Fatawa Rizvia With citations and translation of Arabic phrases Imam Ahmed Raza Barelvi (May his secret be sanctified) 29 Raza Foundation Jamia Nizamia Razvia Inside Lohari Gate, Lahore, 8 Pakistan (54000)

फ़तावा रज़विया सटीक उद्धरण और अरबी इबारतों के अनुवाद के साथ इमाम अहमद रज़ा बरेलवी (कुद्दिस सिर्रहु) 29 रज़ा फ़ाउंडेशन जामिया निज़ामिया रज़विया अंदरून लोहारी दरवाज़ा लाहौर, 8 पाकिस्तान (54000)

فتاویٰ رضویہ مع تخریج و ترجمہ عربی عبارات امام احمد رضا بریلوی قدس سرہ ۲۹ رضا

فاؤنڈیشن جامعہ نظامیہ رضویہ اندرون لوہاری دروازہ لاہور، ۸ پاکستان (۵۴۰۰۰)

Volume 29 Fatawa Rizwia

Contents 4 ..... Summary list 6 ..... Preface 10..... Twenty-ninth Volume 11..... Important matter 14..... Detailed list of contents 40..... List of subsidiary issues 48..... Kitab-ush-Shatta (The Book of Miscellaneous Items) 48..... (Part Four) 48..... Prosody and Rhymes 60..... Knowledge and Education 66..... Language and Expression 70..... Preaching and Propagation 74..... Zoology 76..... Anatomy 80..... Science of Letters and Mathematics 84..... Rights of People 86..... Lexicon 88..... Dream 90..... Leasing 92..... Beliefs, Theology, and Religious Studies 120..... Qawari'-ul-Qahhar 'ala-al-Mujassimat-il-Fujjar 1318 AH 120..... For those who believe in the corporeality of Allah, the Subduer (severe calamities from Allah Almighty upon the profligates) 120..... Titled with a historical title

जिल्द २९ फ़तावा रज़विया

विषय-सूची 4 ..... संक्षिप्त सूची 6 ..... प्रस्तावना 10..... उनतीसवीं जिल्द 11..... महत्वपूर्ण बात 14..... विस्तृत विषय-सूची 40..... गौण मुद्दों की सूची 48..... किताबुश-शती (विविध विषयों का अध्याय) 48..... (चौथा भाग) 48..... छंदशास्त्र और तुकबंदी 60..... ज्ञान और शिक्षा 66..... भाषा और अभिव्यक्ति 70..... उपदेश और प्रचार 74..... प्राणी-विज्ञान 76..... शरीर-रचना-विज्ञान 80..... अक्षर-विज्ञान और गणित 84..... हुक़ूक़-उल-इबाद (मानवीय अधिकार) 86..... शब्दकोश 88..... स्वप्न 90..... पट्टा (किराया) 92..... अक़ायद, कलाम और दीनियात (धार्मिक अध्ययन) 120..... कवारि-उल-क़हहार अलल मुजस्समत-इल-फ़ुज्जार १३१८ हिजरी 120..... अल्लाह की

सिफ़ात में जिस्मियत के क़ायल फाजिरों पर कहर बरसाने वाले (अल्लाह तआला की ओर से सख्त मुसीबतें) 120.....
ऐतिहासिक नाम से अलंकृत

جلد ۲۹ فتاویٰ رضویہ

Contents 4 .....

اجمالی فہرست 6 .....

پیش لفظ 10.....

انتیسویں جلد 11.....

ضروری بات 14.....

فہرست مضامین مفصل

40..... فہرست

ضمنی مسائل 48.....

کتاب الشتی 48.....

(حصہ چہارم)

48..... عروض و

قوافی 60..... علم و

تعلیم 66..... زبان و

بیان 70..... وعظ و

تبلیغ 74..... علم

الحیوان 76.....

تشریح ابدان 80.....

علم حروف و ریاضی

حقوق العباد 84

لغت 86

خواب 88

اجارہ 90

عقائد و کلام 92

و دینیات 120.....

قوارع القهار على المجسمة الفجار ۱۳۱۸ھ

جسمیت 120

باری تعالیٰ کے قائل فاجروں پر قہر فرمانے والے (اللہ تعالیٰ کی طرف سے سخت مصیبتیں)

ملقب بلقب 120

تاریخی

Volume 29

Fatawa Rizvia

120 ..... Zarb-e-Qamari 1318 AH
288 ..... Risala (Treatise)
288 ..... Thalj al-Sadr li-Iman al-Qadr 1325 AH
288 ..... (Coolness of the chest, due to faith in destiny) 304 ..... Risala (Treatise)
304 ..... Al-Tahbeer bi-Bab al-Tadbeer 1305 AH
304 ..... (Adornment of speech regarding the issue of management) 340 ..... Risala (Treatise) 340 ..... Itiqad al-Ahbab fi al-Jameel wa al-Mustafa wa al-Aal wa al-Ashab 1298 AH 340 ..... (The belief of friends regarding the Beautiful (Allah), the Chosen One (PBUH), his family and companions)
412 ..... Risala (Treatise)
412 ..... Rimah al-Qahhar 'ala Kufr al-Kuffar 1328 AH
412 ..... (Striking of the Subduer's spear upon the disbelief of the disbelievers) 412 ..... (Introduction to "Khalis al-I'tiqad")
434 ..... Risala (Treatise)
434 ..... Khalis al-I'tiqad 1328 AH
434 ..... (Pure Belief)
486 ..... Risala (Treatise)
486 ..... Inba' al-Mustafa bi-Hal Sirrin wa Akhfa 1318 AH
486 ..... (Informing the Chosen One (PBUH) of the secret and the most hidden matters) 512 ..... Risala (Treatise) 512 ..... Izahat al-Aib bi-Saif al-Ghaib
512 ..... (Removing the defect with the sword of the unseen) 550 ..... Risala (Treatise)

Page 2 of 753

जिल्द 29

फ़तावा रज़विया

120 ..... ज़रब-ए-क़मरी 1318 हि.
288 ..... रिसाला (ग्रंथ)
288 ..... थल्ज अल-सद्र ली-ईमान अल-क़द्र 1325
हि. 288 ..... (भाग्य में विश्वास के कारण सीने की
ठंडक) 304 ..... रिसाला (ग्रंथ)
304 ..... अत-तहरीर बी-बाब अत-तदबीर 1305
हि. 304 ..... (तदबीर (योजना) के मसले पर भाषण का श्रृंगार)
340 ..... रिसाला (ग्रंथ)
340 ..... एतिकाद अल-अहबाब फ़िल जमील वल मुस्तफ़ा वल आल वल असहाब 1298
हि. 340 ..... (सुंदर (अल्लाह), मुस्तफ़ा (स.अ.व.), उनके परिवार और साथियों के बारे में
मित्रों का विश्वास) 412 ..... रिसाला
(ग्रंथ) 412 ..... रिमाह अल-क़ह्हार अला कुफ्र अल-कुफ़्फ़ार
1328 हि. 412 ..... (काफ़िरों के कुफ़्र पर क़ह्हार (दमनकारी)
का भाला मारना) 412 ..... (भूमिका "खालिस
अल-एतिकाद") 434 ..... रिसाला
(ग्रंथ) 434 ..... खालिस अल-एतिकाद 1328
हि. 434 ..... (शुद्ध विश्वास)
486 ..... रिसाला (ग्रंथ)
486 ..... इन्बा अल-मुस्तफ़ा बी-हाल सिर्रिन व अख़फ़ा 1318
हि. 486 ..... (मुस्तफ़ा (स.अ.व.) को गुप्त और अत्यंत गुप्त बातों की सूचना देना)
512 ..... रिसाला (ग्रंथ)
512 ..... इजा़हत अल-ऐब बी-सैफ़ अल-ग़ैब
512 ..... (ग़ैब की तलवार से ऐब को दूर करना)
550 ..... रिसाला (ग्रंथ)

पृष्ठ 753 में से 2

جلد ۲۹

فتاویٰ رضویہ

120 ..... ضرب قماری

۱۳۱۸ھ 288 ..... رسالہ

288 ..... ثلج الصدر لایمان القدر ۱۳۲۵ھ

288 ..... (سینے کی ٹھنڈک، ایمانِ تقدیر کے سبب) 304 ..... رسالہ

304 ..... التحبیر بباب التدبیر ۱۳۰۵ھ

304 ..... (آرائش کلام مسئلہ تدبیر کے بارے میں)

340 ..... رسالہ

340 ..... اعتقاد الاحباب فی الجمیل والمصطفی والآل والاصحاب ۱۲۹۸ھ

340 ..... (احباب کا اعتقاد جمیل (اللہ تعالی) مصطفی صلی اللہ تعالی علیہ وسلم، آپ کی آل اور اصحاب کے بارے میں)

412 ..... رسالہ

412 ..... رماح القهار علی کفر الکفار ۱۳۲۸ھ

412 ..... (قہار کا نیزہ مارنا کافروں کے کفر پر)

412 ..... (تمہید "خالص الاعتقاد")

434 ..... رسالہ

434 ..... خالص الاعتقاد ۱۳۲۸ھ

(اعتقادِ 434

رسالہ ..... 486 (خالص

انباء المصطفی بحال سرو اخفی ۱۳۱۸ھ 486

(مصطفی صلی اللہ تعالی علیہ وسلم کو خبر دینا پوشیدہ کی اور 486

پوشیدہ ترین کی) 512

ازاحة العیب بسیف الغیب ..... رسالہ 512

(عیب کو دور کرنا غیب کی تلوار سے) 512

رسالہ 550

Fatawa Ridawiyya Volume 29

550 ..... Anwar al-Intibah fi Hall Nida Ya Rasulullah
550 ..... (Luminous admonitions regarding the permissibility of saying 'Ya Rasul Allah') 572 ..... Treatise
572 ..... Isma' al-Arba'in fi Shafa'at Sayyid al-Mahbubin
572 ..... (Relating forty (40) Hadiths about the intercession of the Master of the beloveds) 614 ..... Umur al-'Ishrin dar Imtiyaz al-Aqa'id al-Sunniyyin 614 ..... (Twenty (20) matters in distinguishing the beliefs of Sunnis) 656 ..... Treatise
656 ..... Sharh al-Matalib fi Mabhas Abi Talib (1316 AH)
656 ..... (Explanation of the objectives in the discussion regarding Abu Talib)

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

550 ..... अनवारुल इन्तिबाह फ़ी हल निदा या रसूल अल्लाह
550 ..... (या रसूल अल्लाह कहने के जवाज़ के बारे में नूरानी तंबीहें) 572 ..... रिसाला
572 ..... इस्माउल अरबईन फ़ी शफ़ाअत सैय्यदुल महबूबीन
572 ..... (महबूबों के सरदार की शफ़ाअत के बारे में चालीस 40 हदीसें सुनाना) 614 ..... उमूर-ए-इश्रीन दर इम्तियाज़-ए-अक़ायद-ए-सुन्नियीन 614 ..... (सुन्नियों के अक़ायद की पहचान में बीस 20 उमूर) 656 ..... रिसाला
656 ..... शरहुल मताल़िब फ़ी मबहस अबी ताल़िब (1316 हिजरी)
656 ..... (मताल़िब की वज़ाहत अबू ताल़िब की बहस में)

पृष्ठ 753 में से 3

فتاویٰ رضویہ جلد ۲۹

550 ..... انوار الانتباہ فی حل نداء یارسول اللہ

550 ..... (یا رسول اللہ کہنے کے جواز کے بارے میں نورانی تنبیہیں) 572 ..... رسالہ

572 ..... اسماع الاربعین فی شفاعۃ سید المحبوبین

572 ..... (محبوبوں کے سردار کی شفاعت کے بارے میں چالیس ۴۰ حدیثیں سنانا) 614 ..... امورِ عشرین در امتیازِ عقائدِ سنیین 614 ..... (سنیوں کے عقائد کی پہچان میں بیس ۲۰ امور) 656 ..... رسالہ

656 ..... شرح المطالب فی مبحث ابی طالب ۱۳۱۶ھ

656 ..... (مطالب کی وضاحت ابوطالب کی بحث میں)

Volume 29

Fatawa Razawiyya

Fatawa Razawiyya With Research & Translation of Arabic Phrases

Imam Ahmad Raza Barelvi (May his secret be sanctified)

Raza Foundation Jamia Nizamia Razawiyya

www.dawateislami.net

Inside Lohari Gate, Lahore No. 8 Pakistan (54000)

I.T. Majlis of Dawat-e-Islami

Page 1 of 750

जिल्द 29

फ़तावा रज़विया

फ़तावा रज़विया तख़रीज और अरबी वाक्यांशों के अनुवाद के साथ

इमाम अहमद रज़ा बरेलवी (क़ुद्दिस सिर्रहु)

रज़ा फ़ाउंडेशन जामिया निज़ामिया रज़विया

www.dawateislami.net

अंदरून लोहारी दरवाज़ा, लाहौर नंबर 8 पाकिस्तान (54000)

आई.टी. मजलिस-ए-दावत-ए-इस्लामी

पृष्ठ 750 में से 1

جلد ۲۹

فتاویٰ رضویہ

فتاویٰ رضویہ مع تخریج و ترجمہ عربی عبارات

امام احمد رضا بریلوی قدس سرہ

رضا فاؤنڈیشن جامعہ نظامیہ رضویہ

www.dawateislami.net

اندرون لوہاری دروازہ لاہور نمبر ۸ پاکستان (۵۴۰۰۰)

I.T. Majlis of Dawat-e-Islami

Page 1 of 750

Volume 29

Fatawa Razawiya

"Whomsoever Allah intends good for, He grants him deep understanding of the religion." (Hadith)

AL-ATAYA AL-NABAWIYYA FIL FATAWA AL-RADAWIYYA With verification and translation of Arabic passages

Volume 29

A magnificent fourteenth-century jurisprudential encyclopedia containing rare research

Imam Ahmad Raza Barelvi (May his secret be sanctified) 1272 AH / 1856 AD — 1340 AH / 1921 AD

Raza Foundation, Jamia Nizamia Razavia Inside Lohari Gate, Lahore-8, Pakistan (54000) Phone: 7657312, 7665772

Page 2 of 750

जिल्द 29

फ़तावा रज़विया

"अल्लाह जिसके साथ भलाई का इरादा करता है, उसे दीन की गहरी समझ अता फ़रमाता है।" (हदीस)

अल-अताया अल-नबवियाह फ़िल फ़तावा अर-रज़वियाह अरबी इबारतों की तख़रीज और तर्जुमे के साथ

जिल्द 29

चौदहवीं सदी का अज़ीमुश्शान फ़िक़्ही इनसाइक्लोपीडिया, जिसमें नादिर तहक़ीक़ात शामिल हैं

इमाम अहमद रज़ा बरेलवी (कुद्दसा सिर्रहुल अज़ीज़) 1272 हिजरी / 1856 ईस्वी — 1340 हिजरी / 1921 ईस्वी

रज़ा फाउंडेशन, जामिया निज़ामिया रज़विया अंदरून लोहारी दरवाज़ा, लाहौर-8, पाकिस्तान (54000) फ़ोन: 7657312, 7665772

पृष्ठ 750 में से 2

جلد ۲۹

فتاویٰ رضویہ

مَنْ یُرِدِ اللّٰہُ بِہٖ خَیْرًا یُّفَقِّھْہُ فِی الدِّیْنِ (الحدیث)

اَلْعَطَایَا النَّبَوِیَّۃُ فِی الْفَتَاوَی الرَّضَوِیَّۃُ مع تخریج و ترجمہ عربی عبارات

جلد ۲۹

تحقیقاتِ نادرہ پر مشتمل چودہویں صدی کا عظیم الشان فقہی انسائیکلوپیڈیا

امام احمد رضا بریلوی قدس سرہ العزیز ۱۲۷۲ھ/ ۱۸۵۶ء — ۱۳۴۰ھ/ ۱۹۲۱ء

رضا فاؤنڈیشن، جامعہ نظامیہ رضویہ اندرون لوہاری دروازہ، لاہور-۸، پاکستان (۵۴۰۰۰) فون: ۷۶۵۷۳۱۲، ۷۶۶۵۷۷۲

صفحہ 2 از 750

Fatawa Razvia Volume 29

(All rights reserved for the publisher)

Book Name: __ **Fatawa Razvia Volume 29 Author:** __ Sheikh-ul-Islam Imam Ahmed Raza Qadri Barelvi (Rehmatullah Alaih) Translation of Arabic phrases: __ Hafiz Abdul Sattar Saeedi, Director of Education Jamia Nizamia Razvia, Lahore. Foreword: __ **Hafiz Abdul Sattar Saeedi, Director of Education Jamia Nizamia Razvia, Lahore. Table of Contents arrangement:** __ **Hafiz Abdul Sattar Saeedi, Director of Education Jamia Nizamia Razvia, Lahore. Referencing and Correction:** _ ***Maulana Nazir Ahmed Saeedi, Maulana Muhammad Akram Allah Butt, Maulana Ghulam Hussain. Supervision and Patronage:*** _ **Maulana Mufti Muhammad Abdul Qayyum Hazarvi, Secretary General Tanzeem-ul-Madaris Ahle Sunnat, Pakistan. Calligraphy:** __ **Muhammad Sharif Gul, Karial Kalan (Gujranwala). Pasting:** __ Maulana Muhammad Mushtaq Tabash Qasoori, Teacher of Persian Department Jamia Nizamia Lahore. Pages: __ **752 Publication Date:** __ Rajab-ul-Murajjab 1426 AH / August 2005 AD. Printer: __ __ Publisher: __ **Raza Foundation Jamia Nizamia Razvia, Inside Lohari Gate, Lahore. Price:** __ ___

Available at: * Raza Foundation, Jamia Nizamia Razvia, Inside Lohari Gate, Lahore. 0300-9415300, 7665772 * Maktaba Ahle Sunnat Jamia Nizamia Razvia, Inside Lohari Gate, Lahore. * Zia-ul-Quran Publications, Gunj Bakhsh Road, Lahore. * Shabbir Brothers, 40-B, Urdu Bazaar, Lahore.

फ़तावा रज़विया जिल्द २९

(सर्वाधिकार प्रकाशक के पास सुरक्षित हैं)

पुस्तक का नाम __ **फ़तावा रज़विया जिल्द २९ लेखक** __ शेख़-उल-इस्लाम इमाम अहमद रज़ा क़ादरी बरेलवी (रहमतुल्लाहि तआला अलैहि) अरबी इबारतों का अनुवाद __ हाफ़िज़ अब्दुल सत्तार सईदी, नाज़िम-ए-तालीमात जामिया निज़ामिया रज़विया, लाहौर प्रस्तावना __ **हाफ़िज़ अब्दुल सत्तार सईदी, नाज़िम-ए-तालीमात जामिया निज़ामिया रज़विया, लाहौर विषय-सूची व्यवस्था __ हाफ़िज़ अब्दुल सत्तार सईदी, नाज़िम-ए-तालीमात जामिया निज़ामिया रज़विया, लाहौर संदर्भ और शोधन _ मौलाना नज़ीर अहमद सईदी, मौलाना मुहम्मद अकरम अल्लाह बट, मौलाना गुलाम हुसैन प्रबंधन और संरक्षण _ मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अब्दुल कय्यूम हज़ारी, नाज़िम-ए-आला तंज़ीम-उल-मदारिस अहले सुन्नत, पाकिस्तान लेखन (कैलीग्राफी) __ मुहम्मद शरीफ़ गुल, कड़ियाल कलां (गुजरानवाला) पेस्टिंग** __ मौलाना मुहम्मद मुश्ताक़ ताबिश कसूरी, फ़ारसी विभाग के शिक्षक जामिया निज़ामिया लाहौर पृष्ठ __ **७५२ प्रकाशन** __ रजब-उल-मुरज्जब १४२६ हिजरी / अगस्त २००५ ईस्वी मुद्रणालय __ __ प्रकाशक __ **रज़ा फाउंडेशन जामिया निज़ामिया रज़विया, अंदरून लोहारी दरवाज़ा, लाहौर मूल्य** __ ___

मिलने के पते * रज़ा फाउंडेशन, जामिया निज़ामिया रज़विया, अंदरून लोहारी दरवाज़ा, लाहौर ०३००/९४१५३०० ७६६५७७२ * मकतबा अहले सुन्नत जामिया निज़ामिया रज़विया, अंदरून लोहारी दरवाज़ा, लाहौर * ज़िया-उल-कुरान पब्लिकेशंस, गंज बख्श रोड, लाहौर * शब्बीर ब्रदर्स, ४० बी, उर्दू बाज़ार, लाहौर

فتاویٰ رضویہ جلد ۲۹

(جملہ حقوق بحق ناشر محفوظ ہیں)

نام کتاب __ **فتاویٰ رضویہ جلد ۲۹ تصنیف** __ شیخ الاسلام امام احمد رضا قادری بریلوی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ ترجمہ عربی عبارات __ حافظ عبدالستار سعیدی، ناظم تعلیمات جامعہ نظامیہ رضویہ، لاہور پیش لفظ __ **حافظ عبدالستار سعیدی، ناظم تعلیمات جامعہ نظامیہ رضویہ، لاہور ترتیب فہرست __ حافظ عبدالستار سعیدی، ناظم تعلیمات جامعہ نظامیہ رضویہ، لاہور تخریج و تصحیح _ مولانا نذیر احمد سعیدی، مولانا محمد اکرم اللہ بٹ، مولانا غلام حسین باہتمام و سرپرستی _ مولانا مفتی محمد عبدالقیوم ہزاروی ناظم اعلیٰ تنظیم المدارس اہل سنت، پاکستان کتابت __ محمد شریف گل، کڑیال کلاں (گوجرانوالہ) پیسٹنگ** __ مولانا محمد مشتاق تابش قصوری معلم شعبہ فارسی جامعہ نظامیہ لاہور صفحات __ **۷۵۲ اشاعت** __ رجب المرجب ۱۴۲۶ھ / اگست ۲۰۰۵ء مطبع __ __ ناشر __ **رضا فاؤنڈیشن جامعہ نظامیہ رضویہ، اندرون لوہاری دروازہ، لاہور قیمت** __ ____

ملنے کے پتے * رضا فاؤنڈیشن، جامعہ نظامیہ رضویہ، اندرون لوہاری دروازہ، لاہور ۰۳۰۰/۹۴۱۵۳۰۰ ۷۶۶۵۷۷۲ * مکتبہ اہل سنت جامعہ نظامیہ رضویہ، اندرون لوہاری دروازہ، لاہور * ضیاء القرآن پبلیکیشنز، گنج بخش روڈ، لاہور * شبیر برادرز، ۴۰ بی، اردو بازار، لاہور

Volume 29 Fatawa Rizwia

O I'tiqad al-Ahbab _____ 339 O Rimah al-Qahhar _____ 411 O Khalis al-I'tiqad _____ 433 O Inba al-Mustafa _____ 485 O Izahat al-Aib _____ 511 O Anwar al-Intibah _____ 549 O Isma Arba'in _____ 571 O Umur 'Ashrin _____ 613 O Sharh al-Matalib _____ 655

Page 5 of 750

जिल्द २९ फ़तावा रज़विया

O एतिकाद उल-अहबाब _____ ३३९ O रिमाह उल-क़हार _____ ४११ O खालिस उल-एतिकाद _____ ४३५ O इन्बा उल-मुस्तफा _____ ४८५ O इज़ाहत उल-ऐब _____ ५११ O अनवार उल-इंतिबाह _____ ५४९ O इस्माए अरबईन _____ ५७१ O उमूरे अश्रीन _____ ६१३ O शरह उल-मताल़िब _____ ६५५

पेज ५ ऑफ़ ७५०

اعتقاد الاحباب O _____ ۳۳۹ رماح القہار O _____ ۴۱۱ خالص الاعتقاد O _____ ۴۳۳

انباء المصطفیٰ O _____ ۴۸۵ ازاحۃ العیب O _____ ۵۱۱ انوار الانتباہ O _____ ۵۴۹

اسماع اربعین O _____ ۵۷۱ امور عشرین O _____ ۶۱۳ شرح المطالب O _____ ۶۵۵

Fatawa Rizvia - Volume 29

In the name of Allah, the Most Gracious, the Most Merciful.

Preface

All praise is for Allah! The Raza Foundation, an institution established in March 1988 at Darul Uloom Jamia Nizamia Razvia, Lahore, to present the academic treasures and jurisprudential stores of Ala Hazrat, Imam al-Muslimeen, Maulana Shah Ahmad Raza Khan Barelvi (may Allah have mercy on him) to the public in a modern way in exact accordance with contemporary requirements, is progressing towards its goal by completing the evolutionary stages of its proposed plan with extreme success and lightning speed. So far, this institution has published numerous works of Imam Ahmad Raza, among which the following Arabic works, published according to international standards, are of special importance:

(1) Al-Dawlat al-Makkiyya bi'l-Madat al-Ghaybiyya (1323 AH) with Al-Fuyudat al-Malakiyya li-Muhibb al-Dawlat al-Makkiyya (1326 AH) (2) Anba' al-Hayy an kalamihi al-masun tibyanan li-kulli shay' (1326 AH) with Al-Ta'liqat Hasim al-Muftari 'ala al-Sayyid al-Barri (1328 AH) (3) Kifl al-Faqih al-Fahim fi Ahkam Qirtas al-Darahim (1324 AH) (4) Saiqal al-Rain 'an Ahkam Mujawarat al-Haramayn (1305 AH) (5) Hadi al-Adhiyya bi'l-Shat al-Hindiyya (1312 AH)

I.T. Majlis of Dawat-e-Islami

Page 6 of 750

फ़तावा रिज़विया - जिल्द 29

अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत दयालु और बहुत कृपालु है।

प्राक्कथन (पेश लफ़्ज़)

अल्हम्दु लिल्लाह! आला हज़रत इमाम अल-मुस्लिमीन मौलाना शाह अहमद रज़ा खान बरेलवी (रहमतुल्लाह अलैह) के शैक्षिक खज़ानों और फ़िक़्ही भंडारों को आधुनिक तरीके से वर्तमान युग की आवश्यकताओं के अनुसार सार्वजनिक पटल पर लाने के लिए मार्च 1988 में दारुल उलूम जामिया निज़ामिया रिज़विया, लाहौर में "रज़ा फ़ाउंडेशन" के नाम से जो संस्थान स्थापित किया गया था, वह अपनी प्रस्तावित योजना के विकासात्मक चरणों को अत्यंत सफलता और तीव्र गति से पूरा करते हुए अपने लक्ष्य की ओर बढ़ रहा है। अब तक यह संस्थान इमाम अहमद रज़ा की कई रचनाएँ प्रकाशित कर चुका है, जिनमें अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुसार प्रकाशित निम्नलिखित अरबी रचनाएँ विशेष महत्व रखती हैं:

(1) अद-दौलतुल मक्कियाह बिल-माद्दतुल ग़ैबियाह (1323 हिजरी) अल-फ़ुयूज़ातुल मलकीयाह लि-मुहिब अद-दौलतुल मक्कियाह (1326 हिजरी) के साथ (2) अंबाउल हय्यि अन् कलामिहिल मसून तिब्यानल लिकुल्लि शय (1326 हिजरी) अत-ता'लीक़ात हासिमुल मुफ़्तरी अलस-सय्यिदुल बर्री (1328 हिजरी) के साथ (3) किफ़्लुल फ़क़ीहिल फ़ाहिम फ़ी अहकाम क़िरतास अद-दराहिम (1324 हिजरी) (4) सैक़लुर रैन अन अहकाम मुजावरतिल हरमैन (1305 हिजरी) (5) हादी अल-अज़हियाह बिल-शातिल हिंदियाह (1312 हिजरी)

आई.टी. मजलिस-ए-दावत-ए-इस्लामी

पृष्ठ 6 / 750

فتاویٰ رضویہ - جلد ۲۹

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم ط

پیش لفظ

الحمد للہ! اعلیٰحضرت امام المسلمین مولانا شاہ احمد رضا خاں بریلوی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ کے خزائن علمیہ اور ذخائر فقہیہ کو جدید انداز میں عصرِ حاضر کے تقاضوں کے عین مطابق منظرِ عام پر لانے کے لئے دارالعلوم جامعہ نظامیہ رضویہ لاہور میں رضا فاؤنڈیشن کے نام سے جو ادارہ مارچ ۱۹۸۸ء میں قائم ہوا تھا وہ انتہائی کامیابی اور برق رفتاری سے مجوزہ منصوبہ کے ارتقائی مراحل کو طے کرتے ہوئے اپنے ہدف کی طرف بڑھ رہا ہے۔ اب تک یہ ادارہ امام احمد رضا کی متعدد تصانیف شائع کر چکا ہے جن میں بین الاقوامی معیار کے مطابق شائع ہونے والی مندرجہ ذیل عربی تصانیف خاص اہمیت کی حامل ہیں:

(۱) الدولة المكية بالمادة الغيبية (۱۳۲۳ھ) مع الفيوضات الملكية لمحب الدولة المكية (۱۳۲۶ھ) (۲) انباء الحی ان کلامہ المصون تبیانا لکل شیئ (۱۳۲۶ھ) مع التعلیقات حاسم المفتری علی السید البرٰی (۱۳۲۸ھ) (۳) کفل الفقیہ الفاھم فی احکام قرطاس الدراھم (۱۳۲۴ھ) (۴) صیقل الرین عن احکام مجاورۃ الحرمین (۱۳۰۵ھ) (۵) ھادی الاضحیۃ بالشاۃ الھندیۃ (۱۳۱۲ھ)

آئی ٹی مجلسِ دعوتِ اسلامی

Fatawa Razawiya Volume 29

(6) Al-Safiyah al-Muhiyah li-Hukm Julud al-Adhiyah (1307 AH) (7) Al-Ijazat al-Matinah li-'Ulama' Bakkah wa al-Madinah (1322 AH)

However, the greatest achievement of this institution is the publication of "Al-'Ataya al-Nabawiyyah fi al-Fatawa al-Radawiyyah," known as Fatawa Razawiya, with meticulous referencing and translation in an excellent and beautiful manner. The publication of the aforementioned Fatawa began in Sha'ban al-Mu'azzam 1410 AH / March 1990 AD. By the grace of Allah Almighty and the kindness of His Noble Messenger, in a short span of approximately fifteen (15) years, the twenty-ninth (29th) volume is now in your hands. Details of the contents of the twenty-eight volumes published prior to this, in terms of years of publication, books and chapters, total pages, number of questions and answers, and the number of treatises included in them, are as follows:

Vol	Title	Q&A	No. of Treatises	Publication Years	Pages
1	Kitab al-Taharah (Book of Purification)	22	11	Sha'ban al-Mu'azzam 1410 AH / March 1990	848
2	Kitab al-Taharah	33	7	Rabi' al-Thani 1412 AH / November 1991	710
3	Kitab al-Taharah	59	6	Sha'ban al-Mu'azzam 1412 AH / February 1992	756
4	Kitab al-Taharah	132	5	Rajab al-Murajjab 1413 AH / January 1993	760
5	Kitab al-Salat (Book of Prayer)	140	6	Rabi' al-Awwal 1414 AH / September 1993	692
6	Kitab al-Salat	257	4	Rabi' al-Awwal 1415 AH / August 1994	736
7	Kitab al-Salat	269	7	Rajab al-Murajjab 1415 AH / December 1994	720
8	Kitab al-Salat	337	6	Muharram al-Haram 1416 AH / June 1995	664
9	Kitab al-Jana'iz (Book of Funerals)	273	13	Dhu al-Qi'dah 1416 AH / April 1996	946

Vol	Title	Q&A	No. of Treatises	Publication Years	Pages
10	Kitab Zakat, Sawm, Hajj	316	16	Rabi' al-Awwal 1417 AH / August 1996	832
11	Kitab al-Nikah (Book of Marriage)	459	6	Muharram al-Haram 1418 AH / May 1997	736
12	Kitab Nikah, Talaq	328	3	Rajab al-Murajjab 1418 AH / November 1997	688
13	Kitab Talaq, Iman, and Hudud-o-Ta'zir	293	2	Dhu al-Qi'dah 1418 AH / March 1998	688
14	Kitab al-Siyar	339	7	Jumada al-Akhirah 1419 AH / September 1998	712

फ़तावा रज़विया जिल्द २९

(६) अस-साफ़िया अल-मुहिया लि-हुक्म जुलूद अल-अज़हिया (१३०७ हि.) (७) अल-इजाज़त अल-मतीना लि-उलमा-ए-बक्का वल-मदीना (१३२२ हि.)

मगर इस संस्था की सबसे बड़ी उपलब्धि "अल-अताया अल-नबवियाह फ़ि अल-फ़तावा अल-रज़वियाह" का प्रकाशन है, जिसे फ़तावा रज़विया के नाम से जाना जाता है, जिसमें संदर्भों और अनुवाद के साथ एक उत्कृष्ट और सुंदर ढंग से काम किया गया है। उक्त फ़तावा का प्रकाशन शाबानुल मुअज़्ज़म १४१० हिजरी / मार्च १९९० ईस्वी में शुरू हुआ था और अल्लाह तआला के फ़ज़ल और उसके पाक रसूल की कृपा से लगभग पंद्रह (१५) वर्षों के संक्षिप्त समय में उन्तीसवीं (२९) जिल्द आपके हाथों में है। इससे पहले प्रकाशित अट्ठाईस जिल्दों की सामग्री का विवरण प्रकाशन के वर्ष, पुस्तकों और अध्यायों, कुल पृष्ठों, प्रश्नों और उत्तरों की संख्या और उनमें शामिल शोध-पत्रों (रिसालों) की संख्या के अनुसार निम्नानुसार है:

जिल्द	शीर्षक	प्रश्न/उत्तर	रिसालों की संख्या	प्रकाशन वर्ष	पृष्ठ
१	किताबुत तहारत	२२	११	शाबानुल मुअज़्ज़म १४१० हि. / मार्च १९९०	८४८
२	किताबुत तहारत	३३	७	रबीउल थानी १४१२ हि. / नवंबर १९९१	७१०
३	किताबुत तहारत	५९	६	शाबानुल मुअज़्ज़म १४१२ हि. / फरवरी १९९२	७५६
४	किताबुत तहारत	१३२	५	रजबुल मुरज्जब १४१३ हि. / जनवरी १९९३	७६०
५	किताबुस सलात	१४०	६	रबीउल अव्वल १४१४ हि. / सितंबर १९९३	६९२
६	किताबुस सलात	२५७	४	रबीउल अव्वल १४१५ हि. / अगस्त १९९४	७३६

जिल्द	शीर्षक	प्रश्न/उत्तर	रिसालों की संख्या	प्रकाशन वर्ष	पृष्ठ
७	किताबुस सलात	२६९	७	रजबुल मुरज्जब १४१५ हि. / दिसंबर १९९४	७२०
८	किताबुस सलात	३३७	६	मुहर्रमुल हराम १४१६ हि. / जून १९९५	६६४
९	किताबुल जनाइज़	२७३	१३	ज़ीक़ादा १४१६ हि. / अप्रैल १९९६	९४६
१०	किताब ज़कात, सोम, हज	३१६	१६	रबीउल अव्वल १४१७ हि. / अगस्त १९९६	८३२
११	किताबुन निकाह	४५९	६	मुहर्रमुल हराम १४१८ हि. / मई १९९७	७३६
१२	किताबुन निकाह, तलाक़	३२८	३	रजबुल मुरज्जब १४१८ हि. / नवंबर १९९७	६८८
१३	किताब तलाक़, ईमान और हुदूद-व-तज़ीर	२९३	२	ज़ीक़ादा १४१८ हि. / मार्च १९९८	६८८
१४	किताबुस सियर	३३९	७	जमादियुल उखरा १४१९ हि. / सितंबर १९९८	७१२

पृष्ठ ७/७५०

فتاویٰ رضویہ جلد ۲۹

(۶) الصافية الموحية لحكم جلود الاضحية (۱۳۰۷ھ) (۷) الاجازات المتينة لعلماء بكة والمدينة (۱۳۲۲ھ)

مگر اس ادارے کا عظیم ترین کارنامہ العطایا النبویة فی الفتاویٰ الرضویه المعروف به فتاویٰ رضویہ کی تخریج و ترجمہ کے ساتھ عمدہ و خوبصورت انداز میں اشاعت ہے۔ فتاویٰ مذکورہ کی اشاعت کا آغاز شعبان المعظم ۱۴۱۰ھ / مارچ ۱۹۹۰ء میں ہوا تھا اور بفضلہ تعالیٰ جل مجدہ و بعنایت رسولہ الکریم تقریباً تقریباً پندرہ ۱۵ سال کے مختصر عرصہ میں انتیسویں ۲۹ جلد آپ کے ہاتھوں میں ہے۔ اس سے قبل شائع ہونے والی اٹھائیس جلدوں کے مشمولات کی تفصیل سنین اشاعت، کتب و ابواب، مجموعی صفحات، تعداد سوالات و جوابات اور ان میں شامل رسائل کی تعداد کے اعتبار سے حسب ذیل ہے:

جلد	عنوان	جوابات اسئلہ	تعداد رسائل	سنین اشاعت	صفحات
۱	کتاب الطہارۃ	۲۲	۱۱	شعبان المعظم ۱۴۱۰ھ / مارچ ۱۹۹۰ء	۸۴۸
۲	کتاب الطہارۃ	۳۳	۷	ربیع الثانی ۱۴۱۲ھ / نومبر ۱۹۹۱ء	۷۱۰
۳	کتاب الطہارۃ	۵۹	۶	شعبان المعظم ۱۴۱۲ھ / فروری ۱۹۹۲ء	۷۵۶

جلد	عنوان	جوابات اسئلہ	تعداد رسائل	سنین اشاعت	صفحات
۴	کتاب الطہارۃ	۱۳۲	۵	رجب المرجب ۱۴۱۳ھ / جنوری ۱۹۹۳ء	۷۶۰
۵	کتاب الصلوٰۃ	۱۴۰	۶	ربیع الاول ۱۴۱۴ھ / ستمبر ۱۹۹۳ء	۶۹۲
۶	کتاب الصلوٰۃ	۲۵۷	۴	ربیع الاول ۱۴۱۵ھ / اگست ۱۹۹۴ء	۷۳۶
۷	کتاب الصلوٰۃ	۲۶۹	۷	رجب المرجب ۱۴۱۵ھ / دسمبر ۱۹۹۴ء	۷۲۰
۸	کتاب الصلوٰۃ	۳۳۷	۶	محرم الحرام ۱۴۱۶ھ / جون ۱۹۹۵ء	۶۶۴
۹	کتاب الجنائز	۲۷۳	۱۳	ذیقعدہ ۱۴۱۶ھ / اپریل ۱۹۹۶ء	۹۴۶
۱۰	کتاب زکوٰۃ، صوم، حج	۳۱۶	۱۶	ربیع الاول ۱۴۱۷ھ / اگست ۱۹۹۶ء	۸۳۲
۱۱	کتاب النکاح	۴۵۹	۶	محرم الحرام ۱۴۱۸ھ / مئی ۱۹۹۷ء	۷۳۶
۱۲	کتاب نکاح، طلاق	۳۲۸	۳	رجب المرجب ۱۴۱۸ھ / نومبر ۱۹۹۷ء	۶۸۸

جلد	عنوان	جوابات اسئلہ	تعداد رسائل	سنین اشاعت	صفحات
۱۳	کتاب طلاق، ایمان اور حدود و تعزیر	۲۹۳	۲	ذیقعدہ ۱۴۱۸ھ / مارچ ۱۹۹۸ء	۶۸۸
۱۴	کتاب السیر	۳۳۹	۷	جمادی الاخریٰ ۱۴۱۹ھ / ستمبر ۱۹۹۸ء	۷۱۲

Fatawa Rizvia Volume 29

No.	Book	Pages	Issues	Hijri Date ___ Gregorian Date	Total Pages
15	Kitab al-Siyar	81	15	Muharram al-Haram 1420 AH ___ April 1999 AD	744
16	Kitab al-Shirka, Kitab al-Waqf	432	3	Jumada al-Ula 1420 AH ___ September 1999 AD	632
17	Kitab al-Buyu, Kitab al-Hawala, Kitab al-Kafala	153	2	Dhu al-Qi'dah 1420 AH ___ February 2000 AD	726
18	Kitab al-Shahadat, Kitab al-Qada wa al-Da'wa	152	2	Rabi' al-Thani 1421 AH ___ July 2000 AD	740
19	Kitab al-Wakala, Kitab al-Iqrar, Kitab al-Sulh, Kitab al-Mudaraba, Kitab al-Amanat, Kitab al-Ariya, Kitab al-Hiba, Kitab al-Ijara, Kitab al-Ikrah, Kitab al-Hajr, Kitab al-Ghasb	296	3	Dhu al-Qi'dah 1421 AH February 2001 AD	692
20	Kitab al-Shufa, Kitab al-Qisma, Kitab al-Muzara'a, Kitab al-Sayd wa al-Dhaba'ih, Kitab al-Adhiya	334	3	Safar al-Muzaffar 1422 AH ___ May 2001 AD	632
21	Kitab al-Hazr wa al-Ibaha (Part 1)	291	9	Rabi' al-Awwal 1423 AH ___ May 2002 AD	676
22	Kitab al-Hazr wa al-Ibaha (Part 2)	241	6	Jumada al-Akhira 1423 AH ___ August 2002 AD	692
23	Kitab al-Hazr wa al-Ibaha (Part 3)	409	7	Dhu al-Hijjah 1423 AH ___ February 2003 AD	768
24	Kitab al-Hazr wa al-Ibaha	284	9		720

No.	Book	Pages	Issues	Hijri Date ___ Gregorian Date	Total Pages
				Dhu al-Hijjah 1423 AH ___ February 2003 AD	
25	Kitab al-Muda'inat, Kitab al-Ashriba, Kitab al-Rahn, Bab al-Qasm, Kitab al-Wasaya	183	3	Rajab al-Murajjab 1424 AH ___ September 2003 AD	658
26	Kitab al-Fara'iz, Kitab al-Shatti Part 1	325	8	Muharram al-Haram 1425 AH ___ March 2004 AD	616
27	Kitab al-Shatti Part 2	35	10	Jumada al-Akhira 1425 AH ___ August 2004 AD	684
28	Kitab al-Shatti Part 3	22	2	Dhu al-Qi'dah 1425 AH ___ January 2005 AD	684

The order of the chapters in the first eight volumes of the old Fatawa Rizvia is the same as mentioned in the well-known and current books of jurisprudence and fatwas. This same order has been kept in view in the twenty volumes published by the Raza Foundation.

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

क्र.सं.	किताब	पृष्ठ	मुद्दे	हिजरी तारीख ___ ईस्वी तारीख	कुल पृष्ठ
15	किताब अल-सियर	81	15	मुहर्रम उल हराम 1420 हिजरी ___ अप्रैल 1999 ईस्वी	744
16	किताब अल-शिरकत, किताब अल-वक़्फ़	432	3	जमादी उल उला 1420 हिजरी ___ सितम्बर 1999 ईस्वी	632
17	किताब अल-बुयू, किताब अल-हवाला, किताब अल-कफाला	153	2	ज़ीक़ादा 1420 हिजरी ___ फ़रवरी 2000 ईस्वी	726
18	किताब अल-शहादत, किताब अल-कज़ा व अद-दावा	152	2	रबीउल थानी 1421 हिजरी ___ जुलाई 2000 ईस्वी	740
19	किताब अल-वकाला, किताब अल-इकरार, किताब अल-सुलह, किताब अल-मुज़ारबा, किताब अल-अमानत, किताब अल-आरिया, किताब अल-हिबा, किताब अल-इजारा, किताब अल-इकराह, किताब अल-हज्र, किताब अल-ग़स्ब	296	3	ज़ीक़ादा 1421 हिजरी फ़रवरी 2001 ईस्वी	692
20	किताब अल-शुफ़ा, किताब अल-क़िस्मा, किताब अल-मुज़ारआ, किताब अल-सैद व अल-ज़बाह, किताब अल-अज़हिया	334	3	सफ़र अल मुजफ्फर 1422 हिजरी ___ मई 2001 ईस्वी	632
21	किताब अल-हज़र व अल-इबाहत (भाग 1)	291	9		676

क्र.सं.	किताब	पृष्ठ	मुद्दे	हिजरी तारीख ___ ईस्वी तारीख	कुल पृष्ठ
				रबीउल अव्वल 1423 हिजरी ___ मई 2002 ईस्वी	
22	किताब अल-हज़र व अल-इबाहत (भाग 2)	241	6	जमादी उल उखरा 1423 हिजरी ___ अगस्त 2002 ईस्वी	692
23	किताब अल-हज़र व अल-इबाहत (भाग 3)	409	7	ज़िल हिज्जा 1423 हिजरी ___ फ़रवरी 2003 ईस्वी	768
24	किताब अल-हज़र व अल-इबाहत	284	9	ज़िल हिज्जा 1423 हिजरी ___ फ़रवरी 2003 ईस्वी	720
25	किताब अल-मुदायनात, किताब अल-अशरिबा, किताब अल-रहन, बाब अल-क़स्म, किताब अल-वसाया	183	3	रजब अल मुरज्जब 1424 हिजरी ___ सितम्बर 2003 ईस्वी	658
26	किताब अल-फराइज़, किताब अल-शत्ती भाग 1	325	8	मुहर्रम उल हराम 1425 हिजरी ___ मार्च 2004 ईस्वी	616
27	किताब अल-शत्ती भाग 2	35	10	जमादी उल उखरा 1425 हिजरी ___ अगस्त 2004 ईस्वी	684
28	किताब अल-शत्ती भाग 3	22	2	ज़ीक़ादा 1425 हिजरी ___ जनवरी 2005 ईस्वी	684

पुरानी फ़तावा रज़विया की पहली आठ जिल्दों के अध्यायों का क्रम वही है जो न्यायशास्त्र और फ़तवों की प्रसिद्ध और प्रचलित पुस्तकों में उल्लेख किया गया है। रज़ा फ़ाउंडेशन द्वारा प्रकाशित बीस जिल्दों में इसी क्रम को ध्यान में रखा गया है।

पृष्ठ 8 का 750

فتاویٰ رضویہ جلد ۲۹

| ۱۵ | کتاب السیر | ۸۱ | ۱۵ | محرم الحرام ۱۴۲۰ھ ___ اپریل ۱۹۹۹ء | ۷۴۴ | | ۱۶ | کتاب الشرکۃ، کتاب الوقف | ۴۳۲ | ۳ | جمادی الاولیٰ ۱۴۲۰ھ ___ ستمبر ۱۹۹۹ء | ۶۳۲ | | ۱۷ | کتاب البیوع، کتاب الحوالہ، کتاب الکفالہ | ۱۵۳ | ۲ | ذیقعدہ ۱۴۲۰ھ ___ فروری ۲۰۰۰ء | ۷۲۶ | | ۱۸ | کتاب الشہادۃ، کتاب القضاء و الدعاوی | ۱۵۲ | ۲ | ربیع الثانی ۱۴۲۱ھ ___ جولائی ۲۰۰۰ء | ۷۴۰ | | ۱۹ | کتاب الوکالۃ، کتاب الاقرار، کتاب الصلح، کتاب المضاربۃ، کتاب الامانات، کتاب العاریۃ، کتاب الھبۃ، کتاب الاجارۃ، کتاب الاکراہ، کتاب الحجر، کتاب الغصب | ۲۹۶ | ۳ | ذیقعدہ ۱۴۲۱ھ فروری ۲۰۰۱ء | ۶۹۲ | | ۲۰ | کتاب الشفعہ، کتاب القسمہ، کتاب المزارعہ، کتاب الصید والذبائح، کتاب الاضحیہ | ۳۳۴ | ۳ | صفر المظفر ۱۴۲۲ھ ___ مئی ۲۰۰۱ء | ۶۳۲ | | ۲۱ | کتاب الحظر والاباحۃ (حصہ اول) | ۲۹۱ | ۹ | ربیع الاول ۱۴۲۳ھ ___ مئی ۲۰۰۲ء | ۶۷۶ | | ۲۲ | کتاب الحظر والاباحۃ (حصہ دوم) | ۲۴۱ | ۶ | جمادی الاخریٰ ۱۴۲۳ھ ___ اگست ۲۰۰۲ء | ۶۹۲ | | ۲۳ | کتاب الحظر والاباحۃ (حصہ سوم) | ۴۰۹ | ۷ | ذوالحجہ ۱۴۲۳ھ ___ فروری ۲۰۰۳ء | ۷۶۸ | | ۲۴ | کتاب الحظر والاباحۃ | ۲۸۴ | ۹ | ذوالحجہ ۱۴۲۳ھ ___ فروری ۲۰۰۳ء | ۷۲۰ | | ۲۵ | کتاب المداینات، کتاب الاشربہ، کتاب الرھن، باب القسم، کتاب الوصایا | ۱۸۳ | ۳ | رجب المرجب ۱۴۲۴ھ ___ ستمبر ۲۰۰۳ء | ۶۵۸ | | ۲۶ | کتاب الفرائض، کتاب الشتی حصہ اول | ۳۲۵ | ۸ | محرم الحرام ۱۴۲۵ھ ___ مارچ ۲۰۰۴ء | ۶۱۶ | | ۲۷ | کتاب الشتی حصہ دوم | ۳۵ | ۱۰ | جمادی الاخریٰ ۱۴۲۵ھ ___ اگست ۲۰۰۴ء | ۶۸۴ | | ۲۸ | کتاب الشتی حصہ سوم | ۲۲ | ۲ | ذیقعدہ ۱۴۲۵ھ ___ جنوری ۲۰۰۵ء | ۶۸۴ |

فتاویٰ رضویہ قدیم کی پہلی آٹھ جلدوں کے ابواب کی ترتیب وہی ہے جو معروف ومتداول کتب فقہ و فتاویٰ میں مذکور ہے۔ رضا فاؤنڈیشن کی طرف سے شائع ہونے والی بیس جلدوں میں اسی ترتیب کو مدنظر رکھا گیا ہے۔

Page 8 of 750

Fatawa Rizvia Volume 29

...has been kept in mind. However, the arrangement of the remaining four printed volumes of the old Fatawa Rizvia (Volumes 9, 10, 11, and 12) is problematic due to its non-conformity with the chapters of jurisprudence (Fiqh). Therefore, after consultation and inquiry with the Chief Patron of this institution, Muhsin-e-Ahle-Sunnat Mufti-e-Azam Pakistan Hazrat Allama Maulana Mufti Muhammad Abdul Qayyum Hazarvi and other senior scholars and Mashaikh, the members of the institution decided that in the volumes following the twentieth volume, instead of the arrangement of the old volumes of Fatawa Rizvia, the well-known arrangement of Fiqh chapters should be made the basis. Furthermore, in this regard, we have also kept in view the valuable and refined research of Bahr-ul-Uloom Hazrat Maulana Mufti Abdul Mannan Sahab Azmi (may his high blessings continue) and derived full benefit and guidance from it. Generally, in books of Fiqh and Fatawa, the title 'Kitab al-Hazr wal-Ibahat' (Book of Prohibition and Permissibility) is mentioned after 'Kitab al-Adhiya'. Since the twentieth volume published by our institution ended with 'Kitab al-Adhiya', the publication of matters related to Hazr and Ibahat was started from the twenty-first volume. After the completion of 'Kitab al-Hazr wal-Ibahat' (which consists of four volumes: 21, 22, 23, and 24), the twenty-fifth volume, comprising chapters on debts (madayinat), beverages, pledges (rahn), oaths (qasam), and wills (wasaya), has also been brought to light. Now, from among the jurisprudential chapters, only 'Kitab al-Fara'id' (Book of Inheritance) was left, which has been included in the current volume. As for the theological matters and other miscellaneous topics including discussions and fatwas of Ala Hazrat, which are listed in the ninth and twelfth volumes of the old Fatawa Rizvia in an unorganized and unarranged manner, their arrangement and categorization, though not an easy task, has been accomplished by the grace of Allah, the Lord of the worlds, the kind gaze of the Mercy for the worlds (peace and blessings of Allah be upon him, his family, and companions), and the spiritual influence and miracle of Ala Hazrat and Mufti-e-Azam (may Allah have mercy on them). The author has crossed this difficult pass and, like 'Kitab al-Hazr wal-Ibahat', has strung these scattered pearls into a chain of chapters, making them connected and organized. Praise be to Allah.

In this regard, we have particularly kept the following matters in mind: (1) All these theological and miscellaneous matters have been given the central title of 'Kitab-ush-Shatta' (Book of Miscellaneous Topics) and divided into different chapters. (b) In categorization, the question and formal request for fatwa (istifta) have been taken

into account. (c) In cases where questions related to different chapters are mentioned in a single istifta, each issue has been included under its relevant chapter along with the name of the questioner (mustafti). (d) The treatises included in the aforementioned two volumes (old 9 and 12) have been placed under relevant chapters according to their titles. (5) The beginning and end of the treatises have been distinguished.

फ़तावा रिज़विया जिल्द २९

...को ध्यान में रखा गया है। मगर पुराने फ़तावा रिज़विया की शेष चार मुद्रित जिल्दों (नौवीं, दसवीं, ग्यारहवीं, बारहवीं) की व्यवस्था न्यायशास्त्र (फिक्ह) के अध्यायों के साथ असंगति के कारण विचारणीय है। इसलिए, इस संस्था के मुख्य संरक्षक, मोहसिन-ए-अहले सुन्नत मुफ्ती-ए-आज़म पाकिस्तान हज़रत अल्लामा मौलाना मुफ्ती मुहम्मद अब्दुल कय्यूम हज़ारवी और अन्य वरिष्ठ विद्वानों और मशायख़ से परामर्श और पूछताछ के बाद, संस्था के सदस्यों ने निर्णय लिया कि बीसवीं जिल्द के बाद वाली जिल्दों में पुराने फ़तावा रिज़विया की व्यवस्था के बजाय फिक्ह के अध्यायों की प्रसिद्ध व्यवस्था को आधार बनाया जाए। इसके अतिरिक्त, इस संबंध में हमने बहर-उल-उलूम हज़रत मौलाना मुफ्ती अब्दुल मन्नान साहब आज़मी (उनकी उच्च बरकतें बनी रहें) के बहुमूल्य और सूक्ष्म शोध को भी ध्यान में रखा और उससे भरपूर लाभ और मार्गदर्शन प्राप्त किया। आमतौर पर फिक्ह और फ़तावा की किताबों में 'किताब अल-अज़हिया' के बाद 'किताब अल-हज़र वल-इबाहत' (निषेध और अनुमति की किताब) का शीर्षक उल्लेख किया जाता है। चूंकि हमारी संस्था द्वारा प्रकाशित बीसवीं जिल्द 'किताब अल-अज़हिया' पर समाप्त हुई थी, इसलिए इक्कीसवीं जिल्द से हज़र और इबाहत के मसलों का प्रकाशन शुरू किया गया। 'किताब अल-हज़र वल-इबाहत' (जो चार जिल्दों २१, २२, २३, २४ पर आधारित है) के पूरा होने के बाद, ऋण (मदायिनात), पेय पदार्थ, गिरवी (रहन), शपथ (क़सम) और वसीयत (वसाया) के अध्यायों वाली पच्चीसवीं जिल्द भी सामने आ चुकी है। अब फिक्ही अध्यायों में से केवल 'किताब अल-फ़राइज़' (विरासत की किताब) शेष थी, जिसे वर्तमान जिल्द में शामिल कर लिया गया है। जहाँ तक कलामी (ईश्वरमीमांसा) मसलों और अन्य विविध विषयों पर आधारित आला हज़रत की चर्चाओं और फ़तवों का सवाल है, जो पुराने फ़तावा रिज़विया की नौवीं और बारहवीं जिल्द में बिना किसी क्रम और व्यवस्था के दर्ज हैं, उनकी व्यवस्था और वर्गीकरण करना यद्यपि कोई आसान काम नहीं था, लेकिन रब्बुल आलमीन की तौफीक, रहमतुल लिल आलमीन (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की कृपा दृष्टि, आला हज़रत और मुफ्ती-ए-आज़म (रहमतुल्लाह अलैहिमा) के आध्यात्मिक प्रभाव और चमत्कार से लेखक ने यह कठिन घाटी भी पार कर ली और 'किताब अल-हज़र वल-इबाहत' की तरह इन बिखरे हुए मोतियों को अध्यायों की लड़ी में पिरोकर सुव्यवस्थित और संगठित कर दिया है, वल्हम्दुलिल्लाह।

इस संबंध में हमने विशेष रूप से निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखा है: (१) इन सभी कलामी और विविध मसलों को 'किताबुश-शत्ता' का केंद्रीय शीर्षक देकर विभिन्न अध्यायों में विभाजित कर दिया

गया है। (ख) वर्गीकरण में प्रश्न और इस्तफ़्ता (फ़तवे का अनुरोध) का ध्यान रखा गया है। (ग) एक ही इस्तफ़्ता में विभिन्न अध्यायों से संबंधित प्रश्न होने की स्थिति में, प्रत्येक मसले को प्रश्नकर्ता (मुस्तफ़्ती) के नाम के साथ संबंधित अध्यायों के अंतर्गत शामिल कर दिया गया है। (घ) उपरोक्त दोनों जिल्दों (पुरानी ९ और १२) में शामिल लेखों को उनके शीर्षकों के अनुसार संबंधित अध्यायों के अंतर्गत डाल दिया गया है। (५) लेखों के आरंभ और अंत को स्पष्ट रूप से अलग किया गया है।

पृष्ठ ९/७५०

ملحوظ رکھا گیا ہے۔ مگر فتاویٰ رضویہ قدیم کی بقیہ چار مطبوعہ (جلد نہم، دہم، یازدہم، دوازدہم) کی ترتیب ابواب فقہ سے عدم مطابقت کی وجہ سے محل نظر ہے۔ چنانچہ ادارہ ہذا کے سر پرست اعلیٰ محسن اہلسنت مفتی اعظم پاکستان حضرت علامہ مولانا مفتی محمد عبدالقیوم ہزاروی صاحب اور دیگر اکابر علماء و مشائخ سے استشارہ و استفسار کے بعد اراکین ادارہ نے فیصلہ کیا کہ بیسویں جلد کے بعد والی جلدوں میں فتاویٰ رضویہ کی قدیم جلدوں کی ترتیب کے بجائے ابواب فقہ کی معروف ترتیب کو بنیاد بنایا جائے، نیز اس سلسلہ میں بحر العلوم حضرت مولانا مفتی عبدالمنان صاحب اعظمی دامت برکاتہم العالیہ کی گرانقدر تحقیق انیق کو بھی ہم نے پیش نظر رکھا اور اس سے بھر پور استفادہ اور راہنمائی حاصل کی۔ عام طور پر فقہ و فتاویٰ کی کتب میں کتاب الاضحیہ کے بعد کتاب الحظر والاباحۃ کا عنوان ذکر کیا جاتا ہے اور ہمارے ادارہ سے شائع شدہ بیسویں جلد کا اختتام چونکہ کتاب الاضحیہ پر ہوا تھا لہٰذا اکیسویں جلد سے مسائل حظر واباحۃ کی اشاعت کا آغاز کیا گیا۔ کتاب الحظر والاباحۃ (جو چار جلدوں ۲۱، ۲۲، ۲۳، ۲۴ پر مشتمل ہے) کی تکمیل کے بعد ابواب مداینات، اشربہ، رہن، قسم اور وصایا پر مشتمل پچیسویں جلد بھی منصہ شہود پر آچکی ہے۔ اب ابواب فقہیہ میں سے صرف کتاب الفرائض باقی تھی جس کو پیش نظر جلد میں شامل کر دیا گیا ہے۔ باقی رہے مسائل کلامیہ و دیگر متفرق عنوانات پر مشتمل مباحث و فتاوائے اعلیحضرت جو فتاویٰ رضویہ قدیم کی جلد نہم و دوازدہم میں غیر مبوّب و غیر مرتب طور پر مندرج ہیں، ان کی ترتیب و تبویب اگر چہ آسان کام نہ تھا مگر رب العالمین عزوجل کی توفیق، رحمۃ للعالمین صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ واصحابہ اجمعین کی نظر عنایت، اعلیحضرت اور مفتی اعظم رحمۃ اللہ علیہما کے روحانی تصرف و کرامت سے راقم نے یہ گھاٹی بھی عبور کر لی اور

کتاب الحظر والاباحۃ کی طرح ان بکھرے ہوئے موتیوں کو ابواب کی لڑی میں پرو کر مربوط و منضبط کر دیا ہے وللہ الحمد۔

اس سلسلہ میں ہم نے مندرجہ ذیل امور کو بطور خاص ملحوظ رکھا : (۱) ان تمام مسائل کلامیہ و متفرقہ کو کتاب الشتیٰ کا مرکزی عنوان دے کر مختلف ابواب پر تقسیم کر دیا ہے۔ (ب) تبویب میں سوال و استفتاء کا اعتبار کیا گیا ہے۔ (ج) ایک ہی استفتاء میں مختلف ابواب سے متعلق سوالات مذکور ہونے کی صورت میں ہر مسئلہ کو مستفتی کے نام سمیت متعلقہ ابواب کے تحت داخل کر دیا ہے۔ (د) مذکورہ بالا دونوں جلدوں (نہم و دوازدہم قدیم) میں شامل رسائل کو ان کے عنوانات کے مطابق متعلقہ ابواب کے تحت داخل کر دیا ہے۔ (۵) رسائل کی ابتداء و انتہاء کو ممتاز کیا ہے۔

Fatawa Rizwia Volume 29

(v) Some treatises of Ala Hazrat related to the chapters of 'Kitab-ul-Shata' (Book of Miscellaneous Issues), which could not be included in the old Fatawa Rizwia, have also been included in appropriate and suitable places. (vi) Since the current arrangement after the new categorization (Tabweeb) has become completely different from the previous arrangement, a complete list of issues had to be re-organized according to the current chapters from scratch. (vii) Complete and detailed tables of contents for all the treatises included in 'Kitab-ul-Shata' have been prepared.

Twenty-Ninth Volume This volume consists of answers to 215 questions and a total of 572 pages. The Arabic and Persian passages in this volume have been translated by the author. However, some passages of the treatise "Khalis-ul-I'tiqad" were translated by Hazrat Maulana Tahseen Raza Khan Sahib, while most passages of "Al-Tahjir bi-Bab al-Tadbir" and "Thulj al-Sadr li-Iman al-Qadr" are the fruit of the pen of Hazrat Allama Maulana Muhammad Ahmad Misbahi (may his high blessings endure). The translation of the treatise "Qawari' al-Qahhar" was written by the Grand Mufti of Pakistan, Hazrat Allama Sheikh-ul-Hadith Maulana Mufti Muhammad Abdul Qayyum Qadri Hazarwi (mercy be upon him), and the decoration, arrangement, explanation, and interpretation of the treatise "I'tiqad-ul-Ahbab" was performed by Khalil-ul-Ulama Hazrat Allama Maulana Mufti Muhammad Khalil-ul-Qadri al-Barkati (mercy be upon him).

The volume under review (Kitab-ul-Shata Part IV) is primarily based on theological (Kalam) and dogmatic issues which were mentioned separately in the ninth and twelfth volumes of the old Fatawa Rizwia; we have gathered them together. In addition, this volume includes answers to questions about prosody and rhyme, science and education, language and expression, zoology, science of letters and mathematics, preaching and guidance, human rights, anatomy, dreams, lexicography, and leasing (Ijarah). In addition to the above-mentioned topics, issues related to numerous other topics have also been discussed incidentally. The following eleven treatises, containing extremely profound and valuable research and investigation, also grace this volume.

(1) Qawari' al-Qahhar 'ala al-Mujassamat al-Fujjar, known as Zarb-e-Qahhari (1318 AH) A crushing response to the objections of the Aryas on the ambiguous verses (Ayat-e-Mutashabihat).

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

(v) 'किताब-उश-शता' (विविध विषयों की पुस्तक) के अध्यायों से संबंधित आला हज़रत के कुछ शोध पत्र जो पुराने फ़तावा रज़विया में शामिल नहीं हो सके थे, उन्हें भी उचित और उपयुक्त स्थानों पर शामिल कर दिया गया है। (vi) नए वर्गीकरण (तबवीब) के बाद वर्तमान व्यवस्था चूंकि पिछली व्यवस्था से बिल्कुल अलग हो गई है, इसलिए मुद्दों की पूरी सूची को वर्तमान अध्यायों के अनुसार नए सिरे से व्यवस्थित करना पड़ा। (vii) 'किताब-उश-शता' में शामिल सभी शोध पत्रों की सामग्री की पूरी और विस्तृत सूचियाँ तैयार कर ली गई हैं।

उन्तीसवीं जिल्द यह जिल्द 215 सवालों के जवाबों और कुल मिलाकर 572 पृष्ठों पर आधारित है। इस जिल्द के अरबी और फ़ारसी उद्धरणों का अनुवाद लेखक (राक़िम-उल-हुरूफ) ने किया है। हालांकि, शोध पत्र "ख़ालिस-उल-एतिक़ाद" के कुछ उद्धरणों का अनुवाद हज़रत मौलाना तहसीन रज़ा ख़ान साहब ने किया है, जबकि "अल-तहजीर बि-बाब अल-तदबीर" और "थुल्ज अल-सद्र लि-ईमान अल-क़द्र" के अधिकांश उद्धरणों का अनुवाद हज़रत अल्लामा मौलाना मुहम्मद अहमद मिस्बाही (दामत बरकातुहुमुल आलया) की लेखनी का फल है। शोध पत्र "क़वारि-उल-क़हहार" का अनुवाद पाकिस्तान के मुफ़्ती-ए-आज़म हज़रत अल्लामा शैख़-उल-हदीस मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अब्दुल क़य्यूम क़ादरी हज़ारवी (रहमतुल्लाह अलैह) द्वारा लिखा गया है और शोध पत्र "एतिक़ाद-उल-अहबाब" की सजावट, व्यवस्था, स्पष्टीकरण और व्याख्या ख़लील-उल-उलेमा हज़रत अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद ख़लील-उल-क़ादरी अल-बरकाती (रहमतुल्लाह अलैह) ने की है।

वर्तमान जिल्द (किताब-उश-शता हिस्सा चहारुम) मुख्य रूप से कलाम (धर्मशास्त्र) और एतिकादी (आस्था) संबंधी मुद्दों पर आधारित है जो पुराने फ़तावा रज़विया की नौवीं और बारहवीं जिल्द में अलग-अलग वर्णित थे; हमने उन्हें एक साथ कर दिया है। इसके अलावा, इस जिल्द में छंदशास्त्र और तुकबंदी, विज्ञान और शिक्षा, भाषा और अभिव्यक्ति, प्राणीशास्त्र, अक्षरों के विज्ञान और गणित, उपदेश और प्रचार, मानवाधिकार, शारीरिक रचना (एनाटॉमी), स्वप्न, शब्दकोष और लीज (इजारा) के बारे में सवालों के जवाब भी शामिल हैं। उपरोक्त विषयों के अलावा, कई अन्य विषयों से संबंधित मुद्दों पर भी प्रसंगवश चर्चा की गई है। अत्यंत गंभीर और बहुमूल्य शोध और जांच पर आधारित निम्नलिखित ग्यारह शोध पत्र भी इस जिल्द की शोभा हैं।

(1) क़वारि-उल-क़हहार अलल मुजस्समातुल फ़ुज्जार, जिसे ज़र्ब-ए-क़हहारी (1318 हिजरी) के नाम से जाना जाता है। संदिग्ध आयतों (आयात-ए-मुतशाबिहात) पर आर्यों की आपत्तियों का मुंहतोड़ जवाब।

पृष्ठ 10/750

(و) کتاب الشتیٰ کے ابواب سے متعلق اعلیٰحضرت کے بعض رسائل جو فتاویٰ رضویہ قدیم میں شامل نہ ہوسکے تھے ان کو بھی موزوں و مناسب جگہ پر شامل کردیا ہے۔ (ز) تبویبِ جدید کے بعد موجودہ ترتیب چونکہ سابق ترتیب سے بالکل مختلف ہوگئی ہے لہٰذا مسائل کی مکمل فہرست موجودہ ابواب کے مطابق نئے سرے سے مرتب کرنا پڑی۔ (ح) کتاب الشتیٰ میں داخل تمام رسائل کے مندرجات کی مکمل و مفصل فہرستیں مرتب کی گئی ہیں۔

انتیسویں جلد یہ جلد ۲۱۵ سوالوں کے جوابات اور مجموعی طور پر ۵۷۲ صفحات پر مشتمل ہے۔ اس جلد کی عربی و فارسی عبارات کا ترجمہ راقم الحروف نے کیا ہے۔ البتہ رسالہ "خالص الاعتقاد" کی بعض عبارات کا ترجمہ حضرت مولانا تحسین رضا خان صاحب نے کیا ہے جب کہ التححیر بباب التدبیر اور ثلج الصدر لایمان القدر کی اکثر عبارات کا ترجمہ حضرت علامہ مولانا محمد احمد مصباحی دامت برکاتہم العالیہ کے رشحاتِ قلم کا ثمر ہے۔ رسالہ قوارع القہار کا ترجمہ مفتی اعظم پاکستان حضرت علامہ شیخ الحدیث مولانا مفتی محمد عبد القیوم قادری ہزاروی علیہ الرحمہ کا تحریر کردہ ہے اور رسالہ اعتقاد الاحباب کی تزئین و ترتیب اور توضیح و تشریح خلیل العلماء حضرت علامہ مولانا مفتی محمد خلیل القادری البرکاتی علیہ الرحمہ نے فرمائی ہے۔

پیشِ نظر جلد (کتاب الشتیٰ حصہ چہارم) بنیادی طور پر مسائل کلامیہ و اعتقادیہ پر مشتمل ہے جو فتاویٰ رضویہ قدیم جلد نہم و دوازدہم میں متفرق طور پر مذکور ہیں ہم نے ان کو یکجا کردیا ہے علاوہ ازیں اس جلد میں عروض و قوافی، علم و تعلیم زبان و بیان علم الحیوان، علم حروف و ریاضی، وعظ و تبلیغ، حقوق العباد، تشریحِ ابدان، خواب، لغت اور اجارہ کے بارے میں سوالوں کے جوابات بھی شامل ہیں۔ مذکورہ بالا عنوانات کے علاوہ متعدد عنوانات سے متعلق مسائل ضمناً زیر

بحث آئے ہیں، انتہائی وقیع اور گرانقدر تحقیقات و تدقیقات پر مشتمل مندرجہ ذیل گیارہ رسائل بھی اس جلد کی زینت ہیں۔

(۱) قوارع القہار علی المجسمۃ الفجار المعروف بہ ضربِ قہاری (۱۳۱۸ھ) آیاتِ متشابہات پر آریوں کے اعتراضات کا منہ توڑ جواب

Fatawa Razawiya Volume 29

(2) Izāḥat al-'Ayb bi-Sayf al-Ghayb A reasoned treatise on the subject of Knowledge of the Unseen. (3) "Khāliṣ al-I'tiqād" with introduction Rimāḥ al-Qahhār 'alā Kufr al-Kuffār (1328 AH) A reasoned treatise on the issue of Knowledge of the Unseen. (4) Inbā' al-Muṣṭafā bi-Ḥāl-i-Sirrin wa-Akhfā (1318 AH) Proof of the Holy Prophet ﷺ being the knower of everything that has happened and will happen. (5) Anwār al-Intibāh fī Ḥall-i-Nidā' Yā Rasūl Allāh (1304 AH) Strong arguments for the permissibility of saying "Ya Rasul Allah". (6) Sharḥ al-Maṭālib fī Mabḥath-i-Abī Ṭālib (1316 AH) A detailed discussion regarding the faith (Iman) of Abu Talib. (7) I'tiqād al-Aḥbāb fīl Jamīl wal Muṣṭafā wal Āl wal Aṣḥāb (1298 AH) Description of ten true beliefs of the Ahl-us-Sunnah wa-al-Jama'ah. (8) Al-Tahbīr bi-Bāb at-Tadbīr (1325 AH) A clear explanation of the issue of destiny and predestination. (10) Ismā' al-Arba'īn fī Shafā'at-i-Sayyid al-Maḥbūbīn (1305 AH) (11) Umūr-i-'Ashrīn dar 'Aqā'id-i-Sanīn Description of twenty (20) points that distinguish between a Sunni and a non-Sunni.

Important Note Although Jamia Nizamia Razvia had to face an unbearable shock due to the sorrowful passing of Mufti-e-Azam (may mercy be upon him), yet it is the grace of that miraculous existence that his noble son, Hazrat Maulana Allama Mufti Muhammad Abdul Mustafa Hazarvi (may his shadow be extended), who is an authentic scholar of religious and contemporary sciences...

Page 11 of 750

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

(2) इज़ाहत-उल-'ऐब बि-सैफ़-इल-ग़ैब इल्म-ए-ग़ैब के विषय पर सप्रमाण शोध-पत्र। (3) "खालिस-उल-इ'तिक़ाद" मअ तमहीद "रिमाह अल-कहार अला कुफ्र अल-कुफ्फ़ार" (1328 हिजरी) इल्म-ए-ग़ैब के मसले पर सप्रमाण शोध-पत्र। (4) इन्बा-उल-मुस्तफ़ा बि-हाल-ए-सिर्रिन व अख़फ़ा (1318 हिजरी) हुज़ूर अनवर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के'आलिम मा कान व मा यकून' (जो हो चुका और जो होगा, उसके ज्ञाता) होने का प्रमाण। (5) अनवार-उल-इन्तिबाह फ़ी हल-ए-निदा 'या रसूल अल्लाह' (1304 हिजरी) 'या रसूल अल्लाह' कहने के औचित्य पर सशक्त तर्क। (6) शरह-उल-मतालिब फ़ी मबहास-ए-अबी तालिब (1316 हिजरी) अबू तालिब के ईमान के बारे में विस्तृत चर्चा। (7) इ'तिक़ाद-उल-अहबाब फ़िल जमील वल मुस्तफ़ा वल आल वल असहाब (1298 हिजरी) अहले सुन्नत व जमाअत के दस सही अक़ीदों का वर्णन। (8) अत-तहबीर बि-बाब-अत-तदबीर (1325 हिजरी) कज़ा और क़द्र (नियति और पूर्व-निर्धारण) के मसले का स्पष्ट वर्णन। (10) इस्मा-उल-अरबईन फ़ी शफ़ाअत-ए-सय्यिद-इल-महबूबीन (1305 हिजरी) (11) उमूर-ए-'अशरीन दर अक़ाइद-ए-सन्नीन सुन्नी और गैर-सुन्नी में अंतर करने वाली बीस (20) बातों का वर्णन।

ज़रूरी बात यद्यपि मुफ़्ती-ए-आज़म अलैहिर्रहमा के दुखद निधन से जामिया निजामिया रज़विया को एक असहनीय सदमे का सामना करना पड़ा, लेकिन यह उस चमत्कारिक व्यक्तित्व का ही कृपा-प्रभाव है कि उनके सुयोग्य पुत्र हज़रत मौलाना अल्लामा मुफ़्ती मुहम्मद अब्दुल मुस्तफा हज़ारी मदज़िल्लहु, जो धार्मिक और समसामयिक विषयों के प्रामाणिक विद्वान...

पृष्ठ 11 / 750

(۲) ازاحۃ العیب بسیف الغیب علم غیب کے موضوع پر مدلل رسالہ (۳) "خالص الاعتقاد" مع تمہید رماح القہار علی کفر الکفار (۱۳۲۸ھ) مسئلہ علم غیب کا مدلل رسالہ (۴) انباء المصطفیٰ بحال سر واخفی (۱۳۱۸ھ) حضور انور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے عالم ماکان ومایکون ہونے کا ثبوت (۵) انوار الانتباہ فی حل نداء یا رسول اللہ (۱۳۰۴ھ) یا رسول اللہ کہنے کے جواز پر زور دار دلائل (۶) شرح المطالب فی مبحث ابی طالب (۱۳۱۶ھ) ایمان ابو طالب کے بارے میں مفصل بحث (۷) اعتقاد الاحباب فی الجمیل والمصطفٰی والال والاصحاب (۱۲۹۸ھ) اہل سنت و جماعت کے دس عقائد حقہ کا بیان (۸) التحبیر بباب التدبیر (۱۳۲۵ھ) مسئلہ قضاء و قدر کا روشن بیان (۱۰) اسماح الاربعین فی شفاعۃ سید المحبوبین (۱۳۰۵ھ) (۱۱) امور عشرین در عقائد سنین سُنی اور غیر سُنی میں امتیاز کرنے والے بیس ۲۰ امور کا بیان۔

ضروری بات گو مفتی اعظم علیہ الرحمۃ کے وصال پر ملال سے جامعہ نظامیہ رضویہ کو ناقابل برداشت صدمہ سے دوچار ہونا پڑا، مگر یہ اس سراپا کرامت وجود باجود کا فیضان ہے کہ ان کے فرزند ارجمند حضرت مولانا علامہ مفتی محمد عبدالصطفیٰ ہزاروی مدظلہ جو علوم دینیہ و عصریہ کے مستند فاضل

Fatawa Rizvia Volume 29

And [he] is the heir and custodian of the intellectual and experiential breadth and insight of the Grand Mufti. Demonstrating extreme patience and steadfastness, he has dedicated himself day and night to the promotion and development of all departments. This is why, due to a significant increase in the number of students at the Jamia, he has appointed several experienced teachers. Furthermore, in the publication and printing of the new Fatawa Rizvia, he continues to follow the beautiful footsteps of the Grand Mufti (may mercy be upon him). This is the reason that, as usual, the publication of two volumes annually is taking place regularly. So, a request is made to you all to continue blessing with your prayers so that the physical and spiritual successors of the Grand Mufti (may mercy be upon him) may play their part in bringing his mission to fruition with excellence and progress. That is all.

Rajab-ul-Murajab 1426 AH Hafiz Muhammad Abdul Sattar Saeedi August 2005 Nazim-e-Ta'leemat Jamia Nizamia Razavia Lahore & Sheikhupura (Pakistan)

और [वह] हज़रत मुफ़्ती-ए-आज़म की वैज्ञानिक और अनुभवी व्यापकता और अंतर्दृष्टि के उत्तराधिकारी और संरक्षक हैं। अत्यंत धैर्य और दृढ़ता का प्रदर्शन करते हुए, उन्होंने सभी विभागों के प्रचार और विकास के लिए दिन-रात एक कर दिया है। यही कारण है कि जामिया में छात्रों की संख्या में काफी वृद्धि होने के कारण, उन्होंने कई अनुभवी शिक्षकों की नियुक्ति की है। साथ ही, नए फ़तावा रज़विया के प्रकाशन और मुद्रण में भी वह लगातार मुफ़्ती-ए-आज़म (रहमतुल्लाह अलैह) के सुंदर पदचिह्नों पर चल रहे हैं। यही कारण है कि सामान्य रूप से प्रति वर्ष दो जिल्दों का प्रकाशन नियमित रूप से हो रहा है। बस आप सभी से अनुरोध है कि दुआओं से नवाज़ते रहें ताकि हज़रत मुफ़्ती-ए-आज़म (रहमतुल्लाह अलैह) के मिशन को उनके शारीरिक और आध्यात्मिक उत्तराधिकारी कुशलता और उन्नति के साथ सफल बनाने में अपनी भूमिका निभाते रहें। फ़क़त।

रजब-उल-मुरज्जब 1426 हिजरी हाफ़िज़ मुहम्मद अब्दुल सत्तार सईदी अगस्त 2005 नाज़िम-ए-ता'लीमात जामिया निज़ामिया रज़विया लाहौर और शेखूपुरा (पाकिस्तान)

اور حضرت مفتی اعظم کی علمی و تجرباتی وسعت وفراست کے وارث وامین ہیں، نہایت صبر و استقامت کا مظاہرہ فرماتے ہوئے تمام شعبہ جات کی ترویج وترقی کے لئے شب وروز ایک کئے ہوئے ہیں۔ یہی وجہ ہے کہ موصوف نے جامعہ کے طلباء کی تعداد میں خاصا اضافہ ہونے کے باعث متعدد تجربہ کار مدرسین مقرر کئے ہیں اور فتاویٰ رضویہ جدید کی اشاعت وطباعت میں بھی بدستور مفتی اعظم علیہ الرحمہ کے نقوشِ جمیلہ پر گامزن ہیں۔ یہی وجہ ہے کہ حسب معمول سالانہ دو جلدوں کی اشاعت باقاعدگی سے ہورہی ہے۔ بس آپ حضرات سے درخواست ہے کہ دعاؤں سے نوازتے رہئے تاکہ حضرت مفتی اعظم علیہ الرحمہ کے مشن کو ان کے جسمانی وروحانی نائبیں بحسن وخوبی ترقی سے ہمکنار کرنے میں اپنا کردار سرانجام دیتے رہیں۔ فقط

رجب المرجب ۱۴۲۶ھ حافظ محمد عبدالستار سعیدی اگست ۲۰۰۵ ناظم تعلیمات جامعہ نظامیہ رضویہ لاہور و شیخوپورہ (پاکستان)

Fatawa Rizwia, Volume 29 Detailed Table of Contents

Section: Prosody and Rhymes

Page 47: A scholarly, investigative, and technical commentary by Ala Hazrat (upon whom be mercy) on several objections raised by a person skilled in the art of poetry regarding the book named 'Kanz al-Akhira', and the author's responses to them. Page 47: The first objection and its response. Page 48: The second objection and its response. Page 48: The proofs from the masters regarding the variation of rhyme movement are widely transmitted (at the level of Tawatur). Page 48: Some verses for support. Page 49: The third objection and its response. Page 49: In the rhymes of the plural, the singular will not be taken into account. Page 49: It is certainly commendable, but not mandatory. Page 49: A few supporting verses. Page 50: The fourth objection and its response. Page 50: The fifth objection and its response. Page 50: What is 'Tafrees' called? Page 51: The sixth, seventh, eighth, ninth, and tenth objections and their responses. Page 52: Response by Ala Hazrat (may Allah Almighty have mercy on him). Page 52: Commentary on the first objection. Page 52: Commentary on the second objection. Page 53: Commentary on the third objection. Page 53: Commentary on the fourth objection. Page 54: Commentary on the fifth objection. Page 54: Commentary on the sixth objection.

फतावा रज़विया, जिल्द 29 विस्तृत विषय सूची

अनुभाग: छन्दशास्त्र और तुकबंदी (अरुज़ और क़वाफ़ी)

पृष्ठ 47: 'कन्ज़ अल-अखिरा' नामक पुस्तक पर कविता की कला में कुशल एक व्यक्ति द्वारा की गई कुछ आपत्तियों और लेखक द्वारा उनके उत्तरों पर आला हज़रत (रहमतुल्लाह अलैह) की एक विद्वतापूर्ण, शोधपूर्ण और तकनीकी टिप्पणी। पृष्ठ 47: पहली आपत्ति और उसका उत्तर। पृष्ठ 48: दूसरी आपत्ति और उसका उत्तर। पृष्ठ 48: तुकबंदी के स्वर के अंतर पर उस्तादों (महारथियों) के प्रमाण व्यापक रूप से प्रसारित (तवातुर) होने की सीमा पर हैं। पृष्ठ 48: समर्थन के लिए कुछ शेर। पृष्ठ 49: तीसरी आपत्ति और उसका उत्तर। पृष्ठ 49: बहुवचन की तुकबंदी में एकवचन का ध्यान नहीं रखा जाएगा। पृष्ठ 49: यह प्रशंसनीय अवश्य है, अनिवार्य नहीं। पृष्ठ 49: कुछ सहायक शेर। पृष्ठ 50: चौथी आपत्ति और उसका उत्तर। पृष्ठ 50: पांचवीं आपत्ति और उसका उत्तर। पृष्ठ 50: 'तफ़रीस' किसे कहते हैं? पृष्ठ 51: छठी, सातवीं, आठवीं, नौवीं और दसवीं आपत्ति और उनके उत्तर। पृष्ठ 52: आला हज़रत (रहमतुल्लाह अलैह) का उत्तर। पृष्ठ 52: पहली आपत्ति पर टिप्पणी। पृष्ठ 52: दूसरी आपत्ति पर टिप्पणी। पृष्ठ 53: तीसरी आपत्ति पर टिप्पणी। पृष्ठ 53: चौथी आपत्ति पर टिप्पणी। पृष्ठ 54: पांचवीं आपत्ति पर टिप्पणी। पृष्ठ 54: छठी आपत्ति पर टिप्पणी।

فتاوی رضویہ جلد ۲۹ فہرست مضامین مفصل

عروض و قوافی

۴۷: کنز الآخرۃ نامی کتاب پر فن شاعری میں مہارت رکھنے والے ایک شخص کے چند اعتراضات اور مصنف کنز الآخرۃ کی طرف سے ان کے جوابات پر اعلیحضرت علیہ الرحمہ کا علمی تحقیقی اور فنی تبصرہ ۴۷: پہلا اعتراض اور اس کا جواب ۴۸: دوسرا اعتراض اور اس کا جواب ۴۸: اختلافِ حرکتِ قافیہ میں اساتذہ کی سندیں حدِ تواتر پر ہیں ۴۸: تائید کے لیے کچھ اشعار ۴۹: تیسرا اعتراض اور اس کا جواب ۴۹: جمع کے قوافی میں مفرد کا لحاظ نہ رکھا جائے گا ۴۹: مستحسن ضرور ہے لازم نہیں ۴۹: چند اشعارِ مؤیِّدہ ۵۰: چوتھا اعتراض اور اس کا جواب ۵۰: پانچواں اعتراض اور اس کا جواب ۵۰: تفریں کسے کہتے ہیں ۵۱: چھٹا، ساتواں، آٹھواں، نواں اور دسواں اعتراض اور ان کے جوابات ۵۲: اعلیٰ حضرت رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ کا جواب ۵۲: اعتراض اول پر تبصرہ ۵۲: اعتراض دوم پر تبصرہ ۵۳: اعتراض سوم پر تبصرہ ۵۳: اعتراض چہارم پر تبصرہ ۵۴: اعتراض پنجم پر تبصرہ ۵۴: اعتراض ششم پر تبصرہ

Volume 29 Fatawa Rizvia

[Table of Contents]

Page	Subject
61	Scholars should not certify a matter written by an ignorant person.
61	All matters attributed to the Imam of the school (Sahib-e-Mazhab) with the words "He said" (Qala) or "According to him" (Indahu) are from the 'Zahir al-Riwayah' books, and continuous chains of transmission (asanid) for them exist. There is no need for a separate chain for every matter.
62	The chain of transmission for the author of 'Durr al-Mukhtar'.
62	The chain of transmission for the author of 'Al-Bahr'.
64	Answer to a question regarding a citation of a Hadith mentioned in 'Mirqat Sharh al-Mishkat'.
	Language & Expression
65	The difference between adultery without consent and with consent.
66	The meaning of the text of 'Durr al-Mukhtar' and 'Hidaya' regarding endowments (waqf).
55	Commentary on the seventh objection.
55	Commentary on the eighth objection.
55	Commentary on the ninth objection.
56	Commentary on the tenth objection.
57	The difference between "to do" (karna), "to get done" (kar lena), and "to do for someone" (kar dena), with examples.
	Knowledge & Education
59	A request for a fatwa (istifta) consisting of five questions and its detailed answer.
60	Allah Almighty and His Messenger (peace and blessings of Allah be upon him) have informed us about the truth, falsehood, benefit, and harm regarding our every need; religious matters should be expressed in a modest manner.

Page	Subject
67	The meaning of this verse: "Implicit in my construction is a form of ruin; the lightning that strikes the harvest is the hot blood of the peasant."
67	Answer to a question regarding the meaning of three verses.
68	The numerical value (abjad) of the word 'Muhammad' is 92 and for 'Khuda' it is 605.
68	The journey of the noble Messengers is from Allah to the creation, and the journey of the Ummah is from the Messengers to Allah.
68	Access to Allah without the mediation of the Messengers is impossible.
60	What precautions are necessary while translating?
60	A single statement, through a change in the style of expression, can turn from respect into insult.
60	The meaning of 'correct' (sahih) versus 'hypothetical' (farzi).
60	There are additions and interpolations in 'Ma la Budda' and 'Miftah al-Jannah'.
61	'Bahishti Zewar' is a collection of errors, misguidance, vanity, and ignorance.

खंड २९ फ़तावा रिज़विया

[विषय-सूची]

पृष्ठ	विषय
६१	अज्ञानी द्वारा लिखित मसले की विद्वानों को पुष्टि नहीं करनी चाहिए।
६१	वे सभी मसले जिन्हें संप्रदाय के इमाम (साहिब-ए-मज़हब) की ओर 'क़ाल' (उन्होंने कहा) या 'इन्दहू' (उनके अनुसार) शब्दों के साथ संदर्भित किया जाता है, 'ज़ाहिर अल-रिवाया' की किताबों के मसले हैं, और उन तक निरंतर प्रमाण (असानिद) मौजूद हैं। हर मसले के लिए अलग प्रमाण की आवश्यकता नहीं है।
६२	'दुर्र अल-मुख्तार' के लेखक की सनद (प्रमाण)।
६२	'अल-बहर' के लेखक की सनद (प्रमाण)।
६४	'मिर्क़ात शरह अल-मिश्क़ात' में उल्लेखित एक हदीस के संदर्भ में प्रश्न का उत्तर।
	भाषा और अभिव्यक्ति
६५	बिना सहमति के व्यभिचार और सहमति से व्यभिचार में अंतर है।
६६	वक्फ़ (बंदोबस्ती) के बारे में 'दुर्र अल-मुख्तार' और 'हिदाया' की इबारत का अर्थ।
६७	

पृष्ठ	विषय
५५	सातवें आक्षेप पर टिप्पणी।
५५	आठवें आक्षेप पर टिप्पणी।
५५	नौवें आक्षेप पर टिप्पणी।
५६	दसवें आक्षेप पर टिप्पणी।
५७	'करना', 'कर लेना' और 'कर देना' में अंतर और उनके उदाहरण।
	ज्ञान और शिक्षा
५९	पाँच प्रश्नों वाला एक इस्तेफ़्ता और उसका विस्तृत उत्तर।
६०	अल्लाह तआला और उसके रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने हमारी हर ज़रूरत के बारे में सत्य, असत्य, लाभ और हानि से हमें अवगत करा दिया है; मसलों को हया (विनम्रता) के अंदाज़ में बयान करना चाहिए।
६०	

पृष्ठ विषय

इस शेर का अर्थ: "मेरी तामीर में मुज़मिर है इक सूरत ख़राबी की, हयूली बर्क़-ए-ख़िरमन का है ख़ून-ए-गर्म दहक़ाँ का।"

६७ तीन शेरों के अर्थ के बारे में एक प्रश्न का उत्तर।

६८ शब्द 'मोहम्मद' के अंक ९२ और 'खुदा' के अंक ६०५ हैं।

६८ रसूलों की यात्रा अल्लाह से सृष्टि की ओर है और उम्मत की यात्रा रसूलों से अल्लाह की ओर है।

६८ रसूलों की मध्यस्थता के बिना अल्लाह तक पहुँच असंभव है।

पृष्ठ ७५० का १५

पृष्ठ विषय

अनुवाद करते समय क्या सावधानियां ज़रूरी हैं?

६० एक ही बात अभिव्यक्ति की शैली में अंतर से सम्मान से अपमान में बदल जाती है।

६० 'सही' बनाम 'फ़र्ज़ी' (काल्पनिक) का अर्थ।

६० 'मा ला बुद्दा' और 'मिफ़्ताह अल-जन्नत' में परिवर्धन और प्रक्षेप हैं।

६१ 'बहिश्ती ज़ेवर' त्रुटियों, गुमराहियों, व्यर्थता और अज्ञानता का संग्रह है।

جلد ۲۹ فتاوی رضویہ

[فہرست مضامین]

صفحہ	مضمون	صفحہ	مضمون
۶۱	جاہل کے لکھے ہوئے مسئلہ کی علماء کو تصدیق نہیں کرنی چاہیے	۵۵	اعتراض ہفتم پر تبصرہ
۶۱	تمام مسائل کہ صاحب مذہب رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی طرف بلفظ قال وعند نسبت کیے جاتے ہیں، کتب ظاہر الروایہ کے مسئلے ہیں اور ان تک اسانید متصلہ موجود۔ ہر مسئلہ کے لیے جدا سند کی حاجت نہیں	۵۵	اعتراض ہشتم پر تبصرہ
۶۲	صاحب در مختار کی سند	۵۵	اعتراض نہم پر تبصرہ
۶۲	صاحب بحر کی سند	۵۶	اعتراض دہم پر تبصرہ
۶۴	مرقاۃ شرح مشکوۃ میں مذکور ایک حدیث کے حوالہ کے بارے میں سوال کا جواب	۵۷	کرنا، کر لینا اور کر دینا میں فرق اور اس کی مثالیں
	زبان و بیان		**علم و تعلیم**
۶۵	زنائے خلاف رضامندی و بلارضامندی میں فرق ہے	۵۹	پانچ سوالات پر مشتمل ایک استفتاء اور اس کا مفصل جواب
۶۶		۶۰	

صفحہ	مضمون
۶۰	وقف کے بارے میں در مختار اور ہدایہ کی عبارت کا مطلب
۶۰	اس شعر کا مطلب۔ میری تعمیر میں مضمر ہے اک صورت خرابی کی ہیولی برق خرمن کا ہے خونِ گرم دہقاں کا
۶۰	تین اشعار کے مطلب کے بارے میں ایک سوال کا جواب
۶۰	لفظ محمد کے عدد ۹۲ اور خدا کے عدد ۶۰۵ ہیں
۶۰	رسل کرام کی سیر من اللہ الی الخلق ہے اور امت کی سیر من الرسل الی اللہ ہے
۶۱	بے وساطت رسل اللہ تک رسائی محال ہے

صفحہ	مضمون
	اللہ تعالیٰ اور اس کے رسول صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے ہماری ہر حاجت کے متعلق حق و باطل اور نفع و ضرر پر ہمیں مطلع فرمادیا، مسائل کو حیاء کے پیرائے میں بیان کرنا چاہیے
	ترجمہ کرتے وقت کیا احتیاطیں ضروری ہیں
	ایک ہی بات اختلافِ طرزِ بیان سے تعظیم سے توہین تک بدل جاتی ہے
	صحیح مقابل فرضی کا مطلب
	مالابد اور مفتاح الجنتہ میں زیادات و الحاقات ہیں
	بہشتی زیور اغلاط وضلالت و بطالت و جہالت کا مجموعہ ہے

Fatawa Razawiyya Volume 29

Page	Topic
68	Belief in all messengers is part of faith
68	'Baras' (year) is called 'Haul' in Arabic, derived from 'Tahweel'
68	'Baras' in the sense of rain
68	Every messenger's prophethood is a rain of mercy
	Preaching and Propagation
70	Conditions for a preacher: first being a Muslim, second being a Sunni, third being a scholar, and fourth not being a transgressor
	Zoology
73	Dogs and all animals, grazing and flying, whose offspring are they?
	Anatomy
75	Can a person have two hearts?
77	The human soul is not divisible
78	Science of letters and mathematics
79	Answer to a question by Nawab Wazir Ahmed Khan Qadri regarding the dissolution of 'Majdoor'
80	A strong rebuttal of a Rafidi's false reasoning based on the numerical value of a Quranic verse
80	The religion created by Rawafidh is based on groundless and airy superstitions
80	The numerical value of every verse of punishment can be matched with names of the righteous, and every verse of reward with names of disbelievers, as there is vast latitude in names
80	The names of the three sons of Commander of the Faithful, Hazrat Ali Murtaza (may Allah be pleased with him), were Abu Bakr, Umar, and Uthman
81	The names of Hazrat Imam Hasan, Husayn, and Muhsin are rhythmic and synonymous with the names of Hazrat Dawud (peace be upon him)'s sons Shabar, Shabbir, and Mubashshir
81	Seven examples of correspondence between the numerical values of verses of punishment and names of the wicked, and verses of praise and names of the righteous
	Rights of People

Page	Topic
76	What is the heart?
76	An indefinite noun under negation indicates generality and encompassment
83	If someone commits an immoral act with a woman and then seeks forgiveness from her husband, will it be forgiven by his forgiveness or is repentance necessary? And if he only repents, will this sin be forgiven?

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

पृष्ठ	विषय	पृष्ठ	विषय
68	सभी रसूलों की तस्दीक ईमान का हिस्सा है	77	मानवीय आत्मा विभाज्य नहीं है
68	'बरस' (वर्ष) को अरबी में 'हौल' कहते हैं क्योंकि यह 'तहवील' से निकला है	78	अक्षरों का विज्ञान और गणित
68	'बरस' बारिश के अर्थ में	79	'मजदूर' के विश्लेषण के संबंध में नवाब वज़ीर अहमद खान कादरी के एक सवाल का जवाब
68	हर रसूल की रिसालत रहमत की बारिश है	80	एक आयत-ए-करीमा की संख्या से एक राफ़ज़ी के गलत तर्क का जोरदार खंडन
	वअज़ और तब्लीग़	80	राफ़ज़ियों द्वारा बनाया गया धर्म निराधार और हवा में उड़ने वाले वहमों पर आधारित है
70	उपदेशक के लिए पहली शर्त मुसलमान होना, दूसरी सुन्नी होना, तीसरी विद्वान होना और चौथी फासिक न होना है	80	सज़ा की हर आयत की संख्या को नेक लोगों के नामों के साथ मिलाया जा सकता है और सवाब की हर आयत को काफ़िरों के नामों के साथ, क्योंकि नामों में बहुत विस्तार है
	प्राणि विज्ञान (इल्म-उल-हैवान)	80	अमीर-उल-मोमिनीन हज़रत अली मुर्तज़ा (रज़ियल्लाहु अन्हु) के तीन साहिबज़ादों के नाम अबू बक्र, उमर और उस्मान हैं
73	कुत्ता और सभी जानवर, चरने वाले और उड़ने वाले, किसकी संतान हैं?	81	हज़रत इमाम हसन, हुसैन और मोहसिन के नाम हज़रत दाऊद (अलैहिस्सलाम) के बेटों शबर, शब्बीर और मुबशशिर के हम-वज़न और हम-मायनी हैं
	शारीरिक व्याख्या (तशरीह-ए-अबदान)	81	सज़ा की आयतों और दुष्टों के नामों, और प्रशंसा की आयतों और नेक लोगों के नामों की संख्या में समानता के सात उदाहरण
75			**बंदों के अधिकार (हुकूक-उल-इबाद)**

पृष्ठ	विषय
	क्या किसी व्यक्ति के दो दिल हो सकते हैं?
76	हृदय क्या है?
76	निषेध के तहत एक अनिश्चित संज्ञा सामान्यता और व्यापकता का बोध कराती है
पृष्ठ 750 का 16	

पृष्ठ	विषय
83	यदि कोई व्यक्ति किसी महिला के साथ अनैतिक कार्य करता है और फिर उसके पति से माफी माँगता है, तो क्या उसके माफ करने से वह माफ हो जाएगा या उस पर तौबा करना अनिवार्य है? और यदि वह केवल तौबा करता है, तो क्या यह पाप क्षमा हो जाएगा?

صفحہ	موضوع
۶۸	تصدیق سب رسولوں کی جزوایمان ہے
۶۸	برس کو عربی میں حول کہتے ہیں کہ تحویل سے مشجر ہے
۶۸	برس بمعنی بارش ہے
۶۸	ہر رسول کی رسالت بارشِ رحمت ہے
	وعظ و تبلیغ
۷۰	واعظ کے لیے شرط اول مسلمان ہونا، شرط دوم سُنّی ہونا، شرط سوم عالم ہونا اور شرط چہارم فاسق نہ ہونا
۸۰	**علم الحیوان**
۷۷	روحِ انسانی متجزی نہیں
۷۸	علم حروف وریاضی
۷۹	تحلیل مجدور کے بارے میں نواب وزیر احمد خان قادری کے ایک سوال کا جواب
۸۰	ایک آیت کریمہ کے عدد سے ایک رافضی کے غلط استدلال کا ردِ بلیغ
۸۰	روافض کی بنائی مذہب اوہام بے سروپا و پادر ہوا ہے
۸۰	ہر آیت عذاب کے عدد اسماءِ اخیار سے مطابق کر سکتے ہیں اور ہر آیت ثواب کے عدد اسماءِ کفار سے کہ اسماء میں وسعت وسیعہ ہے،

صفحہ	موضوع
۷۳	کتا اور کل جانور چرند پرند کس کی اولاد ہیں
۷۵	**تشریح ابدان** کیا کسی شخص کے دو دل ہو سکتے ہیں
۷۶	قلب کیا ہے،
۷۶	نکرہ تحت نفی مفید عموم واستغراق ہوتا ہے
۸۱	داؤد علیہ السلام کے بیٹوں شبر وشبیر ومبشر کے ہم وزن وہم معنی ہیں
۸۱	آیات عذاب واسماءِ اشرار اور آیات مدح واسماءِ اخیار کے عدد میں مطابقت کی سات مثالیں
	حقوق العباد
۸۳	اگر کوئی شخص کسی عورت سے بدفعلی کرے پھر اس کے خاوند سے معافی طلب کرے تو اس کے معاف کرنے سے معاف ہو جائے گا یا اس پر توبہ لازم ہے، اور اگر فقط توبہ کر لے تو کیا یہ گناہ معاف ہو جائے گا

صفحہ	موضوع
	امیر المؤمنین حضرت علی مرتضیٰ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے تین صاحبزادوں کے نام ابوبکر و عمر وعثمان ہیں
	حضرت امام حسن وحسین و محسن کے نام حضرت

Volume 29 Fatawa Rizvia

92 | The dancing of prostitutes is forbidden (haram). Ignorant people have spread this sin at the Urs (death anniversaries) of the saints without restraint. | Dictionary 93 | The sin of the husband drinking alcohol lies on him; the wife cannot refuse him intercourse because of it. | 85 | What are the meanings of Shakil and Aqil? Dream 93 | Breach of trust, treachery, and breaking promises are not permissible. 93 | It is forbidden to present oneself for humiliation by committing a legal crime. | 87 | What is a dream? 94 | If a Hindu's property is obtained without treachery or a legal crime, it is permissible to take it. | 87 | There are four types of dreams. 94 | A woman's desire is much greater than a man's, but Allah Almighty has placed modesty upon her. | 87 | First: Hadith-e-Nafs (Self-talk). 94 | No specific time is fixed in Sharia for combing hair. | 87 | Second: Ilqa-e-Shaitan (Satanic suggestion). 94 | 'Taqwiyat-ul-Iman' is a book of misguidance and irreligiousness. | 87 | Third: Ilqa-e-Farishta (Angelic suggestion). 95 | Who are the Wahhabis, where did their origin come from, and what are their beliefs? | 88 | Fourth: Ilqa-e-Ilahi (Divine suggestion). 96 | What is the reality of Mawlid Sharif? | Lease / Hiring 97 | Answer to the question regarding Khwaja Hasan Nizami Dehlvi's book 'Muharram Nama'. | 89 | If a person selected for a task does not perform it fully, i.e., remains deficient, what should be understood about him? 98 | Sayyidina Amr ibn al-Aas (may Allah be pleased with him) is a great companion; his virtues and merits. | Beliefs, Theology, and Religious Affairs 98 | All companions are people of goodness and justice. | 91 | Answer to an inquiry (istifta) comprising eight questions. 103 | Answer to an inquiry comprising six questions regarding the saints of Allah. | 92 | Innate knowledge of the unseen is exclusive to Allah Almighty, and its being known to the Prophets through Allah's bestowal is among the essentials of religion. 92 | Support from verses and Hadiths.

जिल्द 29 फ़तावा रज़विया

92 | वेश्याओं का नृत्य हराम है। औलिया किराम के उर्सों पर अनियंत्रित जाहिलों ने यह बुराई फैलाई है | शब्दकोश 93 | पति के शराब पीने का गुनाह उसी पर है, पत्नी उसे संभोग से मना नहीं कर सकती | 85 | शकील और अक़ील का अर्थ क्या है ख्वाब (सपना) 93 | अमानत में खयानत और विश्वासघात व वादाखिलाफी जायज़ नहीं है 93 | किसी कानूनी अपराध को करके स्वयं को अपमानित करना मना है | 87 | ख्वाब क्या चीज़ है 94 | विश्वासघात और कानूनी अपराध के बिना हिंदू का माल मिले तो उसे लेना जायज़ है | 87 | ख्वाब चार प्रकार के होते हैं 94 | औरत की इच्छा मर्द से बहुत अधिक है मगर अल्लाह तआला ने उस पर हया (लज्जा) डाल दी है | 87 | पहला हदीस-ए-नफ़्स (मन की बात) 94 | कंघी करने के लिए शरीयत में कोई विशेष समय निर्धारित नहीं है | 87 | दूसरा इल्का-ए-शैतान (शैतानी सुझाव) 94 | तक़वियत-उल-ईमान एक गुमराही और अधर्म की पुस्तक है | 87 | तीसरा इल्का-ए-फ़रिश्ता (फ़रिश्ते का सुझाव) 95 | वहाबी कौन हैं, उनकी उत्पत्ति कहाँ से हुई और उनके अक़ीदे क्या हैं | 88 | चौथा इल्का-ए-इलाही (ईश्वरीय सुझाव) 96 | मौलूद शरीफ की हकीकत क्या है | इजारा (किराया/अनुबंध) 97 | ख्वाजा हसन निज़ामी देहलवी की किताब मुहर्रम नामा के बारे में सवाल का जवाब | 89 | जो व्यक्ति किसी काम के लिए चुना गया वह उसे पूरी तरह से पूरा न करे यानी अक्षम रहे तो उसके बारे में क्या समझना चाहिए 98 | सैयदुना अम्र बिन अल-आस रज़ियल्लाहु अन्हु महान सहाबी हैं, आपके फ़ज़ाइल व मनाक़िब | अक़ीदे व कलाम व दीनियात 98 | सहाबा सब के सब भलाई और न्याय वाले हैं। | 91 | आठ सवालों पर आधारित इस्तिफ़ता का जवाब 103 | औलिया अल्लाह के बारे में छह सवालों पर आधारित एक इस्तिफ़ता का जवाब | 92 | ज़ाती इल्म-ए-ग़ैब अल्लाह अज़्ज़वजल के लिए विशिष्ट है और अल्लाह तआला के बताने से नबियों को ज्ञात होना दीन की अनिवार्यताओं में से है 92 | आयतों और हदीसों से पुष्टि

جلد ۲۹ فتاویٰ رضویہ

۹۲ | رنڈیوں کا ناچ حرام ہے۔ اولیاء کرام کے عُرسوں پر بے قید جاہلوں نے یہ معصیت پھیلائی ہے | لغت ۹۳ | خاوند کے شراب پینے کا وبال اس پر ہے، عورت اسے جماع سے منع نہیں کر سکتی | ۸۵ | شکیل اور عقیل کا معنی کیا ہیں خواب ۹۳ | امانت میں خیانت اور غدر و بد عہدی جائز نہیں ۹۳ | کسی جرم قانونی کا ارتکاب کر کے اپنے آپ کو ذلت پر پیش کرنا منع ہے | ۸۷ | خواب کیا چیز ہے ۹۴ | غدر اور قانونی جرم کے بغیر ہندو کا مال ملے تو اس کو لے لینا مباح ہے | ۸۷ | خواب چار قسم ہے ۹۴ | عورت کی خواہش مرد سے بہت زیادہ ہے مگر اللہ تعالیٰ نے اس پر حیا ڈال دی ہے | ۸۷ | پہلا حدیث نفس ۹۴ | کنگھے کے لیے شریعت میں کوئی خاص وقت مقرر نہیں ہے | ۸۷ | دوسرا القاء شیطان ۹۴ | تقویت الایمان ایک گمراہی اور بے دینی کی کتاب ہے | ۸۷ | تیسرا القاء فرشتہ۔ ۹۵ | وہابی کون ہیں، ان کی اصل کہاں سے نکلی اور ان کے عقائد کیا ہیں | ۸۸ | چوتھا القاء الہی ۹۶ | مولود شریف کی حقیقت کیا ہے | اجارہ ۹۷ | خواجہ حسن نظامی دہلوی کی کتاب محرم نامہ کے بارے میں سوال کا جواب | ۸۹ | جو شخص کسی کام کے لیے منتخب کیا گیا وہ اس کو پوری طرح ادا نہ کرے یعنی قاصر رہے تو اس کو کیا سمجھنا چاہیے ۹۸ | سید نا عمرو بن العاص رضی اللہ تعالیٰ عنہ جلیل القدر صحابی ہیں، آپ کے فضائل و مناقب | عقائد و کلام و دینیات ۹۸ | صحابہ سب کے سب اہل خیر و عدالت ہیں۔ | ۹۱ | آٹھ سوالات پر مشتمل استفتاء کا جواب ۱۰۳ | اولیاء اللہ کے بارے میں چھ سوالات پر مشتمل ایک استفتاء کا جواب | ۹۲ | علم غیب ذاتی اللہ عزوجل کے لیے خاص ہے اور اللہ تعالیٰ کے بتانے سے انبیاء کو معلوم ہونا ضروریات دین سے ہے ۹۲ | آیات و احادیث سے تائید

Fatawa Rizvia, Volume 29

[Right Column] 103: The human soul remains alive even after death. 103: Those who believe in the death of the soul are followers of deviant sects. 103: The deceased sees those coming to their grave and hears their voices. 103: Statement of Shah Abdul Aziz Muhaddith Dehlawi regarding the authority and spiritual aid of the friends of Allah (Awliya). 105: Proof of the life of martyrs and saints from the Holy Quran. 105: Indeed, our master Ghaus-e-Azam (Radi Allahu Anhu) and Khwaja Moinuddin Chishti are helpers of the poor (Ghareeb Nawaz). 105: Support from the statements of scholars. 106: When everything is present in the Holy Quran, then on what basis do the Imams disagree? 108: Despite having knowledge, the silence of the Messenger of Allah (peace be upon him) during the time of the incident of Ifk (slander) was based on wisdom. 109: Answer to an inquiry consisting of six questions regarding Master Jesus (peace be upon him) and his noble mother. 109: There is no proof in the pure Sharia regarding the marriage of Lady Mary with Joseph the Carpenter or her being a prophetess. 109: Four prophets have not yet been overtaken by death. 110: Deniers of the life of the prophets are astray and irreligious. 110: All prophets are alive with a real, worldly, physical life.

[Left Column] 110: God forbid, no messenger is ever dismissed from their messengership, nor will Master Messiah (peace be upon him) be dismissed. 111: The Messenger of Allah (peace be upon him) being an 'ummati' is not contrary to messengership. 111: A ruling based on what is abrogated is invalid. 112: Answer to a question regarding a passage in 'Musallam al-Thubut'. 112: The author of 'Musallam al-Thubut' is a Sunni Hanafi, not free-thinking. 112: Warning regarding a vague and ambiguous question. 113: Answer to a question regarding the Hadith of 'Lawlak'. 113: Allah Almighty created the entire universe for the sake of the Holy Prophet (peace be upon him). 116: Refutation of a false fatwa regarding considering Allah Almighty to be on the Throne ('Arsh). 116: Allah Almighty is free from place and location. Neither is the Throne His place, nor any other spot. 116: Discussion on 'Istawa 'alal-'Arsh' (Rising over the Throne). 117: There are two schools of thought among the Ahl-e-Sunnah regarding the ambiguous verses (Ayat-e-Mutashabihat). 117: Ibn Taymiyyah does not know the difference between the material and the immaterial.

Page 18 of 750

फतावा रज़विया, खंड 29

[दायां कॉलम] 103: मृत्यु के बाद भी मानवीय आत्मा जीवित रहती है। 103: आत्मा की मृत्यु के मानने वाले कुमार्गी हैं। 103: मृत व्यक्ति अपनी कब्र पर आने वालों को देखता है और उनकी आवाज़ सुनता है। 103: औलिया अल्लाह के अधिकार और आध्यात्मिक सहायता के बारे में शाह अब्दुल अज़ीज़ मुहद्दिस देहलवी का कथन। 105: कुरान मजीद से शहीदों और औलिया के जीवन का प्रमाण। 105: निश्चय ही, हमारे स्वामी गौस-ए-आज़म और ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती गरीबों के मददगार (ग़रीब नवाज़) हैं। 105: विद्वानों के कथनों से समर्थन। 106: जब कुरान मजीद में सब कुछ मौजूद है, तो फिर इमामों के बीच मतभेद किस आधार पर है? 108: ज्ञान होने के बावजूद, इफ़्क (अपवाद) के समय में रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की चुप्पी हिकमत (बुद्धिमानी) पर आधारित थी। 109: हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम और उनकी पवित्र माता के बारे में छह सवालों पर आधारित फ़तवे का जवाब। 109: शरीयत-ए-मुतहरा में सैयदा मरियम के यूसुफ़ नज्जार के साथ विवाह और उनके नबी होने का कोई प्रमाण नहीं है। 109: चार नबियों को अभी तक मृत्यु नहीं आई है। 110: नबियों के जीवन का इनकार करने वाले गुमराह और अधर्मी हैं। 110: सभी नबी वास्तविक, सांसारिक और शारीरिक जीवन के साथ जीवित हैं।

[बायां कॉलम] 110: अल्लाह न करे कि कोई रसूल रिसालत (पैग़म्बरी) से हटाया जाए, और न ही हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम हटाए जाएंगे। 111: हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का उम्मती होना रिसालत के विरुद्ध नहीं है। 111: निरस्त (मनसूख) पर दिया गया निर्णय अमान्य है। 112: 'मुसल्लम अल-थुबूत' के एक अंश के बारे में एक सवाल का जवाब। 112: 'मुसल्लम अल-थुबूत' के लेखक सुन्नी हनफी हैं, आज़ाद ख्याल नहीं। 112: एक अस्पष्ट और गोल-मोल सवाल पर चेतावनी। 113: 'लौलाक' हदीस के बारे में एक सवाल का जवाब। 113: अल्लाह तआला ने पूरी दुनिया को हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के लिए बनाया। 116: अल्लाह तआला को अर्श पर समझने के बारे में एक गलत फतवे का खंडन। 116: अल्लाह तआला स्थान और स्थिति से मुक्त है। न अर्श उसका स्थान है और न कोई और जगह। 116: 'इस्तवा अलल अर्श' (अर्श पर बुलंद होना) पर चर्चा। 117: आयात-ए-मुतशाबिहात के बारे में अहल-ए-सुन्नत के दो मार्ग (मसलक) हैं। 117: इब्न तैमिया को भौतिक और अमूर्त के बीच का अंतर नहीं पता।

पृष्ठ 750 का 18

فتاویٰ رضویہ ، جلد ۲۹

[دایاں کالم] ۱۰۳: روحِ انسانی بعدِ موت بھی زندہ رہتی ہے ۱۰۳: موتِ رُوح کے قائل بد مذہب ہیں ۱۰۳: میت اپنی قبر پر آنے والے کو دیکھتا اور ان کی آواز کو سنتا ہے ۱۰۳: اولیاء اللہ کے تصرفات اور فیض رسانی کے بارے میں شاہ عبدالعزیز محدث دہلوی کی عبارت ۱۰۵: حیاتِ شہداء و اولیاء کا ثبوت قرآن مجید سے۔ ۱۰۵: حضور سیدنا غوثِ اعظم ضرور دستگیر اور خواجہ معین الدین چشتی ضرور غریب نواز ہیں ۱۰۵: عباراتِ علماء سے تائید ۱۰۶: قرآن مجید میں جب سب کچھ موجود ہے تو پھر اماموں کا اختلاف کس بناء پر ہے ۱۰۸: علم ہونے کے باوجود رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کا زمانہ افک میں سکوت حکمت پر مبنی تھا ۱۰۹: سیدنا حضرت عیسیٰ علیہ الصلوۃ والسلام اور ان کی والدہ ماجدہ کے بارے میں چھ سوالات پر مشتمل استفتاء کا جواب ۱۰۹: سیدہ مریم کے یوسف نجار کے ساتھ نکاح اور ان کے نبیہ ہونے کا شریعت مطہرہ میں کوئی ثبوت نہیں ۱۰۹: چار نبیوں کو ابھی تک موت کا لحوق نہیں ہوا ۱۱۰: حیاتِ انبیاء کے منکر گمراہ بددین ہیں ۱۱۰: تمام انبیاء بحیات حقیقی دنیاوی جسمانی زندہ ہیں

[بایاں کالم] ۱۱۰: حاشا للہ کوئی رسول رسالت سے معزول کیا جاتا ہے نہ سیدنا مسیح علیہ الصلوۃ والسلام معزول ہوں گے ۱۱۱: حضور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کا امتی ہونا رسالت کے خلاف نہیں ۱۱۱: منسوخ پر حکم باطل ہے۔ ۱۱۲: مسلم الثبوت کی ایک عبارت کے بارے میں سوال کا جواب ۱۱۲: مصنف مسلم الثبوت سنی حنفی ہیں آزاد خیال نہیں ۱۱۲: ایک مجمل گول سوال پر تنبیہ ۱۱۳: حدیث لولاک کے بارے میں ایک سوال کا جواب ۱۱۳: اللہ تعالیٰ نے تمام جہان حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے لیے بنایا ۱۱۶: اللہ تعالیٰ کو عرش پر سمجھنے کے بارے میں ایک غلط فتویٰ کا رد ۱۱۶: اللہ تعالیٰ مکان و تمکن سے پاک ہے۔ نہ عرش اس کا مکان ہے نہ دوسری

جگہ ۱۱۶: استواء علی العرش پر گفتگو ۱۱۷: آیاتِ متشابہات کے بارے میں اہلسنت کے دو مسلک ہیں ۱۱۷: ابن تیمیہ کو مادی اور مجرد عن المادہ کے درمیان فرق معلوم نہیں

Fatawa Rizvia Volume 29

Page	Topic (Right Column)	Topic (Left Column)	Page
118	Treatise "Qawari' al-Qahhar 'ala al-Mujassimah al-Fujjar" (A research-based answer to Arya's objections on the ambiguous verses of the Holy Quran)	Account of six ignorances and misguidances in a few lines of writing by a misguided Najdi	140
119	Fifteen beliefs of the Ahl-us-Sunnah wal-Jama'ah regarding the transcendence of Allah Almighty	Six slaps from the author (mercy be upon him) to take account of the aforementioned ignorances and misguidances	140
121	The belief of the Ahl-us-Sunnah wal-Jama'ah in the chapter of ambiguous (mutashabih) verses	First slap	141
122	A major source of guidance and misguidance is that the verses of the Holy Quran are of two types: clear (muhkamat) and ambiguous (mutashabihat)	250 strikes from the author (mercy be upon him)	141
122	Four elegant ways of interpreting the meaning of "Istiwa' 'ala al-Arsh" (rising over the Throne)	First strike which consists of 33 strikes	141
124	In the Holy Quran, 'Istiwa' appears in seven places; in all seven places, it appears along with the creation of the earth and the heavens and immediately after it	Second slap	147
128	The noble verse "The Most Merciful rose over the Throne" is among the ambiguous (mutashabih) verses	Third slap	150
128	Support for the mentioned issue from twenty books	The real slap, the slap of the Day of Judgment, which turns the misguidance of the	150

Page	Topic (Right Column)	Topic (Left Column)	Page
		anthropomorphists (Mujassimah) into kohl/dust	
133	Consensus of the four Imams that no meaning should be assigned to "Istiwa'"; believing in it is obligatory and investigating its meaning is forbidden	What is permissible for physical bodies is not permissible for Allah Almighty	152
137	The irreligiousness of the Wahhabi anthropomorphists	It is impossible for a spatial thing to be present in two different places in one instant	153
137	In most issues, the Ahl-us-Sunnah remain in the middle of two contradictory sects	It is obligatory that the Lord Almighty be free from physical space	154
139	What is the legal ruling on someone who says that Allah Almighty is seated on the Throne and nowhere else?	Believing any creature to be eternal is disbelief by the consensus of Muslims	154
139	Transcription of the misguidance of Tahmir and the Najdi remains	It is necessary for the place to encompass the inhabitant	155
140	The subduing strike (Zarb-e-Qahari)	If the Deity is assumed to occupy space, it would either be as small as an indivisible particle or larger, and both are false	155

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

पेज	विषय (दायां कॉलम)	विषय (बायां कॉलम)	पेज
११८	रिसाला क़वारिअल क़हार अलल मुजस्सिमतुल फ़ुज्जार (क़ुरआन मजीद की आयाते मुतशाबिहात पर आर्य के एतराज़ात का तहक़ीक़ी जवाब)	नज्दी गुमराह की चंद सतरी तहरीर में छह जहालतों और ज़लालतों का बयान	१४०
११९	अल्लाह अज़्वजल की तनज़ीह में अहल-ए-सुन्नत व जमाअत के पंद्रह अक़ीदे	मज़कूरा बाला जहालतों और ज़लालतों की ख़बर लेने के लिए मुसन्निफ़ अलैहिर्रहमा की तरफ से छह तपांचे	१४०
१२१	आयाते मुतशाबिहात के बाब में अहल-ए-सुन्नत व जमाअत का एतकाद	पहला तपांचा	१४१
१२२	हिदायत व ज़लालत का बड़ा मन्शा क़ुरआन मजीद की आयात का दो किस्म होना है, मोहकमात और मुतशाबिहात	मुसन्निफ़ अलैहिर्रहमा की तरफ से २५० ज़रबें	१४१
१२२	इस्तवा अलल अर्श के मानी में चार नफीस वुजूहे तावील	ज़रबे अव्वल जो ४३ ज़रबों पर मुश्तमिल है	१४१
१२४	क़ुरआन मजीद में 'इस्तवा' सात जगह आया है, सातों जगह आफ़रीनशे ज़मीन व आसमान के साथ और बिला फ़स्ल उसके बाद आया है	दूसरा तपांचा	१४७
१२८	आयते करीमा "अर-रहमानु अलल अर्शिस्तवा" आयाते मुतशाबिहात में से है	तीसरा तपांचा	१५०
१२८	बीस कुतुब से ताईदे मसला मज़कूरा	असली तपांचा क़यामत का तपांचा जिससे मुजस्सिमी गुमराही का सुरमा हो जाए	१५०
१३३		जो अज्शाम पर रवा है अल्लाह तआला पर रवा नहीं	१५२

पेज	विषय (दायां कॉलम)	विषय (बायां कॉलम)	पेज
	चारों इमामों का इज्मा है कि इस्तवा के मायने कुछ न कहे जाएं इस पर ईमान वाजिब है और मायने की तफ़्तीश हराम है		
१३७	वहाबिया मुजस्सिमा की बेदीनी	मकानी चीज़ का एक आन में दो मुख्तलिफ मकानों में मौजूद होना मुहाल है	१५३
१३७	अक्सर मसाइल में अहल-ए-सुन्नत दो मुतज़ाद फिरक़ों के वस्त में रहते हैं	वाजिब है कि मौला तआला मकान से पाक हो	१५४
१३९	जो शख्स कहे कि अल्लाह तआला अर्श पर बैठा है और कहीं नहीं है। शरअन उसका क्या हुक्म है	किसी मखलूक को अज़ली मानना बाजमाए मुस्लिमीन कुफ्र है	१५४
१३९	नक़ले तहरीर ज़लालते तहमीर और नज्दी बक़िया	मकान का मकीन को मुहीत होना लाज़िम	१५५
१४०	ज़रबे क़हारी	अगर माबूद को मकानी फ़र्ज़ किया जाए तो दो हाल से खाली न होगा कि जुज़-ए-लायताज़ज़्ज़ा के बराबर होगा या उससे बड़ा होगा और ये दोनों बातिल हैं	१५५

فتاوی رضویہ جلد ۲۹

صفحہ	عنوان (دایاں کالم)	عنوان (بایاں کالم) صفحہ
	رسالہ قوارع القہار علی المجسمۃ الفجار	نجدی گمراہ کی چند سطری تحریر میں چھ جہالتوں اور ضلالتوں کا بیان ۱۴۰
۱۱۸	(قرآن مجید کی آیات متشابہات پر آریہ کے اعتراضات کا تحقیقی جواب)	مذکورہ بالا جہالتوں اور ضلالتوں کی خبر لینے کے لیے مصنف علیہ الرحمہ کی طرف چھ تپانچے ۱۴۰
۱۱۹	اللہ عزوجل کی تنزیہ میں اہل سنت و جماعت کے پندرہ عقیدے	پہلا تپانچہ ۱۴۱
۱۲۱	آیات متشابہات کے باب میں اہلسنت و جماعت کا اعتقاد	مصنف علیہ الرحمہ کی طرف سے ۲۵۰ ضربیں ۱۴۱
۱۲۲	ہدایت و ضلالت کا بڑا منشاء قرآن مجید کی آیات کا دو قسم ہونا ہے، محکمات اور متشابہات	ضرب اول جو ۳۳ ضربوں پر مشتمل ہے ۱۴۱
۱۲۲	استواء علی العرش کے معنی میں چار نفیس وجوہ تاویل	
۱۲۴	قرآن مجید میں استواء سات جگہ آیا ہے، ساتوں جگہ آفرینش زمین و آسمان	دوسرا تپانچہ ۱۴۷

صفحہ	عنوان (دایاں کالم)	عنوان (بایاں کالم)	صفحہ
	کے ساتھ اور بلا فصل اس کے بعد آیا ہے		
۱۲۸	آیت کریمہ "الرحمن علی العرش استوی" آیات متشابہات میں سے ہے	تیسرا تپانچہ	۱۵۰
۱۲۸	بیس کتب سے تائید مسئلہ مذکورہ	اصلی تپانچہ قیامت کا تپانچہ جس سے مجسمی گمراہی کا سرمہ ہو جائے	۱۵۰
۱۳۳	چاروں اماموں کا اجماع ہے کہ استواء کے معنی کچھ نہ کہے جائیں اس پر ایمان واجب ہے اور معنی کی تفتیش حرام ہے	جو اجسام پر روا ہے اللہ تعالیٰ پر روا نہیں	۱۵۲
۱۳۷	وہابیہ مجسمہ کی بے دینی	مکانی چیز کا ایک آن میں دو مختلف مکانوں میں موجود ہونا محال ہے	۱۵۳
۱۳۷	اکثر مسائل میں اہل سنت دو متناقض فرقوں کے وسط میں رہتے ہیں	واجب ہے کہ مولیٰ تعالیٰ مکان سے پاک ہو	۱۵۴
۱۳۹	جو شخص کہے کہ اللہ تعالیٰ عرش پر بیٹھا ہے اور کہیں نہیں ہے ۔ شرعاً اس کا کیا حکم ہے	کسی مخلوق کو ازلی ماننا باجماع مسلمین کفر ہے	۱۵۴
۱۳۹	نقل تحریر ضلالت تحمیر اور نجدی بقیہ	مکان کا مکین کو محیط ہونا لازم	۱۵۵

صفحہ	عنوان (دایاں کالم)	عنوان (بایاں کالم) صفحہ
		اگر معبود کو مکانی فرض کیا جائے تو دو
۱۴۰	ضرب قہاری	حال سے خالی نہ ہوگا کہ جز ء لا یتجزی کے برابر ہوگا یا اس سے بڑا ہوگا اور یہ دونوں باطل ہیں ۱۵۵

Fatawa Razawiya, Volume 29

Page	Topic
157	One who is spatial and not equal to an indivisible atom cannot escape magnitude.
157	Magnitude that is infinite in actuality is void.
157	The individuals of a finite magnitude are infinite.
157	In matters of equal proportion, preferring one depends on intention.
157	Every creature is originated by will.
157	The existence of something quantitative without magnitude is impossible.
157	Every finite magnitude is capable of increase.
157	Directions 'up' and 'down' are two relative concepts; the existence of one without the other is impossible.
157	In eternity, there was nothing besides Allah, the Almighty and Majestic.
158	Everything possessing direction is capable of sensory pointing.
159	Refutation of the arguments of Ibn Taymiyyah etc. regarding the affirmation of place and direction for Allah.
160	The Pure Shariah has commanded Muslims of the entire world to face the Qibla in prayer.
160	'As-Samad' is He who has no interior void.
160	The highest heaven is called the Atlas Sphere and the Sphere of Spheres.
161	It is undoubtedly obligatory to believe that He is Self-Sufficient, free from place, direction, and all accidental properties.
162	By the grace of Allah, these are 20 glorious arguments that prove the truth and invalidate the false.
162	Refutation of the ignorances of the opponent.
166	Ibn Lahi'ah is a 'mudallis' (one who conceals sources).
166	Hadith scholars do not accept the 'an'ana' (report using 'from') of a mudallis.
166	Jarh and Ta'dil (criticism and appraisal) on Darraj.

Page	Topic
158	Everything capable of sensory pointing is localized.
158	Every localized thing is either a body or corporeal.
158	Every body and corporeal thing is needy.
158	Allah Almighty is free from need.
158	The Throne is at an extreme distance from the earth.
158	The helpless and lowly cannot be God.
158	Place and the placed cannot escape direction.
158	Directions are the essences of locations or the limits of locations.
159	The earth is round and habitation is proven on every side of it.
166	The narration of Darraj from Abu al-Haytham is weak.
166	'Makan' (place), 'Manzil' (destination), and 'Maqam' (station) are commonly used in the sense of status, rank, and position.
170	The fourth blow (rebuttal).
170	There are only two ways for the Ahl al-Sunnah regarding allegorical verses.
171	The first way: Tafwid (consignment).
171	A glorious benefit (footnote).
172	The second way: Ta'wil (interpretation).
176	The fifth blow.
179	'Mutawatir' (mass-transmitted) reports are only a few.

फ़तावा रज़विया, खंड २९

पृष्ठ	विषय
१५७	जो स्थानी (मकानी) हो और अविभाज्य भाग के बराबर न हो, उसे मात्रा (परिमाण) से छुटकारा नहीं है।
१५७	वास्तव में अनंत परिमाण अमान्य (बातिल) है।
१५७	परिमित परिमाण के अंग अनंत हैं।
१५७	समान अनुपात वाले विषयों में एक की प्राथमिकता इच्छा (इरादे) पर निर्भर है।
१५७	प्रत्येक सृष्टि इच्छापूर्वक उत्पन्न (हादिस) है।
१५७	परिमाणयुक्त वस्तु का बिना परिमाण के अस्तित्व असंभव है।
१५७	प्रत्येक परिमित परिमाण वृद्धि के योग्य है।
१५७	'ऊपर' और 'नीचे' की दिशाएँ दो सापेक्ष अवधारणाएँ हैं; एक का अस्तित्व दूसरे के बिना असंभव है।
१५७	अनादिकाल (अज़ल) में अल्लाह अज़्ज़-व-जल्ल के अतिरिक्त कुछ न था।
१५८	प्रत्येक दिशा वाली वस्तु इंद्रिय संकेत (इशारा-ए-हिस्सिया) के योग्य है।
१५९	अल्लाह तआला के लिए स्थान और दिशा सिद्ध करने पर इब्न तैमिया आदि के तर्कों का खंडन।
१६०	शुद्ध शरीयत ने पूरे विश्व के मुसलमानों को नमाज़ में किबला की ओर मुख करने का आदेश दिया है।
१६०	'समद' वह है जिसके भीतर कोई रिक्त स्थान (जौफ़) न हो।
१६०	उच्चतम आकाश को फलक-ए-अतलस और फलक-उल-अफ़्लाक कहा जाता है।
१६१	अनिवार्य रूप से ईमान लाना फ़र्ज़ है कि वह (अल्लाह) बे-नियाज़ (स्वावलंबी) है, स्थान, दिशा और समस्त आकस्मिक गुणों से मुक्त है।
१६२	अल्लाह की स्तुति से ये २० भव्य प्रमाण सत्य को स्थापित और असत्य को निरस्त करने वाले हैं।
१६२	विरोधी की अज्ञानताओं का खंडन।
१६६	इब्न लहिया 'मुदल्लिस' (हदीस में सूत्रों को छिपाने वाला) है।
१६६	हदीस के विद्वान 'मुदल्लिस' के'अन'अना' (वर्णन का एक तरीका) को स्वीकार नहीं करते हैं।
१६६	दर्राज पर आलोचना और मूल्यांकन (जिरह व तादील)।

पृष्ठ	विषय
१५८	प्रत्येक इंद्रिय संकेत के योग्य वस्तु स्थान घेरती (मुतहैयिज़) है।
१५८	प्रत्येक स्थान घेरने वाली वस्तु शरीर (जिस्म) या शारीरिक (जिस्मानी) है।
१५८	प्रत्येक शरीर और शारीरिक वस्तु मोहताज (निर्भर) है।
१५८	अल्लाह तआला निर्भरता से मुक्त है।
१५८	अर्श पृथ्वी से अत्यधिक दूरी पर है।
१५८	असहाय और नीच ईश्वर नहीं हो सकता।
१५८	स्थान और स्थान में रहने वाले के लिए दिशा के अतिरिक्त कोई विकल्प नहीं है।
१५८	दिशाएँ स्वयं स्थान हैं या स्थानों की सीमाएँ हैं।
१५९	पृथ्वी गोल है और इसके हर ओर आबादी होना प्रमाणित है।
१६६	अबू अल-हैथम से दर्राज का वर्णन कमज़ोर (ज़ईफ़) है।
१६६	मकान, मंज़िल और मक़ाम का प्रयोग हैसियत, पद और दर्जे के अर्थ में व्यापक है।
१७०	चौथा तमाचा (प्रहार/खंडन)।
१७०	अलंकारिक छंदों (आयात-ए-मुतशाबिहात) में अहले सुन्नत के केवल दो मार्ग हैं।
१७१	प्रथम मार्ग: तफ़वीज़ (पूर्ण समर्पण)।
१७१	गौरवशाली लाभ (फ़ायदा-ए-जलीला) - (फुटनोट)।
१७२	द्वितीय मार्ग: तावील (व्याख्या)।
१७६	पाँचवाँ तमाचा।
१७९	'मुतवातिर' (अत्यंत प्रामाणिक) हदीसें केवल गिनी-चुनी हैं।

فتاویٰ رضویہ، جلد ۲۹

صفحہ	مضمون
۱۵۷	جو مکانی ہو اور جزء لایتجزی کے برابر نہ ہواسے مقدار سے مفر نہیں
۱۵۷	مقدار غیر متناہی بالفعل باطل ہے
۱۵۷	مقدار متناہی کے افراد نامتناہی ہیں
۱۵۷	امور متساویۃ النسبۃ میں ایک کی ترجیح ارادے پر موقوف ہے
۱۵۷	ہر مخلوق بالارادہ حادث ہے
۱۵۷	مقداری کا وجود بے مقدار کے محال ہے
۱۵۷	ہر مقدار متناہی قابل زیادت ہے
۱۵۷	
۱۵۹	اللہ تعالیٰ کے لیے مکان وجہت کے اثبات پر ابن تیمیہ وغیرہ کی دلیل کارڈ۔
۱۶۰	شرع مطہر نے تمام جہان کے مسلمانوں کو نماز میں قبلہ کی طرف منہ کرنے کا حکم دیا ہے
۱۶۰	صمد وہ ہے جس کا جوف نہ ہو
۱۶۰	آسمان اعلیٰ کو فلک اطلس اور فلک الافلاک کہتے ہیں
۱۶۱	لا جرم ایمان لانا فرض ہے کہ وہ غنی ہے نیاز مکان و جہت و جملہ اعراض سے پاک ہے
۱۶۲	بحمد اللہ یہ بیس ۲۰ دلائل جلائل مثبت حق و مبطل باطل ہیں
۱۶۲	رد جہالات مخالف
۱۶۶	ابن لہیعہ مدلس ہے

صفحہ	مضمون
	جہات فوق وتحت دو مفہوم اضافی ہیں
	ایک کا وجود بے دوسرے کے محال ہے
۱۵۷	ازل میں سوا اللہ عزوجل کے کچھ نہ تھا
۱۵۸	ہر ذی جہت قابل اشارہ حسیہ ہے
۱۵۸	ہر قابل اشارہ حسیہ متحیز ہے
۱۵۸	ہر متحیز جسم یا جسمانی ہے
۱۵۸	ہر جسم و جسمانی محتاج۔
۱۵۸	اللہ تعالیٰ احتیاج سے پاک ہے
۱۵۸	عرش زمین سے غایت بعد پر ہے
۱۵۸	عاجز و اسفل خدا نہیں ہوسکتا
۱۵۸	مکان و مکانی کو جہت سے چارہ نہیں
۱۵۸	جہات نفس ا مکنہ ہیں یا حدود ا مکنہ
۱۵۹	زمین گول ہے اور اس کی ہر طرف آبادی ثابت ہے

صفحہ	مضمون
۱۶۶	مدلس کا عنعنہ محدثین قبول نہیں کرتے
۱۶۶	دراج پر جرح و تعدیل
۱۶۶	ابوالہیثم سے دراج کی روایت ضعیف ہے
۱۶۶	مکان و منزل و مقام بمعنی مکانت ومنزلت و مرتبہ شائع الاستعمال ہیں
۱۷۰	چوتھا تپانچہ
۱۷۰	آیات متشابہات میں اہلسنت کے صرف دو طریق ہیں
۱۷۱	طریق اول، تفویض
۱۷۱	فائدہ جلیلہ (حاشیہ)
۱۷۲	طریق دوم (تاویل)
۱۷۶	پانچواں تپانچہ
۱۷۹	متواترات صرف معدودے چند ہیں

Fatawa Razawiyya Volume 29

180 | Taqleed is a Shari'i obligation and began from the era of Prophethood | 195 | The sixth slap 180 | Proofs for the existence of the sky and refutation of philosophers | 200 | The Arsh is not in a place, but rather it is above all physical bodies 188 | The person, attributes, virtues, and perfections of the Holy Prophet ﷺ are never subject to decline, but are always progressing | 201 | The decisive blow 189 | Account regarding Giyarwin Sharif and fixing days for the remembrance of elders | 202 | The seventh slap 189 | In our country, none except the Wahhabis deny Milad recitation and visiting graves etc. | 203 | The issue of raising hands for prayer after obligatory acts 189 | Performing Mawlid Sharif and standing during the mention of the Holy Birth within it | 204 | It is not proven by any authentic verbal, active, or tacit Hadith that the Arsh is the dwelling place of God 189 | How is it to perform the Giyarwin Sharif of Peeran-e-Peer? | 204 | The prohibition of raising hands for prayer after obligatory acts is not proven by any authentic verbal, active, or tacit Hadith 190 | How is it to recite 'Khatm' with food placed in front? | 204 | Sahih lidhatih, Sahih lighayrih, Hasan lidhatih, and Hasan lighayrih are all authoritative and are self-affirming rulings 190 | How is it to say 'Ya Rasool Allah' and to believe the Holy Prophet ﷺ is present, observing, and a knower of the unseen? | 204 | In the domain of virtues, weak narrations are accepted by consensus 190 | How is it to visit the graves of elders, circumambulate them, and kiss them? | 205 | Majhul-ul-ayn is accepted by many research imams, and in Majhul-ul-hal also, the school of some elders is accepted 190 | What is the Shari'i ruling on Hila-e-Isqat? | 205 | Ignorance of the person does not necessitate ignorance of the condition 190 | Is it necessary to pray 12 Rak'ats of Ihtiyat-uz-Zuhr after the Friday prayer or not? | 205 | A 'majhul' falls below the level of formal evidence but not below the level of consideration 193 | Answer to a query regarding the fatwa of a Deobandi Mufti | 211 | The issue of praying behind non-followers (Ghair-Muqallideen) 194 | The statement of Shah Abdul Aziz Muhaddith Dehlawi (Mercy be upon him) on the permissibility of Urs | 212 | Millions of Tabi'een and thousands of Sahaba were followers (Muqallids)

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

180 | तक़लीद शरई वाजिब है और रिसालत के ज़माने से शुरू हुई | 195 | छठा तमाचा 180 | आसमान के वजूद पर दलीलें और दार्शनिकों का खंडन | 200 | अर्श किसी जगह में नहीं बल्कि वह तमाम जिस्मों से ऊपर है 188 | हुज़ूर अकदस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की ज़ात, सिफ़ात, फ़ज़ाइल और कमालात कभी ज़वाल-पज़ीर नहीं होते, बल्कि हमेशा तरक्की पर हैं | 201 | आख़िरी फ़ैसला 189 | ग्यारहवीं शरीफ़ और बुज़ुर्गों की यादगारी के लिए दिन तय करने का बयान | 202 | सातवां तमाचा 189 | हमारे देश में वहाबियों के अलावा मिलाद ख्वानी और मज़ारों की ज़ियारत वग़ैरह का कोई मुनकिर नहीं है | 203 | फ़र्ज़ों के बाद हाथ उठाकर दुआ माँगने का मसला 189 | मौलूद शरीफ़ मनाना और उसमें ज़िक्र-ए-विलादत पर खड़े होना | 204 | किसी सही हदीस-ए-क़ौली, फ़ेली या तक़रीरी से अर्श का अल्लाह का मकान होना साबित नहीं है 189 | पीरान-ए-पीर की ग्यारहवीं शरीफ़ करना कैसा है | 204 | किसी सही हदीस-ए-क़ौली, फ़ेली या तक़रीरी से फ़र्ज़ों के बाद हाथ उठाकर दुआ माँगने की मनाही साबित नहीं है 190 | खाना सामने रखकर ख़त्म दिलाना कैसा है | 204 | सहीह लिहातिही, सहीह लिग़ैरिही, हसन लिहातिही और हसन लिग़ैरिही सब हुज्जत हैं और स्वयं अहकाम साबित करते हैं 190 | 'या रसूल अल्लाह' कहना, हुज़ूर अनवर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को हाज़िर व नाज़िर और आलिमुल ग़ैब मानना कैसा है | 204 | फ़ज़ाइल के मुकाम पर ज़ईफ़ हदीसें इज्मा (सर्वसम्मति) से स्वीकार्य हैं 190 | बुज़ुर्गों की कब्रों की ज़ियारत, उनका तवाफ़ और उन्हें चूमना कैसा है | 205 | मजहूल-उल-ऐन बहुत से इमामों और मुहक़्क़िक़ीन के नज़दीक स्वीकार्य है, और मजहूल-उल-हाल में भी कुछ बड़ों का मज़हब स्वीकार्य है 190 | हीला-ए-इस्क़ात का शरई हुक्म क्या है | 205 | ऐन (व्यक्ति) की अज्ञानता हाल (अवस्था) की अज्ञानता का कारण नहीं बनती 190 | जुमे की नमाज़ के बाद एहतियात-उज़-ज़ुहर की 12 रकअतें पढ़ना ज़रूरी है या नहीं | 205 | मजहूल दलील के स्तर से गिर जाता है, एतबार के स्तर से नहीं 193 | एक देवबंदी मुफ़्ती के फ़तवे के बारे में इस्तिफ़्ता का जवाब | 211 | ग़ैर-मुक़ल्लिदों के पीछे नमाज़ पढ़ने का मसला 194 | उर्स के जाइज़ होने पर शाह अब्दुल अज़ीज़ साहब मुहद्दिस देहलवी अलैहिर्रहमा का इरशाद | 212 | लाखों ताबेईन और हज़ारों सहाबा किराम मुक़ल्लिद थे

पृष्ठ 21 का 750

۱۸۰ | تقلید واجب شرعی ہے اور زمانہ رسالت سے شروع ہوئی | ۱۹۵ | چھٹا تپانچہ ۱۸۰ | وجود آسمان پر دلائل اور فلاسفہ کا رد | ۲۰۰ | عرش کسی مکان میں نہیں بلکہ وہ بالائے تمام اجسام ہے ۱۸۸ | حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی ذات و صفات و فضائل و کمالات کبھی زوال پذیر نہیں بلکہ ہمیشہ مترقی ہیں | ۲۰۱ | ضرب فیصلہ ۱۸۹ | گیارہویں شریف اور بزرگوں کی یادگاری کے لیے دن مقرر کرنے کا بیان | ۲۰۲ | ساتواں تپانچہ ۱۸۹ | ہمارے ملک میں میلاد خوانی و زیارت قبور وغیرہ کا منکر سوا وہابیہ کے کوئی نہیں | ۲۰۳ | مسئلہ فرضوں کے بعد ہاتھ اٹھا کر دعا مانگنا ۱۸۹ | مولود شریف کرنا اور اس میں ذکر ولادت اقدس پر قیام کرنا | ۲۰۴ | کسی صحیح حدیث قولی و فعلی و تقریری سے عرش کا مکان الہی ہونا ثابت نہیں ۱۸۹ | پیران پیر کی گیارہویں شریف کرنا کیسا ہے | ۲۰۴ | کسی صحیح حدیث قولی و فعلی و تقریری سے فرضوں کے بعد ہاتھ اٹھا کر دعا مانگنے کی ممانعت ثابت نہیں ۱۹۰ | کھانا سامنے رکھ کر ختم دینا کیسا ہے | ۲۰۴ | صحیح لذاتہ و صحیح لغیرہ و حسن لذاتہ و حسن لغیرہ سب حجت اور خود مثبت احکام ہیں ۱۹۰ | یا رسول اللہ کہنا، حضور انور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کو حاضر و ناظر اور عالم الغیب ماننا کیسا ہے | ۲۰۴ | مقام فضائل میں ضعاف بالاجماع مقبول ہیں ۱۹۰ | بزرگوں کی قبروں کی زیارت، ان کا طواف اور ان کا بوسہ دینا کیسا ہے | ۲۰۵ | مجہول العین بہت ائمہ محققین کے نزدیک مقبول ہے اور مجہول الحال میں بھی بعض اکابر کا مذہب مقبول ہے ۱۹۰ | حیلہ اسقاط کا حکم شرعی کیا ہے | ۲۰۵ | جہالت عین جہالت حال کو مستلزم نہیں ۱۹۰ | جمعہ کی نماز کے بعد احتیاط الظہر ۱۲ رکعت پڑھنا ضروری ہے یا نہیں | ۲۰۵ | مجہول پایہ احتجاج سے ساقط ہے نہ پایہ اعتبار سے ۱۹۳ | ایک دیوبندی مفتی کے فتوی کے بارے میں

استفتاء کا جواب | ۲۱۱ | مسئلہ غیر مقلدوں کے پیچھے نماز پڑھنا ۱۹۴ | عرس کے جواز پر شاہ عبدالعزیز صاحب محدث دہلوی علیہ الرحمہ کا ارشاد | ۲۱۲ | لاکھوں تابعین اور ہزاروں صحابہ کرام مقلد تھے

Fatawa Razawiya Volume 29

- A Persian poetic Q&A regarding reward and punishment | 212
- When certain ambiguous words are uttered by an accepted person, they will be interpreted in a good sense according to the Quranic command, and when uttered by a rejected one who has already committed explicit blasphemy, they will be understood in a vile sense due to their evil habit. | 224
- From when did the practice of Meelad Sharif start and from where is standing in reverence (Qiyam) at the specific mention of the birth proven? | 213
- The Hadith "There is no Mahdi except Jesus" is not authentic. | 226
- Just as there are four principles in jurisprudence, there are also four principles in beliefs. | 214
- The Hadiths regarding Hazrat Imam Mahdi and Hazrat Jesus have reached the level of mass transmission (Tawatur). | 226
- In jurisprudence, consensus (Ijma) is the strongest evidence. | 215
- Statement on the virtues of the Companions and the obligation of their veneration. | 227
- The consensus of the Sawad-e-Azam, i.e., Ahl-e-Sunnat, on a matter of creed is the strongest evidence. | 215
- An error of judgment (ijtihad) was made by Hazrat Ameer Muawiyah (may Allah be pleased with him). | 228
- A detailed answer to an inquiry (istifta) containing five questions regarding the twelve caliphs. | 216
- Every Companion will be addressed as 'Hazrat' and 'May Allah be pleased with him'. | 228
- What is the Sharia ruling on praying behind one who rejects Meelad Sharif and the kissing of thumbs? | 219
- No non-prophet can be equal to any prophet. | 228
- One who calls the perpetrator of a major sin a disbeliever is a Kharijite, and one who considers mere verbal profession of faith sufficient is a 'Nechari' (naturalist). | 220
- Considering Mawla Ali (may Allah be pleased with him) equal to any prophet is pure disbelief (Kufr). | 228
- The creed of Ahl-e-Sunnat. | 220
- A fabricated, ridiculous tale. | 228

- Zaid's belief is that Allah Almighty can create someone equal to the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) but will not. Is it correct to pray behind him or not? | 221
- After the Prophets, the most superior are Hazrat Siddiq-e-Akbar, then Farooq-e-Azam (may Allah be pleased with them both). | 229
- Ghunyat-ut-Talibin is not an authored work of Sarkar-e-Ghaus, and interpolations have also been made in it. | 222
- Rejecting the fixing of a day for religious ceremonies is a characteristic of Wahhabis nowadays. | 229
- In the mentioned book, not all Hanafis, but some have been called astray. | 223
- Sunni and Wahhabi cannot be distinguished by holding Meelad Sharif and standing (Qiyam) in it because often Wahhabis also do so on occasion. | 229

फ़तावा रज़विया जिल्द २९

- सजा और जज़ा के बारे में एक फ़ारसी पद्यात्मक प्रश्नोत्तर | २१२
- जब कुछ संदिग्ध शब्द किसी स्वीकृत व्यक्ति द्वारा कहे जाते हैं, तो उन्हें कुरान के आदेश के अनुसार अच्छे अर्थ में लिया जाएगा, और जब किसी बहिष्कृत व्यक्ति द्वारा कहे जाते हैं जिसने पहले से ही स्पष्ट अपमान किया है, तो उनकी बुरी आदत के कारण उनका अर्थ बुरा ही समझा जाएगा। | २२४
- मीलाद शरीफ का रिवाज कब से है और जन्म के विशेष उल्लेख के समय सम्मान में खड़े होने (कयाम) का प्रमाण कहाँ से मिलता है? | २१३
- "ईसा के अलावा कोई महदी नहीं" हदीस सही नहीं है। | २२६
- जिस तरह फ़िक़ह (न्यायशास्त्र) में चार सिद्धांत हैं, अक़ायद (विश्वास) में भी चार सिद्धांत हैं। | २१४
- हज़रत इमाम महदी और हज़रत ईसा के बारे में हदीसें तवातुर (निरंतरता) की सीमा तक पहुँच गई हैं। | २२६
- फ़िक़ह में इज्मा (आम सहमति) सबसे मज़बूत प्रमाण है। | २१५
- सहाबा इकराम के गुणों और उनके सम्मान की अनिवार्यता का वर्णन। | २२७
- सवाद-ए-आज़म यानी अहले सुन्नत का किसी अक़ीदे के मसले पर इत्तेफ़ाक़ सबसे मज़बूत प्रमाण है। | २१५
- सैयदना हज़रत अमीर मुआविया (रज़ियल्लाहु अन्हु) से इज्तिहादी (निर्णय की) गलती हुई। | २२८
- बारह खलीफ़ाओं के बारे में पाँच सवालों पर आधारित इस्तिफ़ता का विस्तृत उत्तर। | २१६
- हर सहाबी के साथ 'हज़रत' और 'रज़ियल्लाहु अन्हु' कहा जाएगा। | २२८
- मीलाद शरीफ और अंगूठे चूमने के मुनकिर (इनकार करने वाले) के पीछे नमाज़ पढ़ने का शरीयत का हुक्म क्या है? | २१९
- कोई गैर-नबी किसी नबी के बराबर नहीं हो सकता। | २२८
- कबीरा गुनाह करने वाले को काफ़िर कहने वाला ख़ारजी है और सिर्फ कलिमा पढ़ने को काफी समझने वाला 'नेचरी' है। | २२०
- मौला अली (रज़ियल्लाहु अन्हु) को किसी नबी के बराबर मानना शुद्ध कुफ्र (अधर्म) है। | २२८

• अहले सुन्नत का मज़हब। | २२०
• एक मनगढ़ंत हास्यास्पद कहानी। | २२८
• ज़ैद का अक़ीदा है कि अल्लाह तआला रसूल-ए-मक़बूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के बराबर किसी को पैदा कर सकता है लेकिन करेगा नहीं। उसके पीछे नमाज़ पढ़ना सही है या नहीं? | २२१
• नबियों के बाद सबसे अफ़ज़ल (श्रेष्ठ) सैयदना सिद्दीक-ए-अकबर फिर फ़ारूक़-ए-आज़म हैं (रज़ियल्लाहु अन्हुमा)। | २२९
• 'ग़ुनियत-उत-तालिबीन' सरकार-ए-ग़ौस की रचना नहीं है और इसमें मिलावट भी की गई है। | २२२
• धार्मिक समारोहों के लिए दिन तय करने का इनकार करना आजकल वहाबियों का लक्षण है। | २२९
• उल्लेखित पुस्तक में सभी हनफियों को नहीं, बल्कि कुछ को गुमराह कहा गया है। | २२३
• मीलाद शरीफ आयोजित करने और उसमें कयाम करने से सुन्नी और वहाबी की पहचान नहीं हो सकती क्योंकि अक्सर वहाबी भी कभी-कभी ऐसा कर लेते हैं। | २२९

فتاویٰ رضویہ جلد ۲۹

سزا و جزا کے بارے میں ایک فارسی منظوم سوال وجواب | ۲۱۲ بعض محتمل لفظ جب کسی مقبول سے صادر ہوں بحکمِ قرآن انہیں معنی حسن پر محمول کریں گے اور جب کسی مردود سے صادر ہوں جو صریح توہین کر چکا ہو تو اس کی خبیث عادت کی بناء پر معنی خبیث ہی مفہوم ہوں گے | ۲۲۴ میلاد شریف کا رواج کب سے ہے اور خاص ذکرِ پیدائش کے وقت تعظیماً قیام کرنا کہاں سے ثابت ہے | ۲۱۳ "لامھدی الّا عیسیٰ" حدیث صحیح نہیں | ۲۲۶ جس طرح فقہ میں چار اصول ہیں عقائد میں بھی چار اصول ہیں | ۲۱۴ حضرت امام مہدی اور حضرت عیسیٰ کے بارے میں حدیثیں حدِ تواتر تک پہنچی ہیں | ۲۲۶ فقہ میں اجماع اقویٰ الادلہ ہے | ۲۱۵ صحابہ کرام کے فضائل اور ان کی تعظیم کی فرضیت کا بیان | ۲۲۷ سوادِ اعظم یعنی اہل سنت کا کسی مسئلہ عقائد پر اتفاق اقویٰ الادلہ ہے | ۲۱۵ سیدنا حضرت امیر معاویہ رضی اللہ عنہ سے اجتہادی خطا ہوئی | ۲۲۸ بارہ خلفاء کے بارے میں پانچ سوالات پر مشتمل استفتاء کا مفصل جواب | ۲۱۶ ہر صحابہ کے ساتھ حضرت اور رضی اللہ تعالی عنہ کہا جائے گا | ۲۲۸ منکرِ میلاد شریف و تقبیلِ ابہامین کے پیچھے نماز پڑھنے کا شرعی حکم کیا ہے | ۲۱۹ کوئی غیر نبی کسی نبی کے برابر نہیں ہوسکتا۔ | ۲۲۸ مرتکبِ کبیرہ کو کافر کہنے والا خارجی اور نری کلمہ گوئی کو کافی جاننے والا نیچری ہے | ۲۲۰ مولیٰ علی رضی اللہ تعالی عنہ کو کسی نبی کے برابر ماننا کفرِ خالص ہے | ۲۲۸ اہل سنت کا مذہب | ۲۲۰ ایک افترائی مضحکہ خیز حکایت | ۲۲۸ زید کا عقیدہ ہے کہ اللہ تعالیٰ رسول مقبول صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے برابر پیدا کر سکتا ہے مگر کرے گا نہیں۔ اس کے پیچھے نماز پڑھنا درست ہے یا نہیں | ۲۲۱ انبیاء کے بعد سب سے افضل سیدنا صدیقِ اکبر پھر فاروقِ اعظم ہیں رضی اللہ تعالیٰ عنہما | ۲۲۹ غنیۃ الطالبین سرکارِ غوث کی تصنیف نہیں ہے نیز

اس میں الحاق بھی کر دیا گیا ہے | ۲۲۲ مذہبی تقریبات کے لیے تعیینِ یوم کا انکار آج کل وہابیہ کا شعار ہے | ۲۲۹ کتاب مذکور میں تمام حنفیہ کو نہیں بلکہ بعض کو گمراہ کہا گیا ہے | ۲۲۳ میلاد شریف کرانے اور اس میں قیام کرنے سے سنی وہابی کی پہچان نہیں ہو سکتی کیونکہ اکثر موقع پر وہابی بھی ایسا کر لیتے ہیں | ۲۲۹

Fatawa Razawiyya Volume 29

Page	Question / Topic (Left Column)	Ref	Question / Topic (Right Column)
235	Since the Master of the Universe (peace and blessings of Allah be upon him) is himself mercy, what is the benefit of sending mercy upon him?	230	Noah's Ark (peace be upon him) sailed in the month of Rajab.
236	The Noble Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) sees all states until the Day of Judgment.	231	Is a person a Sunni Hanafi or not who calls the maker of Ta'ziya an infidel, calls standing (Qiyam) and celebrating the birth (Mawlid) a bad innovation, and calls attending the death anniversary ceremonies (Urs) of elders a futile act?
236	What was the wisdom in taking a promise from the noble Prophets to believe in the Leader of the Prophets?	230	Who is more misguided among the Deobandis and the non-conformists (Ghayr Muqallids)?
236	Nothing is obligatory upon Allah, however, His favor is certain.	232	Is a person a Muslim or not who calls the shrines of saints heaps of dust, denies seeking help and assistance from their graves, declares saying 'Ya Rasul Allah' as polytheism, considers food offered for Fatiha and Niyaz as forbidden, and denies the knowledge of the unseen of the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him)?
237	Is absolute sainthood (Wilayah Mutlaqah) superior or specific prophethood (Nubuwwat-e-Khasah)?	232	To which school of thought do Maulvi Qasim Deobandi, Maulvi Rashid Ahmad Gangohi, Maulvi Ashraf Ali Thanwi, and Maulvi Mahmud Hasan Deobandi belong? What should be the attitude towards them?

Page	Question / Topic (Left Column)	Ref	Question / Topic (Right Column)
238	Absolute prophethood is thousands of degrees superior to the sainthood of any non-prophet saint.	233	A few insulting and blasphemous statements from Wahhabi books with references.
245	All the noble Companions (may Allah be pleased with them) were saints of Allah.	233	Proof of raising hands and praying with food in front.
247	Who is the most superior among the Companions?	234	Announcement of a two-hundred rupee reward in response to the one-hundred rupee reward of the Wahhabis.
247	Answer to a question regarding a blessed verse about the knowledge of the unseen (Ilm-e-Ghayb).	235	Proof of celebrating the Noble Birth (Milad Sharif) from the Holy Quran.
248	Answer to an inquiry regarding the followers of Ismail Dehlvi and Sayyid Ahmad Barelvi.	235	Writing of the treatise 'Shams-us-Salikeen' regarding the blessed assembly and standing.
	In the merits of actions, weak narrations are accepted by consensus.	235	

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

पृष्ठ	प्रश्न / विषय (बायां कॉलम)	सन्दर्भ प्रश्न / विषय (दायां कॉलम)
235	जब सैयदे कायनात (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) स्वयं रहमत हैं, तो उन पर रहमत भेजने का क्या लाभ है?	230 हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की कश्ती रजब में चली।
236	हुज़ूर अनवर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) कयामत तक के सभी हाल देखते हैं।	231 क्या वह व्यक्ति सुन्नी हनफी है या नहीं जो ताज़िया बनाने वाले को काफ़िर कहता है, कयाम और मौलूद को बुरी बिदअत कहता है, और बुजुर्गों के उर्स में हाज़िरी को व्यर्थ कार्य कहता है?
236	नबियों से इमामुल अम्बिया पर ईमान लाने का वादा लेने में क्या हिकमत थी?	230 देवबंदी और गैर-मुकल्लद में से ज़्यादा गुमराह कौन है?
236	अल्लाह तआला पर कुछ वाजिब नहीं है, फिर भी उसका फ़ज़्ल निश्चित है।	232 क्या वह व्यक्ति मुसलमान है या नहीं जो औलिया के मज़ारों को मिट्टी का ढेर कहे, उनकी कब्रों से मदद मांगने का इंकारी हो, 'या रसूलल्लाह' कहने को शिर्क कहे, फातिहा और नियाज़ के खाने को हराम समझे और रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के इल्म-ए-ग़ैब का इंकारी हो?
237	विलायत-ए-मुतलका अफज़ल है या नुबुव्वत-ए-खासा?	232 मौलवी कासिम देवबंदी, मौलवी रशीद अहमद गंगोही, मौलवी अशरफ अली थानवी और मौलवी महमूद हसन देवबंदी किस मज़हब के लोग हैं? उनके बारे में कैसा विचार रखना चाहिए?
238		233

पृष्ठ	प्रश्न / विषय (बायां कॉलम)	सन्दर्भ	प्रश्न / विषय (दायां कॉलम)
	मुतलक नुबुव्वत किसी भी गैर-नबी वली की विलायत से हजारों दर्जे अफ़ज़ल है।		वहाबी किताबों से हवाले के साथ कुछ गुस्ताख़ाना और कुफ़्रिया इबारतें।
245	सहाबा-ए-किराम (रज़ियल्लाहु अन्हुम) सभी अल्लाह के वली थे।	233	खाना सामने रखकर हाथ उठाकर दुआ मांगने का प्रमाण।
247	सहाबा में सबसे अफ़ज़ल कौन है?	234	वहाबियों के सौ रुपये इनाम के जवाब में दो सौ रुपये इनाम की घोषणा।
247	इल्म-ए-ग़ैब से संबंधित एक आयत-ए-करीमा के बारे में प्रश्न का उत्तर।	235	पवित्र कुरान से मिलाद शरीफ मनाने का प्रमाण।
248	इस्माईल देहलवी और सैयद अहमद बरेलवी के मानने वालों के बारे में इस्तफ्ता का जवाब।	235	मजलिस-ए-मुबारक और कयाम के बारे में रिसाला 'शम्सुस सालिकीन' का लेखन।
	फज़ाइल-ए-अमाल में ज़ईफ़ हदीसें आम सहमति से स्वीकार्य हैं।	235	

جب سید کائنات صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم خود رحمت ہیں تو آپ پر رحمت بھیجنے کا کیا فائدہ ہے ۲۳۰ **کشتی نوح علیہ السلام رجب میں چلی** ۲۳۵

حضور انور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم قیامت تک کے تمام احوال کو دیکھتے ہیں ۲۳۱ تعزیہ بنانے والے کو کافر، قیام و مولود کو بدعت سیئہ اور حاضری اعراسِ بزرگان کو فعل لغو کہنے والا شخص سُنی حنفی ہے یا نہیں ۲۳۶

انبیاء کرام سے امام الانبیاء پر ایمان لانے کا وعدہ لینے میں حکمت کیا تھی ۲۳۰ دیوبندی اور غیر مقلد میں سے زیادہ ضلالت پر کون ہے ۲۳۶

اللہ تعالیٰ پر کچھ واجب نہیں تاہم تفضل صحیح ہے ۲۳۲ جو شخص مزارات اولیاء کو تودہ خاک کہے، قبور اولیاء سے استمداد و استغاثہ کا منکر ہو، یارسول اللہ کہنے کو شرک قرار دے، طعام فاتحہ و نیاز کو حرام سمجھے اور رسالتمآب صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے علم غیب کا منکر ہو وہ شخص مسلمان ہے یا نہیں ۲۳۶

جب سید کائنات صلی اللہ

تعالیٰ علیہ وسلم خود

۲۳۵ رحمت ہیں تو آپ پر **۲۳۰ کشتی نوح علیہ السلام رجب میں چلی**

رحمت بھیجنے کا کیا

فائدہ ہے

مولوی قاسم دیوبندی، مولوی رشید احمد گنگوہی، مولوی

ولایت مطلقہ افضل ہے یا

۲۳۷ ۲۳۲ اشرف علی تھانوی اور مولوی محمود حسن دیوبندی کس

نبوت خاصہ

مذہب کے لوگ ہیں۔ ان کے ساتھ کیسا خیال رکھنا چاہیے

نبوت مطلقاً ہر ولی غیر

۲۳۸ نبی کی ولایت سے ۲۳۳ کتب وہابیہ سے چند گستاخانہ کفریہ عبارات باحوالہ

ہزاروں درجے افضل ہے

صحابہ کرام رضی اللہ

۲۴۵ تعالیٰ عنہم سب اولیاء کرام ۲۳۳ کھانا سامنے رکھ کر ہاتھ اٹھا کر دعا مانگنے کا ثبوت

تھے

وہابیہ کے سو روپے انعام کے مقابلے میں دوسو روپے

۲۴۷ افضل الصحابہ کون ہے ۲۳۴

انعام کا اعلان

علم غیب سے متعلق ایک

۲۴۷ آیت کریمہ کے بارے میں ۲۳۵ میلاد شریف منانے کا ثبوت قرآن مجید سے

سوال کا جواب

۲۴۸ ۲۳۵ تحریر رسالہ شمس السالکین دربارہ مجلسِ مبارک و قیام

جب سید کائنات صلی اللہ

تعالیٰ علیہ وسلم خود

۲۳۵ رحمت ہیں تو آپ پر ۲۳۰ کشتی نوح علیہ السلام رجب میں چلی

رحمت بھیجنے کا کیا

فائدہ ہے

اسمعیل دہلوی اور سید

احمد بریلوی کے معتقدوں

کے بارے میں استفتاء کا

جواب

فضائل اعمال میں ضعاف
۲۳۵
بالاجماع مقبول ہیں

Fatawa Rizwia - Volume 29

- Satan cannot take the form of the Holy Prophet (PBUH); however, he can deceive by taking the form of pious people, even appearing as God. (253) | Standing during a Milad gathering is commendable. (266)
- What is meant by eighteen thousand worlds? (253) | Observance of Sunni signs is certainly emphasized. (266)
- Were souls extinguished after the covenant of "Am I not your Lord?" (253) | What about praying behind an apostate? (267)
- The soul, once created, will never perish. (253) | A long inquiry regarding "belief in the unseen." (267)
- The idea of the soul originating with the body is a false philosophy of philosophers. (253) | When divine curse descends, the eyes of the heart go blind. (269)
- Definition of faith and perfect faith. (254) | The means of knowledge are three. (270)
- Reciting Durood-e-Taj and considering the Holy Prophet (PBUH) as the dispeller of calamities. (255) | Scientists themselves differ on hundreds of matters. (270)
- The luminous Prophet (PBUH) is present in Milad gatherings. (257) | A problem from Euclid. (270)
- The holy soul of the Holy Prophet (PBUH) often manifests in seventy thousand forms. (258) | A problem of arithmetic (Arshmatiqi). (270)
- Inquiry about the interpretation of several Quranic verses. (259) | A problem of algebra (Jabr-o-Muqabala). (270)
- Divine tidings are like divine knowledge; contradiction in them is impossible, but this is an impossibility due to an external factor, not a denial of power. (262) | Proof for standing in Milad and refutation of deniers. (272)
- There can be no deviation in the promises and warnings of Allah Almighty. (262) | Questions in the grave are to the soul, and the soul never dies. (273)
- Description of the greatness and excellence of the Companions (Sahaba) and the condemnation and deviance of those who call them greedy. (264) | Eloquent refutation of the wrong reasoning of a person who considers Hasan and Husain (RA) superior to the four Caliphs. (274)
- It is necessary to remain firm on one school of thought (madhhab); he who does not is an atheist or non-conformist (Ghair-Muqallid). (266) | The belief that

Hazrat Ali Murtaza (RA) is the best of the Ummah after the Messenger of Allah (PBUH) is not of the Ahl al-Sunnah but of the Rawafid. (277)

फतावा रज़विया - जिल्द 29

- शैतान हुज़ूर अकदस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का रूप धारण नहीं कर सकता, हाँ नेक लोगों की शक्ल बनकर धोखा दे सकता है बल्कि अपने आप को अल्लाह ज़ाहिर कर सकता है। (253) | मीलाद की मजलिस में खड़े होना मुस्तहब (पसंदीदा) है। (266)
- अठारह हज़ार आलम से क्या मुराद है? (253) | सुन्नी प्रतीकों का लिहाज़ करना यकीनन ताकीदी (ज़रुरी) है। (266)
- क्या मीसाक 'अलस्त' (क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूँ) के बाद रूहें मिटा दी गई थीं? (253) | मुर्तद (धर्मत्यागी) के पीछे नमाज़ कैसी? (267)
- रूह पैदा होने के बाद कभी खत्म नहीं होगी। (253) | 'ईमान बिल-ग़ैब' (अदृश्य पर विश्वास) के बारे में एक लंबी पूछताछ। (267)
- बदन के साथ रूह की उत्पत्ति का विचार दार्शनिकों का बातिल (गलत) ख्याल है। (253) | जब ईश्वरीय लानत उतरती है तो दिल की आँखें फूट जाती हैं। (269)
- ईमान की परिभाषा और कामिल ईमान। (254) | ज्ञान के तीन साधन हैं। (270)
- दुरूद-ए-ताज पढ़ना और हुज़ूर अनवर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को विपत्ति दूर करने वाला समझना। (255) | वैज्ञानिक खुद सैकड़ों बातों में आपस में मतभेद रखते हैं। (270)
- हुज़ूर पुर-नूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) मीलाद की महफ़िल में जलवागर होते हैं। (257) | यूक्लिड का एक मसला। (270)
- नबी करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की पवित्र रूह अक्सर सत्तर हज़ार रूपों में प्रकट होती है। (258) | अंकगणित (अरशमतीकी) का एक मसला। (270)
- कुछ कुरानी आयतों की व्याख्या के बारे में पूछताछ। (259) | बीजगणित (जबर-ओ-मुकाबला) का एक मसला। (270)
- ईश्वरीय समाचार ईश्वरीय ज्ञान के समान है, उनमें से किसी का विरोध मुमकिन नहीं, लेकिन यह बाहरी कारणों से असंभव है, शक्ति की कमी नहीं। (262) | मीलाद शरीफ के कयाम (खड़े होने) का सबूत और इनकार करने वालों का खंडन। (272)
- मौला अज़्वजल के वादों और धमकियों में कोई बदलाव मुमकिन नहीं। (262) | कब्र में सवाल रूह से होता है और रूह कभी नहीं मरती। (273)

- सहाबा किराम की महानता और श्रेष्ठता और उन्हें लालची कहने वाले की निंदा और पथभ्रष्टता का वर्णन। (264) | हसनैन करीमैन (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) को चारों खलीफ़ाओं से श्रेष्ठ बताने वाले व्यक्ति के गलत तर्क का जोरदार खंडन। (274)
- एक मज़हब पर अडिग रहना ज़रूरी है और जो एक मज़हब पर नहीं रहता, वह नास्तिक या गैर-मुक़ल्लिद है। (266) | यह अकीदा कि हज़रत अली मुर्तज़ा (रज़ियल्लाहु अन्हु) अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के बाद उम्मत में सबसे श्रेष्ठ हैं, अहले सुन्नत का नहीं बल्कि रवाफ़िज़ का है। (277)

- حضور اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کے ساتھ شیطان تمثیل نہیں کرسکتا، ہاں نیک لوگوں کی شکل بن کر دھوکا دے سکتا ہے بلکہ اپنے آپ کو اللہ ظاہر کرسکتا ہے (۲۵۳) | مجلس میلاد میں قیام مندوب ہے (۲۶۶)
- اٹھارہ ہزار عالم سے کیا مراد ہے (۲۵۳) | شعارِ سنیت کا لحاظ ضرور مؤکد ہے (۲۶۶)
- بعد میثاق الست بربکم کیا ارواح معدوم کر دی گئی تھیں (۲۵۳) | مرتد کے پیچھے نماز کیسی (۲۶۷)
- روح بعد ایجاد کبھی فنانہ ہوگی (۲۵۳) | ایمان بالغیب کے بارے میں ایک طویل استفتاء (۲۶۷)
- بدن کے ساتھ حدوث نفس خیال باطل فلاسفہ ہے (۲۵۳) | جب لعنت الٰہی اترتی ہے تو دل کی آنکھیں پھوٹ جاتی ہیں (۲۶۹)
- ایمان کی تعریف اور کامل ایمان (۲۵۴) | علم کے اسباب تین ہیں (۲۷۰)
- درود تاج پڑھنا اور حضور انور صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کو دافع بلاء سمجھنا (۲۵۵) | سائنس والے صدہا باتوں میں خود مختلف ہیں (۲۷۰)
- حضور پُر نور صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم مجلس میلاد میں جلوہ گر ہوتے ہیں (۲۵۷) | اقلیدس کا ایک مسئلہ (۲۷۰)
- نبی کریم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کی روح اقدس بارہا ستر ہزار صورتوں میں جلوہ گر ہوتی ہے (۲۵۸) | ارشما طیقی کا ایک مسئلہ (۲۷۰)
- چند قرآنی آیات کی تفسیر کے بارے میں استفسار (۲۵۹) | جبر و مقابلہ کا ایک مسئلہ (۲۷۰)

- خبر الٰہی مثلِ علمِ الٰہی ہے ان میں سے کسی کا خلاف ممکن نہیں مگر یہ استحالہ بالغیر ہے نفی قدرت نہیں کرتا (۲۶۲) | قیام میلاد شریف کا ثبوت اور منکرین کا رد (۲۷۲)
- مولا عزوجل کے وعدو وعید کسی میں تخلف ممکن نہیں (۲۶۲) | قبر میں سوال روح سے ہوتا ہے اور روح کبھی نہیں مرتی، (۲۷۳)
- صحابہ کرام کی عظمت و فضیلت اور انہیں لالچی کہنے والے کی مذمت و ضلالت کا بیان (۲۶۴) | حسنین کریمین رضی اللہ تعالٰی عنہما کو خلفاء اربعہ سے افضل قرار دینے والے شخص کے غلط استدلال کا ردِ بلیغ (۲۷۴)
- ایک مذہب پر قائم رہنا ضروری ہے اور جو ایک مذہب پر قائم نہیں رہتا، وہ دہریہ یا غیر مقلد ہے (۲۶۶) | یہ عقیدہ کہ حضرت علی مرتضیٰ رضی اللہ تعالٰی عنہ افضل ترین امت بعد رسول خدا صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم ہیں اہلسنت کا نہیں بلکہ روافض کا ہے (۲۷۷)

Fatawa Rizvia Volume 29

- The soul of a Muslim goes wherever it wishes after death. (281)
- Being the Creator is exclusively the work of Allah Almighty. He has neither given this authority to anyone nor can anyone possess any such authority. (289)
- Visiting graves is a Sunnah. (282)
- Why is a human being questioned? (291)
- Allah Almighty has granted His Beloved (peace and blessings of Allah be upon him) detailed knowledge of every atom of the first and the last, the East and the West, the Throne and the earth, what lies beneath the earth, and everything that has happened and will happen until the last days. (283)
- The existence of intention, will, and choice in humans is such a clear and self-evident matter that none but a madman can deny it. (291)
- It is desirable (Mustahab) to kiss the thumbs upon hearing the holy name [of the Prophet] during the Adhan (call to prayer). (283)
- Every person understands that there is definitely a difference between me and a stone. (291)
- Deliberately skipping the congregational prayer without a valid Sharia reason is a sin, and one who habitually does so is a transgressor (Fasiq) and misguided. (283)
- It is nowhere stated in the Great Qur'an "do not guide these individuals more," yes, it is certainly stated that guidance and misguidance are all by His will. (292)
- Answer to a question related to destiny (Taqdeer). (285)
- It is not necessary to know the reality of something in order to know it as truth. (292)
- Souls were not created from eternity (Azal). Yes, they were created two thousand years before the body. (285)
- The belief of the Ahl al-Sunnah is that man is neither completely compelled like a stone nor is he fully independent; rather, he is in a state between the two. (299)
- The treatise 'Thalj al-Sadr li-Iman al-Qadr' (A clear explanation of the issue of predestination and decree). (287)
- Why punishment and reward? (300)
- When a servant cannot do anything without the will of Allah Almighty, then why will there be accountability and questioning of the servant? (288)
- The Jews are those who have incurred [God's] anger. (302)

- By sending Messengers and revealing books, Allah Almighty has pointed out the beauty and ugliness of every matter, completed His favor, and left no room for any excuse. (288)
- Christians believe in three gods. (302)
- Magians (Zoroastrians) believe in two creators: Yazdan and Ahriman. (302)

Page 25 of 750

फ़तावा रज़विया खंड 29

- एक मुसलमान की आत्मा मृत्यु के बाद जहाँ चाहे जा सकती है। (281)
- स्रष्टा होना केवल अल्लाह सर्वशक्तिमान का ही कार्य है। उसने यह अधिकार न तो किसी को दिया है और न ही कोई ऐसा अधिकार प्राप्त कर सकता है। (289)
- कब्रों की ज़ियारत (दर्शन) करना सुन्नत है। (282)
- मनुष्य से पूछताछ क्यों की जाती है? (291)
- अल्लाह सर्वशक्तिमान ने अपने महबूब (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को पहले और बाद के सभी लोगों, पूरब और पश्चिम, अर्श और फर्श, पाताल और कयामत के दिन तक जो कुछ हुआ और होने वाला है, उसके कण-कण का विस्तृत ज्ञान प्रदान किया है। (283)
- मनुष्य में इरादा, इच्छा और चुनाव की शक्ति का होना इतना स्पष्ट और प्रत्यक्ष है कि पागल के अलावा कोई भी इसका खंडन नहीं कर सकता। (291)
- अज़ान के दौरान पवित्र नाम सुनकर अंगूठों को चूमना मुस्तहब (पसंदीदा) है। (283)
- हर व्यक्ति समझता है कि मुझमें और पत्थर में निश्चित रूप से अंतर है। (291)
- बिना किसी शरीयत के वैध कारण के जानबूझकर जमात (सामूहिक नमाज़) छोड़ना पाप है और इसकी आदत डालने वाला फासिक (पापी) और गुमराह है। (283)
- कुरान-ए-अजीम में कहीं भी यह नहीं कहा गया है कि 'इन लोगों को और अधिक मार्गदर्शन न दें', हाँ, यह निश्चित रूप से कहा गया है कि मार्गदर्शन और पथभ्रष्टता सब उसी की इच्छा से है। (292)
- भाग्य (तक़दीर) से संबंधित एक प्रश्न का उत्तर। (285)
- किसी बात को सत्य जानने के लिए उसकी वास्तविकता जानना आवश्यक नहीं है। (292)
- आत्माएं अनादि (अज़ल) से नहीं बनाई गई थीं। हाँ, वे शरीर से दो हज़ार वर्ष पूर्व बनाई गई थीं। (285)
- अहले सुन्नत का अकीदा यही है कि मनुष्य न तो पत्थर की तरह पूरी तरह मजबूर है और न ही पूरी तरह स्वतंत्र, बल्कि वह इन दोनों के बीच की एक स्थिति में है। (299)
- रिसाला 'थलजुल सदर लि-ईमानुल कद्र' (भाग्य और आदेश के मसले का स्पष्ट वर्णन)। (287)
- सजा और इनाम क्यों? (300)

- जब अल्लाह सर्वशक्तिमान की इच्छा के बिना बंदा कुछ भी नहीं कर सकता, तो फिर बंदे से जवाबदेही और पूछताछ क्यों होगी? (288)
- यहूदी वे हैं जिन पर अल्लाह का क्रोध हुआ। (302)
- अल्लाह सर्वशक्तिमान ने रसूल भेजकर, किताबें उतारकर, हर बात की अच्छाई और बुराई को बताकर अपनी नेमत (वरदान) पूरी कर दी और किसी भी बहाने की जगह नहीं छोड़ी। (288)
- ईसाई तीन ईश्वर मानते हैं। (302)
- पारसी (मजूसी) दो स्रष्टा मानते हैं: यज़दान और अहरिमन। (302)

مسلمان کی رُوح بعدِ انتقال جہاں چاہے جاتی ہے (۲۸۱) | خالق ہونا اللہ تعالیٰ ہی کا کام ہے۔ یہ اختیار نہ اس نے کسی کو دیا نہ اس کا کوئی اختیار پا سکتا ہے (۲۸۹) زیارتِ قبور سنت ہے (۲۸۲) | انسان سے بازپرس کیوں ہوتی ہے، (۲۹۱) اللہ تعالیٰ نے اپنے حبیب صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کو تمام اولین و آخرین، مشرق و مغرب عرش و فرش، ماتحت الثریٰ اور جملہ ما کان وما یکون الیٰ آخر الایام کے ذرے ذرے کا تفصیلی علم عطا فرمایا (۲۸۳) | انسان میں قصد و ارادہ و اختیار کا ہونا ایسا واضح و بدیہی امر ہے جس کا انکار نہیں کر سکتا مگر مجنون (۲۹۱) اذان میں نامِ اقدس سُن کر انگوٹھے چومنا مستحب ہے (۲۸۳) | ہر شخص سمجھتا ہے کہ مجھ میں اور پتھر میں ضرور فرق ہے (۲۹۱) بلا وجہ شرعی عمداً ترکِ جماعت گناہ ہے اور اس کا عادی فاسق گمراہ ہے (۲۸۳) | قرآنِ عظیم میں یہ کہیں نہیں فرمایا کہ ان اشخاص کو زیادہ ہدایت نہ کرو، ہاں یہ ضرور فرمایا ہے کہ ہدایت وضلالت سب اس کے ارادہ سے ہے (۲۹۲) تقدیر سے متعلق ایک سوال کا جواب (۲۸۵) | کسی بات کو حق جاننے کے لیے اس کی حقیقت کو جاننا لازم نہیں ہوتا (۲۹۲) روحیں ازل سے پیدا نہ ہوئیں۔ ہاں جسم سے دو ہزار برس پہلے بنیں (۲۸۵) | عقیدہ اہلسنت یہی ہے کہ انسان نہ تو پتھر کی طرح مجبورِ محض ہے نہ ہی خود مختار بلکہ ان دونوں کے درمیان میں ایک حالت ہے (۲۹۹) رسالہ ثلج الصدر لایمان القدر (مسئلہ قضا و قدر کا روشن بیان) (۲۸۷) | سزا و جزاء کیوں (۳۰۰) جب اللہ تعالیٰ کی مشیت کے بغیر بندہ کچھ بھی نہیں کر سکتا تو پھر بندے سے مواخذہ اور باز پرس کیوں ہو گی (۲۸۸) | یہود مغضوب علیہم ہیں (۳۰۲) اللہ تعالیٰ نے رسول بھیج کر، کتابیں اتار کر، ہر بات کا حُسن و قبح جتا کر اپنی نعمت تمام فرما دی

اور کسی عذر کی جگہ باقی نہ چھوڑی (۲۸۸) | نصاریٰ تین خدا مانتے ہیں (۳۰۲) | مجوسی دو خالق مانتے ہیں یزدان اور اہرمن (۳۰۲)

Fatawa Rizvia, Volume 29

Page 303: Treatise "Al-Tahbeer fi Bab al-Tadbeer" (Detailed discussion on the issue of planning) | Page 313: Many forms of planning are absolute obligations. Page 303: What is the ruling on calling someone who considers planning commendable a disbeliever (Kafir), and what is the sin and punishment for the one who calls them Kafir? | Page 314: Virtues of seeking and searching for a lawful livelihood. Page 304: In reality, everything that happens in the world is by the decree (Taqdeer) of Allah, glorified be He. | Page 318: Prohibition of abandoning work/earning. Page 305: Planning is never useless. | Page 318: Searching for lawful (halal), concern for livelihood, and utilizing means are by no means contrary to trust in God (Tawakkul), but rather exactly the will of Allah. Man should plan and put his trust in destiny. Page 305: The world is a realm of causes in which effects have been linked with causes. | Page 319: Planning is not outside of destiny, but is itself a destiny. Page 305: Divine practice (Sunnat-e-Ilahiyya) has been established that the effect is produced after the cause. | Page 321: Becoming completely engrossed in planning is forbidden and reprehensible for a man. Page 305: To rejoice in planning while forgetting destiny is a characteristic of disbelievers. | Page 325: Calling a Muslim a disbeliever is not a trivial matter. Page 305: To make planning purely futile, rejected, useless, and discarded is the work of one who is astray or insane. | Page 325: Repentance and renewal of marriage are mandatory for the one who calls a Muslim a disbeliever. Page 305: None were greater in trust (Tawakkul) than the Messengers (peace be upon them), nor did anyone have greater faith in destiny than them. | Page 327: The soul is pure in its original creation, then it becomes impure through bad beliefs and evil deeds and becomes deserving of punishment. Page 305: Prophets and Messengers always planned, showed its ways, and themselves strove for lawful earning to eat pure sustenance. | Page 328: Possibility is not a condition for obligation (Farz). Page 305: Support of the issue from Quranic verses. | Page 328: Debate in Paradise and Hell. Page 307: Support from blessed Hadiths. | Page 329: A baseless false story. Page 311: Evils of considering planning absolutely useless. | Page 332: Answer to a question about astronomy. Page 311: Many forms of planning are recommended (mandub) and Sunnah. | Page 333: All Prophets and Angels are innocent (Masoom). Page 311: Hadiths regarding supplication (dua) are mutawatir (widely transmitted). | Page 333: Hearing from afar and being present and seeing (Hazir o Nazir) is the glory of Allah's beloveds by His bestowal. Page 313: Using medicine is Sunnah. |

फ़तावा रज़विया, खंड 29

पृष्ठ 303: रिसालत-उत-तहरीर फी बाब अल-तदबीर (नियोजन के मुद्दे पर विस्तृत चर्चा) | पृष्ठ 313: नियोजन के कई रूप पूर्ण कर्तव्य (फ़र्ज़) हैं। पृष्ठ 303: नियोजन को सराहनीय मानने वाले को काफ़िर कहना कैसा है और काफ़िर कहने वाले पर क्या पाप और सज़ा है? | पृष्ठ 314: हलाल आजीविका की खोज और तलाश के गुण। पृष्ठ 304: वास्तव में, दुनिया में जो कुछ भी होता है वह अल्लाह, महिमा उसकी, की तक़दीर (भाग्य) से है। | पृष्ठ 318: कमाई छोड़ने की मनाही। पृष्ठ 305: नियोजन कभी बेकार नहीं होता। | पृष्ठ 318: हलाल की तलाश, आजीविका की चिंता और साधनों का उपयोग करना ईश्वर पर भरोसे (तवक्कुल) के बिल्कुल विपरीत नहीं है, बल्कि अल्लाह की इच्छा ही है। मनुष्य को नियोजन करना चाहिए और भाग्य पर भरोसा रखना चाहिए। पृष्ठ 305: दुनिया कारणों का एक क्षेत्र है जिसमें परिणामों को कारणों से जोड़ा गया है। | पृष्ठ 319: नियोजन भाग्य से बाहर नहीं है, बल्कि वह स्वयं एक भाग्य है। पृष्ठ 305: दैवीय प्रथा (सुन्नत-ए-इलाहिया) जारी है कि कारण के बाद परिणाम उत्पन्न होता है। | पृष्ठ 321: नियोजन में पूरी तरह से लीन हो जाना मनुष्य के लिए वर्जित और निंदनीय है। पृष्ठ 305: भाग्य को भूलकर नियोजन पर फूलना काफ़िरों का गुण है। | पृष्ठ 325: किसी मुसलमान को काफ़िर कहना कोई छोटी बात नहीं है। पृष्ठ 305: नियोजन को पूरी तरह से व्यर्थ, अस्वीकृत, फालतू और तिरस्कृत बनाना गुमराह या पागल का काम है। | पृष्ठ 325: मुसलमान को काफ़िर कहने वाले पर तौबा और निकाह का नवीनीकरण अनिवार्य है। पृष्ठ 305: रसूलों (उन पर शांति हो) से बढ़कर कोई तवक्कुल करने वाला नहीं था और न ही उनसे ज्यादा किसी का भाग्य पर ईमान है। | पृष्ठ 327: आत्मा मूल सृष्टि में शुद्ध है, फिर वह गलत मान्यताओं और बुरे कर्मों से अपवित्र हो जाती है और सजा की पात्र बन जाती है। पृष्ठ 305: अंबिया और रसूल हमेशा नियोजन करते थे, उसके रास्ते बताते थे और खुद हलाल कमाई में प्रयास करके पवित्र जीविका खाते थे। | पृष्ठ 328: कर्तव्य (फ़र्ज़) के लिए संभावना शर्त नहीं है। पृष्ठ 305: कुरानी आयतों से मुद्दे का समर्थन। | पृष्ठ 328: जन्नत और दोज़ख में बहस। पृष्ठ 307: मुबारक हदीसों से समर्थन। | पृष्ठ 329: एक निराधार झूठी कहानी। पृष्ठ 311: नियोजन को पूरी तरह से बेकार मानने की बुराइयाँ। | पृष्ठ 332: खगोल विज्ञान के बारे में एक प्रश्न का उत्तर। पृष्ठ 311: नियोजन के कई रूप वांछनीय (मंदूब) और सुन्नत हैं। | पृष्ठ 333: सभी नबी और फरिश्ते मासूम (पाप रहित) हैं। पृष्ठ 311: दुआ की हदीसें मुतवातिर (व्यापक रूप से प्रसारित) हैं। | पृष्ठ 333: दूर से सुनना और हाज़िर-ओ-नाज़िर होना अल्लाह की देन से उसके महबूबों की शान है। पृष्ठ 313: दवा का उपयोग करना सुन्नत है। |

पृष्ठ 26/750

فتاویٰ رضویہ ، جلد ۲۹

۳۰۳ رسالۃ التحبیر بباب التدبیر (مسئلہ تدبیر پر سیر حاصل بحث) | ۳۱۳ تدبیر کی بہت صورتیں فرض قطعی ہیں ۳۰۳ تدبیر کو مستحسن جاننے والے کو کافر کہنا کیسا ہے اور کافر کہنے والے پر کیا گناہ و تعزیر ہے | ۳۱۴ حلال معاش کی طلب و تلاش کی فضیلتیں ۳۰۴ فی الواقع عالم میں جو کچھ ہوتا ہے سب اللہ جل جلالہ کی تقدیر سے ہے۔ | ۳۱۸ ترک کسب سے ممانعت ۳۰۵ تدبیر زنہار معطل نہیں۔ | ۳۱۸ تلاش حلال، فکر معاش اور تعاطی اسباب ہرگز منافی توکل نہیں بلکہ عین مرضی الٰہی ہے آدمی تدبیر کرے اور بھروسا تقدیر پر رکھے۔ ۳۰۵ دنیا عالم اسباب ہے جس میں مسببات کو اسباب کے ساتھ جوڑ دیا گیا ہے | ۳۱۹ تدبیر تقدیر سے باہر نہیں بلکہ وہ خود ایک تقدیر ہے ۳۰۵ سنت الٰہیہ جاری ہوئی کہ سبب کے بعد مسبب پیدا ہوتا ہے | ۳۲۱ آدمی کا ہمہ تن تدبیر میں منہمک ہو جانا ممنوع و مذموم ہے ۳۰۵ تقدیر کو بھول کر تدبیر پر پھولنا کفار کی خصلت ہے | ۳۲۵ مسلمان کو کافر کہنا سہل بات نہیں ۳۰۵ تدبیر کو محض عبث و مطرود اور فضول و مردود بنانا گمراہ یا مجنون کا کام ہے | ۳۲۵ مسلمان کو کافر کہنے والے پر توبہ اور تجدید نکاح لازم ہے ۳۰۵ حضرات مرسلین صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم سے بڑھ کر کوئی متوکل نہیں اور نہ ہی ان سے زیادہ کسی کا تقدیر پر ایمان ہے | ۳۲۷ روح اصل خلقت میں پاک ہے پھر بداعتقادی و بد عملی سے ناپاک ہو کر مستحق عذاب ہو جاتی ہے ۳۰۵ انبیاء و مرسلین ہمیشہ تدبیر فرماتے، اس کی راہیں بتاتے اور خود کسب حلال میں سعی فرما کر رزق طیب کھاتے تھے | ۳۲۸ فرض کے لیے امکان شرط نہیں ۳۰۵ آیات قرآنیہ سے مسئلہ کی تائید | ۳۲۸ جنت و دوزخ میں مناظرہ ۳۰۷ احادیث مبارکہ سے تائید | ۳۲۹ ایک بے اصل جھوٹی حکایت ۳۱۱ تدبیر کو مطلقاً مہمل ماننے کی قباحتیں | ۳۳۲ علم ہیئت کے بارے میں ایک سوال کا جواب ۳۱۱ تدبیر کی

بہت سی صورتیں مندوب و مسنون ہیں | ۳۳۳ تمام انبیاء و ملائکہ معصوم ہیں ۳۱۱ دعا کی حدیثیں متواتر ہیں | ۳۳۳ دور سے سننا اور حاضر و ناظر ہونا اللہ تعالیٰ کی عطا سے اس کے محبوبوں کی شان ہے ۳۱۳ استعمال دوا سنت ہے |

Vol 29 Fatawa-e-Razvia

[Table of Contents - Page 27 of 750]

Page	Left Column Content	Page	Right Column Content	Page
351	Presiders of the assembly of honor and status	334	It is permissible to rub the dust of shrines on the face	351
352	Fourth Belief (Fourth Creed)	334	Circumambulation of reverence is only for the Exalted Kaaba	352
352	The highest rank of the close angels	334	All prayers of the Prophets (peace be upon them) are accepted	352
354	Fifth Belief (Fifth Creed) - Companions of the Leader of Messengers and the Noble Household	334	Visiting the shrines of the saints is the Sunnah of the Prophet and the Sunnah of the Companions	354
		334	The meaning of 'Unseen' (Ghaib)	
363	Necessary Warning	334	Evidence of the Knowledge of the Unseen for the Prophets	363
363	It is obligatory to mention the Noble Companions only with goodness whenever they are mentioned	334	The meaning of 'Prophet' (Nabi)	363
363	Sixth Belief (Sixth Creed)	335	In what sense does Mother of the Believers Syeda Aisha Siddiqa deny seeing Allah Almighty?	363
364	The Ten Promised Paradise and the Four Caliphs (May Allah be pleased with them)	335	The Great Imam is included among the leaders of the scholars	364
375	Seventh Belief (Seventh Creed)	335	According to the People of Sunnah, the mistake of Ameer Muawiyah was an error of judgment; criticism of judgment is not permissible. Errors of judgment are of two types: established and rejected.	375
375		336		375

Page	Left Column Content	Page	Right Column Content	Page
	Disputes of the Noble Companions (May Allah be pleased with them)		Interference in the disputes of the Noble Companions is prohibited	
380	Eighth Belief (Eighth Creed)	342	The purpose of Hazrat Imam Hasan Mujtaba (May Allah be pleased with him) handing over the caliphate to Ameer Muawiyah (May Allah be pleased with him) was peace and cessation of war	380
380	Leadership of Siddiq-e-Akbar (May Allah be pleased with him)	339	Treatise 'Belief of the Friends regarding the Beautiful, the Chosen One, the Family and the Companions' (A brilliant explanation of the ten true beliefs of the People of Sunnah and the Group)	380
382	Ninth Belief (Ninth Creed)	339	First Belief (First Creed)	382
382	Essentials of Faith	339	The Essence and Attributes of Allah Almighty	382
385	Grand Benefit	345	Second Belief (Second Creed)	385
385	Accepted matters are of four types: 1. Essentials of faith. 2. Essentials of the People of Sunnah's creed. 3. Established facts. 4. Decisive matters, probable nuances.	345	The Highest and the Most Exalted	385
		351	Third Belief (Third Creed)	

खंड २९ फ़तावा-ए-रज़विया

[विषय-सूची - पृष्ठ ७५० का २७]

पृष्ठ	बायां कॉलम सामग्री	पृष्ठ	दायां कॉलम सामग्री	पृष्ठ
३५१	इज़्ज़त और रुतबे की महफ़िल के सदर-नशीन	३३४	मज़ार की मिट्टी चेहरे पर मलना जायज़ है	३५१
३५२	अकीदा-ए-राबिया (चौथा अकीदा)	३३४	ताज़ीमी तवाफ़ केवल काबा मुअज़्ज़मा का है	३५२
३५२	मक़र्रब फ़रिश्तों का उच्चतम स्तर	३३४	अंबिया अलैहिमुस्सलाम की सभी दुआएँ मक़बूल हैं	३५२
३५४	अकीदा-ए-खामिसा (पांचवां अकीदा) - सैयदुल मुर्सलीन के साथी और अहले बैत-ए-किराम	३३४	मज़ार-ए-औलिया पर हाज़िरी सुन्नत-ए-रसूल और सुन्नत-ए-सहाबा है	३५४
		३३४	ग़ैब का अर्थ	
३६३	आवश्यक चेतावनी	३३४	अंबिया के लिए इल्म-ए-ग़ैब का प्रमाण	३६३
३६३	सहाबा-ए-किराम का ज़िक्र जब भी हो, भलाई के साथ ही होना फ़र्ज़ है	३३४	नबी का अर्थ	३६३
३६३	अकीदा-ए-सादिसा (छठा अकीदा)	३३५	उम्मुल मोमिनीन सैयदा आयशा सिद्दीका किस अर्थ में अल्लाह तआला के दीदार (रूत) का इंकार फ़रमाती हैं	३६३
३६४	अशरा मुबश्शरा और खुलफ़ा-ए-अरबा (रज़ि.)	३३५	इमाम-ए-आज़म विद्वानों के सरदारों में शामिल हैं	३६४
३७५	अकीदा-ए-साबिया (सातवां अकीदा)	३३५	अहले सुन्नत के नज़दीक अमीर मुआविया की खता इस्तेहादी खता थी; इस्तेहाद पर ताना देना जायज़ नहीं। इस्तेहादी खता दो प्रकार की होती है: मुकर्रर और मुनकर।	३७५
३७५		३३६		३७५

पृष्ठ	बायां कॉलम सामग्री	पृष्ठ	दायां कॉलम सामग्री	पृष्ठ
	सहाबा-ए-किराम (रज़ि.) के आपसी विवाद		सहाबा-ए-किराम के बीच के विवादों में हस्तक्षेप हराम है	
३८०	अकीदा-ए-सामिना (आठवां अकीदा)	३४२	हज़रत इमाम हसन मुजतबा (रज़ि.) ने जो खिलाफत अमीर मुआविया (रज़ि.) के सुपुर्द की, उसका उद्देश्य शांति और युद्ध विराम था	३८०
३८०	सिद्दीक़-ए-अकबर (रज़ि.) की इमामत	३३९	रिसाला 'एतेकाद-उल-अहबाब फ़िल जमील वल मुस्तफ़ा वल आल वल असहाब' (अहले सुन्नत व जमात के दस सच्चे अक़ीदों का उज्ज्वल वर्णन)	३८०
३८२	अकीदा-ए-तासिया (नौवां अकीदा)	३३९	अकीदा-ए-ऊला (पहला अकीदा)	३८२
३८२	दीन की ज़रूरतें	३३९	अल्लाह तआला की ज़ात और सिफ़ात	३८२
३८५	बड़ा लाभ (फ़ायदा-ए-जलीला)	३४५	अकीदा-ए-सानिया (दूसरा अकीदा)	३८५
३८५	मानी हुई बातें चार प्रकार की होती हैं: १. दीन की ज़रूरतें। २. अहले सुन्नत मज़हब की ज़रूरतें। ३. साबितात। ४. मुहकमा, ज़नियात मोह्तमेला।	३४५	सबसे आला और सबसे औला	३८५
		३५१	अकीदा-ए-सालिसा (तीसरा अकीदा)	

جلد ۲۹ فتاویٰ رضویہ

[فہرست مضامین - صفحہ ۲۷ از ۷۵۰]

صفحہ	بائیں کالم کے مضامین	صفحہ	دائیں کالم کے مضامین	صفحہ
۳۵۱	صدر نشینان بزم عز و جاہ	۳۳۴	مزارات کی مٹی منہ پر ملنا جائز ہے	۳۵۱
۳۵۲	عقیدہ رابعہ (چوتھا عقیدہ)	۳۳۴	طواف تعظیمی صرف کعبہ معظمہ کا ہے	۳۵۲
۳۵۲	اعلیٰ طبقہ ملائکہ مقربین	۳۳۴	انبیاء علیہم الصلوٰۃ والسلام کی سب دعائیں مقبول ہیں	۳۵۲
۳۵۴	عقیدہ خامسہ (پانچواں عقیدہ) - اصحاب سید المرسلین واہل بیت کرام۔	۳۳۴	مزارات اولیاء پر حاضری سنت رسول و سنت صحابہ ہے	۳۵۴
		۳۳۴	غیب کا معنی	
۳۶۳	تنبیہ ضروری	۳۳۴	انبیاء کے لیے علم غیب کا ثبوت	۳۶۳
۳۶۳	صحابہ کرام کا ذکر جب بھی ہو خیر کے ساتھ ہی ہونا فرض ہے	۳۳۴	نبی کا معنی	۳۶۳
۳۶۳	عقیدہ سادسہ (چھٹا عقیدہ)	۳۳۵	ام المومنین سیدہ عائشہ صدیقہ کس معنی میں رؤیت باری تعالیٰ کا انکار فرماتی ہیں	۳۶۳
۳۶۴	عشرہ مبشرہ و خلفاء اربعہ رضی اللہ تعالیٰ عنہم	۳۳۵	امام اعظم سرداران علماء میں داخل ہیں	۳۶۴

صفحہ	بائیں کالم کے مضامین	صفحہ	دائیں کالم کے مضامین	صفحہ
			اہلسنت کے نزدیک امیر معاویہ کی خطا	
			خطاء اجتہادی تھی اجتہاد پر طعن جائز	
۳۷۵	عقیدہ سابعہ (ساتواں عقیدہ)	۳۳۵	نہیں خطاء اجتہادی دو قسم پر ہے۔ مقرر و	۳۷۵
			منکر	
			مشاجرات صحابہ کرام رضی اللہ	
۳۷۵		۳۳۶	مشاجرات صحابہ کرام میں مداخلت حرام	۳۷۵
			تعالیٰ عنہم	
			حضرت امام حسن مجتبیٰ رضی اللہ تعالیٰ	
			عنہ نے جو خلافت امیر معاویہ رضی اللہ	
۳۸۰	عقیدہ ثامنہ (آٹھواں عقیدہ)	۳۴۲	تعالیٰ عنہ کے سپرد فرمائی اس سے	۳۸۰
			مقصود صلح و بندش جنگ تھا	
			رسالہ اعتقاد الاحباب فی الجمیل	
	امامت صدیق اکبر رضی اللہ تعالیٰ		والمصطفٰی والآل و الاصحاب (اہلسنت و	
۳۸۰		۳۳۹	جماعت کے دس سچے معتقدات کا روشن	۳۸۰
	عنہ		بیان)	
۳۸۲	عقیدہ تاسعہ (نواں عقیدہ)	۳۳۹	عقیدہ اولیٰ (پہلا عقیدہ)	۳۸۲
۳۸۲	ضروریات دین	۳۳۹	ذات و صفات باری تعالیٰ	۳۸۲
۳۸۵	فائدہ جلیلہ	۳۴۵	عقیدہ ثانیہ (دوسرا عقیدہ)	۳۸۵
	مانی ہوئی باتیں چار قسم ہوتی ہیں			
۳۸۵	۱۔ ضروریات دین ۲۔ ضروریات	۳۴۵	سب سے اعلیٰ و سب سے اولیٰ	۳۸۵

صفحہ	بائیں کالم کے مضامین صفحہ	دائیں کالم کے مضامین صفحہ
	مذہب اہل سنت ۳۔ ثابتات ۴۔	
	محکمہ، ظنیات محتملہ	
۳۵۱		عقیدہ ثالثہ (تیسرا عقیدہ)

Fatawa Razawiyya (Volume 29)

Main Topic / Detail	Serial No.	Topic	Page No.
In the research of the author (Mercy be upon him), the application of the term 'Aalim-ul-Ghaib' (Knower of the Unseen) is specific to Allah Almighty, as it commonly implies knowledge by essence.	382	The Tenth Belief (Aqeeda-e-Ashirah)	405
All the mysteries of space and existence (Makan-o-Mayakun) were revealed to the Holy Prophet (peace be upon him).	386	Shariat and Tariqat	408
Explanation of a statement by Mulla Ali Qari.	390	Why did Prophet Moses (AS), despite being a Prophet, wish to be a follower of the Master of the Universe (SAW)?	408
Rimah al-Qahhar ala Kufr al-Kuffar (Preface to 'Khaalis al-I'tiqad').	391	Is the rank of common believers higher than common angels or not?	411
Reason for writing the treatise 'Khaalis al-I'tiqad' and its detailed background.	391	Explanation of common believers.	412
Two strategies of the infidelity party.	392	Taqlid (following a school of jurisprudence) is an absolute obligation.	413
First strategy: Counter-argument with a similar example.	393	The one who does not follow Fiqh (jurisprudence) is a devil.	413
Matters are of three types: Essentials of religion, essentials of Sunni beliefs, and matters of disagreement among Sunni scholars.	393	The evils of not following Fiqh.	413
	393		414

Main Topic / Detail	Serial No.	Topic	Page No.
Categories and rulings of the knowledge of the unseen (Ilm-ul-Ghaib).		Saying 'Amin' loudly in prayer is not correct.	
The deceits of the Wahhabis.	394	Respect is shown sometimes by standing and sometimes by sitting with etiquette.	416
The theft and stubbornness of Munawwar Ali Rampuri, author of Ghayat-ul-Mamool.	395	Answer to a question based on the slander, ignorance, misunderstanding, and dishonesty of Rama Singham Arya.	418
Munawwar Ali Rampuri's 'Bakaff-e-Chiraghi' (Lamp in hand).	396	The possessor of spiritual insight (Kashf) is a Mu'tazilite.	419
Munawwar Ali Rampuri's 'Katar Byunt' (Manipulation/Cutting and Splicing).	396	Discussion on the issue of forgiveness of sins and detail of the Arya's objections and their answers.	419
Sharmili Jhanoli.	402	Rama Singham is no longer an Arya but a Christian, hence answering the said question in a different style while directing it towards Christians.	420
Second strategy.	402	Proof of bestowed knowledge of the unseen (Ilm-e-Ghaib Ata'i) for the Holy Prophet (SAW).	421

फ़तावा रज़विया (खंड 29)

मुख्य विषय / विवरण	क्रमांक	विषय	पृष्ठ संख्या
लेखक (रहमतुल्लाह अलैह) के शोध में, 'आलिम-उल-ग़ैब' शब्द का प्रयोग अल्लाह तआला के साथ विशिष्ट है क्योंकि इससे सामान्यतः स्वयं का ज्ञान (इल्म-बिज़-ज़ात) समझा जाता है।	382	दशम अक़ीदा (अक़ीदा-ए-आशिरह)	405
हुज़ूर अक़दस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर स्थान और समय (मकान-ओ-मायकून) के सभी ग़ैब प्रकट कर दिए गए।	386	शरीअत और तरीक़त	408
मुल्ला अली क़ारी के एक कथन की व्याख्या।	390	पैगंबर होने के बावजूद हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) ने सैयदे आलम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का उम्मती होने की इच्छा क्यों की?	408
रिमाह अल-क़हार अली कुफ़्र अल-कुफ़्फ़ार (भूमिका 'ख़ालिस अल-एतिकाद')।	391	क्या सामान्य मोमिनों का दर्जा सामान्य फ़रिश्तों से अधिक है या नहीं?	411
रिसाला 'ख़ालिस अल-एतिकाद' के लेखन का कारण और विस्तृत पृष्ठभूमि।	391	सामान्य मोमिनों की व्याख्या।	412
कुफ़्र पार्टी की दो रणनीतियाँ।	392	तक़लीद क़तई फ़र्ज़ है।	413
पहली रणनीति: समान तर्क के साथ प्रतिवाद।	393	फ़िक़्ह को न मानने वाला शैतान है।	413
मसले तीन प्रकार के होते हैं: धर्म की आवश्यकताएँ सुन्नी अक़ीदों की आवश्यकताएँ और सुन्नी विद्वानों के बीच मतभेद वाले मसले।	393	फ़िक़्ह को न मानने की बुराइयाँ।	413

मुख्य विषय / विवरण	क्रमांक	विषय	पृष्ठ संख्या
इल्म-उल-ग़ैब (परोक्ष ज्ञान) की श्रेणियाँ और आदेश।	393	नमाज़ में ज़ोर से 'आमीन' कहना सही नहीं है।	414
वहाबियों की चालबाजियाँ।	394	सम्मान कभी खड़े होकर और कभी अदब से बैठने से होता है।	416
'ग़ायत-उल-मामूल' के लेखक मुनवर अली रामपूरी की चोरी और ज़बरदस्ती।	395	रामा सिंघम आर्य के मिथ्यारोप, अज्ञानता, नाफ़हमी और बेईमानी पर आधारित एक प्रश्न का उत्तर।	418
मुनवर अली रामपूरी की 'बकफ़-ए-चराग़ी' (हाथ में चिराग)।	396	'साहब-ए-कश्फ़' मुअतज़ली है।	419
मुनवर अली रामपूरी की 'काट-छाँट' (कतर व्योंत)।	396	पाप क्षमा (मग़फ़िरत-ए-ज़म्ब) के मसले पर चर्चा और आर्य के आपत्तियों और उनके उत्तरों का विवरण।	419
शर्मीली झनौली।	402	रामा सिंघम अब आर्य नहीं ईसाई है, इसलिए उक्त प्रश्न का उत्तर दूसरे ढंग से ईसाइयों की ओर निर्देशित करते हुए।	420
दूसरी रणनीति।	402	हुज़ूर अनवर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के लिए प्रदान किए गए परोक्ष ज्ञान (इल्म-ए-ग़ैब अताई) का प्रमाण।	421

تفصیل / ذیلی عنوان	نمبر شمار
مصنف علیہ الرحمہ کی تحقیق میں لفظ عالم الغیب کا اطلاق حضرت عزت عز جلالہ کے ساتھ خاص ہے کہ اس سے عرفاً علم بالذات متبادر ہے	۳۸۲
حضور اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم پر مکان و مایکون کے تمام غیب منکشف فرمادیئے گئے	۳۸۶
ملا علی قاری کی ایک عبارت کی توجیہ	۳۹۰
رماح القہار علی کفر الکفار (تمہید "خالص الاعتقاد")	۳۹۱
رسالہ "خالص الاعتقاد" کی وجہ تصنیف اور تفصیلی پس منظر	۳۹۱

عنوان	صفحہ نمبر
عقیدہ عاشرہ (دسواں عقیدہ)	۴۰۵
شریعت و طریقت	۴۰۸
نبی ہونے کے باوجود سید نا موسیٰ علیہ الصلوۃ والسلام نے سید عالم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کا امتی ہونے کی خواہش کیوں کی	۴۰۸
عوام مومنین سے عوام ملائکہ کا مرتبہ زیادہ ہے یا نہیں	۴۱۱
عوام مومنین کی تشریح	۴۱۲

تفصیل / ذیلی عنوان	نمبر شمار
کفر پارٹی کی دو تدبیریں	۳۹۲
تدبیر اول معارضہ بالمثل	۳۹۳
مسائل تین قسم کے ہوتے ہیں۔ ضروریات دین، ضروریات عقائد اہل سنت۔ علمائے اہلسنت میں مختلف فیہ	۳۹۳
مسائل علم غیب کے اقسام و احکام	۳۹۳
وہابیہ کی مکاریاں	۳۹۴
غایۃ المامول والے منور علی رامپوری کی چوری اور سر زوری	۳۹۵
منور علی رامپوری کی بکف چراغی	۳۹۶
منور علی رامپوری کی کتر بیونت	۳۹۶
شرمیلی جھانولی	۴۰۲

عنوان	صفحہ نمبر
تقلید فرض قطعی ہے	۴۱۳
فقہ کو نہ ماننے والا شیطان ہے	۴۱۳
فقہ کو نہ ماننے کی قباحتیں	۴۱۳
آمین بالجہور نماز میں درست نہیں	۴۱۴
تعظیم کبھی قیام میں اور کبھی باادب بیٹھنے سے ہوتی ہے۔	۴۱۶
راما سنکھم آریہ کے افتراء و جہالت و نافہمی و بے ایمانی پر مبنی ایک سوال کا جواب	۴۱۸
صاحب کشف معتزلی ہے	۴۱۹
مسئلہ مغفرت ذنب کی بحث اور اس کے بارے میں آریہ کے اعتراضات اور ان کے جوابات کی تفصیل	۴۱۹
راما سنکھم اب آریہ نہیں نصرانی ہے لہذا روئے جواب جانب نصاریٰ کرتے	۴۲۰

نمبر شمار	تفصیل / ذیلی عنوان	صفحہ نمبر
	عنوان	
	ہوئے سوال مذکور کا جواب باسلوب دیگر	
	حضور انور صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کے لیے علم غیب عطائی کا ثبوت	۴۲۱
۴۰۲	دوسری تدبیر	

Fatawa Rizvia, Volume 29

- First letter from Hazrat Syed Hussain Haider Miyan Marehravi to Aala Hazrat (Allah's mercy be upon him) | The division of knowledge into 'essential' (zati) and 'bestowed' (ata'i) is certain, and the division into 'encompassing' (muhit) and 'non-encompassing' (ghair muhit) is obvious. [Page 444 / 429]
- Second letter | Only essential knowledge and encompassing knowledge are worthy of being exclusive to Allah the Almighty. [Page 444 / 430]
- Risala Khalis-ul-I'tiqad (A great and reasoned book on the issue of knowledge of the unseen, consisting of one hundred and twenty proofs) | References and clarifications of the noble Imams. [Page 445 / 433]
- Epistle of the author (Allah's mercy be upon him) addressed to Hazrat Syed Hussain Haider Miyan Marehravi (Allah the Almighty's mercy be upon him) | Three exquisite interpretations of the noble verse "La A'lamu al-Ghaib" (I do not know the unseen). [Page 450 / 433]
- First Point | Fourth Point [Page 450 / 434]
- Slanders and fabrications of the opponents | Collective issues related to the knowledge of the unseen (Ilm-ul-Ghaib). [Page 450 / 434]
- Second Point | The knowledge of all creation does not have even that relationship with Divine knowledge which exists between millions of oceans and one ten-millionth part of a tiny drop. [Page 450 / 438]
- Evidences for bestowing knowledge of the unseen to servants and the meaning of verses of negation | The relationship of the finite to the finite is necessary. [Page 450 / 438]
- Which knowledge of the unseen is the exclusive attribute of Allah the Almighty? | Whatever is within two boundaries is all finite. [Page 451 / 438]
- It is absolutely true that Prophets (peace and blessings be upon them) are bestowed with non-encompassing knowledge of the unseen by Allah the Almighty's gift | Detailed knowledge of the actually infinite can never be attained by creation. [Page 451 / 438]
- Faith is confirmation (tasdiq), and confirmation is knowledge; how is it possible to have faith in something of which there is no knowledge? | Beliefs of the Wahhabis regarding the knowledge of the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him). [Page 451 / 439]
- References | Fifth Point [Page 453 / 439]

- Increases in wraths upon the Wahhabis | Controversial boundaries of the knowledge of the unseen and the way of the Gnostics. [Page 453 / 443]
- Third Point | The collection of knowledge of 'what was and what will be' (Ma Kana wa Ma Yakunu) is just one wave of the ocean of the knowledge of Mustafa (peace and blessings of Allah be upon him). [Page 453 / 444]
- Division of knowledge into essential and bestowed and clarifications of the scholars | References of Imams and scholars regarding the knowledge of 'what was and what will be'. [Page 456 / 444]
- A 'Wali Fard' (unique saint) dominates the entire elemental physical existence. [Page 458]

फ़तावा रज़विया, जिल्द 29

- पहला पत्र हज़रत सैय्यद हुसैन हैदर मियाँ मारहरवी का आला हज़रत रहमतुल्लाह अलैहा के नाम | इल्म के ज़ाती और अताई होने का विभाजन यकीनी है और मुहीत व ग़ैर मुहीत की तरफ विभाजन स्पष्ट है। [पृष्ठ 444 / 429]
- दूसरा पत्र | अल्लाह तआला के साथ विशेष होने के योग्य केवल इल्म-ए-ज़ाती और इल्म-ए-मुहीत है। [पृष्ठ 444 / 430]
- रिसाला खालिसुल एतिक़ाद (ग़ैब के इल्म के मसले पर महान और दलीलों से भरी किताब जो एक सौ बीस दलीलों पर आधारित है) | आइम्मा-ए-किराम के हवाले और स्पष्टीकरण। [पृष्ठ 445 / 433]
- लेखक रहमतुल्लाह अलैह का पत्र हज़रत सैय्यद हुसैन हैदर मियाँ मारहरवी रहमतुल्लाह तआला अलैह के नाम | आयत करीमा "ला आलमु ग़ैब" की तीन उत्कृष्ट व्याख्याएँ। [पृष्ठ 450 / 433]
- पहला मामला | चौथा मामला [पृष्ठ 450 / 434]
- विरोधियों के आरोप और झूठी बातें | ग़ैब के इल्म से संबंधित सामूहिक मुद्दे। [पृष्ठ 450 / 434]
- दूसरा मामला | तमाम मखलूक (सृष्टि) के ज्ञान का ईश्वरीय ज्ञान के साथ वह संबंध भी नहीं है जो करोड़ों करोड़ों समुद्रों का एक छोटी सी बूंद के करोड़वें हिस्से से है। [पृष्ठ 450 / 438]
- बंदों को ग़ैब का ज्ञान प्रदान किए जाने के साक्ष्य और नकारात्मक आयतों का अर्थ | सीमित का सीमित से संबंध निश्चित है। [पृष्ठ 450 / 438]
- कौन सा ग़ैब का इल्म अल्लाह तआला की विशेषता है। | जो कुछ दो सीमाओं के भीतर है, वह सब सीमित है। [पृष्ठ 451 / 438]
- अल्लाह तआला के प्रदान करने से अंबिया अलैहिमुस्सलातु वत्तस्लीमात को ग़ैर-मुहीत ग़ैबी ज्ञान प्राप्त होना निश्चित रूप से सत्य है | वास्तव में अनंत का विस्तृत ज्ञान सृष्टि को मिल ही नहीं सकता। [पृष्ठ 451 / 438]
- ईमान तस्दीक (पुष्टि) है और तस्दीक इल्म है, जिस चीज़ का इल्म ही न हो उस पर ईमान लाना कैसे संभव है। | रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इल्म के बारे में वहाबियों के अकीदे। [पृष्ठ 451 / 439]
- संदर्भ | पाँचवां मामला [पृष्ठ 453 / 439]

- वहाबियों पर क्रोध की वृद्धि | ग़ैब के इल्म की विवादास्पद सीमाएँ और सूफियों का मार्ग। [पृष्ठ 453 / 443]
- तीसरा मामला | 'मा कान व मा यकून' (जो हुआ और जो होगा) के इल्म का संग्रह, मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज्ञान के समुद्र की एक लहर है। [पृष्ठ 453 / 444]
- इल्म का ज़ाती और अताई में विभाजन और विद्वानों के स्पष्टीकरण | 'मा कान व मा यकून' के इल्म से संबंधित इमामों और विद्वानों के संदर्भ। [पृष्ठ 456 / 444]
- वली-ए-फ़र्द पूरी भौतिक शारीरिक रचना पर हावी होता है। [पृष्ठ 458]

فتاوی رضویہ جلد ۲۹

- نامہ اول از حضرت سید حسین حیدر میاں مارہروی بنام اعلیحضرت رحمۃ اللہ علیہا | علم کی ذاتی و عطائی کی طرف انقسام یقینی اور محیط و غیر محیط کی طرف تقسیم بدیہی ہے (۴۲۹)
- نامہ دوم | اللہ تعالیٰ کے ساتھ خاص ہونے کے قابل صرف علم ذاتی و علم محیط ہے (۴۳۰)
- رسالہ خالص الاعتقاد (مسئلہ علم غیب پر عظیم اور مدلل کتاب جو ایک سو بیس دلائل پر مشتمل ہے) | حوالہ جات و تصریحات آئمہ کرام (۴۳۳)
- مراسلہ مصنف علیہ الرحمہ بنام حضرت سید حسین حیدر میاں مارہروی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ | آیت کریمہ "لا اعلم الغیب" کی تین نفیس تفسیریں (۴۳۳)
- امر اول | امر چہارم (۴۳۴)
- مخالفین کی افتراء پردازیاں | علم غیب سے متعلق اجتماعی مسائل (۴۳۴)
- امر دوم | تمام مخلوق کے علوم کو علوم الہیہ سے وہ نسبت بھی نہیں جو کروڑہا کروڑ سمندروں سے ایک ذراسی بوند کے کروڑویں حصے کو ہے (۴۳۸)
- بندوں کو علم غیب عطا ہونے کی سندیں اور آیات نفی کی مراد | متناہی کو متناہی سے نسبت ضرور ہے (۴۳۸)
- کون سا علم غیب اللہ تعالیٰ کا خاصہ ہے۔ | جو کچھ دو حدوں کے اندر ہو سب متناہی ہے (۴۳۸)
- اللہ تعالیٰ کی عطا سے علوم غیب غیر محیط کا انبیاء علیہم الصلوۃ والتسلیمات کو عطا ہونا قطعاً حق ہے | بالفعل غیر متناہی کا علم تفصیلی مخلوق کو مل ہی نہیں سکتا (۴۳۸)

• ایمان تصدیق ہے اور تصدیق علم ہے جس شیئ کا علم ہی نہ ہو اس پر ایمان لانا کیونکر ممکن ہے۔ | علم رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے بارے میں وہابیہ کے عقائد (۴۳۹)
• حوالہ جات | امر پنجم (۴۳۹)
• وہابیہ پر عضبوں کی ترقیاں | علم غیب کی اختلافی حدود اور مسلک عرفاء (۴۴۳)
• امر سوم | مجموعہ ماکان ومایکون کا علم، علوم مصطفیٰ صلی اللہ علیہ وسلم کے سمندر کی ایک لہر ہے (۴۴۴)
• ذاتی و عطائی کی جانب علم کا انقسام اور علماء کی تصریحات | علم ماکان ومایکون سے متعلق ائمہ و علما کے حوالہ جات (۴۴۴)
• ولی فرد تمام نشاۃ عنصری جسمانی پر مستولی ہوتا ہے

Fatawa Rizvia Volume 29

- Saying of Hazrat Syed Abdul Aziz Dabbagh (Mercy of Allah be upon him) regarding the noble verse 'And He taught Adam all the names' - 462
- Description of the vastness of the great knowledge of Mustafa (Peace and blessings of Allah be upon him) - 486
- There are two types of evil - 465
- Quranic Verses - 487
- The first type: verbal evil, where the tongue chatters incessantly - 465
- In the creed of Ahl-us-Sunnah, a 'thing' is everything that exists - 487
- The second type: behavioral evil, where the tongue remains silent but doesn't refrain from malice - 465
- The knowledge of Mustafa (Peace and blessings of Allah be upon him) encompasses the Preserved Tablet - 487
- Wahhabis are both verbal and behavioral evils - 465
- What is written in the Preserved Tablet - 487
- Some sayings of Syedna Hazrat Ali al-Murtaza (May Allah be pleased with him) - 465
- An indefinite noun in a negative sentence denotes generality - 488
- Jafr and Jamia are two books by Amir-ul-Momineen Syedna Ali Murtaza (May Allah be pleased with him) - 466
- The word 'Kull' (All) is so general that it is never used as specific - 488
- The Messenger of Allah (Peace and blessings of Allah be upon him) had knowledge of the five unknowns - 474
- Generality in comprehensive usage is definitive - 488
- Grand Warning - 477
- Texts will always be interpreted according to their apparent meaning - 488
- All scholars, saints, companions, and prophets are targets of Wahhabi takfir (charging with infidelity) - 479
- Delayed specification is abrogating - 488
- The chain of belief of Imam Ahmad Raza is continuously linked through scholars, saints, imams, and companions to Muhammad, the Messenger of Allah (Peace and blessings of Allah be upon him), and from him to Allah, the Lord of the worlds - 482
- Abrogation of news/information is impossible - 488

• Treatise: Children of Mustafa in the states of the secret and the most hidden (Description of the Prophet (Peace and blessings of Allah be upon him) being the knower of what was and what will be) - 485
• Intellectual specification does not demote generality from definitiveness - 488
• Allah Almighty bestowed the knowledge of the first and the last upon the Holy Prophet (Peace and blessings of Allah be upon him) - 486
• Not a single particle of East and West, sky and earth, Throne and ground is outside the knowledge of the Holy Prophet - 488

फ़तावा रज़विया खंड 29

- आयत करीमा 'वअल्लामा आदमाल अस्माअ कुल्लाहा' के मुताल्लिक़ हज़रत सैय्यद अब्दुल अज़ीज़ दब्बाग़ (अल्लाह की रहमत उन पर हो) का क़ौल - 462
- इल्म-ए-अज़ीम-ए-मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की वुसअत का बयान - 486
- शर दो क़िस्म के होते हैं - 465
- आयात-ए-क़ुरानी - 487
- क़िस्म-ए-अव्वल शर-ए-क़ौली कि ज़बान से बक-बक करे - 465
- अहल-ए-सुन्नत के मज़हब में 'शै' हर मौजूद को कहते हैं - 487
- क़िस्म-ए-दोम शर-ए-फ़ेअली कि ज़बान से चुप रहे और ख़बासत से बाज़ न आए - 465
- इल्म-ए-मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) लौह-ए-महफ़ूज़ को मुहीत है - 487
- वहाबिया शर-ए-क़ौली व शर-ए-फ़ेअली दोनों हैं - 465
- लौह-ए-महफ़ूज़ में क्या-क्या लिखा है - 487
- सैय्यदना हज़रत अली अल-मुर्तज़ा (रज़ियल्लाहु अन्हु) के बाज़ इरशादात - 465
- नकरा जो नफ़ी में मुफ़इद-ए-उमूम होता है - 488
- जफ़र व जामिया अमीर-उल-मोमिनीन सैय्यदना अली मुर्तज़ा (रज़ियल्लाहु अन्हु) की दो किताबें हैं - 466
- लफ़्ज़ 'कुल' ऐसा आम है जो कभी ख़ास होकर मुस्तअमल ही नहीं होता - 488
- रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को पांचों ग़ैबों का इल्म हासिल था - 474
- आम इफ़ादा-ए-इस्तग़राक़ में क़तई होता है - 488
- तन्बीह-ए-जलील - 477
- नुसूस हमेशा ज़ाहिर पर महमूल रहेंगी - 488
- तमाम उलमा, औलिया, सहाबा और अम्बिया वहाबियों की तक़फ़ील का निशाना - 479
- तख़्सीस-ए-मुतराख़ी नासिख़ है - 488
- इमाम अहमद रज़ा का सिलसिला-ए-एतकाद उलमा, औलिया, अइम्मा और सहाबा से मोहम्मद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) और आप से अल्लाह रब्बुल आलमीन तक मुसलसल मिला हुआ है - 482
- अख़बार का नस्ख़ नामुमकिन है - 488

• रिसाला 'अब्राउल मुस्तफ़ा बिहाल-ए-सिर व अख़फ़ा' (नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आलिम-ए-मा-कान व मा-यकून होने का बयान) - 485
• तख़्सीस-ए-अक़्ली आम को क़तईयत से नाज़िल नहीं करती - 488
• अल्लाह तआला ने हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को अव्वलीन व आख़िरीन का इल्म अता फ़रमाया - 486
• शर्क़ व ग़र्ब, समा व अर्ज़, अर्श व फ़र्श का कोई ज़र्रा हुज़ूर के इल्म से बाहर नहीं - 488

فتاویٰ رضویہ جلد ۲۹

- آیت کریمہ "وعلم ادم الاسماء کلھا" کے متعلق حضرت سید عبدالعزیز دباغ علیہ الرحمہ کا قول ۴۶۲ -
- علم عظیم مصطفیٰ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی وسعت کا بیان - ۴۸۶
- اشر دو قسم کے ہوتے ہیں - ۴۶۵
- آیات قرآنی - ۴۸۷
- قسم اول اشر قولی کہ زبان سے بک بک کرے - ۴۶۵
- اہل سنت کے مذہب میں شیئ ہر موجود کو کہتے ہیں - ۴۸۷
- قسم دوم اشر فعلی کہ زبان سے چپ رہے اور خباثت سے باز نہ آئے - ۴۶۵
- علم مصطفیٰ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم لوح محفوظ کو محیط ہے - ۴۸۷
- وہابیہ اشر قولی و اشر فعلی دونوں ہیں - ۴۶۵
- لوح محفوظ میں کیا کیا لکھا ہے - ۴۸۷
- سید نا حضرت علی المرتضیٰ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے بعض ارشادات - ۴۶۵
- نکرہ جو نفی میں مفید عموم ہوتا ہے - ۴۸۸
- جفر و جامعہ امیر المومنین سید نا علی مرتضیٰ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی دو کتابیں ہیں - ۴۶۶
- لفظ کل ایسا عام ہے جو کبھی خاص ہو کر مستعمل ہی نہیں ہوتا - ۴۸۸
- رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کو پانچوں غیبوں کا علم حاصل تھا - ۴۷۴
- عام افادہ استغراق میں قطعی ہوتا ہے - ۴۸۸
- تنبیہ جلیل - ۴۷۷

- نصوص ہمیشہ ظاہر پر محمول رہیں گی - ۴۸۸
- تمام علماء، اولیاء، صحابہ اور انبیاء وہابیوں کی تکفیر کا نشانہ - ۴۷۹
- تخصیص متراخی ناسخ ہے - ۴۸۸
- امام احمد رضا کا سلسلہ اعتقاد علماء، اولیاء، ائمہ اور صحابہ سے محمد رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم اور آپ سے اللہ رب العالمین تک مسلسل ملا ہوا ہے - ۴۸۲
- اخبار کا نسخ ناممکن ہے - ۴۸۸
- رسالہ ابناء المصطفٰی بحال سر واخفیٰ (نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے عالم ماکان و ما یکون ہونے کا بیان) - ۴۸۵
- تخصیص عقلی عام کو قطعیت سے نازل نہیں کرتی - ۴۸۸
- اللہ تعالیٰ نے حضور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کو اولین و آخرین کا علم عطا فرمایا - ۴۸۶
- شرق و غرب، سما و ارض، عرش و فرش کا کوئی ذرہ حضور کے علم سے باہر نہیں - ۴۸۸

Fatawa Razawiya Volume 29

Topic	Page	Topic	Page
Response to all arguments presented to diminish the knowledge of the Prophet (Peace and Blessings be upon Him).	489	The texts of restriction (nusoos-e-hasr) do not touch the opponent's claim at all, but rather they are proof of their explicit ignorance.	503
Relying on solitary reports (akhbar-e-ahad) in opposition to the general, definitive verses of the Quran is purely incorrect.	489	Not accepting that the Prophet (Peace and Blessings be upon Him) knew the state of his own end is explicit disbelief (kufr).	504
A few passages from 'Barahin-e-Qati'ah' and their rebuttal.	489	The greatness of the status of the Prophet (Peace and Blessings be upon Him) - A comprehensive Hadith from Jami' al-Tirmidhi.	506
Response to the reasoning of Wahhabis from the Hadith "By Allah, I do not know what will be done with me or with you."	490	The ruling on one who insults or finds fault with the Prophet (Peace and Blessings be upon Him).	507
Answer from Shaykh Muhaqqiq to an objection regarding the knowledge of the Noble Prophet (Peace and Blessings of Allah be upon Him).	491	He who says that such-and-such person's knowledge is greater than that of the Prophet (Peace and Blessings be upon Him) has found fault with him.	507
Blessed Hadiths	492	Introduction to "Mali al-Habib bi-Ulum al-Ghaib," an extensive book by the author (may Allah have mercy on him) about the Prophet's (Peace and Blessings of Allah be upon Him) knowledge of the unseen.	508
The entire Ummah, along with all their deeds, was presented before the Prophet (Peace and Blessings be upon Him).	494	Introduction to "Mali al-Habib bi-Ulum al-Ghaib," an extensive book by the author (may Allah have mercy on him) about the Prophet's (Peace and	508

Topic	Page	Topic	Page
		Blessings of Allah be upon Him) knowledge of the unseen.	
Sayings of the honorable Imams	497	O Treatise 'Izahat al-Aib bi-Sayf al-Ghaib' (a reasoned writing on the issue of knowledge of the unseen and rebuttal of Wahhabi misconceptions - a question sent from the Tabligh Madrasa Deoband).	511
Difference between Divine Knowledge and Created Knowledge	500	Response from the author (may Allah have mercy on him).	512
Texts of restriction (nusoos-e-hasr)	502	Rebuttal of the 'meteor' (Shihab) of Wahhabis.	512
Knowledge is of two types regarding its source: essential (dhati) and bestowed (ata'i).	503	The Glorious Quran was revealed gradually over 23 years.	512
Knowledge is of two types regarding its object: absolute knowledge (a'lam mutlaq) and general knowledge (mutlaq-e-ilm).	503	The Beloved of Allah (Peace and Blessings of Allah be upon Him) was granted knowledge of everything that was and everything that will be (jami' ma kana wa ma yakun).	512
Essential knowledge and absolute knowledge are undoubtedly exclusive to Allah Almighty, and no one ever claims their attainment for anyone other than God.	503		

फ़तावा रज़विया जिल्द २९

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
हुज़ूर अलैहिस सलातो वस्सलाम का इल्म घटाने के लिए जितने दलाइल पेश किए जाते हैं उन सब का जवाब।	४८९	नुसूस-ए-हस्र को मुद्दआ-ए-मुखालिफ़ से असलन मस नहीं बल्कि वो उसकी सरीह जहालत पर नस हैं।	५०३
उमूम-ए-आयात-ए-क़तईय्या क़ुरआनिया की मुखालिफ़त में अख़बार-ओ-अहाद से इस्तिनाद महज़ ग़लत है।	४८९	अपने ख़ातिमे का हाल हुज़ूर अलैहिस सलातो वस्सलाम को मालूम न मानना सरीह कुफ्र है।	५०४
बराहीन-ए-क़ातिआ की चंद इबारात और उनका रद।	४८९	हुज़ूर अलैहिस सलातो वस्सलाम की अज़मत-ए-शान - जामे तिर्मिज़ी की एक जामे हदीस।	५०६
हदीस "वल्लाहे ला अदरी मायुफ़अलु बी व ला बिकुम" से वहाबिया के इस्तदलाल का जवाब।	४९०	हुज़ूर अलैहिस सलातो वस्सलाम को गाली देने और ऐब लगाने वाले का हुक्म।	५०७
नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के इल्म पर एक एतराज़ का शेख़ मोहक़िक़ की तरफ़ से जवाब।	४९१	जिसने कहा फ़लां का इल्म हुज़ूर अलैहिस सलातो वस्सलाम के इल्म से ज़्यादा है उसने आप को ऐब लगाया।	५०७
अहादीस मुबारका	४९२	नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के इल्म-ए-ग़ैब के बारे में मुसन्निफ़ अलैहिर्रहमा की एक मबसूत किताब "माली अल-हबीब बिउलूम अल-ग़ैब" का तआरुफ़।	५०८
सब उम्मत तमाम आमाल समेत हुज़ूर अलैहिस सलातो वस्सलाम के सामने पेश की गई।	४९४	नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के इल्म-ए-ग़ैब के बारे में मुसन्निफ़ अलैहिर्रहमा की एक मबसूत किताब "माली अल-हबीब बिउलूम अल-ग़ैब" का तआरुफ़।	५०८
अक़वाल-ए-आइम्मा किराम	४९७	O रिसाला इज़ाहात अल-ऐब बि-सैफ़ अल-ग़ैब (इल्म-ए-ग़ैब के मसअले पर मुदल्लल तहरीर	५११

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
		और औहाम-ए-वहाबिया का रद - तबलीग़ मदरसा देवबंद से इरसाल कर्दा एक सवाल)।	
इल्म-ए-इलाही और इल्म-ए-ख़ल्क़ में फ़र्क़	५००	जवाब अज़ मुसन्निफ़ अलैहिर्रहमा।	५१२
नुसूस-ए-हस्र	५०२	शिहाब-ए-वहाबिया का दफ़ैया	५१२
इल्म बा-एतबार मंशा दो क़िस्म का है: ज़ाती व अताई।	५०३	क़ुरआन मजीद ने २३ बरस में ब-तदरीज़ नुज़ूल-ए-इजलाल फ़रमाया।	५१२
इल्म बा-एतबार मुतअल्लिक़ दो क़िस्म का है: आलम मुतलक़ व मुतलक़ इल्म।	५०३	हबीब-उल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को जमीअ मा काना व मा यकून का इल्म अता हुआ।	५१२
इल्म-ए-ज़ाती व इल्म-ए-मुतलक़ बिला शुबा अल्लाह अज़्ज़वजल के साथ ख़ास हैं और हरगिज़ किसी ग़ैर ख़ुदा के लिए उनके हुसूल का कोई भी क़ायल नहीं।	५०३		
पृष्ठ ७५० का ३१			

موضوع	صفحہ
حضور علیہ الصلوۃ والسلام کا علم گھٹانے کے لیے جتنے دلائل پیش کیے جاتے ہیں ان سب کا جواب	۴۸۹
عموم آیات قطعیہ قرآنیہ کی مخالفت میں اخبار و احاد سے استناد محض غلط ہے	۴۸۹
براہین قاطعہ کی چند عبارات اور ان کا رد	۴۸۹
حدیث "واللہ لا ادری مایفعل بی و لابکم" سے وہابیہ کے استدلال کا جواب	۴۹۰
نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے علم پر ایک اعتراض کا شیخ محقق کی طرف سے جواب	۴۹۱
احادیث مبارکہ	۴۹۲
نصوص حصر کو مدعائے مخالف سے اصلاً مس نہیں بلکہ وہ اس کی صریح جہالت پر نص ہیں	۵۰۳
اپنے خاتمے کا حال حضور علیہ الصلوۃ والسلام کو معلوم نہ ماننا صریح کفر ہے	۵۰۴
حضور علیہ الصلوۃ والسلام کی عظمت شان۔ میں جامع ترمذی کی ایک جامع حدیث	۵۰۶
حضور علیہ الصلوۃ والسلام کو گالی دینے اور عیب لگانے والے کا حکم	۵۰۷
جس نے کہا فلاں کا علم حضور علیہ الصلوۃ والسلام کے علم سے زیادہ ہے اس نے آپ کو عیب لگا یا	۵۰۷
نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے علم غیب کے بارے میں مصنف علیہ الرحمہ کی ایک مبسوط کتاب "مالی الحبیب بعلوم الغیب" کا تعارف	۵۰۸

موضوع	صفحہ
سب امت تمام اعمال سمیت حضور علیہ الصلوۃ والسلام کے سامنے پیش کی گئی	۴۹۴
اقوال ائمہ کرام	۴۹۷
علم الہی اور علم خلق میں فرق	۵۰۰
نصوص حصر	۵۰۲
علم باعتبار منشاء دو قسم کا ہے۔ ذاتی و عطائی	۵۰۳
علم باعتبار متعلق دو قسم کا ہے اعلم مطلق و مطلق علم	۵۰۳
علم ذاتی و علم مطلق بلا شبہ اللہ عزوجل کے ساتھ خاص ہیں اور ہر گز کسی غیر خدا کے لیے ان کے حصول کا کوئی بھی قائل نہیں	۵۰۳
نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے علم غیب کے بارے میں مصنف علیہ الرحمہ کی ایک مبسوط کتاب "مالی الحبیب بعلوم الغیب" کا تعارف	۵۰۸
O رسالہ ازاحۃ العیب بسیف الغیب (علم غیب کے مسئلہ پر مدلل تحریر اور اوہام وہابیہ کا رد۔ تبلیغ مدرسہ دیوبند سے ارسال کردہ ایک سوال	۵۱۱
جواب از مصنف علیہ الرحمہ	۵۱۲
شہاب وہابیہ کا دفعیہ	۵۱۲
قرآن مجید نے ۲۳ برس میں بتدریج نزول اجلال فرمایا	۵۱۲
حبیب اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کو جمیع ماکان ومایکون کا علم عطا ہوا	۵۱۲

Fatawa Razawiya, Volume 29

Page 32 of 750

Table of Contents:

- (Page 513) No Hadith-e-Ahad can be accepted if it contradicts definitive verses (Ayat-e-Qat'iyyah), even if its chain of narration (Isnad) is authentic. | (Page 518) The chapter on metaphors (Tashbih) is vast.
- (Page 513) Four things must be kept in mind when presenting an argument against the Great Quran. | (Page 518) Refutation of the second misconception.
- (Page 513) Denial of essential reality does not necessitate denial of bestowed reality. | (Page 519) Refutation of the third misconception.
- (Page 513) The scene of the gathering on the Day of Judgment (Maidan-e-Mahshar) and the kindnesses of the Intercessor of Mahshar (peace be upon him). | (Page 519) The clear slander (Iftira) of Deobandis in Hadith.
- (Page 515) Benefit (Faida). | (Page 519) The actions of the Ummah are presented in the presence of the Messenger (Prophethood).
- (Page 515) Refutation of the first misconception. | (Page 519) The life and death of the Master of both worlds (peace and blessings of Allah be upon him) are better for the Ummah.
- (Page 515) Imam Ahmad bin Hanbal was born fifty-three and a half years after the death of Imam Ibn Sirin. | (Page 520) Actions are presented before Allah Almighty every Monday and Thursday, and are presented before the Prophets (peace be upon them) and parents on Friday.
- (Page 515) Ibn Sirin passed away on 9 Shawwal 110 AH, while Imam Ahmad bin Hanbal was born in Rabi' al-Awwal 164 AH. | (Page 522) The daily presentation of actions before the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) is among his unique characteristics.
- (Page 516) The Wahhabis do not have as much enmity towards the virtues of others as they do towards the virtues of the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him). | (Page 522) Refutation of the fourth misconception.
- (Page 516) A subtle and noble point (Lateefa Jaleela). | (Page 522) The author's scholarly discussion on Tirmidhi's Hadith and the investigation and evaluation (Jarh wa Ta'dil) of the narrators.
- (Page 516) The historical ignorance of Mr. Gangohi, who thought Imam Abu Yusuf was a contemporary of Husain bin Mansur Hallaj. | (Page 529) The

strange absurdity of the Wahhabis: a Hadith that is a clear proof in favor of the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) is used by them as an opposing proof for denial.

- (Page 516) Imam Abu Yusuf died in 182 AH. | (Page 529) The Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) is the ruler of both Sharia (outward law) and Haqiqat (inward reality); therefore, his commands are sometimes based on the apparent Sharia and sometimes on the hidden Haqiqat.
- (Page 517) An anecdote about Sultan Aurangzeb Alamgir.

फतावा रज़विया, जिल्द 29

पृष्ठ 32 का 750

विषय-सूची:

- (पृष्ठ 513) क़तई आयतों के ख़िलाफ़ कोई हदीस-ए-आहाद भी स्वीकार्य नहीं हो सकती, भले ही उसकी सनद सही हो। | (पृष्ठ 518) उपमा (तशबीह) का बाब विस्तृत है।
- (पृष्ठ 513) क़ुरान-ए-अज़ीम के विरुद्ध जो दलील दी जाए, उस पर चार बातों का ध्यान रखना आवश्यक है। | (पृष्ठ 518) दूसरे संदेह (शुभा) का खंडन।
- (पृष्ठ 513) मूल वास्तविकता (हक़ीक़त-ए-ज़ातिया) का खंडन, ईश्वरीय वरदान स्वरूप वास्तविकता (हक़ीक़त-ए-अताइया) के खंडन को आवश्यक नहीं बनाता। | (पृष्ठ 519) तीसरे संदेह का खंडन।
- (पृष्ठ 513) मैदान-ए-महशर का दृश्य और महशर के शफ़ीअ (सिफारिश करने वाले) सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की कृपाएँ। | (पृष्ठ 519) हदीस में देवबंदियों का स्पष्ट झूठ (इफ़्तरा)।
- (पृष्ठ 515) लाभ (फ़ायदा)। | (पृष्ठ 519) उम्मत के आमाल (कर्म) रिसालत की बारगाह में पेश किए जाते हैं।
- (पृष्ठ 515) पहले संदेह का खंडन। | (पृष्ठ 519) सरकार-ए-दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का जीवन और वफ़ात उम्मत के लिए बेहतर हैं।
- (पृष्ठ 515) इमाम इब्न-ए-सीरीन की वफ़ात के साढ़े तिरपन साल बाद इमाम अहमद बिन हंबल का जन्म हुआ। | (पृष्ठ 520) हर सोमवार और गुरुवार को कर्म अल्लाह तआला के दरबार में पेश किए जाते हैं और शुक्रवार को नबियों और माता-पिता के सामने पेश किए जाते हैं।
- (पृष्ठ 515) इब्न-ए-सीरीन का निधन 9 शव्वाल 110 हिजरी को हुआ, जबकि इमाम अहमद बिन हंबल का जन्म रबी-उल-अव्वल 164 हिजरी में हुआ। | (पृष्ठ 522) अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दरबार में दैनिक कर्मों की प्रस्तुति आपकी विशिष्टताओं (ख़साइस) में से है।
- (पृष्ठ 516) वहाबियों को दूसरों के गुणों से उतनी शत्रुता नहीं है जितनी हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के गुणों से है। | (पृष्ठ 522) चौथे संदेह का खंडन।

- (पृष्ठ 516) लतीफ़ा-ए-जलीला (एक सूक्ष्म बिंदु)। | (पृष्ठ 522) तिरमिज़ी की हदीस पर लेखक की विद्वत्तापूर्ण चर्चा और रावीयों की जाँच (जर्ह-ओ-तादील)।
- (पृष्ठ 516) गंगोही साहब की ऐतिहासिक अज्ञानता कि उन्होंने इमाम अबू यूसुफ़ को हुसैन बिन मंसूर हल्लाज का समकालीन समझ लिया। | (पृष्ठ 529) वहाबियों का अजीब उल्टापन कि जो हदीस हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पक्ष में स्पष्ट दलील है, उसी को वे इनकार के लिए उल्टी दलील बना लेते हैं।
- (पृष्ठ 516) इमाम अबू यूसुफ़ की वफ़ात 182 हिजरी में हुई। | (पृष्ठ 529) हुज़ूर अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम शरीअत और हक़ीक़त दोनों के शासक हैं, इसलिए आपके आदेश कभी ज़ाहिरी शरीअत पर और कभी बातिनी हक़ीक़त पर होते हैं।
- (पृष्ठ 517) सुल्तान औरंगज़ेब आलमगीर की एक कहानी।

فتاویٰ رضویہ ، جلد ۲۹

صفحہ ۳۲ از ۷۵۰

فہرستِ مضامین:

- ۵۱۳ | آیاتِ قطعیہ کے خلاف کوئی حدیثِ احاد بھی مسلم نہیں ہوسکتی اگرچہ سنداً صحیح ہو | ۵۱۸ | باب تشبیہ واسع ہے
- ۵۱۳ | قرآنِ عظیم کے خلاف پر جو دلیل قائم کرے اس پر چار باتیں ملحوظ رکھنا لازم ہیں | ۵۱۸ | شبہ ثانیہ کا رد
- ۵۱۳ | نفیِ حقیقتِ ذاتیہ نفیِ حقیقتِ عطائیہ کو مستلزم نہیں | ۵۱۹ | شبہ ثالثہ کا رد
- ۵۱۳ | میدانِ محشر کا منظر اور حضور شافعِ محشر علیہ الصلوٰۃ والسلام کی کرم نوازیاں | ۵۱۹ | دیوبندی کا حدیث میں صریح افتراء
- ۵۱۵ | فائدہ | ۵۱۹ | اعمالِ اُمت بارگاہِ رسالت میں پیش ہوتے ہیں
- ۵۱۵ | شبہ اولٰی کا رد | ۵۱۹ | سرکارِ دو عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی حیات و وفات اُمت کے لیے بہتر ہیں
- ۵۱۵ | امام ابنِ سیرین کی وفات سے ساڑھے ترپن برس بعد امام احمد بن حنبل کی ولادت ہوئی۔ | ۵۲۰ | ہر پیر اور جمعرات کو اعمال اللہ تعالیٰ کے حضور پیش ہوتے ہیں اور جمعہ کو انبیاءِ کرام علیہم الصلوٰۃ والسلام اور ماں باپ کے سامنے پیش ہوتے ہیں
- ۵۱۵ | ابنِ سیرین کا وصال ۹ شوال ۱۱۰ھ کو ہے جب کہ امام احمد بن حنبل کی ولادت ربیع الاول ۱۶۴ھ کو ہوئی | ۵۲۲ | رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے حضور روزانہ اعمال کی پیشی آپ کے خصائص میں سے ہے۔

- ۵۱۶ | وہابیہ کو اوروں کے فضائل سے اتنی عداوت نہیں جتنی فضائلِ حضورِ اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم سے ہے | ۵۲۲ | شبہ رابعہ کا رد
- ۵۱۶ | لطیفہ جلیلہ | ۵۲۲ | حدیثِ ترمذی پر مصنف علیہ الرحمہ کی محدثانہ بحث اور راویوں کی جرح و تعدیل
- ۵۱۶ | گنگوہی صاحب کی تاریخی جہالت کہ امام ابو یوسف کو حسین بن منصور حلاج کا ہمعصر سمجھ بیٹھے | ۵۲۹ | وہابیہ کا عجب اوندھا پن کہ جو حدیث حضورِ اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم پر روشن دلیل ہے اُسی کو الٹی دلیل نفی ٹھہراتے ہیں
- ۵۱۶ | امام ابو یوسف کی وفات ۱۸۲ھ میں ہوئی | ۵۲۹ | حضورِ انور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم شریعت و حقیقت دونوں کے حاکم ہیں لہٰذا آپ کے احکام کبھی شریعتِ ظاہر پر اور کبھی حقیقتِ باطنہ پر ہوتے ہیں
- ۵۱۷ | سلطان اورنگزیب عالمگیر کی ایک حکایت

Fatawa-e-Razvia - Volume 29

Page	Subject	Subject	Page
529	Examples of rulings based on inner reality	How is it to call upon the saints of Allah from afar for help in difficulties?	545
530	Ruling on killing a person performing prayer	How is it to call out "Ya Rasul Allah" and believe that you hear personally?	545
531	Ruling on killing a thief	Answer to a question about the life of Jesus (peace be upon him).	547
532	It is among the special attributes of the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) that he combines two Qiblas and two migrations, and both Sharia and Reality were united for him.	When did the Milad Sharif start, who started it, did Imam-e-Azam do it or not, was it in the time of the Companions or not?	547
533	Further support from the text of Imam Suyuti's (may Allah's mercy be upon him) book "Khasa'is-e-Kubra".	The recitation (wazifa) of "Ya Sheikh Abdul Qadir Jilani Shai-an-lillah" is permissible.	548
533	While common Prophets are ordered only on the outward Sharia and Prophet Khidr only on the inward, the Leader of Prophets (peace be upon them all) is granted permission to act on both.	The treatise "Anwar-ul-Intibah fi Hall Nida Ya Rasul Allah" (Arguments for the permissibility of calling out "Ya Rasul Allah").	549
540	Standing during the mention of the birth of the Master of Mankind (best of prayers and peace be upon him and his family) is undoubtedly recommended and desirable according to great scholars, the habit of noble lovers, and the rage of the vile Wahhabis.	Saying "Ya Rasul Allah" is undoubtedly permissible.	550
543			550

Page	Subject	Subject	Page
	Answer to a question about a person who forbids asking for wishes at shrines.	Proof of this from Hadiths and traditional prayers.	
544	Definition of a Hanafi.	Proof from the sayings of Imams and fatwas of scholars.	553
544	Standing in the gathering of Milad Sharif is desirable, and scholars of all four schools of thought and the general Muslims perform this standing.	The incident of three Syrian warriors who were successors of the successors (Taba'i-ut-Tabi'in).	554
544	One who follows Ismail Dehlvi and Taqwiya-tul-Iman or holds beliefs according to it is a Wahhabi.	Teachings of Sayyiduna Ghaus-e-Azam regarding this matter.	556
545	Noble saints are alive after death, but not like the Prophets (peace be upon them).	The inherited method of calling out to noble saints which they themselves taught to their followers.	556
545	All Muslims will rise from their graves in their shrouds (kafans).		

फ़तावा-ए-रज़विया - जिल्द 29

पृष्ठ	विषय	विषय	पृष्ठ
529	हक़ीक़त-ए-बातिना (आंतरिक वास्तविकता) पर अहकाम (आदेशों) के उदाहरण	औलिया अल्लाह को दूर से मुश्किल के समय पुकारना कैसा है?	545
530	एक नमाज़ी को मारने का हुक्म	"या रसूल अल्लाह" पुकारना और यह विश्वास रखना कि आप स्वयं सुनते हैं, कैसा है?	545
531	चोर को मारने का हुक्म	हज़रत ईसा (अलैहिस्सलाम) के जीवन के बारे में एक सवाल का जवाब।	547
532	हुज़ूर अक़दस (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की विशेषताओं में से है कि आप दो क़िब्लों और दो हिजरतों के जामे (संग्रहकर्ता) हैं और शरीयत व हक़ीक़त दोनों आपके लिए जमा कर दी गई हैं।	मीलाद शरीफ़ कब से शुरू हुआ, किसने शुरू किया, इमाम-ए-आज़म ने किया या नहीं, सहाबा के ज़माने में था या नहीं।	547
533	इमाम सुयूती (रहमतुल्लाह अलैह) की किताब "ख़साइस-ए-कुबरा" की इबारत (पाठ) से और अधिक समर्थन।	"या शैख़ अब्दुल क़ादिर जिलानी शैअन लिल्लाह" का वज़ीफ़ा जायज़ है।	548
533	आम नबियों को केवल शरीयत के ज़ाहिर (बाहरी रूप) पर, हज़रत ख़िज़्र को केवल बातिन (आंतरिक रूप) पर, जबकि इमामुल अंबिया को दोनों पर अमल करने की अनुमति है (उन पर सलाम)।	रिसाला "अनवारुल इन्तिबाह फ़ी हल निदा या रसूल अल्लाह" (या रसूल अल्लाह कहने के जवाज़ पर दलीलें)।	549
540	सैय्यद-उल-अनाम (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की विलादत (जन्म) के ज़िक्र के दौरान खड़ा होना निस्संदेह मुस्तहब (पसंदीदा) और मुस्तहसन (सराहनीय) है, अल्लामा (विद्वानों) और प्रेमियों की	या रसूल अल्लाह कहना निस्संदेह जायज़ है।	550

पृष्ठ	विषय	विषय	पृष्ठ
	आदत है और नीच वहाबियों के लिए क्रोध का विषय है।		
543	मज़ारात पर जाकर मुराد माँगने से मना करने वाले व्यक्ति के बारे में सवाल का जवाब।	हदीसों और पारंपरिक दुआओं से इसका प्रमाण।	550
544	हनफ़ी की परिभाषा।	अइम्मा (इमामों) के कथनों और विद्वानों के फ़तवों से प्रमाण।	553
544	महफ़िल-ए-मीलाद शरीफ़ में खड़ा होना मुस्तहसन है और यह कयाम (खड़ा होना) चारों मज़ाहिब (संप्रदायों) के उलेमा और आम मुसलमान करते हैं।	तीन शामी मुजाहिदीन की घटना कि वे तीनों तब-ए-ताबी थे।	554
544	इस्माइल देहलवी और तक़ियतुल ईमान को मानने वाला या उसके अनुसार अक़ीदा (विश्वास) रखने वाला वहाबी है।	इस संबंध में सैय्यदुना ग़ौस-ए-आज़म की शिक्षाएं।	556
545	औलिया-ए-किराम वफ़ात के बाद जीवित हैं मगर नबियों की तरह नहीं (उन पर सलाम)।	औलिया-ए-किराम को पुकारने का वह पारंपरिक तरीका जो उन्होंने स्वयं अपने अनुयायियों को सिखाया।	556
545	सभी मुसलमान क़ब्रों से कफ़न में उठेंगे।		

पृष्ठ 33 का 750

صفحہ	مضمون
۵۲۹	حقیقت باطنہ پر احکام کی مثالیں
۵۳۰	ایک نمازی کو قتل کرنے کا حکم
۵۳۱	چور کو قتل کرنے کا حکم
۵۳۲	حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے خصائص میں سے ہے کہ آپ دو قبلوں اور دو ہجرتوں کے جامع ہیں اور شریعت و حقیقت دونوں آپ کے لیے جمع کردی گئی ہیں
۵۳۳	امام سیوطی علیہ الرحمہ کی کتاب "خصائص کبریٰ" کی عبارت سے تائید مزید
۵۳۳	عامہ انبیاء کو صرف ظاہرِ شرع، حضرت خضر کو صرف باطن پر جب کہ امام الانبیاء کو دونوں پر عمل کا اذن ہے علیہم الصلوٰۃ والسلام
۵۴۵	اولیاء اللہ کو دور سے مشکل کے واسطے پکارنا کیسا ہے
۵۴۵	"یا رسول اللہ" پکارنا اور یہ اعتقاد رکھنا کہ آپ بذاتِ خود سنتے ہیں کیسا ہے
۵۴۷	حیات عیسیٰ علیہ السلام کے بارے میں ایک سوال کا جواب
۵۴۷	میلاد شریف کب سے نکلا، کس نے نکالا، امام اعظم نے کیا یا نہیں۔ زمانہ صحابہ میں تھا یا نہیں
۵۴۸	یا "شیخ عبدالقادر جیلانی شیئا للہ" کا وظیفہ جائز ہے
۵۴۹	رسالہ انوار الانتباہ فی حل نداء یا رسول اللہ (یا رسول اللہ کے جواز پر دلائل)

صفحہ	مضمون
۵۴۰	قیام ذکر ولادت سید الانام علیہ و علیٰ ذویہ افضل الصلوٰۃ والسلام بلاشبہ مستحب و مستحسن علمائے اعلام و عادتِ محبین کرام و غیظ وہابیہ لئام
۵۴۳	مزارات پر جا کر مرادیں مانگنے سے منع کرنے والے شخص کے بارے میں سوال کا جواب
۵۴۴	حنفی کی تعریف
۵۴۴	محفل میلاد شریف میں قیام کرنا مستحسن ہے اور یہ قیام چاروں مذاہب کے علماء و عام اہلِ اسلام کرتے ہیں
۵۴۴	اسمعیل دہلوی و تقویت الایمان کے ماننے والا یا اس کے مطابق عقائد رکھنے والا وہابی ہے
۵۴۵	اولیاء کرام بعد وفات زندہ ہیں مگر نہ مثل حضرات انبیاء علیہم الصلوٰۃ والسلام
۵۴۵	سب مسلمان قبروں سے کفن میں اٹھیں گے
۵۵۰	یا رسول اللہ کہنا بلاشبہ جائز ہے
۵۵۰	احادیث اور ادعیہ ماثورہ سے اس کا ثبوت
۵۵۳	اقوالِ ائمہ اور فتاویٰ علماء سے ثبوت
۵۵۴	تین شامی مجاہدین کا واقعہ کہ یہ تینوں تبع تابعی تھے
۵۵۶	سیدنا غوث اعظم کی تعلیمات بسلسلہ ہذا
۵۵۶	اولیاء کرام کو ندا کرنے کا طریقہ متوارثہ جو خود انہوں نے اپنے متوسطین کو تعلیم فرمایا

Fatawa Razawiyya Volume 29

Page	Topic	Page	Topic
572	Second Verse	558	Some incidents in this connection
573	Third Verse	561	Proof of this issue from the works of Allama Jami and Shah Waliullah
573	Fourth Verse	564	Proof through "Ya Sheikh Abdul Qadir and Nad-e-Ali" and other invocations
573	Fifth Verse	565	According to the Wahhabi claim, everyone from the Companions to Shah Waliullah is considered a polytheist
574	Noble Hadiths	566	Proof of calling "Ya Rasulullah" after At-Tahiyyat
574	Hadiths on the horrors of the Resurrection and the Great Intercession	566	According to the Wahhabi creed, Shirk (polytheism) becomes inherent in prayer, which is an act of worship
575	The dignity that our Master has in the court of Allah is not possessed by anyone else.	567	Offering salutations to the Master (Prophet) while in At-Tahiyyat, intending its meanings
575	The office of the Great Intercession is specific to this Master.	568	Deeds of the Ummah are presented in the court of Prophethood
575	The Intercessor of the Sinners (peace and blessings of Allah be upon him) will intercede repeatedly, and each time he will grant salvation to countless servants of God.	571	Treatise "Isma' al-Arba'in fi Shafa'at Sayyid al-Mahbubin" (Forty sacred Hadiths regarding intercession)
576	Selection of forty Hadiths of intercession by the author, which are apart from the famous Hadiths	572	Thousands of Hadith scholars are narrators of the Hadiths of intercession; every kind of Hadith book - Sahah, Sunan, Musanid, Mu'ajim, Jawami', Musannafat - is full of them.

Page	Topic	Page	Topic
	of intercession and have less reached the ears of the common people.		Every soul of the Ahl al-Sunnah, even women, children, and simple villagers, is aware of this belief. Vision of God and intercession of Muhammad is on the tongue of every child, peace and blessings of Allah be upon him.
577	Hadith 1 and 2	572	A few Quranic verses in proof of intercession
577	The intercession of the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) will be for those heavily burdened with sins.	572	First verse

फ़तावा रज़विया, खंड 29

पृष्ठ	विषय	पृष्ठ	विषय
572	दूसरी आयत	558	इस संबंध में कुछ घटनाएँ
573	तीसरी आयत	561	अल्लामा जामी और शाह वलीउल्लाह की कृतियों से इस मुद्दे का प्रमाण
573	चौथी आयत	564	"या शेख अब्दुल कादिर और नाद-ए-अली" और अन्य वज़ीफ़ों के माध्यम से प्रमाण
573	पाँचवीं आयत	565	वहाबियों के कथन के अनुसार, सहाबा से लेकर शाह वलीउल्लाह तक सभी मुशरिक ठहरते हैं
574	हदीस-ए-करीमा	566	अत-तहिआत के बाद नदा-ए-"या रसूलल्लाह" का प्रमाण
574	हश्र के मैदान की भयानकता और शफ़ाअत-ए-कुबरा की हदीसें	566	वहाबियों के मज़हब के अनुसार नमाज़ जो कि इबादत है, उसके अंदर शिर्क अनिवार्य हो जाता है
575	अल्लाह की दरगाह में जो गरिमा हमारे आका की है, वह किसी और की नहीं।	567	अत-तहिआत में अर्थों का इरादा करते हुए सरकार की सेवा में सलाम पेश करे
575	शफ़ाअत-ए-कुबरा का पद इसी सरकार का विशेषाधिकार है।	568	उम्मत के आमाल बारगाह-ए-रिसालत में पेश किए जाते हैं
575	हुज़ूर शफ़ी-उल-मुज़निबीन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बार-बार शफ़ाअत फरमाएंगे और हर बार अल्लाह के अनगिनत बंदों को मुक्ति दिलाएंगे।	571	रिसाला "इस्मा अल-अरबईन फी शफ़ाअत सैय्यद अल-महबूबीन" (शफ़ाअत के बारे में चालीस पवित्र हदीसें)
576		572	

पृष्ठ	विषय
	लेखक की ओर से ऐसी चालीस शफ़ाअत हदीसों का चयन जो प्रसिद्ध शफ़ाअत हदीसों के अतिरिक्त हैं और आम लोगों के कानों तक कम पहुंची हैं।
577	हदीस 1 और 2
577	हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शफ़ाअत पापों में डूबे हुए घोर अपराधियों के लिए होगी

पृष्ठ	विषय
	हज़ारों हदीस विद्वान शफ़ाअत की हदीसों के रावी हैं; हदीस की हर तरह की किताब - सहाह, सुनन, मसानिद, मुआजम, जवामि, मुसन्नफ़ात - इनसे भरी हुई हैं। अहले सुन्नत का हर व्यक्ति, यहाँ तक कि महिलाएँ, बच्चे और अनपढ़ ग्रामीण भी इस अक़ीदे से अवगत हैं। अल्लाह का दीदार और मोहम्मद की शफ़ाअत हर बच्चे की ज़ुबान पर जारी है, सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम।
572	शफ़ाअत के प्रमाण में कुछ कुरानी आयतें
572	पहली आयत

فتاوی رضویہ جلد ۲۹

صفحہ	عنوان
۵۷۲	دوسری آیت
۵۷۳	تیسری آیت
۵۷۳	چوتھی آیت
۵۷۳	پانچویں آیت
۵۷۴	احادیث کریمہ
۵۷۴	عرصات محشر کی ہولناکی اور شفاعت کبری کی حدیثیں
۵۷۵	بارگاہ الہی میں جو وجاہت ہمارے آقا کی ہے کسی اور کی نہیں۔
۵۷۵	منصب شفاعت کبری اسی سرکار کا خاصہ ہے
۵۷۵	

صفحہ	عنوان
۵۵۸	اس سلسلہ میں چند واقعات
۵۶۱	علامہ جامی وشاہ ولی اللہ صاحب کی تصانیف سے اس مسئلہ کا اثبات
۵۶۴	"یا شیخ عبدالقادر و ناد علی" و دیگر وظائف کے ذریعہ ثبوت
۵۶۵	وہابیہ کے قول پر صحابہ سے لے کر شاہ ولی اللہ تک سب مشرک ٹھہرتے ہیں
۵۶۶	التحیات کے بعد نداء یار سول اللہ کا اثبات
۵۶۶	وہابیہ کے مذہب پر نماز جو کہ عبادت ہے اس کے اندر شرک لازم آتا ہے
۵۶۷	التحیات میں معانی کا قصد کرتے ہوئے سرکار کی خدمت میں سلام عرض کرے
۵۶۸	اعمال اُمت بارگاہ رسالت میں پیش ہوتے ہیں
۵۷۱	

صفحہ	عنوان
	حضور شفیع المذنبین صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم بار بار شفاعت فرمائیں گے اور ہر مرتبہ بے شمار بندگان خدا کو نجات بخشیں گے
	مصنف علیہ الرحمہ کی طرف سے ایسی چالیس احادیث شفاعت کا انتخاب جو
۵۷۶	مشہور احادیث شفاعت کے علاوہ ہیں اور گوش عوام تک کم پہنچی ہیں۔
۵۷۷	حدیث ۱ و ۲
	حضور اکرم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی شفاعت گناہوں
۵۷۷	میں آلود سخت خطا کاروں کے لیے ہوگی

صفحہ	عنوان
	رسالہ اسماع الاربعین فی شفاعۃ سید المحبوبین (شفاعت کے بارے میں چالیس احادیث مقدسہ)
	ہزارہا محدثین احادیث شفاعت کے راوی ہیں حدیث کی ہر گونہ کتاب صحاح، سنن، مسانید معاجم، جوامع، مصنفات، ان سے مالا مال اہلسنت کا ہر متنفس، یہاں
۵۷۲	تک کہ زنان واطفال بلکہ دہقانی جُہال بھی اس عقیدے سے آگاہ، خدا کا دیدار، محمد کی شفاعت ایک ایک بچے کی زبان پر جاری، صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم
۵۷۲	شفاعت کے ثبوت میں چند آیات قرآنیہ
۵۷۲	پہلی آیت

Fatawa Razawiyya Volume 29

577 | Hadith 3: Intercession for those who perish. 582 | Hadith 24: All creations of God became in need of the Holy Prophet (peace be upon him). Even Hazrat Ibrahim Khalilullah (peace be upon him). 577 | Hadith 4 to 8: Intercession for the perpetrators of major sins. 582 | Hadith 25: Allah Almighty kept intercession hidden for His Beloved, and did not give it to anyone else. 578 | Hadith 9: Intercession for the people of sins. 585 | Hadith 26: The Holy Prophet (peace be upon him) will be the leader and speaker of the prophets on the Day of Resurrection. 585 | Hadith 27 to 40: He who does not believe in intercession is not worthy of intercession. 578 | Hadith 10 & 11: Intercession for more people than the number of trees, stones, and clods on earth. 586 | All things prostrate on the Night of Power (Shab-e-Qadr). 579 | Hadith 12: Intercession for every true believer (one who recites the Kalima). 587 | Reply to a letter regarding a difference of opinion between two Maulvis, written by Maulvi Syed Ahmad. 579 | Hadith 13: Intercession for every person whose end was upon non-shirk (monotheism). 587 | The importance of honoring the Sayyids (descendants of the Prophet). 579 | Hadith 14: The Holy Prophet (peace be upon him) will have the gate of Hell opened and bring out every true believer from there. 587 | People are trustees of their lineage. 580 | Hadith 15: The Lord will say, "O Beloved, what is your wish? What should I do with your Ummah?" 589 | Incident of staying in Ahmedabad on return from Hajj. 580 | The gatekeeper of Hell will submit, "O Beloved, you have left no trace of the Lord's wrath in your Ummah." 590 | Incident of writing a commendation (Taqreez) on a book by a scholar from Rampur. 581 | Hadith 16 to 21: Decree of the Master of Messengers (peace be upon him) that "no prophet besides me was given this status." 591 | It is obligatory for the common people to learn the knowledge of essential matters. 581 | Hadith 22 & 23: Every prophet was given a special accepted prayer which they used in this world, but the Leader of Prophets (peace be upon him) kept that prayer for the hereafter, through which he will seek forgiveness for his entire Ummah.

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

577 | हदीस 3: हलाकी (विनाश) वालों के लिए शफ़ाअत (सिफ़ारिश)। 582 | हदीस 24: अल्लाह की तमाम मख्लूक (सृष्टि) हुज़ूर अलैहिस सलातो वस्सलाम की नियाज़मंद (ज़रूरतमंद) हो गई। यहाँ तक कि हज़रत इब्राहीम खलीलुल्लाह अलैहिस्सलाम भी। 577 | हदीस 4 से 8: बड़े गुनाह करने वालों (अहल-ए-कबायिर) के लिए शफ़ाअत। 582 | हदीस 25: अल्लाह तआला ने अपने महबूब के लिए शफ़ाअत छिपा रखी, किसी और को न दी। 578 | हदीस 9: गुनाहगारों के लिए शफ़ाअत। 585 | हदीस 26: हुज़ूर अलैहिस सलातो वस्सलाम क़यामत के दिन अंबिया (नबियों) के सरदार और ख़तीब (वक्ता) होंगे। 585 | हदीस 27 से 40: जो शफ़ाअत पर ईमान (विश्वास) नहीं रखता, वह शफ़ाअत का पात्र नहीं है। 578 | हदीस 10 और 11: ज़मीन के पेड़ों, पत्थरों और मिट्टी के ढेलों की संख्या से ज़्यादा आदमियों की शफ़ाअत। 586 | शबे क़द्र में तमाम चीज़ें सज्दा करती हैं। 579 | हदीस 12: हर सच्चे कलिमा पढ़ने वाले के लिए शफ़ाअत। 587 | एक पत्र का उत्तर जो दो मौलवी साहबान के बीच मतभेद के बारे में मौलवी सैयद अहमद ने लिखा। 579 | हदीस 13: हर उस व्यक्ति के लिए शफ़ाअत जिसका अंत शिर्क न करने (तौहीद) पर हुआ। 587 | सादात (सैयदों) के सम्मान का महत्व। 579 | हदीस 14: नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम जहन्नम (नरक) का दरवाज़ा खुलवाकर हर सच्चे कलिमा पढ़ने वाले को वहाँ से निकाल लाएंगे। 587 | लोग अपने वंश (नसब) पर अमीन (विश्वस्त) होते हैं। 580 | हदीस 15: रब फरमाएगा, "ऐ महबूब! तुम्हारी क्या मर्ज़ी है, मैं तुम्हारी उम्मत के साथ क्या करूँ।" 589 | हज से वापसी पर अहमद आबाद में ठहरने की घटना। 580 | दोज़ख (नरक) का दारोगा अर्ज़ करेगा, "ऐ महबूब! आपने अपनी उम्मत में रब के ग़ज़ब (क्रोध) का नाम तक न छोड़ा।" 590 | रामपुर के एक आलिम की रचना पर तक़रीज़ (प्रशंसा लेख) लिखने की घटना। 581 | हदीस 16 से 21: सैयदुल मुरसलीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का फ़रमान कि "मेरे सिवा किसी नबी को यह पद (मंसब) नहीं मिला।" 591 | आम जनता के लिए ज़रूरी बातों का इल्म सीखना ही फ़र्ज़ है। 581 | हदीस 22 और 23: हर नबी को एक विशेष स्वीकृत दुआ दी गई जो उन्होंने दुनिया में इस्तेमाल कर ली, लेकिन इमामुल अंबिया सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने वह दुआ आख़िरत (परलोक) के लिए बचा कर रखी है, जिसके ज़रिए वे अपनी पूरी उम्मत को बख्शवाएंगे।

فتاوی رضویہ جلد ۲۹

۵۷۷ | حدیث ۳، ہالکین کے لیے شفاعت ۵۸۲ | حدیث ۲۴ تمام مخلوق الہی حضور علیہ الصلوۃ والسلام کی نیاز مند ہو گئی۔ یہاں تک کہ حضرت ابراہیم خلیل اللہ علیہ السلام بھی ۵۷۷ | حدیث ۴ تا ۸، اہل کبائر کے لیے شفاعت ۵۸۲ | حدیث ۲۵ اللہ تعالیٰ نے اپنے محبوب کے لیے شفاعت چھپا رکھی کسی اور کو نہ دی ۵۷۸ | حدیث ۹، اہل ذنوب کے لیے شفاعت ۵۸۵ | حدیث ۲۶ حضور علیہ الصلوۃ والسلام قیامت کے دن انبیاء کے پیشوا اور خطیب ہوں گے ۵۸۵ | حدیث ۲۷ تا ۴۰ جو شفاعت پر ایمان نہیں رکھتا وہ شفاعت کا اہل نہیں ۵۷۸ | حدیث ۱۰ و ۱۱، زمین کے پیڑوں، پتھروں اور ڈھیلوں کی تعداد سے زیادہ آدمیوں کی شفاعت۔ ۵۸۶ | شب قدر میں تمام چیزیں سجدہ کرتی ہیں ۵۷۹ | حدیث ۱۲۔ ہر سچے کلمہ گو کے لیے شفاعت ۵۸۷ | ایک خط کا جواب جو دو مولوی صاحبان کے درمیان اختلاف رائے کے بارے میں مولوی سید احمد نے لکھا ۵۷۹ | حدیث ۱۳۔ ہر اس شخص کے لیے شفاعت جس کا خاتمہ عدم شرک پر ہوا ۵۸۷ | تعظیم سادات کی اہمیت ۵۷۹ | حدیث ۱۴۔ نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم جہنم کا دروازہ کھلوا کر ہر سچے کلمہ گو کو وہاں سے نکال لائیں گے ۵۸۷ | لوگ اپنے نسب پر امین ہوتے ہیں ۵۸۰ | حدیث ۱۵۔ رب فرمائے گا اے محبوب۔ تیری کیا مرضی ہے میں تیری امت کے ساتھ کیا کروں۔ ۵۸۹ | حج سے واپسی پر احمد آباد میں قیام کا واقعہ ۵۸۰ | داروغہ دوزخ عرض کرے گا کہ اے محبوب آپ نے اپنی امت میں رب کا غضب نام کو نہ چھوڑا۔ ۵۹۰ | ایک رامپوری عالم کی تصنیف پر تقریظ لکھنے کا واقعہ ۵۸۱ | حدیث ۱۶ تا ۲۱، فرمانِ سید المرسلین صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کہ میرے سوا کسی نبی کو یہ منصب نہیں ملا ۵۹۱ | عوام کو ضروری باتوں کا علم سیکھنا ہی فرض ہے ۵۸۱ | حدیث ۲۲ و ۲۳ ہر نبی کو ایک خاص مقبول دعا عطا ہوئی جو انہوں نے دنیا میں استعمال

کرلی مگر امام الانبیاء صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے وہ دُعا آخرت کے لیے اٹھا رکھی جس کے ذریعے وہ اپنی ساری امت کو بخشوائیں گے

Fatawa Rizwia, Volume 29

Page	Topic
591	Public should never fly higher than their status
591	Letter from Maulana Muharram Ali Chishti (RA), Second President of Anjuman-e-Naumania Lahore, containing ten questions and the reply from Ala Hazrat (RA)
592	It is mandatory to conceal a slip-up if it occurs from people of truth
595	The majestic status of Ala Hazrat's father, Maulana Naqi Ali Khan, and the lover of the Prophet, Maulana Abdul Qadir (may Allah sanctify their secrets)
596	The humility of the author (RA)
596	Statement of the number of Ala Hazrat's compositions up to 1330 AH
596	Ala Hazrat personally sent his published treatises to Anjuman-e-Naumania Lahore until 1320 AH
597	There is a need for a collective force of pure Ahl-e-Sunnat, but for that, three things are strongly required: (1) Agreement of scholars, (2) Enduring great hardships beyond capacity, (3)
603	Part One
603	Part Two
607	Final Submission
608	Ala Hazrat's (RA) full-time engagement in religious affairs
610	Conversation between Maulana Syed Deedar Ali Shah and Ala Hazrat
613	Treatise "Umoor-e-Ashreen dar Imtiyaz Aqaid-e-Sunniyeen" (Twenty matters that distinguish Sunni from non-Sunni)
613	(Reply to the letter sent by Hafiz Muhammad Usman from the state of Jaipur (Rajasthan), in which an inquiry was made from the author (RA) regarding Mr. Maulvi Ahmad Ali Shah)
613	Copy of the letter from Hafiz Muhammad Usman to the author (RA)

Page	Topic
	Agreement of the wealthy for the sake of the Creator
599	Hadith stating that a time will come when the work of religion will not proceed without money
599	Important methods of spreading religious knowledge
602	Some amendments in the list of Hanafi beliefs
603	Two types of abandoned previous amendments
614	Letter from the author (RA) to Hafiz Muhammad Usman
615	Twenty matters seeking verification from Mr. Maulana Maulvi Ahmad Ali Shah Mirzapuri
617	Verification of the author's (RA) established matters from Mr. Maulana Maulvi Ahmad Ali Shah
617	Verification of writing by the author (RA)

फ़तावा रज़विया, जिल्द 29

पृष्ठ	विषय	पृष्ठ	विषय
591	आम जनता अपने पद से ऊपर कदापि न उड़ें	603	भाग प्रथम
591	मौलाना मुहर्रम अली चिश्ती (रहमतुल्लाह अलैहि), अंजुमन-ए-नोमानिया लाहौर के दूसरे अध्यक्ष का दस सवालों वाला पत्र और आला हज़रत (रहमतुल्लाह अलैहि) का उत्तर	603	भाग द्वितीय
592	अहल-ए-हक़ (सत्य पर चलने वालों) से यदि कोई चूक हो जाए तो उसे छिपाना अनिवार्य है	607	अंतिम प्रस्तुति
595	आला हज़रत के पूज्य पिता मौलाना नक़ी अली खान और रसूल-प्रेमी मौलाना अब्दुल क़ादिर साहब (अल्लाह उनके रहस्यों को पवित्र करे) की महान प्रतिष्ठा	608	आला हज़रत (रहमतुल्लाह अलैहि) की पूर्णकालिक धार्मिक कार्यों में व्यस्तता
596	लेखक (रहमतुल्लाह अलैहि) की विनम्रता	610	मौलाना सैयद दीदार अली शाह और आला हज़रत के बीच बातचीत
596	सन् 1330 हिजरी तक आला हज़रत की रचनाओं की संख्या का विवरण	613	रिसाला "उमूर-ए-अशरीन दर इम्तियाज़ अकायद-ए-सुन्नियान" (सुन्नी और गैर-सुन्नी के बीच अंतर करने वाली बीस बातें)
596	आला हज़रत ने अंजुमन-ए-नोमानिया लाहौर को 1320 हिजरी तक प्रकाशित अपने शोध प्रबंध स्वयं भेजे थे	613	(जयपुर रियासत (राजस्थान) से भेजे गए हाफ़िज़ मुहम्मद उस्मान के पत्र का उत्तर जिसमें श्री मौलवी अहमद अली शाह साहब के बारे में लेखक (रहमतुल्लाह अलैहि) से पूछताछ की गई थी)
597		613	

पृष्ठ	विषय
	शुद्ध अहले सुन्नत की एक सामूहिक शक्ति की आवश्यकता है, लेकिन इसके लिए तीन चीजों की सख्त जरूरत है: (1) विद्वानों की सहमति (2) क्षमता से परे बड़ी कठिनाइयों को सहन करना (3) रचयिता (अल्लाह) की प्रसन्नता के लिए अमीरों की सहमति
599	हदीस का कथन कि वह समय आने वाला है जब दीन का काम भी बिना रुपये-पैसे के नहीं चलेगा
599	धार्मिक ज्ञान के प्रसार के महत्वपूर्ण तरीके
602	हनफ़ी अक़ीदों की सूची में कुछ संशोधन
603	छोड़े गए पिछले संशोधनों के दो प्रकार

पृष्ठ	विषय
	हाफ़िज़ मुहम्मद उस्मान साहब द्वारा लेखक (रहमतुल्लाह अलैहि) के नाम पत्र की प्रति
614	लेखक (रहमतुल्लाह अलैहि) का हाफ़िज़ मुहम्मद उस्मान साहब के नाम पत्र
615	श्री मौलाना मौलवी अहमद अली शाह मिर्जापुरी से सत्यापन के लिए बीस बातें
617	श्री मौलाना मौलवी अहमद अली शाह द्वारा लेखक (रहमतुल्लाह अलैहि) के निर्धारित मामलों का सत्यापन
617	लेखक (रहमतुल्लाह अलैहि) द्वारा लेखन का सत्यापन

فتاویٰ رضویہ، جلد ۲۹

صفحہ	عنوان
۵۹۱	عوام مرتبے سے اونچے ہرگز نہ اڑیں
	مولانا محرم علی چشتی علیہ الرحمہ
۵۹۱	صدر ثانی انجمن نعمانیہ لاہور کا دس سوالات پر مشتمل خط اور اعلیٰحضرت علیہ الرحمہ کا جواب
۵۹۲	اہل حق سے لغزش واقع ہو اس کا اخفاء واجب ہے
۵۹۵	والد ماجد اعلیٰحضرت مولانا نقی علی خان و محب رسول مولانا عبدالقادر صاحب قدس سرہما کی جلالت شان
۵۹۶	مصنف علیہ الرحمہ کی کسر نفسی
۵۹۶	سن ۱۳۳۰ ہجری تک اعلیٰحضرت کی تعداد تصانیف کا بیان
۵۹۶	
۶۰۳	قسم اول
۶۰۳	قسم دوم
۶۰۷	عرض اخیر
۶۰۸	اعلیٰحضرت علیہ الرحمہ کی ہمہ وقتی دینی امور میں مشغولیت
۶۱۰	مولانا سید دیدار علی شاہ اور اعلیٰحضرت کے دوران گفتگو
۶۱۳	رسالہ "امور عشرین در امتیاز عقائد سنیین" (سنی اور غیر سنی میں امتیاز کرنے والے بیس امور)
۶۱۳	

صفحہ	عنوان	صفحہ	عنوان
			(علاقہ ریاست جے پور (راجستھان) سے
	انجمن نعمانیہ لاہور میں اعلیٰحضرت نے		ارسال کردہ حافظ محمد عثمان کے خط کا
	۱۳۲۰ھ تک کے شائع شدہ رسائل خود		جواب جس میں جناب مولوی احمد علی شاہ
	ارسال کیے تھے		صاحب کے بارے میں مصنف علیہ الرحمہ
			سے استفسار کیا گیا تھا)
	خالص اہلسنت کی ایک قوت اجتماعی کی		
	ضرورت ہے مگر اس کے لیے تین		
۵۹۷	چیزوں کی سخت حاجت ہے (۱) علماء	۶۱۳	نقل نامہ حافظ محمد عثمان صاحب بنام
	کا اتفاق (۲) تحمل شاق قدر بالاطاق (۳)		مصنف علیہ الرحمہ
	امراء کا اتفاق لوجہ الخلاق،		
	حدیث کا ارشاد کہ وہ زمانہ آنے والا ہے		
۵۹۹	کہ دین کا کام بھی بے روپیہ پیسے کے	۶۱۴	نامہ مصنف علیہ الرحمہ بنام حافظ محمد
	نہ چلے گا		عثمان صاحب
۵۹۹	اشاعت علم دین کے اہم طریقے	۶۱۵	امور عشرین تصدیق طلب از جناب مولانا
			مولوی احمد علی شاہ صاحب مرزا پوری
			مصنف علیہ الرحمہ کے امور مقررہ کی
۶۰۲	فہرست عقائد حنفیہ میں کچھ ترمیمات	۶۱۷	تصدیق از جناب مولانا مولوی احمد علی
			شاہ صاحب
۶۰۳	ترمیمات سابقہ متروکہ کی دو قسمیں	۶۱۷	تصدیق تحریر از مصنف علیہ الرحمہ

Volume 29 Fatawa Razawiyya

Page No.		Subject Matter 1	Subject Matter 2	Page
632	618	Inquiry regarding an advertisement containing a will from a servant of the Prophet's (PBUH) shrine named Sheikh Ahmed.	Answer to an inquiry consisting of nine questions.	632
632	619	Difference between the sin of a scholar and an ignorant person.	The statement of Mother of Believers Hazrat Aisha (RA) is about spiritual ascension (Me'raj).	632
633	620	Answer to a letter from the noble Maulana Syed Muhammad Miyan Marehrawi, mentioning the correction and reform of the book titled 'Kanz-ul-Akhira'.	Details of physical ascension (Me'raj-e-Jismani).	633
635	625	Question about an Imam who refuses to recite Fatiha over food items because if any part falls on the ground, it would be disrespectful and the one giving Fatiha would be sinful.	The wisdom behind the ascension occurring at night.	635
637	626	The scale for weighing good and evil is contrary to the scales here: there, if the pan of good deeds is heavy, it will rise, and the pan of evil deeds will sink.	All Prophets (peace be upon them) are alive with true physical life.	637
637	627	Investigation into the sayings of Hazrat Mansoor, Bayazid Bastami, and Shams Tabrizi like 'Ana al-Haq', 'Subhani Ma Azama Shani', and 'Qum bi-idni'.	Four Prophets are still alive without experiencing death.	637
638	628	Why was Hazrat Shah Mansoor (mercy be upon him) crucified?	There is firm hope that true descendants of the Prophet (Sayyids) are protected from punishment.	638
638	629			638

Page No.		Subject Matter 1	Subject Matter 2	Page
		The miracle of Ghaus-e-Azam (RA) making a sunken ship sail.	Hazrat Fatima and all her descendants are protected from the Fire.	
639	629	This narration is false and void that Ghaus-e-Azam slapped Azrael (AS), and narrating it is forbidden (haram).	Answer to another question of a similar nature.	639
641	629	Archangels are collectively superior to all non-Prophets.	Ill-omens are not permissible and are a Hindu custom.	641
642	629	Insulting the Messenger is blasphemy (kufr).	A disbeliever cannot take allegiance (bay'at).	642
642	630	Answer to a question about an anonymous letter containing Quranic words.	Making a disbeliever an authorized deputy for allegiance and a successor is blasphemy.	642
-	630	Proof of souls of believers visiting their respective homes.	-	-

जिल्द २९ फ़तावा रज़विया

पृष्ठ	क्र.	विषय १	विषय २	पृष्ठ
६३२	६१८	शेख अहमद नाम के नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के रौज़े के खादिम की ओर से एक वसीयत पर आधारित विज्ञापन के बारे में पूछताछ।	नौ सवालों पर आधारित एक पूछताछ का जवाब।	६३२
६३२	६१९	आलिम (विद्वान) और जाहिल के गुनाह में अंतर।	उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीका (रज़ियल्लाहु अन्हा) का फरमान रूहानी मेराज के बारे में है।	६३२
६३३	६२०	साहिबज़ादा मौलाना सैयद मुहम्मद मियां मारहरवी के एक पत्र का जवाब, जिसमें 'कंज़ुल आखिरत' नाम की किताब के संशोधन का उल्लेख है।	मेराज-ए-जिस्मानी (शारीरिक आरोहण) का विवरण।	६३३
६३५	६२५	एक मस्जिद के इमाम के बारे में सवाल जो खाने की चीजों पर फातिहा पढ़ने से इसलिए इनकार करता है कि यदि कोई हिस्सा जमीन पर गिर जाए तो अनादर होगा और फातिहा देने वाला गुनहगार होगा।	रात में मेराज होने की हिकमत (बुद्धिमत्ता)।	६३५
६३७	६२६	नेकी और बदी तौलने वाला तराजू यहाँ के तराजू के विपरीत है: वहाँ अगर नेकियों का पलड़ा भारी है तो वह ऊपर उठेगा और बुराइयों का पलड़ा नीचे बैठेगा।	तमाम अंबिया (अलैहिमुस्सलाम) वास्तविक जीवन के साथ जीवित हैं।	६३७
६३७	६२७	हज़रत मंसूर, बायज़ीद बुस्तामी और शम्स तबरेज़ी के कथनों 'अनल हक', 'सुब्हानी मा आज़मा शानी' और 'कुम बिइज़नी' की जाँच।	चार नबी बिना मौत के अब तक जीवित हैं।	६३७

पृष्ठ	क्र.	विषय १	विषय २	पृष्ठ
६३८	६२८	हज़रत शाह मंसूर (रहमतुल्लाह अलैह) को फांसी क्यों दी गई?	पक्का विश्वास है कि सच्चे सादात (नबी की संतान) अज़ाब से सुरक्षित हैं।	६३८
६३८	६२९	सरकार गौस-ए-आज़म (रज़ियल्लाहु अन्हु) की डूबी हुई नाव को पार लगाने वाला चमत्कार।	हज़रत फातिमा और उनकी समस्त संतति नरक की आग से सुरक्षित हैं।	६३८
६३९	६२९	यह रिवायत गलत और निराधार है कि गौस-ए-आज़म ने अज़राईल (अलैहिस्सलाम) को थप्पड़ मारा, और इसे बयान करना हराम है।	इसी प्रकार के एक और सवाल का जवाब।	६३९
६४१	६२९	फ़रिश्तों के रसूल सामूहिक रूप से तमाम गैर-नबियों से श्रेष्ठ हैं।	अपशकुन मानना जायज़ नहीं है और यह हिंदुओं का तरीका है।	६४१
६४२	६२९	रसुल की तौहीन (अपमान) कुफ्र है।	काफिर की बैत (शिष्यता) नहीं हो सकती।	६४२
६४२	६३०	कुरानी शब्दों वाले एक गुमनाम पत्र के बारे में सवाल का जवाब।	काफिर को बैत का अधिकार देना या उत्तराधिकारी बनाना कुफ्र है।	६४२
-	६३०	मोमिनों की रूहों का अपने-अपने घरों में आने का प्रमाण।	-	-

صفحہ	نمبر	مضمون ۱	مضمون ۲	صفحہ
		شیخ احمد نامی خادم روضۃ النبی صلی اللہ تعالیٰ	نو سوالات پر مشتمل ایک	
۶۳۲	۶۱۸	علیہ وسلم کی طرف سے ایک وصیت پر مشتمل	استفتاء کا جواب	۶۳۲
		اشتہار کے بارے میں استفتاء		
			ام المومنین حضرت عائشہ	
			صدیقہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا	
۶۳۲	۶۱۹	عالم اور جاہل کے گناہ میں فرق	کا فرمان روحانی معراج	۶۳۲
			کے بارے میں ہے	
		صاحبزادہ والا قدر حضرت مولانا سید محمد میاں		
		مارہروی کے ایک خط کا جواب جس میں		
۶۳۳	۶۲۰	کنزالاخرۃ نامی کتاب کی تصحیح و اصلاح کا ذکر	معراج جسمانی کی تفصیل	۶۳۳
		کیا گیا ہے،		
		ایک امام مسجد کے بارے میں سوال جو کھانے کی		
		اشیاء پر اس لیے فاتحہ پڑھنے سے انکار کرتا ہے	رات میں معراج ہونے کی	
۶۳۵	۶۲۵	کہ اگر اس میں سے کوئی حصہ زمین پر گر گیا تو	حکمت	۶۳۵
		بے ادبی ہوگی اور فاتحہ دینے والے کو اس پر گناہ		
		ہوگا		

صفحہ	نمبر	مضمون ۱	مضمون ۲	صفحہ
۶۳۷	۶۲۶	نیکی و بدی تولنے والی میزان یہاں کے ترازو کے خلاف ہے وہاں نیکیوں کا پلڑا اگر بھاری ہے تو اوپر اٹھے گا اور بدیوں کا پلڑا نیچے بیٹھے گا	انبیاء علیہم الصلوۃ والسلام سب بحیات حقیقی زندہ ہیں	۶۳۷
۶۳۷	۶۲۷	حضرت منصور، بایزید بسطامی اور شمس تبریزی کے اقوال انا الحق، سبحانی ما اعظم شانی اور قم باذنی کی تحقیق	چار نبی بے عروض موت اب تک زندہ ہیں	۶۳۷
۶۳۸	۶۲۸	حضرت شاہ منصور علیہ الرحمہ کو سولی کیوں دی گئی	حقیقی سادات پر عذاب سے مامون ہونے کی امید واثق ہے	۶۳۸
۶۳۸	۶۲۹	سرکار غوث اعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی ڈوبی کشتی ترانے والی کرامت	حضرت فاطمہ اور ان کی تمام ذریت نار سے محفوظ ہے	۶۳۸
۶۳۹	۶۲۹	یہ روایت غلط و باطل ہے کہ غوث اعظم نے عزرائیل علیہ السلام کو تھپڑ مارا، اور اس کو بیان کرنا حرام	اسی نوعیت کے ایک اور سوال کا جواب	۶۳۹
۶۴۱	۶۲۹	مرسلین ملائکہ بالا جماع تمام غیر انبیاء سے افضل ہیں	بدشگونی جائز نہیں اور ہندوانہ طریقہ	۶۴۱
۶۴۲	۶۲۹	توہینِ رسول کفر ہے	کافر بیعت نہیں ہو سکتا	۶۴۲

صفحہ نمبر مضمون ۱		مضمون ۲	صفحہ
۶۳۰	قرآنی کلمات پر مشتمل گمنام خط کے بارے میں سوال کا جواب	کافر کو مجاز و ماذون بیعت و خلیفہ بنانا کفر ہے	۶۴۲
۶۴۲			

- ۶۳۰ ارواح مومنین کا اپنے اپنے مکان میں آنے کا ثبوت - -

Volume 29 Fatawa Rizvia

What is the relationship between a believer (Momin) and a saint (Wali)? | 643 | Third Chapter: Sayings of the noble Imams and eminent scholars from which the disbelief of Abu Talib is proven. | 685 The reason for including 'ala Ibrahim' and 'ala Aali Ibrahim' in Salutations (Durood Sharif). | 643 | Fourth Chapter: Clarifications of scholars that the verdict of disbelief regarding Abu Talib is the truth and correct. | 699 Whatever subject the Holy Quran points to is a Quranic implication. | 643 | Fifth Chapter: Clarifications of scholars that there is a consensus (ijma) of Ahl-e-Sunnat on the disbelief of Abu Talib. | 701 Analogical reasoning (Qiyas) in ambiguous matters (Mutashabihat) is misguidance. | 643 | Sixth Chapter: Clarifications of scholars that believing in the Islam of Abu Talib is the doctrine of the Rafidites (Rawafiz). | 703 The Companions (Sahaba) are also included within the Family (Aal). | 643 | Seventh Chapter: Refutation of the doubts of opponents. | 705 The reason why the rank of sainthood (Wilayat) remains and Prophethood (Nubuwwat) has ended. | 644 | First Doubt: The guardianship (Kafalat) of the Prophet (peace and blessings be upon him). | 705 Explanation regarding Nosha-e-Baghdad (may his secret be sanctified) and the correct remedy for doubt. | 645 | Second Doubt: Assistance to the Prophet (peace and blessings be upon him) and its five answers. | 706 A comprehensive and exclusive definition of worship (Ibadat). | 646 | Third Doubt: Love for the Prophet (peace and blessings be upon him); wisdoms behind Abu Talib not being a Muslim. | 708 Prostration of worship for anyone other than God is disbelief (Kufr), and prostration of respect (tahiyat) is forbidden (haram) and a major sin (kabirah). | 649 | Fourth Doubt: Noble Praise (Naat) of the Prophet (peace and blessings be upon him). | 711 Both parts of the Kalima Tayyaba are present in the Holy Quran. | 652 | Fifth Doubt: The Prophet (peace and blessings be upon him) seeking forgiveness (Istighfar). | 712 Proof from the Holy Quran that the Holy Prophet (peace and blessings be upon him) is the intercessor of the Day of Resurrection (Shafi-e-Mahshar). | 652 | Sixth Doubt: The narration from Jami' al-Usul and mentioning those members of the Household (Ahl-e-Bait) in the answer who clarified Abu Talib's disbelief. | 712 Treatise 'Sharh al-Matalib fi Mabhas-e-Abi Talib' (Detailed and reasoned discussion about Abu Talib's faith). | 655 | Seventh Doubt: Text from the commentary of Safar al-Sa'ada. | 714 First Chapter: Quranic verses proving that Abu Talib was not a Muslim. | 661 | Eighth Doubt: The testament (wasiyat namah) and its three answers. | 714 Second Chapter: Explicit Hadiths proving Abu Talib's non-acceptance of Islam. | 673 | |

खंड 29 फतावा रज़विया

मोमिन और वली के बीच क्या संबंध है? | 643 | तीसरा अध्याय: प्रतिष्ठित इमामों और प्रख्यात विद्वानों के कथन जिनसे अबू तालिब का कुफ़्र (अविश्वास) सिद्ध होता है। | 685 दुरूद शरीफ में 'अला इब्राहिम' और 'अला आली इब्राहिम' शामिल करने का कारण। | 643 | चौथा अध्याय: विद्वानों का स्पष्टीकरण कि अबू तालिब के बारे में कुफ़्र (तकफीर) का निर्णय ही सत्य और सही है। | 699 पवित्र कुरान जिस विषय की ओर संकेत करता है, वह कुरान का अर्थ है। | 643 | पांचवां अध्याय: विद्वानों का स्पष्टीकरण कि अबू तालिब के कुफ़्र पर अहले सुन्नत की आम सहमति (इज्मा) है। | 701 अस्पष्ट विषयों (मुताशाबिहात) में कयास (तर्क) करना गुमराह होना है। | 643 | छठा अध्याय: विद्वानों का स्पष्टीकरण कि अबू तालिब के इस्लाम को मानना रवाफ़िज़ का मज़हब है। | 703 'आल' के भीतर सहाबा (साथी) भी शामिल हैं। | 643 | सातवां अध्याय: विरोधियों के संदेहों का खंडन। | 705 विलायत (संतत्व) का दर्जा बने रहने और नबूवत (पैग़म्बरी) के समाप्त होने का कारण। | 644 | पहला संदेह: नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का संरक्षण (कफ़ालत)। | 705 नोशा-ए-बगदाद (रहमतुल्लाह अलैहि) की व्याख्या और भ्रम का सही इलाज। | 645 | दूसरा संदेह: नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की सहायता और इसके पांच उत्तर। | 706 इबादत (पूजा) की व्यापक और अनन्य परिभाषा। | 646 | तीसरा संदेह: नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का प्रेम; अबू तालिब के मुस्लिम न होने के पीछे की हिकमतें (तर्क)। | 708 ईश्वर के अतिरिक्त किसी अन्य को पूजा का सजदा करना कुफ़्र है, और सम्मान का सजदा (तहीयत) हराम और कबीरा (बड़ा पाप) है। | 649 | चौथा संदेह: नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की नात शरीफ। | 711 पवित्र कुरान में कलमा तय्यबा के दोनों हिस्से मौजूद हैं। | 652 | पांचवां संदेह: नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का क्षमा माँगना (इस्तिग़फ़ार)। | 712 पवित्र कुरान से इस बात का प्रमाण कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) कयामत के दिन शफ़ाअत (सिफारिश) करने वाले होंगे। | 652 | छठा संदेह: जामे अल-उसूल की कहानी और उत्तर में उन अहले बैत का उल्लेख जिन्होंने अबू तालिब के कुफ़्र का स्पष्टीकरण दिया। | 712 रिसाला 'शरह अल-मतालिब फ़ी मबहस-ए-अबी तालिब' (अबू तालिब के ईमान के बारे में विस्तृत और तर्कपूर्ण चर्चा)। | 655 | सातवां संदेह: शरह सफ़र अल-सआदह का पाठ। | 714 पहला अध्याय: कुरान की आयतें जिनसे अबू तालिब का मुस्लिम न होना सिद्ध है। | 661 | आठवां संदेह: वसीयतनामा और उसके तीन उत्तर। | 714 दूसरा अध्याय: स्पष्ट हदीसें जिनसे अबू तालिब का इस्लाम स्वीकार न करना सिद्ध है। | 673 | |

750 में से पृष्ठ 38

مومن اور ولی میں کون سی نسبت ہے | ۶۴۳ | فصل سوم اقوال ائمہ کرام و علمائے اعلام جن سے کفر ابی طالب ثابت | ۶۸۵ درود شریف میں علیٰ ابراھیم و علیٰ ال ابراھیم لانے کی وجہ | ۶۴۳ | فصل چہارم علماء کی تصریحات کہ درباره ابو طالب قول تکفیر ہی حق و صحیح ہے | ۶۹۹ جس مضمون پر قرآن پاک دلالت کرے وہ مدلولِ قرآنی ہے | ۶۴۳ | فصل پنجم علماء کی تصریحات کہ کفر ابی طالب پر اجماع اہل سنت ہے | ۷۰۱ متشابہات میں قیاس کرنا ضلالت ہے | ۶۴۳ | فصل ششم علماء کی تصریحات کہ اسلام ابو طالب ماننا روافض کا مذہب ہے | ۷۰۳ آل کے اندر اصحاب بھی شامل ہیں | ۶۴۳ | فصل ہفتم شبہات مخالفین کا رد | ۷۰۵ درجہ ولایت باقی رہنے اور نبوت ختم ہونے کی وجہ | ۶۴۴ | شبہ اولٰی کفالت نبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم | ۷۰۵ نوشہ بغداد قدس سرہ کی تشریح اور وہم کا صحیح علاج | ۶۴۵ | شبہ دوم نصرت نبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم اور اس کے پانچ جواب | ۷۰۶ عبادت کی جامع و مانع تعریف | ۶۴۶ | شبہ سوم محبت نبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم عدم اسلام ابی طالب کی حکمتیں | ۷۰۸ غیر خدا کے لیے سجدہ عبادت کفر ہے اور سجدہ تحیت حرام و کبیرہ ہے | ۶۴۹ | شبہ چہارم نعت شریف نبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم | ۷۱۱ قرآن مجید میں کلمہ طیبہ کے دونوں جز موجود ہیں | ۶۵۲ | شبہ پنجم نبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کا استغفار فرمانا | ۷۱۲ حضور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے شافع محشر ہونے کا ثبوت قرآن مجید سے | ۶۵۲ | شبہ ششم حکایت جامع الاصول اور جواب میں ان اہل بیت کا ذکر جنہوں نے کفر ابی طالب کی تصریحات کیں | ۷۱۲ رسالہ شرح المطالب فی مبحث ابی طالب (ایمان ابوطالب کے بارے میں مفصل و مدلل بحث) | ۶۵۵ | شبہ ہفتم عبارت شرح سفر السعادۃ | ۷۱۴ فصل اول آیات قرآنیہ جن سے ابوطالب کا مسلمان نہ ہونا ثابت | ۶۶۱ | شبہ ہشتم

وصیت نامہ اور اس کے تین جواب | ۷۱۴ فصل دوم احادیث صریحہ جن سے ابوطالب کا عدم اسلام ثابت | ۶۷۳ | |

Volume 29 Fatawa Ridawiyyah

68 The numerical value of the word 'Muhammad' is 92 and that of 'God' is 605 718 Ninth doubt regarding the Maghazi narration of Ibn Ishaq and its seven answers 68 270 A problem of Euclid 738 Eighth Chapter: The difference between the disbelief of Abu Talib and Abu Lahab and the prohibition of praying for a disbeliever's forgiveness 270 270 A problem of Arithmetic 741 Ninth Chapter: Names of those eighty (80) Companions, Successors, Imams, and Scholars from whom the explicit mention of Abu Talib's disbelief has been quoted in this treatise 270 270 A problem of Algebra (Jabr-o-Muqabla) 745 Tenth Chapter: Names of those one hundred and twenty-three books of exegesis, beliefs, etc., whose chains of narration have been quoted in this treatise 270 Linguistics (Supplement) 748 Tadhbeel (Appendix): The books that provided assistance in this treatise
57 The difference between 'doing' (Karna), 'doing for oneself' (Kar lena), and 'doing for others' (Kar dena) and their examples Beliefs and Theology (Supplement) 57 68 A year is called 'Hawl' in Arabic as it is derived from 'Tahwil' (change) 68 Access to Allah Almighty without the mediation of the Messenger of Allah is impossible 68 68 'Baras' (Year) in the sense of rain 68 Belief in all Messengers is a part of faith 68 166 The words 'Maqam' (Station), 'Manzil' (Destination), and 'Maqam' in the sense of status and rank are commonly used Science of Letters and Mathematics (Supplement) 166

जिल्द 29 फ़तावा रिज़विया

68 शब्द 'मुहम्मद' का अंक 92 और 'खुदा' का अंक 605 है 718 इब्ने इशाक की मग़ाज़ी रिवायत से संबंधित नौवाँ संदेह और उसके सात जवाब 68 270 यूक्लिड (इक्लिदिस) की एक समस्या 738 आठवाँ अध्याय: अबू तालिब और अबू लहब के कुफ़्र (अविश्वास) में अंतर और काफ़िर के लिए क्षमा की दुआ करने की मनाही 270 270 अंकगणित की एक समस्या 741 नौवाँ अध्याय: उन अस्सी (80) सहाबा, ताबिईन, अइम्मा और उलमा के नाम जिनसे अबू तालिब के कुफ़्र की स्पष्ट पुष्टि इस शोधपत्र में उद्धृत की गई है 270 270 बीजगणित (जबर-ओ-मुक़ाबला) की एक समस्या 745 दसवाँ अध्याय: उन एक सौ तेईस तफ़सीर, अक़ायद आदि की पुस्तकों के नाम जिनकी सनदें इस शोधपत्र में उद्धृत की गई हैं 270 भाषा विज्ञान (परिशिष्ट) 748 तज़बील (परिशिष्ट): वे पुस्तकें जिनसे इस शोधपत्र में सहायता ली गई है 57 'करना', 'कर लेना' और 'कर देना' में अंतर और उनके उदाहरण अक़ायद और कलाम (परिशिष्ट) 57 68 वर्ष को अरबी में 'हौल' कहते हैं क्योंकि यह 'तहवील' (परिवर्तन) से व्युत्पन्न है 68 अल्लाह तआला तक रसूलुल्लाह की मध्यस्थता के बिना पहुँचना असंभव है 68 68 'बरस' (वर्ष) बारिश के अर्थ में 68 सभी रसूलों की तस्दीक़ (पुष्टि) ईमान का हिस्सा है 68 166 'मक़ाम' (स्थान), 'मंज़िल' और 'मक़ाम' हैसियत, पद और मर्तबा के अर्थ में सामान्य रूप से उपयोग किए जाते हैं अक्षरों का विज्ञान और गणित (परिशिष्ट) 166

पृष्ठ 39 / 750

۶۸ لفظ محمد کے عدد ۹۲ اور خدا کے عدد ۶۰۵ ہیں ۷۱۸ شبہ نہم روایت مغازی ابن اسحاق اور اس کے سات جواب ۶۸ ۲۷۰ اقلیدس کا ایک مسئلہ ۷۳۸ فصل ہشتم کفر ابی طالب وابولہب کا فرق اور کافر کے لیے دعائے مغفرت کا حرام ہونا ۲۷۰ ۲۷۰ ارشماتیقی کا ایک مسئلہ ۷۴۱ فصل نہم اُن اسی ۸۰ صحابہ و تابعین و ائمہ و علماء کے نام جن سے کفر ابی طالب کی تصریح اس رسالہ میں منقول ہوئی ۲۷۰ ۲۷۰ جبر و مقابلہ کا ایک مسئلہ ۷۴۵ فصل دہم ان ایک سو تئیس کتب تفسیر و عقائد و غیر ہا کے نام جن کی سندیں اس رسالہ میں منقول ہوئیں ۲۷۰ لغت (ضمیمہ) ۷۴۸ تذبیل، وہ کتاب جن سے اس رسالہ میں مدد لی گئی

۵۷ کرنا، کرلینا اور کر دینا میں فرق اور اس کی مثالیں عقائد وکلام (ضمیمہ) ۵۷ ۶۸ برس کو عربی میں حول کہتے ہیں کہ تحویل سے مشتق ہے ۶۸ بے وساطتِ رسول اللہ تعالیٰ تک رسائی محال ہے ۶۸ ۶۸ برس بمعنی بارش ہے ۶۸ تصدیقِ سب رسولوں کی جزوایمان ہے ۶۸ ۱۶۶ مقام و منزل و مقام بمعنی مکانت و مرتبت و مرتبہ شائع الاستعمال ہیں علم حروف و ریاضی (ضمیمہ) ۱۶۶

Fatawa Razawiyya Volume 29 Index of Subsidiary Issues Virtues of the Master of Messengers - Why did Prophet Musa (Peace be upon him), despite being a Prophet, desire to be a follower of the Master of the Universe (Peace and blessings of Allah be upon him and his family)? (Page 390) - The messengership of every Prophet is a rain of mercy. (Page 68) - A comprehensive Hadith from Jami` at-Tirmidhi regarding the great majesty of the Holy Prophet (Peace and blessings of Allah be upon him). (Page 506) - Allah the Almighty created the whole universe for the Holy Prophet (Peace and blessings of Allah be upon him and his family). (Page 113) - The scene of the field of resurrection and the kindness of the Intercessor of the day of resurrection (Peace and blessings of Allah be upon him). (Page 513) - The blessed person, attributes, virtues, and perfections of the Holy Prophet (Peace and blessings of Allah be upon him and his family) are never subject to decline, but are always progressing. (Page 201) - The daily presentation of deeds before the Messenger of Allah (Peace and blessings of Allah be upon him and his family) is among his special characteristics. (Page 522) - Reciting Durood-e-Taj and considering the Radiant Prophet (Peace and blessings of Allah be upon him and his family) as the remover of calamities. (Page 255) - The Radiant Prophet (Peace and blessings of Allah be upon him and his family) is the ruler of both Sharia (Divine Law) and Haqiqah (Spiritual Reality); therefore, his commands are sometimes based on the outward Sharia and sometimes on the inward Haqiqah. (Page 529) - The sacred soul of the Noble Prophet (Peace and blessings of Allah be upon him and his family) manifests in seventy thousand forms multiple times. (Page 658) - It is among the special characteristics of the Holy Prophet (Peace and blessings of Allah be upon him and his family) that he is the collector of two Qiblahs and two migrations, and both Sharia and Haqiqah have been gathered for him. (Page 532)

फ़तावा रज़विया जिल्द 29 फ़ेहरिस्त ज़िमनी मसाइल (सहायक मसलों की सूची) फ़ज़ाइल-ए-सैयदुल मुरसलीन (रसूलों के सरदार की विशेषताएं) - नबी होने के बावजूद सैय्यदना मूसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का उम्मती होने की ख़्वाहिश क्यों की? (पृष्ठ 390) - हर रसूल की रिसालत रहमत की बारिश है। (पृष्ठ 68) - हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम की अज़मत-ए-शान में जामे तिरमिज़ी की एक जामे हदीस। (पृष्ठ 506) - अल्लाह तआला ने तमाम जहान हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए बनाया। (पृष्ठ 113) - मैदान-ए-महशर का मंज़र और हुज़ूर शाफ़ेए-महशर अलैहिस्सलातु वस्सलाम की करम नवाज़ियां। (पृष्ठ 513) - हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ात व सिफ़ात और फ़ज़ाइल व कमालत कभी ज़वाल पज़ीर नहीं बल्कि हमेशा तरक़्क़ी पर हैं। (पृष्ठ 201) - रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हुज़ूर रोज़ाना आमाल की पेशी आप के ख़साइस में से है। (पृष्ठ 522) - दुरूद-ए-ताज पढ़ना और हुज़ूर अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दाफ़ेए-बला समझना। (पृष्ठ 255) - हुज़ूर अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम शरीअत व हक़ीक़त दोनों के हाकिम हैं लिहाज़ा आप के अहकाम कभी शरीअत-ए-ज़ाहिर पर और कभी हक़ीक़त-ए-बातिना पर होते हैं। (पृष्ठ 529) - नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रूहे अक़दस बारहा सत्तर हज़ार सूरतों में जल्वा गर होती है। (पृष्ठ 658) - हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ख़साइस में से है कि आप दो क़िब्लों और दो हिजरतों के जामे हैं और शरीअत व हक़ीक़त दोनों आप के लिए जमा कर दी गई हैं। (पृष्ठ 532)

पृष्ठ 40 / 750

فتاوی رضویہ جلد ۲۹ فہرست ضمنی مسائل فضائل سید المرسلین - نبی ہونے کے باوجود سید نا موسیٰ علیہ الصلوٰۃ والسلام نے سید عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کا امتی ہونے کی خواہش کیوں کی (۳۹۰) - ہر رسول کی رسالت بارش رحمت ہے (۶۸) - حضور علیہ الصلوٰۃ والسلام کی عظمت شان میں جامع ترمذی کی ایک جامع حدیث (۵۰۶) - اللہ تعالیٰ نے تمام جہان حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کے لیے بنایا (۱۱۳) - میدان محشر کا منظر اور حضور شافع محشر علیہ الصلوٰۃ والسلام کی کرم نوازیاں (۵۱۳) - حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کی ذات و صفات و فضائل و کمالات کبھی زوال پذیر نہیں بلکہ ہمیشہ مترقی ہیں (۲۰۱) - رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کے حضور روزانہ اعمال کی پیشی آپ کے خصائص میں سے ہیں (۵۲۲) - درود تاج پڑھنا اور حضور انور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کو دافع بلاء سمجھنا (۲۵۵) - حضور انور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم شریعت و حقیقت دونوں کے حاکم ہیں لہذا آپ کے احکام کبھی شریعت ظاہر پر اور کبھی حقیقت باطنہ پر ہوتے ہیں (۵۲۹) - نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کی روح اقدس بارہاستر ہزار صورتوں میں جلوہ گر ہوتی ہے (۶۵۸) - حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کے خصائص میں سے ہے کہ آپ دو قبلوں اور دو ہجرتوں کے جامع ہیں اور شریعت و حقیقت دونوں آپ کے لیے جمع کر دی گئی ہیں (۵۳۲)

صفحہ ۴۰ از ۷۵۰

Fatawa Rizvia, Volume 29

Page	Subject
575	The status our Master has in the presence of God is not for anyone else
575	The station of Great Intercession (Shafa'at-e-Kubra) is exclusive to this Master
580	The warden of Hell will say, O Beloved, you have not left a trace of God's wrath in your Ummah
	Virtues and Merits
98	Our leader 'Amr ibn al-'As (Radi Allahu 'anhu) is an exalted companion, his virtues and merits
98	All companions are people of goodness and justice
105	Hazrat Ghaus-e-Azam is surely a helper, and Khwaja Moinuddin Chishti is surely a helper of the poor
227	The description of the obligation of the virtues and respect of the noble companions
229	After the prophets, the most superior is Sayyiduna Siddiq-e-Akbar, then Farooq-e-Azam (may Allah be pleased with them)
233	

Page	Subject
458	The individual saint (Wali Fard) has control over all physical creation
587	The importance of respecting the descendants of the Prophet (Sadaat)
595	The majestic status of the noble father of Ala Hazrat, Maulana Naqi Ali Khan, and the lover of the Prophet, Maulana Abdul Qadir (may their souls be sanctified)
529	The miracle of the Master Ghaus-e-Azam (Radi Allahu 'anhu) bringing back the sunken boat
529	Messenger angels are unanimously superior to all non-prophets
538	There is a firm hope for the real Sadaat to be safe from punishment
638	Hazrat Fatima and all her progeny are protected from the fire
643	The reason for mentioning "on Ibrahim and on the family of Ibrahim" in the Durood Sharif
	Prayer and Leadership
160	

Page	Subject
	The noble companions (may Allah be pleased with them) were all saints
234	Who is the most superior of the companions?
264	The description of the greatness and excellence of the noble companions and the condemnation and deviance of those who call them greedy
335	In what sense does the Mother of the Believers Sayyidah Aisha Siddiqah deny the vision of the Lord Almighty?
335	The Great Imam (Imam-e-Azam) is among the leaders of the scholars
	The pure Sharia has commanded Muslims throughout the world to face the Qibla in prayer
193	The issue of praying behind non-conformists
205	Is it necessary to pray 12 rak'ahs of Ihtiyat al-Zuhr after Friday prayer or not?
219	What is the Sharia ruling on praying behind those who reject the Mawlid and the kissing of thumbs?
221	Zaid's belief is that Allah Almighty can create someone equal to the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) but will not. Is it correct to pray behind him or not?

फ़तावा रिज़विया, जिल्द 29

पृष्ठ	विषय
575	ईश्वर के दरबार में जो प्रतिष्ठा हमारे आका की है, वह किसी और की नहीं
575	महान शफ़ाअत (सिफारिश) का पद इसी सरकार का विशेष अधिकार है
580	नरक का दारोगा कहेगा कि ऐ महबूब! आपने अपनी उम्मत में रब्ब का क्रोध नाम को भी नहीं छोड़ा
	गुण और विशेषताएं
98	सैय्यदुना अम्र इब्न अल-आस (रज़ियल्लाहु अन्हु) एक महान सहाबी हैं, उनके गुण और विशेषताएं
98	सहाबा (साथी) सभी के सभी भलाई और न्याय वाले हैं
105	हुज़ूर सैय्यदुना ग़ौस-ए-आज़म निश्चित रूप से मददगार हैं और ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती निश्चित रूप से ग़रीब नवाज़ हैं
227	सहाबा किराम के गुणों और उनके सम्मान की अनिवार्यता का वर्णन
229	नबियों के बाद सबसे श्रेष्ठ सैय्यदुना सिद्दीक़-ए-अकबर फिर फ़ारूक़-ए-आज़म हैं (रज़ियल्लाहु अन्हुमा)
233	

पृष्ठ	विषय
458	वली फ़र्द पूरी भौतिक सृष्टि पर नियंत्रण रखता है
587	सादात (पैगंबर के वंशज) के सम्मान का महत्व
595	आला हज़रत के पूज्य पिता मौलाना नक़ी अली खान और रसूल के प्रेमी मौलाना अब्दुल क़ादिर साहब (उनकी आत्माएं पवित्र हों) की महान महिमा
529	सरकार ग़ौस-ए-आज़म (रज़ियल्लाहु अन्हु) का डूबी हुई नाव को पार लगाने वाला चमत्कार
529	संदेशवाहक फरिश्ते सर्वसम्मति से सभी गैर-नबियों से श्रेष्ठ हैं
538	वास्तविक सादात के दंड से सुरक्षित रहने की दृढ़ आशा है
638	हज़रत फ़ातिमा और उनकी समस्त संतति नर्क की आग से सुरक्षित है
643	दुरूद शरीफ़ में "आले इब्राहीम" लाने का कारण
	नमाज़ और इमामत
160	

पृष्ठ	विषय
	सहाबा किराम (रज़ियल्लाहु अन्हुम) सभी औलिया किराम थे
234	सबसे श्रेष्ठ सहाबी कौन है?
264	सहाबा किराम की महानता और श्रेष्ठता और उन्हें लालची कहने वाले की निंदा और पथभ्रष्टता का वर्णन
335	उम्मुल मोमिनीन सैय्यदा आयशा सिद्दीक़ा किस अर्थ में दीदार-ए-इलाही का इनकार करती हैं?
335	इमाम-ए-आज़म विद्वानों के सरदारों में शामिल हैं

पृष्ठ	विषय
	शरीअत-ए-मुतह्हरा ने पूरी दुनिया के मुसलमानों को नमाज़ में क़िबला की ओर मुँह करने का हुक्म दिया है
193	गैर-मुक़ल्लिदों के पीछे नमाज़ पढ़ने का मसला
205	जुमे की नमाज़ के बाद एहतिआत-उल-ज़ुहर की 12 रकात पढ़ना ज़रूरी है या नहीं?
219	मीलाद शरीफ़ और अंगूठे चूमने का इनकार करने वालों के पीछे नमाज़ पढ़ने का शरीअत का क्या हुक्म है?
221	ज़ैद का अक़ीदा है कि अल्लाह तआला रसूल-ए-मक़बूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के बराबर पैदा कर सकता है मगर करेगा नहीं। उसके पीछे नमाज़ पढ़ना जायज़ है या नहीं?

صفحہ	مضمون
۵۷۵	بارگاہ الٰہی میں جو وجاہت ہمارے آقا کی ہے کسی اور کی نہیں
۵۷۵	منصب شفاعت کبریٰ اسی سرکار کا خاصہ ہے
۵۸۰	داروغہ دوزخ عرض کرے گا کہ اے محبوب آپ نے اپنی امت میں رب کا غضب نام کو نہ چھوڑا
	فضائل و مناقب
۹۸	سیدنا عمرو بن العاص رضی اللہ تعالی عنہ جلیل القدر صحابی ہیں، آپ کے فضائل و مناقب
۹۸	صحابہ سب کے سب اہل خیر و عدلت ہیں
۴۵۸	ولی فرد تمام نشاۃ عنصری جسمانی پر مستولی ہوتا ہے
۵۸۷	تعظیم سادات کی اہمیت
۵۹۵	والد ماجد اعلیحضرت مولانا نقی علی خان و محب رسول مولانا عبدالقادر صاحب قدس سرہما کی جلالت شان
۵۲۹	سرکار غوث اعظم رضی اللہ تعالی عنہ کی ڈوبی کشتی ترانے والی کرامت
۵۲۹	مرسلین ملائکہ بالا جماع تمام غیر انبیاء سے افضل ہیں
۵۳۸	حقیقی سادات پر عذاب سے مامون ہونے کی امید واثق ہے

صفحہ	مضمون
	حضور سیدنا غوث اعظم
۱۰۵	ضرور دستگیر اور خواجہ معین الدین چشتی ضرور غریب نواز ہیں
۲۲۷	صحابہ کرام کے فضائل اور ان کی تعظیم کی فرضیت کا بیان
	انبیاء کے بعد سب سے افضل
۲۲۹	سیدنا صدیق اکبر پھر فاروق اعظم ہیں رضی اللہ تعالی عنہما
۲۳۳	صحابہ کرام رضی اللہ تعالی عنہم سب اولیاء کرام تھے
۲۳۴	افضل الصحابہ کون ہے
	صحابہ کرام کی عظمت و
۲۶۴	فضیلت اور انہیں لالچی کہنے والے کی مذمت و ضلالت کا بیان

صفحہ	مضمون
۶۳۸	حضرت فاطمہ اور ان کی تمام ذریت نار سے محفوظ ہے
۶۴۳	درود شریف میں علیٰ ابراہیم وعلیٰ آل ابراھیم لانے کی وجہ
	نماز و امامت
۱۶۰	شرع مطہر نے تمام جہان کے مسلمانوں کو نماز میں قبلہ کی طرف منہ کرنے کا حکم دیا ہے
۱۹۳	مسئلہ غیر مقلدوں کے پیچھے نماز پڑھنا
۲۰۵	جمعہ کی نماز کے بعد احتیاط الظہر ۱۲ رکعت پڑھنا ضروری ہے یا نہیں

صفحہ	مضمون
	ام المومنین سیدہ عائشہ صدیقہ
۳۳۵	کس معنی میں رؤیت باری تعالیٰ کا انکار فرماتی ہیں
۳۳۵	امام اعظم سرداران علماء میں داخل ہیں

صفحہ	مضمون
۲۱۹	منکر میلاد شریف و تقبیل ابہامین کے پیچھے نماز پڑھنے کا شرعی حکم کیا ہے
۲۲۱	زید کا عقیدہ ہے کہ اللہ تعالیٰ رسول مقبول صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کے برابر پیدا کر سکتا ہے مگر کرے گا نہیں۔ اس کے پیچھے نماز پڑھنا درست ہے یا نہیں

Fatawa Razawiyya Volume 29

Topic	Page
How is the prayer behind an apostate?	267
Intentional abandonment of the congregation without a Sharia-compliant reason is a sin, and one who makes it a habit is a transgressor and misguided.	283
Saying 'Amen' loudly is not correct in prayer.	393
Proving the calling 'Ya Rasool Allah' after Attahiyyat.	566
According to the Wahhabi creed, Shirk becomes mandatory in prayer, which is an act of worship.	566
While intending the meanings in Attahiyyat, one should offer greetings (Salam) to the Presence of the Prophet.	566
Funerals	
How is visiting the graves of elders, circumambulating them, and kissing them?	205
A major cause of guidance and misguidance is the two types of verses in the Holy Quran: Muhkamat (precise) and Mutashabihat (ambiguous).	122
The meanings of 'Istiwa ala al-Arsh' (Rising over the Throne) have four refined ways of interpretation.	124
'Istiwa' appears seven times in the Holy Quran; the seventh time it is mentioned with the creation of the earth and heavens, and immediately after it.	126
The noble verse "The Most Merciful rose over the Throne" is among the ambiguous verses.	128
There are only two ways among the Ahl al-Sunnah regarding ambiguous verses.	170
Inquiry regarding the interpretation of several Quranic verses.	259
Three refined interpretations of the noble verse "I do not know the unseen".	450
The saying of Hazrat Sayyid Abdul Aziz Dabbagh (Mercy of Allah be upon him) regarding the noble	462

Topic	Page
Visiting graves is a Sunnah.	282
Exegetical Benefits	
What precautions are necessary while translating?	60
Discussion on 'Istiwa ala al-Arsh'.	116
There are two schools of thought among the Ahl al-Sunnah regarding ambiguous verses.	117
verse "And He taught Adam the names, all of them".	
The Holy Quran descended in its glory gradually over 23 years.	512
Both parts of the Kalima Tayyiba are present in the Quran.	654
Hadith Benefits	
Answer to a question regarding a reference to a Hadith mentioned in Mirqat, a commentary on Mishkat.	64
Answer to a question regarding the Hadith of 'Lawlak'.	113

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

विषय	पृष्ठ
मुर्तद के पीछे नमाज़ कैसी है?	267
बिना किसी शरीअत-सम्मत कारण के जानबूझकर जमाअत छोड़ना गुनाह है और इसका आदी व्यक्ति फ़ासिक़ और गुमराह है।	283
नमाज़ में ज़ोर से 'आमीन' कहना सही नहीं है।	393
अत्तहिय्यात के बाद 'या रसूल अल्लाह' पुकारने का प्रमाण।	566
वहाबी पंथ के अनुसार नमाज़ में, जो कि इबादत है, शिर्क अनिवार्य हो जाता है।	566
अत्तहिय्यात में अर्थों का संकल्प करते हुए सरकार (नबी) की बारगाह में सलाम पेश करें।	566
जनाज़ा	
बुज़ुर्गों की क़ब्रों की ज़ियारत, उनका तवाफ़ और उन्हें चूमना कैसा है?	205
क़ब्रों की ज़ियारत सुन्नत है।	282
हिदायत और ज़लालत का बड़ा मुख्य कारण है, मोहकमात और मुतशाबिहात।	122
'इस्तिवा अलल-अर्श' के अर्थ की चार उत्तम व्याख्याएँ हैं।	124
क़ुरान मजीद में 'इस्तिवा' सात जगहों पर आया है; सातवीं बार ज़मीन और आसमान की पैदाइश के साथ और बिना किसी अंतराल के उसके बाद आया है।	126
पवित्र आयत "अर-रहमानु अलल-अर्श इस्तवा" मुतशाबिहात आयतों में से है।	128
मुतशाबिहात आयतों के बारे में अहल-ए-सुन्नत के केवल दो तरीके हैं।	170
कुछ क़ुरानी आयतों की तफ़सीर के बारे में पूछताछ।	259
पवित्र आयत "ला आलमुल ग़ैब" की तीन उत्तम व्याख्याएँ।	450
पवित्र आयत "व अल्लमा आदमल अस्माअ कुल्लहा" के बारे में हज़रत सैयद अब्दुल अज़ीज़ दब्बाग़ (रहमतुल्लाह अलैहि) का कथन।	462
	512

विषय	पृष्ठ
तफ़सीरी फ़ायदे	
अनुवाद करते समय क्या सावधानियां ज़रूरी हैं?	60
'इस्तिवा अलल-अर्श' पर चर्चा।	116
मुतशाबिहात आयतों के बारे में अहल-ए-सुन्नत के दो मसलक हैं।	117
क़ुरान मजीद का 23 वर्षों में धीरे-धीरे अवतरण हुआ।	
क़ुरान में कलिमा तैयबा के दोनों भाग मौजूद हैं।	654
हदीसी फ़ायदे	
मिर्क़ात शरह मिश्क़ात में वर्णित एक हदीस के संदर्भ के बारे में एक सवाल का जवाब।	64
'लौलाक' वाली हदीस के बारे में एक सवाल का जवाब।	113

عنوان	صفحہ
مرتد کے پیچھے نماز کیسی	۲۶۷
بلا وجہ شرعی عمداً ترک جماعت گناہ ہے اور اس کا عادی فاسق گمراہ ہے	۲۸۳
آمین بالجہر نماز میں درست نہیں	۳۹۳
التحیات کے بعد نداء یارسول اللہ کا اثبات	۵۶۶
وہابیہ کے مذہب پر نماز جو کہ عبادت ہے اس کے اندر شرک لازم آتا ہے	۵۶۶
التحیات میں معانی کا قصد کرتے ہوئے سرکار کی خدمت میں سلام عرض کرے	۵۶۶
چند قرآنی آیات کی تفسیر کے بارے میں استفسار	۲۵۹

عنوان	صفحہ
ہدایت وضلالت کا بڑا منشاء قرآن مجید کی آیات کا دو قسم ہونا ہے، محکمات اور متشابہات	۱۲۲
استواء علی العرش کے معنی ہیں چار نفیس وجوہ تاویل	۱۲۴
قرآن مجید میں استواء سات جگہ آیا ہے ساتویں جگہ آفرینش زمین وآسمان کے ساتھ اور بلا فصل اس کے بعد آیا ہے	۱۲۶
آیت کریمہ "الرحمن علی العرش استوی" آیات متشابہات میں سے ہے	۱۲۸
آیات متشابہات میں اہل سنت کے صرف دو طریق ہیں	۱۷۰

عنوان	صفحہ
جنائز	
بزرگوں کی قبروں کی زیارت، ان کا طواف اور ان کو بوسہ دینا کیسا ہے	۲۰۵
زیارت قبور سنت ہے	۲۸۲
فوائد تفسیریہ	
ترجمہ کرتے وقت کیا احتیاطیں ضروری ہیں	۶۰
استواء علی العرش پر گفتگو	۱۱۶
آیات متشابہات کے بارے میں اہل سنت کے دو مسلک ہیں	۱۱۷
آیت کریمہ "لا اعلم الغیب" کی تین نفیس تفسیریں	۴۵۰
آیت کریمہ "وعلم آدم الاسماء کلھا" کے متعلق حضرت سید عبدالعزیز دباغ علیہ الرحمہ کا قول	۴۶۲
قرآن مجید نے ۲۳ برس میں بتدریج نزول اجلال فرمایا	۵۱۲
قرآن میں کلمہ طیبہ کے دونوں جز موجود ہیں	۶۵۴
فوائد حدیثیہ	
مرقاۃ شرح مشکوۃ میں مذکور ایک حدیث کے حوالے کے بارے میں سوال کا جواب	۶۴
حدیث لولاک کے بارے میں ایک سوال کا جواب	۱۱۳

Fatawa Razawiyya | Volume 29

574 | Hadith scholars do not accept the 'An'ana' (narration style) of a Mudallis | 166 | Traditions regarding the horrors of the Day of Judgment and the Great Intercession | 574 576 | Mass-narrated traditions (Mutawatir) are very few in number | 179 | A selection of forty (40) traditions of intercession by the author, which are apart from the well-known intercession traditions and have less reached the common public | 576 | Sahih li-dhatihi, Sahih li-ghayrihi, Hasan li-dhatihi, and Hasan li-ghayrihi are all proofs and themselves establish rulings | 190 | **Jurisprudential Benefits** | 544 | In the realm of virtues (Fazail), weak traditions are acceptable by consensus | 190 | Definition of a Hanafi | 544 640 | Majhul-al-Ayn is accepted by many investigative scholars, and the view of some elders is also accepted regarding Majhul-al-Hal | 190 | A comprehensive and exclusive definition of worship | 640 | The Hadith "La Mahdi illa Isa" (There is no Mahdi except Jesus) is not authentic | 226 | **Principles-based Benefits** | 110 | Traditions regarding Imam Mahdi and Prophet Jesus have reached the level of mass-narration (Tawatur) | 226 | The Prophet (peace and blessings of Allah be upon him and his family) being unlettered (Ummi) is not contrary to his messengership | 110 110 | Answer to a fatwa request regarding the followers of Ismail Dehlvi and Sayyid Ahmad Barelvi | 235 | A ruling on an abrogated matter is void | 110 157 | Weak traditions are acceptable by consensus in the excellence of deeds (Fazail-e-A'maal) | 235 | In matters of equal proportion, preferring one depends on intention | 157 157 | Traditions about supplication (Dua) are mass-narrated (Mutawatir) | 311 | Every creature is contingent (hadith) by will | 157 190 | Refutation of some passages from 'Barahin-e-Qati'a' | 489 | Ignorance of the essence (Jahalat-e-Ayn) does not necessitate ignorance of the state (Jahalat-e-Hal) | 190 190 | Answer to the Wahhabi reasoning from the Hadith "By Allah, I do not know what will be done with me or with you" | 490 | A 'Majhul' (unknown narrator) is disqualified from the level of argumentation (ihtijaj) but not from the level of consideration (i'tibar) | 190 212 | Scholar-like discussion by the author on Hadith Tirmidhi and the critical analysis (Jarh wa Ta'dil) of narrators | 522 | Just as there are four principles in jurisprudence, there are also four principles in beliefs ('aqaa'id) | 212

फतावा रज़विया | खंड 29

574 | मुदल्लीस का 'अनअना' मुहाद्दिसीन स्वीकार नहीं करते | 166 | हश्र के मैदान की विभीषिका और शफ़ाअत-ए-कुबरा की हदीसें | 574 576 | मुतवातिरात (निरंतर वर्णित) केवल कुछ ही हैं | 179 | लेखक की ओर से शफ़ाअत की ऐसी चालीस (40) हदीसों का चुनाव जो प्रसिद्ध शफ़ाअत हदीसों के अतिरिक्त हैं और आम जनता तक कम पहुंची हैं | 576 | सहीह ल़ातिही, सहीह लि-गैरही, हसन ल़ातिही और हसन लि-गैरही सभी प्रमाण हैं और स्वयं अहकाम को सिद्ध करते हैं | 190 | **फ़िक़्ही लाभ** | 544 | फ़ज़ाइल (गुणों) के क्षेत्र में ज़ईफ़ हदीसें सर्वसम्मति से स्वीकार्य हैं | 190 | हनफ़ी की परिभाषा | 544 640 | मजहूल-उल-ऐन बहुत से खोजी विद्वानों के निकट स्वीकार्य है और मजहूल-उल-हाल में भी कुछ बड़ों का मत स्वीकार्य है | 190 | इबादत की व्यापक और अनन्य परिभाषा | 640 | "ला महदी इल्ला ईसा" हदीस सही नहीं है | 226 | **उसूली लाभ** | 110 | हज़रत इमाम महदी और हज़रत ईसा के बारे में हदीसें मुतवातिर के स्तर तक पहुंची हैं | 226 | हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का उम्मी होना रिसालत के विरुद्ध नहीं है | 110 110 | इस्माइल देहलवी और सैय्यद अहमद बरेलवी के अनुयायियों के बारे में फतवा का उत्तर | 235 | मंसूख (निरस्त) पर हुक्म बातिल है | 110 157 | फ़ज़ाइल-ए-आमाल में ज़ईफ़ हदीसें सर्वसम्मति से स्वीकार्य हैं | 235 | समान अनुपात वाले मामलों में एक को प्राथमिकता देना इच्छा पर निर्भर करता है | 157 157 | दुआ की हदीसें मुतवातिर हैं | 311 | प्रत्येक प्राणी इच्छा से उत्पन्न (हादिस) है | 157 190 | 'बराहीन-ए-क़ातिआ' के कुछ अनुच्छेदों का खंडन | 489 | जहालत-ए-ऐन, जहालत-ए-हाल को अनिवार्य नहीं बनाती | 190 190 | हदीस "वल्लाह ला अदरी मा युफ़अ्लु बी वला बिकुम" से वहाबियों के तर्क का जवाब | 490 | मजहूल तर्क के स्तर से गिर जाता है न कि विचार के स्तर से | 190 212 | हदीस तिर्मिज़ी पर लेखक की विद्वतापूर्ण चर्चा और रावीओं की समीक्षा (जरह-ओ-ताअदील) | 522 | जिस तरह फ़िक़्ह में चार सिद्धांत हैं, अक़ीदों में भी चार सिद्धांत हैं | 212

۵۷۴ | مدلس کا عنعنہ محدثین قبول نہیں کرتے | ۱۶۶ | عرصات محشر کی ہولناکی اور شفاعت کبری کی حدیثیں | ۵۷۴ ۵۷۶ | متواترات صرف معدودے چند ہیں | ۱۷۹ | مصنف علیہ الرحمہ کی طرف سے ایسی چالیس ۴۰ احادیث شفاعت کا انتخاب جو مشہور احادیث شفاعت کے علاوہ ہیں اور گوش عوام تک کم پہنچی ہیں | ۵۷۶ | صحیح لذاتہ و صحیح لغیرہ و حسن لذاتہ و حسن لغیرہ سب حجت اور خود مثبت احکام ہیں | ۱۹۰ | **فوائد فقہیہ** | ۵۴۴ | مقام فضائل میں ضعاف بالاجماع مقبول ہیں | ۱۹۰ | حنفی کی تعریف | ۵۴۴ ۶۴۰ | مجہول العین بہت ائمہ محققین کے نزدیک مقبول ہے اور مجہول الحال میں بھی بعض اکابر کا مذہب مقبول ہے | ۱۹۰ | عبادت کی جامع و مانع تعریف | ۶۴۰ | "لامھدی الاعیسیٰ" حدیث صحیح نہیں | ۲۲۶ | **فوائد اصولیہ** | ۱۱۰ | حضرت امام مہدی اور حضرت عیسیٰ کے بارے میں حدیثیں حد تواتر تک پہنچی ہیں | ۲۲۶ | حضور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کا امی ہونا رسالت کے خلاف نہیں | ۱۱۰ ۱۱۰ | اسمعیل دہلوی اور سید احمد بریلوی کے معتقدوں کے بارے میں استفتاء کا جواب | ۲۳۵ | منسوخ پر حکم باطل ہے | ۱۱۰ ۱۵۷ | فضائل اعمال میں ضعاف بالاجماع مقبول ہیں | ۲۳۵ | امور متساویۃ النسبۃ میں ایک کی ترجیح ارادے پر موقوف ہے | ۱۵۷ ۱۵۷ | دعا کی حدیثیں متواتر ہیں | ۳۱۱ | ہر مخلوق بالارادہ حادث ہے | ۱۵۷ ۱۹۰ | براہین قاطعہ کی چند عبارات اور ان کا رد | ۴۸۹ | جہالت عین جہالت حال کو مستلزم نہیں | ۱۹۰ ۱۹۰ | حدیث "واللہ لا ادری مایفعل بی ولابکم" سے وہابیہ کے استدلال کا جواب | ۴۹۰ | مجہول پایہ احتجاج سے ساقط ہے نہ کہ پایہ اعتبار سے | ۱۹۰ ۲۱۲ | حدیث ترمذی پر مصنف علیہ الرحمہ کی محدثانہ بحث اور راویوں کی جرح و تعدیل | ۵۲۲ | جس طرح فقہ میں چار اصول ہیں عقائد میں بھی چار اصول ہیں | ۲۱۲

Volume 29 Fatawa Razawiyya

Page 215: Consensus (Ijma) in jurisprudence (Fiqh) is the strongest evidence. Page 166: Critique and evaluation (Jarah o Tadeel) of 'Daraj'. Page 215: The agreement of the Great Majority (Sawad-e-Azam), i.e., Ahl-e-Sunnat, on any doctrinal issue is the strongest evidence. Page 166: The narration of 'Daraj' from 'Abul Haitham' is weak. Page 488: Texts (Nusoos) will always be understood according to their apparent meaning. Oath of Allegiance and Caliphate Page 488: Subsequent specification (Takhsees-e-mutarakhi) is abrogation (Naskh). Page 642: A disbeliever (Kafir) cannot be given the oath of allegiance (Ba'ait). Page 488: Abrogation of news/reports (Akhbar) is impossible. Page 642: Appointing a disbeliever as a representative or authorized person for the oath of allegiance and caliphate is disbelief (Kufr). Page 488: Intellectual specification does not lower the certainty of a general rule. Taqleed (Following/Imitation) Page 489: Relying on solitary reports (Akhbar-e-Aahad) in opposition to the general, definitive verses of the Quran is purely wrong. Page 194: Millions of successors (Tabieen) and thousands of noble companions (Sahaba) were followers (Muqallid). Page 513: No solitary Hadith (Hadis-e-Aahad) can be accepted against definitive verses, even if its chain of transmission is sound. Page 195: Taqleed is a religious obligation and began from the time of Prophethood. Page 513: Denial of intrinsic reality does not necessitate denial of bestowed reality. Page 392: Taqleed is a definitive obligation (Farz-e-Qataee). Page 633: Whatever content the Holy Quran indicates is the Quranic intended meaning. Page 393: One who does not accept jurisprudence (Fiqh) is a devil. Page 633: Drawing analogies (Qiyas) in ambiguous matters (Tashabuhat) is misguidance. Page 393: The evils of not accepting jurisprudence. Iftaa (Issuing Rulings) and Rasm-ul-Mufti | History and Biography Page 61: Scholars should not verify a problem written by an ignorant person. Page 62: The chain of transmission (Sanad) of the author of Dur-e-Mukhtar. Page 61: All matters are attributed to the founder of the school (Sahib-e-Mazhab) May Allah be pleased with him, using the words "he said" and "according to him." These are issues from the books of 'Zahir-ur-Riwaya' and connected chains of transmission to them exist. There is no need for a separate chain for every single issue. Page 62: The chain of transmission (Sanad) of the author of Al-Bahr. Names of Men (Asma-ur-Rijal) Page 80: The names of three sons of the Leader of the Believers Hazrat Ali Murtaza (may Allah be pleased with him) are Abu Bakr, Umar, and Uthman. Page 166: Ibn-e-Lahiya is a 'Mudallis' (one who conceals defects in a chain).

खण्ड 29 फ़तावा रज़विया

पृष्ठ 215: न्यायशास्त्र (फ़िक़्ह) में इज्मा (आम सहमति) सबसे मज़बूत प्रमाण है। पृष्ठ 166: 'दराज' पर जरह और तादील (आलोचना और मूल्यांकन)। पृष्ठ 215: किसी भी धार्मिक मुद्दे पर सवाद-ए-आज़म यानी सुन्नी समुदाय की सहमति सबसे मज़बूत प्रमाण है। पृष्ठ 166: अबुल हैथम से दराज का कथन कमज़ोर है। पृष्ठ 488: धार्मिक ग्रंथ (नुसूस) हमेशा अपने प्रत्यक्ष अर्थ पर आधारित रहेंगे। बैअत और खिलाफ़त पृष्ठ 488: बाद में किया गया विशेष विवरण (तख़्सीस-ए-मुतराखी) निरसन (नस्ख़) है। पृष्ठ 642: एक काफिर (अविश्वासी) बैअत (निष्ठा की शपथ) नहीं ले सकता। पृष्ठ 488: सूचनाओं/रिपोर्टों (अख़बार) का निरसन असंभव है। पृष्ठ 642: काफिर को बैअत और खलीफा के लिए प्रतिनिधि या अधिकृत बनाना कुफ़्र (अविश्वास) है। पृष्ठ 488: बौद्धिक विशिष्टता किसी सामान्य नियम की निश्चितता को कम नहीं करती है। तक़लीद (अनुसरण) पृष्ठ 489: कुरान की सामान्य और निश्चित आयतों के विरोध में एकाकी रिपोर्टों (अख़बार-ए-आहाद) पर भरोसा करना पूरी तरह गलत है। पृष्ठ 194: लाखों ताबईन (अनुयायी) और हज़ारों महान सहाबा (साथी) मुक़ल्लिद थे। पृष्ठ 513: कुरान की निश्चित आयतों के खिलाफ कोई भी एकाकी हदीस (हदीस-ए-आहाद) स्वीकार्य नहीं हो सकती, चाहे उसका वर्णन-सूत्र (सनद) सही क्यों न हो। पृष्ठ 195: तक़लीद एक धार्मिक कर्तव्य है और रिसालत (पैग़म्बर) के समय से शुरू हुई थी। पृष्ठ 513: वास्तविक वास्तविकता का खंडन, ईश्वर प्रदत्त वास्तविकता के खंडन को आवश्यक नहीं बनाता है। पृष्ठ 392: तक़लीद एक निश्चित फ़र्ज़ (फ़र्ज़-ए-क़तई) है। पृष्ठ 633: जिस सामग्री को पवित्र कुरान इंगित करता है, वह कुरान का अभीष्ट अर्थ है। पृष्ठ 393: जो फ़िक़्ह (न्यायशास्त्र) को नहीं मानता, वह शैतान है। पृष्ठ 633: संदिग्ध मामलों (तशाबुहात) में उपमा (क़यास) देना गुमराही है। पृष्ठ 393: फ़िक़्ह को न मानने की बुराइयाँ। इफ्ता और रस्म-उल-मुफ्ती | इतिहास और स्मरण पृष्ठ 61: विद्वानों को किसी अज्ञानी व्यक्ति द्वारा लिखी गई समस्या की पुष्टि नहीं करनी चाहिए। पृष्ठ 62: 'दुर्रे मुख़्तार' के लेखक का वर्णन-सूत्र (सनद)। पृष्ठ 61: सभी मामलों को संप्रदाय के संस्थापक (साहब-ए-मज़हब) रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ओर "उन्होंने कहा" और "उनके अनुसार" शब्दों के साथ संदर्भित किया जाता है। ये 'ज़ाहिर-उर-रिवाया' की किताबों के मुद्दे हैं और उन तक जुड़े हुए वर्णन-सूत्र (सनद) मौजूद हैं। हर मुद्दे के लिए अलग सनद की ज़रूरत नहीं है। पृष्ठ 62: 'अल-बह्र' के लेखक का वर्णन-सूत्र (सनद)। अस्मा-उर-रिजाल (पुरुषों के नाम/जीवनी) पृष्ठ 80: अमीरुल मोमिनीन हज़रत अली मुर्तज़ा (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) के तीन साहिबज़ादों के नाम

अबू बक्र, उमर और उस्मान हैं। पृष्ठ 166: इब्न-ए-लहिया मुदल्लिस (वर्णन-सूत्र में दोष छिपाने वाला) है।

۲۱۵ | فقہ میں اجماع اقوی الادلۃ ہے | ۱۶۶ | دراج پر جرح و تعدیل ۲۱۵ | سواد اعظم یعنی اہل سنت کا کسی مسئلہ عقائد پر اتفاق اقوی الادلۃ ہے | ۱۶۶ | ابوالہیثم سے دراج کی روایت ضعیف ہے ۴۸۸ | نصوص ہمیشہ ظاہر پر محمول رہیں گی | | بیعت و خلافت ۴۸۸ | تخصیص متراخی نسخ ہے | ۶۴۲ | کافر بیعت نہیں ہو سکتا ۴۸۸ | اخبار کا نسخ ناممکن ہے | ۶۴۲ | کافر کو مجاز و ماذون بیعت و خلیفہ بنانا کفر ہے ۴۸۸ | تخصیص عقلی عام کو قطعیت سے نازل نہیں کرتی | | تقلید ۴۸۹ | عموم آیات قطعیہ قرآنیہ کی مخالفت میں اخبار واحد سے استناد محض غلط ہے | ۱۹۴ | لاکھوں تابعین اور ہزاروں صحابہ کرام مقلد تھے ۵۱۳ | آیات قطعیہ کے خلاف کوئی حدیث احاد بھی مسلم نہیں ہو سکتی اگرچہ سنداً صحیح ہو | ۱۹۵ | تقلید واجب شرعی ہے اور زمانہ رسالت سے شروع ہوئی ۵۱۳ | نفی حقیقت ذاتیہ نفی حقیقت عطائیہ کو مستلزم نہیں | ۳۹۲ | تقلید فرض قطعی ہے ۶۳۳ | جس مضمون پر قرآن پاک دلالت کرے وہ مدلول قرآنی ہے | ۳۹۳ | فقہ کو نہ ماننے والا شیطان ہے ۶۳۳ | تشابہات میں قیاس کرنا ضلالت ہے | ۳۹۳ | فقہ کو نہ ماننے کی قباحتیں | افتاء ورسم المفتی | | تاریخ وتذکرہ ۶۱ | جاہل کے لکھے ہوئے مسئلہ کی علماء کو تصدیق نہیں کرنی چاہیے | ۶۲ | صاحب در مختار کی سند ۶۱ | تمام مسائل کو صاحب مذہب رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی طرف بلفظ قال و عند نسبت کیے جاتے ہیں۔ کتب ظاہر الروایہ کے مسئلے ہیں اور ان تک اسانید متصلہ موجود۔ ہر مسئلہ کے لیے جدا سند کی حاجت نہیں | ۶۲ | صاحب بحر کی سند | اسماء الرجال | ۸۰ | امیر المومنین حضرت علی مرتضیٰ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے تین صاحبزادوں کے نام ابوبکر و عمر و عثمان ہیں | | ۱۶۶ | ابن لہیعہ مدلس ہے

Fatawa-e-Razvia Volume 29

Page	Description
81	The names of Hazrat Imam Hasan, Husayn, and Muhsin are similar in weight and meaning to the names of Hazrat Dawood (peace be upon him)'s sons, Shubar, Shubayr, and Mubashar.
112	The author of 'Musallam-uth-Thuboot' is a Sunni Hanafi and not free-thinking.
235	Noah's Ark sailed in the month of Rajab.
396	The author of 'Kashshaf' is a Mu'tazilite.
466	'Jafr' and 'Jami'ah' are two books by the Commander of the Faithful, Sayyiduna Ali al-Murtaza (may Allah be pleased with him).
515	Imam Ahmad ibn Hanbal was born fifty-three and a half years after the death of Imam Ibn Sirin.
515	Ibn Sirin passed away on 9 Shawwal 110 AH, while Imam Ahmad ibn Hanbal was born in Rabi al-Awwal 164 AH.
516	The historical ignorance of Gangohi Sahib in considering Imam Abu Yusuf as a contemporary of Husayn ibn Mansur al-Hallaj.
516	Imam Abu Yusuf passed away in 182 AH.
556	The traditional method of calling upon the Awliya (Saints) which they themselves taught to their followers.
556	Several incidents in this regard.
589	Incident of staying in Ahmedabad upon return from Hajj.
590	Incident of writing an endorsement on the work of a Rampuri scholar.
592	Statement regarding the number of Ala Hazrat's compositions up to 1330 AH.
596	Ala Hazrat personally sent published treatises to Anjuman Nu'maniya, Lahore, up to 1320 AH.
608	The full-time involvement of Ala Hazrat (may mercy be upon him) in religious matters.
610	Conversation between Maulana Syed Didar Ali Shah and Ala Hazrat.
627	Research on the statements "Ana al-Haq" (I am the Truth) by Hazrat Mansur, "Subhani ma a'zama shani"

Page	Description
517	A story of Sultan Aurangzeb Alamgir.
547	When did the Mawlid-un-Nabi start, who started it, did Imam-e-Azam do it or not? Was it present in the time of the Sahaba or not?
552	Incident of three Syrian Mujahideen that they were Tabi' al-Tabi'in.
628	Why was Hazrat Shah Mansur (may mercy be upon him) executed?
637	Four Prophets are still alive without facing death.

फ़तावा-ए-रज़विया जिल्द २९

पृष्ठ	विवरण
८१	हज़रत इमाम हसन, हुसैन और मोहसिन के नाम हज़रत दाऊद (अलैहिस्सलाम) के बेटों शुबर, शुबैर और मुबशार के समान वज़न और अर्थ के हैं।
११२	'मुसल्लम-उत-थुबूत' के लेखक सुन्नी हनफी हैं और स्वतंत्र विचारक नहीं हैं।
२३५	नूह (अलैहिस्सलाम) की कश्ती रजब के महीने में चली थी।
३९६	'कश्शाफ़' के लेखक मुअतज़िली हैं।
४६६	'जफ़्र' और 'जामिया' अमीरुल मोमिनीन सैयदुना अली मुर्तज़ा (रज़ियल्लाहु अन्हु) की दो पुस्तकें हैं।
५१५	इमाम इब्न सिरीन की मृत्यु के साढ़े तिरपन साल बाद इमाम अहमद बिन हंबल का जन्म हुआ।
५१५	इब्न सिरीन का निधन ९ शव्वाल ११० हिजरी को हुआ, जबकि इमाम अहमद बिन हंबल का जन्म रबी-उल-अव्वल १६४ हिजरी में हुआ।
५१६	गंगोही साहब की ऐतिहासिक अज्ञानता कि उन्होंने इमाम अबू यूसुफ को हुसैन बिन मंसूर हल्लाज का समकालीन समझ लिया।
५१६	इमाम अबू यूसुफ का निधन १८२ हिजरी में हुआ।
५५६	औलिया किराम को पुकारने का वह पारंपरिक तरीका जो उन्होंने स्वयं अपने अनुयायियों को सिखाया।
५५६	इस संबंध में कुछ घटनाएँ।
५८९	हज से वापसी पर अहमदाबाद में ठहरने की घटना।
५९०	एक रामपुरी विद्वान की रचना पर प्रशंसापत्र लिखने की घटना।
५९४	१३३० हिजरी तक आला हज़रत की रचनाओं की संख्या का विवरण।
५९६	आला हज़रत ने अंजुमन नोमानिया, लाहौर में १३२० हिजरी तक प्रकाशित शोध पत्र स्वयं भेजे थे।
६०८	आला हज़रत (अलैहिर्रहमा) की धार्मिक मामलों में पूर्णकालिक व्यस्तता।
६१०	मौलाना सैयद दीदार अली शाह और आला हज़रत के बीच बातचीत।
६२७	हज़रत मंसूर के'अनल हक', बायज़ीद बस्तमी के'सुब्हानी मा आज़मा शानी' और

पृष्ठ	विवरण
५१७	सुल्तान औरंगज़ेब आलमगीर की एक कहानी।
५४७	मिलाद शरीफ कब शुरू हुआ, किसने शुरू किया, इमाम-ए-आज़म ने किया या नहीं? क्या यह सहाबा के ज़माने में था या नहीं?
५५२	तीन सीरियाई मुजाहिदीन की घटना कि वे तीनों तबे-ताबई थे।
६२८	शम्स तब्रेज़ी के'कुम बि-इज़नी' के कथनों का शोध।
६२८	हज़रत शाह मंसूर (अलैहिर्रहमा) को सूली क्यों दी गई?
६३७	चार नबी बिना मृत्यु का सामना किए अभी तक जीवित हैं।

पृष्ठ ४५ / ७५०

| ۸۱ | حضرت امام حسن و حسین و محسن کے نام حضرت داؤد علیہ السلام کے بیٹوں شبر و شبیر و مبشر کے ہم وزن و ہم معنی ہیں | ۵۵۶ | اولیاء کرام کو ندا کرنے کا طریقہ متوارثہ جو خود انہوں نے اپنے متوسلین کو تعلیم فرمایا | | ۱۱۲ | مصنف مسلم الثبوت سنی حنفی ہیں آزاد خیال نہیں | ۵۵۶ | اس سلسلہ میں چند واقعات | | ۲۳۵ | کشتی نوح علیہ السلام رجب میں چلی | ۵۸۹ | حج سے واپسی پر احمد آباد میں قیام کا واقعہ۔ | | ۳۹۶ | صاحب کشاف معتزلی ہے | ۵۹۰ | ایک رامپوری عالم کی تصنیف پر تقریظ لکھنے کا واقعہ | | ۴۶۶ | جفر و جامعہ امیر المومنین سیدنا علی مرتضیٰ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی دو کتابیں ہیں | ۵۹۲ | سن ۱۳۳۰ ہجری تک اعلیٰحضرت کی تعداد تصانیف کا بیان | | ۵۱۵ | امام ابن سیرین کی وفات سے ساڑھے ترپن برس بعد امام احمد بن حنبل کی ولادت ہوئی | ۵۹۶ | انجمن نعمانیہ لاہور میں اعلیٰحضرت نے ۱۳۲۰ھ تک کے شائع شدہ رسائل خود ارسال کیے تھے | | ۵۱۵ | ابن سیرین کا وصال ۹ شوال ۱۱۰ھ کو ہے جب کہ امام احمد بن حنبل کی ولادت ربیع الاول ۱۶۴ھ کو ہوئی | ۶۰۸ | اعلیٰحضرت علیہ الرحمہ کی ہمہ وقتی دینی امور میں مشغولیت | | ۵۱۶ | گنگوہی صاحب کی تاریخی جہالت کہ امام ابو یوسف کو حسین بن منصور حلاج کا ہمعصر سمجھ بیٹھے | ۶۱۰ | مولانا سید دیدار علی شاہ اور اعلیٰحضرت کے درمیان گفتگو | | ۵۱۶ | امام ابو یوسف کی وفات ۱۸۲ھ میں ہوئی | ۶۲۷ | حضرت منصور، بایزید بسطامی اور شمس تبریزی کے اقوال انا الحق، سبحانی ما اعظم شانی اور قم باذنی کی تحقیق | | ۵۱۷ | سلطان اورنگزیب عالمگیر کی ایک حکایت | ۶۲۸ | حضرت شاہ منصور علیہ الرحمہ کو سولی کیوں دی گئی | | ۵۴۷ | میلاد شریف کب سے نکلا، کس نے نکالا، امام اعظم نے کیا یا نہیں ۔ زمانہ صحابہ میں تھا یا نہیں |

۶۳۷ | چار نبی بے عروض موت اب تک زندہ ہیں | | ۵۵۲ | تین شامی مجاہدین کا واقعہ کہ یہ تینوں تبع تابعی تھے | | |

صفحہ 45/750

Volume 29 | Fatawa Rizvia

Page	Topic (Left)
158	Place and the placed cannot do without direction
158	Are directions the essence of places or boundaries of places?
160	The highest heaven is called 'Falak-e-Atlas' and 'Falak-al-Aflak'
200	Arguments for the existence of heaven and refutation of philosophers
253	The idea of the soul's creation with the body is a false notion of philosophers
270	Scientists themselves differ in hundreds of things
450	A finite must definitely have a relationship with another finite
451	Whatever is between two boundaries is all finite
	Waqf
66	Meaning of the text of Durr-e-Mukhtar and Hidaya regarding Waqf
	Logic
633	What is the relationship between a believer and a saint?

Page	Topic (Right)
	Hudood and Ta'zir
65	There is a difference between consensual and non-consensual adultery
	Philosophy and Science
77	The human soul is not divisible
155	It is necessary for the place to encompass the inhabitant
155	If the deity is assumed to be spatial, it would be in one of two states: either equal to an indivisible atom or larger than it, and both are false
157	That which is spatial and not equal to an indivisible atom cannot escape having a magnitude
157	Actually infinite magnitude is false
157	The individuals of a finite magnitude are infinite
157	The existence of magnitude without magnitude is impossible
157	Every finite magnitude is capable of increase
	The directions of 'above' and 'below' are two relative concepts.

Page	Topic (Left)	Page	Topic (Right)
	Prohibition and Permissibility (Hazr-o-Ibahat)	157	The existence of one without the other is impossible
60	Matters should be expressed in a modest manner	158	Everything with direction is capable of sensory indication.
92	The dancing of prostitutes is forbidden; ignorant people have spread this sin at the Urs of noble saints without restraint	158	Everything capable of sensory indication is spatial
93	The burden of the husband's wine drinking is upon him; the wife cannot refuse him intercourse for this reason	158	Everything spatial is a body or physical
		158	Every body and physical thing is dependent

पृष्ठ	विषय (बाएं)	पृष्ठ	विषय (दाएं)
158	स्थान और स्थानगत वस्तु दिशा के बिना नहीं रह सकते		**हुद्दूद ओ ताज़ीर (दंडविधि)**
158	क्या दिशाएं स्वयं स्थान हैं या स्थानों की सीमाएं हैं?	65	सहमति और असहमति से किए गए व्यभिचार में अंतर है
160	सर्वोच्च स्वर्ग को 'फलक-ए-अटलस' और 'फलक-अल-अफ़लाक' कहा जाता है		**दर्शन और विज्ञान**
200	स्वर्ग के अस्तित्व के प्रमाण और दार्शनिकों का खंडन	77	मानवीय आत्मा विभाज्य नहीं है
253	शरीर के साथ आत्मा की उत्पत्ति का विचार दार्शनिकों का एक असत्य विचार है	155	स्थान के लिए निवासी को घेरना आवश्यक है
270	वैज्ञानिक स्वयं सैकड़ों बातों में आपस में भिन्न हैं	155	यदि पूज्य को स्थानबद्ध मान लिया जाए, तो वह दो स्थितियों से रिक्त नहीं होगा: या तो वह एक अविभाज्य कण के बराबर होगा या उससे बड़ा होगा, और ये दोनों असत्य हैं
450	परिमित का परिमित से संबंध होना आवश्यक है	157	जो स्थानबद्ध हो और अविभाज्य कण के बराबर न हो, वह परिमाण (माप) से बच नहीं सकता
451	जो कुछ दो सीमाओं के भीतर है वह सब परिमित है	157	वास्तव में अनंत परिमाण असत्य है
	वक़्फ़	157	एक परिमित परिमाण के व्यक्ति अनंत हैं
66	वक़्फ़ के संबंध में दुर्रे मुख्तार और हिदाया के पाठ का अर्थ	157	बिना परिमाण के परिमाण का अस्तित्व असंभव है
	तर्कशास्त्र (Logic)	157	प्रत्येक परिमित परिमाण वृद्धि के योग्य है

पृष्ठ	विषय (बाएं)
633	मोमिन और वली के बीच क्या संबंध है?
	हज़र-ओ-इबाहत (निषेध और अनुमति)
60	मसलों को शालीनता के दायरे में बयान करना चाहिए
92	वेश्याओं का नृत्य हराम है; अज्ञानी लोगों ने इसे बिना किसी रोक-टोक के औलिया-ए-कराम के उर्स पर फैलाया है
93	पति के शराब पीने का पाप उसी पर है; पत्नी इस कारण उसे संभोग से मना नहीं कर सकती

पृष्ठ	विषय (दाएं)
	ऊपर और नीचे की दिशाएं दो सापेक्ष अवधारणाएं हैं।
157	एक का अस्तित्व दूसरे के बिना असंभव है
158	प्रत्येक दिशा वाली वस्तु इंद्रियगोचर संकेत के योग्य है।
158	प्रत्येक इंद्रियगोचर संकेत के योग्य वस्तु स्थान घेरती है (मुतहैय्यज़)
158	प्रत्येक स्थान घेरने वाली वस्तु शरीर या शारीरिक है
158	प्रत्येक शरीर और शारीरिक वस्तु मोहताज (निर्भर) है

صفحہ	عنوان (بائیں)	صفحہ	عنوان (دائیں)
۱۵۸	مکان و مکانی کو جہت سے چارہ نہیں		**حدود و تعزیر**
۱۵۸	جہات نفس امکنہ ہیں یا حدود امکنہ	۶۵	زنائے خلاف رضا مندی و بلا رضا مندی میں فرق ہے
۱۶۰	آسمان اعلیٰ کو فلک اطلس اور فلک الافلاک کہتے ہیں		**فلسفہ و سائنس**
۲۰۰	وجود آسمان پر دلائل اور فلاسفہ کارد	۷۷	روح انسانی متجزی نہیں
۲۵۳	بدن کے ساتھ حدوث نفس خیال باطل فلاسفہ ہے	۱۵۵	مکان کا مکین کو محیط ہونا لازم
۲۷۰	سائنس والے صدہا باتوں میں خود مختلف ہیں	۱۵۵	اگر معبود کو مکانی فرض کیا جائے تو دو حال سے خالی نہ ہوگا کہ جزو لا یتجزٰی کے برابر ہوگا یا اس سے بڑا ہوگا، اور یہ دونوں باطل ہیں
۴۵۰	متناہی کو متناہی سے نسبت ضرور ہے	۱۵۷	جو مکانی ہو اور جزو لا یتجزٰی کے برابر نہ ہو اسے مقدار سے مفر نہیں
۴۵۱		۱۵۷	مقدار غیر متناہی بالفعل باطل ہے

صفحہ	عنوان (بائیں)	صفحہ	عنوان (دائیں)
	جو کچھ دو حدود کے اندر ہو سب متناہی ہے		
	وقف	۱۵۷	مقدار متناہی کے افراد نا متناہی ہیں
۶۶	وقف کے بارے میں در مختار اور ہدایہ کی عبارت کا مطلب	۱۵۷	مقدار کا وجود بے مقدار کے محال ہے
	منطق	۱۵۷	ہر مقدار متناہی قابلِ زیادت ہے
۶۳۳	مومن اور ولی میں کون سی نسبت ہے		جہات فوق و تحت دو مفہوم اضافی ہیں۔
	حظر واباحت	۱۵۷	ایک کا وجود بے دوسرے کے محال ہے
۶۰	مسائل کو حیاء کے پیرائے میں بیان کرنا چاہیے	۱۵۸	ہر ذی جہت قابل اشارہ حسیہ ہے۔
۹۲	رنڈیوں کا ناچ حرام ہے، اولیاء کرام کے عرسوں پر بے قید	۱۵۸	ہر قابل اشارہ حسیہ متحیز ہے
۹۳	جاہلوں نے یہ معصیت پھیلائی ہے خاوند کے شراب پینے کا وبال اس پر ہے عورت اسے جماع سے منع نہیں کر سکتی	۱۵۸	ہر متحیز جسم یا جسمانی ہے
		۱۵۸	ہر جسم و جسمانی محتاج

Fatawa Razawiyya Volume 29

Topic	Page	Topic	Page
Treachery in trust, betrayal, and breach of promise are not permissible.	93	An indefinite noun under negation indicates generality and encompassment.	76
Presenting oneself to humiliation by committing a legal crime is forbidden.	93	The word 'all' (kull) is so general that it is never used in a specific sense.	488
Taking the property of a Hindu without betrayal or a legal crime is permissible.	94	A general statement is definitive in its encompassment.	488
There is no specific time fixed in Sharia for combing hair.	94	The chapter on comparison (tashbih) is vast.	518
Standing in the gathering of Milad is recommended (mandub).	266	Astronomy	
Using medicine is Sunnah.	313	Answer to a question about the science of astronomy.	332
For a person to be completely engrossed in planning is prohibited and blameworthy.	321	Refutation of Heretics and Debate	
Disclosing many sciences is not advisable.	513	Description of six ignorances and misguidances in a few lines of a Najdi miscreant's writing.	140
Standing during the mention of the birth of the Leader of Mankind (peace and blessings be upon him and his family) is undoubtedly recommended and virtuous by eminent scholars, a habit of beloved companions, and a source of anger for the vile Wahhabis.	540	Six slaps from the author (mercy be upon him) to address the aforementioned ignorances and misguidances.	140
The litany "O Sheikh Abdul Qadir Jilani, something for the sake of Allah" is permissible.	548	Refutation of the arguments of Ibn Taymiyyah etc. regarding the	159

Topic	Page	Topic	Page
		affirmation of place and direction for Allah Almighty.	
Commoners should never soar above their status.	591	Refutation of the opponent's ignorances.	162
Taking bad omens is not permissible and is a Hindu custom.	641	Promotions of members over Wahhabis.	443
Eloquence		The strange perversity of Wahhabis that they consider the Hadith, which is a clear proof for the Holy Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him and his family), as a reverse proof for negation.	529

फतावा रजविया जिल्द 29

विषय	पृष्ठ
अमानत में ख्यानत और विश्वासघात व वादाखिलाफी जायज नहीं है।	९३
किसी कानूनी अपराध को करके स्वयं को अपमानित करना वर्जित है।	९३
विश्वासघात या कानूनी अपराध के बिना किसी हिंदू की संपत्ति प्राप्त करना जायज है।	९४
कंघी करने के लिए शरीयत में कोई विशेष समय निर्धारित नहीं है।	९४
मिलाद की मजलिस में खड़े होना प्रशंसनीय (मंदूब) है।	२६६
दवा का उपयोग करना सुन्नत है।	३१३
मनुष्य का पूरी तरह से योजना बनाने में तल्लीन हो जाना वर्जित और निंदनीय है।	३२१
कई विद्याओं को प्रकट करना उचित नहीं होता।	५१३
मानव जाति के सरदार (उन पर और उनके परिवार पर शांति और आशीर्वाद हो) के जन्म के उल्लेख के दौरान खड़ा होना निस्संदेह प्रख्यात विद्वानों द्वारा अनुशंसित और सराहनीय है, प्रिय साथियों की	५४०
नकारात्मकता के तहत एक अनिश्चित संज्ञा सामान्यता और व्याप्ति का संकेत देती है।	७६
'कुल' (सब) शब्द इतना व्यापक है कि यह कभी विशिष्ट अर्थ में प्रयुक्त नहीं होता।	४८८
सामान्य कथन अपनी व्याप्ति में निश्चित होता है।	४८८
उपमा (तशबीह) का अध्याय विस्तृत है।	५१८
खगोल विज्ञान (हैयात)	
खगोल विज्ञान के बारे में एक प्रश्न का उत्तर।	३३२
विधर्मियों का खंडन और वाद-विवाद	
एक नजदी गुमराह के कुछ पंक्तियों के लेखन में छह अज्ञानताओं और गुमराहियों का वर्णन।	१४०
उपर्युक्त अज्ञानताओं और गुमराहियों की खबर लेने के लिए लेखक (उन पर दया हो) की ओर से छह तमाचे।	१४०

विषय	पृष्ठ
आदत है, और नीच वहाबियों के लिए क्रोध का कारण है।	
"या शेख अब्दुल कादिर जिलानी शैअन लिल्लाह" का वजीफा जायज है।	
आम लोग अपने पद से ऊपर कभी न उड़ें।	
अपशकुन लेना जायज नहीं है और यह हिंदू रीति-रिवाज है।	
वाग्मिता (बलागत)	
पृष्ठ 47/750	

विषय	पृष्ठ
अल्लाह तआला के लिए स्थान और दिशा की पुष्टि पर इब्न तैमिया आदि के तर्कों का खंडन।	५४८ १५९
विरोधी की अज्ञानताओं का खंडन।	५९१ १६२
वहाबियों पर सदस्यों की तरक्की।	६४१ ४४३
वहाबियों का अजीब उल्टापन कि जो हदीस हुजूर अकदस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर स्पष्ट प्रमाण है, उसी को वे नकारने का उल्टा प्रमाण मानते हैं।	५२९

موضوع	صفحہ
امانت میں خیانت اور غدر و بد عہدی جائز نہیں	۹۳
کسی جرم قانونی کا ارتکاب کر کے اپنے آپ کو ذلت پر پیش کرنا منع ہے	۹۳
غدر اور قانونی جرم کے بغیر ہندو کا مال ملے تو اس کو لے لینا مباح ہے	۹۴
کنگھے کے لیے شریعت میں کوئی خاص وقت مقرر نہیں ہے	۹۴
مجلس میلاد میں قیام مندوب ہے	۲۶۶
استعمال دوا سنت ہے	۳۱۳
آدمی کا ہمہ تن تدبیر میں منہمک ہو جانا ممنوع و مذموم ہے	۳۲۱
بہت علوم کا اظہار مصلحت نہیں ہوتا	۵۱۳
	۵۴۰

موضوع	صفحہ
نکرہ تحت نفی مفید عموم واستغراق ہوتا ہے	۷۶
لفظ کل ایسا عام ہے جو کبھی خاص ہو کر مستعمل ہی نہیں ہوتا	۴۸۸
عام افادہ استغراق میں قطعی ہوتا ہے	۴۸۸
باب تشبیہ واسع ہے	۵۱۸
ہیئت	
علم ہیئت کے بارے میں ایک سوال کا جواب	۳۳۲
رد بد مذہباں ومناظرہ	
نجدی گمراہ کی چند سطری تحریر میں چھ جہالتوں اور ضلالتوں کا بیان	۱۴۰
	۱۴۰

موضوع	صفحہ
قیام ذکر ولادت سید الانام علیہ وعلیٰ ذویہ افضل الصلوٰۃ والسلام بلاشبہ مستحب و مستحسن علمائے اعلام و عادت محبین کرام و غیظ وہابیہ لئام	
"یا شیخ عبد القادر جیلانی شیئاً للہ" کا وظیفہ جائز ہے	۵۴۸
عوام مرتبے سے اونچے ہرگز نہ اڑیں	۵۹۱
بد شگونی جائز نہیں اور ہندوانہ طریقہ بلاغت	۶۴۱

موضوع	صفحہ
مذکورہ بالا جہالتوں اور ضلالتوں کی خبر لینے کے لیے مصنف علیہ الرحمہ کی طرف سے چھ تپانچے	
اللہ تعالیٰ کے لیے مکان و جہت کے اثبات پر ابن تیمیہ وغیرہ کی دلیل کا رد	۱۵۹
ردّ جہالات مخالف	۱۶۲
وہابیہ پر عضبوں کی ترقیاں	۴۴۳
وہابیہ کا عجب اوندھا پن کہ جو حدیث حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم پر روشن دلیل ہے اسی کو الٹی دلیل نفی ٹھہراتے	۵۲۹

Fatawa Razawiyya Volume 29

Kitab-ush-Shatti (Part 4) Prosody and Rhymes

Problem 1: From Saharanpur, district Etah, sent by Mr. Chaudhary Maulvi Abdul Hamid, 20 Jumada al-Ula 1331 AH. To the great Excellency, the reviver of the current century, the evident supporter, his highness Maulvi Mufti Ahmad Raza Khan Sahib - may Allah the Almighty prolong his shadows of guidance upon the seekers. After the manners of humility, need, and the Sunnah salutation: A person from Marehra has sent the following paper on 'Kanz al-Akhirah' with additions and amendments. These are sent below for his Excellency's review. After review, please clarify to what extent the objections are correct and the answers sufficient, so that it can be acted upon accordingly. The objector possesses a masterful command of the art of poetry and complete expertise in prosody and rhymes. (1) Title page: Muhammad ar-Rasul Allah (Muhammad the Messenger of Allah). Objection: The 'alif-lam' (definite article 'the') does not come on the 'mudhaf' (the possessed noun in a genitive construction). Answer: I did not write anything on the book title except the book's name. All other text is the work of the scribe. "No bearer of burdens will bear the burden of another"[1] (And no soul burdened with sin will bear the burden of another. - T)

[1] Al-Quran Al-Karim 6/164 Page 48 of 750

फ़तावा रज़विया खंड 29

किताब-उश-शत्ती (भाग 4) छंदशास्त्र और तुकबंदी

मसाला 1: सहारनपुर, जिला एटा से, प्रेषक जनाब चौधरी मौलवी अब्दुल हमीद साहब, 20 जमादी उल-ऊला 1331 हिजरी। आला हज़रत अज़ीमुल बरकत मुजद्दिद-ए-माअत-ए-हाज़िरा मुअैयद-ए-ज़ाहिरा आली जनाब मौलवी मुफ्ती अहमद रज़ा खान साहब - अल्लाह तआला उनके हिदायत के साये को तालिबों पर क़ायम रखे। विनम्रता, ज़रूरत और सुन्नत के मुताबिक सलाम के बाद: मारहरा के एक साहब ने 'कन्ज़ अल-आख़िरह' पर अतिरिक्त और संशोधनों के साथ निम्नलिखित पर्चा भेजा है। ये नीचे आला हज़रत के अवलोकन के लिए भेजे जा रहे हैं। अवलोकन के बाद, कृपया यह स्पष्ट करें कि आपत्तियाँ किस हद तक सही हैं और उत्तर किस हद तक पर्याप्त हैं, ताकि उसके अनुसार कार्रवाई की जा सके। आपत्ति करने वाले शायरी की कला में महारत रखते हैं और छंदशास्त्र और तुकबंदी में पूर्ण दक्षता रखते हैं। (1) शीर्षक पृष्ठ: मुहम्मद अर-रसूल अल्लाह। आपत्ति: मुज़ाफ़ (सम्बन्धित शब्द) पर 'अलिफ़ लाम' नहीं आता है। उत्तर: मैंने पुस्तक के शीर्षक पर पुस्तक के नाम के अलावा कुछ भी नहीं लिखा। बाकी सारा पाठ कातिब (लेखक/लिपिक) का संकलन है। "और कोई बोझ उठाने वाली जान दूसरे का बोझ न उठाएगी।"[1] (त)

[1] अल-क़ुरान अल-करीम 6/164 पृष्ठ 48 of 750

کتاب الشتی (حصہ چھارم) عروض و قوانی

مسئلہ ۱: از سہارن پور ضلع ایٹہ مرسلہ جناب چودھری مولوی عبدالحمید صاحب ۲۰ جمادی الاولی ۱۳۳۱ھ اعلحضرت عظیم البرکت مجدد مائت حاضرہ مؤید ظاہرہ عالی جناب مولوی مفتی احمد رضا خان صاحب- ادام اللہ تعالٰی ظلال اشادہ علی راس الطالبین، پس از آداب عجز و نیاز و سلام مسنون، مارہرہ سے ایک صاحب نے کنز الآخرہ پر مندرجہ پرچہ با اضافہ و ترمیم کرکے بھیجا ہے جس کے جوابات ذیل بغرض ملاحظہ اعلحضرت ارسال ہیں، بعد ملاحظہ اس امر کی تنقیح فرمائی جائے کہ اعتراض کس حد تک صحیح ہیں اور جوابات کس حد تک کافی، تاکہ اس کے مطابق عملدرآمد کیا جائے۔ معترض صاحب فن شاعری میں دستگاہ قادر رکھتے ہیں اور عروض و قوافی میں مہارت کامل۔ (۱) صفحہ ٹائٹل محمد الرسول اللہ۔ اعتراض: مضاف پر الف لام نہیں آتا۔ جواب: میں نے عنوان کتاب پر سوا نام کتاب کے کچھ تحریر نہ کیا۔ باقی سب عبارت تالیف کاتب ہے۔ "وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰی" ۱ (اور کوئی بوجھ اٹھانے والی جان دوسرے کا بوجھ نہ اٹھائے گی۔ ت)

۱ القرآن الکریم ۶ / ۱۶۴ Page 48 of 750

Fatawa-e-Razvia Volume 29

(2) Page 74: He is unique in His attributes and essence, and likewise, all His actions are singular. Objection: The rhyme is not correct; it should be: Hemistich: "And He is unique in every matter." Answer: Precedents from master poets regarding variation in the vowel sound of the rhyme are extremely numerous (reaching the level of tawatur). For instance, Hazrat Saadi: (1) When He wishes to ruin a world, He places the realm in the clutches of a tyrant. (1) (2) Act according to the advice of those who have seen the world, for an old wolf is experienced in hunting. (2) (3) When your servant becomes old, do not forget the right of his long years of service. (3) (4) Now, while you have strength in your hand, pull out a thorn; for when will you be able to bring your hand out of the shroud? (4) (5) Gnaw at it with the teeth of malice and venom, for this base world is a breeder of spite. (5)

(1) When He intends for a country to be ruined, He hands it over to the control of a tyrant. (2) Follow the counsel of those who have seen the world, as an old wolf has experience in hunting. (3) When your servant grows old, do not forget his annual pension/allowance. (4) Now that you have power (in your hand), remove a thorn; otherwise, when will you be able to extend your hand from the shroud? (5) They will gnaw at it with poisonous teeth due to malice, for this lowly world nurtures spite. (T)

1. Bostan Saadi, Chapter 1, Maktaba Shirkat-e-Ilmia, Multan, p. 41.
2. Bostan Saadi, Chapter 1, Maktaba Shirkat-e-Ilmia, Multan, p. 63.
3. Bostan Saadi, Chapter 1, Maktaba Shirkat-e-Ilmia, Multan, p. 19.
4. Bostan Saadi, Chapter 1, Maktaba Shirkat-e-Ilmia, Multan, p. 50.
5. Bostan Saadi, Chapter 1, Maktaba Shirkat-e-Ilmia, Multan, p. 93.

फ़तावा रज़विया खंड 29

(2) पृष्ठ 74: वह अपने गुणों और सार में अद्वितीय है, और उसी प्रकार उसके सभी कार्य निराले हैं। आक्षेप: क़ाफ़िया (अनुप्रास) सही नहीं है, यह इस प्रकार होना चाहिए: अ (मिसरा): और वह हर बात में अद्वितीय है। उत्तर: क़ाफ़िया की हरकत (स्वर) के अंतर के विषय में उस्ताद कवियों के प्रमाण बहुतायत में (तवातुर की सीमा तक) मौजूद हैं। जैसे हज़रत सादी: (1) जब वह चाहता है कि कोई दुनिया बर्बाद हो जाए, तो वह उस देश को किसी ज़ालिम के क़ब्ज़े में दे देता है। (1) (2) दुनिया देखे हुए लोगों के अनुसार कार्य कर, क्योंकि पुराने भेड़िए को शिकार का अनुभव होता है। (2) (3) जब तेरा सेवक बूढ़ा हो जाए, तो उसकी वर्षों की सेवा के अधिकार को मत भूल। (3) (4) अब जबकि तेरे हाथ में ताक़त है, कोई काँटा निकाल ले, फिर कफ़न से कब हाथ बाहर निकाल सकेगा? (4) (5) उसे द्वेष के ज़हरीले दाँतों से चबाएँगे क्योंकि यह नीच ज़माना कीना-परवर (बैर पालने वाला) है। (5)

(1) जब वह चाहता है कि कोई देश बर्बाद हो जाए, तो वह देश किसी ज़ालिम के क़ब्ज़े में दे देता है। (2) जिन्होंने दुनिया देखी हुई है उनकी राय के मुताबिक़ अमल कर क्योंकि पुराने भेड़िए को शिकार का अनुभव होता है। (3) जब तेरा सेवादार बूढ़ा हो जाए तो उसके सालाना वज़ीफ़े को मत भूल। (4) अब जबकि तेरा हाथ (ताक़त) है कोई काँटा निकाल, फिर कफ़न से कब हाथ बाहर निकाल सकेगा। (5) कीना (द्वेष) की वजह से उसको ज़हरीले दाँतों से चबाएँगे क्योंकि कीना-परवर है यह कमीना ज़माना। (त)

1. बोस्ताँ सादी, अध्याय प्रथम, मकतबा शिरकत-ए-इल्मिया मुल्तान, पृ. 41
2. बोस्ताँ सादी, अध्याय प्रथम, मकतबा शिरकत-ए-इल्मिया मुल्तान, पृ. 63
3. बोस्ताँ सादी, अध्याय प्रथम, मकतबा शिरकत-ए-इल्मिया मुल्तान, पृ. 19
4. बोस्ताँ सादी, अध्याय प्रथम, मकतबा शिरकत-ए-इल्मिया मुल्तान, पृ. 50
5. बोस्ताँ सादी, अध्याय प्रथम, मकतबा शिरकत-ए-इल्मिया मुल्तान, पृ. 93

पृष्ठ 750 में से 49

(۲) ص ۷۴: وہ یگانہ ہے صفات وذات میں نیز یکتا اس کے سب افعال ہیں اعتراض: قافیہ صحیح نہیں، یوں ہو: ع نیز یکتا ہو وہ ہر بات میں جواب: اختلاف حرکتِ قافیہ میں اساتذہ کی سندیں حدِ تواتر پر ہیں حضرت سعدی: (۱) چو خواہد کہ ویراں کند عالمی کند ملک در پنجہ ظالمے ۱ (۲) برائے جہاندیدگاں کار کن کہ صید آموز دست گرگ کہن ۲ (۳) چو خدمت گزار یت گردد کہن حقِ سالیانش فراموش مکن ۳ (۴) کنونت کہ دستت خاری بکن دگر کے بر آری تو دست از کفن ۴ (۵) بخائیدش از کینہ دنداں بزہر کہ دوں پرورست این فرومایہ دہر ۵ (۱) جب وہ چاہتا ہے کہ کوئی ملک برباد ہو جائے تو وہ ملک کسی ظالم کے قبضہ میں دے دیتا ہے۔ (۲) جنہوں نے جہاں دیکھا ہوا ہے ان کی رائے کے مطابق عمل کر کیونکہ پرانے بھیڑیے کو شکار کا تجربہ ہوتا ہے۔ (۳) جب تیرا خدمتگار بوڑھا ہو جائے تو اس کے سالانہ وظیفے کو مت بھول۔ (۴) اب جب کہ تیرا ہاتھ (طاقت) ہے کوئی کانٹا نکال، پھر کفن سے کب ہاتھ باہر نکال سکے گا۔ (۵) کینہ کی وجہ سے اس کو زہریلے دانتوں سے چبائیں گے کیونکہ کینہ پرور ہے یہ کمینہ زمانہ۔ (ت)

۱ بوستان سعدی باب اول مکتبہ شرکت علمیہ ملتان ص ۴۱ ۲ بوستان سعدی باب اول مکتبہ شرکت علمیہ ملتان ص ۶۳ ۳ بوستان سعدی باب اول مکتبہ شرکت علمیہ ملتان ص ۱۹ ۴ بوستان سعدی باب اول مکتبہ شرکت علمیہ ملتان ص ۵۰ ۵ بوستان سعدی باب اول مکتبہ شرکت علمیہ ملتان ص ۹۳

Volume 29 Fatawa Razawiya

Mathnawi Sharif: The Prophet said, O counselor, seek counsel, for the counselor is trustworthy[1] 'Mu'taman' with a kasra on the second 'meem' means trustworthy. O God, a cry against this old wolf; he tells him, "Behold, the time has come, be patient."[2]

Kamal Isma'il: O you, by whose banner the kingdom and religion are in pride and nourishment; O Emperor of Faridun's glory and Alexander's disposition. It is the shadow of God, and O Lord, keep his shadow enduring; for it is obligatory to pray for his state from the heart. The difference between 'Manish' and 'Daulatish' is as clear as the sun. Maulvi Hafiz Azizuddin Jalisi, the author of 'Nadir al-Tartib', who is still alive and is a great master and experienced poet, writes in 'Nadir al-Tartib': There are six hundred and twelve or thirteen chapters and two sections in it; there are small glossaries on the margins for each chapter. My dear, the difference in Deccan rhyme is effortlessly correct. (3) p. 7: He is the Creator of all creatures; He is the Provider for all animals. Objection: There is an 'Aikar' (repetition of 'at') in 'makhluqat' and 'haiwanat'; it should be: "He is the Provider for all the provided (marzuqat)". Answer: In the rhymes of plural forms, the singular will not be taken into account; it is certainly desirable but not mandatory. Maulana Rumi: O Generous of Forgiveness, Hider of Defects! Do not take revenge upon us for our sins.[3] Then the Prophet said, "Consult your heart," even if the muftis externally pronounce calamities.[4] In 'uyub' (defects) and 'dhunub' (sins), the 'waw' is a sign of plural; if it is looked at separately, the rhyme of 'ayb' and 'dhanb' will not be formed. Similarly, 'qulub' and 'khutub'.

Atish, Gulzar-e-Nasim: Show halwa to this demon; why give poison if he dies from jaggery (gur)?

[1] Mathnawi Ma'nawi, Book I, Mu'assasah-e-Intisharat-e-Islami, Lahore, 1/131. [2] Mathnawi Ma'nawi, Book III, Mu'assasah-e-Intisharat-e-Islami, Lahore, 3/50. [3] Mathnawi Ma'nawi, Book I, Mu'assasah-e-Intisharat-e-Islami, Lahore, 1/145. [4] Mathnawi Ma'nawi, Book VI, Hamid & Co., Lahore, 6/50.

जिल्द २९ फ़तावा रज़विया

मसनवी शरीफ: पैगंबर ने कहा, ऐ परामर्शदाता, परामर्श करो, क्योंकि परामर्शदाता विश्वसनीय होता है[1] 'मुतमिन' दूसरी 'मीम' के नीचे जेर के साथ विश्वसनीय के अर्थ में है। ऐ खुदा, इस पुराने भेड़िए के खिलाफ फरियाद; वह उससे कहता है, "देख, समय आ गया है, सब्र कर।"[2]

कमाल इस्माइल: ऐ वह, जिसके ध्वज से राज्य और धर्म गर्व और पोषण में हैं; ऐ फ़रीदून की महिमा और सिकंदर के स्वभाव वाले सम्राट। यह खुदा की छाया है, और ऐ रब, उसकी छाया को कायम रख; क्योंकि उसके राज्य की भलाई के लिए दिल से दुआ करना फर्ज़ है। 'मनिश' और 'दौलतिश' का अंतर सूरज की तरह स्पष्ट है। मौलवी हाफिज अजीजुद्दीन जलीसी, जो 'नादिरुल तरतीब' के लेखक हैं और अभी भी जीवित हैं और एक महान उस्ताद और अनुभवी कवि हैं, 'नादिरुल तरतीब' में लिखते हैं: इसमें छह सौ बारह-तेरह अध्याय और दो खंड हैं; प्रत्येक अध्याय के लिए हाशिये पर छोटी-छोटी शब्दकोशें हैं। मेरे मेहरबान, दकन का क़ाफिया अंतर सहज रूप से सही है। (३) पृ. ७: वही तमाम मख्लूकात (सृष्टि) का खालिक (स्रष्टा) है; वही तमाम जानवरों का रज्जाक (अन्नदाता) है। ऐतराज: मख्लूकात और हैवानात में एकरूपता है, इस तरह होना चाहिए, वही रज्जाक मरज़ूकात (जिन्हें रिज़्क दिया गया) का है। जवाब: बहुवचन के क़ाफ़ियों में एकवचन का ध्यान नहीं रखा जाएगा, यह वांछनीय जरूर है लेकिन अनिवार्य नहीं। मौलाना रूमी: ऐ बख्शने वाले करीम, ऐ दोषों को छिपाने वाले! हमारे गुनाहों पर हमसे बदला न ले।[3] फिर पैगंबर ने कहा, "अपने दिल से पूछो," चाहे मुफ्ती बाहर से विपत्तियों की बात करें।[4] 'उयूब' (दोषों) और 'ज़ुनूब' (पापों) में 'वाव' बहुवचन का चिन्ह है; अगर इसे अलग करके देखा जाए तो 'ऐब' और 'ज़म्ब' का क़ाफिया नहीं बनेगा। इसी तरह 'कुलूब' और 'खुतूब'।

आतिश गुलज़ार-ए-नसीम: हलवा इस देव को दिखाओ; जो गुड़ से मरे तो ज़हर क्यों दो।

[1] मसनवी मानवी, दफ्तर अव्वल, मुअस्ससतुन इंतिशाराते इस्लामी, लाहौर १/१३१ [2] मसनवी मानवी, दफ्तर सोम, मुअस्ससतुन इंतिशाराते इस्लामी, लाहौर ३/ ५० [3] मसनवी मानवी, दफ्तर अव्वल, मुअस्ससतुन इंतिशाराते इस्लामी, लाहौर १/ १४५ [4] मसनवी मानवी, दफ्तर शशुम, हामिद एंड कंपनी, लाहौर ६/ ५०

पेज ५०/७५०

مثنوی شریف: گفت پیغمبر بکن اے رائے زن مشورت کالمستشار مؤتمن[1] مؤتمن بکسر میم ثانی بمعنی امین ہے۔ کالے خدا فغاں ازیں گرگ کہن گویدش نک وقت آمد صبر کن[2]

کمال اسمعیل: اے زرایت ملک ودیں در نازش و در پرورش اے شہنشاہ فریدوں فرواسکندر منش سایہ حق است و یا رب سایہ اش پائندہ دار زانکہ فرض ست از میان بادعائے دولتش منش اور دولتش کا اختلاف اظہر من الشمس ہے ، مولوی حافظ عزیز الدین جلیسی مؤلف نادر الترتیب جو اب بھی حیات ہیں اور بڑے استاد اور پرانے تجربہ کار شاعر ہیں نادر الترتیب میں لکھتے ہیں۔ چھ سو بارہ تیرہ فصل دو باب اس میں ہیں تھوڑے تھوڑے حاشیہ پر ہیں لغت ہر باب میں مہربان من اختلافِ دکن قافیہ بے تکلف درست ہے۔ (۳) ص ۷: ہے وہی خلاق مخلوقات کا ہے وہی رزاق حیوانات کا اعتراض: مخلوقات و حیوانات میں ایکار ہے، یوں چاہیے ، ہے وہی رزاق مرزوقات کا جواب: جمع کے قوافی، میں مفرد کا لحاظ نہ رکھا جائے گا ، مستحسن ضرور ہے لازم نہیں۔ مولاناروم : یا کریم العفو ، ستار العیوب ! انتقام از ما مکش اندر ذنوب[3] پس پیغمبر گفت استفت القلوب گرچہ مفتی تاں بروں گوید خطوب[4] عیوب وذنوب میں علامتِ جمع واؤ ہے اس کو علیحدہ کرکے دیکھا جائے تو عیب وذنب کا قافیہ نہ بنے گا اسی طرح قلوب وخطوب۔

آتش گلزار نسیم: حلوا اس دیو کو دکھلاؤ گڑ سے جو مرے تو زہر کیوں دو

[1] مثنوی معنوی دفتر اول مؤسسۃ انتشارات اسلامی لاہور ۱/۱۳۱ [2] مثنوی معنوی دفتر سوم مؤسسۃ انتشارات اسلامی لاہور ۳/ ۵۰ [3] مثنوی معنوی دفتر اول مؤسسۃ انتشارات اسلامی لاہور ۱/ ۱۴۵ [4] مثنوی معنوی دفتر ششم حامد اینڈ کمپنی لاہور ۶/ ۵۰

Volume 29 Fatawa Rizvia

Here too, by separating the plural marker 'vaw', the rhyme of the singular word does not remain correct. A teacher, whose name I do not recall, used to say: "Keep reciting blessings upon this name, O believers! Leave all other mentions when there is mention of the Seal of the Prophets."

(4) Page 5: "He is not dependent on anyone, all are dependent on Him, small and big." Objection: The rhyme is incorrect; it should be: "Every single thing is dependent on Him." Answer: This has been addressed in number 2.

(5) Page 5: "He is pure from body, essence (jawhar), and accident (aradh); from matter, place, and illness (maradh)." Objection: Opposite to 'jawhar' is 'aradh' (with double fat'has), as is 'maradh'. It should be as follows: "He is pure from accident, body, and essence; pure from matter, illness, and home." Answer: This is permissible out of necessity; it is called 'tafris'. Although this 'tafris' is unseemly, there is no doubt about its permissibility. Most Persians have done this with Arabic vocabulary according to common usage, for example, 'harakat' (movement) with three fat'has. Tulafawti: H "Since he was of pleasant movement and sweet manner." 'Kafan' (shroud) with double fat'has, but Shifa'i says: "Let his sister make a shroud from the gums of menstruation." Thus, bringing the vocabulary of one language into another through 'tafris' is correct. However, if one performs 'tafris' of Arabic in Arabic, or Persian in Persian, it is certainly impermissible. Despite this, I do not like this 'tafris' either, and now I have corrected all these changed-vowel words by returning them to their original vowels. In the verse that your excellency has written after amending, the word 'paak' (pure) has the same meaning in both places, so I don't understand how the rhyme will be correct. Yes, it should be amended like this: "He is pure from accident, body, and essence; he is pure from matter and illness of home." Or like this: "He is pure from accident and the body of essence; he is pure from matter, illness, and home."

जिल्द 29 फ़तावा रज़विया

यहाँ भी जमा (बहुवचन) की निशानी 'वाओ' को अलग करने से मुफ़रद (एकवचन) का क़ाफ़िया सही नहीं रहता। एक उस्ताद, जिनका नाम मुझे याद नहीं आ रहा, फ़रमाते हैं: "ऐ मोमिनों! तुम इस नाम पर दुरूद पढ़ते रहो! जब ख़त्म-उल-मुरसलीन का ज़िक्र हो तो बाकी सब ज़िक्र छोड़ दो।"

(4) सफ़ा 5: "वह किसी का भी मोहताज नहीं है, छोटे-बड़े सब उसके मोहताज हैं।" ऐतराज़: क़ाफ़िया ग़लत है, इस तरह होना चाहिए: "हर एक चीज़ उसकी ही मोहताज है।" जवाब: नंबर 2 में गुज़र चुका है।

(5) सफ़ा 5: "वह पाक है जिस्म और जौहर व अर्ज़ से, मादा से और मकाँ से, मर्ज़ से।" ऐतराज़: जौहर के मुक़ाबले में अर्ज़ (दो ज़बर के साथ) है और मर्ज़ भी। यूँ होना चाहिए: "वह अर्ज़ और जिस्म व जौहर से पाक है, मादा से और मर्ज़ और घर से पाक है।" जवाब: यह ज़रूरत के वक़्त जायज़ है, इसका नाम 'तफ़रीस' है। अगरचे यह 'तफ़रीस' भद्दी है, लेकिन इसके जायज़ होने में कोई शक नहीं। अक्सर अहले फ़ार्स ने अरबी लफ़्ज़ों में आम शोहरत के मुताबिक़ ऐसा किया है, जैसे 'हरकत' तीनों ज़बर के साथ। तुलाफ़ौती: ह "चूँकि वह ख़ुश-हरकत और मीठी गुफ़्तगू वाला था।" 'कफ़न' दो ज़बर के साथ, लेकिन शफ़ाई कहता है: "हैज़ की मसूड़ों से उसकी बहन कफ़न बनाए।" लिहाज़ा एक ज़ुबान के लफ़्ज़ को दूसरी ज़ुबान में 'तफ़रीस' करके लाना सही है। हाँ, अरबी को अरबी में और फ़ारसी को फ़ारसी में 'तफ़रीस' करना यक़ीनन नाजायज़ है। इसके बावजूद, मैं इस 'तफ़रीस' को पसंद नहीं करता और अब मैंने इन तमाम बदले हुए हरकात वाले शब्दों को असल हरकात के साथ दुरुस्त कर लिया है। आपने शेर में जो तरमीम (संशोधन) फ़रमाई है, उसमें 'पाक' लफ़्ज़ दोनों जगह एक ही माना में है, फिर मेरी समझ में नहीं आता कि क़ाफ़िया कैसे सही होगा। हाँ, इस तरह तरमीम की जाए: "वह अर्ज़ और जिस्म व जौहर से है पाक, मादा से और मर्ज़ घर से है पाक।" या यूँ: "है अर्ज़ और जिस्म जौहर से पाक, मादा से और मर्ज़ और घर से पाक।"

पृष्ठ 51 का 750

یہاں بھی علامتِ جمع واؤ کے علیحدہ کرنے سے قافیہ مفرد کا صحیح نہیں رہتا، ایک استاد جن کا نام مجھ کو یاد نہیں فرماتے ہیں۔ تم درود اس نام پر پڑھتے رہو اے مومنین ! چھوڑ دو سب ذکر جب ہو ذکر ختم المرسلین

(۴) صفحہ ۵ :۔ وہ کسی کا بھی نہیں محتاج ہے اس کے سب محتاج ہیں چھوٹے بڑے اعتراض: قافیہ غلط ، یوں چاہیے اس کی ہی محتاج ہے ہر ایک شے جواب: نمبر ۲ میں گزر چکا۔ (۵) صفحہ ۵ : پاک ہے وہ جسم و جوہر عرض سے مادہ سے اور مکاں سے مرض سے اعتراض: جوہر کے مقابل عرض بفتحتین ہے اور نیز مرض، یوں چاہیے :۔ ہے عرض اور جسم و جوہر سے وہ پاک مادہ سے اور مرض اور گھر سے پاک جواب: یہ بضرورت جائز ہے اس کا نام تفریس ہے، اگرچہ یہ تفریس قبیح ہے، لیکن جائز ہونے میں شک نہیں، اکثر اہل فارس نے لغاتِ عربی میں بموجبِ شہرتِ عام کی ہے، مثلاً حرکت بفتحات ثلاثہ تلا فوتی : ح ز بس خوش حرکت و شیریں ادا بود کفن بفتحتین، لیکن شفائی کہتا ہے۔ از لثہ حیض خواھرش کفن کند پس ایک زبان کے لغت کو دوسری میں تفریس کر کے لانا صحیح ، ہاں عربی کو عربی، فارسی کو فارسی میں تفریس کرے تو ضرور نا جائز، بایں ہمہ اس تفریس کو میں بھی پسند نہیں کرتا اور اب میں نے ان تمام متغیر الحرکات لغات کو اصلی حرکات سے ملبس کر کے درست کر لیا ہے۔ شعر کو جناب نے ترمیم فرما کر جو تحریر فرمایا ہے اس میں پاک ہر دو جگہ متحد المعنی ہے پھر میری سمجھ میں نہیں آتا کہ قافیہ کیونکر درست ہوگا۔ ہاں اس طرح ترمیم کیا جائے۔ وہ عرض اور جسم و جوہر سے ہے پاک مادہ سے اور مرض گھر سے ہے پاک یا یوں۔ ہے عرض اور جسم جوہر سے پاک مادہ سے اور مرض اور گھر سے پاک

Fatawa Razawiyya Volume 29

Then it is correct, but the flaw in it is that the pronoun (he/it) does not appear anywhere. I have amended it like this: He is free from space and from disease, He is free from body and substance, from accident. In this, although the word 'matter' (madda) is being removed, there is a freshness in the composition. The explanation of 'matter' can also be that when He is free from disease, He is necessarily free from matter as well, because disease is inherent to material things.

(6) Page 5: He is present and seeing everywhere, nothing is hidden from Him, without doubt. Objection: 'Shubha' (doubt) is wrong; the correct is: He is present and seeing in every place, not a single bit is hidden from Him. Answer: Since I have already called this 'tafrees' (splitting/breaking meter) repulsive, I agree with it.

(7) Page 6: He is the responder to pleas and prayers, without doubt, He is the granter of needs. Objection: Rhyme, amendment: Hatred from polytheism, infidelity, and wickedness to Him. Answer: Amendment accepted.

(8) Page 7: He is pleased with obedience and faith, He is unhappy with polytheism, infidelity, and wickedness. Objection: Amendment: Surely He is the granter of needs. Answer Number 2: Passed in detail, considering it wrong is the error of the objector.

(9) Page 8: True is the ascension of Muhammad, the refuge of religion, to the heavens as Allah willed. Objection: The composition of 'Muhammad Deen Panah' without 'Izafat' (possessive link) is strange/foreign. Answer: Sir, why do you keep it without Izafat? If the 'dal' of 'Muhammad' is given a light Izafat, what is the harm? The verse will not fall out of meter. True is the ascension of Muhammad, the refuge of religion (Meter: Fa'ilatun Fa'ilatun Fa'ilun)

(10) 'Ila Masha Allah' is wrong, amendment...

Page 52 of 750

तब दुरुस्त है लेकिन इसमें यह कबाहात है कि ज़मीर (वह) किसी जगह नहीं आता, मैंने तरमीम इस तरह की है: वह मकाँ से और मरज़ से पाक है, जिस्म ओ जौहर से अर्ज़ से पाक है इसमें अगरचे कलिमा मादा का दौर हुआ जाता है लेकिन बंदिश में शिगुफ़्तगी होती है और मादा की तौज़ीह यूँ भी हो सकती है कि जब मरज़ से पाक है लामहाला मादा से भी पाक है कि माद्दी शय को मरज़ लाज़मी है।

(6) सफ़्हा 5: हाज़िर ओ नाज़िर वही है हर जगह, कुछ नहीं पोशीदा उससे बे शुबा ऐतराज़: शुबा ग़लत है, सही: हाज़िर ओ नाज़िर वह है हर एक जा, उससे पोशीदा नहीं कोई ज़रा जवाब: चूँकि इस तफ़रीस को मैं ख़ुद मकबूह कह चुका हूँ लिहाज़ा इससे मुझको इत्तेफ़ाक़ है।

(7) सफ़्हा 6: वह मुजीब-ए-अर्ज़ ओ दावात है, बेशुबा वह क़ाज़ी-उल-हाजात है ऐतराज़: क़ाफ़िया, तरमीम: शिर्क ओ कुफ़्र ओ फ़िस्क से नफ़रत उसे जवाब: तरमीम तस्लीम।

(8) सफ़्हा 7: है वह राज़ी ताअत ओ ईमाँ से, शिर्क ओ कुफ़्र ओ फ़िस्क से नाख़ुश वह है ऐतराज़: तरमीम: बा-यक़ीन वह क़ाज़ी-उल-हाजात है। जवाब नंबर 2: मुफ़स्सल गुज़रा, इसको ग़लत समझना मोअतरिज़ की ग़लती है।

(9) सफ़्हा 8: हक़ है मेराज-ए-मुहम्मद दीं पनाह, आसमानों पर इली माशा अल्लाह ऐतराज़: बग़ैर इज़ाफ़त 'मुहम्मद दीं पनाह' की तरकीब अजब है। जवाब: जनाब बग़ैर इज़ाफ़त क्यों रखते हैं, अगर मुहम्मद की 'दाल' को ख़फ़ीफ़ इज़ाफ़त दी जाए तो क्या हर्ज है, शेर वज़न से नहीं गिरेगा। हक़ है मेराज-ए-मुहम्मद दीं पनाह (फ़ाइलातुन फ़ाइलातुन फ़ाइलुन)

(10) 'इली माशा अल्लाह' ग़लत है, तरमीम...

تب درست ہے لیکن اس میں یہ قباحت ہے کہ ضمیر (وہ) کسی جگہ نہیں آتا، میں نے ترمیم اس طرح کی ہے: وہ مکاں سے اور مرض سے پاک ہے جسم و جوہر سے عرض سے پاک ہے اس میں اگرچہ کلمہ مادہ کا دور ہوا جاتا ہے لیکن بندش میں شگفتگی ہوتی ہے اور مادہ کی توضیح یوں بھی ہو سکتی ہے کہ جب مرض سے پاک ہے لامحالہ مادہ سے بھی پاک ہے کہ مادی شے کو مرض لازمی ہے۔

(۶) صفحہ ۵: حاضر و ناظر وہی ہے ہر جگہ کچھ نہیں پوشیدہ اس سے بے شبہ اعتراض: شبہ غلط ہے صحیح: حاضر و ناظر وہ ہے ہر ایک جا اس سے پوشیدہ نہیں کوئی ذرا جواب: چونکہ اس تفریس کو میں خود مقبوح کہہ چکا ہوں لہٰذا اس سے مجھ کو اتفاق ہے۔

(۷) صفحہ ۶: وہ مجیب عرض اور دعوات ہے بیشبہ وہ قاضی الحاجات ہے اعتراض: قافیہ، ترمیم: شرک و کفر و فسق سے نفرت اسے جواب: ترمیم تسلیم۔

(۸) صفحہ ۷: ہے وہ راضی طاعت و ایماں سے شرک و کفر و فسق سے ناخوش وہ ہے اعتراض: ترمیم: بالیقین وہ قاضی الحاجات ہے۔ جواب نمبر ۲: مفصل گزرا، اس کو غلط سمجھنا معترض کی غلطی ہے۔

(۹) صفحہ ۸: حق ہے معراج محمد دیں پناہ آسمانوں پر الٰی ماشاء اللہ اعتراض: بغیر اضافت محمد دیں پناہ کی ترکیب اجنب ہے۔ جواب: جناب بغیر اضافت کیوں رکھتے ہیں، اگر محمد کی دال کو خفیف اضافت دی جائے تو کیا حرج ہے، شعر وزن سے نہیں گرے گا۔ حق ہے معراج محمدؐ دیں پناہ فاعلاتن فاعلاتن فاعلن

(۱۰) الٰی ماشاء اللہ غلط ہے، ترمیم

Fatawa Ridawiyyah Volume 29

The Ascension of Muhammad is a certainty; the Sultan of Religion went to the heavens. And measure the rest by this.

Answer: Why do you read the 'Hamza' of 'Masha Allah' clearly? You should read it by merging the 'Hamza' into the 'Alif' of 'Masha Allah' and the 'Lam' of 'Allah'. You have written a revised verse, but there is a vast difference (like between heaven and earth) between this verse and its beauty. In the verse "the Sultan of Religion went to the heavens," the end of the journey of Ascension is proven only up to the heavens. However, the phrase "ila Masha Allah" (towards what Allah willed) in the book's verse is so meaningful that there is no limit to the journey's end, and its interpretation is adorned by the verse "Then he was at a distance of two bow-lengths or even closer," as is not hidden from people of insight. - (Finished).

The Answer: [To] Kamil al-Nisab Chaudhary Sahab, may his places increase and his days and nights be blessed. After offering the Sunnah greeting, I request that your kind letter arrived just now. I am presenting a brief reply. Whatever I state against the objector will be marked with letters. Now 'H', and against what you presented will be marked with numbers 1, 2, 3, 4, and 'Mushtarak' for common points. (First Objection) (1) It is out of place, and the reply is sufficient. (b) If these were to be taken under objection, then why was the historical name 'al-Musawwam bi' (named as) abandoned? With what construction should the historical name be designated? (c) 'Al-Musawwam bi' and 'al-Ma'ruf bi' - these are Kayasth-style (1) 'Alif Lams'. Upon verification, it was found that they also needed change. (h) (1) Yes, on the name 'Kanz al-Akhira', a subtle criticism would be appropriate; the 'ta marbuta' (round ta) is split. Phonetically, in pause it is 'ha' and in connection it is 'ta'. Firstly, it follows common scribal practice. If you take the pronunciation, it is a place for pause. With 'Alif Lam', it is an Arabic construction. So, in any case, the count is 5, not 400. Yes, if common people read 'Kanz al-Akhirat' based on logic, the date could be correct according to pronunciation, but for a scholarly work, it is better to avoid this. (Second Objection) (2) The rhyming of 'mein' (in) and 'haan' (yes) is certainly defective. (3) Analogy of 'aalime' (a scholar) on 'zaalime' (an oppressor).

Footnote (1): The meaning is that the 'Alif Lam' on 'al-Musawwam' and 'al-Ma'ruf' is how Kayasth people speak and write in Patwari documents. 'La indal-partal ma'lum bhayo' i.e., it became known upon checking. In this sentence, those people made one

mistake by saying 'anda' for 'ind' and the second was adding 'Alif Lam'. 12 Abdul Mannan Azmi.

Page 53 of 750

फ़तावा रज़विया खंड २९

मुहम्मद का मेराज हक़ है; दीन के सुल्तान आसमानों पर गए। और बाक़ी को इसी पर क़यास करें।

उत्तर: आप 'माशा अल्लाह' के'हमज़ा' को ज़ाहिर करके क्यों पढ़ते हैं? हमज़ा को माशा अल्लाह के अलिफ़ और अल्लाह के लाम में इद्ग़ाम (मिलाकर) करके पढ़िए। आपने जो संशोधित शेर कहा है, उस शेर और इसकी ख़ूबी में ज़मीन-आसमान का फ़र्क़ है। "आसमानों पर गए सुल्तान-ए-दीं" में मेराज के सफ़र की इंतहा (अंत) आसमानों तक साबित होती है, और किताब के शेर में "इला माशा अल्लाह" का कलिमा इतना अर्थपूर्ण है कि इसमें सफ़र की इंतहा की कोई हद ही नहीं रहती और जिसकी तफ़्सीर "फ़काना क़ाबा क़ौसयने औ अदना" (वह दो कमानों के फासले पर थे या उससे भी कम) से सुसज्जित है, जैसा कि अंतर्दृष्टि रखने वालों से छिपा नहीं है। - समाप्त।

जवाब: कामिल-उन-निसब चौधरी साहब, आपके ठिकाने बढ़ें और दिन-रात बरकत वाले हों। सुन्नत के मुताबिक़ सलाम पेश करने के बाद गुज़ारिश है कि आपका नवाज़िश-नामा (कृपा-पत्र) इसी वक़्त पहुँचा, संक्षिप्त जवाब हाज़िर है। ऐतराज़ करने वाले (मुअतरिज़) के ख़िलाफ़ जो कुछ अर्ज़ करूँगा उस पर हुर्फ़ी नंबर (वर्णानुक्रम) होंगे। अब 'ह', और आपकी बात के ख़िलाफ़ जो अर्ज़ करूँगा उस पर अददी नंबर (संख्यात्मक) १, २, ३, ४ होंगे और जो दोनों के लिए हो उस पर 'मुश्तरक' (साझा)। (पहला ऐतराज़) (१) बे-महल (अनुचित) है और जवाब काफ़ी है। (ब) यही ऐतराज़ में लेने थे तो तारीख़ी नाम 'अल-मुसव्वम बि' क्यों छोड़ा गया? किस तरकीब से तारीख़ी नाम रखा जाना चाहिए था? (ज) 'अल-मुसव्वम बि' और 'अल-मअरूफ़ बि' ये 'कायस्थाना' (१) (कायस्थों की शैली के) अलिफ़ लाम हैं। पड़ताल (जाँच) करने पर मालूम हुआ कि इसमें भी तब्दीली की ज़रूरत थी। (ह) (१) हाँ, 'कंजुल आख़िरा' नाम होने पर एक बारीक पकड़ (मवाख़ज़ा) सही होती, 'ता-ए-मदव्वरा' (गोल ता) फटी हुई है और लफ़्ज़न वक़्फ़ (रुकने) में 'हा' है और वस्ल (मिलाने) में 'ता'। पहले तो आम लिखने का तरीक़ा है और अगर तलफ़्फ़ुज़ (उच्चारण) लें तो वक़्फ़ की जगह है। अलिफ़ लाम के साथ अरबी तरकीब है, तो बहरहाल ५ ही संख्या हुई न कि ४००। हाँ, आम लोगों के तर्क पर 'कंजुल आख़िरत' पढ़ें तो तलफ़्फ़ुज़ के हिसाब से तारीख़ सही हो सकती है, लेकिन एक इल्मी (विद्वत्तापूर्ण) रचना के लिए इससे बचना बेहतर है। (दूसरा ऐतराज़) (२) 'में' और 'हाँ' का क़ाफ़िया यक़ीनन दोषपूर्ण (मअ़यूब) है। (३) 'आलिमे' का 'ज़ालिमे' पर क़यास।

फ़ुटनोट (१): मतलब यह है कि 'अल-मुसव्वम' और 'अल-मअरूफ़' पर जो अलिफ़ लाम है, यह कायस्थ लोग बोलते हैं और पटवारी के दस्तावेज़ों में लिखते हैं। 'ला इन्दल-पड़ताल मालूम भयो' यानी पड़ताल से मालूम हुआ। इस जुमले में उन लोगों ने एक खराबी तो यह की कि 'इन्द' को 'अन्द' कहा और दूसरी यह कि अलिफ़ लाम लगा दिया। १२ अब्दुल मन्नान आज़मी।

पेज ५३ ऑफ़ ७५०

حق ہے معراج محمد بالیقین آسمانوں پر گئے سلطانِ دیں وقس ھذا البواقی۔

جواب: ماشاء اللہ کے ہمزہ کو آپ ظاہر کرکے کیوں پڑھتے ہیں، ہمزہ کو ماشاء اللہ کے الف اور اللہ کے لام میں ادغام کرکے پڑھئے۔ جناب نے ترمیمی شعر کہا ہے اس شعر اور اس کی خوبی میں زمین و آسمان کا فرق ہے۔ آسمانوں پر گئے سلطانِ دیں اس میں انتہائے سیر معراج آسمانوں تک ثابت ہوتی ہے، اور شعر کتاب میں الی ماشاء اللہ کا کلمہ ایسا پر معنی ہے جس میں انتہائے سیر کی کچھ حد ہی نہیں رہتی اور جس کی تفسیر فکان قاب قوسین او ادنیٰ سے مزین ہے کما لا یخفیٰ علی اھل البصیرۃ (جیسا کہ اہل بصیرت پر پوشیدہ نہیں۔ ت) تمت۔

الجواب : کامل النصاب چودھری صاحب زیدت محالیہ و بورکت ایام و لیالیہ۔ بعد اہدائے ہدیہ سنت ملتمس، نوازش نامہ اسی وقت تشریف لایا، بحال اختصار جواب حاضر۔ جو کچھ حضرت معترض کے خلاف گزارش کروں گا اس پر نمبر حرفی ہوں گے۔ اب ح، اور خلاف جناب معروض ہوگا اس پر نمبر عددی ۱۔ ۲۔ ۳۔ ۴ اور مشترک پر مشترک۔ (اعتراض اول) (۱) بے محل ہے اور جواب کافی (ب) یہی زیر اعتراض لینے تھے تو اسم تاریخی الموسوم بہ کیوں ترک ہوا کون سی ترکیب سے موسوم باسم تاریخی چاہیے تھا۔ (ج) الموسوم بہ (ء) المعروف بہ یہ کائیتھانہ ۱ــہ الف لام ہیں عندالپر تال معلوم بھیکوان کی بھی تغییر چاہیے تھی۔ (ھ) (۱) ہاں کنزالآخرۃ کے نام ہونے پر ایک باریک مواخذہ بر محل ہوتا تائے مدورہ شگافہا ہے اور لفظاً وقف میں ہا اور وصل میں تا اولاً عام اعتبار کتابت کا ہے اور تلفظ بھی لیجئے تو محل محل وقف ہے اور الف لام سے ترکیب ترکیب عربی، تو بہر حال ۵ ہی عدد ہوئی نہ ۴۰۰ ہاں منطق عوام پر کنزالآخرت پڑھے تو باعتبار تلفظ

تاریخ صحیح ہو سکتی ہے مگر ایک علمی تصنیف، اس سے محفوظ رہنا اولیٰ۔ (اعتراض دوم) (۲) میں اور ہاں کا قافیہ معیوب ضرور ہے۔ (۳) عالمے ظالمے پر قیاس

۱ـہ: مطلب یہ ہے کہ الموسوم اور المعروف پر جو الف لام ہے، یہ کائیتھ لوگ بولتے اور کاغذات پٹواری میں لکھتے ہیں لاعندالپر تال معلوم بھیو یعنی جانچ پر تال سے معلوم ہوا، اس جملے میں ان لوگوں نے ایک خرابی تو یہ کی عند کو عند کہا اور دوسری یہ کہ الف لام داخل کیا۔ ۱۲ عبد المنان اعظمی۔

Fatawa Rizvia, Volume 29

It is not correct that when the 'rawi' (rhyme letter) is mobile, variation in the preceding vowel is unanimously permissible and flawless, as in 'dil-ash' and 'gul-shan'. This is contrary to the case where the 'rawi' is quiescent, such as 'dil'. For instance, here (4) 'kuhan' can be with a fat-ha on 'ha' or with two dammas; there is evidence for both in these verses and countless similar ones. Hazrat Maulwi (Rumi) - may his secret be sanctified: The carnal self (nafs) is like Pharaoh; do not satisfy it, lest it brings back memories of that ancient disbelief. (1) (Translator's note: The carnal soul is Pharaoh-like; be warned not to feed its desires, so it does not recall old infidelities.) The great elders have frequently used 'kun' to rhyme with 'man', 'zann', or 'husn', etc. (5) 'Jaari bikun' is a clerical error; the correct form is 'khaarey bikun'. (6) Both 'zahr' and 'dahr' are with a fat-ha. (7) In the Noble Hadith, the word 'Mu'taman' (one who is trusted), following the pattern of 'Mu'tamad', has a fat-ha on the second 'meem'. 'Mu'tamin' with a kasra means one who holds a trust, while 'Mu'taman' with a fat-ha means one who has been made a trustee. That is, the person whose advice is sought is made a trustee; thus, giving advice contrary to one's knowledge is a betrayal. Therefore, this humble seeker has the audacity to state that this is the decree of Shariah and the requirement of trust. (8) In 'manish' and 'dawlatash', there is certainly a difference in vowel movement, which constitutes a flaw. There is no verbal or semantic flaw for which an example cannot be cited from the masters' poetry; however, such examples neither make it permissible nor remove it from being a flaw, nor is it permissible to imitate them in this. Leading scholars of investigation, like Ibn al-Humam (may Allah have mercy on him), state clearly that when masters use such forms, it is attributed to indifference because they were masters of speech (qadir-e-sukhan); if someone else uses them, it is attributed to ignorance and incompetence. I have changed this hemistich as follows:

He is unique in His attributes and His essence / in His decree, His actions, and in every matter.

(Objection Three), part (v): The answer you gave is correct, that observing this is commendable, otherwise it is found in abundance in the works of the elders.

The hearts of the knowers of God have eyes / that see what common observers cannot see. And they have wings that fly without feathers / toward the celestial kingdom of the Lord of the worlds. And they have tongues that whisper secrets / hidden even from the Noble Recording Angels.

(Translation: For the gnostics, there are eyes of the heart that see what the seers among us do not see. And they have wings with which they fly without feathers in the kingdom of the Lord of the worlds. And they have tongues that utter such hidden secrets that are concealed even from the Kiraman Katibin.)

1 Masnawi Ma'nawi, Book Four, Islamic Publications Foundation, Lahore 2/342 Page 54 of 750

फ़तवा रज़विया, खंड 29

यह सही नहीं है कि जब 'रवी' (छंद का अंतिम अक्षर) गतिशील हो, तो उससे पहले के स्वर में अंतर सर्वसम्मति से जायज़ और दोषरहित है, जैसे 'दिलश' और 'गुलशन'। 'दिल' के अंतर के विपरीत जहाँ 'रवी' शांत है, जैसे यहाँ (4) 'कुहन' 'हा' पर फतह के साथ और दोनों पर दम्मा के साथ, दोनों तरह से संभव है, जिसका प्रमाण यही छंद और उनके अनगिनत उदाहरण हैं। हज़रत मौलवी (रूमी) - उनका रहस्य पवित्र हो: नफ़्स (इंद्रिय मन) फ़िरौन है; सावधान रहो, उसे तृप्त मत करो, ताकि वह उस पुराने कुफ़्र (अविश्वास) को याद न दिलाए। (1) (व्याख्या: नफ़्स फ़िरौन के समान है; सावधान रहें कि उसकी इच्छाओं को पूरा न करें, ताकि वह पुरानी नास्तिकता की यादें वापस न लाए।) महान पूर्वजों ने 'कुन' को 'मन', 'ज़न्न' या 'हुस्न' आदि के साथ भी अक्सर तुकबंदी में बाँधा है। (5) 'जारी बिकुन' लिपिकीय त्रुटि है; सही 'खारे बिकुन' है। (6) 'ज़हर' और 'दहर' दोनों फतह के साथ हैं। (7) हदीस शरीफ में 'मुअतमन' (अर्थात् जिस पर भरोसा किया जाता है) 'मुअतमद' के वज़न पर दूसरे 'मीम' पर फतह के साथ ही है। कसरा के साथ 'मुअतमिन' का अर्थ है अमानत रखने वाला, और फतह के साथ 'मुअतमन' का अर्थ है जिसे अमीन (विश्वस्त) बनाया गया हो; अर्थात् जिससे सलाह माँगी गई उसे अमीन बनाया गया, तो सलाह के विरुद्ध कार्य करना विश्वासघात है। इसलिए, इस फकीर को इन प्रस्तुतियों पर हिम्मत है कि यही शरीयत का हुक्म और अमानत की मांग है। (8) 'मनिश' और 'दौलतश' में निश्चित रूप से स्वर का अंतर है और यह दोष है। कोई भी शाब्दिक या अर्थ संबंधी दोष ऐसा नहीं है जिसका उदाहरण उस्तादों के कलाम से न दिया गया हो; इससे वह न तो जायज़ हो जाता है और न ही दोष होने से बाहर आता है, और न ही इसमें उनका अनुकरण जायज़ है। इब्न अल-हुमाम (रहमतुल्लाह अलैहि) जैसे शोधकर्ता इमाम स्पष्ट रूप से कहते हैं कि उस्तादों द्वारा ऐसा किया जाना उनकी बेपरवाही माना जाएगा क्योंकि वे कला के माहिर (कादिर-ए-सुखन) थे; यदि कोई दूसरा ऐसा करता है, तो उसे अज्ञानता और असमर्थता माना जाएगा। मैंने इस मिसरे को इस प्रकार बदला है:

वह अद्वितीय है अपने गुणों और अस्तित्व में / अपने आदेशों में, अपने कार्यों में और हर बात में।

(तीसरा आक्षेप) का (व) वह उत्तर सही है जो श्रीमान ने दिया कि इसका ध्यान रखना प्रशंसनीय है, अन्यथा बुजुर्गों के कलाम में यह बहुतायत से मौजूद है।

ईश्वर को जानने वालों (आरिफों) के पास दिल की आँखें होती हैं / जो वह देखती हैं जो अन्य देखने वाले नहीं देख सकते। और उनके पास ऐसे पंख हैं जो बिना पंखों के उड़ते हैं / ब्रह्मांड के स्वामी के

दिव्य साम्राज्य की ओर। और उनकी ज़ुबानें हैं जो गुप्त रहस्यों को फ़ुसफ़ुसाती हैं / जो सम्मानित लेखकों (फ़रिश्तों) से भी छिपे हुए हैं।

(व्याख्या: ज्ञानियों के लिए दिल की आँखें हैं जो वह देखती हैं जो हम में से देखने वाले नहीं देखते। और उनके बाजू हैं कि वे परों के बिना उड़ते हैं परवरदिगार-ए-आलम की बादशाही में। और उनकी ज़ुबानें हैं जो ऐसे गुप्त भेद कह देती हैं जो किरामन कातिबीन से भी पोशीदा हैं।)

1 मसनवी मानवी, दफ्तर चहारुम, मुअस्सा-ए-इंतशारात-ए-इस्लामी, लाहौर, 2/342 पृष्ठ 54 का 750

صحیح نہیں کہ روی جب متحرک ہو تو قبل کی حرکت میں اختلاف باجماع جائز و بے عیب ہے جیسے دلش و گلشن ۔ بخلاف اختلاف دل کہ روی ساکن ہے جیسے یہاں (۴) کہن بفتح ہا و بضمتین دونوں طرح ہے جس کی سند یہی اشعار اور ان کی امثال بے شمار ہیں ۔ حضرت مولوی قدس سرہ نفس فرعون است ہا سیر مش مکن تانیار د یاد زاں کفر کہن ۱ (نفس فرعون ہے خبردار اس کو سیر مت کر ، تاکہ وہ پرانے کفر کی یاد نہ لائے ۔ ت) اکابر نے اس کثرت سے کن کا قافیہ من یازن یا حسن و غیر ہا بھی کبھی باندھا (۵) جاری بکن غلطی کاتب ہے صحیح خارے بکن ہے (۶) زہر و دہر دونوں بالفتح ہیں ۔ (۷) حدیث شریف میں مؤتمن بروزن معتمد بفتح میم دوم ہی ہے مؤتمن بالکسر امین دارندہ و بالفتح امین داشتہ شدہ یعنی جس سے مشورہ طلب کیا گیا اسے امین بنایا گیا تو خلاف مشورہ دینا خیانت ہے۔ لہذا فقیر کو ان گزارشوں پر جرات ہے کہ یہی حکم شریعت و مقتضائے امانت ہے۔ (۸) منش اور دولتش میں ضرور اختلاف حرکت ہے اور عیب ہے۔ کوئی عیب لفظی خواہ معنوی ایسا نہیں جس کی مثال اساتذہ کے کلام سے نہ دی گئی ہو اس سے نہ وہ جائز ہوتا ہے نہ عیب ہونے سے باہر آتا ہے اور نہ اس میں ان کی تقلید روا ہو ۔ ائمہ محققین مثل ابن الہمام رحمتہ اللہ تعالیٰ علیہ تصریح فرماتے ہیں کہ ان کا باندھا بے پرواہی پر محمول ہو گا کہ قادر سخن تھے دوسرا باندھے تو جہل و عجز پر محمول ہو گا ، میں نے اس مصرعہ کو یوں بدلا ہے :

وہ یگانہ ہے صفات وذات میں حکم میں افعال میں ہر بات میں

(اعتراض سوم) کا (و) وہ جواب صحیح ہے جو جناب نے دیا کہ اس کا لحاظ مستحسن ہے ورنہ اکابر کے کلام میں بکثرت موجود۔

قلوب العارفین لها عیون تری ما لا یراہ الناظرونا واجنحة تطیر بغیر ریش الی ملکوت رب العالمینا والسنة بسر قد تناجی بغیب عن کرام کاتبینا

(عارفوں کے لیے دل کی آنکھیں ہیں وہ دیکھتی ہیں جو ہم میں سے دیکھنے والے نہیں دیکھتے۔ اور ان کے بازو ہیں کہ وہ پروں کے بغیر اڑتے ہیں پروردگار عالم کی بادشاہی میں ۔ اور ان کی زبانیں ہیں جو ایسے خفیہ راز کہہ دیتی ہیں جو کر اما کاتبین سے پوشیدہ ہیں ت)

۱ مثنوی معنوی دفتر چہارم مؤسسۃ انتشارات اسلامی لاہور ۲/ ۳۴۲ Page 54 of 750

Fatawa Rizvia Volume 29

(9) However, citing the rhymes of 'uyub' (defects), 'zunub' (sins), 'qulub' (hearts), and 'khutub' (matters) as evidence is not correct because the speech is in the sound plural form (jam' salim). This humble servant had also not changed this rhyme as it was not necessary; after the objection, it seemed more appropriate to make it 'marzuqat'.

(Fourth Objection) It is the same second one, and the speech remains the speech. I have changed the first hemistich here as follows: 'He is pure from every need and every defect; all are dependent on Him, small and great.' In this, a universal rule has been added.

(Fifth Objection) (10) This is also certainly worth taking up and mandatory to abandon. We have not been given the authority for such alterations, nor is there any rule that we can apply poetic license (sama') everywhere without precedent; and the answer to necessity is the same: what is the need to compose poetry? In 'harakat' (movement), 'barakat' (blessing), and their likes, due to the succession of vowels, a second silent letter (sukun thani) is undoubtedly commonly used, but 'arz' (accident), 'gharz' (motive), 'faras' (horse), and their likes cannot be judged based on that. I have replaced two couplets with three here as follows: 'That Pure Essence is transcendent from physical body; without place, without time, and without directions.' 'Their Creator was as He was before them; He remained the same even after their existence.' 'He is pure from body and essence, and from accident; He is pure from matter and from disease.' Purification from 'place' (makan) appeared in the first couplet. (11) 'Pak' (Pure) is an attribute, and it contains a hidden pronoun; there is no need for an explicit pronoun, just as in this couplet: 'He knows the secrets of the chest; He sees love and malice in the heart.'

(Z) The objection you raised regarding the change made by the objector is very correct.

(Sixth Objection) Undoubtedly correct, which you have also accepted, but (H) to call a doubt correct is itself wrong; it is a correct doubt. (T) (12) The titles 'Hazir' (Present) and 'Nazir' (Watching) should also not be applied to the Almighty Creator. Scholars felt such a need regarding its application that they even issued a decree against declaring one a disbeliever for it. It is stated in Sharh al-Wahbaniyah and Durr al-Mukhtar: 'Saying "O Present! O Watching!" does not constitute disbelief.' 1 Meaning, one will not become a disbeliever by calling Allah Almighty 'Ya Hazir' or 'Ya Nazir'. I have changed this couplet as follows: 'He is the Witness and All-Seeing of everything;

nothing is hidden from You, O All-Aware.' In the second hemistich, there is 'Iltifat' (apostrophe), which is among the fine arts of poetry.

1 Al-Durr al-Mukhtar, Kitab al-Jihad, Bab al-Murtad, Matba' Mujtabai Delhi, 1/361.

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

(9) मगर उयूब (दोष), ज़ुनूब (पाप), कुलूब (हृदय) और खुतूब (मामले) के क़वाफ़ी (क़ाफ़ियों) से इस्तशहाद (प्रमाण देना) सही नहीं है क्योंकि कलाम जमा सालिम (नियमित बहुवचन) में है। फ़क़ीर ने भी यह क़ाफ़िया नहीं बदला था क्योंकि ज़रूरी नहीं था; एतराज़ (आपत्ति) के बाद 'मरज़ूक़ात' ही बना देना मुनासिब मालूम हुआ।

(चौथा एतराज़) वही दूसरा है और कलाम वही कलाम है। मैंने यहाँ पहला मिसरा (पद) यूँ बदला है: 'पाक है हर हाजत व हर ऐब से, इसके सब मोहताज हैं छोटे बड़े' इसमें एक मसला-ए-कुल्लिया (सार्वभौमिक नियम) ज़्यादा हो गया।

(पाँचवाँ एतराज़) (10) यह भी ज़रूर क़ाबिले-अख़्ज़ (ग्रहण करने योग्य) और वाजिबे-तर्क(त्यागने योग्य) है और ऐसे तसर्रुफ़ात (बदलावों) का हमें इख़्तियार नहीं दिया गया और न ही वह कोई क़ायदा है कि समा' (सुनने) के बिना हर जगह जारी कर सकें और ज़रूरत का जवाब वही है कि शेर कहना क्या ज़रूरी है? 'हरकत' और 'बरकत' और उनके जैसों में हरकातों के निरंतर आने की वजह से 'सुकून-ए-सानी' (दूसरे अक्षर का शांत होना) बेशक आम तौर पर मुस्तअमल (प्रचलित) है, मगर 'अर्ज़', 'ग़रज़' और 'फ़रस' वग़ैरह को इस पर क़यास नहीं कर सकते। मैंने यहाँ दो शेरों को तीन से यूँ बदला है: 'है मुनज़्ज़ा (पवित्र) जिस्म से वो पाक ज़ात, बे मकान व बे ज़मान व बे जिहात' 'ख़ालिक़ (रचयिता) उनका उनसे पहले जैसे था, उनके होने पर भी वैसा ही रहा' 'जिस्म व जौहर से अर्ज़ से पाक है, माद्दा से और मर्ज़ से पाक है' मकान से तनज़ीह (पवित्रता) पहले शेर में आ गई। (11) 'पाक' सिफ़त (विशेषण) है और इसमें ज़मीर-ए-मुस्ततिर (छुपा हुआ सर्वनाम) है, ज़मीर-ए-मज़हर (प्रकट सर्वनाम) की ज़रूरत नहीं जैसे इस शेर में: 'जानता है राज़-हा-ए-सीना को, देखता है दिल में हुब्ब व कीना को'

(ज़) हज़रत मोतरिज़ (आक्षेप करने वाले) ने जो तब्दीली फ़रमाई उस पर जनाब का एतराज़ बहुत सही है।

(छठा एतराज़) बेशक सही है जिसे जनाब ने भी तस्लीम (स्वीकार) फ़रमाया, मगर (ह) 'शुबा सही' बताना ख़ुद ग़लत है, 'सही शुबा' है। (त) (12) 'हाज़िर व नाज़िर' का इतलाक़ (प्रयोग) भी बारी अज़्ज़-व-जल्ल पर न किया जाएगा। उलमा-ए-किराम को इसके इतलाक़ में यहाँ तक हाजत (ज़रूरत) हुई कि इस पर से नफ़ी-ए-तक्फ़ीर (कुफ़्र का खंडन) फ़रमाई।

शरह अल-वहानिया और दुर्र-ए-मुह्तार में है: 'व या हाज़िर या नाज़िर लैसा बि-कुफ़्र' 1 यानी अल्लाह अज़्ज़-व-जल्ल को 'या हाज़िर' या 'या नाज़िर' कहने से काफ़िर न होगा। मैंने इस शेर को यूँ बदला है: 'है वही हर चीज़ का शाहिद बसीर, कुछ नहीं पोशीदा तुझसे ऐ ख़बीर' मिसरा-ए-सानी (दूसरी पंक्ति) में इल्तिफ़ात (संबोधन का बदलाव) है जो नफ़ाइस-ए-सनत (कला की उत्कृष्टता) से है।

1 अल-दुर्र अल-मुह्तार, किताब अल-जिहाद, बाब अल-मुरतद, मतबा मुजतबाई देहली, 1/361।

(۹) مگر عیوب و ذنوب اور قلوب و خطوب کے قوافی سے استشہاد صحیح نہیں کہ کلام جمع سالم میں ہے۔ فقیر نے بھی یہ قافیہ نہ بدلا تھا۔ کہ ضروری نہ تھا بعد اعتراض مرزوقات ہی بنا دینا انسب معلوم ہوا۔

(اعتراض چہارم) وہی دوم ہے والکلام الکلام میں نے یہاں پہلا مصرعہ یوں بدلا ہے، پاک ہے ہر حاجت و ہر عیب سے اس کے سب محتاج ہیں چھوٹے بڑے اس میں ایک مسئلہ کلیہ زائد ہو گیا۔

(اعتراض پنجم) (۱۰) یہ بھی ضرور قابل اخذ و واجب الترک ہے اور ایسے تصرفات کا ہم کو اختیار نہ دیا گیا نہ وہ کوئی قاعدہ ہے کہ سماع بے سماع ہر جگہ جاری کر سکیں اور ضرورت کا جواب وہی ہے کہ شعر گفتن چہ ضرور۔ حرکت و برکت اور ان کے امثال میں بوجہ توالی حرکات سکون ثانی بے شک عام طور پر مستعمل مگر عرض و غرض و فرس وامثالہا کو اس پر قیاس نہیں کر سکتے۔ میں نے یہاں دو شعروں کو تین سے یوں تبدیل کیا ہے: ہے منزہ جسم سے وہ پاک ذات بے مکان و بے زمان و بے جہات خالق ان کا ان سے پہلے جیسے تھا ان کے ہونے پر بھی ویسا ہی رہا جسم و جوہر سے عرض سے پاک ہے مادہ سے اور مرض سے پاک ہے مکان سے تنزیہہ شعر اول میں آگئی (۱۱) پاک صفت ہے اور اس میں ضمیر مستتر ہے، ضمیر مظہر کی ضرورت نہیں جیسے اس شعر میں۔ جانتا ہے راز ہائے سینہ کو دیکھتا ہے دل میں حب و کینہ کو

(ز) حضرت معترض نے جو تبدیلی فرمائی اس پر جناب کا اعتراض بہت صحیح ہے۔

(اعتراض ششم) بے شبہ صحیح ہے جسے جناب نے بھی تسلیم فرمایا مگر (ح) شبہ صحیح بتانا خود غلط ہے صحیح شبہ ہے۔ (ط) (۱۲) حاضر و ناظر کا اطلاق بھی باری عزوجل پر نہ کیا جائے

گا۔ علماء کرام کو اس کے اطلاق میں یہاں تک حاجت ہوئی کہ اس پر سے نفی تکفیر فرمائی، شرح الوہبانیہ و درمختار میں ہے۔ و یا حاضر یا ناظر لیس بیکفر۔ ۱ یعنی اللہ عزوجل کو یا حاضر یا ناظر کہنے سے کافر نہ ہو گا۔ میں نے اس شعر کو یوں بدلا ہے۔ ہے وہی ہر چیز کا شاہد بصیر کچھ نہیں پوشیدہ تجھ سے اے خبیر مصرعہ ثانی میں التفات ہے کہ نفائس صنعت سے ہے۔

۱ الدرالمختار کتاب الجہاد باب المرتد مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۳۶۱ Page 55 of 750

Fatawa Rizvia Volume 29

(Seventh Objection) The same as the sixth, but (Y) (13) It is strange to keep "Qazi al-Hajat" (Judge of Needs) as stable or persistent; I have changed it thus. Verse: With certainty, He is the Judge of Needs (Ya) (14) In its first hemistich, "He is the Answerer of the petition and prayers," the phrase "Mujeeb Arz" is a Persian construction. Using the word "Aur" (and) for conjunction with it is impermissible; why was there no objection to this? I changed it thus: He is the Answerer of petitions and prayers. (Seen) (15) On the same page, verse 11 "Be daleel-o-hujjat-o-burhan lek" also uses conjunction in a Persian construction, so the manifestation of the 'noon' (nasalization) is impermissible. There was no objection to this either; I changed it thus: Verse: Need is not a proof in faith, but... (Lah) (16) In the first hemistich of page 7, "Allah is the Creator of good and evil," the same issue exists regarding the construction and the Hindi conjunction. Now it suggests a very corrupt meaning where the conjunction for "evil"—God forbid—might lead one to read "Creator of good" and then "evil is Allah." This objection was also missed; I changed it thus: Allah is the Creator of every good and evil. (Eighth Objection) The same as the second, regarding the speech (Be). In it, the change to "hatred of shirk, disbelief, and wickedness" was very vile. Even if millions of rhymes or even the base rhyme letter were changed, or every hemistich went out of meter, the ugliness of those millions would not reach even a millionth part of this change. "Nafrat" (hatred/aversion) refers to running away and being spooked; its attribution towards Allah Almighty is not permissible (Ya). (17) Furthermore, in the hemistich "He is pleased with obedience and faith," the manifestation of 'noon' after a Persian construction was prohibited. No objection was raised against this. I have changed this verse thus: He, the Ever-Living, is pleased with obedience and faith; He is displeased with shirk, disbelief, and wickedness. (Yo) (18) On the same page, it was "Some are superior by necessity." The word is "Zaroor" or "Bi-al-zaroorah"; "Bi-al-zaroor" is incorrect. I have changed it thus: Verse: Some are surely superior to others. (Ninth Objection) (Yad) "Right is the ascension of Muhammad, the refuge of religion," peace and blessings of Allah be upon him. The objection to the possessive case of "Falak" is misplaced; there is plenty of room. Here, on page 7, "First among them, Hazrat Adam, the father of mankind."

फतावा रिज़विया जिल्द २९

(सातवाँ आक्षेप) वही छठा है मगर (य) (१३) 'काज़ी अल-हाजात' (ज़रूरतों को पूरा करने वाला) को स्थिरता या निरंतरता के साथ रखना अजीब है; मैंने इसे इस तरह बदला है। पद्य: निश्चित रूप से वह ज़रूरतों को पूरा करने वाला है (या) (१४) इसके पहले मिसरे (अर्ध-पद्य) में "वह मुजीब अर्ज़ और दावात है" में 'मुजीब अर्ज़' फ़ारसी संरचना है। 'और' शब्द के साथ इस पर संयोजन (عطف) अनुचित है। इस पर आक्षेप क्यों नहीं हुआ? मैंने इसे इस तरह बदल दिया: वह मुजीब-उल-अर्ज़ वद-दावात है। (स) (१५) इसी पृष्ठ का ११वाँ शेर "बे दलील-ओ-हुज्जत-ओ-बुरहान लेक" में भी फ़ारसी संरचना में संयोजन है, तो 'नूँ' का प्रकटीकरण वर्जित है, इस पर भी आक्षेप नहीं हुआ। मैंने इसे इस तरह बदला: पद्य: हाजत हुज्जत नहीं ईमान में लेक (लह) (१६) पृष्ठ ७ के पहले मिसरे "ख़ालिक़ खैर और शर अल्लाह है" में वही बात है कि संरचना और हिन्दी संयोजन है और अब वह एक बहुत ही दूषित अर्थ का संकेत देता है कि 'शर' (बुराई) का संयोजक—खुदा न करे—ऐसा बना देता है कि पढ़ा जाए "खैर का खालिक" और "शर अल्लाह है"। यह आक्षेप भी रह गया था; मैंने इसे इस प्रकार बदला: अल्लाह हर खैर व शर का खालिक है। (आठवाँ आक्षेप) वही दूसरा है और कलाम (बे) है। इसमें "शिर्क कुफ्र और फ़िस्क से नफ़रत" का परिवर्तन बहुत ही घृणित हुआ। यदि करोड़ों काफ़िये (तुकबंदी) बदलते या रदीफ़ भी बदलते, बल्कि हर मिसरा छंद (वजन) से बाहर हो जाता, तो भी उन करोड़ों की कुरूपता इस बदलाव की करोड़वीं हिस्से तक न पहुँचती। 'नफ़रत' भागने और बिदकने को कहते हैं, अल्लाह अज़्वजल की ओर इसका संबंध जायज़ नहीं है (य)। (१७) इसके अतिरिक्त, मिसरे "है वो राज़ी ताअत व ईमान से" में फ़ारसी संरचना के बाद 'नूँ' का प्रकटीकरण मना था। इस पर आक्षेप नहीं हुआ। मैंने यह शेर इस प्रकार बदला है: ताअत व ईमान से राज़ी है वो हयी, शिर्क व कुफ्र व फ़िस्क से नाराज़ है। (यो) (१८) इसी पृष्ठ में "बाज़ अफज़ल पर हैं बि-अज़-ज़रूर" था। शब्द 'ज़रूर' है या 'बि-अज़-ज़रूरह', 'बि-अज़-ज़रूर' जैसा कुछ नहीं है। मैंने इसे इस प्रकार बदला है: पद्य: बाज़ अफज़ल बाज़ से हैं पुर-ज़रूर (नौवाँ आक्षेप) (यद) "हक़ है मेअराज-ए-मुहम्मद दीन पनाह" सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम। 'फलक' की इज़ाफ़त (सम्बन्ध कारक) पर आक्षेप अनुचित है; बहुत स्थान है। यहीं पृष्ठ ७ पर "प्रथम उनमें हज़रत आदम अबुल बशर"।

पृष्ठ ५६ का ७५०

(اعتراض ہفتم) وہی ششم ہے مگر (ی) (۱۳) قاضی الحاجات باثبات یابر قرار رکھنا عجب ہے میں نے اسے یوں بدلا ہے۔ ع بالیقین وہ قاضی حاجات ہے (یا) (۱۴) اس کے پہلے مصرعہ وہ مجیب عرض اور دعوات ہے میں عجیب عرض ترکیب فارسی ہے لفظ اور سے اس پر عطف ناجائز ہے، اس پر اعتراض کیوں نہ ہوا، میں نے اسے یوں تبدیل کیا۔ وہ مجیب العرض والدعوات ہے۔ (س) (۱۵) اسی صفحہ کا ۱۱ شعر بے دلیل وحجت و برہان لیک میں بھی عطف بہ ترکیب فارسی ہیں تو اظہار نون ناجائز اس پر بھی اعتراض نہ ہوا، میں نے اسے یوں بدلا: ع حاجت حجت نہیں ایمان میں لیک (لح) (۱۶) صفحہ ۷ کے پہلے مصرعہ خالق خیر اور شر اللہ ہے میں وہی بات ہے کہ ترکیب اور عطف ہندی اور اب وہ سخت معنی فاسد کو موہم کہ شرکا عاطف معاذ اللہ خالق خیر پڑھواور شر اللہ ہے یہ بھی اعتراض سے رہ گیا میں نے اسے یوں بدلا۔ خالق ہر خیر و شر اللہ ہے (اعتراض ہشتم) وہی دوم ہے والکلام الکلام (بہ) اس میں یوں تبدیل شرک و کفر و فسق سے نفرت اسے بہت سخت قبیح واقع ہوئی اگر کروڑوں قافیے تبدیل بلکہ روی رکھتے بلکہ ہر مصرعہ خارج از وزن ہوتا تو بھی ان کروڑوں کی شناعت اس تبدیلی کی کروڑویں حصہ کو نہ پہنچتی۔ نفرت بھاگنے اور بدکنے کو کہتے ہیں، اللہ عزوجل کی طرف اس کی نسبت حلال نہیں (یہ) (۱۷) نیز اس مصرعہ " ہے وہ راضی طاعت و ایمان سے " میں ترکیب فارسی کے بعد اظہار نون ممنوع تھا۔ اس پر اعتراض نہ ہوا میں نے یہ شعر یوں بدلا ہے: طاعت وایمان سے راضی ہے وہ حی شرک و کفر و فسق سے ناراض ہے (یو) (۱۸) اسی صفحہ میں " بعض افضل پر ہیں بالضرور " تھا لفظ ضرور ہے یا بالضرورۃ، بالضرور کوئی چیز نہیں، میں نے اسے یوں بدلا ہے: ع بعض افضل بعض سے ہیں پُر ضرور (اعتراض نہم) (ید) " حق ہے معراج محمد دیں پناہ " صلی اللہ تعالٰی علیہ

وسلم۔ فلک اضافت پر اعتراض بیجا ہے فلک لک دو لک جگہ ملے گا۔ یہیں ص ۷ پر اول ان کے

حضرت آدم ابوالبشر

Fatawa Razawiyya - Volume 29

In that too, why was 'fakk' (separation) allowed? (T) If 'fakk' is irrational, then why consider 'Deen Panah' as an adjective? Rather, it is an elision of the subject in an independent laudatory sentence, meaning 'He (peace and blessings of Allah be upon him) is the Refuge of Religion.' Its examples are present in the Great Quran itself. (Y-T) Even if not this, why not establish that the addressee Sa'eed is being called, meaning 'O Refuge of Religion.'

(19) To give this answer a light 'Idafah' (annexation) is not correct; now the meter cannot be 'Fa'ilatun Fa'ilun'. There was no room for 'Fa'ilun' even before; 'Deen Panah' is 'Fa'ilat'. Now the 'kasra' on 'daal' will make the scanning 'Fa'ilatun Fa'ilat Mafa'ilun'.

(Tenth Objection) It is correct (20) 'Ma Sha Allah' i.e., as it should be read. 'Ma Sha Allahu Lahu' is not required by any rule. Elision of the 'hamzah' is certainly permissible and common, but now because of the meeting of two quiescent letters in 'Alif' and 'Lam', the 'Alif' will drop, and it will be read as 'Mashalla'. I have changed it in two ways: firstly, on the heavens (the upper line), 'Ila Ma Sha Allah', meaning the 'hamzah' is elided and the 'Alif' of 'Sha' dropped due to the meeting of two quiescent letters and joined the 'Sheen' with the 'Lam'. Secondly, on the heavens (the lower line), 'Lima Sha Allah', 'Lam' in the sense of 'Ila' is very common and occurs in the Great Quran itself, and essentially there is no need for any formality. (Y) The objection you raised on this change is correct; indeed, there is a world of difference between the original and the substitute. This is a set of forty [points], with complete justice, twenty related to the respected objector and twenty related to your excellency. In the humble opinion of this pauper (the author), there is neither a need to send it elsewhere nor any benefit to be gained, as many required changes would be left out. Some that are not required would be implemented, and some that themselves require more severe changes would come to light. It is hoped that after the amendment here, no error, religious or poetic, remains. God willing, this pauper had written to you that I would ignore poetic errors; in response to your request, those were also kept under consideration. My great lack of leisure, excessive work, and on top of that, absolute solitude, then illness and weakness for ten months have surely caused the delay. If you do not hurry and if it is the will of the Almighty, the work will be completed and be free from all flaws. In the future, whatever your noble opinion may be, it is accepted with respect.

Problem 2: From the Press of Ahl-e-Sunnat wa Jama'at, Bareilly, questioned by Munshi Ijaz Ahmad Sahib Qaiser Muradabadi, scribe of the said press, 5 Rajab 1335 AH.

"On this basis, O Qaiser, you claim to be a Muslim, Sometimes you remember God, sometimes you mention idols."

Is this 'Bahr-e-Hazaj Salim' or 'Muzahaf Musabbagh'? What is the difference between 'karain' (do) and 'kar lain' (do/take)? And what will be the Persian for 'kar lain'?

Page 57 of 750

उसमें भी 'फ़क्क' (अलगाव) था, उसे क्यों जायज़ रखा गया? (त) अगर 'फ़क्क' अनुचित हो, तो 'दीन पनाह' को सिफ़त (विशेषण) क्यों मानें? बल्कि यह मुब्तदा (विषय) का हज़फ़ (लोप) है, एक स्वतंत्र प्रशंसात्मक वाक्य है, यानी 'वे (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) दीन के पनाह हैं।' इसके उदाहरण स्वयं क़ुरआन अज़ीम में मौजूद हैं। (य-त) यदि यह भी न सही, तो क्यों न मान लें कि मुख़ातब (संबोधित) सईद को पुकारा गया है, यानी 'ऐ दीन पनाह' (ऐ धर्म की शरण)।

(19) इस उत्तर को हल्की इज़ाफ़त (संबंध) देना सही नहीं है; अब वज़न 'फ़ाइलातुन फ़ाइलुन' नहीं हो सकता। 'फ़ाइलुन' की गुंजाइश तो पहले ही नहीं थी; 'दीन पनाह' 'फ़ाइलात' है। अब 'दाल' की कसर (इ-की मात्रा) इसकी तक़्ती (छंद-विच्छेद) 'फ़ाइलातुन फ़ाइलात मफ़ाइलुन' कर देगी।

(दसवाँ ऐतराज़) सही है (20) 'माशा अल्लाह' यानी जिस तरह पढ़ा जाए। 'माशा अल्लाहु लहू' किसी नियम के अनुसार आवश्यक नहीं है। 'हमज़ा' का हज़फ़ (लोप) बेशक जायज़ और आम है, लेकिन अब 'अलिफ़' और 'लाम' में दो साकिनों के मिलने (इल्तिक़ा-ए-साकिनैन) के कारण 'अलिफ़' गिर जाएगा और इस तरह पढ़ा जाएगा 'मशल्ला'। मैंने इसे दो तरह से बदला है: पहला, ऊपर की पंक्ति में 'इला माशा अल्लाह', यानी हमज़ा लुप्त हो गया और 'शा' का अलिफ़ दो साकिनों के मिलने के कारण गिरकर 'शीन' 'लाम' से मिल गया। दूसरा, नीचे की पंक्ति में 'लिमा शा अल्लाह', 'लाम' 'इला' के अर्थ में बहुत आम है और स्वयं क़ुरआन अज़ीम में आया है, और मूल रूप से किसी बनावट की ज़रूरत नहीं है। (य) इस बदलाव पर जो ऐतराज़ आपने किया वह सही है, वास्तव में असल और बदल (विकल्प) में ज़मीन-आसमान का फ़र्क़ है। यह एक 'अरबईन' (चालीस का समूह) है, पूर्ण न्याय के साथ, यानी बीस माननीय ऐतराज़कर्ता से संबंधित और बीस आप से संबंधित। इस फ़क़ीर की राय में इसे दूसरी जगह भेजने की न तो ज़रूरत है और न ही कोई लाभ, क्योंकि बहुत से ज़रूरी बदलाव रह जाएंगे। कुछ जो ज़रूरी नहीं हैं वे लागू हो जाएंगे, और कुछ जिन्हें स्वयं और भी बड़े बदलाव की ज़रूरत है वे सामने आएंगे। उम्मीद है कि यहाँ के सुधार के बाद कोई ग़लती न शरई (धार्मिक) बाकी रही न शेअरी (काव्यात्मक), इंशा अल्लाह तआला। इस फ़क़ीर ने आपको लिखा था कि काव्यात्मक त्रुटियों से आँखें मूँद लूँगा, आपकी फ़रमाइश पर उन्हें भी ध्यान में रखा गया। मेरी अत्यधिक व्यस्तता, काम की बेहद अधिकता और उस पर पूर्ण एकांत, फिर बीमारी और कमज़ोरी के कारण दस महीने से दौर निश्चित रूप से देरी का कारण बना। यदि आप जल्दबाज़ी न करें और यदि ईश्वर की इच्छा हो,

तो काम पूरा हो जाएगा और सभी दोषों से मुक्त हो जाएगा। भविष्य में जो भी आपकी श्रेष्ठ राय हो, वह सम्मान के साथ स्वीकार्य है।

मसला 2: मतबा (प्रेस) अहले सुन्नत व जमाअत बरेली से, सवालकर्ता मुंशी एजाज़ अहमद साहब क़ैसर मुरादाबादी, उक्त प्रेस के कातिब (लेखक), 5 रजब 1335 हिजरी।

"इसी पर आपको क़ैसर मुसलमानी का दावा है, कभी याद-ए-ख़ुदा कर लें कभी ज़िक्र-ए-बुताँ कर लें।"

यह 'बहर-ए-हज़ज सालिम' है या 'मुज़ाहफ़ मुसब्बग़'? 'करें' और 'कर लें' में क्या फ़र्क़ है? और 'कर लें' की फ़ारसी क्या होगी?

पृष्ठ 57/750

میں بھی فک تھا وہ کیوں جائز رکھا گیا۔ (تح) اگر فک نامعقول ہو تو دیں پناہ کو صفت کیوں مانئے بلکہ حذف مبتدا جملہ مستقلہ مدحیہ ہے یعنی وہ دیں پناہ ہیں صلی اللہ علیہ وسلم۔ اس کے نظائر خود قرآن عظیم میں ہیں۔ (یط) یہ بھی نہ سہی کیوں نہ ٹھہرائیں کہ مخاطب سعید کو ندا ہے یعنی اے دیں پناہ

(۱۹) یہ جواب کو خفیف اضافت دی جائے صحیح نہیں اب وزن فاعلاتن فاعلن نہیں ہو سکتا فاعلن کی گنجائش تو پہلے ہی نہ تھی دین پناہ فاعلات ہے اب کسرہ دال یہ تقطیع کردے گا فاعلاتن فاعلات مفاعلن۔

(اعتراض دہم) صحیح ہے (۲۰) ماشاء اللہ یعنی جو اس طرح پڑھا جائے۔ ماشااللہ لاہ کسی قاعدہ کا مقتضی نہیں حذف ہمزہ بے شک جائز و شائع ہے مگر اب الف و لام میں التقائے ساکنین ہو کر الف گر جائے گا اور یوں پڑھا جائے گا۔ ماشلّا میں نے اسے دو طرح بدلا ہے۔ آسانوں پر "الی ماشا الہ" یعنی ہمزہ محذوف اور الف شاہ بوجہ التقاساقط ہو کر شین لام سے مل گیا۔ دوم آسمانوں "لماشاء الہ" لام بمعنی الی بکثرت شائع اور خود قرآن عظیم میں واقع اور اصلاً کسی تکلف کی حاجت نہیں۔ (ی) اس تبدیلی پر جو اعتراض جناب نے کیا وہ صحیح ہے واقعی مفاد اصل و بدل میں زمین و آسمان کا تفاوت ہے، یہ ایک اربعین ہے مع انصاف تام یعنی میں متعلق بحضرت معترض اور بیس متعلق بجناب والاسلام فقیر کی رائے میں دوسری جگہ بھیجنے کی نہ حاجت نہ حصول منفعت کہ بہت تبدیلیں جو درکار ہیں رہ جائیں۔ بعض کہ درکار نہیں عمل میں آئیں بعض کہ خود اشد اعظم تبدیل کے محتاج ہوں ظہور پائیں امید کہ یہاں کی ترمیم کے بعد کوئی غلطی نہ شرعی باقی رہی نہ شعری، ان شاء اللہ تعالٰی جناب کو فقیر نے لکھا تھا کہ اغلاط شعریہ سے قطع نظر کروں گا اس

کے جواب میں فرمائش جناب پر وہ بھی زیر نظر رکھے گئے میری عظیم بے فرصتی بے حد کثرت کار اور اس پر محض تنہائی اور پھر علالت و نقاہت کا دس مہینے سے دورہ ضرور باعث دیر تاخیر ہوں گے۔ اگر عجلت نہ فرمائیں اور منظور حضرت عز جلالہ ہو تو کام پورا اور تمام نقائص سے مبرا ہو جائے گا۔ آئندہ جو رائے سامی ہو التسلیم مع التکریم۔

مسئلہ ۲: از مطبع اہلسنت و جماعت بریلی مسئولہ منشی اعجاز احمد صاحب قیصر مراد آبادی کاتب مطبع مذکور ۵ رجب ۱۳۳۵ھ

اسی پر آپ کو قیصر مسلمانی کا دعویٰ ہے کبھی یاد خدا کرلیں کبھی ذکر بتاں کرلیں

یہ بحر ہزج سالم ہے یا مزاحف مسبغ؟ کریں، اور کر لیں، میں کیا فرق ہے؟ اور کرلیں، کی فارسی کیا ہوگی؟

Fatawa Razawiyya Volume 29

The Answer: It is a healthy octameter (muthman), but according to the rule of scansion (taqti'), 'Lin' will not occur; hence, it is not 'musabba' (septameter). Yes, one hemistich is musabba.

Hemistich: Oh hunter! The breath of the prisoners of the cage is being stifled.

To achieve the effect of an action for oneself or for another is generally called 'karna' (to do). 'Kar lena' (to do for oneself) is used where the intent is to acquire the effect for oneself, even if it is just to be free from the task. For example, 'I have spoken' (main ne baat kar li), meaning finished. On the other hand, 'kar dena' (to do for someone else) is used when the delivery of the effect to another is intended, whether for benefit or harm. 'Got married' (nikah kar liya) refers to oneself, while 'married someone off' (kar diya) refers to another. The word 'kya' (did) includes both. 'Torn from head to toe' (sarapa chaak kar liya) is for oneself, and for another, 'kar diya'. In Persian, there is no direct translation for this short compound construction, and it is not specific to the verb 'to do' alone, but applies to every verb, like 'eat' (kha lo) or 'drink' (pi lo). However, 'do' is used when the effect reaches another. One would not say 'kha do' (eat for someone else). 'Break the pomegranate' (anaar tod do) means for someone else, and 'break for yourself' (tod lo) means for oneself. If someone is breaking it for another and is told 'anaar tod lo' (break the pomegranate), it is not the same; here it signifies 'completion' (faragh), meaning the effect is for oneself. That is all.

Page 58 of 750

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

अल-जवाब: मुसम्मन सालिम है लेकिन कानून-ए-तक़्तीअ में हस्ब-ए-क़ायदा न आएगा लिहाज़ा मुसब्बअ नहीं। हाँ, एक मिसरा मुसब्बअ है। ऐ

असीराने क़फ़स का दम घुटा जाता है ऐ सय्याद

फ़ेल का असर अपने लिए हासिल करना हो ख़्वाह दूसरे के लिए, उसे मुतलक़न 'करना' कहेंगे। और 'कर लेना' वहां कि अपने लिए तहसीले-असर मक़सूद हो, अगरचे इस क़दर कि उससे फ़राग़ हासिल हो। 'मैंने बात कर ली' यानी कर चुका। और 'कर देना' वहां कि दूसरे तक वसूले-असर मक़सूद हो नफ़अ ख़्वाह ज़रर। 'निकाह कर लिया' यानी अपना, और 'कर दिया' यानी दूसरे का। और 'क्या' दोनों को शामिल है। 'सरापा चाक कर लिया' और दूसरे का 'कर दिया' और क्या आम। फ़ारसी में इस मुख़्तसर तरकीब का तर्जुमा नहीं और ये फ़क़त 'करने' ही से ख़ास नहीं बल्कि हर फ़ेल में है जैसे 'खा लो', 'पी लो', मगर 'दो' वहीं होगा जहाँ दूसरे पर असर पहुंचे। 'खा दो' न कहा जाएगा। 'अनार तोड़ दो' यानी दूसरे को और 'तोड़ लो' यानी अपने लिए। और अगर दूसरे के लिए तोड़ रहा है उससे कहा 'अनार तोड़ लो' तो एक बात नहीं, यहाँ वही बमानी फ़राग़ है कि ये असर अपने लिए है फ़क़त।

पृष्ठ 58/750

الجواب: مثمن سالم ہے لیکن قانون تقطیع میں حسبِ قاعدہ نہ آئے گا لہذا مسبع نہیں ۔ ہاں ایک مصرع مسبع ہے۔ ع

اسیرانِ قفس کا دم گھٹا جاتا ہے اے صیاد

فعل کا اثر اپنے لیے حاصل کرنا ہو خواہ دوسرے کے لیے اسے مطلقاً کرنا کہیں گے اور کر لینا وہاں کہ اپنے لیے تحصیلِ اثر مقصود ہو اگر چہ اس قدر کہ اس سے فراغ حاصل ہوامیں نے بات کر لی یعنی کر چکا اور کر دینا وہاں کہ دوسرے تک وصولِ اثر مقصود ہو نفع خواہ ضرر، نکاح کر لیا یعنی اپنا اور کر دیا یعنی دوسرے سے اور کیا دونوں کو شامل ہے سراپا چاک کر لیا اور دوسرے کا کر دیا اور کیا عام۔ فارسی میں اس مختصر ترکیب کا ترجمہ نہیں اور یہ فقط کرنے ہی سے خاص نہیں بلکہ ہر فعل میں ہے جیسے کھالو پی لو مگر دو وہیں ہوگا۔ جہاں دوسرے پر اثر پہنچے کھا دو نہ کہا جائے گا انار توڑ دو یعنی دوسرے کو اور توڑ لو یعنی اپنے لیے اور اگر دوسرے کے لیے توڑ رہا ہے اس سے کہا انار توڑ لو تو ایک بات نہیں یہاں وہی بمعنی فراغ ہے کہ یہ اثر اپنے لیے ہے فقط۔

Fatawa Razawiya Volume 29

Knowledge and Education

Issue 73 to 77: From Asara, Post Office Karhatal, District Meerut, Madrasa Hifazat-e-Islam, sent by Munshi Mahmood Ali, teacher of the mentioned Madrasa, 29 Rabi al-Akhir 1336 AH.

(1) In these times when the clouds of general ignorance are widespread, is it forbidden to translate books of the Holy Quran, Hadith Sharif, and Hanafi Fiqh into Urdu and present them to the public, due to some issues being considered shameful, such as menstruation (haidh), postnatal bleeding (nifaas), sexual intercourse (jamaa), divorce (talaq), proof of lineage (thubut-e-nasab), etc.?

(2) Are the books of Fiqh of the Hanafi school, whether academic or non-academic, such as Kanz al-Daqaiq, Sharh Wiqayah, Hidayah, Durr al-Mukhtar, Alamgiri, Shami, Qazikhan, etc., and their commentaries which are included in the curriculum of famous Arabic madrasas, authentic or hypothetical?

(3) If issues derived from the aforementioned books are translated into Urdu so that the common people may benefit from them, would they not be reliable and worthy of practice, similar to Persian and Urdu books like Ma la Budda Minhu, Miftah al-Jannat, Bahishti Zewar, etc.?

(4) A person who, despite claiming to be a Hanafi, denies the aforementioned books and says their issues are hypothetical and not part of the Hanafi school—causing a large group's faith in these books to be spoiled—would such people be considered followers (muqallid) or non-followers (ghair-muqallid) in their claim?

(5) Most people [object to] some issues in Bahishti Zewar which are scattered in sections on impurity (najasaat) and proof of lineage (thubut-e-nisbat) etc.

Page 60 of 750

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

इल्म व तालीम (ज्ञान और शिक्षा)

मसला 73 से 77: आसारा, डाकखाना करहटाल, जिला मेरठ, मदरसा हिफ़ाज़त-ए-इस्लाम से प्रेषित मुंशी महमूद अली, शिक्षक उक्त मदरसा, 29 रबी-अल-आख़िर 1336 हिजरी।

(1) इस ज़माने में जबकि आम जहालत (अज्ञानता) की घटा फैली हुई है, तो इस वजह से कि बाज़ (कुछ) मसाइल शर्मनाक होने के कारण, जैसे कि हैज़ (मासिक धर्म), निफ़ास (प्रसवोत्तर रक्तस्राव), जिमा (संभोग), तलाक़, सुबूत-ए-नसब (वंश का प्रमाण) आदि, उपर्युक्त पुस्तकों का अनुवाद करके आम जनता के सामने प्रकट करना क्या वर्जित है?

(2) हनफ़ी मज़हब की फ़िक़्ह की किताबें, चाहे वे दरसी (पाठ्यपुस्तकें) हों या ग़ैर-दरसी, जैसे कंज़ अद-दक़ाएक़, शरह विक़ाया, हिदाया, दुर्र-ए-मुख़्तार, आलमगीरी, शामी, क़ाज़ीख़ाँ आदि, और उनकी शरहें (व्याख्याएँ) जो मशहूर अरबी मदरसों के पाठ्यक्रम में शामिल हैं, क्या वे सही हैं या फ़र्ज़ी (काल्पनिक)?

(3) जो मसाइल उपरोक्त पुस्तकों से लेकर उर्दू में कर दिए जाएँ ताकि आम लोग उससे फ़ायदा उठा सकें, तो क्या वे भरोसेमंद और अमल (व्यवहार) के योग्य नहीं होंगे, जैसे कि फ़ारसी और उर्दू की किताबें 'मा ला बुद्दा मिन्हु', 'मिफ़्ताह अल-जन्नत', 'बहिश्ती ज़ेवर' आदि?

(4) वह व्यक्ति जो हनफ़ी होने का दावा करने के बावजूद उपरोक्त पुस्तकों का खंडन करे और कहे कि इनके मसाइल फ़र्ज़ी हैं और हनफ़ी मज़हब के नहीं हैं, जिसकी वजह से एक बड़े समूह का इन किताबों पर से विश्वास उठ जाता है, क्या ऐसे लोग अपने दावे में मुक़ल्लिद (अनुयायी) होंगे या ग़ैर-मुक़ल्लिद?

(5) अक्सर लोग 'बहिश्ती ज़ेवर' के कुछ मसाइल पर, जो नजासत (अशुद्धता) और सुबूत-ए-निस्बत (वंश प्रमाण) आदि के अध्यायों में अलग-अलग जगहों पर हैं, [आपत्ति करते हैं]।

पेज 60 ऑफ़ 750

فتاویٰ رضویہ جلد ۲۹

علم وتعلیم

مسئلہ ۷۳ تا ۷۷: از اسارا ڈاکخانہ کرہٹل ضلع میرٹھ مدرسہ حفاظت اسلام مرسلہ منشی محمود علی مدرس مدرسہ مذکور ۲۹ ربیع الآخر ۱۳۳۶ھ

(۱) اس زمانے میں جب کہ عام جہالت کی گھٹا پھیلی ہوئی ہے تو اس وجہ سے قرآن پاک، حدیث شریف، فقہ حنفیہ کا بوجہ بعض مسائل شرمناک ہونے کے مثلاً حیض، نفاس، جماع، طلاق، ثبوت نسب وغیرہ کے کتب بالا کا ترجمہ کرکے عوام کے روبرو اظہار کرنا کیا منع ہے۔

(۲) کتب فقہ جو مذہب حنفی کی درسی و غیر درسی مثلاً کنز الدقائق، شرح وقایہ، ہدایہ، درمختار، عالمگیری، شامی، قاضیخاں وغیرہ اور ان کی شروح جو مشہور مدارس عربیہ میں داخلِ درس ہیں آیا صحیح ہیں یا فرضی؟

(۳) جو مسائل کتب مذکورہ بالا سے اخذ کرکے اردو میں کردیئے جائیں تاکہ عوام اس سے فائدہ مند ہوں تو کیا وہ قابلِ یقین و عمل نہ ہوں گے جیسے کتب فارسی وارد مالابدم نہ، مفتاح الجنت، بہشتی زیور وغیرہ۔

(۴) جو شخص باوجود دعویٰ حنفیت کرتے ہوئے کتب بالا سے انکار کرے اور کہے کہ ان کے مسائل فرضی ہیں۔ حنفی مذہب کے نہیں جس کی وجہ سے ایک گروہ عظیم کا کتب بالا سے اعتقاد خراب ہوجاتا ہے، یہ لوگ اپنے دعویٰ میں مقلد ہوں گے یا غیر مقلد؟

(۵) اکثر لوگ بہشتی زیور کے بعض مسائل پر کہ متفرق طور سے فصل نجاست اور ثبوتِ نسبت وغیرہ میں ہیں۔

They object: we have researched them in books of jurisprudence (Fiqh) and they are found in Sharh Wiqayah, Durr al-Mukhtar, Kanz al-Daqaiq. A Mufti says that these issues are hypothetical; how can what he says be correct?

The Answer: (1) Including the Great Quran in such a question is bad manners (disrespect). Allah and His Messenger (may He be glorified and may peace and blessings be upon him) informed us of truth and falsehood, benefit and harm, regarding our every need. Just as they taught us prayer and fasting, similarly, they taught us about sexual intercourse and Istinja (cleaning after urination/defecation). However, the mention of matters of shame becomes different by changing the mode of expression. If the same issue is described in a modest manner, it can be taught to a virgin girl, but if it is in an immodest manner, no cultured person can describe it even before men. Especially a translation, which is as if it is the speaker's own words from their tongue, it is highly necessary that the greatness and dignity of the original text be considered, and words be written that are worthy of the original speaker. Some misguided people did not take this into account in the translation of the Holy Quran, which is severe disrespect. In short, the same thing changes from respect to insult due to the difference in the mode of expression. For example, "Aush Farmaye" (Please eat), "Tanawul Farmaye" (Please partake), "Nosh-e-Jan Farmaye" (Enjoy your meal), versus "Khao" (Eat), "Niglo" (Swallow), "Thooro" (Stuff your face), "Zehr-mar Karo" (Eat poison/curse on you); how different they are in respect and insult! So just the excuse that 'we have only translated' cannot be sufficient when the mode of expression is absurd/vulgar. And Allah Almighty knows best.

(2) To be 'authentic' as opposed to 'hypothetical', it is enough that the book belongs to the person to whom it is attributed, no matter how many errors it contains. None of the books named by the questioner are hypothetical. All the names mentioned from 'Kanz' to 'Qazikhan' are authentic in the sense of being reliable/authoritative. However, what is the level of reliability? We have mentioned the details of this in our Fatawas. And Allah Almighty knows best.

(3) If a correct translation is made from the aforementioned books, and the mode of expression is also acceptable and praiseworthy, and there is no addition from one's own side, then it would be as if it were a second existence of those books. Certainty is required in matters of belief (I'tiqadiyat), and for action, that issue which is Mufta-Bihi (the official ruling). There are additions even in 'Mala Budd', and 'Miftah-ul-Jannah'

remained in the hands of Wahhabis, in which much correction took place. And 'Bahishti Zewar' is a collection of errors, misguidance, vanity, and ignorance. And Allah Almighty knows best.

(4) No Hanafi says regarding all the books named from 'Kanz' to 'Qazikhan' that their issues are against the Hanafi school or are hypothetical. So the question itself is hypothetical. If someone said such a thing about some additions and interpolations in 'Mala Budd' and 'Miftah-ul-Jannah', it was not out of place. And 'Bahishti Zewar' is 'La fi al-Eer wala fi al-Nafeer' (neither in the caravan nor in the army, meaning it is of no account, t). And Allah Almighty knows best.

वे आपत्ति करते हैं: हमने फ़िक़्ह (इस्लामी न्यायशास्त्र) की किताबों में उनका शोध किया, तो वे शरह विक़ाया, दुर्रे मुख़्तार, कंजुद दक़ाएक़ में पाए जाते हैं। एक मुफ़्ती साहब कहते हैं कि ये मुद्दे काल्पनिक (फर्ज़ी) हैं; उनकी बात कैसे सही हो सकती है?

उत्तर: (१) ऐसे सवाल में महान कुरान को शामिल करना बदतमीज़ी (सू-ए-अदब) है। अल्लाह और उसके रसूल (अल्लाह उन पर फ़ज़्ल व करम करे और उन्हें सलामती दे) ने हमारी हर ज़रूरत के बारे में सच और झूठ, फ़ायदे और नुक़सान के बारे में हमें सूचित किया है। जिस तरह हमें नमाज़ और रोज़ा सिखाया गया, उसी तरह जिमा (सहवास) और इस्तिंजा (शौच के बाद सफाई) की शिक्षा दी गई। लेकिन शर्म के मामलों का ज़िक्र बयान के अंदाज़ (तर्ज़-ए-बयान) के बदलने से अलग हो जाता है। अगर वही मुद्दा हया (मर्यादा) के अंदाज़ में बयान किया जाए तो एक कुंवारी लड़की को इसकी शिक्षा दी जा सकती है, लेकिन अगर बेहयाई (अश्लीलता) के तौर पर हो तो कोई सभ्य व्यक्ति इसे पुरुषों के सामने भी बयान नहीं कर सकता। ख़ास तौर पर अनुवाद कि वह जैसे बोलने वाले की ओर से उसकी ज़बान का बयान होता है, तो यह अत्यंत आवश्यक है कि उसकी महानता और गरिमा का ध्यान रखा जाए, और वे शब्द लिखे जाएं जो उसके कहने के योग्य हों। कुछ गुमराह लोगों ने कुरान मजीद के अनुवाद में इसका ध्यान नहीं रखा, यह गंभीर बदतमीज़ी है। संक्षेप में, एक ही बात बयान के अंदाज़ के अंतर से सम्मान से अपमान तक बदल जाती है। जैसे "औश फरमाएं', "तनावुल फरमाएं', "नोष-ए-जान फरमाएं' (कृपया खाएं/ग्रहण करें) बनाम "खाओ", "निगलो", "ठूंसो", "ज़हर-मार करो" (ज़हर की तरह खाओ); सम्मान और अपमान में ये कितने भिन्न हैं! तो केवल यह बहाना कि "हमने तो सिर्फ अनुवाद किया है" पर्याप्त नहीं हो सकता जब बयान का अंदाज़ बेहूदा (बेतुका/अभद्र) हो। और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है।

(२) 'काल्पनिक' (फर्ज़ी) के मुक़ाबले में 'सत्य' (सही) होने के लिए इतना ही काफ़ी है कि वह किताब, जिसकी ओर उसे जोड़ा गया है, उसी की हो, चाहे उसमें कितनी ही ग़लतियां क्यों न हों। प्रश्नकर्ता ने जिन किताबों के नाम लिए हैं उनमें से कोई भी काल्पनिक नहीं है। 'कंज' से लेकर 'क़ाज़ीख़ां' तक जितने भी नाम बताए गए हैं, ये सब सही यानी विश्वसनीय (मोअतमिद) भी हैं। लेकिन विश्वसनीयता का स्तर क्या है? इसका विवरण हमने अपने फ़तावा में दिया है। और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है।

(३) यदि उपरोक्त पुस्तकों से सही अनुवाद किया जाए और बयान का अंदाज़ भी स्वीकार्य और सराहनीय हो और अपनी ओर से कोई अतिरिक्त बात न जोड़ी जाए, तो वह मानो उन पुस्तकों का दूसरा अस्तित्व होगा। आस्था के मामलों (ऐतिक़ादियत) में निश्चितता (यक़ीन) की आवश्यकता होती है, और अमल (कार्य) के लिए वह मुद्दा जो मुफ़्ता-बिही (आधिकारिक नियम) हो। 'मा-ला-बुद्द' में भी कुछ अधिकताएं हैं, और 'मिफ़्ताह-उल-जन्ना' वहाबियों के हाथ में रही जिसमें बहुत कुछ सुधार हुआ। और 'बहिश्ती ज़ेवर' ग़लतियों, गुमराहियों, व्यर्थता और अज्ञानता का संग्रह है। और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है।

(४) 'कंज' से लेकर 'क़ाज़ीख़ां' तक जितनी भी पुस्तकों के नाम लिए गए, उनके बारे में कोई हनफ़ी यह नहीं कहता कि उनके मुद्दे हनफ़ी संप्रदाय के विरुद्ध हैं या काल्पनिक हैं। तो सवाल ही काल्पनिक है। यदि किसी ने 'मा-ला-बुद्द' और 'मिफ़्ताह-उल-जन्ना' के कुछ अतिरिक्त अंशों और मिलावटों के बारे में ऐसा कहा है, तो वह अनुचित नहीं था। और 'बहिश्ती ज़ेवर' न तो 'ईर' (क़ाफ़िले) में है और न ही 'नफ़ीर' (सेना) में [अर्थात् उसकी कोई गिनती नहीं है, त]। और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है।

पृष्ठ ६१ / ७५०

اعتراض کرتے ہیں، ہم نے ان کی تحقیق کتب فقہ میں کی تو شرح وقایہ، در مختار، کنز الدقائق میں پائے جاتے ہیں ایک مفتی صاحب کہتے ہیں کہ مسائل فرضی ہیں ان کا کہا کیونکر صحیح ہے؟

الجواب: (۱) ایسے سوال میں قرآن عظیم کا شامل کرنا سوء ادب ہے اللہ ورسول جل وعلا وصلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے ہماری ہر حاجت کے متعلق حق و باطل، نفع و ضر پر ہمیں مطلع فرمایا۔ جس طرح ہمیں نماز روزہ سکھایا یونہی جماع و استنجاء تعلیم فرمایا مگر امور شرم کا ذکر طرز بیان مختلف ہو جانے سے مختلف ہو جاتا ہے۔ ایک ہی مسئلہ اگر حیاء کے پیرایہ میں بیان کیا جائے تو کنواری لڑکی کو اس کی تعلیم ہو سکتی ہے اور بے حیائی کے طور پر ہو تو کوئی مہذب آدمی مردوں کے سامنے بھی بیان نہیں کر سکتا۔ خصوصاً ترجمہ کہ وہ گویا متکلم کی طرف سے اس کی زبان کا بیان ہوتا ہے، تو نہایت ضرور ہے کہ اس کی عظمت و شان ملحوظ رہے، وہ لفظ لکھے جائیں جو اس کے کہنے کے ہوں، بعض گمراہوں نے ترجمہ قرآن مجید میں اس کا لحاظ نہ رکھا یہ سخت سوء ادب ہے۔ غرض ایک ہی بات اختلاف طرز بیان سے تعظیم سے توہین تک بدل جاتی ہے جیسے اوش فرمائیے، تناول فرمائیے نوش جان فرمائیے ۔ کھاؤ، نگلو، ٹھورو، زہر مار کرو اور تعظیم و توہین میں کس قدر مختلف ہیں تو صرف اتنا عذر کہ ہم نے ترجمہ کیا ہے کافی نہیں ہو سکتا جب کہ طرز بیان بے ہودہ ہو۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

(۲) صحیح مقابل فرضی کے لیے تو اس قدر بس ہے کہ وہ کتاب جس کی طرف نسبت کی جائے اس کی ہو اگر چہ کتنے ہی اغلاط پر مشتمل ہو، جن کتابوں کے نام سائل نے لیے ان میں کوئی

فرضی نہیں، کنز سے قاضیخاں تک جتنے نام مذکور ہوئے یہ سب صحیح بمعنی معتمد بھی ہیں، مگر اعتماد کیا حاصل اس کی تفصیل ہم نے اپنے فتاوٰی میں ذکر کی ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

(۳) اگر کتب مذکورہ بالا سے صحیح ترجمہ کیا جائے اور طرز بیان بھی مقبول و محمود ہو اور اپنی طرف سے کچھ اضافہ نہ ہو تو وہ گویا انہیں کتابوں کا وجود ثانی ہوگا یقین تو اعتقادیات میں درکار ہوتا ہے اور قابل عمل وہ مسئلہ جو مفتی بہ ہو۔ مالا بد میں بھی زیادات ہیں اور مفتاح الجنتہ تو وہابیہ کے ہاتھ میں رہی جس میں بہت کچھ اصلاح ہوئی اور بہشتی زیور اغلاط و ضلالت و بطالت و جہالت کا مجموعہ ہے، واللہ تعالٰی اعلم۔

(۴) کنز سے قاضیخاں تک جتنی کتابوں کے نام لیے ان کی نسبت کوئی حنفی نہیں کہتا کہ ان کے مسائل حنفیہ کے خلاف ہیں اور فرضی ہیں، تو سوال ہی فرضی ہے، مالا بد و مفتاح الجنتہ کے بعض زیادات و الحاقات کو اگر کسی نے ایسا کہا تو بیجانہ کہا اور بہشتی زیور لا فی العیر ولا فی النفیر (نہ قافلے میں نہ لشکر میں، یعنی کسی شمار میں نہیں، ت) واللہ تعالٰی اعلم۔

Fatawa Razawiyya, Volume 29

(5) The state of "Bahishti Zewar" has been briefly mentioned above. Undoubtedly, it contains many false and fabricated matters. It is in no way worthy of a Muslim to see it or keep it in their home, except for an expert scholar for the purpose of refutation and annulment. The Mufti's objection to it is correct, and the more the common people loathe its issues, the better it is for their religious well-being. The Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said:

Beware of them and keep them away from you, lest they mislead you and lest they involve you in temptation. [1]

اِيَّاكُم وَ اِيَّاهُم لَا يُضِلُّونَكُم وَلَا يَفتِنُونَكُم۔ [1]

The scholars have advised not to verify an issue written by an ignorant person, even if the issue is correct in itself, because its verification would increase the writer's esteem in the eyes of the public. They would think that he is also a Mufti, and then they would trust whatever he writes out of his ignorance. When this is the ruling for an ignorant person, then what to say of a beginner, and what to say of an apostate? And Allah Almighty knows best.

Problem 8: From Jaipur Rajputana, Hawa Mahal Bazaar, sent by Muhammad Yusuf, teacher at Madrasah Faiz-e-Muhammadi, 2 Rabi' al-Awwal 1337 AH.

Question: What do the scholars of religion say regarding the issues mentioned in the books of jurisprudence like Durr al-Mukhtar, Sharh Wiqayah, Hidayah, Fatawa Alamgiri, Kanz al-Daqaiq, Quduri, and Munyat al-Musalli etc., which are quoted with the words "Abu Hanifa said" and "According to Abu Hanifa" (Abu Hanifa said and according to Abu Hanifa it is thus)? Do their chains of transmission, according to the rules of Hadith scholars, reach Imam Abu Hanifa (may Allah have mercy on him) from the authors? Please provide the chain for one or two issues as an example.

The Answer: All the issues that are attributed to the founder of the school of thought (may Allah be pleased with him) with the words "said" and "according to" are matters from the "Zahir al-Riwayah" books. Connected chains of transmission exist for them. There is no need for a separate chain for every single issue, just as we have connected chains back to Sahih Bukhari. All the Sahih Hadiths are with us through those same chains; there is no need for a new chain for every Hadith. The author of Durr al-Mukhtar (may Allah be pleased with him) says in Durr al-Mukhtar:

[1] Sahih Muslim, Chapter on the prohibition of narrating from weak narrators, Qadimi Kutub Khana, Karachi, 1 / 10.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 29

(5) "बहिश्ती ज़ेवर" का हाल संक्षेप में ऊपर गुज़र चुका है। निस्संदेह इसमें बहुत से ग़लत और मनगढ़ंत मसले हैं। यह किसी भी तरह इस लायक़ नहीं है कि कोई मुसलमान इसे देखे या अपने घर में रखे, सिवाय एक माहिर आलिम के जो इसके खंडन के लिए रखे। मुफ़्ती साहब का इस पर एतराज़ सही है और आम लोग इसके मसलों से जितनी नफ़रत करें, उनके दीन के हक़ में उतना ही बेहतर है। अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया:

उनसे दूर भागो और उन्हें अपने से दूर रखो, कहीं वे तुम्हें गुमराह न कर दें और कहीं वे तुम्हें फ़ितने में न डाल दें। [1]

اِیَّاکُم وَ اِیَّاھُم لَا یُضِلُّونَکُم وَلَا یَفتِنُونَکُم۔[1]

विद्वानों ने वसीयत फ़रमाई है कि किसी जाहिल के लिखे हुए मसले की तस्दीक़ (पुष्टि) न करो, चाहे वह मसला खुद में सही ही क्यों न हो, क्योंकि उसकी तस्दीक़ आम लोगों की नज़रों में लिखने वाले की अहमियत बढ़ा देगी। वे यह समझ लेंगे कि यह भी कोई मुफ़्ती है, फिर वह अपनी जहालत से जो भी ग़लत फ़तवा लिखेगा, वे उस पर भी ऐतबार करेंगे। जब एक जाहिल के लिए यह हुक्म है, तो फिर एक नौसिखिए या एक मुर्तद (धर्मत्यागी) का क्या कहना। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 8: जयपुर राजपूताना, हवा महल बाज़ार से, प्रेषक मुहम्मद यूसुफ़, शिक्षक मदरसा फ़ैज़-ए-मुहम्मदी, 2 रबी-उल-अव्वल 1337 हिजरी।

सवाल: दीन के विद्वान इस मसले में क्या कहते हैं कि दुर्रे मुख़्तार, शरह विकाया, हिदाया, फ़तावा आलमगीरी, कज़ुद्दक़ायक़, कुदूरी और मुनियतुल मुसल्ली आदि फ़िक़्ह की किताबों में जो मसले "क़ाला अबू हनीफ़ा" और "अिंदा अबी हनीफ़ा" (अबू हनीफ़ा ने फ़रमाया और अबू हनीफ़ा के नज़दीक यूँ है) शब्दों के साथ नक़ल किए गए हैं, क्या उनकी सनद (प्रमाण-श्रृंखला) मुहद्दिसीन के नियम के अनुसार किताब के लेखक से इमाम अबू हनीफ़ा (रहमतुल्लाहि अलैहि) तक पहुँचती है? कृपया उदाहरण के तौर पर एक-दो मसलों की सनद लिख दें।

जवाब: वे तमाम मसले जो मज़हब के इमाम (रज़ियल्लाहु अन्हु) की तरफ़ "क़ाला" और "अिंदा" शब्दों के साथ मंसूब किए जाते हैं, वे "ज़ाहिर-उर-रिवाया" की किताबों के मसले हैं। उन तक मुत्तसिल (निरंतर) सनदें मौजूद हैं। हर मसले के लिए अलग सनद की ज़रूरत नहीं है, जैसे कि हमारे पास सही बुख़ारी तक मुत्तसिल सनदें हैं। सही की तमाम हदीसें हमारे पास उन्हीं सनदों से हैं, हर हदीस

के लिए नई सनद की ज़रूरत नहीं है। दुर्रे मुख़्तार के लेखक (रज़ियल्लाहु अन्हु) दुर्रे मुख़्तार में फ़रमाते हैं:

---

[1] सही मुस्लिम, कमज़ोर रावियों से रिवायत करने की मनाही का अध्याय, क़दीमी कुतुब ख़ाना, कराची, 1/10

(۵) بہشتی زیور کا حال بالاجمال اُوپر گزرا بے شک اس میں بہت مسائل باطل و ساختہ ہیں وہ کسی طرح اس قابل نہیں کہ کوئی مسلمان اسے دیکھے یا اپنے گھر میں رکھے مگر عالم جید بغرض رَدّ وابِطال، مفتی صاحب کا اس پر اعتراض بجا ہے اور عوام اس کے مسائل سے جتنی بھی نفرت کریں ان کے حق میں مصلحت دینیہ ہے۔ قال صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم:

اُن سے دور بھاگو اور اپنے سے دور رکھو کہیں وہ تمہیں گمراہ نہ کردیں کہیں وہ تمہیں فتنہ میں نہ ڈالیں۔[1]

اِیَّاکُم وَ اِیَّاھُم لَا یُضِلُّونَکُم وَلَا یَفتِنُونَکُم۔[1]

علمائے کرام نے وصیت فرمائی کہ جاہل کے لکھے ہوئے مسئلہ پر تصدیق نہ کرو اگرچہ مسئلہ فی نفسا صحیح ہو کہ اس کی تصدیق نگاہِ عوام میں وقعتِ کاتب کی موجب ہوگی۔ وہ یہ سمجھ لیں گے کہ یہ بھی کوئی مفتی ہے، پھر اور جو اپنی جہالت سے غلط فتوٰی لکھے گا اس پر بھی اعتبار کریں گے۔ جب جاہل کے لیے یہ حکم ہے تو چہ جائے مبتدی چہ جائے مرتد واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۸: از جے پور راجپوتانہ، بازار ہوا محل، مرسلہ محمد یوسف مدرس مدرسہ فیض محمدی ۲ ربیع الاول ۱۳۳۷ھ

سوال: کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ درِ مختار و شرح و قایہ و ہدایہ و فتاوٰی عالمگیری و کنز الدقائق و قدوری و منیۃ المصلی وغیرہ کتبِ فقہ میں وہ مسائل جو بلفظ قال ابوحنیفہ و عند ابی حنیفہ (ابو حنیفہ نے فرمایا اور ابو حنیفہ کے نزدیک یوں ہے، ت) منقول ہیں کیا ان کی اسناد بقاعدہ محدثین صاحب کتاب سے امام ابو حنیفہ رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ تک پہنچتی ہیں تو ایک دو مسئلہ کی سند بطور نظیر کے ارقام فرمادیں۔

الجواب: تمام مسائل کہ صاحبِ مذہب رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی طرف بلفظ قال و عند نسبت کئے جاتے ہیں کتبِ ظاہر الروایۃ کے مسئلے ہیں اور ان تک اسانید متصلہ موجود ہر مسئلہ کے لیے جدا سند کی حاجت نہیں جس طرح صحیح بخاری تک ہم اسانیدِ متصلہ رکھتے ہیں، صحیح کی تمام حدیثیں ہمارے پاس انہیں سندوں سے ہیں ہر حدیث میں جدید سند کی ضرورت نہیں۔ صاحبِ درِ مختار رضی اللہ تعالیٰ عنہ درِ مختار میں فرماتے ہیں:

---

[1] صحیح مسلم باب النھی عن الروایۃ عن الضعفاء قدیمی کتب خانہ کراچی ۱ / ۱۰

Fatawa Razawiyya Volume 29

[Right Column (Translation of Arabic text)] I narrate this (science of jurisprudence) from my teacher Sheikh Abdul Nabi al-Khalili, who narrates from the author (i.e., Sheikh al-Islam Abu Abdullah Muhammad bin Abdullah al-Ghazzi al-Tamartashi), from Ibn Nujaym al-Misri (i.e., the investigative scholar Zayn, author of al-Bahr al-Ra'iq), with his chain reaching the founder of the school, Imam Abu Hanifa (may Allah Almighty be pleased with him)... (until the author's statement that) this is mentioned in detail in our authorizations through various paths from the great, profound scholars. (T)

[Left Column (Original Arabic text)] I narrate it from our teacher, Sheikh Abdul Nabi al-Khalili, from the author (i.e., Shaykh al-Islam Abi Abdullah Muhammad bin Abdullah al-Ghazzi al-Tamartashi), from Ibn Nujaym al-Misri (i.e., the investigative scholar Zayn, author of al-Bahr al-Ra'iq), with his chain to the founder of the school, Abu Hanifa (may Allah Almighty be pleased with him)... (to his statement) as it is detailed in our authorizations through numerous paths from the great profound scholars. [1]

The chain of transmission for the author of 'al-Bahr' is as follows:

[Right Column (Translation of Arabic text)] Al-Muhaqqiq (the investigator) Zayn narrates from the scholar Ibn al-Shalabi, author of al-Fatawa, from Ibn al-Shihnah, commentator on al-Wahbaniyya, from Imam Ibn al-Humam, author of Fath al-Qadir and Zad al-Faqir, from the scholar Qari al-Hidaya, from Imam Ala-ud-Din al-Sirani, from Sayyid Jalal-ud-Din, author of al-Kifaya, from Imam Abdul Aziz al-Bukhari, author of Kashf al-Pazdawi, from the author of al-Kanz, al-Wafi, and al-Kafi, Imam Hafiz al-Din al-Nasafi, from Imam Shams al-A'immah al-Kardari, from the author of al-Hidaya, Kifayat al-Muntaha, and al-Tajnis, Imam Burhan al-Din, from Imam Fakhr al-Islam Ali al-Pazdawi, from Imam Shams al-A'immah al-Sarakhsi, author of al-Mabsut, from Imam Shams al-A'immah al-Halwani, from Qazi Abu Ali al-Nasafi, from Imam...

[Left Column (Original Arabic text)] Al-Muhaqqiq Zayn from the scholar Ibn al-Shalabi, author of al-Fatawa, from Ibn al-Shihnah, commentator on al-Wahbaniyya, from Imam Ibn al-Humam, author of Fath al-Qadir and Zad al-Faqir, from the leading scholar, the reciter of al-Hidaya, from the scholar Ala al-Din al-Sirani, from Sayyid Jalal al-Din, author of al-Kifaya, from Imam Abd al-Aziz al-Bukhari, author of Kashf al-Pazdawi, from Imam Hafiz al-Din al-Nasafi, author of al-Kanz, al-Wafi, and al-Kafi, from Imam Shams al-A'immah al-Kardari, from Imam Burhan al-Din, author of al-

Hidaya, Kifayat al-Muntaha, and al-Tajnis, from Imam Fakhr al-Islam Ali al-Pazdawi from...

[1] Al-Durr al-Mukhtar, Introduction of the book, Mujtabai Press, Delhi, 1/3.

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

[दायाँ कॉलम (अरबी पाठ का अनुवाद)] मैं इस (इल्म-ए-फ़िक़्ह) को अपने उस्ताद शेख अब्दुल नबी ख़लीली से रिवायत करता हूँ, वे रिवायत करते हैं मुसन्निफ़ (यानी शेख-उल-इस्लाम अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह ग़ज़ी तमर्ताशी) से, वे इब्ने नुजैम मिस्री (यानी अल्लामा मुहक़्क़िक़ ज़ैन साहिब-ए-बहर-उर-राइक़) से, वे अपनी सनद के साथ जो मुत्तसिल है साहब-ए-मज़हब इमाम अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के साथ... (मुसन्निफ़ के इस कौल तक कि) यह मबूतहर उलमा-ए-किबार से मुतअद्दिद तरीक़ों के साथ हमारी इजाज़तों में मुफ़स्सल ज़िक्र है। (त)

[बायाँ कॉलम (मूल अरबी पाठ)] इनी अरवीहु अन शेख़िना अश्-शेख़ अब्दुल नबी अल-ख़लीली अन अल-मुसन्निफ़ (एय शेख़ुल इस्लाम अबी अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह अल-ग़ज़ी अत-तमर्ताशी) अन इब्न नुजैम अल-मिस्री (एय अल-अल्लामा अल-मुहक़्क़िक़ ज़ैन साहिब अल-बहर अर-राइक़) बि-सनदिही इला साहिब अल-मज़हब अबी हनीफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु (इला कौलिही) कमा हुवा मबसूतन फी इजाज़तिना बि-तुरुकिन अदीदतिन अन अल-मशायिक़ अल-मुतबहरीन अल-किबार। [1]

अल्लामा साहिब-ए-बहर की सनद यह है:

[दायाँ कॉलम (अरबी पाठ का अनुवाद)] मुहक़्क़िक़ ज़ैन रिवायत करते हैं अल्लामा इब्ने शलबी साहिब-ए-फ़तावा से, वे इब्ने शुहना शारह-ए-वह्बानिया से, वे इमाम इब्ने हुमाम मुसन्निफ़ फ़तहुल क़दीर व ज़ादुल फ़क़ीर से, वे अल्लामा क़ारी अल-हिदाया से, वे इमाम अलाउद्दीन सैरानी से, वे सैय्यद जलालुद्दीन साहिब-ए-किफ़ाया से, वे अब्दुल अज़ीज़ बुख़ारी साहिब-ए-कश्फ़-ए-पज़दवी से, वे कंज़, वाफ़ी और काफ़ी के मुसन्निफ़ हाफ़िज़ुद्दीन नसफ़ी से, वे इमाम शम्सुल अइम्मा करदरी से, वे हिदाया, किफ़ायतुल मुंतहा और तजनीस के मुसन्निफ़ इमाम बुरहानुद्दीन से, वे इमाम फ़ख़रुल इस्लाम अली पज़दवी से, वे इमाम शम्सुल अइम्मा सरख़्सी साहिब-ए-मबसूत से, वे इमाम शम्सुल अइम्मा हलवानी से, वे क़ाज़ी अबू अली नसफ़ी से, वे इमाम...

[बायाँ कॉलम (मूल अरबी पाठ)] अल-मुहक़्क़िक़ ज़ैन अन अल-अल्लामा इब्न अश्-शलबी साहिब अल-फ़तावा अन इब्न अश्-शुहना शारिह अल-वह्बानिया अन अल-इमाम इब्न अल-हुमाम साहिब फ़तह अल-क़दीर व ज़ाद अल-फ़क़ीर अन अल-इमाम अल-अल्लामा क़ारी अल-हिदाया अन अल-अल्लामा अला अल-दीन अस्-सैरानी अन अस्-सय्यद जलाल अल-दीन साहिब अल-किफ़ाया अन अल-इमाम अब्दुल अज़ीज़ अल-बुख़ारी साहिब कश्फ़ पज़दवी अन अल-इमाम हाफ़िज़ अल-दीन

अन-नसफ़ी साहिब अल-कन्ज़ व अल-वाफ़ी व अल-काफ़ी अन अल-इमाम शम्स अल-अइम्मा अल-कुरदुरी अन अल-इमाम बुरहान अल-दीन साहिब अल-हिदाया व किफ़ायत अल-मुंतहा व अत-तजनीस अन अल-इमाम फ़ख़र अल-इस्लाम अली अल-पज़दवी अन...

[1] अद-दुर्रुल मुख़्तार मुक़द्दमा अल-किताब, मतबअ मुज्तबाई दिल्ली, 1/3.

पृष्ठ 63 / 750

[بایاں کالم (عربی عبارت)] انی ارویه عن شیخنا الشیخ عبدالنبي الخلیلي عن المصنف(ای شیخ الاسلام ابی عبدالله محمد بن عبدالله الغزی التمر تاشی)عن ابن نجیم المصری (ای العلامة المحقق زین صاحب البحر الرائق) بسنده الی صاحب المذهب ابی حنیفة رضی الله تعالی عنه(الی قوله) کما هو مبسوط فی اجازاتنا بطرق عدیدة عن المشایخ المتبحرین الکبار۔ ^1

[دایاں کالم (اردو ترجمہ)] میں اس (علم فقہ) کو روایت کرتا ہوں اپنے استاذ شیخ عبدالنبی خلیلی سے ، وہ روایت کرتے ہیں مصنف (یعنی شیخ الاسلام ابو عبداللہ محمد بن عبداللہ غزی تمرتاشی) سے وہ ابن نجیم مصری (یعنی علامہ محقق زین صاحب بحر الرائق) سے وہ اپنی سند کے ساتھ جو متصل ہے صاحب مذہب امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالٰی عنہ کے ساتھ (مصنف کے اس قول تک کہ) یہ متبحر علماء کبار سے متعدد طرق کے ساتھ ہماری اجازت میں مفصل مذکور ہے(ت)

علامہ صاحبِ بحر کی سند یہ ہے:

[بایاں کالم (عربی عبارت)] المحقق زین عن العلامة ابن الشلبی صاحب الفتاوی عن ابن الشحنة شارح الوهبانیة عن الامام ابن الهمام صاحب فتح القدیر وزاد الفقیر عن الامام العلامة قارئ الهدایة عن العلامة علاء الدین السیرانی عن السید جلال الدین صاحب الکفایة عن الامام عبدالعزیز البخاری صاحب کشف بزدوی عن الامام حافظ الدین النسفی صاحب الکنز و الوافی و الکافی عن الامام شمس الائمہ الکردری عن الامام برهان الدین صاحب الهدایة و کفایة المنتهی و التجنیس عن الامام فخر الاسلام علی البزدوی عن

[دایاں کالم (اردو ترجمہ)] محقق زین روایت کرتے ہیں علامہ ابن شلبی صاحب فتاویٰ سے وہ ابن شحنہ شارح وہبانی سے وہ امام ابن ہمام مصنف فتح القدیر وزاد الفقیر سے وہ علامہ قاری الہدایہ سے وہ امام الدین سیرانی سے وہ سید جلال الدین صاحب کفایہ سے وہ عبدالعزیز بخاری صاحب کشف بزدوی سے وہ کنز و وافی و کافی کے مصنف حافظ الدین نسفی سے وہ امام شمس الائمہ کردری سے وہ ہدایہ ، کفایۃ المنتہی اور تجنیس کے مصنف امام برہان الدین سے وہ امام فخر الاسلام علی بزدوی سے وہ امام شمس الائمہ سرخسی صاحب مبسوط سے وہ امام شمس الائمہ حلوانی سے وہ قاضی ابو علی نسفی سے وہ امام

1^8 الدر المختار مقدمة الكتاب مطبع مجتبائی دہلی ۱ / ۳

Fatawa Rizwia, Vol 29

Imam Shams al-A'immah al-Sarakhsi, the author of al-Mabsut (a commentary on al-Kafi of Imam al-Hakim al-Shaheed), narrates from Imam Shams al-A'immah al-Halwani, from Qadi Abu Ali al-Nasafi, from Imam al-Fadl, from Abu Abd Allah al-Subadhmuni, from Abu Hafs al-Saghir, from his father Imam Abu Hafs al-Kabir, from Imam Muhammad, from the Lamp of the Ummah, the Great Imam (Imam Azam Abu Hanifa). Also, Imam Muhammad narrates from Yaqub (Abu Yusuf), and he from Imam Abu Hanifa, may Allah Almighty be pleased with them. (T)

The chain of this humble servant (the author) up to the Great Imam, the leader of the school of thought, may Allah Almighty be pleased with him, is present in the beginning of the first volume of 'Fatawa-e-Faqir' (my own fatawa), and by the grace of Allah Almighty, chains of transmission connected back to the books of Zahir al-Riwayah, the books of Nawadir, and many books of scholars and shaykhs are also present. And Allah Almighty knows best.

Question 9: From Ahmedabad, Gujarat, Jamalpur neighborhood, sent by Mawlawi Hakim Abdul Rahim Sahib, 9 Safar al-Muzaffar 1337 AH.

If the text of 'Mirqat Sharh Mishkat' by Mulla Ali Qari is before your eyes, please tell me in which chapter and section of Mirqat and in the explanation of which companion's hadith Mulla Ali Qari quoted this hadith? This humble servant needs it and will be grateful. The text is:

"It has reached me from the Prophet (may Allah Almighty send blessings and peace upon him) that whoever says 'La ilaha illa Allah' seventy thousand times, Allah Almighty will forgive him, and for whomsoever it is said, he too will be forgiven." (T)

1. Al-Bahr al-Ra'iq

फ़तावा रिज़विया, खंड 29

इमाम शम्स अल-अइम्मा अस-सरखसी, 'अल-मबसूत' के लेखक (जो इमाम अल-हाकिम अल-शहीद की 'अल-काफ़ी' की व्याख्या है), इमाम शम्स अल-अइम्मा अल-हलवानी से, वे क़ाज़ी अबू अली अन-नसाफ़ी से, वे इमाम अल-फ़ज़ल से, वे अबू अब्दुल्ला अस-सबधमुनी से, वे अबू हफ़्स अस-सग़ीर से, वे अपने पिता इमाम अबू हफ़्स अल-कबीर से, वे इमाम मुहम्मद से, वे उम्मत के चिराग़ इमाम-ए-आज़म अबू हनीफ़ा से रिवायत करते हैं। साथ ही इमाम मुहम्मद, याक़ूब (अबू यूसुफ़) से और वे इमाम अबू हनीफ़ा से रिवायत करते हैं, अल्लाह तआला उन सभी से प्रसन्न हो। (त)

इस विनम्र सेवक की सनद (शृंखला) मज़हब के स्वामी इमाम-ए-आज़म तक फ़तावा के प्रथम खंड के प्रारंभ में मौजूद है, और अल्लाह की कृपा से 'ज़ाहिर अल-रिवायह' की पुस्तकों, 'नवादिर' की पुस्तकों और विद्वानों एवं मशायख की कई पुस्तकों तक निरंतर सनदें उपलब्ध हैं। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।

प्रश्न 9: अहमदाबाद, गुजरात, जमालपुर मोहल्ला से, प्रेषक मौलवी हकीम अब्दुल रहीम साहिब, 9 सफ़र अल-मुज़फ़्फ़र 1337 हिजरी।

यदि मुल्ला अली क़ारी की 'मिरक़ात शरह मिश्क़ात' का पाठ आपकी दृष्टि में हो, तो कृपया बताएँ कि यह मिरक़ात के किस अध्याय और खंड में है और किस सहाबी की हदीस की व्याख्या में मुल्ला अली क़ारी ने यह हदीस उद्धृत की है? इस विनम्र सेवक को इसकी आवश्यकता है और वह कृतज्ञ होगा। पाठ इस प्रकार है:

"मुझ तक नबी करीम (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की यह हदीस पहुँची कि आप ने फ़रमाया कि बेशक जिस व्यक्ति ने सत्तर हज़ार बार 'ला इलाहा इल्लल्लाह' कहा, अल्लाह तआला उसकी मग़फ़िरत (क्षमा) फ़रमाएगा, और जिसके लिए यह कहा गया उसकी भी मग़फ़िरत फ़रमाएगा।" (त)

1. अल-बहर अर-राइक़

पृष्ठ 64 / 750

الامام شمس الائمة السرخسی صاحب المبسوط شرح فضل سے وہ ابو عبد اللہ سبذ مونی سے وہ ابو حفص صغیر سے وہ کافی الامام الحاکم الشہید عن الامام شمس الائمة اپنے والد امام ابو حفص کبیر سے وہ امام محمد سے وہ سراج الامہ الحلوانی عن القاضی ابی علی النسفی عن الامام الفضل امام اعظم ابو حنیفہ سے نیز امام محمد روایت کرتے ہیں امام عن ابی عبد اللہ السبا مونی عن ابی حفص الصغیر عن یعقوب (ابو یوسف) سے اور وہ امام ابو حنیفہ سے رضی اللہ ابیہ الامام ابی حفص الکبیر عن الامام محمد عن سراج تعالٰی عنہم (ت) الامة الامام الاعظم وایضا عن محمد عن یعقوب عن ابی حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہم- 1 صاحب مذہب رضی اللہ تعالی عنہ تک فقیر کی سند صدر جلد اول فتاوٰی فقیر اور بفضلہ تعالی کتب ظاہر الروایہ بلکہ کتب نوادر بلکہ بکثرت کتب علماء و مشایخ تک باسانیڈ متصلہ موجود، واللہ تعالی اعلم۔

مسئلہ ۹: از احمد آباد گجرات، محلہ جمالپور، مرسلہ مولوی حکیم عبدالرحیم صاحب، ۹ صفر المظفر ۱۳۳۷ھ

مرقاۃ شرح مشکوۃ ملا علی قاری کی عبارت اگر آپ کے زیر نظر ہو تو یہ پتا بتائیے کہ یہ مرقاۃ کی کون سے باب و فصل اور کون سے صحابی کی حدیث کی شرح میں ملا علی قاری نے یہ حدیث نقل کی ہے اس کی بندہ کو ضرورت ہے ممنون و مشکور ہوگا عبارت یہ ہے :

انہ بلغنی عن النبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم ان من | مجھ تک نبی کریم صلی اللہ تعالٰی علیہ والہ وسلم کی یہ حدیث پہنچی، قال لا الہ الا اللہ سبعین الفا غفر اللہ تعالٰی لہ ومن | آپ نے فرمایا کہ بے

شک جس شخص نے ستر ہزار مرتبہ کہالا قیل لہ غفر لہ ایضاً۔ | اللہ الا اللہ، اللہ تعالیٰ اس کی مغفرت فرمائے گا اور جس کے لیے یہ کہا گیا اس کی بھی مغفرت فرمائے گا۔ (ت)

1 البحر الرائق

Fatawa Razawiyya Volume 29

The Answer: Honorable Maulana, Peace, mercy and blessings of Allah be upon you! This text is in the commentary (Sharh) of the Hadith of Ali and Mu'adh bin Jabal (may Allah be pleased with them both), from the book 'Mirqat'[1], Book of Prayer: Chapter on what is incumbent upon the follower regarding following (the Imam), Second Section. (Egyptian edition, Volume Two, Page 102).

---

[1] Mirqat al-Mafatih, Book of Prayer, Second Section, Hadith 1142, Maktaba Habibiyyah Quetta 3/ 222

फ़तावा रज़विया खंड 29

उत्तर: माननीय मौलाना, आप पर अल्लाह की शांति, दया और बरकतें हों! यह इबारत (अनुच्छेद) मिर्क़ात[1] की किताबुस-सलात (नमाज़ की किताब): बाब मा अलल-मामूम मिनल मुता-बअति (इमाम की पैरवी में मुकतदी पर जो वाजिब है), फ़स्ल-ए-सानी (दूसरा भाग), अली और मुआज़ बिन जबल (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) की हदीस की व्याख्या में है। (मिस्र मुद्रणालय, खंड दो, पृष्ठ 102)।

---

[1] मिर्क़ातुल मफ़ातीह, किताबुस-सलात, अल-फ़स्ल-उस-सानी, हदीस 1142, मकतबा हबीबिया क्वेटा 3/ 222

पृष्ठ 65 का 750

فتاوٰی رضویہ جلد ۲۹

الجواب: مولانا اکرمکم ،السلام علیکم ورحمتہ و برکاتہ ! یہ عبارت مرقاۃ ۱ کتاب الصلوٰۃ : باب ما علی المامو م من المتابعۃ، فصل ثانی، حدیث علی و معاذ بن جبل علیہما الرضوان کی شرح میں ہے۔ مطبع مصر جلد دوم صفحہ ۱۰۲)

---

۱ مرقاۃ المفاتیح، کتاب الصلوٰۃ، الفصل الثانی، حدیث ۱۱۴۲، مکتبہ حبیبیہ کوئٹہ ۳/ ۲۲۲

Fatawa Rizvia Volume 29

Language and Expression

Problem 10: From the country of Bengal, district Faridpur, sent by Shamsuddin Sahib. What is the difference between adultery against consent and adultery without consent?

The Answer: It is a meaningless and futile question. Between 'against consent' and 'lack of consent', there is a general and specific absolute relationship. A matter towards which there is neither inclination nor aversion is not 'against consent' but is 'without consent'. And Allah Almighty knows best.

Problem 11: [Arabic]: Ownership over a mosque or place of prayer is removed by [actual] action, and by his saying: 'I have made it a mosque.' — 1 [Urdu Translation]: In a mosque and Eidgah, the ownership of the owner is removed by the act of prayer, and it is also removed by saying this, that 'I have made it a mosque.' (T)

Does this 'Wao' (and) on which 'Saad' is written give the meaning of 'or' or 'and'? Second: [Arabic]: And when he builds a mosque, his ownership over it does not cease until he separates it from his property with its path. [Urdu Translation]: The person who built a mosque, from him the ownership of the founder will not cease until he separates its path.

1. Al-Durr al-Mukhtar, Kitab al-Waqf, Mujtabai Press, Delhi, 9/371

फ़तावा रज़विया जिल्द २९

भाषा और अभिव्यक्ति

मसाला १०: देश बंगाल, जिला फरीदपुर से, शम्सुद्दीन साहब द्वारा प्रेषित। सहमति के विरुद्ध (ख़िलाफ़-ए-रज़ामंदी) और बिना सहमति (बिला-रज़ामंदी) के ज़िना में क्या अंतर है?

उत्तर: यह एक निरर्थक और व्यर्थ प्रश्न है। 'सहमति के विरुद्ध' और 'सहमति न होने' के बीच सामान्य और विशेष का पूर्ण संबंध है। वह बात जिसकी ओर न तो झुकाव हो और न ही घृणा, वह 'सहमति के विरुद्ध' नहीं बल्कि 'बिना सहमति' के है। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।

मसाला ١١: [अरबी]: मस्जिद और ईदगाह से उसका स्वामित्व कर्म (नमाज़) के द्वारा और उसके यह कहने से कि 'मैंने इसे मस्जिद बना दिया' समाप्त हो जाता है। मस्जिद और ईदगाह में नमाज़ के कृत्य से मालिक का स्वामित्व समाप्त हो जाता है और यह कहने से भी स्वामित्व समाप्त हो जाता है कि 'मैंने इसे मस्जिद बना दिया'। (त)

यह 'वाव' (و) जिस पर 'साद' (ص) बना हुआ है, 'या' (अथवा) का अर्थ देगा या 'और' का? दूसरा: [अरबी]: और जब उसने मस्जिद बनाई, तो उसका स्वामित्व उससे तब तक समाप्त नहीं होता जब तक वह उसे अपने स्वामित्व से उसके रास्ते के साथ अलग न कर दे। जिस व्यक्ति ने मस्जिद बनाई, तो उससे निर्माता का स्वामित्व तब तक समाप्त नहीं होगा जब तक वह उसका रास्ता अलग न कर दे।

1. अल-दुर्र अल-मुख्तार, किताब अल-वक़्फ़, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, ९/३७१

पृष्ठ ६६ / ७५०

فتاوی رضویہ جلد ۲۹

زبان و بیان

مسئلہ ۱۰: از ملک بنگال ضلع فرید پور مرسلہ شمس الدین صاحب زنائے خلاف رضا مندی و بلا رضا مندی میں کیا فرق ہے؟

الجواب: مہمل و بے حاصل سوال ہے، خلاف رضا و عدم رضا میں عموم و خصوص مطلق ہے وہ بات جس کی طرف نہ رغبت نہ نفرت، خلاف رضا نہیں بلارضا ہے، واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۱۱: یزول ملکہ عن المسجد والمصلی بالفعل ص وبقولہ جعلتہ مسجدا - ۱ مسجد اور عید گاہ میں فعل نماز سے مالک کی ملکیت زائل ہو جاتی ہے اور یہ کہنے سے بھی ملکیت زائل ہو جاتی ہے کہ میں نے اس کو مسجد کر دیا۔ (ت)

یہ واؤ جس پر ص بنا ہوا ہے یا کے معنی دے گا یا اور کے؟ دوم: واذا بنی مسجدا لم یزل ملکہ عنہ حتی یفرزہ عن ملکہ بطریقہ جس شخص نے مسجد بنائی تو اس سے بانی کی ملکیت زائل نہ ہوگی جب تک اس کا راستہ الگ کر کے

۱ الدرالمختار کتاب الوقف مطبع مجتبائی دہلی ۹/۳۷۱

Fatawa Razawiyya, Volume 29

| Arabic: 1 ويأذن للناس بالصلوٰة فيه | ...unless he separates it from his ownership and until he gives general permission to the people to pray in it. (T) |

Question: Does the 'Waw' (conjunction) in this second place mean 'or' or 'and'? And what is the reason?

Answer: The first text is from Durr-e-Mukhtar, and in it, the 'Waw' carries the meaning of 'or'. This means that the owner's ownership of a mosque is terminated by the act of prayer, or by the owner's statement: "I have made this a mosque." Whichever occurs is sufficient; the existence of both is not necessary. Radd-al-Muhtar states regarding this:

| Arabic: لم يردانه لايزول بدونه لما عرفت انه يزول بالفعل ايضا بلاخلاف 2۔ والله تعالیٰ اعلم۔ | This does not mean that ownership will not terminate without it, because you already know that ownership is terminated merely by the act of prayer, [even] if he hasn't given general permission to pray in it. (T) |

Further Explanation: The second text is from Hidayah, and in it, the 'Waw' does not mean 'or' but refers to two necessary matters. According to 'Tarafayn' (Imam Abu Hanifa and Imam Muhammad), one instance of prayer with permission is necessary. However, according to Imam Abu Yusuf, merely saying with the tongue that "I have made this a mosque" is sufficient. This is stated in Hidayah immediately following that text:

| Arabic: وقال ابویوسف یزول ملکہ لقولہ جعلتہ مسجداً 3۔ | Imam Abu Yusuf said that by his merely saying "I have made this a mosque," his ownership is terminated. (T) |

Concluding Point: The fatwa is based on the opinion of Imam Abu Yusuf, which states that whichever of the two occurs is sufficient; the combination of the act and the word is not necessary. Radd-al-Muhtar states:

| Arabic: فی الدر المنتقی وقدم فی التنویر و الدرر والوقایة وغیرها قول ابی یوسف علمت ارجحیته فی الوقف والقضا۔ 4 | In Al-Durr al-Muntaqa, it is mentioned that the opinion of Imam Abu Yusuf has been prioritized in Tanwir, Dur, and Wiqaya, and its superiority in matters of Waqf and judgement is established. (T) |

Footnotes: 1 Al-Hidayah, Book of Waqf, Al-Maktabah al-Arabiyyah, Karachi, 2/622. 2 Radd al-Muhtar, Book of Waqf, Section on Mosque Rulings, Dar Ihya al-Turath al-

Arabi, Beirut, 3/369. 3 Al-Hidayah, Book of Waqf, Al-Maktabah al-Arabiyyah, Karachi, 2/622. 4 Radd al-Muhtar, Book of Waqf, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 3/370.

फतावा रज़विया, खंड २९

| अरबी: 1 ويأذن للناس بالصلوٰة فيه | ...जब तक वह इसे अपने स्वामित्व से अलग न कर दे और जब तक लोगों को इसमें नमाज़ पढ़ने की सामान्य अनुमति न दे दे। (त) |

प्रश्न: यह 'वाव' (संयोजक) जिस पर दूसरी जगह है, इसका अर्थ 'या' होगा या 'और'? और कारण क्या है?

उत्तर: पहली इबारत (पाठ) 'दुर्रे मुख्तार' की है और इसमें 'वाव' का अर्थ 'या' है, यानी मस्जिद में नमाज़ के कार्य से मालिक का स्वामित्व समाप्त हो जाता है, और मालिक के इस कथन से भी कि "मैंने इसे मस्जिद बना दिया," दोनों में से जो भी हो पर्याप्त है, दोनों का होना आवश्यक नहीं। 'रद्दुल मुहतार' में इसी पर लिखा है:

| अरबी: 2۔ والله تعالیٰ لم یردانه لایزول بدونه لما عرفت انه یزول بالفعل ایضا بلاخلاف علم।। | इससे यह अर्थ नहीं है कि इसके बिना स्वामित्व समाप्त नहीं होगा, क्योंकि आप जान चुके हैं कि स्वामित्व तो केवल नमाज़ के कार्य से भी समाप्त हो जाता है, [भले ही] उसने इसमें नमाज़ पढ़ने की सामान्य अनुमति न दी हो। (त) |

आगे की व्याख्या: दूसरी इबारत 'हिदाया' की है और इसमें 'वाव' का अर्थ 'या' नहीं है बल्कि दो आवश्यक बातें हैं। 'तरफ़ैन' (इमाम अबू हनीफ़ा और इमाम मुहम्मद) के अनुसार, अनुमति के साथ एक बार नमाज़ होना आवश्यक है, और इमाम अबू यूसुफ़ के अनुसार केवल ज़ुबान से यह कह देना काफ़ी है कि "मैंने इसे मस्जिद बनाया।" इसी को इस इबारत के पास 'हिदाया' में बताया गया है:

| अरबी: 3 وقال ابویوسف یزول ملکہ لقولہ جعلتہ مسجداً | इमाम अबू यूसुफ़ ने फ़रमाया कि उसके केवल यह कह देने से कि "मैंने इसे मस्जिद कर दिया है," उसका स्वामित्व समाप्त हो जाता है। (त) |

निष्कर्ष: और इमाम अबू यूसुफ़ के कथन पर ही फ़तवा है कि दोनों में से जो भी हो पर्याप्त है, कार्य और वचन का एक साथ होना ज़रूरी नहीं। 'रद्दुल मुहतार' में है:

| अरबी: فی الدر المنتقی وقدم فی التنویر و الدرر والوقایة وغیرها قول ابی یوسف علمت ارجحیته فی الوقف والقضا۔ 4 | 'दुर्रे मुंतक़ा' में है कि तन्वीर, दुर और विक़ाया में इमाम अबू

यूसुफ़ के कथन को प्राथमिकता दी गई है और वक्फ़ और न्याय में इसका श्रेष्ठ होना मालूम हो चुका है। (त) |

पादलेख: 1 अल-हिदाया, किताबुल वक्फ़, अल-मकतबा अल-अरबिया, कराची २/ ६२२ 2 रद्दुल मुहतार, किताबुल वक्फ़, मतलब फ़ी अहकामुल मस्जिद, दार एहयाउत तुरास अल-अरबी, बेरुत ३/ ३६९ 3 अल-हिदाया, किताबुल वक्फ़, अल-मकतबा अल-अरबिया, कराची २/ ६२२ 4 रद्दुल मुहतार, किताबुल वक्फ़, दार एहयाउत तुरास अल-अरबी, बेरुत ३/ ३७०

| ویأذن للناس بالصلوٰۃ فیہ 1 | اُسے اپنی ملکیت سے جدا نہ کردے اور جب تک لوگوں کو اس میں نماز پڑھنے کی عام اجازت نہ دے دے۔(ت) |

یہ واؤ جس پر صہ دوسری جگہ ہے اس کے معنی یا کے ہوں گے یا اور کے؟ اور وجہ کیا ہے؟

الجواب: پہلی عبارت در مختار کی ہے اور اس میں واؤ بمعنی یا ہے یعنی مسجد میں فعلِ نماز سے ملکِ مالک زائل ہو جاتی ہے اور مالک کے اس قول سے بھی کہ میں نے اس کو مسجد کر دیا، دونوں میں جو ہو کافی ہے دونوں کا وجود ضروری نہیں، ردالمحتار میں اسی پر لکھا ہے:

| لم یردانہ لایزول بدونہ لما عرفت انہ یزول بالفعل ایضا بلاخلاف 2۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ | اس سے یہ مراد نہیں کہ اس کے بغیر ملکیت زائل نہیں ہو گی اس لیے کہ تو جان چکا ہے کہ ملکیت تو محض فعلِ نماز سے بھی زائل ہو جاتی ہے اس میں نماز پڑھنے کی عام اجازت نہ دے دے۔(ت) |

دوسری عبارت ہدایہ کی ہے اور اس میں واؤ بمعنی یا نہیں بلکہ امرانِ ضرور ہے اور اس کے بعد طرفین کے نزدیک ایک بار نماز باذن ہونا لازم، اور امام ابو یوسف کے نزدیک صرف زبان سے کہہ دینا کافی کہ میں نے اسے مسجد کیا، اسی کو اس عبارت کے متصل ہدایہ میں بتایا:

| وقال ابویوسف یزول ملکہ لقولہ جعلتہ مسجداً 3 | امام ابویوسف نے فرمایا اس کے صرف یہ کہہ دینے سے کہ میں نے اس کو مسجد کر دیا ہے اس کی ملکیت زائل ہو جاتی ہے۔(ت) |

اور قولِ امام ابویوسف پر ہی فتوٰی ہے کہ دونوں میں سے جو ہو کافی ہے فعل و قول کا جمع ہونا ضروری نہیں۔ ردالمحتار میں ہے:

| فی الدر المنتقی وقدم فی التنویر و الدرر والوقایۃ وغیرھا قول ابی یوسف علمت ارجحیتہ فی الوقف والقضا۔ 4 | درِ منتقّٰی میں ہے کہ تنویر، در اور وقایہ میں امام ابویوسف کے قول کو مقدم کیا گیا ہے اور وقف وقضا میں اس کا ارحج ہونا معلوم ہو چکا ہے۔(ت) |

حواشی: 1 الہدایۃ کتاب الوقف المکتبۃ العربیہ کراچی ۲/ ۶۲۲ 2 ردالمحتار کتاب الوقف مطلب فی احکام المسجد دار احیاء التراث العربی بیروت ۳/ ۳۶۹ 3 الہدایۃ کتاب الوقف المکتبۃ العربیہ کراچی ۲/ ۶۲۲ 4 ردالمحتار کتاب الوقف دار احیاء التراث العربی بیروت ۳/ ۳۷۰

Fatawa Razawiyyah, Volume 29

Issue 12: From Madrasa Manzar-e-Islam, Bareilly, sent by Maulvi Akbar Hussain Rampuri, student, 28 Rabi-ul-Awwal 1326 AH. It is requested to the noble presence of Ala Hazrat (may his shadow be prolonged): I have been contemplating the meaning of a couplet for a long time but cannot understand it. I hope to find success through your holy presence. The couplet is: "In my construction, a form of ruin is inherent / The material for the lightning that strikes the granary is the farmer's warm blood."

The Answer: 'Hayuli' (material/prime matter) refers to that in which the potential and capacity of a thing exist. Warm blood is the cause of effort, as a farmer's effort results in the yield of crops, and its harvest is the 'kharman' (granary). When lightning strikes, it completely annihilates it. So, he says that it was produced due to the warm blood of the farmer. That very material of the granary's lightning, having turned into heat, had the potential to become lightning, and finally, it struck the granary it created as lightning and destroyed it. So, in this construction, a form of desolation was hidden, as: (Arabic quote): Lidu lil-maut wabnu lil-kharab (Translation): Live to die and build buildings to be ruined and destroyed.

Issue 13: From Pilibhit, Mohalla Ahmadzai, sent by Maulvi Syed Muhammad Umar Allahabadi Suhrawardi, 18 Rajab 1332 AH. (1) I was at that time when Adam was not / when Eve was non-existent and Adam was not. (2) I prostrated to God at that time / when even the essence and attributes of God were not. (3) When we looked at Muhammad with joy / found him three hundred and sixty years before God. (Translation of 1 & 2): (1) I existed at a time when Adam was not, when Eve was non-existent and Adam was not. (2) I prostrated to God at a time when even God's essence and attributes were not present. (T) Please write the meaning of these three couplets, whose poems they are, and in which book they are found? A person asked me for the meaning of these couplets but I don't know how to explain them. Therefore, the question to your excellency is to please write the meaning. Only, the petitioner, Muhammad Umar.

The Answer: The meaning of such couplets is asked when it is known that the speaker was a reliable person, otherwise...

फ़तावा रज़विया, जिल्द 29

मसाला 12: मदरसा मंज़र-ए-इस्लाम, बरेली से, प्रेषक मौलवी अकबर हुसैन रामपुरी छात्र, 28 रबी-उल-अव्वल शरीफ़ 1326 हिजरी। आला हज़रत की बारगाह में अर्ज़ है कि एक शेर के अर्थ में बहुत सोच-विचार करता हूँ लेकिन समझ में नहीं आता, उम्मीद है कि हुज़ूर की ज़ात से कामयाब होऊँगा, शेर यह है: "मेरी तामीर में मुज़्मर इक सूरत ख़राबी की / हयूली बर्क़ए-ख़रमन का है ख़ून-ए-गर्म दहक़ाँ का"

उत्तर: 'हयूली' उस पदार्थ को कहते हैं जिसमें किसी चीज़ की क़ाबलियत और क्षमता होती है। और 'ख़ून-ए-गर्म' कोशिश का कारण है, क्योंकि किसान की कोशिश से फ़सल की पैदावार होती है, और उसका हासिल 'ख़रमन' (खलिहान) है। जब बिजली गिरती है तो उसे पूरी तरह से नष्ट कर देती है। तो वह कहता है कि वह किसान के गर्म खून के कारण पैदा हुआ। वही खलिहान की बिजली का पदार्थ बनकर गर्मी में बिजली बनने की क्षमता रखता था और अंततः उसने अपने ही बनाए खलिहान पर बिजली बनकर गिरकर उसे नष्ट कर दिया। तो इस तामीर (निर्माण) में वीरानी (विनाश) की सूरत छिपी थी कि: (अरबी उद्धरण): 'लिदू लिल-मौत वब्नू लिल-ख़राब' (अनुवाद): जीओ मरने के लिए और इमारतें बनाओ बर्बाद होने के लिए।

मसाला 13: पीलीभीत, मोहल्ला अहमदज़ई से, प्रेषक मौलवी सैयद मोहम्मद उमर अल्लाह आबादी सुहरावर्दी, 18 रजब 1332 हिजरी। (1) मैं उस वक़्त था जब आदम न थे / जब हव्वा अदम थी और आदम न थे। (2) मैंने उस वक़्त ख़ुदा को सजदा किया / जब ख़ुदा की ज़ात और सिफ़ात भी न थीं। (3) ग़ौर से हमने मुहम्मद को जो देखा फ़रहाँ / तीन सौ साठ बरस पाया ख़ुदा से पहले। (1 और 2 का अनुवाद): (1) मैं उस वक़्त था कि आदम न था कि हव्वा मादूम थी और आदम न था। (2) मैंने उस वक़्त ख़ुदा को सजदा किया कि ख़ुदा की ज़ात व सिफ़ात भी मौजूद न थीं। (त) इन तीनों शेरों का मतलब तहरीर फ़रमाएँ कि ये अशआर किसके हैं और किस किताब में हैं? एक शख़्स ने मुझसे इन शेरों का मतलब पूछा है मगर मुझे नहीं मालूम मैं कैसे बताऊं लिहाज़ा आपकी सेवा में सवाल है कि मतलब तहरीर फ़रमाएँ। फ़क़त मुस्तफ़ती मोहम्मद उमर।

उत्तर: ऐसे अशआर का मतलब उस वक़्त पूछा जाता है जब मालूम हो कि कहने वाला कोई मोतबर (विश्वसनीय) शख़्स था, वरना...

فتاوی رضویہ، جلد ۲۹

مسئلہ ۱۲: از مدرسہ منظر الاسلام، بریلی، مرسلہ مولوی اکبر حسین رام پوری طالب علم ۲۸ ربیع الاول شریف ۱۳۲۶ھ بعالی خدمت اعلیحضرت مدظلہ العالی عرض ہے کہ ایک شعر کے معنی میں نہایت فکر کرتا ہوں لیکن سمجھ میں نہیں آتا، امید کہ میں حضور کی ذات اقدس سے کامیاب ہوں گا، شعر یہ ہے: میری تعمیر میں مضمر اک صورت خرابی کی ہولی برق خرمن کا ہے خون گرم دہقان کا

الجواب: ہولی مادے کو کہتے ہیں جس میں شے کی قابلیت اور استعداد ہوتی ہے اور خون گرم سعی کا سبب کہ دہقان کی سعی سے کھیتی کی پیداوار ہے، اور اس کا محاصل خرمن، کہ برق گرے تو اسے بالکلیہ نیست و نابود کردے، تو کہتا ہے کہ وہ خون گرم دہقان کے سبب پیدا ہوا۔ وہی برق خرمن کا مادہ بنا کر حرارت میں برق بننے کی استعداد تھی اور وہی بالآخر اپنے پیدا کردہ خرمن پر بجلی ہو کر گرا اور اسے فنا کر گیا تو اس تعمیر میں ویرانی کی صورت پنہاں تھی کہ: لد واللموت وابنوا للخراب جیو مرنے کے لیے اور عمارتیں بناؤ خراب و برباد ہونے کے لیے۔

مسئلہ ۱۳: از پیلی بھیت محلہ احمد زئی مرسلہ مولوی سید محمد عمر اللہ آبادی سہروردی ۱۸ رجب ۱۳۳۲ھ (۱) من آن وقت بودم کہ آدم نبود کہ حوا عدم بود آدم نبود (۲) من آں وقت کردم خدا را سجود کہ ذات و صفات خدا ہم نبود (۳) غور سے ہم نے محمد کو جو دیکھا فرحاں تین سو ساٹھ برس پایا خدا سے پہلے (۱) میں اس وقت تھا کہ آدم نہ تھا کہ حوا معدوم تھی اور آدم نہ تھا۔ (۲) میں نے اس وقت خدا کو سجدہ کیا کہ خدا کی ذات و صفات بھی موجود نہ تھیں۔ ت) ان تینوں شعروں کا مطلب تحریر فرمائیے کہ یہ اشعار کس کے ہیں اور کس کتاب میں ہیں؟ ایک شخص نے

مجھ سے ان شعروں کا مطلب دریافت کیا ہے مگر مجھے نہیں معلوم میں کیسے بتلاؤں لہذا آنجناب سے سوال ہے کہ مطلب تحریر فرمائیے فقط المستفتی محمد عمر۔

الجواب: ایسے اشعار کا مطلب اس وقت پوچھا جاتا ہے جب معلوم ہو کہ قائل کوئی معتبر شخص تھا ورنہ

Fatawa Razawiyya Volume 29

The delirium of meaningless people is not worthy of attention. In the last hemistich of the first verse, it should be 'aan dam nabood' (that moment was not), otherwise, the rhyme is incorrect. In any case, its meaning is clear and correct; it refers to the existence of souls before bodies. The second verse is explicit disbelief (Kufr). In the third verse, the phrase 'three hundred and thirteen years' actually exists. Farhan was a poet from our Bareilly; this ghazal of his was published during his lifetime. This humble servant [the author] saw it then. In it, the term 'three hundred and thirteen' was used. The poet held a nonsensical, absurd, and futile meaning: that the numerical value of the word 'Muhammad' (PBUH) is 92, and the numerical value of the word 'Khuda' (God) is 605. It is evident that 605 precedes 92 by a magnitude of 513. Absurd meaning and a meaningless talk, I seek forgiveness from Allah the Magnificent. This is what the poet understood. However, its meaning could also be that by 'Muhammad' (PBUH) is meant the rank of Prophethood of the Master of Messengers, may Allah the Almighty's peace and blessings be upon him and all of them, the head of which is only 'R' (ر), which is the origin of Vision (Ruyat), Narration (Riwayat), Rejection (Radiyat), and Opinion (Raye); these are the sources of the rivers of Prophethood. Its numerical value is 200. And the Messengers are 313, who in reality are all reflections of the Prophethood of Muhammad, peace and blessings be upon its possessor. The total becomes 513. The journey of the noble Messengers (peace be upon them) is from Allah to the creation, and the journey of the Ummah is from the Messengers to Allah. Until one believes in the Messengers, one cannot find faith in Allah Almighty. Furthermore, reaching Him without the mediation of the Messengers is impossible. Verification of all Messengers is a part of faith. "We make no distinction between any of His Messengers"[1] (We do not differentiate in believing in any of His Messengers). 'Bars' (year) is called 'Haul' in Arabic, which signifies 'Tahweel' (transformation/change). The successions of Messengers were also transformations. And 'Bars' also means rain; every Messenger's Prophethood is a rain of mercy. That is, Muhammad (peace and blessings be upon him) underwent these three hundred and thirteen developments in the path of Prophethood from Adam to the Final Prophet, raining three hundred and thirteen clouds of mercy. Until one is blessed with the verification of all of them, reaching God is impossible. And Allah Almighty knows best.

---

[1] The Holy Quran 2/285

अर्थहीन लोगों का प्रलाप ध्यान देने योग्य नहीं है। पहले शेर के अंतिम मिसरे (अर्ध-पंक्ति) में 'आन दम नबूद' होना चाहिए, अन्यथा काफ़िया (तुकबंदी) गलत है। बहरहाल, इसका अर्थ स्पष्ट और सही है; यह शरीरों से पहले आत्माओं के अस्तित्व की ओर संकेत है। दूसरा शेर स्पष्ट कुफ़्र (अधर्म) है। तीसरे शेर में वास्तव में 'तीन सौ तेरह वर्ष' शब्द है। फ़रहान हमारे बरेली के एक कवि थे; उनकी यह ग़ज़ल उनके जीवनकाल में प्रकाशित हुई थी। फकीर (लेखक) ने इसे तभी देखा था। इसमें तीन सौ तेरह का शब्द था। कवि ने इसमें यह निरर्थक, बेतुका और फालतू अर्थ रखा है कि शब्द 'मोहम्मद' (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के अंक 92 हैं और शब्द 'खुदा' के अंक 605 हैं। यह स्पष्ट है कि 605, 92 से 513 की मात्रा में पहले है। बेतुका अर्थ और अर्थहीन बात, मैं महान अल्लाह से क्षमा माँगता हूँ। यह वह है जो कवि साहब ने समझा था। और इसका अर्थ यह भी हो सकता है कि मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से तात्पर्य संदेष्टाओं के स्वामी (सैयदुल मुर्सलीन), अल्लाह उन पर और उन सब पर शांति और आशीर्वाद बरसाए, के नुबुव्वत (पैगंबरी) का पद हो, जिसका सिरा केवल 'रे' (ر) है जो दृष्टि (रुयत), वर्णन (रवायत), अस्वीकृति (रदियत) और राय (विचार) सबका मूल है; और नुबुव्वत की नदियाँ यहीं से निकलती हैं। इसके अंक 200 हैं। और रसूल (संदेष्टा) 313 हैं, जो वास्तव में मोहम्मदिया नुबुव्वत की छाया हैं, इसके स्वामी पर श्रेष्ठ दरूद और सलाम हो। कुल योग 513 हुआ। माननीय रसूलों (अ़लैहिमुस्सलाम) की यात्रा अल्लाह से सृष्टि की ओर है, और उम्मत की यात्रा रसूलों से अल्लाह की ओर है। जब तक रसूलों पर ईमान न लाएँ, अल्लाह अज़्ज़वजल पर ईमान नहीं मिल सकता। फिर उस तक पहुँचना तो रसूलों के माध्यम के बिना असंभव है। और सभी रसूलों की पुष्टि ईमान का हिस्सा है। "हम उसके रसूलों में से किसी के बीच अंतर नहीं करते"[1] (हम उसके किसी रसूल पर ईमान लाने में फर्क नहीं करते)। 'बरस' (वर्ष) को अरबी में 'हौल' कहते हैं, जो 'तहवील' (परिवर्तन) का सूचक है। रसूलों का उत्तराधिकार भी परिवर्तन था। और 'बरस' का अर्थ वर्षा है; हर रसूल की नुबुव्वत रहमत (कृपा) की वर्षा है। यानी मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने आदम से खातम (अंतिम पैगंबर) तक नुबुव्वत की राय में ये तीन सौ तेरह रूप धारण किए, तीन सौ तेरह रहमत के बादल बरसाए। जब तक उन सबकी पुष्टि से लाभान्वित न हों, खुदा तक पहुँचना नामुमकिन है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

---

[1] अल-कुरान अल-करीम 2/285

بے معنی لوگوں کے ہذیان کیا قابلِ التفات۔ شعرِ اول کے مصرعہ اخیر میں آں دم نبود چاہیے ورنہ قافیہ غلط ہے بہر حال اس کا مطلب صحیح و صاف ہے وجودِ ارواح قبلِ اجسام کی طرف اشارہ ہے۔ شعرِ دوم صریح کفر ہے۔ شعرِ سوم میں دراصل تین سو تیرہ برس کا لفظ ہے فرحان ہمارے بریلی کے شاعر تھے ان کی زندگی میں ان کی یہ غزل چھپی تھی فقیر نے جبھی دیکھی تھی اس میں تین سو تیرہ کا لفظ تھا اس میں شاعر نے یہ مہمل و بے ہودہ و لغو مطلب رکھا ہے کہ لفظ محمدؐ کے عدد ۹۲ ہیں اور لفظ خدا کے عدد ۶۰۵ ظاہر ہے کہ ۶۰۵ سے ۹۲ بقدر ۵۱۳ کے مقدم ہے۔ بے ہودہ معنی اور بے معنی بات واستغفراللہ العظیم یہ وہ ہے جو شاعر صاحب نے سمجھا تھا اور اس کا مطلب یہ بھی ہو سکتا ہے کہ محمدؐ سے مراد مرتبہ رسالت حضور سید المرسلین صلی اللہ تعالٰی علیہ وعلیہم اجمعین ہو جس کا سر صرف ر ہے کہ رویت و روایت و ردیت درائے سب کا مبدا ہے اور انہارِ رسالت کی یہی منابع ہیں۔ اس کے عدد ۲۰۰ ہیں اور رسول ۳۱۳ کہ حقیقۃً سب ظلالِ رسالتِ محمدیہ علیہ صاحبہا افضل الصلوۃ والتحیہ ہیں مجموع ۵۱۳ ہوا۔ رسل کرام علیہم الصلوۃ والسلام کی سیر من اللہ الی الخلق ہے اور امت کی سیر من الرسل الی اللہ جب تک رسولوں پر ایمان نہ لائے اللہ عزوجل پر ایمان نہیں مل سکتا۔ پھر اس تک رسائی تو بے وساطت رسل محال ہے اور تصدیقِ سب رسولوں کی جزء ایمان ہے۔ " لَا نُفَرِّقُ بَیْنَ اَحَدٍ مِّنْ رُّسُلِہٖ قف" ۱ (ہم اس کے کسی رسول پر ایمان لانے میں فرق نہیں کرتے) برس کو عربی میں حول کہتے ہیں کہ تحویل سے مشعر ہے رسولوں کی بدلیاں بھی تحویل تھیں اور برس بمعنی بارش ہے ہر رسول کی رسالت بارشِ رحمت ہے یعنی محمد صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے آدم سے خاتم تک رائے رسالت میں یہ

تین سو تیرہ تطور فرمائے تین سو تیرہ ابرِ رحمت برسائے جب تک ان سب کی تصدیق سے بہرہ ور ہو خدا تک رسائی ناممکن ہے واللہ تعالٰی اعلم۔

---

۱ القرآن الکریم ۲/۲۸۵

Fatawa Razawiyya Volume 29

Sermon and Preaching

Issue 12: From Sahasram, District Gaya, Pattiyaan Toli Mohalla, known as Neem Kale Khan, sent by Hakim Sirajuddin Ahmad Sahib, 17th Shawwal 1345 AH. The preachers from Deoband, Saharanpur, Nanautwi, Allahabad, etc., state various differing opinions regarding the construction and protection of schools and mosques without prioritizing one over the other. To what extent are they justified, until the categories of innovation (bid'ah) as obligatory (wajib), recommended (mandub), permissible (mubah), forbidden (haram), and disliked (makruh) are defined, along with the reasons for their goodness or badness (husn-o-qubh), the distinction between innovation and permissibility, and the specific application of Hadiths?

(1) "He who starts a good practice and he who starts an evil practice..."[1] - "One who invents a good way and one who invents an evil way. (Translation)" (2) "Whoever innovates something in this matter of ours that is not a part of it, it will be rejected."[2] - "Whoever brings a new thing into our religion, it is rejected. (Translation)" (3) "Whoever introduces a misleading innovation with which Allah and His Messenger are not pleased..."[3] - "Whoever brings up such a new thing which is bad and which Allah and His Messenger do not like. (Translation)"

[1] Musnad al-Imam Ahmad bin Hanbal, Al-Maktab al-Islami Beirut 4/361, and Sahih Muslim Kitab al-Ilm, Qadimi Kutub Khana Karachi 2/341. [2] Sahih Muslim Kitab al-Aqdiyah, Chapter on the Nullification of False Rulings etc., Qadimi Kutub Khana Karachi 2/77. [3] Jami' at-Tirmidhi Kitab al-Ilm, Chapter on Adhering to the Sunnah and Avoiding Innovation, Amin Company Delhi 2/92.

फतावा रज़विया जिल्द 29

उपदेश और प्रचार (वाज़ ओ तबलीग़)

मसला 12: सहसराम, जिला गया, मोहल्ला पटिया टोली उर्फ नीम काले खान से, प्रेषक हकीम सिराजुद्दीन अहमद साहिब, 17 शव्वाल 1345 हिजरी। देवबंदी, सहारनपुरी, नानौतवी, इलाहाबादी वग़ैरह प्रचारक मदरसों और मस्जिदों के निर्माण और सुरक्षा के बारे में बिना किसी प्राथमिकता के एक-दूसरे के विरुद्ध जो विभिन्न मत व्यक्त करते हैं, वे कहाँ तक सही हैं? जब तक कि बिदअत (नवाचार) के वाजिब (अनिवार्य), मंदूब (अनुशंसित), मुबाह (अनुमेय), हराम (वर्जित) और मकरूह (नापसंद) होने की श्रेणियां, और बिदअत की अच्छाई-बुराई (हुस्न-ओ-क़ुब्ह) के कारण, और बिदअत तथा मुबाह के बीच अंतर, और हदीसों के विशेष अर्थ स्पष्ट न हो जाएं।

(1) "जिसने एक अच्छी सुन्नत (तरीका) शुरू की और जिसने एक बुरी सुन्नत शुरू की..."[1] - "जिसने अच्छा तरीका ईजाद किया और जिसने बुरा तरीका ईजाद किया। (अनुवाद)" (2) "जिसने हमारे इस मामले (दीन) में कुछ नया निकाला जो इसमें से नहीं है, वह खारिज है।"[2] - "जो व्यक्ति हमारे दीन में कोई नई बात निकाले वह मरदूद (अस्वीकृत) है। (अनुवाद)" (3) "जिसने किसी ऐसी गुमराह करने वाली बिदअत को जन्म दिया जिससे अल्लाह और उसका रसूल खुश नहीं हैं..."[3] - "जिसने कोई ऐसी नई बात निकाली जो बुरी है जिसे अल्लाह और रसूल पसंद नहीं फ़रमाते। (अनुवाद)"

[1] मसनद अल-इमाम अहमद बिन हंबल, अल-मकतब अल-इस्लामी बेरूत 4/361 और सहीह मुस्लिम किताब अल-इल्म, कदीमी कुतुब खाना कराची 2/341। [2] सहीह मुस्लिम किताब अल-अक़्ज़िया, बाबत नक़्ज़ अल-अहकाम अल-बातिला वग़ैरह, कदीमी कुतुब खाना कराची 2/77। [3] जामे अत-तिरमिज़ी किताब अल-इल्म, बाबत अल-अख़्ज़ बिल-सुन्ना व इज्तिनाब अल-बिदअत, अमीन कंपनी दिल्ली 2/92।

पेज 70 में से 750

فتاوٰی رضویہ جلد ۲۹

وعظ و تبلیغ

مسئلہ ۱۲: از سہسرام ضلع گیا محلہ پٹیاں ٹولی عرف نیم کالے خان مرسلہ حکیم سراج الدین احمد صاحب ۱۷ شوال ۱۳۴۵ھ دیوبندی سہارنپوری نانوتوی والہ آبادی وغیرہ ہم واعظین مدارس و مساجد کی تعمیر و تحفظ میں بلا ترجیح یکدیگر جو کچھ اقوال مختلفہ بیان کرتے ہیں کہاں تک حق بجانب ہے تاوقتیکہ بدعت واجب مندوب مباح حرام مکروہ اور بدعت کی وجہ حسن وقبح اور فرق درمیان بدعت و مباح و تخصیص حدیثیں۔

(۱) من سنّ سنّة حسنة ومن سنّ سنّة سیّئة[1] - جس نے اچھا طریقہ ایجاد کیا اور جس نے بُرا طریقہ ایجاد کیا (ت) (۲) من احدث فی امرنا ھذا مالیس منہ فھو ردّ[2] - جو شخص ہمارے دین میں کوئی نئی بات نکالے وہ مردود ہے۔ (ت) (۳) من ابتدع بدعة ضلالة لایرضاھا اللہ ورسولہ[3] - جس نے کوئی ایسی نئی بات نکالی جو بُری ہے جسے اللہ و رسول پسند نہیں فرماتے۔ (ت)

1 مسند الامام احمد بن حنبل المکتب الاسلامی بیروت ۴ / ۳۶۱ و صحیح مسلم کتاب العلم قدیمی کتب خانہ کراچی ۲ / ۳۴۱ 2 صحیح مسلم کتاب الاقضیۃ باب نقض الاحکام الباطلۃ الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ۲ / ۷۷ 3 جامع الترمذی کتاب العلم باب الاخذ بالسنۃ واجتناب البدعۃ امین کمپنی دہلی ۲ / ۹۲

Should they not explain in detail how to keep every good deed pure from evil, so that the general public, out of misunderstanding, does not infringe upon rights and make good deeds blameworthy by mixing them with prohibited acts? If the aforementioned individuals do not adhere to this in their preaching, can they be held accountable or not?

The Answer:

The first condition for a preacher is to be a Muslim. Those with Deobandi beliefs are not Muslims at all; listening to their preaching is forbidden (Haram), and knowingly appointing them as preachers is disbelief (Kufr). The scholars of the Two Holy Sanctuaries (Haramain Sharifain) have stated:

من شك في كفره وعذابه فقد كفر[1]	**He who doubts their disbelief and punishment has himself disbelieved. (T)**

Similarly, all Wahhabis and non-conformists (Ghair Muqallidin) are brothers of the devils. The second condition is to be a Sunni; appointing a non-Sunni as a preacher is forbidden, even if, hypothetically, they say the right thing. In the Hadith, the Holy Prophet (may peace and blessings of Allah be upon him) says:

من وقر صاحب بدعة فقد اعان على هدم الاسلام[2]	**Whoever honors an innovator has helped in the demolition of the religion of Islam.**

The third condition is to be a scholar; it is impermissible to call an ignorant person a preacher, as is stated:

اتخذ الناس رؤسا جها لا فسئلوا فافتوا بغير علم فضلوا واضلوا[3]	**People took ignorant ones as leaders. So, when they were asked, they gave fatwas without knowledge; thus they went astray and led others astray.**

The fourth condition is not to be a transgressor (Fasiq). In 'Tabyin al-Haqa'iq' etc., it is written:

لان فی تقدیمہ للامامة تعظیمہ	**Because putting him forward for leadership is an act of honoring him.**

[1] Al-Durr al-Mukhtar, Kitab al-Jihad, Bab al-Murtad, Mujtabai Press Delhi 1/356; Husam al-Haramain ala Manhar al-Kufri wa al-Mayn, Ahle Sunnat wa Jama'at Press Bareilly, p. 94. [2] Kanz al-Ummal, Hadith 1102, Mu'assasat al-Risalah Beirut 1/219. [3]

Sahih al-Bukhari, Kitab al-Ilm, Bab Kayfa Yuqbad al-Ilm, Qadimi Kutub Khana Karachi 1/20.

क्या उन्हें विस्तार से यह नहीं बताना चाहिए कि हर अच्छे काम को बुराई से कैसे पाक रखा जाए, ताकि आम जनता गलतफहमी में आकर अधिकारों का हनन न करे और अच्छे कामों में निषेधों को मिलाकर उन्हें निंदनीय न बना दे? यदि उक्त व्यक्ति अपने प्रवचनों में इसका पालन नहीं करते, तो क्या उन्हें दोषी ठहराया जा सकता है या नहीं?

उत्तर:

एक उपदेशक (वाइज़) के लिए पहली शर्त यह है कि वह मुसलमान हो। देवबंदी अक़ीदे (विश्वास) वाले मुसलमान ही नहीं हैं; उनका प्रवचन सुनना हराम है और जानबूझकर उन्हें उपदेशक बनाना कुफ़्र है। हरमैन शरीफ़ैन (मक्का और मदीना) के उलेमा ने फ़रमाया है कि:

من شك في كفره وعذابه فقد كفر[1]	**जिसने उनके कुफ़्र और अज़ाब (दंड) में संदेह किया, उसने कुफ़्र किया। (त)**

इसी तरह तमाम वहाबी और गैर-मुक़ल्लिद शैतानों के भाई हैं। दूसरी शर्त सुन्नी होना है; किसी गैर-सुन्नी को उपदेशक बनाना हराम है, भले ही वह बात सही ही क्यों न कहे। हदीस में है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं:

من وقر صاحب بدعة فقد اعان على هدم الاسلام[2]	**जिसने किसी बिदअती (धर्म में नयापन लाने वाला) का सम्मान किया, उसने इस्लाम धर्म को ढहाने में मदद की।**

तीसरी शर्त आलिम (विद्वान) होना है; जाहिल को उपदेशक कहना नाजायज़ है, जैसा कि इरशाद है:

اتخذ الناس رؤسا جها لا فسئلوا فافتوا بغير علم فضلوا واضلوا[3]	**लोगों ने जाहिलों को अपना सरदार बना लिया। फिर जब उनसे सवाल किया गया, तो उन्होंने बिना ज्ञान के शरई अहकाम बयान करने शुरू कर दिए, जिससे वे स्वयं भी गुमराह हुए और दूसरों को भी गुमराह किया।**

चौथी शर्त फ़ासिक़ (अधर्मी) न होना है। 'तब्ईन अल-हक़ाएक़' आदि में है:

لان فی تقدیمہ للامامۃ تعظیمہ	**क्योंकि उसे इमामत (नेतृत्व) के लिए आगे करने में उसका सम्मान है।**

[1] अदुर्रुल मुख्तार, किताब अल-जिहाद, बाब अल-मुरतद, मतबा मुजतबाई दिल्ली 1/356; हुसामुल हरमैन अला मनहर अल-कुफ्रे वल मैन, मतबा अहले सुन्नत व जमात बरेली, पृ. 94. [2] कन्जुल उम्माल, हदीस 1102, मुअस्ससतुल रिसाला बेरूत 1/219. [3] सहीह अल-बुखारी, किताब अल-इल्म, बाब कैफ़ा युक़बज़ अल-इल्म, क़दीमी कुतुब खाना कराची 1/20.

पृष्ठ ७१ / ७५०

کے مطابق ہر امور حسنہ کو سیئہ سے پاک رہنے کا حال مفصل نہ کہہ سنائیں کہ عوام غلط فہمی سے حق تلفی کر کے امور حسنہ کو بآمیزش ممنوعات کے مذموم نہ کر دیں اگر اس کا التزام مذکورین اپنے اپنے وعظ میں نہ کریں تو مورد الزام ہو سکتے ہیں یا نہیں؟

الجواب:

واعظ کے لیے پہلی شرط یہ ہے کہ مسلمان ہو دیوبندی عقیدے والے مسلمان ہی نہیں ان کا وعظ سننا حرام اور دانستہ انہیں واعظ بنانا کفر علمائے حرمین شریفین نے فرمایا ہے کہ:

من شك في كفره وعذابه فقد كفر[1] — **جس نے ان کے کفر اور عذاب میں شک کیا اس نے کفر کیا۔ (ت)**

اسی طرح تمام وہابیہ وغیر مقلدین فانھم جمیعاً اخوان الشیاطین۔ (کہ وہ سب شیطانوں کے بھائی ہیں۔ ت) دوسری شرط سنی ہونا غیر سنی کو واعظ بنانا حرام ہے اگر چہ بالفرض وہ بات ٹھیک ہی کہے۔ حدیث میں ہے نبی کریم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں:

من وقر صاحب بدعة فقد اعان علی هدم الاسلام[2] — **جس نے کسی بد مذہب کی توقیر کی اس نے دین اسلام کے ڈھانے پر مدد دی۔**

تیسری شرط عالم ہونا جاہل کو واعظ کہنا نا جائز ہے جیسا کہ ارشاد ہے:

اتخذ الناس رؤسا جھا لا لوگوں نے جاہلوں کو سردار بنا لیا پس جب ان سے سوال کیا گیا تو

فسئلوا فافتوا بغیر علم انہوں نے بے علم احکام شرعی بیان کرنے شروع کیے تو آپ بھی

فضلوا واضلوا[3] گمراہ ہوئے اور اوروں کو بھی گمراہ کیا۔

چوتھی شرط فاسق نہ ہونا۔ تبیین الحقائق وغیرہ میں ہے:

لان فی تقدیمہ للامامۃ تعظیمہ کیونکہ اسے امامت کے لیے مقدم کرنے میں اس کی تعظیم ہے۔

[1] الدرالمختار کتاب الجهاد باب المرتد مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۳۵۶، حسام الحرمین علی منحر الکفر والمین مطبع اہلسنت و جماعت بریلی ص ۹۴ [2] کنز العمال حدیث ۱۱۰۲ مؤسسة الرسالة بیروت ۱/ ۲۱۹ [3] صحیح البخاری کتاب العلم باب کیف یقبض العلم الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/ ۲۰

Fatawa Ridawiyya Volume 29

And indeed, it has become obligatory upon them to humiliate him according to Sharia law. - It is respect, whereas according to Sharia, humiliating him is obligatory for Muslims. (T)

And when all these conditions are gathered, and a Sunni scholar of religion with correct beliefs and piety delivers a sermon, then the common people are not allowed to interfere in his sermon. He will certainly take into account the Sharia-based considerations. However, if there is a specific wisdom or benefit in a particular place of which he is unaware, he should be informed before the sermon about the situation there. And Allah the Almighty knows best.

---

[1]Tabyin al-Haqa'iq, Chapter on Imamate and Impurity during Prayer, Al-Matba'a al-Kubra, Bulaq, Egypt, 1/134.

और वास्तव में, शरीयत के अनुसार उनका अपमान करना उन पर अनिवार्य हो गया है। - यह सम्मान है, जबकि शरीयत के अनुसार मुसलमानों पर उनका अपमान करना अनिवार्य है। (त)

और जब ये सभी शर्तें पूरी हों और एक सुन्नी, सही अकीदा (आस्था) वाले धर्मपरायण विद्वान उपदेश दें, तो आम जनता को उनके उपदेश में हस्तक्षेप करने की अनुमति नहीं है। वे निश्चित रूप से शरीयत के हितों का ध्यान रखेंगे। हाँ, यदि किसी स्थान पर कोई विशेष कारण या हित हो जिसकी उन्हें जानकारी न हो, तो उपदेश से पहले उन्हें सूचित कर दिया जाना चाहिए कि यहाँ ऐसी स्थिति है। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

---

[1]तबयीन अल-हक़ाएक़, इमामत और नमाज़ में हदस (अशुद्धि) का अध्याय, अल-मत्बा अल-कुबरा, बुलाक़, मिस्र, 1/134।

فتاوی رضویہ جلد ۲۹

وقد وجب علیھم اھانتہ شرعاً - تعظیم ہے حالانکہ شرعاً مسلمانوں پر اس کی توہین واجب ہے۔ (ت)

اور جب یہ سب شرائط مجتمع ہوں سنی صحیح العقیدہ عالم دین متقی و وعظ فرمائے تو عوام کو اس کے وعظ میں دخل دینے کی اجازت نہیں وہ ضرور مصالح شرعیہ کا لحاظ رکھے گا ہاں اگر کسی جگہ کوئی خاص مصلحت ہو جس پر اسے اطلاع نہیں تو پیش از وعظ مطلع کر دیا جائے کہ یہاں یہ حالت ہے واللہ تعالٰی اعلم۔

---

[1]تبیین الحقائق باب الامامۃ والحدث فی الصلوۃ المطبعۃ الکبری بولاق مصر ۱ / ۱۳۴

Fatawa Razawiya Volume 29

Zoology

Issue 15: What do the scholars of religion and jurists of Sharia say regarding this matter: To whose offspring do dogs and all other animals, grazing beasts, and birds belong?

The Answer: Every animal that is born from a female is the offspring of the first animal of its kind which the Lord Almighty created in the beginning. For example, the first horse that the Lord Almighty created from clay and water; all horses are from its progeny. Similarly, dogs and others. And Allah Almighty knows best.

Page 74 of 750

फ़तावा रज़विया खंड २९

प्राणि विज्ञान

मसला १५: इस मसले में दीन के उलेमा और शरई मुफ्ती क्या फरमाते हैं? कुत्ता और तमाम जानवर, चरने वाले पशु और पक्षी किसकी संतान में से हैं?

अल-जवाब: हर वह जानवर जो मादा से पैदा होता है, वह अपनी प्रजाति के उस पहले जानवर की संतान है जिसे रब्ब-ए-अज़्ज़वजल ने शुरुआत में बनाया था। उदाहरण के लिए, पहला घोड़ा जिसे रब्ब-ए-अज़्ज़वजल ने मिट्टी और पानी से बनाया, तमाम घोड़े उसी की नस्ल से हैं। इसी तरह कुत्ते वगैरह। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

पृष्ठ ७४/७५०

علم الحیوان

مسئلہ ۱۵: کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیانِ شرع اس مسئلہ میں۔ کتا اور کل جانور چرند و پرند کس کی اولاد میں سے ہیں؟

الجواب: ہر جانور کہ مادہ سے پیدا ہوتا ہے اپنی قسم کے اس پہلے جانور کی اولاد میں ہے جسے رب عزوجل نے ابتدا بنایا تھا مثلاً سب میں پہلا گھوڑا جو مٹی اور پانی سے رب عزوجل نے بنایا سب گھوڑے اس کی نسل ہیں یونہی کتے وغیرہ۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

صفحہ ۷۴ از ۷۵۰

Volume 29 Fatawa Razawiyya

Anatomy of Bodies

Issue 16: Sent by Maulvi Nawab Muhammad Sultan Ahmad Khan Sahib, 29 Muharram al-Haram 1325 AH.

Zaid says that recently two such persons have been found who have two hearts each, and doctors have also examined them in their own way. Bakr says that a person cannot have two hearts because Allah Almighty states:

"Allah has not made for any man two hearts in his interior." (1) | Allah Almighty has not placed two hearts inside any man. (T)

To this Khalid says that Allah Almighty has also stated:

"It is He who forms you in the wombs however He wills." (2) | It is He who forms your image in the wombs of mothers as He wills.

So, this matter is among the wonders of Divine creation, just as there is a person whose heart is on the right side. Similarly, children of strange creation are constantly born, whether human or animal. And the first verse was revealed about a person who claimed that this person [himself] has two hearts, therefore [claiming] "I possess more knowledge and understanding than the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him)." Since at that time people were determined to oppose you in various ways, so this person...

(1) Al-Quran al-Karim 33 / 4 (2) Al-Quran al-Karim 3 / 6

Page 76 of 750

जिल्द 29 फ़तावा रज़विया

शरीर रचना (एनाटॉमी)

मसला 16: मौलवी नवाब मुहम्मद सुल्तान अहमद खान साहब द्वारा प्रेषित, 29 मुहर्रमुल हराम 1325 हिजरी।

ज़ैद कहता है कि हाल ही में दो ऐसे व्यक्ति पाए गए हैं जिनके दो-दो दिल हैं और डॉक्टरों ने भी अपनी तरह से इसकी जाँच की है। बक्र कहता है कि एक व्यक्ति के दो दिल नहीं हो सकते क्योंकि अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है:

"अल्लाह ने किसी आदमी के सीने में दो दिल नहीं रखे।" (1) | अल्लाह तआला ने किसी आदमी के अंदर दो दिल नहीं रखे। (त)

इस पर खालिद कहता है कि खुदा तआला ने यह भी तो फरमाया है:

"वही है जो तुम्हारी तस्वीर बनाता है माँओं के पेट में जैसी चाहे।" (2) | वही है जो तुम्हारी तस्वीर बनाता है माँओं के पेट में जैसी चाहे।

अतः यह मामला बारी तआला की सृष्टि के आश्चर्यों में से है, जैसे कि एक व्यक्ति ऐसा भी मौजूद है जिसका दिल दाईं ओर है। इसी प्रकार विचित्र बनावट वाले बच्चे हमेशा पैदा होते रहते हैं, चाहे वह इंसान हों या जानवर। और पहली आयत तो उस व्यक्ति के बारे में उतरी है जो दावा करता था कि इस व्यक्ति के दो दिल हैं, इसलिए मैं नबी करीम (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) से अधिक ज्ञान और समझ रखता हूँ। चूंकि उस समय लोग तरह-तरह से आपकी मुखालफत (विरोध) पर कमर कस चुके थे, इसलिए उस व्यक्ति ने...

(1) अल-कुरानुल करीम 33 / 4 (2) अल-कुरानुल करीम 3 / 6

पेज 76 का 750

تشریح ابدان

مسئلہ ۱۶: مرسلہ مولوی نواب محمد سلطان احمد خان صاحب ۲۹ محرم الحرام ۱۳۲۵ھ زید کہتا ہے حال میں دو شخص ایسے پائے گئے ہیں جن کے دو دو دل ہیں اور ڈاکٹروں نے بھی اس کو اپنے طور پر جانچ کیا ہے بکر کہتا ہے کہ ایک شخص کے دو دل نہیں ہو سکتے کیونکہ اللہ تعالیٰ ارشاد فرماتا ہے:

"مَا جَعَلَ اللَّهُ لِرَجُلٍ مِّن قَلْبَيْنِ فِي جَوْفِهِ" 1۔ | اللہ تعالیٰ نے کسی آدمی کے اندر دو دل نہ رکھے۔ (ت)

اس پر خالد کہتا ہے خدائے تعالیٰ نے یہ بھی تو فرمایا ہے:

"هُوَ الَّذِي يُصَوِّرُكُمْ فِي الْأَرْحَامِ كَيْفَ يَشَاءُ" 2۔ | وہی ہے جو تمہاری تصویر بناتا ہے ماؤں کے پیٹ میں جیسی چاہے۔

پس یہ امر عجائب صنع باری سے ہے جیسے کہ ایک شخص ایسا بھی موجود ہے جس کا دل داہنی طرف ہے اسی طرح عجیب الخلقت بچے ہمیشہ پیدا ہوتے رہتے ہیں کیا انسان کیا جانور اور پہلی آیت تو اس شخص کے بارے میں اتری ہے جو دعویٰ کرتا ہے کہ اس شخص کے دو دل ہیں لہٰذا میں نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم سے زیادہ علم و فہم رکھتا ہوں۔ چونکہ اس وقت میں لوگ طرح طرح سے آپ کی مخالفت پر کمر بستہ تھے اس لیے اس شخص نے

1 القرآن الکریم ۳۳ / ۴ 2 القرآن الکریم ۳ / ۶

Fatawa Razawiyya Volume 29

...said so that people would turn away from you, then Allah Almighty revealed his lie. Therefore, it is requested from the scholars of the firm religion with an attentive heart: what is the meaning of both these verses and what belief should be held regarding them? "Alqu'l-kalam nafsikum fi qalbi tujiru min rabbi" (Place your precious words in my heart, you will receive a reward from my Lord. - Trans.)

The Answer:

The heart is that organ which is the king of the kingdom of the body, the seat of intellect and understanding, and the origin of intention, choice, approval, and denial. A single person cannot have two hearts. "Two kings cannot fit in one kingdom." (Trans.) In the noble verse, the word 'rajul' (man) is an indefinite noun and falls under negation, which provides generality and comprehensiveness; meaning that Allah Almighty has not made two hearts for anyone, not just denying it in relation to that specific person.

The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said:

| "Beware, in the body there is a piece of flesh; if it is sound, the whole body is sound, | Listen, in the body there is a piece of flesh; if it is sound, the whole | | and if it is corrupt, the whole body is corrupt. Beware, it is the heart."[1] | body remains sound, and if it gets corrupt, the whole body gets corrupt; listen, it is the heart. |

So if someone were to have two hearts, and one of them was sound while the other was corrupt, then the whole body should simultaneously be both corrupt and sound at the same moment, and this is impossible. When there are two hearts, and one intends to do a task while the other intends not to do it, then will the body obey one, both, or neither? It is obvious that obeying both is impossible, and if it obeys neither, then neither is a 'heart', because the heart is that by whose will the body performs intentional movement and rest. And if it obeys one and not the other, then the one it obeys is the heart, and the other is just a lump of bad flesh that has grown in the body in the shape of a heart, just as someone might have six fingers on a palm, or some might have two hands attached to one arm; the one that works and is in the right place is the hand, the other is just bad flesh. If the statement of doctors is true, then this would be its form in the body...

[1] Sahih al-Bukhari, Kitab al-Iman, Chapter: The Virtue of One Who Safeguards His Religion, Qadimi Kutub Khana Karachi, 1/31; Sahih Muslim, Kitab al-Musaqat,

Chapter: Taking what is Lawful and Leaving Doubts, Qadimi Kutub Khana Karachi, 2/28.

Page 77 of 750

फ़तावा रज़विया जिल्द २९

...कहा जिससे लोग आपसे फिर जाएँ तो अल्लाह तआला ने उसका झूठ ज़ाहिर कर दिया। अतः क़वीम दीन के उलेमा से दिल की गहराई से सवाल है कि इन दोनों आयतों का मक़सद क्या है और इस बारे में क्या अक़ीदा (विश्वास) रखना चाहिए? "अल्क़ुल-कलाम नफ़्सिकुम फ़ी क़ल्बी तुजिरू मिन रब्बी" (अपना कीमती कलाम मेरे दिल में डालो, मेरे रब से सवाब पाओगे। - अनु.)

उत्तर:

दिल वह अंग है जो शरीर के साम्राज्य का राजा, बुद्धि और समझ का स्थान और इरादे, चुनाव, रज़ा और इनकार का स्रोत है। एक व्यक्ति के दो दिल नहीं हो सकते। "दो बादशाह एक राज्य में नहीं समा सकते।" (अनु.) आयत-ए-करीमा में 'रजुल' (आदमी) नकरा (अनिश्चित संज्ञा) है और नफ़ी (निषेध) के तहत आता है, जो व्यापकता और समावेशिता प्रदान करता है; यानी अल्लाह अज़्ज़वजल ने किसी के भी दो दिल नहीं बनाए हैं, न कि केवल उस विशेष व्यक्ति के संबंध में इनकार फ़रमाया है।

रसूल अल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया:

| अला व इन्ना फ़िल जसदि मुज़ग़तन इज़ा सलहत सलहल जसदु कुल्लुहू | सुनते हो बदन में एक पारा गोश्त है कि वह ठीक है तो सारा | | व इज़ा फ़सदत फ़सदल जसदु कुल्लुहू अला व हियल क़ल्ब।[1] | बदन ठीक रहता है और वह बिगड़ जाए तो सारा बदन बिगड़ जाता है सुनते हो वह दिल है। |

तो अगर किसी के दो दिल हों, और उनमें से एक ठीक रहे और दूसरा बिगड़ जाए, तो चाहिए कि एक ही समय में सारा शरीर बिगड़ा हुआ और संभला हुआ दोनों हो, और यह असंभव है। जब दो दिल हों, और एक ने इरादा किया कि यह काम किया जाए और दूसरे ने इरादा किया कि न किया जाए, तो अब शरीर एक की आज्ञा मानेगा या दोनों की या किसी की नहीं? ज़ाहिर है कि दोनों की आज्ञा मानना असंभव है, और यदि किसी की न माने तो उनमें कोई भी दिल नहीं है, क्योंकि दिल तो वही है जिसकी इच्छा से शरीर स्वैच्छिक गति और स्थिरता करता है। और अगर वह एक की आज्ञा मानेगा और दूसरे की नहीं, तो जिसकी आज्ञा मानेगा वही दिल है, और दूसरा एक बुरा मांस (लोथड़ा) है जो शरीर में दिल की सूरत में पैदा हो गया है, जैसे किसी के पंजे में छह उंगलियां हों, और कुछ के एक हाथ में दो हाथ लगे होते हैं; उनमें जो काम देता है और ठीक जगह पर है वही हाथ है, दूसरा बुरा मांस है। डॉक्टरों का बयान अगर सच हो तो शरीर में इसकी यही सूरत होगी कि...

[1] सहीह अल-बुख़ारी, किताब अल-ईमान, बाब: फ़ज़्ल मन इस्तबरा लि-दीनिही, क़दीमी कुतुब ख़ाना कराची १/३१; सहीह मुस्लिम, किताब अल-मुसाक़ात, बाब: अख़्ज़ुल हलाल व तरकुश शुबहात, क़दीमी कुतुब ख़ाना कराची २/२८।

पेज ७७ ऑफ़ ७५०

کہہ دیا جس سے لوگ آپ سے برگشتہ ہو جائیں تو خدا تعالٰی نے اس کا جھوٹ ظاہر کردیا۔ پس علماء دین قویم سے بقلب استفسار ہے کہ منشاء ہر دو آیت کا کیا ہے اور اس بارے میں کیا اعتقاد رکھنا چاہیے؟ القو الکلام نفسیکم فی قلبی توجروا من ربی (اپنا نفیس کلام میرے دل میں ڈالو میرے رب سے اجر پاؤ گے۔ ت)

الجواب:

قلب وہ عضو ہے کہ سلطان اقلیم بدن و محل عقل و فہم و منشا قصد و اختیار و رضا و انکار ہے ایک شخص کے دو دل نہیں ہو سکتے دو بادشاہ دراقلیمے نہ گنجند (ایک سلطنت میں دو بادشاہ نہیں ہوتے۔ ت) آیۂ کریمہ میں رجل نکرہ ہے اور تحت نفی داخل ہے تو مفید عموم و استغراق ہے یعنی اللہ عزوجل نے کسی کے دو دل نہ بنائے نہ کہ فقط اس شخص خاص کی نسبت انکار فرمایا ہو۔

رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے فرمایا:

| الا وان فی الجسد مضغة اذا صلحت صلح الجسد کله | سنتے ہو بدن میں ایک پارہ گوشت ہے کہ وہ ٹھیک ہے تو سارا | | واذا فسدت فسد الجسد کله الا وھی القلب۔1 | بدن ٹھیک رہتا ہے اور وہ بگڑ جائے تو سارا بدن بگڑ جاتا ہے سنتے ہو وہ دل ہے۔ |

تو اگر کسی کے دو دل ہوں ان میں ایک ٹھیک رہے ایک بگڑ جائے تو چاہیے معاً ایک آن میں سارا بدن بگڑا اور سنبھلا دونوں ہوا اور یہ محال ہے جب دو دل ہیں ایک نے ارادہ کیا یہ کام کیجئے دوسرے نے ارادہ کیا نہ کیجئے تو اب بدن ایک کی اطاعت کرے گا یا دونوں کی یا کسی کی نہیں۔ ظاہر ہے کہ دونوں کی اطاعت محال ہے اور کسی کی نہ ہو تو ان میں کوئی قلب نہیں کہ

قلب تو وہی ہے کہ بدن اسی کے ارادہ سے حرکت وسکون ارادی کرتا ہے اور اگر ایک کی اطاعت کرے گا دوسرے کی نہیں تو جس کی اطاعت کرے گا وہی قلب ہے اور دوسرا ایک بد گوشت ہے کہ بدن میں صورت قلب پر پیدا ہو گیا جیسے کسی کے پنجے میں چھ انگلیاں اور بعض کے ایک ہاتھ میں دو ہاتھ لگے ہوتے ہیں ان میں جو کام دیتا ہے اور ٹھیک موقع پر ہے وہی ہاتھ ہے دوسرا بد گوشت ہے۔ ڈاکٹروں کا بیان اگر سچا ہو تو اس کی یہی صورت ہوگی کہ بدن میں

1 صحیح البخاری کتاب الایمان باب فضل من استبراء لدینہ قدیمی کتب خانہ کراچی ۱ / ۳۱، صحیح مسلم کتاب المساقات باب اخذ الحلال وترک الشبہات قدیمی کتب خانہ کراچی ۲۸/۲

Fatawa Razawiya Volume 29

A lump of flesh in the shape of a heart might have grown extra. In the case of a hand, it is possible that both the original and the extra hand function, but in the case of the heart, this is impossible. A human being is a human because of the human soul, and the heart is the name of its vessel. The human soul is not divisible, such that half remains in one heart and half in another. Therefore, the one to which it is essentially attached is the [true] heart, and the other is a surplus. And in the noble verse "He fashions you in the wombs as He wills" [1], it is stated that He creates your form in the mother's womb as He pleases. It is not said "as you will and as you invent with your imaginations," meaning that He should create a form just as you desire or devise in your thoughts; this is purely false. He has declared His will that He has not placed two hearts in anyone's body, so there will be no form contrary to that. And Allah Almighty knows best.

[1] The Holy Quran 3/6

दिल के आकार का मांस का एक अतिरिक्त टुकड़ा बढ़ गया होगा। हाथ के मामले में तो यह भी हो सकता है कि असली और अतिरिक्त दोनों हाथ काम करें, लेकिन दिल के मामले में यह असंभव है। मनुष्य अपनी मानवीय आत्मा के कारण मनुष्य है और इसी के केंद्र का नाम दिल है। मानवीय आत्मा विभाज्य नहीं है कि आधी एक दिल में रहे और आधी दूसरे में। इसलिए, जिससे वह मूल रूप से जुड़ी है, वही दिल है और दूसरा अतिरिक्त है। और पवित्र आयत में फ़रमाया गया है: "वही है जो तुम्हारी माताओं के गर्भ में जैसी चाहता है तुम्हारी सूरत बनाता है" [1]। उसने फ़रमाया कि वह माँ के पेट में तुम्हारी वैसी सूरत बनाता है जैसी वह चाहता है। यह नहीं फ़रमाया कि "जैसा तुम चाहो और अपनी कल्पनाओं से गढ़ो," कि तुम जैसी चाहो या अपने ख्यालों में जैसी बनाओ वैसी ही सूरत बना दे; यह पूरी तरह से गलत है। उसने अपनी इच्छा स्पष्ट कर दी है कि उसने किसी के शरीर में दो दिल नहीं रखे हैं, इसलिए इसके विपरीत कोई रचना नहीं होगी। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

[1] अल-क़ुरआन अल-करीम 3/6

ایک بد گوشت بصورت دل زیادہ پیدا ہو گیا ہو گا۔ ہاتھ میں تو یہ بھی ہو سکتا ہے کہ اصلی اور زائد دونوں ہاتھ کام دیں مگر قلب میں یہ نا ممکن ہے آدمی روح انسانی سے آدمی ہے اور اسی کے مرکب کا نام قلب ہے اور روح انسانی متجزی نہیں کہ آدھی ایک دل میں رہے آدھی دوسرے میں۔ تو جس سے وہ اصالۃً متعلق ہو گئی تو وہی قلب ہے دوسرا سلب ہے۔ اور آیہ کریمہ میں "یُصَوِّرُکُمْ فِي الْأَرْحَامِ کَیْفَ یَشَاءُ"۱ فرمایا ہے کہ ماں کے پیٹ میں تمہاری تصویر بناتا ہے جیسی وہ چاہے۔ یہ نہیں فرمایا کہ کیف تشاء ون وبتخیلاتکم تخترعون جیسی تم چاہو اور اپنے خیالات میں گھڑو ویسی ہی تصویر بنا دے یہ محض باطل ہے اور اس نے اپنی مشیت بتادی کہ کسی کے جوف میں میں نے دو دل نہ رکھے تو اس کے خلاف تصویر نہ ہو گی۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

۱ القرآن الکریم ۳/۶

Volume 29 Fatawa Rizwia

Science of Letters and Mathematics

Problem 17: From the city, Baharpur locality, Nawab Wazir Ahmad Khan Sahib Qadri Razvi, 14 Jamadi-ul-Awwal 1338 AH. Presented with respect to the exalted servants of the Almighty, the Lord of blessings, Mir Sand, peace be upon you and the mercy of Allah and His blessings. Humble greetings presented. If $la^2 = 75$ and $2la + a = 130$. If this model were correct, then based on the same model this equation would be established: $la^2 / 75 = (30 - la)^2$. $la^2 = 75(30 - la)^2$ or $la^2 = 75(900 - 60la + la^2)$ or $la^2 = 67500 - 4500la + 75la^2$ or $74la^2 + 4500la = 67500$. Divided by 2: $37la^2 - 2250la = 33750$. To make it a perfect square: $37la^2 - 2250 / 1 + 33750 - 2(4250 / 2)^2 = 33750 + 1 / 37(2250 / 4)^2$ or $37la^2 - 2250la + 1 / 2250 (1125)^2 = 33750 - (1125)^2$ or $37la^2 - 2250la + 1 / 37 (1125)^2 = 33750 + 1 / 37 (1125)^2$. Please observe this up to here; if it is correct, then further action shall be taken.

The Answer: Honored and kind Junior Nawab Sahib (may he be safe), and upon you be peace and the mercy of Allah and His blessings. This is a new rule for completing a square: that relating 'one' to the square side and adding the square of half the coefficient—this will not be correct in my view. For example, $la^2 + 6la = 20$. According to the mentioned way: $2la^2 + 1 / 2 (3)^2 = 20 + 9 / 2 = 49 / 2$ which is definitely not a perfect square. Or $3la^2 - 4la$ as mentioned: $3la^2 - 4la + 1 / 3 (2)^2 = 4 + 4 / 3 = 16 / 3$ which is definitely not a square.

Page 80 of 750

खंड 29 फ़तावा रज़विया

अक्षर और गणित का विज्ञान

मसला 17: शहर मोहल्ला बहारपुर से, नवाब वज़ीर अहमद खान साहिब क़ादरी रज़वी, 14 जमादी-उल-अव्वल 1338 हिजरी। सर्वशक्तिमान ईश्वर के महान सेवकों, अनुग्रह के स्वामी मीर सांड की सेवा में विनम्र निवेदन। अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहु। फ़िदयाना आदाब अर्ज़ है। यदि $la^2 = 75$ और $2la + a = 130$। यदि यह नमूना सही होता, तो इसी नमूने पर यह समीकरण स्थापित हो जाता: $la^2 / 75 = (30 - la)^2$। $la^2 = 75(30 - la)^2$ या $la^2 = 75(900 - 60la + la^2)$ या $la^2 = 67500 - 4500la + 75la^2$ या $74la^2 + 4500la = 67500$। 2 से विभाजित किया: $37la^2 - 2250la = 33750$। पूर्ण वर्ग बनाने के लिए: $37la^2 - 2250 / 1 + 33750 - 2(4250 / 2)^2 = 33750 + 1 / 37(2250 / 4)^2$ या $37la^2 - 2250la + 1 / 2250 (1125)^2 = 33750 - (1125)^2$ या $37la^2 - 2250la + 1 / 37 (1125)^2 = 33750 + 1 / 37 (1125)^2$। इसे यहाँ तक देख लिया जाए, यदि सही हो तो आगे अमल किया जाए।

उत्तर: मुकर्रम करमफ़रमा छोटे नवाब साहिब (सल्लमा), वअ़लैकुम अस्सलाम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहु। वर्ग पूर्ण करने का यह नया नियम—कि वर्ग पक्ष की ओर एक का अनुपात करके वर्ग के गुणांक का आधा शामिल करें—मेरे नज़दीक सही नहीं होगा। उदाहरण के लिए, $la^2 + 6la = 20$। वर्णित तरीके के अनुसार: $2la^2 + 1 / 2 (3)^2 = 20 + 9 / 2 = 49 / 2$ जो हरगिज़ पूर्ण वर्ग नहीं है। या $3la^2 - 4la$ जैसा कि उल्लेख किया गया: $3la^2 - 4la + 1 / 3 (2)^2 = 4 + 4 / 3 = 16 / 3$ जो हरगिज़ वर्ग नहीं है।

पृष्ठ 80/750

علمِ حروف وریاضی

مسئلہ ۱۷: از شہر محلہ بہار پور نواب وزیر احمد خان صاحب قادری رضوی ۱۴ جمادی الاولیٰ ۱۳۳۸ھ بعز عرض بندگان عالی متعالی خداوند متعالی خداوند نعمت میر ساند السلام علیکم ورحمتہ اللہ وبرکاتہ آداب فدیانہ معروض ۔ لا ۲ = ۷۵، ۲ لا + ء = ۱۳۰ اگر یہ نمونہ صحیح ہوجاتا تو اسی نمونے پر یہ مساوات قائم ہوجاتی۔ لا ۲/ ۷۵ = (۳۰ - لا) ۲ لا ۲ = ۷۵ (۳۰ - لا) ۲ یا لا ۲ = ۷۵ (۹۰۰ - ۶۰ لا + لا ۲) یا لا ۲ = ۶۷۵۰۰ - ۴۵۰۰ لا + ۷۵ لا ۲ یا ۷۴ لا ۲ + ۴۵۰۰ لا = ۶۷۵۰۰ تقسیم کیا۔ ۲ سے ۳۷ لا ۲ - ۲۲۵۰ لا = ۳۳۷۵۰ مربع کامل کیا ۳۷ لا ۲ - ۲۲۵۰ / ۱ + ۳۳۷۵۰ - ۲ (۴۲۵۰ / ۲) ۲ = ۳۳۷۵۰ + ۱ / ۳۷ (۲۲۵۰ / ۴) ۲ یا ۳۷ لا ۲ - ۲۲۵۰ لا + ۱ / ۲۲۵۰ (۱۱۲۵) ۲ = ۳۳۷۵۰ - ۱۱۲۵) ۲ یا ۳۷ لا ۲ - ۲۲۵۰ لا + ۱ / ۳۷ (۱۱۲۵) ۲ = ۳۳۷۵۰ + ۱ / ۳۷ (۱۱۲۵) ۲ اس کو ملاحظہ فرما لیا جائے یہاں تک کہ اگر صحیح ہو تو آگے عمل کیا جائے۔

الجواب: مکرم کرم فرما چھوٹے نواب صاحب سلمہ وعلیکم السلام ورحمتہ وبرکاتہ تکمیل مجذور کا یہ نیا قاعدہ ہے کہ سر مجذور کی طرف ایک کو نسبت کر کے مجذور نصف سر لاکسر کر کے شامل کریں مجذور کامل ہو جائے میرے نزدیک یہ صحیح نہ آئے گا مثلاً لا ۲ + ۶ لا = ۲۰ طور مذکور پر ۲ لا ۲ + ۱ / ۲ (۳) ۲ = ۲۰ + ۹ / ۲ = ۴۹ / ۲ ہر گز مجذور کامل نہیں یا ۳ لا ۲ - ۴ لا بطور مذکور ۳ لا ۲ - ۴ لا + ۱ / ۳ (۲) ۲ = ۴ + ۴ / ۳ = ۱۶ / ۳ ہر گز مربع نہیں۔

(2) This can be solved very easily by a second-degree equation; you have brought it to the point that 7721 + 2500x = 67500. Here, invert the negative and positive, and the equation will become 7721 - 2500x = 67500. Then, either operate like this: 21 - 2500 / 27x = -7 / 27500, add the square of 4/2250 to both sides, or keep the equation as it is, multiply by 296, and add $(7/500)^2$ to both sides; the objective will be achieved. (3) Yes, a more subtle point is that the name "second degree" should not appear, and it should be obtained only from a first-degree equation; tell him that it is very easy. Finis.

Problem 18: Inquiry by Qazi Fazl Ahmad Sahib Ludhianvi, 22 Safar al-Muzaffar 1339 AH. What is the verdict of the noble scholars in this matter: A Rafidhi (Shia) cited the noble verse, "Verily, We shall exact retribution from the criminals" (1) — (No doubt We are those who take revenge from the criminals. T.) — stating that its numerical value is 1202, and this is the same numerical value for Abu Bakr and Usman. The Answer: The foundation of the religion constructed by the Rafidhis (may Allah the Exalted curse them) is upon such groundless and baseless delusions. Firstly: The numerical value of every verse of punishment can be matched with the names of the righteous, and the names of disbelievers with verses of reward, as there is vast scope in names. Secondly: The Leader of the Believers, Ali (may Allah the Exalted honor his face), had three sons named Abu Bakr, Umar, and Usman. The Rafidhi turned the verse this way, some Nasibi will turn it that way, and both are accursed. It is in the Hadith: Upon the birth of Sayyiduna Imam Hasan (may Allah the Exalted be pleased with him), the Holy Prophet (may peace and blessings of Allah the Exalted be upon him) arrived and said: "Show me my son; what name have you given him?" (2) Mawla Ali (RA) replied: "Harb." He said: "No, rather he is Hasan." Then, upon the birth of Sayyiduna Imam Husayn (may Allah the Exalted be pleased with him), he arrived and asked: "Show me my son; what name have you given him?" Mawla Ali (RA) replied: "Harb." He said: "No, rather he is Husayn." Then, upon the birth of Imam Mohsin, he asked the same, and Mawla Ali (RA) gave the same reply. He said: "No, rather he is Mohsin." Then he said: "I have named my sons after the names of [the sons of] Dawood (David), peace and blessings be upon him."

1. The Noble Quran 32/22.
2. Asad al-Ghabah fi Ma'rifat al-Sahaba, Chapter on 'Ha' and 'Seen', biography of Hasan bin Ali, 1/125, Dar al-Fikr Beirut, 1/557.

(२) समीकरण की दूसरी डिग्री से इसे बहुत आसानी से हल किया जा सकता है; आप इसे यहाँ तक ले आए हैं कि ७७२१ + २५००x = ६७५००। यहाँ नकारात्मक और सकारात्मक को उलट दें, तो समीकरण ७७२१ - २५००x = ६७५०० हो जाएगा। फिर चाहे आप इस प्रकार कार्य करें: २१ - २५०० / २७x = -७ / २७५००, दोनों पक्षों में ४/२२५० का वर्ग जोड़ें, या समीकरण को यथावत रखते हुए २९६ से गुणा करें और दोनों पक्षों में (७/५००)² जोड़ें; वांछित परिणाम प्राप्त हो जाएगा। (३) हाँ, अधिक सूक्ष्म बात यह है कि "दूसरी डिग्री" का नाम न आए और यह केवल प्रथम डिग्री समीकरण से प्राप्त हो जाए; उन्हें बताएं कि यह बहुत आसान है। केवल।

मसला १८: मसला क़ाज़ी फ़ज़ल अहमद साहब लुधियानवी ४२ सफ़र अल-मुज़फ़्फ़र १३३१ हिजरी। विद्वानों का इसमें क्या इरशाद है: एक राफ़ज़ी ने पवित्र आयत "इन्ना मिनल मुजरिमीन मुंतक़िमून" (१) पेश की — (बेशक हम मुजरिमों से इंतकाम लेने वाले हैं। - त.) — और कहा कि इसका संख्यात्मक मान १२०२ है, और यही मान अबू बक्र और उस्मान का भी है। उत्तर: राफ़ज़ियों (अल्लाह उन पर लानत करे) के बनाए हुए मज़हब की बुनियाद ऐसे ही निराधार और हवाई भ्रमों पर है। पहला: अज़ाब की हर आयत के संख्यात्मक मान को नेक लोगों के नामों के साथ मिलाया जा सकता है, और इनाम की आयत के मान को काफ़िरों के नामों के साथ, क्योंकि नामों में बहुत विस्तार होता है। दूसरा: अमीर-उल-मोमिनीन अली (अल्लाह उनके चेहरे को सम्मानित करे) के तीन साहिबज़ादों के नाम अबू बक्र, उमर और उस्मान थे। राफ़ज़ी ने आयत को इधर मोड़ा, कोई नासिबी उसे उधर मोड़ देगा, और दोनों ही अभिशप्त हैं। हदीस में है: सैय्यदुना इमाम हसन (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) के जन्म पर हुज़ूर अकदस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पधारे और फ़रमाया: "मुझे मेरा बेटा दिखाओ; तुमने उसका क्या नाम रखा?" (२) मौला अली (रज़ि.) ने अर्ज़ किया: "हर्ब"। आपने फ़रमाया: "नहीं, बल्कि वह हसन है।" फिर जब सैय्यदुना इमाम हुसैन (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) का जन्म हुआ, तो हुज़ूर अकदस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पधार कर पूछा: "मुझे मेरा बेटा दिखाओ; तुमने उसका क्या नाम रखा?" मौला अली (रज़ि.) ने अर्ज़ किया: "हर्ब"। आपने फ़रमाया: "नहीं, बल्कि वह हुसैन है।" फिर जब इमाम मोहसिन का जन्म हुआ, तो वही पूछा और मौला अली ने वही अर्ज़ किया। आपने फ़रमाया:

"नहीं, बल्कि वह मोहसिन है।" फिर फ़रमाया: "मैंने अपने बेटों के नाम दाऊद (अलैहिस्सलाम) के बेटों के नाम पर रखे हैं।"

1. अल-क़ुरआन ३२/२२
2. असद अल-ग़ाबा फ़ी मारिफ़त अल-सहाबा, बाब अल-हा व अल-सीन, अनुवाद हसन बिन अली १/१२५, दार अल-फ़िक्र बेरूत १/५५७।

पृष्ठ ८१ / ७५०

(۲) مساوات درجہ دوم سے یہ بہت سہل حل ہو سکتا یہاں تک آپ لے آئے کہ ۷۷۲۱ + ۲۵۰۰ لا = ۶۷۵۰۰ یہاں نفی واثبات کا قلب کر لیجئے مساوات یہ ہو جائے گی ۷۷۲۱ - ۲۵۰۰ لا = ۶۷۵۰۰ پھر خواہ یوں عمل کیجئے ۲۱ - ۲۵۰۰ / ۲۷ لا = -۷ / ۲۷۵۰۰ طرفین میں ۴ / ۲۲۵۰ کا مجذور شامل کیجئے یا مساوات کو بحال رکھ کر ۲۹۶ میں ضرب دے کر طرفین میں (۷ / ۵۰۰)^2 شامل فرمایئے مدعا حاصل ہوگا۔ (۳) ہاں لطیف تر یہ ہے کہ درجہ دوم کا نام نہ آنے پائے صرف مساوات درجہ اول سے حاصل ہو اسے بتایئے وہ بہت آسان ہے فقط

مسئلہ ۱۸: مسئلہ قاضی فضل احمد صاحب لودھیانوی ۲۲ صفر مظفر ۱۳۳۹ھ علمائے کرام کا اس میں کیا ارشاد ہے ایک رافضی نے کہا آیت کریمہ "إِنَّا مِنَ الْمُجْرِمِينَ مُنتَقِمُونَ"۱۔ (بے شک ہم مجرموں سے انتقام لینے والے ہیں۔ ت) کے عدد ۱۲۰۲ ہیں اور یہ ہی عدد ابوبکر عثمان کے ہیں۔ الجواب: روافض لعنہم اللہ تعالیٰ کی بنائی مذہب ایسے ہی اوہام بے سروپا وپادر ہوا پر ہے۔ اولاً: ہر آیت عذاب کے عدد اسماء اخیار سے مطابق کر سکتے ہیں اور آیت ثواب کے اسماء کفار سے کہ اسماء میں وسعت وسیع ہے۔ ثانیاً: امیر المومنین علی کرم اللہ تعالیٰ وجہہ کے تین صاحبزادوں کے نام ابوبکر و عمر و عثمان ہیں۔ رافضی نے آیت کو ادھر پھیرا کوئی ناصبی ادھر پھیر دے گا اور دونوں ملعون ہیں۔ حدیث میں ہے سیدنا امام حسن رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی ولادت پر حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم تشریف لے گئے اور ارشاد فرمایا۔ ارونی ابنی ماسمیتموہ ۲ مجھے میرا بیٹا دکھاؤ تم نے اس کا کیا نام رکھا۔ مولی علی نے عرض کی حرب۔ فرمایا: نہیں۔ بلکہ وہ حسن ہے۔ پھر سیدنا امام حسین رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی ولادت پر تشریف لے گئے اور فرمایا مجھے میرا بیٹا دکھاؤ تم نے اس کا کیا نام رکھا؟ مولی علی نے عرض کی: حرب۔ فرمایا: نہیں بلکہ وہ حسین ہے

پھر امام محسن کی ولادت پر وہی فرمایا مولی علی نے وہی عرض کی۔ فرمایا: نہیں بلکہ وہ محسن ہے پھر فرمایا میں نے اپنے بیٹوں کے نام داؤد علیہ الصلوٰۃ والسلام کے نام پر رکھے۔

۱ القرآن الکریم ۳۲ / ۲۲ ۲ اسد الغابة في معرفة الصحابة باب الحاء والسین ترجمہ حسن بن علی ۱ / ۱۲۵ دار الفکر بیروت ۱ / ۵۵۷

Fatawa Ridawiyya Volume 29

...[named] after his sons. Shabar, Shubair, and Mubashir[1] are equivalent in weight and meaning to Hasan, Husain, and Muhsin. Through this, Mawla Ali (may Allah Almighty ennoble his countenance) was alerted that children should be named after virtuous people. Therefore, after them, he named his sons Abu Bakr, Umar, Usman, Abbas, etc. Thirdly: The Rafidi gave incorrect numerical values. The holy name of Amir al-Mu'minin Usman Ghani (may Allah be pleased with him) is written without an 'Alif', so the numerical value is twelve hundred and one, not two. Yes, and 'Rafidi' (1) has the numerical value of twelve hundred and two; they are the followers of Ibn Saba, the Rafida. (2) Yes, and 'Rafidi'! Twelve hundred and two are their numbers: Iblis, Yazid ibn Ziyad, Shaytan al-Taq, Kulayni, Ibn Babawayh, Qummi, Tusi, Hilli. (3) Yes, and 'Rafidi'! Allah Almighty says: "Indeed, those who have divided their religion and become sects, you [O Muhammad] are not [associated] with them in anything."[2] - Indeed, those who split their religion into pieces and became sects (Shi'as), O Prophet! You have no relation with them. This noble verse has a numerical value of 2828, and these are the numerical values of the Rafidah, Ithna Ashariyyah, Shaytaniyyah, and Isma'iliyyah. And if, according to their way, an 'Alif' is desired in Isma'iliyyah, then these are the numbers of Rawafid, Ithna Ashariyyah, Nusayriyyah, and Isma'iliyyah. (4) Yes, and 'Rafidi'! Allah Almighty says: "For them is the curse and for them is the ill abode."[3] - For them is the curse and for them is an evil home. Its numerical value is six hundred and forty-four, and these are the numerical values of Shaytan al-Taq, Tusi, and Hilli. (5) No, and 'Rafidi'! Rather, Allah Almighty says: "Those are the truthful and the martyrs with their Lord. For them is their reward..."[4] - They are the truthful and martyrs in the sight of their Lord; for them is their reward. Its numerical value is fourteen hundred and forty-five, and these are the numerical values of Abu Bakr, Umar, Usman, Ali, and Sa'ad.

[1] Usd al-Ghaba fi Ma'rifat al-Sahaba, Chapter of Ha and Seen, Biography of Hasan bin Ali, 1/265, Dar al-Fikr Beirut, 1/557 [2] Al-Quran al-Karim 6/159 [3] Al-Quran al-Karim 13/25 [4] Al-Quran al-Karim 57/19

फ़तावा रज़विय्या जिल्द 29

...के बेटों पर रखे। शबर, शब्बीर, मुबश्शिर[1] हसन, हुसैन, मोहसिन के हम-वज़न और हम-मानी हैं। इससे मौला अली (करम अल्लाह तआला वजहुह अल-करीम) को तंबीह हुई कि औलाद के नाम अख़ियार (नेक लोगों) के नामों पर रखने चाहिए, लिहाज़ा उनके बाद अपने साहबज़ादों के नाम अबू बक्र, उमर, उस्मान, अब्बास वग़ैरह रखे। सालिसन (तीसरे): राफ़ज़ी ने अदद (संख्या) ग़लत बताए। अमीर अल-मोमिनीन उस्मान ग़नी (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) के पाक नाम में 'अलिफ़' नहीं लिखा जाता तो अदद बारह सौ एक हैं, न कि दो। हाँ और राफ़ज़ी (1) बारह सौ दो अदद का है, ये इब्न सबा राफ़ज़ा के हैं। (2) हाँ और राफ़ज़ी! बारह सौ दो अदद उनके हैं: इब्लीस, यज़ीद इब्न ज़ियाद, शैतान अत-ताक़, कुलैनी, इब्न बाबुवैह, क़ुम्मी, तूसी, हल्ली। (3) हाँ और राफ़ज़ी! अल्लाह अज़्ज़वजल फ़रमाता है: "इनल्लज़ीना फ़र्रकू दीनहुम व कानू शियअन लस्त मिन्हुम फ़ी शयइन"[2] - बेशक जिन्होंने अपना दीन टुकड़े-टुकड़े कर दिया और शिया (गिरोह) हो गए, ऐ नबी! तुम्हें उनसे कुछ ताल्लुक़ नहीं। इस आयत-ए-करीमा के अदद 2828 हैं और यही अददी हैं रफ़ाज़, इसना अशरिय्या, शैतानिय्या, इस्माइलिय्या के। और अगर अपनी तरह से इस्माइलिय्या में अलिफ़ चाहें तो यही अदद हैं रवाफ़िज़, इसना अशरिय्या व नुसैरिया व इस्माइलिय्या के। (4) हाँ और राफ़ज़ी! अल्लाह तआला फ़रमाता है: "लहुमुल ला'नतु व लहुम सूउद दार"[3] - उनके लिए है लानत और उनके लिए है बुरा घर। इसके अदद छह सौ चौवालिस हैं और यही अदद हैं शैतान अत-ताक़, तूसी, हल्ली के। (5) नहीं और राफ़ज़ी! बल्कि अल्लाह अज़्ज़वजल फ़रमाता है: "उलाइका हुमुस सिद्दीक़ूना वश शुहदाउ इन्दा रब्बिहिम लहुम अज्रुरुम"[4] - वही अपने रब के यहाँ सिद्दीक़ व शहीद हैं, उनके लिए उनका सवाब है। इसके अदद चौदह सौ पैंतालीस हैं और यही अदद अबू बक्र, उमर, उस्मान, अली, साद के हैं।

[1] उस्द अल-ग़ाबा फ़ी मारिफ़त अस-सहाबा, बाब अल-हा व अल-सीन, तर्जुमा हसन बिन अली, 1/265, दार अल-फ़िक्र बेरुत, 1/557 [2] अल-क़ुरआन अल-करीम 6/159 [3] अल-क़ुरआन अल-करीम 13/25 [4] अल-क़ुरआन अल-करीम 57/19

पेज 82 ऑफ़ 750

کے بیٹوں پر رکھے۔ شبر شبیر مبشر ۱ حسن حسین محسن ان سے ہم وزن و ہم معنی ہیں اس سے مولیٰ علی کرم اللہ تعالیٰ وجہہ الکریم کو تنبیہ ہوئی کہ اولاد کے نام اخیار کے ناموں پر رکھنے چاہئیں لہٰذا ان کے بعد اپنے صاحبزادوں کے نام ابو بکر عمر عثمان عباس وغیرہ رکھے۔ ثالثاً: رافضی نے عدد غلط بتائے امیر المومنین عثمان غنی رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے نام پاک میں الف نہیں لکھا جاتا تو عدد بارہ سو ایک ہیں نہ کہ دو۔ ہاں اور رافضی (۱) بارہ سو دو عدد کا ہے ہیں ابن سبینا رافضہ کے۔ (۲) ہاں اور رافضی ! بارہ سو دو عدد ان کے ہیں ابلیس یزید ابن زیاد شیطان الطاق کلینی ابن بابویہ قمی طوسی حلی۔ (۳) ہاں اور رافضی ! اللہ عزوجل فرماتا ہے: "اِنَّ الَّذِیْنَ فَرَّقُوْا دِیْنَهُمْ وَ كَانُوْا شِیَعًا لَّسْتَ مِنْهُمْ فِیْ شَیْءٍؕ" ۲ بے شک جنہوں نے اپنا دین ٹکڑے ٹکڑے کر دیا اور شیعہ ہو گئے اے نبی ! تمہیں ان سے کچھ علاقہ نہیں۔ اس آیہ کریمہ کے عدد ۲۸۲۸ ہیں اور یہی عددی ہیں رفاض اثناعشریہ شیطانیہ اسمعیلیہ کے اور اگر اپنی طرح سے اسمعیلیہ میں الف چاہے تو یہ ہی عدد ہیں روافض اثناعشریہ و نصیر یہ و اسماعیلیہ کے۔ (۴) ہاں اور رافضی ! اللہ تعالیٰ فرماتا ہے: "لَهُمُ اللَّعْنَةُ وَ لَهُمْ سُوْٓءُ الدَّارِ" ۳ ان کے لیے ہے لعنت اور ان کے لیے ہے برا گھر۔ اس کے عدد چھ سو چوالیس ہیں اور یہی عدد ہیں شیطان الطاق طوسی حلی کے۔ (۵) نہیں اور رافضی ! بلکہ اللہ عزوجل فرماتا ہے: "اُولٰٓىٕكَ هُمُ الصِّدِّیْقُوْنَ ۫ وَ الشُّهَدَآءُ عِنْدَ رَبِّهِمْؕ لَهُمْ اَجْرُهُمْ" ۴ وہی اپنے رب کے یہاں صدیق و شہید ہیں ان کے لیے ان کا ثواب ہے۔ اس کے عدد چودہ سو پینتالیس ہیں اور یہی عدد ابوبکر عمر عثمان علی سعد کے۔

۱ اسد الغابة فی معرفة الصحابة باب الحاء والسین ترجمہ حسن بن علی ۱ / ۲۶۵ دار الفکر بیروت ۱ / ۵۵۷ ۲ القرآن الکریم ۶ / ۱۵۹ ۳ القرآن الکریم ۱۳ / ۲۵ ۴ القرآن الکریم ۵۷ / ۱۹

Volume 29 Fatawa Rizvia

(6) No, O Rafidhi! Rather, Allah the Almighty says: "Those are the ones who are the truthful and the witnesses before their Lord. For them is their reward and their light." 1- They are the truthful and martyrs in the presence of their Lord; for them is their reward and their light. Its numerical value is 752, and these are the same numerical values as [the names] Abu Bakr, Umar, Uthman, Ali, Talha, and Zubair.

(7) No, O Rafidhi! Rather, Allah the Almighty says: "And those who have believed in Allah and His messengers - those are the truthful and the martyrs, with their Lord. For them is their reward and their light." 2- Those who believed in Allah and His messengers, they are the truthful and martyrs near their Lord; for them is their reward and their light. The numerical value of this noble verse is 3016, and these are the same numerical values as [the names] Siddiq, Faruq, Dhun-Nurayn, Ali, Talha, Zubair, Sa'd, Sa'id, Abu Ubaidah, and Abdur Rahman bin Awf. Alhamdulillah, the entire sentence of praise in the noble verse is complete, and all the blessed names of the Ashara Mubashara (the ten promised Paradise), may Allah be pleased with them, have also been included. In this, there is no affectation or artifice at all. For a few days, my eyes have been aching; I have matched all these verses of punishment and names of the wicked, and verses of praise and names of the righteous, just in my mind, which only took a few minutes. If I had written them down and calculated the totals, a spring of correspondences would have been seen, but by Allah's help, even this much is sufficient. All praise is for Allah, and Allah the Almighty knows best.

1 The Holy Quran 57:19 2 The Holy Quran 57:19

Page 83 of 750

खंड 29 फ़तावा रिज़विया

(6) नहीं ओ राफ़िज़ी! बल्कि मौला तआला फ़रमाता है: "वही अपने रब के हुज़ूर सिद्दीक़ और शहीद हैं; उनके लिए उनका सवाब और उनका नूर है।" 1- वही अपने रब के हुज़ूर सिद्दीक़ और शहीद हैं; उनके लिए उनका सवाब और उनका नूर है। इसका संख्यात्मक मान 752 है, और यही संख्या अबू बक्र, उमर, उस्मान, अली, तलहा और ज़ुबैर के नामों का भी है।

(7) नहीं ओ राफ़िज़ी! बल्कि अल्लाह अज़्ज़वजल फ़रमाता है: "और जो लोग अल्लाह और उसके रसूलो पर ईमान लाए, वही अपने रब के नज़दीक सिद्दीक़ और शहीद हैं; उनके लिए उनका सवाब और उनका नूर है।" 2- जो लोग अल्लाह और उसके रसूलों पर ईमान लाए, वे ही अपने रब के निकट सिद्दीक़ और शहीद हैं; उनके लिए उनका सवाब और उनका नूर है। इस आयते करीमा का संख्यात्मक मान 3016 है, और यही संख्या सिद्दीक़, फ़ारूक़, ज़ुन-नूरैन, अली, तलहा, ज़ुबैर, साद, सईद, अबू उबैदा और अब्दुर रहमान बिन औफ़ के नामों का भी है। अल्हम्दुलिल्लाह, आयते करीमा का प्रशंसा वाला पूरा जुमला मुकम्मल हो गया और अशरा मुबशरा (जन्नत की बशारत पाए हुए दस सहाबा) रज़ियल्लाहु अन्हुम के सभी पाक नाम भी आ गए, जिसमें ज़रा भी बनावट या बनावटीपन का दखल नहीं है। कुछ दिनों से आँखों में तकलीफ़ है; मैंने अज़ाब की इन तमाम आयतों और शरीरों के नामों, तथा मदह की आयतों और नेक लोगों के नामों का मिलान केवल ख़याल (मन) में किया है, जिसमें केवल कुछ मिनट लगे। अगर लिखकर संख्याएँ जोड़ी जातीं, तो तालमेल की बहार नज़र आती, लेकिन अल्लाह की मदद से इतना भी काफ़ी है। तमाम प्रशंसा अल्लाह के लिए है और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।

1 अल-क़ुरआन 57/19 2 अल-क़ुरआन 57/19

पृष्ठ 83/750

جلد ۲۹ فتاویٰ رضویہ

(۶) نہیں او رافضی! بلکہ مولیٰ تعالیٰ فرماتا ہے: "اُولٰٓئِكَ هُمُ الصِّدِّيْقُوْنَ وَالشُّهَدَآءُ عِنْدَ رَبِّهِمْ لَهُمْ اَجْرُهُمْ وَنُوْرُهُمْ" 1- وہی اپنے رب کے حضور صدیق و شہید ہیں ان کے لیے ہے ان کا ثواب اور ان کا نور۔ اس کے عدد ۷۵۲ ہیں اور یہی عدد ہیں ابوبکر و عمر و عثمان و علی و طلحہ و زبیر کے۔

(۷) نہیں او رافضی! بلکہ اللہ عزوجل فرماتا ہے: "وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖٓ اُولٰٓئِكَ هُمُ الصِّدِّيْقُوْنَ ۖ وَالشُّهَدَآءُ عِنْدَ رَبِّهِمْ لَهُمْ اَجْرُهُمْ وَنُوْرُهُمْ" 2- جو لوگ ایمان لائے اللہ اور اس کے رسولوں پر وہی اپنے رب کے نزدیک صدیق و شہید ہیں ان کے لیے ہے ان کا ثواب اور ان کا نور۔ آیۂ کریمہ کے عدد ۳۰۱۶ ہیں اور یہی عدد ہیں صدیق فاروق ذوالنورین علی طلحہ زبیر سعد سعید ابوعبیدہ عبدالرحمن بن عوف کے۔ الحمد للہ آیہ کریمہ کا تمام و کمال جملہ مدح بھی پورا ہو گیا اور حضرات عشرہ مبشرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہم کے اسمائے طیبہ بھی سب آگئے جس میں اصلاً تکلف و تصنع کو دخل نہیں کچھ روزوں سے آنکھ دکھتی ہے یہ تمام آیات عذاب واسمائے اشرار و آیت مدح و اسمائے اخیار کے عدد محض خیال میں مطابق کیے جن میں صرف چند منٹ صرف ہوئے اگر لکھ کر اعداد جوڑے جاتے تو مطابقتوں کی بہار نظر آتی مگر بعونہ تعالیٰ اس قدر بھی کافی ہے وللہ الحمد واللہ تعالیٰ اعلم۔

۱ القرآن الکریم ۵۷/۱۹ ۲ القرآن الکریم ۵۷/۱۹

Fatawa Razawiyya, Volume 29

Rights of Servants (Huquq-ul-Ibad)

Problem 19: From the city of Bareilly, Lodi Tola neighborhood, asked by Nazir Ahmed, Old City, 23 Shaban 1334 AH. If someone commits an act of immorality (adultery/ fornication) with someone's woman and wants to seek forgiveness from her husband, will it be forgiven, or will repentance also be mandatory for him? If sins are forgiven just by repenting, then my submission at this time is that the rights of servants are not forgiven unless forgiveness is obtained from the right-holder. Is this not a right of a servant? Please write in detail. Explain and be rewarded. (State it, you will be rewarded - Translation)

The Answer: Suppose there are ten people like the woman's husband, or father, brother etc., the guardians who would feel shame from this matter. If, God forbid, adultery is committed with her without her consent, then there is entrapment in twelve rights: one is the right of the Lord Almighty (Mawla Azzawajal) for disobeying Him, the second is of that woman whose chastity was ruined, the third is of her husband, and similarly for the remaining ten right-holders. Unless all of them forgive, it will not be forgiven. This is the case if they come to know about it. And if it is with the woman's consent, then both the woman and the person are trapped in eleven severe rights: one right of the Lord Almighty and ten of those ten people. In this case, there will be no right for the woman because she consented. And a woman does not leave the marriage bond due to adultery, except in the case where this act occurs with the husband's father or son...

Page 84 of 750

फ़तावा रज़विया, जिल्द २९

हुकूक-उल-इबाद (बंदों के अधिकार)

मसला १९: शहर बरेली, मोहल्ला लोदी टोला, प्रेषक नज़ीर अहमद, पुराना शहर, २३ शाबान १३३४ हिजरी। यदि कोई व्यक्ति किसी की महिला के साथ कुकर्म (व्यभिचार) करता है और उस महिला के पति से माफ़ी मांगना चाहता है, तो क्या वह माफ़ हो जाएगा, या उस पर तौबा (पछतावा) भी अनिवार्य होगी? यदि केवल तौबा करने से पाप माफ़ हो जाता है, तो इस समय मेरा निवेदन यह है कि बंदों के अधिकार (हुकूक-उल-इबाद) तब तक माफ़ नहीं होते जब तक कि हकदार से माफ़ी न ले ली जाए। क्या यह बंदों का अधिकार नहीं है? विस्तार से लिखें। बयान फरमाएं, आपको पुण्य मिलेगा।

जवाब: मान लीजिए कि उस महिला के पति, पिता, भाई आदि दस लोग संरक्षक हैं जिन्हें इस बात से शर्मिंदगी होगी। यदि, ईश्वर न करे, उसके साथ उसकी सहमति के बिना व्यभिचार किया जाता है, तो बारह अधिकारों का उल्लंघन होता है: एक अल्लाह सर्वशक्तिमान का अधिकार कि उसकी अवज्ञा की गई, दूसरा उस महिला का जिसकी पवित्रता भंग की गई, तीसरा उसके पति का, और इसी तरह शेष दस हकदारों का। जब तक ये सब माफ़ नहीं करेंगे, तब तक माफ़ी नहीं होगी। यह उस स्थिति में है जब उन्हें इसकी जानकारी हो जाए। और यदि यह महिला की सहमति से है, तो महिला और वह व्यक्ति दोनों ग्यारह गंभीर अधिकारों के उल्लंघन में फंस गए हैं: एक अल्लाह सर्वशक्तिमान का अधिकार और दस उन दस लोगों के अधिकार। इस स्थिति में महिला का कोई अधिकार नहीं होगा क्योंकि वह सहमत थी। और व्यभिचार के कारण महिला निकाह (विवाह) से बाहर नहीं होती, सिवाय उस स्थिति के जब यह मामला पति के पिता या पुत्र के साथ हुआ हो...

पृष्ठ ८४/७५०

فتاویٰ رضویہ، جلد ۲۹

حقوق العباد

مسئلہ ۱۹: از شہر بریلی محلہ لودی ٹولہ مسئولہ نظیر احمد شہر کہنہ ۲۳ شعبان ۱۳۳۴ھ کوئی شخص اگر کسی کی عورت کے ساتھ بد فعلی کرے اور اس عورت کے خاوند سے معافی چاہے تو کیا معاف ہوجائے گا یا توبہ بھی اس پر لازم ہوگی؟ اگر فقط توبہ کرنے سے گناہ معاف ہو جائے تو اس وقت میری عرض یہ ہے کہ حق العباد تو معاف نہیں ہوتا تاوقتیکہ صاحبِ حق سے معافی نہ لے کیا یہ حق العباد نہیں ہے؟ مفصلاً تحریر فرمائیں۔ بینوا توجروا (بیان فرمائیے اجر دیئے جاؤ گے۔ت)

الجواب: عورت جس کا شوہر ہو یا باپ بھائی وغیرہ ہم اولیاء جن کو اس امر سے عار پہنچے فرض کیجئے وہ دس شخص ہیں تو اس کے ساتھ معاذ اللہ بدکاری اگر بے اس کی رضا کے ہے تو بارہ حقوق میں گرفتاری ہے ایک حق مولیٰ عزوجل کا کہ اس کی نافرمانی کی دوسرا اس عورت کا کہ اس کی عصمت خراب کی تیسرا اس کے شوہر کا یوں ہی باقی دس حقداروں کا جب تک یہ سب معاف نہ کریں معاف نہ ہوگا۔ بحالیکہ ان کو اطلاع پہنچ جائے اور اگر برضائے زن ہے تو عورت اور یہ دونوں گیارہ سخت حقوق میں گرفتار ہوئے ایک حق مولیٰ عزوجل کا دس ان دسوں کے اور اس صورت میں عورت کا حق نہ ہوگا کہ وہ راضی ہے اور عورت زنا کے باعث نکاح سے خارج نہیں ہوتی مگر اس حالت میں کہ شوہر کے باپ یا بیٹے سے یہ امر واقع ہو تو

صفحہ ۸۴ از ۷۵۰

Volume 29 Fatawa Razawiyya

The marriage will become invalid (fasid). She will become permanently forbidden for the husband such that she will never become lawful. It will be obligatory for the husband to leave her, but without his leaving her, she will not be released from the marriage even then, and she will not be able to marry elsewhere. And Allah Almighty knows best.

Page 85 of 750

जिल्द 29 फ़तावा रज़विया

निकाह फ़ासिद हो जाएगा। शौहर पर हमेशा के लिए हराम हो जाएगी कि कभी हलाल नहीं होती। शौहर पर फ़र्ज़ होगा कि उसे छोड़ दे मगर बिना उसके छोड़े निकाह से निकलेगी अब भी नहीं, दूसरी जगह निकाह न कर सकेगी। वल्लाह तआला आलम (और अल्लाह तआला बेहतर जानता है)।

पेज 85 ऑफ़ 750

نکاح فاسد ہو جائے گا۔ شوہر پر ہمیشہ کے لیے حرام ہو جائے گی کہ کبھی حلال نہیں ہوتی۔ شوہر پر فرض ہوگا کہ اسے چھوڑ دے مگر بے اس کے چھوڑے نکاح سے نکلے گی اب بھی نہیں دوسری جگہ نکاح نہ کر سکے گی واللہ تعالیٰ اعلم۔

Fatawa Razawiyyah Volume 29

Lexicon

Problem 20: From Kanpur, old Nach Ghar locality, sent by Maulana Maulvi Muhammad Asif Sahib Qadri Razawi Barkati, 14 Ramadan-ul-Mubarak 1336 AH. O beloved of the beloved of Allah, my soul be sacrificed for you, the Qiblah of the Qiblah-worshippers and the Kaaba of the masters of certainty, may your high shadow be extended. After humble salutations and the desire for the honor of attending your threshold, please inform about the correctness or incorrectness of the words "Shakeel" and "Aqeel" in the sense of wise. The late Mr. Jalal Lakhnavi had sent the following writing; both the aforementioned words are incorrect according to him. "Shakeel" and "Aqeel" are found in the following verses of the late Zauq. Noor-e-ma'ni hai bahar shakl nateeja us ka / Allah Allah re zahe shakl-e-shahinshah-e-shakeel Danish amoz ho gar tarbiyat-e-aam teri / Beed-e-majnoon ko banade abhi insaan-e-aqeel (1) In "Ghayas" it is stated:

[Persian Excerpt]: Aqeel with fatha on the first letter and kasra on qaf: a great and very wise man, a camel's knee-tie, and the name of the son of Abu Talib who was wiser than the Quraysh (2).

---

1 2 Ghayas-ul-Lughat, section 'Ain' (without diacritics) with 'Qaf', Naval Kishore Lucknow, p. 466.

Page 86 of 750

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

शब्दकोश (लुग़त)

मस्अला 20: कानपुर, पुराने नाच घर मोहल्ले से प्रेषित, मौलाना मौलवी मोहम्मद आसिफ़ साहब क़ादरी रज़वी बरकाती द्वारा, 14 रमज़ान-उल-मुबारक 1336 हिजरी। हे अल्लाह के प्रिय के प्रिय, मेरी आत्मा आप पर कुर्बान हो, क़िबला पूजने वालों के क़िबला और यक़ीन वालों के काबा, आपकी उच्च छाया बनी रहे। विनम्र सलाम और आपके चौखट की उपस्थिति की इच्छा के बाद, कृपया शब्द "शकील" और "अक़ील" के'बुद्धिमान' अर्थ में सही या ग़लत होने के बारे में सूचित करें। स्वर्गीय जनाब जलाल लखनवी ने निम्नलिखित लेख भेजा था; उनके अनुसार उपर्युक्त दोनों शब्द ग़लत हैं। "शकील" और "अक़ील" मरहूम ज़ौक़ के निम्नलिखित शेरों में पाए जाते हैं। नूर-ए-मअनी है बहर शक्ल नतीजा उस का / अल्लाह अल्लाह रे ज़हे शक्ल-ए-शहनशाह-ए-शकील दानिश आमोज़ हो गर तरबियत-ए-आम तेरी / बीद-ए-मजनूँ को बनादे अभी इंसान-ए-अक़ील (1) "ग़ियास" में है:

[फ़ारसी उद्धरण]: अक़ील (पहले अक्षर पर फ़त्हा और क़ाफ़ पर कसरा): एक महान और बहुत बुद्धिमान व्यक्ति, ऊंट का ज़ानू-बंद (घुटना बाँधने वाली रस्सी), और अबू तालिब के पुत्र का नाम जो क़ुरैश की तुलना में अधिक बुद्धिमान थे (2)।

---

1 2 ग़ियास-उल-लुग़ात, फ़स्ल ऐन मोह्मला मा क़ाफ़, नवल किशोर लखनऊ, पृ. 466।

पृष्ठ 86 का 750

لغت

مسئلہ ۲۰: از کانپور محلہ ناچ گھر قدیم مرسلہ مولانا مولوی محمد آصف صاحب قادری رضوی برکاتی ۱۴ رمضان المبارک ۱۳۳۶ھ یا حبیب محبوب اللہ روحی فداک قبلہ قبلہ پرستان و کعبہ ارباب ایقان مد ظلہم العالی بعد تسلیمات فدویانہ و تمنائے حضور شرف آستانہ الفاظ شکیل و عقیل بمعنی دانا کی صحت و تغلیط سے مطلع فرمائیں۔ جناب جلال لکھنوی آنجہانی نے حسب ذیل تحریر بھیجی تھی ہر دو الفاظ مذکورہ ان کے نزدیک غلط ہیں۔ شکیل اور عقیل ذوق مرحوم کے مندرجہ ذیل اشعار میں پائے جاتے ہیں۔ نور معنی ہے بہر شکل نتیجہ اُس کا اللہ اللہ رے زہے شکل شہنشاہِ شکیل دانش آموز ہو گر تربیتِ عام تری بید مجنوں کو بنادے ابھی انسانِ عقیل ۱ غیاث میں ہے۔

عقیل بفتح اول و کسر قاف مردِ بزرگ و بسیار دانا و زانو بندِ شتر و نامِ پسر ابی طالب کہ داناتر بود بہ نسبت قریش ۲۔

عقیل (ع پر زبر اور ق کے نیچے زیر) بزرگ اور بہت عقل والا آدمی اور اونٹ کا زانو بند۔ اور ابوطالب کے بیٹے کا نام کہ وہ قریش کی نسبت زیادہ عقلمند تھا۔ (ت)

---

۱ ۲ غیاث اللغات فصل عین مہملہ مع قاف نولکشور لکھنؤ ص ۴۶۶

Fatawa Razawiyya Volume 29

In response to this writing, Mr. Jalal wrote: The way Zauq has used 'Shakil' and 'Aqil' to mean 'wise' (dana), it might be credible for you, but not for me, because 'Shakil' and 'Aqil' in the sense of 'wise' do not appear in any reliable dictionary like 'Surah' or 'Qamus', nor are they found in the verses of Persian masters, so how can I accept it? And even though the author of 'Ghiyath' might write 'Aqil' to mean 'wise', none of the dictionary sources cited by 'Ghiyath' have written so. Understand this, the ignorant Jalal.

The Answer:

There are hundreds of Arabic words that are used in Urdu with meanings different from their Arabic ones; searching for these meanings in an Arabic dictionary like 'Qamus' is foolishness. Rather, one should inquire from the native speakers of Urdu. The late Zauq was one of the accepted masters of this language. The objector's pen name is 'Jalal'; in which dictionary is the word 'Takhallus' (pen name) found in this sense? In Urdu, when referring to anger, people say "Jalal aa gaya" (Majesty/Anger came). When is it used in this sense in Arabic? In fact, even the word 'Ghussa' (anger) in Arabic means a choke in the throat, not 'Khashm' (resentment/anger). If a list of such words were to be written, it would form an entire treatise. Among them are 'Shakil' and 'Aqil'. 'Shakil' means handsome and 'Aqil' means possessor of intellect. The objector's claim that Zauq used 'Shakil' and 'Aqil' to mean 'wise' is pure ignorance. Where in Zauq's poetry is 'Shakil' understood as 'wise'? Moreover, even between 'Aqil' and 'wise' (Dana), there is a difference according to the wise. Intellect and knowledge are not one and the same. "Ilm-u-hu akbaru min aqli-hi" (His knowledge is greater than his intellect - [Note]) is famous. As far as I have heard, the objector's sect was Shia; in such a case, 'Janab' (Sir) and 'Farmaya' (said - respectful) should not be used. Peace be upon the generous one, and Allah Almighty knows best.

I.T. Majlis of Dawat-e-Islami Page 87 of 750

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

इस लेखन के जवाब में जनाब जलाल ने यह लिखा था: ज़ौक़ ने जो 'शकील' और 'अक़ील' को 'दाना' (बुद्धिमान) के अर्थ में प्रयोग किया है, वह आपके नज़दीक विश्वसनीय हो सकता है, लेकिन मेरे नज़दीक नहीं, क्योंकि 'शकील' और 'अक़ील' का 'दाना' के अर्थ में किसी विश्वसनीय शब्दकोश जैसे 'सुराह' या 'क़ामूस' में कोई ज़िक्र नहीं मिलता, न ही फ़ारसी के उस्तादों के शेरों में है, फिर मैं कैसे मान लूँ। और 'ग़ियास' के लेखक भी 'अक़ील' को 'दाना' के अर्थ में लिखते होंगे मगर 'ग़ियास' के जो शब्दकोश स्रोत हैं, उनमें से भी किसी ने ऐसा नहीं लिखा। इसे समझें, नासमझ जलाल।

जवाब:

सैकड़ों अरबी शब्द ऐसे हैं जो उर्दू में अरबी से अलग अर्थों में प्रयुक्त होते हैं। इन अर्थों को 'क़ामूस' जैसे अरबी शब्दकोश में खोजना मूर्खता है। बल्कि उर्दू के जानकारों से पूछना चाहिए। मरहूम ज़ौक़ इस ज़बान के माने हुए उस्ताद थे। एतराज़ करने वाले साहब का तख़ल्लुस 'जलाल' है; 'तख़ल्लुस' शब्द इस अर्थ में किस शब्दकोश में है? उर्दू में जब गुस्से को कहते हैं "जलाल आ गया"। अरबी में इस अर्थ में कब है? बल्कि अरबी में 'ग़ुस्सा' शब्द का अर्थ गले का अटकना है, न कि 'ख़श्म' (क्रोध)। अगर इस तरह के शब्दों की सूची बनाई जाए, तो एक पूरा रिसाला (पुस्तिका) बन जाए। उन्हीं में 'शकील' और 'अक़ील' भी हैं। 'शकील' का अर्थ सुंदर और 'अक़ील' का अर्थ बुद्धिमान है। एतराज़ करने वाले का यह कहना कि ज़ौक़ ने 'शकील' और 'अक़ील' को 'दाना' के अर्थ में बाँधा है, सरासर नादानी है। ज़ौक़ के शेर में 'शकील' को 'दाना' के अर्थ में कहाँ से समझा गया? बल्कि 'अक़ील' और 'दाना' में भी बुद्धिमानों के नज़दीक अंतर है। अक़्ल और इल्म एक ही चीज़ नहीं हैं। "इल्मुहु अक्बरु मिन अक़्लिही" (उसका ज्ञान उसकी बुद्धि से बड़ा है - त.) प्रसिद्ध है। जहाँ तक मैंने सुना है, एतराज़ करने वाले का मज़हब शिया था, ऐसी स्थिति में उनके लिए 'जनाब' और 'फ़रमाया' का प्रयोग नहीं होना चाहिए। वस्सलाम मअल करीम, वल्लाहु तआला आलम।

आई.टी. मजलिस-ए-दावत-ए-इस्लामी पृष्ठ 87 / 750

اس تحریر کا جواب جناب جلال نے یہ تحریر فرمایا تھا: ذوق نے جو شکیل و عقیل بمعنی دانا باندھا ہے آپ کے نزدیک وہ پایہ اعتبار میں ہوگا میرے نزدیک نہیں اس لیے کہ شکیل و عقیل بمعنی دانا کسی لغت معتبر میں مثل صراح و قاموس کے نہیں نکلتا نہ اساتذہ پارس کے اشعار میں ہے پھر کیونکر میں مان لوں۔ اور صاحب غیاث بھی عقیل کو بمعنی دانا لکھا کریں مگر صاحب غیاث کا ماخذ جو لغت ہیں ان میں سے بھی کسی نے لکھا ہے۔ فافہم بیچدان جلال۔

الجواب:

صدہا الفاظ عربی ہیں کہ اردو میں غیر معنی عربی پر مستعمل ہیں ان معانی کو قاموس میں تلاش کرنا حماقت ہے۔ بلکہ اردو کے اہل زبان سے دریافت کرنا چاہیے ذوق مرحوم اس زبان کے مسلم اساتذہ سے تھے۔ معترض صاحب کا تخلص جلال ہے لفظ تخلص اس معنی پر کون سے قاموس میں ہے۔ اردو میں جب غصہ کو کہتے ہیں جلال آگیا۔ عربی میں اس معنی پر کب ہے بلکہ غصہ بھی عربی میں گلے کا چھو ہے نہ کہ خشم۔ اس قسم کے الفاظ کی فہرست لکھی جائے تو ایک رسالہ ہو۔ انہیں میں شکیل و عقیل بھی ہیں شکیل بمعنی حسین اور عقیل بمعنی صاحب عقل معترض کا کہنا کہ ذوق نے شکیل و عقیل بمعنی دانا باندھا محض نادانی ہے شکیل بمعنی دانا شعر ذوق میں کہاں سے سمجھا بلکہ عقیل و دانا میں بھی عقیل دانا کے نزدیک فرق ہے عقل و علم شے واحد نہیں علم اکبر من عقلہ (اس کا علم اس کی عقل سے بڑا ہے۔ ت) مشہور ہے جہاں تک میرے کان کا سنا ہوا ہے معترض کا مذہب شیعی تھا ایسی حالت میں جناب اور فرمایا نہ چاہیے والسلام مع الکریم واللہ تعالٰی اعلم۔

Vol. 29 | Fatawa Razawiya

Dream

Issue 21: From Kanpur, Mohalla Moolganj, sent by Din Sahib, Imam of Masjid Shukrullah Sahib, Merchant, 13 Rabi-ul-Akhar Sharif. What is a dream?

The Answer: Dreams are of four types: 1. Hadith-un-Nafs (Internal thoughts): These are the thoughts that dominate the heart during the day. When one sleeps and the senses are suspended, the world of similitudes (Alam-e-Mithal) is revealed according to one's capacity, and the forms of these imaginations appear. This type of dream is useless and meaningless. This also includes dreams seen due to the dominance of some bodily humor, showing related things; for example, seeing fire due to yellow bile or water due to phlegm.

1. The second type of dream is from Satan (Alqa-e-Shaitan), and it is often terrifying. Satan frightens the person or plays with them in the dream. It is advised not to mention such dreams to anyone so that they may not cause you harm. If one sees such a dream, they should spit three times to their left and recite 'A'uzubillah'. It is better to perform ablution and pray two units of voluntary (Nafil) prayer.
2. The third type of dream is from an Angel (Alqa-e-Farishta). Through this, past, present, and future hidden matters are revealed, but they are often behind a veil of interpretation, whether near or far, and therefore require an interpretation (Ta'beer).

जिल्द २९ | फतावा रजविया

स्वप्न (ख्वाब)

मसला २१: कानपुर, मोहल्ला मूलगंज से, प्रेषक दिन साहब, इमाम मस्जिद शुक्रउल्लाह साहब सौदागर, १३ रबी-उल-आख़िर शरीफ़। स्वप्न क्या है?

उत्तर: स्वप्न चार प्रकार के होते हैं: १. 'हदीस-उन-नफ़्स' (आत्म-चर्चा): वे विचार जो दिन में हृदय पर हावी रहते हैं। जब व्यक्ति सो जाता है और इंद्रियाँ शिथिल हो जाती हैं, तो 'आलम-ए-मिसाल' (प्रतीकात्मक जगत) उसकी क्षमता के अनुसार प्रकट होता है और उन्हीं कल्पनाओं के रूप सामने आते हैं। यह स्वप्न निरर्थक और अर्थहीन होता है। इसमें वह भी शामिल है जो किसी शारीरिक दोष की प्रबलता के कारण उसके अनुकूल दिखाई देता है, जैसे पित्त की अधिकता के कारण आग देखना या कफ के कारण पानी देखना।

1. दूसरा स्वप्न शैतान द्वारा डाला गया (अल्का-ए-शैतान) होता है और वह अक्सर डरावना होता है। शैतान आदमी को डराता है या स्वप्न में उसके साथ खेलता है। इसके बारे में कहा गया है कि किसी से इसका ज़िक्र न करो ताकि तुम्हें कोई नुकसान न हो। ऐसा स्वप्न देखने पर अपनी बाईं ओर तीन बार थूकें और 'अऊजुबिल्लाह' (मैं अल्लाह की शरण चाहता हूँ) पढ़ें। बेहतर यह है कि वूज़ू करके दो रकात नफ़्ल नमाज़ पढ़ें।
2. तीसरा स्वप्न फ़रिश्ते द्वारा डाला गया (अल्का-ए-फ़रिश्ता) होता है। इसके माध्यम से अतीत, वर्तमान और भविष्य की गुप्त बातें प्रकट होती हैं, लेकिन वे अक्सर व्याख्या (ताबीर) के पर्दे में होती हैं, चाहे वह व्याख्या निकट हो या दूर, और इसलिए व्याख्या की आवश्यकता होती है।

خواب

مسئلہ ۲۱: از کانپور محلہ مولگنج مرسلہ الدین صاحب امام مسجد شکر اللہ صاحب سوداگر ۱۳ ربیع الآخر شریف خواب کیا چیز ہے؟

الجواب: خواب چار قسم ہے: ایک حدیث نفس کہ دن میں جو خیالات قلب پر غالب رہے جب سویا اور اس طرف سے حواس معطل ہوئے عالم مثال بقدر استعداد منکشف ہوا انہیں تخیلات کی شکلیں سامنے آئیں یہ خواب مہمل و بے معنی ہے اور اس میں داخل ہے وہ جو کسی خلط کے غلبہ اس کے مناسبات نظر آتے ہیں مثلاً صفراوی آگ دیکھے بلغمی پانی۔

دوسرا خواب القائے شیطان ہے اور وہ اکثر وحشتناک ہوتا ہے شیطان آدمی کو ڈراتا یا خواب میں اس کے ساتھ کھیلتا ہے اس کو فرمایا کہ کسی سے ذکر نہ کرو کہ تمہیں ضرر نہ دے۔ ایسا خواب دیکھے تو بائیں طرف تین بار تھوک دے اور اعوذ پڑھے اور بہتر یہ ہے کہ وضو کرکے دو رکعت نفل پڑھے۔

تیسرا خواب القائے فرشتہ ہوتا ہے اس سے گزشتہ و موجودہ و آئندہ غیب ظاہر ہوتے ہیں مگر اکثر پردہ تاویل قریب یا بعید میں و لہذا محتاج تعبیر ہوتا ہے۔

Fatawa Razawiyya Volume 29

The fourth kind of dream is that which the Lord of Honor inspires directly; it is clear and explicit, and free from the need for interpretation. And Allah Almighty knows best.

Page 89 of 750

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

चौथा ख़्वाब कि रब्बुल इज़्ज़त बिला-वास्ता इलक़ा फ़रमाए, वह साफ़ सरीह होता है और एहतेयाज-ए-ताबीर से बरी। वल्लाहु तआला आलम।

पेज 89 ऑफ़ 750

چوتھا خواب کہ رب العزت بلاواسطہ القاء فرمائے وہ صاف صریح ہوتا ہے اور احتیاجِ تعبیر سے بری۔واللہ تعالٰی اعلم۔

Fatawa Razawiyya Volume 29

Ijarah (Hiring/Leasing)

Issue 22: From Karachi Memon Masjid, Aram Bagh Gari Hatta, 19 Rabi' al-Akhir 1336 AH. If a person is selected for a task but fails to perform it fully, i.e., remains deficient, then what should be thought of him? Explain and be rewarded. (State the ruling, you will be rewarded. - T)

The Answer: There can be thousands of scenarios in this; such a vague question is not answerable. What was the task? How was the selection made? Why should it have been done or not done? Was he chosen for a task that was permissible (mubah) for him, and if he didn't do it, what is the blame? And if it was an obligation (fard) upon him and he didn't do it, he is a severe sinner and it was forbidden (haram). And if he didn't do it [because it was something bad], he did very well. And Allah Almighty knows best.

Page 90 of 750

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

इजारा (किराया/अनुबंध)

मसला 22: कराची मेमन मस्जिद, आराम बाग गाड़ी हाता, 19 रबी-उल-आखिर 1336 हिजरी। जो व्यक्ति जिस काम के लिए चुना गया हो, अगर वह उसे पूरी तरह से पूरा न करे, यानी असमर्थ रहे, तो उसे क्या समझा जाना चाहिए? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें। (बयान कीजिए, आपको पुण्य दिया जाएगा। - त)

अल-जवाब (उत्तर): इसमें हज़ारों स्थितियाँ हो सकती हैं; ऐसी गोल-मोल बात जवाब के काबिल नहीं होती। काम क्या था? चुनाव कैसा था? क्यों करना या न करना? क्या उसे ऐसे काम के लिए चुना गया था जो उसके लिए मुबाह (जायज़) था, और अगर उसने नहीं किया तो क्या इल्ज़ाम? और अगर वह उस पर फ़र्ज़ था और नहीं किया तो वह सख्त गुनहगार और हराम था, और अगर नहीं किया [क्योंकि वह बुरा काम था] तो बहुत अच्छा किया। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।

पेज 90 ऑफ़ 750

اجارہ

مسئلہ ۲۲: از کراچی میمن مسجد آرام باغ گاڑی حاطہ ۱۹ ربیع الآخر ۱۳۳۶ھ جو شخص جس کام کے لیے منتخب کیا گیا وہ اس کو پوری طرح سے ادا نہ کرے یعنی قاصر رہے تو اس کو کیا سمجھنا چاہیے۔؟ بینوا توجروا۔ (بیان کیجئے اجر دیئے جاؤ گے ۔ ت)

الجواب: اس میں ہزاروں صورتیں ہو سکتی ہیں ایسی گول بات قابلِ جواب نہیں ہوتی۔ کیا کام کیسا انتخاب کیوں کرنا نہ کرنا ایک ایسے کام کے لیے منتخب کیا تھا جو اس کے لیے مباح ہے نہ کیا تو کیا الزام اور اگر اس پر فرض تھا اور نہ کیا تو سخت گناہگار اور حرام تھا اور نہ کیا تو بہت اچھا کیا واللہ تعالٰی اعلم۔

Fatawa Rizvia Volume 29

Beliefs, Theology and Religious Sciences

Case 23: From Hasanpur, District Moradabad, through Tufail Ahmad Sahib Qadri Barkati Rizvi, sent by Hafiz Ikramullah Khan, 18 Rabi' al-Akhir 1336 AH. First Question: On page 329 of 'Taqwiyat-ul-Iman' by Maulvi Ismail, printed at Fakhr-ul-Matabi', Lucknow, there is some poetry in refutation of 'Urs Sharif' (commemorations of saints), and reference is made to prostitutes etc. On reading it, as far as my reason reached, it appeared true because in many 'Urs', prostitutes dance and many sins are committed, and their paramours/associates are also present with them, which everyone witnesses with their own eyes. Various thoughts arise because good and evil thoughts are not within one's control. Many such things are written; please provide a satisfactory answer after examining them. Second Question: And on page 300 of that book, regarding the fatwas on 'Ilm-e-Ghayb' (Knowledge of the Unseen), where it is mentioned that [if] you get knowledge of killing a mosquito [then you claim to have knowledge of the unseen]. In response to this, the Maulvi Sahib has cited Surah An-Naml verse four, Para 7 Surah Al-An'am verse five, Surah Al-A'raf, and Surah Al-Ahqaf, followed by a Hadith. This suggests that you [the Prophet ﷺ] did not possess 'Ilm-e-Ghayb' nor were you aware of what would happen tomorrow; this is evident from the Hadith. Regarding the statement that Satan has more knowledge and you have less, the submission is that there are many things which were not granted to our Muhammad, peace and blessings of Allah be upon him, but were granted to others.

फ़तावा रज़विया खंड २९

अक़ायद-ओ-कलाम-ओ-दीनियात (मान्यताएं, धर्मशास्त्र और धार्मिक शिक्षाएं)

मसला २३: हसनपुर, जिला मुरादाबाद से, तुफ़ैल अहमद साहब कादरी बरकाती रज़वी के माध्यम से, प्रेषक हाफ़िज़ इकरामउल्लाह खाँ, १८ रबी-उल-आखिर १३३६ हिजरी। पहला सवाल: मौलवी इस्माइल की किताब 'तक़वियत अल-ईमान', जो फख्र-उल-मताबे लखनऊ से छपी है, उसके पृष्ठ ३२९ पर 'उर्स शरीफ़' के खंडन में कुछ कविता है और वेश्याओं आदि का संदर्भ दिया गया है। उसे पढ़ने पर जहाँ तक बुद्धि ने काम किया, वह सच मालूम हुआ क्योंकि अक्सर उर्स में वेश्याएँ नाचती हैं और बहुत सारे पाप होते हैं और वेश्याओं के साथ उनके यार-दोस्त भी होते हैं और सब लोग अपनी आँखों से देखते हैं और तरह-तरह के ख्याल आते हैं क्योंकि अच्छे और बुरे ख्याल अपने वश में नहीं होते। ऐसी और बहुत सी बातें लिखी हैं, उन्हें देखकर कृपया संतोषजनक उत्तर दें। दूसरा सवाल: और इसी किताब के पृष्ठ ३०० पर 'इल्म-ए-ग़ैब' (परोक्ष ज्ञान) के बारे में जो फ़तवे दर्ज हैं कि मच्छर मारने का ज्ञान आपको हो जाता है, इसके उत्तर में मौलवी साहब ने सूरह अन-नमल आयत चार, पारा ७ सूरह अल-अनआम आयत पांच और सूरह अल-अराफ़ व सूरह अल-अहक़ाफ़ और उसके आगे हदीस शरीफ़ पेश की हैं, जिससे यह ज़ाहिर होता है कि आपको न इल्म-ए-ग़ैब था और न ही कल का हाल मालूम था कि क्या होगा। हदीस शरीफ़ से यही ज़ाहिर होता है। और यह कहना कि शैतान के पास ज्ञान अधिक है और आपके पास कम, तो अर्ज़ (निवेदन) है कि ऐसी बहुत सी बातें हैं जो हमारे मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को नहीं दी गईं और औरों को दी गईं।

فتاوی رضویہ جلد ۲۹

عقائد و کلام و دینیات

مسئلہ ۲۳ : از حسن پور ضلع مراد آباد بذریعہ طفیل احمد صاحب قادری برکاتی رضوی مرسلہ حافظ اکرام اللہ خاں، ۱۸ ربیع الآخر ۱۳۳۶ھ سوال اول : تقویۃ الایمان مولوی اسمعیل کی فخر المطابع لکھنؤ کی چھپی ہوئی کے صفحہ ۳۲۹ پر جو عرس شریف کی تردید میں کچھ نظم ہے، اور رنڈی وغیرہ کا حوالہ دیا ہے اسے جو پڑھا تو جہاں تک عقل نے کام دیا سچا معلوم ہوا کیونکہ اکثر عرس میں رنڈیاں ناچتی ہیں اور بہت بہت گناہ ہوتے ہیں اور رنڈیوں کے ساتھ ان کے یار آشنا بھی ہوتے ہیں اور آنکھوں سے سب آدمی دیکھتے ہیں اور طرح طرح کے خیال آتے ہیں کیونکہ خیال بد و نیک اپنے قبضہ میں نہیں، ایسی اور بہت ساری باتیں لکھی ہیں جن کو دیکھ کر تسلی بخش جواب دیجئے ۔ سوال دوم : اور اس کتاب کے صفحہ ۳۰۰ پر درباره علم غیب کے جو فتوے درج ہیں کہ مچھر مارنے کا آپ کو علم ہو جاتا ہے اس کے جواب میں جو مولوی صاحب نے درج کی سورہ نمل آیتہ چہارم ، پارہ ۷ سورہ انعام آیت پنجم و سورہ اعراف و سورہ احقاف اور اس سے آگے حدیث شریف پیش کی ہیں جس سے یہ ظاہر ہوتا ہے کہ آپ کو علم غیب کیا کل کا بھی حال معلوم نہیں تھا کہ کیا ہو گا حدیث شریف سے ظاہر ہوتا ہے ، اور یہ کہنا کہ شیطان کو علم زیادہ ہے اور آپ کو کم، تو عرض ہے کہ بہت ساری باتیں ایسی ہیں کہ ہمارے محمد صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کو نہیں دی گئیں اوروں کو دی گئیں۔

Fatawa Razawiyya Volume 29

...like for Solomon (peace be upon him) a throne and horses and camels for battle, while our Muhammad (may Allah's peace and blessings be upon him) fought on foot. Many such things are to be presented, but I fear it would become too lengthy. Please provide a satisfying answer with evidence, along with the verse and its translation from which the knowledge of the unseen (Ilm-e-Ghaib) is known, and the Hadith from which the knowledge of the unseen is found, and regarding the accusation against Lady Aisha Siddiqa (may Allah be pleased with her), if there were knowledge of the unseen, why were you not informed?

Question 3: If a woman's husband drinks alcohol and has intercourse with the woman while intoxicated, what should the woman do? Question 4: If a Hindu leaves money or goods with me as a trust, should I not return them? Is it permissible or impermissible? Or if he forgot something and I picked it up, should I return it or not? In short, is it permissible to take the property of Hindus by theft or deception or not? Question 5: It is widely said that a woman's carnal desire is nine times more than a man's; is this known from Shariah or not? Question 6: At what times should the beard be combed? Question 7: Is it permissible to perform prayer behind Maulvi Ashraf Ali Thanwi or not? Question 8: What are those things because of which the book 'Taqwiyat-ul-Iman' is bad?

Answer:

Answer to Question 1: The dancing of prostitutes is undoubtedly forbidden (Haram). Unrestrained ignorant people have spread this sin during the Urs (anniversaries) of the saints. Answer to Question 2: Innate knowledge of the unseen (Ilm-e-Ghaib-e-Zaati), which is of one's own self without being given by anyone else, is specific to Allah (Almighty). In those verses, this very meaning is intended: that no one can know without God's giving. And for the Prophets to know through Allah's informing is among the necessities of religion. Many verses of the Holy Quran are in proof of this, including what He says in Surah Jinn:

"[He is] Knower of the unseen, and He does not disclose His [knowledge of the] unseen to anyone, Except whom He has approved of messengers..." [Translation in box]: Allah is the Knower of the unseen, so He does not grant dominance over His specific unseen to anyone except His chosen [messengers].

फ़तावा रज़विया खंड 29

...जैसे सुलेमान (अलैहिस्सलाम) के लिए तख़्त और लड़ाई के लिए घोड़े और ऊँट थे, और हमारे मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पैदल चलकर लड़ते थे। बहुत सी बातें पेश करने वाली हैं जिससे विस्तार का डर है। कृपया दलीलों के साथ संतोषजनक उत्तर दें और वह आयत अनुवाद के साथ जिससे इल्म-ए-ग़ैब (परोक्ष का ज्ञान) मालूम होता है और हदीस शरीफ़ जिससे इल्म-ए-ग़ैब पाया जाता है और वह मिसाल जैसे हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़ियल्लाहु अन्हा) पर जो तोहमत लगाई गई थी, अगर इल्म-ए-ग़ैब होता तो आपको ख़बर क्यों न हुई?

सवाल 3: अगर किसी औरत का पति शराब पीता है और शराब पीकर औरत से संभोग (जमाअ) करे तो उस औरत को क्या करना चाहिए? सवाल 4: अगर कोई हिंदू कोई चीज़ मेरे पास नक़द या सामान रख गया तो उसे नहीं देना चाहिए, यह जायज़ है या नाजायज़? या कोई चीज़ भूल गया तो मैंने उसे उठा लिया तो देना चाहिए या नहीं? संक्षेप में, क्या हिंदुओं का माल चोरी या धोखे से लेना जायज़ है या नहीं? सवाल 5: यह जो मशहूर है कि औरत की ख़्वाहिश-ए-नफ़्स (कामेच्छा) मर्द से नौ हिस्से ज़्यादा है, इसका पता शरीयत से चलता है या नहीं? सवाल 6: कंघा दाढ़ी में किस-किस वक़्त किया जाए? सवाल 7: मौलवी अशरफ़ अली थानवी के पीछे नमाज़ पढ़ना जायज़ है या नहीं? सवाल 8: वह कौन सी बातें हैं जिनकी वजह से किताब 'तक़वियत-उल-ईमान' ख़राब है?

जवाब:

जवाब सवाल 1: रंडियों का नाच बेशक हराम है, औलिया-ए-कराम के उर्सों में बेलगाम जाहिलों ने यह बुराई (मअसियत) फैलाई है। जवाब सवाल 2: इल्म-ए-ग़ैब-ए-ज़ाती जो अपनी ज़ात से बिना किसी के दिए हो, अल्लाह अज़्ज़वजल के लिए ख़ास है। उन आयतों में यही मानी मुराद हैं कि बिना ख़ुदा के दिए कोई नहीं जान सकता, और अल्लाह के बताने से अंबिया को मालूम होना ज़रूरियात-ए-दीन से है। क़ुरान मजीद की बहुत आयतें इसके सबूत में हैं, जिनमें से सूरह जिन्न में फ़रमाता है:

"(वह) ग़ैब का जानने वाला है, तो वह अपने ग़ैब पर किसी को आगाह नहीं करता, सिवाय उस रसूल के जिसे उसने पसंद कर लिया हो..." [बॉक्स का अनुवाद]: अल्लाह है ग़ैब का जानने वाला, तो अपने ख़ास ग़ैब पर किसी को मुसल्लत नहीं करता सिवाय अपने पसंदीदा (रसूलों) के।

पेज 93/750

مثل سلیمان علیہ السلام کو تخت اور لڑائی کے لیے گھوڑے اور اونٹ، اور ہمارے محمد صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نہیں پیدل چل کر لڑتے تھے۔ بہت ساری باتیں عرض حال ہے جس سے طول ہونے کا خیال ہے۔ تسلی بخش جواب بادلیل عنایت کیجئے اور وہ آیت مع ترجمہ جس سے کہ علمِ غیب معلوم ہوتا ہے اور حدیث شریف جس سے علمِ غیب پایا جاتا ہے اور وہ مثل حضرت عائشہ صدیقہ (رضی اللہ تعالٰی عنہا) کی جو تہمت لگائی گئی تھی اگر علمِ غیب ہوتا تو آپ کو کیوں خبر نہ ہوئی۔

سوال سوم: اگر کسی عورت کا خاوند شراب پیتا ہے اور شراب پی کر عورت سے جماع کرے تو اس عورت کو کیا کرنا چاہیے؟ سوال چہارم: اگر کوئی ہندو کوئی چیز میرے پاس نقد یا سامان رکھ گیا تو اس کو نہ دینا چاہیے، جائز ہے یا ناجائز؟ یا کوئی چیز بھول گیا تو میں نے اس کو اٹھا لیا تو دینا چاہیے یا نہیں؟ غرض ہندوؤں کا مال چوری دھوکا دے کر لینا جائز ہے یا نہیں؟ سوال پنجم: یہ جو مشہور ہے کہ عورت کو خواہش نفس مرد سے نو حصے زیادہ ہے، اس کا پتہ شریعت سے چلتا ہے یا نہیں؟ سوال ششم: کنگھا داڑھی میں کس کس وقت کیا جائے؟ سوال ہفتم: مولوی اشرفعلی تھانہ بھون والے کے پیچھے نماز پڑھنا جائز ہے یا نہیں؟ سوال ہشتم: وہ کون سی باتیں ہیں جن کی وجہ سے کتاب تقویۃ الایمان خراب ہے؟

الجواب:

جواب سوال اول: رنڈیوں کا ناچ بے شک حرام ہے، اولیائے کرام کے عرسوں میں بیقید جاہلوں نے یہ معصیت پھیلائی ہے۔ جواب سوال دوم: علمِ غیبِ ذاتی کہ اپنی ذات سے بے کسی کے دیئے ہوئے اللہ عزوجل کے لیے خاص ہے اُن آیتوں میں یہی معنی مراد ہیں کہ بے خدا کے دیئے کوئی نہیں

جان سکتا اور اللہ کے بتائے سے انبیاء کو معلوم ہونا ضروریاتِ دین سے ہے، قرآنِ مجید کی بہت آیتیں اس کے ثبوت میں ہیں، از انجملہ سورہ جن میں فرماتا ہے:

عٰلِمُ الْغَیْبِ فَلَا یُظْهِرُ عَلٰی غَیْبِهٖۤ اَحَدًا ۙ﴿۲۶﴾ اِلَّا مَنِ ارْتَضٰی مِنْ رَّسُوْلٍ اللہ ہے غیب کا جاننے والا تو اپنے خاص غیب پر کسی کو مسلط نہیں کرتا سوائے اپنے پسندیدہ

Fatawa Ridawiyya Volume 29

[...except a] Messenger[1] - of the Messengers. And He says: "These are of the news of the Unseen which We reveal to you."[2] - These are the tidings of the unseen that We tell you. And He says: "And he is not at all stingy in disclosing the unseen."[3] - This Prophet does not show any stinginess in telling the matters of the unseen. For the explanation of this issue, see the treatise 'Anba al-Mustafa' and the treatise 'Khalis al-I'tiqad' to see how much proof there is from many verses, hadiths, and sayings of the leaders of the religion. The person who claims that Satan's knowledge is more [than that of the Prophet], insults the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) and is a disbeliever; for the details on this, see the fatwa of the scholars of the Two Holy Cities (Haramayn Sharifayn) titled 'Husam al-Haramayn'. All these books can be obtained from the Ahl-e-Sunnat publishing house in Bareilly. There is no such wealth, no such blessing, and no such honor which is truly wealth and honor that Allah Almighty has given to anyone else and has not bestowed upon the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him). Whatever has been bestowed or will be bestowed upon anyone in this world or the hereafter, it is all as charity from the Prophet, by means of the Prophet, and bestowed from the hands of the Prophet. The Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) says: "Indeed, I am the distributor and Allah is the Giver."[4] - Allah is the Giver and I am the distributor. Answer to the third question: The sin of the husband drinking alcohol lies upon him; the wife cannot refuse him sexual intercourse because of it. Answer to the fourth question: Breach of trust is not permissible even if it belongs to a Hindu. Deception and violation of treaty are not permissible even with a Hindu. Besides avoiding breach and deception, it is also necessary to keep in mind that committing any legal offense to subject oneself to humiliation is also prohibited. It is mentioned in a hadith: "Whoever voluntarily subjects himself to humiliation..." - Anyone who, without any compulsion, voluntarily...

---

[1] Al-Quran Al-Karim 72/26 & 27 [2] Al-Quran Al-Karim 11/49 [3] Al-Quran Al-Karim 81/24 [4] Sahih al-Bukhari, Kitab al-Ilm, Chapter: 'Whomever Allah intends good for, He gives him understanding of the religion', Qadimi Kutub Khana Karachi, 1/16; Sahih al-Bukhari, Kitab al-Jihad, Chapter on Allah's words: 'Indeed, for Allah is one-fifth...', Qadimi Kutub Khana Karachi, 1/439.

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

[...मगर] रसूल[1] - रसूलों के। और फ़रमाता है: "ये ग़ैब (परोक्ष) की ख़बरों में से हैं जो हम आपकी तरफ़ वह्य (प्रकटीकरण) करते हैं।"[2] - ये ग़ैब की बातें हैं कि हम तुम्हें बताते हैं। और फ़रमाता है: "और वह (नबी) ग़ैब की बातें बताने में कंजूस नहीं हैं।"[3] - ये नबी ग़ैब की बातें बताने में बुख़्ल (कंजूसी) नहीं फ़रमाते। इस मसले के बयान के लिए रिसाला 'अंबा-उल-मुस्तफ़ा' और रिसाला 'ख़ालिसुल एतिकाद' देखें कि कितनी आयतों, हदीसों और दीन के इमामों के अक़्वाल से सुबूत है। जो व्यक्ति शैतान के इल्म (ज्ञान) को ज़्यादा बताता है, वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तौहीन करता है और काफ़िर है; इसके बयान के लिए हरमैन शरीफ़ैन के उलेमा का फ़तवा 'हुसामुल हरमैन' देखें। ये सब किताबें बरेली मतबा अहल-ए-सुन्नत से मिल सकती हैं। कोई ऐसी दौलत, नेमत या इज़्ज़त जो वास्तव में दौलत और इज़्ज़त हो, ऐसी नहीं है कि अल्लाह अज़्ज़वजल्ल ने किसी और को दी हो और हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अता न की हो। जो कुछ जिसे अता हुआ या अता होगा दुनिया में या आख़िरत में, वह सब हुज़ूर के सदक़े में है, हुज़ूर के तुफ़ैल में है, हुज़ूर के हाथ से अता हुआ। हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं: "बेशक मैं बाँटने वाला हूँ और अल्लाह देने वाला है।"[4] - देने वाला अल्लाह है और बाँटने वाला मैं। तीसरे सवाल का जवाब: पति के शराब पीने का वबाल (पाप) उसी पर है, पत्नी उसे संभोग से मना नहीं कर सकती। चौथे सवाल का जवाब: अमानत में ख़यानत जायज़ नहीं है चाहे वह हिंदू की ही क्यों न हो। ग़दर (धोखा) और वादा-ख़िलाफ़ी जायज़ नहीं है चाहे हिंदू से ही क्यों न हो। ख़यानत और ग़दर के अलावा इस बात का भी लिहाज़ ज़रूरी है कि किसी कानूनी जुर्म का इर्तिकाब करके अपने आप को ज़िल्लत (अपमान) के लिए पेश करना भी मना है। हदीस में है: "जिसने अपनी मर्ज़ी से खुद को ज़िल्लत के हवाले किया..." - जो व्यक्ति बिना किसी मजबूरी के अपनी मर्ज़ी से...

---

[1] अल-क़ुरान अल-करीम 72/26 और 27 [2] अल-क़ुरान अल-करीम 11/49 [3] अल-क़ुरान अल-करीम 81/24 [4] सहीह अल-बुख़ारी, किताबुल इल्म, बाब: 'जिसके साथ अल्लाह भलाई का इरादा करता है, उसे दीन की समझ अता फ़रमाता है', क़दीमी कुतुब ख़ाना कराची, 1/16; सहीह अल-बुख़ारी, किताबुल जिहाद, बाब: अल्लाह तआला का फ़रमान: 'बेशक अल्लाह के लिए पाँचवाँ हिस्सा है...', क़दीमी कुतुब ख़ाना कराची, 1/439।

पेज 94 का 750

مِّن رَّسُولٍ ۱ - رسولوں کے۔ اور فرماتا ہے : "تِلْکَ مِنْ اَنْبَاءِ الْغَیْبِ نُوحِیْہَآ اِلَیْکَ" ۲ - یہ غیب کی باتیں ہیں کہ ہم تمہیں بتاتے ہیں۔ اور فرماتا ہے : "وَ مَا ھُوَ عَلَی الْغَیْبِ بِضَنِیْنٍ" ۳ - یہ نبی غیب کی باتیں بتانے میں بخل نہیں فرماتے۔ اس مسئلہ کے بیان کو رسالہ انباء المصطفٰی ورسالہ خالص الاعتقاد دیکھئے کہ کتنی آیتوں ، حدیثوں اور اقوالِ ائمہ دین سے ثبوت ہے، جو شخص شیطان کے علم کو زیادہ بتاتا ہے، نبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی توہین کرتا ہے اور کافر ہے اس کے بیان کو علمائے حرمین شریفین کا فتویٰ حسام الحرمین دیکھئے یہ سب کتابیں بریلی مطبع اہلسنت سے مل سکتی ہیں۔ کوئی دولت، کوئی نعمت، کوئی عزت جو حقیقۃ دولت و عزت ہو ایسی نہیں کہ اللہ عزوجل نے کسی اور کو دی ہو اور حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کو عطا نہ کی ہو، جو کچھ جسے عطا ہوا یا عطا ہوگا دنیا میں یا آخرت میں وہ سب حضور کے صدقہ میں ہے حضور کے طفیل میں ہے حضور کے ہاتھ سے عطا ہوا۔ حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں : انما انا قاسم واللہ المعطی ۴ - دینے والا اللہ ہے اور بانٹنے والا میں۔ جواب سوال سوم: خاوند کے شراب پینے کا وبال اس پر ہے عورت اسے جماع سے منع نہیں کرسکتی جواب سوال چہارم: امانت میں خیانت جائز نہیں اگر چہ ہندو کی ہو، غدر و بدعہدی جائز نہیں اگر چہ ہندو سے ہو، خیانت و غدر کے سوا اس کا بھی لحاظ ضرور ہے کہ کسی جرم قانونی کا ارتکاب کرکے اپنے آپ کو ذلت پر پیش کرنا بھی منع ہے۔ حدیث میں ہے: من اعطی الذلۃ من نفسہ - جو شخص بغیر کسی مجبوری کے اپنے آپ کو بخوشی

۱ القرآن الکریم ۷۲ / ۲۶ و ۲۷ ۲ القرآن الکریم ۱۱ / ۴۹ ۳ القرآن الکریم ۸۱ / ۲۴ ۴ صحیح البخاری کتاب العلم باب من یرد الله بہ خیرا یفقهہ فی الدین قدیمی کتب خانہ کراچی ۱ / ۱۶ ، صحیح البخاری کتاب الجہاد باب قول الله تعالی فان لله خمسہ قدیمی کتب خانہ کراچی ۱ / ۴۳۹

Fatawa Razawiyyah, Volume 29

[Arabic]: He who follows [disgrace] voluntarily without being coerced is not of us. | [Urdu]: He who presents himself for humiliation is not among us. And when there is neither treachery nor a legal crime, then however his property is obtained, it is permissible. Answer to the fifth question: Harm is its root. It is stated in a Hadith that a woman has been given a hundred parts more desire (lust) than a man, but Allah Almighty has cast a veil of modesty over her.[2] Answer to the sixth question: There is no specific time prescribed in the Shariah for combing; moderation is commanded. It should not be that a man makes his appearance look like a jinn, nor should he be constantly preoccupied with parting and braiding hair. 'The best of matters is the middle one'[3] (T: The best matter is that which is moderate). Answer to the seventh question: Regarding Ashraf Ali, the scholars of the Two Holy Sanctuaries (Haramayn Sharifayn) have stated in that same book 'Hussam al-Haramayn': [Arabic]: Whoever doubts his disbelief and punishment has indeed disbelieved.[4] | [Urdu]: He who, having been informed of his words of disbelief, doubts his being an infidel and subject to punishment, is also an infidel. Answer to the eighth question: 'Taqwiyat al-Iman' is a book of misguidance and irreligiousness. The scholars of the Two Holy Sanctuaries have labeled this group as misguided and irreligious, and said: [Arabic]: "Those are the party of Satan. Unquestionably, the party of Satan - they are the losers." [5] | [Urdu]: These people are the party of Satan; beware, it is the party of Satan that are in loss. In 'Kubah-e-Shahabiya', nearly seventy examples of the words of disbelief from this book and its author have been presented as specimens, providing references to page numbers for the excerpts and then citing verses, Hadiths, and narrations from the Imams to prove their status as words of disbelief. If you look at this treatise, you will realize what kind of an irreligious person he was; it is forbidden to look at the book of an irreligious person. And Allah Almighty knows best.

1. At-Targhib wat-Tarhib, Chapter on Asceticism in the World, etc., Hadith 60, Mustafa al-Babi Egypt, 4/179.
2. Al-Maqasid al-Hasanah, Hadith 605, Dar al-Kitab al-Arabi Beirut, p. 304; also Kanz al-Ummal, Hadith 22845, Mu'assasat ar-Risalah Beirut, 12/325.
3. Kashf al-Khafa, Hadith 1245, Dar al-Kutub al-Ilmiyah Beirut, 1/366.
4. Hussam al-Haramayn with Tamheed-e-Iman, Matba' Ahl-e-Sunnat Bareilly, p. 94.
5. Al-Quran al-Karim, 58/19.

फतावा रज़विया, खंड 29

[अरबी]: जो स्वेच्छा से बिना किसी मजबूरी के[अपमान स्वीकार करता है] वह हम में से नहीं है। | [उर्दू]: जो खुद को ज़िल्लत (अपमान) के लिए पेश करे वह हम में से नहीं है। और जब न विश्वासघात हो न ही कोई कानूनी अपराध, तो जिस तरह भी उसका धन प्राप्त हो वह अनुमेय (मुबाह) है। पाँचवें प्रश्न का उत्तर: नुक़सान इसका मूल है। हदीस में इरशाद हुआ है कि औरत में मर्द से सौ हिस्से ज़्यादा ख़्वाहिश (कामवासना) है, लेकिन अल्लाह तआला ने उस पर हया (लज्जा) डाल दी है।[2] छठे प्रश्न का उत्तर: कंघी करने के लिए शरीयत में कोई विशेष समय निर्धारित नहीं है, बल्कि संतुलन (एतदाल) का आदेश है। न तो यह हो कि आदमी जिन्नों जैसी शक्ल बना ले, और न ही ऐसा हो कि हर समय मांग-चोटी में ही उलझा रहे। 'सबसे अच्छा काम वह है जो मध्यम हो'।[3] (अर्थात बेहतरीन कार्य वह है जो मध्यम दर्जे का हो।) सातवें प्रश्न का उत्तर: अशरफ अली के बारे में हरमैन शरीफ़ैन के उलमा ने इसी किताब 'हुसामुल हरमैन' में फ़रमाया है: [अरबी]: जिसने उसके कुफ़्र (अविश्वास) और उसके अज़ाब (दंड) में संदेह किया, उसने वास्तव में कुफ़्र किया।[4] | [उर्दू]: जो उसके कुफ़्रिया बयानों से अवगत होकर उसके काफ़िर और दंडित होने में संदेह करे, वह भी काफ़िर है। आठवें प्रश्न का उत्तर: 'तक़्वियतुल ईमान' एक गुमराही और बेदीनी की किताब है। उलमा-ए-हरमैन शरीफ़ैन ने इस समूह को गुमराह और बेदीन लिखा है और फ़रमाया है: [अरबी]: "वे लोग शैतान का गिरोह हैं। सावधान! शैतान का गिरोह ही नुक़सान उठाने वाला है।" [5] | [उर्दू]: ये लोग शैतान के गिरोह हैं, ख़बरदार हो जाओ कि शैतान का गिरोह ही नुक़सान में है। इस किताब और इसके लेखक के कुफ़्रिया शब्दों के लगभग सत्तर नमूने 'कुब्बा-ए-शहाबिया' में वर्णित किए गए हैं, जिसमें पृष्ठों के संदर्भ के साथ उसकी इबारतें और फिर उनके कुफ़्र होने पर आयतें, हदीसें और इमामों के उद्धरण लिखे गए हैं। इस रिसाले को देखें तो आपको पता चलेगा कि वह व्यक्ति कैसा अधर्मी था। किसी अधर्मी की पुस्तक देखना हराम है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

1. अल-तरग़ीब वत-तरहीब, दुनिया से विरक्ति का अध्याय आदि, हदीस 60, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, 4/179.
2. अल-मक़ासिद अल-हसना, हदीस 605, दारुल किताब अल-अरबी बेरुत, पृ. 304; साथ ही कंज़ुल उम्माल, हदीस 22845, मुअस्ससतुत रिसाला बेरुत, 12/325.
3. कश्फ़ुल ख़फ़ा, हदीस 1245, दारुल कुतुब अल-इल्मिया बेरुत, 1/366.
4. हुसामुल हरमैन मअ तमहीद-ए-ईमान, मतबा अहले सुन्नत बरेली, पृ. 94.

5. अल-क़ुरआन अल-करीम, 58/19.

طائعاً غیر مکرہ فلیس منّاء | ذلت پر پیش کرے وہ ہم میں سے نہیں ہے۔ اور جب نہ غدر ہو نہ قانونی جرم تو پھر جس طرح اس کا مال ملے مباح ہے۔ جواب سوال پنجم: ضرر اس کی اصل ہے، حدیث میں ارشاد ہوا ہے کہ عورت کو مرد سے سو حصہ زائد خواہش (شہوت) ہے مگر اللہ تعالیٰ نے اس پر حیا ڈال دی ہے۔[2] جواب سوال ششم: کنگھے کے لیے شریعت میں کوئی خاص وقت مقرر نہیں ہے اعتدال کا حکم ہے، نہ تو یہ ہو کہ آدمی جنّاتی شکل بنا رہا ہے نہ یہ ہو کہ ہر وقت مانگ چوٹی میں گرفتار ،خیر الامور اوسطھا[3]۔ (بہترین امر وہ ہے جو درمیانہ ہو۔ ت) جواب ہفتم: اشرف علی کی نسبت علمائے حرمین شریفین نے اسی کتاب حسام الحرمین میں فرمایا ہے۔ من شك في كفره وعذابه فقد كفر[4] | جو اس کے اقوال کفر پر مطلع ہو کر اس کے کافر و معذب ہونے میں شک کرے وہ بھی کافر ہے۔ جواب سوال ہشتم: تقویۃ الایمان ایک گمراہی اور بے دینی کی کتاب ہے ، علمائے حرمین شریفین نے اس گروہ کو گمراہ و بے دین لکھا ہے، اور فرمایا ہے۔ " أُولَٰئِكَ حِزْبُ الشَّيْطَانِ ۚ أَلَا إِنَّ حِزْبَ الشَّيْطَانِ هُمُ الْخَاسِرُونَ " [5] | یہ لوگ شیطان کے گروہ ہیں خبردار ہو شیطان ہی کے گروہ نقصان میں ہیں۔ اس کتاب اور اس کے مصنف کے کلماتِ کفر کو کُبہ شہابیہ میں بطورِ نمونہ ستر کے قریب بیان کیے ہیں جس میں صفحات کے حوالہ سے اس کی عبارتیں اور پھر اس کے کلمہ کفر ہونے پر آیتیں، حدیثیں ائمہ کی روایتیں لکھی ہیں اور اس رسالہ کو دیکھئے تو آپ کو معلوم ہو کہ یہ شخص کیسا بے دین تھا بیدین کی کتاب دیکھنا حرام ہے۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

1 الترغیب والترہیب الترغیب فی الزہد فی الدنیا الخ حدیث ۶۰ مصطفٰی البابی مصر ۴/ ۱۷۹ 2 المقاصد الحسنہ حدیث ۶۰۵ دارالکتاب العربی بیروت ص ۳۰۴،کذا کنز العمال حدیث ۲۲۸۴۵

مؤسسۃ الرسالہ بیروت ۱۲/ ۳۲۵ 3 کشف الخفاء حدیث ۱۲۴۵ دارالکتب العلمیہ بیروت ۱/ ۳۶۶ 4 حسام الحرمین مع تمہید ایمان مطبع اہلسنت بریلی ص ۹۴ 5 القرآن الکریم ۵۸/۱۹

Volume 29 Fatawa Razawiyya

Question 30: From Moradabad, Madrasa Ahle Sunnat, Bazar Dewan, sent by Maulvi Abul Saud Abdul Wadood Sahib, student of the said Madrasa, 1st Jamadi al-Ula 1336 AH. Who is the sect known as Wahhabi, where did their origin come from, what are their beliefs, and what has been narrated in Hadith regarding them?

The Answer: Wahhabis are an irreligious sect that burns with envy at the veneration of the beloved servants of God and seeks to erase their remembrance and respect through various excuses. Their origin starts with the cursed Iblis (Satan), whom Allah Almighty commanded to venerate our master Adam, peace be upon him, and that cursed one refused. In the era of Islam, their guide was Dhul-Khuwaysira al-Tamimi, who spoke derogatory words regarding the exalted status of the Holy Prophet, peace and blessings of Allah be upon him. After that, an entire group of Kharijites followed this path, whom the Commander of the Faithful, Maula Ali, put to death. People said, "Praise be to Allah who purified the earth from their impurities." The Commander of the Faithful replied, "They are not extinguished; they are still in the wombs of mothers and the loins of fathers. Whenever one horn is cut off, another grows, until the last of them emerges with the Masih al-Dajjal (the Antichrist)."[1] According to this Hadith, these people have continued to appear in every era under new names until, at the end of the twelfth century, Ibn Abdul Wahhab Najdi became the leader of this sect. He wrote 'Kitab al-Tawhid' and, under the guise of the Oneness of God Almighty, disrespectfully insulted the Prophets and Saints, peace be upon them, and the Holy Prophet, the Master of Mankind, may the best of blessings be upon him, to his heart's content. By association with him, this group came to be called Najdi and Wahhabi. In India, this cursed mischief was spread by Ismail Dehlawi; he translated 'Kitab al-Tawhid' and named it 'Taqwiyat-ul-Iman'. The core belief is what is written clearly in several places in Taqwiyat-ul-Iman: "Do not believe in anyone besides Allah.[2] To believe in others is pure madness."[3] The groups that follow him are all one in beliefs but differ in practices such that one group has...

[1] Kanz al-Ummal, Hadith 31244, Muassasat al-Risala, Beirut, 11/205. [2] Taqwiyat-ul-Iman, Chapter 1, Matba' Alimi, Lohari Gate, Lahore, p. 12. [3] Taqwiyat-ul-Iman, Introduction, Matba' Alimi, Lohari Gate, Lahore, p. 5.

जिल्द 29 फ़तावा रज़विया

मसला 30: मुरादाबाद, मदरसा अहले सुन्नत, बाज़ार दीवान से, प्रेषक मौलवी अबुल सऊद अब्दुल वदूद साहब, उक्त मदरसा के छात्र, 1 जमादी अल-उला 1336 हिजरी। वहबी जो मशहूर हैं वे कौन सा फ़िरक़ा (संप्रदाय) है और उनकी जड़ कहाँ से निकली और उनके अक़ीदे (मान्यताएँ) क्या हैं, और उनके बारे में हदीस में क्या आया है?

अल-जवाब: वहबी एक बेदीन (अधार्मिक) फ़िरक़ा है जो ख़ुदा के महबूबों की ताज़ीम (सम्मान) से जलता है और तरह-तरह के हीलों (बहानों) से उनके ज़िक्र और ताज़ीम को मिटाना चाहता है। इसकी शुरुआत इब्लीस लईन (शापित शैतान) से हुई, जब अल्लाह अज़वजल ने सैय्यदना आदम अलैहिस्सलाम की ताज़ीम का हुक्म दिया और उस मलऊन (शापित) ने नहीं माना। और इस्लाम के ज़माने में इसका हादी (मार्गदर्शक) ज़ुल-ख़ुवैसिरा तमीमी हुआ, जिसने हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अर्फ़ा (सर्वोच्च) शान में तौहीन (अपमान) का शब्द कहा। इसके बाद ख़वारिज का एक पूरा गिरोह इसी रास्ते पर चला, जिन्हें अमीर-उल-मोमिनीन मौला अली ने क़त्ल किया। लोगों ने कहा, "अल्लाह का शुक्र है जिसने ज़मीन को उनकी गलाज़त से पाक किया।" अमीर-उल-मोमिनीन ने फ़रमाया, "ये ख़त्म नहीं हुए; अभी ये माँओं के पेट में हैं और बाप की पीठ (लोन) में हैं। जब भी उनमें से एक सींग काटा जाएगा, दूसरा निकल आएगा, यहाँ तक कि उनका आख़िरी गिरोह दज्जाल के साथ निकलेगा।"[1] इस हदीस के मुताबिक़ हर ज़माने में ये लोग नए-नए नाम से ज़ाहिर होते रहे, यहाँ तक कि बारहवीं सदी के आख़िर में इब्न अब्दुल वहाब नजदी इस फ़िरक़े का सरग़ना (मुखिया) हुआ और उसने 'किताब अल-तौहीद' लिखी और अल्लाह की तौहीद के परदे में अंबिया और औलिया अलैहिमुस्सलाम और ख़ुद हुज़ूर सैय्यद-उल-अनाम अलैहि अफ़ज़ल-उस-सलात की तौहीन दिल खोल कर की। उसकी तरफ़ निस्बत करके इस गिरोह का नाम नजदी और वहबी हुआ। हिंदुस्तान में इस फ़ितना-ए-मलऊना को इस्माइल देहलवी ने फैलाया; उसने 'किताब अल-तौहीद' का तर्जुमा किया और उसका नाम 'तक़्वियतुल ईमान' रखा। असली अक़ीदा वह है जो तक़्वियतुल ईमान में कई जगह साफ़ लफ़्ज़ों में लिख दिया गया कि: "अल्लाह के सिवा किसी को न मान।[2] औरों को मानना महज़ ख़ब्त (पागलपन) है।"[3] उसके मुत्तबेईन (अनुयायी) जो गिरोह हैं, अक़ीदे में सब एक हैं लेकिन आमाल (कर्मों) में इस तरह अलग हुए कि एक फ़िरक़े ने...

[1] कंज़ अल-उम्माल, हदीस 31244, मुअस्ससत अल-रिसाला, बेरूत, 11/205. [2] तक़्वियतुल ईमान, अध्याय 1, मतबा अलीमी, लोहारी दरवाज़ा, लाहौर, पृष्ठ 12. [3] तक़्वियतुल ईमान, प्रस्तावना, मतबा अलीमी, लोहारी दरवाज़ा, लाहौर, पृष्ठ 5.

पेज 96/750

مسئلہ ۳۰: از مرادآباد مدرسہ اہلسنت بازار دیوان مرسلہ مولوی ابوالسعود عبدالودود صاحب طالب علم مدرسہ مذکور یکم جمادی الاولی ۱۳۳۶ھ وہابی جو مشہور ہیں وہ کون سافرقہ ہے اور ان کی اصل کہاں سے نکلی اور ان کے عقائد کیا ہیں، اور ان کی بابت حدیث میں کیا وارد ہے؟

الجواب: وہابی ایک بے دین فرقہ ہے جو محبوبانِ خدا کی تعظیم سے جلتا ہے اور طرح طرح کے حیلوں سے ان کے ذکر و تعظیم کو مٹانا چاہتا ہے ابتدا اس کی ابلیس لعین سے ہے کہ اللہ عزوجل نے تعظیم سیدنا آدم علیہ الصلوۃ والسلام کا حکم دیا اور اس ملعون نے نہ مانا اور زمانہ اسلام میں اس کا ہادی ذوالخویصرہ تمیمی ہوا جس نے حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی شانِ ارفع میں کلمہ توہین کہا اس کے بعد ایک پورا گروہ خوارج کا اسی طریق پر چلا جن کو امیر المومنین مولیٰ علی نے قتل فرمایا لوگوں نے کہا حمد اللہ کو جس نے ان کی نجاستوں سے زمین کو پاک کیا امیر المومنین نے فرمایا یہ منقطع نہیں ہوئے ابھی ان میں کے ماؤں کے پیٹوں میں ہیں باپوں کی پیٹھوں میں ہیں، کلما قطع قرن نشاء قرن جب ان میں کی ایک سنگت کاٹ دی جائے گی دوسری سر اٹھائے گی، حتیٰ یکون آخرھم یخرج مع المسیح الدجال ۱۔ یہاں تک کہ ان کا پچھلا گروہ دجال کے ساتھ نکلے گا۔ اس حدیث کے مطابق ہر زمانہ میں یہ لوگ نئے نئے نام سے ظاہر ہوتے رہے یہاں تک کہ بارھویں صدی کے آخر میں ابن عبدالوہاب نجدی اس فرقہ کا سرغنہ ہوا اور اس نے کتاب التوحید لکھی اور توحید الہی عزوجل کے پردے میں انبیاء و اولیاء علیہم الصلوۃ والسلام اور خود حضور اقدس سید الانام علیہ افضل الصلوۃ کی توہین دل کھول کر کی اس کی طرف نسبت کر کے اس گروہ کا نام نجدی و وہابی ہوا۔ ہندوستان میں اس فتنہ ملعونہ کو اسماعیل دہلوی نے پھیلایا کتاب التوحید کا ترجمہ کیا اس کا نام تقویۃ الایمان رکھا، دلی عقیدہ وہ ہے جو تقویۃ الایمان میں کئی جگہ

صاف لفظوں میں لکھ دیا کہ : اللہ کے سوا کسی کو نہ مان ۲۔ اوروں کا ماننا محض خبط ہے۔ ۳ اس کے متبعین جو گروہ ہیں عقائد میں سب ایک ہیں مگر اعمال میں یوں متفرق ہوئے کہ ایک فرقہ نے

۱ کنز العمال حدیث ۳۱۲۴۴ موسسۃ الرسالہ بیروت ۱۱/ ۲۰۵ ۲ تقویۃ الایمان الفصل الاول مطبع علیمی اندرون لوہاری دروازہ لاہور ، ص ۱۲ ۳ تقویۃ الایمان مقدمۃ الکتاب مطبع علیمی اندرون لوہاری دروازہ لاہور ، ص ۵

Fatawa Rizwiya Volume 29

They abandoned Taqleed (adherence to a school of jurisprudence) as well and became Ahl-e-Hadith themselves; these are the non-adherent (Ghair-Muqallid) Wahhabis. Their leaders were Nazir Husain Dehlwi and some Punjabis and Bengalis were and are (among them). Among the adherent Wahhabis, the leaders were Rashid Ahmad Gangohi and Qasim Nanotwi, and now Ashraf Ali Thanwi. Whoever considers these people good, or believes in their books like Taqwiya-tul-Iman etc., or doubts their being misguided and irreligious, he is a Wahhabi. The sign of a Wahhabi has been stated in the Hadith that apparently they will be great observers of the Sharia. "You will consider your prayers insignificant compared to their prayers, and your fasting compared to their fasting, and your deeds compared to their deeds"[1]. You will consider your prayer inferior to theirs, your fasting to theirs, and your actions to theirs. "They will recite the Quran but it will not go beyond their throats"[2]. They will read the Quran but it will not descend from their throats, meaning it will have no effect in their hearts. "They will speak from the best words of creation"[3]. They will apparently speak very good things, and one narration says: "From the words of the best of creation"[4]. They will cry out "Hadith, Hadith" a lot. Despite this, the situation will be that "they will exit the religion just as an arrow exits from its prey"[5]. They will exit from the religion just as an arrow passes through the target. "Then they will not return to it"[6], then they will never return to the religion again. "Their sign is head-shaving"[7]. Their sign will be shaving their heads. "Tucked up lower garments"[8]. Their sarongs (Tehbands) or pajamas will be very high. The description of their beliefs is in our treatise 'Noor-ul-Furqan' and the treatise 'Al-Kawkabah ash-Shahabiyyah'. And Allah Almighty knows best.

Problem 31: From Muradabad, Madrasa Ahle Sunnat Bazaar Diwan, sent by Molvi Abul Sa'ood Abdul Wadood Sahib, student of the said Madrasa, 1st Jumada al-Ula 1336 AH. What is the reality of Mawloud Sharif, and in a Milad gathering, at the specific time of the mention of the noble birth of the Presence (Prophet)...

---

[1] Kanz-ul-Ummal, Hadith 30962, Muassasat-ur-Risalah, Beirut, 11/233 [2] Kanz-ul-Ummal, Hadith 30950, Muassasat-ur-Risalah, Beirut, 11/240; Sahih Muslim, Kitab-uz-Zakat, Chapter on Giving to those whose hearts are to be reconciled and the description of the Kharijites, Qadimi Kutub Khana, Karachi, 1/320 & 324 [3] Sahih Muslim, Kitab-uz-Zakat, Chapter on Giving to those whose hearts are to be reconciled and the description of the Kharijites, Qadimi Kutub Khana, Karachi, 1/322 [4] Kanz-ul-

Ummal, Hadith 30952, Muassasat-ur-Risalah, Beirut, 11/241 [5] Kanz-ul-Ummal, Hadith 30944, Muassasat-ur-Risalah, Beirut, 11/239 [6] Kanz-ul-Ummal, Hadith 30936, Muassasat-ur-Risalah, Beirut, 11/239 [7] Sahih Muslim, Kitab-uz-Zakat, Chapter on Giving to those whose hearts are to be reconciled and the description of the Kharijites, Qadimi Kutub Khana, Karachi, 1/340

फ़तावा रिज़विया जिल्द 29

तक़लीद को भी तर्क किया और खुद अहले हदीस बने, ये ग़ैर मुक़ल्लिद वहाबी हैं। इनके सरगना नज़ीर हुसैन देहलवी और कुछ पंजाबी बंगाली थे और हैं। और मुक़ल्लिद वहाबियों के सरगना रशीद अहमद गंगोही और क़ासिम नानोतवी, और अब अशरफ अली थानवी हैं। जो इन लोगों को अच्छा जाने या तक़्वियत-उल-ईमान वग़ैरह इनकी किताबों को माने या उनके गुमराह बे-दीन होने में शक करे, वह वहाबी है। वहाबी की अलामत (पहचान) हदीस में बयान की गई है कि वे ज़ाहिरी तौर पर शरीयत के बड़े पाबंद बनेंगे। "तुम अपनी नमाज़ को उनकी नमाज़ के आगे हक़ीर (तुच्छ) जानोगे, और अपने रोज़ों को उनके रोज़ों के आगे, और अपने आमाल को उनके आमाल के आगे"[1]। तुम अपनी नमाज़ को उनकी नमाज़ के मुक़ाबले कमतर समझोगे, अपने रोज़ों को उनके रोज़ों के मुक़ाबले और अपने कर्मों को उनके कर्मों के मुक़ाबले। "वे क़ुरआन पढ़ेंगे लेकिन वह उनके गले से नीचे नहीं उतरेगा"[2]। वे क़ुरआन पढ़ेंगे लेकिन वह उनके गले से नीचे नहीं उतरेगा, यानी दिल में उसका कोई असर नहीं होगा। "वे मखलूक़ (सृष्टि) की बेहतरीन बातें करेंगे"[3]। वे ज़ाहिरी तौर पर बहुत अच्छी बातें करेंगे, और एक रिवायत है: "बेहतरीन मखलूक़ की बातों में से"[4]। वे हदीस-हदीस का बहुत शोर मचाएंगे। इसके बावजूद हाल यह होगा कि "वे दीन से ऐसे निकल जाएंगे जैसे तीर शिकार से निकल जाता है"[5]। वे दीन से ऐसे निकल जाएंगे जैसे तीर निशाने को पार कर जाता है। "फिर वे उसमें वापस नहीं लौटेंगे"[6], फिर कभी दीन में लौटकर नहीं आएंगे। "उनकी निशानी सर मुंडाना होगी"[7]। उनकी पहचान सिर मुंडवाना होगी। "ऊंचे तहबंद"[8]। उनके तहबंद या पाजामे बहुत ऊंचे होंगे। उनके अक़ीदों (मान्यताओं) का बयान हमारे रिसाले 'नूरुल फ़ुरक़ान' और रिसाले 'अल-कौकबा अल-शहाबिया' में है। वल्लाहु तआला आलम (और अल्लाह बेहतर जानता है)।

मसाला 31: मुरादाबाद, मदरसा अहले सुन्नत बाज़ार दीवान से, प्रेषक मौलवी अबुल सऊद अब्दुल वदूद साहब, उक्त मदरसे के छात्र, 1 जुमादाल उला 1336 हिजरी। मौलूद शरीफ की हकीकत क्या है, और महफ़िल-ए-मीलाद में हुज़ूर के विलादत (जन्म) के ज़िक्र के खास वक्त पर...

---

[1] कंज़ुल उम्माल, हदीस 30962, मुअस्ससतुर रिसाला, बेरूत, 11/233 [2] कंज़ुल उम्माल, हदीस 30950, मुअस्ससतुर रिसाला, बेरूत, 11/240; सहीह मुस्लिम, किताबुज़ ज़कात, बाब इताउल मुअल्लफ़ा व बयानुल खवारिज, क़दीमी कुतुब खाना, कराची, 1/320 और 324 [3] सहीह मुस्लिम, किताबुज़ ज़कात, बाब इताउल मुअल्लफ़ा व बयानुल खवारिज, क़दीमी कुतुब खाना, कराची, 1/322

[4] कंज़ुल उम्माल, हदीस 30952, मुअस्ससतुर रिसाला, बेरूत, 11/241 [5] कंज़ुल उम्माल, हदीस 30944, मुअस्ससतुर रिसाला, बेरूत, 11/239 [6] कंज़ुल उम्माल, हदीस 30936, मुअस्ससतुर रिसाला, बेरूत, 11/239 [7] सहीह मुस्लिम, किताबुज़ ज़कात, बाब इताउल मुअल्लफ़ा व बयानुल खवारिज, क़दीमी कुतुब खाना, कराची, 1/340

تقلید کو بھی ترک کیا اور خود اہلحدیث بنے یہ غیر مقلد وہابی ہیں ان کا سر گروہ نذیر حسین دہلوی اور کچھ پنجابی بنگالی تھے اور ہیں، اور مقلد وہابیوں کے سر گروہ رشید احمد گنگوہی اور قاسم نانوتوی، اور اب اشرف علی تھانوی، جوان لوگوں کو اچھا جانے یا تقویۃ الایمان وغیرہ ان کی کتابوں کو مانے یا ان کے گمراہ بد دین ہونے میں شک کرے وہ وہابی ہے، وہابی کی علامت حدیث میں ارشاد ہوئی کہ ظاہراً شریعت کے بڑے پابند بنیں گے۔ تحقرون صلوتکم مع صلوتھم وصیامکم مع صیامھم وعملکم مع عملھم ۱۸ 1۔ تم اپنی نماز کو ان کی نماز کے آگے حقیر جانو گے اور اپنے روزوں کو ان کے روزوں کے آگے اور اپنے اعمال کو ان کے اعمال کے آگے یقرؤن القرآن ولا یجاوز تراقیھم ۲۸ 2۔ قرآن پڑھیں گے مگر ان کے گلے سے نہ اترے گا یعنی دل میں اس کا کچھ اثر نہ ہوگا۔ یقولون من خیر قول البریۃ ۳۸ 3۔ باتیں بظاہر بہت اچھی کریں گے، اور ایک روایت ہے۔ من قول خیر البریۃ ۴۸ 4۔ حدیث حدیث بہت پکاریں گے۔ باینہمہ حال یہ ہوگا یمرقون من الدین کما یمرق السہم من الرمیۃ نکل جائیں گے دین سے ایسے جیسے تیر نکل جاتا ہے نشانہ سے ثم لا یعودون فیہ ۵۸ 5 پھر لوٹ کر دین میں نہ آئیں گے۔ سیماھم التحلیق ۶۸ 6۔ ان کی علامت سر منڈانا ہوگی۔ مشمر الازار ۷۸ 7۔ تہبند یا پاجامے بہت اونچے، ان کے عقائد کا بیان ہمارے رسالہ نور الفرقان اور رسالہ کو کبہ الشہابیہ میں ہے۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔ مسئلہ ۳۱: از مراد آباد مدرسہ اہلسنت بازار دیوان مرسلہ مولوی ابوالسعود عبدالودود صاحب طالب علم مدرسہ مذکور، یکم جمادی الاولیٰ ۱۳۳۶ھ مولود شریف کی حقیقت کیا ہے، اور محفل میلاد میں خاص وقت ذکر ولادت شریف حضور

---

۱۸ کنز العمال حدیث ۳۰۹۶۲ مؤسسۃ الرسالہ بیروت ۱۱ / ۲۳۳ ۲۸ کنز العمال حدیث ۳۰۹۵۰ مؤسسۃ الرسالہ بیروت ۱۱ / ۲۴۰ ، صحیح مسلم کتاب الزکوٰۃ باب اعطاء المؤلفۃ و بیان الخوارج

قدیمی کتب خانہ کراچی ۱ / ۳۲۰ و ۳۲٤ 3۸ صحیح مسلم کتاب الزکوٰۃ باب اعطاء المؤلفۃ و بیان الخوارج قدیمی کتب خانہ کراچی ۱ / ۳۲۲ 4۸ کنز العمال حدیث ۳۰۹۵۲ مؤسسۃ الرسالہ بیروت ۱۱ / ۲٤۱ 5۸ کنز العمال حدیث ۳۰۹٤٤ مؤسسۃ الرسالہ بیروت ۱۱ / ۲۳۹ 6۸ کنز العمال حدیث ۳۰۹۳٦ مؤسسۃ الرسالہ بیروت ۱۱ / ۲۳۹ 7۸ صحیح مسلم کتاب الزکوٰۃ باب اعطاء المؤلفۃ و بیان الخوارج قدیمی کتب خانہ کراچی ۱ / ۳٤۰

Fatawa Razawiyya Volume 29

Is it permissible to stand for the radiant Ahmad Mujtaba Muhammad Mustafa (peace and blessings of Allah be upon him), to command people to stand, and to recite poetic praise (Naats) melodiously?

The Answer: All these things are permissible, commendable, and a source of blessings. Their basis is following these commands of the Great Quran: "And as for the blessing of your Lord, proclaim [it]"[1] — speak well of your Lord's blessings before people. "And remind them of the days of Allah"[2] — remind them of the days of Allah. "Say: 'In the bounty of Allah and in His mercy - in that let them rejoice'"[3] — command that they celebrate the joy of Allah's grace and Allah's mercy. "That you may believe in Allah and His Messenger and honor him and respect him"[4] — so that you honor and revere Allah and His Messenger. And Allah Almighty knows best.

Problem 32: From Ramnagar, District Banaras, sent by Imam-ud-Din Sahib, 9 Jumada al-Ula 1346 AH.

Last Muharram, Khwaja Hasan Nizami Dehlvi wrote a book named "Muharram Nama." Since Khwaja Sahib is a famous personality, his book had a large circulation. A friend of this humble servant also ordered a copy. In this Muharram Nama, Khwaja Sahib has made extremely harsh and severe attacks on the Umayyad dynasty in general, and specifically on Hazrat Amr ibn al-Aas (may Allah be pleased with him). He has written things that have caused great turmoil in the minds of Sunni readers. Therefore, I am extracting and referring to some parts from the mentioned Muharram Nama and want to inquire what these statements are like, so that by knowing, I can free myself and other brothers of the Ahl as-Sunnah from the conflict of thoughts. In Muharram Nama, it says: (1) Without thinking, you will come to know that from the beginning of Hazrat Uthman's caliphate until his murder, the Battle of the Camel, the Battle of Siffin, the arbitration of Siffin, and every big or small mischief until the end, the hand of Amr ibn al-Aas was certainly there. (2) By deceiving Hazrat Ali, he (Amr ibn al-Aas) got the caliphate given to Hazrat Uthman.

[1] The Holy Quran 93/11 [2] The Holy Quran 14/5 [3] The Holy Quran 10/58 [4] The Holy Quran 48/9

फ़तावा रज़विया जिल्द २९

पुरनूर अहमद मुज्तबा मुहम्मद मुस्तफा (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की ताज़ीम के लिए खड़े होना और लोगों को खड़े होने का हुक्म देना और नातिया अशआर ख़ुश-अलहानी से पढ़ना जायज़ है या नहीं?

अल-जवाब: ये सब बातें जायज़, मुस्तहसन और बरकतों का सबब हैं और इनकी असल कुरान-ए-अज़ीम के इन अहकाम को मानना है कि "अम्मा बिनिअमते रब्बिका फहद्दिस"[1] अपने रब की नेमत लोगों के सामने खूब बयान करो, "वज़क्किरहुम बिअय्यामिल लाह"[2] उन्हें अल्लाह के दिन याद दिलाओ, "कुल बिफ़ज़्लिल्लाहे व बिरह-मतिही फबिज़ालिका फल-यफ़्रहू"[3] तुम हुक्म दो कि अल्लाह के फज़्ल और अल्लाह की रहमत की खुशी मनाएं "लितुअ्मिनू बिल्लाहे व रसूलेही व तुअज़्ज़िरूहु व तुवक्किरूहु"[4] ताकि तुम अल्लाह और उसके रसूल की ताज़ीम और तौक़ीर करो। वल्लाह तआला आलम।

मसअला ३२: राम नगर जिला बनारस, मुरसिला इमाम उद्दीन साहब, ९ जमादी अल-उला १३४६ हिजरी।

गुज़श्ता मुहर्रम ख्वाजा हसन निज़ामी देहलवी ने एक किताब लिखी जिसका नाम 'मुहर्रम नामा' रखा है, ख्वाजा साहब एक मशहूर शख्सियत के आदमी हैं इसलिए उनकी इस किताब की बड़ी अशाअत हुई। इसका एक नुस्खा नाचीज़ के एक दोस्त ने भी मंगवाया। इस मुहर्रम नामा में ख्वाजा साहब ने आम बनू उमय्या पर और हज़रत अम्र बिन अल-आस (रज़ियल्लाहु अन्हु) पर खुसूसन निहायत सख्त और शदीद हमले किए हैं और उनके मुताल्लिक ऐसी बातें लिखी हैं जिससे सुन्नी मज़हब मुहर्रम नामा पढ़ने वालों के ख्यालात में निहायत हलचल मच गई है। लिहाज़ा मुहर्रम नामा मज़कूर से अख्ज़ करके कुछ हवाला करता हूँ और दरयाफ्त करना चाहता हूँ कि ये बातें कैसी हैं ताकि मालूम करके खुद को और दीगर बिरादराने अहल-ए-सुन्नत को ख्यालात की कशमकश से छुड़ाऊं। मुहर्रम नामा में है: (१) बगैर सोचे तुमको मालूम हो जाएगा कि हज़रत उस्मान की शुरू खिलाफत से लेकर क़त्ल-ए-उस्मान तक, जंगे जमल, जंगे सिफ़्फ़ीन, फैसला-ए-सिफ़्फ़ीन और आखिर तक हर बड़े छोटे फसाद की बुनियाद में अम्र बिन अल-आस का हाथ ज़रूर था। (२) हज़रत अली को धोखा देकर खिलाफत हज़रत उस्मान को उन्होंने दिलवाई।

[1] अल-कुरान अल-करीम ९३/११ [2] अल-कुरान अल-करीम १४/५ [3] अल-कुरान अल-करीम १०/५८ [4] अल-कुरान अल-करीम ४८/९

पेज ९८ / ७५०

پُر نور احمد مجتبیٰ محمد مصطفی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے کھڑے ہونا اور لوگوں کو کھڑے ہونے کے لیے حکم دینا اور نعتیہ اشعار خوش الحانی سے پڑھنا جائز ہے یا نہیں؟

الجواب: یہ سب باتیں جائز و مستحسن و باعثِ برکات ہیں اور ان کی اصل قرآنِ عظیم کے ان احکام کا ماننا ہے کہ "اَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ"1 اپنے رب کی نعمت لوگوں کے سامنے خوب بیان کرو، "وَذَكِّرْهُمْ بِاَيّٰمِ اللّٰهِ"2۔ انہیں اللہ کے دن یاد دلاؤ، "قُلْ بِفَضْلِ اللّٰهِ وَ بِرَحْمَتِهٖ فَبِذٰلِكَ فَلْيَفْرَحُوْا"3 تم حکم دو کہ اللہ کے فضل اور اللہ کی رحمت کی خوشی منائیں، "لِتُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖ وَ تُعَزِّرُوْهُ وَ تُوَقِّرُوْهُ"4۔ تاکہ تم اللہ اور اس کے رسول کی تعظیم و توقیر کرو۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۳۲: رام نگر ضلع بنارس مرسلہ امام الدین صاحب ۹ جمادی الاولیٰ ۱۳۴۶ھ

گزشتہ محرم خواجہ حسن نظامی دہلوی نے ایک کتاب لکھی جس کا نام محرم نامہ رکھا ہے، خواجہ صاحب ایک مشہور شخصیت کے آدمی ہیں اس لیے ان کی اس کتاب کی بڑی اشاعت ہوئی اس کا ایک نسخہ ناچیز کے ایک دوست نے بھی منگوایا اس محرم نامہ میں خواجہ صاحب نے عام بنو امیہ پر اور حضرت عمرو بن العاص رضی اللہ تعالیٰ عنہ پر خصوصاً نہایت سخت و شدید حملے کیے ہیں اور ان کے متعلق ایسی باتیں لکھی ہیں سنی المذہب محرم نامہ پڑھنے والوں کے خیالات میں نہایت ہلچل پڑ گئی ہے۔ لہٰذا محرم نامہ مذکور سے اخذ کر کے کچھ حوالہ کرتا ہوں اور دریافت کرنا چاہتا ہوں کہ یہ باتیں کیسی ہیں تاکہ معلوم کر کے خود کو اور دیگر برادرانِ اہل سنن کو خیالات کی کشمکش سے چھڑاؤں، محرم نامہ میں ہے۔ (۱) بغیر سوچے تم کو معلوم ہو جائے گا کہ حضرت عثمان کی شروع خلافت سے لے کر قتل عثمان تک جنگ جمل، جنگ صفین، فیصلہ

صفین اور آخر تک ہر بڑے چھوٹے فساد کی بنیاد میں عمرو بن العاص کا ہاتھ ضرور تھا۔ (۲) حضرت علی کو دھوکا دے کر خلافت حضرت عثمان کو انہوں نے دلوائی۔

1 القرآن الکریم ۹۳/ ۱۱ 2 القرآن الکریم ۱۴/ ۵ 3 القرآن الکریم ۱۰/ ۵۸ 4 القرآن الکریم ۴۸/ ۹

Volume 29 Fatawa Razawiyya

(3) And then first of all, they were ready to oppose Uthman, (4) Divorced the sister of Hazrat Uthman. (5) And these same Amr ibn al-Aas initiated harsh language with Hazrat Uthman in the mosque. (6) It was these same Amr ibn al-Aas who openly incited people and encouraged them to kill Hazrat Uthman. (7) And then it was these same Amr ibn al-Aas who came as a minister to Muawiya to seek revenge for the blood of Uthman from Hazrat Ali. (8) These were also the ones who deceived Abu Musa al-Ash'ari in the decision of the Caliphate. (9) This fire started by a few people like Banu Umayya and Amr ibn al-Aas has not been extinguished to this day. Although the above matters are mostly related to history, since every single word affects religion, this humble person thought it appropriate to knock at the door of Dar al-Ifta. Three more things need to be asked regarding Hazrat Amr ibn al-Aas (may Allah be pleased with him): (1) The Hazrat's lineage. (2) Did you have any kinship with the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) or not? (3) Does any group dispute your correct lineage? Regarding the mentioned 'Mahram Nama', it is asked how it is for Sunnis to read it and whether it is correct to consider it right?

The Answer: Our master Amr ibn al-Aas (may Allah be pleased with him) is among the exalted Companions. None but a Rafidi (Shia) would commit insolence against him. It is forbidden (haram) for Sunni Muslims to read or listen to a book containing such things. What is the need for book references in such a matter? It is clearly stated in the established beliefs of the Ahl al-Sunnah:

"The Companions are all upright; we do not mention them except with goodness." All companions are people of goodness and justice; we shall not mention them except with goodness.

If someone does not accept the books of the Ahl al-Sunnah, then to the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him)...

1 Manh al-Rawd al-Azhar Sharh al-Fiqh al-Akbar, Afdal al-Nas Ba'dahu 'Alayhis Salatu was-Salam, Mustafa al-Babi, Egypt, p. 71. Page 99 of 750

जिल्द 29 फ़तावा रज़विया

(3) और फिर सबसे पहले उस्मान के विरोध पर ये तैयार हुए, (4) हज़रत उस्मान की बहन को तलाक़ दी। (5) और मस्जिद में हज़रत उस्मान के साथ कठोर भाषा की शुरुआत भी इन्हीं अम्र इब्न अल-आस ने की। (6) यही अम्र इब्न अल-आस थे जिन्होंने लोगों को सरेआम उकसा कर हज़रत उस्मान को मार डालने के लिए प्रेरित किया। (7) और फिर यही अम्र इब्न अल-आस थे जो मुआविया के मंत्री बनकर हज़रत अली से उस्मान के खून का बदला लेने आए। (8) खिलाफत के फैसले में अबू मूसा अशअरी को धोखा देने वाले भी यही थे। (9) बनी उमय्या और अम्र इब्न अल-आस जैसे चंद आदमियों की ये लगाई हुई आग है जो आज तक नहीं बुझी। उपरोक्त बातों का संबंध यद्यपि अधिकतर इतिहास से है, लेकिन चूंकि एक-एक शब्द मज़हब पर प्रभाव डाल रहा है, इसलिए इस नाचीज़ ने दारुल इफ्ता के दरवाज़े पर ही दस्तक देना उचित समझा। हज़रत अम्र इब्न अल-आस (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) के बारे में तीन और बातें पूछनी हैं: (1) हज़रत का वंश-वृक्ष (नसब नामा)। (2) क्या आपकी अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) से कोई रिश्तेदारी थी या नहीं? (3) क्या किसी समूह को आपके सही वंश के होने में संदेह है? उपरोक्त 'महरम नामा' के संबंध में यह पूछना है कि सुन्नियों के लिए इसका पढ़ना कैसा है और इसे सही समझना?

अल-जवाब (उत्तर): हमारे आका अम्र इब्न अल-आस (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) प्रतिष्ठित सहाबा किराम में से हैं। उनकी शान में गुस्ताखी (अशिष्टता) वही करेगा जो राफ़ज़ी (शिया) होगा। जिस किताब में ऐसी बातें हों, उसका पढ़ना और सुनना सुन्नी मुसलमानों पर हराम है। ऐसे मसले में किताबों के संदर्भ की क्या आवश्यकता है? अहले सुन्नत के स्थापित अक़ीदों (विश्वासों) में यह स्पष्ट है:

"सभी सहाबा न्यायप्रिय (उदुल) हैं, हम उनका उल्लेख केवल भलाई के साथ ही करेंगे।" सहाबा सभी के सभी खैर और न्याय वाले हैं, हम उनका ज़िक्र केवल भलाई से ही करेंगे।

अगर कोई व्यक्ति अहले सुन्नत की किताबों को नहीं मानता, तो अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) के..

1 मन्ह अर-रौद अल-अज़हर शरह अल-फ़िक़्ह अल-अकबर, अफ़ज़ल अन-नास बा'दहु अलैहिस्सलातु वस-सलाम, मुस्तफ़ा अल-बाबी, मिस्र, पृष्ठ 71। पेज 99 ऑफ़ 750

(۳) اور پھر سب سے پہلے مخالفت عثمان پر یہ آمادہ ہوئے، (۴) حضرت عثمان کی بہن کو طلاق دی۔ (۵) اور مسجد میں سخت کلامی کا افتتاح بھی انہی عمرو بن العاص نے حضرت عثمان کے ساتھ کیا۔ (۶) یہی عمرو بن العاص تھے جنہوں نے لوگوں کو اعلانیہ جوش دلا کر حضرت عثمان کے مار ڈالنے پر ترغیب دی۔ (۷) اور پھر یہی عمرو بن العاص تھے جو معاویہ کے وزیر بن کر حضرت علی سے خونِ عثمان کا انتقام لینے آئے۔ (۸) فیصلہ خلافت میں ابو موسیٰ اشعری کو دھوکا دینے والے بھی یہی تھے۔ (۹) بنی امیہ اور عمرو بن العاص جیسے چند آدمیوں کی یہ آگ لگائی ہوئی ہے جو آج تک نہیں بجھی۔ مندرجہ بالا باتوں کا تعلق اگرچہ زیادہ تر تاریخ سے ہے لیکن چونکہ ایک ایک حرف مذہب پر اثر ڈال رہا ہے، اور اس لیے ناچیز نے دار الافتاء کے دروازے ہی پر دستک دینی مناسب سمجھی، حضرت عمرو بن العاص رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے متعلق تین باتیں اور پوچھنی ہیں۔ (۱) حضرت کا نسب نامہ۔ (۲) آیا آپ کی حضور رسول خدا صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم سے کوئی رشتہ داری تھی یا نہیں؟ (۳) کسی گروہ کو آپ کے صحیح النسب ہونے میں کلام ہے؟ محرم نامہ مذکور کی نسبت یہ دریافت کرنا ہے کہ آیا اس کا پڑھنا سنیوں کے لیے کیسا ہے اور اس کو درست سمجھنا؟

الجواب: سید نا عمرو بن العاص رضی اللہ تعالیٰ عنہ جلیل القدر صحابہ کرام سے ہیں اُن کی شان میں گستاخی نہ کرے گا مگر رافضی، جس کتاب میں ایسی باتیں ہوں اس کا پڑھنا سُنا مسلمان سنیوں پر حرام ہے، ایسے مسئلہ میں کتابوں کے حوالے کی کیا حاجت، اہلسنت کے مسنون عقائد میں تصریح ہے،

الصحابة کلھم عدول لانذکرھم الابالخیر1۔ صحابہ سب کے سب اہل خیر و عدالت ہیں ہم ان کا ذکر نہ کریں گے مگر بھلائی سے۔

اگر کوئی شخص اہل سنت کی کتابوں کو نہ مانے تو رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے

1 منح الروض الازہر شرح الفقہ الاکبر افضل الناس بعدہ علیہ الصلوۃ والسلام مصطفی البابی مصر

Fatawa Razawiya, Volume 29

He will accept the commands; the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) says:

[Arabic] اسلم الناس وآمن عمرو بن العاص رواہ الترمذی عن عقبہ ابن عامر رضی اللہ تعالٰی عنہ۔ Many people are those who accepted Islam, but Amr ibn al-Aas is among those who brought faith. (Narrated by at-Tirmidhi from Uqbah ibn Aamir, may Allah be pleased with him. - T)

The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says:

[Arabic] ان عمرو بن العاص من صالحی قریش رواہ الترمذی والا مام احمد فی مسند عن سیدنا طلحة بن عبید اللہ احد العشرة المبشرة رضی اللہ تعالی عنہم اجمعین۔ Amr ibn al-Aas is from the righteous of the Quraysh. (At-Tirmidhi and Imam Ahmad narrated this in his Musnad from our master Talhah ibn Ubaydullah, who is one of the ten promised Paradise [Ashara Mubashara], may Allah be pleased with them all. - T)

The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says:

[Arabic] نعم اھل البیت عبد اللہ وابو عبد اللہ و ام عبد اللہ، رواہ البغوی و ابویعلی عن طلحة رضی اللہ تعالٰی عنہ۔ What an excellent household are Abdullah ibn Amr ibn al-Aas, Abdullah's father [Amr], and his mother. (This was narrated by al-Baghawi and Abu Ya'la from Talhah, may Allah be pleased with him. - T)

And Ibn Sa'd narrated in at-Tabaqat with a sound chain from Ibn Abi Mulaykah and added (Ibn Sa'd narrated this in at-Tabaqat with a sound chain from Ibn Abi Mulaykah and added this much): namely, Abdullah ibn Amr ibn al-Aas. The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) made Abdullah ibn Amr ibn al-Aas (may Allah be pleased with him) the commander of that divine army in the expedition of Dhat al-Salasil, in which Siddiq al-Akbar and Faruq al-A'zam (may Allah be pleased with them) were included.

Footnotes: 1. Jami' at-Tirmidhi, Chapters of Virtues, Virtues of Amr ibn al-Aas, Hadith 3870, Dar al-Fikr Beirut, 5/566. 2. Sunan at-Tirmidhi, Chapters of Virtues, Virtues of Amr ibn al-Aas, Hadith 3871, Dar al-Fikr Beirut, 5/566; Musnad Ahmad bin Hanbal from Talhah bin Ubaydullah, Hadith 1385, Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut, 1/260. 3. Musnad Ahmad bin Hanbal from Talhah bin Ubaydullah, Hadith 1384, Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut, 1/260; Musnad Abi Ya'la, Hadith 641, Muassasat Ulum al-Quran Beirut, 1/313.

फ़तावा-ए-रज़विया, जिल्द 29

वे आदेशों को स्वीकार करेंगे; नबी-ए-करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं:

[अरबी] اسلم الناس وآمن عمرو بن العاص رواہ الترمذی عن عقبہ ابن عامر رضی اللہ تعالٰی عنہ۔ बहुत से लोग वे हैं जो इस्लाम लाए, लेकिन अम्र इब्न अल-आस उन लोगों में से हैं जो ईमान लाए। (इसे तिरमिज़ी ने उकबा इब्न आमिर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है। - टी)

अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं:

[अरबी] ان عمرو بن العاص من صالحی قریش رواہ الترمذی والا مام احمد فی مسند عن سیدنا طلحۃ بن عبید اللہ احد العشرۃ المبشرۃ رضی اللہ تعالی عنہم اجمعین۔ अम्र इब्न अल-आस कुरैश के नेक लोगों में से हैं। (तिरमिज़ी और इमाम अहमद ने इसे अपनी मसनद में हमारे सरदार तलहा इब्न उबैदुल्लाह से रिवायत किया है, जो उन दस लोगों में से एक हैं जिन्हें जन्नत की खुशखबरी दी गई थी [अशरा मुबश्शरा], अल्लाह उन सब से राजी हो। - टी)

अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं:

[अरबी] نعم اھل البیت عبد اللہ وابو عبد اللہ و ام عبد اللہ، رواہ البغوی و ابویعلی عن طلحۃ رضی اللہ تعالٰی عنہ۔ अब्दुल्लाह इब्न अम्र इब्न अल-आस, अब्दुल्लाह के पिता और उनकी माँ कितना बेहतरीन घराना है। (इसे अल-बघवी और अबू याला ने तलहा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है। - टी)

और इब्न साद ने अल-तबाक़त में इब्न अबी मुलैका से एक सही सनद के साथ रिवायत किया और इतना बढ़ाया (इब्न साद ने इसे तबक़ात में सही सनद के साथ इब्न अबी मुलैका से रिवायत किया और इतना ज़्यादा किया): यानी अब्दुल्लाह इब्न अम्र इब्न अल-आस। अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने अब्दुल्लाह इब्न अम्र इब्न अल-आस (रज़ियल्लाहु अन्हु) को ग़ज़वा-ए-ज़ातुस सलासिल में उस ईश्वरीय सेना का सरदार बनाया, जिसमें सिद्दीक़-ए-अकबर और फ़ारूक़-ए-आज़म (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) शामिल थे।

पाद टिप्पणियाँ: 1. जामिअ अत-तिरमिज़ी, फ़ज़ाइल के अध्याय, अम्र इब्न अल-आस के फ़ज़ाइल, हदीस 3870, दार अल-फ़िक्र बेरुत, 5/566। 2. सुनन अत-तिरमिज़ी, फ़ज़ाइल के अध्याय, अम्र इब्न अल-आस के फ़ज़ाइल, हदीस 3871, दार अल-फ़िक्र बेरुत, 5/566; मसनद अहमद बिन हंबल

तलहा बिन उबैदुल्लाह से, हदीस 1385, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी बेरुत, 1/260। 3. मसनद अहमद बिन हंबल तलहा बिन उबैदुल्लाह से, हदीस 1384, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी बेरुत, 1/260; मसनद अबी याला, हदीस 641, मुअस्सासत उलूम अल-कुरान बेरुत, 1/313।

पृष्ठ 100/750

ارشادات کو تو مانے گا، نبی کریم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں:

اسلم الناس وآمن عمرو بن العاص رواہ الترمذی عن عقبہ ابن عامر رضی اللہ تعالٰی عنہ۔ بہت لوگ وہ ہیں کہ اسلام لائے مگر عمرو بن العاص ان میں ہیں جو ایمان لائے۔ (اس کو ترمذی نے عقبہ ابن عامر رضی اللہ تعالٰی عنہ سے روایت کیا۔ ت)

رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں:

ان عمرو بن العاص من صالحی قریش رواہ الترمذی والا مام احمد فی مسند عن سیدنا طلحۃ بن عبید اللہ احد العشرۃ المبشرۃ رضی اللہ تعالی عنہم اجمعین۔ عمرو بن العاص صالحین قریش سے ہیں (ترمذی اور امام احمد نے اپنی مسند میں اسے سیدنا طلحہ بن عبید اللہ جو عشرہ مبشرہ رضی اللہ تعالٰی عنہم اجمعین سے ایک ہیں سے روایت کیا۔ ت)

رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں:

نعم اھل البیت عبد اللہ وابو عبد اللہ و ام عبد اللہ، رواہ البغوی و ابویعلی عن طلحۃ رضی اللہ تعالٰی عنہ۔ بہت اچھے گھر والے ہیں عبد اللہ بن عمرو بن العاص اور عبد اللہ کا باپ اور اس کی ماں۔ اس کو بغوی اور ابویعلی رضی اللہ تعالٰی عنہ نے طلحہ رضی اللہ تعالٰی عنہ سے روایت کیا ہے۔ ت)

واخرج ابن سعد فی الطبقات بسند صحیح عن ابن ابی ملکیۃ وزاد (اس کو ابن سعد نے طبقات میں صحیح سند کے ساتھ ابن ابی ملیکہ سے روایت کیا اور اتنا زیادہ کیا۔) یعنی عبد اللہ بن عمرو بن العاص، رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے انہیں عبد اللہ بن عمرو بن العاص رضی اللہ تعالٰی

عنہ کو غزوہ ذات السلاسل میں اسی الہی فوج کا سردار کیا۔ جس میں صدیق اکبر و فاروق اعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہما شامل تھے۔

حواشی: 1 جامع الترمذی ابواب المناقب مناقب عمرو بن العاص حدیث ۳۸۷۰ دار الفکر بیروت ۵۶۶/۵ 2 سنن الترمذی ابواب المناقب مناقب عمرو بن العاص حدیث ۳۸۷۱ دار الفکر بیروت ۵۶۶/۵، مسند احمد بن حنبل عن طلحہ بن عبید اللہ حدیث ۱۳۸۵ دار احیاء التراث العربی بیروت ۲۶۰/۱ 3 مسند احمد بن حنبل عن طلحہ بن عبید اللہ حدیث ۱۳۸۴ دار احیاء التراث العربی بیروت ۲۶۰/۱، مسند ابی یعلی حدیث ۶۴۱ موسسۃ علوم القرآن بیروت ۳۱۳/۱

Fatawa Rizvia, Volume 29

...were. May Allah be pleased with them. Once, the people of Medina experienced such fear that they became scattered. Salim Mawla Abi Hudhaifa and Amr ibn al-Aas (may Allah be pleased with both of them) remained in the Noble Mosque with their swords. The Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) delivered a sermon and said in it:

[Arabic Box 1] Left: Why was it not that your refuge was with Allah and His Messenger? Why did you not do as these two believing men did? Right: Why was it not that in fear you sought refuge with Allah and His Messenger? Why did you not do as these two believing men did?

Even if a denier does not believe in the Hadiths, he will surely believe in the Great Quran. Allah Almighty says: "Not equal among you are those who spent before the conquest [of Makkah] and fought. Those are greater in degree than those who spent afterwards and fought. And to all Allah has promised the best [reward]. And Allah is Acquainted with what you do."

Translation: Among you, those who spent and fought before the victory of Makkah are not equal. They are greater in rank than those who spent and fought afterwards. And to both parties, Allah has promised goodness. And Allah knows well what you do.

Allah Almighty has categorized the companions of the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him and his progeny) into two types: first, believers before the victory of Makkah; second, believers after the victory of Makkah. He granted excellence to the first group over the second and stated for both groups that Allah Almighty has promised them goodness. Amr ibn al-Aas is among the believers from before the victory of Makkah. It is mentioned in Al-Isaba fi Tamyiz al-Sahaba:

[Arabic Box 2] Left: Amr bin al-Aas bin Wa'il bin Hashim bin Sa'id (with the diminutive form) bin Sahm bin Amr bin Husays bin Ka'b bin Lu'ayy al-Qurashi al-Sahmi, the governor of Egypt, whose agnomen (kunya) is Abu Abdullah and Abu Muhammad. He embraced Islam before the victory, in the month of Safar, 8 AH. Right: Amr bin al-Aas bin Wa'il bin Hashim bin Sa'id (with the diminutive form) bin Sahm bin Amr bin Husays bin Ka'b bin Lu'ayy al-Qurashi al-Sahmi, the governor of Egypt, whose

agnomen (kunya) is Abu Abdullah and Abu Muhammad. He embraced Islam before the victory of Makkah in the month of Safar, 8 AH and...

1. Musnad Ahmad bin Hanbal, Remaining Hadiths of Amr bin al-Aas, Al-Maktab al-Islami Beirut, 2/203.
2. Al-Quran Al-Karim, 57:10.

फ़तावा रज़विया, खंड 29

...थे। रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम। एक बार मदीना तय्यिबा के लोगों में ऐसा डर पैदा हुआ कि वे तितर-बितर हो गए। सालिम मौला अबी हुज़ैफ़ा और अम्र इब्न अल-आस (दोनों पर अल्लाह प्रसन्न हो) तलवारें लेकर मस्जिद शरीफ़ में हाज़िर रहे। हुज़ूर अकदस (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) ने खुतबा (भाषण) दिया और उसमें इरशाद फ़रमाया:

[बॉक्स 1] बायाँ (अरबी): क्या तुम्हारी पनाहगाह अल्लाह और उसके रसूल के सिवा कोई और थी? तुमने वैसा क्यों नहीं किया जैसा इन दो मोमिन पुरुषों ने किया? दायाँ (उर्दू): ऐसा क्यों न हुआ कि तुम डर के समय अल्लाह और उसके रसूल की ओर पनाह मांगते? तुमने वैसा क्यों नहीं किया जैसा इन दो मोमिन (ईमान वाले) पुरुषों ने किया।

यदि कोई इनकार करने वाला हदीसों को भी न माने तो वह महान कुरआन को तो मानेगा, अल्लाह अज्ज़वजल फ़रमाता है: "तुम में से वे बराबर नहीं हैं जिन्होंने फ़तह-ए-मक्का (मक्का की जीत) से पहले खर्च और जिहाद किया। वे उन लोगों से दर्जे में बड़े हैं जिन्होंने बाद में खर्च और जिहाद किया, और अल्लाह ने दोनों समूहों से भलाई का वादा फ़रमाया है और अल्लाह जो कुछ तुम करते हो उससे अच्छी तरह वाकिफ है।"

अनुवाद: तुम में वे बराबर नहीं जिन्होंने फ़तह-ए-मक्का से पहले खर्च और क़िताल (युद्ध) किया, वे दर्जे में उनसे बड़े हैं जिन्होंने बाद में खर्च और क़िताल किया, और दोनों पक्षों से अल्लाह ने भलाई का वादा फ़रमाया है, और अल्लाह अच्छी तरह जानता है जो कुछ तुम करोगे।

अल्लाह अज्ज़वजल ने हुज़ूर अकदस (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलीही वसल्लम) के सहाबा (साथियों) को दो प्रकार का बताया है: एक, फ़तह-ए-मक्का से पहले के मोमिन; दूसरे, फ़तह-ए-मक्का के बाद के मोमिन। पहले समूह को दूसरे समूह पर श्रेष्ठता प्रदान की और दोनों समूहों के लिए फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने उनसे भलाई का वादा किया है। अम्र इब्न अल-आस फ़तह-ए-मक्का से पहले के मोमिनों में से हैं। "अल-इसाबा फ़ी तमीज़ अल-सहाबा" में है:

[बॉक्स 2] बायाँ (अरबी): अम्र बिन अल-आस बिन वाइल बिन हाशिम बिन सईद (तस्गीर के साथ) बिन सहम बिन अम्र बिन हसीस बिन काब बिन लुय्यी कुरैशी सहमी मिस्र के अमीर, जिनकी कुनियत अबू अब्दुल्ला और अबू मुहम्मद है, वह फ़तह से पहले सफर 8 हिजरी में इस्लाम लाए। दायाँ (उर्दू): अम्र बिन अ ास बिन वाइल बिन हाशिम बिन सईद (तस्गीर के साथ) बिन सहम बिन अम्र बिन हसीस

बिन काब बिन लुय्यी कुरैशी सहमी मिस्र के अमीर जिनकी कुनियत अबू अब्दुल्ला और अबू मुहम्मद है, वह फ़तह-ए-मक्का से पहले माह सफर 8 हिजरी में इस्लाम लाए और...

1. मुसनद अहमद बिन हंबल, अम्र बिन अल-आस की शेष हदीसें, अल-मकतबा अल-इस्लामी बेरूत, 2/203।
2. अल-कुरआन अल-करीम 10/57 (वास्तव में 57/10)।

पृष्ठ 101 / 750

تھے۔ رضی اللہ تعالیٰ عنہم۔ ایک بار اہل مدینہ طیبہ کو کچھ ایسا خوف پیدا ہوا کہ متفرق ہو گئے سالم مولیٰ ابی حذیفہ اور عمرو بن العاص دونوں صاحب رضی اللہ تعالیٰ عنہما تلوار لے کر مسجد شریف میں حاضر رہے، حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے خطبہ فرمایا اور اس میں ارشاد کیا:

الا کان مفزعکم الی اللہ والی رسولہ الا فعلتم کما فعل ھذان الرجلان المؤمنان۔[1] | کیوں نہ ہوا کہ تم خوف میں اللہ ورسول کی طرف التجا لاتے، تم نے ایسا کیوں نہ کیا جیسا ان دونوں ایمان والے مردوں نے کیا۔

منکراگر احادیث کو بھی نہ مانے تو قرآن عظیم کو تو مانے گا، اللہ عزوجل فرماتا ہے: "لَا یَسْتَوِي مِنْكُمْ مَّنْ اَنْفَقَ مِنْ قَبْلِ الْفَتْحِ وَ قٰتَلَؕ اُولٰٓىٕكَ اَعْظَمُ دَرَجَةً مِّنَ الَّذِیْنَ اَنْفَقُوْا مِنْۢ بَعْدُ وَ قٰتَلُوْاؕ وَكُلًّا وَّعَدَ اللّٰهُ الْحُسْنٰىؕ وَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِیْرٌ"۔[2] تم میں برابر نہیں جنہوں نے فتح مکہ سے پہلے خرچ و قتال کیا وہ درجے میں ان سے بڑے ہیں جنہوں نے بعد میں خرچ و قتال کیا اور دونوں فریق سے اللہ نے بھلائی کا وعدہ فرمایا اور اللہ خوب جانتا ہے جو کچھ کہ تم کرو گے۔

اللہ عزوجل نے صحابہ حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کو دو قسم فرمایا: ایک مؤمنین قبل فتح مکہ، دوسرے مؤمنین بعد فتح مکہ، فریق اول کو فریق دوم پر فضیلت بخشی اور دونوں فریق کو فرمایا کہ اللہ تعالیٰ نے ان سے بھلائی کا وعدہ کیا۔ عمرو ابن العاص مؤمنین قبل فتح مکہ میں ہیں۔ اصابہ فی تمیز الصحابہ میں ہے:

عمرو بن العاص بن وائل بن هاشم بن سعيد بالتصغير ابن سهم بن عمرو بن هصيص بن كعب بن لوي قرشي السهمی امیر مصر یکنی ابا عبد الله و ابا محمد اسلم قبل الفتح فی صفر ۸ هـ | عمرو بن عاص بن وائل بن ہاشم بن سعید (تصغیر کے ساتھ) بن سہم بن عمرو بن ہصیص بن کعب بن لوی قرشی سہمی امیر مصر جن کی کنیت ابو عبداللہ اور ابو محمد ہے وہ فتح مکہ سے پہلے ماہ صفر ۸ ہجری میں اسلام لائے اور

[1] مسند احمد بن حنبل بقيه حديث عمرو بن العاص المكتب الاسلامي بيروت ۲۰۳/۲ [2] القرآن الكريم ۱۰/۵۷

Volume 29

Fatawa Rizvia

Eight [years], and it is said [it was] between Hudaybiyyah and Khaybar - 1 | (It is said that he accepted Islam between Hudaybiyyah and Khaybar. T)

And after the victory, their jihads in the path of Allah are such that the heavens and earth are echoing with their voices, and Allah Almighty has promised goodness to both parties. And as for those with diseased hearts who criticize them, saying so-and-so did this or that, if they have faith, then their mouths are silenced by the completion of the verse: "And Allah is Aware of what you do" 2—meaning, I know very well what you will do, yet I have already promised goodness to all of you. Now ask the Great Quran itself what Allah Almighty says regarding those to whom He has promised goodness:

"Indeed, those for whom the best [reward] has preceded from Us—they are from it far removed. They will not hear its sound, while they are, in that which their souls desire, abiding eternally. They will not be grieved by the greatest terror, and the angels will meet them, [saying], 'This is your Day which you were promised.'" 3

Indeed, those for whom Our promise of goodness has been made are kept far from Hell. They will not even hear a whisper of it and will remain forever in the blessings their hearts desire. The greatest terror [of the Day of Judgment] will not grieve them, and the angels will welcome them saying, "This is your day which was promised to you."

After these divine pronouncements, it does not behove a Muslim to criticize any Companion. Even if, for the sake of argument, the critic points out something far greater than what is claimed, say to him: "Are you more knowing, or is Allah?" 4 Do you know more or does Allah? Was Allah not aware of those things? Despite that, He has already said to them, "I have promised goodness to all of you; your actions are not hidden from Me." So, no one will object now except one whose intention is to object to Allah Almighty. [Regarding] Amr ibn al-Aas (may Allah be pleased with him).

1 Al-Isaba fi Tamyiz al-Sahaba, letter 'Ayn, entry for Amr ibn al-Aas, 5882, Dar Sadr, Beirut, 2/3. 2 Al-Quran al-Karim, 57:10. 3 Al-Quran al-Karim, 21:101, 102, and 103. 4 Al-Quran al-Karim, 2:140.

जिल्द 29

फतावा रजविया

आठ [वर्ष], और कहा गया है कि हुदैबिया और खैबर के बीच - 1 | (कहा गया है कि वह हुदैबिया और खैबर के दरमियान इस्लाम लाए। त)

और फतह के बाद अल्लाह की राह में उनके जो जिहाद हैं, आसमान व ज़मीन उनकी आवाज़ों से गूँज रहे हैं और अल्लाह अज़्ज़-व-जल्ल ने दोनों पक्षों से भलाई का वादा फरमाया है। और दिल के बीमार जो उन पर तान (आलोचना) करें कि फलाँ ने यह काम किया, फलाँ ने वह काम किया, अगर वे ईमान रखते हैं तो उनका मुँह आयत के इस हिस्से से बंद कर दिया गया कि "और अल्लाह तुम्हारे कर्मों से ख़बरदार है" 2—यानी मुझे अच्छी तरह मालूम है जो कुछ तुम करने वाले हो, फिर भी मैं तुम सबसे भलाई का वादा फरमा चुका हूँ। अब यह भी कुरान-ए-अज़ीम ही से पूछ कर देखिये कि अल्लाह अज़्ज़-व-जल्ल ने जिससे भलाई का वादा फरमाया, उसके लिए क्या फरमाता है:

"बेशक जिनके लिए हमारी तरफ से भलाई का वादा पहले हो चुका है, वे जहन्नुम से दूर रखे गए हैं। वे उसकी भनक तक न सुनेंगे और वे अपनी मनपसंद नेमतों में हमेशा रहेंगे। उन्हें कयामत की सबसे बड़ी घबराहट दुखी नहीं करेगी और फरिश्ते उनका स्वागत यह कहते हुए करेंगे कि यह तुम्हारा वह दिन है जिसका तुमसे वादा किया गया था।" 3

बेशक वह जिनके लिए हमारा वादा भलाई का हो जहन्नुम से दूर रखे गए हैं इसकी भनक तक न सुनेंगे और अपनी मन मानती नेमतों में हमेशा रहेंगे वह कयामत सब से बड़ी घबराहट उन्हें ग़मगीन न करे गी और मलाइका उनका इस्तक़बाल करेंगे यह कहते हुए कि यह है तुम्हारा वह दिन जिसका तुम से वादा था।

इन ईश्वरीय कथनों के बाद एक मुसलमान की यह शान नहीं कि वह किसी सहाबी पर तान (आक्षेप) करे। फर्ज़ कीजिए कि आक्षेप करने वाला जितनी बात बताता है, उससे हज़ार गुना ज़्यादा ही सही, उससे यह कहिये "क्या तुम ज़्यादा जानते हो या अल्लाह?" 4 क्या तुम ज़्यादा जानते हो या अल्लाह? क्या अल्लाह को इन बातों की ख़बर न थी? इसके बावजूद वह उनसे फरमा चुका कि मैंने तुम सबसे भलाई का वादा कर लिया है, तुम्हारे काम मुझसे छुपे नहीं हैं। तो अब कोई एतराज़ नहीं करेगा

सिवाय उसके जिसका मकसद अल्लाह अज़्ज़-व-जल्ल पर एतराज़ करना हो। [विषय:] अम्र बिन अल-आस (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु)।

1 अल-इसाबा फी तमीज़ अल-सहाबा, हर्फ़ अल-ऐन, तर्जुमा अम्र बिन अल-आस, 5882, दार सादिर बेरुत, 2/3। 2 अल-कुरान अल-करीम, 57/10। 3 अल-कुरान अल-करीम, 21/101, 102 और 103। 4 अल-कुरान अल-करीम, 2/140।

पेज 102 / 750

جلد ۲۹

فتاوی رضویہ

ثمان وقیل بین الحدیبیۃ و خیبر - 1 | کہا گیا ہے کہ حدیبیہ اور خیبر کے درمیان اسلام لائے۔ ت)

اور بعد فتح تو راہِ خدا میں جو ان کے جہاد ہیں آسمان و زمین ان کے آوازے سے گونج رہے ہیں اور اللہ عزوجل نے دونوں فریق سے بھلائی کا وعدہ فرمایا، اور مریض القلب معترضین جو ان پر طعن کریں کہ فلاں نے یہ کام کیا فلاں نے یہ کام کیا اگر ایمان رکھتے ہوں تو ان کا منہ تمہ آیت سے بند فرما دیا کہ "وَاللّٰہُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِیْرٌ" 2 "مجھے خوب معلوم ہے جو کچھ تم کرنے والے ہو، مگر میں تو تم سب سے بھلائی کا وعدہ فرما چکا۔ اب یہ بھی قرآن عظیم ہی سے پوچھ دیکھئے، کہ اللہ عزوجل نے جس سے بھلائی کا وعدہ فرمایا اس کے لیے کیا ہے فرماتا ہے:

"اِنَّ الَّذِیْنَ سَبَقَتْ لَہُمْ مِّنَّا الْحُسْنٰی ۙ اُولٰٓئِکَ عَنْہَا مُبْعَدُوْنَ ﴿۱۰۱﴾ لَا یَسْمَعُوْنَ حَسِیْسَہَا ۚ وَ ہُمْ فِیْ مَا اشْتَہَتْ اَنْفُسُہُمْ خٰلِدُوْنَ ۚ﴿۱۰۲﴾ لَا یَحْزُنُہُمُ الْفَزَعُ الْاَکْبَرُ وَ تَتَلَقّٰہُمُ الْمَلٰٓئِکَۃُ ؕ ہٰذَا یَوْمُکُمُ الَّذِیْ کُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ ﴿۱۰۳﴾" 3

بے شک وہ جن کے لیے ہمارا وعدہ بھلائی کا ہو جہنم سے دور رکھے گئے ہیں اس کی بھنک تک نہ سنیں گے اور اپنی من مانتی نعمتوں میں ہمیشہ رہیں گے وہ قیامت سب سے بڑی گھبراہٹ انہیں غمگین نہ کرے گی اور ملائکہ ان کا استقبال کریں گے یہ کہتے ہوئے کہ یہ ہے تمہارا وہ دن جس کا تم سے وعدہ تھا۔

ان ارشادات الہیہ کے بعد مسلمان کی شان نہیں کہ کسی صحابی پر طعن کرے، بفرض غلط بفرض باطل طعن کرنے والا جتنی بات بتاتا ہے اس سے ہزار حصے زائد سہی اس سے یہ کہیے "ءَاَنْتُمْ اَعْلَمُ اَمِ اللّٰہُ" 4 کیا تم زیادہ جانتے ہو یا اللہ، کیا اللہ کو ان باتوں کی خبر نہ تھی باینہمہ وہ ان سے

فرما چکا کہ میں نے تم سب سے بھلائی کا وعدہ فرما لیا تمہارے کام مجھ سے پوشیدہ نہیں، تو اب اعتراض نہ کرے گا مگر وہ جسے اللہ عزوجل پر اعتراض مقصود ہے۔ عمرو بن عاص رضی اللہ تعالیٰ عنہ

1 الاصابة فی تمییز الصحابة حرف العین ترجمہ عمرو بن العاص ۵۸۸۲ دار صادر بیروت ۲/۳ 2 القرآن الکریم ۵۷ / ۱۰ 3 القرآن الکریم ۲۱ / ۱۰۱، ۱۰۲ و ۱۰۳ 4 القرآن الکریم ۲ / ۱۴۰

Fatawa Rizwia Volume 29

[He is] a high-ranking Quraishi from the progeny of Ka'b bin Lu'ay (Radi Allahu Anhu), the ancestor of the Messenger of Allah (Sallallahu Alaihi Wa Sallam). If those cursed words of slander regarding lineage were spoken, it must have been by some Rafidhi (heretic). When they do not even spare Siddiq and Farooq, what significance does Amr ibn al-Aas hold? Radi Allahu Anhum Ajma'een (May Allah be pleased with them all).

"And those who have wronged are going to know to what [kind of] return they will be returned." [Quran 26:227] And Allah Almighty knows best. And soon the wrongdoers will know to which side they will turn. (T) And Allah Almighty knows best.

Issue 33 to 38: From Kanpur, Mohalla Rui Godam, Masjid Hussaini Mistri, sent by Muhammad Yaqub Khan, 9 Jumada al-Ula 1336 AH.

(1) Do the Auliya Allah (saints) remain alive after their passing or not? If they remain alive, is there any definitive proof for their eternal life? And if they do not remain alive, is there any decisive argument for that?

(2) Do the powers and spiritual benefits (fuyooz) and blessings of the Auliya Allah persist after their passing, or do they all end with physical death? Is it rightful for the needy to seek benefit from the shrines of the elders of religion, and is there any Sharia proof for this? If there is, what is the proof, and if not, are all these merely superstitions? What is the proof for them being superstitions?

(3) Is visiting the shrines of the elders of religion and saying to them, "You are one whose prayers are answered and accepted in the Divine Court; pray for us so that the Lord of the worlds fulfills our purpose," rooted in the luminous Sharia or not? If it has any basis, in which book is it found?

(4) Are the Auliya Allah aware when someone visits their shrines? If they have this awareness, do they intercede in the Court of the Majestic Lord to alleviate the distress and suffering of an afflicted person or not?

(5) Is it permissible to call Hazrat Ghaus-e-Azam (may his secret be sanctified) "Dastagir" (helper)?

(6) Is it permissible to address Hazrat Khwaja Moinuddin Sanjari (may his secret be sanctified) with the title "Gharib Nawaz" (benefactor of the poor)?

1. The Holy Quran 26/227

फ़तावा रिज़विया जिल्द 29

[वह] अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के महान पूर्वज काब बिन लुय्या (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) की संतान से एक उच्च श्रेणी के कुरैशी हैं। यदि वंश के बारे में वे अभिशप्त निंदा के शब्द कहे गए होंगे, तो वह किसी राफ़ज़ी (पंथद्रोही) ने ही कहे होंगे। जब वे सिद्दीक़ और फ़ारूक़ को नहीं छोड़ते, तो अम्र बिन अल-आस की क्या बिसात? अल्लाह उन सब से राज़ी हो।

"और ज़ुल्म करने वाले अनक़रीब जान लेंगे कि किस करवट पलटा खाएँगे।" [क़ुरान 26:227] और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। और जल्द ही अत्याचारी जान लेंगे कि वे किस ओर मुड़ेंगे। (त) और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 33 से 38: कानपुर, मोहल्ला रुई गोदाम, मस्जिद हुसैनी मिस्त्री से, प्रेषक मुहम्मद याकूब खान, 9 जमादी अल-उला 1336 हिजरी।

(1) क्या औलिया अल्लाह (अल्लाह के वली) वसाल (देहांत) के बाद जीवित रहते हैं या नहीं? यदि वे जीवित रहते हैं, तो क्या उनके शाश्वत जीवन पर कोई ठोस प्रमाण है? और यदि वे जीवित नहीं रहते, तो क्या इस पर कोई निर्णायक तर्क है?

(2) क्या औलिया अल्लाह के प्रभाव और उनके आध्यात्मिक लाभ (फ़ैज़) और बरकतें वसाल के बाद भी मौजूद रहती हैं, या ज़ाहिरी मौत के बाद वे सब खत्म हो जाते हैं? ज़रूरतंदों का दीन के बुज़ुर्गों की दरगाहों से लाभान्वित होना सही है और क्या इस पर कोई शरीयत का प्रमाण है? यदि है तो वह प्रमाण क्या है, और यदि नहीं है तो क्या ये सब मात्र अंधविश्वास हैं? उनके अंधविश्वास होने पर क्या प्रमाण है?

(3) दीन के बुज़ुर्गों की दरगाहों में उपस्थित होना और उनसे यह कहना कि "आपकी दुआएँ क़ुबूल होती हैं और आप दरबार-ए-इलाही में मक़बूल हैं, हमारे लिए दुआ कीजिए कि रब्बुल आलमीन हमारी ज़रूरत पूरी कर दे", क्या शरीअत-ए-ग़र्रा (उज्ज्वल शरीयत) में इसका कोई आधार है या नहीं? यदि इसका कोई आधार है, तो वह किस किताब में है?

(4) क्या औलिया अल्लाह को मज़ार पर जाने वालों की खबर होती है या नहीं? और यदि उनमें यह एहसास है, तो क्या वे अल्लाह तआला के दरबार में अर्ज़ करके किसी मुसीबतज़दा की तकलीफ़ और मुसीबत को दूर करवाते हैं या नहीं?

(5) हज़रत ग़ौस-ए-आज़म पाक (क़ुद्दिस सिर्रहु) को "दस्तगीर" कहना जायज़ है या नहीं?

(6) हज़रत ख्वाजा मुईनुद्दीन संजरी (क़ुद्दिस सिर्रहु) को "ग़रीब नवाज़" के लक़ब से पुकारना जायज़ है या नहीं?

1. अल-क़ुरान अल-करीम 26/227

पृष्ठ 103/750

جلیل القدر قریشی ہیں رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کے جد امجد کعب بن لؤی رضی اللہ تعالٰی عنہما کی اولاد سے، اور ان کی نسبت وہ ملعون کلمہ طعن فی النسب کا اگر کہا ہو گا تو کسی رافضی نے، پھر وہ صدیق و فاروق کو کب چھوڑتے ہیں عمرو بن عاص کی کیا گنتی، رضی اللہ تعالٰی عنہم اجمعین۔

"وَسَيَعْلَمُ الَّذِينَ ظَلَمُوا أَيَّ مُنقَلَبٍ يَنقَلِبُونَ" واللہ تعالٰی اعلم۔ اور عنقریب ظالم جان لیں گے کہ کس کروٹ پلٹا کھائیں گے۔(ت)واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۳۳ تا ۳۸: از کانپور محلہ روئی گودام مسجد حسینی مستری مرسلہ محمد یعقوب خاں ۹ جمادی الاولٰی ۱۳۳۶ھ

(۱) حضرات اولیاء اللہ بعد وصال زندہ رہتے ہیں یا نہیں؟ اگر زندہ رہتے ہیں تو کوئی دلیل قطعی ان کی حیاتِ ابدی پر ہے یا نہیں؟ اور اگر نہیں زندہ رہتے تو اس پر کوئی برہانِ قاطع ہے یا نہیں؟

(۲) اولیاء اللہ کے تصرفات اور انکے فیوض وانوار وبرکات بعد وصال بھی موجود رہتے ہیں یا بعدِ موتِ ظاہری وہ سب ختم ہو جاتے ہیں؟ حاجتمندوں کا بزرگانِ دین کی درگاہوں سے فیضیاب ہونا برحق ہے اور اس پر کوئی دلیل شرعی ہے؟ اگر ہے تو کیا دلیل ہے اور اگر نہیں ہے تو کیا یہ سب محض توہمات ہیں؟ ان کے توہمات ہونے پر کیا دلیل ہے؟

(۳) بزرگانِ دین کی درگاہوں میں حاضر ہونا اور ان سے یہ کہنا کہ آپ مستجاب الدعوات اور مقبول بارگاہ ہیں ہمارے لیے دعا کیجئے کہ خداوند عالم ہماری وہ غرض پوری کردے شریعتِ غرا میں اس کی کوئی اصل ہے یا نہیں؟ اگر اس کی کوئی اصل ہے تو کس کتاب میں ہے؟

(۴) اولیاء اللہ کو مزارات پر جانے سے خبر ہوتی ہے یا نہیں؟ اور ان میں یہ احساس ہے تو بارگاہِ ذوالجلال میں عرض کر کے کسی مصیبت زدہ کی تکلیف اور مصیبت کا ازالہ کرا دیں یا نہیں؟

(۵) حضرت غوثِ اعظم پاک قدس سرہ کو دستگیر کہنا جائز ہے یا نہیں؟

(۶) حضرت خواجہ معین الدین سنجری قدس سرہ کو غریب نواز کے لقب سے پکارنا جائز ہے یا نہیں؟

1. القرآن الکریم ۲۶ / ۲۲۷

Fatawa Ridawiyyah Volume 29

The Answer:

The doctrine of the Ahl al-Sunnah is that the human soul remains alive even after death. Death is for the body, not for the soul. "Innama khuluqtum lil-abad" (You were created for eternity), you were made to live forever. Imam Jalaluddin al-Suyuti, in Sharh al-Sudur, narrates from some eminent Imams that someone mentioned death and the soul in their presence, and they said:

Subhan Allah! Haadha qawlu Ahl al-Bida'[2] (Glory be to Allah! This is the saying of the people of innovation.) | Glory be to Allah! This is the statement of those with corrupt beliefs.

Allah Almighty says:

"Kullu nafsin dhaa'iqat al-mawt"[3] | Every soul is to taste the flavor of death.

As long as death has not occurred, how can there be a taste of the non-existent? And when it does occur, if the soul dies, then who would taste the flavor of death? Likewise, there is a consensus of the Ahl al-Sunnah wa al-Jama'ah and clarification in authentic Hadiths that every deceased person sees the one who comes to their grave and hears their speech. After death, hearing, sight, knowledge, and perception all remain as they were; rather, they increase significantly, for these attributes belonged to the soul and the soul is still alive. Previously it was imprisoned in the body and now it is free from that imprisonment. Presenting one's needs to the Saints (Awliya) in this manner is undoubtedly permissible. The great Imam Taqi al-Milla wa al-Din Ali bin Abdul Kafi al-Subki (may his secret be sanctified) in the honorable book 'Shifa al-Siqam' and the verified scholar Mawlana Abdul Haq Muhaddith Dehlawi (may Allah's mercy be upon him) in 'Ash'at al-Lam'at' and other elders have provided grand research on these issues in their works. Shah Abdul Aziz Muhaddith Dehlawi writes in 'Tafsir-e-Azizi' under the noble verse 'And [by] the moon when it becomes full':

Some of the special elect among the friends of Allah (Awliya), whom He has made instruments for the completion and guidance of mankind, also possess disposal (tasarruf) in the world in this state [after death]. | There are some special friends of Allah who have been made a means for the complete training and guidance of servants; they, even in this state, [possess disposal...]

[1] Sharh al-Sudur, Chapter: Excellence of Death, Khilafat Academy Swat, p. 5 [2] Sharh al-Sudur, Chapter: Abode of Souls, Khilafat Academy Swat, p. 106 [3] Al-Quran al-Karim 3/185

फतवा रज़विया जिल्द २९

उत्तर:

अहले सुन्नत का मज़हब यह है कि इंसानी रूह मौत के बाद भी ज़िंदा रहती है, मौत बदन के लिए है रूह के लिए नहीं, "इनमा खुलिक्तुम लिल-अबद" (बेशक तुम्हें हमेशा रहने के लिए पैदा किया गया है)। इमाम जलालुद्दीन सुयूती 'शरह-उस-सुदूर' में कुछ अइम्मा-ए-किराम से नक़ल फरमाते हैं कि किसी ने उनके सामने मौत और रूह का ज़िक्र किया, तो उन्होंने फ़रमाया:

सुब्हान अल्लाह! हाज़ा कौलु अहलिल बिदअ[2] | सुब्हान अल्लाह! यह बद-मज़हबों का कौल (कथन) है।

अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल फरमाता है:

"कुल नफ़्सिन ज़ा-इक़तुल मौत"[3] | हर जान मौत का मज़ा चखने वाली है।

जब तक मौत वाक़े नहीं हुई, मादूम (अनुपस्थित) का मज़ा कहाँ से आया? और जब वाक़े हुई, अगर रूह मर जाए तो मौत का मज़ा कौन चखेगा? इसी तरह अहले सुन्नत व जमाअत का इज्मा (सहमति) है और सही हदीसों की तसरीह (स्पष्टीकरण) है कि हर मय्यत अपनी क़ब्र पर आने वाले को देखती है और उसका कलाम सुनती है। मौत के बाद समाअत (सुनना), बसरत (देखना), इल्म और इदराक (बोध), सब बदस्तूर बाक़ी रहते हैं बल्कि पहले से बहुत ज़्यादा हो जाते हैं, क्योंकि ये सिफ़तें रूह की थीं और रूह अब भी ज़िंदा है। पहले बदन में क़ैद थी और अब इस क़ैद से आज़ाद है। औलिया-ए-किराम से इस तरह अर्ज़-ए-हाजत (ज़रूरत पेश करना) बिला-शुबा जायज़ है। इमाम-ए-अजल तक़ीउल मिल्लत वद-दीन अली बिन अब्दुल काफ़ी सुबकी (क़ुद्दिसा सिर्रहु) ने किताब 'शिफ़ा-उस-सिक़ाम' में और शैख मोहक़्क़िक़ मौलाना अब्दुल हक़ मोहद्दिस देहलवी (रहमहुल्लाह) ने 'अशअतुल लम्आत' और दीगर अकाबिर ने अपनी तसनीफ़ात (रचनाओं) में इन मसाइल की तहक़ीक़-ए-जलील फ़रमाई। शाह अब्दुल अज़ीज़ साहब मोहद्दिस देहलवी 'तफ़्सीर-ए-अज़ीज़ी' में आयत-ए-करीमा "वल क़मरि इज़ात्तसक़" के तहत लिखते हैं:

अल्लाह तआला के कुछ खास औलिया हैं जिन्हें बंदों की मुकम्मल तरबियत और रहनुमाई के लिए ज़रिया बनाया गया है, उन्हें इस हालत में भी दुनिया में तसर्रुफ़ (अधिकार) हासिल है। | अल्लाह

तआला के कुछ खास औलिया हैं जिन्हें बंदों की मुकम्मल तरबियत और रहनुमाई के लिए ज़रिया बनाया गया है, उन्हें इस हालत में भी...

[1] शरह-उस-सुदूर, बाब: फ़ज़्लुल मौत, ख़िलाफ़त एकेडमी स्वात, पृष्ठ ५ [2] शरह-उस-सुदूर, बाब: मक़र्रुल अरवाह, ख़िलाफ़त एकेडमी स्वात, पृष्ठ १०६ [3] अल-क़ुरान अल-करीम ३/ १८५

فتاوی رضویہ جلد ۲۹

الجواب:

اہلسنت کا مذہب یہ ہے کہ روح انسانی بعد موت بھی زندہ رہتی ہے، موت بدن کے لیے ہے روح کے لیے نہیں، انما خلقتم للابد تم ہمیشہ رہنے کے لیے بنائے گئے ہو۔ امام جلال الدین سیوطی شرح الصدور میں بعض ائمہ کرام سے نقل فرماتے ہیں کہ کسی نے ان کے سامنے موت وروح کا ذکر کیا، فرمایا:

سبحن اللہ ھذا قول اھل البدع[2] | سبحان اللہ ! یہ بد مذہبوں کا قول ہے۔

اللہ عزوجل فرماتا ہے:

"كُلُّ نَفْسٍ ذَائِقَةُ الْمَوْتِ ط "[3] | ہر جان موت کا مزہ چکھنے والی ہے۔

موت جب تک واقع نہ ہوئی معدوم کا مزہ کہاں سے آیا اور جب واقع ہوئی اگر روح مر جائے تو موت کا مزہ کون چکھے یوں ہی اہلسنت وجماعت کا اجماع اور صحیح حدیثوں کی تصریح ہے کہ ہر میت اپنی قبر پر آنے والے کو دیکھتا اور اس کا کلام سنتا ہے، موت کے بعد سمع بصر، علم اوراک ، سب بدستور باقی رہتے ہیں بلکہ پہلے سے بہت زیادہ ہو جاتے ہیں، کہ یہ صفتیں روح کی تھیں اور روح اب بھی زندہ ہے پہلے بدن میں مقید تھی اور اب اس قید سے آزاد ہے، اولیائے کرام سے اس طرح عرض حاجت بلاشبہ جائز ہے، امام اجل تقی الملت والدین علی بن عبد الکافی سبکی قدس سرہ الملکی نے کتاب مستطاب شفاء السقام اور شیخ محقق مولانا عبد الحق محدث دہلوی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ نے اشعۃ اللمعات اور دیگر اکابر نے اپنی تصنیفات میں ان مسائل کی تحقیق جلیل

فرمائی۔ شاہ عبدالعزیز صاحب محدث دہلوی تفسیر عزیزی میں زیر آیہ کریمہ والقمر اذا اتسق لکھتے ہیں:

بعضے از خواص اولیاء اللہ را کہ آلہ جارحہ تکمیل وارشاد بنی نوع خود گردانیدہ اند دریں حالت ہم تصرف در دنیا | اللہ تعالیٰ کے بعض خاص اولیاء ہیں جن کو بندوں کی تربیت کاملہ اور رہنمائی کے لیے ذریعہ بنایا گیا ہے، انہیں اس حالت میں بھی

[1] شرح الصدور باب فضل الموت خلافت اکیڈمی سوات ص ۵ [2] شرح الصدور باب مقر الارواح خلافت اکیڈمی سوات ص ۱۰۶ [3] القرآن الکریم ۳/ ۱۸۵

Fatawa Razawiyya Volume 29

...given, and their absorption (in the Divine) due to the perfection and vastness of their perception does not prevent them from turning towards this side (the world). Owaisi Sufis acquire internal perfections from these friends of Allah, and those in need seek and find the solution to their problems from them. (T)

Also in Tafsir-e-Azizi it is stated: Burning (cremation) is like making the soul homeless, whereas burial is like creating a dwelling for the soul. For this reason, the process of gaining benefit and grace from the buried friends of Allah and other righteous believers continues, and providing assistance and benefit to them is also conceivable. (T)

Also in the same [book], in the commentary of Surah Al-Mutaffifin, it is stated: The station of 'Illiyyin is above the seven heavens; its lower part is connected to Sidrat al-Muntaha and its upper part is connected to the right pillar of the Majestic Throne. The souls of the righteous reach there after their removal (from the body). The close ones, namely the Prophets and the Saints, remain established there, while the common righteous people are placed according to their ranks in the lowest heaven (Asman-e-Dunya), or between the heavens and the earth, or in the Well of Zamzam. These souls also maintain a connection with their graves, so for visitation at the grave...

1 Fath al-Aziz (Tafsir-e-Azizi), Para Amma, under the verse "Wal-qamari idha-ttasaq..." etc., Muslim Book Depot, Lal Kuan, Delhi, p. 206. 2 Fath al-Aziz (Tafsir-e-Azizi), Para Amma, Surah Abasa, "Benefiting from Buried Saints", Muslim Book Depot, Lal Kuan, Delhi, p. 143.

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

...दी गई है, और उनके बोध की पूर्णता और विशालता के कारण उनका तल्लीन होना इस ओर (दुनिया की तरफ) ध्यान देने में बाधा नहीं बनता। ओवैसी सूफी इन अल्लाह के वलियों से आंतरिक पूर्णता प्राप्त करते हैं, और ज़रूरतमंद लोग अपनी समस्याओं का समाधान उनसे माँगते और पाते हैं। (त)

साथ ही तफ़्सीर-ए-अज़ीज़ी में है: जला देना मानों रूह को बेघर करना है, जबकि दफ़नाना मानों रूह के लिए एक ठिकाना बनाना है। इसी कारण दफ़नाए गए अल्लाह के वलियों और अन्य नेक मोमिनों से लाभ और फ़ायदा प्राप्त करने का सिलसिला जारी रहता है, और उनके लिए सहायता और लाभ पहुँचाना भी संभव है। (त)

साथ ही उसी में सूरह अल-मुतफ़्फ़िफ़ीन की तफ़्सीर में है: इल्लिय्यीन का स्थान सातों आसमानों के ऊपर है, उसका निचला हिस्सा सिदरतुल मुंतहा से और ऊपरी हिस्सा अर्श-ए-मजीद के दाहिने पाए से जुड़ा हुआ है। नेक लोगों की रूहें कब्ज़ होने के बाद वहाँ पहुँचती हैं। मुक़र्रबीन यानी नबी और वली तो वहीं बने रहते हैं, जबकि आम नेक लोगों को उनके दर्जे के अनुसार दुनिया के आसमान पर या आसमान और ज़मीन के बीच या ज़मज़म के कुएं में ठहराया जाता है। इन रूहों का संबंध कब्रों के साथ भी बना रहता है, इसलिए ज़ियारत के लिए कब्र पर...

1 फ़तह अल-अज़ीज़ (तफ़्सीर-ए-अज़ीज़ी), पारा अम्मा, आयत "वल्-क़मरि इज़ा-त्तसक़..." आदि के अंतर्गत, मुस्लिम बुक डिपो, लाल कुआं, दिल्ली, पृ. 206। 2 फ़तह अल-अज़ीज़ (तफ़्सीर-ए-अज़ीज़ी), पारा अम्मा, सूरह अबस, "दफ़नाए गए वलियों से लाभ उठाना", मुस्लिम बुक डिपो, लाल कुआं, दिल्ली, पृ. 143।

पृष्ठ 750 का 105

داده، واستغراق آنها بجهت کمال وسعت مدارک آنها مانع توجه باین سمت نمی گردد و اویسیان تحصیل کمالات باطنی از آنها می نمایند وار باب حاجات و مطالب حل مشکلات خود از آنها می طلبند و می یابند۔ 1 | دنیا کے اندر تصرف کی طاقت و اختیار دیا گیا ہے اور کامل وسعت مدارک کی وجہ سے ان کا استغراق اس طرف متوجہ ہونے سے مانع نہیں ہوتا۔ صوفیائے اویسیہ باطنی کمالات ان اولیاء اللہ سے حاصل کرتے ہیں اور غرض مند و محتاج لوگ اپنی مشکلات کا حل ان سے طلب کرتے اور پاتے ہیں۔ (ت)

نیز تفسیر عزیزی میں ہے: سوختن گویا روح را بے مکان کردن است و دفن کردن گویا مسکنی برائے روح ساختن است بنا بریں از اولیائے مدفونین و دیگر صلحائے مومنین انتفاع و استفاده جاری ست و آنها را افاده اعانت نیز متصور۔ 2 | جلا دینا گویا کہ روح کو بے مکان کرنا ہے جب کہ دفن کرنا گویا کہ روح کے لیے ٹھکانا بنانا ہے۔ اسی سبب سے دفن شده اولیاء اللہ اور دیگر صلحائے مومنین سے نفع و فائدہ کا حصول جاری ہے اور ان کے لیے امداد و فائدہ رسانی بھی متصور ہے۔ (ت)

نیز اسی میں تفسیر سوره مطففین میں ہے: مقام علیین بالائے ہفت آسمان ست و پائین آں متصل بسدرة المنتہی است و بالائے آں متصل بہ پایہ راست عرش مجید است وارواح نیکاں بعد از قبض در آنجامی رسند و مقربان یعنی انبیاء و اولیاء دراں مستقر می مانند، و عوام صلحاء رہ بحسب مراتب در آسمان دنیا یا در میان آسمان و زمین یا در چاہ زمزم قرار می دہند و تعلقے بقبر نیز این ارواح را می باشد کہ بحضور زیارت کنندگان و اقارب و دیگر دوستان | مقام علیین ساتویں آسمانوں کے اوپر ہے، اس کا نچلا حصہ سدرة المنتہی اور اوپر والا عرشِ مجید کے دائیں پائے سے ملا ہوا ہے،

نیک لوگوں کی روحیں قبض ہونے کے بعد وہاں پہنچتی ہیں، مقربین یعنی انبیاء و اولیاء تو وہیں برقرار رہتے ہیں جب کہ عام صالحین کو ان کے مراتب کے مطابق آسمانِ دنیا یا آسمان و زمین کے درمیان یا چاہِ زمزم میں ٹھہراتے ہیں ان روحوں کا تعلق قبروں کے ساتھ بھی قائم رہتا ہے، چنانچہ وہ زیارت کے لیے قبر پر

1 فتح العزیز (تفسیر عزیزي) پارہ عم تحت آیة والقمر اذا اتسق الخ مسلم بکڈپو لال کنواں دہلی ص ۲۰۶ 2 فتح العزیز (تفسیر عزیزي) پارہ عم سورہ عبس استفادہ از اولیائے مدفونین مسلم بکڈپو لال کنواں دہلی ص ۱۴۳

Fatawa Razawiya Volume 29

[Persian Quote]: They become aware and familiar at the grave because spatial proximity or distance does not prevent the soul from this perception. Its example in human existence is the visual spirit, which can see the stars of the seven heavens from inside a well. [1] [Urdu Translation of above]: They become aware of incoming relatives, near ones, and friends and gain familiarity with them because spatial proximity and distance are not barriers for the soul for this discovery and knowledge; its example in human existence is the visual spirit (vision) which can see the stars of the seventh heaven from within a well. (T)

The life of martyrs is proven from the Great Quran, and scholars are superior to martyrs; it is in Hadith: On the Day of Judgment, the blood of martyrs and the ink of scholars' inkpots will be weighed; the ink of scholars' inkpots will prevail over the blood of martyrs. [2]

And saints (Awliya) are superior to scholars, so when martyrs are alive and it is commanded not to call them dead, then the saints who are superior to them by many degrees are certainly better and eternally alive than them. Among the conciseness (I'jaz) of the Holy Quran is also that it commands something and through it indicates its similar and more significant instances. Like:

[Arabic Verse]: "[3] "فَلَا تَقُلْ لَّهُمَا اُفٍّ وَّ لَا تَنْهَرْ هُمَا [Urdu Translation]: Do not say 'Uff' to them and do not rebuke them. (T)

Prohibition was given against saying 'Uff' to parents; whatever is more than that is automatically forbidden. And see here, the life of martyrs was explicitly mentioned and the life of Prophets was not mentioned so that the higher level is automatically understood; undoubtedly, saints are included in this textual implication (Dalalat-ul-Nass).

Hazrat Sayyiduna Ghaus-ul-Azam (may Allah be pleased with him) is definitely a helper, and Hazrat Sultan-ul-Hind Moin-ul-Haq wal-Deen is definitely a protector of the poor. Sayyiduna Abul Hasan Nooruddin narrates in Bahjat-ul-Asrar Sharif from Sayyiduna Abul Qasim Umar Bazzar (may his secret be sanctified):

[Arabic]: He said: I heard the Master, the Sheikh Abdul Qadir. [Urdu]: That is, I heard my master Hazrat Sayyid Sheikh Abdul Qadir.

[1] Fath al-Aziz (Tafsir Azizi), Para Am, Surah al-Mutaffifin, Station of the Souls of Prophets and Righteous, Muslim Book Depot, Lal Kuan, Delhi, p. 193. [2] Kanz al-Ummal, Hadith 28715, Mu'assasat ar-Risalah, Beirut, 10/141. [3] Al-Quran al-Karim, 17 / 23.

फ़तावा रज़विया खंड 29

[फ़ारसी उद्धरण]: वे कब्र पर अवगत और परिचित होते हैं क्योंकि स्थान की निकटता या दूरी आत्मा को इस बोध से नहीं रोकती है। मानव अस्तित्व में इसका उदाहरण दृश्य आत्मा (दृष्टि) है, जो कुएं के अंदर से सातवें आकाश के सितारों को देख सकती है। [1] [उर्दू अनुवाद]: वे आने वाले रिश्तेदारों, निकटतम लोगों और दोस्तों से अवगत होते हैं और उनसे मेल-जोल प्राप्त करते हैं क्योंकि स्थान की निकटता या दूरी आत्मा के लिए इस खोज और ज्ञान में बाधा नहीं है; इसका उदाहरण मानव अस्तित्व में दृश्य आत्मा है जो सातवें आकाश के सितारों को कुएं के अंदर से देख सकती है। (त)

शहीदों का जीवन महान कुरान से सिद्ध है और विद्वान (उलेमा) शहीदों से श्रेष्ठ हैं, हदीस में है: कयामत के दिन शहीदों का खून और विद्वानों की दवात की स्याही तौली जाएगी; विद्वानों की दवात की स्याही शहीदों के खून पर भारी पड़ेगी। [2]

और विद्वानों से भी श्रेष्ठ औलिया (संत) हैं, तो जब शहीद जीवित हैं और फरमाया गया कि उन्हें मुर्दा मत कहो, तो औलिया जो उनसे कई दर्जे ऊँचे हैं, वे निश्चित रूप से उनसे बेहतर शाश्वत जीवित हैं। कुरान मजीद की संक्षिप्तता (ईजाज़) में यह भी है कि वह एक बात का आदेश देता है और उससे उसके समान और उससे बड़े उदाहरणों का संकेत देता है। जैसे:

[अरबी आयत]: "फ़ला तकुल लहुमा उफ़्फ़िन वला तन्हर हुमा" [3] [हिंदी अनुवाद]: उनसे 'उफ़' न कहना और न उन्हें झिड़कना। (त)

माता-पिता को 'उफ़' कहने से मना किया गया; जो कुछ इससे अधिक है वह अपने आप वर्जित हो गया। और यहाँ देखिये, शहीदों के जीवन का स्पष्ट उल्लेख किया गया और नबियों के जीवन का उल्लेख नहीं किया ताकि उच्च स्तर का अर्थ अपने आप समझ में आ जाए; इस शाब्दिक संकेत (दलालत-ए-नस) में औलिया भी निस्संदेह शामिल हैं।

हज़रत सैयदना गौस-ए-आजम (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) निश्चित रूप से मददगार हैं, और हज़रत सुल्तान-उल-हिंद मोइन-उल-हक वद-दीन निश्चित रूप से गरीबों के रक्षक हैं। सैयदना अबुल हसन नूरुद्दीन 'बहजतुल असरार' शरीफ में सैयदना अबुल कासिम उमर बज़्ज़ार (अल्लाह उनके रहस्य को पवित्र रखे) से रिवायत करते हैं:

[अरबी]: उन्होंने कहा: मैंने सैयद शेख अब्दुल कादिर को सुना। [हिंदी]: यानी मैंने अपने मौला हज़रत सैयद शेख अब्दुल कादिर को सुना।

[1] फतह अल-अजीज़ (तफ़सीर अज़ीज़ी), पारा अम्म, सूरह अल-मुतफ़्फ़िफीन, नबियों और नेक लोगों की रूहों का स्थान, मुस्लिम बुक डिपो, लाल कुआं, दिल्ली, पृष्ठ 193। [2] कंज़ उल-उम्माल, हदीस 28715, मुअस्ससा-अर-रिसाला, बेरुत, 10/141। [3] अल-कुरान अल-करीम, 17 / 23।

पृष्ठ 106/750

بر قبر مطلع و مستائس میگردند زیرا کہ روح را قرب و بعد مکانی مانع ایں دریافت نمی شود، و مثال آں در وجود انسانی روح بصری ست کہ ستارہ ہائے ہفت آسمان درون چاہ می تواند دید۔ ۱ آنے والے عزیز واقارب اور دوستوں سے آگاہ ہوتے ہیں اور ان سے انس حاصل کرتے ہیں کیونکہ مکانی قرب و بعد روح کے لیے اس دریافت و علم سے مانع نہیں ہوتا، اس کی مثال انسانی وجود میں روحِ بصری ہے جو ساتویں آسمان کے ستاروں کو چاہ کے اندر دیکھ سکتی ہے۔ (ت)

حیاتِ شہداء قرآن عظیم سے ثابت ہے اور شہداء سے علماء افضل، حدیث میں ہے۔ روز قیامت شہداء کا خون اور علماء کی دوات کی سیاہی تولے جائیں گے علماء کی دوات کی سیاہی شہداء کے خون پر غالب آئے گی۔ ۲ اور علماء سے اولیاء افضل ہیں، تو جب شہداء زندہ ہیں اور فرمایا کہ انہیں مردہ نہ کہو، تو اولیاء کہ بدرجہا ان سے افضل ہیں ضرور ان سے بہتر حیِ ابدی ہیں، قرآن کریم کے ایجازات میں یہ بھی ہے کہ امر ارشاد فرماتے ہیں اور اس سے اس کے امثال اور اس سے امثل پر دلالت فرما دیتے ہیں۔ جیسے:

"فَلَا تَقُلْ لَّهُمَا اُفٍّ وَّ لَا تَنْهَرْ هُمَا" ۳ ان سے ہوں نہ کہنا اور انہیں نہ جھڑکنا (ت)

ماں باپ کو ہوں کہنے سے ممانعت فرمائی جو کچھ اسے زیادہ ہو وہ خود ہی منع ہو گیا، اور یہیں دیکھئے حیات شہداء کی تصریح فرمائی اور حیاتِ انبیاء کا ذکر نہیں کہ اعلٰی خود ہی مفہوم ہو جائے گا اس دلالۃ النص میں اولیاء بلاشبہ داخل۔ حضرت سیدنا غوثِ اعظم رضی اللہ تعالی عنہ ضرور دستگیر ہیں، اور حضرت سلطان الہند معین الحق والدین ضرور غریب نواز، سیدنا ابوالحسن نورالدین بہجۃالاسرار شریف میں سیدنا ابوالقاسم عمر بزاز قدس سرہ سے روایت فرماتے ہیں:

قال سمعت السید الشیخ عبدالقادر یعنی میں نے اپنے مولیٰ حضرت سید شیخ عبدالقادر

۱ فتح العزیز (تفسیر عزیزی) پارہ عم سورہ مطففین مقام ارواح انبیاء وصلحا مسلم بکڈ پولال کنواں دہلی ص ۱۹۳ ۲ کنز العمال حدیث ۲۸۷۱۵ مؤسسة الرساله بیروت ۱۰/ ۱۴۱ ۳ القرآن الکریم ۱۷ / ۲۳

Al-Jili (may Allah be pleased with him) says more than once: "My brother Hussain al-Hallaj stumbled, and in his time there was no one to take his hand. Had I been in his time, I would have taken his hand. And I am the helper of every one of my companions, disciples, and those who love me until the Day of Judgment who stumbles - and all praise is due to Allah, Lord of the worlds."

Sheikh Jilani (may Allah be pleased with him) was heard saying many times: "My brother Hussain Hallaj's foot slipped; in his time there was no one who could support him. Had I been there at that time, I would have supported him. And among my companions, my disciples, and those who love me, I am the supporter of whoever has a slip until the Day of Judgment."

On the tongues of all Muslims, the title of his eminence is 'Ghaus-e-Azam,' meaning the greatest seeker of aid. Leaving aside Shah Waliullah and Shah Abdul Aziz, even Ismail Dehlvi himself has frequently remembered his eminence as 'Ghaus-e-Azam.' What is this if not seeking help and support? Hazrat Sheikh Mujaddid Alf Thani states in his letters (Maktubat):

"After the passing of the source of guidance and sanctuary, my father, I went to visit his shrine on the day of Eid. During the focus towards the blessed shrine, complete attention from his sacred spirituality became apparent, and out of extreme kindness to the poor, he bestowed upon me that special spiritual connection (nisbat) which was attributed to Hazrat Khwaja Ahrar (may Allah's mercy be upon him)."[1]

After the demise of the noble spiritual guide, I attended his sacred shrine for a visit on the day of Eid. During the focus towards the blessed shrine, the full attention of the noble guide's sacred spirituality was manifest, and with extreme kindness, he granted that special connection that he had obtained from Hazrat Khwaja Ahrar (may Allah have mercy on him). (T)

Problem 39 & 40: From village Darru, district Nainital, sent by Mattho Noor Baaf, 9 Jumada al-Ula 1336 AH. What Allah Almighty has commanded is the pure Word; all decisions are present in it, no decision is left out. Now, on what basis is the difference between the Imams? An action is forbidden (haram) for one, and for someone else, the same action is permissible (halal); for one it is obligatory (fardh) and for someone else the same action is Sunnah, according to some...

[1] Bahjat al-Asrar, Fadl Ashabahu wa Bushrahum, Mustafa al-Babi Egypt, p. 102. [2] Maktubat-e-Mujaddid Alf Thani, Letter 291, Naval Kishore Lucknow, 1/413.

फ़तावा रज़विया - खंड 29

अल-जीली (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) एक से अधिक बार कहते हैं: "मेरे भाई हुसैन अल-हल्लाज लड़खड़ा गए, और उनके समय में उनका हाथ थामने वाला कोई नहीं था। अगर मैं उनके समय में होता, तो मैं उनका हाथ पकड़ लेता। और मैं कयामत के दिन तक अपने हर उस साथी, मुरीद और मुझसे प्यार करने वाले का मददगार हूँ जो लड़खड़ाएगा - और तमाम तारीफें अल्लाह के लिए हैं, जो दुनिया का रब है।"

शेख़ जिलानी (रज़ियल्लाहु अन्हु) को कई बार यह कहते सुना गया: "मेरे भाई हुसैन हल्लाज का पैर फिसल गया; उनके समय में कोई ऐसा नहीं था जो उन्हें सहारा दे सके। अगर मैं उस समय वहाँ होता, तो मैं उन्हें सहारा देता। और मेरे साथियों, मेरे मुरीदों और मुझसे प्यार करने वालों में, कयामत तक जिसका भी पैर फिसलेगा, मैं उसका सहारा हूँ।"

तमाम मुसलमानों की जुबान पर हुज़ूर का लक़ब 'ग़ौस-ए-आज़म' है, जिसका अर्थ है सबसे बड़ा फरियाद सुनने वाला। शाह वलीउल्लाह और शाह अब्दुल अज़ीज़ साहब को तो छोड़िए, खुद इस्माइल देहलवी ने जगह-जगह हुज़ूर को 'ग़ौस-ए-आज़म' कहकर याद किया है। यह फरियाद-रसी और दस्तगीरी (सहायता) नहीं है तो और क्या है? हज़रत शेख मुजद्दिद अल्फ़ थानी अपने मक्तुबात (पत्रों) में फरमाते हैं:

"मार्गदर्शन और शरण के स्रोत, मेरे पिता के इंतकाल के बाद, मैं ईद के दिन उनके मज़ार की ज़ियारत के लिए गया। मुबारक मज़ार की ओर ध्यान लगाने के दौरान, उनकी पवित्र रूहानियत से पूर्ण ध्यान प्रकट हुआ, और अत्यधिक गरीब-नवाज़ी दिखाते हुए उन्होंने मुझे वह विशेष आध्यात्मिक संबंध (निस्बत) प्रदान किया जो हज़रत ख्वाजा अहरार (अल्लाह की उन पर रहमत हो) से संबंधित था।"[2]

मुर्शिद-ए-गिरामी के इंतकाल के बाद ईद के दिन उनके मुकद्दस मज़ार की ज़ियारत के लिए हाज़िर हुआ। मुबारक मज़ार की ओर तवज्जो (ध्यान) के दौरान मुर्शिद-ए-गिरामी की मुकद्दस रूहानियत का पूरा ध्यान ज़ाहिर हुआ, और कमाल-ए-ग़रीब नवाज़ी से उन्होंने वह विशेष निस्बत अता फरमाई जो उन्हें हज़रत ख्वाजा अहरार (रहमतुल्लाह अलैह) से प्राप्त हुई थी। (त)

मसअला 39 और 40: ग्राम दरू, जिला नैनीताल से, प्रेषक मट्ठू नूर बाफ, 9 जमाद-उल-उला 1336 हिजरी। अल्लाह तआला का जो फरमान है वह पाक कलाम है; उसमें सभी फैसले मौजूद हैं, कोई भी

फैसला उससे बाहर नहीं है। अब इमामों के बीच जो मतभेद है वह किस आधार पर है? एक कार्य किसी के यहाँ हराम है, और किसी और के यहाँ वही कार्य हलाल है; किसी के यहाँ फर्ज है और किसी और के यहाँ वही कार्य सुन्नत है, कुछ के अनुसार...

[1] बहजतुल असरार, फ़ज़्ल असहाबहु व बुशराहुम, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, पृ. 102. [2] मक्तुबात-ए-मुजद्दिद अल्फ़ थानी, पत्र 291, नवल किशोर लखनऊ, 1/413.

पृष्ठ 107/750

فتاوی رضویہ - جلد ۲۹

الجِيلي رضي الله تعالى عنه يقول غير مرة عثرا اخي حسين الحلاج فلم يكن في زمانه من ياخذ بيده ولو كنت في زمانه لاخذت بيده وانا لكل من عثر به مركوبه من اصحابي ومريدي ومحبي الى يوم القيمة اخذ بيده - والحمد لله رب العلمين۔

جیلانی رضی اللہ تعالٰی عنہ کو بار ہا فرماتے سنا میرے بھائی حسین حلاج کا پاؤں پھسلا ان کے وقت میں کوئی ایسا نہ تھا کہ ان کی دستگیری کرتا اس وقت میں ہوتا تو ان کی دستگیری فرماتا اور میرے اصحاب اور میرے مریدوں اور مجھ سے محبت رکھنے والوں میں قیامت تک جس سے لغزش ہوگی میں اس کا دستگیر ہوں ۔

تمام مسلمانوں کی زبانوں پر حضور کا لقب غوث اعظم ہے یعنی سب سے بڑے فریاد رس شاہ ولی اللہ صاحب اور شاہ عبدالعزیز صاحب درکنار خود اسمعیل دہلوی نے جابجا حضور کو غوث اعظم یاد کیا ہے یہ فریاد رسی و دستگیری نہیں تو کیا ہے ، حضرت شیخ مجدد الف ثانی اپنے مکتوبات میں فرماتے ہیں :

بعد از رحلت ارشاد پناہی قبلہ گاہی روز عید بزیارت مزار ایشان رفتہ بود دراثنائے توجہ بمزار متبرک التفات تمام از روحانیت مقدسہ ایشان ظاہر گشت و از کمال غریب نوازی نسبت خاصہ خود را کہ بحضرت خواجہ احرار منسوب بود مرحمت فرمودند- ۲ واللہ تعالیٰ اعلم

مرشد گرامی کے وصال کے بعد عید کے روز ان کے مزار اقدس کی زیارت کے لیے حاضر ہوا۔ مزار مبارک کی طرف توجہ کے دوران مرشد گرامی کی روحانیت مقدسہ کا التفاتِ تمام ظاہر ہوا

اور کمال غریب نوازی سے آپ نے وہ نسبت خاص عنایت فرمائی جو آپ کو حضرت خواجہ احرار علیہ الرحمۃ سے حاصل تھی۔(ت)

مسئلہ ۳۹ و ۴۰: از موضوع درو ضلع نینی تال مرسلہ مٹھو نور باف ۹ جمادی الاولٰی ۱۳۳۶ھ اللہ تعالیٰ کا جو فرمان ہے وہ کلامِ پاک ہے ، اس میں سب فیصلے موجود ہیں ، اس سے کوئی فیصلہ بچا نہیں ہے ، اب اماموں کا جو اختلاف ہے وہ کس بنا پر ہے ؟ ایک فعل حرام اور کسی کے یہاں وہی فعل حلال ہے اور کسی کے یہاں وہی فعل فرض اور کسی کے یہاں وہی فعل سنت ، بعض کے

۱ بھجۃ الاسرار فضل اصحابہ و بشراہم مصطفی البابی مصر ص ۱۰۲ ۲ مکتوبات مجدد الف ثانی مکتوب ۲۹۱ نولکشور لکھنو ۱/ ۴۱۳

Fatawa Rizvia, Volume 29

Here, a deed might be obligatory; for instance, a certain act is permissible according to Imam Shafi'i but impermissible according to our Imam-e-Azam (may Allah's mercy be upon him). Some people perform this act while we abstain from it. I have also heard that one who considers Allah's prohibitions as lawful is a disbeliever (kafir). Additionally, I have heard that praying behind a non-conformist (ghair-muqallid) is not permissible, rather it is disliked (makruh). Master, please provide solace on this matter. Secondly, the Almighty has bestowed all ranks upon His Beloved. Often, when hearing the disputes of the Wahhabis, they present the example of Hazrat Bibi Aisha (may Allah be pleased with her) regarding the accusation. My master! My submission is: was there a veil from the Almighty's side on some occasions, or what?

The Answer: Undoubtedly, everything is present in the Great Quran, but no one could understand it if the Hadith did not explain it. Allah Almighty said: "So that you may explain to the people what has been sent down to them" (1) - to clarify to the people what was revealed to them. (T) And no one could understand the Hadith either if the Mujtahid Imams did not explain it. Their levels of understanding vary. The Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) says: "Many a person to whom a message is conveyed remembers it better than the one who heard it [from me]." (2) | Many people to whom a word is conveyed retain it better than the listeners. (T) And he says: "Many a carrier of knowledge (fiqh) conveys it to one who is more knowledgeable than him." (3) | There are many carriers of jurisprudence who convey it to someone more jurisprudent than themselves. (T) The difference in ranks in this understanding of religion (tafaqquh fi al-din) became the cause of disagreement, and here, divine wisdom in the Hadiths...

1. Al-Quran al-Karim, 16/44.
2. Sunan Ibn Majah, chapter on 'He who conveyed knowledge', H.M. Saeed Company Karachi, p. 21.
3. Jami' at-Tirmidhi, Chapters on Knowledge, chapter on 'What has been narrated regarding encouraging the transmission of what is heard', Amin Company Delhi, 2/90; Sunan Ibn Majah, chapter on 'He who conveyed knowledge', H.M. Saeed Company Karachi, p. 21.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 29

यहाँ वाजिब, उदाहरण के तौर पर एक कार्य इमाम शाफ़ई के यहाँ जायज़ है और हमारे इमाम-ए-आज़म (रहमतुल्लाह अलैह) के यहाँ नाजायज़, और कुछ लोग उस कार्य को करते हैं और हम बचते हैं, और यह भी सुना है कि ख़ुदा के हराम को हलाल जानने वाला काफ़िर है, और यह भी सुना है कि ग़ैर-मुक़ल्लिद के पीछे नमाज़ जायज़ नहीं है बल्कि मकरूह है, हुज़ूर इसकी तसकीन फ़रमाएँ। दूसरे यह कि जनाब-ए-बारी ने अपने महबूब को सब मरातिब इनायत फ़रमाए हैं। अक्सर वहाबिया का झगड़ा सुनने को मिलता है तो हज़रत बीबी आयशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) की मिसाल पेश करते हैं तोहमत वाली, मेरे हुज़ूर! गुज़ारिश यह है कि कुछ मौक़ों पर जनाब-ए-बारी की तरफ़ से पर्दा होता था या क्या?

अल-जवाब: क़ुरआन अज़ीम में बेशक सब कुछ मौजूद है मगर उसे कोई नहीं समझ सकता अगर हदीस उसकी शरह न फ़रमाती। अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "1"لِتُبَيِّنَ لِلنَّاسِ مَانُزِّلَ إِلَيْهِمْ - ताकि तुम लोगों से बयान कर दो जो उनकी तरफ़ उतरा (त) और हदीस भी कोई नहीं समझ सकता अगर अइम्मा-ए-मुज्तहिदीन उसकी शरह न फ़रमाते, उनकी समझ में मदारिज मुख़्तलिफ़ हैं, नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं: 2 - رُبَّ مُبَلَّغٍ يبلُغهُ اَوعىٰ لَهُ مِنْ سَامِعٍ | बहुत से लोग जिन तक बात पहुँचाई जाती वे सुनने वाले से ज़्यादा उसको याद रखने वाले होते हैं। (त) और फ़रमाते हैं: 3 - رُبَّ حَامِلِ فِقْهٍ اِلىٰ مَنْ هُوَ اَفْقَهُ مِنْهُ | बहुत से फ़िक़्ह उठाने वालों से वह ज़्यादा फ़क़ीह होता है जिसको वे पहुँचाते हैं। (त) इस तफ़क़्कुह फ़िद्दीन में इख़्तिलाफ़-ए-मरातिब बाइस-ए-इख़्तिलाफ़ हुआ और उधर मस्लहत-ए-इलाहिया अहादीस...

1. अल-क़ुरआन अल-करीम 16/44
2. सुनन इब्न माजा, बाब मन बल्लाग इल्मन, एच.एम. सईद कंपनी कराची, पृ. 21
3. जामिअ अत-तिर्मिज़ी, अबवाबुल इल्म, बाब मा जाआ फ़िल हस अला तब्लीग़ अस-समाअ, अमीन कंपनी दिल्ली 2/90, सुनन इब्न माजा, बाब मन बल्लाग इल्मन, एच.एम. सईद कंपनी कराची, पृ. 21

یہاں واجب، مثلاً ایک فعل امام شافعی کے یہاں جائز ہے اور ہمارے امام اعظم رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ کے یہاں ناجائز، اور کچھ لوگ اس فعل کو کرتے ہیں اور ہم بچتے ہیں، اور یہ بھی سُنا ہے کہ خدا کے حرام کو حلال جاننے والا کافر، اور یہ بھی سُنا ہے کہ غیر مقلد کے پیچھے نماز جائز نہیں ہے بلکہ مکروہ ہے، حضور اس کی تسکین ہو۔ دوسرے یہ کہ جناب باری نے اپنے محبوب کو سب مراتب عنایت فرمائے ہیں اکثر وہابیہ کا جھگڑا سننے کو ملتا ہے تو حضرت بی بی عائشہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا کی مثال پیش کرتے ہیں تہمت والی، میرے حضور ! گزارش یہ ہے کہ بعض موقع پر جناب باری کی طرف سے پردہ ہوتا تھا یا کیا ؟

الجواب: قرآن عظیم میں بے شک سب کچھ موجود ہے مگر اُسے کوئی نہ سمجھ سکتا اگر حدیث اس کی شرح نہ فرماتی۔ قال اللہ تعالی: "لِتُبَيِّنَ لِلنَّاسِ مَانُزِّلَ إِلَيْهِمْ"1 - تاکہ تم لوگوں سے بیان کردو جو اُن کی طرف اُترا (ت) اور حدیث بھی کوئی نہ سمجھ سکتا اگر ائمہ مجتہدین اس کی شرح نہ فرماتے، ان کی سمجھ میں مدارج مختلف ہیں، نبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں : رُبَّ مُبَلَّغٍ يبلُغهُ اَوعیٰ لَهُ مِنْ سَامِعٍ - 2 | بہت سے لوگ جن تک بات پہنچائی جاتی وہ سننے والے سے زیادہ اس کو یاد رکھنے والے ہوتے ہیں۔ (ت) اور فرماتے ہیں: رُبَّ حَامِلِ فِقْهٍ اِلیٰ مَنْ هُوَ اَفْقَهُ مِنْهُ - 3 | بہت سے فقہ اُٹھانے والوں سے وہ زیادہ فقیہ ہوتا ہے جس کو وہ پہنچاتے ہیں۔ (ت) اس تفقہ فی الدین میں اختلاف مراتب باعث اختلاف ہوا اور ادھر مصلحت الٰہیہ احادیث

1 القرآن الکریم ۱۶ / ۴۴ 2 سنن ابن ماجہ باب من بلغ علما ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ص ۲۱ 3 جامع الترمذی ابواب العلم باب ماجاء فی الحث علی تبلیغ السماع امین کمپنی دہلی ۲/ ۹۰ ، سنن ابن ماجہ باب من بلغ علما ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ص ۲۱

Fatawa Rizvia Volume 29

Different Sahaba (companions) came; one heard a Hadith and another heard something else, and they dispersed to various cities. Each propagated their own knowledge; this was the second cause of difference. The knowledge of Abdullah bin Umar reached Imam Malik, that of Abdullah bin Abbas reached Imam Shafi'i, and the knowledge of the most superior of worshipers, Abdullah bin Mas'ood, reached our Imam-e-Azam Abu Hanifa (may Allah be pleased with them all). Considering the permissible as forbidden or the forbidden as permissible, which has been labeled as disbelief (Kufr), applies to those things whose status as forbidden or permissible is part of the 'necessities of religion' (Zaruriyat-e-Deen) or at least proven by definitive texts (Nusoos-e-Qat'iyyah). In mujtahid (interpretive) matters, it is not even permissible to taunt anyone, let alone such an idea (God forbid). Prayer behind non-muqallids (Ghair-Muqallideen) is purely void, meaning it does not occur at all. Its details are in our treatise 'An-Nahyul-Ayikah'. According to the ruling of the noble jurists, disbelief is mandatory upon these non-muqallids for seventy reasons, so how could prayer behind them be possible? Imam-e-Azam, Imam Abu Yusuf, and Imam Muhammad (may Allah be pleased with them) say:

Box 1: Prayer behind the people of desires (innovators) is not permissible. (1) Prayer is not permissible behind those of bad religion. (T)

Main Text: Allah Almighty revealed the Great Qur'an to His Beloved (may Allah bless him and grant him peace) so that everything became clear to him. Allah Almighty said:

Box 2: "We have sent down to you the Book as an explanation for everything." (2) We have sent down this Quran to you as a clear explanation of everything. (T)

Main Text: The Great Qur'an was revealed gradually over twenty-three (23) years. As much of the Great Qur'an was revealed, the Unseen became clear to the Prophet (peace be upon him). When the Great Qur'an was completely revealed, the Prophet (peace be upon him) attained encompassing knowledge of all that was and all that will be from the first day to the last day. If some event was not disclosed before the complete revelation of the Quran due to some Divine wisdom, it does not contradict the encompassing nature of his sacred knowledge. God forbid, during the incident of 'Ifk' (the slander against Aisha), the Prophet (peace be upon him) remained silent; this does not necessitate that the Prophet did not have knowledge. Was it better to express the innocence of his family with his own tongue, or that the Lord of the

heavens and earth revealed seventeen verses in the Holy Qur'an regarding their innocence, which will be recited in mosques, assemblies, and gatherings until the Day of Resurrection? And Allah Almighty knows best.

Footnotes: 1. Fath al-Qadeer, Kitab al-Salat, Bab al-Imamah, Maktaba Nooria Rizvia, Sukkur, 1/304. 2. Al-Quran al-Karim, 16/89.

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

विभिन्न सहाबा (साथी) आए; किसी सहाबी ने कोई हदीस सुनी और किसी ने कोई और, और वे विभिन्न शहरों में फैल गए। प्रत्येक ने अपना ज्ञान प्रसारित किया, यह मतभेद का दूसरा कारण बना। अब्दुल्लाह बिन उमर का ज्ञान इमाम मालिक तक पहुँचा, और अब्दुल्लाह बिन अब्बास का इमाम शाफ़ई तक, और इबादत गुज़ारों में सबसे श्रेष्ठ अब्दुल्लाह बिन मसूद का ज्ञान हमारे इमाम-ए-आज़म अबू हनीफ़ा (अल्लाह उन सब से प्रसन्न हो) तक पहुँचा। हलाल को हराम या हराम को हलाल समझना जिसे कुफ्र (अधर्म) कहा गया है, वह उन चीज़ों में है जिनका हराम या हलाल होना 'ज़रूरियात-ए-दीन' (धर्म की अनिवार्य आवश्यकताएँ) का हिस्सा है या कम से कम 'नसूस-ए-क़तई' (निश्चित ग्रंथों) से प्रमाणित हो। इजतिहादी (व्याख्यात्मक) मामलों में किसी पर ताना मारना भी जायज़ नहीं है, ऐसा विचार तो दूर की बात है (अल्लाह इससे बचाए)। ग़ैर-मुक़ल्लिदों के पीछे नमाज़ पूर्णतः शून्य (बातिल) है, यानी वह बिल्कुल होती ही नहीं। इसका विवरण हमारे शोध-पत्र 'अन-नह्युल आयिका' में है। फुक़हा-ए-किराम (श्रेष्ठ न्यायविदों) के निर्णय के अनुसार, इन ग़ैर-मुक़ल्लिदों पर सत्तर कारणों से कुफ्र वाजिब है, तो उनके पीछे नमाज़ का होना क्या अर्थ रखता है। इमाम-ए-आज़म, इमाम अबू यूसुफ़ और इमाम मुहम्मद (अल्लाह उन सब से प्रसन्न हो) फरमाते हैं:

बॉक्स 1: ला तजुजुस सलात खल्फ अहलिल अह्वा। (1) बद-मज़हबों के पीछे नमाज़ जायज़ नहीं है। (त)

मुख्य पाठ: अल्लाह अज़्ज़-ओ-जल्ल ने अपने हबीब (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर अज़ीम क़ुरआन उतारा ताकि हर चीज़ उन पर रोशन (स्पष्ट) कर दी जाए। अल्लाह तआला ने फरमाया:

बॉक्स 2: "नज्ज़लना अलै-कल किताब तिब्या नल लिकुल्ली शय'इन्" (2) हमने तुम पर यह क़ुरआन उतारा कि हर चीज़ का साफ़ बयान है। (त)

मुख्य पाठ: क़ुरआन-ए-अज़ीम थोड़ा-थोड़ा करके तेईस (23) वर्षों में नाज़िल (अवतरित) हुआ। जितना क़ुरआन-ए-अज़ीम उतरता गया, हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर ग़ैब (परोक्ष) रोशन होता गया। जब क़ुरआन-ए-अज़ीम पूरा नाज़िल हो चुका, तो पहले दिन से आखिरी दिन तक का सारा 'मा कान व मा यकून' (जो कुछ हुआ और जो कुछ होगा) का व्यापक ज्ञान हुज़ूर को प्राप्त हो गया। यदि क़ुरआन के पूर्ण अवतरण से पहले कोई घटना किसी ईश्वरीय हिकमत (बुद्धिमत्ता) के कारण उजागर नहीं हुई थी, तो यह पवित्र ज्ञान के व्यापक होने के विपरीत नहीं है। अल्लाह न करे, 'इफ़्क़' की घटना

(आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा पर आरोप) के समय हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने चुप्पी साधी, इससे यह आवश्यक नहीं होता कि हुज़ूर को ज्ञान नहीं था। अपने परिवार की बेगुनाही को अपनी ज़बान से प्रकट करना बेहतर होता या यह कि आसमानों और ज़मीन के रब ने पवित्र क़ुरआन में सत्रह (17) आयतें उनकी बेगुनाही में नाज़िल फ़रमाईं जो क़यामत तक मस्जिदों, सभाओं और मजलिसों में तिलावत की जाएँगी। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।

पाद टिप्पणियाँ: 1 फ़तह अल-क़दीर, किताबुस सलात, बाबुल् इमामत, मकतबा नूरिया रज़विया सुक्कुर 1/304 2 अल-क़ुरआन अल-करीम 16/89

مختلف آئیں، کسی صحابی نے کوئی حدیث سُنی اور کسی نے کوئی اور وہ بلاد میں متفرق ہوئے، ہر ایک نے اپنا علم شائع فرمایا، یہ دوسرا باعث اختلاف ہوا۔ عبداللہ بن عمر کا علم امام مالک کو آیا، اور عبداللہ بن عباس کا امام شافعی کو، اور افضل العباد لہ عبداللہ بن مسعود کا علم ہمارے امام اعظم ابو حنیفہ کو رضی اللہ تعالٰی عنہم اجمعین، حلال کو حرام یا حرام کو حلال جاننا جو کفر کہا گیا ہے وہ ان چیزوں میں ہے جن کا حرام یا حلال ہونا ضروریاتِ دین سے ہے یا کم از کم نصوص قطعیہ سے ثابت ہو۔ اجتہادی مسائل میں کسی پر طعن بھی جائز نہیں نہ کہ معاذ اللہ ایسا خیال، غیر مقلدوں کے پیچھے نماز باطل محض ہے کہ اصلاً ہوتی ہی نہیں۔ اس کی تفصیل ہمارے رسالہ النہی الایکہ میں ہے ان غیر مقلدوں پر بحکم فقہاء کرام ستر وجہ سے کفر لازم ہے اور ان کے پیچھے نماز ہو سکنا کیا معنی۔ امام اعظم و امام ابویوسف و امام محمد رضی اللہ تعالٰی عنہم فرماتے ہیں :

لا تجوز الصلٰوۃ خلف اھل الاھواء۔ 1 بد مذہبوں کے پیچھے نماز جائز نہیں۔ (ت)

اللہ عزوجل نے اپنے حبیب صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم پر قرآن عظیم اتارا کہ ہر چیز ان پر روشن فرمادی۔ قال اللہ تعالٰی :

"نَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ تِبْيَانًا لِكُلِّ شَيْءٍ" 2 ہم نے تم پر یہ قرآن اتارا کہ ہر چیز کا روشن بیان ہے۔ (ت)

قرآن عظیم تھوڑا تھوڑا کر کے تیئیس ۲۳ برس میں نازل ہوا، جتنا قرآن عظیم اترتا گیا، حضور پر غیب روشن ہوتا گیا، جب قرآن عظیم پورا نازل ہو چکا روز اول سے روزِ آخر تک کا جمیع ماکان و مایکون کا علم محیط حضور کو حاصل ہو گیا۔ تمامی نزول قرآن سے پہلے اگر کوئی واقعہ کسی حکمت الہیہ کے سبب منکشف نہ ہوا ہو تو احاطہ علم اقدس کا منافی نہیں معاذ زمانہ افک میں

حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ نے سکوت فرمایا جس سے یہ لازم نہیں آتا کہ حضور کو علم نہ تھا، اپنے اہل کی براءت اپنی زبان سے ظاہر فرمانا یہ بہتر ہوتا یا یہ کہ رب السموت والارض نے قرآن کریم میں سترہ ۱۷ آیتیں ان کی براءت میں نازل فرمائیں جو قیام قیامت تک مساجد و مجالس و مجامع میں تلاوت کی جائے گی۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

1 فتح القدیر کتاب الصلوٰۃ باب الامامۃ مکتبہ نوریہ رضویہ سکھر ۱ / ۳۰۴ 2 القرآن الکریم ۱۶ / ۸۹

Fatawa Razawiya Volume 29

Issue 41 to 46: From Shahar Aqab Kotwali, asked by Azizuddin Sahib Peshkar, 13 Jumada al-Ula 1336 AH. (1) Did the noble mother of Hazrat Isa (Jesus) peace be upon him get married after the birth of Hazrat Isa (Jesus) peace be upon him to Yusuf Najjar, the cousin of Hazrat Maryam, or not? (2) Is Hazrat Maryam a prophetess or not? (3) Which prophets are alive now and where are they? (4) Is Hazrat Isa (Jesus) peace be upon him on the fourth heaven? (5) A person does not believe in the prophets being alive and brings the verse "qad khalat min qablihir rusul" 1 - (Messengers have passed away before him) as an argument. What is the meaning of this verse? (6) And it is also his saying that if Hazrat Isa (Jesus) peace be upon him descends, will he be a messenger or not? And if he is not a messenger and is part of the Ummah (community) of Muhammad (peace and blessings of Allah be upon him and his family) at that time, it would be against the Holy Word, as Allah Almighty will not take away anyone's messengership. And would his Ummah remain without a messenger?

The Answer: (1) There is no evidence of this in the pure Shariah. Even among Christians, he is only written as a fiancé. Yes, in Paradise, she will be among the pure wives of the Holy Master, the Leader of the Messengers (peace and blessings of Allah be upon him), as mentioned in the Hadith. (2) No, no woman is a prophetess. (3) Yes, in the sense that till now the occurrence of death has not happened at all, four prophets are alive: Isa and Idris (peace be upon them both) are in the heavens, and Ilyas and Khidr (peace be upon them both) are on the earth. It is stated in Sharh-ul-Maqasid: [Arabic: Dhahaba ilayhil 'uzama'u minal 'ulama'i anna arba'atan min anbiya'in fi zumratil ahya'] Great scholars have held the view that four from among the prophets are in the group of the living, Hazrat Khidr and...

1 Al-Quran al-Karim 3/144 Page 110 of 750

फ़तावा रज़विया जिल्द २९

मसला ४१ से ४६: शहर अक़ब कोतवाली से, मुस्तफ़ा अज़ीज़ुद्दीन साहब पेशकार द्वारा पूछा गया, १३ जमादी-उल-उला १३३६ हिजरी। (१) क्या हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की वालिदा माजिदा का निकाह हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की विलादत के बाद हज़रत मरियम के ख़ालाज़ाद भाई यूसुफ़ नज्जार से हुआ है या नहीं? (२) क्या हज़रत मरियम नबिया (पैग़म्बरी प्राप्त महिला) हैं या नहीं? (३) अब कौन से पैग़म्बर ज़िंदा हैं और वे कहाँ-कहाँ हैं? (४) क्या हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम चौथे आसमान पर हैं? (५) एक व्यक्ति पैग़म्बरों के ज़िंदा होने का कायल (मानने वाला) नहीं है और आयत "क़द ख़लत मिन क़ब्लिहुर रुसुल" १ (उनसे पहले बहुत से रसूल गुज़र चुके हैं) को दलील के तौर पर लाता है। इस आयत का क्या मतलब है? (६) और उसका यह कहना है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम अगर उतरेंगे, तो वे रसूल होंगे या नहीं? और अगर वे रसूल न हों और उस वक़्त उम्मत-ए-मुहम्मदिया (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) में से हों, तो यह पाक कलाम (क़ुरआन) के ख़िलाफ़ होगा कि अल्लाह तआला किसी की रिसालत नहीं छीनेगा। और क्या उनकी उम्मत बिना रसूल के रह जाएगी?

अल जवाब (उत्तर): (१) शरा-ए-मुतह्ह (पवित्र शरीयत) में इसका कहीं कोई सुबूत नहीं है। ईसाइयों के यहाँ भी केवल मंगेतर लिखा है। हाँ, जन्नत में वह हुज़ूर अक़दस सैय्यदुल मुर्सलीन (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की अज़वाज-ए-मुतह्हात (पवित्र पत्नियों) में से होंगी, जैसा कि हदीस में आया है। (२) नहीं, कोई औरत नबिया नहीं है। (३) हाँ, इस अर्थ में कि अब तक उन्हें मृत्यु प्राप्त नहीं हुई है, चार नबी ज़िंदा हैं: ईसा और इदरीस (अलैहिमुस्सलाम) आसमान पर, और इलियास और ख़िज़्र (अलैहिमुस्सलाम) ज़मीन पर। शरह-उल-मक़ासिद में है: [अरबी: ज़हबा इलयहिल उज़माउ मिनल उलमाइ अन्ना अरबअतन मिन अंबियाइ फ़ी ज़ुमरतिल अहया] बड़े विद्वान इस ओर गए हैं कि चार अंबिया ज़िंदा लोगों के समूह में हैं, हज़रत ख़िज़्र और...

१ अल-क़ुरआन अल-करीम ३/१४४ पेज १लो ऑफ़ ७५०

مسئلہ ۴۱ تا ۴۶: از شہر عقب کو توالی مسئولہ عزیز الدین صاحب پیشکار ۱۳ جمادی الاولی ۱۳۳۶ھ (۱) حضرت عیسیٰ علیہ الصلوۃ والسلام کی والدہ ماجدہ کا نکاح بعد ولادت حضرت عیسیٰ علیہ الصلوۃ والسلام کے یوسف نجار حضرت مریم کے خالہ زاد بھائی سے ہوا ہے یا نہیں؟ (۲) حضرت مریم نبیہ ہیں یا نہیں؟ (۳) اب کے پیغمبر زندہ ہیں اور کہاں کہاں ہیں؟ (۴) حضرت عیسیٰ علیہ السلام کیا چوتھے آسمان پر ہیں؟ (۵) ایک شخص زندہ ہونے پیغمبروں کا قائل نہیں ہے اور آیت "قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ" ط ۱۔ (ان سے پہلے رسول ہوچکے۔ت) کہ استدلال میں لاتا ہے، اس آیت کا کیا مطلب ہے؟ (۶) اور اسی کا یہ قول ہے کہ حضرت عیسیٰ علیہ السلام اگر اتریں گے تو وہ رسول ہوں گے یا نہیں اور اگر وہ رسول نہ ہوں اور اُمتِ محمد صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم سے اُس وقت ہوں تو خلاف کلامِ پاک ہوگا کہ اللہ تعالیٰ کسی کی رسالت نہ چھینے گا، اور کیا ان کی امت بلارسول کے رہ جائے گی؟

الجواب: (۱) شرع مطہر میں اس کا کہیں ثبوت نہیں، نصاری کے یہاں بھی صرف منگیتر لکھا ہے ہاں وہ جنت میں حضور اقدس سید المرسلین صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی ازواج مطہرات سے ہوں گی، کما فی الحدیث۔ (۲) نہیں، کوئی عورت نبیہ نہیں۔ (۳) ہاں بایں معنی کہ اب تک لحوقِ موت اصلاً نہ ہوا چار نبی زندہ ہیں: عیسیٰ و ادریس علیہما الصلوۃ والسلام آسمان پر، اور الیاس و خضر علیہما الصلوۃ والسلام زمین پر۔ شرح مقاصد میں ہے: ذھب الیہ العظماء من العلماء ان اربعۃ من انبیاء فی زمرۃ الاحیاء بزرگ علماء اس طرف گئے ہیں کہ چار انبیاء زندوں کے زمرہ میں ہیں، حضرت خضر اور

۱ القرآن الکریم ۳/ ۱۴۴ Page 110 of 750

Fatawa Razawiya Volume 29

Al-Khidr and Ilyas are on earth, and Isa and Idris are in heaven. Peace be upon them – 1.

Ilyas (peace be upon them) is on earth, while Hazrat Isa (peace be upon him) and Hazrat Idris (peace be upon them) are in heaven. (T)

(4) The Holy Prophet (may Allah the Exalted bless him and grant him peace) found them in the second heaven on the Night of Ascension (Isra). For the purpose of welcoming and following the Prophet, all the noble Prophets (peace be upon him and upon them, the finest of blessings and peace) first gathered in Bayt al-Maqdis. Then each Prophet was seen in his designated place. From this, it is apparent that the station of our master the Messiah (peace be upon him) is the second heaven, though the fourth is well-known. And Allah the Exalted knows best.

(5) One who denies the life of the Prophets (peace and blessings be upon them) is misguided and irreligious. The mention of passing away does not even prove the occurrence of death, let alone, God forbid, the continuation of death. This word only indicates the end of an era, just as—without comparison—saying that so many Sultans passed before Sultan Muhammad Khan V; this would not mean that Sultan Hamid Khan is not alive. All Prophets (peace be upon them) are alive with a real, worldly, and physical life. The Messenger of Allah (may Allah the Exalted bless him and grant him peace) says:

“The Prophets are alive in their graves, praying.” – 2

Prophets (peace be upon them) are alive in their graves and perform prayer. (T)

And he (may Allah the Exalted bless him and grant him peace) says:

“Indeed, Allah has forbidden the earth from consuming the bodies of the Prophets. So a Prophet of Allah is alive and provided for.” – 3

Indeed, Allah the Exalted has forbidden the earth from consuming the bodies of the Prophets, so the Prophet of Allah the Exalted is alive and is given sustenance. (T)

(6) God forbid, no Messenger is ever deposed from his messengership, nor is our master the Messiah (peace be upon him)...

1. Sharh al-Maqasid al-Hasana, Chapter Four, Section Seven, Dar al-Maarif al-Nu'maniyya, Lahore, 2/311

2. Musnad Abi Ya'la, Hadith 3412, Mu'assasat 'Ulum al-Qur'an, Beirut, 3/279
3. Sunan Ibn Majah, Chapters on Funerals, Chapter on Mention of His Death and Burial (peace and blessings of Allah be upon him), H.M. Saeed Company, Karachi, p. 119

फतावा रज़विया खंड २९

अल-खिज़्र और इलियास ज़मीन पर हैं और ईसा और इदरीस आसमान में हैं। उन पर शांति और आशीर्वाद हो - १।

इलियास (उन दोनों पर शांति हो) ज़मीन में हैं जबकि हज़रत ईसा (उन पर शांति हो) और हज़रत इदरीस (उन दोनों पर शांति हो) आसमान पर हैं। (त)

(४) हुज़ूर अकदस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने शब-ए-अस्रा (मेराज की रात) उन्हें दूसरे आसमान पर पाया। हुज़ूर के इस्तक़बाल और इक़्तिदा (अनुसरण) के लिए सभी अंबिया-ए-किराम (उन पर श्रेष्ठ आशीर्वाद और शांति हो) पहले बैत अल-मक़दिस में एकत्रित हुए, फिर प्रत्येक नबी को उनके नियत स्थान पर देखा गया। इससे स्पष्ट है कि सैय्यदना मसीह (अलैहिस्सलाम) का स्थान दूसरा आसमान है, और चौथा प्रसिद्ध है। और अल्लाह ताला बेहतर जानता है।

(५) अंबिया (अलैहिमुस्सलातु वस्सना) के जीवन का इनकार करने वाला गुमराह और दीन-हीन है। 'गुज़र जाने' (मृत्यु) का ज़िक्र भी सिरे से मृत्यु आने का प्रमाण नहीं है, और माज़ अल्लाह (ईश्वर न करे) मृत्यु के निरंतर रहने का तो बिल्कुल भी नहीं। यह शब्द केवल एक कार्यकाल की समाप्ति का सूचक है, जैसे कि बिना तुलना किए यह कहना कि सुल्तान मुहम्मद खान पंचम से पहले इतने सुल्तान गुज़र चुके हैं; इससे यह नहीं समझा जाएगा कि सुल्तान हमीद खान जीवित नहीं हैं। सभी नबी (अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम) वास्तविक सांसारिक शारीरिक जीवन के साथ जीवित हैं। अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं:

“नबी अपनी कब्रों में जीवित हैं और नमाज़ पढ़ते हैं।” - २

अंबिया (अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम) अपनी कब्रों में जीवित हैं और नमाज़ पढ़ते हैं। (त)

और हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं:

“बेशक अल्लाह ने ज़मीन पर नबियों के शरीरों को खाना हराम कर दिया है। अतः अल्लाह का नबी जीवित होता है और उसे रिज़्क़ दिया जाता है।” - ३

बेशक अल्लाह ताला ने नबियों के जिस्म को खाना ज़मीन पर हराम कर दिया है, अतः अल्लाह ताला का नबी ज़िंदा होता है और उसे रिज़्क़ दिया जाता है। (त)

(६) हाशाना (ईश्वर न करे) कोई रसूल अपनी रिसालत (पैग़म्बरी) से बर्खास्त नहीं किया जाता, न ही सैय्यदना मसीह (अलैहिस्सलाम)...

1. शरह अल-मक़ासिद अल-हसना, चौथा अध्याय, सातवाँ शोध, दार अल-मआरिफ अल-नुमानिया, लाहौर, २ / ३११
2. मुसनद अबी याला, हदीस ३४१२, मुअस्ससत उलूम अल-कुरान, बेरूत, ३ / २७९
3. सुनन इब्न माजह, जनाज़ा के अध्याय, उनकी मृत्यु और दफन का उल्लेख (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम), एच.एम. सईद कंपनी, कराची, पृष्ठ ११९

पृष्ठ १११ / ७५०

فتاوی رضویہ جلد ۲۹

الخضر والیاس فی الارض وعیسی وادریس فی السماء علیہم الصلوۃ والسلام ۔ ۱

الیاس علیہما الصلوۃ والسلام زمین میں جب کہ حضرت عیسیٰ علیہ السلام اور حضرت ادریس علیہما الصلوۃ والسلام آسمان پر (ت)

(۴) حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے شب اسریٰ انہیں آسمان دوم پر پایا استقبال سرکار و اقتداء حضور کے لیے تمام انبیاء کرام علیہ و علیہم افضل الصلوۃ والسلام اولاً بیت المقدس میں جمع ہوئے پھر ہر نبی کو ان کے محل میں دیکھا اس سے ظاہر یہ کہ مقام سیدنا مسیح علیہ السلام آسمان دوم ہے اور مشہور چہارم ، واللہ تعالیٰ اعلم۔

(۵) حیات انبیاء علیہم الصلوۃ والثناء کا منکر گمراہ بددین ہے اور خلت سرے سے طریان موت پر بھی دلیل نہیں ، نہ کہ معاذ اللہ استمرار موت یہ لفظ صرف انقضائے عہد پر دال ہے جیسے بلا تشبیہ یہ کہنا کہ سلطان محمد خاں خامس سے پہلے اتنے سلاطین ہو گزرے اس سے یہ نہ سمجھا جائے گا کہ سلطان حمید خان زندہ ہی نہیں۔ انبیاء علیہم الصلوۃ والسلام سب بحیات حقیقی دنیاوی جسمانی زندہ ہیں۔ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں:

الانبیاء احیاء فی قبورھم یصلون۔ ۲

انبیاء علیہم الصلوۃ والسلام اپنی قبروں میں زندہ ہیں اور نماز پڑھتے ہیں۔ (ت)

اور فرماتے ہیں صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم :

ان اللہ حرّم علی الارض ان تاکل اجساد الانبیاء فنبی اللہ حی یرزق۔ ۳

بے شک اللہ تعالیٰ نے نبیوں کے جسم کو کھانا زمین پر حرام کر دیا ہے چنانچہ اللہ تعالیٰ کا نبی زندہ ہوتا ہے اس کو رزق دیا جاتا ہے۔ (ت)

(۶) حاشانہ کوئی رسول رسالت سے معزول کیا جاتا ہے نہ سیدنا مسیح علیہ الصلوۃ۔۔۔

۱ شرح المقاصد الحسنہ الفصل الرابع المبحث السابع دار المعارف النعمانیہ لاہور ۲ / ۳۱۱ ۲ مسند ابی یعلی حدیث ۳۴۱۲ مؤسسۃ علوم القرآن بیروت ۳ / ۲۷۹ ۳ سنن ابن ماجہ ابواب الجنائز باب ذکر وفاتہ ودفنہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ص ۱۱۹

Fatawa Razawiyya Volume 29

...and peace, they will not be deposed from prophethood, nor is being a follower (ummati) of the Prophet against prophethood. They were followers of our Holy Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him) even during their own eras before descending, and they will descend as followers after being raised. All prophets and messengers were followers of the Prophet even in their own times and are still followers now; even when they were messengers, and they are messengers now, because our Prophet is the Prophet of Prophets. Allah the Almighty says: "Latu'minunna bihi walatansurunnahu"[1] (You must believe in him and you must help him). Yes, at that time they used to govern according to their own laws, now that the Muhammadi Sharia (may the best of prayers and salutations be upon its possessor) has abrogated the previous laws. Not just Jesus (peace be upon him), any messenger who appears now will rule only according to the Muhammadi Sharia; ruling by an abrogated law is void. The Messenger of Allah (may Allah's peace and blessings be upon him) says: "If Moses were alive in my time, he would have no choice but to follow me"[2]. And to say that his community would remain without a messenger is proof of extreme ignorance. If said intentionally, it is Christianity; are the Christians now the community of Christ? Are they still on his religion? God forbid! "How terrible is the word that comes out of their mouths"[3]. And Allah Almighty knows best.

Question 74: From Bareilly, Madrasa Ahl-e-Sunnat wal Jamaat, asked by Maulvi Shafi Ahmad Sahib Mubailpuri, student of the said Madrasa, 12 Jumada al-Ula 1336 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: are the two viewpoints mentioned in 'Musallam al-Thubut' false and rejected or not? It appears from them that the author is a free-thinking person; according to the first, the servant became absolutely independent in his will, and according to the second, he became the creator of partial actions of the heart. The text is:

It was said, rather it exists, so it is necessary to specify the firm intention from the generality...	**And it is said, rather intention is present, thus there is a specification of the servant's firm intention from the generality of the texts of creation.**

[1] The Holy Quran 3 / 81 [2] Musnad Ahmad bin Hanbal on the authority of Jabir bin Abdullah, Al-Maktab al-Islami Beirut 3 / 387, Dala'il al-Nubuwwah by Abi Nu'aym, Chapter 1, Alam al-Kutub Beirut, Part 1, p. 8 [3] The Holy Quran 18 / 5

फतावा रजविया जिल्द 29

...और शांति, वे रिसालत (पैग़म्बरी) से पदच्युत नहीं होंगे, और न ही हुज़ूर का उम्मती होना रिसालत के विरुद्ध है। वे अवतरण से पहले अपने युग में भी हमारे हुज़ूर अकदस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के उम्मती थे और उठाए जाने के बाद भी उम्मती होकर ही उतरेंगे। समस्त नबी और रसूल अपने युग में भी हुज़ूर के उम्मती थे और अब भी उम्मती हैं; जब वे रसूल थे तब भी और अब भी रसूल हैं क्योंकि हमारे हुज़ूर नबियों के नबी हैं। अल्लाह तआला फरमाता है: "लतु'मिनुन्ना बिही वलतनसुरुन्नहू"[1] (तुम अवश्य उस पर ईमान लाना और अवश्य उसकी सहायता करना)। हाँ, उस समय वे अपनी शरीयत के अनुसार शासन करते थे, अब जबकि शरीयत-ए-मोहम्मदिया (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने पिछली शरीयतों को मंसूख़ (निरस्त) कर दिया है। केवल हज़रत ईसा ही नहीं, कोई भी रसूल जो अब प्रकट होगा, वह शरीयत-ए-मोहम्मदिया पर ही शासन करेगा; मंसूख़ शरीयत पर शासन करना बातिल (अमान्य) है। अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं: "यदि मूसा मेरे समय में होते, तो उन्हें मेरा अनुसरण करने के अलावा कोई विकल्प न होता"[2]। और उनका यह कहना कि उनकी उम्मत बिना रसूल के रह जाएगी, उनकी घोर अज्ञानता का प्रमाण है। और यदि समझ-बूझकर कहा गया है, तो यह ईसाइयत है; क्या अब ईसाई मसीह की उम्मत हैं? क्या अब वे उनके धर्म पर हैं? हशशा (ईश्वर न करे)! "उनके मुँह से निकलने वाली बात कितनी बड़ी है"[3]। वल्लाहु तआला आलम (अल्लाह बेहतर जानता है)।

मसअला 74: बरेली मदरसा अहले सुन्नत व जमाअत से, प्रेषक मौलवी शफी अहमद साहब मबीलीपुरी, उक्त मदरसे के छात्र, 12 जमादी अल-उला 1336 हिजरी। धर्म के विद्वान इस विषय में क्या कहते हैं कि 'मुसल्लम अल-थुबूत' में जो ये दो मत वर्णित हैं, वे बातिल और अस्वीकृत हैं या नहीं? इनसे ऐसा प्रतीत होता है कि लेखक एक स्वतंत्र विचारक व्यक्ति हैं; पहले के आधार पर बंदा अपने इरादे में पूर्णतः स्वतंत्र हो गया, दूसरे के आधार पर वह हृदय के आंशिक कार्यों का स्रष्टा (खालिक) बन गया। इबारत (अनुच्छेद) यह है:

कहा गया है, बल्कि यह मौजूद है, इसलिए दृढ़ संकल्प को विशिष्ट करना आवश्यक है सामान्य से...

और कहा गया है कि बल्कि संकल्प मौजूद है, अतः सृष्टि के ग्रंथों की व्यापकता से बंदे के दृढ़ संकल्प की विशिष्टता है।

[1] पवित्र कुरान 3/81 [2] मुसनद अहमद बिन हनबल, जाबिर बिन अब्दुल्ला के हवाले से, अल-मकतब अल-इस्लामी बेरूत 3/387, दलाईल अल-नुबुव्वह ले अबी नुअैम, अध्याय 1, आलम अल-कुतुब बेरूत, भाग 1, पृष्ठ 8 [3] पवित्र कुरान 18/5

पेज 112 / 750

والسلام رسالت سے معزول ہوں گے، نہ حضور کا امتی ہونا رسالت کے خلاف، وہ قبل نزول اپنے عہد میں بھی ہمارے حضور اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کے امتی تھے اور بعد رفع بھی امتی ہو کر اتریں گے، تمام انبیاء ومرسلین اپنے عہد میں بھی حضور کے امتی تھے اور اب بھی امتی ہیں، جب بھی رسول تھے اور اب بھی رسول ہیں کہ ہمارے حضور نبی الانبیاء ہیں۔ قال اللہ تعالٰی: "لَتُؤْمِنُنَّ بِهٖ وَلَتَنْصُرُنَّهٗ"۱ (تم ضرور ضرور اس پر ایمان لانا اور ضرور ضرور اس کی مدد کرنا ت) ہاں اس وقت وہ اپنی شریعت پر حکم فرماتے تھے اب کہ شریعت محمدیہ صلی اللہ علیہ و صاحبہا افضل الصلوۃ والتحیہ نے اگلی شریعتیں منسوخ فرمادیں۔ ایک حضرت مسیح نہیں جو کوئی رسول بھی اب ظاہر ہو شریعت محمدیہ پر ہی حکم کرے گا، منسوخ پر حکم باطل، رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں: اگر موسٰی میرا زمانہ پاتے تو میری اتباع کے سوا انہیں کچھ گنجائش نہ ہوتی ۲۔ اور اس کا کہنا ان کی امت بلا رسول کے رہ جائے گئی اس کی سخت جہالت پر دلیل ہے اور اگر سمجھ کر کہے تو اس کی نصرانیت، کیا اب نصرانی امت مسیح ہیں، کیا اب وہ ان کے دین پر ہیں، حاشا " كَبُرَتْ كَلِمَةً تَخْرُجُ مِنْ أَفْوَاهِهِمْ "۳۔ (کتنا بڑا بول ہے کہ ان کے مونہوں سے نکلتا ہے۔ ت) واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۷۴: از بریلی مدرسہ اہلسنت وجماعت مسئولہ مولوی شفیع احمد صاحب مبیلیپوری طالب علم مدرسہ مذکور ۱۲جمادی الاولی ۱۳۳۶ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ مسلم الثبوت میں جو یہ دو مذہب بیان کیے ہیں یہ باطل و مردود ہیں یا نہیں؟ ان سے معلوم ہوتا ہے کہ مصنف آزاد خیال شخص ہیں پہلے کی بنا پر ارادہ میں عبد مختار محض ہوا دوسرے کی بنا پر افعال قلوب جزئیہ کا خالق ہوا۔ عبارت یہ ہے:

وقیل بل موجود فیجب تخصیص اور کہا گیا ہے بلکہ قصد موجود ہے چنانچہ نصوص خلق کے

القصد المصمم من عموم عموم سے بندے کے مصمم ارادہ کی تخصیص

۱ القرآن الکریم ۳ / ۸۱ ۲ مسند احمد بن حنبل عن جابر بن عبداللہ المکتب الاسلامی بیروت ۳ / ۳۸۷، دلائل النبوۃ لابی نعیم الفصل الاول عالم الکتب بیروت الجزء الاول ص ۸ ۳ القرآن الکریم ۱۸ / ۵

Fatawa Razawiyya Volume 29

| Al-Khalqu bil-Aql[1] | Creation by intellect is mandatory (T) |

One line later:

| Wa ‘indi Mukhtarun bi-hasab al-Idrakat al-Juz’iyyah al-Jismaniyyah | And according to me, the servant is a free agent in terms of partial physical perceptions | | Majburun bi-hasab al-Ulum al-Kulliyyah al-Aqliyyah[2] | and compelled in terms of universal intellectual sciences. (T) |

The Answer: The first school of thought is void; its refutation is found in this humble servant's treatise 'Al-Qam' al-Mubin'. The second school of thought is purely absurd and meaningless, having no substance at all. The author is a Sunni Hanafi and not a free-thinker, but he was prohibited from plunging into this bloodthirsty ocean; daring to do so caused his slip and error, and it was bound to happen. And Allah Almighty knows best.

Problem 48: From Kanpur, New Road, Mosque of the late Haji Shakrullah, sent by Imam-ud-Din Sahib, 15 Jumada al-Ula 1336 AH. Zaid says such insulting words regarding the glory of God, as if, in his own words, he [God] has become quite like rubber. Does Zaid become a disbeliever (kafir) or remain a Muslim by saying such insulting words about the glory of God? Since I am not satisfied except with your scholarly investigations, this petition is sent to your service.

The Answer: No ruling can be given on such a vague and roundabout question. The phrase 'now then' clearly indicates that this is a derivation from something; what was that thing and was the speaker this person or another? For example, if some disbeliever, apostate, or wretched hypocrite said something about his deity from which expansion or contraction is proven, or to the extent that these impure changes are attributed to His glory, and then some Muslim, to open the eyes of that blind disbeliever, gave this warning, then the insult was committed by that disbelieving apostate and not by the Muslim. In short, there can be many scenarios. If the matter is explained in detail, then a ruling can be given. And Allah Almighty knows best.

[1] Musallam al-Thubut, Fa'ida: According to Jahmiyyah, there is no power in the servant at all. Matba' al-Ansari, Delhi, p. 9. [2] Musallam al-Thubut, Fa'ida: According to Jahmiyyah, there is no power in the servant at all. Matba' al-Ansari, Delhi, p. 9.

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

| अल-खल्क बिल-अक्ल[1] | अक्ल के अनुसार रचना अनिवार्य है (त) |

एक पंक्ति के बाद है:

| व इंदी मुख्तारुन बि-हसब अल-इदराकात अल-जुज़िया अल-जिस्मानिया | और मेरे निकट बंदा आंशिक शारीरिक अनुभूतियों के आधार पर स्वतंत्र है | | मजबूरुन बि-हसब अल-उलूम अल-कुल्लिया अल-अकलिया[2] | और सार्वभौमिक बौद्धिक विज्ञान के आधार पर विवश है। (त) |

उत्तर: पहला विचार बातिल (अमान्य) है, इसका खंडन फकीर (मुसन्निफ़) के रिसाले 'अल-क़म अल-मुबीन' में है। दूसरा विचार निरा अर्थहीन और बेमतलब है जिसका कोई ठोस आधार नहीं। मुसन्निफ़ सुन्नी हनफी हैं, आज़ाद ख्याल नहीं, मगर इस खूँख्वार समुद्र में गोता लगाने से मना किया गया था; इस पर जुर्रत (साहस) करने से ठोकर और फिसलन हुई और होनी ही थी। वल्लाहु तआला आलम (और अल्लाह तआला बेहतर जानता है)।

मसला 48: कानपुर, नई सड़क, मरहूम हाजी शुक्रुल्लाह की मस्जिद से, इमाम उद्दीन साहब द्वारा प्रेषित, 15 जमाद-अल-ऊला 1336 हिजरी। ज़ैद खुदा की शान में ये अपमानजनक शब्द कहता है कि गोया अपने कथनानुसार [खुदा] काफी हद तक रबड़ हो गया है। क्या खुदा की शान में ऐसे अपमानजनक शब्द कहने से ज़ैद काफ़िर हो गया या मुसलमान रहा? चूँकि मुझे आपकी विद्वतापूर्ण जांच के अलावा चैन नहीं मिलता, इसलिए यह अर्जी आपकी सेवा में भेजी जा रही है।

उत्तर: ऐसे अस्पष्ट और घुमावदार सवाल पर कोई फैसला नहीं दिया जा सकता। शब्द 'अब तो' साफ तौर पर इशारा कर रहा है कि यह किसी बात का निष्कर्ष है; वह बात क्या थी और उसका कहने वाला यह था या कोई और, उदाहरण के तौर पर किसी काफ़िर, मुर्तद (धर्मत्यागी) या नीच मुनाफ़िक ने अपने माबूद (उपास्य) के लिए कोई ऐसी बात कही जिससे उसका फैलना या सिकुड़ना साबित हो, या इसी हद तक कि ये अपवित्र परिवर्तन उसकी गरिमा में माने जाएँ, और फिर किसी मुसलमान ने उस अंधे काफ़िर की आँखें खोलने के लिए यह चेतावनी दी हो, तो अपमान उस काफ़िर मुर्तद ने किया न कि उस मुसलमान ने। संक्षेप में, इसमें कई स्थितियाँ हो सकती हैं। यदि बात विस्तार से बताई जाए तो हुक्म दिया जाए। वल्लाहु तआला आलम।

[1] मुसल्लम अल-थुबूत, फ़ायदा: जहमिया के नज़दीक बंदे में बिलकुल भी कुदरत (शक्ति) नहीं है। मतबा अल-अंसारी, दिल्ली, पृष्ठ 9। [2] मुसल्लम अल-थुबूत, फ़ायदा: जहमिया के नज़दीक बंदे में बिलकुल भी कुदरत (शक्ति) नहीं है। मतबा अल-अंसारी, दिल्ली, पृष्ठ 9।

पृष्ठ 113 / 750

فتاوی رضویہ جلد ۲۹

| الخلق بالعقل[1] | بقرینہ عقل واجب ہے (ت) |

ایک سطر بعد ہے:

| وعندی مختار بحسب الادراکات الجزئیة الجسمانیة | اور میرے نزدیک بندہ ادراکات جزئیہ جسمانیہ کے اعتبار سے | | مجبور بحسب العلوم الکلیة العقلیة - [2] | مختار اور علوم کلیہ عقلیہ کے اعتبار سے مجبور ہے۔ (ت) |

الجواب: پہلا مذہب باطل ہے، اس کارد فقیر کے رسالہ القمع المبین میں ہے۔ مذہب دوم محض مہمل و بے معنی ہے جس کا اصلاً کوئی محصل نہیں، مصنف سنی حنفی ہیں آزاد خیال نہیں مگر اس بحر خونخوار میں غوطہ زنی سے ممانعت فرمائی گئی تھی اس پر جرات باعث لغزش و زلت ہوئی اور ہونی ہی تھی۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۴۸: از کانپور نئی سڑک مسجد حاجی شکر اللہ مرحوم مرسلہ امام الدین صاحب ۱۵ جمادی الاولی ۱۳۳۶ھ زید خدا کی شان میں یہ کلمات توہینیہ کہتا ہے گویا بقول خود اچھا خاصا ربڑ ہو گیا۔ آیا زید خدا کی شان میں ایسے کلمات توہینیہ کہنے سے کافر ہو گیا یا مسلمان رہا؟ مجھے چونکہ بجز حضور کی تحقیقات علمیہ کے تسکین نہیں ہوتی اس واسطے عریضہ خدمت میں روانہ کیا جاتا ہے۔

الجواب: ایسے مجمل گول مول سوال پر کوئی حکم نہیں ہو سکتا، لفظ اب تو صاف دلالت کر رہا ہے کہ یہ کسی بات پر تفریع ہے وہ بات کیا تھی اور اس کا قائل یہ تھا یا دوسرا، مثلاً کسی کافر یا مرتد یا منافق خبیث نے اپنے معبود کے لیے کوئی بات ایسی کہی جس سے اس کا پھیلنا سمٹنا ثابت

ہو، یا اسی قدر کہ یہ ناپاک تغیرات اس کی شان سے ٹھہریں اس پر کسی مسلمان نے اس اندھے کافر کی آنکھیں کھولنے کو یہ تنبیہ کی تو توہین اس کافر مرتد نے کی نہ کہ اس مسلمان نے، غرض اس میں بہت صورتیں ہو سکتی ہیں۔ مفصل بات کہی جائے تو حکم دیا جائے، واللہ تعالیٰ اعلم۔

1 مسلم الثبوت فائدہ عند الجهمية لا قدرة في العبد اصلا المطبع الانصاری دہلی ص ۹ 2 مسلم الثبوت فائدہ عند الجهمية لا قدرة في العبد اصلا المطبع الانصاری دہلی ص ۹

Fatawa Rizvia Volume 29

Issue 49: From Telenpara, inside Bari Ajab Mian, District Hooghly, sent by Sultan Ahmad Khan Mirzapuri, 15 Jumada al-Akhira 1336 AH.

The scholars of religion have always narrated "Law laaka lama khalaqtu al-aflaka" [1] (If it were not for you, I would not have created the celestial spheres) in gatherings of Mawlid Sharif and continue to do so now. Most scholars have stated in open sessions that this is a Hadith Qudsi, and it is written as such in many Urdu books on Mawlid. Reciters of Mawlid all over the world recite it, yet no scholar has ever raised any objection to it. In the 'Mawlid Sharif Shahidi' by Maulana Ghulam Imam Shaheed, it is also noted in the margin that it is a Hadith Qudsi. Similarly, it is found in many Urdu books of Mawlid and is also stated as 'Qudsi' in the 'Lughat-e-Kishori'. Conversely, Maulana Muhammad Yaqub Sahib has stated regarding this Hadith that it is not a Hadith Qudsi, nor is it present in any collection of Hadiths. He also says that upon inquiring from many elders of the religion, it was found that indeed this is not a Hadith, though its meaning is correct. Please state what the ruling of Allah and His Messenger is regarding this Hadith.

The Answer: It is certainly true that Allah Almighty created the entire universe for the sake of the Holy Presence [Prophet Muhammad], peace and blessings of Allah be upon him. If the Prophet were not there, nothing would exist. This theme is proven by numerous Hadiths, the description of which is in our treatise 'Tala’ul Aflak bi Jalali Ahadith Law Laka'. Shah Waliullah Muhaddith Dehlawi has also written with these very words in some of his works, but these words are established with a chain of transmission [2]:

Arabic Text	**Urdu Translation**
Khalaktu ad-dunya wa ahlaha li-a'rifahum karamataka wa manzilataka 'indi wa law laaka ya Muhammadu ma khalaqtu ad-dunya.	(Meaning: Allah Almighty says to His Noble Beloved, peace and blessings of Allah be upon him) I have created the world and the inhabitants of the world so that I may reveal to them the honor and rank you hold in My presence. O Muhammad! If you were not there, I would not have made the world.

In the [first one], there was only the word 'aflak' (celestial spheres), but in this one, He mentioned the whole world, which includes the spheres, the earth, and everything in between. This is called Hadith Qudsi, meaning a divine word of Allah narrated in the form of a Hadith.

[1] Kashf al-Khafa, Hadith 2121, Dar al-Kutub al-Ilmiyah, Beirut, 2/128 [2] Tarikh Dimashq al-Kabir, Mention of his ascent to heaven, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 3/297

फ़तावा रिज़विया खंड 29

मसला 49: तेलनपाड़ा, बाड़ी अजब मियां के अंदर, जिला हुगली से सुल्तान अहमद खान मिर्ज़ापुरी द्वारा भेजा गया, 15 जमादी अल-आख़िर 1336 हिजरी।

धर्म के विद्वान हमेशा से मीलाद शरीफ की महफिलों में "लौ लाका लमा खलक्तुल अफ़्लाक" [1] (यदि आप न होते तो मैं आकाशों की रचना न करता) का वर्णन करते आए हैं और अब भी करते हैं। अधिकांश विद्वानों ने मजलिसों में बताया है कि यह हदीस कुदसी है, और मीलाद की कई उर्दू किताबों में ऐसा ही लिखा है। पूरी दुनिया के मीलाद पढ़ने वाले इसे पढ़ते हैं, लेकिन किसी विद्वान ने कभी इस पर कोई आपत्ति नहीं जताई। मौलाना गुलाम इमाम शहीद की 'मीलाद शरीफ शहीदी' के हाशिये (मार्जिन) पर भी लिखा है कि यह हदीस कुदसी है। इसी तरह कई उर्दू मीलाद किताबों में है, और 'लुगत-ए-किशोरी' में भी लिखा है कि यह कुदसी है। इसके विपरीत, मौलाना मुहम्मद याकूब साहब ने इस हदीस के बारे में कहा है कि यह हदीस कुदसी नहीं है और न ही किसी हदीस में है। वह यह भी कहते हैं कि हमने कई बुजुर्गों से पूछा तो पता चला कि निस्संदेह यह कोई हदीस नहीं है, हालांकि इसका अर्थ सही है। इस हदीस के बारे में अल्लाह और उसके रसूल का जो भी हुक्म हो, उसका वर्णन करें।

उत्तर: यह निश्चित रूप से सही है कि अल्लाह अज़्वजल ने पूरा संसार हुज़ूर अकदस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के लिए बनाया है। अगर हुज़ूर न होते तो कुछ न होता। यह विषय कई हदीसों से सिद्ध है जिसका वर्णन हमारे रिसाले 'तलाउल अफ़्लाक बि जलालि अहादीस लौ लाका' में है। इन्हीं शब्दों के साथ शाह वलीउल्लाह मुहद्दिस देहलवी ने अपनी कुछ रचनाओं में लिखा है, लेकिन प्रमाण (सनद) के साथ ये शब्द साबित हैं [2]:

अरबी इबारत	**उर्दू अनुवाद**
खलक्तुद दुनिया व अहलहा लि-अरिफ़हुम करा-मतका व मंज़िलतका इन्दी व लौ लाका या मुहम्मद मा खलक्तुद दुनिया।	(अर्थात: अल्लाह अज़्वजल अपने प्यारे हबीब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से फ़रमाता है कि) मैंने दुनिया और दुनिया वालों को इसलिए बनाया ताकि उन पर तुम्हारी वह इज़्ज़त और मर्तबा ज़ाहिर करूँ जो मेरी बारगाह में है। ऐ मुहम्मद! अगर तुम न होते तो मैं दुनिया को न बनाता।

इसमें तो केवल 'अफ़्लाक' (आकाशों) शब्द था, इसमें पूरी दुनिया को फ़रमाया गया जिसमें आकाश, पृथ्वी और जो कुछ उनके बीच है सब शामिल हैं। इसी को हदीस कुदसी कहते हैं कि वह अल्लाह का कलाम जो हदीस में हो।

[1] कशफ अल-ख़फ़ा, हदीस 2121, दार अल-कुतुब अल-इल्मिया, बेरूत, 2/128 [2] तारीख दमिश्क अल-कबीर, स्वर्गारोहण का ज़िक्र, दार इहया अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 3/297

पृष्ठ 114/750

فتاویٰ رضویہ جلد ۲۹

مسئلہ ۴۹: از تیلن پاڑہ اندرون باڑی عجب میاں ضلع ہگلی مرسلہ سلطان احمد خاں مرزا پوری ۱۵ جمادی الاخر ۱۳۳۶ھ

لولاک لما خلقت الافلاک [1] کو علمائے دین ہمیشہ سے محفل میلاد شریف میں بیان کرتے آئے اور اب بھی بیان کرتے ہیں اور اکثر علمائے دین نے برسر مجلس اس حدیث کو بتلایا کہ یہ حدیث قدسی ہے اور بہت سی اردو میلاد کی کتابوں میں یہی لکھا ہے اور تمام دنیا کے میلاد خواں اسی کو پڑھتے ہیں مگر کسی عالم نے کبھی اس کی نسبت کچھ اعتراض نہ کیا اور مولانا غلام امام شہید کے میلاد شریف شہیدی میں یہی حاشیہ پر لکھا ہے کہ حدیث قدسی ہے، اسی طرح بہت سی اردو کی میلاد کی کتابوں میں ہے، اور لغات کشوری میں بھی لکھا ہے کہ قدسی ہے، برعکس اس کے مولانا محمد یعقوب صاحب نے اس حدیث کی بابت بیان کیا ہے کہ یہ حدیث قدسی نہیں ہے اور نہ کسی حدیث میں ہے، اور یہ بھی کہتے ہیں کہ ہم نے اکثر بزرگانِ دین سے دریافت کیا تو معلوم ہوا کہ بے شک یہ کوئی حدیث نہیں ہے بلکہ اس کے معنی صحیح ہیں۔ اس حدیث کی نسبت جو کچھ حکم خدا و رسول کا ہو بیان فرمائیں۔

الجواب: یہ ضرور صحیح ہے کہ اللہ عزوجل نے تمام جہان حضور اقدس صلی اللہ تعالی علیہ وسلم کے لیے بنایا اگر حضور نہ ہوتے کچھ نہ ہوتا۔ یہ مضمون احادیث کثیرہ سے ثابت ہے جن کا بیان ہمارے رسالہ تلاء لا الافلاک بجلال احادیث لولاک میں ہے اور انہی لفظوں کے ساتھ شاہ ولی اللہ صاحب محدث دہلوی نے اپنی بعض تصانیف میں لکھی مگر سنداً ثابت یہ لفظ ہیں [2]۔

عربی عبارت	اردو ترجمہ
خلقت الدنیا واھلھا لأعرفھم کرامتك ومنزلتك عندی ولولاك یامحمد ما خلقت الدنیا۔	(یعنی اللہ عزوجل اپنے محبوب اکرم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم سے فرماتا ہے کہ) میں نے دنیا اور اہل دنیا کو اس لیے بنایا کہ تمہاری عزت اور مرتبہ جو میری بارگاہ میں ہے ان پر ظاہر کروں، اے محمد ! اگر تم نہ ہوتے میں دنیا کو نہ بناتا۔

اس میں تو فقط افلاک کا لفظ تھا اس میں ساری دنیا کو فرمایا جس میں افلاک و زمین اور جو کچھ ان کے درمیان ہے سب داخل ہیں، اسی کو حدیث قدسی کہتے ہیں کہ وہ کلام الہی جو حدیث۔

[1] کشف الخفاء حدیث ۲۱۲۱ دار الکتب العلمیہ بیروت ۲/ ۱۲۸ [2] تاریخ دمشق الکبیر ذکر عروجہ الی السماء دار احیاء التراث العربی بیروت ۳ / ۲۹۷

Fatawa Razawiyya, Volume 29

It was stated that in such a context, presenting verbal debates to instill doubt and suspicion in the hearts of the common people and to unsettle their hearts is by no means wishing well for Muslims. And the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says:

[Box Start] Left: Ad-deenu an-nus-hu li-kulli Muslim - 1 (Religion is sincere well-wishing for every Muslim) Right: Religion is that a person wishes well for every Muslim. Allah knows best. [Box End]

Problem 50: From Qadmatli Post Bancha Rampur, District Tipra, sent by Talib Ali Sahib, 15 Jamadi-ul-Ula 1336 AH. Is it the creed of the Ahl al-Sunnah to consider the Essence of Allah Almighty to be only upon the Throne and not to consider anything beyond above the Throne among God's creations to be encompassed by His Essence, but rather to say that only the knowledge of Allah encompasses all things and His Essence is only upon the Throne and nowhere else? And is it permissible to perform prayer behind someone who holds this belief?

[Box Start] Left: And please also write that they attribute this belief to the Hanbalis. Are the beliefs of the Hanbalis actually like this or not? Right: And also please write that people attribute this belief to the Hanbalis; are the beliefs of the Hanbalis in reality like this or not? (T) [Box End]

He is the Corrector (Allah). Considering the Essence of the Lord to be on the Throne without explaining the nature of 'Istawa' (establishment), and considering His knowledge to encompass the entire world, and interpreting verses of 'Ma'iyyat' (being with) and 'Qurb' (closeness) as closeness and companionship through knowledge, is the creed of the Ahl al-Sunnah. Performing prayer behind a follower of this creed is correct without any dislike. In 'Sharh Hikmat Nabawiyya' it is stated:

[Box Start] Left: Na'taqidu annahu 'alal 'arshi mustawin 'alayhi istiwa'an munazzahan 'anit tamakkuni wal istiqrar, wa annahu fawqal 'arshi ma'a dhaalika huwa qareebun min kulli mawjudin wa huwa aqrabu min hablil wareedi wala yumaathilu qurbahu qurbal ajsam - 2 ah. Right: Our belief is that Allah Almighty is established on the Throne with such an establishment that is pure from physical settling and stability. Despite being manifest on the Throne, He is near to every existing thing and even closer than the jugular vein, and His closeness is not like the closeness of physical bodies. Ah (T) [Box End]

1 Sahih al-Bukhari, Book of Faith, Chapter: Saying of the Prophet (PBUH) 'Religion is sincere advice...', Qadimi Kutub Khana Karachi 1/13. Sahih Muslim, Book of Faith, Chapter explaining that 'Religion is sincere advice...', Qadimi Kutub Khana Karachi 1/54 & 55. 2 Sharh Hikmat Nabawiyya.

फ़तावा रज़विया, खंड 29

यह कहा गया है कि ऐसी जगह पर शाब्दिक बहस पेश करके आम जनता के दिलों में शक और शुबहा पैदा करना और उनके दिलों को डगमगाना हरगिज़ मुसलमानों की खैरख्वाही नहीं है, और अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) फ़रमाते हैं:

[बॉक्स प्रारंभ] बायां: अद-दीनु अ़न-नुस्हु लिकुल्लि मुस्लिम - 1 (दीन हर मुसलमान की खैरख्वाही है) दायां: दीन यह है कि आदमी हर मुसलमान की भलाई चाहे। अल्लाह सबसे बेहतर जानता है। [बॉक्स समाप्त]

मसला 50: कदमतीली पोस्ट बांचा रामपुर, जिला टिपरा से, प्रेषक तालिब अली साहब, 15 जमादी-उल-उला 1336 हिजरी। क्या अल्लाह तआला की ज़ात (अस्तित्व) को केवल अर्श (सिंहासन) पर ही समझना और अर्श के ऊपर अल्लाह की मख्लूक़ (सृष्टि) में से किसी को भी अल्लाह की ज़ात से बाहर न समझना, बल्कि यह कहना कि केवल अल्लाह का इल्म ही सब चीज़ों को घेरे हुए है और उसकी ज़ात केवल अर्श पर ही है और कहीं नहीं, यह अहले सुन्नत का अक़ीदा है या नहीं? और जो इस अक़ीदे का मानने वाला हो उसके पीछे नमाज़ पढ़ना जायज़ है या नहीं?

[बॉक्स प्रारंभ] बायां: और यह भी लिख दें कि वे इस अक़ीदे को हनाबिला (हंबली संप्रदाय) की तरफ़ मंसूब (जोड़ते) करते हैं। क्या वास्तव में हनाबिला के अक़ीदे ऐसे ही हैं या नहीं? दायां: और यह भी तहरीर फ़रमाएं कि लोग इस अक़ीदे को हनाबिला की तरफ़ मंसूब करते हैं, क्या दर हक़ीक़त अक़ाइदे हनाबिला ऐसे ही हैं या नहीं? (त) [बॉक्स समाप्त]

अल्लाह ही हक़ की तरफ़ रहनुमाई करने वाला है। परवरदिगार की ज़ात को अर्श पर समझना बिना 'इस्तवा' (सिंहासनारूढ़ होना) की कैफ़ियत बयान किए, और उसके इल्म को पूरी दुनिया को घेरे हुए समझना, और 'मइय्यत' (साथ होना) और 'क़ुर्ब' (निकटता) की आयतों को इल्मी क़ुर्ब और मइय्यत पर महमूल करना (अर्थ निकालना) अहले सुन्नत का मज़हब है। इस मज़हब के मानने वाले के पीछे नमाज़ बिना किसी कराहत (बुराई) के दुरुस्त है। 'शरह हिकमत नबविया' में है:

[बॉक्स प्रारंभ] बायां: नअ्तक़िदु अन्नहू अ़लल अ़र्शि मुस्तविन अ़लैहि इस्तवाअन मुनज़्ज़हन अ़नित तमक्कुनि वल इस्तिक़रार, व अन्नहू फ़ौक़ल अ़र्शि मअ़ ज़ालिका हुवा क़रीबुन मिन कुल्लि मौजूदिन व हुवा अक़रबु मिन हब्लिल वरीदि वला युमाथिलु क़ुरबहु क़ुर्बल अज्साम - 2 अ़ह दायां: हमारा अक़ीदा यह है कि अल्लाह तआला अर्श पर ऐसे इस्तवा के साथ मुस्तवी है जो बैठने और टिकने से पाक है।

अर्श पर जलवागर होने के बावजूद वह हर मौजूद चीज़ के करीब है और शह-रग से भी ज़्यादा करीब है, और उसकी निकटता भौतिक शरीरों की निकटता जैसी नहीं है। अ़ह (त) [बॉक्स समाप्त]

1 सहीह अल-बुखारी, किताबुल ईमान, बाब: नबी (स.अ.व.) का कौल 'अद-दीनु अ़न-नसीह़त...', कदीमी कुतुब खाना कराची 1/13। सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाब: बयान कि 'अद-दीनु अ़न-नसीह़त...', कदीमी कुतुब खाना कराची 1/54 और 55। 2 शरह हिकमत नबविया।

میں فرمایا گیا ایسی جگہ لفظی بحث پیش کرکے عوام کے دلوں میں شک و شبہ ڈالنا اور ان کے قلوب کو متزلزل کرنا ہرگز مسلمانوں کی خیر خواہی نہیں، اور رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم فرماتے ہیں:

الدین النصح لکل مسلم- 1 | دین یہ ہے کہ آدمی ہر مسلمان کی خیر خواہی کرے واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۵۰: از قد متلی پوسٹ بانچہ رام پور ضلع تپرہ مرسلہ طالب علی صاحب ۱۵ جمادی الاولی ۱۳۳۶ھ ذات باری تعالٰی کو فقط عرش ہی پر سمجھے اور ماسوا فوق العرش کسی کو مخلوقات الہی سے بے ذات باری تعالٰی محیط نہ جاننا بلکہ یہ کہنا کہ فقط علم الہی ساری اشیاء کو محیط ہے اور ذات اس کی فقط عرش ہی پر ہے اور دوسری جگہ نہیں، یہ عقیدہ اہل سنت کا ہے یا نہیں؟ اور جو معتقد اس عقیدے کا ہو نماز پیچھے اس کے ادا کرنا جائز ہے یا نہیں؟

واینہم تحریر فرمایند کہ ایشایاں این عقیدہ را منسوب بحنابلہ مے گویند فی الحقیقت عقائد حنابلہ ہمچنین ست یانہ؟ | اور یہ بھی تحریر فرمائیں کہ لوگ اس عقیدے کو حنابلہ کی طرف منسوب کرتے ہیں، کیا در حقیقت عقائد حنابلہ ایسے ہیں یا نہیں؟ (ت)

ھو المصوب ذاتِ پروردگار کو عرش پر سمجھنا بدوں بیان کیفیت استوا اور اس کے علم کو محیط تمام عالم سمجھنا اور آیت معیت و قرب وغیرہ کو قرب ومعیت علمی پر حمل کرنا مذہب اہلسنت کا ہے اور معتقد اس مذہب کے پیچھے نماز درست ہے بلا کراہت، شرح حکمت نبویہ میں ہے:

نعتقد انہ علی العرش مستو علیہ استواء منزھا عن التمکن والاستقرار، و انہ فوق العرش مع ذلك ھو قریب من کل موجود وھو اقرب من حبل الورید ولا یماثل قربہ قرب الاجسام -2 اہ | ہمارا اعتقاد یہ

ہے کہ اللہ تعالی عرش پر ایسے استواء کے ساتھ مستوی ہے جو تمکن و استقرار سے منزہ ہے، اور عرش پر جلوہ گر ہونے کے باوجو وہ ہر موجود کے نزدیک اور شہ رگ سے بھی زیادہ قریب ہے اور اس کا قرب اجسام کے قرب کی مثل نہیں ہے۔ اھ (ت)

1 صحیح البخاری کتاب الایمان باب قول النبی صلی اللہ تعالی علیہ وسلم الدین النصیحۃ الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ۱ / ۱۳، صحیح مسلم کتاب الایمان باب بیان ان الدین النصیحۃ قدیمی کتب خانہ کراچی ۱ / ۵۴ و ۵۵ 2 شرح حکمت نبویہ

Fatawa Rizvia, Volume 29

And in Siyar al-Nubala, it is written: Ishaq bin Rahwayh said: There is a consensus among all people of knowledge that Allah, the Exalted, is established over the Throne, and He knows everything down to the seventh earth. — End[1] Ishaq bin Rahwayh said: All the people of knowledge have a consensus on this that Allah the Exalted is established over the Throne, and He knows every single thing beneath the seventh earth. — End (T)

And in Jami' at-Tirmidhi, after mentioning the Hadith: "If you were to lower a bucket with a rope to the lowest earth, it would reach Allah." Then the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) recited: "He is the First and the Last, the Ascendant and the Intimate, and He is, of all things, Knowing."[2] If you were to lower any rope towards the lower earth, it would reach Allah. Then the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) recited this noble verse: "He is the First, the Last, the Manifest, the Hidden, and He knows everything." (T)

It is recorded: The recitation of the verse indicates that he intended for it to "reach Allah" in terms of Allah's knowledge, power, and authority. Allah's knowledge is everywhere, while He is above the Throne as He described in His Book.[3] The recitation of the noble verse indicates that by the rope reaching Allah, the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) meant that it reached the knowledge, power, and dominion of Allah the Exalted. And the knowledge of Allah the Exalted is everywhere, while He Himself is upon the Throne, just as He described this attribute of Himself in His book. (T)

And the common notion that this is the doctrine of the Hanbalis is wrong. Rather, it is the doctrine of the majority of researchers among the Hanafis, Shafi'is, and...

---

[1] Siyar A'lam al-Nubala, Biography of Ishaq bin Rahwayh 97 / Mu'assasat al-Risalah Beirut 11 / 370 [2] Jami' at-Tirmidhi, Chapters on Tafsir, Surah al-Hadid, Amin Company Delhi 2 / 162 [3] Jami' at-Tirmidhi, Chapters on Tafsir, Surah al-Hadid, Amin Company Delhi 2 / 162

फ़तावा रज़विया, खंड २९

और सियर अल-नुबला में है: इसहाक बिन राहविया ने कहा: सभी विद्वानों के बीच इस बात पर आम सहमति है कि अल्लाह तआला अर्श (सिंहासन) पर सुशोभित है और वह सातवीं धरती के नीचे तक की हर चीज़ को जानता है। — समाप्त[1] इसहाक बिन राहविया ने कहा: तमाम अहल-ए-इल्म का इस पर इज्मा (आम सहमति) है कि अल्लाह तआला ने अर्श पर इस्तवा फ़रमाया और वह सातवीं ज़मीन के नीचे हर चीज़ को जानता है। — इति (त)

और जामी अत-तिर्मिज़ी में, हदीस के उल्लेख के बाद: "अगर तुम सातवीं और सबसे निचली धरती की तरफ रस्सी के ज़रिए एक डोल लटकाओ, तो वह अल्लाह तक पहुँचेगी।" फिर रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) ने पढ़ा: "वही अव्वल है, वही आख़िर है, वही ज़ाहिर है, वही बातिन है, और वह हर चीज़ को जानने वाला है।"[2] अगर तुम कोई रस्सी नीचे वाली ज़मीन की तरफ़ लटकाओ तो वह अल्लाह के पास पहुँचेगी। फिर अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) ने यह पवित्र आयत तिलावत फ़रमाई: वही अव्वल, वही आख़िर, वही ज़ाहिर, वही बातिन, और वही सब कुछ जानता है। (त)

लिखा है: आयत का पाठ इस बात को दर्शाता है कि उनके"अल्लाह तक पहुँचने" से तात्पर्य अल्लाह के ज्ञान, शक्ति और अधिकार से था। अल्लाह का ज्ञान हर जगह है, जबकि वह स्वयं अर्श पर है जैसा कि उसने अपनी किताब में वर्णित किया है।[3] पवित्र आयत की तिलावत इस बात पर दलालत करती है कि रस्सी के अल्लाह तआला के पास पहुँचने से रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) की मुराद यह है कि वह अल्लाह तआला के इल्म, कुदरत और सल्तनत में पहुँची है। और अल्लाह तआला का इल्म हर जगह है जबकि वह खुद अर्श पर है। जैसा कि उसने अपनी किताब में खुद अपना यह वस्फ (गुण) बयान फ़रमाया है। (त)

और यह जो मशहूर है कि यह मज़हब हनाबिला का है, गलत है। बल्कि यह मज़हब जम्हूर मुहक्क़िकीन हनफ़िया व शाफ़ईया व...

---

1. सियर आलाम अल-नुबला, जीवनी इसहाक बिन राहविया ९७ / मुअस्ससत अल-रिसाला बेरूत ११ / ३७०
2. जामी अत-तिर्मिज़ी, अबवाबुत-तफ़्सीर, सूरह अल-हदीद, अमीन कंपनी दिल्ली २ / १६२

3. जामी अत-तिर्मिज़ी, अबवाबुत-तफ़्सीर, सूरह अल-हदीद, अमीन कंपनी दिल्ली २ / १६२

पृष्ठ ११६ / ७५०

اور سیر النبلاء میں ہے: قال اسحاق بن راھویۃ اجمع اھل العلم علی انہ تعالٰی علی العرش استوٰی وھو یعلم کل شیئ فی اسفل الارض السابعۃ۔ انتہٰی[1] اسحاق بن راہویہ نے کہا: تمام اہل علم کا اس پر اجماع ہے کہ اللہ تعالٰی نے عرش پر استواء فرمایا اور وہ ساتویں زمین کے نیچے ہر شیئ کو جانتا ہے ۔ انتہی (ت)

اور جامع ترمذی میں بعد ذکر حدیث: لوانکم دلیتم اجلًا بحبل الی الارض السفلٰی لھبط علی اللہ ثم قرأ رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم ھو الاول والاخر والظاھر والباطن وھو بکل شیئ علیم۔[2] اگر تم کوئی رسی نیچے والی زمین کی طرف لٹکاؤ تو وہ اللہ کے پاس پہنچے گی۔ پھر رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے یہ آیت کریمہ تلاوت فرمائی وہی اول ، وہی آخر ، وہی ظاہر ، وہی باطن، اور وہی سب کچھ جانتا ہے۔ (ت)

مرقوم ہے: قراۃ الأٰیۃ تدل علی انہ اراد یھبط علی اللہ علی علم اللہ وقدرتہ وسلطانہ وعلم اللہ فی کل مکان وھو علی العرش کما وصف فی کتابہ۔[3] آیت کریمہ کی تلاوت اس بات پر دلالت کرتی ہے کہ رسی کے اللہ تعالٰی کے پاس پہنچنے سے رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کی مراد یہ ہے کہ وہ اللہ تعالٰی کے علم، قدرت اور سلطنت میں پہنچی ہے۔ اور اللہ تعالٰی کا علم ہر جگہ ہے جب کہ وہ خود عرش پر ہے۔ جیسا کہ اس نے اپنی کتاب میں خود اپنا یہ وصف بیان فرمایا ہے۔ (ت)

اور یہ جو مشہور ہے کہ یہ مذہب حنابلہ کا ہے، غلط ہے۔ بلکہ یہ مذہب جمہور محققین حنفیہ و شافعیہ و

1۔ سیر اعلام النبلاء ترجمہ اسحاق بن راہویہ 97/ مؤسسة الرسالة بیروت 11 / 370 2۔ جامع الترمذی ابواب التفسیر سورة الحدید امین کمپنی دہلی 2 / 162 3۔ جامع الترمذی ابواب التفسیر سورة الحدید امین کمپنی دہلی 2 / 162

Fatawa-e-Razawiyya, Volume 29

...is that of the Malikis, Hanbalis, Muhaddithin, and others. However, some Hanbalis have come to favor the view of 'Istiwa' (ascending/establishing) along with a description of its modality (Kaifiyat), and they consider the settlement of the Lord to be similar to the settlement of creatures. This doctrine is rejected. A detailed explanation requires great extensiveness, and there is sufficiency in what we have mentioned. And Allah Almighty knows best what is correct. (And detail requires much more scope, whereas what we have mentioned is sufficient, and Allah knows best the correct matter. -T) Written by Muhammad Karamat Ali, may he be forgiven.

The Answer: God forbid! This is by no means the belief of the Ahl al-Sunnah. He is free from space and location; neither is the Throne His place nor any other place. The Throne and the Earth are all created things (hadithat), and He is Eternal, Pre-eternal, Everlasting, and Perpetual. Where was He when none of these existed? As He was then, so He is now, and as He is now, so He shall remain forever and ever. The Throne and the Earth are all changing, originated, and ephemeral, whereas He and His attributes are free from all change, origination, and destruction. What is the need to cite a consensus on 'Istiwa' when the Compassionate, Exalted be He, Himself states:

"The Most Merciful [who is] above the Throne established [Himself]." 1	**He, the Most Merciful, established Himself on the Throne in a manner befitting His Majesty. (T)**

However, the belief of the Ahl al-Sunnah is what their Lord, Exalted be He, taught to those firm in knowledge:

"And those firm in knowledge say, 'We believe in it. All [of it] is from our Lord.' And no one will be reminded except those of understanding." 2	**And those firm in knowledge say, 'We believe in it; it is all from our Lord,' and none receive admonition except men of understanding. (T)**

The belief of the Ahl al-Sunnah is that which the Mother of the Believers, Umm Salama (may Allah be pleased with her), stated:

"Istiwa is known, its modality is unknown, belief in it is obligatory, and questioning it is an innovation." 3	**Istiwa is known, its modality is unknown; to believe in it is obligatory, and to investigate it is misguidance.**

1 Al-Quran al-Karim 20/5 2 Al-Quran al-Karim 3/7 3 Ad-Durr al-Manthur under verse 7/52, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut 3/429; Fath al-Bari, Book of Tawhid, chapter

on the statement "And His Throne was over the water," Mustafa al-Babi, Egypt 17/177.

फ़तावा-ए-रज़विया, खंड 29

...मालकियों, हनाबिला, मुहद्दिसों आदि का मत है। हालांकि, कुछ हनाबिला 'इस्तिवा' (अर्श पर आसीन होना) के साथ उसकी कैफियत (प्रक्रिया) के वर्णन के पक्षधर हो गए हैं और वे ईश्वर के आसीन होने को मखलूकात (सृष्टि) के आसीन होने के समान समझते हैं। यह मत अस्वीकार्य है। इसका विवरण बहुत अधिक विस्तार की मांग करता है, और जो कुछ हमने वर्णित किया है वह पर्याप्त है। और अल्लाह बेहतर जानता है। (और विस्तार के लिए बहुत गुंजाइश है, जबकि जो कुछ हमने वर्णित किया है वह पर्याप्त है, और अल्लाह बेहतर बात को अच्छी तरह जानता है। -त) लिखित, मुहम्मद करामत अली, उन पर कृपा हो।

उत्तर: ईश्वर न करे! यह कतई अहले सुन्नत का अक़ीदा (विश्वास) नहीं है। वह स्थान और स्थिति से मुक्त है। न अर्श उसका स्थान है और न कोई और जगह। अर्श और फर्श (धरती) सब नश्वर (حادثات) हैं। और वह अनादि, अनंत, शाश्वत है। जब ये कुछ भी नहीं थे, तब वह कहाँ था? जैसा वह तब था, वैसा ही अब है, और जैसा अब है, वैसा ही अनंत काल तक रहेगा। अर्श और फर्श सब परिवर्तनशील हैं, नश्वर हैं, समाप्त होने वाले हैं। और वह और उसके गुण परिवर्तन, नवीनता और विनाश से मुक्त हैं। 'इस्तिवा' पर इज्मा (सहमति) प्रस्तुत करने की क्या आवश्यकता है, जब स्वयं रहमान अज़्ज़ व जल्ल फरमाता है:

"रहमान अर्श पर मुस्तवी (आसीन) हुआ।" १	**वह बड़ा दयालु है, उसने अर्श पर इस्तिवा फरमाया जैसा कि उसकी गरिमा के अनुकूल है। (त)**

परंतु अहले सुन्नत का अक़ीदा वह है जो उनके रब अज़्ज़ व जल्ल ने इल्म में पक्के लोगों (रासिख़ीन फिल इल्म) को सिखाया है:

"और जो इल्म में पक्के हैं, वे कहते हैं, 'हम इस पर ईमान लाए, यह सब हमारे रब की ओर से है।' और कोई नसीहत नहीं लेता सिवाय बुद्धि वालों के।" २	**और वे जो गहरे ज्ञान वाले हैं, कहते हैं, 'हम इस पर विश्वास करते हैं; यह सब हमारे रब की ओर से है,' और बुद्धिमानों के सिवाय कोई शिक्षा ग्रहण नहीं करता। (त)**

अहले सुन्नत का अक़ीदा वह है जो उम्मुल मोमिनीन उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने फरमाया:

"इस्तिवा ज्ञात है, इसकी कैफियत (स्वरूप) अज्ञात है, इस पर ईमान लाना वाजिब (अनिवार्य) है और इसके बारे में सवाल करना बिदत (नवाचार) है।" ३

इस्तिवा ज्ञात है और कैफियत अज्ञात, और इस पर ईमान लाना वाजिब है, और इसकी छानबीन करना गुमराह (पथभ्रष्टता) है।

१ अल-कुरान अल-करीम २०/ ५ २ अल-कुरान अल-करीम ३/ ७ ३ अद-दुरुल मंसूर, आयत ७/ ५२ के अंतर्गत, दार इहया अत-तुराथ अल-अरबी, बेरूत ३/ ४२९; फतह अल-बारी, किताब अत-तौहीद, अध्याय "और उसका अर्श पानी पर था", मुस्तफा अल-बाबी, मिस्र १७ / १७७।

पृष्ठ ११७/७५०

مالکیہ و حنابلہ و محدثین و غیرہم کا ہے البتہ بعض حنابلہ استواء مع بیان الکیفیت کے قائل ہو گئے ہیں اور استقرار پروردگار کو مثل استقرار مخلوقات کے سمجھتے ہیں یہ مذہب مردود ہے، والتفصیل یتدعی بسطاً بسیطاً وفیما ذکرناہ کفایۃ۔ واللہ تعالیٰ اعلم بالصواب (اور تفصیل بہت زیادہ وسعت کو چاہتی ہے جب کہ ہم نے جو کچھ ذکر کیا اس میں کفایت ہے اور اللہ تعالیٰ درست بات کو خوب جانتا ہے۔ت) حررہ، محمد کرامت علی عفی عنہ الجواب: حاشا للہ! یہ ہر گز عقیدہ اہل سنت کا نہیں، وہ مکان و تمکن سے پاک ہے، نہ عرش اس کا مکان ہے نہ دوسری جگہ، عرش و فرش سب حادثات ہیں، اور وہ قدیم ازلی ابدی سرمدی جب تک یہ کچھ نہ تھے کہاں تھا، جیسا جب تھا ویسا ہی اب ہے اور جیسا اب ہے ویسا ہی ابد الآباد تک رہے گا۔ عرش و فرش سب متغیر ہیں، حادث ہیں، فانی ہیں، اور وہ اور اس کی صفات تغیر و حدوث و فنا سب سے پاک، استواء پر اجماع نقل کرنے کی کیا حاجت، خود رحمن عزوجل فرماتا ہے:

"الرَّحْمٰنُ عَلَى الْعَرْشِ اسْتَوٰى ۝۱" **وہ بڑا مہربان والا اس نے عرش پر استواء فرمایا جیسا کہ اس کی شان کے لائق ہے۔ (ت)**

مگر اعتقاد اہل سنت کا وہ ہے جو ان کے رب عزوجل نے راسخین فی العلم کو تعلیم فرمایا:

"وَ الرّٰسِخُوْنَ فِی الْعِلْمِ یَقُوْلُوْنَ اٰمَنَّا بِهٖ كُلٌّ مِّنْ عِنْدِ رَبِّنَا وَ مَا یَذَّكَّرُ اِلَّاۤ اُولُوا الْاَلْبَابِ ۝۲" **اور وہ پختہ علم والے کہتے ہیں ہم اس پر ایمان لائے سب ہمارے رب کے پاس سے ہے، اور نصیحت نہیں مانتے مگر عقل والے۔ (ت)**

اعتقاد اہل سنت کا وہ ہے جو ام المومنین ام سلمہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا نے فرمایا:

الاستواء معلوم والكيف مجهول والايمان به واجب و السؤال عنه بدعة ٣

استواء معلوم ہے اور کیفیت مجہول، اور اس پر ایمان واجب، اور اس کی تفتیش گمراہی۔

١ القرآن الكريم ٢٠/ ٥ ٢ القرآن الكريم ٣/ ٧ ٣ الدرالمنثور تحت الآية ٧ / ٥٢ داراحياء التراث العربى بيروت ٣/ ٤٢٩ ، فتح البارى كتاب التوحيد باب قوله وكان عرشه على الماء مصطفى البابى مصر ١٧ / ١٧٧

Fatawa Razawiya, Volume 29

There are two schools of thought among the Ahl al-Sunnah regarding the ambiguous verses (Ayat-e-Mutashabihat). The school of the pious predecessors (Salaf-e-Salih) is that of delegation (tafwid): we neither know their meanings nor engage in discussion about them. What is understood from their apparent literal sense is definitely not intended, and whatever is the intent of their Lord (Almighty), we believe in it.

"All is from our Lord" (1) - We believe in all of it; all is from our Lord.

The second school is that of the later scholars (muta'akhkhirin), who, in order to protect the faith of the common people, divert from impossible meanings towards a nearby correct meaning. For example, 'istiwa' (rising/establishing) also carries the meaning of 'istila' (conquest/dominion).

Bishr established dominion over Iraq / Without a sword or shed blood. (2) (Inquiry: Bishr became dominant over Iraq without shedding blood with a sword. - Translator)

However, the false doctrine that the verses of 'togetherness' (ma'iyyat) are based on metaphorical interpretation while the verse of 'istiwa' is taken literally is absolutely not the path of the Ahl al-Sunnah. Saying "He is on the Throne and not elsewhere" clearly indicates occupancy (tamakkun). To fix a place for Him on the Throne—Allah forbid—while negating other locations, is problematic. It is explicitly stated in Alamgiriyyah, Tariqah Muhammadiyyah, Hadiqah Nadiyyah, Tatarkhaniyyah, Khulasah, Jami' al-Fusulayn, Khizanat al-Muftin, etc., that affirming a place or location for the Lord (Almighty) in any manner is disbelief (kufr). Some malicious anthropomorphists (mujassim) among the later Hanbalis, like Ibn Taymiyyah and Ibn al-Qayyim, emerged. Ibn Taymiyyah says, "I searched everywhere and found nothing, and what is non-existent is not there." He sees no difference between these two—i.e., that which is not in a place does not exist at all. But for him, the Lord (Almighty)—Allah forbid—must definitely be in a place. If this foolish and ignorant person does not know the difference between material and immaterial existence, then the "cutting sword" we mentioned above is sufficient to sever his neck. A "place" is created (hadith). When place did not exist at all, where was He? Perhaps he would say when there was no place, He did not exist either, or he would say that place is also eternal and beginningless (qadim azali). Both are disbelief. When his deity, according to him, cannot exist without being present in some place, then He becomes dependent on place. And he who is dependent is not Allah. Therefore, in reality, a

denial of God is necessary upon them. Performing prayer behind someone with such a belief is prohibited and impermissible. And Allah Almighty knows best.

1. Al-Quran al-Karim, 3:7
2. Fath al-Bari, Book of Tawhid, Chapter on His Saying "And His Throne was over the water", Mustafa al-Babi, Egypt, 17/176.

फ़तावा रज़विया, खंड 29

अहले सुन्नत के बीच मुतशाबिहात आयतों (संदिग्ध आयतों) के बारे में दो मत हैं। पूर्वजों (सलफ़-ए-सालिह) का मत 'तफ़वीज़' (सौंपना) का है: हम न तो उनके अर्थ जानते हैं और न ही उन पर चर्चा करते हैं। उनके शाब्दिक रूप से जो कुछ समझ में आता है, वह निश्चित रूप से अभीष्ट नहीं है, और जो कुछ उनके रब (अज़्वजल) की मंशा है, हम उस पर विश्वास करते हैं।

"सब कुछ हमारे रब की ओर से है" (1) - हम सब इस पर ईमान लाए, सब हमारे रब के पास से है।

दूसरा मत बाद के विद्वानों (मुताअख़िरीन) का है कि आम लोगों के धर्म की रक्षा के लिए असंभव अर्थों से हटाकर किसी निकटवर्ती सही अर्थ की ओर ले जाया जाए, उदाहरण के लिए, 'इस्तिवा' (सिंहासन पर विराजमान होना) का अर्थ 'इस्तिला' (अधिपत्य/विजय) भी आता है।

बिश्र ने इराक पर अधिपत्य स्थापित किया / बिना तलवार या खून बहाए। (2) (अर्थात: बिश्र तलवार के साथ खून बहाए बिना इराक पर हावी हो गया। - अनुवादक)

लेकिन यह गलत मत कि 'मईय्यत' (साथ होने) की आयतें तो व्याख्या (तावील) पर आधारित हैं और 'इस्तिवा' की आयत शाब्दिक अर्थ पर, यह कतई अहले सुन्नत का रास्ता नहीं है। यह कहना कि "वह अर्श (सिंहासन) पर है और दूसरी जगह नहीं", यह स्पष्ट रूप से 'तमकुन' (स्थान घेरने) को दर्शाता है। अर्श पर उसके लिए जगह निश्चित करना—अल्लाह की पनाह—जबकि अन्य स्थानों को नकार दिया गया। आलमगीरिया, तरीक़ा मोहम्मदिया, हदीक़ा नदिया, तातारख़ानिया, ख़ुलासा, जामिउल फुसूलैन, ख़ज़ानतुल मुफ़्तीन आदि में यह स्पष्ट रूप से वर्णित है कि रब (अज़्वजल) के लिए किसी भी तरह से कोई स्थान या जगह साबित करना कुफ़्र (अधर्म) है। बाद के हन्बलियों में कुछ दुष्ट 'मुजस्सिमा' (मानवरूपवादी) हो गए जैसे इब्न तैमिया और इब्न क़य्यिम। इब्न तैमिया कहता है कि "मैंने सब जगह ढूँढा कहीं न पाया और जो कहीं नहीं है वह है ही नहीं," यानी इन दोनों में कोई अंतर नहीं है—अर्थात जो किसी स्थान पर नहीं है उसका अस्तित्व ही नहीं है। लेकिन उसके अनुसार रब (अज़्वजल)—अल्लाह की पनाह—ज़रूर किसी स्थान पर है। यदि इस मूर्ख और अज्ञानी व्यक्ति को भौतिक और पदार्थ-रहित के बीच का अंतर नहीं पता है, तो ऊपर वर्णित "सैक़तुल क़ातेअ" (काटने वाली तलवार) उसकी गर्दन काटने के लिए पर्याप्त है। स्थान 'हादिस' (नश्वर/निर्मित) है। जब स्थान था ही नहीं, तो वह कहाँ था? शायद वह कहेगा कि जब स्थान नहीं था, वह भी नहीं था, या वह कहेगा कि स्थान भी 'क़दीम अज़ली' (अनादि और शाश्वत) है। और ये दोनों कुफ़्र हैं। जब उसका आराध्य उसके अनुसार

बिना किसी स्थान में मौजूद हुए नहीं हो सकता, तो वह स्थान का मोहताज हो गया, और जो मोहताज है वह अल्लाह नहीं। अतः वास्तव में उन पर ईश्वर का इनकार ही लाज़िम आता है। ऐसे अकीदे (विश्वास) वाले के पीछे नमाज़ पढ़ना वर्जित और नाजायज़ है। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।

1. अल-क़ुरान अल-करीम 3/7
2. फ़तह अल-बारी, किताब अत-तौहीद, अध्याय "और उसका सिंहासन पानी पर था", मुस्तफ़ा अल-बाबी, मिस्र, 17/176।

पृष्ठ 118/750

اہلسنت کے دو مسلک آیات متشابہات میں ہیں سلف صالح کا مسلک تفویض کا، ہم نہ ان کے معنی جانیں نہ ان سے بحث کریں جو کچھ ان کے ظاہر سے سمجھ میں آتا ہے، وہ قطعاً مراد نہیں اور جو کچھ ان کے رب عزوجل کی مراد ہے ہم اس پر ایمان لاتے ہیں۔ "كُلٌّ مِّنْ عِندِ رَبِّنَا" (1) - ہم سب اس پر ایمان لائے سب ہمارے رب کے پاس سے ہے۔

دوسرا مسلک متاخرین کا کہ حفظ دین عوام کے لیے معنی محال سے پھیر کر کسی قریب معنی صحیح کی طرف لے جائیں، مثلاً استواء بمعنی استیلاء بھی آتا ہے۔ قد استوی بشر علی العراق من غیر سیف اودم مھراق (2) (تحقیق بشر عراق پر غالب آگیا تلوار کے ساتھ خون بہائے بغیر۔ ت)

مگر یہ مسلک باطل کہ آیات معیت تو تاویل پر محمول ہیں اور آیت استواء ظاہر پر یہ ہرگز مسلک اہل سنت نہیں، عرش پر ہے دوسری جگہ نہیں، یہ صاف تمکن کو بتارہا ہے عرش پر معاذ اللہ اس کے لیے جگہ ثابت کی جب تو اور مکانات کی نفی کی، عالمگیریہ، طریقہ محمدیہ، حدیقہ ندیہ، تاتارخانیہ، خلاصہ، جامع الفصولین، خزانۃ المفتین وغیرہا میں تصریح ہے کہ رب عزوجل کے لیے کسی طرح کسی جگہ مکان ثابت کرنا کفر ہے۔ متاخرین حنابلہ میں بعض خبثاء مجسمہ ہوگئے جیسے ابن تیمیہ وابن قیم، ابن تیمیہ کہتا ہے کہ میں نے سب جگہ ڈھونڈا کہیں نہ پایا اور معدوم ہے ان دونوں میں کچھ فرق نہیں یعنی جو کسی جگہ نہیں ہے وہ ہے ہی نہیں لیکن رب عزوجل تو معاذ اللہ ضرور کسی جگہ ہے، اس احمق سفیہ کو اگر مادی اور مجرد عن المادہ کا فرق نہ معلوم ہو تو وہ سیف قاطع جو اوپر ہم نے ذکر کی اس کی گردن کاٹنے کو کافی جگہ حادث ہے جب جگہ تھی ہی نہیں کہاں تھا وہ شاید یہ کہے گا کہ جب جگہ نہ تھی وہ بھی نہ تھا یا یہ کہے گا کہ جگہ بھی

قدیم ازلی ہے اور دونوں کفر ہیں جب اُس کا معبود اس کے نزدیک بغیر کسی جگہ میں موجود ہوئے نہیں ہو سکتا تو جگہ کا محتاج ہوا، اور جو محتاج ہے اللہ نہیں تو حقیقتاً ان پر انکار خدا ہی لازم ہے ایسے عقیدے والے کے پیچھے نماز ممنوع و ناجائز ہے۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

1 القرآن الکریم ۳ / ۷ 2 فتح الباری کتاب التوحید باب قولہ وکان عرشہ علی الماء مصطفی البابی مصر ۱۷ / ۱۷۶

Volume 29 | Fatawa Razawiyya

Qawāriʿ al-Qahhār ʿalā al-Mujassimat al-Fujjār (1318 AH) Severe calamities from Allah (the Subduer) upon the wicked ones who claim the corporeality of the Creator. Titled with historical chronograms: Dharb-e Qahhārī (1318 AH)

In the name of Allah, the Most Gracious, the Most Merciful

[Arabic Box Text]: Glory be to You, O He Who is far exalted above what the unjust anthropomorphists say, with a great exaltation. * Send blessings, peace, and benediction upon him who came to us as a bearer of glad tidings and a warner * calling towards You by Your permission, a radiant lamp * and upon his family, his companions, and the people of his Sunnah and his community, abundantly and repeatedly.

[Urdu Box Text]: You are pure, O Being Who is highest above that which the unjust people, who attribute a body (to Allah), say. Send mercy, peace, and blessings upon that personality who came to us as a bearer of glad tidings and a warner, and who, by Your command, is a radiant lamp calling towards You, and upon his progeny, companions, and the Ahl-e-Sunnat wa-Jama'at, abundantly and repeatedly. (T)

Beliefs of Ahl al-Sunnah wa'l Jama'ah regarding the transcendence of Allah Almighty: (1) Allah Almighty is free from every defect and flaw. (2) Everyone is in need of Him; He is not in need of anything, in any way, in any matter at all.

Page 120 of 750

जिल्द २९ | फ़तावा रज़विया

क़वारिअल क़ह्हार अलल मुजस्सिमतुल फ़ुज्जार (१३१८ हिजरी) अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की सिफ़त-ए-जिस्मियत के कायल फ़ाजिरों पर अल्लाह की तरफ़ से सख़्त मुसीबतें। ऐतिहासिक नाम: ज़रब-ए-क़ह्हारी (१३१८ हिजरी)

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रह़मत वाला

[अरबी बॉक्स]: पाक है तू ऐ वह ज़ात जो बहुत बुलन्द है उस बात से जो ज़ालिम मुजस्सिमा (अल्लाह के लिए जिस्म साबित करने वाले) कहते हैं। * रह़मत, सलामती और बरकत नाज़िल फ़रमा उस हस्ती पर जो हमारे पास बशीर (खुशखबरी देने वाला) और नज़ीर (डराने वाला) बन कर आए * और तेरे हुक्म से तेरी तरफ़ दावत देने वाले रोशन चिराग़ हैं * और उनकी आल (वंश), सहाबा और अहले सुन्नत व जमाअत पर कसरत के साथ।

[उर्दू बॉक्स अनुवाद]: पाक है तू ऐ वह ज़ात जो उस बात से बहुत बुलन्द है जो ज़ालिम लोग (अल्लाह के लिए) जिस्म साबित करते हुए कहते हैं। रह़मत, सलामती और बरकत फ़रमा उस शख़्सियत पर जो हमारे पास बशीर और नज़ीर बन कर तशरीफ़ लाए और तेरे हुक्म से तेरी तरफ़ दावत देने वाले रोशन चिराग़ हैं, और उनकी आल व सहाबा और अहले सुन्नत व जमाअत पर कसरत दर कसरत (त)।

अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल की तन्ज़ीह (पवित्रता) में अहले सुन्नत व जमाअत के अक़ीदे: (१) अल्लाह तआला हर ऐब और नुक़सान से पाक है। (२) सब उसके मोह़ताज हैं, वह किसी चीज़ की तरफ़ किसी तरह किसी बात में अस्लन मोह़ताज नहीं।

७५० में से पृष्ठ १२०

قوارع القهار علی المجسمة الفجار ۱۳۱۸ھ جسمیت باری تعالیٰ کے قائل فاجروں پر قہر فرمانے والے (اللہ تعالیٰ) کی طرف سے سخت مصیبتیں ملقب بلقب تاریخی: ضرب قہاری ۱۳۱۸ھ

بسم اللہ الرحمن الرحیم

[عربی عبارت]: سبحنک یا من تعالی عما یقول المجسمة الظالمون علوا کبیرا * صلّ و سلم و بارك علی من اتانا بشیرًا و نذیرًا * داعیا الیك باذنك سراجًا منیرًا * و علی الہ و صحابتہ و اہل سنتہ و جماعتہ کثیرا کثیرا ۔

[اردو ترجمہ]: پاک ہے تو اے وہ ذات جو بلند ترین ہے اس بات سے جو جسم ثابت کرنے والے ظالم لوگ کہتے ہیں، رحمت، سلامتی اور برکت فرما اس شخصیت پر جو ہمارے پاس بشیر و نذیر بن کر تشریف لائے اور تیری طرف دعوت دینے والے تیرے حکم سے روشن چراغ ہیں اور ان کی آل و صحابہ و اہل سنت و جماعت پر کثرت در کثرت سے (ت)

اللہ عزوجل کی تنزیہ میں اہلسنت و جماعت کے عقیدے (۱) اللہ تعالیٰ ہر عیب و نقصان سے پاک ہے۔ (۲) سب اس کے محتاج ہیں وہ کسی چیز کی طرف کسی طرح کسی بات میں اصلاً احتیاج نہیں

Fatawa Razawiya Volume 29

...does not keep. (3) He is free from any resemblance to creation. (4) Change cannot occur in Him; He is now as He was in eternity, and He will remain so forever and ever. It can never happen that He is one way first and then changes to another state. (5) He is not a body, and He has no connection with anything that has a body. (6) Quantity is not accidental to Him such that one could say "this much" or "that much"; He is not long, wide, three-dimensional, thick, thin, much, little, or large, small, heavy, or light in count or weight. (7) He is free from shape; neither spread out nor contracted, neither round nor long, triangular or square, straight or crooked, or of any other form. (8) He is pure from limits, sides, and endings, and is not "infinite" in the sense of being spread out without end, but rather in the sense that He is free from quantity and all such accidents. In short, saying "infinite" is to negate limits, not to affirm an endless quantity. (9) He is not made from anything. (10) One cannot suppose parts or portions in Him. (11) He is pure from direction and side; just as one cannot say He is to the right, left, or below, similarly, in terms of direction, He is never in front, behind, or above. (12) He cannot join with any creation such that He is attached to it. (13) He is not separate from any creation such that there is a spatial distance between Him and the creation. (14) There is no location or place for Him. (15) He is free from all accidents of bodies and physicality such as rising, sitting, descending, ascending, walking, staying, etc. In the detailed explanation, there are countless beliefs of transcendence (Tanzeeh). These fifteen items are mentioned here as per need, and besides these, the basis of all these issues are the three beliefs mentioned earlier, and among them, the primary principle is the first belief which is the sum and substance of all transcendence requirements. Their proof is all those verses of the Great Quran in which the glorification, sanctification, purity, independence, peerlessness, and uniqueness of the Almighty are proclaimed.

Page 121 of 750

फतावा रजविया जिल्द २९

...नहीं रखता। (३) वह मख्लूक (सृष्टि) की समानता से पाक (पवित्र) है। (४) उसमें परिवर्तन नहीं आ सकता, वह अज़ल (अनंत अतीत) में जैसा था वैसा ही अब है और वैसा ही हमेशा-हमेशा रहेगा, यह कभी नहीं हो सकता कि पहले एक तरीके पर हो फिर बदल कर दूसरी हालत पर हो जाए। (५) वह जिस्म (शरीर) नहीं है और जिस्म वाली किसी चीज़ से उसका कोई लगाव नहीं। (६) उसे मिकदार (मात्रा) पेश नहीं आती कि इतना या उतना कह सकें; वह लम्बा, चौड़ा, त्रिविमीय, मोटा, पतला, बहुत, थोड़ा या गिनती या तौल में बड़ा, छोटा, भारी या हल्का नहीं है। (७) वह शक्ल (आकार) से पाक है; न फैला हुआ, न सिमटा हुआ, न गोल, न लम्बा, न तिकोना, न चौकोर, न सीधा, न तिरछा और न ही किसी और सूरत का। (८) वह हद (सीमा), दिशा और अंत से पाक है और इस अर्थ में 'असीमित' (नामहदूद) भी नहीं कि बिना अंत के फैला हुआ हो, बल्कि इस अर्थ में कि वह मात्रा आदि तमाम गुणों (अराज़) से पाक है। संक्षेप में, 'असीमित' कहना सीमाओं को नकारने के लिए है, न कि अनंत मात्रा को सिद्ध करने के लिए। (९) वह किसी चीज़ से बना नहीं है। (१०) उसमें अंगों या हिस्सों की कल्पना नहीं की जा सकती। (११) वह दिशा और तरफ से पाक है; जिस तरह उसे दाएं, बाएं या नीचे नहीं कह सकते, उसी तरह दिशा के अर्थ में आगे, पीछे या ऊपर भी हरगिज़ नहीं। (१२) वह किसी मख्लूक (सृष्टि) से मिल नहीं सकता कि उससे जुड़ा हुआ हो। (१३) वह किसी मख्लूक से जुदा (अलग) नहीं है कि उसमें और मख्लूक में फासला (दूरी) हो। (१४) उसके लिए कोई मकान (घर) और जगह नहीं है। (१५) वह उठने, बैठने, उतरने, चढ़ने, चलने, ठहरने आदि जिस्म और जिस्मानियत (भौतिकता) के तमाम लक्षणों से पाक है। विस्तार में तन्ज़ीह (ईश्वर की पवित्रता) के अकीदे (विश्वास) अनगिनत हैं, ये पंद्रह नाम ज़रूरत के अनुसार यहाँ ज़िक्र किए गए हैं। इनके अलावा इन सभी मसलों की जड़ वही तीन अकीदे हैं जो पहले ज़िक्र हुए, और उनमें भी असलुल उसूल (मुख्य सिद्धांत) पहला अकीदा है जो तन्ज़ीह के तमाम पहलुओं का सार और निचोड़ है। उनका प्रमाण क़ुरान-ए-अज़ीम की वे तमाम आयतें हैं जिनमें बारी तआला की तस्बीह (महिमामंडन), तक़दीस (पवित्रता), पाकी, बे-नियाज़ी (आत्मनिर्भरता), बे-मिस्ली (अद्वितीयता) और बे-नज़ीरी (बेजोड़ता) का ज़िक्र है।

نہیں رکھتا۔ (۳) مخلوق کی مشابہت سے منزہ ہے۔ (۴) اس میں تغیر نہیں آسکتا، ازل میں جیسا تھا ویسا ہی اب ہے اور ویسا ہی ہمیشہ ہمیشہ رہے گا، یہ کبھی نہیں ہو سکتا کہ پہلے ایک طور پر ہو پھر بدل کر اور حالت پر ہو جائے۔ (۵) وہ جسم نہیں جسم والی کسی چیز کو اس سے لگاؤ نہیں۔ (۶) اُسے مقدار عارض نہیں کہ اتنا یا اتنا کہہ سکیں، لمبا چوڑا یا دِکدار یا موٹا یا پتلا یا بہت یا تھوڑا یا گنتی یا تول میں بڑا یا چھوٹا یا بھاری یا ہلکا نہیں۔ (۷) وہ شکل سے منزہ ہے، پھیلا یا سمٹا، گول یا لمبا، تکونا یا چوکونا، سیدھا یا ترچھا یا اور کسی صورت کا نہیں۔ (۸) حد و طرف و نہایت سے پاک ہے اور اس معنی پر نامحدود بھی نہیں کہ بے نہایت پھیلا ہوا ہو بلکہ یہ معنی کہ وہ مقدار وغیرہ تمام اعراض سے منزہ ہے، غرض نامحدود کہنا نفی حد کے لیے ہے نہ اثبات بے مقدار بے نہایت کے لیے۔ (۹) وہ کسی چیز سے بنا نہیں۔ (۱۰) اس میں اجزا یا حصے فرض نہیں کر سکتے۔ (۱۱) جہت اور طرف سے پاک ہے جس طرح اُسے داہنے بائیں یا نیچے نہیں کہہ سکتے یونہی جہت کے معنی پر آگے پیچھے یا اوپر بھی ہرگز نہیں۔ (۱۲) وہ کسی مخلوق سے مل نہیں سکتا کہ اس سے لگا ہوا ہو۔ (۱۳) کسی مخلوق سے جُدا نہیں کہ اُس میں اور مخلوق میں مسافت کا فاصلہ ہو۔ (۱۴) اُس کے لیے مکان اور جگہ نہیں۔ (۱۵) اُٹھنے، بیٹھنے، اترنے، چڑھنے، چلنے، ٹھہرنے و غیر ہاتمام عوارض جسم و جسمانیات سے منزہ ہے۔ محل تفصیل میں عقائد تنزیہہ بے شمار ہیں، یہ پندرہ اسمہ بقدرِ حاجت یہاں مذکور ہوئے اور انکے سوا ان جملہ مسائل کی اصل یہی تین عقیدے ہیں جو پہلے مذکور ہوئے اور ان میں بھی اصل الاصول عقیدہ اولی ہے کہ تمام مطالب تنزیہہ کا حاصل و خلاصہ ہے ان کی دلیل قرآن عظیم کی وہ سب آیات ہیں جن میں باری عزوجل کی تسبیح و تقدیس و پاکی و بے نیازی و بے مثلی و بے نظیری ارشاد

How many and abundant are the verses of glorification themselves. And Allah the Almighty said: "The Sovereign, the Pure, the Perfection"[1] - The King, extremely holy, safe from every defect. And Allah the Almighty said: "Indeed, Allah is free from need of the worlds"[2] - Verily, Allah is independent of the entire universe. And Allah the Almighty said: "Indeed, Allah is the Free of need, the Praiseworthy"[3] - Verily, Allah alone is independent, praised with all excellences. And Allah the Almighty said: "There is nothing like unto Him"[4] - There is nothing like Him. And Allah the Almighty said: "Do you know of any similar to Him?"[5] - Do you know anyone of His name (attributes)? And Allah the Almighty said: "And there is none comparable to Him"[6] - There is no equal to Him. There are hundreds of verses conveying these meanings. These are decisive verses (Muhkamat), they are the foundation of the Book. There is no hidden or ambiguous meaning in them, no difficulty or problem at all. Whatever is openly manifest and clear from their explicit words, to believe in it without change, alteration, specification, or interpretation is among the necessities of the religion of Islam. And success is from Allah.

Belief of the Ahlus Sunnah regarding the Ambiguous Verses

Allah the Almighty said (Allah the Almighty stated): "It is He who has sent down to you, [O Muhammad], the Book; in it are verses [that are] precise - they are the foundation of the Book - and others unspecific. As for those in whose hearts is deviation [from truth], they will follow that of it which is unspecific, seeking discord and seeking an interpretation [suitable to them]. And no one knows its [true] interpretation except Allah. But those firm in knowledge say, 'We believe in it. All [of it] is from our Lord.' And no one will be reminded except those of understanding."

(In Mauzih al-Quran, its translation is as follows: It is He who has sent down the Book to you; in it are some verses that are firm/clear, which are the root of the Book, and others are those that lend themselves to multiple meanings. So those whose hearts are deviated follow the ones that suit them, seeking misguidance and seeking their ultimate explanation. And no one knows their ultimate explanation except Allah. And those who are firm in knowledge say, 'We believe in it, everything is from our Lord.' And only those who are given understanding take heed.)

[1] The Holy Quran 59/23 [2] The Holy Quran 3/97 [3] The Holy Quran 31/26 [4] The Holy Quran 42/11 [5] The Holy Quran 19/65 [6] The Holy Quran 112/4

तस्बीह (महिमामंडन) की आयतें स्वयं कितनी प्रचुर और पर्याप्त हैं। और अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "बादशाह, अत्यंत पवित्र, शांति प्रदान करने वाला"[1] - वह सम्राट जो अत्यंत पवित्र है और हर दोष से सुरक्षित है। और अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "निस्संदेह अल्लाह सारे जहान से बेनियाज़ (स्वतंत्र) है"[2] - वास्तव में अल्लाह को संपूर्ण ब्रह्मांड की कोई आवश्यकता नहीं है। और अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "निस्संदेह अल्लाह ही बेपरवाह (स्वतंत्र) है और सभी प्रशंसाओं का हकदार है"[3] - वास्तव में अल्लाह ही आत्मनिर्भर है और सभी खूबियों के साथ सराहा गया है। और अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "उसके जैसा कुछ भी नहीं है"[4] - उसके समान कोई वस्तु नहीं है। और अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "क्या तू उसके नाम (गुणों) वाला किसी को जानता है?"[5] - क्या आप उसके समान किसी को जानते हैं? और अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "और उसके बराबर का कोई नहीं है"[6] - उसका कोई जोड़ नहीं है। इन विषयों की सैकड़ों आयतें हैं, ये आयतें 'मुहकमात' (स्पष्ट) हैं, ये किताब की असल बुनियाद (उम्मुल किताब) हैं, इनके अर्थ में कोई अस्पष्टता या संक्षिप्तता नहीं है, मूल रूप से कोई कठिनाई या शंका नहीं है। जो कुछ उनके स्पष्ट शब्दों से बिना किसी परदे के रोशन और ज़ाहिर है, बिना किसी बदलाव, परिवर्तन, विशेषता या व्याख्या के उस पर ईमान लाना इस्लाम के आवश्यक धर्म सिद्धांतों में से है। और सफलता अल्लाह की ओर से है।

आयते-मुतशाबिहात के बारे में अहले सुन्नत का अक़ीदा (विश्वास)

अल्लाह तआला ने फ़रमाया (अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमाया): "वही है जिसने तुझ पर किताब उतारी, उसमें से कुछ आयतें स्पष्ट हैं—वही किताब की असल बुनियाद हैं—और दूसरी कुछ आयतें वे हैं जिनके एक से अधिक अर्थ हो सकते हैं। तो जिनके दिलों में टेढ़ापन है, वे उस किताब के उस हिस्से के पीछे पड़ते हैं जिसके कई अर्थ हो सकते हैं, ताकि फ़ितना (उपद्रव) पैदा करें और उसके (मनचाहे) अर्थ निकालें। हालाँकि उसका वास्तविक अर्थ अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता। और जो ज्ञान में पक्के हैं, वे कहते हैं, 'हम उस पर ईमान लाए, सब हमारे रब ही की ओर से है।' और नसीहत वही लोग प्राप्त करते हैं जो बुद्धिमान हैं।"

(मौज़िह-उल-क़ुरआन में इसका अनुवाद इस प्रकार है: वही है जिसने तुझ पर किताब उतारी, उसमें कुछ आयतें पक्की हैं जो किताब की जड़ हैं, और दूसरी कई तरफ़ मिलने वाली हैं। तो जिनके दिल फिरे हुए हैं, वे उनके उन हिस्सों के पीछे लग जाते हैं जो उनके ढब (मर्जी) के हों, वे गुमराह होने की

तलाश में रहते हैं और उनकी पूरी व्याख्या (तावील) पाना चाहते हैं। और उनकी पूरी व्याख्या अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता। और जो मज़बूत इल्म वाले हैं, वे कहते हैं कि हम उस पर ईमान लाए, सब कुछ हमारे रब की तरफ़ से है, और वही समझते हैं जिन्हें समझाया गया है।)

[1] अल-क़ुरआन अल-करीम 59/23 [2] अल-क़ुरआन अल-करीम 3/97 [3] अल-क़ुरआन अल-करीम 31/26 [4] अल-क़ुरआन अल-करीम 42/11 [5] अल-क़ुरआन अल-करीम 19/65 [6] अल-क़ुरआन अल-करीम 112/4

पृष्ठ 122 / 750

ہوئی آیات تسبیح خود کس قدر کثیر و وافر ہیں۔ وقال تعالٰی: "الْمَلِكُ الْقُدُّوسُ السَّلٰمُ" ۱- بادشاہ نہایت پاکی والا ہر عیب سے سلامت۔ وقال تعالٰی: "فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِیٌّ عَنِ الْعٰلَمِیْنَ" ۲- بے شک اللہ سارے جہان سے بے نیاز ہے۔ وقال تعالٰی: "اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَنِیُّ الْحَمِیْدُ" ۳- بے شک اللہ ہی بے پروا ہے سب خوبیوں سراہا، وقال تعالٰی: "لَیْسَ كَمِثْلِهٖ شَیْءٌ" ٤- اس کے مثل کوئی چیز نہیں۔ وقال تعالٰی: "هَلْ تَعْلَمُ لَهٗ سَمِیًّا" ٥- کیا تو جانتا ہے اس کے نام کا کوئی، وقال تعالٰی: "وَلَمْ یَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ" ٦- اس کے جوڑ کا کوئی نہیں۔ ان مطالب کی آیتیں صدہا ہیں، یہ آیات محکمات ہیں، یہ اُم الکتاب ہیں، ان کے معنی میں کوئی خفا و اجمال نہیں، اصلاً دقت و اشکال نہیں جو کچھ ان کے صریح لفظوں سے بے پردہ روشن و ہویدا ہے بے تغیر و تبدیل بے تخصیص و تاویل اس پر ایمان لانا ضروریاتِ دین اسلام سے ہے، وباللہ التوفیق۔

آیاتِ متشابہات کے باب میں اہلسنت کا اعتقاد

قال اللہ تعالٰی (اللہ تعالٰی نے فرمایا): "هُوَ الَّذِیْ اَنْزَلَ عَلَیْكَ الْكِتٰبَ مِنْهُ اٰیٰتٌ مُّحْكَمٰتٌ هُنَّ اُمُّ الْكِتٰبِ وَ اُخَرُ مُتَشٰبِهٰتٌ ؕ فَاَمَّا الَّذِیْنَ فِیْ قُلُوْبِهِمْ زَیْغٌ فَیَتَّبِعُوْنَ مَا تَشَابَهَ مِنْهُ ابْتِغَآءَ الْفِتْنَةِ وَ ابْتِغَآءَ تَاْوِیْلِهٖ ۚ وَ مَا یَعْلَمُ تَاْوِیْلَهٗۤ اِلَّا اللّٰهُ ۘ وَ الرّٰسِخُوْنَ فِی الْعِلْمِ یَقُوْلُوْنَ اٰمَنَّا بِهٖ ۙ كُلٌّ مِّنْ عِنْدِ رَبِّنَا ۚ وَ مَا یَذَّكَّرُ اِلَّاۤ اُولُوا الْاَلْبَابِ"

(موضح القرآن میں اس کا ترجمہ یوں ہے۔ وہی ہے جس نے اتاری تجھ پر کتاب اس میں بعض آیتیں پکی ہیں سو جڑ ہیں کتاب کی، اور دوسری ہیں کئی طرف ملتی، سوجن کے دل ہیں پھرے ہوئے وہ لگتے ہیں ان کے ڈھب والیوں سے، تلاش کرتے ہیں گمراہی اور تلاش کرتے ہیں ان کی کل بیٹھانی، اور ان کی کل کوئی نہیں جانتا سوائے اللہ کے، اور جو مضبوط علم والے ہیں سو کہتے

ہیں ہم اس پر ایمان لائے سب کچھ ہمارے رب کی طرف سے ہے، اور سمجھائے وہی سمجھے ہیں)

١ القرآن الكريم ٥٩/٢٣ ٢ القرآن الكريم ٣/٩٧ ٣ القرآن الكريم ٣١/٢٦ ٤ القرآن الكريم ٤٢/١١ ٥ القرآن الكريم ١٩/٦٥ ٦ القرآن الكريم ١١٢/٤

صفحہ 122 منجانب 750

Fatawa Razawiyya Volume 29

"...those of understanding." (1) - | Those who possess intellect. (2) And in its commentary, it is written: Allah Almighty says that in every speech, Allah has placed some things whose meanings are not clearly revealed. So those who are astray start trying to grasp their meanings through (mere) intellect, and those who possess firm knowledge relate their meanings with other verses and understand them according to the 'foundation of the Book'. If they can understand it that way, they do; if not, they leave it to Allah, (believing) that He knows best, and our concern is with faith. (3) End.

I say: (I say, T) The matter is that Allah Almighty has sent down the Holy Quran to guide and to test and try His servants, "He misleads many thereby and guides many thereby" (4). Through this very Quran, He misleads many and shows the path to many others.

The great cause of this guidance and misguidance is that the verses of the Great Quran are of two types: 'Muhkamat' (Clear verses), whose meanings are clear without difficulty, such as the verses about the purity, independence, and incomparability of Allah Almighty mentioned above; and secondly 'Mutashabihat' (Ambiguous verses), in whose meanings there is complexity. Either nothing is understood from the apparent words, like the disjointed letters 'Alif-Lam-Mim' etc., or what is understood is impossible for Allah Almighty, like "The Most Merciful [who is] above the Throne established" (5). (The Great Merciful One, He established [Istawa] on the Throne. T) or "then He established Himself above the Throne" (6). (Then He established [Istawa] on the Throne. T)

Then those in whose hearts was deviation and misguidance, finding these to their liking, began to mislead the ignorant through them and spread discord in religion saying, "Look, it is in the Quran that Allah is sitting on the Throne, has ascended the Throne, has stayed on the Throne." And they forgot from their hearts the commands of the 'Muhkamat' verses which were the foundation of the Book, even though the word 'Istawa' has appeared in the Great Quran, and its meaning is not necessarily climbing, sitting, staying, or being. This is just your own...

1. Al-Quran al-Karim 3/7
2. Mauzih al-Quran Translation and Commentary by Shah Abdul Qadir, 121 Taj Company Lahore p. 62

3. Mauzih al-Quran Translation and Commentary by Shah Abdul Qadir, 121 Taj Company Lahore p. 62
4. Al-Quran al-Karim 2/26
5. Al-Quran al-Karim 20/5
6. Al-Quran al-Karim 7/54, 10/3 etc.

फतावा रज़विया जिल्द २९

"...अक्ल वाले।" (1) - | जिनको अक्ल है। (2) और इसके फ़ायदे में लिखा है: अल्लाह साहब फ़रमाता है कि हर कलाम में अल्लाह ने बाज़ बातें रखी हैं जिनके मानी साफ़ नहीं खुलते तो जो गुमराह हों उनके मानी अक्ल से लगे पकड़ने और जो मज़बूत इल्म रखे वो उनके मानी और आयतों से मिला कर समझे जो जड़ किताब की है इसके मुवाफ़िक़ समझ पाए तो समझे और अगर न पाए तो अल्लाह पर छोड़ दे कि वही बेहतर जाने हमको ईमान से काम है (3) इति।

अक़ूल: (मैं कहता हूँ, त) बात ये है कि अल्लाह तआला ने क़ुरान मजीद उतारा है हिदायत फ़रमाने और बंदों को जांचने आज़माने को, "इससे बहुतों को गुमराह करता है और बहुतों को राह दिखाता है" (4)। इसी क़ुरान से बहुतों को गुमराह फ़रमाए और बहुतों को राह दिखाए।

इस हिदायत व ज़लालत का बड़ा मन्शा क़ुरान अज़ीम की आयतों का दो क़िस्म होना है: मोहकमात जिनके मानी साफ़ बे-दिक़्क़त हैं जैसे अल्लाह तआला की पाकी व बे-नियाज़ी व बे-मिस्ली की आयतें जिनका ज़िक्र ऊपर गुज़रा, और दूसरी मुतशाबिहात जिनके मानी में इशकाल है या तो ज़ाहिर लफ्ज़ से कुछ समझ ही नहीं आता जैसे हुरूफ़ मुक़तआत अलिफ़-लाम-मीम वग़ैरा या जो समझ में आता है वो अल्लाह अज़्ज़वजल पर मुहाल है, जैसे "रहमान अर्श पर इस्तिवा फ़रमाया" (5)। (वो बड़ा मेहरबान वाला उसने अर्श पर इस्तिवा फ़रमाया। त) या "फिर उसने अर्श पर इस्तिवा फ़रमाया" (6)। (फिर उसने अर्श पर इस्तिवा फ़रमाया। त)

फिर जिनके दिलों में कजी व गुमराही थी वो तो उन को अपने ढब का पा कर उनके ज़रिया से बे-इल्मों को बहकाने और दीन में फ़ितने फैलाने लगे कि देखो क़ुरान में आया है अल्लाह अर्श पर बैठा है, अर्श पर चढ़ा हुआ है, अर्श पर ठहर गया है। और आयात मोहकमात जो किताब की जड़ थीं उनके इरशाद दिल से भुला दिये हालांकि क़ुरान अज़ीम में तो इस्तिवा आया है और इसके मानी चढ़ना, बैठना, ठहरना, होना कुछ ज़रूर नहीं ये तो तुम्हारी अपनी...

1. अल-क़ुरान अल-करीम 3/7
2. मौज़िह अल-क़ुरान तर्जुमा व तफ़्सीर शाह अब्दुल क़ादिर १२१ ताज कम्पनी लाहौर पृ. ६२
3. मौज़िह अल-क़ुरान तर्जुमा व तफ़्सीर शाह अब्दुल क़ादिर १२१ ताज कम्पनी लाहौर पृ. ६२
4. अल-क़ुरान अल-करीम 2/26
5. अल-क़ुरान अल-करीम 20/5

6. अल-क़ुरान अल-करीम 7/54, 10/3 वग़ैरा

पृष्ठ १२३/७५०

أُولُوا الْأَلْبَابِ (1)۔ | جن کو عقل ہے۔ (2) اور اس کے فائدے میں لکھا: اللہ صاحب فرماتا ہے کہ ہر کلام میں اللہ نے بعض باتیں رکھی ہیں جن کے معنی صاف نہیں کھلتے تو جو گمراہ ہوں ان کے معنی عقل سے لگے پکڑنے اور جو مضبوط علم رکھے وہ ان کے معنی اور آیتوں سے ملا کر سمجھے جو جڑ کتاب کی ہے اس کے موافق سمجھ پائے تو سمجھے اور اگر نہ پائے تو اللہ پر چھوڑ دے کہ وہی بہتر جانے ہم کو ایمان سے کام ہے (3) انتہیٰ۔

اقول: (میں کہتا ہوں، ت) بات یہ ہے کہ اللہ تعالیٰ نے قرآن مجید اتارا ہے ہدایت فرمانے اور بندوں کو جانچنے آزمانے کو، "يُضِلُّ بِهِ كَثِيراً وَيَهْدِي بِهِ كَثِيراً" (4)۔ اسی قرآن سے بہتوں کو گمراہ فرمائے اور بہتیروں کو راہ دکھائے۔

اس ہدایت و ضلالت کا بڑا منشا قرآن عظیم کی آیتوں کا دو قسم ہونا ہے: محکمات جن کے معنی صاف بے دقت ہیں جیسے اللہ تعالیٰ کی پاکی و بے نیازی و بے مثلی کی آیتیں جن کا ذکر اوپر گزرا، اور دوسری متشابہات جن کے معنی میں اشکال ہے یا تو ظاہر لفظ سے کچھ سمجھ ہی نہیں آتا جیسے حروف مقطعات الم وغیرہ یا جو سمجھ میں آتا ہے وہ اللہ عزوجل پر محال ہے، جیسے "الرَّحْمَنُ عَلَى الْعَرْشِ اسْتَوَى" (5)۔ (وہ بڑا مہربان والا اس نے عرش پر استواء فرمایا۔ ت) یا "ثُمَّ اسْتَوَى عَلَى الْعَرْشِ" (6)۔ (پھر اس نے عرش پر استواء فرمایا۔ ت)

پھر جن کے دلوں میں کجی و گمراہی تھی وہ تو ان کو اپنے ڈھب کا پا کر ان کے ذریعہ سے بے علموں کو بہکانے اور دین میں فتنے پھیلانے لگے کہ دیکھو قرآن میں آیا ہے اللہ عرش پر بیٹھا ہے، عرش پر چڑھا ہوا ہے، عرش پر ٹھہر گیا ہے۔ اور آیات محکمات جو کتاب کی جڑ تھیں اُن

کے ارشاد دل سے بھلا دیئے حالانکہ قرآن عظیم میں تو استواء آیا ہے اور اس کے معنی چڑھنا، بیٹھنا، ٹھہرنا، ہونا کچھ ضرور نہیں یہ تو تمہاری اپنی...

1 القرآن الکریم 3/7 2 موضح القرآن ترجمہ و تفسیر شاہ عبدالقادر ۱۲۱ تاج کمپنی لاہور ص ۶۲ 3 موضح القرآن ترجمہ و تفسیر شاہ عبدالقادر ۱۲۱ تاج کمپنی لاہور ص ۶۲ 4 القرآن الکریم 2/26 5 القرآن الکریم 20/5 6 القرآن الکریم 7/54، 10/3 وغیرہ

Fatawa Razawiyya Volume 29

...understanding that places its own judgment upon God. "Allah has not sent down any authority for it." 1— (Allah Almighty did not reveal any proof for this. T) Even if, hypothetically, these words like 'ascending', 'sitting', 'staying' appeared in the Holy Quran, it would have been a definitive obligation by the command of the Quran itself that you should not understand them in those literal meanings that come to our minds from these words, because these actions belong to physical bodies, and Allah Almighty is not a body. But these people, out of their misguidance, remained firm on this literal meaning; about them, the Holy Quran said:

"Those in whose hearts is perversity" 2— their hearts are turned away.

And those who were firm in knowledge and possessed guidance from their Lord understood that it is definitively established from the clear verses (Ayat Muhkamat) that Allah Almighty is free from place, direction, body, and accidents. He is pure from sitting, ascending, and staying, as all these things are flaws in the right of the Flawless One, whose description will come soon, if Allah the Helper wills. And He is free from every flaw. In these [literal interpretations], there would arise a need for Allah Almighty towards His creation, the Throne, while He is free from every need. In them, similarity with creatures would be established, as rising, sitting, ascending, descending, moving, and staying are the actions of physical bodies, and He is free from every similarity with creation. Therefore, the literal meanings of these words that come to our understanding are absolutely and certainly not intended. Then what is the ultimate meaning? In this, the people of guidance took two paths. Most of them said that when the literal meaning is definitely not intended and the metaphorical meaning is not determined or limited, then what should we say from our side? It is better to leave its knowledge to Allah. Our Lord forbade us from pursuing the ambiguous verses (Ayat Mutashabihat) and stated that delving into determining their intended meaning is misguidance. So why should we step out of bounds? Let us be content with the part revealed by the Quran itself: "We believe in it; all of it is from our Lord." 3. Whatever our Master intends, we believe in it. Both clear and ambiguous verses are from our Lord. This is the path of the majority of the early imams (Salaf), and it is the safest and most superior. It is called the path of 'Tafwid' (entrusting) and 'Taslim' (submission). These imams said: 'Istiwa' is known (i.e., it is a confirmed attribute of Allah), but the 'how' (kayf) is unknown, meaning its ultimate nature is beyond our understanding. Believing in it is mandatory because it

is established by the definitive text of the Quran, and questioning it (the 'how') is an innovation (Bid'ah).

1 Al-Quran al-Karim 12/40 2 Al-Quran al-Karim 3/7 3 Al-Quran al-Karim 3/7

फ़तावा रज़विया खंड 29

...समझ है जो अपना हुक्म खुदा पर लगा रही है। "अल्लाह ने इसके लिए कोई प्रमाण नहीं उतारा है।" 1— (अल्लाह तआला ने इस पर कोई दलील नाज़िल नहीं फ़रमाई। त) अगर मान लीजिए कुरआन मजीद में यही शब्द 'चढ़ना', 'बैठना', 'ठहरना' आते, तो कुरआन ही के हुक्म से यह फ़र्ज़-ए-क़तई (निश्चित कर्तव्य) होता कि उन्हें उन ज़ाहिरी (सतही) अर्थों में न समझो जो इन शब्दों से हमारे ज़हन में आते हैं, क्योंकि ये काम तो शरीरों (पिंडों) के हैं और अल्लाह तआला शरीर नहीं है। मगर ये लोग अपनी गुमराही से इसी अर्थ पर टिक गए, उनके बारे में कुरआन मजीद ने फ़रमाया:

"जिनके दिलों में टेढ़ापन है" 2— उनके दिल फिरे हुए हैं।

और जो लोग इल्म (ज्ञान) में पक्के थे और अपने रब की ओर से हिदायत (मार्गदर्शन) रखते थे, वे समझ गए कि मोहकम आयतों (स्पष्ट आयतों) से निश्चित रूप से सिद्ध है कि अल्लाह तआला स्थान, दिशा, शरीर और गुणों के बदलाव से पाक (पवित्र) है। वह बैठने, चढ़ने, ठहरने से मुनज़्ज़ह (पवित्र) है, क्योंकि ये सभी बातें उस बे-ऐब (दोषरहित) की शान में ऐब (दोष) हैं, जिनका वर्णन इंशा अल्लाह अल-मुस्तआन (यदि अल्लाह ने चाहा तो) जल्द ही आएगा। और वह हर ऐब से पाक है। इनमें अल्लाह अज़्ज़-व-जल्द के लिए अपनी मख्लूक (सृष्टि) यानी अर्श की ओर मोहताजी (ज़रूरत) निकलेगी, जबकि वह हर ज़रूरत से पाक है। इनमें मख्लूक़ात (सृष्टि) के साथ समानता सिद्ध होगी, क्योंकि उठना, बैठना, चढ़ना, उतरना, खिसकना, ठहरना शरीरों के काम हैं और वह सृष्टि की हर समानता से पाक है। तो निश्चित रूप से इन शब्दों के ज़ाहिरी अर्थ जो हमारी समझ में आते हैं, वे हरगिज़ मुराद (अभिप्राय) नहीं हैं। फिर आख़िर अर्थ क्या लिया जाए? इसमें हिदायत वाले दो रास्तों पर चल दिए। अधिकांश ने फ़रमाया कि जब ये ज़ाहिरी अर्थ निश्चित रूप से लक्षित नहीं हैं और तावीली (व्याख्यात्मक) अर्थ निर्धारित और सीमित नहीं हैं, तो हम अपनी ओर से क्या कहें? यही बेहतर है कि इसका इल्म अल्लाह पर छोड़ दें। हमारे रब ने हमें आयत-ए-मुतशाबिहात (अस्पष्ट आयतों) के पीछे पड़ने से मना फ़रमाया और उनके निर्धारण में गहराई से विचार करने को गुमराही बताया, तो हम सीमा से बाहर कदम क्यों रखें? कुरआन के बताए हुए इसी हिस्से पर संतोष करें कि "हम उस पर ईमान लाए, सब हमारे रब के पास से है।" 3। जो कुछ हमारे मौला की मुराद है, हम उस पर ईमान लाए; मोहकम और मुतशाबिह सब हमारे रब के पास से हैं। यही पूर्ववर्ती इमामों (सलफ़) का धर्म है और यही सबसे सुरक्षित और उत्तम है। इसे 'मस्लक-ए-तफ़वीज़' (सौंपने का मार्ग) और 'तस्लीम' (समर्पण) कहते हैं। इन इमामों ने फ़रमाया कि 'इस्तिवा' ज्ञात है (यानी यह निश्चित रूप से अल्लाह का

एक गुण है) और उसका 'कैफ़' (स्वरूप) अज्ञात है, यानी उसके अर्थ हमारी समझ से परे हैं। और उस पर ईमान लाना अनिवार्य है क्योंकि यह कुरआन के निश्चित पाठ (नस्-ए-क़तई) से प्रमाणित है, और उसके बारे में सवाल करना बिदअत (नवाचार) है।

1 अल-कुरआन अल-करीम 12/40 2 अल-कुरआन अल-करीम 3/7 3 अल-कुरआन अल-करीम 3/7

سمجھ ہے جس کا حکم خدا پر لگارہے۔ "مَّا أَنْزَلَ اللَّهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ" 1۔ (اللہ تعالٰی نے اس پر کوئی دلیل نازل نہ فرمائی۔ ت) اگر بالفرض قرآن مجید میں یہی الفاظ چڑھنا، بیٹھنا، ٹھہر نا آتے تو قرآن ہی کے حکم سے فرض قطعی تھا کہ انہیں ان ظاہری معنی پر نہ سمجھو جوان لفظوں سے ہمارے ذہن میں آتے ہیں کہ یہ کام تو اجسام کے ہیں اور اللہ تعالٰی جسم نہیں مگر یہ لوگ اپنی گمراہی سے اسی معنی پر جم گئے انہیں کو قرآن مجید نے فرمایا۔

"الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ زَيْغٌ" 2- ان کے دل پھرے ہوئے ہیں۔

اور جو لوگ علم میں پکے اور اپنے رب کے پاس سے ہدایت رکھتے تھے وہ سمجھے کہ آیات محکمات سے قطعاً ثابت ہے کہ اللہ تعالٰی مکان و جہت و جسم و اعراض سے پاک ہے بیٹھنے، چڑھنے، ٹھہرنے سے منزہ ہے کہ یہ سب باتیں اس بے عیب کے حق میں عیب ہیں جن کا بیان ان شاء اللہ المستعان عنقریب آتا ہے اور وہ ہر عیب سے پاک ہے ان میں اللہ عزوجل کے لیے اپنی مخلوق عرش کی طرف حاجت نکلے گی اور وہ ہر احتیاج سے پاک ہے ان میں مخلوقات سے مشابہت ثابت ہوگی کہ اٹھنا، بیٹھنا، چڑھنا، اترنا، سرکنا ٹھہرنا اجسام کے کام ہیں اور وہ ہر مشابہت خلق سے پاک ہے تو قطعاً یقیناً ان لفظوں کے ظاہری معنی جو ہماری سمجھ میں آتے ہیں ہرگز مراد نہیں، پھر آخر معنی کیا لیں۔ اس میں یہ ہدایت والے دور وش ہو گئے۔ اکثر نے فرمایا جب یہ ظاہری معنی قطعاً مقصود نہیں اور تاویلی مطلب متعین و محدود نہیں تو ہم اپنی طرف سے کیا کہیں، یہی بہتر کہ اس کا علم اللہ پر چھوڑیں ہمیں ہمارے رب نے آیاتِ متشابہات کے پیچھے پڑنے سے منع فرمایا اور ان کی تعیین مراد میں خوض کرنے کو گمراہی بتایا تو ہم حد سے باہر کیوں قدم دھریں، اسی قرآن کے بتائے حصے پر قناعت کریں کہ "اٰمَنَّا بِہٖ کُلٌّ مِّنْ عِنْدِ رَبِّنَا" 3۔ جو کچھ

ہمارے مولیٰ کی مراد ہے ہم اس پر ایمان آئے محکم متشابہ سب ہمارے رب کے پاس سے ہے، یہ مذہب جمہور ائمہ سلف کا ہے اور یہی اسلم واولیٰ ہے اسے مسلک تفویض و تسلیم کہتے ہیں، ان ائمہ نے فرمایا استواء معلوم ہے کہ ضرور اللہ تعالیٰ کی ایک صفت ہے اور کیف مجہول ہے کہ اس کے معنی ہماری سمجھ سے وراء ہیں، اور ایمان اس پر واجب ہے کہ نص قطعی قرآن سے ثابت ہے اور سوال اس سے بدعت

1 القرآن الکریم ۱۲/ ۴۰ 2 القرآن الکریم ۳/ ۷ 3 القرآن الکریم ۳/ ۷

Fatawa Rizvia Volume 29

...is that there will be no questioning except to determine the intent, and there is no way towards determining the intent. Some have considered that when Allah Almighty categorized verses into two types, Muhkam (clear) and Mutashabih (ambiguous), and stated about the Muhkamat that "they are the foundation of the Book"[1], it implies that they are the root of the book. It is evident that every branch returns to its root. Thus, the noble verse itself has shown the way for interpreting the ambiguous verses and has provided us with the correct standard for them: that you should generate those correct and pure interpretations from them which align with their root, i.e., the Muhkamat, and do not lead to trials, misguidance, falsehood, or impossibility. It is necessary that one cannot be certain that a self-extracted meaning is precisely the intent of Allah Almighty; however, when the meanings are clear and pure, free and sanctified from opposing the Muhkamat, and are linguistically sound according to Arabic usage, then there is no harm in expressing them as possibilities. The benefit in this is that the natures of some common people will find it difficult to be content with just being told "we cannot say anything about their meaning," and when they are stopped, their curiosity and greed to think about it will inevitably increase.

| Indeed, the son of Adam is greedy for what is forbidden[2] | Man is greedy for whatever he is forbidden from. (T) |

And when they think, they will fall into trials and misguidance. Therefore, it is most appropriate that their thoughts be directed towards a suitable and appropriate meaning that conforms to the Muhkamat and accords with linguistic usage, so they may be saved from trial and misguidance. This path has been chosen by many later scholars (Muta'akhireen) considering the condition of the common people; this is called the "Maslak-e-Ta'weel" (path of interpretation). These scholars interpret the verse in many ways, of which four reasons are refined and clear.

First: "Istawa" means coercion and dominance. This is established and evident in the Arabic language. The Throne (Arsh) is above and higher than all creation; therefore, its mention was considered sufficient, and the meaning is that Allah is dominant and triumphant over all creation.

Note: Narrated by al-Tabarani[3] and through his chain by al-Daylami from Ibn Umar (may Allah be pleased with them both) from the Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him).

(Side note): Al-Tabarani narrated it, and al-Daylami narrated it through al-Tabarani's chain from Ibn Umar (may Allah be pleased with them both), who narrated from the Holy Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him). (T)

[1] Al-Quran al-Karim, 3/7 [2] Al-Firdaws bi-Ma'thur al-Khitab, Hadith 885, Dar al-Kutub al-Ilmiyah Beirut, 1/231 [3] Kashf al-Khafa referencing al-Tabarani, Hadith 1674, 1/199

फ़तावा रज़विया खंड 29

...है कि सवाल नहीं होगा मगर इरादे के निर्धारण के लिए, और इरादे के निर्धारण का कोई रास्ता नहीं है। और कुछ ने यह विचार किया कि जब अल्लाह अज़्ज़-व-जल्ल ने मोहकम (स्पष्ट) और मुताशाबिह (अस्पष्ट) दो क़िस्में फ़रमाकर मोहकमात को "[1]"هُنَّ اُمُّ الْكِتٰبِ (वे किताब की जड़ हैं) फ़रमाया, तो ज़ाहिर है कि हर शाखा अपनी जड़ की तरफ़ लौटती है। अतः आयत-ए-करीमा ने स्वयं मुताशाबिहात की तावील (व्याख्या) की राह बता दी और हमें उनका सही मानक समझा दिया कि उनमें वे सही और पाक संभावनाएँ पैदा करो जिनसे वे अपनी जड़ यानी मोहकमात के मुताबिक़ आ जाएँ और फ़ितना, गुमराही, बातिल और असम्भव की राह न पाएँ। यह ज़रूर है कि अपने निकाले हुए अर्थ पर यक़ीन नहीं कर सकते कि अल्लाह अज़्ज़-व-जल्ल का यही इरादा है, मगर जब अर्थ साफ़ और पाक हैं और मोहकमात के विरोध से बरी और पवित्र हैं और अरबी मुहावरों के लिहाज़ से भी बन सकते हैं, तो सम्भावित तौर पर बयान करने में क्या हर्ज है? और इसमें लाभ यह है कि कुछ आम लोगों की प्रकृति सिर्फ़ इतनी बात पर मुश्किल से संतुष्ट होगी कि "हम उनके अर्थ के बारे में कुछ नहीं कह सकते," और जब उन्हें रोका जाएगा तो अनजाने में उनमें विचार और लालच बढ़ेगा।

| बेशक आदम का बेटा उस चीज़ का लालची है जिससे उसे रोका जाए[2] | इंसान को जिस चीज़ से मना किया जाए, वह उस पर लालची होता है। (त) |

और जब वे विचार करेंगे तो फ़ितने में पड़ेंगे और गुमराही में गिरेंगे। तो यही सबसे बेहतर है कि उनके विचारों को एक उचित और अनुकूल अर्थ की ओर फेर दिया जाए जो मोहकमात के अनुरूप और मुहावरों के अनुकूल हो, ताकि वे फ़ितने और गुमराही से निजात पाएँ। यह बाद के बहुत से विद्वानों (मुताअखिरीन) का मार्ग है, जिन्होंने आम लोगों की स्थिति को देखते हुए इसे अपनाया है; इसे 'मसलक-ए-तावील' (व्याख्या का मार्ग) कहते हैं। ये विद्वान कई कारणों से आयत की तावील करते हैं, जिनमें से चार कारण श्रेष्ठ और स्पष्ट हैं।

पहला: 'इस्तिवा' का अर्थ क़हर और ग़लबा (वर्चस्व) है। यह अरबी भाषा से सिद्ध और प्रकट है। अर्श सभी रचनाओं से ऊपर और ऊँचा है, इसलिए इसके उल्लेख पर ही संतोष किया गया और मतलब यह हुआ कि अल्लाह तमाम रचनाओं पर क़ाहिर और ग़ालिब है।

नोट: इसे तबरानी[3] ने रिवायत किया और दैलमी ने तबरानी के तरीक़े पर इब्न उमर (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से, उन्होंने नबी करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से रिवायत किया है।

(साइड नोट): इसे तबरानी ने रिवायत किया और दैलमी ने तबरानी के मार्ग से इब्न उमर (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से, जिन्होंने नबी करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से रिवायत किया है। (त)

[1] अल-क़ुरान अल-करीम ३/७ [2] अल-फ़िरदौस बि-मासूर अल-ख़िताब, हदीस ८८५, दार अल-कुतुब अल-इल्मिया बेरूत १/२३१ [3] कश्फ़ अल-ख़फ़ा ब-हवाला-ए-तबरानी, हदीस १६७४, १/१९९

ہے کہ سوال نہ ہوگا مگر تعین مراد کے لیے اور تعین مراد کی طرف راہ نہیں اور بعض نے خیال کیا کہ جب اللہ عزوجل نے محکم متشابہ دو قسمیں فرما کر محکمات کو "هُنَّ اُمُّ الْكِتٰبِ"[1] فرمایا کہ وہ کتاب کی جڑ ہیں۔ اور ظاہر ہے کہ ہر فرع اپنی اصل کی طرف پلٹتی ہے تو آیہ کریمہ نے تاویل متشابہات کی راہ خود بتادی اور ان کی ٹھیک معیار ہمیں سمجھادی کہ ان میں وہ درست و پاکیزہ احتمالات پیدا کرو جن سے یہ اپنی اصل یعنی محکمات کے مطابق آجائیں اور فتنہ وضلال و باطل و محال راہ نہ پائیں۔ یہ ضرور ہے کہ اپنے نکالے ہوئے معنی پر یقین نہیں کر سکتے کہ اللہ عزوجل کی یہی مراد ہے مگر جب معنی صاف و پاکیزہ ہیں اور مخالفت محکمات سے بری و منزہ ہیں اور محاورات عرب کے لحاظ سے بن بھی سکتے ہیں تو احتمالی طور پر بیان کرنے میں کیا حرج ہے اور اس میں نفع یہ ہے کہ بعض عوام کی طبائع صرف اتنی بات پر مشکل سے قناعت کریں کہ انکے معنی ہم کچھ نہیں کہہ سکتے اور جب انہیں روکا جائے گا تو خواہ مخواہ ان میں فکر کی اور حرص بڑھے گی۔

| ان ابن ادم لحریص علی ما منع[2] | انسان کو جس چیز سے منع کیا جائے وہ اس پر حریص ہوتا ہے۔ (ت) |

اور جب فکر کریں گے فتنے میں پڑیں گے گمراہی میں گریں گے، تو یہی انسب ہے کہ ان کی افکار ایک مناسب و ملائم معنی کی طرف کہ محکمات سے مطابق محاورات سے موافق ہوں پھیر دی جائیں کہ فتنہ وضلال سے نجات پائیں یہ مسلک بہت علمائے متاخرین کا ہے کہ نظر بحال عوام

اسے اختیار کیا ہے اسے مسلک تاویل کہتے یہ علماء بوجوہ کثیر تاویل آیت فرماتے ہیں ان میں چار وجہیں نفیس و واضح ہیں۔

اول: استواء بمعنی قہر و غلبہ ہے، یہ زبان عرب سے ثابت و پیدا ہے عرش سب مخلوقات سے اوپر اور اونچا ہے اس لیے اس کے ذکر پر اکتفا فرمایا اور مطلب یہ ہوا کہ اللہ تمام مخلوقات پر قاہر و غالب ہے۔

عہ: رواہ الطبرانی[3] ومن طریقہ الدیلمي عن ابن عمر رضی اللہ تعالی عنہما عن النبی صلی اللہ تعالی علیہ وسلم۔ (حاشیہ): اس کو طبرانی نے روایت کیا اور دیلمی نے طبرانی کے طریق پر ابن عمر رضی اللہ عنہما سے انہوں نے نبی کریم صلی اللہ تعالی علیہ وسلم سے روایت کیا ہے۔ (ت)

[1] القرآن الکریم ۳/۷ [2] الفردوس بمأثور الخطاب حدیث ۸۸۵ دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱/ ۲۳۱ [3] کشف الخفاء بحوالہ الطبرانی حدیث ۱۶۷۴، ۱/ ۱۹۹

Fatawa Rizvia, Volume 29

Second: 'Istawa' means elevation (uluww), and elevation is an attribute of Allah Almighty. It does not mean spatial elevation, but rather elevation in terms of sovereignty and authority. Imam Baihaqi mentioned both these meanings in the 'Kitab al-Asma wa al-Sifat', and his statements will follow soon, Insha'Allah.

Third: 'Istawa' means intention and will. 'Thumma Istawa 'ala al-'Arsh' means He then turned towards the Throne, meaning He intended its creation and began its fashioning. This interpretation was provided by the Imam of Ahl al-Sunnah, Imam Abu al-Hasan al-Ash'ari. Imam Isma'il al-Darir said: "It is the correct [view]."[1]

This is correct; Imam Jalaluddin al-Suyuti mentioned it in 'al-Itqan'. (Note: Imam Jalaluddin al-Suyuti has quoted this in al-Itqan. - T)

Note: Al-Farra, al-Ash'ari, and a group of linguists said this. Then [Suyuti] said it is unlikely because it is used with the preposition 'ala'. If the meaning was as they mentioned, it would be used with 'ila', as in the verse: 'Then He directed Himself (Istawa ila) to the heaven'. The response is that prepositions are often used interchangeably, as stated in Sahah and other works. Imam Baihaqi narrated from al-Farra in 'Kitab al-Asma wa al-Sifat' that one might say, "He was facing so-and-so, then he turned towards me (istawa 'alayya) scolding me." Here 'ila' and 'ala' carry the same meaning of "turning towards". (12-Minhu) (T)

Footnotes: 1. Al-Itqan fi Ulum al-Qur'an, Chapter 43 regarding Muhkam and Mutashabih, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 1/605. 2. Al-Itqan fi Ulum al-Qur'an, Chapter 43 regarding Muhkam and Mutashabih, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 1/605. 3. Kitab al-Asma wa al-Sifat, Chapter regarding Allah's statement 'The Most Merciful rose over the Throne', Al-Maktabah al-Athariyyah, Sangla Hill, Sheikhupura, 2/152.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 29

दूसरा: 'इस्तवा' का अर्थ 'उलुव्व' (उच्चता) है, और उच्चता अल्लाह अज़्ज़-व-जल्ल का एक गुण है। इसका अर्थ स्थान की उच्चता नहीं बल्कि स्वामित्व और सत्ता की उच्चता है। इमाम बैहक़ी ने 'किताबुल अस्मा वस्सफ़ात' में ये दोनों अर्थ उल्लेख किए हैं, जिनके विवरण शीघ्र ही आएंगे, इंशाअल्लाह।

तीसरा: 'इस्तवा' का अर्थ इरादा और संकल्प है। 'थुम्मा इस्तवा अलल-अर्श' का अर्थ है फिर उसने अर्श की ओर रुख किया, यानी उसके निर्माण का इरादा किया और उसका सृजन शुरू किया। यह व्याख्या अहले सुन्नत के इमाम, इमाम अबुल हसन अशअरी ने प्रदान की है। इमाम इस्माइल दर्रार ने फ़रमाया: "यही सही है।"[1]

यही ठीक है, इसे इमाम जलालुद्दीन सुयूती ने 'अल-इतकान' में उल्लेख किया है। (टी: इमाम जलालुद्दीन सुयूती ने इसे इतकान में उद्धृत किया है।)

नोट: फ़रा, अशअरी और भाषाविदों के एक समूह का यही मत है। फिर इमाम सुयूती ने कहा कि यह मत इसके'अला' के साथ प्रयुक्त होने के कारण कठिन लगता है। यदि इसका वही अर्थ होता जो उन्होंने बताया है, तो यह 'इला' के साथ आता जैसा कि अल्लाह के फरमान 'थुम्मा इस्तवा इलस्समा' में है। लेकिन इस पर आपत्ति यह है कि व्याकरण में एक अव्यय (حروف) दूसरे का स्थान ले लेता है, जैसा कि 'सहाह' आदि में प्रमाणित है। इमाम बैहक़ी ने 'किताबुल अस्मा वस्सफ़ात' में फ़रा से रिवायत की है कि मिसाल के तौर पर कोई कहे कि वह फलां की ओर मुखातिब था, फिर वह मेरी ओर मुड़ा (इस्तवा अलैय्य) मुझे बुरा-भला कहते हुए। यानी चाहे 'इस्तवा इला' कहे या 'इस्तवा अला', दोनों का अर्थ एक ही है। (12-मिन्हु) (टी)

पाद टिप्पणियाँ: 1. अल-इतकान फ़ी उलूम अल-क़ुरआन, अध्याय 43 मुहकम और मुताशाबिह के बारे में, दार इह्या अत-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 1/605। 2. अल-इतकान फ़ी उलूम अल-क़ुरआन, अध्याय 43 मुहकम और मुताशाबिह के बारे में, दार इह्या अत-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 1/605। 3. किताबुल अस्मा वस्सफ़ात, अल्लाह के इस कथन के बारे में अध्याय 'रहमान अर्श पर इस्तवा फरमाया', अल-मकतबाह अल-अथ़रिय्याह, सांगला हिल, शेख़ूपुरा, 2/152।

पृष्ठ 126 / 750

دوم: استواء بمعنی علو ہے، اور علو اللہ عز وجل کی صفت ہے نہ علو مکان بلکہ علو مالکیت و سلطان، یہ دونوں معنی امام بیہقی نے کتاب الاسماء والصفات میں ذکر فرمائے جس کی عبارات عنقریب آتی ہیں۔ ان شاء اللہ تعالٰی سوم: استواء بمعنی قصد وارادہ ہے، ثم استوی علی العرش یعنی پھر عرش کی طرف متوجہ ہوا یعنی اس کی آفرینش کا ارادہ فرمایا یعنی اس کی تخلیق شروع کی، یہ تاویل امام اہلسنت امام ابو الحسن اشعری نے افادہ فرمائی۔ امام اسمعیل ضریر نے فرمایا:انہ الصواب ۱ یہی ٹھیک ہے، نقلہ الامام جلال الدین سیوطی فی الاتقان عہ (اس کو امام جلال الدین سیوطی نے اتقان میں نقل کیا ہے۔ت) عہ: قالہ الفراء والاشعری وجماعۃ اھل المعانی ثم قال یبعدہ تعدیتہ بعلی ولوکان کما ذکر وہ لتعدی بالی کما فی قولہ تعالی ثم استوی علی السماء۔ وفیہ ان حروف المعانی ۲ تنوب بعضھا عن بعض کما نص علیہ فی الصحاح و غیرھا و قدروی الامام البیھقی فی کتاب الاسماء والصفات عن الفراء ان تقول کان مقبلا علی فلان ثم استوی علیّ یشاتمنی والی سواء علی معنی اقبل الیّ وعلیّ ۳ ۱۲منہ۔ (فراء، اشعری اور اہل معانی کی ایک جماعت کا یہ قول ہے، پھر امام سیوطی نے کہا کہ یہ قول اس کے علی کے ساتھ متعدی ہونے سے بعید ہے اگر مطلب وہی ہوتا جو انہوں نے ذکر کیا ہے تو یہ الٰی کے ساتھ متعدی ہوتا جیسا کہ اللہ تعالٰی کے ارشاد ثم استوی الی السماء میں ہے، مگر اس پر یہ اعتراض ہے کہ حروف ایک دوسرے کی جگہ استعمال ہوتے رہتے ہیں، جیسا کہ صحاح وغیرہ میں اس پر نص کی گئی ہے، اور امام بیہقی نے کتاب الاسماء والصفات میں فراء سے روایت کیا ہے مثلاً تو کہے کہ وہ فلاں کی طرف متوجہ تھا پھر وہ مجھے برا بھلا کہتے ہوئے میری طرف متوجہ ہوا یعنی چاہے استوی الٰی کہے یا استوی علی دونوں برابر ہیں۔۱۲منہ (ت)

١ الاتقان فى علوم القرآن النوع الثالث والاربعون فى المحكم والمتشابہ داراحياء التراث العربى بيروت ١/ ٦٠٥ ٢ الاتقان فى علوم القرآن النوع الثالث والاربعون فى المحكم والمتشابہ داراحياء التراث العربى بيروت ١/ ٦٠٥ ٣ كتاب الاسماء والصفات باب ما جاء فى قول الله تعالى الرحمن على العرش استوى المكتبۃ الاثريہ سانگلہ ہل شيخوپوره ٢/ ١٥٢

Fatawa Razawiyya - Volume 29

Fourth: Istiwa means completion and finishing of the work, i.e., He completed the process of creation at the Throne; nothing was found outside of it. Whatever He created or will create in this world and the hereafter is not outside the sphere of the Throne, for it encompasses all creation. The best interpretation of the Quran is that which is from the Quran itself. Istiwa meaning completion is found in the Great Quran itself, as Allah Almighty says:

"And when he reached his full strength and was established (attained maturity)."[1] | When he reached the time of his strength and his youth was completed.

Similarly, His saying:

"Like a seed that sends forth its shoot, then strengthens it, then becomes thick and stands firmly on its stalk."[2] | Like a plant whose ear comes out, then He made it heavy, so it became thick and stood upright on its stem. (T)

In this context, 'Istiwa' refers to a state of perfection. This interpretation was narrated by Imam Hafiz al-Hadith Ibn Hajar al-Asqalani from Imam Abu al-Hasan Ali bin Khalaf Ibn Battal, and this is the speech of Imam Abu Tahir al-Qazwini, as stated in 'Siraj al-Uqool', and is quoted in Imam Abd al-Wahhab al-Sha'rani's book 'Al-Yawaqit'.[3] I say (T): and besides this, this 'Istiwa' is mentioned in seven places in the Great Quran. In all seven places, it is mentioned alongside the creation of the heavens and the earth and immediately after it. In Surah Al-A'raf and Surah Yunus (peace be upon him), He says:

"Indeed, your Lord is Allah, who created the heavens and the earth in six days and then established Himself above the Throne."[4] | Your Lord is He who created the heavens and the earth in six days, then He performed 'Istiwa' on the Throne. (T)

In Surah Ar-Ra'd, He says:

"Allah is He who raised the heavens without pillars..." | Allah Almighty is He who [raised] the heavens...

---

[1] Al-Quran al-Kareem 28/14 [2] Al-Quran al-Kareem 48/29 [3] Al-Yawaqit wal-Jawahir, reference Siraj al-Uqool, Seventh Topic, Mustafa al-Babi, Egypt 1/102 [4] Al-Quran al-Kareem 10/3

फतवा रज़विया - जिल्द 29

चौथा: इस्तिवा का अर्थ काम की समाप्ति और पूर्णता है, अर्थात उन्होंने सृष्टि और निर्माण की श्रृंखला को सिंहासन पर पूर्ण किया; इसके बाहर कुछ भी नहीं पाया गया। दुनिया और परलोक में जो कुछ भी उन्होंने बनाया है या बनाएंगे, वह सिंहासन के दायरे से बाहर नहीं है क्योंकि वह समस्त सृष्टि को घेरे हुए है। कुरान की सबसे अच्छी व्याख्या वह है जो कुरान से ही हो। इस्तिवा जिसका अर्थ पूर्णता है, स्वयं महान कुरान में है, अल्लाह तआला फरमाता है:

"और जब वह अपनी पूरी शक्ति को पहुँच गया और स्थापित हो गया (परिपक्वता प्राप्त की)।"[1] | जब वह अपनी शक्ति के समय को पहुँचा और उसकी जवानी पूरी हुई।

इसी प्रकार अल्लाह का कथन है:

"जैसे एक बीज जिसने अपनी कोंपल निकाली, फिर उसे मजबूत किया, फिर वह मोटा हो गया और अपने तने पर सीधा खड़ा हो गया।"[2] | जैसे पौधा कि उसकी बाली निकली तो उसे भारी किया गया, तो वह मोटा हुआ और अपने तने पर सीधा खड़ा हुआ। (त)

यहाँ इस्तिवा पूर्णता की स्थिति को दर्शाता है। यह व्याख्या इमाम हाफिज़ अल-हदीस इब्न हजर अल-अ़स्क़लानी ने इमाम अबू अल-हसन अली बिन खलफ इब्न बत्तल से उद्धृत की है, और यह इमाम अबू ताहिर अल-कज़वीनी का कथन है जैसा कि 'सिराज अल-उ़क़ूल' में बताया गया है, और इमाम अब्दुल वहाब अल-श़रानी की पुस्तक 'अल-यवाक़ीत'[3] में उद्धृत है। मैं कहता हूँ (त): और इसके अलावा यह है कि महान कुरान में यह 'इस्तिवा' सात स्थानों पर वर्णित है। सातों स्थानों पर इसका उल्लेख आकाश और पृथ्वी के सृजन के साथ और उसके तुरंत बाद किया गया है। सूरह अल-अराफ और सूरह यूनुस (उन पर शांति हो) में फरमाया:

"बेशक, तुम्हारा रब अल्लाह है जिसने आसमानों और ज़मीन को छह दिनों में पैदा किया, फिर अर्श पर इस्तिवा फरमाया।"[4] | तुम्हारा रब वह है जिसने आसमानों और ज़मीन को छह दिनों में पैदा किया, फिर अर्श पर इस्तिवा फरमाया। (त)

सूरह रअद में फरमाया:

"अल्लाह वह है जिसने आसमानों को बिना खंभों के ऊँचा किया..." | अल्लाह तआला वह हस्ती है जिसने आसमानों को...

[1] अल-कुरान अल-करीम 28/14 [2] अल-कुरान अल-करीम 48/29 [3] अल-यवाक़ीत वल-जवाहर, सन्दर्भ सिराज अल-उक़ूल, सातवाँ विषय, मुस्तफ़ा अल-बाबी, मिस्र 1/102 [4] अल-कुरान अल-करीम 10/3

पृष्ठ 127/750

چہارم: استواء بمعنی فراغ و تمامی کار ہے یعنی سلسلہ خلق و آفرینش کو عرش پر تمام فرمایا اس سے باہر کوئی چیز نہ پائی، دنیا و آخرت میں جو کچھ بنایا اور بنائے گا دائرہ عرش سے باہر نہیں کہ وہ تمام مخلوق کو حاوی ہے۔ قرآن کی بہتر تفسیر وہ ہے وہ قرآن سے ہو۔ استواء بمعنی تمامی خود قرآن عظیم میں ہے، قال اللہ تعالٰی:

"وَلَمَّا بَلَغَ أَشُدَّهٗ وَاسْتَوٰی" 1 | جب اپنی قوت کے زمانے کو پہنچا اور اس کا شباب پورا ہوا۔

اسی طرح قولہ تعالٰی:

"كَزَرْعٍ أَخْرَجَ شَطْـَٔهٗ فَاٰزَرَهٗ فَاسْتَغْلَظَ فَاسْتَوٰی عَلٰی سُوْقِهٖ" 2 | جیسے پودا کہ اس کا خوشہ نکلا تو اس کو بو جھل کیا تو وہ موٹا ہوا تو وہ اپنے تنے پر درست ہوا۔ (ت)

میں استواء حالتِ کمال سے عبارت ہے، یہ تاویل امام حافظ الحدیث ابن الحجر عسقلانی نے امام ابوالحسن علی بن خلف ابن بطال سے نقل کی اور یہ کلام امام ابوطاہر قزوینی کا ہے کہ سراج العقول میں افادہ فرمایا، اور امام عبدالوہاب شعرانی کی کتاب الیواقیت 3 میں منقول۔ اقول: (میں کہتا ہوں، ت) اور اس کے سوا یہ ہے کہ قرآن عظیم میں یہ استواء سات جگہ مذکور ہوا، ساتوں جگہ ذکرِ آفرینش آسمان وزمین کے ساتھ اور بلا فصل اُس کے بعد ہے، سورہ اعراف و سورہ یونس علیہ الصلوٰۃ والسلام میں فرمایا۔

"اِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰی عَلَى الْعَرْشِ" 4 | تمہارا رب وہ ہے جس نے آسمانوں اور زمین کو پیدا کیا چھ دنوں میں پھر عرش پر استوا فرمایا (ت)

سورہ رعد میں فرمایا:

"اَللّٰهُ الَّذِيْ رَفَعَ السَّمٰوٰتِ بِغَيْرِ عَمَدٍ" | اللہ تعالیٰ وہ ذات ہے جس نے آسمانوں کو

---

1 القرآن الکریم ۲۸/ ۱۴ 2 القرآن الکریم ۴۸/ ۲۹ 3 الیواقیت والجواہر بحوالہ سراج العقول المبحث السابع مصطفی البابی مصر ۱/ ۱۰۲ 4 القرآن الکریم ۱۰/ ۳

Vol. 29 Fatawa Rizwia

[He raised them] ...which you can see. Then He established Himself on the Throne. - 1 Urdu Translation: He raised [the heavens] without pillars that you see, then He established Himself on the Throne. (T)

It is said in Surah Ta-Ha (peace and blessings be upon him): "A revelation from Him who created the earth and the high heavens, The Most Merciful [who is] above the Throne established." - 2 Urdu Translation: The Quran is revealed from the Being who created the earth and the high heavens; He is the Most Gracious who established Himself on the Throne. (T)

It is said in Surah al-Furqan: "He who created the heavens and the earth and what is between them in six days and then established Himself above the Throne..." - 3 Urdu Translation: He who created the heavens and the earth and what is between them in six days, then He established Himself on the Throne. (T)

It is said in Surah al-Ra'd: "It is He who created the heavens and the earth in six days and then established Himself above the Throne..." - 4 Urdu Translation: He who created the heavens and the earth in six days, then He established Himself on the Throne. (T)

These points, which have been briefly mentioned from the beginning to this point, are clearly stated in the noble words of hundreds of leaders of religion. If I were to quote them, it would form a massive volume. This humble servant has committed in this treatise to quote the passages from the very books whose names the anonymous opponent has cited to mislead the common people, in order to refute him. Let Muslims see how shameless, bold, cunning, crafty, irreligious, and impure the Wahhabi individual is, that he cites as his authority the very books in which clear refutations of his misguidance are written. What a daring thief he is who holds a lamp in his hand. (How bold is the thief that he has a lamp in his hand. T)

1. Al-Quran Al-Karim 13/2
2. Al-Quran Al-Karim 20/4 & 5
3. Al-Quran Al-Karim 25/59
4. Al-Quran Al-Karim 7/54

खण्ड २९ फ़तावा रज़विया

...जिन्हें तुम देख रहे हो, फिर वह अर्श (सिंहासन) पर इस्तिवा (विराजमान) हुआ। - १ बिना खंभों के ऊँचा किया जिन्हें तुम देख रहे हो, फिर अर्श पर इस्तिवा फ़रमाया। (त)

सूरह ताहा (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) में फ़रमाया: "उसकी तरफ से नाज़िल किया गया है जिसने ज़मीन और ऊंचे आसमानों को पैदा किया, वह रहमान है जिसने अर्श पर इस्तिवा फ़रमाया।" - २ उर्दू अनुवाद: क़ुरआन उस ज़ात की तरफ़ से नाज़िल किया हुआ है जिसने ज़मीन और बुलंद आसमानों को पैदा किया, वह रहमान है जिसने अर्श पर इस्तिवा फ़रमाया। (त)

सूरह फ़ुरकान में फ़रमाया: "वही जिसने आसमानों और ज़मीन और उनके दरमियान की चीज़ों को छह दिनों में पैदा किया, फिर अर्श पर इस्तिवा फ़रमाया।" - ३ उर्दू अनुवाद: वही जिसने आसमानों और ज़मीन को और इन दोनों के दरमियान को छह दिनों में पैदा किया फिर अर्श पर इस्तिवा फ़रमाया। (त)

सूरह रअद में फ़रमाया: "वही जिसने आसमानों और ज़मीन को छह दिनों में पैदा किया, फिर अर्श पर इस्तिवा फ़रमाया।" - ४ उर्दू अनुवाद: वही जिसने आसमानों और ज़मीन को छह दिनों में पैदा किया फिर अर्श पर इस्तिवा फ़रमाया। (त)

ये मतालबा (विषय) जो शुरू से यहाँ तक संक्षिप्त में बयान हुए, दीन के सैकड़ों इमामों के श्रेष्ठ कलीमात (कथनों) में उनकी स्पष्ट व्याख्याएँ मौजूद हैं। अगर उन्हें नक़ल किया जाए तो एक बड़ा दफ़्तर (ग्रन्थ) बन जाए। और इस फ़क़ीर (लेखक) ने इस रिसाले (लेख) में ये नियम रखा है कि जिन किताबों के नाम अज्ञात विरोधी ने जनता को गुमराह करने के लिए लिख दिए हैं, उसके खंडन में उन्हीं की इबारतें (उद्धरण) नक़ल करे ताकि मुसलमान देख लें कि वहाबी साहब किस क़दर निर्लज्ज, साहसी, मकार, चालाक, अधर्मी और अपवित्र होते हैं कि जिन किताबों में उनकी गुमराहियों का स्पष्ट खंडन लिखा है, उन्हीं के नाम अपनी दलील में लिख देते हैं। चे दिलावर अस्त दुज़्दे कि ब-कफ़ चराग़ दारद (चोर कैसा दिलेर है कि हाथ में चिराग़ लिए हुए है। त)

1. अल-क़ुरआन अल-करीम १३/२
2. अल-क़ुरआन अल-करीम २०/४ और ५
3. अल-क़ुरआन अल-करीम २५/५९

4. अल-क़ुरआन अल-करीम ७/५४

पृष्ठ १२८/७५०

تَرَوْنَهَا ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ ۔ ۱ بغیر ستون کے بلند کیا تم دیکھ رہے ہو پھر عرش پر استواء فرمایا (ت)

سورہ طٰہٰ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم میں فرمایا: "تَنزِيلًا مِّمَّنْ خَلَقَ الْأَرْضَ وَالسَّمَاوَاتِ الْعُلَى (4) الرَّحْمَٰنُ عَلَى الْعَرْشِ اسْتَوَىٰ (5)" ۔ ۲ قرآن نازل کردہ ہے اس ذات کی طرف سے جس نے پیدا کیا زمین کو اور بلند آسمانوں کو، وہ رحمن ہے جس نے عرش پر استواء فرمایا۔ (ت)

سورہ فرقان میں فرمایا: "الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ ۚ" ۔ ۳ وہ جس نے آسمانوں اور زمین کو اور ان دونوں کے درمیان کو چھ دنوں میں پیدا کیا پھر عرش پر استواء فرمایا (ت)

سورہ رعد میں فرمایا: "هُوَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ ۖ" ۔ ۴ وہ جس نے آسمانوں اور زمین کو چھ دنوں میں پیدا کیا پھر عرش پر استواء فرمایا (ت)

یہ مطالب کہ اول سے یہاں تک اجمالاً مذکور ہوئے صدہا ائمہ دین کے کلمات عالیہ میں ان کی تصریحات جلیہ ہیں انہیں نقل کیجئے تو دفتر عظیم ہو، اور فقیر کو اس رسالہ میں التزام ہے کہ جن کتابوں کے نام مخالف گمنام نے اغوائے عوام کے لیے لکھ دیئے ہیں اس کے رَد میں انہی کی عبارتیں نقل کرے کہ مسلمان دیکھیں کہ وہابی صاحب کس قدر بے حیا، بیباک، مکار، چالاک، بد دین، ناپاک ہوتے ہیں کہ جن کتابوں میں اُن کی گمراہیوں کے صریح رَد لکھے ہیں انہی کے نام اپنی سند میں لکھ دیتے ہیں۔ ع چہ دلاورست دزدے کہ بکف چراغ دارد (چور کیسا دلیر ہے کہ ہاتھ میں چراغ لیے ہوئے ہے۔ت)

١ القرآن الكريم ١٣ / ٢ ٢ القرآن الكريم ٢٠ / ٤ و ٥ ٣ القرآن الكريم ٢٥ / ٥٩ ٤ القرآن الكريم ٧ / ٥٤

Fatawa Razawiyya - Volume 29

In the upcoming discussions, the excerpts that will be quoted from those books will, God willing, make all these points clear. Here, I will only cite some passages regarding the ambiguous verses (mutashabihat), from which the previous meaning will become evident, and it will also become clear that the noble verse 'The Most Merciful rose over the Throne' is among the ambiguous verses. It will also be shown that just as the opponent's unrefined creed is certainly clear misguidance and contrary to all of Ahl al-Sunnah, similarly, opposing the understanding of the meaning of this verse in general is contrary to the righteous predecessors (Salaf Salih) and the majority of the imams of Ahl al-Sunnah wa al-Jama'ah. (1) The excerpt from Muzih al-Quran has already been mentioned above. (2) Listen here to the statements of Ma'alim, Madarik, Kitab al-Asma wa al-Sifat, and Jami' al-Bayan, for these five books are also among those books whose names the opponent has listed. It is stated in Ma'alim al-Tanzil:

[Table Header omitted for clarity in text format] Arabic: "As for the people of the Sunnah, they say that rising over the Throne is an attribute of Allah Almighty without 'how'. It is mandatory for a person to believe in it and entrust the knowledge thereof to Allah Almighty." | Urdu: Meaning, as for the Ahl al-Sunnah, they say that 'istawa' (rising) over the Throne is an attribute of Allah Almighty without any 'how' or 'why'. It is obligatory for a Muslim to believe in it and leave the knowledge of its meaning to God.

The opponent should realize what his own authoritative book has written about the specific issue of 'istawa' as the creed of Ahl al-Sunnah. If he has any shame, he should desist from his absurdities and align his creed with the creed of Ahl al-Sunnah. (3) In the same [book] it is stated:

Arabic: "The majority have held the view that the 'waw' (and) in His saying 'and those firmly grounded [in knowledge]' is a 'waw' of resumption (ist'inaf), and the speech was completed at His saying 'and no one knows its interpretation except Allah'. This is the saying of Ubayy bin Ka'b." | Urdu: Meaning, the creed of the majority of the imams of religion, the companions and their followers (may Allah be pleased with them all), is that a new sentence begins with 'and those firmly grounded in knowledge'. The first statement was completed right there, meaning that no one knows the meaning of the ambiguous verses except Allah Almighty.

1 Ma'alim al-Tanzil, under verse 7/54, Dar al-Kutub al-Ilmiyyah, Beirut, 2/13

फतावा रज़विया - खंड २९

आगामी चर्चाओं में उन किताबों से जो उद्धरण दिए जाएंगे, उनसे इंशा अल्लाह अल-अज़ीम ये सब बातें स्पष्ट हो जाएंगी। यहाँ मैं केवल मुतशाबिहात (अलंकारिक आयतों) के बारे में कुछ अंश उद्धृत करूँगा जिनसे पिछला मतलब भी ज़ाहिर हो जाए और ये भी खुल जाए कि आयत 'अर-रहमानु अलल अर्श इस्तवा' (रहमान अर्श पर विराजमान हुआ) मुतशाबिहात आयतों में से है। और ये भी कि जिस तरह विरोधी का असंस्कृत पंथ निश्चित रूप से स्पष्ट गुमराह है और समस्त अहले सुन्नत के विरुद्ध है, वैसे ही इस आयत के अर्थ को सामान्य रूप से जानने पर विरोध करना सलफ सालेह और अहले सुन्नत व जमाअत के अधिकांश इमामों के विरुद्ध है। (१) मौज़िह अल-क़ुरान का उद्धरण ऊपर गुज़र चुका है। (२) मआलिम, मदारिक, किताबुल अस्मा वस सिफ़ात और जामेउल बयान के बयान यहाँ सुनिए कि ये पांचों किताबें भी उन्हीं किताबों में से हैं जिनका नाम विरोधी ने गिना दिया है। मआलिम अल-तन्ज़ी़ल में है:

अरबी: "जहाँ तक अहले सुन्नत की बात है, वे कहते हैं कि अर्श पर इस्तवा अल्लाह तआला का एक गुण (सिफ़त) है बिना 'कैफ़' (बिना स्वरूप वर्णन के)। इंसान पर इस पर ईमान लाना अनिवार्य है और इसका ज्ञान अल्लाह अज़्वजल को सौंपना चाहिए।" | उर्दू: यानी अहले सुन्नत का कहना है कि अर्श पर इस्तवा अल्लाह अज़्वजल की एक सिफ़त है जो किसी भी तरह के'कैसे' और 'किस तरह' से परे है, मुसलमान पर फ़र्ज़ है कि वह उस पर ईमान लाए और उसके अर्थ का ज्ञान खुदा को सौंप दे।

विरोधी को समझना चाहिए कि उसकी अपनी प्रामाणिक किताब ने इस्तवा के विशेष मसले में अहले सुन्नत का मज़हब क्या लिखा है। अगर उसे शर्म है तो अपनी बकवास से बाज़ आए और अपना अक़ीदा अहले सुन्नत के अक़ीदे के मुताबिक करे। (३) उसी में है:

अरबी: "बहुमत इस राय पर गया है कि अल्लाह के कौल 'वुर्रासिख़ूना' में वाव 'इस्तिनाफ़' (नई शुरुआत) का है, और बात 'वमा यअ'लमु तावीलहू इल्लल्लाहु' पर पूरी हो गई। और यही उबई बिन कअब का कौल है।" | उर्दू: यानी दीन के अधिकांश इमामों, सहाबा और ताबिईन (रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन) का मज़हब यह है कि 'वुर्रासिख़ूना फ़िल इल्म' से अलग बात शुरू हुई, पहला कलाम वहीं पूरा हो गया कि मुतशाबिहात का मतलब अल्लाह अज़्वजल के सिवा कोई नहीं जानता।

---

१ मआलिम अल-तन्ज़ी़ल, आयत ७/५४ के तहत, दारुल कुतुबुल इल्मिया, बेरूत, २/१३

পৃষ্ঠ ১২৯/৭৫০

مباحث آئندہ میں جو عبارات ان کتابوں کی منقول ہوں گی انہیں سے ان شاء اللہ العظیم یہ سب بیان واضح ہو جائیں گے یہاں صرف آیات متشابہات کے متعلق بعض عبارات نقل کروں جن سے مطلب سابق بھی ظاہر ہو اور یہ بھی کھل جائے کہ آیہ کریمہ الرحمن علی العرش استویٰ آیات متشابہات سے ہے، اور یہ بھی کہ جس طرح مخالف کا مذہب نامہذب یقیناً صریح ضلالت اور مخالف جملہ اہل سنت ہے۔ یونہی اجمالاً اس آیت کے معنی جاننے پر مخالف سلف صالح و جمہور ائمہ اہلسنت و جماعت ہے۔ (۱) موضح القرآن کی عبارت اوپر گزری۔ (۲) معالم و مدارک و کتاب الاسماء والصفات وجامع البیان کے بیان یہاں سنئے کہ یہ پانچوں کتابیں بھی انہیں کتب سے ہیں جن کا نام مخالف نے گن دیا۔ معالم التنزیل میں ہے:

اما اهل السنة يقولون الاستواء على العرش صفة لله تعالى بلا كيف يجب على الرجل الايمان به ويكل العلم فيه الى الله عزوجل۔ ۱ | یعنی رہے اہلسنت، وہ یہ فرماتے ہیں کہ عرش پر استواء اللہ عزوجل کی ایک صفت بے چونی و چگونگی ہے، مسلمان پر فرض ہے کہ اُس پر ایمان لائے اور اس کے معنی کا علم خدا کو سونپے۔

مخالف کو سوجھے کہ اُسی کی مستند کتاب نے خاص مسئلہ استواء میں اہلسنت کا مذہب کیا لکھا ہے شرم رکھتا ہے تو اپنی خرافات سے باز آئے اور عقیدہ اپنا مطابق اعتقادِ اہلسنت کرے۔ (۳) اُسی میں ہے:

ذهب الاكثرون الى ان الواو في قوله، والراسخون واو الاستئناف وتم الكلام عند قوله وما يعلم تاويله الا الله وهو قول ابى بن كعب | یعنی جمہور ائمہ دین صحابہ و تابعین رضی اللہ تعالیٰ عنہم اجمعین کا

مذہب یہ ہے کہ والراسخون فی العلم سے جدا بات شروع ہوئی پہلا کلام وہیں پورا ہوگیا کہ

متشابہات کے معنی اللہ عزوجل کے سوا کوئی نہیں جانتا،

---

۱ معالم التنزیل تحت الآیۃ ۷/ ۵۴ دار الکتب العلمیہ بیروت ۲/ ۱۳

Fatawa Rizwia Volume 29

[Left column - Arabic text]: ...and Aisha and Urwah ibn al-Zubayr (may Allah be pleased with them). Imam Tawus narrated the same from Ibn Abbas (may Allah be pleased with them). This is also the view of Hasan [al-Basri] and the majority of the Tabi'un (successors), and it was chosen by al-Kisa'i, al-Farra', and al-Akhfash. (Until he said) and what confirms this is the recitation of Abdullah [ibn Mas'ud]: 'Verily its interpretation is not except with Allah, and those firm in knowledge say, "We believe in it."' And in the variant of Ubayy [ibn Ka'b]: 'And those firm in knowledge say, "We believe in it."' Umar ibn Abd al-Aziz said regarding this verse: 'The knowledge of those firm in knowledge regarding the interpretation of the Quran concludes with them saying, "We believe in it; all is from our Lord."' This view is more sound in Arabic grammar and more aligned with the apparent wording of the verse.

[Right column - Urdu translation]: This is the view of the leader of the Companion-reciters, Ubayy ibn Ka'b, the Mother of the Believers Aisha Siddiqa, and Urwah ibn al-Zubayr (may Allah be pleased with them). Imam Tawus narrated the same from Abdullah ibn Abbas (may Allah be pleased with them). This is also the school of thought of Imam Hasan al-Basri and the majority of the Successors (Tabi'un). It was chosen by Imam al-Kisa'i, al-Farra', and al-Akhfash. This meaning is also confirmed by the recitation of Abdullah ibn Mas'ud (may Allah be pleased with him), stating that the interpretation of the ambiguous verses (mutashabihat) is known to none but Allah Almighty, and those firm in knowledge say, 'We believe in it.' The recitation of Ubayy ibn Ka'b (may Allah be pleased with him) also confirms this meaning. The Commander of the Faithful, Umar ibn Abd al-Aziz (may Allah be pleased with him), said that the extent of the knowledge of those firm in knowledge regarding their interpretation is simply that they say, 'We believe in them; all is from our Lord.' This view is more compelling from a linguistic (Arabic) perspective and is very much in accord with the apparent wording of the verse.

(4) It is in 'Madarik al-Tanzil': [Left column - Arabic text]: From it are precise verses whose wording is perfected by being protected from ambiguity and... [Right column - Urdu translation]: Meaning, some verses of the Great Quran are 'Muhkamat' (precise), whose meanings are clear; [there is no room for] ambiguity and doubt in them...

---

1 Ma'alim al-Tanzil under verse 3/7, Dar al-Kutub al-Ilmiyah, Beirut, 1/214 and 215.

फ़तावा रजविया जिल्द २९

[बायां कॉलम - अरबी पाठ]: ...और आयशा और उरवा बिन अल-जुबैर (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो)। इमाम ताऊस ने इब्न अब्बास (अल्लाह उन दोनों पर प्रसन्न हो) से यही रिवायत किया है। यही हसन [बसरी] और अधिकांश ताबीईन का मत है, और इसे अल-किसाई, अल-फर्रा और अल-अखफश ने चुना है। (आगे कहा गया) और जिसकी पुष्टि अब्दुल्ला [बिन मसूद] के पाठ से होती है: 'वास्तव में इसकी व्याख्या अल्लाह के अलावा किसी के पास नहीं है, और गहरे ज्ञान वाले कहते हैं, "हम इस पर ईमान लाए।"' और उबै [बिन काब] के पाठ में है: 'और गहरे ज्ञान वाले कहते हैं, "हम इस पर ईमान लाए।"' उमर बिन अब्दुल अजीज ने इस आयत के बारे में कहा: 'कुरआन की व्याख्या के संबंध में गहरे ज्ञान वालों का ज्ञान इस बात पर समाप्त होता है कि वे कहते हैं, "हम इस पर ईमान लाए; सब हमारे रब की ओर से है।"' यह मत अरबी व्याकरण में अधिक सटीक है और आयत के प्रत्यक्ष अर्थ के अधिक अनुकूल है।

[दायां कॉलम - उर्दू अनुवाद]: यही मत सहाबा के पाठकों के सरदार हजरत उबै बिन काब, उम्मुल मोमिनीन हजरत आयशा सिद्दीका और उरवा बिन जुबैर (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) का है। यही इमाम ताऊस ने हजरत अब्दुल्ला बिन अब्बास (अल्लाह उन दोनों पर प्रसन्न हो) से रिवायत किया है। यही इमाम हसन बसरी और अधिकांश ताबीईन का पंथ है, और इसी को इमाम कसाई, फर्रा और अख़फ़श ने अपनाया है। इसकी पुष्टि हजरत अब्दुल्ला बिन मसूद (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) के इस पाठ (क़िरात) से भी होती है कि मुतशाबिहात (अस्पष्ट आयतों) की व्याख्या अल्लाह अज़्ज़-व-जल्द के अलावा किसी के पास नहीं है, और गहरे ज्ञान वाले कहते हैं 'हम ईमान लाए'। हजरत उबै बिन काब (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) का पाठ भी इसी अर्थ की पुष्टि करता है। अमीरुल मोमिनीन उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि उनकी व्याख्या में गहरे ज्ञान वालों के ज्ञान का अंत बस यहीं तक है कि वे कहें कि 'हम इन पर ईमान लाए, सब हमारे रब की तरफ़ से है'। यह मत अरबी भाषा की दृष्टि से अधिक प्रभावशाली और आयत के प्रत्यक्ष अर्थ के बहुत अनुकूल है।

(४) 'मदारिक अत-तंजील' में है: [बायां कॉलम - अरबी पाठ]: उनमें से कुछ आयतें मोहकमात हैं जिनकी इबारत सुदृढ़ की गई है, इस तरह कि उन्हें संदेह और... से सुरक्षित रखा गया है। [दायां कॉलम - उर्दू अनुवाद]: यानी महान क़ुरआन की कुछ आयतें मोहकमात हैं जिनके अर्थ स्पष्ट हैं; उनमें संदेह और अस्पष्टता के लिए [कोई स्थान नहीं है]...

1 मआलिम अत-तंजील, आयत ३/७ के नीचे, दार अल-कुतुब अल-इल्मिया, बेरुत, १/२१४ और २१५।

पृष्ठ १३० / ७५०

[بایاں کالم - عربی متن]: وعائشة وعروة بن الزبیر رضی اللہ تعالی عنهم. و روایة طاؤس عن ابن عباس رضی اللہ تعالی عنهما و به قال الحسن واکثر التابعین واختار الکسائی و الفراء والاخفش (الی ان قال) ومما یصدق ذلك قراءة عبد اللہ ان تاویله الا عند اللہ والراسخون فی العلم یقولون آمنا و فی حرف ابی ویقول الراسخون فی العلم آمنا به ، وقال عمر بن عبدالعزیز فی هذه الآیة انتهی علم الراسخین فی العلم تأویل القرآن الی ان قالوا آمنا به کل من عند ربنا وهذا القول اقیس فی العربیة واشبه بظاهر الآیة۔

[دایاں کالم - اردو ترجمہ]: یہی قول حضرت سیّد قاریانِ صحابہ ابی بن کعب اور حضرت ام المومنین عائشہ صدیقہ اور عروہ بن زبیر رضی اللہ تعالیٰ عنہم کا ہے، اور یہی امام طاؤس نے حضرت عبداللہ بن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کیا، اور یہی مذہب امام حسن بصری واکثر تابعین کا ہے، اور اسی کو امام کسائی وفراء واخفش نے اختیار کیا اور اس مطلب کی تصدیق حضرت عبداللہ بن مسعود رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی اس قراءت سے بھی ہوتی ہے کہ آیاتِ متشابہات کی تفسیر اللہ عزوجل کے سوا کسی کے پاس نہیں، اور پکے علم والے کہتے ہیں ہم ایمان لائے اور ابی بن کعب رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی قراءت بھی اسی معنی کی تصدیق کرتی ہے۔ امیر المومنین عمر بن عبدالعزیز رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے فرمایا ان کی تفسیر میں محکم علم والوں کا منتہائے علم بس اس قدر ہے کہ کہیں ہم ان پر ایمان لائے سب ہمارے رب کے پاس سے ہے اور یہ قول عربیت کی رُوسے زیادہ دلنشین اور ظاہر آیت سے بہت موافق ہے۔

(۴) مدارک التنزیل میں ہے۔ [بایاں کالم - عربی متن]: منه آیت محکمت احکمت عبارتها بان حفظت من الاحتمال و [دایاں کالم - اردو ترجمہ]: یعنی قرآنِ عظیم کی بعض آیتیں محکمات ہیں جن کے معنی صاف ہیں احتمال واشتباہ کو ان میں

1 معالم التنزيل تحت الآية ۳/ ۷ دار الكتب العلميه بيروت ۱/ ۲۱۴ و ۲۱۵

Fatawa Razawiyya Volume 29

[Table content] [Left Column - Arabic with Urdu context]: Interpretation of ambiguous verses refers back to the 'Mother of the Book' (the clear verses). The foundation of the Book is that ambiguous verses (mutashabihat) are interpreted according to it and referred back to it. And others are ambiguous, having multiple possible meanings. An example of that is: 'The Most Merciful rose over the Throne' (Ar-Rahman 'ala al-'Arsh istawa). Thus, 'istawa' can mean sitting, or it can mean power and dominance. The first meaning is not permissible for Allah Almighty based on the evidence of the clear verse (Al-Muhkam), which is the word of Allah: 'There is nothing like unto Him.' As for those in whose hearts is deviation—turning away from the truth, and they are the people of innovation (Ahl al-Bid'ah)—they follow that which is ambiguous. They cling to the ambiguous parts which might support what the innovator believes and which do not align with the clear verses, even if they could also have a meaning that aligns with the words of the people of truth. [They do this] seeking fitna (strife), desiring to tempt people away from their religion and lead them astray, and seeking its interpretation, desiring to interpret it according to their own whims. But none knows its [ultimate] interpretation except Allah. That is, none is guided to its true interpretation, which must be upheld, except Allah. (Abridged summary).

[Right Column - Urdu Translation]: It is not so; these verses are the foundation of the Book, such that the ambiguous verses should be interpreted according to them and their meanings referred back to them. Some other verses are ambiguous, where there is complexity and multiple possibilities in their meaning. For instance, the noble verse 'The Most Merciful rose over the Throne'—the word 'Istawa' can mean 'sitting,' and it can also mean 'power and dominance.' The first meaning is impossible for Allah (Mighty and Majestic), as the clear (Muhkam) verses describe Allah Almighty as being free and pure from sitting. Among those clear verses is this one: 'There is nothing like unto Him' (Laysa kamithlihi shay). Then, those whose hearts have turned away from the truth—and they are the people of misguided sects—pursue the ambiguous verses. They take shelter behind such verses where a meaning favoring their misguidance is possible, which does not match the clear verses, even if a meaning matching the clear verses and the creed of the Ahl al-Sunnah is also possible. Those of misguided sects use these ambiguous verses to create strife, to mislead people from the true religion, and to provide meanings that suit their own

desires. But no one knows their true meaning except Allah. Only Allah knows what their true meanings are, upon which it was necessary to reveal them. [End of quote].

Let the misguided person open their eyes and see how this pure discourse, this verse, and its interpretation clearly refute and expose their misguidance.

1 Madarik al-Tanzil (Tafsir al-Nasafi), Verse 3/7, Dar al-Kitab al-Arabi, Beirut, 1/146.

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

[तालिका सामग्री] [बायाँ कॉलम - उर्दू संदर्भ के साथ अरबी]: संदेहास्पद आयतों (मुतशाबिहात) की व्याख्या किताब की असल (बुनियाद) यानी स्पष्ट आयतों (मोहकमत) की ओर लौटती है। किताब की असल यह है कि मुतशाबिहात को उन्हीं पर परखा जाए और उनके अर्थ उन्हीं की ओर लौटाए जाएं। और कुछ दूसरी आयतें मुतशाबिहात हैं जिनके कई अर्थ संभव हैं। उदाहरण के लिए: 'अर-रहमान अलल-अर्श इस्तवा' (रहमान अर्श पर विराजमान हुआ)। यहाँ 'इस्तवा' का अर्थ 'बैठना' भी हो सकता है और 'शक्ति व वर्चस्व' भी। पहला अर्थ अल्लाह तआला के लिए अनुचित है, जिसका प्रमाण वह मोहकम (स्पष्ट) आयत है जो अल्लाह का कथन है: 'उसके समान कोई चीज़ नहीं।' लेकिन जिनके दिलों में खोट है—जो हक से फिर गए हैं और वे बिदअती लोग हैं—वे मुतशाबिहात के पीछे पड़ते हैं। वे उन मुतशाबिहात से जुड़ते हैं जो उस बात का समर्थन कर सकते हैं जिसकी ओर बिदअती जाता है और जो मोहकमत के अनुकूल नहीं है, भले ही उनमें वह अर्थ भी संभव हो जो हक वालों की बात के अनुसार मोहकमत के अनुकूल हो। वे फितना (अराजकता) फैलाने, लोगों को उनके दीन से भटकाने और गुमराह करने के लिए, और अपनी इच्छा के अनुसार व्याख्या (तवील) खोजने के लिए ऐसा करते हैं। जबकि उसकी वास्तविक व्याख्या अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता। यानी, अल्लाह के सिवा कोई भी उस सही व्याख्या तक नहीं पहुँच सकता जिसे माना जाना चाहिए। (संक्षिप्त)।

[दायाँ कॉलम - उर्दू अनुवाद]: ऐसा नहीं है, ये आयतें तो किताब की असल (बुनियाद) हैं कि मुतशाबिहात (संदिग्ध आयतों) को उन्हीं पर परखा जाएगा और उनके अर्थ उन्हीं की ओर लौटाए जाएंगे। और कुछ दूसरी आयतें मुतशाबिहात हैं जिनके अर्थ में पेचीदगी और संभावना है। जैसे कि मुक़द्दस आयत 'अर-रहमान अलल-अर्श इस्तवा'—'इस्तवा' का अर्थ 'बैठना' भी आता है और 'शक्ति व वर्चस्व' भी। पहला अर्थ अल्लाह (अज़्ज़ा वजल्ल) के लिए असंभव है क्योंकि मोहकमत आयतें अल्लाह तआला को बैठने से पाक और पवित्र बताती हैं। उन मोहकमत में से एक यह आयत है: 'लैसा कमिसलिही शय' (अल्लाह के समान कोई चीज़ नहीं)। फिर वे जिनके दिल हक (सत्य) से फिर गए हैं और वे गुमराह लोग हैं, वे मुतशाबिहात आयतों के पीछे पड़ते हैं। वे ऐसी आयतों की आड़ लेते हैं जिनमें उनकी गुमराहियत के अर्थ की संभावना हो, जो मोहकमत आयतों के अनुसार नहीं हैं, भले ही उनमें वह अर्थ भी संभव हो जो मोहकमत के अनुरूप हो और अहल-ए-सुन्नत का मज़हब है। वे गुमराह लोग इन मुतशाबिहात आयतों की आड़ इसलिए लेते हैं ताकि फितना उठाएं, लोगों को सच्चे दीन से बहकाएं और उनके वे अर्थ बताएं जो उनकी अपनी इच्छाओं के अनुकूल हों। हालांकि उनका

वास्तविक अर्थ अल्लाह के अलावा कोई नहीं जानता। अल्लाह ही को खबर है कि उनके सही अर्थ क्या हैं, जिनके आधार पर उन्हें उतारना आवश्यक था। (समाप्त)।

गुमराह व्यक्ति अपनी आँखें खोलकर देखे कि यह पवित्र व्याख्या, यह आयत और इसकी तफ़सीर उसकी गुमराही का कैसा स्पष्ट खंडन करती है।

1 मदारिक अत-तन्ज़ील (तफ़सीर अन-नसफ़ी), आयत 3/7, दार अल-किताब अल-अरबी, बेरूत, 1/146. पृष्ठ 131 / 750

الاشتباہ ھن ام الکتب، اصل الکتاب تحمل المتشابہات علیہا وترد الیھا واخر متشابہات مشتبہات محتملات مثال ذلك الرحمن علی العرش استوی فالا ستواء یکون بمعنی الجلوس وبمعنی القدرۃ و الاستیلاء و لا یجوز الاوّل علی اللہ تعالی بدلیل المحکم وھو قولہ تعالی لیس کمثلہ شیئی، فأما الذین فی قلوبھم زیغ میل عن الحق وھم اھل البدع فیتبعون ماتشابہ، فیتعلقون بالمتشابہ الذی یحتمل مأیذھب الیہ المبتدع مما لا یطابق المحکم ویحتمل مأیطابقہ من قول اھل الحق منہ ابتغاء الفتنۃ طلب ان یفتنوا الناس دینھم ویضلوھم وابتغاء تأویلہ وطلب ان یؤولوہ التأویل الذی یشتھونہ وما یعلم تأویلہ الا اللہ ای لایھتدی الی تأویلہ الحق الذی یجب ان یحمل علیہ الا اللہ اھ مختصرا۔

گزر نہیں یہ آیات تو کتاب کی اصلی ہیں کہ متشابہات انہیں پر حمل کی جائیں گی اور اُن کے معنی انہیں کی طرف پھیرے جائیں گے اور بعض دوسری متشابہات ہیں جن کے معنی میں اشکال و احتمال ہے جیسے کریمہ الرحمن علی العرش استوٰی بیٹھنے کے معنی پر بھی آتا ہے اور قدرت و غلبہ کے معنی پر بھی اور پہلے معنی اللہ عزوجل پر محال ہیں کہ آیات محکمات اللہ تعالٰی کو بیٹھنے سے پاک و منزہ بتارہی ہیں اُن محکمات سے ایک یہ آیت ہے لیس کمثلہ شیئ اللہ کے مثل کوئی چیز نہیں، پھر وہ جن کے دل حق سے پھرے ہوئے ہیں اور وہ بد مذہب لوگ ہوئے وہ تو آیات متشابہات کے پیچھے پڑتے ہیں ایسی آیتوں کی آڑ لیتے ہیں جن میں ان کی بد مذہبی کے معنی کا احتمال ہوسکے جو آیات محکمات کے مطابق نہیں اور اس مطلب کا بھی احتمال ہو جو محکمات کے مطابق اور اہلسنت کا مذہب ہے وہ بدمذھب ان آیات متشابہات کی آڑ اس لیے لیتے ہیں کہ فتنہ اٹھائیں لوگوں کو سچے دین سے بہکائیں ان کے وہ معنی بتائیں جو اپنی خواہش کے موافق ہوں،

اور انکے معنی تو کوئی نہیں جانتا مگر اللہ، اللہ ہی کو خبر ہے کہ ان کے حق معنی کیا ہیں جن پر ان کا اتارنا واجب ہے انتہیٰ۔

گمراہ شخص آنکھیں کھول کر دیکھے کہ یہ پاکیزہ تقریر یہ آیت و تفسیر اس کی گمراہی کا کیسا ردو واضح و

1 مدارک التنزیل (تفسیر النسفی) آیت ۳/ ۷ دارالکتاب العربی بیروت ۱/ ۱۴۶

Fatawa Razawiya, Volume 29

...is radiant. And all praise is due to Allah, Lord of the worlds. (5) Imam Bayhaqi states in the book 'Al-Asma wa al-Sifat':

| Regarding 'Al-Istiwa' (Establishment), the predecessors from our companions, may Allah be pleased with them, used not to interpret it nor speak about it, following their school of thought regarding such matters.[1] | Our predecessor companions, may Allah be pleased with them, did not assign any meaning to 'Istiwa', nor did they open their mouths about it at all, just as their school of thought is regarding all ambiguous (mutashabihat) attributes. |

(6) In the same book:

| We have narrated from the predecessors among our companions the abandonment of speaking regarding such matters; this is along with their belief in negating limits, resemblance, and representation for Allah, the Glorified and Exalted.[2] | We have already written the school of thought of our predecessor companions that they would not open their lips at all regarding such texts, and along with this, they held the belief that Allah the Almighty is pure from being limited or being similar to or like the creation in any aspect. |

(7) In the same book, narrated from Yahya bin Yahya:

| We were with Malik bin Anas when a man came and said, 'O Abu Abdullah! [Allah] The Most Merciful established Himself over the Throne; how did He establish Himself?' Malik lowered his head until sweat began to cover him. Then he said: 'The Istiwa is not unknown, the "how" (modality) is not conceivable, faith in it is obligatory, and asking about it is an innovation (bid'ah). And I do not see you except as an innovator.' Then he ordered for him to be taken out.[3] | We were present in the service of Imam Malik, may Allah be pleased with him. A person came and said, 'O Abu Abdullah! The Most Merciful established Himself over the Throne. In what manner is this Istiwa?' Hearing this, the Imam lowered his blessed head until his holy body was covered in sweat. Then he said: 'Istiwa is not unknown, and its modality is not conceivable (to the human mind). Belief in it is obligatory, and questioning it is an innovation. In my opinion, you are certainly a deviate.' Then he ordered to expel him. |

[1] Kitab al-Asma wa al-Sifat by al-Bayhaqi, Chapter on what came regarding the saying of Allah the Almighty: 'The Most Merciful established Himself over the Throne,' Al-Maktaba al-Athariyya Sangla Hill Sheikhupura, 2 / 150. [2] Kitab al-Asma wa al-Sifat, Chapter on the saying of Allah the Almighty: 'O Jesus, indeed I will take you and raise you to Myself,' Al-Maktaba al-Athariyya Sangla Hill Sheikhupura, 2 / 169. [3] Kitab al-Asma wa al-Sifat, Chapter on what came regarding the saying of Allah the Almighty: 'The Most Merciful established Himself over the Throne' etc., Al-Maktaba al-Athariyya Sangla Hill Sheikhupura, 2 / 150 & 151.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 29

...मुनीर (प्रकाशित) है। और तमाम तारीफें अल्लाह के लिए हैं जो तमाम जहानों का पालने वाला है।
(5) इमाम बैहक़ी अपनी किताब 'अल-अस्मा व अल-सिफ़ात' में फ़रमाते हैं:

| इस्तिवा के बारे में हमारे साथियों में से जो मुतक़द्दिमीन (पूर्ववर्ती) थे, अल्लाह उनसे राज़ी हो, वे न तो इसकी व्याख्या करते थे और न ही इसके बारे में बात करते थे, जैसा कि ऐसे अन्य विषयों में उनका मज़हब है।[1] | हमारे असहाब-ए-मुतक़द्दिमीन (पूर्वज साथी) रज़ियल्लाहु अन्हुम 'इस्तिवा' का कोई अर्थ बयान नहीं करते थे और न ही इस बारे में बिल्कुल ज़बान खोलते थे, जैसा कि तमाम सिफ़ात-ए-मुतशाबिहात (गूढ़ गुणों) में उनका यही मज़हब (तरीक़ा) है। |

(6) उसी किताब में है:

| हमने अपने साथियों में से मुतक़द्दिमीन से रिवायत की है कि वे ऐसी चीज़ों में कलाम (चर्चा) छोड़ देते थे। इसके साथ उनका यह अक़ीदा था कि अल्लाह सुब्हानहू व तआला सीमा (हद), समानता (तशबीह) और प्रतिनिधित्व (तमसील) से पाक है।[2] | हम अपने असहाब-ए-मुतक़द्दिमीन का मज़हब लिख चुके हैं कि ऐसी नुसूस (पाठों) में वे बिल्कुल लब (होंठ) नहीं खोलते थे और इसके साथ यह अक़ीदा (विश्वास) रखते थे कि अल्लाह तआला सीमित होने या मख़लूक (सृष्टि) से किसी बात में मुतशाबिह (समान) व मानिंद (समान) होने से पाक है। |

(7) उसी में यहया बिन यहया से रिवायत है:

| हम मालिक बिन अनस के पास थे कि एक आदमी आया और कहा: ऐ अबू अब्दुल्लाह! रहमान अर्श पर मुस्तवी (विराजमान) हुआ, तो वह कैसे मुस्तवी हुआ? इमाम मालिक ने अपना सिर झुका लिया यहाँ तक कि उन पर पसीना आ गया, फिर उन्होंने फ़रमाया: 'इस्तिवा' मालूम है, और 'कैसे' (कैफ़ियत) समझ से बाहर है, इस पर ईमान लाना वाजिब है और इसके बारे में सवाल करना बिदअत है। और मैं तुम्हें एक बिदअती ही समझता हूँ। फिर उन्होंने उसे बाहर निकाल देने का हुक्म दिया।[3] | हम इमाम मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ख़िदमत में हाज़िर थे। एक शख़्स ने हाज़िर होकर अर्ज़ की: ऐ अबू अब्दुल्लाह! रहमान ने अर्श पर इस्तिवा फ़रमाया, यह इस्तिवा किस तरह है? इसे सुनते ही इमाम ने सर मुबारक झुका लिया यहाँ तक कि बदन-ए-मुक़द्दस पसीने-पसीने हो गया, फिर फ़रमाया: 'इस्तिवा' मजहूल (अज्ञात) नहीं और कैफ़ियत (स्वरूप) माक़ूल (तर्कसंगत/बोधगम्य) नहीं

और इस पर ईमान फ़र्ज़ है और इससे इस्तफ़सार (पूछताछ) बिदअत है, और मेरे ख़्याल में तो तू ज़रूर बद-मज़हब है, फिर हुक्म दिया कि इसे निकाल दो। |

---

[1] किताबुल अस्मा व अल-सिफ़ात लिल-बैहक़ी, बाब मा जाअ फ़ी क़ौलिल्लाहि तआला 'अर-रहमानु अलल अरश इस्तिवा', अल-मक्तबतुल असरिया सांगला हिल शेखूपुरा 2 / 150 [2] किताबुल अस्मा व अल-सिफ़ात, बाब क़ौलिल्लाहि तआला 'ईसा अलैहिस्सलाम इन्नी मुतवफ़्फ़ीका व रफ़ीउका इलय्या', अल-मक्तबतुल असरिया सांगला हिल शेखूपुरा 2 / 169 [3] किताबुल अस्मा व अल-सिफ़ात, बाब मा जाअ फ़ी क़ौलिल्लाहि तआला 'अर-रहमानु अलल अरश' आदि, अल-मक्तबतुल असरिया सांगला हिल शेखूपुरा 2 / 150 व 151

पृष्ठ 132 / 750

منیر ہے۔ والحمد للہ رب العلمین۔ (۵) امام بیہقی کتاب الاسماء والصفات میں فرماتے ہیں:

| الاستواء فالمتقدمون من اصحابنا رضی اللہ تعالٰی عنھم کانوا لا یفسرونہ ولا یتکلمون فیہ کنحو مذھبھم فی امثال ذلك۔[1] | ہمارے اصحاب متقدمین رضی اللہ تعالٰی عنہم استواء کے کچھ معنی نہ کہتے تھے نہ اس میں اصلاً زبان کھولتے جس طرح تمام صفات متشابہات میں ان کا یہی مذہب ہے۔ |

(۶) اسی میں ہے:

| حکینا عن المتقدمین من اصحابنا ترك الکلام فی امثال ذلك، ھذا مع اعتقادھم نفی الحد والتشبیہ و التمثیل عن اللہ سبحنہ و تعالٰی[2]۔ | ہم اپنے اصحاب متقدمین کا مذہب لکھ چکے کہ ایسے نصوص میں اصلاً لب نہ کھولتے اور اس کے ساتھ یہ اعتقاد رکھتے کہ اللہ تعالٰی محدود ہونے یا مخلوق سے کسی بات میں متشابہ و مانند ہونے سے پاک ہے۔ |

(۷) اسی میں یحییٰ بن یحییٰ سے روایت کی:

| کنا عند مالك بن انس فجاء رجل فقال یا ابا عبداللہ اللہ الرحمن علی العرش استوی فکیف استوی؟ قال فاطرق مالك راسہ حتی علاہ الرحضاء ثم قال الاستواء غیر مجھول والکیف غیر معقول والایمان بہ واجب والسؤال عنہ بدعۃ وما اراك الا مبتدعا فامر بہ ان یخرج۔[3] | ہم امام مالک رضی اللہ تعالٰی عنہ کی خدمت میں حاضر تھے ایک شخص نے حاضر ہو کر عرض کی اے ابو عبداللہ ! رحمن نے عرش پر استواء فرمایا یہ استواء کس طرح ہے؟ اس کے سنتے ہی امام نے سر مبارک جھکا لیا یہاں تک کہ بدنِ مقدس پسینہ پسینہ ہو گیا، پھر فرمایا: استواء مجہول نہیں اور کیفیت معقول نہیں

اور اس پر ایمان فرض اور اس سے استفسار بدعت اور میرے خیال میں تو ضرور بد مذہب ہے، پھر حکم دیا کہ اسے نکال دو۔ |

---

1 کتاب الاسماء والصفات للبیہقی باب ما جاء فی قول اللہ تعالی الرحمن علی العرش استوی، المکتبۃ الاثریہ سانگلہ ہل شیخوپورہ ۲ / ۱۵۰ 2 کتاب الاسماء والصفات باب قول اللہ تعالی عیسی علیہ السلام انی متوفیک و رافعك الی المکتبۃ الاثریہ سانگلہ ہل شیخوپورہ ۲ / ۱۶۹ 3 کتاب الاسماء والصفات باب ما جاء فی قول اللہ تعالی الرحمن علی العرش الخ المکتبۃ الاثریہ سانگلہ ہل شیخوپورہ ۲ / ۱۵۰ و ۱۵۱

Fatawa Razawiya Volume 29

(8) In the same [book], it is narrated from Abdullah bin Salih bin Muslim: Rabia al-Ra’y was asked about the word of Allah, the Blessed and Exalted, "The Most Merciful rose over the Throne" (Al-Rahman 'ala al-'Arsh istawa), how did He rise? He said: The 'how' (kayf - modality) is inconceivable, and the rising (istawa) is not unknown. It is obligatory for me and you to believe in all of that. That is, Imam Rabia bin Abi Abdur Rahman, the teacher of Imam Malik, who is called Rabia al-Ra’y due to his strength of intellect and abundance of analogy, was asked this very question. He said: The modality is inconceivable, and Allah Almighty's rising is not unknown, and it is obligatory for me and you to have faith in all these matters.

(9) In the same [book], it is narrated via Imam Ahmad bin Abi al-Hawari from Imam Sufyan bin 'Uyaynah that he said: Whatever Allah Almighty described of Himself in His Book, its interpretation is its recitation and remaining silent about it. That is, whatever attributes of this kind Allah Almighty has stated for Himself in the Great Quran, their interpretation is simply to recite them and remain silent.

Via Ishaq bin Musa al-Ansari, he added: It is not for anyone to interpret it in Arabic or Persian. It is not permissible for anyone to state its meaning in Arabic or Persian, or any language.

(10) In the same [book], it is narrated from Hakim that he showed the book of creeds of Imam Abu Bakr Ahmad bin Ishaq bin Ayyub, in which the creed of the Ahl al-Sunnah was recorded; it says: The Most Merciful rose over the Throne without 'how' (bila kayf). The Most Merciful's rising is 'without quality or comparison' (bechoon-o-bechegoon).

(11) In the same [book], it is said: The reports from the predecessors (Salaf) regarding such matters are numerous, and the school of Al-Shafi'i, may Allah Almighty be pleased with him, points towards this method. That is, narrations from the righteous predecessors in this chapter are abundant, and Imam Shafi'i's school points towards this method of silence over faith, and this is the path.

---

1. Kitab al-Asma' wa al-Sifat by al-Bayhaqi, Chapter on what has been narrated regarding the word of Allah Almighty "The Most Merciful rose over the Throne," Al-Maktabah al-Athariyah, Sangla Hill, Sheikhupura, 2/151.
2. Kitab al-Asma' wa al-Sifat by al-Bayhaqi, Chapter on what has been narrated regarding the word of Allah Almighty "The Most Merciful rose over the Throne,"

2/151, and the Chapter on what was mentioned regarding the Right Hand and the Palm, 2/151.

3. Kitab al-Asma' wa al-Sifat by al-Bayhaqi, Chapter on what has been narrated regarding the affirmation of the Eye, Al-Maktabah al-Athariyah, Sangla Hill, Sheikhupura, 2/44.
4. Kitab al-Asma' wa al-Sifat by al-Bayhaqi, Chapter on what has been narrated regarding the word of Allah Almighty "The Most Merciful rose over the Throne," Al-Maktabah al-Athariyah, Sangla Hill, Sheikhupura, 2/152.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 29

(8) इसी में अब्दुल्लाह बिन सालिह बिन मुस्लिम से रिवायत की: रबीअ अल-राय से अल्लाह तबारक व तआला के क़ौल "रहमान अर्श पर मुस्तवी हुआ" के बारे में पूछा गया कि कैसे मुस्तवी हुआ? उन्होंने कहा: 'कैसे' (कैफियत) अक्ल से परे है और मुस्तवी होना (इस्तवा) नामालूम नहीं है। मुझ पर और तुम पर इन सब बातों पर ईमान लाना वाजिब है। यानी इमाम रबीअ बिन अबी अब्दुर्रहमान, इमाम मालिक के उस्ताद, जिन्हें अक्ल की कुव्वत और कसरत-ए-कियास की वजह से रबीअ-तुल-राये लिखा जाता है, उनसे यही सवाल हुआ। फ़रमाया: कैफियत (स्वरूप) समझ से परे है और अल्लाह तआला का इस्तवा अनभिज्ञ नहीं है, और मुझ पर और तुझ पर इन सब बातों पर ईमान लाना वाजिब है।

(9) इसी में ब-तरीक इमाम अहमद बिन अबी अल-हवारी, इमाम सुफियान बिन उययना से रिवायत की कि वे फ़रमाते हैं: अल्लाह तआला ने अपनी किताब में अपने लिए जो भी सिफ़ात बयान की हैं, उनकी तफ़सीर उनकी तिलावत और उन पर खामोश रहना है। यानी इस किस्म की जितनी सिफ़ात अल्लाह अज़्ज़वजल ने क़ुरान-ए-अज़ीम में अपने लिए बयान फ़रमाई हैं, उनकी तफ़सीर यही है कि तिलावत कीजिये और खामोश रहिये।

इसहाक़ बिन मूसा अंसारी के तरीके से इज़ाफ़ा किया: किसी के लिए ये जायज़ नहीं है कि उसकी तफ़सीर अरबी या फारसी में करे। किसी को जायज़ नहीं कि अरबी में हो या फारसी में, किसी भी ज़बान में इसके मायने बयान करे।

(10) इसी में हाकिम से रिवायत की, उन्होंने इमाम अबू बक्र अहमद बिन इसहाक़ बिन अय्यूब का अक़ायद नामा दिखाया जिसमें मज़हब-ए-अहले सुन्नत दर्ज था, उसमें लिखा है: अल्-रहमान अलल-अर्श इस्तवा बिला कैफ़ (रहमान अर्श पर मुस्तवी हुआ बिना किसी कैफियत के)। रहमान का इस्तवा बेचूँ-ओ-बेचगूँ (बिना स्वरूप और मिसाल के) है।

(11) इसी में है: और इस तरह के मामलों में सलफ़ (पूर्वजों) से रिवायतें बहुत हैं, और यही वह तरीक़ा है जिसकी तरफ इमाम शाफई (रज़ियल्लाहु अन्हु) का मज़हब इशारा करता है। यानी इस बाब में सलफ़-ए-सालेहीन से रिवायतें कसरत से हैं और इसी सुकूत (खामोशी) के तरीके पर ईमान शाफई का मज़हब दलालत करता है और यही मज़हब है।

1. किताबुल अस्मा वस्-सिफ़ात लिल-बैहक़ी, बाब मा जाअ फ़ी क़ौलि-ल्लाही अज़्ज़वजल अर-रहमानु अलल-अर्शिस्तवा, अल-मकतबतुल असरिया, सांगला हिल, शेख़ूपुरा, 2/151.
2. किताबुल अस्मा वस्-सिफ़ात लिल-बैहक़ी, बाब मा जाअ फ़ी क़ौलि-ल्लाही अज़्ज़वजल अर-रहमानु अलल-अर्शिस्तवा, 2/151 और बाब मा ज़िकरा फ़ील यमीनि वल कफ़, 2/151.
3. किताबुल अस्मा वस्-सिफ़ात लिल-बैहक़ी, बाब मा जाअ फ़ी इसबातिल ऐन, अल-मकतबतुल असरिया, सांगला हिल, शेख़ूपुरा, 2/44.
4. किताबुल अस्मा वस्-सिफ़ात लिल-बैहक़ी, बाब मा जाअ फ़ी क़ौलि-ल्लाही अज़्ज़वजल अर-रहमानु अलल-अर्शिस्तवा, अल-मकतबतुल असरिया, सांगला हिल, शेख़ूपुरा, 2/152.

(۸) اسی میں عبداللہ بن صالح بن مسلم سے روایت کی: سئل ربیعة الرأی عن قول اللہ تبارك وتعالی الرحمن علی العرش استوٰی کیف استوٰی؟ قال الکیف غیر معقول والا ستواء غیر مجهول ویجب علیّ وعلیك الایمان بذلك کله۔1 یعنی امام ربیعہ بن ابی عبدالرحمن استاذ امام مالک سے جنہیں بوجہ قوت عقل و کثرت قیاس ربیعۃ الرائے لکھا جاتا یہی سوال ہوا، فرمایا کیفیت غیر معقول ہے اور اللہ تعالٰی کا استواء مجہول نہیں اور مجھ پر اور تجھ پر ان سب باتوں پر ایمان لانا واجب ہے۔

(۹) اسی میں بطریق امام احمد بن ابی الحواری امام سفیان بن عیینہ سے روایت کی کہ فرماتے: ما وصف اللہ تعالٰی من نفسه فی کتابه فتفسیره تلاوته والسکوت علیه۔2 یعنی اس قسم کی جتنی صفات اللہ عزوجل نے قرآن عظیم میں اپنے لیے بیان فرمائی ہیں ان کی تفسیر یہی ہے کہ تلاوت کیجئے اور خاموش رہیے۔

بطریق اسحق بن موسٰی انصاری زائد کیا: لیس لاحد ان یفسره بالعربیة ولا بالفارسیة۔3 کسی کو جائز نہیں کہ عربی میں خواہ فارسی کسی زبان میں اس کے معنی کہے۔

(۱۰) اسی میں حاکم سے روایت کی انہوں نے امام ابو بکر احمد بن اسحق بن ایوب کا عقائد نامہ دکھایا جس میں مذہب اہلسنت مندرجہ تھا اس میں لکھا ہے: الرحمن علی العرش استوی بلا کیف ۔4 رحمن کا استواء بیچون و بیچگون ہے۔

(۱۱) اسی میں ہے: والا ثار عن السلف فی مثل هذا کثیرة وعلی هذه الطریقة یدل مذهب الشافعی رضی اللہ تعالٰی عنه ۔ یعنی اس باب میں سلف صالح سے روایات بکثرت ہیں اور اسی طریقہ سکوت پر ایمان شافعی کا مذہب دلالت کرتا ہے اور یہی مسلک

1 كتاب الاسماء والصفات للبيهقى باب ماجاء فى قول الله عز وجل الرحمن على العرش استوى المكتبة الاثريه سانگلہ ہل شيخوپوره ٢/ ١٥١ 2 كتاب الاسماء والصفات للبيهقى باب ماجاء فى قول الله عز وجل الرحمن على العرش ٢/ ١٥١ وباب ماذكر فى يمين والكف ٢/ ١٥١ 3 كتاب الاسماء والصفات للبيهقى باب ماجاء فى اثبات العين المكتبة الاثريه سانگلہ ہل شيخوپوره ٢/ ۴۴ 4 كتاب الاسماء والصفات للبيهقى باب ماجاء فى قول الله عز وجل الرحمن على العرش استوى المكتبة الاثريه سانگلہ ہل شيخوپوره ٢/ ١٥٢

To this [view] inclined Ahmad bin Hanbal, al-Husayn bin al-Fadl al-Balkhi, and among the later scholars, Abu Sulayman al-Khattabi. [1]	[The view of] Imam Ahmad bin Hanbal, Imam Husayn bin Fadl Balkhi, and among the later scholars, Imam Abu Sulayman Khattabi.

All praise be to Allah, a narration from Imam al-A'zam will follow shortly; these [views] are present from the three Imams. It is established that there is a consensus (ijma') of the four Imams that no meaning should be stated for 'Istawa' (rising above the Throne); faith in it is obligatory, and investigating its meaning is forbidden. This is the way of all the righteous predecessors (Salaf-e-Salihin).

(12) In the same [book] from Imam Khattabi:

"And we are more worthy not to proceed forward in what those who were more knowledgeable, earlier in time, and older in age than us desisted from. However, the time in which we live, its people have become two parties: one that rejects what is narrated from this type of hadith entirely and calls it a lie in principle. In that is a rejection of the scholars who narrated these hadith, while they are the Imams of religion, the transmitters of Sunan, and the intermediaries between us and the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him). And the other party accepts the narration in it, going in the investigation of its path to a school of thought that almost leads them to the statement of anthropomorphism (Tashbih). We desire to turn away from both matters together. We are not satisfied with either of them as a school of thought,	That is, when these noble Imams, who were superior to us in knowledge, earlier in time, and older in age, remained silent regarding the 'mutashabihat' (ambiguous matters), then it was more appropriate for us to remain silent and say nothing about their meaning. However, in our time, two groups have emerged: one group rejects this type of hadith altogether and calls them lies; this necessitates calling the scholar-narrators of hadith liars, even though they are the Imams of religion, transmitters of traditions, and our means and links to the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him). And the second group, while accepting these narrations, leans towards their apparent meaning in such a way that their speech tends towards likening Allah Almighty to His creation (anthropomorphism). Both of these matters are distasteful to us; we are not willing to adopt either of them as our

so it becomes incumbent upon us to seek..."	school of thought. So, it became necessary for us that in this chapter...

[1] Kitab al-Asma wa al-Sifat by al-Bayhaqi, Chapter on what was narrated regarding the saying of Allah Almighty 'Ar-Rahman 'ala al-'Arsh istawa', Al-Maktaba al-Athariyya, Sangla Hill, Sheikhupura, 2/152.

अहमद बिन हनबल, अल-हुसैन बिन अल-फदल अल-बल्खी और बाद के विद्वानों में से अबू सुलेमान अल-खत्ताबी इसी विचार की ओर गए हैं। [1]

[यह विचार] इमाम अहमद बिन हनबल, इमाम हुसैन बिन फदल बल्खी और बाद के विद्वानों में से इमाम अबू सुलेमान खत्ताबी का है।

अल्हम्दुलिल्लाह, इमाम-ए-आजम से रिवायत जल्द ही आ रही है; ये बातें तीनों इमामों से मौजूद हैं। यह साबित हो गया कि चारों इमामों का इज्मा (सहमति) है कि 'इस्तिवा' के अर्थ के बारे में कुछ न कहा जाए, इस पर ईमान लाना वाजिब (अनिवार्य) है और अर्थ की जांच करना हराम (वर्जित) है। यही सालेह पूर्वजों (सल्फ-ए-सालिहीन) का तरीका है।

(12) उसी में इमाम खत्ताबी से है:

"और हम उन बातों में आगे न बढ़ने के अधिक हकदार हैं जिनसे वे लोग पीछे रहे जो हमसे अधिक ज्ञानी, समय में पहले और उम्र में बड़े थे। लेकिन जिस समय में हम रह रहे हैं, उसके लोग दो गुटों में बंट गए हैं: एक वह जो इस प्रकार की हदीसों को सिरे से नकार देता है और उन्हें पूरी तरह झूठ बताता है। इसमें उन हदीस वर्णन करने वाले विद्वानों को झुठलाना लाज़िम आता है, जबकि वे दीन के इमाम और सुन्नतों के वाहक हैं और हमारे और अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के बीच माध्यम हैं। और दूसरा गुट इन रिवायतों को स्वीकार तो करता है लेकिन उनके अर्थ की तहकीकात में ऐसे पंथ की ओर चला जाता है जो उन्हें तशबीह (अल्लाह को सृष्टि के समान बताना) की बात तक पहुँचा देता है। हम इन दोनों बातों से एक साथ अलग रहना चाहते हैं। हम उनमें से किसी

यानी जब इन इमाम-ए-किराम ने, जो हममें इल्म में ज़्यादा और ज़माने में पहले और उम्र में बड़े थे, मुतशाबिहात (संदिग्ध विषयों) में खामोशी इख्तियार की, तो हमारे लिए भी खामोश रहना और उनके अर्थ के बारे में कुछ न कहना अधिक उचित था। लेकिन हमारे दौर में दो समूह पैदा हुए हैं: एक तो इस तरह की हदीसों को पूरी तरह से नकारता है और उन्हें झूठ बताता है, जिससे हदीस बयान करने वाले आलिमों को झुठलाना अनिवार्य हो जाता है, जबकि वे धर्म के इमाम, सुन्नतों को आगे बढ़ाने वाले और नबी करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) तक हमारे माध्यम और साधन हैं। और दूसरा समूह इन रिवायतों को मानकर उनके बाहरी अर्थों की ओर इस तरह झुक जाता है कि उनकी बातें अल्लाह अज़्जवजल को उसकी सृष्टि के समान बताने तक पहुँचने लगती हैं। हमें ये दोनों बातें नापसंद हैं, हम इनमें से किसी को अपना

को भी अपना मज़हब (पंथ) बनाने पर राज़ी नहीं हैं, तो हम पर लाज़िम हुआ कि हम तलाश करें..."

मज़हब बनाने के लिए तैयार नहीं हैं। अतः हमारे लिए यह ज़रूरी हुआ कि इस अध्याय में...

[1] बैहक़ी की किताब अल-असमा वल-सिफ़ात, अल्लाह अज़्जवजल के इस फरमान के बारे में कि 'रहमान अर्श पर मुस्तवी हुआ', अल-मकतबाह अल-असरिया, सांगला हिल, शेखूपुरा 2/152।

والیھا ذھب احمد بن حنبل والحسین بن الفضل امام احمد بن حنبل و امام حسین بن فضل بلخی اور البلخی ومن المتاخرین ابو سلیمن الخطابی۔ 1 متاخرین سے امام ابو سلیمان خطابی کا ہے۔

الحمد للہ امام اعظم سے روایت عنقریب آتی ہے، ائمہ ثلاثہ سے یہ موجود ہیں، ثابت ہوا کہ چاروں اماموں کا اجماع ہے کہ استواء کے معنی کچھ نہ کہے جائیں اس پر ایمان واجب ہے اور معنی کی تفتیش حرام یہی طریقہ جملہ سلف صالحین کا ہے۔

(۱۲) اسی میں امام خطابی سے ہے

"ونحن احری بان لانتقدم فیما تأخر عنه من ھو اکثر علما و اقدم زمانا وسنا، ولکن الزمان الذی نحن فیه قد صاراھلہ حزبین منکر لما یروی من نوع ھذہ الاحادیث راسا ومکذب بہ اصلا، وفی ذلک تکذیب العلماء الذین ردوا ھذہ الاحادیث وھم ائمة الدین ونقلة السنن والواسطة بیننا وبین رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم، والطائفة الاخری مسلمة للروایة فیھا ذاھبة فی تحقیق منھامذھبا یکاد یفضی بھم الی القول

یعنی جب ان ائمہ کرام نے جو ہم میں سے علم میں زائد اور زمانے میں مقدم اور عمر میں بڑے تھے متشابہات میں سکوت فرمایا تو ہمیں ساکت رہنا اور ان کے معنی کچھ نہ کہنا اور زیادہ لائق تھا مگر ہمارے زمانے میں دو گروہ پیدا ہوئے ایک تو اس قسم کی حدیثوں کو سرے سے رد کرتا اور جھوٹ بتاتا ہے، اس میں علمائے رواۃ احادیث کی تکذیب لازم آتی ہے، حالانکہ وہ دین کے امام ہیں اور سنتوں کے ناقل اور نبی کریم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم تک ہمارے وسائط و رسائل۔ اور دوسرا گروہ ان روایتوں کو مان کر ان کے ظاہری معنی کی طرف ایسا جاتا ہے کہ اس کا کلام اللہ عزوجل کو خلق سے مشابہ کر

بالتشبيه و نحن نرغب عن الامرين معا۔ ولا نرضى بواحد منهما مذهبا، فيحق علينا ان نطلب

دینے تک پہنچنا چاہتا ہے اور ہمیں یہ دونوں باتیں ناپسند ہیں ہم ان میں سے کسی کو مذہب بنانے پر راضی نہیں، تو ہمیں ضرور ہوا کہ اس باب میں

1 کتاب الاسماء والصفات للبیہقی باب ما جاء فی قول اللہ عزوجل الرحمن علی العرش المکتبہ الاثریہ سانگلہ ہل شیخوپورہ ۲/۱۵۲

Fatawa Rizwia Volume 29

[Box Top Right - Arabic] لما یرد من هذه الاحادیث اذا صحت من طریق فالنقل و السند، تاویلا یخرج علی معانی اصول الدین ومذاهب العلماء ولا تبطل الروایة فیها اصلا، اذا کانت طرقها مرضیة ونقلتها عدولا۔[1] [Box Top Left - English Translation] Those authentic hadiths that reach us through reliable chains and transmissions should be interpreted in a manner that aligns with the fundamentals of faith and the definitive verses (Ayat-e-Muhkamat), ensuring that the authentic narrations transmitted through trustworthy scholars are not invalidated, provided their paths are satisfactory and their narrators are upright.

(13) Imam Abu al-Qasim al-Lalaka'i, in the book 'As-Sunnah', narrates from our master Imam Muhammad, the leader of the Hanafi school and a student of our master Imam-e-Azam (may Allah be pleased with him), who said:

[Box Middle Right - Arabic] اتفق الفقهاء کلهم من المشرق الی المغرب علی الایمان بالقرآن وبالاحادیث التی جاء بها الثقات عن رسول الله صلی الله تعالیٰ علیه وسلم فی صفة الرب من غیر تشبیه ولا تفسیر فمن فسر شیئا من ذلك فقد خرج عما کان علیه النبی صلی الله تعالی علیه وسلم و فارق الجماعة فانهم لم یصفوا ولم یفسروا و لیکن آمنوا بما فی الکتاب والسنة ثم سکتوا۔[2] [Box Middle Left - English Translation] All the jurists (Mujtahid Imams) from the East to the West have a consensus on believing in the attributes of the Divine mentioned in the Great Quran and the authentic Hadiths, without anthropomorphism (tashbih) and without [innovative] interpretation (tafsir). Thus, whoever explains the meaning of any of these has departed from the way of the Noble Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) and separated from the community of scholars, because the Imams neither described the condition of these attributes nor stated their meanings; rather, they believed in the Quran and Hadith and remained silent.

Strangely enough, this statement of Imam Muhammad and the mention of the consensus of the noble Imams was also narrated by al-Dhahabi himself in the book 'al-Uluw'. He said that this consensus from Muhammad was narrated by al-Lalaka'i and Abu Muhammad bin Qudamah in their books; in fact, even the forsaken Ibn Taymiyyah narrated it. All praise belongs to Allah and to Him belongs the supreme argument. (Praise be to Allah Almighty and the prevailing argument is His. - T)

(14) Also, in 'Madarik' under Surah Taha it is stated:

[1] Kitab al-Asma wa al-Sifat by al-Bayhaqi, Chapter: What is mentioned regarding the 'Foot' (al-Qadam), al-Maktaba al-Athariyya, Sangla Hill, Sheikhupura, 2/86. [2] Kitab as-Sunnah by Imam Abu al-Qasim al-Lalaka'i.

फ़तावा रिज़विया जिल्द २९

[ऊपरी बॉक्स - अरबी] لما یرد من هذه الاحادیث اذا صحت من طریق فالنقل و السند، تاویلا یخرج علی معانی اصول الدین ومذاهب العلماء ولا تبطل الروایة فیها اصلا، اذا کانت طرقها مرضیة ونقلتها عدولا۔[1] [ऊपरी बॉक्स - हिंदी अनुवाद] जो सही हदीसें आएं उनकी वह तावील (व्याख्या) कर दें जिससे उनके मानी उसूले अक़ाइद (आस्था के मूल सिद्धांतों) और आयाते मोहकमात (स्पष्ट आयतों) के मुताबिक़ हो जाएं और सही रिवायतें, जो मोतबर (भरोसेमंद) उलमा की सनद से आएं, बातिल न होने पाएं बशर्ते कि उनके सनद के रास्ते पसंदीदा हों और उनके रावी (वर्णनकर्ता) आदिल (न्यायप्रिय) हों।

(१३) इमाम अबुल क़ासिम लालकाई 'किताबुस सुन्नह' में सैयदुना इमाम मुहम्मद, मज़हबे हनफ़ी के सरदार और सैयदुना इमाम-ए-आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के शागिर्द से रावी हैं कि वह फ़रमाते हैं:

[बीच का बॉक्स - अरबी] اتفق الفقهاء کلهم من المشرق الی المغرب علی الایمان بالقرآن وبالاحادیث التی جاء بها الثقات عن رسول الله صلی الله تعالیٰ علیه وسلم فی صفة الرب من غیر تشبیه ولا تفسیر فمن فسر شیئا من ذلك فقد خرج عما کان علیه النبی صلی الله تعالی علیه وسلم و فارق الجماعة فانهم لم یصفوا ولم یفسروا و لیکن آمنوا بما فی الکتاب والسنة ثم سکتوا۔[2] [बीच का बॉक्स - हिंदी अनुवाद] पूर्व से पश्चिम तक तमाम आइम्मा मुज्तहिदीन (धर्मशास्त्रीय इमामों) का इज्माअ (आम सहमति) है कि क़ुरआन-ए-अज़ीम और सही अहादीस में जो अल्लाह की सिफ़ात (विशेषताएं) बयान हुई हैं, उन पर बिला तशबीह (बिना किसी तुलना के) और बिला तफ़्सीर (बिना किसी व्याख्या के) ईमान लाएं। तो जो कोई उनमें से किसी के मानी (अर्थ) बयान करे, वह नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के तरीक़े से बाहर हो गया और उलमा की जमाअत से अलग हो गया, क्योंकि आइम्मा ने न तो इन सिफ़ात की कोई कैफ़ियत (हालत) बयान की और न ही उनके मानी कहे, बल्कि क़ुरआन व हदीस पर ईमान लाकर ख़ामोश रहे।

ताज्जुब की बात यह है कि इमाम मुहम्मद के इस इरशाद और बुज़ुर्ग इमामों के इज्माअ के ज़िक्र को ख़ुद इमाम ज़हबी ने भी अपनी किताब 'अल-उलू' में नक़्ल किया है और कहा है कि इमाम मुहम्मद से यह इज्माअ लालकाई और अबू मुहम्मद बिन क़ुदामा ने अपनी किताबों में रिवायत किया है; यहाँ तक कि ख़ुद मख़ज़ूल (त्यागा हुआ) इब्न तैमिय्या भी इसे नक़्ल कर गया। सारी तारीफ़ अल्लाह के लिए है

और उसी की हुज्जत (दलील) बुलंद है। (अल्लाह तआला की हम्द हो और ग़ालिब दलील उसी की है। - त)

(१४) इसके अलावा 'मदारिक' में सूरह ताहा के तहत लिखा है:

[1] किताबुल अस्मा वस सिफ़ात, इमाम बैहक़ी, बाब: जो 'क़दम' (पैर) के बारे में ज़िक्र किया गया, अल-मक्तबा अल-असरिया, सांगला हिल, शेखुपुरा २/८६। [2] किताबुस सुन्नह, इमाम अबुल क़ासिम लालकाई।

पेज १३५/७५०

[دائیں باکس - عربی] لما یرد من ھذہ الاحادیث اذا صحت من طریق فالنقل و السند، تاویلا یخرج علی معانی اصول الدین ومذاھب العلماء ولا تبطل الروایۃ فیھا اصلا، اذا کانت طرقھا مرضیۃ ونقلتھا عدولا۔[1] [بائیں باکس - اردو ترجمہ] جو صحیح حدیثیں آئیں اُن کی وہ تاویل کردیں جس سے ان کے معنی اصولِ عقائد و آیاتِ محکمات کے مطابق ہو جائیں اور صحیح روایتیں کہ علماء ثقات کی سند سے آئیں باطل نہ ہونے پائیں۔

(۱۳) امام ابوالقاسم لالکائی کتاب السنہ میں سیدنا امام محمد سردار مذہب حنفی تلمیذ سیدنا امام اعظم رضی اللہ تعالٰی عنہ سے راوی کہ فرماتے:

[دائیں باکس - عربی] اتفق الفقھاء کلھم من المشرق الی المغرب علی الایمان بالقرآن وبالاحادیث التی جاء بھا الثقات عن رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فی صفۃ الرب من غیر تشبیہ ولا تفسیر فمن فسر شیئا من ذلك فقد خرج عما کان علیہ النبی صلی اللہ تعالی علیہ وسلم و فارق الجماعۃ فانھم لم یصفوا ولم یفسروا و لیکن آمنوا بما فی الکتاب والسنۃ ثم سکتوا۔[2] [بائیں باکس - اردو ترجمہ] شرق سے غرب تک تمام ائمہ مجتہدین کا اجماع ہے کہ آیاتِ قرآن عظیم و احادیث صحیحہ میں جو صفاتِ الٰہیہ آئیں ان پر ایمان لائیں بلا تشبیہ و بلا تفسیر تو جو ان میں سے کسی کے معنی بیان کرے وہ نبی کریم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کے طریقے سے خارج اور جماعتِ علماء سے جدا ہوا اس لیے کہ ائمہ نے نہ ان صفات کا کچھ حال بیان فرمایا نہ اُن کے معنی کہے بلکہ قرآن و حدیث پر ایمان لا کر چپ رہے۔

طرفہ یہ کہ امام محمد کے اس ارشاد و ذکر اجماع ائمہ امجاد کو خود ذہبی نے بھی کتاب العلو میں نقل کیا اور کہا محمد سے یہ اجماع لالکائی اور ابو محمد بن قدامہ نے اپنی کتابوں میں روایت کیا بلکہ خود ابن تیمیہ مخذول بھی اسے نقل کر گیا، وللہ الحمد ولہ الحجۃ السامیۃ (حمدللہ تعالٰی کے لیے ہے اور غالب حجت اسی کی ہے۔ ت)

(۱۴) نیز مدارک میں زیر سورہ طٰہٰ ہے:

[1] کتاب الاسماء والصفات للبیہقی باب ماذکر فی القدم الرجل المکتبۃ الاثریہ سانگلہ ہل شیخوپورہ ۸۶/۲ [2] کتاب السنۃ امام ابوالقاسم لالکائی

(Arabic Column)	(Urdu Column)
The doctrine is the saying of Ali (may Allah be pleased with him): Establishment (Istiwa) is not unknown, its modality (takyeef) is inconceivable, belief in it is obligatory, and asking about it is an innovation (bid'ah). Because Allah existed when there was no place, so He is as He was before creating place, He has not changed from how He was.[1]	The creed is what Mawla Ali (may Allah honor his face) said: Istiwa is not unknown, and its 'how-ness' cannot come into the intellect. Faith in it is obligatory, and debating its meaning is a bid'ah because Allah Almighty existed before place was created and there was no place; then He did not change from that glory, meaning as He was pure from place then, He is still pure now.

Let the strayed person reflect on this statement of his own authority and correct his faith.

(15) In the same [book], under Surah Al-A'raf, this same saying is narrated from Imam Ja'far Sadiq, Imam Hasan Basri, Imam Azam Abu Hanifa, and Imam Malik (may Allah be pleased with them)[2].

(16) The same subject is in Jami' al-Bayan under Surah Yunus.

(Arabic Column)	(Urdu Column)
Istiwa (establishment) is known, its modality is unknown, and asking about it is an innovation.[3]	Istiwa is known, its quality/how-ness is unknown, and debating or questioning it is a bid'ah. (T)

(17) The same subject is narrated in Surah Ar-Ra'd from the Pious Predecessors (Salaf-e-Salih) that:

(Arabic Column)	(Urdu Column)
The Salaf said: Istiwa is known and the modality is unknown.[4]	The Salaf said: Istiwa is known and the quality is unknown. (T)

(18) In Surah Taha it is written:

(Arabic Column)	(Urdu Column)
Al-Shafi'i was asked about Istiwa, so he replied: I believed without anthropomorphism (tashbih) and I...	Meaning Imam Shafi'i was asked the meaning of Istiwa, he said: I brought faith in Istiwa and...

[1] Madarik al-Tanzil (Tafsir al-Nasafi), Verse 3/5, Dar al-Kitab al-Arabi, Beirut, 3/48. [2] Madarik al-Tanzil (Tafsir al-Nasafi), Verse 7/52, Dar al-Kitab al-Arabi, Beirut, 2/56. [3] Jami' al-Bayan, Muhammad bin Abdul Rahman al-Shafi'i, Verse 10/3, Dar Nashr al-Kutub al-Islamiyya, Gujranwala, 1/292. [4] Jami' al-Bayan, Muhammad bin Abdul Rahman al-Shafi'i, Verse 13/2, Dar Nashr al-Kutub al-Islamiyya, Gujranwala, 1/345.

(अरबी कॉलम)

मज़हब वही है जो मौला अली (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने फ़रमाया: इस्तिवा (Istiwa) अज्ञात नहीं है, उसकी कैफियत (तकयीफ़) समझ से बाहर है, उस पर ईमान लाना वाजिब है, और उसके बारे में सवाल करना बिदअत (नवाचार) है। क्योंकि अल्लाह तब भी मौजूद था जब कोई स्थान नहीं था, अतः वह वैसा ही है जैसा स्थान के निर्माण से पहले था, वह वैसा ही रहा जैसा वह था।[1]

(उर्दू कॉलम)

मज़हब वह है जो मौला अली करम अल्लाह वजहुल करीम ने फ़रमाया कि इस्तिवा अज्ञात नहीं है और उसकी चगूँगी (कैसे होना) अक्ल में नहीं आ सकती। उस पर ईमान वाजिब है और उसके अर्थ से बहस बिदअत है क्योंकि स्थान पैदा होने से पहले अल्लाह तआला मौजूद था और स्थान नहीं था, फिर वह अपनी उस शान से बदला नहीं यानी जैसा जब स्थान से पाक था अब भी पाक है।

गुमराह व्यक्ति अपनी ही प्रमाणित पुस्तक के इस कथन पर विचार करे और अपना ईमान ठीक करे।

(15) इसी में सूरा आराफ़ के तहत यही बात इमाम जाफ़र सादिक़, इमाम हसन बसरी, इमाम आज़म अबू हनीफ़ा और इमाम मालिक (रज़ियल्लाहु अन्हुम) से नक़ल की गई है[2]।

(16) यही विषय जामिअ अल-बयान में सूरा यूनुस में है।

(अरबी कॉलम)

इस्तिवा ज्ञात है, उसकी कैफियत अज्ञात है और उसके बारे में सवाल करना बिदअत है।[3]

(उर्दू कॉलम)

इस्तिवा मालूम है और उसकी कैफियत मजहूल (अज्ञात) है और उससे बहस व सवाल बिदअत है। (त)

(17) यही विषय सूरा रअद में सलफ़ सालेह से नक़ल किया गया है कि:

(अरबी कॉलम)

सलफ़ ने कहा: इस्तिवा ज्ञात है और कैफियत अज्ञात है।[4]

(उर्दू कॉलम)

सलफ़ ने फ़रमाया: इस्तिवा मालूम है और कैफियत मजहूल है। (त)

(18) सूरा ताहा में लिखा है:

(अरबी कॉलम)	(उर्दू कॉलम)
इमाम शाफ़ई से इस्तिवा के बारे में पूछा गया, तो उन्होंने जवाब दिया: मैंने बिना सादृश्य (तशबीह) के ईमान लाया और...	यानी इमाम शाफ़ई से इस्तिवा के मायने पूछे गए, फ़रमाया: मैं इस्तिवा पर ईमान लाया और...

---

[1] मदारिकुत्तंज़ील (तफ़्सीर अन-नसफ़ी), आयत 3/5, दारुल किताब अल-अरबी, बेरुत, 3/48. [2] मदारिकुत्तंज़ील (तफ़्सीर अन-नसफ़ी), आयत 7/52, दारुल किताब अल-अरबी, बेरुत, 2/56. [3] जामिअ अल-बयान, मुहम्मद बिन अब्दुर रहमान अल-शाफ़ई, आयत 10/3, दार नश्र अल-कुतुब अल-इस्लामिया, गुजरांवाला, 1/292. [4] जामिअ अल-बयान, मुहम्मद बिन अब्दुर रहमान अल-शाफ़ई, आयत 13/2, दार नश्र अल-कुतुब अल-इस्लामिया, गुजरांवाला, 1/345.

| والمذهب قول علي رضی اللہ تعالی عنه الاستواء غیر مجهول والتکیف غیر معقول والایمان به واجب و السؤال عنه بدعة لانه تعالی کان ولا مکان فهو علی ما کان قبل خلق المکان لم یتغیر عما کان۔ 1 | مذہب وہ ہے جو مولٰی علی کرم اللہ وجہہ الکریم نے فرمایا کہ استواء مجہول نہیں اور اس کی چگونگی عقل میں نہیں آسکتی اُس پر ایمان واجب ہے اور اس کے معنی سے بحث بدعت ہے اس لیے کہ مکان پیدا ہونے سے پہلے اللہ تعالٰی موجود تھا اور مکان نہ تھا پھر وہ اپنی اُس شان سے بدلا نہیں یعنی جیسا جب مکان سے پاک تھا اب بھی پاک ہے۔ |

گمراہ اپنی ہی مستند کی اس عبارت کو سوجھے اور اپنا ایمان ٹھیک کرے۔

(۱۵) اسی میں زیرِ سورہ اعراف یہی قول امام جعفر صادق و امام حسن بصری و امام اعظم ابو حنیفہ و امام مالک رضی اللہ تعالٰی عنہم سے نقل فرمایا 2۔

(۱۶) یہی مضمون جامع البیان سورہ یونس میں ہے۔

| الاستواء معلوم والکیفیة مجهولة والسؤال عنه بدعة۔ 3 | استواء معلوم ہے اور اس کی کیفیت مجہول ہے اور اس سے بحث وسوال بدعت ہے۔ (ت) |

(۱۷) یہی مضمون سورہ رعد میں سلف صالح سے نقل کیا کہ:

| قال السلف الاستواء معلوم والکیفیة مجهولة۔ 4 | سلف نے فرمایا: استواء معلوم ہے اور کیفیت مجہول ہے۔ (ت) |

(۱۸) سورہ طٰہٰ میں لکھا ہے:

| سئل الشافعی عن الاستواء فاجاب أمنت بلاتشبیه واتهمت | یعنی امام شافعی سے استواء کے معنی پوچھے گئے، فرمایا: میں استواء پر ایمان لایا اور |

---

1 مدارک التنزیل (تفسیر النسفی) آیت ۳/ ۵ دار الکتاب العربی بیروت ۴۸/۳ 2 مدارک التنزیل (تفسیر النسفی) آیت ۷/ ۵۲ دار الکتاب العربی بیروت ۵۶/۲ 3 جامع البیان محمد بن عبد الرحمن الشافعی آیة ۱۰/ ۳ دار نشر الکتب الاسلامیه گوجرانواله ۱/ ۲۹۲ 4 جامع البیان محمد بن عبد الرحمن الشافعی آیة ۱۳/ ۲ دار نشر الکتب الاسلامیه گوجرانواله ۱/ ۳۴۵

Fatawa Razawiyya, Volume 29

[Box 1] Arabic: Nafsi fil-idraki wa amsaktu 'anil khawdi fihi kullal imsak. 1 Urdu Translation: Those meanings cannot be correct which imply a resemblance between Allah Almighty and His creation, and I consider myself incapable of understanding its meaning. I have no confidence in myself to grasp its correct meaning, therefore I have completely withdrawn from contemplating it.

(19) Written in Surah Al-A'raf: [Box 2] Arabic: Ajma'as salafu 'ala anna istiwa'ahu 'alal 'arshi sifatun lahu bila kaifa nu'minu bihi wa nukilul 'ilma ilallahi ta'ala. 2 Urdu Translation: There is a consensus of the pious predecessors (Salaf Saliheen) that 'Istiwa' over the Throne is an attribute of Allah Almighty without 'how' (incomparable and indescribable); we believe in it and entrust the knowledge of it to God.

(20) The irony is that in Surah Al-A'raf it only says that we know nothing of its meaning, and in Surah Al-Furqan it is written: [Box 3] Arabic: Qad marra fi Suratil A'rafi tafseelu ma'nahu. 3 Urdu Translation: The detail of its meaning has passed in Surah Al-A'raf.

Similarly, in Surah As-Sajdah it is written: 'Qad marra fi Suratil A'raf' 4. (It has passed in Surah Al-A'raf. - Translator) Similarly, in Surah Al-Hadid: 'Qad marra tafseeluhu fi Suratil A'rafi wa ghayriha' 5. (Its detail has already passed in Surah Al-A'raf etc. - Translator) See how clearly it was stated that the detail of its meaning is that we know nothing. Now it is clear that for the Wahhabiyya Mujassimah (anthropomorphists) to cite names like Kitab al-Asma, Ma'alim, Madarik, and Jami' al-Bayan in their references is [misleading].

Footnotes: 1 Jami' al-Bayan, Muhammad bin Abdul Rahman al-Shafi'i, Ayah 5/20, Dar Nashr al-Kutub al-Islamiyyah, Gujranwala, 2/156 2 Jami' al-Bayan, Muhammad bin Abdul Rahman al-Shafi'i, Ayah 7/54, Dar Nashr al-Kutub al-Islamiyyah, Gujranwala, 1/223 3 Jami' al-Bayan, Muhammad bin Abdul Rahman al-Shafi'i, Ayah 25/59, Dar Nashr al-Kutub al-Islamiyyah, Gujranwala, 3/89 4 Jami' al-Bayan, Muhammad bin Abdul Rahman al-Shafi'i, Ayah 32/4, Dar Nashr al-Kutub al-Islamiyyah, Gujranwala, 2/157 5 Jami' al-Bayan, Muhammad bin Abdul Rahman al-Shafi'i, Ayah 57/4, Dar Nashr al-Kutub al-Islamiyyah, Gujranwala, 2/336

फतावा रजविया, जिल्द 29

[बॉक्स 1] अरबी: नफ़्सी फ़िल इद्राकि व अम्सक्तु अनिल खौदि फ़ीहि कुल्लल इम्साक। 1 उर्दू अनुवाद: वे अर्थ नहीं हो सकते जिनमें अल्लाह तआला की मखलूक (सृष्टि) से समानता निकले और मैं स्वयं को इसके अर्थ समझने में संदिग्ध मानता हूँ। मुझे अपने नफ़्स (मन) पर भरोसा नहीं है कि मैं इसका सही अर्थ समझ सकूँ इसलिए मैंने इसमें चिंतन करने से पूरी तरह हाथ खींच लिए हैं।

(19) सूरा आराफ़ में लिखा है: [बॉक्स 2] अरबी: अजमअस सलफ़ु अला अन्ना इस्तिवाअहु अलल अर्शि सिफ़तुल लहु बिला कैफ़ नु'मिनु बिहि व नुकिलुल इल्मा इलल्लाहि तआला। 2 उर्दू अनुवाद: सलफ़ सालेहीन (पुण्य पूर्वजों) का इज्मा (सर्वसम्मति) है कि अर्श पर 'इस्तिवा' अल्लाह तआला का एक बे-मिसाल और अकथनीय गुण है; हम इस पर ईमान लाते हैं और इसका ज्ञान ईश्वर को सौंपते हैं।

(20) विडंबना यह है कि सूरा आराफ़ में तो केवल इतना लिखा कि हम इसके अर्थ के बारे में कुछ नहीं जानते और सूरा फ़ुरक़ान में लिखा है: [बॉक्स 3] अरबी: क़द मर्रा फ़ी सूरतिल आराफ़ि तफ़्सीलु मा'नाहु। 3 उर्दू अनुवाद: इसके अर्थ का विवरण सूरा आराफ़ में गुजर चुका है।

इसी तरह सूरा सजदा में लिखा है: 'क़द मर्रा फ़ी सूरतिल आराफ़' 4। (सूरा आराफ़ में गुजर चुका। - त) इसी तरह सूरा हदीद में लिखा है: 'क़द मर्रा तफ़्सीलुहु फ़ी सूरतिल आराफ़ि व गैरिहा' 5। (इसका विवरण सूरा आराफ़ आदि में गुजर चुका है। - त) देखो कैसा साफ़ बताया कि इसके अर्थ का विवरण यही है कि हम कुछ नहीं जानते। अब तो साफ़ हो गया कि वहाबिया मुजस्सिमा का अपनी सनद में 'किताबुल अस्मा', 'मआलिम', 'मदारिक' और 'जामेउल बयान' के नाम दे देना [महज़ दिखावा है]।

पाद-टिप्पणियाँ: 1 जामेउल बयान, मुहम्मद बिन अब्दुल रहमान अश-शाफ़ई, आयत 5/20, दार नश्र अल-कुतुब अल-इस्लामिया, गुजरांवाला, 2/156 2 जामेउल बयान, मुहम्मद बिन अब्दुल रहमान अश-शाफ़ई, आयत 7/54, दार नश्र अल-कुतुब अल-इस्लामिया, गुजरांवाला, 1/223 3 जामेउल बयान, मुहम्मद बिन अब्दुल रहमान अश-शाफ़ई, आयत 25/59, दार नश्र अल-कुतुब अल-इस्लामिया, गुजरांवाला, 3/89 4 जामेउल बयान, मुहम्मद बिन अब्दुल रहमान अश-शाफ़ई, आयत 32/4, दार नश्र अल-कुतुब अल-इस्लामिया, गुजरांवाला, 2/157 5 जामेउल बयान, मुहम्मद बिन अब्दुल रहमान अश-शाफ़ई, आयत 57/4, दार नश्र अल-कुतुब अल-इस्लामिया, गुजरांवाला, 2/336

نفسی فی الادراک وامسکت عن الخوض فیہ کل الامساک۔ 1 وہ معنی نہیں ہوسکتے جن میں اللہ تعالیٰ کی مشابہت مخلوق سے نکلے اور میں اپنے آپ کو اُس کے معنی سمجھنے میں متہم رکھتا ہوں مجھے اپنے نفس پر اطمینان نہیں کہ اس کے صحیح معنی سمجھ سکوں لہذا میں نے اس میں فکر کرنے سے یک قلم قطعی دست کشی کی۔

(۱۹) سورہ اعراف میں لکھا: اجمع السلف علی ان استواء ہ علی العرش صفۃ لہ بلا کیف نؤمن بہ ونکل العلم الی اللہ تعالٰی۔ 2 سلف صالح کا اجماع ہے کہ عرش پر استواء اللہ تعالیٰ کی ایک صفت بیچون وبے چگون ہے ہم اس پر ایمان لاتے ہیں اور ان کا علم خدا کو سونپتے ہیں۔

(۲۰) طرفہ یہ کہ سورہ اعراف میں تو صرف اتنا لکھا کہ اس کے معنی ہم کچھ نہیں جانتے اور سورہ فرقان میں لکھا۔ قدمر فی سورۃ الاعراف تفصیل معناہ۔ 3 اس کے معنی کی تفصیل سورہ اعراف میں گزری۔

یونہی سورہ سجدہ میں لکھا قد مر فی سورۃ الاعراف 4۔ (سورہ اعراف میں گزرا۔ت) یونہی سورہ حدید میں قد مرتفصیلہ فی سورۃ الاعراف و غیرھا 5۔ (اس کی تفصیل سورہ اعراف وغیرہ میں گزر چکی ہے۔ت) دیکھو کیسا صاف بتایا کہ اس کے معنی کی تفصیل یہی ہے کہ ہم کچھ نہیں جانتے، اب تو کھلا کہ وہابیہ مجسمہ کا اپنی سند میں کتاب الاسماء ومعالم ومدارک و جامع البیان کے نام لے دینا۔

حواشی: 1 جامع البیان محمد بن عبدالرحمن الشافعی آیۃ ۲۰/ ۵ دار نشر الکتب الاسلامیہ گوجرانوالہ ۲/ ۱۵۶ 2 جامع البیان محمد بن عبدالرحمن الشافعی آیۃ ۵۴/ ۷ دار نشر الکتب الاسلامیہ گوجرانوالہ

۱/ ۲۲۳ 3 جامع البیان محمد بن عبدالرحمن الشافعی آیۃ ۵۹/ ۲۵ دار نشر الکتب الاسلامیہ گوجرانوالہ ۳/ ۸۹ 4 جامع البیان محمد بن عبدالرحمن الشافعی آیۃ ۴/ ۳۲ دار نشر الکتب الاسلامیہ گوجرانوالہ ۲/ ۱۵۷ 5 جامع البیان محمد بن عبدالرحمن الشافعی آیۃ ۴/ ۵۷ دار نشر الکتب الاسلامیہ گوجرانوالہ ۲/ ۳۳۶

جلد ۲۹ (Volume 29)

فتاویٰ رضویہ (Fatawa Razawiyya)

What a severe shamelessness it was. There is no power or strength except with Allah, the Most High, the Most Great.

The Irreligiousness of the Anthropomorphist Wahhabis

The belief of the Ahl-as-Sunnah regarding the chapter of ambiguous attributes (Sifat-e-Mutashabihat) has become known, that our portion in them is only this much: whatever Allah Ta'ala intends, we believe in that. Allah Ta'ala is definitely pure from the literal meanings that come to our understanding, and we have no information about the divine intent, therefore we cannot say anything about their meaning. Or even if we say something by way of interpretation (ta'wil), we will say only that which is worthy of our Lord's holy majesty and according to the decisive verses (Ayat-e-Muhkamat). And Allah Ta'ala has granted the Ahl-as-Sunnah the straight path (Sirat-al-Mustaqim), which is always the middle way. On both sides of it are two terrible and fatal valleys of excess (ifrat) and deficiency (tafrit). This is why in most issues, the Ahl-as-Sunnah remain in the middle of two contradictory groups, like the Rafidis and Nasibis, or Kharijis and Murji'is, or Qadaris and Jabris, or Batini and Zahiri, or Wahhabis and innovators, or the followers of Ismail [Dehlvi] and grave-worshippers, and so on. Similarly, here too, two false groups emerged: the Mu'attilah and Mushabbihah. The Mu'attilah, who are also called Jahmiyyah, completely denied the ambiguous attributes, to the extent that their first leader, the rejected Ja'd bin Dirham, said that Allah Ta'ala neither made Ibrahim (peace be upon him) His close friend nor spoke to Musa (peace be upon him). These misguided people, due to their excess, were deprived of the verse: "We believe in it; all of it is from our Lord"[1] (Translation: We believe in it, all is from our Lord. -T). Opposite to them, at the extreme of deficiency, came the Mushabbihah, who are also called Hashwiyyah and Mujassimah. These vile people explicitly accepted that yes, for Allah Ta'ala, there is place, body, and direction. And when all this is there, then ascending, descending, rising, sitting, moving, and staying are all automatically established. These are the same rejected ones about whom the Great Quran said: "In whose hearts is deviation"[2] (Translation: In their hearts is deviation. -T) and called them misguided mischief-makers. You should know the impure Wahhabis as the scavengers of all the misguided; they have filled their pile by taking some beliefs of misguidance from various bad-sectarians. They didn't miss out here either, and their leader Ismail, in

[his book] 'Sirat-al-Mustaqim', regarding his ignorant spiritual guide's [relation] with Allah Ta'ala...

[1] The Holy Quran 3/7 [2] The Holy Quran 3/7

खण्ड 29

फ़तावा रज़विया

कैसी भीषण निर्लज्जता थी। अल्लाह के सिवा कोई शक्ति या सामर्थ्य नहीं है, जो सबसे उच्च और महान है।

मानवरूपी वहाबियों की अधार्मिकता

अहले सुन्नत का अकीदा (विश्वास) अल्लाह के अस्पष्ट गुणों (सिफात-ए-मुतशाबिहात) के अध्याय में ज्ञात हो गया है कि उनमें हमारा हिस्सा केवल इतना ही है कि अल्लाह तआला का जो कुछ इरादा है, हम उस पर ईमान लाए। ज़ाहिरी शब्दों से जो अर्थ हमारी समझ में आते हैं, अल्लाह तआला निश्चित रूप से उन से पवित्र है और हमें अल्लाह की मंशा के बारे में कोई जानकारी नहीं है, इसलिए हम उनके अर्थों के बारे में कुछ कह ही नहीं सकते। या यदि हम व्याख्या (तावील) के तौर पर कुछ कहें भी, तो वही कहेंगे जो हमारे रब की पावन महिमा के योग्य हो और स्पष्ट आयतों (आयात-ए-मुहकमात) के अनुकूल हो। अल्लाह तआला ने अहले सुन्नत को सिराते मुस्तकीम (सीधा मार्ग) प्रदान किया है, जो सदैव मध्यम मार्ग होता है। उसके दोनों ओर इफ़रात (अति) और तफ़रीत (कमी) की दो भयानक घातक घाटियाँ हैं। यही कारण है कि अधिकांश मुद्दों में अहले सुन्नत दो विपरीत समूहों के बीच में रहते हैं, जैसे राफ़्ज़ी और नासबी, या खारजी और मुर्जी, या क़दरी और जबरी, या बातिनी और ज़ाहिरी, या वहाबी और बिदअती, या इस्माइल के अनुयायी और कब्र-पूजक, और इसी तरह। इसी प्रकार यहाँ भी दो झूठे समूह निकले: मोअत्तला और मुशब्बिहा। मोअत्तला, जिन्हें जहमिया भी कहा जाता है, अस्पष्ट गुणों से पूरी तरह मुकर गए, यहाँ तक कि उनका पहला नेता तिरस्कृत जअद बिन दिरहम कहता था कि न अल्लाह तआला ने इब्राहिम (अलैहिस्सलाम) को अपना मित्र बनाया और न मूसा (अलैहिस्सलाम) से कलाम फरमाया। ये गुमराह लोग अपनी अति (इफ़रात) के कारण इस आयत से वंचित रहे: "हम इस पर ईमान लाए, सब हमारे रब की तरफ से है"[1] (अनुवाद: हम इस पर ईमान लाए, सब हमारे रब की ओर से है। -त)। उनके विपरीत, कमी (तफ़रीत) की पराकाष्ठा पर मुशब्बिहा आए, जिन्हें हशविया और मुजस्सिमा भी कहा जाता है। इन नीच लोगों ने साफ-साफ मान लिया कि हाँ, अल्लाह तआला के लिए स्थान है, शरीर है और दिशा है। और जब यह सब कुछ है, तो फिर चढ़ना, उतरना, उठना, बैठना, चलना, रुकना सब अपने आप ही सिद्ध हो गया। ये वही तिरस्कृत लोग हैं जिनके बारे में महान कुरान ने फरमाया: "जिनके दिलों में टेढ़ापन है"[2] (अनुवाद:

उनके दिलों में टेढ़ापन है। -त) और उन्हें गुमराह व फसाद फैलाने वाला बताया। आप नापाक वहाबियों को समझें कि वे सभी गुमराहों की जूठन खाने वाले हैं; उन्होंने विभिन्न संप्रदायों से पथभ्रष्टता के कुछ-कुछ विश्वास लेकर अपनी गन्दगी भरी है। वे यहाँ भी नहीं चूके, और उनके नेता इस्माइल ने 'सिराते मुस्तकीम' में अपने अज्ञानी पीर के बारे में जो अल्लाह तआला से...

[1] अल-कुरान अल-करीम 3/7 [2] अल-कुरान अल-करीम 3/7

جلد ۲۹

فتاویٰ رضویہ

کیسی سخت بے حیائی تھا۔ ولاحول ولاقوۃ الا باللہ العلی العظیم۔

وہابیہ مجسمہ کی بددینی

صفات متشابہات کے باب میں اہلسنت کا عقیدہ تو معلوم ہولیا کہ ان میں ہمارا حصہ بس اس قدر ہے کہ اللہ تعالیٰ کی جو کچھ مراد ہے ہم اس پر ایمان لائے ، ظاہر لفظ سے جو معنی ہماری سمجھ میں آتے ہیں ان سے اللہ تعالیٰ یقینا پاک ہے اور مرادِ الٰہی پر ہمیں اطلاع نہیں لہذا ہم ان کے معنی کچھ کہہ ہی نہیں سکتے یا بطور تاویل کچھ کہیں بھی تو وہی کہیں گے جو ہمارے رب کی شانِ قدوسی کے لائق اور آیاتِ محکمات کے مطابق اور اہلسنت کو اللہ تعالیٰ نے صراطِ مستقیم عطا فرمائی ہے وہ ہمیشہ راہِ وسط ہوتی ہے اس کے دونوں پہلوؤں پر افراط و تفریط دو ہولناک مہلک گھاٹیاں ہیں اسی لیے اکثر مسائل میں اہلسنت دو فرقہ متناقض کے وسط میں رہتے ہیں جیسے رافضی ناصبی یا خارجی مرجی یا قدری جبری یا باطنی ظاہری یا وہابی بدعتی یا اسمعیل پرست گور پرست وعلی ہذا القیاس اسی طرح یہاں بھی دو فرقہ باطلہ نکلے معطلہ و مشبہ ، معطلہ جنہیں جہمیہ بھی کہتے ہیں صفات متشابہات سے یکسر منکر ہی ہوگئے یہاں تک کہ ان کا پہلا پیشوا جعد بن درہم مردود کہتا کہ نہ اللہ تعالیٰ نے ابراہیم علیہ الصلوۃ والتسلیم کو اپنا خلیل بنایا نہ موسیٰ کلیم علیہ الصلوۃ والتسلیم سے کلام فرمایا ، یہ گمراہ لوگ اپنے افراط کے باعث "آمَنَّاهِ كُلٌّ مِّنْ عِنْدِ رَبِّنَا" 1 (ہم اس پر ایمان لائے سب ہمارے رب کی طرف سے ہے۔ ت) سے بے بہرہ ہوئے ان کی طرف نقیض پر انتہائے تفریط میں مشبہ آئے جنہیں حشویہ و مجسمہ بھی کہتے ہیں ان خبیثوں نے صاف صاف مان لیا کہ

ہاں اللہ تعالیٰ کے لیے مکان ہے جسم ہے جہت ہے۔ اور جب یہ سب کچھ ہے تو پھر چڑھنا اترنا اٹھنا بیٹھنا چلنا ٹھہرنا سب آپ ہی ثابت ہے ، یہ مردود وہی ہوئے جنہیں قرآن عظیم نے "فِي قُلُوبِهِمْ زَيْغٌ" 2 ۔ (ان کے دلوں میں زیغ ہے۔ ت) فرمایا اور گمراہِ فتنہ پرداز بتایا تھا۔ وہابیہ ناپاک کو آپ جانیں کہ سب گمراہوں کے فضلہ خوار ہیں مختلف بدمذہبوں سے کچھ کچھ عقائدِ ضلالت لے کر آپ بھرت پورا کیا ہے یہاں بھی نہ چوکے ، اور ان کے پیشوا اسمعیل نے صراطِ مستقیم میں جو اپنے جاہل پیر کی اللہ تعالیٰ سے

1 القرآن الکریم ۳/ ۷ 2 القرآن الکریم ۳/ ۷

Fatawa Ridawiyya, Volume 29

...proved a friendly meeting and hand-shaking "Good Morning". (Refer to the blessed book Al-Kawkabah al-Shahabiyyah 'ala Kufriyat Abi al-Wahhabiyyah). Therefore, some of its progeny clearly accepted the creed of the confounded anthropomorphists (Mujassimah), and their root is also their leader; the hideous one in his treatise Idah al-Haqq al-Sarih had fixed that considering Allah the Almighty free from place and direction is an innovation and misguidance. In refutation of this, Kawkabah al-Shahabiyyah presented this writing of Shah Abdul Aziz from Tuhfa Ithna Ashariyah that in the creed of Ahl al-Sunnah wa'l Jama'ah, there is no place for Allah the Almighty, nor can there be any direction of above or below for Him. And this statement from Bahr al-Ra'iq and Alamgiri:

[Box 1] Right: Affirming a place for Allah the Almighty is disbelief.[2] Left: Meaning, a person becomes a disbeliever by believing in a place for Allah the Almighty.

And this statement of the most exalted Imam, Qadhi Khan:

[Box 2] Right: A man said, "God in heaven knows that I have nothing." This is disbelief because Allah the Almighty is transcendent above place.[3] Left: Meaning, if someone said "God in heaven knows that I have nothing", he becomes a disbeliever because Allah the Almighty is pure from having a place.

And this statement from Khulasa al-Fatawa:

[Box 3] Right: If he said, "Place a ladder, go up to heaven, and fight with God," he commits disbelief because he affirmed a place for Allah the Almighty.[4] Left: If someone says, "Take a spear, go to heaven, and fight with God," he will become a disbeliever because he attributed a place to Allah the Almighty. (T) (See Kawkabah al-Shahabiyyah)

From the recent offspring of those insolent anthropomorphists, a person from Sahswan, a sycophant of the misguided Harari Ghulam Nawab Bhopal Qannawji (the deceased), has again become the initiator and founder of this dormant fitna (mischief), and towards that Subbuh (All-Pure), Quddus (All-Holy), Jalla Jalaluhu...

---

[1] Tuhfa Ithna Ashariyah, Chapter 5 on Divinity, Suhail Academy Lahore, p. 141. [2] Fatawa Hindiyyah, Book of Expeditions, Chapter 9, Noori Kutub Khana Peshawar, 2/259; Bahr al-Ra'iq, Book of Expeditions, Chapter on the Rulings of Apostates, H.M. Saeed Company Karachi, 5/120. [3] Fatawa Qadhi Khan, Book of Expeditions, Chapter

on what constitutes disbelief for a Muslim, Naval Kishore Lucknow, 4/884. [4] Khulasa al-Fatawa, Book of Disbelief, Section 2, Category 2, Maktabah Habibiyyah Quetta, 4/384.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 29

...दोस्ताना मुलाकात और हाथ से हाथ मिलाकर 'गुड मॉर्निंग' (Good Morning) साबित की थी। (देखिए पवित्र पुस्तक अल-कौकबतुल शहाबिया अला कुफ़्रियात अबिल वहाबिया)। इसलिए उसके कुछ सपूतों ने स्पष्ट रूप से मुजस्सिमा (ईश्वर को सदेह मानने वाले) का मत मान लिया और उनकी जड़ भी वही उनका पेशवा है; उस घिनौने ने अपने रिसाले 'ईज़ाहुल हक़ अल-सरीह' में यह बात जमा दी थी कि अल्लाह तआला को स्थान और दिशाओं से पाक मानना बिदअत और गुमराही है। इसके खंडन में 'कौकबा शहाबिया' ने शाह अब्दुल अज़ीज़ साहब की 'तोहफ़ा इस्ना अशरिया' से यह तहरीर पेश की थी कि अहल-ए-सुन्नत वल जमाअत के अकीदे में अल्लाह तआला के लिए कोई स्थान नहीं है, न ही उसके लिए ऊपर या नीचे की कोई दिशा हो सकती है। और 'बहरुल रायिक' और 'आलमगीरी' का यह कथन:

[बॉक्स 1] दायाँ: अल्लाह तआला के लिए स्थान साबित करना कुफ़्र है।[2] बायाँ: यानी अल्लाह तआला के लिए स्थान मानने से आदमी काफ़िर हो जाता है।

और इमाम अजल क़ाज़ी खां का यह कथन:

[बॉक्स 2] दायाँ: एक आदमी ने कहा, 'आसमान वाला खुदा जानता है कि मेरे पास कुछ नहीं है'। यह कुफ़्र है क्योंकि अल्लाह तआला स्थान से पाक (परे) है।[3] बायाँ: यानी किसी ने कहा खुदा आसमान पर जानता है कि मेरे पास कुछ नहीं है, तो वह काफ़िर हो गया क्योंकि अल्लाह तआला स्थान से पाक है।

और 'खुलासा' के फ़तावा का यह कथन:

[बॉक्स 3] दायाँ: अगर उसने कहा, 'सीढ़ी लगाओ, आसमान पर जाओ और खुदा से जंग करो', तो वह काफ़िर हो जाएगा, क्योंकि उसने अल्लाह तआला के लिए स्थान साबित किया।[4] बायाँ: अगर कोई यह कहे कि नेज़ा ले और आसमान पर जा और खुदा से जंग कर, तो वह काफ़िर हो जाएगा क्योंकि उसने अल्लाह तआला के लिए स्थान माना। (त) (देखिए कौकबा शहाबिया)

उन्हीं गुस्ताख मुजस्सिमा की नई औलादों में से सहसवान के एक साहब, जो गुमराह हरारी गुलाम नवाब भोपाल कन्नौजी (दिवंगत) के चाटुकार थे, ने नए सिरे से इस सोए हुए फ़ितने को फिर से जीवित किया है, और उस सुब्बूहुन क़ुद्दूस (अत्यंत पवित्र) जल्ल जलालाहु...

[1] तोहफ़ा इस्ना अशरिया, अध्याय 5, ईलाहियात, सुहैल एकेडमी लाहौर, पृष्ठ 141। [2] फ़तावा हिन्दिया, किताबुल सियर, अध्याय 9, नूरी कुतुब खाना पेशावर, 2/259; बहरुल रायिक, किताबुल सियर, मुरतद के अहकाम का अध्याय, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 5/120। [3] फ़तावा क़ाज़ी खां, किताबुल सियर, मुसलमान के कुफ़्र से संबंधित अध्याय, नवल किशोर लखनऊ, 4/884। [4] खुलासतुल फ़तावा, किताबुल कुफ़्र, खंड 2, श्रेणी 2, मकतबा हबीबिया क्वेटा, 4/384।

पृष्ठ 139 का 750

دوستانہ ملاقات اور ہاتھ سے ہاتھ ملا کر گڈ مارننگ (Good Morning) ثابت کی تھی۔ (دیکھو کتاب مستطاب الکوکبۃ الشہابیۃ علی کفریات ابی الوہابیہ) لہٰذا اس کے بعض سپوت صاف صاف مجسمہ مبہوت کا مذہب مان گئے اور اس کی جڑ بھی وہی ان کا پیشوا ہے فتیح اپنے رسالہ ایضاح الحق الصریح میں جما گیا تھا کہ اللہ تعالٰی کو مکان وجوہت سے پاک جاننا بدعت وضلالت ہے جس کے رَد میں کوکبہ شہابیہ نے تحفہ اثنا عشریہ شاہ عبدالعزیز صاحب کی یہ تحریر پیش کی تھی کہ اہل سنت و جماعت کے عقیدے میں اللہ تعالٰی کے لیے مکان نہیں، نہ اس کے لیے فوق یا تحت کوئی جہت ہو سکتی ہے۔ اور بحر الرائق و عالمگیری کی یہ عبارت:

[بکس ۱] دائیں: یکفر باثبات المکان للہ تعالٰی [2] بائیں: یعنی اللہ تعالٰی کے لیے مکان ماننے سے آدمی کافر ہو جاتا ہے۔

اور فتاوٰی امام اجل قاضی خاں کی یہ عبارت:

[بکس ۲] دائیں: رجل قال خدائے برآسمان می داند کہ من چیزے ندارم یکون کفر لان اللہ تعالٰی منزہ عن المکان [3]۔ بائیں: یعنی کسی نے کہا خدا آسمان پر جانتا ہے کہ میرے پاس کچھ نہیں کافر ہو گیا اس لیے کہ اللہ تعالٰی مکان سے پاک ہے۔

اور فتاوٰی خلاصہ کی یہ عبارت:

[بکس ۳] دائیں: لو قال نردبان بنہ و بآسمان برآئے و باخدا جنگ کن یکفر، لانہ اثبت المکان للہ تعالٰی [4]۔ بائیں: اگر کوئی یہ کہے نیزہ لے اور آسمان پر جا اور خدا سے جنگ کر، تو کافر ہو جائے گا کیونکہ اس نے اللہ تعالٰی کے لیے مکان مانا۔ (ت) (دیکھو کوکبہ شہابیہ)

انہیں مجسمہ گستاخ کے تازہ افراخ سے ایک صاحب سہسوانی بکاسہ لیسی گمراہ ہراری غلام نواب بھوپال قنوجی آنجہانی از سر نو اس فتنہ خوابیدہ کے بادی و بانی اور اس سُبوح قدوس جل جلالہ

---

۱ تحفہ اثنا عشریہ باب پنجم در الہیات سہیل اکیڈمی لاہور ص ۱۴۱ ۲ فتاویٰ ہندیہ کتاب السیر ،الباب التاسع نوری کتب خانہ پشاور ۲/ ۲۵۹،بحرالرائق کتاب السیر باب احکام المرتدین ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۵/ ۱۲۰ ۳ فتاویٰ قاضی خان کتاب السیر باب مایکون کفرًا من المسلم نولکشور لکھنؤ ۴/ ۸۸۴ ۴ خلاصۃ الفتاویٰ کتاب الکفر فصل ۲ جنس ۲ مکتبہ حبیبیہ کوئٹہ ۴/ ۳۸۴

Volume 29 Fatawa Ridawiyya

...became claimants of physical and spatial defects in His (God's) majesty. On the 4th of Muharram-ul-Haram, 1318 Hijri Qudsiyah, a request for a religious decree (istifta) regarding this matter and two other matters related to the same person was presented to the Crown of Researchers, the Scholar of Ahl-e-Sunnat, may his high shadow endure. His Eminence stated the essence of the ruling with great conciseness. After nearly two months, on the 26th of Safar, a troubled piece of writing regarding them arrived, which was a living image of misguidance, ignorance, folly, and error. Such deliriums are not worthy of attention, but for the sake of safeguarding the beliefs of the common people and the support of Sunnah and Islam, these few lines are written for the sake of Allah. Let the people of truth look with an eye of justice and not be swayed by the words of any misguided deceiver in matters of belief.

"And my guidance is from none but Allah; in Him I trust and to Him I turn." (Success is only through Allah; I have relied upon Him and to Him I return. - Trans.)

Issue 51: From Sahaswan, Qazi Mohalla, sent by Haji Farhat Ali Sahib, 4th Muharram 1318 AH.

What do the scholars of religion say regarding this matter: what is the Shariah ruling for a person who says that Allah, the Lord of Honor, is seated on the Throne (Arsh) and is nowhere else?

The Answer: Allah, the Mighty and Sublime, is pure from place, direction, sitting, and all other physical attributes, bodily qualities, defects, and shortcomings. This phrasing used by that person carries meanings of severe misguidance. Repentance is obligatory for him; he should align his belief with the Ahl-e-Sunnat. And Allah is the Guide.

Transcript of a misguidance-laden writing from a Najdi:

Issue: Allah Almighty being only on the Throne:

The Answer: "Ar-Rahman 'ala al-'arsh istawa" means Allah Almighty sat, ascended, or stayed on the Throne. Anyone who interprets this verse in any meaning other than these three is an innovator (bid'ati). Allah Almighty has mentioned this subject in seven places in His Noble Word. See Fath al-Rahman, the commentary of Qari Shah Waliullah Sahib Muhaddith Dehlavi, and Tafsir Mudih al-Qur'an.

खंड २९ फ़तावा रज़विय्या

...उनकी शान में शारीरिक और स्थान संबंधी दोषों के दावेदार हुए। ४ मुहर्रम-उल-हराम १३१८ हिजरी को इस विषय में और इन्हीं सज्जन के बारे में दो अन्य मामलों में ताजुल मुहक्क़िक़ीन, आलिम-ए-अहले सुन्नत (उनका साया बना रहे) से फतवा माँगा गया। हज़रत ने हुक्म का सार अत्यंत संक्षिप्त में बताया। पौने दो महीने बाद २६ सफर को उनके बारे में एक परेशान करने वाली तहरीर आई जो गुमराह करने वाली, अज्ञानता, मूर्खता और पथभ्रष्टता की बोलती तस्वीर थी। ऐसी बकवास ध्यान देने योग्य नहीं है, लेकिन आम लोगों के अक़ीदे (विश्वास) की रक्षा और सुन्नत व इस्लाम की सहायता के लिए ये कुछ पंक्तियाँ अल्लाह की रज़ा के लिए लिखी गई हैं। सत्य के लोग न्याय की दृष्टि से देखें और अक़ीदे के मामलों में किसी गुमराह मक्कार की बातों में न आएं।

"और मेरी तौफ़ीक़ (सामर्थ्य) अल्लाह के सिवा किसी से नहीं; उसी पर मैंने भरोसा किया और उसी की ओर मैं झुकता हूँ।" (मुझे सफलता केवल अल्लाह से मिलती है; उसी पर मैंने भरोसा किया है और उसी की ओर मेरा रुख है। - अनुवाद)

मसला ५१: सहसवान से, क़ाज़ी मोहल्ला, प्रेषक हाजी फरहत अली साहब, ४ मुहर्रम १३१८ हिजरी।

दीन के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं कि जो व्यक्ति यह कहे कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त अर्श (सिंहासन) पर बैठा है और कहीं नहीं है, शरीअत में उसका क्या हुक्म है?

उत्तर: अल्लाह अज़्ज़-व-जल्ल स्थान, दिशा, बैठने और अन्य सभी शारीरिक लक्षणों, शारीरिक कमियों, दोषों और न्यूनताओं से पवित्र है। उस व्यक्ति द्वारा कहे गए इन शब्दों का अर्थ घोर गुमराह करना है, उस पर तौबा (पश्चाताप) करना अनिवार्य है, वह अपना अक़ीदा अहले सुन्नत के अनुसार करे, और अल्लाह ही मार्गदर्शक है।

एक नज्दी की गुमराही से भरी तहरीर की नक़ल:

मसला: अल्लाह तआला का अर्श पर ही होना:

उत्तर: "अर-रहमान अला अल-अर्श इस्तवा" यानी अल्लाह तआला अर्श पर बैठा या चढ़ा या ठहरा। इन तीन अर्थों के अलावा इस आयत में जो कोई और अर्थ कहेगा वह बिदअती (नवाचारी) है। अल्लाह तआला ने अपने कलाम शरीफ में सात जगह इस विषय का उल्लेख किया है। देखिए फतह-उर-रहमान तफसीर क़ारी शाह वलीउल्लाह साहब मुहद्दिस देहलवी और तफसीर मौज़िह अल-कुरान।

পৃষ্ঠ ১৪০/৭৫০

کی شان میں مدعی عیوب جسمی و مکانی ہوئے، چہارم محرم الحرام ۱۳۱۸ھجریہ قدسیہ کو اس باب اور انہیں صاحب کے متعلق دو امر دیگر میں حضرت تاج المحققین عالم اہلسنت دام ظلہم العالی سے استفتاء ہوا حضرت نے نفس حکم بنہایت اجمال ارشاد فرمایا: پونے دو مہینے کے بعد بست و ششم ۲۶ صفر کو ان کے متعلق ایک پریشان تحریر گمراہی و جہالت و سفاہت و ضلالت کی بولتی تصویر آئی ایسے ہذیانات کیا قابل التفات مگر حفظِ عقائد عوام و نصرت سنت و اسلام کے لحاظ سے یہ چند سطور لوجہ اللہ مسطور، اہل حق بنگاہِ انصاف نظر فرمائیں اور امر عقائد میں کسی گمراہ مکار کے کہنے میں نہ آئیں۔

وما توفیقی الا باللہ علیہ توکلت والیہ انیب۔ (مجھے توفیق صرف اللہ تعالیٰ سے ہے اسی پر میں نے توکل کیا ہے اور اسی کی طرف میرا رجوع ہے۔ ت)

مسئلہ ۵۱: از سہسوان قاضی محلہ مرسلہ حاجی فرحت علی صاحب ۴ محرم ۱۳۱۸ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ جو شخص یہ کہے کہ اللہ رب العزت عرش پر بیٹھا ہے اور کہیں نہیں ہے شرعاً اس کا کیا حکم ہے؟

الجواب: اللہ عزوجل مکان و جہت و جلوس و غیرہما تمام عوارض جسم و جسمانیات و عیوب و نقائص سے پاک ہے، یہ لفظ کہ اس شخص نے کہا سخت گمراہی کے معنی دیتا ہے اس پر توبہ لازم ہے عقیدہ اپنا مطابق اہل سنت کرے، واللہ الہادی۔

نقل تحریر ضلالت تخمیر از نجدی بقدیر :

مسئلہ: اللہ تعالیٰ کا عرش پر ہی ہونا :

الجواب: الرحمن علی العرش استوی اللہ تعالیٰ عرش پر بیٹھا یا چڑھا یا ٹھہرا۔ ان تین معنی کے سوا اس آیت میں جو کوئی اور معنی کہے گا وہ بدعتی ہے، اللہ تعالیٰ نے اپنے کلام شریف میں سات جگہ اس مضمون کو ذکر فرمایا ہے۔ دیکھو فتح الرحمن تفسیر قاری شاہ ولی اللہ صاحب محدث دہلوی و تفسیر موضح القرآن

Fatawa Rizvia, Volume 29

...nowhere else.

Thirdly: He insulted the All-Glorious, All-Holy One to his heart's content by asserting a physical place for Him, claiming that the Throne is His place, and forcibly citing two hadiths to support this.

Fourthly: These three claims were explicit in the text; he further stated by implication that the meaning of 'Istawa ala al-Arsh' (establishment on the Throne) is for Allah Almighty to sit, ascend, and stay on the Throne, and that this is in accordance with the Sunnah.

Fifthly: He was not content with merely attributing sitting, ascending, and staying to his deity; rather, from the meanings of these terms—on which the Lawgiver's discourse remains silent and about which silence is mandatory—he interpreted all ambiguous (mutashabihat) verses, like 'Istawa', according to their literal, outward meanings.

Sixthly: Despite all this, his primary claim is that God is nowhere except on the Throne.

By the grace of Allah, we will address these six points in order with six 'slaps' (refutations), and in the seventh slap, we will briefly reprimand him regarding the remaining two issues. Success is from Allah alone.

The First Slap

The misguided one claimed that whoever proposes a meaning for 'Istawa' other than Allah Almighty's sitting, ascending, or staying is an innovator, and he referenced nine books for this.

Strike 1: Had I not committed to using the very books he cited as evidence, you would have seen how this slap would have completely crushed this misguided person. However, briefly consider the aforementioned statements to see which leaders of religion and the Sunnah this misguided person has labeled as innovators: 1. Imam Abu al-Hasan Ali ibn Battal, 2. Imam Ibn Hajar al-Asqalani, 3. Imam Abu Tahir al-Qazwini, 4. Imam Arif al-Sha'rani, 5. Imam Jalal al-Din al-Suyuti, 6. Imam Isma'il al-Darir, and even the leader of the Ahl al-Sunnah, our master Imam Abu al-Hasan al-Ash'ari (may Allah be pleased with them all). Thus, consider this single blow to be at least seven, or rather thirteen, as the statements of Imam Nasafi, Imam Bayhaqi,

Imam Baghawi, Imam Ali bin Muhammad Abu al-Hasan Tabari, Imam Abu Bakr bin Fawrak, and Imam Abu Mansur bin Abi Ayyub will follow soon. According to this innovator, these noble figures also—God forbid—become innovators. Adding the twenty previous blows, the total becomes thirty-three. Let us proceed and now refute him using only his own cited authorities.

Strike 34: In Madarik Sharif, regarding Surah As-Sajdah, the essence of 'Istawa ala al-Arsh' is explained as its creation and...

...कहीं नहीं।

तीसरा: उसने उस 'सब्बूहुन क़ुद्दूस' (अत्यंत पवित्र) को जी भरकर गाली दी कि उसके लिए स्थान सिद्ध है, अर्श उसका स्थान है, और इसके प्रमाण में जबरदस्ती दो हदीसें उद्धृत कर दीं।

चौथा: ये तीन दावे तो इबारतों (ग्रंथों) के प्रत्यक्ष अर्थ थे; उसने अपवाद के भाव से बताया कि 'इस्तवा अलल अर्श' (सिंहासन पर स्थापित होना) का अर्थ अल्लाह तआला का अर्श पर बैठना, चढ़ना और ठहरना सुन्नत के अनुसार है।

पांचवां: उसने अपने पूज्य को बैठाने, चढ़ाने और ठहराने पर ही संतोष नहीं किया, बल्कि उन शब्दों के अर्थ से—जिन गुणों पर शरीयत का प्रवचन मौन है और जिनमें मौन रहना अनिवार्य है—उसने सभी 'मुताशबिहात' (अस्पष्ट आयतों) को 'इस्तवा' की तरह उन्हीं अर्थों पर आधारित कर लिया जो उनके बाहरी रूप से समझ में आते हैं।

छठा: इन सब के बावजूद उसका मूल दावा यह है कि ईश्वर अर्श के अलावा कहीं नहीं है।

हम भी अल्लाह की सहायता से इन छह बातों का उसी क्रम में छह 'थप्पड़ों' (खंडन) से उत्तर देंगे और सातवें थप्पड़ में शेष दो मसलों के संबंध में संक्षेप में ताड़ना करेंगे। और सफलता अल्लाह की ओर से ही है।

पहला थप्पड़

गुमराह व्यक्ति ने दावा किया कि अल्लाह तआला के बैठने, चढ़ने और ठहरने के अलावा जो कोई 'इस्तवा' का कोई और अर्थ बताए वह बिदअती (नवाचारी) है, और इसके लिए उसने उन नौ किताबों का हवाला दिया।

पहली चोट: फ़क़ीर ने यदि यह संकल्प न किया होता कि उसकी गिनाई हुई किताबों से ही प्रमाण लाऊंगा, तो आप देखते कि यह थप्पड़ इस गुमराह को कैसे धूल चटाता। लेकिन संक्षेप में ऊपर दिए गए कथनों को देख लीजिए कि इस गुमराह ने किन-किन दीन और सुन्नत के इमामों को बिदअती बना दिया: 1. इमाम अबुल हसन अली इब्न बत्ताल, 2. इमाम इब्न हजर असकलानी, 3. इमाम अबू ताहिर क़ज़्वीनी, 4. इमाम आरिफ़ शेरानी, 5. इमाम जलालुद्दीन सुयूती, 6. इमाम इस्माइल ज़रीर, यहाँ तक

कि स्वयं अहले सुन्नत के इमाम हमारे आका इमाम अबुल हसन अशअरी (अल्लाह उन सब से प्रसन्न हो)। तो इस एक चोट को कम से कम सात चोटें समझिए, बल्कि तेरह, क्योंकि इमाम नसफ़ी, इमाम बैहक़ी, इमाम बग़वी, इमाम अली बिन मुहम्मद अबुल हसन तबरी, इमाम अबूबकर बिन फ़ौरक और इमाम अबू मंसूर बिन अबी अय्यूब के कथन शीघ्र ही आने वाले हैं। इस बिदअती के अनुसार ये महान हस्तियाँ भी—अल्लाह की पनाह—बिदअती हुईं। और बीस चोटें पहले बीत चुकी हैं, कुल तैंतीस हुईं। आगे चलिए और अब केवल उसके अपने प्रामाणिक स्रोतों से उसे सबक सिखाते हैं।

चोट 34: 'मदारिक शरीफ़' में सूरह सजदा के अंतर्गत 'इस्तवा अलल अर्श' का सार उसका निर्माण और...

کہیں نہیں۔

ثالثاً: منہ بھر کر اُس سبّوح قدوس کو گالی دی کہ اس کے لیے مکان ثابت ہے، عرش اس کا مکان ہے، اور اس کے ثبوت میں بزورِ زبان دو حدیثیں نقل کردیں۔

رابعاً: یہ تین دعوے تو منطوقِ عبارات تھے مفہوم استثناء سے بتایا کہ استواء علی العرش کے معنی اللہ تعالیٰ کا عرش پر بیٹھنا، چڑھنا، ٹھہرنا مطابق سنت ہیں۔

خامساً: اپنے معبود کو بٹھانے، چڑھانے، ٹھہرانے ہی پر قناعت نہ کی بلکہ ان لفظوں کے مفہوم سے کہ جن صفات سے کلام شارع ساکت ہے ان میں سکوت لازم ہے تمام متشابہات استواء کی طرح انہیں معانی پر محمول کرلیں جو اُن کے ظاہر سے مفہوم ہوتے ہیں۔

سادساً: باوصف ان کے اصلِ دعوٰی یہ ہے کہ خدا عرش کے سوا کہیں نہیں۔

ہم بھی ان چھ باتوں کو بعونہ تعالیٰ اسی ترتیب پر چھ تپانچوں سے خبر لیں اور ساتویں تپانچے میں دو مسئلہ باقیہ کے متعلق اجمالی گوشمالی کریں وباللہ التوفیق۔

پہلا تپانچہ

گمراہ نے ادعا کیا کہ اللہ تعالیٰ کے بیٹھنے، چڑھنے، ٹھہرنے کے سوا جو کوئی اور معنی استواء کے کہے بدعتی ہے، اور اس پر اُن نو کتابوں کا حوالہ دیا۔

ضرب اوّل: فقیر نے اگر یہ التزام نہ کیا ہوتا کہ اُس کی گنائی ہوئی کتابوں سے سند لاؤں گا تو آپ سیر دیکھتے کہ یہ تپانچہ اس گمراہ کو کیونکر خاک و خون میں لٹاتا مگر اجمالاً اقوالِ مذکورہ بالا

ہی ملاحظہ ہوجائیں کہ اس گمراہ نے کس کس امامِ دین وسنت کو بدعتی بنا دیا، ۱ امام ابوالحسن علی ابن بطال، ۲ امام ابن حجر عسقلانی، ۳ امام ابوطاہر قزوینی، ۴ امام عارف شعرانی، ۵ امام جلال الدین سیوطی، ۶ امام اسمعیل ضریر حتی کہ خود امام اہلسنت سیدنا امام ابوالحسن اشعری رضی اللہ تعالیٰ عنہم اجمعین، تو کم از کم اس ضرب کو سات ضرب سمجھئے بلکہ تیرہ ۱۲ کہ امام نسفی و امام بیہقی و امام بغوی و امام علی بن محمد ابوالحسن طبری و امام ابوبکر بن فورک و امام ابو منصور بن ابی ایوب کے اقوال عنقریب آتے ہیں۔ یہ حضرات بھی اس بدعتی کے طور پر معاذ اللہ بدعتی ہوئے، اور بیس ۲۰ ضرب اوپر گزریں جملہ تینتس ۳۳ ہوئیں، آگے چلیے اور اب صرف اس کے مستندوں سے اس کی خبر لیجئے۔

ضرب ۳۴: مدارک شریف سورہ سجدہ میں استواء علی العرش کا حاصل اس کا احداث اور

Fatawa Razawiyya Volume 29

Creating this brings them close to the third meaning mentioned above. Point 35: Except for this Surah and Surah Al-Furqan, where there is absolute silence regarding the interpretation of 'Istiwa', in the other five places, its meaning is described as dominance, conquest, and control. In Surah Al-Hadid, it says: "Then He established Himself over the Throne."[1] (Then He performed Istiwa over the Throne. - T). In Radd-ul-Muhtar, it says:

Arabic	Urdu
استولى بالاقتدار و نفوذ السلطان[2]	He became the possessor of power and dominion. (T)

In Surah Al-A'raf, it says:

Arabic	Urdu
اضاف الاستيلاء الى العرش وان كان سبحانه وتعالى مستوليا على جميع المخلوقات لان العرش اعظمها و اعلاها[3]	Meaning, Allah the Almighty's control is over all His creatures; specifically mentioning control over the Throne is because the Throne is the largest in physical size and the highest of all creatures.

Point 36: In Surah Taha, after mentioning the meaning of 'Istiwa', one reason is quoted as follows:

Arabic	Urdu
لما كان الاستواء على العرش وهو سرير الملك مما يردف الملك جعلوه كناية عن الملك فقال استوى فلان على العرش اى ملك وان لم يقعد على السرير البتة وهذا كقولك يد فلان مبسوطة اى جواد و ان لم يكن له يد رأساً[4]	That is, since ascending the throne is a symbol of royalty, in common usage, "ascending the throne" is spoken and dominion is intended. It is said so-and-so person ascended the throne, meaning he became king, even if he did not actually sit on a throne. Just as by saying "so-and-so's hand is open," your intention is his being generous, even if he does not have a hand at all.

Summary is that "Istiwa over the Throne" means kingship; sitting physically is not at all necessary, when...

---

[1] Madarik al-Tanzil (Tafsir al-Nasafi), Verse 4/57, Dar al-Kitab al-Arabi, Beirut, 4/223 [2] Madarik al-Tanzil (Tafsir al-Nasafi), Verse 13/2, Dar al-Kitab al-Arabi, Beirut, 2/241 [3] Madarik al-Tanzil (Tafsir al-Nasafi), Verse 54/7, Dar al-Kitab al-Arabi, Beirut, 2/56 [4] Madarik al-Tanzil (Tafsir al-Nasafi), Verse 5/20, Dar al-Kitab al-Arabi, Beirut, 3/28

फतावा रज़विया खंड 29

इसे उत्पन्न करना उन्हें ऊपर बताए गए तीसरे अर्थ के करीब लाता है। बिंदु 35: इस सूरा और सूरा अल-फुरकान को छोड़कर, जहाँ 'इस्तिवा' की व्याख्या पर पूर्ण चुप्पी है, बाकी पांच स्थानों पर इसका अर्थ वर्चस्व, विजय और नियंत्रण बताया गया है। सूरा अल-हदीद में है: "फिर वह अर्श पर मुस्तवी हुआ।"[1] (फिर उसने अर्श पर इस्तिवा फरमाया। - त)। रद्दुल मुहतार में है:

अरबी	उर्दू
استولى بالاقتدار و نفوذ السلطان[2]	वह शक्ति और शासन का मालिक बन गया। (त)

सूरा अल-आराफ़ में है:

अरबी	उर्दू
اضاف الاستيلاء الى العرش وان كان سبحانه وتعالى مستوليا على جميع المخلوقات لان العرش اعظمها و اعلاها[3]	यानी अल्लाह तआला का काबू उसकी तमाम मखलूकात पर है, खास अर्श पर काबू होने का ज़िक्र इसलिए फरमाया कि अर्श तमाम मखलूकात से जिसा़मत (आकार) में बड़ा और सब से ऊपर है।

बिंदु 36: सूरा ताहा में 'इस्तिवा' का अर्थ बताने के बाद एक कारण इस प्रकार उद्धृत किया गया है:

अरबी	उर्दू
لما كان الاستواء على العرش وهو سرير الملك مما يردف الملك جعلوه كناية عن الملك فقال استوى فلان على العرش اى ملك وان لم يقعد على السرير البتة وهذا كقولك يد فلان مبسوطة اى جواد و ان لم يكن له يد رأساً[4]	यानी जब कि तख्तनशीनी शाही निशानी है तो आम बोलचाल में तख्तनशीनी बोलते हैं और उससे सल्तनत मुराद लेते हैं, कहते हैं कि फलां शख्स तख्तनशीन हुआ, यानी बादशाह हुआ अगरचे असल में तख्त पर न बैठा हो, जिस तरह तेरे इस कहने से कि फलां का हाथ कुशादा है, उसका सखी होना मुराद होता है अगरचे वह सिरे से हाथ ही न रखता हो।

हासिल यह कि "इस्तिवा अलल अर्श" का अर्थ बादशाही है; हकीकत में बैठना हरगिज़ लाज़िम नहीं, जब...

[1] मदारिक अत-तंज़ील (तफ़सीर अन-नसफ़ी), आयत 4/57, दार अल-किताब अल-अरबी, बेरुत, 4/223 [2] मदारिक अत-तंज़ील (तफ़सीर अन-नसफ़ी), आयत 13/2, दार अल-किताब अल-अरबी, बेरुत, 2/241 [3] मदारिक अत-तंज़ील (तफ़सीर अन-नसफ़ी), आयत 54/7, दार अल-किताब अल-अरबी, बेरुत, 2/56 [4] मदारिक अत-तंज़ील (तफ़सीर अन-नसफ़ी), आयत 5/20, दार अल-किताब अल-अरबी, बेरुत, 3/28

पृष्ठ 143/750

پیدا کر نالیا یہ انہیں معنی سوم کے قریب ہے جو اوپر گزرے۔ ضرب ۳۵: اس سورۃ اور سورہ فرقان کے سوا کہ وہاں استواء کی تفسیر سے سکوت مطلق ہے باقی پانچوں جگہ اس کے معنی استیلاء و غلبہ و قابو بتائے۔ حدید میں ہے: ثم استوی علی العرش[1]۔ (پھر عرش پر استواء فرمایا۔ ت)

رد المحتار میں ہے :

عربی	اردو
استولی بالاقتدار و نفوذ السلطان[2]	اقتدار اور حکومت کا مالک ہوا ۔ (ت)

اعراف میں ہے:

عربی	اردو
اضاف الاستیلاء الی العرش وان کان سبحانہ وتعالی مستولیا علی جمیع المخلوقات لان العرش اعظمھا و اعلاھا[3]	یعنی اللہ تعالٰی کا قابو اس کی تمام مخلوقات پر ہے، خاص عرش پر قابو ہونے کا ذکر اس لیے فرمایا کہ عرش سب مخلوقات سے جسامت میں بڑا اور سب سے اوپر ہے۔

ضرب ۳۶: سورہ طہ میں بعد ذکر معنی استیلاء ایک وجہ یہ نقل فرمائی۔

عربی	اردو
لما کان الاستواء علی العرش وھو سریر الملک مما یردف الملک جعلوہ کنایۃ عن الملک فقال استوی فلان علی العرش ای ملک وان لم یقعد علی السریر البتۃ وھذا	یعنی جب کہ تخت نشینی آثار شاہی سے ہے تو عرف میں تخت نشینی بولتے اور اس سے سلطنت مراد لیتے ہیں، کہتے ہیں فلاں شخص تخت نشین ہوا، یعنی بادشاہ ہوا اگرچہ اصلاً تخت پر نہ بیٹھا ہو، جس طرح تیرے اس

عربی	اردو
كقولك يد فلان مبسوطة اى جواد و ان لم يكن له يد رأساً[4]	کہنے سے کہ فلاں کا ہاتھ کشادہ ہے اس کا سخی ہونا مراد ہوتا ہے اگرچہ وہ سرے سے ہاتھ ہی نہ رکھتا ہو۔

حاصل یہ کہ استواء علی العرش بمعنی بادشاہی ہے حقیقۃً بیٹھنا ہر گز لازم نہیں، جب

---

[1] مدارك التنزيل (تفسير النسفي) آية ۴/۵۷ دار الكتاب العربی بيروت ۴/ ۲۲۳ [2] مدارك التنزيل (تفسير النسفي) آية ۱۳/۲ دار الكتاب العربی بيروت ۲/ ۲۴۱ [3] مدارك التنزيل (تفسير النسفي) آية ۵۴/۷ دار الكتاب العربی بيروت ۲/ ۵۶ [4] مدارك التنزيل (تفسير النسفي) آية ۵/۲۰ دار الكتاب العربی بيروت ۳/ ۲۸

Fatawa Razawiya, Volume 29

In the chapter on creation, this idiom is used where rising and sitting are all possible, so to understand 'sitting' in its literal sense regarding the Creator (Exalted is He), refuge be with Allah, what a blatant injustice it is.

Point 37: The statement from Ma'alim (Tafsir) regarding Surah Al-A'raf was that the method of the Ahl al-Sunnah is silence; they know only that Istiwa is an attribute of Allah Almighty and knowledge of its meaning is entrusted to Allah. This was the method of the righteous predecessors (Salaf al-Salihin). In Surah Al-Ra'd, Istiwa was interpreted as 'exaltation' ('uluww). These are the second meanings that were mentioned above.

Point 38: Imam Bayhaqi, in Kitab al-Asma, stated the creed of the early Imams regarding Istiwa, which was mentioned above. Then he said:

[Arabic Column]: And Abu al-Hasan 'Ali bin Isma'il al-Ash'ari went to the view that Allah, Exalted is His praise, performed an action in the Throne which He named Istiwa, just as He performed in others an action which He named provision or blessing or others of His actions. Then he did not assign a modality (keyf) to Istiwa, except that he made it from the attributes of action because of the saying of Allah Almighty "Then He rose over ('astawa 'ala) the Throne", and "then" (thumma) is for delay (tarakhi), and delay only occurs in actions, and the actions of Allah Almighty occur without His direct contact with them nor movement. 1

[Urdu Column]: Meaning the Imam of Ahl al-Sunnah, Imam Abu al-Hasan Ash'ari said that Allah, the Mighty and Sublime, performed an action with the Throne which He named Istiwa, just as He performs actions with you and me, Zaid and 'Amr, and names them provision, blessing, etc. We do not know the modality of this action of Istiwa; it is only necessary that among His actions there is no meeting, touching, being attached to them, or movement, as there is in sitting, climbing, etc. And the proof for Istiwa being an action is that Allah Almighty said "Then He rose over the Throne", so it became known that Istiwa is originated (hadith), it was not there before, and origination can occur in actions. The essential attributes of Allah Almighty are pure from origination. So it is proven that Istiwa is not an essential attribute of Allah Almighty, but rather one of His works, the modality of which is unknown to us.

---

1 Kitab al-Asma' wa al-Sifat by al-Bayhaqi, Chapter on what came regarding the saying of Allah Almighty: "The Most Merciful rose over the Throne", Al-Maktabah al-Athariyyah, Sangla Hill, Sheikhupura, 4/152.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 29

सृष्टि के अध्याय में यह मुहावरा है जिनमें उठना और बैठना सब संभव है, तो सृष्टिकर्ता (अल्लाह) अज़्ज़वजल के बारे में इससे - अल्लाह की पनाह - वास्तविक बैठना समझ लेना कैसा स्पष्ट अन्याय है।

बिंदु 37: सूरह आराफ़ के मुआलिम (तफ़्सीर) का बयान तो यह था कि अहले सुन्नत का तरीक़ा ख़ामोशी (सकूत) है, वे बस इतना जानते हैं कि इस्तेवा (Istiwa) अल्लाह तआला की एक सिफ़त है और इसके अर्थ का ज्ञान अल्लाह के सुपुर्द है, यह सलफ़ सालेहीन (पुण्य पूर्वजों) का तरीक़ा था। सूरह राद में इस्तेवा की व्याख्या 'उच्चता' (उलूव) से की गई। ये वे दूसरे अर्थ हैं जो ऊपर गुज़रे।

बिंदु 38: इमाम बैहक़ी ने 'किताबुल अस्मा' में इस्तेवा के बारे में पूर्ववर्ती इमामों का वह पंथ बयान किया जिसका ज़िक्र ऊपर गुज़रा। फिर फ़रमाया:

[अरबी कॉलम]: और अबू अल-हसन अली बिन इस्माइल अल-अशअरी इस विचार पर गए कि अल्लाह तआला, उसकी प्रशंसा बुलंद है, उसने अर्श में एक कार्य किया जिसका नाम उसने इस्तेवा रखा, जैसे उसने दूसरों में एक कार्य किया जिसका नाम रिज़्क़ या नेमत या उसके अन्य कार्यों में से रखा। फिर उसने इस्तेवा की कोई गुणवत्ता (कैफ़ियत) बयान नहीं की, सिवाय इसके कि उसने इसे कार्यों की विशेषताओं (सिफ़ात-ए-फ़ेल) में से बनाया क्योंकि अल्लाह तआला का फरमान है "फिर वह अर्श पर मुस्तवी हुआ", और 'फिर' (सुम्मा) अंतराल (ताराख़ी) के लिए है, और अंतराल केवल कार्यों में होता है, और अल्लाह तआला के कार्य बिना उसके सीधे संपर्क या गति के होते हैं। 1

[उर्दू कॉलम]: यानी अहले सुन्नत के इमाम इमाम अबुल हसन अशअरी ने फ़रमाया कि अल्लाह अज़्ज़वजल ने अर्श के साथ कोई कार्य (फ़ेल) फ़रमाया है जिसका नाम इस्तेवा रखा है, जैसे मुझ और आप, ज़ैद और अम्र के साथ कार्य फ़रमाए और उनका नाम रिज़्क़ (रोज़ी) और नेमत आदि रखा। इस इस्तेवा के कार्य की गुणवत्ता (कैफ़ियत) हम नहीं जानते, इतना ज़रूर है कि उसके कार्यों में सृष्टि के साथ मिलना, छूना, उनसे लगा हुआ होना या गति करना नहीं है जैसे बैठने, चढ़ने आदि में होता है। और इस्तेवा के कार्य होने पर प्रमाण यह है कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया "फिर उसने अर्श पर इस्तेवा फ़रमाया", तो मालूम हुआ कि इस्तेवा उत्पन्न (हादिस) है, पहले न था और उत्पन्न होना कार्यों में हो सकता है। अल्लाह तआला की ज़ाती (मौलिक) सिफ़तें उत्पन्न होने से पाक हैं। तो साबित हुआ कि इस्तेवा अल्लाह तआला की कोई ज़ाती सिफ़त नहीं है बल्कि उसके कामों में से एक काम है जिसकी गुणवत्ता हमें मालूम नहीं।

1 किताबुल अस्मा वस्सिफ़ात लिल-बैहक़ी, अध्याय: अल्लाह तआला के इस क़ौल के बारे में जो आया है "रहमान अर्श पर इस्तेवा फ़रमाया", अल-मकतबतुल असरिय्यह, सांगला हिल, शेखूपुरा, 4/152.

خلق کے باب میں یہ محاورہ ہے جن کا اٹھنا بیٹھنا سب ممکن ، تو خالق عزوجل کے بارے میں اس سے معاذ اللہ حقیقۃ بیٹھنا سمجھ لینا کیسا ظلم صریح ہے۔

ضرب ۳۷: معالم سورہ اعراف کا بیان تو وہ تھا کہ اہلسنت کا طریقہ سکوت ہے اتنا جانتے ہیں کہ استواء اللہ تعالیٰ کی ایک صفت ہے اور اس کے معنی کا علم اللہ کے سپرد ہے، یہ طریقہ سلف صالحین تھا، سورہ رعد میں استواء کو علو سے تاویل کیا۔ یہ معنی دوم ہیں کہ اوپر گزرے۔

ضرب ۳۸: امام بیہقی نے کتاب الاسماء میں درباره استواء ائمہ متقدمین کا وہ مسلک ارشاد فرمایا جس کا بیان اوپر گزرا۔ پھر فرمایا:

[عربی کالم]: وذهب ابو الحسن علی بن اسمعیل الاشعری الی ان اللہ تعالی جل ثناؤه فعل فی العرش فعلا سماه استواء کما فعل فی غیره فعلا سماه رزقا او نعمة او غیرهما من افعاله ثم لم یکیف الاستواء الا انه جعله من صفات الفعل لقوله تعالی ثم استوی علی العرش وثم للتراخی والتراخی انما یکون فی الافعال وافعال اللہ تعالی توجد بلا مباشرة منه ایاها ولا حرکة۔ 1

[اردو کالم]: یعنی امام اہلسنت امام ابوالحسن اشعری نے فرمایا کہ اللہ عزوجل نے عرش کے ساتھ کوئی فعل فرمایا ہے جس کا نام استواء رکھا ہے جیسے من و تو زید و عمرو کے ساتھ افعال فرمائے اور ان کا نام رزق و نعمت وغیرہ رکھا اس فعل استواء کی کیفیت ہم نہیں جانتے اتنا ضرور ہے کہ اس کے افعال میں مخلوق کے ساتھ ملنا، چھونا، ان سے لگا ہوا ہونا یا حرکت کرنا نہیں جیسے بیٹھنے چڑھنے وغیرہ میں ہے اور استواء کے فعل ہونے پر دلیل یہ ہے کہ اللہ تعالیٰ نے فرمایا پھر عرش پر استواء کیا تو معلوم ہوا کہ استواء حادث ہے پہلے نہ تھا اور حدوث افعال میں

ہو سکتا ہے اللہ تعالیٰ کی صفات ذات حدوث سے پاک ہیں ، تو ثابت ہوا کہ استواء اللہ تعالیٰ کی کوئی صفت ذاتی نہیں بلکہ اس کے کاموں میں سے ایک کام ہے جس کی کیفیت ہمیں معلوم نہیں۔

---

1 کتاب الاسماء والصفات للبیھقی باب ماجاء فی قول اللہ تعالی الرحمن علی العرش استوی المکتبۃ الاثریہ سانگلہ ہل شیخو پورہ ۴/ ۱۵۲

Volume 29 | Fatawa Rizwia

Point 39: Narrated from Abul Hasan Ali bin Muhammad Tabari and other leading theologians:

Arabic Text

The Ancient (Allah), Glory be to Him, is High over His Throne, not sitting, nor standing, nor touching, nor separate from the Throne. By "separation," he means the separation of essence which implies distance or isolation, because touching and separation (which is its opposite), as well as standing and sitting, are characteristics of bodies. Allah Almighty is One, Eternal, He begets not, nor is He begotten, and there is none co-equal or comparable to Him. Therefore, what is permissible for bodies is not permissible for Him, Blessed and Exalted is He.[1]

Urdu Translation

The Lord Almighty has loftiness over the Throne, but He is neither sitting on it nor standing, nor attached to it, nor separate from it in the sense that He is at one edge or far away. To be attached, separate, rising, or sitting are qualities of a physical body. Allah Almighty is One and Eternal; He neither begot nor was begotten, nor has any peer. Thus, attributes that are possible for physical bodies are not possible for Allah Almighty.

Point 40: Imam Ustad Abu Bakr bin Furak narrated from certain Imams of the Ahl al-Sunnah:

Arabic Text

"Istawa" means He is High, and he does not mean by that height of distance, localization, or being in a place firmly established in it. Rather, he means the meaning of the words of Allah Almighty, "Are you secure from Him who is in the heaven," meaning from above it, in the sense of denying any limit for Him, and that He is not something that layers contain or borders surround.[2]

Urdu Translation

That is, "Istawa" means loftiness, and it does not mean height of distance or being in a place. Rather, it means that He is pure from limits and ends; no layer of the Throne or earth can encompass Him, nor can any place surround Him. With this meaning, He is mentioned in the Great Quran as being above the heaven, meaning He is so High and Exalted that He cannot be contained within the heaven.

Imam Bayhaqi says:

| I say: and He is upon this path from... | Result: That according to this method, Istawa is among the Attributes of the Essence. |

[1] Kitab al-Asma' wa al-Sifat by al-Bayhaqi, Chapter on what has been narrated regarding the words of Allah the Exalted "The Most Merciful rose over the Throne," Al-Maktabah al-Athariyyah, Sangla Hill, Sheikhupura 2/152 [2] Kitab al-Asma' wa al-Sifat by al-Bayhaqi, Chapter on what has been narrated regarding the words of Allah the Exalted "The Most Merciful rose over the Throne," Al-Maktabah al-Athariyyah, Sangla Hill, Sheikhupura 2/152-153

ज़र्ब ३९: अबुल हसन अली बिन मुहम्मद तबरी और अन्य प्रमुख धर्मशास्त्रियों से उद्धृत किया गया है:

अरबी पाठ

अल्लाह सुब्हानहु व तआला अर्श पर बुलंदी रखता है, न बैठा है, न खड़ा है, न स्पर्श करने वाला है और न ही अर्श से अलग है। इससे उसका तात्पर्य उस ज़ाती अलगाव से है जो दूरी या पृथकता के अर्थ में हो, क्योंकि स्पर्श करना और अलग होना (जो एक-दूसरे के विपरीत हैं) और खड़ा होना और बैठना शरीरों की विशेषताएँ हैं। और अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल एक है, बेनियाज़ है, न वह किसी का पिता है और न ही किसी की संतान, और न ही उसके बराबर कोई है। अत; जो बातें शरीरों के लिए अनुमेय हैं, वे अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल पर लागू नहीं हो सकतीं।[1]

उर्दू अनुवाद

मौला तआला अर्श पर बुलंदी रखता है मगर न उस पर बैठा है न खड़ा, न उससे लगा हुआ न इस अर्थ में अलग कि उससे एक किनारे पर हो या दूर हो क्योंकि सटना, अलग होना और उठना-बैठना तो शरीर की विशेषताएं हैं और अल्लाह तआला एक और बेनियाज़ है, न जना न जना गया, न उसके जोड़ का कोई, तो जो बातें शरीरों पर जायज़ हैं वे अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल पर जायज़ नहीं हो सकतीं।

ज़र्ब ४०: इमाम उस्ताद अबू बक्र बिन फुरक से वर्णित है कि उन्होंने अहले सुन्नत के कुछ इमामों से उल्लेख किया:

अरबी पाठ

इस्तवा का अर्थ बुलंदी है और इससे उसका तात्पर्य दूरी वाली ऊंचाई, या स्थान में स्थित होना नहीं है। बल्कि उसका अर्थ अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल के इस कथन का अर्थ है: "क्या तुम उससे सुरक्षित हो जो आसमान में है," यानी उसके ऊपर, इस अर्थ में कि उससे सीमाओं का निषेध हो और यह कि वह ऐसी चीज़ नहीं है जिसे कोई परत समेट ले या कोई क्षेत्र घेर ले।[2]

उर्दू अनुवाद

यानी इस्तवा का अर्थ बुलंदी है और इससे दूरी की बुलंदी या स्थान में होना मुराद नहीं बल्कि यह कि वह सीमाओं और अंत से पवित्र है, अर्श व फर्श की कोई परत उसे घेर नहीं सकती न कोई स्थान उसे घेरे, इसी अर्थ पर क़ुरान अज़ीम में उसे आसमान के ऊपर फ़रमाया, यानी इससे बुलंद व बाला है कि आसमान में समा सके।

इमाम बैहक़ी फ़रमाते हैं:

| मैं कहता हूँ: और वह इसी रास्ते पर है... | हासिल यह कि इस तरीके पर इस्तवा ज़ाती सिफ़ात में से है। |

---

[1] किताब अल-अस्मा व अल-सिफ़ात, बैहक़ी, अध्याय: अल्लाह का कथन "रहमान अर्श पर इस्तवा फ़रमाया", अल-मकतबा अल-असरिया, सांगला हिल, शेखूपुरा, २/ १५२ [2] किताब अल-अस्मा व अल-सिफ़ात, बैहक़ी, अध्याय: अल्लाह का कथन "रहमान अर्श पर इस्तवा फ़रमाया", अल-मकतबा अल-असरिया, सांगला हिल, शेखूपुरा, २/ १५२- १५३

ضرب ۳۹: ابوالحسن علی بن محمد طبری وغیرہ ائمہ متکلمین سے نقل فرمایا:

عربی متن	اردو متن
القدیم سبحنہ عال علی عرشہ لا قاعد ولا قائم ولا مماس و لامباین عن العرش، یرید بہ مباینۃ الذات التی ھی بمعنی الاعتزال او التباعد لان المماسۃ و المباینۃ التی ھی ضدھا والقیام والقعود من اوصاف الاجسام۔ واللہ عزوجل احد صمد لم یلد ولم یولد ولم یکن لہ کفوا احد، فلا یجوز علیہ ما یجوز علی الاجسام تبارک و تعالی۔[1]	مولیٰ تعالیٰ عرش پر علو رکھتا ہے مگر نہ اُس پر بیٹھا ہے نہ کھڑا، نہ اس سے لگا ہوا نہ اس معنیٰ پر جُدا کہ اس سے ایک کنارے پر ہو یا دور ہو کہ لگایا الگ ہونا اور اٹھنا بیٹھنا تو جسم کی صفتیں ہیں اور اللہ تعالیٰ احد صمد ہے، نہ جنا نہ جنا گیا، نہ اس کے جوڑ کا کوئی، تو جو باتیں اجسام پر روا ہیں اللہ عزوجل پر روا نہیں ہو سکتیں۔

ضرب ۴۰: امام استاذ ابو بکر بن فورک سے نقل فرمایا کہ انہوں نے بعض ائمہ اہلسنت سے حکایت کی:

عربی متن	اردو متن
استوی بمعنی علا ولا یرید بذلک علوا بالمسافۃ و التحیز والکون فی مکان متمکنا فیہ ولکن یرید معنی قول اللہ عزوجلء امنتم من فی السماء ای من فوقھا علی	یعنی استواء بمعنی علو ہے اور اس سے مسافت کی بُلندی یا مکان میں ہونا مراد نہیں بلکہ یہ کہ وہ حد و نہایت سے پاک ہے، عرش و فرش کا کوئی طبقہ اُسے محیط نہیں ہو سکتا نہ کوئی مکان اسے گھیرے، اسی

عربی متن	اردو متن
معنی نفی الحد عنه وانه لیس مما یحویه طبق او یحیط به قطر۔[2]	معنی پر قرآن عظیم میں اُسے آسمان کے اوپر فرمایا، یعنی اس سے بلند و بالا ہے کہ آسمان میں سما سکے۔

امام بیہقی فرماتے ہیں:

| قلت و هو علی هذه الطریقة من | حاصل یہ کہ اس طریقہ پر استواء صفاتِ ذات |

---

[1] کتاب الاسماء والصفات للبیہقی باب ماجاء فی قول اللہ تعالی الرحمن علی العرش استویٰ المکتبة الاثریة سانگلہ ہل شیخوپورہ ۲/ ۱۵۲ [2] کتاب الاسماء والصفات للبیہقی باب ماجاء فی قول اللہ تعالی الرحمن علی العرش استویٰ المکتبة الاثریة سانگلہ ہل شیخوپورہ ۲/ ۱۵۲۔ ۱۵۳

Volume 29 | Fatawa Razawiyya

(Arabic Text) The attributes of Essence and the word 'then' (thumma) relate to that which is 'istiwa' upon, not to the 'istiwa' itself. It is like the saying of Allah, the Mighty and Sublime, "Then Allah is a witness over what they do," meaning that their actions occur and then He witnesses them. Abu al-Hasan Ali bin Ismail pointed to this method through narration, saying: Some of our companions said it is an attribute of the Essence, and it is not said He has always been 'mustawi' upon His Throne, just as knowledge that things have occurred is among the attributes of Essence, and it is not said He has always known that they have occurred when they have not yet occurred.

(Urdu Text) This means that Allah, Glory be to Him, is inherently transcendent above all His creation. This transcendence is not of place, but rather of dominion and authority. The word 'then' (phir) refers to the creation of the Throne, as that inherent transcendence relates to every created thing after its creation, just as mentioned in the Great Quran: "Then Allah is a witness over their actions," meaning when their actions were created, the Divine witnessing related to them. Similarly, Divine knowledge is eternal, but the knowledge that a thing has occurred will only relate to it after its occurrence. It cannot be said that He knew in eternity that things had already been created while they were still non-existent.

Strike 41: Then it was narrated from the Imam of Ahl al-Sunnah (may his secret be sanctified):

(Arabic Text) My answer is the first one: Allah is 'mustawi' upon His Throne, and He is above all things, separate from them, in the sense that things do not dwell in Him, nor does He dwell in them, nor does He touch them, nor is He similar to them. This separation is not by way of isolation (spatial distance). Our Lord is exalted above indwelling, touching, distance, and isolation, a great exaltation.

(Urdu Text) My view is the first one: Allah, the Mighty and Sublime, performed the act of 'istiwa' with the Throne. And not just the Throne, He is above all things and distinct from all, meaning that things do not permeate Him nor does He permeate them. He does not touch them, nor does He bear any resemblance to them. This separation does not mean that Allah the Almighty is at one side of the things. Our Lord is far above indwelling, physical contact, distance, and isolation; He is Exalted and Sublime.

(Bottom text) See how the Imams of Ahl al-Sunnah are uprooting the notions of sitting, ascending, and staying.

Footnotes: [1] Kitab al-Asma' wa al-Sifat by al-Bayhaqi, Chapter on what was narrated regarding the words of Allah the Almighty "The Most Merciful rose over the Throne," al-Maktabah al-Athariyyah, Sangla Hill, Sheikhupura, 2/153. [2] Kitab al-Asma' wa al-Sifat by al-Bayhaqi, Chapter on what was narrated regarding the words of Allah the Almighty "The Most Merciful rose over the Throne," al-Maktabah al-Athariyyah, Sangla Hill, Sheikhupura, 2/154.

(अरबी पाठ) सत्ता के गुण और शब्द 'तथा' (सुम्मा) उस पर संबंधित हैं जिस पर 'इस्तिवा' है, न कि स्वयं 'इस्तिवा' पर। यह अल्लाह, पराक्रमी और प्रतापी के इस कथन के समान है: "फिर अल्लाह उनके कार्यों का गवाह है," जिसका अर्थ है कि उनके कार्य होते हैं और फिर वह उन्हें देखता है। अबू अल-हसन अली बिन इस्माइल ने वर्णन के माध्यम से इस पद्धति की ओर इशारा किया, कहा: हमारे कुछ साथियों ने कहा कि यह सत्ता का एक गुण है, और यह नहीं कहा जाता कि वह हमेशा से अपने सिंहासन पर 'मुस्तवी' रहा है, जैसे कि चीजों के होने का ज्ञान सत्ता के गुणों में से है, और यह नहीं कहा जाता कि वह हमेशा से जानता था कि वे हो चुकी हैं जब वे अभी तक नहीं हुई थीं।

(उर्दू पाठ) इसका अर्थ यह होगा कि अल्लाह सुब्हानहू स्वयं अपनी समस्त सृष्टि से उच्च और श्रेष्ठ है। यह उच्चता स्थान की नहीं, बल्कि प्रभुत्व और अधिकार की है। 'फिर' (सुम्मा) शब्द सिंहासन की उत्पत्ति की दृष्टि से होगा कि वह व्यक्तिगत उच्चता प्रत्येक उत्पन्न वस्तु से उसकी उत्पत्ति के बाद संबंधित होती है, जैसा कि महान कुरान में फरमाया गया है: "फिर अल्लाह उनके कार्यों पर गवाह है," अर्थात जब उनके कार्य उत्पन्न हुए, तो दिव्य साक्षी उनसे संबंधित हुई। इसी तरह दिव्य ज्ञान प्राचीन (अनादि) है, लेकिन यह ज्ञान कि कोई चीज़ उत्पन्न हो गई है, उसकी उत्पत्ति के बाद ही संबंधित होगा। यह नहीं कहा जा सकता कि वह अनादि काल में जानता था कि चीजें उत्पन्न हो चुकी हैं जबकि वे अभी भी अस्तित्वहीन थीं।

चोट 41: फिर इमाम अहले सुन्नत (उनका रहस्य पवित्र हो) से उद्धृत किया गया:

(अरबी पाठ) मेरा उत्तर पहला वाला है: अल्लाह अपने सिंहासन पर 'मुस्तवी' है, और वह सभी चीजों से ऊपर है, उनसे अलग है, इस अर्थ में कि चीजें उसमें वास नहीं करतीं, न ही वह उनमें वास करता है, न वह उन्हें स्पर्श करता है, न ही वह उनके समान है। यह अलगाव दूरी (स्थानिक दूरी) के माध्यम से नहीं है। हमारा रब वास करने, स्पर्श करने, दूरी और अलगाव से बहुत ऊपर है, बहुत बड़ी श्रेष्ठता वाला।

(उर्दू पाठ) मेरा विचार वही पहला है कि अल्लाह अज़्ज़-व-जल्ल ने अर्श (सिंहासन) के साथ इस्तिवा का कार्य किया। और केवल अर्श ही क्या, वह सभी चीजों से ऊपर और सबसे अलग है, इस अर्थ में कि न तो चीजें उसमें समाती हैं और न वह उनमें, न वह उन्हें स्पर्श करता है और न उनसे कोई समानता

रखता है। और यह अलगाव ऐसा नहीं है कि अल्लाह तआला चीजों के एक किनारे पर हो। हमारा रब हलूल (समा जाना), स्पर्श, दूरी और अलगाव से बहुत ऊंचा है, वह प्रतापी और उच्च है।

(निचला पाठ) देखें कि अहले सुन्नत के इमाम बैठने, चढ़ने और रुकने की धारणाओं की जड़ें कैसे काट रहे हैं।

पाद लेख: [1] किताब अल-अस्मा वल-सिफ़ात, बैहकी, अध्याय: अल्लाह तआला के इस कथन "रहमान अर्श पर मुस्तवी हुआ" के बारे में जो आया है, अल-मकतबा अल-असरिया, सांगला हिल, शेखूपुरा, 2/153। [2] किताब अल-अस्मा वल-सिफ़ात, बैहकी, अध्याय: अल्लाह तआला के इस कथन "रहमान अर्श पर मुस्तवी हुआ" के बारे में जो आया है, अल-मकतबा अल-असरिया, सांगला हिल, शेखूपुरा, 2/154।

(عربی عبارت) صفات الذات وکلمة ثم تعلقت بالمستوی علیه، لا بالاستواء وهو کقوله عزوجل ثم الله شهید علی ما یفعلون یعنی ثم یکون عملهم فیشهده وقد اشار ابو الحسن علی بن اسمعیل الی هذه الطریقة حکایة، فقال وقال بعض اصحابنا انه صفة ذات ولا یقال لم یزل مستویاً علی عرشه کما ان العلم بان الاشیاء قد حدثت من صفات الذات، ولا یقال لم یزل عالماً بان قد حدثت و لما حدثت بعد [1]۔

(اردو عبارت) سے ہوگا کہ اللہ سبحانہ بذاتہ اپنی تمام مخلوق سے بلند و بالا ہے، نہ بلندی مکان بلکہ بلندی مالکیت و سلطان، اور اب پھر کا لفظ نظر بحدوث عرش ہوگا کہ وہ بلندی ذاتی ہر حادث سے اس کے حدوث کے بعد متعلق ہوتی ہے جیسے قرآن عظیم میں فرمایا کہ پھر اللہ شاہد ہے ان کے افعال پر یعنی جب ان کے افعال پیدا ہوئے تو شہود الٰہی ان سے متعلق ہوا جس طرح علم الٰہی قدیم ہے مگر یہ علم کہ چیز حادث ہو گئی اس کے حدوث کے بعد ہی متعلق ہوگا یہ نہیں کہہ سکتے کہ وہ ازل میں جانتا تھا کہ اشیاء پیدا ہو چکیں حالانکہ ہنوز ناپیدا تھیں۔

ضرب ۴۱: پھر امام اہلسنت قدس سرہ سے نقل فرمایا:

(عربی عبارت) وجوابی هو الاول وهو ان الله مستوی علی عرشه وانه فوق الاشیاء بائن منها بمعنی انها لا تحله ولا یحلها ولا یمسها ولا یشبهها ولیست البینونة بالعزلة تعالی الله ربنا عن الحلول والمماسة علواً کبیراً [2]۔

(اردو عبارت) میرا قول وہی پہلا ہے کہ اللہ عزوجل نے عرش کے ساتھ فعل استواء کیا اور ایک عرش ہی کیا وہ تمام اشیاء سے بالا اور سب سے جدا ہے بایں معنی کہ نہ اشیاء اس میں حلول کریں نہ وہ ان میں، نہ وہ ان سے مس کرے نہ ان سے کوئی مشابہت رکھے، اور یہ جدائی نہیں کہ اللہ

تعالی اشیاء سے ایک کنارے پر ہو، ہمارا رب حلول و مس و فاصلہ و عزلت سے بہت بلند ہے، جل وعلا۔

دیکھو ائمہ اہلسنت بیٹھنے، چڑھنے، ٹھہرنے کی کیسی جڑ کاٹ رہے ہیں۔

حواشی: [1] کتاب الاسماء والصفات للبیھقی باب ما جاء فی قول اللہ تعالی الرحمن علی العرش استوی المکتبۃ الاثریۃ سانگلہ ہل شیخوپورہ ۲/ ۱۵۳ [2] کتاب الاسماء والصفات للبیھقی باب ما جاء فی قول اللہ تعالی الرحمن علی العرش استوی المکتبۃ الاثریۃ سانگلہ ہل شیخوپورہ ۲/ ۱۵۴

Fatawa Razawiyyah Volume 29

Point 42: Then it was narrated from Imam Ahl al-Sunnat:

[Arabic Box 1] "And some of our companions said that Istawa is an attribute of Allah Almighty which negates crookedness from Him." 1-

[Urdu translation of Box 1] Meaning, some Imams of Ahl al-Sunnat said that the meaning of the attribute of Istawa is that Allah Almighty is free from any crookedness.

I say: (I say, 'T') On this interpretation, Istawa would be among the negative attributes (Sifat-e-Salbiyyah), like 'Ghani' meaning not being dependent on anyone; similarly 'Mustawi' meaning there is no crookedness or deviation in him. And now 'Ala' will be for the location of permanence and will signify the same highness of dominion and authority. And 'Thumma' (then) is for sequence in mention, (T) as Allah the Almighty said: "Then he was of those who believed" 2 (Then he became among those who believe - T) and as Allah the Almighty said: "He created him from dust, then said to him, 'Be,' and he was." 3 (Created him from soil then said to him become, so he became - T). And Allah Almighty knows best.

Point 43: Then it was narrated from Imam Ustadh Abu Mansur ibn Abi Ayyub that he wrote to me:

[Arabic Box 2] "Indeed, many of the later companions of ours held that Istawa is subjugation (qahr) and dominance (ghalaba). Its meaning is that the Most Merciful dominated the Throne and subjugated it. The benefit of this is informing about His subjugation of His creations, and that they did not subjugate Him. The Throne was specifically mentioned because it is the greatest of creations, so he pointed out the lower by mentioning the higher. He said: And Istawa meaning subjugation and dominance is common in the language, as it is said: 'So-and-so istawa over the region' when he dominated its people. And the poet said in..."

[Urdu translation of Box 2] Meaning, many later scholars of Ahl al-Sunnat moved towards the view that Istawa means subjugation and dominance. The meaning of the verse is that the Most Merciful (Rahman) Almighty is dominant over the Throne and its Subjugator. The benefit of this instruction is to inform that the Lord Almighty has control over all His creations, creations do not have control over Him. And the Throne was specifically mentioned because it is the largest of all creations in size; so by mentioning it, He cautioned about all the rest. And Istawa meaning subjugation and

dominance is common in the Arabic language. Then he presented examples from prose and poetry that...

---

1 Kitab al-Asma wa al-Sifat by al-Bayhaqi, chapter on what was mentioned regarding the words of Allah Almighty 'The Most Merciful istawa over the Throne', Al-Maktabat al-Athariyyah, Sangla Hill, Sheikhupura, 2/153 2 Al-Quran al-Karim 90/17 3 Al-Quran al-Karim 3/59

फतावा रज़विया जिल्द २९

बिंदु ४२: फिर इमाम अहले सुन्नत से नक़ल किया गया:

[अरबी बॉक्स १] "और हमारे कुछ साथियों ने कहा कि इस्तिवा अल्लाह तआला का एक गुण है जो उससे टेढ़ेपन की नफ़ी करता है।" १-

[बॉक्स १ का उर्दू अनुवाद] यानी कुछ अहले सुन्नत के इमामों ने फरमाया कि सिफत-ए-इस्तिवा का अर्थ है कि अल्लाह अज़्वजल टेढ़ेपन (कजी) से पाक है।

मैं कहता हूँ: (मैं कहता हूँ, त) इस व्याख्या पर इस्तिवा सिफत-ए-सल्बिया (नकारात्मक गुणों) में से होगा जैसे 'ग़नी' यानी किसी का मोहताज नहीं, वैसे ही 'मुस्तवी' यानी उसमें कजी और टेढ़ापन नहीं। और अब 'अला' मुस्तक़र (ठहराव के स्थान) के लिए होगा और उसी सल्तनत और प्रभुत्व की ऊँचाई का बोध कराएगा। और 'थुम्मा' (फिर) ज़िक्र में क्रम के लिए है, (त) जैसे अल्लाह तआला का फरमान है: "फिर वह ईमान वालों में से हुआ" २ (फिर ईमान वालों में हुआ - त) और अल्लाह तआला का फरमान है: "उसे मिट्टी से पैदा किया फिर उसे फरमाया हो जा, तो वह हो गया।" ३ (उसे मिट्टी से पैदा किया फिर उसे फरमाया हो जा, तो वह हो गया - त)। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

बिंदु ४३: फिर इमाम उस्ताद अबू मंसूर इब्न अबी अय्यूब से नक़ल किया गया कि उन्होंने मुझे लिख भेजा:

[अरबी बॉक्स २] "बेशक हमारे बहुत से बाद के साथियों ने यह माना कि इस्तिवा का अर्थ कहर और ग़लबा (दबदबा और प्रभुत्व) है। इसका अर्थ है कि रहमान ने अर्श पर ग़लबा पाया और उसे वश में किया। इसका लाभ उसकी ममलुकात (सृष्टि) पर उसके कहर की सूचना देना है, और यह कि उन्होंने उसे वश में नहीं किया। अर्श का उल्लेख विशेष रूप से इसलिए किया गया क्योंकि यह सबसे बड़ी सृष्टि है, अतः उच्च का उल्लेख करके निम्न की ओर संकेत किया गया। उन्होंने कहा: और भाषा में कहर और ग़लबा के अर्थ में इस्तिवा का प्रयोग आम है, जैसे कहा जाता है: 'अमुक व्यक्ति क्षेत्र पर मुस्तवी हो गया' जब उसने वहां के लोगों पर प्रभुत्व पा लिया। और कवि ने कहा..."

[बॉक्स २ का उर्दू अनुवाद] यानी बहुत से बाद के अहले सुन्नत के उलेमा इस ओर गए कि इस्तिवा कहर और ग़लबा के अर्थ में है। आयत का अर्थ यह है कि रहमान अज़्वजल अर्श पर ग़ालिब और उसका क़ाहिर है। और इस निर्देश का लाभ यह बताना है कि मौला तआला अपनी तमाम ममलुकात

पर काबू रखता है, ममलुकात का उस पर काबू नहीं। और अर्श का विशेष ज़िक्र इसलिए फरमाया कि वह आकार में तमाम ममलुकात से बड़ा है, तो उसके ज़िक्र से बाकी सब पर सचेत कर दिया। और अरबी भाषा में कहर और ग़लबा के अर्थ में इस्तिवा का प्रयोग आम है। फिर नस्र (गद्य) और नज़्म (पद्य) से उसके उदाहरण प्रस्तुत किए कि...

---

१ किताबुल अस्मा वस्सफ़ात लिल-बयहक़ी, बाब मा जाअ फी क़ौल्लिल्लाहि तआला अर्रहमानु अलल अर्श इस्तवा, अल-मक्तबतु अल्स्रिया सांगला हिल, शेखूपुरा, २/१५३ २ अल-कुरान अल-करीम ९०/१७ ३ अल-कुरान अल-करीम ३/५९

पृष्ठ ७५० का १४७

فتاوٰی رضویہ جلد ۲۹

ضرب ۴۲: پھر امام اہلسنت سے نقل فرمایا:

[Arabic Box 1] وقد قال بعض اصحابنا ان الاستواء صفة الله تعالی ینفی الاعوجاج عنه ۱-

[Urdu translation of Box 1] یعنی بعض ائمہ اہلسنت نے فرمایا کہ صفت استواء کے معنی ہیں کہ اللہ عزوجل کجی سے پاک ہے۔

اقول: (میں کہتا ہوں، ت) اس تقدیر پر استواء صفات سلبیہ سے ہو گا جیسے غنی یعنی کسی کا محتاج نہیں، یونہی مستوی یعنی اس میں کجی اور اعوجاج نہیں، اور اب علیٰ ظرفِ مستقر ہو گا اور اسی علو ملک و سلطان کا مفید، اور ثُم تراخی فی الذکر کے لیے، (ت) کقوله تعالی: "ثُمَّ كَانَ مِنَ الَّذِينَ آمَنُوا" ۲ (پھر ایمان والوں میں ہوا ت) وقولہ تعالی: "خَلَقَهُ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ قَالَ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ" ۳ (اس کو مٹی سے پیدا کیا پھر اس کو فرمایا ہو جا، تو وہ ہو گیا ت) واللہ تعالیٰ اعلم۔

ضرب ۴۳: پھر امام استاذ ابو منصور ابن ابی ایوب سے نقل فرمایا کہ انہوں نے مجھے لکھ بھیجا:

[Arabic Box 2] ان کثیرا من متاخری اصحابنا ذهبوا الی ان الاستواء هو القهر والغلبة، و معناه ان الرحمن غلب العرش و قهره، وفائدته الاخبار عن قهره مملوکاته، و انها لم تقهره و انما خص العرش بالذکر لانه اعظم المملوکات فنبه بالاعلی علی الادنی، قال والاستواء بمعنی القهر و الغلبة شائع في اللغة کما یقال استوی فلان علی الناحیة اذا غلب اهلها وقال الشاعر في

[Urdu translation of Box 2] یعنی بہت متاخرین علمائے اہل سنت اس طرف گئے کہ استواء بمعنی قہر و غلبہ ہے، آیت کے معنی یہ ہیں کہ رحمن عزوجل عرش پر غالب اور اس کا قاہر ہے، اور اس ارشاد کا فائدہ یہ خبر دینا ہے کہ مولیٰ تعالیٰ اپنی تمام مملوکات پر قابو رکھتا ہے

مملوکات کا اس پر قابو نہیں اور عرش کا خاص ذکر اس لیے فرمایا کہ وہ جسامت میں سب مملوکات سے بڑا ہے، تو اس کے ذکر سے باقی سب پر تنبیہ فرمادی اور استواء بمعنی قہر و غلبہ زبان عرب میں شائع ہے۔ پھر نثر و نظم سے اس کی نظیریں پیش کیں کہ

---

۱ کتاب الاسماء والصفات للبیهقی باب ماجاء فی قول الله تعالی الرحمن علی العرش استوی المکتبة الاثریة سانگلہ ہل شیخوپورہ ۲/ ۱۵۳ ۲ القرآن الکریم ۹۰ / ۱۷ ۳ القرآن الکریم ۳ / ۵۹

Fatawa Razawiyya Volume 29

Bishr bin Marwan.

[Arabic]: Bishr ascended over Iraq, without a sword or shed blood. He meant that he overcame its people without fighting. - 1 [Urdu]: When someone prevails over the people of a town, it is said 'so-and-so astawa (ascended) over the region.' And the poet said about Bishr bin Marwan: Truly Bishr prevailed over Iraq without shedding blood with a sword; the poet's meaning is that he prevailed over the people of the town without waging war. (T)

O misguided Wahhabis! Did you see how your own presented books have punished you for your actions? But where is your shame!

Second Slap: The ignorant fool babbled that Allah Almighty's encompassment is only in terms of knowledge. In doing so, he also denied Allah Almighty's power, became blind to Allah Almighty's attribute of sight, went against his own relied-upon books, and created contradiction and disagreement with his own absurd writing. Listen to the reasons.

Argument 44: Allah Almighty said: [Arabic]: "Unquestionably, they are in doubt about the meeting with their Lord. Unquestionably, He is, of all things, encompassing." 2 [Urdu]: Listen, they are in doubt about meeting their Lord; listen, God encompasses everything.

Argument 45: Allah Almighty said: [Arabic]: "And ever is Allah, of all things, encompassing." 3 [Urdu]: Allah encompasses everything.

Argument 46: Allah Almighty said: [Arabic]: "And Allah, from behind them, is encompassing." 4 [Urdu]: Allah encompasses them from all sides.

In these three verses, Allah Almighty is described as encompassing (Muhit). The verse regarding the encompassment of knowledge is separate.

1 Kitab al-Asma' wa al-Sifat by al-Bayhaqi, Chapter on what has been narrated regarding Allah Almighty's saying 'The Most Merciful ascended over the Throne', Al-Maktaba al-Athariyya, Sangla Hill, Sheikhupura, 2/153. 2 The Holy Quran 41/54 3 The Holy Quran 4/126 4 The Holy Quran 85/20

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

बिश्र बिन मरवान।

[अरबी]: बिश्र इराक पर हावी हो गया, बिना तलवार या खून बहाए। उसका मतलब है कि उसने बिना लड़ाई के वहां के लोगों पर विजय प्राप्त की। - 1 [उर्दू]: जब कोई व्यक्ति किसी बस्ती के लोगों पर हावी हो जाता है, तो कहा जाता है "फलां उस क्षेत्र पर हावी हो गया"। और कवि ने बिश्र बिन मरवान के बारे में कहा: वास्तव में बिश्र तलवार से खून बहाए बिना इराक पर हावी हो गया; कवि का अर्थ यह है कि वह युद्ध किए बिना बस्ती वालों पर हावी हो गया। (त)

गुमराह वहाबियों! तुमने देखा कि तुम्हारी ही पेश की गई किताबों ने तुम्हें तुम्हारे कर्मों की क्या सज़ा दी, लेकिन तुम्हें हया (शर्म) कहाँ!

दूसरा तमाचा: जाहिल बेवक़ूफ़ ने बक दिया कि अल्लाह तआला का घेरा (अहाता) केवल ज्ञान (इल्म) के लिहाज़ से है। ऐसा कहकर उसने अल्लाह तआला की शक्ति (कुदरत) का भी इंकार किया, अल्लाह अज़्ज़वजल के देखने के गुण (सिफत-ए-बसर) से भी अंधा हो गया, अपनी ही भरोसेमंद किताबों के खिलाफ गया, और अपनी ही बेतुकी तहरीर (लेखन) से विरोधाभास और मतभेद पैदा किया। कारण सुनिए।

दलील 44: अल्लाह तआला ने फरमाया: [अरबी]: "सुनो, वे अपने रब से मिलने में संदेह में हैं। सुनो, वह हर चीज़ को घेरे हुए है।" 2 [उर्दू]: सुनो, वे अपने रब से मिलने के बारे में शक में हैं; सुनो, खुदा हर चीज़ को घेरे हुए है।

दलील 45: अल्लाह तआला ने फरमाया: [अरबी]: "और अल्लाह हर चीज़ को घेरे हुए है।" 3 [उर्दू]: अल्लाह हर चीज़ को घेरे हुए है।

दलील 46: अल्लाह तआला ने फरमाया: [अरबी]: "और अल्लाह उनके पीछे से उन्हें घेरे हुए है।" 4 [उर्दू]: अल्लाह उनके आसपास से उन्हें घेरे हुए है।

इन तीनों आयतों में अल्लाह अज़्ज़वजल को 'मुहीत' (घेरने वाला) बताया गया है, ज्ञान के घेरे (अहाता-ए-इल्म) की आयत अलग है।

1 किताब अल-असमा वाल-सिफात लिल-बयहकी, अध्याय अल्लाह तआला के कौल 'अर-रहमान अलल-अर्श इस्तवा' के बारे में, अल-मकतबा अल-असरिया, सांगला हिल, शेखूपुरा, 2/153। 2 अल-कुरान अल-करीम 41/54 3 अल-कुरान अल-करीम 4/126 4 अल-कुरान अल-करीम 85/20

فتاوی رضویہ جلد ۲۹

بشر بن مروان۔

قد استوی بشر علی العراق من غیر سیف ودم مهراق یرید انه غلب اهله من غیر محاربة - 1 جب کوئی شخص کسی بستی والوں پر غالب آجائے تو کہا جاتا ہے استوی فلان علی الناحیۃ اور شاعر نے بشر بن مروان کے بارے میں کہا تحقیق بشر عراق پر غالب آگیا تلوار کے ساتھ خون بہائے بغیر، شاعر کی مراد یہ ہے کہ وہ جنگ کیے بغیر بستی والوں پر غالب آگیا۔ (ت)

گمراہ وہابیو! تم نے دیکھا کہ تمہاری ہی پیش کردہ کتابوں نے تمہیں کیا سزائے کردار کو پہنچایا مگر تمہیں حیا کہاں!

دوسرا تپانچہ: جاہل بے خرد نے بک دیا کہ اللہ تعالیٰ کا احاطہ فقط ازروئے علم ہے اس میں اللہ تعالیٰ کی قدرت کا بھی منکر ہوا، اللہ عزوجل کی صفت بصر سے بھی بے بصر ہوا، اپنی مستندہ کتابوں کا بھی خلاف کیا، خود اپنی بے ہودہ تحریر سے بھی تناقض و اختلاف کیا۔ وجوہ سینئے۔

ضرب ۴۴ : قال اللہ تعالیٰ : "اَلَا اِنَّهُمْ فِیْ مِرْیَةٍ مِّنْ لِّقَآءِ رَبِّهِمْ ؕ اَلَآ اِنَّهٗ بِكُلِّ شَیْءٍ مُّحِیْطٌ" 2 سنتا ہے وہ شک میں ہیں اپنے رب سے ملنے سے، سنتا ہے خدا ہر چیز کو محیط ہے۔

ضرب ۴۵: قال اللہ تعالیٰ : "وَ كَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَیْءٍ مُّحِیْطًا" 3 اللہ ہر شے کو محیط ہے۔

ضرب ۴۶: قال اللہ تعالیٰ : "وَ اللّٰهُ مِنْ وَّرَآئِهِمْ مُّحِیْطٌ" 4 اللہ ان کے آس پاس سے محیط ہے۔

ان تینوں آیتوں میں اللہ عزوجل کو محیط بتایا ہے، احاطہ علم کی آیت جدا ہے۔

1 کتاب الاسماء والصفات للبیہقی باب ماجاء فی قول اللہ تعالی الرحمن علی العرش استوی المکتبۃ الاثریۃ سانگلہ ہل شیخوپورہ ۲ / ۱۵۳ 2 القرآن الکریم ۴۱ / ۵۴ 3 القرآن الکریم ۴ / ۱۲۶ 4 القرآن الکریم ۸۵ / ۲۰

"And that Allah has encompassed all things in knowledge." - 1 Indeed, the knowledge of Allah Almighty encompasses everything. (T)

Dharb 47: In the Rafi'iyya translation, it is mentioned: "Be aware, surely they are in doubt regarding the meeting with their Lord; be aware, surely He encompasses everything." - 2 Dharb 48: In the same source: "And Allah is with everything, encompassing [it]," - 3 Dharb 49: In the same source: "And Allah is encompassing them from behind." - 4 Dharb 50: In Mudih-ul-Quran, it is mentioned: "Listen, they are in delusion regarding the meeting with their Lord; listen, He encompasses everything." - 5 Dharb 51: In the same source, under the third verse, it says: "And Allah has encompassed from around them." - 6 Both of these authentic translators of yours have also attributed this encompassing to Allah Almighty Himself. Dharb 52: In the same source, under the second verse, it says: "Everything is in Allah's grasp. This encompassing is taken from the perspective of power." - 7 Dharb 53: In Jami' al-Bayan, under the first verse, it says:

1 Al-Quran al-Kareem 65 / 12 2 Translation Shah Rafiuddin Verse 41 / 54 Mumtaz Company Lahore p. 529, 530 3 Translation Shah Rafiuddin Verse 4 / 126 Mumtaz Company Lahore p. 109 4 Translation Shah Rafiuddin Verse 85 / 20 Mumtaz Company Lahore p. 65 5 Mudih-ul-Quran Translation and Commentary Shah Abdul Qadir 121 Taj Company Lahore p. 511 6 Mudih-ul-Quran Translation and Commentary Shah Abdul Qadir 121 Taj Company Lahore p. 716 7 Mudih-ul-Quran Translation and Commentary Shah Abdul Qadir 121 Taj Company Lahore p. 120

"और यह कि अल्लाह ने हर चीज़ को अपने ज्ञान से घेर रखा है।" - 1 बेशक अल्लाह तआला का इल्म (ज्ञान) हर चीज़ को घेरे हुए है। (त)

ज़र्ब 47: तर्जुमा रफ़ीया में है: "खबरदार हो जाओ, वे अपने रब की मुलाक़ात के बारे में शक में हैं; खबरदार, वह हर चीज़ को घेरे हुए है।" - 2 ज़र्ब 48: उसी में है: "और अल्लाह हर चीज़ के साथ घेरने वाला है," - 3 ज़र्ब 49: उसी में है: "और अल्लाह उनके पीछे से घेर रहा है।" - 4 ज़र्ब 50: मौज़िहुल क़ुरआन में है: "सुनो, वे अपने रब की मुलाक़ात के बारे में धोखे में हैं; सुनो, वह हर चीज़ को घेरे हुए है।" - 5 ज़र्ब 51: उसी में तीसरी आयत के तहत है: "और अल्लाह ने उनके चारों ओर से घेर रखा है।" - 6 आपके इन दोनों प्रामाणिक अनुवादकों ने भी इस घेराव (अहाता) का श्रेय स्वयं अल्लाह अज़्ज़-व-जल्ल को ही दिया है। ज़र्ब 52: उसी में दूसरी आयत के तहत है: "हर चीज़ अल्लाह के क़ब्ज़े (क़ुदरत) में है। यह घेराव क़ुदरत के नज़रिए से लिया गया है।" - 7 ज़र्ब 53: जामिउल बयान में पहली आयत के तहत है:

1 अल-क़ुरआन अल-करीम 65 / 12 2 तर्जुमा शाह रफ़ीउद्दीन आयत 41 / 54 मुमताज़ कंपनी लाहौर पृ. 529, 530 3 तर्जुमा शाह रफ़ीउद्दीन आयत 4 / 126 मुमताज़ कंपनी लाहौर पृ. 109 4 तर्जुमा शाह रफ़ीउद्दीन आयत 85 / 20 मुमताज़ कंपनी लाहौर पृ. 65 5 मौज़िहुल क़ुरआन तर्जुमा व तफ़सीर शाह अब्दुल क़ादिर 121 ताज कंपनी लाहौर पृ. 511 6 मौज़िहुल क़ुरआन तर्जुमा व तफ़सीर शाह अब्दुल क़ादिर 121 ताज कंपनी लाहौर पृ. 716 7 मौज़िहुल क़ुरआन तर्जुमा व तफ़सीर शाह अब्दुल क़ादिर 121 ताज कंपनी लाहौर पृ. 120

"وَاَنَّ اللّٰہَ قَدْ اَحَاطَ بِکُلِّ شَیْءٍ عِلْمًا" ۔ہ۱۔ بے شک اللہ تعالٰی کا علم ہر شئے کو محیط ہے۔ (ت)

ضرب ۴۷: ترجمہ رفیعیہ میں ہے: خبردار ہو تحقیق وہ بنچ شک کے ہیں ملاقات پروردگار اپنے کی سے، خبردار ہو تحقیق وہ ہر چیز کو گھیر رہا ہے۔ ۔ہ۲ ضرب ۴۸: اسی میں ہے۔ اور ہے اللہ ساتھ ہر چیز کے گھیرنے والا، ۔ہ۳ ضرب ۴۹: اُسی میں ہے: اور اللہ اُن کے پیچھے سے گھیر رہا ہے۔ ۔ہ۴ ضرب ۵۰: موضح القرآن میں ہے: سنتا ہے وہ دھوکے میں ہیں اپنے رب کی ملاقات سے، سُنتا ہے وہ گھیر رہا ہے ہر چیز کو۔ ۔ہ۵ ضرب ۵۱: اُسی میں زیر آیت ثالثہ ہے: اور اللہ نے اُن کے گرد سے گھیرا ہے۔ ۔ہ۶ ان دونوں تیرے مستند مترجموں نے بھی یہ احاطہ خود اللہ عزوجل ہی کی طرف نسبت کیا۔ ضرب ۵۲: اُسی میں زیر آیت ثانیہ ہے: اللہ کے ڈھب میں ہے، سب چیز۔ یہ احاطہ از روئے قدرت لیا۔ ۔ہ۷ ضرب ۵۳: جامع البیان میں زیر آیت اُولٰی ہے:

۱ القرآن الکریم ۶۵ / ۱۲ ۲ ترجمہ شاہ رفیع الدین آیۃ ۴۱ / ۵۴ ممتاز کمپنی لاہور ص ۵۲۹، ۵۳۰ ۳ ترجمہ شاہ رفیع الدین آیۃ ۴ / ۱۲۶ ممتاز کمپنی لاہور ص ۱۰۹ ۴ ترجمہ شاہ رفیع الدین آیۃ ۸۵ / ۲۰ ممتاز کمپنی لاہور ص ۶۵ ۵ موضح القرآن ترجمہ و تفسیر شاہ عبد القادر ۱۲۱ تاج کمپنی لاہور ص ۵۱۱ ۶ موضح القرآن ترجمہ و تفسیر شاہ عبد القادر ۱۲۱ تاج کمپنی لاہور ص ۷۱۶ ۷ موضح القرآن ترجمہ و تفسیر شاہ عبد القادر ۱۲۱ تاج کمپنی لاہور ص ۱۲۰

Fatawa Razawiyya - Volume 29

| Al-Kullu tahta 'ilmihi wa qudratih (1) | Meaning: Everything is under His knowledge and power. |

Point 54: Under the second verse: With His knowledge and His power. Allah encompasses [everything] from both the perspectives of knowledge and power. (2) Point 55: In Madarik Sharif, under the third verse, it is stated:

| Dhu 'alimun bi-ahwalihim wa qadirun 'alayhim wa hum la yu'jizunah (3) | Meaning: Allah is the Knower of their states and is powerful over them; they cannot render Him powerless. |

Point 56: In the Book of Names (Kitab al-Asma) it is stated:

| Al-Muheetu raji'un ila kamal il-'ilmi wal-qudrati (4) | The Divine Name 'Al-Muheet' refers back to the meanings of the perfection of knowledge and power. |

How completely did these authorities of yours invalidate the idea that encompassing is only from the perspective of knowledge. Point 57: The sight of Allah (Mighty and Majestic) is also encompassing, as He said:

| "Indeed He is All-Seeing of all things." (19) (5) | Allah Almighty is seeing everything. |

Point 58: His hearing (Sama') also encompasses all things.

| Kama haqaqahu 'Alim-e-Ahl-e-Sunnah Maddazillahu fi Manhiyat Subhan al-Subbuh. | As researched by the scholar of Ahl-e-Sunnah (may his shadow be extended) in the 'Manhiyat' of 'Subhan al-Subbuh'. (T) |

Point 59: Power (Qudrat) is also encompassing, He said:

| "Indeed, Allah is powerful over all things." (6) | Undoubtedly, Allah Almighty has power over every thing. (T) |

Point 60: Creativity (Khaliqiyat) is also encompassing, He said:

| "The Creator of all things; so worship Him." (7) | Allah Almighty is the Creator of everything, so worship Him alone. (T) |

---

1 Jami' al-Bayan li-Muhammad bin Abdul Rahman, Ayah 41/52, Dar Nashr al-Kutub al-Islamiyyah, Gujranwala, 2/252 2 Jami' al-Bayan li-Muhammad bin Abdul Rahman,

Ayah 41/52, Dar Nashr al-Kutub al-Islamiyyah, Gujranwala, 1/426 3 Madarik al-Tanzil (Tafsir al-Nasafi), Ayah 20/85, Dar al-Kitab al-Arabi, Beirut, 4/347 4 Kitab al-Asma was-Sifat lil-Bayhaqi, Chapters on mentioning the names followed in similitude etc., Al-Maktabah al-Athariyyah, Sangla Hill, Sheikhupura, 1/81 5 Al-Quran al-Karim 67/19 6 Al-Quran al-Karim 2/20, 2/106, 3/109, 3/128 etc. 7 Al-Quran al-Karim 6/102

| अल-कुल्लु तहता इल्मिही व कुदरतिह (1) | यानी: सब कुछ उसके ज्ञान और शक्ति के अधीन है। |

पॉइंट 54: दूसरी आयत के तहत है: अपने ज्ञान और अपनी शक्ति से। अल्लाह ज्ञान और शक्ति दोनों के लिहाज़ से घेरे हुए है। (2) पॉइंट 55: मदारिक शरीफ में तीसरी आयत के तहत है:

| जु आलिमुन बि-अहवालिहिम व क़ादिरुन अलैहिम व हुम ला युअ'जिज़ूनह (3) | यानी: अल्लाह उनके हालातों को जानने वाला है और उन पर क़ादिर है; वे उसे विवश नहीं कर सकते। |

पॉइंट 56: किताबुल अस्मा में है:

| अल-मुहीतु राजि'उन इला कमाल इल-इल्मि वल-कुदरति (4) | अल्लाह के नाम 'मुहीत' के अर्थ ज्ञान और शक्ति की पूर्णता की ओर लौटते हैं। |

इन आपके विश्वसनीय प्रमाणों ने केवल ज्ञान की दृष्टि से घेरे होने को कैसा अमान्य कर दिया। पॉइंट 57: अल्लाह अज़्ज़-व-जल्ल की दृष्टि (बसर) भी घेरे हुए है, अल्लाह तआला ने फ़रमाया:

| "बेशक वह हर चीज़ को देख रहा है।" (19) (5) | अल्लाह तआला हर चीज़ को देख रहा है। |

पॉइंट 58: उसका श्रवण (समा) भी वस्तुओं को घेरे हुए है।

| कमा हक़्क़क़हू आलिम-ए-अहले सुन्नत मद्दज़िल्लहू फ़ी मन्हीयात सुब्हानुस सुब्बूहु। | जैसा कि आलिम-ए-अहले सुन्नत (अल्लाह उनकी छाया बनाए रखे) ने 'सुब्हानुस सुब्बूहु' के'मन्हीयात' में इसकी शोध की है। (त) |

पॉइंट 59: शक्ति (कुदरत) भी घेरे हुए है, अल्लाह तआला ने फ़रमाया:

| "बेशक अल्लाह तआला हर चीज़ पर क़ादिर है।" (6) | बेशक अल्लाह तआला हर चीज़ पर क़ादिर है। (त) |

पॉइंट 60: सृजन (ख़ालिक़ियत) भी घेरे हुए है, अल्लाह तआला ने फ़रमाया:

| "हर चीज़ का पैदा करने वाला, अतः उसी की इबादत करो।" (7) | अल्लाह तआला हर चीज़ का रचयिता है, अतः उसी की उपासना करो। (त) |

1 जामिउल बयान लि-मुहम्मद बिन अब्दुल रहमान, आयत 41/52, दार नश्र अल-कुतुब अल-इस्लामिया, गुजरांवाला, 2/252 2 जामिउल बयान लि-मुहम्मद बिन अब्दुल रहमान, आयत 41/52, दार नश्र अल-कुतुब अल-इस्लामिया, गुजरांवाला, 1/426 3 मदारिकुत्तंजील (तफ़सीर अन-नसफ़ी), आयत 20/85, दार अल-किताब अल-अरबी, बेरूत, 4/347 4 किताबुल अस्मा वस सिफ़ात लिल-बैहक़ी, अबवाब ज़िक्रुल अस्मा... अल-मक्तबा अल-असरिया, सांग्ला हिल, शेखूपुरा, 1/81 5 अल-क़ुरान अल-करीम 67/19 6 अल-क़ुरान अल-करीम 2/20, 2/106, 3/109, 3/128 आदि 7 अल-क़ुरान अल-करीम 6/102

पृष्ठ 150/750

| الکل تحت علمه وقدرته - 1 | یعنی سب اُس کے علم و قدرت کے نیچے ہیں۔ |

ضرب ۵۴: زیر آیت ثانیہ ہے: بعلمہ وقدرتہ۔ اللہ علم و قدرت دونوں کی رُو سے محیط ہے۔ 2 -

ضرب ۵۵: مدارک شریف میں زیر آیت ثالثہ ہے:

| ذو عالم باحوالهم وقادر علیهم وهم لا یعجزونه - 3 | یعنی اللہ اُن کے احوال کا عالم اور ان پر قادر ہے وہ اسے عاجز نہیں کر سکتے۔ |

ضرب ۵۶: کتاب الاسماء میں ہے:

| المحیط راجع الی کمال العلم والقدرة - 4 | اسم الٰہی محیط کے معنی کمال علم و قدرت کی طرف راجع ہیں۔ |

ان تیرے مستندوں نے احاطہ فقط از روئے علم ہونا کیسا باطل کیا۔ ضرب ۵۷: اللہ عزوجل کی بصر بھی محیط ہے، قال تعالٰی:

| "إِنَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ بَصِيرٌ 19" - 5 | اللہ تعالٰی ہر چیز کو دیکھ رہا ہے۔ |

ضرب ۵۸: اس کا سمع بھی محیط اشیاء ہے۔

| کما حققه عالم اهل السنة مدظله في منهیات سبحن السبوح- | جیسا کہ عالم اہلسنت نے سبحن السبوح کے منہیات میں اس کی تحقیق فرمائی ہے (ت) |

ضرب ۵۹: قدرت بھی محیط ہے، قال تعالٰی:

| "إِنَّ اللهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ 6" - | بے شک اللہ تعالٰی ہر شے پر قادر ہے۔ (ت) |

ضرب ۶۰: خالقیت بھی محیط ہے، قال تعالٰی:

| "خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ فَاعْبُدُوهُ 7" - | اللہ تعالیٰ ہر شے کا خالق ہے پس اسی کی عبادت کرو۔ (ت) |

---

1 جامع البیان لمحمد بن عبدالرحمن آیت ۴۱/ ۵۲ دار نشر الکتب الاسلامیه گوجرانواله ۲/ ۲۵۲ 2 جامع البیان لمحمد بن عبدالرحمن آیت ۴۱/ ۵۲ دار نشر الکتب الاسلامیه گوجرانواله ۱/ ۴۲۶ 3 مدارك التنزیل (تفسیر النسفی) آیة ۲۰ / ۸۵ دار الکتاب العربی بیروت ۴/ ۳۴۷ 4 کتاب الاسماء والصفات للبیهقی ابواب ذکر الاسماء التی متبع فی التشبیه الخ، المکتبة الاثریه سانگله هل شیخو پوره ۸۱/۱ 5 القرآن الکریم ۶۷ / ۱۹ 6 القرآن الکریم ۲/ ۲۰، ۲/ ۱۰۶، ۳/ ۱۰۹، ۳/ ۱۲۸ و غیره 7 القرآن الکریم ۶/ ۱۰۲

Fatawa Razawiyya Volume 29

Point 61: Ownership is also all-encompassing. Allah Almighty says: "In Whose Hand is the dominion of all things, and to Him you will be returned" [Quran 36:83] - 1 | Everything is in His grasp/possession. (T) This senseless Wahhabi, by mentioning it only from the perspective of knowledge, has denied the encompassment of all these Divine Attributes. If he had eyes, he would see how many verses he has rejected in the thick darkness of his profound ignorance. In short, if we take the way of the predecessors (mutaqaddimin), we believe that the knowledge of our Lord Almighty is all-encompassing, as stated in Surah At-Talaq, and the meaning of the encompassment of knowledge is known to us as: "Not an atom's weight escapes Him in the heavens or in the earth" [Quran 34:3] - 2 | Not a single particle is hidden from Him in the heavens nor in the earth. (T) And our Lord, Mighty and Majestic, is all-encompassing just as He stated in Surah An-Nisa, Surah Fussilat, and Surah Al-Buruj, and His encompassment is beyond our intellect. "We believe in it; all of it is from our Lord" [Quran 3:7] - 3 | We have faith in it, all of it is from our Lord. (T) And if one follows the way of the later scholars (muta'akhkhirin), just as Allah Almighty is all-encompassing in terms of knowledge, He is also all-encompassing in terms of power, hearing, sight, sovereignty, creation, and so on. Restricting 'encompassment' only to knowledge is to deny all these attributes and verses. Point 62: The fool will admit a few lines later that as many attributes as are mentioned in the Divine Speech (Quran/Sunnah), one cannot remain silent about them. Why the silence here regarding the encompassment of Essence (Dhat)? He has denied it, but "the Wahhabi has no memory" - what a blatant contradiction. Third Blow: The real blow is the blow of the Day of Judgment, which will blind the misguidance of anthropomorphism (Tajseem). The deviant heretic has clearly uttered that his deity occupies a place and resides on the Throne ('Arsh).

1 Al-Quran al-Kareem 36/83 2 Al-Quran al-Kareem 34/3 3 Al-Quran al-Kareem 3/7

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

प्रहार 61: स्वामित्व भी व्यापक (अहाता किए हुए) है। अल्लाह तआला फरमाता है: "उसके हाथ में हर चीज़ का मालिकाना अधिकार है और उसी की तरफ़ तुम लौटाए जाओगे" (क़ुरआन 36:83) - 1 | सब कुछ उसी के अधिकार में है। (त) इस बेवकूफ वहाबी ने केवल ज्ञान के नज़रिए से कहकर अल्लाह के इन सभी गुणों (सिफ़ात) की व्यापकता से इंकार कर दिया। अगर उसके पास आँखें होतीं तो उसे दिखता कि अपनी अज्ञानता के घने अंधेरे में वह कितनी आयतों को झुठला गया। संक्षेप में, यदि हम पूर्ववर्तियों (मुतक़द्दिमीन) का मार्ग अपनाएं तो हम ईमान लाए कि हमारे रब तआला का ज्ञान व्यापक है जैसा कि सूरह तलाक़ में बताया गया है, और ज्ञान की व्यापकता का अर्थ हमें ज्ञात है कि: "आकाशों और धरती में कण भर चीज़ भी उससे ओझल नहीं है" (क़ुरआन 34:3) - 2 | आसमानों और ज़मीन में कोई भी ज़र्रा उससे छिपा नहीं है। (त) और हमारा रब, शक्तिशाली और महान, व्यापक है जैसा कि सूरह निसा, सूरह फुस्सिलत और सूरह बुरुज में फरमाया गया है, और उसकी व्यापकता हमारी बुद्धि से परे है। "हम इस पर ईमान लाए, यह सब हमारे रब की ओर से है" (क़ुरआन 3:7) - 3 | हम इस पर ईमान लाए, सब हमारे रब के पास से है। (त) और यदि बाद के विद्वानों (मुताअख्खिरीन) का मार्ग अपनाया जाए, तो जिस प्रकार अल्लाह तआला ज्ञान के आधार पर व्यापक है, वैसे ही वह शक्ति, सुनने, देखने, प्रभुत्व, सृष्टि आदि के आधार पर भी व्यापक है। अतः व्यापकता को केवल ज्ञान तक सीमित कर देना इन सभी गुणों और आयतों का इनकार करना है। प्रहार 62: वह मूर्ख कुछ पंक्तियों के बाद स्वीकार करेगा कि अल्लाह के कलाम में जितने गुण वर्णित हैं, उन पर मौन नहीं रहा जा सकता। यहाँ 'ज़ात' (स्वयं) की व्यापकता पर कैसा मौन? उसने इनकार कर दिया, लेकिन "वहाबी की याददाश्त नहीं होती" - यह कितना स्पष्ट विरोधाभास है। तीसरा प्रहार: असली प्रहार क़यामत का प्रहार है जिससे शरीरवाद (तजसीम) की गुमराह चकनाचूर हो जाए। गुमराह बद-मज़हब ने साफ़ बक दिया कि उसका माबूद (पूज्य) स्थान रखता है और अर्श पर बसता है।

1 अल-क़ुरआन अल-करीम 36/83 2 अल-क़ुरआन अल-करीम 34/3 3 अल-क़ुरआन अल-करीम 3/7

पृष्ठ 151 / 750

ضرب ۶۱: مالکیت بھی محیط ہے قال تعالٰی۔ "بِيَدِهِ مَلَكُوتُ كُلِّ شَيْءٍ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿۸۳﴾" - ۱ | اسی کے ہاتھ میں ہر چیز کا قبضہ ہے۔ (ت) اس بے خرد وہابی نے فقط ازروئے علم کہہ کر ان تمام صفاتِ الٰہیہ کے احاطہ سے انکار کردیا، آنکھیں رکھتا ہو تو سوجھے کہ اپنی گہری جہالت کی گھٹاؤپ اندھیری میں کتنی آیتوں کا رد کر گیا۔ بالجملہ اگر مذہب متقدمین لیجئے تو ہم ایمان لائے کہ ہمارے مولٰی تعالٰی کا علم محیط ہے جیسا کہ سورہ طلاق میں فرمایا، اور احاطہ علم کے معنی ہمیں معلوم ہیں کہ۔ "لا يَعْزُبُ عَنْهُ مِثْقَالُ ذَرَّةٍ فِي السَّمٰوَاتِ وَلَا فِي الْأَرْضِ" ۲۔ | اس سے غائب نہیں ذرہ بھر کوئی چیز آسمانوں میں اور نہ زمین میں۔ (ت) اور ہمارا مولٰی عزوجل محیط ہے جیسا کہ سورہ نساء سورہ فصلت و سورہ بروج میں ارشاد فرمایا اور اس کا احاطہ ہماری عقل سے وراء ہے۔ "آمَنَّا بِهِ كُلٌّ مِّنْ عِندِ رَبِّنَا" ۳۔ | ہم اس پر ایمان لائے سب ہمارے رب کے پاس سے ہے۔ (ت) اور اگر مسلکِ متاخرین چلے تو اللہ تعالٰی جس طرح ازروئے علم محیط ہے یونہی ازروئے قدرت و ازروئے سمع و ازراہ بصر و از جہتِ ملک و از وجہ خلق و غیر ذلک، تو فقط علم میں احاطہ منحصر کر دینا ان سب صفات و آیات سے منکر ہو جانا ہے۔ ضرب ۶۲: بے وقوف چند سطر بعد مانے گا کہ جتنی صفتیں کلام شارع میں وارد ہیں ان سے سکوت نہ ہوگا، یہاں احاطہ ذات سے سکوت کیسا، انکار کر گیا مگر وہابی را حافظہ نباشد، یہ کیسا صریح تناقض ہے۔ تیسرا تپانچہ: اصل تپانچہ قیامت کا تپانچہ جس سے تجسمی گمراہی کا سرمہ ہو جائے بد مذہب گمراہ نے صاف بک دیا کہ اس کا معبود مکان رکھتا ہے عرش پر بستا ہے۔

۱ القرآن الکریم ۸۳ / ۳۶ ۲ القرآن الکریم ۳۴ / ۳ ۳ القرآن الکریم ۷/۳

Volume 29 Fatawa Ridawiyya

تَعَالَى اللّٰهُ عَمَّا يَقُولُ الظّٰلِمُوْنَ عُلُوًّا كَبِيْرًا (Allah is highly exalted above what the wrongdoers say.)

Strike 63: The statement of Janab Shah Abdul Aziz Sahib, who was the grandfather-mentor, teacher, and father of Ismail, the late leader of the anthropomorphist Wahhabis, has been mentioned above. He stated that in the belief of the Ahl al-Sunnah, Allah Almighty is free from space (makan). His own fatwa is sufficient to prove them innovators (bid'ati).

Strikes 64 to 67: Excerpts from Bahr-ul-Raiq, Alamgiri, Qazi Khan, and Fatawa Khulasa have also been mentioned above, stating that anyone who believes in a physical location (makan) for Allah Almighty is a disbeliever (kafar).

These were the five mentioned above. Now, let's take the original approach: that is, to scrutinize it from its authentic books, then pierce the heart of anthropomorphism with some decisive rational and traditional arguments that penetrate the heart like armor-piercing arrows. And success is from Allah, and attainment of the truth.

Strike 68: In Madarik Sharif, regarding Surah al-A'raf, it says:

Arabic Text	Translation
اِنَّہٗ تَعَالٰی کَانَ قَبْلَ الْعَرْشِ وَ لَا مَکَانَ وَ ھُوَ الْاٰنَ کَمَا کَانَ، لِاَنَّ التَّغَیُّرَ مِنْ صِفَاتِ الْاَکْوَانِ 1۔	Indeed, Allah Almighty existed before the Throne when there was no trace of space, and He is now just as He was, for changing is the characteristic of creation.

Strike 69: Similarly, in Surah Ta-Ha, it is clearly stated that the Throne is not the dwelling place of Allah; Allah Almighty is free from space. This excerpt was previously quoted.

Strike 70: In Surah Yunus, it says:

Arabic Text	Translation
اَیْ اِسْتَوٰی فَقَدْ یُقَدِّسُ الدَّیَّانُ جَلَّ وَ عَزَّ عَنِ الْمَکَانِ وَالْمَعْھُوْدِ عَنِ الْحُدُوْدِ 2۔	Istiwa means dominion and dominance, not in the sense of occupying space, because Allah Almighty is free from space, and the worshipped One, Exalted and High, is pure from limits and ends.

A thousand curses on that shameless eye which, while uttering such filthy words, does not blink even for a moment when naming such books.

1. Madarik al-Tanzil (Tafsir al-Nasafi), Verse 7/54, Dar al-Kitab al-Arabi, Beirut, 2/56.
2. Madarik al-Tanzil (Tafsir al-Nasafi), Verse 10/3, Dar al-Kitab al-Arabi, Beirut, 2/153.

जिल्द 29 फ़तावा रज़विया

تَعَالَی اللّٰہُ عَمَّا یَقُوْلُ الظّٰلِمُوْنَ عُلُوًّا کَبِیْرًا (अल्लाह उन बातों से बहुत ऊँचा और महान है जो ज़ालिम कहते हैं।)

प्रहार 63: वहाबिया मुजस्सिमा (मानवरूपवादी) के अगुवा इस्माइल मरहूम के दादा-पीर, उस्ताद और पिता जनाब शाह अब्दुल अज़ीज़ साहब का कथन ऊपर गुज़रा कि अहले सुन्नत के विश्वास में अल्लाह तआला स्थान (मकान) से पवित्र है। उनके विदाती होने के लिए उनका अपना फतवा ही काफी है।

प्रहार 64 से 67: बहर-उर-राइक, आलमगीरी, क़ाज़ी ख़ान और फ़तावा खुलासा के उद्धरण भी ऊपर गुज़रे हैं कि जो अल्लाह तआला के लिए स्थान (मकान) माने वह काफ़िर है।

ये तो ऊपर के पांच थे, अब मुख्य शैली अपनाएँ यानी इसकी प्रामाणिक किताबों से इसे रगड़ना, फिर कुछ अकाट्य तार्किक और पारंपरिक प्रमाणों के दिल दहला देने वाले तीरों से मानवरूपवाद के कलेजे को छेदना। और अल्लाह ही की ओर से सफलता और सत्य की प्राप्ति है।

प्रहार 68: मदारेक शरीफ में सूरह आराफ़ के बारे में है:

अरबी पाठ	अनुवाद
اِنَّہٗ تَعَالٰی کَانَ قَبْلَ الْعَرْشِ وَ لَا مَکَانَ وَ ھُوَ الْاٰنَ کَمَا کَانَ، لِاَنَّ التَّغَیُّرَ مِنْ صِفَاتِ الْاَکْوَانِ 1.	बेशक अल्लाह तआला अर्श से पहले मौजूद था जब स्थान का नाम-ओ-निशान न था और वह अब भी वैसा ही है जैसा तब था, क्योंकि बदल जाना तो मख्लूक (सृष्टि) की शान है।

प्रहार 69: इसी तरह सूरह ता-हा में स्पष्ट किया गया है कि अर्श अल्लाह का स्थान नहीं है, अल्लाह तआला स्थान से पवित्र है। यह इबारत पहले उद्धृत की जा चुकी है।

प्रहार 70: सूरह युनुस में फरमाया:

अरबी पाठ	अनुवाद
اَیْ اِسْتَوٰی فَقَدْ یُقَدِّسُ الدَّیَّانُ جَلَّ وَ عَزَّ عَنِ الْمَکَانِ وَالْمَعْھُوْدِ عَنِ الْحُدُوْدِ 2.	"इस्तिवा" का अर्थ प्रभुत्व और प्रभुता है न कि स्थान ग्रहण करना, क्योंकि अल्लाह तआला स्थान से पवित्र है और पूज्य प्रभु सीमाओं और अंत से मुक्त है।

हज़ार धिक्कार है उस बेशर्म आँख पर जो ऐसे नापाक शब्द बोलकर ऐसी किताबों का नाम लेते हुए ज़रा भी न झपके।

1. मदारेक अल-तंज़ील (तफ़्सीर अल-नसाफ़ी), आयत 7/54, दार अल-किताब अल-अरबी, बेरूत, 2/56.
2. मदारेक अल-तंज़ील (तफ़्सीर अल-नसाफ़ी), आयत 10/3, दार अल-किताब अल-अरबी, बेरूत, 2/153.

تَعَالٰی اللّٰہُ عَمَّا یَقُوْلُ الظّٰلِمُوْنَ عُلُوًّا کَبِیْرًا (اللہ تعالیٰ اس سے بہت بلند ہے جو ظالم کہتے ہیں ت)

ضرب ۶۳ : وہابیہ مجسمہ کے پیر مغاں اسماعیل آنجہانی علیہ ما علیہ کے دادا پیر اور استاد اور باپ یعنی جناب شاہ عبدالعزیز صاحب کا ارشاد اوپر گزرا کہ اہلسنت کے اعتقاد میں اللہ تعالیٰ عزوجل مکان سے پاک ہے، اس کے بدعتی ہونے میں انہیں کا فتوی کافی۔

ضرب ۶۴ تا ۶۷ : بحر الرائق و عالمگیری و قاضی خان و فتاوی خلاصہ کی عبارتیں بھی اوپر گزریں کہ جو اللہ عزوجل کے لیے مکان مانے کافر ہے۔

یہ تو اوپر کے پانچ تھے اب اصل طرز کے لیجئے یعنی اس کی مستند کتابوں سے اسے رگیدنا، پھر کچھ دلائل قاطعہ عقلیہ و نقلیہ کے جگر دوز جوشن گزار تیروں سے مجسمیت کا کلیجا چھیدنا، وباللہ التوفیق ووصول التحقیق۔

ضرب ۶۸ : مدارک شریف سورہ اعراف میں ہے:

عربی عبارت	ترجمہ
اِنَّہٗ تَعَالٰی کَانَ قَبْلَ الْعَرْشِ وَ لَا مَکَانَ وَ ھُوَ الْاٰنَ کَمَا کَانَ، لِاَنَّ التَّغَیُّرَ مِنْ صِفَاتِ الْاَکْوَانِ 1۔	بے شک اللہ تعالیٰ عرش سے پہلے موجود تھا جب مکان کا نام و نشان نہ تھا اور وہ اب بھی ویسا ہی ہے جیسا جب تھا اس لیے کہ بدل جانا تو مخلوق کی شان ہے۔

ضرب ۶۹ : یونہی سورہ طہ میں تصریح فرمائی کہ عرش مکان الٰہی نہیں ، اللہ عزوجل مکان سے پاک ہے، عبارت سابقاً منقول ہوئی۔

ضرب ۷۰ : سورہ یونس میں فرمایا :

عربی عبارت	ترجمہ
اَیْ اِسْتَوٰی فَقَدْ یُقَدِّسُ الدَّیَّانُ جَلَّ وَ عَزَّ عَنِ الْمَکَانِ وَالْمَعْهُوْدِ عَنِ الْحُدُوْدِ الله عزوجل مکان سے پاک اور معبود جل و علا حد و نہایت سے منزہ ہے۔	استواء بمعنی استیلاء و غلبہ ہے نہ بمعنی مکانیت اس لیے کہ 2-

ہزار نفرین اس بیحیا آنکھ کو جو ایسے ناپاک بول بول کر ایسی کتابوں کا نام لیتے ہوئے ذرا نہ جھپکے۔

1 مدارک التنزیل (تفسیر النسفی) آیت ۷ / ۵۴ دار الکتاب العربی بیروت ۵۶/۲ 2 مدارک التنزیل (تفسیر النسفی) آیت ۱۰/ ۳ دار الکتاب العربی بیروت ۲/ ۱۵۳

Fatawa Rizvia Volume 29

Blow 71: Imam Bayhaqi in 'Kitab al-Asma wa al-Sifat' quotes from the great Imam Abu Abdullah Halimi under the holy name 'Al-Muta'ali':

[Arabic Text]: Its meaning is the Exalted above that which is permissible for created beings, such as spouses, children, limbs, organs, taking a throne to sit upon, being veiled by curtains from eyes reaching Him, and moving from place to place, and the like. For affirming some of these things necessitates finitude, some necessitate need, and some necessitate change and alteration. None of that is appropriate for the Eternal, nor is it permissible for Him.[1]

[Urdu Translation]: That is, the meaning of the Divine name 'Al-Muta'ali' is that Allah (Almighty) is pure and exalted above those things which are applicable to creatures, such as having a wife, a son, tools, organs, sitting on a throne, hiding behind veils, moving from one place to another (as occurs in climbing, descending, walking, or staying). This is because some of these things would imply a limit, some a need, some change and transformation, and none of these matters are worthy of Allah (Almighty), nor is there any possibility of them for Him.

Why did you not regret giving a reference to Kitab al-Asma? A thousand shames on the shamelessness of the Wahhabi anthropomorphists.

Blow 72: In the chapter 'What has come regarding the Throne', he quotes from Imam Sulayman Khattabi, may mercy be upon him:

[Arabic Text]: The meaning of the Muslims' statement that Allah the Almighty 'Istawa' (rose over) the Throne is not that He is in contact with it, or settled in it, or confined in any direction of it. Rather, He is distinct from all His creation. It is merely a report brought by revelation, so we affirm it, and we deny any 'how-ness' (modality) from Him, as 'there is nothing like unto Him' and He is...

[Urdu Translation]: The meaning of the Muslims' saying that Allah Almighty is on the Throne is not that He is attached to the Throne, or that it is His place, or that He is stationed in any of its directions. Instead, He is unique and separate from all His creation. This is a piece of information that has come in the Shariah, so we have accepted it, and we consider modality to be far and removed from it, because there is no one similar to Allah...

[1]Kitab al-Asma wa al-Sifat by al-Bayhaqi, Collection of Chapters Mentioning Names that Follow the Negation of Likeness, Al-Maktaba al-Athariya, Sangla Hill, 1/71 & 72.

फ़तावा रज़विया खंड 29

तर्क71: इमाम बैहक़ी 'किताब अल-अस्मा व अल-सिफ़ात' में महान इमाम अबू अब्दुल्लाह हलीमी से पवित्र नाम 'अल-मुताली' के अंतर्गत उद्धृत करते हैं:

[अरबी पाठ]: इसका अर्थ उस चीज़ से ऊपर है जो सृजित प्राणियों के लिए अनुमेय है, जैसे पति-पत्नी, बच्चे, अंग, बैठने के लिए सिंहासन लेना, आँखों को उन तक पहुँचने से रोकने के लिए पर्दों द्वारा ओझल होना, और एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना, और इसी तरह के अन्य कार्य। क्योंकि इनमें से कुछ चीज़ों की पुष्टि परिमितता की आवश्यकता पैदा करती है, कुछ ज़रूरत की, और कुछ बदलाव और परिवर्तन की। इनमें से कुछ भी उस शाश्वत के लिए उचित नहीं है, और न ही उनके लिए अनुमेय है।[1]

[उर्दू अनुवाद]: अर्थात, ईश्वरीय नाम 'अल-मुताली' का अर्थ यह है कि अल्लाह (सर्वशक्तिमान) उन चीज़ों से पवित्र और उच्च है जो प्राणियों पर लागू होती हैं, जैसे पत्नी, बेटा, औज़ार, अंग, सिंहासन पर बैठना, पर्दों के पीछे छिपना, एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना (जैसा कि चढ़ने, उतरने, चलने या रुकने में होता है)। ऐसा इसलिए है क्योंकि इनमें से कुछ बातें एक सीमा को दर्शाती हैं, कुछ ज़रूरत को, कुछ बदलाव और रूपांतरण को, और इनमें से कोई भी मामला अल्लाह (सर्वशक्तिमान) के योग्य नहीं है, और न ही उनके लिए इनकी कोई संभावना है।

किताब अल-अस्मा का संदर्भ देकर आपको पछतावा क्यों नहीं हुआ? वहाबी मूर्तिपूजकों की बेशर्मी पर हज़ार धिक्कार है।

तर्क72: 'अर्श (सिंहासन) के संबंध में जो आया है' अध्याय में, वह इमाम सुलेमान खत्ताबी (रहमतुल्लाहि अलैहि) से उद्धृत करते हैं:

[अरबी पाठ]: मुसलमानों के इस कथन का अर्थ कि अल्लाह सर्वशक्तिमान अर्श पर 'इस्तवा' (विराजमान) है, यह नहीं है कि वह इसके संपर्क में है, या इसमें स्थापित है, या इसकी किसी दिशा में सीमित है। बल्कि, वह अपनी पूरी सृष्टि से अलग है। यह केवल एक रिपोर्ट है जो रहस्योद्घाटन द्वारा लाई गई है, इसलिए हम इसकी पुष्टि करते हैं, और हम उनसे किसी भी 'कैफियत' (स्वरूप) को नकारते हैं, क्योंकि 'उसके जैसा कोई नहीं है' और वह...

[उर्दू अनुवाद]: मुसलमानों के इस कहने का अर्थ कि अल्लाह सर्वशक्तिमान अर्श पर है, यह नहीं है कि वह अर्श से जुड़ा हुआ है, या वह उसका स्थान है, या वह उसकी किसी दिशा में स्थित है। इसके बजाय, वह अपनी तमाम सृष्टि से निराला और अलग है। यह तो एक खबर है जो शरीयत में आई है, तो हमने इसे माना है, और स्वरूप (चगूँगी) को उससे दूर और समाप्त माना है, क्योंकि अल्लाह के समान कोई नहीं है...

[1]किताब अल-अस्मा व अल-सिफ़ात, बैहक़ी द्वारा, समानता के निषेध का पालन करने वाले नामों का उल्लेख करने वाले अध्यायों का संग्रह, अल-मक्तबा अल-असरिया, सांगला हिल, 1/71 और 72।

पृष्ठ 153 कुल 750 में से

ضرب ۷۱: امام بیہقی کتاب الاسماء والصفات میں امام اجل ابو عبداللہ حلیمی سے زیر اسم پاک متعالی نقل فرماتے ہیں:

[عربی متن]: معناه المرتفع عن ان يجوز عليه ما يجوز على المحدثين من الازواج والاولاد والجوارح والاعضاء واتخاذ السرير للجلوس عليه، والاحتجاب بالستور عن ان تنفذ الابصار اليه، والانتقال من مكان الى مكان، ونحو ذلك فان اثبات بعض هذه الاشياء يوجب النهاية وبعضها يوجب الحاجة، وبعضها يوجب التغير والاستحالة، وشيئ من ذلك غير لائق بالقديم ولا جائز عليه.1

[اردو ترجمہ]: یعنی نام الہی متعالی کے یہ معنی ہیں کہ اللہ عزوجل اس سے پاک و منزہ ہے کہ جو باتیں مخلوقات پر روا ہیں جیسے جورو، بیٹا، آلات، اعضاء، تخت پر بیٹھنا، پردوں میں چھپنا، ایک مکان سے دوسرے کی طرف انتقال کرنا (جس طرح چڑھنے، اترنے، چلنے، ٹھہرنے میں ہوتا ہے) اس پر روا ہو سکیں اس لیے کہ ان میں بعض باتوں سے نہایت لازم آئے گی بعض سے احتیاج بعض سے بدلنا متغیر ہونا اور ان میں سے کوئی امر اللہ عزوجل کے لائق نہیں، نہ اس کے لیے امکان رکھے۔

کیوں پچھتائے تو نہ ہوگئے کتاب الاسماء کا حوالہ دے کر، تف ہزار تف وہابیہ مجسمہ کی بے حیائی پر۔

ضرب ۷۲: باب ماجاء فی العرش میں امام سلیمان خطابی علیہ الرحمۃ سے نقل فرماتے ہیں:

[عربی متن]: لیس معنی قول المسلمین ان اللہ تعالی استوی علی العرش ھو انہ مماس لہ او متمکن فیہ، او متحیز فی جھۃ من جھاتہ، لکنہ بائن من جمیع خلقہ، وانما ھو خبر جاء بہ التوقیف فقلنا بہ، ونفینا عنہ التکیف اذ لیس کمثلہ شیئ وھو

[اردو ترجمہ]: مسلمانوں کے اس قول کے کہ اللہ تعالیٰ عرش پر ہے، یہ معنی نہیں کہ وہ عرش سے لگا ہوا ہے یا وہ اس کا مکان ہے یا وہ اس کی کسی جانب میں ٹھہرا ہوا ہے بلکہ وہ تو اپنی تمام مخلوق سے نرالا ہے یہ تو ایک خبر ہے کہ شرع میں وارد ہوئی تو ہم نے مانی اور چگونگی اس سے دور و مسلوب جانی اس لیے کہ اللہ کے مشابہ کوئی

1 کتاب الاسماء والصفات للبیہقی جماع ابواب ذکر الاسماء التی تتبع نفی التشبیہ المکتبۃ الاثریہ سانگلہ ہل ۱/۷۱ و ۷۲

Volume 29

Fatawa Rizvia

The All-Hearing, All-Knowing[1]	**There is nothing [like Him], and He is the Hearer, the Seer.**

Point 73: It was mentioned earlier that by the loftiness (Uluw) of Allah Almighty, it is not meant that He resides in a high place; space does not encompass Him.

Point 74: Also, this principle was mentioned that what is permissible for physical bodies is not permissible for Allah Almighty.

Point 75: In this regard, this Hadith is narrated from Abu Huraira (may Allah be pleased with him) that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) described the layers of the heavens, the Throne above them, and then the layers of the earth and said:

"By Him in Whose Hand is the soul of Muhammad, if you were to let a man down with a rope to the seventh earth, he would descend upon Allah, Blessed and Exalted is He." Then the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) recited: "He is the First and the Last, the Manifest and the Hidden."[2]	**By Him in Whose hand of power is the life of Muhammad (peace and blessings of Allah be upon him), if you let someone down by a rope to the seventh earth, even there he would reach Allah Almighty Himself. Then the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) recited this verse: that Allah alone is the First and the Last, the Manifest and the Hidden.**

After this Hadith, the Imam states:

"What was narrated at the end of this Hadith is an indication of the negation of place for Allah Almighty, and that wherever the servant may be, he is equal in closeness and distance from Allah Almighty. And that He is the Manifest, so it is correct to perceive Him through evidence, and He is the Hidden, so it is not correct to perceive Him by Him being in a place."[3]

The last sentence of this Hadith indicates the negation of a physical location for Allah Almighty, and that wherever a servant may be, they are equal in terms of proximity and distance from Allah Almighty. And that Allah alone is the Manifest, so He can be recognized through evidence, and He is the Hidden, not residing in any place such that He could be known in that manner.

I say: That is, if the Throne were His location, then the one who reached the seventh earth would be at an extreme distance from Him, rather than reaching Allah there as well. And a spatial object [cannot be] in two different [places] in a single moment...

---

[1] Kitab al-Asma wa al-Sifat, Chapter on what has been narrated regarding the Throne and the Footstool, Al-Maktabah al-Athariyyah, Sangla Hill, Sheikhupura, 2/139. [2] Kitab al-Asma wa al-Sifat by al-Bayhaqi, Collection of chapters mentioning names that follow the negation of anthropomorphism, Al-Maktabah al-Athariyyah, Sangla Hill, 2/144. [3] Kitab al-Asma wa al-Sifat by al-Bayhaqi, Collection of chapters mentioning names that follow the negation of anthropomorphism, Al-Maktabah al-Athariyyah, Sangla Hill, 2/144.

जिल्द 29

फ़तावा रिज़विया

अस्-समी' अल-अलीम[1] [उसके जैसा] कुछ भी नहीं है और वही सुनने वाला, देखने वाला है।

नुक्ता 73: इससे पहले गुज़रा कि अल्लाह अज़्व-जल्ल की उलूव (बुलंदी) से यह मुराद नहीं कि वह ऊपर किसी जगह में हो, जगह उसे नहीं घेरती।

नुक्ता 74: साथ ही यह सिद्धांत भी गुज़रा कि जो चीज़ें भौतिक शरीरों के लिए जायज़ हैं, वे अल्लाह अज़्व-जल्ल के लिए जायज़ नहीं।

नुक्ता 75: इसी सिलसिले में अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से यह हदीस रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने आसमानों की परतों, उनके ऊपर अर्श और फिर ज़मीन की परतों का बयान करके फ़रमाया:

"उसकी क़सम जिसके हाथ में मुहम्मद की जान है, अगर तुम किसी को रस्सी के ज़रिए सातवीं ज़मीन तक लटकाओ, तो वह अल्लाह तबारक व तआला ही पर गिरेगा।" फिर रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने यह आयत पढ़ी: "वही अव्वल है और आख़िर है, और ज़ाहिर है और बातिन है।"[2]

उस ज़ात की क़सम जिसके क़ुदरत के हाथ में मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की जान है, अगर तुम किसी को रस्सी के ज़रिए सातवीं ज़मीन तक उतारो, तो वहां भी वह अल्लाह अज़्व-जल्ल ही तक पहुंचेगा। फिर रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने यह आयत तिलावत फ़रमाई कि अल्लाह ही अव्वल व आख़िर और ज़ाहिर व बातिन है।

इस हदीस के बाद इमाम फ़रमाते हैं:

"इस हदीस के अंत में जो रिवायत किया गया है, वह अल्लाह तआला के लिए जगह की नफ़ी (निषेध) की ओर इशारा है, और यह कि बंदा जहाँ कहीं भी हो, अल्लाह तआला से नज़दीकी और दूरी में बराबर है। और वह ज़ाहिर है, इसलिए प्रमाणों के माध्यम से उसे पहचानना सही है, और वह बातिन है, इसलिए उसे किसी स्थान में होने के माध्यम से पहचानना सही नहीं है।"[3]

इस हदीस का पिछला जुमला अल्लाह अज़्व-जल्ल से जगह की नफ़ी पर दलालत करता है और यह कि बंदा कहीं हो, अल्लाह अज़्व-जल्ल से क़ुर्ब (निकटता) और बु'अद (दूरी) में यकसां (बराबर) है, और यह कि अल्लाह ही ज़ाहिर है तो दलीलों से उसे पहचान सकते हैं और वही बातिन है किसी मकान (जगह) में नहीं कि यूँ उसे जान सकें।

अक़ूल (मैं कहता हूँ): यानी अगर अर्श उसका ठिकाना होता, तो जो सातवीं ज़मीन तक पहुँचा, वह उससे अत्यंत दूरी पर होता, न कि वहाँ भी अल्लाह ही तक पहुँचता, और एक स्थानिक चीज़ एक ही पल में दो अलग-अलग...

---

[1] किताबुल अस्मा वस-सिफ़ात, बाब मा जाअ फ़िल अर्श वल कुर्सी, अल-मकतबा अल-असरिया, सांग्ला हिल, शेखूपुरा, 2/ 139 [2] किताबुल अस्मा वस-सिफ़ात लिल-बैहक़ी, जमा' अबवाब ज़िक्रिल अस्मा अल्लती तत्तबिउ नफ़्यत-तश्बीह, अल-मकतबा अल-असरिया, सांग्ला हिल, 2/ 144 [3] किताबुल अस्मा वस-सिफ़ात लिल-बैहक़ी, जमा' अबवाब ज़िक्रिल अस्मा अल्लती तत्तबिउ नफ़्यत-तश्बीह, अल-मकतबा अल-असरिया, सांग्ला हिल, 2/ 144

جلد ۲۹

فتاویٰ رضویہ

السمیع العلیم 1۔ چیز نہیں اور وہی ہے سننے دیکھنے والا۔

ضرب ۷۳: اس سے گزرا کہ اللہ عزوجل کے علو سے اس کا امکان بالا میں ہونا مراد نہیں، مکان اسے نہیں گھیرتا۔

ضرب ۷۴: نیز یہ کلیہ بھی گزرا کہ جوا جسام پر روا ہے اللہ عزوجل پر روا نہیں۔

ضرب ۷۵: اسی میں یہ حدیث ابوہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے طبقات آسمان پھر ان کے اوپر عرش پھر طبقات زمین کا بیان کر کے فرمایا:

والذی نفس محمد بیدہ لو انکم دلیتم احدکم بحبل الی الارض السابعۃ لھبط علی اللہ تبارک وتعالی ثم قرأ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم و ھو الاول والاخر والظاھر والباطن۔2

قسم اس کی جس کے دستِ قدرت میں محمد صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی جان ہے اگر تم کسی کو رسی کے ذریعہ سے ساتویں زمین تک لٹکاؤ تو وہاں بھی وہ اللہ عزوجل ہی تک پہنچے گا۔ پھر رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے یہ آیت تلاوت فرمائی کہ اللہ ہی ہے اول و آخر و ظاہر و باطن۔

اس حدیث کے بعد امام فرماتے ہیں:

الذی روی فی اخر ھٰذا الحدیث اشارۃ الی اس حدیث کا پچھلا فقرہ اللہ عزوجل سے نفی مکان پر نفی المکان عن اللہ تعالیٰ وان العبد اینما دلالت کرتا ہے اور یہ کہ بندہ کہیں ہو اللہ عزوجل سے کان فھو فی القرب و البعد من اللہ تعالیٰ قرب و بعد میں یکساں ہے، اور یہ کہ اللہ ہی ظاہر ہے سواء وانہ الظاھر، فیصح ادراکہ بالدلالۃ، تو دلائل سے اُسے پہچان سکتے ہیں اور وہی باطن الباطن فلا یصح ادراکہ بالکون في مکان۔3 ہے کسی مکان میں نہیں کہ یوں اسے جان سکیں۔

اقول: یعنی اگر عرش اُس کا مکان ہوتا تو جو ساتویں زمین تک پہنچا وہ اس سے کمال دوری و بعد پر ہو جاتا نہ کہ وہاں بھی اللہ ہی تک پہنچتا، اور مکانی چیز کا ایک آن میں دو مختلف...

---

1 کتاب الاسماء والصفات باب ماجاء فی العرش والکرسی المکتبۃ الاثریہ سانگلہ ہل شیخوپورہ ۲/ ۱۳۹ 2 کتاب الاسماء والصفات للبیھقی جماع ابواب ذکر الاسماء التی تتبع نفی التشبیہ المکتبۃ الاثریہ سانگلہ ہل ۲/ ۱۴۴ 3 کتاب الاسماء والصفات للبیھقی جماع ابواب ذکر الاسماء التی تتبع نفی التشبیہ المکتبۃ الاثریہ سانگلہ ہل ۲/ ۱۴۴

Fatawa Razawiyya, Volume 29

Being present in a space is impossible, and even more atrocious than this is to believe that all spaces from the Throne to the Earth, above and below, are simultaneously filled with Him. Besides necessitating hundreds of impossibilities like divisibility etc., God forbid, it would also be correct to call Allah the Lowest and the Meanest. Therefore, it is absolutely and certainly necessary to believe that the Throne and the Earth are not His space; He is neither in the Throne nor below the Earth, nor in any location. Yes, His knowledge, power, hearing, sight, and dominion are everywhere. Just as Imam Tirmidhi mentioned in the 'Jami'':

And some of our companions argued for the negation of location for Him, the Exalted, using the saying of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him): 'You are the Manifest, there is nothing above You, and You are the Hidden, there is nothing below You.' Since there is nothing above Him and nothing below Him, He is not in a location.

Meaning: Some Imams of Ahl-us-Sunnah have derived proof for the negation of space for Allah Almighty from this saying of the Prophet (peace be upon him) wherein he addresses his Lord, "You are the Manifest, there is nothing above You; and You are the Hidden, there is nothing below You." When there is nothing above or below Allah Almighty, He is not in any location.

This hadith is in Sahih Muslim and Sunan Abi Dawud narrated by Hazrat Abu Hurairah (may Allah be pleased with him). And Al-Bayhaqi narrated it in "Al-Asma wal-Akhar" (Bayhaqi mentioned it in the First and Last names. [Translator's note]).

I say: The gist of the argument is that for Allah Almighty to fill all locations, above and below, is obviously impossible, otherwise the same impossibilities would follow. Now, if He were in an upper location, things would be below Him; if He were in a lower location, things would be above Him; and if He were in the middle, things would be both above and below Him. However, the Messenger of Allah (peace be upon him) says there is nothing above Him and nothing below Him. Therefore, it is mandatory to believe that the Lord Almighty is transcendent from space.

Strike 77: If you call the Throne and the Earth God's space (God forbid), was Allah Almighty established in it from eternity, or did He become established now? On the first supposition, that space would also be eternal, and believing any creation to be eternal is contrary to the consensus of Muslims.

1. Kitab al-Asma was-Sifat, Chapter on what has been narrated regarding the Throne and the Kursi, Al-Maktabah al-Athariyyah, Sangla Hill, Sheikhupura, 2/144.

फतावा रज़विया, जिल्द 29

स्थान में मौजूद होना असंभव है और यह उससे भी अधिक घृणित है कि अर्श (सिंहासन) से फर्श (धरती) तक ऊपर और नीचे के सभी स्थान एक साथ उससे भरे हुए हों। विभाज्यता आदि जैसे सैकड़ों असंभवों की आवश्यकता के अलावा, अल्लाह न करे, अल्लाह तआला को सबसे नीचा और सबसे तुच्छ कहना भी सही होगा। इसलिए, निश्चित रूप से यह विश्वास करना आवश्यक है कि अर्श और फर्श उनका स्थान नहीं हैं; न वह अर्श में हैं, न पृथ्वी के नीचे, और न ही किसी स्थान में। हाँ, उनका ज्ञान, शक्ति, श्रवण, दृष्टि और प्रभुत्व हर जगह है। जैसा कि इमाम तिर्मिज़ी ने जामे में उल्लेख किया है:

और हमारे कुछ साथियों ने अल्लाह तआला के लिए स्थान के निषेध पर पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के इस कथन से तर्क दिया: 'आप ही ज़ाहिर हैं, आपसे ऊपर कुछ नहीं है, और आप ही बातिन हैं, आपसे नीचे कुछ नहीं है।' चूँकि उनके ऊपर कुछ नहीं है और उनके नीचे कुछ नहीं है, वह किसी स्थान में नहीं हैं।

अर्थात्: अहले सुन्नत के कुछ इमामों ने अल्लाह अज़्ज़वजल के लिए स्थान के निषेध के लिए नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के इस कथन से दलील दी है जिसमें वह अपने रब से अर्ज़ करते हैं: 'आप ही ज़ाहिर हैं तो आपसे ऊपर कोई नहीं, और आप ही बातिन हैं तो आपके नीचे कोई नहीं।' जब अल्लाह अज़्ज़वजल से न कोई ऊपर हो न कोई नीचे, तो अल्लाह तआला किसी स्थान में नहीं हुआ।

यह हदीस सहीह मुस्लिम शरीफ और सुनन अबी दाऊद में हज़रत अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से वर्णित है। और अल-बैहक़ी ने इसे 'अल-अस्मा अल-अव्वल वल-आख़िर' में रिवायत किया है। (बैहक़ी ने इसे पहले और आख़िरी नामों में ज़िक्र किया है। - त)

मैं कहता हूँ: तर्क का सार यह है कि अल्लाह अज़्ज़वजल का सभी ऊपर और नीचे के स्थानों को भरना प्रत्यक्षतः असंभव है, अन्यथा वही असंभव बातें आवश्यक होंगी। अब अगर वह ऊपर के स्थान में होंगे, तो चीजें उनके नीचे होंगी; और यदि नीचे के स्थान में होते, तो चीजें उनसे ऊपर होतीं; और यदि बीच में होते, तो ऊपर और नीचे दोनों ओर चीजें होतीं। जबकि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) फ़रमाते हैं, न उनसे ऊपर कुछ है न नीचे कुछ, तो यह अनिवार्य हुआ कि मौला तआला स्थान से पाक (मुक्त) हो।

प्रहार 77: अर्श और फर्श की जगह को अल्लाह न करे अल्लाह का स्थान कहो, तो क्या अल्लाह तआला अनादि काल (अज़ल) से इसमें स्थित था या अब स्थित हुआ? पहली धारणा पर, वह स्थान भी अनादि ठहरा, और किसी सृष्टि को अनादि मानना मुसलमानों की सर्वसम्मति (इज्मा) के विरुद्ध है।

---

1. किताबुल अस्मा वस-सिफ़ात, अर्श और कुर्सी के बारे में जो आया है उसका अध्याय, अल-मकतबा अल-असरिया, सांगला हिल, शेखूपुरा, 2/144।

पृष्ठ 155/750

مکان میں موجود ہونا محال اور یہ اس سے بھی شنیع تر ہے کہ عرش تا فرش تمام مکانات بالا و زیر میں دفعۃً اس سے بھرے ہوئے مانو کہ تجزیہ وغیرہ صدہا استحالات لازم آنے کے علاوہ معاذ اللہ اللہ تعالٰی کو اسفل و ادنٰی کہنا بھی صحیح ہوگا لاجرم قطعاً یقیناً ایمان لانا پڑے گا کہ عرش و فرش کچھ اس کا مکان نہیں، نہ وہ عرش میں ہے نہ ماتحت الثرٰی میں، نہ کسی جگہ میں ہاں اس کا علم و قدرت و سمع و بصر و ملک ہر جگہ ہے۔ جس طرح امام ترمذی نے جامع میں ذکر فرمایا:

واستدل بعض اصحابنا في نفي المکان عنه تعالی بقول النبي صلی اللہ تعالی علیه وسلم انت الظاهر فلیس فوقك شيء وانت الباطن فلیس دونك شيء واذا لم یکن فوقه شيء ولا دونه شيء لم یکن في مکان.

یعنی اور بعض ائمہ اہلسنت نے اللہ عزوجل سے نفی مکان پر نبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کے اس قول سے استدلال کیا کہ اپنے رب عزوجل سے عرض کرتے ہیں تو ہی ظاہر ہے تو کوئی تجھ سے اوپر نہیں، اور تو ہی باطن ہے تو کوئی تیرے نیچے نہیں، جب اللہ عزوجل سے نہ کوئی اوپر ہو نہ کوئی نیچے تو اللہ تعالٰی کسی مکان میں نہ ہوا۔

یہ حدیث صحیح مسلم شریف و سنن ابی داؤد میں حضرت ابوہریرہ رضی اللہ تعالٰی عنہ سے ورواہ البیہقی فی الاسم الاول والآخر (اسے بیہقی نے اسم اول و آخر میں ذکر کیا ہے۔ ت)

اقول: حاصل دلیل یہ کہ اللہ عزوجل کا تمام امکنہ زیر و بالا کو بھرے ہونا تو بداہۃً محال ہے ورنہ وہی استحالات لازم آئیں، اب اگر مکان بالا میں ہوگا تو اشیاء اس کے نیچے ہوں گی اور مکان زیریں میں ہوا تو اشیاء اُس سے اوپر ہوں گی اور وسط میں ہوا تو اوپر نیچے دونوں ہوں گی

حالانکہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ وسلم فرماتے ہیں، نہ اس سے اوپر کچھ ہے نہ نیچے کچھ، تو واجب ہوا کہ مولیٰ تعالیٰ مکان سے پاک ہو۔

ضرب ۷۷: عرش فرش جگہ کو معاذ اللہ مکانِ الہی کہو اللہ تعالیٰ ازل سے اس میں متمکن تھا یا اب متمکن ہوا، پہلی تقدیر پر وہ مکان بھی ازلی ٹھہرا اور کسی مخلوق کو ازلی ماننا باجماع مسلمین

---

1. کتاب الاسماء والصفات باب ماجاء في العرش والکرسی المکتبة الاثریه سانگلہ ہل شیخوپوره ۲/ ۱۴۴

Fatawa Razawiyya Volume 29

It is disbelief (kufr); in the second scenario, it would imply a change in Allah Almighty, which is contrary to the dignity of divinity.

Point 78: I say: Whether place (makan) be an imaginary dimension, abstract space, or the encompassing surface of the occupant, it is necessary for it to encompass him. An encompassing or touching thing is part of an object's place or part of the place itself, not the object's place. For example, a cap cannot be called the place of the wearer; if you are wearing shoes, it won't be said that your place is in the shoes. So if the Throne ('Arsh), God forbid, were the place of the Divine, it would follow that it encompasses Allah Almighty, which is impossible. Allah Almighty says: "And Allah encompasses all things." [1] Allah Almighty encompasses both the Throne ('Arsh) and the Earth (Farsh). That encompassing is beyond intellect and worthy of His holy majesty; nothing other than Him can encompass Him.

Point 79: Furthermore, it would follow that Allah Almighty is smaller than the Throne.

Point 80: Furthermore, He would be limited and confined.

Point 81: After all these monstrosities, the very verse from which the spatiality of the Throne was derived became void; the verse says "upon the Throne," and if the Throne were the place of God, then God would be inside the Throne, not upon the Throne.

Point 82: I say: When, according to you, your deity became spatial, it cannot be devoid of two states: he will either be equal to an indivisible part (atom/monad) or larger than it. The first is void because, in this scenario, your deity would be smaller than every small thing, less than even the thousandth or millionth part of a grain of sand. Moreover, in this case, hundreds of verses and Hadiths mentioning 'Eye', 'Hand', 'Face', 'Shin', etc., would be denied. For if the ambiguous verses (Mutashabihat) are taken literally, then here too it would be obligatory to take the apparent meanings, and for an indivisible part, an eye, hand, face, or foot is impossible. If it is said that one single part performs the function of all those organs, hence he was named by these names, then this is also void because, firstly, these things were accepted for it, not that it is itself these things. Secondly: what will be the answer to "with Our eyes" and "nay, both His hands"? For in an indivisible part, one cannot assume two. And "spread out" (mabsutatan) explicitly invalidates it, for where is 'spread' in an individual monad? And the second (case) is also void, for on this

estimation, your deity could be broken into pieces, parts could be assumed in him, and the True Deity (M'abood-e-Haqq), Exalted is His Majesty, is pure from this.

---

[1] The Holy Quran 4/ 126

कुफ़्र है; दूसरी स्थिति में अल्लाह तआला अज़्ज़वजल में परिवर्तन आया और यह ईश्वरीय गरिमा के विरुद्ध है।

प्रहार 78: मैं कहता हूँ: स्थान चाहे कल्पित विस्तार हो या अमूर्त स्थान या अधिभोगी की घेरने वाली सतह, उसका उसे घेरना अनिवार्य है। घेरने वाली या छूने वाली चीज़ किसी वस्तु के स्थान का हिस्सा या स्थान का हिस्सा है, न कि वस्तु का स्थान। उदाहरण के लिए, टोपी को पहनने वाले का स्थान नहीं कह सकते; यदि आप जूते पहने हैं, तो यह नहीं कहा जाएगा कि आपका स्थान जूते में है। तो यदि अर्श (सिंहासन), ईश्वर न करे, ईश्वरीय स्थान होता, तो यह अनिवार्य होता कि वह अल्लाह अज़्ज़वजल को घेरे हुए हो, जो कि असंभव है। अल्लाह तआला फरमाता है: "और अल्लाह हर चीज़ को घेरे हुए है।" [1] अल्लाह तआला अर्श और फर्श (धरती) सबको घेरे हुए है। वह घेराव जो बुद्धि से परे है और उसकी पवित्र महिमा के योग्य है, उसके अलावा कोई और उसे घेर नहीं सकता।

प्रहार 79: साथ ही यह भी अनिवार्य होगा कि अल्लाह अज़्ज़वजल अर्श से छोटा हो।

प्रहार 80: साथ ही वह सीमित और संकुचित हो।

प्रहार 81: इन सभी विसंगतियों के बाद, जिस आयत से अर्श की स्थानिकता निकाली गई थी, वही बातिल (शून्य) हो गई; आयत में अर्श "पर" फरमाया गया है और यदि अर्श खुदा का स्थान होता, तो खुदा अर्श के"अंदर" होता, न कि अर्श "पर"।

प्रहार 82: मैं कहता हूँ: जब तुम्हारे अनुसार तुम्हारा पूज्य स्थानिक (जगह घेरने वाला) हो गया, तो वह दो स्थितियों से खाली नहीं होगा: वह एक अविभाज्य अंश (परमाणु) के बराबर होगा या उससे बड़ा। पहली स्थिति बातिल है क्योंकि इस अनुमान पर तुम्हारा पूज्य हर छोटी चीज़ से छोटा हो गया, रेत के एक दाने के हजारवें-लाखों हिस्से से भी कमतर हुआ। साथ ही इस स्थिति में सैकड़ों आयतों और हदीसों में वर्णित 'आँख', 'हाथ', 'चेहरा', 'पिंडली' आदि का खंडन होगा, क्योंकि जब मुतशाबिहात (अलंकारिक आयतों) को प्रत्यक्ष अर्थों पर आधारित माना जाए, तो यहाँ भी प्रत्यक्ष अर्थ लेना अनिवार्य होगा, और एक अविभाज्य अंश के लिए आँख, हाथ, चेहरा, पैर संभव नहीं है। यदि कहा जाए कि वही एक अंश उन सभी अंगों का काम देता है, इसलिए इन नामों से नामित हुआ, तो यह भी बातिल है क्योंकि पहली बात तो यह कि उसके लिए ये चीज़ें मानी गई हैं न कि वह स्वयं ये चीज़ें है। दूसरी बात: "हमारी आँखों के सामने" और "बल्कि उसके दोनों हाथ" का क्या जवाब होगा? क्योंकि एक

अविभाज्य अंश में दो की कल्पना नहीं की जा सकती। और "फैले हुए" (मबसूततान) तो स्पष्ट रूप से इसका खंडन करता है, क्योंकि एक व्यक्तिगत परमाणु में फैलाव कहाँ? और दूसरी स्थिति भी बातिल है क्योंकि इस अनुमान पर तुम्हारे पूज्य के टुकड़े हो सकेंगे, उसमें हिस्सों की कल्पना की जा सकेगी, और सत्य पूज्य (मअबूद-ए-हक़), जिसकी महिमा महान है, इससे पवित्र है।

---

[1] अल-कुरान अल-करीम 4/ 126

کفر ہے دوسری تقدیر پر اللہ تعالیٰ عزوجل میں تغیر آیا اور یہ خلافِ شانِ الوہیت ہے۔

ضرب ۷۸ : اقول: مکان خواہ بعدِ موہوم ہو یا مجرد یا سطحِ حاویِ مکین کو اُس کا محیط ہونا لازم، محیط یا مماس بعض شے مکان یا بعض مکان ہے نہ مکان شے، مثلاً ٹوپی کو نہیں کہہ سکتے کہ پہننے والے کا مکان، تم جوتا پہنے ہو تو یہ نہ کہیں گے کہ تمہارا مکان جوتے میں ہے، تو عرش اگر معاذ اللہ مکانِ الٰہی ہو لازم کہ اللہ عزوجل کو محیط ہو، یہ محال ہے۔ قال اللہ تعالیٰ: "وَ کَانَ اللّٰہُ بِکُلِّ شَیْءٍ مُّحِیْطًا" ۱ اللہ تعالیٰ عرش و فرش سب کو محیط ہے۔ وہ احاطہ جو عقل سے وراء ہے اور اس کی شانِ قدوسی کے لائق ہے اس کا غیر اسے محیط نہیں ہو سکتا۔

ضرب ۷۹: نیز لازم کہ اللہ عزوجل عرش سے چھوٹا ہو۔

ضرب ۸۰: نیز محدود محصور ہو۔

ضرب ۸۱: ان سب شناعتوں کے بعد جس آیت سے عرش کی مکانیت نکالی تھی وہی باطل ہو گئی، آیت میں عرش پر فرمایا ہے اور عرش مکانِ خدا ہو تو خدا عرش کے اندر ہو گا نہ کہ عرش پر۔

ضرب ۸۲: اقول: جب تیرے نزدیک تیرا معبود مکانی ہوا تو دو حال سے خالی نہیں جزء لایتجزی کے برابر ہو گا یا اس سے بڑا، اول باطل ہے کہ اس تقدیر پر تیرا معبود ہر چھوٹی چیز سے چھوٹا ہوا، ایک دانہ ریگ کے ہزارویں لاکھوں حصے سے بھی کمتر ہوا، نیز اس صورت میں صدہا آیات و احادیث عین و ید و وجہ و ساق وغیرہا کا انکار ہوگا کہ جب متشابہات ظاہر پر محمول ٹھہریں تو یہاں بھی معانی مفہومہ ظاہرہ مراد لینے واجب ہوں گے اور جزء لایتجزی کے لیے آنکھ، ہاتھ، چہرہ، پاؤں ممکن نہیں۔ اگر کہیے وہ ایک ہی جزء ان سب اعضاء کے کام دیتا ہے، لہذا ان ناموں

سے مسمّیٰ ہوا تو یہ بھی باطل ہے کہ اولاً تو اس کے لیے یہ اشیاء مانی گئی ہیں نہ یہ کہ وہ خود یہ اشیاء ہے۔ ثانیاً: با عیننا اور بل یداہ کا کیا جواب ہو گا کہ جزء لایتجزی میں دو فرض نہیں کر سکتے۔ اور مبسوطتان تو صراحۃً اس کا ابطال ہے جو ہر فرد میں بسط کہاں، اور ثانی بھی باطل ہے کہ اس تقدیر پر تیرے معبود کے ٹکڑے ہو سکیں گے اس میں حصے فرض کر سکیں گے اور معبودِ حق عزجلالہ اس سے پاک ہے۔

---

۱ القرآن الکریم ۴/ ۱۲۶

Fatawa Ridawiyya Volume 29

Point 83: I say: For someone sitting on something, only three possibilities are possible: either the seat is equal to him, or it is larger than him such that he is sitting and some space remains empty, or it is smaller than him such that he does not fit entirely on that seat and some part is outside. All three of these possibilities are impossible for Allah (Almighty and Majestic). If He were equal to the Throne (Arsh), then as many parts as can be in the Throne could also be in Him. And if He were smaller, it would be more appropriate to call the Throne "God" instead of calling Him God, because it (the Throne) would be even larger than God. And if He were larger, then parts would effectively be determined, that one part of God is in contact with the Throne and one part is outside.

Point 84: I say: Can God make a Throne even larger than this one or not? If not, then He is helpless, whereas "Indeed, Allah is over all things competent" (1. Verily Allah has power over all things. -T). And if yes, then if God is not smaller than the Throne, and even if He is equal, when He can make something larger than the Throne, He can also make something larger than Himself; because when both are equal, then whatever is larger than the Throne is also larger than God. And if God is larger than the Throne, He cannot be infinitely large because infinite dimensions are proven false by definitive proofs; therefore, He must be larger by a finite measure. For example, assume it is double the size of the Throne. Now keep asking about quantities like one and a quarter, one and a half, one and three quarters, double, triple, whether God is capable of creating them or not. Wherever you deny, you will call God helpless, and if you keep affirming, the same predicament will arise—that God can make something larger than Himself.

Point 85: I say: It is certainly necessary that when God sits on the Throne, He must be larger than the Throne, otherwise God and the creation would become equal, or the creation would be larger than Him. And when the one sitting is larger than his seat, he absolutely cannot fit on it entirely. The part that is larger will remain outside. Thus, there would be two parts: one attached to the Throne and one separate. Now the question will be, are both these parts God? Or is only the part attached to the Throne God, and the outside part is separate from divinity, or it's a reflection of it? Or is neither of them God, but rather the sum of both is God? On the first estimation, two Gods would be necessitated. On the second, God and the Throne would become equal, as God would only be the name of that which is in contact with the Throne. On the third estimation, God did not sit on the Throne, because the one who is God is

separate, and the one attached is not God. On the fourth, the Throne would not be God's place, because if it is a place, it is for only that piece which is in contact with it, and that is not God.

---

1. The Holy Quran 2/20, 106, 109, 148, etc. Page 157 of 750

फतावा रज़विया जिल्द २९

प्रहार ८३: मैं कहता हूँ: जो किसी चीज़ पर बैठा हो, उसकी तीन ही सूरतें मुमकिन हैं: या तो वह बैठकी उसके बराबर है, या उससे बड़ी है कि वह बैठा है और जगह खाली बाकी है, या छोटी है कि वह पूरा उस बैठकी पर न आया, कुछ हिस्सा बाहर है। अल्लाह अज़्ज़वजल के मामले में ये तीनों सूरतें मुहाल (असंभव) हैं। अगर वह अर्श के बराबर हो तो जितने हिस्से अर्श में हो सकते हैं, उसमें भी हो सकेंगे। और अगर छोटा हो तो उसे खुदा कहने से अर्श को खुदा कहना बेहतर है क्योंकि वह खुदा से भी बड़ा है। और अगर बड़ा हो तो वास्तव में हिस्से तय हो गए कि खुदा का एक हिस्सा अर्श से मिला है और एक हिस्सा बाहर है।

प्रहार ८४: मैं कहता हूँ: क्या खुदा इस अर्श से भी बड़ा अर्श बना सकता है या नहीं? अगर नहीं तो वह मजबूर हुआ, जबकि "बेशक अल्लाह हर चीज़ पर कादिर (शक्तिमान) है।" (१. बेशक अल्लाह हर चीज़ पर कुदरत रखता है। -त) और अगर हाँ, तो अब अगर खुदा अर्श से छोटा नहीं, और बराबर भी हो तो जब वह अर्श से बड़ा बना सकता है, तो अपने से बड़ा भी बना सकता है; क्योंकि जब दोनों बराबर हैं, तो जो अर्श से बड़ा है वह खुदा से भी बड़ा है। और अगर खुदा अर्श से बड़ा ही है, तो वह असीमित रूप से बड़ा नहीं हो सकता क्योंकि असीमित आयाम निर्णायक प्रमाणों से गलत साबित हैं; लाज़मी तौर पर वह एक सीमित मात्रा तक ही बड़ा होगा। उदाहरण के लिए, अर्श से दोगुना मान लीजिए। अब सवाई, डेढ़, पौने दो, दुगुनी, तिगुनी मात्राओं के बारे में पूछते जाइए कि खुदा उनके बनाने पर कादिर है या नहीं। जहाँ इनकार करोगे, खुदा को मजबूर कहोगे और अगर इकरार करते जाओगे तो वही मुसीबत सामने आएगी कि खुदा अपने से बड़ा बना सकता है।

प्रहार ८५: मैं कहता हूँ: यह तो ज़रूर है कि खुदा जब अर्श पर बैठे तो अर्श से बड़ा हो, वर्ना खुदा और मख्लूक (सृष्टि) बराबर हो जाएंगे या मख्लूक उससे बड़ी ठहरेगी। और जब बैठने वाला अपनी बैठकी से बड़ा है तो यकीनन उस पर पूरा नहीं आ सकता। जितना बड़ा है उतना हिस्सा बाहर रहेगा, तो इसमें दो हिस्से हुए: एक अर्श से लगा हुआ और एक अलग। अब सवाल होगा कि क्या ये दोनों हिस्से खुदा हैं? या जितना अर्श से लगा है वही खुदा है, बाहर वाला खुदाई से अलग है या उसका अक्स (प्रतिबिंब) है? या उनमें से कोई खुदा नहीं बल्कि दोनों का कुल योग (मजमुआ) खुदा है? पहली सूरत में दो खुदा लाज़िम आएंगे। दूसरी सूरत में खुदा और अर्श बराबर हो गए कि खुदा तो उतने ही का नाम रहा जो अर्श से मिला हुआ है। तीसरी सूरत में खुदा अर्श पर नहीं बैठा, क्योंकि जो खुदा है

वह अलग है और जो लगा है वह खुदा नहीं। चौथी सूरत में अर्श खुदा का स्थान न हुआ क्योंकि अगर वह स्थान है तो उतने ही टुकड़े का जो उससे मिला है और वह खुदा नहीं है।

---

1. अल-क़ुरान अल-करीम २/२०, १०६, १०९, १४८ आदि। पृष्ठ १५७/७५०

فتاوی رضویہ جلد ۲۹

ضرب ۸۳ : اقول : جو کسی چیز پر بیٹھا ہو اس کی تین ہی صورتیں ممکن ، یا تو وہ بیٹھک اس کے برابر ہے یا اس سے بڑی ہے کہ وہ بیٹھا ہے اور جگہ خالی باقی ہے یا چھوٹی ہے کہ وہ پورا اس بیٹھک پر نہ آیا کچھ حصہ باہر ہے ، اللہ عزوجل میں یہ تینوں صورتیں محال ہیں ، وہ عرش کے برابر ہو تو جتنے حصے عرش میں ہو سکتے ہیں اس میں بھی ہوسکیں گے ، اور چھوٹا ہو تو اسے خدا کہنے سے عرش کو خدا کہنا اولی ہے کہ وہ خدا سے بھی بڑا ہے اور بڑا ہو تو بالفعل حصے متعین ہو گئے کہ خدا کا ایک حصہ عرش سے ملا ہے اور ایک حصہ باہر ہے۔

ضرب ۸۴ : اقول : خدا اس عرش سے بھی بڑا بنا سکتا ہے یا نہیں، اگر نہیں تو عاجز ہوا حالانکہ "اِنَّ اللّٰہَ عَلٰی کُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ﴿۲۰﴾" 1 - بے شک اللہ تعالیٰ ہر چیز پر قادر ہے۔ ت) اور اگر ہاں تو اب اگر خدا عرش سے چھوٹا نہیں۔ برابر بھی ہو تو جب عرش سے بڑا بنا سکتا ہے اپنے سے بڑا بھی بنا سکتا ہے کہ جب دونوں برابر ہیں تو جو عرش سے بڑا ہے خدا سے بھی بڑا ہے اور اگر خدا عرش سے بڑا ہی تو غیر متناہی بڑا نہیں ہو سکتا کہ لامتناہی ابعاد دلائل قاطعہ سے باطل ہے لاجرم بقدر متناہی بڑا ہوگا۔ مثلاً عرش سے دونا فرض کیجئے، اب عرش سے سوائی ڈیوڑھی، پون دگنی، تکنی مقداروں کو پوچھتے جائیے کہ خدا ان کے بنانے پر قادر ہے یا نہیں، جہاں انکار کرو گے خدا کو عاجز کہو گے اور اقرار کرتے جاؤ گے تو وہی مصیبت آڑے آئے گی کہ خدا اپنے سے بڑا بنا سکتا ہے۔

ضرب ۸۵ : اقول : یہ تو ضرور ہے کہ خدا جب عرش پر بیٹھے تو عرش سے بڑا ہو ورنہ خدا اور مخلوق برابر ہو جائیں گے یا مخلوق اس سے بڑی ٹھہرے گی، اور جب وہ بیٹھنے والا اپنی بیٹھک سے بڑا ہے تو قطعاً اس پر پورا نہیں آسکتا جتنا بڑا ہے اتنا حصہ باہر رہے گا تو اس میں دو

حصے ہوئے ایک عرش سے لگا اور ایک الگ۔ اب سوال ہوگا کہ یہ دونوں حصے خدا ہیں یا جتنا عرش سے لگا ہے وہی خدا ہے باہر والا خدائی سے جدا ہے یا اس کا عکس ہے یا ان میں کوئی خدا نہیں بلکہ دونوں کا مجموعہ خدا ہے پہلی تقدیر پر دو خدا لازم آئیں گے، دوسری پر خدا و عرش برابر ہو گئے کہ خدا تو اتنے ہی کا نام رہا جو عرش سے ملا ہوا ہے۔ تیسری تقدیر پر خدا عرش پر نہ بیٹھا کہ جو خدا ہے وہ الگ ہے اور جو لگا ہے وہ خدا نہیں، چوتھی پر عرش خدا کا مکان نہ ہوا کہ وہ اگر مکان ہے تو اتنے ٹکڑے کا جو اس سے ملا ہے اور وہ خدا نہیں۔

---

1 القرآن الکریم ۲/ ۲۰ و ۱۰۶ و ۱۰۹ و ۱۴۸ وغیرہ Page 157 of 750

Fatawa Razawiyyah Volume 29

Dharb 86: I say: That which is spatial and not equal to an indivisible atom cannot escape magnitude, and an actually infinite magnitude is void. The individuals of a finite magnitude are infinite, and only a specific value will be accidental to a specific person among them. Therefore, your deity is necessarily on a specific limited magnitude. This specification requires a cause; for example, if it is a million yards, why is it not two million? If it is two million, why is it not one million? Is the cause of this specification your deity itself or someone else? If it is someone else, then the true God is He who made your deity this many or that many yards. And if it is itself, then in any case, its being originated (hadith) is necessary, because the preference of one over equal possibilities depends on will, and every created thing by will is originated. Thus, that specific magnitude is originated, and the existence of magnitude itself without a specific quantity is impossible. So your deity is originated, besides the necessity of a thing preceding itself.

Dharb 87: I say: Every finite magnitude is capable of increase, so something larger than your deity, and even larger than that, is possible.

Dharb 88: I say: The directions 'above' and 'below' are two relative concepts; the existence of one without the other is impossible. Every child knows that you cannot call something 'above' unless another thing is 'below'. And in eternity (Azal), there was nothing besides Allah Almighty. It is recorded in Sahih Bukhari from Imran bin Husain (may Allah be pleased with him) that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said:

Allah Almighty existed and there was nothing else besides Him.1	Allah Almighty existed and there was nothing besides Him.

So, it is impossible for Allah Almighty to have an 'above' or 'below' in eternity. And when it was impossible in eternity, it will remain impossible forever, otherwise, the subsistence of accidental attributes (hawadith) in Allah Almighty would be necessary, and this is impossible. It is stated in the Book of Names and Attributes (Kitab al-Asma wa al-Sifat) by Imam Abu Abdullah Halimi:

When Allah is called 'The Almighty' (Al-Aziz), what is meant is the acknowledgment of His eternity (Qidam), due to which no change	When Allah Almighty is called 'Aziz', it is an acknowledgment of His eternity, based on which there has been no change in His power and strength since eternity, and it

occurs in His Power and Strength from what He has always been.

refers to the purity of Allah Almighty from those things which...

1 Sahih al-Bukhari, Book of the Beginning of Creation, chapter on what has been narrated regarding Allah's saying: 'And He it is Who originates the creation, etc.', Qadimi Kutub Khana, Karachi, 1/453

फतावा रज़विया खंड 29

ज़र्ब 86: मैं कहता हूँ: जो स्थानगत (मकानी) है और अविभाज्य परमाणु के बराबर नहीं है, वह परिमाण (मात्रा) से बच नहीं सकता, और वास्तव में अनंत परिमाण अमान्य है। एक परिमित परिमाण के व्यक्ति अनंत हैं, और उनमें से एक विशिष्ट व्यक्ति के लिए केवल एक विशिष्ट मूल्य ही आकस्मिक होगा। तो निश्चित रूप से तुम्हारा पूज्य एक विशिष्ट सीमित परिमाण पर है। इस विशिष्टता के लिए एक कारण की आवश्यकता है; उदाहरण के लिए, यदि वह एक करोड़ गज का है, तो वह दो करोड़ का क्यों नहीं हुआ? यदि वह दो करोड़ का है, तो वह एक करोड़ का क्यों नहीं हुआ? इस विशिष्टता का कारण तुम्हारा पूज्य स्वयं है या उसका कोई अन्य? यदि वह अन्य है, तो सच्चा ईश्वर वही है जिसने तुम्हारे पूज्य को इतने या इतने गज का बनाया। और यदि वह स्वयं ही है, तो भी बहरहाल उसका 'हादिस' (उत्पन्न) होना आवश्यक है क्योंकि समान संभावनाओं वाले मामलों में एक की प्राथमिकता इच्छा पर निर्भर करती है, और इच्छा द्वारा बनाई गई हर रचना 'हादिस' है। तो वह विशिष्ट परिमाण 'हादिस' हुआ, और बिना मात्रा के परिमाण का अस्तित्व असंभव है। तो तुम्हारा पूज्य 'हादिस' हुआ, इसके अलावा 'तक़द्दुम-ए-शई-अलल-नफ़्स' (किसी वस्तु का स्वयं से पहले होना) का अनिवार्य होना अलग है।

ज़र्ब 87: मैं कहता हूँ: हर परिमित परिमाण वृद्धि के योग्य है, तो तुम्हारे पूज्य से बड़ा और उससे भी बड़ा संभव है।

ज़र्ब 88: मैं कहता हूँ: ऊपर और नीचे की दिशाएँ दो सापेक्ष अवधारणाएँ हैं; एक का अस्तित्व दूसरे के बिना असंभव है। हर बच्चा जानता है कि आप किसी चीज़ को 'ऊपर' नहीं कह सकते जब तक कि दूसरी चीज़ 'नीचे' न हो। और अनादि काल (अज़ल) में अल्लाह अज़्वजल के सिवा कुछ नहीं था। सहीह बुखारी शरीफ़ में इमरान बिन हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से वर्णित है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फरमाते हैं:

अल्लाह तआला था और उसके सिवा कुछ न था।1 अल्लाह तआला था और उसके सिवा कुछ न था। तो अज़ल में अल्लाह अज़्वजल का ऊपर या नीचे होना असंभव है और जब अज़ल में असंभव था तो हमेशा असंभव रहेगा वरना अल्लाह अज़्वजल के साथ घटनाओं (हवादिस) का कायम होना आवश्यक होगा और यह असंभव है, किताबुल अस्मा वस्सफ़ात में इमाम अबू अब्दुल्लाह हलीमी से वर्णित है:

जब अल्लाह तआला को 'अज़ीज़' कहा जाए तो उससे उसके'कदम' (अनादिता) की स्वीकृति है जिसकी वजह से अज़ल से उसकी कुदरत और ताकत पर कोई बदलाव नहीं हुआ।	जब अल्लाह तआला को 'अज़ीज़' कहा जाए तो उससे उसके'कدم' की स्वीकृति है जिसकी बिना पर अज़ल से उसकी कुदरत और ताकत पर कोई बदलाव नहीं हुआ, और अल्लाह तआला की पाकीज़गी की तरफ राज़ेअ (सम्बन्धित) है उन चीज़ों से जो...

1 सहीह अल-बुखारी, किताब बद्उल खल्क, अल्लाह के इस कथन के बारे में अध्याय: "वहुवल्लजी यब्दउल खल्क इलख" कदीमी कुतुब खाना कराची 1/453

ضرب ۸۶: اقول: جو مکانی ہے اور جزء لا یتجزی کے برابر نہیں اسے مقدار سے مفر نہیں اور مقدار غیر متناہی بالفعل باطل ہے اور مقدار متناہی کے افراد نامتناہی ہیں اور شخص معین کو ان میں سے کوئی قدر معین ہی عارض ہوگی، تو لاجرم تیرا معبود ایک مقدار مخصوص محدود پر ہوا اس تخصیص کو علت سے چارہ نہیں مثلاً کروڑ گز کا ہے تو دو کروڑ کا کیوں نہ ہوا، دو کروڑ کا ہے تو کروڑ کا کیوں نہ ہوا، اس تخصیص کی علت تیرا معبود آپ ہی ہے یا اس کا غیر اگر غیر ہے جب تو سچا خدا وہی ہے جس نے تیرے معبود کو اتنے یا اتنے گز کا بنایا، اور اگر خود ہی ہو تا ہم بہر حال اس کا حادث ہونا لازم کہ امورِ متساویۃ النسبۃ میں ایک کی ترجیح ارادے پر موقوف، اور ہر مخلوق بالارادہ حادث ہے تو وہ مقدار مخصوص حادث ہوئی اور مقدار ہی کا وجود بے مقدار کے محال، تو تیرا معبود حادث ہوا اور تقدّم الشئی علی نفسہ کا لزوم علاوہ۔

ضرب ۸۷: اقول: ہر مقدار متناہی قابلِ زیادت ہے تو تیرے معبود سے بڑا اور اس کے بڑے سے بڑا ممکن۔

ضرب ۸۸: اقول: جہات فوق و تحت دو مفہوم اضافی ہیں ایک کا وجود بے دوسرے کے محال ہر بچہ جانتا ہے کہ کسی چیز کو اوپر نہیں کہہ سکتے جب تک دوسری چیز نیچی نہ ہو، اور ازل میں اللہ عز وجل کے سوا کچھ نہ تھا۔ صحیح بخاری شریف میں عمران بن حصین رضی اللہ تعالی عنہ سے ہے رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم فرماتے ہیں:

کان اللہ تعالٰی ولم یکن شیئی غیرہ 1۔ اللہ تعالٰی تھا اور اس کے سوا کچھ نہ تھا۔

تو ازل میں اللہ عز وجل کا فوق یا تحت ہونا محال اور جب ازل میں محال تھا تو ہمیشہ محال رہے گا ورنہ اللہ عز وجل کے ساتھ حوادث کا قیام لازم آئے گا اور یہ محال ہے، کتاب الاسماء والصفات میں امام ابو عبداللہ حلیمی سے ہے:

اذا قیل للہ العزیز فانما یراد بہ جب اللہ تعالٰی کو عزیز کہا جائے تو اس سے اس کے قدم کا الاعتراف لہ بالقدم الذی لایتھیأ معہ اعتراف ہے کہ جس کی بناء پر ازل سے اس کی قدرت وطاقت تغیر ہ عمالم یزل علیہ من القدرۃ پر کوئی تغیر نہیں ہوا، اور اللہ تعالٰی کی پاکیزگی کی طرف والقوۃ و راجع ہے ان چیزوں سے جو

1 صحیح البخاری کتاب بدء الخلق باب ماجاء فی قول اللہ تعالٰی وھو الذی یبدؤ الخلق الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ۱ / ۴۵۳

Volume 29 Fatawa Rizwia

This refers to His transcendence (Exalted is He) from what is permissible for created beings, because of their subjection to change by accidents occurring within themselves and being affected and altered by them. 1	**[This] can be for the creation because they themselves and their accidents undergo change. (T)**

Argument 89: I say: Everything that has a direction is subject to sensory indication, such that if it were above, one could point upwards with a finger to show it is there, and if it were below, then downwards. Everything subject to sensory indication is spatially located (mutahayyiz), and everything spatially located is a body or bodily. Every body and bodily thing is in need, and Allah (Mighty and Majestic is He) is free from need. Therefore, it is necessary that He be free from direction; He is neither above nor below, nor in front nor behind, nor right nor left. Thus, it is absolutely certain that He is not in any place.

Argument 90: I say: The Throne (Arsh) is at an extreme distance from the earth, while Allah is in extreme proximity to His servant. Allah the Almighty said: | "And We are closer to him than [his] jugular vein." 2- | We are closer to you than your jugular vein. (T) | | :--- | :--- | Allah the Almighty said: | "And when My servants ask you concerning Me, indeed I am near." 3- | When My servants ask you about Me, indeed I am near. (T) | | :--- | :--- | If Allah (Mighty and Majestic is He) had a location on the Throne, Allah the Almighty would be further from us than any distant thing, and that is false according to the text of the Quran.

Argument 91: I say: If the Lord (Mighty is He) is seated upon the Throne, can He also descend from it or not? If not, He would be incapable, and the incapable is not God. And if yes, then when He descends, He will be below the Throne, making it possible for Him to have a 'below' (asfal), and what has a 'below' is not God.

Argument 92: I say: If there is a place for your deity, and place and the placed cannot avoid having a direction—since directions are the spaces themselves or their boundaries—then it cannot be other than two cases: either He is in only one direction like the sun, or He encompasses every direction like the sky. The first is false for several reasons.

1 Kitab al-Asma' wa al-Sifat by al-Bayhaqi, Jami' Abwab Dhikr al-Asma' allati tattabi' nafy al-tashbih etc., Al-Maktaba al-Athariyya Sangla Hill, Sheikhupura 1/71 2 The Holy Quran 50:16 3 The Holy Quran 2:186

यह अल्लाह तआला की उन चीज़ों से पाकीज़गी की ओर इशारा है जो मखलूक (सृष्टि) के लिए जायज़ हैं, क्योंकि उनके अपने वजूद में पेश आने वाले हादसों के कारण उनमें बदलाव और तब्दीली आती रहती है। 1

[यह] मखलूक के लिए हो सकता है क्योंकि वे खुद और उनके हालात बदलते रहते हैं। (त)

दलील ८९: मैं कहता हूँ: हर दिशा वाली चीज़ इन्द्रिय संकेत (Ishara Hasiya) के योग्य होती है, कि अगर वह ऊपर हो तो उंगली ऊपर उठाकर बता सकते हैं कि वह वहाँ है, और अगर नीचे हो तो नीचे। हर इन्द्रिय संकेत के योग्य चीज़ स्थान घेरने वाली (Mutahayyiz) होती है, और स्थान घेरने वाली चीज़ जिस्म (शरीर) या जिस्मानी होती है। हर जिस्म और जिस्मानी चीज़ मोहताज होती है, और अल्लाह (अज़्ज़ व जल्ल) मोहताजी से पाक है। तो वाजिब हुआ कि वह दिशा से पाक हो, न ऊपर हो न नीचे, न आगे न पीछे, न दाएं न बाएं। तो निश्चित रूप से लाज़िम आया कि वह किसी स्थान (मकान) में न हो।

दलील ९०: मैं कहता हूँ: अर्श ज़मीन से बहुत दूर है और अल्लाह बन्दे से बहुत करीब है। अल्लाह तआला ने फरमाया: | "और हम उसकी शाहरग से भी ज़्यादा करीब हैं।" 2- | हम तुम्हारी शाहरग से ज़्यादा करीब हैं। (त) | | :--- | :--- | अल्लाह तआला ने फरमाया: | "जब मेरे बन्दे आपसे मेरे बारे में पूछें, तो मैं करीब हूँ।" 3- | जब तुझसे मेरे बारे में मेरे बन्दे सवाल करें तो मैं करीब हूँ। (त) | | :--- | :--- | तो अगर अर्श पर अल्लाह (अज़्ज़ व जल्ल) का मकान होता तो अल्लाह तआला हर दूर चीज़ से ज़्यादा हमसे दूर होता, और वह कुरान के स्पष्ट आदेश (नस्स) के अनुसार गलत है।

दलील ९१: मैं कहता हूँ: मौला तआला अगर अर्श पर चढ़ा बैठा है तो उससे उतर भी सकता है या नहीं? अगर नहीं, तो वह विवश (आजिज़) हुआ और विवश खुदा नहीं हो सकता। और अगर हाँ, तो जब उतरेगा तो अर्श से नीचे होगा, तो उसका 'नीचे' (असफ़ल) होना भी मुमकिन हुआ, और 'नीचे' वाला खुदा नहीं।

दलील ९२: मैं कहता हूँ: अगर तुम्हारे माबूद (उपास्य) के लिए कोई स्थान है, और स्थान और स्थान घेरे हुए चीज़ के लिए दिशा होना अनिवार्य है—क्योंकि दिशाएँ स्वयं स्थान हैं या स्थानों की सीमाएँ—तो अब दो स्थितियों से खाली नहीं: या तो वह सूरज की तरह केवल एक ही तरफ होगा या आसमान की तरह हर तरफ से घेरे हुए। पहला कई कारणों से गलत है।

1 किताबुल अस्मा वस्सफ़ात लिल्बैहकी, जमा अबवाब ज़िक्रिल अस्मा अल्लती तत्ताबि' नफ़िय्यत्तशबीह आदि, अल-मकतबतुल असरीया, सांगला हिल, शेखूपुरा 1/71 2 अल-कुरानुल करीम 50/16 3 अल-कुरानुल करीम 2/186

ذلک عائد الی تنزیھہ تعالی عما یحوز علی المصنوعین لاعراضھم بالحدوث فی انفسھم للحوادث ان تصیبھم وتغیرھم۔1

مخلوق کے لیے ہو سکتی ہیں کیونکہ وہ خود اور ان کے حوادث تغیر پاتے ہیں۔ (ت)

ضرب ۸۹:اقول: ہر ذی جہت قابل اشارہ حسیہ ہے کہ اوپر ہوا تو انگلی اوپر کو اٹھا کر بتا سکتے ہیں، کہ وہ ہے اور نیچے ہوا تو نیچے کو، اور ہر قابل اشارہ حسیہ متحیز ہے اور متحیز جسم یا جسمانی ہے اور ہر جسم و جسمانی محتاج ہے اور اللہ عزوجل احتیاج سے پاک ہے تو واجب ہوا کہ جہت سے پاک ہو، نہ اوپر ہو نہ نیچے، نہ آگے نہ پیچھے، نہ دہنے نہ بائیں تو قطعاً لازم کہ کسی مکان میں نہ ہو۔

ضرب ۹۰:اقول: عرش زمین سے غایت بعد پر ہے اور اللہ بندے سے نہایت قرب میں۔ قال اللہ تعالیٰ: | "وَنَحْنُ أَقْرَبُ إِلَيْهِ مِنْ حَبْلِ الْوَرِيدِ ﴿١٦﴾" 2- | ہم تمہاری شہ رگ سے زیادہ قریب ہیں۔ (ت) | | :--- | :--- | قال اللہ تعالیٰ: | " إِذَا سَأَلَكَ عِبَادِي عَنِّي فَإِنِّي قَرِيبٌ " 3- | جب تجھ سے میرے متعلق میرے بندے سوال کریں تو میں قریب ہوں۔ (ت) | | :--- | :--- | تو اگر عرش پر اللہ عزوجل کا مکان ہوتا اللہ تعالیٰ ہر دور تر سے زیادہ ہم سے دور ہوتا، اور وہ بنص قرآن باطل ہے۔

ضرب ۹۱:اقول: مولیٰ تعالیٰ اگر عرش پر چڑھا بیٹھا ہے تو اس سے اُتر بھی سکتا ہے یا نہیں، اگر نہیں تو عاجز ہوا اور عاجز خدا نہیں، اور اگر ہاں تو جب اترے گا عرش سے نیچے ہوگا تو اس کا اسفل ہونا بھی ممکن ہوا اور اسفل خدا نہیں۔

ضرب ۹۲:اقول: اگر تیرے معبود کے لیے مکان ہے اور مکان و مکانی کو جہت سے چارہ نہیں کہ جہات نفسِ امکنہ ہیں یا حدودِ امکنہ، تو اب دو حال سے خالی نہیں، یا تو آفتاب کی طرح صرف ایک ہی طرف ہو گا یا آسمان کی مانند ہر جہت سے محیط، اولیٰ باطل ہے بوجوہ۔

1 کتاب الاسماء والصفات للبیہقی جماع ابواب ذکر الاسماء التی تتبع نفی التشبیہ الخ، المکتبہ الاثریہ سانگلہ ہل شیخوپورہ ۱/۷۱ 2 القرآن الکریم ۱۶/۵۰ 3 القرآن الکریم ۲/۱۸۶

Fatawa Razawiya Volume 29

Firstly: It is contrary to the noble verse "And Allah is encompassing of all things" [1] - (Allah Almighty's power encompasses everything).

Secondly: It is against the noble verse "So wherever you [might] turn, there is the Face of Allah" [2] - (Whichever way you turn, there is the Being of Allah Almighty).

Thirdly: The earth is spherical, i.e., round, and its habitation on all sides is proven, and by the grace of Allah, Islam has reached everywhere; the new and old worlds are echoing with the word of Muhammad, the Messenger of Allah, peace and blessings of Allah Almighty be upon him. The purified Shariah is general to all regions.

"Blessed is He who sent down the Criterion upon His Servant that he may be to the worlds a warner" [3]. | Blessed is that Being who revealed the Qur'an to His special servant so that he might be a warner to all the worlds. (T)

And in Sahih Bukhari, it is narrated from Abdullah bin Umar, may Allah Almighty be pleased with them both, that the Messenger of Allah, peace and blessings of Allah Almighty be upon him, said:

"Indeed, when one of you is in prayer, Allah Almighty is in front of his face, so let no one spit in front of his face while in prayer" [4]. | When any of you is in prayer, then Allah Almighty is in front of his face, so no one should ever clear their throat in front of them while in prayer.

If Allah Almighty were in only one direction, then how could He be in front of someone praying in every part of the earth?

Fourthly: The leaders of those misguided people who believe in place and direction, such as Ibn Taymiyyah and others, have themselves presented this argument for Allah Almighty being in the upward direction, that Muslims of the whole world raise their hands towards their heads at the time of supplication and prayers. It is clear that this weak and exhausted argument, whose feathers the noble Imams have already plucked, if it proves anything, it would be Allah Almighty's encompassing from all sides; if He were in only one direction, then only...

---

1 Al-Qur'an al-Karim 4/126 2 Al-Qur'an al-Karim 2/115 3 Al-Qur'an al-Karim 25/1 4 Sahih al-Bukhari, Book of Adhan, Chapter: Does one look aside for something that descends? Qadimi Kutub Khana Karachi 1/102

फतावा रज़विया जिल्द 29

सर्वप्रथम: यह पाक आयत "और अल्लाह हर चीज़ को घेरे हुए है" [1] - (अल्लाह तआला की कुदरत हर चीज़ को घेरे हुए है) के विरुद्ध है।

द्वितीय: यह पाक आयत "तुम जिधर भी मुड़ो उधर अल्लाह का चेहरा है" [2] - (तुम जिस तरफ भी चेहरा करो वहाँ अल्लाह तआला की ज़ात है) के खिलाफ है।

तृतीय: पृथ्वी गोलाकार यानी गोल है और इसके हर तरफ आबादी सिद्ध हो चुकी है और अल्लाह के शुक्र से हर जगह इस्लाम पहुँच चुका है। नई और पुरानी दुनिया में सब जगह अल्लाह के रसूल मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का कलमा गूँज रहा है। शरीअते मुतह्हरा तमाम स्थानों के लिए आम है।

"बड़ी बरकत वाला है वह जिसने अपने बंदे पर फुरकान उतारा ताकि वह तमाम जहान वालों के लिए डर सुनाने वाला हो" [3]। | वह पाक ज़ात है जिसने अपने खास बंदे पर कुरआन नाज़िल फरमाया ताकि सब जहानों के लिए डर सुनाने वाला हो। (त)

और सहीह बुखारी में अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं:

"जब तुम में से कोई नमाज़ पढ़ता है तो बेशक अल्लाह तआला उसके सामने होता है, अतः कोई भी नमाज़ के दौरान अपने सामने न थूके" [4]। | जब तुम में से कोई व्यक्ति नमाज़ में होता है तो अल्लाह तआला उसके मुँह के सामने है, तो हरगिज़ कोई व्यक्ति नमाज़ में सामने न खँखारे।

अगर अल्लाह तआला एक ही दिशा में होता तो ज़मीन के हर हिस्से में नमाज़ पढ़ने वाले के सामने कैसे हो सकता है?

चतुर्थ: उन गुमराहों जो अल्लाह के लिए जगह और दिशा के कायल हैं, उनके पेशवाओं इब्ने तैमिया वगैरह ने अल्लाह तआला के ऊपर की दिशा में होने पर खुद ही यह दलील पेश की है कि दुनिया भर के मुसलमान दुआ और मुनाजात के वक्त अपने हाथों को सिर की तरफ उठाते हैं। ज़ाहिर है कि यह दलील इतनी कमज़ोर है जिसे आईमा-ए-किराम पहले ही रद्द कर चुके हैं। अगर यह दलील कुछ साबित करती है तो यह कि अल्लाह अज़्वजल हर तरफ से घेरे हुए है; अगर वह सिर्फ एक ही दिशा में होता तो केवल...

1 अल-कुरआन अल-करीम 4/126 2 अल-कुरआन अल-करीम 2/115 3 अल-कुरआन अल-करीम 25/1 4 सहीह अल-बुखारी, किताबुल अज़ान, बाब: क्या नमाज़ी किसी ऐसी चीज़ की तरफ मुड़ सकता है जो पेश आ जाए? कदीमी कुतुब खाना कराची 1/102

पृष्ठ 160/750

اولاً: آیہ کریمہ "وَكَانَ اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ مُحِيطًا" ۱ - (اللہ تعالٰی کی قدرت ہر چیز کو محیط ہے۔ت) کے مخالف ہے۔

ثانیاً: کریمہ "فَأَيْنَمَا تُوَلُّوا فَثَمَّ وَجْهُ اللَّهِ ط" ۲ - (تم جدھر پھرو تو وہاں اللہ تعالٰی کی ذات ہے۔ت) کے خلاف ہے۔

ثالثاً: زمین کروی یعنی گول ہے اور اس کی ہر طرف آبادی ثابت ہوئی ہے اور بحمد اللہ ہر جگہ اسلام پہنچا ہوا ہے نئی پرانی دنیا میں سب محمد رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کے کلمے سے گونج رہی ہیں شریعت مطہرہ تمام بقاع کو عام ہے۔

"تَبٰرَكَ الَّذِي نَزَّلَ الْفُرْقَانَ عَلٰى عَبْدِهٖ لِيَكُونَ لِلْعٰلَمِينَ نَذِيرًا" ۳- | وہ پاک ذات ہے جس نے اپنے خاص بندے پر قرآن نازل فرمایا تاکہ سب جہانوں کے لیے ڈر سنانے والا ہو۔ (ت)

اور صحیح بخاری میں عبداللہ بن عمر رضی اللہ تعالٰی عنہما سے ہے رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں:

ان احدکم اذا کان فی الصّلٰوۃ فان اللہ تعالٰی قبل وجھہ فلا یتنحن احد قبل وجھہ فی الصّلٰوۃ۔ ۴۔ | جب تم میں کوئی شخص نماز میں ہوتا ہے تو اللہ تعالٰی اس کے منہ کے سامنے ہے تو ہر گز کوئی شخص نماز میں سامنے کو کھنکار نہ ڈالے۔

اگر اللہ تعالٰی ایک ہی طرف ہے تو ہر پارہ زمین میں نماز پڑھنے والے کے سامنے کیوں کر ہو سکتا ہے۔

رابعاً: ان گمراہوں مکان وجہت ماننے والوں کے پیشواؤں ابن تیمیہ وغیرہ نے اللہ تعالیٰ کے جہت بالا میں ہونے پر خود ہی یہ دلیل پیش کی ہے کہ تمام جہان کے مسلمان دعا و مناجات کے وقت ہاتھ اپنے سروں کی طرف اٹھاتے ہیں پُر ظاہر کہ یہ دلیل ذلیل طبل کلیل کہ ائمہ کرام جس کے پر نچے اڑا چکے اگر ثابت کرے گی تو اللہ عزوجل کا سب طرف سے محیط ہونا کہ ایک ہی طرف ہوتا تو وہیں کے

---

۱ القرآن الکریم ۴/ ۱۲۶ ۲ القرآن الکریم ۲/ ۱۱۵ ۳ القرآن الکریم ۲۵/ ۱ ۴ صحیح البخاری کتاب الاذان باب هل یلتفت لامرینزل بہ قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/ ۱۰۲

Muslims raise their hands towards their heads where they are opposite their heads. Why wouldn't Muslims in other parts raise them towards their heads? Rather, it would be incumbent upon those living in the opposite direction to stretch their hands towards their feet because their idol's deity is towards their feet. In short, the first option is void. As for the second, this encirclement would never be within the Throne; otherwise, 'istiwa' (rising over) would become void. Their deity would not be above the Throne but would be established below it. Inevitably, it would encompass from outside the Throne. Now the Throne would be in the stomach of their deity, so how could the Throne be its place? Rather, it (the deity) became the place for the Throne, and now sitting on the Throne also became void because one cannot say that something that is inside itself is sitting on it. Will they say to you that you are sitting on your heart, or liver, or spleen? O misguided ones, the Proof of Allah is established thus.

Strike 93: I say: The pure Sharia commanded the Muslims of the whole world to face the Qibla in prayer. This command itself is a definitive proof that Allah, the Exalted and Majestic, is pure and free from direction and place. If there were a side and direction for His Majesty the Honor, it would be purely absurd and void to leave facing the true Deity, standing in His service, bowing in His presence of greatness, and rubbing the face on the dust before Him, and instead start prostrating towards another place while the Deity is in another place. If a subject of a king, leaving the king, performs the etiquette of the court facing a wall of the courthouse and stands with folded hands in front of the wall, he would be called a disrespectful jester or an insane madman. Yes, if the Deity surrounded the earth from all sides, then a reason for fixing the direction of Qibla could emerge; since He encompasses from every side, facing Him would happen in any case, and a specific direction was designated as an etiquette rule. But the Deity is pure from such encompassing because this situation is conceivable in only two ways. One is that all places from the Throne to the floor are filled with Him, just as air fills every void. Second, that He encompasses the universe like the celestial spheres outside the Throne, and in the middle is a void in which the Throne, the Footstool, the heavens, the earth, and the creations are situated. And both forms are impossible. The latter because He would no longer be 'As-Samad' (Eternal, Besought of all, having no hollow). 'As-Samad' is one for whom there is no hollow. And His hollow became so large—Allah forbid—when the Creator of the universe took the shape of the sky, then how did you know that He is this highest sky which is called the 'Atlas sphere' and the 'sphere of spheres'? When comparison

(tashbih) is established, what evidence could there be for its impossibility? And the first form is even more hideous and obviously void, for when the illusory deity of the corporealist misguided ones fills every place from the Throne to the floor, then—Allah forbid—He would be in every latrine, bathroom, in the stomachs of men and in the [wombs] of women.

मुसलमान अपने सिर की तरफ हाथ उठाते हैं जहाँ वे सिरों के विपरीत होते हैं। बाकी दिशाओं के मुसलमान सिरों की तरफ हाथ क्यों न उठाते? बल्कि विपरीत दिशा में रहने वालों पर अनिवार्य होता कि वे अपने पैरों की तरफ हाथ बढ़ाते क्योंकि उनके मुजस्सिमा (साकारवादी) का माबूद (उपास्य) उनके पैरों की तरफ है। संक्षेप में, पहला विकल्प व्यर्थ है। रही बात दूसरे की, तो यह घेरा अर्श के भीतर कभी नहीं होगा, अन्यथा 'इस्तिवा' (अर्श पर आसीन होना) व्यर्थ हो जाएगा। उनका माबूद अर्श के ऊपर नहीं होगा बल्कि नीचे स्थिर होगा। अनिवार्य रूप से वह अर्श को बाहर से घेरे होगा। अब अर्श उनके माबूद के पेट में होगा, तो अर्श उसका स्थान कैसे हो सकता है? बल्कि वह (माबूद) अर्श का स्थान ठहरा और अब अर्श पर बैठना भी व्यर्थ हो गया, क्योंकि जो चीज़ अपने अंदर हो उस पर बैठना नहीं कहा जा सकता। क्या वे तुमसे कहेंगे कि तुम अपने दिल या जिगर या तिल्ली पर बैठे हुए हो? ऐ गुमराहों, अल्लाह की हुज्जत (प्रमाण) इस प्रकार स्थापित होती है।

घात ९३: मैं कहता हूँ: शरीयत-ए-मुतह्हरा (पवित्र शरीयत) ने दुनिया भर के मुसलमानों को नमाज़ में किबला की ओर मुँह करने का हुक्म दिया। यही हुक्म इस बात का कतई (अंतिम) प्रमाण है कि अल्लाह अज्ज़-व-जल्ल दिशा और स्थान से पाक और मुक्त है। अगर खुद हज़रत-ए-इज़्ज़त-ओ-जलाल के लिए कोई दिशा या स्थान होता, तो यह नितांत निरर्थक और व्यर्थ होता कि असली माबूद की ओर मुँह करके उसकी सेवा में खड़ा होना, उसकी महानता के सामने झुकना, उसके सामने खाक (मिट्टी) पर माथा रगड़ना छोड़कर किसी और स्थान की ओर सजदा करने लगें, जबकि माबूद दूसरे स्थान में है। अगर किसी बादशाह का दरबारी बादशाह को छोड़कर दीवान-खाने की किसी दीवार की तरफ मुँह करके दरबारी शिष्टाचार निभाए और दीवार के सामने ही हाथ बाँधकर खड़ा रहे, तो वह बदतमीज़ मज़ाकिया या पागल कहलाएगा। हाँ, अगर माबूद ज़मीन को सब तरफ से घेरे होता, तो किबला की दिशा निर्धारित करने का एक पहलू निकल सकता था कि जब वह हर दिशा से घेरे हुए है, तो उसकी तरफ मुँह तो हर हाल में होगा ही, शिष्टाचार के तौर पर एक विशेष दिशा बना दी गई। लेकिन माबूद ऐसे घेरे से पाक है क्योंकि यह स्थिति केवल दो ही तरह से सोची जा सकती है। एक यह कि अर्श से लेकर फर्श तक सब जगहें उससे भरी हों जैसे हर खाली स्थान में हवा भरी है। दूसरा यह कि वह अर्श से बाहर ही बाहर आसमानों की तरह विश्व को घेरे हो और बीच में खाली जगह हो जिसमें अर्श, कुर्सी, आसमान, ज़मीन और मखलूकात (सृष्टि) स्थित हों। और ये दोनों स्थितियाँ असंभव हैं। पिछली इसलिए कि अब वह 'समद' नहीं रहेगा। समद वह है जिसके लिए कोई खोखलापन (जोफ़) न हो। और उसका खोखलापन तो इतना बड़ा हो गया—अल्लाह की पनाह—जब सृष्टि का

रचयिता आसमान के आकार पर हुआ, तो तुम्हें क्या मालूम हुआ कि वह यही सबसे ऊँचा आसमान है जिसे 'फलक-ए-अतलस' और 'फलक-उल-अफ्लाक' कहते हैं? जब तुलना (तशबीह) ठहर गई, तो उसके असंभव होने पर क्या प्रमाण हो सकता है? और पहली स्थिति तो इससे भी अधिक घिनौनी और स्पष्ट रूप से व्यर्थ है कि जब गुमराह मुजस्सिमा (साकारवादियों) का काल्पनिक माबूद अर्श से फर्श तक हर स्थान को भरे हुए है, तो—अल्लाह की पनाह—वह हर पाखाने, गुसलखाने में होगा, मर्दों के पेट और औरतों के[कोख] में...

مسلمان سر کی طرف ہاتھ اٹھاتے جہاں وہ سروں کے مقابل ہے باقی اطراف کے مسلمان سروں کی طرف کیوں نہ اٹھاتے بلکہ سمت مقابل کے رہنے والوں پر لازم ہوتا کہ اپنے پاؤں کی طرف ہاتھ بڑھائیں کہ ان مجسمہ کا معبود ان کے پاؤں کی طرف ہے۔ بالجملہ پہلی شق باطل ہے، رہی دوسری اس پر یہ احاطہ عرش کے اندر اندر ہر گز نہ ہوگا ورنہ استواء باطل ہوجائے گا، ان کا معبود عرش کے اوپر نہ ہوگا نیچے قرار پائے گا، لاجرم عرش کے باہر سے احاطہ کرے گا اب عرش ان کے معبود کے پیٹ میں ہوگا تو عرش اس کا مکان کیوں کر ہوسکتا ہے بلکہ وہ عرش کا مکان ٹھہرا اور اب عرش پر بیٹھنا بھی باطل ہوگیا، کہ جو چیز اپنے اندر ہواس پر بیٹھنا نہیں کہہ سکتے کیا تمہیں کہیں گے کہ تم اپنے دل یا جگر یا طحال پر بیٹھے ہوئے ہو، گمراہو ، حجتہ اللہ یوں قائم ہوتی ہے۔

ضرب ۹۳ : اقول: شرع مطہر نے تمام جہان کے مسلمانوں کو نماز میں قبلہ کی طرف منہ کرنے کا حکم فرمایا، یہی حکم دلیل قطعی ہے کہ اللہ عزوجل جہت و مکان سے پاک وبری ہے، اگر خود حضرتِ عزتِ جلالہ کے لیے طرف وجہت ہوتی محض مہمل باطل تھا کہ اصل معبود کی طرف منہ کرکے اس کی خدمت میں کھڑا ہونا اس کی عظمت کے حضور پیٹھ جھکانا اس کے سامنے خاک پر منہ ملنا چھوڑ کر ایک اور مکان کی طرف سجدہ کرنے لگیں حالانکہ معبود دوسرے مکان میں ہے، بادشاہ کا مجرائی اگر بادشاہ کو چھوڑ کر دیوان خانہ کی کسی دیوار کی طرف منہ کرکے آدابِ مجرا بجا لائے اور دیوار ہی کے سامنے ہاتھ باندھے کھڑا رہے تو بے ادب مسخرہ کہلائے گا یا مجنون پاگل۔ ہاں اگر معبود سب طرف سے زمین کو گھیرے ہوتا تو البتہ جہت قبلہ مقرر کرنے کی جہت نکل سکتی کہ جب وہ ہر سمت سے محیط ہے تو اس کی طرف منہ تو بہرحال میں ہوگا

ہی، ایک ادب قاعدے کے طور پر ایک سمت خاص بنادی گئی، مگر معبود ایسے گھیرے سے پاک ہے کہ یہ صورت دو ہی طور پر متصور ہے، ایک یہ کہ عرش تا فرش سب جگہیں اس سے بھری ہوں جیسے ہر خلا میں ہوا بھری ہے۔ دوسرے یہ کہ وہ عرش سے باہر باہر افلاک کی طرح محیط عالم ہو اور بیچ میں خلا جس میں عرش و کرسی، آسمان و زمین و مخلوقات واقع ہیں، اور دونوں صورتیں محال ہیں، پچھلی اس لیے کہ اب وہ صمد نہ رہے گا صمد وہ جس کے لیے جوف نہ ہو، اور اس کا جوف تو اتنا بڑا ہوا معاذاللہ جب خالق عالم آسمان کی شکل پر ہوا تو تمہیں کیا معلوم ہوا کہ وہ یہی آسمان اعلیٰ ہو جسے فلک اطلس و فلک الافلاک کہتے ہیں، جب تشبیہ ٹھہری تو اس کے استحالی پر کیا دلیل ہوسکتی ہے اور پہلی صورت اس سے بھی شنیع تر و بدیہی البطلان ہے کہ جب مجسمہ گمراہوں کا وہمی معبود عرش تا فرش ہر مکان کو بھرے ہوئے ہے تو معاذاللہ ہر پاخانہ غسل خانے میں ہوگا مردوں کے پیٹ اور عورتوں کے

...would also be in the womb; those walking on the path would be stepping and placing their shoes on it. God forbid, according to this estimation, how would you know that He is the same one who is filled in every place? When physical enclosure is proven false in every way, then by necessity He must be at only one edge. There is no doubt that when people living in every direction of the globe face the Kaaba in their prayers, everyone's face will not be towards that one edge in which you have assumed God to be. Rather, if one faces it, the other's back will be towards it; the third's side, one's head, and the other's feet. This would be a severe insult to the pure Sharia. Certainly, it is obligatory to believe that He is Self-Sufficient, beyond space, direction, and all accidental attributes. All praise is for Allah.

Strike 94: I say: It is narrated in the Sahihayn from Abu Hurayrah and in Sahih Muslim from Abu Hurayrah and Abu Sa'id (may Allah be pleased with them) that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says:

Our Lord (Mighty and Majestic is He) descends every night to this lowest heaven when the last third of the night remains and says: "Is there anyone supplicating so that I may accept his supplication?" — The Hadith [1].

And authentic, continuous observations have proven that both heaven and earth are round in the shape of a sphere. The sun is in a constant state of rising and setting; when it rises in one place, it sets in another. This condition remains constant throughout the twenty-four hours (eight *pahars*). Thus, every part of the day and night will also remain present across different locations throughout the twenty-four hours. At this moment, if it is the last third of the night here, then after a moment, the last third will be in another place, which will have moved slightly westward from the first place. A moment later, it will be the last third in a third place, and so on. Therefore, it is necessary for those who believe in an anthropomorphic deity and insist on taking this descending and such actions in their literal sense, that He would always, at all times, every hour of the day, all twelve months of the year, remain in this lower heaven. At most, as the night moves along, He Himself would move in alignment with those people, whether He stays in one place in the heaven and calls out. In any case, if He is presiding over this heaven at all times, then when will the time come to sit on the Throne, and what would be the meaning of descending to the heaven?

[1] Sahih al-Bukhari, Book of Tahajjud, Chapter on Supplication and Prayer in the last part of the night, Qadeemi Kutub Khana Karachi, 1/153; Sahih Muslim, Book of the Prayer of Travelers, Chapter on the Night Prayer and its number of Rak'ahs, etc., Qadeemi Kutub Khana Karachi, 1/258.

फतावा रज़विया जिल्द 29

...गर्भ में भी होगा, राह चलने वाले उसी पर पाँव और जूते रखकर चलेंगे। अल्लाह न करे, इस अनुमान पर तुम्हें क्या मालूम कि वह वही हुआ जो हर जगह भरा है, जब शारीरिक घेराबंदी हर तरह से गलत सिद्ध हुई तो निश्चित रूप से एक ही किनारे को होगा। और इसमें कोई शक नहीं कि पृथ्वी के गोले के हर कोने में रहने वाले जब नमाज़ों में काबा की ओर मुँह करेंगे, तो सबका मुँह उस एक किनारे की तरफ नहीं होगा जिसमें तुमने खुदा को मान लिया है। बल्कि एक का मुँह है तो दूसरे की पीठ होगी, तीसरे का बाजू, एक का सिर होगा तो दूसरे के पाँव; यह शरीअत-ए-मुतह्हरा (पवित्र कानून) पर बड़ा दोष लगाना होगा। अतः, यह विश्वास करना अनिवार्य है कि वह बेनयाज़ (आत्मनिर्भर), स्थान, दिशा और सभी आकस्मिक गुणों से पाक है, और अल्लाह की प्रशंसा है।

प्रहार ९४: मैं कहता हूँ: सहीहैन में अबू हुरैरा से और सहीह मुस्लिम में अबू हुरैरा और अबू सईद (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं:

हमारा रब (अज़-ओ-जल्ल) हर रात जब रात का आखिरी तिहाई हिस्सा बचता है, इस निचले आसमान तक उतरता है और फरमाता है: "है कोई दुआ करने वाला कि मैं उसकी दुआ कुबूल करूँ?" — हदीस [1].

और सही और मुतवातिर (लगातार) टिप्पणियों ने यह साबित किया है कि आसमान और ज़मीन दोनों गोले के आकार में गोल हैं। सूर्य हर समय उदय और अस्त की स्थिति में रहता है; जब वह एक स्थान पर उदय होता है, तो दूसरे स्थान पर अस्त होता है। आठों पहर (24 घंटे) यही स्थिति रहती है, तो दिन और रात का हर हिस्सा भी इसी तरह आठों पहर अलग-अलग स्थानों पर मौजूद रहता है। इस समय यहाँ रात का तिहाई हिस्सा है, तो एक क्षण के बाद दूसरी जगह तिहाई हिस्सा होगा जो पहली जगह से थोड़ा पश्चिम की ओर खिसक गया होगा। एक क्षण बाद तीसरी जगह तिहाई हिस्सा होगा और इसी तरह आगे भी। तो उन लोगों के लिए जो एक साकार ईश्वर को मानते हैं और इन उतरने आदि के अर्थों को शाब्दिक रूप में लेना आवश्यक समझते हैं, यह लाज़िम है कि वह हमेशा हर समय, आठों पहर, साल के बारहों महीने इसी निचले आसमान पर रहता हो। अधिक से अधिक यह कि जैसे-जैसे रात सरकती जाए, वह स्वयं भी उन लोगों के सामने सरकता जाए, चाहे वह आसमान पर एक ही

जगह बैठा आवाज़ देता हो। बहरहाल, जब वह हर समय इसी आसमान पर सुशोभित है, तो अर्श (सिंहासन) पर बैठने का कौन सा समय आएगा और आसमान पर उतरने के क्या अर्थ होंगे?

[1] सहीह अल-बुखारी, किताब अत-तहज्जुद, रात के आखिरी हिस्से में दुआ और नमाज़ का अध्याय, कदीमी कुतुब खाना कराची, 1/153; सहीह मुस्लिम, मुसाफिरों की नमाज़ की किताब, रात की नमाज़ और उसकी रकअतों की संख्या का अध्याय, आदि, कदीमी कुतुब खाना कराची, 1/258।

رحم میں بھی ہوگا، راہ چلنے والے اسی پر پاؤں اور جوتا رکھ کر چلیں گے معاذ اللہ اس تقدیر پر تمہیں کیا معلوم کہ وہ یہی ہوا ہو جو ہر جگہ بھری ہے، جب احاطہ جسمانیہ ہر طرح باطل ہوا تو بالضرورۃ ایک ہی کنارے کو ہو گا اور شک نہیں کہ کرہ زمین کے ہر سمت رہنے والے جب نمازوں میں کعبے کو منہ کریں گے تو سب کا منہ اس ایک ہی کنارے کی طرف نہ ہو گا جس میں تم نے خدا کو فرض کیا ہے بلکہ ایک کا منہ ہے تو دوسرے کی پیٹھ ہو گی، تیسرے کا بازو، ایک کا سر ہو گا تو دوسرے کے پاؤں، یہ شریعت مطہرہ کو سخت عیب لگانا ہوگا۔ لاجرم ایمان لانا فرض ہے کہ وہ غنی بے نیاز مکان و جہت و جملہ اعراض سے پاک ہے وللہ الحمد۔

ضرب ۹۴: اقول: صحیحین میں ابوہریرہ اور صحیح مسلم میں ابوہریرہ وابو سعید رضی اللہ تعالٰی عنہما سے ہے رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں :

1- ینزل ربنا کل اللیلۃ الی سماء الدنیا حین یبقی ثلث اللیل الآخر فیقول من یدعونی فاستجیب لہ الحدیث
ہمارا رب عزوجل ہر رات تہائی رات رہے اس آسمانِ زیریں تک نزول کرتا اور ارشاد فرماتا ہے، ہے کوئی دعا کرنے والا کہ میں اس کی دعا قبول کروں۔

اور ارصاد صحیحہ متواترہ نے ثابت کیا ہے کہ آسمان و زمین دونوں گول بشکل کرہ ہیں، آفتاب ہر آن طلوع و غروب میں ہے، جب ایک موضع میں طالع ہوتا ہے تو دوسرے میں غروب ہوتا ہے، آٹھ پہر یہی حالت ہے تو دن اور رات کا ہر حصہ بھی یونہی آٹھ پہر باختلاف مواضع موجود رہے گا اس وقت یہاں تہائی رات رہی تو ایک لحظہ کے بعد دوسری جگہ تہائی رہے گی جو پہلی جگہ سے ایک مقدار خفیف پر مغرب کو ہٹی ہو گی ایک لحظہ بعد تیسری جگہ تہائی رہے گی وعلی ہذا

القیاس، تو واجب ہے کہ مجسمہ کا معبود جن کے طور پر یہ نزول و غیرہ سب معنی حقیقی پر حمل کرنا لازم، ہمیشہ ہر وقت آٹھوں پہر بارھوں مہینے اسی نیچے کے آسمان پر رہتا ہو، غایت یہ کہ جو جو رات سرکتی جائے خود بھی ان لوگوں کے محاذات میں سر کتا ہو خواہ آسمان پر ایک ہی جگہ بیٹھا آواز دیتا ہو، بہر حال جب ہر وقت اسی آسمان پر براج رہا ہے تو عرش پر بیٹھنے کا کون سا وقت آئے گا اور آسمان پر اترنے کے کیا معنی ہوں گے۔

1 صحیح البخاری کتاب التہجد باب الدعاء والصلوۃ من آخر اللیل قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/ ۱۵۳، صحیح مسلم کتاب صلوۃ المسافرین باب صلوۃ اللیل وعدد رکعات الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/ ۲۵۸

Fatawa-e-Razawiya, Volume 29

By the praise of Allah, these are twenty (20) grand proofs, establishers of the truth and nullifiers of falsehood. Three are from the benefits of the noble Imams and seventeen are from the bestowals of the All-Knowing Lord, which were written spontaneously without referring to books—fourteen in a single private sitting and the remaining three in a second sitting after prayers. If one refers to books of theology, apparently there will be many arguments separate from these, many of them new and fresh, and it wouldn't be surprising if some common ones are found. However, there is neither time nor need for more, nor was the reliance on other books established in this treatise. Therefore, limiting and sufficing with this, and if divine success accompanies, there is sufficiency and guidance in them. And praise be to Allah, Lord of the worlds.

Now take the refutation of the opponent's ignorances, i.e., those which that ignorant person presented by the power of his misguidance, considering two Hadiths useful for himself.

Point 95: The scholar of the age (sarcastic) has written the Sahih Bukhari Hadith with his eyes completely shut. The notion of his deity being spatial and corporeal has become so fixed in his mind that, whether he wants it or not, he misinterprets every path and every example. The words of the Hadith are as follows:

Arabic	**Translation**
He said while he was in his place: "O Lord, lighten (the burden) for us, for my nation cannot bear this."	You said from your place: "O Lord! Grant us relief because my nation does not have this capability." (T)

Meaning, when fifty prayers were made obligatory for the Noble Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him) and the Holy Prophet returned from Sidra to the seventh heaven, Moses (peace and blessings be upon him) requested him to seek reduction. Upon the advice of Gabriel the Trustworthy (peace and blessings be upon him), the Prophet again set out for Sidra and reached his previous station where he had reached before, and petitioned his Lord: "O Allah! Grant us relief from this, as my nation will not be able to perform so many."

Here, the 'station of ascent' of the Master of the Universe (may Allah's peace and blessings be upon him) is being mentioned. The foolish 'learned one' immediately diverted the pronoun towards the Divine Majesty, meaning he thought the Prophet

petitioned in a state where God was sitting in His same place and hadn't gone anywhere. There is no power or strength except with Allah, the High, the Great. The 'insightful' gentleman didn't even realize that 'wahuwa makanuhu' (while he was in his place) is a circumstantial clause (jumla-e-haliya) occurring between 'qaala' (he said) and his statement.

---

[1] Sahih al-Bukhari, Kitab at-Tawhid, Chapter on the word of Allah Almighty: "And Allah spoke to Moses with (direct) speech," Qadimi Kutub Khana, Karachi, 12/1120.

फ़तावा रज़विया, खंड 29

अल्लाह की स्तुति से, ये बीस (20) भव्य प्रमाण हैं, जो सत्य के स्थापक और असत्य के नाशक हैं। तीन महान इमामों के लाभों से हैं और सत्रह सर्वज्ञ प्रभु के अनुग्रह से हैं, जिन्हें बिना पुस्तकों के परामर्श के अचानक लिखा गया है—चौदह एक ही निजी बैठक में और शेष तीन नमाज़ के बाद दूसरी बैठक में। यदि धर्मशास्त्र की पुस्तकों का संदर्भ लिया जाए, तो स्पष्ट रूप से इनमें से कई तर्क अलग होंगे, उनमें से कई नए और ताज़ा होंगे, और इसमें कोई आश्चर्य नहीं होगा यदि कुछ सामान्य तर्क भी मिलें। हालाँकि, न तो अधिक समय है और न ही आवश्यकता, और न ही इस शोध प्रबंध में अन्य पुस्तकों पर निर्भरता का निर्णय लिया गया था। इसलिए, इसी पर संतोष करना, और यदि ईश्वरीय सफलता साथ हो, तो इन्हीं में पर्याप्तता और मार्गदर्शन है। और सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जो संसारों का प्रतिपालक है।

अब विरोधी की अज्ञानताओं का खंडन लें, यानी वे दो हदीसें जो उस अज्ञानी ने अपनी पथभ्रष्टता के बल पर अपने लिए उपयोगी समझकर पेश कीं।

प्रहार 95: उस युग के तथाकथित विद्वान ने सहीह बुखारी की हदीस पूरी तरह से आँखें बंद करके लिख दी है। उनके देवता का स्थानिक और शारीरिक होने का विचार उनके दिमाग में इस तरह बैठ गया है कि वे न चाहते हुए भी हर रास्ते और हर उदाहरण को गलत समझते हैं। हदीस के शब्द इस प्रकार हैं:

अरबी	**अनुवाद**
सो उन्होंने अपने स्थान पर रहते हुए कहा: "हे मेरे प्रभु, हमारे लिए (बोझ) हल्का कर दें, क्योंकि मेरी उम्मत इसे सहने में सक्षम नहीं है।"	आपने अपनी जगह पर फरमाया: "ऐ रब! हम पर कमी फरमा क्योंकि मेरी उम्मत में यह सामर्थ्य नहीं।" (त)

अर्थात् जब नबी करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर पचास नमाज़ें फ़र्ज़ हुईं और हुज़ूर सिदरा से सातवें आसमान पर वापस आए, तो मूसा (अलैहिस्सलाम) ने कमी चाहने के लिए गुज़ारिश की। हुज़ूर जिब्रील अमीन (अलैहिस्सलाम) के मशवरे से फिर सिदरा के लिए रवाना हुए और अपने उसी पिछले स्थान पर पहुँच गए जहाँ पहले पहुँचे थे और अपने रब से अर्ज़ की: "ऐ अल्लाह! हम पर कमी फरमा दे क्योंकि मेरी उम्मत से इतनी नमाज़ें नहीं हो सकेंगी।"

यहाँ सैय्यद आलम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के'उन्नति के स्थान' का ज़िक्र है, बावले फाज़िल ने तुरंत ज़मीर (सर्वनाम) को ईश्वरीय महिमा की ओर फेर दिया, यानी उनका मानना था कि हुज़ूर ने इस हाल में अर्ज़ की कि खुदा अपने उसी स्थान पर बैठा हुआ था और कहीं नहीं गया था। अल्लाह के सिवा कोई शक्ति या सामर्थ्य नहीं है, जो उच्च और महान है। 'समझदार' साहब को इतना भी नहीं सूझा कि 'वहुवा मकानुहु' (जबकि वह अपने स्थान पर थे) एक हालिया जुमला है जो 'काला' (उन्होंने कहा) और उनके कथन के बीच स्थित है।

---

[1] सहीह अल-बुखारी, किताब अत-तौहीद, अल्लाह के इस कथन का अध्याय: "और अल्लाह ने मूसा से साक्षात बात की", क़दीमी कुतुब खाना, कराची, 12/1120

بحمد اللہ یہ بیس ۲۰ دلائل جلاءل، مثبت حق و مبطل باطل ہیں، تین افادہ ائمہ کرام اور سترہ افاضہ مولائے علام کہ بلا مراجعت کتاب ارتجالاً لکھ دیں، چودہ ایک جلسہ واحدہ خفیہ میں اور باقی تین نماز کے بعد جلسہ ثانیہ میں، اگر کتب کلامیہ کی طرف رجوع کی جائے تو ظاہرًا بہت دلائل ان میں ان سے جدا ہوں گے بہت ان میں جدید و تازہ ہوں گے، اور عجب نہیں کہ بعض مشترک بھی ملیں، مگر نہ زیادہ کی فرصت نہ حاجت، نہ اس رسالے میں کتب دیگر سے استناد کا قرار داد، لہذا اسی پر اقتصار و قناعت، اور توفیق الہی ساتھ ہو تو انہیں میں کفایت و ہدایت، والحمد للہ رب العلمین۔

اب ردّ جہالاتِ مخالف لیجیے یعنی وہ جو اس بے علم نے اپنی گمراہی کے زور میں دو حدیثیں پیش خویش اپنی مفید جان کر پیش کیں۔

ضرب ۹۵: حدیث صحیح بخاری تو ان علامۃ الدہر صاحب نے بالکل آنکھیں بند کر کے لکھ دی اپنے معبود کا مکانی و جسم ہونا جو ذہن میں جم گیا ہے تو خواہ ہی نخواہی بھی ہر ابی ہر اسوہ بجھتا ہے حدیث کے لفظ یہ ہیں۔

عربی **ترجمہ**

فقال وھو مکانہ یارب خفف عنّا فأن آپ نے اپنی جگہ پر فرمایا۔ اے رب ! ہم پر تخفیف فرما کیونکہ امتی لا تستطیع ھذا۔ میری امت میں یہ استطاعت نہیں۔ (ت)

یعنی جب نبی کریم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم پر پچاس نمازیں فرض ہوئیں اور حضور سدرہ سے واپس آئے آسمان ہفتم پر موسٰی علیہ الصلوۃ والسلام نے تخفیف چاہنے کے لیے گزارش کی حضور

بمشورہ جبریل امین علیہ الصلوۃ والتسلیم پھر عازم سدرہ ہوئے اور اپنے اسی مکان سابق پر پہنچ کر جہاں تک پہلے پہنچے تھے اپنے رب سے عرض کی : الہی! ہم سے تخفیف فرمادے کہ میری امت سے اتنی نہ ہو سکیں گی۔

یہاں سید عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے مکان ترقی کا ذکر ہے، باؤلے فاضل نے جھٹ ضمیر حضرت عزت کی طرف پھیر دی یعنی حضور نے عرض کی اس حال میں کہ خدا اپنے اسی مکان میں بیٹھا ہوا تھا کہیں چلا نہ گیا تھا۔ ولا حول ولا قوۃ الا باللہ العلی العظیم بصیر صاحب کو اتنی بھی نہ سوجھی کہ وھو مکانہ جملہ حالیہ قال اور اس کے مقولے کے درمیان واقع ہے

---

[1] صحیح البخاری کتاب التوحید باب قول اللہ عز وجل وکلم اللہ موسی تکلیما قدیمی کتب خانہ کراچی ۱۲/ ۱۱۲۰

Fatawa Razawiyya Volume 29

Then how can it be fabricated without proof, leaving aside what is closer, that this state is not from the Prophet ﷺ but from Allah Almighty, which is not even mentioned in this sentence, except that:

"And he for whom Allah has not appointed light, for him there is no light." (1) (T)

Observation 96: Look into your authentic book 'Al-Asma' was-Sifat' and see what it says regarding this hadith. This hadith was narrated by Shurayk ibn Abdullah ibn Abi Namir (whom Imam Yahya ibn Ma'in and Imam Nasai called 'not strong' (2), meaning not strong in narration; and the leader of your non-conformists, Ibn Hazm, described as unreliable and weak because of this very hadith; and Hafiz-ush-Shan in 'Taqrib' (3) called 'truthful but prone to error'). He narrated from Hazrat Anas bin Malik (may Allah be pleased with him), in which he contradicted reliable memorizers (huffaz) at several places. In the aforementioned book, it is stated regarding this:

(Arabic Text)	(Translation)
Ibn Shihab al-Zuhri narrated the Hadith of Mi'raj from Anas bin Malik, from Abu Dharr; and Qatadah from Anas bin Malik, from Malik bin Sa'sa'ah (may Allah be pleased with them). In none of these narrations is there anything of that sort. Indeed, Shurayk ibn Abdullah ibn Abi Namir mentioned things in his narration which prove that he had not memorized the hadith as it ought to be. (4)	That is, this Hadith of Mi'raj was narrated by Imam Ibn Shihab al-Zuhri from Hazrat Anas bin Malik, who narrated from Hazrat Abu Dharr (may Allah be pleased with them), and Qatadah narrated from Hazrat Anas bin Malik, who narrated from Hazrat Malik bin Sa'sa'ah (may Allah be pleased with them). In these narrations, there is absolutely no trace of those words, and undoubtedly Shurayk mentioned things in his narration which prove that he did not remember this hadith as it should be remembered.

Observation 97: After stating the reasons for contradiction, he said:

---

1. Al-Qur'an al-Karim 24/40.
2. Mizan al-I'tidal quoting Al-Nasai, entry 3696, Shurayk bin Abdullah, Dar al-Ma'rifah, Beirut, 2/269.
3. Taqrib al-Tahdhib, entry 2796, Dar al-Kutub al-Ilmiyyah, Beirut, 1/418.

4. Kitab al-Asma' was-Sifat by al-Bayhaqi, Chapter on what has been reported regarding Allah's saying 'Then he approached and came down...' etc., Al-Maktabah al-Athariyyah, Sangla Hill, Sheikhupura, 12/187.

Page 164 of 750

तो करीब को छोड़कर बिना दलील के कैसे गढ़ लिया जाए कि यह हाल हुज़ूर ﷺ से नहीं बल्कि अल्लाह अज़्ज़वजल से है, जो इस जुमले में मज़कूर भी नहीं, मगर यह है कि:

"और जिसके लिए अल्लाह ने नूर नहीं बनाया, उसके लिए कोई नूर नहीं।" (१) (त)

ज़रब ९६: अपनी मुस्तनद किताब 'अल-अस्मा वस्सिफ़ात' को देखकर इस हदीस के बाब में देखें कि क्या फ़रमाते हैं। यह हदीस शरीक बिन अब्दुल्लाह बिन अबी नम्र ने (जिन्हें इमाम यहया बिन मईन और इमाम नसाई ने 'ल़ैस बिल-क़वी' (२) कहा है, यानी मज़बूत नहीं, और तुम्हारे गैर-मुक़ल्लिदों के पेशवा इब्ने हज़्म ने इसी हदीस की वजह से उन्हें वाही और ज़ईफ़ बताया, और हाफ़िज़-उश-शान ने 'तक़रीब' (३) में 'सदूक़ युख़्ती' यानी सच्चा मगर गलती करने वाला कहा) हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की, जिसमें जगह-जगह मोतबर हाफ़िज़ों की मुखालफ़त की गई है। इस पर मौसूफ़ किताब में फ़रमाते हैं:

(अरबी इबारत)	**(अनुवाद)**
इब्ने शिहाब अल-ज़ुहरी ने हज़रत अनस बिन मालिक से, उन्होंने हज़रत अबू ज़र से, और क़तादा ने हज़रत अनस बिन मालिक से, उन्होंने हज़रत मालिक बिन सा'सा (रज़ियल्लाहु अन्हुम) से हदीस-ए-मेराज रिवायत की। इनमें से किसी भी हदीस में ऐसी कोई बात नहीं है। और बेशक शरीक बिन अब्दुल्लाह बिन अबी नम्र ने अपनी इस रिवायत में ऐसी बातें ज़िक्र की हैं जिनसे साबित होता है कि उन्होंने हदीस को उस तरह याद नहीं रखा जैसा कि उसे याद रखना चाहिए था। (४)	यानी यह हदीस-ए-मेराज इमाम इब्ने शिहाब ज़ुहरी ने हज़रत अनस बिन मालिक, उन्होंने हज़रत अबू ज़र रज़ियल्लाहु अन्हुमा से और क़तादा ने हज़रत अनस बिन मालिक, उन्होंने हज़रत मालिक बिन सा'सा रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत की। इन रिवायतों में असल में उन अलफ़ाज़ का पता नहीं और बेशक शरीक ने रिवायत में वह बातें ज़िक्र की हैं जिनसे साबित होता है कि यह हदीस जैसी चाहिए उन्हें याद न थी।

ज़रब ९७: मुखालफ़त की वजह बयान करके फ़रमाया:

---

1. अल-कुरान अल-करीम २४/ ४०

2. मीज़ानुल एतदाल बहवाला अन-नसाई, तर्जुमा ३६९६ शरीक बिन अब्दुल्लाह, दारुल मारिफा बैरूत २/ २६९
3. तक़रीबुत तहज़ीब तर्जुमा २७९६ दारुल कुतुबुल इल्मिय्या बैरूत १/ ४१८
4. किताबुल अस्मा वस्सिफ़ात लिल-बैहक़ी, बाब मा जाअ फी क़ौलिल्लाहि सुम्मा दना फ़-तदल्ला इलख़, अल-मकतबा अल-अस़रिया सांगला हिल शेख़ूपुरा १२/ १८७

पृष्ठ १६४ / ७५०

تو اقرب کو چھوڑ کر بلا دلیل کیونکر گھڑ لیا جائے کہ یہ حال حضور ﷺ سے نہیں اللہ عزوجل سے ہے جو اس جملے میں مذکور بھی نہیں مگر یہ ہے کہ۔

"وَمَنْ لَّمْ يَجْعَلِ اللّٰهُ لَهٗ نُوْرًا فَمَا لَهٗ مِنْ نُّوْرٍ ﴿۴۰﴾" (1) (ت)

ضرب ۹۶: اپنی مستند کتاب الاسماء والصفات کو دیکھ کر اس حدیث کے باب میں کیا کیا فرماتے ہیں یہ حدیث شریک بن عبداللہ بن ابی نمر نے (جنہیں امام یحییٰ بن معین و امام نسائی نے لیس بالقوی (2) کہا ویسے قوی نہیں، اور تم غیر مقلدوں کے پیشوا ابن حزم نے اسی حدیث کی وجہ سے واہی وضعیف بتایا اور حافظ الشان نے تقریب (3) میں صدوق یخطی فرمایا) حضرت انس بن مالک رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی جس میں جابجا ثقات حفاظ کی مخالفت کی اس پر کتاب موصوف میں فرماتے ہیں:

(عربی عبارت)

وروی حدیث المعراج ابن شهاب الزهری عن انس بن مالك عن ابي ذر وقتادة عن انس بن مالك عن مالك بن صعصعة رضی الله تعالی عنه لیس في حدیث واحد منهما شیئ من ذلك، وقد ذكر شریك بن عبدالله بن ابی نمر في روایته هذا ما یستدل به علی انه لم یحفظ الحدیث كما ینبغي له۔ (4)

(ترجمہ)

یعنی یہ حدیث معراج امام ابن شہاب زہری نے حضرت انس بن مالک انہوں نے حضرت ابوذر رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے اور قتادہ نے حضرت انس بن مالک انہوں نے حضرت مالک بن صعصعہ رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کی ان روایات میں اصلاً ان الفاظ کا پتہ نہیں اور بیشک شریک نے روایت میں وہ باتیں ذکر کی ہیں

(عربی عبارت) **(ترجمہ)**

جن سے ثابت ہوتا ہے کہ یہ حدیث جیسی چاہیے انہیں

یاد نہ تھی۔

ضرب ۹۷: وجوہ مخالفت بیان کر کے فرمایا:

---

1 القرآن الکریم ۲۴/ ۴۰ 2 میزان الاعتدال بحوالہ النسائی ترجمہ ۳۶۹۶ شریك بن عبدالله دارالمعرفة بیروت ۲/ ۲۶۹ 3 تقریب التذیب ترجمہ ۲۷۹۶ دار الکتب العلمیہ بیروت ۱/ ۴۱۸ 4 کتاب الاسماء والصفات للبیہقی باب ماجاء فی قول الله ثم دنأ فتدلی الخ المکتبة الاثریه سانگلہ ہل شیخو پورہ ۱۲/ ۱۸۷

Fatawa Razawiyya Volume 29

[Left Column (Arabic)] Then this entire story is only a narration told by Sharik from Anas bin Malik (may Allah be pleased with him) on his own accord. He did not attribute it to the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him), nor did he narrate it from him, nor did he add it to his words. Abdullah bin Mas'ud, Aisha, and Abu Huraira (may Allah be pleased with them) contradicted him in what he alone narrated, and they were superior in memorization, age, and number. 1 Strike 98: Then he quoted from Imam Abu Sulayman al-Khattabi: In the hadith, there is another word that Sharik was also unique in reporting, and no one else mentioned it, which is his saying: "and he is in his place". Place is not attributed to Allah the Almighty, glory be to Him. It only refers to the place of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) and his first standing where he was positioned. 2

[Right Column (Urdu Translation)] Meaning, then this story is not a Marfu' hadith; Sharik only narrated Hazrat Anas's own saying, which he neither attributed to the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) nor narrated as the Prophet's word. And in these words, Hazrat Abdullah bin Mas'ud, Hazrat Umm al-Mu'minin Siddiqa, and Hazrat Abu Huraira (may Allah be pleased with them) contradicted him, and they are superior in memorization, age, and number.

Meaning, this word "Makan" (place) was also only mentioned by Sharik, and there is no trace of it in the narrations of others. And "Makan" is not attributed to Allah Subhanah; it refers to the place of the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) and his station where he was established before this descent.

[Middle Text] Why have you become true repentants? But where is shame for the misguided Wahhabi. Strike 99: I say: In the Hadith of Musnad Imam Ahmad (may Allah be pleased with him), in the Musnad of Sayyiduna Abu Sa'id al-Khudri (may Allah be pleased with him), it is narrated once through this chain: Abu Salama narrated to us, Layth informed us from Yazid bin al-Had from Amr bin Abi Sa'id al-Khudri 3. Again thus:

[Footnotes] 1 Kitab al-Asma wa al-Sifat li al-Bayhaqi, Bab Ma Ja'a fi Qawl Allah Ta'ala Thumma Dana Fatadalla etc., Al-Maktaba al-Athariyya, Sangla Hill, Sheikhupura, 2/187 2 Kitab al-Asma wa al-Sifat li al-Bayhaqi, Bab Ma Ja'a fi Qawl Allah Ta'ala Thumma Dana Fatadalla etc., Al-Maktaba al-Athariyya, Sangla Hill, Sheikhupura, 2/187 3 Musnad Ahmad bin Hanbal, narrated from Abu Sa'id al-Khudri, Dar al-Fikr, Beirut, 3/29

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

[बायां कॉलम (अरबी)] फिर यह पूरा किस्सा केवल एक वर्णन है जिसे शरीक ने अनस बिन मालिक (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) से अपनी ओर से सुनाया है। उन्होंने इसे अल्लाह के रसूल (अल्लाह की उन पर शांति और आशीर्वाद हो) से संबद्ध नहीं किया, न ही उनसे इसका वर्णन किया, न ही इसे उनके शब्दों में जोड़ा। अब्दुल्ला बिन मसूद, आयशा और अबू हुरैरा (अल्लाह उन सबसे प्रसन्न हो) ने उन बातों में उनका विरोध किया है जिनमें वे अकेले थे, जबकि वे याद रखने, उम्र और संख्या में उनसे श्रेष्ठ थे। 1 प्रहार 98: फिर इमाम अबू सुलैमान खत्ताबी से उद्धृत किया: हदीस में एक और शब्द है जिसे केवल शरीक ने बयान किया है और किसी अन्य ने इसका उल्लेख नहीं किया है, और वह उनका यह कहना है: "और वह अपने स्थान पर हैं"। स्थान अल्लाह सर्वशक्तिमान की ओर नहीं जोड़ा जाता, वह पवित्र है। यह केवल नबी (अल्लाह की उन पर शांति और आशीर्वाद हो) का स्थान और उनका वह पहला मुक़ाम है जहाँ उन्हें ठहराया गया था। 2

[दायां कॉलम (उर्दू अनुवाद)] यानी फिर यह किस्सा हदीस-ए-मर्फ़ू नहीं, शरीक ने सिर्फ हज़रत अनस का अपना क़ौल रिवायत किया है जिसे न नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की तरफ निस्बत किया न हुज़ूर का क़ौल रिवायत किया और इन अल्फ़ाज़ में उनकी मुख़ालफ़त फ़रमाई हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद व हज़रत उम्मुल मोमिनीन सिद्दीक़ा व हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम ने, और वह हिफ़्ज़ में ज़ायद, उम्र में ज़ायद, अदद में ज़ायद।

यानी यह लफ़्ज़ मकान भी सिर्फ शरीक ने ज़िक्र किया औरों की रिवायत में इसका पता नहीं और मकान अल्लाह सुब्हानहू की तरफ मंसूब नहीं, इस से मुराद तो नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का मकान और हुज़ूर का वह मुक़ाम है जहाँ इस नुज़ूल से पहले क़ायम किए गए थे।

[मध्य पाठ] क्यों सच्चे तौबा हुए हो गए, मगर तौबा वहाबी गुमराह को हया कहाँ। प्रहार 99: मैं कहता हूँ: मुसनद इमाम अहमद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की हदीस, मुसनद सैयदुना अबू सईद खुदरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु में एक बार इस सनद से मरवी: अबू सलमा ने हमसे बयान किया, लैस ने हमें यज़ीद बिन अल-हाद से उन्होंने अम्र बिन अबी सईद खुदरी से ख़बर दी 3। दोबारा यूँ:

[पाद टिप्पणियाँ] 1 किताब अल-असमा व अल-सिफ़ात लिल-बैहक़ी, बाब मा जा फ़ी क़ौलिल्लाहि तआला सुम्मा दना फ़तदल्ला अलख़, अल-मकतबा अल-असरिया सांगला हिल शेखूपुरा 2/187 2 किताब अल-असमा व अल-सिफ़ात लिल-बैहक़ी, बाब मा जा फ़ी क़ौलिल्लाहि तआला सुम्मा दना

फ़तदल्ला अलख़, अल-मकतबा अल-असरिया सांगला हिल शेखूपुरा 2/187 3 मुसनद अहमद बिन हंबल, मरवी अज़ अबू सईद खुदरी, दारुल फ़िक्र बेरूत 3/29

पृष्ठ 165 का 750

[بایاں کالم (عربی)] ثم ان هذه القصة بطولها انما هي حكاية حكاها شريك عن انس بن مالك رضى الله تعالى عنه من تلقاء نفسه، لم يعزها الى رسول الله صلى الله تعالى عليه وسلم ولا رواها عنه ولا اضافها الى قوله وقد خالفه فيما تفرد به منها عبد الله بن مسعود وعائشة وابو هريرة رضى الله تعالى عنهم وهم احفظ واكبر واكثر 1۔ ضرب ۹۸ : پھر امام ابو سلیمان خطابی سے نقل فرمایا : وفی الحدیث لفظة اخری تفرد بها شریك ایضا لم یذکرها غیره وهی قوله فقال وهو مکانه والمکان لا یضاف الی الله تعالی سبحنه انما هو مکان النبی صلی الله تعالی علیه وسلم ومقامه الاول الذی اقیم فیه۔ 2

[دایاں کالم (اردو ترجمہ)] یعنی پھر یہ قصہ حدیث مرفوع نہیں شریک نے صرف حضرت انس کا اپنا قول روایت کیا ہے جسے نہ نبی صلی اللہ تعالی علیہ وسلم کی طرف نسبت کیا نہ حضور کا قول روایت کیا اور ان الفاظ میں ان کی مخالفت فرمائی حضرت عبداللہ بن مسعود و حضرت ام المؤمنین صدیقہ و حضرت ابوہریرہ رضی اللہ تعالی عنہم نے، اور وہ حفظ میں زائد، عمر میں زائد، عدد میں زائد۔

یعنی یہ لفظ مکان بھی صرف شریک نے ذکر کیا اوروں کی روایت میں اس کا پتہ نہیں اور مکان اللہ سبحانہ کی طرف منسوب نہیں، اس سے مراد تو نبی کریم صلی اللہ تعالی علیہ وسلم کا مکان اور حضور کا وہ مقام ہے جہاں اس نزول سے پہلے قائم کیے گئے تھے۔

[درمیانی متن] کیوں سچے توبہ ہوئے ہو گئے، مگر توبہ وہابی گمراہ کو حیا کہاں۔ ضرب ۹۹ : اقول : مسند امام احمد رضی اللہ تعالی عنہ کی حدیث مسند سید نا ابی سعید خدری رضی اللہ تعالی

عنہ میں ایک بار اس سند سے مروی۔ حدثنا ابوسلمة انا لیث عن یزید بن الهاد عن عمرو بن ابی سعید الخدری 3۔ دوبارہ یوں:

[حواشی] 1 کتاب الاسماء والصفات للبیهقی باب ماجاء فی قول الله تعالی ثم دنا فتدلی الخ المکتبة الاثریہ سانگلہ ہل شیخوپورہ ۲/ ۱۸۷ 2 کتاب الاسماء والصفات للبیهقی باب ماجاء فی قول الله تعالی ثم دنا فتدلی الخ المکتبة الاثریہ سانگلہ ہل شیخوپورہ ۲/ ۱۸۷ 3 مسند احمد بن حنبل مروی از ابو سعید الخدری دارالفکر بیروت ۳/ ۲۹

Fatawa Ridawiyya, Volume 29

Yunus narrated to us, Layth narrated the Hadith, both in chain and text[1]. In these, there is only this much that the Lord Almighty said: "By My honor and My majesty"[2]. I swear by My honor and My majesty. There is absolutely no mention of 'spatial elevation' (irtifa' makani); he narrated it three times through this chain. Yahya bin Ishaq narrated to us, Ibn Lahi'ah reported to us, from Darraj, from Abu al-Haytham, from Abu Sa'id al-Khudri. Here, there is no mention of the oath at all; it is only as follows: [Boxed Text] The Lord Almighty said: "I will continue to forgive them as long as they seek forgiveness from Me"[3]. The Lord Almighty said, "I will always keep forgiving them as long as they seek forgiveness from Me."

The great Imam, Hafiz al-Hadith Abdul Azeem al-Mundhiri, also mentioned this Hadith in the book 'at-Targhib wat-Tarhib' with reference to Musnad Imam Ahmad and Mustadrak al-Hakim. He also quoted only this much: "By My honor and My majesty"[4]. And the exalted Imam Jalaluddin al-Suyuti mentioned it in 'Jami' al-Saghir' and 'Jami' al-Kabir', also with reference to Musnad Ahmad, Abu Ya'la, and al-Hakim. In these too, it is only this much; the word 'spatial elevation' is not in any of them. However, al-Bayhaqi narrated this Hadith in 'Kitab al-Asma' through the latter chain of Ibn Lahi'ah: Where he said: Ali bin Ahmad bin Abdan informed us, Ahmad bin Ubaid reported to us, Ja'far bin Muhammad narrated to us, Qutaybah narrated to us, Ibn Lahi'ah narrated to us, from Darraj, from Abu al-Haytham, from Abu Sa'id al-Khudri (may Allah be pleased with him)[5].

Footnotes: 1. Musnad Ahmad bin Hanbal, narrated from Abu Sa'id al-Khudri, Dar al-Fikr, Beirut, 3/41 2. Musnad Ahmad bin Hanbal, narrated from Abu Sa'id al-Khudri, Dar al-Fikr, Beirut, 3/29 & 41 3. Musnad Ahmad bin Hanbal, narrated from Abu Sa'id al-Khudri, Dar al-Fikr, Beirut, 3/71 4. At-Targhib wat-Tarhib, Book of Remembrance and Supplication, Encouragement in Seeking Forgiveness, Mustafa al-Babi, Egypt, 2/468 5. Kitab al-Asma' was-Sifat by al-Bayhaqi, Chapter on what has been mentioned regarding the affirmation of Honor, Al-Maktabah al-Athariyyah, Sangla Hill, Sheikhupura, 1/221

फ़तावा रज़विया, खंड 29

यूनुस ने हमें हदीस सुनाई, लैथ ने हदीस की सनद (शृंखला) और मतन (पाठ) दोनों के साथ बयान किया[1]। इनमें केवल इतना ही है कि रब अज़्ज़ा व जल्ल ने फरमाया: "मेरी इज़्ज़त और मेरे जलाल की कसम"[2]। मुझे मेरी इज़्ज़त और मेरे जलाल की कसम। इसमें 'स्थानिक उच्चता' (इरतिफ़ा-ए-मकानी) का बिल्कुल भी ज़िक्र नहीं है, उन्होंने इस सनद से तीन बार रिवायत की है। यय्या बिन इसहाक ने हमें हदीस सुनाई, इब्ने लहिया ने हमें बताया, दराज से, उन्होंने अबुल हैथम से, उन्होंने अबू सईद खुदरी से। यहाँ कसम का ज़िक्र बिल्कुल नहीं है, बस इतना है कि: [बॉक्स टेक्स्ट] रब अज़्ज़ा व जल्ल ने फरमाया: "मैं उन्हें तब तक माफ़ करता रहूँगा जब तक वे मुझसे माफ़ी मांगते रहेंगे"[3]। रब अज़्ज़ा व जल्ल ने फरमाया, "मैं उन्हें हमेशा बख्शता रहूँगा जब तक वे मुझसे इस्तग़फ़ार (क्षमा याचना) करेंगे।"

महान इमाम, हाफ़िज़ुल हदीस अब्दुल अज़ीम मुन्ज़िरी ने भी यह हदीस अपनी किताब 'अत-तरग़ीब वत-तरहीब' में मुसनद इमाम अहमद और मुस्तदरक हाकिम के हवाले से ज़िक्र की है। उन्होंने भी सिर्फ इतना ही उद्धृत किया है: "मेरी इज़्ज़त और मेरे जलाल की कसम"[4]। और अज़ीम इमाम जलालुद्दीन सुयूती ने 'जामे सगीर' और 'जामे कबीर' में भी मुसनद अहमद, अबू याला और हाकिम के हवाले से इसका ज़िक्र किया है। इनमें भी सिर्फ इतना ही है; 'स्थानिक उच्चता' शब्द इनमें से किसी में भी नहीं है। हाँ, बैहक़ी ने 'किताबुल अस्मा' में यह हदीस इब्ने लहिया के इस आख़िरी तरीके से रिवायत की है: जहाँ उन्होंने कहा: अली बिन अहमद बिन अब्दान ने हमें बताया, अहमद बिन उबैद ने हमें सूचित किया, जाफ़र बिन मोहम्मद ने हमें हदीस सुनाई, कुतैबा ने हमें हदीस सुनाई, इब्ने लहिया ने दराज से, उन्होंने अबुल हैथम से, उन्होंने अबू सईद खुदरी (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) से रिवायत की[5]।

पादलेख: 1. मुसनद अहमद बिन हनबल, अबू सईद खुदरी से रिवायत, दारुल फ़िक्र बेरूत 3/41 2. मुसनद अहमद बिन हनबल, अबू सईद खुदरी से रिवायत, दारुल फ़िक्र बेरूत 3/29 और 41 3. मुसनद अहमद बिन हनबल, अबू सईद खुदरी से रिवायत, दारुल फ़िक्र बेरूत 3/71 4. अत-तरग़ीब वत-तरहीब, किताबुज़ ज़िक्र वद दुआ, अत-तरग़ीब फ़िल इस्तग़फ़ार, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र 2/468 5. किताबुल अस्मा वस्सफ़ात लिल बैहक़ी, बाब मा जाअ फ़ी इसबातुल इज़्ज़ह, अल-मक्तबा अल-असरिया सांगला हिल शेखूपुरा 1/221

حدثنا یونس ثنا لیث الحدیث سنداً ومتناً[1]۔ ان میں صرف اس قدر ہے کہ رب عزوجل نے فرمایا۔ بعزتی و جلالی[2]۔ مجھے اپنی عزت و جلال کی قسم۔ ارتفا ع مکانی کا اصلاً ذکر نہیں ، سہ بارہ اس سند سے روایت فرمائی۔ حدثنا یحیی بن اسحق انا ابن لھیعة عن دراج عن ابی الھیثم عن ابی سعید الخدری۔ یہاں سرے سے قسم کا ذکر ہی نہیں صرف اتنا ہے کہ: [Boxed Text] قال الرب عز وجل لا ازال اغفر لھم ما استغفرونی[3]۔ رب عزوجل نے فرمایا میں انہیں ہمیشہ بخشتا رہوں گا جب تک وہ مجھ سے استغفار کریں گے۔

امام اجل حافظ الحدیث عبد العظیم منذری نے بھی یہ حدیث کتاب الترغیب والترہیب میں بحوالہ مسند امام احمد و مستدرک حاکم ذکر فرمائی انہوں نے بھی صرف اسی قدر نقل کیا کہ بعزتی و جلالی[4] اور امام جلیل جلال الدین سیوطی نے جامع صغیر و جامع کبیر میں بھی بحوالہ مسند احمد وابویعلی وحاکم ذکر کی ان میں بھی اتنا ہی ہے ارتفاع مکانی کا لفظ کسی میں نہیں، ہاں بیہقی نے کتاب الاسماء میں یہ حدیث اس طریق اخیر ابن لہیعہ سے روایت کی۔ حیث قال اخبرنا علی بن احمد بن عبدان انا احمد بن عبید ثنا جعفر بن محمد ثنا قتیبة ثنا ابن لھیعة عن دراج عن ابی الھیثم عن ابی سعید الخدری رضی اللہ تعالٰی عنہ[5]۔

حواشی: ۱۔ مسند احمد بن حنبل مروی از ابوسعید خدری دارالفکر بیروت ۳ / ۴۱ ۲۔ مسند احمد بن حنبل مروی از ابوسعید خدری دارالفکر بیروت ۳ / ۲۹ و ۴۱ ۳۔ مسند احمد بن حنبل مروی از ابوسعید خدری دارالفکر بیروت ۳ / ۷۱ ۴۔ الترغیب والترہیب کتاب الذکر والدعاء الترغیب فی الاستغفار مصطفی البابی مصر ۲ / ۴۶۸ ۵۔ کتاب الاسماء والصفات للبیہقی باب ما جاء فی اثبات العزة المکتبة الاثریہ سانگلہ ہل شیخوپورہ ۱/ ۲۲۱

Fatawa Ridawiyya Volume 29

Here is the word (Irtifa-e-Makani - spatial elevation - F); in this chain of narration, first of all, Ibn Lahiya is present, regarding whom the discourse of the scholars of Hadith is well-known and established. When the leading scholars (Aimmah) have such disputes over his narrations in the chapter of rulings (Ahkam), the chapter of Divine Attributes (Sifat) is the most critical of chapters.

Strike 100: I say: He is a Mudallis (one who conceals defects in a chain) as mentioned in Fath al-Mughith, and scholars of Hadith do not accept the 'an'ana' (indirect narration) of a Mudallis.

Strike 101: I say: He narrates from Darraj, and Darraj from Abu al-Haytham. In Mizan al-I'tidal, the validation (tawthiq) of Darraj is cited only from Yahya. Imam Ahmad declared him weak and called his hadiths 'munkar' (rejected). Imam Fadlak Razi said he is not reliable. Imam Nasa'i stated: He is 'munkar al-hadith' (a narrator of rejected hadiths). Imam Abu Hatim said: He is weak. Ibn 'Adi narrated his hadiths and stated: the preservers (Huffaz) do not agree with him. Imam Daraqutni said: He is weak, and once said: He is 'matruk' (abandoned). All these statements are in Mizan al-I'tidal[1]. Finally, the refined verdict regarding him is what the grand preserver (Hafiz) wrote in Taqrib that:

[Arabic Quote] "Saduq fi hadithihi 'an Abi al-Haytham da'if"[2] | He is truthful in himself, but his narration from Abu al-Haytham is weak.

And here, this narration is indeed from Abu al-Haytham, so the weakness of the hadith is proven. Oh great Muhaddith! Was it on this strength that you declared them authentic (sahih) hadiths?

Strike 102: These seven strikes were regarding those specific hadiths you relied upon. Now take it generally: whether this hadith or any like it that you bring, you will face defeat. 'Makan' (place), 'Manzil' (home), and 'Maqam' (rank) here mean 'Makanat' and 'Manzilat' (status and station).

Note: Therefore, in Mirqat, it is written under this very hadith: "And spatial elevation means my status/rank"[3]. - 12 (Amnah)

F: At this very point, the researcher has also taken 'makan' to mean 'makanat'. The meaning here is elevation of status, not physical place, because Allah exists without a

place, and the evidence for this is the hadith of the people of Yemen. - Nazir Ahmad Sa'idi.

---

[1] Mizan al-I'tidal, entry 2667, Darraj Abu al-Samh al-Misri, Dar al-Ma'rifah Beirut, 2/24, 25. [2] Taqrib al-Tahdhib, entry 1829, Dar al-Kutub al-Ilmiyyah Beirut, 1/284. [3] Mirqat al-Mafatih, Chapter on Seeking Forgiveness and Repentance, Second Section, Maktaba Habibiyah Quetta, 5/175.

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

यहाँ वह शब्द (इर्तफ़ा-ए-मकानी फ़) है; इस सनद (नैरेशन चैन) में पहले तो इब्न लहिया मौजूद हैं, जिनके बारे में हदीस विशेषज्ञों (मुहद्दीसीन) की बातचीत प्रसिद्ध और ज्ञात है। जब अह्काम (नियमों) के अध्याय में उनकी हदीसों पर इमामों के बीच ऐसे विवाद हैं, तो सिफ़ात (ईश्वरीय गुणों) का अध्याय तो और भी कठिन अध्याय है।

प्रहार 100: मैं कहता हूँ: वह मुदल्लिस हैं जैसा कि 'फ़तह अल-मुग़ीस' में है, और मुहद्दीसीन मुदल्लिस की 'अन'अना' (अप्रत्यक्ष वर्णन) को स्वीकार नहीं करते।

प्रहार 101: मैं कहता हूँ: वह दराज से रिवायत करते हैं और दराज अबुल हैथम से। 'मीज़ान अल-इतिदाल' में दराज की तौसीक़ (पुष्टि) केवल याह्या से उद्धृत है। इमाम अहमद ने उन्हें कमज़ोर (ज़ईफ़) कहा और उनकी हदीसों को मुनकर (अस्वीकृत) बताया। इमाम फ़ज़लक राज़ी ने कहा कि वह विश्वसनीय नहीं हैं। इमाम नसाई ने कहा: वह मुनकरुल हदीस हैं। इमाम अबू हातिम ने कहा: वह ज़ईफ़ हैं। इब्न अदी ने उनकी हदीसें रिवायत कीं और कहा कि हिफ़ाज़त करने वाले (हुफ़्फ़ाज़) उनके साथ सहमत नहीं हैं। इमाम दारकुतनी ने कहा: वह ज़ईफ़ हैं, और एक बार कहा: वह मतरूक (परित्यक्त) हैं। ये सभी कथन 'मीज़ान अल-इतिदाल' में हैं[1]। अंततः उनके बारे में परिष्कृत फैसला वही है जो हाफ़िज़ ने 'तक़रीब' में लिखा कि:

[अरबी उद्धरण] "सदूक़ फ़ी हदीसहि अन अबिल हैथम ज़ईफ़"[2] | वह व्यक्ति स्वयं तो सच्चा है, लेकिन अबुल हैथम से उनकी रिवायत कमज़ोर है।

और यहाँ यह रिवायत अबुल हैथम ही से है, तो हदीस की कमज़ोरी साबित हो गई। ओ बड़े मुहद्दीस जी! क्या इसी के आधार पर आपने इन्हें सही (सहीह) हदीसें कहा था?

प्रहार 102: ये सात प्रहार आपकी उन विशिष्ट हदीसों के बारे में थे जिन पर आपने भरोसा किया था। अब सामान्य तौर पर लें: चाहे यह हदीस हो या वैसी ही कोई और जो आप लाएँ आप हार मानेंगे। 'मकान' (स्थान), 'मंजिल' (घर) और 'मक़ाम' (स्थान) का अर्थ यहाँ 'मकानत' और 'मंज़िलत' (पद और प्रतिष्ठा) है।

नोट: इसीलिए 'मिरक़ात' में इसी हदीस के नीचे लिखा है: "और मकामी बुलंदी का अर्थ मेरा पद/प्रतिष्ठा है।"[3] - 12 (आमनह)

फ़: इसी स्थान पर शोधकर्ता ने भी 'मकान' का अर्थ 'मकानत' लिया है। यहाँ तात्पर्य प्रतिष्ठा की ऊँचाई है, भौतिक स्थान नहीं, क्योंकि अल्लाह बिना किसी स्थान के अस्तित्व में है, और इसका प्रमाण यमन के लोगों की हदीस है। - नज़ीर अहमद सईदी।

---

[1] मीज़ान अल-इतिदाल, अनुवाद 2667, दराज अबू अल-सम्ह अल-मिस्री, दार अल-मआरिफ़ा बेरूत, 2/24, 25। [2] तक़रीब अल-तहज़ीब, अनुवाद 1829, दार अल-कुतुब अल-इल्मिया बेरूत, 1/284। [3] मिरक़ात अल-मफ़ातीह, क्षमा और पश्चाताप का अध्याय, दूसरा खंड, मकतबा हबीबिया क्वेटा, 5/175।

یہاں وہ لفظ (ارتفاع مکانی ف) ہے اس سند میں اول تو ابن لہیعہ موجود ان میں محدثین کا جو کلام ہے معلوم و معہود جب باب احکام میں اُن کی حدیث پر ائمہ کو وہ نزاعیں ہیں تو باب صفات تو اشد الابواب ہے۔

ضرب ۱۰۰: اقول: وہ مدلس ہیں کما فی فتح المغیث (جیسا کہ فتح المغیث میں ہے ، ت) اور مدلس کا عنعنہ محدثین قبول نہیں کرتے۔

ضرب ۱۰۱: اقول: وہ درّاج سے راوی ہیں اور درّاج ابوالہثیم سے، میزان الاعتدال میں درّاج کی توثیق صرف یحییٰ سے نقل کی، اور امام احمد نے ان کی تضعیف فرمائی اور اُن کی حدیثوں کو منکر کہا۔ امام فضلت رازی نے کہا وہ ثقہ نہیں، امام نسائی نے فرمایا: منکر الحدیث ہیں، امام ابوجا تم نے کہا ضعیف ہیں ابن عدی نے اُن کی حدیثیں روایت کر کے کہہ دیا۔ اور حفاظ ان کی موافقت نہیں کرتے۔ امام دار قطنی نے کہا: ضعیف ہیں، اور ایک بار فرمایا: متروک ہیں، یہ سب اقوال میزان الاعتدال میں ہیں ۱۔ بالآخر ان کے باب میں قول منقح یہ ٹھہرا جو حافظ الشان نے تقریب میں لکھا کہ:

صدوق فی حدیثہ عن ابی الھیثم ضعیف ۲۔ | آدمی فی نفسہ سچے ہیں مگر ابوالہثیم سے ان کی روایت ضعیف ہے۔

اور یہاں یہ روایت ابوالہثیم ہی سے ہے تو حدیث کا ضعف ثابت ہو گیا۔ بڑے محدث جی، اسی برتے پر احادیث صحیحہ کہا تھا۔

ضرب ۱۰۲: یہ سات ضربیں ان خاص خاص حدیثوں کے متعلق آپ کے دم پر تھیں۔ اب عام لیجئے کہ یہ حدیث اور اس جیسی اور جولاؤ سب میں منہ کی کھاؤ مکان و منزل و مقام بمعنی عہ مکانت و منزلت

عہ: ولہذا مرقات میں اسی حدیث کے نیچے لکھا۔ وارتفاع مکانی ای مکانتی ۳۔۱۲ امنہ

ف: اسی مقام پر تحقیق والے نے بھی مکان سے مراد مکانتہ لیا ہے، المراد ھنا ارتفاع المکانتہ لیس المکان لان اللہ موجود بلا مکان ودلیلہ حدیث اھل الیمن۔ نذیر احمد سعیدی

---

۱ میزان الاعتدال ترجمہ ۲۶۶۷ درّاج ابو السمح المصری دارالمعرفۃ بیروت ۲/ ۲۴، ۲۵ ۲ تقریب التہذیب ترجمہ ۱۸۲۹ دار الکتب العلمیہ بیروت ۱/ ۲۸۴ ۳ مرقات المفاتیح باب الاستغفار والتوبہ فصل ثانی مکتبہ حبیبیہ کوئٹہ ۵/ ۱۷۵

Fatawa Razawiyya, Volume 29

...and such things are not so commonly used that they would remain hidden from even a person with basic knowledge. But what can be the cure for an ignorant person lacking wisdom?

Observation 103: I say: It is possible that the word 'makan' (place) is a mim-initial infinitive (masdar mimi), so its essence would be the being, existence, elevation, and loftiness of Divine existence.

Observation 104: Have you ever heard of an 'honorable ascription' (idafat-e-tashrifi) from any person of knowledge? He said regarding the Kaaba: 'Baiti' (My House); He said regarding Gabriel the Trustworthy: 'Ruhuna' (Our Spirit); He said regarding the she-camel of (Prophet) Salih: 'Naqatullah' (Allah's she-camel). Now go ahead and say that Allah has a grand glass palace above, and has built a small room in Mecca for sleeping at night, and that your deity is a living being who also rides upon a tall she-camel.

Be shameless and say whatever you wish. (Be shameless and say what you want)

The same Imam Bayhaqi, who is your soul's enemy and whose book 'al-Asma' you have cited as a calamity for your life, says in the same book 'al-Asma' after the previously mentioned passage:

(Arabic)

Abu Sulayman said: There is another wording here regarding the story of intercession, narrated by Qatadah from Anas (may Allah be pleased with him) from the Prophet (may Allah bless him and grant him peace): "The people of the Gathering will come to me and ask me for intercession. So I will seek permission from my Lord in His House, and permission will be granted to me." That is, in His House which He has made a dwelling for His friends, and that is Paradise. Just as the Almighty says: "For them is the Abode of Peace with their

(English Translation)

Abu Sulayman stated that here, in the narration of intercession, there is another wording which Hazrat Qatadah narrated from Anas (may Allah be pleased with him), and he from the Holy Prophet (may Allah bless him and grant him peace): "So the people of the Gathering will come to me and request intercession. Then I will seek permission from Allah Almighty in His House, and I will be given permission for intercession. By 'fi darihi' (in His house) is meant that house which Allah Almighty has established as an abode for His friends, and that is Paradise. Just as is the

(Arabic)

Lord," and as He says: "And Allah invites to the Abode of Peace." And as it is said "House of Allah" and "Sanctuary of Allah", they mean the House which Allah has made a place of return.

Page 168 of 750

(English Translation)

statement of Allah Almighty: 'And Allah Almighty invites to the Abode of Peace.' (Calling Paradise Allah's abode) is just like saying 'Baitullah' (House of Allah) and 'Haramullah' (Sanctuary of Allah), and they mean that house which..."

फ़तावा रज़विया, जिल्द 29

...और वे इतने व्यापक रूप से उपयोग में नहीं हैं कि किसी भी अल्प ज्ञान वाले व्यक्ति से छिपे रहें। लेकिन उस अज्ञानी का क्या इलाज है जिसके पास बुद्धि नहीं है?

अवलोकन 103: मैं कहता हूँ: यह संभव है कि 'मकान' (स्थान) एक मीम-प्रारंभिक कृदंत (मस्दर मीमी) हो, तो इसका अर्थ होना, अस्तित्व, ऊँचाई और दिव्य अस्तित्व की सर्वोच्चता होगा।

अवलोकन 104: क्या आपने कभी किसी ज्ञानी व्यक्ति से 'सम्मानजनक संबंध' (इदाफ़त-ए-तशरीफ़ी) के बारे में सुना है? उन्होंने काबा के बारे में कहा: 'बैती' (मेरा घर); उन्होंने जिब्रील अमीन के बारे में कहा: 'रुहुना' (हमारी आत्मा); उन्होंने (पैगंबर) सालेह की ऊँटनी के बारे में कहा: 'नाक़तुल्लाह' (अल्लाह की ऊँटनी)। अब आगे बढ़ो और कहो कि अल्लाह का ऊपर एक भव्य शीश महल है, और रात को सोने के लिए मक्का में एक छोटी सी कोठरी बना रखी है, और तुम्हारा आराध्य कोई जीवित प्राणी है जो एक ऊँची ऊँटनी पर सवार भी होता है।

बेशर्म बनो और जो चाहो कहो। (निर्लज्ज हो जाओ और जो चाहो कहो)

वही इमाम बैहक़ी, जो तुम्हारी जान के दुश्मन हैं और जिनकी किताब 'अल-असमा' का नाम तुमने हमेशा के लिए अपनी जान को आफ़त में डालने के लिए ले लिया है, उसी किताब 'अल-असमा' में पिछली उल्लिखित इबारत के बाद कहते हैं:

(अरबी)

अबू सुलेमान ने कहा: शफ़ाअत (सिफारिश) की घटना के संबंध में यहाँ एक और शब्द है, जिसे क़तादा ने अनस (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) से, उन्होंने पैगंबर (अल्लाह उन पर कृपा और शांति बरसाए) से रिवायत किया है: "महशर (प्रलय के दिन एकत्र होने वाले) के लोग मेरे पास आएंगे और मुझसे शफ़ाअत की प्रार्थना करेंगे। तो मैं अपने रब से उसके घर में अनुमति माँगूँगा, और मुझे अनुमति दी जाएगी।" यानी उसके घर में जिसे उसने अपने

(हिन्दी अनुवाद)

अबू सुलेमान ने कहा कि यहाँ शफ़ाअत की घटना में एक दूसरा शब्द है जिसे हज़रत क़तादा ने अनस (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) से और उन्होंने नबी पाक (अल्लाह उन पर कृपा और शांति बरसाए) से रिवायत किया: "तो मेरे पास महशर वाले आएंगे और शफ़ाअत की दरख्वास्त करेंगे, तो मैं अल्लाह तआला से उसके घर में इजाज़त तलब करूँगा तो मुझे शफ़ाअत की इजाज़त होगी। 'फ़ी दारिही'

(अरबी)

वलियों (मित्रों) के लिए घर बनाया है और वह जन्नत (स्वर्ग) है। जैसा कि अल्लाह सर्वशक्तिमान का फरमान है: "उनके लिए उनके रब के पास सलामती का घर है," और जैसा कि उसने कहा: "और अल्लाह सलामती के घर की ओर बुलाता है।" और जैसा कि कहा जाता है 'बैतुल्लाह' (अल्लाह का घर) और 'हरमुल्लाह' (अल्लाह का हरम), उनका मतलब उस घर से होता है जिसे अल्लाह ने लौटने का स्थान बनाया है।

पृष्ठ 168/750

(हिन्दी अनुवाद)

(उसके घर में) से मुराद वह घर है जिसे अल्लाह तआला ने अपने औलिया के लिए घर बनाया और वह जन्नत है, जैसे अल्लाह तआला का इरशाद है: 'और अल्लाह तआला दारुस्सलाम की तरफ दावत देता है।' (जन्नत को अल्लाह तआला का घर कहना) वैसे ही है जैसे बैतुल्लाह और हरमुल्लाह कहा जाता है और ये मुराद लेते हैं कि वह बैत (घर) जिसे..."

و مرتبہ ایسے شائع الاستعمال نہیں کہ کسی ادنیٰ ذی علم پر مخفی رہیں مگر جاہل بے خرد کا کیا علاج۔

ضرب ۱۰۳: اقول: ممکن کہ مکان مصدر میمی ہو تو اس کا حاصل کون و وجود و ارتفاع و اعتلائے وجود الہی ہوگا۔

ضرب ۱۰۴: اضافت تشریفی بھی کبھی کسی ذی علم سے سنی ہے، کعبہ کو فرمایا: بیتی میرا گھر جبریل امین کو فرمایا: روحنا ہماری روح، ناقہ صالح کو فرمایا: ناقۃ اللہ اللہ کی اونٹنی اب کہہ دینا کہ اللہ کا بڑا شیش محل تو اوپر ہے اور ایک چھوٹی سی کوٹھری رات کو سونے کی مکے میں بنارکھی ہے اور تیرا معبود کوئی جاندار بھی ہے اونچی سی اونٹنی پر سوار بھی ہے۔

بیحیا باش وانچہ خواہی گوئے (بے حیا ہو جا اور جو چاہے کہہ ت)

وہی تیری جان کے دشمن امام بیہقی جن کی کتاب الاسماء کا نام تو نے ہمیشہ کے لیے اپنی جان کو آفت لگا دینے کے واسطے لے دیا اُسی کتاب الاسماء میں بعد عبارت مذکورہ سابق فرماتے ہیں:

(عربی)	(اردو ترجمہ)
قال ابوسلیمان ولھھنا لفظة اخری فی قصة الشفاعة رواھا قتادة عن انس رضی اللہ تعالی عن النبي صلی اللہ تعالی علیه وسلم فیأتوني یعنی اھل المحشر یسأ لوني للشفاعة فاستأذن علی	ابوسلیمان نے فرمایا کہ یہاں شفاعت کے واقعہ میں ایک دوسرا لفظ ہے جس کو حضرت قتادہ نے انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ اور انہوں نے نبی پاک صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم سے روایت کیا: تو میرے پاس اہل محشر آئیں گے شفاعت کی درخواست کریں گے، تو میں اللہ تعالیٰ سے اجازت طلب

(عربی)

ربی فی داره فیؤذن لی علیه ای فی داره التی دورها لاولیائه وهی الجنة کقوله عز وجل لهم دارالسلام عند ربهم وکقوله تعالی واللہ یدعو الی دارالسلم وکما یقال بیت اللہ و حرم اللہ، یریدون البیت الذی جعل اللہ مثابة

(اردو ترجمہ)

کروں گا اس کے گھر میں تو مجھے اجازت شفاعت ہو گی، فی داره سے مراد وہ دار ہے جس کو اللہ تعالیٰ نے اپنے اولیاء کے لیے دار بنایا اور وہ جنت ہے، جیسے اللہ تعالیٰ کا ارشاد ہے اور اللہ تعالیٰ دارالسلام کی طرف دعوت دیتا ہے۔ (جنت کو اللہ تعالیٰ کا دار کہنا) ایسے ہی ہے جیسے بیت اللہ اور حرم اللہ کہا جاتا ہے اور یہ مراد لیتے ہیں کہ وہ بیت جس کو

Fatawa Rizvia - Volume 29

[Arabic Text]: ...for people, and the Sanctuary which He made safe. Similarly, "Spirit of Allah" is used by way of preference over all other spirits. This is merely a linguistic arrangement, as in the words of Allah the Almighty (recounting Pharaoh's words): "Indeed, your messenger who has been sent to you is mad." Thus, he attributed the messenger to them, whereas he is only the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) whom Allah sent to them. [End of summary] (T)

[Urdu Translation in Image]: Allah Ta'ala made it a place of return for the people and that Haram (Sanctuary) which Allah Ta'ala made a place of safety for the people. Similarly, it was called 'Rooh Allah' (Spirit of Allah), meaning Allah Ta'ala gave it excellence over other spirits. This is merely a linguistic arrangement, just as Allah Ta'ala's statement, recounting from Pharaoh, says: "O Children of Israel! Your messenger who has been sent to you is mad." So here, the attribution of the messenger is made to the Children of Israel, whereas he is only the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) whom Allah Ta'ala sent to them. [In brief] (T)

Strike 105: The final answer is also from the first Hadith. Even if we assume these two Hadiths exist and interpret "makan" (place) according to your notion, and attribute it to the Side of Honor as you wish, the ultimate result is that the word "makan" appeared in two ahad (solitary) Hadiths. Is this much worthy of reliance or trust? Such Hadiths are fundamentally not acceptable in matters of the Divine Essence and Attributes. Your own credible source, Imam Baihaqi, says in the book "Al-Asma wa al-Sifat":

[Arabic Text]: Our fellow thinkers (Ahl al-Nazar) have abandoned using solitary reports (ahbar al-ahad) as proof regarding the attributes of Allah the Almighty when what is unique to them has no basis in the Book (Quran) or consensus (Ijma), and they occupied themselves with their interpretation.

[Urdu Translation in Image]: Our Imams, the theologians of Ahl al-Sunnat wa'l-Jama'at, did not accept bringing proof from solitary reports in matters of Divine attributes when a point mentioned solely in them has no basis proven from the Great Quran or the consensus of the Ummah, and they engaged in the interpretation of such Hadiths.

In the same [book], he narrated from Imam Khattabi:

1. Kitab al-Asma wa al-Sifat, Chapter on Allah's words "Then he approached and came down etc.", Al-Maktabah al-Athariyyah, Sangla Hill, Sheikhupura, 2/188 & 189.
2. Kitab al-Asma wa al-Sifat, Chapter on what is mentioned about "Al-Qadam" and "Al-Rijl" then "Then he approached and came down etc.", Al-Maktabah al-Athariyyah, Sangla Hill, Sheikhupura, 2/92.

फतावा रज़विया - जिल्द 29

[अरबी पाठ]: ...लोगों के लिए, और वह हरम जिसे अल्लाह ने लोगों के लिए शांति का स्थान बनाया। इसी तरह 'रूह अल्लाह' कहा गया जिसका अर्थ है कि अल्लाह तआला ने उसे अन्य रूहों पर श्रेष्ठता दी। यह केवल शाब्दिक व्यवस्था है, जैसा कि अल्लाह तआला का इरशाद फ़िरौन से हिकायत करते हुए है कि उसने कहा: "बनी इसराइल! तुम्हारा रसूल जो तुम्हारी तरफ भेजा गया है, वह मजनून (पागल) है।" तो यहाँ रसूल का संबंध बनी इसराइल से जोड़ा गया, जबकि वह केवल अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) हैं, जिन्हें अल्लाह तआला ने उनकी तरफ भेजा है। [संक्षेप में] (त)

[उर्दू अनुवाद]: अल्लाह तआला ने लोगों के लिए मरजअ बनाया और वह हरम जिसे अल्लाह तआला ने लोगों के लिए जाए अमन बनाया, इसी तरह रूह अल्लाह कहा गया कि जिसका मतलब है कि अल्लाह तआला ने उसको बाकी रूहों पर फ़ज़ीलत दी और यह सिर्फ कलामी तरतीब है जैसे अल्लाह तआला का इरशाद फ़िरौन से हिकायत करते हुए है कि उसने कहा: बनी इसराइल! तुम्हारा रसूल जो तुम्हारी तरफ भेजा गया वह मजनून है, तो यहाँ रसूल की इज़ाफ़त बनी इसराइल की तरफ की हालाँकि वह सिर्फ़ अल्लाह के रसूल हैं, सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम, जिसको अल्लाह तआला ने उनकी तरफ भेजा है। [संक्षेप में] (त)

प्रहार 105: कि पहली हदीस से भी अंतिम उत्तर प्राप्त है। यदि इन दोनों हदीसों को मान भी लिया जाए और 'मकान' (स्थान) को तुम्हारी धारणा के अनुसार ही समझा जाए और उसका संबंध अल्लाह की इज़्ज़त की ओर तुम्हारी इच्छा के अनुसार ही मान लिया जाए, तो भी निष्कर्ष यह है कि दो 'आहाद' (एकल) हदीसों में शब्द 'मकान' आया है। क्या यह इतना विश्वसनीय या भरोसेमंद है? ऐसे अल्लाह की ज़ात और सिफ़ात (गुणों) के मामलों में ऐसी हदीसें मूल रूप से स्वीकार्य नहीं हैं। तुम्हारे ही मान्य इमाम बैहक़ी अपनी किताब 'अल-अस्मा वल-सिफ़ात' में फ़रमाते हैं:

[अरबी पाठ]: हमारे साथी विचारकों (अहल-ए-नज़र) ने अल्लाह तआला के सिफ़ात के बारे में 'अखबार-ए-आहाद' (एकल सूचनाओं) से दलील देना छोड़ दिया है जब उनके द्वारा बताई गई किसी अनूठी बात का मूल कुरआन या इज्मा (सर्वसम्मति) में न हो, और वे उनकी व्याख्या (तावील) में लग गए।

[उर्दू अनुवाद]: हमारे अइम्मा मुतकिल्लिमीन अहल-ए-सुन्नत वल-जमाअत ने मसाइल-ए-सिफ़ात-ए-इलाहिया में अखबार-ए-आहाद से सनद लाना कबूल न की जब तक कि वह बात कि तन्हा उनमें आई उसकी असल कुरआन-ए-अज़ीम या इज्मा-ए-उम्मत से साबित न हो और ऐसी हदीसों की तावील में मशगूल हुए।

उसी में इमाम खत्ताबी से नक़्ल फ़रमाया:

1. किताब अल-अस्मा वल-सिफ़ात, अध्याय: अल्लाह के इस कथन के बारे में 'फिर वह करीब आया और नीचे उतरा' आदि, अल-मकतबा अल-असरिया, सांगला हिल, शेखूपुरा, 2/188 और 189।
2. किताब अल-अस्मा वल-सिफ़ात, अध्याय: जो 'अल-क़दम' और 'अल-रिज्ल' के बारे में वर्णित है, फिर 'फिर वह करीब आया और नीचे उतरा' आदि, अल-मकतबा अल-असरिया, सांगला हिल, शेखूपुरा, 2/92।

पृष्ठ 169 का 750

للناس، والحرم الذی جعلہ امناً ومثلہ روح اللہ علی سبیل التفضیل لہ علی سائر الارواح، وانما ذلك في ترتیب الکلام کقولہ جل وعلا (ای حکایۃ عن فرعون) ان رسولکم الذی ارسل الیکم لمجنون فاضاف الرسول الیھم وانما ھو رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم ارسل الیھم اھـ باختصار ۱۔

اللہ تعالیٰ نے لوگوں کے لیے مرجع بنایا اور وہ حرم جس کو اللہ تعالیٰ نے لوگوں کے لیے جائے امن بنایا، اسی طرح روح اللہ کہا گیا کہ جس کا مطلب ہے کہ اللہ تعالیٰ نے اس کو باقی روحوں پر فضیلت دی اور یہ صرف کلامی ترتیب ہے جیسے اللہ تعالیٰ کا ارشاد فرعون سے حکایت کرتے ہوئے ہے کہ اس نے کہا : بنی اسرائیل ! تمہارا رسول جو تمہاری طرف بھیجا گیا وہ مجنون ہے، تو یہاں رسول کی اضافت بنی اسرائیل کی طرف کی حالانکہ وہ صرف اللہ کے رسول ہیں، صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم، جس کو اللہ تعالیٰ نے ان کی طرف بھیجا ہے، اھـ اختصاراً (ت)

ضرب ۱۰۵: کہ حدیث اول سے بھی جواب آخر ہے یہ دونوں حدیثیں بھی فرض کر لیں اور مکان اسی تیرے گمان ہی کے معنی پر رکھیں اور اس کی نسبت جانبِ عزت بھی تیرے ہی حسب دلخواہ قرار دیں تو غایت یہ کہ دو حدیث آحاد میں لفظ مکان وارد ہوا اس قدر کیا قابل استناد ولا ئق اعتماد کہ ایسے مسائل ذات و صفات الہی میں احادیث اصلاً قابل قبول نہیں وہی تیرے دشمن مستند، امام بیہقی اسی کتاب الاسماء والصفات میں فرماتے ہیں:

ترك اھل النظر اصحابنا الاحتجاج باخبار الآحاد فی صفات اللہ تعالی اذا لم یکن لما انفرد منھا اصل فی الکتاب او الاجماع واشتغلوا بتأویلہ ۲۔

ہمارے ائمہ متکلمین اہلسنت و جماعت نے مسائل صفاتِ الہیہ میں اخبار آحاد سے سند لانی قبول نہ کی جب کہ وہ بات کہ تنہا ان میں آئی اس کی اصل قرآن عظیم یا باجماعِ امت سے ثابت نہ ہو اور ایسی حدیثوں کی تاویل میں مشغول ہوئے۔

اسی میں امام خطابی سے نقل فرمایا:

۱ کتاب الاسماء والصفات باب ماجاء في قول الله تعالى ثم دنا فتدلى الخ المکتبۃ الاثریہ سانگلہ ہل شیخوپورہ ۲/ ۱۸۸ و ۱۸۹ ۲ کتاب الاسماء والصفات باب ماذکر فی القدم والرجل ثم دنا فتدلى الخ المکتبۃ الاثریہ سانگلہ ہل شیخوپورہ ۹۲/۲

Fatawa Razawiyya - Volume 29

Arabic Original Text	Urdu Translation (from the book)
The principle in this and similar matters regarding the affirmation of attributes is that it is not permissible except by a speaking Book (the Quran) or a report whose authenticity is certain. If it is not among those established by individual reports (Ahad) based on a principle in the Book or in the Sunnah whose authenticity is certain, or by conforming to their meanings, and whatever is contrary to that, then refraining from applying the name to it is what is mandatory. At that time, it should be interpreted in a way that is consistent with the meanings of the agreed-upon principles from the sayings of the people of religion and knowledge, while denying anthropomorphism (tashbih) in it. This is the principle upon which discourse is built and relied upon in this chapter. [1]	The rule regarding the affirmation of this and similar attributes is that this affirmation should only be from the Book of Allah or a definitive Hadith. If it is not from both, then its proof should be from those Hadiths which are according to some rule supported by the Book of Allah and definitively Sahih Hadith and conform to their meanings. And if it is contrary to them, then it will be necessary to suffice only with the application of the name of this attribute, and for its intended meaning, such an interpretation will be made that conforms to the meanings of the unanimous statements of the people of religion and knowledge. And it is necessary that there should be no aspect of anthropomorphism in these attributes. This is the rule upon which speech should be based, and this is the reliable rule in this chapter. (T)

Argument 106: I say: Setting aside all your ignorance, just consider your claim that the Throne (Arsh) being the place of God is proven by explicit Sahih Hadiths. Putting "explicit" aside, if it were proven by these Hadiths (supposing for a false sake), then in your view, it is a place for your deity. How did it follow from this that the place is the Throne itself? You don't have the ability to understand even your own claim, yet you set out to speak about the Divine Attributes.

Argument 107: I say: Rather, in the first Hadith, Sidrat al-Muntaha is mentioned:

Arabic Hadith	Urdu Translation (from the book)
Then he ascended with him above that to what none knows but Allah until he came to Sidrat al-Muntaha, and the Mighty One	Then you went above that, of which only Allah Almighty has knowledge, until you reached Sidrat al-Muntaha, and found

Arabic Hadith	Urdu Translation (from the book)
(Al-Jabbar), the Lord of Honor, drew near and hung down until He was at a distance of two bow-lengths or nearer, so He revealed to him what He revealed, fifty [prayers]...	proximity to the Lord of Honor, then found more proximity until you were at a distance of two bow-lengths or even closer, then Allah Almighty sent revelation to him...

[1] Kitab al-Asma wa al-Sifat by al-Bayhaqi, Chapter on what was mentioned regarding the Fingers, Al-Maktaba al-Athariyya, Sangla Hill, Sheikhupura, 2/70. Page 170 of 750

फ़तावा रज़विया - खंड २९

अरबी मूल पाठ

इस और इसके समान गुणों को सिद्ध करने का सिद्धांत यह है कि यह तब तक जायज़ नहीं है जब तक कि यह बोलती हुई किताब (कुरान) या ऐसी हदीस द्वारा न हो जिसकी प्रामाणिकता निश्चित हो। यदि यह उन व्यक्तिगत रिपोर्टों (आहद) में से नहीं है जो कुरान के किसी सिद्धांत या सुन्नत पर आधारित हैं जिसकी प्रामाणिकता निश्चित है, या उनके अर्थों के अनुरूप है, और जो इसके विपरीत है, तो उस नाम का प्रयोग करने से रुकना ही अनिवार्य है। उस समय, इसकी व्याख्या धर्म और ज्ञान के लोगों के सहमत सिद्धांतों के अर्थों के अनुसार की जानी चाहिए, जबकि इसमें सादृश्य (तशबीह) का खंडन किया जाए। यही वह सिद्धांत है जिस पर इस अध्याय में चर्चा आधारित और विश्वसनीय है। [१]

उर्दू अनुवाद (पुस्तक से)

इस और इस प्रकार के गुणों की पुष्टि में नियम यह है कि यह पुष्टि केवल अल्लाह की किताब या निश्चित हदीस से होनी चाहिए। यदि यह इन दोनों से न हो, तो इसका प्रमाण उन हदीसों से होना चाहिए जो अल्लाह की किताब और निश्चित रूप से सही हदीस द्वारा समर्थित किसी नियम के अनुसार हों और उनके अर्थों के अनुरूप हों। और यदि यह उनके विरुद्ध हो, तो इस गुण के नाम के प्रयोग पर ही संतोष करना आवश्यक होगा, और इसके अभिप्रेत अर्थ के लिए ऐसी व्याख्या की जाएगी जो धर्म और ज्ञान के लोगों के सर्वसम्मत कथनों के अर्थों के अनुरूप हो। और यह आवश्यक है कि इन गुणों में सादृश्य (तशबीह) का कोई पहलू न हो। यही वह नियम है जिस पर भाषण आधारित होना चाहिए और इस अध्याय में यही विश्वसनीय नियम है। (त)

प्रहार १०६: मैं कहता हूँ: तुम्हारी सारी अज्ञानता को दरकिनार करते हुए, जरा अपने दावे पर विचार करो कि स्पष्ट सही हदीसों से अल्लाह का स्थान अर्श (सिंहासन) होना सिद्ध है। "स्पष्ट" को एक तरफ रखें, यदि इन हदीसों से (गलत कल्पना के आधार पर) यह सिद्ध हो जाए, तो तुम्हारी धारणा में यह तुम्हारे देवता के लिए एक स्थान है। इससे यह कैसे निकला कि वह स्थान अर्श ही है? तुम अपना दावा समझने की योग्यता नहीं रखते और ईश्वरीय गुणों के बारे में बोलने चले।

प्रहार १०७: मैं कहता हूँ: बल्कि पहली हदीस में सिद्रत अल-मुंतहा का उल्लेख है कि:

अरबी हदीस

फिर वह उन्हें उसके ऊपर ले गया जिसे अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता, यहाँ तक कि वह सिद्रत अल-मुंतहा तक पहुँचा, और सम्मान के प्रभु, सर्वशक्तिमान (अल-जब्बार) समीप आए और नीचे लटके यहाँ तक कि वह दो धनुषों की दूरी पर या उससे भी निकट थे, तो उन्होंने उन पर वही प्रकट किया जो उन्होंने प्रकट किया, पचास [नमाज़ें]...

उर्दू अनुवाद (पुस्तक से)

फिर आप उससे ऊपर गए जिसका ज्ञान केवल अल्लाह तआला को ही है, यहाँ तक कि आप सिद्रत अल-मुंतहा पर आए और रब-उल-इज्जत की निकटता पाई, फिर और निकटता पाई यहाँ तक कि दो धनुषों की दूरी पर हुए या उससे भी अधिक निकटता पाई, तो अल्लाह तआला ने उनकी तरफ वही भेजी...

[१] किताब अल-अस्मा वा अल-सिफात लिल-बैहक़ी, उंगलियों के बारे में जो उल्लेख किया गया है, अल-मकतबा अल-असरिया, सांगला हिल, शेखूपुरा, २/७०। पृष्ठ १७०/७५०

عربی اصل متن **اردو ترجمہ**

الاصل فی هذا وما اشبهه فی اثبات الصفات، انه لا یجوز ذلك الاان یکون بکتاب ناطق او خبر مقطوع بصحته فان لم یکن فیما یثبت من اخبار الاحادیث المستندة الی اصل فی الکتاب اوفی السنة المقطوع بصحتها او بموافقة معانیها و ما کان بخلاف ذلك فالتوقف عن اطلاق الاسم به هو الواجب ویتأول حینئذ علی مایلیق بمعانی الاصول المتفق علیها من اقاویل اهل الدین والعلم مع نفی التشبیه فیه ، هذا هو الاصل الذی یبنی علیه الکلام والمعتمدة فی هذا الباب۔ [1]

اس میں اور اس قسم کی صفات کے اثبات میں قاعدہ یہ ہے کہ یہ اثبات صرف کتاب اللہ یا قطعی حدیث سے ہو، اگر ان دونوں سے نہ ہو پھر اس کا ثبوت ان احادیث سے ہو جو کتاب اللہ اور قطعی صحیح حدیث سے مستند کسی ضابطہ کے مطابق اور ان کے معانی کے موافق ہو، اور جوان کے مخالف ہو تو پھر اس صفت کے اسم کے اطلاق پر ہی اکتفا کیا جانا ضروری ہو گا اور اس کی مراد کے لیے ایسی تاویل کی جائے گی جو اہل دین اور اہل علم کے متفقہ اقوال کے معانی کے موافق ہو، اور ضروری ہے کہ اس صفات میں کوئی تشبیہ کا پہلو نہ ہو، یہی وہ قاعدہ ہے جس پر کلام کو مبنی کیا جائے اور اس باب میں یہی قابل اعتماد قاعدہ ہے۔ (ت)

ضرب ۱۰۶: اقول: تیری سب جہالتوں سے قطع نظر کی جائے تو ذرا اپنے دعوے کو سوجھ کہ احادیث صریحہ صحیحہ سے عرش کا مکان الہی ہونا ثابت ہے، صریح ہونا بالائے طاق ان احادیث سے اگر بفرضِ باطل ثابت ہو گا تو یہ تیرے معبود کے لیے تیرے زعم میں مکان ہے اس سے یہ کیونکر نکلا کہ وہ مکان عرش ہی ہے، خود اپنا دعوٰی سمجھنے کی لیاقت نہیں اور چلے صفات الہیہ میں کلام کرنے۔

ضرب ۱۰۷: اقول: بلکہ حدیثِ اول میں تو سدرۃ المنتہیٰ کا ذکر ہے کہ:

عربی حدیث	اردو ترجمہ
ثم علا به فوق ذلك بما لا يعلمه الا الله حتى جاء سدرة المنتهى و دنا الجبار رب العزة فتدلى حتى كان منه قاب قوسين او ادنى فاوحى اليه فيما اوحى	پھر آپ اس سے اوپر گئے جہاں کا صرف اللہ تعالیٰ کو ہی علم ہے حتی کہ آپ سدرۃ المنتہیٰ پر آئے اور رب العزت کا قرب پایا پھر اور قرب پایا حتی کہ دو کمانوں کے فاصلہ پر یا اس سے بھی زیادہ قرب پایا، تو اللہ تعالیٰ نے ان کی طرف وحی

[1] كتاب الاسماء والصفات للبيهقى باب ماذكر فى الاصابع المكتبة الاثرية سانگلہ ہل شیخوپورہ

Page 170 of 750 ۷۰/۲

[Boxed Text]: Salat-ul-Hadith 1. He ordained what He ordained; in that revelation, there were also fifty prayers. Al-Hadith (T)

If, according to your false assumption, the application of location were established, then it would be at the Sidrah, not the Throne; these were called explicit Hadiths. There is no power or might except with Allah, the Most High, the Most Supreme.

The Fourth Slap

This claim that the meaning of 'Istawa ala al-Arsh' (ascending/establishing over the Throne) as sitting, climbing, or staying is according to the Sunnah.

Strike 108: I say: In your Wahhabi religion, the office of legislation continued for three generations (centuries), and after that, the door of general and specific legal applications was also closed, as you have written in this very text. Any matter introduced into religious affairs after the first three generations is, by consensus, an innovation (bid'at), and "every innovation is misguidance" (and every innovation is misguidance - T). Now, for a moment, act like a man and provide proof for these three meanings of 'Istawa ala al-Arsh' from the Sahaba, Tabi'un, or Tabi' al-Tabi'un (Imams of Sunnah) with authentic and reliable chains of narration; otherwise, admit to being a misguided innovator and irreligious person destined for the Fire. The writings of one or two Indians from the thirteenth century will not be able to establish it as Sunnah.

Strike 109: I say: In this same text, regarding the denial of raising hands for supplication after prayer, you wrote: "It is not proven by any authentic Hadith, whether verbal, practical, or tacit." If you have any shame for what you said and any regard for your non-conformism (ghair-muqallidiyat), then provide proof for these three meanings from any authentic Hadith; otherwise, weep over your own writing.

Strike 110: I say: These were retaliatory strikes. Truly, interpreting the meanings of the Great Quran according to one's own opinion is extremely heinous and forbidden. Therefore, it is necessary to provide proof of such meanings from the righteous predecessors (Salaf-e-Salih); an unproven statement is rejected and abandoned.

Strike 111: Every sensible person understands that the Lord, Glory be to Him, mentioned 'Istawa' in His own praise and glorification. God forbid, what praise is derived from sitting, climbing, or staying, that He should praise Himself with them?

And such praise that He brings its mention repeatedly in seven Surahs. To take 'Istawa' in these meanings is to turn praise and definition into censure and distortion. Necessarily and with certainty, these deficient and meaningless interpretations are never the intent of the Lord of Honor.

Strike 112: It has become known above that regarding the ambiguous verses (Ayat Mutashabihat), there are only two paths for the People of Sunnah:

---

1. Sahih al-Bukhari, Book of Tawhid, Chapter 'Allah spoke to Moses directly', Qadimi Kutub Khana, Karachi, 2/120.

[बॉक्स]: सलात-उल-हदीस १. उन्होंने वही की जो वही की; उस रहस्योद्घाटन में पचास नमाज़ें भी थीं। अल-हदीस (त)

तो अगर आपकी गलत धारणा के अनुसार स्थान का अनुप्रयोग सिद्ध हो जाए, तो वह सिदराह पर होगा, अर्श (सिंहासन) पर नहीं; इन्हें ही स्पष्ट हदीसें कहा गया था। अल्लाह के सिवा कोई शक्ति या सामर्थ्य नहीं है, जो सबसे ऊँचा और सबसे महान है।

चौथा तमाचा

यह दावा कि 'इस्तवा अलल अर्श' का अर्थ बैठना, चढ़ना, या ठहरना सुन्नत के अनुसार है।

प्रहार १०८: मैं कहता हूँ: तुम्हारे वहाबी धर्म में विधान का पद तीन शताब्दियों तक जारी रहा, और उसके बाद शरीयत के सामान्य और विशिष्ट अनुप्रयोगों का द्वार भी बंद हो गया, जैसा कि तुमने इसी लेख में लिखा है। जो बात तीन शताब्दियों के बाद धर्म के मामलों में ईजाद हुई, वह सर्वसम्मति से बिदअत (नवाचार) है और "हर बिदअत गुमराही है" (और हर बिदअत गुमराही है - त)। अब ज़रा थोड़ी देर के लिए मर्द बनकर 'इस्तवा अलल अर्श' के इन तीनों अर्थों का प्रमाण सहाबा, ताबईन या तब-ए-ताबईन (सुन्नत के इमामों) से प्रामाणिक और विश्वसनीय सूत्रों के साथ दीजिए; अन्यथा स्वयं के बिदअती, गुमराह और बेदीन होकर नर्क में जाने का स्वीकार कीजिए। तेरहवीं सदी के एक-दो हिंदुस्तानियों का लिख देना इसे सुन्नत साबित नहीं कर सकेगा।

प्रहार १०९: मैं कहता हूँ: तुमने इसी लेख में नमाज़ के बाद हाथ उठाकर दुआ माँगने के इनकार में लिखा: "किसी भी सही हदीस (मौखिक, व्यावहारिक या मौन सहमति) से साबित नहीं है।" यदि कहने की शर्म और गैर-मुकलिदियत की लाज है, तो इन तीनों अर्थों का सबूत भी किसी सही हदीस से दो, अन्यथा अपने लिखे पर सिर रखकर रोओ।

प्रहार ११०: मैं कहता हूँ: ये तो जवाबी प्रहार थे। वास्तव में, कुरान-ए-अज़ीम के अर्थ अपनी राय से कहना अत्यंत घृणित और वर्जित है। इसलिए ऐसे अर्थों का सल्फ़-ए-सालेहीन से प्रमाण देना आवश्यक है; बिना प्रमाण वाला कथन अस्वीकार्य और त्याज्य है।

प्रहार १११: हर बुद्धिमान व्यक्ति समझता है कि मौला सुब्हानहू व तआला ने 'इस्तवा' का उल्लेख अपनी प्रशंसा और गुणगान में फ़रमाया है। अल्लाह न करे, बैठने, चढ़ने या ठहरने में उसकी क्या

प्रशंसा निकलती है कि उनसे अपनी प्रशंसा फ़रमाता? और प्रशंसा भी ऐसी कि बार-बार सात सूरतों में उसका वर्णन लाता। तो इन अर्थों पर 'इस्तवा' को लेना प्रशंसा और परिभाषा को निंदा और विकृति में बदल देना है। निश्चित रूप से ये त्रुटिपूर्ण और अर्थहीन व्याख्याएं कभी भी रब्बुल इज़्ज़त का उद्देश्य नहीं हैं।

प्रहार ११२: ऊपर ज्ञात हो चुका है कि आयत-ए-मुतशाबिहात (अस्पष्ट आयतों) के बारे में अहले सुन्नत के केवल दो तरीके हैं:

---

1. सहीह अल-बुखारी, किताबुत्तौहीद, बाब 'अल्लाह ने मूसा से सीधे बात की', कदीमी कुतुब खाना, कराची, २/१२०।

पृष्ठ १७१ / ७५०

[صلوٰۃ الحدیث ۱]۔ فرمائی جو فرمائی اس وحی میں پچاس نمازیں بھی ہیں۔ الحدیث (ت)

تو اگر تیرے زعم باطل کے طور پر اطلاق مکان ثابت ہو گا تو سدرہ پر نہ عرش پر، انہیں کو احادیث صریحہ کہا تھا۔ لا حول ولا قوۃ الا باللہ العلی العظیم

چوتھا تپانچہ

یہ ادعا کہ استواء علی العرش کے معنی بیٹھنا، چڑھنا، ٹھہرنا مطابق سنت ہیں۔

ضرب ۱۰۸: اقول: تم وہابیہ کے دھرم میں تشریع کا منصب تین قرن تک جاری رہا تھا، اور اس کے بعد عمومات و اطلاقات شرعیہ کا دروازہ بھی بند ہو گیا، تو نے اسی تحریر میں لکھا ہے۔ جو بات امور دین میں بعد قرون ثلثہ کے ایجاد ہوئی بالاتفاق بدعت ہے وکل بدعۃ ضلالۃ (اور ہر بدعت گمراہی ہے۔ ت)

اب ذرا تھوڑی دیر کو مرد بن کر استواء علی العرش کے ان تینوں معنی کا صحابہ کرام یا تابعین یا تبع تابعین کے ائمہ سنت سے باسانید صحیحہ معتمدہ ثبوت دیجئے ورنہ خود اپنی بدعتی گمراہ بد دین فی النار ہونے کا اقرار کیجئے تیرہ صدی کے دو ایک ہندیوں کا لکھ دینا سنت نہ ثابت کر سکے گا۔

ضرب ۱۰۹: اقول: تو نے اسی تحریر میں نماز کے بعد ہاتھ اٹھا کر دعا مانگنے کے انکار میں لکھا: کسی صحیح حدیث قولی و فعلی و تقریری سے ثابت نہیں، کہے کی شرم اور غیر مقلدی کی لاج ہے تو ان تینوں معنی کا ثبوت بھی کسی حدیث صحیح سے دو ورنہ اپنے لکھے کو سر پر ہاتھ رکھ کر روؤ۔

ضرب ۱۱۰: اقول: یہ تو الزامی ضربیں تھیں اور تحقیقاً بھی قرآن عظیم کے معنی اپنی رائے سے کہنا سخت شنیع و ممنوع ہے تو ایسے معنی کا سلف صالح سے ثابت دینا ضرور اور قول بے ثبوت مردود و مہجور۔

ضرب ۱۱۱: ہر عاقل سمجھتا ہے کہ مولیٰ سبحانہ و تعالیٰ نے استواء کو اپنی مدح و ثناء میں ذکر فرمایا ہے۔ معاذ اللہ بیٹھنے، چڑھنے، ٹھہرنے میں اس کی کیا تعریف نکلتی ہے کہ ان سے اپنی مدح فرماتا اور مدح بھی ایسی کہ بار بار بتکرار سات سورتوں میں اس کا بیان لاتا تو ان معانی پر استواء کو لینا مدح و تعریف میں قدح و تحریف میں کر دینا ہے لاجرم بالیقین یہ ناقص و بے معنی معانی ہر گز مراد رب العزۃ نہیں۔

ضرب ۱۱۲: اوپر معلوم ہو چکا کہ آیات متشابہات میں اہل سنت کے صرف دو طریق ہیں:

۱۔ صحیح البخاری کتاب التوحید باب کلم اللہ موسیٰ تکلیماً قدیمی کتب خانہ کراچی ۱۲۰/۲

Fatawa Razawiyya Volume 29

First: Tafwid (Relinquishment), meaning that no meaning should be stated. In this method, translation is fundamentally not permitted because when the meaning is unknown to us...

Note: A great benefit. Imam Hujjat al-Islam Muhammad Muhammad Muhammad al-Ghazali (may his secret be sanctified) states in the book "Iljam al-Awam":

(Arabic text on the left): It is obligatory upon anyone who hears the verses of the Attributes and their hadiths—whether from the common folk, a grammarian, a traditionist, an exegete, or a jurist—to declare Allah (Glory be to Him) free from corporeality and its concomitants, such as form, place, and direction. They must be certain that the literal linguistic meaning is not intended, as that is impossible with respect to Allah Almighty. They should know that these have meanings befitting the majesty of Allah Almighty, and they must not alter the transmitted words at all, neither by interpretation—meaning changing the word for another Arabic word or otherwise—because the permissibility of changing or translating is dependent on first knowing the intended meaning. Nor should they derive a derivative word from the transmitted one to apply it, such as saying 'Mustawi' based on the occurrence of 'Istawa'. Nor should they use analogy on the transmitted word; for instance, if 'Yad' (Hand) is mentioned, they should not say 'Sa'id' (Forearm) or 'Kaff' (Palm) based on analogy. It is also obligatory to restrain one's heart from reflecting upon these matters. If a thought occurs to their heart, they should immediately engage in prayer, remembrance (dhikr), and recitation of the Quran. If they cannot persist in these acts of worship, they should occupy themselves with some branch of knowledge to divert their attention. If even that is not possible, then with a trade or craft. If that too is not possible, then with play and amusement, for play and amusement are better than delving into this ocean [of allegorical verses]. Nay, even if one is occupied with sins...

(Urdu translation on the right): That is, every person, whether common, grammarian, traditionist, exegete, or jurist, who hears such verses and hadiths, it is mandatory for them to sanctify Allah Almighty from corporeality and its appendages like form, place, and direction. They should know for certain that their literal linguistic meanings are not intended, for they are impossible in the right of Allah Almighty. They should know that they have meanings that befit the Majesty of Allah Subhanuhu. They should not meddle with the transmitted words at all, nor change

them with another Arabic word, nor translate them into any other language, because changing and translating are only permissible when the intended meaning is known first. They should not extract a derivative from the transmitted word and apply it; for example, 'Istawa' has appeared, so they should not say 'Mustawi'. Nor should they use analogy on the transmitted word; 'Yad' has appeared, so they should not say 'Sa'id' and 'Kaff' by analogy. It is mandatory that they restrain their hearts from thinking about these matters. If a doubt arises in the heart, they should immediately occupy themselves with prayer, remembrance, and recitation of the Quran. If they cannot persist in these worships, they should occupy themselves with some science to divert their attention. If that is also not possible, then in some trade or craft. If that is also not known, then in play and amusement, for play and amusement are better than reflecting on Mutashabihat (allegorical verses). In fact, even if one is occupied in sins... (Continued on the next page)

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

प्रथम: तफ़वीज़ (सपुर्द करना), अर्थात कोई अर्थ न बताया जाए। इस रीति से अनुवाद की बिल्कुल अनुमति नहीं है क्योंकि जब अर्थ हमें...

टिप्पणी: एक महान लाभ। इमाम हुज्जतुल इस्लाम मुहम्मद मुहम्मद मुहम्मद अल-ग़ज़ाली (अल्लाह उनकी आत्मा को पवित्र करे) अपनी पुस्तक "इल्जामुल अवाम" में फरमाते हैं:

(बाएँ कॉलम का अरबी अंश): प्रत्येक व्यक्ति, चाहे वह साधारण हो या व्याकरणवेत्ता, मुहद्दिस (हदीस का ज्ञाता), मुफ़स्सिर (कुरान का व्याख्याता) या फ़क़ीह (विधिवेत्ता), जो ईश्वरीय गुणों वाली आयतों और हदीसों को सुनता है, उस पर यह अनिवार्य (फ़र्ज़) है कि वह अल्लाह सुब्हानहू को शारीरिकता और उससे जुड़ी चीज़ों जैसे रूप, स्थान और दिशा से पवित्र माने। उसे यह दृढ़ विश्वास होना चाहिए कि इनके वास्तविक शाब्दिक अर्थ यहाँ अभिप्रेत नहीं हैं क्योंकि अल्लाह तआला की गरिमा के लिए वे असंभव हैं। उसे यह जानना चाहिए कि इनके कुछ ऐसे अर्थ हैं जो अल्लाह सुब्हानहू की महिमा के योग्य हैं, और जो शब्द आए हैं उनमें उसे बिल्कुल भी हेर-फेर नहीं करना चाहिए। न तो उन्हें किसी दूसरे अरबी शब्द से बदलना चाहिए और न ही किसी दूसरी भाषा में उनका अनुवाद करना चाहिए, क्योंकि शब्द बदलना या अनुवाद करना तभी उचित होता है जब पहले अभिप्रेत अर्थ ज्ञात हो। न ही आए हुए शब्द से कोई व्युत्पन्न शब्द निकालकर उसका प्रयोग करना चाहिए, जैसे 'इस्तवा' शब्द आया है तो 'मुस्तवी' न कहे। न ही आए हुए शब्द पर कोई अनुमान (क़यास) लगाना चाहिए; जैसे 'यद' (हाथ) शब्द आया है तो उसके अनुमान से 'साइद' (बाजू) या 'कफ़' (हथेली) न बोले। यह भी अनिवार्य है कि वह अपने मन को भी इन विषयों पर विचार करने से रोके। यदि मन में ऐसा कोई विचार आए, तो उसे तुरंत नमाज़, ज़िक्र और क़ुरान के पाठ में व्यस्त हो जाना चाहिए। यदि इन इबादतों को निरंतर जारी न रख सके तो किसी ज्ञान के अर्जन में लगकर ध्यान हटा ले। यदि यह भी संभव न हो, तो किसी पेशे या उद्योग में लग जाए। यदि वह भी न जानता हो, तो खेल-कूद में लग जाए, क्योंकि मुतशाबिहात (अलंकारिक आयतों) में गहरे उतरने से खेल-कूद ही बेहतर है। बल्कि यदि वह पापों में भी व्यस्त हो तो...

(दाएँ कॉलम का उर्दू अंश): अर्थात जो व्यक्ति आम जन, व्याकरणवेत्ता, हदीसवेत्ता, व्याख्याकार या विधिवेत्ता इस प्रकार की आयतों और हदीसों को सुने, उस पर यह फर्ज है कि वह अल्लाह तआला को शारीरिकता और उससे संबंधित चीजों जैसे रूप, स्थान और दिशा से पवित्र माने। वह विश्वास रखे

कि इनके वास्तविक भाषाई अर्थ अभिप्रेत नहीं हैं क्योंकि वे अल्लाह तआला के संबंध में असंभव हैं। वह यह जाने कि इनके कुछ ऐसे अर्थ हैं जो अल्लाह सुब्हानहू के जलाल के योग्य हैं। और जो शब्द आए हैं, उनमें वह बिल्कुल भी हस्तक्षेप न करे, न उन्हें किसी दूसरे अरबी शब्द से बदले और न ही किसी अन्य भाषा में उनका अनुवाद करे। क्योंकि बदलना और अनुवाद करना तब उचित होता है जब पहले अर्थ ज्ञात हो। न ही वह आए हुए शब्द से कोई व्युत्पन्न शब्द निकाले, जैसे 'इस्तवा' आया है तो 'मुस्तवी' न कहे। न ही आए हुए शब्द पर अनुमान लगाए, 'यद' आया है तो उसके अनुमान से 'साइद' और 'कफ' न बोले। यह फर्ज है कि वह अपने दिल को भी इस बारे में सोचने से रोके। यदि दिल में कोई विचार आए तो तुरंत नमाज, जिक्र और कुरान के पाठ में व्यस्त हो जाए। यदि इन इबादतों पर निरंतरता न रह सके तो किसी विद्या में लगकर ध्यान हटा ले। यदि यह भी न हो सके तो किसी हुनर या शिल्प में लग जाए। यदि वह भी न जानता हो तो खेल-कूद में, क्योंकि मुतशाबिहात में विचार करने से खेल-कूद ही बेहतर है। बल्कि यदि वह पापों में व्यस्त हो तो... (शेष अगले पृष्ठ पर)

اول: تفویض کہ کچھ معنی نہ کہے جائیں، اس طریق پر اصلاً ترجمے کی اجازت ہی نہیں کہ جب معنی ہم

عہ: فائدہ جلیلہ: امام حجۃ الاسلام محمد محمد محمد غزالی قدس سرہ العالی کتاب الجام العوام میں فرماتے ہیں:

یجب علی من سمع أیات الصفات واحادیثها من العوام و النحوی و المحدث والمفسر والفقیه ان ینزه الله سبحنه من الجسمیة وتوابعها من الصورة والمکان والجهة فیقطع بان معناها التحقیق اللغوی غیر مراد لانه فی حق الله تعالی محال وان لهذا معنی یلیق بجلاله تعالی وان لا یتصرف فی الالفاظ الواردة لابلتفسیر ای تبدیل اللفظ بلفظ آخر عربی او غیره لان جواز التبدیل فرع معرفة المعنی المراد ولا بالاشتقاق من الوارد کان یقول مستو اخذا من استوی ولا بالقیاس کان یطلق لفظة الساعد والکف قیاسا علی ورود الید وان یکف باطنه عن التفکر فی هذه الامور فان حدثته نفسه بذلك تشاغل بالصلوة و الذکر وقراءة القرآن فان لم یقدر علی الدوام علی ذلك تشاغل بشیئ من العلوم فان لم یمکنه فبحرفة او صناعة فان لم یقدر فبلعب ولهو فان ذلك خیر من الخوض فی هذا البحر

یعنی جو شخص عامی یا نحوی یا محدث یا مفسر یا فقیہ اس قسم کی آیات و احادیث سنے اس پر فرض ہے کہ جسمیت اور اس کے توابع مثل صورت و مکان و جہت سے اللہ تعالیٰ کی تنزیہ کرے۔ یقین جانے کہ ان کے حقیقی لغوی معنی مراد نہیں کہ وہ اللہ تعالیٰ کے حق میں محال ہیں اور جانے کہ ان کے کچھ معنی ہیں جو اللہ سبحانہ کے جلال کے لائق ہیں اور جو لفظ وارد ہوئے ان میں اصلاً تصرف نہ کرے، نہ کسی دوسرے لفظ عرب سے بدلے، نہ کسی اور زبان میں ترجمہ کرے

کہ تبدیل و ترجمہ تو جب جائز ہو کہ پہلے معنی مراد ہولیں، نہ لفظِ وارد سے کوئی مشتق نکال کر اطلاق کرے جیسے استویٰ آیا ہے مستوی نہ کہے نہ لفظِ وارد پر قیاس کرے ید آیا ہے اس کے قیاس سے ساعد و کف نہ بولے اور فرض ہے کہ اپنے دل کو بھی اس میں فکر سے روکے اگر دل میں اس کا خطرہ آئے تو فوراً نماز و ذکر و تلاوت میں مشغول ہو جائے، اگر ان عبادات پر دوام نہ ہو سکے تو کسی علم میں مشغول ہو کر دھیان بٹادے۔ یہ بھی نہ ہو سکے تو کسی حرفت یا صنعت میں یہ بھی نہ جانے تو کھیل کود میں کہ متشابہات میں فکر کرنے سے کھیل کود ہی بھلا ہے بلکہ اگر گناہوں میں مشغول ہو تو اس (باقی اگلے صفحہ پر)

They simply do not know how to translate them. It has been mentioned from the Commander of the Faithful, Umar bin Abdul Aziz (may Allah be pleased with him), that the pinnacle of knowledge regarding their interpretation is merely to say, "We believe in them." It is mentioned in the "Kitab al-Asma" that our predecessor companions (may Allah be pleased with them) did not say anything about the meaning of "Istiwa" (Ascension/Settling), nor did they open their mouths regarding it at all.

It has been mentioned from Imam Sufyan that their interpretation is simply to recite them and remain silent; it is not permissible for anyone to state their meaning in any language, whether Arabic or Persian.

It has been mentioned from our master Imam Muhammad (may Allah be pleased with him) that not stating their meaning is what has been narrated from the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him), and there is a consensus of the righteous predecessors on this.

The Second Path: Which the later scholars adopted out of necessity, its purpose was to avoid those meanings which might suggest a resemblance of Allah (Almighty and Majestic) to His creation. Instead, meanings reflecting His Majesty and Holiness should be derived. Sitting, ascending, and staying are the actions of physical bodies and are clear deficiencies for the Creator (Almighty and Majestic). So, your interpretation has not only failed but has instead planted the roots of further delusion.

In short, these three meanings are distant and rejected by both methods of the Ahl al-Sunnah. To call them in accordance with the Sunnah is like naming an Ethiopian 'Kafur' (Camphor/White). Now you will see how the Imams of the Ahl al-Sunnah have completely rejected these meanings. If one or two Indian scholars' feet slipped and they failed to realize that translation with these words is absolutely incorrect, their writing cannot overturn the consensus of the predecessor and successor Imams, nor can it be established as the creed of the Ahl al-Sunnah. However, this has always been the state of Wahhabis and indeed all deviants: a drowning man catches a straw. Wherever they find a rare or obscure word from someone, they rejoice, and against it, they ignore the decisive clarifications of the predecessors and successors, rather the clear dictates of the Quran and Hadith.

"Rather, if one were to engage in physical play, it would be safer than plunging into this deep sea. Indeed, if one were to engage in physical sins, it would be safer, for the limit of that is transgression (fisq), whereas the end of this is polytheism (shirk)." (Abbreviated, 1) — It is better than that, for their ultimate end is transgression (fisq) and its result is disbelief (kufr). We seek refuge in Allah Almighty. (From the author).

---

1 Al-Iljam al-Awam Page 173 of 750

वे जानते ही नहीं कि उनका अनुवाद कैसे करें। अमीरुल मोमिनीन उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (रज़ियल्लाहु अन्हु) का कथन गुज़रा है कि उनकी व्याख्या में ज्ञान की पराकाष्ठा बस इतनी ही है कि हम कहें कि हम उन पर ईमान लाए। 'किताबुल अस्मा' में ज़िक्र है कि हमारे पूर्वज साथियों (रज़ियल्लाहु अन्हुम) ने 'इस्तवा' का कोई अर्थ नहीं बताया और न ही इस बारे में अपनी ज़ुबान खोली।

इमाम सुफ़यान का कथन गुज़रा है कि उनकी व्याख्या यही है कि उन्हें पढ़ें और खामोश रहें; किसी के लिए यह जायज़ नहीं है कि अरबी या फ़ारसी किसी भी भाषा में उनका अर्थ बताए।

सैय्यदना इमाम मुहम्मद (रज़ियल्लाहु अन्हु) का कथन गुज़रा है कि उनका अर्थ न कहना ही रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से वर्णित है, और इसी पर पूर्वज सज्जनों (सलफ सालेहीन) का इज्मा (सहमति) है।

दूसरा तरीका: जिसे बाद के विद्वानों (मुताअक्खीरीन) ने आवश्यकतावश अपनाया, उसका उद्देश्य यह था कि वे अर्थ न रहें जिनसे अल्लाह अज़्वजल का उसकी रचना के समान होना प्रतीत हो, बल्कि उसके प्रताप और पवित्रता के अर्थ उत्पन्न हों। बैठना, चढ़ना, रुकना तो विशिष्ट शरीरों के कार्य हैं और बारी अज़्वजल के हक में स्पष्ट दोष हैं। तो तुमने खाक व्याख्या की, बल्कि भ्रम की जड़ें और मज़बूत कर दीं।

कुल मिलाकर, ये तीनों अर्थ अहले सुन्नत के दोनों तरीकों से दूर और त्याज्य हैं। उन्हें सुन्नत के अनुकूल कहना वैसा ही है जैसे किसी हब्शी का नाम 'काफ़ूर' (सफेद कपूर) रख दिया जाए। अब आप देखेंगे कि अहले सुन्नत के इमामों ने इन अर्थों को किस तरह सिरे से खारिज कर दिया है। यदि एक-दो हिंदुस्तानियों के कदम डगमगा गए और उन्हें यह ख्याल नहीं रहा कि इन शब्दों से अनुवाद कतई सही नहीं है, तो उनका लिखना पूर्वज और परवर्ती इमामों के इज्मा को रद्द नहीं कर सकता, और न ही वह अहले सुन्नत का मसलक (पंथ) करार दिया जा सकता है। लेकिन वहाबियों बल्कि तमाम गुमराहों की हमेशा यही हालत रही है कि 'डूबते को तिनके का सहारा'। जहाँ किसी का कोई दुर्लभ या त्याज्य शब्द पकड़ लिया, खुश हो गए, और उसके मुकाबले में पूर्वजों और परवर्तियों की ठोस स्पष्टीकरणों, बल्कि कुरान और हदीस के स्पष्ट निर्देशों को नज़रअंदाज़ कर दिया।

"बल्कि अगर कोई शारीरिक खेलों में व्यस्त हो जाए, तो वह इस अथाह समुद्र में गोता लगाने से ज़्यादा सुरक्षित है। बल्कि अगर वह शारीरिक गुनाहों में भी व्यस्त हो जाए, तो वह ज़्यादा सुरक्षित है,

क्योंकि उसका अंतिम परिणाम केवल उल्लंघन (फ़िस्क) है, जबकि इसका परिणाम शिर्क (बहुदेववाद) है।" (संक्षिप्त, 1) — इससे बेहतर यह है कि उनका अंत घोर उल्लंघन (फ़िस्क) है और उसका परिणाम कुफ़्र (अधर्म) है। और हम अल्लाह तआला की शरण चाहते हैं। १२ मिन्हु (लेखक की ओर से)।

---

1 इलजामुल अवाम पृष्ठ 173 का 750

جانتے ہی نہیں ترجمہ کیا کریں، امیر المومنین عمر بن عبدالعزیز رضی اللہ تعالٰی عنہ کا ارشاد گزرا کہ ان کی تفسیر میں منتہا ئے علم بس اس قدر ہے کہ کہیں ہم ان پر ایمان لائے، کتاب الاسماء سے گزرا کہ ہمارے اصحاب متقدمین رضی اللہ تعالٰی عنہم استواء کے کچھ معنی نہ کہتے نہ اس میں اصلاً زبان کھولتے۔

امام سفیان کا ارشاد گزرا کہ ان کی تفسیر یہی ہے کہ تلاوت کیجئے اور خاموش رہئے ، کسی کو جائز نہیں کہ عربی یا فارسی کسی زبان میں اس کے معنی کہے۔

سیدنا امام محمد رضی اللہ تعالٰی عنہ کا ارشاد گزرا کہ ان کے معنی نہ کہنا ہی رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم سے منقول ، اور اسی پر سلف صالح کا اجماع ہے۔

طریق دوم: کہ متاخرین نے بضرورت اختیار کیا اس کا یہ منشا تھا کہ وہ معنی نہ رہیں جن سے اللہ عزوجل کا خلق سے مشابہ ہونا متوہم ہو بلکہ اس کے جلال و قدوسیت کے معنی پیدا ہو جائیں۔ بیٹھنا، چڑھنا، ٹھہرنا تو خاص اجسام کے کام اور باری عزوجل کے حق میں صریح عیب ہیں تو تم نے تاویل خاک کی بلکہ اور وہم کی جڑ جمادی۔

بالجملہ یہ تینوں معانی دونوں طریقہ اہلسنت سے دور و مہجور ہیں ان کو مطابق سنت کہنا نام زنگی کا فور رکھنا ہے اب آپ ملاحظہ ہی کریں گے کہ ائمہ اہلسنت نے ان معانی کو کیسا یکسر رد فرمایا ہے دو ایک ہندیوں کے قدم نے اگر لغزش کی اور خیال نہ رہا کہ ان لفظوں سے ترجمہ ہر گز صحیح نہیں تو ان کا لکھنا ائمہ سلف و خلف کے اجماع کو رد نہیں کر سکتا، نہ وہ مسلک اہلسنت قرار پا سکتا ہے مگر وہابیوں بلکہ سب گمراہوں کی ہمیشہ یہی حالت رہی ہے کہ ڈوبتا

سوار پکڑتا ہے جہاں کسی کا کوئی لفظ شاذ مہجور پکڑ لیا خوش ہو گئے اور اس کے مقابل تصریحات قاہرہ سلف و خلف بلکہ ارشادات صریحہ قرآن و حدیث کو

بل لواشتغل بملاهی البدنیة کان اسلم من الخوض فی هذا | سے بہتر ہے کہ ان کی نہایت فسق ہے اور اس کا انجام کفر، البحر البعید غوره بل لو اشتغل بالمعاصی البدنیة کان اسلم | والعیاذ باللہ تعالیٰ ۱۲ منہ۔ فان ذلك غایته لفسق وهذا عاقبته الشرك اه مختصراً ۱۔

---

۱ الجام العوام Page 173 of 750

Fatawa Razawiyya Volume 29

...put aside, but the people of truth, by the grace of Allah Almighty, know well that the path of guidance is following the majority. Even if someone makes an error or a mistake, they might be excused, but that particular statement of theirs is abandoned and forsaken. They know that "every steed stumbles, every sharp sword becomes dull, and every scholar makes a slip." Every fast horse sometimes trips, every sharp sword sometimes bends, and every scholar sometimes experiences a lapse. And with Allah is protection from error.

Point 113: Now hear from your own authentic sources the rejection of those meanings which you, out of ignorance, called "according to the Sunnah," or rather claimed the Sunnah is limited to them. From Madarik Sharif:

| Al-Istiwa bi-ma'na al-julus la yajuzu 'ala Allahi Ta'ala [1] | Istiwa in the sense of sitting is impossible for Allah Almighty, the Exalted and Majestic. |

Point 114: From Kitab al-Asma:

| Muta'alun 'an an yajooza 'alayhi ittikhazu as-sariri lil-julus [2] | Allah Almighty, the Exalted and Majestic, is pure and superior to making a throne to sit upon. |

Point 115: In the same, it is cited from Imam Abu al-Hasan al-Tabari and other masters of theology: "These meanings of Istiwa do not mean that the Lord Almighty is sitting or standing on the Throne; these are attributes of a body, and Allah, the Exalted and Majestic, is pure from them."

Point 116: In the same, narrating from Al-Farra' the grammarian that "Istiwa" means "turning towards" (Iqbal), and that Ibn Abbas (may Allah be pleased with them both) interpreted it as "rising," he said:

| Istiwa in the sense of 'turning towards' (Iqbal) is correct, because turning towards is intention, and intention is will, and that is permissible among the attributes of Allah Almighty. However, as for what was narrated from Ibn Abbas... | ...meaning Istiwa in the sense of 'Iqbal' is correct as Iqbal is intention, and intention is will, which is permissible among the attributes of Allah Subhana. But that which was narrated from Ibn Abbas (may Allah be pleased with them both) that Istiwa means 'rising' - Note |

Note: Imam Jalaluddin al-Suyuti said in 'Al-Itqan': "It was rejected because He, the Almighty, is also transcendent above ascending."[3] This meaning is rejected because Allah Almighty is pure from rising. [End of note by the author]

[1] Madarik al-Tanzil (Tafsir al-Nasafi), Verse 3/7, Dar al-Kitab al-Arabi Beirut 1/146 [2] Kitab al-Asma wa al-Sifat lil-Bayhaqi, Jami' Abwab Dhikr al-Asma, published by Al-Maktaba al-Athariyya, Sangla Hill, Sheikhupura 1/71, 72 [3] Al-Itqan fi Ulum al-Qur'an, Type 43, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut 1/205

फ़तावा रज़विया खंड 29

...एक तरफ रख दिया, लेकिन सत्य के अनुयायी अल्लाह सर्वशक्तिमान की कृपा से भली-भांति जानते हैं कि मार्गदर्शन का मार्ग बहुमत का अनुसरण करना है। जिससे चूक या गलती हुई, हालांकि वह क्षम्य हो सकता है, लेकिन उसका वह कथन त्याग दिया जाता है। वे जानते हैं कि "हर तेज़ घोड़े को ठोकर लगती है, हर तेज़ तलवार कभी कुंद पड़ जाती है, और हर विद्वान से कभी न कभी चूक हो जाती है।" और अल्लाह ही त्रुटियों से बचाने वाला है।

बिंदु 113: अब अपने ही प्रमाणित स्रोतों से उन अर्थों का खंडन सुनें जिन्हें आपने अज्ञानता के कारण सुन्नत के अनुसार बताया, बल्कि सुन्नत को उन्हीं में सीमित कर दिया। 'मदारिक शरीफ़' से गुज़रा:

| अल-इस्तिवा बि-मान अल-जुलूस ला यजूज़ु अला अल्लाहि तआला [1] | बैठने के अर्थ में इस्तिवा अल्लाह तआला अज़्ज़-व-जल्ल के हक़ में असंभव है। |

बिंदु 114: 'किताब अल-अस्मा' से गुज़रा:

| मुतआलुन अन अन यजूज़ा अलैहि इत्तिकाज़ु अस-सरीरी लिल-जुलूस [2] | अल्लाह तआला अज़्ज़-व-जल्ल इससे पवित्र और श्रेष्ठ है कि वह बैठने के लिए तख़्त बनाए। |

बिंदु 115: उसी में इमाम अबुल हसन अल-तबरी और अन्य धर्मशास्त्रियों (मुतकल्लिमीन) से गुज़रा: इस्तिवा के ये अर्थ नहीं हैं कि मौला तआला अर्श (सिंहासन) पर बैठा या खड़ा है, ये शरीर के गुण हैं और अल्लाह अज़्ज़-व-जल्ल इनसे पवित्र है।

बिंदु 116: उसी में 'फ़र्रा' वैयाकरण से यह वर्णन करते हुए कि 'इस्तिवा' का अर्थ 'इक़बाल' (अभिमुख होना) है, और इब्न अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हा) ने 'चढ़ने' से व्याख्या की, फ़रमाया:

| इस्तिवा इक़बाल के अर्थ में सही है क्योंकि इक़बाल का अर्थ इरादा है, और इरादा अल्लाह तआला के गुणों में मान्य है। लेकिन इब्न अब्बास से जो वर्णन है... | ...यानी इक़बाल के अर्थ में इस्तिवा सही है कि इक़बाल इरादा है और इरादा अल्लाह सुब्हाना के गुणों में अनुमेय है। लेकिन वह जो इब्न अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हा) से वर्णन किया गया कि इस्तिवा का अर्थ 'चढ़ना' है - नोट |

नोट: इमाम जलालुद्दीन सुयूती ने 'अल-इतकान' में फ़रमाया: "इसे खारिज कर दिया गया क्योंकि वह सर्वशक्तिमान ऊपर चढ़ने से भी पवित्र है।"[3] यह अर्थ इस प्रकार अस्वीकार्य हुआ कि अल्लाह तआला ऊपर चढ़ने से पवित्र है। [लेखक की ओर से नोट समाप्त]

[1] मदारिक अल-तन्ज़ील (तफ़्सीर अल-नसफ़ी), आयत 3/7, दार अल-किताब अल-अरबी बेरुत 1/146 [2] किताब अल-अस्मा व अल-सिफ़ात लिल-बैहक़ी, जामी' अबवाब ज़िक्र अल-अस्मा, अल-मक़्तबा अल-असरिया साँगला हिल, शेखुपुरा 1/71, 72 [3] अल-इतकान फ़ी उलूम अल-क़ुरान, प्रकार 43, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरुत 1/205

بالائے طاق رکھ دیا مگر اہل حق بحمد اللہ تعالیٰ خوب جانتے ہیں کہ شاہراہ ہدایت اتباع جمہور ہے جس سے سہو و خطا ہوئی اگرچہ معذور ہے مگر اس کا وہ قول متروک و مہجور ہے، وہ جانتے ہیں کہ لکل جواد کبوۃ لکل صارم نبوۃ ولکل عالم ھفوۃ ہر تیز گھوڑا کبھی ٹھوکر کھا لیتا ہے اور ہر تیغ براں کبھی کج جاتی ہے اور ہر عالم سے کبھی کوئی لغزش وقوع پاتی ہے۔ وب اللہ العصمۃ۔

ضرب ۱۱۳: اب اپنے مستندات سے ان معانی کا رد سنئے جنہیں آپ نے براہ جہالت مطابق سنت بلکہ سنت کو انہیں میں منحصر بتایا۔ مدارک شریف سے گزرا:

| الاستواء بمعنی الجلوس لا یجوز علی اللہ تعالی ۱ | استواء بیٹھنے کے معنی پر اللہ تعالیٰ عزوجل کے حق میں محال ہے۔ |

ضرب ۱۱۴: کتاب الاسماء سے گزرا:

| متعال عن ان یجوز علیہ اتخاذ السریر للجلوس ۲ | اللہ تعالیٰ عزوجل اس سے پاک و برتر ہے کہ بیٹھنے کے لیے تخت بنائے۔ |

ضرب ۱۱۵: اسی میں امام ابوالحسن طبری وغیرہ ائمہ متکلمین سے گزرا استواء کے یہ معنی نہیں کہ مولیٰ تعالیٰ عرش پر بیٹھا یا کھڑا ہے، یہ جسم کی صفات ہیں اور اللہ عزوجل ان سے پاک۔

ضرب ۱۱۶: اُسی میں فراء نحوی سے یہ حکایت کر کے کہ استواء بمعنی اقبال ہے، اور ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما نے چڑھنے سے تفسیر کی، فرمایا:

| استوی بمعنی اقبل صحیح لان الاقبال ھو القصد و القصد ھو الارادۃ وذلك جائز فی صفات اللہ تعالی، اما ماحکی عن ابن عباس | یعنی استوا بمعنی اقبال صحیح کہ اقبال قصد ہے اور قصد ارادہ ہے، یہ تو اللہ سبحانہ کی صفات میں جائز ہے، مگر وہ جو ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے حکایت کی کہ استواء چڑھنے کے معنی عہ |

عہ: امام جلال الدین سیوطی نے اتقان میں فرمایا: رد بانہ تعالی منزہ عن الصعود ایضاً ۳ یہ معنی یوں مردود ہوئے کہ اللہ تعالیٰ چڑھنے سے پاک ہے ۱۲ امنہ،

1 مدارک التنزیل (تفسیر النسفی)، آیت ۳/ ۷ دار الکتاب العربی بیروت ۱/ ۱۴۶ 2 کتاب الاسماء والصفات للبیھقی جماع ابواب ذکر اسماء التي تتبع المکتبۃ الاثریہ سانگلہ ہل شیخوپورہ ۱/ ۷۱، ۷۲ 3 الاتقان فی علوم القرآن النوع الثالث والاربعون دار احیاء التراث العربی بیروت ۲۰۵/ ۱

Fatawa Razawiyya Volume 29

[Arabic Passage]: (May Allah be pleased with them both) He [Al-Farra] only took it from the exegesis (Tafsir) of Al-Kalbi, and Al-Kalbi is weak. Another narration from him in another place is from Al-Kalbi on the authority of Abu Salih from Ibn Abbas (may Allah be pleased with them both) stating that 'Istawa' means his command ascended. - Summarized [1].

[Urdu Translation]: (Regarding the narration from Ibn Abbas) Al-Farra derived it from the Tafsir of Kalbi, and Kalbi is weak. Kalbi himself has narrated from Ibn Abbas (may Allah be pleased with them both) in another place that 'Istawa' means the ascension of the Divine Command.

Point 11: In the same [source] it is stated:

[Arabic Passage]: Narrated by Muhammad bin Marwan from Al-Kalbi from Abu Salih from Ibn Abbas (may Allah be pleased with them both) regarding Allah's words 'Then He established Himself (Istawa) over the Throne', he said it means He settled (Istaqarra) on the Throne. This narration is 'Munkar' (disclaimed). He said in another place with the same chain: 'Istawa over the Throne' means His command was established on the Throne, attributing 'settling' to the command. This Abu Salih, Al-Kalbi, and Muhammad bin Marwan are all 'Matruk' (abandoned) according to the scholars of Hadith. They do not use any of their narrations as proof due to the abundance of 'Munkar' (rejected) matters in them and the obviousness of their lying in their narrations. Abu Sa'id al-Malini informed us (and mentioned his chain) from Habib bin Abi Thabit who said: We used to call him 'Durogh-zan' (liar), meaning Abu Salih, the freed slave of Umm Hani. Abu Abdullah al-Hafiz informed us (with his chain) from Sufyan who said: Al-Kalbi said to me, Abu Salih said to me: All the hadiths I narrated to you are lies. Furthermore, Al-Kalbi said...

[Urdu Translation]: That is, Muhammad bin Marwan narrated from Kalbi, who narrated from Abu Salih, who narrated from Ibn Abbas (may Allah be pleased with them both) regarding Allah's words 'Then He established Himself (Istawa) over the Throne', that the meaning of 'Istawa' on the Throne is to stay/settle. This narration is 'Munkar' (rejected). Kalbi himself, using the same chain of transmission, narrated in another place that 'Istawa' on the Throne means the Divine command settled there; here, 'settling' is attributed to the command. Abu Salih, Kalbi, and Muhammad bin Marwan are all 'Matruk' (discarded) in the view of the Hadith scholars. None of their narrations are fit to be presented as evidence because 'Munkar' (unacceptable)

elements abound in their narrations and their lying is evident. Habib bin Abi Thabit said, "We had named this Abu Salih 'Durogh-zan' (liar)." Abu Salih was the freed slave of Umm Hani. Imam Sufyan said that Kalbi himself told me that Abu Salih said to him, "All the hadiths I have narrated to you are lies." Furthermore, Kalbi said...

[Footnote] 1: Kitab al-Asma wa'l-Sifat by al-Bayhaqi, Chapter: Ar-Rahman 'ala al-'Arsh Istawa, Al-Maktaba al-Athariyya, Sangla Hill, Sheikhupura, 2/ 154 and 155.

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

[अरबी अनुच्छेद]: (अल्लाह उन दोनों से प्रसन्न हो) उसने [अल-फ़र्रा] इसे केवल अल-कल्बी के तफ़सीर (व्याख्या) से लिया है, और अल-कल्बी कमज़ोर है। उनके माध्यम से एक अन्य स्थान पर अल-कल्बी से अबू सालेह के अधिकार पर इब्न अब्बास (अल्लाह उन दोनों से प्रसन्न हो) से रिवायत है कि 'इस्तवा' का अर्थ है उनका आदेश चढ़ गया। - संक्षिप्त [1]।

[उर्दू अनुवाद]: (इब्न अब्बास से रिवायत के बारे में) फ़र्रा ने कल्बी की तफ़सीर से अ़ख़्ज़ किया और कल्बी ज़ईफ़ है और खुद इब्न अब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा से इसी कल्बी ने दूसरी जगह यूँ रिवायत की कि इस्तवा के मा़नी हुक्म-ए-इलाही का चढ़ना है।

बिंदु 11: इसी में फ़रमाया गया:

[अरबी अनुच्छेद]: यानी मुहम्मद बिन मरवान ने अल-कल्बी से, उन्होंने अबू सालेह से और उन्होंने इब्न अब्बास (अल्लाह उन दोनों से प्रसन्न हो) से रिवायत की कि अल्लाह के कथन 'फिर वह अर्श (सिंहासन) पर प्रतिष्ठित हुआ (इस्तवा)' का अर्थ है वह अर्श पर ठहर गया। यह रिवायत 'मुनकर' (अस्वीकार्य) है। उन्होंने उसी सनद (श्रृंखला) के साथ दूसरी जगह कहा: 'अर्श पर इस्तवा' का अर्थ है उनका आदेश अर्श पर ठहर गया, यहाँ ठहरने को आदेश की ओर फेर दिया। यह अबू सालेह, अल-कल्बी और मुहम्मद बिन मरवान सभी हदीस के विद्वानों के निकट 'मतरूक' (त्यागे हुए) हैं। वे उनकी किसी भी रिवायत को प्रमाण के रूप में स्वीकार नहीं करते क्योंकि उनकी रिवायतों में 'मुनकर' बातें बहुत अधिक हैं और उनकी रिवायतों में उनका झूठ बोलना स्पष्ट है। अबू सईद अल-मालिनी ने हमें सूचित किया (और अपनी सनद का उल्लेख किया) हबीब बिन अबी साबित से, जिन्होंने कहा: हम उन्हें 'दरोग-ज़न' (झूठा) कहते थे, यानी अबू सालेह, उम्मे हानी के आज़ाद किए हुए गुलाम। अबू अब्दुल्लाह अल-हाफ़िज़ ने हमें सूचित किया (सनद के साथ) सुफ़यान से, जिन्होंने कहा: कल्बी ने मुझसे कहा, अबू सालेह ने मुझसे कहा: जितनी हदीसें मैंने आपसे बयान की हैं, वे सब झूठ हैं। साथ ही कल्बी ने कहा...

[उर्दू अनुवाद]: यानी मुहम्मद बिन मरवान ने कल्बी से, उसने अबू सालेह से, उसने इब्न अब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा से रिवायत की कि अल्लाह तआ़ला के क़ौल 'हुम्मास्तवा अ़लल अ़र्श' में अ़र्श पर इस्तवा के मा़नी ठहरना है, यह रिवायत मुनकर है, और खुद कल्बी ने इसी सनद से दूसरी जगह यूँ रिवायत की कि अ़र्श पर इस्तवा के मा़नी हुक्म-ए-इलाही का ठहरना है यहाँ ठहरने को हुक्म

की तरफ फेरा और ये अबू सालेह और कल्बी और मुहम्मद बिन मरवान सब के सब उ़लमा-ए-मुहद्दिसीन के नज़दीक मतरूक हैं उनकी कोई रिवायत हुज्जत लाने के क़ाबिल नहीं कि उनकी रिवायतों में मुनकुरात ब-कसरत हैं और उनमें उनका झूठ बोलना आश्कारा है, हबीब बिन अबी साबित ने फ़रमाया हमने इस अबू सालेह का नाम ही दरोग़-ज़न रख दिया था, इमाम सुफ़यान ने फ़रमाया खुद कल्बी ने मुझसे बयान किया कि अबू सालेह ने मुझसे कहा जितनी हदीसें मैंने तुझसे बयान की हैं सब झूठ हैं नीज़ कल्बी ने कहा...

[पाद टिप्पणी] 1: किताबुल अस्मा वस्सफ़ात लिल-बैहक़ी, बाब अर-रहमान अ़लल अ़र्शिस्तवा, अल-मकतबतुल अस़रिया, सांगला हिल, शेख़ूपुरा, 2/ 154 और 155।

पृष्ठ 175/750

رضی اللہ تعالی عنہما فانما اخذہ عن تفسیر الکلبی و الکلبی ضعیف و الروایۃ عنہ فی موضع اخر عن الکلبی عن ابی صالح عن ابن عباس رضی اللہ تعالی عنہما استوی یعنی صعد امرہ اھ ملخصاً[1]۔ پر ہے فراء نے کلبی کی تفسیر سے اخذ کیا اور کلبی ضعیف ہے اور خود ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے اس کلبی نے دوسری جگہ یوں روایت کی کہ استواء کے معنی حکم الہی کا چڑھنا ہے۔

ضرب ۱۱: اسی میں فرمایا:

عن محمد بن مروان عن الکلبی عن ابی صالح عن ابن عباس رضی اللہ تعالی عنہما فی قولہ تعالی ثم استوی علی العرش یقول استقر علی العرش. ھذہ الروایۃ منکرۃ وقد قال فی موضع آخر بھذا الاسناد استوی علی العرش یقول استقر امرہ علی السریر ورد الاستقرار الی الامر، وابو صالح ھذا والکلبی و محمد بن مروان کلھم متروک عند اھل العلم بالحدیث لا یحتجون بشیئ من روایاتھم لکثرۃ المناکیر فیھا وظھور الکذب منھم فی روایاتھم، اخبرنا ابو سعید المالینی (فذکر باسنادہ) عن حبیب بن ابی ثابت قال کنا نسمیہ دروغ زن یعنی ابا صالح مولی ام ھانی، واخبرنا ابو عبد اللہ الحافظ (فاسند) عن سفین قال قال الکلبی قال لی ابو صالح یعنی محمد بن مروان نے کلبی سے اس نے ابوصالح سے اس نے ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کی کہ اللہ تعالیٰ کے قول ثم استوی علی العرش میں عرش پر استواء کے معنی ٹھہرنا ہے یہ روایت منکر ہے، اور خود کلبی نے اسی سند سے دوسری جگہ یوں روایت کی کہ عرش پر استواء کے معنی حکم الہی کا ٹھہرنا ہے یہاں ٹھہرنے کو حکم کی طرف پھیرا اور یہ ابوصالح اور کلبی اور محمد بن مروان سب کے سب علمائے محدثین کے نزدیک متروک ہیں ان کی کوئی روایت حجت لانے کے قابل نہیں کہ ان کی روایتوں میں منکرات بکثرت ہیں اور ان میں ان کا جھوٹ بولنا آشکارا ہے، حبیب بن ابی ثابت نے فرمایا ہم نے اس

ابوصالح کا نام ہی دروغ زن رکھ دیا تھا امام سفیان نے فرمایا خود کلبی نے مجھ سے بیان کیا کہ ابوصالح نے مجھ سے کہا جتنی حدیثیں میں نے تجھ سے بیان کی ہیں سب جھوٹ ہیں نیز کلبی نے کہا

۱۸ کتاب الاسماء والصفات للبیھقی باب الرحمن علی العرش استوی المکتبۃ الاثریہ سانگلہ ہل شیخوپورہ ۲/ ۱۵۴ و ۱۵۵

Volume 29 Fatawa Razawiyya

[Arabic Box Left]: Everything narrated to you is a lie. Al-Malini informed us (with his chain) from Al-Kalbi, who said: Abu Salih said to me, "Look at everything you have narrated on my authority from Ibn Abbas (may Allah be pleased with them both), and do not narrate it." Abu Sahl Ahmad bin Muhammad al-Muzakki informed us, Abu al-Hussein Muhammad bin Hamid al-Attar related to us, Abu Abdullah al-Rawasani informed me, saying: I heard Muhammad bin Ismail al-Bukhari saying: Muhammad bin Marwan al-Kufi, the companion of Al-Kalbi—they (the scholars) remained silent about him; his Hadith is not written at all. End of summary. 1

[Urdu Box Right]: Abu Salih said to me, "See, whatever you have narrated on my authority from Hadrat Ibn Abbas (may Allah be pleased with them both), do not narrate any of it." Imam Bukhari says regarding Muhammad bin Marwan al-Kufi, the student of al-Kalbi, that the masters of Hadith remained silent about him, meaning his narrations were abandoned and his Hadith should not be relied upon at all.

Point 118: Then he said:

[Arabic Box Left]: And how can it be permissible for such statements to be authentic from Ibn Abbas (may Allah be pleased with them both), while none of his reliable and firm-understanding companions narrate them or know of them, despite the great need for knowing them? What Al-Kalbi and his likes narrate exclusively necessitates a limit, and a limit necessitates being originated (hadith), because a limit requires an origin-giver to specify it to that limit. And the Creator, the Most High, is Eternal, He never ceases to be. 2

[Urdu Box Right]: How can it be possible for such things to be authentic from Ibn Abbas (may Allah be pleased with them both), and yet his reliable students with firm understanding and memory neither narrate them nor are aware of them, despite the great need for knowing them? And what al-Kalbi and those in his condition narrate alone implies that Allah (Almighty and Majestic) is limited. And being limited necessitates being created (hadith), because a limit requires someone who specifies that limited being to that particular fixed limit. And Allah (Almighty and Majestic) is Eternal; He has always been.

1. Kitab al-Asma wa al-Sifat by al-Bayhaqi, Chapter: Ar-Rahman rose over the Throne, Al-Maktaba al-Athariyya, Sangla Hill, Sheikhupura 2/355 to 357.

2. Kitab al-Asma wa al-Sifat by al-Bayhaqi, Chapter: Ar-Rahman rose over the Throne, Al-Maktaba al-Athariyya, Sangla Hill, Sheikhupura 2/151.

जिल्द 29 फ़तावा रज़विया

[अरबी बॉक्स बाएँ]: जो कुछ तुम्हें बताया गया वह झूठ है। अल-मालिनी ने हमें (अपनी सनद के साथ) अल-कलबी से बताया, जिन्होंने कहा: अबू सालेह ने मुझसे कहा, "देखो, जो कुछ भी तुमने मेरे माध्यम से इब्न अब्बास (रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा) से रिवायत किया है, उसे रिवायत न करो।" अबू सहल अहमद बिन मुहम्मद अल-मुज़क्की ने हमें बताया, अबू अल-हुसैन मुहम्मद बिन हामिद अल-अत्तार ने हमें बताया, अबू अब्दुल्ला अल-रवासानी ने मुझे बताया, उन्होंने कहा: मैंने मुहम्मद बिन इस्माइल अल-बुखारी को कहते सुना: मुहम्मद बिन मरवान अल-कूफी, जो अल-कलबी के साथी हैं—उनके बारे में (विद्वानों ने) चुप्पी साधी है; उनकी हदीस बिल्कुल नहीं लिखी जाती। संक्षेप समाप्त। 1

[उर्दू बॉक्स दाएँ]: मुझसे अबू सालेह ने कहा, "देखो, जो कुछ तुमने मेरे माध्यम से हज़रत इब्न अब्बास (रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा) से रिवायत किया है, उसमें से कुछ भी रिवायत न करना।" इमाम बुखारी कहते हैं कि कलबी के शागिर्द मुहम्मद बिन मरवान कूफी के बारे में हदीस के इमामों ने ख़ामोशी इख़्तियार की है, यानी उसकी रिवायतें तर्क(छोड़) दी गईं, उसकी हदीस पर हरगिज़ एतबार न किया जाए।

बिंदु 118: फिर फ़रमाया:

[अरबी बॉक्स बाएँ]: और यह कैसे जायज़ हो सकता है कि इब्न अब्बास (रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा) से इस तरह की बातें सही हों, जबकि उनके विश्वसनीय और मज़बूत समझ वाले साथियों में से कोई भी उन्हें रिवायत नहीं करता और न ही उनके बारे में जानता है, जबकि उन्हें जानने की बहुत ज़रूरत है? अल-कलबी और उनके जैसे लोग जो अकेले रिवायत करते हैं, वह एक सीमा (हद) को अनिवार्य करता है, और सीमा का होना 'हादिस' (जिसका आरम्भ हो) होने को अनिवार्य करता है, क्योंकि सीमा के लिए एक सीमा-निर्धारक की आवश्यकता होती है जो उसे उस सीमा तक सीमित करे। और सृष्टिकर्ता, जो सर्वोच्च है, वह अनादि (क़दीम) है, वह हमेशा से है। 2

[उर्दू बॉक्स दाएँ]: भला यह कैसे मुमकिन है कि ऐसी बातें इब्न अब्बास (रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा) से सही हों और फिर उनके भरोसेमंद, मज़बूत समझ और हिफ़्ज़ (याददाश्त) वाले शागिर्द न उन्हें रिवायत करें और न उनसे वाकिफ़ हों, हालांकि उन्हें जानने की कितनी ज़रूरत है? और जो कुछ कलबी और उसके जैसे दूसरे लोग अकेले रिवायत कर रहे हैं, उससे तो अल्लाह अज़्ज़वजल का महदूद (सीमित) होना लाज़िम आता है, और महदूद होना 'हादिस' (जिसकी शुरुआत हो) होने को

वाजिब करता है, क्योंकि हद के लिए किसी ऐसे की ज़रूरत होती है जो उस महदूद को उस ख़ास हद के साथ मुख़्सूस (निर्धारित) करे। और अल्लाह अज़्ज़वजल तो 'क़दीम' (अनादि) है; वह हमेशा से है।

1. किताबुल अस्मा वस सिफ़ात, इमाम बैहकी, बाब: अर्श पर रहमान के इस्तिवा का बयान, अल-मकतबतुल असरिया, सांगला हिल, शेखूपुरा 2/355 से 357।
2. किताबुल अस्मा वस सिफ़ात, इमाम बैहकी, बाब: अर्श पर रहमान के इस्तिवा का बयान, अल-मकतबतुल असरिया, सांगला हिल, शेखूपुरा 2/151।

पृष्ठ 176 का 750

[عربی باکس بائیں]: کل ما حدثك کذب، واخبرنا المالیني (بسنده) عن الکلبی قال قال لی ابو صالح انظر کل شیئ رویت عنی عن ابن عباس رضی اللہ تعالی عنهما فلا تروه، اخبرنا ابو سهل احمد بن محمد المزکی ثنا ابوالحسین محمد بن حامد العطار اخبرنی ابو عبداللہ الرواسانی قال سمعت محمد بن اسمعیل البخاری یقول محمد بن مروان الکوفی صاحب الکلبی سکتوا عنه لا یکتب حدیثه البتة اه مختصراً ۱۔

[اردو باکس دائیں]: مجھ سے ابو صالح نے کہا دیکھو جو کچھ تو نے میرے واسطے سے حضرت ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کیا ہے اس میں سے کچھ روایت نہ کرنا، امام بخاری فرماتے ہیں کلبی کے شاگرد محمد بن مروان کوفی سے ائمہ حدیث نے سکوت کیا ہے، یعنی اس کی روایات متروک کر دیں اس کی حدیث کا ہر گز اعتبار نہ کیا جائے۔

ضرب ۱۱۸: پھر فرمایا:

[عربی باکس بائیں]: وکیف یجوز ان یکون مثل هذه الاقاویل صحیحة عن ابن عباس رضی اللہ تعالی عنهما ثم لا یرویها ولا یعرفها احد من اصحابه الثقات الاثبات مع شدة الحاجة الی معرفتها، وما تفرد به الکلبی وامثاله یوجب الحد والحد یوجب الحدث لحاجة الحد الی حادخصه به والباری تعالی قدیم لم یزل۔ ۲

[اردو باکس دائیں]: بھلا کیونکر ہو سکتا ہے کہ ایسی باتیں ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے صحیح ہوں پھر ان کے ثقہ شاگرد محکم فہم و حفظ والے نہ انہیں روایت کریں نہ ان سے آگاہ ہوں حالانکہ ان کے جاننے کی کیسی ضرورت ہے اور جو کچھ کلبی اور اس کی حالت کے اور لوگ

تنہا روایت کر رہے ہیں اس سے تو اللہ عزوجل کا محدود ہونا لازم آتا ہے اور محدود ہونا حادث ہونے کو واجب کرتا ہے کہ حد کے لیے کوئی ایسا درکار ہے جو خاص اس حد معین سے اس محدود کو مخصوص کرے اور اللہ عزوجل تو قدیم ہے ہمیشہ سے ہے۔

۱ کتاب الاسماء والصفات للبیھقی باب الرحمن علی العرش استوی المکتبۃ الاثریہ سانگلہ ہل شیخوپورہ ۲/ ۳۵۵ تا ۳۵۷ ۲ کتاب الاسماء والصفات للبیھقی باب الرحمن علی العرش استوی المکتبۃ الاثریہ سانگلہ ہل شیخوپورہ ۲/ ۱۵۱

Fatawa Rizwia Volume 29

Strike 119: It is stated in it: [Arabic]: Indeed, Allah Almighty has no place, nor is He composed. Verily, movement, rest, relocation, and settling are attributes of physical bodies. And Allah Almighty is One, Eternal; there is nothing like unto Him. [Briefly] [Urdu]: Indeed, for Allah Most High there is no place nor any such thing which He is mounted upon, and indeed movement, stillness, moving, and staying are attributes of a body, and Allah Most High is One, Eternal, nothing has resemblance to Him. [Briefly]

Strike 120: It is stated in Madarik Sharif: [Arabic]: Interpreting the Throne as a bed and 'Istiwa' (rising above/establishing) as settling, as the anthropomorphists (Mushabbihah) say, is falsehood. [Urdu]: Saying the meaning of Arsh is throne and the meaning of Istiwa is staying, just as the Mujassimah (corporealists) sect says, is false.

You have seen how clear the truth has become, and all praise is due to Allah.

The Fifth Slap I say: It has already been made clear above that this claimant himself did not stick to his claim. Not only did he fail to remain silent about attributes concerning which the speech of the Lawgiver is not silent, but he outright denied them. However, it must be said here that for this audacious claimant, the meaning of acceptance and lack of silence is certainly not what it is according to the Ahl al-Sunnah. For the Ahl al-Sunnah, it means not assigning a specific meaning but simply believing summarily that whatever Allah intended is true, or providing an interpretation that leads to a pure and sanctified meaning where there is no trace of resemblance to creation, corporeality, place, or direction. If he had believed in this path, he would not have defined 'Istiwa' as sitting, climbing, or staying, nor would he have labeled other meanings mentioned by the Imams of Ahl al-Sunnah as innovation and misguidance. Inevitably, his doctrine is that of the corporealists (Mujassimah), that whatever has been revealed must be understood and accepted based on its literal, linguistic, and apparent meaning. Everything written from the start was in refutation of this cursed misguidance. Let me say this much more in his ear, perhaps God will grant him understanding and guidance: O witless one! This impure doctrine of yours, specifically regarding 'Istiwa' and generally regarding all

ambiguous verses (Mutashabihat), is a filthy path of manifest misguidance. According to this method, your deity, whom you consider your...

1. Kitab al-Asma wa al-Sifat, Chapter: 'Are they waiting for anything else but that Allah should come to them...', Al-Maktaba al-Athariyya, Sheikhupura, 2/192
2. Madarik al-Tanzil (Tafsir al-Nasafi), Verse 7/54, Dar al-Kitab al-Arabi, Beirut, 2/52

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

प्रहार 119: उसी में है: [अरबी]: बेशक अल्लाह तआला के लिए न कोई स्थान है न वह संयोजित है, और बेशक गति, ठहराव, स्थानांतरण और स्थिरता शरीरों के गुण हैं। और अल्लाह तआला एक और बेनियाज़ है, उसके जैसा कोई नहीं है। [संक्षेप में] [उर्दू]: बेशक अल्लाह तआला के लिए न स्थान है न कोई ऐसी चीज़ जिस पर वह सवार हो, और बेशक हरकत, सुकून, हटना और ठहरना यह जिस्म की सिफतें हैं और अल्लाह तआला अहद समद है कोई चीज़ उससे मुशाबहत (समानता) नहीं रखती। [संक्षेप में]

प्रहार 120: मदारिक शरीफ़ में फ़रमाया: [अरबी]: अर्श का अर्थ तख्त और इस्तिवा का अर्थ ठहराव करना, जैसा कि मुशब्बिहा (समानता देने वाले) कहते हैं, असत्य है। [उर्दू]: अर्श के मानी तख्त और इस्तिवा के मानी ठहरना कहना जिस तरह फिर्क़ा-ए-मुजस्सिमा कहता है, बातिल (असत्य) है।

आपने देखा कि हक़ कैसा वाज़ेह (स्पष्ट) हुआ, वल्लाहिल हम्द (अल्लाह ही के लिए सब प्रशंसा है)।

पाँचवाँ तपांचा (थप्पड़) मैं कहता हूँ: यह तो ऊपर स्पष्ट हो गया कि यह दावेदार स्वयं अपने दावे पर नहीं टिका और जिन गुणों पर शरीयत का कलाम खामोश नहीं है, उनसे खामोशी तो दूर, उसने साफ़ इनकार कर दिया। लेकिन यहाँ यह कहना है कि इस निडर दावेदार के नज़दीक स्वीकार करने और खामोश न रहने का वह अर्थ हरगिज़ नहीं है जो अहले सुन्नत के नज़दीक है। अहले सुन्नत के नज़दीक इसका अर्थ है कि कोई (निश्चित) अर्थ न कहना, बस संक्षेप में इतनी बात पर ईमान ले आना कि अल्लाह की जो मुराद (इच्छा) है वही सत्य है, या ऐसी व्याख्या करना जो पाक और साफ़ अर्थ की ओर ले जाए जिसमें सृष्टि से समानता, शरीर होने, स्थान या दिशा की कोई गंध भी पैदा न हो। यदि वह इस मार्ग पर ईमान लाता, तो इस्तिवा का अर्थ बैठना, चढ़ना या ठहरना न बताता और न ही अहले सुन्नत के इमामों द्वारा बताए गए अन्य अर्थों को बिदअत और गुमराह कहता। निश्चित रूप से उसका पंथ वही मुजस्सिमा (शरीर मानने वालों) का पंथ है कि जो कुछ आयात में आया है उसे उसके वास्तविक भाषाई अर्थ और प्रत्यक्ष अर्थ पर ही आधारित माना जाएगा। शुरू से अब तक जो कुछ लिखा गया वह इसी शापित गुमराही के खंडन में था। इतना और उसके कान में डाल दूँ शायद खुदा समझ दे और हिदायत करे कि ऐ नासमझ! यह नापाक पंथ जो 'इस्तिवा' में विशेष रूप से और बाकी मुतशाबिहात

(संदिग्ध छंदों) में पूर्ण रूप से तेरा है, वह खुली गुमराही का गंदा रास्ता है। इस तरीके पर तेरा माबूद (पूज्य) जिसे तू अपना...

1. किताबुल अस्मा वस-सिफ़ात, बाब: हल यन्ज़ुरुना इल्ला अं यतियहुमुल्लाह... अल-मकतबा अल-असरिया, शेखूपुरा, 2/192
2. मदारिकुत्तन्ज़ील (तफ़्सीर अन-नसफ़ी), आयत 7/54, दारुल किताबुल अरबी, बेरूत, 2/52

पृष्ठ 177 / 750

فتاوی رضویہ جلد ۲۹

ضرب ۱۱۹: اُسی میں ہے: ان اللہ تعالیٰ لامکان لہ ولا مرکب و ان الحرکۃ و السکون والانتقال والاستقرار من صفات الاجسام واللہ تعالیٰ احد صمد لیس کمثلہ شیئ ۱۔ اھ باختصار بے شک اللہ تعالیٰ کے لیے نہ مکان ہے نہ کوئی چیز ایسی جس پر سوار ہو اور بے شک حرکت اور سکون اور ہٹنا اور ٹھہرنا یہ جسم کی صفتیں ہیں اور اللہ تعالیٰ احد صمد ہے کوئی چیز اس سے مشابہت نہیں رکھتی اھ باختصار۔

ضرب ۱۲۰: مدارک شریف میں فرمایا: تفسیرالعرش بالسریر والاستواء بالاستقرار کما تقولہ المشبہۃ باطل ۲۔ عرش کے معنی تخت اور استواء کے معنی ٹھہرنا کہنا جس طرح فرقہ مجسمہ کہتا ہے باطل ہے۔

دیکھا تونے حق کیسا واضح ہوا، واللہ الحمد۔

پانچواں تپانچہ اقول: یہ تو اوپر واضح ہو لیا کہ یہ مدعی خود ہی دعوے پر نہ جما اور جن صفات سے کلام شارع ساکت نہیں ان سے سکوت در کنار، ان کا صاف انکار کر گیا مگر یہاں یہ کہنا ہے کہ اس مدعی بے باک کے نزدیک تسلیم و عدم سکوت کا وہ مطلب ہرگز نہیں جو اہلسنت کے نزدیک ہے یعنی کچھ معنی نہ کہنا صرف اجمالاً اتنی بات پر ایمان لے آنا کہ جو کچھ مراد الہی ہے حق ہے یا تاویل کر کے صاف و پاک معنی کی طرف ڈھال دینا جن میں مشابہت مخلوق و جسمیت و مکان وجہت کی بو اصلاً نہ پیدا ہو۔ اس مسلک پر ایمان لاتا تو استواء کے معنی بیٹھنا، چڑھنا، ٹھہرنا نہ بتاتا ان کے علاوہ اور معانی کو کہ ائمہ اہلسنت نے ذکر فرمائے بدعت و ضلالت نہ بتاتا لاجرم اس کا مسلک وہی مسلک مجسمہ ہے کہ جو کچھ وارد ہوا وہ اپنے حقیقی لغوی معنی مفہوم و

متبادر پر محمول ٹھہرا کر مانا جائے گا۔ شروع سے اب تک جو لکھا گیا وہ اسی ضلالت ملعونہ کے رد میں تھا اتنا اور اس کے کان میں ڈال دوں شاید خدا سمجھ دے اور ہدایت کرے کہ اے بے خرد! یہ ناپاک مسلک جو استواء میں خصوصاً اور باقی متشابہات میں مطلقاً تیرا ہے۔ (کھلی گمراہی کا نجس رستہ ہے) اس طریقہ پر تیرا معبود جسے تو اپنے

۱ کتاب الاسماء والصفات باب هل ينظرون الا ان ياتيهم الله الخ المكتبۃ الاثریہ شیخوپورہ ۲/ ۱۹۲ ۲ مدارك التنزيل (تفسير النسفی) آیت ۷/ ۵۴ دار الكتاب العربی بيروت ۲/ ۵۲

Volume 29 Fatawa Razawiyya

A form has been carved in the mind and understood as a deity; if it does not remain just a statue from a Chinese temple, then it is my responsibility. Blows 121 to 182: He knows how your imaginary deity is.

[Arabic column]: He has a face like a human face, with two eyes that see. However, he does not look at the one with whom he is angry. Then, the wonder is that his face is towards every direction. Even more wonderful is that despite this, he turns it away from the one he is angry with. I wish I knew how he can turn away from a direction when he is facing every direction. Rather, as long as a person is praying, he turns his face towards the person praying, and when the person finishes praying, he also turns away. If he has a voice, then there must be a throat and breath too. Rather, he is found from the direction of Yemen. He has two ears with which he listens to the one he is pleased with. He has curly hair with long locks reaching down to his earlobes. As for the beard, it is not found; rather, he is a beardless youth. He has two hands like a human, a right and a left, with forearms, palms, and fingers stretched far out. Sometimes he clinches them, and sometimes he scoops with them. He has a side; his laughter reveals a gaping mouth and teeth that grin. He has a waist to which kinship is attached. He has two feet and a shin; he sits on a throne dangling both feet, resting them on a chair, and sometimes he lies on his back.

[Urdu column]: He has a face like a human's, in which two eyes see, but he does not look at the one with whom he is angry. Then it is a wonder that his face is in every direction. Even more wonderful than this is that despite this, he turns his face away from the one he is angry with. If only there were understanding; how can one who is in every direction turn towards another side? Rather, as long as a namazi (worshiper) is in prayer, he turns his face towards the namazi, and when the namazi finishes, he also turns away. If he has a voice, there must be a sound and breath as well. Rather, he is found from the direction of Yemen. He has two ears with which he listens to the one with whom he is pleased. He is tall; the hair on his head is grown below both ears. But there is no beard; rather, he is a beardless youth. Like a human, he has two hands; one is right and the other is left. There are arms, palms, and fingers in them. His hands are stretched out far; sometimes he closes his hands and sometimes he opens and fills them. He has a side; he laughs and gives news from his mouth. He has teeth that chew. He has a lower garment (loincloth) from which kinship/mercy hangs. There are two feet and a shin. Sitting on a throne, he dangles both feet and keeps them on a chair, and sometimes lies on his back.

जिल्द 29 फ़तावा रज़विया

ज़हन में एक सूरत तराश कर माबूद समझ लिया है, अगर बुतखाना-ए-चीन की एक मूरत होकर न रह जाए तो मेरा ज़िम्मा। ज़रब 121 ता 182: जानता है वह तेरा वहमी माबूद कैसा है।

[अरबी कॉलम]: उसका चेहरा इंसान जैसा है, उसमें दो आँखें देखती हैं। लेकिन जिस पर वह नाराज़ हो, उसकी तरफ नहीं देखता। फिर अचरज यह है कि उसका चेहरा हर तरफ है। इससे भी अधिक अचरज की बात यह है कि इसके बावजूद जिससे वह नाराज़ हो, उससे चेहरा फेर लेता है। काश समझ होती, जो हर तरफ हो वह किस तरह दूसरी तरफ फिर जाए? बल्कि जब तक नमाज़ी नमाज़ में है, वह अपना चेहरा नमाज़ी की तरफ रखता है और जब नमाज़ी फारिग हो जाता है तो वह भी फिर जाता है। अगर उसकी आवाज़ है, तो गला और साँस भी होगी। बल्कि यमन की तरफ से पाया जाता है। उसके दो कान हैं जिससे वह राज़ी हो उस पर कान लगाता है। उसके घुंघराले बाल हैं जो कानों की लौ तक हैं। जहाँ तक दाढ़ी का सवाल है, वह नहीं पाई जाती बल्कि वह एक बे-दाढ़ी का नौजवान है। इंसान की तरह उसके दो हाथ हैं, दायाँ और बायाँ, जिसमें बाजू, हथेली और उंगलियाँ दूर तक फैली हुई हैं। कभी वह उन्हें मुट्ठी में बंद करता है और कभी उनसे भरता (स्कूप) है। उसका पहलू है, उसकी हँसी एक खुले हुए मुँह और दाँतों का पता देती है। उसका कटी प्रदेश (कमर) है जिससे रहम (रिश्तेदारी) जुड़ी हुई है। उसके दो पाँव और पिंडली है। वह तख्त पर बैठा हुआ अपने दोनों पाँव लटकाता है, उन्हें कुर्सी पर रखता है और कभी चित लेट जाता है।

[उर्दू कॉलम]: उसका इंसान जैसा चेहरा है, उसमें दो आँखें देखती हैं लेकिन जिस पर वह नाराज़ हो उसकी तरफ नहीं देखता, फिर अचरज है कि उसका चेहरा हर तरफ है, इससे बढ़कर अचरज यह कि इसके बावजूद जिससे नाराज़ हो उससे चेहरा फेर ले। काश समझ होती, जो हर तरफ हो वह किस तरह दूसरी तरफ फिर जाए? बल्कि जब तक नमाज़ी नमाज़ में है तो वह अपने चेहरे को नमाज़ी की तरफ करता है और जब वह नमाज़ी फारिग हो जाता है तो वह भी फिर जाता है। उसकी आवाज़ है तो आहट और साँस भी होगी, बल्कि यमन की तरफ से पाया जाता है। उसके दो कान हैं जिससे राज़ी हो उस पर कान लगाता है। वह कद्दो-कामत वाला है, उसके सिर के बाल दोनों कानों के नीचे तक बढ़े हुए हैं, लेकिन दाढ़ी नहीं बल्कि नौजवान बे-दाढ़ी है। इंसान की तरह उसके दो हाथ हैं उनमें एक दायाँ दूसरा बायाँ है। उसका बाजू और हथेली और उंगलियाँ हैं, दूर तक उसके हाथ फैले हुए, कभी हाथों को बंद करता है और कभी खोल कर भरता है। उसका पहलू है, हँसता है, अपने मुँह से खबर बताता है, उसके दाँत हैं जो चबाते हैं। उसका ज़ेर-जामा (तहबंद) है जिससे रहम लटकता है,

दो पाँव हैं, पिंडली है, तख्त पर बैठकर दोनों पाँव को लटकाता है और उन दोनों को कुर्सी पर रखता है और कभी चित लेटकर।

पृष्ठ 178 / 750

ذہن میں ایک صورت تراش کر معبود سمجھ لیا ہے اگر بت خانہ چین کی ایک مورت ہو کر نہ رہ جائے تو میرا ذمہ۔ ضرب ۱۲۱ تا ۱۸۲: جانتا ہے وہ تیرا وہمی معبود کیسا ہے۔

[عربی کالم]: له وجه كوجه الانسان فيه عينان تنظران ولكن من سخط عليه لا ينظر اليه ثم العجب ان وجهه الى كل جهة واعظم عجبا انه مع ذلك يصرفه عمن يغضب عليه فليت شعري كيف يصرف عن جهة ما هو الى كل وجهة بل المصلي مادام يصلي يقبل عليه بوجهه فاذا انصرف صرف له صوت فلتكن حنجرة ونفس ايضاً بل قد وجد من قبل اليمن له اذنان يأذن لمن يرضى عليه جعد ذو وفرة الى شحمة اذنيه اما اللحية فلم توجد بل شاب امرد له يدان كالانسان فيهما يمين وشمال وساعد وكف واصابع مبسوطتان الى بعيد وربما قبض وقد يحثوله جنب وضحكه يخبر عن فم يفغر واسنان تكشر له حقو تعلقت به الرحم و رجلان وساق قد جلس على السرير مدلياً قدميه واضعهما على كرسي وربما استلقى

[اردو کالم]: اس کا انسان جیسا چہرہ، اس میں دو آنکھیں دیکھتی ہیں لیکن جس پر وہ ناراض ہو اس کی طرف نہیں دیکھتا پھر عجب ہے کہ اس کا چہرہ ہر طرف ہے اس سے بڑھ کر عجیب یہ کہ اس کے باوجود جس سے ناراض ہو اس سے چہرہ پھیر لے، کاش سمجھ ہوتی، جو ہر طرف ہو وہ کس طرح دوسری طرف پھر جائے، بلکہ جب تک نمازی نماز میں ہے تو وہ اپنے چہرہ کو نمازی کی طرف کرتا ہے اور جب وہ نمازی فارغ ہو جاتا ہے تو وہ بھی پھر جاتا ہے، اس کی آواز ہے تو آہٹ اور سانس بھی ہوگا، بلکہ یمن کی طرف سے پایا جاتا ہے، اس کے دو کان ہیں جس سے راضی ہو اس پر کان لگاتا ہے قد آور ہے اس کے سر کے بال دونوں کانوں سے نیچے تک بڑھے ہوئے ہیں، لیکن داڑھی نہیں بلکہ نوجوان بے داڑھی ہے، انسان کی طرح اس کے دو ہاتھ ہیں ان میں ایک

دایاں دوسرا بایاں ہے، اس کا بازو اور ہتھیلی اور انگلیاں ہیں، دور تک اس کے ہاتھ پھیلے ہوئے، کبھی ہاتھوں کو بند کرتا ہے اور کبھی کھول کر بھرتا ہے، اس کا پہلو ہے، ہنستا ہے، اپنے منہ سے خبر بتاتا ہے، اس کے دانت ہیں جو چباتے ہیں، اس کا زیر جامہ ہے جس سے رحم لٹکتا ہے، دو پاؤں ہیں، پنڈلی ہے، تخت پر بیٹھ کر دونوں پاؤں کو لٹکاتا ہے اور ان دونوں کو کرسی پر رکھتا ہے اور کبھی چت لیٹ کر

صفحہ ۱۷۸ از ۷۵۰

Fatawa Razawiya Volume 29

[Arabic Column:] Placing one of His legs over the other, so there must be a back and a neck. He finds familiarity in the chest, and from the light of His chest, angels were created. His feet are in every mosque, upon which the prostrators prostrate. As for the rest of the organs, the reports do not detail them; the report is more general and comprehensive that He is in the form of a human, for He created Adam in the image of the Merciful. He ascends and descends, walks and jogs. He may come to the earth, and His last step was at the place of Waj. Then He will come on the Day of Resurrection and circle the earth, wearing clothes—a loincloth and a cloak. He covers the believer with the cloak on His shoulder. His cloak is over His face in the Garden of Eden. He has a deep shade with which He reaches whom He wills and turns away from whom He wills. On the Day of Resurrection, He comes in shadows of clouds. He wonders, feels shy, becomes bored, hesitates, and mocks. Sometimes He finds something repulsive. His Throne is carried by four angels: two under His right leg and two under His left leg. It bears a heavy load, and the Throne creaks because of it like the creaking of a new saddle under a heavy rider. Sometimes He wears a green suit and two sandals of gold and sits on a throne of gold. Beneath Him is a bed of gold, and before Him is a curtain of pearls.

[Urdu Column:] He places one leg over the other, therefore He must have a back and a neck, and He finds familiarity with the chest; from the light of His chest, angels were created. His feet are in every mosque so that the prostrator may prostrate upon those feet. For the remaining organs, for which there is no detail, there is only this general and comprehensive report that He is in human form because He created Adam in His own image. He ascends, descends, walks, jogs, sometimes comes to the earth, and His last step is in the place of Waj. Then on the Day of Resurrection, He will come and circle the earth, wearing a loincloth and a cloak. He covers the believer with His hem. His cloak is over His face in the Garden of Eden. He has a deep shade which He casts upon whom He wills and does not cast upon what He does not will. On the Day of Resurrection, He will come in the shadow of clouds. He feels wonder and shyness, leans forward and backward, mocks, and sometimes feels repulsion towards something. His Throne is four angels; two are under His right foot and two are under His left foot. When He puts a heavy weight, the Throne makes a sound like a new camel saddle producing a sound under a heavy rider. Sometimes He wears a green suit, and there are golden shoes, and He sits on a golden chair, and under it is a golden bed and nearby are curtains of pearls.

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

[अरबी कॉलम:] अपना एक पैर दूसरे पर रखे हुए, इसलिए पीठ और गर्दन होनी चाहिए। वह छाती से अपनापन पाता है, और उसकी छाती के नूर से फ़रिश्ते पैदा हुए। उसके पैर हर मस्जिद में हैं, जिन पर सजदा करने वाले सजदा करते हैं। बाकी अंगों के लिए, विवरण नहीं दिया गया है; यह रिपोर्ट अधिक सामान्य और व्यापक है कि वह मानव के रूप में है, क्योंकि उसने आदम को रहमान की छवि पर बनाया है। वह ऊपर चढ़ता है और नीचे उतरता है, चलता है और दौड़ता है। वह पृथ्वी पर आ सकता है, और उसका आखिरी कदम वज नामक स्थान पर था। फिर वह कयामत के दिन आएगा और पृथ्वी का चक्कर लगाएगा, कपड़े पहने हुए—एक तहबंद और एक चादर। वह मोमिन को अपने कंधे की चादर से ढकता है। उसकी चादर अदन के बाग में उसके चेहरे पर है। उसकी एक गहरी छाया है जिससे वह जिसे चाहता है पहुँचाता है और जिससे चाहता है हटा देता है। कयामत के दिन, वह बादलों की छाया में आता है। वह आश्चर्य करता है, शर्माता है, ऊब जाता है, हिचकिचाता है और उपहास करता है। कभी-कभी वह किसी चीज़ को घृणित पाता है। उसका अर्श (सिंहासन) चार फ़रिश्तों द्वारा उठाया जाता है: दो उसके दाहिने पैर के नीचे और दो उसके बाएं पैर के नीचे। यह एक भारी बोझ उठाता है, और इसके कारण अर्श इस तरह चरचराता है जैसे एक भारी सवार के नीचे नया जीन चरचराता है। कभी-कभी वह हरे रंग का सूट और सोने की दो चप्पलें पहनता है और सोने के सिंहासन पर बैठता है। उसके नीचे सोने का बिस्तर है, और उसके सामने मोतियों का पर्दा है।

[उर्दू कॉलम:] वह एक टांग को दूसरी पर रखता है लिहाज़ा उसकी पीठ और गर्दन होगी, और छाती से मानूस करता है; उसकी छाती के नूर से फ़रिश्ते पैदा हुए। उसके कदम हर मस्जिद में हैं ताकि सजदा करने वाला उन कदमों पर सजदा करे। और बाकी अंग जिनकी तफ़सील नहीं है, सिर्फ़ यह खबर आम और व्यापक है कि वह इंसानी सूरत पर है क्योंकि उसने आदम को अपनी सूरत पर पैदा किया। चढ़ता है, उतरता है, चलता है, दौड़ता है, कभी ज़मीन पर आता है और आखिरी कदम मौज़े वज में होता है। फिर कयामत को आकर ज़मीन पर चक्कर लगाएगा, लिबास वाला तहबंद और चादर पहने हुए, अपने दामन से मोमिन को ढकता है। उसकी चादर चेहरे पर है जन्नत-ए-अदन में। उसकी गहरी छाया है जिसे वह जिस पर चाहता है डालता है और जिस चीज़ पर नहीं चाहता नहीं डालता। कयामत में बादलों के साये में आएगा। ताज्जुब और हया करता है, झुकाव आगे-पीछे होता है, मज़ाक करता है, कभी किसी चीज़ से घिन करता है। उसका अर्श चार फ़रिश्ते हैं; दो उसके दाहिने कदम और दो उसके बाएं कदम के नीचे हैं। शदीद बोझ डाले तो उससे अर्श इस तरह

आवाज़ निकालता है जैसे नया कजावा भारी सवार से आवाज़ पैदा करता है। कभी सब्ज़ जोड़ा पहनता है, और सोने के जूते हैं और सोने की कुर्सी पर बैठा है और उसके नीचे सोने का बिस्तर और पास मोतियों के पर्दे होते हैं।

पृष्ठ 750 का 179

[Arabic Column:] واضعاً احدى رجليه على الاخرى فلا بد من ظهر وقفاً ويستأنس للصدر ايضاً فمن نور صدره خلقت الملئكة قد ماه في كل مسجد عليهما يسجد الساجدون وبقية الاعضاء لم تفصل الاخبار اعم واشمل انه على صورة الانسان اذ خلق آدم على صورة الرحمن يصعد وينزل ويمشى ويهرول وقد يأتى الارض و كانت أخر وطأته بموضع وج ثم يجئ يوم القيمة فيطوف الارض مكتس ثياباً ازارا و رداء يستر المؤمن بكتفه رداؤه على وجه في جنة عدن له ظل ظليل يصيب به من يشاء ويصرف عنه من يشاء يأتى يوم القيام في ظلل من الغمام يتعجب ويستحيى و يمل ويتردد و يستهزئ وقد يتقذر نفسه شيئاً تحمله وعرشه اربعة املاك اثنان تحت رجله اليمنى و اثنان تحت رجله اليسرى تقبل شديد الوزر ويأط منه العرش اطيط الرجل الجديد من ثقل الراكب الشديد ربما لبس حلة خضراء ونعلين من ذهب و جلس على كرسى ذهب تحته فراش من ذهب ودونه ستر من

[Urdu Column:] ایک ٹانگ کو دوسری پر رکھتا ہے لہٰذا اس کی پیٹھ اور گدی ہوگی، اور چھاتی سے مانوس کرتا ہے، اس کی چھاتی کے نور سے فرشتے پیدا ہوئے، اس کے قدم ہر مسجد میں ہیں تاکہ سجدہ کرنے والا ان قدموں پر سجدہ کرے، اور باقی اعضاء جن کی تفصیل نہیں صرف یہ خبر عام و اشمل ہے کہ وہ انسانی صورت پر ہے کیونکہ اس نے آدم کو اپنی صورت پر پیدا کیا، چڑھتا ہے، اترتا ہے، چلتا ہے، دوڑتا ہے، کبھی زمین پر آتا ہے اور آخری قدم موضع وج میں ہوتا ہے، پھر قیامت کو آکر زمین پر چکر لگائے گا، لباس والا تہبند اور چادر پہنے ہوئے، اپنے دامن سے مومن کو ڈھانپتا ہے اس کی چادر چہرہ پر ہے جنت عدن میں اس کا گہرا سایہ ہے جس کو چاہتا ہے اس پر ڈالتا ہے اور جس چیز پر نہیں چاہتا نہیں ڈالتا، قیامت میں بادل کے سایہ میں آئے گا، تعجب و حیا کرتا ہے، میلان آگے پیچھے ہوتا ہے مذاق کرتا ہے، کبھی کسی چیز سے

گھن کرتا ہے، اس کا عرش چار ملک ہیں، دو اس کے داہنے قدم اور دو اس کے بائیں قدم کے نیچے ہیں، شدید بوجھ ڈالے تو اس سے عرش اس طرح آواز نکالتا ہے جیسے نیا کجاوہ بھاری سوار سے آواز پیدا کرتا ہے، کبھی سبز جوڑا پہنتا ہے، اور سونے کے جوتے ہیں اور سونے کی کرسی پر بیٹھا اور اس کے نیچے سونے کا بستر اور پاس موتیوں کے پردے ہوتے ہیں،

Fatawa Rizwia, Volume 29

Arabic	Urdu Translation
His feet are on greenery in a green garden, and other such descriptions, some of which are mentioned in Quranic verses and the rest narrated in Hadiths. Most of these have been presented in the book 'Al-Asma wal-Sifat.'	His feet are on greenery in a green garden. Some of these are attributes described by Quranic verses, and the rest are those about which Hadiths have been narrated. Most of these have been presented in the book Al-Asma wal-Sifat. (T)

Why, O ignorant and foolish one! You who take support from solitary (Ahad) and weak Hadiths regarding spatial elevation to believe your deity has a physical location, is this the kind of deity you worship? What then is the difference between Him and a human body except for being bigger or smaller? But, Al-Hamdulillah, the Ahl-us-Sunnah worship such a true, real Lord and Deity who is One (Ahad), Eternal (Samad), without likeness or example, incomparable and beyond description.

Quranic Verse	Translation
"He neither begets nor is born, nor is there to Him any equivalent."	He has no children, nor was He born from anyone, and there is none equal to Him. (T)

He is pure and sanctified from body, physicality, place, ignorance, organs, tools, and all defects and deficiencies. All such narrations and similar things that have been reported, some of them are weak in narration—and most will be so—and clear anthropomorphic descriptions that are far from metaphorical idioms will be found in them. The successful servants of God do not value these even as much as a grain of barley. And even if a narration is sahih (authentic) but is a Khabar-e-Ahad (solitary report), if its meaning does not align with Mutawatir (mass-transmitted) reports, they do not grant it a place of acceptance.

Arabic	Urdu Translation
For indeed, solitary reports do not provide reliability in matters of belief, even if they were supposed to be in the most authentic books with the most authentic chains.	In matters of belief, solitary reports (akhbar-e-ahad), even if they are from authentic books and with authentic chains, are not useful for establishing certain belief. (T)

As for the Mutawatir reports, they are but a few. They are interpreted according to the well-known and famous idioms of the Arabs, such as Hand (yad), Face (wajh), Eye (ayn), Shin (saq), Istiwa (ascending/firmly establishing), coming (atiyan), and descending (nuzul) etc. If you interpret them, it is a clear path; if you delegate their meaning (to Allah), it is the most excellent way. It is not that you should speak insolently against God and clearly attribute a physical location to Him, or accept that He rises, sits, climbs, descends, walks, or stays. Allah Almighty [is above such things].

1. The Holy Quran 112/ 3 & 4 Page 180 of 750

फ़तावा रज़विया, खंड 29

अरबी	उर्दू अनुवाद
"उनके पैर हरे बगीचे में हरियाली पर हैं," और इसी तरह की अन्य बातें, जिनमें से कुछ का उल्लेख कुरानी आयतों में है और बाकी हदीसों में वर्णित हैं। इनमें से अधिकांश को 'किताब अल-अस्मा वस-सिफ़ात' में प्रस्तुत किया गया है।	उनके पैर हरे बगीचे में हरियाली पर होते हैं। इनमें से कुछ वे गुण हैं जिन्हें कुरानी आयतों ने बयान किया है और बाकी वे जिनके बारे में हदीसें आई हैं। उनमें से अधिकांश को 'किताब अल-अस्मा वस-सिफ़ात' में पेश किया गया है। (त)

क्यों ओ अज्ञानी और निर्बुद्धि! ओ एकाकी (अहाद) और कमज़ोर हदीसों से स्थानिक ऊँचाई (ارتفاع। مکانی) का प्रमाण लाकर अपने आराध्य को किसी स्थान में मानने वाले, क्या ऐसे ही आराध्य की तू पूजा करता है? फिर उसमें और मनुष्य के शरीर में छोटे-बड़े के अलावा क्या अंतर है? मगर अल्हम्दुलिल्लाह, अहले सुन्नत ऐसे सच्चे रब, वास्तविक आराध्य की पूजा करते हैं जो एक (अहद) है, सनातन (समद) है, बिना किसी उपमा, नमूने और बे-मिसाल है।

कुरानी आयत	अनुवाद
"न वह किसी का बाप है और न किसी का बेटा, और न कोई उसके बराबर का है।"	न उसकी कोई संतान है और न वह किसी से पैदा हुआ है, और न उसके जोड़ का कोई है। (त)

वह शरीर, भौतिकता, स्थान, अज्ञानता, अंगों, औजारों और सभी दोषों और कमियों से पवित्र और मुक्त है। ये सब और इसके समान जो कुछ भी वर्णित हुआ है, उनमें से कुछ रिवायत के अनुसार कमज़ोर हैं—और ज़्यादातर वही होंगी—और स्पष्ट मानवीकरण (تشبیہ) के साफ़ विवरण जो तावीली मुहावरों से दूर पड़ते हों, वे उन्हीं में मिलेंगे। खुदा के नेक बंदे उन्हें एक जौ के बराबर भी महत्व नहीं देते। और जो कुछ रिवायत के अनुसार सही हो मगर 'खबर-ए-अहाद' (एकल रिपोर्ट) हो, उसे भी तब तक स्वीकार नहीं किया जाता जब तक कि उसका अर्थ 'मुतवातिरात' (व्यापक रूप से प्रसारित रिपार्टों) के अनुकूल न हो।

अरबी	उर्दू अनुवाद
क्योंकि वास्तव में, विश्वास के मामलों में एकाकी रिपोर्टें भरोसेमंद नहीं होतीं, भले ही उन्हें सबसे	विश्वास (एतकाद) के मामले में 'अख़बार-ए-अहाद' (एकाकी खबरें) चाहे सही किताब

अरबी	उर्दू अनुवाद
प्रामाणिक किताबों में सबसे प्रामाणिक सनद (श्रृंखला) के साथ मान लिया जाए।	और सही सनद से हों, वे भरोसे के लिए उपयोगी नहीं हैं। (त)

रहे 'मुतवातिरात', तो वे बहुत कम हैं, और उन्हें भी अरबों के प्रसिद्ध और मशहूर मुहावरों के अनुसार तावील (व्याख्या) के योग्य समझा जाता है, जैसे कि हाथ (यद), चेहरा (वजह), आँख (ऐन), पिंडली (साक), इस्तिवा, आना (आतियान) और उतरना (नुज़ूल) आदि। इनमें तावील करें तो राह रोशन है और तफ़वीज़ (अल्लाह को सौंपना) करें तो सबसे उत्तम, न कि मुँह भरकर खुदा को अपशब्द कहें और उसके लिए स्पष्ट रूप से स्थान मान लें, या उसका उठना, बैठना, चढ़ना, उतरना, चलना, ठहरना स्वीकार करें। अल्लाह अज़्ज़-व-जल्ल [इन सबसे पाक है]।

1. अल-कुरान अल-करीम 112/ 3 और 4 पेज 180 of 750

عربی	اردو ترجمہ
لؤلؤ رجلاہ فی خضرۃ فی روضۃ خضراء الی غیر ذلك مما نطق ببعضہ الایات ووردت بالباقی الاحادیث،اتی علی اکثرھا فی کتاب الاسماء والصفات۔	اس کے پاؤں سبزے کے باغ میں سبزے پر ہوتے ہیں بعض ان میں وہ صفات ہیں جن کو قرآنی آیات نے بیان کیا اور باقی وہ جن کے بارے میں احادیث وارد ہوئی ہیں ان میں سے اکثر کو کتاب الاسماء والصفات میں پیش کیا ہے ۔ (ت)

کیوں اے جاہل بے خرد! اے حدیث احاد و ضعیف ارتفاع مکانی سے سند لا کر اپنے معبود کو مکان ماننے والے، کیا ایسے ہی معبود کو تو پوجتا ہے پھر اس میں اور انسان کے جسم میں چھوٹے بڑے کے سوا فرق کیا ہے ، مگر الحمد للہ اہلسنت ایسے سچے رب حقیقی معبود کو پوجتے ہیں جو احد، صمد، بے شبہ و نمون و بیچون و چگون ہے۔

قرآنی آیت	ترجمہ
"لَمْ یَلِدْ وَلَمْ یُولَدْ وَلَمْ یَکُنْ لَّہٗ کُفُوًا اَحَدٌ"	نہ اس کی کوئی اولاد اور نہ وہ کسی سے پیدا ہوا، اور نہ اس کے جوڑ کا کوئی (ت)

جسم و جسمانیات و مکان و جہالت و اعضاء و آلات و تمام عیوب و نقصانات سے پاک و منزہ ہے یہ سب اور اس کے مثل جو کچھ وارد ہوا ان میں کچھ روایۃً ضعیف ہے اور زیادہ وہی ہو گا اور صریح تشبیہ کی صاف تصریحیں کہ تاویلی محاوروں سے بعید پڑیں اُسی میں ملیں گی اُسے تو یہ

خدا کے موفق بندے ایک جو کے برابر بھی نہیں سمجھتے اور جو کچھ روایۃً صحیح مگر خبر احاد ہو اسے بھی جب کہ متواترات سے موافق المعنے نہ ہو پایہ قبول پر جگہ نہیں دیتے۔

عربی	اردو ترجمہ
فان الاحاد لا تفید الاعتماد فی باب الاعتقاد ولو فرضت فی اصح الکتب باصح الاسناد۔ (ت)	اعتقاد کے باب میں اخبار احاد اگر چہ صحیح کتاب اور صحیح سند سے ہوں وہ اعتماد کے لئے مفید نہیں ہیں۔

رہ گئے متواترات اور وہ نہیں مگر معدودے چند، اور وہ بھی معروف و مشہور محاورات عرب کے موافق تاویل پسند مثل ید و وجہ و عین و ساق و استواء و اتیان و نزول وغیرہا ان میں تاویل کیجئے تو راہ روشن اور تفویض کیجئے تو سب سے احسن، نہ یہ کہ منہ بھر کر خدا کو گالی دیجئے اور اس کے لیے صاف صاف مکان مان لیجئے، یا اٹھتا، بیٹھتا، چڑھتا، اترتا، چلتا، ٹھہرتا، تسلیم کیجئے، اللہ عزوجل

1 القرآن الکریم ۱۱۲/ ۳ و ۴ Page 180 of 750

Fatawa Ridawiyya, Volume 29

May [Allah] grant the ability to follow the truth and protect from opposing the Ahl-us-Sunnah in every word and deed, Ameen.

Sixth Slap

I say: It is a strange spectacle that when this misguided person took all the calamities upon his head, called his deity spatial, accepted him as physical, and settled him on the Throne (Arsh), placing him in a specific direction; then what kind of thought occurred to him that he contradicted his own writings by saying "nowhere else" in various ways.

Blow 183: If you are truthful, provide proof from the Quran and Hadith that Allah Almighty is on the Throne and nowhere else but the Throne. In which verse or Hadith is this "nowhere else"? "Or do you say about Allah that which you do not know?" [1]— Or like the Jews, you fabricate out of an ignorant heart and pass judgment on God.

Blow 184: When you do not believe that the Subbuh (All-Glorious) and Quddus (All-Holy), Jalla Jalaluhu, is free from place, then there is no reason why other verses and Hadiths, from whose apparent words presence elsewhere is understood, should be diverted from their apparent meaning. According to your way, it would be obligatory to act upon the literal, real, and apparent meaning of all of them. Now see how many verses and Hadiths you have denied, and how many times you have clearly contradicted your writing that whatever is mentioned in Sharia must be followed silently. First of all, there is this Sahih Bukhari Hadith 'wa huwa makanuhu' (and He is in His place) [2] in which you forcibly applied the pronoun to the Hazrat Izzat Jalla Shanahu and then arbitrarily took "place" to mean the Throne, whereas Sidrat al-Muntaha is mentioned there. So, being only on the Throne became wrong; sometimes He is also on Sidra.

Blow 185: In the Hadith of Intercession in Sahih Bukhari from Anas (may Allah be pleased with him):

"I will ask permission of my Lord in His house (dar), and I will be given permission [to enter] to Him." [3]

It is obvious that a throne is not called a house (haveli), nor is the Throne (Arsh) in any place; rather, it is above all bodies.

[1] Al-Quran al-Karim 2/80 [2] Sahih al-Bukhari, Kitab al-Tawhid, Chapter: The Statement of Allah Almighty 'And Allah spoke to Moses directly', Qadimi Kutub Khana Karachi 2/1140 [3] Sahih al-Bukhari, Kitab al-Tawhid, Chapter: The Statement of Allah 'Some faces that Day will be radiant, looking at their Lord', Qadimi Kutub Khana Karachi 2/1108

फतावा रज़विया, जिल्द 29

[अल्लाह] सत्य का अनुसरण करने की तौफीक दे और अहले सुन्नत की मुखालफत से हर कौल व फेल (कथनी और करनी) में सुरक्षित रखे, आमीन।

छठा तमाचा

मैं कहता हूँ: यह अजीब तमाशा है कि जब इस गुमराह ने सारी मुसीबतें अपने सिर पर ओढ़ लीं, अपने माबूद को मकामी (स्थानबद्ध) कह दिया, जिस्म मान लिया, अर्श पर बसा कर उसे एक दिशा में जान लिया; फिर उसे क्या ख्याल आया कि 'कहीं और नहीं' कहकर तरह-तरह से अपने ही लिखे का विरोध किया।

प्रहार 183: यदि तुम सच्चे हो तो कुरान और हदीस से प्रमाण दो कि अल्लाह तआला अर्श पर तो है और अर्श के सिवा कहीं नहीं, यह 'कहीं और नहीं' किस आयत या हदीस में है? "क्या तुम अल्लाह के बारे में वह कहते हो जो तुम नहीं जानते?" [1]। या यहूदियों की तरह बिना जाने-बूझे दिल से गढ़कर खुदा पर हुक्म लगा देते हो।

प्रहार 184: जब तुम उस सुब्बूहुन व कुद्दूस (पवित्र और पावन) जल्ला जलालाहू को स्थान (मकान) से पाक नहीं मानते, तो अब कोई कारण नहीं कि अन्य आयतों और हदीसों को, जिनके स्पष्ट शब्दों से कहीं और होना समझा जाता है, उनके स्पष्ट अर्थ से फेर दिया जाए। तुम्हारे तरीके के अनुसार, उन सभी के शाब्दिक, वास्तविक और स्पष्ट अर्थ पर अमल करना अनिवार्य होगा। अब देखो कि तुमने कितनी आयतों और हदीसों का इंकार कर दिया और कितनी बार अपने इस लिखे से कि जो शरीयत में वर्णित है उससे चुप्पी नहीं साधी जाएगी, साफ विरोध किया। सबसे पहले तो यही सही बुखारी की हदीस 'वहूवा मकानुहू' (और वह अपने स्थान पर है) [2] है, जिसमें तुमने बलपूर्वक जमीर (सर्वनाम) हजरत इज्जत जल्ला शानुहू की तरफ ठहरा दी और फिर स्थान से केवल जबरदस्ती अर्श मुराद ले लिया, जबकि वहां सिदरतुल मुंतहा का जिक्र है। तो केवल अर्श पर होना गलत हुआ, कभी सिदरा पर भी ठहरा है।

प्रहार 185: सही बुखारी की शफाअत वाली हदीस में अनस (रजी अल्लाहू अन्हु) से है:

"मैं अपने रब से उसके घर (दार) में अनुमति माँगूँगा, तो मुझे उसके पास उपस्थित होने की अनुमति दी जाएगी।" [3]

जाहिर है कि तख्त (सिंहासन) को हवेली (घर) नहीं कहते, और न ही अर्श किसी मकान (स्थान) में है, बल्कि वह तमाम शरीरों के ऊपर है।

---

[1] अल-कुरान अल-करीम 2/80 [2] सही अल-बुखारी, किताब अल-तौहीद, अध्याय: अल्लाह तआला का कथन 'और अल्लाह ने मूसा से सीधे बात की', कदीमी कुतुब खाना कराची 2/1140 [3] सही अल-बुखारी, किताब अल-तौहीद, अध्याय: अल्लाह का कथन 'उस दिन कुछ चेहरे चमक रहे होंगे, अपने रब की ओर देख रहे होंगे', कदीमी कुतुब खाना कराची 2/1108

فتاوی رضویہ، جلد ۲۹

اتباعِ حق کی توفیق دے اور مخالفتِ اہلسنت سے ہر قول و فعل میں محفوظ رکھے، آمین۔

چھٹا تپانچہ

اقول: طرفہ تماشہ ہے جب اس گمراہ نے سب مصائب اپنے سر پر اوڑھ لیے اپنے معبود کو مکانی کہہ دیا، جسم مان لیا، عرش پر متمکن ٹھہرا کر جہت میں جان لیا، پھر یہ کیا خط سوجھا کہ اور کہیں نہیں کہہ کر طرح طرح اپنے ہی لکھے سے تناقض کیا۔

ضرب ۱۸۳: سچا ہے تو قرآن و حدیث سے ثبوت دے کہ اللہ تعالٰی عرش پر تو ہے اور عرش کے سوا کہیں نہیں، یہ اور کہیں نہیں، کون سی آیت حدیث میں ہے؟ "اَمْ تَقُوْلُوْنَ عَلَی اللہِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ" ۱۔ یا یہود کی طرح بے جانے بوجھے دل سے گھڑ کر خدا پر حکم لگا دیتے ہو۔

ضرب ۱۸۴: جب تُو اس سبوح و قدوس جل جلالہ کو مکان سے پاک نہیں مانتا تو اب کوئی وجہ نہیں کہ اور آیات و احادیث جن کے ظاہر الفاظ سے اور جگہ ہونا مفہوم ہو اپنے ظاہر سے پھیری جائیں۔ تیرے طور پر اُن سب کو معنی لغوی حقیقی ظاہر متبادر پر عمل کرنا واجب ہوگا، اب دیکھ کہ تو نے کتنی آیات و احادیث کا انکار کردیا اور کتنی بار اپنے اس لکھے سے کہ جو شرع میں وارد ہے اس سے سکوت نہ ہوگا، صاف تناقض کیا سب میں پہلے تو یہی حدیث صحیح بخاری وھو مکانہ ۲ ہے جس میں تُو نے بزورِ زبان ضمیر حضرت عزت جل شانہ کی طرف ٹھہرا دی اور پھر مکان سے محض زبردستی عرش مراد لے لیا حالانکہ وہاں سدرۃ المنتہٰی کا ذکر ہے تو عرش ہی پر ہونا غلط ہوا کبھی سدرہ پر بھی ٹھہرا ہے۔

ضرب ۱۸۵: صحیح بخاری حدیث شفاعت میں انس رضی اللہ تعالٰی عنہ سے ہے:

فاستأذن علی ربی فی دارہ فیؤذن لی علیہ ۳۔ میں اپنے رب پر اذن طلب کروں گا اس کی حویلی میں تو مجھے اس کے پاس حاضر ہونے کا اذن ملے گا۔

ظاہر ہے کہ تخت کو حویلی نہیں کہتے، نہ عرش کسی مکان میں ہے، بلکہ وہ بالائے جملہ اجسام ہے،

---

۱ القرآن الکریم ۲/۸۰ ۲ صحیح البخاری کتاب التوحید باب قول اللہ تعالی وکلم اللہ موسی تکلیما قدیمی کتب خانہ کراچی ۲/۱۱۴۰ ۳ صحیح البخاری کتاب التوحید باب قول اللہ وجوہ یومئذ ناضرۃ الی ربہا ناظرۃ قدیمی کتب خانہ کراچی ۲/۱۱۰۸

Fatawa Razawiyya, Volume 29

Undoubtedly, this mansion will be Paradise itself.

Point 186: In the Sahihayn (Bukhari and Muslim), narrated by Abu Musa al-Ash'ari (may Allah be pleased with him):

Arabic	Urdu Translation
The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: "There are two gardens of silver with their vessels and everything in them, and two gardens of gold with their vessels and everything in them. There will be nothing between the people and seeing their Lord, Almighty and Majestic, except the cloak of pride over His face in the Garden of Eden."[1]	The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: "There are two paradises whose vessels and all belongings are of silver, and two paradises whose vessels and all belongings are of gold. Between the people and the sight of Allah Almighty, there will only be the cloak of pride on His face in the Garden of Eden, acting as a veil." (T)

Here is a clear statement of being in the Garden of Eden.

Point 187: Bazzar, Ibn Abi al-Dunya, and Tabarani with a strong and sound (jayyid qawi) chain of narration in 'Al-Awsat' from Anas bin Malik (may Allah be pleased with him), narrating marfu' (directly attributed to the Prophet) the hadith of the people of Paradise seeing their Lord every Friday:

Arabic	Urdu Translation
"When it is Friday, Allah, Blessed and Exalted, descends from 'Illiyyin upon His Throne (Kursi). Then the Throne will be surrounded by pulpits (minbars) of light, and the Prophets will come and sit upon them..."[2] - the Hadith	"When it is Friday, Allah Blessed and Exalted will descend from 'Illiyyin to the Throne (Kursi), then pulpits of light will be laid around it, the Prophets (peace and blessings be upon them) will come and grace those pulpits." (T)

Here, descending from 'Illiyyin onto the Chair is a manifestation (tajalli) within the circle of Prophets, Truthful ones, Martyrs, and the rest of the people of Paradise.

Point 188: Allah says: "Do you feel secure from Him who is in the heaven..."[3] - (Are you fearless of the one whose...)

1. Sahih al-Bukhari, Book of Tafsir 2/737 and Book of Tawhid 2/1109, Qadimi Kutub Khana Karachi; Sahih Muslim, Book of Iman, Qadimi Kutub Khana Karachi 1/100.
2. Al-Targhib wa al-Tarhib, Chapter on the people of Paradise looking at their Lord, Hadith 129, Mustafa al-Babi Egypt 4/554; Kashf al-Astar 'an Zawa'id al-Bazzar, Chapter on the Bliss of the People of Paradise, Hadith 3519, Mu'assasat al-Risala Beirut 4/195; Al-Mu'jam al-Awsat, Hadith 7613, Maktabat al-Ma'arif Riyadh 7/367.
3. The Holy Quran 67/16.

फतावा रज़विया, जिल्द 29

निस्संदेह यह हवेली स्वर्ग (जन्नत) ही होगी।

बिंदु 186: सहीहैन में अबू मूसा अशअरी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है:

अरबी

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया: "दो जन्नतें चांदी की हैं जिनके बर्तन और सारा सामान चांदी का है, और दो जन्नतें सोने की हैं जिनके बर्तन और सारा सामान सोने का है। लोगों और उनके रब अज़्ज़वजल के दीदार के बीच जन्नत-ए-अदन में उनके चेहरे पर केवल बड़ाई (किब्रियाई) की चादर होगी, जो पर्दा बनेगी।"[1]

उर्दू अनुवाद

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया: "दो जन्नतें ऐसी हैं जिनके बर्तन और तमाम सामान चांदी का है, दो जन्नतें ऐसी हैं जिनके बर्तन और तमाम सामान सोने का है। अल्लाह तआला के दीदार और कौम के बीच सिर्फ किब्रियाई की चादर होगी जो जन्नत-ए-अदन में उसके चेहरे पर होगी, जो आड़ बनेगी।" (त)

यहाँ जन्नत-ए-अदन में होने का स्पष्ट उल्लेख है।

बिंदु 187: बज़्ज़ार, इब्न अबी अदुनिया और तबरानी ने 'अल-औसत' में मज़बूत और पुख्ता सनद के साथ अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु से हर जुमे के दिन जन्नत वालों के दीदार की हदीस मरफूअ़न रिवायत की है:

अरबी

"जब जुमे का दिन होगा, तो अल्लाह तबारक व तआला इल्लिय्यीन से कुर्सी पर नुज़ूल फरमाएगा, फिर उसके चारों ओर नूर के मिंबर बिछाए जाएंगे, और नबी अलैहिमुस्सलाम तशरीफ लाकर उन मिंबरों पर सुशोभित होंगे।"[2] - अल-हदीस

उर्दू अनुवाद

"जब जुमे का दिन होगा तो अल्लाह तबारक व तआला इल्लिय्यीन से कुर्सी पर नुज़ूल फरमाएगा, फिर उसके गिर्द नूर के मिंबर बिछाए जाएंगे, अंबिया अलैहिमुस्सलाम तशरीफ लाकर उन मिंबरों पर जलवागर होंगे।" अल-हदीस (त)

यहाँ इल्लिय्यीन से उतरकर कुर्सी पर अंबिया, सिद्दीकीन, शोहदा और अन्य जन्नत वालों के घेरे में तजल्ली (प्रकाश) है।

बिंदु 188: अल्लाह तआला का इरशाद है: "क्या तुम उससे निडर हो गए हो जो आसमान में है..."[3] - (क्या तुम उससे बेखौफ हो गए हो जिसकी...)

---

1. सहीह अल-बुखारी, किताबुत्तफसीर 2/737 और किताबुत्तौहीद 2/1109, कदीमी कुतुब खाना कराची; सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान, कदीमी कुतुब खाना कराची 1/100।
2. अत-तरगीब वत-तरहीब, जन्नत वालों के अपने रब के दीदार का बयान, हदीस 129, मुस्तफा अल-बाबी मिस्र 4/554; कश्फ अल-अस्तार अन ज़वाइद अल-बज़्ज़ार, जन्नत वालों की नेमतों का बाब, हदीस 3519, मुअस्ससतुर रिसाला बेरूत 4/195; अल-मुअजम अल-औसत, हदीस 7613, मकतबतुल मआरिफ रियाज़ 7/367।
3. अल-कुरआनुल करीम 67/16।

لا جرم یہ حویلی جنت ہی ہو گی۔

ضرب ۱۸۶: صحیحین میں ابو موسیٰ اشعری رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے :

عربی متن	اردو ترجمہ
قال رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم جنتان من فضۃ آنیتھما وما فیھما، وجنتان من ذھب آنیتھما وما فیھما وما بین القوم وبین ان ینظروا الی ربھم عزوجل الارداء الکبریاء علی وجھہ في جنۃ عدن۔ 1	رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: دو جنتیں ہیں جن کے برتن اور تمام سامان چاندی کا ہے، دو جنتیں ہیں جن کے برتن اور تمام سامان سونے کا ہے اللہ تعالیٰ کے دیدار اور قوم میں صرف کبریائی کی چادر ہو گی جو جنت عدن میں اس کے چہرے پر ہو گی، حائل ہو گی۔ (ت)

یہاں جنت عدن میں ہونے کی تصریح ہے۔

ضرب ۱۸۷: بزار و ابن ابی الدنیا اور طبرانی بسند جید قوی اوسط میں انس بن مالک رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے حدیثِ دیدارِ اہل جنت ہر روزِ جمعہ میں مرفوعاً راوی :

عربی متن	اردو ترجمہ
فاذا کان یوم الجمعۃ نزل تبارك و تعالیٰ من علیین علی کرسیّہ ثم حف الکرسی بمنابر من نور و جاء النبیون حتی یجلسوا علیھا - الحدیث 2	جب جمعہ کا روز ہو گا تو اللہ تبارک و تعالیٰ علیین سے کرسی پر نزول فرمائے گا پھر اس کے گرد نور کے منبر بچھائے جائیں گے، انبیاء علیہم الصلوۃ والسلام تشریف لاکر ان منبروں پر جلوہ گر ہوں گے۔ الحدیث (ت)

یہاں علیین سے اتر کر کرسی پر حلقہ انبیاء و صدیقین و شہداء و سائر اہل جنت کے اندر تجلی ہے۔

ضرب ۱۸۸: قال تعالیٰ : "ءَاَمِنْتُمْ مَّنْ فِي السَّمَاءِ" 3- (کیا تم اس سے نڈر ہو گئے ہو جس کی

---

1 صحیح البخاری کتاب التفسیر ۲/ ۷۳۷ و کتاب التوحید ۲/ ۱۱۰۹ قدیمی کتب خانہ کراچی ، صحیح مسلم کتاب الایمان قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/ ۱۰۰ 2 الترغیب و الترہیب فصل فی نظر اہل الجنۃ الی ربھم حدیث ۱۲۹ مصطفی البابی مصر ۴/ ۵۵۴ ، کشف الاستار عن زوائد البزار باب فی نعیم اہل الجنۃ حدیث ۳۵۱۹ موسسۃ الرسالہ بیروت ۴/ ۱۹۵ ، المعجم الاوسط حدیث ۷۶۱۳ مکتبۃ المعارف الریاض ۷/ ۳۶۷ 3 القرآن الکریم ۶۷/ ۱۶

Fatawa Rizvia, Volume 29

...sovereignty is in the heaven. (T)

Point 189: Allah Almighty said: "Or do you feel secure that He who is in the heaven..." (1) - (Are you fearless of Him whose sovereignty is in the heaven? T)

Point 190: Ahmad, Ibn Majah, and Hakim narrated with a sahih chain from Abu Hurairah (may Allah be pleased with him) in the hadith of the seizing of the soul as a marfu' narration:

"It continues to be said to it (the soul) until it reaches the heaven in which is Allah, Blessed and Exalted." (2) - (The soul will continue to be told this until it reaches that heaven in which Allah Almighty is. T)

Point 191: Muslim, Abu Dawood, and Nasai narrated from Mu'awiyah bin al-Hakam (may Allah be pleased with him) in the hadith of the slave girl:

"He said to her, 'Where is Allah?' She said, 'In the heaven.' He said, 'Who am I?' She said, 'You are the Messenger of Allah.' He said, 'Free her, for she is a believer.'" (3) - (He said to the slave girl, "Where is Allah?" She replied, "In the heaven." Then he asked, "Who am I?" She said, "You are the Messenger of Allah." So he told the owner, "Free her because she is a believer." T)

Point 192: Abu Dawood and Tirmidhi narrated with the benefit of authentication from Abdullah bin 'Amr (may Allah be pleased with them both):

"The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: 'Have mercy on those on the earth, and He Who is in the heaven will have mercy on you.'" (4) - (His Eminence (peace and blessings be upon him) said: Show mercy to those on earth, the One who is in the heaven will show mercy to you. T)

Point 193: In Sahih Muslim from Abu Hurairah (may Allah be pleased with him):

"The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: (His Eminence (peace and blessings be upon him) said: To me this...)"

Footnotes: 1. The Holy Quran 67 / 17 2. Musnad Ahmad bin Hanbal, narrated from Abu Hurairah, Dar al-Fikr Beirut 2 / 364-365, Sunan Ibn Majah Chapter on Remembrance of Death and Preparation for it, HM Saeed Company Karachi p. 325, Kanz al-Ummal Hadith 42396, Mu'assasat al-Risalah Beirut 15 / 230 3. Sahih Muslim Book of Mosques, Chapter on Prohibition of Speaking in Prayer, Qadimi Kutub Khana

Karachi 1 / 204, Sunan Abi Dawud Chapter on Saying Yarhamukallah to Someone who Sneezes in Prayer, Aftab-e-Alam Press Lahore 1 / 132 4. Jami' at-Tirmidhi Chapters of Righteousness and Joining Ties, Amin Company, Rashidiyah Bookstore Delhi 2 / 14, Sunan Abi Dawud Book of Manners, Chapter on Manners, Aftab-e-Alam Press Lahore 2 / 319

फ़तावा रिज़विया, खंड 29

...सल्तनत आसमान में है। त)

बिंदु 189: अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "अ-अमिन्तुम मन फिस-समा" (1)। (क्या तुम उससे बेख़ौफ़ हो गए जिसकी सल्तनत आसमान में है। त)

बिंदु 190: अहमद, इब्ने माजह और हाकिम ने सहीह सनद के साथ अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रूह कब्ज़ होने की हदीस में मरफ़ूअन रिवायत की:

"फ़ला युज़ालु युकालु लहा ज़ालिका हत्ता तन्ताहिया बिहा इलस-समाइल्लती फ़ीहा अल्लाहु तबारका व तआला" (2)। (रूह से यह कहा जाता रहेगा यहाँ तक कि वह उस आसमान तक पहुँच जाए जिसमें अल्लाह तआला है। त)

बिंदु 191: मुस्लिम, अबू दाऊद और नसाई ने मुआविया बिन हकम (रज़ियल्लाहु अन्हु) से हदीस-ए-जारिया में रिवायत की:

"काला लहा ऐना अल्लाहु कालत फिस-समाइ काला मन अना कालत अंता रसूलुल्लाहि काला आतिक़्हा फ़-इन्नहा मोमिना" (3)। (लौंडी से फ़रमाया अल्लाह कहाँ है? उसने कहा आसमान में, फिर पूछा मैं कौन हूँ? तो उसने कहा आप अल्लाह के रसूल हैं, तो आपने मालिक से फ़रमाया इसे आज़ाद कर दो क्योंकि यह मोमिना है। त)

बिंदु 192: अबू दाऊद और तिर्मिज़ी ने अब्दुल्लाह बिन उम्र (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से तसहीह के साथ रिवायत की:

"काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम इरहमू मन फ़िल अर्ज़ि यरहमकुम मन फिस-समा" (4)। (हुज़ूर अलैहिस्सलातु वसल्लम ने फ़रमाया: ज़मीन वालों पर रहम करो, तुम पर वह रहम करेगा जो आसमान में है। त)

बिंदु 193: सहीह मुस्लिम में अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से:

"काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम" (हुज़ूर अलैहिस्सलातु वसल्लम ने फ़रमाया: मुझे इस)

पादलेख (Footnotes): 1. अल-क़ुरान अल-करीम 67 / 17 2. मुसनद अहमद बिन हंबल, अबू हुरैरा से रिवायत, दारुल फ़िक्र बैरूत 2 / 364-365, सुनन इब्ने माजह बाब ज़िक्रुल मौत वल इस्तिदाद लहु, एच.एम. सईद कंपनी कराची पृ. 325, कंज़ुल उम्माल हदीस 42396, मुअस्ससतु र-रिसाला बैरूत 15 / 230 3. सहीह मुस्लिम किताबुल मसाजिद बाब तहरीमुल कलाम फिस-सलात, कदीमी कुतुब खाना कराची 1 / 204, सुनन अबू दाऊद बाब तश्मीतुल आतिस फिस-सलात, आफ़ताब-ए-आलम प्रेस लाहौर 1 / 132 4. जामिउत तिर्मिज़ी अबवाबुल बिर्रे वस्सिलाह, अमीन कंपनी कुतुब खाना रशीदिया दिल्ली 2 / 14, सुनन अबू दाऊद किताबुल अदब बाब फ़िल अदब, आफ़ताब-ए-आलम प्रेस लाहौर 2 / 319

पृष्ठ 183 / 750

فتاوٰی رضویہ جلد ۲۹

سلطنت آسمان میں ہے۔ ت)

ضرب ۱۸۹: قال تعالٰی " أَمْ اَمِنْتُمْ مَّنْ فِي السَّمَاءِ " (1)۔ (کیا تم نڈر ہوگئے ہواس سے جس کی سلطنت آسمان میں ہے۔ ت)

ضرب ۱۹۰: احمد وابن ماجہ و حاکم بسند صحیح ابوہریرہ رضی اللہ تعالٰی عنہ سے حدیث قبضِ روح میں مرفوعاً راوی۔

فلا یزال یقال لھا ذلک حتی تنتھی بھا الی السماء التی فیھا اللہ تبارک و تعالٰی (2)۔ (روح کو یہ کہا جاتا رہے گا حتٰی کہ وہ اس آسمان تک پہنچ جائے جس میں اللہ تعالٰی ہے۔ ت)

ضرب ۱۹۱: مسلم ابوداؤد و نسائی معاویہ بن حکم رضی اللہ تعالٰی عنہ سے حدیث جاریہ میں راوی:

قال لھا این اللہ قالت فی السماء قال من انا قالت انت رسول اللہ قال اعتقھا فانھا مؤمنۃ (3)۔ (لونڈی کو فرمایا اللہ کہاں ہے؟ اس نے کہا آسمان میں، پھر پوچھا میں کون ہوں؟ تو اس نے کہا آپ رسول اللہ ہیں، تو آپ نے مالک کو فرمایا اس کو آزاد کردو کیونکہ مومنہ ہے۔ ت)

ضرب ۱۹۲: ابوداؤد و ترمذی بافادہ تصحیح عبداللہ بن عمرو رضی اللہ تعالٰی عنہما سے راوی:

قال رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم ارحموا من فی الارض یرحمکم من فی السماء (4)۔ (حضور علیہ الصلوۃ والسلام نے فرمایا: زمین والوں پر رحم کرو تم پر رحم کرے گا جو آسمان میں ہے۔ ت)

ضرب ۱۹۳: صحیح مسلم میں ابوہریرہ رضی اللہ تعالٰی عنہ سے:

قال رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم (حضور علیہ الصلوۃ والسلام نے فرمایا: مجھے اس)

حواشی: 1. القرآن الکریم ۶۷ / ۱۷ 2. مسند احمد بن حنبل مروی از ابو ہریرہ دار الفکر بیروت ۲ / ۳۶۵-۳۶۴، سنن ابن ماجہ باب ذکر الموت والاستعداد لہ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ص ۳۲۵، کنز العمال حدیث ۴۲۳۹۶ مؤسسۃ الرسالہ بیروت ۱۵ / ۲۳۰ 3. صحیح مسلم کتاب المساجد باب تحریم الکلام فی الصلوۃ قدیمی کتب خانہ کراچی ۱ / ۲۰۴، سنن ابوداؤد باب تشمیت العاطس فی الصلوۃ آفتاب عالم پریس لاہور ۱ / ۱۳۲ 4. جامع الترمذی ابواب البر والصلہ امین کمپنی کتب خانہ رشیدیہ دہلی ۲ / ۱۴، سنن ابوداؤد کتاب الادب باب فی الادب آفتاب عالم پریس لاہور ۲ / ۳۱۹

Fatawa Razawiyyah Volume 29

“By Him in Whose Hand is my life, there is no man who calls his wife to her bed and she refuses him, but He Who is in the heaven is angry with her until he (the husband) is pleased with her.” 1 | By Him in Whose Hand is my life, when a husband calls his wife for intercourse and she refuses, the Being Who is in the heaven remains angry with the wife. (T)

Citation 194: Abu Ya'la, Bazzar, and Abu Nu'aym narrate with a good chain from Abu Hurairah (may Allah be pleased with him): The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: When Ibrahim (peace be upon him) was thrown into the fire, he said: O Allah, You are One in the heaven, and I am one on the earth who worships You. 2 | The Holy Prophet (peace and blessings be upon him) said: When Ibrahim (peace be upon him) was thrown into the fire, he said: O Allah, You are One in the heaven, and I am one on the earth who worships You. (T)

Citation 195: Abu Ya'la, Hakeem, Hakim, Sa'id bin Mansoor, Ibn Hibban, Abu Nu'aym, and Baihaqi in 'Kitab al-Asma' narrate as a marfu' (attributed) hadith from Abu Sa'id al-Khudri (may Allah be pleased with him), that Allah Almighty said: O Moses, if the seven heavens and their inhabitants besides Me, and the seven earths were in one scale, and 'La ilaha illa Allah' was in the other scale, the scale of 'La ilaha illa Allah' would outweigh them. 3 | O Moses, if the seven heavens and everything present in them except Me, and the seven earths were in one scale, and in the other scale was 'La ilaha illa Allah', then the scale containing 'La ilaha illa Allah' would be heavier than all of them. (T)

From these verses and hadiths, being in the heaven is proven.

1 Sahih Muslim, Kitab al-Nikah, Bab Tahrim Imtina'iha min Farashiha, etc., Qadimi Kutub Khana, Karachi, 1/464. 2 Hilyat al-Awliya, Muqaddimat al-Mu'allif, Dar al-Kitab al-Arabi, Beirut, 1/19; Kanz al-Ummal with reference to Abu Ya'la, Hadith 32286, Muassasat al-Risalah, Beirut, 11/482. 3 Musnad Abu Ya'la, Hadith 1389, narrated from Abu Sa'id al-Khudri, Muassasat Ulum al-Qur'an, Beirut, 2/135; Kitab al-Asma wa al-Sifat, Bab ma ja'a fi fadl al-Kalimat al-Baqiyah, al-Maktabat al-Athariyyah, Sangla Hill, Sheikhupura, 1/175; al-Mustadrak lil-Hakim, Kitab al-Du'a, Dar al-Fikr, Beirut, 1/528; Mawarid al-Zaman, Hadith 2324, al-Matba'at al-Salafiyyah, p. 577.

फ़तावा रज़विया जिल्द २९

“उसकी कसम जिसके हाथ में मेरी जान है, कोई भी आदमी अपनी पत्नी को बिस्तर पर बुलाता है और वह इनकार कर देती है, तो वह जो आसमान में है उस पर तब तक नाराज़ रहता है जब तक कि वह (पति) उससे राज़ी न हो जाए।” १ | उस जात की कसम जिसके कब्ज़े में मेरी जान है, जब कोई पति अपनी पत्नी को हमबिस्तरी के लिए बुलाता है और वह मना कर देती है, तो वह जात जो आसमान में है, उस पत्नी पर नाराज़ होती है। (त)

उद्धरण १९४: अबू याला, बज़ार और अबू नुऐम ने हसन सनद के साथ अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत की है: अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया: जब इब्राहिम (अलैहिस्सलाम) को आग में डाला गया, तो उन्होंने कहा: ऐ अल्लाह, तू आसमान में एक है और मैं ज़मीन में एक हूँ जो तेरी इबादत करता हूँ। २ | हुज़ूर अलैहिस्सलोतु वस्सलाम ने फरमाया: जब इब्राहिम अलैहिस्सलाम को आग में डाला गया तो उन्होंने कहा: ऐ अल्लाह तू आसमान में एक है और मैं ज़मीन में एक हूँ, तेरी इबादत करता हूँ। (त)

उद्धरण १९५: अबू याला, हकीम, हाकिम, सईद बिन मंसूर, इब्न हिब्बान, अबू नुऐम और बैहकी ने 'किताब अल-अस्मा' में अबू सईद खुदरी (रज़ियल्लाहु अन्हु) से मरफू रिवायत की है कि अल्लाह अज़्ज़ा व जल ने फरमाया: ऐ मूसा, अगर सातों आसमान और मेरे सिवा उनमें रहने वाली हर चीज़, और सातों ज़मीनें एक पलड़े में हों और दूसरे पलड़े में 'ला इलाहा इल्लल्लाह' हो, तो 'ला इलाहा इल्लल्लाह' वाला पलड़ा उन पर झुक जाएगा (भारी होगा)। ३ | ऐ मूसा अगर सातों आसमान और उनमें मौजूद हर चीज़ मेरे सिवा, और सात ज़मीनें एक पलड़े में हों और दूसरे पलड़े में ला इलाहा इल्लल्लाह हो तो ला इलाहा इल्लल्लाह वाला पलड़ा सब पर भारी होगा। (त)

इन आयतों और हदीसों से आसमान में होना साबित हुआ।

१ सहीह मुस्लिम, किताबुन निकाह, बाबू तहरीमी इमतिनाइहा मिन फराशीहा, इलख, कदीमी कुतुब खाना कराची १/४६४ २ हिलयतुल औलिया, मुकद्दिमतुल मुअल्लिफ, दारुल किताबुल अरबी बेरुत १/१९, कन्ज़ुल उम्माल बहवाला अबी याला हदीस ३२२८६ मुअस्ससतुर रिसाला बेरुत ११/४८२ ३ मुसनद अबू याला हदीस १३८९ मरवी अज़ अबू सईद खुदरी मुअस्ससतु उलूमुल कुरआन बेरुत २/१३५, किताबुल अस्मा वस सिफ़ात बाबू मा जाअ फी फ़ज़्लिल कलिमतिल बाकिया, अल-

मकतबतुल असरीया सांगला हिल शेखूपुरा १/१७५, अल-मुस्तदरक लिल हाकिम किताबुद दुआ, दारुल फ़िक्र बेरुत १/५२८, मवारिदुज़् ज़मआन हदीस २३२४ अल-मतबअतुल सलफिया स. ५७७

पृष्ठ ७५० का १८४

والذي نفسي بيده مامن رجل يدعو امراته الى فراشها فتأبى عليه الاكان الذي في السماء ساخطا عليها حتى يرضى عنها۔ 1 | ذات کی قسم جس کے قبضہ میں میری جان ہے جب کوئی خاوند اپنی بیوی کو جماع کے لیے طلب کرتا ہے اور وہ انکار کرتی ہے تو وہ ذات جو آسمان میں ہے بیوی پر ناراض ہوتی ہے۔ (ت)

ضرب ۱۹۴ : ابویعلی و بزار و ابونعیم بسندِ حسن ابو ہریرہ رضی اللہ تعالٰی عنہ سے راوی : قال رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم لما القی ابراہیم في النار قال اللھم انت في السماء واحد وانا في الارض واحد أعبدك 2 | حضور علیہ الصلوۃ والسلام نے فرمایا : جب براہیم علیہ السلام کو آگ میں ڈالا گیا تو انہوں نے کہا : اے اللہ تو آسمان میں ایک ہے اور میں زمین میں ایک ہوں، تیری عبادت کرتا ہوں۔ (ت)

ضرب ۱۹۵ : ابویعلی و حکیم و حاکم و سعید بن منصور و ابن حبان و ابو نعیم اور بیہقی کتاب الاسماء میں ابو سعید خدری رضی اللہ تعالٰی عنہ سے مرفوعاً راوی، اللہ عز وجل نے فرمایا : یاموسی لو ان السمٰوات السبع و عامر ھن غیری، و الارضین السبع فی کفۃ ولااله الا اللہ في کفۃ مالت بھن لااله الااللہ 3 ۔ | اے موسیٰ اگر ساتوں آسمان اور ان میں موجود ہر چیز میرے سوا، اور سات زمینیں ایک پلڑے میں ہوں اور دوسرے پلڑے میں لا الہ الا اللہ ہو تو لا الہ الا اللہ والا پلڑا سب پر بھاری ہوگا۔ (ت)

ان آیات و احادیث سے آسمان میں ہونا ثابت ہوا۔

1 صحیح مسلم کتاب النکاح باب تحریم امتناعها من فراش الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ۱ / ۴۶۴ 2 حلیۃ الاولیاء مقدمۃ المؤلف دار الکتاب العربی بیروت ۱ / ۱۹، کنز العمال بحوالہ ابی یعلی حدیث ۳۲۲۸۶ موسسۃ الرسالہ بیروت ۱۱ / ۴۸۲ 3 مسند ابو یعلی حدیث ۱۳۸۹ مروی از ابو سعید خدری موسسۃ علوم القرآن بیروت ۲ / ۱۳۵، کتاب الاسماء والصفات باب ماجاء فی فضل الکلمۃ الباقیہ المکتبۃ الاثریہ سانگلہ ہل شیخوپورہ ۱ / ۱۷۵، المستدرک للحاکم کتاب الدعاء دار الفکر بیروت ۱ / ۵۲۸، موارد الظمآن حدیث ۲۳۲۴ المطبعۃ السلفیہ ص ۵۷۷

Fatawa Ridawiyya, Volume 29

Point 196: The hadith regarding [Allah] descending to the lowest heaven every night has already been mentioned, and there are many ahadith on this subject. Point 197: Allah Almighty says:

"He is Allah in the heavens and in the earth." (1) [Urdu Translation: He is Allah in the heavens and the earths. (T)]

Point 198: Allah Almighty says:

"And We are closer to him than [his] jugular vein." (2) [Urdu Translation: We are closer to him than his jugular vein. (T)]

Point 199: Allah Almighty says:

"Prostrate and draw near." (3) [Urdu Translation: Prostrate and be close. (T)]

Point 200: Allah Almighty says:

"And when My servants ask you concerning Me, indeed I am near." (4) [Urdu Translation: When My servants ask you about Me, then I am near. (T)]

Point 201: Allah Almighty says:

"Indeed, He is All-Hearing and near." (5) [Urdu Translation: He is All-Hearing and Near. (T)]

Point 202: Allah Almighty says:

"And We called him from the right side of the mount and brought him near, confiding [with him]." (6) [Urdu Translation: And We called him from the right side of Mount Tur and We brought him near for secret conversation. (T)]

Point 203: Allah Almighty says:

"But when he came to it, he was called, 'Blessed is whoever is at the fire and whoever is around it. And exalted is Allah, Lord of the worlds.'" (7) [Urdu Translation: When he reached there, a voice was heard: 'Blessed is the one who is in the fire and those who are around it, and Holy is Allah, the Lord of all the worlds'. (T)]

1. Al-Quran Al-Karim 3/6
2. Al-Quran Al-Karim 50/16
3. Al-Quran Al-Karim 96/19

4. Al-Quran Al-Karim 2/186
5. Al-Quran Al-Karim 34/50
6. Al-Quran Al-Karim 19/52
7. Al-Quran Al-Karim 27/8

फ़तावा रज़विया, खंड 29

बिंदु 196: हर रात दुनिया के आसमान पर [अल्लाह के नुज़ूल] होने की हदीस गुज़र चुकी है और इस विषय में बहुत सी हदीसें हैं। बिंदु 197: अल्लाह तआला ने फरमाया:

"वही अल्लाह है आसमानों में और ज़मीन में।" (1) [उर्दू अनुवाद: वह अल्लाह आसमानों और ज़मीनों में है। (त)]

बिंदु 198: अल्लाह तआला ने फरमाया:

"और हम उसकी शाह-रग (गर्दन की रग) से भी ज़्यादा करीब हैं।" (2) [उर्दू अनुवाद: हम उसकी शाह-रग से ज़्यादा करीब हैं। (त)]

बिंदु 199: अल्लाह तआला ने फरमाया:

"सजदा कर और करीब हो जा।" (3) [उर्दू अनुवाद: सजदा कर और करीब हो। (त)]

बिंदु 200: अल्लाह तआला ने फरमाया:

"और जब मेरे बंदे आपसे मेरे बारे में सवाल करें, तो बेशक मैं करीब हूँ।" (4) [उर्दू अनुवाद: जब आप से मेरे बंदे मेरे मुताल्लिक सवाल करें तो मैं करीब हूँ। (त)]

बिंदु 201: अल्लाह तआला ने फरमाया:

"बेशक वह सुनने वाला और करीब है।" (5) [उर्दू अनुवाद: वह सुनने वाला और करीब है। (त)]

बिंदु 202: अल्लाह तआला ने फरमाया:

"और हमने उसे तूर की दाईं जानिब से पुकारा और उसे राज़-ओ-नियाज़ की बातें करने के लिए करीब किया।" (6) [उर्दू अनुवाद: और हमने उनको नदा दी तूर की दाईं जानिब से और उसको हमने करीब किया मुनाजात करते हुए। (त)]

बिंदु 203: अल्लाह तआला ने फरमाया:

"फिर जब वह वहाँ पहुँचा तो आवाज़ दी गई कि बरकत दी गई उसे जो इस आग में है और जो इसके आस-पास है, और पाक है अल्लाह जो तमाम जहानों का रब है।" (7) [उर्दू अनुवाद: जब वहाँ आए तो

नदा दी गई कि जो आग में है उसको बरकत दी गई और उसके इर्द-गिर्द वालों को, अल्लाह पाक रब्बुल आलमीन है (त)]

1. अल-कुरान अल-करीम 3/6
2. अल-कुरान अल-करीम 50/16
3. अल-कुरान अल-करीम 96/19
4. अल-कुरान अल-करीम 2/186
5. अल-कुरान अल-करीम 34/50
6. अल-कुरान अल-करीम 19/52
7. अल-कुरान अल-करीम 27/8

ضرب ۱۹۶: ہر رات آسمانِ دنیا پر ہونے کی حدیث گزری اور احادیث اس باب میں بکثرت ہیں۔

ضرب ۱۹۷: قال اللہ تعالٰی: "هُوَ اللّٰهُ فِي السَّمٰوٰتِ وَ فِي الْاَرْضِ" ۱۔ وہ اللہ آسمانوں اور زمینوں میں ہے۔ (ت)

ضرب ۱۹۸: قال تعالٰی: "وَ نَحْنُ اَقْرَبُ اِلَيْهِ مِنْ حَبْلِ الْوَرِيْدِ" ۲۔ ہم اس کی شہ رگ سے زیادہ قریب ہیں۔ (ت)

ضرب ۱۹۹: قال تعالٰی: "وَ اسْجُدْ وَ اقْتَرِبْ" ۳۔ سجدہ کر اور قریب ہو۔ (ت)

ضرب ۲۰۰: قال تعالٰی: "اِذَا سَاَلَكَ عِبَادِيْ عَنِّيْ فَاِنِّيْ قَرِيْبٌ" ۴۔ جب آپ سے سوال کریں میرے بندے میرے متعلق تو میں قریب ہوں۔ (ت)

ضرب ۲۰۱: قال تعالٰی: "اِنَّهٗ سَمِيْعٌ قَرِيْبٌ" ۵۔ وہ سمیع و قریب ہے۔ (ت)

ضرب ۲۰۲: قال تعالٰی: "وَ نَادَيْنٰهُ مِنْ جَانِبِ الطُّوْرِ الْاَيْمَنِ وَ قَرَّبْنٰهُ نَجِيًّا" ۶۔ اور ہم نے ان کو ندا دی طور کی دائیں جانب سے اور اس کو ہم نے قریب کیا مناجات کرتے ہوئے۔ (ت)

ضرب ۲۰۳: قال تعالٰی: "فَلَمَّا جَاءَهَا نُوْدِيَ اَنْ بُوْرِكَ مَنْ فِي النَّارِ وَ مَنْ حَوْلَهَا وَ سُبْحٰنَ اللّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ" ۷۔ جب وہاں آئے تو ندا دی گئی کہ جو آگ میں ہے اس کو برکت دی گئی اور اس کے ارد گرد والوں کو، اللہ پاک رب العالمین ہے (ت)

۱ القرآن الکریم ۳/ ۶ ۲ القرآن الکریم ۵۰/ ۱۶ ۳ القرآن الکریم ۹۶/ ۱۹ ۴ القرآن الکریم ۲/ ۱۸۶ ۵ القرآن الکریم ۳۴/ ۵۰ ۶ القرآن الکریم ۱۹/ ۵۲ ۷ القرآن الکریم ۲۷/ ۸

In Ma'alim [al-Tanzil] it is stated:

It is narrated from Ibn Abbas, Sa'id bin Jubayr, and al-Hasan regarding the verse "Blessed be He who is in the fire": "Blessed be He who is in the fire" refers to the sanctified one who is in the fire, and He is Allah Almighty. He referred to His own Essence, meaning He called out to Moses from there and made him hear His speech from that direction. - 1

It is narrated from Ibn Abbas, Sa'id bin Jubayr, and al-Hasan (may Allah be pleased with them) regarding "man burika fil-nar", that is, blessed is He who is in the fire, and He is the Being of Allah who said this about His own Being, meaning that Moses was called and He made him hear His speech from that direction. (T)

Example 404: Allah Almighty said: "And He is with you wherever you are." - 2 He is with you wherever you may be. (T)

Example 405: It is narrated in the Sahihayn from Abu Musa al-Ash'ari (may Allah be pleased with him) that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: "O people, be gentle with yourselves, for you are not calling upon one who is deaf or absent; rather, you are calling upon the All-Hearing, the Near, and He is with you." - 3 O people! Be gentle with yourselves because you are not calling out to someone deaf or absent, you are calling the All-Hearing and Near One, He is with you. (T)

In a narration of this same Hadith: "The One you call upon is closer to one of you than the neck of his mount." - 4 That Being Whom you call upon is closer to you than the neck of your mount. (T)

Example 406: Narrated by Muslim, Abu Dawood, and Nasa'i from Abu Hurairah (may Allah be pleased with him), the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: "The closest a servant is to his Lord..." A servant is closest to Allah Almighty when...

---

1. Ma'alim al-Tanzil (Tafsir al-Baghawi) Ayah 8/2 Dar al-Kutub al-Ilmiyah Beirut 3/328
2. Al-Quran al-Karim 57/4
3. Sahih al-Bukhari Kitab al-Jihad Chapter: What is disliked regarding raising the voice etc. Qadeemi Kutub Khana Karachi 1/420, Sahih Muslim Kitab al-Dhikr wal-

Du'a Chapter: Desirability of lowering the voice etc. Qadeemi Kutub Khana Karachi 2/346

4. Sahih Muslim Kitab al-Dhikr wal-Du'a Chapter: Desirability of lowering the voice etc. Qadeemi Kutub Khana Karachi 2/346

मआलिम [अल-तन्ज़ील] में है:

इब्ने अब्बास, सईद बिन जुबैर और हसन रज़ियल्लाहु अन्हुम से रिवायत किया गया कि 'मन् बोरक फ़िल नार' (बरकत वाला है वह जो आग में है) के बारे में: वह पाक ज़ात जो आग में है और वह अल्लाह तआला है। उसने अपनी ज़ात मुराद ली, जिसका मतलब है कि उसने मूसा को वहाँ से आवाज़ दी और उन्हें उस जानिब से अपना कलाम सुनाया। - 1

इब्ने अब्बास, सईद बिन जुबैर और हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम से रिवायत किया गया कि 'मन् बोरक फ़िल नार' के बारे में, यानी बरगुज़ीदा है जो आग में है और वह अल्लाह की ज़ात है जिसको अपनी ज़ात के बारे में फ़रमाया यानी यह है कि मूसा ने निदा की तो उसको अपना कलाम सुनाया उस जानिब से। (त)

मिसाल ४०४: अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "और वह तुम्हारे साथ है तुम जहाँ भी हो।" - २ वह तुम्हारे साथ है तुम जहाँ भी हो। (त)

मिसाल ४०५: सहीहैन में अबू मूसा अशअरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से है, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "ऐ लोगो! अपने आप पर नरमी करो क्योंकि तुम किसी बहरे और ग़ायब को नहीं पुकारते, बल्कि तुम तो सुनने वाले और नज़दीक रहने वाले को पुकारते हो और वह तुम्हारे साथ है।" - ३ ऐ लोगो! अपने आप पर नरमी करो क्योंकि तुम किसी बहरे और ग़ायब को नहीं पुकारते, तुम तो पुकारते हो सम्मीअ करीब को, वह तुम्हारे पास है। (त)

इसी हदीस की एक रिवायत में है: "वह ज़ात जिसे तुम पुकारते हो, वह तुम में से किसी की सवारी की गर्दन से भी ज़्यादा करीब है।" - ४ वह ज़ात जिसे तुम पुकारते हो वह तुम्हारी सवारी की गर्दन से भी करीब तर है। (त)

मिसाल ४०६: मुस्लिम, अबू दाऊद और नसाई ने अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत की है, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं: "बंदा अपने रब के सबसे करीब तब होता है जब..." बंदा अल्लाह तआला के करीब तरीन होता है जब...

1. मआलिम अल-तन्ज़ील (तफ़्सीर अल-बग़वी) आयत ८/२ दारुल कुतुब अल-इल्मिया बेरुत ३/३२८
2. अल-कुरान अल-करीम ५७/४
3. सहीह अल-बुखारी किताब अल-जिहाद बाब: आवाज़ बुलंद करने की कराहियत वगैरह, कदीमी कुतुब खाना कराची १/४२०, सहीह मुस्लिम किताब अल-ज़िक्र वद-दुआ बाब: आवाज़ पस्त करने का इस्तेहबाब वगैरह, कदीमी कुतुब खाना कराची २/३४६
4. सहीह मुस्लिम किताब अल-ज़िक्र वद-दुआ बाब: आवाज़ पस्त करने का इस्तेहबाब वगैरह, कदीमी कुतुब खाना कराची २/३४६

معالم میں ہے:

روی عن ابن عباس وسعید بن جبیر والحسن فی قولہ بورك من فی النار قدس من فی النار وھو اللہ تعالی عنی بہ نفسہ علی معنی انہ نادٰی موسٰی منھا واسمعہ کلامہ من جھتھا - ۱ ابن عباس، سعید بن جبیر اور حسن رضی اللہ تعالٰی عنہم سے روایت کیا گیا کہ من بورک فی النار کے بارے میں، یعنی برگزیدہ ہے جو آگ میں ہے اور وہ اللہ کی ذات ہے جس کو اپنی ذات کے بارے میں فرمایا یعنی یہ ہے کہ موسٰی نے ندا کی تو اس کو اپنا کلام سنایا اس جانب سے۔ (ت)

ضرب ۴۰۴: قال تعالٰی: "وَھُوَ مَعَکُمْ اَیْنَ مَا کُنْتُمْ" - ۲ وہ تمہارے ساتھ ہے تم جہاں بھی ہو۔ (ت)

ضرب ۴۰۵: صحیحین میں ابو موسٰی اشعری رضی اللہ تعالٰی عنہ سے ہے، رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے فرمایا: یایھا الناس اربعوا علی انفسکم فانکم لاتدعون اصم ولا غائبا انکم تدعون سمیعا قریبا وھو معکم - ۳ اے لوگو! اپنے آپ پر نرمی کرو کیونکہ تم کسی بہرے اور غائب کو نہیں پکارتے، تم تو پکارتے ہو سمیع قریب کو، وہ تمہارے پاس ہے۔ (ت)

اسی حدیث کی ایک روایت میں ہے: والذی تدعون اقرب الی احدکم من عنق راحلۃ احدکم - ۴ وہ ذات جسے تم پکارتے ہو وہ تمہاری سواری کی گردن سے بھی قریب تر ہے۔ (ت)

ضرب ۴۰۶: مسلم، ابوداؤد، و نسائی ابوہریرہ رضی اللہ تعالٰی عنہ سے روای، رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں: اقرب مایکون العبد من ربہ بندہ اللہ تعالٰی کے قریب ترین ہوتا ہے جب

---

۱ معالم التنزیل (تفسیر البغوی) آیۃ ۸/۲ دار الکتب العلمیۃ بیروت ۳۲۸/۳ ۲ القرآن الکریم ۴/۵۷ ۳ صحیح البخاری کتاب الجہاد باب مایکرہ من رفع الصوت الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ۴۲۰/۱،

صحیح مسلم کتاب الذکر والدعاء باب استحباب خفض الصوت الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ۳۴۶/۲ ۴

صحیح مسلم کتاب الذکر والدعاء باب استحباب خفض الصوت الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ۳۴۶/۲

Fatawa Razawiyyah, Volume 29

(And while) he is prostrating, so increase the supplication. (t)	**وهو ساجد فاكثروا الدعاء 1**
Entry 207: Deilami narrates from Thawban (may Allah be pleased with him) that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said:	
Allah Almighty said: 'O Moses! I am behind you, in front of you, on your right, and on your left. O Moses, I am the companion of My servant when he remembers Me, and I am with him when he calls upon Me.' (t)	قال الله تعالى انا خلفك وامامك وعن يمينك وعن شمالك يا موسى انا جليس عبدي حين يذكرني وانا معه اذا دعاني۔ 2
Entry 208: In Sahihayn, it is narrated from Abu Hurairah (may Allah be pleased with him) that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said that Allah Almighty says:	
I am as My servant expects Me to be, and I am with him when he remembers Me. (t)	انا عند ظن عبدي بي وانا معه اذا ذكرني 3
Entry 209: In Mustadrak, on the authority of Anas (may Allah be pleased with him), there is a Hadith Qudsi from the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him):	
O My servant, I am according to the expectation you have of Me, and I am with you when you remember Me. (t)	عبدي انا عند ظنك بي وانا معك اذا ذكرتني 4
Entry 210: Sa'id bin Mansoor narrates Marfu'an from Abu Amara:	

---

1 Sahih Muslim, Book of Prayer, Chapter on what is said in Ruku', Qadimi Kutub Khana Karachi 1/191; Sunan Abi Dawud, Book of Prayer, Chapter on Supplication in Ruku' and Sujud, Aftab Alam Press Lahore 1/127; Sunan an-Nasa'i, 'The closest a servant is to Allah Almighty', Noor Muhammad Karkhana Tijarat Kutub Karachi 1/107. 2 Al-Firdous bi-Ma'thur al-Khitab, Hadith 4533, Dar al-Kutub al-Ilmiyah Beirut 3/192. 3 Sahih al-Bukhari, Book of Tawhid, Chapter on Allah's words 'And Allah warns you of Himself', Qadimi Kutub Khana Karachi 3/1101; Sahih Muslim, Book of Remembrance and Supplication 2/343 and Book of Repentance 2/352. 4 Al-Mustadrak lil-Hakim,

Book of Supplication, Chapter on Allah Almighty said 'My servant, I am as you think of Me', Dar al-Fikr 1/497.

(और जब) वह सज्दा करता है, तो दुआ ज़्यादा करो। (त)

वहूवा साजिदुन फ़अक्सिरुद् दुआ़ 1

ज़र्ब २०७: दैलमी सोबान रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रावी, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं:

अल्लाह तआला ने फ़रमाया: ऐ मूसा! मैं तेरे पीछे, आगे, दाएं और बाएं हूँ। ऐ मूसा, मैं बंदे का हम-नशीन होता हूँ जब वह मेरा ज़िक्र करता है, और मैं उसके साथ होता हूँ जब वह मुझे याद करता है। (त)

कालल्लाहु तआला अना ख़लफ़का व अमा मका व अ़न यमीनिका व अ़न शिमालिका या मूसा अना जलीसु अ़ब्दी हीना यज़कुरुनी व अना मअ़हू इज़ा दआ़नी। 2

ज़र्ब २०८: सहीहैन में अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से है, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि अल्लाह अज़्ज़वजल फ़रमाता है:

मैं अपने बंदे के गुमान के साथ हूँ जब वह मुझे याद करता है। (त)

अना इन्दा ज़न्नि अ़ब्दी बी व अना मअ़हू इज़ा ज़करनी 3

ज़र्ब २०९: मुस्तदरक में बरवायत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से हदीस-ए-क़ुदसी है:

ऐ बंदे, मैं तेरे गुमान के साथ हूँ जो तू मेरे मुताल्लिक़ रखता है और मैं तेरे साथ होता हूँ जब तू मुझे याद करता है। (त)

अ़ब्दी अना इन्दा ज़न्निका बी व अना मअ़का इज़ा ज़करतनी 4

ज़र्ब २१०: सईद बिन मन्सूर अबू अ़मारा से मरफ़ूअ़न रावी:

---

1 सहीह मुस्लिम, किताबुस सलात, बाब रुकूअ़ में जो कहा जाए, क़दीमी कुतुब खाना कराची 1/191; सुनन अबी दाऊद, किताबुस सलात, बाब रुकूअ़ और सुजूद में दुआ़, आफ़ताब आलम प्रेस

लाहौर 1/127; सुनन अन-नसाई, 'बंदा अल्लाह अज़्ज़वजल के सबसे करीब होता है', नूर मुहम्मद कारखाना तिज़ारत कुतुब कराची 1/107. 2 अल-फ़िरदौस बि-मासूरुल ख़िताब, हदीस 4533, दारुल कुतुबुल इल्मिय्या बैरूत 3/192. 3 सहीह अल-बुखारी, किताबुत तौहीद, बाब अल्लाह तआला का फ़रमान 'और अल्लाह तुम्हें अपने आप से डराता है', क़दीमी कुतुब खाना कराची 3/1101; सहीह मुस्लिम, किताबुज़ ज़िक्र वद दुआ़ 2/343 और किताबुत तौबा 2/352. 4 अल-मुस्तदरक लिल-हाकिम, किताबुद दुआ़, बाब अल्लाह अज़्ज़वजल ने फ़रमाया 'मेरे बंदे, मैं तेरे गुमान के पास हूँ', दारुल फ़िक्र 1/497.

पृष्ठ १८७/७५०

وہ سجدہ کرتا ہے، تو دُعا زیادہ کرو۔ (ت) **وھو ساجد فا کثر و االد عاء 1**

ضرب ۲۰۷: دیلمی ثوبان رضی اللہ تعالٰی عنہ سے راوی، رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں:

اللہ تعالٰی نے فرمایا: اے موسٰی ! میں تیرے پیچھے، آگے دائیں اور بائیں ہوں، میں بندے کا ہم نشین ہوتا ہوں جب وہ میرا ذکر کرتا ہے، اور میں اس کے ساتھ ہوتا ہوں جب مجھے یاد کرتا ہے۔ (ت)

قال اللہ تعالٰی انا خلفك و امامك وعن یمینك وعن شمالك یا موسٰی انا جلیس عبدی حین یذکرنی وانا معه اذا دعانی۔ 2

ضرب ۲۰۸: صحیحین میں ابوہریرہ رضی اللہ تعالٰی عنہ سے ہے رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں اللہ عزوجل فرماتا ہے:

میں اپنے بندے کے گمان کے ساتھ ہوں جب وہ مجھے یاد کرتا ہے (ت)

انا عند ظن عبدی بی وانا معه اذا ذکرنی 3

ضرب ۲۰۹: مستدرک میں بروایت انس رضی اللہ تعالٰی عنہ رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم سے حدیث قدسی ہے۔ اے بندے میں تیرے گمان کے ساتھ ہوں جو تو میرے متعلق رکھتا ہے اور میں تیرے ساتھ ہوتا ہوں جب تو مجھے یاد کرتا ہے۔ (ت)

عبدی انا عند ظنك بی وانا معك اذا ذکرتنی 4

وہ سجدہ کرتا ہے، تو دُعا زیادہ کرو۔ (ت)　　وھو ساجد فا کثر و االد عاء 1

ضرب ۲۱۰: سعید بن منصور ابوعماره سے مرفوعاً راوی:

---

1 صحیح مسلم کتاب الصلوۃ باب ما یقال فی الرکوع قدیمی کتب خانہ کراچی ۱ / ۱۹۱، سنن ابی داؤد کتاب الصلوۃ باب الدعاء فی الرکوع والسجود آفتاب عالم پریس لاہور ۱ / ۱۲۷، سنن النسائی اقرب ما یکون العبد من اللہ عزوجل نور محمد کار خانہ تجارت کتب کراچی ۱ / ۱۰۷ 2 الفردوس بمأثور الخطاب حدیث ۴۵۳۳ دار الکتب العلمیہ بیروت ۳ / ۱۹۲ 3 صحیح البخاری کتاب التوحید باب قول اللہ تعالیٰ ویحذرکم اللہ نفسہ قدیمی کتب خانہ کراچی ۳ / ۱۱۰۱، صحیح مسلم کتاب الذکر والدعاء ۲ / ۳۴۳ و کتاب التوبہ ۲ / ۳۵۲ 4 المستدرک للحاکم کتاب الدعاء باب قال عزوجل عبدی انا عند ظنك بی دار الفکر ۱ / ۴۹۷

Fatawa Rizwiya Volume 29

Arabic: الساجد یسجد علی قدمی اللہ تعالی 1	**English: The one who prostrates, prostrates at the Feet of Allah Almighty. (T)**

From these verses and hadiths, it is proven that He is present on earth, on Mount Tur, in every mosque, in front of, behind, to the right, and to the left of the servant, near every person who remembers Him, with every person, in every place, and closer to everyone than their jugular vein.

Point 211: Allah Almighty said: "Purify My House" 2 (You two, clean my house, T). Here, the Kaaba is referred to as His House.

Point 212: It is mentioned in Ma'alim that it is narrated to be written in the Holy Torah:

Arabic: جاء اللہ تعالیٰ من سیناء واشرف من ساعین واستعلی من جبال فاران۔ 3	**English: Allah Almighty came from Mount Sinai, looked out from the mountain of Seir, and rose high from the mountains of Makkah al-Mukarramah.**

Mentioned under the verse of 'Burak' (He mentioned it under the verse of Burak. T)

Point 213: Narrated in Tabarani Kabir from Salama bin Nufayl (may Allah be pleased with him):

Arabic: قال رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم انی اجد نفس الرحمن من بھنا واشار الی الیمن۔ 4	**English: The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) pointed towards Yemen and said: Indeed, I find the breath of the Compassionate from here.**

Point 214: In Musnad Ahmad and Jami' Tirmidhi, there is a previous hadith from Abu Huraira (may Allah be pleased with him) that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said:

Arabic: والذی نفس محمد بیده لوانکم دلیتم بحبل الی الارض السفلی لهبط علی اللہ عز وجل، ثم	**English: By Him in Whose hand is the life of Muhammad (peace and blessings of Allah be upon him), if you were to lower a rope to the lowest level of the earth, that rope would fall upon Allah Almighty. Then...**

1. Hilyat al-Awliya, biography of Hassan bin Atiyyah, Dar al-Kitab al-Arabi, Beirut, 2/71
2. The Holy Quran, 2/125
3. Ma'alim at-Tanzil (Tafsir al-Baghawi), under the verse 2/8, Dar al-Kutub al-Ilmiyyah, Beirut, 3/428
4. Al-Mu'jam al-Kabir, Hadith 6358, Al-Maktabah al-Faisaliyah, Beirut, 7/52

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

अरबी: الساجد یسجد علی قدمی اللہ تعالی 1	**हिन्दी: सजदा करने वाला अल्लाह तआला के क़दमों पर सजदा करता है। (त)**

इन आयतों और हदीसों से ज़मीन पर और तूर पर और हर मस्जिद में और बंदे के आगे पीछे दाएं बाएं और हर ज़ाकिर के पास और हर शख़्स के साथ और हर जगह और हर एक की शह रग गर्दन से ज़्यादा क़रीब होना साबित है।

ज़र्ब 211: अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "तुम दोनों मेरे घर को साफ़ करो" 2 (त) यहाँ काबा को अपना घर बताया।

ज़र्ब 212: मालिम में है मरुवी हुआ कि तौरेत मुक़द्दस में लिखा है:

अरबी: جاء اللہ تعالیٰ من سیناء واشرف من ساعین واستعلی من جبال فاران۔ 3	**हिन्दी: अल्लाह तआला सीना के पहाड़ से आया और साईन के पहाड़ से झांका और मक्का मुअज़्ज़मा के पहाड़ों से बुलंद हुआ।**

ज़िक्रहु तहत आयते बूरक (इसे आयते बूरक के तहत ज़िक्र किया। त)

ज़र्ब 213: तबरानी कबीर में सलमा बिन नुफैल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रावी:

अरबी: قال رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم انی اجد نفس الرحمن من ہھنا واشار الی الیمن۔ 4	**हिन्दी: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने यमन की तरफ़ इशारा कर के फ़रमाया: बेशक मैं रहमान की ख़ुशबू यहाँ से पाता हूँ।**

ज़र्ब 214: मुसनद अहमद व जामिअ तिर्मिज़ी में हदीस साबिक़ अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

अरबी: والذى نفس محمد بيده لوانكم دليتم بحبل الى الارض السفلى لهبط على الله عز وجل، ثم	**हिन्दी: उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ा में मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की जान है अगर तुम सब से निचली ज़मीन तक रस्सी लटकाओ तो वो रस्सी अल्लाह तआला पर गिरेगी, फिर**

1. हिल्लियतुल औलिया तर्जुमा हस्सान बिन अतिया दारुल किताबुल अरबी बैरुत 2/71
2. अल-क़ुरानुल करीम 2/125
3. मालिमुल तंज़ील (तफ़्सीर अल-बग़वी) तहतुल आयह 2/8 दारुल कुतुबुल इल्मिय्या बैरुत 3/428
4. अल-मुअज्जमुल कबीर हदीस 6358 अल-मकतबा अल-फैसलिया बैरुत 7/52

الساجد یسجد علی قدمی اللہ تعالی 1 سجدہ کرنے والا اللہ تعالیٰ کے قدموں پر سجدہ کرتا ہے۔(ت)

ان آیات و احادیث سے زمین پر اور طور پر اور ہر مسجد میں اور بندے کے آگے پیچھے داہنے بائیں اور ہر ذاکر کے پاس اور ہر شخص کے ساتھ اور ہر جگہ اور ہر ایک کی شہ رگ گردن سے زیادہ قریب ہونا ثابت ہے۔

ضرب ۲۱۱: قال اللہ تعالیٰ: " اَنْ طَہِّرَا بَیْتِیَ " 2 (تم دونوں میرے گھر کو صاف کرو،ت) یہاں کعبے کو اپنا گھر بتایا۔

ضرب ۲۱۲: معالم میں ہے مروی ہوا کہ توریت مقدس میں لکھا ہے:

جاء اللہ تعالیٰ من سیناء واشرف من ساعین واستعلی من جبال فاران۔ 3

اللہ تعالیٰ سیناء کے پہاڑ سے آیا اور ساعین کے پہاڑ سے جھانکا اور مکہ معظمہ کے پہاڑوں سے بلند ہوا۔

ذکرہ تحت آیۃ بورک (اسے آیہ بورک کے تحت ذکر کیا۔ ت)

ضرب ۲۱۳: طبرانی کبیر میں سلمہ بن نفیل رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے راوی:

قال رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم انی اجد نفس الرحمن من ہھنا واشار الی الیمن۔ 4

رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے یمن کی طرف اشارہ کر کے فرمایا: بے شک میں رحمان کی خوشبو یہاں سے پاتا ہوں۔

ضرب ۲۱۴: مسند احمد و جامع ترمذی میں حدیث سابق ابوہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے ہے رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا:

والذی نفس محمد بیدہ لوانکم دلیتم اس ذات کی قسم جس کے قبضہ میں محمد صلی اللہ تعالیٰ علیہ بحبل الی الارض السفلی لہبط علی وسلم کی جان ہے اگر تم سب سے نچلی زمین تک رسی لٹکاؤ اللہ عز وجل، ثم تو وہ رسی اللہ تعالیٰ پر گرے گی، پھر

1 حلیۃ الاولیاء ترجمہ حسان بن عطیہ دار الکتاب العربی بیروت ۲/ ۷۱ 2 القرآن الکریم ۱۲۵/۲ 3 معالم التنزیل (تفسیر البغوی) تحت الایۃ ۲/ ۸ دار الکتب العلمیہ بیروت ۳/ ۴۲۸ 4 المعجم الکبیر حدیث ۶۳۵۸ المکتبۃ الفیصلیہ بیروت ۷/ ۵۲

Fatawa Razawiyya Volume 29

[Boxed text:] He read: 'He is the First and the Last, the Manifest and the Hidden, and He is, of all things, Knowing.' 1 - (T) You recited 'He is the First and the Last, the Manifest and the Hidden, and He is, of all things, Knowing.' (T)

It is proven from here that He is beneath all the earths. Decisive Strike [c] - Strike 215: I say: These very verses and traditions are enough to silence every filthy anthropomorphist and to enlighten the faith of every Sunni Muslim. It should be said to this anthropomorphist that if he interprets literally, why does he not believe in these verses and traditions? "Do you believe in some of the Book and disbelieve in others?" 2 (You believe in some verses of the Holy Quran and deny others, T). Look, in your saying that He is on the Throne and nowhere else, there is a clear denial of so many verses and traditions. And if he takes the path of interpretation in them, why does he exceed the limit regarding the verses of Istiwa (Establishment) and the tradition of place (makan)? Now your blathering is established as an outright lie and arbitrary decree that your deity occupies a place and sits on the Throne. And by the grace of Allah, the Sunni believer finds such a clear path of guidance from them that when verses and traditions have arrived regarding the Throne, the Kaaba, the heaven, the earth, and every location and place, then three possibilities remain: either interpret some of them literally and some through delegation (Tafwid) and interpretation (Ta'wil), or all be literal, or all through delegation and interpretation. The first is undue arbitrariness and baseless preference, and imposing a judgment on Allah Almighty without evidence. The second possibility, regardless of those definitive, overwhelming, and manifest proofs of Divine transcendence, is rationally and traditionally invalid in every way because a single occupant cannot be in multiple places at once. So, being everywhere would mean being filled like air, and what could be more hideous, impure, and obviously false than that He would necessarily be in every place of impurity, under every foot, in every person's mouth, and in every female's womb? Furthermore, wherever a space is filled with objects like houses, mountains, etc., if He is also exactly there, it implies interpenetration; and if He is not there, then millions of fragments, pieces, hollows, and holes would become necessary. And whenever a new tree grows or a new wall is raised, your deity would have to shrink, and a new hollow would increase in it. And now for Istiwa on the Throne and for the abode...

[c]: The word 'Faisla' (Decisive) also has a numerical value of 215. (Author)

1 Jami' at-Tirmidhi, Chapters of Tafsir, Surah Al-Hadid, Hadith 3309, Dar al-Fikr Beirut 5/195; Musnad Ahmad bin Hanbal from Abu Huraira, Al-Maktab al-Islami Beirut 2/370. 2 The Holy Quran 2/85.

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

[बॉक्स में:] उन्होंने पढ़ा: 'वही पहला है और वही आख़िरी, वही ज़ाहिर है और वही पोशीदा, और वह हर चीज़ का जानने वाला है।' 1 - (T) आपने 'वही पहला है और वही आख़िरी, वही ज़ाहिर है और वही पोशीदा, और वह हर चीज़ का जानने वाला है' की तिलावत की। (T)

यहाँ से सिद्ध होता है कि वह सब ज़मीनों के नीचे है। निर्णायक प्रहार ᶜ - प्रहार 215: मैं कहता हूँ: यही आयतें और हदीसें हर गंदे मुजस्समि (ईश्वर को सदेह मानने वाला) का मुँह बंद करने और हर सुन्नी मुस्लिम के ईमान को रोशन करने के लिए पर्याप्त हैं। इस मुजस्समि से कहा जाए कि अगर वह ज़ाहिर (शाब्दिक अर्थ) पर महमूल (आधारित) करता है, तो वह इन आयतों और हदीसों पर ईमान क्यों नहीं लाता? "क्या तुम किताब के कुछ हिस्से पर ईमान लाते हो और कुछ का इनकार करते हो?" 2 (आप पवित्र क़ुरआन की कुछ आयतों पर ईमान लाते हैं और कुछ का इनकार करते हैं, T)। देख, तेरे इस कहने में कि वह अर्श पर है और कहीं नहीं, कितनी आयतों और हदीसों का साफ़ इनकार है। और अगर उनमें तावील (व्याख्या) का रास्ता अपनाता है, तो इस्तवा (स्थापित होने) की आयतों और स्थान की हदीस में सीमा से बाहर क्यों निकलता है? अब तेरा यह बकना स्पष्ट झूठ और मनमानी है कि तेरा माबूद (उपास्य) स्थान रखता है और अर्श पर बैठता है। और सुन्नी मोमिन को अल्लाह की कृपा से उनसे हिदायत का ऐसा रोशन रास्ता मिलता है कि जब अर्श, काबा, आसमान, ज़मीन और हर विषय और स्थान के लिए आयतें और हदीसें आई हैं, तो अब तीन स्थितियाँ हो सकती हैं: या तो उनमें से कुछ को शाब्दिक अर्थ पर महमूल करें और कुछ में तफ़वीज़ (अल्लाह के सुपुर्द करना) और तावील करें, या सभी शाब्दिक हों, या सभी में तफ़वीज़ और तावील हो। पहली स्थिति अनुचित मनमानी और बिना किसी ठोस कारण के वरीयता देना है, और अल्लाह अज़्ज़-व-जल्ल पर बिना दलील के हुक्म लगाना है। और दूसरी स्थिति, ईश्वरीय पवित्रता के उन प्रबल और स्पष्ट प्रमाणों को छोड़ते हुए भी, तार्किक और पारंपरिक रूप से हर तरह से बातिल (अमान्य) है कि एक ही व्यक्ति एक ही समय में कई स्थानों पर नहीं हो सकता। तो हर जगह होना उसी स्थिति में होगा कि वह हवा की तरह हर जगह भरा हो, और इससे अधिक घृणित, अपवित्र और स्पष्ट रूप से बातिल बात क्या होगी कि उसका हर गंदगी की जगह, हर पैर के नीचे, हर व्यक्ति के मुँह में और हर मादा के गर्भाशय में होना अनिवार्य हो जाए। और फिर जितनी जगह मकानों, पहाड़ों आदि वस्तुओं से भरी हुई है, अगर वह बिल्कुल वहीं भी हो तो अंतःप्रवेश (तदाखुल) होगा, और अगर न हो तो उसमें करोड़ों टुकड़े, पुर्जे,

खोखले छेद अनिवार्य होंगे। और जो नया पेड़ उगे, नई दीवार खड़ी हो, तो तेरे माबूद को सिमटना पड़ेगा, एक नया खोखलापन उसमें और बढ़ेगा। और अब अर्श पर इस्तवा के लिए और घर के लिए...

ः शब्द 'फ़ैसला' का संख्यात्मक मान भी 215 है। (लेखक)

1 जामि अल-तिर्मिज़ी, तफ़सीर के अध्याय, सूरह अल-हदीद, हदीस 3309, दार अल-फ़िक्र बेरुत 5/195; मुसनद अहमद बिन हनबल, अबू हुरैरा से, अल-मक्तब अल-इस्लामी बेरुत 2/370। 2 पवित्र क़ुरआन 2/85।

[باکس میں:] قرأ ھو الاول والاخر والظاھر والباطن وھو بکل شیئ علیم ۱ - (ت) آپ نے ھو الاول والآخر والظاھر والباطن وھو بکل شیئ علیم کو تلاوت کیا۔(ت)

یہاں سے ثابت کہ سب زمینوں کے نیچے ہے۔ ضرب فیصلہ عـ ضرب ۲۱۵ : اقول : یہی آیات و احادیث ہر مجسم خبیث کی دہن دوزی اور ہر مسلم سُنی کی ایمان افروزی کو بس ہیں اس مجسم سے کہا جائے کہ اگر ظاہر پر حمل کرتا ہے تو ان آیات و احادیث پر کیوں ایمان نہیں لاتا۔ "أَفَتُؤْمِنُونَ بِبَعْضِ الْكِتٰبِ وَتَكْفُرُوْنَ بِبَعْضٍ " ۲ (قرآن پاک کی بعض آیتوں پر ایمان لاتے ہو اور بعض کا انکار کرتے ہو، ت) دیکھ تیرے اس کہنے میں کہ عرش پر ہے اور کہیں نہیں کتنی آیتوں حدیثوں کا صاف انکار ہے ، اور اگر ان میں تاویل کی راہ چلتا ہے تو آیاتِ استوا و حدیثِ مکان میں کیوں حد سے نکلتا ہے ، اب یہ تیرا بکنا صریح جھوٹ اور تحکم ٹھہرا کہ تیرا معبود مکان رکھتا اور عرش پر بیٹھتا ہے، اور مومن سُنی کو ان سے بحمد اللہ یوں روشن راستہ ہدایت کا ملتا ہے کہ جب آیات و احادیثِ عرش و کعبہ و آسمان و زمین و ہر موضوع و مقام کے لیے وارد ہیں تو اب تین حال سے خالی نہیں ، یا تو ان میں بعض کو ظاہر پر محمول کریں اور بعض میں تفویض و تاویل، یا سب ظاہر پر ہوں یا سب میں تفویض و تاویل ، اول تحکم بیجا و ترجیح بلا مرجح اور اللہ عزوجل پر بے دلیل حکم لگا دینا ہے ، اور شق دوم قطع نظر ان قاطعہ قاہرہ دلائلِ زاہرہ تنزیہ الہی کے یوں بھی عقلاً و نقلاً ہر طرح باطل کہ مکین واحد وقت واحد میں امکنہ متعددہ میں نہیں ہو سکتا تو ہر جگہ ہونا اسی صورت پر بنے گا کہ ہوا کی طرح ہر جگہ بھرا ہو اور اس سے زائد شنیع و نا پاک اور بداہۃً باطل کیا بات ہوگی کہ ہر نجاست کی جگہ ، ہر پاؤں کے تلے ہر شخص کے منہ ، ہر مادہ کے رحم میں ہونا لازم آتا ہے۔ اور پھر جتنی جگہ مکانوں پہاڑوں وغیرہ اجسام سے بھری ہوئی ہے

بعینہ اس میں بھی ہو تو تداخل ہے اور نہ ہو تو اس میں کروڑوں ٹکڑے پرزے جوف سوراخ لازم آئیں گے، اور جو نیا پیڑ اگے نئی دیوار اٹھے تیرے معبود کو سمٹنا پڑے ایک نیا جوف اس میں اور بڑھے اور اب استوا کے لیے عرش اور دار کے لیے

عـ : لفظ فیصلہ کے بھی ۲۱۵ عدد ہیں منہ۔

۱ جامع الترمذی ابواب التفسیر سورۃ الحدید حدیث ۳۳۰۹ دارالفکر بیروت ۵/ ۱۹۵، مسند احمد بن حنبل عن ابی ہریرہ المکتب الاسلامی بیروت ۲/ ۳۷۰ ۲ القرآن الکریم ۲ / ۸۵

Fatawa Ridawiyya Volume 29

What speciality will remain for the Kaaba in Paradise? Therefore, the third part is truth. From the verses of Istiwa until here, no verse or Hadith is interpreted according to those impossible and absurd meanings which are understood from apparent words by deficient intellects. Rather, for the understanding of common people, they have pure meanings, worthy of the majesty of Allah Almighty, which the eminent Imams, and especially Imam Bayhaqi in the book Al-Asma, have described in detail, and the knowledge of their true intent is entrusted to Allah Almighty.

[Arabic Box:] We believe in it; all is from our Lord. And none will remember except those of understanding. And all praise is for Allah, the Lord of the worlds. And blessings and peace be upon the Master of the Messengers, Muhammad, and his family and all his companions. Ameen!

[Urdu Translation in Box:] We have believed in it, all is from our Lord, and none accept advice except the wise. And all praises are for Allah, the Lord of the worlds. And may blessings and peace descend upon the Master of the Messengers Muhammad Mustafa, and on his family and on all his companions. Ameen (T)

Seventh Slap

Alhamdulillah, the issue of the Throne (Arsh) and the negation of place (Radd-e-Makan) has been completed, as this was the main subject of the treatise. Now, two final letters regarding two other issues remain. Let us deal with them briefly as well so that no complaint remains.

Matter stated: Raising hands to pray after the obligatory (Fard) prayers.

Answer: Raising hands for prayer after Fard prayers is not proven from any authentic Hadith, whether verbal, practical, or tacit.

I say: Strike 216: It is not proven from any authentic verbal, practical, or tacit Hadith that Allah Almighty's Throne is anywhere else but [where it is]. Raising hands for prayer without an authentic Hadith is an innovation (Bid'ah), but to impose a ruling on God requires only your claimative tongue.

O shameless Najdi! Have some shame. (O shameless Najdi! Have some shame.)

Strike 217: It is not proven from any authentic verbal, practical, or tacit Hadith that it is possible for the Throne to be inverted. For spreading hands in supplication before

your Lord, an authentic Hadith is needed, but for insulting Allah Almighty and making Him similar to His creation, only your unbridled tongue is proof.

Do not make your abode in the depths of fire. (Do not make your abode in the depths of fire. T)

Page 190 of 750

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

जन्नत बैत के लिए काबा की क्या विशेषता रहेगी? इसलिए तीसरा भाग ही सत्य है। 'इस्तवा' की आयतों से लेकर यहाँ तक कोई भी आयत या हदीस उन असंभव और व्यर्थ अर्थों पर आधारित नहीं है जो कम अक्ल वालों को ऊपरी शब्दों से समझ में आते हैं। बल्कि आम लोगों की समझ के लिए उनके पवित्र अर्थ हैं, जो अल्लाह अज़्ज़वजल की शान के योग्य हैं, जिन्हें प्रतिष्ठित इमामों और विशेष रूप से इमाम बैहक़ी ने 'किताबुल अस्मा' में विस्तार से वर्णन किया है और उनके वास्तविक अर्थ का ज्ञान अल्लाह अज़्ज़वजल को ही है।

[अरबी बॉक्स:] हमने उस पर ईमान लाया, सब हमारे रब के पास से है, और नसीहत नहीं मानते मगर अक्ल वाले। और तमाम तारीफें अल्लाह रब्बुल आलमीन के लिए हैं। और दुरूद व सलाम नाज़िल हो सैयदुल मुर्सलीन मुहम्मद और उनकी आल और उनके तमाम सहाबा पर। आमीन!

[बॉक्स में उर्दू अनुवाद:] हमने इस पर ईमान लाया सब हमारे रब के पास से है, और नसीहत नहीं मानते मगर अक्ल वाले, और तमाम तारीफें अल्लाह रब्बुल आलमीन के लिए हैं। और दुरूद व सलाम नाज़िल हो सैयदुल मुर्सलीन मुहम्मद मुस्तफ़ा पर और आपकी आल पर और आपके तमाम सहाबा पर। आमीन (त)

सातवाँ तमाचा

अल्हम्दुलिल्लाह, अर्श और स्थान के नकार (रद्द-ए-मकान) का मसला समाप्त हुआ क्योंकि यही इस रिसाले का मुख्य विषय था। अब तहरीर के अंतिम दो अक्षर दो अन्य मसलों के बारे में बाकी हैं। उनके बारे में भी सरसरी तौर पर कुछ कह दिया जाए ताकि कोई शिकायत न रहे।

मसला: फर्ज़ नमाज़ों के बाद हाथ उठाकर दुआ माँगना।

जवाब: किसी भी सही कौली (मौखिक),.फेली (क्रियात्मक) या तक़रीरी (मौन सहमति वाली) हदीस से फर्ज़ों के बाद दुआ के लिए हाथ उठाना साबित नहीं है।

अक़ूल (मैं कहता हूँ): स्ट्राइक 216: किसी सही कौली,.फेली या तक़रीरी हदीस से अल्लाह तआला का अर्श के सिवा कहीं और न होना साबित नहीं। दुआ के लिए हाथ उठाना बिना सही हदीस के बिदअत है, लेकिन खुदा पर हुक्म लगा देने के लिए केवल तुम्हारी दावा करने वाली ज़ुबान की ज़रूरत है।

नजदी बेशर्म शर्म हम बदार (ऐ बेशर्म नजदी! कुछ शर्म कर।)

स्ट्राइक 217: किसी सही कौली,.फेली या तक़रीरी हदीस से अर्श का उल्टा होना मुमकिन साबित नहीं है। अपने रब के सामने इल्तिजा के लिए हाथ फैलाने के लिए तो सही हदीस की ज़रूरत है, लेकिन अल्लाह अज़्ज़वजल को गाली देने और उसे अपनी मख्लूक जैसा बनाने के लिए केवल तुम्हारी बेलगाम ज़ुबान ही दलील है।

मकन खुद रा मकान दर क़अरे नार (अपना ठिकाना आग की गहराई में मत बना। त)

पृष्ठ 190 का 750

جنت بیت کے لیے کعبے کی کیا خصوصیت رہے گی۔ لاجرم شق سوم ہی حق ہے اور آیات استوا سے لے کر یہاں تک کوئی آیت و حدیث ان محال و بے ہودہ معنی پر محمول نہیں جو ناقص افہام میں ظاہر الفاظ سے مفہوم ہوتے ہیں بلکہ تفہیم عوام کے لیے ان کے پاکیزہ معانی ہیں، اللہ عزوجل کے جلال کے لائق جنہیں ائمہ کرام اور خصوصاً امام بیہقی نے کتاب الاسماء میں مشرحاً بیان فرمایا اور ان کی حقیقی مراد کا علم اللہ عزوجل کو سپرد ہے۔

[عربی ڈبہ:] امنا بہ کل من عند ربنا وما یذکر الا اولو الالباب o والحمد اللہ رب العلمین والصلوۃ والسلام علی سید المرسلین محمد و آلہ و صحبہ اجمعین امین!

[ڈبے کا اردو ترجمہ:] ہم اس پر ایمان لائے سب ہمارے رب کے پاس سے ہے، اور نصیحت نہیں مانتے مگر عقل والے، اور تمام تعریفیں اللہ رب العالمین کے لیے ہیں۔ اور درود و سلام نازل ہو سید المرسلین محمد مصطفیٰ پر اور آپ کی آل پر اور آپ کے تمام صحابہ پر۔ آمین (ت)

ساتواں تپانچہ

الحمد للہ مسئلہ عرش ورّ مکان سے فراغ پایا کہ یہی رسالے کا موضوع اصلی تھا اب تحریر و ہابیت تخمیر کے دو حرف اخیر دو مسئلہ دیگر کے متعلق باقی ہیں ان کی نسبت بھی سرسری دو چار ہاتھ لیجئے کہ شکایت نہ رہے۔

قولہ مسئلہ: فرضوں کے بعد ہاتھ اٹھا کر دعا مانگنا۔

الجواب: کسی صحیح حدیث قولی و فعلی و تقریری سے فرضوں کے بعد دعا کے لیے ہاتھ اٹھانا ثابت نہیں۔

اقول: ضرب ۲۱٦: کسی صحیح حدیث قولی و فعلی و تقریری سے اللہ تعالیٰ کا عرش کے سوا اور کہیں نہ ہونا ثابت نہیں دعا کے لیے ہاتھ اٹھانا بے حدیث صحیح بدعت مگر خدا پر حکم لگا دینے کو صرف تیرے زبان ادعا کی حاجت ع

نجدی بے شرم شرم ہم بدار (اے بے شرم نجدی! کچھ شرم کر)

ضرب ۲۱۷: کسی صحیح حدیث قولی و فعلی و تقریری سے عرش کا امکان الٹی ہونا ثابت نہیں، اپنے رب کے حضور التجا کے لیے ہاتھ پھیلانے کو حدیث صحیح کی ضرورت، مگر اللہ عزوجل کو گالی دینے اس کی مخلوقات سے مشابہ بنا دینے کو فقط تیری بد لگام زبان حجت ع

مکن خود را مکان در قعر نار (اپنا مکان مت بنا آگ کی گہرائی میں۔ ت)

Fatawa Razawiyyah - Volume 29

Point 218: There is no prohibition established from any authentic Hadith (verbal, practical, or tacitly approved) against raising hands for supplication after obligatory prayers. So with what face do you people forbid it? Is the prohibition a Sharia of your own home, or is there a need for proof for permissibility while prohibition is exempt from proof?

Point 219: If by "Sahih" (authentic) the opposite of "Hasan" (fair) is intended, then evidence is by no means limited to it. Sahih li-dhatih (authentic in itself), Sahih li-ghayrih (authentic by virtue of others), Hasan li-dhatih (fair in itself), and Hasan li-ghayrih (fair by virtue of others) are all evidences and establish rulings by themselves. And if it includes "Hasan", then denial is only regarding the specific location, or in the sense of absolute lack of proof, the second is definitely void. Making supplication after prayer is established from the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) through numerous authentic and reliable verbal, practical, and tacitly approved Hadiths. Similarly, raising hands as part of the etiquette of supplication is established from numerous authentic and reliable verbal, practical, and tacitly approved Hadiths. All these Hadiths are narrated and mentioned in Sahih collections, Mishkat, Adhkar, Hisn Hasin, etc. And once a general ruling is established, claiming a specific prohibition without proof is far from the principles of knowledge and is abandoned.

Point 220: This is a matter of virtues (fadhail), and in this, weak narrations (da'if) are accepted by consensus. Look at the treatise of the Scholar of Ahl-e-Sunnat (may his shadow be extended), "Al-Hād al-Kāf fī Hukm al-Di'āf". Thus, demanding authenticity is sheer ignorance and injustice.

I say: The Hadith of Musannaf Ibn Abi Shaybah, which is narrated through Aswad al-Amiri in some fatwas of the people of Bareilly, is weak by consensus of the Hadith scholars and lacks credibility because Aswad al-Amiri is unknown in person (Majhul al-'Ayn) and state (Majhul al-Hal).

I say: Point 221: The claim of consensus is mere lie and fabrication. A narrator unknown in person (Majhul al-'Ayn) is acceptable according to many investigating imams, and for those unknown in state (Majhul al-Hal), some of the great elders also accept their narrations. Imam Nawawi states in the Introduction to Al-Minhaj:

[Table Content] Arabic: المجهول اقسام مجهول العدالة ظاهرا وباطنا و مجهولها باطنا مع وجود ظاهرا وهو المستور و المجهول العين فاما الاول فالجمهور على انه لا يحتج به واما الاخران فاحتج بهما كثيرون من المحققين ١-

Urdu/English Translation: There are several types of 'Majhul' (unknown): unknown in integrity ('adalah) both outwardly and inwardly; unknown in integrity inwardly while integrity is apparent outwardly—this is 'Mastur'; and unknown in person (Majhul al-'Ayn). The majority do not use only the first type as proof, but many researchers have taken the last two types as proof. (T)

Footnote 1: Introduction to Al-Minhaj by Al-Nawawi with Sahih Muslim, Qadimi Kutub Khana Karachi 1/17.

फतावा रज़विया - जिल्द 29

पॉइंट 218: किसी सही हदीस (क़ौली, फ़ेली, या तक़रीरी) से फ़र्ज़ नमाज़ों के बाद दुआ के लिए हाथ उठाने की मनाही साबित नहीं है। फिर तुम लोग किस मुंह से मना करते हो? क्या मनाही की शरीअत तुम्हारे अपने घर की है, या जवाज़ (अनुमति) के लिए दलील की ज़रूरत है जबकि मनाही दलील से बेपरवाह है?

पॉइंट 219: अगर "सही" से मुराद "हसन" का मुक़ाबला है, तो हुज्जत (दलील) हरगिज़ इसमें सीमित नहीं है। सही ल-ज़ातिही, सही ल-ग़ैरिही, हसन ल-ज़ातिही, और हसन ल-ग़ैरिही सब हुज्जत हैं और ख़ुद अहकाम साबित करने वाले हैं। और अगर इसमें "हसन" भी शामिल है, तो इनकार सिर्फ खास जगह के लिहाज़ से है, या मुतलक़ (निरपेक्ष) सबूत न होने के अर्थ में है, तो दूसरा पूरी तरह बातिल है। नमाज़ के बाद दुआ मांगना नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से बहुत सी सही और विश्वसनीय क़ौली, फ़ेली और तक़रीरी हदीसों से साबित है। इसी तरह, दुआ के आदाब में से हाथ उठाना बहुत सी सही और मोअतबर (विश्वसनीय) क़ौली, फ़ेली और तक़रीरी हदीसों से साबित है। ये सब हदीसें सहाह, मिश्कात, अज़कार, हिस्ने हसीन वग़ैरा में मरवी और मज़कूर हैं। और हुक्म के मुतलक़ साबित होने के बाद, बिना दलील के खास मनाही का दावा करना इल्मी क़ायदे से दूर और तर्क करने योग्य है।

पॉइंट 220: यह मक़ाम (विषय) फ़ज़ाइलों का है, और इसमें ज़ईफ़ (कमज़ोर) रिवायतें सर्वसम्मति (इज्मा) से मक़बूल हैं। हज़रत आलिमे अहल-ए-सुन्नत (मदज़िल्लहुल आली) का रिसाला "अल-हाद अल-काफ़ फ़ी हुक्म अल-दिआफ़" देखें। तो सेहत (प्रामाणिकता) का मुतालबा पूरी तरह जहल (अज्ञानता) और एतेसाफ़ (ज़्यादती) है।

मैं कहता हूँ: मुसन्निफ़ इब्न अबी शैबा की हदीस जो अस्वद आमरी के ज़रिए बरेली के कुछ लोगों के फ़तवे में नक़ल की गई है, वह मुहद्दिसों के इत्तेफ़ाक़ से ज़ईफ़ है और एतबार के दर्जे से गिरी हुई है क्योंकि अस्वद आमरी "मजहूल अल-ऐन" और "मजहूल अल-हाल" है।

मैं कहता हूँ: पॉइंट 221: इत्तेफ़ाक़ (आम सहमति) का दावा कोरा झूठ और मनगढ़ंत है। "मजहूल अल-ऐन" बहुत से मुहाक़्क़िक़ अइम्मा (शोधकर्ता इमामों) के नज़दीक मक़बूल है, और "मजहूल अल-हाल" में भी कुछ अक़ाबिर (बड़े बुजुर्गों) का मज़हब क़बूलियत का है। इमाम नववी "मुक़द्दमा मिन्हाज" में फ़रमाते हैं:

[तालिका सामग्री] अरबी: المجهول اقسام مجهول العدالة ظاهرا وباطنا و مجهولها باطنا مع وجود ها ظاهرا وهو المستور و المجهول العين فاما الاول فالجمهور على انه لا يحتج به واما الاخران فاحتج بهما كثيرون من المحققين ١-

हिंदी अनुवाद: मजहूल की कई किस्में हैं, मजहूल अल-अदालह ज़ाहिरी और बातिनी तौर पर; मजहूल अल-अदालह बातिनी तौर पर जबकि ज़ाहिरी तौर पर अदालह मौजूद हो, यह 'मस्तूर' है; और मजहूल अल-ऐन। सिर्फ पहली किस्म को जम्हूर दलील नहीं बनाते लेकिन आखिरी दो किस्मों को मुहाक़्क़िक़ीन में से बहुतों ने दलील बनाया है। (त)

पाद टिप्पणी 1: मुक़द्दमा मिन्हाज अल-नववी मअ सही मुस्लिम, क़दीमी कुतुब ख़ाना कराची 1/17.

ضرب ۲۱۸: کسی صحیح حدیث قولی و فعلی و تقریری سے فرضوں کے بعد دعا کے لیے ہاتھ اٹھانے کی ممانعت ثابت نہیں۔ پھر تم لوگ کس منہ سے منع کرتے ہو، کیا منع کی شریعت تمہارے اپنے گھر کی ہے یا جواز کے لیے حاجت دلیل ہے ممانعت دلیل سے مستغنی ہے۔

ضرب ۲۱۹: اگر صحیح سے مقابل حسن مراد تو ہرگز حجت اس میں منحصر نہیں، صحیح لذاتہ و صحیح لغیرہ و حسن لذاتہ و حسن لغیرہ سب حجت اور خود مثبت احکام ہیں، اور اگر حسن کو بھی شامل تو انکار صرف بنظر خصوص محل ہے، یا بمعنی عدم ثبوت مطلق ثانی قطعاً باطل، بکثرت صحیح و معتمد احادیث قولی و فعلی و تقریری سے نماز کے بعد دعا مانگنا نبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم سے ثابت۔ یونہی ہاتھ اٹھانا دعا کے آداب سے ہونا بکثرت احادیث صحیحہ و معتبرہ قولی و فعلی و تقریری سے ثابت، یہ سب حدیثیں صحاح و مشکوٰۃ و اذکار و حصن حصین و غیرہا میں مروی و مذکور، اور بعد ثبوت اطلاق بے اثبات تخصیص ممانعت خاص قاعدہ علم سے دور و مہجور۔

ضرب ۲۲۰: مقام مقامِ فضائل ہے اور اس میں ضعاف بالاجماع مقبول، دیکھو حضرت عالم اہلسنت مدظلہ العالی کا رسالہ الھاد الکاف فی حکم الضعاف تو مطالبہ صحت سراسر جہل و اعتساف۔

اقول: مصنف ابن ابی شیبہ کی حدیث جو بطریق اسود عامری بعض اہل بریلی کے فتوے میں منقول ہے۔ وہ باتفاق محدثین ضعیف و پایہ اعتبار سے ساقط ہے کیونکہ اسود عامری مجہول العین والحال ہے۔

اقول: ضرب ۲۲۱: ادعائے اتفاق محض کذب و اختلاق، مجہول العین بہت ائمہ محققین کے نزدیک مقبول ہے اور مجہول الحال میں بھی بعض اکابر کا مذہب قبول ہے، امام نووی مقدمہ منہاج میں فرماتے ہیں:

[جدول] المجهول اقسام مجهول العدالة ظاهرا وباطنا و مجهولها باطنا مع وجود ها ظاهرا وهو المستور و المجهول العين فاما الاول فالجمهور على انه لا يحتج به واما الاخران فاحتج بهما كثيرون من المحققين ۱۔ | مجہول کی کئی اقسام ہیں، مجہول العدالۃ ظاہراً و باطناً، مجہول العدالۃ باطناً مع وجود العدالۃ ظاہراً، یہ مستور ہے اور مجہول العین، صرف پہلی قسم کو جمہور دلیل نہیں بناتے لیکن آخری دو قسموں کو محققین میں سے کثیر نے دلیل بنایا ہے۔ (ت)

۱ مقدمہ منہاج للنووی مع صحیح مسلم، قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/ ۱۷

(For more detail, be honored by studying the blessed book "Munir al-Ain fi Hukm Taqbil al-Ibhamayn" [The Illuminating Light of the Eyes Regarding the Ruling on Kissing the Thumbs], second benefit from the beginning of the book and fourth benefit from the end of the book, by Hazrat Aalam-e-Ahle Sunnat, may his high shadow endure.)

Point 222: Regarding Aswad, in "Mizan al-I'tidal" it is only stated:

| None narrated from him except his son Dalham; he has only one Hadith. | No one besides his son Dalham narrated from him, and according to the Hadith scholars, he has only one Hadith. (Trans.) |

From this, only 'Jahalat al-Ayn' (ignorance of identity) is apparent; it does not necessitate 'Jahalat al-Haal' (ignorance of state/credibility). This is because many researchers accept a 'Majhul al-Ayn' (one whose identity is unknown). A 'Majhul al-Haal' is considered impugned (majruh). Claiming a ruling of 'Jahalat al-Haal' is your own ignorance, or provide proof from reliable Imams for the second case. In the first case, what are you and what is your ignorance? Your knowledge is itself ignorance; what could ignorance be? You don't even know Allah Almighty, as you believe in a physical location for Him.

Point 223: Dhahabi also wrote this statement from himself, and his negation cannot be like the negation of the leading Imams. Now see here, he says that there is only one Hadith for Aswad. I say one Hadith of his is the one narrated by Abu Bakr bin Abi Shaybah. The second Hadith from him is in Sunan Abi Dawood, in which, after mentioning the arrival of Laqeet bin Aamir, he mentioned two short words of the Hadith through the path of Abdur Rahman bin Ayyash al-Sim'i from Dalham bin al-Aswad from his father from his uncle. And in its entirety, on a long single page containing accounts of knowledge of the unseen (Ilm-e-Ghayb), resurrection (Hashr-o-Nashr), the Pond of Kawthar (Hawd-e-Kawthar), etc., through the aforementioned path, it is present in the "Zawa'id" of the Musnad of Abdullah bin the Imam [Ahmad].

Point 224: Mr. Hadith Scholar! Have you also seen the refined statement of Hafiz al-Shaan [Imam Dhahabi]? He explicitly states that Aswad al-Amiri is acceptable. If an ignorant, unknown person is excused for their ignorance, then what is the need to speak out?

Point 225: Consider something a hundred times more exalted and grand than Hafiz al-Shaan: the great Imam Abu Dawood narrated the aforementioned Hadith from Aswad al-Amiri in his "Sunan" and did not criticize it at all. According to the statements of the Imams, the Hadith is then 'Sahih' (authentic), 'Hasan' (good), or at least 'Salih' (valid). The praised Imam himself says in his "Risalah Makkiyyah":

| That about which I have not mentioned anything is 'Salih' (valid). | That Hadith in which I do not mention any defect is valid. |

---

1. Mizan al-I'tidal, biography 982, Aswad bin Abdullah, Dar al-Ma'rifah, Beirut, 1/256.
2. Musnad Ahmad bin Hanbal, Hadith of Abi Razin al-Uqayli Laqeet bin Aamir etc., Al-Maktab al-Islami, Beirut, 4/13.

(अधिक विवरण के लिए, हज़रत आलम-ए-अहले सुन्नत, मद्दज़िल्लहु अल-आली की धन्य पुस्तक "मुनीर अल-ऐन फ़ी हुक्म तक़्बील अल-इबहामैन" [अंगूठे चूमने के हुक्म में आँखों की रौशनी], पुस्तक के आरंभ का दूसरा लाभ और पुस्तक के अंत का चौथा लाभ पढ़कर लाभान्वित हों।)

प्रहार २२२: असवद के बारे में "मीज़ान अल-इ'तेदाल" में केवल इतना है:

| उनके बेटे दलहम के अलावा किसी ने उनसे रिवायत नहीं की; उनकी केवल एक हदीस है। | उनके बेटे दलहम के अलावा किसी और ने उनसे रिवायत नहीं की, और मुहाद्दिसीन के अनुसार उनकी केवल एक हदीस है। (त) |

इससे केवल 'जहालत अल-ऐन' (पहचान की अनभिज्ञता) प्रकट होती है; यह 'जहालत अल-हाल' (विश्वसनीयता की अनभिज्ञता) को आवश्यक नहीं बनाती। ऐसा इसलिए है क्योंकि कई शोधकर्ताओं के निकट 'मजहूल अल-ऐन' स्वीकार्य है। 'मजहूल अल-हाल' दोषपूर्ण (मजरूह) माना जाता है। 'जहालत अल-हाल' का हुक्म लगाना आपकी अपनी अज्ञानता है, या विश्वसनीय इमामों से इसके लिए प्रमाण दें। पहले मामले में, आप क्या और आपकी अज्ञानता क्या? आपका ज्ञान तो स्वयं अज्ञानता है; अज्ञानता और क्या होगी? आप तो अल्लाह अज़-व-जल्ल को ही नहीं जानते, क्योंकि आप उसके लिए स्थान (मकान) मानते हैं।

प्रहार २२३: ज़हबी ने भी यह बात अपनी ओर से लिखी है, और उनका नकार अग्रणी इमामों के नकार के समान नहीं हो सकता। अब यहीं देखें, वे कहते हैं कि असवद के लिए एक हदीस है। मैं कहता हूँ कि उनकी एक हदीस तो वही है जिसे अबू बक्र बिन अबी शैबा ने रिवायत किया है। उनसे दूसरी हदीस "सुनन अबी दाऊद" में है, जिसमें लकीत बिन आमिर के आगमन का उल्लेख करते हुए, अब्दुर रहमान बिन अय्याश समई के माध्यम से दलहम बिन अल-असवद से, उन्होंने अपने पिता से, उन्होंने अपने चाचा से, हदीस के दो संक्षिप्त शब्द उल्लेख किए। और पूर्ण रूप से एक लंबे पृष्ठ में, जिसमें इल्म-ए-ग़ैब, हश्र-ओ-नश्र, हौज-ए-कौसर आदि के विवरण शामिल हैं, उपर्युक्त मार्ग से अब्दुल्लाह बिन इमाम [अहमद] के"ज़वाइद मुसनद" में मौजूद है।

प्रहार २२४: मुहाद्दिस साहब! क्या आपने हाफ़िज़ अल-शान [इमाम ज़हबी] का परिष्कृत कथन भी देखा है? वे स्पष्ट रूप से कहते हैं कि असवद आमरी स्वीकार्य (मक़बूल) हैं। यदि कोई अज्ञानी, अज्ञात व्यक्ति अपनी अज्ञानता के कारण क्षमा योग्य है, तो ज़बान खोलने की क्या आवश्यकता है?

प्रहार २२५: हाफ़िज़ अल-शान से सौ गुना अधिक महान और भव्य व्यक्तित्व को देखें: महान इमाम अबू दाऊद ने अपनी "सुनन" में असवद आमरी से उक्त हदीस रिवायत की है और उस पर कोई आलोचना (जरह) नहीं की। इमामों के कथनों के अनुसार, वह हदीस 'सहीह', 'हसन' या कम से कम 'सालिह' (मान्य) तो हुई ही। स्वयं प्रशंसित इमाम अपने "रिसाला मक्किया" में फ़रमाते हैं:

| जिसके बारे में मैंने कुछ उल्लेख नहीं किया, वह 'सालिह' है। | वह हदीस जिसमें मैं किसी दोष का उल्लेख न करूँवह मान्य है। |

---

1. मीज़ान अल-इ'तेदाल, जीवनी ९८२, असवद बिन अब्दुल्लाह, दार अल-मआरिफ़ा, बेरूत, १/२५६।
2. मुसनद अहमद बिन हंबल, हदीस अबी रज़ीन अल-उकैली लकीत बिन आमिर आदि, अल-मक्तब अल-इस्लामी, बेरूत, ४/१३।

पृष्ठ ७५० का १९२

(زیادہ تفصیل درکار ہو تو حضرت عالم اہلسنت مدظلہ العالی کی کتاب مستطاب منیر العین فی حکم تقبیل الابہامین افادہ دوم صدر کتاب و فائدہ چہارم آخر کتاب کے مطالعے سے مشرف ہو)

ضرب ۲۲۲: اسود کی نسبت میزان الاعتدال میں صرف اس قدر ہے :

| ما روی عنه سوی ولده دلهم له حدیث واحد - | اس کے بیٹے دلہم کے بغیر اس سے کسی نے روایت نہیں کی اور محدثین کے ہاں اس کی ایک حدیث ہے ۔ (ت) |

اس سے فقط جہالت عین ظاہر ہوتی ہے وہ جہالت حالی کو مستلزم نہیں کہ مجہول العین بہت محققین کے نزدیک مقبول اور مجہول الحال مجروح تو جہالت حال کا حکم آپ کی اپنی جہالت ہے یا ائمہ معتمدین سے روایت علی الثانی ثبوت دیجئے علی الاول آپ کیا اور آپ کی جہالت کیا ، آپ کا علم تو جہل ہے جہل کیا ہوگا ، آپ اللہ عزوجل ہی کو نہیں جانتے ہیں کہ اس کے لیے مکان مانتے ہیں۔

ضرب ۲۲۳: ذہبی نے بھی یہ قول اپنی طرف سے لکھا اور ان کی نفی نفی ائمہ کے مثل نہیں ہو سکتی ، اب یہیں دیکھئے کہ وہ کہتے ہیں کہ اسود کے لیے ایک حدیث ہے ، میں کہتا ہوں ان کی ایک حدیث تو یہی ہے کہ ابوبکر بن ابی شیبہ نے روایت کی، دوسری حدیث ان سے سنن ابی داؤد میں ہے جس میں وفادت لقیط بن عامر کا ذکر فرما کر حدیث کے دو لفظ مختصر بطریق عبد الرحمن بن عیاش سمعی عن دلهم بن الاسود عن ابیه عن عمه ذکر کیئے اور تمام و کمال ایک ورق طویل میں متضمن بیانات علم غیب و حشر و نشر و حوض کوثر وغیرہا بطریق مذکور عبداللہ بن الامام کے زوائد مسند میں ہے۔

ضرب ۲۲۴: محدث صاحب ! آپ نے حافظ الشان کا قول منقح بھی دیکھا وہ تصریح فرماتے ہیں کہ اسود عامری مقبول ہیں جاہل مجہول اگر جہل سے معذور تو زبان کھولنی کیا ضرور۔

ضرب ۲۲۵: حافظ الشان سے سو اوجہ اجل و اعظم لیجئے امام اجل ابو داؤد نے سنن میں حدیث مذکور اسود عامری سے روایت کی اور اس پر اصلاً جرح نہ فرمائی تو حسب تصریحات ائمہ حدیث صحیح یا حسن یالاقل صالح تو ہوئی خود امام ممدوح اپنے رسالہ مکیہ میں فرماتے ہیں:

| مالم اذکرہ فیہ شیئا فھو صالح و | جس میں کوئی علت بیان نہ کروں وہ حدیث |

---

1 میزان الاعتدال ترجمہ ۹۸۲ اسود بن عبد اللہ دار المعرفۃ بیروت، ۱/ ۲۵۶ 2 مسند احمد بن حنبل حدیث ابی رزین العقیل لقیط بن عامر الخ المکتب الاسلامی بیروت ۴/ ۱۳

Fatawa Razawiyya Volume 29

[Boxed Text]: "Some of them are more authentic than others." 1 / It will be correct, and among them, some will be more authentic than others. - T

Now see your great ignorance that the noble Imams declare Aswad as acceptable and his Hadith as sound (Salih), while an undiscerning and mindless person like you declares it fallen from the status of reliability.

Point 226: Even if for the sake of argument your ignorance is accepted, and even if it is wrongly conceded that one whose status is unknown (Majhul-ul-Hal) is unanimously unacceptable, even then, to declare it fallen from the status of reliability unanimously is rejected and forsaken. O poor Muhaddith! You don't even know the difference between argumentation (ihtijaj) and reliability (i'tibar) yet and have set out to criticize Hadiths. Mr. Muhaddith! If 'Majhul' (unknown) is considered 'fallen', it is from the level of argumentation, not from the level of reliability. Refer to the treatise 'al-Had al-Kaf', and here, being up to the level of reliability is sufficient and enough without disagreement.

Point 227: All this work is based on the assumption that the Aswad mentioned is the one in 'al-Mizan', but far be it! What proof do you have for this? Rather, the evidence points to the opposite, that the father of that Aswad is not an unknown companion, as Al-Hafiz has explicitly stated. (As Al-Hafiz has explicitly stated on this. - T) And the father of this Aswad is a companion as mentioned in the Hadith itself: "I prayed Fajr with the Messenger of Allah, peace and blessings of Allah be upon him." (As it is mentioned in the same Hadith that I prayed the Fajr prayer with the Prophet, peace and blessings be upon him. - T)

His statement: And the Hadith from Ibn al-Sunni's 'Amal al-Yawm wa al-Laylah', which is quoted in the mentioned Fatwa on the authority of Anas, is fabricated (maudu') because it contains 'Isa, a liar narrator. Both these Hadiths are present at the end of 'Mizan al-I'tidal'.

I say (Point 228): 'Isa is not a liar, but you are certainly a liar; there is no narrator named 'Isa in its chain (isnad) at all.

But one cannot escape from a fabricator, for he creates speech himself. (One cannot get rid of a slanderer because he makes up things himself).

1. Muqaddimah Sunan Abi Dawud, Al-Fasl al-Thani, Aftab-e-Alam Press Lahore, 1/4. Page 193 of 750

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

[बॉक्स किया हुआ पाठ]: "उनमें से कुछ दूसरों की तुलना में अधिक प्रामाणिक हैं।" 1 / यह सही होगा और उनमें से कुछ दूसरों से अधिक प्रामाणिक होंगे। - त

अब अपनी महान अज्ञानता देखो कि महान इमाम असवद को स्वीकार्य और उनकी हदीस को 'सालिह' (उत्तम) बताते हैं, और तुम जैसा विवेकहीन और समझ से रहित व्यक्ति उसे विश्वसनीयता के पद से गिरा हुआ बताता है।

प्रहार 226: यदि तर्क के लिए आपकी अज्ञानता मान भी ली जाए, और यदि गलत तरीके से यह भी स्वीकार कर लिया जाए कि जिसकी स्थिति अज्ञात (मजहूल-उल-हाल) है वह सर्वसम्मति से अस्वीकार्य है, फिर भी सर्वसम्मति से इसे विश्वसनीयता के पद से गिरा हुआ बताना तिरस्कृत और त्याज्य है। ओ बेचारे मुहाद्दिस! तुम्हें अभी तक दलील (इहतिजाज) और विश्वसनीयता (एतबार) के बीच का अंतर ही नहीं पता और तुम हदीसों पर आलोचना करने निकल पड़े। श्रीमान मुहाद्दिस! यदि 'मजहूल' (अज्ञात) गिरा हुआ है, तो वह दलील के स्तर से है, न कि विश्वसनीयता के स्तर से। 'अल-हाद अल-काफ़' नामक ग्रंथ देखें, और यहाँ विश्वसनीयता के स्तर तक होना बिना किसी विवाद के पर्याप्त है।

प्रहार 227: यह सब कार्य इस स्वीकारोक्ति पर आधारित है कि असवद वही हैं जिनका उल्लेख 'अल-मीज़ान' में है, लेकिन कदापि नहीं! आपके पास इसका क्या सबूत है? बल्कि सबूत इसके विपरीत की ओर इशारा करता है कि उस असवद के पिता अज्ञात सहाबी नहीं हैं, जैसा कि अल-हाफ़िज़ ने इस पर स्पष्ट रूप से उल्लेख किया है। (जैसा कि हाफ़िज़ ने इस पर स्पष्ट निर्देश दिया है। - त) और इस असवद के पिता सहाबी हैं जैसा कि हदीस के मूल में उल्लेख है: "मैंने अल्लाह के रसूल, सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ फज्र की नमाज़ पढ़ी।" (जैसा कि इसी हदीस में उल्लेख है कि मैंने हुज़ूर अलैहिस्सलाम के साथ फज्र की नमाज़ पढ़ी। - त)

उनका कथन: और इब्न अल-सुन्नी की 'अमल अल-यौम वल-लैलह' की हदीस जो अनस के माध्यम से उल्लेखित फतवे में उद्धृत है, गढ़ी हुई (मौज़ू) है क्योंकि इसमें ईसा नामक एक झूठा कथावाचक है। ये दोनों हदीसें 'मीज़ान अल-एतिदाल' के अंत में मौजूद हैं।

मैं कहता हूँ (प्रहार 228): ईसा झूठा नहीं है बल्कि तुम निश्चित रूप से झूठे हो, इसकी सनद (सूत्र) में ईसा नाम का कोई कथावाचक है ही नहीं।

"लेकिन एक झूठ गढ़ने वाले से कोई बच नहीं सकता, क्योंकि वह खुद ही बातें बना लेता है।" (झूठ बोलने वाले से छुटकारा नहीं पाया जा सकता क्योंकि वह खुद बातें बना लेता है)।

1. मुकद्दिमा सुनन अबी दाऊद, अल-फस्ल अल-थानी, आफ़ताब-ए-आलम प्रेस लाहौर, 1/4. पृष्ठ 193/750

[باکس شدہ عبارت]: بعضھا اصح من بعض۔ 1 / درست ہوگی اور ان میں بعض سے بعض اصح ہوں گی۔ ت

اب اپنی جہالت کبری دیکھ کہ ائمہ کرام تو اسود کو مقبول اور ان کی حدیث کو صالح فرمائیں اور تجھ جیسا بے تمیز بے ادراک پایہ اعتبار سے ساقط بتائے۔

ضرب ۲۲۶: بالفرض اگر آپ کی جہالت مان بھی لیں اور بفرض غلط یہ بھی تسلیم کرلیں کہ مجھول الحال بالاتفاق نامقبول ، پھر بھی بالاتفاق پایہ اعتبار سے ساقط بتانا مردود و مخذول، محدث مسکین ابھی احتجاج و اعتبار ہی کا فرق نہیں جانتے اور چلے حدیثوں پر جرح کرنے، محدث صاحب! مجھول اگر ساقط ہے تو پایہ احتجاج سے نہ کہ پایہ اعتبار سے، دیکھو رسالہ الہاد الکاف، اور یہاں پایہ اعتبار تک ہونا کافی و وافی ہے بلا خلاف۔

ضرب ۲۲۷: یہ سب کام اس تسلیم پر ہے کہ اسود مذکور فی المیزان ہوں مگر حاشا اس کا تمہارے پاس کیا ثبوت، بلکہ دلیل اس کے خلاف کی طرف ناظر کہ اُن اسود کے باپ صحابی نہیں مجھول ہیں کما نص علیہ الحافظ (جیسا کہ حافظ نے اس پر نص کی ہے۔ ت) اور اس اسود کے باپ صحابی کما ذکر فی نفس الحدیث صلیت مع رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم الفجر (جیسا کہ اسی حدیث میں ذکر ہے کہ میں نے حضور علیہ الصلوۃ والسلام کے ساتھ فجر کی نماز پڑھی(ت)

قولہ: اور ابن السنی کے عمل الیوم واللیلۃ کی حدیث جو بروایت انس فتوی مذکور میں منقول ہے۔ موضوع ہے کیونکہ اس میں عیسی راوی کذاب ہے، یہ دونوں حدیثیں میزان الاعتدال کے اخیر میں موجود ہیں۔

اقول ضرب ۲۲۸: عیسی تو کذاب نہیں مگر تم ضرور کذاب ہو اس کی سند میں عیسی کوئی راوی ہی نہیں -

ولے از مفتری نتواں برآمد کہ او از خود سخن می آفریند (افترا پرداز سے چھٹکارا نہیں ہو سکتا کیونکہ وہ خود بات بنا لیتا ہے)

1 مقدمہ سنن ابی داؤد الفصل الثانی آفتاب عالم پریس لاہور ۱/ ۴ صفحہ 193 از 750

Fatawa Razawiyya, Volume 29

Strike 229: Ruling something as fabricated without evidence is rejected.

Strike 230: These hadiths are not mentioned in 'Mizan al-I'tidal'. Is there a habit of lying even without reason, and is "So be patient" (fasbir) appropriate in this context?

Point of Discussion: Not praying behind non-conformists (Ghair Muqallidin).

Answer: Anyone who labels a Muslim as a sinner (fasiq), an innovator (mubtadi'), or an infidel (kafir) without Sharia proof, becomes the manifestation of that label himself.

I say: Strike 231: Well, speaking ill of a Muslim without proof is a crime. And that impure, bold person who, in the fervor of his misguidance, assigns a physical location to the Lord of Muslims—not only without proof but absolutely contrary to Sharia evidence—making Him similar to His needy creation; to which word of rejection is he subject? What punishment is he deserving of?

Strike 232: Take a good look at your leader Ismail Dehlawi (may he receive what he deserves). He and all his offspring among the people of Wahhabism and Najdism are afflicted with this fatal disease, being ready to brand Muslims as polytheists (mushrik) and innovators based merely on verbal force and false accusations. "May Allah destroy them! How are they turned away!"[1] (Quran 9:30). That man himself defined polytheism as performing acts specifically meant for the veneration of God for others, and then listed examples of polytheism such as erecting a canopy over someone's grave or fanning a grave with peacock feathers. Praise be to Allah that sons like you have admitted that man himself was a polytheist.

Strike 233: Likewise, you of the new generation, who are the minions of those old cunning ones—meaning this Dehlawi and his straying followers—your entire creed is impure as you label the following of the Imams (taqlid) as polytheism and call the followers (muqallidin) polytheists without Sharia proof. Praise be to Allah that you yourself have become polytheists by your own words.

Strike 234: Your group of non-conformists being sinful innovators is not without Sharia proof; rather, the scholars of Arab and non-Arab lands have proven it with abundant, overwhelming evidence. If you do not yield despite your stubbornness, there is no cure for it.

Strike 235: Mr. Sheikh Mujaddid Alf Thani states in 'Risala Mabda o Ma'ad':

For a long time, I wished that some justification could be found in the Hanafi school so that recitation of Fatiha could be done behind the Imam, but due to adherence to the school, involuntarily...

For a long time, there was a desire that some way could be found in the Hanafi school for the recitation behind the Imam; however, involuntarily, in adherence to the school, in following the Imam...

[1] Al-Quran al-Karim 9/73

फ़तावा रज़विया, जिल्द 29

ज़रब 229: बिना दलील के गढ़ने (मौज़ू) का हुक्म देना मरदूद (अस्वीकार्य) है।

ज़रब 230: मीज़ान अल-इतिदाल में इन हदीसों का ज़िक्र नहीं है, क्या बिना वजह भी झूठ बोलने की आदत है? और क्या यहाँ "तो सब्र कर" (फ़स्बिर) का मौका है?

मसला: ग़ैर-मुक़ल्लिदों के पीछे नमाज़ न पढ़ना।

अल-जवाब: जो व्यक्ति किसी मुसलमान को शरीअत के सबूत के बिना फ़ासिक़ (पापी), मुब्तदिअ (बिदअती) या काफ़िर कहे, वह ख़ुद उसी का पात्र है।

अक़ूल (मैं कहता हूँ): ज़रब 231: भला किसी मुसलमान को बिना सबूत बुरा कहना एक जुर्म हुआ। और वह नापाक बेबाक़ जो अपनी गुमराहियों की उमंग में मुसलमानों के रब के लिए न केवल बिना सबूत बल्कि शरीअत के सबूतों के बिलकुल ख़िलाफ़ जगह (स्थान) बताए और उसे अपनी मोहताज मख़लूक़ की तरह बनाए, वह किस मरदूद शब्द का हक़दार है? उसे किस सज़ा का हक़ है?

ज़रब 232: अपने पीर-ए-मुग़ाँ इस्माइल देहलवी (उन पर जो है सो है) की ख़ूब ख़बर ली। वह और उसकी तमाम वहाबी और नज्दी नस्ल इसी जानलेवा बीमारी में गिरफ़्तार हैं कि मुसलमानों को शरीअत के सबूत के बिना महज़ ज़बान और तोहमत के ज़ोर पर मुशरिक और बिदअती बनाने के लिए तैयार हैं। "अल्लाह उन्हें हलाक करे! वे कहाँ भटके जा रहे हैं।"[1] उस आदमी ने ख़ुद शिर्क की परिभाषा दी कि जो बातें अल्लाह ने अपनी ताज़ीम के लिए ख़ास की हैं उन्हें दूसरों के लिए करना शिर्क है, और फिर शिर्क की मिसालों में गिना दिया: किसी की क़ब्र पर शामियाना लगाना, किसी की क़ब्र पर मोरछल झलना। अल्लाह का शुक्र है कि तुम जैसे बेटों ने उस आदमी के ख़ुद मुशरिक होने का इक़रार कर लिया।

ज़रब 233: इसी तरह तुम नई पीढ़ी के लोग, जो उन पुराने सियानों के चेले हो, यानी इसी देहलवी और उसके गुमराह अनुयायियों का तुम्हारा सबका मज़हब नापाक है कि तुम इमामों की पैरवी (तक़लीद) को बिना शरीअत के सबूत के शिर्क और मुक़ल्लिदों को मुशरिक कहते हो। अल्लाह का शुक्र है कि तुम ख़ुद अपने मुँह से मुशरिक बन गए।

ज़रब 234: तुम्हारी ग़ैर-मुक़ल्लिद जमाअत का फ़ासिक़ और बिदअती होना शरीअत के सबूत के बिना नहीं है, बल्कि अरब और अजम के उलेमा ने बहुत सारी दलीलों से इसे साबित कर दिया है। अगर तुम सीनाज़ोरी से न हारो तो इसका क्या इलाज।

ज़रब 235: जनाब शैख़ मुजद्दिद अल्फ़ सानी 'रिसाला मब्द-ओ-मआद' में फ़रमाते हैं:

एक लंबे समय तक यह इच्छा रही कि हनफ़ी मज़हब में कोई ऐसी सूरत निकल आए जिससे इमाम के पीछे सूरह फ़ातिहा पढ़ी जा सके लेकिन मज़हब की रियायत की वजह से बे-इख़्तियार...

बहुत समय तक यह आरज़ू रही कि हनफ़ी मज़हब में इमाम के पीछे किरात की कोई सूरत बन जाए; हालाँकि ग़ैर-इख़्तियारी तौर पर मज़हब की रियायत में इमाम की...

[1] अल-क़ुरआन अल-करीम 9/73

فتاویٰ رضویہ جلد ۲۹

ضرب ۲۲۹: حکم بالوضع بے دلیل و مردود ہے۔

ضرب ۲۳۰: میزان الاعتدال میں ان احادیث کا ذکر نہیں، کیا بلا وجہ بھی جھوٹ کی عادت ہے اور فاصبر کیا موقع پر ہے۔

قولہ مسئلہ: غیر مقلدوں کے پیچھے نماز نہ پڑھنا۔

الجواب: جو شخص کسی مسلمان کو بلا ثبوت شرعی فاسق یا مبتدع یا کافر کہے خود اسی کا مصداق ہے۔

اقول: ضرب ۲۳۱: بھلا کسی مسلمان کو بلا ثبوت برا کہنا، یہ جرم ہوا اور جو ناپاک بے باک اپنی گمراہی کی ترنگ میں مسلمانوں کے رب کے لیے نہ صرف بلا ثبوت بلکہ قطعاً بر خلاف ثبوت شرعی مکان بتائے اسے اس کی مخلوق محتاج کے مانند بنائے وہ مردود کس لفظ کا مصداق ہے اسے کس سزا کا استحقاق ہے۔

ضرب ۲۳۲: اپنے پیر مغان اسماعیل دہلوی علیہ ما علیہ کی خوب خبر لی وہ اور اس کی تمام ذریت اہل توہب و نجدیت اسی مرض مہلک میں گرفتار ہیں کہ مسلمانوں کو بلا ثبوت شرعی محض بزور زبان وزور بہتان مشرک بدعتی بنانے کو تیار ہیں "قَتَلَهُمُ اللّٰهُ أَنَّى يُؤْفَكُونَ"[1]۔ مردک نے خود ہی شرک کی تعریف کی کہ جو باتیں خدا نے اپنی تعظیم کے لیے خاص کی ہیں وہ دوسروں کے لیے بجا لانا اور پھر شرک کی مثالوں میں گنا دیا، کسی کی قبر پر شامیانہ کھڑا کرنا، کسی کی قبر کو مور چھل جھلنا، الحمد للہ کہ تم جیسے سپوتوں نے اس مردک کے خود مشرک ہونے کا اقرار کردیا۔

ضرب ۲۳۳: یونہی تم نئی پود والے جن پرانوں سیانوں کے گرگے ہو یعنی یہی دہلوی اور اس کے اذناب غوی تم سب کا مسلک ناپاک ہے کہ تقلید ائمہ کو بلا ثبوت شرعی شرک اور مقلدین کو مشرک کہتے ہو، الحمد للہ کہ تم خود اپنے منہ آپ مشرک بننے کہ کر د کہ نیافت۔

ضرب ۲۳۴: تمہارے طائفہ غیر مقلدین کا فساق مبتدعین ہونا بے ثبوت شرعی نہیں بلکہ علمائے عرب و عجم بکثرت دلائل قاہرہ سے ثابت فرما چکے سینہ زوری سے نہ ہارو تو اس کا کیا علاج۔

ضرب ۲۳۵: جناب شیخ مجدد الف ثانی رسالہ مبدو معاد میں فرماتے ہیں:

مدتے آرزوئے آں داشت کہ وجہی پیدا شود و جیہہ در مذہب حنفی تا در خلف امام قراء ت فاتحہ نمودہ آید اما بواسطہ رعایت مذہب بے اختیار

مدت تک یہ آرزو رہی کہ حنفی مذہب میں قرات خلف الامام کی کوئی صورت بن جائے تاہم غیر اختیاری طور پر مذہب کی رعایت میں امام کی

[1] القرآن الکریم ۹/۷۳

Fatawa Razawiyya, Volume 29

[Box Content] He kept omitting recitation (in prayer while following an Imam), regarding this omission as a form of ascetic struggle. Ultimately, by the grace of adhering to the [Hanafi] school of thought—since departing from one's school of thought is considered a form of deviation (al-had)—the reality of omitting recitation for a follower became clear to him. In the eyes of insight, juridical recitation (hukmi qirat) appeared far more beautiful than actual vocal recitation. (T)

Here, the praised person (Hazrat Mujaddid Alf Thani) is clearly calling the 'Ghair-Muqallids' (non-conformists) heretics (mulhid). According to you, this statement is based on Sharia evidence. Then why do you and your entire group get upset when the robes of heresy and irreligiousness are bestowed upon you, or when you are called transgressors (fasiq) and innovators (mubtadi)? Perhaps you are upset because the rank was lowered from 'heretic zindiq' to 'mere transgressing innovator'. And if this statement lacks Sharia proof, then according to your logic, Hazrat Sheikh Mujaddid (God forbid) would be considered a heretic. Quickly tell us, which of these two options do you prefer? It doesn't stop here. If the Sheikh is so regarded, then where will Shah Waliullah and Shah Abdul Aziz be safe? For they are his disciples and followers, regarding him among the greatest saints. Anyone who calls a heretic a Muslim is himself a heretic, let alone calling him an Imam of Islam and a saint of high standing. And there is no end to it. If all these personalities were such, then where will the Sheikh of the accursed Wahhabis, the slain Ismail (Makhdhool), run? He who praises these three, is their slave, calls them saints and Imams, would himself be a heretic among heretics, a heretic of heretics. And now, where do you go? You are to him what he is to those three. You are the last scrapings from the pot of heresy, the dregs at the bottom of the bottle of atheism. Now say, which option did you like? Every option brings the calamity of heresy upon your own head.

His saying: The Imams of religion and the Muslims of the first three centuries were all Ghair-Muqallids (non-conformists).

I say: Strike 236: This is a pure lie. Among the Tabi'un and Taba Tabi'un, there were millions of followers (Muqallids). Even among the noble Sahaba (may Allah be pleased with them), thousands, especially the Bedouins and most of the freed captives (Tulqa), were followers. To consider every single person among the millions of Muslims of the first three centuries as a Mujtahid (independent jurist) is a feat only for a 'learned-ignorant' (Fazil-i Ajhal) like you. Faith!

1 Mabda-o-Ma'ad, Mujaddid Alf Thani, Mujaddadi Press, Amritsar, India, p. 73

फ़तावा रज़विया, खंड २९

[बॉक्स की सामग्री] इक्तिदा (नमाज़ में इमाम के पीछे खड़े होने) में क़िराअत (पाठ) नहीं की, इस क़िराअत को छोड़ने को वह एक प्रकार का कठिन प्रयास (रियाज़त) समझते रहे। अंतत; अल्लाह के फ़ज़ल से अपने मज़हब (हन्फ़ी) पर टिके रहने की बरकत से—चूँकि अपने मज़हब को छोड़ना विचलन (इल्हाद) है—मुक़्तदी (पीछे चलने वाले) के लिए क़िराअत छोड़ने की हक़ीक़त उन पर ज़ाहिर हो गई। तब बसीरत (सूझ-बूझ) की नज़र में हक़ीक़ी क़िराअत (वास्तविक पाठ) से हुक्मी क़िराअत (क़ानूनी/निर्धारित पाठ) कहीं अधिक सुंदर प्रतीत हुई। (त)

यहाँ मम्दूह (प्रशंसित हज़रत मुजद्दिद) ग़ैर-मुक़ल्लिदों को साफ़-साफ़ मुलहिद (नास्तिक/विचलित) कह रहे हैं। आपके नज़दीक यह कहना शरीअत के प्रमाण के अनुसार है, तो फिर आप और आपकी पूरी जमात को इल्हाद और बेदीनी का तोहफ़ा मिलने पर, या फ़ासिक़ और मुबतदिअ (धर्म भ्रष्ट) कहे जाने पर बुरा क्यों लगता है? हाँ, शायद इसलिए बुरा लगा हो कि रुतबा घटा दिया गया—मुलहिद ज़िंदीक़ से सिर्फ़ फ़ासिक़ मुबतदिअ बना दिया। और अगर यह कहना शरीअत के सबूत के बिना है, तो आपके अनुसार हज़रत शेख मुजद्दिद (अल्लाह की पनाह) मुलहिद ठहराए जाएँगे। जल्दी बताओ कि इन दोनों सूरतों में से कौन सी सूरत तुम्हें पसंद है? अभी बात यहीं ख़त्म नहीं होती। जब शेख ऐसे ठहरेंगे, तो शाह वलीउल्लाह और शाह अब्दुल अज़ीज़ साहब कहाँ बचेंगे? क्योंकि वे उनके मुरीद और मानने वाले हैं और उन्हें बड़े औलिया में गिनते हैं। जो किसी मुलहिद को मुसलमान कहे, वह ख़ुद मुलहिद है, न कि उसे इमाम-ए-इस्लाम और वली-ए-आली मक़ाम कहने वाला। और अभी अंत कहाँ? जब ये सब हज़रात ऐसे हुए तो वहाबियों का शेख़ मक़्तूल इस्माइल कहाँ भागेगा? जो इन तीनों का प्रशंसक, ग़ुलाम है और उन्हें वली और इमाम कहता है, तो वह ख़ुद मुलहिद दर मुलहिद, मुलहिदों का मुलहिद हुआ। और अब तुम कहाँ जाते हो? तुम उस एक के लिए वैसे ही हो जैसे वह उन तीन के लिए। तुम इल्हाद की देग की आख़िरी खुरचन और इल्हाद की बोतल की निचली तलछट हो। अब कहो कौन सी सूरत पसंद आई? हर सूरत में इल्हाद की आफ़त तुम्हारे ही सिर मढ़ी गई।

उनका कहना: धर्म के इमाम और शुरुआती तीन सदियों के मुसलमान सब ग़ैर-मुक़ल्लिद थे।

मैं कहता हूँ: प्रहार २३६: यह कोरा झूठ है। ताबेईन और तबअ-ताबेईन में तो लाखों मुक़ल्लिद थे ही, सहाबा किराम (रज़ियल्लाहु अन्हुम) में भी हज़ारों हज़रात, विशेष रूप से ग्रामीण और मक्का विजय पर इस्लाम लाने वाले (तुलक़ा), मुक़ल्लिद थे। पहली तीन सदियों के करोड़ों मुसलमानों में से हर

शख़्स को मुज्तहिद (स्वतंत्र न्यायविद्) समझना आप जैसे 'फ़ाज़िल-ए-अजहल' (विद्वान मूर्ख) का ही काम है। ईमान!

1 मबदा-ओ-मआद, मुजद्दिद अल्फ़ थानी, मतबअ मुजद्दिदी, अमृतसर, भारत, पृष्ठ ७३

[باکس کی تحریر] اقتداء میں قرات نہ کی، اس ترکِ قرات کو تکلف محسوس کرتا رہا، بالاخر مذہب کی رعایت کی برکت سے مقتدی کے لیے ترکِ قرات کی حقیقت ظاہر ہوگئی جب کہ اپنے مذہب سے دوسرے مذہب میں منتقل ہونا الحاد ہے، چنانچہ حقیقی قرات سے حکمی قرات نظر بصیرت میں خوب تر معلوم ہوئی۔ (ت)

یہاں حضرت ممدوح غیر مقلدوں کو صاف صاف ملحد فرما رہے ہیں، آپ کے نزدیک یہ فرمانا مطابق ثبوت شرعی ہے جب تو آپ اور آپ کے سارے طائفے کو الحاد و بے دینی کا خلعت مبارک، پھر آپ فاسق و مبتدع کہنے پر کیوں بگڑیں۔ ہاں شاید یوں بگڑے ہوں کہ مرتبہ گھٹا دیا ملحد زندیق سے نرا فاسق مبتدع رکھا، اور اگر یہ فرمانا بے ثبوت شرعی ہے تو آپ کے طور پر حضرت شیخ مجدد معاذ اللہ ملحد قرار پائیں گے جلد بتاؤ کہ دونوں شقوں سے کون سی شق تمہیں پسند ہے، ہنوز بس نہیں، جب جناب شیخ ایسے ٹھہریں گے تو شاہ ولی اللہ و شاہ عبدالعزیز صاحب کہاں بچیں گے کہ یہ ان کے مرید ان کے معتقد ہیں انہیں اکابر اولیاء سے جانتے ہیں اور جو کسی ملحد کو مسلم کہے خود ملحد ہے نہ کہ امام اسلام و ولی والا مقام کہنے والا، اور ابھی انتہا کہاں، جب یہ سب حضرات ایسے ہوئے تو وہابیہ مخذولین کا شیخ مقتول اسمعیل مخذول علیہ ماعلیہ کدھر بھاگے گا، یہ تینوں کا مداح تینوں کا غلام تینوں کو ولی کہے تینوں کو امام، تو یہ خود ملحد در ملحد ملحدوں کا ملحد ہوا، اور اب تم کہاں جاتے ہو تم اس ایک کے ویسے ہی ہو جیسا وہ ان تین کا تو دیگ الحاد کی پچھلی کھرچن الحادی بوتل کی نیچے کی تلچھٹ تم ہوئے اب کہو کون سی شق پسند رہی، ہر شق پر الحاد کی آفت تمہارے ہی ماتھے گئی۔

قولہ: ائمہ دین و مسلمانانِ قرونِ ثلاثہ سب غیر مقلد تھے۔

اقول: ضرب ۲۳۶ : محض جھوٹ ہے، تابعین و تبع تابعین میں تو لکھو کھا مقلدین تھے ہی، صحابہ کرام رضی اللہ تعالیٰ عنہم میں بھی ہزاروں حضرات خصوصاً اعراب و اکثر طلقاء مقلد تھے۔ قرونِ ثلاثہ کے کروڑوں مسلمانوں میں ہر شخص کو مجتہد جاننا آپ ہی جیسے فاضلِ اجہل کا کام ہے

ایمان

1 مبداء و معاد مجدد الف ثانی مطبع مجددی امر تسر انڈیا ص ۷۳

صفحہ ۱۹۵ از ۷۵۰

Fatawa Ridawiyyah Volume 29

...to say, did asking a scholar a question and acting upon what they said ever happen in the first three generations (Quroon-e-Thalatha) or not? Indeed it happened, and it happened in every era, day and night. And what else is Taqlid (imitation/following)? If they had ever even caught a whiff of the books of Hadith in their dreams, they would know that this practice of laypeople and scholars seeking fatwas and providing fatwas has always been prevalent since the time of the Companions, and even since the time of the Prophethood.

Point 237: People of this age ask about non-Muqallids (those who don't follow a school of thought): How is the prayer behind them? The scholars of Sunnah answer that it is forbidden and disliked (Makruh). To apply this question and answer to the Mujtahid Imams is not just ignorance but deliberate mischief. Non-Muqallid is the name of that perished, misguided, and deviating group which, by following the accursed Satan, refuses to follow the Imams of religion, calls the followers (Muqallids) of the Imams polytheists (Mushriks), and commands every foolish person to follow their own deficient intellect instead of following the teachings of the Imams. Taking the literal meanings of names and applying them to things not named thus is such great foolishness! It's like saying: Why is a glass bottle (qarurah) called 'qarurah'? Because water stays (qarar) in it. Then your stomach is also a 'qarurah' because water stays in it too. Why is watercress (jarjir) called 'jarjir'? Because it moves (tajur-jur). Then your beard is also 'jarjir' because it also moves.

Point 238: If, for the sake of a false argument, we assume that the term "non-Muqallids" also includes the Mujtahid Imams, then when a term has two types of referents—one praiseworthy and the other blameworthy—and the praiseworthy ones existed in the early times and now only the blameworthy ones remain, then there is no need for restriction or specification in the ruling of condemnation. To every sane person, the ruling applies to those present. Anyone who thinks it's general is either a stubborn rebel or a pathetic simpleton. For example, every Muslim says Jews and Christians are disbelievers. If someone objects by saying that the Jews of Moses' era and the Christians of Jesus' era followed the true religion and were believers, yet you called everyone disbelievers, then this objector is one of two things: either a malicious scoundrel or a complete fool.

The opponent says: Taqlid is a newly invented matter and was created in the fourth century.

I say: Point 239: You are lying blatantly. In fact, Taqlid is a religious obligation. The Quran and Hadith made it mandatory; it has been prevalent since the time of the Prophethood. Allah Almighty says:

"So ask the people of knowledge if you do not know." - Ask the people of remembrance if you yourself do not know. (Translator)

And the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him and his family) said:

1 Al-Quran al-Karim 16/43 and 21/7

फ़तावा रज़विया जिल्द २९

...कहना कि शुरुआती तीन पीढ़ियों (क़ुरून-ए-सालिसा) में कभी किसी ने किसी आलिम से मसला पूछा और उन्होंने जो बताया उस पर अमल किया या नहीं? बेशक हुआ, और हर सदी में हुआ, रात-दिन होता रहा। और तक़लीद (अनुसरण) किस चीज़ का नाम है? अगर कभी सपने में भी हदीस की किताबों की हवा लगी होती तो मालूम होता कि आम लोगों और उलमा का यह इस्तेफ़्ता (सवाल पूछना) और इफ़्ता (फ़तवा देना) न सिर्फ सहाबा के ज़माने से बल्कि रिसालत (पैग़म्बरी) के ज़माने से हमेशा से चला आ रहा है।

नुक़्ता २३७: इस ज़माने के लोग ग़ैर-मुक़ल्लिदीन के बारे में सवाल करते हैं कि उनके पीछे नमाज़ कैसी है? सुन्नत के विद्वान जवाब देते हैं कि मना और मकरूह है। इस सवाल-जवाब को मुजतहिद इमामों पर थोपना सिर्फ़ अज्ञानता नहीं बल्कि जानबूझकर की गई शरारत है। ग़ैर-मुक़ल्लिद उस बर्बाद, गुमराह और भटकने वाले गिरोह का नाम है जो मलऊन शैतान की पैरवी करते हुए दीनी इमामों की तक़लीद से इनकार करता है, इमामों के मुक़ल्लिदों को मुशरिक (बहुदेववादी) कहता है, और अपने हर बेवकूफ़ शख्स को इमामों के इरशाद पर चलने के बजाए अपनी अधूरी अक्ल पर चलने का हुक्म देता है। नामों के शब्दार्थ लेकर उन्हें किसी अनपेक्षित चीज़ पर थोपना कितनी बड़ी मूर्खता है! यह वैसी ही मिसाल हुई कि 'क़रूरह' (कांच की बोतल) को 'क़रूरह' क्यों कहते हैं? इसलिए कि उसमें पानी ठहरता (क़रार) है, तो फिर तुम्हारा पेट भी 'क़रूरह' हुआ क्योंकि उसमें भी पानी ठहरता है। 'जरजीर' (एक पौधा) को 'जरजीर' क्यों कहते हैं? क्योंकि वह हरकत करता है, तो तुम्हारी दाढ़ी भी 'जरजीर' हुई क्योंकि वह भी हिलती है।

नुक़्ता २३८: अगर एक ग़लत दलील के लिए मान लें कि "ग़ैर-मुक़ल्लिदीन" शब्द में मुजतहिद इमाम भी शामिल हैं, तो जब एक शब्द के दो अर्थ हों—एक सराहनीय और दूसरा निंदनीय—और सराहनीय लोग पुराने ज़माने में थे और अब सिर्फ़ निंदनीय ही बचे हैं, तो अब निंदा के हुक्म में किसी शर्त या विशेष स्पष्टीकरण की ज़रूरत नहीं है। हर बुद्धिमान व्यक्ति के लिए वह हुक्म मौजूद लोगों के लिए ही होगा। इसे सामान्य समझने वाला या तो एक ज़िद्दी विद्रोही है या फिर एक बेवकूफ़ गधा। उदाहरण के लिए, हर मुसलमान कहता है कि यहूदी और ईसाई काफ़िर हैं। अगर कोई इस पर आपत्ति करे कि मूसा अलैहिस्सलाम के दौर के यहूदी और ईसा अलैहिस्सलाम के दौर के ईसाई सच्चे दीन पर क़ायम थे और मोमिन (ईमान वाले) थे, फिर भी तुमने सबको काफ़िर कह दिया, तो आपत्ति करने वाला दो हालतों से खाली नहीं: या तो वह एक दुष्ट शरारती है या फिर एक बेचारा बेवकूफ़।

कहा गया: तक़लीद एक नया मामला है और चौथी सदी में ईजाद हुई।

मैं कहता हूँ: नुक़्ता २३९: तुम सख्त झूठे हो, बल्कि तक़लीद एक वाजिब शरई (धार्मिक अनिवार्यता) है। क़ुरआन और हदीस ने इसे लाज़िम किया है, यह रिसालत के ज़माने से ही जारी है। अल्लाह तआला फ़रमाता है:

"फ़स-अलु अह्लज़्ज़िक्रे इन कुन्तुम ला त'अलमून" - अहले ज़िक्र (ज्ञानियों) से पूछो अगर तुम खुद नहीं जानते। (अनुवाद)

और अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया:

1 अल-क़ुरआन अल-करीम १६/४३ और २१/७

पृष्ठ ७५० का १९६

سے کہنا قرون ثلثہ میں کبھی کسی کا کسی عالم سے مسئلہ پوچھنا اور وہ جو فرمائے اس پر عمل کرنا ہوا یا نہیں، بے شک ہوا اور ہر قرن میں ہوا اور شب و روز ہوتا رہا، اور تقلید کس چیز کا نام ہے، اگر کبھی خواب میں بھی کتب حدیث کی ہوا لگی ہوتی تو معلوم ہوتا کہ عوام و علماء کا یہ استفتائ وافتاء نہ صرف زمانہ صحابہ بلکہ زمانہ رسالت سے ہمیشہ رائج رہا۔

ضرب ۲۳۷ : اہل زمانہ غیر مقلدین کے بارے میں سوال کریں کہ ان کے پیچھے نماز کیسی ہے؟ علمائے سنت جواب فرمائیں کہ ممنوع و مکروہ ہے، اس سوال و جواب کو ائمہ مجتہدین پر حمل کرنا، جہالت نہیں بلکہ دیدہ و دانستہ حرامزدگی ہے، غیر مقلد اس طائفہ تالفہ ضالہ حائفہ کا نام ہے جو بتقلید شیطان لعین تقلید ائمہ دین سے انکار رکھتا ہے، مقلدین ائمہ کو مشرک کہتا ہے اپنے ہر خرنا مشخض کو بے اتباع ارشادات ائمہ اپنی عقل ناقص پر چلنے کا حکم دیتا ہے ناموں کے معانی لغوی لے کر غیر مسمیٰ پر حمل کرنا کیسی حمار یت کبریٰ ہے، یہ وہی مثل ہوئی کہ قارورے کو قارورہ کیوں کہتے ہیں اس لیے کہ اس میں پانی کا قرار ہے تو تمہارا پیٹ بھی قارورہ ہوا کہ اس میں بھی پانی کا قرار ہوتا ہے۔ جرجیر کو جرجیر کیوں کہتے ہیں اس لیے کہ وہ تجر جر یعنی حرکت کرتا ہے تو تمہاری داڑھی بھی جرجیر ہوئی کہ اسے بھی جنبش ہوتی ہے۔

ضرب ۲۳۸ : اگر بفرض باطل لفظ غیر مقلدین ائمہ مجتہدین کو بھی شامل مانیے تو لفظ کے مصداق جب دو قسم ہوں ایک محمود، دوسری مذموم، اور محمود زمانہ سلف میں تھے اب تنہا مذموم باقی ہیں تو اب حکم مذمت میں قید و تخصیص کی ضرورت نہیں ہر عاقل کے نزدیک حکم انہیں موجودین کے لیے ہوگا اسے عام سمجھنے والا یا مکابر سرکش ہے یا مسکین بار کش، مثلاً

ہر مسلمان کہتا ہے کہ یہود و نصاریٰ کافر ہیں اس پر شخص جو اعتراض کرے کہ زمانہ موسوی کے یہود، عصر عیسوی کے نصاریٰ کہ دین حق پر قائم تھے مومنین تھے تم نے سب کو کافر کہہ دیا، تو یہ معترض انہیں دو حال سے خالی نہیں یا حرامزادہ وہ شریر ہے یا خر مسکین۔

قولہ: تقلید ایک امر مستحدث ہے اور چوتھی صدی میں ایجاد ہوئی۔

اقول: ضرب ۲۳۹ : سخت جھوٹے ہو بلکہ تقلید واجب واجب شرعی ہے، قرآن وحدیث نے لازم کی، زمانہ رسالت سے رائج ہوئی، قال اللہ تعالی:

"فَسْئَلُوْٓا اَهْلَ الذِّكْرِ اِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ" ۱- اہل ذکر سے پوچھو اگر تم خود نہیں جانتے۔ (ت)

وقال رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وآلہ وسلم:

1 القرآن الکریم ۱۶ / ۴۳ و ۲۱ / ۷

Arabic: Ask if you do not know, for the cure for ignorance is asking. (1)	**Urdu Translation: Why did they not ask themselves when they did not know? Because the treatment for the helpless is to ask. (T)**

Yes, the non-conformity (*Ghair-Muqalladiat*) of your misguided group is a very recent invention, which Ibn Abdul Wahhab Najdi introduced in the 12th century. See the treatise *Al-Durar al-Saniyya fi al-Radd 'ala al-Wahhabiyya* by the leader of the scholars of Makkah al-Mukarramah, Shaykh al-Ulama Sayyiduna Ahmad Zayni (may his secret be sanctified).

Strike 420: Our dispute as Ahl al-Sunnah with these misguided ones is, firstly, over their labeling of *Taqleed* (imitation) as *Shirk* (polytheism); secondly, over their declaring it forbidden (*Haram*); and thirdly, over their claiming that abandoning it is permissible for those lacking the capability for *Ijtihad*. These cunning deceivers leave these three points and start entangling in *Taqleed-e-Shakhsi* (following a specific Imam). This is an old tactic of these deceivers to save their lives. These fledglings of a new flight also followed the same trick, yet they fabricated a lie about the fourth century. Their murdered Sheikh Ismail's grandfather, grand-teacher, and great-grandfather, Shah Waliullah, did justice in his treatise *Al-Insaf*, stating:

Arabic: After two hundred years, adhering to the schools of specific Mujtahids appeared among them, and few were those who did not rely on a specific Mujtahid's school, and this was what was necessary in that time. (2)	**Urdu Translation: Meaning, after two centuries, becoming bound to the school of a particular Mujtahid became evident among the people of Islam, such that there was hardly anyone who did not rely on a specific Imam, and this was necessary in those times.**

Statement (*Qauluhu*): And whatever was invented in the matters of religion after the first three generations (*Quroon-e-Thalatha*) is, by consensus, a *Bid'ah* (innovation), and every innovation is misguidance.

Strike 421: Just like your non-conformity, which emerged not after three but in the twelfth century from the belly of the 'Horn of Satan' (*Qarn al-Shaytan*).

Strike 422: An ox bellowing in a lion's forest seeks its own death. Tell me, who among the first three generations accepted establishing a place for Allah Almighty? Thus, your statement is worse than urine; from your own mouth, it is innovation,

misguidance, and in the Fire, and you are an innovator, misguided, and deserving of the Fire.

Strike 423: Who in the first three generations denied the personal encompassment (*Ihata Dhatiya*) of Allah Almighty? This too is your innovation and...

---

1. *Sunan Abi Dawud*, Book of Purification, Chapter on the Wounded performing Tayammum, Aftab-e-Alam Press, Lahore, 1/49.
2. *Risalah al-Insaf*, Shah Waliullah, Chapter on the condition of people before the fourth century etc., Maktaba Dar al-Shafqat, Istanbul, Turkey, p. 19.

अरबी: क्या उन्होंने नहीं पूछा जब वे नहीं जानते थे? क्योंकि अज्ञानता का इलाज पूछना ही है। (१)

उर्दू अनुवाद: उन्होंने खुद न जानने पर क्यों नहीं पूछा? क्योंकि लाचार का इलाज पूछना है। (त)

हाँ, तुम्हारे गुमराह गिरोह की 'ग़ैर-मुक़ल्लिदी' बहुत ही नई ईजाद है जिसे इब्न अब्दुल वहाब नजदी ने बारहवीं सदी में निकाला, देखो मक्का मुकर्रमा के विद्वानों के सरदार शैखुल उलमा हज़रत सैय्यदना अहमद ज़ैनी (क़ुद्दिस सिर्रहु) का रिसाला 'अल-दुरर अल-सन्निया फी अल-रद्द अलल वहाबिया'।

आघात ४२०: हम अहले सुन्नत का इन गुमराहों से विवाद, पहला तक़लीद को शिर्क बताने पर है, दूसरा इसे हराम ठहराने पर, तीसरा बिना योग्यता के इज्तिहाद के लिए इसे छोड़ना जायज़ बताने पर है। ये चालाक छली इन तीनों को छोड़कर 'तक़लीद-ए-शख़्सी' में उलझने लगते हैं। यह इन मक्कारों का जान बचाने का पुराना तरीका है। नई उड़ान के इन बच्चों ने भी यही चाल चली, फिर भी चौथी सदी को झूठ बना लिया। उनके मारे गए शैख इस्माइल के दादा, गुरु के दादा और परदादा शाह वलीउल्लाह साहब ने अपने रिसाला 'इंसाफ' में इंसाफ करते हुए लिखा है:

अरबी: दो सौ वर्षों के बाद, उनके बीच विशिष्ट मुजतहिदों के संप्रदायों का पालन करना प्रकट हुआ, और बहुत कम लोग ऐसे थे जो किसी विशिष्ट मुजतहिद के संप्रदाय पर निर्भर नहीं थे, और उस समय यही आवश्यक था। (२)

उर्दू अनुवाद: यानी दो सदी के बाद खास एक मुजतहिद के मज़हब का पाबंद बनना अहल-ए-इस्लाम में ज़ाहिर हुआ कि कम ही कोई शख्स था जो एक इमाम मुअय्यन पर एतमाद न करता हो और यही वाजिब था उस ज़माने में।

कथन (क़ौलुहू): और जो बात दीन के मामलों में तीन सदियों (क़ुरून-ए-सलासा) के बाद ईजाद हुई, वह आम सहमति से बिदअत (नवाचार) है और हर बिदअत गुमराही है।

आघात ४२१: जैसे तुम्हारी ग़ैर-मुक़ल्लिदी कि तीन छोड़कर बारहवीं सदी में 'शैतान के सींग' (क़र्न-उश-शैतान) के पेट से निकली।

आघात ४२२: शेर के जंगल में डकारने वाला बैल अपनी मौत खुद मांगता है। अल्लाह तआला के लिए स्थान साबित करना बता तो दे कि तीन सदियों में किसने माना? तो तेरा कथन मूत्र से भी बदतर

है, तेरे ही मुंह से यह बिदअत, गुमराही और आग में ले जाने वाला है और तू बिदअती, गुमराह और आग का हक़दार है।

आघात ४२३: अल्लाह अज्ज़वजल के'एहाता-ए-ज़ाती' (व्यक्तिगत घेराव) का इनकार तीन सदियों में किसने किया? यह भी तेरी बिदअत और...

---

1. सुनन अबी दाऊद, किताबत-तहारत, बाबुल मज़दूर यतयम्मम, आफताब-ए-आलम प्रेस लाहौर, १/४९।
2. रिसाला इंसाफ, शाह वलीउल्लाह, बाब हिकायत हालुन-नास क़ब्लल मिअत-उर-राबिआ आदि, मकतबा दारुश-शफ़क़त, इस्तांबुल, तुर्की, पृ. १९।

पृष्ठ १९७ / ७५०

الاسألو اذلم یعلموا فانما شفاء انہوں نے خود نہ جاننے پر پوچھا کیوں نہیں کیوں کہ عاجز کا العي السؤال 1- علاج پوچھنا ہے۔ (ت)

ہاں تمہارے طائفہ گمراہ کی غیر مقلدی بہت نو پیدا احدث ہے کہ ابن عبدالوہاب نجدی نے بارہویں صدی میں نکالی، دیکھو سردار علمائے مکہ معظمہ شیخ العلما حضرت سیدنا احمد زین قدس سرہ کا رسالہ الدرر السنیہ فی الرد علی الوہابیہ۔

ضرب ۴۲۰: ہم اہلسنت کو ان گمراہوں سے نزاع اولاً تقلید کو شرک بتانے ، ثانیاً اس کے حرام ٹھہرانے، ثالثاً بے لیاقت اجتہاد اس کا ترک جائز بتانے میں ہے، یہ چالاک عیار تینوں کو چھوڑ کر تقلید شخصی میں الجھنے لگتے ہیں، یہ ان مکاروں کا قدیم طریقہ جان بچانے کا ہے، یہ نئی پرواز کے پٹھے بھی یہی چال چلے پھر بھی چوتھی صدی جھوٹ بنالی، ان کے شیخ مقتول اسمعیل مخذول کے دادا اور دادا استاد اور پیر دادا پیر شاہ ولی اللہ صاحب رسالہ انصاف میں انصاف کر گئے کہ :

بعد المائتین ظھر بینھم التمذھب للمجتھدین یعنی دو صدی کے بعد خاص ایک مجتہد کے مذہب کا بأعیانھم وقل من کان لا یعتمد علی مذھب پابند بننا اہل اسلام میں ظاہر ہوا کہ کم ہی کوئی مجتھد بعینہ وکان ھذا ھو الواجب في ذلك شخص تھا جو ایک امام معین پر اعتماد نہ کرتا ہو اور الزمان 2- یہی واجب تھا اس زمانے میں۔

قولہ : اور جو بات امور دین میں بعد قرونِ ثلاثہ کے ایجاد ہوئی بالاتفاق بدعت ہے وکل بدعة ضلالة۔

ضرب ۴۲۱: جیسی تمہاری غیر مقلدی کہ تین چھوڑ بارہویں قرن میں قرن الشیطان کے پیٹ سے نکلی،

ضرب ۴۲۲: شیر کے بن میں ڈکرانے والا بیل اپنی موت اپنے منہ مانگتا ہے، اللہ تعالیٰ کے لیے مکان ثابت کرنا بتا تو دے کہ قرونِ ثلاثہ میں کس نے مانا، تو تیرا قول بدتر از بول تیرے ہی منہ سے بدعت و ضلالت وفی النار اور تو بدعتی گمراہ مستحقِ نار ہے۔

ضرب ۴۲۳: اللہ عزوجل کے احاطہ ذاتیہ کا انکار قرونِ ثلاثہ میں کس نے کیا، یہ بھی تیری بدعت و

---

1 سنن ابی داؤد کتاب الطھارۃ باب المجدور یتیمم آفتاب عالم پریس لاہور ۱ / ۴۹ 2 رسالہ انصاف شاہ ولی اللہ باب حکایۃ حال الناس قبل المائۃ الرابعۃ الخ مکتبہ دار الشفقت استنبول ترکی ص ۱۹

is misguidance.

Strike 244: Limiting Divine attributes only to His all-encompassing Knowledge, which leads to the denial of the all-encompassing nature of His Power, His Hearing, His Sight, His Ownership, and His Creativity—who held such a view during the first three generations (Quroon-e-Thalatha)? This too is evidence of your deviance and religious corruption.

Strike 245: Claiming only three meanings for 'Istawa' and labeling any fourth as an innovation (bid'ah)—whose statement was this during the first three generations? This is also your misguidance and irreligiousness.

Strike 246: Restricting the validity of virtuous deeds (Fazail-e-A'mal) solely to Sahih Hadith—whose school of thought was this during the first three generations? This too is your innovative audacity and foul speech.

Strike 247: To interpret innovation (bid'ah) as anything that emerged in religious matters after the first three generations and to call it 'misguided innovation' by consensus is a slander against the blessed Ummah. The scholars of Ahl-us-Sunnah have already clarified this in their numerous works; detailing that discussion would result in a lengthy volume. Furthermore, how can a deficient-minded opponent be worthy of address? However, let the claimant show the consensus of the Ummah on his claim from a reliable and authoritative source; otherwise, let him suffer the consequences of his own ignorance and misguidance.

His Saying: The Mufti of Bareilly, who considers Taqlid (following a school of thought) a religious matter, has certainly become an innovator. According to his own decree, praying behind him has become 'Makruh-e-Tahrimi' (highly disliked), as is evident. Alas, this foolish friend has even made it impermissible to pray behind his own Imams (may Allah have mercy on them).

I am glad that you passed by, drawing your skirt away from rivals, Even though my handful of dust has been blown to the winds.

We seek refuge in Allah from his blunders.

I am happy that you passed by saving your hem from rivals, even if my handful of dust was destroyed. May Allah Almighty protect from his nonsensical talks. (T)

Strike 249:

When God intends to tear someone's veil of modesty, He inclines them towards slandering the pure ones.

(When Allah Almighty wants to expose someone's faults, He occupies them in slandering pure people. - T)

Muslims have seen whether the title 'innovator' (mubtadi') belongs, God forbid, to the scholars of Ahl-us-Sunnah, or to this irreligious misguided person who believes Allah is confined to a place (makani).

जिल्द 29 फ़तावा रज़विया

गुमराहियत है।

प्रहार 244: ईश्वरीय गुणों में केवल ज्ञान को सर्वव्यापक मानना, जिससे उसकी शक्ति, उसके सुनने, उसके देखने, उसके स्वामित्व और उसकी सृजनशीलता की व्यापकता का इनकार सिद्ध होता है, प्रथम तीन पीढ़ियों (क़ुरून-ए-सलासा) में इसका कायल कौन था? यह भी तुम्हारी गुमराहियत और बद-मज़हबी (धार्मिक भ्रष्टता) है।

प्रहार 245: 'इस्तवा' के वे तीन अर्थ कहना और उनके अलावा चौथे को बिदअत (नवाचार) बताना प्रथम तीन पीढ़ियों में किसका कथन था? यह भी तुम्हारी गुमराहियत और बद-दीनी (धर्महीनता) है।

प्रहार 246: नेक कर्मों की फ़ज़ीलत (महत्व) के प्रमाण को केवल सही हदीस तक सीमित कर देना प्रथम तीन पीढ़ियों में किसका मज़हब था? यह भी तुम्हारी बिदअती दुस्साहस और बद-ज़बानी है।

प्रहार 247: बिदअत का यह अर्थ लेना कि जो बात दीनी मामलों में प्रथम तीन पीढ़ियों के बाद पैदा हुई और उसे सर्वसम्मति से 'बिदअत-ए-ज़लालत' कहना उम्मत-ए-मरहूमा पर इफ़्तरा (आरोप) है। सुन्नी विद्वान अपनी अनेक कृतियों में इसकी व्याख्या कर चुके हैं, यदि वह बहस लिखी जाए तो एक लंबा दफ्तर बन जाए। और फिर अल्पबुद्धि वाला विरोधी क्या संबोधन के योग्य है? लेकिन दावेदार अपने इस दावे पर उम्मत की सर्वसम्मति किसी विश्वसनीय स्रोत से दिखाए, वरना अपनी अज्ञानता और गुमराहियत का खामियाजा खुद भुगते।

उनका कथन: बरेली के मुफ्ती जो तक़लीद को दीनी मामला समझते हैं, निश्चित रूप से बिदअती हो गए और उनके फतवे के अनुसार उनके पीछे नमाज़ पढ़ना मकरूह-ए-तहरीमी हो गया जैसा कि स्पष्ट है। अफसोस कि इस नादान दोस्त ने अपने इमामों (अल्लाह उन पर रहम करे) के पीछे भी नमाज़ पढ़ने को नाजायज़ कर दिया।

मुझे खुशी है कि तुम प्रतिद्वंद्वियों से दामन बचाकर गुज़र गए, भले ही मेरी एक मुट्ठी खाक हवा में उड़ गई हो।

अल्लाह की पनाह उसकी गलतियों से।

मुझे खुशी है कि तुम प्रतिद्वंद्वियों से दामन बचाकर गुज़र गए भले ही मेरी एक मुट्ठी खाक बर्बाद हो गई, अल्लाह तआला उसकी बेहुदा बातों से बचाए। (त)

प्रहार 249:

जब खुदा किसी का पर्दा चाक करना चाहता है, तो उसका रुझान पवित्र लोगों पर ताना मारने की ओर कर देता है।

(जब अल्लाह तआला किसी का पर्दा फाड़ना चाहता है तो उसे नेक लोगों पर ताना मारने में व्यस्त कर देता है। - त)

मुसलमानों ने देख लिया कि शब्द 'मूबतदी' (बिदअती) के पात्र अल्लाह की पनाह सुन्नी विद्वान हैं या यह धर्महीन गुमराह व्यक्ति जो अल्लाह को किसी स्थान विशेष में (मकानी) मानता है।

पेज 198 ऑफ 750

ضلالت ہے۔

ضرب ۲۴۴: صفاتِ الٰہیہ میں صرف علم کو محیط ماننا جس سے اس کی قدرت، اس کے سمع اس کی بصر، اس کی مالکیت، اس کی خالقیت کے احاطے کا انکار ثابت ہوتا ہے، قرونِ ثلثہ میں کون اس کا قائل تھا، یہ بھی تیری گمراہی و بد مذہبی ہے۔

ضرب ۲۴۵: استواء کے وہ تین معنی کہنا اور ان کے سوا چوتھے کو بدعت بتانا قرونِ ثلثہ میں کس کا قول تھا۔ یہ بھی تیری ضلالت و بد دینی ہے۔

ضرب ۲۴۶: فضائلِ اعمال کے ثبوت کو حدیث صحیح میں منحصر کر دینا قرونِ ثلثہ میں کس کا مذہب تھا، یہ بھی تیری بدعت جسارت و بد زبانی ہے۔

ضرب ۲۴۷: بدعت کے یہ معنی لینا کہ جو بات امورِ دین میں بعد قرونِ ثلثہ کے حادث ہوئی اور اسے بالاتفاق بدعتِ ضلالت کہنا اُمتِ مرحومہ پر افتراء ہے، اس کی تحقیق علماء اہلسنت اپنی تصانیف کثیرہ میں فرما چکے، وہ بحث لکھے تو دفتر طویل ہو، اور پھر مخاطب ناقص العقل کیا قابلِ خطاب، مگر مدعی اپنے اس دعویٰ اطلاق پر امت کا اتفاق مسند معتمد سے دکھائے ورنہ اپنی جہالت و ضلالت کا آپ سر کھائے۔

قولہ: مفتی بریلی جو تقلید کو امر دینی سمجھتا ہے یقینی مبتدع ہوا اور اس کے فتوے کے مطابق اس کے پیچھے نماز پڑھنا مکروہ تحریمی ہوا کما ھو ظاہر افسوس کہ اس نادان دوست نے اپنے ائمہ رحمہم اللہ تعالیٰ کے پیچھے بھی نماز پڑھنے کو ناجائز کر دیا۔

شادم کہ از رقیباں دامن کشاں گزشتی گومشت خاک ماہم بر باد رفتہ باشد

نعوذ باللہ من ھفواتہ۔

مجھے خوشی ہے کہ تم رقیبوں سے دامن بچا کر گزر گئے اگرچہ میری مشتِ خاک بھی برباد ہوگئی، اللہ تعالیٰ اس کی بے ہودہ باتوں سے بچائے۔ (ت)

ضرب ۲۴۹:۔

چوں خدا خواھد کہ پردہ کس درد میلش اندر طعنہ پاکاں زند

(جب اللہ تعالیٰ کسی کا پردہ چاک کرنا چاہتا ہے تو پاک لوگوں پر طعنہ میں اسے مشغول کر دیتا ہے۔ ت)

مسلمانوں نے دیکھ لیا کہ لفظ مبتدع کے مستحق معاذ اللہ علمائے اہلسنت ہیں یا یہ بد دین گمراہ کہ اللہ کو مکانی مانتا

Fatawa Razawiyya Volume 29

He does not consider His physical existence as encompassing His power, hearing, sight, creativity, ownership, etc. He considers himself a rival to the Imams of religion by his own admission. May Allah protect us, are they innovators or that old leader of the new branch of Wahhabism, the slain Sheikh Ismail, the forsaken one, against whose blasphemies the blessed treatise 'Al-Kawakib al-Shahabiya 'ala Kufriyat Abi al-Wahhabiyya' was authored? Scholars of the Arab and non-Arab world declared his misguidance; in fact, the scholars of the two holy sanctuaries issued fatwas of disbelief against him. The point here is to show that if one who considers Taqlid (following a school of law) a religious matter becomes an innovator, God forbid, then what about the reports of Shah Waliullah, who considered not just general Taqlid but specifically individual Taqlid (Taqlid Shakhsi) obligatory after two centuries, whose text has just been mentioned?

Point 250: And what will be the ruling regarding the honorable Mujaddid-like personage who considers not just general Taqlid but specifically individual Taqlid so strictly necessary and a most important religious matter that they consider abandoning it as atheism and irreligion? The text was mentioned above. And listen, they do not listen to authentic and widespread Hadiths over a jurisprudential report. Even when a report itself is contradictory, and what a contradiction! Even the fatwa of their own Imams is different in Imam Muhammad's book, contrary to itself. And according to the Hadiths, their own and Hazrat Imam Azam's (may Allah be pleased with him) mentioned school is that the finger should be pointed during Tashahhud, and the Imams of Fatwa gave it too, but they say it is not permissible to act upon Hadiths simply because this narration is not famous from our Imam. What can be a greater understanding of Taqlid, and that too individual, as a religious necessity? In Maktubat Volume 1, Letter 312, he says:

Persian Text	**Urdu Translation**
O master, many Prophetic Hadiths (peace and blessings be upon him) have been reported regarding the permissibility of pointing the index finger, and some subtle jurisprudential narrations have also come regarding this. What Imam Muhammad said was:	O our master! Numerous Hadiths have been reported regarding pointing with the index finger during Tashahhud, and some jurisprudential narrations from certain Hanafi scholars have also come down in this regard. And what Imam Muhammad (may Allah have mercy on him) said was

Persian Text

'The Messenger of Allah (peace and blessings be upon him) used to point, and we do as the Prophet (peace and blessings be upon him) did.' Then he said: 'This is my view and the view of Abu Hanifa (may Allah be pleased with them both).' It is from the rare narrations; it does not befit us followers to dare to point by acting upon the requirements of Hadiths.

Page 199 of 750

Urdu Translation

that the Messenger of Allah (peace and blessings be upon him) used to point and we will do what the Holy Prophet (peace and blessings be upon him) did. Then he said: 'This is my view and the view of Imam Abu Hanifa (may Allah be pleased with him).' Since these are from the rare (Nadir) reports, we followers should not act directly upon the Hadith to dare making the gesture.

वह अपनी शारीरिक सत्ता को उसकी शक्ति, श्रवण, दृष्टि, सृजनशीलता, स्वामित्व आदि को व्यापक नहीं समझता। वह धर्म के इमामों से अपने स्वीकार के अनुसार प्रतिस्पर्धा रखता है। अल्लाह हमें बचाए, क्या वे नवाचारी (बिदती) हैं या वहाबियत की नई शाखा के उस पुराने नेता, मारे गए शेख इस्माइल, जो त्यागा हुआ है, जिसके कुफ़्र (ईश-निंदा) के खिलाफ मुबारक ग्रंथ 'अल-कवाकिब अल-शहाबिया अला कुफ्रियत अबी अल-वहाबिया' लिखा गया था? अरब और गैर-अरब दुनिया के विद्वानों ने उसकी गुमराह होने की घोषणा की; वास्तव में, दो पवित्र हरमों के विद्वानों ने उसके खिलाफ कुफ़्र के फतवे जारी किए। यहाँ यह दिखाना है कि यदि कोई व्यक्ति तक़लीद (एक कानूनी विचारधारा का अनुसरण) को धार्मिक मामला मानता है, तो वह (अल्लाह न करे) नवाचारी हो जाता है, तो फिर शाह वलीउल्लाह की खबरों के बारे में क्या कहा जाए, जिन्होंने दो शताब्दियों के बाद न केवल सामान्य तक़लीद बल्कि विशेष रूप से व्यक्तिगत तक़लीद (तक़लीद शख़्सी) को अनिवार्य माना, जिसका पाठ अभी ऊपर गुज़रा है?

बिंदु 250: और उस मुजद्दिद जैसी सम्मानित हस्ती के बारे में क्या फैसला होगा जो न केवल सामान्य तक़लीद बल्कि विशेष रूप से व्यक्तिगत तक़लीद को इतना कड़ाई से आवश्यक और सबसे महत्वपूर्ण धार्मिक मामला मानते हैं कि वे इसे छोड़ने को नास्तिकता और अधर्म मानते हैं? पाठ ऊपर गुज़र चुका है। और सुनिए, वे किसी न्यायशास्त्रीय रिपोर्ट के सामने सही और व्यापक हदीसों को नहीं सुनते। और रिपोर्ट भी ऐसी कि खुद विरोधाभासी है, और विरोधाभास भी कैसा! यहाँ तक कि उनके अपने इमामों का फतवा भी इमाम मुहम्मद की किताब में इसके खिलाफ अलग है। और हदीसों के अनुसार उनका अपना और हज़रत इमाम आज़म (रज़ियल्लाहु अन्हु) का उल्लेखित पंथ यह है कि तशहुद में उंगली से इशारा किया जाना चाहिए, और फतवे के इमामों ने भी इसे दिया, लेकिन वे कहते हैं कि हदीसों पर अमल करना जायज़ नहीं है सिर्फ इसलिए कि यह रिवायत हमारे इमाम से प्रसिद्ध नहीं है। तक़लीद, और वह भी व्यक्तिगत को धार्मिक आवश्यकता के रूप में समझने का इससे बड़ा उदाहरण और क्या हो सकता है? मक्तुबात जिल्द अव्वल, मक्तूब 312 में फरमाते हैं:

फ़ारसी पाठ	**उर्दू अनुवाद**
मखदूमा, सुन्नत की हदीसें (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) शहादत की उंगली के इशारे की	ऐ हमारे मखदूम! तशहुद में शहादत की उंगली से इशारा करने की बहुत सी हदीसें आई हैं और

फ़ारसी पाठ

अनुमति के बारे में बहुत आई हैं और कुछ सूक्ष्म न्यायशास्त्रीय रिवायतें भी इस बारे में आई हैं। और जो इमाम मुहम्मद ने कहा: 'रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) इशारा करते थे और हम वैसा ही करते हैं जैसा नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने किया।' फिर उन्होंने कहा: 'यह मेरा और अबू हनीफ़ा (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) का कथन है।' यह दुर्लभ रिवायतों में से है; हम तक़लीद करने वालों के लिए यह उचित नहीं है कि हदीसों की आवश्यकताओं पर अमल करते हुए इशारा करने का साहस करें।

उर्दू अनुवाद

इस बारे में कुछ हनफ़ी हज़रात की न्यायशास्त्रीय रिवायतें भी आई हैं। और इमाम मुहम्मद (रहमतुल्लाहि अलैह) ने जो फरमाया कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) इशारा फरमाते थे और हम वही करेंगे जो नबी पाक (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) करते थे। फिर उन्होंने फरमाया कि मेरा और इमाम अबू हनीफा (रज़ियल्लाहु अन्हु) का यही कहना है। चूंकि ये दुर्लभ (नादिर) रिवायतों में से हैं, इसलिए हम तक़लीद करने वालों को सीधे हदीस पर अमल करके इशारा करने का साहस नहीं करना चाहिए।

جسمانی جانتا اس کی قدرت و سمع و بصر و خالقیت و مالکیت وغیرہ کو محیط نہیں سمجھتا ائمہ دین سے باقرار خود رقابت رکھتا ہے عیاذاً باللہ وہ مبتدع ہیں یا اس وہابیہ کے نئے پٹھے کا پرانا گرو گھنٹال شیخ مقتول اسمعیل مخذول جس کے کفریات میں رسالہ مبارکہ الکواکب الشھابیۃ علی کفریات ابی الوھابیۃ، تصنیف ہوا اور علمائے عرب و عجم نے اس کے ضلال بلکہ علمائے حرمین طیبین نے اس کے کفر پر فتوٰی دیا، یہاں اسے یہ دکھانا ہے کہ جب تقلید کو امر دینی سمجھنے والا معاذ اللہ مبتدع ہوا تو اب شاہ ولی اللہ کی خبریں کہیے جو نہ مطلق تقلید بلکہ دو صدی کے بعد خاص تقلید شخصی کو واجب کہتے ہیں جس کی عبارت ابھی گزری۔

ضرب ۲۵۰: اور جناب مجددیت مآب کی نسبت کیا حکم ہوگا جو تقلید نہ مطلق تقلید بلکہ خاص تقلید شخصی کو ایسا سخت ضروری و مہم تر امر عظیم دینی مانتے ہیں کہ اس کے ترک کو الحاد و بے دینی جانتے ہیں، عبارت اوپر گزری، اور سنئے کہ وہ صحیح و مستفیض حدیثوں کو فقہی روایت کے مقابل نہیں سنتے اور روایت بھی کسی کہ خود مختلف آئی اور اختلاف بھی کیسا کہ اپنے ہی ائمہ کا فتوٰی تک مختلف امام محمد کی کتاب میں خود اس کے خلاف، اور حدیثوں کے مطابق اپنا اور حضرت امام اعظم رضی اللہ تعالٰی عنہ کا مذہب مذکور کہ التحیات میں اشارہ کیا جائے اور اس پر بھی ائمہ فتوٰی نے دیا مگر صرف اس بنا پر کہ یہ روایت ہمارے امام سے مشہور نہیں احادیث پر عمل کرنا جائز نہیں بتاتے، اس سے بڑھ کر تقلید اور وہ بھی خاص شخصی کو دینی ضروری سمجھنا اور کیا ہو سکتا ہے، مکتوبات جلد اول مکتوب ۳۱۲ میں فرماتے ہیں :

متنِ فارسی

مخدوما احادیث نبوی علیٰ مصدرہا الصلوٰۃ والسلام در باب جواز اشارت سبابہ بسیار وارد شدہ اند و بعضے از روایات فقہیہ خفیہ نیز دریں باب آمدہ وانچہ امام محمد گفتہ کان رسول اللہ صلی اللہ اللہ تعالی علیہ وسلم یشیر ونصنع کما یصنع النبی صلی اللہ تعالی علیہ وسلم ثم قال ھذا قولی و قول ابی حنیفۃ رضی اللہ تعالی عنھما از روایات نوادر ست ما مقلد ان را نمی رسد کہ بمقتضائے احادیث عمل نمودہ جرات در اشارت نمائیم۔

اردو ترجمہ

اے ہمارے مخدوم ! تشہد میں شہادت کی انگلی سے اشارہ کی کثیر احادیث وارد ہیں اور بعض حنفی حضرات کی اس بارے میں روایات فقہیہ بھی آئی ہیں، اور امام محمد رحمتہ اللہ تعالیٰ علیہ نے جو فرمایا کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم اشارہ فرماتے تھے اور ہم وہ کریں گے جو نبی پاک صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کرتے تھے۔ پھر انہوں نے فرمایا میرا اور امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا یہی قول ہے، تو یہ نادر روایات میں سے ہے، تو ہم مقلد لوگوں کو براہ راست حدیث پر عمل نہیں کرنا چاہیے، کہ اشارہ کرنے کی جرات کریں،

Fatawa Rizvia Volume 29

If it is said that Hanafite scholars have also given fatwas on the permissibility of gesturing, I will say that the preference lies in its non-permissibility. [Summarized]	**If it is said that Hanafite scholars have also given fatwas on the permissibility of gesturing, I will say that the preference lies in its non-permissibility. [Summarized] (T)**

Now talk about the innovator's news and remember the previous discourse as well, that even a single word spoken against them involved Shah Waliullah and Shah Abdul Aziz too. And without delay, let all three go, those beloved of all, Ismail who went and because of him, the weevils in the wheat, and all your groups reached the depth of hellish innovation and misguidance. Alas, that this unfortunate elephant harmed its own army, this immature Rawalpindi resident harmed his own table-cloth and feast. He considered Ismail and the entire rejected and disgraced group as innovative, misguiding, and hellish, and made it permissible to pray behind them.

Shadam ki az raqiban daman kashan guzashti / Go jaye zikr ma hum aan tang dil nadarad I am happy that you passed by, avoiding the rivals; although even on our mention, they are not narrow-hearted. (T)

We seek refuge in Allah from his lapses and the insinuations of Ismail and his progeny. O my Lord, I seek refuge in You from the promptings of the devils, and I seek refuge in You lest they should come near me. And our final call is that all praise is due to Allah, the Lord of the worlds, and peace and blessings be upon the leader of the messengers, our master Muhammad, and upon all his family and companions. Ameen!	**We seek refuge in Allah the Almighty from his nonsense and Ismail's whisperings and shameful matters. O my Lord, I seek refuge in You from the promptings of Satan, and I seek refuge in You from the presence of devils. And our final word is that all praise is for Allah the Almighty, the Lord of the worlds, and may blessings and peace be upon the leader of the messengers, our master Muhammad, and upon all his family and companions, Ameen. (T)**

Praise be to Allah that this brief summary response was completed on the 15th of the month of light and joy, the blessed month of Rabi' al-Awwal 1318 Hijri, despite the abundance of work and the rush of teaching, instruction, and the blessed gatherings of the holy Mawlid, in the few sessions of free time. And in terms of its historical name: 'Qawari' al-Qahhar 'ala al-Mujassimah al-Fujjar' (1318 AH).

1. Maktubat Imam Rabbani Mujaddid Alf Thani, Letter 312, published by Naval Kishore Lucknow, 1/448 to 451.

अगर कहा जाए कि हनफ़ी उलमा ने भी इशारे की अनुमति पर फ़तवा दिया है, तो मैं कहूँगा कि प्राथमिकता अनुमति न होने को है। (संक्षिप्त)

अगर कहा जाए कि हनफ़ी उलमा ने भी इशारे की अनुमति पर फ़तवा दिया है, तो मैं कहूँगा कि प्राथमिकता अनुमति न होने को है। (संक्षिप्त) (त)

अब नवाचारी (बिदअती) की खबरें सुनाएँ और पिछली चर्चा को भी याद रखें कि उनके सम्मान में कोई शब्द कहा गया और साथ ही शाह वलीउल्लाह और शाह अब्दुल अज़ीज़ साहब भी गए। बिना देर किए उन तीनों को जाने दें, वे सब में प्रिय इस्माइल जो गए और उनके सदके गेहूं के साथ घुन भी पिस गया, और तुम्हारे सभी गुट नरक के नवाचार और पथभ्रष्टता की गहराई में पहुँच गए। अफ़सोस कि इस अभागे हाथी ने अपनी ही सेना का नुकसान किया, इस कच्ची पिंडी वाले ने अपनी ही दस्तरख़्वान का नुकसान किया। उसने इस्माइल और पूरे तिरस्कृत और अपमानित गुट को नवाचारी, पथभ्रष्ट और नरकी मान लिया और उनके पीछे नमाज़ पढ़ने को जायज़ कर दिया।

शादम कि अज़ रक़ीबां दामन कशां गुज़श्ती / गो जाये ज़िक्र मा हम आं तंग दिल नदारद मुझे खुशी है कि तुम प्रतिद्वंद्वियों से दामन बचाकर गुज़र गए, हालांकि हमारे ज़िक्र पर भी वे तंगदिल नहीं होते। (त)

हम अल्लाह तआला की शरण चाहते हैं उसकी गलतियों से और इस्माइल की वसवसों और शर्मनाक बातों से। ऐ मेरे रब, मैं शैतानों के वसवसों से तेरी पनाह चाहता हूँ, और मैं शैतानों की उपस्थिति से तेरी पनाह चाहता हूँ। और हमारी आखिरी बात यह है कि तमाम प्रशंसा अल्लाह तआला के लिए है जो तमाम जहानों का रब है। और दुरूद और सलाम हो रसूलों के सरदार हमारे आका मुहम्मद पर और उनकी आल और असहाब सब पर, आमीन!

हम अल्लाह तआला की पनाह चाहते हैं उसके लघ्वियात (बकवास) और इस्माइल की वसवसा अंगेज़ियों और शर्मनाक बातों से। ऐ मेरे रब, मैं तेरी पनाह चाहता हूँ शैतान की वसवसा अंगेज़ियों से, और तेरी पनाह चाहता हूँ शैतानों की हाज़िरी से, और हमारी आख़िरी बात यह है तमाम हम्दें अल्लाह तआला रब्बुल आलमीन के लिए हैं, और सलात-ओ-सलाम हो रसूलो के सरदार हमारे आक़ा मुहम्मद और उनकी आल-ओ-असहाब सब पर, आमीन। (त)

अल्लाह का शुक्र है कि यह संक्षिप्त सारांश उत्तर 15 रबी-उल-अव्वल 1318 हिजरी को कार्य की अधिकता और शिक्षण, प्रशिक्षण और मीलाद की मुबारक महफ़िलों के बावजूद फ़ुरसत के कुछ क्षणों में पूरा हुआ। और तारीख़ी एतबार से इसका नाम है: 'क़वारिअ अल-क़ह्हार अलल-मुजस्सिमह अल-फ़ुज्जार' (1318 हिजरी)।

---

1. मक्तुबात इमाम रब्बानी मुजद्दिद अल्फ़ सानी, मक्तुब 312, नवल किशोर लखनऊ द्वारा प्रकाशित, 1/448 से 451।

اگر گویند کہ علمائے حنفیہ بر جواز اشارت اگر کہا جائے کہ حنفی علماء نے اشارہ کے جواز پر

نیز فتوی دادہ اند گویم ترجیح عدم جواز فتوے دیا ہے تو میں کہوں گا کہ ترجیح عدم جواز

راست اہ ملتقطا۔ 1 کو ہے اھ ملتقطا (ت)

اب مبتدع کی کہ خبریں کہیے اور تقریر سابق بھی یاد رکھیے کہ ان کی شان میں کوئی کلمہ کہا اور ساتھ لگے شاہ ولی اللہ شاہ عبدالعزیز صاحب بھی گئے اور بلا پس ہو تینوں کو جانے دو وہ سب میں چہیتے اسماعیل جو گئے اور ان کے صدقے گیہوں کے گھن، اور تمہارے سب طائفے والے جہنم بدعت وضلالت کے قعر میں پہنچے، افسوس کہ اس نامراد ہاتھی نے اپنی ہی فوج کا زیاں کیا اس کچی پنڈی نے اپنے سفرہ و دستار خوان کا نقصان کیا، اسماعیل اور سارے طائفہ مردود و ذلیل کو بدعتی گمراہ جہنمی مان لیا ان کے پیچھے نماز پڑھنے کو جائز کر دیا۔

شادم کہ از رقیباں دامن کشاں گزشتی / گو جائے ذکر ماہم آں تنگ دل ندارد مجھے خوشی ہے کہ تم رقیبوں سے دامن بچا کر گزر گئے، اگرچہ ہمارے ذکر پر بھی وہ تنگ دل نہیں ہوتے۔ (ت)

نعوذ باللہ من ھفواتہ وھمزات اسمعیل وبناتہ رب انی اعوذبك من ھمزات الشیطین، واعوذبك ان یحضرون ٥ واخر دعونا ان الحمد للہ رب العلمین و الصلوۃ والسلام علی سید المرسلین سیدنا محمد وا لہ واصحابہ اجمعین امین!

ہم اللہ تعالٰی کی پناہ چاہتے ہیں اس کے لغویات اور اسماعیل کی وسوسہ انگیز یوں اور باعث شرم باتوں سے۔ اے میرے رب میں تیری پناہ چاہتا ہوں شیطان کی وسوسہ انگیزیوں سے، اور تیری پناہ چاہتا ہوں شیطانوں کی حاضری سے ، اور ہماری آخری بات یہ ہے تمام حمدیں اللہ تعالٰی رب العالمین کے لیے ہیں، اور صلوٰۃ وسلام ہو، رسولوں کے سردار ہمارے آقا محمد اور انکی آل واصحاب سب پر، آمین (ت)

الحمد للہ کہ یہ مختصر اجمالی جواب پنزدھم شہر النور والسرور ماہ مبارک ربیع الاول ۱۳۱۸ھ ہجری قدسیہ علی صاحبھا الصلوۃ والتحیہ کو باوصف کثرتِ کار و ہجوم اشغال تعلیم و تدریس و مجالس مبارکہ میلاد سراپا تقدیس وقتِ فرصت کے قلیل جلسوں میں تمام اور بلحاظ تاریخ قوارع القہار علی المجسمۃ الفجار ۱۳۱۸ھ

---

1 مکتوبات امام ربانی مجدد الف ثانی مکتوب ۳۱۲ مطبوعہ نولکشور لکھنو ۱/ ۴۴۸ تا ۴۵۱

Fatawa Razawiyya Volume 29

The name was given with the commitment that in the issue of 'Makan' (space/place), I will only present excerpts from books authored by that person himself. The count reached two hundred and fifty citations, and even in his authoritative books, Tafsir Ibn Kathir was not available, otherwise it was possible that the count would have increased further. Similarly, Kitab al-'Ulu, Mudtarib Minhafat, and others were not nearby. If the pen had not been restricted by the opponent in such a narrow space, the abundance of 'hits' (arguments) would have shown its charm. Still, on these few lines, two hundred and fifty is not a small number. Success is from Allah, and Allah, the Exalted and Sublime, is the Guide to the straight path. May Allah's blessings and peace be upon the Noble Prophet Muhammad and his family. Amen.

Problem 52: From the city's Madrasa Ahle Sunnat wa Jama'at Manzar-e-Islam, requested by Maulvi Akbar Hasan Khan Rampuri, student of the aforementioned madrasa, 16 Jumadi al-Ula 1326 AH.

The lowliest servant submits to the servants of his presence that among the English (Westerners), it is proven through rational arguments that the sky is not a physical thing, and what is perceived as a blue object is just space. The difference between night and day is all due to the earth's rotation. There is no movement of stars either; the gravitational pull of each star holds the other like a magnet. It is hoped that some strong rational and traditional proof for the existence of the sky will be provided.

The Answer: What more proof is needed for the existence of the sky than the heavenly books? All heavenly books are filled with the affirmation of the existence of the sky. In the Great Quran, there are hundreds of verses describing how the sky was initially smoke, a closed mass, then the Lord of Honor separated and spread it, made it into seven layers, made it a roof, built it extremely strong and firm, made it stand without pillars, how Allah Almighty created it and the earth in six days, its splitting on the Day of Judgment, its being struck against the earth once, then the re-creation of it and the earth, etc. These are clear and bright instructions that no one can deny except one who denies Allah Himself. Furthermore, it is explicitly mentioned in various places in the Great Quran that what we see is this very sky. This is a refutation of the misguided philosophers who admit the existence of the heavens but claim they cannot be seen, and that what appears to us is merely the 'sphere of vapor' (atmosphere). To refute all these Christians, Greeks, and falsehood-mongers, one noble verse is sufficient:

"Does He Who created not know? And He is the Subtle One." | Does He not know who He created, and He is the Pure/Kind.

यह नाम इस प्रतिबद्धता के साथ रखा गया कि स्थान (मक़ान) के मसले में केवल उसी व्यक्ति की प्रामाणिक पुस्तकों के उद्धरण प्रस्तुत करूँगा। संख्या ढाई सौ तक पहुँच गई और उनकी विश्वसनीय पुस्तकों में तफ़सीर इब्न कसीर भी उपलब्ध नहीं थी, अन्यथा संभव था कि यह संख्या और बढ़ती। इसी प्रकार किताबुल 'उुलू, मुज़्तरिब मुन्हाफ़त और इसके अतिरिक्त अन्य पुस्तकें भी पास नहीं थीं। यदि लेखनी को इस विरोधी द्वारा इतने संकुचित स्थान में सीमित न किया जाता, तो प्रहारों की अधिकता अपना आनंद दिखाती। फिर भी, इन गिनी-चुनी पंक्तियों पर ढाई सौ क्या कम हैं? और सफलता अल्लाह की ओर से है, और अल्लाह सुब्हानहू व तआला ही सीधे मार्ग की ओर मार्गदर्शन करने वाला है। और अल्लाह तआला की कृपा और शांति नबी-ए-करीम मुहम्मद और उनके आल (वंश) पर हो। आमीन।

मसला ५२: शहर मदरसा अहले सुन्नत व जमाअत मंज़रे इस्लाम से, प्रार्थी मौलवी अकबर हसन खान रामपुरी, विद्यार्थी मदरसा-ए-मज़कूर, १६ जमादी-उल-ऊला १३२६ हिजरी।

निकृष्ट सेवक हुज़ूर के ख़ादिमों की सेवा में निवेदन करता है कि अंग्रेज़ों के यहाँ तर्कसंगत प्रमाणों से यह सिद्ध है कि आकाश कोई वस्तु नहीं है और यह जो नीलापन महसूस होता है, वह केवल अंतरिक्ष (स्पेस) है। रात और दिन का अंतर पृथ्वी की गति के कारण है। न ही सितारों की अपनी कोई गति है, बल्कि प्रत्येक तारे का गुरुत्वाकर्षण दूसरे को थामे हुए है जैसे चुंबक। आशा है कि आकाश के अस्तित्व पर कोई प्रबल तर्कसंगत और पारंपरिक (नक़्ली) प्रमाण प्रदान किया जाएगा।

उत्तर: आकाश के अस्तित्व पर आसमानी किताबों से बढ़कर और क्या प्रमाण चाहिए? सभी आसमानी किताबें आकाश के अस्तित्व की पुष्टि से भरी हुई हैं। क़ुरआन अज़ीम में तो सैकड़ों आयतें हैं जिनमें आकाश का प्रारंभ में धुआँ होना, एक जुड़ी हुई चीज़ होना, फिर रब्बुल इज़्ज़त का उसे अलग-अलग करना और फैलाना, सात परतों में बनाना, उसका छत होना, उसका अत्यंत मज़बूत और सुदृढ़ होना, उसका बिना स्तंभों के खड़ा होना, अल्लाह तआला का उसे और पृथ्वी को छह दिनों में बनाना, क़ियामत के दिन उसका फट जाना, पृथ्वी के साथ एक बार टकरा दिया जाना, फिर उसका और पृथ्वी का दोबारा पैदा होना आदि स्पष्ट और उज्ज्वल निर्देश हैं, जिनका इनकार वही कर सकता है जो अल्लाह का ही मुनकिर (इनकारी) हो। इसके अतिरिक्त क़ुरआन अज़ीम में जगह-जगह यह भी स्पष्ट है कि जो हमें दिखाई दे रहा है, यही आकाश है। इसमें उन गुमराह दार्शनिकों का खंडन

है जो आकाशों का अस्तित्व तो मानते हैं परंतु कहते हैं कि वे देखे नहीं जा सकते, और यह जो हमें दिखाई देता है वह केवल वाष्प का गोला (वायुमंडल) है। इन ईसाइयों और यूनानियों, इन सभी मिथ्यावादियों के खंडन में एक आयत-ए-करीमा पर्याप्त है कि:

"क्या वह नहीं जानता जिसने पैदा किया? और वही बारीकबीन (सूक्ष्मदर्शी) है।" | क्या वह न जाने जिसने बनाया और वही है पाक।

पृष्ठ २०१/७५०

نام ہوا اس التزام کے ساتھ کہ مسئلہ مکان میں صرف اسی شخص کی سند اگنائی ہوئی کتابوں کی عبارتیں پیش کروں گا، عدد ڈھائی سو ضرب تک پہنچا اور اس کی مستند کتابوں میں بھی تفسیر ابن کثیر موجود نہ تھی ورنہ ممکن تھا کہ عدد اور بڑھتا، یونہی کتاب العلو مضطرب منہافت اور اس کے علاوہ پاس بھی نہ تھی اور اگر قلم کو اس مخالف کی اس قدر جائے تنگ میں محصور نہ کیا جاتا تو ضربوں کی کثرت لطف دکھاتی، پھر بھی ان معدود سطور پر ڈھائی سو کیا کم ہیں۔ وباللہ التوفیق، واللہ سبحانہ وتعالی الھادی الی سواء الطریق وصلی اللہ تعالی علی النبی الکریم محمد وآلہ وبارک وسلم امین۔

مسئلہ ۵۲: از شہر مدرسہ اہلسنت و جماعت منظر اسلام مسئولہ مولوی اکبر حسن خان رامپوری طالب علم مدرسہ مذکور ۱۶ جمادی الاولی ۱۳۲۶ھ

کمترین خدمت خدامان حضرت میں عارض ہے انگریزوں کے یہاں بدلائل عقلیہ ثابت ہے کہ آسمان کوئی چیز نہیں اور یہ جو نیلگوں شے محسوس ہوتی ہے وہ فضا ہے، اور اختلاف لیل و نہار سب حرکت ارض ہے۔ اور نہ ستاروں کی حرکت ہے، ہر ستارہ کی کشش دوسرے کو روکے ہوئے ہے جس طرح مقناطیس امید کہ کوئی قوی دلیل عقلی و نقلی وجودِ آسمان پر افادہ فرمائی جائے۔

الجواب: وجودِ آسمان پر آسمانی کتابوں سے زیادہ کیا دلیل درکار ہے تمام آسمانی کتابیں اثباتِ وجودِ آسمان سے مالامال ہیں، قرآن عظیم میں تو صدہا آیتیں ہیں جن میں آسمان کا ابتداء میں دھواں ہونا بستہ چیز پھر رب العزت کا اسے جدا جدا کرنا پھیلانا، سات پر بنانا، اس کا چھت ہونا اس کا نہایت مضبوط بنائے مستحکم ہونا، اس کا بے ستون قائم ہونا، اللہ تعالی کا اسے اور زمین کو چھ دن میں

بنانا، روزِ قیامت اس کا شق ہونا، اٹھا کر زمین کے ساتھ ایک بار ٹکرا دیا جانا، پھر اس کا اور زمین کا دوبارہ پیدا ہونا وغیرہ وغیرہ صاف روشن ارشاد ہیں کہ ان کا انکار نہیں کر سکتا مگر وہ جو اللہ ہی کا منکر ہے، نیز قرآن عظیم میں جابجا یہ بھی تصریح ہے کہ جو ہم کو نظر آرہا ہے یہی آسمان ہے تو اس میں گمراہ فلسفیوں کا رد ہے جو آسمانوں کا وجود تو مانتے ہیں مگر کہتے ہیں کہ وہ نظر نہیں آسکتے یہ جو ہمیں دکھائی دیتا ہے کہ کرہ بخار ہے۔ ان نصرانیوں اور ان یونانیوں سب بطلانیوں کے رد میں ایک آیہ کریمہ کافی ہے کہ:

"اَلَا یَعْلَمُ مَنْ خَلَقَ ط وَھُوَ اللَّطِیْفُ" | کیا وہ نہ جانے جس نے بنایا اور وہی ہے پاک

Fatawa Razawiyya Volume 29

AL-KHABĪR[1] - The All-Aware.

What the Creator says is not accepted, but the conjectures of those whose hearts are blind and whose understanding is inverted are listened to; what could be more foolish than this? The Bible currently held by Christians begins with the first chapter of the first book, describing the creation of the heavens and the earth. As for rational proof, a little fairness is required. Does the existence of such a vast body, which millions of eyes see, require proof? Or is it for him who says it is absolute non-existence and all these are errors of the eyes, a complete deception, to prove its non-existence with definitive proof? In this way, a rational proof would have to be established for everything. What proof is there that the sun, which even Christians acknowledge, possesses existence in itself and is not an error of sight? In short, if security is removed even from sensory perceptions, nothing of religion or the world will remain, and the creed of the 'Inadiya' (sophists/skeptics) will prevail. There is no power or might except with Allah, the Most High, the Supreme. And Allah the Exalted knows best.

Problem 53: From Lahore, Haveli Mian Khan, near the house of Hakim Muhammad Anwar Sahib. Sent by Allah Diya, poet, 16 Jamadi-ul-Ula 1336 AH.

I am a person of the Hanafi school. In a gathering which included non-conformists (Ghair Muqallid), Mirzais, etc., I said that the noble person of the Messenger of Allah (may Allah's peace and blessings be upon him) with praised attributes is eternal and has no decline. Upon this, they called me a disbeliever (Kafir), polytheist (Mushrik), and irreligious. They also said that no scholar has ever written anything on this issue, therefore you are a liar. I request your holy presence to grant a fatwa regarding this. I inquired from some scholars in Lahore about this, and they said you are on the path of truth, and they gave me fatwas as well. Now it is my desire to collect and publish these fatwas because you are the skilled physician of our true group, and we are very proud and honored by your blessed personality.

The Answer: Undoubtedly, the person, attributes, virtues, and perfections of the Holy Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him) are never subject to decline; rather, they are always progressing. Allah the Exalted said:

"And surely the latter is better for you than the former."[2] - (T)

Here, no rational Muslim can mean that movement and transition are negated, nor would any Muslim deny it.

[1] Al-Quran Al-Karim 7/12 [2] Al-Quran Al-Karim 93/4

फतावा रज़विया खंड 29

अल-ख़बीर[1] - सर्वज्ञ।

बनाने वाला जो कह रहा है उसे तो नहीं माना जाता, और जिनके दिल अंधे हैं और समझ उल्टी है, उनकी अटकलों को सुना जाता है; इससे बड़ी मूर्खता और क्या हो सकती है? ईसाइयों के पास जो वर्तमान बाइबिल है, उसकी पहली किताब का पहला अध्याय आकाश और पृथ्वी के सृजन के वर्णन से ही शुरू होता है। जहाँ तक तार्किक प्रमाण की बात है, थोड़े न्याय की आवश्यकता है। क्या इतने विशाल शरीर का अस्तित्व, जिसे करोड़ों आँखें देख रही हैं, प्रमाण का मोहताज है? या जो कहता है कि यह पूर्णतः शून्य है और यह सब आँखों की गलती है, सरासर धोखा है, उसका कर्तव्य है कि वह ठोस प्रमाण से इसके अस्तित्वहीन होने को सिद्ध करे? इस तरह तो हर चीज़ पर तार्किक प्रमाण स्थापित करना होगा। सूर्य, जिसे ईसाई भी मानते हैं, इसका क्या प्रमाण है कि यह अपने आप में कोई अस्तित्व रखता है और दृष्टि की त्रुटि नहीं है? संक्षेप में, यदि इंद्रियजन्य बोधों से भी सुरक्षा हट जाए, तो दीन और दुनिया का कुछ भी शेष नहीं रहेगा, और 'इनादिया' (संशयवादी) का पंथ आ जाएगा। अल्लाह के सिवा न कोई शक्ति है और न कोई सामर्थ्य, जो सर्वोच्च और महान है। और अल्लाह बेहतर जानता है।

मसाला 53: लाहौर, हवेली मियां खान से, हकीम मोहम्मद अनवर साहब के घर के पास। प्रेषक: अल्लाह दिया, कवि, 16 जमादी-उल-उला 1336 हिजरी।

मैं एक हनफी विचारधारा का व्यक्ति हूँ। मैंने एक सभा में, जिसमें गैर-मुक़ल्लिद, मिर्ज़ाई आदि शामिल थे, कहा कि रसूल-ए-अकरम (उन पर अल्लाह की शांति और कृपा हो) का प्रशंसित गुणों वाला व्यक्तित्व शाश्वत है और इसका कोई पतन नहीं है। इस पर उन्होंने मुझे काफ़िर, मुशरिक और बेदीन कहा। यह भी कहा कि आज तक किसी विद्वान ने इस विषय पर कुछ नहीं लिखा है, इसलिए तुम झूठे हो। आपकी पवित्र सेवा में प्रार्थना है कि इसके संबंध में फतवा प्रदान करें। मैंने लाहौर के कुछ विद्वानों से इसके बारे में पूछा तो उन्होंने कहा कि तुम सत्य के मार्ग पर हो और उन्होंने मुझे फतवे भी दिए। अब मेरी इच्छा है कि मैं इन फतवों को इकट्ठा करके छपवा दूँ, क्योंकि आप हमारे सच्चे समूह के कुशल हकीम हैं और हमें आपके धन्य व्यक्तित्व पर बहुत गर्व है।

उत्तर: निःसंदेह, हुज़ूर अकरम (उन पर अल्लाह की शांति और कृपा हो) का व्यक्तित्व, गुण, गुण और पूर्णताएँ कभी पतन के अधीन नहीं होतीं; बल्कि, वे हमेशा प्रगति कर रही हैं। अल्लाह तआला ने फरमाया:

"और निश्चित रूप से आपके लिए बाद वाला (समय/अवस्था) पहले वाले से बेहतर है।"[2] - (त)

यहाँ किसी तर्कसंगत मुसलमान का यह अर्थ नहीं हो सकता कि गति और परिवर्तन का निषेध है, और न ही कोई मुसलमान इसका खंडन करेगा।

[1] अल-कुरान अल-करीम 7/12 [2] अल-कुरान अल-करीम 93/4

الْخَبِیْرُ 1- خبردار۔

بنانے والا جو فرما رہا ہے وہ تو نہ مانا جائے اور دل کے اندھے سمجھ کے اوندھے جو اٹکلیں دوڑاتے ہیں وہ سنی جائیں، اس سے بڑھ کر گدھا پن کیا ہو سکتا ہے، یہ بائبل جو اب نصاریٰ کے پاس ہے اس کی پہلی کتاب کا پہلا باب آسمان و زمین کے بیان پیدائش ہی سے شروع ہے رہی دلیل عقلی، ذرا انصاف درکار، اتنا بڑا جسم جسے کروڑوں آنکھیں دیکھ رہی ہیں اس کا وجود محتاج دلیل ہے یا جو کہے یہ معدوم محض یہ سب آنکھوں کی غلطی ہے یہ نری دھوکا کی ٹٹی ہے اس کے ذمے ہے کہ دلیل قطعی سے اس کا عدم ثابت کرے یوں تو ہر چیز پر دلیل عقلی قائم کرنی ہو گی آفتاب جسے نصاریٰ بھی مانتے ہیں کیا دلیل ہے کہ یہ فی نفسہ کوئی وجود رکھتا ہے اور نگاہ کی غلطی نہیں غرض محسوسات سے بھی امان اٹھ کر دین و دنیا کچھ قائم نہ رہیں گے عنادیہ کا مذہب آجائے گا۔ ولا حول ولا قوۃ الا باللہ العلی العظیم واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۵۳: از لاہور حویلی میاں خان نزد مکان حکیم محمد انور صاحب مرسلہ اللہ دیا شاعر ۱۶ جمادی الاولی ۱۳۳۶ھ

میں ایک حنفی المذہب شخص ہوں میں نے ایک مجمع میں جس میں غیر مقلد و مرزائی وغیرہ شامل تھے یہ کہا کہ رسول اکرم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی ذات ستودہ صفات لایزال ہے اور اس کو زوال نہیں جس پر انہوں نے مجھے کافر مشرک اور بے دین کہا یہ بھی کہا کہ کسی عالم نے آج تک اس مسئلہ پر کچھ نہیں لکھا اس واسطے تم جھوٹے ہو، آپ کی خدمت اقدس میں عرض ہے کہ اس کے متعلق فتوٰی عنایت فرمائیں میں نے لاہور کے چند علماؤں سے اس کے متعلق استفسار

کیا تو انہوں نے فرمایا کہ تم راستی پر ہو اور انہوں نے مجھے فتوٰی بھی دیئے۔ اب میری یہ آرزو ہے کہ میں ان فتوؤں کو جمع کر کے چھپوا دوں، چونکہ آپ ہماری جماعت حقہ کے حکیم حاذق ہیں اور ہمیں آپ کی ذات بابرکت پر بڑا فخر و ناز ہے۔

الجواب: بے شک حضور اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کی ذات و صفات و فضائل و کمالات کبھی زوال پذیر نہیں بلکہ ہمیشہ مترقی ہیں، قال اللہ تعالٰی۔

"وَلَلْآخِرَةُ خَيْرٌ لَّكَ مِنَ الْأُولَىٰ" 2- اور بے شک پچھلی تمہارے لیے پہلی سے بہتر ہے۔ (ت)

یہاں کسی عاقل مسلم کی یہ مراد نہیں ہو سکتی کہ حرکت و انتقال منتفی ہے، نہ کوئی مسلمان اس کی نفی کرے گا۔

1 القرآن الکریم ۷/ ۱۲ 2 القرآن الکریم ۹۳/ ۴

Fatawa Razawiya Volume 29

To fulfill the divine promise, a moment of death occurs for the Prophets (peace be upon them), and they are immediately granted true, eternal spiritual and physical life. This was not just for the Holy Prophet, but for him, it meant eternal life in Barzakh and a continuous increase in his holy virtues. Undoubtedly, after that fulfillment of the promise, eternal existence of the self is attained for all Prophets (peace be upon them). The Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) says:

1. "Prophets are alive in their graves and offer prayers."

And he (peace and blessings of Allah be upon him) says: 2. "Indeed, Allah has forbidden the earth to consume the bodies of Prophets. So, a Prophet of Allah is alive and provided with sustenance."

Despite the proximity of a correct meaning, to interpret the words of a Muslim with an ugly or even clearly blasphemous meaning is not the task of a Muslim. And Allah knows best.

Issue 52: From Radhanpur, Gujarat near Ahmedabad, sent by Hakim Muhammad Mian Sahib, 6 Jumada al-Ula 1336 AH. What do you say about 'Gyariween'? Does offering Fatiha on the day of Gyariween bring more reward than on other days? How is it to fix a day for the commemoration of the elders (saints)?

Answer: Fixing a day for the commemoration of the beloved ones of God is undoubtedly permissible. It is mentioned in the Hadith: 3. "The Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) used to visit the graves of the martyrs of Uhud at the turn of every year."

Shah Abdul Aziz Sahib considered this Hadith as an authority for the 'Urs of the Awliya' (saints), and Shah Waliullah Sahib said:

---

1. Sharh al-Sudur, Chapter on the states of the dead in their graves, etc., Khilafat Academy, Mingora, Swat, p. 87; Musnad Abi Ya'la, Hadith 3412, Mu'assasat al-Ulum al-Qur'an, Beirut, 3/379.
2. Sunan Ibn Majah, Chapters on Funerals, Chapter on his death, etc., H.M. Saeed Company, Karachi, p. 119.

3. Jami' al-Bayan (Tafsir Ibn Jarir), under Verse 13/24, Dar al-Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 13/170.

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

ईश्वरीय वादे की पुष्टि के लिए, नबियों (अलैहिमुस्सलाम) पर क्षण भर के लिए मृत्यु आती है और फिर तुरंत ही उन्हें वास्तविक, शाश्वत, आध्यात्मिक और शारीरिक जीवन प्रदान कर दिया जाता है। यह हुज़ूर के लिए केवल इतना ही नहीं, बल्कि इससे हुज़ूर के लिए बरज़ख में शाश्वत जीवन और उनके पवित्र गुणों में निरंतर वृद्धि मुराद है। निस्संदेह, उस वादे की पुष्टि के बाद, सभी नबियों (अलैहिमुस्सलाम) के लिए आत्म-अमरता प्राप्त है। नबी करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं:

1. "नबी अपनी कब्रों में जीवित हैं और नमाज़ पढ़ते हैं।"

और हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं: 2. "बेशक अल्लाह तआला ने ज़मीन पर हराम कर दिया है कि वह नबियों के जिस्मों को खाए, अतः अल्लाह का नबी जीवित होता है और उसे रिज़्क़ दिया जाता है।"

सही अर्थ की निकटता के बावजूद, किसी मुसलमान की बात को भद्दे या स्पष्ट कुफ्र के अर्थ में लेना एक मुसलमान का काम नहीं है, और अल्लाह बेहतर जानता है।

मसला 52: राधनपुर, गुजरात, अहमदाबाद के पास से प्रेषित, हकीम मोहम्मद मियां साहब, 6 जमादी-उल-उला 1336 हिजरी। ग्यारहवीं के बारे में आप क्या फरमाते हैं? ग्यारहवीं के दिन फातिहा दिलाने से सवाब ज़्यादा होता है या किसी और दिन? बुज़ुर्गों की यादगारी के लिए दिन तय करना कैसा है?

अल-जवाब: ईश्वर के प्रियजनों की यादगारी के लिए दिन तय करना निस्संदेह जायज़ है। हदीस में है: 3. "नबी करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) हर साल के अंत में शोहदा-ए-उहुद की कब्रों पर तशरीफ लाते थे।"

शाह अब्दुल अज़ीज़ साहब ने इसी हदीस को औलिया-ए-कराम के उर्स के लिए प्रमाण माना, और शाह वलीउल्लाह साहब ने कहा:

1. शरह अल-सुदूर, कब्रों में मृतकों की स्थिति का अध्याय, आदि, खिलाफ़त अकादमी, मिंगोरा, स्वात, पृष्ठ 87; मुसनद अबी याला, हदीस 3412, मुअस्ससत अल-उलूम अल-कुरान, बेरूत, 3/379।
2. सुनन इब्न माजाह, जनाज़े के अध्याय, उनकी मृत्यु का अध्याय, आदि, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, पृष्ठ 119।
3. जामिउल बयान (तफसीर इब्न जरीर), आयत 13/24 के तहत, दार अल-इहया अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 13/170।

تصدیق وعدہ الٰہیہ کے لیے جو ایک آن کے لیے انبیاء علیہم الصلوۃ والسلام کو طریانِ موت ہو کر معا حیاتِ حقیقی ابدی روحانی جسمانی بخشی جاتی ہے، یہ حضور کے لیے نہ ہوئی بلکہ اس سے حضور کی برزخ میں حیاتِ ابدی اور فضائل اقدس میں ترقی دوامی مراد ہو گی بلاشبہ اُس تصدیق وعدہ کے بعد سب انبیاء علیہم الصلوۃ والسلام کے لیے ابدیت ذات حاصل ہے۔ نبی کریم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں:

الانبیاء احیاء فی قبورھم یصلون۔1 انبیاء کرام علیہم الصلوۃ والسلام اپنی قبروں میں زندہ ہیں اور نماز پڑھتے ہیں۔(ت)

اور فرماتے ہیں صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم: ان اللہ حرم علی الارض ان تاکل اجساد الانبیاء فنبي اللہ حی یرزق۔2 بے شک اللہ تعالٰی نے زمین پر حرام کر دیا ہے کہ وہ نبیوں کے جسموں کو کھائے چنانچہ اللہ تعالٰی کا نبی زندہ ہوتا ہے اس کو رزق دیا جاتا ہے۔(ت)

باوصف قرب معنی صحیح مسلمان کے کلام کو معنی قبیح بلکہ کفر صریح پر حمل کرنا مسلمان کا کام نہیں واللہ اعلم۔

مسئلہ ۵۲: از رادھن پور گجرات قریب احمد آباد مرسلہ حکیم محمد میاں صاحب ۶ جمادی الاولٰی ۱۳۳۶ھ گیارھویں کے لیے آپ کیا فرماتے ہیں، گیارھویں کے روز فاتحہ دلانے سے ثواب زیادہ ہوتا ہے یا آڑے دن فاتحہ دلانے سے، بزرگوں کے دن کی یادگاری کے لیے دن مقرر کرنا کیسا ہے؟

الجواب: محبوبان خدا کی یادگاری کے لیے دن مقرر کرنا بے شک جائز ہے۔ حدیث میں ہے: کان النبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم یأتی قبور شہداء أحد علی رأس کل حول۔3 نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم ہر سال کے اختتام پر شہدائے احد کی قبروں پر تشریف لاتے تھے۔(ت)

شاہ عبدالعزیز صاحب نے اسی حدیث کو اعراس اولیاء کرام کے لیے مستند مانا، اور شاہ ولی اللہ صاحب نے کہا:

---

1 شرح الصدور باب احوال الموتی فی قبورھم الخ خلافت اکیڈمی منگورہ سوات ص ۸۷، مسند ابی یعلی حدیث ۳۴۱۲ مؤسسۃ علوم القرآن بیروت ۳/ ۳۷۹ 2 سنن ابن ماجہ ابواب ماجاء فی الجنائز باب ذکر وفاتہ الخ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ص ۱۱۹ 3 جامع البیان (تفسیر ابن جریر) تحت آیۃ ۱۳/ ۲۴ دار احیاء التراث العربی بیروت ۱۳/ ۱۷۰

Vol 29 Fatawa Razawiyya

1. From the fragrance of preserving the Urs (death anniversaries) of the masters. | Celebrating the Urs of the masters is proven by this Hadith. (T)

The specification of 'Giyarwee Shareef' also falls under the same category, but there is no increase or decrease in reward based on it; whenever it is performed, the reward will be the same. Yes, performing righteous deeds during virtuous times carries more radiance. And Allah Almighty knows best.

Issue 55: From Baryal Post Office, Meherganj, Mohalla Chatterlakhi, house of Munshi Abdul Karim. Sent by Muhammad Hasan Sahib, 16 Jamadi al-Awwal 1336 AH.

[Original Persian text on left column, Urdu translation on right column] In our country, several controversial issues have arisen, the first of which is that among the scholars, there are groups who call each other Wahhabis and declare praying behind them as 'Makruh Tahrimi' (prohibitively disliked). The beliefs of the Wahhabi group are that they consider Milad recitations, visiting graves, Fateha, Tasbih and Tahlil, and celebrating Urs as Haraam (forbidden), and call those who perform these acts innovators (bid'ati), and do not pray in their congregation. Both these groups are causing corruption in this way, but what the true nature of being Wahhabi or Sunni is, is not known. (T)

The Answer:

[Original Persian/Arabic text on left column, Urdu translation on right column] In this country, there is no denier of Milad recitations, grave visitations, Fateha, Tasbih, and Tahlil except for the Wahhabis; similarly, there is no denier of the essence of Urs besides them. As for Urs that involves dancing, that is itself impermissible. Praying behind Wahhabis is not permissible. It is stated in 'Fath al-Qadir': Imam Muhammad narrated from Imam Abu Hanifa and Imam Abu Yusuf (may Allah be pleased with them) that certainly, praying behind those of deviated beliefs is not permissible.

1. Hama'at Hama 11, Shah Waliullah Academy, Hyderabad Pakistan, p. 58.
2. Fath al-Qadir, Kitab al-Salat, Bab al-Imamah, Maktaba Nooria Razawiyya, Sukkur, 1/304.

जिल्द २९ फ़तावा रज़विया

1. बुजुर्गों के उर्स की हिफाज़त की खुशबू से। | बुजुर्गों के उर्स मनाना इस हदीस से साबित है। (त)

ग्यारहवीं शरीफ का तअय्युन (समय तय करना) भी इसी बाब से है, मगर सवाब की कमी-बेशी इस पर नहीं है, जब भी करें वैसा ही सवाब होगा। हाँ, फ़ज़ीलत वाले औकात में नेक आमाल ज़्यादा नूरानी होते हैं, वल्लाहु तआला आलम।

मसला ५५: बरियाल डाकखाना मेहरगंज, मुहल्ला चटर लक्खी, मकान मुंशी अब्दुल करीम से। मुरसला मुहम्मद हसन साहब, १६ जमादी उल अव्वल १३३६ हिजरी।

[मूल फारसी पाठ बाईं ओर, उर्दू अनुवाद दाईं ओर] हमारे मुल्क में चंद इख़्तिलाफी (विवादास्पद) बातें खड़ी हो गई हैं, जिनमें से पहली यह है कि उलेमा के दरमियान कुछ गिरोह हैं जो एक दूसरे को वहाबी कहते हैं और उनके पीछे नमाज़ पढ़ने को मकरूह तहरीमी करार देते हैं। वहाबी कौम के अक़ाइद (विश्वास) यह हैं कि वे मीलाद ख्वानी, ज़ियारत-ए-क़ुबूर, फातिहा, तस्बीह ओ तहलील और उर्स करने को हराम कहते हैं, और ऐसे काम करने वालों को बिदअती कहते हैं, और उनकी जमात में नमाज़ नहीं पढ़ते। ये दोनों जमातें इस तरह फसाद करती हैं लेकिन वहाबी और सुन्नी की कैफियत क्या है, यह मालूम नहीं। (त)

अल-जवाब (उत्तर):

[मूल फारसी/अरबी पाठ बाईं ओर, उर्दू अनुवाद दाईं ओर] इस मुल्क में मीलाद ख्वानी, ज़ियारत-ए-क़ुबूर, फातिहा और तस्बीह ओ तहलील का मुनकिर (इनकार करने वाला) वहाबियों के सिवा कोई नहीं है, यूँ ही नफ्स-ए-उर्स (उर्स के मूल) का मुनकिर भी उनके अलावा कोई नहीं। रहा रक्स (नृत्य) पर मुश्तमिल उर्स, तो वह खुद ना-जायज़ है। वहाबियों के पीछे नमाज़ जायज़ नहीं है। फ़त्हुल क़दीर में है: इमाम मुहम्मद ने इमाम अबू हनीफा और इमाम अबू यूसुफ (रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम) से रिवायत की कि बेशक बद-मज़हबों के पीछे नमाज़ जायज़ नहीं।

1. हमात हमा ११, शाह वलीउल्लाह एकेडमी हैदराबाद पाकिस्तान, सफा ५८।
2. फ़त्हुल क़दीर, किताबुस सलात, बाहुल इमामत, मक्तबा नूरिया रज़विया सुक्खर, १/३०४।

جلد ۲۹ فتاویٰ رضویہ

از بنجاست حفظ اعراس مشائخ۔ ۱ | مشائخ کے عرس منانا اس حدیث سے ثابت ہے (ت)

گیارہویں شریف کی تعین بھی اسی باب سے ہی مگر ثواب کی کمی بیشی اس پر نہیں جب کریں ویسا ہی ثواب ہو گا۔ ہاں اوقات فاضلہ میں اعمال فاضلہ زیادہ نورانیت رکھتے ہیں ، واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۵۵ : از بریال ڈاکخانہ مہر گنج محلہ چٹر لکھی مکان منشی عبد الکریم۔ مرسلہ محمد حسن صاحب ۱۶ جمادی الاولیٰ ۱۳۳۶ھ

آناں بملک مابرا ئے چند کلام نزع برفع اند اولاً مابین علمائے چند فریق شدہ اند یک دیگرے را وہابی گویند و در پیش آں صلوٰۃ خوانی مکروہ تحریمی و عقائد قوم و جماعت وہابیہ اینکہ مولود خوانی و زیارت قبور و فاتحہ و تسبیح و تہلیل و عرس کردن ایں سب امور را حرام گویند و انجا افعال کنندہ را بدعتی گویند در پیش ایں جماعت را نماز نمی خوانند و ایں ہر دو جماعت ہمیچاں فساد می کنند لکن کیفیت وہابی و سنی چیست نہ معلوم اند۔ | ہمارے ملک میں چند اختلافی باتیں اٹھ کھڑی ہوئی ہیں جن میں سے پہلی یہ کہ علماء کے درمیان کچھ گروہ ہیں جو ایک دوسرے کو وہابی کہتے ہیں اور ان کے پیچھے نماز پڑھنے کو مکروہ تحریمی قرار دیتے ہیں۔ وہابی قوم کے عقائد یہ ہیں کہ وہ میلاد خوانی زیارت قبور، فاتحہ ، تسبیح و تہلیل اور عرس کرنے کو حرام کہتے ہیں ، اور ایسے افعال کرنے والے کو بدعتی کہتے ہیں ، اور انکی جماعت میں نماز نہیں پڑھتے۔ یہ دونوں جماعتیں اس طرح فساد کرتی ہیں لیکن وہابی اور سنی کی کیفیت کیا ہے یہ معلوم نہیں (ت)

الجواب:

دریں دیار منکراں میلاد خوانی و زیارت قبور و فاتحہ و تسبیح و تہلیل جزو وہابیہ نہ باشند و ہمچناں منکراں نفس عرس، اما عرسیکہ مشتمل بر رقص باشد خود نار و است نماز پس وہابیہ جائز نیست ، در فتح قد راست روی محمد عن ابی حنیفہ و ابی یوسف رضی اللہ تعالیٰ عنہم ان الصلوۃ خلف اھل الاھواء لا تجوز۔ ۲ | اس ملک میں میلاد خوانی ، زیارت قبور، فاتحہ اور تسبیح و تہلیل کا منکر وہابیوں کے سوا کوئی نہیں ، یو نہی نفس عرس کا منکر بھی ان کے علاوہ کوئی نہیں ، رہا رقص پر مشتمل عرس تو وہ خود ناجائز ہے، وہابیوں کے پیچھے نماز جائز نہیں ، فتح القدیر میں ہے : امام محمد نے امام ابو حنیفہ اور امام ابو یوسف رضی اللہ تعالیٰ عنہم سے روایت کی کہ بے شک بد مذہبوں کے پیچھے نماز جائز نہیں۔

۱ ہمعات ہمعہ ۱۱ شاہ ولی اللہ اکیڈمی حیدر آباد پاکستان ص ۵۸ ۲ فتح القدیر کتاب الصلوۃ باب الامامۃ مکتبہ نوریہ رضویہ سکھر ۱/ ۳۰۴

[Left Column - Persian] The denial of the aforementioned matters is the hallmark of the Wahhabis. Similarly, they declare seeking help from the Prophets and Saints (peace be upon them) and saying "Ya Rasulullah" or "Ya Ali" as polytheism (shirk). The summary of their creed is what their leader said in 'Taqwiyat al-Iman'^1: "Do not be a believer in anyone except Allah, and Muhammad Mustafa (peace be upon him) only had as much greatness over himself as an elder brother has over a younger brother." They apply many such insolent remarks to the Prophets, Saints, and the Master of the Prophets (peace be upon him). The core of these wretched people's creed is what Hazrat Maulvi (Maulana Rumi) may his secret be sanctified, said in the Masnavi Sharif: They claimed equality with the Prophets^2 They thought the Saints were like themselves. And Allah knows best.

[Right Column - Urdu] The denial of the aforementioned matters is the hallmark of the Wahhabis. Similarly, they declare seeking help from the Prophets and Saints (peace be upon them) and saying "Ya Rasulullah" or "Ya Ali" as polytheism (shirk). The summary of their creed is what their leader said in 'Taqwiyat al-Iman' that: "Do not be a believer in anyone except Allah, and give Muhammad Mustafa (peace be upon him) only as much greatness over himself as an elder brother has over a younger brother." They apply many such insolent remarks to the Prophets, Saints, and the Master of the Prophets (peace be upon him). The core of these wretched people's creed is what Hazrat Maulvi (Maulana Rumi) may his secret be sanctified, said in the Masnavi Sharif: they raised a claim of equality with the Prophets and considered the Saints like themselves. (T)

Issues 62 to 65: From Fort Sandeman, Balochistan, Zhob Militia booklet, sent by Mistri Ahmad-ud-Din, 30 Jamadi al-Ula 1336 AH. (1) How is performing Milad Sharif and standing at the time of the narration of the noble birth? (2) How is the observance of Giyarwin for Hazrat Piran-e-Pir (mercy of Allah be upon him)? (3) Is it permissible or impermissible to raise hands and give Khatam while food is placed in front? (4) How is saying "Ya Rasulullah" while sitting and standing, considering him omnipresent (Hazir Nazir), and believing him to be the knower of the unseen (Alim al-Ghayb)?

---

^1 Taqwiyat al-Iman, Chapter Five, Alimi Press, inside Lohari Gate, Lahore, p. 41. ^2 Masnavi Ma'navi, Story of the Grocer etc., Islamic Publications Institute, Lahore, Book One, p. 58.

[बायां कॉलम - फारसी] उल्लेखित मामलों का खंडन वहाबियों का लक्षण है। इसी तरह, वे अंबिया और औलिया (उन पर शांति हो) से मदद मांगना और "या रसूल अल्लाह" या "या अली" कहना शिर्क (बहुदेववाद) घोषित करते हैं। उनके पंथ का सारांश वह है जो उनके नेता ने 'तक़वियतुल ईमान'^1 में कहा था: "अल्लाह के अलावा किसी का भी मानने वाला मत बनो, और मुहम्मद मुस्तफ़ा (उन पर अल्लाह की कृपा और शांति हो) को खुद पर केवल उतनी ही बड़ाई देते हैं जितनी बड़े भाई को छोटे भाई पर होती है।" वे नबियों, वलियों और खुद सैयदुल अंबिया (उन पर अल्लाह की कृपा और शांति हो) पर इस तरह की बहुत सी गुस्ताख़ाना बातें थोपते हैं। इन नीच लोगों के पंथ का सार वह है जो हज़रत मौलवी (मौलाना रूमी) क़ुद्दिसा सिर्रहु ने मसनवी शरीफ़ में फ़रमाया है: उन्होंने नबियों के साथ बराबरी का दावा खड़ा कर दिया^2 उन्होंने औलिया को अपने जैसा समझ लिया। और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है।

[दायां कॉलम - उर्दू] उल्लेखित मामलों का इनकार वहाबियों का लक्षण है। इसी तरह, वे औलिया अल्लाह और अंबिया (उन पर शांति हो) से मदद मांगने और "या रसूल अल्लाह" और "या अली" कहने को शिर्क करार देते हैं। उनके मज़हब का सारांश वह है जो उनके इमाम ने 'तक़वियतुल ईमान' में कहा कि: "अल्लाह ताला के सिवा किसी का कायल मत हो, और मुहम्मद मुस्तफ़ा (उन पर अल्लाह की कृपा और शांति हो) को खुद पर सिर्फ इतनी बड़ाई देते हैं जितनी बड़े भाई को छोटे भाई पर होती है।" इस किस्म की बहुत सी गुस्ताख़ाना बातें नबियों, वलियों और खुद हुज़ूर सैयदुल अंबिया (उन पर अल्लाह की कृपा और शांति हो) पर चस्पां करते हैं। इन खबीसों के मज़हब का हासिल वह है जो हज़रत मौलवी (मौलाना रूमी) क़ुद्दिसा सिर्रहु ने मसनवी शरीफ़ में फ़रमाया है, उन्होंने नबियों के साथ बराबरी का दावा खड़ा कर दिया और औलिया अल्लाह को अपने जैसा समझ लिया है। (त)

मसला 62 से 65: फोर्ट सैंडेमैन, बलूचिस्तान से, ज़ोब मिलिशिया पुस्तिका, प्रेषक मिस्त्री अहमद-उद-दीन, 30 जमादी-उल-उला 1336 हिजरी। (1) मौलूद शरीफ़ करना कैसा है और विलादत शरीफ़ के बयान के समय खड़े होना (क़ियाम) कैसा है? (2) हज़रत पीराने पीर (अल्लाह की उन पर रहमत हो) की ग्यारहवीं करना कैसा है? (3) खाना सामने रखकर हाथ उठाकर ख़त्म देना जायज़ है या नाजायज़? (4) उठते बैठते "या रसूल अल्लाह" कहना, आप को हाज़िर-नाज़िर जानना और आलिम-उल-ग़ैब मानना कैसा है?

^1 तक़वियतुल ईमान, अध्याय पांच, अलीमी प्रेस, लोहारी गेट के अंदर, लाहौर, पृष्ठ 41। ^2 मसनवी मानवी, बक्कल की कहानी आदि, इस्लामिक पब्लिकेशन इंस्टीट्यूट, लाहौर, पुस्तक एक, पृष्ठ 58।

[بایاں کالم - فارسی] انکار امور مذکورہ شعار وہابیہ است، ہمچناں استمداد از انبیاء و اولیاء علیہم الصلوٰۃ والسلام و یا رسول اللہ و یا علی گفتن را شرک می گویند و خلاصہ مذہب ایشاں آنست کہ امامِ آنہا در تقویۃ الایمان[18] گفت کہ جز خدا ہیچ کس را قائل مباش و مصطفیٰ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم را خود ہمیں بزرگی داشت چنانکہ برادرِ کلاں را بر برادرِ خورد و ازیں قسم بسیار سخنہائے گستاخی بانبیاء و اولیاء خود حضور سید الانبیاء علیہم الصلوٰۃ والثناء چپادیدہ است حاصلِ مذہبِ ایں خبیثا آنست کہ حضرت مولوی قدس سرہ در مثنوی شریف فرمودہ ہمسری با انبیاء برداشتند[28] اولیاء راہمچو خود پنداشتند واللہ تعالٰی اعلم۔

[دایاں کالم - اردو] امور مذکور کا انکار وہابیوں کا شعار ہے، اسی طرح اولیاء اللہ اور انبیاء علیہم الصلوٰۃ والسلام سے مدد مانگنے اور یا رسول اللہ اور یا علی کہنے کو شرک قرار دیتے ہیں، ان کے مذہب کا خلاصہ وہ ہے جو ان کے امام نے تقویۃ الایمان میں کہا کہ اللہ تعالیٰ کے سوا کسی کا قائل مت ہو، اور محمد مصطفیٰ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کو خود پر صرف اتنی بڑائی دیتے ہیں جتنی بڑے بھائی کو چھوٹے بھائی پر۔ اس قسم کی بہت سی گستاخانہ باتیں نبیوں، ولیوں اور خود حضور سید الانبیاء صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم پر چسپاں کرتے ہیں۔ ان خبیثوں کے مذہب کا حاصل وہ ہے جو حضرت مولوی (مولانا روم) قدس سرہ نے مثنوی شریف میں فرمایا ہے انہوں نے نبیوں کے ساتھ برابری کا دعویٰ کھڑا کر دیا اور اولیاء اللہ کو اپنے جیسا سمجھ لیا ہے۔ (ت)

مسئلہ ۶۲ تا ۶۵: از فورٹ سنڈیمن بلوچستان رسالہ زوپ ملیشیہ مرسلہ مستری احمد الدین ۳۰ جمادی الاولٰی ۱۳۳۶ھ (۱) مولود شریف کرنا کیسا ہے اور بوقت بیانِ ولادت شریف قیام کرنا کیسا ہے؟ (۲) گیارھویں حضرت پیرانِ پیر رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ کی کرنی کیسی ہے؟ (۳) کھانا آگے

رکھ کر ہاتھ اٹھا کر ختم دینا جائز ہے یا ناجائز؟ (۴) اٹھتے بیٹھتے یارسول اللہ کہنا، آپ کو حاضر ناظر جاننا اور عالم الغیب ماننا کیسا ہے؟

---

1 تقویۃ الایمان الفصل الخامس مطبع علیمی اندرون لوہاری دروازہ لاہور ص ۴۱ 2 مثنوی معنوی حکایت مرد بقال الخ موسسۃ انتشارات اسلامی لاہور دفتر اول ص ۵۸

Fatawa Rizvia, Volume 29

(5) Is it permissible or not to travel long distances to visit the graves of saints, to attend 'Urs (death anniversary commemorations), to circumambulate (tawaf) graves, and to kiss them? (6) Is it permissible or not to perform Isqat (expiation) for the deceased in both ways? (7) Is it necessary or not to pray Ihtiyat al-Zuhr (Precautionary Zuhr) of 12 rak'ahs after the Friday prayer?

Answer to Related Question

(1) [Persian Column]: Mawlud Sharif, i.e., the specific narration of the birth of the Holy Prophet (peace and blessings be upon him) which is free from religious innovations, is permissible. However, standing (qiyam) and folding hands over the navel with the belief that the Messenger of Allah (peace and blessings be upon him) attends the Mawlud gathering is without any correct basis and contrary to [proper] belief. [Urdu Column]: Mawlud Sharif, i.e., the specific narration of the birth of the Master of the Two Worlds (peace and blessings be upon him), which is free from religious innovations (munkarat), is permissible. But for it, to stand and to fold hands over the navel with the belief that the Messenger of Allah (peace and blessings be upon him) is present in the gathering of Milad is not correct and is contrary to belief.

(2) [Persian Column]: Giving an offering (nadhr) for the soul of Ghous-e-Azam (may mercy be upon him), if it is purely for the sake of Allah for the purpose of sending reward (Isal-e-Thawab) to his holy soul, is permissible, rather it is good. But if, at the time of making the offering, one mentions only the name of Piran-e-Pir (may mercy be upon him) and omits the name of Allah the Almighty as is the habit of the ignorant, then it is impermissible, rather there is fear of disbelief (kufr). [Urdu Column]: Giving an offering (nadhr) for the pure soul of Ghous-e-Azam (may mercy be upon him), if it is purely for the being of Allah the Almighty and the intention is to send reward to the holy soul of the Great Ghaus, then it is permissible, rather it is commendable. But if, at the time of making the offering, one specifically mentions the name of Piran-e-Pir (may mercy be upon him) and leaves out the mention of Allah (the Blessed and Exalted), as is the habit of the ignorant, it is impermissible, rather there is fear of disbelief.

(3) [Persian Column]: Praying at the time food is present is permissible, but it is better that it be done after finishing the consumption of food, because the right of the food precedes. However, that which is known in some cities where they gather students and clerics and for them [the Quran] is finished. [Urdu Column]: To pray while

keeping food in front is permissible, but it is better that the prayer be done after finishing the meal because the right of the food is prior. However, what is prevalent in some cities, where they gather students and clerics, they finish the Holy Quran and [perform] Tasbih and...

फ़तावा रज़विया, जिल्द 29

(५) बुज़ुर्गों की क़ब्रों की ज़ियारत के लिए दूर-दराज़ से सफ़र करना, उर्स और क़ब्रों का तवाफ़ और बोसा देना जायज़ है या नहीं? (६) हर दो तरीक़ पर मय्यत का इस्क़ात करना जायज़ है या नहीं? (७) जुमे की नमाज़ के बाद एहतियातुल-ज़ुहर की १२ रकात पढ़ना ज़रूरी है या नहीं?

जवाब हम-रिश्ता सवाल (संबंधित प्रश्न का उत्तर)

(१) [फारसी कॉलम]: मौलूद शरीफ़ यानी सरकारे दो आलम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की विलादत का विशेष बयान, जो शरीयत में मना किए गए कार्यों से पाक हो, जायज़ है। मगर इसके लिए क़ियाम करना और इस अक़ीदे के साथ नाफ़ पर हाथ बाँधना कि जनाब रिसालत-मआब (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) महफ़िल-ए-मीलाद में हाज़िर होते हैं, सही नहीं है और अक़ीदे के ख़िलाफ़ है। [उर्दू कॉलम]: मौलूद शरीफ़ यानी सरकारे दो आलम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की विलादत का विशेष बयान, जो शरीयत में मना किए गए कार्यों (मुनकिरात) से पाक हो, जायज़ है। मगर इसके लिए क़ियाम करना और इस अक़ीदे के साथ नाफ़ पर हाथ बाँधना कि जनाब रिसालत-मआब (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) महफ़िल-ए-मीलाद में हाज़िर होते हैं, सही नहीं है और अक़ीदे के ख़िलाफ़ है।

(२) [फारसी कॉलम]: गौसे आज़म (रहमतुल्लाहि अलैहि) की पाक रूह के लिए नज़्र देना, अगर वह ख़ालिस अल्लाह के लिए ईसाल-ए-सवाब की नियत से हो, तो जायज़ बल्कि बेहतर है। लेकिन अगर नज़्र करते वक़्त सिर्फ पीरान-ए-पीर का नाम लिया जाए और अल्लाह का नाम छोड़ दिया जाए, जैसा कि जाहिलों की आदत है, तो यह नाजायज़ है बल्कि कुफ़्र का ख़ौफ़ है। [उर्दू कॉलम]: गौसे आज़म (रहमतुल्लाहि अलैहि) की पाक रूह की नज़्र देनी अगर ख़ालिस अल्लाह तआला की ज़ात के लिए हो और सरकारे गौसे पाक की मुक़द्दस रूह को सवाब पहुँचाना मक़सूद हो, तो जायज़ बल्कि मुस्तहसन है। लेकिन अगर नज़्र करते वक़्त ख़ास पीरान-ए-पीर (अ.र.) का नाम ज़िक्र करे और अल्लाह तबारक व तआला का ज़िक्र छोड़ दे जैसा कि जाहिलों की आदत है, तो नाजायज़ है बल्कि कुफ़्र का ख़ौफ़ है।

(३) [फारसी कॉलम]: खाना मौजूद होने के वक़्त दुआ करना जायज़ है लेकिन बेहतर यह है कि खाना खाने के बाद की जाए क्योंकि खाने का हक़ पहले है। लेकिन जो कुछ शहरों में मशहूर है कि तालिब-ए-इल्मों और मुल्लाओं को जमा करते हैं और उनके लिए ख़त्म किया जाता है। [उर्दू कॉलम]: खाना सामने रखकर दुआ करना जायज़ है लेकिन बेहतर यह है कि खाना खाकर फ़ारिग़ होने के बाद दुआ

की जाए क्योंकि खाने का हक़ मुक़द्दम (पहले) है। लेकिन जो बाज़ शहरों में मुरव्वज (प्रचलित) है कि तलबा और मुल्लाओं को जमा करते हैं, वे क़ुरआन मजीद ख़त्म करते हैं और तस्बीह व...

पृष्ठ २०६ का ७५०

(۵) بزرگوں کی قبروں کی زیارت کے لیے دور دراز سے سفر کرنا عرس اور قبروں کا طواف اور بوسہ دینا جائز ہے یا نہیں؟ (۶) ہر دو طریق پر میت کا اسقاط کرنا جائز ہے یا نہیں؟ (۷) جمعہ کی نماز کے بعد احتیاط الظہر ۱۲ رکعت پڑھنا ضروری ہے یا نہیں؟

جواب ہم رشتہ سوال

(۱) [Persian Column]: مولود شریف یعنی خاص بیان ولادت آنحضرت صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی خالی از منکرات شرعیہ می باشد جائز ہست مگر قیام کردن و دست بر ناف بستن بریں اعتقاد کہ جناب رسالت مآب صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم حاضر می شود مجلس مولود را بغیر صحیح و خلاف عقیدہ ہست۔ [Urdu Column]: (۱) مولود شریف یعنی خاص بیان ولادت سرکار دو عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم جو کہ منکرات شرعیہ سے خالی ہو جائز ہے مگر اس کے لیے قیام کرنا اور اس اعتقاد کے ساتھ ناف پر ہاتھ باندھنا کہ جناب رسالتمآب صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم محفل میلاد میں حاضر ہوتے ہیں صحیح نہیں اور عقیدہ کے خلاف ہے۔

(۲) [Persian Column]: نذر دادن بر روح غوث اعظم علیہ الرحمہ اگر خالصاً لوجہ اللہ از برائے ایصال الثواب بروح مقدس شاں مے باشد جائز بلکہ حسن ست لکن اگر در وقت نذر کردن خاص نام پیران پیر علیہ الرحمہ ذکر کند و نام خداوند تعالیٰ ترک کند چنانچہ عادت جہال ست پس ناجائز بلکہ خوف کفر ہست۔ [Urdu Column]: (۲) غوث اعظم علیہ الرحمہ کی روح پاک کی نذر دینی اگر خالصاً اللہ تعالیٰ کی ذات کے لیے ہو اور سرکار غوث پاک کی روح مقدس کو ثواب پہنچانا مقصود ہو تو جائز بلکہ مستحسن ہے ، لیکن اگر نذر کرتے وقت خاص پیران پیر علیہ

الرحمہ کا نام ذکر کرے اور اللہ تبارک و تعالیٰ کا ذکر چھوڑ دے تو جیسا کہ جاہلوں کی عادت ہے ناجائز ہے بلکہ کفر کا خوف ہے۔

(۳) [Persian Column]: دعا کردن در وقت حضور طعام جائز ہست لیکن بہتر آن ہست کہ بعد فراغ از تناول طعام کردہ شود زیرا کہ حق طعام سابق ہست لکن آنکہ در بعضی شہر ہا معروف ہست کہ طلبہ و ملایان را جمع می کنند و بر ایشاں ختم۔ [Urdu Column]: (۳) کھانا سامنے رکھ کر دعا کرنا جائز ہے لیکن بہتر یہ ہے کہ کھانا کھا کر فارغ ہونے کے بعد دعا کی جائے کیونکہ کھانے کا حق مقدم ہے لیکن جو بعض شہروں میں مروج ہے کہ طلباء اور ملاؤں کو جمع کرتے ہیں وہ قرآن مجید ختم کرتے ہیں اور تسبیح و۔

Volume 29 Fatawa Razawiyya

They recite the Holy Quran, Tasbeeh (glorification of God), and Tahleel (declaration of God's oneness), and in exchange, they are given bread and money. This is impermissible. For those who perform the 'Khatam' (completion of recitation), it is forbidden to take money and eat the food. Also, the one who provides the food does not receive the reward of charity, as mentioned in the final chapter of 'Tariqah Muhammadiyyah', 'Bahr al-Ra'iq', and 'Shami'.

(4) Saying 'Ya Rasool Allah' is permissible at all times except in places of disrespect. However, believing that the Master of the Universe (peace and blessings of Allah be upon him) is present everywhere is contrary to the creed of the Ahl al-Sunnah wa al-Jama'ah and is not correct. Rather, the 'Durood' (salutations) or 'Salam' is presented to the holy soul of the Noble Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) in Medina al-Munawwarah itself. It is not that the Master of the Prophets (peace and blessings of Allah be upon him and his family) himself presents himself for it. As stated in a Hadith of Sunan al-Nasa'i, the Noble Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said: "Indeed, your salutations reach me wherever you may be."

Note: Despite intense efforts, a Hadith with these exact words could not be found in Sunan al-Nasa'i. However, a Hadith with words close to these was found in 'Mu'jam al-Kabir' and 'Musnad Ahmad bin Hanbal' with the following wording: "Wherever you are, send salutations upon me, for indeed your salutations reach me." - Nazir Ahmad Saeedi

1. Al-Mu'jam al-Kabir, Hadith 7229, Al-Maktabah al-Faysaliyyah, Beirut, 3/82; Musnad Ahmad bin Hanbal, narrated by Abu Hurayrah, Al-Maktab al-Islami, 2/367. Page 207 of 750

जिल्द 29 फ़तावा रज़विया

वे पवित्र कुरान, तस्बीह और तहलील (अल्लाह की पाकी और एकत्व का बयान) करते हैं, जिसके बदले में उन्हें रोटी और पैसे दिए जाते हैं। यह नाजायज़ है। ख़त्म करने वालों के लिए पैसे लेना और खाना खाना हराम है, और खाना खिलाने वाले को ख़ैरात (दान) का सवाब नहीं मिलता, जैसा कि तरीक़ा-ए-मोहम्मदिया के अंतिम अध्याय, बहर-उल-रैक और शामी में उल्लेखित है।

(4) 'या रसूल अल्लाह' कहना बेअदबी (अपमान) की जगहों के अलावा हर समय जायज़ है। लेकिन कायनात के सरदार (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को हर जगह हाज़िर मानना अहले सुन्नत व जमाअत के अकीदे (विश्वास) के खिलाफ है और सही नहीं है। बल्कि दुरूद शरीफ़ या सलाम नबी करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की पाक रूह को खुद मदीना मुनव्वरा में पेश किया जाता है। ऐसा नहीं है कि सैय्यदुल अंबिया (सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम) इसके लिए खुद हाज़िर होते हैं। जैसा कि नसाई शरीफ़ की हदीस में आया है, नबी करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया कि बेशक तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है तुम जहां कहीं भी हो।

नोट: बहुत कोशिश के बाद भी नसाई शरीफ़ में इन शब्दों के साथ हदीस नहीं मिल सकी, अलबत्ता इन शब्दों के करीब-करीब 'मुअजम कबीर' और 'मुसनद अहमद बिन हंबल' में इन शब्दों के साथ हदीस मिली है: "तुम जहां कहीं भी हो, मुझ पर दुरूद भेजो, क्योंकि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है।" - नज़ीर अहमद सईदी

1. अल-मुअजम अल-कबीर, हदीस 7229, अल-मकतबा अल-फ़ैसलिया, बेरूत, 3/82; मुसनद अहमद बिन हंबल, हज़रत अबू हुरैरा से रिवायत, अल-मकतबा अल-इस्लामी, 2/367। पेज 207/750

قرآن شریف اور تسبیح و تہلیل کرتے ہیں جس کے بدلے میں انہیں روٹی اور پیسے دیئے جاتے ہیں یہ ناجائز ہے ختم کرنے والوں کو پیسے لینا اور کھانا کھانا حرام ہے اور کھانا کھلانے والے کو خیرات کا ثواب حاصل نہیں ہوتا، جیسا کہ طریقہ محمدیہ کی فصلِ آخر، بحر الرائق اور شامی میں مذکور ہے۔ (۴) یا رسول اللہ کہنا بے ادبی کی جگہوں کے سوا ہر وقت جائز ہے مگر سرورِ کائنات صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کو حاضر جاننا عقیدہ اہلسنت و جماعت کے خلاف ہے اور صحیح نہیں ہے بلکہ درود شریف یا سلام نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی روحِ پاک کو خود مدینہ منورہ میں پیش کیا جاتا ہے، یوں نہیں کہ سید الانبیاء صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم اس کے لیے خود حاضر ہوتے ہیں جیسا کہ نسائی شریف کی حدیث میں وارد ہوا ہے، نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا کہ بے شک تمہارا درود مجھ تک پہنچتا ہے تم جہاں کہیں بھی ہو۔

ف: انتہائی کوشش کے بعد بھی نسائی شریف میں ان الفاظ کے ساتھ حدیث نہیں مل سکی البتہ ان الفاظ کے قریب قریب معجم کبیر و مسند احمد بن حنبل میں ان الفاظ کے ساتھ حدیث ملی ہے۔ "حیثما کنتم فصلوا علی فان صلوتکم تبلغني"۔ نذیر احمد سعیدی

۱ المعجم الکبیر حدیث ۷۲۲۹ المکتبۃ الفیصلیہ بیروت ۳/ ۸۲، مسند احمد بن حنبل عن ابی ھریرہ المکتب الاسلامی ۲/ ۳۶۷ صفحہ 207 از 750

Fatawa Razawiyya, Volume 29

[Left Column Content] It is impermissible to call [the Prophet] (peace and blessings of Allah be upon him) "Aalim al-Ghayb" (Knower of the Unseen). Thus, Mulla Ali Qari clarifies in the commentary of Fiqh al-Akbar: "Then know that the Prophets (peace be upon them) did not know unseen matters of things except what Allah occasionally taught them. And the Hanafis have explicitly mentioned Takfir for believing that the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) knows the unseen, as it contradicts the Word of Allah: 'Say: None in the heavens and the earth knows the unseen except Allah.' [1]" (5) Traveling for visiting graves is permissible due to the absolute nature of the Prophet's statement (peace be upon him): "I used to forbid you from visiting graves, so visit them." [2] And the reasoning of some scholars like Ibn Taymiyyah and others to prohibit travel based on the Hadith "Do not undertake travel except to three mosques" [3] etc. is incorrect, as Imam Ghazali (may Allah have mercy on him) [says] in Ihya...

[Right Column Content] Moreover, it is impermissible to call the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) "Aalim al-Ghayb". Thus, Mulla Ali Qari (may Allah have mercy on him) clarifies in the commentary of Fiqh al-Akbar: "Then you should know that indeed the noble Prophets (peace and blessings be upon them) do not know the unseen of things except those whose knowledge Allah Almighty sometimes grants them. And the Hanafis have mentioned 'Takfir' (declaring as a disbeliever) for this reason, that one holds the belief that the noble Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) knows the unseen, because this belief of theirs is contrary to this command of Allah Almighty: 'O Beloved (peace and blessings of Allah be upon him), you say: No one in the heavens and the earth knows the unseen except Allah Almighty.'" (5) It is permissible to travel for visiting graves because this command of the noble Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) is absolute: "I used to forbid you from visiting graves, so now visit them." The reasoning of some scholars like Ibn Taymiyyah and others to prohibit travel based on this Hadith "Do not bind your saddles (for travel) except towards three mosques" is incorrect; as Imam Ghazali (may Allah have mercy on him) [states in] Ihya al-Ulum...

[Footnotes] 1. Minah al-Rawd al-Azhar Sharh al-Fiqh al-Akbar, ruling on believing a soothsayer regarding what he tells of the unseen, Mustafa al-Babi, Egypt, p. 151. 2. Sahih Muslim, Book of Funerals, Chapter on Going to Visit Graves, Qadeemi Kutub Khana, Karachi, 1/312. 3. Sahih Muslim, Book of Mosques, Chapter on the Excellence of the Three Mosques, Qadeemi Kutub Khana, Karachi, 1/427.

फ़तावा रज़विया, खंड 29

[बायां कॉलम] [नबी] (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को 'आलिमुल ग़ैब' कहना नाजायज़ है, चुनाँचे मुल्ला अली क़ारी 'शरह फ़िक़्ह-ए-अकबर' में तसरीह (स्पष्टीकरण) करते हैं: "फिर जान लो कि नबियों (अलैहिमुस्सलाम) को चीज़ों के ग़ैब का ज्ञान नहीं था, सिवाय उसके जो अल्लाह ने उन्हें कभी-कभी सिखाया। और हनफ़ियों ने इस अक़ीदे पर तक़्फ़िर का स्पष्ट उल्लेख किया है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ग़ैब जानते हैं, क्योंकि यह अल्लाह तआला के इस फ़रमान के विपरीत है: 'कह दीजिए: आसमानों और ज़मीन में जो कोई भी है, वह अल्लाह के सिवा ग़ैब नहीं जानता।' [१]" (५) कब्रों की ज़ियारत के लिए सफ़र करना जायज़ है, क्योंकि नबी (अलैहिस्सलाम) का यह फ़रमान मुतलक़ (निरपेक्ष) है: "मैं तुम्हें कब्रों की ज़ियारत से मना करता था, अब उनकी ज़ियारत किया करो।" [२] और इब्न तैमिया आदि जैसे कुछ विद्वानों का इस हदीस के आधार पर सफ़र (यात्रा) की मनाही पर दलील देना कि "तीन मस्जिदों के अलावा कहीं के लिए ऊँट के कजावे मत बांधो" [३] आदि, गलत है; जैसा कि इमाम ग़ज़ाली (अलैहिर्रहमा) 'इह्या' में...

[दायां कॉलम] साथ ही, अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को 'आलिमुल ग़ैब' कहना नाजायज़ है। चुनाँचे मुल्ला अली क़ारी (अलैहिर्रहमा) 'शरह फ़िक़्ह-ए-अकबर' में तसरीह करते हैं: "फिर तू जान ले कि बेशक अंबिया किराम (अलैहिमुस्सलातो वस्सलाम) चीज़ों के ग़ैब को नहीं जानते, सिवाय उन चीज़ों के जिनका इल्म अल्लाह तआला उन्हें कभी-कभार अता फ़रमाता है। और हनफ़ियों ने इसकी तक़्फ़िर का ज़िक्र इस वजह से किया है कि वह यह अक़ीदा रखता है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ग़ैब जानते हैं, क्योंकि उनका यह विश्वास अल्लाह तआला के इस फ़रमान के विरुद्ध है: 'ऐ महबूब (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम), आप फ़रमा दें कि आसमानों और ज़मीन में जो कोई भी है, वह अल्लाह तआला के सिवा ग़ैब नहीं जानता।'" (५) ज़ियारत-ए-कुबूर के लिए सफ़र करना जायज़ है, क्योंकि नबी करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का यह फ़रमान मुतलक़ है: "मैं तुम्हें कब्रों की ज़ियारत से मना करता था, तो अब उनकी ज़ियारत किया करो।" इब्न तैमिया आदि जैसे कुछ विद्वानों का सफ़र की मनाही पर इस हदीस से इस्तदलाल (तर्क) करना गलत है: "कजावे मत बांधो मगर सिर्फ तीन मस्जिदों की तरफ", जैसा कि इमाम ग़ज़ाली (अलैहिर्रहमा) 'इह्या उल-उलूम'...

[पादलेख] १. मिनह अर-रौज़ अल-अज़हर शरह अल-फ़िक़्ह अल-अकबर, ग़ैब की खबर देने वाले काहिन की तस्दीक का हुक्म, मुस्तफ़ा अल-बाबी, मिस्र, पृ. १५१ २. सहीह मुस्लिम, किताबुल

जनाइज़, फ़स्ल कब्रों की ज़ियारत के लिए जाने के बारे में, कदीमी कुतुब खाना कराची, १/३१२ ३. सहीह मुस्लिम, किताबुल मसाजिद, बाब तीनों मस्जिदों की फ़ज़ीलत, कदीमी कुतुब खाना कराची, १/४२७

पृष्ठ २०८ / ७५०

[Left Column Content] تعالیٰ علیہ وسلم را عالم الغیب گفتن ناجائز ہست، چنانچہ ملا علی قاری در شرح فقہ اکبر تصریح میکند ثم اعلم ان الانبیاء علیہم السلام لم یعلموا المغیبات من الاشیاء الا ما علمہم اللہ احیاناً و ذکر الحنفیۃ صریحاً بالتکفیر باعتقادہ ان النبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم یعلم الغیب لمعارضۃ قولہ تعالیٰ قل لا یعلم من فی السموات والارض الغیب الا اللہ ۱۔ (۵) سفر کردن از برائے زیارت قبور جائز ہست از جہت اطلاق قولہ علیہ السلام کنت نہیتکم عن زیارۃ القبور فزوروھا ۲۔ وانچہ بعض علماء مثل ابن تیمیہ و غیرہ استدلال بر منع سفر کردہ اند بایں حدیث لا تشدوا الرحال الا الی ثلثۃ مساجد ۳ الخ۔ غلط ہست، چنانچہ امام غزالی علیہ الرحمہ در احیاء

[Right Column Content] نیز رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کو عالم الغیب کہنا نا جائز ہے، چنانچہ ملا علی قاری علیہ الرحمہ شرح فقہ اکبر میں تصریح کرتے ہیں پھر تو جان لے کہ بے شک انبیاء کرام علیہم الصلوۃ والسلام غیب اشیاء کو نہیں جانتے سوائے ان چیزوں کے جن کا علم انہیں اللہ تعالیٰ کبھی کبھار عطا فرماتا ہے، اور حنفیہ نے اس کی تکفیر کا ذکر اس وجہ سے کیا ہے کہ وہ یہ عقیدہ رکھتا ہے نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم غیب جانتے ہیں اس لیے کہ ان کا یہ اعتقاد اللہ تعالیٰ کے اس ارشاد کے مخالف ہے: اے محبوب صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم آپ فرمادیں کہ جو کوئی آسمانوں اور زمین میں ہے۔ وہ غیب نہیں جانتا سوائے اللہ تعالیٰ کے۔ (۵) زیارت قبور کے لیے سفر کرنا جائز ہے اس واسطے کہ نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کا یہ ارشاد مطلق ہے میں تمہیں قبروں کی زیارت سے منع کیا کرتا تھا تو اب ان کی زیارت کیا کرو۔ ابن تیمیہ وغیرہ بعض علماء کا منع سفر پر اس حدیث سے استدلال کرنا غلط ہے کجاوے مت باندھو مگر صرف تین مسجدوں کی طرف چنانچہ امام غزالی علیہ الرحمہ احیاء العلوم

[Footnotes] ۱ منح الروض الازهر شرح الفقہ الاکبر حکم تصدیق الکاہن بما یخبر بہ من الغیب مصطفی البابی مصر ص ۱۵۱ ۲ صحیح مسلم کتاب الجنائز فصل فی الذهاب الی زیارة القبور قدیمی کتب خانہ کراچی ۱ / ۳۱۲ ۳ صحیح مسلم کتاب المساجد باب فضل المساجد الثلاثہ قدیمی کتب خانہ کراچی ۱ / ۴۲۷

Fatawa Razawiyya - Volume 29

[In Ihya Ulum-id-Din, Imam Ghazali] says: Some scholars have used this Hadith as evidence for the prohibition of traveling to visit the shrines and graves of scholars and pious people. But what has become clear to me is that the matter is not like that; rather, visiting graves has been commanded. The Messenger of Allah (may Allah Almighty send peace and blessings upon him) said: "I used to forbid you from visiting graves, so [now] visit them." However, kissing the grave, performing circumambulation (tawaf) around it, fairs (urs), etc., are all impermissible and forbidden. Moreover, doing so is contrary to the etiquette and method of visiting. Accordingly, Imam Ghazali (may Allah's mercy be upon him) states in Ihya Ulum-id-Din: "The etiquette of visiting is that one should not stand facing the grave while turning one's back towards the Qibla, nor should one kiss the grave, nor should one bow down before it, etc." In fact, there is a fear of disbelief (kufr) in bowing and prostrating to a grave.

(6) Performing the "Hilah-e-Isqat" (legal device for expiation) in the prevalent manner, although it was not practiced in this way during the first three generations (Quroon-e-Thalatha), yet scholars of jurisprudence have mentioned it in their books and have derived this ruling from the texts and traditions of the Companions. Accordingly, Allamah Ibn Abidin Shami has published a dedicated treatise on this issue.

Footnotes: 1. Ihya Ulum-id-Din, Book of the Secrets of Hajj, Excellence of the Noble City, etc., Al-Mashhad Al-Husayni Press, Cairo, 1/244. 2. Ihya Ulum-id-Din, Book of the Remembrance of Death, Chapter Six, Al-Mashhad Al-Husayni Press, Cairo, 4/491.

फ़तावा रज़विया - खंड २९

[इहया उलूम-उद-दीन में इमाम गज़ाली] कहते हैं: कुछ विद्वानों ने इस हदीस से इस बात पर दलील दी है कि विद्वानों और नेक लोगों की मज़ारों और क़ब्रों की ज़ियारत के लिए यात्रा करना मना है। लेकिन मेरे सामने जो बात स्पष्ट हुई है वह यह है कि मामला ऐसा नहीं है, बल्कि क़ब्रों की ज़ियारत करने का हुक्म दिया गया है। अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया: "मैं तुम्हें क़ब्रों की ज़ियारत से मना करता था, तो अब उनकी ज़ियारत किया करो।" लेकिन क़ब्र को चूमना, उसका तवाफ़ (परिक्रमा) करना और उर्स आदि सब नाजायज़ और हराम है। और ऐसा करना ज़ियारत करने के तरीक़े और शिष्टाचार के ख़िलाफ़ है, जैसा कि इमाम गज़ाली (रहमतुल्लाहि अलैहि) इहया उलूम में फ़रमाते हैं: "ज़ियारत का आदाब यह है कि क़ब्र की तरफ मुँह करके और क़िबला की तरफ पीठ करके न खड़ा हो, और न ही क़ब्र को चूमे और न ही उसके लिए झुके आदि।" बल्कि क़ब्र के लिए झुकने और सजदा करने में कुफ़्र का डर है।

(६) प्रचलित तरीक़े पर 'हीला-ए-इसक़ात' (प्रायश्चित का तरीक़ा) करना, हालाँकि यह पहले तीन दशकों (क़ुरून-ए-सलासा) में इस तरह प्रचलित नहीं था, लेकिन फ़िक़्ह (इस्लामी न्यायशास्त्र) के विद्वानों ने अपनी किताबों में इसे उद्धृत किया है और सहाबा के नुसूस और आसार से इस हुक्म को प्राप्त किया है। चुनाँचे अल्लामा इब्ने आबिदीन शामी ने इस मसले पर एक स्वतंत्र शोध-पत्र प्रकाशित किया है।

पाद-टिप्पणी: 1. इहया उलूम-उद-दीन, किताब ज़िक्र असरार उल-हज, फ़ज़ीलत उल-मदीना अल-शरीफ़ा आदि, अल-मशहद अल-हुसैनी प्रेस, काहिरा, 1/244। 2. इहया उलूम-उद-दीन, किताब ज़िक्र उल-मौत, बाब छठा, अल-मशहद अल-हुसैनी प्रेस, काहिरा, 4/491।

पृष्ठ 209/750

میں فرماتے ہیں: بعض علماء نے اس حدیث سے اس بات پر استدلال کیا ہے کہ علماء و صلحاء کی قبروں اور مقامات مقدسہ کی زیارت کے لیے سفر کرنا منع ہے اور میرے لیے جو کچھ ظاہر ہوا ہے وہ یہ ہے کہ معاملہ اس طرح نہیں بلکہ زیارت قبور کا حکم دیا گیا ہے۔ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: میں تمہیں قبروں کی زیارت سے منع کرتا تھا تو اب ان کی زیارت کیا کرو لیکن قبر کو بوسہ دینا طواف کرنا اور عرس وغیرہ سب ناجائز و حرام ہے اور ایسا کرنا زیارت کرنے کے طریقہ اور آداب کے خلاف ہے، چنانچہ امام غزالی علیہ الرحمہ احیاء العلوم میں فرماتے ہیں: زیارت کے آداب یہ ہیں کہ قبر کی طرف منہ کر کے اور قبلہ کی طرف پیٹھ کر کے مت کھڑا ہو اور نہ قبر کو چومے اور نہ ہی اس کے لیے جھکے الخ بلکہ قبر کے لیے جھکنے اور سجدہ کرنے میں کفر کا خوف ہے۔

(۶) مروج طریقے پر حیلہ اسقاط کرنا اگر چہ قرون ثلاثہ میں اس طور پر جاری نہ تھا مگر علماء فقہ نے اپنی کتابوں میں اس کو نقل کیا ہے اور نصوص و آثار صحابہ سے اس حکم کو مستنبط کیا ہے چنانچہ علامہ ابن عابدین صاحب شامی نے اس مسئلہ میں ایک مستقل رسالہ شائع [کیا ہے]۔

حواشی: 1 احیاء العلوم کتاب ذکر اسرار الحج فضیلۃ المدینۃ الشریفہ الخ مطبعۃ المشہد الحسینی القاھرہ ۱/ ۲۴۴ 2 احیاء العلوم کتاب ذکر الموت الباب السادس مطبعۃ المشہد الحسینی القاھرہ ۴/ ۴۹۱

Volume 29 Fatawa Ridawiyya

[Left Column: Persian/Arabic | Right Column: Urdu Translation] ...and it has been established and proven that the 'Hila-e-Isqat' (compensation) for the deceased is permissible. Since quoting the text of that treatise would lead to excessive length, I have omitted those passages. / ...and it has been established and proven that the 'Hila-e-Isqat' for the deceased is permissible. Since quoting all the passages from that treatise would lead to great lengthiness, I have omitted those passages.

(7) There is a difference among scholars regarding the number of rak'ahs for the Friday prayer. Some say there are six sunnah rak'ahs after the Friday fard (obligatory) prayer and they prohibit the four rak'ahs of cautionary prayer (Ihtiyat al-Zuhr). Accordingly, the author of 'Bahr al-Ra'iq' has clearly stated the prohibition in his book, saying: "The origin of their ignorance is performing four rak'ahs after Friday with the intention of Dhuhr; this was only instituted by some later scholars due to doubt about the validity of the Friday prayer, because of the narration prohibiting multiple Friday congregations in one city. This narration is not the preferred one, nor is this view—meaning the preference for the four rak'ahs after it—reported from Abu Hanifa or his two companions. It happened that I gave a fatwa many times against its prayer, fearing that the ignorant might believe it is the obligation and that the Friday prayer is not an obligation." etc. From the statement of the author of 'Bahr al-Ra'iq', absolute prohibition is understood, and some scholars... / (7) There is a difference of opinion among scholars regarding the number of rak'ahs of the Friday (Jumu'ah) prayer. Some say that after the Friday obligatory (fard) prayer, there are six rak'ahs of sunnah, and they prohibit the four rak'ahs of cautionary fard (Ihtiyat al-Zuhr). Thus, the author of 'Bahr al-Ra'iq' explicitly states the prohibition in his book, saying that the cause of ignorance among those who deny the obligation of Jumu'ah is the performance of four rak'ahs with the intention of Zuhr after Jumu'ah. This was established by some later scholars based on doubt regarding the validity of Jumu'ah, due to the narration that multiple Jumu'ah congregations in one city are not permissible. However, this narration is not the preferred one (mukhtar), nor is the opinion of reading four rak'ahs of Ihtiyat al-Zuhr after Jumu'ah narrated from Imam Abu Hanifa or his companions. It even happened to me that I repeatedly gave a fatwa against these four rak'ahs, fearing that ignorant people would consider these four rak'ahs as the fard and not consider Jumu'ah as fard. etc. From the statement of the author of 'Bahr al-Ra'iq', absolute prohibition is understood, and some scholars...

1 Bahr al-Ra'iq, Kitab al-Salah, Bab al-Jumu'ah, H.M. Saeed Company Karachi, 2/139.

जिल्द 29 फ़तावा रज़विया

[बायां कॉलम: फारसी/अरबी | दायां कॉलम: उर्दू अनुवाद] ...और यह स्थापित और सिद्ध हो चुका है कि मृतक के लिए 'हीला-ए-इसक़ात' जायज़ है। चूंकि उस रिसाले (पुस्तिका) के उद्धरणों को यहाँ उद्धृत करने से बहुत अधिक विस्तार हो जाएगा, इसलिए मैंने उन उद्धरणों को छोड़ दिया है। / क्या है और साबित किया है कि मय्यत के लिए हीला-ए-इसक़ात जायज़ है। चूंकि उस रिसाले की इबारतों को नक़ल करने में बहुत ज़्यादा तवालत (विस्तार) लाज़िम आती है। इसलिए मैंने उन इबारतों को तर्क (छोड़) कर दिया है।

(७) जुमे की नमाज़ की रकअतों की संख्या के बारे में विद्वानों में मतभेद है। कुछ कहते हैं कि जुमे के फ़र्ज़ के बाद छह रकअतें सुन्नत हैं और वे चार रकअत एहतियाती फ़र्ज़ (एहतियात-उज़-ज़ुहर) से मना करते हैं। चुनाँचे 'बहरुल राइक' के लेखक अपनी किताब में इस पाबंदी पर स्पष्ट रूप से कहते हैं: "जुमे की फ़र्ज़ियत का इनकार करने वालों की अज्ञानता का कारण जुमे के बाद ज़ुहर की नीयत से चार रकअत नमाज़ पढ़ना है, जिसे कुछ बाद के विद्वानों ने जुमे की सेहत (वैधता) में संदेह के आधार पर स्थापित किया है। इस संदेह का कारण एक ही शहर में कई जुमे की सभाओं के जायज़ न होने वाली रिवायत है, जबकि यह रिवायत मुख़्तार (चुनी हुई) नहीं है और न ही जुमे के बाद एहतियात-उज़-ज़ुहर के तौर पर चार रकअतें पढ़ने का यह विचार इमाम अबू हनीफ़ा या उनके साथियों से वर्णित है। यहाँ तक कि मेरे साथ ऐसा हुआ कि मैंने कई बार इन चार रकअतों के न होने का फ़तवा दिया, इस डर से कि कहीं अज्ञानी लोग इन चार रकअतों को फ़र्ज़ न समझ लें और जुमे को फ़र्ज़ न मानें।" आदि। 'बहरुल राइक' के लेखक के कथन से तो पूरी तरह मनाही समझ में आती है, और कुछ विद्वान... / (७) नमाज़-ए-जुमा की रकअतों की तादाद में उलमा का इख़्तिलाफ़ है। बाज़ कहते हैं कि फ़र्ज़-ए-जुमा के बाद छह रकअतें सुन्नत हैं और चार रकअत फ़र्ज़-ए-एहतियाती (एहतियात-उज़-ज़ुहर) से मना करते हैं। चुनाँचे साहिब-ए-बहरुल राइक अपनी किताब में मुमानअत पर तसरीह (स्पष्टीकरण) फ़रमाते हुए कहते हैं कि फ़र्ज़ियत-ए-जुमा के मुनकरीन की जहालत का मन्शा जुमा के बाद ज़ुहर की नियत से चार रकअतें नमाज़ पढ़ना है जिसे बाज़ मुताख़िरीन ने सेहत-ए-जुमा में शक की बुनियाद पर वज़अ किया है और इस शक का सबब एक शहर में ताअद्दुद-ए-जुमाआत (एक से अधिक जुमा) के अदम-ए-जवाज़ वाली रिवायत है, हालाँकि यह रिवायत मुख़्तार नहीं और न ही यह क़ौल यानी जुमा के बाद चार रकअतें एहतियात-उज़-ज़ुहर पढ़ने का मुख़्तार होना इमाम अबू हनीफ़ा और उनके साहिबैन से मरवी है। यहाँ तक कि मेरे लिए ऐसे वाक़े हुआ कि मैंने बारहा इन चार

रकअतों के अदम-ए-जवाज़ का फ़तवा दिया इस बात का ख़ौफ़ करते हुए कि जाहिल लोग इन चार रकअतों को फ़र्ज़ समझ लेंगे और जुमा को फ़र्ज़ नहीं समझेंगे। इलख़ (इत्यादि), साहिब-ए-बहरुल राइक के क़ौल से तो मुतलक़न (पूरी तरह) मुमानअत...

---

1 बहरुल राइक, किताबुस सलात, बाबुल जुमुआ, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 2/139।

[بائیں کالم میں فارسی/عربی عبارت اور دائیں کالم میں اس کا اردو ترجمہ ہے] وثابت کردہ ہست کہ اسقاط میت جائز ہست و در نقل عبارات آں رسالہ بسیار طول لازم می شود ازیں وجہ ترک کردم۔ | کیا ہے اور ثابت کیا ہے کہ میت کے لیے حیلہ اسقاط جائز ہے چونکہ اس رسالہ کی عبارات کو نقل کرنے میں بہت زیادہ طوالت لازم آتی ہے۔ اس لیے میں نے ان عبارات کو ترک کردیا ہے۔

(۷) در عدد رکعات نماز جمعہ اختلاف علماء ہست بعضے میگویند کہ بعد از فرض جمعہ شش رکعات سنت ہست و چہار رکعت فرض احتیاطی را منع می کند چنانچہ صاحب بحر الرائق در کتاب خود تصریح کردہ ہست بر منع و میگوید و منشاء جهلهم صلوة الاربع بعد الجمعة بنية الظهر وانما وضعها بعض المتأخرين عند الشك في صحة الجمعة بسبب رواية عدم تعددها في مصر واحد وليست هذه الرواية بالمختارة وليس هذا القول اعنى اختيار صلوة الاربع بعدها مرويا عن ابى حنيفة وصاحبيه حتى وقع لي اني افتيت مراراً بعدم صلوتها خوفاً على اعتقاد الجهلة بأنها الفرض وان الجمعة ليست بفرض۔ الخ، پس از قول صاحب بحر الرائق مطلقاً منع کر دن معلوم میشود و بعض علماء | (۷) نماز جمعہ کی رکعتوں کی تعداد میں علماء کا اختلاف ہے بعض کہتے ہیں کہ فرض جمعہ کے بعد چھ رکعتیں سنت ہیں اور چار رکعت فرض احتیاطی (احتیاط الظہر) سے منع کرتے ہیں۔ چنانچہ صاحب بحر الرائق اپنی کتاب میں ممانعت پر تصریح فرماتے ہوئے کہتے ہیں کہ فرضیت جمعہ کے منکرین کی جہالت کا منشاء جمعہ کے بعد ظہر کی نیت سے چار رکعتیں نماز پڑھنا ہے جس کو بعض متاخرین نے صحت جمعہ میں شک کی بنیاد پر وضع کیا ہے اور اس شک کا سبب ایک شہر میں تعدد جمعات کے عدم جواز والی روایت ہے حالانکہ یہ روایت مختار نہیں اور نہ ہی یہ قول یعنی جمعہ کے بعد چار رکعتیں احتیاط الظہر پڑھنے کا مختار ہونا امام ابو حنیفہ اور ان کے

صاحبین سے مروی ہے۔ حتی کہ میرے لیے ایسے واقع ہوا کہ میں نے بارہا ان چار رکعتوں کے عدم جواز کا فتوی دیا اس بات کا خوف کرتے ہوئے کہ جاہل لوگ ان چار رکعتوں کو فرض سمجھ لیں گے اور جمعہ کو فرض نہیں سمجھیں گے۔ الخ صاحب بحر الرائق کے قول سے تو مطلقاً ممانعت

---

۱ بحر الرائق کتاب الصلوۃ باب الجمعہ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۲/ ۱۳۹

Fatawa Rizvia Volume 29

It is stated that it is better to perform twelve rak'ahs after Friday prayer; four precautionary rak'ahs (Ihtiyati Farz) as is well-known. As the author of Shami has written, quoting Al-Maqdisi from Al-Muhit: "In every place where there is doubt about it being a city, it is appropriate for them to perform four rak'ahs after the Friday prayer with the intention of Dhuhr as a precaution (Ihtiyatan)." etc. However, in my humble opinion, the preferred view is that the statement of the author of Bahr al-Ra'iq should be applied to the general public. Thus, the general public should not be given a fatwa to perform the 'precautionary obligatory prayer' (Farz-e-Ihtiyati) because they will inevitably fall into doubt regarding the obligatoriness (fardiyyat) of the Friday prayer. And the statement of the author of Shami should be applied to the elite (scholars/knowledgeable individuals). This is because they are aware of the conditions of intention and the core of the disagreement, so no doubt will arise for them regarding the obligatoriness of the Friday prayer. I have taken evidence from the statement of Maqdisi where he said: "We do not command the general public with this, but rather we guide the elite to it." etc. In summary, the 'precautionary obligatory prayer' will not be commanded for the general public, rather it is better for the elite. Peace be upon you and those with you. This is what was facilitated for me, and Allah Almighty knows best the correct matter. (T)

Written by the humble Faqir Maulvi Syed Badshah son of Maulvi Syed Muhammad Siddiq Ahsanzada, resident of Riuzi, dated 3rd Ramadan.

---

1. Radd al-Muhtar, Kitab al-Salat, Bab al-Jumu'ah, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 1/542.
2. Radd al-Muhtar, Kitab al-Salat, Bab al-Jumu'ah, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 1/542.

फ़तावा रज़विया जिल्द २९

यह बताया गया है कि यह बेहतर है कि जुमा के बाद बारह रकात अदा की जाएं चार एहतियाती रकात (एहतियाती फ़र्ज़) जैसा कि प्रसिद्ध है। जैसा कि शामी के लेखक ने लिखा है, अल-मुहीत से अल-मक़दीसी को उद्धृत करते हुए: "हर उस स्थान पर जहाँ उसके शहर होने में संदेह हो, उनके लिए उचित है कि वे जुमा के बाद जुहर की नीयत से एहतियातन चार रकात पढ़ें।" आदि। लेकिन मेरे (बंदे के) नज़दीक पसंददीदा नज़रिया यह है कि बहर-उर-राईक़ के लेखक के कथन को आम लोगों पर लागू किया जाना चाहिए। चुनांचे, आम लोगों को 'एहतियाती फ़र्ज़' नमाज़ पढ़ने का फतवा नहीं दिया जाएगा क्योंकि उन्हें जुमा की फ़र्जियत (अनिवार्यता) में ज़रूर संदेह पैदा होगा। और शामी के लेखक के कथन को ख़ास लोगों (विद्वानों) पर लागू किया जाएगा। इसलिए कि वे नीयत के अहवाल और मतभेद की असलियत से वाकिफ हैं, अतः उनके लिए जुमा की फ़र्जियत में कोई संदेह पैदा नहीं होगा। मैंने मक़दीसी के कथन से दलील ली है जहाँ उन्होंने कहा है: "हम आम लोगों को इसका आदेश नहीं देते, बल्कि हम ख़ास लोगों को इसका मार्गदर्शन करते हैं।" आदि। सारांश यह है कि आम लोगों को 'एहतियाती फ़र्ज़' का हुक्म नहीं दिया जाएगा, बल्कि यह ख़ास लोगों के लिए बेहतर है। आप पर और जो आपके साथ हैं उन पर सलाम हो। यह वह है जो मुझे उपलब्ध हुआ, और अल्लाह तआला सही बात को बेहतर जानता है। (त)

लिखित: फ़क़ीर मौलवी सैयद बादशाह पुत्र मौलवी सैयद मोहम्मद सिद्दीक़ अहसनज़ादा, निवासी रयूज़ी, दिनांक ३ रमज़ान।

---

1. रद-उल-मुहतार, किताब-उस-सलात, बाब-उल-जुमा, दार इह्या-उत-तुरात-अल-अरबी, बेरूत १/५४२।
2. रद-उल-मुहतार, किताब-उस-सलात, बाब-उल-जुमा, दार इह्या-उत-तुरात-अल-अरबी, बेरूत १/५४२।

पेज ७५० में से २११

فتاوی رضویہ جلد ۲۹

میگوید کہ بہتر ایں ہست کہ بعد از جمعہ دوازدہ رکعات گزاردہ شود چہار رکعت احتیاطی چنانچہ معروف ہست چنانچہ صاحب شامی نوشتہ ہست و نقل المقدسی عن المحیط کل موضع وقع الشك فی کونہ مصرًا ینبغی لھم ان یصلوا بعد الجمعة اربعًا بنیة الظھر احتیاطا ۔ ۱ الخ لیکن نزد بندہ مختار ایں ہست کہ قول صاحب بحر الرائق حمل کردہ شود بر عوام الناس و عوام الناس را فتوی دادہ نہ شود بر گزاردن فرض احتیاطی زیرا کہ ایشاں را ضرور تردد واقع میشود و در فرضیت جمعہ و قول صاحب شامی محمول ہست بر خواص ازیں وجہ کہ ایشاں واقف ہست از احوال نیت و اصل خلاف پس واقع نمی شود ایشاں را تردد در فرضیت جمعہ و و دلیل گرفتہ ام بقول مقدسی حیث قال نحن لا نامر بذلك ھذہ العوام بل ندل علیہ الخواص ۲ ۔ الخ حاصل آنکہ فرض احتیاطی در حق عوام الناس امر نگردہ شود بلکہ خواص را بہتر ہست فقط السلام علیکم و علی من لدیکم ھذا ما وضع لی واللہ تعالیٰ اعلم بالصواب۔

معلوم ہوتی ہے ، بعض علماء کہتے ہیں بہتر یہ ہے کہ جمعہ کے بعد بارہ رکعتیں ادا کی جائیں چار رکعتیں احتیاطی فرض ہیں جیسا کہ معروف ہے، چنانچہ صاحب شامی نے لکھا ہے کہ مقدسی نے محیط سے نقل کیا جس جگہ کے شہر ہونے میں شک ہو وہاں لوگوں کو چاہیے کہ جمعہ کے بعد چار رکعتیں فرض احتیاطی بنیت ظہر پڑھیں الخ لیکن بندہ کے نزدیک مختار یہ ہے کہ صاحب بحر الرائق کے قول کو عوام الناس پر محمول کیا جائے گا چنانچہ عوام الناس کو فرض احتیاطی پڑھنے کا فتوی نہیں دیا جائے گا کیونکہ ان کو ضرور جمعہ کی فرضیت میں تردد واقع ہوگا اور صاحب شامی کے قول کو خواص پر محمول کیا جائے گا۔ اس لیے کہ وہ نیت کے احوال اور اصل خلاف سے واقف ہیں لہذا ان کی فرضیت جمعہ میں کوئی تردد نہ ہوگا۔ میں نے مقدسی کے قول سے دلیل

پکڑی ہے جہاں انہوں نے فرمایا کہ ہم ایسے احکام کا عوام کو حکم نہیں دیتے بلکہ ان پر خواص کی رہنمائی کرتے ہیں الخ۔ خلاصہ یہ کہ فرض احتیاطی کا عوام کو حکم نہیں دیا جائے گا بلکہ یہ خواص کے لیے بہتر ہے، فقط تم پر اور ان پر جو تمہارے پاس ہیں سلام ہو۔ یہ وہ ہے جو مجھے مہیا ہوا ، اور اللہ تعالیٰ درست بات کو خوب جانتا ہے۔ (ت)

محررہ فقیر مولوی سید بادشاہ ابن مولوی سید محمد صدیق احسن زادہ ساکن ریوزی مورخہ ۳ رمضان

---

۱ ردالمحتار کتاب الصلوۃ باب الجمعۃ دار احیاء التراث العربی بیروت ۱ / ۵۴۲ ۲ ردالمحتار کتاب الصلوۃ باب الجمعۃ دار احیاء التراث العربی بیروت ۱ / ۵۴۲

Fatawa Razvia Volume 29

To the noble presence of Hazrat Maulana Sahib, may his blessings endure. Peace be upon you and the mercy of Allah. This request for a ruling (istifta) is sent for your service, please observe. This Maulvi sahib who has written the answer to this istifta is educated at the Deoband Madrasa, but his thoughts are as he has stated. Now, please state whether it is permissible to appoint this Maulvi sahib as the imam of a mosque and perform prayer behind him; is the prayer valid behind such a person?

The Answer:

After the sunnah greetings, that question and answer in the responses has been handled with much cunning; even then, a glimpse of Wahhabism (Tawahub) is apparent from them. You wrote about the responder receiving education in Deoband; these questions should not have been asked there, for if he gave wrong answers, he would still not be a disbeliever (kafir). The beliefs of the Deobandis are those regarding which the scholars of the two holy sanctuaries (Haramain Sharifain) have unanimously written that:

'Whoever, being aware of their statements, doubts their punishment and their disbelief, is indeed a disbeliever himself.'

In such a situation, the question should be: what do you think of Rashid Ahmad Gangohi, Ashraf Ali Thanvi, Qasim Nanotwi, Mahmood Hasan Deobandi, and Khalil Ahmad Ambethwi, and even worse than all of them, their Imam Ismail Dehlvi and their books: Barahin-e-Qatiah, Tahzeer-un-Naas, Hifz-ul-Iman, Taqwiyat-ul-Iman, and Ezah-ul-Haq? How do you view the fatwas issued by the scholars of the Haramain Sharifain regarding these people? Do you consider them false or accept them as truth? And if he expresses his ignorance of these fatwas, then send for 'Husam-ul-Haramain' from the Bareilly Ahl-e-Sunnat press and show it to him. If he accepts with an open heart that indeed these fatwas of the scholars of Haramain Sharifain are the truth, then it will be proven that Deobandism has no effect on him; otherwise, the fatwa of the scholars of Haramain Sharifain is the same:

'Whoever doubts his punishment and his disbelief, is indeed a disbeliever.' (T)

---

1. Husam-ul-Haramain, Maktaba Nabawiya, Lahore, p. 13
2. Husam-ul-Haramain, Maktaba Nabawiya, Lahore, p. 13

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

हज़रत मौलाना साहब की ख़िदमत-ए-अकदस में, उनकी बरकतें बनी रहें। अस्सलाम-उ-अलैकुम व रहमतुल्लाह। यह इस्तफ़्ता (फ़तवे की दरख्वास्त) आपकी सेवा में भेजा जा रहा है, कृपया इसे देखें। यह मौलवी साहब जिन्होंने इस इस्तफ़्ता का उत्तर लिखा है, देवबंद मदरसे के शिक्षित हैं लेकिन उनके विचार वही हैं जो उन्होंने लिखे हैं। अब यह स्पष्ट करें कि इन मौलवी साहब को मस्जिद का इमाम नियुक्त करना और उनके पीछे नमाज़ पढ़ना कैसा है; क्या ऐसे व्यक्ति के पीछे नमाज़ हो जाती है?

जवाब:

सुन्नत के अनुसार अभिवादन के बाद, उस सवाल और जवाब में बहुत चालाकी बरती गई है, फिर भी उनमें वहाबियत (तवहुब) की झलक दिखाई देती है। आपने उत्तरदाता का देवबंद में शिक्षा पाना लिखा है; वहां ये सवाल नहीं करने चाहिए थे, क्योंकि अगर वह गलत जवाब देता तब भी काफ़िर न होता। देवबंदियों के अकीदे (विश्वास) तो वे हैं जिनके बारे में हरमैन शरीफ़ैन (मक्का और मदीना) के उलेमा ने सर्वसम्मति से लिखा है कि:

'जो उनके कथनों से अवगत होकर उनके अज़ाब और कुफ़्र (अविश्वास) में संदेह करे, वह स्वयं भी काफ़िर है।'

ऐसी स्थिति में तो यह सवाल करना चाहिए कि रशीद अहमद गंगोही, अशरफ़ अली थानवी, कासिम नानौतवी, महमूद हसन देवबंदी और खलील अहमद अंबेतवी, और उन सब से बढ़कर उनके इमाम इस्माइल देहलवी और उनकी किताबों: बराहीन-ए-कातिआ, तहज़ीर-उन-नास, हिफ़्ज़ुल ईमान, तक़्वियत-उल-ईमान और ईज़ाहुल हक को कैसा जानते हो? और इन लोगों के संबंध में हरमैन शरीफ़ैन के विद्वानों ने जो फ़तवे दिए हैं, उन्हें गलत समझते हो या सही मानते हो? और अगर वह इन फ़तवों से अपनी अनभिज्ञता ज़ाहिर करे, तो बरेली के अहल-ए-सुन्नत छापाखाने से 'हुसामुल हरमैन' मंगा लीजिए और उसे दिखाइए। अगर वह खुले दिल से स्वीकार करे कि वास्तव में हरमैन शरीफ़ैन के विद्वानों के ये फ़तवे सही हैं, तो यह साबित होगा कि उस पर देवबंदियत का कोई प्रभाव नहीं है; अन्यथा हरमैन शरीफ़ैन के विद्वानों का वही फ़तवा है कि:

'जो उसके अज़ाब और कुफ़्र में संदेह करे, वह भी काफ़िर है।' (त)

1. हुसामुल हरमैन, मकतबा नबविया, लाहौर, पृष्ठ 13
2. हुसामुल हरमैन, मकतबा नबविया, लाहौर, पृष्ठ 13

पेज 212/750

بخدمت اقدس حضرت مولانا صاحب دامت برکاتہم السلام علیکم ورحمة اللہ، استفتائ ہذا ارسال خدمت ہے ملاحظہ فرمائیں، یہ مولوی صاحب جنہوں نے جواب استفتائ ہذا تحریر فرمایا ہے تعلیم یافتہ مدرسہ دیوبند ہیں لیکن ان کے خیالات یہ ہیں جو انہوں نے ارقام فرمائے ہیں اب یہ تحریر فرمائیں کہ ان مولوی صاحب کو امام مسجد مقرر کرنا اور ان کے پیچھے نماز پڑھنا کیسا ہے، آیا اس شخص کے پیچھے نماز ہو جاتی ہے۔

الجواب:

بعد مراسم سنّت، وہ سوال جواب جوابات میں بہت چالاکی برتی گئی ہے پھر بھی ان سے توھب کی جھلک پیدا ہے آپ نے مجیب کا دیوبند میں تعلیم پانا لکھا ہے وہاں یہ سوالات کرنے نہ تھے کہ انہیں غلط جواب دے جب بھی کافر تو نہ ہوگا دیوبندیوں کے عقائد تو وہ ہیں جن کی نسبت علمائے حرمین شریفین نے بالاتفاق تحریر فرمایا ہے کہ:

من شك في عذابه وكفره فقد كفر - جو ان کے اقوال پر مطلع ہو کر ان کے عذاب اور کفر میں شک کرے وہ بھی کافر ہے۔

ایسی جگہ تو یہ سوال کرنا چاہیے کہ رشید احمد گنگوہی، اشرف علی تھانوی، قاسم نانوتوی، محمود حسن دیوبندی اور خلیل احمد انبیٹھوی اور ان سب سے گھٹ کر ان کے امام اسمعیل دہلوی اور ان کی کتابوں: براہینِ قاطعہ، تحذیر الناس، حفظ الایمان، تقویت الایمان اور ایضاح الحق کو کیسا جانتے ہو اور ان لوگوں کی نسبت علمائے حرمین شریفین نے جو فتوے دیئے ہیں انہیں باطل سمجھتے ہو یا حق مانتے ہو اور اگر وہ ان فتوؤں سے اپنی ناواقفی ظاہر کرے تو بریلی مطبع اہلسنت سے حسام

الحرمین منگا لیجئے اور دکھائیے اگر بکشادہ پیشانی تسلیم کرے کہ بیشک علمائے حرمین شریفین کے یہ فتوے حق ہیں تو ثابت ہوگا کہ دیوبندیت کا اس پر کچھ اثر نہیں ورنہ علمائے حرمین شریفین کا وہی فتویٰ ہے کہ:

من شك في عذابه وكفره فقد كفر - جو اس کے عذاب اور کفر میں شک کرے وہ بھی کافر ہے۔ (ت)

---

1. حسام الحرمین مکتبہ نبویہ لاہور ص ۱۳
2. حسام الحرمین مکتبہ نبویہ لاہور ص ۱۳

Fatawa Ridawiyya, Volume 29

At that time, it will become clear to you how a person who—far from considering those who insult Allah and His Messenger as disbelievers—considers them scholars of religion and elders of the Muslims, can be a Muslim. Then, why mention the issue of Urs, Fatiha, and subsidiary matters before him, that is all.

Problem 63: 3 Jamadi al-Ula 1336 AH Religious and certain brother Maulvi Muhammad Farooq Sahib (may he be safe).

The Answer: After the Sunnah greeting, I searched for your letter at this time but did not find it; I do not know what else was written. I remember one question regarding Urs. The proof of the noble Urs has been given by Shah Abdul Aziz Sahib in his treatise 'Zabiha' from the presence of the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him), Siddiq al-Akbar, and Farooq al-A'zam (may Allah be pleased with them both). The aforementioned Shah Sahib and his ancestors perform Urs. A Punjabi objected to this, to which Shah Sahib replied from Hadith. The discourse is about that noble Urs which is free from Sharia-prohibited acts; there is nothing but good in it. And it is not necessary for that exact good act to be narrated [from the early generations]. This issue was settled among Siddiq, Farooq, and the Companions (may Allah be pleased with them) that even if the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) did not do it, it is a good deed, therefore it should be done; and there was a consensus of the noble Companions (may Allah be pleased with them) on this. The answer to the question is this much. However, the construction of madrasas and the appointment of teachers in them with salaries, and the determination of Dars-e-Nizami or any other prescribed syllabus in them, monthly and annual examinations, marks for success in them and prizes for them, printing books, setting commissions, etc.—thousands of such things are prevalent among the deniers who also call themselves Hanafis. I am surprised where they found the clarification of these matters from Imam al-A'zam. Similarly, why did the fulfillment of the obligatory and necessary maintenance (nafaqah) for themselves and their families through court inspection not require clarification from the instruction of Imam al-A'zam? Prayers for the children, that is all.

Problem 64: From Madrasa Ahl-e-Sunnat-o-Jamaat, Bareilly. Questioned by Maulvi Muhammad Afzal Sahib Kabuli, student of the said Madrasa, 13 Jamadi al-Akhira 1336 AH.

[Persian Poetry] Sazāyam bar gunāham lāzim āmad / Pas āngah rahmat-ash na bāham āmad Bagū guftī khaṭā'e yā ṣawābam / Basā asrār īnjā bāham āmad

(It is necessary for me to receive punishment for my sin, so at that time His [Allah Almighty's] mercy was not provided.)

Page 213 of 750

उस समय आपको स्पष्ट हो जाएगा कि वह व्यक्ति जो अल्लाह और उसके रसूल को गाली देने वालों को काफ़िर समझना तो दूर, उन्हें दीन का विद्वान और मुसलमानों का बुजुर्ग समझता है, वह कैसे मुसलमान हो सकता है। फिर उसके सामने उर्स, फ़ातिहा और सहायक मसलों का ज़िक्र क्यों किया गया, बस।

मसला 63: 3 जमादी-उल-उला 1336 हिजरी दीनी और यकीनी भाई मौलवी मुहम्मद फ़ारूक साहिब (सल्लमा)।

जवाब: सुन्नत के अनुसार सलाम के बाद, इस समय आपका पत्र तलाश किया, नहीं मिला; पता नहीं और क्या लिखा था। उर्स के बारे में एक सवाल याद है। उर्स शरीफ़ का प्रमाण शाह अब्दुल अज़ीज़ साहिब ने अपने रिसाले 'ज़बीहा' में हुज़ूर अकदस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम), सिद्दीक-ए-अकबर और फ़ारूक-ए-आज़म (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से दिया है। उल्लेखित शाह साहिब और उनके पूर्वज उर्स करते हैं। एक पंजाबी ने इस पर आपत्ति की जिसका जवाब शाह साहिब ने हदीस से दिया। बात उस उर्स शरीफ़ की है जो शरई बुराइयों से मुक्त हो, उसमें खैर के अलावा कुछ नहीं है। और उस खैर का हुबहू नकल होना ज़रूरी नहीं है। यह मसला सिद्दीक, फ़ारूक और सहाबा (रज़ियल्लाहु अन्हुम) के बीच तय हो चुका था कि भले ही हुज़ूर अकदस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने नहीं किया, लेकिन काम खैर है इसलिए किया जाना चाहिए और इस पर सहाबा किराम (रज़ियल्लाहु अन्हुम) का इजमा (आम सहमति) हुआ। सवाल का जवाब तो इतना ही है। मगर मदरसों का निर्माण और उनमें शिक्षकों की वेतन के साथ नियुक्ति और उनमें दर्स-ए-निज़ामी या किसी अन्य निर्धारित पाठ्यक्रम का निर्धारण, उनमें मासिक और वार्षिक परीक्षा और उनमें सफलता के अंक और उन पर इनाम और किताबें छापना, कमीशन निर्धारित करना आदि हज़ारों बातें उन इनकार करने वालों में प्रचलित हैं जो खुद को हनफ़ी भी कहते हैं। मुझे आश्चर्य है कि इन बातों का स्पष्टीकरण उन्हें इमाम-ए-आज़म से कहाँ मिला? इसी तरह अपने और अपने परिवार के फ़र्ज़ और वाजिब ख़र्च (नफ़क़ा) को कोर्ट इंस्पेक्टरी से अदा करना भी इमाम-ए-आज़म के निर्देश के स्पष्टीकरण का मोहताज क्यों न हुआ? बच्चों को दुआ, बस।

मसला 64: मदरसा अहले सुन्नत व जमात बरेली से, मुस्तफ़्ती (प्रश्नकर्ता) मौलवी मुहम्मद अफ़ज़ल साहिब काबुली, छात्र उक्त मदरसा, 13 जमादी-अल-आखिरा 1336 हिजरी।

[फ़ारसी कविता] सज़ायम बर गुनाहम लाज़िम आमद / पस आंगह रहमतश न बाहम आमद बगू गुफ्ती खताए या सवाबम / बसा असरार ईंजा बाहम आमद

(मेरे गुनाह पर मुझे सज़ा मिलना लाज़िम है तो उस वक्त उसकी (अल्लाह तआला की) रहमत मुहैय्या न हुई।)

पेज 213 of 750

اس وقت آپ کو ظاہر ہو جائے گا کہ جو شخص اللہ و رسول کو گالیاں دینے والوں کو کافر نہ جاننا در کنار علمائے دین واکابر مسلمین جانے وہ کیونکر مسلمان ، پھر مسئلہ عرس و فاتحہ و فرعی مسائل کا اس کے سامنے ذکر کیا ہے ، فقط۔

مسئلہ ۶۳: ۳ جمادی الاولی ۱۳۳۶ھ برادر دینی و یقینی مولوی محمد فاروق صاحب سلمہ

الجواب: بعد تحیہ مسنونہ ، اس وقت آپ کا خط تلاش کیا ، نہ ملا معلوم نہیں اور کیا لکھا تھا ایک سوال درباره عرس یاد ہے عرش شریف کا ثبوت شاہ عبد العزیز صاحب نے اپنے رسالہ ذبیحہ میں حضور اقدس صلی اللہ تعالی علیہ و سلم و صدیق اکبر و فاروق اعظم رضی اللہ تعالی عنہما سے دیا ہے ، شاہ صاحب موصوف اور ان کے اب وجد عرس کرتے ہیں، ایک پنجابی نے اس پر اعتراض کیا جس کا جواب شاہ صاحب نے حدیث سے دیا، کلام اُس عرس شریف میں ہے جو منکرات شرعیہ سے خالی ہو، اس میں خیر کے سوا کیا ہے ، اور خیر کا بعینہ منقول ہونا کچھ ضرور نہیں، یہ مسئلہ صدیق و فاروق و صحابہ رضی اللہ تعالی عنہم میں طے ہو لیا کہ اگرچہ حضرت اقدس صلی اللہ تعالی علیہ و سلم نے نہ کیا مگر کام خیر ہے لہذا کیا جائے اور اس پر صحابہ کرام رضی اللہ عنہم کا اجماع ہوا۔ سوال کا جواب تو اتنا ہے مگر مدارس کی تعمیر اور ان میں مدرسین کا تنخواہوں کے ساتھ تقرر اور اس میں درس نظامی یا اور کسی مقرر کردہ نصاب کا تعین اور ان میں ماہانہ و سالانہ امتحان اور اس میں کامیابیوں کے نمبر اور ان پر انعام اور کتابیں چھاپنا ، کمیشن مقرر کرنا وغیرہ ہزاروں باتیں منکرین میں رائج ہیں وہ سب بھی اپنے آپ کو حنفی کہتے ہیں، مجھے تعجب ہے کہ ان باتوں کی تصریح امام اعظم سے کہاں انہیں ہاتھ لگی یونہی اپنے اور اپنے

اہل و عیال کے فرض و واجب نفقہ کا کوٹ انسپکٹری سے ادا کرنا بھی امام اعظم کے ارشاد سے کیوں نہ محتاج تصریح ہوا، بچوں کو دعا، فقط

مسئلہ ۶۴ :از مدرسہ اہلسنت و جماعت بریلی مسئولہ مولوی محمد افضل صاحب کابلی طالب علم مدرسہ مذکور ۱۳ جمادی الاخری ۱۳۳۶ھ

سزایم برگناہم لازم آمد پس آنگہ رحمتش نہ باہم آمد بگو گفتی خطائے یا صوابم بسا اسرار اینجا باہم آمد

(میرے گناہ پر مجھے سزا ملنا لازم ہے تو اس وقت اس (اللہ تعالیٰ) کی رحمت مہیا نہ ہوئی)

Fatawa Rizvia, Volume 29

O Mufti! Tell me, did I say it wrong or right? Many secrets have been obtained at this place.

The Answer:

1. Who has made punishment mandatory for a Muslim? For this is the saying of the oppressive Mu'tazilite.
2. And even if he receives punishment, he will not receive a complete punishment. Because for a believer, forgiveness is mandatory upon Allah Almighty's grace.
3. Even if, hypothetically, Allah Almighty does not forgive the believer's fault, His mercy remains free from any deficiency.
4. Because He shows mercy to whom He wills, not to every individual, and He punishes whom He wills. This (command) is also established.
5. In this world, His mercy is common to all; in the hereafter, it is specifically the portion of the Muslim.
6. For a believer, there is no end to his reward; for a disbeliever, His punishment is eternal.
7. Every attribute of His has a manifestation, because He is the Taker of Retribution and the Showerer of Mercy.

And Allah Almighty knows best.

(1) Who has made punishment mandatory for a Muslim? For this is the saying of the oppressive Mu'tazilite. (2) And if he receives punishment, he will still not receive a complete punishment. Because for a believer, forgiveness is mandatory upon Allah Almighty's grace. (3) If, hypothetically, Allah Almighty does not forgive the believer's fault, even then His mercy is free from deficiency. (4) Because He shows mercy to whom He wills, not to every person; He punishes whom He wills. This (rule) is also established. (5) In this world, His mercy is common to everyone; in the hereafter, it is specifically for the Muslims. (6) For a believer, there is no end to his reward; for a disbeliever, the punishment is eternal. (7) Every attribute of His has a manifestation, because He is the One who takes retribution and the One who shows mercy.

Problem 65: From Kanpur, sent by Maulvi Sulaiman Sahib, dated 7 Jumada al-Ukhra 1331 AH. Since when has the custom of Meelad Sharif been in practice, and from where is the practice of standing out of respect at the specific mention of birth established?

फ़तावा रज़विया, खंड 29

ऐ मुफ्ती! बताएं कि मैंने गलत कहा या सही कहा, बहुत से राज़ इस जगह हासिल हुए हैं।

उत्तर:

1. मुसलमान के लिए सजा किसने लाज़िम (अनिवार्य) की है? क्योंकि यह तो ज़ालिम मोतज़ली का कौल (कथन) है।
2. और अगर उसने सजा पाई तो भी पूरी सजा न पाएगा। क्योंकि मोमिन के लिए अल्लाह तआला के जिम्मे करम पर माफ़ी लाज़िम है।
3. अगर मान लें कि अल्लाह तआला मोमिन की खता माफ न फरमाए तो भी उसकी रहमत नुक्सान से पाक है।
4. क्योंकि वह जिस पर चाहे रहम फरमाता है न कि हर व्यक्ति पर, जिसको चाहे अज़ाब देता है। यह (नियम) भी कायम है।
5. दुनिया में उसकी रहमत सब के लिए आम है, आखिरत में खास मुसलमान का हिस्सा है।
6. मोमिन के लिए उसके सवाब (पुण्य) की कोई इन्तहा नहीं है, काफिर के लिए उसका अज़ाब स्थायी है।
7. उसकी हर सिफत (विशेषता) का कोई मज़हर (प्रकटीकरण) है, क्योंकि वह इंतकाम लेने वाला और रहम फरमाने वाला है।

अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।

(१) मुसलमान के लिए सजा किसने लाज़िम की है? क्योंकि यह तो ज़ालिम मोतज़ली का कौल है। (२) और अगर उसने सजा पाई तो भी वह पूर्ण दंड नहीं पाएगा। क्योंकि मोमिन के लिए अल्लाह तआला के अनुग्रह पर क्षमा अनिवार्य है। (३) यदि परिकल्पना के तौर पर अल्लाह तआला मोमिन की गलती माफ न फरमाए, तब भी उसकी दया कमी से मुक्त है। (४) क्योंकि वह जिसे चाहता है उस पर दया करता है, न कि हर व्यक्ति पर; वह जिसे चाहता है दंड देता है। यह (नियम) भी स्थापित है। (५) दुनिया में उसकी दया सभी के लिए सामान्य है, परलोक में विशेष रूप से मुसलमानों का हिस्सा है। (६) मोमिन के लिए उसके पुण्य का कोई अंत नहीं है, काफिर के लिए उसका दंड शाश्वत है। (७) उसके प्रत्येक गुण का कोई प्रकटीकरण है, क्योंकि वह प्रतिशोध लेने वाला और दया करने वाला है।

मसला ६५: कानपुर से, प्रेषक मौलवी सुलेमान साहब, दिनांक ७ जमादी-उल-उखरा १३३१ हिजरी। मीलाद शरीफ का रिवाज कब से है और विशेष रूप से जन्म के उल्लेख के समय सम्मानपूर्वक खड़े होना कहाँ से सिद्ध है?

पृष्ठ २१४ का ७५०

فتاوی رضویه جلد ۲۹

اے مفتی ! بتائیں نے غلط کہا یاد درست کہا، بہت سے راز اس جگہ حاصل ہوئے ہیں ت)

الجواب:

۱ مسلمان راسزا لازم کہ کردست - کہ قول اعتزالی ظالم آمد ۲ و گریابد سزا کامل نیابد - کہ عفو ش بہر مومن لازم آمد ۳ و گربا لفرض از و چیزے نہ بخشد - ز نقصان رحمتش خود سالم آمد ۴ کہ یرا حم من یشاء لکل فرد - یعذب من یشاء ہم قائم آمد ۵ بدنیار رحمتش بر جملہ عام ست - یعقے خاص حظ مسلم آمد ۶ ثوابش بہر مومن منتھی نیست - عذابش بہر کافر دائم آمد ۷ برائے ہر صفت مظہر بکار ست - کہ اوذ و انتقام ورا حم آمد

واللہ تعالٰی اعلم

(۱) مسلمان کے لیے سزا کس نے لازم کی ہے کہ یہ تو ظالم معتزلی کا قول ہے۔ (۲) اور اگر اس نے سزا پائی تو بھی کامل سزا نہ پائے گا۔ کیونکہ مومن کے لیے عفو اللہ تعالیٰ کے ذمہ کرم پر لازم ہے۔ (۳) اگر بالفرض اللہ تعالیٰ مومن کی خطا معاف نہ فرمائے تو بھی اس کی رحمت نقصان سے مبرا ہے۔ (۴) کیونکہ وہ جس پر چاہے رحم فرماتا ہے نہ کہ ہر فرد پر، جس کو چاہے عذاب دیتا ہے۔ (یہ حکم) بھی قائم ہے۔ (۵) دنیا میں اس کی رحمت سب کو عام ہے، آخرت میں خاص مسلمان کا حصہ ہے۔ (۶) مومن کے لیے اس کے ثواب کی انتہا نہیں ہے، کافر کے لیے اس کا عذاب دائمی ہے۔ (۷) اس کی ہر صفت کا کوئی مظہر ہے، کیونکہ وہ انتقام لینے والا اور رحم فرمانے والا ہے۔

مسئلہ ۶۵: از کانپور مرسلہ مولوی سلیمان صاحب مورخہ ۷ جمادی الاخری ۱۳۳۱ھ میلاد شریف کا رواج کب سے ہے اور خاص ذکر پیدائش کے وقت تعظیماً قیام کرنا کہاں سے ثابت ہے؟

Fatawa Razawiyya Volume 29

The Answer: Proof for the blessed gathering of Milad and Standing (Qiyam) has been given thousands of times, and now the summary is that their proof is from the same source as the proof for the disbelief (Kufr) of the Wahhabis, and Allah Almighty knows best.

Issue 66: Submitted by Shafi' Ahmad Faqir Qadiri Razawi, student of Madrasa Manzar-e-Islam, 21 Jamadi al-Akhira 1336 AH. What do the scholars of religion say regarding the issue mentioned in the sermon (Khutbah) of *Sharh al-Aqa'id al-Adudiyyah* by Al-Muhaqqiq al-Dawwani (may Allah have mercy on him):

[Arabic Quote:] "O He who granted us success in researching Islamic beliefs and protected us from imitation (Taqlid) in the principles and branches of theology."

[Urdu Translation:] O You who granted us success in researching Islamic beliefs and saved us from imitation in the principles of theology and the branches of theology. (1)

And it is also famous that:

[Arabic Quote:] "There is no imitation (Taqlid) in matters of belief." (2)

[Urdu Translation:] There is no imitation in matters of belief. (T)

Respected sir, if it is so, then why is it said for an ignorant person that when a belief is presented before him and he does not know it, he should say, "My belief is that which the Ahl al-Sunnah hold"? Rather, no ignorant person, nor even most ordinary scholars, know the proofs for most beliefs, and we often present the sayings of the Imams to prove beliefs. This method of proof exists in the writings of the great scholars. Or does this mean that knowledge of beliefs should be certain like the knowledge of a verified matter, not speculative knowledge like the knowledge of an imitator?

The Answer: Just as there are four principles in Jurisprudence (Fiqh): Book, Sunnah, Consensus (Ijma), and Analogy (Qiyas), there are four principles in Beliefs (Aqa'id): Book, Sunnah, the Great Majority (Sawad al-A'zam), and Sound Reason. So, whoever knows a matter of belief through one of these, knows it by evidence, not merely by blind imitation without evidence. The Ahl al-Sunnah themselves are the Great Majority (Sawad al-A'zam) of Islam, so referring to them is referring to evidence, not imitation. Similarly, relying on the sayings of the Imams is in the sense that this is the

school of the Ahl al-Sunnah. Therefore, if even one, two, ten, or twenty great scholars write against the majority and the Sawad al-A'zam...

---

1. Al-Dawwani 'ala al-Aqa'id al-Adudiyyah, Khutbah al-Kitab, Matba' Mujtabai, Delhi, p. 2
2. [Footnote marker 2]

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

अल-जवाब: महफ़िल-ए-मीलाद मुबारक और क़याम का सुबूत हज़ारों बार दे दिया, और अब इजमालन यह है कि उनका सुबूत वहाँ से है जहाँ से वहाबिया के कुफ़्र का सुबूत आया है, वल्लाहु तआला आलम।

मसला 66: मसूला शफ़ी अहमद फ़क़ीर क़ादरी रज़वी तालिब-ए-इल्म मदरसा मंज़र-ए-इस्लाम, 21 जमादी अल-उखरा 1336 हिजरी। क्या फ़रमाते हैं उलेमा-ए-दीन इस मसले में कि शरह अक़ायद अज़ुदिया लिल-मुहक़्क़िक़ अद-दवानी रहमतुल्लाह अलैहि के खुतबे में है:

[अरबी उद्धरण:] "या मन वफ़्फ़क़ना लितहक़ीक़िल अक़ायदिल इस्लामिया व अस़मना अनिल तक़लीदि फ़िल उस़ूलि वल फ़ुरूइल कलामिया।"

[हिन्दी अनुवाद:] ऐ वह ज़ात जिसने हमें अक़ायद-ए-इस्लामिया की तहक़ीक़ की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई और हमें उस़ूल-ए-कलामिया और फ़ुरू-ए-कलामिया में तक़लीद से बचाया। (1)

और यह भी मशहूर है:

[अरबी उद्धरण:] "ला तक़लीद फ़िल एतक़ादियात।" (2)

[हिन्दी अनुवाद:] एतक़ादियात में तक़लीद नहीं। (त)

हुज़ूर अगर ऐसा है तो जाहिल के लिए यह क्यों है कि जब उसके सामने कोई अक़ीदा पेश किया जाए और यह न जानता हो तो कहे मेरा वह अक़ीदा है जो अहल-ए-सुन्नत का है, बल्कि कोई जाहिल बल्कि अक्सर मामूली आलिम अक्सर अक़ायद के इस्तिदलाल नहीं जानते और हम अक्सर सुबूत-ए-अक़ायद में अक़्वाल-ए-अइम्मा पेश करते हैं और यह तरीक़-ए-इस़बात तसानीफ़-ए-उलेमा-ए-एज़ाम में मौजूद है। या इसके मानी यह हैं कि अक़ायद का इल्म यक़ीनी मिस्ल इल्म-ए-अम्र-ए-मुहक़्क़िक़ हो, न इल्म-ए-ज़न्नी मिस्ल इल्म-ए-मर्द-ए-मुक़ल्लिद।

अल-जवाब: जिस तरह फ़िक़्ह में चार उस़ूल हैं: किताब, सुन्नत, इजमा, क़ियास; अक़ायद में चार उस़ूल हैं: किताब, सुन्नत, सवाद-ए-आज़म, अक़्ल-ए-सहीह। तो जो उनमें एक के ज़रिया से किसी मसला-ए-अक़ायद को जानता है दलील से जानता है न कि बे-दलील महज़ तक़लीदन। अहल-ए-सुन्नत ही सवाद-ए-आज़म-ए-इस्लाम हैं, तो उन पर हवाला दलील पर हवाला है न कि तक़लीद। यूँ ही अक़्वाल-ए-अइम्मा से इस्तिनाद इसी मानी पर है कि यह अहल-ए-सुन्नत का मज़हब है। व लिहाज़ा

एक दो दस बीस उलेमा-ए-कबार ही सही अगर जमहूर व सवाद-ए-आज़म के ख़िलाफ़ लिखेंगे...
(जारी)

---

1. अद-दवानी अलल अक़ायद अल-अज़ुदिया, खुतबा अल-किताब, मतबअ मुज्तबाई दिल्ली, सफ़ा 2
2. [फुटनोट मार्कर 2]

पेज 215 का 750

فتاوٰی رضویہ جلد ۲۹

الجواب: مجلس میلاد مبارک و قیام کا ثبوت ہزاروں بار دے دیا، اور اب اجمالاً یہ ہے کہ ان کا ثبوت وہاں سے ہے جہاں سے وہابیہ کے کفر کا ثبوت آیا ہے، واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۶۶: مسئولہ شفیع احمد فقیر قادری رضوی طالب علم مدرسہ منظر اسلام ۲۱ جمادی الاخرٰی ۱۳۳۶ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ شرح عقائد عضدیہ للمحقق الدوانی رحمۃ اللہ علیہ کے خطبہ میں ہے۔

یَا مَن وَفَّقَنَا لِتَحقیقِ العَقائدِ الاسلامیۃ وعصمنا عن التقلیدِ في الاصولِ والفروعِ الکلامیۃ۔

اے وہ ذات جس نے ہمیں عقائد اسلامیہ کی تحقیق کی توفیق عطا فرمائی اور ہمیں اصولِ کلامیہ اور فروعِ کلامیہ میں تقلید سے بچایا۔ 1

اور یہ بھی مشہور ہے:

لا تقلید في الاعتقادیات ۔ ۲

اعتقادیات میں تقلید نہیں۔ (ت)

حضور اگر ایسا ہے تو جاہل کے لیے یہ کیوں ہے کہ جب اس کے سامنے کوئی عقیدہ پیش کیا جائے اور یہ نہ جانتا ہو تو کہے میرا وہ عقیدہ ہے جو اہل سنت کا ہے بلکہ کوئی جاہل بلکہ اکثر معمولی عالم اکثر عقائد کے استدلال نہیں جانتے اور ہم اکثر ثبوت عقائد میں اقوال ائمہ پیش کرتے ہیں اور یہ طریق اثبات تصانیف علمائے عظام میں موجود یا اس کے معنی یہ ہیں کہ عقائد کا علم یقینی مثل علم امر محقق ہو، نہ علم ظنی مثل علم مرد مقلد۔

الجواب: جس طرح فقہ میں چار اصول ہیں، کتاب سنت، اجماع، قیاس، عقائد میں چار اصول ہیں، کتاب، سنت، سواد اعظم، عقل صحیح، تو جو ان میں ایک کے ذریعہ سے کسی مسئلہ عقائد کو جانتا ہے دلیل سے جانتا ہے نہ کہ بے دلیل محض تقلیداً، اہل سنت ہی سواد اعظم اسلام ہیں، تو ان پر حوالہ دلیل پر حوالہ ہے نہ کہ تقلید۔ یوں ہی اقوال ائمہ سے استناد اسی معنی پر ہے کہ یہ اہل سنت کا مذہب ہے ولہذا ایک دو دس بیس علماء کبار ہی سہی اگر جمہور و سواد اعظم کے خلاف لکھیں گے اس

---

1 الدوانی علی العقائد العضدیہ خطبۃ الکتاب مطبع مجتبائی دہلی ص ۲ 2

At that time, it was not permissible to rely on or cite their sayings, as this would then be 'Taqlid' (blind following), which is not permissible in matters of creed ('Aqa'id'). This evidence, namely directing towards the 'Sawad-e-Azam' (the great majority), is a sign of the perfect mercy of Allah and His Messenger (peace and blessings be upon him). Not everyone was capable of proving their creed from the Quran and Sunnah. Reason alone is not sufficient in matters of hearing (revelation). Inevitably, the masses had to follow in matters of creed. Therefore, this clear and manifest evidence was provided: that whatever creed the great majority of Muslims adhere to is the truth. Identifying it is not difficult. During the time of the Sahaba (may Allah be pleased with them), there were no deviants at all. Even though they emerged later, all the deviants in the world combined could never reach the number of the Ahl al-Sunnah. Praise be to Allah, just as 'Ijma' (consensus) is the strongest of evidences in jurisprudence—such that even a Mujtahid has no authority to go against consensus, even if he finds something contrary to it in the Quran and Sunnah according to his own opinion; it will surely be understood that either it is an error in understanding or that this ruling has been abrogated, even if the Mujtahid is not aware of the abrogating text—similarly, the consensus of the Ummah is a great thing. The agreement of the 'Sawad-e-Azam', i.e., the Ahl al-Sunnah, on any issue of creed is the strongest of evidences here. If something contrary to it is perceived from the Quran and Sunnah, it is an error in understanding; the truth is with the 'Sawad-e-Azam'. And in one sense, the strongest evidence here is reason, because the authority of other evidences is also manifest through it. However, it is impossible for the consensus of the 'Sawad-e-Azam' to be against any sound rational proof. These are just a few sentences, but by the grace of Allah, they are very beneficial and profitable. "Cling to it firmly with your molars." And Allah Almighty knows best.

Case 76 to 81: From the city, Kanboh neighborhood, mansion of Hamid Hussain Khan Sahib, Nobleman. Questioner: Shamshad Ali Khan Sahib, 26 Rajab 1336 AH. (1) In Sahih Muslim and other authentic collections, this Hadith is recorded with different wordings but the same meaning, that the Holy Prophet (peace and blessings be upon him) said: "The matter of Islam will always remain dominant, and there will be twelve Caliphs in it." What is sought to be known is, what are the blessed names of these twelve? (2) Will those twelve Caliphs all be virtuous individuals, or will some be good and some bad? And if it is said that not all of them were good, rather some were such that they could not be called the best of people, did the Prophet (peace and blessings

be upon him) provide this detail, or did other scholars? (3) Have those twelve Caliphs already graced the throne of the Caliphate, or are some still remaining? (4) Since in the Hadiths related to the twelve Caliphs, this issue has been mentioned that Islam will not end until the twelve Caliphs are completed; if the Caliphs have already appeared in the world and completed their number, then now...

उस समय उनके कथनों पर न भरोसा जायज़ था न हवाला, क्योंकि तब यह 'तक़लीद' (अंधानुकरण) होती, और वह अक़ाइद (धर्म के सिद्धांतों) में जायज़ नहीं है। यह प्रमाण, यानी 'सवाद-ए-आज़म' (महान बहुमत) की ओर मार्गदर्शन, अल्लाह और उसके रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की पूर्ण कृपा है। हर व्यक्ति इस बात में सक्षम कहाँ था कि वह किताब और सुन्नत से अपने अक़ीदे (विश्वास) को सिद्ध करे। अक़्ल (तर्क) तो स्वयं ही श्रुतियों (सुनी हुई बातों/प्रकाशनाओं) में पर्याप्त नहीं है। विवश होकर आम जनता को अक़ाइद में तक़लीद करनी पड़ती। इसलिए यह स्पष्ट और प्रकाशवान प्रमाण दिया गया कि मुसलमानों का सवाद-ए-आज़म जिस अक़ीदे पर हो, वही हक़ (सत्य) है। इसकी पहचान कुछ कठिन नहीं है। सहाबा किराम (रज़ियल्लाहु अन्हुम) के समय में तो कोई गुमराह (बद-मज़हब) था ही नहीं, और बाद में चाहे वे पैदा हुए, लेकिन पूरी दुनिया के सभी गुमराह मिलकर कभी अहले-सुन्नत की संख्या तक नहीं पहुँच सके। अल्लाह का शुक्र है, जिस प्रकार न्यायशास्त्र (फ़िक़्ह) में इज्मा (आम सहमति) सबसे प्रबल प्रमाण (अक़्वा-उल-अदिल्ला) है कि इज्मा के विरुद्ध किसी मुजतहिद को भी अधिकार नहीं है, भले ही वह अपनी राय में किताब और सुन्नत से उसके विपरीत पाता हो; निश्चित रूप से यह समझा जाएगा कि या तो यह समझ की भूल है या यह हुक्म (आदेश) निरस्त (मन्सूख़) हो चुका है, चाहे मुजतहिद को उसके नासिख़ (निरस्त करने वाले) का पता न हो। इसी तरह, उम्मत का इज्मा एक महान चीज़ है। सवाद-ए-आज़म यानी अहले-सुन्नत का किसी अक़ाइद के मसले पर एकमत होना यहाँ सबसे प्रबल प्रमाण है। यदि किताब और सुन्नत से इसके विपरीत कुछ समझ में आए, तो वह समझ की ग़लती है; सत्य सवाद-ए-आज़म के साथ है। और एक अर्थ में यहाँ सबसे प्रबल प्रमाण अक़्ल (बुद्धि) है, क्योंकि अन्य प्रमाणों का प्रमाण होना भी उसी से प्रकट हुआ है। लेकिन यह असंभव है कि सवाद-ए-आज़म की सहमति किसी सही तर्कसंगत प्रमाण के विरुद्ध हो। ये गिने-चुने वाक्य हैं लेकिन अल्लाह की कृपा से बहुत लाभदायक और लाभकारी हैं। "इसे अपनी दाढ़ों से मजबूती से पकड़ लो।" और अल्लाह बेहतर जानता है।

मसला 76 से 81: शहर से, मुहल्ला कनबोह, कोठी हामिद हुसैन ख़ान साहब रईस। सवालकर्ता: शमशाद अली ख़ान साहब, 26 रजब 1336 हिजरी। (1) सही मुस्लिम और अन्य सहीह हदीस की किताबों में अलग-अलग शब्दों में लेकिन एक ही अर्थ के साथ यह हदीस आई है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया: "इस्लाम का मामला हमेशा प्रबल रहेगा और उसमें बारह ख़लीफ़ा होंगे।" जानने योग्य यह है कि उन बारह के मुबारक नाम क्या हैं? (2) वे बारह ख़लीफ़ा सब

के सब नेक (अख़ियार) होंगे या कुछ अच्छे और कुछ बुरे? और यदि यह कहा जाए कि वे सब अच्छे नहीं थे बल्कि कुछ ऐसे भी थे जिन्हें 'ख़ैरुन-नास' (लोगों में सबसे अच्छे) नहीं कहा जा सकता, तो क्या यह विवरण रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने दिया है या अन्य विद्वानों ने? (3) क्या वे बारह ख़लीफ़ा ख़िलाफ़त के सिंहासन की शोभा बन चुके हैं या अभी कुछ शेष हैं? (4) चूँकि बारह ख़लीफ़ाओं से संबंधित हदीसों में यह मसला आया है कि इस्लाम तब तक समाप्त नहीं होगा जब तक बारह ख़लीफ़ा पूरे न हो जाएँ यदि ख़लीफ़ा दुनिया में आकर अपनी संख्या पूरी कर चुके हैं, तो अब...

पेज 216 / 750

وقت ان کے اقوال پر نہ اعتماد جائز نہ استناد کہ اب یہ تقلید ہوگی اور وہ عقائد میں جائز نہیں، اس دلیل یعنی سوادِ اعظم کی طرف ہدایت اللہ ورسول جل وعلا وصلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کی کمال رحمت ہے ، ہر شخص کہاں قادر تھا کہ عقیدہ کتاب وسنت سے ثابت کرے، عقل تو خود ہی سمعیات میں کافی نہیں ناچار عوام کو عقائد میں تقلید کرنی ہوتی، لہذا یہ واضح روشن دلیل عطا فرمائی کہ سوادِ اعظم مسلمین جس عقیدہ پر ہو وہ حق ہے اس کی پہچان کچھ دشوار نہیں، صحابہ کرام رضی اللہ تعالٰی عنہم کے وقت میں تو کوئی بد مذہب تھا ہی نہیں اور بعد کو اگرچہ پیدا ہوئے مگر دنیا بھر کے سب بد مذہب ملا کر کبھی اہلسنت کی گنتی کو نہیں پہنچ سکے ، للہ الحمد فقہ میں جس طرح اجماع اقویٰ الادلہ ہے کہ اجماع کے خلاف کا مجتہد کو بھی اختیار نہیں اگرچہ وہ اپنی رائے میں کتاب و سنت سے اس کا خلاف پاتا ہو یقیناً سمجھا جائے گا کہ یا فہم کی خطا ہے یا یہ حکم منسوخ ہو چکا ہے اگرچہ مجتہد کو اس کا ناسخ نہ معلوم ہو، یونہی اجماعِ امت تو شے عظیم ہے سوادِ اعظم یعنی اہلسنت کا کسی مسئلہ عقائد پر اتفاق یہاں اقویٰ الادلہ ہے کتاب وسنت سے اس کا خلاف سمجھ میں آئے تو فہم کی غلطی ہے، حق سوادِ اعظم کے ساتھ ہے، اور ایک معنی پر یہاں اقویٰ الادلہ عقل ہے کہ اور دلائل کی حجیت بھی اسی سے ظاہر ہوئی ہے مگر محال ہے کہ سوادِ اعظم کا اتفاق کسی برہانِ صحیح عقلی کے خلاف ہو ، یہ گنتی کے جملے ہیں مگر بحمدہ تعالٰی بہت نافع و سود مند فعضوا علیھا بالنواجذ (پس ان کو مضبوطی سے داڑھوں کے ساتھ پکڑلو۔ ت) واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۷۶ تا ۸۱: از شہر محلہ کنبوہ کوٹھی حامد حسین خاں صاحب رئیس مسئولہ شمشاد علی خاں صاحب ۲۶ رجب ۱۳۳۶ھ (۱) صحیح مسلم و دیگر صحاح میں بہ الفاظِ مختلفہ و اتحادِ مطلب یہ

حدیث وارد ہے کہ آنحضرت صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے فرمایا کہ امر اسلام ہمیشہ غالب رہے گا اور اس میں بارہ خلیفہ ہوں گے۔ دریافت طلب یہ ہے کہ ان بارہ کے اسماءِ مبارک کیا ہیں؟ (۲) وہ خلفائے دوازدہ گانہ کل کے کل اخیار ہوں گے یا کہ بعض اچھے اور بعض بُرے، اور اگر کہا جائے کہ سب اُن میں اچھے نہ تھے بلکہ کچھ ایسے بھی تھے جو کہ خیر الناس نہیں کہے جاسکتے، یہ تفصیل حضور صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے فرمائی ہے یا دیگرے علماء نے؟ (۳) وہ بارہ ۱۲ خلفاء زیب دہ مسندِ خلافت ہو چکے یا یہ کہ ابھی کچھ باقی ہیں؟ (۴) چونکہ احادیث متعلقہ خلفاء اثنی عشر میں یہ مسئلہ وارد ہوا ہے کہ اسلام ختم نہ ہوگا تو قتیکہ بارہ خلفاء پورے نہ ہو لیں اگر خلفاء دنیا میں رونق افزائے عالم ہو کر اپنی تعداد پوری کر چکے ہیں تو اب

Fatawa Rizwia - Volume 29

(5) Are the names of the twelve caliphs mentioned on page 82 of Sharh Fiqh al-Akbar by Mulla Ali Qari or any other page correct or incorrect?

The Answer: The fundamental principle is that in matters of the unseen (Ghayb), whatever Allah Almighty and His Messenger (peace and blessings be upon him) disclose is undoubtedly the truth. Beyond what has been stated, there is no path to certainty, as the unseen cannot be known without the information provided by God and His Messenger. Therefore, there has been ambiguity regarding the meaning of this Hadith since the time of the Tabi'un. Al-Muhallab said:

لم الق احدا يقطع فى هذا الحديث بمعنىٰ[1]	**I have not found anyone who could definitively state the intended meaning of this Hadith.**

Imam Qazi Iyad al-Maliki, after mentioning many possibilities in Sharh Sahih Muslim, stated:

وقد يحتمل وجوهاً اخر والله اعلم بمراد نبيه صلى الله تعالى عليه وسلم[2]	**That is, other possibilities besides these can also emerge from the Hadith, and Allah knows best the intent of His Prophet, Jalla wa 'Ala and Salla Allahu Ta'ala 'alayhi wa sallam.**

Imam Ibn al-Jawzi writes in Kashf al-Mushkil:

قد اطلت البحث عن معنى هذا الحديث وطلبته فى مظانه وسألت عنه فما رأيت احدًا وقع على المقصود به-[3]	**I have long investigated the meaning of this Hadith, searched for it in likely sources, and asked the scholars of my time about it, but no fixed meaning was determined.**

And how could it be otherwise? When Allah and His Messenger do not provide the details of an unseen matter, how can those details be known with certainty? Yes, people make conjectures, but none of them can be relied upon with certainty. However, the correct criterion is that the signs mentioned in the Hadith regarding those twelve caliphs must be present. Any interpretation where they are not found is false, and where they are found, it remains a possibility.

---

[1] Fath al-Bari, citing al-Muhallab, Kitab al-Ahkam, under Hadith 7222 and 7223, Dar al-Kutub al-Ilmiyyah, Beirut, 14/181. [2] Sharh Sahih Muslim, Kitab al-Imarah, Bab al-Nas

Taba' li-Quraysh, Qadimi Kutub Khana, Karachi, 2/119. [3] Kashf al-Mushkil, Kitab al-Ahkam, Bab al-Istikhlaf, under Hadith 2237, Dar al-Kutub al-Ilmiyyah, Beirut, 8/295.

फ़तावा रज़विया - जिल्द 29

(5) मुल्ला अली क़ारी की 'शरह फ़िक़्ह अल-अकबर' के पृष्ठ 82 या किसी अन्य पृष्ठ पर बारह ख़लीफ़ाओं के जो नाम ज़ाहिर किए गए हैं, वे सही हैं या ग़लत?

अल-जवाब (उत्तर): मूल सिद्धांत यह है कि ग़ैब (परोक्ष) के मामलों में अल्लाह और उसके रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) जितनी बात बयान फ़रमाएँ उतनी यकीनन हक़ (सत्य) है। और जिस सीमा तक ज़िक्र न फ़रमाएँ उसकी ओर यक़ीन का कोई रास्ता नहीं है, क्योंकि ग़ैब बिना खुदा और रसूल के बताए मालूम नहीं हो सकता। लिहाज़ा इस हदीस के अर्थ के बारे में ताबेईन के ज़माने से ही संशय रहा है। मुहल्लब ने फ़रमाया:

لم الق احدا یقطع فی هذا الحدیث بمعنیٰ[1]	**मैंने ऐसा कोई नहीं पाया जो इस हदीस का कोई निश्चित अर्थ बताता हो।**

इमाम क़ाज़ी अयाज़ मालिकी ने 'शरह सहीह मुस्लिम' में बहुत सी संभावनाएँ बताने के बाद फ़रमाया:

وقد یحتمل وجوهاً اخر واللہ اعلم بمراد نبیه صلی اللہ تعالی علیه وسلم[2]	**यानी इसके अलावा हदीस में और भी संभावनाएँ निकल सकती हैं और अल्लाह अपने नबी की मुराद (उद्देश्य) को सबसे बेहतर जानता है, जल्ला व आला और सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम।**

इमाम इब्ने जौज़ी 'कश्फ़ुल मुश्किल' में लिखते हैं:

قد اطلت البحث عن معنی هذا الحدیث وطلبته فی مظانه وسألت عنه فما رأیت احدًا وقع علی المقصود به-[3]	**मैंने लंबे समय तक इस हदीस के अर्थ की जाँच की और जहाँ-जहाँ संभावना थी वे पुस्तकें देखीं, अपने समय के इमामों से प्रश्न किए, मगर निश्चित अर्थ तय न हो सका।**

और हो भी कैसे? जिस ग़ैब का विवरण अल्लाह और उसके रसूल न फ़रमाएँ उसका विवरण निश्चित रूप से कैसे मालूम हो सकता है? हाँ, लोग अनुमान लगाते हैं, जिनमें से किसी पर पूर्ण विश्वास नहीं किया जा सकता। अलबत्ता, यह पैमाना सही है कि हदीस में उन बारह ख़लीफ़ाओं के जो लक्षण बताए गए हैं, वे जिस अर्थ में न पाए जाएँ वह असत्य है, और जिसमें पाए जाएँ वह एक संभावना है।

[1] फ़तह अल-बारी, मुहल्लब के हवाले से, किताब अल-अहकाम, हदीस 7222 और 7223 के अंतर्गत, दारुल कुतुब अल-इल्मिया, बेरूत, 14/181। [2] शरह सहीह मुस्लिम, किताब अल-इमारा, बाब अन-नास तबअ ली-कुरैश, क़दीमी कुतुब खाना, कराची, 2/119। [3] कश्फ़ुल मुश्किल, किताब अल-अहकाम, बाब अल-इस्तिखलाफ़, हदीस 2237 के अंतर्गत, दारुल कुतुब अल-इल्मिया, बेरूत, 8/295।

حسبِ مفادِ حدیث اسلام و اسلامیان دنیا میں باقی ہیں یا کیا؟ (۵) شرح فقہ اکبر ملا علی قاری کہ صفحہ ۸۲ یا کسی دوسرے صفحہ پر بارہ خلفاء کے جو نام ظاہر کیے گئے ہیں وہ صحیح ہیں یا غلط؟ الجواب: اصل یہ ہے کہ امورِ غیب میں اللہ ورسولِ جل وعلا وصلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم جتنی بات بیان فرمائیں اتنی یقینا حق ہے اور جس قدر ذکر نہ فرمائیں اس کی طرف یقین کی راہ نہیں کہ غیب بے خدا ورسول کے بتائے معلوم نہیں ہو سکتا لہٰذا اس حدیث کے معنی میں زمانہ تابعین سے اشتباہ رہا۔ مہلب نے فرمایا:

لم الق احدا یقطع فی ھذا الحدیث بمعنیٰ[1]

میں نے کوئی ایسا نہ پایا کہ اس حدیث کی کوئی مرادِ قطعی بتاتا۔

امام قاضی عیاض مالکی نے شرح صحیح مسلم میں بہت احتمالات بتا کر فرمایا:

وقد یحتمل وجوھاً اخر واللہ اعلم بمراد نبیہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم[2]

یعنی اس کے سوا حدیث میں اور احتمال بھی نکل سکتے ہیں اور اللہ اپنے نبی کی مراد خوب جانے، جل وعلا وصلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم۔

امام ابن جوزی کشف المشکل میں لکھتے ہیں:

قد اطلت البحث عن معنی ھذا الحدیث وطلبتہ فی مظانہ وسألت عنہ فما رأیت احدًا وقع علی المقصود بہ۔[3]

میں نے مدتوں اس حدیث کے معنی کی تفتیش کی اور جہاں جہاں گمان تھا وہ کتابیں دیکھیں اپنے زمانے کے ائمہ سے سوال کئے مگر مراد متعین نہ ہوئی۔

اور ہو کیوں کر کہ جس غیب کی اللہ ورسول تفصیل نہ فرمائیں اس کی تفصیل قطعاً کیونکر معلوم ہو، ہاں لوگ لگتے لگاتے ہیں جن میں سے کسی پر یقین نہیں، البتہ یہ معیار صحیح ہے کہ حدیث میں جو نشان اُن بارہ خلفاء کے ارشاد ہوئے جس معنی میں نہ پائے جائیں باطل ہیں اور جس میں پائے جائیں وہ احتمالی۔

---

۱ فتح الباری بحوالہ المہلب کتاب الاحکام تحت الحدیث ۷۲۲۲ و ۷۲۲۳ دارالکتب العلمیۃ بیروت ۱۴/ ۱۸۱ ۲ شرح صحیح مسلم کتاب الامارۃ باب الناس تبع لقریش قدیمی کتب خانہ کراچی ۲/ ۱۱۹ ۳ کشف المشکل کتاب الاحکام باب الاستخلاف تحت الحدیث ۲۲۳۷ دارالکتب العلمیۃ بیروت ۸/ ۲۹۵

It will be commonly accepted rather than certain. The signs in the Hadiths regarding this chapter are as follows: (1) "All of them will be from the Quraish," narrated by the two Shaykhs (Bukhari and Muslim).[1] (2) All of them will be kings and rulers of the land. It is in Sahih Muslim:

[Table] Arabic: The affairs of the people will continue as long as they are ruled by twelve men, all of whom are from the Quraish.[2] Urdu: The Caliphate will continue as long as twelve men (caliphs) remain as rulers, all of whom will be from the Quraish. (T)

In Musnad Ahmad, Bazzar, and Sahih Mustadrak, it is narrated from Abdullah bin Mas'ud (may Allah be pleased with him) with a good (Hasan) chain of narration:

[Table] Arabic: He was asked, "How many caliphs will rule this Ummah?" He said, "We asked the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) about it, and he said: Twelve, like the number of the chiefs (Nuqaba) of the Children of Israel."[3] Urdu: Abdullah bin Mas'ud (may Allah be pleased with him) was asked, "How many caliphs will become the rulers of this Ummah?" He said, "We asked the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) about it. He stated that they will be twelve, according to the number of the chiefs of the Children of Israel." (T)

(3) During their era, Islam will be strong. It is in Sahih Muslim:

[Table] Arabic: Islam will remain mighty until twelve caliphs have passed, all of whom are from the Quraish.[4] Urdu: Islam will remain dominant until the rule of twelve caliphs is completed, and they will all be from the Quraish. (T)

(4) Their era will be an era of righteousness. Bazzar, Tabarani, and Abu Juhaifa (may Allah be pleased with him) narrated:

[Table] Arabic: The affair of my Ummah will remain upright.[5] Urdu: (Until the Caliphate of twelve caliphs) the state of my Ummah will remain correct. (T)

---

[1] Sahih Muslim, Kitab al-Imara, Chapter: People follow Quraish, Qadimi Kutub Khana Karachi, 2/119 [2] Sahih Muslim, Kitab al-Imara, Chapter: People follow Quraish, Qadimi Kutub Khana Karachi, 2/119 [3] Musnad Ahmad bin Hanbal from Abdullah bin Mas'ud, Al-Maktab al-Islami Beirut, 1/398; Majma' al-Zawa'id citing Bazzar etc., Chapter: The Twelve Caliphs, Dar al-Kitab Beirut, 5/190 [4] Sahih Muslim, Kitab al-Imara, Chapter:

People follow Quraish, Qadimi Kutub Khana Karachi, 2/119 [5] Kanz al-Ummal by al-Muttaqi and Ibn Asakir, Hadith 33849, Mu'assasat al-Risala Beirut, 12/32

यह निश्चित होने के बजाय सामान्य रूप से स्वीकार्य होगा। इस अध्याय की हदीसों में उनके संकेत इस प्रकार हैं: (1) "वे सभी क़ुरैश से होंगे," दोनों शैखों (बुखारी और मुस्लिम) द्वारा वर्णित।[1] (2) वे सभी देश के राजा और शासक होंगे। सहीह मुस्लिम में है:

[तालिका] अरबी: लोगों के मामले तब तक चलते रहेंगे जब तक उन पर बारह पुरुष शासन करेंगे, जो सभी क़ुरैश से होंगे।[2] उर्दू: खिलाफत तब तक जारी रहेगी जब तक बारह पुरुष (खलीफा) शासक रहेंगे, जो सभी क़ुरैश से होंगे। (त)

मुसनद अहमद, बज़ार और सहीह मुस्तदरक में अब्दुल्ला बिन मसूद (रज़ियल्लाहु अन्हु) से हसन सनद के साथ वर्णित है:

[तालिका] अरबी: उनसे पूछा गया, "इस उम्मत पर कितने खलीफा शासन करेंगे?" उन्होंने कहा, "हमने अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से इसके बारे में पूछा, तो उन्होंने कहा: बारह, बनी इस्राईल के नक़ीबों (प्रमुखों) की संख्या के समान।"[3] उर्दू: अब्दुल्ला बिन मसूद (रज़ियल्लाहु अन्हु) से पूछा गया कि इस उम्मत के कितने खलीफा शासक बनेंगे? उन्होंने कहा कि हमने अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से पूछा था। आपने फ़रमाया कि वे बनी इस्राईल के नक़ीबों की संख्या के अनुसार बारह होंगे। (त)

(3) उनके समय में इस्लाम शक्तिशाली होगा। सहीह मुस्लिम में है:

[तालिका] अरबी: बारह खलीफाओं के गुजरने तक इस्लाम शक्तिशाली बना रहेगा, वे सभी क़ुरैश से होंगे।[4] उर्दू: बारह खलीफाओं का शासन पूरा होने तक इस्लाम प्रबल रहेगा, वे सभी क़ुरैशी होंगे। (त)

(4) उनका समय सुधार (नेक काम) का समय होगा। बज़ार, तबरानी और अबू जुहैफ़ा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से वर्णित है:

[तालिका] अरबी: मेरी उम्मत का मामला दुरुस्त रहेगा।[5] उर्दू: (बारह खलीफाओं की खिलाफत तक) मेरी उम्मत का मामला दुरुस्त रहेगा। (त)

---

[1] सहीह मुस्लिम, किताब अल-इमारा, अध्याय: लोग कुरैश के पीछे चलते हैं, कदीमी कुतुब खाना कराची, 2/119 [2] सहीह मुस्लिम, किताब अल-इमारा, अध्याय: लोग कुरैश के पीछे चलते हैं, कदीमी

कुतुब खाना कराची, 2/119 [3] मुसनद अहमद बिन हंबल, अब्दुल्ला बिन मसूद से, अल-मकतब अल-इस्लामी बेरूत, 1/398; मजमा अल-ज़वाइद बज़ार आदि के हवाले से, अध्याय: बारह खलीफा, दार अल-किताब बेरूत, 5/190 [4] सहीह मुस्लिम, किताब अल-इमारा, अध्याय: लोग कुरैश के पीछे चलते हैं, कदीमी कुतुब खाना कराची, 2/119 [5] कंज़ अल-उम्माल (मुत्तकी द्वारा) और इब्न असाकिर, हदीस 33849, मुअस्ससत अल-रिसाला बेरूत, 12/32

طور پر مسلم ہوگا نہ کہ یقینی، احادیث باب میں ان کے نشان یہ ہیں۔ (۱) کلہم من قریش سب قریشی ہوں گے رواہ الشیخان۔[1] (۲) وہ سب بادشاہ و والیاں ملک ہوں گے ، صحیح مسلم میں ہے:

[جدول] عربی: لا یزال امر الناس ماضیاً ما ولیھم اثنا عشر رجلاً کلھم من قریش - [2] اردو: خلافت اس وقت تک جاری رہے گی جب تک بارہ مرد (خلفاء) حکمران رہیں گے جو سب قریش میں سے ہوں گے۔ (ت)

مسند احمد و بزار و صحیح مستدرک میں عبداللہ بن مسعود رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے بسندِ حسن ہے :

[جدول] عربی: انہ سئل کم تملك ھذہ الامة من خلیفة فقال سألنا عنھا رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم فقال اثنا عشرة کعدة نقباء بنی اسرائیل۔[3] اردو: عبداللہ بن مسعود رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے سوال کیا گیا کہ کتنے خلفاء اس امت کے حکمران بنیں گے؟ تو انہوں نے کہا کہ ہم نے رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم سے پوچھا تھا۔ آپ نے ارشاد فرمایا وہ بنی اسرائیل کے نقیبوں کی تعداد کے مطابق بارہ ہوں گے۔ (ت)

(۳) اُن کے زمانے میں اسلام قوی ہوگا صحیح مسلم میں ہے :

[جدول] عربی: لا یزال الاسلام عزیزا الی اثنی عشر خلیفة کلھم من قریش[4] - اردو: بارہ خلفاء کی حکومت پوری ہونے تک اسلام غالب رہے گا، وہ سب قریشی ہوں گے۔ (ت)

(۴) اُن کا زمانہ زمانہ صلاح ہوگا، بزار و طبرانی و ابو جحیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے راوی:

[جدول] عربی: لا یزال امر امتی صالحاً[5]- اردو: (بارہ خلفاء کی خلافت تک) میری امت کا معاملہ درست رہے گا۔ (ت)

[1] صحیح مسلم کتاب الامارۃ باب الناس تبع لقریش قدیمی کتب خانہ کراچی ۲/ ۱۱۹ [2] صحیح مسلم کتاب الامارۃ باب الناس تبع لقریش قدیمی کتب خانہ کراچی ۲/ ۱۱۹ [3] مسند احمد بن حنبل عن عبد اللہ بن مسعود المکتب الاسلامی بیروت ۱/ ۳۹۸، مجمع الزوائد بحوالہ بزار وغیرہ باب الخلفاء الاثنا عشر دار الکتاب بیروت ۵/ ۱۹۰ [4] صحیح مسلم کتاب الامارۃ باب الناس تبع لقریش قدیمی کتب خانہ کراچی ۲/ ۱۱۹ [5] کنز العمال بز مر طب و ابن عساکر عون الخ حدیث ۳۳۸۴۹ موسسۃ الرسالۃ بیروت ۱۲/ ۳۲

Fatawa Ridawiyyah, Volume 29

(5) There will be a consensus of the Ummah on them, meaning the people of influence and decision-making will accept them as the true rulers and caliphs. It is stated in Sunan Abi Dawud:

لا يزال هذا الدين قائماً حتى يكون عليكم اثنا عشر خليفة كلهم تجتمع عليه الامة[1]	**This religion will remain established until twelve caliphs are rulers over you, upon whom the whole Ummah will be united. (T)**

(6 & 7) All of them will act upon guidance and the religion of truth. Two of them will be from the Ahl al-Bayt (the household) of the Prophethood. It is narrated from Abu al-Jald in the Musnad al-Kabir of Musaddad, the teacher of Imams Bukhari and Muslim:

انه لا تهلك هذه الامة حتى يكون منها اثنا عشر خليفة كلهم يعمل بالهدى و دين الحق، منهم رجلان من اهل بيت محمد صلى الله تعالى عليه وسلم[2]۔	**Indeed, this Ummah will not perish until there are twelve caliphs ruling among them. They will all act upon guidance and the religion of truth. Two of them will be from the household of the Messenger of Allah, may Allah's blessings and peace be upon him. (T)**

Among those who point out flaws, anyone who has not seen all the paths of the Hadith might draw an inference after seeing just one or two paths. For example, Abu al-Husayn bin Manawi interpreted it to mean that there would be twelve caliphs at one time. Such a degree of disagreement could only arise from a brief wording like that in Bukhari. But look at other wordings: where is such division, and where is consensus? In such a state, what would be the meaning of Islam being strong, dominant, and established, and the affairs of the Ummah being sound? Of this kind is Ali Qari's assumption, following Ibn Hajar al-Shafi'i, that there were 12 from Siddiq-e-Akbar (may Allah be pleased with him) to the last of the Umayyad rulers, and even the wretched Yazid (may he get what he deserves) was counted among them. However, what connection does the era of that wicked person have with the strength and righteousness of the religion? After seeing these hadiths, there would be no room for this saying. The focus was only on 12 sultanates. The truth is, when was there ever a consensus of the 'Ahl al-Hall wa al-Aqd' (those who loose and bind) on that wicked one? The beloved grandson of the Messenger of Allah (may Allah's blessings and peace be upon him), our leader Imam Hussain (may Allah be pleased with him), was martyred precisely because he did not pledge allegiance to his impure

hand. The people of Medina revolted against him. Abdullah bin Hanzalah, 'Ghaseel al-Mala'ikah' (washed by angels) (may Allah be pleased with him)...

[1] Sunan Abi Dawud, Kitab al-Mahdi, Aftab-e-Alam Press, Lahore, 2/232. [2] Fath al-Bari, citing Musaddad in his Musnad al-Kabir under hadith 7222 and 7223, Dar al-Kutub al-Ilmiyyah, Beirut, 14/183.

फ़तावा रिज़विया, खंड 29

(5) उन पर उम्मत का इज्मा (आम सहमति) होगा, यानी 'अहल-ए-हल-ओ-अक़्द' (प्रभावशाली लोग) उन्हें सच्चा शासक और ख़लीफ़ा मानेंगे। सुनन अबी दाऊद में है:

لا یزال ھذا الدین قائماً حتی یکون علیکم اثنا عشر خلیفة کلھم تجتمع علیه الامة[1]	**यह दीन उस वक्त तक कायम रहेगा जब तक तुम पर बारह ख़लीफ़ा हाकिम हों, जिन पर तमाम उम्मत मुत्तफ़िक़ (एकमत) होगी। (त)**

(6 और 7) वे सभी हिदायत और दीन-ए-हक़ पर अमल करेंगे। उनमें से दो रिसालत के अहल-ए-बैत (पैग़म्बर के घराने) से होंगे। इमाम बुख़ारी और मुस्लिम के उस्ताद मुसद्दद की 'मुसनद कबीर' में अबू अल-जल्द से मरवी है:

انه لا تھلك ھذه الامة حتی یکون منھا اثنا عشر خلیفة کلھم یعمل بالھدی و دین الحق، منھم رجلان من اھل بیت محمد صلی الله تعالی علیه وسلم[2]۔	**बेशक यह उम्मत उस वक्त तक हलाक न होगी जब तक उनमें बारह ख़लीफ़ा हुक्मरां होंगे, वे सब हिदायत और दीन-ए-हक़ पर अमल करेंगे उनमें से दो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के अहल-ए-बैत में से होंगे। (त)**

टीका-टिप्पणी करने वालों में से जिसने हदीस के तमाम रास्तों (सनदों) को नहीं देखा, उसने एक-आध रास्ते को देखकर कोई संभावना निकाल ली, जैसे अबू अल-हुसैन बिन मनावी ने यह अर्थ लिया कि एक ही समय में बारह ख़लीफ़ा होंगे। यानी इतना मतभेद केवल बुख़ारी के इस संक्षिप्त शब्द पर हो सकता था। और शब्द देखिए तो कहाँ इस दर्जे का बिखराव और कहाँ एकता, और ऐसी स्थिति में इस्लाम के शक्तिशाली, प्रभावी और स्थापित होने और उम्मत के मामलों के सुधरने के क्या मायने? इसी श्रेणी में अली क़ारी का इब्न हजर शाफ़ई के अनुसरण में यह मानना है कि सिद्दीक़-ए-अकबर (रज़ियल्लाहु अन्हु) से लेकर बनू उमय्या के आखिरी शासकों तक 12 हुए और उनमें यज़ीद पलीद (उस पर वह हो जिसका वह हकदार है) को भी गिन लिया, जबकि उस ख़बीस के ज़माने का दीन की ताकत और भलाई से क्या लेना-देना। ये हदीसें देखकर इस बात की गुंजाइश नहीं रहती, लेकिन उनकी नज़र में सिर्फ़12 सल्तनतें थीं। और हक़ यह है कि उस ख़बीस पर अहल-ए-हल-ओ-अक़्द का इज्मा कब हुआ? रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के फूल, हमारे आका इमाम हुसैन

(रज़ियल्लाहु अन्हु) उसी के नापाक हाथ पर बैअत (निष्ठा की शपथ) न करने के कारण शहीद हुए। मदीना वालों ने उस पर विद्रोह किया। अब्दुल्ला बिन हंज़ला 'ग़सीलुल मलाइका' (रज़ियल्लाहु अन्हु)...

[1] सुनन अबी दाऊद, किताब अल-महदी, आफ़ताब-ए-आलम प्रेस, लाहौर, 2/232. [2] फ़तह अल-बारी, मुसद्दद के हवाले से उनकी मुसनद अल-कबीर में हदीस 7222 और 7223 के तहत, दार अल-कुतुब अल-इल्मिया, बेरुत, 14/183.

(۵) اُن پر اجتماعِ امت ہوگا یعنی اہلِ حل و عقد انہیں والیِ ملک و خلیفہ صدق مانیں گے ، سنن ابی داؤد میں ہے:

لا یزال ھذا الدین قائماً حتی یکون علیکم اثنا عشر خلیفۃ کلھم تجتمع علیہ الامۃ 1 — **یہ دین اس وقت تک قائم رہے گا جب تک تم پر بارہ خلفاء حاکم ہوں، جن پر تمام امت متفق ہوگی۔ (ت)**

(۶ و ۷) وہ سب ہدایت و دینِ حق پر عمل کریں گے ان میں سے دو اہلِ بیت رسالت سے ہوں گے۔ استاذ امام بخاری و مسلم مسدد کی مسند کبیر میں ابو الجلد سے ہے:

انہ لا تھلک ھذہ الامۃ حتی یکون منھا اثنا عشر خلیفۃ کلھم یعمل بالھدی و دین الحق، منھم رجلان من اھل بیت محمد صلی اللہ تعالی علیہ وسلم 2 . — **بے شک یہ امت اس وقت تک ہلاک نہ ہوگی جب تک ان میں بارہ خلفاء حکمران ہوں گے، وہ سب ہدایت و دینِ حق پر عمل کریں گے ان میں سے دو رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کے اہلِ بیت میں سے ہوں گے۔ (ت)**

لکتے لگانے والوں میں جس نے سب طرقِ حدیث نہ دیکھے ایک آدھ طریق کو دیکھ کر کوئی احتمال نکال دیا جیسے ابو الحسین بن مناوی نے یہ معنی لیے کہ ایک وقت میں بارہ خلیفہ ہوں گے یعنی اس قدر اختلاف یہ فقط اس لفظ مجمل بخاری پر بن سکتا تھا اور الفاظ دیکھئے تو کہاں اس درجہ افتراق اور کہاں اجتماع اور ایسی حالت میں اسلام کے قوی و غالب و قائم اور امرِ امت کے صالح ہونے کے کیا معنی؟ اس قبیل سے علی قاری کا یہ زعم باتباع ابن حجر شافعی ہے کہ صدیقِ اکبر رضی اللہ تعالٰی عنہ سے آخرِ ولاۃ بنی امیہ تک ۱۲ ہوئے اور ان میں یزید پلید علیہ ماعلیہ کو بھی گنا دیا حالانکہ اُس خبیث کے زمانہ کو قوتِ دین و صلاح سے کیا تعلق، یہ احادیث دیکھ کر

اس قول کی گنجائش نہ ہوتی، مگر صرف ۱۲ سلطنتیں نگاہ میں تھا اور حق یہ کہ اس خبیث پر اجتماعِ اہلِ حل و عقد کب ہوا، ریحانہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم سیدنا امام حسین رضی اللہ تعالیٰ عنہ اُس کے دستِ ناپاک پر بیعت نہ کرنے ہی کے باعث شہید ہوئے، اہلِ مدینہ نے اُس پر خروج کیا۔ عبداللہ بن حنظلہ غسیل الملائکہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ

1 سنن ابی داود کتاب المهدی آفتاب عالم پریس لاہور ۲ / ۲۳۲ 2 فتح الباری بحوالہ مسدد فی مسنده الکبیر تحت الحدیث ۷۲۲۲ و ۷۲۲۳ دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴ / ۱۸۳

Volume 29

Fatawa Razawiya

...said:

[Arabic Box]: By Allah, we did not revolt against Yazid until we feared stones would be thrown at us from the sky. He was a man who committed incest with mothers of children, daughters, and sisters, drank wine, and abandoned prayer. 1 [Urdu Translation in Box]: By God, we did not rise against Yazid until the fear arose that stones would rain down from the sky; such a person who violates the honor of sisters and daughters, drinks wine, and neglects prayers. (T)

In short, this statement is false according to all paths of Hadith; it is nowhere stated in Hadith that they (the caliphs) will follow one another without interruption. Eight of them have passed: Siddiq-e-Akbar, Farooq-e-Azam, Uthman-e-Ghani, Ali al-Murtaza, Hasan Mujtaba, Amir Muawiyah, Abdullah bin Zubair, Umar bin Abdul Aziz (may Allah be pleased with them all). And one is surely to come: Hazrat Imam Mahdi (may Allah be pleased with them all). The identification of the remaining three is in the knowledge of Allah and His Messenger. It is a wonder of wonders that Abdullah bin Zubair (may Allah be pleased with him), who is a companion and son of a companion, a just leader, the nephew of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him), the grandson of Siddiq-e-Akbar (may Allah be pleased with him), and the son of one of the ten promised paradise (Ashara al-Mubashshara), is not counted. Yet, that vile and impure person is counted, for calling whom "Commander of the Faithful," Amir al-Mu'minin Umar bin Abdul Aziz (may Allah be pleased with him) ordered twenty lashes for a person. We ask Allah for forgiveness and well-being. Leaving aside Abdullah bin Zubair, even Imam Mujtaba was not counted because his period of caliphate was short, while Walid was counted, who hung the Great Quran on a wall and pierced it with arrows. Such baseless and meaningless statements have no authority; rather, they are the errors of judgment of a later scholar. Infallibility is for none but the Prophets and Angels (peace be upon them). We ask Allah for forgiveness and well-being, and Allah knows best.

Problem 72: Sent from village Bahutpur, Post Office Atraon, District Allahabad, by petitioner Amir Allah Qasab.

What do the scholars of religion say regarding this matter: A scholar forbids standing during the gathering of Milad Sharif (Mawlid), where the mention of the birth of the

Master of Messengers (peace and blessings of Allah be upon him) is made at all times, saying there is no proof for it anywhere. Furthermore, he says that when the (Prophet's) name is mentioned, people kiss their thumbs, and there is no proof for this either; all this is improper and a sin. What is the ruling regarding such a scholar? And how is it to become his disciple or pray behind him? And these mentioned matters, i.e., standing and kissing the thumbs upon the mention of the holy name...

---

1 Al-Sawa'iq al-Muhriqah, The Conclusion: In Explanation of the Creed of the People of Sunnah, Maktabah Majidiya, Multan, p. 221.

खंड २९

फ़तावा रज़विया

...ने फ़रमाया:

[अरबी पाठ]: अल्लाह की कसम, हमने यज़ीद के खिलाफ तब तक विद्रोह नहीं किया जब तक कि हमें यह डर नहीं लगा कि आसमान से हम पर पत्थर बरसेंगे। वह ऐसा व्यक्ति था जो माताओं, बेटियों और बहनों के साथ व्यभिचार करता था, शराब पीता था और नमाज़ छोड़ देता था। १ [उर्दू अनुवाद]: खुदा की कसम, हमने यजीद पर विद्रोह तब तक नहीं किया जब तक यह डर न हुआ कि आसमान से पत्थर आएँ ऐसा शख्स कि बहन बेटी की आबरू रेज़ी करे और शराब पिए और नमाज़ का त्याग करने वाला हो। (त)

संक्षेप में, हदीस के सभी मार्गों से यह बात गलत है; हदीस में कहीं नहीं लिखा है कि वे (खलीफा) बिना किसी अंतराल के एक के बाद एक होंगे। उनमें से आठ बीत चुके हैं: सिद्दीक-ए-अकबर, फारूक-ए-आजम, उस्मान-ए-गनी, अली अल-मुर्तज़ा, हसन मुस्तबा, अमीर मुआविया, अब्दुल्ला बिन जुबैर, उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (अल्लाह उन सभी से प्रसन्न हो)। और एक निश्चित रूप से आने वाले हैं, हज़रत इमाम महदी (अल्लाह उन सभी से प्रसन्न हो)। बाकी तीन की पहचान अल्लाह और उसके रसूल के ज्ञान में है। यह बड़े आश्चर्य की बात है कि अब्दुल्ला बिन जुबैर (अल्लाह उन दोनों से प्रसन्न हो), जो एक सहाबी और सहाबी के बेटे हैं, एक न्यायप्रिय नेता हैं, रसूल अल्लाह (उन पर अल्लाह की शांति और कृपा हो) के भतीजे हैं, सिद्दीक-ए-अकबर (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) के नवासे हैं, और 'अशरा मुबश्शिरा' (स्वर्ग की खुशखबरी पाने वाले दस) में से एक के बेटे हैं, उन्हें नहीं गिना जाता। और उस नीच और नापाक को गिना जाता है, जिसे "अमीरुल मोमिनीन" (मोमिनों का अमीर) कहने पर अमीरुल मोमिनीन उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) ने एक व्यक्ति को बीस कोड़े लगवाए। हम अल्लाह से माफ़ी और सलामती माँगते हैं। अब्दुल्ला बिन जुबैर को तो छोड़िए, खुद इमाम मुस्तबा को नहीं गिना गया क्योंकि उनकी खिलाफत का समय कम था, जबकि वलीद को गिना गया जिसने कुरआन-ए-अजीम को दीवार पर लटकाकर तीरों से छेद दिया था। ऐसे निराधार और अर्थहीन बयानों का कोई आधार नहीं होता, बल्कि वे बाद के किसी विद्वान की राय की गलती है। मासूमियत नबियों और फरिश्तों (उन पर शांति हो) के अलावा किसी के लिए नहीं है। हम अल्लाह से माफ़ी और सलामती माँगते हैं, और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है।

मसला ७२: प्रेषित ग्राम बहुतपुर, डाकघर अतराओं, जिला इलाहाबाद, प्रार्थी अमीर अल्लाह कसाब।

धर्म के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं: एक विद्वान मिलाद शरीफ की महफ़िल में खड़े होने (कयाम) से मना करते हैं, जहाँ हर समय सैयदुल मुरसलीन (उन पर अल्लाह की शांति और कृपा हो) के जन्म का ज़िक्र किया जाता है, और कहते हैं कि इसका कहीं कोई प्रमाण नहीं है। इसके अलावा, वह यह भी कहते हैं कि जब (पैगंबर का) नाम आता है, तो लोग अंगूठे चूमते हैं, इसका भी कहीं कोई प्रमाण नहीं है; यह सब गलत है और पाप है। ऐसे विद्वान के लिए क्या हुक्म है? और उनसे मुरीद होना और उनके पीछे नमाज़ पढ़ना कैसा है? और ये ऊपर बताए गए मामले, यानी पवित्र नाम आने पर खड़ा होना और अंगूठे चूमना...

---

१ अस-सवाइक अल-मुहरिका, उपसंहार: अहले सुन्नत की अकीदा के बयान में, मकतबा मजीदिया, मुल्तान, पृष्ठ २२१

पृष्ठ ७५० का २२०

جلد ۲۹

فتاوٰی رضویہ

نے فرمایا:

واللہ ماخرجنا علی یزید حتی خفنا ان نرمی بالحجارۃ من السماء ان رجلا ینکح امھات الاولاد والبنات والاخوات ویشرب الخمر ویدع الصلوۃ 1- خدا کی قسم ہم نے یزید پر خروج نہ کیا جب تک یہ خوف نہ ہوا کہ آسمان سے پتھر آئیں، ایسا شخص کہ بہن بیٹی کی آبرو ریزی کرے اور شراب پیئے اور تارک الصلوۃ ہو۔ (ت)

غرض جمیع طرق حدیث سے یہ قول باطل ہے، حدیث میں کہیں نہیں کہ وہ سب بلا فصل یکے بعد دیگرے ہوں گے۔ ان میں سے آٹھ گزر گئے صدیق اکبر، فاروق اعظم، عثمان غنی، علی مرتضٰی، حسن مجتبٰی، امیر معاویہ، عبد اللہ بن زبیر، عمر بن عبدالعزیز، اور ایک یقیناً آنے والے ہیں، حضرت امام مہدی رضی اللہ تعالٰی عنہم اجمعین باقی تین کی تعیین اللہ و رسول کے علم میں ہے، عجب عجب ہزار عجب کہ ان میں عبداللہ بن زبیر رضی اللہ تعالٰی عنہما کہ صحابی ابن صحابی ہیں، امام عادل ہیں، رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کے بھتیجے ہیں، صدیق اکبر رضی اللہ تعالٰی عنہ کے نواسہ ہیں، احد العشرۃ المبشرہ کے صاحبزادے ہیں شمار نہ کیے جائیں، اور وہ خبیث ناپاک معدود ہو جسے امیر المومنین کہنے پر امیر المومنین عمر بن عبدالعزیز رضی اللہ تعالٰی عنہ نے ایک شخص کو بیس تازیانے لگائے۔ نسأل اللہ العفو و العافیۃ (ہم اللہ تعالٰی سے معافی و عافیت طلب کرتے ہیں۔ ت) عبداللہ بن زبیر بھی درکنار، خود امام مجتبٰی کو نہ گنا کہ ان کی خلافت کا زمانہ قلیل تھا اور ولید کو گنا جس نے قرآن عظیم کو دیوار میں لٹکا کر تیروں سے

چھیدا۔ ایسے بے سروپا بے معنی اقوال کی سند نہیں ہوتی بلکہ وہ ایک متاخر عالم کی خطائے رائے ہے عصمت انبیاء و ملائکہ علیہم الصلوۃ والسلام کے سوا کسی کے لیے نہیں، نسأل اللہ العفو و العافیۃ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۷۲: مرسلہ موضع بہوت پور ڈاکخانہ اتراؤں ضلع الہ آباد سائل امیر اللہ قصاب

کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ایک عالم صاحب قیام محفل میلاد شریف کو منع کرتے ہیں جو ہر وقت ذکر ولادت سید المرسلین صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کیا جاتا ہے اور کہتے ہیں کہ اس کا ثبوت کہیں نہیں ہے ونیز یہ بھی کہتے ہیں کہ نام جب آتا ہے تو لوگ انگوٹھا چومتے ہیں اس کا بھی کہیں ثبوت نہیں یہ سب بیجا ہے اور گناہ ہے، ایسے عالم کے لیے کیا حکم ہے؟ اور ان سے مرید ہونا اور انکے پیچھے نماز پڑھنا کیسا ہے؟ اور یہ امور مذکورہ یعنی قیام اور بوسہ دینا انگوٹھے کا بوقت نام پاک آنے

---

1 الصواعق المحرقۃ الخاتمہ فی بیان اعتقاد اہل السنۃ مکتبہ مجیدیہ ملتان ص ۲۲۱

Fatawa Razawiyya, Volume 29

...of Sallallahu Ta'ala Alayhi Wa Sallam, is there any proof of it? It is hoped that proof from the Quran and Hadith will be provided; there is a severe dispute here regarding this, so please grant a reply soon.

The Answer: Such a person cannot be a scholar who does not have enough sense to know that proof of prohibition is required to prohibit and call something a sin. Regarding something which Allah Ta'ala and the Messenger of Allah (Sallallahu Ta'ala Alayhi Wa Sallam) have not prohibited, who is this prohibitor? To consider the lack of proof for it as sufficient reason is extreme ignorance. There is no proof for prohibition either, so it is proven from his own mouth that he is a sinner because of this prohibition. Nowadays, the prohibiters of these things are mostly Wahhabis, and Wahhabis are irreligious, listening to them is haram, and becoming a disciple of such a person is a severe major sin, and prayer behind him is absolutely invalid. As we have researched in (the treatise) An-Nahi al-Akeed (As we have researched in the treatise 'An-Nahi al-Akeed'. T). The proof for standing (Qiyam) is in our treatise 'Iqamah al-Qiyamah', and regarding the kissing of thumbs, it is in our detailed book 'Muneer al-Ain' which was published 23 years ago. And Allah Ta'ala knows best.

Problem 73: From the city of Baans Mandi, shop of Azizullah, sent by Karim Bakhsh, leather seller, 19 Ramadan 1336 AH. Zaid said that the person who fasts, prays, and performs all the legal pillars (of Islam) is in the Ummah of the accepted Messenger (Sallallahu Ta'ala Alayhi Wa Sallam) and will go to Paradise. And whoever goes against the accepted Messenger (Sallallahu Ta'ala Alayhi Wa Sallam) will go to Hell, and there is neither forgiveness for him nor is he in the Ummah. Bakr said, whoever does not fast, does not pray, does not perform all the legal pillars, but says the Kalimah, will be forgiven.

The Answer: Both statements are misguidance and error. The first statement is that of the Kharijites who call the perpetrator of a major sin an infidel (kafir). The second is that of the Naturists (Necharis) who think that merely saying the Kalimah is sufficient. The creed of the Sunni Muslims is that whoever denies any of the essentials of faith, or insults Allah (Azzawajal), the Great Quran, the Prophet (Sallallahu Ta'ala Alayhi Wa Sallam), or any prophet or angel—in short, any word or deed that negates or contradicts faith and definitely cuts off Islam—he is an infidel, even if he says the Kalimah, prays and fasts a million times. And as for the one who is healthy in faith and religion, if one...

फ़तावा रज़विया, जिल्द 29

...सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के, क्या इसका कहीं सबूत है? उम्मीद है कि क़ुरान और हदीस से इसका सबूत दिया जाएगा, यहाँ इस बारे में सख्त झगड़ा है, इसलिए जल्द जवाब मरहममत हो।

अल-जवाब: ऐसा व्यक्ति विद्वान नहीं हो सकता जिसे इतनी समझ न हो कि मना करने और गुनाह कहने के लिए मनाही का सबूत दरकार है। जिस चीज़ से अल्लाह तआला और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने मना नहीं फ़रमाया, यह मना करने वाला कौन है? इसके लिए सबूत न होने को काफी जानना घोर अज्ञानता है। मनाही का भी तो कोई सबूत नहीं है, तो उसी के मुँह से साबित हुआ कि वह इस मनाही के कारण गुनहगार है। आज कल इन चीज़ों को मना करने वाले अक्सर वहाबी होते हैं, और वहाबी बेदीन हैं, उनकी बात सुनना हराम है, और ऐसे व्यक्ति का मुरीद होना सख्त गुनाहे कबीरा है और उसके पीछे नमाज़ बिल्कुल बातिल है। जैसा कि हमने (रिसाला) 'अन-नह्युल अकीद' में इसकी तहकीक की है। क़ियाम का सबूत हमारे रिसाला 'इक़ामतुल क़ियामा' में है, और अंगूठे चूमने के बारे में हमारी तफ़सीली किताब 'मुनीरुल ऐन' में है जिसे छपे हुए 23 साल हो गए हैं। वल्लाहु तआला आलम।

मसला 73: शहर बांस मंडी, दुकान अज़ीज़ुल्लाह, प्रेषक करीम बख़्श चमड़ा फ़रोश, 19 रमज़ान 1336 हिजरी। ज़ैद ने कहा कि जो व्यक्ति रोज़ा रखेगा, नमाज़ पढ़ेगा और जितने शरीयत के अरकान हैं वह सब अदा करेगा, वह रसूल-ए-मक़बूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की उम्मत में है और वह जन्नत में जाएगा। और जो रसूल-ए-मक़बूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के खिलाफ होगा वह दोज़ख में जाएगा और न उसकी बख्शिश है और न वह उम्मत में है। बक्र ने कहा जो रोज़ा न रखे, नमाज़ न पढ़े, जितने शरीयत के अरकान हैं वह सब न अदा करे मगर कलमा गो हो, वह बख्श दिया जाएगा।

अल-जवाब: दोनों बातें गुमराही और ज़लालत हैं। पहला कथन ख़ारजियों का है जो कबीरा गुनाह करने वाले को काफ़िर कहते हैं। दूसरा नैचरियों (नेचरिस्टों) का है जो केवल कलमा कहना ही काफी समझते हैं। सुन्नी मुसलमानों का मज़हब यह है कि जो ज़रूरीयाते-दीन में से किसी चीज़ का मुन्किर हो या अल्लाह अज़्ज़वजल या क़ुरान-ए-अज़ीम या नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम या किसी नबी या फ़रिश्ते की तौहीन करे—ग़रज़ कि कोई बात या काम जो ईमान की नफ़ी और मुख़ालफ़त

करे और निश्चित रूप से इस्लाम को खत्म कर दे—वह काफ़िर है, चाहे वह लाख बार कलमा पढ़ने वाला, नमाज़ी और रोज़ेदार हो। और जो अक़ीदा और दीन में मुस्लिम सालिम है, अगर एक...

صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے ، کیا اس کا کہیں ثبوت ہے؟ امید کہ قرآن و حدیث سے اس کا ثبوت دیا جائے، یہاں پر سخت جھگڑا اس کی بابت ہے، لہٰذا جواب جلد مرحمت ہو۔

الجواب: ایسا شخص عالم نہیں ہوسکتا جسے اتنی تمیز نہ ہو کہ منع کرنے اور گناہ کہنے کو ثبوت منع درکار ہے جس چیز سے اللہ تعالیٰ اور رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے منع نہ فرمایا یہ منع کرنے والا کون اس کے لیے عدم ثبوت کافی جاننا سخت جہل شدید ہے، ثبوت تو منع کا بھی نہیں، تو اُسی کے منہ ثابت ہوا کہ وہ اس ممانعت کے سبب گنہگار ہے، آج کل ان چیزوں کے مانعین اکثر وہابی ہوتے ہیں، اور وہابی بے دین ہیں ان کی بات سننا حرام ہے، اور ایسے شخص کا مرید ہونا سخت اشد گناہِ کبیرہ ہے اور اس کے پیچھے نماز باطل محض۔ کما حققناہ فی النہی الاکید (جیسا کہ ہم نے (رسالہ) النہی الاکید میں اسکی تحقیق کی ہے۔ ت) قیام کا ثبوت ہمارے رسالہ اقامۃ القیامہ میں ہے، اور بوسہ انگشت میں ہماری مبسوط کتاب منیرالعین ہے جسے طبع ہوئے ۲۳ برس ہوئے واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۷۳: از شہر بانس منڈی دکان عزیز اللہ مرسلہ کریم بخش چمڑہ فروش ۱۹ رمضان ۱۳۳۶ھ زید نے کہا کہ جو شخص روزہ رکھے گا نماز پڑھے گا اور جتنے ارکانِ شرعی ہیں وہ سب ادا کرے گا وہ رسولِ مقبول صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی اُمت میں ہے اور وہ بہشت میں جائے گا اور جو رسولِ مقبول صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے برخلاف ہوگا وہ دوزخ میں جائے گا اور نہ اس کی بخشش ہے اور نہ وہ اُمت میں ہے۔ بکر نے کہا جو روزہ نہ رکھے نماز نہ پڑھے جتنے ارکانِ شرعی ہیں وہ سب نہ ادا کرے مگر کلمہ گو ہو وہ بخشا جائے گا۔

الجواب: دونوں قول گمراہی وضلالت ہیں، پہلا قول خارجیوں کا ہے کہ مرتکبِ کبیرہ کو کافر کہتے ہیں، دوسرا نیچریوں کا ہے کہ نری کلمہ گوئی کافی جانتے ہیں، مسلمانانِ اہلسنت کا مذہب یہ ہے کہ جو ضروریاتِ دین میں سے کسی شئے کا منکر ہو یا عزوجل یا قرآنِ عظیم یا نبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم یا کسی نبی یا ملک کی توہین کرے غرض کوئی قول یا فعل نافی و منافی ایمان و قطعاً قاطع اسلام کرے وہ کافر ہے اگرچہ لاکھ کلمہ گو نمازی روزہ دار ہو، اور جو عقیدہ و دین میں مسلم سالم ہے، اگر ایک

Fatawa Razawiyya, Volume 29

If one intentionally omits a prayer at its prescribed time or intentionally leaves a mandatory fast, or commits any sin; if Allah, the Almighty and Majestic, wills, He may punish him—and this is His justice—or if He wills, He may forgive him—and this is His grace.

"Indeed, Allah does not forgive that a partner be associated with Him, but He forgives what is less than that for whom He wills."[1]

Indeed, Allah the Exalted does not forgive that a partner be associated with Him, but He forgives anything below that to whomever He wills. (T) And Allah the Exalted knows best.

Problem 72: From Arda Nagla, Post Office Achhnera, District Agra, sent by Sadiq Ali Khan Sahab, 28 Shawwal 1336 AH. Zaid holds the belief that Allah, the Holy Essence, has the power to create someone equal to the Beloved Messenger (peace and blessings of Allah be upon him and his family), but according to His promise, He will not create such a one. Is it correct according to the investigative scholars for Zaid to be an Imam for prayer or not?

The Answer: Many of the exalted virtues and noble characteristics of the Holy Presence (peace and blessings of Allah be upon him) are unique and non-shareable, such as being the Best of Prophets, the Seal of the Prophets, the Master of the Messengers, the first of Allah's creation, the best of Allah's creation, the first intercessor, the first whose intercession is accepted, and the Prophet of Prophets (peace and blessings of Allah be upon him). If at that time the mind of the speaker did not consider this and only the generality of Divine Power was in view, he should be explained to. If he is a follower of truth and a seeker of truth, he will surely understand and desist from his mistake. But if, despite being explained to, he persists with enmity, arrogance, stubbornness, and obstinacy, then he is surely of a corrupt creed. It is absolutely not permissible to make him an Imam, and praying behind him is Makruh Tahrimi (prohibitively disliked), such that praying behind him is a sin and repeating the prayer is mandatory. This is also provided that the aforementioned statement is not due to the cause of Wahhabism; otherwise, now the Deobandis have left no trace of Islam among the Wahhabis, who, like them, commit severe, clear, and uninterpretable insults against Allah and His Messenger—they are themselves disbelievers. At the very least, it is certain that those who do not call the perpetrators of these insults disbelievers become disbelievers themselves by

association. The scholars of the Two Holy Harams have already written regarding the Deobandis that "whoever doubts their disbelief has himself disbelieved."[2] Those who regarding their disbelief...

---

1 2 Al-Quran al-Karim 4/48 and 116

फ़तावा रज़विया, खंड 29

समय की नमाज़ जानबूझकर या एक फ़र्ज़ रोज़ा जानबूझकर छोड़ने वाला या किसी पाप का अपराधी, अल्लाह अज़्ज़-व-जल्ल चाहे तो उसे सज़ा दे और यह उसका न्याय है, चाहे तो माफ़ कर दे और यह उसकी कृपा है।

"बेशक अल्लाह यह नहीं बख्शता कि उसका कोई साझी ठहराया जाए और उससे नीचे जो कुछ है, जिसे चाहे माफ़ कर देता है।"[1]

बेशक अल्लाह तआला इसे नहीं बख्शता कि उसका कोई शरीक (साझी) ठहराया जाए और उससे नीचे जो कुछ है जिसे चाहे माफ़ फ़रमा देता है। (त) और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 72: अर्दा नगला, डाकखाना अछनेरा, ज़िला आगरा से सादिक अली खान साहब द्वारा प्रेषित, 28 शव्वाल 1336 हिजरी। ज़ैद का यह अक़ीदा (विश्वास) है कि अल्लाह तआला ज़ात-ए-पाक, रसूल-ए-मक़बूल सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि वसल्लम के बराबर किसी को पैदा कर सकता है, लेकिन अपने वादे के अनुसार पैदा नहीं करेगा। मुहक़्क़िक़ीन (शोधकर्ता) उलेमा के नज़दीक ज़ैद का इमाम-ए-नमाज़ होना सही है या नहीं?

अल-जवाब (उत्तर): हुज़ूर अकदस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बहुत से महान गुण और महान विशेषताएं हैं जिन्हें साझा नहीं किया जा सकता, जैसे कि सबसे श्रेष्ठ नबी, अंतिम नबी, रसूलों के सरदार, अल्लाह की पहली रचना, अल्लाह की सबसे श्रेष्ठ रचना, पहले शिफ़ाअत करने वाले, जिनकी शिफ़ाअत सबसे पहले स्वीकार होगी, नबियों के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम। अगर उस समय कहने वाले का ध्यान इस ओर नहीं गया और केवल अल्लाह की शक्ति की व्यापकता सामने थी, तो उसे समझाया जाए। अगर वह सत्य का अनुयायी और सत्य का खोजी होगा, तो वह ज़रूर समझ जाएगा। और अपनी ग़लती से बाज़ आ जाएगा। और अगर समझाने के बावजूद दुश्मनी, अहंकार, ज़िद और अड़ियलपन दिखाए, तो वह निश्चित रूप से गुमराह (बद-मज़हब) है, उसे इमाम बनाना किसी भी हाल में जायज़ नहीं है और उसके पीछे नमाज़ पढ़ना मकरूह-ए-तहरीमी है, कि पढ़ना पाप है और नमाज़ लौटाना अनिवार्य है। यह भी तब है जब उपरोक्त कथन वहाबियत के कारण न हो, वर्ना अब देवबंदियों ने वहाबियों में इस्लाम का नाम नहीं रहने दिया, जो उनकी तरह अल्लाह और रसूल की घोर, स्पष्ट और अकथनीय तौहीन (अपमान) करते हैं, वे स्वयं काफ़िर हैं। वर्ना इतना तो तय है कि जो इन तौहीनों को करने वालों को काफ़िर नहीं कहते, वे उनके कारण काफ़िर हो जाते हैं। हरमैन

शरीफ़ैन के उलेमा देवबंदियों के संबंध में लिख चुके हैं कि "जिसे उनके कुफ़्र (अविश्वास) में संदेह है, वह स्वयं काफ़िर है।"[2] जो उनके कुफ़्र...

---

1 2 अल-क़ुरआन अल-करीम 4/48 और 116

وقت کی نماز قصداً یا ایک فرض روزہ عمداً ترک کرے یا کسی گناہ کا مرتکب ہو اللہ عزوجل چاہے تو اس پر عذاب کرے اور یہ اس کا عدل ہے چاہے بخش دے اور یہ اس کا فضل ہے۔

"إِنَّ اللهَ لَا يَغْفِرُ أَنْ يُشْرَكَ بِهِ وَيَغْفِرُ مَا دُونَ ذَلِكَ لِمَنْ يَشَاءُ ۚ" 1

بے شک اللہ تعالٰی اسے نہیں بخشتا کہ اس کا کوئی شریک ٹھہرایا جائے اور اس سے نیچے جو کچھ ہے جسے چاہے معاف فرما دیتا ہے۔ (ت) واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۷۲: از اردہ نگلہ ڈاک خانہ اچھنیرا ضلع آگرہ مرسلہ صادق علی خان صاحب ۲۸ شوال ۱۳۳۶ھ زید کا یہ عقیدہ ہے کہ اللہ تعالٰی ذاتِ پاک رسول مقبول صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی برابر پیدا کر سکتا ہے مگر بموجب اپنے وعدہ کے پیدا نہیں کرے گا۔ زید کا امام نماز ہونا محققین علماء کے نزدیک درست ہے یا نہیں؟

الجواب: حضور اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کے بہت فضائل جلیلہ و خصائص کریمہ ناقابل اشتراک ہیں جیسے افضل الانبیاء خاتم النبیین، سید المرسلین، اول خلق اللہ، افضل خلق اللہ، اول شافع، اول مشفع، نبی الانبیاء صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم۔ اگر اس وقت اس طرف قائل کا ذہن نہ گیا محض عموم قدرت پیشِ نظر تھا اسے تفہیم کی جائے، اگر تابع حق و طالب حق ہو گا ضرور سمجھ جائے گا۔ اور اپنی غلطی سے باز آئے گا۔ اور اگر باوصفِ تفہیم عناد و استکبار ولد اد و اصرار کرے تو ضرور بد مذہب ہے، اسے امام بنانا ہر گز جائز نہیں اور اس کے پیچھے نماز مکروہ تحریمی کہ پڑھنی گناہ اور پھیرنی واجب، یہ بھی اس وقت ہے کہ قول مذکور بعلتِ وہابیت نہ ہو، ورنہ اب دیوبندیوں نے وہابیہ میں اسلام کا نام نہ رکھا جو ان کے مثل اللہ و رسول کی شدید واضح

و قابلِ تاویل توہینیں کرتے ہیں خود کافر ہیں، ورنہ اتنا ضرور ہے کہ ان توہینوں کے کرنے والوں کو کافر نہیں کہتے یہ ان کے صدقے میں کافر ہوئے علمائے حرمین شریفین دیوبندیوں کی نسبت تحریر فرما چکے کہ من شک فی کفرہ فقد کفر۔ 2 جو ان کے کفر...

---

1 2 القرآن الکریم ۴ / ۴۸ و ۱۱۶

Fatawa Razawiyya Volume 29

...whoever doubts it is himself a disbeliever. Wal'iyadh bi-Allah Ta'ala (May Allah protect. T). And Allah knows best.

Problem 75: From Calcutta, Post Office Ballygunge, Katra Road No. 101, requested by Faiz Muhammad, trader in the market of late Mistri Hadi.

The presence of the Qutb of Qutbs, our Master and Leader, the Beloved of the Divine, the Eternal Refuge (may Allah have mercy on him), in his treatise Ghunyat al-Talibin, has listed the Hanafi school among the misguided sects. Please clarify this thoroughly to provide comfort and satisfaction, so that carnal and satanic whispers and dangers may be removed. A resident of Ghazipur district named Abdul Azeem has authored a treatise in which he has shown and proven the contents of the treatise Taqwiyat al-Iman (known as Taqwiyat al-Iman) from the letters of Makhdoom al-Mulk (may Allah have mercy on him) and Mujaddid Alf Thani (may Allah have mercy on him) and other elders of the religion. He has stated that these elders in their letters have used even harsher words than Taqwiyat al-Iman, naming names, saying that if Allah wills, He could reject so-and-so and accept Pharaoh and Nimrod, create hundreds of Ka'bas, etc. etc.

Now this humble servant requests that if any treatise has been published in response to them, please send it by post parcel, or record a clear summary of the answer. Peace be upon you with honor.

There is more confusion from the contents of Ghunyat al-Talibin because the chain of connection, relationship, faith, and conviction is attached to both personalities. If the school is Hanafi, the spiritual path (mashrab) is Qadri. Now, even a slight doubt or skepticism concerning these two leaders has become a grip, causing fear and dread of a major attack on faith. For Allah's sake, have mercy on my miserable state; a very big trial is before me at this time. Most respectful regards.

The Answer: In the name of Allah, the Most Gracious, the Most Merciful. We praise Him and send blessings upon His Noble Messenger. Kind benefactor, may Allah Almighty honor you. Peace be upon you and the mercy and blessings of Allah. Firstly: Regarding the book Ghunyat al-Talibin, it is the opinion of Hazrat Sheikh Abdul Haq Muhaddis Dehlavi (may Allah have mercy on him) that it is not the work of the radiant presence, our Master Ghaus al-Azam (may Allah be pleased with him) at all, but this is a bare negation. And Imam Hajar Makki (may Allah have mercy on him) has explicitly

stated that some deserving of punishment have made interpolations in this book. He says in Fatawa Hadithiyya:

Wa iyyaka an taghtarra bima waqa'a	**That is, beware, do not be deceived by that which the Leader of the Saints...**

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

...जो इसमें शक करे वह खुद काफ़िर है। वल-इयाज़ु बिल्लाहि तआला (अल्लाह बचाए। त) वल्लाहु तआला आलम।

मसला 75: कलकत्ता, डाकखाना बालीगंज, कटरा रोड नंबर 101 से, मुस्तइलह (पूछने वाले) फ़ैज़ मोहम्मद, ताज़िर, बाज़ार मिस्त्री हादी मरहूम।

हुज़ूर क़ुत्बुल अक़्ताब सैयदुना व मौलाना महबूब-ए-सुब्हानी गौस-ए-समदानी रहमतुल्लाहि अलैहि ने जो अपने रिसाला 'ग़ुन्यतुत तालिबीन' में मज़हब-ए-हनफिया को गुमराह फ़िर्क़ों में दर्ज फ़रमाया है, इसको अच्छी तरह से हुज़ूर वाज़ेह फ़रमा कर तस्कीन व तश्फ़ी बख्शें कि वसवसा व खतरात-ए-नफ़्सानी व शैतानी रफ़ा हो जाएं। अब्दुल अज़ीम नामी ज़िला गाजीपुर के बाशिंदे ने एक रिसाला तस्नीफ़ किया है जिसमें रिसाला 'तक़वियतुल ईमान' उर्फ़'तक़वियतुल ईमान' के मज़मून को मक्तूबात-ए-मख़दूमुल मुल्क रहमतुल्लाहि अलैहि व मुजद्दिद अल्फ-ए-सानी रहमतुल्लाहि अलैहि और भी बुज़ुर्गान-ए-दीन के मक्तूबात से दिखलाया है और साबित किया है कि इन बुज़ुर्गों ने अपने मक्तूबात में 'तक़वियतुल ईमान' से भी सख्त-सख्त अल्फ़ाज़ नाम-ब-नाम लिखे हैं कि अल्लाह चाहे तो फ़लां को मरदूद कर दे और फ़िरौन व नमरूद को चाहे मक़बूल करे, सैंकड़ों काबा तैयार कर दे वग़ैरा वग़ैरा।

अब खाक़सार अर्ज़ करता है कि या तो कोई रिसाला इनके जवाब में शाया फ़रमाया हो तो बज़रिये डाक पार्सल इरसाल हो या वाज़ेह खुलासा-ए-जवाब रक़म हो, वस्सलाम मअल इक्राम।

'ग़ुन्यतुत तालिबीन' के मज़ामीन से ज़्यादा इसलिए इंतिशार है कि दोनों हज़रात से तअल्लुक़ व रिश्ता व ईमान व ईक़ान का सिलसिला मुल्हक़ है, हनफ़ी अगर मज़हब है तो क़ादरी मशरब है, अब ज़रा भी इन दोनों पेशवा की तरफ़ से रैब व शक दामनगीर हुआ कि बहुत बड़ा हमला ईमान पर होने का खौफ़ व डर है, लिल्लाह मेरे हाल-ए-ज़ार पर रहम फ़रमाएं, इस वक़्त मेरे लिए बहुत बड़ा इम्तिहान मद-ए-नज़र है। ज़्यादा हद-ए-अदब।

अल-जवाब: बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम मुकर्रम करम फ़रमा अकरमकुमुल्लाहु तआला व अलैकुम अस्सलाम व रहमतुल्लाहि व बरकातहु, अव्वलन: किताब 'ग़ुन्यतुत तालिबीन' शरीफ़ की निस्बत हज़रत शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाहि अलैहि का तो यह ख्याल है कि वह सिरे से हुज़ूर पुरनूर सैयदुना गौस-ए-आज़म रज़ियल्लाहु तआला

अन्हु की तस्नीफ़ ही नहीं, मगर यह नफ़ी मुजर्रद है। और इमाम हजर मक्की रहमतुल्लाहि अलैहि ने तसरीह फ़रमाई कि इस किताब में बाज़ मुस्तहिक़्क़ीन-ए-अज़ाब ने इल्हाक़ कर दिया है, फ़तावा हदीसिया में फ़रमाते हैं:

व इय्याका अन तग़तर्रा बिमा वक़अ	**यानी ख़बरदार धोखा न खाना इससे जो इमामुल औलिया...**

पेज 223/750

میں شک کرے وہ خود کافر ہے۔ والعیاذ باللہ تعالٰی (اللہ بچائے ت) واللہ تعالٰی اعلم

مسئلہ ۷۵: از کلکتہ ڈاک خانہ بالی گنج کٹرا روڈ نمبر ۱۰۱ مسئولہ فیض محمد تاجر در بازار مستری ہادی مرحوم۔

حضور قطب الاقطاب سید نا و مولانا محبوب سبحانی غوث الصمدانی رحمۃ اللہ علیہ نے جو اپنے رسالہ غنیۃ الطالبین میں مذہب حنفیہ کو گمراہ فرقہ میں مندرج فرمایا ہے اس کو اچھی طرح سے حضور واضح فرما کر تسکین و تشفی بخشیں کہ وسوسہ و خطرات نفسانی و شیطانی رفع ہو جائیں ، عبدالعظیم نامی ضلع غازیپور کے باشندے نے ایک رسالہ تصنیف کیا ہے جس میں رسالہ تقویۃ الایمان عرف تقویتہ الایمان کے مضمون کو مکتوبات مخدوم الملک رحمۃ اللہ علیہ و مجدد الف ثانی رحمۃ اللہ علیہ اور بھی بزرگان دین کے مکتوبات سے دکھلایا ہے وثابت کیا ہے کہ ان بزرگوں نے اپنے مکتوبات میں تقویۃ الایمان سے بھی سخت سخت الفاظ نام بنام لکھا ہے کہ اللہ چاہے تو فلاں کو مردود کر دے وفرعون و نمرود کو چاہے مقبول کرے ، سینکڑوں کعبہ تیار کر دے وغیرہ وغیرہ۔

اب خاکسار عرض کرتا ہے کہ یا تو کوئی رسالہ ان کے جواب میں شائع فرمایا ہو تو بذریعہ ڈاک پارسل ارسال ہو یا واضح خلاصہ جواب ارقام ہو والسلام مع الاکرام۔

غنیۃ الطالبین کے مضامین سے زیادہ اس لیے انتشار ہے کہ دونوں حضرات سے تعلق ورشتہ وایمان وایقان کا سلسلہ ملحق ہے ، حنفی اگر مذہب ہے تو قادری مشرب ہے ، اب ذرا بھی ان دونوں

پیشوا کی طرف سے ریب و شک دامنگیر ہوا کہ بہت بڑا حملہ ایمان پر ہونے کا خوف وڈر ہے ، اللہ میرے حال زار پر رحم فرمائیں اس وقت میرے لیے بہت بڑا امتحان مد نظر ہے۔ زیادہ حد ادب۔

الجواب:

بسم اللہ الرحمن الرحیم ط نحمدہ و نصلی علی رسولہ الکریم ط

مکرم کرم فرما اکرمکم اللہ تعالیٰ وعلیکم السلام ورحمۃ اللہ وبرکاتہ،

اولاً: کتاب غنیۃ الطالبین شریف کی نسبت حضرت شیخ عبدالحق محدث دہلوی رحمۃ اللہ علیہ کا تو یہ خیال ہے کہ وہ سرے سے حضور پر نور سیدنا غوث اعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی تصنیف ہی نہیں مگر یہ نفی مجرد ہے۔ اور امام حجر مکی رحمۃ اللہ علیہ نے تصریح فرمائی کہ اس کتاب میں بعض مستحقین عذاب نے الحاق کر دیا ہے ، فتاوی حدیثیہ میں فرماتے ہیں:

وایاک ان تغتر بما وقع یعنی خبر دار دھوکا نہ کھانا اس سے جو امام الاولیاء

Fatawa Razawiya, Vol 29

In 'al-Ghunya' by the leader of the Gnostics and the pole of Islam and Muslims, teacher Abdul Qadir al-Jilani (may Allah be pleased with him), it is stated that someone added fabricated content against him in this book, and soon Allah Almighty will take revenge on him, while the Hazrat Shaikh (may Allah be pleased with him) is free from it. [1]

Secondly, in the same book, all Ash'aris, i.e., Ahl al-Sunnah wa al-Jama'ah, have been called innovators, misguided, and misleaders, saying: "Contrary to what the Ash'aris said that Allah's speech is a meaning existing in His essence, and Allah is sufficient against every misguided and misleading innovator." [2] (T)

Can any just person say that, God forbid, this is the statement of Sarkaar Ghous-e-Azam? In a book where all Ahl al-Sunnah are called innovators, misguided, and misleaders, what complaint can be made if something is said regarding the Hanafis? Therefore, there is no cause for concern.

Thirdly, then it is itself a blatant error and fabrication upon fabrication that all Hanafis have been written as such. The explicit words in Ghunya-tul-Talibin are: "They are some companions of Abu Hanifa." [3]

This can neither be an allegation against Hanafis, nor, God forbid, against Hanafism. After all, it is definitely known and everyone knows that among Hanafis there were some Mu'tazilites, like Zamakhshari the author of Kashaf, Abd al-Jabbar, and Mutarrizi the author of Mughrib, and Zahidi the author of Qunya, Hawi, and Mujtaba. Then how does an allegation come against Hanafism and Hanafis? Some Shafi'is are Zaydi-Rafidis; does that bring an allegation against Shafi'is and Shafi'ism? The Wahhabis of Najd are all Hanbalis, then...

1: Al-Fatawa al-Hadithiyya, Topic: What is in al-Ghunya for Sheikh Abdul Qadir, al-Jamaliyya Press, Egypt, p. 128. 2: Al-Ghunya li-Talibi Tariq al-Haq, Chapter on the belief that the Quran is composed of understood letters, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 1/91. 3: Al-Ghunya li-Talibi Tariq al-Haq, Chapter: As for the Jahmiyyah etc., Department of Publishing and Propagation of Islamic Sciences, Peshawar, 1/91.

फतावा रज़विया, खंड 29

आरिफों के इमाम और इस्लाम और मुसलमानों के ध्रुव, उस्ताद अब्दुल कादिर अल-जिलानी (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) की किताब 'अल-ग़ुनिया' में यह बात आई है कि इस किताब में किसी ने उन पर झूठ गढ़कर इज़ाफ़ा कर दिया है, और जल्द ही अल्लाह अज़-व-जल उससे बदला लेगा, जबकि हज़रत शेख (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) इससे बरी हैं। [1]

दूसरे, इसी किताब में तमाम अशअरियों यानी अहले सुन्नत व जमाअत को बिदअती, गुमराह और गुमराह करने वाला लिखा गया है: "इसके विपरीत जो अशारिया ने कहा कि अल्लाह तआला का कलाम ऐसा अर्थ है जो उसकी ज़ात के साथ कायम है और अल्लाह तआला हर बिदअती, गुमराह और गुमराह करने वाले के लिए काफी है।" [2] (त)

क्या कोई न्यायप्रिय व्यक्ति कह सकता है कि मा'अज़अल्लाह यह सरकार-ए-ग़ौसियत का इरशाद है? जिस किताब में तमाम अहले सुन्नत को बिदअती, गुमराह और गुमराह करने वाला लिखा गया है, उसमें हनफियों के संबंध में कुछ हो तो क्या शिकायत की जाए। इसलिए, चिंता का कोई स्थान नहीं है।

तीसरे, फिर यह खुद सरासर गलत और मनगढ़ंत बात है कि तमाम हनफियों को ऐसा लिखा गया है। ग़ुनियत-उत-तालिबीन में स्पष्ट शब्द ये हैं: "वे अबू हनीफा के कुछ साथी हैं।" [3]

न तो यह हनफियों पर आरोप हो सकता है और न ही मा'अज़अल्लाह हनफियत पर। आखिरकार, यह निश्चित रूप से ज्ञात है और सभी जानते हैं कि हनफियों में कुछ मोअतज़िली थे, जैसे कशाफ के लेखक ज़मख्शरी, अब्दुल जब्बार, मग़रिब के लेखक मुतर्रिज़ी, और कुन्या, हावी व मुजतबा के लेखक ज़ाहिदी। फिर इससे हनफियत और हनफियों पर क्या आरोप आया? कुछ शाफ़ई ज़ैदी राफ़िज़ी हैं, क्या इससे शाफ़इयों और शाफ़इयत पर आरोप आया? नजद के वहाबी सब हंबली हैं, फिर...

1: अल-फ़तावा अल-हदीथिया, विषय: शेख अब्दुल कादिर की ग़ुनिया में जो है, अल-जामलिया प्रेस मिस्र, पृष्ठ 128। 2: अल-ग़ुनिया लि-तालिबी तरीक़ अल-हक़, इस विश्वास पर अध्याय कि कुरान समझ में आने वाले अक्षर हैं, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी बेरूत 1/91। 3: अल-ग़ुनिया लि-

तालिबी तरीक़ अल-हक़, अध्याय: जहाँ तक जहमिया आदि का संबंध है, इस्लामी विज्ञान प्रकाशन विभाग पेशावर 1/91।

पृष्ठ 224/750

فی الغنیة لامام العارفین وقطب الاسلام والمسلمین الاستاذ عبد القادر الجیلاني رضي الله تعالی عنه فانه دسه علیه فیها من سینتقم الله منه والا فهو برئ من ذلك -1 سردارِ اسلام و مسلمین حضور سیدنا شیخ عبدالقادر جیلانی رضی اللہ تعالٰی عنہ کی غنیہ میں واقع ہوا کہ اس کتاب میں اسے حضور پر افتراء کر کے ایسے شخص نے بڑھا دیا ہے کہ عنقریب اللہ عزوجل اس سے بدلہ لے گا، حضرت شیخ رضی اللہ تعالٰی عنہ اس سے بری ہیں۔

ثانیاً اسی کتاب میں تمام اشعریہ یعنی اہلسنت و جماعت کو بدعتی، گمراہ، گمراہ گر لکھا ہے کہ: خلاف ما قالت الاشعریة من ان کلام الله معنی قائم بنفسه والله حسیب کل مبتدع ضال مضل -2 بخلاف اس کے جو اشاعرہ نے کہا کہ اللہ تعالٰی کا کلام ایسا معنی ہے جو اس کی ذات کے ساتھ قائم ہے اور اللہ تعالٰی ہر بدعتی، گمراہ و گمراہ گر کے لیے کافی ہے۔ (ت)

کیا کوئی ذی انصاف کہہ سکتا ہے کہ معاذ اللہ یہ سرکار غوثیت کا ارشاد ہے جس کتاب میں تمام اہلسنت کو بدعتی، گمراہ گمراہ گر لکھا ہے اس میں حنفیہ کی نسبت کچھ ہو تو کیا جائے شکایت ہے۔ لہٰذا کوئی محل تشویش نہیں۔

ثالثاً: پھر یہ خود صریح غلط اور افتراء پر افتراء ہے کہ تمام حنفیہ کو ایسا لکھا ہے غنیۃ الطالبین کے یہاں صریح لفظ یہ ہیں کہ: هم بعض اصحاب ابی حنیفة -3 وہ بعض حنفی ہیں۔

اس نے نہ حنفیہ پر الزام آسکتا ہے نہ معاذ اللہ حنفیت پر، آخر یہ تو قطعاً معلوم ہے اور سب جانتے ہیں کہ حنفیہ میں بعض معتزلی تھے، جیسے زمخشری صاحب کشاف و عبد الجبار و مطرزی صاحب مغرب و زاہدی صاحب قنیہ و حاوی و مجتبٰی، پھر اس سے حنفیت و حنفیہ پر کیا الزام آیا۔

بعض شافعیہ زیدی رافضی ہیں اس سے شافعیہ و شافعیت پر کیا الزام آیا۔ نجد کے وہابی سب حنبلی ہیں پھر

---

1 الفتاوی الحدیثیۃ مطلب ان ما فی الغنیۃ للشیخ عبدالقادر مطبعۃ الجمالیہ مصر ص ۱۲۸ 2 الغنیۃ لطالبي طریق الحق فصل فی اعتقاد ان القرآن حروف مفھومۃ دار احیاء التراث العربی بیروت ۱/ ۹۱ 3 الغنیۃ لطالبي طریق الحق فصل و اما الجھمیۃ الخ ادارہ نشر و اشاعت علوم اسلامیہ پشاور ۱/ ۹۱

Fatawa Razawiyya Volume 29

What accusation did this bring upon Hanbalism and the Hanbalis? Let it be; Rafizis, Kharijis, Mu'tazilis, and Wahhabis all emerged within Islam and claimed to be Muslims. Then, God forbid, what accusation did this bring upon Islam and Muslims?

Fourthly: In the revered book Bahjat-ul-Asrar, through an authentic chain of narration from Hazrat Abu al-Taqi Muhammad bin Azhar Sarighini, it is stated: "I had a desire to see the Men of the Unseen (Rijal al-Ghayb). I saw a man in the presence of the holy shrine of Imam Ahmad (may Allah be pleased with him). It occurred to my heart that he is from the Men of the Unseen. After finishing the visit, he started walking, and I followed him. For him, the width of the River Tigris shrunk to just a single step, so he stepped over and reached the other side. I stopped him by swearing an oath and asked his school of thought (madhhab). He replied:

'A Hanafi Muslim, and I am not of the polytheists.' A Muslim separate from every falsehood, and I am not among the polytheists, (T).

He understood that he was a Hanafi. He went to present himself before the court of our master Ghaus-e-Azam (may Allah be pleased with him). The master was inside, and the door was closed. As soon as he arrived, the master called out from inside: 'O Muhammad! Today, there is no saint of this stature on the face of the earth who is not of the Hanafi school of thought.' [1]

God forbid, can misguided and ill-behaved people be saints of Allah, whose sainthood the master of Ghausiyat himself testified to? That Wahhabi treatise has not come to my notice; however, a few matters are worthy of consideration here.

Firstly, those words which the opponent quoted from those books must be like the cursed words of Ismail Dehlvi; otherwise, the citation is rejected. It should also be remembered here that when some ambiguous words are uttered by an accepted person, they will be interpreted with a good meaning according to the command of the Quran. But when they are uttered by a rejected person who has already committed explicit insults, then due to his vile habit, only vile meanings will be understood because:

'Every vessel leaks what is in it,' as explicitly stated by Imam Ibn Hajar Al-Makki (may Allah have mercy on him). Imam Hajar Al-Makki (may Allah have mercy on him) has clarified this. (T)

Secondly: It must be proven that the book is preserved and protected, where there is no possibility of interpolation by an enemy of the faith, just as it was recently stated regarding interpolations in Ghunyat al-Talibin. Similarly, regarding the words of Imam Hujjat-ul-Islam Ghazali...

---

[1] Bahjat-ul-Asrar, mention of sections of his speech, adorned with some of his wondrous states, summarized, Dar al-Kutub al-Ilmiyah, Beirut, p. 152.

फतावा रजविया जिल्द 29

इससे हनबलिया और हनबलियत पर क्या आरोप लगा? जाने दीजिए, राफिज़ी, खारजी, मोतज़ली, वहाबी सब इस्लाम ही से निकले और इस्लाम के दावेदार हुए, फिर माज़अल्लाह (अल्लाह की पनाह) इससे इस्लाम और मुसलमानों पर क्या आरोप लगा?

चौथा: मोतबर किताब 'बहजत-उल-असरार' में सही सनद के साथ हज़रत अबू अल-तकी मुहम्मद बिन अज़हर सरैनी से रिवायत है: "मुझे रिजाल-उल-ग़ैब (परोक्ष के पुरुषों) को देखने की इच्छा थी। मैंने इमाम अहमद (रज़ियल्लाहु अन्हु) के पाक मज़ार के पास एक व्यक्ति को देखा। मेरे दिल में आया कि ये रिजाल-उल-ग़ैब में से हैं। वो ज़ियारत से फ़ारिग होकर चलने लगे, मैं उनके पीछे हो गया। उनके लिए दजला नदी का पाट सिमट कर एक कदम के बराबर रह गया और वो पैर रखकर उस पार चले गए। मैंने कसम देकर उन्हें रोका और उनका मज़हब पूछा, तो उन्होंने फ़रमाया:

'हनफी मुस्लिम वमा अना मिनल मुशरिकीन।' हर बातिल (झूठ) से अलग मुसलमान, और मैं मुशरिकों (बहुदेववादियों) में से नहीं हूँ, (त)।

उन्होंने समझ लिया कि ये हनफी हैं। वे हुज़ूर सय्यदना गौस-ए-आज़म (रज़ियल्लाहु अन्हु) की बारगाह में अर्ज़ के लिए हाज़िर हुए। हुज़ूर अंदर थे और दरवाज़ा बंद था। उनके पहुँचते ही हुज़ूर ने अंदर से इर्शाद फ़रमाया: 'ऐ मुहम्मद! आज रू-ए-ज़मीन (धरती की सतह) पर इस शान का कोई वली (संत) हनफी मज़हब के अलावा नहीं है।' [1]

क्या माज़अल्लाह गुमराह और बद-मज़हब लोग अल्लाह के वली होते हैं जिनकी विलायत की गवाही खुद सरकार-ए-ग़ौसियत ने दी? वो वहाबी रिसाला नज़र से नहीं गुज़रा, यहाँ चंद बातें काबिले-गौर हैं।

अव्वल, वो शब्द जो उन किताबों से विरोधी ने उद्धृत किए हैं, इस्माइल देहलवी के उन मलऊन (अभिशप्त) शब्दों की तरह होने चाहिए, अन्यथा उनका प्रमाण रद्द है। यहाँ यह नुक्ता भी याद रहे कि जब कुछ मुहतमल (संभावित) शब्द किसी मक़बूल (स्वीकृत) व्यक्ति से निकलें, तो कुरान के हुक्म के अनुसार उन्हें अच्छे अर्थों में लिया जाएगा। और जब किसी मरदूद (तिरस्कृत) व्यक्ति से निकलें जो स्पष्ट तौहीन (अपमान) कर चुका हो, तो उसकी खबीस (गंदी) आदत के कारण उनके गंदे अर्थ ही समझे जाएंगे क्योंकि:

'हर बर्तन से वही कुछ बाहर आता है जो उसके अंदर होता है,' जैसा कि इमाम इब्न हजर अल-मक्की (रहमतुल्लाह अलैहि) ने साफ़ तौर पर फ़रमाया है। इमाम हजर मक्की (रहमतुल्लाह अलैहि) ने इसकी तसरीह (स्पष्टीकरण) फरमाई है। (त)

दूसरा: यह साबित होना चाहिए कि वह किताब सुरक्षित और महफूज़ है, जिसमें दीन के किसी दुश्मन द्वारा कुछ मिला देने (मिलावट) की कोई संभावना न हो, जैसा कि अभी 'ग़ुनियत-उत-तालिबीन' शरीफ में मिलावट होने की बात बयान हुई। इसी तरह इमाम हुज्जतुल इस्लाम गज़ाली के कलाम...

---

[1] बहजत-उल-असरार, उनके कलाम के अध्यायों का ज़िक्र, उनके अद्भुत हालों में से कुछ के साथ सजाया हुआ, संक्षिप्त, दार अल-कुतुब अल-इल्मिया बेरूत, पृष्ठ 152।

اس سے حنبلیہ وحنبلیت پر کیا الزام آیا، جانے دو رافضی خارجی معتزلی وہابی سب اسلام ہی میں نکلے اور اسلام کے مدعی ہوئے پھر معاذ اللہ اس سے اسلام و مسلمین پر کیا الزام آیا۔

رابعاً: کتاب مستطاب بہجۃ الاسرار میں بسند صحیح حضرت ابوالتقی محمد بن از ہر صریغینی سے ہے مجھے رجال الغیب کے دیکھنے کی تمنا تھی مزار پاک امام احمد رضی اللہ تعالٰی عنہ کے حضور ایک مرد کو دیکھا دل میں آیا کہ مردانِ غیب سے ہیں وہ زیارت سے فارغ ہو کر چلے یہ پیچھے ہوئے ان کے لیے دریائے دجلہ کا پاٹ سمٹ کر ایک قدم بھر کا رہ گیا کہ وہ پاؤں رکھ کر اس پار ہو گئے انہوں نے قسم دے کر روکا اور ان کا مذہب پوچھا، فرمایا:

حنفی مسلم وما انا من المشرکین۔ ہر باطل سے الگ مسلمان، اور میں مشرکوں میں سے نہیں ہوں، (ت)

یہ سمجھے کہ حنفی ہیں، حضور سید نا غوث اعظم رضی اللہ تعالٰی عنہ کی بارگاہ میں عرض کے لیے حاضر ہوئے حضور اندر ہیں دروازہ بند ہے ان کے پہنچتے ہی حضور نے اندر سے ارشاد فرمایا: اے محمد ! آج روئے زمین پر اس شان کا کوئی ولی حنفی المذہب نہیں۱۔

کیا معاذ اللہ گمراہ بد مذہب لوگ اولیاء اللہ ہوتے ہیں جن کی ولایت کی خود سرکارِ غوثیت نے شہادت دی، وہ وہابی رسالہ نظر سے نہ گزرا، یہاں چند امور واجب اللحاظ ہیں۔

اولاً وہ کلمات جوان کتب سے مخالف نے نقل کیے اسمعیل دہلوی کے کلمات ملعونہ کے مثل ہوں ورنہ استشہاد مردود، یہاں یہ نکتہ بھی یاد رہے کہ بعض محتمل لفظ جب کسی مقبول سے صادر

ہوں بحکم قرآن انہیں معنی حسن پر حمل کریں گے، اور جب کسی مردود سے صادر ہوں جو صریح توہینیں کر چکا ہو تو اس کی خبیث عادت کی بنا پر معنی خبیث ہی مفہوم ہوں گے کہ:

کل اناء یترشح بما فیہ صرح بہ الامام ابن حجر ہر برتن سے وہی کچھ باہر آتا ہے جو اس کے اندر ہوتا ہے، امام المکی رحمۃ اللہ تعالٰی۔ حجر مکی رحمۃ اللہ علیہ نے اس کی تصریح فرمائی ہے۔ (ت)

ثانیاً: وہ کتاب محفوظ مصون ہو نا ثابت ہو جس میں کسی دشمن دین کے الحاق کا احتمال نہ ہو جیسے ابھی غنیۃ الطالبین شریف میں الحاق ہو نا بیان ہوا، یونہی امام حجۃ الاسلام غزالی کے کلام

---

۱ بہجۃ الاسرار ذکر فصول من کلامہ مرصعاً بشیئ من عجائب احوالہ مختصراً دار الکتب العلمیہ بیروت ص ۱۵۲

...were added in, and in the speech of Shaykh al-Akbar, the interpolations are beyond count, for which a sufficient explanation was given by Imam Abdul Wahhab ash-Sha'rani in the book Al-Yawaqit wal-Jawahir, where he stated that even during my lifetime, envious people made additions to my book. Similarly, Shah Abdul Aziz, in Tuhfa Ithna Ashariyyah, mentioned that interpolations occurred in the works of Hakim Sanai, Khawaja Hafiz, and other great figures. Finding some passage in a manuscript in some cupboard is not a legal Shar'i proof that it is exactly as the author wrote it. If such manuscripts are then printed, the abundance of printed copies will not be significant as their origin is that same unknown manuscript, like the printed editions of Futuhat al-Makkiyya.

Thirdly: Even if the chain of transmission is proven, mass-transmission (tawatur) and investigation are required. Imam Hujjat-ul-Islam Ghazali and other elders state:

- It is not permissible to attribute a major sin to a Muslim without investigation. Yes, it is permissible to say that Ibn Muljam killed Ali, for that is proven through mass-transmission. (T)
- [Urdu Translation]: It is not permissible to attribute a major sin to a Muslim without investigation; however, it is permissible to say that Ibn Muljam killed Hazrat Ali (may Allah be pleased with him), because this report is established through mass-transmission. (T)

When it is impermissible to attribute a sin to a common Muslim without investigation, how can it be permissible to attribute words of disbelief (kufr) to the friends of Allah (Awliya) without definitive proof? God forbid!

Fourthly: Even if everything is assumed [to be true], the essence of the Wahhabi's answer would be that insulting the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him and his family) is not bad because so-and-so also did it. Can any Muslim give such an answer? Even if an insult were wrongly proven, it would not be acceptable, nor would it mean that, God forbid, all insults towards him should become acceptable.

- There is no power nor strength except with Allah, the Most High, the Most Great. And Allah knows best.

- [Urdu Translation]: There is no power to avoid sin, nor strength to do good except through the guidance of Allah, the High and Great. And Allah knows best. (T)

Problem 76 to 87: Sent by Muhammad Abdul Wahid Khan, Bombay, Islampura. 12 Rabi' al-Awwal 1345 AH. (1) What is the opinion regarding "La Mahdi illa Isa" (There is no Mahdi besides Hazrat Isa, peace be upon him - T)?

1. Ihya' Ulum al-Din, Book of the Evils of the Tongue, Eighth Evil: Cursing, Matba'at al-Mashhad al-Husayni, Cairo, 3/125.

...में मिला दिए गए, और हज़रत शेख़-ए-अकबर के कलाम में तो मिलावटों (इलहाक़ात) की गिनती ही नहीं है, जिसका पर्याप्त वर्णन इमाम अब्दुल वहाब अल-शारानी ने किताब 'अल-यवाक़ीत वल-जवाहर' में दिया है और कहा है कि मेरे जीवन काल में ही ईर्ष्यालु लोगों ने मेरी किताब में मिलावटें कीं। इसी तरह हज़रत हकीम सनाई और हज़रत ख्वाजा हाफ़िज़ और अन्य महापुरुषों के कलाम में मिलावटें होने का उल्लेख शाह अब्दुल अज़ीज़ साहब ने 'तुहफ़ा इस्ना अशरिया' में किया है। किसी अलमारी में कोई हस्तलिखित किताब मिल जाए और उसमें कुछ इबारत हो, तो यह इस बात का शरीयत सम्मत प्रमाण नहीं है कि वह हूबहू लेखक की ही है। फिर यदि उस हस्तलिखित प्रति से छपाई की जाए, तो छपी हुई प्रतियों की अधिकता कोई महत्व नहीं रखेगी क्योंकि उनका मूल वही अज्ञात हस्तलिखित प्रति है, जैसे कि 'फ़ुतुहात-ए-मक्खिया' की छपी हुई प्रतियाँ।

तीसरा: यदि यह सनद (प्रमाण) साबित भी हो जाए, तो भी तवातुर (निरंतरता) और शोध आवश्यक है। इमाम हुज्जतुल इस्लाम ग़ज़ाली और अन्य विद्वान फ़रमाते हैं:

- बिना शोध के किसी मुसलमान की ओर बड़े गुनाह (कबीरा) का श्रेय देना जायज़ नहीं है। हाँ, यह कहना जायज़ है कि इब्न मुलजम ने अली की हत्या की, क्योंकि यह बात तवातुर से साबित है। (त)
- [उर्दू अनुवाद]: बिना शोध के किसी मुसलमान की ओर बड़े गुनाह की निस्बत करना जायज़ नहीं है; हाँ, यह कहना जायज़ है कि इब्न मुलजम ने हज़रत अली (रज़ियल्लाहु अन्हु) की हत्या की, क्योंकि यह ख़बर तवातुर से साबित है। (त)

जब बिना शोध के किसी आम मुसलमान की ओर गुनाह की निस्बत करना नाजायज़ है, तो अल्लाह के वलियों (औलिया) की ओर, अल्लाह न करे, कुफ्र (अविश्वास) के शब्दों की निस्बत बिना किसी ठोस प्रमाण के कैसे जायज़ हो सकती है?

चौथा: यदि सब कुछ मान भी लिया जाए, तो वहाबी के उत्तर का सार यह होगा कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का अपमान करना बुरा नहीं है क्योंकि फ़लां-फ़लां ने भी किया है। क्या कोई मुसलमान ऐसा उत्तर दे सकता है? मान लीजिए कि यदि अपमान ग़लती से साबित भी हो जाए,

तो वह स्वीकार्य नहीं होगा, और न ही ऐसा होगा कि, अल्लाह न करे, उनके प्रति सभी अपमान स्वीकार्य हो जाएं।

- गुनाहों से बचने की न तो कोई ताक़त है और न ही नेकी करने की शक्ति, सिवाय ऊंचे और महान अल्लाह की तौफीक के। और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है।
- [उर्दू अनुवाद]: गुनाहों से बचने की न तो कोई ताक़त है और न ही नेकी करने की शक्ति, सिवाय ऊंचे और महान अल्लाह की मदद के। और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है। (त)

मसला 76 से 87: प्रेषक: मोहम्मद अब्दुल वाहिद ख़ान साहब, बंबई, इस्लामपुरा। 12 रबी-उल-अव्वल शरीफ़ 1345 हिजरी। (1) "ला महदी इल्ला ईसा" (हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के सिवा कोई महदी नहीं है - त) के बारे में क्या राय है?

1. एहया-उल-उलूम, किताब आफ़ात-उल-लसान, आठवीं बुराई: लानत, मतबअ अल-मशहद अल-हुसैनी, काहिरा, 3/125।

पेज 226/750

میں الحاق ہوئے اور حضرت شیخ اکبر کے کلام میں تو الحاقات کا شمار نہیں جن کا شافی بیان امام عبدالوہاب شعرانی نے کتاب الیواقیت والجواہر میں فرمایا اور فرمایا کہ خود میری زندگی میں میری کتاب میں حاسدوں نے الحاقات کئے ، اسی طرح حضرت حکیم سنائی و حضرت خواجہ حافظ و غیر ہما اکابر کے کلام میں الحاقات ہو نا شاہ عبدالعزیز صاحب نے تحفہ اثناء عشریہ میں بیان فرمایا ، کسی الماری میں کوئی قلمی کتاب ملے اس میں کچھ عبارت ملنی دلیل شرعی نہیں کہ بے کم و بیش مصنف کی ہے پھر اس قلمی نسخہ سے چھاپا کریں تو مطبوعہ نسخوں کی کثرت کثرت نہ ہو گی اور ان کی اصل وہی مجہول قلمی ہے جیسے فتوحات مکیہ کے مطبوعہ نسخے۔

ثالثاً: اگر یہ سند ہی ثابت ہو تو تواتر و تحقیق در کار امام حجتہ الاسلام غزالی وغیرہ اکابر فرماتے ہیں :

لا تجوز نسبة مسلم الی کبیرة من غیر تحقیق ، نعم

یجوز ان یقال قتل ابن ملجم علیا فان ذلك ثبت متواترا۔ 1

بلا تحقیق مسلمان کی طرف گناہ کبیرہ کی نسبت کرنا جائز نہیں،

ہاں یوں کہنا جائز ہے کہ ابن ملجم نے حضرت علی رضی اللہ تعالیٰ عنہ کو قتل کیا، کیونکہ یہ خبر متواتر سے ثابت ہے ۔ (ت)

جب بے تحقیق تمام عام مسلمان کلمہ گو کی طرف گناہ کی نسبت ناجائز ہے تو اولیاء کرام کی طرف معاذ اللہ کلمہ کفر کی نسبت بلا ثبوت قطعی کیسے حلال ہو سکتی ہے۔

رابعاً: سب فرض کرلیں تو اب وہابی کے جواب کا حاصل یہ ہو گا کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کی توہین بری نہیں کہ فلاں فلاں نے بھی کی ہے کیا یہ جواب کوئی مسلمان دے سکتا ہے ، بفرض غلط تو ہین جس سے ثابت ہو وہ ہی مقبول نہ ہو گا نہ یہ کہ معاذ اللہ اس کے سب تو ہین مقبول ہو جائے۔

| ولاحول ولاقوۃ الا باللہ العلی العظیم واللہ تعالیٰ اعلم۔ | نہ گناہ سے بچنے کی طاقت ہے اور نہ ہی نیکی کرنے کی قوت مگر | | | بلند و عظمت والے اللہ کی توفیق سے ، واللہ تعالیٰ اعلم ۔ (ت) |

مسئلہ ۷۶ تا ۸۷: مرسلہ محمد عبد الواحد خان صاحب بمبئی اسلامپورہ ۱۲ ربیع الاول شریف ۱۳۴۵ھ (۱) لامھدی الا عیسیٰ (حضرت عیسیٰ علیہ السلام کے سوا کوئی مہدی نہیں ۔ ت) کے متعلق کیا رائے ہے؟

1 احیاء العلوم کتاب آفات اللسان الا فة الثامنة اللعن مطبعة المشهد الحسين القاهره ۳/ ۱۲۵

Fatawa Razawiyya, Volume 29

(2) How many hadiths have been narrated regarding Hazrat Mahdi and Jesus? (3) Which verses of the Holy Quran can be used to refute them?

Answer: (1) This hadith is not authentic, and even if assumed to be authentic, it is of the type: [Arabic]: "There is no pain except the pain of the eye, no sorrow except the sorrow for religion, no youth except Ali, and no sword except Dhu'l-Fiqar." [Urdu translation in box]: There is no pain except eye pain, no sorrow except for the religion, there is no generous person except Hazrat Ali Al-Murtada (may Allah honor his face), and there is no sword except Dhu'l-Fiqar (T). ...it is of that type. (2) Regarding Hazrat Mahdi and Jesus, the hadiths have reached the level of 'Tawatur' (massively transmitted), so much so that the leaders of religion have included their descent and appearance in the articles of faith. (3) All the verses of the Great Quran that command the veneration of the Prophets (peace be upon them) and declare as infidels those who deny them; that enumerate the miracles of our master Jesus (peace be upon him); that testify to their prophethood and messenger-ship; that state that the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) is the Seal of the Prophets; and that curse false claimants to prophethood—all these are refutations of the Qadianis. And Allah knows best.

Problem 79: Sent by Abdul Jabbar Khan, Tayyib Dham-pur, District Bijnor, 27 Rabi al-Awwal 1335 AH. (1) Is a person who rebels and fights against a rightful Caliph worthy of honor and respect? Is it necessary to remember them with titles like 'Hazrat' and 'May Allah have mercy on him' or 'May Allah be pleased with him', whether they are a Companion (Sahabi) or not? (2) Was Hazrat Ameer Muawiyah a rebel and wrongdoer in opposition to Hazrat Ali (may Allah honor his face), or was his opinion different based on ijtihad (independent legal reasoning), whereby an accusation of bad faith and rebellion would not apply to him? A detailed clarification is requested. (3) Can any human being be equal to or greater than the status of any Prophet after the Holy Messenger (peace and blessings of Allah be upon him)? Or is it obligatory to believe that the status of Hazrat Ali (may Allah honor his face) is equal to or higher than the Prophets of the Children of Israel? A person states this argument: Hazrat Ali (may Allah honor his face) in response to such a question said, "Understand this, that Hazrat Adam (peace be upon him) was punished for eating wheat once..."

फ़तावा रज़विया, जिल्द 29

(२) हज़रत महदी और ईसा के बारे में कितनी हदीसें वर्णित हैं? (३) कुरान शरीफ की किन आयतों से उनका खंडन किया जा सकता है?

उत्तर: (१) यह हदीस सही नहीं है, और यदि इसे सही मान भी लिया जाए, तो यह इस प्रकार की है: [अरबी]: "आँख के दर्द के सिवा कोई दर्द नहीं, दीन के ग़म के सिवा कोई ग़म नहीं, अली के सिवा कोई जवान (शूरवीर) नहीं, और ज़ुल्फ़िक़ार के सिवा कोई तलवार नहीं।" [बॉक्स में उर्दू अनुवाद]: आँख के दर्द के सिवा कोई दर्द नहीं, दीन के ग़म के सिवा कोई ग़म नहीं, हज़रत अली अल-मुर्तज़ा (करम अल्लाह वज्हहु) के सिवा कोई सखी नहीं, और ज़ुल्फ़िक़ार के सिवा कोई तलवार नहीं (त)। ...इसी श्रेणी में आता है। (२) हज़रत महदी और ईसा के बारे में हदीसें 'तवातुर' (निरंतरता) की सीमा तक पहुँच चुकी हैं, यहाँ तक कि धर्म के इमामों ने उनके उतरने और उनके प्रकट होने को अकीदों (विश्वासों) में शामिल किया है। (३) कुरान-ए-अज़ीम की जितनी आयतें अंबिया अलैहिमुस्सलाम के सम्मान का आदेश देती हैं और उनके झुठलाने पर कुफ्र का फतवा देती हैं; जो हमारे आका ईसा अलैहिस्सलाम के मोजिज़ों (चमत्कारों) को गिनती हैं; उनकी नबुव्वत और रिसालत की गवाही देती हैं; नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को खातम-उन-नबीय्यीन बताती हैं; झूठे नबुव्वत के दावेदारों पर लानत करती हैं—वे सब क़ादियानियों का खंडन हैं। वल्लाहु तआला आलम (और अल्लाह बेहतर जानता है)।

मसला ७९: प्रेषक: अब्दुल जब्बार खां, तैय्यब धामपुर जिला बिजनौर, २७ रबी-उल-अव्वल १३३५ हिजरी। (१) जो व्यक्ति सच्चे खलीफा के विरुद्ध विद्रोह और युद्ध करे, क्या वह व्यक्ति सम्मान के योग्य है? और क्या उसके नाम को 'हज़रत', 'रहमतुल्लाह अलैह' या 'रज़ियल्लाहु अन्हु' जैसे शब्दों के साथ याद करना ज़रूरी है, चाहे वह सहाबी हो या गैर-सहाबी? (२) क्या हज़रत अमीर मुआविया, हज़रत अली (करम अल्लाह वज्हहु) के मुक़ाबले में बागी और खताकार (गलत) थे या इज्तिहाद के तौर पर उनकी राय अलग थी, जिससे उन पर बदनीयती और गुनाह का आरोप नहीं लगेगा? विस्तृत स्पष्टीकरण वांछित है। (३) क्या हज़रत रसूल-ए-मकबूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद कोई इंसान किसी नबी के मर्तबे के बराबर या उससे बड़ा हो सकता है? या हज़रत अली (करम अल्लाह वज्हहु) का मर्तबा बनी इस्राइल के अंबिया के बराबर या उनसे ऊंचा मानना वाजिब है? एक व्यक्ति यह दलील पेश करता है कि हज़रत अली (करम अल्लाह वज्हहु) ने ऐसे ही एक सवाल के जवाब में कहा कि तुम यह समझ लो कि हज़रत आदम एक बार गेहूं खाने से दंड के पात्र हुए...

فتاوی رضویہ، جلد ۲۹

(۲) حضرت مہدی و عیسیٰ کے متعلق کس قدر حدیثیں وارد ہیں؟ (۳) قرآن شریف کی کن کن آیتوں سے ان کا رد ہو سکتا ہے؟

الجواب: (۱) یہ حدیث صحیح نہیں، اور بفرض صحت از قبیل: لا وجع الا وجع العین ولا ھم الا ھم الدین ولا فتی الاعلی ولا سیف الا ذوالفقار۔ آنکھ کے درد کے سوا کوئی درد نہیں، دین کے غم کے سوا کوئی غم نہیں، حضرت علی المرتضیٰ کرم اللہ وجہہ کے سوا کوئی سخی نہیں، اور ذوالفقار کے سوا کوئی تلوار نہیں (ت) کے قبیل سے ہے۔ (۲) حضرت مہدی و عیسیٰ کے بارے میں احادیث حد تواتر کو پہنچی ہیں یہاں تک کہ ائمہ دین نے ان کا نزول اور انکا ظہور عقائد میں داخل فرمایا۔ (۳) قرآن عظیم کی جتنی آیتیں تعظیم انبیاء علیہم السلام کا حکم دیتی ہیں ان کی تکذیب پر تکفیر فرماتی ہیں، معجزات سیدنا عیسیٰ علیہ الصلوٰۃ والسلام گناتی ہیں، انکی نبوت و رسالت کی شہادت دیتی ہیں، نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کو خاتم النبیین بتاتی ہیں، جھوٹے مدعی نبوت پر لعنت فرماتی ہیں، وہ سب قادیانی کے رد ہیں، واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۷۹: مرسلہ عبدالجبار خاں طیب دھام پور ضلع بجنور ۲۷ ربیع الاول شریف ۱۳۳۵ھ (۱) جو شخص کہ خلیفہ برحق سے برسر بغاوت و برسر پیکار ہو کیا وہ شخص قابل عزت ولائق احترام ہے اور اس کے نام کو لفظ حضرت و رحمۃ اللہ علیہ یا رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے ساتھ یاد کرنا لازم ہے خواہ صحابی ہوں یا غیر صحابی؟ (۲) کیا حضرت امیر معاویہ بمقابلہ حضرت علی کرم اللہ وجہہ، باغی اور خطا کار تھے یا بطور اجتہاد ان کی رائے مختلف تھی جس میں ان پر بدنیتی اور عصیان کا الزام عائد نہ ہوگا۔ تفصیل واضح مطلوب۔ (۳) کیا حضرت رسول مقبول صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے بعد کوئی انسان کسی نبی کے مرتبہ کے برابر ہوسکتا ہے یا زیادہ؟ یا حضرت علی

کرم اللہ وجہہ کا مرتبہ انبیاء بنی اسرائیل کے برابر یا ان سے بالاتر ماننا واجب ہے؟ ایک شخص یہ دلیل بیان کرتے ہیں کہ حضرت علی کرم اللہ وجہہ نے ایسے ہی سوال کے جواب میں یہ فرمایا کہ تم یہ سمجھ لو کہ حضرت آدم ایک بار گندم کھانے سے مورد عقاب ہوئے

Fatawa Razawiya Volume 29

...and I have eaten so much, etc. Is this Hadith authentic and Mutawatir (consecutively reported)? And does the conclusion drawn by the aforementioned person necessarily follow from it? (4) Is it appropriate for us to engage in the debate whether the rank of Hazrat Ali (may Allah honor his face) is higher than that of the three caliphs or lower than them? And is this among the essential beliefs of the Hanafis? That's all.

The Answer: (1) In the creed of Ahl-ul-Sunnah, honoring all the companions (may Allah be pleased with them) is obligatory, and it is forbidden to malign any of them. Engaging in their internal disputes is prohibited. It is stated in a Hadith: "اذا ذکر اصحابی فامسکوا" [1] — When my companions are mentioned, refrain [from criticism]. Translation: When my companions are mentioned, stop (from debate and investigation). (T)

Lord Almighty, Who is the Knower of the unseen and the witnessed, has categorized the companions of the Master of the Universe (may peace and blessings of Allah be upon him) into two groups: those believers before the conquest [of Makkah] who spent and fought in the way of Allah, and those believers after the conquest who did so later. He granted superiority to the first group over the second, stating: "لَا یَسْتَوِیْ مِنْکُمْ مَّنْ اَنْفَقَ مِنْ قَبْلِ الْفَتْحِ وَ قٰتَلَ ط اُولٰٓئِکَ اَعْظَمُ دَرَجَةً مِّنَ الَّذِیْنَ اَنْفَقُوْا مِنْۢ بَعْدُ وَ قٰتَلُوْا ط" [2] — "Not equal among you are those who spent before the conquest and fought. Those are greater in degree than those who spent afterwards and fought." Translation: Among you, those who spent and fought before the conquest of Makkah are not equal [to those after]. They are greater in rank than those who spent and fought after the conquest. (T)

And He also said simultaneously: "وَ کُلًّا وَّعَدَ اللّٰهُ الْحُسْنٰی ط" [3] — "And to each, Allah has promised the best [reward]." Allah has promised goodness to both groups. And He also closed the door to ignorant criticism of their actions by saying: "وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِیْرٌ" [4] — "And Allah is well-acquainted with what you do." Allah is well aware of your deeds. That is, He knows all that you were going to do; nevertheless, He has promised goodness to all of you, whether among the predecessors or the successors. And see for yourself from the Great Quran what the Lord Almighty says about those to whom He has promised goodness:

1. Al-Mu'jam al-Kabir, Hadith 7272, Al-Maktaba al-Faysaliya, Beirut, 2/96.

2. The Holy Quran, 57:10.
3. The Holy Quran, 57:10.
4. The Holy Quran, 57:10.

फ़तावा रज़विया खंड २९

...और मैंने इतना खाया है आदि, क्या यह हदीस सही और मुतवातिर (लगातार रिपोर्ट की गई) है? और क्या इससे वही नतीजा निकलता है जो उक्त व्यक्ति निकालता है? (४) क्या हमारे लिए इस बहस में पड़ना उचित है कि हज़रत अली (करम अल्लाह वजहु) का रुतबा तीनों खलीफाओं से ऊपर है या उनसे कम है? और क्या यह हनफियों के आवश्यक अकीदों (विश्वासों) में से है? बस।

उत्तर: (१) अहले सुन्नत के अकीदे में तमाम सहाबा किराम (रज़ियल्लाहु अन्हुम) का सम्मान करना फ़र्ज़ है और उनमें से किसी पर भी आक्षेप (आलोचना) करना हराम है और उनके बीच के विवादों में पड़ना मना है। हदीस में इरशाद है: "اذا ذکر اصحابی فامسکوا" १ — जब मेरे सहाबा का ज़िक्र किया जाए, तो रुक जाओ। अनुवाद: जब मेरे सहाबा का ज़िक्र किया जाए, तो (बहस और छानबीन से) रुक जाओ। (त)

रब अज़्वजल, जो ग़ैब और हाज़िर का जानने वाला है, उसने सैयदे आलम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के सहाबा की दो किस्में बयान फ़रमाई हैं: फ़तेह [मक्का की जीत] से पहले के मोमिन जिन्होंने अल्लाह की राह में खर्च और जेहाद किया, और फ़तेह के बाद के मोमिन। उसने पहले समूह को दूसरे पर श्रेष्ठता प्रदान करते हुए फ़रमाया: "لَا یَسْتَوِیْ مِنْکُمْ مَّنْ اَنْفَقَ مِنْ قَبْلِ الْفَتْحِ وَ قٰتَلَ ؕ اُولٰٓئِکَ اَعْظَمُ دَرَجَةً مِّنَ الَّذِیْنَ اَنْفَقُوْا مِنْۢ بَعْدُ وَ قٰتَلُوْا ؕ" २ — "तुममें से वे बराबर नहीं हैं जिन्होंने फ़तेह से पहले खर्च किया और जेहाद किया। वे उन लोगों से दरजे में बड़े हैं जिन्होंने बाद में खर्च किया और जेहाद किया।" अनुवाद: तुममें वे बराबर नहीं हैं जिन्होंने फ़तेह मक्का से पहले खर्च और जेहाद किया, वे मर्तबे (पद) में उन लोगों से बड़े हैं जिन्होंने फ़तेह के बाद खर्च और जेहाद किया। (त)

और साथ ही फ़रमा दिया: "وَ کُلًّا وَّعَدَ اللّٰهُ الْحُسْنٰی ؕ" ३ — "और अल्लाह ने दोनों से भलाई का वादा फ़रमाया है।" अल्लाह ने दोनों गिरोहों से भलाई का वादा फ़रमा लिया है। और उनके कामों पर अज्ञानतापूर्ण नुक्ताचीनी का दरवाज़ा भी बंद कर दिया कि साथ ही इरशाद हुआ: "وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِیْرٌ " ४ — "और जो कुछ तुम करते हो, अल्लाह उससे पूरी तरह वाकिफ़ है।" अल्लाह को तुम्हारे आमाल (कर्मों) की खूब खबर है, यानी जो कुछ तुम करने वाले हो वह सब जानता है, इसके बावजूद तुम सबसे भलाई का वादा फ़रमा चुका है चाहे पहले वाले हों या बाद वाले, और यह भी कुरआन

अज़ीम से ही पूछ देखिए कि मौला अज़्वजल जिससे भलाई का वादा फ़रमा चुका उसके लिए क्या फ़रमाता है:

1. अल-मुअजम अल-कबीर, हदीस ७२७२, अल-मकतबा अल-फ़ैसलिया, बेरूत, २/९६।
2. अल-कुरआन अल-करीम, ५७:१०।
3. अल-कुरआन अल-करीम, ५७:१०।
4. अल-कुरआन अल-करीम, ५७:१०।

पृष्ठ ७५० में से २२८

اور میں نے اس قدر کھایا ہے وغیرہ، کیا یہ حدیث صحیح اور متواتر ہے اور کیا اس سے یہی نتیجہ نکلتا ہے جو شخص مذکور نکالتا ہے؟ (۴) کیا ہم کو اس بحث میں پڑنا زیبا ہے کہ حضرت علی کرم اللہ وجہہ کا رتبہ خلفائے ثلاثہ سے بالاتر اور ان کا کمتر ہے اور کیا یہ حنفیوں کے عقائد ضروریہ میں سے ہے؟ فقط۔

الجواب: (۱) اہلسنت کے عقیدہ میں تمام صحابہ کرام رضی اللہ تعالٰی عنہم کی تعظیم فرض ہے اور ان میں سے کسی پر طعن حرام اور انکے مشاجرت میں خوض ممنوع، حدیث میں ارشاد: اذا ذکر اصحابی فامسکوا ۱۔ جب میرے صحابہ کا ذکر کیا جائے، (بحث و خوض سے) رک جاؤ۔ (ت)

رب عزوجل کہ عالم الغیب والشہادہ ہے اس نے صحابہ سید عالم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کی دو قسمیں فرمائیں، مومنین قبل الفتح جنہوں نے فتح مکہ سے پہلے راہ خدا میں خرچ و جہاد کیا اور مومنین بعد الفتح جنہوں نے بعد کو، فریق اول کو دوم پر تفضیل عطا فرمائی کہ: "لَا یَسْتَوِیْ مِنْکُمْ مَّنْ اَنْفَقَ مِنْ قَبْلِ الْفَتْحِ وَ قٰتَلَ ط اُولٰٓئِکَ اَعْظَمُ دَرَجَۃً مِّنَ الَّذِیْنَ اَنْفَقُوْا مِنْۢ بَعْدُ وَ قٰتَلُوْا ط ۲۔" تم میں برابر نہیں وہ جنہوں نے فتح مکہ سے قبل خرچ اور جہاد کیا، وہ مرتبہ میں اُن سے بڑے ہیں جنہوں نے بعد فتح کے خرچ اور جہاد کیا۔ (ت)

اور ساتھ ہی فرما دیا۔ "وَ کُلًّا وَّعَدَ اللّٰہُ الْحُسْنٰی ط ۳۔" دونوں فریق سے اللہ نے بھلائی کا وعدہ فرما لیا۔ اور ان کے افعال پر جاہلانہ نکتہ چینی کا دروازہ بھی بند فرما دیا کہ ساتھ ہی ارشاد ہوا۔ "وَاللّٰہُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِیْرٌ ۴۔" اللہ کو تمہارے اعمال کی خوب خبر ہے، یعنی جو کچھ تم کرنے والے ہو وہ سب جانتا ہے بایں ہمہ تم سب سے بھلائی کا وعدہ فرما چکا خواہ سابقین ہوں یا لاحقین، اور یہ بھی

قرآن عظیم سے ہی پوچھ دیکھئے کہ مولیٰ عزوجل جس سے بھلائی کا وعدہ فرما چکا اُس کے لیے کیا فرماتا ہے:

۱ المعجم الکبیر حدیث ۷۲۷۲ المکتبۃ الفیصلیہ بیروت ۹۶/۲ ۲ القرآن الکریم ۵۷/ ۱۰ ۳ القرآن الکریم ۵۷/ ۱۰ ۴ القرآن الکریم ۵۷/ ۱۰

Fatawa Razawiyya Volume 29

"Indeed, those for whom the best [reward] has already preceded from Us - they are far removed from it [Hell]. They will not hear its sound, while they are abiding eternally in that which their souls desire. The greatest terror will not grieve them, and the angels will meet them, [saying], 'This is your Day which you were promised.'"[1]

A true Islamic heart, upon hearing this general declaration from its Lord (Glorified and Exalted), can never harbor an ill suspicion toward any Companion (Sahabi) nor investigate their deeds. Even if, for the sake of argument, something went wrong, are you the judge or is Allah? Do you know more or does Allah? "Do you know better or does Allah?"[2] (Do you have more knowledge or Allah Almighty?). The true Judge, Knower of hearts, has already decided: "I know all your deeds; I have already promised you goodness." After this, what room is there for a Muslim to go against it? Certainly, every Companion will be addressed as 'Hazrat' (Excellency), certainly 'Radi Allahu Ta'ala Anhu' (May Allah be pleased with him) will be said, and honoring and respecting them is certainly obligatory. "...even though the criminals hate it."[3]

(2) The answer to that has also become clear from the first response. Undoubtedly, their error was an error of 'Ijtihad' (independent reasoning), and to attribute the blame of sin to it is a clear violation of this divine command.

(3) There is a consensus (Ijma) among Muslims that no non-prophet can be equal to any prophet. Anyone who considers a non-prophet to be the peer or superior of a prophet is, by consensus, an infidel and an apostate. Considering the status of Mawla Ali (May Allah honor his countenance) to be higher than or equal to the prophets of the children of Israel or any prophet, far from being obligatory, is pure infidelity. And that cursed fabricated story is strangely ridiculous: if eating wheat were a proof of superiority, then Mawla Ali (May Allah honor his countenance) certainly did not eat as much wheat as Zaid and Amr [common people] are eating today. The diet of that King of the Realm of Wilayah (Sainthood) was mostly in following the Master of the Universe (peace and blessings of Allah be upon him), and even that was often only once a day, and even then, not to a full stomach. And if Zaid and Amr eat wheat twice a day, then this—May Allah protect us—from Adam (peace be upon him)...

[1] The Holy Quran 21/101 and 103 [2] The Holy Quran 2/140 [3] The Holy Quran 8/8

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

"बेशक वे लोग जिनके लिए हमारी ओर से भलाई का वादा पहले ही हो चुका है, वे जहन्नम से दूर रखे जाएंगे। वे उसकी आहट तक नहीं सुनेंगे और वे अपनी मनपसंद मुरादों में हमेशा रहेंगे। उन्हें वह बड़ी घबराहट ग़म में न डालेगी, और फ़रिश्ते उनका स्वागत करेंगे (यह कहते हुए कि) 'यह तुम्हारा वह दिन है जिसका तुमसे वादा किया गया था।'"[1]

एक सच्चा इस्लामी दिल अपने रब (अज़्ज़वजल) का यह आम फ़रमान सुनकर कभी किसी सहाबी पर न बुरा गुमान (सू-ए-ज़न) कर सकता है और न ही उनके कर्मों की जाँच-पड़ताल। यदि ग़लती से कुछ हो भी गया हो, तो क्या तुम हाकिम हो या अल्लाह? तुम ज़्यादा जानते हो या अल्लाह? "क्या तुम ज़्यादा जानते हो या अल्लाह?"[2] (क्या तुम्हें अधिक ज्ञान है या अल्लाह तआला को?) दिलों के हाल जानने वाले सच्चे हाकिम ने यह फ़ैसला सुना दिया है कि मुझे तुम्हारे सब कर्मों की ख़बर है, मैं तुमसे भलाई का वादा कर चुका हूँ। इसके बाद किसी मुसलमान के लिए इसके विरुद्ध जाने की क्या गुंजाइश है? हर सहाबी के साथ 'हज़रत' ज़रूर कहा जाएगा, 'रज़ियल्लाहु तआला अन्हु' ज़रूर कहा जाएगा, और उनका सम्मान और आदर करना अनिवार्य (फ़र्ज़) है। "...चाहे मुजरिमों को बुरा ही क्यों न लगे।"[3]

(२) उसका उत्तर भी पहले उत्तर से स्पष्ट हो चुका। निस्संदेह उनकी त्रुटि 'इज्तिहादी' त्रुटि थी और उस पर पाप का आरोप लगाना इस ईश्वरीय आदेश के साफ़ खिलाफ है।

(३) मुसलमानों का आम फैसला (इज्मा) है कि कोई गैर-नबी किसी नबी के बराबर नहीं हो सकता। जो किसी गैर-नबी को किसी नबी के बराबर या उससे श्रेष्ठ समझे, वह सर्वसम्मति से काफ़िर और धर्मत्यागी (मुर्तद) है। मौला अली (करमल्लाहु तआला वज्हहुल करीम) का दर्जा बनी इसराइल के नबियों या किसी भी नबी से ऊँचा या बराबर मानना वाजिब होना तो दूर, कोरा कुफ्र है। और वह शापित गढ़ी हुई कहानी अजीब और मज़ाकिया है: यदि गेहूँ खाना ही श्रेष्ठता का प्रमाण होता, तो मौला अली (करमल्लाहु तआला वज्हहुल करीम) ने इतने गेहूँ कभी नहीं खाए जितने ज़ैद और अम्र (आम लोग) आज खा रहे हैं। विलायत के उस सुल्तान का भोजन अधिकतर सैय्यद-ए-आलम (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) के अनुसरण में था, और वह भी अक्सर दिन में एक बार, और वह भी पेट भरकर नहीं। और यदि ज़ैद और अम्र दिन-रात में दो-दो बार गेहूँ खाते हैं, तो यह—अल्लाह की पनाह—आदम (अलैहिस्सलाम) से...

[1] अल-क़ुरान अल-करीम २१/१०१ और १०३ [2] अल-क़ुरान अल-करीम २/१४० [3] अल-क़ुरान अल-करीम ८/८

पेज २२९ ऑफ ७५०

"اِنَّ الَّذِیْنَ سَبَقَتْ لَهُمْ مِّنَّا الْحُسْنٰۤىۙ اُولٰٓىٕكَ عَنْهَا مُبْعَدُوْنَۙ(۱۰۱) لَا یَسْمَعُوْنَ حَسِیْسَهَاۚ وَهُمْ فِیْ مَا اشْتَهَتْ اَنْفُسُهُمْ خٰلِدُوْنَۚ(۱۰۲) لَا یَحْزُنُهُمُ الْفَزَعُ الْاَكْبَرُ وَتَتَلَقّٰىهُمُ الْمَلٰٓىٕكَةُؕ هٰذَا یَوْمُكُمُ الَّذِیْ كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ(۱۰۳)" بے شک جن سے ہمارا وعدہ بھلائی کا ہو چکا وہ جہنم سے دُور رکھے گئے ہیں اس کی بھنک تک نہ سنیں گے اور وہ اپنی من مانتی مرادوں میں ہمیشہ رہیں گے، انہیں غم میں نہ ڈالے گی بڑی گھبراہٹ، فرشتے ان کی پیشوائی کو آئیں گے یہ کہتے ہوئے کہ یہ ہے تمہارا وہ دن جس کا تم سے وعدہ تھا۔

سچا اسلامی دل اپنے رب عزوجل کا یہ ارشادِ عام سن کر کبھی کسی صحابی پر نہ سوءِ ظن کر سکتا ہے نہ اس کے اعمال کی تفتیش، بفرضِ غلط کچھ بھی کیا تم حاکم ہو یا اللہ، تم زیادہ جانو یا اللہ، "ءَاَنْتُمْ اَعْلَمُ اَمِ اللّٰهُ"۔[2] (کیا تمہیں علم زیادہ ہے یا اللہ تعالی کو، ت) دلوں کی جاننے والا سچا حاکم یہ فیصلہ فرما چکا کہ مجھے تمہارے سب اعمال کی خبر ہے میں تم سے بھلائی کا وعدہ فرما چکا۔ اس کے بعد مسلمان کو اس کے خلاف کی گنجائش کیا ہے، ضرور ہر صحابی کے ساتھ حضرت کہا جائے گا، ضرور رضی اللہ تعالٰی عنہ کہا جائے گا، ضرور اس کا اعزاز و احترام فرض ہے۔ "وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُوْنَ"۔[3] (اگرچہ مجرم بُرا مانیں ت)

(۲) اُس کا جواب بھی جواب اوّل سے واضح ہو چکا، بلاشبہ اُن کی خطا خطائے اجتہادی تھی اور اس پر الزام معصیت عائد کرنا اس ارشادِ الٰہی کے صریح خلاف ہے۔

(۳) مسلمانوں کا اجماع ہے کہ کوئی غیر نبی کسی نبی کے برابر نہیں ہو سکتا، جو کسی غیر نبی کو کسی نبی کے ہمسر یا افضل جانے وہ بالاجماع کافر مرتد ہے۔ مولٰی علی کرم اللہ تعالٰی وجہہ کا مرتبہ انبیائے بنی اسرائیل یا کسی نبی سے بالا یا برابر ماننا واجب در کنار کفر خالص ہے اور

ملعون افترائی حکایت عجب مضحکہ خیز ہے، گیہوں کھانا ہی اگر دلیل افضیلت ہو تو مولیٰ علی کرم اللہ وجہہ نے اتنے گیہوں ہر گز نہیں کھائے جتنے زید و عمرو آج کل کھا رہے ہیں، اُس بادشاہ ملک ولایت کی اکثر غذا باتباع سید عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم جو تھی، اور وہ بھی اکثر ایک وقت، اور وہ بھی پیٹ بھر کر نہیں۔ اور زید و عمرو رات دن میں دو دو وقت گیہوں کھاتے ہیں تو یہ معاذ اللہ آدم علیہ السلام سے

[1] القرآن الکریم ۱۰۱/۲۱ اور ۱۰۳ [2] القرآن الکریم ۱۴۰/۲ [3] القرآن الکریم ۸/۸

...also became superior to Mawla Ali (Karam Allahu Ta'ala Wajhahu). 'In fasad-e-khurdan-e-gandum bud' (This is the corruption of eating wheat - t). (4) This is against the beliefs not only of the Hanafis but of the entire Ahl-e-Sunnat. According to the Ahl-e-Sunnat, after the Prophets (peace and blessings be upon them), the most superior of all the former and the latter generations is Amir al-Mu'minin Sayyiduna Siddiq al-Akbar (may Allah be pleased with him), then Amir al-Mu'minin Sayyiduna Faruq al-A'zam (may Allah be pleased with him). And Allah Almighty knows best.

Problem 83: From Frashi Tola, Bareilly, sent by Maqsood Ali Khan Sahib, 26 Shaban 1335 AH. People generally say about Zaid that he is a Wahhabi, and Milad Sharif, Teja, etc., are not held at his place, and he does not stand during Qiyam either. Zaid held a Milad Sharif and stood during the Qiyam. Upon inquiry, he says that it is permissible to convey reward (Isal-e-Sawab) to the deceased by reciting the Great Quran and Kalima Sharif, but fixing specific days like Teja, annual anniversary (Barsi), or six-month anniversary (Chhamahi) should not be done. Instead, whether on the second day, third day, or fourth day of the death, reciting the Kalima Sharif over a morsel, a piece of fruit, or anything else to convey reward to the souls of the deceased is permissible. Similarly, one should not use the words 'Barsi' or 'Chhamahi' or count the days, but rather have food cooked and Fatiha offered whenever one wishes. Zaid also says that regarding the praise of the Beloved Messenger (peace and blessings of Allah be upon him), his belief is that he is 'less than God but more than all else'; this phrase alone is worthy of Muhammad (peace and blessings of Allah be upon him). If one brings even a slight difference in their heart regarding the reverence of the Prophet, they are out of Islam. He considers the radiant Prophet as the Intercessor of Sinners and Mercy for the Worlds, and believes that there is none like him, nor has there been, nor will there be. And if the Merciful Lord had not created the Prophet, He would not have created all of creation. Should a person with such beliefs be considered a Wahhabi? If it is thought that he has done this for some expediency but in his heart it might be contrary, then what should be understood in such a case? Can his verbal confession be relied upon or not? Explain and be rewarded (t).

Answer: Rejecting specific days is the hallmark of Wahhabis today. All the things he said can be stated by even staunch and seasoned Wahhabis, and in extreme circumstances, they even attend gatherings and Qiyam. One cannot be identified by these things alone. Rather, detailed Wahhabi beliefs should be inquired of Zaid. Also, his stance regarding Ismail Dehlavi, Taqviyat-ul-Iman, Barahin-e-Qatiya, Tahzir-un-

Nas, Hifz-ul-Iman, and their authors should be asked. If he says the same in response to all these as what the scholars of the two Holy Sanctuaries (Makkah and Madinah) have written, then he will certainly be considered a Sunni as long as his...

...भी और मौला अली करम अल्लाह तआला वजहहु से भी अफ़ज़ल हुए, ईं फ़साद ख़ुरदन गंदम बूद (यह गेहूं खाने का फ़साद है। त) (4) यह न केवल हनफ़िया बल्कि तमाम अहले सुन्नत के अक़ायद के ख़िलाफ़ है। अहले सुन्नत के नज़दीक अंबिया अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम के बाद तमाम अव्वलीन व आख़िरीन से अफ़ज़ल अमीरुल मोमिनीन सैय्यदुना सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु, फिर अमीरुल मोमिनीन सैय्यदुना फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हैं, वल्लाहु तआला आलम।

मसला 83: अज़ फ़राशी टोला, बरेली मुरसला मक़सूद अली खां साहब 26 शाबान 1335 हि. ज़ैद को लोग आम तौर पर कहते हैं कि वह वहाबी है और उसके यहाँ मीलाद शरीफ़ और तीजा वग़ैरा नहीं होता और क़ियाम के वक़्त भी खड़ा नहीं होता। ज़ैद ने मीलाद शरीफ़ कराई और क़ियाम के वक़्त खड़ा हुआ और दरियाफ्त करने पर वह कहता है कि क़ुरआन अज़ीम और कलमा शरीफ़ पढ़ कर सवाब मय्यत को पहुँचाना जाइज़ है लेकिन तअयुन (दिन मुक़र्रर करना) के साथ तीजा व बरसी व छमाही यह न करना चाहिए बल्कि ख़्वाह मय्यत के दूसरे रोज़ ख़्वाह तीसरे रोज़ ख़्वाह चौथे रोज़ कत्ते पर या खीरे पर या किसी शै पर कलमा शरीफ़ पढ़ कर सवाब मय्यत की अरवाह को पहुँचाना जाइज़ है और इसी तरह हर बरसी व छमाही के लफ़्ज़ से और गिनती दिनों से न करे बल्कि जिस वक़्त चाहे खाना पका कर फ़ातिहा दिलवा दे, और ज़ैद यह भी कहता है कि रसूले मक़बूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की तारीफ़ में यह मेरा अक़ीदा है कि ख़ुदा से कम ज़्यादा सबसे कहिये यही कलमा है शायाने मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम, और हुज़ूर की ताज़ीम में ज़रा भी फ़र्क़ दिल में लाए तो वह ख़ारिज अज़ इस्लाम है, और हुज़ूर पुर नूर को शफ़ीउल मुज़्नबीन रहमतुल लिल आलमीन समझे और यह समझे कि मिस्ल हुज़ूर के न कोई है न हुआ और न हो, और अगर ख़ुदावंद करीम हुज़ूर को पैदा न करता तो तमाम मख़लूक़ को पैदा न करता। ऐसे अक़ीदे वाले को वहाबी ख़याल करना चाहिए? इस पर अगर यह ख़याल किया जाए कि उसने किसी मसलहत से ऐसा किया है लेकिन उसके दिल में मुमकिन है कि इसके ख़िलाफ़ हो तो ऐसी सूरत में क्या समझना चाहिए इसके ज़बानी इक़रार का एतबार हो सकता है या नहीं? बय्यिनू तूजरू (बयान फरमाओ अज्र दिए जाओगे। त)

अल जवाब: तअयुन-ए-यौम का इनकार आज कल वहाबिया का शेआर (पहचान) है, और जितनी बातें उसने कहीं। बड़े बड़े पक्के वहाबी कह लेते हैं और बड़े बड़े अश्द मौक़े पर मज्लिस व क़ियाम भी

कर लेते हैं इन बातों से पहचान नहीं हो सकती। बल्कि ज़ैद से मुफ़स्सल अक़ायद-ए-वहाबिया दरियाफ्त किये जाएँ नीज़ इस्माईल देहलवी व तक़वियतुल ईमान व बराहीने क़ातिआ व तहज़ीरुन्नास व हिफ़्ज़ुल ईमान और उनके मुसन्निफ़ों की निस्बत दरियाफ्त किया जाए अगर सब बातों के जवाब में वही कहे जो उलमाए हरमैन शरीफ़ैन ने तहरीर फ़रमाया तो ज़रूर उसे सुन्नी समझा जाएगा जब तक उसका...

पृष्ठ 230 का 750

بھی اور مولیٰ علی کرم اللہ تعالیٰ وجہہ سے بھی افضل ہوئے، ایں فساد خوردن گندم بود (یہ گندم کھانے کا فساد ہے۔ت) (۴) یہ نہ فقط حنفیہ بلکہ تمام اہلسنت کے عقائد کے خلاف ہے۔ اہلسنت کے نزدیک بعد انبیاء علیہم الصلوۃ والسلام تمام اولین و آخرین سے افضل امیر المومنین سیدنا صدیق اکبر رضی اللہ تعالیٰ عنہ پھر امیر المومنین سیدنا فاروق اعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہ ہیں، واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۸۳: از فراشی ٹولہ، بریلی مرسلہ مقصود علی خان صاحب ۲۶ شعبان ۱۳۳۵ھ زید کو لوگ عام طور پر کہتے ہیں کہ وہ وہابی ہے اور اس کے یہاں میلاد شریف اور تیجہ وغیرہ نہیں ہوتا اور قیام کے وقت بھی کھڑا نہیں ہوتا۔ زید نے میلاد شریف کرائی اور قیام کے وقت کھڑا ہوا اور دریافت کرنے پر وہ کہتا ہے کہ قرآن عظیم اور کلمہ شریف پڑھ کر ثواب میت کو پہنچانا جائز ہے لیکن تعین کے ساتھ تیجہ وبرسی و چھماہی یہ نہ کرنا چاہیے بلکہ خواہ میت کے دوسرے روز خواہ تیسرے روز خواہ چوتھے روز کتے پر یا کھیرے پر یا کسی شے پر کلمہ شریف پڑھ کر ثواب میت کی ارواح کو پہنچانا جائز ہے اور اسی طرح ہر برسی و چھماہی کے لفظ سے اور گنتی دنوں سے نہ کرے بلکہ جس وقت چاہے کھانا پکا کر فاتحہ دلوا دے، اور زید یہ بھی کہتا ہے کہ رسول مقبول صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی تعریف میں یہ میرا عقیدہ ہے کہ خدا سے کم زیادہ سے کہئے یہی کلمہ ہے شایان محمد صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم، اور حضور کی تعظیم میں ذرا بھی فرق دل میں لائے تو وہ خارج از اسلام ہے، اور حضور پُر نور کو شفیع المذنبین رحمتہ للعالمین سمجھے اور یہ سمجھے کہ مثل حضور کے نہ کوئی ہے نہ ہوا اور نہ ہو، اور اگر خداوند کریم حضور کو پیدا نہ کرتا تو تمام مخلوق کو پیدا نہ کرتا۔ ایسے عقیدے والے کو وہابی خیال کرنا چاہیے؟ اس پر اگر یہ

خیال کیا جائے کہ اس نے کسی مصلحت سے ایسا کیا ہے لیکن اس کے دل میں ممکن ہے کہ اس کے خلاف ہو تو ایسی صورت میں کیا سمجھنا چاہیے اس کے زبانی اقرار کا اعتبار ہو سکتا ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا (بیان فرماؤ اجر دیئے جاؤ گے۔ت)

الجواب: تعینِ یوم کا انکار آج کل وہابیہ کا شعار ہے، اور جتنی باتیں اُس نے کہیں۔ بڑے بڑے پکے وہابی کہہ لیتے ہیں اور بڑے بڑے اشد موقع پر مجلس و قیام بھی کر لیتے ہیں ان باتوں سے پہچان نہیں ہو سکتی۔ بلکہ زید سے مفصل عقائدِ وہابیہ دریافت کئے جائیں نیز اسمعیل دہلوی و تقویۃ الایمان و براہین قاطعہ و تحذیر الناس و حفظ الایمان اور ان کے مصنفوں کی نسبت دریافت کیا جائے اگر سب باتوں کے جواب میں وہی کہے جو علمائے حرمین شریفین نے تحریر فرمایا تو ضرور اسے سُنّی سمجھا جائے گا جب تک اس کا

Fatawa Razawiyya Volume 29

...did not appear contrary. And if he gives an answer contrary to any point in it, or hesitates in accepting what the scholars of the Haramayn Sharifayn have already ruled regarding these books and their authors as misguidance, disbelief, and apostasy, then he is undoubtedly not a Sunni; he is certainly one of them (from among them). And Allah Almighty knows best.

Issue 84: Maulvi Afzal Sahib Bukhari, student of Madrasa Manzar-e-Islam, Bareilly, 21 Safar 1336 AH.

(1) The request is that many conditions are mentioned for reciting litanies (wird) which the intellect deems far-fetched, to the extent that while reciting, thoughts arise in the heart, i.e., does the Prophet (may peace and blessings of Allah be upon him) see and hear?

(2) When the Master of the Universe (may peace and blessings of Allah be upon him) is himself mercy, what is the benefit of sending mercy (Salawat/Durood) upon him?

(3) Why did the Lord of the worlds command the Prophets (peace and salutations be upon them) that if Muhammad Mustafa (may peace and blessings of Allah be upon him) were to be sent in their time, they should believe in him, even though Allah knew that he would appear in a specific time?

(4) The request is that if someone holds the belief that nothing is obligatory upon Allah Almighty from anyone else, but if He, out of His mercy and grace, makes something obligatory upon His own generous responsibility, it is permissible; how is this?

The Answer:

(1) Undoubtedly, the Holy Prophet (peace and blessings be upon him)...

फ़तावा रज़विया खंड 29

...विपरीत प्रकट नहीं हुआ। और यदि वह इसमें किसी बात का विपरीत उत्तर देता है, या हरमैन शरीफ़ैन के उलेमा ने इन किताबों और उनके लेखकों के बारे में जो गुमराह, कुफ़्र और धर्मत्याग (इ़तिदाद) का हुक्म लगाया है, उसे मानने में हिचकिचाहट करता है, तो वह निस्संदेह सुन्नी नहीं है; वह निश्चित रूप से उन्हीं में से है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 84: मौलवी अफ़ज़ल साहब बुखारी, छात्र मदरसा मंज़र-ए-इस्लाम, बरेली, 21 सफ़र 1336 हिजरी।

(1) अर्ज़ यह है कि विर्द (वज़ीफ़ा) पढ़ने में बहुत सी शर्तें बताई गई हैं जिन्हें अक्ल दूर की बात समझती है, यहाँ तक कि विर्द पढ़ते समय दिल में ख्याल आने लगते हैं, यानी क्या रसालत-मआब (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) देखते और सुनते हैं?

(2) जब सैयदे कायनात (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) स्वयं रहमत हैं, तो उन पर रहमत (दरूद) भेजने का क्या फ़ायदा है?

(3) परवरदिगारे आलम ने नबियों (अलैहिमुस्सलाम) को यह क्यों फ़रमाया कि अगर मुहम्मद मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) उनके ज़माने में भेजे जाएँ तो वे उन पर ईमान लाएँ जबकि अल्लाह तआला को मालूम था कि आप एक विशेष ज़माने में प्रकट होंगे।

(4) अर्ज़ यह है कि अगर कोई व्यक्ति यह अक़ीदा (आस्था) रखे कि किसी और की तरफ़ से अल्लाह तआला पर कोई चीज़ वाजिब (अनिवार्य) नहीं है, लेकिन अगर वह स्वयं अपनी रहमत और फ़ज़्ल से अपने ज़िम्मे कुछ वाजिब कर ले तो जायज़ है, यह कैसा है?

अल-जवाब (उत्तर):

(1) निस्संदेह हुज़ूर अकदस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)...

خلاف ظاہر نہ ہوا اور اگر اس میں کسی بات کا جواب خلاف دے یا جو کچھ علمائے حرمین شریفین ان کتابوں اور ان کے مصنفوں کی نسبت حکم ضلالت و کفر و ارتداد لگا چکے اس کے ماننے میں ہچکچاہٹ کرے تو وہ بلاشبہ سنی نہیں ضرور منہم (انہی میں سے) ہے واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۸۴: مولوی افضل صاحب بخاری طالب علم مدرسہ منظر الاسلام بریلی ۲۱ صفر ۱۳۳۶ھ

(۱) عرض یہ ہے کہ ورد پڑھنے میں شرائط بہت زیادہ مذکور ہیں جن کو عقل بعید سمجھتی ہے یہاں تک کہ ورد پڑھتے وقت دل میں خیالات پیدا ہونے لگتے ہیں، یعنی کیا رسالتمآب صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم دیکھتے اور سنتے ہیں؟

(۲) سید کائنات صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم جب خود رحمت ہیں تو ان پر رحمت (درود) بھیجنے کا کیا فائدہ ہے؟

(۳) پروردگار عالم نے انبیاء علیہم الصلوٰۃ والتسلیمات کو کیوں ارشاد فرمایا کہ محمد مصطفیٰ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم اگر ان کے زمانہ میں مبعوث ہوئے تو وہ آپ پر ایمان لائیں حالانکہ اللہ تعالیٰ کو معلوم تھا کہ آپ ایک خاص زمانے میں جلوہ افروز ہوں گے۔

(۴) عرض یہ ہے کہ اگر کوئی شخص یہ عقیدہ رکھے کہ کسی غیر کی جانب سے اللہ تعالیٰ پر کوئی شئ واجب نہیں لیکن وہ خود اگر اپنی رحمت و فضل سے اپنے ذمہ کرم پر کچھ واجب کر لے تو جائز ہے، یہ کیسا ہے؟

الجواب:

(۱) بلاشبہ حضور اقدس علیہ الصلوٰۃ والسلام...

صفحہ ۲۳۱ از ۷۵۰

Fatawa Razawiyya Volume 29

They see and hear. (Saying of the Prophet): Indeed, I see what you do not see and I hear what you do not hear. The sky groaned, and it was right for it to groan. When they hear the sound of the sky's groan from a distance of five hundred years, why wouldn't they hear from a distance of one or two months? (Saying of the Prophet): Indeed, Allah Almighty raised the world for me, so I am looking at it and at everything that will happen in it until the Day of Judgment as if I am looking at this palm of mine. When they see things until the Day of Judgment like the palm of their blessed hand, why can't they see what exists now? Upon them be the most excellent and perfect blessings and peace. Reason does not consider this far-fetched, rather it is a matter of conjecture and suspicion which are the falsest of reports, then where does imagination count. And Allah Almighty knows best.

(2) When Allah, the Transcendent and Almighty, is Himself Pure and Glorious, then what is the benefit of reciting His Tasbeeh (glorification)? The benefit is actually for ourselves. I do not become pure by their glorification. Rather, by glorification, they themselves become pure and distinguished.

Footnotes: 1. Jami' at-Tirmidhi, Book of Asceticism, Chapter on what was narrated in the saying of the Prophet (PBUH) 'If you knew what I know', Amin Company Delhi 2/55 2. Kanz al-Ummal Hadith 31971, Mu'assasat ar-Risalah Beirut 11/420

वे देखते और सुनते हैं। (रसूल का फ़रमान): बेशक मैं वह देखता हूँ जो तुम नहीं देखते और मैं वह सुनता हूँ जो तुम नहीं सुनते। आसमान ने चीख़ मारी, और उसे चीख़ मारनी चाहिए। जब वे पाँच सौ साल की दूरी से आसमान की चीख़ की आवाज़ सुनते हैं, तो एक-दो महीने की दूरी से क्यों नहीं सुनेंगे। (रसूल का फ़रमान): बेशक अल्लाह तआला ने दुनिया को मेरी तरफ़ ऊँचा कर दिया, तो मैं उसे और जो कुछ उसमें क़यामत तक होने वाला है, उसे ऐसे देख रहा हूँ जैसे मैं अपनी इस हथेली को देख रहा हूँ। जब वे क़यामत तक होने वाली चीज़ों को अपने मुबारक हाथ की हथेली की तरह देखते हैं, तो जो कुछ अब मौजूद है उसे क्यों नहीं देख सकते? उन पर अफ़ज़ल और अकमल दुरूद व सलाम हो। अक़्ल इसे नामुमकिन नहीं मानती, बल्कि वहम और गुमान तो सबसे झूठी बात (अकज़बुल हदीस) है, फिर वहम की क्या बिसात है। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।

(2) हक़ सुब्हानहू व तआला जब खुद पाक और मुनज़्ज़ह है, तो फिर उसकी तस्बीह (महिमागान) करने का क्या फ़ायदा? फ़ायदा दरअसल खुद हमारा है। मैं उनकी तस्बीह से पाक नहीं होता। बल्कि तस्बीह से वे खुद पाक और मुमताज़ (श्रेष्ठ) होते हैं।

पादलेख (Footnotes): 1. जामिअ अल-तिर्मिज़ी, किताबुल ज़ुहद, बाब मा जाअ फ़ी क़ौलिन नबी ﷺ 'लव तलमून मा आलम', अमीन कंपनी दिल्ली 2/55 2. कंज़ुल उम्माल हदीस 31971, मुअस्ससतुर रिसाला बेरूत 11/420

دیکھتے اور سنتے ہیں (فرمان رسول ہے) بے شک میں وہ کچھ دیکھتا ہوں جو تم نہیں دیکھتے اور میں وہ کچھ سنتا ہوں جو تم نہیں سنتے، آسمان نے چیخ ماری ہے اور اس کو چیخ مارنی چاہیے۔ جب وہ پانچ سو سال کی راہ سے آسمان کی چیخ کی آواز سنتے ہیں تو ایک دو ماہ کی راہ سے کیوں نہیں سنتے۔ (فرمان رسول ہے) بے شک اللہ تعالٰی نے دنیا کو میری طرف بلند کردیا تو میں اس کی طرف اور جو کچھ اس میں قیامت تک ہونے والا ہے اس کی طرف دیکھ رہا ہوں گویا کہ میں اپنی اس ہتھیلی کو دیکھ رہا ہوں۔ جب وہ قیامت تک ہونے والی چیزوں کو اپنے دستِ مبارک کی ہتھیلی کی طرح دیکھتے ہیں تو جو کچھ اب موجود ہے اس کو کیوں نہیں دیکھ سکتے، ان پر افضل واکمل درود و سلام ہوں۔ عقل اس کو بعید شمار نہیں کرتی بلکہ وہ، اور جب ظن اکذب الحدیث ہے تو وہم کس گنتی میں ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

(۲) حق سبحانہ و تعالٰی جب خود پاک اور منزہ ہے تو پھر اس کی تسبیح (پاکی) بیان کرنے کا کیا فائدہ؟ فائدہ درحقیقت خود ہمارا ہے۔ میں ان کی تسبیح سے پاک نہیں ہوتا۔ (بلکہ تسبیح سے) وہ خود پاک اور ممتاز ہوتے ہیں۔

حواشی: ۱ جامع الترمذی کتاب الزہد باب ما جاء فی قول النبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم لو تعلمون ما اعلم امین کمپنی دہلی ۲/ ۵۵ ۲ کنز العمال حدیث ۳۱۹۷۱ موسسۃ الرسالہ بیروت ۱۱/ ۴۲۰

صفحہ 232 / 750

Fatawa Razawiyya Volume 29

Similarly, there is a benefit for us here (in sending blessings) that whoever sends blessings upon me once, Allah sends ten blessings upon him (1). May Allah Almighty send peace and blessings upon him, and He knows best.

(3) The purpose was to manifest the absolute honor, greatness, leadership, and essential origin of the radiant Messenger (peace and blessings be upon him) so that all the Prophets (peace and blessings be upon them) could be brought within the sphere of his absolute Prophethood and made his followers. May Allah Almighty send blessings, peace, and favors upon them all.

(4) This is correct, and it is not an obligation but a favor. (Divine command): 'Your Lord has prescribed mercy for Himself' (2). (Further stated): 'And it was incumbent upon Us to help the believers' (3). And Allah Almighty knows best.

Question 88: From the city, fort neighborhood, near the Jamia Masjid, sent by Hamid Husain Khan Sahib, 7th Rabi' al-Akhir 1336 AH. What do the scholars of religion and jurists of the clear Sharia say regarding this issue: whether absolute sainthood (Wilayah) is superior to specific prophethood (Nubuwwah) or is specific prophethood superior to sainthood? And which among the companions of the Messenger of Allah (peace and blessings be upon him) were possessors of sainthood? And were all the noble companions at the rank of sainthood, or only some of them?

1 Sahih Muslim, Book of Prayer, Chapter of Sending Blessings on the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) after the Tashahhud, Qadimi Kutub Khana, Karachi, 1/175. 2 Al-Quran Al-Karim 6/54. 3 Al-Quran Al-Karim 30/47.

उसी तरह यहाँ (दरूद भेजने में) भी हमारा अपना फ़ायदा है, (रसूल का फ़रमान है) कि जिसने मुझ पर एक बार दरूद भेजा अल्लाह तआला उस पर दस रहमतें नाज़िल फरमाता है। अल्लाह तआला आप पर दरूद व सलाम भेजे, और वह खूब जानता है।

(३) हुज़ूर पुरनूर अलैहि अफ़ज़लुल सलात वस्लाम की इज़्ज़त, अज़मत, सयादत-ए-मुतलक़ा और असालत-ए-कुल्लिया को ज़ाहिर करना मक़सूद था ताकि अंबिया-ए-किराम अलैहिमुस्सलाम को आपकी नबुव्वत-ए-मुतलक़ा के दायरे में लेकर आपका उम्मती बना दे। इन सब पर अल्लाह तआला दरूद व सलाम और बरकत नाज़िल फ़रमाए।

(४) यह सही है, और वह वजूब (अनिवार्यता) नहीं बल्कि उसका फ़ज़्ल है। (ईश्वरीय आदेश है) 'तुम्हारे रब ने अपने ज़िम्मे करम पर रहमत लाज़िम कर ली है' (२)। (मज़ीद फ़रमाया) 'और हमारे ज़िम्मे करम पर है मुसलमानों की मदद फ़रमाना' (३)। (वल्लाह तआला आलम)

मसअला ८८: शहर मुहल्ला क़िला मुत्तसिल जामे मस्जिद मुरसला हामिद हुसैन खान साहब, ७ रबीउल आख़िर शरीफ़ १३३६ हिजरी। क्या फ़रमाते हैं उलेमा-ए-दीन व मुफ़्तियान-ए-शरअ-ए-मतीन इस मसअले में कि आया विलायत-ए-मुतलक़ा अफ़ज़ल है नबुव्वत-ए-ख़ास से या नबुव्वत-ए-ख़ास अफ़ज़ल है विलायत से? और सहाबा-ए-किराम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से कौन सहाबी विलायत के मालिक थे? और क्या तमाम सहाबा-ए-किराम विलायत के मर्तबे पर फ़ाइज़ थे या उनमें से कुछ?

१ सहीह मुस्लिम, किताबुस सलात, बाबूस्सलात अलन्नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम बादत्तशहुद, क़दीमी कुतुब ख़ाना कराची, १/१७५। २ अल-क़ुरआन अल-करीम ६/५४ ३ अल-क़ुरआन अल-करीम ३०/४७

ہمچناں اینجا فائدہ ماراست کہ من صلی علی واحدۃً صلی اللہ علیہ عشرا ۱۔ اسی طرح یہاں (درود بھیجنے میں) بھی ہمارا اپنا فائدہ ہے، (فرمان رسول ہے) کہ جس نے مجھ پر ایک بار درود بھیجا اللہ تعالٰی اس پر دس رحمتیں نازل فرماتا ہے۔ اللہ تعالٰی آپ پر درود وسلام بھیجے، اور وہ خوب جانتا ہے۔ (۳) مقصود اظہار عزت و عظمت و سیادت مطلقہ واصالت کلیہ حضور پرنور علیہ افضل الصلوۃ والسلام بود تا ہمہ انبیاء علیہم الصلوۃ والسلام را در دائرہ نبوت مطلقہ اش فرا گیرد و امتی او گرداند، صلی اللہ تعالٰی علیہم اجمعین و وبارک وسلم۔ (۳) حضور پرنور علیہ افضل الصلوۃ والسلام کی عزت عظمت، سیادت مطلقہ اور اصالت کلیہ کو ظاہر کرنا مقصود تھا تاکہ انبیاء علیہم الصلوۃ والسلام کو آپ کی نبوت مطلقہ کے دائرہ میں لے کر آپ کا امتی بنادے۔ ان سب پر اللہ تعالٰی درود وسلام وبرکت نازل فرمائے۔ (۴) صحیح است واں وجوب نیست تفضل ست "كَتَبَ رَبُّكُمْ عَلَى نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ" ۲۔ "وَكَانَ حَقًّا عَلَيْنَا نَصْرُ الْمُؤْمِنِينَ" ۳۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ (۴) یہ صحیح ہے، اور وہ وجوب نہیں بلکہ اس کا فضل ہے۔ (فرمانِ الٰہی ہے) تمہارے رب نے اپنے ذمہ کرم پر رحمت لازم کرلی ہے۔ (مزید فرمایا) اور ہمارے ذمہ کرم پر ہے مسلمانوں کی مدد فرمانا (ت) (واللہ تعالٰی اعلم)

مسئلہ ۸۸: از شہر محلہ قلعہ متصل جامع مسجد مرسلہ حامد حسین خان صاحب ۷ ربیع الآخر شریف ۱۳۳۶ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیان شرع متین اس مسئلہ میں کہ آیا ولایت مطلقہ افضل ہے نبوت خاص سے یا نبوت خاص افضل ہے ولایت سے؟ اور صحابہ کرام رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم سے کون صحابی دارائ ولایت تھے؟ اور تمام صحابہ کرام مرتبہ ولایت پر فائز تھے یا بعض اُن

١ صحیح مسلم کتاب الصلوۃ باب الصلوۃ علی النبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم بعد التشہد قدیمی کتب خانہ کراچی ١/ ١٧٥ ٢ القرآن الکریم ٥٤/٦ ٣ القرآن الکریم ٤٧/٣٠

Fatawa Razawiyya Volume 29

A detailed and explained statement is requested from among them.

The Answer: Prophethood (Nubuwwat) is absolutely thousands of degrees superior to the sainthood (Wilayat) of any non-prophet saint (wali), no matter how great his status may be. Yes, there is a difference of opinion as to whether a prophet's prophethood is superior to his own sainthood, or his own sainthood is superior to his prophethood. There is no need to delve into this difference. The first point (that Nubuwwat is superior to the Wilayat of a non-prophet) is among the essentials of religion; belief in it is the basis of faith. Anyone who says a non-prophet saint, even a Siddiq (the most truthful), is superior to or even equal to any prophet is a disbeliever (Kafir), as the great leaders of the Ummah have explicitly stated in numerous books. (As the elders of the Ummah have stipulated in multiple books. - T) The Companions (Sahaba Ikram) radiallahu ta'ala anhum were all great saints. Allah the Almighty says:

"Not equal among you are those who spent before the conquest and fought. Those are greater in degree than those who spent afterwards and fought. And to all Allah has promised the best [reward]. And Allah, of what you do, is Aware."

Those among you who spent and fought before the conquest [of Makkah] are not equal. They are higher in rank than those who spent and fought afterwards. And Allah has promised Paradise to all of them, and Allah is Aware of what you do. (T)

And Allah the Almighty says:

"Indeed, those for whom the best [reward] has preceded from Us - they are from it (Hell) far removed. They will not hear its sound, while they are, in that which their souls desire, abiding eternally. They will not be grieved by the greatest terror, and the angels will meet them, [saying], 'This is your Day which you were promised.'"

Indeed, those for whom the promise of good from Us has already passed, they have been kept away from it (Hell). They will not even hear its slightest sound, and they will remain forever in whatever their souls desire. The greatest terror will not grieve them, and the angels will come to receive them, [saying], "This is your day which was promised to you." (T)

1 The Holy Quran 57/10 2 The Holy Quran 21/101 and 103

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

उनमें से विस्तृत और स्पष्ट बयान हो।

उत्तर: नुबुव्वत (पैग़म्बरी) पूर्णतः किसी भी ग़ैर-नबी वली (संत) की विलायत (संतत्व) से हज़ारों दर्जे अफ़ज़ल (श्रेष्ठ) है, चाहे वह वली कितने ही महान मर्तबे का क्यों न हो। हाँ, इसमें मतभेद है कि नबी की नुबुव्वत स्वयं उनकी अपनी विलायत से अफ़ज़ल है या उनकी अपनी विलायत उनकी नुबुव्वत से, और इस मतभेद में पड़ने की कोई आवश्यकता नहीं है। पहली बात (कि नुबुव्वत ग़ैर-नबी की विलायत से श्रेष्ठ है) धर्म की अनिवार्य बातों (ज़रूरियात-ए-दीन) में से है, इस पर विश्वास रखना ईमान की बुनियाद है। जो किसी ग़ैर-नबी वली को, यहाँ तक कि 'सिद्दीक़' को भी, किसी नबी से श्रेष्ठ या उनके बराबर कहे, वह काफ़िर है, जैसा कि उम्मत के महान इमामों ने अनेक पुस्तकों में स्पष्ट रूप से उल्लेख किया है। (जैसा कि उम्मत के अकाबिर ने अनेक किताबों में इस पर नस फ़रमाई है। - त) सहाबा किराम रदियल्लाहु तआला अन्हुम सभी महान औलिया (संत) थे। अल्लाह तआला फ़रमाता है:

"तुममें बराबर नहीं वे जिन्होंने फ़तेह (मक्का की विजय) से पहले ख़र्च किया और जिहाद किया, वे मर्तबे में उनसे बड़े हैं जिन्होंने फ़तेह के बाद ख़र्च और जिहाद किया, और उन सब से अल्लाह तआला जन्नत का वादा फ़रमा चुका है, और अल्लाह तआला को तुम्हारे कामों की ख़बर है।" (त)

और अल्लाह तआला फ़रमाता है:

"बेशक जिनके लिए हमारी तरफ से नेकी का वादा पहले हो चुका वे उस (जहन्नम) से दूर रखे गए हैं, वे उसकी हल्की सी आवाज़ भी न सुनेंगे और जो कुछ वे चाहेंगे हमेशा उसी में रहेंगे। उन्हें ग़म में न डालेगी वह सबसे बड़ी घबराहट, और फ़रिश्ते उनकी पेशवाई (स्वागत) को आएँगे कि यह है तुम्हारा वह दिन जिसका तुमसे वादा था।" (त)

1 अल-क़ुरआन अल-करीम 57/10 2 अल-क़ुरआन अल-करीम 21/101 और 103

میں سے مفصل اور مشرح ارشاد ہو۔

الجواب: نبوت مطلقاً ہر ولی غیر نبی کی ولایت سے ہزاروں درجے افضل ہے کیسے ہی اعظم مرتبہ کا ولی ہو، ہاں اس میں اختلاف ہے کہ نبی کی نبوت خود اس کی اپنی ولایت سے افضل ہے یا اس کی اپنی ولایت اس کی نبوت سے، اور اس اختلاف میں خوض کی کوئی حاجت نہیں، پہلی بات ضروریات دین سے ہے اس کا اعتقاد مدارِ ایمان ہے جو کسی ولی غیر نبی حتی کہ صدیق کو کسی نبی سے افضل یا ہمسر ہی کہے کافر ہے کما قد نص علیہ الاکابر الائمۃ فی غیر ما کتاب۔ (جیسا کہ اکابر امت نے متعدد کتابوں میں اس پر نص فرمائی ہے۔ت) صحابہ کرام رضی اللہ تعالیٰ عنہم سب اولیائے کرام تھے۔ قال اللہ تعالیٰ:

"لَا یَسْتَوِي مِنْكُمْ مَّنْ اَنْفَقَ مِنْ قَبْلِ الْفَتْحِ وَقَاتَلَ اُولٰٓئِكَ اَعْظَمُ دَرَجَةً مِّنَ الَّذِیْنَ اَنْفَقُوْا مِنْ بَعْدُ وَقَاتَلُوْا ط۱-"

تم میں برابر نہیں وہ جنہوں نے فتح مکہ سے قبل خرچ کیا اور جہاد کیا، وہ مرتبہ میں ان سے بڑے ہیں جنہوں نے بعد فتح کے خرچ اور جہاد کیا، اور ان سب سے اللہ تعالیٰ جنت کا وعدہ فرما چکا ہے، اور اللہ تعالیٰ کو تمہارے کاموں کی خبر ہے۔ (ت)

وقال اللہ تعالیٰ:

"اِنَّ الَّذِیْنَ سَبَقَتْ لَهُمْ مِّنَّا الْحُسْنٰٓی اُولٰٓئِكَ عَنْهَا مُبْعَدُوْنَ لا یَسْمَعُوْنَ حَسِیْسَهَا وَهُمْ فِیْ مَا اشْتَهَتْ اَنْفُسُهُمْ خٰلِدُوْنَ لا یَحْزُنُهُمُ الْفَزَعُ الْاَكْبَرُ وَ تَتَلَقّٰهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ هٰذَا یَوْمُكُمُ الَّذِیْ كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ ۲"

بے شک جن کے لیے ہماری طرف سے نیکی کا وعدہ پہلے ہو چکا وہ اس (جہنم) سے دور رکھے گئے ہیں وہ اس کی ہلکی سی آواز بھی نہ سنیں گے اور جو کچھ وہ چاہیں گے ہمیشہ اسی میں رہیں

گے۔ انہیں غم میں نہ ڈالے گی وہ سب سے بڑی گھبراہٹ، اور فرشتے ان کی پیشوائی کو آئیں گے کہ یہ ہے تمہارا وہ دن جس کا تم سے وعدہ تھا۔ (ت)

1 القرآن الکریم ۱۰/۵۷ 2 القرآن الکریم ۱۰۱/۲۱ او ۱۰۳

Fatawa Rizvia Volume 29

And Allah the Almighty said: "And those who believe in Allah and His messengers - they are the truthful ones and the witnesses before their Lord. For them is their reward and their light."[1] And those who believe in Allah and all His messengers, they are the perfectly truthful ones and witnesses for others before their Lord; for them is their reward and their light. (T)

And Allah the Almighty said: "On the Day when Allah will not disgrace the Prophet and those who believe with him. Their light will proceed before them and on their right."[2] On the day Allah will not disgrace the Prophet and those who believe with him, their light will be running before them and on their right. (T)

Among the Noble Sahaba (Companions), the most superior, perfect, exalted, and closest to Allah were the four Caliphs (Khulafa-e-Arba'a), may Allah be pleased with them. Their superiority in 'Wilayah' follows the order of their Caliphate. These four personages are perfect and complete to the highest degree. In terms of being possessors of the vicegerency of Prophethood (Niabat-e-Nubuwwat), the status of the 'Shaikhayn' (Abu Bakr and Umar), may Allah be pleased with them both, is most elevated. And in terms of being the possessor of completion (Takmil), it is Hazrat Maula Ali al-Murtaza, the Lion of God, the Dispeller of Distress, may Allah be pleased with them all. And Allah knows best.

Problem 89: Town Basharat Ganj, District Bareilly, Fateh Muhammad, 12 Jumadi al-Akhir 1336 AH, Saturday. What do the scholars of religion and jurists of the clear Shariah say regarding this issue that in the 9th Para (Juz), Surah Al-A'raf, this noble verse appears: "And if I knew the unseen, I could have acquired much wealth, and no harm would have touched me. I am not except a warner and a bringer of good tidings to a people who believe."[3] And if I used to know the unseen, then it would be that I gathered much good and no evil reached me; I am but a giver of warnings and glad tidings to those who believe. (T) What are its meanings, what is the occasion of its revelation (Shan-e-Nuzul), and does it negate the knowledge of the unseen (Ilm-e-Ghayb) or not?

The Answer: If I, of my own accord, without Allah's telling, knew the unseen, I would have gathered much good for myself and no harm or suffering would have reached me; I am but a giver of warnings and glad tidings to the believers. This verse was revealed in response to the meaningless questions of the disbelievers. It negates "personal/intrinsic" knowledge of the unseen (Ilm-e-Ghayb Dhati), meaning that

without Allah informing me, I do not have knowledge. If someone takes it to mean that even with Allah informing there is no knowledge, then that is a clear denial of the Holy Quran and open disbelief. See the details of this in our treatises on the 'Knowledge of the Unseen' (Ilm-e-Ghayb). And Allah knows best.

[1] Al-Quran Al-Karim 57/19 [2] Al-Quran Al-Karim 66/8 [3] Al-Quran Al-Karim 7/188

फ़तावा रिज़विया खंड 29

अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "और जो लोग अल्लाह और उसके रसूलों पर ईमान लाए, वही सच्चे हैं और अपने रब के यहाँ गवाह हैं। उनके लिए उनका सवाब और उनका नूर (प्रकाश) है।"[1] और वह जो अल्लाह और उसके सब रसूलों पर ईमान लाएं वही हैं कामिल सच्चे और औरों पर गवाह अपने रब के यहां उनके लिए उनका सवाब और उनका नूर है। (त)

अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "जिस दिन अल्लाह नबी को और उन लोगों को जो उनके साथ ईमान लाए, रुस्वा (अपमानित) नहीं करेगा। उनका नूर उनके आगे और उनके दाहिनी ओर दौड़ रहा होगा।"[2] जिस दिन अल्लाह तआला रुस्वा न करेगा नबी और उनके साथ के ईमान वालों को, उनका नूर दौड़ता होगा उनके आगे और उनके दाएं। (त)

सहाबा किराम में सबसे अफ़ज़ल (श्रेष्ठ), अकमल (पूर्ण), आला (उच्च) और अल्लाह के सबसे क़रीब चार खुलफ़ा (रज़ी अल्लाह तआला अन्हुम) थे। उनकी अफ़ज़लियत और विलायत ख़िलाफ़त की तरतीब (क्रम) के अनुसार है। ये चारों हज़रात सबसे आला दर्जे के कामिल मुकम्मल (पूर्ण) हैं। नबूवत की नायबत (प्रतिनिधित्व) प्राप्त करने में 'शैख़ैन' (अबू बक्र और उमर) रज़ी अल्लाह तआला अन्हुमा का मक़ाम सबसे ऊंचा है, और तकमील (पूर्णता) के मामले में हज़रत मौला अली मुर्तज़ा, शेरे-ख़ुदा, मुश्किल कुशा रज़ी अल्लाह तआला अन्हुम अजमईन। वल्लाहु आलम।

मसला 89: क़स्बा बशारत गंज, ज़िला बरेली, फ़तेह मुहम्मद, 12 जमादी अल-आख़िर 1336 हिजरी, शनिवार। दीन के विद्वान और शरीअत के मुफ़्ती इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि पारा 9, सूरा अल-आराफ़ में यह मुक़द्दस आयत आती है: "और यदि मैं ग़ैब (परोक्ष) का ज्ञान रखता, तो मैं बहुत सी भलाई इकट्ठा कर लेता और मुझे कोई बुराई न पहुँचती। मैं तो केवल एक डराने वाला और शुभ सूचना देने वाला हूँ उन लोगों के लिए जो ईमान लाते हैं।"[3] और अगर मैं ग़ैब जान लिया करता तो यों होता कि मैंने बहुत भलाई जमा कर ली और मुझे कोई बुराई न पहुँचती, मैं तो यही डर और ख़ुशी सुनाने वाला हूँ उन्हें जो ईमान रखते हैं। (त) इसका क्या अर्थ है और इसकी शान-ए-नुज़ूल (उतरने का कारण) क्या है और इससे इल्म-ए-ग़ैब की नफ़ी (निषेध) होती है या नहीं?

अल-जवाब: अगर मैं अपनी ज़ात से, बिना अल्लाह के बताए, ग़ैब जानता होता, तो बहुत सी ख़ैर (भलाई) जमा कर लेता और मुझे कोई बुराई या तकलीफ़ न पहुँचती; मैं तो ईमान वालों को डर और ख़ुशख़बरी ही सुनाने वाला हूँ। यह आयत काफ़िरों के बेहूदा सवालों पर उतरी थी। इससे 'इल्म-ए-ग़ैब

ज़ाती' (स्वयं का ग़ैब का ज्ञान) की नफ़ी होती है, यानी बिना अल्लाह के बताए मुझे ज्ञान नहीं होता। और अगर कोई यह अर्थ ले कि अल्लाह के बताने पर भी ज्ञान नहीं होता, तो यह साफ़ तौर पर क़ुरान मजीद का इनकार और खुला कुफ़्र है। इसका विवरण हमारे 'इल्म-ए-ग़ैब' के लेखों में देखें। वल्लाहु आलम।

[1] अल-क़ुरान अल-करीम 57/19 [2] अल-क़ुरान अल-करीम 66/8 [3] अल-क़ुरान अल-करीम 7/188

पृष्ठ 235/750

وقال اللہ تعالٰی: "وَالَّذِیْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰہِ وَرُسُلِہٖٓ اُولٰٓئِکَ ھُمُ الصِّدِّیْقُوْنَ ۖ وَالشُّھَدَآءُ عِنْدَ رَبِّھِمْ ط لَھُمْ اَجْرُھُمْ وَنُوْرُھُمْ ۭ" - 1 اور وہ جو اللہ اور اس کے سب رسولوں پر ایمان لائیں وہی ہیں کامل سچے اور اوروں پر گواہ اپنے رب کے یہاں ان کے لیے ان کا ثواب اور ان کا نور ہے۔ (ت)

وقال اللہ تعالٰی: "یَوْمَ لَا یُخْزِي اللَّهُ النَّبِيَّ وَالَّذِینَ آمَنُوا مَعَهُ نُورُهُمْ یَسْعَى بَیْنَ أَیْدِیهِمْ وَبِأَیْمَانِهِمْ" - 2 جس دن اللہ تعالٰی رسوا نہ کرے گا نبی اور ان کے ساتھ کے ایمان والوں کو، ان کا نور دوڑتا ہوگا ان کے آگے اور ان کے دائیں۔ (ت)

صحابہ کرام میں سب سے افضل واکمل واعلٰی واقرب الی اللہ خلفائے اربعہ رضی اللہ تعالٰی عنہم تھے اور ان کی افضیلت ولایت بترتیبِ خلافت ، یہ چاروں حضرات سب سے اعلٰی درجے کے کامل مکمل ہیں اور دارائے نیابتِ نبوت ہونے میں شیخین رضی اللہ تعالٰی عنہما کا پایہ ارفع ہے اور دارائے تکمیل ہونے میں حضرت مولا علی مرتضی شیر خدا مشکل کشا رضی اللہ تعالٰی عنہم اجمعین۔ واللہ اعلم۔

مسئلہ ۸۹: قصبہ بشارت گنج ضلع بریلی فتح محمد ۱۲ جمادی الاخر ۱۳۳۶ھ یوم ہفتہ کیا فرماتے ہیں علمائے دین ومفتیانِ شرع متین اس مسئلہ میں کہ پارہ ۹ سورہ اعراف میں یہ آیہ کریمہ آتی ہے۔ "وَلَوْ كُنْتُ اَعْلَمُ الْغَیْبَ لَاسْتَكْثَرْتُ مِنَ الْخَیْرِ ۛ وَمَا مَسَّنِیَ السُّوْٓءُ ۚ اِنْ اَنَا اِلَّا نَذِیْرٌ وَّبَشِیْرٌ لِّقَوْمٍ یُّؤْمِنُوْنَ" - 3 اور اگر میں غیب جان لیا کرتا تو یوں ہوتا کہ میں نے بہت بھلائی جمع کرلی اور مجھے کوئی برائی نہ پہنچتی، میں تو یہی ڈر اور خوشی سنانے والا ہوں انہیں جو ایمان رکھتے ہیں۔ (ت) اس کے کیا معنی ہیں اور اس کا شانِ نزول کیا ہے اور اس سے علم غیب کی نفی ہوتی ہے یا نہیں؟

الجواب: اگر میں اپنی ذات سے بے خدا کے بتائے غیب جانتا تو بہت سی خیر جمع کرلیتا اور مجھے کوئی برائی تکلیف نہ پہنچتی، میں تو ایمان والوں کو ڈر اور خوشخبری ہی سنانے والا ہوں کافروں کے مہمل سوالات پر اتری تھی۔ اس سے علم غیب ذاتی کی نفی ہوتی ہے کہ بے خدا کے بتائے مجھے علم نہیں ہوتا اور خدا کے بتائے سے نہ ہو نامراد لیں تو صراحتہً قرآن مجید کا انکار اور کھلا کفر ہے۔ اس کی تفصیل ہمارے رسائل علم غیب میں دیکھو، واللہ اعلم۔

1 القرآن الکریم ۵۷/ ۱۹ 2 القرآن الکریم ۶۶/ ۸ 3 القرآن الکریم ۷/ ۱۸۸

Fatawa Razawiya Volume 29

Question 90: From Shishgarh town, main post office Bareilly, asked by Syed Muhammad Sajjad Hussain Sahib on 29th Muharram al-Haram 1337 AH.

(1) Zaid, despite claiming to be a descendant of Siddiq (Abu Bakr), refers to Ismail Dehlvi as Hazrat Maulana Molvi Muhammad Ismail Sahib Shaheed Rahmathullah Alaih.

(2) Bakr calls himself a Chishti Hydari and holds beliefs on the following matters: Concerning the Muslims who fix the 11th of the month (Gyariween Sharif) for Hazrat Peeran-e-Peer Sheikh Sayyid Muhyiddin Abdul Qadir Jilani (may Allah be pleased with him) to send rewards (Thawab) to his blessed soul, he says that fixing the 11th date is blameworthy (mazmoom). Regarding the month of Rajab, he writes that there are many narrations about the great rewards of voluntary prayers (Nawafil), Salawat, fasting (Sawm), and worship in this month, but none of them are authentic (Sahih). And it is completely wrong and without evidence that Prophet Noah (peace be upon him) was ordered to build the ark in the month of Rajab. Cooking Halwa in the month of Sha'ban or doing Arafa on the 13th, or distributing food on the day of Eid is prohibited. Cooking Khichra or syrup especially in the month of Muharram, serving it, giving offerings (Niyaz) in the name of the Imams, and setting up Sabeels (water stalls) are very bad innovations (Bid'ah). Thinking of any special reward or blessing in the month of Safar is ignorance. He considers Sayyid Ahmad Rae Barelvi to be good, pious, rather a saint (Wali). So, what do the scholars of religion say about such individuals? What is their actual religion? And let the reality of the aforementioned matters be written in detail.

The Answer:

(1) In the mentioned case, Zaid is a misguided, irreligious Najdi Ismaili, and according to the decree of the honorable jurists (Fuqaha), the ruling of disbelief (Kufr) is mandatory for him, the details of which are evident from the book 'Al-Kawakib al-Shahabiya fi Kufriyat Abi al-Wahabiya'. And Allah Almighty knows best.

(2) Bakr seems to be a clever Wahhabi. To call Gyariween Sharif blameworthy, and to prohibit Sha'ban's Halwa, the Arafa of the 13th, and the food of Eid absolutely without Sharia prohibition, and to call the Khichra of Muharram Sharif and the Sabeel of syrup for the noble Imams absolutely a 'heinous innovation' is the hallmark of Wahhabism. And Wahhabis are misguided and irreligious. Not calling the hadiths of

the actions of Rajab authentic is a great cleverness; the authenticity according to the terminology of the Hadith scholars (Muhaddithin) is not required here, as weak narrations (Daeef) are acceptable by consensus (Ijma) in the virtues of deeds (Fazail-e-A'maal). The command to build the ark was not in Rajab; rather, the ark sailed in Rajab, bringing wrath upon enemies and "We carried him on a thing of planks and nails, sailing..." (Quran 54:13-14) upon the beloved ones.

फतावा रज़विया खंड 29

प्रश्न 90: कस्बा शीशगढ़, मुख्य डाकघर बरेली से, सैयद मोहम्मद सज्जाद हुसैन साहब द्वारा 29 मुहर्रम अल-हराम 1337 हिजरी को पूछा गया।

(1) ज़ैद, सिद्दीकी वारिस होने का दावा करने के बावजूद, इस्माइल देहलवी को 'हज़रत मौलाना मौलवी मोहम्मद इस्माइल साहब शहीद रहमतुल्लाह अलैह' लिखता है।

(2) बक्र खुद को चिश्ती हैदरी बताता है और निम्नलिखित बातों पर विश्वास रखता है: जो मुसलमान हज़रत पीरान-ए-पीर जनाब शेख सैयद मुहयिद्दीन अब्दुल कादिर जिलानी (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) की ग्यारहवीं शरीफ़ मुक़र्रर करके उनकी रूह को सवाब पहुँचाते हैं, उसके बारे में वह कहता है कि ग्यारहवीं तारीख़ मुक़र्रर करना निंदनीय (मज़मूम) है। रजब के महीने के बारे में वह लिखता है कि इस महीने के नवाफ़िल, नमाज़, रोज़ा और इबादत के बारे में बड़े-बड़े सवाबों की बहुत सी रिवायतें हैं, उनमें से कोई भी सही नहीं है। और यह बात बिल्कुल ग़लत और बेबुनियाद है कि हज़रत नूह (अलैहिस्सलाम) को कश्ती बनाने का हुक्म रजब के महीने में हुआ था। शाबान के महीने में हलवा पकाना या तेरहवीं को अरफ़ा करना, ईद के दिन खाना बाँटना वर्जित है। मुहर्रम के महीने में खिचड़ा या शरबत खास तौर पर पकाना, पिलाना और इमामों के नाम की नियाज़ दिलाना और सबील लगाना बहुत बुरी बिदअतें हैं, सफ़र के महीने में किसी खास सवाब या बरकत का ख़्याल रखना जहालत है, सैयद अहमद राय बरेलवी को नेक, बुज़ुर्ग बल्कि वली जानता है। तो ऐसे व्यक्तियों के बारे में दीन के उलमा क्या फरमाते हैं कि उनका असली मज़हब क्या है? और उपरोक्त मामलों की असलियत विस्तार से लिखी जाए।

उत्तर:

(1) वर्णित स्थिति में ज़ैद गुमराह, बेदीन, नजदी इस्माइली है और फुकहा-ए-किराम के हुक्म के अनुसार उस पर कुफ्र का हुक्म लाज़िम है, जिसका विवरण किताब 'अल-कवाकिब अल-शहाबिया फी कुफ्रियत अबी अल-वहाबिया' से स्पष्ट है। वल्लाहु तआला आलम (और अल्लाह बेहतर जानता है)।

(2) बक्र होशियार वहाबी मालूम होता है। ग्यारहवीं शरीफ़ को निंदनीय कहना, शाबान के हलवे, तेरहवीं के अरफ़े ईद के खाने को बिना किसी शरीई मनाही के मुतलक़न (पूरी तरह से) वर्जित कहना, मुहर्रम शरीफ़ के खिचड़े, अइम्मा-ए-अतहार की शरबत की सबील को मुतलक़न 'बिदअत-

ए-शन्नीअह' (घृणित नवाचार) कहना वहाबियों का तौर-तरीका है। और वहाबी गुमराह और बेदीन हैं। रजब के आमाल की हदीसों को सही न कहना बड़ी चालाकी है, यहाँ मुहद्दिसों की शब्दावली वाली 'सहत' (प्रामाणिकता) की ज़रूरत नहीं है, फज़ाइल-ए-आमाल (कर्मों की फज़ीलत) में ज़ईफ़ रिवायतें इज्मा (आम सहमति) से स्वीकार्य हैं। रजब में कश्ती बनाने का हुक्म नहीं हुआ था बल्कि रजब में कश्ती चली थी और दुश्मनों पर कहर और महबूबों पर "और हमने उसे तख्तों और कीलों वाली चीज़ (कश्ती) पर सवार किया, जो चलती थी..." (कुरान 54:13-14)।

पृष्ठ 750 में से 236

فتاوی رضویہ جلد ۲۹

مسئلہ ۹۰: از قصبہ شیش گڑھ ڈاک خانہ خاص بریلی مسئولہ سید محمد سجاد حسین صاحب ۲۹ محرم الحرام ۱۳۳۷ھ (۱) زید باوجود ادعائے صدیق الوارثی کے اسمعیل دہلوی کو حضرت مولانا مولوی محمد اسمعیل صاحب شہید رحمتہ اللہ علیہ لکھتا ہے۔ (۲) بکر اپنے آپ کو چشتی حیدری بتاتا ہے اور مندرجہ ذیل امور پر اعتقاد رکھتا ہے یعنی مسلمان جو حضرات پیران پیر جناب شیخ سید محی الدین عبدالقادر جیلانی رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی گیارھویں شریف مقرر کر کے ان کی روح پر فتوح کو ثواب پہنچاتے ہیں اس کی بابت کہتا ہے کہ گیارھویں تاریخ مقرر کرنا مذموم ہے۔ ماہ رجب کی بابت لکھتا ہے کہ اس ماہ کے نوافل، صلوٰۃ وصوم و عبادت کے متعلق بڑے بڑے ثوابوں کی بہت سی روایتیں ہیں اُن میں صحیح کوئی بھی نہیں۔ اور یہ بات بالکل غلط اور بے سند ہے کہ حضرت نوح علیہ السلام کو کشتی بنانے کا حکم ماہ رجب میں ہوا تھا۔ ماہ شعبان میں حلوا پکانا یا تیرہویں کو عرفہ کرنا، عید کے دن کھانا تقسیم کرنا ممنوع ہے۔ ماہ محرم میں کھچڑا یا شربت خاص کر کے پکانا، پلانا اور اماموں کے نام کی نیاز دلانا اور سبیل لگانا بہت بری بدعتیں ہیں، ماہِ صفر میں کسی خاص ثواب یا برکت کا خیال رکھنا جہل ہے، سید احمد رائے بریلوی کو نیک، بزرگ بلکہ ولی جانتا ہے۔ پس کیا فرماتے ہیں علمائے دین ایسے اشخاص کے حق میں کہ ان کا اصلی مذہب کیا ہے؟ اور امور مذکورہ بالا کی اصلیت مفصل طور سے تحریر فرمائی جائے۔

الجواب: (۱) صورت مذکورہ میں زید گمراہ بددین نجدی اسمعیلی ہے اور بحکم فقہائے کرام اس پر حکم کفر لازم، جس کی تفصیل کتاب الکواکب الشہابیہ فی کفریات ابی الوھابیہ سے ظاہر، واللہ تعالیٰ اعلم۔ (۲) بکر ہوشیار وہابی معلوم ہوتا ہے، گیارھویں شریف کو مذموم، شعبان کے حلوے، تیرہویں کے عرفے، عید کے کھانے کو مطلقاً بلا ممانعت شرعی ممنوع، محرم شریف کے کھچڑے، شربت

ائمہ اطہار کی سبیل کو مطلقاً بدعتِ شنیعہ کہنا شعارِ وہابیہ ہے۔ اور وہابیہ گمراہ، بددین، احادیث اعمالِ رجب کو صحیح نہ کہنا بڑی چالاکی ہے، اصطلاح محدثین کی صحت یہاں درکار نہیں، فضائل اعمال میں ضعاف بالاجماع مقبول ہیں۔ رجب میں کشتی بنانے کا حکم نہ ہوا تھا بلکہ رجب میں کشتی چلی اور اعداء پر قہر اور محبوبوں پر " وَحَمَلْنٰہُ عَلٰی ذَاتِ اَلْوَاحٍ وَّدُسُرٍ ۙ تَجْرِیْ "۔

Volume 29 Fatawa Razawiyya

"Sailing under Our eyes, as a reward for him who had been denied" (1). (We carried Noah on a vessel of planks and nails, which floated before Our eyes, as a recompense for him who was rejected - T). Its virtue became apparent in this very month. This is proven by the traditions of Abdullah bin Abbas and others (may Allah be pleased with them). His saying regarding Safar and the kohl of Ashura should not be rejected, even though there is much disagreement regarding the latter. If one considers the false words of 'Sirat-e-Mustaqim' as false, the blasphemous as blasphemous, and knows Ismail Dehlvi to be a misguided irreligious person, separate from Wahhabism, then just by considering Syed Ahmed as an elder, he will not become a Wahhabi. Otherwise, "And We have certainly made the signs clear for a people who understand, as our Lord has guided us, our Lord is high and lofty above what they describe." (T) And Allah Almighty knows best.

Problem 92: From Bahar-e-Shariat, Muhalla Khanqah Hazrat Makhdoomul Mulk Bihari (may Allah's mercy be upon him), questioned by Najmuddin Ahmed Sahib Firdausi, grandson of Hazrat Syed Shah Amin Ahmed Firdausi (may Allah's mercy be upon him), 23 Safar 1337 AH. In the name of Allah, the Most Gracious, the Most Merciful. We praise Him and send blessings upon His Noble Messenger. What do the scholars and muftis of the firm Shariah say regarding these following detailed issues: (1) A person who considers the maker of Ta'ziya as an infidel and his offspring as illegitimate, and considers the standing during Mawlid (celebration of the Prophet's birth) as an evil innovation, and considers attending the Urs (anniversary) of the elders of religion as a futile act, what kind of person is he? Is he a Sunni Hanafi or not? (2) Between a Deobandi who claims to follow (Taqleed) and a non-conformist (Ghair-Muqallid) who claims to be of the 'Ahl-e-Hadith', who is more in misguidance? Is prayer valid behind both sects or not? And what is the fatwa of the scholars of the Two Holy Sanctuaries regarding these two groups? (3) A person who calls the noble shrines of the great saints of Allah a "heap of dust," denies seeking help and assistance (istimdad and istighatha) from the graves of the saints of Allah, calls saying "Ya Rasool Allah" shirk (associating partners with Allah) and impermissible, considers eating food from Fatiha and Niyaz as haram (forbidden), and denies the knowledge of the unseen (Ghayb) of His Eminence the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him)—is that person a Muslim or not?

(1) Al-Quran Al-Karim 54/13 and 14 Page 237 of 750

जिल्द 29 फ़तावा रज़विया

"बि-अय्युनिना जज़ाअल्-लिमन का-न कुफ़िर" (1)। (हमने नूह को तख्तों और कीलों वाली पर सवार किया कि हमारी आँखों के सामने चलती थी, उस के बदले के तौर पर जिसे झुठलाया गया था-त) का फ़ज़ल इसी महीने में ज़ाहिर हुआ। यह अब्दुल्ला बिन अब्बास और दीगर रज़ियल्लाहु अन्हुम की हदीसों से साबित है। सफ़र और आशूरा के सुरमे के मुताल्लिक़ उनका कौल रद्द न किया जाए अगरचे दूसरे में काफी इख्तिलाफ़ है। अगर 'सिराते मुस्तकीम' के बातिल कलिमात को बातिल, कुफ़्रिया को कुफ़्रिया, और इस्माइल देहलवी को गुमराह बेदीन जानता है और वहाबियत से जुदा है, तो सिर्फ सैयद अहमद को बुज़ुर्ग मानने से वह वहाबी न होगा। वरना "हमने अक्लमंद कौम के लिए निशानियाँ वाज़ेह कर दी हैं, जैसा कि हमारे रब ने हमें हिदायत दी, हमारा परवरदिगार उनकी बातों से बुलंद व बाला है।" (त) वल्लाहु तआला आलम (और अल्लाह तआला बेहतर जानता है)।

मसला 92: अज़ बहार-ए-शरीअत, मोहल्ला खानकाह हज़रत मखदूमुल मुल्क बिहारी (रहमतुल्लाह अलैह), सायल: नजमुद्दीन अहमद साहब फिरदौसी, पोते हज़रत सैयद शाह अमीन अहमद फिरदौसी (रहमतुल्लाह अलैह), 23 सफ़र 1337 हिजरी। बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम। नहमदुहु व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम उलमा और मुफ़्तियाने शरा-ए-मतीन इन मसायल में क्या फ़रमाते हैं: (1) जो ताज़िया बनाने वाले को काफिर और उसकी औलाद को हरामी कहता है, और कयाम-ए-मौलूद को बिदअत-ए-सय्यिआ (बुरी ईजाद) और बुज़ुर्गान-ए-दीन के उर्स की हाज़िरी को फ़ुज़ूल काम समझता है, वह शख्स कैसा है? सुन्नी हनफी है या नहीं? (2) देवबंदी जो तक़लीद का दावा करता है और गैर-मुक़ल्लिद जो अहल-ए-हदीस होने का दावा करता है, उनमें से कौन ज़्यादा गुमराही पर है? और क्या इन दोनों फिरकों के पीछे नमाज़ जायज़ है या नहीं? और इन दोनों गिरोहों पर हरमैन शरीफैन के उलमा का क्या फतवा है? (3) जो शख्स अल्लाह के बड़े वलियों के मज़ार-ए-अक़दस को "मिट्टी का ढेर" कहे और वलियों की कब्रों से मदद माँगने (इस्तिम्दाद और इस्तिगासा) का मुनकिर (इनकारी) हो, और "या रसूल अल्लाह" कहना शिर्क और नाजायज़ बताए, और फातिहा और नियाज़ का खाना हराम समझे, और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इल्म-ए-ग़ैब का मुनकिर हो, क्या वह शख्स मुसलमान है या नहीं?

(1) अल-क़ुरआन अल-करीम 54/13 और 14 पेज 237 ऑफ़ 750

بِأَعْيُنِنَا جَزَاءً لِمَنْ كَانَ كُفِرَ (۱)۔ (ہم نے نوح کو سوار کیا تختوں اور کیلوں والی پر کہ ہماری نگاہ کے روبرو بہتی، اس کے صلہ میں جس کے ساتھ کفر کیا گیا تھا۔ت) کا فضل اسی مہینہ میں ظاہر ہوا۔ یہ عبد اللہ بن عباس و غیرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہم کی حدیثوں سے ثابت ہے۔ صفر وسرمہ عاشورہ کی نسبت اس کا قول رد نہ کیا جائے اگرچہ ثانی میں اختلاف کثیر ہے۔ اگر صراط مستقیم کے کلمات باطلہ کو باطلہ، کفریہ کو کفریہ، اسمعیل دہلوی کو گمراہ بد دین جانتا ہے وہابیت سے جدا ہے تو سید احمد کو صرف بزرگ جاننے سے وہابی نہ ہوگا۔ ورنہ وقد بینا الآیات لقوم یعقلون کما ھدانا ربنا تبارک و تعالیٰ عما یصفون (تحقیق ہم نے عقلمند قوم کے لیے نشانیاں ظاہر کر دی ہیں، جیسا کہ ہمارے رب نے ہمیں ہدایت دی ہمارے پروردگار ان کی باتوں سے بلند و بالا ہے۔ت) واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۹۲: از بہار شریعت محلہ خانقاہ حضرت مخدوم الملک بہاری رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ مسئولہ نجم الدین احمد صاحب فردوسی نبیرہ جناب حضرت سید شاہ امین احمد فردوسی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ ۲۳ صفر ۱۳۳۷ھ بسم اللہ الرحمن الرحیم۔ نحمدہ ونصلي علی رسولہ الکریم کیا فرماتے ہیں علماء ومفتیانِ شرع متین ان مسائل مفصلہ ذیل میں۔ (۱) جو تعزیہ بنانے والے کو کافر اور اس کی اولاد کو حرامی اور قیامِ مولود کو بدعتِ سیئہ اور حاضریِ عرسِ بزرگانِ دین کو فعل لغو سمجھتا ہے وہ شخص کیسا ہے، سنی حنفی ہے یا نہیں؟ (۲) دیوبندی مدعیِ تقلید و غیر مقلد مدعیِ اہل حدیث میں زیادہ کون ضلالت پر ہے اور دونوں فرقوں کے پیچھے نماز درست ہے یا نہیں؟ اور ان دونوں گروہوں پر علمائے حرمین شریفین کا کیا فتویٰ ہے؟ (۳) جو شخص کہ اکابر اولیاء اللہ کے مزار اقدس کو تودہ خاک کہے اور استمداد و استغاثہ کا اولیاء اللہ کے قبور سے منکر ہو، اور یا رسول اللہ

کہنا شرک و ناجائز بتائے اور طعام فاتحہ و نیاز کا کھانا حرام سمجھے اور جناب رسالتمآب صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے غیب کا منکر ہو وہ شخص مسلمان ہے یا نہیں؟

(۱) القرآن الکریم ۵۴/۱۳ و ۱۴ Page 237 of 750

(4) To which sect do Maulvi Qasim Deobandi, Maulvi Rashid Ahmad Gangohi, Maulvi Ashraf Ali Thanwi, and Maulvi Mahmud Hasan Deobandi belong? What kind of view should one hold towards them? Please guide us so that we Sunnis are strengthened. Give a verdict and be rewarded (explain and be granted a reward).

The Answer: Making a Ta'zia is a sin, not disbelief (kufr). One who calls a Muslim a 'kafir' (disbeliever) falls under the warning of this Hadith which is narrated by Bukhari and Muslim on the authority of Abdullah bin Umar (may Allah be pleased with them both) that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said:

"Whoever says to his brother, 'O disbeliever', then it surely applies to one of them. If it is as he said, (then it is so), otherwise it returns to him (the accuser)."[1]

Meaning, whoever calls an apparent Muslim a disbeliever, this calamity will certainly fall upon one of the two. If he (the accused) is actually a disbeliever, then fine, otherwise this accusation will return back to the one who said it.

And calling their children illegitimate is included under this noble verse:

"Indeed, those who accuse chaste, unaware and believing women are cursed in this world and the Hereafter; and they will have a great punishment."[2]

Considering the standing in blessed gatherings (Qiyam) as a 'bad innovation' (bid'ah sayyi'ah) and regarding attendance at pure urs (death anniversaries of saints) as futile is the hallmark of the Wahhabis. And the Wahhabis are not even Muslims, let alone Sunnis, as they openly insult Allah and His Messenger. And Allah Almighty says:

"Say, 'Was it at Allah and His verses and His Messenger that you were mocking? Make no excuse; you have disbelieved [i.e., rejected faith] after your belief.'"[3]

1. Sahih Muslim, Book of Faith, Chapter: The state of faith of one who says to his Muslim brother, 'O disbeliever', Qadimi Kutub Khana Karachi 1/57; Sahih al-Bukhari, Book of Manners, Chapter: One who declares his brother a disbeliever without interpretation, then it is as he said, Qadimi Kutub Khana Karachi 2/901.
2. Al-Quran Al-Karim 24 / 23
3. Al-Quran Al-Karim 9/ 65 & 66

(4) मौलवी कासिम देवबंदी, मौलवी रशीद अहमद गंगोही, मौलवी अशरफ अली थानवी और मौलवी महमूद हसन देवबंदी किस मज़हब के लोग हैं? उनके साथ कैसा विचार रखना चाहिए? कृपया मार्गदर्शन करें ताकि हम सुन्नियों को शक्ति मिले। हुक्म बयान करें और पुण्य कमाएं।

उत्तर: ताज़िया बनाना गुनाह है, कुफ्र (अविश्वास) नहीं। किसी मुसलमान को 'काफ़िर' कहने वाला खुद उस हदीस की ज़द में आता है जो बुखारी और मुस्लिम ने हज़रत अब्दुल्ला बिन उमर (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से रिवायत की है कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया:

"जो कोई अपने भाई से कहे कि 'ऐ काफ़िर', तो यह बात उनमें से किसी एक पर ज़रूर लागू होगी। अगर वह वैसा ही है जैसा उसने कहा, (तो ठीक), वरना यह (इल्जाम) उसी कहने वाले पर लौट आएगा।"[1]

अर्थात्, जो व्यक्ति ज़ाहिरी तौर पर किसी मुसलमान को काफ़िर कहता है, तो यह आफत उन दोनों में से एक पर ज़रूर पड़ेगी। अगर वह वास्तव में काफ़िर है तो ठीक, वर्ना यह कहना कहने वाले पर ही लौट आएगा।

और उनकी औलाद को हरामी कहना इस आयते करीमा में शामिल है:

"बेशक वे लोग जो पाकबाज़, बेखबर मोमिन औरतों पर तोहमत (व्यभिचार का आरोप) लगाते हैं, उन पर दुनिया और आख़िरत में लानत है, और उनके लिए बड़ा अज़ाब है।"[2]

मुबारक महफ़िलों में कयाम (खड़े होना) को 'बिदअत-ए-सय्या' (बुरी ईजाद) समझना और मुकद्दस उर्सों की हाज़िरी को फिजूल समझना वहाबियों का तरीका है। और वहाबी सुन्नी तो क्या मुसलमान भी नहीं हैं क्योंकि वे अल्लाह और उसके रसूल की सरेआम तौहीन करते हैं, और अल्लाह अज़्ज़वजल फरमाता है:

"उनसे कह दो, क्या तुम अल्लाह, उसकी आयतों और उसके रसूल के साथ मज़ाक कर रहे थे? बहाने मत बनाओ, तुम ईमान लाने के बाद काफ़िर हो चुके हो।"[3]

1. सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाब: किसी मुसलमान भाई को काफिर कहने वाले के ईमान का हाल, कदीमी कुतुब खाना कराची 1/57; सहीह अल-बुखारी, किताबुल अदब, बाब: जो

किसी तावील के बिना अपने भाई को काफ़िर कहे, तो वह वैसा ही है जैसा उसने कहा, कदीमी कुतुब खाना कराची 2/901.

2. अल-कुरआनुल करीम 24 / 23
3. अल-कुरआनुल करीम 9/ 65 और 66

पृष्ठ 238 / 750

(۴) مولوی قاسم دیوبندی و مولوی رشید احمد گنگوہی و مولوی اشرف علی تھانوی و مولوی محمود حسن دیوبندی کس مذہب کے لوگ ہیں؟ ان کے ساتھ کیسا خیال رکھنا چاہیے؟ ارشاد فرمایا جائے کہ ہم سنیوں کو تقویت حاصل ہو۔ بینوا توجروا (بیان کر واجر دیئے جاؤ گے)

الجواب: تعزیہ بنانا گناہ ہے کفر نہیں، کافر کہنے والا مسلمان کو کافر کہتا ہے اور اس حدیث میں داخل ہوتا ہے کہ بخاری اور مسلم نے عبد اللہ بن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کی ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا:

مَنْ قَالَ لِأَخِيْهِ يَا كَافِرُ فَقَدْ بَاءَ بِهَا أَحَدُهُمَا فَانْ كَانَ كَمَا قَالَ وَإِلَّا رَجَعَتْ عَلَيْهِ - 1 یعنی جو بظاہر کسی مسلم کو کافر کہے دونوں میں سے ایک پر یہ بلا ضرور پڑے، اگر واقع میں کافر ہے تو خیر ورنہ یہ کہنا اس کہنے والے ہی پر پلٹ آئے گا۔

اور اس کی اولاد کو حرامی کہنا اس آیہ کریمہ میں داخل ہے:

" إِنَّ الَّذِينَ يَرْمُونَ الْمُحْصَنَاتِ الْغَافِلَاتِ الْمُؤْمِنَاتِ لُعِنُوا فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ " 2 وہ جو پارسا بے خبر ایمان والیوں کو زنا کی تہمت لگاتے ہیں ان پر دنیا اور آخرت میں لعنت ہے اور ان کے لیے بڑا عذاب ہے۔

قیام مجلس مبارک کو بدعت سیئہ اور حاضری اعراس طیبہ کو لغو سمجھنا شعار وہابیہ ہے، اور وہابیہ سنی کیا مسلمان بھی نہیں کہ اللہ و رسول کی علانیہ توہین کرتے ہیں، اور اللہ عزوجل فرماتا ہے:

"قُلْ اَبِاللّٰهِ وَاٰيٰتِهٖ وَرَسُوْلِهٖ كُنْتُمْ تَسْتَهْزِئُوْنَ لَا تَعْتَذِرُوْا قَدْ كَفَرْتُمْ بَعْدَ اِيْمَانِكُمْ ط" 3 ان سے فرمادو کیا اللہ اور اس کی آیتوں اور اس کے رسول سے ٹھٹھا کرتے تھے بہانے نہ بناؤ تم کافر ہو چکے اپنے ایمان کے بعد۔

1 صحیح مسلم کتاب الایمان باب بیان حال ایمان من قال لاخیه المسلم یا کافر قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/ ۵۷، صحیح البخاری کتاب الادب باب من اکفر اخاه بغیر تاویل فهو کما قال قدیمی کتب خانہ کراچی ۲/ ۹۰۱ 2 القرآن الکریم ۲۴ / ۲۳ 3 القرآن الکریم ۹/ ۲۵ و ۲۶

Fatawa Rizvia Volume 29

Yes, hypothetically, if there is a person who is separate from Wahhabism and Wahhabis, considers Wahhabis as misguided and irreligious, and Deobandis as apostate disbelievers, and only has disagreements regarding Qiyam (standing in prayer) and Urs (anniversary of a saint), then solely for this reason he will not be expelled from Sunnism and Hanafism. However, nowadays this hypothesis is of the nature of a false hypothesis; today who is there among them who speaks out and is a Sunni? Except perhaps by Taqiya (pretense), for Wahhabis are no less than Rafidis (Shia sect) in this regard.

(2) Both are like racehorses in the field of disbelief; prayer behind both is absolutely invalid, just like behind Masih Charan or Ganga Din.

| Arabic: As we have established in 'An-Nahi al-Akid 'an as-Salat wara' Adi at-Taqlid' and others of our books and fatwas. | Urdu: As we have researched in our treatise 'An-Nahi al-Akid 'an as-Salat wara' Adi at-Taqlid' and other books and fatwas of ours. (T) |

It is in Fath al-Qadir, the commentary on Al-Hidayah:

| Arabic: Imam Muhammad narrated from Abu Hanifa and Abu Yusuf (may Allah be pleased with them) that prayer behind people of innovations/desires is not permissible. 1 | Urdu: Imam Muhammad (may Allah have mercy on him) narrated from Imam Abu Hanifa and Imam Abu Yusuf (may Allah have mercy on them) that prayer behind a person of wrong beliefs is not permissible. (T) |

Apparently, the Ghair-Muqallids (those who don't follow a school of jurisprudence) are worse than Deobandis because they are united in beliefs of disbelief and misguidance, and in them, the denial of Taqleed (following a school of thought) and speaking ill of Imams is extra. Even the leader of the Deobandis, Rashid Gangohi himself, in his Fatwa, Part Two, page 21, regarding the 4th group among Ghair-Muqallids, Nazir Husain Dehlawi, says: "To call them rejected and outside of the Ahl-as-Sunnah is also very extreme." 2

In beliefs, all are united, whether Muqallid or Ghair-Muqallid. And if a Mufti is asked about Ghair-Muqallids and Deobandis, he will give a harsher ruling on Deobandis because their main characteristic and defining description is the abandonment of Taqleed and bad-mouthing Imams. What comparison is there with those statements of the leaders of Deobandis like Gangohi, Nanotwi, and Thanvi, which say that Iblees

(Satan) has knowledge of the unseen, but if believed for the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him), then it is clear polytheism (shirk).

Explanation: Both are like racehorses who try to outdo each other.

1. Fath al-Qadir, Kitab as-Salat, Bab al-Imamah, Maktaba Nooriya Razviya Sukkur, 1/304.
2. Fatawa Rashidiya, ruling on speaking ill of Maulvi Nazir Husain Ahl-e-Hadith, Muhammad Saeed & Sons, Booksellers, Karachi, p. 185.

फ़तावा-ए-रज़विया, जिल्द 29

हाँ, मान लीजिए अगर कोई ऐसा व्यक्ति हो जो वहाबियत और वहाबियों से अलग हो, वहाबियों को गुमराह और बेदीन, और देवबंदियों को काफ़िर और मुर्तद मानता हो, और केवल क़ियाम और उर्स के विषय में मतभेद रखता हो, तो केवल इस कारण से उसे सुन्नियत और हनफ़ियत से बाहर नहीं कहा जाएगा। लेकिन आज के समय में यह कल्पना एक झूठी कल्पना की तरह है; आज उनमें से कौन ऐसा है जो बोलता हो और सुन्नी हो? सिवाय शायद तक़िया (दिखावे) के, क्योंकि वहाबी इस मामले में राफ़िज़ियों से कम नहीं हैं।

(2) दोनों कुफ़्र के मैदान में रेस के घोड़ों की तरह हैं; दोनों के पीछे नमाज़ बिल्कुल बातिल (अमान्य) है, जैसे मसीह चरन या गंगा दीन के पीछे।

| अरबी: जैसा कि हमने 'अन-नहीं अल-अकीद अन अस-सलात वरा अदी अत-तक़लीद' और अपनी अन्य किताबों और फ़तवों में इसकी पुष्टि की है। | उर्दू: जैसा कि हमने अपने रिसाले 'अन-नहीं अल-अकीद अन अस-सलात वरा अदी अत-तक़लीद' और अपनी अन्य किताबों और फ़तवों में इसकी तहक़ीक़ (शोध) कर दी है। (त) |

फ़तहुल क़दीर शरह हिदाया में है:

| अरबी: इमाम मुहम्मद ने अबू हनीफ़ा और अबू यूसुफ़ (रज़ी अल्लाहु अन्हुम) से रिवायत की है कि बिदअतियों के पीछे नमाज़ जाइज़ नहीं है। 1 | उर्दू: इमाम मुहम्मद अलैहिर्रहमा ने इमाम अबू हनीफ़ा और इमाम अबू यूसुफ़ रहमतुल्लाहि अलैहिमा से रिवायत की है कि बद-मज़हब के पीछे नमाज़ जाइज़ नहीं है। (त) |

ज़ाहिर है कि ग़ैर-मुक़ल्लिद, देवबंदियों से भी बदतर हैं क्योंकि कुफ़्र और गुमराह अक़ीदों में दोनों एक हैं, और उनमें तक़लीद का इनकार और इमामों की बुराई करना अतिरिक्त है। यहाँ तक कि देवबंदियों के इमाम रशीद गंगोही ने खुद अपने फ़तवे, हिस्सा दोयम, सफ़ा 21 में ग़ैर-मुक़ल्लिदों के चौथे गिरोह नज़ीर हुसैन देहलवी के बारे में कहा है: "उन्हें मरदूद और अहले सुन्नत से बाहर कहना भी बहुत सख़्त है।" 2

अक़ीदों में सभी एक हैं, चाहे मुक़ल्लिद हों या ग़ैर-मुक़ल्लिद। और अगर मुफ़्ती से ग़ैर-मुक़ल्लिदों और देवबंदियों के बारे में सवाल होगा, तो वह देवबंदियों पर ज़्यादा सख़्त हुक्म देगा क्योंकि उनकी

मुख्य विशेषता और पहचान तक़लीद को छोड़ना और इमामों की बुराई करना है। देवबंदियों के सरगनाओं जैसे गंगोही, नानोतवी और थानवी के उन कथनों से इसकी क्या तुलना है, जो कहते हैं कि इबलीस को इल्मे-ग़ैब है, लेकिन अगर रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के लिए माना जाए, तो यह स्पष्ट शिर्क है।

व्याख्या: दोनों रेस के घोड़ों की तरह हैं जो एक-दूसरे से आगे निकलने की कोशिश करते हैं।

1. फ़तहुल क़दीर, किताबुस-सलात, बाबुल्-इमामा, मकतबा नूरिय्या रज़विय्या सुक्कुर, 1/304.
2. फ़तावा रशीदिया, मौलवी नज़ीर हुसैन अहले हदीस को बुरा कहने का हुक्म, मुहम्मद सईद एंड संज़, कुतुब फ़रोश, कराची, पृ. 185.

पेज 239 ऑफ़ 750

ہاں بالفرض اگر کوئی شخص ایسا ہو کہ وہابیت و وہابیہ سے جدا ہو وہابیہ کو گمراہ و بد دین، دیوبندیہ کو کفار مرتدین جانتا مانتا ہو صرف قیام و عرس میں کلام رکھتا ہو تو محض اس وجہ پر اسے سنیت و حنفیت سے خارج نہ کہا جائے گا مگر آج کل یہ فرض از قبیل فرض باطل ہے، آج وہ کون ہے کہ ان میں کلام کرے اور ہو سنی، اللھم مگر بہ تقیہ کہ وہابیہ میں روافض سے کچھ کم نہیں۔

(۲) دونوں میدانِ کفر میں کفر سی ع رہان ہیں، دونوں کے پیچھے نماز باطل محض جیسے مسیح چرن یا گنگا دین کے پیچھے ۔

| کما حققناہ فی النھی الاکید عن الصلوۃ وراء عدی التقلید و غیرہ من کتبنا و فتاؤنا۔ | جیسا کہ ہم نے اس کی تحقیق اپنے رسالہ النہی الاکید عن الصلوۃ وراء عدی التقلید اور دیگر کتب و فتاوٰی میں کر دی ہے۔ (ت) |

فتح القدیر شرح ہدایہ میں ہے:

| روی محمد عن ابی حنیفۃ و ابی یوسف رضی اللہ تعالی عنھم ان الصلوۃ خلف اھل اھواء لا یجوز۔ 1 | امام محمد علیہ الرحمہ نے امام ابوحنیفہ اور امام ابویوسف رحمۃ اللہ تعالٰی علیہما سے روایت فرمایا کہ بد مذہب کے پیچھے نماز جائز نہیں۔ (ت) |

بظاہر غیر مقلد دیوبندیہ سے بد تر ہیں کہ عقائد کفر و ضلال میں دونوں متحد اور ان میں انکارِ تقلید و بد گوئی ائمہ زائد خود امام الدیابنہ رشید گنگوہی کے فتاوی حصہ دوم صفحہ ۲۱ میں ۴ گروہ غیر

مقلد میں نذیر حسین دہلوی کی نسبت ہے۔ ان کو مردود اور خارج اہل سنت سے کہنا بھی سخت بے جا ہے 2۔

عقائد میں سب متحد مقلد اور غیر مقلد ہیں۔ اور مفتی سے اگر غیر مقلدین اور دیوبندیہ کے بارے میں سوال ہوگا تو دیوبندیوں پر حکم سخت تر دے گا کہ اس کا مطمعِ نظر و وصفِ عنوانی ہے ترکِ تقلید و بدگوئی ائمہ کو دیوبندیہ کے ان اقوال سے کیا نسبت ہے جو سر گروہانِ دیابنہ گنگوہی، نانوتوی و تھانوی کے ہیں کہ ابلیس کو علمِ غیب ہے اور رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم کے لیے مانے تو صریح مشرک۔

ع : دونوں ریس کے گھوڑوں کی مانند ہیں جو ایک دوسرے سے سبقت لے جانے کی کوشش کرتے ہیں۔

۱ فتح القدیر کتاب الصلوۃ باب الامامۃ مکتبہ نوریہ رضویہ سکھر ۱/ ۳۰۴ ۲ فتاویٰ رشیدیہ مولوی نذیر حسین اہلحدیث کو برا کہنے کا حکم محمد سعید اینڈ سنز تاجران کتب کراچی ص ۱۸۵

Fatawa Razawiyya Volume 29

(2) This expansion [of knowledge] for Satan has been proven by religious text (Nass). Which definitive text (Nass-e-Qat'i) exists regarding the expansion of knowledge of the Pride of the World (Prophet Muhammad), by which one would reject all texts and establish a form of polytheism (Shirk)? If this is not Shirk, then which part of faith is it?[1] (3) Satan is a partner with God in His specific attributes.[2] (4) Satan is superior to the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) in this great excellence. Not in the sense that there is less in His Eminence and more in Satan, but in the sense that this glorious grace is exclusively for Iblis (Satan). Anyone who believes this for His Eminence is a polytheist (Mushrik); rather, Satan himself becomes God because 'Knowledge of the Unseen' (Ilm-e-Ghaib) is established for him. If no one among the common folk is superior to Satan due to excellence, then at least establish 'Knowledge of the Unseen' for him equal to [Satan] according to your own assumption.[3] The author of 'Barahin' has, according to his own assumption, carved out this claim of the opponent: that excellence necessitates greater knowledge. On this basis, he says that based on your assumption of excellence, establish 'Knowledge of the Unseen' at least equal to Satan. The term 'Knowledge of the Unseen' (Ilm-e-Ghaib) was not in the opponent's discourse; however, what the opponent did prove, the author of 'Barahin' himself accepts as proven through religious texts and terms it 'Knowledge of the Unseen'. Indeed, according to the Wahhabis, it is 'Knowledge of the Unseen'; in fact, it is millions of times more than all types of 'Knowledge of the Unseen', for according to them, knowing the count of leaves on a single tree is 'Knowledge of the Unseen', and being aware of a marriage gathering is 'Knowledge of the Unseen'. 'Barahin-e-Qati'ah', page 49, labels one who believes in [having] knowledge of just a marriage ceremony as an infidel (Kafir).[4] Thus, knowledge encompassing the entire earth would be a collection of millions of types of 'Knowledge of the Unseen', which was accepted as proven for Satan, whereas establishing 'Knowledge of the Unseen' for anyone other than the Almighty is explicit polytheism (Shirk-e-Sarih).[5] (Fatawa Gangohi, Part 3, page 7). Therefore, for them, Satan must not be 'other than the Almighty', otherwise, by attributing 'Knowledge of the Unseen' to him, they would have fallen into explicit Shirk. He who believes in the possibility of Divine falsehood—i.e., explicitly states that Allah (God forbid) is a liar—then such a person should not be called an infidel (Kafir) or a misguided innovator (Bid'ati Dhaal). No harsh words should be used against him. In this, the excommunication (Takfir) of the scholars of the past (Salaf) becomes

necessary; he cannot taunt or label Hanafis and Shafi'is as misguided; such a person should be kept safe from the label of sinfulness (Tafseeq).[6] (Fatwa of Mr. Gangohi)

[1] Al-Barahin al-Qati'ah, Discussion on Knowledge of the Unseen, Bilasdhore Press, India, p. 51 [2] Al-Barahin al-Qati'ah, Discussion on Knowledge of the Unseen, Bilasdhore Press, India, pp. 51 & 52 [3] Al-Barahin al-Qati'ah, Discussion on Knowledge of the Unseen, Bilasdhore Press, India, p. 51 [4] Al-Barahin al-Qati'ah, Discussion on Knowledge of the Unseen, Bilasdhore Press, India, p. 51 [5] Fatawa Rashidiya, Knowledge of the Unseen is Shirk, Muhammad Saeed & Sons, Book Traders, Karachi, p. 65 [6]

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

(2) शैतान के लिए यह विस्तार (ज्ञान का) 'नस' (धर्मग्रंथ के स्पष्ट प्रमाण) से सिद्ध हुआ है। फ़ख़्रे आलम (पैगंबर मुहम्मद) के ज्ञान के विस्तार के लिए कौन सा 'नसे क़तई' (निश्चित प्रमाण) है जिसके द्वारा तमाम नसों को रद्द करके कोई शिर्क(साझेदारी) सिद्ध करता है? अगर यह शिर्क नहीं है, तो फिर ईमान का कौन सा हिस्सा है?[1] (3) शैतान खुदा के खास गुणों में उसका साझीदार है।[2] (4) शैतान इस महान फ़ज़ीलत (उत्कृष्टता) में अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से बढ़ा हुआ है। इस अर्थ में नहीं कि हुज़ूर में कम और उसमें ज़्यादा है, बल्कि इस अर्थ में कि यह महान कृपा (फ़ज़्ले جلیل) केवल इब्लीस (शैतान) के लिए ही है। हुज़ूर के लिए इसे मानने वाला मुशरिक (बहुदेववादी) है, बल्कि शैतान खुद खुदा है क्योंकि उसके लिए 'इल्मे गैब' (परोक्ष ज्ञान) सिद्ध है। अगर अवाम में अफ़ज़लियत के कारण कोई शैतान से ज़्यादा नहीं है, तो अपने गुमान के अनुसार उसके बराबर तो इल्मे गैब सिद्ध कर दे।[3] 'बराहीन' वाले ने अपने गुमान में विपक्षी का यह अनुमान गढ़ा है कि श्रेष्ठता ही अधिक ज्ञानी होने का कारण है। इसी आधार पर वह कहता है कि अपनी श्रेष्ठता के इस गुमान पर शैतान के बराबर तो इल्मे गैब सिद्ध कर लो। विपक्षी के कथन में 'इल्मे गैब' शब्द नहीं था, और जो विपक्षी ने सिद्ध किया उसे 'बराहीन' वाला खुद नसों से सिद्ध मानता है और उसी को इल्मे गैब कहता है। वास्तव में वह वहाबियों के नज़दीक इल्मे गैब है, बल्कि सब परोक्ष ज्ञानों से करोड़ों गुना अधिक है, क्योंकि उनके यहाँ एक पेड़ के पत्तों की गिनती जान लेना इल्मे गैब है, एक निकाह की महफ़िल से अवगत हो जाना इल्मे गैब है। 'बराहीन-ए-क़ातिआ' पेज 49 में केवल निकाह की महफ़िल के ज्ञान के विश्वास पर काफ़िर लिखा गया है।[4] तो पूरी ज़मीन को घेरने वाला ज्ञान तो लाखों-करोड़ों इल्मे गैब का संग्रह हुआ, जिसे शैतान के लिए सिद्ध माना गया, जबकि अल्लाह के अलावा किसी और के लिए इल्मे गैब सिद्ध करना स्पष्ट शिर्क(शिर्के सरीह) है।[5] (फ़तावा गंगोही, भाग 3, पेज 7)। तो निश्चित रूप से उनके यहाँ शैतान 'ग़ैर-हक़ तआला' (ईश्वर के अलावा) नहीं है, वरना उसके लिए इल्मे गैब मानकर वे स्पष्ट शिर्क में न पड़ते। जो 'वक़ूए-किज़्बे बारी' (ईश्वर के झूठ बोलने की संभावना) का कायल हो, यानी स्पष्ट रूप से कहे कि अल्लाह (अल्लाह माफ़ करे) झूठा है, तो उसे काफ़िर या गुमराह बिदअती नहीं कहना चाहिए, उसे कोई कठोर शब्द नहीं कहना चाहिए। इसमें पूर्वजों (सलफ़) के उलेमाओं की तक़फ़री (काफ़िर ठहराना) लाज़िम आती है; वह हनफ़ी और शाफ़ई पर दोषारोपण और गुमराह होने का आरोप नहीं लगा सकता, ऐसे व्यक्ति को फ़िस्क़ (पाप) की पदवी से सुरक्षित रखना चाहिए।[6] (गंगोही साहब का फ़तवा)

[1] अल-बराहीन अल-क़ातिआ, इल्मे गैब की चर्चा, बिलासधौर प्रेस, इंडिया, पेज 51 [2] अल-बराहीन अल-क़ातिआ, इल्मे गैब की चर्चा, बिलासधौर प्रेस, इंडिया, पेज 51 और 52 [3] अल-बराहीन अल-क़ातिआ, इल्मे गैब की चर्चा, बिलासधौर प्रेस, इंडिया, पेज 51 [4] अल-बराहीन अल-क़ातिआ, इल्मे गैब की चर्चा, बिलासधौर प्रेस, इंडिया, पेज 51 [5] फ़तावा रशीदिया, इल्मे गैब शिर्क है, मुहम्मद सईद एंड संस, कराची, पेज 65 [6]

(۲) شیطان کو یہ وسعتِ نص سے ثابت ہوئی فخرِ عالم کی وسعتِ علم کی کون سی نص قطعی ہے جس سے تمام نصوص کو رد کرکے ایک شرک ثابت کرتا ہے شرک نہیں تو کون سا ایمان کا حصہ ہے۔^1 (۳) شیطان خدا کی صفتِ خاصہ میں اس کا شریک ہے۔^2 (۴) شیطان اس عظیم فضلیت میں رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم سے زیادہ ہے نہ بایں معنی کہ حضور میں کم ہو اور اس میں زائد، بلکہ بایں معنی کہ یہ فضل جلیل ابلیس ہی کے لیے ہے حضور کے لیے ماننے والا مشرک بلکہ شیطان خود خدا ہے کہ اس کے لیے علم غیب ثابت ہے کوئی عوام میں بسبب افضلیت کے شیطان سے زیادہ نہیں تو اس کے برابر تو علم غیب بزعم خود ثابت کردے۔^3 براہین والے نے بزعم خود مخالف کا یہ زعم تراشا ہے کہ افضلیت موجب اعلمیت ہے اس بنا پر کہتا ہے کہ اپنے اس زعم پر بنائے افضلیت شیطان کے برابر تو علم غیب ثابت کرلے علم غیب کا لفظ کلام مخالف میں نہ تھا اور جو مخالف نے ثابت کیا اسے براہین والا خود نصوص سے ثابت مانتا ہے اور اسی کو علم غیب کہتا ہے اور واقعی وہ وہابیہ کے نزدیک علم غیب ہے بلکہ سب علوم غیب سے کروڑوں درجے زائد کہ ان کے یہاں ایک پیڑ کے پتوں کی گنتی جان لینا علم غیب ہے، ایک جلسہ نکاح پر مطلع ہوجانا علم غیب ہے براہین قاطعہ ص ۴۹ فقط مجلس نکاح کے اعتقاد علم میں کافر لکھا ہے۔^4 تو علم محیطِ زمین تو لاکھوں کروڑوں علم غیب کا مجموعہ ہوا جسے شیطان کے لیے ثابت مانا اور اثباتِ علمِ غیب غیرِ حق تعالیٰ کو شرک صریح ہے۔^5 (فتاوی گنگوہی حصہ تین ص ۷) تو ضرور شیطان ان کے یہاں غیر حق تعالیٰ نہیں ورنہ اس کے لیے علم غیب مان کر شرک صریح میں نہ پڑتے۔ جو وقوع کذب باری کا قائل ہو یعنی صراحتہ کہے کہ اللہ (معاذاللہ) جھوٹا ہے تو اس کو کافر یابدعتی ضال کہنا نہ چاہیے اس کو کوئی سخت کلمہ نہ کہنا چاہیے، اس میں تکفیر

علمائے سلف کی لازم آتی ہے حنفی شافعی پر طعن و تضلیل نہیں کرسکتا، ایسے کو تفسیق سے مامون کرنا چاہیے۔[6] (فتوی گنگوہی صاحب)

[1] البراہین القاطعہ بحث علم غیب مطبع لے بلاسڈھور انڈیا ص ۵۱ [2] البراہین القاطعہ بحث علم غیب مطبع لے بلاسڈھور انڈیا ص ۵۱ و ۵۲ [3] البراہین القاطعہ بحث علم غیب مطبع لے بلاسڈھور انڈیا ص ۵۱ [4] البراہین القاطعہ بحث علم غیب مطبع لے بلاسڈھور انڈیا ص ۵۱ [5] فتاوی رشیدیہ علم غیب شرک ہے محمد سعید اینڈ سنز تاجران کتب کراچی ص ۶۵ [6]

Vol 29 Fatawa Razawiyya

That Rasulullah (may Allah the Almighty grant him peace and blessings) is 'Khatam-un-Nabiyyin' in the sense of being the Last Prophet of time (as all Muslims from the time of Rasulullah (may Allah the Almighty grant him peace and blessings) himself until today have understood) is considered by [some] to be the thought of the ignorant and a lack of understanding. They claim this noble attribute is neither a perfection nor does it have any role in excellence, nor is it worthy of mention in praise. If these were the meanings of the verse, then there would be an illusion of verbosity on the part of God [1] and the wording of the Quran would be disjointed (Tahdhir al-Nas by Nanotwi Sahib, p. 2 & 3). Furthermore, even if, hypothetically, another prophet were to be born after the time of the Prophet (peace and blessings be upon him) [2], it would still not cause any difference in the Finality of Muhammad. [2] (Tahdhir al-Nas, p. 33). The understanding of the elders (scholars, Imams, companions, and the Master of the Universe (may Allah the Almighty grant him peace and blessings) himself) did not reach this level. An ignorant child (meaning Nanotwi Sahib) said something fitting. [3] (Tahdhir al-Nas, p. 44). Meaning that calling him 'Khatam-un-Nabiyyin' is mere false boasting, because chronological finality, which all companions, Imams, scholars, and Muslims (in their view) have understood through lack of understanding from the time of Rasulullah (may Allah the Almighty grant him peace and blessings) until today, and on page 11 of Tahdhir al-Nas it was said for the sake of affectation that the denier of it would also be an infidel. [4] That would obviously disappear in the case where another prophet is born after the time of the Prophet (peace and blessings be upon him) [2]. For he himself, by the admission of Tahdhir al-Nas p. 2, was the last prophet among all. [5] When another prophet is born after the Prophet, how will he remain the last among all? That is gone, and with its departure, Nanotwi Sahib's fabricated 'essential finality' is also finished, because chronological finality was necessary for it; Tahdhir p. 9 says chronological finality is necessary for finality in the sense of being presented. [6] When the necessary is gone, where is the entailed? In short, neither chronological finality remained nor essential, all vanished, and regarding Finality: "it will not cause any difference." "Thus does Allah seal over every heart [of] a proud tyrant [40:35]." [7] (Allah the Almighty thus seals the entire heart of the arrogant rebel (T)). This is that 'fitting' talk. Ah 1 & Ah 2: We say Sallallahu Alaihi Wa Aalihi Wa Sallam. 12 Minhu Ghafar Allah.

1 Tahdhir al-Nas, Kutub Khana Rahimiyya, Deoband, Saharanpur, p. 21 2 Tahdhir al-Nas, Kutub Khana Rahimiyya, Deoband, Saharanpur, p. 25 3 Tahdhir al-Nas, Kutub Khana Rahimiyya, Deoband, Saharanpur, p. 26 4 Tahdhir al-Nas, Kutub Khana Rahimiyya, Deoband, Saharanpur, p. 10 5 Tahdhir al-Nas, Kutub Khana Rahimiyya, Deoband, Saharanpur, p. 3 6 Tahdhir al-Nas, Kutub Khana Rahimiyya, Deoband, Saharanpur, p. 8 7 Al-Quran al-Karim 40/35

जिल्द २९ फ़तावा रज़विया

रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) का 'खातमुन नबिय्यीन' होना यानी आख़िरी ज़माने का नबी होना (जैसा कि खुद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) से लेकर आज तक तमाम मुसलमान समझ रहे हैं), जाहिलों का ख्याल और नासमझी है। यह नेक सिफ़त न तो कोई कमाल है, न ही इसका फज़ीलत में कोई दखल है और न ही यह मदह (प्रशंसा) में ज़िक्र करने के काबिल है। अगर आयत के ये मायने हों तो खुदा पर ज़रूरत से ज़्यादा बोलने का वहम होगा [1] और कुरान की इबारत बे-रब्त (असंगत) हो जाएगी (तहज़ीरुन नास, नानोतवी साहब, पृष्ठ 2 और 3)। बल्कि अगर फर्ज़ कर लें कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के ज़माने के बाद [2] भी कोई नबी पैदा हो जाए, तो भी मुहम्मदी ख़त्मियत में कोई फर्क नहीं आएगा। [2] (तहज़ीरुन नास, पृष्ठ 33)। बड़ों (उलेमा, इमामों, सहाबा और खुद सैयदुल आलम (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम)) की समझ यहाँ तक नहीं पहुँची। एक नादान बच्चे (यानी नानोतवी साहब) ने ठिकाने की बात कह दी। [3] (तहज़ीरुन नास, पृष्ठ 44)। यानी यह कि खातमुन नबिय्यीन कहना महज झूठी हवाबाज़ी है, क्योंकि ज़मानी ख़त्मियत (समय के अंत में होना) जिसे रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) से आज तक तमाम सहाबा, इमामों, उलेमा और मुसलमानों ने (उनके गुमान में) नासमझी से समझा हुआ था, और तहज़ीरुन नास के पृष्ठ 11 पर बनावट के तौर पर कहा गया था कि इसका मुनकिर (इनकार करने वाला) भी काफिर होगा। [4] वह तो इस सूरत में कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के ज़माने के बाद [2] भी कोई नबी पैदा हो जाए, ज़ाहिर तौर पर ख़त्म ही हो गई, क्योंकि वह तो खुद तहज़ीरुन नास पृष्ठ 2 के इकरार के मुताबिक यही था कि आप सब में आख़िरी नबी हैं। [5] जब हुज़ूर के बाद कोई और नबी पैदा हुआ तो वह सब में आख़िरी कब रहेंगे? यह तो चला ही गया और इसके जाते ही नानोतवी साहब की बनाई हुई 'खातमे ज़ाती' भी खत्म हो गई, क्योंकि इसके लिए ज़मानी ख़त्मियत लाज़मी थी; तहज़ीर पृष्ठ 9 के अनुसार नबूवत के मायने में ताखीर-ए-ज़मानी (समय की देरी) लाज़मी है। [6] जब लाज़िम चला गया तो मलूज़म कहाँ रहा? गरज यह कि न ज़मानी ख़त्मियत रही न ज़ाती, सब फना हो गया और ख़त्मियत के बारे में कहा गया कि "इसमें कुछ फर्क न आएगा।" "इसी तरह अल्लाह हर अहंकारी और सरकश के दिल पर मुहर लगा देता है (40:35)।" [7] (अल्लाह तआला अहंकारी विद्रोही के पूरे दिल पर ऐसे ही मुहर लगा देता है (त))। यह है वह 'ठिकाने की' बात। अह 1 और अह 2: हम कहते हैं सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिहि वसल्लम। 12 मिन्हु गफ़र लहु।

1 तहज़ीरुन नास, कुतुब खाना रहीमिया, देवबंद, सहारनपुर, पृष्ठ 21 2 तहज़ीरुन नास, कुतुब खाना रहीमिया, देवबंद, सहारनपुर, पृष्ठ 25 3 तहज़ीरुन नास, कुतुब खाना रहीमिया, देवबंद, सहारनपुर, पृष्ठ 26 4 तहज़ीरुन नास, कुतुब खाना रहीमिया, देवबंद, सहारनपुर, पृष्ठ 10 5 तहज़ीरुन नास, कुतुब खाना रहीमिया, देवबंद, सहारनपुर, पृष्ठ 3 6 तहज़ीरुन नास, कुतुब खाना रहीमिया, देवबंद, सहारनपुर, पृष्ठ 8 7 अल-कुरान अल-करीम 40/35

पृष्ठ 241 / 750

رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کا خاتم النبیین بمعنی نبی آخر الزماں ہونا (جیسے خود رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم سے آج تک سب مسلمان سمجھ رہے ہیں) جاہلوں کا خیال ہے نا فہمی ہے یہ وصف کریم نہ کوئی کمال ہے نہ اُسے فضیلت میں دخل نہ وہ مدح میں ذکر کرنے کے قابل آیت کے یہ معنی ہوں تو خدا پر زیادہ گوئی کا وہم ۱ قرآن کی عبارت بے ربط (تحذیر الناس نانوتوی صاحب ص ۲ و ۳) بلکہ اگر بالفرض بعد زمانہ نبوی صلعم ۲ بھی کوئی نبی پیدا ہو تو پھر بھی خاتمیت محمدی میں کچھ فرق نہ آئے گا۔ ۲ (تحذیر الناس ص ۳۳) بڑوں (علماء وائمہ و صحابہ خود حضور سید عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) کا فہم نہ پہنچا۔ طفل ناداں یعنی نانوتوی صاحب) نے ٹھکانے کی بات کہہ دی۔ ۳ (تحذیر الناس ص ۴۴) یعنی یہ کہ خاتم النبیین کہنا محض جھوٹی ہوا بندی ہے اس لیے کہ ختم زمانی جو رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم سے آج تک تمام صحابہ وائمہ و علماء و مسلمین (ان کے زعم میں) براہ نا فہمی سمجھے ہوئے تھے اور ص ۱۱ تحذیر الناس پر خود برائے تصنع کہا تھا کہ اس کا منکر بھی کافر ہو گا۔ ۴ وہ تو اس صورت میں کہ بعد زمانہ نبوی صلعم۔ ۲ بھی کوئی نبی پیدا ہو بداہتہً زائل ہو ہی گیا کہ وہ تو خود بہ اقرار تحذیر الناس ص ۲ یہی تھا کہ آپ سب میں آخری نبی ہیں۔ ۵ جب حضور کے بعد اور نبی پیدا ہوا تو سب میں آخری کب رہیں گے یہ تو گیا ہی اور اس کے جاتے ہی نانوتوی صاحب کا ساختہ ختم ذاتی بھی ختم شد کہ اسے ختم زمانی لازم تھا تحذیر ص ۹ ختم نبوت بمعنی معروض کو تاخیر زمانی لازم ہے۔ ۶ لازم گیا تو ملزوم کہاں غرض نہ ختم زمانی رہا نہ ذاتی، سب فنا اور خاتمیت بجا اس میں کچھ فرق نہ آئے گا" كَذٰلِكَ يَطْبَعُ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ قَلْبِ مُتَكَبِّرٍ جَبَّارٍ ۲۵ "۔ ۷ (اللہ تعالیٰ یونہی مہر کر دیتا ہے متکبر

سرکش کے سارے دل پر (ت) یہ ہے وہ ٹھکانے کی بات عہ ۱ و عہ ۲: ہم کہتے ہیں صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم ۱۲ منہ غفرلہ

۱ تحذیر الناس کتب خانہ رحیمیہ دیوبند سہارن پور ص ۲۱ ۲ تحذیر الناس کتب خانہ رحیمیہ دیوبند سہارن پور ص ۲۵ ۳ تحذیر الناس کتب خانہ رحیمیہ دیوبند سہارن پور ص ۲۶ ۴ تحذیر الناس کتب خانہ رحیمیہ دیوبند سہارن پور ص ۱۰ ۵ تحذیر الناس کتب خانہ رحیمیہ دیوبند سہارن پور ص ۳ ۶ تحذیر الناس کتب خانہ رحیمیہ دیوبند سہارن پور ص ۸ ۷ القرآن الکریم ۴۰ / ۳۵

Fatawa Rizvia, Volume 29

What even the Messenger of Allah, peace and blessings be upon him, had not understood until today, Nanotvi sahib has understood. If some unseen sciences (uloom-e-ghaybiyya) are meant, then what is special about the Prophet (i.e., the Holy Prophet, peace and blessings be upon him)? Such knowledge of the unseen is attained even by Zaid and Amr, rather every child and madman, rather even all animals and beasts. (Hifz al-Iman, Thanwi, p. 7). It is necessary to explain the reason for the difference between a prophet and a non-prophet. And if all the sciences of the unseen are meant in such a way that not a single individual of this whole is excluded, then its falsehood is proven by textual and rational evidence. (Hifz al-Iman, p. 8).

And hence, the noble scholars of the Harams (Makkah and Madinah) have issued this decree regarding the non-conformists:

| Arabic: هو من اهل البدعة والنار[3] | Urdu: He is an innovator destined for Hell.[4] |

And in the noble *Husam al-Haramain*, it is stated about the Deobandis as follows:

| Arabic: هؤلاء الطوائف كلهم كفار مرتدون خارجون عن الاسلام۔[5] | Urdu: All these groups are disbelievers and apostates, excluded from Islam by the consensus of the Ummah.[6] |

And the research is that Deobandis are the pioneers in creating these explicit, clear, and cursed infidelities, and in accepting them, they and the non-conformists (Ghair-Muqallid) are all equal and united. No Wahhabi will refrain from declaring the Deobandis as disbelievers for these cursed infidelities and severe, foul insults against Allah and His Messenger; rather, he will go along with them. And the noble scholars have already said about the Deobandis:

| Arabic: من شك فى كفره وعذابه فقد كفر[7] | Urdu: Whoever doubts their disbelief and punishment is himself a disbeliever.[8] |

So they all became equal in cursed infidelities, and to Allah and His Messenger, the Majestic and Exalted, peace and blessings be upon him, these...

---

1. Hifz al-Iman, Thanwi, Muhammad Usman Khan, Book Merchant, Proprietor of Ashrafiya Book Depot, Delhi, p. 8.
2. Hifz al-Iman, Thanwi, Muhammad Usman Khan, Book Merchant, Proprietor of Ashrafiya Book Depot, Delhi, p. 9.

3. Fatawa al-Haramain
4. Fatawa al-Haramain
5. Husam al-Haramain, Maktaba Nabawia, Lahore, p. 31.
6. Husam al-Haramain, Maktaba Nabawia, Lahore, p. 32.
7. Husam al-Haramain, Maktaba Nabawia, Lahore, p. 13.
8. Husam al-Haramain, Maktaba Nabawia, Lahore, p. 14.

फ़तावा रज़विया, खंड 29

जो आज तक अल्लाह के रसूल, सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी नहीं समझा था, उसे नानौतवी साहब ने समझ लिया। अगर कुछ ग़ैब के उलूम मुराद हैं, तो इसमें हुज़ूर (यानी नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की क्या विशेषता है? ऐसा ग़ैब का इल्म तो ज़ैद और अम्र बल्कि हर बच्चे और पागल, बल्कि तमाम जानवरों और चौपायों को भी हासिल है। (हिफ़्ज़-उल-ईमान, थानवी, पृ. 7)। नबी और ग़ैर-नबी के बीच फ़र्क़ की वजह बयान करना ज़रूरी है। और अगर तमाम उलूम-ए-ग़ैब इस तरह मुराद हैं कि इस कुल्ली का एक भी फ़र्द ख़ारिज न रहे, तो इसका बातिल होना नक़्ली और अक़्ली दलील से साबित है। (हिफ़्ज़-उल-ईमान, पृ. 8)।

और इसलिए हरमैन शरीफ़ैन के महान विद्वानों ने ग़ैर-मुक़ल्लिद पर यह हुक्म दिया:

| अरबी: هو من اهل البدعة والنار[3] | उर्दू: वह बिदअती जहन्नमी है।[4] |

और हुसाम-उल-हरमैन शरीफ़ में देवबंदियों के बारे में इस प्रकार फ़रमाया गया है:

| अरबी: هؤلاء الطوائف كلهم كفار مرتدون خارجون عن الاسلام۔[5] | उर्दू: ये तमाम गिरोह काफ़िर और मुर्तद हैं, उम्मत के इज्मा' (सहमति) से इस्लाम से बाहर हैं।[6] |

और हक़ीक़त यह है कि इन स्पष्ट और लानती कुफ़्रों को ईजाद करने में देवबंदी पेश-पेश हैं, और उन्हें मानने में वे और ग़ैर-मुक़ल्लिद सब बराबर हैं। कोई भी वहाबी इन लानती कुफ़्रों और अल्लाह और रसूल की शान में की गई गंदी गालियों पर देवबंदियों की तक़फ़ीर (काफ़िर कहना) करने से नहीं रुकेगा बल्कि उनका साथ ही देगा। और उलमा-ए-किराम देवबंदियों के बारे में फ़रमा चुके हैं:

| अरबी: من شك فی کفرہ وعذابہ فقد کفر[7] | उर्दू: जो उनके कुफ़्र और अज़ाब में शक करे, वह ख़ुद काफ़िर है।[8] |

तो ये सब लानती कुफ़्रों में बराबर हो गए और अल्लाह और रसूल (जल्ल जला-लहू व सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को इन...

---

1. हिफ़्ज़-उल-ईमान, थानवी, मुहम्मद उस्मान ख़ां, किताब विक्रेता, मालिक कुतुबख़ाना अशरफ़िया दिल्ली, पृ. 8।

2. हिफ़्ज़-उल-ईमान, थानवी, मुहम्मद उस्मान ख़ां, किताब विक्रेता, मालिक कुतुबख़ाना अशरफ़िया दिल्ली, पृ. 9।
3. फ़तावा-अल-हरमैन
4. फ़तावा-अल-हरमैन
5. हुसाम-उल-हरमैन, मक्तबा नबविया लाहौर, पृ. 31।
6. हुसाम-उल-हरमैन, मक्तबा नबविया लाहौर, पृ. 32।
7. हुसाम-उल-हरमैन, मक्तबा नबविया लाहौर, पृ. 13।
8. हुसाम-उल-हरमैन, मक्तबा नबविया लाहौर, पृ. 14।

جو آج تک رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم بھی نہ سمجھے تھے نانوتوی صاحب نے سمجھی بعض علوم غیبیہ مراد ہیں تو اس میں حضور، (یعنی نبی کریم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم) کی کیا تخصیص ہے ایسا علم غیب تو زید و عمرو بلکہ ہر صبی و مجنون بلکہ جمیع حیوانات و بہائم کے لیے بھی حاصل ہے۔ حفظ الایمان تھانوی ص ۷ نبی اور غیر نبی میں وجہ فرق بیان کرنا ضرور ہے اور اگر تمام علوم غیب مراد ہیں اس طرح کہ اس کلی کا ایک فرد بھی خارج نہ رہے تو اس کا بطلان دلیل نقلی و عقلی سے ثابت۔ حفظ الایمان ص ۸۔

ولہذا علمائے کرام حرمین شریفین نے فتاوٰی الحرمین میں غیر مقلد پر یہ حکم فرمایا:

| هو من اهل البدعة والنار[3] | وہ بدعتی جہنمی ہے۔[4] |

اور حسام الحرمین شریف میں دیوبندیوں کی نسبت یوں ارشاد فرمایا:

| هؤلاء الطوائف كلهم كفار مرتدون خارجون عن الاسلام۔[5] | یہ طائفہ سب کے سب کافر مرتد ہیں باجماع امت اسلام سے خارج ہیں۔[6] |

اور تحقیق یہ ہے کہ ان صریح جلی ملعون کفروں کے ایجاد میں دیوبندی پیش قدم ہیں اور ان کے تسلیم میں وہ اور غیر مقلد سب یکساں و ہدم ہیں کوئی وہابی ان لعین کفروں اور اللہ و رسول کو شدید غلیظ گالیوں پر دیوبندیوں کی تکفیر نہ کرے گا بلکہ اپنی چلتی ساتھ ہی دے گا اور علمائے کرام دیوبندیوں کو فرما چکے۔

| من شك فی كفره وعذابه فقد كفر[7] | جو ان کے کفر وعذاب میں شک کرے خود کافر ہے۔[8] |

تو ملعون کفروں میں سب برابر ہوئے اور اللہ ورسول جل وعلا وصلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کو ان

---

1. حفظ الایمان تھانوی محمد عثمان خاں تاجر کتب مالک کتب خانہ اشرفیہ دہلی ص ۸
2. حفظ الایمان تھانوی محمد عثمان خاں تاجر کتب مالک کتب خانہ اشرفیہ دہلی ص ۹
3. فتاوٰی الحرمین
4. فتاوٰی الحرمین
5. حسام الحرمین مکتبہ نبویہ لاہور ص ۳۱
6. حسام الحرمین مکتبہ نبویہ لاہور ص ۳۲
7. حسام الحرمین مکتبہ نبویہ لاہور ص ۱۳
8. حسام الحرمین مکتبہ نبویہ لاہور ص ۱۴

Fatawa Rizvia, Volume 29

After such filthy insults, what consideration can there be for them calling the Imams bad and Taqlid (imitation) impermissible? Compared to these great cursed infidels, what are they worth mentioning? Therefore, both groups are equal in infidelity and are more than true brothers like yellow dogs, jackals, black dogs, and pigs.

(3) All these issues are Wahhabism, and we have made it clear that Wahhabis are not Muslims, even if the issues themselves are not infidelity in their essence, except for the denial of the knowledge of the unseen (Ilm-ul-Ghaib). If it's not just the word but the meaning that is denied, and that too absolutely, that the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) was not informed of the unseen at all, then this denial is in itself infidelity. Besides Quranic verses and definitive texts, it is a denial of the very prophethood of the Prophet. Imam Qastallani says in Mawahib-ul-Ladunniyah Sharif:

"Prophethood is the access to the unseen." [1] | That is, the very meaning of prophethood is to be informed of the unseen.

(4) These four individuals are the four elements of Deobandism, the leaders of infidelity, "surely they have no faith." (These are those who have no faith. - Trans.) In one stroke of a pen, let alone a small detail, you have heard the fatwa of the scholars of the Two Holy Harams regarding the Deobandis, that they are all kafirs (infidels) and apostates by the consensus of the Ummah. Anyone who doubts their infidelity is also a kafir. Those elders have also issued a decree of infidelity specifically naming them in the testimonials of "Husam-ul-Haramain Sharif" on the aforementioned three individuals. Page 42:

"Indeed, Ghulam Ahmad Qadiani and Rashid Ahmad and those who followed them like Khalil Ahmad Ambethvi and Ashraf Ali and others, there is no doubt in their infidelity without any scope [for doubt], rather there is no doubt [regarding the infidelity] of the one who doubts, or rather even pauses in any state or condition to call them kafir." [2] | Ghulam Ahmad Qadiani and Rashid Ahmad and those who follow them like Khalil Ahmad Ambethvi and Ashraf Ali etc., there is no doubt in their infidelity, no room for doubt, rather one who doubts their infidelity or pauses in any way or condition in calling them kafirs, there is no doubt in his infidelity. [3]

Page 58:

Ghulam Ahmad Qadiani and | Ghulam Ahmad Qadiani and Rashid Ahmad and

[1] Al-Mawahib-ul-Ladunniyah, Second Objective, First Chapter, Al-Maktab al-Islami Beirut, 2/74 [2] Husam al-Haramain, Maktaba Nabwiya Lahore, p. 49 [3] Husam al-Haramain, Maktaba Nabwiya Lahore, p. 50

फ़तावा रज़विया, खंड 29

ऐसी घृणित गालियों के बाद इस बात पर क्या विचार करना कि उन्होंने इमामों को भी बुरा कहा और तक़लीद (अनुकरण) को नाजायज़ बताया। इन महान शापित काफिरों के सामने इनका क्या ज़िक्र? इसलिए दोनों समूह कुफ़्र (अधर्म) में बराबर हैं और पीले कुत्ते, सियार, काले कुत्ते और सुअर से भी बढ़कर आपस में सगे भाई हैं।

(3) ये सभी मुद्दे वहाबियत हैं और हम स्पष्ट कर चुके हैं कि वहाबी मुसलमान नहीं हैं, भले ही मुद्दे अपने आप में कुफ़्र न हों, सिवाय 'इल्म-ए-ग़ैब' (परोक्ष ज्ञान) के इनकार के। यदि केवल शब्द ही नहीं बल्कि अर्थ का भी खंडन किया जाए, और वह भी पूरी तरह से, कि रसूल अल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को परोक्ष की बिल्कुल सूचना नहीं दी गई, तो यह इनकार अपने आप में कुफ़्र है। कुरान की आयतों और स्पष्ट प्रमाणों के अलावा, यह स्वयं हुज़ूर की नुबुव्वत (पैगंबरी) का इनकार है। इमाम क़स्तलानी 'मवाहिब-उल-लदुन्निया शरीफ' में फरमाते हैं:

"नुबुव्वत ही ग़ैब पर सूचित होना है" [1] | अर्थात, नुबुव्वत का अर्थ ही यह है कि ग़ैब (परोक्ष) पर सूचित होना।

(4) ये चारों व्यक्ति देवबंदियत के चार तत्व हैं, कुफ़्र के सरदार, "उनके पास कोई ईमान नहीं है।" (ये वो हैं जिनके पास ईमान नहीं है। - अनुवाद) एक ज़रा सी चूक में ही नहीं, बल्कि विस्तार से, देवबंदियों के संबंध में हरमैन शरीफैन के विद्वानों का फतवा सुन चुके हैं कि उम्मत की सर्वसम्मति से ये सब काफिर और धर्मत्यागी हैं। जो उनके काफिर होने में संदेह करे, वह भी काफिर है। उन बुजुर्गों ने 'हुसाम-उल-हरमैन शरीफ' के प्रशंसापत्रों में जगह-जगह नाम लेकर उक्त तीनों पर कुफ़्र का आदेश दिया है। पृष्ठ 42:

"निश्चित रूप से गुलाम अहमद कादियानी और रशीद अहमद और जो उनके अनुयायी हों जैसे खलील अहमद अंबेतवी और अशरफ अली आदि, उनके काफिर होने में बिना किसी गुंजाइश के कोई संदेह नहीं है, बल्कि उनके[काफिर होने में] संदेह करने वाले, या किसी भी स्थिति या हालत में उन्हें काफिर कहने में रुकने वाले के कुफ़्र में भी कोई संदेह नहीं है।" [2] | गुलाम अहमद कादियानी और रशीद अहमद और जो उनके अनुयायी हों जैसे खलील अहमद अंबेतवी और अशरफ अली आदि, उनके कुफ़्र में कोई संदेह नहीं है, न ही संदेह की गुंजाइश है, बल्कि जो उनके कुफ़्र में संदेह

करे या किसी भी तरह से किसी भी हाल में उन्हें काफिर कहने में हिचकिचाए, उसके कुफ़्र में कोई संदेह नहीं है। [3]

पृष्ठ 58:

गुलाम अहमद कादियानी और | गुलाम अहमद कादियानी और रशीद अहमद और

---

[1] अल-मवाहिब-उल-लदुन्निया, दूसरा उद्देश्य, पहला अध्याय, अल-मकतबा अल-इस्लामी बेरूत 2/74 [2] हुसाम अल-हरमैन, मकतबा नबविया लाहौर, पृष्ठ 49 [3] हुसाम अल-हरमैन, मकतबा नबविया लाहौर, पृष्ठ 50

पृष्ठ 243 / 750

سخت گندی دشناموں کے بعد اس پر کیا نظر کہ انہوں نے ائمہ کو بھی بُرا اور تقلید کو ناجائز کہا ان عظیم ملعون کافروں کے آگے یہ کیا قابلِ ذکر ہے لہٰذا دونوں گروہ کفر میں برابر اور سگِ زرد و شغال و سگِ سیاہ و خوک سے زیادہ باہم حقیقی برادر ہیں۔

(۳) یہ سب مسائل وہابیت ہیں اور ہم واضح کر چکے کہ وہابیہ مسلمان نہیں اگرچہ نفسِ مسائل فی نفسہما کفر نہ ہوں سوائے انکارِ علمِ غیب کہ اگر نہ صرف لفظ بلکہ معنی کا انکار ہو اور علی الاطلاق ہو کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کو اصلاً غیب پر اطلاع نہ دی گئی تو یہ انکار بذاتِ خود کفر ہے کہ آیاتِ قرآنیہ و نصوصِ قاطعہ کے علاوہ خود نفسِ نبوتِ حضور کا انکار کیا ہے، امام قسطلانی مواہب اللدنیہ شریف میں فرماتے ہیں:

النبوۃ ھی الاطلاع علی الغیب 1 | یعنی نبوت کے معنی ہی یہ ہیں کہ غیب پر مطلع ہونا۔

(۴) یہ چاروں حضرات عناصرِ اربعہ دیوبندیت ائمۃ الکفر انھم لا ایمان لھم (یہ وہ ہیں جن کے پاس ایمان نہیں۔ت) یکمر ہمزہ میں چہ جائے فتحہ، جوابِ دوم میں دیوبندیوں کی نسبت علمائے حرمین طیبین کا فتویٰ سُن چکے کہ یہ سب بہ اجماعِ امت کافر مرتد ہیں جو ان کے کافر ہونے میں شک کرے وہ بھی کافر، اور انہیں اکابر نے تقریظاتِ حسام الحرمین شریف میں جابجا نام بنام بھی ثالثہ سابقہ پر حکمِ کفر فرمائے۔ صفحہ ۴۲:

ان غلام احمد القادیانی و رشید احمد و من تبعہ کخلیل الانبیٹھی واشرفعلی وغیرھم لا شبھۃ فی کفرھم بلا مجال بل لا شبھۃ فی من شك بل فیمن توقف فی کفرھم بحال من الاحوال۔ 2 | غلام احمد قادیانی اور رشید احمد اور جو اس کے پیرو ہوں جیسے خلیل احمد انبیٹھوی اور اشرف علی وغیرہ ان کے

کفر میں کوئی شبہ نہیں، نہ شک کی مجال، بلکہ جو ان کے کفر میں شک کرے بلکہ کسی طرح کسی حال میں انہیں کافر کہنے میں توقف کرے اس کے کفر میں شبہ نہیں۔ 3

ص ۵۸:

غلام احمد القادیانی و | غلام احمد قادیانی و رشید احمد و

---

1 المواہب اللدنیۃ المقصد الثانی الفصل الاول المکتب الاسلامی بیروت ۲/ ۷۴ 2 حسام الحرمین مکتبہ نبویہ لاہور ص ۴۹ 3 حسام الحرمین مکتبہ نبویہ لاہور ص ۵۰

- Rashid Ahmad, Khalil Ahmad, and Ashraf Ali are among those who are in clear disbelief.[1] | Khalil Ahmad and Ashraf Ali are open disbelievers.[2]

Page: 60: - Rashid Ahmad, Ashraf Ali, and Khalil Ahmad are among those with clear disbelief.[3] | Rashid Ahmad, Ashraf Ali, and Khalil Ahmad are people of clear disbelief.[4]

Page 68 & 70: - I have looked into the words of the misguided and found them to be grounds for their apostasy, and they—may Allah Almighty disgrace them—are Rashid Ahmad, Ashraf Ali, and Khalil Ahmad, among those with clear disbelief.[5] | When I became aware of the statements of this misguided group, I found that their statements are reasons for their becoming apostates, and they (may Allah disgrace them) are Rashid Ahmad, Ashraf Ali, and Khalil Ahmad, who are in open disbelief.[6]

Page 100: - The apostate sect called Wahhabiyya, among them is the apostate who demeans the glory of Divinity and Messengership: Qasim Nanotwi, Rashid Ahmad Gangohi, Khalil Ahmad Ambethwi, and Ashraf Ali Thanwi.[7] | The group outside the fold of religion, which is called Wahhabiyah; among them is the one who left the religion, the diminisher of the status of Divinity and Messengership: Qasim Nanotwi, Rashid Ahmad Gangohi, Khalil Ahmad Ambethwi, and Ashraf Ali Thanwi.[8]

Footnotes: 1. Husam al-Haramayn, Maktaba Nabawia Lahore, p. 65 2. Husam al-Haramayn, Maktaba Nabawia Lahore, p. 66 3. Husam al-Haramayn, Maktaba Nabawia Lahore, p. 67 4. Husam al-Haramayn, Maktaba Nabawia Lahore, p. 68 5. Husam al-Haramayn, Maktaba Nabawia Lahore, pp. 75 & 77 6. Husam al-Haramayn, Maktaba Nabawia Lahore, pp. 76 & 87 7. Husam al-Haramayn, Maktaba Nabawia Lahore, p. 107 8. Husam al-Haramayn, Maktaba Nabawia Lahore, p. 108

फ़तावा रज़विया | जिल्द 29

- रशीद अहमद, ख़लील अहमद और अशरफ़ अली स्पष्ट कुफ्र वालों में से हैं।[1] | ख़लील अहमद और अशरफ़ अली खुले काफ़िर हैं।[2]

पृष्ठ: 60: - रशीद अहमद, अशरफ़ अली और ख़लील अहमद स्पष्ट कुफ्र वालों में से हैं।[3] | रशीद अहमद, अशरफ़ अली और ख़लील अहमद खुले कुफ्र वाले हैं।[4]

पृष्ठ 68 और 70: - मैंने गुमराह लोगों की बातों पर गौर किया और उन्हें उनके धर्मत्याग का कारण पाया, और वे - अल्लाह उन्हें अपमानित करे - रशीद अहमद, अशरफ़ अली और ख़लील अहमद हैं, जो स्पष्ट कुफ्र वालों में से हैं।[5] | मैं इन गुमराह गिरोह के अक़वाल (बातों) पर मत्तला हुआ तो मैंने पाया कि उनके अक़वाल उनके मुर्तद हो जाने के मूजिब (कारण) हैं, और वो (उन्हें अल्लाह रुस्वा करे) रशीद अहमद और अशरफ़ अली और ख़लील अहमद हैं जो खुले कुफ्र वाले हैं।[6]

पृष्ठ 100: - पथभ्रष्ट संप्रदाय जिसे वहाबिया कहा जाता है, उनमें से वह पथभ्रष्ट है जो दिव्यता और ईश्वरीय दूतत्व की महिमा को कम करता है: कासिम नानौतवी, रशीद अहमद गंगोही, ख़लील अहमद अंभेठवी और अशरफ़ अली थानवी।[7] | गिरोह ख़ारिज अज़ दीन जिसे वहाबिया कहा जाता है उनमें से है दीन से निकलने वाला, शान-ए-उलूहियत व रिसालत का घटाने वाला क़ासिम नानौतवी, रशीद अहमद गंगोही, ख़लील अहमद अनबैठी, अशरफ़ अली थानवी।[8]

फुटनोट्स: 1. हुसामुल हरमैन, मकतबा नबविया लाहौर, पृ. 65 2. हुसामुल हरमैन, मकतबा नबविया लाहौर, पृ. 66 3. हुसामुल हरमैन, मकतबा नबविया लाहौर, पृ. 67 4. हुसामुल हरमैन, मकतबा नबविया लाहौर, पृ. 68 5. हुसामुल हरमैन, मकतबा नबविया लाहौर, पृ. 75 और 77 6. हुसामुल हरमैन, मकतबा नबविया लाहौर, पृ. 76 और 87 7. हुसामुल हरमैन, मकतबा नबविया लाहौर, पृ. 107 8. हुसामुल हरमैन, मकतबा नबविया लाहौर, पृ. 108

आई.टी. मजलिस-ए-दावत-ए-इस्लामी पृष्ठ 244 / 750

رشید احمد و خلیل احمد و اشرف علی من اھل الکفر الجلی۔[1] | خلیل احمد و اشرف علی کھلے کافر ہیں۔[2]

ص : ۶۰: رشید احمد و اشرف علی و خلیل احمد من ذوی الکفر الجلی۔[3] | رشید احمد و اشرف علی و خلیل احمد کھلے کفر والے ہیں۔[4]

ص ۶۸ و ۷۰: اطلعت علی کلام المضلین فوجدتہ موجبا لردتھم و ھم اخزاھم اللہ تعالیٰ رشید احمد و اشرف علی و خلیل احمد من ذوی الکفر الجلی۔[5] | میں ان گمراہ گروہ کے اقوال پر مطلع ہوا تو میں نے پایا کہ ان کے اقوال ان کے مرتد ہو جانے کے موجب ہیں، اور وہ (انہیں اللہ رسوا کرے) رشید احمد و اشرف علی و خلیل احمد ہیں جو کھلے کفر والے ہیں۔[6]

ص ۱۰۰: الفرقۃ المارقۃ التی تدعی بالوھابیۃ منھم المارق المنقص لشان الالوھیۃ والرسالۃ قاسم النانوتوی و رشید احمد گنگوھی و خلیل احمد انبیٹھی واشرف علی تھانوی۔[7] | گروہ خارج از دین جسے وہابیہ کہا جاتا ہے ان میں سے ہے دین سے نکلنے والا شان الوہیت و رسالت کا گھٹانے والا قاسم نانوتوی رشید احمد گنگوہی، خلیل احمد انبیٹھی، اشرف علی تھانوی۔[8]

حواشی: 1. حسام الحرمین مکتبہ نبویہ لاہور ص ۶۵ 2. حسام الحرمین مکتبہ نبویہ لاہور ص ۶۶ 3. حسام الحرمین مکتبہ نبویہ لاہور ص ۶۷ 4. حسام الحرمین مکتبہ نبویہ لاہور ص ۶۸ 5. حسام الحرمین مکتبہ نبویہ لاہور ص ۷۵ و ۷۷ 6. حسام الحرمین مکتبہ نبویہ لاہور ص ۷۶ و ۸۷ 7. حسام الحرمین مکتبہ نبویہ لاہور ص ۱۰۷ 8. حسام الحرمین مکتبہ نبویہ لاہور ص ۱۰۸

Fatawa Razawiyya, Vol. 29

Page 128 & Page 130:

[Arabic Text]: The Qasmiya's statement is explicit in allowing a new prophethood for someone after him (the Prophet). There is no doubt that whoever allows this is a disbeliever (kafir) by the consensus of Muslims. Upon them, and upon those who are pleased with their statement, unless they repent, is the wrath of Allah and His curse until the Day of Judgment. [1]

[Urdu Text]: It is clearly evident from Qasim Nanotwi's statement that these people consider it permissible for someone to receive a new prophethood after the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him). There is no doubt that whoever considers this permissible is a disbeliever by the consensus of the scholars of the Ummah. Upon these people, and upon those who agree with this statement of theirs, is the wrath of Allah and the curse of Allah until the Day of Judgment if they do not repent. [2]

Page 132 & Page 134:

[Arabic Text]: The statement of Rashid Ahmad al-Gangohi in *Al-Barahin al-Qati'ah* is blasphemy (kufr) and a clear insult to the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him). The Imams of the four schools of thought have explicitly stated that whoever insults the Messenger of Allah is a disbeliever. [3]

[Urdu Text]: What Rashid Ahmad Gangohi wrote in *Al-Barahin al-Qati'ah* is blasphemy and is a clear disparagement of the Holy Prophet's (peace and blessings of Allah be upon him) dignity. The Imams of the four schools of thought have provided clarifications that the one who disparages the holy dignity is a disbeliever. [4]

Page 136:

[Arabic Text]: The statement of Ashraf Ali Thanwi is explicit blasphemy by consensus, and even more insulting to the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) than the statement of Rashid Ahmad. Therefore, it is blasphemy to a greater degree, inviting the wrath of Allah.

[Urdu Text]: What Ashraf Ali Thanwi said is open blasphemy by consensus. It contains even more disparagement of the dignity of the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) than Rashid Ahmad's statement. Thus, it will be

blasphemy to an even greater degree and [a cause of] the wrath and curse of Allah Almighty until the Day of Judgment.

---

[1] *Husam al-Haramayn*, Maktaba Nabawiya, Lahore, pp. 135 & 137 [2] *Husam al-Haramayn*, Maktaba Nabawiya, Lahore, pp. 136 & 138 [3] *Husam al-Haramayn*, Maktaba Nabawiya, Lahore, pp. 139 & 141 [4] *Husam al-Haramayn*, Maktaba Nabawiya, Lahore, pp. 140 & 142

फ़तावा रज़विया, जिल्द 29

पृष्ठ 128 और पृष्ठ 130:

[अरबी पाठ]: कासिमिया का कथन स्पष्ट रूप से उनके(पैगंबर) बाद किसी के लिए नई नबूवत (पैगंबरी) की अनुमति देता है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि जो कोई भी इसकी अनुमति देता है, वह मुसलमानों की सर्वसम्मति (इज्मा) से काफिर है। उन पर, और जो लोग उनके इस बयान से खुश हैं, जब तक कि वे तौबा न करें, कयामत के दिन तक अल्लाह का प्रकोप और उसकी लानत है। [1]

[उर्दू पाठ]: कासिम नानौतवी के कथन से यह स्पष्ट है कि ये लोग नबी करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के बाद किसी को नई नबूवत मिलना जायज़ मान रहे हैं। इसमें कोई संदेह नहीं है कि जो इसे जायज़ मानता है, वह उम्मत के विद्वानों की सर्वसम्मति से काफिर है। उन लोगों पर और जो उनकी इस बात से सहमत हैं, उन पर कयामत तक अल्लाह का प्रकोप और अल्लाह की लानत हो, यदि वे तौबा न करें। [2]

पृष्ठ 132 और 134:

[अरबी पाठ]: 'अल-बराहिन अल-क़ातिआ' में रशीद अहमद अल-गंगोही का बयान कुफ्र (ईश-निंदा) है और अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का स्पष्ट अपमान है। चारों मज़हबों के इमामों ने स्पष्ट रूप से कहा है कि जो कोई अल्लाह के रसूल का अपमान करता है वह काफिर है। [3]

[उर्दू पाठ]: रशीद अहमद गंगोही ने 'बराहिन-ए-क़ातिआ' में जो लिखा है वह कुफ्र है और साफ़-साफ़ हुज़ूर अक़दस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की शान घटाना है। चारों मज़हब के इमामों ने स्पष्ट रूप से फरमाया है कि शान-ए-अकदस घटाने वाला काफिर है। [4]

पृष्ठ 136:

[अरबी पाठ]: अशरफ अली थानवी का बयान सर्वसम्मति से स्पष्ट कुफ्र है, और रशीद अहमद के बयान से भी अधिक अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का अपमान करने वाला है। इसलिए, यह और भी बड़े स्तर पर कुफ्र है, जो अल्लाह के प्रकोप को आमंत्रित करता है।

[उर्दू पाठ]: अशरफ अली थानवी ने जो कहा वह सर्वसम्मति से खुला कुफ्र है। इसमें रशीद अहमद के कथन से भी अधिक रसूल अल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की शान में कमी की गई है। अतः

यह बदरजा-ए-औला (और भी बड़े स्तर पर) कुफ्र होगा और कयामत तक अल्लाह तआला के गज़ब और लानत का [कारण बनेगा]।

---

[1] हुसाम अल-हरमैन, मकतबा नबविया, लाहौर, पृष्ठ 135 और 137 [2] हुसाम अल-हरमैन, मकतबा नबविया, लाहौर, पृष्ठ 136 और 138 [3] हुसाम अल-हरमैन, मकतबा नबविया, लाहौर, पृष्ठ 139 और 141 [4] हुसाम अल-हरमैन, मकतबा नबविया, लाहौर, पृष्ठ 140 और 142

فتاویٰ رضویہ جلد ۲۹

ص ۱۲۸ و ص ۱۳۰:

والقاسمية قولهم صريح فی تجويز نبوة جديدة لاحد بعده ولا شك ان من جوزذلك فهو كافر باجماع المسلمين وعليهم وعلى من رضى بمقالتهم تلك ان لم يتوبوا غضب الله ولعنته الى يوم الدين ۔ 1

قاسم نانوتوی کے قول سے صاف ظاہر ہے کہ یہ لوگ نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے بعد کسی کو نبوت جدیدہ ملنی جائز مان رہے ہیں اور کچھ شک نہیں کہ جو اسے جائز مانے وہ باجماع علمائے اُمّت کافر ہے ان لوگوں پر اور جو ان کی اس بات پر راضی ہو اس پر اللہ کا غضب اور اللہ کی لعنت ہے قیامت تک اگر تائب نہ ہوں۔ 2

ص ۱۳۲ و ۱۳۴:

قول رشيد احمد الگنگوهی فی البراهين القاطعة كفر واستخفاف صريح برسول الله صلى الله تعالیٰ عليه وسلم وقد نص ائمة المذاهب الاربعة ان من استخف برسول الله كافر۔ 3

وہ جو رشید احمد گنگوہی نے براہین قاطعہ میں لکھا کفر ہے اور صاف صاف حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی شان گھٹانا ہے چاروں مذہب کے اماموں نے تصریحات فرمائی ہیں کہ شان اقدس گھٹانے والا کافر ہے۔ 4

ص ۱۳۶:

قول اشرفعلی تهانوی كفر صريح بالاجمتاع اشد استخفافاً برسول الله صلى الله تعالیٰ عليه وسلم من مقالة رشيد احمد فيكون كفراً بطريق الاولیٰ موجبا لغضب الله

وہ جو اشرف علی تھانوی نے کہا وہ کھلا ہوا کفر ہے بالاتفاق اس میں رشید احمد کے قول سے بھی زیادہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی تنقیص شان ہے تو بدرجہ اولیٰ کفر ہوگا اور قیامت تک اللہ تعالیٰ کے غضب و لعنت کا

---

1. حسام الحرمین مکتبہ نبویہ لاہور ص ۱۳۵ و ۱۳۷
2. حسام الحرمین مکتبہ نبویہ لاہور ص ۱۳۶ و ۱۳۸
3. حسام الحرمین مکتبہ نبویہ لاہور ص ۱۳۹ و ۱۴۱
4. حسام الحرمین مکتبہ نبویہ لاہور ص ۱۴۰ و ۱۴۲

Page 245 of 750

Fatawa Razawiyya Volume 29

[May] the curse be upon him until the Day of Judgment -1 Causal factor -2 As for the fourth Deobandi person, he follows the first three, but is ahead in worshipping millions of gods. He published in the supplement of 'Nizam-ul-Mulk' newspaper on 25 August 1889, without hesitation, that their god can steal because if a human can steal, how can God not be a thief? Now observe, no sane person would call taking one's own property stealing. So, it must be that some things are outside their god's ownership and belong to someone else independently. And the independent owner cannot be anyone but God, since everything a servant possesses belongs to his Master. Thus, there must be another god whose property their god can steal. Furthermore, a human can steal from millions and billions; if their god can only steal from one, then he is less powerful than a human. Therefore, there must be millions and billions of gods for the Deobandis, whom their god can steal from. This was expressed by Mahmud Hasan, but the original logic comes from their Imam of the group, Ismail Dehlvi, who wrote in 'Yak Rozi' 3 that since a human can lie, if God cannot, He would be less powerful than a human. Extensive refutations of this flawed logic exist in our treatises like 'Subhan-as-Subbuh' etc., but the Wahhabis are bound by it, and all Wahhabis themselves subscribe to it. Now, is there any courage in Thanvi, or Mahmud Hasan, or any Deobandi or Wahhabi to bring an answer to this and reduce even one from their millions of gods? "Such is the punishment; and the punishment of the Hereafter is greater, if they only knew." (68:33)4. (The blow is such, and indeed the blow of the Hereafter is the greatest; how good it would have been if they knew (T). And Allah Almighty knows best.

Problem 96: From Nasirabad, Rajputana, sent by Sheikh Umar, 5 Rabi-ul-Awwal Sharif 1337 AH. If there is evidence in any book from the words or actions of Imam-e-Azam (God's mercy be upon him) regarding reciting Fatiha over food with raised hands, please inform me of that book's name and page number very soon. This is because a claim like this is made by Maulvi Abdul Hakim, a non-conformist (Ghair Muqallid), a copy of whose pamphlet which reached me, I am sending for your service for review.

1 Hussam-ul-Haramain, Maktaba Nabawiya, Lahore, p. 141 2 Hussam-ul-Haramain, Maktaba Nabawiya, Lahore, p. 142 3 Yak Roza (Persian), Kutub Khana Multan, p. 17 4 Al-Qur'an al-Karim 68/33

क़यामत के दिन तक उन पर लानत हो -1 कारण -2 रही बात चौथे देवबंदी साहब की, तो वे अगले तीन के पीछे हैं, लेकिन करोड़ों खुदाओं को मानने में सबसे आगे हैं। उन्होंने २५ अगस्त १८८९ के 'अख़बार निज़ाम-उल-मुल्क' के सप्लीमेंट में बिना किसी झिझक के छपवा दिया कि उनका खुदा चोरी कर सकता है क्योंकि अगर आदमी चोरी कर सकता है, तो खुदा चोर कैसे नहीं हो सकता? अब देखिए, कोई भी बुद्धिमान व्यक्ति अपनी ही संपत्ति लेने को चोरी नहीं कह सकता। तो यह अनिवार्य है कि कुछ चीज़ें उनके खुदा के स्वामित्व से बाहर हों और किसी दूसरे के स्वतंत्र स्वामित्व में हों। और स्वतंत्र मालिक खुदा के अलावा और कोई नहीं हो सकता क्योंकि बंदे के पास जो कुछ भी है वह उसके मौला (मालिक) का है। तो निश्चित रूप से एक दूसरा खुदा होना चाहिए जिसकी संपत्ति को उनका खुदा चुरा सके। फिर, एक आदमी लाखों-करोड़ों की चोरी कर सकता है; अगर उनका खुदा सिर्फ एक की ही चोरी कर सके तो वह शक्ति में इंसान से कम हो जाएगा। इसलिए देवबंदियों के पास लाखों-करोड़ों खुदा होने चाहिए जिनकी चोरी उनका यह खुदा कर सके। यह बात तो महमूद हसन ने ज़ाहिर की, लेकिन असल दलील उनके इमाम-ए-ताइफ़ा इस्माइल देहलवी की है कि उन्होंने 'यकरोज़ी' 3 में लिखा कि अगर आदमी झूठ बोल सकता है और खुदा नहीं बोल सकता, तो खुदा शक्ति में आदमी से कम रह जाएगा। इस दलील का विस्तार से खंडन हमारे 'सुब्हान-उस-सुब्बूह' आदि जैसे रिसालों में मौजूद है, लेकिन वहाबियों पर इसे मानना अनिवार्य है और सभी वहाबी खुद इसके कायल हैं। अब क्या थानवी साहब, महमूद हसन या किसी देवबंदी या वहाबी में इतनी हिम्मत है कि इसका जवाब ला सके और अपने करोड़ों खुदाओं में से एक को भी कम कर सके? "ऐसी ही सज़ा होती है; और आख़िरत (परलोक) की सज़ा तो सबसे बड़ी है, काश वे जानते होते।" (६८:३३)4। (ऐसी मार पड़ती है और निस्संदेह आख़िरत की मार सबसे बड़ी है; कितना अच्छा होता अगर वे जानते (त)। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला ९६: नसीराबाद, राजपूताना से, प्रेषक शेख उमर, ५ रबी-उल-अव्वल शरीफ़ १३३४ हिजरी। अगर किसी किताब में इमाम-ए-आज़म (अल्लाह उन पर रहमत करे) के क़ौल या फ़ेल (वचन या कर्म) से खाने पर हाथ उठाकर फ़ातिहा पढ़ने का कोई सबूत हो, तो कृपया उस किताब का नाम और पेज नंबर बहुत जल्द बताएं। क्योंकि ऐसा दावा मौलवी अब्दुल हकीम, जो कि एक ग़ैर-मुक़ल्लिद है, करता है। उसके जिस पर्चे की नकल मेरे पास आई है, उसे आपकी सेवा में अवलोकन हेतु भेज रहा हूँ।

1 हुसाम-उल-हरमैन, मकतबा नबविया, लाहौर, पृष्ठ १४१ 2 हुसाम-उल-हरमैन, मकतबा नबविया, लाहौर, पृष्ठ १४२ 3 यक रोज़ा (फारसी), कुतुब खाना मुल्तान, पृष्ठ १७ 4 अल-कुरान अल-करीम ६८/३३

पृष्ठ २४६ का ७५०

لعنتہ الی یوم الدین -1 موجب -2 رہے چوتھے دیوبندی صاحب یہ انہیں اگلے تین کے پیچھے ہیں مگر کروڑوں خداؤں کے پوچنے میں آگے ہیں انہوں نے ضمیمہ اخبار نظام الملک ۲۵ اگست ۱۸۸۹ء میں بے تکان چھاپ دیا کہ ان کا خدا چوری کر سکتا ہے کیونکہ آدمی چرا سکتا ہے تو خدا کیسے چور نہ ہوسکے گا، اب ملاحظہ ہو کوئی عاقل اپنی ملک لینے کو چوری نہیں کہہ سکتا تو ضرور ہے کہ بعض چیزیں ان کے خدا کی ملک سے باہر اور دوسرے کی ملک مستقل ہوں اور مالک مستقل نہ ہو گا مگر خدا کہ بندہ کاسب کچھ اس کے مولٰی کا ہے تو ضرور ہے کہ دوسرا خدا ہو جس کی ملک کو ان کا خدا چرا سکے پھر آدمی لاکھوں کروڑوں کی چوری کر سکتا ہے ان کا خدا اگر ایک ہی کی کر سکے تو پھر انسان سے قدرت میں گھٹ رہے تو ضرور ہے کہ دیوبندی کے لاکھوں کروڑوں خدا میں جن کی چوری ان کا یہ خدا کر سکتا ہے یہ ظاہر تو کی محمود حسن نے مگر اصل دلیل ان کے امام الطائفہ اسمعیل دہلوی کی ہے کہ یکروزی 3 میں لکھی کہ آدمی جھوٹ بول سکتا ہے خدا نہ بول سکے تو آدمی سے قدرت میں کم رہے اس دلیل ذیل کے بکثرت رد ہمارے رسائل مثل سبحن السبوح وغیرہ میں ہیں مگر وہابیہ پر اس کا ماننا لازم اور سب وہابی خود اس کے قائل ہیں۔ اب ہے دم تھانوی صاحب یا محمود حسن یا کسی دیوبندی یا کسی وہابی میں کہ اس کا جواب لا سکے اور اپنے کروڑوں خدا سے ایک ہی گھٹا سکے۔ کَذٰلِكَ الْعَذَابُ وَ لَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَكْبَرُ ؕ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿۳۳﴾4۔ (مار ایسی ہوتی ہے اور بے شک آخرت کی مار سب سے بڑی ہے کیا اچھا تھا اگر وہ جانتے (ت) واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۹۶: از نصیر آباد راجپوتانہ مرسلہ شیخ عمر ۵ ربیع الاول شریف ۱۳۳۷ھ اگر کسی کتاب میں امام اعظم رحمتہ اللہ علیہ کے قول یا فعل سے کھانے پر فاتحہ ہاتھ اٹھا کر پڑھنے کا ثبوت ہو

تو برائے مہربانی اُس کتاب کا نام اور صفحہ سے بہت جلد اطلاع دیں کیونکہ ایسا دعویٰ مولوی عبدالحکیم غیر مقلد کرتا ہے جس کے پرچہ کی نقل جو میرے پاس آیا ہوا ہے کر کے خدمت میں روانہ کرتا ہوں ملاحظہ

1 حسام الحرمین مکتبہ نبویہ لاہور ص ۱۴۱ 2 حسام الحرمین مکتبہ نبویہ لاہور ص ۱۴۲ 3 یک روزہ فارسی کتب خانہ ملتان ص ۱۷ 4 القرآن الکریم ۶۸ / ۳۳

Fatawa Ridawiyya, Volume 29

...state. (Copy of the note is this) I, Abdul Hakim, declare that if any scholar can prove from Imam-e-Azam (may Allah Almighty have mercy on him) that he ordered performing Fatiha by placing food in front and raising hands, then I will do so, and I will repent publicly and distribute one hundred rupees worth of sweets in gratitude.

The Answer: The creed of Imam-e-Azam (may Allah be pleased with him) is that which is mentioned in the commentary of his book 'Fiqh al-Akbar' on beliefs:

"Verily, the prayers of the living for the deceased and their charity [on behalf of them] are beneficial for them, contrary to the Mu'tazilites. The fundamental principle regarding this according to the People of Sunnah is that a person can transfer the reward of their actions to another, whether it be prayer, fasting, pilgrimage, charity, or otherwise. According to Imam Abu Hanifa (may Allah have mercy on him) and his companions, this is permissible and its reward reaches the deceased."

Truly, the prayers of the living for the dead and giving charity on their behalf benefit the dead. The misguided sect of Mu'tazila opposes this. The basic principle in this regard is that according to the Ahl-e-Sunnat, a person can convey the reward of any of their actions to another, be it prayer, fasting, Hajj, charity or anything else. According to Imam Abu Hanifa and his companions, all of this is permissible and the reward reaches the deceased. (T)

This is the creed of Imam-e-Azam. If anyone provides proof that the Imam declared conveying the reward of the Holy Quran and food as permissible but prohibited placing the food in front, or declared prayer for the deceased permissible but prohibited raising hands during it, then they will be given an award of two hundred rupees. Furthermore, regarding the 'Insaaf' education in Deobandi etc. Wahabi schools, and the annual gatherings, conducting exams for style assessment, printing their marks and reports, and printing and selling books and taking commissions on them—if any scholar can prove that Imam-e-Azam ordered these things, they will receive a hundred rupee reward.

Question 97: From Amritsar Katra, note sent by Ghulam Muhammad shopkeeper, 27 Rabi-ul-Awwal Sharif 1337 AH.

A hundred rupee reward for proof of Mawlid Sharif: The custom of Mawlid that is prevalent today is, to our knowledge, without proof. For providing proof of it, a ten-rupee prize advertisement was published by this association on the 1st of Rabi-ul-

Awwal. However, Mian Feroz-ud-Din Sahib, merchant and honorary magistrate, says that this reward is too low for this issue.

[1] Minah al-Rawd al-Azhar Sharh al-Fiqh al-Akbar, Prayer for the deceased benefits contrary to the Mu'tazilites, Mustafa al-Babi Egypt, pp. 129-130.

फतावा रज़विया, खंड 29

...बताएं। (नोट की नकल यह है) मैं अब्दुल हकीम इस बात को स्वीकार करता हूं कि अगर कोई विद्वान इमाम-ए-आजम (अल्लाह तआला उन पर रहम फरमाए) से यह साबित कर दे कि उन्होंने खाना सामने रखकर हाथ उठाकर फातिहा पढ़ने का हुक्म दिया है, तो मैं यह काम करूंगा, और सार्वजनिक रूप से तौबा करूंगा और इसके शुक्रिया में सौ रुपये की मिठाई बांटूंगा।

उत्तर: इमाम-ए-आजम (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) का मत वह है जो अकीदा की उनकी किताब 'फिक्ह अल-अकबर' की व्याख्या में है कि:

"बेशक जीवितों की मृतकों के लिए दुआ और उनकी ओर से सदका (दान) उन्हें लाभ पहुँचाता है, मुअतज़िला के विपरीत। सुन्नत वालों के अनुसार इसका मूल यह है कि मनुष्य अपने कर्म का पुण्य दूसरे को पहुँचा सकता है, चाहे वह नमाज़ हो, रोज़ा हो, हज हो, सदका हो या कुछ और। इमाम अबू हनीफा और उनके साथियों के अनुसार यह सब जायज़ है और इसका पुण्य मृतक को पहुँचता है।"

बेशक जीवितों का मुर्दों के लिए दुआ करना और उनकी तरफ से सदका देना मुर्दों को फायदा देता है, गुमराह फिरका मुअतज़िला इसमें खिलाफ है, और असल इसमें यह है कि अहले सुन्नत के नज़दीक आदमी अपने हर अमल का सवाब दूसरे को पहुँचा सकता है, नमाज़ हो या रोज़ा या हज या सदका या कुछ और, इमाम अबू हनीफा और उनके असहाब के नज़दीक यह सब जायज़ है और मय्यत को उसका सवाब पहुँचता है। (त)

यह इमाम-ए-आजम का मजहब है, अगर इसमें कोई सबूत दे दे कि इमाम ने कुरान मजीद और खाने का सवाब पहुँचाना जायज़ तो फरमाया लेकिन खाना सामने रखने को मना फरमाया है, मय्यत के लिए दुआ तो जायज़ फरमाई है लेकिन उसमें हाथ उठाना मना फरमाया है, तो उसे दो सौ रुपये इनाम दिए जाएंगे। इसके अलावा देवबंद वगैरह वहाबी मदरसों में जो इंसाफ तालीम है और सालाना जलसे, तर्ज़ मालूम करने के लिए इम्तिहान और उनके नंबर और रूदादें छापना और किताबें छापकर बेचना और उन पर कमीशन काटना, अगर कोई विद्वान इसका सबूत दे दे कि इमाम-ए-आजम ने इन बातों का हुक्म दिया है तो सौ रुपये इनाम पाएगा।

मसला 97: अमृतसर कटड़ा से, गुलाम मुहम्मद दुकानदार द्वारा भेजा गया पत्र, 27 रबी-उल-अव्वल शरीफ 1337 हिजरी।

मौलूद शरीफ के सबूत पर सौ रुपये इनाम: आज कल जिस रस्म-ए-मौलूद का रिवाज है, हमारे ज्ञान में यह बिना सबूत वाली बात है। इसका सबूत देने पर इस अंजुमन की ओर से 1 रबी-उल-अव्वल को दस रुपये का एक इनामी विज्ञापन प्रकाशित हो चुका है, मगर मियां फिरोज़-उद-दीन साहब सौदागर मानद मजिस्ट्रेट फरमाते हैं कि यह इनाम इस मसले के लिए कम है।

[1] मिनह अर-रौज़ अल-अज़हर शरह अल-फिक्ह अल-अकबर, मय्यत के लिए दुआ मुअतज़िला के खिलाफ फायदा देती है, मुस्तफा अल-बाबी मिस्र, पृ. 129-130।

فرمائیں۔ (نقل رقعہ یہ ہے) میں عبد الحکیم اس بات کا اقرار کرتا ہوں کہ اگر کوئی عالم امام اعظم رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ سے یہ ثابت کردے کہ انہوں نے کھانا آگے رکھ کر ہاتھ اٹھا کر فاتحہ پڑھنے کا حکم دیا ہے تو میں اس کام کو کروں گا، اور علانیہ لوگوں میں توبہ کروں گا اور سو روپیہ کی مٹھائی اس کے شکریہ میں تقسیم کروں گا۔

الجواب: امام اعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا مذہب وہ ہے جو ان کی کتاب عقائد فقہ اکبر کی شرح میں ہے کہ:

ان دعاء الاحیاء للاموات وصدقتھم نفع لھم، خلافا للمعتزلۃ. الاصل في ذلك عند اھل السنۃ ان للانسان ان یجعل ثواب عملہ لغیرہ صلاۃ اوصوما او حجا اوصدقۃ اوغیرھا، وعندابي حنیفۃ رحمۃ اللہ و اصحابہ یجوزذلك وثوابہ الی المیت ملخصاً ۱۔

بے شک زندوں کا مردوں کے لیے دُعا کرنا اور ان کی طرف سے صدقہ دینا مردوں کو نفع دیتا ہے، معتزلہ گمراہ فرقہ اس میں مخالف ہے، اور اصل اس میں یہ ہے کہ اہل سنت کے نزدیک آدمی اپنے ہر عمل کا ثواب دوسرے کو پہنچا سکتا ہے نماز ہو یا روزہ یا حج یا صدقہ یا کچھ ، امام ابو حنیفہ اور ان کے اصحاب کے نزدیک یہ سب جائز ہے اور میت کو اس کا ثواب پہنچتا ہے۔ (ت)

یہ مذہب ہے امام اعظم کا، اگر اس میں کوئی ثبوت دے دے کہ امام نے قرآن مجید اور کھانے کا ثواب پہنچانا جائز تو فرمایا لیکن کھانا آگے رکھنے کو منع فرمایا ہے، میت کے لیے دعا تو جائز فرمائی ہے لیکن اس میں ہاتھ اٹھانا منع فرمایا ہے، تو اسے دوسو روپے انعام دیئے جائیں گے، نیز دیو بند وغیرہ وہابی مدارس میں جو انصاف تعلیم ہے اور سالانہ جلسے، طرز معلوم کے لیے

امتحان اور ان کے نمبر اور رودادیں چھاپنا اور کتابیں چھاپ کر بیچنا اور ان پر کمیشن کاٹنا، اگر کوئی عالم اس کا ثبوت دے کہ امام اعظم نے ان باتوں کا حکم دیا ہے تو سو روپیہ انعام پائے گا۔

مسئلہ ۹۷: از امر تسر کٹڑہ پرچہ مرسلہ غلام محمد دکاندار ۲۷ ربیع الاول شریف ۱۳۳۷ھ

ثبوت مولود شریف پر سو روپیہ انعام، آج کل جس رسم مولود کا رواج ہے ہمارے علم میں یہ بے ثبوت بات ہے اس کے ثبوت دینے پر انجمن ہذا کی طرف سے یکم ربیع الاول کو ایک اشتہار انعامی دس روپیہ شائع ہوچکا ہے مگر میاں فیروز الدین صاحب سودا گر آنریری مجسٹریٹ فرماتے ہیں کہ یہ انعام کم ہے اس مسئلہ

۱ منح الروض الازہر شرح الفقہ الاکبر الدعاء للمیت ینفع خلافا للمعتزلۃ مصطفی البابی مصر ص ۱۲۹-۱۳۰

Fatawa Razawiyya Volume 29

A decision is necessary. Therefore, we permit the aforementioned Mian Sahab to announce an award of 100 (one hundred) rupees to anyone who provides evidence for the current Mawlid (celebrating birth) from the Quran or established Hadith. It is hoped that the supporters of the noble Mawlid will certainly pay attention and, besides the mentioned award, also earn the reward of both worlds.

Note: It should be clear that there is no trickery; just publishing the reference of the book along with the text is sufficient, in which it is written that one should hold a Mawlid gathering in the month of Rabi' al-Awwal and that holding a Mawlid gathering is meritorious. From our side, permission is granted to show the saying of any one Imam among the Imams of religion from any authentic book. If even this much evidence is not provided, then do not delay for a moment in abandoning such an unproven matter, otherwise, there will be accountability before God. Peace. Humble Muhammad Ibrahim Shawl Merchant, Deputy Secretary, Anjuman Ahl-e-Hadith Amritsar, 13 December.

The Answer: A 200 (two hundred) rupee reward for the Wahhabis. Praising Allah, sending blessings and peace upon His Prophet. (1) Allah Almighty says:

"And as for the blessing of your Lord, proclaim [it]."[1] — Publicize the blessings of your Lord well.

If the Wahhabis provide proof that the birth of the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him and his family) is not a blessing, or that the blessed Mawlid gathering is not the proclamation of this blessing, then a 40 rupee award.

(2) Allah Almighty says:

"And remind them of the days of Allah."[2] — Remind them of the days of Allah.

If the Wahhabis provide proof that the birthday of the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) is not among the great days of Allah, or that the Mawlid gathering is not a reminder of that day, then a 40 rupee award.

(3) Allah Almighty says:

"Say, 'In the bounty of Allah and in His mercy - in that let them rejoice.'"[3] — You say that it is incumbent upon them to rejoice only in the bounty of Allah and His mercy.

[1] Al-Quran Al-Karim 11/93 [2] Al-Quran Al-Karim 5/14 [3] Al-Quran Al-Karim 58/10

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

फ़ैसला होना ज़रूरी है, इसलिए हम ऊपर ज़िक्र किए गए मियां साहब को मौजूदा मौलूद (मिलाद) का सुबूत क़ुरान या प्रमाणित हदीस से देने वाले को एक सौ (100) रुपये इनाम देने का एलान करने की इजाज़त देते हैं। उम्मीद है कि मिलाद शरीफ़ के हिमायती ज़रूर ध्यान देंगे और ज़िक्र किए गए इनाम के अलावा दोनों जहाँ का सवाब भी हासिल करेंगे।

नोट: साफ़ रहे कि इसमें कोई हेर-फेर नहीं है, बस किताब का हवाला इबारत (लिखावट) के साथ प्रकाशित कर देना काफ़ी है जिसमें लिखा हो कि रबी-उल-अव्वल के महीने में मिलाद की महफ़िल किया करो, मिलाद करना सवाब है। हमारी तरफ़ से इजाज़त है कि दीन के इमामों में से किसी एक इमाम का क़ौल (वचन) किसी प्रामाणिक किताब से दिखा दें। अगर इतना भी सुबूत नहीं है, तो फिर ऐसी बे-सुबूत बात को छोड़ने में ज़रा भी देर न करें, वरना ख़ुदा के सामने जवाबदेही होगी। वस्सलाम ख़ाकसार मोहम्मद इब्राहिम शाल मर्चेंट, नायब सेक्रेटरी अंजुमन अहल-ए-हदीस अमृतसर, 13 दिसंबर।

जवाब: वहाबियों को दो सौ (200) रुपये इनाम। अल्लाह की हम्द, नबी पर दुरूद और सलाम के बाद। (1) अल्लाह तआला फ़रमाता है:

"और अपने रब की नेमत का ख़ूब चर्चा करो।"[1]

अगर वहाबी सुबूत दे दें कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वआलिही वसल्लम) की विलादत (पैदाइश) नेमत नहीं है या मीलाद की महफ़िल इस नेमत का चर्चा नहीं है, तो 40 रुपये इनाम।

(2) अल्लाह तआला फ़रमाता है:

"उन्हें अल्लाह के दिन याद दिलाओ।"[2]

अगर वहाबी सुबूत दे दें कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) की विलादत का दिन अल्लाह के महान दिनों में से नहीं है या मीलाद की महफ़िल उस दिन की याद दिलाना नहीं है, तो 40 रुपये इनाम।

(3) अल्लाह तआला फ़रमाता है:

"तुम फ़रमा दो कि अल्लाह के फ़ज़्ल और उसकी रहमत ही पर लाज़िम है कि ख़ुशियाँ मनाओ।"[3]

[1] अल-क़ुरान अल-करीम 11/93 [2] अल-क़ुरान अल-करीम 5/14 [3] अल-क़ुरान अल-करीम 58/10

کا فیصلہ ہونا ضروری ہے اس لیے میاں صاحب موصوف مروجہ مولود کا ثبوت قرآن یا حدیث یافتہ میں سے دینے والے کو ایک صد ۱۰۰ روپیہ انعام دینے کا اعلان کرنے کی ہم کو اجازت دیتے ہیں۔ امید ہے حامیان مولود شریف ضرور توجہ کر کے انعام مرقومہ کے علاوہ ثواب دارین بھی حاصل کریں گے۔

نوٹ: واضح رہے کہ ایچ پیچ کا کام نہیں ، صرف حوالہ کتاب مع عبارت شائع کر دینا کافی ہے جس میں لکھا ہو کہ ربیع الاول کے مہینہ میں مجلس مولود کیا کرو مجلس مولود کرنا ثواب ہے ، ہماری طرف سے اجازت ہے کہ امامان دین میں سے کسی ایک امام کا قول دکھا دیں جو کسی مستند کتاب میں ہو، اگر اتنا بھی ثبوت نہیں تو پھر ایسی بے ثبوت بات کو چھوڑنے میں ذرا دیر نہ کریں ورنہ خدا کے سامنے جواب دہی ہوگی۔ والسلام خاکسار محمد ابراہیم شال مرچنٹ نائب سیکرٹری انجمن اہل حدیث امر تسر ۱۳ دسمبر

الجواب: وہابیہ کو دوسو ۲۰۰ روپے انعام۔ حامداً ومصلیاً ومسلما۔ (۱) اللہ تعالیٰ فرماتا ہے:

"وَ اَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ" ۱۔ اپنے رب کی نعمت کا خوب چرچا کرو۔

اگر وہابیہ ثبوت دے دیں کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کی ولادت نعمت نہیں یا مجلس میلاد مبارک اس نعمت کا چرچا نہیں تو ۴۰ روپے انعام۔

(۲) اللہ تعالیٰ فرماتا ہے:

"وَ ذَكِّرْهُمْ بِاَيّٰمِ اللّٰهِ" ۲۔ انہیں اللہ کے دن یاد دلاؤ۔

اگر وہابیہ ثبوت دے دیں کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی ولادت کا دن اللہ کے عظمت والے دنوں میں نہیں یا مجلس میلاد اُس دن کا یاد دلانا نہیں تو ۴۰ روپے انعام۔

(۳) اللہ تعالیٰ فرماتا ہے:

"قُلْ بِفَضْلِ اللهِ وَ بِرَحْمَتِهٖ فَبِذٰلِكَ فَلْيَفْرَحُوْا" ۳۔ تم فرمادو کہ اللہ کے فضل اور اس کی رحمت ہی پر لازم ہے کہ خوشیاں مناؤ۔

۱ القرآن الکریم ۱۱/۹۳ ۲ القرآن الکریم ۵/۱۴ ۳ القرآن الکریم ۵۸/۱۰

Fatawa Razawiyya, Volume 29

If the Wahhabis provide proof that the birth of the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) is not Allah's grace and His mercy, or that the Milad assembly is not a celebration of this grace and mercy, then a reward of 40 rupees.

(4) Allah Almighty says: "And whatever the Messenger gives you, take it; and whatever he forbids you, abstain from it." (1)

If the Wahhabis provide proof that the Holy Quran or the Hadith Sharif anywhere forbids the blessed Milad assembly, then a reward of 40 rupees.

Necessary Notice: Let it be clear that there's no room for evasiveness; simply publishing that verse or that Hadith with a book reference and authentic chain of transmission is sufficient, in which it is written that 'do not hold a Milad assembly in the month of Rabi-ul-Awwal, holding a Milad assembly is a punishment'. Rather, on our part, it is permitted that you show a mentioned saying of even just one of the four Imams or the six authors of the Sahih Sitta (six authentic Hadith collections), which is found in any authentic book. If even this much proof of prohibition is not available, then do not delay for a moment in abandoning such baseless prohibition, otherwise there will be accountability before God.

(5) If the Wahhabis can provide proof from the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) or the Companions, the Successors, or the four Imams, or the six authors of the Sahih books for holding Ahl-e-Hadith conferences and appointing secretaries etc. for them, and their large annual gatherings and their specific structures, and printing Ahl-e-Hadith newspapers and taking advance payments for them, and printing books in refutation of the Imams, and establishing madrasas on the current pattern and employing salaried teachers in them, having quarterly, six-monthly, and annual examinations, setting passing marks in them, printing advertisements when proof for an issue is demanded, determining a syllabus for teaching, and fixing prizes; then a reward of 40 rupees. If they cannot provide proof, then do not delay for a moment in abandoning such baseless practices, otherwise there will be accountability before God. Peace be upon him who follows guidance. (And peace be upon the one who follows the guidance. - T)

Writing of the treatise "Shams al-Salikeen" regarding the blessed assembly and standing.

In the name of Allah, the Most Gracious, the Most Merciful. All praise is due to Allah, Who is sufficient, and peace be upon His servants whom He has chosen, especially the beloved, the chosen one, and his family and companions, the people of truth and purity. The poor [servant], may the Almighty Master forgive him, to Maulana Maulvi...

(1) The Holy Quran 59/7

फ़तावा रज़विया, खंड 29

अगर वहाबी यह सबूत दें कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का जन्म अल्लाह का फ़ज़ल (अनुग्रह) और उसकी रहमत नहीं है, या मिलाद की महफ़िल इस फ़ज़ल और रहमत की खुशी नहीं है, तो 40 रुपये इनाम।

(4) अल्लाह तआला फ़रमाता है: "और जो रसूल तुम्हें दें उसे ले लो और जिससे वह मना करें उससे बाज़ रहो।" (1)

अगर वहाबी यह सबूत दें कि क़ुरआन मजीद या हदीस शरीफ़ में कहीं मिलाद-ए-मुबारक की महफ़िल को मना किया गया है, तो 40 रुपये इनाम।

ज़रूरी सूचना: यह स्पष्ट रहे कि इसमें किसी हेर-फेर की गुंजाइश नहीं है; बस वह आयत या पुस्तक के संदर्भ और सही सनद (प्रमाणिक श्रृंखला) के साथ वह हदीस प्रकाशित कर देना काफ़ी है जिसमें लिखा हो कि 'रबी-उल-अव्वल के महीने में मिलाद की महफ़िल न किया करो, मिलाद की महफ़िल करना अज़ाब (दंड) है'। बल्कि हमारी ओर से अनुमति है कि चारों इमामों या सिहाह-ए-सित्ता के छह लेखकों में से किसी एक इमाम का ही कोई उल्लेखित कथन दिखा दें जो किसी प्रामाणिक पुस्तक में हो। अगर मनाही का इतना सबूत भी नहीं है, तो फिर ऐसी बे-सबूत मनाही को छोड़ने में ज़रा भी देर न करें, अन्यथा ईश्वर के सामने जवाबदेही होगी।

(5) अहल-ए-हदीस की कॉन्फ्रेंस करना और उसमें सचिव आदि नियुक्त करना और उनके बड़े वार्षिक जलसे और उनका विशिष्ट स्वरूप, और अहल-ए-हदीस का अख़बार छापना और उसकी अग्रिम क़ीमत लेना, और इमामों के खंडन में किताबें छापना और प्रचलित पद्धति पर मदरसे बनाना और उनमें वेतनभोगी शिक्षकों को रखना, त्रैमासिक, छमाही, वार्षिक परीक्षा होना, उनमें पास होने के अंक निर्धारित करना, किसी मसले का सबूत मांगे जाने पर विज्ञापन छापना, उस पर शिक्षण का पाठ्यक्रम निर्धारित करना, इनाम तय करना; इन सब बातों का अगर वहाबी अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) या सहाबा, ताबेईन या चारों इमामों या सिहाह के छह लेखकों से सबूत दे दें, तो 40 रुपये इनाम। और अगर सबूत न दे सकें तो फिर ऐसी बे-सबूत बातों को छोड़ने में ज़रा भी देर न करें, अन्यथा ईश्वर के सामने जवाबदेही होगी। वस्सलाम अला मनित्तबा अल-हुदा (और सलामती हो उस पर जो हिदायत का पालन करे)।

मजलिस-ए-मुबारक और क़ियाम के बारे में "शम्स-उस-सालिकीन" नामक रिसाले (लेख) का लेखन।

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम। तमाम तारीफ़ अल्लाह के लिए है और वही काफ़ी है, और उसके उन बंदों पर सलाम हो जिन्हें उसने चुन लिया है, विशेष रूप से प्रिय मुस्तफ़ा पर और उनके परिवार और उनके साथियों पर, जो सच्चाई और पवित्रता वाले हैं। फ़क़ीर (दीन सेवक), जिसे सर्वशक्तिमान स्वामी क्षमा करे, मौलाना मौलवी...

(1) अल-क़ुरआन अल-करीम 59/7

فتاوی رضویہ جلد ۲۹

اگر وہابیہ ثبوت دیں کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کی ولادت اللہ کا فضل اور اس کی رحمت نہیں یا مجلس میلاد اس فضل ورحمت کی خوشی نہیں تو ۴۰ روپے انعام۔

(۴) اللہ تعالیٰ فرماتا ہے : "وَمَا اٰتٰىكُمُ الرَّسُوْلُ فَخُذُوْهُ وَ مَا نَهٰىكُمْ عَنْهُ فَانْتَهُوْا" ۱- جو رسول تمہیں دے وہ لو اور جس سے وہ منع کریں اس سے باز رہو

اگر وہابیہ ثبوت دیں کہ قرآن مجید یا حدیث شریف میں کہیں مجلس میلاد مبارک کو منع فرماتا ہے تو ۴۰ روپے انعام۔

ضروری اطلاع: واضح رہے کہ ایچ پیچ کا کام نہیں صرف وہ آیت یا مع حوالہ کتاب و صحیح اسناد وہ حدیث شائع کر دینا کافی ہے جس میں لکھا ہے کہ ربیع الاول کے مہینے میں مجلس میلاد نہ کیا کرو مجلس میلاد کرنا عذاب ہے بلکہ ہماری طرف سے اجازت ہے کہ چاروں اماموں یا صحاح ستہ کے چھ مصنفوں میں سے کسی ایک امام ہی کا قول مذکور دکھادیں جو کسی مستند کتاب میں ہو، اگر منع کا اتنا ثبوت بھی نہیں تو پھر ایسے بے ثبوت منع کو چھوڑنے میں ذرا دیر نہ کریں ورنہ خدا کے سامنے جواب دہی ہوگی۔

(۵) اہلحدیث کی کانفرنس اور اس میں سیکریٹری وغیرہ مقرر کرنا اور اس کے بڑے سالانہ جلسے اور ان کی ہیئت کذائی اور اہلحدیث کا اخبار چھاپنا اور اس کی پیشگی قیمت لینا اور ردّ ائمہ میں کتابیں چھاپنا اور ہیئت مروجہ پر مدرسے بنانا اور ان میں تنخواہ دار مدرسین رکھنا، سہ ماہی، ششماہی، سالانہ امتحان ہونا، ان میں پاس کے نمبر ٹھہرانا، کسی مسئلہ کا ثبوت مانگنے پر اشتہار چھاپنا، اس پر درس کا نصاب معین کرنا، انعام ٹھہرانا، ان سب باتوں کا اگر وہابیہ رسول اللہ صلی

اللہ تعالٰی علیہ وسلم یا صحابہ، تابعین یا چار امام یا چھ مصنف صحاح سے ثبوت دے دیں تو ۴۰ روپیہ انعام، اور ثبوت نہ دے سکیں، تو پھر ایسی بے ثبوت باتوں کے چھوڑنے میں ذرا دیر نہ کریں ورنہ خدا کے سامنے جواب دہی ہوگی۔ والسلٰم علٰی من اتبع الھدی (اور سلامتی اسے جو ہدایت کی پیروی کرے۔ت)

تحریر رسالہ شمس السالکین دربارہ مجلس مبارک و قیام

بسم اللہ الرحمن الرحیم، الحمد للہ وکفی و سلام علٰی عبادہ الذین اصطفٰی لاسیما الحبیب المصطفٰی وآلہ وصحبہ اولی الصدق والصفا، فقیر غفرلہ المولی القدیر نے مولینا مولوی

۱۔ القرآن الکریم ۷/۵۹

Volume 29 Fatawa Razawiyya

Abu Nasr Hakim Muhammad Yaqub Sahib Hanafi Qadri Rampuri's brief and sufficient fatwa titled "Shams-us-Salikeen" was studied. May the Lord Almighty accept Maulana's beautiful endeavor and make this fatwa truly a luminous sun for the seekers of the right path. As for the blessed assembly and the standing of the people of love, it fundamentally requires no proof. For those among the people of argument who come towards justice, the Great Quran is the decisive word and the judge of justice. Allah Almighty says:

Arabic Verse	Urdu Translation
"قُلْ بِفَضْلِ اللّٰهِ وَ بِرَحْمَتِهٖ فَبِذٰلِكَ فَلْيَفْرَحُوْا"	Say: "In the bounty of Allah and in His mercy – in that let them rejoice." (T)

And He says:

Arabic Verse	Urdu Translation
"وَ ذَكِّرْهُمْ بِاَيّٰمِ اللّٰهِ"	And remind them of the days of Allah. (T)

And He says:

Arabic Verse	Urdu Translation
"وَ اَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ"	And proclaim the favor of your Lord extensively. (T)

And He says:

Arabic Verse	Urdu Translation
"اِنَّاۤ اَرْسَلْنٰكَ شَاهِدًا وَّ مُبَشِّرًا وَّ نَذِيْرًا ۙ لِّتُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖ وَ تُعَزِّرُوْهُ وَ تُوَقِّرُوْهُ"	O Prophet! Indeed We have sent you as a witness (present and observant) and a bringer of glad tidings and a warner, so that O people! you may believe in Allah and His Messenger, and honor and respect the Messenger. (T)

And He says:

Arabic Verse	Urdu Translation
"فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِهٖ وَ عَزَّرُوْهُ وَ نَصَرُوْهُ وَ اتَّبَعُوا النُّوْرَ الَّذِيْۤ اُنْزِلَ مَعَهٗۤ ۙ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ"	So those who believe in him, and honor him, and help him, and follow the light which was sent down with him, it is they who are the successful. (T)

And He says:

Arabic Verse	Urdu Translation
"لَئِنْ اَقَمْتُمُ الصَّلٰوةَ وَ اٰتَيْتُمُ الزَّكٰوةَ وَ اٰمَنْتُمْ"	If you establish prayer and give zakat and believe in My messengers...

1 Al-Quran al-Karim 10 / 58 2 Al-Quran al-Karim 14 / 5 3 Al-Quran al-Karim 93 / 11 4 Al-Quran al-Karim 48 / 8 & 9 5 Al-Quran al-Karim 7 / 157

जिल्द २९ फ़तावा रज़विया

अबू नसर हकीम मुहम्मद याकूब साहब हनफी क़ादरी रामपुरी का यह संक्षिप्त और पर्याप्त फतवा जिसका नाम "शम्स-उस-सालीकीन" है, का अध्ययन किया गया। मौला अज़्वजल मौलाना के इस सुंदर प्रयास को स्वीकार करे और इस फतवे को वास्तव में सही राह के चाहने वालों के लिए एक नूरानी सूरज बनाए। मुबारक महफ़िल और अहले-मोहब्बत के क़याम के लिए तो मौलिक रूप से किसी प्रमाण की आवश्यकता नहीं है। दलील वालों में जो इंसाफ़ पर आएँ, उनके लिए क़ुरआन-ए-अज़ीम अंतिम निर्णय और न्याय का जज है। अल्लाह अज़्वजल फ़रमाता है:

अरबी आयत	**उर्दू अनुवाद**
"قُلْ بِفَضْلِ اللّٰهِ وَ بِرَحْمَتِهٖ فَبِذٰلِكَ فَلْيَفْرَحُوْا"	आप कह दीजिये कि अल्लाह के फ़ज़्ल और उसकी रहमत ही पर लाज़िम है कि खुशियाँ मनाओ। (त)

और फ़रमाता है:

अरबी आयत	**उर्दू अनुवाद**
"وَ ذَكِّرْهُمْ بِاَيّٰىمِ اللّٰهِ"	उन्हें अल्लाह के दिन याद दिलाओ। (त)

और फ़रमाता है:

अरबी आयत	**उर्दू अनुवाद**
"وَ اَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ"	अपने रब की नेमत का खूब चर्चा करो। (त)

और फ़रमाता है:

अरबी आयत	**उर्दू अनुवाद**
"اِنَّاۤ اَرْسَلْنٰكَ شَاهِدًا وَّ مُبَشِّرًا وَّ نَذِيْرًا ۙ لِّتُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖ وَ تُعَزِّرُوْهُ وَ تُوَقِّرُوْهُ"	ऐ नबी! बेशक हमने तुम्हें भेजा हाज़िर व नाज़िर और खुशखबरी देता और डर सुनाता, ताकि ऐ लोगो! तुम अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाओ और रसूल की ताज़ीम व तौक़ीर करो। (त)

और फ़रमाता है:

अरबी आयत	उर्दू अनुवाद
"فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِهٖ وَ عَزَّرُوْهُ وَ نَصَرُوْهُ وَ اتَّبَعُوا النُّوْرَ الَّذِيْٓ اُنْزِلَ مَعَهٗٓ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ"	तो वो जो उस पर ईमान लाएं और उसकी ताज़ीम करें और उसे मदद दें और उस नूर की पैरवी करें जो उसके साथ उतरा, वही बामुराद हुए। (त)

और फ़रमाता है:

अरबी आयत	उर्दू अनुवाद
"لَئِنْ اَقَمْتُمُ الصَّلٰوةَ وَ اٰتَيْتُمُ الزَّكٰوةَ وَ اٰمَنْتُمْ"	अगर तुम नमाज़ क़ायम रखो और ज़कात दो और मेरे रसूलों...

---

१ अल-क़ुरआन अल-करीम १० / ५८ २ अल-क़ुरआन अल-करीम १४ / ५ ३ अल-क़ुरआन अल-करीम ९३ / ११ ४ अल-क़ुरआन अल-करीम ४८ / ८ और ९ ५ अल-क़ुरआन अल-करीम ७ / १५७

ابو نصر حکیم محمد یعقوب صاحب حنفی قادری رامپوری کا یہ مختصر وکافی فتویٰ مسمیٰ بہ شمس السالکین مطالعہ کیا، مولیٰ عزوجل مولینا کی سعی جمیل قبول فرمائے اور اس فتویٰ کو حقیقۃً سالکین راہ ہدی کے لیے آفتابِ نورانی بنائے۔ مجلسِ مبارک و قیامِ اہلِ محبت کے نزدیک تو اصلاً محتاجِ دلیل نہیں۔ اہلِ حجت میں جو انصاف پر آئیں قرآنِ عظیم قولِ فیصل و حاکمِ عدل ہے، اللہ عزوجل فرماتا ہے:

عربی آیت **اردو ترجمہ**

"قُلْ بِفَضْلِ اللّٰهِ وَ بِرَحْمَتِهٖ فَبِذٰلِكَ فَلْیَفْرَحُوْا" تم فرما دو کہ اللہ کے فضل اور اس کی رحمت ہی پر لازم ہے کہ خوشیاں مناؤ۔ (ت)

اور فرماتا ہے:

عربی آیت **اردو ترجمہ**

"وَ ذَكِّرْهُمْ بِاَیّٰىمِ اللّٰهِ" انہیں اللہ کے دن یاد دلاؤ۔ (ت)

اور فرماتا ہے:

عربی آیت **اردو ترجمہ**

"وَ اَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ" اپنے رب کی نعمت کا خوب چرچا کرو۔ (ت)

اور فرماتا ہے:

عربی آیت	اردو ترجمہ
"اِنَّآ اَرْسَلْنٰكَ شَاهِدًا وَّ مُبَشِّرًا وَّ نَذِيْرًاۙ لِّتُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖ وَ تُعَزِّرُوْهُ وَ تُوَقِّرُوْهُؕ"	اے نبی بے شک ہم نے تمہیں بھیجا حاضر و ناظر اور خوشخبری دیتا اور ڈر سناتا، تاکہ اے لوگو! تم اللہ اور اس کے رسول پر ایمان لاؤ اور رسول کی تعظیم و توقیر کرو۔ (ت)

اور فرماتا ہے:

عربی آیت	اردو ترجمہ
"فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِهٖ وَ عَزَّرُوْهُ وَ نَصَرُوْهُ وَ اتَّبَعُوا النُّوْرَ الَّذِيْۤ اُنْزِلَ مَعَهٗۤ اُولٰٓىٕكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ"	تو وہ جو اس پر ایمان لائیں اور اس کی تعظیم کریں اور اسے مدد دیں اور اس نور کی پیروی کریں جو اس کے ساتھ اترا، وہی بامراد ہوئے۔ (ت)

اور فرماتا ہے:

عربی آیت	اردو ترجمہ
"لَىٕنْ اَقَمْتُمُ الصَّلٰوةَ وَ اٰتَيْتُمُ الزَّكٰوةَ وَ اٰمَنْتُمْ"	اگر تم نماز قائم رکھو اور زکوۃ دو اور میرے رسولوں

---

1 القرآن الکریم ۱۰ / ۵۸ 2 القرآن الکریم ۱۴ / ۵ 3 القرآن الکریم ۹۳ / ۱۱ 4 القرآن الکریم ۴۸ / ۸ و ۹ 5 القرآن الکریم ۷ / ۱۵۷

"...believe in My messengers and honor them and lend unto Allah a goodly loan, I will surely remit from you your evil deeds and will surely bring you into Gardens underneath which rivers flow. But whoso among you disbelieveth after this, he hath gone astray from the right way." (Urdu Translation): ...believe in them and honor them and give Allah a goodly loan; undoubtedly, I will remove your sins and will surely take you into gardens beneath which rivers flow. Then, whoever among you disbelieves after this has certainly strayed from the straight path. (T)

In the first three verses, it is commanded to celebrate over Allah's grace and His mercy, remind people of the 'Days of Allah', and proclaim Allah's blessings extensively. What grace and mercy from Allah, what blessing is greater than the birth of this Noble Beloved (upon him and his family be the most excellent blessings and peace), for all blessings, all mercies, and all bounties were granted through his sake. Which 'Day of Allah' is greater than the day of the luminous manifestation of this Noble Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him)? Thus, undoubtedly, the Holy Quran commands us to rejoice at the sacred birth. Proclaim it extensively and with fervor before the Muslims; this itself is named a 'Majlis-e-Milad'. In the subsequent three verses, an absolute (general) command is given for the veneration of His Messengers, especially the Leader of the Messengers (may Allah's peace and blessings be upon him). And the legal principle is: "The absolute remains absolute"[2]. (The absolute continues in its generality. T). Whatever Allah the Almighty has stated in an absolute manner, it bestows an absolute command. Everything that falls under that absolute term is included in that command without exception. Anyone who restricts the absolute of Allah the Almighty's Book from their own side would be abrogating the Book of Allah. When the command for the veneration of the Holy Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him) was given to us in an absolute manner, then all methods of veneration were permitted until the Sharia forbids a specific method. Similarly, rejoicing over mercy, mentioning the 'Days of Allah', and proclaiming divine blessings—these are also absolute. In whichever way they are performed, all are compliance with the divine command until the pure Sharia objects to a specific method. Thus, it became clear that seeking specific evidence by name for 'Majlis' (gathering) and 'Qiyam' (standing), or searching for their exact existence in the first three generations (Khair al-Qurun), is not just cowardice and inverted intellect, but rather abrogating the Holy Quran with one's own opinion. Allah the Almighty gives an absolute command, yet the deniers say:

"Let Him continue to speak in absolute terms, but we will only accept as permissible that specific form which has been declared permissible by taking its specific name, or whose exact form existed in the three generations..."

[1] Al-Quran Al-Karim 5/12 [2] Al-Tawdih wa al-Talwih, Section: Ruling of the Absolute, Mir Muhammad Press, Karachi 1/169

"...मेरे रसूलो पर ईमान लाओ और उनकी ताज़ीम (सम्मान) करो और अल्लाह को कर्ज़-ए-हसन दो, तो मैं ज़रूर तुम्हारे गुनाह मिटा दूँगा और ज़रूर तुम्हें उन बाग़ों में दाख़िल करूँगा जिनके नीचे नहरें बहती हैं। फिर इसके बाद तुम में से जो कुफ़्र करे, वो ज़रूर सीधे रास्ते से भटक गया।" (उर्दू अनुवाद): ...उन पर ईमान लाओ और उनकी ताज़ीम करो और अल्लाह को कर्ज़-ए-हसन दो; बेशक मैं तुम्हारे गुनाह उतार दूँगा और ज़रूर तुम्हें बाग़ों में ले जाऊँगा जिनके नीचे नहरें रवां हैं, फिर इसके बाद जो तुम में से कुफ़्र करे वो ज़रूर सीधी राह से बहका (त)

पहली तीनों आयतों में हुक्म फ़रमाता है कि अल्लाह के फ़ज़ल और उसकी रहमत पर खुशियाँ मनाओ, लोगों को अल्लाह के दिनों की याद दिलाओ, अल्लाह की नेमत का खूब चर्चा करो। अल्लाह का कौन सा फ़ज़ल व रहमत, कौन सी नेमत इस हबीब-ए-करीम (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की विलादत (जन्म) से बढ़कर है, क्योंकि तमाम नेमतें, तमाम रहमतें और तमाम बरकतें उन्हीं के सदके में अता हुईं। अल्लाह का कौन सा दिन इस नबी-ए-अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के ज़ुहूर-ए-नूर (नूरानी आगमन) के दिन से बड़ा है? तो बिला-शुबा क़ुरआन करीम हमें हुक्म देता है कि विलादत-ए-अक़दस पर खुशी मनाओ। मुसलमानों के सामने उसी का चर्चा खूब ज़ोर-शोर से करो, इसी का नाम 'मज्लिस-ए-मीलाद' है। बाद की तीन आयतों में अपने रसूलो, विशेष रूप से सैय्यद-उल-रसुल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की ताज़ीम का हुक्म मुतलक़ (निरपेक्ष) फ़रमाता है। और शरई कायदा है: "अल-मुतलक़ु यजरी अला इतलाक़िही"[2]। (मुतलक़ अपने इतलाक़ पर जारी रहता है। त)। जो बात अल्लाह अज़्ज़वजल ने मुतलक़ इरशाद फ़रमाई, वह मुतलक़ हुक्म अता करेगी। जो कुछ उस मुतलक़ के तहत आता है, वह सब उस हुक्म में शामिल है। बिना किसी तख़्सीस (विशिष्टीकरण) के, जो अपनी तरफ़ से किताबुल्लाह के मुतलक़ को मुक़य्यद (सीमित) करेगा, तो वह किताबुल्लाह को मन्सूख़ (निरस्त) करता है। जब हमें हुज़ूर-ए-अक़दस (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की ताज़ीम का हुक्म मुतलक़ फ़रमाया, तो ताज़ीम के तमाम तरीक़ों की इजाज़त हो गई, जब तक कि शरीअत किसी ख़ास तरीक़े से मना न फ़रमाए। इसी तरह रहमत पर खुशी मनाना, अय्याम-ए-इलाही का ज़िक्र करना, नेमत-ए-रब्बानी का चर्चा करना भी मुतलक़ हैं। जिस तरीक़े से भी किए जाएं, वे सब ईश्वरीय आदेश का पालन हैं, जब तक कि शरीअत-ए-मुतह्हरा किसी ख़ास तरीक़े पर इनकार न फ़रमाए। तो साफ़ ज़ाहिर हुआ कि मज्लिस और क़ियाम पर ख़ास दलील नाम लेकर माँगना या हूबहू उनका 'क़ुरून-ए-सलासा' (प्रारंभिक तीन पीढ़ियों) में वजूद तलाश करना न सिर्फ बुज़दिली और उल्टी अक़्ल

है, बल्कि क़ुरआन मजीद को अपनी राय से मन्सूख़ करना है। अल्लाह अज़्ज़वजल तो मुतलक़ हुक्म फ़रमाए और मुन्किरीन (इनकार करने वाले) कहें कि वह मुतलक़ कहता रहे, हम तो सिर्फ उसी ख़ास सूरत को जायज़ मानेंगे जिसे तख़्सीस के साथ नाम लेकर जायज़ किया हो या जिसका हूबहू स्वरूप क़ुरून-ए-सलासा में...

[1] अल-क़ुरआन अल-करीम ५/१२ [2] अत-तौज़ीह व अत-तलवीह, फ़स्ल: हुक्म-उल-मुतलक़, मीर मुहम्मद प्रेस, कराची १/१६९

पृष्ठ २५१/७५०

"بِرُسُلِيْ وَعَزَّرْتُمُوْهُمْ وَاَقْرَضْتُمُ اللهَ قَرْضًا حَسَنًا لَّاُكَفِّرَنَّ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَلَاُدْخِلَنَّكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ فَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذٰلِكَ مِنْكُمْ فَقَدْ ضَلَّ سَوَاءَ السَّبِيْلِ" ہا پر ایمان لاؤ اور ان کی تعظیم کرو اور اللہ کو قرض حسن دو بے شک میں تمہارے گناہ اتار دوں گا اور ضرور تمہیں باغوں میں لے جاؤں گا جن کے نیچے نہریں رواں پھر اس کے بعد جو تم میں سے کفر کرے وہ ضرور سیدھی راہ سے بہکا (ت)

پہلی تینوں آیتوں میں حکم فرماتا ہے کہ اللہ کے فضل اور اس کی رحمت پر شادیاں مناؤ، لوگوں کو اللہ کے دن یاد دلاؤ، اللہ کی نعمت کا خوب چرچا کرو۔ اللہ کا کون سا فضل و رحمت، کون سی نعمت اس حبیب کریم علیہ وعلٰی آلہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم کی ولادت سے زائد ہے کہ تمام نعمتیں تمام رحمتیں تمام برکتیں اسی کے صدقے میں عطا ہوئیں۔ اللہ کا کون سا دن اس نبی اکرم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کے ظہور پر نور کے دن سے بڑا ہے، تو بلا شبہ قرآن کریم ہمیں حکم دیتا ہے کہ ولادت اقدس پر خوشی کرو۔ مسلمانوں کے سامنے اُسی کا چرچا خوب زور شور سے کرو، اسی کا نام مجلس میلاد ہے، بعد کی تین آیتوں میں اپنے رسولوں خصوصاً سید الرسل صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کی تعظیم کا حکم مطلق فرماتا ہے، اور قاعدہ شرعیہ المطلق یجری علی اطلاقہ[2]۔ (مطلق اپنے اطلاق پر جاری ہوتا ہے۔ ت) جو بات اللہ عزوجل نے مطلق ارشاد فرمائی وہ مطلق حکم عطا کرے گی جو جو کچھ اس مطلق کے تحت میں داخل ہے سب کو وہ حکم شامل ہے بلا تخصیص شرع جو اپنی طرف سے کتاب اللہ تعالٰی کے مطلق کو مقید کرے گا تو وہ کتاب اللہ کو منسوخ کرتا ہے جب ہمیں تعظیم حضور اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کا حکم مطلق فرمایا تو جمیع طرق تعظیم کی اجازت ہوئی جب تک کسی خاص طریقے سے شریعت منع نہ فرمائے۔ یونہی رحمت پر فرحت ایام

الہی کا تذکرہ، نعمت ربانی کا چرچا یہ بھی مطلق ہیں جس طریقے سے کیے جائیں سب امتثال امر الہی ہیں جب تک شرع مطہر کسی خاص طریقہ پر انکار نہ فرمائے۔ تو روشن ہوا کہ مجلس و قیام پر خاص دلیل نام لے کر چاہنا یا بعینہ ان کا قرونِ ثلاثہ میں وجود تلاش کرنا بزدلی اوندھی مت ہی نہیں بلکہ قرآن مجید کو اپنی رائے سے منسوخ کرنا ہے۔ اللہ عزوجل تو مطلق حکم فرمائے اور منکرین کہیں کہ وہ مطلق کہا کرے ہم تو خاص وہ صورت جائز مانیں گے جسے بالتخصیص نام لے کر جائز کیا ہو یا جس کا بہیئت کذائی قرون ثلاثہ میں

[1] القرآن الکریم ۱۲/۵ [2] التوضیح والتلویح فصل حکم المطلق مطبع میر محمد کراچی ۱۶۹/۱

Vol 29 Fatawa Razwiya

...came into existence. "Truly to Allah we belong and truly to Him is our return." 1- (We are Allah's property and we have to return to Him. - Translator) Had they possessed wisdom and faith, whatever method of expressing joy, mentioning the blessing, and honoring the Master of Prophethood they saw, they would have searched in it whether Allah and His Messenger specifically forbade this form. If they found no specific prohibition, they would have known for certain that this is the fulfillment of those commands mentioned in the noble verses. But man is helpless of heart; mentioning the beloved is the lover's peace, and his honor is the coolness of the eyes. And the heart filled with rage will itself burn even at the mention and will be offended even by the honoring. This is a great way to distinguish a friend from a foe. After all, didn't you see how the suppressed [rage] of the heart flared up and blew? Do you know who these deniers of [Mawlid] assemblies and standing [Qiyam] are now? Yes, yes, they are the very ones who first used to say that he is like an elder brother and we are younger brothers; his leadership is just like a village headman or a community leader; praise him just as you praise one another, rather even less than that. In words and examples, they even ran away giving comparisons to scavengers and leatherworkers. All these are explicitly stated in their religious book 'Taqwiyat-ul-Iman', which is much more than others. And now they have played further games, [stating] that Satan's knowledge is more than his [the Prophet's] knowledge. 2 Such knowledge of the unseen as he has is possessed by every madman and every quadruped animal 3 etc. etc., cursed words. O Muslims! These are the ones who today stand before you denying the blessed assembly and standing. Now understand what the cause of denial is: By Allah! By Allah! It is hatred for Muhammad, the Messenger of Allah, peace and blessings of Allah be upon him. Look, beware, be alert! These are the ones about whom the news was given in the Hadith: "Wolves in clothing." 4 They will be wolves wearing clothes, meaning in appearance human dress, and in heart, a deceitful wolf. O innocent sheep of Mustafa, peace and blessings of Allah be upon him! Recognize your enemy. No, no, not your enemy, but the enemies of your beloved master, peace and blessings of Allah be upon him, who wrote those cursed insults against the holy dignity of Muhammad, the Messenger of Allah, peace and blessings of Allah be upon him, published them, and are still insistent upon them today.

"Hatred has already appeared from their mouths, and what their breasts conceal is greater." | Their intense enmity has become apparent from their words, and that which is hidden in their hearts is much (greater).

---

1 Al-Qur'an al-Karim 2 / 156 2 Al-Barahin al-Qati'ah, discussion on knowledge of the unseen, Matba' le-Bala Swanih Dhor, p. 51 3 Hifz al-Iman, Qadimi Kutub Khana Karachi, p. 13 and Dawat-e-Fikr Maktaba Ala Hazrat Lahore, p. 27 4

...अस्तित्व में आया हो। "बेशक हम अल्लाह के हैं और हमें उसी की ओर लौटना है।" 1- (हम अल्लाह की संपत्ति हैं और हमें उसी की तरफ़ वापस जाना है। - तर्जुमा) यदि उनके पास बुद्धि और धर्म होता, तो वे खुशी प्रकट करने, नेमत की चर्चा करने और रिसालत के आका का सम्मान करने का जो भी तरीका देखते, उसमें यह खोजते कि क्या अल्लाह और उसके रसूल ने विशेष रूप से इस स्वरूप को मना तो नहीं फ़रमाया। यदि वे इसकी विशेष मनाही न पाते, तो उन्हें यकीन होता कि यह उन्हीं आदेशों का पालन है जो इन पवित्र आयतों में गुज़रे। मगर मनुष्य दिल से मजबूर है; प्रिय की चर्चा प्रेमी का चैन है, और उनका सम्मान आँखों की ठंडक है। और जिस दिल में गुस्सा भरा है, वह ज़िक्र (चर्चा) से भी जलेगा और सम्मान से भी चिढ़ेगा। यह दोस्त और दुश्मन की बहुत बड़ी पहचान है। आख़िर आपने नहीं देखा कि दिल की दबी हुई [आग] ने भड़क कर कहाँ तक फूँका? क्या आप जानते हैं कि अब ये महफ़िल (मज्लिस) और खड़े होने (क़ियाम) के इनकार करने वाले कौन हैं? हाँ, हाँ, ये वही हैं जो पहले तो यहाँ तक कहते थे कि वे बड़े भाई हैं और हम छोटे भाई; उनकी सरदारी वैसी ही है जैसे गाँव का प्रधान या जाति का चौधरी; उनकी प्रशंसा वैसी ही करो जैसे आपस में एक-दूसरे की करते हो बल्कि उससे भी कम। बातों और उदाहरणों में वे भंगी-चमारों से तुलना देने तक से नहीं कतराते थे। ये सब औरों से बहुत अधिक उनकी धार्मिक पुस्तक 'तक़वियतुल ईमान' में स्पष्ट हैं। और अब तो उन्होंने और भी खेल खेले कि उनके ज्ञान से शैतान का ज्ञान अधिक है। 2 जैसा इल्म-ए-ग़ैब (परोक्ष का ज्ञान) उन्हें है, वैसा तो हर पागल और हर चौपाये को होता है 3 आदि आदि शापित शब्द। ऐ मुसलमानों! ये वही हैं जो आज तुम्हारे सामने धन्य महफ़िल और क़ियाम (खड़े होने) के विरोधी हैं। अब तो समझो कि इनकार का कारण क्या है? अल्लाह की कसम! अल्लाह की कसम! यह मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से द्वेष है। देखो, सावधान रहो, सतर्क रहो! ये वे हैं जिनकी सूचना हदीस में दी गई थी कि "कपड़ों में भेड़िये"। 4 वे भेड़िये होंगे कपड़े पहने हुए, यानी दिखावे में इंसानी लिबास और भीतर से धूर्त भेड़िये। ऐ मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की भोली भेड़ों! अपने दुश्मन को पहचानो। नहीं, नहीं, तुम्हारे दुश्मन नहीं, तुम्हारे प्यारे मालिक (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के दुश्मन, जिन्होंने वे शापित गालियाँ मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की पवित्र शान में लिखीं, प्रकाशित कीं और आज तक उन पर अड़े हुए हैं।

"उनके मुँह से द्वेष प्रकट हो चुका है और जो उनके सीनों में छिपा है वह इससे भी बड़ा है।" | उनकी तीव्र शत्रुता तो उनकी बातों से ज़ाहिर हो गई और वह जो उनके दिलों में छिपा है वह बहुत (बड़ा) है।

1 अल-क़ुरआन अल-करीम 2 / 156 2 अल-बराहीन अल-क़ातिआ, चर्चा इल्म-ए-ग़ैब, मतबा ले-बला स्वानिह ढोर, पृष्ठ 51 3 हिफ़्ज़ुल ईमान, क़दीमी कुतुब ख़ाना कराची, पृष्ठ 13 और दावत-ए-फ़िक्र मकतबा आला हज़रत लाहौर, पृष्ठ 27 4

पृष्ठ 252 का 750

وجود ہوا ہو "اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّـآ اِلَیْہِ رٰجِعُوْنَ" 1- (ہم اللہ کے مال ہیں اور ہم کو اسی کی طرف پھرنا ہے۔ ت) عقل و دین رکھتے تو جو طریقہ اظہار فرحت و تذکرہ نعمت و تعظیم سرکار رسالت دیکھتے اس میں یہ تلاش کرتے کہ کہیں خاص اس صورت کو اللہ و رسول نے منع تو نہیں فرمایا، اگر اس کی خاص ممانعت نہ پاتے یقین جانتے کہ یہ انہیں احکام کی بجا آوری ہے جو ان آیات کریمہ میں گزرے، مگر آدمی دل سے مجبور ہے، محبوب کا چرچا محب کا چین، اور اس کی تعظیم آنکھوں کی ٹھنڈک، اور جس دل میں غیظ بھرا ہے وہ آپ ہی ذکر سے بھی جلے گا تعظیم سے بھی بگڑے گا۔ دوست دشمن کی یہ بڑی پہچان ہے، آخر نہ دیکھا کہ دل کی دبی نے بھڑک کر کہاں تک پھونکا، جانتے ہو کہ اب یہ منکرانِ مجلس و قیام کون ہیں، ہاں ہاں وہی ہیں جو اول تو اتنا کہتے تھے کہ وہ بڑے بھائی ہم چھوٹے بھائی، ان کی سروری ایسی ہی ہے جیسے گاؤں کا پدھان یا قوم کا چودھری، ان کی تعریف ایسی ہی کرو جیسے آپس میں ایک دوسرے کی کرتے ہو بلکہ اس سے بھی کم، باتوں مثالوں میں چوڑھے چمار سے تشبیہ بھی دے بھاگتے تھے کہ یہ سب اوروں سے بہت زائد ان کی دھرم پوتھی تقویت الایمان میں مصرح ہیں اور اب تو اور بھی کھیل کھیلے کہ ان کے علم سے شیطان کا علم زیادہ ہے۔ 2 جیسا علم غیب ان کو ہے ایسا تو ہر پاگل ہر چوپائے کو ہوتا ہے 3 وغیرہ وغیرہ کلمات ملعونہ۔ مسلمانو! یہ ہیں جو آج تمہارے سامنے مجلس مبارک و قیام سے منکر ہیں اب تو سمجھو کہ علت انکار کیا ہے واللہ واللہ بغض محمد رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم، دیکھو خبردار ہوشیار یہ ہیں وہ جن کی خبر حدیث میں دی تھی کہ ذیاب فی ثیاب۔ 4 بھیڑیئے ہوں گے کپڑے پہنے، یعنی ظاہر میں انسانی لباس اور باطن میں گرگ خناس۔ اے مصطفٰی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کی بھولی بھیڑو! اپنے دشمن کو پہچانو، نہیں نہیں تمہارے دشمن نہیں

تمہارے پیارے مالک صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے دشمن جنہوں نے وہ ملعون گالیاں محمد رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی شان اقدس میں لکھیں، چھاپیں اور آج تک ان پر مصر ہیں۔

"قَدْ بَدَتِ الْبَغْضَآءُ مِنْ اَفْوَاهِهِمْۚ۱ وَمَا تُخْفِیْ صُدُوْرُهُمْ اَكْبَرُ" | ان کی عداوت شدیدہ تو ان کی باتوں سے ظاہر ہو گئی اور وہ جو ان کے دلوں میں چھپی ہے بہت (بڑی ہے)۔

---

1 القرآن الکریم ۲ / ۱۵۶ 2 البراہین القاطعہ بحث علم غیب مطبع لے بلا سوانح ڈھور ص ۵۱ 3 حفظ الایمان قدیمی کتب خانہ کراچی ص ۱۳ و دعوت فکر مکتبہ اعلیحضرت لاہور ص ۲۷ 4

صفحہ 252 کا 750

Volume 29 Fatawa Razawiyya

'AKBARU'[1]- is extra. Ask those who apparently do not commit those vile insults themselves, whether those wicked people who insulted Mustafa (peace and blessings of Allah be upon him) so profusely remained Muslims or became disbelievers. See, they will never call them disbelievers; instead, they will be ready to support them against Muhammad the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him), they will concoct interpretations, they will make excuses, even though the noble scholars of the Two Holy Sanctuaries (Haramain Sharifain) have unanimously stated, naming each of those insulters, that:

'Whoever doubts their punishment and their disbelief has indeed disbelieved.'[2] | Whoever doubts their punishment and being a disbeliever is also a disbeliever.

O Muslims! When the situation has reached this point, what opportunity remains for discussion in a gathering or on any Islamic issue? What right do disbelievers and apostates have to interfere in Islamic matters? But all this difficulty is because, brothers, you have not yet recognized the enemies of Muhammad the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him). You sit with them, listen to their words, see their writings. Look, this is poison for you. Look, your beloved Master (peace and blessings of Allah be upon him), who, by Allah, is kinder to you than you are to yourselves, is saying to you:

'Keep away from them and keep them away from you, so that they may not mislead you nor put you into trial.'[3] | Run away from them, keep them away from you, lest they mislead you or throw you into trial. And refuge is sought with Allah the Almighty.

Brothers! Is it better to cling to the hem of Mustafa (peace and blessings of Allah be upon him) or, God forbid, to fall into the trap of his enemies? May Allah not let go of his hem in this world or the hereafter. Amen, and may the blessings of Allah be upon our master and leader Muhammad and his family and all his companions. Amen.

Issue 98 to 99: From Jalandhar Chowk Imam Nasir-ud-Din, shop of Malik Muhammad Amin, sent by Malik Muhammad Amin, 25 Rabi-ul-Akhir 1337.

What do the scholars of religion say in this matter that—

[1] Al-Quran Al-Karim 3/118 [2] Hussam-ul-Haramain, Maktaba Nabawiya Lahore p. 13, Maktaba Ahl-e-Sunnat Bareilly p. 94 [3] Sahih Muslim, Chapter on Prohibition of Narrating from the Weak, Qadeemi Kutub Khana Karachi 1/10

जिल्द 29 फ़तावा रज़विया

'अकबरु'[1]- अतिरिक्त है। जो स्पष्ट रूप से स्वयं उन नीच गालियों के दोषी नहीं हैं, उनसे पूछकर देखें कि जिन दुष्टों ने मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को इस तरह मुँह भर-भर कर गालियाँ दीं, वे मुसलमान रहे या काफ़िर हो गए। देखो, वे उन्हें हरगिज़ काफ़िर नहीं कहेंगे, बल्कि मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के मुक़ाबले में उल्टी उनकी हिमायत के लिए तैयार हो जाएँगे, तावीलें (व्याख्याएं) गढ़ेंगे, बातें बनाएंगे, जबकि हरमैन शरीफ़ैन के विद्वानों ने सर्वसम्मति से उन सभी गाली देने वालों का एक-एक कर नाम लेकर फ़रमाया है कि:

'जिसने उनके अज़ाब (सज़ा) और उनके काफ़िर होने में शक किया, वह भी काफ़िर हो गया।'[2] | जो उनके अज़ाब और काफ़िर होने में शक करे, वह भी काफ़िर है।

मुसलमानों! जब नौबत यहाँ तक पहुँच चुकी, तो फिर उसे किसी मजलिस या इस्लाम के किसी मसले पर बहस करने का क्या मौका रहा? काफ़िरों और मुर्तदों (धर्मत्यागियों) को इस्लामी मामलों में दखल देने का क्या हक़ है? लेकिन यह सारी मुश्किल इसलिए है कि भाइयो! आपने अभी तक मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के दुश्मनों को नहीं पहचाना। आप उनके पास बैठते हो, उनकी बातें सुनते हो, उनकी रचनाएँ देखते हो। देखो, यह तुम्हारे हक़ में ज़हर है। देखो, तुम्हारे प्यारे आका (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम), जो अल्लाह की क़सम तुमसे कहीं ज़्यादा तुम पर मेहरबान हैं, तुमसे फ़रमा रहे हैं कि:

'तो उनसे दूर रहो और उन्हें अपने से दूर रखो, कहीं वे तुम्हें गुमराह न कर दें और तुम्हें फ़ितने (परीक्षण) में न डाल दें।'[3] | उनसे दूर भागो, उन्हें अपने से दूर कर दो, कहीं वे तुम्हें गुमराह न कर दें या तुम्हें फ़ितने में न डाल दें। अल्लाह तआला की पनाह।

भाइयो! मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के दामन से लिपटे रहना अच्छा है या माज़-अल्लाह उनके दुश्मन के जाल में फँसना? अल्लाह तआला दुनिया और आख़िरत में उनका दामन न छुड़ाए। आमीन, और अल्लाह की रहमतें हों हमारे आका और मौला मुहम्मद पर और उनकी आल और उनके तमाम असहाब पर। आमीन।

मसला 98 से 99: जालंधर चौक इमाम नासिरुद्दीन साहब, दुकान मलिक मुहम्मद अमीन, प्रेषक मलिक मुहम्मद अमीन, 25 रबी-उल-आख़िर 1337।

दीन के विद्वान इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि—

[1] अल-कुरआन अल-करीम 3/118 [2] हुसाम-उल-हरमैन, मकतबा नबविया लाहौर पृ. 13, मकतबा अहल-ए-सुन्नत बरेली पृ. 94 [3] सहीह मुस्लिम, कमज़ोरों से रिवायत करने की मनाही का अध्याय, क़दीमी कुतुब खाना कराची 1/10

اَکْبَرُ ط ۱۔ زائد ہے۔ جو بظاہر اُن خبیث گالیوں کے خود مرتکب نہیں ان سے پوچھ دیکھئے کہ جن خبیثاء نے مصطفی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کو یوں منہ بھر کر گالیاں دیں وہ مسلمان رہے یا کافر ہو گئے، دیکھو ہرگز ہرگز انہیں کافر نہ کہیں گے بلکہ محمد رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کے مقابل اُلٹی اُن کی حمایت کو تیار ہو جائیں گے، تاویلیں گھڑیں گے بات بنائیں گے، حالانکہ علمائے کرام حرمین شریفین بالاتفاق اُن تمام دشنامیوں کو ایک ایک کا نام لے کر فرما چکے کہ۔

من شك فی عذابه و کفره فقد کفر ۲ | جو ان کے عذاب اور کافر ہونے میں شک کرے وہ بھی کافر ہے،

مسلمانو! جب نوبت یہاں تک پہنچ چکی پھر اُسے مجلس یا کسی مسئلہ اسلام میں بحث کا کیا موقع رہا۔ کافروں مرتدوں کو اسلامی مسائل میں دخل دینے کا کیا حق۔ مگر یہ ساری دقت اس کی ہے کہ بھائیو تم نے محمد رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کے دشمنوں کو ابھی نہ پہچانا، ان کے پاس بیٹھتے ہو، ان کی بات سنتے ہو، ان کی تحریریں دیکھتے ہو، دیکھو یہ تمہارے حق میں زہر ہے، دیکھو تمہارے پیارے مولیٰ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کہ واللہ تم سے بڑھ کر تم پر مہربان ہیں، تمہیں ارشاد فرما رہے ہیں کہ :

فایّاکم وایاھم لایضلونکم ولایفتنونکم ۳ | اُن سے دور بھاگو انہیں اپنے سے دُور کردو کہیں وہ تمہیں گمراہ نہ کردیں کہیں وہ تمہیں فتنہ میں نہ ڈال دیں۔ والعیاذ باللہ تعالٰی۔

بھائیو! مصطفی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کے دامن سے لپٹار ہنا اچھا ہے یا معاذ اللہ ان کے دشمن کے پھندے میں پڑنا۔ اللہ تعالیٰ اُن کا دامن نہ چھڑائے دنیا میں نہ آخرت میں، آمین وصلی اللہ تعالٰی علیٰ سیدنا ومولینا محمد والہ وصحبہ اجمعین آمین۔

مسئلہ ۹۸ تا ۹۹: از جالندھر چوک امام ناصر الدین صاحب، دکان ملک محمد امین، مرسلہ ملک محمد امین ۲۵ ربیع الآخر ۱۳۳۷

کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ۔

۱ القرآن الکریم ۳ / ۱۱۸ ۲ حسام الحرمین مکتبہ نبویہ لاہور ص ۱۳ مکتبہ اہل سنت بریلی ص ۹۴

۳ صحیح مسلم باب النہی عن الروایۃ عن الضعفاء قدیمی کتب خانہ کراچی ۱ / ۱۰

Fatawa Razawiya, Volume 29

(1) Can Satan deceive someone in a dream by taking a good form and claiming, "I am Muhammad, the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him)"? (2) What is meant by eighteen thousand worlds? Are all things like trees, etc., also included in this or not?

Answer: (1) Satan cannot impersonate the Holy Prophet (peace and blessings be upon him). It is stated in the Hadith: "Whoever has seen me in a dream has indeed seen the Truth, for Satan cannot take my form."[1] (Whoever saw me in a dream, undoubtedly saw me, because Satan does not have the power to take my form. (T)) Yes, he can deceive by taking the form of pious people; in fact, he can even manifest himself as God. (2) There are eighteen worlds, and due to the abundance of creation in each, it was termed as a thousand. These are the three kingdoms: minerals, plants, and animals; the four elements; the seven heavens; the sphere of fixed stars; the starless sphere; the Footstool (Kursi); and the Throne (Arsh). This is the explanation by Shaykh al-Akbar Muhyi al-Din ibn Arabi (may his secret be sanctified). And Allah Almighty knows best.

Problem 100: From Bareilly City, Saudagaran locality, asked by Shafi Ahmad Bisalpuri, 5 Jumada al-Ula 1337 AH. Respected Master, after the Covenant of 'Alastu bi-rabbikum' (Am I not your Lord?), were the souls annihilated? And then at the time of human creation, is the soul created again? What is the belief of the Ahl al-Sunnah regarding this, and what is the evidence? And at what level is this belief – certain (iqani), consensual (ijma'i), or among the necessities of the Ahl al-Sunnah? There is hesitation among scholars on this issue; clarification is needed now.

Answer: God forbid! Once created, the soul will never perish. "Verily, you were created for eternity."[2] (You have been created forever. (T)) The notion that the soul begins to exist only with the body is a false idea of philosophers. Allah Almighty says: "And you were dead and He gave you life; then He will cause you to die, then He will bring you back to life."[3] (While you were dead, He gave you life, then He will cause you to die, then He will bring you back to life. (T))

[1] Kanz al-Ummal, Hadith 41289, Muassasat al-Risalah, Beirut, 15/384. [2] Sharh al-Sudur, Chapter on the Virtue of Death, Khilafat Academy, Mingora, Swat, p. 5. [3] Al-Quran al-Karim, 2/28.

फ़तावा-ए-रज़विया, जिल्द 29

(1) क्या शैतान सपने में किसी अच्छे रूप में आकर यह धोखा दे सकता है कि "मैं मुहम्मद अल्लाह का रसूल हूँ (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)"? (2) अठारह हज़ार आलम (संसार) से क्या तात्पर्य है? क्या इसमें सभी चीजें जैसे पेड़ आदि भी शामिल हैं या नहीं?

उत्तर: (1) शैतान हुज़ूर अकदस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का रूप नहीं ले सकता। हदीस में फरमाया गया: "जिसने मुझे सपने में देखा, उसने निश्चित रूप से सत्य (मुझे ही) देखा, क्योंकि शैतान मेरा रूप धारण नहीं कर सकता।"[1] (जिसने मुझे सपने में देखा उसने वास्तव में मुझे ही देखा, क्योंकि शैतान मेरी सूरत अख्तियार नहीं कर सकता। (त)) हाँ, वह नेक लोगों का रूप बनकर धोखा दे सकता है, बल्कि स्वयं को ईश्वर के रूप में भी प्रकट कर सकता है। (2) अठारह आलम हैं, और प्रत्येक में सृष्टि की बहुतायत के कारण उसे 'हज़ार' से व्यक्त किया गया। ये हैं तीन मवालीद: जमादात (खनिज), नबातात (वनस्पति), हैवानात (जीव); चार तत्व; सात आकाश; फलक-ए-सवाबित (सितारों का आकाश); फलक-ए-अतलस; कुर्सी; और अर्श। यह शेख अल-अकबर मुहीउद्दीन इब्न अरबी (क़ुद्दसा सिर्रहु) की व्याख्या है। और अल्लाह बेहतर जानता है।

मसाला 100: शहर बरेली, मोहल्ला सौदागरान, प्रेषक शफी अहमद बीसलपुरी, 5 जमादी अल-उला 1337 हिजरी। हुज़ूर पुरनूर, 'अलस्तु बिरब्बिकुम' (क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूँ) के वादे के बाद, क्या रूहें (आत्माएँ) मिटा दी गई थीं? और बाद में इंसान के जन्म के समय फिर से रूह की रचना होती है? इस बारे में अहले सुन्नत का क्या अक़ीदा (आस्था) है और क्या दलील है? और यह अक़ीदा किस दर्जे का है - यकीनी (इयकानी), इजमाई या अहले सुन्नत की ज़रूरतों (ज़रूरियात) में से? इस मुद्दे पर उलेमाओं में दुविधा है, अभी इसकी स्पष्टता की ज़रूरत है।

उत्तर: अल्लाह की पनाह! रूह पैदा होने के बाद कभी खत्म नहीं होगी। "बेशक, तुम अनंत काल के लिए पैदा किए गए हो।"[2] (तुम हमेशा के लिए पैदा किए गए हो। (त)) शरीर के साथ रूह का नया पैदा होना दार्शनिकों का एक गलत विचार है। अल्लाह अज़्ज़वजल ने फरमाया: "जबकि तुम निर्जीव (मृत) थे, उसने तुम्हें जीवन दिया, फिर वह तुम्हें मृत्यु देगा, फिर वह तुम्हें जीवित करेगा।"[3] (हालाँकि तुम मुर्दा थे, उसने तुम्हें जीवित किया, फिर तुम्हें मारेगा, फिर तुम्हें जिलाएगा। (त))

[1] कंज़ अल-उम्माल, हदीस 41289, मुअस्सासा-ए-रिसाला, बेरुत, 15/384. [2] शरह अल-सुदूर, मृत्यु की फज़ीलत का अध्याय, खिलाफत अकादमी, मिंगोरा, स्वात, पृ. 5. [3] अल-क़ुरान अल-करीम, 2/28.

पृष्ठ 254/750

(۱) خواب میں شیطان کسی اچھی صورت میں ہو کر فریب دے سکتا ہے یا نہیں کہ میں محمد رسول اللہ ہوں صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم (۲) اٹھارہ ہزار عالم سے کیا مراد ہے؟ کل اشیاء درخت وغیرہ بھی اس میں شامل ہیں یا نہیں؟ الجواب: (۱) حضور اقدس علیہ افضل الصلوات والتسلیمات کے ساتھ شیطان تمثل نہیں کر سکتا۔ حدیث میں فرمایا۔ من رأنی فی المنام فقد رأی الحق ان الشیطن لایتمثل بی ۱۔ (جس نے مجھے خواب میں دیکھا بے شک اس نے مجھے ہی دیکھا کیونکہ شیطان میری صورت اختیار نہیں کر سکتا۔ (ت)) ہاں نیک لوگوں کی شکل بن کر دھوکا دے سکتا ہے بلکہ اپنے آپ کو الہ ظاہر کر سکتا ہے۔ (۲) عالم اٹھارہ ہیں اور ہر ایک میں کثرتِ مخلوقات کے سبب اسے ہزار سے تعبیر کیا۔ تینوں موالید جمادات، نباتات، حیوانات، اور چاروں عناصر، اور سات آسمان، اور فلکِ ثوابت، فلک اطلس، کرسی، عرش، افادہ الشیخ الاکبر محی الدین ابن عربی قدس سرہ۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۱۰۰: از شہر بریلی محلہ سوداگراں مسئولہ شفیع احمد بسلپوری ۵ جمادی الاولی ۱۳۳۷ھ حضور پُر نور، بعد میثاق الست بربکم کیا ارواح معدوم کر دی گئی تھیں اور بعدہ خلقِ انسان کے وقت پھر خلقِ روح ہوتا ہے، اس میں اہل سنت کا کیا عقیدہ ہے اور کیا دلیل؟ اور یہ عقیدہ کس مرتبہ میں ہے ایقانی اجماعی یا ضروریاتِ اہلسنت سے؟ اس مسئلہ میں علماء کو تردد ہے، ابھی ضرورت ہے۔ الجواب: حاشا للہ، روح بعد ایجاد کبھی فنانہ ہوگی، انما خلقتم للابد ۲ (تم ہمیشہ کے لیے پیدا کیے گئے ہو۔ ت) بدن کے ساتھ حدوث نفس خیال باطل فلاسفہ ہے، قال اللہ عزوجل: "وَكُنْتُمْ اَمْوَاتًا فَأَحْيَاكُمْ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيْكُمْ" ۳۔ (حالانکہ تم مردہ تھے اُس نے تمہیں جلایا پھر تمہیں مارے گا پھر تمہیں جلائے گا۔ (ت))

۱- کنز العمال حدیث ۴۱۲۸۹ موسسۃ الرسالہ بیروت ۱۵/ ۳۸۴ ۲- شرح الصدور باب فضل الموت خلافت اکیڈمی منگورہ سوات ص ۵ ۳- القرآن الکریم ۲/ ۲۸

Fatawa Razawiyya, Volume 29

If souls were made non-existent after the covenant [of Alastu], there would have been three deaths, and it would have been stated like this:

(Arabic) كنتم امواتا فاحياكم ثم اماتكم ثم احياكم ثم يميتكم ثم يحييكم۔	**You were dead, He gave you life, then He caused you to die, then He gave you life, then He will cause you to die, then He will give you life. (T)**

This is a consensus belief, but not so clear that a person who disagrees out of ignorance should be expelled from the Ahl-us-Sunnah; rather, he is merely an error-maker and wrongdoer, and the charge against him is that he dared to speak without knowledge. And Allah Almighty knows best.

Problem 101: 11 Jumada al-Ula 1337 AH What do the scholars of religion say on this matter: What is the definition of Iman (faith)? And how does faith become perfect? Explain and be rewarded. (T)

The Answer: To believe that Muhammad, the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him), is truthful in every matter, and to accept the truth of His Presence from the bottom of one's heart, is faith. He who establishes this shall be known as a Muslim, provided that in none of his words, deeds, or states is found any denial, falsification, or insult toward Allah and His Messenger. And he whose heart's connection with Allah and His Messenger (Exalted and Almighty, peace and blessings of Allah be upon him) prevails over all other connections, who loves the lovers of Allah and His Messenger even if they are his own enemies, and who holds enmity towards the opponents and detractors of Allah and His Messenger even if they are pieces of his own liver (children/family) - whatever he gives, he gives for Allah, and whatever he withholds, he withholds for Allah - then his faith is perfect. The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says:

(Arabic) من احب لله وابغض لله واعطى لله ومنع لله فقدا ستكمل الايمان والله تعالىٰ اعلم-1	**Whoever loves for Allah, hates for Allah, gives for Allah, and withholds for Allah, has indeed perfected his faith. (T) And Allah Almighty knows best.**

Problem 102 and 103: From Khandal Post Office, Kyauktaw, Akyab District, sent by Muhammad Abdus Salam, 4th teacher, Government Islamic Urdu School. 14 Jumada al-Ula 1337 AH What do the scholars of religion say on this matter: Some Wahhabi scholars say that reciting Durud Taj is haram (forbidden)...

1 Sunan Abi Dawud, Kitab al-Sunnah, Chapter on Rejecting al-Irja, Aftab-e-Alam Press, Lahore, 12 / 287

फतावी रज़विया, जिल्द 29

अगर मीसाक़ के बाद रूहें मिटा दी गई होतीं तो तीन मौतें होतीं और इस तरह फ़रमाया जाता।

(अरबी) كنتم امواتا فاحياكم ثم اماتكم ثم احياكم ثم يميتكم ثم يحييكم۔	**तुम मुर्दा थे उसने तुम्हें ज़िंदा किया, फिर मारा, फिर ज़िंदा किया, फिर मारेगा, फिर ज़िंदा करेगा। (त)**

यह अक़ीदा इजमाई (सर्वसम्मत) है मगर इस दर्जे पर स्पष्ट नहीं कि जो व्यक्ति अनभिज्ञता के कारण इसके विपरीत चले उसे अहले सुन्नत से बाहर कर दिया जाए, बल्कि वह गलत करने वाला और गुनहगार है बस, और उस पर यह इल्ज़ाम है कि उसने बिना जाने बोलने का साहस किया। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 101: 11 जमादि उल-उला 1337 हिजरी उलमा-ए-दीन इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि ईमान की परिभाषा क्या है? और ईमान कामिल (पूर्ण) कैसे होता है? बयान फ़रमाएं अजर पाएं। (त)

अल-जवाब: मोहम्मद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) को हर बात में सच्चा जानना, हुज़ूर की सच्चाई को सच्चे दिल से मानना ईमान है। जो इस पर अडिग हो उसे मुसलमान माना जाएगा, जब तक कि उसके किसी वचन, कर्म या स्थिति में अल्लाह और उसके रसूल का इनकार, झुठलाना या अपमान न पाया जाए। और जिसके दिल में अल्लाह और उसके रसूल (अज़्वजल व सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) का लगाव तमाम लगावों पर हावी हो, अल्लाह और रसूल के चाहने वालों से मोहब्बत रखे चाहे वे अपने दुश्मन हों, और अल्लाह और रसूल के विरोधियों और बुरा बोलने वालों से दुश्मनी रखे चाहे वे अपने जिगर के टुकड़े (संतान) हों—जो कुछ दे अल्लाह के लिए दे, जो कुछ रोके, तो उसका ईमान कामिल है। रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं:

(अरबी) من احب لله وابغض لله واعطى لله ومنع لله فقدا ستكمل الايمان والله تعالىٰ اعلم-1	**जिसने अल्लाह के लिए मोहब्बत की और अल्लाह के लिए दुश्मनी की, और अल्लाह के लिए दिया और अल्लाह के लिए रोका, उसका ईमान कामिल है। (त) और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।**

मसला 102 और 103: खंडल पोस्ट ऑफिस, क्युक्तु जिला अकयाब से प्रेषक मोहम्मद अब्दुस सलाम, चतुर्थ अध्यापक, गवर्नमेंट इस्लामिया उर्दू स्कूल। 14 जमादि उल-उला 1337 हिजरी उलमा-ए-दीन इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि कुछ वहाबी आलिम कहते हैं कि दरूद ताज पढ़ना हराम है...

---

1 सुनन अबी दाऊद, किताबुस सुन्नह, बाब फ़ी रद्दील इरजा, आफ़ताब-ए-आलम प्रेस, लाहौर, 12 / 287

اگر بعد میثاق رُوحیں معدوم کردی گئی ہوتیں تو تین موتیں ہوتیں اور یوں فرمایا جاتا۔

کنتم امواتا فاحیاکم ثم اماتکم ثم احیاکم ثم یمیتکم ثم یحییکم۔

تم مردہ تھے اس نے تمہیں زندہ کیا، پھر مارا، پھر زندہ کیا، پھر مارے گا، پھر زندہ کرے گا۔ (ت)

یہ عقیدہ اجماعی ہے مگر نہ اس درجہ پر واضح کہ جو شخص بحال ناواقفی اس کا خلاف کرے اُسے اہل سنت سے خارج کیا جائے بلکہ غلط کار خاطی ہے وبس، اور اس پر یہ الزام ہے کہ بے جانے لب کشائی کی جرات کی۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۱۰۱: ۱۱ جمادی الاولٰی ۱۳۳۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ایمان کی تعریف کیا ہے؟ اور ایمان کامل کیسے ہوتا ہے؟ بینوا توجروا۔ (بیان فرماؤ اجر دیئے جاؤ گے۔ ت)

الجواب: محمد رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کو ہر بات میں سچا جاننے، حضور کی حقانیت کو صدق دل سے ماننا ایمان ہے جو اس کا مقرر ہوا اسے مسلمان جانیں گے جب کہ اس کے کسی قول یا فعل یا حال میں اللہ و رسول کا انکار یا تکذیب یا توہین نہ پائی جائے اور جس کے دل میں اللہ و رسول جل و علا و صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کا علاقہ تمام علاقوں پر غالب ہو اللہ و رسول کے محبوں سے محبت رکھے اگرچہ اپنے دشمن ہوں، اور اللہ و رسول کے مخالفوں بد گویوں سے عداوت رکھے اگرچہ اپنے جگر کے ٹکڑے ہوں، جو کچھ دے اللہ کے لیے دے جو کچھ روکے، سو اس کا ایمان کامل ہے، رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں:

من احب للہ وابغض للہ واعطی للہ ومنع للہ فقدا ستکمل الایمان واللہ تعالیٰ اعلم-1

جس نے اللہ تعالیٰ کے لیے محبت کی اور اللہ تعالیٰ کے لیے عداوت کی، اور اللہ تعالیٰ کے لیے دیا اور اللہ تعالیٰ کے لیے روکا، اس کا ایمان کامل ہے۔ (ت) واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۱۰۲ اور ۱۰۳: از کھنڈل پوسٹ آفس کیوکٹو ضلع اکیاب مرسلہ محمد عبدالسلام مدرس چہارم گورنمنٹ اسلامیہ اردو اسکول ۱۴ جمادی الاولیٰ ۱۳۳۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ بعض وہابی عالم کہتے ہیں کہ درود تاج پڑھنا حرام ہے

---

1 سنن ابی داؤد کتاب السنۃ باب فی رد الارجاء آفتاب عالم پریس لاہور ۱۲ / ۲۸۷

Fatawa Razawiyya - Volume 29

Is the use of the titles 'Dafi-ul-Balaa wal-Waba wal-Qaht wal-Maradh wal-Alam' (Remover of Calamities, Pestilence, Famine, Disease, and Pain) for the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) improper, or rather forbidden by Sharia, and is there a fear of losing one's faith by saying so? Seek refuge in Allah from that. Is this statement true or false? If it is true, what is the Sharia ruling for those who deny it?

Answer: The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) is undoubtedly the remover of every calamity. His great stature is even more sublime and high; even his servants remove calamities. Ibn Adi and Ibn Asakir narrate from Abdullah bin Abbas (may Allah be pleased with them) that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said:

[Arabic Box]: "إِنَّمَا سُمِيْتُ اَحْيَدَ لِاَنِّيْ اَحِيْدُ عَنْ اُمَّتِيْ نَارَ جَهَنَّمَ۔[1]" (I was named 'Ahyad' because I repel the fire of Hell from my Ummah.)

What greater calamity can there be than Hell, of which the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) is the remover? Al-Bayhaqi in *Dala'il al-Nubuwwah* and Abu Sa'ad in *Sharaf al-Mustafa* narrate from Khafaf bin Nadlah (may Allah be pleased with him) that he presented himself in the Prophet's court and submitted:

[Arabic Box]: "حتی وردت الی المدینة جاهدا کیما اراك فتفرج الکربات۔[2]" (I arrived in Medina with great effort, so that by being honored with your holy presence, Your Excellency might resolve all my difficulties.)

The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) liked his submission and praised it. In *Manh al-Madh* by Imam Ibn Sayyid al-Nas, it is mentioned that the companion Harb bin Raytah (may Allah be pleased with him) submitted:

[Arabic Box]: "لقد بعث الله النبي محمدا بحق وبرهان الهدی یکشف الکربا۔[3]" (By God, Allah Almighty sent His Prophet Muhammad (peace and blessings of Allah be upon him) with truth and definitive proof of guidance such that His Excellency removes calamities.)

Footnotes: 1. Tarikh Dimashq al-Kabir, Chapter: Knowledge of His Names, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 3/21. 2. Dala'il al-Nubuwwah by al-Bayhaqi, Compilation of Chapters on the Commissioning of the Prophet, Reason for the Islam of Khafaf bin

Nadlah, Dar al-Kutub al-Ilmiyyah, Beirut, 2/261; Sharaf al-Mustafa, Mention of the Islam of Khafaf bin Nadlah, Hadith 53, Dar al-Bashair al-Islamiyyah, 1/232. 3. Al-Isaba fi Tamyiz al-Sahaba, referencing Ibn Sayyid al-Nas, biography 1659, Harb bin Raytah, Dar Sader, Beirut, 1/320.

फ़तावा रज़विया - जिल्द 29

और अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के लिए 'दाफ़ि-उल-बला वल-वबा वल-क़हत वल-मरज़ वल-अलम' (मसीबत, वबा, अकाल, बीमारी और दुख को दूर करने वाला) का इस्तेमाल अनुचित है, बल्कि शरई तौर पर मना है और ईमान जाने का ख़ौफ़ है? अल्लाह इससे पनाह दे। क्या यह कहना हक़ है या बातिल? अगर हक़ है तो मुनकिरीन (इनकार करने वालों) पर शरई हुक्म क्या है?

अल-जवाब: अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) निस्संदेह हर बला को दूर करने वाले (दाफ़ि-ए-बला) हैं। उनकी अज़ीम शान तो और भी बुलंद और आला है; उनके गुलाम बलाएं दूर करते हैं। इब्ने अदी और इब्ने असाकिर अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से रिवायत करते हैं कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया:

[अरबी बॉक्स]: "إِنَّمَا سُمِيْتُ اَحْيَدَ لِاَنِّيْ اَحِيْدُ عَنْ اُمَّتِيْ نَارَ جَهَنَّمَ[1]۔" (मेरा नाम 'अहयद' इसलिए रखा गया क्योंकि मैं अपनी उम्मत से जहन्नुम की आग को दूर (दफ़ा) करता हूँ।)

दोज़ख़ से बदतर और क्या बला होगी जिसके दाफ़ि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) हैं। बेहाक़ी 'दलाइल-उन-नुबुव्वह' में और अबू साद 'शर्फ़ुल मुस्तफ़ा' में रिवायत करते हैं कि ख़फ़ाफ़ बिन नज़ला (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने बारगाह में हाज़िर होकर अर्ज़ किया:

[अरबी बॉक्स]: "حتی وردت الی المدینة جاھدا کیما اراك فتفرج الکربات۔[2]" (मैं कोशिश करता हुआ मदीना में हाज़िर हुआ कि ज़ियारत-ए-अक़दस से मुशर्रफ़ हूँ तो हुज़ूर मेरी सब मुश्किलें खोल दें।)

अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने उनकी अर्ज़ को पसंद किया और तारीफ़ फ़रमाई। 'मन्ह-अल-मदह' में इमाम इब्न सैयिद-उन-नास रिवायत करते हैं कि सहाबी हर्ब बिन रयता (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने अर्ज़ किया:

[अरबी बॉक्स]: "لقد بعث اللہ النبي محمدا بحق وبرھان الھدی یکشف الکربا۔[3]" (ख़ुदा की क़सम अल्लाह अज़्ज़-व-जल्ल ने अपने नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हक़ और क़तई दलील-ए-हिदायत के साथ ऐसा भेजा कि हुज़ूर दाफ़ि-ए-बला फ़रमाते हैं।)

फ़ुटनोट्स: 1. तारीख़ दमिश्क़ अल-कबीर, बाब: मारिफ़त अस्मा-इ-ही, दार इह्या अल-तुरास अल-अरबी, बेरुत, 3/21. 2. दलाइल-उन-नुबुव्वह लिल-बेहाक़ी, जमा अबवाब अल-मबस, सबब इस्लाम ख़फ़ाफ़ बिन नज़ला, दार अल-कुतुब अल-इल्मिया, बेरुत, 2/261; शर्फ़ुल मुस्तफ़ा, ज़िक्र इस्लाम ख़फ़ाफ़ बिन नज़ला, हदीस 53, दार अल-बशाईर अल-इस्लामिया, 1/232. 3. अल-इसाबा फ़ी तमीज़ अल-सहाबा, बहवाला इब्न सैयिद-उन-नास, तर्जुमा 1659, हर्ब बिन रयता, दार सादिर, बेरुत, 1/320.

पृष्ठ 256 / 750

اور رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے حق میں دافع البلاء والوباء والقحط والمرض والالم (مصیبت، وباء، قحط سالی، بیماری اور دکھ کو دور کرنے والا۔ت) کا استعمال نازیبا بلکہ شرعاً ممنوع اور ایمان جانے کا خوف ہے۔ نعوذ باللہ من ذلک، یہ قول حق ہے یا باطل؟ اگر حق ہو تو منکرین پر شرعاً کیا حکم؟

الجواب: رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم بے شک دافع ہر بلا ہیں، ان کی شانِ عظیم توا رفع و اعلیٰ ہے، اُن کے غلام دفعِ بلا فرماتے ہیں، ابن عدی و ابن عساکر عبداللہ بن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے راوی، رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں:

[عربی باکس]: ''اِنَّمَا سُمِیْتُ اَحْیَدَ لِاَنِّی اَحِیْدُ عَنْ اُمَّتِیْ نَارَ جَھَنَّمَ۔ 1'' میرا نام احید اس لیے ہوا کہ میں اپنی اُمت سے آتشِ دوزخ کو دفع فرماتا ہوں۔

دوزخ سے بدتر اور کیا بلا ہوگی جس کے دافع رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم ہیں۔ بیہقی دلائل النبوۃ اور ابو سعد شرف المصطفیٰ میں راوی، خفاف بن نضلہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ حاضرِ بارگاہ ہو کر عرض کی:

[عربی باکس]: ''حتی وردت الی المدینۃ جاھدا کیما اراك فتفرج الکربات۔ 2'' میں کوشش کرتا ہوا مدینہ میں حاضر ہوا کہ زیارت اقدس سے مشرف ہوں تو حضور میری سب مشکلیں کھول دیں۔

رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے اُن کی عرض پسند کی اور تعریف فرمائی۔ منح المدح امام ابن سید الناس میں ہے حرب بن ریطہ صحابی رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے عرض کی :۔

[عربی باکس]: ”لقد بعث الله النبي محمدا بحق وبرهان الهدى يكشف الكربا۔ 3“ (خدا کی قسم اللہ عزوجل نے اپنے نبی محمد صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کو حق اور قطعی دلیل ہدایت کے ساتھ ایسا بھیجا کہ حضور دافع بلا فرماتے ہیں)

1 تاریخ دمشق الکبیر باب معرفة اسمائه دار احیاء التراث العربی بیروت ۳/ ۲۱ 2 دلائل النبوة للبیہقی جماع ابواب المبعث سبب اسلام خفاف بن نضلہ دار الکتب العلمیہ بیروت ۲/ ۲۶۱، شرف المصطفی ذکر اسلام خفاف بن نضلہ حدیث ۵۳ دار البشائر الاسلامیہ ۱/ ۲۳۲ 3 الاصابة فی تمییز الصحابة بحوالہ ابن سید الناس ترجمہ ۱۶۵۹ حرب بن ریطہ دار صادر بیروت ۱/ ۳۲۰

Fatawa Razawiyya Volume 29

Narrated by Umar bin Shabba through Aamir Shabi, Aswad bin Masud Thaqafi (may Allah be pleased with him) submitted:

You are the Messenger whose favors are hoped for during drought when the rain fails. 1	**O Messenger of Allah! You are the Messenger through whose grace hope is sought at the time of famine when rain fails to fall.**

Ibn Shadhan narrated from Abdullah bin Masud (may Allah be pleased with him) that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said at the funeral of Hazrat Hamzah (may Allah be pleased with him):

O Hamzah, O remover of afflictions! O Hamzah, O defender of the face of the Messenger of Allah! 2	**O Hamzah, O repeller of calamities! O Hamzah, O one who wards off enemies from the face of the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him).**

In previous scriptures, it is mentioned regarding the noble mention of the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) that he will have two deputies. One senior, namely Siddiq Akbar (may Allah be pleased with him), and the second a youth, namely Faruq Azam (may Allah be pleased with him). "As for the youth, he is the plunger into difficulties and the repeller of complexities." 3 He who is the youth, he plunges into hardships and is a great repeller of calamities and a great solver of problems. The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says:

[Whomever I am] a protector of, Ali is his protector 4. Al-Munawi said in his commentary: He repels from him what he dislikes. 5	**That is, whomever I am a helper of, Ali al-Murtada is his helper, for he repels every disliked thing from him.**

Shah Waliullah Dehlavi writes in "Hama'at":

Among the fruits of this connection is the appearance of the form of that group [of saints] in places of peril and distress, and the resolution of problems being attributed to that form. 6	**The appearance of the form of that group (Awliya Allah) in destructions and straits, and the resolution of problems being attributed to it, is among the fruits of this connection. (T)**

1 Al-Isaba fi Tamyiz al-Sahaba, Biography 169, Aswad bin Masud Thaqafi, Dar Sader Beirut, 1/26 2 Insan al-Uyun, known as al-Sirah al-Halabiyyah, Mention of the Battle of Uhud, Al-Maktaba al-Islamiyya Beirut, 2/247 3 4 Al-Jami' al-Saghir, Hadith 9001, Dar al-Kutub al-Ilmiyya Beirut, 2/522 5 Al-Taysir Sharh al-Jami' al-Saghir, under the Hadith "Whomever I am a protector..." etc., Maktaba al-Imam al-Shafi'i Riyadh, 2/442 6 Hama'at, Hama 11, Shah Waliullah Academy Hyderabad, p. 59

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

उमर बिन शब्बा ने आमिर शुबी के माध्यम से रिवायत किया कि असवद बिन मसूद सक़फी (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने अर्ज़ किया:

आप वह रसूल हैं जिनके फ़ज़्ल की उम्मीद अकाल के समय की जाती है जब बारिश न हो। 1

या रसूल अल्लाह! आप वह रसूल हैं जिनके फ़ज़्ल की उम्मीद उस वक़्त की जाती है जब कहत (अकाल) हो और बारिश न बरसे।

इब्न शादान ने अब्दुल्लाह बिन मसूद (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत किया कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने हज़रत हमज़ा (रज़ियल्लाहु अन्हु) के जनाज़े पर फ़रमाया:

ऐ हमज़ा! ऐ मुसीबतों को दूर करने वाले! ऐ हमज़ा! ऐ रसूलुल्लाह के चेहरे से दुश्मनों को हटाने वाले! 2

ऐ हमज़ा, ऐ बलाओं को टालने वाले! ऐ हमज़ा, ऐ रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के चेहरे से दुश्मनों को दफ़ा करने वाले।

पिछली किताबों में हुज़ूर अक़दस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के ज़िक्र में है कि उनके दो नायब होंगे। एक उम्रदराज़ यानी सिद्दीक़-ए-अकबर (रज़ियल्लाहु अन्हु) और दूसरे जवान यानी फ़ारूक़-ए-आज़म (रज़ियल्लाहु अन्हु)। "रहा वह जवान, तो वह मुश्किलों में कूदने वाला और पेचीदगियों को टालने वाला है।" 3 वह जो जवान हैं, वह सख़्तियों में घुस जाने वाले और बड़ी बलाओं को टालने वाले और बड़े मुश्किल कुशा होंगे। रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं:

[जिसका मैं] वली (मददगार) हूँ, अली उसका वली है। 4 मुनावी ने अपनी शरह में कहा: वह उससे हर नापसंद चीज़ को टाल देते हैं। 5

यानी मैं जिसका मददगार हूँ, अली अल-मुर्तज़ा उसके मददगार हैं कि हर मकरूह (नापसंद चीज़) को उससे दफ़ा करते हैं।

शाह वलीउल्लाह देहलवी 'हमात' में लिखते हैं:

इस निस्बत (सम्बन्ध) के समरात (फलों) में से यह है कि हलाकतों और तंगियों में उस जमाअत की सूरत का ज़ाहिर होना और मुश्किलों का हल होना उस सूरत की तरफ़ मंसूब होना। 6

हलाकतों और तंगियों में उस जमाअत (औलिया अल्लाह) की सूरत का ज़ाहिर होना और मुश्किलों का हल होना उसकी तरफ़ मंसूब होना इस निस्बत के समरात में से है। (त)

1 अल-इसाबा फ़ी तमीज़ अल-सहाबा, जीवनी 169, असवद बिन मसूद सक़फी, दार सादिर बेरूत, 1/26 2 इंसान अल-उयून, जिसे सीरत-ए-हल़बिया के नाम से जाना जाता है, ग़ज़वा-ए-उहुद का उल्लेख, अल-मकतबा अल-इस्लामिया बेरूत, 2/247 3 4 अल-जामि अल-सगीर, हदीस 9001, दार अल-कुतुब अल-इल्मिया बेरूत, 2/522 5 अत-तयसीर शरह अल-जामि अल-सगीर, हदीस "जिसका मैं वली..." आदि के तहत, मकतबा अल-इमाम अल-शाफ़ई रियाद, 2/442 6 हमात, हमा 11, शाह वलीउल्लाह अकादमी हैदराबाद, पृ. 59

पेज 257/750

عمر بن شبہ بطریق عامر شعبی راوی، اسود بن مسعود ثقفی رضی اللہ تعالٰی عنہ نے عرض کی۔

انت الرسول الذی یرجی فواضلہ عند القحوط اذا ما أخطأ المطر۔ ۱

یا رسول اللہ ! حضور وہ رسول ہیں جن کے فضل کی امید کی جاتی ہے قحط کے وقت جب مینہ خطا کرے۔

ابن شاذان عبد اللہ بن مسعود رضی اللہ تعالٰی عنہ سے راوی، رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے حضرت حمزہ رضی اللہ تعالٰی عنہ کے جنازے پر فرمایا۔

یا حمزہ یا کاشف الکربات یا حمزہ یا ذاب عن وجہ رسول اللہ۔ ۲

اے حمزہ اے دافع البلاء اے حمزہ اے چہرہ رسول صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم سے دشمنوں کے دفع کرنے والے۔

کتب سابقہ میں حضور اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کے ذکر شریف میں ہے ان کے دو نائب ہوں گے ایک سن رسیدہ یعنی صدیق اکبر رضی اللہ تعالٰی عنہ اور دوسرے جوان یعنی فاروق اعظم رضی اللہ تعالٰی عنہ اما الفتی فخواض غمرات و دفاع معضلات۔ ۳ وہ جو جوان ہیں وہ سختیوں میں گھس پڑنے والے اور بڑے دافع البلا بڑے مشکل کشا ہوں گے۔ رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں :

ولیہ فعلی ولیہ ۴ قال المناوی فی شرحہ یدفع عنہ مایکرہ۔ ۵

یعنی میں جس کا مددگار ہوں علی المرتضٰی اس کے مددگار ہیں کہ ہر مکروہ کو اس سے دفع کرتے ہیں،

شاہ ولی اللہ دہلوی ہمعات میں لکھتے ہیں:

از ثمرات این نسبت است در مہالک و ہلاکتوں اور تنگیوں میں اس جماعت (اولیاء اللہ) کی مضایق صورت آں جماعت پدید آمدن و حل صورت کا ظاہر ہونا اور حل مشکلات کا اس کی طرف مشکلات وے ہاں صورت منسوب شدن۔ ۶ منسوب ہونا اس نسبت کے ثمرات میں ہے۔ ت)

۱ الاصابة فی تمییز الصحابة ترجمہ ۱۶۹ اسود بن مسعود ثقفی دار صادر بیروت ۱/ ۲۶ ۲ انسان العیون المعروف بالسیرة الحلبیۃ ذکر غزوہ احد المکتبة الاسلامیة بیروت ۲/ ۲۴۷ ۳ ۴ الجامع الصغیر حدیث ۹۰۰۱ دار الکتب العلمیہ بیروت ۲/ ۵۲۲ ۵ التیسیر شرح الجامع الصغیر تحت حدیث من کنت ولیہ الخ مکتبہ الامام الشافعی ریاض ۲/ ۴۴۲ ۶ ہمعات ہمہ ۱۱ شاہ ولی اللہ اکیڈمی حیدر آباد ص ۵۹

Fatawa Razawiyya Volume 29

Qazi Thanaullah writes in Tadhkirat al-Mawta: "Arwah-e-Ishan ya'ni Awliya dar Zameen-o-Asman-o-Behisht har ja ke khwahand mi-rawand-o-dostan-o-mu'taqidan ra dar dunya-o-akhirat madad gari mi-farmayand-o-dushmanan ra halak mi-namayand."1 The souls of the Awliya (saints of Allah) go wherever they wish in the earth, the heavens, and Paradise. They help their friends and devotees in this world and the Hereafter, and they destroy their enemies. (T) Full details of this matter are in our book 'Al-Amn wal-'Ula li-Na'iti al-Mustafa bi-Dafi' al-Bala'. Only someone who is himself attributed to the forbidden (haram) would attribute the recitation of Durood Taj to being forbidden. The Wahabis are apostates; it is not permissible to listen to them. And Allah Almighty knows best. Second Question: From the same place and from the same questioner (Second question from that same place by the same questioner. T)

Enter with respect, O heart, into the gathering of Mawlid,
For he himself (the Prophet) is present in the gathering of Mawlid.

The manifestation (presence) of our Noble Messenger, peace and blessings of Allah be upon him, in the gathering of Mawlid is attested to by this verse, but the Wahabi says it cannot be so. What is the evidence for his not being present? The Answer: The Wahabi liar is a fabricator. Imam, the Seal of Hadith Scholars, Jalal al-Millah wa al-Din al-Suyuti, may Allah Almighty have mercy on him, says in 'Tanwir': "Qad akhbarani al-thiqat min ahl al-salah annahum shahaduhu salla Allahu ta'ala 'alayhi wa sallama miraran 'inda qira'at al-mawlud al-sharif wa 'inda khatm al-qur'an wa ba'd al-ahadith."2 Trustworthy righteous individuals have informed me that they witnessed the Radiant Presence, peace and blessings of Allah be upon him, many times in the gathering of the noble Mawlid, the session for the completion of the Great Quran, and certain Hadith sessions. Furthermore, the aforementioned Imam in 'Tanwir', and then the illustrious Imam Muhaddith Zarqani in 'Sharh al-Mawahib al-Sharifiyya' say: "Annahu wa sa'ir al-anbiya' salla Allahu ta'ala 'alayhi wa sallama..." Undoubtedly, the Messenger of Allah, peace and blessings of Allah be upon him...

---

1 Tadhkirat al-Mawta, Chapter on the Abode of Souls, Muhammadi Press Lahore, p. 30 2 Tanwir al-Hawalik

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

काज़ी सनाउल्लाह तज़किरतुल मौता में लिखते हैं: "अल्लाह के वलियों की रूहें ज़मीन, आसमान और जन्नत में जहाँ चाहती हैं जाती हैं और दुनिया व आख़िरत में अपने दोस्तों और अक़ीदतमंदों की मदद करती हैं और दुश्मनों को हलाक करती हैं।"1 अल्लाह के वलियों की रूहें ज़मीन, आसमान और जन्नत में जहाँ चाहती हैं जाती हैं और दुनिया व आख़िरत में अपने दोस्तों और अक़ीदतमंदों की मदद करती हैं और दुश्मनों को हलाक करती हैं। (त) इस मसले की काफी तफ़सील हमारी किताब 'अल-अम्न वल-उला लि-नातिल मुस्तफ़ा बि-दाफ़िइल बला' में है। दरूद-ए-ताज पढ़ने को हराम की तरफ़ निस्बत वही करेगा जो खुद हराम से मंसूब हो। वहाबी मुर्तद हैं, उनकी बात सुनना जायज़ नहीं। वल्लाहु तआला आलम (और अल्लाह तआला बेहतर जानता है)। दूसरा सवाल: उसी जगह से और उसी साइल (पूछने वाले) की तरफ़ से (त)

अदब के साथ दाखिल हो ऐ दिल, महफ़िल-ए-मीलाद में,
वह खुद अपनी बरकत से महफ़िल-ए-मीलाद में शामिल हैं।

हमारे रसूल-ए-अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का महफ़िल-ए-मौलूद में जलवा-अफ़रोज़ होना इस शेर से सादिक आता है, लेकिन वहाबी कहता है कि नहीं हो सकता। जलवा-अफ़रोज़ न होने की क्या दलील है? जवाब: वहाबी कज़्ज़ाब झूठा है, इमाम खातुल हुफ़्फ़ाज़ जलालुल मिल्लत वद्दीन सुयूती रहमतुल्लाहि तआला अलैहि 'तन्वीर' में फ़रमाते हैं: "मुझे नेक मोतबर लोगों ने ख़बर दी है कि उन्होंने बारहा हुज़ूर पुरनूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को मज्लिस-ए-मीलाद शरीफ़ और जलसा-ए-खत्म-ए-क़ुरआन अज़ीम और बाज़ अहादीस में मुशाहदा किया है।"2 नेक और भरोसेमंद लोगों ने मुझे बताया कि उन्होंने कई बार हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को मीलाद शरीफ़ की महफ़िल, क़ुरआन पाक के खत्म की महफ़िल और कुछ हदीस की महफ़िलों में देखा है। मजीद इमाम-ए-ममदूह तन्वीर में, फिर इमाम मुहद्दिस जलील ज़रक़ानी शरह अल-मवाहिब शरीफ़ा में फ़रमाते हैं: "बेशक वह और तमाम अंबिया सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम..." बेशक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम...

---

1 तज़किरतुल मौता, बाबू दर मुक़र्र-ए-अर्वाह, मतबा मोहम्मदी लाहौर, पृ. 30 2 तन्वीरुल हवालिक

قاضی ثناء اللہ تذکرۃ الموتی میں لکھتے ہیں: ارواح ایشاں یعنی اولیادر زمین و آسمان و بہشت ہر جا کہ خواہمند می روند و دوستان و معتقدان را در دنیا و آخرت مدد گاری مے فرمایند و دشمنان را ہلاک می نمایند۱۔ اولیاء اللہ کی روحیں زمین، آسمان اور جنت میں جہاں چاہتی ہیں جاتی ہیں اور دنیا و آخرت میں اپنے دوستوں اور عقید تمندوں کی مدد کرتی ہیں اور دشمنوں کو ہلاک کرتی ہیں (ت) اس مسئلہ کی کافی تفصیل ہماری کتاب الامن والعلی لناعتی المصطفیٰ بدافع البلا میں ہے۔ درود تاج پڑھنے کو حرام کی طرف نسبت وہی کرے گا جو خود منسوب بحرام ہو۔ وہابیہ مرتدین ہیں ان کی بات سُننی جائز نہیں۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔ سوال ثانی: ازیں مقام وازیں سائل (سوال دوم اُسی جگہ سے اسی سائل کی طرف سے۔ ت)

بہ ادب داخل ہوا ے دل محفل میلاد میں خود بدولت خود میں شامل محفل میلاد ہیں

ہمارے رسول اکرم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کا محفل مولود میں جلوہ افروز ہونا اس شعر سے صادق آتا ہے لیکن وہابی کہتا ہی کہ نہیں ہو سکتا۔ جلوہ افروز نہ ہونے کی کیا دلیل؟ الجواب: وہابی کذاب جھوٹا ہے ، امام خاتم الحفاظ جلال الملۃ والدین سیوطی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ تنویر میں فرماتے ہیں۔ قد اخبرنی الثقات من اھل الصلاح انھم شاھدوہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم مرارا عند قراءۃ المولود الشریف وعند ختم القرآن وبعض الاحادیث ۲۔ مجھے ثقہ صالحین نے خبر دی کہ انہوں نے بارہا حضور پُرنور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کو مجلس میلاد شریف و جلسہ ختم قرآن عظیم و بعض احادیث میں مشاہدہ کیا۔ نیز امام ممدوح تنویر پھر امام محدث جلیل زرقانی شرح المواہب شریفہ میں فرماتے ہیں: انہ وسائر الانبیاء صلی اللہ تعالی علیہ و سلم بے شک رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم

۱ تذکرة الموتی باب در مقر ارواح مطبع محمدی لاہور ص ۳۰ ۲ تنویر الحوالک

Fatawa Razawiya Volume 29

(Table Row 1) Arabic: عليهِم وسلم أذن لهم في الخروج من قبورهم للتصرف في الملكوت العلوي والسفلي۔ 1 Urdu: And all the noble Prophets (peace and blessings be upon them) have permission to go outside their blessed shrines to exercise authority in the Divine kingdom of the heavens and the earth.

Allama Zarqani states: (Table Row 2) Arabic: ونحوه يأتي للمصنف في غير موضع من هذا الكتاب۔ 2 Urdu: That is, similarly Imam Ahmad Qastalani has explicitly stated in 'Mawahib al-Sharifa' in various places.

Imam Ibn Hajar Makki states in 'Fatawa al-Kubra', Chapter of Funerals: (Table Row 3) Arabic: 3 ۔روح نبينا صلى الله تعالى عليه وسلم ربما تظهر في سبعين الف صورة Urdu: The sacred soul of our Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) manifests in seventy thousand forms.

The sacred status of the Presence, the Essence of Light (peace and blessings of Allah be upon him), is high and exalted. The great Imam Abdullah bin Mubarak and Abu Bakr bin Abi Shaybah, the teacher of Bukhari and Muslim, narrated from Hazrat Abdullah bin Amr (may Allah be pleased with them) in a 'mawquf' (attributed to companion) manner, and Imam Ahmad in 'Musnad', Al-Hakim in the Sahih 'Mustadrak', and Abu Nu'aym in 'Hilyah' narrated with a sahih chain from the Master of the Universe (peace and blessings of Allah be upon him) in a 'marfu' (attributed to the Prophet) manner, and this is the Hadith of Abu Bakr: (Table Row 4) Arabic: اذا مات المؤمن يخلى سربه يسرح حيث شاء۔ 4 Urdu: When a Muslim passes away, his path is opened up, he goes wherever he wishes.

In our treatise 'Ityan al-Arwah li-Diyarihim ba'd al-Rawah', we have mentioned many narrations on this. In fact, the arrival of the Radiant Presence (peace and blessings of Allah be upon him) at blessed gatherings does not mean that he was not present and then arrived, for he is present in the homes of Muslims at all times (peace and blessings of Allah be upon him).

Footnotes: 1 Al-Hawi lil-Fatawi, Tanwir al-Hawalik fi Imkan Ruyat al-Nabi wal-Malak, Dar al-Kutub al-Ilmiyah, Beirut, 2/263. 2 [Reference to previous or next citation] 3 Al-Fatawa al-Kubra, Kitab al-Salah, Chapter of Funerals, Dar al-Kutub al-Ilmiyah, Beirut, 9/2. 4 Ithaf al-Sadah al-Muttaqin, citing Al-Musannaf of Ibn Abi Shaybah, Kitab Dhikr al-Mawt, Dar al-Fikr, Beirut, 10/227.

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

(टेबल रो 1) अरबी: عليهِم وسلم أذن لهم في الخروج من قبورهم للتصرف في الملكوت العلوي والسفلي۔ 1 उर्दू: और सभी महान नबियों (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) को अनुमति है कि वे स्वर्ग और पृथ्वी के ईश्वरीय साम्राज्य में अधिकार का प्रयोग करने के लिए अपने पवित्र मजारों से बाहर जा सकते हैं।

अल्लामा ज़रक़ानी कहते हैं: (टेबल रो 2) अरबी: ونحوه يأتي للمصنف في غير موضع من هذا الكتاب۔ 2 उर्दू: यानी, इसी तरह इमाम अहमद क़स्तलानी ने 'मवाहिब-ए-शरीफ़ा' में जगह-जगह स्पष्ट रूप से कहा है।

इमाम इब्न हजर मक्की 'फ़तावा अल-कुबरा', जनाज़ा अध्याय में कहते हैं: (टेबल रो 3) अरबी: روح نبينا صلى الله تعالى عليه وسلم ربما تظهر في سبعين الف صورة۔ 3 उर्दू: हमारे नबी (अल्लाह उन पर अपनी कृपा और शांति बरसाए) की पवित्र रूह सत्तर हजार रूपों में जलवागर होती है।

हुज़ूर ऐन-ए-नूर (अल्लाह उन पर अपनी कृपा और शांति बरसाए) की पवित्र शान तो बुलंद और आला है। महान इमाम अब्दुल्लाह बिन मुबारक और बुखारी और मुस्लिम के उस्ताद अबू बक्र बिन अबी शैबा ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र (अल्लाह उन दोनों से प्रसन्न हो) से 'मौकूफ़' तरीके से रिवायत की है, और इमाम अहमद ने 'मुसनद' में, अल-हाकिम ने सही 'मुस्तदरक' में और अबू नुएम ने 'हिलया' में सही सनद के साथ आका-ए-दो आलम (अल्लाह उन पर अपनी कृपा और शांति बरसाए) से 'मरफ़ू तरीके से रिवायत की है, और यह अबू बक्र की हदीस है: (टेबल रो 4) अरबी: اذا مات المؤمن يخلى سربه يسرح حيث شاء۔ 4 उर्दू: जब एक मुसलमान का देहांत होता है, तो उसका रास्ता खोल दिया जाता है, वह जहाँ चाहे जाता है।

हमने अपने शोध प्रबंध 'इतयान अल-अरवाह ली-दियारिहिम बाद अल-रवाह' में इस पर बहुत सी रिवायतें ज़िक्र की हैं। बल्कि हुज़ूर अनवर (अल्लाह उन पर अपनी कृपा और शांति बरसाए) का पवित्र महफ़िलों में तशरीफ़ लाना इस मायने में नहीं है कि वे मौजूद नहीं थे और फिर आए, क्योंकि वे हर समय मुसलमानों के घरों में तशरीफ़ फरमा होते हैं (अल्लाह उन पर अपनी कृपा और शांति बरसाए)।

पादलेख: 1 अल-हावी लिल-फ़तावी, तनवीर अल-हवालिक फ़ी इमक़ान रुयात अल-नबी वल-मलक, दार अल-कुतुब अल-इल्मिया, बेरुत, 2/263। 2 [पिछले या अगले उद्धरण का संदर्भ] 3 अल-फ़तावा

अल-कुबरा, किताब अस-सलाह, जनाज़ा अध्याय, दार अल-कुतुब अल-इल्मिया, बेरुत, 9/2। 4 इत्हाफ़ अल-सादाह अल-मुत्तक़ीन, इब्न अबी शैबा के अल-मुसन्नफ़ के हवाले से, किताब ज़िक्र अल-मौत, दार अल-फ़िक्र, बेरुत, 10/227।

فتاویٰ رضویہ جلد ۲۹

(Arabic (Table Row 1: علیہم وسلم اذن لہم فی الخروج من قبورہم للتصرف فی الملکوت العلوی والسفلی۔ Urdu 1: اور تمام انبیاء کرام علیہم الصلوٰۃ والسلام کو اجازت ہے کہ آسمان و زمین کی سلطنت الہی میں تصرف فرمانے کے لیے اپنے مزارات طیبہ سے باہر تشریف لے جائیں۔

علامہ زرقانی فرماتے ہیں: (Arabic (Table Row 2: ونحوہ یأتی للمصنف فی غیر موضع من ھٰذا الکتاب۔ Urdu 2: یعنی اس کے مثل امام احمد قسطلانی نے مواہب شریفہ میں جا بجا تصریح فرمائی ہے۔

امام ابن حجر مکی فتاویٰ کبریٰ باب الجنائز میں فرماتے ہیں: (Arabic (Table Row 3: روح نبینا صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم ربما تظہر فی سبعین الف صورۃ۔ Urdu 3: ہمارے نبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی روح اقدس ستر ہزار صورتوں میں جلوہ گر ہوتی ہے۔

حضور عین نور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی شان اقدس تو بلند و بالا ہے، امام اجل عبد اللہ بن مبارک و ابو بکر بن ابی شیبہ استاد بخاری و مسلم حضرت عبد اللہ بن عمرو رضی اللہ عنہما سے وقفا اور امام احمد مسند اور حاکم صحیح مستدرک اور ابو نعیم حلیہ میں بسند صحیح حضور سید عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم سے رفعا راوی، وہٰذا حدیث ابی بکر: (Table Row 4)
Arabic: اذامات المؤمن یخلی سربہ یسرح حیث شاء ۔ Urdu 4: جب مسلمان کا انتقال ہوتا ہے اس کی راہ کھول دی جاتی ہے جہاں چاہے جاتا ہے۔

ہم نے اپنے رسالہ اتیان الارواح لدیارھم بعد الرواح میں اس پر بہت روایات ذکر کیں بلکہ حضور انور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کا مجالس طیبہ میں تشریف لانا بایں معنی نہیں کہ نہ تھے اور

تشریف لائے کہ وہ تو ہر وقت مسلمانوں کے گھروں میں تشریف فرما ہیں صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم۔

حواشی: 1 الحاوی للفتاویٰ تنویر الحوالک فی امکان رؤیۃ النبی والملک دار الکتب العلمیۃ بیروت ۲۶۳/۲ 2 3 الفتاویٰ الکبریٰ کتاب الصلوٰۃ باب الجنائز دار الکتب العلمیۃ بیروت ۹/۲ 4 اتحاف السادۃ المتقین بحوالہ المصنف لابن ابی شیبہ کتاب ذکر الموت دار الفکر بیروت ۱۰ / ۲۲۷

Mulla Ali Qari states in the commentary of Shifa Sharif: "Indeed, the soul of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) is present in the houses of the people of Islam." | The sacred soul of the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) visits the home of every Muslim.

Rather, the meaning that he bestows a special manifestation in a blessed gathering depends on his grace; it is not necessary everywhere, and whichever humble servant he favors is not far-fetched.

Persian Couplet: If a king comes to the door of an old woman, O master, do not lose your composure! (If a king graces an old woman's door, O leader, do not pluck your mustache in disbelief! - Note)

What evidence does the Wahhabi have, who considers this impossible? Allah Almighty says: "Bring your proof, if you are truthful."[2] — Bring your evidence if you are telling the truth.

There is no evidence except that: *Persian Hemistich:* They considered the Prophets to be like themselves. (They consider the Prophets to be like themselves - Note)

"And those who have wronged will come to know to what [kind of] return they will be returned."[3] — And Allah Almighty knows best. Soon the wrongdoers will know to which side they will turn. (Note) And Allah Almighty knows best.

Problem 104: From Kanpur, sent by Maulana Muhammad Asif Sahib, 15 Jamadi al-Ula 1337 AH. In the name of Allah, the Most Gracious, the Most Merciful. We praise Him and send blessings upon His Noble Messenger. O beloved of Allah's beloved, may my soul be sacrificed for you, the Qibla of both worlds and the Kaaba of both abodes, may your blessings continue. After humble greetings and the desire to attain the felicity of kissing your threshold, I submit that by the grace of Allah Almighty, this humble servant is well, and [your] welfare is constantly sought from the presence of the One. Your honorable letter arrived and was the cause of honor and exaltation. This humble servant [read] the interpretation of this Quranic verse: "Then among them will be the wretched and the prosperous."[4] — (Then among them is the unfortunate and the lucky - Note) its interpretation,

---

[1] Sharh al-Shifa by Mulla Ali al-Qari, on the margin of Naseem al-Riyadh, Section on Locations, etc. Markaz-e-Ahlesunnat Barkat-e-Raza, Gujarat, India, 3/264. [2] Al-Quran

al-Kareem 2/111 and 27/64. [3] Al-Quran al-Kareem 26/227. [4] Al-Quran al-Kareem 11/105.

मुल्ला अली क़ारी शरह शफ़ा शरीफ़ में फ़रमाते हैं: यकीनन नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की रूह इस्लाम वालों के घरों में मौजूद है। | रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की मुक़द्दस रूह हर मुसलमान के घर में तशरीफ़ फ़रमा होती है। बल्कि ये मानी कि महफ़िल-ए-मुबारक में तजल्ली-ए-ख़ास फ़रमाते हैं, ये उनके करम पर है हर जगह ज़रूर नहीं और जिस अदना बंदे को नवाज़ें कुछ दूर नहीं।

फ़ारसी बैत: अगर बादशाह किसी बुढ़िया के दरवाज़े पर आ जाए तो ऐ ख़्वाजा! अपनी मूंछें मत उखाड़ो। (अगर बादशाह बुढ़िया के दरवाज़े पर तशरीफ़ लाए तो ऐ सरदार! मूंछ मत उखाड़ - त)

वहाबी जो इसे नामुमकिन मानता है, उसके पास क्या दलील है? अल्लाह अज़्वजल फ़रमाता है: "अपनी दलील लाओ अगर तुम सच्चे हो।"[2] — अपनी दलील लाओ अगर तुम सच्चे हो।

दलील कुछ नहीं सिवाए इसके कि: फ़ारसी मिसरा: उन्होंने अंबिया को अपने जैसा ही समझा। (वे नबियों को अपने जैसा ही समझते हैं - त)

"और ज़ालिमों को जल्द ही मालूम हो जाएगा कि वे किस तरफ़ पलटेंगे।"[3] — वल्लाहु तआला आलम। अनक़रीब ज़ालिम जान जाएंगे कि किस करवट पर पलटते हैं। (त) वल्लाहु तआला आलम।

मसला १०४: कानपुर से, मौलाना मुहम्मद आसिफ़ साहब द्वारा प्रेषित, १५ जमादी-उल-उला १३३७ हिजरी। बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम, नहमदहु व नुसल्ली अला रसूलेहिल करीम। ऐ अल्लाह के महबूब के महबूब, मेरी जान आप पर फ़िदा हो, दोनों जहानों के क़िब्ला और दोनों घरों के काबा, आपकी बरकतें जारी रहें। तस्लीमात-ए-फ़िदवियाना और आपके आस्ताने को चूमने की सआदत की तमन्ना के बाद, इल्तिमास है कि अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से ये अदना बंदा ख़ैरियत से है और हुज़ूर की खैरियत अल्लाह की बारगाह से हमेशा मतलूब है। आपका गिरामी नामा मौसूल हुआ जो इज़्ज़त और सर्फ़राज़ी का सबब बना। इस अदना ने इस क़ुरआनी आयत "तो उनमें कोई बदबख़्त है और कोई खुश नसीब।"[4] — (तो उनमें कोई बदबख्त है और कोई खुश नसीब - त) की तफ़सीर,

---

[1] शरह अल-शफ़ा मुल्ला अली अल-क़ारी, नसीम अल-रियाज़ के हाशिए पर, फ़स्ल फ़िल मवातिन आदि, मरकज़-ए-अहल-ए-सुन्नत बरकात-ए-रज़ा, गुजरात, भारत, ३/२६४ [2] अल-क़ुरआन अल-करीम २/१११ और २७/६४ [3] अल-क़ुरआन अल-करीम २६/२२७ [4] अल-क़ुरआन अल-करीम ११/१०५

ملا علی قاری شرح شفا شریف میں فرماتے ہیں: لان روح النبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم حاضرۃ فی بیوت اھل الاسلام ۔ 1 | رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی روح اقدس ہر مسلمان کے گھر میں تشریف فرما ہے۔ بلکہ یہ معنی کہ مجلس مبارک میں تجلی خاص فرماتے ہیں، یہ اُن کے کرم پر ہے ہر جگہ ضرور نہیں اور جس ذیل سے ذیل بندے کو نوازیں کچھ دور نہیں۔

اگر بادشاہ بردر پیر زن بیاید تو اے خواجہ سلبت مکن (اگر بادشاہ بوڑھی عورت کے دروازے پر تشریف لائے تو اے سردار! مونچھ مت اکھاڑ ، ت)

وہابی کہ اسے محال مانتا ہے کیا دلیل رکھتا ہے اللہ عزوجل فرماتا ہے: "قُلْ هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝" 2۔ اپنی برہان لاؤ اگر سچے ہو۔ دلیل کچھ نہیں سوا اس کے کہ ع انبیا را ہمچو خود پنداشتند (نبیوں کو وہ اپنے جیسا سمجھتے ہیں۔ت)

"وَسَيَعْلَمُ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا اَيَّ مُنْقَلَبٍ يَّنْقَلِبُوْنَ ۝" 3۔ وَاللہُ تعالیٰ اعلم عنقریب ظالم جان جائیں گے کہ کس کروٹ پر پلٹتے ہیں۔ (ت) واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۱۰۴: از کانپور مرسلہ مولانا محمد آصف صاحب ۱۵ جمادی الاولیٰ ۱۳۳۷ھ بسم اللہ الرحمن الرحیم ، نحمدہ و نصلی علی رسولہ الکریم یا حبیب محبوب اللہ روحی فداک ، قبلہ کونین و کعبہ دارین دامت فیوضہم بعد تسلیمات فدویانہ و تمنائے حصول سعادت آستانہ بوسی، التماس اینکہ بفضلہ تعالیٰ کمترین بخیریت ہے حضور کی مدام بارگاہِ احدیت سے مطلوب۔ گرامی نامہ صادر ہو کر موجب عزت و سرفرازی ہوا۔ فدوی نے اس آیت قرآنی "فَمِنْهُمْ شَقِيٌّ وَّ سَعِيْدٌ ۝" 4۔ (توان میں کوئی بد بخت ہے اور کوئی خوش نصیب۔ت) کی تفسیر،

1 شرح الشفاء لملا على القارى على ہامش نسيم الرياض فصل فى المواطن الخ مركز اہلسنت بركات رضا گجرات ہند ۳/ ۲۶۴ 2 القرآن الكريم ۲/ ۱۱۱ و ۲۷/ ۶۴ 3 القرآن الكريم ۲۶/ ۲۲۷ 4 القرآن الكريم ۱۱/ ۱۰۵

Fatawa Razawiyya, Volume 29

Looked into Tafsir al-Kabir.

"وَ اَمَّا الَّذِیْنَ سُعِدُوْا فَفِی الْجَنَّةِ خٰلِدِیْنَ فِیْهَا مَا دَامَتِ السَّمٰوٰتُ وَ الْاَرْضُ اِلَّا مَا شَآءَ رَبُّكَ ط عَطَآءً غَیْرَ مَجْذُوْذٍ۝"

And as for those who were fortunate, they will be in Paradise, abiding therein as long as the heavens and the earth endure, except what your Lord wills—a gift uninterrupted. (T)

It is written regarding this:

الاستثناء فی باب السعداء یجب حمله علی احد الوجوه المذکورة فیما تقدم وهو الوجه آخروهوانه ربما اتفق لبعضهم ان یرفع من الجنة الی العرش والی المنازل الرفیعة التی لایعلمها الا الله تعالی 2 .

The exception regarding the fortunate must be interpreted based on one of the reasons mentioned previously, and here is another reason: it is that sometimes it happens for some that they are given elevation from Paradise towards the Throne and those high ranks which no one knows except Allah Almighty. (T)

If someone says that from the words "uninterrupted" (ghair majdhudh) it is known that the gift will not be cut off, but the exception "unless your Lord wills" (illa masha rabbuka) indicates the power to cut it off, even if He will never ever connect the will to cutting it off, then what is the answer to this? Your Excellency's treatise, first volume of Subhan al-Subbuh, is with me. I have requested some books like Zafar al-Tayyib etc. and also the second volume of Subhan al-Subbuh through the courier from Maulana Maulvi Amjad Ali Sahib. It is written in the book "Siyanat al-Nas 'an Waswas al-Khannas" authored by the late Maulana Nazir Ahmad Khan Sahib of Rampur: Information and promises of reward must be certain and not contingent on will, because going against them is a flaw from which Allah Almighty is pure and exalted.

قال عبدالحکیم في الحاشیة علی الخیالی لعل مراد ذلك البعض بقولهم ان الخلف في الوعید کرم ان الکریم اذا زجر بالوعید فالا لائق بحاله و

Mulla Abdul Hakim said in the margins of Khayali: Perhaps that person's intent by his statement that breaking a threat is generosity is that when a generous person warns with a threat, then what is worthy of his state and...

---

1. The Holy Quran 11/108
2. Mafatih al-Ghayb (Tafsir al-Kabir) under verse 11/108, Al-Matba'a al-Bahiyya al-Misriyya, Egypt 18/67

फ़तावा रज़विया, जिल्द 29

तफ़सीर-ए-कबीर में देखी।

"وَ اَمَّا الَّذِیْنَ سُعِدُوْا فَفِی الْجَنَّةِ خٰلِدِیْنَ فِیْهَا مَا دَامَتِ السَّمٰوٰتُ وَ الْاَرْضُ اِلَّا مَا شَآءَ رَبُّكَ ط عَطَآءً غَیْرَ مَجْذُوْذٍ۝"

और जो खुश नसीब हुए वे जन्नत में हमेशा रहेंगे जब तक आसमान व ज़मीन रहें मगर जितना तुम्हारे रब ने चाहा यह बख्शिश ही कभी ख़त्म न होगी। (त)

के मुताल्लिक लिखा है:

الاستثناء فی باب السعداء یجب حمله علی احد الوجوه المذکورة فیما تقدم وهو الوجه آخروهوانه ربما اتفق لبعضهم ان یرفع من الجنة الی العرش والی المنازل الرفیعة التی لایعلمها الا الله تعالی 2 ۔

खुश नसीबों के बारे में इस्तिसना को मा-क़बल में मज़कूर वजूह में से किसी एक पर महमूल करना लाज़िम है और यहाँ पर एक दूसरी वजह है वह यह कि बसा औक़ात बाज़ के लिए यह इत्तिफ़ाक़ होता है कि उसे जन्नत से अर्श और इन बुलंद मंज़िलों की तरफ़ रफ़अत बख्शी जाती है जिनको अल्लाह तआला के सिवा कोई नहीं जानता। (त)

अगर कोई कहे कि शब्द "ग़ैर मज़ज़ूज़" (गैर-विच्छिन्न) से पता चला कि अता (देना) विच्छिन्न नहीं होगी, लेकिन "इल्ला माशा रब्बुका" (मगर जो तुम्हारा रब चाहे) अपवाद है, तो विच्छिन्न करने की शक्ति का पता चलता है, भले ही वह कभी भी विच्छिन्न करने की इच्छा नहीं करेगा, तो इसका क्या उत्तर है? हुज़ूर का रिसाला जिल्द अव्वल 'सुब्हान अल-सुब्बूह' मेरे पास है। मौलाना मौलवी अमजद अली साहब से कुछ किताबें जैसे 'ज़फ़र अल-तैय्यब' आदि और 'सुब्हान अल-सुब्बूह' की दूसरी जिल्द भी मंगवाई है। मौलाना नज़ीर अहमद खान साहब मरहूम रामपुरी की किताब 'सियानत अल-नास अन वसाविस अल-खन्नास' में लिखा है: इनाम की ख़बर और वादा निश्चित होना और इच्छा पर आधारित न होना वाजिब है, क्योंकि इसके विपरीत होना एक दोष है जिससे अल्लाह तआला पवित्र और उच्च है।

قال عبدالحکیم في الحاشیة علی الخیالی لعل مراد ذلك البعض بقولهم ان الکریم اذا زجر بالوعید فالا لائق بحاله و ان الخلف في الوعید ك

मुल्ला अब्दुल हकीम ने खयाली के हाशिए में कहा, शायद उस बाज़ की मुराद अपने इस क़ौल से कि वईद (धमकी) में खुल्फ़ (वादा-खिलाफ़ी) करम है यह हो कि

करीम जब वईद के साथ ज़ज्र फ़रमाए तो उसके हाल के लाइक़ और...

---

1. अल-क़ुरान अल-करीम 11/108
2. मफ़ातीह अल-ग़ैब (तफ़्सीर-ए-कबीर) आयत 11/108 के तहत, अल-मतबा अल-बहिया अल-मिसरिया, मिस्र 18/67

تفسیر کبیر میں دیکھی۔

"وَ اَمَّا الَّذِیْنَ سُعِدُوْا فَفِی الْجَنَّةِ خٰلِدِیْنَ فِیْهَا مَا اور جو خوش نصیب ہوئے وہ جنت میں ہمیشہ رہیں دَامَتِ السَّمٰوٰتُ وَ الْاَرْضُ اِلَّا مَا شَآءَ رَبُّكَ ط گے جب تک آسمان و زمین رہیں مگر جتنا تمہارے رب عَطَآءً غَیْرَ مَجْذُوْذٍ۝" نے چاہا یہ بخشش ہی کبھی ختم نہ ہوگی۔ (ت)

کے متعلق لکھا ہے:

الاستثناء فی باب السعداء یجب حمله علی احد الوجوه المذکورة فیما تقدم وهو الوجه آخروهوانه ربما اتفق لبعضهم ان یرفع من الجنة الی العرش والی المنازل الرفیعة التی لایعلمها الا الله تعالی 2 ۔

خوش نصیبوں کے بارے میں استثناء کو ماقبل میں مذکور وجوہ میں سے کسی ایک پر محمول کرنا لازم ہے اور یہاں پر ایک دوسری وجہ ہے وہ یہ کہ بسا اوقات بعض کے لیے یہ اتفاق ہوتا ہے کہ اسے جنت سے عرش اور ان بلند منزلوں کی طرف رفعت بخشی جاتی ہے جن کو اللہ تعالی کے سوا کوئی نہیں جانتا۔ (ت)

اگر کوئی کہے کہ الفاظ غیر مجذوذ سے معلوم ہوا کہ عطا غیر منقطع ہوگی مگر استثناء ماشاء ربک ہے قدرت منقطع کرنے پر معلوم ہوتی ہے اگرچہ ہر گز ہرگز مشیت منقطع کرنے کے لیے متعلق نہ فرمائے گا تو اس کا کیا جواب ہے حضور کار سالہ جلد اول سبحن السبوح فدوی کے پاس ہے۔ مولانا مولوی امجد علی صاحب سے چند کتابیں مثل ظفر الطیب وغیرہ نیز جلد ثانی سبحن السبوح کی کمترین نے بذریعہ ویلوطلب کی ہیں کتاب صیانۃ الناس عن وساوس الخناس تصنیف مولانا نذیر احمد خاں صاحب مرحوم رامپوری میں لکھا ہے۔ اخبار و وعدہ ثواب کا قطعی ہونا اور

مشیت پر مبنی نہ ہونا واجب ہے کہ اس کے خلاف میں لوم ہے جس سے خدائے تعالیٰ پاک و منزہ ہے۔

قال عبدالحكيم في الحاشية على الخيالی لعل مراد ذلك البعض بقولهم ان الخلف في الوعيد كرم ان الكريم اذا زجر بالوعيد فالا لائق بحاله و

ملا عبدالحکیم نے خیالی کے حاشیہ میں کہا، شاید اس بعض کی مراد اپنے اس قول سے کہ وعید میں خلف کرم ہے یہ ہو کہ کریم جب وعید کے ساتھ زجر فرمائے تو اس کے حال کے لائق اور

---

1 القرآن الكريم ١١ / ١٠٨ 2 مفاتيح الغيب (التفسير الكبير) تحت آيت ١١ / ١٠٨ المطبعة البهية المصريه مصر ١٨ / ٦٧

[Boxed Text] (Arabic): The requirement of His grace is that His information regarding warnings (of punishment) be based on Divine Will. Thus, all general statements regarding warnings are connected to His Will, even if the Gracious One has not explicitly stated it to deter the disobedient and prevent them from sin. Therefore, falsehood and alteration do not apply. This is contrary to the promise of the Gracious One, for its fulfillment is mandatory, as breaking a promise is blameworthy; hence, it is not permissible to make it contingent upon Divine Will. (Urdu): The demand of His grace is that His information about warnings should be based on His will. Accordingly, all general statements regarding warnings are connected with His will, even if the Gracious One has not explicitly stated it for the purpose of rebuking the disobedient and preventing them from sin. Therefore, lying and change do not become necessary. Contrary to the promise of the Gracious One, its being absolute is mandatory, because breaking a promise in that regard is blameworthy, hence it is not permissible to make it contingent upon Divine Will. (T)

A second enclosed petition was sent to the service of the fountain of grace approximately twelve days ago; it is yet deprived of a reply. In that petition, regarding the verse 'So among them are the wretched and the happy,' I inquired about the words 'as long as the heavens and the earth endure' (until the heavens and the earth remain. T) concerning the people of Paradise, followed by 'except what your Lord wills' (but as much as your Lord willed. T). If someone doubts that this seems to go against the power of eternal dwelling, although He will never act against His promise, as He has also clearly said 'a gift never to be cut off,' then what is the doubt? In Tafsir Ibn Jarir and Arais al-Bayan, it is written:

[Boxed Text] (Arabic): Ibn Mas'ud said: A time will surely come upon Hell when its doors will bang [empty], and there will not be a single person in it. (Urdu): Ibn Mas'ud (may Allah be pleased with him) said: A time will surely come upon Hell when all its doors will become empty, and there will not remain even a single person in it. (T)

What is its meaning?

The Answer: In the name of Allah, the Most Gracious, the Most Merciful. We praise Him and send blessings upon His Noble Messenger, our respected teacher.

---

1. Hashiya Abdul Hakim ala al-Hakim al-Khayali, Matba' Yusufi Lucknow, p. 126.

2. Jami' al-Bayan (Tafsir Ibn Jarir) under verse 11/107, Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut, 12/124.

[बॉक्स टेक्स्ट] (अरबी): उनके करम का तक़ाज़ा यह है कि वईद (सज़ा की चेतावनी) के बारे में उनकी सूचना ईश्वरीय इच्छा (मशियत) पर आधारित हो। अतः, वईद के संबंध में आए सभी सामान्य कथन अल्लाह की इच्छा के साथ जुड़े हुए हैं, भले ही उस दयालु (करीम) ने अवज्ञाकारियों को डराने और उन्हें पाप से रोकने के लिए इसे स्पष्ट रूप से न कहा हो। इसलिए इसमें झूठ और बदलाव आवश्यक नहीं होता। इसके विपरीत, अल्लाह के वादे का पूर्ण होना अनिवार्य है, क्योंकि उसमें वादाखिलाफी निंदनीय है, इसलिए उसे इच्छा पर निर्भर करना जायज़ नहीं है। (उर्दू): उनके करम का तक़ाज़ा यह होता है कि वईद के बारे में उनकी ख़बर मशियत पर आधारित हो। चुनांचे वईद के सिलसिले में वारिद तमाम उमुमात मशियत के साथ मुनसलिक हैं अगरचे नाफरमानों की ज़ज्र व तौबीह और उन्हें गुनाह से बाज़ रखने की खातिर करीम ने इसकी तसरीह न की हो लिहाज़ा इसमें झूठ और तब्दीली लाज़िम नहीं आती बखिलाफ़ करीम के वादे के इसका कतई होना वाजिब है इसलिए कि इसमें खुल्फ लोम है चुनांचे इसको मशियत पर मुअल्लक करना जायज़ नहीं। (त)

दूसरा संलग्न प्रार्थना पत्र संभवतः बारह दिन हो गए होंगे, सेवा में भेजा जा चुका है, अभी तक उत्तर नहीं मिला है। उस प्रार्थना पत्र में आयत 'फिर उनमें से कुछ बदकिस्मत होंगे और कुछ खुशकिस्मत' से संबंधित पूछा गया था कि जन्नत वालों के बारे में 'जब तक आसमान और ज़मीन रहेंगे' (त) के बाद 'सिवाय इसके कि जो तुम्हारा रब चाहे' (त) से यदि कोई संदेह करे कि यह शाश्वत निवास की शक्ति के विरुद्ध प्रतीत होता है, यद्यपि वह कभी अपने वादे के विरुद्ध नहीं करेगा जैसा कि उसने स्पष्ट रूप से 'एक उपहार जो कभी समाप्त नहीं होगा' भी कह दिया है, तो फिर क्या संदेह है? तफ़सीर इब्ने जरीर और अराइसुल बयान में है:

[बॉक्स टेक्स्ट] (अरबी): इब्न मसूद ने कहा: जहन्नम पर ज़रूर एक ऐसा समय आएगा जब उसके दरवाज़े बजेंगे [खाली होंगे], और उसमें एक भी व्यक्ति नहीं रहेगा। (उर्दू): इब्न मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि जहन्नम पर ज़रूर एक ऐसा ज़माना आएगा जब उसके तमाम दरवाज़े खाली हो जाएंगे और उसमें कोई एक शख़्स भी नहीं रहेगा। (त)

इसका क्या अर्थ है?

जवाब: बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम, हम उनकी प्रशंसा करते हैं और उनके सम्मानित रसूल, हमारे मोहतरम मौलाना पर दरूद भेजते हैं।

1. हाशिया अब्दुल हकीम अली अल-हकीम अल-खयाली, मतबा यूसुफी लखनऊ, पृष्ठ 126।
2. जामिउल बयान (तफ़सीर इब्ने जरीर) आयत 11/107 के तहत, दार अहया अल-तुराथ अल-अरबी बेरुत, 12/124।

पेज 262/750

[باکس ٹیکسٹ] مقتضی کرمہ ان یبتنی اخبارہ علی المشیۃ فجمیع لعمومات الواردۃ فی الوعید متعلقۃ بالمشیۃ وان لم یصرح بھا زجر اللعاصین ومنعا لھم فلا یلزم الکذب والتبدیل بخلاف وعد الکریم فانہ یجب ان یکون قطعیاً لان الخلف فیہ لوم فلا یجوز تعلیقہ بالمشیۃ اس کے کرم کا تقاضا یہ ہوتا ہے کہ وعید کے بارے میں اس کی خبر مشیت پر مبنی ہو۔ چنانچہ وعید کے سلسلے میں وارد تمام عمومات مشیت کے ساتھ منسلک ہیں اگرچہ نافرمانوں کی زجر و توبیخ اور انہیں گناہ سے باز رکھنے کی خاطر کریم نے اس کی تصریح نہ کی ہو لہٰذا اس میں جھوٹ اور تبدیلی لازم نہیں آتی بخلاف کریم کے وعدے کے اس کا قطعی ہونا واجب ہے اس لیے کہ اس میں خلف لوم ہے چنانچہ اس کو مشیت پر معلق کرنا جائز نہیں (ت)

دوسرا خط عریضہ ملفوف تخمیناً بارہ روز ہوئے ہوں گے، فدوی روانہ خدمت فیضدرجت کر چکا ہے ہنوز جواب سے محروم ہے، اس عریضہ میں متعلق آیت "فَمِنْهُمْ شَقِيٌّ وَّسَعِيْدٌ" دریافت کیا تھا کہ اہل جنت کی بابت بَعْدَ مَا دَامَتِ السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ (جب تک آسمان و زمین رہیں گے۔ ت) کے "اِلَّا مَا شَاءَ رَبُّکَ" (مگر جتنا تمہارے رب نے چاہا ۔ ت) سے اگر کوئی شبہ کرے کہ قدرت خلود ابدی کے خلاف کرنے پر معلوم ہوتی ہے اگرچہ ہرگز خلاف وعدہ نہ فرمائے گا چنانچہ صراحتاً بھی عطاء غیر مجذوذ کے فرما دیا ہے تو کیا شبہ ہے۔ تفسیر ابن جریر و عرائس البیان میں ہے:

[باکس ٹیکسٹ] قال ابن مسعود لیاتین علی جھنم زمان تخفق ابوابھا لیس فیھا احد ابن مسعود رضی اللہ تعالٰی عنہ نے فرمایا کہ جہنم پر ضرور ایک ایسا زمانہ آئے گا جب اس کے تمام دروازے خالی ہو جائیں گے اور اس میں کوئی ایک شخص بھی نہیں رہے گا۔ (ت)

اس کا کیا مطلب ہے؟

الجواب: بسم اللہ الرحمن الرحیم نحمدہ و نصلی علی رسولہ الکریم مولانا المکرم

---

1. حاشیہ عبد الحکیم علی الحکیم الخیالی مطبع یوسفی لکھنؤ ص ۱۲۶
2. جامع البیان (تفسیر ابن جریر) تحت آیت ۱۱/ ۷ ۱۰ دار احیاء التراث العربی بیروت ۱۲/ ۱۲۴

Fatawa Ridawiyya Volume 29

Although I was recently busy with several treatises refuting Wahhabism—may Allah Ta'ala forsake them. Divine Information is like Divine Knowledge; it is impossible for either to be contradicted. However, this impossibility is 'bil-ghayr' (due to an external cause), it does not negate power. It was in the pre-eternal Divine Knowledge that He would create this Zaid at such a time; now it became necessary for Zaid to be created then. If he were not created, then, God forbid, ignorance would follow. But it does not follow from this that the Lord Ta'ala was forced to create him, or that He was no longer powerful enough not to create him, otherwise ignorance would again follow because the Knowledge was that He would create him by His own power, and that did not happen, rather, God forbid, He became forced. Far from it! Rather, Zaid's existence and non-existence are eternally and forever under [Divine] power. Due to the connection with Knowledge, at the time his existence was in Divine Knowledge, existence is necessary, and at the time of non-existence, non-existence is necessary; because if it were otherwise, it would be ignorance, and ignorance is essentially impossible (muhal bid-dhat). This essential impossibility made these possibilities necessary 'bil-ghayr' in their respective times. From this, God forbid, neither was power stripped away, nor is ignorance possible. Exactly the same thing applies to Divine Information; He gave information that He will keep the people of Paradise in Paradise forever, so their eternal residence became necessary. If it were not so, then, God forbid, lying would follow. However, power over discontinuation was not stripped away; both eternal residence and discontinuation are eternally and forever under [Divine] power, but the connection of the Information made eternal residence necessary 'bil-ghayr'. Through this, neither was power stripped away, nor is lying possible, God forbid. It is precisely because lying is essentially impossible that this possible thing became necessary 'bil-ghayr'. If lying were possible, then who would make it necessary? Regarding the promises and threats of the Lord Azza wa Jalla, no deviation is possible in any. Regarding the threat itself, it is stated: "The Word that comes from Me cannot be changed"[1]—(My word does not change here. - T). Just as He said regarding the promise: "Allah will never fail in His promise"[2]—(And Allah Ta'ala will never break His promise. - T). In some discourses where the term 'khulf-e-wa'eed' (failure to fulfill a threat) occurs, there are clarifications that it refers to forgiveness; if this were, God forbid, the possibility of lying, then what kind of occurrence would it be when forgiveness will surely occur. A detailed discussion on this is in 'Subhan al-Sabbooh'. Regarding the noble verse "Except as thy Lord willeth"[3]

—(But as much as your Lord willed - T), by the help of Allah Ta'ala, meanings are in the mind of this humble one after which there is absolutely no need for any interpretation; the meanings are straightforward and direct. The eternal stay of the inhabitants of both realms is ordained by the duration of the heavens and the earth: "As long as the heavens and the earth endure"[4]—(As long as the heavens and the earth remain. - T). It is clear that this does not refer to the survival of the current heavens and earth which will cease at the blowing of the trumpet, but rather refers to the age of the heavens and earth that will be restored on the Day of Judgment, which is eternal, and there is no doubt that its duration for the inhabitants of Paradise...

[1] Al-Qur'an al-Karim 50/29 [2] Al-Qur'an al-Karim 22/47 [3] Al-Qur'an al-Karim 11/107 and 108 [4] Al-Qur'an al-Karim 11/107 and 108

फ़तावा रज़विया खंड 29

यद्यपि हाल ही में मैं वहाबियत के खंडन में कई शोधग्रंथों में व्यस्त था—अल्लाह तआला उन्हें बेसहारा छोड़ दे। ईश्वरीय सूचना (ख़बर-ए-इलाही) ईश्वरीय ज्ञान के समान है; इनमें से किसी का भी उल्लंघन संभव नहीं है। लेकिन यह 'इस्तेहाला बिल-ग़ैर' (किसी अन्य कारण से असंभवता) है, यह शक्ति की कमी को नहीं दर्शाता। ईश्वरीय अनादि ज्ञान में यह था कि वह इस ज़ैद को अमुक समय पर पैदा करेगा; अब यह अनिवार्य हो गया कि ज़ैद उस समय पैदा हो। यदि वह पैदा न हो, तो अल्लाह न करे, अज्ञानता अनिवार्य होगी। लेकिन इससे यह अनिवार्य नहीं हुआ कि मौला तआला उसे पैदा करने पर मजबूर हो गया, या वह उसे पैदा न करने पर समर्थ न रहा, अन्यथा फिर अज्ञानता अनिवार्य होगी कि ज्ञान में तो यह था कि वह अपनी शक्ति से उसे पैदा करेगा, और ऐसा नहीं हुआ बल्कि अल्लाह न करे वह मजबूर हो गया। हशा (कदापि नहीं)! बल्कि ज़ैद का अस्तित्व और विनाश अनादि काल से और अनंत काल तक शक्ति के अधीन है। और ज्ञान के संबंध के कारण जिस समय उसका अस्तित्व ईश्वरीय ज्ञान में था, अस्तित्व अनिवार्य है और जिस समय विनाश है, विनाश अनिवार्य है; क्योंकि यदि इसके विपरीत हो तो अज्ञानता होगी, और अज्ञानता स्वतः ही असंभव (मुहाल बिज़-ज़ात) है। इसी स्वतः असंभवता ने इन संभावनाओं को अपने-अपने समय में 'वाजिब बिल-ग़ैर' (दूसरे के कारण अनिवार्य) बना दिया। इससे अल्लाह न करे, न तो शक्ति छीनी गई और न ही अज्ञानता संभव है। ठीक यही बात ईश्वरीय सूचना में है; उसने सूचना दी कि वह स्वर्गवासियों को स्वर्ग में हमेशा रखेगा, तो उनका वहां हमेशा रहना अनिवार्य हो गया। यदि ऐसा न हो, तो अल्लाह न करे, झूठ बोलना अनिवार्य होगा। लेकिन इससे अंत करने की शक्ति नहीं छीनी गई; अनंत काल तक रहना और अंत होना दोनों अनादि और अनंत काल तक शक्ति के अधीन हैं, लेकिन सूचना के संबंध ने वहां हमेशा रहने को 'वाजिब बिल-ग़ैर' बना दिया। इससे न तो शक्ति छीनी गई और न ही अल्लाह न करे झूठ बोलना संभव है। झूठ बोलना स्वतः ही असंभव होने के कारण ही इस संभव बात को 'वाजिब बिल-ग़ैर' बना दिया गया। यदि इससे झूठ बोलना संभव हो जाए, तो इसे अनिवार्य कौन करेगा? मौला अज़्ज़वजल के वादों और धमकियों (वअदा-ओ-वईद) में किसी भी प्रकार का उल्लंघन संभव नहीं है। स्वयं धमकी के लिए ही फ़रमाया गया है: "مَا یُبَدَّلُ الْقَوْلُ لَدَیَّ"[1]।। (मेरे यहाँ बात बदलती नहीं। - त)। जैसा कि वादे के बारे में फ़रमाया: "لَنْ یُخْلِفَ اللّٰهُ وَعْدَهٗ"[2]। (और अल्लाह तआला हरगिज़ अपना वादा झूठा न करेगा। - त)। कुछ के प्रवचनों में जहाँ धमकी के उल्लंघन (ख़ुल्फ़-ए-वईद) का शब्द आया है, वहाँ स्पष्टीकरण हैं कि इससे तात्पर्य क्षमा (अफ़्व) है। यदि यह, अल्लाह न करे, झूठ की संभावना होती, तो

फिर घटना कैसी होती कि क्षमा निश्चित रूप से होगी। इसकी विस्तृत चर्चा 'सुब्हान अल-सुब्बूह' में है। आयत-ए-करीमा "[3]اِلَّا مَا شَآءَ رَبُّکَ" (मगर जितना तुम्हारे रब ने चाहा - त) के वे अर्थ अल्लाह तआला की सहायता से इस फ़कीर के मन में हैं जिनके बाद किसी भी व्याख्या की बिल्कुल आवश्यकता नहीं है; अर्थ स्पष्ट रूप से बिना किसी कठिनाई के सीधे हैं। दोनों लोकों के निवासियों का अनंत काल तक रहना आकाश और पृथ्वी की आयु के साथ निर्धारित किया गया है: "مَا دَامَتِ السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ"[4]। (जब तक आकाश और पृथ्वी रहेंगे। - त)। यह स्पष्ट है कि इससे वर्तमान आकाश और पृथ्वी का बने रहना मुराद नहीं है जो सूर फूँकने पर समाप्त हो जाएंगे, बल्कि उस आकाश और पृथ्वी की आयु मुराद है जो कयामत के दिन फिर से बनाए जाएंगे, जो शाश्वत है और इसमें कोई संदेह नहीं कि इसकी मात्रा स्वर्गवासियों के लिए...

[1] अल-क़ुरआन अल-करीम 50/29 [2] अल-क़ुरआन अल-करीम 22/47 [3] अल-क़ुरआन अल-करीम 11/107 और 108 [4] अल-क़ुरआन अल-करीम 11/107 और 108

اگرچہ میں آج کل متعدد رسائل رد و با بیہ خذ لہم اللہ تعالٰی میں مشغول تھا۔ خبر الہی مثل علم الہی ہے ان میں سے کسی کا خلاف ممکن نہیں، مگر یہ استحالہ بالغیر ہے، نفی قدرت نہیں کرتا علم الہی ازلی میں تھا کہ یہ زید کو فلاں وقت پیدا کرے گا اب واجب ہوا کہ زید اس وقت پیدا ہو، اگر نہ پیدا ہو تو معاذ اللہ جہل لازم آئے لیکن اس سے یہ لازم نہ آیا کہ مولا تعالٰی اس کو پیدا کرنے پر مجبور ہو گیا، نہ پیدا کرنے پر قادر نہ رہا ورنہ پھر جہل لازم آئے کہ علم میں تو یہ تھا کہ اپنی قدرت سے اسے پیدا کرے گا اور یہ نہ ہوا بلکہ معاذ اللہ مجبور ہو گیا۔ حاشا بلکہ زید کا وجود و فنا ازلاً ابداً تحت قدرت ہے اور تعلق علم کے سبب جس وقت اس کا وجود علم الہی میں تھا وجود واجب ہے اور جس وقت فنا فنا واجب ہے کہ خلاف ہو تو جہل ہو اور جہل محال بالذات ہے اس محال بالذات نے ان ممکنات کو اپنے اپنے وقت میں واجب بالغیر کر دیا اس سے معاذ اللہ نہ قدرت مسلوب ہوئی نہ جہل ممکن، بعینہ یہی بات خبر الہی میں ہے اس نے خبر دی کہ اہل جنت کو جنت میں ہمیشہ رکھے گا ان کا خلود واجب ہو گیا۔ اگر نہ ہو تو معاذ اللہ کذب لازم آئے۔ مگر اس سے انقطاع پر قدرت مسلوب نہ ہوئی خلود و انقطاع دونوں ازلاً ابداً زیر قدرت ہیں مگر تعلق خبر نے خلود کو واجب بالغیر کر دیا اس سے نہ قدرت مسلوب ہوئی نہ معاذ اللہ کذب ممکن۔ کذب کے محال بالذات ہونے ہی نے تو اس ممکن کو واجب بالغیر کر دیا اگر اس سے کذب ممکن ہو جائے تو اسے واجب کون کرے، مولا عزوجل کے وعدہ و وعید کسی میں تخلف ممکن نہیں خود وعید ہی کے لیے ارشاد ہوا ہے۔ "مَا يُبَدَّلُ الْقَوْلُ لَدَيَّ"1۔ میرے یہاں بات بدلتی نہیں۔ ت) جیسے وعدہ کو فرمایا: "لَنْ يُخْلِفَ اللّٰهُ وَعْدَهُ"2۔ (اور اللہ تعالٰی ہرگز اپنا وعدہ جھوٹا نہ کرے گا ت) بعض کے کلام میں کہ خلف و وعید کا لفظ واقع ہوا تصریحات ہیں کہ اس سے مراد عفو ہے، یہ اگر معاذ اللہ امکان کذب ہو

تو امکان کیسا وقوع ہوا کہ عفو یقیناً واقع ہوگا، اس کی مفصل بحث سبحن السبوح میں ہے آیہ کریمہ "اِلَّا مَا شَآءَ رَبُّکَ"3۔ (مگر جتنا تمہارے رب نے چاہا ت) کے وہ معنی بعونہ تعالیٰ ذہن فقیر میں ہیں جن کے بعد ہر گز ہر گز کسی تاویل کی حاجت نہیں، معنی ظاہر پر بلا تکلف مستقیم ہیں خلود اہل دارین کو عمر آسمان و زمین سے مقدر فرمایا ہے "مَا دَامَتِ السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ"4۔ (جب تک آسمان و زمین رہیں گے۔ ت) ظاہر ہے کہ اس سے یہ بقائے آسمان و زمین مراد نہیں جو نفخ صور پر منقطع ہے بلکہ سماء و ارض کہ روز قیامت اعادہ کیے جائیں گے اُن کی عمر مراد ہے جو ابدی ہے اور کچھ شک نہیں کہ اس کی مقدار جنتیوں کے

1 القرآن الکریم 29/50 2 القرآن الکریم 22/47 3 القرآن الکریم 11/ 107 اور 108 4 القرآن الکریم 11/ 107 اور 108

Fatawa Razawiya Volume 29

The duration of the residents of Paradise staying in Paradise is hundreds of years more than that of the residents of Hell in Hell, as there is no end for either. However, its beginning is hundreds of years before their beginning. At the start of the Day of Judgment, the heavens and earth will be created, but the people of Paradise will enter Paradise and the people of Hell will enter Hell after the account (hisab), and they will also differ in duration from each other. The poor will enter Paradise five hundred years before the rich. Thus, in terms of the beginning, their stay will be less than the duration of the heavens and earth, some for example a thousand years less, according to whoever's will it is, some two thousand years less, and so on. Regarding this, He says: "Except what your Lord wills."[1] (Quran 11:107-108). The narration "Laya'tiyanna 'ala Jahannama"[2] etc. is for the first level of Hell, named 'Jahannam', although the whole is also called Jahannam. This level is for the disobedient monotheists; it will surely become completely empty one day when no one who says 'La ilaha illallah' remains in it, and Allah Almighty knows best.

Issue 105: 17 Jumada al-Ula 1337 AH. A request is made to the scholars of the Ahl al-Sunnat wa'l-Jama'at that nowadays many of the Sunnat al-Jama'at have become misbelieving regarding a few matters due to staying in the company of deviant sects. Although every kind of issue is present in the numerous writings of His Eminence (Ahmad Raza Khan), this issue has not passed through the humble eyes (of the questioner). Therefore, there was a need for this matter, and also the faith of the common people will be refreshed and the misbelieving people will desist from misguidance. One among those issues is written below. Zaid says regarding Amir Mu'awiyah (may Allah be pleased with him) that he was a greedy person, he fought with Hazrat Ali (may Allah enlighten his face) and the family of the Messenger (peace and blessings of Allah be upon him), i.e., Imam Hassan (may Allah be pleased with him), took their caliphate and martyred thousands of companions. Bakr says that I consider them to be in error, they should not be called 'Amir'. Amr's statement is that they are among the great companions, and insulting them is misguidance. Another person calls himself a follower of the Sunni sect and also possesses some knowledge (the truth is that he is a pure ignoramus); he says that all companions, especially Hazrat Abu Bakr Siddiq (may Allah be pleased with him), Hazrat Umar Farooq al-A'zam, and Hazrat Uthman Dhu al-Nurayn (may Allah be pleased with them both), were greedy (we seek refuge in Allah from this) because the blessed body of the Noble Messenger (peace and blessings of Allah be upon him) was kept, and they

were occupied with the thought of becoming their own caliphs. What is the ruling regarding these four persons? Can these persons be called Ahl al-Sunnat wa'l-Jama'at or not? And what is His Eminence's position on this issue?

[1] Al-Quran al-Karim 11/107 and 108 [2] Jami' al-Bayan (Tafsir Ibn Jarir) under verse 11/107, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 12/142 Page 264 of 750

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

जन्नत के निवासियों का जन्नत में रहने का समय दोज़खियों के दोज़ख में रहने के समय से सैकड़ों साल अधिक है, क्योंकि न तो उसका कोई अंत है और न ही इसका, लेकिन इसकी शुरुआत उनकी शुरुआत से सैकड़ों साल पहले है। कयामत के दिन की शुरुआत में ही आसमान और ज़मीन पैदा हो जाएंगे, लेकिन जन्नती जन्नत में और दोज़खी दोज़ख में हिसाब-किताब के बाद जाएंगे। और वे आपस में भी समय की अवधि में भिन्न होंगे। गरीब लोग अमीरों से पाँच सौ साल पहले जन्नत में जाएंगे। तो शुरुआत की ओर से उनका जन्नत में रहना आसमानों और ज़मीन के अस्तित्व के समय से कम होगा, किसी का उदाहरण के तौर पर एक हजार साल कम, जैसा कि जिसके लिए अल्लाह की इच्छा होगी, किसी का दो हजार साल कम, इसी तरह और भी। इसके बारे में वह (अल्लाह) फ़रमाता है: "मगर जितना तुम्हारे रब ने चाहा।"[1] (कुरआन 11:107-108)। 'लयातियन्ना अला जहन्नम'[2] वाली रिवायत दोज़ख के पहले तबके(स्तर) के लिए है, जिसका नाम जहन्नम है, हालांकि पूरे संग्रह को भी जहन्नम कहा जाता है। यह तबका गुनाहगार मुवह्हिदीन (एकेश्वरवादियों) के लिए है; यह निश्चित रूप से एक दिन बिल्कुल खाली हो जाएगा जब 'ला इलाहा इल्लल्लाह' कहने वाला कोई भी व्यक्ति उसमें नहीं रहेगा, वल्लाहु तआला आलम (और अल्लाह ही सबसे बेहतर जानता है)।

मसला 105: 17 जमादी अल-उला 1337 हिजरी। अहले सुन्नत व जमाअत के विद्वानों की सेवा में निवेदन है कि आजकल अहले सुन्नत व जमाअत के कई लोग गुमराह फिरकों की संगति में रहकर कुछ मसलों में गलत आस्था रखने लगे हैं। यद्यपि हुज़ूर (अहमद रज़ा खान) के ढेरों लेखों में हर प्रकार के मसले मौजूद हैं, लेकिन यह मसला इस तुच्छ (अहक़र) की नज़र से नहीं गुज़रा है। इसलिए इस मसले की आवश्यकता हुई, और साथ ही आम लोगों का ईमान ताज़ा होगा और गलत अकीदे वाले लोग गुमराह होने से बाज़ आएंगे। उन्हीं मसलों में से एक नीचे लिखा है। अमीर मुआविया (रज़ियल्लाहु अन्हु) के बारे में ज़ैद कहता है कि वे एक लालची व्यक्ति थे, उन्होंने हज़रत अली (करमल्लाहु तआला वज्हहु) और रसूल अल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के परिवार यानी इमाम हसन (रज़ियल्लाहु अन्हु) से लड़कर उनकी खिलाफत छीन ली और हजारों सहाबा को शहीद किया। बक्र कहता है कि मैं उन्हें गलती पर मानता हूँ, उन्हें 'अमीर' नहीं कहना चाहिए। अम्र का कहना है कि वे महान सहाबा में से हैं, उनका अपमान करना गुमराही है। एक और व्यक्ति खुद को सुन्नी मज़हब का अनुयायी कहता है और कुछ ज्ञान भी रखता है (सच तो यह है कि वह निरा मूर्ख है), वह कहता है कि सभी सहाबा और विशेष रूप से हज़रत अबू बक्र सिद्दीक (रज़ियल्लाहु अन्हु), हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म

और हज़रत उस्मान ज़ुन्नूरैन (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) लालची थे (अल्लाह इससे बचाए), क्योंकि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का मुबारक शव रखा हुआ था और वे अपने-अपने खलीफा बनने की फिक्र में लगे हुए थे। इन चारों व्यक्तियों के बारे में क्या हुक्म है? क्या इन व्यक्तियों को सुन्नत व जमाअत कहा जा सकता है या नहीं? और इस मसले में हुज़ूर का क्या मज़हब (विचार) है?

[1] अल-कुरआन अल-करीम 11/107 और 108 [2] जामि अल-बयान (तफ़सीर इब्न जरीर) आयत 11/107 के अंतर्गत, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 12/142 पेज 264 का 750

جنت دوزخیوں کے دوزخ میں رہنے کی مقدار سے صدہا سال زائد ہے کہ انتہانہ ان کو نہ اس کو، مگر اس کی ابتداء ان کی ابتداء سے سینکڑوں برس پہلے ہے شروع روز قیامت میں آسمان وزمین پیدا ہو جائیں گے لیکن جنتی جنت اور دوزخی دوزخ میں بعد حساب جائیں گے اور باہم بھی مقدار میں مختلف ہوں گے فقراء اغنیاء سے پانچسو برس پہلے جنت میں جائیں گے تو جانب ابتداء میں ان کا خلود اَن سموات وارض کے دوام سے کم ہوا کسی کا مثلاً ہزار برس کم جیسی جس کے لیے مشیت ہوگی کسی کا دو ہزار برس کم ،الی غیر ذلک اس کو فرماتا ہے۔ "اِلَّا مَا شَآءَ رَبُّکَ ط"[1] (مگر جتنا تمہارے رب نے چاہا ت) روایت لیا تین علی جھنم ۲ الخ دوزخ کے طبقہ اولیٰ کے لیے ہے جس کا نام جہنم ہے اگرچہ مجموعہ کو بھی جہنم کہتے ہیں یہ طبقہ عصاۃ موحدین کے لیے ہے یہ بیشک ایک روز بالکل خالی ہو جائے گا جب لا الہ الا اللہ کہنے والا کوئی اس میں نہ رکھا جائے گا ، واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۱۰۵: ۱۷ جمادی الاولیٰ ۱۳۳۷ھ علمائے اہلسنت و جماعت کی خدمت میں گزارش ہے کہ آج کل اکثر سنت والجماعت فرقہ باطلہ کی صحبت میں رہ کر چند مسائل سے بد عقیدہ ہو گئے ہیں اگرچہ حضور کی تصانیف کثیرہ میں ہر قسم کے مسائل موجود ہیں لیکن احقر کی نگاہ سے یہ مسئلہ نہیں گزرا، اسی واسطے اس مسئلے کی ضرورت ہوئی ، اور نیز عوام کا ایمان تازہ ہوگا اور بد عقیدہ لوگ گمراہی سے باز آئیں گے ، منجملہ ان کے ایک مسئلہ ذیل میں تحریر ہے۔ امیر معاویہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی نسبت زید کہتا ہے کہ وہ لالچی شخص تھے ، حضرت علی کرم اللہ تعالیٰ وجہہ اور آل رسول صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم یعنی امام حسن رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے لڑ کر انکی خلافت لے لی اور ہزار ہا صحابہ کو شہید کیا۔ بکر کہتا ہے کہ میں ان کو خطا پر جانتا ہوں ان کو

امیر نہ کہنا چاہیے۔ عمرو کا یہ قول ہے کہ وہ اجلہ صحابہ میں سے ہیں ان کی توہین کرنا گمراہی ہے ایک اور شخص کو اپنے آپ کو سنی المذہب کہتا ہے اور کچھ علم بھی رکھتا ہے، (حق یہ ہے کہ وہ نرا جاہل ہے) وہ کہتا ہے کہ سب صحابہ اور خصوصاً حضرت ابوبکر صدیق رضی اللہ تعالیٰ عنہ اور حضرت عمر فاروق اعظم اور حضرت عثمان ذوالنورین رضی اللہ تعالیٰ عنہما لالچی تھے (نعوذ باللہ منھا) کیونکہ رسول اکرم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی نعش مبارک رکھی تھی اور وہ اپنے اپنے خلیفہ ہونے کی فکر میں لگے ہوئے تھے۔ ان چاروں شخصوں کی نسبت کیا حکم ہے ؟ ان شخصوں کو سنت والجماعت کہہ سکتے ہیں یا نہیں ؟ اور حضور کا اس مسئلہ میں کیا مذہب ہے ؟

[1] القرآن الکریم ۱۱/ ۱۰۷ اور ۱۰۸ [2] جامع القرآن (تفسیر ابن جریر) تحت آیت ۱۱/ ۱۰۷ دار احیاء التراث العربی بیروت ۱۲/ ۱۴۲ Page 264 of 750

Volume 29

Fatawa Ridawiyya

Provide a reasoned answer for the general public.

The Answer:

Allah, the Exalted, in Surah Al-Hadid, described two categories of the companions of the Master of the Messengers (peace and blessings of Allah be upon him and them): one, those who were honored with faith before the conquest of Mecca and spent their wealth and strove in the path of Allah; the second, those who did so after. Then He stated, "And to all Allah has promised the best [reward]"[1]. Allah has promised goodness to both groups, and concerning those to whom He has promised goodness, He says: "Those are kept far away from it [Hell]", they will not even hear its slightest sound. "And they will abide forever in that which their souls desire. The greatest terror will not grieve them," the greatest anxiety of the Day of Resurrection will not sadden them. "And the angels will meet them," the angels will welcome them, saying: "This is your Day which you were promised"[2].

Allah, the Almighty, describes this high status for every companion of the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him). Therefore, anyone who slanders any companion belies Allah, the One, the Subduer. Presenting some of their affairs—most of which consist of false narrations—against the Divine command is not the conduct of the people of Islam. In the same verse, the Lord, the Exalted, silenced such critics by promising goodness to both groups of companions (may Allah be pleased with them) and simultaneously saying: "And Allah is well-aware of what you do"[3]. Essentially, He has already promised goodness to all of you. After this, let whoever talks nonsense suffer the consequences and go to Hell. Allama Shihab al-Din Khafaji in *Nasim al-Riyad*, a commentary on *Al-Shifa* of Imam Qadi Iyad, states:

Whoever slanders Mu'awiyah is one of the dogs of the pit of Hell	**Whoever slanders Hazrat Mu'awiyah (may Allah be pleased with him) is one of the dogs of Hell.**

[4] Among these four individuals, the statement of Umar is true, Zaid and Bakr are liars, and the fourth person is the worst, a filthy Rafidi slanderer. Appointing an Imam is more critical than any other matter, as the entire management of religion and the world depends on it.

[1] Quran 57/10 [2] Quran 21/101 to 103 [3] Quran 57/10 [4] Nasim al-Riyad, Chapter Three, Markaz Ahle Sunnat Barkat-e-Raza Gujarat, India, 3/430

खंड 29

फ़तावा रज़विया

आम लोगों के लिए तर्कसंगत उत्तर प्रदान करें।

उत्तर:

अल्लाह अज़-व-जल ने सूरह अल-हदीद में रसूलों के सरदार (उन पर और उनके साथियों पर अल्लाह की शांति और कृपा हो) के साथियों की दो श्रेणियां बताई हैं: पहली वे जो मक्का की विजय से पहले ईमान के साथ सम्मानित हुए और अल्लाह की राह में धन खर्च किया और जिहाद किया; और दूसरी वे जिन्होंने इसके बाद किया। फिर फ़रमाया, "और अल्लाह ने सभी से भलाई का वादा किया है"[1]। अल्लाह तआला ने दोनों समूहों से भलाई का वादा किया है, और जिनके लिए भलाई का वादा किया गया है, उनके बारे में वह फ़रमाता है: "वे [जहन्नुम] से दूर रखे गए हैं", वे इसकी भनक तक नहीं सुनेंगे। "और वे हमेशा अपनी मनचाही इच्छाओं में रहेंगे। सबसे बड़ी घबराहट उन्हें दुखी नहीं करेगी," कयामत के दिन की सबसे बड़ी चिंता उन्हें गमगीन नहीं करेगी। "और फ़रिश्ते उनका स्वागत करेंगे," फ़रिश्ते उनका स्वागत करते हुए कहेंगे: "यह तुम्हारा वह दिन है जिसका तुमसे वादा किया गया था"[2]।

अल्लाह अज़-व-जल अल्लाह के रसूल (उन पर अल्लाह की शांति और कृपा हो) के हर साथी की यह शान बताता है। तो जो कोई किसी सहाबी (साथी) पर आक्षेप करता है, वह अल्लाह, जो एक और सर्वशक्तिमान है, को झुठलाता है। उनके कुछ मामलों को—जिनमें से अधिकांश झूठी कहानियाँ हैं—ईश्वरीय आदेश के विरुद्ध प्रस्तुत करना इस्लाम के लोगों का काम नहीं है। उसी आयत में, रब अज़-व-जल ने आलोचकों का मुँह यह कहकर बंद कर दिया कि उसने सहाबा (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) के दोनों समूहों से भलाई का वादा किया है और साथ ही फ़रमाया: "और अल्लाह अच्छी तरह जानता है जो तुम करते हो"[3]। संक्षेप में, वह तुम सभी से भलाई का वादा कर चुका है। इसके बाद जो कोई बकवास करे, वह अपना सिर खुद फोड़े और खुद जहन्नुम में जाए। अल्लामा शिहाब अल-दीन खफाजी इमाम काजी अयाज़ की 'शिफा' की व्याख्या 'नसीम अल-रियाज़' में फ़रमाते हैं:

व मय्यकूनु यत-अुनु फी मुआवियत फ-ज़ालिका कलबुम मिन किलाबिल हावियाह

जो हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु पर आक्षेप करे वह जहन्नुम के कुत्तों में से एक कुत्ता है।

[4] इन चार व्यक्तियों में उमर का कथन सत्य है, ज़ैद और बक्र झूठे हैं, और चौथा व्यक्ति सबसे बुरा खबीस राफ़िज़ी तबराई है। इमाम की नियुक्ति किसी भी अन्य कार्य से अधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि धर्म और दुनिया का सारा प्रबंधन उसी से संबंधित है।

---

[1] अल-कुरान 57/10 [2] अल-कुरान 21/101 से 103 [3] अल-कुरान 57/10 [4] नसीम अल-रियाज़, अध्याय 3, मरकज़ अहले सुन्नत बरकात-ए-रज़ा गुजरात भारत, 3/430

جلد ۲۹

فتاوی رضویہ

جواب مدلل عام ارقام فرمائیے۔

الجواب:

اللہ عزوجل نے سورہ حدید میں صحابہ سیدالمرسلین صلی اللہ تعالیٰ علیہ وعلیہم وسلم کی دو قسمیں فرمائیں، ایک وہ کہ قبل فتح مکہ شریف مشرف بایمان ہوئے اور راہ خدا میں مال خرچ کیا جہاد کیا۔ دوسرے وہ کہ بعد پھر فرمایا۔ "وَّكُلًّا وَّعَدَ اللّٰهُ الْحُسْنٰى"[1]۔ دونوں فریق سے اللہ تعالیٰ نے بھلائی کا وعدہ فرمایا، اور جن سے بھلائی کا وعدہ کیا ہے ان کو فرماتا ہے، "اُولٰٓئِكَ عَنْهَا مُبْعَدُوْنَۙ" وہ جہنم سے دور رکھے گئے، "لَا يَسْمَعُوْنَ حَسِيْسَهَا" اس کی بھنک تک نہ سنیں گے۔ "وَ هُمْ فِيْ مَا اشْتَهَتْ اَنْفُسُهُمْ خٰلِدُوْنَۚ لَا يَحْزُنُهُمُ الْفَزَعُ الْاَكْبَرُ" اور وہ اپنی من مانتی خواہشوں میں ہمیشہ رہیں گے قیامت کی سب سے بڑی گھبراہٹ انہیں غمگین نہ کرے گی۔ "وَ تَتَلَقّٰىهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُؕ" فرشتے ان کا استقبال کریں گے۔ "هٰذَا يَوْمُكُمُ الَّذِيْ كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ"[2] یہ کہتے ہوئے کہ یہ تمہارا وہ دن جس کا تم سے وعدہ تھا۔ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے ہر صحابی کی یہ شان اللہ عزوجل بتاتا ہے، تو جو کسی صحابی پر طعن کرے اللہ واحد قہار کو جھٹلاتا ہے، اور ان کے بعض معاملات جن میں اکثر حکایات کاذب ہیں ارشاد الہی کے مقابل پیش کرنا اہل اسلام کا کام نہیں، رب عزوجل نے اسی آیت میں اس کا منہ بھی بند فرما دیا کہ دونوں فریق صحابہ رضی اللہ تعالیٰ عنہم سے بھلائی کا وعدہ کر کے ساتھ ہی ارشاد فرمایا "وَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ"[3]۔ اور اللہ تعالیٰ کو خوب خبر ہے جو کچھ تم کرو

گے۔ بالبنیہ میں تم سب سے بھلائی کا وعدہ فرما چکا۔ اس کے بعد کوئی بکے اپنا سر کھائے خود جہنم جائے۔ علامہ شہاب الدین خفاجی نسیم الریاض شرح شفاء امام قاضی عیاض میں فرماتے ہیں:

ومن یکون یطعن في معاویة فذالك جو حضرت معاویہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ پر طعن کرے وہ جہنم

کلب من کلاب الھاویة کے کتوں میں سے ایک کتا ہے۔

[4] ان چار شخصوں میں عمر کا قول سچا ہے، زید و بکر جھوٹے ہیں، اور چوتھا شخص سب سے بدتر خبیث رافضی تبرائی ہے۔ امام کا مقرر کرنا بہر مہم سے زیادہ ہے تمام انتظام دین و دنیا اسی سے متعلق ہے۔

---

[1] القرآن الکریم ۵۷ / ۱۰ [2] القرآن الکریم ۲۱ / ۱۰۱ تا ۱۰۳ [3] القرآن الکریم ۵۷ / ۱۰ [4] نسیم الریاض الباب الثالث مرکز اہلسنت برکات رضا گجرات الہند ۳ / ۴۳۰

Fatawa Razawiyya Volume 29

If the illuminated funeral of the Holy Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him) had remained until the Day of Resurrection, no deterioration would have occurred at all. The pure bodies of the Prophets (peace be upon them) do not decay. Sayyiduna Sulayman (peace be upon him) remained standing for one year after passing away and was buried after a year. The blessed funeral was in the chamber of the Mother of the Believers, Siddiqah (may Allah be pleased with her), where the illuminated shrine is now. It was not to be taken outside. The chamber was small, and all the Sahaba (Companions) had to be honored by performing that holy prayer. One group would come, pray, and leave, then another would come. In this way, the process concluded on the third day. And if it had taken three years to conclude, the holy funeral would have remained just like that, because delaying the holy burial was necessary for this reason. According to Iblis (Satan), if this was due to greed, then the most severe accusation is against the Commander of the Faithful, Ali (may Allah Almighty ennoble his face). These were not greedy people, and the tasks of shrouding and burial are related to the family members. Why would they sit idly with their hands on their laps for three days? They performed this work of the Messenger, they rendered this final service. Thus, it is known that the objection is accursed, and not burying the illuminated funeral quickly was itself religious wisdom, upon which Ali Murtaza and all the Sahaba reached a consensus, however:

"May the eye of the ill-wisher be plucked out; even a skill appears as a flaw in his sight." (May the ill-wisher's eye be destroyed; in his sight, even a talent appears as a defect.)

These wretched people (may Allah forsake them) do not stop causing distress to the noble Sahaba. It is mentioned in the noble Hadith:

"Whoever hurts them has hurt me, and whoever hurts me has hurt Allah, and whoever hurts Allah, it is near that He will seize him."[1]

Whoever hurt my Sahaba has hurt me, and whoever hurt me has hurt Allah, and whoever hurt Allah, it is near that Allah will seize him. We seek refuge in Allah, and Allah Almighty knows best.

Issue 106: From Cochin, District Malabar, Matancherry neighborhood, sent by Maulana Haji Tahir Muhammad Sahab, 20 Jumada al-Ula 1337 AH. What do the noble scholars say regarding this matter: is it obligatory (Farz), necessary (Wajib), or a

Sunnah to remain steadfast on one Madhhab (school of law)? What is the status of one who does not remain steadfast on one Madhhab? What is his name?

[1] Jami' at-Tirmidhi, Chapters on Merits, Chapter on those who insult the Sahaba of the Prophet (PBUH), Amin Company Delhi 2/226.

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

हुज़ूर-ए-अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का जनाज़ा-ए-अनवर अगर क़यामत तक रखा रहता तो उसमें कोई विकार नहीं आता, नबियों अलैहिमुस्सलाम के पाक जिस्म ख़राब नहीं होते। सय्यदुना सुलेमान अलैहिस्सलाम वफात के बाद एक साल तक खड़े रहे और साल भर बाद दफ़न हुए। मुक़द्दस जनाज़ा उम्मुल मोमिनीन सिद्दीक़ा (रज़ियल्लाहु अन्हा) के हुजरे में था जहाँ अब मज़ार-ए-अनवर है, उसे वहाँ से बाहर नहीं ले जाना था। हुजरा छोटा था और तमाम सहाबा को उस नमाज़-ए-अक़दस से मुशर्रफ़ होना था। एक जमात आती, नमाज़ पढ़ती और बाहर जाती, फिर दूसरी आती। इस तरह यह सिलसिला तीसरे दिन ख़त्म हुआ। और अगर यह सिलसिला तीन साल में ख़त्म होता तो जनाज़ा-ए-अक़दस तीन साल तक यूँ ही रखा रहता क्योंकि इस वजह से दफ़न में ताख़ीर (देरी) ज़रूरी थी। इबलीस के नज़दीक अगर यह लालच की वजह से था, तो सबसे सख़्त इल्ज़ाम अमीरुल मोमिनीन अली (कर्रमल्लाहु तआला वजहुहुल करीम) पर है। वे लालची नहीं थे और कफ़न-दफ़न का काम घर वालों से ही मुताल्लिक़ होता है, वे क्यों तीन दिन हाथ पर हाथ धरे बैठे रहे? उन्होंने ही रसूल का यह काम किया, उन्होंने ही यह आख़िरी ख़िदमत अंजाम दी। तो मालूम हुआ कि एतराज़ (आपत्ति) मलऊन है और जनाज़ा-ए-अनवर को जल्द दफ़न न करना ही दीनी मफ़ाद (मसलहत) थी जिस पर अली मुर्तज़ा और तमाम सहाबा का इजमा (सहमति) था, मगर:

चश्म-ए-बद अंदेश कि बर कंदा बाद / ऐब नुमायद ब निगा हश हुनर (बदख़्वाह की आँख बर्बाद हो जाए, उसकी निगाह में हुनर भी ऐब नज़र आता है।)

ये ख़बीस (दुष्ट) लोग सहाबा किराम को तकलीफ़ पहुँचाने से बाज़ नहीं आते। हदीस शरीफ़ में है:

"जिसने उन्हें तकलीफ़ दी उसने मुझे तकलीफ़ दी, और जिसने मुझे तकलीफ़ दी उसने अल्लाह को तकलीफ़ दी, और जिसने अल्लाह को तकलीफ़ दी तो क़रीब है कि अल्लाह उसे पकड़ ले।"[1]

जिसने मेरे सहाबा को ईज़ा (दुख) दी उसने मुझे ईज़ा दी और जिसने मुझे ईज़ा दी उसने अल्लाह को ईज़ा दी और जिसने अल्लाह को ईज़ा दी तो क़रीब है कि अल्लाह उसे गिरफ्तार करे, वल इयाजु बिल्लाह, वल्लाहु तआला आलम।

मसला 106: कोचीन, ज़िला मालाबार, मोहल्ला मट्टनचेरी से मौलाना हाजी ताहिर मोहम्मद साहब द्वारा भेजा गया, 20 जमादी-उल-उला 1337 हिजरी। उलेमा-ए-किराम इस मसले में क्या फ़रमाते हैं

कि एक मज़हब पर क़ायम रहना फ़र्ज़ है या वाजिब है या सुन्नत? जो एक मज़हब पर क़ायम नहीं है वह कौन है? उसका नाम क्या है?

[1] जामिअ अत-तिरमिज़ी, अबवाबुल मनाक़िब, बाबु मन सब्बा असहाबाहु सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, अमीन कंपनी दिल्ली 2/226

حضورِ اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کا جنازہ انور اگر قیامت تک رکھا رہتا اصلاً کوئی خلل متحمل نہ تھا، انبیاء علیہم السلام کے اجسام طاہرہ بگڑتے نہیں، سیدنا سلیمان علیہ الصلوٰۃ والسلام بعدِ انتقال ایک سال کھڑے رہے سال بھر بعد دفن ہوئے، جنازہ مبارکہ حجرہ ام المومنین صدیقہ میں تھا جہاں اب مزارِ انور ہے اس سے باہر لے جانا نہ تھا، چھوٹا سا حجرہ اور تمام صحابہ کو اُس نمازِ اقدس سے مشرف ہونا ایک ایک جماعت آتی اور پڑھتی اور باہر جاتی دوسری آتی، یوں یہ سلسلہ تیسرے دن ختم ہوا۔ اور اگر تین برس میں ختم ہوتا تو جنازہ اقدس تین برس یوں ہی رکھا رہتا کہ اس وجہ سے تاخیرِ دفن اقدس ضروری تھی۔ ابلیس کے نزدیک یہ اگر لالچ کے سبب تھا سب سے سخت تر الزام امیر المومنین علی کرم اللہ تعالیٰ وجہہ پر ہے یہ تولاچی نہ تھے اور کفن دفن کا کام گھر والوں سے ہی متعلق ہوتا ہے یہ کیوں تین دن ہاتھ پر ہاتھ دھرے بیٹھے رہے۔ انہیں نے رسول کا یہ کام کیا ہوتا یہ پچھلی خدمت بجالائے ہوتے۔ تو معلوم ہوا کہ اعتراض ملعون ہے اور جنازہ انور کا جلد دفن نہ کرنا ہی مصلحتِ دینی تھی جس پر علی مرتضیٰ اور سب صحابہ نے اجماع کیا مگر

چشمِ بد اندیش کہ بر کندہ باد عیب نماید بہ نگاہش ہنر (بدخواہ کی آنکھ برباد ہو جائے اس کی نگاہ میں ہنر بھی عیب نظر آتا ہے۔ت)

یہ خبثاء خذلھم اللہ تعالیٰ صحابہ کرام کو ایذا نہیں دیتے۔ حدیث شریف میں ہے۔ من أذاھم فقد آذانی ومن آذانی فقد آذی اللہ ومن آذی اللہ یوشك ان یاخذہ۔۱ جس نے میرے صحابہ کو ایذا دی اس نے

مجھے ایذا دی اور جس نے مجھے ایذا دی اس نے اللہ کو ایذا دی اور جس نے اللہ کو ایذا دی تو قریب ہے کہ اللہ اسے گرفتار کرے، والعیاذ باللہ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۱۰۶: از کو چین ضلع ملیبار محلہ مٹانچری مرسلہ مولانا حاجی طاہر محمد صاحب ۲۰ جمادی الاولٰی ۱۳۳۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے کرام اس مسئلہ میں کہ ایک مذہب پر قائم رہنا فرض ہے یا واجب ہے یا سنت؟ جو ایک مذہب پر قائم نہیں وہ کون ہے؟ اس کا نام کیا ہے؟

۱ جامع الترمذی ابواب المناقب باب من سب اصحابہ صلی اللہ علیہ وسلم، امین کمپنی دہلی ۲/ ۲۲۶

Fatawa Razawiyya Volume 29

The Answer: Remaining steadfast upon the creed of the Ahl-us-Sunnah is the greatest obligation. In jurisprudence, remaining firm on one school of thought, such as the Hanafi school, is necessary. One who does not follow any school of thought is an atheist in the first scenario and a non-conformist (ghair muqallid) in the second; this sect is also an innovator destined for Hellfire. It is mentioned in Tahtawi on al-Durr al-Mukhtar: "So whoever remains outside of these four [schools of thought] is from the people of innovation and the Fire. And Allah knows best." So, whoever is outside the four is among the innovators and the dwellers of Hell. (T) And Allah Almighty knows best.

Problem 107: From Bareilly city, Madrasa Manzar-ul-Islam. Questioner: Imam Bakhsh, a student of the said Madrasa. 15 Jumada al-Akhirah 1337 AH. What do the scholars of the religion say about this matter: Zaid says that standing (during Mawlid) is impermissible. As proof, he falsely attributes a statement to Imam-e-Azam, saying, "Our Imam himself never performed 'qiyam'. Since we follow him, we should follow him in every matter. Thus, if we do not perform 'qiyam', we cannot be blamed." Is Zaid's statement that Imam-e-Azam (may Allah have mercy on him) never performed 'qiyam' correct or not? If Zaid is falsely attributing this to Imam-e-Azam (may Allah have mercy on him), what is the ruling for such a person? Zaid claims the author of 'Mirqat' says that emphasizing a recommended (mandub) act makes it disliked (makruh). 'Qiyam' is recommended (mustahabb), so why is it so emphasized, even to the point of publishing pamphlets? Four rak'ahs of Sunnah before Asr prayer are recommended, why is there no emphasis on that? What is special about 'qiyam', and what reward will those who perform it receive? And what punishment will there be for the one who rejects it? In a Mawlid ceremony, some people stood and some did not; what is the ruling for them? Is prayer valid behind those who only reject standing or who hold Deobandi views?

The Answer: He has slandered the Imam. Standing is 'mandub' (recommended). If sometimes a gathering did not stand on the basis that it is not obligatory, and it wasn't accompanied by Wahhabi inclinations, there would be no harm. However, now this 'qiyam' has become a hallmark of the Ahl-us-Sunnah. Therefore, distinguishing between the hallmarks of Wahhabism and Sunnism is definitely emphasized.

[1] Hashiyah al-Tahtawi 'ala al-Durr al-Mukhtar, Book of Slaughtering, Al-Maktabah al-Islamiyya, Quetta, 3/153.

उत्तर: अहले सुन्नत के पंथ पर अडिग रहना सबसे बड़ा कर्तव्य है। न्यायशास्त्र (फ़िक़्ह) में किसी एक पंथ पर, जैसे कि हनफ़ी पंथ पर, टिके रहना आवश्यक है। जो किसी पंथ पर अडिग नहीं है, वह पहली स्थिति में नास्तिक (दहरिया) है और दूसरी स्थिति में गैर-मुक़ल्लिद है; यह संप्रदाय भी पथभ्रष्ट और नरकगामी है। त़हत़ावी अल-दुर्र अल-मुख़्तार में है: "जो भी इन चार [पंथों] से बाहर है, वह नवाचार करने वालों (बिदअतियों) और नरक की आग वालों में से है।" और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है। तो जो कोई भी इन चारों से बाहर है, वह बिदअतियों और जहन्नमियों में से है। (त) और अल्लाह सर्वशक्तिमान सबसे बेहतर जानता है।

मसला 107: बरेली शहर, मदरसा मंज़र-ए-इस्लाम से। प्रस्तावक: इमाम बख्श, उक्त मदरसा के छात्र। 15 जमादी अल-आख़िरा 1337 हिजरी। धर्म के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं: ज़ैद का यह कहना है कि क़ियाम (खड़े होना) नाजायज़ है और इसके प्रमाण के रूप में वह इमाम-ए-आज़म साहब का एक कथन झूठ बोलकर पेश करता है कि "हमारे इमाम साहब खुद कभी-कभी क़ियाम नहीं करते थे, जब हम उनका अनुसरण (तक़लीद) करते हैं तो हर बात में तक़लीद करनी चाहिए। इसलिए इस स्थिति में कि हम क़ियाम नहीं करते, हमें दोषी नहीं ठहराया जा सकता।" क्या ज़ैद का यह कथन कि इमाम-ए-आज़म (रहमतुल्लाह अलैह) कभी-कभी क़ियाम नहीं करते थे, सही है या नहीं? अगर ज़ैद इमाम-ए-आज़म (रहमतुल्लाह अलैहि) पर झूठ मढ़ रहा है, तो ऐसे व्यक्ति के लिए क्या हुक्म है? ज़ैद कहता है कि 'मिरक़ात' के लेखक का कहना है कि जो कार्य मनदूब (सिफारिशी) है, उस पर ज़ोर देने से वह मकरूह (नापसंद) हो जाता है। क़ियाम मुस्तहब (पसंदीदा) है, फिर इस पर इतना ज़ोर क्यों दिया जाता है कि बात पर्चे छपवाने तक पहुँच गई है? असर की नमाज़ से पहले चार रकात सुन्नत मुस्तहब है, उस पर ज़ोर क्यों नहीं दिया जाता? क़ियाम में क्या विशेषता है और क़ियाम करने वालों को क्या पुण्य (सवाब) मिलेगा? और क़ियाम से इनकार करने वाले को क्या सज़ा (अज़ाब) होगी? मीलाद शरीफ़ में कुछ लोगों ने क़ियाम किया और कुछ लोगों ने नहीं किया, उनके लिए क्या हुक्म है? जो लोग केवल क़ियाम के विरोधी हैं या पूरी तरह से देवबंदी विचारधारा के हैं, उनके पीछे नमाज़ जायज़ है या नहीं?

उत्तर: उसने इमाम पर झूठ मढ़ा है। क़ियाम मनदूब है। यदि कभी पूरी सभा इस आधार पर क़ियाम न करती कि यह अनिवार्य (वाजिब) नहीं है, और उसके साथ वहाबी विचार न होते, तो कोई हर्ज़ नहीं था। लेकिन अब यह क़ियाम अहले सुन्नत की पहचान (शआर) बन गया है, और इस लिहाज़ से

वहाबियत के प्रतीकों और सुन्नियत के प्रतीकों के बीच भेद करना निश्चित रूप से आवश्यक (मोअक्कदा) है।

[1] ह़ाशिया अत-ृत़ह़त़ावी अल-दुर्र अल-मुख़्तार, किताबुज़-ज़ब़ाह़, अल-मकतब अल-इस्लामिया, क्वेटा, 3/153.

الجواب: مذہب اہلسنت پر قائم رہنا فرض اعظم ہے اور فقہ میں ایک مذہب مثلاً حنفی مذہب پر قائم رہنا، اور جو کسی مذہب پر قائم نہیں پہلی صورت میں دہریہ اور دوسری صورت میں غیر مقلد ہے اور یہ فرقہ بھی بدعتی ناری ہے۔ طحطاوی علی الدر المختار میں ہے: فمن کان خارجًا عن ھذا الاربعۃ فھو من اھل البدعۃ والنار۔ واللہ تعالٰی اعلم تو جو کوئی چاروں سے خارج ہے وہ بدعتیوں اور جہنمیوں میں سے ہے۔ (ت) واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۱۰۷: از شہر بریلی مدرسہ منظر الاسلام مسئولہ امام بخش طالب علم مدرسہ مذکور ۱۵ جمادی الاخرہ ۱۳۳۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید کا یہ قول ہے کہ قیام ناجائز ہے اور اس کی دلیل امام اعظم صاحب کا قول پیش کرتا ہے بطور افتراء کہ ہمارے امام صاحب خود کبھی کبھی قیام نہیں فرماتے تھے جب ہم ان کی تقلید کرتے ہیں تو ہر ایک بات میں تقلید کرنا چاہیے تو اس صورت میں کہ ہم قیام نہیں کرتے الزام نہیں ہو سکتا اور زید کا یہ قول کہ امام اعظم رحمتہ اللہ تعالی کبھی کبھی قیام نہیں فرماتے تھے یہ صحیح ہے یا نہیں، اگر زید امام اعظم رحمتہ اللہ تعالی علیہ پر افتراء کرتا ہے تو ایسے شخص کے واسطے کیا حکم ہے؟ زید کہتا ہے کہ صاحب مرقات کا قول یہ ہے کہ جو امر مندوب ہے اس پر تاکید کرنے سے مکروہ ہو جاتا ہے، قیام مستحب ہے پھر اس پر اس قدر تاکید کیوں ہے یہاں تک کہ رسالہ بازیوں تک نوبت پہنچ گئی، قبل نماز عصر چار رکعت سنت مستحب ہے، اس پر تاکید کیوں نہیں کرتے، قیام پر کیا خصوصیت ہے اور قیام کرنے والوں کو کیا ثواب ملے گا؟ اور منکر قیام کو کیا عذاب ہو گا؟ میلاد شریف میں کچھ لوگوں نے قیام کیا اور کچھ لوگوں نے نہیں کیا ان کے واسطے کیا حکم ہے؟ جو لوگ صرف قیام کے منکر ہیں یا پورے دیوبندی خیال کے ہیں ان کے پیچھے نماز جائز ہے یا نہیں۔

الجواب: اس نے امام پر افتراء کیا اور قیام مندوب ہے اگر بعض اوقات اس لحاظ سے کہ واجب نہیں ساری مجلس قیام نہ کرتی اور اس کے ساتھ یہ خیال وہابیت نہ ہوتا تو حرج نہ تھا اور اب یہ قیام شعارِ اہلسنت ہو گیا ہے اور اس سے ان کا اشعار وہابیت اور شعارِ سنیت کا لحاظ ضرور مو کدہ ہے۔

[1] حاشیۃ الطحطاوی علی الدرالمختار کتاب الذبائح المکتبہ الاسلامیہ کوئٹہ ۳/ ۱۵۳

Fatawa Razawiyya Volume 29

The supererogatory prayers (nawafil) before Asr are neither a symbol of Sunnism nor is there any blame or misguidance in omitting them, especially in a situation where the congregation stands (for Qiyam) and some intentionally remain seated in opposition to the Muslims. If, hypothetically, a denier of Qiyam is found who only has doubt in this specific issue, not due to Wahhabism nor based on Wahhabi principles, and in all other matters is in agreement with the Ahl al-Sunnah, and considers Wahhabis to be misguided and irreligious, then there would be no harm in praying behind him. However, such a person is perhaps non-existent in India. As for Deobandis and those who share their views, they are apostates; how can prayer be performed behind an apostate!

Issue 108: Through Syed Zamirul Hasan Sahib, 12 Jumada al-Ula 1337 AH.

Respected brother, may your prosperity continue, it is a humble request that the pamphlet I mentioned has now been received. I am writing one objection from it because the others are long and detailed, which I will write later. Please present this to the honorable presence of A'la Hazrat, Qiblah, and Ka'bah, and send the answer to this humble servant. The objection is that for us, who find ourselves in a very weak state of faith, the command is: "They believe in the unseen" [1] - meaning they believe without seeing. "Who fears Him in the unseen" [2] - who is it that fears without seeing? "Those who fear their Lord in the unseen and they are fearful of the Hour" [3] - this advice is for those people who fear God without seeing and fear the Day of Judgment. "You can only warn him who follows the reminder and fears the Most Merciful in the unseen" [4] - you warn only those who follow the advice and fear the Merciful without seeing. "Who feared the Most Merciful in the unseen and came with a heart turned [in repentance]. Enter it in peace" [5] - a person who continued to fear God without seeing and came with a devoted heart, we will say to such people: enter this Paradise with peace. "Who will help Him and His Messengers in the unseen" [6] - those people who help God and His Messenger without seeing. "Indeed, those who fear their Lord in the unseen, for them is forgiveness and a great reward" [7] - for those people who fear God without seeing, there is a great reward. In short, numerous verses in which...

1. Al-Quran Al-Karim 2/3
2. Al-Quran Al-Karim 5/94
3. Al-Quran Al-Karim 21/49

4. Al-Quran Al-Karim 36/11
5. Al-Quran Al-Karim 50/33 & 34
6. Al-Quran Al-Karim 57/25
7. Al-Quran Al-Karim 67/12

फतावा रज़विया खंड २९

अस्र से पहले के नवाफिल न सुन्नियत का प्रतीक हैं और न ही उनके त्याग में कोई दोष या गुमराही है, विशेष रूप से उस स्थिति में जब मजलिस (सभा) कयाम (खड़ी) हो और कुछ लोग जानबूझकर मुसलमानों का विरोध करते हुए बैठे रहें। यदि परिकल्पना के तौर पर कोई कयाम का इनकार करने वाला ऐसा पाया जाए जिसे केवल इसी मसले में संदेह हो, न कि वहाबियत के कारण और न ही वहाबियत के सिद्धांतों के आधार पर, और वह अन्य सभी मसलों में सुन्नत के समर्थकों (अहले सुन्नत) के अनुकूल हो, वहाबियों को गुमराह और बेदीन समझता हो, तो उसके पीछे नमाज़ पढ़ने में कोई हर्ज नहीं होगा। मगर भारत में शायद ऐसा व्यक्ति मौजूद न हो। रही बात देवबंदियों और उनके हम-ख्याल लोगों की, तो वे धर्मत्यागी (मुरतद) हैं; एक धर्मत्यागी के पीछे नमाज़ कैसी!

मसला १०८: सैयद ज़मीरुल हसन साहब के माध्यम से, १२ जमादी अल-उला १३३७ हिजरी।

आदरणीय भाई साहब, आपकी समृद्धि बनी रहे, सविनय निवेदन है कि जिस पुस्तिका का ज़िक्र किया था वह अब प्राप्त हो गई है। मैं उसमें से एक आपत्ति लिख रहा हूँ क्योंकि अन्य आपत्तियाँ लंबी और विस्तृत हैं जो बाद में लिखूँगा। आप इसे आलाहज़रत किबला व काबा की सेवा में प्रस्तुत करें और उत्तर इस तुच्छ सेवक के पास भेजें। वह आपत्ति यह है कि हम जो कि अपनी ईमानी अवस्था को बहुत कमज़ोर पाते हैं, हमारे लिए आदेश होता है: "वे अनदेखी चीज़ों (ग़ैब) पर ईमान लाते हैं" [1] - यानी बिना देखे ईमान लाते हैं। "कौन है जो अनदेखे डरता है" [2] - कौन है जो बिना देखे डरता है? "जो अपने रब से बिन देखे डरते हैं और वे कयामत के समय से डरे हुए हैं" [3] - यह उपदेश उन लोगों के लिए है जो बिना देखे ईश्वर से डरते हैं और प्रलय (कयामत) से डरते हैं। "तुम केवल उसे सचेत कर सकते हो जो उपदेश का अनुसरण करता है और बिन देखे रहमान (अत्यंत दयालु) से डरता है" [4] - तुम उन्हें ही डराओ जो समझाने पर चलें और बिना देखे रहमान से डरें। "जो बिन देखे रहमान से डरता रहा और एकाग्र हृदय लेकर उपस्थित हुआ। इसमें शांति के साथ प्रवेश करो" [5] - वह व्यक्ति जो बिना देखे ईश्वर से डरता रहा और समर्पित हृदय लेकर आया, हम ऐसे लोगों से कहेंगे कि शांति के साथ इस जन्नत (स्वर्ग) में प्रवेश कर जाओ। "कौन उसकी और उसके रसूलों की अनदेखे में सहायता करेगा" [6] - वे लोग जो बिना देखे ईश्वर और उसके रसूल की सहायता करते हैं।

"निस्संदेह वे जो अपने रब से बिन देखे डरते हैं, उनके लिए क्षमा और बड़ा प्रतिफल है" [7] - जो लोग बिना देखे ईश्वर से डरते हैं, उनके लिए बड़ा प्रतिफल है। सारांश यह कि अनेक आयतें जिनमें...

1. अल-क़ुरान अल-करीम २/३
2. अल-क़ुरान अल-करीम ५/९४
3. अल-क़ुरान अल-करीम २१/४९
4. अल-क़ुरान अल-करीम ३६/११
5. अल-क़ुरान अल-करीम ५०/३३ और ३४
6. अल-क़ुरान अल-करीम ५७/२५
7. अल-क़ुरान अल-करीम ६७/१२

पृष्ठ २६८/७५०

عصر سے پہلے کے نوافل نہ شعارِ سنیت ہیں نہ ان کے ترک میں کوئی تہمت و گمراہی، خصوصاً اس حالت میں کہ مجلس قیام کرے اور بعض بالقصد مخالفتِ مسلمین کرکے بیٹھے رہیں، منکرِ قیام اگر بالفرض ایسا پایا جائے کہ صرف اسی مسئلہ میں اس کو شبہ ہے نہ بہ علت وہابیت نہ بربنائے اصولِ وہابیت اور تمام مسائل میں موافقِ اہلسنت ہے، وہابیہ کو گمراہ بے دین جانتا ہے تو اس کے پیچھے نماز میں حرج نہ ہوگا، مگر ہندوستان میں شاید ایسا شخص معدوم ہو۔ رہے دیوبندی اور ان کے ہم خیال وہ مرتدین ہیں مرتد کے پیچھے نماز کیسی!

مسئلہ ۱۰۸: بمعرفت سید ضمیر الحسن صاحب ۱۲ جمادی الاولی ۱۳۳۷ھ

جناب بھائی صاحب دام اقبالہ، مودبانہ گزارش ہے کہ جس رسالہ کے بارے میں تذکرہ کیا تھا وہ اس وقت موصول ہوا، اس کا ایک اعتراض تحریر کرتا ہوں کیونکہ دوسرے لمبے چوڑے ہیں وہ بعد کو لکھوں گا آپ اس کو اعلیحضرت قبلہ و کعبہ کی خدمتِ عالی میں پیش کریں اور جواب خاکسار کے پاس روانہ فرمائیں، وہ اعتراض یہ ہے کہ ہم جو کہ ایمانی حالت نہایت کمزور رکھتے ہیں ہمارے واسطے حکم ہوتا ہے۔ "یُؤْمِنُونَ بِالْغَیْبِ" 1- بغیر دیکھے ایمان لاتے ہیں۔ "مَنْ یَّخَافُہٗ بِالْغَیْبِ" 2- کون ہے جو بے دیکھے ڈرتا ہے۔ "اَلَّذِیْنَ یَخْشَوْنَ رَبَّھُمْ بِالْغَیْبِ وَھُمْ مِّنَ السَّاعَۃِ مُشْفِقُوْنَ" 3- یہ نصیحت نامہ ان لوگوں کے واسطے ہے جو بے دیکھے خدا سے ڈرتے ہیں اور قیامت سے ڈرتے ہیں، "اِنَّمَا تُنْذِرُ مَنِ اتَّبَعَ الذِّکْرَ وَ خَشِیَ الرَّحْمٰنَ بِالْغَیْبِ" 4- تم انہیں کو ڈراؤ جو سمجھانے پر چلے اور بغیر دیکھے رحمن سے ڈرے، "مَنْ خَشِیَ الرَّحْمٰنَ بِالْغَیْبِ وَ جَاءَ بِقَلْبٍ مُّنِیْبٍ د خُلُوْھَا بِسَلٰمٍ" 5- جو شخص بے دیکھے خدا سے ڈرتا رہا اور دل گرویدہ لے کر حاضر ہوا، ہم ایسے لوگوں سے فرمائیں گے سلامتی کے ساتھ اس بہشت میں داخل ہو جاؤ۔ "مَنْ یَّنْصُرُہٗ وَ رُسُلَہٗ بِالْغَیْبِ" 6- جو لوگ

بغیر دیکھے خدا اور اس کے رسول کی مدد کرتے ہیں۔ "اِنَّ الَّذِیْنَ یَخْشَوْنَ رَبَّھُمْ بِالْغَیْبِ لَھُمْ مَّغْفِرَۃٌ وَّ اَجْرٌ کَبِیْرٌ" 7- جو لوگ خدا سے بغیر دیکھے ڈرتے ہیں ان کے واسطے بڑا اجر ہے۔ غرضکہ متعدد آیات جن میں

1 القرآن الکریم ۳/۲ 2 القرآن الکریم ۵/۹۴ 3 القرآن الکریم ۲۱/۴۹ 4 القرآن الکریم ۳۶/۱۱ 5 القرآن الکریم ۵۰/۳۳ و ۳۴ 6 القرآن الکریم ۵۷/۲۵ 7 القرآن الکریم ۶۷/۱۲

Fatawa Razawiyya Volume 29

Allah Almighty has commanded us to believe without seeing. Today, philosophy, science, and chemistry have gained such influence that even a person with ordinary intellect is not ready to believe without seeing. A few days ago, stories of djinns, ghosts, fairies, and witches had a heavy influence on our hearts, but now, as the influence of science spreads, these things are being increasingly denied. We are not ready to accept anything without observation. Therefore, today it is a very difficult thing for anyone to accept something without observation, even though the incident of the determined Prophet and Father of Prophets, Prophet Ibrahim (peace be upon him), from thousands of years ago, is present in the Noble Quran.

| "And when Ibrahim said, 'My Lord, show me how You give life to the dead.' [Allah] said, 'Have you not believed?' He said, 'Yes, but [I ask] only that my heart may be satisfied.'" 1 | And when Prophet Ibrahim (peace be upon him) said to his Lord, "My Lord, show me how You will bring the dead back to life," God asked, "Do you not believe in this word of Ours?" Prophet Ibrahim (peace be upon him) replied, "Yes, I have believed, but I want to see for the sake of peace of heart."

Every person knows that believing is a matter of the heart; belief is not just oral lip service. If Prophet Ibrahim (peace be upon him) had truly believed in this, then peace of heart would certainly have been achieved. Now the objection is that in that era, when science and philosophy had not made humans so astute, the people of that time had the right to check and verify what is false and what is true before believing. So, how is it based on justice that in this enlightened age, there is a dictatorial command that you should not ask, inquire, look, or examine, but just bring faith without seeing? Firstly, Prophet Ibrahim (peace be upon him) was a Prophet, and such a Prophet from whose offspring thousands of Prophets were born, and the Seal of the Prophets, Hazrat Muhammad Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him), took pride in him, saying: "Say, 'Rather, [we follow] the religion of Abraham, inclining toward truth.'" 2. (Say, rather we adopt the religion of Ibrahim (peace be upon him)). Secondly, 'Nabi' is derived from 'Naba'; 'Naba' means news. The meaning of Prophet (Nabi) is one who receives news of the unseen. And the news of the unseen is such an unexpected blessing that has been a means for every rank of spiritual progress. Allah Almighty grants them news of the universe...

---

1 Al-Quran al-Karim 2/260 2 Al-Quran al-Karim 2/135

फतावा रज़विया जिल्द 29

अल्लाह तआला ने फ़रमाया है कि बिना देखे ईमान लाओ, आज कल फ़लसफ़ा, साइंस और केमिस्ट्री ने वह कुछ ज़ोर बांधा है कि मामूली से मामूली समझ वाला भी बिना देखे ईमान लाने को तैयार नहीं। जिन, भूत, परी, चुड़ैल के क़िस्से चंद रोज़ हुए कि हमारे दिलों पर बड़ा भारी असर किए हुए थे मगर अब ज्यों-ज्यों साइंस की हवा लगती जाती है इन बातों से इंकार होता चला जाता है और मुशाहिदे (अवलोकन) के बिना किसी बात के मानने के वास्ते हम तैयार ही नहीं होते, इसलिए आजकल यह बड़ी मुश्किल बात है कि बिना मुशाहिदे के कोई शख़्स किसी बात को तस्लीम कर ले, जबकि आज से चंद हज़ार साल पहले एक उलुल-अज़्म बल्कि अबुल-अंबिया हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का वाक़िया क़ुरआन शरीफ़ में मौजूद है।

| "और जब इब्राहीम ने कहा, 'ऐ मेरे रब! मुझे दिखा कि तू मुर्दों को कैसे ज़िंदा करता है?' उसने (अल्लाह ने) फ़रमाया, 'क्या तुझे यक़ीन नहीं?' उसने कहा, 'क्यों नहीं! (यक़ीन तो है) लेकिन इसलिए कि मेरे दिल को इत्मीनान (तसल्ली) मिल जाए।'" 1 | और जब इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अपने रब से कहा था कि मेरे रब मुझे दिखा कि तू किस तरह मुर्दों को ज़िंदा करेगा, खुदा ने पूछा क्या तू हमारी इस बात पर ईमान नहीं लाता, हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने जवाब दिया कि हाँ ईमान तो लाया हूँ मगर इत्मीनान-ए-क़ल्ब (दिल की तसल्ली) की ख़ातिर देखना चाहता हूँ। |

हर शख़्स जानता है कि ईमान लाना दिल के साथ होता है, ज़बानी जमा-खर्च का नाम ईमान नहीं। अगर हक़ीक़त में हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम इस बात पर ईमान लाए होते तो इत्मीनान-ए-क़ल्ब ज़रूर होता। अब ऐतराज़ (आपत्ति) यह है कि उस ज़माने में जब कि साइंस और फ़लसफ़े ने इंसान को इस क़दर होशियार नहीं किया था, उस वक़्त के लोग तो यह हक़ रखते थे कि वे देख-भाल कर खोटा-खरा जाँच कर ईमान लाएँ तो भला यह किस क़दर इंसाफ़ पर मबनी (आधारित) है कि इस रौशनी के ज़माने में यह नादिरशाही हुक्म हो कि तुम पूछो-गछो देखो-भालो नहीं बिना देखे ही ईमान ले आओ। अव्वल तो हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम नबी थे और नबी भी ऐसे नबी जिनकी औलाद से कई हज़ार नबी पैदा हुए और ख़ातमुल अंबिया हज़रत मोहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन पर फ़ख्र किया कि: "क़ुल बल मिल्लत-ए-इब्राहीमा हनीफ़ा" 2। (तुम फ़रमाओ बल्कि हम तो इब्राहीम अलैहिस्सलाम का दीन लेते हैं।) दूसरे नबी 'नबा' से निकला है, नबा ख़बर को कहते हैं, नबी के मानी ग़ैब (अदृश्य) की ख़बरें पाने वाला है। और ग़ैब की ख़बर एक ऐसी नेमत-ए-ग़ैर

मुतरक़्क़बा (अनपेक्षित आशीर्वाद) है कि जो हर मर्तबा ईमानी तरक़्क़ी का ज़रिया हुई है, कायनात-ए-आलम की ख़बरें अल्लाह तआला उन्हें...

---

1 अल-क़ुरआन अल-करीम 2/260 2 अल-क़ुरआन अल-करीम 2/135

اللہ تعالیٰ نے فرمایا ہے کہ بغیر دیکھے ایمان لاؤ، آج کل فلسفہ، سائنس اور کیمسٹری نے وہ کچھ زور باندھا ہے کہ معمولی سے معمولی سمجھ والا بھی بغیر دیکھے ایمان لانے کو تیار نہیں۔ جن، بھوت، پری، چڑیل کے قصے چند روز ہوئے کہ ہمارے دلوں پر بڑا بھاری اثر کیے ہوئے تھے مگر اب جوں جوں سائنس کی ہوا لگتی جاتی ہے ان باتوں سے انکار ہوتا چلا جاتا ہے اور مشاہدے کے بغیر کسی بات کے ماننے کے واسطے ہم تیار ہی نہیں ہوتے، اس لیے آجکل یہ بڑی مشکل بات ہے کہ بلا مشاہدہ کے کوئی شخص کسی بات کو تسلیم کرلے جب کہ آج سے چند ہزار سال پہلے ایک اولو العزم بلکہ ابوالانبیاء حضرت ابراہیم علیہ السلام کا واقعہ قرآن شریف میں موجود ہے۔

| "وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ رَبِّ أَرِنِي كَيْفَ تُحْيِي الْمَوْتَىٰ ۖ قَالَ أَوَلَمْ تُؤْمِن ۖ قَالَ بَلَىٰ وَلَٰكِن لِّيَطْمَئِنَّ قَلْبِي" 1 | اور جب ابراہیم علیہ السلام نے اپنے رب سے کہا تھا کہ میرے رب مجھے دکھا کہ تو کس طرح مردوں کو زندہ کرے گا، خدا نے پوچھا کیا تو ہماری اس بات پر ایمان نہیں لاتا، حضرت ابراہیم علیہ السلام نے جواب دیا کہ ہاں ایمان تو لایا ہوں مگر اطمینانِ قلب کی خاطر دیکھنا چاہتا ہوں۔ |

ہر شخص جانتا ہے کہ ایمان لانا دل کے ساتھ ہوتا ہے زبانی جمع خرچ کا نام ایمان نہیں، اگر فی الحقیقت حضرت ابراہیم علیہ السلام اس بات پر ایمان لائے ہوتے تو اطمینانِ قلب ضرور ہوتا اب اعتراض یہ ہے کہ اُس زمانہ میں جب کہ سائنس اور فلسفہ نے انسان کو اس قدر ہوشیار نہیں کیا تھا اُس وقت کے لوگ تو یہ حق رکھتے تھے کہ وہ دیکھ بھال کر کھوٹا کھرا جانچ کر ایمان لائیں تو بھلا یہ کس قدر انصاف پر مبنی ہے کہ اس روشنی کے زمانے میں یہ نادر شاہی حکم ہو کہ تم

پوچھو گچھو دیکھو بھالو نہیں بغیر دیکھے ہی ایمان لے آؤ۔ اول تو حضرت ابراہیم علیہ السلام نبی تھے اور نبی بھی ایسے نبی جن کی اولاد سے کئی ہزار نبی پیدا ہوئے اور خاتم النبیین حضرت محمد رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے ان پر فخر کیا کہ: "قُلْ بَلْ مِلَّةَ إِبْرَاهِيمَ حَنِيفًا" 2۔ (تم فرماؤ بلکہ ہم تو ابراہیم علیہ السلام کا دین لیتے ہیں۔ ت) دوسرے نبی نبا سے نکلا ہے نبا خبر کو کہتے ہیں، نبی کے معنی غیب کی خبریں پانے والا۔ اور غیب کی خبر ایک ایسی نعمتِ غیر مترقبہ ہے کہ جو ہر مرتبہ ایمانی ترقی کا ذریعہ ہوئی ہے کائناتِ عالم کی خبریں اللہ تعالٰی انہیں...

---

1 القرآن الکریم ۲/ ۲٦۰ 2 القرآن الکریم ۲/ ۱۳۵

Fatawa Razawiyya Volume 29

...he remains, due to which they stay extremely happy. Keeping these points in mind, now consider that those who are receiving news of extraordinary habits night and day, they should have the right to say, "Show me how You will bring the dead to life," and we, who are drowning in the ever-increasing flood of this modern science and philosophy, are given this Nadir Shah-like command to believe without seeing. Is this justice? People! For God's sake, answer. You can gauge the wrath this new light has wreaked from the following note: until these scientists were born, the world was so soft-hearted that no one denied the existence of God; rather, they used to accept even the most ordinary things as God. Thus, world history will tell you that there was no religion that denied the existence of the Almighty Creator. On the contrary, there were people who believed in fire, stones, trees, the sun, stars, moon, rivers, and even animals as God; there were believers in one or even many gods; no one denied it. But theories like Darwin's emerged and blew away God altogether, saying all this is by itself, there is no God, these are talks of the ignorant. Now consider that here there is a denial of God altogether; in such a state, how is it possible for anyone to believe in God's commands without proof and without seeing? It is surprising that when man was unaware of even his own reality and was living like a savage, at that time he had the right to bring faith after examination and scrutiny, and now when man, ruling over fire, water, air, and electricity, is busy thinking of conversing with stars while flying in the sky of progress, for this time such a law is passed that, "Go, bring faith without seeing." What kind of justice is this? And then, when the Prophet brings faith after seeing, and for us weak humans the command is to bring faith without seeing, tell me, are we not more deserving than them? Every person will answer that yes, indeed, we are more entitled to bring faith after more scrutiny because we haven't seen even a single reflection of Allah's manifestations, nor can we see. The divine revelation of prophethood ended with the Holy Messenger, the Seal of the Prophets, peace and blessings of Allah be upon him. And according to the Ahmadis, even if it is accepted that the path of prophethood is not closed, it is still impossible for the whole world to become prophets.

The Answer: May Allah (the Almighty and Majestic) protect us from His curse. When divine curse descends, the eyes of the heart are burst; a person with perfectly good senses becomes insane; he cannot even perceive his own existence or his actions.

...देता रहता है, जिसकी वजह से वे अत्यंत प्रसन्न रहते हैं। इन बातों को ध्यान में रखते हुए अब विचार करें कि जो रात-दिन अलौकिक समाचार प्राप्त कर रहे हैं, उन्हें तो यह अधिकार होना चाहिए कि 'मुझे दिखा दे कि तू मृतकों को कैसे जीवित करेगा', और हम जो इस आधुनिक विज्ञान और दर्शन की बढ़ती बाढ़ में डूबते जा रहे हैं, हमें यह नादिरशाही हुक्म दिया जाए कि बिना देखे ईमान ले आओ। क्या यह न्याय है? लोगों! ईश्वर के लिए उत्तर दो। इस नई रोशनी ने जो कहर ढाया है, उसका अंदाज़ा आप निम्नलिखित नोट से लगा सकते हैं: जब तक ये वैज्ञानिक पैदा नहीं हुए थे, दुनिया इतनी नरम दिल थी कि ईश्वर के अस्तित्व से किसी को इनकार नहीं था, बल्कि वे मामूली से मामूली चीजों को भी ईश्वर स्वीकार कर लिया करते थे। चुनांचे, विश्व इतिहास आपको बताएगा कि कोई ऐसा धर्म नहीं था जो ईश्वर के अस्तित्व से इनकार करता हो। इसके विपरीत, ऐसे लोग मौजूद थे जो आग, पत्थर, पेड़, सूरज, तारा, चाँद, नदी, यहाँ तक कि जानवरों को भी ईश्वर मानते थे; एक को छोड़कर कई-कई ईश्वरों को मानने वाले मौजूद थे, इनकार किसी को भी नहीं था। मगर डार्विन जैसों के सिद्धांतों ने पैदा होकर सिरे से ईश्वर को ही उड़ा दिया और कहने लगे कि यह सब कुछ अपने आप है, कोई ईश्वर नहीं है, ये अज्ञानियों की बातें हैं। अब ज़रा विचार करें कि यहाँ तो सिरे से ईश्वर का ही इनकार है, ऐसी स्थिति में यह कैसे संभव है कि कोई बिना प्रमाण के ईश्वर के आदेशों पर बिना देखे ईमान ला सके? आश्चर्य की बात है कि जब मानव अपनी वास्तविकता से भी अनभिज्ञ था और एक जंगली की तरह जीवन व्यतीत कर रहा था, उस समय तो उसे यह अधिकार प्राप्त था कि वह देख-भाल कर, ठोक-बजा कर ईमान लाए, और अब जब कि मानव आग, पानी, हवा, बिजली पर शासन करते-करते प्रगति के आसमान पर उड़ान भर कर तारों से बातचीत करने की फ़िक्र में मग्न हो, उस समय के लिए यह कानून पास हो जाए कि जी, बिना देखे ईमान ले आओ। यह कैसा न्याय है? और फिर, जब नबी तो देख-भाल कर ईमान लाएँ और हम कमज़ोर इंसानों के लिए यह हुक्म हो कि बिना देखे ईमान ले आओ, बताओ कि क्या हम उनसे ज़्यादा हक़दार हैं या नहीं? हर व्यक्ति इसका यही जवाब देगा कि हाँ, बेशक हम नबियों से ज़्यादा देख-भाल कर ईमान लाने के हक़दार हैं क्योंकि हमने अल्लाह के नूर की एक भी झलक नहीं देखी, और न ही हम देख सकते हैं। ईश्वरीय प्रकाश और नबूवत हज़रत रसूल-ए-करीम, खातमुन नबिय्यीन (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर समाप्त हो गई, और अहमदिया लोगों के अनुसार अगर यह मान भी लिया जाए कि नबूवत का रास्ता बंद नहीं हुआ, तो यह भी असंभव है कि पूरी दुनिया नबी बन जाए।

उत्तर: अल्लाह (अज़्ज़ व जल्ल) अपनी लानत से बचाए, जब ईश्वरीय लानत उतरती है तो दिल की आँखें फूट जाती हैं, अच्छा-भला होश-ओ-हवास वाला व्यक्ति पागल हो जाता है, उसे अपना अस्तित्व ही समझ नहीं आता, अपने कर्म (भी नहीं)।

पृष्ठ 270 का 750

دیتا رہتا ہے، جس کی وجہ سے وہ نہایت مسرور رہتے ہیں ان باتوں کو مد نظر رکھ کر اب غور کیجئے کہ جو رات دن خارق عادت خبریں پا رہے ہیں وہ تو یہ حق رکھیں کہ مجھے یہ دکھا دے کہ تو کس طرح مردوں کو زندہ کرے گا، اور ہم جو کہ اس موجودہ سائنس اور فلسفہ کے روز افزوں سیلاب میں ڈوبے جا رہے ہیں ہمیں یہ نادر شاہی حکم ہو کہ بغیر دیکھے ایمان لے آؤ۔ کیا یہ انصاف ہے؟ لوگو! خدا کے لیے جواب دو۔ اس نئی روشنی نے جو غضب ڈھایا ہے وہ حسب ذیل نوٹ سے آپ اندازہ کر سکتے ہیں کہ جب تک یہ سائنسدان پیدا نہیں ہوئے تھے دنیا اس قدر نرم دل واقع ہوئی تھی کہ خدا کی ہستی سے انکار کسی کو بھی نہ تھا بلکہ معمولی سے معمولی چیزوں کو بھی وہ خدا تسلیم کر لیا کرتے تھے۔ چنانچہ تاریخ عالم آپ کو یہ بتا دے گی کہ کوئی مذہب ایسا نہیں تھا کہ جن کو ہستی باری تعالیٰ سے انکار ہو۔ اس کے برعکس ایسے لوگ موجود تھے کہ آگ، پتھر، درخت، آفتاب، ستارہ، چاند، دریا، جانور تک کو خدا مانتے تھے، ایک چھوڑ کئی کئی خدا کے ماننے والے موجود تھے انکار کسی کو بھی نہ تھا مگر ڈارون جیسوں کی تھیور یز نے پیدا ہو کر سرے سے خدا ہی کو اڑا دیا اور کہنے لگے یہ سب کچھ خود بخود سے ہے کوئی خدا نہیں یہ جاہلوں کی باتیں ہیں۔ اب ذرا غور کریں کہ یہاں تو سرے سے خدا کا ہی انکار ہے اس حالت میں یہ کس طرح ممکن ہے کہ کوئی بلا دلیل خدا کے احکامات پر بلا دیکھے ایمان لا سکے تعجب ہے کہ جب جب حضرت انسان اپنی حقیقت سے بھی ناواقف تھا اور ایک وحشی کی طرح زندگی بسر کر رہا تھا اس وقت تو اس کو یہ حق حاصل تھا کہ یہ دیکھ بھال کر ٹھونک بجا کر ایمان لائے اور جب کہ انسان آگ، پانی، ہوا، بجلی پر حکمرانی کرتے کرتے ترقی کے آسمان پر پرواز کر کے تاروں سے گفت و شنید کی فکر میں منہمک ہو اس وقت کے واسطے یہ قانون پاس ہو جائے کہ جی

بغیر دیکھے ایمان لے آؤ کس قدر انصاف ہے، اور پھر جب کہ نبی تو دیکھ بھال کر ایمان لائیں اور ہم کمزور انسانوں کے واسطے یہ حکم ہو کہ بغیر دیکھے ایمان لے آؤ تمہیں بتاؤ کہ ہم ان سے زیادہ حقدار ہیں یا نہیں؟ ہر شخص اس کا یہی جواب دے گا کہ ہاں بے شک ہم انبیاء سے زیادہ دیکھ بھال کر ایمان لانے کے مستحق ہیں کیونکہ ہم نے تجلیات اللہ کا ایک پر تو بھی نہیں دیکھا، اور نہ ہم دیکھ سکتے ہیں وحی الہی نبوت حضرت رسول کریم خاتم النبیین صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم پر ختم ہو گئی، اور بقول احمدیوں کے یہ بھی مان لیا جائے کہ نبوت کا راستہ بند نہیں ہوا تو یہ بھی غیر ممکن ہے کہ تمام دنیا نبی بن جائے۔

الجواب: اللہ عز و جل اپنی لعنت سے بچائے، جب لعنت الہی اترتی ہے دل کی آنکھیں پھوٹ جاتی ہیں اچھا خاصا ہوش و حواس والا پاگل ہو جاتا ہے اسے اپنی ہی ہستی سجھائی نہیں دیتی اپنے افعال

Volume 29 Fatawa Razawiya

...the eye closes and the mouth of the one speaking nonsense opens. (1) The means of knowledge are three: intellect, senses, and truthful report. There are five senses, of which seeing is related to only one. Thus, combined with knowledge, they are mediums. One who is blind and says he will not believe without seeing has invalidated six out of seven means of knowledge. And if he is also blind to the obvious, then the seventh is also gone. (2) This person is even worse than a donkey; even a donkey knows there are other sources of knowledge besides sight. If it hears a lion's roar from afar or smells its scent, it will run for its life at full speed. But this person is more foolish than a donkey, standing right there, saying, "I haven't seen the lion, what is the meaning of believing without seeing?" (3) Do scientists believe in air or not? If yes, then how without seeing? (4) Scientists themselves disagree on hundreds of things. They disagree on things they have seen. Are they all blind, or is at least one of them sighted? They point fingers at things they've seen, and each follows their own opinion. (5) It is a theorem of Euclid that the ratio of a sphere to another sphere is as the ratio of their diameters, for example, by repetition, if the diameter of one sphere is 1/2 of another, then its volume will be 1/8, or if it is 1/3, then 1/27. With which eyes was this seen and accepted? (6) It is a theorem of Archimedes that the ratio of squares is the square of the ratio of roots. With which eyes was this seen? (7) It is a rule of algebra (Jabr-o-Muqabala) that adding the square of half the coefficient of the middle term to both sides—i.e., in an equation of the form: $x^2 + ax = b$, adding $(a/2)^2$ or $a^2/4$—makes it a perfect square. Even if it was complete before, with which eyes was this seen and accepted? Similarly, there are millions of problems in these arts and other sciences that are accepted without seeing. (8) This objector and every person certainly knows their mother to be their mother. Which of them saw themselves being born from her womb? (9) Leave aside the mother, whoever among them has a father never has a doubt, even though they did not see themselves descending from his loins and entering their mother's womb. Then how do they believe in him being their father? (10) There will be millions among them who have not seen London with their own eyes. Then what kind of blindness is it to say "without seeing"...

जिल्द २९ फ़तावा रज़विया

...वाली आँख बंद हो जाती है और निरर्थक बकने वाला मुँह खुल जाता है। (१) ज्ञान के तीन साधन हैं: बुद्धि, इंद्रियाँ, और विश्वसनीय सूचना। इंद्रियाँ पाँच हैं, जिनमें से देखना केवल एक से संबंधित है। तो ज्ञान के साथ वे माध्यम हुए। जो अंधा कहे कि बिना देखे नहीं मानेंगे, उसने ज्ञान के सात साधनों में से छह को निरस्त कर दिया। और यदि वह प्रत्यक्ष से भी अंधा है, तो सातवाँ भी गया। (२) यह तो गधे से भी बदतर हुआ, वह भी जानता है कि देखने के अलावा ज्ञान के अन्य साधन भी हैं। वह दूर से शेर की आवाज़ सुनेगा या उसकी गंध सूंघेगा, तो अपनी जान बचाकर पूरी रफ़्तार से भागेगा। लेकिन यह व्यक्ति गधे से भी अधिक मूर्ख है, वहीं खड़ा रहेगा कि शेर को देखा तो नहीं, बिना देखे मानने का क्या अर्थ? (३) विज्ञान वाले हवा को मानते हैं या नहीं? यदि हाँ, तो बिना देखे कैसे? (४) विज्ञान वाले स्वयं सैकड़ों बातों में भिन्न मत रखते हैं। देखी हुई बात में भी मतभेद किया। क्या वे सब अंधे हैं या उनमें से कोई एक सुदृष्टि वाला है? देखी हुई बातों में उंगलियाँ उठाते हैं और हर कोई अपनी बात मनवाता है। (५) यूक्लिड का प्रमेय है कि एक गोले का दूसरे गोले से अनुपात उनके व्यास के अनुपात के अनुसार होता है। उदाहरण के लिए, यदि एक गोले का व्यास दूसरे का १/२ है, तो उसका आयतन १/८ होगा, या यदि १/३ है, तो १/२७ होगा। यह किन आँखों से देख कर माना? (६) आर्किमिडीज का प्रमेय है कि वर्गों का अनुपात मूलों के अनुपात का वर्ग होता है। यह किन आँखों से देखा? (७) बीजगणित (जबर-ओ-मुकाबला) का नियम है कि मध्य पद के गुणांक के आधे का वर्ग दोनों पक्षों में जोड़ने से—अर्थात जिस समीकरण का रूप हो: $x^2 + ax = b$, उसमें $(a/2)^2$ या $a^2/4$ जोड़ने से वह पूर्ण वर्ग बन जाता है। भले ही वह पहले भी पूर्ण रहा हो, इसे किन आँखों से देख कर माना? इसी प्रकार इन कलाओं और अन्य विज्ञानों की लाखों समस्याएँ हैं जिन्हें बिना देखे मान लिया जाता है। (८) यह आपत्तिकर्ता और हर व्यक्ति अपनी माँ को निश्चित रूप से अपनी माँ जानता है। उनमें से किसने खुद को उसके गर्भ से पैदा होते देखा है? (९) माँ की तो बात ही क्या, उनमें से जिसका भी पिता है, उसे कभी संदेह नहीं होता, जबकि उसने स्वयं को उसकी पीठ से उतरते और माँ के पेट में प्रवेश करते नहीं देखा। फिर वह उसके पिता होने पर विश्वास कैसे रखता है? (१०) उनमें लाखों ऐसे होंगे जिन्होंने लंदन को अपनी आँखों से नहीं देखा। फिर यह कैसा अंधापन है कि बिना देखे...

पृष्ठ २७१ / ७५०

والی آنکھ بند ہو جاتی ہے اور مہملات بکنے والا منہ کھل جاتا ہے۔ (۱) علم کے اسباب تین ہیں: عقل، حواس، خبر صادق۔ حواس پانچ ہیں جن میں دیکھنا صرف ایک سے متعلق ہے تو علم کے ساتھ ذریعہ ہوئے، جو اندھا کہے کہ بے دیکھے نہ مانیں گے وہ سات میں سے چھ ذریعہ علم کو باطل کر چکا اور اگر ظاہر کا بھی اندھا ہے تو وہ ساتواں بھی گیا۔ (۲) یہ تو گدھے سے بھی بدتر ہوا، وہ بھی جانتا ہے کہ دیکھنے کے سوا اور بھی ذرائع علم ہیں دور سے شیر کی آواز سنے گا یا بو سونگھے گا تو جان توڑ کر سرپٹ بھاگے گا مگر یہ گدھے سے بھی احمق تر وہیں کھڑا رہے گا کہ شیر کو دیکھا تو ہے ہی نہیں بے دیکھے ماننا کیا معنی۔ (۳) سائنس والے ہوا کے معتقد ہیں یا نہیں ہیں، تو بے دیکھے کیونکر۔ (۴) سائنس والے صدہا باتوں میں خود مختلف ہیں، دیکھی ہوئی بات میں اختلاف کیا، کیا سب اندھے ہیں یا ان میں سے ایک انکھیارا ضرور ہے دیکھی باتوں میں انگلیں دوڑاتے اور ہر ایک اپنی مانتا ہے۔ (۵) اقلیدس کا مسئلہ ہے کہ کرہ کی نسبت کرہ کی طرف، قطر کی نسبت قطر کی طرف ہے، مثلاً بالتکریر مثلاً ایک کرہ کا قطر دوسرے کا ۱/۲ ہے تو یہ کرہ اس کا ۱/۸ ہوگا، یا ۱/۳ ہے تو ۱/۲۷ یہ کن آنکھوں سے دیکھ کر مانا۔ (۶) ارشمایطقی کا مسئلہ ہے کہ نسبت مجذورین مجذور نسبت جذرین ہے، یہ کن آنکھوں سے دیکھی۔ (۷) جبر و مقابلہ کا مسئلہ ہے کہ نصف سر لا کا مجذور طرفین میں شامل کرنے سے یعنی جو مساوات اس صورت کی ہو: لا ۲ + ص لا = ط اس میں (ص/۲) ۲ یا ص۲/۴ ملانے سے مجذور کامل ہو جاتا ہے۔ اگر چہ پہلے بھی کامل ہو، یہ کن آنکھوں سے دیکھ کر مانا۔ اسی طرح ان فنون اور ان کے سوا دیگر علوم کے لاکھوں مسائل ہیں کہ بے دیکھے مان لیتے ہیں۔ (۸) یہ معترض اور ہر (شخص) اپنی ماں کو یقیناً اپنی ماں جانتا ہے ان میں سے کس نے اپنے آپ کو اس کے پیٹ سے

پیدا ہوتے دیکھا ہے۔ (۹) ماں تو ماں ان میں سے جو کوئی باپ رکھتا ہے اسے کبھی شبہ نہیں ہوتا کہ اس نے اپنے آپ کو اس کی پیٹھ سے اترتے اور ماں کے پیٹ میں داخل ہوتے نہ دیکھا پھر کیونکر اس کے باپ ہونے پر اعتقاد رکھتا ہے۔ (۱۰) ان میں لاکھوں ہوں گے جنہوں نے لندن آنکھوں سے نہ دیکھا پھر کیسا اندھا پن ہے کہ بے دیکھے

Fatawa Razawiyya Volume 29

One forgets the well-established facts of day and night as if one is not a human, nor made from human sperm, nor ever had the company of humans. They believe in events by seeing them. (11) For those who raise such insane objections, it would be an open denial not only of Divine Law but also of government law, saying: "We did not see the law-makers making this law, so why should we accept it?" (12) Setting law aside, they would even deny the empire of the Emperor of India, saying: "We did not see the Emperor of India, nor did the coronation happen in front of us, so why should we acknowledge it?" In short, there are millions of such examples that the wretched ones themselves use daily, but to object to Allah, the One, the Subduer, they forget these and open their mouths of impurity. The Lord Almighty did not compel belief in the unseen without proof; rather, He established definitive proofs and clear arguments, sent prophets, gave them miracles, and showed His signs in the horizons and within souls, calling people to believe in them. What is the complaint against the disbeliever that he claimed Ibrahim (peace be upon him) was devoid of faith before seeing? But if he says that his reasoning from this event is investigative or as a challenge: if it is investigative, then he has cast all his lies into hell—not meaning the fire of hell, as he does not believe in it, but he will believe on that day. "The Day they are pushed into the fire of Hell with a violent push. [It will be said], 'This is the Fire which you used to deny. Is this magic, or do you not see?'"[1] My meaning is that he threw all his false malice into the blazing fire and incinerated it. How could he believe without seeing that this event of Ibrahim (peace be upon him) occurred? And if it is as a challenge, then the conversation itself explicitly states: "Indeed, I have faith, but my heart seeks the quality—how it occurs; I want the satisfaction of seeing it." Let the blind look at the question itself; he did not say, "O my Lord! Wilt Thou give life to the dead?" as if, God forbid, doubt in giving life were understood. Rather, he said, "'My Lord, show me how You give life to the dead.'"[2] O my Lord! Show me with my own eyes the manner in which You give life to the dead. "But it is the signs of Allah that the wrongdoers reject."[3] — There is no power nor strength [except with Allah].

[1] Al-Quran Al-Karim 52 / 13, 14, and 15 [2] Al-Quran Al-Karim 2 / 260 [3] Al-Quran Al-Karim 6 / 33

दिन-रात की मानी हुई बातों को इंसान इस तरह भूल जाता है मानो न वह इंसान है, न इंसान के वीर्य से बना है, और न ही कभी उसे इंसानी सोहबत मिली है। घटनाओं को देखकर वे उन पर विश्वास करते हैं। (११) ऐसे पागलपन भरे आक्षेप करने वालों के लिए न केवल ईश्वरीय कानून, बल्कि सरकारी कानून का भी खुला इनकार होगा कि हमने कानून बनाने वालों को यह कानून बनाते नहीं देखा, तो हम इसे क्यों मानें? (१२) कानून को तो अलग रखें, वे भारत के सम्राट के साम्राज्य से भी इनकार कर देंगे कि हमने न तो भारत के सम्राट को देखा और न ही हमारे सामने ताजपोशी हुई, तो हम क्यों स्वीकार करें? संक्षेप में, इसके लाखों उदाहरण हैं जो ये अभागे स्वयं प्रतिदिन उपयोग करते हैं, लेकिन अल्लाह, जो एक और सर्वशक्तिमान है, पर आक्षेप करने के लिए वे इन्हें भूल जाते हैं और अपनी अपवित्रता का मुँह खोलते हैं। रब अज़्वजल ने बिना प्रमाण के अदृश्य (ग़ैब) पर विश्वास करने के लिए मजबूर नहीं किया, बल्कि स्पष्ट प्रमाण और ठोस तर्क स्थापित किए, पैगंबर भेजे, उन्हें चमत्कार दिए, दुनिया और स्वयं के भीतर अपनी निशानियाँ दिखाईं और लोगों को उन पर विश्वास करने के लिए बुलाया। काफिर से क्या शिकायत कि उसने इब्राहिम (अ़लैहिस्सलाम) को देखने से पहले ईमान से खाली बताया? लेकिन यदि वह कहे कि इस घटना से उसका तर्क जांचा-परखा (तहक़ीक़न) है या आरोप लगाने के लिए (इल्ज़ामन), तो यदि वह जांचा-परखा है, तो उसने अपने सभी झूठों को जहन्नुम में डाल दिया—जहन्नुम से तात्पर्य नर्क की आग नहीं है, क्योंकि वह उस पर विश्वास ही नहीं रखता, वह उस दिन विश्वास लाएगा। "जिस दिन वे धक्के देकर जहन्नुम की आग में डाले जाएंगे, [कहा जाएगा], 'यह वह आग है जिसे तुम झुठलाते थे। क्या यह जादू है या तुम्हें सूझता नहीं?'"१ बल्कि मेरा अर्थ यह है कि उसने अपनी तमाम झूठी बुराइयों को दहकती आग में डालकर भस्म कर दिया। बिना देखे कैसे विश्वास लाया कि इब्राहिम अ़लैहिस्सलातो वस्सलाम की यह घटना हुई? और यदि यह आरोप लगाने के लिए है, तो स्वयं इस बातचीत में स्पष्टीकरण है कि वास्तव में मुझे विश्वास है, मेरा हृदय इसकी स्थिति (कैफ़ियत) की तलाश में है कि इसके घटित होने का तरीका क्या होगा, मैं इसे देखकर संतुष्टि चाहता हूँ। अंधा सवाल को ही देखे, उसने यह अर्ज़ नहीं की कि "ऐ मेरे रब! क्या तू मुर्दे जिलाएगा?" जिससे अल्लाह न करे जिलाने में संदेह समझा जाए, बल्कि यह अर्ज़ की कि "'ऐ मेरे रब! मुझे दिखा तू मुर्दे किस तरह जीवित करता है।'"२ ऐ मेरे रब! जिस तरह तू मुर्दे जिलाएगा, वह रूप मुझे आँखों से दिखा दे। "लेकिन ज़ालिम लोग अल्लाह की आयतों का ही इनकार करते हैं।"३ — ला हौल वला कुव्वत।

१ अल-कुरान अल-करीम ५२ / १३ और १४ और १५ २ अल-कुरान अल-करीम २ / २६० ३ अल-कुरान अल-करीम ६ / ३३

पृष्ठ २७२ का ७५०

اقوال رات دن کے مسلمات ایسا بھول جاتا ہے گویا نہ یہ انسان ہے نہ انسان کے نطفے سے بنا، نہ کبھی انسان کی اسے ہوا لگی۔ واقعات دیکھنے اس کا یقین رکھتے ہیں۔ (۱۱) ایسے پاگل پن کا اعتراض کرنے والوں کو نہ صرف قانون الٰہی بلکہ قانون گورنمنٹ پر بھی کھلا انکار ہوگا کہ ہم نے واضعانِ قانون کو یہ قانون بناتے نہ دیکھا ہم کیونکر مان لیں۔ (۱۲) قانون بالائے طاق وہ قیصرِ ہند کی سلطنت سے بھی انکار کریں گے کہ ہم نے نہ قیصرِ ہند کو دیکھا نہ ہمارے سامنے تاجپوشی ہوئی ہم کیوں تسلیم کریں۔ بالجملہ اس کی لاکھوں مثالیں ہیں جو اشقیاء خود روزمرہ برت رہے ہیں، مگر اللہ واحد قہار پر اعتراض کرنے کے لیے اُن کو بھلاتے اور ناپاکی کا منہ پھیلاتے ہیں، رب عزوجل نے غیب پر بے دلیل ایمان لانے پر مجبور نہیں فرمایا بلکہ براہین قاطعہ و دلائل ساطعہ قائم فرمائے انبیاء بھیجے انہیں معجزات دیئے آفاق و انفس میں اپنی نشانیاں ظاہر فرمائیں ان کے ماننے کیطرف بلایا ہے، کافر سے اس کی کیا شکایت کہ اس نے ابراہیم علیہ السلام کو دیکھنے سے پہلے ایمان سے خالی بتایا مگر یہ کہے کہ اس واقعہ سے اس کا استدلال تحقیقا ہے یا الزاماً، اگر تحقیقا ہے تو خود اپنے سارے جھوٹ کو جہنم میں ڈال دیا، جہنم سے مراد دوزخ نہیں، اس پر تو ایمان ہی نہیں رکھتا، اس دن ایمان لائے گا۔ "یَوْمَ یُدَعُّونَ إِلَی نَارِ جَهَنَّمَ دَعًّا ۙ هَذِهِ النَّارُ الَّتِي كُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُونَ ﴿۱۴﴾ اَفَسِحْرٌ هَذَا اَمْ اَنْتُمْ لَا تُبْصِرُونَ ﴿۱۵﴾" ۱۔ جس دن دھکے دے کر جہنم کی آگ میں ڈالے جائیں گے، یہ ہے وہ آگ جسے تم جھٹلاتے تھے، کیا یہ جادو ہے یا تمہیں سوجھتا نہیں، بلکہ میری مراد یہ ہے کہ اس نے اپنی تمام جھوٹی خباثتوں کو بھڑکتی آگ میں ڈال کر بھسم کر دیا، بے دیکھے کیونکر اعتقاد لایا کہ ابراہیم علیہ الصلوۃ والسلام کا یہ واقعہ ہوا، اور اگر الزاماً ہے تو خود اس گفتگو میں تصریح ہے کہ بیشک مجھے ایمان ہے اس کی کیفیت کی قلب کو تلاش ہے کہ اس

کے وقوع کا کیا طریقہ ہو گا دیکھنے سے اس کا اطمینان چاہتا ہوں اندھا سوال ہی کو دیکھے یہ عرض نہ کی کہ ربّ اَنّی الموت اے میرے رب ! کیا تو مُردے جلائے گا کہ معاذ اللہ جلانے میں شک سمجھا جائے بلکہ یہ عرض کی کہ "رَبِّ اَرِنِیْ کَیْفَ تُحْیِ الْمَوْتٰی" ۲۔ اے میرے رب ! جس طرح تو مردے جلائے گا وہ صورت مجھے آنکھوں سے دکھادے۔ "وَلَکِنَّ الظّٰلِمِیْنَ بِاٰیٰتِ اللّٰہِ یَجْحَدُوْنَ ﴿۳۳﴾" ۳۔ ولا حول ولا قوۃ

۱ القرآن الکریم ۵۲ / ۱۳ و ۱۴ و ۱۵ ۲ القرآن الکریم ۲ / ۲۶۰ ۳ القرآن الکریم ۶ / ۳۳

صفحہ 272 کا 750

Fatawa Razawiyya, Volume 29

...except by Allah, the High, the Great. And Allah Almighty knows best (but the wrongdoers deny the signs of Allah Almighty, there is no power to avoid sin nor strength to do good except from God, the Possessor of highness and greatness. And Allah Almighty knows best.

Issue 109: Some authentic Hadiths are needed regarding the standing (Qiyam) during the blessed Milad. Opponents, the Wahhabis, say that the Messenger of Allah, peace and blessings of Allah be upon him, did not give any command for standing, and it is not proven from any book; it is forbidden.

The Answer: The Wahhabis are liars, and their claim of prohibition is a slander against the Sharia. Ask them, did Allah and His Messenger forbid it, or do you forbid it? If they say Allah and His Messenger forbade it, then show in which verse or which authentic Hadith it says that standing in the blessed assembly is forbidden. And if they say "we ourselves forbid it," then let them talk nonsense; the command is not theirs but of Allah and His Messenger, may His glory be exalted, and may the blessings and peace of Allah be upon him. Allah the Almighty has commanded the veneration of the Holy Prophet, peace and blessings of Allah be upon him, in various places in the Great Quran, and this standing is also among the types of veneration. So, as long as the prohibition of this specific veneration is not proven by the command of Allah and the Messenger of Allah, this practice is in accordance with the Quranic command. What more evidence is required than the Great Quran? More details are in our treatise "Iqamat al-Qiyamah." The Holy Prophet himself, peace and blessings of Allah be upon him, used to stand to honor Lady Batul Zahra (Fatima), and Lady Batul Zahra, may Allah be pleased with her, used to stand to venerate the Holy Prophet, peace and blessings of Allah be upon him. When Sa'd bin Mu'adh, may Allah be pleased with him, arrived, the Holy Prophet, peace and blessings of Allah be upon him, commanded the Ansar to stand for him. Anas, may Allah be pleased with him, says: When the Holy Prophet, peace and blessings of Allah be upon him, would rise from the luminous assembly, "we would stand and remain standing until we saw that he had entered one of the houses of his wives." [1] We would all stand up and stay standing until the Prophet had entered one of the noble chambers. The prohibition of standing is for the non-Arabs (Ajam), where their king would sit on a throne and the courtiers would stand before him like statues. Sometimes his dislike was out of humility and to avoid formality, just as even now if a religious dignitary comes and the attendees stand for him, he says, "Don't bother, please be seated."

This doesn't mean he is forbidding standing legally, but rather out of humility. Among the deniers, standing out of respect is equally prevalent; they will stand for their own leaders (mullahs), and if people stand for them and some remain seated, they will get angry and call them disrespectful.

---

1. Sunan Abi Dawud, Kitab al-Adab, Bab fi al-Hilm wa Akhlaq al-Nabi (peace and blessings of Allah be upon him), Aftab-e-Alam Press, Lahore, 2/202.

फ़तावा रज़विया, खंड 29

...सिवाय अल्लाह के जो बुलंद और अज़ीम है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है (लेकिन ज़ालिम अल्लाह तआला की आयतों का इनकार करते हैं, न गुनाह से बचने की ताक़त है और न ही नेकी करने की कुव्वत मगर बुलंदी और अज़मत वाले खुदा की तरफ से। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 109: कयाम-ए-मीलाद शरीफ़ के बारे में चंद मुस्तनद हदीसों की ज़रूरत है, मुखालिफ वहाबी कहते हैं कि रसूले मक़बूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने कयाम के लिए कोई हुक्म नहीं दिया है और किसी किताब से साबित भी नहीं है, मना है।

अल-जवाब: वहाबी झूठे हैं और उनका मना कहना शरीयत पर इफ़्तरा (झूठा आरोप) है, उनसे पूछो कि अल्लाह और रसूल ने मना फ़रमाया है या तुम मना करते हो। अगर कहें अल्लाह और रसूल ने मना फ़रमाया है, तो दिखाएं किस आयत किस हदीसे सहीह में है कि कयाम-ए-मजलिस-ए-मुबारक मना है, और अगर कहें कि हम खुद मना करते हैं, तो बका करें (बकवास करें), हुक्म उनका नहीं बल्कि अल्लाह और रसूल का है जल्ल जलालाहु, व सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम। अल्लाह अज़्ज़वजल ने कुरआने अज़ीम में जगह-जगह नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की ताज़ीम का हुक्म फ़रमाया और यह कयाम भी ताज़ीम की किस्मों में से है, तो जब तक इस खास ताज़ीम की ममानअत अल्लाह और रसूले अल्लाह के हुक्म से साबित न हो यह हुक्म कुरआनी के मुताबिक है। कुरआने अज़ीम से बढ़कर और क्या दलील दरकार है, ज़्यादा तफ़सील हमारे रिसाले 'इकामते कयामत' में है। खुद हुज़ूरे अकदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम तकरीम-ए-हज़रत बतूल ज़हरा के लिए कयाम फ़रमाते और हज़रत बतूल ज़हरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ताज़ीम-ए-हुज़ूरे अकदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के लिए कयाम करतीं। सअद बिन मुआज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जिस वक़्त हाज़िर हुए हुज़ूरे अकदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने अन्सार-ए-किराम को उनके लिए कयाम का हुक्म फ़रमाया। अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं: जब हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम मजलिस-ए-अनवर से उठते "कमना कयामन हत्ता नराहु कद दखला बअज़ बयूते अज़वाजिही" [1]। हम सब खड़े हो जाते और खड़े रहते जब तक कि हुज़ूर हुजरात-ए-शरीफ़ा में से किसी में तशरीफ़ न ले जाते। ममानअत-ए-कयाम आअजम (गैर-अरबों) से है कि उनका बादशाह तख्त पर बैठा होता और दरबारी तस्वीर बने हुए सामने खड़े रहते। बाज़ वक़्त इसकी नापसंदी बतौर तवाज़ो व रफ़-ए-तकल्लुफ़ है जैसे अब भी कोई

मुअज़्ज़म दीनी आए और हाज़िरीन उसके लिए कयाम करें तो वह कहता है कि तकलीफ़ न फ़रमाइए तशरीफ़ रखिये, इसके यह मायने नहीं कि कयाम से शरअन रोकता है बल्कि तवाज़ोअन। मानिईन (रोकने वालों) के यहाँ भी कयाम-ए-ताज़ीमी बराबर रायज है, अपने मुल्लाओं के लिए कयाम करेंगे और लोग उनके लिए कयाम करें, बाज़ बैठे रहें तो नाराज़ होंगे बे-अदब।

---

1. सुनन अबी दाऊद, किताब अल-अदब, बाब फ़िल हिलम व अख़्लाक़ुन नबी (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम), आफ़ताबे आलम प्रेस, लाहौर 2/202।

الا باللہ العلی العظیم۔ واللہ تعالیٰ اعلم (مگر ظالم اللہ تعالیٰ کی آیتوں کا انکار کرتے ہیں، نہ گناہ سے بچنے کی طاقت ہے اور نہ ہی نیکی کرنے کی قوت مگر بلندی و عظمت والے خدا کی طرف سے۔ واللہ تعالیٰ اعلم

مسئلہ ۱۰۹: قیام میلاد شریف کے بارے میں چند مستند حدیثوں کی ضرورت ہے، مخالف وہابی کہتے ہیں رسول مقبول صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے قیام کے واسطے کوئی حکم نہیں دیا ہے اور کسی کتاب سے ثابت بھی نہیں ہے، منع ہے۔

الجواب: وہابی جھوٹے ہیں اور ان کا منع کہنا شریعت پر افترا ہے، ان سے پوچھو کہ اللہ ورسول نے منع فرمایا ہے یا تم منع کرتے ہو۔ اگر کہیں اللہ ورسول نے منع فرمایا ہے، تو دکھائیں کس آیت کس حدیث صحیح میں ہے کہ قیام مجلس مبارک منع ہے، اور اگر کہیں کہ ہم خود منع کرتے ہیں، تو بکا کریں، حکم ان کا نہیں بلکہ اللہ ورسول کا ہے جل جلالہ، وصلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم اللہ عزوجل نے قرآن عظیم میں جا بجا نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی تعظیم کا حکم فرمایا اور یہ قیام بھی اقسام تعظیم سے ہے تو جب تک اس خاص تعظیم کی ممانعت اللہ ورسول اللہ کے حکم سے ثابت نہ ہو یہ حکم قرآنی کے مطابق ہے۔ قرآن عظیم سے بڑھ کر اور کیا دلیل درکار ہے، زیادہ تفصیل ہمارے رسالہ اقامۃ القیامہ میں ہے، خود حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم تکریم حضرت بتول زہرا کے لیے قیام فرماتے اور حضرت بتول زہرا رضی اللہ تعالیٰ عنہا تعظیم حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے لیے قیام کرتیں سعد بن معاذ رضی اللہ تعالیٰ عنہ جس وقت حاضر ہوئے حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے انصار کرام کو ان کے لیے قیام کا حکم

فرمایا۔ انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ فرماتے ہیں۔ جب حضور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم مجلس انور سے اٹھتے قمنا قیاماً حتی نراہ قد دخل بعض بیوت ازواجہ ۱۔ ہم سب کھڑے ہو جاتے اور کھڑے رہتے جب تک کہ حضور حجرات شریفہ میں سے کسی میں تشریف نہ لے جاتے، ممانعت قیام اعاجم سے ہے کہ ان کا بادشاہ تخت پر بیٹھا ہوتا اور درباری تصویر بنے ہوئے سامنے کھڑے رہتے۔ بعض وقت اس کی ناپسندی بطور تواضع و رفع تکلف ہے جیسے اب بھی کوئی معظم دینی آئے اور حاضرین اس کے لیے قیام کریں تو وہ کہتا ہے کہ تکلیف نہ فرمائیے تشریف رکھئے، اس کے یہ معنی نہیں کہ قیام سے شرعاً روکتا ہے بلکہ تواضعاً، مانعین کے یہاں بھی قیام تعظیمی برابر رائج ہے اپنے ملّوں کے لیے قیام کریں گے اور لوگ ان کے لیے قیام کریں بعض بیٹھے رہیں تو ناراض ہوں گے بے ادب

---

۱ سنن ابی داؤد کتاب الادب باب فی الحلم واخلاق النبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم آفتاب عالم پریس لاہور ۲ / ۲۰۲

Volume 29 Fatawa Rizwia

...will go, but this is the respect for their own places, whose false greatness fills their hearts. Where is the greatness of the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) in their hearts? These excuses arise in this matter. In Ash-Shifa al-Sharif and other books, the leaders of the religion explicitly state that the respect for the noble mention of the Prophet is like the respect for his luminous person; the respect for the time of his arrival is like the respect for his luminous person. The respect for the time of his arrival is shown by standing, so this same respect for the noble mention has been established by Muslims for hundreds of years, as stated in 'Uqd al-Jawhar etc. (as it is in 'Uqd al-Jawhar etc. - T) And Allah Almighty knows best.

Issue 110: From Ramzanpur Post Office, District Badaun, sent by Abdul Samad alias Sufi Qadri Barkati Nuri Abul Husaini, 14 Rajab 1337 AH.

Question 110: What do the scholars of religion say regarding this issue? When one returns after burying the deceased, it is proven from previous books that angels come to the grave, then revive the deceased and take account. In which explicit text (Nass) is the proof for this, i.e., Isharat al-Nass or Dalalat al-Nass? A new sect has emerged that presents itself as 'Ahl-e-Quran'; they deny this and say that there is a specific fixed time for revival which is called Judgment Day, and everything else is nonsense. The questioner is in great worry and hesitation about how to respond to this evil sect.

Answer: The Answer: Questioning is done to the soul, and the soul never dies. As for whether the soul is returned to the body, or enters half of the body, or is placed between the body and the shroud, its details are not from the definitives (qati'at), nor is there a need for investigation. And this new sect which has emerged under the name 'Qurani' is outside of Islam. Their words should not be listened to. And Allah Almighty knows best.

Issue 111: From the city of Bareilly, Bibi Ji's Mosque, asked by Hashmat Ali Sahib, student of Madrasa Manzar-ul-Islam, 7 Shaban 1337 AH.

Question 111: What do the truthful scholars of the Ahl-e-Sunnat wa-Jama'at (may Allah multiply them, help them, and assist them) say in the following matter? Zaid, by the grace of Allah Almighty, does not deny or even doubt any essential matter of religion; rather, he considers such a person to be a disbeliever and an apostate. Despite this, his belief is that although Sayyiduna Siddiq-e-Akbar (may Allah be

pleased with him) is the best of people after the Prophets, but according to the rule "There is no general statement except that some individuals have been excluded from it"[1]. (There is no general rule except that some individuals are exempted from it).

[1] Al-Tawdih 'ala al-Talwih, Chapter on the ruling of the General, Mir Muhammad Kutub Khana Karachi, p. 209.

जिल्द 29 फ़तावा रज़विया

...जाएंगे मगर ये तो अपने महलों की ताज़ीम है जिनके बातिल अज़मत से दिल भरे हुए हैं, हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की अज़मत उनके यहाँ कहाँ, इसमें ये शाख़साने सूझते हैं, शिफ़ा शरीफ़ वग़ैरा में अइम्मा दीन तसरीह फ़रमाते हैं कि हुज़ूर के ज़िक्रे अक़दस की ताज़ीम ज़ाते अनवर की तरह है, वक़्त तशरीफ़ आवरी की ताज़ीम ज़ाते अनवर की तरह है, वक़्त तशरीफ़ आवरी की ताज़ीम ज़ाते करीम क़ियाम से है तो ज़िक्रे शरीफ़ की ये ही ताज़ीम मुसलमानों ने सदहा साल से मुक़र्रर की कमा फ़ी अक़दुल जौहर वग़ैरा (जैसा कि अक़दुल जौहर वग़ैरा में है - त) वल्लाहु तआला आलम।

मसअला 110: अज़ रमज़ानपुर डाकख़ाना ख़ास ज़िला बदायूँ मुरसला अब्दुल समद उर्फ़ सूफ़ी क़ादरी बरकाती नूरी अबुल हुसैनी 14 रजब 1337 हि.।

सवाल 110: क्या फ़रमाते हैं उलमए दीन इस मसअले में कि मय्यत को जिस वक़्त दफ़्न करके वापस आते हैं कुतुबे साबिक़ा से ये बात साबित है कि मलायका क़ब्र में आते हैं फिर मय्यत को ज़िंदा करके हिसाब लेते हैं इस बात का सुबूत किस नसे सरीह में है यानी इशारतुल नस या दलालतुल नस, एक फ़िरक़ा जदीद पैदा हुआ है जो अपने आप को अहल-ए-क़ुरआन ज़ाहिर करते हैं वो इस बात के मुनकिर हैं और कहते हैं कि ज़िंदा करने का एक वक़्त मुअय्यना मुक़र्रर है जिसको क़ियामत कहते हैं बाक़ी सब लग़वियात हैं साइल बड़े फ़िक्र व तरद्दुद में है कि किस तरह से जवाब इस फ़िरक़ा-ए-बद को दिया जाए।

अल-जवाब: सवाल रूह से होता है और रूह कभी नहीं मरती, रहा ये कि रूह बदन में इयादा की जाती है या निस्फ़ बदन में आती है या बदन व कफ़न के दरमियान रखी जाती है इसकी तफ़सील क़तइयात से नहीं न तफ़्तीश की हाजत और ये जदीद फ़िरक़ा जो बनाम क़ुरआनी निकला है, इस्लाम से ख़ारिज है इसकी बात सुननी न चाहिए, वल्लाहु तआला आलम।

मसअला 111: अज़ शहर बरेली बीबी जी की मस्जिद मसऊला हशमत अली साहब तालिब इल्म मदरसा मंज़रु-उल-इस्लाम 7 शाबान 1337 हि.।

सवाल 111: क्या फ़रमाते हैं उलमए हक़्क़ानीन अहल-ए-सुन्नत व जमाअत कसरहुमुल्लाह नसरहुम व इमदादहुम मसअला ज़ैल में कि ज़ैद बहम्दिल्लाहि तआला किसी ज़रूरी दीनी का इंकार बल्कि इसमें

शक भी नहीं करता बल्कि ऐसे शख़्स को भी काफ़िर व मुर्तद जानता है। बावजूद इसके उसका ये अक़ीदा है कि सय्यदुना सिद्दीक़-ए-अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अगरचे अफ़ज़लुल नास बादुल अंबिया हैं लेकिन बहुक़्म मा मिन आम इल्ला व क़द ख़स्स मिन्हुल अज़[1]। (कोई आम नहीं मगर उसमें से बाज़ अफ़राद को)

[1] अत-तौज़ीह अलत-तलवीह फ़स्ल फ़ी हुक्मुल आम मीर मोहम्मद कुतुब ख़ाना कराची स 209।

جائیں گے مگر یہ تو اپنے محلوں کی تعظیم ہے جن کی باطل عظمت سے دل بھرے ہوئے ہیں، حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ و سلم کی عظمت ان کے یہاں کہاں، اس میں یہ شاخسانے سوجھتے ہیں، شفاء شریف وغیرہ میں ائمہ دین تصریح فرماتے ہیں کہ حضور کے ذکر اقدس کی تعظیم ذات انور کی طرح ہے وقت تشریف آوری کی تعظیم ذات انور کی طرح ہے، وقت تشریف آوری کی تعظیم ذات کریم قیام سے ہے تو ذکر شریف کی یہ ہی تعظیم مسلمانوں نے صدہا سال سے مقرر کی کما فی عقد الجوھر وغیرہ (جیسا کہ عقد الجوھر وغیرہ میں ہے ت) واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۱۱۰: از رمضان پور ڈاک خانہ خاص ضلع بدایوں مرسلہ عبد الصمد عرف صوفی قادری برکاتی نوری ابوالحسینی ۱۴ رجب ۱۳۳۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ میت کو جس وقت دفن کر کے واپس آتے ہیں کتبہائے سابقہ سے یہ بات ثابت ہے کہ ملائکہ قبر میں آتے ہیں پھر میت کو زندہ کر کے حساب لیتے ہیں اس بات کا ثبوت کس نص صریح میں ہے یعنی اشارۃ النص یا دلالت النص، ایک فرقہ جدید پیدا ہوا ہے جو اپنے آپ کو اہل قرآن ظاہر کرتے ہیں وہ اس بات کے منکر ہیں اور کہتے ہیں کہ زندہ کرنے کا ایک وقت معینہ مقرر ہے جس کو قیامت کہتے ہیں باقی سب لغویات ہیں سائل بڑے فکر و تردد میں ہے کہ کس طرح سے جواب اس فرقہ بد کو دیا جائے۔

الجواب: سوال روح سے ہوتا ہے اور روح کبھی نہیں مرتی، رہا یہ کہ روح بدن میں اعادہ کی جاتی ہے یا نصف بدن میں آتی ہے یا بدن و کفن کے درمیان رکھی جاتی ہے اس کی تفصیل قطعیات سے

نہیں نہ تفتیش کی حاجت اور یہ جدید فرقہ جو بنام قرآنی نکلا ہے، اسلام سے خارج ہے اس کی بات سننی نہ چاہیے، واللہ تعالیٰ اعلم

مسئلہ ۱۱۱: از شہر بریلی بی بی جی کی مسجد مسولہ حشمت علی صاحب طالب علم مدرسہ منظر الاسلام ۷ شعبان ۱۳۳۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے حقانیین اہل سنت و جماعت کثر ہم اللہ نصر ہم و امداد ہم مسئلہ ذیل میں کہ زید بحمد اللہ تعالیٰ کسی ضروری دینی کا انکار بلکہ اس میں شک بھی نہیں کرتا بلکہ ایسے شخص کو بھی کافر و مرتد جانتا ہے۔ باوجود اس کے اس کا یہ عقیدہ ہے کہ سیدنا صدیق اکبر رضی اللہ تعالیٰ عنہ اگرچہ افضل الناس بعد الانبیاء ہیں لیکن بحکم ما من عام الا و قد خص منہ البعض۱۔ (کوئی عام نہیں مگر اس میں سے بعض افراد کو)

۱ التوضیح علی التلویح فصل فی حکم العام میر محمد کتب خانہ کراچی ص ۲۰۹

Fatawa Razawiyya Volume 29

...has been specified. (T) Hasanain (may Allah be pleased with them) are exempted from this text, because Hasanain Kareemain (may Allah be pleased with them) are the princes of the Prophetic dynasty and the four Caliphs are the ministers of the Throne of Apostleship (peace and blessings of Allah be upon him), and the rank of princes is higher than ministers. So it is known that Hasanain (may Allah be pleased with them) are superior to the four Caliphs (may Allah be pleased with them). Upon this, Umar says that Sayyiduna Maula Ali (may Allah honor him) comes after the rank of Sayyiduna Siddiq-e-Akbar (may Allah be pleased with him), rather even after Sayyiduna Usman-e-Ghani (may Allah be pleased with him), so will Hasanain (may Allah be pleased with them) also become superior to their noble father (may Allah be pleased with him)? Zaid replies that this is not impossible, rather it is possible, even actual. The matter to be inquired about is how is Zaid's reasoning and does this belief not cause any defect in his Sunnism?

The Answer: If he had said that Hasanain Kareemain (may Allah be pleased with them) have a partial superiority (Fadl-e-Juz'i) over the high Excellencies the four Caliphs (may Allah be pleased with them) due to their noble lineage (being a part of the Prophet), and the rank of the Caliphs is grander and higher, then it would be correct. But due to his ignorance, he gave universal superiority (Fadl-e-Kulli) to the two grandsons, and categorized the best of humanity after the Prophets, Abu Bakr as-Siddiq, as a general case with exceptions, and called them superior to Amir-ul-Momineen Maula Ali. All this is void and contrary to the Ahl-e-Sunnat. Repentance from this false belief is obligatory, otherwise he is not a Sunni. And his argument is merely rejected and debased. If being a part (of the lineage) was the cause of superiority in rank near Allah, then it would follow that all the 'Mir Sahabs' (descendants) of today, no matter how much they are involved in sin and transgression, would be superior and higher than Amir-ul-Momineen Maula Ali in the eyes of Allah the Almighty. And none would say this except an ignorant, most ignorant, madman, or a misguided, misguiding, enchanted person. Allah the Almighty says:

Arabic Quote	Translation
"Say, 'Are those who know equal to those who do not know?'"[1]	Say: Are those who know equal to those who do not know?

Arabic Quote	Translation
"Allah will raise those who have believed among you and those who were given knowledge, by degrees."[2]	Allah will exalt in degree those of you who believe, and those who have been granted knowledge.

[1] Al-Quran al-Kareem 39/9 [2] Al-Quran al-Kareem 58/11

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

...विशिष्ट किया गया है। (त) इस पाठ (नस्स) से हसनैन (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) अपवाद हैं, क्योंकि हसनैन करीमैन (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) नबुवत के घराने के शहजादे हैं और चारों ख़लीफ़ा रिसालत के सिंहासन के वज़ीर हैं (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) और वज़ीरों से शहजादों का मर्तबा बड़ा होता है, तो मालूम हुआ कि हसनैन (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) चारों ख़लीफ़ाओं (रज़ियल्लाहु अन्हुम) से अफ़ज़ल (श्रेष्ठ) हैं। इस पर उमर कहता है कि सैयदुना मौला अली (कर्रमल्लाहु वज्हहुल करीम) तो सैयदुना सिद्दीक़-ए-अकबर (रज़ियल्लाहु अन्हु), बल्कि सैयदुना उस्मान-ए-ग़नी (रज़ियल्लाहु अन्हु) के मर्तबे के बाद हैं, तो क्या हसनैन (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) अपने पिता (रज़ियल्लाहु अन्हु) से भी अफ़ज़ल हो जाएंगे? ज़ैद जवाब में कहता है कि यह असंभव नहीं बल्कि संभव है, बल्कि वास्तव में ऐसा है। पूछने योग्य बात यह है कि ज़ैद का तर्क कैसा है और इस अक़ीदे (विश्वास) से उसकी सुन्नियत में तो कोई कमी नहीं आई?

उत्तर: अगर वह यह कहता कि हसनैन करीमैन (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) अपने पवित्र वंश (नबी का अंश होने) के कारण चारों महान ख़लीफ़ाओं (रज़ियल्लाहु अन्हुम) पर एक आंशिक श्रेष्ठता (फ़ज़्ल-ए-जुज़ई) रखते हैं, जबकि ख़लीफ़ाओं का मर्तबा सबसे महान और उच्च है, तो यह सही होता। लेकिन उसने अपनी अज्ञानता के कारण दोनों नवासों को पूर्ण श्रेष्ठता (फ़ज़्ल-ए-कुल्ली) दे दी, और नबियों के बाद सबसे श्रेष्ठ इंसान अबू बक्र सिद्दीक़ को एक अपवाद वाला मामला बना दिया, और उन्हें अमीर-उल-मोमिनीन मौला अली से भी श्रेष्ठ बताया। यह सब निराधार और अहले सुन्नत के विरुद्ध है। इस झूठे अक़ीदे से तौबा (पश्चाताप) करना अनिवार्य है, अन्यथा वह सुन्नी नहीं है। और उसका तर्क केवल तिरस्कृत और नीच है। यदि वंश का अंश होना अल्लाह के निकट श्रेष्ठता का कारण होता, तो यह ज़रूरी हो जाता कि आज के ज़माने के सभी 'मीर साहब' (वंशज) चाहे वे कितने भी पाप और दुराचार में लिप्त हों, अल्लाह के नज़दीक अमीर-उल-मोमिनीन मौला अली से श्रेष्ठ और उच्च हों। और ऐसा कोई नहीं कहेगा सिवाय किसी जाहिल, महा-जाहिल, पागल, या गुमराह करने वाले और खुद गुमराह व्यक्ति के। अल्लाह तआला फ़रमाता है:

अरबी आयत	**अनुवाद**
"क़ुल हल यस्तविल्लज़ीना यअ'लमूना वल्लज़ीना ला यअ'लमून"[1]	तुम फ़रमा दो क्या बराबर हो जाएंगे आलिम (ज्ञानी) और बे-इल्म (अज्ञानी)।

अरबी आयत	अनुवाद
"यरफ़ा'इल्लाहुल्लज़ीना आमनू मिंकुम वल्लज़ीना ऊतुल इल्मा दराजा़त"[2]	अल्लाह बुलंद फ़रमाएगा तुम में से मोमिनों और विशेष रूप से आलिमों के दर्जे।

[1] अल-क़ुरआन अल-करीम 39/9 [2] अल-क़ुरआन अल-करीम 58/11

خاص کیا گیا ہے۔ ت) اس نص سے حسنین رضی اللہ تعالی عنہما مستثنیٰ ہیں، کیونکہ حسنین کریمین رضی اللہ تعالی عنہما شاہزادگان دودمان نبوت ہیں اور حضرات خلفائے اربعہ وزرائے شہ سریر رسالت صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم ہیں اور وزراء سے شاہزادوں کا مرتبہ بڑا ہوتا ہے تو معلوم ہوا کہ حسنین رضی اللہ تعالیٰ عنہما خلفائے اربعہ رضوان اللہ تعالیٰ علیہم سے افضل ہیں۔ اس پر عمر کہتا ہے کہ سید نا مولی علی کرم اللہ تعالیٰ وجہہ الکریم تو سیدنا صدیق اکبر رضی اللہ تعالیٰ عنہ بلکہ سیدنا عثمان غنی رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے مرتبہ کے بعد ہیں، تو کیا حسنین رضی اللہ تعالیٰ عنہما اپنے والد ماجد رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے بھی افضل ہو جائیں گے، زید جواباً کہتا ہے کہ یہ محال نہیں بلکہ ممکن بلکہ واقع ہے، دریافت طلب یہ امر ہے کہ زید کا استدلال کیسا ہے اور اس عقیدہ سے اس کی سنیت میں تو کوئی نقص نہ آیا۔

الجواب: اگر وہ یہ کہتا کہ حضرات حسنین کریمین رضی اللہ تعالیٰ عنہما بوجہ جزئیت کریمہ ایک فضل جزئی حضرات عالیہ خلفائے اربعہ رضی اللہ تعالیٰ عنہم پر رکھتے ہیں اور مرتبہ حضرات خلفاء کا اعظم و اعلیٰ ہے تو حق تھا مگر اس نے اپنی جہالت سے فضل کلی سبطین کو دیا اور افضل البشر بعد الانبیاء ابوبکر الصدیق کو عام مخصوص منہ البعض ٹھہرایا اور انہیں امیر المومنین مولی علی سے افضل کہا یہ سب باطل اور خلاف اہلسنت ہے اس عقیدہ باطلہ سے توبہ فرض ہے ورنہ وہ سنی نہیں اور اس کی دلیل محض مردود و ذلیل ، اگر جزئیت موجب افضیلت مرتبہ عند اللہ ہو تو لازم کہ آج کل کے بھی سارے میر صاحب اگرچہ کیسے ہی فسق و فجور میں مبتلا ہوں اللہ عزوجل کے نزدیک امیر المومنین مولی علی سے افضل و اعلیٰ ہوں اور یہ نہ کہے گا مگر جاہل اجہل مجنون یا ضال مضل مفتون قال اللہ عزوجل :

عربی متن	ترجمہ
"قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الَّذِيْنَ يَعْلَمُوْنَ وَالَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ"[1]	تم فرما دو کیا برابر ہو جائیں گے عالم اور بے علم۔
"يَرْفَعِ اللهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ ۙ وَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ دَرَجٰتٍ"[2]	اللہ بلند فرمائے گا تم میں سے مومنوں اور بالخصوص عالموں کے درجے۔

[1] القرآن الکریم ۹/۳۹ [2] القرآن الکریم ۱۱/۵۸

Volume 29 | Fatawa Razawiyya

So, in the sight of Allah, the excellence of knowledge is more noble and greater than the excellence of lineage. This Mir Sahib, even if he is righteous but not a scholar, does not legally reach the status of today's Sunni scholars of correct belief, let alone the Imams, the Companions, Mawla Ali, or Siddiq and Farooq (may Allah be pleased with them all). In *Tanwir al-Absar* and *Durr al-Mukhtar*, it is stated:

Arabic Text	Urdu Translation
A young scholar has the right of precedence over an elderly ignorant person, even if the latter is a Qurayshi. Allah Almighty said: "Allah will exalt those who have believed among you and those who were given knowledge, by degrees." Since Allah is the One Who bestows exaltation, whoever belittles him, Allah will cast him into Hell. (1)	A young scholar has the right of precedence over an elderly ignorant person, even if he (the ignorant one) is a Qurayshi. Allah Almighty has said: Allah will raise the ranks of the learned. Since the Giver of elevation is Allah Almighty, therefore whoever belittles him, Allah Almighty will cast him into Hell. (T)

In *Fatawa Khayriyya* by Imam Khayr al-Din al-Ramli, it is stated:

Arabic Text	Urdu Translation
Being a Qurayshi does not permit him precedence over a possessor of knowledge despite his ignorance, because the books of knowledge are overflowing with the precedence of the scholar over the Qurayshi. Allah, glorified and exalted be He, did not differentiate between a Qurayshi and a non-Qurayshi in His saying: "Are those who know equal to those who do not know?" (2)	A person's being a Qurayshi while ignorant does not make his precedence over a scholar permissible, because books of knowledge are full of the right of precedence of a scholar over a Qurayshi. And Allah, glorified and exalted be He, made no distinction between a Qurayshi and a non-Qurayshi in this statement of His, wherein He said: Can those who know and those who do not know be equal. (T)

In the same source it is stated:

Arabic Text	Urdu Translation
And the scholar takes precedence over a non-scholar Qurayshi. The proof for this is the precedence of the two	A scholar has precedence over a non-scholar Qurayshi. The proof for this is that the fathers-in-law of the Holy Prophet (peace

Arabic Text	Urdu Translation
fathers-in-law over the two sons-in-law [of the Prophet].	and blessings of Allah be upon him) have precedence over his sons-in-law.

1. *Al-Durr al-Mukhtar*, Miscellaneous Matters, Mujtabai Press, Delhi, 2/351.
2. *Al-Fatawa al-Khayriyya*, Miscellaneous Matters, Dar al-Ma'rifah, Beirut, 2/234.

तो अल्लाह के नज़दीक इल्म (ज्ञान) की फ़ज़ीलत नसब (वंश) की फ़ज़ीलत से ज़्यादा अशरफ़ और अज़म (महान) है। ये मीर साहब, अगरचे नेक हों लेकिन आलिम नहीं हैं, तो वो शरअन (धार्मिक कानून के अनुसार) आज के दौर के सही अकीदा सुन्नी आलिम के मर्तबे को नहीं पहुँचते, आइम्मा (इमामों), सहाबा, मौला अली, या सिद्दीक ओ फ़ारूक़ (रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन) की तो बात ही अलग है। 'तनवीरुल अबसार' और 'दुर्रे मुख्तार' में है:

अरबी इबारत

एक जवान आलिम को बूढ़े जाहिल पर तक़द्दुम (प्राथमिकता) का हक़ हासिल है, चाहे वह (जाहिल) क़ुरैशी ही क्यों न हो। अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "अल्लाह तआला आलिमों के दर्जे बुलंद फ़रमाएगा।" चूँकि बुलंदी अता फ़रमाने वाला अल्लाह तआला है, लिहाज़ा जो उसे घटाएगा, अल्लाह उसे जहन्नम में डालेगा। (1)

उर्दू अनुवाद

नौजवान आलिम को बूढ़े जाहिल पर तक़द्दुम का हक़ हासिल है अगरचे वह (जाहिल) कुरैशी हो, अल्लाह तआला ने फ़रमाया: अल्लाह तआला आलिमों के दर्जे बुलंद फ़रमाएगा। चूँकि बुलंदी अता फ़रमाने वाला अल्लाह तआला है लिहाज़ा जो उसको घटाएगा अल्लाह तआला उसको जहन्नम में डालेगा। (त)

फ़तावा खैरिया (इमाम खैरूद्दीन रम्ली) में है:

अरबी इबारत

क़ुरैशी होना किसी जाहिल को एक साहिबे इल्म पर तक़द्दुम का हक़ नहीं देता, क्योंकि इल्म की किताबें आलिम के क़ुरैशी पर तक़द्दुम के हक़ से भरी पड़ी हैं। अल्लाह सुब्हानहु व तआला ने क़ुरैशी और ग़ैर-क़ुरैशी के बीच अपने इस इरशाद में कोई फ़र्क़ नहीं किया: "क्या जानने वाले और न जानने वाले बराबर हो सकते हैं?" (2)

उर्दू अनुवाद

जाहिल का कुरैशी होना आलिम पर उसके तक़द्दुम को मुबाह (अनुमेय) नहीं करता, क्योंकि इल्म की किताबें आलिम के कुरैशी पर तक़द्दुम के हक़ से भरी पड़ी हैं और अल्लाह सुब्हानहु व तआला ने कुरैशी व ग़ैर-कुरैशी के दरमियान अपने इस इरशाद में कोई फ़र्क़ नहीं किया, फ़रमाया कि क्या जानने वाले और न जानने वाले बराबर हो सकते हैं। (त)

उसी में है:

अरबी इबारत	उर्दू अनुवाद
और आलिम को ग़ैर-आलिम क़ुरैशी पर तक़द्दुम हासिल है। इसकी दलील यह है कि नबी-ए-करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के ससुर आपके दामादों पर मुक़द्दम (श्रेष्ठ) हैं।	क़ुरैशी ग़ैर आलिम पर आलिम को तक़द्दुम हासिल है, इसकी दलील यह है कि नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के ससुर आप के दामादों पर मुक़द्दम हैं।

1. दुर्रे मुख्तार, मसाइल-ए-शत्ता, मत्तबा मुज्तबाई दिल्ली, 2/351
2. अल-फ़तावा अल-खैरिया, मसाइल-ए-शत्ता, दारुल मा'रिफ़ा बेरुत, 2/234

تو عنداللہ فضلِ علم فضلِ نسب سے اشرف و اعظم ہے، یہ میر صاحب کہ عالم نہ ہوں اگرچہ صالح ہوں آج کل کے عالم سُنی صحیح العقیدہ کے مرتبہ کو شرعاً نہیں پہنچتے نہ کہ ائمہ نہ کہ صحابہ نہ کہ مولٰی علی نہ کہ صدیق و فاروق رضی اللہ تعالٰی عنہم اجمعین، تنویر الابصار و درمختار میں ہے:

عربی عبارت	اردو ترجمہ
للشاب العالم ان یتقدم علی الشیخ الجاھل ولو قریشا، قال تعالی والذین اوتوا العلم درجت فالرافع ھو اللہ فمن یضعہ یضعہ اللہ في جھنم- 1	نوجوان عالم کو بوڑھے جاہل پر تقدم کا حق حاصل ہے اگرچہ وہ (جاہل) قرشی ہو، اللہ تعالٰی نے فرمایا: اللہ تعالٰی عالموں کے درجے بلند فرمائے گا۔ چونکہ بلندی عطا فرمانے والا اللہ تعالٰی ہے لہٰذا جو اس کو گھٹائے گا اللہ تعالٰی اس کو جہنم میں ڈالے گا۔ (ت)

فتاوٰی خیریہ یہ امام خیر الدین رملی میں ہے:

عربی عبارت	اردو ترجمہ
کونہ قرشیا لایبیح لہ التقدم علی ذی العلم مع جھلہ اذ کتب العلم طافحۃ بتقدم العالم علی القرشی ولم یفرق سبحنہ وتعالٰی بین القرشی وغیرہ فی قولہ تعالٰی ھل یستوی الذین یعلمون والذین لایعلمون 2	جاہل کا قرشی ہونا عالم پر اس کے تقدم کو مباح نہیں کرتا، کیونکہ علم کی کتابیں عالم کے قرشی پر تقدم کے حق سے بھری پڑی ہیں اور اللہ سبحنہ و تعالٰی نے قرشی و غیر قرشی کے درمیان اپنے اس ارشاد میں کوئی فرق

عربی عبارت	اردو ترجمہ
	نہیں، فرمایا کہ کیا جاننے والے اور نہ جاننے والے برابر ہو سکتے ہیں۔ (ت)

اسی میں ہے:

عربی عبارت	اردو ترجمہ
والعالم یقدم علی القرشی الغیر العالم والدلیل علی ذلك تقدم الصھرین علی الختنین	قرشی غیر عالم پر عالم کو تقدم حاصل ہے، اس کی دلیل یہ ہے کہ نبی کریم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کے سسر آپ کے دامادوں پر مقدم ہیں

1 الدرالمختار مسائل شتی مطبع مجتبائی دہلی ۲/ ۳۵۱ 2 الفتاوٰی الخیریۃ مسائل شتی دارالمعرفۃ بیروت ۲/ ۲۳۴

Fatawa Razawiyya Volume 29

[Box 1] Left: If the son-in-law is closer in lineage than them [1]. Right: Although in terms of lineage, the son-in-law is closer than the father-in-law. (T)

Therefore, the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) specifically mentioned the leadership of the two noble grandsons for the youth of Paradise to preserve the generality.

[Box 2] Left: Al-Hasan and al-Husayn are the leaders of the youth of Paradise. Right: Hasan and Husayn (may Allah be pleased with them) are the leaders of the youth of Paradise. (T)

That the four Caliphs (may Allah be pleased with them) are not included, and in many authentic Hadiths, he supplemented it by saying: "And their father is better than them." Hasan and Husayn are the leaders of the youth of Paradise and their father is superior to them.

[Box 3] Left: Narrated by Ibn Majah and al-Hakim [2] from Ibn Umar, and al-Tabarani in al-Kabir from Qurrah bin Iyas with a good chain, and from Malik bin al-Huwayrith, and al-Hakim who authenticated it from Ibn Mas'ud (may Allah be pleased with them). Right: Ibn Majah and al-Hakim narrated it from Ibn Umar, and al-Tabarani narrated it in Mu'jam al-Kabir from Qurrah bin Iyas with a good chain, and from Malik bin Huwayrith and al-Hakim, and Ibn Mas'ud authenticated it (may Allah be pleased with them). (T)

And it was said:

[Box 4] Left: Abu Bakr and Umar are the best of the first and the last, and the best of the people of the heavens and the best of the people of the earths, except for the Prophets and Messengers [3]. Right: Abu Bakr and Umar are superior to all the people of the past and the future, and are superior to all the inhabitants of the heaven and all the inhabitants of the earth, except for the Prophets and Messengers (peace and blessings be upon them). (T)

Footnotes: 1. Al-Fatawa al-Khayriyya, Miscellaneous Issues, Dar al-Ma'rifah, Beirut 2/235. 2. Sunan Ibn Majah, Excellence of Ali ibn Abi Talib (may Allah be pleased with him), H.M. Saeed Company, Karachi p. 2; Al-Mustadrak lil-Hakim, Book of Knowledge of the Sahaba, Dar al-Fikr, Beirut 3/167; Al-Mu'jam al-Kabir, Hadith 650, Al-Maktaba al-

Faysaliyya, Beirut 19/292. 3. Kanz al-Ummal, Hadith 32645, Mu'assasah ar-Risalah, Beirut 11/560.

फतावा रज़विया जिल्द 29

[बॉक्स 1] बायां: यदि दामाद उनसे वंश में अधिक निकट हो [1]। दायां: हालांकि वंश के आधार पर दामाद ससुर की तुलना में अधिक निकट होता है। (त)

इसलिए, अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने सामान्यता को बनाए रखने के लिए जन्नत के युवाओं के लिए दो महान पोतों (हसन और हुसैन) की सरदारी का विशेष रूप से उल्लेख किया।

[बॉक्स 2] बायां: अल-हसन और अल-हुसैन जन्नत के युवाओं के सरदार हैं। दायां: हसन और हुसैन (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) जन्नत के युवाओं के सरदार हैं। (त)

कि चार खलीफा (रज़ियल्लाहु अन्हुम) इसमें शामिल नहीं हैं, और कई सही हदीसों में इसके पूरक के रूप में फरमाया: "और उनके पिता उन दोनों से बेहतर हैं।" हसन और हुसैन जन्नत के युवाओं के सरदार हैं और उनके पिता उनसे श्रेष्ठ हैं।

[बॉक्स 3] बायां: इसे इब्न माजा और अल-हाकिम [2] ने इब्न उमर से, और अल-तबरानी ने अल-कबीर में कुर्रह बिन इयास से एक अच्छी सनद के साथ, और मालिक बिन अल-हुवैरिथ से, और अल-हाकिम ने इब्न मसूद (रज़ियल्लाहु अन्हुम) से इसे प्रमाणित किया है। दायां: इसे इब्न माजा और अल-हाकिम ने इब्न उमर से और तबरानी ने मोजम कबीर में कुर्रह बिन इयास से अच्छी सनद के साथ मालिक बिन हुवैरिथ और हाकिम से रिवायत किया है, और इब्न मसूद ने इसकी तस्दीक की है (रज़ियल्लाहु अन्हुम)। (त)

और इरशाद हुआ:

[बॉक्स 4] बायां: अबू बक्र और उमर पहले और बाद के लोगों में सबसे अच्छे हैं, और आसमानों के लोगों में सबसे अच्छे हैं और ज़मीन के लोगों में सबसे अच्छे हैं, सिवाय नबियों और रसूलों के[3]। दायां: अबू बक्र और उमर पहले और बाद के तमाम लोगों से अफज़ल (श्रेष्ठ) हैं, और तमाम आसमान वालों और तमाम ज़मीन वालों से अफज़ल हैं, सिवाय नबियों और रसूलों के(उन पर सलाम और दुरूद हो)। (त)

पाद टिप्पणियाँ: 1. अल-फतावा अल-खैरिया, मसाइल शत्ता, दार अल-मारिफा, बेरुत 2/235। 2. सुनन इब्न माजा, फज़्ल अली इब्न अबी तालिब (रज़ियल्लाहु अन्हु), एच.एम. सईद कंपनी, कराची पृ. 2; अल-मुस्तदरक लिल-हाकिम, किताब मारिफतुल सहाबा, दार अल-फ़िक्र, बेरुत 3/167; अल-

मोजम अल-कबीर, हदीस 650, अल-मकतबा अल-फैसलिया, बेरुत 19/292। 3. कंज़ुल उम्माल, हदीस 32645, मुअस्ससतुर रिसाला, बेरुत 11/560।

पृष्ठ 750 में से 277

فتاوی رضویہ جلد ۲۹

[باکس ۱] بایاں: ان کان الختن اقرب نسبا منھم ۱۸- دایاں: حالانکہ نسب کے اعتبار سے داماد بنسبت سسر کے اقرب ہوتا ہے-(ت)

ولہذا رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم نے سرداری حضرات سبطین کریمین کو حفظ تعمیم کے لیے جوانان اہل جنت سے خاص فرمایا۔

[باکس ۲] بایاں: الحسن والحسین سیدا شباب اھل الجنۃ- دایاں: حسین و حسین رضی اللہ تعالی عنہما جنتی جوانوں کے سردار ہیں۔(ت)

کہ خلفائے اربعہ رضی اللہ تعالیٰ عنہم کو شامل نہ ہو ، اور متعدد صحیح حدیثوں میں اسی کے تتمہ میں فرمادیا۔ وابوھما خیر منھما حسن و حسین جوانان اہل جنت کے سردار ہیں اور ان کا باپ ان سے افضل ہے۔

[باکس ۳] بایاں: رواہ ابن ماجۃ والحاکم ۲۸ عن ابن عمر والطبرانی فی الکبیر عن قرۃ بن ایاس بسند حسن وعن مالك بن الحویرث والحاکم وصححہ عن ابن مسعود رضی اللہ تعالی عنھم۔ دایاں: اس کو ابن ماجہ اور حاکم نے ابن عمر سے اور طبرانی نے معجم کبیر میں قرہ بن ایاس سے سند حسن کے ساتھ مالک بن حویرث و حاکم سے روایت کیا ہے اور ابن مسعود نے اس کی تصحیح کی ہے رضی اللہ عنہم (ت)

اور ارشاد ہوا:

[باکس ۴] بایاں: ابوبکر و عمر خیر الاولین والاخرین و خیر اھل السموت و خیر اھل الارضین الاالنبیین والمرسلین ۳۸۔ دایاں: ابوبکر و عمر سب اگلوں پچھلوں سے افضل ہیں اور سب آسمان والوں اور سب زمین والوں سے افضل ہیں سوا انبیاء و مرسلین کے علیہم الصلوۃ والتسلیم (ت)

حواشی: 1 الفتاوی الخیریۃ مسائل شتی دارالمعرفۃ بیروت ۲/ ۲۳۵ 2 سنن ابن ماجہ فضل علی ابن ابی طالب رضی اللہ عنہ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ص ۲ ، المستدرک للحاکم کتاب معرفۃ الصحابۃ دارالفکر بیروت ۳/ ۱۶۷، المعجم الکبیر حدیث ۶۵۰ المکتبۃ الفیصلیۃ بیروت ۱۹ / ۲۹۲ 3 کنزالعمال حدیث ۳۲۶۴۵ مؤسسۃ الرسالۃ بیروت ۱۱/ ۵۶۰

Fatawa Razawiyya Volume 29

Problem 112: From Sitapur, Muhalla Tamin Ganj, sent by Hakim Ghulam Haider Sahib, 10 Sha'ban 1337 AH.

What do the scholars of religion say about this matter: that Mr. Khwaja Hasan Nizami Sahib Dehlavi, in his authored book "Yazid Nama," has expressed his beliefs in these words: that I consider Hazrat Ali (may Allah be pleased with him) to be the most superior person in the Ummah after the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him), and I claim that this is the true belief of all the Ahl-e-Sunnat. Regardless of those whose eyes of insight are not open, this is the same belief and creed of all the honorable Sufis, great saints, and elders of religion. Referring to "Futuhat-e-Makkiyya," he has also expressed the same belief for Hazrat Ibn Arabi (may Allah be pleased with him). Regarding the circumstances of Hazrat Ameer Muawiya (may Allah be pleased with him), he wrote a lot, which would be too long to quote in full; finally, he wrote his decision that we should not waste time in searching for proof of their disbelief and lack of religion, therefore we leave this matter to God. Maulana Shah Waliullah Sahib Muhaddith Dehlavi (may his secret be sanctified), in his book "Izalat al-Khafa," declares those with this belief to be from the Tafzili and innovative sect, deserving of punishment, and he narrates through several routes a saying of Hazrat Ali (may Allah be pleased with him) that he said: "No person should give me superiority over Hazrat Abu Bakr and Hazrat Umar (may Allah be pleased with them both), otherwise I will lash him with lashes for the crime of slander and false accusation."[1]

In this sensitive time, the need for this fatwa arose because, after seeing "Yazid Nama," Sunnis who are unaware of beliefs, including highly educated and graduate individuals, might consider this belief to be the true belief of the Ahl-e-Sunnat. It should be clear to them that these are the beliefs of the Tafzili sect and have nothing to do with the beliefs of the Ahl-e-Sunnat. It is hoped that the scholars of the Ahl-e-Sunnat will pay sufficient attention to this.

The Answer: By no means is this the creed of the Ahl-e-Sunnat; it is the creed of the Rafidha (Shias). To call it the creed of the Ahl-e-Sunnat is exactly like someone saying that the creed of the Rafidha is "Tafzil-e-Shaykhayn" (superiority of Abu Bakr and Umar), meaning that the Rafidha consider Hazrat Siddiq-e-Akbar and Farooq-e-Azam (may Allah be pleased with them both) to be the most superior and exalted in the entire Ummah. Just as someone claiming that would be a clear, false slanderer,

similarly, the one who says that the belief of all the Ahl-e-Sunnat is to consider Maula Ali as the most superior is undoubtedly a severe and audacious liar. Imam-e-Azam (may Allah be pleased with him) stated that the first sign of the Ahl-e-Sunnat is "Tafzil al-Shaykhayn,"[2] which is that you believe Siddiq-e-Akbar and Farooq-e-Azam (may Allah be pleased with them both) to be superior to the whole Ummah. This praiseworthy belief is held by Ameer al-Mu'minin Maula Ali himself.

[1] Izalat al-Khafa, Maqsad Awwal, Chapter Four, Musnad Ali (may Allah be pleased with him), Suhail Academy Lahore, 1/287 & 280. [2] Minah al-Rawd al-Azhar Sharh al-Fiqh al-Akbar, "The best of people after him (PBUH) etc.", Mustafa al-Babi Egypt, p. 63.

फतावा रज़विया जिल्द २९

मसला ११२: सीतापुर मोहल्ला तामिन गंज से हकीम गुलाम हैदर साहब द्वारा भेजा गया, १० शाबान १३३७ हिजरी।

धर्म के विद्वान इस मामले के बारे में क्या कहते हैं: कि श्री ख्वाजा हसन निजामी साहब देहलवी ने अपनी पुस्तक "यजीद नामा" में इन शब्दों में अपने अकीदे (विश्वास) का इज़हार किया है कि मैं हज़रत अली (रज़ियल्लाहु अन्हु) को अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के बाद उम्मत में सबसे अफ़ज़ल (श्रेष्ठ) मानता हूँ, और दावा करता हूँ कि यही तमाम अहले सुन्नत का हकीकी (सच्चा) अकीदा है। जिनकी बसीरत (अंतर्दृष्टि) की आँखें खुली नहीं हैं, उनसे कतई नज़र, तमाम सूफ़ी और दीन के बुज़ुर्गों का यही अकीदा और मसलक है। "फ़ुतुहात-ए-मक्किआ" के हवाले से उन्होंने हज़रत इब्न अरबी (रज़ियल्लाहु अन्हु) का भी यही अकीदा ज़ाहिर किया है। हज़रत अमीर मुआविया (रज़ियल्लाहु अन्हु) के हालात में बहुत कुछ लिखा है जो विस्तार का कारण बना, आखिर में फैसला यह लिखा है कि हमें उनके कुफ्र व बे-दीनी के सुबूत तलाश करने में वक्त ज़ाया (नष्ट) नहीं करना चाहिए, इसलिए इस मामले को खुदा के हवाले करते हैं। मौलाना शाह वलीउल्लाह साहब मुहद्दिस देहलवी (तआला रहमतुल्लाहि अलैहि) अपनी किताब "इज़ालतुल खफा" में इस अकीदे वाले को फिरका "तफ़्ज़ीली" और गुमराह व मुस्तहिक-ए-ताज़ीर (सज़ा का हकदार) करार देते हैं और हज़रत अली (रज़ियल्लाहु अन्हु) का कौल (कथन) अनेक रास्तों से नक़्ल करते हैं कि हज़रत अली ने फरमाया: "कोई शख्स मुझे हज़रत अबू बक्र और हज़रत उमर (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) पर फज़ीलत न दे, वरना तोहमत व इफ्तरा (झूठा आरोप) के जुर्म में मैं उसे कोड़े लगाऊँगा।"[1]

इस नाज़ुक ज़माने में इस इस्तेफ्ता (सवाल) की ज़रूरत इसलिए हुई क्योंकि "यजीद नामा" को देखकर ऐसे अकीदों से नावाकिफ सुन्नी, जिनमें उच्च दर्जे के शिक्षित और ग्रेजुएट हज़रात भी शामिल हैं, इसी अकीदे को अहले सुन्नत का हकीकी अकीदा समझने लगें। उनको स्पष्ट होना चाहिए कि ये अकीदे फिरका तफ़्ज़ीलीया के हैं और अहले सुन्नत के अकीदों से इनका कोई वास्ता नहीं है। उम्मीद है कि अहले सुन्नत के उलेमा इस पर काफी तवज्जो (ध्यान) देंगे।

अल-जवाब (उत्तर): हाशा! यह हरगिज़ अहले सुन्नत का मसलक नहीं है; यह राफिज़ियों (शियाओं) का मज़हब है। इसे अहले सुन्नत का मज़हब कहना बिल्कुल वैसा ही है जैसे कोई कहे कि राफिज़ियों का मज़हब "तफ़्ज़ीले शेखैन" है, यानी राफिज़ी हज़रत सिद्दीक-ए-अकबर और फारूक-ए-आज़म

(रज़ियल्लाहु अन्हुमा) को पूरी उम्मत से अफ़ज़ल और आला मानते हैं। जैसा कि ऐसा दावा करने वाला साफ़ तौर पर झूठा मुफ़्तरी (आरोप लगाने वाला) है, उसी तरह यह कहने वाला कि तमाम अहले सुन्नत का अकीदा मौला अली को सबसे अफ़ज़ल जानना है, निस्संदेह एक सख्त और ढीठ झूठा है। इमाम-ए-आज़म (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने अहले सुन्नत का पहला निशान यह बताया है कि "तफ़्ज़ीले शेखैन"[2] - यानी यह कि आप सिद्दीक-ए-अकबर और फारूक-ए-आज़म (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) को तमाम उम्मत से अफ़ज़ल मानें। यह सराहनीय अकीदा स्वयं अमीरुल मोमिनीन मौला अली का है।

[1] इज़ालतुल खफा मक़सद अव्वल, फ़स्ल चहारुम, मसनद अली (रज़ियल्लाहु अन्हु), सुहैल अकादमी लाहौर १/ २८७ व २८०। [2] मन्हुल रौज़ुल अज़हर शरह अल-फिक्हुल अकबर, "लोगों में उनके(सल्ल.) के बाद सबसे श्रेष्ठ इत्यादि", मुस्तफा अल-बाबी मिस्र पृ. ६३।

पृष्ठ २७८/७५०

فتاوی رضویہ جلد ۲۹

مسئلہ ۱۱۲: از سیتا پور محلہ تامن گنج مرسلہ حکیم غلام حیدر صاحب ۱۰ شعبان ۱۳۳۷ھ

کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ جناب خواجہ حسن نظامی صاحب دہلوی نے اپنے مؤلفہ کتاب یزید نامہ میں اپنے عقائد کا اظہار ان الفاظ میں فرمایا ہے کہ میں حضرت علی رضی اللہ تعالیٰ عنہ کو افضل ترین امت بعد رسول خدا صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے سمجھتا ہوں اور دعویٰ کیا ہے کہ یہی عقیدہ حقہ تمامی اہلسنت کا ہے جن کی چشم بصیرت بینا نہیں ان سے قطع نظر تمام صوفیہ کرام و اولیائے عظام و بزرگان دین کا یہی عقیدہ و مسلک ہے۔ بحوالہ فتوحات مکیہ حضرت ابن عربی رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا بھی یہی عقیدہ ظاہر کیا ہے۔ حضرت امیر معاویہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے حالات میں بہت کچھ لکھا ہے کل نقل باعث طوالت ہے، آخری فیصلہ یہ لکھا ہے کہ ہم کو ان کے کفر و بے دینی کے ثبوت تلاش کرنے میں وقت ضائع نہ کرنا چاہیے لہٰذا اس معاملہ کو خدا کے حوالہ کرتے ہیں، مولانا شاہ ولی اللہ صاحب محدث دہلوی طاب ثراہ اپنی کتاب ازالۃ الخفاء میں اس عقیدہ والے کو فرقہ تفضیلی و بدعتی و مستحق تعزیر قرار دیتے ہیں اور حضرت علی رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا قول متعدد طرق سے نقل فرماتے ہیں کہ فرمایا حضرت علی نے کوئی شخص مجھے حضرت ابوبکر و حضرت عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما پر فضیلت نہ دے ورنہ تہمت و افتراء پردازی کے جرم میں اسی درے لگاؤں گا ۱۔

اس نازک زمانہ میں اس استفتاء کی ضرورت اس وجہ سے ہوئی کہ یزید نامہ کو دیکھ کر عقائد سے ناواقف سنی جن میں اعلیٰ درجے کے تعلیم یافتہ و گریجویٹ حضرات بھی شامل ہیں اسی

عقیدہ کو عقیدہ حقہ اہلسنت سمجھیں گے ان کو واضح ہونا چاہیے کہ یہ عقائد فرقہ تفضیلیہ کے ہیں عقائد اہلسنت کو اس سے واسطہ نہیں امید کہ علمائے اہلسنت اس پر کافی توجہ فرمائیں گے۔

الجواب: حاشایہ ہرگز اہلسنت کا مذہب نہیں روافض کا مذہب ہے اسے اہلسنت کا مذہب کہنا بعینہ ایسا ہے کہ کوئی کہے رافضیوں کا مذہب تفضیل شیخین ہے یعنی صدیق اکبر و فاروق اعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہا کو رافضی تمام امت سے افضل و اعلیٰ مانتے ہیں جیسا اس کا قائل صریح جھوٹا مفتری ہے یو نہی یہ کہنے والا کہ تمام اہلسنت کا عقیدہ مولا علی کو سب سے افضل جاننا ہے بلاشبہ سخت کذاب جری ہے ، امام اعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے پہلا شعار اہلسنت کا یہ بتایا ہے ان تفضیل الشیخین ۲۔ یہ کہ تو صدیق اکبر و فاروق اعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہما کو تمام اُمت سے افضل مانے ، یہ عقیدہ حمیدہ خود امیر المومنین مولا علی کا ہے۔

۱ ازالۃ الخفاء مقصد اول فصل چہارم مسند علی رضی اللہ تعالیٰ عنہ ، سہیل اکیڈمی لاہور ۱/ ۲۸۷ و ۲۸۰ ۲ منح الروض الازہر شرح الفقہ الاکبر افضل الناس بعدہ علیہ الصلوۃ والسلام الخ مصطفی البابی مصر ص ۶۳

Fatawa Razawiyya (Volume 29)

Eighty (80) Companions and Successors (Tabi'un) have narrated from [Ali] (may Allah honor him). In this regard, our comprehensive book "Matla' al-Qamarayn fi Abanati Sabqati al-'Umarayn" contains waves of oceans from the Great Quran, the traditions of the Master of Messengers (peace and blessings be upon him and them all), the legacies of the noble household (Ahl al-Bayt), the great companions, the sayings of the Commander of the Faithful, Haydar (may Allah be pleased with them), and the texts of the Imams, scholars, saints, and gnostics (may their secrets be sanctified). Every child knows that in all books of beliefs (Aqa'id) of the Ahl al-Sunnah, the best of humans after the Prophets is Abu Bakr al-Siddiq[1]. (The most superior human after the Prophets is Abu Bakr al-Siddiq, may Allah be pleased with him. If it is permissible to deny the sun in broad daylight on a clear day while having eyes on one's face in an open field, then only such a madman can deny this likewise. Similarly, attributing this false belief to the noble saints (may Allah sanctify their secrets) is an open fabrication. In "Dalil al-Yaqin min Kalimat al-Arifin," the absolute superiority of the two Shaykhs (Abu Bakr and Umar, may Allah be pleased with them both) has been proven solely from the sayings of the noble saints. It is evident that when this is the belief of the Ahl al-Sunnah, and the opponent of the Ahl al-Sunnah in belief is an innovator, and it is impossible for an innovator to be a saint (wali), then how can the belief of the saints be against it? "But the wrongdoers invent lies, and regarding the truth after it has become manifest, they doubt." [T] In the same vein, fabrications were attached to "Al-Futuhat al-Makkiyya." The explicit words of "Al-Futuhat" are as follows:

Know that there is no one in the Ummah of Muhammad (peace and blessings of Allah be upon him) who is better than Abu Bakr, except for 'Isa (peace and blessings be upon him)[2].

That is, know for certain that in the Ummah of Muhammad (peace and blessings of Allah be upon him), there is no one who is superior to Hazrat Abu Bakr Siddiq (may Allah be pleased with him), except for our master 'Isa (peace and blessings be upon him), for he is a follower of the Prophet [in terms of being part of his Ummah at the end of times] and is superior to Siddiq because he is a Prophet.

Note (Ayin): Irreligiousness and misguidance are one thing, but to a rational person, attributing such a denial of the sun to a famous person seems easier to believe if

some follower of Yazid wrote a "Yazid Nama" and attributed it to him, or at least added such brazenness to it. 12 [Author]

[1] Sharh al-Aqa'id al-Nasafiyya, Dar al-Isha'at al-Arabiyya, Kandahar, Afghanistan, p. 107 [2] Al-Futuhat al-Makkiyya

फ़तावा रज़विया (खंड 29)

करम अल्लाह वजहुल करीम से अस्सी (80) सहाबा और ताबेईन ने रिवायत किया है। इस बारे में हमारी विस्तृत किताब "मतला अल-क़मरैन फ़ी अबानाती सबक़ती अल-उमरैन" है, जिसमें इस महान उद्देश्य पर महान कुरान, सैय्यद अल-मुरसलीन (उन पर और उन सब पर अल्लाह की शांति और आशीर्वाद हो) की हदीसों, अहले बैत और महान सहाबा के अवशेषों, अमीरुल मोमिनीन हैदर (अल्लाह उन सब से प्रसन्न हो) के कथनों और इमामों, विद्वानों, संतों और आरिफों (अल्लाह उनके रहस्यों को पवित्र करे) के ग्रंथों की नदियाँ बह रही हैं। हर बच्चा जानता है कि अहले सुन्नत की अक़ीदे की सभी किताबों में लिखा है कि पैगंबरों के बाद सबसे श्रेष्ठ इंसान अबू बक्र सिद्दीक़ हैं[1]। (नबियों के बाद सबसे श्रेष्ठ इंसान अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु हैं। यदि साफ़ दिन में मैदान में हथेली पर आँखें होते हुए दोपहर के सूरज को झुठलाना जायज़ है, तो केवल ऐसा ही कोई पागल इसका भी इनकार कर सकता है। इसी तरह महान संतों (अल्लाह उनके रहस्यों को पवित्र करे) की ओर इस गलत अक़ीदे का संबंध जोड़ना एक खुला झूठ है। "दलील अल-यक़ीन मिन कलिमत अल-आरिफीन" में शेख़ैन (अबू बक्र और उमर, अल्लाह उन दोनों से प्रसन्न हो) की पूर्ण श्रेष्ठता को केवल संतों के कथनों से सिद्ध किया गया है। यह स्पष्ट है कि जब यह अहले सुन्नत का अक़ीदा है और अक़ीदे में अहले सुन्नत का विरोधी बिदअती है, और एक बिदअती का वली (संत) होना असंभव है, तो फिर संतों का अक़ीदा इसके विरुद्ध कैसे हो सकता है? "लेकिन ज़ालिम झूठ गढ़ते हैं और सत्य प्रकट होने के बाद उसमें संदेह करते हैं।" (टी) इसी श्रेणी में "अल-फ़ुतूहात अल-मक्किआ" पर भी झूठ गढ़े गए, फ़ुतूहात के स्पष्ट शब्द ये हैं:

जान लो कि मुहम्मद (अल्लाह की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) की उम्मत में अबू बक्र से बेहतर कोई नहीं है, सिवाय ईसा (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) के[2]।

यानी यकीन जानो कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की उम्मत में कोई ऐसा नहीं है जो हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़ियल्लाहु अन्हु) से श्रेष्ठ हो, सिवाय हमारे सरदार ईसा (अलैहिस्सलाम) के, क्योंकि वह हुज़ूर के उम्मती हैं और सिद्दीक़ से श्रेष्ठ हैं क्योंकि वह नबी हैं।

नोट (ऐन): अधर्म और गुमराह होना एक अलग बात है, लेकिन बुद्धिमान व्यक्ति के लिए किसी प्रसिद्ध हस्ती की ओर सूरज के ऐसे इनकार को जोड़ना तब आसान लगता है जब किसी यज़ीदी ने

"यज़ीद नामा" लिखकर उनके नाम कर दिया हो या कम से कम ऐसी बेशर्म बातें उसमें मिला दी हों। 12 [लेखक]

[1] शरह अल-अक़ायद अल-नस्फ़िया, दारुल इशाअत अल-अरबिया, कंधार, अफगानिस्तान, पृष्ठ 107

[2] अल-फ़ुतूहात अल-मक्किआ

کرم اللہ وجہہ الکریم سے اسی ۸۰ صحابہ تابعین نے روایت کیا اس میں ہماری حافل کتاب مطلع القمرین فی ابانۃ سبقۃ العمرین ہے جس میں اس مطلب شریف پر قرآن عظیم و احادیث سید المرسلین صلی اللہ تعالیٰ علیہ وعلیہم اجمعین و آثار اہلبیت کرام و صحابہ عظام و ارشادات امیر المومنین حیدر رضی اللہ عنہم و نصوص ائمہ و علماء و اولیاء و عرفاء قدست اسرار ہم سے دریا لہرا رہے ہیں۔ ہر بچہ جانتا ہے کہ اہل سنت کی تمام کتب عقائد میں افضل البشر بعد الانبیاء ابو بکر الصدیق ۱۔ (انبیاء کے بعد سب سے افضل انسان ابوبکر صدیق رضی اللہ تعالیٰ عنہ ہیں۔ اگر نہایت صاف دن میں کف دست میدان میں منہ پر آنکھیں ہوتے ہوئے ٹھیک دو پہر کو انکار آفتاب روا ہے تو اس کا انکار عہ بھی اسی منکر کا سا مجنون کر سکتا ہے یونہی حضرات اولیائے کرام قدسنا اللہ تعالیٰ باسرار ہم کی طرف اس عقیدہ باطلہ کی نسبت کھلا افتراء ہے۔ دلیل الیقین من کلمات العارفین میں افضلیت مطلقہ حضرات شیخین رضی اللہ تعالیٰ عنہما کو صرف ارشادات اولیائے کرام سے ثابت کیا ہے اور خود ظاہر کہ جب یہ عقیدہ اہلسنت ہے اور عقیدہ میں اہلسنت کا مخالف مبتدع اور مبتدع کا ولی ہونا محال، تو اس کے خلاف اعتقاد اولیاء کیونکر ہو سکتا ہے۔ ولکن الظلمین یفترون و فی الحق بعد ما تبین یمترون (لیکن ظالم جھوٹ گھڑتے اور حق ظاہر ہو جانے کے بعد اس میں شک کرتے ہیں۔ت)

اسی زمرہ میں فتوحات مکیہ پر بھی افترا جڑا، فتوحات کے صریح لفظ یہ ہیں:

اعلم انہ لیس فی امۃ محمد صلی اللہ تعالی علیہ وسلم من ھو افضل من ابی بکر غیر عیسی علیہ الصلوۃ والسلام ۲۔

یعنی یقین جان کہ محمد صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی اُمت میں کوئی ایسا نہیں جو حضرت ابوبکر صدیق رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے افضل ہو سوا سیدنا عیسیٰ علیہ الصلوٰۃ والسلام کے کہ وہ حضور کے امتی ہیں اور صدیق سے افضل ہیں کہ نبی ہیں۔

عہ: بددینی و گمراہی دوسری چیز ہے مگر ذی عقل مشہور کی طرف ایسے انکار آفتاب کی نسبت سے یہ سہل معلوم ہوتا ہے کہ کسی یزیدی نے یزید نامہ لکھ کر اُس کے نام کر دیا یا کم از کم ایسی وقاحتیں اس میں ملادیں ۱۲ منہ

۱ شرح العقائد النسفیہ دارالاشاعۃ العربیۃ قندھار افغانستان ص ۱۰۷ ۲ الفتوحات المکیہ

Fatawa Razawiyya - Volume 29

The Hadith regarding Amir Muawiyah (may Allah be pleased with him) is among the most eminent companions (may Allah be pleased with them all). It is mentioned in Sahih Tirmidhi Sharif that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) prayed for him:

[Arabic Box]: O Allah, make him a guide, rightly-guided, and guide [others] through him. [Urdu Translation Box]: O Lord! Make him a guide and a recipient of guidance, and grant guidance to people through him.

No one will call any of the noble companions an infidel or irreligious except for an infidel, an irreligious person, or a misguided heretic. The Almighty, the All-Powerful, the One, the Subduer (may His glory be exalted) categorized the companions into two groups: first, those who spent and fought in the path of Allah before the conquest of Mecca, and second, those who did so after the conquest. He then declared that He has promised 'Al-Husna' (the best reward/Paradise) to both groups, and He further stated that Allah is well aware of your deeds—everything you do. Despite this, He promised 'Al-Husna' to all of you. Here, the Great Quran has put a stone in the mouths of those foul-mouthed, bold, disrespectful, and impure people who wish to taunt the companions because of their actions. Allah Almighty knew their actions (assuming they are correct), yet He promised 'Al-Husna' to all of them. So, anyone who objects now is objecting to Allah, the One, the Subduer. Paradise and high ranks are not in the hands of the objector; they are in the hands of Allah Almighty. The objector will continue to beat his head in vain, while Allah will certainly fulfill the promise of 'Al-Husna' He made to them, and the objector will be punished in Hell. That noble verse is this:

[Arabic Box]: Not equal among you are those who spent before the conquest and fought [and those who did so after]. Those are greater in degree than they who spent afterwards and fought. But to all Allah has promised the best [reward]. And Allah is Acquainted with what you do. [Urdu Translation Box]: O companions of the Beloved! Not equal among you are those who spent and fought before the conquest; they are greater in rank than those [who did so] after. Yet, to both groups, Allah has promised 'Al-Husna' (the best reward), and Allah is well aware of whatever you do.

Now, listen from the Great Quran to the state of those for whom Allah's promise of 'Al-Husna' has already been made:

[Arabic Box]: Indeed, those for whom the best [reward] has preceded from Us—they are from it (Hell) far removed. They will not hear its sound, while they are, in that which their souls desire, abiding eternally. [Urdu Translation Box]: Indeed, those for whom our promise of 'Al-Husna' has already been made, they have been kept far away from Hell; they will not hear even its whisper and will forever remain in what their souls desire.

---

1 Jami' at-Tirmidhi, Chapters on Merits, Merits of Muawiyah bin Abi Sufyan, Amin Company Delhi 2/225 2 Al-Quran Al-Karim 57/10

फतावा रज़विया - खण्ड 29

अमीर मुआविया (रज़ियल्लाहु अन्हु) की हदीस प्रतिष्ठित सहाबा-ए-किराम (रज़ियल्लाहु अन्हुम) में से है, सही तिर्मिज़ी शरीफ़ में है कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने उनके लिए दुआ फरमाई:

[अरबी बॉक्स]: ऐ अल्लाह! उसे मार्गदर्शक और मार्गदर्शित बना और उसके ज़रिए लोगों को हिदायत दे। [उर्दू अनुवाद बॉक्स]: इलाही! इसे राह-नुमा राह-याब कर और इसके ज़रिए से लोगों को हिदायत दे।

सहाबा-ए-किराम में किसी को काफ़िर या बेदीन नहीं कहेगा सिवाय काफ़िर, बेदीन या गुमराह बददीन के। अज़ीज़, जब्बार, वाहिद, कह्हार (अल्लाह तआला) ने सहाबा-ए-किराम के दो समूह किए हैं: एक वे जिन्होंने फ़तह (मक्का) से पहले अल्लाह की राह में ख़र्च किया और जिहाद किया, और दूसरे वे जिन्होंने फ़तह के बाद किया। फिर फरमाया कि अल्लाह अज़्ज़वजल ने दोनों समूहों से 'हुस्ना' (भलाई/जन्नत) का वादा किया है और साथ ही फरमाया कि अल्लाह तुम्हारे कामों से खूब वाकिफ़ है कि तुम क्या-क्या करने वाले हो। इसके बावजूद उसने तुम सब से 'हुस्ना' का वादा फरमाया। यहाँ क़ुरआन अज़ीम ने उन बड़बोले, बेबाक, बेअदब और नापाक लोगों के मुँह में पत्थर दे दिया है जो सहाबा-ए-किराम के कार्यों के कारण उन पर ताना मारना चाहते हैं। अल्लाह अज़्ज़वजल को उनके कार्य मालूम थे (सही होने की शर्त पर), फिर भी उसने उन सभी से 'हुस्ना' का वादा फरमाया। तो अब जो ऐतराज़ करने वाला है, वह अल्लाह वाहिद कह्हार पर ऐतराज़ कर रहा है। जन्नत और ऊंचे मक़ाम इस ऐतराज़ करने वाले के हाथ में नहीं हैं, बल्कि अल्लाह अज़्ज़वजल के हाथ में हैं। ऐतराज़ करने वाला अपना सिर पीटता रहेगा और अल्लाह ने उनसे 'हुस्ना' का जो वादा किया है, उसे ज़रूर पूरा फरमाएगा और ऐतराज़ करने वाला जहन्नुम में सज़ा पाएगा। वह आयत-ए-करीमा यह है:

[अरबी बॉक्स]: ऐ महबूब के सहाबियों! तुममें वे बराबर नहीं जिन्होंने फ़तह से पहले ख़र्च और जिहाद किया। वे दर्जे में बाद वालों से बड़े हैं, और अल्लाह ने दोनों समूहों से 'हुस्ना' का वादा कर लिया है। और जो कुछ तुम करते हो, अल्लाह उससे खूब वाकिफ़ है। [उर्दू अनुवाद बॉक्स]: ऐ महबूब के सहाबियो! तुम में बराबर नहीं वो जिन्होंने फ़तह से पहले ख़र्च ओ क़िताल किया वो रुतबे में बाद वालों से बड़े हैं, और दोनों फ़रीक़ से अल्लाह ने हुस्ना का वादा कर लिया, और अल्लाह ख़ूब जानता है जो कुछ तुम करने वाले हो।

अब जिनके लिए अल्लाह का वादा 'हुस्ना' का हो चुका, उनका हाल भी क़ुरआन अज़ीम से सुनें:

[अरबी बॉक्स]: बेशक जिनके लिए हमारा वादा 'हुस्ना' का हो चुका, वे जहन्नुम से दूर रखे गए हैं। वे उसकी आहट तक नहीं सुनेंगे और हमेशा अपनी मनचाही मुरादों में रहेंगे। [उर्दू अनुवाद बॉक्स]: बे-शक़ जिन के लिए हमारा वादा हुस्ना का हो चुका वो जहन्नुम से दूर रखे गए हैं इसकी भनक तक न सुनेंगे और हमेशा अपनी मन-मानती मुरादों में रहेंगे।

---

1 जामि अत-तिर्मिज़ी, मुनाकिब के अध्याय, मुआविया बिन अबी सुफ़ियान के मुनाकिब, अमीन कंपनी दिल्ली 2/225 2 अल-क़ुरआन अल-करीम 57/10

حدیث امیر معاویہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ اجلہ صحابہ کرام رضوان اللہ تعالیٰ علیہم سے ہیں، صحیح ترمذی شریف میں ہے رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے ان کے لیے دعا فرمائی۔

[عربی باکس]: اللھم اجعلہ ھادیا مھدیا واھد بہ۔ [اردو ترجمہ باکس]: الٰہی! اسے راہ نما راہ یاب کر اور اس کے ذریعہ سے لوگوں کو ہدایت دے۔

صحابہ کرام میں کسی کو کافر بے دین نہ کہے گا مگر کافر بے دین یا گمراہ بد دین، عزیز جبار واحد قہار جل وعلا نے صحابہ کرام کو دو قسم کیا ایک وہ کہ قبل فتح مکہ جنہوں نے راہِ خدا میں خرچ و قتال کیا دوسرے وہ جنہوں نے بعد فتح پھر فرما دیا کہ دونوں فریق سے اللہ عزوجل نے بھلائی کا وعدہ فرمایا اور ساتھ ہی فرما دیا کہ اللہ کو تمہارے کاموں کی خوب خبر ہے کہ تم کیا کیا کرنے والے ہو باینمہ اس نے تم سب سے حسنیٰ کا وعدہ فرمایا۔ یہاں قرآن عظیم نے ان دریدہ دہنوں، بیباکوں، بے ادب، ناپاکوں کے منہ میں پتھر دے دیا ہے جو صحابہ کرام کے افعال سے ان پر طعن چاہتے ہیں وہ بشرطِ صحت اللہ عزوجل کو معلوم تھے پھر بھی ان سب سے حسنیٰ کا وعدہ فرمایا، تو اب جو معترض ہے اللہ واحد قہار پر معترض ہے جنت و مدارج عالیہ اس معترض کے ہاتھ میں نہیں اللہ عزوجل کے ہاتھ میں ہیں معترض اپنا سر کھاتا رہے گا اور اللہ نے جو حسنیٰ کا وعدہ اُن سے فرمایا ہے ضرور پورا فرمائے گا اور معترض جہنم میں سزا پائے گا وہ آیہ کریمہ یہ ہے:

[عربی باکس]: لَا یَسْتَوِیْ مِنْكُمْ مَّنْ اَنْفَقَ مِنْ قَبْلِ الْفَتْحِ وَ قٰتَلَؕ اُولٰٓىٕكَ اَعْظَمُ دَرَجَةً مِّنَ الَّذِیْنَ اَنْفَقُوْا مِنْۢ بَعْدُ وَ قٰتَلُوْاؕ وَ كُلًّا وَّعَدَ اللّٰهُ الْحُسْنٰىؕ وَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِیْرٌ ﴿۲﴾ [اردو ترجمہ باکس]: اے محبوب کے

صحابیو! تم میں برابر نہیں وہ جنہوں نے فتح سے پہلے خرچ و قتال کیا وہ رتبے میں بعد والوں سے بڑے ہیں، اور دونوں فریق سے اللہ نے حسنیٰ کا وعدہ کر لیا، اور اللہ خوب جانتا ہے جو کچھ تم کرنے والے ہو۔

اب جن کے لیے اللہ کا وعدہ حسنیٰ کا ہو لیا اُن کا حال بھی قرآن عظیم سے سنئے:

[عربی باکس]: اِنَّ الَّذِیْنَ سَبَقَتْ لَهُمْ مِّنَّا الْحُسْنٰۙ اُولٰٓىِٕكَ عَنْهَا مُبْعَدُوْنَ ﴿۱۰۱﴾ لَا یَسْمَعُوْنَ حَسِیْسَهَا ۚ وَ هُمْ فِیْ مَا اشْتَهَتْ اَنْفُسُهُمْ خٰلِدُوْنَ ۚ﴿۱۰۲﴾ [اردو ترجمہ باکس]: بے شک جن کے لیے ہمارا وعدہ حسنیٰ کا ہو چکا وہ جہنم سے دور رکھے گئے ہیں اس کی بھنک تک نہ سنیں گے اور ہمیشہ اپنی من مانتی مرادوں میں رہیں گے۔

---

۱ جامع الترمذی ابواب المناقب مناقب معاویہ بن ابی سفیان امین کمپنی دہلی ۲/ ۲۲۵ ۲ القرآن الکریم ۱۰ /۵۷

Fatawa Razawiyya Volume 29

[They will be] abiding [therein forever]. The greatest terror will not grieve them, and the angels will meet them, [saying], "This is your Day which you were promised."[1] | That great anxiety—the commotion of the Day of Resurrection—will not grieve them, and the angels will welcome them saying, "This is your day which you were promised."

This is the testimony of the Holy Quran for all the noble companions of the Master of Mankind (peace and blessings be upon him and them). The Leader of the Believers, the Master of the Muslims, Ali al-Murtaza, the Dispeller of Difficulties (may Allah the Almighty honor him), belongs to the first category about whom it is said: "Those are greater in degree."[2] Their status is higher than those in the second category. Ameer Mu'awiya (may Allah be pleased with him) belongs to the second category, and the promise of 'Husna' (the best reward) and all these glad tidings include everyone. Therefore, there is a Hadith from Ibn Asakir narrated from the Leader of the Believers, Master Ali (may Allah be pleased with him), that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said:

My companions will commit a slip which Allah, the Exalted and Majestic, will forgive them for because of their precedence [in faith and company] with me. Then a people will come after them whom Allah will throw face-down into the Fire.[3] | My companions will make a mistake which Allah, the Exalted and Majestic, will forgive because of that precedence which they have in my court. Then after them, some people will come whom Allah the Almighty will throw face-down into Hell.

These are those who will take issue with the slips of the Sahaba. Therefore, Allama Shihab Khafaji (may Allah the Almighty have mercy on him) stated in 'Naseem al-Riyad', a commentary on 'Ash-Shifa' of Imam Qadi Iyad:

And whoever slanders Mu'awiya is a dog from the dogs of the Pit (Jahannam).[4] | Whoever slanders Ameer Mu'awiya is a dog from the dogs of Hell.

And Allah speaks the truth, and He guides to the [right] way. (And Allah the Almighty speaks the truth and guides towards the straight path. -T) And Allah the Almighty knows best.

[1] Quran Al-Karim 21/101, 102, 103 [2] Quran Al-Karim 57/10 [3] Al-Mu'jam al-Awsat, Hadith 3243, Maktabat al-Ma'arif, Riyadh, 4/124 and Majma' al-Zawa'id, 7/232 [4] Naseem al-Riyad, Chapter Three, Markaz-e-Ahle Sunnat, Gujarat, India, 3/430

फ़तावा रज़विया खंड 29

[वे उसमें] सदैव रहेंगे। महाभय उन्हें दुखी नहीं करेगा, और फ़रिश्ते उनका स्वागत करेंगे (यह कहते हुए कि) "यह तुम्हारा वह दिन है जिसका तुमसे वादा किया गया था।"[1] | वह बड़ी घबराहट—क़यामत की हलचल—उन्हें दुखी नहीं करेगी और फ़रिश्ते उनका इस्तक़बाल (स्वागत) करेंगे यह कहते हुए कि यह तुम्हारा वह दिन है जिसका तुमसे वादा किया गया था।

यह मानव जाति के सरदार (उन पर और उन सब पर सलातो-सलाम हो) के समस्त सहाबा-ए-किराम के लिए क़ुरआन करीम की गवाही है। अमीरुल् मोमिनीन, मुसलमानों के मौला अली मुर्तज़ा मुश्किलकुशा (अल्लाह तआला उनके चेहरे को सम्मानित करे) प्रथम श्रेणी में हैं, जिनके बारे में कहा गया: "वे दर्जे में बहुत बड़े हैं।"[2] उनके मर्तबे (पद) दूसरी श्रेणी वालों से बड़े हैं। अमीर मुआविया (रज़ियल्लाहु अन्हु) दूसरी श्रेणी में हैं, और 'हुस्ना' (सर्वश्रेष्ठ प्रतिफल) का वादा और ये सभी शुभ समाचार उन सभी को शामिल हैं। इसीलिए अमीरुल् मोमिनीन मौला अली (रज़ियल्लाहु अन्हु) से इब्ने असाकिर की हदीस है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया:

मेरे सहाबा से चूक (लग्ज़िश) होगी जिसे अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल उनके मेरे साथ पूर्व संबंध (साबिक़ा) के कारण माफ़ फरमा देगा। फिर उनके बाद कुछ लोग आएंगे जिन्हें अल्लाह तआला उनके मुँह के बल जहन्नम में औंधा गिराएगा।[3] | मेरे सहाबा से लग्ज़िश होगी जिसे अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल माफ़ फरमा देगा उस साबिक़ा के कारण जो उनको मेरी बारगाह में प्राप्त है। फिर उनके बाद कुछ लोग आएंगे कि उन्हें अल्लाह तआला उनके मुँह के बल जहन्नम में औंधा करेगा।

ये वे लोग हैं जो सहाबा की लग्ज़िशों पर पकड़ करेंगे। अतः अल्लामा शिहाब ख़फ़ाजी (रहमतुल्लाहि अलैहि) ने इमाम क़ाज़ी अयाज़ की 'शिफ़ा' की व्याख्या 'नसीमुल रियाज़' में फरमाया:

और जो कोई मुआविया पर ताना (आक्षेप) करे, वह जहन्नम के कुत्तों में से एक कुत्ता है।[4] | जो अमीर मुआविया पर तअन (आक्षेप) करे वह जहन्नम के कुत्तों में से एक कुत्ता है।

और अल्लाह सच कहता है और सीधे रास्ते की तरफ़ हिदायत देता है। (और अल्लाह तआला सच फरमाता है और सीधे रास्ते की तरफ़ हिदायत देता है। -त) और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।

[1] अल-क़ुरआन अल-करीम 21/101, 102, 103 [2] अल-क़ुरआन अल-करीम 57/10 [3] अल-मुअजम अल-अवसत, हदीस 3243, मकतबतुल माआरिफ़, रियाज़, 4/124 और मज्मउज़ ज़वाइद, 7/232 [4] नसीमुल रियाज़, तीसरा अध्याय, मरकज़-ए-अहले सुन्नत, गुजरात, भारत, 3/430

पृष्ठ 281/750

فتاوی رضویہ جلد ۲۹

خَلِدُوْنَ ۝ لَا یَحْزُنُهُمُ الْفَزَعُ الْاَ كْبَرُ وَتَتَلَقّٰهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُؕ هٰذَا یَوْمُكُمُ الَّذِیْ كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ ۝ ۱ | وہ بڑی گھبراہٹ قیامت کی ہلچل انہیں غم نہ دے گی اور فرشتے ان کا استقبال کریں گے یہ کہتے ہوئے کہ یہ ہے تمہارا وہ دن جس کا تمہیں وعدہ دیا جاتا تھا۔

یہ ہے جمیع صحابہ کرام سید الانام علیہ وعلیہم الصلوٰۃ والسلام کے لیے قرآن کریم کی شہادت امیر المومنین مولیٰ المسلمین علی مرتضیٰ مشکلکشا کرم اللہ تعالیٰ وجہہ الکریم قسم اول میں ہیں جن کو فرمایا: "أُولَئِكَ أَعْظَمُ دَرَجَةً" ۲۔ ان کے مرتبے قسم دوم والوں سے بڑے ہیں، اور امیر معاویہ رضی اللہ تعالیٰ عنہم قسم دوم میں ہیں، اور حسنیٰ کا وعدہ اور یہ تمام بشارتیں سب کو شامل۔ ولہٰذا امیر المومنین مولیٰ علی رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے ابن عساکر کی حدیث ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا:

تکون لاصحابی زلة یغفرها الله لهم لسابقتهم معی ثم یأتی قوم بعد هم یکبهم الله علی مناخرهم فی النار ۳ | میرے اصحاب سے لغزش ہوگی جسے اللہ عزوجل معاف فرمائے گا اس سابقہ کے سبب جو ان کو میری بارگاہ میں ہے پھر ان کے بعد کچھ لوگ آئیں گے کہ انہیں اللہ تعالیٰ ان کے منہ کے بل جہنم میں اوندھا کرے گا۔

یہ ہیں وہ کہ صحابہ کی لغزشوں پر گرفت کریں گے۔ ولہٰذا علامہ شہاب خفاجی رحمہ اللہ تعالیٰ نے نسیم الریاض شرح شفاء امام قاضی عیاض میں فرمایا:

ومن یکون یطعن فی معویة فذاك کلب من کلاب الهاویة ۴ | جو امیر معاویہ پر طعن کرے وہ جہنم کے کتوں سے ایک کتا ہے۔

واللہ یقول الحق ویھدي السبیل (اور اللہ تعالٰی سچ فرماتا ہے اور سیدھے راستے کی طرف ہدایت دیتا ہے۔ ت) واللہ تعالٰی اعلم۔

۱ القرآن الکریم ۲۱ / ۱۰۱ و ۱۰۲ و ۱۰۳ ۲ القرآن الکریم ۵۷ / ۱۰ ۳ المعجم الاوسط حدیث ۳۲۴۳ مکتبۃ المعارف ریاض ۴ / ۱۲۴ و مجمع الزوائد ۷ / ۲۳۲ ۴ نسیم الریاض الباب الثالث مرکز اہلسنت گجرات الہند ۳ / ۴۳۰

Fatawa Razawiyyah, Volume 29

Issue 113: From Dholka, Ahmedabad district, Gujarat state, Fateh Hassan ka Pol, Maulvi Noor Nabi son of Haji Wali Muhammad Sahib, 16 Ramadan al-Mubarak 1337 AH. In the name of Allah, the Most Gracious, the Most Merciful. We praise Him and send blessings upon His Noble Messenger, may peace and blessings be upon him and his progeny. After that, what do the scholars of religion say regarding the following matters: (1) Does the soul come into the world after leaving the body or not? Especially since the life of Prophets, Saints, and Martyrs is proven, can the holy soul of the Holy Prophet (may peace and blessings of Allah be upon him) come to Milad and noble gatherings in the world or not? And if someone considers the arrival of his holy soul to be impossible, how should that person be regarded within the fold of Islam? (2) If a person calls visiting the graves of the people of Allah (Saints) and placing flowers on them an innovation (bid'at), what would be the opinion of the people of Islam regarding him? (3) Did the radiant Messenger (may peace and blessings of Allah be upon him) have knowledge of the unseen (Ilm-e-Ghayb) or not? And if a person says that the Messenger of Allah (may peace and blessings of Allah be upon him) did not have absolute knowledge of the unseen, but rather had only as much knowledge as all humans have—in short, if he denies the Prophet's knowledge—how should he be regarded? (4) When "Ashhadu anna Muhammadan Rasul Allah" is said during the call to prayer (Adhan), how is it to kiss one's thumbs at that time? If someone denies this, how should he be regarded? (5) What will be the opinion of the people of Islam regarding a person who intentionally leaves the congregational prayer (Jama'at)?

The Answer: (1) After passing away, the soul of a Muslim goes wherever it wishes. It is stated in a Hadith: "When a believer dies, his path is set free; he travels wherever he wills."[1] When a Muslim dies, his path is opened so that he can go wherever he wants. The detailed explanation of this is in our book "Hayat al-Mawat fi Bayan Sama' al-Amwat". The exalted status of the Holy Prophet (may peace and blessings of Allah be upon him) is higher and loftier than the entire world; even asking such a question there is out of place. Imam Ibn Hajar Makki (may Allah have mercy on him) states that the Messenger of Allah (may peace and blessings of Allah be upon him) can be present in seventy thousand places at one time.

[1] Ithaf al-Saadat al-Muttaqin, with reference to Al-Musannaf of Ibn Abi Shaybah, Kitab Dhikr al-Mawt, Fadilah Dhikr al-Mawt, Dar al-Fikr, Beirut, 10/227.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 29

मसला 113: धोलका, जिला अहमदाबाद, गुजरात राज्य से, फ़तेह हसन का पोल, मौलवी नूर नबी पुत्र हाजी वली मुहम्मद साहब, 16 रमज़ान अल-मुबारक 1337 हिजरी। बिस्मिल्लाह हिर्रहमान निर्रहीम। हम उसकी प्रशंसा करते हैं और उसके महान रसूल पर दुरूद और सलाम भेजते हैं, उन पर और उनके परिवार पर अल्लाह की कृपा और शांति हो। इसके बाद, दीन के उलेमा निम्नलिखित मसलों में क्या फरमाते हैं: (1) रूह (आत्मा) शरीर से निकलने के बाद दुनिया में आती है या नहीं? विशेष रूप से जब नबियों, औलिया और शहीदों का जीवन सिद्ध है, तो क्या नबी करीम (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की पाक रूह दुनिया में मिलाद और शरीफ़ महफिलों में आ सकती है या नहीं? और अगर कोई उनकी पाक रूह के आगमन को असंभव समझे, तो उस व्यक्ति को इस्लाम के दायरे में कैसा माना जाएगा? (2) यदि कोई व्यक्ति अल्लाह के वलियों की कब्रों की ज़ियारत (दर्शन) करने और उन पर फूल चढ़ाने को बिदअत (नवाचार) कहे, तो अहले इस्लाम (मुसलमानों) का उसके प्रति क्या विचार होगा? (3) हुज़ूर पुरनूर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को इल्म-ए-ग़ैब (परोक्ष ज्ञान) था या नहीं? और यदि कोई व्यक्ति कहे कि जनाब रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को मुतलक़ (पूर्ण) ग़ैब नहीं था, बल्कि उन्हें उतना ही ज्ञान था जितना सभी मनुष्यों को होता है - संक्षेप में, यदि वह हुज़ूर के ज्ञान का इनकार करे, तो उसे कैसा माना जाएगा? (4) अज़ान के समय जब 'अशहदु अन्ना मुहम्मदन रसूलुल्लाह' कहा जाए, तो उस समय हाथ के अंगूठों को चूमना कैसा है? यदि कोई इसका इनकार करे, तो उसे कैसा माना जाएगा? (5) जो व्यक्ति जानबूझकर जमाअत (सामूहिक नमाज़) छोड़ दे, उसके बारे में अहले इस्लाम का क्या ख्याल होगा?

उत्तर: (1) मुसलमान की रूह इंतक़ाल (मृत्यु) के बाद जहाँ चाहे जाती है, हदीस में है: "इज़ा मातुल मोमिनु युखल्ला सबुहु यसहु हैसु यशाऊ"[1] - जब मुसलमान मरता है, तो उसका रास्ता खोल दिया जाता है कि जहाँ चाहे जाए। इसका विस्तृत विवरण हमारी पुस्तक "हयातुल मवात फ़ी बयान समाअल अमवात" में है। हुज़ूर अक़दस (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की पवित्र शान पूरे संसार से श्रेष्ठ और ऊँची है; वहाँ यह सवाल करना भी अनुचित है। इमाम इब्न हजर मक्की (रहमतुल्लाह अलैहि) फरमाते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) एक ही समय में सत्तर हज़ार स्थानों पर तशरीफ़ फ़रमा हो सकते हैं।

[1] इत्हाफ़ुस सादातुल मुत्तक़ीन, ब-हवाला अल-मुसन्निफ़ इब्न अबी शैबा, किताब ज़िक्रुल मौत, फ़ज़ीलत ज़िक्रुल मौत, दारुल फ़िक्र बेरूत 10/227।

مسئلہ ۱۱۳: از دھولقہ ضلع احمد آباد ملک گجرات فتح حسن کا پول مولوی نور نبی ابن حاجی ولی محمد صاحب ۱۶ رمضان المبارک ۱۳۳۷ھ بسم اللہ الرحمن الرحیم۔ نحمدہ ونصلی علی رسولہ الکریم صلی اللہ تعالٰی علیہ وعلی آلہ وسلم۔ امّا بعد کیا فرماتے ہیں علمائے دین مندرجہ ذیل مسائل میں: (۱) روح بعد خروج جسم کے دنیا میں آتی ہے یا نہیں؟ خصوصاً جب کہ حیات انبیاء و اولیاء و شہداء ثابت ہے اور نبی کریم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کی روح پاک دنیا میں میلاد و مجلس شریف میں آسکتی ہے یا نہیں؟ اور کوئی ان کی پاک روح کی تشریف آوری کو بعید از امکان سمجھے وہ شخص دائرہ اسلام میں کیسا سمجھا جائے گا؟ (۲) کوئی شخص قبور اہل اللہ کی زیارت اور ان پر پھول چڑھانے کو بدعت بتلائے تو اس کی نسبت اہل اسلام کا کیسا خیال ہوگا؟ (۳) حضور پر نور صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کو علم غیب تھا یا نہیں؟ اور کوئی شخص کہے جناب رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کو مطلق غیب نہ تھا بلکہ تمام انسان کو جتنا علم ہوتا ہے، اتنا ہی آپ کو علم تھا غرض علم حضور کا انکار کرے وہ کیسا سمجھا جائے گا؟ (۴) وقت اذان کے اشہد ان محمداً رسول اللہ کہا جائے اس وقت ہاتھ کے انگوٹھے چومنا کیسا ہے؟ کوئی شخص انکار کرے وہ کیسا سمجھا جائے گا؟ (۵) جو شخص عمداً ترکِ جماعت کرے اس کی نسبت اہل اسلام کا کیا خیال ہوگا؟

الجواب: (۱) مسلمان کی روح بعد انتقال جہاں چاہے جاتی ہے، حدیث میں ہے: اذا مات المؤمن یخلی سربہ یسرح حیث یشاء ۱ ۔ جب مسلمان مرتا ہے اس کی راہ کھول دی جاتی ہے کہ جہاں چاہے جائے۔ اس کا مفصل بیان ہماری کتاب حیات الموات فی بیان سماع الاموات میں ہے حضور اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کی شان اقدس تمام جہاں سے ارفع واعلیٰ ہے وہاں یہ سوال کرنا بھی بے

جا ہے، امام ابن حجر مکی رحمۃ اللہ فرماتے ہیں کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم ایک وقت میں ستر ہزار جگہ تشریف فرما

۱ اتحاف السادۃ المتقین بحوالہ المصنف لابن ابی شیبہ کتاب ذکر الموت فضیلۃ ذکر الموت دارالفکر بیروت ۱۰/ ۲۲۷

Volume 29 Fatawa Rizvia

...can be. Imam Jalaluddin al-Suyuti, the seal of the preservers of Hadith, states: | Permission has been granted to the Prophets to emerge from their graves and exercise authority in the celestial and terrestrial worlds. [2] | All the Prophets (peace and blessings be upon them) have been given the choice to come forth from their pure shrines and exercise authority wherever they wish throughout the entire universe, the heavens and the earth. | | :--- | :--- |

To consider the arrival of the holy soul as far-fetched or impossible, if due to ignorance and lack of knowledge, is audacity and disrespect; and if based on Wahhabi ideology, then Wahhabism itself is manifest disbelief. And Allah Almighty knows best. (2) Visiting graves is a Sunnah. The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says: | Behold, visit them, for they will make you ascetic in this world and remind you of the hereafter. [3] | Listen, visit the graves, for they will make you indifferent towards the world and remind you of the hereafter. | | :--- | :--- |

Especially visiting the shrines of the noble saints, which is a source of thousands of blessings and happiness. No one but a wretched Wahhabi, a consumer of the remains of Ibn Taymiyya, would call it an innovation (bid'at). The innovations created by the ignorant there, such as dancing and musical instruments, are certainly impermissible, but visiting, which is a Sunnah, does not become an innovation because of them. Just as reciting the Holy Quran incorrectly during prayer, or not performing the bowing (ruku) and prostration (sujud) correctly, or improper purification being common among the masses, does not make the prayer itself a bad thing. Placing flowers on a Muslim's grave is commendable (mustahabb). The leaders of the religion state that as long as the flowers are fresh, they will glorify Allah, and through this, the heart of the deceased will be comforted. As mentioned in 'Fatawa al-Imam Faqih al-Nafs' etc. (as it is in the Fatawa of Imam Faqih al-Nafs etc.). It is stated in Fatawa 'Alamgiri and others: | Placing roses and aromatic herbs on | Placing roses and other fragrant flowers on graves | | :--- | :--- |

1. Al-Fatawa al-Kubra by Ibn Hajar al-Haytami, Book of Funerals, Dar al-Kutub al-Ilmiyyah, Beirut, 2/9.
2. Al-Hawi lil-Fatawa, Tanwir al-Hawalik regarding the possibility of seeing the Prophet and the Angel, Dar al-Kutub al-Ilmiyyah, Beirut, 2/263.

3. Sunan Ibn Majah, Chapters on Funerals, Chapter on what has been narrated regarding visiting graves, H.M. Saeed Company, Karachi, p. 114.

खंड 29 फ़तावा रज़विया

...हो सकते हैं। इमाम जलालुद्दीन सुयूती, हदीस के हाफ़िज़ों की मुहर, फ़रमाते हैं: | नबियों को अपनी कब्रों से बाहर आने और ऊपरी और निचले संसार में कार्य करने की अनुमति दी गई है। [2] | तमाम नबियों (अलैहिमुस्सलाम) को यह अधिकार दिया गया है कि वे अपने पवित्र मज़ार से बाहर तशरीफ़ लाएं और पूरे ब्रह्मांड, आसमान और ज़मीन में जहां चाहें कार्य करें। | | :--- | :--- |

पवित्र रूह के आगमन को संभावना से दूर समझना, अगर अज्ञानता और जानकारी की कमी के कारण है तो यह ढिठाई और अपमान है; और यदि यह वहाबियत के आधार पर है, तो वहाबियत स्वयं स्पष्ट कुफ़्र है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (2) कब्रों की ज़ियारत सुन्नत है, अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) फ़रमाते हैं: | सुनो, उनकी ज़ियारत करो क्योंकि वे तुम्हें दुनिया में विरक्त (बे-रग़बत) करेंगी और आख़िरत की याद दिलाएँगी। [3] | सुनो, कब्रों की ज़ियारत करो कि वे तुम्हें दुनिया में बे-रग़बत करेंगी और आख़िरत याद दिलाएँगी। | | :--- | :--- |

विशेष रूप से औलिया किराम के मज़ारत की ज़ियारत, जो हज़ारों-हज़ार बरकत और सौभाग्य का कारण है, इसे कोई बिदअत (नवाचार) नहीं कहेगा सिवाय एक बदकार वहाबी के, जो इब्न तैमिया का जूठन खाने वाला है। वहां अज्ञानियों ने जो रक़्स (नृत्य) और मज़ामीर (वाद्य यंत्र) जैसे बिदअत ईजाद कर लिए हैं, वे निश्चित रूप से नाजायज़ हैं, लेकिन उनसे ज़ियारत, जो कि सुन्नत है, बिदअत नहीं हो जाएगी। जैसे नमाज़ में कुरान शरीफ़ गलत पढ़ना, रुकू और सुजूद सही न करना, तहारत (पवित्रता) ठीक न होना आम जनता में प्रचलित है, इससे नमाज़ बुरी नहीं हो जाएगी। मुसलमान की कब्र पर फूल रखना मुस्तहब (सराहनीय) है, दीन के इमाम फ़रमाते हैं कि जब तक वे ताज़ा हैं, वे अल्लाह की तस्बीह करेंगे, इससे मुर्दे का दिल बहलेगा। जैसा कि 'फ़तावा अल-इमाम फ़क़ीह अन-नफ़्स' आदि में है (जैसा कि इमाम फ़क़ीह अन-नफ़्स के फ़तावा आदि में है)। फ़तावा आलमगीरिया आदि में है: | कब्रों पर गुलाब और सुगंधित पौधे रखना | कब्रों पर गुलाब और अन्य सुगंधित फूल रखना | | :--- | :--- |

1. अल-फ़तावा अल-कुबरा लि-इब्न अल-हजर अल-हैतमी, जनाजे का अध्याय, दारुल कुतुब अल-इल्मिया, बेरुत, 2/9.
2. अल-हावी लिल-फ़तावा, तनवीर अल-हवालिक फ़ी इमक़ान रुयतुल नबी वल मलक, दारुल कुतुब अल-इल्मिया, बेरुत, 2/263.

3. सुनन इब्न माजा, जनाजे के अध्याय, कब्रों की ज़ियारत के बारे में जो आया है, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, पृ. 114.

पृष्ठ 283 का 750

ہو سکتے ہیں۔ امام جلال الدین سیوطی خاتم حفاظ الحدیث فرماتے ہیں: | اذن للانبیاء ان یخرجوا من قبورھم ویتصرفوا فی العالم العلوی و السفلی۔ 2 | تمام انبیاء علیہم الصلوۃ والسلام کو اختیار ملا ہے کہ اپنے مزاراتِ طیبہ سے باہر تشریف لائیں اور جملہ عالم آسمان و زمین میں جہاں چاہیں تصرف فرمائیں۔ | | :--- | :--- |

روح اقدس کی تشریف آوری کو بعید از امکان جاننا اگر براہِ جہل و بے علمی ہے تو جرات و بے ادبی ہے، اور بربنائے وہابیت ہے تو وہابیت خود کفرِ جلی ہے۔ واللہ تعالیٰ اعلم (۲) زیارتِ قبور سنت ہے، رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں: | الا فزوروھا فانھا تزھدکم فی الدنیا وتذکرکم الاخری۔ 3 | سُن لو، قبور کی زیارت کرو کہ وہ تمہیں دنیا میں بے رغبت کرے گی اور آخرت یاد دلائے گی۔ | | :--- | :--- |

خصوصاً زیارتِ مزاراتِ اولیاء کرام کہ موجبِ ہزاروں ہزار برکت و سعادت ہے، اسے بدعت نہ کہے گا مگر وہابی نابکار، ابنِ تیمیہ کا فضلہ خوار۔ وہاں جاہلوں نے جو بدعات مثلِ رقص و مزامیر ایجاد کر لیے ہیں وہ ضرور ناجائز ہیں، مگر ان سے زیارت کہ سنت ہے بدعت نہ ہو جائے گی۔ جیسے نماز میں قرآن شریف غلط پڑھنا، رکوع و سجود صحیح نہ کرنا، طہارت ٹھیک نہ ہونا عام عوام میں جاری و ساری ہے اس سے نماز بُری نہ ہو جائے گی۔ قبرِ مسلمان پر پھول رکھنا مستحب ہے، ائمہ دین فرماتے ہیں، وہ جب تک تر ہے تسبیحِ الٰہی کرے گا اس سے مردے کا دل بہلے گا۔ کما فی فتاوی الامام فقیہ النفس وغیرھا (جیسا کہ امام فقیہ النفس کے فتاوی وغیرہ میں ہے۔ ت)

فتاوی عالمگیریہ وغیرہما میں ہے: | وضع الورد والریاحین علی | قبروں پر گلاب وغیرہ خوشبودار پھول رکھنا | | :--- | :--- |

1 الفتاوى الكبرى لابن الحجر الهيتمى باب الجنائز دار الكتب العلمية بيروت ٢ / ٩ 2 الحاوى للفتاوى تنوير الحوالك في امكان رؤية النبي والملك دار الكتب العلمية بيروت ٢ / ٢٦٣ 3 سنن ابن ماجه ابواب الجنائز باب ماجاء في زيارة القبور ايچ ايم سعيد كمپنى كراچى ص ١١٤

| Al-qubooru hasan 1. | It is good. (T) | Calling this an innovation (bid'at) is also a misguidance of the Wahhabis these days, and Allah Almighty knows best.

(3) Allah Almighty granted His Beloved, peace and blessings of Allah be upon him, detailed knowledge of every particle of the first and the last, east and west, the Throne and the earth, and everything beneath the soil, and everything that has happened and will happen until the end of days. Its description is in our treatises 'Anbaa al-Mustafa', 'Khalis al-I'tiqad', 'al-Dawlat al-Makkiya', etc. Whoever says that the Noble Prophet, peace and blessings of Allah be upon him, did not have absolute knowledge of the unseen, or that the knowledge of the Prophet was equal to all other men, is an infidel. Imam Hujjat al-Islam al-Ghazali and other elders state:

| An-Nubuwwah hiya al-ittila' 'ala al-ghayb 2. | The meaning of Prophethood is to be informed of the unseen. (T) |

Allah Almighty says:

| "Alim ul-Ghayb fala yuzhiru 'ala ghaybihi ahada. Illa man-irtada min Rasulin" 3. Wallahu Ta'ala A'lam. | The Knower of the Unseen, He does not reveal His Unseen to anyone, except to a Messenger whom He has chosen. (T) |

(4) Kissing the thumbs upon hearing the holy name in the Adhan is recommended according to the details in the books of Fiqh like Radd al-Muhtar Hashiyah Durr al-Mukhtar, Jami' al-Rumuz Sharh Nuqayah, Fatawa Sufiya, and Kanz al-Ibad. Its detailed explanation is in our book 'Munir al-'Ayn fi Hukm Taqbil al-Abhamayn'. Opposing this is also the characteristic of Wahhabis nowadays, and Allah Almighty knows best.

(5) Intentionally skipping the congregational prayer without a Shari'a-compliant reason is a sin, and one who makes it a habit is a transgressor and misguided. It is recorded in Sahih Muslim from Abdullah bin Mas'ud, may Allah be pleased with him:

| Wa law annakum sallaytum fi buyutikum kama yusalli hadha al-mutakhallif fi baytihi latarakhtum sunnata nabiyyikum wa law taraktum sunnata nabiyyikum... | And if you were to pray in your houses as this one who stays behind prays in his house, you would surely leave the Sunnah of your Prophet; and if you were to [leave] your... | | ... taraktum | ... |

1. Fatawa Hindiyya, Kitab al-Karahiya, Chapter 16, Noorani Kutub Khana Peshawar, 5/351
2. Al-Mawahib al-Ladunniya, Al-Maqsad al-Thani, Al-Fasl al-Awwal, Al-Maktab al-Islami Beirut, 2/77
3. Al-Qur'an al-Karim, 72/26 & 27

| अल-क़ुबूरु हसन १ | वह अच्छा है। (त) | इसे बिदअत कहना भी आज कल वहाबियों की ही गुमराही है, वल्लाहु तआला आलम।

(३) अल्लाह अज़्ज़वजल ने अपने हबीब सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को तमाम उव्वलीन व आख़िरीन व पूर्व व पश्चिम व अर्श व फ़र्श व ज़मीन के नीचे और जो कुछ हो चुका और जो कुछ क़यामत तक होने वाला है, उसके ज़र्रे-ज़र्रे का विस्तृत ज्ञान प्रदान किया। इसका वर्णन हमारे रिसाला 'अनबाउल मुस्तफा' और 'खालिसुल एतिक़ाद' और 'अद्दौलतुल मक्किया' आदि में है। जो कहे कि हुज़ूर अकदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को ग़ैब का ज्ञान पूर्ण रूप से नहीं था या हुज़ूर का ज्ञान और सब आदमियों के बराबर है, वह काफिर है। इमाम हुज्जतुल इस्लाम गज़ाली आदि बुज़ुर्ग फरमाते हैं:

| अन-नबुव्वतु हिया अल-इत्तिलाउ अलल ग़ैब २ | नबूवत का अर्थ ग़ैब की जानकारी होना है। (त) |

अल्लाह अज़्ज़वजल फरमाता है:

| "आलिमुल ग़ैबि फ़ला युज़हिरु अला ग़ैबिही अहदा। इल्ला मनि-र्तदा मिर-रसूल" ३। वल्लाहु तआला आलम। | वह ग़ैब का जानने वाला है, तो वह अपने ग़ैब पर किसी को भी हावी नहीं करता। सिवाय उन रसूलों के जिन्हें उसने चुन लिया है। (त) |

(४) अज़ान में नामे अकदस सुनकर अंगूठे चूमना फ़िक़्ह की किताबों 'रद-उल-मुह्तार हाशियह दुर्र-ए-मुख्तार' व 'जामि-उर-रुमूज़ शरह नुक़ायह' व 'फतावा सूफिया' व 'कन्ज़-उल-इबाद' के स्पष्टीकरण के अनुसार मुस्तहब है। इसका विस्तार से वर्णन हमारी किताब 'मुनीर-उल-ऐन फ़ी हुक्म तक़्बील अल-अभामैन' में है। आज कल इस पर इनकार करना भी वहाबियों का तरीका है। वल्लाहु तआला आलम।

(५) बिना किसी शरीअत की वजह के जानबूझकर जमाअत छोड़ना गुनाह है और इसका आदि (आदत रखने वाला) फ़ासिक व गुमराह है। सहीह मुस्लिम शरीफ में हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है:

| व लौ अन्नकुम सल्लयतुम फ़ी बुयूतिकुम कमा युसल्ली हाज़ल मुतख़ल्लिफ़ु फ़ी बैतिही ल-तरकतुम सुन्नता नबिय्यिकुम व लौ तरकतुम सुन्नता नबिय्यिकुम... | और अगर तुम ने घरों में नमाज़ पढ़ी जैसा

कि यह जमाअत छोड़ने वाला अपने घर में पढ़ता है, तो तुम अपने नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की सुन्नत छोड़ दोगे और अगर तुम ने अपने... | | ... तरकतुम | ... |

---

1. फ़तावा हिन्दिया, किताबुल कराहिया, बाब १६, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, ५/३५१
2. अल-मवाहिबुल लदुननिया, अल-मक़्सद अल-थानी, अल-फ़स्ल अल-अव्वल, अल-मक़्तब अल-इस्लामी बेरूत, २/७७
3. अल-क़ुरआन अल-करीम, ७२/२६ और २७

पृष्ठ २८४/७५०

| القبور حسن ۱ ۔ | اچھا ہے۔ ت) | اسے بدعت کہنا بھی آج کل وہابیہ ہی کی ضلالت ہے، واللہ تعالٰی اعلم (۳) اللہ عزوجل نے اپنے حبیب صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کو تمام اولین و آخرین و شرق و غرب و عرش و فرش و ماتحت الثرٰی و جملہ ماکان و مایکون الی آخر الایام کے ذرے ذرے کا علم تفصیلی عطا فرمایا اس کا بیان ہمارے رسالہ انباء المصطفٰی و خالص الاعتقاد والدولۃ المکیہ وغیرہما میں ہے۔ جو کہے حضور اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کو علم غیب مطلقانہ تھا یا حضور کا علم اور سب آدمیوں کے برابر ہے وہ کافر ہے، امام حجتہ الاسلام غزالی وغیرہ اکابر فرماتے ہیں:

| النبوۃ ہی الاطلاع علی الغیب ۲ ۔ | نبوت کا معنی غیب پر مطلع ہونا ہے۔ ت) |

اللہ عزوجل فرماتا ہے:

| "عٰلِمُ الْغَیْبِ فَلَا یُظْهِرُ عَلٰی غَیْبِهٖۤ اَحَدًاۙ اِلَّا مَنِ ارْتَضٰی مِنْ رَّسُوْلٍ" ۳۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ | غیب کا جاننے والا تو اپنے غیب پر کسی کو مسلط نہیں کرتا سوائے اپنے پسندیدہ رسولوں کے۔(ت) |

(۴) اذان میں نام اقدس سن کر انگوٹھے چومنا حسب تصریح کتب فقہ ردالمحتار حاشیہ در مختار و جامع الرموز شرح نقایہ وفتاوٰی صوفیہ و کنز العباد مستحب ہے۔ اس کا مبسوط بیان ہماری کتاب منیر العین فی حکم تقبیل الابہامین میں ہے اس پر انکار بھی آج کل شعارِ وہابیہ ہے واللہ تعالٰی اعلم۔

(۵) بلاوجہ شرعی عمداً ترک جماعت گناہ ہے اور اس کا عادی فاسق گمراہ ہے صحیح مسلم شریف میں عبداللہ بن مسعود رضی اللہ تعالٰی عنہ سے ہے:

| ولو انكم صليتم في بيوتكم كما يصلي هذا المتخلف في بيته لتركتم سنة نبيكم ولو تركتم سنة نبيكم... |

اور اگر تم نے گھروں میں نماز پڑھی جیسا کہ یہ تارکِ جماعت اپنے گھر میں پڑھتا ہے تو تم اپنے نبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی سنت چھوڑو گے اور اگر تم نے اپنے... | | ... ترکتم | ... |

---

۱ فتاویٰ ہندیہ کتاب الکراھیۃ الباب السادس عشر نورانی کتب خانہ پشاور ۵/ ۳۵۱ ۲ المواھب اللدنیہ المقصد الثانی الفصل الاول المکتب الاسلامی بیروت ۲/ ۷۷ ۳ القرآن الکریم ۷۲/ ۲۶ و ۲۷

Fatawa Razawiyya Volume 29

| Arabic: Sunnata nabiyyikum ladalaltum 1 AH, i.e., straying from the path of the pious. And if someone considers it permissible or takes it lightly, then it is straying in religion, and we seek refuge in Allah, the Lord of the worlds. | Urdu Translation: If you leave the Sunnah of your Prophet, you will go astray, meaning you will deviate from the path of the God-fearing people. And if someone considers leaving the congregational prayer as permissible or takes it lightly, then this is straying from religion. Seeking refuge in Allah, the Lord of the worlds (Translator). |

Another point that is extremely necessary and useful is that asking a religious ruling (Mas'ala) from Deobandis or paying any heed to their words in any matter is absolutely not permissible. All the scholars of the two holy sanctuaries (Haramain Tayyibain) have unanimously declared Deobandis as apostates and have stated: 'Whoever doubts their disbelief and punishment has himself disbelieved.' 2. (Translation: One who doubts their disbelief and punishment also becomes an infidel - Translator). Anyone who, after being aware of their cursed statements, considers them Muslims, let alone having doubts about their disbelief, is also an infidel. See Hussam-ul-Haramain Shareef. And Allah is the Guide.

Mas'ala 118 to 120: From Mewandi Post Office Shahi, District Bareilly, sent by Sayyid Amir Alam Hasan Sahib, 12 Shawwal 1331 AH.

What do the scholars of religion say regarding these matters:

(1) Zaid says that whatever happened and will happen, it has happened and will happen only by the command of God. Then why is man held accountable and why is he made liable for punishment? What work did he do that made him deserve punishment? Whatever He has written in destiny, that is what happens, because it is proven from the Holy Quran that not even an atom moves without His command. Then what work did the person do by his own choice that he became a dweller of Hell, or an infidel, or a transgressor? If bad deeds are written in destiny, he will do bad deeds, and if good ones are written, he will do good. In any case, he is subject to destiny; then why is he made a criminal? Stealing, adultery, murder, etc., whatever is written in a person's destiny, he has to do the same; similarly for good deeds.

(2) When a woman had intimacy with a man and she became pregnant, why was that pregnancy called an 'illegitimate pregnancy' (Hamal-e-Haraam) and why was that act

of intimacy called adultery (Zina)? And when a child was born from this pregnancy, why was that child...

---

1. Sahih Muslim, Kitab al-Masajid, Bab Bayan Fadl al-Jama'ah etc., Qadeemi Kutub Khana Karachi, 1/232.
2. Hussam-ul-Haramain, Maktaba Nabawiyyah Lahore p. 13, Maktaba Ahl-e-Sunnat Bareilly p. 94.

फतावा रज़विया जिल्द 29

| अरबी: सुन्नता नबिय्यिकुम ल-दलल्तुम 1 हि., अर्थात परहेज़गारों के रास्ते से गुमराह होना। और अगर कोई इसे जायज़ समझे या हल्का माने, तो यह दीन में गुमराह होना है, और हम अल्लाह, दुनिया के रब की पनाह चाहते हैं। | उर्दू अनुवाद: नबी की सुन्नत छोड़ दी तो गुमराह हो जाओगे, यानी मुत्तकी (परहेज़गार) लोगों के रास्ते से हट जाओगे। और अगर किसी ने जमात छोड़ने को हलाल जाना या हल्का समझा तो यह दीन से गुमराह होना है। अल्लाह रब्बुल आलमीन की पनाह (त) |

एक यह बात अत्यंत आवश्यक और उपयोगी है कि देवबंदियों से कोई मसला (धार्मिक प्रश्न) पूछना या किसी मसले में उनकी बात पर कान धरना (ध्यान देना) हरगिज़ हरगिज़ जायज़ नहीं है। हरमैन तय्यिबैन (मक्का और मदीना) के सभी विद्वानों ने सर्वसम्मति से देवबंदियों को मुर्तद (धर्मत्यागी) लिखा है और फरमाया है: 'जिसने उनके कुफ्र (अविश्वास) और अज़ाब (दंड) में शक किया, वह भी काफिर हो गया।' 2. (जिसने उनके कुफ्र और अज़ाब में शक किया वह भी काफिर हो गया - त)। जो उनके शापित कथनों से अवगत होकर उन्हें मुसलमान जानना तो दूर, उनके कुफ्र में शक भी करे, वह भी काफिर है। हुस्साम-उल-हरमैन शरीफ़ देखें। और अल्लाह ही मार्गदर्शक है।

मसला 118 से 120: मेवंडी डाकखाना शाही, ज़िला बरेली से, प्रेषक सैयद अमीर आलम हसन साहब, 12 शव्वाल 1331 हिजरी।

दीन के विद्वान इन मसलों में क्या फरमाते हैं:

(1) ज़ैद कहता है कि जो हुआ और होगा, सब खुदा के हुक्म से ही हुआ और होगा, फिर बंदे (इंसान) की पकड़ क्यों है और उसे सज़ा का पात्र क्यों ठहराया गया? उसने ऐसा कौन सा काम किया जो अज़ाब का हकदार हुआ? जो कुछ उसने तकदीर (भाग्य) में लिख दिया है वही होता है क्योंकि कुरान पाक से साबित हो रहा है कि उसके हुक्म के बिना एक ज़र्रा (कण) भी नहीं हिलता। फिर बंदे ने कौन सा अपने अधिकार से वह काम किया जो वह जहन्नमी (दोज़खी) हुआ या काफिर या फासिक (पापी)? जो बुरे काम तकदीर में लिखे होंगे वह बुरे काम करेगा और जो भले लिखे होंगे वह भले। बहरहाल, वह तकदीर के अधीन है, फिर क्यों उसे मुजरिम बनाया जाता है? चोरी करना, ज़िना करना, कत्ल करना आदि जो बंदे की तकदीर में लिख दिए गए हैं, वही करना है; वैसे ही नेक काम करना है।

(2) जब किसी औरत ने किसी व्यक्ति से निकटता (शारीरिक संबंध) की और उसे गर्भ ठहर गया, तो उस गर्भ को 'हराम का गर्भ' (हमल-ए-हराम) क्यों कहा गया और उसके इस कृत्य को ज़िना (व्यभिचार) क्यों कहा गया? और जब इस गर्भ से बच्चा पैदा हुआ तो उस बच्चे को...

---

1. सहीह मुस्लिम, किताब अल-मसाजिद, बाब बयान फज़्ल अल-जमाअत आदि, कदीमी कुतुब खाना कराची 1/232।
2. हुस्साम-उल-हरमैन, मकतबा नबविया लाहौर पृष्ठ 13, मकतबा अहले सुन्नत बरेली पृष्ठ 94।

पृष्ठ 285 / 750

| سنة نبيكم لضللتم ۱ ه اى ضلال عن سبيل المتقين وان استحله او استخفه فضلال فى الدين ، والعياذ بالله رب العالمين۔ | نبی کی سنت چھوڑ دی تو گمراہ ہو جاؤ گے اھ یعنی متقی لوگوں کے راستے سے ہٹ جاؤ گے اور اگر کسی نے ترک جماعت کو حلال جانا یا ہلکا سمجھا تو یہ دین سے گمراہ ہونا ہے۔ اللہ رب العالمین کی پناہ (ت) |

ایک یہ بات نہایت ضروری و بکار آمد ہے کہ دیوبندیوں سے کوئی مسئلہ پوچھنا یا کسی مسئلہ میں اُن کی بات پر کان رکھنا ہر گز ہر گز جائز نہیں، تمام علمائے حرمین طیبین بالاتفاق دیوبندیوں کو مرتد لکھ چکے اور فرما دیا ۔ من شك في كفره وعذابه فقد كفر ۲۔ (جس نے اس کے کفر و عذاب میں شک کیا وہ بھی کافر ہو گیا۔ت) جو اُن کے اقوال ملعونہ پر مطلع ہو کر انہیں مسلمان جاننا در کنار ان کے کفر میں شک بھی کرے وہ بھی کافر ہے۔ دیکھو حسام الحرمین شریف والله الهادي۔

مسئلہ ۱۱۸ تا ۱۲۰: از میونڈی ڈاکخانہ شاہی ضلع بریلی مرسلہ سید امیر عالم حسن صاحب ۱۲ شوال ۱۳۳۱ھ

کیا فرماتے ہیں علمائے دین ان مسائل میں کہ :

(۱) زید کہتا ہے جو ہوا اور ہو گا سب خدا کے حکم سے ہی ہوا اور ہو گا پھر بندہ سے کیوں گرفت ہے اور اس کو کیوں سزا کا مرتکب ٹھہرایا گیا اس نے کون سا کام کیا جو مستحق عذاب کا ہوا جو کچھ اس نے تقدیر میں لکھ دیا ہے وہی ہوتا ہے کیونکہ قرآن پاک سے ثابت ہو رہا ہے کہ بلا حکم اُس کے ایک ذرہ نہیں ہلتا۔ پھر بندے نے کون سا اپنے اختیار سے وہ کام کیا جو دوزخی ہوا یا کافر یا فاسق، جو بُرے کام تقدیر میں لکھے ہوں گے تو بُرے کام کرے گا اور بھلے لکھے ہوں گے تو

بھلے ، بہرحال تقدیر کا تابع ہے پھر کیوں اس کو مجرم بنایا جاتا ہے؟ چوری کرنا، زنا کرنا، قتل کرنا وغیرہ وغیرہ جو بندہ کی تقدیر میں لکھ دیئے ہیں وہی کرنا ہے ایسے ہی نیک کام کرنا ہے۔

(۲) جب کسی عورت نے کسی شخص سے قربت کی اور اس کو حمل رہ گیا تو اس حمل کو حمل حرام کیوں کہا گیا اور اس کے اس فعلِ قربت کو زنا کیوں کہا گیا؟ اور جب اس حمل سے بچہ پیدا ہوا تو اس بچے کو

---

۱ صحیح مسلم کتاب المساجد باب بیان فضل الجماعة الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ۱ / ۲۳۲ ۲ حسام الحرمین مکتبہ نبویہ لاہور ص ۱۳ مکتبہ اہل سنت بریلی ص ۹۴

Volume 29 Fatawa Razawiya

...why should it be called haram (prohibited/unlawful)? Because whatever actions a servant performs, they are all by destiny and by the command of God. So now, did this woman perform those actions by her own power and command? No, she did exactly what was written in destiny; then how can it be called adultery or haram? (3) Was the soul of that child pure or impure? Or was it one of those souls created on the day of eternity (Azal), or someone else? And what is the reason that the child became illegitimate (harami) while the soul remains pure? No, the soul must also be like that; how can the child be illegitimate while the soul is pure? That's all.

The Answer: (1) Zaid is astray and irreligious. If someone hits him with a shoe, why does he get angry? That too was in destiny. If someone usurps his property, why does he get upset? That too was in destiny. This is a deception of Satanic actions, suggesting that we have to do as it was written; rather, He knew what we were going to do and wrote it based on His knowledge. (2) This is the same deception of the cursed Iblis (Satan) that he gives to the irreligious. Knowledge does not compel anyone. The woman was going to commit adultery, therefore He, knowing her future state through His knowledge of the unseen (Ilm-ul-Ghaib), wrote it down. Had she been one to do what is lawful (halal), she would have been written as such. (3) Souls were not created in eternity (Azal), yes, they were created two thousand years before the body. It is not the fault of the illegitimate child (walad-ul-haram) himself, but since he was born out of a prohibited act (haram), what doubt is there in him being illegitimate? However, this does not necessitate the impurity of his soul. A soul is pure from disbelief and misguidance; the soul of an irreligious person is impure, even if they are legitimate (walad-ul-halal). And the soul of a religious person is pure, even if their birth was from a prohibited act. How can the pureness of the soul erase the fact that the body's seed was formed from a prohibited act? There is no benefit for an ignorant person to delve into such ignorance and matters, except that Satan may lead them astray in some valley and destroy them. And Allah Almighty knows best.

Page 286 of 750

जिल्द 29 फतावा रजविया

...हराम क्यों कहा जाए? क्योंकि जितने कार्य बंदा करता है, वे सब तक़दीर से और ख़ुदा के हुक्म से होते हैं, तो क्या इस औरत ने अपनी शक्ति और हुक्म से उन कार्यों को किया? नहीं, उसने वही किया जो तक़दीर में लिखा था, फिर इसे ज़िना (व्यभिचार) या हराम कहना कैसे संभव है? (3) उस बच्चे की रूह (आत्मा) पाक (पवित्र) थी या नापाक? या उन रूहों में से थी जो रोज़-ए-अज़ल (सृष्टि के आरंभ) में पैदा हुई थीं या कोई और? और इसका क्या कारण है कि बच्चा हरामी (नाजायज) हो गया और रूह पाक रहे? नहीं, रूह भी वैसी ही होगी, बच्चा हरामी और रूह पाक कैसे हो सकता है? बस इतना ही।

अल-जवाब (उत्तर): (1) ज़ैद गुमराह और बेदीन (अधर्मी) है। यदि उसे कोई जूता मारे तो वह क्यों नाराज़ होता है? वह भी तो तक़दीर में था। यदि कोई उसका माल हड़प ले तो वह क्यों बिगड़ता है? वह भी तक़दीर में था। यह शैतानी कार्यों का धोखा है कि जैसा लिख दिया गया है हमें वैसा ही करना पड़ता है, बल्कि जैसा हम करने वाले थे, उसने अपने इल्म (ज्ञान) से जानकर वही लिख दिया। (2) यह वही शापित इब्लिस (शैतान) का धोखा है जो वह बेदीनों को दिया करता है। इल्म किसी को मजबूर नहीं करता। औरत ज़िना करने वाली थी, इसलिए उसने उसके भविष्य की स्थिति को अपने इल्म-ए-ग़ैब (परोक्ष ज्ञान) से जानकर लिख लिया। अगर वह हलाल (वैध कार्य) करने वाली होती तो उसे हलाल वाली ही लिखा जाता। (3) रूहें अज़ल में पैदा नहीं हुईं, हाँ, शरीर से दो हज़ार साल पहले बनीं। वलद-उल-हराम (नाजायज संतान) का अपना कोई दोष नहीं है, लेकिन जब वह हराम से पैदा हुआ तो वलद-उल-हराम होने में क्या शक है? इससे उसकी रूह की नापाकी ज़रूरी नहीं। रूह कुफ़्र और गुमराहियत से पाक होती है; बेदीन की रूह नापाक है चाहे वह वलद-उल-हलाल (जायज संतान) ही क्यों न हो। और दीनदार की रूह पाक है चाहे उसकी पैदाइश हराम से ही क्यों न हुई हो। रूह के पाक होने से शरीर के नुत्फ़े(बीज) का हराम से बनना कैसे मिट गया? अज्ञानी के लिए ऐसी अज्ञानता और ऐसी बातों में गहराई से उतरने का कोई फ़ायदा नहीं, सिवाय इसके कि शैतान उसे किसी घाटी में भटकाकर तबाह कर दे। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

पृष्ठ 286/750

حرام کیوں کہا جائے؟ کیونکہ جتنے افعال بندہ کرتا ہے وہ سب تقدیر سے اور حکم خدا سے ہوتے ہیں تو اب اس عورت نے کیا اپنی قدرت اور حکم سے ان فعلوں کو کرلیا، نہیں وہی کیا جو تقدیر میں لکھ دیا تھا پھر اس کو زنا یا حرام کہنا کیونکر ہے؟ (۳) اُس بچے کی روح پاک تھی یا ناپاک؟ یا اُن روحوں میں کی روح تھی جو روزِ ازل میں پیدا ہوئی تھیں یا کوئی اور؟ اور اس کا کیا سبب جو بچہ حرامی ہو گیا اور روح پاک رہے نہیں روح بھی ایسی ہے جیسا بچہ حرامی کیونکر ہو سکتا ہے؟ فقط

الجواب: (۱) زید گمراہ بے دین ہے، اُسے کوئی جوتا مارے تو کیوں ناراض ہوتا ہے، یہ بھی تو تقدیر میں تھا۔ اس کا کوئی مال دبائے تو کیوں بگڑتا ہے، یہ بھی تقدیر میں تھا۔ یہ شیطانی فعلوں کا دھوکا ہے کہ جیسا لکھ دیا ایسا ہمیں کرنا پڑتا ہے بلکہ جیسا ہم کرنے والے تھے اُس نے اپنے علم سے جان کر وہی لکھا ہے۔ (۲) یہ وہی ابلیس ملعون کا دھوکا ہے جو بددینوں کو دیا کرتا ہے علم کسی کو مجبور نہیں کرتا۔ عورت زنا کرنے والی تھی اس لیے اس کا یہ آئندہ حال اس نے اپنے علم غیب سے جان کر لکھ لیا۔ اگر وہ حلال کرنے والی ہوتی تو اسے حلال والی ہی لکھا جاتا۔ (۳) رُوحیں ازل میں پیدا نہ ہوئیں، ہاں جسم سے دو ہزار برس پہلے بنیں، ولد الحرام کا اپنا قصور نہیں مگر جبکہ وہ حرام سے پیدا ہوا ولد الحرام ہونے میں کیا شک ہے، نہ اس سے اس کی روح کی ناپاکی لازم۔ روح کفر و ضلالت سے پاک ہوتی ہے، بد دین کی روح ناپاک ہے اگر چہ ولد الحلال ہو۔ اور دیندار کی رُوح پاک ہے اگر چہ اس کی ولادت حرام سے ہو، روح کے پاک ہونے سے جسم کا نطفہ حرام سے بننا کیونکر مٹ گیا۔ بے علم کو ایسی جہالتوں اور ایسی باتوں میں خوض سے فائدہ نہیں ہوتا سوائے اس کے کہ شیطان کسی گھاٹی میں راہ مار کر ہلاک کر دے۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

Volume 29 Fatawa Ridawiyya

Treatise Thalj al-Sadr li-Iman al-Qadr 1325 AH (Coolness of the chest, due to faith in predestination)

In the name of Allah, the Most Gracious, the Most Merciful.

Problem 121: From district Kheri, kingdom of Awadh, village Katwara, sent by Sayyid Muhammad Muzaffar Husain Sahib son of Sayyid Ridā Husain Sahib, Taluqdar of Katwara, 28 Muharram al-Haram 1325 AH.

What do the scholars of religion say regarding this problem: In the Quran, there is a verse whose meaning is, "O Muhammad! Do not guide these individuals any more; there is no eternal will for Islam for them, they will not become Muslims." And for the proof of every matter, most Quranic verses are present; so then how can any matter occur contrary to the will of the Sustainer? Because 'Mashiyat' (will) means the will of the Lord of the worlds. So when Allah Almighty has intended some action, how could a servant do otherwise? And when Allah had already intended to keep a human being a disbeliever before birth, how could he now become a Muslim? "He guides whom He wills." [1]

[1] Al-Qur'an al-Karim 2/272

जिल्द 29 फतावा रिज़विया

रिसाला थलज अल-सद्र लि-ईमान अल-क़द्र 1325 हिजरी (सीने की ठंडक, तक़दीर पर ईमान के सबब)

बिस्मिल्लाह हिर्रहमान निर्रहीम

मसला 121: जिला खीरी, अवध देश, मौज़ा कटवारा, भेजने वाले सय्यद मुहम्मद मुज़फ़्फ़र हुसैन साहब सुपुत्र सय्यद रज़ा हुसैन साहब, ताल्लुकेदार कटवारा, 28 मुहर्रम-उल-हराम 1325 हिजरी।

धर्म के विद्वान इस मसले में क्या फरमाते हैं (क्या फरमाते हैं उलेमा-ए-दीन इस मसले के बारे में): कुरआन में जिस आयत के मायने ये हैं कि "ऐ मुहम्मद! इन लोगों को और ज्यादा हिदायत न करो, इनके लिए इस्लाम के वास्ते मशियात-ए-अज़ली (शाश्वत इच्छा) नहीं है, ये मुसलमान न होंगे"। और हर बात के सबूत में अक्सर कुरआनी आयतें मौजूद हैं, तो फिर पालनहार की मर्जी के खिलाफ कोई बात कैसे हो सकती है, क्योंकि 'मशियात' के मायने रब्ब-ए-आलम के इरादे के हैं, तो जब किसी काम का इरादा अल्लाह तआला ने कर लिया तो बन्दा उसके खिलाफ कैसे कर सकता था। और अल्लाह ने जब पैदाइश से पहले ही किसी इंसान को काफिर रखने का इरादा कर लिया था, तो अब वो मुसलमान कैसे हो सकता है? "वह जिसे चाहता है हिदायत देता है।" [1]

[1] अल-कुरआन अल-करीम 2/272

पेज 288/750

رسالہ ثلج الصدر لایمان القدر ۱۳۲۵ھ (سینے کی ٹھنڈک، ایمانِ تقدیر کے سبب)

بسم اللہ الرحمن الرحیم ط

مسئلہ ۱۲۱: از ضلع کھیری ملک اودھ موضع کٹوارہ مرسلہ سید محمد مظفر حسین صاحب خلف سید رضا حسین صاحب ،تعلقہ دار کٹوارہ ۲۸، محرم الحرام ۱۳۲۵ھ

چہ می فرمایند علمائے دین دریں مسئلہ (کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ کے بارے میں ،ت) قرآن میں جس آیت کے معنی یہ ہیں کہ "اے محمد ! ان اشخاص کو زیادہ ہدایت مت کرو، ان کے لئے اسلام کے واسطے مشیت ازلی نہیں ہے ، یہ مسلمان نہ ہوں گے"۔ اور ہر امر کے ثبوت میں اکثر آیات قرآنی موجود ہیں ، تو پس کیونکر خلاف مشیت پروردگار کوئی امر ظہور پذیر ہو سکتا ہے ، کیونکہ مشیت کے معنی ارادہ پروردگار عالم کے ہیں ، تو جب کسی کام کا ارادہ اللہ تعالیٰ نے کیا تو بندہ اس کے خلاف کیونکر کرسکتا تھا۔ اور اللہ نے جب قبل پیدائش کسی بشر کے ارادہ اس کے کافر رکھنے کا کرلیا تھا تو اب وہ مسلمان کیونکر ہو سکتا ہے " یھدی من یشاء ط " ۱ ۔

۱ القرآن الکریم ۲ / ۲۷۲

Fatawa Rizvia, Volume 29

...the clear meaning of this is that whatever a person desires, that will happen. Thus, man is compelled; how can there be accountability for why he did a certain work, because at that time guidance from the Almighty was granted to him, which he chose. There is a clear difference between knowledge and will; here 'man yasha'u' (whoever He wills) manifests His desire. Why then should a person be brought to account? Thus, it is known that when Allah the Pure wants to make any human from the people of Paradise, He gives him such guidance.

The Answer:

[Arabic Column]: O Allah! Guide us to the truth and correctness. Our Lord! Let not our hearts deviate after You have guided us and grant us from Yourself mercy. Indeed, You are the Bestower. My Lord! I seek refuge in You from the promptings of the devils, and I seek refuge in You, my Lord, lest they be present with me.

[Urdu Column]: O Allah! I seek guidance of truth and correctness from You. O our Lord! Let not our hearts deviate after You have guided us, and grant us mercy from Yourself; surely You are the Great Giver. O my Lord! I seek Your protection from the whispers of the devils, and O my Lord! I seek Your protection from them coming near me. 12 (T)

Allah Almighty created servants and granted them ears, eyes, hands, feet, tongue, etc. as instruments and limbs, and inspired them with the method of putting them to use. And He made them subordinate and obedient to their will so that they might attain their benefits and avoid harms. Then He distinguished them with the noble essence of the highest degree, namely intellect, which raised the status of man over all animals. He granted intellect the power to perceive these matters. External senses could not distinguish between good and evil, benefit and harm. Then He did not leave him helpless and unaided with only his own understanding; yet there were millions of things that intellect itself could not perceive, and in those things where perception was possible, it had no powerful hold to protect from slipping and stumbling. Therefore, by sending Prophets, revealing Books, and clearly expressing the goodness and badness of every little thing, He completed His blessing perfectly and left no room for excuse. "So that mankind will have no argument against Allah after the messengers." 1 (That there remains no excuse for people before Allah after the messengers). The path of truth became clearer than the sun. No veil remained over guidance and misguidance. "There is no compulsion in..."

1 Al-Quran al-Kareem 4/ 165

फ़तावा रिज़विया, खंड 29

...इसका स्पष्ट अर्थ यह है कि जिस बात की उसे इच्छा होगी, वही होगा। तो मनुष्य विवश है, उससे पूछताछ कैसे हो सकती है कि उसने अमुक कार्य क्यों किया, क्योंकि उस समय उसे ईश्वर की ओर से मार्गदर्शन प्राप्त हो गया था जिसे उसने चुना। ज्ञान और इच्छा में स्पष्ट अंतर है, यहाँ 'मं यशाउ' (जिसे वह चाहता है) से उसकी इच्छा प्रकट होती है। फिर मनुष्य को पूछताछ के दायरे में क्यों लाया जाए? अतः यह ज्ञात हुआ कि जब अल्लाह पाक किसी मनुष्य को स्वर्गवासियों में से बनाना चाहता है, तो उसे वैसा ही मार्गदर्शन प्राप्त होता है।

उत्तर:

[अरबी कॉलम]: ऐ अल्लाह! हमें सत्य और सुसंगति का मार्गदर्शन दे। ऐ हमारे रब! हमारे दिलों को टेढ़ा न कर इसके बाद कि तूने हमें मार्गदर्शन दिया, और हमें अपने पास से दया प्रदान कर। निस्संदेह तू ही बड़ा देने वाला है। ऐ मेरे रब! मैं शैतानों के फुसफुसाहटों से तेरी शरण चाहता हूँ, और ऐ मेरे रब! मैं तेरी शरण चाहता हूँ इससे कि वे मेरे पास आएं।

[उर्दू कॉलम]: ऐ अल्लाह! मैं तुझसे सत्य और सुसंगति का याचक हूँ। ऐ हमारे रब! हमारे दिलों को टेढ़ा न कर इसके बाद कि तूने हमें मार्गदर्शन दिया, और हमें अपने पास से दया प्रदान कर, निस्संदेह तू ही बड़ा देने वाला है। ऐ मेरे रब! मैं शैतानों के फुसफुसाहटों से तेरी शरण चाहता हूँ, और ऐ मेरे रब! मैं तेरी शरण चाहता हूँ इससे कि वे मेरे पास आएं। 12 (त)

अल्लाह अज़्वजल ने बंदे बनाए, और उन्हें कान, आँख, हाथ, पैर, ज़बान आदि अंग और इंद्रियां प्रदान कीं और उन्हें उपयोग में लाने का तरीका सिखाया। और उन्हें उनकी इच्छा के अधीन और आज्ञाकारी बना दिया ताकि वे अपने लाभ प्राप्त करें और नुकसान से बचें। फिर उन्हें सर्वोच्च स्तर के नेक तत्व अर्थात बुद्धि से विशिष्ट किया जिसने सभी जानवरों पर मनुष्य का दर्जा बढ़ाया। बुद्धि को इन मामलों को समझने की शक्ति दी। बाहरी इंद्रियां भलाई और बुराई, लाभ और हानि को नहीं पहचान सकती थीं। फिर उसने उसे केवल उसकी समझ पर असहाय और बेसहारा नहीं छोड़ा; अभी भी लाखों बातें थीं जिन्हें बुद्धि स्वयं नहीं समझ सकती थी, और जिन्हें समझना संभव था, उनमें फिसलने और ठोकर खाने से बचने के लिए उसके पास कोई मज़बूत सहारा नहीं था। इसलिए नबियों को भेजकर, किताबें उतारकर, छोटी-छोटी बातों की अच्छाई और बुराई को अच्छी तरह समझाकर अपनी नियामत पूरी कर दी और किसी बहाने की जगह बाकी न छोड़ी "ताकि रसूलों के बाद लोगों के पास अल्लाह के

सामने कोई बहाना न रहे"। 1 (कि रसूलों के बाद अल्लाह के यहाँ लोगों को कोई बहाना न रहे)। सत्य का मार्ग सूर्य से भी अधिक स्पष्ट हो गया। मार्गदर्शन और पथभ्रष्टता पर कोई पर्दा नहीं रहा "धर्म में कोई ज़बरदस्ती नहीं..."

---

1 अल-कुरान अल-करीम 4/ 165

کے صاف معنی یہ ہیں کہ جس امر کی طرف اس کی خواہش ہوگی وہ ہوگا۔ پس انسان مجبور ہے اس سے باز پرس کیونکر ہو سکتی ہے کہ اس نے فلاں کام کیوں کیا، کیونکہ اس وقت اس کو ہدایت از جانب باری عز اسمہ ہو گئی وہ اختیار کرے گا۔ علم اور ارادہ میں بین فرق ہے، یہاں من یشاء سے اس کی خواہش ظاہر ہوتی ہے۔ پھر انسان باز پرس میں کیوں لایا جائے، پس معلوم ہوا کہ جب اللہ پاک کسی بشر کو اہل جنان سے کرنا چاہتا ہے تو اس کو ایسی ہی ہدایت ہوتی ہے۔

الجواب:

[عربی کالم]: اللھم ھدایۃ الحق والصواب، ربنا لا تزغ قلوبنا بعد اذ ھدیتنا وھب لنا من لدنك رحمۃ انك انت الوھاب، رب انی اعوذ بك من ھمزات الشیطین واعوذ بك رب ان یحضرون۔

[اردو ترجمہ کالم]: اے اللہ ! میں تجھ سے حق اور درستی کا طلبگار ہوں، اے ہمارے رب ! ہمارے دل ٹیڑھے نہ کر بعد اس کے کہ تو نے ہمیں ہدایت دی، اور ہمیں اپنے پاس سے رحمت عطا کر، بیشک تو ہے بڑا دینے والا، اے میرے رب ! تیری پناہ شیاطین کے وسوسوں سے، اور اے میرے رب ! تیری پناہ اس سے کہ وہ میرے پاس آئیں ۱۲ (ت)

اللہ عزوجل نے بندے بنائے، اور انھیں کان، آنکھ، ہاتھ، پاؤں، زبان وغیرہ آلات و جوارح عطا فرمائے اور انھیں کام میں لانے کا طریقہ الہام کیا۔ اور ان کے ارادے کا تابع و فرماں بردار کردیا کہ اپنے منافع حاصل کریں اور مضرتوں سے بچیں۔ پھر اعلیٰ درجے کے شریف جوہر یعنی عقل سے ممتاز فرمایا جس نے تمام حیوانات پر انسان کا مرتبہ بڑھایا۔ عقل کو ان امور کے ادراک کی طاقت بخشی۔ خیر و شر، نفع و ضر یہ حواس ظاہری نہ پہچان سکتے تھے۔ پھر اسے بھی فقط اپنی

سمجھ پر بے کس و بے یاور نہ چھوڑا، ہنوز لاکھوں باتیں جن کو عقل خود ادراک نہ کر سکتی تھی، اور جن کا ادراک ممکن تھا ان میں لغزش کرنے، ٹھوکر کھانے سے پناہ کے لئے کوئی زبردست دامن ہاتھ میں نہ رکھتی تھی۔ لہذا انبیاء بھیج کر، کتابیں اتار کر ذرا ذرا بات کا حسن و قبح خوب جتا کر اپنی نعمت تمام و کمال فرمادی کسی عذر کی جگہ باقی نہ چھوڑی " لِئَلَّا یَکُونَ لِلنَّاسِ عَلَی اللہِ حُجَّۃٌ بَعْدَ الرُّسُلِ ط" 1 (کہ رسولوں کے بعد اللہ کے یہاں لوگوں کو کوئی عذر نہ رہے ت) حق کا راستہ آفتاب سے زیادہ واضح ہو گیا۔ ہدایت و گمراہی پر کوئی پردہ نہ رہا " لَا اِکْرَاہَ فِی

---

1 القرآن الکریم ۴/ ۱۶۵

Fatawa Rizvia Volume 29

"[There is] no compulsion in religion. The right course has become clear from the wrong." (1) (Translation from Arabic: Al-Quran 2:256). Despite this, being a creator of anyone—be it an essence or an attribute, an action or a state, bringing a non-existent thing from non-existence into existence—this is solely His work. He did not give this power to anyone's choice, nor could anyone possess this choice, for all creatures are non-existent in their own essence. How can one non-existent being bring another non-existent being into existence? Bringing into existence is the attribute of Him who is the Absolute Truth and Absolute Existence in His own essence. Yes, out of His mercy and absolute self-sufficiency, He established the custom of action: when a servant intends an action and moves his limbs towards it, Allah Almighty creates that action by His will. For example, He gave hands and put in them the power to extend, contract, lift, and bend; He made the sword and put a sharp edge and cutting power in it. He made its lifting, positioning, and striking possible. He granted intellect to recognize friend and foe, gave the power to distinguish between good and evil, and by sending divine law (Sharia), He clearly explained the goodness and evil of rightful and wrongful killing. Zaid intended to lift the same sword shown by God, with hands made by God, and using the power given by God. It lifted by God's command. He then intended to bend it and strike Waleed's body; it bent by God's command and struck Waleed's body. So, all factors on which this strike depended were gifts from the Truth (Allah), and the strike itself occurred by the will of God. And now, the severing of Waleed's neck resulting from this strike will also be by Allah's creation. If He did not wish it, not just one Zaid, but all of mankind, jinn, and angels combined could not even move it, let alone lift it. And after lifting it by His command, if He did not wish it, even if the earth, sky, and mountains were all placed as a weight on the point of the sword, it would not bend even a hair's breadth. And after it reached by His command, if He did not wish it, let alone severing the neck, it was not possible for even a mark to appear. It has been experienced thousands of times in battles that swords struck and not even a scratch appeared; bullets hit and became cold upon reaching the body; after returning from the battlefield in the evening, bullets were found in the hair of soldiers' heads. Thus, everything that happened from Zaid was by the creation of God and the will of God. Zaid's role in it was only that he intended the killing of Waleed and directed his limbs towards it. Now, if Waleed is legally (according to Sharia) deserving of being killed, then there is no blame on Zaid; rather, he will be entitled to a great reward many times over, because he intended that

which Allah Almighty, through His messengers, declared as His will and His liked deed. But if it is an unjust killing, then Zaid is certainly blameworthy and deserving of a painful punishment because...

1. The Holy Quran 2 / 256 Page 290 of 750

फ़तावा रिज़विया जिल्द २९

"दीन में कोई ज़बरदस्ती नहीं है, बेशक नेक राह गुमराह से खूब जुदा हो गई है।" (१) (कुरान २:२५६)। इसके साथ-साथ, किसी का ख़ालिक़ (स्रष्टा) होना—चाहे वह ज़ात (सत्ता) हो या सिफ़त (गुण), फ़ेल (कर्म) हो या हालत (स्थिति), किसी नदारद (अस्तित्वहीन) चीज़ को अदम (शून्यता) से निकाल कर वजूद (अस्तित्व) का लिबास पहना देना—यह उसी का काम है। यह न तो उसने किसी के इख़्तियार (अधिकार) में दिया और न ही कोई इसे हासिल कर सकता था, क्योंकि तमाम मख़्लूक़ात (सृजन) अपनी ज़ात की हद में नेस्त (अस्तित्वहीन) हैं। एक नेस्त भला दूसरे नेस्त को हस्त (अस्तित्ववान) कैसे बना सकता है? हस्त बनाना उसी की शान है जो अपनी ज़ात से 'हस्त-ए-हक़ीक़ी' और 'हस्त-ए-मुतलक़' (परम अस्तित्व) है। हाँ, उसने अपनी रहमत और ग़िना-ए-मुतलक़ (परम आत्मनिर्भरता) से यह आदत जारी फ़रमाई है कि बंदा जिस काम का इरादा करे और अपने अंगों (जवारिह) को उधर फेरे, मौला तआला अपने इरादे से उसे पैदा फ़रमा देता है। मिसाल के तौर पर, उसने हाथ दिए, उनमें फैलने, सुकुड़ने, उठने और झुकने की ताक़त रखी; तलवार बनाई, उसमें धार और धार में काटने की शक्ति रखी। उसका उठाना, लगाना और वार करना मुमकिन बनाया। दोस्त और दुश्मन की पहचान के लिए अक़्ल (बुद्धि) बख़्शी, भले और बुरे में फ़र्क करने की ताक़त दी, और शरीअत (ईश्वरीय कानून) भेजकर हक़ और नाहक़ क़त्ल की अच्छाई-बुराई साफ़-साफ़ बता दी। ज़ैद ने वही ख़ुदा की बताई हुई तलवार, ख़ुदा के बनाए हुए हाथों और ख़ुदा की दी हुई ताक़त से उठाने का इरादा किया। वह ख़ुदा के हुक्म से उठ गई। फिर उसने उसे झुकाकर वलीद के जिस्म पर वार करने का इरादा किया; वह ख़ुदा के हुक्म से झुकी और वलीद के जिस्म पर लगी। तो यह वार जिन बातों पर निर्भर था, वे सब हक़ (ईश्वर) की अता (दान) थीं, और ख़ुद जो वार हुआ, वह ख़ुदा के इरादे से हुआ। और अब इस वार से वलीद की गर्दन का कट जाना जो पैदा होगा, वह भी अल्लाह के पैदा करने से होगा। अगर वह न चाहता, तो अकेला ज़ैद क्या, तमाम इंसान, जिन्न और फ़रिश्ते मिलकर ज़ोर लगाते तो उठना तो दूर, वह ज़रा भी न हिलती। और उसके हुक्म से उठने के बाद अगर वह न चाहता, तो ज़मीन, आसमान और पहाड़ सब एक बोझ (लंगर) बनकर तलवार की नोक पर डाल दिए जाते, तो वह नाम के लिए बाल बराबर भी न झुकती। और उसके हुक्म से वार पहुँचने के बाद अगर वह न चाहता, तो गर्दन कटना तो दूर, एक खरोंच तक आना मुमकिन न था। लड़ाइयों में हज़ारों बार तजुर्बा हो चुका है कि तलवारें चलीं और खरोंच तक न आई; गोलियाँ लगीं और शरीर तक पहुँचते-पहुँचते ठंडी हो गईं; शाम को मैदान-ए-जंग से लौटने के बाद सिपाहियों के सिर के बालों में से गोलियाँ

निकलीं। तो ज़ैद से जो कुछ भी हुआ, वह सब ख़ुदा का सृजन और ख़ुदा की इच्छा से था। ज़ैद की इसमें सिर्फ़ इतनी भूमिका रही कि उसने वलीद के क़त्ल का इरादा किया और अपने अंगों को उस तरफ़ मोड़ा। अब अगर वलीद शरीअत के मुताबिक क़त्ल का हक़दार था, तो ज़ैद पर कोई इल्ज़ाम नहीं है, बल्कि वह कई गुना बड़े सवाब (पुण्य) का हक़दार होगा क्योंकि उसने उस चीज़ का इरादा किया और अपने अंगों को उधर मोड़ा जिसे अल्लाह अज़्ज़ वजल्ल ने अपने रसूलों के ज़रिए अपनी मर्ज़ी और अपना पसंदीदा काम फ़रमाया था। लेकिन अगर यह नाहक़ क़त्ल है, तो यकीनन ज़ैद पर इल्ज़ाम है और वह अज़ाब-ए-अलीम (दर्दनाक सज़ा) का हक़दार होगा क्योंकि...

१ अल-कुरानुल करीम २/२५६ पेज २९० ऑफ़ ७५०

الدِّیْنِ قَدْ تَّبَیَّنَ الرُّشْدُ مِنَ الْغَیِّ ۱ "کچھ زبردستی نہیں دین میں بے شک خوب جدا ہو گئی ہے نیک راہ گمراہی سے (ت) بایں ہمہ کسی کا خالق ہونا، یعنی ذات ہو یا صفت، فعل ہو یا حالت، کسی معدوم چیز کو عدم سے نکال کر لباس وجود پہنادینا، یہ اسی کا کام ہے، یہ نہ اس نے کسی کے اختیار میں دیا نہ کوئی اس کا اختیار پا سکتا تھا، کہ تمام مخلوقات خود اپنی حد ذات میں نیست ہیں، ایک نیست دوسرے نیست کو کیا ہست بنا سکے، ہست بنانا اسی کی شان ہے جو آپ اپنی ذات سے ہست حقیقی وہست مطلق ہے، ہاں یہ اس نے اپنی رحمت اور غنائے مطلق سے عادات اجراء فرمائے کہ بندہ جس امر کی طرف قصد کرے اپنے جوارح ادھر پھیرے، مولا تعالٰی اپنے ارادہ سے اسے پیدا فرما دیتا ہے مثلا اس نے ہاتھ دئے ان میں پھیلنے، سمٹنے، اٹھنے، جھکنے کی قوت رکھی، تلوار بنائی، اس میں دھار، اور دھار میں کاٹ کی قوت رکھی۔ اس کا اٹھانا، لگانا، وار کرنا بنایا، دوست دشمن کی پہچان کو عقل بخشی، اسے نیک وبد میں تمیز کی طاقت عطا کی، شریعت بھیج کر قتل حق وناحق کی بھلائی برائی صاف جتادی۔ زید نے وہی خدا کی بتائی ہوئی تلوار، خدا کے بنائے ہوئے ہاتھ، خدا کی دی ہوئی قوت سے اٹھانے کا قصد کیا۔ وہ خدا کے حکم سے اٹھ گئی اور جھکا کر ولید کے جسم پر ضرب پہنچانے کا ارادہ کیا، وہ خدا کے حکم سے جھکی اور ولید کے جسم پر لگی۔ تو یہ ضرب جن امور پر موقوف تھی سب عطائے حق تھے، اور خود جو ضرب واقع ہوئی باراده خدا واقع ہوئی۔ اور اب جو اس ضرب سے ولید کی گردن کٹ جانا پیدا ہوگا یہ بھی اللہ کے پیدا کرنے سے ہوگا۔ وہ نہ چاہتا تو ایک زید کیا تمام انس وجن وملک جمع ہو کر زور کرتے تو اٹھنا درکنار، ہرگز جنبش نہ کرتی اور اس کے حکم سے اٹھنے کے بعد اگر وہ نہ چاہتا تو زمین، آسمان، پہاڑ سب ایک لنگر بنا کر تلوار کے پیلے (نوک) پر ڈال دیے جاتے، نام کو بال برابر نہ جھکتی۔ اور اس

کے حکم سے پہنچنے کے بعد اگر وہ نہ چاہتا گردن کتنا تو بڑی چیز ہے ممکن نہ تھا کہ خط بھی آتا۔ لڑائیوں میں ہزاروں بار تجربہ ہو چکا کہ تلواریں پڑیں اور خراش تک نہ آئی، گولیاں لگیں اور جسم تک آتے آتے ٹھنڈی ہو گئیں، شام کو معرکہ سے پلٹنے کے بعد سپاہیوں کے سر کے بالوں میں سے گولیاں نکلی ہیں۔ تو زید سے جو کچھ واقع ہوا سب خلق خدا و بارادہ خدا تھا۔ زید کا بیچ میں صرف اتنا کام رہا کہ اس نے قتل ولید کا ارادہ کیا اور اس طرف اپنے جوارح کو پھیرا اب اگر ولید شرعاً مستحق قتل ہے تو زید پر کچھ الزام نہیں رہا بلکہ بارہا ثواب عظیم کا مستحق ہوگا کہ اس نے اس چیز کا قصد کیا اور اس طرف جوارح کو پھیرا جسے اللہ عزوجل نے اپنے رسولوں کے ذریعہ سے اپنی مرضی، اپنا پسندیدہ کام ارشاد فرمایا تھا۔ اور اگر قتل ناحق ہے تو یقیناً زید پر الزام ہے اور عذاب الیم کا مستحق ہوگا کہ

فتاوی رضویہ جلد ۲۹ (Fatawa Razawiyya Volume 29)

...In opposition to the command of Shari'ah, he resolved for that thing, and directed his limbs towards it, which Allah Almighty through His books had declared as a matter of His wrath and displeasure. In short, a human action does not occur by human will alone, but rather occurs upon human will by the will of Allah. If one intends good and directs their limbs towards it, Allah Almighty by His mercy will create goodness. And if one intends evil and directs their limbs towards it, Allah Almighty, in His self-sufficiency, will bring forth evil. There are two cups, one containing honey and the other poison, and both themselves are creations of God. He has placed healing in honey and the effect of destruction in poison. He sent enlightened physicians to inform us: 'Look, this is honey, these are its benefits; and beware! this is poison, drinking it leads to death.' These blessed voices of the sincere and well-wishing physicians echoed throughout the world and reached every individual's ears. Upon this, some picked up the cup of honey and drank, while some picked up the poison. The hands of those who picked them up were also created by God, and the strength to lift the cup and bring it to the mouth was also placed by Him. The power to absorb and ingest something through the mouth and throat, and the mouth, throat, and stomach themselves, were all His creation. Now, honey reached the stomach of those who drank it; will they create its benefit themselves? Or will honey itself become the creator of benefit? Not at all! Rather, the manifestation of its effect is also in His hand of power, and it will happen only by His will. If He wills otherwise, even if one drinks mounds of honey, there will be no benefit; in fact, if He wills, honey could have the effect of poison. Similarly, when poison enters the stomachs of those who drank it, will they create the harm themselves? Or will the poison automatically become the creator of harm? Not at all! Rather, the manifestation of its effect is also under His control and power, and it will happen only by His will. In fact, if He wills, poison could act like honey. Nevertheless, those who drink honey are certainly worthy of praise and appreciation; every wise person will say they did well, this is how it should be. And those who drink poison are certainly deserving of punishment and condemnation; every sensible person will say these wretched individuals are guilty of suicide.

Look, from beginning to end, whatever happened was by the will of Allah. And all the instruments used in this task were creations of Allah and worked by His command. Why is it that all wise people praise one group and condemn the other? All courts that possess a share of reason would find these poison-drinkers guilty. Why would

they do so? Neither was the poison created by them, nor was the power to kill placed in it by them. Neither were the hands created by them, nor was the strength to extend and lift them placed by them. Neither were the mouth and throat created by them, nor was the power of absorption and suction placed by them. Nor was swallowing possible by their own will alone. Man...

फ़तावा रज़विया जिल्द २९ (Fatawa Razawiyya Volume 29)

...शरीअत के हुक्म के ख़िलाफ़ उस चीज़ का इरादा किया, और अपने अंगों (जवारिह) को उस तरफ मोड़ा जिसे अल्लाह तआला ने अपनी किताबों के ज़रिए अपने ग़ज़ब और अपनी नाराज़गी का हुक्म बताया था। संक्षेप में, इंसान का काम सिर्फ उसके इरादे से नहीं होता, बल्कि इंसान के इरादे पर अल्लाह के इरादे से होता है। यदि वह नेकी का इरादा करे और अपने अंगों को उसकी ओर मोड़े, तो अल्लाह तआला अपनी रहमत से नेकी पैदा कर देगा, और यदि वह बुराई का इरादा करे और अंगों को उस तरफ मोड़े, तो अल्लाह तआला अपनी बे-नियाज़ी (आत्मनिर्भरता) से बदी (बुराई) को वजूद में ले आएगा। दो प्यालियों में शहद और ज़हर हैं और दोनों स्वयं ख़ुदा ही के बनाए हुए हैं। शहद में शिफ़ा (आरोग्य) है और ज़हर में हलाक (नष्ट) करने का असर भी उसी ने रखा है। रोशन दिमाग़ हकीमों को भेज कर बता भी दिया है कि देखो, यह शहद है, इसके ये फ़ायदे हैं; और ख़बरदार! यह ज़हर है, इसके पीने से मौत हो जाती है। इन शुभचिंतक हकीमों की ये मुबारक आवाज़ें पूरी दुनिया में गूँजीं और एक-एक व्यक्ति के कान तक पहुँचीं। इस पर कुछ ने शहद की प्याली उठाकर पी और कुछ ने ज़हर की। उन्हें उठाने वालों के हाथ भी ख़ुदा ही के बनाए हुए थे, और उनमें प्याली उठाने, मुँह तक ले जाने की ताक़त भी उसी की रखी हुई थी। मुँह और हलक़ में किसी चीज़ को जज़्ब करके अंदर लेने की ताक़त, और स्वयं मुँह, हलक़ और पेट वग़ैरह सब उसकी मख़्लूक़ (रचना) थे। अब शहद पीने वालों के पेट में शहद पहुँचा; क्या वे स्वयं उसका लाभ पैदा कर लेंगे? या शहद ख़ुद-ब-ख़ुद लाभ का रचयिता बन जाएगा? हरगिज़ नहीं! बल्कि उसका प्रभाव पैदा होना भी उसी के दस्त-ए-क़ुदरत (शक्ति के हाथ) में है और होगा तो उसी के इरादे से होगा। यदि वह न चाहे, तो कोई मन भर शहद पी जाए, कुछ फ़ायदा नहीं हो सकता; बल्कि वह चाहे तो शहद ज़हर का असर दे। इसी तरह ज़हर पीने वालों के पेट में ज़हर जाकर, क्या वे स्वयं नुक़सान की रचना कर लेंगे या ज़हर ख़ुद-ब-ख़ुद नुक़सान का रचयिता बन जाएगा? हरगिज़ नहीं! बल्कि उसका प्रभाव पैदा होना भी उसी के क़ब्ज़ा-ए-इक़्तेदार (अधिकार और शक्ति) में है और होगा तो उसी के इरादे से होगा; बल्कि वह चाहे तो ज़हर शहद होकर लगे। इसके बावजूद, शहद पीने वाले निश्चित रूप से प्रशंसा और सराहना के पात्र हैं; हर बुद्धिमान यही कहेगा कि उन्होंने अच्छा किया, ऐसा ही करना चाहिए। और ज़हर पीने वाले निश्चित रूप से सज़ा और धिक्कार के योग्य हैं; हर समझदार यही कहेगा कि ये बदनसीब आत्महत्या के अपराधी हैं।

देखो, शुरू से अंत तक जो कुछ हुआ, सब अल्लाह ही के इरादे से हुआ। और जितने भी साधन इस काम में इस्तेमाल किए गए, वे सब अल्लाह ही की मख़्लूक़ थे और उसी के हुक्म से उन्होंने काम किया। जो तमाम बुद्धिजीवियों के नज़दीक एक पक्ष की प्रशंसा और दूसरे की निंदा है, तमाम अदालतें जो अक़्ल का हिस्सा रखती हैं, उन ज़हर पीने वालों को अपराधी ठहराएँगी। फिर वे ऐसा क्यों करती हैं? न ज़हर उनके द्वारा पैदा किया गया था, न ज़हर में मार डालने की शक्ति उन्होंने रखी थी। न हाथ उनके द्वारा बनाए गए थे, न उन्हें बढ़ाने और उठाने की ताक़त उनकी रखी हुई थी। न मुँह और हलक़ उनके बनाए हुए थे, न उनमें जज़्ब करने और खींचने की ताक़त उनकी रखी हुई थी। न हलक़ से नीचे उतरना उनके इरादे से संभव था। आदमी...

पेज २९१ / ७५०

بمخالفتِ حکمِ شرع اس شے کا عزم کیا، اور اس طرف جوارح کو متوجہ کیا جسے مولیٰ تعالیٰ نے اپنی کتابوں کے واسطے سے اپنے غضب اپنی ناراضی کا حکم بتایا تھا، غرض فعل انسان کے ارادے سے نہیں ہوتا بلکہ انسان کے ارادہ پر اللہ کے ارادہ سے ہوتا ہے یہ نیکی کا ارادہ کرے اور اپنے جوارح کو پھیرے اللہ تعالیٰ اپنی رحمت سے نیکی پیدا کر دے گا اور یہ برے کا ارادہ کرے اور جوارح کو اس طرف پھیرے اللہ تعالیٰ اپنی بے نیازی سے بدی کو موجود فرمادے گا۔ دو پیالیوں میں شہد اور زہر ہیں اور دونوں خود بھی خدا ہی کے بنائے ہوئے ہیں، شہد میں شفاء ہے اور زہر میں ہلاک کرنے کا اثر بھی اسی نے رکھا ہے۔ روشن دماغ حکیموں کو بھیج کر بتا بھی دیا ہے، کہ دیکھو یہ شہد ہے اس کے یہ منافع ہیں اور خبردار! یہ زہر ہے اس کے پینے سے ہلاک ہو جاتا ہے۔ ان ناصح اور خیر خواہ حکماءِ کرام کی یہ مبارک آوازیں تمام جہان میں گونجیں اور ایک ایک شخص کے کان میں پہنچیں۔ اس پر کچھ نے شہد کی پیالی اٹھا کر پی اور کچھ نے زہر کی۔ ان اٹھانے والوں کے ہاتھ بھی خدا ہی کے بنائے ہوئے تھے، اور ان میں پیالی اٹھانے، منہ تک لے جانے کی قوت بھی اسی کی رکھی ہوئی تھی۔ منہ اور حلق میں کسی چیز کو جذب کرکے اندر لینے کی قوت۔ اور خود منہ اور حلق اور معدہ وغیرہ سب اس کے مخلوق تھے، اب شہد پینے والوں کے جوف میں شہد پہنچا، کیا وہ آپ اس کا نفع پیدا کر لیں گے؟ یا شہد بذات خود خالق نفع ہو جائے گا؟ حاشا ہرگز نہیں، بلکہ اس کا اثر پیدا ہونا یہ بھی اسی کے دستِ قدرت میں ہے اور ہو گا تو اسی کے ارادہ سے ہو گا۔ وہ نہ چاہے تو منوں شہد پی جائے کچھ فائدہ نہیں ہو سکتا، بلکہ وہ چاہے تو شہد زہر کا اثر دے، یونہی زہر والوں کے پیٹ میں زہر جاکر، کیا وہ آپ ضرر کی تخلیق کر لیں گے یا زہر خود بخود خالق ضرر ہو جائیگا، حاشا ہرگز نہیں بلکہ اس کا اثر پیدا ہونا یہ بھی اسی کے

قبضہِ اقتدار میں ہے اور ہوگا تو اسی کے ارادے سے ہوگا، بلکہ وہ چاہے تو زہر شہد ہو کر لگے، بایں ہمہ شہد پینے والے ضرور قابلِ تحسین و آفرین ہیں، ہر عاقل یہی کہے گا کہ انھوں نے اچھا کیا، ایسا ہی کرنا چاہیے اور زہر پینے والے ضرور لائقِ سزا و نفریں ہیں، ہر ذی ہوش یہی کہے گا کہ یہ بدبخت خودکشی کے مجرم ہیں۔

دیکھو اول سے آخر تک جو کچھ ہوا سب اللہ ہی کے ارادے سے ہوا۔ اور جتنے آلات اس کام میں لئے گئے سب اللہ ہی کے مخلوق تھے اور اسی کے حکم سے انھوں نے کام دیے، جو تمام عقلاء کے نزدیک ایک فریق کی تعریف ہے اور دوسرے کی مذمت، تمام کچہریاں جو عقل سے حصہ رکھتی ہوں ان زہر نوشوں کو مجرم بنائیں گی، پھر کیوں بناتی ہیں، نہ زہر ان کا پیدا کیا ہوا نہ زہر میں قوتِ اہلاک ان کی رکھی ہوئی، نہ ہاتھ ان کا پیدا کیا ہوا نہ اس کے بڑھانے اٹھانے کی قوت ان کی رکھی ہوئی، نہ دہن و حلق ان کے پیدا کئے ہوئے نہ ان میں جذب و کشش کی قوت ان کی رکھی ہوئی، نہ حلق سے اتر جانا ان کے ارادے سے ممکن تھا، آدمی

Fatawa Rizwiya Volume 29

A person drinks water and wants it to go down the throat, but it comes out as a choke; his wanting does not prevail. Nothing happens unless He wills it, Who is the Master of the entire universe. Now, after passing through the throat, even in apparent eyes, the drinker has no role of his own. Its mixing with the blood, the blood carrying it and circulating, reaching the heart in that circulation, and going there and corrupting it - this is not an action done by his will, nor is it in his power. Many drink poison and then regret it; then they make a thousand efforts, but what is destined to happen, happens. If the harm was by his will, then as soon as he withdrew from that will, the poison would necessarily have become nullified, but it does not. So it is known that his will is ineffective. Then why is he questioned/held accountable for it? Yes, the reason for accountability is that honey and poison were pointed out to him; through the knowledge of great exalted physicians, benefits and harms were shown to him; hands, mouth, and throat were placed under his control; eyes were given to him to see, and intellect to understand. This same hand with which he picked up the cup of poison and drank, if he had extended it towards the cup of honey, Allah the Almighty would have created that same movement of picking up. Even though all actions from beginning to end occur by His creation and will and result in his benefit, he did not do so. Instead, he extended his hand towards the bowl of poison and intended to drink it. He (Allah) is rich and independent, indifferent to both worlds. There, the habit is ongoing: that he intends and He creates. He created the picking up of that bowl, its passage through the throat, its reaching the heart, etc. Then how can he be considered innocent? Having this intention, will, and choice in a human is such a clear, bright, and self-evident matter that no one can deny except an insane person. Every person understands that there is certainly a difference between me and a stone. Every person knows that human actions like walking, moving, eating, drinking, sitting, etc., are voluntary movements. Every person is aware that moving a hand to perform human work and the trembling of a hand due to a tremor are clearly different. Every person knows that when he jumps upward and falls to the ground after his strength is exhausted, there is a distinction between these two movements. Jumping up was by his choice and will; if he didn't want to, he wouldn't have jumped. And after this movement ends, coming down to earth is not by his will and choice. Therefore, even if he wants to stop, he cannot. This very will, this very choice that every person sees within himself, its existence along with intellect is the basis for command and prohibition, reward and punishment,

retribution, questioning, and accountability. Although undoubtedly, without question, absolutely, and certainly, this will and choice are also created by Allah Almighty, just as man himself is His creation. Just as a man could not have become himself on his own, nor could he have made for himself eyes, ears, hands, feet, tongue...

कोई पानी पीता है और चाहता है कि हलक से उतरे, लेकिन वह अचकू(हिचकी) होकर निकल जाता है; उसकी इच्छा नहीं चलती। जब तक वह न चाहे जो सारे जहाँ का मालिक है। अब हलक से उतरने के बाद तो ज़ाहिरी नज़रों में भी पीने वाले का अपना कोई काम नहीं, खून में उसका मिलना और खून का उसे लेकर दौरा करना और दौरे में दिल तक पहुँचना और वहाँ जाकर उसे बिगाड़ देना - यह कोई काम न उसके इरादे से है न उसकी शक्ति में। बहुत से ज़हर पीकर पछताते हैं, फिर हज़ार कोशिश करते हैं, जो होना है होकर रहता है। अगर उसके इरादे से नुकसान होता, तो इरादे से पीछे हटते ही ज़हर का असर खत्म हो जाना ज़रूरी था, लेकिन ऐसा नहीं होता। तो पता चला कि उसका इरादा बेअसर है। फिर उससे पूछताछ (जवाबदेही) क्यों होती है? हाँ, जवाबदेही का वही कारण है कि शहद और ज़हर उसे बता दिए गए थे, बड़े हकीमों के ज्ञान के माध्यम से फायदे और नुकसान समझा दिए गए थे, हाथ, मुँह और हलक उसके वश में कर दिए गए थे, देखने को आँख और समझने को अक्ल उसे दे दी गई थी। यही हाथ जिससे उसने ज़हर का प्याला उठाकर पिया, अगर शहद के प्याले की तरफ बढ़ाता तो अल्लाह तआला उसी का उठाना पैदा कर देता। यहाँ तक कि सब काम शुरू से आखिर तक उसी की रचना और मर्जी से होकर उसके फायदे का कारण बनते, मगर उसने ऐसा नहीं किया बल्कि ज़हर के प्याले की तरफ हाथ बढ़ाया और उसे पीने का इरादा किया। वह दोनों जहानों से बेपरवाह और बेनियाज़ है, वहाँ तो नियम यही चल रहा है कि यह इरादा करे और वह रचना कर दे। उसने उसी प्याले का उठाना, हलक से उतरना, दिल तक पहुँचना आदि पैदा कर दिया, फिर यह कैसे बेगुनाह करार पा सकता है। इंसान में यह इरादा और चुनाव (अख्तियार) होना ऐसी स्पष्ट और ज़ाहिर बात है जिससे कोई इनकार नहीं कर सकता सिवाय पागल के। हर व्यक्ति समझता है कि मुझमें और पत्थर में ज़रूर फर्क है। हर व्यक्ति जानता है कि इंसान के चलने-फिरने, खाने-पीने, उठने-बैठने आदि के कार्य इरादतन हरकतें हैं। हर व्यक्ति जानता है कि इंसान का काम करने के लिए हाथ हिलाना और वह हाथ का काँपना जो बीमारी (रअशा) से हो, उनमें साफ अंतर है। हर व्यक्ति वाकिफ है कि जब वह ऊपर की ओर छलांग लगाता है और उसकी शक्ति खत्म होने पर ज़मीन पर गिरता है, तो इन दोनों हरकतों में अंतर है। ऊपर कूदना अपने चुनाव और इरादे से था, अगर न चाहता तो न कूदता, और यह हरकत पूरी होकर अब ज़मीन पर आना अपने इरादे और चुनाव से नहीं है। इसलिए अगर रुकना चाहे तो नहीं रुक सकता। बस यही इरादा, यही चुनाव जो हर व्यक्ति अपने अंदर देख रहा है, अक्ल के साथ उसका पाया जाना ही आदेश और निषेध, पुरस्कार

और दंड, सजा और जवाबदेही का आधार है। हालाँकि बिना किसी संदेह के, निश्चित रूप से यह इरादा और चुनाव भी अल्लाह अज़्वजल का ही बनाया हुआ है, जैसे इंसान खुद भी उसी का बनाया हुआ है। आदमी जिस तरह न खुद से खुद बन सकता था, न अपने लिए आँख, कान, हाथ, पाँव, ज़बान बना सकता था...

पृष्ठ 292 / 750

پانی پیتا ہے اور چاہتا ہے کہ حلق سے اترے مگر اچو ہو کر نکل جاتا ہے اس کا چاہنا نہیں چلتا۔ جب تک وہی نہ چاہے جو صاحب سارے جہاں کا ہے۔ اب حلق سے اترنے کے بعد تو ظاہری نگاہوں میں بھی پینے والے کا اپنا کوئی کام نہیں، خون میں اس کا ملنا اور خون کا اسے لے کر دورہ کرنا اور دورہ میں قلب تک پہنچنا اور وہاں جا کر اسے فاسد کر دینا یہ کوئی فعل نہ اس کے ارادے سے ہے نہ اس کی طاقت سے بہتیرے زہر پی کر نادم ہوتے ہیں، پھر ہزار کوشش کرتے ہیں جو ہونی ہے ہو کر رہتی ہے۔ اگر اس کے ارادہ سے ضرر ہوتا تو اس ارادہ سے باز آتے ہی زہر باطل ہو جانا لازم تھا، مگر نہیں ہوتا تو معلوم ہوا کہ اس کا ارادہ بے اثر ہے پھر اس سے کیوں باز پرس ہوتی ہے ؟ ہاں، باز پرس کی وہی وجہ ہے کہ شہد اور زہر اسے بتا دیے تھے، عالی قدر حکمائے عظام کی معرفت سے نفع نقصان جتا دیے تھے، دست و دہاں وحلق اس کے قابو میں کر دیے تھے، دیکھنے کو آنکھ، سمجھنے کو عقل اسے دے دی تھی، یہی ہاتھ جس سے اس نے زہر کی پیالی اٹھا کر پی، جام شہد کی طرف بڑھاتا اللہ تعالٰی اسی کا اٹھنا پیدا کر دیتا، یہاں تک کہ سب کام اول تا آخر اسی کی خلق و مشیت سے واقع ہو کر اس کے نفع کے موجب ہوتے مگر اس نے ایسا نہ کیا بلکہ کاسہ زہر کی طرف ہاتھ بڑھایا اور اس کے پینے کا عزم لایا وہ غنی بے نیاز دونوں جہان سے بے پروا ہے وہاں تو عادت جاری ہو رہی ہے کہ یہ قصد کرے اور وہ خلق فرما دے، اس نے اسی کاسہ کا اٹھنا اور حلق سے اترنا دل تک پہنچنا وغیرہ وغیرہ پیدا فرما دیا پھر یہ کیونکر بے جرم قرار پا سکتا ہے۔ انسان میں یہ قصد و ارادہ و اختیار ہونا ایسا واضح و روشن و بدیہی امر ہے جس سے انکار نہیں کر سکتا مگر مجنون، ہر شخص سمجھتا ہے کہ مجھ میں اور پتھر میں ضرور فرق ہے ہر شخص جانتا ہے کہ انسان کے چلنے پھرنے، کھانے پینے، اٹھنے

بیٹھنے وغیرہ وغیرہ افعال کے حرکات ارادی ہیں ہر شخص آگاہ ہے کہ انسان کا کام کرنے کے لئے ہاتھ کو حرکت دینا اور وہ جنبش جو ہاتھ کو رعشہ سے ہو، ان میں صریح فرق ہے ہر شخص واقف ہے کہ جب وہ اوپر کی جانب جست کرتا اور اس کی طاقت ختم ہونے پر زمیں پر گرتا ہے ان دونوں حرکتوں میں تفرقہ ہے اوپر کودنا اپنے اختیار و ارادہ سے تھا اگر نہ چاہتا نہ کودتا اور یہ حرکت تمام ہو کر اب زمیں پر آنا اپنے ارادے و اختیار سے نہیں۔ ولہذا اگر رکنا چاہے تو نہیں رک سکتا، بس یہی ارادہ، یہی اختیار جو ہر شخص اپنے نفس میں دیکھ رہا ہے عقل کے ساتھ اس کا پایا جانا، یہی مدار امر و نہی و جزا و سزا و عقاب و پرسش و حساب ہے، اگرچہ بلا شبہہ بلاریب قطعاً یقیناً یہ ارادہ و اختیار بھی اللہ عزوجل ہی کا پیدا کیا ہوا ہے جیسے انسان خود بھی اسی کا بنایا ہوا ہے آدمی جس طرح نہ آپ سے آپ بن سکتا تھا نہ اپنے لئے آنکھ، کان، ہاتھ، پاؤں، زبان

Fatawa Razawiyya Volume 29

...He could have made others besides him, just as He could not have made for Himself power, strength, will, and choice. He gave everything and He created everything. But to think from this that since our will and choice are also God's creation, we have become like stones, no longer subject to reward, punishment, and accountability—what severe ignorance that is! O people! What did God create in you? Will and choice. By their creation, did you become beings with will and choice, or did you become helpless, compelled, and powerless? O people! What was the difference between your movement and the movement of a stone? It was that the stone does not possess will and choice, and Allah Almighty created this quality in you. How strange that the very quality whose creation distinguished your movements from those of a stone, you consider its creation the cause of your becoming stones! What inverted logic is this? Allah Almighty created our eyes and created light in them; through this, we became seeing, not, God forbid, blind. Similarly, He created will and choice in us; through this, we became chosen ones worthy of His gift, not, on the contrary, compelled.

Yes, it is necessary that since even the individual choice of the Omnipotent is His creation and His gift, and not from our own essence, we are 'chosen' (empowered) ones, not self-empowered. Then what is the harm in this? It is not in the nature of a servant to be self-empowered, nor is it necessary to be self-empowered for reward and punishment. A type of choice is needed; however it may be, it is evidently attained.

If a person acts with justice, then this much discourse and example is sufficient: the cup of honey is obedience to God, and the bowl of poison is disobedience to Him and those sublime sages, the noble Prophets (peace and blessings be upon them). And guidance is to benefit from that honey, which will be by the will of Allah; and misguidance is the necessary reaching of that poison, which will also be by His will. But those who obey will be praised, and those who rebel (defy) will be condemned, blamed, and punished. Yet, as long as faith remains, "He forgives whom He wills"[1] (T: So it remains) remains.

And all praise is due to Allah, the Lord of the worlds. To Him belongs the command and to Him you shall be returned.

And all praises are for Allah, who is the sustainer of all the worlds; the command belongs to Him alone and to Him you must return. (T)

Nowhere in the Great Quran is it said not to give more guidance to these people... Yes, it is certainly stated that guidance and misguidance are all by His will. This has already been explained, and insha'Allah (God willing), it will become even clearer in the future. Furthermore, He said:

---

[1] The Holy Quran 2 / 284

फतावा रज़विया खंड 29

...वह दूसरों को बना सकता था, वैसे ही वह अपने लिए शक्ति, बल, इच्छा और विकल्प नहीं बना सकता था। सब कुछ उसने दिया और उसी ने बनाया। लेकिन इससे यह समझ लेना कि जब हमारी इच्छा और विकल्प भी खुदा की ही रचना हैं, तो फिर हम पत्थर हो गए, सजा, इनाम और पूछताछ के लायक नहीं रहे—यह कितनी बड़ी अज्ञानता है! ऐ लोगो! खुदा ने तुममें क्या पैदा किया? इच्छा और विकल्प। तो उनके पैदा होने से तुम इच्छा वाले, विकल्प वाले बने या लाचार, मजबूर और बेबस? ऐ लोगो! तुम्हारी और पत्थर की हरकत में क्या फर्क था? यही कि वह इच्छा और विकल्प नहीं रखता और तुममें अल्लाह तआला ने यह खूबी पैदा की। कितनी अजीब बात है कि वही गुण जिसके पैदा होने ने तुम्हारी हरकतों को पत्थर की हरकतों से अलग कर दिया, उसी की पैदाइश को तुम अपने पत्थर होने का कारण समझते हो! यह कैसी उल्टी बुद्धि है? अल्लाह तआला ने हमारी आँखें बनाईं और उनमें रोशनी पैदा की, इससे हम आँखों वाले बने न कि (ईश्वर न करे) अंधे। इसी तरह उसने हममें इच्छा और विकल्प पैदा किए, इससे हम उसकी अता के काबिल मुख्तार (अधिकार प्राप्त) हुए, न कि इसके विपरीत मजबूर।

हाँ, यह ज़रूरी है कि जब सर्वशक्तिमान का व्यक्तिगत विकल्प भी उसी की रचना और उसी की देन है, न कि हमारी अपनी हस्ती से, तो हम 'मुख्तार किए गए' हुए, 'स्व-मुख्तार' नहीं हुए। फिर इसमें क्या बुराई है? बंदे की यह शान ही नहीं कि वह खुद मुख्तार हो सके और न ही इनाम व सज़ा के लिए खुद मुख्तार होना ज़रूरी है। एक प्रकार का विकल्प चाहिए, वह जिस तरह भी हो, प्रत्यक्ष रूप से प्राप्त है।

यदि आदमी न्याय से काम ले तो इतना प्रवचन और उदाहरण काफी है: शहद का प्याला ईश्वरीय आज्ञाकारिता है और जहर का कटोरा उसकी अवज्ञा है और वे उच्च कोटि के ऋषि यानी अंबिया-ए-किराम (उन पर शांति और आशीर्वाद हो)। और मार्गदर्शन उस शहद से लाभ पाना है जो अल्लाह ही की इच्छा से होगा; और गुमराह होना उस ज़हर का पहुँच पाना है जो भी उसी की इच्छा से होगा। लेकिन आज्ञा मानने वालों की प्रशंसा की जाएगी और विद्रोह (सरकशी) करने वाले निंदित और दोषी होकर सजा पाएंगे। फिर भी जब तक ईमान बाकी है, "वह जिसे चाहे क्षमा कर दे"[1] (त: बाकी है) बाकी है।

और सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है जो तमाम जहानों का पालने वाला है। उसी का हुक्म है और उसी की ओर तुम लौटाए जाओगे।

और सब तारीफें अल्लाह के लिए हैं जो तमाम जहानों का परवरदिगार है; हुक्म उसी का है और उसी की तरफ तुम्हें लौटना है। (त)

कुरान-ए-अजीम में यह कहीं नहीं फ़रमाया कि इन लोगों को और अधिक मार्गदर्शन न करो... हाँ, यह ज़रूर फ़रमाया है कि मार्गदर्शन और गुमराह होना सब उसकी इच्छा से है। इसका वर्णन हो चुका है और भविष्य में इंशाअल्लाह और भी स्पष्ट होगा। साथ ही फ़रमाया:

---

[1] पवित्र कुरान 2 / 284

و غیر ہا بنا سکتا تھا، یو نہی اپنے لئے طاقت، قوت، ارادہ، اختیار بھی نہیں بنا سکتا، سب کچھ اس نے دیا اور اسی نے بنایا، مگر اس سے یہ سمجھ لینا کہ جب ہمارا ارادہ و اختیار بھی خدا ہی کا مخلوق ہے تو پھر ہم پتھر ہو گئے قابل سزا و جزا و بازپرس نہ رہے، کیسی سخت جہالت ہے، صاحبو ! تم میں خدا نے کیا پیدا کیا؟ ارادہ و اختیار، تو ان کے پیدا ہونے سے تم صاحب ارادہ۔ صاحب اختیار ہوئے یا مضطر، مجبور، ناچار، صاحبو! تمہاری اور پتھر کی حرکت میں فرق کیا تھا، یہ کہ وہ ارادہ واختیار نہیں رکھتا اور تم میں اللہ تعالیٰ نے یہ صفت پیدا کی عجب عجب کہ وہی صفت جس کے پیدا ہونے نے تمہاری حرکات کو پتھر کی حرکات سے ممتاز کر دیا، اسی کی پیدائش کو اپنے پتھر ہو جانے کا سبب سمجھو یہ کیسی الٹی مت ہے؟ اللہ تعالیٰ نے ہماری آنکھیں پیدا کیں ان میں نور خلق کیا اس سے ہم انکھیارے ہوئے نہ کہ معاذ اللہ اندھے یو نہی اس نے ہم میں ارادہ و اختیار پیدا کیا اس سے ہم اس کی عطا کے لائق مختار ہوئے، نہ کہ الٹے مجبور۔

ہاں یہ ضرور ہے کہ جب وقاہ فوقاہر فرداختیار بھی اسی کی خلق اسی کی عطا ہے ہماری اپنی ذات سے نہیں تو مختار کردہ ہوئے خود مختار نہ ہوئے پھر اس میں کیا حرج ہے؟ بندے کی شان ہی نہیں کہ خود مختار ہو سکے نہ جزا و سزا کے لئے خود مختار ہونا ہی ضرور۔ ایک نوع اختیار چاہیے، کس طرح ہو ، وہ بداہتہ حاصل ہے۔

آدمی انصاف سے کام لے تو اسی قدر تقریر و مثال کافی ہے شہد کی پیالی اطاعت الہی ہے اور زہر کا کاسہ اس کی نافرمانی اور وہ عالی شان حکماء انبیاے کرام علیہم الصلوۃ والسلام۔ اور ہدایت اس شہد سے نفع پانا ہے کہ اللہ ہی کے ارادہ سے ہوگا اور ضلالت اس زہر کا ضرور پہنچنا کہ یہ بھی

اسی کے ارادے سے ہو گا مگر اطاعت والے تعریف کئے جائیں گے اور تمرد (سرکشی) والے مذموم و ملزم ہو کر سزا پائیں گے۔ پھر بھی جب تک ایمان باقی ہے "فَيَغْفِرُ لِمَن يَّشَآءُ"[1] (جسے چاہے بخش دے۔ ت) باقی ہے۔

والحمد للہ رب العلمین، لہ الحکم والیہ ترجعون۔ **اور سب تعریفیں اللہ کے لئے ہیں جو پروردگار ہے تمام جہانوں کا ، حکم اسی کا ہے اور اسی کی طرف تمھیں لوٹنا ہے۔(ت)**

قرآن عظیم میں یہ کہیں نہیں فرمایا کہ ان اشخاص کو زیادہ ہدایت نہ کرو۔۔۔ ہاں یہ ضرور فرمایا ہے کہ ہدایت ضلالت سب اس کے ارادہ سے ہے، اس کا بیان بھی ہو چکا اور آئندہ ان شاء اللہ تعالٰی اور زیادہ واضح ہوگا۔ نیز فرمایا:

---

[1] القرآن الکریم ۲ / ۲۸۴

Fatawa Razawiya, Volume 29

"Indeed, those who disbelieve - it is all the same for them whether you warn them or do not warn them - they will not believe." [1] They are disbelievers in the divine knowledge; it is all the same to them whether you warn them or do not warn them, they will not believe.

Our Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) was sent as a mercy for the entire universe. Those disbelievers who did not believe would cause great sorrow to his Eminence (peace and blessings of Allah be upon him), until Allah Almighty said:

"Then perhaps you would kill yourself through grief over them, [O Muhammad], if they do not believe in this message, [and] out of sorrow." [2] Perhaps you will risk your life in grief because they do not believe in this word (the Quran).

Therefore, to comfort his holy heart, it was ordained that those who, in Our knowledge, are destined to die in disbelief—refuge is sought with Allah—how could they believe? Do not grieve over them. Hence, it was said that your "warning or not warning" is "the same to them". It was not said that it is "the same for you", lest guidance—God forbid—be considered a futile matter. The reward of the guide is with Allah, whether anyone accepts it or not.

"And there is not upon the Messenger except clear notification." [3] And nothing is upon the messenger except clear delivery. (T)

"And I do not ask you for it any payment. My payment is only from the Lord of the worlds." [4] And I do not ask you for any reward for this; my reward is only with the Lord of all the worlds.

Allah knows well, and has known since eternity, that a certain number of servants will find guidance and a certain number will drown in the pit of misguidance. Yet, He never forbade His messengers from guiding, so that they may be a means of guidance for those who are to be guided, and so that the divine proof may be established against those who do not. "And to Allah belongs the conclusive argument." (And Allah's proof is complete. T)

[Boxed Text] Arabic: Ibn Jarir reported from Anas (may Allah be pleased with him): When Allah Almighty sent Moses (peace be upon him) to Pharaoh, a call was made: "He will not [believe]." [Moses asked]: "Then why should I [go]?" He said: Then twelve angels called out to him. Urdu: Ibn Jarir narrated from Hazrat Anas (may Allah be

pleased with him) that when our master Moses (peace be upon him) was sent by the Lord Almighty as a messenger to Pharaoh, as Moses (peace be upon him) set out, a call came: "But O Moses, Pharaoh will not believe." Moses in his heart...

[1] Al-Quran Al-Karim 2/6 [2] Al-Quran Al-Karim 18/6 [3] Al-Quran Al-Karim 54/24 [4] Al-Quran Al-Karim 109/26

फ़तावा रज़विया, जिल्द 29

"बेशक जिन लोगों ने कुफ्र किया, उनके लिए बराबर है कि आप उन्हें डराएं या न डराएं वे ईमान नहीं लाएंगे।" [1] वे अल्लाह के इल्म में काफ़िर हैं; उनके लिए एक समान है चाहे तुम उन्हें डराओ या न डराओ, वे ईमान नहीं लाएंगे।

हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पूरी कायनात के लिए रहमत बनाकर भेजे गए। जो काफ़िर ईमान नहीं लाते थे, उनका हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बहुत दुख होता था, यहाँ तक कि अल्लाह अज़्ज़वजल ने फरमाया:

"शायद आप उनके पीछे अपने आप को हलाक कर लेंगे इस ग़म में कि वे इस बात (क़ुरआन) पर ईमान नहीं लाते।" [2] शायद आप उनके पीछे अपनी जान पर खेल जाएंगे इस ग़म में कि वे इस कलाम पर ईमान न लाएं।

इसलिए हुज़ूर के मुक़द्दस दिल की तसल्ली के लिए यह इरशाद हुआ कि जो हमारे इल्म में कुफ़्र पर मरने वाले हैं (अल्लाह की पनाह), वे किस तरह ईमान लाएंगे, आप उनका ग़म न करें। इसलिए यह फरमाया कि आपका "समझाना न समझाना" उनके लिए "बराबर है"। यह नहीं फरमाया कि "आपके हक़ में" बराबर है, ताकि हिदायत—अल्लाह की पनाह—फ़ुज़ूल काम न लगे। हिदायत देने वाले का अज्र अल्लाह पर है, चाहे कोई माने या न माने।

"और रसूल के ज़िम्मे सिर्फ साफ़-साफ़ पहुँचा देना है।" [3] और रसूल के ज़िम्मे नहीं मगर साफ़ पहुँचा देना (त)।

"और मैं इस पर तुमसे कोई उजरत नहीं माँगता, मेरा अज्र तो उसी पर है जो सारे जहानों का रब है।" [4] और मैं तुमसे इस पर कुछ उजरत नहीं माँगता, मेरा अज्र तो उसी पर है जो सारे जहाँ का रब है।

अल्लाह खूब जानता है और आज से नहीं अज़ल-उल-आज़ाल से कि इतने बंदे हिदायत पाएंगे और इतने गुमराहियों के गड्ढे में डूबेंगे, मगर कभी अपने रसूलों को हिदायत से मना नहीं फरमाया ताकि जो हिदायत पाने वाले हैं उनके लिए हिदायत का सबब हों और जो न पाएं उन पर हुज्जत-ए-इलाहिया कायम हो। "व लिल्लाहिल हुज्जतुल बालिगा" (और अल्लाह ही की हुज्जत पूरी है। त)।

[बॉक्स टेक्स्ट] अरबी: इब्न जरीर ने हज़रत अनस (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत की: जब अल्लाह तआला ने मूसा (अलैहिस्सलाम) को फ़िरौन की तरफ़ रसूल बनाकर भेजा, तो आवाज़ दी गई: "वह

(ईमान) नहीं लाएगा।" [मूसा अलैहिस्सलाम ने पूछा]: "तो फिर मैं क्यों [जाऊं?" फरमाया: तो बारह फरिश्तों ने उन्हें आवाज़ दी। उर्दू: इब्न जरीर ने हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की कि जब सैय्यदना मूसा अलैहिस्सलाम को मौला अज़्ज़वजल ने रसूल करके फ़िरौन की तरफ़ भेजा, मूसा अलैहिस्सलाम चले तो निदा हुई मगर ऐ मूसा फ़िरौन ईमान न लाएगा, मूसा ने दिल...

[1] अल-क़ुरआन अल-करीम 2/6 [2] अल-क़ुरआन अल-करीम 18/6 [3] अल-क़ुरआन अल-करीम 54/24 [4] अल-क़ुरआन अल-करीम 109/26

"اِنَّ الَّذِیْنَ کَفَرُوْا سَوَآءٌ عَلَیْھِمْ ءَ اَنْذَرْتَھُمْ اَمْ لَمْ تُنْذِرْھُمْ لَا یُؤْمِنُوْنَ" ۱۔ وہ علم الٰہی میں کافر ہیں انھیں ایک سا ہے چاہے تم ان کو ڈراؤ یا نہ ڈراؤ وہ ایمان نہ لائیں گے۔

ہمارے نبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم تمام جہان کے لئے رحمت بھیجے گئے جو کافر ایمان نہ لاتے ان کا نہایت غم حضور صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کو ہوتا، یہاں تک کہ اللہ عزوجل نے فرمایا:

"فَلَعَلَّکَ بَاخِعٌ نَّفْسَکَ عَلٰی اٰثَارِھِمْ اِنْ لَّمْ یُؤْمِنُوْا بِھٰذَا الْحَدِیْثِ اَسَفًا" ۲۔ شاید تم ان کے پیچھے اپنی جان پر کھیل جاؤ گے اس غم میں کہ وہ اس کلام پر ایمان نہ لائیں۔

لہذا حضور کی تسکین خاطر اقدس کو یہ ارشاد ہوا ہے کہ جو ہمارے علم میں کفر پر مرنے والے ہیں والعیاذ باللہ تعالٰی وہ کس طرح ایمان نہ لائیں گے، تم اس کا غم نہ کرو۔ لہذا یہ فرمایا کہ تمہارا "سمجھانا نہ سمجھانا" ان کو "یکساں ہے"۔ یہ نہیں فرمایا کہ "تمہارے حق میں" یکساں ہے، کہ ہدایت معاذ اللہ امر فضول ٹھہرے۔ ہادی کا اجر اللہ پر ہے، چاہے کوئی مانے نہ مانے۔

"وَمَا عَلَی الرَّسُوْلِ اِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِیْنُ" ۳۔ اور رسول کے ذمہ نہیں مگر صاف پہنچادینا (ت)

"وَمَا اَسْئَلُکُمْ عَلَیْہِ مِنْ اَجْرٍ اِنْ اَجْرِیَ اِلَّا عَلٰی رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ" ۴۔ اور میں تم سے اس پر کچھ اجرت نہیں مانگتا، میرا اجر تو اسی پر ہے جو سارے جہاں کا رب ہے۔

اللہ خوب جانتا ہے اور آج سے نہیں ازل الآزال سے کہ اتنے بندے ہدایت پائیں گے اور اتنے چاہ ضلالت میں ڈوبیں گے، مگر کبھی اپنے رسولوں کو ہدایت سے منع نہیں فرمایا کہ جو ہدایت پانے والے ہیں ان کے لئے سبب ہدایت ہوں اور جو نہ پائیں ان پر حجت الٰہیہ قائم ہو۔ وللہ الحجۃ البالغۃ (اور اللہ ہی کی حجت پوری ہے۔ ت)

ابن جریر عن انس رضی اللہ تعالٰی عنہ قال لما بعث اللہ تعالٰی موسی علیہ الصلوۃ والسلام الٰی فرعون نودی لن یفعل، فلم افعل؟ فقال فناداہ اثناعشر ملکاً ابن جریر نے حضرت انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی کہ جب سید نا موسیٰ علیہ الصلوٰۃ والسلام کو مولیٰ عزوجل نے رسول کرکے فرعون کی طرف بھیجا موسیٰ علیہ السلام چلے تو ندا ہوئی مگر اے موسیٰ فرعون ایمان نہ لائے گا، موسیٰ نے دل

۱ القرآن الکریم ۲/۶ ۲ القرآن الکریم ۱۸/۶ ۳ القرآن الکریم ۵۴/۲۴ ۴ القرآن الکریم ۱۰۹/۲۶

Fatawa Razawiyya, Volume 29

From the scholars of the angels: "Proceed with what you have been commanded, for we have striven to know this but we did not know it."[1]	**I said, "Then what is the benefit of my going?" Upon this, twelve great angelic scholars (peace be upon them) said, "O Moses, go where you are commanded; this is a secret that, despite our efforts, has not been revealed to us even until today."**

And finally, everyone saw the benefit of the prophethood—that the enemies of God were destroyed, and the friends of God attained salvation from their slavery and their punishment. In one assembly, seventy thousand magicians fell down in prostration and spoke with one voice:

"We believe in the Lord of the worlds, the Lord of Moses and Aaron."[2]	**We have believed in Him Who is the Lord of all the worlds, the Lord of Moses and Aaron.**

The Lord Almighty was and is capable of guiding the whole world in an instant without any prophet or book.

"And if Allah had willed, He would have gathered them upon guidance. So never be of the ignorant."[3]	**And if Allah willed, He would have gathered them upon guidance; so, O listener! never be among the ignorant.**

But He has made the world a realm of causes and has assigned a different portion in every blessing according to His profound wisdom. If He willed, humans and other living beings would not feel hunger at all, or if hungry, someone's stomach would be filled just by taking a holy name, or by smelling the air. The hard labors from plowing the land to baking bread would not be necessary for anyone. But He willed it so, and in this too, He maintained countless differences; He gave someone so much that millions of stomachs are fed at his door, and for someone else, three days of starvation pass with his family. In short, in everything there are the wonders of "Do they distribute the mercy of your Lord? It is We who have distributed among them..."[4] (Do they distribute your Lord's mercy? We have distributed among them their livelihood in the life of this world. - Translator). Foolish, senseless, or the most ignorant irreligious person is he who questions His honor as to why it was done like this and not like that. He hears His glory is "Allah does what He wills"[5], "Allah's status is that He does whatever He wills." "Indeed, Allah ordains what He intends."[6]

1 2 Al-Quran Al-Karim 7/121 & 122 3 Al-Quran Al-Karim 6/35 4 Al-Quran Al-Karim 43/32 5 Al-Quran Al-Karim 14/27 6 Al-Quran Al-Karim 5/1

स्वर्गदूतों के विद्वानों में से: "जो आपको आदेश दिया गया है उसे पूरा करें, क्योंकि हमने इसे जानने की कोशिश की लेकिन हम इसे नहीं जान सके।"[1]

मैंने कहा, "फिर मेरे जाने का क्या फायदा है?" इस पर बारह महान देवदूतों (अलैहिमुस्सलाम) ने कहा, "हे मूसा! आप वहीं जाइए जहाँ का आपको हुक्म है; यह वह राज़ है जो कोशिश के बावजूद आज तक हम पर भी नहीं खुला।"

और अंततः सबने नबूवत का लाभ देख लिया कि ईश्वर के शत्रु नष्ट हो गए, और ईश्वर के मित्रों ने उनकी गुलामी और उनके दंड से मुक्ति पाई। एक ही सभा में सत्तर हजार जादूगर सजदे में गिर गए और एक ज़बान होकर बोले:

"हम संसारों के रब पर ईमान लाए, जो मूसा और हारून का रब है।"[2]

हम उस पर ईमान लाए जो सारे संसार का रब है, मूसा और हारून का रब है।

प्रभु अज़्ज़-ओ-जल्ल सक्षम था और है कि बिना किसी नबी और किताब के पूरे संसार को एक क्षण में हिदायत (मार्गदर्शन) दे दे।

"और यदि अल्लाह चाहता तो उन सबको हिदायत पर इकट्ठा कर देता, अतः तुम कदापि अज्ञानियों में से न होना।"[3]

और अल्लाह चाहता तो उन्हें हिदायत पर इकट्ठा कर देता; तो ऐ सुनने वाले! तू हरगिज़ नादान न बन।

लेकिन उसने दुनिया को कारणों का संसार बनाया है और अपनी गहन हिकमत के अनुसार हर नेमत में अलग हिस्सा रखा है। वह चाहता तो मनुष्य आदि जीवों को भूख ही न लगती, या भूखे होने पर किसी का केवल पवित्र नाम लेने से, या किसी का हवा सूँघने से पेट भर जाता। ज़मीन जोतने से लेकर रोटी पकाने तक जो कठिन परिश्रम करने पड़ते हैं, वे किसी को न करने पड़ते। मगर उसने ऐसा ही चाहा और इसमें भी अनगिनत अंतर रखे; किसी को इतना दिया कि लाखों पेट उसके द्वार से पलते हैं, और किसी पर उसके परिवार के साथ तीन-तीन फाके गुज़रते हैं। संक्षेप में, हर चीज़ में "क्या वे आपके रब की दया बांटते हैं? हमने ही उनके बीच उनकी जीविका बांटी है..."[4] (क्या वे तुम्हारे रब की रहमत बाँटते हैं? हमने उनके बीच दुनिया की ज़िंदगी में उनकी गुज़र-बसर का सामान बाँटा है। - अनु.) की रंगीनियाँ हैं। मूर्ख, निर्बुद्धि, या सबसे बड़ा जाहिल और अधर्मी वह है जो उसकी शान में क्यों और कैसे के प्रश्न करे कि ऐसा क्यों हुआ वैसा क्यों नहीं? वह सुनता है उसकी शान है "अल्लाह जो

चाहता है करता है"[5] "अल्लाह की शान है कि वह जो चाहे करता है।" "निस्संदेह अल्लाह वह हुक्म देता है जो वह चाहता है।"[6]

---

1 2 अल-कुरान अल-करीम 7/121 और 122 3 अल-कुरान अल-करीम 6/35 4 अल-कुरान अल-करीम 43/32 5 अल-कुरान अल-करीम 14/27 6 अल-कुरान अल-करीम 5/1

من علماء الملئکۃ : امض لما امرت بہ ، فانا جھدنا ان نعلم ملائکہ عظام علیہم السلام نے کہا اے موسیٰ آپ کو جہاں کا حکم ہے ہذا فلم نعلمہ۔[1] جائیے، یہ وہ راز ہے کہ باوصف کوشش آج تک ہم پر بھی نہ کھلا۔

میں کہا پھر میرے جانے سے کیا فائدہ ہے؟ اس پر بارہ علماء

اور آخر نفع بعثت سب نے دیکھ لیا کہ دشمنانِ خدا ہلاک ہوئے ، دوستانِ خدا نے ان کی غلامی ، ان کے عذاب سے نجات پائی ایک جلسے میں ستر ہزار ساحر سجدہ میں گر گئے اور ایک زبان بولے :

"اٰمَنَّا بِرَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ۙ رَبِّ مُوْسٰی وَ ھٰرُوْنَ ۝" [2]

ہم اس پر ایمان لائے جو رب ہے سارے جہاں کا ، رب ہے موسیٰ و ہارون کا۔

مولیٰ عز وجل قادر تھا اور ہے کہ بے کسی نبی و کتاب کے تمام جہان کو ایک آن میں ہدایت فرما دے۔

"وَلَوْ شَاءَ اللّٰہُ لَجَمَعَھُمْ عَلَی الْھُدٰی فَلَا تَکُوْنَنَّ مِنَ الْجٰھِلِیْنَ ۝" [3]

اور اللہ چاہتا تو انہیں ہدایت پر اکٹھا کر دیتا تو اے سننے والے! تو ہر گز نادان نہ بن۔

مگر اس نے دنیا کو عالم اسباب بنایا ہے اور ہر نعمت میں اپنی حکمت بالغہ کے مطابق مختلف حصہ رکھا ہے وہ چاہتا تو انسان وغیرہ جانداروں کو بھوک ہی نہ لگتی ، یا بھوکے ہوتے تو کسی کا صرف نام پاک لینے سے ، کسی کا ہوا سونگھنے سے پیٹ بھرتا ، زمین جوتنے سے روٹی پکانے تک جو سخت مشقتیں پڑتی ہیں کسی کو نہ ہوتیں، مگر اس نے یونہی چاہا اور اس میں بھی بے شمار اختلاف رکھا کسی کو اتنا دیا کہ لاکھوں پیٹ اس کے در سے پلتے ہیں ، اور کسی پر اس

کے اہل و عیال کے ساتھ تین تین فاقے گزرتے ہیں۔ غرض ہر چیز میں "اَهُمْ يَقْسِمُوْنَ رَحْمَتَ رَبِّكَ ؕ نَحْنُ قَسَمْنَا بَيْنَهُمْ" [4] (کیا تمھارے رب کی رحمت وہ بانٹتے ہیں ، ہم نے ان میں ان کی زیست کا سامان دنیا کی زندگی میں بانٹا ۔ ت) کی نیرنگیاں ہیں۔ احمق ، بدعقل، یا اجہل بد دین وہ اس کے ناموس میں چوں و چرا کرے کہ یوں کیوں کیوں نہ کیا؟ سنتا ہے اس کی شان ہے " يَفْعَلُ اللّٰهُ مَا يَشَاءُ ۟ " [5] " اللہ جو چاہے کرتا ہے اس کی شان ہے " اِنَّ اللّٰهَ يَحْكُمُ مَا يُرِيْدُ ۝" [6]

---

1 2 القرآن الکریم ۷/ ۱۲۱ و ۱۲۲ 3 القرآن الکریم ۶/ ۳۵ 4 القرآن الکریم ۴۳/ ۳۲ 5 القرآن الکریم ۱۴/ ۲۷ 6 القرآن الکریم ۵/ ۱

Allah ordains whatever He wills. His majesty is such: "He is not questioned about what He does, but they will be questioned." (Quran 21:23) No one can question Him about what He does, while everyone else will be questioned. Zaid bought a thousand bricks for one rupee. He used five hundred in a "Mosque" and five hundred for the flooring of a "latrine" and cesspools. Can anyone argue that these thousand bricks were made by the same hands, from the same clay, baked in the same kiln, and bought for one rupee—so what was so special about those five hundred that they were used for the mosque, and what was the defect in these others that they were placed in a site of impurity? If a fool were to ask him, he would simply say: "They were my property, I did with them as I pleased." When this is the case with metaphorical, false ownership, what can be said about the true, real ownership? He is the sole, pure, unique, and true owner of us, our lives, our wealth, and the entire universe. What room is there for anyone to utter a word against His works or His commands! Is there any equal to Him or any superior over Him who could ask Him why or what? He is the Absolute Owner, without partner; He has done what He willed and will do what He wills. If a lowly, insignificant, and wretched beggar confronts a mighty king, it is said his head is itching [for trouble], disaster has surrounded him. Every wise person will say: "O mindless, ill-mannered one! Stay within your limits. When it is certain that the King is perfectly just and unique and perfect in all attributes of excellence, what right do you have to interfere in His commands?" Couplet: Gada-e-khak nashini to Hafiza makhrosh / Nizam-e-mamlakat-e-khwesh khusrawan danand (O Hafiz! You are a beggar sitting on the dust, do not make a noise; kings know the governance of their realm.) Alas! That a person should have this consideration regarding worldly, metaphorical, and false kings, yet should voice opinions regarding the commands of the King of Kings, the True Sovereign, Jalla Jalaluhu. Not just kings, but if a person even lower in rank than oneself, even one's servant or slave, is a master expert in some skill and the person himself is unaware of it, he will never understand most of his actions; he simply lacks that perception. But if he has any sense, he will not object to it. He will realize that he is a master and wise in this work, and my thought cannot reach that far.

1. The Holy Quran 21:23
2. Diwan-e-Hafiz, letter 'Shin' Mu'jama, Sab Rang Kitab Ghar Delhi, p. 258.

अल्लाह जो चाहता है हुक्म फरमाता है। उसकी शान है "उससे नहीं पूछा जाता जो वह करता है, बल्कि उनसे (मख्लूक से) पूछा जाएगा" (क़ुरआन 21:23)। वह जो कुछ करे उससे कोई पूछने वाला नहीं और सब से सवाल होगा। ज़ैद ने एक रुपये की हज़ार ईंटें खरीदीं, पाँच सौ "मस्जिद" में लगाईं, पाँच सौ "पाखाने" की ज़मीन और नालियों में। क्या इससे कोई उलझ सकता है कि एक हाथ की बनाई हुई, एक मिट्टी से बनी हुई, एक भट्टी से पकी हुई, एक रुपये की मोल ली हुई हज़ार ईंटें थीं, उन पाँच सौ में क्या खूबी थी कि मस्जिद में खर्च कीं, और उनमें क्या ऐब था कि गंदगी की जगह में रखीं? अगर कोई मूर्ख उससे पूछे भी तो वह यही कहेगा कि मेरी मिल्कियत थीं मैंने जो चाहा किया। जब मज़ाज़ी (नाममात्र की) झूठी मिल्कियत का यह हाल है तो हकीकी (वास्तविक) सच्ची मिल्कियत का क्या पूछना। हमारा और हमारी जान व माल और तमाम जहान का वह एक अकेला पाक निराला सच्चा मालिक है। उसके काम, उसके अहकाम (आदेशों) में किसी को ज़बान खोलने की क्या मजाल! क्या कोई उसका हमसर (बराबर) या उस पर अफ़सर है जो उससे पूछे क्यों और क्या? मालिक-ए-कुल है, बे-शरीक (अकेला) है, जो चाहा किया और जो चाहेगा करेगा। ज़लील फकीर बे-हैसियत हकीर अगर बादशाह-ए-जब्बार (शक्तिशाली राजा) से उलझे तो उसका सर खुजलाया है, शामत (विपत्ति) ने घेरा है, हर अकलमंद यही कहेगा कि ओ बद-अक्ल (निर्बुद्धि), बे-अदब! अपनी हद में रह, जब यकीनन मालूम है कि बादशाह कमाल आदिल (पूर्ण न्यायप्रिय) और तमाम कमाली सिफात में यकता व कामिल (अनोखा और पूर्ण) है, तो तुझे उसके अहकाम में दखल देने की क्या मजाल! शेर: गदा-ए-खाक नशीनी तो हाफिज़ा मखरोश / निज़ाम-ए-ममलकत-ए-ख्वेश खुसरवां दानंद (तुम धूल पर बैठने वाले फकीर हो ऐ हाफिज! शोर मत मचाओ, अपनी सल्तनत के निजाम को बादशाह ही जानते हैं।) अफ़सोस कि दुनियावी, मज़ाज़ी, झूठे बादशाहों की निसबत तो आदमी को यह ख्याल हो और मलिक-उल-मुलूक (बादशाहों के बादशाह) हकीकी बादशाह जल्ल जलालुहू के अहकाम में राय-ज़नी (अपनी राय देना) करे। सलातीन (सुल्तानों) तो सलातीन, अपने बराबर वाले बल्कि अपने से भी कम रुतबा शख्स, बल्कि अपना नौकर या गुलाम जब किसी सिफत (हुनर) का उस्ताद माहिर हो और खुद यह शख्स उससे आगाह (जानकार) नहीं, तो उसके अक्सर कामों को हरगिज़ न समझ सकेगा, यह इतना इद्राक (समझ) ही नहीं रखता, मगर अक्ल से हिस्सा है तो उस पर एतराज़ भी न

होगा। जान लेगा कि यह इस काम का उस्ताद व हकीम (बुद्धिमान) है, मेरा ख्याल वहां तक नहीं पहुँच सकता।

1. अल-कुरान अल-करीम 21/23
2. दीवान-ए-हाफ़िज़ रदीफ़ शीन मुअज्जमा, सब रंग किताब घर दिल्ली पृ. 258

पृष्ठ 296 / 750

اللہ جو چاہے حکم فرماتا ہے۔ اس کی شان ہے "لَا یُسْئَلُ عَمَّا یَفْعَلُ وَھُمْ یُسْئَلُوْنَ"۱ وہ جو کچھ کرے اس سے کوئی پوچھنے والا نہیں اور سب سے سوال ہوگا زید نے روپے کی ہزار اینٹیں خریدیں، پانچسو "مسجد" میں لگائیں، پانچسو "پاخانہ" کی زمین اور قد بچوں میں کیا اس سے کوئی الجھ سکتا ہے کہ ایک ہاتھ کی بنائی ہوئی، ایک مٹی سے بنی ہوئی، ایک آوے سے پکی ہوئی ایک روپے کی مول لی ہوئی ہزار اینٹیں تھیں، ان پانچسو میں کیا خوبی تھی کہ مسجد میں صرف کیں، اور ان میں کیا عیب تھا کہ جائے نجاست میں رکھیں اگر احمق اس سے پوچھے بھی تو وہ یہی کہے گا کہ میری ملک تھیں میں نے جو چاہا کیا۔ جب مجازی جھوٹی ملک کا یہ حال تو حقیقی سچی ملک کا کیا پوچھنا۔ ہمارا اور ہماری جان ومال اور تمام جہان کا وہ ایک اکیلا پاک نرالا سچا مالک ہے۔ اس کے کام ، اس کے احکام میں کسی کو مجال دم زدن کیا معنی! کیا کوئی اسکا ہمسر یا اس پر افسر ہے جو اس سے کیوں اور کیا کہے۔ مالک علی الاطلاق ہے، بے اشتراک ہے، جو چاہا کیا اور جو چاہے گا کرے گا، ذلیل فقیر بے حیثیت حقیر اگر بادشاہ جبار سے الجھے تو اسکا سر کھجایا ہے، شامت نے گھیرا ہے اس ہر عاقل یہی کہے گا کہ او بد عقل، بے ادب! اپنی حد پر رہ، جب یقیناً معلوم ہے کہ بادشاہ کمال عادل اور جمیع کمال صفات میں یکتا و کامل ہے تو تجھے اس کے احکام میں دخل دینے کی کیا مجال !ے گدائے خاک نشینی تو حافظا مخروش / نظام مملکت خویش خسروان دانند۲ (تو خاک نشینی گدا گر ہے اے حافظ ! شور مت کر، اپنی سلطنت کے نظام کو بادشاہ جانتے ہیں ت) افسوس کہ دنیوی، مجازی، جھوٹے بادشاہوں کی نسبت تو آدمی کو یہ خیال ہو اور ملک الملوک بادشاہ حقیقی جل جلالہ کے احکام میں رائے زنی کرے، سلاطین تو سلاطین اپنا برابر زئی بلکہ اپنے سے بھی کم رتبہ شخص بلکہ اپنا نو کر یا غلام جب کسی صفت کا

استاد ماہر ہو اور خود یہ شخص اس سے آگاہ نہیں تو اس کے اکثر کاموں کو ہر گز نہ سمجھ سکے گا، یہ اتنا ادراک ہی نہیں رکھتا، مگر عقل سے حصہ ہے تو اس پر معترض بھی نہ ہوگا۔ جان لے گا کہ یہ اس کام کا استاد و حکیم ہے، میرا خیال وہاں تک نہیں پہنچ سکتا۔

۱ القرآن الکریم ۲۱ / ۲۳ ۲ دیوان حافظ ردیف شین معجمہ سب رنگ کتاب گھر دہلی ص ۲۵۸

Vol. 29 Fatawa Razawiya

In short, one should consider their own understanding insufficient to comprehend His wisdom. Then, to delve into the secrets of the Lord of lords, the Truly Wise, the Knower of secrets and hidden things, the Mighty and Majestic, and to object to what is not understood, if it is not madness, then it is irreligiousness. If it is not madness, it is irreligiousness, and we seek refuge with Allah, the Lord of the worlds.

O dear one! To know something as true, it is not necessary to know its essence. The world knows that a magnet attracts iron, and that iron magnetized with magnetic force turns towards the North Star. But no one can tell its essence and reality: what is the affinity between this earthy iron and that celestial star which is millions of miles away from here? And how does it have awareness of its direction? And this is not the only one; there are thousands of such wonders in the universe that great philosophers died searching for and could not find their reality. Yet, these things cannot be denied. Let man explain about his own soul, what is it that he calls "I"? And what is it that, when it departs, this heap of dust remains senseless and motionless? Allah (the Mighty and Majestic) says in the Criterion of Wisdom (The Quran):

"And you do not will except that Allah wills - Lord of the worlds." - 1 (You cannot wish except what Allah, the Lord of all the worlds, wills.)

And He says: "Is there any creator other than Allah?" - 2 (Is there any other creator of anything besides Allah?)

And He says: "For them is the choice." - 3 (The exclusive choice belongs to Him.)

And He says: "Unquestionably, His is the creation and the command; blessed is Allah, Lord of the worlds." - 4 (Do you hear? Creation and giving commands are for Him alone. Greatly blessed is Allah, the Master of all the worlds.)

These noble verses clearly state that creating, bringing from non-existence into existence, is His exclusive work; others have no share in it at all. Furthermore, original choice belongs to Him, and without His will...

---

1. Al-Quran Al-Karim 81/29
2. Al-Quran Al-Karim 35/3
3. Al-Quran Al-Karim 28/68 and 33/36
4. Al-Quran Al-Karim 7/54 Page 297 of 750

संक्षेप में, व्यक्ति को अपनी समझ को उसकी हिकमत (बुद्धिमत्ता) को समझने के लिए अपर्याप्त मानना चाहिए। फिर रब्बुल अरबाब (स्वामियों के स्वामी), हकीमे हकीकी (सच्चे बुद्धिमान), आलम-उस-सिर्र वल-खफ़ी (रहस्यों और छिपी बातों के ज्ञाता) अज़्ज़ व जल्ल के रहस्यों में गहराई से जाना और जो समझ में न आए उस पर आपत्ति करना, यदि पागलपन नहीं है तो अधर्म है। यदि पागलपन नहीं है, तो अधर्म है, और हम अल्लाह, विश्व के रचयिता से शरण माँगते हैं।

ऐ अज़ीज़! किसी बात को सच जानने के लिए उसकी वास्तविकता जानना ज़रूरी नहीं होता। दुनिया जानती है कि चुंबक लोहे को खींचता है, और चुंबकीय शक्ति वाला लोहा ध्रुव तारे की ओर झुकता है। लेकिन इसकी हक़ीक़त और गहराई कोई नहीं बता सकता कि इस मिट्टी के लोहे और उस आकाशीय तारे में, जो यहाँ से करोड़ों मील दूर है, आपस में क्या लगाव है? और उसे उसकी दिशा का बोध कैसे है? और यही एक बात नहीं, संसार में ऐसे हज़ारों अजूबे हैं कि बड़े-बड़े दार्शनिक धूल छानते हुए मर गए और उनकी हक़ीक़त न पा सके। फिर भी इन बातों से इंकार नहीं किया जा सकता। मनुष्य अपनी जान के बारे में ही बताए, वह क्या चीज़ है जिसे वह "मैं" कहता है? और वह क्या चीज़ है जिसके निकल जाने पर यह मिट्टी का ढेर संज्ञाहीन और गतिहीन रह जाता है? अल्लाह जल्ल जलालहु फ़ुरक़ान-ए-हकीम (कुरान) में फ़रमाता है:

"और तुम नहीं चाह सकते मगर यह कि अल्लाह चाहे, जो सारे जहानों का रब है।" - १

और फ़रमाता है: "क्या अल्लाह के सिवा कोई और भी किसी चीज़ का बनाने वाला है?" - २

और फ़रमाता है: "अधिकार ख़ास उसी का है।" - ३

और फ़रमाता है: "सुन लो, पैदा करना और हुक्म देना उसी के लिए है। बड़ी बरकत वाला है अल्लाह, सारे जहानों का मालिक।" - ४

ये पाक आयतें साफ़ तौर पर इरशाद फ़रमा रही हैं कि पैदा करना, न होने से वजूद में लाना, ख़ास उसी का काम है, दूसरे का इसमें ज़रा भी (बिल्कुल) साझा नहीं, साथ ही मूल अधिकार उसी का है, और बिना उसकी मर्ज़ी के..

---

1. अल-कुरान अल-करीम ८१/२९

2. अल-कुरान अल-करीम ३५/३

3. अल-कुरान अल-करीम २८/६८ और ३३/३६

4. अल-कुरान अल-करीम ७/५४ पृष्ठ २९७/७५०

غرض اپنی فہم کو قاصر جانے کہ اس کی حکمت کو۔ پھر رب الارباب، حکیم حقیقی، عالم السر والخفی عزجلالہ کے اسرار میں خوض کرنا اور جو سمجھ میں نہ آئے اس پر معترض ہونا اگر بے دینی نہیں جنون ہے۔ اگر جنون نہیں بے دینی ہے، والعیاذ باللہ رب العالمین۔

اے عزیز! کسی بات کو حق جاننے کے لئے اس کی حقیقت جانی لازم نہیں ہوتی، دنیا جانتی ہے کہ مقناطیس لوہے کو کھینچتا ہے، اور مقناطیسی قوت دیا ہوا لوہا ستارہ قطب کی طرف توجہ کرتا ہے۔ مگر اس کی حقیقت و کنہ کوئی نہیں بتا سکتا کہ اس خاکی لوہے اور اس افلاکی ستارے میں کہ یہاں سے کروڑوں میل دور ہے باہم کیا الفت؟ اور کیونکر اسے اس کی جہت کا شعور ہے؟ اور ایک یہی نہیں عالم میں ہزاروں ایسے عجائب ہیں کہ بڑے بڑے فلاسفہ خاک چھان کر مر گئے اور ان کی کنہ نہ پائی۔ پھر اس سے ان باتوں کا انکار نہیں ہوسکتا، آدمی اپنی جان ہی کو بتائے وہ کیا شئی ہے جسے یہ "میں" کہتا ہے، اور کیا چیز جب نکل جاتی ہے تو یہ مٹی کا ڈھیر بے حس و حرکت رہ جاتا ہے۔ اللہ جل جلالہ فرقانِ حکیم میں فرماتا ہے:

"وَمَا تَشَاءُوْنَ اِلَّآ اَنْ یَّشَآءَ اللّٰہُ رَبُّ الْعٰلَمِیْنَ" - ۱ تم کیا چاہو ، مگر یہ کہ چاہے اللہ رب سارے جہان کا۔

اور فرماتا ہے: "ھَلْ مِنْ خَالِقٍ غَیْرُ اللّٰہِ" - ۲ کیا کوئی اور بھی کسی چیز کا خالق ہے سوا اللہ کے۔

اور فرماتا ہے: "لَھُمُ الْخِیَرَۃُ" - ۳ اختیار خاص اسی کو ہے۔

اور فرماتا ہے: "اَلَا لَہُ الْخَلْقُ وَالْاَمْرُ تَبٰرَکَ اللّٰہُ رَبُّ الْعٰلَمِیْنَ" - ۴ سنتے ہو پیدا کرنا اور حکم دینا اسی کے لیے ہے بڑی برکت والا ہے اللہ مالک سارے جہان کا۔

یہ آیاتِ کریمہ صاف ارشاد فرما رہی ہیں کہ پیدا کرنا، عدم سے وجود میں لانا خاص اسی کا کام ہے، دوسرے کو اس میں اصلاً (بالکل) شرکت نہیں، نیز اصل اختیار اسی کا ہے، نیز بے اس کی مشیت کے

---

1. القرآن الکریم ۸۱/ ۲۹
2. القرآن الکریم ۳۵/ ۳
3. القرآن الکریم ۲۸/ ۶۸ و ۳۳/ ۳۶
4. القرآن الکریم ۷/ ۵۴ Page 297 of 750

Fatawa Razawiyya Volume 29

No one's will can prevail. And that same Lord and Master, may He be glorified and exalted, says in this Holy Quran: "That is how We recompensed them for their rebellion, and indeed, We are most truthful."[1] This reward We gave them for their rebellion, and indeed, without doubt, We are truthful.

And He says: "And We did not wrong them, but they were wronging themselves."[2] We did not do any injustice to them, rather they used to do injustice to their own souls.

And He says: "Do what you will; indeed, He is Seeing of what you do."[3] Do whatever your heart desires, Allah is watching your deeds.

And He says: "And say, 'The truth is from your Lord, so whoever wills - let him believe; and whoever wills - let him disbelieve.' Indeed, We have prepared for the wrongdoers a fire whose walls will surround them."[4] O Prophet! You say that the truth is from your Lord, so whoever wishes may believe and whoever wishes may disbelieve. Indeed, We have prepared for the wrongdoers such a fire whose tent-flaps will surround them; there will be fire all around.

And He says: "His companion [the devil] will say, 'Our Lord, I did not make him transgress, but he [himself] was in extreme error.' [Allah] will say, 'Do not dispute before Me, while I had already presented to you the warning. The word will not be changed with Me, and never will I be unjust to the servants.'" The companion of the disbeliever, the devil, said: "O our Lord! I did not make them rebellious; they were themselves in far-off misguidance." Lord Almighty said: "Do not argue uselessly in My presence, I had already warned you of the punishment. The word is not changed with Me, and nor do I do any injustice to my servants."

[1] Al-Quran Al-Kareem 6/146 [2] Al-Quran Al-Kareem 16/118 [3] Al-Quran Al-Kareem 41/40 [4] Al-Quran Al-Kareem 18/29

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

किसी की इच्छा नहीं चल सकती। और वही मालिक और मौला जल्ला व अला इसी कुरआन करीम में फ़रमाता है: "यह हमने उनकी सरकशी का बदला उन्हें दिया, और बेशक हम सच कहने वाले हैं।"[1] यह हमने उनकी सरकशी का बदला उन्हें दिया, और निस्संदेह हम पूरी तरह से सच्चे हैं।

और फ़रमाता है: "और हमने उन पर कोई ज़ुल्म नहीं किया, बल्कि वे खुद अपनी जानों पर ज़ुल्म करते थे।"[2] हमने उन पर कोई अत्याचार नहीं किया बल्कि वे स्वयं अपनी आत्माओं पर अत्याचार करते थे।

और फ़रमाता है: "जो तुम्हारा जी चाहे करो, बेशक वह तुम्हारे कामों को देख रहा है।"[3] जो तुम्हारा मन चाहे करते रहो, अल्लाह तुम्हारे कर्मों को देख रहा है।

और फ़रमाता है: "ऐ नबी! तुम फ़रमा दो कि सत्य तुम्हारे रब की ओर से है, तो जो चाहे ईमान लाए और जो चाहे कुफ़्र (अस्वीकार) करे, बेशक हमने ज़ालिमों के लिए वह आग तैयार कर रखी है जिसकी दीवारें उन्हें घेर लेंगी।"[4] ऐ नबी! आप कह दें कि सत्य तुम्हारे पालनहार की ओर से है, तो जो चाहे विश्वास करे और जो चाहे इनकार करे। वास्तव में हमने अत्याचारियों के लिए एक ऐसी आग तैयार कर रखी है जिसकी लपटें उन्हें घेर लेंगी, हर तरफ आग ही आग होगी।

और फ़रमाता है: "काफ़िर का साथी शैतान बोला, 'ऐ हमारे रब! मैंने उसे विद्रोही नहीं बनाया था, बल्कि वह खुद ही बड़ी गुमराही में था।' रब अज़्वज़ल ने फ़रमाया, 'मेरे पास बेकार झगड़ा न करो, मैं तो तुम्हें पहले ही सज़ा की चेतावनी सुना चुका था। मेरे यहाँ बात बदली नहीं जाती और न ही मैं अपने बंदों पर कोई ज़ुल्म करता हूँ।'" काफ़िर का साथी शैतान बोला, "हे हमारे पालनहार! मैंने उन्हें विद्रोही नहीं बनाया था, वह स्वयं ही दूर की गुमराही में था।" पालनहार सर्वशक्तिमान ने फ़रमाया, "मेरी उपस्थिति में बेकार का विवाद न करो, मैं तुम्हें पहले ही दंड की चेतावनी दे चुका था। मेरे यहाँ बात बदली नहीं जाती, और न ही मैं अपने दासों पर कोई अत्याचार करता हूँ।"

[1] अल-कुरआन अल-करीम 6/146 [2] अल-कुरआन अल-करीम 16/118 [3] अल-कुरआन अल-करीम 41/40 [4] अल-कुरआन अल-करीम 18/29

کسی کی مشیت نہیں ہوسکتی۔ اور وہی مالک و مولیٰ جل وعلا اسی قرآن کریم میں فرماتا ہے: "ذٰلِكَ جَزَيْنٰهُمْ بِبَغْيِهِمْ وَاِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ۝" - 1 یہ ہم نے ان کی سرکشی کا بدلہ انہیں دیا، اور بیشک بالیقین ہم سچے ہیں۔

اور فرماتا ہے: "وَمَا ظَلَمْنٰهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ۝" - 2 ہم نے ان پر کچھ ظلم نہ کیا بلکہ وہ خود اپنی جانوں پر ظلم کرتے تھے۔

اور فرماتا ہے: "اِعْمَلُوْا مَا شِئْتُمْ اِنَّهٗ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝" - 3 جو تمہارا جی چاہے کئے جاؤ اللہ تمہارے کاموں کو دیکھ رہا ہے۔

اور فرماتا ہے: "وَقُلِ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكُمْ فَمَنْ شَآءَ فَلْيُؤْمِنْ وَّمَنْ شَآءَ فَلْيَكْفُرْ اِنَّـآ اَعْتَدْنَا لِلظّٰلِمِيْنَ نَارًا اَحَاطَ بِهِمْ سُرَادِقُهَا" - 4 اے نبی! تم فرما دو کہ حق تمہارے رب کے پاس سے ہے تو جو چاہے ایمان لائے اور جو چاہے کفر کرے بیشک ہم نے ظالموں کے لئے وہ آگ تیار کر رکھی ہے جس کے سرا پردے انہیں گھیر لیں گے ہر طرف آگ ہی آگ ہوگی۔

اور فرماتا ہے: "قَالَ قَرِيْنُهٗ رَبَّنَا مَآ اَطْغَيْتُهٗ وَلٰكِنْ كَانَ فِيْ ضَلٰلٍۢ بَعِيْدٍ ۝ قَالَ لَا تَخْتَصِمُوْا لَدَيَّ وَقَدْ قَدَّمْتُ اِلَيْكُمْ بِالْوَعِيْدِ ۝ مَا يُبَدَّلُ الْقَوْلُ لَدَيَّ وَمَآ اَنَا بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ۝" کافر کا ساتھی شیطان بولا اے رب ہمارے! میں نے انہیں سرکش نہ کر دیا تھا یہ آپ ہی دور کی گمراہی میں تھا، رب عزوجل نے فرمایا میرے حضور فضول جھگڑا نہ کرو، میں تو تمہیں پہلے ہی سزا کا ڈر سنا چکا تھا، میرے یہاں بات بدلی نہیں جاتی، اور نہ میں اپنے بندوں پر کچھ ظلم کروں۔

1 القرآن الكريم ٦/ ١٤٦ 2 القرآن الكريم ١٦/ ١١٨ 3 القرآن الكريم ٤١/ ٤٠ 4 القرآن الكريم ١٨/ ٢٩

Fatawa Rizvia Volume 29

"...unjust to the servants."[1] — (I) do wrong to the servants. These verses clearly state that man himself commits injustice against his own soul, and he reaps what he sows. He certainly possesses the choice and will for a forbidden act. Now, all verses of both kinds are definitively the belief of a Muslim. Undoubtedly, without a doubt, God is also the Creator of the actions of the servant. Undoubtedly, the servant cannot do anything without the Divine Will, and undoubtedly, the servant commits injustice against his own soul; undoubtedly, he is deserving of punishment due to his own misdeeds.

These two things cannot be reconciled except by believing in the creed of the Ahl-us-Sunnah wa'l-Jama'ah. What is that matter? It is that which the leader and master of the Ahl-us-Sunnah, the Commander of the Faithful, Ali al-Murtaza (may Allah honor his noble countenance), taught them.

Abu Nu'aym in *Hilyat al-Awliya*, through the chain of Imam Shafi'i from Yahya bin Sulaym from Imam Ja'far al-Sadiq, from Hazrat Imam Baqir, from Hazrat Abdullah bin Ja'far al-Tayyar, from the Commander of the Faithful, Mawla Ali (may Allah be pleased with them all), reports:

Arabic Text	**Urdu Translation**
Indeed, he addressed the people one day (he mentioned his sermon and then said): a man from those who had witnessed the Battle of the Camel with him stood up and said, "O Commander of the Faithful! Inform us about predestination (Qadar)." He said, "It is a deep ocean, do not enter it." He said, "O Commander of the Faithful! Inform us about predestination." He said, "It is a secret of Allah, do not overexert yourself for its burden." He said, "O Commander of the Faithful! Inform us about predestination." He said, "Since you refuse [to stop], then it is a matter between two matters; there is neither compulsion (jabr) nor absolute delegation	Meaning: One day the Commander of the Faithful was delivering a sermon. A person who was with the Commander of the Faithful during the event of Jamal stood up and requested, "O Commander of the Faithful! Inform us about the issue of predestination (Taqdeer)." He said, "It is a deep river, do not step into it." He requested, "O Commander of the Faithful! Inform us." He said, "It is a secret of Allah, do not carry its burden by force." He requested, "O Commander of the Faithful! Inform us." He said, "If you do not agree, then it is a matter between two matters; neither is man absolutely forced, nor is full choice handed over to

Arabic Text

(tafwid)." He said, "O Commander of the Faithful! So-and-so person says that man acts by his own capability (istita'ah), and he is present with you." Ali said, "Bring him to me." So they brought him forward. When he saw him, he drew his sword to the length of four fingers from its scabbard and said, "Do you possess that capability..."

Urdu Translation

him." He requested, "O Commander of the Faithful! Such-and-such person says that man acts with his own power, and he is present before you." Mawla Ali said, "Bring him before me." People made him stand. When the Commander of the Faithful saw him, [he drew] the blessed sword about four fingers' length from the scabbard [and said], "Do you possess that capability..."

[1] Al-Quran al-Karim 50/7, 29 Page 299 of 750

फतवा रज़विया जिल्द 29

"...बन्दों पर ज़ुल्म करूँ।"[1] — (मैं) बन्दों पर ज़ुल्म करूँ। ये आयतें साफ़ इर्शाद फ़रमा रही हैं कि बन्दा ख़ुद ही अपनी जान पर ज़ुल्म करता है, वह अपनी ही करनी भरता है, वह एक हराम का इख़्तियार और इरादा ज़रूर रखता है। अब दोनों क़िस्म की सब आयतें क़तअन मुसलमान का ईमान हैं। बेशक बिला-शुबा बन्दा के अफ़आल का ख़ालिक़ भी ख़ुदा ही है। बेशक बन्दा इरादा-ए-इलाहिया के बिना कुछ नहीं कर सकता, और बेशक बन्दा अपनी जान पर ज़ुल्म करता है; बेशक वह अपनी ही बद-अमलियों के सबब मुस्तहिक़-ए-सज़ा है।

ये दोनों बातें जमा नहीं हो सकतीं मगर यूँ ही कि अक़ीदा-ए-अहले सुन्नत व जमाअत पर ईमान लाया जाए, वह क्या बात है? वह जो अहले सुन्नत के सरदार व मौला अमीर-उल-मोमिनीन अली मुर्तज़ा (कर्रमल्लाहु तआला वज्हहु-ल-करीम) ने उन्हें तालीम फ़रमाया।

अबू नुऐम ने 'हिल्यतुल औलिया' में ब-तरीक़े इमाम शाफ़ई, यह्या बिन सुलैम से, उन्होंने इमाम जाफ़र सादिक़ से, उन्होंने हज़रत इमाम बाक़िर से, उन्होंने हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र तय्यार से, और उन्होंने अमीर-उल-मोमिनीन मौला अली (रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम) से रिवायत की है:

अरबी पाठ	**हिंदी अनुवाद**
यानी एक दिन उन्होंने लोगों को संबोधित किया (फिर अपना खुतबा ज़िक्र किया और कहा): जमल के युद्ध में उनके साथ मौजूद रहने वालों में से एक व्यक्ति खड़ा हुआ और कहा, "हे अमीर-उल-मोमिनीन! हमें तक़दीर (क़दर) के बारे में बताएं।" उन्होंने कहा, "यह एक गहरा समुद्र है, इसमें प्रवेश न करें।" उसने कहा, "हे अमीर-उल-मोमिनीन! हमें तक़दीर के बारे में बताएं।" उन्होंने कहा, "यह अल्लाह का रहस्य है, इसके बोझ के लिए खुद को न थकाएँ।" उसने कहा, "हे अमीर-उल-मोमिनीन! हमें तक़दीर के बारे में बताएं।" उन्होंने कहा, "चूंकि तुम नहीं मान रहे हो, तो यह दो मामलों के बीच का मामला है; न तो जबर	यानी एक दिन अमीर-उल-मोमिनीन ख़ुत्बा फ़रमा रहे थे। एक शख़्स ने, जो वाक़िआ-ए-जमल में अमीर-उल-मोमिनीन के साथ थे, खड़े होकर अर्ज़ की: या अमीर-उल-मोमिनीन! हमें मसला-ए-तक़दीर से ख़बर दीजिये। फ़रमाया: गहरा दरिया है इसमें क़दम न रख। अर्ज़ की: या अमीर-उल-मोमिनीन! हमें ख़बर दीजिये। फ़रमाया: अल्लाह का राज़ है, ज़बरदस्ती इसका बोझ न उठा। अर्ज़ की: या अमीर-उल-मोमिनीन! हमें ख़बर दीजिये। फ़रमाया: अगर नहीं मानता तो एक अम्र है दो अम्रों के दरम्यान, न आदमी मजबूर-ए-महज़ है न

अरबी पाठ

(विवशता) है और न ही पूर्ण स्वतंत्र प्रभार (तफ़वीज़)।" उसने कहा, "हे अमीर-उल-मोमिनीन! फलां व्यक्ति कहता है कि मनुष्य अपनी क्षमता (इस्तताअत) से कार्य करता है, और वह आपके पास उपस्थित है।" अली ने कहा, "उसे मेरे पास लाओ।" तब उन्होंने उसे खड़ा किया। जब उन्होंने उसे देखा, तो अपनी तलवार म्यान से चार अंगुल की लंबाई तक निकाली और कहा, "क्या तुम उस क्षमता के मालिक हो..."

हिंदी अनुवाद

इख़्तियार इसे सुपुर्द है। अर्ज़ की: या अमीर-उल-मोमिनीन! फ़लाँ शख़्स कहता है कि आदमी अपनी.क़ुद्दरत से काम करता है, और वह हुज़ूर में हाज़िर है। मौला अली ने फ़रमाया: मेरे सामने लाओ। लोगों ने उसे खड़ा किया। जब अमीर-उल-मोमिनीन ने उसे देखा तो तेग़-ए-मुबारक चार उंगल की क़द्र नियाम से [बाहर निकाली और] फ़रमाया: क्या तू उस इस्तताअत का मालिक है...

[1] अल-क़ुरआन अल-करीम 50/7, 29 पेज 299 ऑफ़ 750

"بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ" 1 - بندوں پر ظلم کروں۔ یہ آیتیں صاف ارشاد فرمارہی ہیں کہ بندہ خود ہی اپنی جان پر ظلم کرتا ہے وہ اپنی ہی کرنی بھرتا ہے وہ ایک حرام کا اختیار واراده ضرور رکھتا ہے، اب دونوں قسم کی سب آیتیں قطعاً مسلمان کا ایمان ہیں۔ بے شک بے شبہ بندہ کے افعال کا خالق بھی خدا ہی ہے۔ بے شک بندہ بے ارادہ الٰہیہ کچھ نہیں کرسکتا، اور بے شک بندہ اپنی جان پر ظلم کرتا ہے، بے شک وہ اپنی ہی بداعمالیوں کے سبب مستحق سزا ہے۔

یہ دونوں باتیں جمع نہیں ہو سکتیں مگر یونہی کہ عقیدہ اہل سنت و جماعت پر ایمان لایا جائے، وہ کیا بات ہے؟ وہ جو اہل سنت کے سردار ومولیٰ امیر المومنین علی مرتضیٰ کرم اللہ تعالیٰ وجہہ الکریم نے انہیں تعلیم فرمایا۔

ابو نعیم حلیۃ الاولیاء میں بطریق امام شافعی عن یحییٰ بن سلیم امام جعفر صادق سے، وہ حضرت امام باقر، وہ حضرت عبداللہ بن جعفر طیار، وہ امیر المومنین مولیٰ علی رضی اللہ تعالیٰ عنہم سے راوی:

عربی متن	اردو ترجمہ
انه خطب الناس يوماً (فذكر خطبته ثم قال) فقام اليه رجل ممن كان شهد معه الجمل، فقال يا امير المؤمنين اخبرنا عن القدر، فقال بحر عميق فلا تلجه، قال يا امير المؤمنين اخبرنا عن القدر،	یعنی ایک دن امیر المومنین خطبہ فرما رہے تھے، ایک شخص نے کہ واقعہ جمل میں امیر المومنین کے ساتھ تھے کھڑے ہو کر عرض کی: یا امیر المومنین! ہمیں مسئلہ تقدیر سے خبر دیجئے، فرمایا: گہرا دریا ہے اس میں قدم نہ رکھ، عرض کی: یا امیر المومنین! ہمیں خبر دیجئے، فرمایا: اللہ

عربی متن	اردو ترجمہ
قال سر الله فلا تتكلفه، قال يا امير المؤمنين اخبرنا عن القدر، قال اما اذا ابيت فانه امر بين امرين لا جبر و لا تفويض، قال يا امير المؤمنين ان فلاناً يقول بالاستطاعة، وهو حاضرك، فقال علی به فاقاموه، فلما رآه سل سيفه قدر اربع اصابع، فقال الاستطاعة تملكها	کا راز ہے زبردستی اس کا بوجھ نہ اٹھا۔ عرض کی: یا امیر المومنین ہمیں خبر دیجئے فرمایا: اگر نہیں مانتا تو ایک امر ہے دو امروں کے درمیان، نہ آدمی مجبورِ محض ہے نہ اختیار اسے سپرد ہے۔ عرض کی: یا امیر المومنین فلاں شخص کہتا ہے کہ آدمی اپنی قدرت سے کام کرتا ہے، اور وہ حضور میں حاضر ہے، مولیٰ علی فرمایا: میرے سامنے لاؤ، لوگوں نے اسے کھڑا کیا۔ جب امیر المومنین نے اسے دیکھا تیغ مبارک چار انگل کے قدر نیام سے [باہر نکالی اور] فرمایا: کیا تو اس استطاعت کا مالک ہے...

1 القرآن الکریم ۵۰/ ۷، ۲۹ Page 299 of 750

Fatawa Razawiyya Volume 29

[Inside Box] (Arabic): ...with Allah or besides Allah? Beware of saying either of them, for then you would commit apostasy and I would strike your neck. He asked, "O Leader of the Faithful! Then what should I say?" He replied, "Say: I possess power through Allah, who if He wills, grants it to me."[1]

(Urdu Translation): ...drew [it] out and said: Regarding the power to act, are you an owner along with God or an owner separate from God? And listen, beware of saying either of these, for you will become an infidel and I will strike your neck. He said: O Leader of the Faithful! Then what should I say? He replied: Say it like this: I have authority given by that God, that if He wills, He gives me authority; without His will, I have no authority at all.

[Main Body] This is the belief of the Ahl al-Sunnah, that man is neither completely compelled like a stone nor completely independent, but is in a state between the two, the depth of whose secret is known only to God and is like a very deep river. May countless blessings of Allah Almighty be upon the Leader of the Faithful, Ali, who clarified these two complexities in two sentences. A gentleman asked about this, "Do sins not occur without the Divine will?" He replied, "So will anyone commit His disobedience by force (afayu'sa qahran)?" That is, He did not want sin to occur but it happened anyway—then His will was not supreme, God forbid! God would be like the metaphorical kings of this world, who may make the best arrangements against robbers and thieves, yet the robbers and thieves still carry out their work. Far from it, that King of Kings, the true absolute powerful Sovereign, is never such that a single atom could move in His kingdom without His command. That gentleman says, "It was as if he placed a stone in my mouth"[2] (faka-annama alqamani hajara), that is, Mola Ali's answer silenced me so completely that I could say nothing further. Amr bin Ubaid the Mu'tazilite, who did not believe that human actions occur by God's will, used to say himself, "No one has blamed me as much as a Magian (fire-worshipper) who was with me on a ship. I said, 'Why don't you become a Muslim?' He replied, 'God does not want it.' I said, 'God wants it, but the devils won't let you go.' He replied, 'Then I am with the dominant partner.'" Mola Ali pointed towards the rejection of this foul abomination: "If He does not want it, will anyone commit His disobedience by force?" As for that Magian's excuse, it is exactly like someone who is hungry and dying of hunger, food is placed in front of him, and he does not eat, saying, "God does not will it." If His will was...

[1] Hilyat al-Awliya [2] Statement of Mola Ali

फ़तावा रज़विया खंड 29

[बॉक्स के अंदर] (अरबी): ...अल्लाह के साथ या अल्लाह के बिना? इन दोनों में से कोई भी कहने से बचो, वर्ना तुम धर्मत्यागी (काफ़िर) हो जाओगे और मैं तुम्हारी गर्दन काट दूँगा। उसने पूछा, "हे अमीर-उल-मोमिनीन! फिर मैं क्या कहूँ?" उन्होंने फ़रमाया, "कहो: मैं उस अल्लाह के माध्यम से अधिकार रखता हूँ, जो अगर चाहे तो मुझे यह प्रदान करता है।"[1]

(उर्दू अनुवाद): ...निकाल ली और फ़रमाया: कार्य की शक्ति के बारे में, क्या तुम ईश्वर के साथ मालिक हो या ईश्वर से अलग मालिक हो? और सुनो, सावधान रहो, इन दोनों में से कोई भी बात मत कहना वरना काफ़िर हो जाओगे और मैं तुम्हारी गर्दन मार दूँगा। उसने कहा: ऐ अमीर-उल-मोमिनीन! फिर मैं क्या कहूँ? फ़रमाया: यूँ कह कि उस ख़ुदा के दिए से अधिकार रखता हूँ कि अगर वह चाहे तो मुझे अधिकार दे, बिना उसकी मर्जी के मुझे कुछ अधिकार नहीं।

[मुख्य पाठ] यही अहले सुन्नत का अक़ीदा है कि इंसान पत्थर की तरह पूरी तरह मजबूर नहीं है और न ही पूरी तरह स्वतंत्र, बल्कि इन दोनों के बीच की एक स्थिति है जिसकी गहराई का रहस्य ख़ुदा ही जानता है और यह एक अत्यंत गहरे समुद्र की तरह है। अल्लाह अज़्वजल की अनगिनत कृपाएँ अमीर-उल-मोमिनीन अली पर हों कि उन्होंने इन दोनों उलझनों को दो वाक्यों में स्पष्ट कर दिया। एक सज्जन ने इसी बारे में सवाल किया कि क्या पाप भी ईश्वरीय इच्छा (इरादा-ए-इलाहिया) के बिना नहीं होते? उन्होंने फ़रमाया, तो क्या कोई ज़बरदस्ती उसकी अवज्ञा (मासियत) करेगा? यानी वह नहीं चाहता था कि पाप हो, लेकिन फिर भी उसने कर लिया—तो फिर उसका इरादा प्रबल नहीं रहा, माज़अल्लाह! ख़ुदा भी दुनिया के काल्पनिक राजाओं की तरह हो जाएगा कि वे डाकुओं और चोरों के लिए बेहतर बंदोबस्त करें फिर भी डाकू और चोर अपना काम कर ही जाते हैं। हरगिज़ नहीं, वह राजाओं का राजा, वास्तविक प्रभु, सर्वशक्तिमान कभी ऐसा नहीं है कि उसके राज्य में उसकी आज्ञा के बिना एक कण भी हिल सके। वे सज्जन कहते हैं, "मानो उन्होंने मेरे मुँह में पत्थर रख दिया"[2] (फ़कान्नामा अल्क़मनी हजरा), यानी मौला अली ने यह जवाब देकर मुझे ऐसा चुप करा दिया कि आगे कुछ कहते नहीं बना। अम्र बिन उबैद मोअतज़ली, जो बंदों के कार्यों को ख़ुदा की इच्छा से नहीं मानता था, ख़ुद कहता है कि मुझे किसी ने ऐसा दोषी नहीं ठहराया जैसा एक मजूसी (अग्निपूजक) ने ठहराया जो मेरे साथ जहाज़ में था। मैंने कहा, तुम मुसलमान क्यों नहीं हो जाते? उसने कहा, ख़ुदा नहीं चाहता। मैंने कहा, ख़ुदा तो चाहता है लेकिन शैतान तुम्हें नहीं छोड़ते। उसने कहा, तो फिर मैं प्रबल साथी के साथ हूँ। मौला अली ने इसी अपवित्र बुराई के खंडन की ओर इशारा फ़रमाया कि

अगर वह न चाहे तो क्या कोई ज़बरदस्ती उसकी अवज्ञा करेगा? रही बात उस मजूसी के बहाने की, तो वह बिल्कुल वैसा ही है जैसे कोई भूखा हो और भूख से जान निकल रही हो, खाना सामने रखा हो और वह न खाए यह कहकर कि ख़ुदा की इच्छा नहीं है। अगर उसका इरादा होता...

---

[1] हिलियतुल औलिया [2] मौला अली का कथन

पृष्ठ 300 / 750

فتاویٰ رضویہ جلد ۲۹

[باکس کے اندر] مع الله او من دون الله ؟ واياك ان تقول احدهما فترتد فاضرب عنقك. قال فما اقول يا امير المؤمنين قال قل املكها بالله الذي ان شاء ملكنيها[1]۔

نکال لی اور فرمایا: کام کی قدرت کا تو خدا کے ساتھ مالک ہے یا خدا سے جدا مالک ہے ؟ اور سنتا ہے خبردار ان دونوں میں سے کوئی بات نہ کہنا کہ کافر ہو جائیگا اور میں تیری گردن مار دوں گا۔ اس نے کہا : یا امیر المؤمنین ! پھر میں کیا کہوں ؟ فرمایا: یوں کہہ کہ اس خدا کے دیے سے اختیار رکھتا ہوں کہ اگر وہ چاہے تو مجھے اختیار دے بے اس کی مشیت کے مجھے کچھ اختیار نہیں۔

[عبارت] بس یہی عقیدہ اہلسنت ہے کہ انسان پتھر کی طرح مجبور محض ہے نہ خود مختار، بلکہ ان دونوں کے بیچ میں ایک حالت ہے جس کی کنہ راز خدا اور ایک نہایت عمیق دریا ہے۔ اللہ عزوجل کی بے شمار رضائیں امیر المؤمنین علی پر نازل ہوں کہ ان دونوں الجھنوں کو دو فقروں میں صاف فرمادیا، ایک صاحب نے اسی بارے میں سوال کیا کہ کیا معاصی بھی بے ارادہ الہیہ واقع نہیں ہوتے؟ فرمایا تو کیا کوئی زبردستی اس کی معصیت کرے گا افیعصی قھراً یعنی وہ نہ چاہتا تھا کہ اس سے گناہ ہو مگر اس نے کر ہی لیا تو اس کا ارادہ نہ زبردست پڑا معاذاللہ خدا بھی دنیا کے مجازی بادشاہوں کی طرح ہوا کہ وہ ڈاکوؤں، چوروں کا بہتر بند وبست کریں پھر بھی ڈاکو اور چور اپنا کام کر ہی گزرتے ہیں۔ حاشا وہ ملک الملوک بادشاہ حقیقی قادر مطلق ہر گز ایسا نہیں کہ اس کے ملک میں بے اس کے حکم کے ایک ذرہ جنبش کر سکے، وہ صاحب کہتے ہیں فکانما القمنی حجرا[2] مولی علی نے یہ جواب دے کر گویا میرے منہ میں پتھر رکھ دیا کہ آگے کچھ کہتے بن ہی نہ پڑا۔ عمرو بن عبید معتزلی کہ بندے کے افعال خدا کے ارادہ سے نہ جانتا تھا کہ خود کہتا

ہے کہ مجھے کسی نے ایسا الزام نہ دیا جیسا ایک مجوسی نے دیا جو میرے ساتھ جہاز میں تھا، میں نے کہا تو مسلمان کیوں نہیں ہوتا؟ کہا خدا نہیں چاہتا، میں نے کہا خدا تو چاہتا ہے مگر شیطان تجھے نہیں چھوڑتے، کہا تو میں شریک غالب کے ساتھ ہوں، اسی ناپاک شناعت کے رد کی طرف مولی علی نے اشارہ فرمایا کہ وہ نہ چاہے تو کیا کوئی زبردستی اس کی معصیت کرے گا؟۔ باقی رہا اس مجوسی کا عذر، وہ بعینہ ایسا ہے کہ کوئی بھوکا ہے بھوک سے دم نکالا جاتا ہے، کھانا سامنے رکھا ہے اور نہیں کھاتا کہ خدا کا ارادہ نہیں، اس کا ارادہ ہوتا

---

[1] حلیۃ الاولیاء [2] قول مولی علی

Volume 29 Fatawa Ridawiyya

Then I would have certainly eaten it. This fool will be told: "How did you know it was not God's will? Just because you are not eating? At least make an intention to eat, and see, perhaps eating will occur by the divine will." Such distorted reasoning only occurs to one who is overtaken by death. In short, Maula Ali (may Allah be pleased with him) gave this verdict that whatever happens cannot happen without the divine will.

The second point is, why is there reward and punishment? This was decided as such: Ibn Abi Hatim, Al-Asbahani, Al-Lalika'i, and Al-Khal'i narrate from Imam Ja'far al-Sadiq, who narrates from his noble father Imam Baqir (may Allah be pleased with them both):

Arabic Text

It was said to Ali bin Abi Talib: "There is a man here speaking about the Divine Will (al-Mashiah)." Ali said to him: "O servant of Allah, did Allah create you for what He willed or for what you willed?" He said: "Rather, for what He willed." He said: "Does He make you sick when He wills or when you will?" He said: "Rather, when He wills." He said: "Does He cause you to die when He wills or when you will?" He said: "When He wills." He said: "Does He make you enter where He wills or where you will?" He said: "Rather, where He wills." He said: "By Allah, if you had said otherwise, I would have struck that which contains your eyes (i.e., your head) with a sword." Then Ali recited: "And you do not will except that Allah wills. He is the One worthy of being feared and the One worthy of forgiving."[1]

Urdu Translation

It was submitted to Maula Ali that here a person speaks about Divine Will. Maula Ali said to him, "O servant of God! Did God create you for what He wanted or for what you wanted?" He said: "For what He wanted." He said: "Does He make you sick when He wants or when you want?" He said: "Rather when He wants." He said: "Will He give you death at the time He wants or when you want?" He said: "When He wants." He said: "Then will He send you where He wants or where you want?" He said: "Where He wants." He said: "By God! If you had said anything other than this, then I would have struck this in which your eyes are (i.e., your head) with a sword." Then Maula Ali recited this noble verse: "And you do not will except that Allah wants; He is the source of righteousness and the source of forgiveness."

Summary: In short, He did what He willed and He will do what He wills. He did not consult you while creating you, nor will He consult you while sending you.

[1] Al-Durr al-Manthur citing Ibn Abi Hatim and al-Lalika'i in al-Sunnah... under verse 22 / 23 Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut 6 / 198 / 9

तो मैं ज़रूर खा लेता। उस बेवकूफ से यही कहा जाएगा कि तुमने यह कैसे जाना कि खुदा की इच्छा नहीं थी? सिर्फ इसलिए कि तुम नहीं खा रहे? कम से कम खाने का इरादा तो करो, देखो शायद ईश्वरीय इच्छा से खाना हो जाए। ऐसी उल्टी अक्ल उसी को आती है जिस पर मौत सवार हो। संक्षेप में, मौला अली (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने यह फैसला सुनाया कि जो कुछ होता है वह ईश्वरीय इच्छा के बिना नहीं हो सकता।

दूसरी बात यह कि इनाम और सज़ा क्यों है! इसका फैसला इस प्रकार हुआ: इब्न अबी हातिम, अस्बहानी, लालकाई और खल्ई, हज़रत इमाम जाफ़र सादिक से और वह अपने वालिद हज़रत इमाम बाक़िर (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से रिवायत करते हैं:

अरबी पाठ	**उर्दू अनुवाद**
हज़रत अली बिन अबी तालिब से कहा गया कि यहाँ एक व्यक्ति ईश्वरीय इच्छा (मशियत) के बारे में चर्चा कर रहा है। अली ने उससे कहा: "ऐ अल्लाह के बंदे! अल्लाह ने तुझे इसलिए पैदा किया जो उसने चाहा या इसलिए जो तूने चाहा?" उसने कहा: "बल्कि जो उसने चाहा।" उन्होंने पूछा: "वह तुझे बीमार करता है जब वह चाहता है या जब तू चाहता है?" उसने कहा: "बल्कि जब वह चाहता है।" उन्होंने पूछा: "वह तुझे मौत देगा उस वक्त जब वह चाहता है या जब तू चाहता है?" उसने कहा: "जब वह चाहता है।" उन्होंने पूछा: "फिर वह तुझे वहाँ भेजेगा जहाँ वह चाहता है या जहाँ तू चाहता है?" उसने कहा: "बल्कि जहाँ वह चाहता है।" उन्होंने फ़रमाया: "अल्लाह की कसम! अगर तू इसके अलावा कुछ और कहता तो मैं तलवार से उस पर वार करता जिसमें तेरी आँखें हैं (अर्थात तेरा सिर)।" फिर अली ने यह आयत पढ़ी:	मौला अली से अर्ज़ किया गया कि यहाँ एक व्यक्ति ईश्वरीय इच्छा में चर्चा कर रहा है। मौला अली ने उससे फ़रमाया, "ऐ खुदा के बंदे! खुदा ने तुझे इसलिए पैदा किया जिसलिए उसने चाहा या इसलिए जिसलिए तूने चाहा?" उसने कहा: "जिसलिए उसने चाहा।" फ़रमाया: "वह तुझे जब चाहे बीमार करता है या जब तू चाहे?" कहा: "बल्कि जब वह चाहे।" फ़रमाया: "तुझे उस वक्त मौत देगा जब वह चाहे या जब तू चाहे?" कहा: "जब वह चाहे।" फ़रमाया: "तो तुझे वहाँ भेजेगा जहाँ वह चाहे या जहाँ तू चाहे?" कहा: "जहाँ वह चाहे।" फ़रमाया: "खुदा की कसम! तू इसके सिवा कुछ और कहता तो यह जिसमें तेरी आँखें हैं (यानी तेरा सिर) तलवार से मार देता।" फिर मौला अली ने यह आयत करीमा तिलावत फ़रमाई: "और तुम

अरबी पाठ	उर्दू अनुवाद
"और तुम नहीं चाह सकते मगर यह कि अल्लाह चाहे। वही तक़वा (डरने) का हक़दार और मगफिरत (माफी) फरमाने वाला है।"[1]	क्या चाहोगे मगर यह कि अल्लाह चाहे, वह तक़वा का मुस्तहिक और गुनाह माफ करने वाला है।"

सारांश: संक्षेप में यह कि उसने जो चाहा वह किया और जो चाहेगा वह करेगा। तुझे बनाते समय तुझसे मशविरा (सलाह) नहीं लिया था और न भेजते वक्त लेगा।

[1] अद-दुर अल-मंसूर, इब्न अबी हातिम और लालकाई के हवाले से 'अल-सुन्ना' में... आयत २२ / २३ के तहत, दार इहया अत-तुराथ अल-अरबी, बेरूत ६ / १९८ / ९

पृष्ठ ३०१ / ७५०

تو میں ضرور کھالیتا، اس احمق سے یہی کہا جائے گا کہ خدا کا ارادہ نہ ہونا تو نے کاہے سے جانا؟ اسی سے کہ تو نہیں کھاتا، تو کھانے کا قصد تو کر، دیکھ تو ارادہ الہیہ سے کھانا ہو جائے گا۔ ایسی اوندھی مت اسی کو آتی ہے جس پر موت سوار ہے۔ غرض مولی علی نے یہ تواس کا فیصلہ فرمایا کہ جو کچھ ہوتا ہے بے ارادہ الہیہ نہیں ہوسکتا۔

دوسری بات کہ جزا وسزا کیوں ہے !۔ اس کا یوں فیصلہ ارشاد ہوا، ابن ابی حاتم واصبہانی ولالکائی وخلعی حضرت امام جعفر صادق وہ اپنے والد ماجد حضرت امام باقر رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کرتے ہیں،

عربی متن	اردو ترجمہ
قال قيل لعلى بن ابى طالب ان ههنا رجلا يتكلم فى المشيئة فقال له على ياعبد الله خلقك الله لما يشاء او لما شئت ؟ قال بل لما يشاء قال فيمر ضك اذا شاء أو اذا شئت ؟ قال بل اذا شاء. قال فيميتك اذا شاء او اذا شئت ؟ قال اذا شاء. قال فيدخلك حيث شاء او حيث شئت ؟ قال بل حيث يشاء. قال والله لو قلت غير ذلك لضربت الذى	مولی علی سے عرض کی گئی کہ یہاں ایک شخص مشیت میں گفتگو کرتا ہے ، مولی علی نے اس سے فرمایا، اے خدا کے بندے !خدا نے تجھے اس لئے پیدا کیا جس لئے اس نے چاہا یا اس لئے جس لئے تو نے چاہا ؟ کہا: جس لئے اس نے چاہا، فرمایا: تجھے جب وہ چاہے بیمار کرتا ہے یا جب تو چاہے ؟ کہا : بلکہ جب وہ چاہے۔ فرمایا: تجھے اس وقت وفات دے گا جب وہ چاہے یا جب تو چاہے ؟ کہا جب وہ چاہے۔ فرمایا: تو تجھے وہاں بھیجے گا جہاں وہ چاہے یا جہاں تو چاہے ؟ کہا : جہاں وہ چاہے ، فرمایا: خدا کی قسم تو

عربی متن	اردو ترجمہ
فيه عيناك بالسيف۔ ثم تلا علی: وماتشآؤن الا ان یشاء اللہ ھو اھل التقوی و اھل المغفرۃ[1]	اس کے سوا کچھ اور کہتا تو یہ جس میں تیری آنکھیں ہیں (یعنی تیرا سر) تلوار سے مار دیتا۔ پھر مولی علی نے یہ آیت کریمہ تلاوت فرمائی: "اور تم کیا چاہو مگر یہ کہ اللہ چاہے وہ تقویٰ کا مستحق اور گناہ عفو فرمانے والا ہے۔"

خلاصہ یہ کہ جو چاہا کیا اور جو چاہے گا کرے، بناتے وقت تجھ سے مشورہ نہ لیا تھا بھیجتے وقت بھی

[1] الدر المنثور بحوالہ ابن ابی حاتم واللالکائی فی السنۃ الخلفی فی فوائدہ عن علی تحت الآیۃ ۲۲ / ۲۳ دار احیاء التراث العربی بیروت ۶ / ۱۹۸/۹

Fatawa Razawiyya, Volume 29

(He) will not take; the entire universe is His property, and the Owner cannot be questioned regarding His property.

Ibn Asakir narrated from Harith Hamdani that a person came to the Commander of the Faithful, Mawla Ali, and said: "O Commander of the Faithful! Inform me about the matter of destiny (Taqdeer)." He replied: "It is a dark path, do not walk in it." He said: "O Commander of the Faithful! Inform me." He replied: "It is a deep ocean, do not step into it." He said: "O Commander of the Faithful!" He replied: "It is a secret of Allah hidden from you, do not open it." He said: "O Commander of the Faithful! Inform me." He replied: "'Inna Allaha khalaqaka kama shaa aw kama shi't' - Did Allah create you as He willed or as you willed?" He replied: "As He willed." He said: "'Fa yasta'miluka kama shaa aw kama shi't' - Then will He employ you as He wills or as you will?" He replied: "As He wills." He said: "'Fa yab'athuka yawma al-qiyamati kama shaa aw kama shi't' - Will He raise you on the Day of Resurrection as He wills or as you will?" He said: "As He wills." He said: "'Ayyuha al-sailu taqulu la hawla wala quwwata illa bi-man' - O questioner! You say 'There is no might nor power except with [Whom]?' From whose essence?" He said: "From the Being of Allah, the High, the Great." He said: "Do you know its interpretation?" He said: "May the Commander of the Faithful teach me from the knowledge Allah has given him." He replied: "'Inna tafsiraha la yuqdaru 'ala ta'ati Allahi wala yakunu quwwata fi ma'siyati Allahi fi al-amrayni jami'an illa billah' - Its interpretation is that there is no ability for obedience to Allah, nor power against disobedience to Allah in both matters, except by Allah." Then he said: "'Ayyuha al-sailu alaka ma'a Allahi mashiyatun aw duna Allahi mashiyatun. Fa-in qulta inna laka duna Allahi mashiyatun fa-qad iktafayta biha 'an mashiyati Allahi wa-in za'amta anna laka fawqa Allahi mashiyatun fa-qad idda'ayta ma'a Allahi shirkan fi mashiyatihi' - O questioner: Do you have a will alongside Allah or apart from Allah? If you say that you have a will apart from Allah, then you have sufficed with it instead of Allah's will. And if you claim that you have a will above Allah's will, then you have claimed a partnership with Allah in His will." O questioner: Do you have control over your actions with God or without God? If you say you have control without God, then you have no need for Divine intent; whatever you want, you will do by your own will, whether God wants it or not. And if you think you have control above God, then you have claimed to be a partner in Allah's will. Then he said: "'Ayyuha al-sailu Allahu yashji wa yudawi fa-minhu al-dau wa minhu al-dawa'u a-'aqalta 'an Allahi amrahu' - O questioner: Verily, Allah wounds and Allah heals, so

from Him is the disease and from Him is the medicine. Have you understood Allah's command now?" He replied: "Yes." He said to those present: "'Al-ana aslama akhukum fa-qumu fa-safihu' - Now your brother has become a Muslim, so stand up and shake hands with him." Then he said: "'Law anna 'indi rajulan min al-qadariyati la-akhadhtu bi-raqabatihi thumma la azalu ajurruha hatta aqta'aha fa-innahum yahudu hadhihi al-ummati wa nasaraha wa majusaha' - If I had a man from the Qadariyyah with me, I would have grabbed him by the neck and then kept dragging him until I severed it, for they are the Jews, Christians, and Magians of this Ummah." If there were a person with me who [considers] man as the creator of his own actions...

फ़तावा रज़विया, जिल्द 29

(वह) नहीं लेगा; संपूर्ण ब्रह्मांड उसकी मिल्कियत है, और स्वामी से उसकी मिल्कियत के बारे में सवाल नहीं किया जा सकता।

इब्न असाकिर ने हारिस हमदानी से रिवायत की है कि एक व्यक्ति ने आकर अमीरुल मोमिनीन मौला अली की सेवा में निवेदन किया: "हे अमीरुल मोमिनीन! मुझे तक़दीर के मसले से अवगत कराएं।" उन्होंने फरमाया: "यह एक अंधेरा रास्ता है, इसमें मत चलो।" उसने निवेदन किया: "हे अमीरुल मोमिनीन! मुझे अवगत कराएं।" उन्होंने फरमाया: "यह एक गहरा समुद्र है, इसमें कदम मत रखो।" उसने निवेदन किया: "हे अमीरुल मोमिनीन!" उन्होंने फरमाया: "यह अल्लाह का एक रहस्य है जो तुझ पर गुप्त है, इसे मत खोल।" उसने निवेदन किया: "हे अमीरुल मोमिनीन! मुझे अवगत कराएं।" उन्होंने फरमाया: "'इन्नल्लाहा खलक़का कमा शा-अ औ कमा शिअत' - अल्लाह ने तुझे वैसा ही बनाया जैसा उसने चाहा या जैसा तूने चाहा?" उसने निवेदन किया: "जैसा उसने चाहा।" उन्होंने फरमाया: "'फ़यस्तमलुक़ा कमा शा-अ औ कमा शिअत' - तो वह तुझसे वैसा ही काम लेगा जैसा वह चाहेगा या जैसा तू चाहेगा?" उसने निवेदन किया: "जैसा वह चाहेगा।" उन्होंने फरमाया: "'फ़यब-असका यौमल क़ियामती कमा शा-अ औ कमा शिअत' - वह तुझे क़यामत के दिन वैसे ही उठाएगा जैसे वह चाहेगा या जैसे तू चाहेगा?" उसने कहा: "जैसे वह चाहेगा।" उन्होंने फरमाया: "'अय्युहस-साइलु तक़ूलु ला हौला वला कुव्वता इल्ला बि-मन' - हे प्रश्नकर्ता! तू कहता है कि 'ला हौल व ला क़ुव्वत इल्ला बि-मन' (नहीं है कोई शक्ति और न कोई सामर्थ्य सिवाय उसके जो...) किसकी ज़ात से?" उसने कहा: "अल्लाह अली अज़ीम की ज़ात से।" उन्होंने फरमाया: "क्या तू इसकी व्याख्या जानता है?" उसने निवेदन किया: "अमीरुल मोमिनीन को जो ज्ञान अल्लाह ने दिया है, उससे मुझे शिक्षा दें।" उन्होंने फरमाया: "'इन्ना तफ़सीरहा ला युक़दिरु अला ता-अतिल्लाहि वला यकूनु कुव्वता फ़ी मासियतिल्लाहि फ़िल अमरैन जमीअन इल्ला बिल्लाह' - इसकी व्याख्या यह है कि न तो अल्लाह की आज्ञाकारिता की शक्ति है और न ही अल्लाह की अवज्ञा की ताकत, दोनों ही मामलों में अल्लाह के बिना कुछ नहीं है।" फिर फरमाया: "'अय्युहस-साइलु अलका मअल्लाहि मशियतून औ दूनल्लाहि मशियतून। फ़इन क़ुल्ता इन्ना लका दूनल्लाहि मशियतून फ़क़द इक़तफ़ैता बिहा अन मशियतिल्लाह वइन ज़अमता अन्ना लका फ़ौक़ल्लाहि मशियतून फ़क़द इद्द-अैता मअल्लाहि शिरकन फ़ी मशियतिही' - हे प्रश्नकर्ता! क्या अल्लाह के साथ तेरी कोई इच्छा है या अल्लाह के बिना कोई इच्छा है? यदि तू कहता है कि अल्लाह के बिना तेरी कोई इच्छा है, तो तूने अल्लाह की इच्छा के बजाय उसी को

पर्याप्त मान लिया। और यदि तेरा यह दावा है कि अल्लाह की इच्छा के ऊपर तेरी इच्छा है, तो तूने अल्लाह के साथ उसकी इच्छा में शरीक होने का दावा किया।" हे प्रश्नकर्ता: तुझे ईश्वर के साथ अपने काम का अधिकार है या ईश्वर के बिना? यदि तू कहे कि ईश्वर के बिना तुझे अधिकार प्राप्त है, तो तूने इरादा-ए-इलाहिया की कोई आवश्यकता नहीं रखी, जो चाहे खुद अपने इरादे से कर लेगा, ईश्वर चाहे या न चाहे। और यदि यह समझे कि ईश्वर से ऊपर तुझे अधिकार प्राप्त है, तो तूने अल्लाह के इरादे में अपने शरीक होने का दावा किया। फिर फरमाया: "'अय्युहस-साइलु अल्लाहु यशजी व युदावी फ़मिन्हुद-दाउ व मिन्हुद-दवाउ आअक़लता अनिल्लाहि अमरहू' - हे प्रश्नकर्ता! बेशक अल्लाह ही ज़ख्म पहुँचाता है और अल्लाह ही दवा देता है, तो उसी से बीमारी है और उसी से दवा। क्या तूने अब अल्लाह का हुक्म समझ लिया?" उसने निवेदन किया: "हाँ।" उपस्थित लोगों से फरमाया: "'अल-आना असलमा अख़ूकुम फ़क़ूमू फ़साफ़िहू' - अब तुम्हारा यह भाई मुसलमान हो गया, खड़े हो जाओ और उससे हाथ मिलाओ।" फिर फरमाया: "'लौ अन्ना इन्दी रजलम मिनल क़दरियति लाअखज़्तु बिरक़बतिही सुम्मा ला अज़ालु अजुर्रहा हत्ता अक़त-अहा फ़इन्नहुम यहूदु हाज़िहिल उम्मती व नसाराहा व मजूसाहा' - अगर मेरे पास क़दरिया का कोई आदमी होता, तो मैं उसकी गर्दन पकड़ लेता और उसे तब तक घसीटता जब तक कि उसे काट न देता, क्योंकि वे इस उम्मत के यहूदी, ईसाई और मजूसी हैं।" अगर मेरे पास कोई शख्स हो जो इंसान को अपने अफ़आल का ख़ालिक़...

نہ لے گا، تمام عالم اس کی ملک ہے، اور مالک سے درباره ملک سوال نہیں ہو سکتا۔ ابن عساکر نے حارث ہمدانی سے روایت کی ایک شخص نے آکر امیر المؤمنین مولیٰ علی سے عرض کی : یا امیر المؤمنین! مجھے مسئلہ تقدیر سے خبر دیجئے۔ فرمایا: تاریک راستہ ہے اس میں نہ چل۔ عرض کی : یا امیر المؤمنین! مجھے خبر دیجئے۔ فرمایا: گہرا سمندر ہے اور اس میں قدم نہ رکھ، عرض کی: یا امیر المؤمنین! فرمایا اللہ کا راز ہے تجھ پر پوشیدہ ہے اسے نہ کھول، عرض کی : یا امیر المؤمنین! مجھے خبر دیجئے۔ فرمایا: "ان اللہ خلقک کما شاء او کما شئت" اللہ نے تجھے جیسا اس نے چاہا بنایا یا جیسا تو چاہا؟ عرض کی: جیسا اس نے چاہا: فرمایا: "فیستعملک کما شاء او کما شئت" تو تجھ سے کام ویسا لے گا جیسا وہ چاہے یا جیسا تو چاہے؟ عرض کی: جیسا وہ چاہے۔ فرمایا: "فیبعثک یوم القیمۃ کما شاء او کما شئت" تجھے قیامت کے دن جس طرح وہ چاہے گا اٹھائے گا یا جس طرح تو چاہے؟۔ کہا: جس طرح وہ چاہے۔ فرمایا: "ایھا السائل تقول لا حول ولا قوۃ الا بمن" اے سائل! تو کہتا ہے کہ نہ طاقت ہے نہ قوت ہے مگر کس کی ذات سے؟۔ کہا: اللہ علی عظیم کی ذات سے۔ فرمایا تو اس کی تفسیر جانتا ہے؟۔ عرض کی" امیر المؤمنین کو جو علم اللہ نے دیا ہے اس سے مجھے تعلیم فرمائیں ۔ فرمایا: "ان تفسیرھا لا یقدر علی طاعۃ اللہ ولا یکون قوۃ فی معصیۃ اللہ فی الامرین جمیعاً الا باللہ" اس کی تفسیر یہ ہے کہ نہ طاعت کی طاقت، نہ معصیت کی قوت دونوں اللہ ہی کے دیے سے ہیں۔ پھر فرمایا: "ایھا السائل الک مع اللہ مشیۃ او دون اللہ مشیۃ۔ فان قلت ان لک دون اللہ مشیۃ۔ فقد اکتفیت بھا عن مشیۃ اللہ وان زعمت ان لك فوق اللہ مشیۃ فقد ادعیت مع اللہ شرکاً فی مشیتہ" اے سائل: تجھے خدا کے ساتھ اپنے کام کا اختیار ہے یا بے خدا کے؟ اگر تو کہے کہ بے خدا کے تجھے اختیار حاصل ہے تو تو نے ارادہ الٰہیہ کی کچھ حاجت نہ رکھی، جو

چاہے خود اپنے ارادے سے کرلے گا، خدا چاہے یا نہ چاہے، اور یہ سمجھے کہ خدا سے اوپر تجھے اختیار حاصل ہے تو تو نے اللہ کے ارادے میں اپنے شریک ہونے کا دعویٰ کیا۔ پھر فرمایا: ایھا السائل اللہ یشیج و یداوی فمنہ الداء ومنہ الدواء اعقلت عن اللہ امرہ"۔ اے سائل: بیشک اللہ زخم پہنچاتا ہے اور اللہ ہی دوا دیتا ہے تو اسی سے مرض ہے اور اسی سے دوا، کیوں تو نے اب تو اللہ کا حکم سمجھ لیا؟۔ اس نے عرض کی: ہاں۔ حاضرین سے فرمایا: الآن اسلم اخوکم فقوموا فصافحوا" اب تمہارا یہ بھائی مسلمان ہوا، کھڑے ہو اس سے مصافحہ کرو۔ پھر فرمایا: لو ان عندی رجلا من القدریۃ لاخذت برقبتہ ثم لا ازال اجرھا حتی اقطعھا فانھم یھود ھذہ الامۃ ونصارھا ومجوسھا" اگر میرے پاس کوئی شخص ہو جو انسان کو اپنے افعال کا خالق

Fatawa Ridawiyya Volume 29

...knows and denies the occurrence of power and disobedience by the decree of Allah, then I will keep hold of his neck and throttle him until I cut him off, because they are the Jews, Christians, and Magi (Zoroastrians) of this Ummah.

The term 'Jews' was used because Allah's wrath is upon them and Jews are 'those who earned [Allah's] anger,' and Christians and Magi were mentioned because Christians believe in three gods, and the Magi believe in two creators, Yazdan and Ahriman. These people are believing in countless creators, as they consider every jinn and human to be the creator of their own actions. We seek refuge with Allah, the Lord of the worlds.

This is a summarized discourse on this matter, but God willing, it is sufficient, complete, and healing, through which those meant for guidance will find guidance, and guidance is in the hands of Allah alone. Praise be to Allah, and Allah, the Most Glorified and Exalted, knows best.

Treatise Thalj al-Sadr li-Iman al-Qadr (The Cooling of the Heart for Faith in Predestination) has ended.

Page 303 of 750

फतावा रज़विया जिल्द २९

...जानता है और तक़दीर-ए-इलाही से ताक़त और मासीयत (गुनाह) के होने का इनकार करता है, तो मैं उसकी गर्दन पकड़कर दबोचता रहूँगा यहाँ तक कि उसे अलग काट दूँ, क्योंकि वे इस उम्मत के यहूदी, ईसाई और मजूसी हैं।

यहूदी इसलिए कहा गया क्योंकि उन पर अल्लाह का ग़ज़ब है और यहूदी 'मग़ज़ूब अलैहिम' (जिन पर क्रोध हुआ) हैं, और ईसाई व मजूसी इसलिए कहा गया क्योंकि ईसाई तीन ख़ुदा मानते हैं, मजूसी यज़दान और अहरिमन दो ख़ालिक़ (स्रष्टा) मानते हैं। ये लोग अनगिनत ख़ालिक़ों पर ईमान ला रहे हैं कि हर जिन्न और इंसान को अपने अफ़आल (कार्यों) का ख़ालिक़ मान रहे हैं, वल-इयाज़ु बिल्लाहि रब्बिल-आलमीन (तमाम जहानों के रब अल्लाह की पनाह)।

यह इस मसले में एक संक्षिप्त चर्चा है, मगर इंशा अल्लाह तआला काफ़ी, मुकम्मल और शफ़ा बख़्श है जिससे हिदायत वाले हिदायत पाएंगे और हिदायत अल्लाह ही के हाथ में है, वलिल्लाहिल हम्दु वल्लाहु सुब्हानहू व तआला आलम (तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं और अल्लाह पाक और बुलंद सबसे ज़्यादा जानने वाला है)।

रिसाला थलजुल सद्र लि-ईमानिल क़द्र (तक़दीर पर ईमान के लिए सीने की ठंडक) ख़त्म हुआ।

पृष्ठ 303/750

جانتا اور تقدیر الٰہی سے وقوع طاقت ومعصیت کا انکار کرتا ہو تو میں اس کی گردن پکڑ کر دبوچتا رہوں گا یہاں تک کہ الگ کاٹ دوں، اس لئے کہ وہ اس امت کے یہودی اور نصرانی و مجوسی ہیں۔

یہودی اس لئے فرمایا کہ ان پر خدا کا غضب ہے اور یہود مغضوب علیہم ہیں، اور نصرانی و مجوسی اس لئے فرمایا کہ نصاری تین خدا مانتے ہیں، مجوسی یزدان واہر من دو خالق مانتے ہیں، یہ بے شمار خالقوں پر ایمان لا رہے ہیں کہ ہر جن وانس کو اپنے افعال خالق مان رہے ہیں، والعیاذ باللہ رب العالمین۔

یہ اس مسئلہ میں اجمالی کلام ہے، مگر ان شاء اللہ تعالٰی کافی و وافی و شافی جس سے ہدایت والے ہدایت پائیں گے اور ہدایت اللہ ہی کے ہاتھ ہے، وللہ الحمد واللہ سبحنہ و تعالٰی اعلم

رسالہ ثلج الصدر لایمان القدر ختم ہوا

Volume 29 Fatawa Razawiya

Treatise Al-Tahbir bi-Bab al-Tadbir 1305 AH (Beautification of Speech regarding the Issue of Planning/Provision)

In the name of Allah, the Most Gracious, the Most Merciful. We praise Him and send blessings upon His Noble Messenger.

Question 122: Asked by Maulvi Allah Yar Khan Sahib, 20 Dhu al-Hijjah 1305 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: Khalid holds the belief that whatever work happens, good or bad, it is all by the decree of God. And he considers planning/provisions in worldly and otherworldly affairs as a commendable and better matter. Walid calls Khalid an infidel (kafir) because he considers planning/provisions commendable; in fact, considering him an infidel, he has even stopped offering and returning greetings of peace (Salam). He says that planning is nothing, it is absolutely nonsense, and those individuals who educate their children (whether in Arabic or English) are talking nonsense, because reading and writing are included in planning.

Page 304 of 750

जिल्द 29 फ़तावा रज़विया

रिसाला अत-तहरीर बि-बाब अत-तदबीर 1305 हिजरी (तदबीर के मसले के बारे में कलाम की ज़ीनत)

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम नहमदुहु व नुसल्ली अला रसूलेहिल करीम

मसला 122: सायल मौलवी अल्लाह यार ख़ान साहब, 20 ज़ुल-हिज्जा 1305 हिजरी दीन के उलेमा इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि ख़ालिद यह अक़ीदा रखता है कि जो कुछ काम भला या बुरा होता है, वह सब ख़ुदा की तक़दीर से होता है। और वह दुनियावी और अख़रवी कामों में तदबीर (योजना/उपाय) को एक मुस्तहसन (सराहनीय) और बेहतर चीज़ समझता है। वलीद, ख़ालिद को तदबीर को मुस्तहसन समझने की वजह से काफ़िर कहता है, बल्कि उसे काफ़िर समझकर सलाम और सलाम का जवाब भी छोड़ दिया है और कहता है कि तदबीर कोई चीज़ नहीं, बिल्कुल वाहियात है, और जो लोग अपने बच्चों को पढ़ाते-लिखाते हैं (चाहे अरबी हो या अंग्रेज़ी), वे झख मारते हैं, क्योंकि पढ़ना-लिखना तदबीर में दाख़िल है।

पेज 750 में से 304

جلد ۲۹ فتاویٰ رضویہ

رسالہ التحبیر بباب التدبیر ۱۳۰۵ھ (آرائش کلام مسئلہ تدبیر کے بارے میں)

بسم اللہ الرحمن الرحیم ط نحمدہ ونصلی علی رسولہ الکریم ط

مسئلہ ۱۲۲: مسئولہ مولوی اللہ یار خان صاحب ۲۰ ذی الحجہ ۱۳۰۵ھ کیا فرماتے ہیں علماء دین اس مسئلہ میں کہ خالد یہ عقیدہ رکھتا ہے کہ جو کچھ کام بھلا یا برا ہوتا ہے سب خدا کی تقدیر سے ہوتا ہے۔ اور تدبیرات کو کارِ دنیوی واخروی میں امرِ مستحسن اور بہتر جانتا ہے۔ ولید خالد کو بوجہِ مستحسن جاننے تدبیرات کے کافر کہتا ہے، بلکہ اسے کافر سمجھ کر سلام وجواب سلام بھی ترک کر دیا اور کہتا ہے کہ تدبیر کوئی چیز نہیں، بالکل واہیات ہے، اور جو اشخاص اپنے اطفال کو پڑھاتے لکھاتے ہیں۔ (خواہ عربی خواہ انگریزی) وہ جھک مارتے ہیں، کیونکہ پڑھنا لکھنا تدبیر میں داخل ہے۔

Volume 29

Question: Then if Walid called Khalid an infidel, is he an infidel or not? And if not, what is the sin and punishment for the one who said it? Explain and be rewarded.

The Answer: In the name of Allah, the Most Gracious, the Most Merciful.

(Arabic): All praise is for Allah who predestined all things and linked effects with causes. And blessings and peace be upon the master of those who trust [in Allah] secretly and openly, and the leader of the worlds and those who manage affairs, and upon his family and companions whose inner being is trust [in Allah] and whose outer being is engaged in toil and action.

(Urdu Translation): All praise is for Allah who predestined all things and linked effects with causes. And blessings and peace be upon the master of those who trust [in Allah] secretly and openly, and the leader of the worlds and those who manage affairs, and upon his family and companions whose inner being is trust [in Allah] and whose outer being is engaged in toil and action. (t)

Indubitably Khalid is truthful, and this belief of his is the belief of the people of truth. In reality, whatever happens in the world is all by the decree of Allah, the Exalted. Allah Almighty says:

"Every small and large thing is written down." (Al-Quran 54/53) — Every small and big thing is written down. (t)

And Allah Almighty says:

"And everything We have recorded in a clear book." (Al-Quran 36/12) — And everything We have recorded in a clear record, (t)

And Allah Almighty said:

"Nor is there anything moist or dry but [it is written] in a clear record." (Al-Quran 6/59) — Nor is there anything moist or dry but [it is written] in a clear record. (t)

And besides these, there are other verses and Hadiths. (t)

1. Al-Quran Al-Karim 54/53
2. Al-Quran Al-Karim 36/12
3. Al-Quran Al-Karim 6/59

खण्ड 29

प्रश्न: फिर अगर वलीद ने खालिद को काफ़िर कहा, तो क्या वह काफ़िर है या नहीं? और यदि नहीं, तो कहने वाले के लिए क्या पाप और दण्ड है? स्पष्ट करें, आपको पुण्य मिलेगा।

उत्तर: अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत दयालु और कृपाशील है।

(अरबी): तमाम प्रशंसा अल्लाह के लिए है जिसने सभी होने वाली चीज़ों को निर्धारित किया और प्रभावों को कारणों से जोड़ा। और दुरूद व सलाम गुप्त और प्रकट रूप से अल्लाह पर भरोसा करने वालों के सरदार पर, और समस्त जगत के इमाम पर और उन पर जो मामलों की व्यवस्था करने वाले हैं, और उनकी आल (वंश) और साथियों पर जिनका अन्तर्मन तवक्कुल (भरोसा) है और जिनका बाहरी स्वरूप मेहनत और कार्य में लगा हुआ है।

(उर्दू अनुवाद): तमाम प्रशंसा अल्लाह के लिए है जिसने सभी होने वाली चीज़ों को निर्धारित किया और प्रभावों को कारणों से जोड़ा। और दुरूद व सलाम गुप्त और प्रकट रूप से अल्लाह पर भरोसा करने वालों के सरदार पर, और समस्त जगत के इमाम पर और उन पर जो मामलों की व्यवस्था करने वाले हैं, और उनकी आल (वंश) और साथियों पर जिनका अन्तर्मन तवक्कुल (भरोसा) है और जिनका बाहरी स्वरूप मेहनत और कार्य में लगा हुआ है। (त)

निस्संदेह खालिद सच्चा है, और उसका यह विश्वास विशेष रूप से सत्यनिष्ठ लोगों का विश्वास है। वास्तव में, दुनिया में जो कुछ भी होता है, वह सब अल्लाह जल्ल जलालुहु की तक़दीर (नियति) से है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया:

"हर छोटी बड़ी चीज़ लिखी हुई है।" (कुरान 54/53) — हर छोटी बड़ी चीज़ लिखी हुई है। (त)

और अल्लाह तआला ने फ़रमाया:

"और हर चीज़ हमने गिन रखी है एक स्पष्ट किताब में।" (कुरान 36/12) — और हर चीज़ हमने गिन रखी है एक बताने वाली किताब में, (त)

और अल्लाह तआला ने फ़रमाया:

"और न कोई गीली और न कोई सूखी चीज़ जो एक स्पष्ट किताब में लिखी न हो।" (कुरान 6/59) — और न कोई तर और न कोई खुशक जो एक रौशन किताब में लिखा न हो। (त)

इसके अलावा और भी आयतें और हदीसें हैं। (त)

1. अल-क़ुरआन अल-करीम 54/53
2. अल-क़ुरआन अल-करीम 36/12
3. अल-क़ुरआन अल-करीम 6/59

पृष्ठ 305/750

جلد ۲۹

پس ولید نے خالد کو جو کافر کہا تو وہ کافر ہے یا نہیں؟ اور نہیں ہے تو کہنے والے کے لیے کیا گناہ و تعزیر ہے۔ بَیِّنُوْا تُوجَرُوْا (بیان فرماؤ اجر دیئے جاؤ گے ت)

الجواب: بسم اللہ الرحمن الرحیم

الحمد للہ الذی قدّر الکائنات وربط بالاسباب المسبّبات والصلوۃ والسلام علی سید المتوکلین سرّا و جھرا۔ و امام العالمین والمدبرات امرا وعلی الہ وصحبہ الذین باطنھم توکل، وظاھرھم فی الکدّ والعمل۔

تمام تعریف اللہ کے لیے جس نے تمام ہونے والی چیزیں مقدر فرمائیں اور مسببات کا اسباب سے ربط رکھا اور درود و سلام خفیہ اور علانیہ توکل کرنے والوں کے سردار اور تمام عالموں کے امام پر اور ان پر جو کام کی تدبیر کرنے والے ہیں اور ان کی آل و اصحاب پر جن کا باطن متوکل ہے اور ان کا ظاہر محنت و عمل میں لگا ہوا ہے۔ (ت)

بے شک خالد سچا، اور اس کا یہ عقیدہ خاص اہل حق کا عقیدہ ہے۔ فی الواقع عالم میں جو کچھ ہوتا ہے سب اللہ جل جلالہ کی تقدیر سے ہے۔ قال تعالٰی (اللہ تعالٰی نے فرمایا):

"کُلُّ صَغِیْرٍ وَّکَبِیْرٍ مُّسْتَطَرٌ ۵۳" - 1 | ہر چھوٹی بڑی چیز لکھی ہوئی ہے۔ (ت)

وقال تعالٰی (اللہ تعالٰی نے فرمایا):

"وَکُلَّ شَیْئٍ اَحْصَیْنٰہُ فِیْ اِمَامٍ مُّبِیْنٍ ۱۲" - 2 | اور ہر چیز ہم نے گن رکھی ہے ایک بتانے والی کتاب میں، (ت)

وقال تعالٰی (اور اللہ تعالٰی نے فرمایا):

"وَلَا رَطْبٍ وَّلَا یَابِسٍ اِلَّا فِیْ کِتٰبٍ مُّبِیْنٍ ۵۹" - 3 | اور نہ کوئی تر اور نہ کوئی خشک جو ایک روشن کتاب میں لکھا نہ ہو۔ (ت)

الی غیر ذلک من الایآت والاحادیث (اس کے علاوہ اور بھی آیات و احادیث ہیں۔ ت)

1 القرآن الکریم ۵۴/ ۵۳ 2 القرآن الکریم ۳۶/ ۱۲ 3 القرآن الکریم ۶/ ۵۹

But planning/effort is by no means idle. The world is a realm of causes. The Lord, Exalted is His Glory, has, in accordance with His profound wisdom, linked effects to causes in it. And the Divine sunnah (way) has been established such that the effect is produced after the cause. Just as becoming conceited about planning while forgetting destiny is a characteristic of the disbelievers, similarly, to declare planning as purely futile, rejected, useless, and redundant is the act of some blatant deviant or a true madman. By doing so, it becomes necessary to turn away from hundreds of verses and hadiths and to insult and object to all the prophets, companions, imams, and saints. Who has greater trust (tawakkul) than the Messengers (peace and blessings of Allah be upon them all), and who has more faith in divine destiny than them? Yet they too always made plans, showed the ways for it, and strove in lawful earning to eat pure sustenance.

(1) David (peace be upon him) used to make coats of mail. Allah Almighty said (Translation): "And We taught him the making of metal coats of mail for you, to protect you in your wars. So will you then be grateful?"[1] (And We taught him how to make a garment for you, so that it may protect you from your harm, so will you be thankful? - T)

(2) And Allah Almighty said (Translation): "And We made iron soft for him, (saying): 'Make wide coats of mail, and observe a measure in the links; and do you (all) good deeds. Indeed, I am All-Seer of what you do.'"[2] (And We made iron soft for him so that he may make wide coats of mail and keep a measure in the making; and all of you do good, undoubtedly I am watching your deeds. - T)

(3) Moses (peace be upon him) grazed the sheep of Shu'ayb (peace be upon him) for ten years as wages. Allah Almighty said (Translation): "He said, 'I wish to marry one of these two daughters of mine to you on the condition that you serve me for eight years; then if you complete ten, it will be of your own accord. I do not want to place a burden on you; you will find me...'" (He said, "I want to marry one of my two daughters to you on the condition that you work for me for eight years, then if you complete ten years, it is from your side, and I do not want to put you in hardship..." - T)

[1] The Holy Quran 21/80 [2] The Holy Quran 34/10 and 11

फ़तावा रज़विया (खंड 29)

लेकिन तदबीर (योजना/प्रयास) कतई बेकार नहीं है। दुनिया कारणों का संसार है। रब, जिसकी शान बुलंद है, ने अपनी हिक्मत-ए-बालिगा (पूर्ण हिक्मत) के अनुसार इसमें प्रभावों को कारणों से जोड़ा है। और सुन्नत-ए-इलाही (ईश्वरीय परंपरा) यह जारी हुई कि कारण के बाद ही प्रभाव उत्पन्न हो। जिस प्रकार तक़दीर (भाग्य) को भूलकर तदबीर (योजना) पर फूलना काफ़िरों की ख़सलत है, उसी तरह तदबीर को केवल व्यर्थ, त्याज्य, फ़ुज़ूल और अस्वीकार्य बताना किसी स्पष्ट पथभ्रष्ट या पक्के पागल का काम है। जिससे सैकड़ों आयतों और हदीसों से मुख मोड़ना और तमाम नबियों, सहाबा, इमामों और वलियों पर आक्षेप और आपत्ति अनिवार्य हो जाती है। रसूलो (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से अधिक किसका तवक्कुल (ईश्वर पर भरोसा) होगा और अल्लाह की तक़दीर पर उनसे अधिक किसका ईमान होगा? फिर भी वे हमेशा तदबीर फ़रमाते, उसके मार्ग बताते और स्वयं हलाल कमाई में प्रयास करके शुद्ध आहार ग्रहण करते।

(1) दाऊद (अलैहिस्सलाम) कवच बनाते थे। अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "और हमने उसे तुम्हारे लिए एक कवच बनाना सिखाया ताकि वह तुम्हें तुम्हारी जंग (की चोट) से बचाए, तो क्या तुम शुक्रगुज़ार होगे?"[1] (और हमने उसे तुम्हारे लिए एक पहनावा बनाना सिखाया कि तुम्हें तुम्हारी आंच से बचाए, तो क्या तुम शुक्र करोगे? - त)

(2) और अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "और हमने उसके लिए लोहे को नरम कर दिया कि विशाल कवच बना और बनाने में माप का ध्यान रख और तुम सब नेक काम करो, बेशक मैं तुम्हारे काम देख रहा हूँ।"[2] (और हमने उसके लिए लोहा नरम किया कि विशाल कवच बना और बनाने में अंदाज़े का लिहाज़ रख और तुम सब नेकी करो बेशक मैं तुम्हारे काम देख रहा हूँ। - त)

(3) मूसा (अलैहिस्सलाम) ने दस वर्ष तक शुऐब (अलैहिस्सलाम) की बकरियां मज़दूरी पर चराईं। अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "उसने कहा, मैं चाहता हूँ कि अपनी इन दो बेटियों में से एक का निकाह तुम्हारे साथ इस शर्त पर कर दूँ कि तुम आठ साल तक मेरी सेवा करो, फिर यदि तुम दस पूरे करो तो यह तुम्हारी अपनी ओर से होगा, और मैं तुम्हें कष्ट में नहीं डालना चाहता..." (कहा मैं चाहता हूँ कि अपनी दोनों बेटियों में से एक तुम्हें ब्याह दूँ इस मेहर पर कि तुम आठ वर्ष मेरी नौकरी करो, फिर अगर पूरे दस वर्ष कर लो तो तुम्हारी तरफ़ से है और तुम्हें मशक़्क़त में डालना... - त)

[1] अल-कुरानुल करीम 80/21 [2] अल-कुरानुल करीम 10/34 और 11

مگر تدبیر زنہار معطل نہیں۔ دنیا عالم اسباب ہے۔ رب جل مجدہ نے اپنی حکمت بالغہ کے مطابق اس میں مسببات کو اسباب سے ربط دیا۔ اور سنت الہیہ جاری ہوئی کہ سبب کے بعد مسبّب پیدا ہو۔ جس طرح تقدیر کو بھول کر تدبیر پر پھولنا کفار کی خصلت ہے یو نہی تدبیر کو محض عبث و مطرود و فضول و مردود بتانا کسی کھلے گمراہ یا بچے مجنون کا کام ہے جس کی رو سے صدہا آیات و احادیث سے اعراض اور انبیاء و صحابہ و ائمہ واولیاء سب پر طعن و اعتراض لازم آتا ہے۔ حضرات مرسلین صلوات اللہ تعالٰی و سلامہ علیہم اجمعین (اللہ کے درود و سلام ہوں ان سب پر) سے زیادہ کس کا توکل اور ان سے بڑھ کر تقدیر الہی پر کس کا ایمان۔ پھر وہ بھی ہمیشہ تدبیر فرماتے اور اس کی راہیں بتاتے اور خود کسب حلال میں سعی کرکے رزق طیب کھاتے۔

(۱) داؤد علیہ السلام زرہیں بناتے۔ قال اللہ تعالٰی (اللہ تعالٰی نے فرمایا ت) "وَعَلَّمْنٰهُ صَنْعَةَ لَبُوْسٍ لَّكُمْ لِتُحْصِنَكُمْ مِّنْۢ بَاْسِكُمْ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ شٰكِرُوْنَ ﴿۸۰﴾" -1 اور ہم نے اُسے تمہارا ایک پہناوا بنانا سکھایا کہ تمہیں تمہاری آنچ سے بچائے، تو کیا تم شکر کروگے۔ ت)

(۲) وقال تعالٰی (اور اللہ تعالٰی نے فرمایا۔ ت) "وَاَلَنَّا لَهُ الْحَدِيْدَ ﴿۱۰﴾ اَنِ اعْمَلْ سٰبِغٰتٍ وَّقَدِّرْ فِى السَّرْدِ وَاعْمَلُوْا صَالِحًا ؕ اِنِّىْ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿۱۱﴾" -2 اور ہم نے اس کے لیے لوہا نرم کیا کہ وسیع زرہیں بنا اور بنانے میں اندازے کا لحاظ رکھ اور تم سب نیکی کرو بے شک میں تمہارے کام دیکھ رہا ہوں (ت)

(۳) موسٰی علیہ السلام نے دس برس شعیب علیہ الصلوۃ والسلام کی بکریاں اجرت پر چرائیں۔ قال تعالٰی (اللہ تعالٰی نے فرمایا۔ ت) "قَالَ اِنِّىْۤ اُرِيْدُ اَنْ اُنْكِحَكَ اِحْدَى ابْنَتَىَّ هٰتَيْنِ عَلٰٓى اَنْ تَاْجُرَنِىْ ثَمٰنِىَ حِجَجٍ

ۚ فَاِنْ اَتْمَمْتَ عَشْرًا فَمِنْ عِنْدِکَ ۚ وَمَآ اُرِیْدُ اَنْ اَشُقَّ عَلَیْکَ ؕ سَتَجِدُنِیْۤ" کہا میں چاہتا ہوں کہ اپنی دونوں بیٹیوں میں سے ایک تمہیں بیاہ دوں اس مہر پر کہ تم آٹھ برس میری ملازمت کرو، پھر اگر پورے دس برس کرلو تو تمہاری طرف سے ہے اور تمہیں مشقت میں ڈالنا

1 القرآن الکریم ۸۰/۲۱ 2 القرآن الکریم ۱۰/۳۴ و ۱۱

Fatawa Rizvia - Volume 29

[Arabic Quranic Verse]: "If Allah wills, you will find me among the righteous. [27] He said, 'That [is settled] between me and you. Whichever of the two terms I complete, there is no injustice to me, and Allah, over what we say, is Witness.' [28] And when Moses had completed the term and was traveling with his family... (the Verse)[1]" [Urdu translation of the verse]: "I do not desire [to be harsh]; Allah willing, you will find me among the righteous. Moses said: This is an agreement between me and you; whichever of the two periods I complete, no claim shall lie against me; and Allah is witness to what we say. Then, when Moses had completed the term and was traveling with his family... (T)"

The Radiant Presence, the Master of Messengers (peace and blessings of Allah be upon him), took the merchandise of the Mother of the Believers, Khadijah (may Allah be pleased with her), for trade (Mudarabah) and traveled to Syria. The Commander of the Faithful, Uthman Ghani, and Hazrat Abdur Rahman bin Auf (may Allah be pleased with them both) were very renowned and famous merchants. The Great Imam (Imam Abu Hanifa, may his secret be sanctified) used to trade in cloth (Bazzari); rather, the one who denies 'Tadbir' (planning/effort), what planning did he himself omit? We assume he did no agriculture, trade, service, or craft; yet, he must have cooked or had food cooked for himself. Is grinding flour, kneading, and cooking not 'Tadbir'? Leave that aside; even if he got ready-made food without asking or gesturing, making a morsel, bringing it to the mouth, chewing, and swallowing are also 'Tadbir'. If he wants to suspend 'Tadbir', he should refrain from these too, thinking that if life is decreed by Allah, he will live without eating, or his stomach will be filled by divine power, or food will enter the stomach on its own. Otherwise, nothing would be gained from these actions either. For in the Ahl-us-Sunnah school of thought, water does not quench thirst, nor does food eliminate hunger; rather, these are all 'customary causes' (asbab 'adiya) with which Allah Almighty has linked the 'effects' (musabbabat), and according to His established custom, He grants satiety and thirst-quenching after them. If He does not wish, one may consume pitchers [of water] or eat 'Dharis' (large weights) of food[1] - nothing will be beneficial. After all, what happens in the diseases of dropsy (Istisqa) and bovine hunger (Ju'al-Baqar)[2]? The same food and water that used to satisfy and quench now become useless. And if He wills, hunger and thirst will not come near even without eating and drinking, as He will sustain the believers in the time of the Dajjal. And who does not know of the

angels living without water and food? But this is a breaking of habit (kharq-e-adat) for humans, upon which...

Footnotes: Note 1: Dhari: A weight of ten 'Seer' or five 'Seer'. 12 Misbahi. Note 2: Ju'al-Baqar: In this disease, no matter how much one eats, hunger does not go away, just as in dropsy (Istisqa), no matter how much one drinks, thirst does not go away. (M)

[1] Holy Quran, 28/27 to 29. Page 307 of 750

फ़तावा रिज़विया - भाग 29

[अरबी कुरान का पाठ]: "यदि अल्लाह ने चाहा, तो आप मुझे सदाचारियों में से पाएंगे। [27] उसने कहा, 'यह [तय] मेरे और आपके बीच है। मैं दोनों अवधियों में से जिसे भी पूरा करूँमुझ पर कोई ज़्यादती नहीं होगी, और अल्लाह उस पर जो हम कह रहे हैं, गवाह है।' [28] फिर जब मूसा ने अवधि पूरी कर ली और अपने परिवार के साथ यात्रा कर रहे थे... (आयत)[1]" [उपरोक्त का उर्दू अनुवाद]: "मेरी ऐसी कोई इच्छा नहीं है; इंशाअल्लाह, आप मुझे नेक लोगों में पाएंगे। मूसा ने कहा: यह मेरे और आपके बीच का इकरारनामा है; मैं इन दोनों में से जो भी मियाद (अवधि) पूरी कर दूँ, मुझ पर कोई दावा नहीं होगा; और हमारे इस कहे पर अल्लाह गवाह है। फिर जब मूसा ने अपनी मियाद पूरी कर ली और अपनी पत्नी को लेकर चला। (त)"

स्वयं हुज़ूर पुर नूर सैयदुल मुरसलीन (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) हज़रत उम्मुल मोमिनीन खदीजा (रज़ियल्लाहु अन्हा) का माल मुज़ारबत (साझेदारी) के तौर पर लेकर शाम तशरीफ़ ले गए। हज़रत अमीरुल मोमिनीन उस्मान ग़नी और हज़रत अब्दुर रहमान बिन औफ़ (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) बहुत ही प्रसिद्ध और नामी व्यापारी थे। इमाम-ए-आज़म (क़ुद्दिस सिर्रहु) कपड़े का व्यापार करते थे; बल्कि तदबीर (योजना/प्रयास) का इनकार करने वाला खुद तदबीर से कब खाली होगा? हमने मान लिया कि वह कृषि, व्यापार, नौकरी, कारीगरी कुछ नहीं करता, फिर भी वह अपने लिए खाना पकाता या पकवाता तो होगा। आटा पीसना, गूँधना, पकाना क्या यह तदबीर नहीं है? इसे भी छोड़िये; अगर उसे बिना मांगे या इशारे के खुद-ब-खुद पका-पकाया खाना मिल भी जाए, फिर भी निवाला बनाना, मुँह तक लाना, चबाना, निगलना ये भी तदबीर है। अगर वह तदबीर को छोड़ना चाहता है, तो उसे इनसे भी परहेज़ करना चाहिए कि अगर अल्लाह की तक़दीर में ज़िंदगी लिखी है, तो वह बिना खाए जीवित रहेगा, या अल्लाह की शक्ति से पेट भर जाएगा, या भोजन स्वयं पेट में चला जाएगा। अन्यथा इन कार्यों से भी कुछ हासिल नहीं होगा। क्योंकि अहले सुन्नत के मज़हब में न पानी प्यास बुझाता है, न भोजन भूख मिटाता है; बल्कि ये सब आदतन कारण (अस्बाब-ए-आदिया) हैं जिनसे अल्लाह तआला ने परिणामों (मुसब्बबात) को जोड़ दिया है और अपनी स्थापित आदत के अनुसार उनके बाद तृप्ति और प्यास बुझना प्रदान करता है। यदि वह न चाहे तो कोई घड़ों पानी पी ले या 'धड़ियों'[1] खाना खा ले - कुछ भी फ़ायदेमंद नहीं होगा। आख़िर जलोदर (इस्तिसका) और 'जुआ-उल-बकर' (बैल जैसी भूख)[2] नामक रोगों में क्या होता है? वही खाना-पानी जो पहले तृप्त करता था, अब क्यों बेकार हो जाता है? और यदि वह चाहे तो बिना खाए-पिए भूख-प्यास पास न आए, जैसे दज्जाल के ज़माने में वह

ईमान वालों का पालन-पोषण फरमाएगा। और फ़रिश्तों का बिना पानी और भोजन के जीवित रहना किसे नहीं मालूम। मगर यह इंसान के लिए 'ख़र्क़ए-आदत' (असाधारण घटना) है जिस पर...

पाद-टिप्पणी: नोट 1: धड़ी: दस सेर या पाँच सेर का वज़न। 12 मिस्बाही। नोट 2: जुआ-उल-बकर: इस बीमारी में इंसान कितना भी खा ले, भूख नहीं मिटती, जैसे जलोदर (इस्तिसका) में कितना भी पी ले, प्यास नहीं बुझती। (म)

[1] अल-कुरान अल-करीम, 28/27 से 29। पृष्ठ 307 का 750

إِنْ شَاءَ اللَّهُ مِنَ الصَّالِحِينَ ﴿۲۷﴾ قَالَ ذَٰلِكَ بَيْنِي وَبَيْنَكَ ۖ أَيَّمَا | نہیں چاہتا قریب ہے ان شاء اللہ تم مجھے نیکوں میں پاؤ گے۔ الْأَجَلَيْنِ قَضَيْتُ فَلَا عُدْوَانَ عَلَيَّ ۖ وَاللَّهُ عَلَىٰ مَا نَقُولُ وَكِيلٌ ﴿۲۸﴾ | موسٰی نے کہا یہ میرے اور آپ کے درمیان اقرار ہو چکا میں فَلَمَّا قَضَىٰ مُوسَى الْأَجَلَ وَسَارَ بِأَهْلِهِ ۖ الآیۃ 1- | ان دونوں میں جو میعاد پوری کردوں تو مجھ پر کوئی مطالبہ نہیں اور ہمارے اس کہے پر اللہ کا ذمہ ہے پھر جب موسٰی نے اپنی میعاد پوری کردی اور اپنی بیوی کو لے کر چلا۔ (ت)

خود حضورِ پُر نور سید المرسلین صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم حضرت ام المومنین خدیجہ رضی اللہ تعالٰی عنہا کا مال بطور مضاربت لے کر شام کو تشریف فرما ہوئے۔ حضرت امیر المومنین عثمان غنی و حضرت عبدالرحمن بن عوف رضی اللہ تعالٰی عنہما بڑے نامی گرامی تاجر تھے۔ حضرت امامِ اعظم قدس سرہ الاکرم بزاری کرتے ، بلکہ ولید منکر تدبیر خود کیا تدبیر سے خالی ہوگا ہم نے فرض کیا کہ وہ زراعت، تجارت، نوکری حرفت کچھ نہ کرتا ہو آخر اپنے لیے کھانا پکاتا یا پکواتا ہوگا۔ آٹا پیسنا، گوندھنا، پکانا یہ کیا تدبیر نہیں؟ یہ بھی جانے دیجئے اگر بغیر اس کے سوال یا اشارہ و ایما کے خود بخود پکی پکائی اسے مل جاتی ہو ، تاہم نوالہ بنانا، منہ تک لانا، چبانا نگلنا یہ بھی تدبیر، تدبیر کو معطل کرے تو اس سے بھی باز آئے کہ تقدیر الہی میں زندگی لکھی ہے بے کھائے جئے گا یا قدرت الہی سے پیٹ بھر جائے گا یا خود بخود کھانا معدے میں چلا جائے گا۔ ورنہ ان باتوں سے بھی کچھ حاصل نہ ہوگا۔ کہ مذہب اہلسنت میں نہ پانی پیاس بجھاتا ہے۔ نہ کھانا بھوک کھوتا ہے۔ بلکہ یہ سب اسباب عادیہ میں جن سے اللہ تعالٰی نے مسببات کو مربوط فرمایا اور اپنی عادتِ جاریہ کے مطابق ان کے بعد سیری و سیرابی فرماتا ہے۔ وہ نہ چاہے تو گھڑے چڑھائے، دھڑیوں کھا جائے ۔ عہ ۱ کچھ مفید نہ ہوگا۔ آخر مرض استسقاء و جوع البقر عہ ۲ میں کیا ہوتا ہے۔

وہی کھانا، پانی جو پہلے سیر و سیراب کرتا تھا اب کیوں محض بے کار ہو جاتا ہے۔ اور اگر وہ چاہے تو بے کھائے پیئے بھوک پیاس پاس نہ آئے، جیسے زمانہ دجال میں اہل ایمان کی پرورش فرمائے گا۔ اور ملائکہ کا بے آب و غذا زندگی کرنا کسے نہیں معلوم۔ مگر یہ انسان میں خرق عادت ہے جس پر

عہ ۱: دھڑی: دس سیر یا پانچ سیر کا وزن ۱۲ مصباحی۔ عہ ۲: جوع البقر: اس بیماری میں کتنا بھی کھائے بھوک نہیں جاتی جس طرح استسقاء میں جس قدر بھی پیئے پیاس نہیں جاتی۔ م

1 القرآن الکریم ۲۸/۲۷ تا ۲۹ Page 307 of 750

Fatawa Rizwiya Volume 29

To sit idle, giving up effort, is ignorance and stupidity. Even if one makes a false vow of relying on destiny and renounces food and drink, only to die of hunger and thirst, they would surely die a forbidden (haram) death and be a sinner in the sight of Allah. If death is also by destiny, then why did Allah Almighty say:

"وَلَا تُلْقُوْا بِاَیْدِیْكُمْ اِلَى التَّهْلُكَةِ" [1]	**And do not throw [yourselves] with your [own] hands into destruction.**

Even if dying is predestined, do not go into the mouth of a dragon yourself.[2] (Although death is predestined, do not voluntarily go into the mouths of dragons and snakes.)

Suppose a person is so firm in their claim that they completely abandon means and make a solid pact not to move a hand or foot, nor give any hint or sign to seek any plan, saying "if my stomach is filled by God's command, well and good, otherwise I accept death." Yet, he will still supplicate (make dua) to Allah. Is this not a plan (tadbeer)? For when is prayer itself the true effective cause? It is just one means of achieving a goal, and effort is its name. The Lord, Glorious and Exalted, says:

(5) "وَقَالَ رَبُّكُمُ ادْعُوْنِیْۤ اَسْتَجِبْ لَكُمْ" [3]	**Your Lord said, "Call upon Me; I will respond to you."**

He is All-Powerful to grant desires without prayer, then why did He guide towards this measure? And that too with such emphasis that in a Hadith, the Master of the Universe (peace and blessings of Allah be upon him) said:

Hadith 1: | مَنْ لَّمْ یَدْعُ اللهَ غَضِبَ عَلَیْهِ [4] | He who does not ask of Allah, He becomes angry with him. | | :--- | :--- |

---

[1] Al-Quran Al-Karim 2/195 [2] [3] Al-Quran Al-Karim 40/60 [4] Al-Musannaf of Ibn Abi Shaybah, Book of Supplication, Chapter on the Excellence of Supplication, Hadith 9218, Idarat al-Qur'an Karachi 10/200; Musnad Ahmad ibn Hanbal from Abu Hurairah (may Allah be pleased with him), Al-Maktab al-Islami Beirut 2/444; Jami' at-Tirmidhi, Chapters on Supplications, Chapter [thereof], H.M. Said Company Delhi 2/173; Sunan Ibn Majah, Chapters on Supplication, Chapter on the Excellence of Supplication, H.M. Said Company Karachi p. 280; Al-Mustadrak al-Hakim, Book of Supplication, Chapter: He who does not supplicate to Allah etc., Dar al-Fikr Beirut 1/491.

फ़तावा रिज़विया जिल्द 29

हाथ-पैर तोड़कर बैठना जहालत और बेवकूफी है, यहाँ तक कि अगर कोई तकदीर पर भरोसे का झूठा नाम लेकर खान-पान का त्याग कर दे और भूख-प्यास से मर जाए, तो वह निश्चित रूप से हराम मौत मरेगा और अल्लाह तआला का गुनहगार ठहरेगा। मृत्यु भी तो तकदीर से है, फिर अल्लाह तआला ने क्यों फरमाया:

"وَلَا تُلْقُوْا بِاَیْدِیْكُمْ اِلَى التَّهْلُكَةِ" [1]	**अपने हाथों अपनी जान हलाकत (विनाश) में न डालो।**

हालाँकि मरना मुकद्दर है, लेकिन तुम स्वयं अजदहे (साँप) के मुँह में न जाओ।[2] (यद्यपि मृत्यु तय है, लेकिन स्वयं अजदहों और साँपों के मुँह में न जाएँ।)

हमने माना कि वलीद (कोई व्यक्ति) अपने दावे पर इतना दृढ़ हो कि वह पूरी तरह से साधनों को छोड़ दे और पक्का वादा कर ले कि वह बिल्कुल भी हाथ-पैर नहीं हिलाएगा, न ही किसी योजना की ओर संकेत करेगा, और कहेगा कि 'खुदा के हुक्म से पेट भरे तो बेहतर, वरना मरना मंजूर', फिर भी वह अल्लाह तआला से सवाल (दुआ) करेगा। क्या यह कोई योजना (तदबीर) नहीं है? क्योंकि दुआ स्वयं वास्तविक प्रभावशाली कब है? यह केवल उद्देश्य प्राप्ति का एक कारण है, और प्रयास ही इसका नाम है। रब जल जलालुहू फरमाता है:

(5) "وَقَالَ رَبُّكُمُ ادْعُوْنِیْۤ اَسْتَجِبْ لَكُمْ" [3]	**तुम्हारे रब ने फरमाया कि मुझसे दुआ करो, मैं तुम्हारी दुआ स्वीकार करूँगा।**

वह इसके लिए सक्षम थे कि बिना दुआ के मुराद पूरी कर दें, फिर इस तदबीर की ओर क्यों मार्गदर्शन किया? और वह भी उस ताकीद के साथ कि हदीस में हुज़ूर सैय्यद-ए-आलम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया:

हदीस 1: | [4] مَنْ لَّمْ یَدْعُ اللہَ غَضِبَ عَلَیْہِ | जो अल्लाह से दुआ नहीं करेगा, अल्लाह तआला उस पर क्रोधित होगा। | | :--- | :--- |

---

[1] अल-कुरान अल-करीम 2/195 [2] [3] अल-कुरान अल-करीम 40/60 [4] अल-मुसन्नफ इब्न अबी शैबा, किताब अद-दुआ, बाब फि फज़्ल अद-दुआ, हदीस 9218, इदारतुल कुरान कराची 10/200; मसनद अहमद बिन हंबल, अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से, अल-मकतब अल-इस्लामी बेरूत

2/444; जामे तिरमिज़ी, अबवाब अद-दअवात, बाब मिन्हु, एच.एम. सईद कंपनी दिल्ली 2/173; सुनन इब्न माजह, अबवाब अद-दुआ, बाब फज़्ल अद-दुआ, एच.एम. सईद कंपनी कराची पृ. 280; अल-मुस्तदरक अल-हाकिम, किताब अद-दुआ, बाब मन लम यदुल्लाहि इल्ख, दारुल फिक्र बेरूत 1/491।

ہاتھ پاؤں توڑ کر بیٹھنا جہل وحماقت، یہاں تک کہ اگر تقدیر پر بھروسہ کا جھوٹا نام کرکے خوردو نوش کا عہد کرے اور بھوک پیاس سے مرجائے، بے شک حرام موت مرے اور اللہ تعالیٰ کا گنہگار ٹھہرے۔ مرگ بھی تو تقدیر سے ہے، پھر اللہ تعالیٰ نے کیوں فرمایا۔

"وَلَا تُلْقُوْا بِاَیْدِیْكُمْ اِلَى التَّهْلُكَةِ" [1] اپنے ہاتھوں اپنی جان ہلاکت میں نہ ڈالو۔

گرچہ مردن مقدر است ولے تو مرو در دہان اژدہا ۲ (اگرچہ موت مقدر ہے لیکن از خود اژدہوں اور سانپوں کے منہ میں نہ جا۔)

ہم نے مانا کہ ولید اپنے دعوے پر ایسا مضبوط ہو کہ یک لخت ترک اسباب کرکے پیمانِ واثق (پکا عہد) کرلے کہ اصلاً دست وپا نہ ہلائے نہ اشارۃً نہ کنایۃً کسی تدبیر کے پاس جائے گا خدا کے حکم سے پیٹ بھرے تو بہتر ورنہ مرنا قبول، تاہم اللہ تعالیٰ سے سوال کرے گا یہ کیا تدبیر نہیں کہ دعا خود موثر حقیقی کب ہے؟ صرف حصولِ مراد کا ایک سبب ہے، اور تدبیر کا ہے نام ہے۔ رب جل جلالہ فرماتا ہے:

(۵) "وَقَالَ رَبُّكُمُ ادْعُوْنِیْٓ اَسْتَجِبْ لَكُمْ" تمہارے رب نے فرمایا مجھ سے دعا کرو میں قبول کروں گا۔ [3]

وہ قادر تھے کہ بے دعا مراد بخشے، پھر اس تدبیر کی طرف کیوں ہدایت فرمائی؟ اور وہ بھی اس تاکید کے ساتھ کہ حدیث میں حضور سید عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا۔

حدیث ۱: | مَنْ لَّمْ یَدْعُ اللّٰہَ غَضِبَ عَلَیْہِ ۴ | جو اللہ سے دعا نہ کرے گا اللہ تعالیٰ اس پر غضب |
| ---: | ---: |

۱ القرآن الکریم ۲/ ۱۹۵ ۲ ۳ القرآن الکریم ۴۰/ ۶۰ ۴ المصنف لابن ابی شیبہ کتاب الدعاء باب فی فضل الدعاء حدیث ۹۲۱۸ ادارۃ القرآن کراچی ۱۰/ ۲۰۰ ، مسند احمد بن حنبل عن ابی ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ المکتب الاسلامی بیروت ۲/ ۴۴۴، جامع الترمذی ابواب الدعوات باب منہ این کمپنی دہلی ۲/ ۱۷۳ ، سنن ابن ماجہ ابواب الدعاء باب فضل الدعاء ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ص ۲۸۰، المستدرک للحاکم کتاب الدعاء باب من لم یدع اللہ الخ دار الفکر بیروت ۱/ ۴۹۱

Fatawa Razawiya Volume 29

Narrated by the Imams: Ahmad in the Musnad, and Abu Bakr bin Abi Shaybah (and the wording is his) in the Musannaf, and Bukhari in al-Adab al-Mufrad, and Tirmidhi in the Jami’, and Ibn Majah in the Sunan, and al-Hakim in the Mustadrak, from Abu Hurairah (may Allah be pleased with him). (This has been narrated by the Imams; Ahmad in his Musnad, Abu Bakr bin Abi Shaybah in his Musannaf and the wording is his, Bukhari in Adab al-Mufrad, Tirmidhi in Jami', Ibn Majah in Sunan and Hakim in Mustadrak from Abu Hurairah. May Allah be pleased with him. - T)

Rather, caliphate, sovereignty, judiciary, Jihad, hudud (prescribed punishments), and qisas (retribution), etc., all these Sharia matters are the very means of management that have been established in this world of causes for the order of the world, the promotion of religion, and the repelling of mischief-makers.

(6) And Allah the Almighty said: "Obey Allah and obey the Messenger and those in authority among you." [Quran 4:59] Obey Allah's command, and the Messenger's command, and of those who have authority among you. (T)

(7) And Allah the Almighty said: "And fight them until there is no fitnah and [until] the religion, all of it, is for Allah." [Quran 8:39] And fight them until no corruption (fitnah) remains and all religion becomes for Allah. (T)

(8) And Allah the Almighty said: "And if it were not for Allah checking [some] people by means of others, the earth would have been corrupted, but Allah is full of bounty to the worlds." [Quran 2:251] And if Allah did not repel some people by means of others, the earth would surely be destroyed; but Allah is full of bounty for the entire universe. (T)

(9) And Allah the Almighty said: "And if it were not for Allah checking [some] people by means of others, there would have been demolished monasteries, churches, synagogues, and mosques in which the name of Allah is mentioned much..." [Quran 22:40] And if Allah did not repel some men by means of others, then monasteries, churches, synagogues, and mosques, in which the name of Allah is much mentioned, would surely have been pulled down...

1 Al-Quran al-Karim 4/59 2 Al-Quran al-Karim 8/39 3 Al-Quran al-Karim 2/251

इमामों ने इसे वर्णित किया है: अहमद ने मुसनद में, और अबू बक्र बिन अबी शयबा ने मुसन्नफ़ में (और शब्द उन्हीं के हैं), बुख़ारी ने अल-अदब अल-मुफ़रद में, तिर्मिज़ी ने जामी में, इब्न माजह ने सुनन में, और अल-हाकिम ने मुस्तदरक में, अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से। (इसे इमामों ने रिवायत किया; अहमद ने मुसनद में, अबू बक्र बिन अबी शयबा ने मुसन्नफ़ में और लफ़्ज़ उन्हीं के हैं, बुख़ारी ने अदबुल मुफ़रद में, तिर्मिज़ी ने जामी में, इब्न माजह ने सुनन में और हाकिम ने मुस्तदरक में अबू हुरैरा से। अल्लाह तआला उन पर राज़ी हो। - त)

बल्कि खिलाफत, सल्तनत, न्याय, जिहाद, हुदूद और किसास आदि, ये सभी शरीयत के मामले शासन के वही साधन हैं जो इस दुनिया के कारणों में दुनिया की व्यवस्था, धर्म के प्रचार और उपद्रवियों को रोकने के लिए स्थापित किए गए हैं।

(६) और अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "अल्लाह की आज्ञा का पालन करो और रसूल की आज्ञा का पालन करो और उनका भी जो तुम में से अधिकार वाले हैं।" [कुरान ४:५९] अल्लाह का हुक्म मानो और रसूल का हुक्म मानो और उनका जो तुम में हुकूमत वाले हैं। (त)

(७) और अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "और उनसे लड़ो यहाँ तक कि फ़ितना (उपद्रव) न रहे और सारा दीन अल्लाह का हो जाए।" [कुरान ८:३९] और उनसे लड़ो यहाँ तक कि कोई फ़साद बाकी न रहे और सारा दीन अल्लाह का हो जाए। (त)

(८) और अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "और यदि अल्लाह लोगों को एक-दूसरे के माध्यम से न हटाता, तो पृथ्वी दूषित हो जाती, परन्तु अल्लाह संसार वालों पर बड़ा अनुग्रह करने वाला है।" [कुरान २:२५१] और अगर अल्लाह लोगों में बाज़ से बाज़ को दफ़ा न करे तो ज़रूर ज़मीन तबाह हो जाए मगर अल्लाह सारे जहान पर फ़ज़्ल करने वाला है। (त)

(९) और अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "और यदि अल्लाह लोगों को एक-दूसरे के माध्यम से न हटाता, तो खानकाहें, गिरजाघर, पूजा-स्थल और मस्जिदें जिनमें अल्लाह का नाम अधिकता से लिया जाता है, गिरा दी जातीं..." [कुरान २२:४०] और अल्लाह अगर आदमियों में एक को दूसरे से दफ़ा न फ़रमाता तो ज़रूर ढा दी जातीं खानकाहें और गिरजे और कलीसे और मस्जिदें जिनमें अल्लाह का ब-कसरत नाम...

१ अल-कुरान अल-करीम ४/५९ २ अल-कुरान अल-करीम ८/३९ ३ अल-कुरान अल-करीम २/२५१

पृष्ठ 309/750

رواہ الائمۃ احمد في المسند وابو بکر بن ابي شیبۃ واللفظ لہ في المصنف والبخاری فی الادب المفرد والترمذی فی الجامع و ابن ماجۃ فی السنن والحاکم فی المستدرک عن ابی ھریرۃ رضی اللہ تعالٰی عنہ۔ فرمائے گا، (اس کو ائمہ نے روایت کیا احمد نے مسند میں، ابو بکر بن ابی شیبہ نے مصنف میں اور لفظ اسی کے ہیں، بخاری نے ادب المفرد میں ترمذی نے جامع میں، ابن ماجہ نے سنن میں اور حاکم نے مستدرک میں ابوہریرہ سے۔ اللہ تعالٰی ان پر راضی ہو۔ ت)

بلکہ خلافت و سلطنت و قضاء و جہاد و حدود و قصاص وغیرہا یہ تمام امور شرعیہ عین تدبیر ہیں کہ انتظام عالم و ترویج دین و دفع مفسدین کے لیے اس عالم اسباب میں مقرر ہوئے۔

(۶) وقال تعالٰی (اللہ تعالٰی نے فرمایا۔ ت) "اَطِیْعُوا اللّٰہَ وَ اَطِیْعُوا الرَّسُوْلَ وَ اُولِی الْاَمْرِ مِنْکُمْ" 1 ؎ حکم مانو اللہ کا اور حکم مانو رسول کا اور ان کا جو تم میں حکومت والے ہیں۔ (ت)

(۷) وقال تعالٰی (اور اللہ تعالٰی نے فرمایا۔ ت) "وَ قَاتِلُوْھُمْ حَتّٰی لَا تَکُوْنَ فِتْنَۃٌ وَّ یَکُوْنَ الدِّیْنُ کُلُّہٗ لِلّٰہِ" 2 ؎ اور ان سے لڑو یہاں تک کہ کوئی فساد باقی نہ رہی اور سارا دین اللہ کا ہو جائے۔ (ت)

(۸) وقال تعالٰی (اللہ تعالٰی نے فرمایا۔ ت) "وَ لَوْ لَا دَفْعُ اللّٰہِ النَّاسَ بَعْضَھُمْ بِبَعْضٍ لَّفَسَدَتِ الْاَرْضُ وَ لٰکِنَّ اللّٰہَ ذُوْ فَضْلٍ عَلَی الْعٰلَمِیْنَ" 3 ؎ اور اگر اللہ لوگوں میں بعض سے بعض کو دفع نہ کرے تو ضرور زمین تباہ ہو جائے مگر اللہ سارے جہان پر فضل کرنے والا ہے۔ (ت)

(۹) وقال تعالٰی (اللہ تعالٰی نے فرمایا۔ ت) "وَ لَوْ لَا دَفْعُ اللّٰہِ النَّاسَ بَعْضَھُمْ بِبَعْضٍ لَّھُدِّمَتْ صَوَامِعُ وَ بِیَعٌ وَّ صَلَوٰتٌ وَّ مَسٰجِدُ یُذْکَرُ فِیْھَا..." اور اللہ اگر آدمیوں میں ایک کو دوسرے سے دفع نہ فرماتا تو ضرور ڈھادی جاتیں خانقاہیں اور گرجے اور کلیسے اور مسجدیں جن میں اللہ کا بکثرت نام...

1 القرآن الكريم ۴/ ۵۹ 2 القرآن الكريم ۸/ ۳۹ 3 القرآن الكريم ۲/ ۲۵۱

Fatawa Razawiyya Volume 29

...the name of Allah is mentioned much [1] - (is taken). (T) Look, it is clearly stated that Jihad was ordained so that mischief (fitnah) is suppressed and the true religion spreads. If this were not so, the earth would be ruined and mosques and places of worship would be demolished. (10) And Allah Almighty said (And Allah Almighty has said - T): "Unless you do this, there will be mischief on the earth and a great corruption." [2] - If you do not do this, there will be mischief and great corruption on the earth. (T) Mischief (fitnah) is the strength of disbelief (kufr), and great corruption is the weakness of Islam. (11) And Allah Almighty said (And Allah Almighty has said - T): "And in legal retribution (Qisas) there is [saving of] life for you, O people of understanding, that you may become righteous." [3] - And in taking retribution for blood there is life for you, O people of understanding, so that you may perhaps avoid [evil]. (T) That is, if you take blood for blood, the hands of mischief-makers will be restrained and the lives of the innocent will be saved. And for this reason, while executing the punishment (Hadd), it was commanded that Muslims should gather and witness it so that it may serve as an example. (12) Allah Almighty said (Allah Almighty has said - T): "And let a group of the believers witness their punishment." [4] - And a group of Muslims should be present at the time of their punishment. (T) Furthermore, if you progress more, prayer, fasting, Hajj, Zakat, etc., all religious acts are in themselves a strategy, and are the means to attain Divine pleasure, infinite reward, and salvation from punishment and wrath. (13) Allah Almighty said (Allah Almighty has said - T): "And whoever desires the Hereafter and strives for it with the effort due to it while he is a believer - it is those whose effort will be appreciated [by Allah]." [5] - And whoever desires the Hereafter and makes an effort for it as should be made, and is a believer, then it is their effort that has found acceptance. (T) Although it has been determined in eternity that:

1 Quran al-Kareem 22 / 40 2 Quran al-Kareem 8 / 73 3 Quran al-Kareem 2 / 179 4 Quran al-Kareem 24 / 2 5 Quran al-Kareem 17 / 19

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

...अल्लाह का नाम बहुत अधिक [1] - (लिया जाता है)। (T) देखो, स्पष्ट रूप से कहा गया है कि जिहाद इसलिए निर्धारित किया गया था ताकि फ़ितना (उपद्रव) दब जाए और सत्य धर्म फैले। यदि ऐसा न होता तो पृथ्वी तबाह हो जाती और मस्जिदें तथा इबादतगाहें ढहा दी जातीं। (10) और अल्लाह तआला ने फ़रमाया (और अल्लाह तआला ने फ़रमाया - T): "यदि तुम ऐसा नहीं करोगे, तो पृथ्वी पर फ़ितना और बड़ा भ्रष्टाचार होगा।" [2] - यदि तुम ऐसा नहीं करोगे तो पृथ्वी में फ़ितना और बड़ा भ्रष्टाचार होगा। (T) फ़ितना कुफ़्र (अधर्म) की शक्ति है, और बड़ा भ्रष्टाचार इस्लाम की कमजोरी है। (11) और अल्लाह तआला ने फ़रमाया (और अल्लाह तआला ने फ़रमाया - T): "और तुम्हारे लिए किसास (बदले) में जीवन है, ऐ बुद्धिमान लोगो, ताकि तुम बच सको।" [3] - और खून का बदला लेने में तुम्हारे लिए जीवन है, ऐ बुद्धिमान लोगो, ताकि तुम शायद बच जाओ। (T) अर्थात, यदि तुम खून के बदले खून लोगे, तो उपद्रवियों के हाथ रुकेंगे और निर्दोषों की जान बचेगी, और इसीलिए दंड (हद) लागू करते समय यह आदेश दिया गया कि मुसलमान इकट्ठा होकर देखें ताकि यह एक सबक बने। (12) अल्लाह तआला ने फ़रमाया (अल्लाह तआला ने फ़रमाया - T): "और उनके दंड के समय ईमान वालों का एक समूह उपस्थित होना चाहिए।" [4] - और उनके दंड के समय मुसलमानों का एक समूह मौजूद होना चाहिए। (T) बल्कि और प्रगति करें तो नमाज़, रोज़ा, हज, ज़कात आदि सभी धार्मिक कार्य स्वयं एक उपाय हैं, और ईश्वरीय प्रसन्नता एवं अनंत पुण्य प्राप्त करने तथा दंड और क्रोध से मुक्ति पाने के साधन हैं। (13) अल्लाह तआला ने फ़रमाया (अल्लाह तआला ने फ़रमाया - T): "और जो कोई आख़िरत (परलोक) चाहता है और उसके लिए वैसी ही कोशिश करता है जैसी करनी चाहिए, और वह मोमिन (ईमान वाला) है, तो उन्हीं की कोशिश ठिकाने लगी।" [5] - और जो आख़िरत चाहे और उसकी जैसी कोशिश करे और ईमान वाला हो, तो उनकी कोशिश को सराहना मिली। (T) यद्यपि अनादि काल में यह तय हो चुका है कि:

1 अल-कुरान अल-करीम 22 / 40 2 अल-कुरान अल-करीम 8 / 73 3 अल-कुरान अल-करीम 2 / 179 4 अल-कुरान अल-करीम 24 / 2 5 अल-कुरान अल-करीम 17 / 19

اسمُ اللہِ کَثِیرًا 1 - لیا جاتا ہے۔ (ت) دیکھو صاف ارشاد فرمایا جاتا ہے کہ جہاد اسی لیے مقرر ہوا کہ فتنے فرد ہوں اور دینِ حق پھیلے۔ اگر یہ نہ ہوتا تو زمین تباہ ہو جاتی اور مسجدیں اور عبادت خانے ڈھائے جاتے۔ (۱۰) وقال تعالٰی (اور اللہ تعالٰی نے فرمایا۔ت) اِلَّا تَفْعَلُوْہُ تَکُنْ فِتْنَۃٌ فِي الْاَرْضِ وَ فَسَادٌ کَبِیْرٌ 2 - ایسا نہ کرو گے تو زمین میں فتنہ اور بڑا فساد ہو گا۔ (ت) فتنہ کفر کی قوت، اور فسادِ کبیر ضعفِ اسلام۔ (۱۱) وقال تعالٰی (اور اللہ تعالٰی نے فرمایا۔ت) وَلَکُمْ فِي الْقِصَاصِ حَیٰوۃٌ یّٰاُولِی الْاَلْبَابِ لَعَلَّکُمْ تَتَّقُوْنَ 3 - اور خون کا بدلہ لینے میں تمہاری زندگی ہے اے عقلمند و کہ تم کہیں بچو۔ ت) یعنی خون کے بدلے خون لوگے تو مفسدوں کے ہاتھ رکیں گے اور بے گناہوں کی جانیں بچیں گی، اور اسی لیے حد جاری کرتے وقت حکم ہوا کہ مسلمان جمع ہو کر دیکھیں تاکہ موجبِ عبرت ہو۔ (۱۲) قال تعالٰی (اللہ تعالٰی نے فرمایا۔ت) وَلْیَشْھَدْ عَذَابَھُمَا طَائِفَۃٌ مِّنَ الْمُؤْمِنِیْنَ 4 - اور چاہیے کہ ان کی سزا کے وقت مسلمانوں کا ایک گروہ حاضر ہو۔ (ت) بلکہ اور ترقی کیجئے تو نماز، روزہ، حج، زکوٰۃ وغیرہا تمام اعمالِ دینیہ خود ایک تدبیر، اور رضائے الٰہی و ثوابِ نامتناہی ملنے اور عذاب و غضب سے نجات پانے کے اسباب ہیں۔ (۱۳) قال تعالٰی (اللہ تعالٰی نے فرمایا۔ت) وَمَنْ اَرَادَ الْاٰخِرَۃَ وَ سَعٰی لَھَا سَعْیَھَا وَھُوَ مُؤْمِنٌ فَاُولٰئِکَ کَانَ سَعْیُھُمْ مَّشْکُوْرًا 5 - اور جو آخرت چاہے اور اس کی سی کوشش کرے اور ہو ایمان والا، تو انہیں کی کوشش ٹھکانے لگی۔ (ت) اگرچہ ازل میں ٹھہر چکا کہ:

1 القرآن الکریم ۲۲ / ۴۰ 2 القرآن الکریم ۸ / ۷۳ 3 القرآن الکریم ۲ / ۱۷۹ 4 القرآن الکریم ۲۴ / ۲ 5 القرآن الکریم ۱۷ / ۱۹

Fatawa Rizvia | Volume 29

"A party will be in Paradise and a party in the Blaze." (1) | One group is in Paradise and one group is in Hell. (T)

Even then, deeds were made obligatory so that whatever is written in one's destiny, that path is made easy for him, and its means are provided.

Allah Almighty said (Allah Almighty has said. T): "We will ease him toward ease." (2) | So We will soon provide him with ease. (T)

And Allah Almighty said (Allah Almighty has stated. T): "We will ease him toward hardship." (3) | So We will soon provide him with difficulty. (T)

Hadith 2: For this reason, when the Holy Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him) stated: "Those destined for Hell and those destined for Paradise are all recorded," the Companions submitted: "O Messenger of Allah! Then why should we perform deeds? Let us sit back and abandon effort. For those who are fortunate will be fortunate anyway, and those who are wretched will inevitably face wretchedness." He replied: "No, rather keep performing deeds, for everyone is guided toward the path for which they were created. The fortunate person is facilitated toward deeds of fortune, and the wretched person toward deeds of wretchedness." Then the Prophet recited these two verses.

[Boxed Text] Reported by Imams Ahmad, Bukhari, Muslim, and others from the Leader of the Faithful Ali (may Allah honor his face), who said: The Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him) was attending a funeral, and he took something and started scraping the ground with it. He said: "There is not one among you whose place has not already been written, both in the Fire and in Paradise." They said: "O Messenger of Allah! Should we not then rely on our written destiny and abandon deeds?" | Imam Ahmad, Bukhari, Muslim, etc., narrated from the Leader of the Faithful Ali (may Allah honor his face) that the Holy Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him) was attending a funeral, he picked up something and began to scrape the ground and said: "There is none among you whose place has not already been written, one in Hell and one in Paradise." The Companions submitted: "O Messenger of Allah! Should we not then rely on the writing and leave off acting?"

1. The Holy Quran 42/7
2. The Holy Quran 92/7
3. The Holy Quran 92/10

फतावा रिज़विया | जिल्द 29

"एक समूह स्वर्ग में होगा और एक समूह दहकती आग में।" (1) | एक समूह जन्नत में है और एक समूह दोज़ख़ में। (त)

फिर भी कर्मों को अनिवार्य किया गया ताकि जिसके भाग्य में जो लिखा है, उसके लिए वही मार्ग सुलभ हो जाए और उसके साधन उपलब्ध हो जाएँ।

अल्लाह तआला ने फरमाया (अल्लाह तआला ने फरमाया। त): "तो हम उसके लिए सुगमता आसान कर देंगे।" (2) | तो बहुत जल्द हम उसे आसानी मुहैया कर देंगे। (त)

और अल्लाह तआला ने फरमाया (अल्लाह तआला ने इरशाद फरमाया। त): "तो हम उसके लिए कठिनाई आसान कर देंगे।" (3) | तो बहुत जल्द हम उसे कठिनाई मुहैया कर देंगे। (त)

हदीस 2: इसीलिए जब हुज़ूर अकदस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने इरशाद फरमाया: "दोज़ख़ी और जन्नती सब लिखे हुए हैं," तो सहाबा ने अर्ज़ की: "या रसूलुल्लाह! फिर हम अमल (कर्म) क्यों करें, हाथ-पाँव छोड़कर बैठ जाएँ? क्योंकि जो सौभाग्यशाली (सईद) हैं वे स्वयं ही सौभाग्यशाली होंगे और जो अभागे (शकी) हैं वे विवश होकर दुर्भाग्य ही पाएंगे।" आपने फरमाया: "नहीं, बल्कि अमल करते जाओ क्योंकि हर एक के लिए उस ठिकाने का रास्ता आसान कर दिया जाता है जिसके लिए वह बना है। सौभाग्यशाली को सौभाग्य के कर्मों की ओर और अभागे को दुर्भाग्य के कर्मों की ओर ले जाया जाता है।" फिर हुज़ूर ने यही दो आयतें तिलावत फरमाईं।

[बॉक्स के भीतर का टेक्स्ट] इमाम अहमद, बुखारी और मुस्लिम आदि ने अमीर-उल-मोमिनीन अली (करम अल्लाह वज्हहु) से रिवायत की है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) एक जनाज़े में शरीक थे, आपने कोई चीज़ पकड़ी और ज़मीन कुरेदने लगे और फरमाया: "तुममें से ऐसा कोई नहीं जिसका ठिकाना जहन्नुम में और ठिकाना जन्नत में न लिखा जा चुका हो।" उन्होंने पूछा: "या रसूलुल्लाह! क्या फिर हम अपनी तकदीर पर भरोसा करके अमल छोड़ न दें?" | इमाम अहमद, बुखारी और मुस्लिम आदि ने अमीर-उल-मोमिनीन अली (करम अल्लाह वज्हहु) से रिवायत की कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) एक जनाज़े में शरीक थे, आपने कोई चीज़ पकड़ी और ज़मीन को कुरेदने लगे और फरमाया: "तुममें से ऐसा कोई नहीं जिसका एक ठिकाना दोज़ख़ में और

एक ठिकाना जन्नत में न लिखा जा चुका हो।" सहाबा ने अर्ज़ की: "या रसूलुल्लाह! क्या हम तहरीर पर भरोसा करके अमल को छोड़ न दें?"

1. अल-कुरान अल-करीम 42/7
2. अल-कुरान अल-करीम 92/7
3. अल-कुरान अल-करीम 92/10

पृष्ठ 311 / 750

«فَرِیْقٌ فِی الْجَنَّۃِ وَ فَرِیْقٌ فِی السَّعِیْرِ» ۱؎ | ایک گروہ جنت میں ہے اور ایک گروہ دوزخ میں۔ (ت)

پھر بھی اعمال فرض کیے کہ جس کے مقدر میں جو لکھا ہے اسے وہی راہ آسان، اور اسی کے اسباب مہیا ہو جائیں۔

قال تعالٰی (اللہ تعالٰی نے فرمایا۔ ت) «فَسَنُیَسِّرُہ لِلْیُسْرٰی» ۲؎ | تو بہت جلد ہم اسے آسانی مہیا کردیں گے۔ (ت)

وقال تعالٰی (اللہ تعالٰی نے ارشاد فرمایا۔ ت) «فَسَنُیَسِّرُہ لِلْعُسْرٰی» ۳؎ | تو بہت جلد ہم اسے دشواری مہیا کردیں گے۔ (ت)

حدیث ۲: اسی لیے جب حضور اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے ارشاد فرمایا: دوزخی، جنتی سب لکھے ہوئے ہیں، اور صحابہ نے عرض کی: یارسول اللہ! پھر ہم عمل کا ہے کو کریں، ہاتھ پاؤں چھوڑ بیٹھیں۔ کہ جو سعید ہیں آپ ہی سعید ہوں گے اور جو شقی ہیں ناچار شقاوت پائیں گے۔ فرمایا: نہیں بلکہ عمل کیے جاؤ کہ ہر ایک جس گھر کے لیے بنا ہے اسی کا راستہ اسے سہل کردیتے ہیں، سعید کو اعمال سعادت کا اور شقی کو افعال شقاوت کا۔ پھر حضور نے یہی دو آیتیں تلاوت فرمائیں۔

اخرجہ الائمۃ احمد والبخاری و مسلم و غیرھم عن امیر المومنین علی کرم اللہ تعالٰی وجہہ الکریم قال : کان النبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فی جنازۃ فاخذ شیئا فجعل ینکت بہ الارض فقال ما منکم من احد الا وقد کتب مقعدہ من النار ومقعدہ من الجنۃ قالوا یارسول اللہ ! افلا نتکل علی کتابنا و ندع | امام احمد ، بخاری اور مسلم وغیرہ نے امیر المومنین علی کرم اللہ وجہہ الکریم سے روایت کی کہ نبی

اکرم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم ایک جنازہ میں شریک تھے ، آپ نے کوئی چیز پکڑی اور زمین کو کریدنے لگے اور فرمایا تم میں ایسا کوئی نہیں جس کا ایک ٹھکانہ دوزخ میں اور ایک ٹھکانہ جنت میں نہ لکھا جا چکا ہو۔ صحابہ نے عرض کی : یا رسول اللہ ! کیا ہم تحریر پر بھروسہ کر کے عمل کو چھوڑ نہ دیں۔

۱ـہ القرآن الکریم ۴۲/۷ ۲ـہ القرآن الکریم ۹۲/۷ ۳ـہ القرآن الکریم ۹۲/۱۰

Fatawa Razawiya, Volume 29

(Arabic Text)

Action (In one narration, it is added: So whoever is among the people of happiness will soon be led towards the actions of the people of happiness, and whoever is among the people of misery will soon be led towards the actions of the people of misery). He said: Work, for everyone is facilitated for what they were created for. As for the one who is among the people of happiness, they are facilitated for the actions of the people of happiness. And as for the one who is among the people of misery, they are facilitated for the actions of the people of misery. Then he recited: "So as for he who gives and fears Allah and believes in the best reward..." [Verse 1]

(Urdu Translation)

(In one narration it is added that whoever is from the people of bliss/success, he will soon incline towards the deeds of the people of bliss, and whoever is from the people of wretchedness, he will soon incline towards the deeds of the people of wretchedness). He (the Prophet) said: Keep acting; everyone will find facilitated for them what they were created for. Whoever is from the people of bliss, for him the deeds of the people of bliss will be facilitated, and whoever is from the people of wretchedness, for him the deeds of the people of wretchedness will be facilitated. Then he recited this noble verse: "As for him who gives and fears Allah and believes in the best [word]..." (T)

From here it becomes clear that if effort/planning (tadbir) was absolutely useless, then religion and Sharia (divine laws), the sending down of books, the commissioning of messengers, performing obligatory duties, and abstaining from forbidden acts—God forbid!—would all be futile, useless, and meaningless. It would be like cutting a man's rope and leaving him like a stray bull. Deen (religion) and Dunya (world) would all be disrupted at once. There is no power or strength except with Allah, the Most High, the Most Great (There is no power to avoid sin and no strength to do good except from God, the Sublime and Magnificent, T). No, indeed, effort is certainly commendable, and many of its forms are recommended and according to the Sunnah, such as prayer (Du'a) and medicine.

Hadith 3: The Hadiths regarding Du'a are themselves recurrent (Mutawatir), and the most significant is that the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said:

1. Sahih al-Bukhari, Kitab al-Qadr, Chapter on the words of Allah: "And the command of Allah is a decree determined," Qadimi Kutub Khana, Karachi,

12/779; Sahih Muslim, Kitab al-Qadr, Chapter on the manner of creation of humans in the mother's womb, etc., Qadimi Kutub Khana, Karachi, 2/333; Musnad Ahmad bin Hanbal on the authority of Ali (may Allah be pleased with him), Al-Maktab al-Islami, Beirut, 1/20; Sunan Ibn Majah, Chapter on Qadr, H.M. Saeed Company, Karachi, p. 9; Mishkat al-Masabih, Chapter on Faith in Qadr, First Section, Asah-ul-Matabi', Karachi, p. 20.

फतावा रज़विया, खंड 29

(अरबी पाठ)

कर्म (एक रिवायत में यह अधिक है कि जो सौभाग्यशाली लोगों में से है, वह जल्द ही सौभाग्यशाली लोगों के कर्म की ओर उन्मुख होगा, और जो दुर्भाग्यशाली लोगों में से है, वह जल्द ही दुर्भाग्यशाली लोगों के कर्म की ओर उन्मुख होगा)। उन्होंने कहा: कर्म करते रहो, क्योंकि हर किसी के लिए वही सुलभ है जिसके लिए उसे बनाया गया है। जो सौभाग्यशाली लोगों में से है, उसके लिए सौभाग्यशाली लोगों के कर्म सुलभ होंगे, और जो दुर्भाग्यशाली लोगों में से है, उसके लिए दुर्भाग्यशाली लोगों के कर्म सुलभ होंगे। फिर उन्होंने यह आयत पढ़ी: "तो जिसने दान दिया और अल्लाह का डर रखा और बेहतरीन बात की तस्दीक की..." [आयत 1]

(उर्दू अनुवाद)

(एक रिवायत में यह अधिक है कि जो सौभाग्यशाली लोगों में से है, वह शीघ्र ही सौभाग्यशाली लोगों के कर्म की ओर और जो दुर्भाग्यशाली लोगों में से है, वह शीघ्र ही दुर्भाग्यशाली लोगों के कर्म की ओर प्रवृत्त होगा)। आपने फरमाया: कर्म करते रहो, हर किसी को वही उपलब्ध होगा जिसके लिए वह पैदा किया गया है। जो सौभाग्यशाली लोगों में से होगा, उसे सौभाग्यशाली लोगों के कर्म और जो दुर्भाग्यशाली लोगों में से होगा, उसे दुर्भाग्यशाली लोगों के कर्म सुलभ होंगे। फिर आपने यह महान आयत पढ़ी: "अतः जिसने दिया और परहेजगारी की और सबसे अच्छी चीज़ को सच माना" (त)

यहाँ से स्पष्ट हुआ कि यदि प्रयास (तदबीर) पूरी तरह व्यर्थ होता, तो धर्म और शरीयत (कानून), ग्रंथों का अवतरण, पैगंबरों को भेजना, अनिवार्य कर्तव्यों का पालन करना और वर्जित कार्यों से बचना - अल्लाह की पनाह! - सब निरर्थक, व्यर्थ और अर्थहीन हो जाते। यह ऐसा होता जैसे किसी आदमी की रस्सी काटकर उसे खुले बैल की तरह छोड़ देना। धर्म और दुनिया सब एक साथ अस्त-व्यस्त हो जाते। न तो बुराई से बचने की शक्ति है और न ही भलाई करने की सामर्थ्य, सिवाय उस अल्लाह की ओर से जो उच्च और महान है (त)। नहीं, बल्कि प्रयास निस्संदेह प्रशंसनीय है, और इसके कई रूप वांछनीय (मन्दूब) और सुन्नत के अनुसार हैं, जैसे दुआ और दवा।

हदीस 3: दुआ से संबंधित हदीसें तो स्वयं प्रसिद्ध और निरंतर (मुतवातिर) हैं और सबसे बढ़कर यह है कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने यह फरमाया:

1. सहीह अल-बुखारी, किताब अल-कद्र, अध्याय अल्लाह के शब्द: "और अल्लाह का आदेश एक निश्चित आदेश है," कदीमी कुतुब खाना, कराची, 12/779; सहीह मुस्लिम, किताब अल-कद्र, अध्याय माँ के गर्भ में मनुष्य के निर्माण की विधि आदि, कदीमी कुतुब खाना, कराची, 2/333; मुसनद अहमद बिन हंबल, हजरत अली (रज़ियल्लाहु अन्हु) से, अल-मक्तब अल-इस्लामी, बेरूत, 1/20; सुनन इब्न माजह, कद्र पर अध्याय, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, पृष्ठ 9; मिश्कात अल-मसाबीह, ईमान बिल-कद्र पर अध्याय, पहला खंड, असत-उल-मताबे', कराची, पृष्ठ 20।

| (العمل (زاد فی روایۃ فمن کان من اھل السعادۃ فسیصیر الی عمل اھل السعادۃ ومن کان من اھل الشقاء فسیصیر الی عمل اھل الشقاء) قال اعملوا فکل میسر لما خلق لہ اما من کان من اھل السعادۃ فییسر لعمل اھل السعادۃ واما من کان من اھل الشقاء فییسر لعمل الشقاء ثم قراء فأما من اعطی واتقی وصدق بالحسنی الآیۃ 1۔ | (ایک روایت میں یہ زائد ہے کہ جو اہل سعادت میں سے ہے وہ عنقریب اہل سعادت کے عمل کی طرف اور جو اہل شقاوت میں سے ہے وہ عنقریب اہل شقاوت کے عمل کی طرف راغب ہوگا) آپ نے فرمایا: عمل کرتے رہو ہر کسی کو وہی میسر ہوگا جس کے لیے وہ پیدا کیا گیا، جو اہل سعادت میں سے ہوگا اس کو اہل سعادت کا عمل اور جو اہل شقاوت میں سے ہوگا اس کو اہل شقاوت کا عمل میسر ہوگا۔ پھر آپ نے یہ آیت کریمہ تلاوت فرمائی تو وہ جس نے دیا اور پر ہیز گاری کی اور سب سے اچھی چیز کو سچ مانا (ت) |

یہاں سے ظاہر ہوا کہ اگر تدبیر مطلقاً مہمل (بے کار) ہو تو دین و شرائع (قوانین شرع) وانزالِ کتب (کتابیں اتارنا) وارسالِ رُسل (رسولوں کو بھیجنا) و اتیانِ فرائض (فرائض کا کرنا) واجتنابِ محرمات (حرام کاموں سے بچنا) معاذ اللہ ! سب لغو و فضول و عبث ٹھہریں۔ آدمی کی رسی کاٹ کر بجار (آزاد چھوٹا ہوا سانڈ) کر دیں۔ دین و دنیا سب یکبارگی برہم ہو جائیں۔ ولا حول ولا قوۃ الا باللہ العلی العظیم (نہ گناہ سے بچنے کی طاقت ہے اور نہ ہی نیکی کرنے کی قوت مگر بلندی و عظمت والے خدا کی طرف سے، ت) نہیں نہیں بلکہ تدبیر بے شک مستحسن ہے، اور اُس کی بہت صورتیں مندوب و مسنون ہیں، جیسے دُعا ودوا۔

حدیث ۳: دُعا کی حدیثیں تو خود متواتر ہیں اور سب سے بڑھ کر یہ ہے کہ حضور نے یہ ارشاد فرمایا صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم۔

1 صحیح البخاری کتاب القدر باب قولہ تعالی وکان امر اللہ قدرا مقدورا قدیمی کتب خانہ کراچی ۱۲ / ۷۷۹، صحیح مسلم کتاب القدر باب کیفیۃ خلق الادمی فی بطن امہ الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ۲ / ۳۳۳، مسند احمد بن حنبل عن علی رضی اللہ تعالیٰ عنہ المکتب الاسلامی بیروت ۱ / ۲۰، سنن ابن ماجہ باب فی القدر ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ص ۹، مشکوٰۃ المصابیح باب الایمان بالقدر الفصل الاول اصح المطابع کراچی ص ۲۰

Fatawa Razawiya, Volume 29

[Box 1] Arabic: لَا يَرُدُّ الْقَضَاءَ إِلَّا الدُّعَاءُ Urdu: (Destiny is not averted by anything except supplication (i.e., suspended destiny). Arabic: رواہ الترمذی و ابن ماجہ و الحاکم بسند حسن عن سلمان الفارسی رضی اللہ تعالی عنہ۔ Urdu: (Tirmidhi, Ibn Majah, and Al-Hakim reported it with a fair chain of narration from Salman al-Farisi, may Allah be pleased with him. - T)

(Hadith 4): In another Hadith, the Master of the Universe (may Allah's peace and blessings be upon him) says: [Box 2] Arabic: لا یغنی حذر من قدر، والدعاء ینفع مما نزل ومما لم ینزل ان البلاء ینزل فی تلقاہ الدعاء فیعتلجان الی یوم القیمۃ۔ Urdu: Caution is of no avail against destiny, and supplication benefits against the calamity that has descended and that which has not yet descended. Indeed, the calamity descends and is met by supplication, and they struggle with each other until the Day of Resurrection, meaning no matter how much the calamity tries to descend, supplication does not let it. Arabic: رواہ الحاکم و البزار و الطبرانی فی الاوسط عن ام المومنین الصدیقۃ رضی اللہ تعالی عنہا قال الحاکم صحیح الاسناد وکذا قال۔ Urdu: (Al-Hakim, Al-Bazzar, and Al-Tabarani reported it in Al-Awsat from the Mother of the Believers, al-Siddiqah, may Allah be pleased with her. Al-Hakim said its chain is authentic, and he spoke the truth. - T)

Anyone who wishes to see concise and detailed, general and specific Hadiths regarding supplication should refer to Kitab al-Targhib, Hisn, Wa'dah, Salah, and other works of the scholars.

(Hadith 5) And he says (may Allah's peace and blessings be upon him): [Box 3] Arabic: تداووا عباد اللہ فان اللہ Urdu: O servants of Allah! Seek medical treatment, for indeed Allah [has not created any disease...]

I.T. Majlis of DawateIslami

1 Jami` al-Tirmidhi, Chapters on Destiny, Chapter on 'Nothing repels destiny except supplication', Amin Company Delhi 2/36; Sunan Ibn Majah, Chapter on Destiny, HM Saeed Company Karachi p. 10; Al-Mustadrak li-al-Hakim, Book of Supplication, 'Nothing repels destiny except supplication', Dar al-Fikr Beirut 1/493. 2 Al-Mustadrak li-al-Hakim, Book of Supplication, 'Supplication benefits, etc.', Dar al-Fikr Beirut 1/492; Al-Mu'jam al-Awsat, Hadith 2519, Maktabat al-Ma'arif Riyadh 3/244. 3 Al-Mustadrak li-al-Hakim, Book of Supplication, 'Supplication benefits, etc.', Dar al-Fikr Beirut 1/492.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 29

[बॉक्स 1] अरबी: لَا يَرُدُّ الْقَضَاءَ إِلَّا الدُّعَاءُ उर्दू: (तक़दीर किसी चीज़ से नहीं टलती मगर दुआ से (यानी क़ज़ा-ए-मुअ़ल्लक़)। अरबी: رواہ الترمذی و ابن ماجہ و الحاکم بسند حسن عن سلمان الفارسی رضی اللہ تعالی عنہ۔ उर्दू: (इसे तिर्मिज़ी, इब्ने माजा और हाकिम ने सनद-ए-हसन के साथ हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत किया। - त)

(हदीस 4): दूसरी हदीस में सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम फ़रमाते हैं: [बॉक्स 2] अरबी: لا یغنی حذر من قدر، والدعاء ینفع مما نزل وممالم ینزل ان البلاء ینزل فی تلقاہ الدعاء فیعتلجان الی یوم القیمۃ۔ उर्दू: तक़दीर के आगे एहतियात की कुछ नहीं चलती, और दुआ उस बला से जो उतर आई और जो अभी नहीं उतरी दोनों से नफ़ा देती है, और बेशक बला उतरती है दुआ उससे जा मिलती है दोनों क़ियामत तक कुश्ती लड़ती रहती हैं, यानी बला कितना ही उतरना चाहे दुआ उसे उतरने नहीं देती। अरबी: رواہ الحاکم و البزار و الطبرانی فی الاوسط عن ام المومنین الصدیقۃ رضی اللہ تعالی عنہا قال الحاکم صحیح الاسناد وکذا قال۔ उर्दू: (इसको हाकिम, बज़्ज़ार और तबरानी ने औसत में उम्मुल मोमिनीन सैयदा आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा से रिवायत किया। हाकिम ने कहा इसका इसनाद सही है और यूँही कहा है। - त)

जिसे दुआ के बारे में अहादीस-ए-मुज्मला व मुफ़स्सला व कुल्लिया व जुज़इया देखना हों वो किताबुत तरग़ीब व हिस्न व वअ़दा व सलाह व ग़ैरह तसानीफ़-ए-उलमा की तरफ रुजूअ़ करे।

(हदीस 5) और इर्शाद फ़रमाते हैं सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम: [बॉक्स 3] अरबी: تداووا عباد اللہ فان اللہ। उर्दू: ख़ुदा के बंदो! दवा करो कि अल्लाह तआ़ला ने कोई बीमारी [ऐसी नहीं उतारी जिसकी दवा न हो...]

आई.टी. मज्लिस दावत-ए-इस्लामी

1 जामिअ़ तिर्मिज़ी, अबवाबुल क़द्र, बाब मा जा-अ ला यरुद्दुल क़द्र इल्लद दुआ, अमीन कंपनी दिल्ली 2/36; सुनन इब्ने माजा, बाब फ़िल क़द्र, एच.एम. सईद कंपनी कराची पृ. 10; अल-मुस्तदरक लिल हाकिम, किताबुद दुआ, ला यरुद्दुल क़द्र इल्लद दुआ, दारुल फ़िक्र बैरुत 1/493 2 अल-मुस्तदरक लिल हाकिम, किताबुद दुआ, यन्फ़अ़-अल-ख़, दारुल फ़िक्र बैरुत 1/492; अल-मुअ़जम अल-औसत, हदीस 2519, मकतबतुल माअ़रिफ़ रियाज़ 3/244 3 अल-मुस्तदरक लिल हाकिम, किताबुद दुआ, यन्फ़अ़-अल-ख़, दारुल फ़िक्र बैरुत 1/492

[Box 1] لَا یَرُدُّ الْقَضَاءَ إِلَّا الدُّعَاءُ (تقدیر کسی چیز سے نہیں ٹلتی مگر دعا سے (یعنی قضا معلق) رواہ الترمذی و ابن ماجہ و الحاکم بسند حسن عن سلمان الفارسی رضی اللہ تعالی عنہ۔ (اس کو ترمذی ابن ماجہ اور حاکم نے سند حسن کے ساتھ سلمان فارسی رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کیا ۔ت)

(حدیث ۴): دوسری حدیث میں ہے سید عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں: [Box 2] لا یغنی حذر من قدر، والدعاء ینفع مما نزل وممالم ینزل ان البلاء ینزل فی تلقاہ الدعاء فیعتلجان الی یوم القیمۃ۔ تقدیر کے آگے احتیاط کی کچھ نہیں چلتی، اور دعا اس بلا سے جو اتر آئی اور جو ابھی نہیں اتری دونوں سے نفع دیتی ہے، اور بے شک بلا اترتی ہے دعا اس سے جا ملتی ہے دونوں قیامت تک کشتی لڑتی رہتی ہیں، یعنی بلا کتنا ہی اترنا چاہے دعا اسے اترنے نہیں دیتی۔ رواہ الحاکم و البزار و الطبرانی فی الاوسط عن ام المومنین الصدیقۃ رضی اللہ تعالی عنہا قال الحاکم صحیح الاسناد وکذا قال۔ (اس کو حاکم ، بزار اور طبرانی نے اوسط میں ام المومنین سیدہ عائشہ صدیقہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے روایت کیا۔ حاکم نے کہا اس کا اسناد صحیح ہے اور یونہی ہے کہا۔ ت)

جسے دعا کے بارے میں احادیث مجملہ و مفصلہ و کلیہ و جزئیہ دیکھنا ہوں وہ کتاب الترغیب و حصن و عدہ و صلاح و غیرہا تصانیف علماء کی طرف رجوع کرے۔

(حدیث ۵) اور ارشاد فرماتے ہیں صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم: [Box 3] تداووا عباد اللہ فان اللہ خدا کے بندو! دوا کرو کہ اللہ تعالیٰ نے کوئی بیماری

1 جامع الترمذی ابواب القدر باب ماجاء لا یرد القدر الا الدعاء امین کمپنی دہلی ۲/ ۳۶، سنن ابن ماجہ باب فی القدر ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ص ۱۰، المستدرک للحاکم کتاب الدعاء لا یرد القدر الا الدعاء دار الفکر بیروت ۱/ ۴۹۳ 2 المستدرک للحاکم کتاب الدعاء ینفع الخ دار الفکر بیروت ۱/ ۴۹۲، المعجم الاوسط حدیث ۲۵۱۹ مکتبۃ المعارف ریاض ۳/ ۲۴۴ 3 المستدرک للحاکم کتاب الدعاء ینفع الخ دار الفکر بیروت ۱/ ۴۹۲

Volume 29 Fatawa Razawiyya

[Arabic:] Allah has not created a disease without creating its cure, except for one ailment: old age. [Reference:] Narrated by Ahmad, Abu Dawood, Tirmidhi, Nasa'i, Ibn Majah, Ibn Hibban, and al-Hakim from Usama bin Sharik (may Allah be pleased with him) with a sahih chain. [Urdu Translation:] No (disease) was placed for which its medicine was not made, except for one disease, namely old age. (Narrated by Ahmad, Abu Dawood, Tirmidhi, Nasa'i, Ibn Majah, Ibn Hibban, and Hakim from Usama bin Shurayk (may Allah be pleased with him) with an authentic chain of narration.)

And the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) himself used medicine and informed his blessed Ummah of the cures for hundreds of ailments, as is mentioned abundantly in the Hadiths and recorded (written) in the fields of Prophetic Medicine (Tibb al-Nabawi) and Biographies (Siyar) etc. Many forms of planning and measures are definitively obligatory (fard qat'i), such as performing obligatory duties, avoiding forbidden things, consuming food and water in a quantity sufficient to sustain life (bi-qadr-e-sadd-e-ramaq), to the extent that in cases of extreme hunger (makhamasa), the use of forbidden things like wine and carrion was permitted for the sake of saving life.

(Hadith 6): Similarly, all measures for saving life and striving for a lawful livelihood (halal earnings) through which one can sustain themselves and their dependents are required. It is stated in the Hadith that the Master of the Universe (peace and blessings of Allah be upon him) said:

[Arabic:] Seeking lawful earning is an obligation after the primary obligations. [Reference:] Narrated by Al-Tabarani in al-Mu'jam al-Kabir, Al-Bayhaqi in Shu'ab al-Iman, and Al-Daylami in Musnad al-Firdous from Ibn Mas'ud. [Urdu Translation:] The second obligation on a person after the (basic religious) obligation is to seek a lawful livelihood (Narrated by Tabarani in al-Mu'jam al-Kabir, Bayhaqi in Shu'ab al-Iman, and Daylami in Musnad al-Firdous from Sayyiduna Ibn Mas'ud (may Allah be pleased with him)).

[Footnotes:] 1. Jami' al-Tirmidhi, Chapters of Medicine, Chapter on Disease and the urge for it, Amin Company Delhi 2/25; Sunan Abi Dawood, Book of Medicine, Chapter on the man seeking treatment, Aftab-e-Alam Press Lahore 2/183; Sunan Ibn Majah, Chapters of Medicine, Chapter on: Allah has not sent down a disease but He has sent down a cure for it, H.M. Saeed Company Karachi p. 253; Musnad Ahmad bin Hanbal,

Hadith of Usama bin Sharik, Al-Maktab al-Islami Beirut 4/278; Mawarid al-Zam'an, Book of Medicine, Hadith 1295, Al-Matba'ah al-Salafiyah p. 339. 2. Shu'ab al-Iman, Hadith 8741, Dar al-Ma'rifah Beirut 6/420; Al-Firdous bi-Mathur al-Khitab, Hadith 3918, Dar al-Kutub al-Ilmiyyah Beirut 2/441; Kanz al-Ummal with code Tibb-Q, Hadith 9231, Mu'assasah al-Risalah Beirut 4/9.

[अरबी:] अल्लाह ने ऐसी कोई बीमारी नहीं पैदा की जिसकी उसने शिफ़ा (दवा) न पैदा की हो, सिवाय एक बीमारी के बुढ़ापा। [संदर्भ:] इसे अहमद, अबू दाऊद, तिर्मिज़ी, नसाई, इब्न माजा, इब्न हब्बान और अल-हाकिम ने उसामा बिन शरीक (रज़ियल्लाहु अन्हु) से सही सनद के साथ रिवायत किया है। [उर्दू अनुवाद:] ऐसी कोई (बीमारी) नहीं रखी जिसकी दवा न बनाई हो सिवाय एक मर्ज़ यानी बुढ़ापे के। (इसे अहमद, अबू दाऊद, तिर्मिज़ी, नसाई, इब्न माजा, इब्न हब्बान और हाकिम ने उसामा बिन शरीक (रज़ियल्लाहु अन्हु) से सही सनद के साथ रिवायत किया है।)

और स्वयं हुज़ूर अकदस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का दवा का इस्तेमाल फ़रमाना और उम्मते मरहूमा को सैंकड़ों बीमारियों के इलाज बताना हदीसों में कसरत से वर्णित है, और तिब्बे नबवी और सीयर आदि हदीस के विषयों में लिखा हुआ है। तदबीर की कई सूरतें फर्ज़ कतई (अनिवार्य) हैं, जैसे फ़राइज़ (अनिवार्य कर्तव्यों) को पूरा करना, हराम चीज़ों से बचना, जान बचाने की मात्रा (बक़दरे सद्दे रमक़) के बराबर खाना खाना और पानी पीना, यहाँ तक कि भुखमरी (मखमसा) की स्थिति में जान बचाने के लिए शराब और मुर्दार की अनुमति दी गई है।

(हदीस ६): इसी तरह जान बचाने के तमाम उपाय और हलाल रोज़ी की तलाश जिसमें अपनी और अपने आश्रितों के पालन-पोषण का साधन हो। हदीस में है कि हुज़ूर सैय्यद-ए-आलम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं:

[अरबी:] हलाल कमाई की तलाश करना फर्ज़ (इबादतों) के बाद एक फर्ज़ है। [संदर्भ:] तबरानी ने अल-मुअजम अल-कबीर में, बैहकी ने शोएबुल ईमान में और दैलमी ने मुसनद अल-फिरदौस में इब्न मसऊद से रिवायत किया है। [उर्दू अनुवाद:] आदमी पर फर्ज़ के बाद दूसरा फर्ज़ यह है कि हलाल रोज़ी की तलाश करे (तबरानी ने कबीर में, बैहकी ने शोएबुल ईमान में और दैलमी ने मुसनद अल-फिरदौस में सैय्यदुना इब्न मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से)।

[पाद-लेख:] १. जामी अल-तिर्मिज़ी, चिकित्सा के अध्याय, बीमारी और उसके लिए आग्रह का अध्याय, अमीन कंपनी दिल्ली २/२५; सुनन अबी दाऊद, चिकित्सा की पुस्तक, उपचार चाहने वाले व्यक्ति का अध्याय, आफ़ताब-ए-आलम प्रेस लाहौर २/१८३; सुनन इब्न माजा, चिकित्सा के अध्याय, अध्याय: अल्लाह ने कोई बीमारी नहीं भेजी मगर उसका इलाज भेजा, एच.एम. सईद कंपनी कराची पृ. २५३; मुसनद अहमद बिन हंबल, उसामा बिन शरीक की हदीस, अल-मकतब अल-इस्लामी बेरूत ४/२७८;

मवारिद अल-ज़मान, चिकित्सा की पुस्तक, हदीस १२९५, अल-मत्बा अल-सलफ़िया पृ. ३३९। २. शोएबुल ईमान, हदीस ८७४१, दार अल-मआरिफ़ा बेरूत ६/४२०; अल-फिरदौस बि-माथुर अल-खिताब, हदीस ३९१८, दार अल-कुतुब अल-इल्मिय्याह बेरूत २/४४१; कंज़ अल-उम्माल कोड तिब्ब-क के साथ, हदीस ९२३१, मुअस्सा अल-रिसाला बेरूत ४/९।

पृष्ठ ३१४/७५०

لم یضع داءً الا وضع له دواءً غیر داء واحد الهرم، اخرجه احمد وابو داؤد والترمذی والنسائی وابن ماجة وابن حبان والحاکم عن اسامة بن شریك رضی الله تعالی عنه بسند صحیح۔ ایسی نہ رکھی جس کی دوا نہ بنائی ہو مگر ایک مرض یعنی بڑھاپا، (اس کو احمد، ابوداؤد، ترمذی، نسائی، ابن ماجہ، ابن حبان اور حاکم نے اسامہ بن شریک رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے سند صحیح کے ساتھ روایت کیا ت)

اور خود حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کا استعمالِ دوا فرمانا اور امتِ مرحومہ کو صدہا امراض کے علاج بتانا بکثرت احادیث میں مذکور، اور طبِ نبوی و سیر وغیرہ ہما فنونِ حدیثیہ میں مسطور (لکھا ہوا) اور تدبیر کی بہت صورتیں فرض قطعی ہیں، جیسے فرائض کا بجالانا، محرمات سے بچنا، بقدر سدِ رمق (جان بچانے کی مقدار) کھانا کھانا، پانی پینا، یہاں تک کہ اس کے لیے بحالتِ مخمصہ (جان لیوا بھوک) شراب و مردار کی اجازت دی گئی۔

(حدیث ۶): اسی طرح جان بچانے کی کل تدبیریں اور حلال معاش کی سعی و تلاش جس میں اپنے اور اپنے متعلقین کے تن پیٹ کی پرورش ہو۔ حدیث میں ہے حضور سیدِ عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں:

طَلَبُ کَسْبِ الْحَلَالِ فَرِیضَةٌ بَعْدَ الْفَرِیضَةِ اخرجه الطبراني في الکبیر والبیهقي في شعب الایمان والدیلمي في مسند الفردوس عن ابن مسعود آدمی پر فرض کے بعد دوسرا فرض یہ ہے کہ کسبِ حلال کی تلاش کرے (طبرانی نے کبیر میں، بیہقی نے شعب الایمان میں اور دیلمی نے مسند فردوس میں سیدنا ابن مسعود رضی اللہ

۱ جامع الترمذی ابواب الطب باب ماجاء فی الداء والحث علیہ امین کمپنی دہلی ۲/ ۲۵، سنن ابی داؤد کتاب الطب باب الرجل یتداوی آفتاب عالم پریس لاہور ۲/ ۱۸۳، سنن ابن ماجہ ابواب الطب باب ما انزل اللہ داء الا انزل لہ شفاء ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ص ۲۵۳، مسند احمد بن حنبل حدیث اسامة بن شریک المکتب الاسلامی بیروت ۴/ ۲۷۸، موارد الظمآن کتاب الطب حدیث ۱۲۹۵ المطبعة السلفیة ص ۳۳۹ ۲ شعب الایمان حدیث ۸۷۴۱ دارالمعرفة بیروت ۶/ ۴۲۰، الفردوس بماثور الخطاب حدیث ۳۹۱۸ دارالکتب العلمیة بیروت ۲/ ۴۴۱، کنزالعمال برمز طب ق حدیث ۹۲۳۱ مؤسسة الرسالة بیروت ۴/ ۹

Fatawa Razawiyya Volume 29

...may Allah be pleased with him. He narrated its extraction from Him (T).

(Hadith 7): And he (peace and blessings of Allah be upon him) says: "Seeking Halal (lawful) sustenance is obligatory upon every Muslim." [1] (Narrated by Al-Daylami with a good chain from Anas bin Malik, may Allah be pleased with him. Al-Daylami narrated its extraction with a good chain from Hazrat Anas bin Malik, may Allah be pleased with him. T).

Hadith 8: That is why many virtues of seeking and searching for Halal livelihood are mentioned in the Hadiths. It is in Musnad Ahmad and Sahih Bukhari that the radiant Prophet, the Master of the two worlds (peace and blessings of Allah be upon him), says: "No one has ever eaten a meal better than what they earned with the work of their own hands. [2] And indeed, Allah's Prophet Dawud (peace be upon him) used to eat from the wages of his manual labor." (Both extracted it from Miqdam bin Ma'dikarib, may Allah be pleased with him. T).

Hadith 9: And he (peace and blessings of Allah be upon him) says: "Indeed, the purest of what you eat is from your own earning." [3] (Extracted by Al-Bukhari in Al-Tarikh, Al-Darimi, Abu Dawud, Al-Tirmidhi, and Al-Nasa'i from the Mother of the Believers, Al-Siddiqa [Aisha], with a sound chain. The purest food is what you eat from your own earning. (Imam Bukhari in Tarikh, Darimi, Tirmidhi, and Nasa'i extracted it with a sound chain from the Mother of the Believers Sayyidah Aisha al-Siddiqa, may Allah be pleased with her. T)).

---

1. Kanz al-Ummal, with the symbol 'far' from Anas, Hadith 9204, Mu'assasat al-Risala Beirut, 5/2.
2. Sahih al-Bukhari, Book of Sales, Chapter: A man's earning and his work with his hand, Qadimi Kutub Khana Karachi, 1/278; Musnad Ahmad bin Hanbal, Hadith of al-Miqdam bin Ma'dikarib, al-Maktab al-Islami Beirut, 4/131 & 132.
3. Jami' al-Tirmidhi, Chapters of Rulings, Chapter: On parents taking from their child's property, Amin Company Delhi, 1/162; Sunan Abi Dawud, Book of Sales, Chapter: A man eating from his child's property, Aftab Alam Press Lahore, 2/141; Al-Tarikh al-Kabir, Translation 1301, Dar al-Baz Makkah al-Mukarramah, 1/470; Sunan al-Darimi, Book of Sales, Hadith 2530, Nashr al-Sunnah Multan, 2/162.

फ़तावा रज़विया खंड 29

...अल्लाह उन पर प्रसन्न हो। उन्होंने उनसे इसकी तख़रीज (निष्कर्षण) की (त)।

(हदीस 7): और आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं: "हलाल (वैध) जीविका की तलाश करना हर मुसलमान पर अनिवार्य है।" [1] (इसे अल-दयलमी ने हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ियल्लाहु अन्हु) से एक अच्छी सनद के साथ रिवायत किया है। दयलमी ने हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ियल्लाहु अन्हु) से सनद-ए-हसन के साथ इसकी तख़रीज की। त)

हदीस 8: इसीलिए हदीसों में हलाल रोज़ी की तलाश और प्रयास की कई फ़ज़ीलतें (पुण्य) आई हैं। मुसनद अहमद और सहीह बुख़ारी में है कि हुज़ूर पुरनूर सैयदुल कौनैन (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं: "किसी व्यक्ति ने कभी भी अपने हाथ की कमाई से बेहतर भोजन नहीं खाया। [2] और निस्संदेह अल्लाह के नबी दाऊद (अलैहिस्सलाम) अपनी दस्तकारी (शिल्प) की मज़दूरी से खाते थे।" (इन दोनों ने मिक़दाम बिन मादीकरिब (रज़ियल्लाहु अन्हु) से इसकी तख़रीज की। त)

हदीस 9: और आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं: "निश्चित रूप से सबसे पवित्र भोजन वह है जो तुम अपनी कमाई से खाते हो।" [3] (बुखारी ने अल-तारीख़ में, अल-दारीमी, अबू दाऊद, अल-तिर्मिज़ी और अल-नसाई ने मोमिनों की माँ सिद्दीक़ा (रज़ियल्लाहु अन्हा) से सहीह सनद के साथ इसकी तख़रीज की है। सबसे पवित्र भोजन वह है जो अपनी कमाई से खाओ। (इमाम बुखारी ने तारीख़, दारीमी, तिर्मिज़ी और नसाई ने सहीह सनद के साथ उम्मुल मोमिनीन सैयदा आयशा सिद्दीका रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से इसकी तख़रीज की। त))

---

1. कंज़ुल उम्माल, अनस से रिवायत के साथ, हदीस 9204, मुअस्ससतुर् रिसाला बेरुत, 5/2.
2. सहीह अल-बुखारी, किताबुल बुयू (बिक्री की किताब), अध्याय: मनुष्य की कमाई और उसके हाथ का काम, कदीमी कुतुब खाना कराची, 1/278; मुसनद अहमद bin हंबल, मिक़दाम bin मादीकरिब की हदीस, अल-मकतब अल-इस्लामी बेरुत, 4/131 और 132.
3. जामी अल-तिर्मिज़ी, अबवाबुल अहकाम, अध्याय: माता-पिता का अपने बच्चे की संपत्ति से लेना, अमीन कंपनी दिल्ली, 1/162; सुनन अबी दाऊद, किताबुल बुयू, अध्याय: मनुष्य का अपने बच्चे की संपत्ति से खाना, आफ़ताब आलम प्रेस लाहौर, 2/141; अल-तारीख़ अल-कबीर,

अनुवाद 1301, दारुल बाज़ मक्का मुकर्रमा, 1/470; सुनन अद-दारीमी, किताबुल बुयू, हदीस 2530, नश्रुस सुन्ना मुल्तान, 2/162.

पृष्ठ 315 का 750

رضی اللہ تعالٰی عنہ۔ تعالٰی عنہ سے اس کی تخریج فرمائی(ت)۔

(حدیث ۷): اور فرماتے ہیں صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم : طَلَبُ الْحَلَالِ وَاجِبٌ عَلٰی کُلِّ مُسْلِمٍ اخرجہ الدیلمی ۱ بسندٍ حسنٍ عن انس بن مالک رضی اللہ تعالی عنہ۔ طلب حلال ہر مسلمان پر واجب ہے (دیلمی نے سندِ حسن کے ساتھ حضرت انس بن مالک رضی اللہ تعالٰی عنہ سے اس کی تخریج کی۔ ت)

حدیث ۸: اسی لیے احادیث میں حلال معاش کی طلب و تلاش کی بہت فضیلتیں وارد ہیں۔ مسند احمد و صحیح بخاری میں ہے حضور پُر نور سید الکونین صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں: مااکل احد طعاماً قط خیراً من ان یأکل من عمل یدہ ۲ و ان نبی اللہ داؤد کان یأکل من عمل یدہ، و اخرجاہ عن مقدام بن معدیکرب رضی اللہ تعالٰی عنہ۔ کبھی کسی شخص نے کوئی کھانا اپنے ہاتھ کی کمائی سے بہتر نہ کھایا اور بے شک نبی اللہ داؤد علیہ الصلوٰۃ والسلام اپنی دستکاری کی اُجرت سے کھاتے (ان دونوں نے مقدام بن معدیکرب رضی اللہ تعالٰی عنہ سے اس کی تخریج کی۔ت)

حدیث ۹: اور فرماتے ہیں صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم : ان اطیب ما اکلتم من کسبکم اخرجہ البخاری فی التاریخ۳ والدارمی وابوداؤد والترمذی والنسائی عن ام المؤمنین الصدیقۃ بسندٍ صحیح۔ سب سے زیادہ پاکیزہ کھانا وہ ہے جو اپنی کمائی سے کھاؤ۔ (امام بخاری نے تاریخ، دارمی، ترمذی اور نسائی نے سندِ صحیح کے ساتھ ام المؤمنین سیدہ عائشہ صدیقہ رضی اللہ تعالٰی عنہا سے اس کی تخریج کی۔ت)

۱ کنز العمال برمز فرعن انس حدیث ۹۲۰۴ مؤسسۃ الرسالہ بیروت ۵/۲ ۲ صحیح البخاری کتاب البیوع باب کسب الرجل وعملہ بیدہ قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/ ۲۷۸، مسند احمد بن حنبل حدیث المقدام بن معدیکرب المکتب الاسلامی بیروت ۴/ ۱۳۱ و ۱۳۲ ۳ جامع الترمذی ابواب الاحکام باب ما جاء ان الوالدیاخذ من مال ولدہ امین کمپنی دہلی ۱/ ۱۶۲، سنن ابی داؤد کتاب البیوع باب الرجل یاکل من مال ولدہ آفتاب عالم پریس لاہور ۲/ ۱۴۱، التاریخ الکبیر ترجمہ ۱۳۰۱ دار الباز مکہ المکرمہ ۱/ ۴۷۰، سنن الدارمی کتاب البیوع حدیث ۲۵۳۰ نشر السنۃ ملتان ۲/ ۱۶۲

Volume 29, Fatawa Rizvia

Hadith 10 to 13: Someone asked: O Messenger of Allah! Which earning is best? He said: "A man's work with his own hands, and every righteous trade that is free from legal flaws."

[Table Content] Left (Arabic): Narrated by al-Tabarani in al-Awsat and al-Kabir with a chain of trustworthy narrators from Abdullah bin Umar, and it is in al-Kabir, Ahmad, and al-Bazzar from Abu Burdah bin Khiyar, and likewise these two from Rafi' bin Khadij, and al-Bayhaqi from Sa'id bin 'Umayr in a mursal form, and al-Hakim from the Commander of the Faithful Umar al-Faruq, may Allah be pleased with them all. Right (Urdu Translation/Source): Al-Tabarani narrated it in al-Awsat and al-Kabir with a chain of trustworthy narrators from Hazrat Abdullah bin Umar (may Allah be pleased with them both), and Tabarani himself in al-Kabir and Ahmad and Bazzar from Abu Burdah bin Khiyar, also both of them from Rafi' bin Khadij, and Bayhaqi from Sa'id bin 'Umayr as a mursal report, and Hakim narrated it from him with reference to the Commander of the Faithful Umar Faruq, may Allah be pleased with them all.

Hadith 14: And it is reported that he (peace and blessings of Allah be upon him) said:

[Table Content] Left (Arabic): Indeed, Allah loves the professional (working) believer. Narrated by al-Tabarani in al-Kabir, al-Bayhaqi in al-Shu'ab, and my master Muhammad al-Tirmidhi in al-Nawadir from Ibn Umar (may Allah be pleased with them both). Right (Urdu Translation/Source): Indeed, Allah Almighty loves the working Muslim. (Tabarani in al-Kabir, Bayhaqi in al-Shu'ab, and Sayyidi Muhammad Tirmidhi in al-Nawadir narrated it from Ibn Umar, may Allah be pleased with them both.)

Hadith 15, 17: And it is narrated that he (peace and blessings of Allah be upon him) said:

[Table Content] Left (Arabic): Whoever spends the evening tired from the work of his hands, spends it forgiven. Narrated by al-Tabarani in al-Awsat from the Mother of the Believers, al-Siddiqah. Right (Urdu Translation/Source): Whoever returns in the evening tired from labor, that evening of his is an evening of forgiveness. Al-Tabarani narrated it in al-Awsat from the Mother of the Believers, Syeda Siddiqa.

Footnotes: 1. Al-Targhib wa al-Tarhib, Kitab al-Buyu', Al-Targhib fi al-Iktisab bi al-Bay', Mustafa al-Babi Egypt, 2/523; Al-Dur al-Manthur under ayah 2/268, Manshurat Maktabah Ayatul Uzma, Qom Iran, 1/365; Shu'ab al-Iman, Hadith 1225, Dar al-Kutub

al-Ilmiyah Beirut, 2/84 2. Shu'ab al-Iman, Hadith 123, Dar al-Kutub al-Ilmiyah Beirut, 2/88 3. Al-Mu'jam al-Awsat, Hadith 5167, Maktabat al-Ma'arif Riyadh, 8/257

जिल्द 29, फतावा रज़विया

हदीस 10 से 13: किसी ने पूछा: ऐ अल्लाह के रसूल! कौन सी कमाई सबसे बेहतर है? आपने फरमाया: आदमी का अपने हाथों से काम करना और हर वह पाक तिजारत जो शरई बुराइयों से खाली हो।

[तालिका सामग्री] बायाँ (अरबी): तबरानी ने अल-औसत और अल-कबीर में भरोसेमंद सूत्रों के साथ अब्दुल्ला बिन उमर से इसे रिवायत किया है, और यह अल-कबीर, अहमद और बज़ार में अबू बुर्दा बिन खियार से है, और इसी तरह इन दोनों ने राफे बिन खदीज से, और बैहकी ने सईद बिन उमैर से मुरसल के तौर पर और हाकिम ने अमीरुल मोमिनीन उमर फारूक से रिवायत किया है, अल्लाह उन सब से राजी हो। दायाँ (उर्दू अनुवाद/स्रोत): तबरानी ने अल-औसत और अल-कबीर में भरोसेमंद सूत्रों के साथ हज़रत अब्दुल्ला बिन उमर (अल्लाह उन दोनों से राजी हो) से इसे रिवायत किया है, और तबरानी ने ही कबीर में और अहमद और बज़ार ने अबू बुर्दा बिन खियार से, और इन दोनों ने राफे बिन खदीज से, और बैहकी ने सईद बिन उमैर से मुरसल के तौर पर और हाकिम ने अमीरुल मोमिनीन उमर फारूक के हवाले से इसे रिवायत किया है, अल्लाह उन सब से राजी हो।

हदीस 14: और ज़िक्र है कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया:

[तालिका सामग्री] बायाँ (अरबी): बेशक अल्लाह तआला काम करने वाले (पेशेवर) मोमिन को पसंद करता है। तबरानी ने अल-कबीर में, बैहकी ने अल-शोअब में और मेरे आका मोहम्मद तिर्मिज़ी ने अल-नवादिर में इब्न उमर (अल्लाह उन दोनों से राजी हो) से इसे रिवायत किया है। दायाँ (उर्दू अनुवाद/स्रोत): बेशक अल्लाह तआला पेशेवर (मेहनती) मुसलमान को दोस्त रखता है। (तबरानी ने कबीर में, बैहकी ने शोअब में और सैयदी मोहम्मद तिर्मिज़ी ने नवादिर में इब्न उमर से इसे रिवायत किया है।)

हदीस 15, 17: और रिवायत है कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया:

[तालिका सामग्री] बायाँ (अरबी): जो शख्स अपने हाथ के काम से थककर शाम करे, उसकी मगफिरत हो जाती है। तबरानी ने अल-औसत में उम्मुल मोमिनीन अल-सिद्दीका से इसे रिवायत किया है। दायाँ (उर्दू अनुवाद/स्रोत): जिसे मजदूरी से थककर शाम आए, उसकी वह शाम मगफिरत की शाम हो। तबरानी ने अल-औसत में उम्मुल मोमिनीन सैयदा सिद्दीका से इसे रिवायत किया है।

पादलेख: 1. अल-तरगीब वल-तरहीब, किताब अल-बुयू, अल-तरगीब फिल इक्तिसाब बिल-बय, मुस्तफा अल-बाबी मिस्र, 2/523; अद-दुर अल-मनथूर आयत 2/268 के तहत, मंशुरात मकतबा आयतुल उज़मा, कुम ईरान, 1/365; शोअब अल-ईमान, हदीस 1225, दार अल-कुतुब अल-इल्मिया बेरुत, 2/84 2. शोअब अल-ईमान, हदीस 123, दार अल-कुतुब अल-इल्मिया बेरुत, 2/88 3. अल-मुअजम अल-औसत, हदीस 5167, मकतबत अल-मआरिफ रियाद, 8/257

पृष्ठ 316/750

حدیث ۱۰ تا ۱۳: کسی نے عرض کیا: یا رسول اللہ ! اَیُّ الْکَسْبِ اَفْضَلُ ؟ سب سے بہتر کسب کون سا ہے؟ فرمایا: عمل الرجل بیدہ وکل بیع مبرور ۔ اپنے ہاتھ کی مزدوری اور ہر مقبول تجارت کہ مفاسد شرعیہ سے خالی ہو۔

[جدول کا مواد] بایاں (عربی): اخرجہ الطبرانی ۱۔ فی الاوسط والکبیر بسند الثقات عن عبد اللہ بن عمر، وھو فی الکبیر واحمد والبزار عن ابی بردۃ بن خیار، وایضاً ھذان عن رافع بن خدیج، والبیھقی عن سعید بن عمیر مرسلاً والحاکم عن امیر المومنین عمر الفاروق رضی اللہ تعالیٰ عنھم اجمعین۔
دایاں (اردو ترجمہ/ماخذ): اس کی تخریج کی سند ثقات کے ساتھ طبرانی نے اوسط وکبیر میں سیدنا عبد اللہ بن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے، اور طبرانی نے ہی کبیر میں اور احمد و بزار نے ابو بردہ بن خیار سے، نیز ان دونوں نے رافع بن خدیج سے اور بیہقی نے سعید بن عمیر سے مرسلاً اور حاکم نے اسی سے بحوالہ امیر المومنین عمر فاروق روایت کیا رضی اللہ تعالیٰ عنہم اجمعین(ت)

حدیث ۱۴: اور وارد کہ فرماتے ہیں صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم :

[جدول کا مواد] بایاں (عربی): ان اللہ یحب المومن المحترف۔ اخرجہ الطبرانی فی الکبیر ۲۔ والبیھقی فی الشعب وسیدی محمد الترمذی فی النوادر عن ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنھما۔ دایاں (اردو ترجمہ/ ماخذ): بے شک اللہ تعالیٰ مسلمان پیشہ ور کو دوست رکھتا ہے۔ (طبرانی نے کبیر، بیہقی نے شعب اور سید محمد ترمذی نے نوادر میں ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے اس کی تخریج کی۔ت)

حدیث ۱۵، ۱۷: اور مروی کہ فرماتے ہیں صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم :

[جدول کا مواد] بایاں (عربی): من امسی کالا من عمل یدہ امسی مغفورالہ اخرجہ الطبرانی ۳۔ فی الاوسط عن ام المومنین الصدیقہ دایاں (اردو ترجمہ/ماخذ): جسے مزدوری سے تھک کر شام آئے اس کی وہ شام مغفرت ہو۔ اس کی تخریج کی طبرانی نے اوسط میں ام المومنین سیدہ صدیقہ

حواشی: ۱ الترغیب والترہیب کتاب البیوع الترغیب فی الاکتساب بالبیع مصطفی البابی مصر ۲/ ۵۲۳ الدر المنثور تحت آیۃ ۲/ ۲۶۸ منشورات مکتبہ آیۃ العظمی قم ایران ۱/ ۳۶۵ شعب الایمان حدیث ۱۲۲۵ دار الکتب العلمیہ بیروت ۲/ ۸۴ ۲ شعب الایمان حدیث ۱۲۳ دار الکتب العلمیہ بیروت ۲/ ۸۸ ۳ المعجم الاوسط حدیث ۵۱۶۷ مکتبۃ المعارف ریاض ۸/ ۲۵۷

And similar to Abu al-Qasim al-Asbahani from Ibn Abbas, and Ibn Asakir from him and from Anas (may Allah Almighty be pleased with them all). (T)

And similar to Abu al-Qasim al-Asbahani from Ibn Abbas, and Ibn Asakir from him and from Anas (may Allah Almighty be pleased with them all). (T)

Hadith 18: And he (peace and blessings of Allah Almighty be upon him) says:

"Glad tidings for the one whose earning is pure." - Al-Hadith. (This was recorded by al-Bukhari in 'At-Tarikh', al-Tabarani in 'Al-Kabir', al-Bayhaqi in 'Al-Sunan', and al-Baghawi, al-Bawardi, and the sons of Qani', Shahin, and Mandah, all of them from Rukab al-Misri (may Allah Almighty be pleased with him) in a long Hadith. Ibn Abd al-Barr said this Hadith is 'Hasan' (fair); I say, meaning 'Hasan li-Ghayrihi' (fair due to others). (T))

Paradise is for the one with pure earnings (its extraction was done by Bukhari in Tarikh, Tabarani in Kabir, Bayhaqi in Sunan, and Baghawi, Bawardi, and the sons of Qani', Shahin, and Mandah recorded it from Rukab al-Misri (may Allah Almighty be pleased with him) in a long Hadith. Ibn Abd al-Barr said this Hadith is Hasan; I say, meaning it is Hasan li-Ghayrihi. (T))

Hadith 19 & 20: In a Hadith, the noble Prophet (peace and blessings of Allah Almighty be upon him) said:

"The world is sweet and green. Whoever earns wealth from it in a lawful manner and spends it in its rightful place, Allah will reward him for it and admit him into His Paradise." - Al-Hadith. (This was recorded by al-Bayhaqi in 'Ash-Shu'ab' from Ibn Umar (may Allah Almighty be pleased with both of them). I say: And the text according to al-Tirmidhi is from Khawlah bint Qays, the wife of our master Hamzah bin Abdul Muttalib (may Allah Almighty be pleased with them), with the words: "Indeed, this wealth is green..."

The world is green to look at and sweet to taste; that is, it appears very beautiful and delicious on the outside. Whoever earns it through lawful means and spends it in the right place, Allah Almighty will reward him and take him into His Paradise. (Al-Bayhaqi recorded it in Shu'ab from Ibn Umar (may Allah Almighty be pleased with both of them). I say, the text according to Tirmidhi is from Khawlah bint Qays, the wife of our master Hamzah bin Abdul Muttalib (may Allah Almighty be pleased with them), with these words that this wealth is green and sweet...)

1 At-Targhib wa at-Tarhib, Book of Sales, Encouragement in Seeking the Lawful, Mustafa al-Babi Egypt, 2/57 2 Shu'ab al-Iman, Hadith 552, Dar al-Kutub al-Ilmiyah Beirut, 2/396

और अबुल कासिम अल-असबहानी की तरह इब्ने अब्बास से, और इब्ने असाकिर ने उनसे और अनस से (अल्लाह तआला उन सब पर राजी हो)। (त)

और अबुल कासिम अल-असबहानी की तरह इब्ने अब्बास से, और इब्ने असाकिर ने उनसे और अनस से (अल्लाह तआला उन सब पर राजी हो)। (त)

हदीस 18: और हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं:

"खुशखबरी है उसके लिए जिसकी कमाई पाक हो।" - अल-हदीस। (इसे बुखारी ने 'अल-तारीख' में, तबरानी ने 'अल-कबीर' में, बैहकी ने 'अल-सुनन' में, और बगवी, बावर्दी, और काने', शाहीन और मंदह के बेटों ने रुकाब अल-मिसरी (रज़ी अल्लाहु अन्हु) से एक लंबी हदीस में रिवायत किया है। इब्ने अब्दुल बर्र ने कहा कि यह हदीस 'हसन' है; मैं कहता हूँ, यानी 'हसन ले-गैरिही' है। (त))

पाक कमाई वाले के लिए जन्नत है (इसकी तख़रीज बुखारी ने तारीख में, तबरानी ने कबीर में, बैहकी ने सुनन में और बगवी, बावर्दी, और काने', शाहीन और मंदह के बेटों ने रुकाब अल-मिसरी (रज़ी अल्लाहु अन्हु) से एक लंबी हदीस में इसको रिवायत किया। इब्ने अब्दुल बर्र ने कहा यह हदीस हसन है; मैं कहता हूँ यानी हसन ले-गैरिही है। (त))

हदीस 19 व 20: एक हदीस में आया है कि हुज़ूर अकदस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया:

"दुनिया मीठी और हरी-भरी है। जिसने इससे हलाल तरीके से माल कमाया और उसे हक़ की जगह पर खर्च किया, अल्लाह उसे इसका सवाब देगा और अपनी जन्नत में ले जाएगा।" - अल-हदीस। (इसे बैहकी ने 'शुआब' में इब्ने उमर (रज़ी अल्लाहु अन्हुमा) से रिवायत किया है। मैं कहता हूँ: और तिरमिज़ी के पास मत्न हज़रत खौला बिन्त कैस से है, जो हमारे आका हमज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब (रज़ी अल्लाहु अन्हुम) की पत्नी हैं, इन शब्दों के साथ कि: 'बेशक यह माल हरा...'

दुनिया देखने में हरी, चखने में मीठी है यानी बज़ाहिर बहुत खुशुनुमा व खुश ज़ायका मालूम होती है जो इसे हलाल वजह से कमाए और हक़ जगह पर उठाए अल्लाह तआला उसे सवाब दे और अपनी जन्नत में ले जाए (इसकी तख़रीज बैहकी ने शुअब में इब्ने उमर रज़ी अल्लाहु तआला अन्हुमा से की, मैं कहता हूँ और मत्न तिरमिज़ी के नज़दीक खौला बिन्त कैस ज़ौजा सैय्यदना हमज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब रज़ी अल्लाहु तआला अन्हुम से इन लफ्जों के साथ है कि यह माल सब्ज़ व मीठा...)

1 अत-तरग़ीब वत-तरहीब, किताबुल बुयू, अल-तरग़ीब फी तलबुल हलाल, मुस्तफा अल-बाबी मिस्र, 2/57 2 शुअबुल ईमान, हदीस 552, दारुल कुतुब अल-इलमिया बेरूत, 2/396

ومثل ابی القاسم الاصبهانی عن ابن عباس و ابن عساکر عنه وعن انس رضی اللہ تعالٰی عنهم۔

سے اور مثل ابوالقاسم اصبہانی نے ابن عباس سے، اور ابن عساکر نے ابن عباس اور انس سے، اللہ تعالٰی ان سب پر راضی ہو۔ ت)

حدیث ۱۸: اور فرماتے ہیں صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم :

طوبٰی لمن طاب کسبہ۔ الحدیث، اخرجہ البخاری فی التاریخ و الطبرانی فی الکبیر' والبیهقی فی السنن و البغوی و الباوردی و ابناء قانع و شاہین و مندۃ کلهم عن رکب المصری رضی اللہ تعالٰی عنه فی حدیث طویل قال ابن عبدالبر حدیث حسن قلت ای لغیرہ۔

پاک کمائی والے کے لیے جنت ہے (اس کی تخریج کی بخاری نے تاریخ میں، طبرانی نے کبیر میں، بیہقی نے سنن میں اور بغوی و باوردی اور قانع، شاہین و مندہ کے بیٹوں نے رُکب مصری رضی اللہ تعالٰی عنہ سے ایک طویل حدیث میں اس کو روایت کیا، ابن عبدالبر نے کہا یہ حدیث حسن ہے، میں کہتا ہوں یعنی حسن لغیرہ ہے۔ت)

حدیث ۱۹ و ۲۰: ایک حدیث میں آیا حضور اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے فرمایا:

الدنيا حلوة خضرة من اكتسب منها مالا دنیا دیکھنے میں ہری، چکنے میں میٹھی ہے یعنی بظاہر

في حله وانفقه في حقه اثابه الله عليه بہت خوشنما و خوش ذائقہ معلوم ہوتی ہے جو اسے حلال

واورده جنته الحديث، اخرجه البيهقي وجہ سے کمائے اور حق جگہ پر اٹھائے اللہ تعالیٰ اسے

في الشعب عن ابن عمر رضى الله ثواب دے اور اپنی جنت میں لے جائے (اس کی تخریج کی

تعالى عنهما قلت والمتن عند الترمذى بیہقی نے شعب میں ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے،

عن خولة بنت قيس امراءة سيدنا میں کہتا ہوں اور متن ترمذی کے نزدیک خولہ بنت قیس

حمزة بن عبد المطلب رضي الله تعالى زوجہ سیدنا حمزہ بن عبدالمطلب رضی اللہ تعالیٰ عنہم سے

عنهم بلفظ ان هذا المال خضرة ان لفظوں کے ساتھ ہے کہ یہ مال سبز و میٹھا

1 الترغیب والترھیب کتاب البیوع الترغیب فی طلب الحلال مصطفی البابی مصر ۲/ ۵۷ 2 شعب الایمان حدیث ۵۵۲ دارالکتب العلمیہ بیروت ۲/ ۳۹۶

Fatawa Razawiyya, Volume 29

[From the previous page]: ... it is seen, so whoever spends it rightfully, it is blessed for him, [the Hadith]. At-Tirmidhi said it is a good and authentic Hadith. (I say: its source is from Khawlah in Al-Bukhari in an abridged form. – Summarized)

Hadith 21: And it is mentioned that he (peace and blessings of Allah be upon him) said: "Indeed, among the sins are sins that are not expiated by prayer, nor fasting, nor Hajj, nor Umrah. They are expiated by the worries faced in seeking a livelihood." (Narrated by Ibn Asakir and Abu Nu'aym in 'al-Hilya' from Abu Hurairah, may Allah be pleased with him. – Translator)

Hadith 22: The companions (may Allah be pleased with them) saw a man going for some work with speed and vigor. They said: "O Messenger of Allah! How good it would be if this speed and vigor of his were in the path of Allah." The Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said: "If he went out striving for himself to keep himself chaste [from begging etc.], then he is in the path of Allah. And if he went out striving for his young children, then he is in the path of Allah. And if he went out striving for his two elderly parents, then he is in the path of Allah. But if he went out striving for show and pride, then he is in the path of Satan." (Narrated by Al-Tabarani from Ka'b bin 'Ujrah, may Allah be pleased with him and...)

1 Jami' al-Tirmidhi, Chapters on Asceticism, Chapter on what is mentioned regarding taking wealth, Amin Company Delhi, 2/20. 2 Hilyat al-Awliya, biography 386 of Malik bin Anas, may Allah be pleased with him, Dar al-Kitab al-Arabi Beirut, 7/335. 3 Al-Mu'jam al-Kabir, Hadith 282, Al-Maktaba al-Faysaliyya Beirut, 19/129.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 29

[पिछले पृष्ठ से]: ...दिखाई देता है, अतः जो इसे हक जगह पर पहुँचाए उसके लिए इसमें बरकत दी जाती है, अल-हदीस। तिर्मिज़ी ने कहा यह हसन सही है, मैं कहता हूँ इसकी असल बुख़ारी के नज़दीक ख़ौला से है। (संक्षेप में)

हदीस 21: और ज़िक्र है कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं: "बेशक गुनाहों में से कुछ गुनाह ऐसे हैं जिनका कफ़्फ़ारा न नमाज़ है, न रोज़ा, न हज और न उमरा, उनका कफ़्फ़ारा वो परेशानियाँ हैं जो आदमी को हलाल रोज़ी की तलाश में पहुँचती हैं।" (इसे इब्न असाकिर और अबू नुइम ने 'अल-हिलिया' में अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया। – अनुवादक)

हदीस 22: सहाबा (रज़ियल्लाहु अन्हुम) ने एक शख़्स को देखा कि तेज़ और चुस्त किसी काम को जा रहा है। अर्ज़ की: ऐ अल्लाह के रसूल! कितना अच्छा होता अगर उसकी यह तेज़ी और चुस्ती अल्लाह की राह में होती। हुज़ूर अक़दस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया: "अगर यह शख़्स अपने लिए कमाई को निकला है कि सवाल वगैरह की ज़िल्लत से बचे तो उसकी यह कोशिश अल्लाह ही की राह में है। और अगर अपने छोटे बच्चों के ख्याल से निकला है तब भी अल्लाह की राह में है। और अगर अपने बूढ़े माँ-बाप के लिए निकला है तब भी अल्लाह की राह में है। हाँ, अगर दिखावे और गर्व के लिए निकला है तो शैतान की राह में है।" (इसे तबरानी ने काब बिन उजरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया और इसके..)

1 जामी अल-तिर्मिज़ी, अबवाब अल-जुहद, बाब मा जा फ़ी अख़्ज़ अल-माल, अमीन कंपनी दिल्ली, 2/20. 2 हिलियत अल-औलिया, जीवनी 386 मलिक बिन अनस रज़ियल्लाहु अन्हु, दार अल-किताब अल-अरबी बैरुत, 7/335. 3 अल-मुअजम अल-कबीर, हदीस 282, अल-मकतबा अल-फ़ैसलिया बैरुत, 19/129.

पेज 318 ऑफ 750

خولة فمن اصابه بحقہ بورك له فيه، الحديث قال الترمذي حسن صحيح۔ 'قلت واصله عن خولة عند البخاري مختصرًا۔ دکھائی دیتا ہے، چنانچہ جو اسے حق جگہ پر پہنچائے اس کے لیے اس میں برکت دی جاتی ہے، الحدیث۔ ترمذی نے کہا یہ حسن صحیح ہے، میں کہتا ہوں اس کی اصل بخاری کے نزدیک خولہ سے ہے۔ اختصاراً)

حدیث ۲۱: اور مذکور کہ فرماتے ہیں صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم : ان من الذنوب ذنوبا لا یکفرھا الصلوۃ ولا الصیام ولا الحج ولا العمرۃ، یکفرھا الھموم في طلب المعیشۃ، رواہ ابن عساکر وابو نعیم - ۲ فی الحلیہ عن ابی ہریرہ رضی اللہ تعالٰی عنہ۔ کچھ گناہ ایسے ہیں جن کا کفارہ نہ نماز ہو نہ روزہ نہ حج نہ عمرہ، ان کا کفارہ وہ پریشانیاں ہوتی ہیں جو آدمی کو تلاش معاش حلال میں پہنچتی ہیں۔ (اس کو روایت کیا ابن عساکر نے اور ابو نعیم نے حلیہ میں ابوہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے۔ ت)

حدیث ۲۲: صحابہ رضوان اللہ تعالیٰ علیہم نے ایک شخص کو دیکھا کہ تیز و چست کسی کام کو جا رہا ہے عرض کی: یا رسول اللہ ! کیا خوب ہوتا اگر اس کی یہ تیزی و چستی خدا کی راہ میں ہوتی، حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: ان کان خرج یسعی علی نفسہ یعفھا فھو في سبیل اللہ، وان کان خرج یسعی علی ولدہ صغارا فھو في سبیل اللہ۔ وان کان خرج یسعی علی ابوین شیخین کبیرین فھو في سبیل اللہ، وان کان خرج یسعی ریاءً ومفاخرۃ فھو في سبیل الشیطان، رواہ الطبرانی عن کعب بن عجرہ رضی اللہ تعالٰی عنہ و اگر یہ شخص اپنے لئے کمائی کو نکلا ہے کہ سوال وغیرہ کی ذلت سے بچے تو اس کی یہ کوشش اللہ ہی کی راہ میں ہے، اور اگر اپنے چھوٹے چھوٹے بچوں کے خیال سے نکلا ہے جب بھی خدا کی راہ میں ہے اور اگر اپنے بوڑھے ماں باپ کے لیے نکلا ہے جب بھی خدا کی راہ میں ہے، ہاں اگر ریا و تفاخر کے لیے نکلا ہے تو شیطان

کی راہ میں ہے۔ (اس کو طبرانی نے کعب بن عجرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کیا اور اس کے

۱ جامع الترمذی ابواب الزہد باب ماجاء فی اخذ المال امین کمپنی دہلی ۲/ ۲۰ ۲ حلیۃ الاولیاء ترجمہ ۳۸۶ مالک بن انس رضی اللہ تعالٰی عنہ دار الکتاب العربی بیروت ۷ / ۳۳۵ ۳ المعجم الکبیر حدیث ۲۸۲ المکتبہ الفیصلیہ بیروت ۱۹ / ۱۲۹

Fatawa Razawiyya - Volume 29

Its narrators are the narrators of Sahih. | They are the narrators of Sahih. (T)

Hadith 23: For this reason, there is a clear prohibition against abandoning earning a livelihood. In the Hadith, the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him and his family) says:

[Arabic Box:] "The best among you is not he who leaves his world for his hereafter, nor he who leaves his hereafter for his world, until he partakes of both. For the world is a means to reach the hereafter. And do not become a burden upon people." Narrated by Ibn Asakir -1 from Ibn Malik, may Allah be pleased with him.

[Urdu Translation Box:] The best among you is not he who leaves his world for his hereafter, nor he who leaves his hereafter for his world. The best is he who takes a portion from both, for the world is a means for the hereafter. Do not sit as a burden on others. (Ibn Asakir narrated this from Anas bin Malik, may Allah be pleased with him. - T)

It is proven from these Hadiths that seeking lawful sustenance, worrying about livelihood, and utilizing means are not at all contrary to trust in God (Tawakkul). Rather, it is exactly the Divine will that a person should make efforts (plan) and put their trust in destiny.

Hadith 24 & 25: Likewise, when a companion asked the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him), "Should I leave my camel just like that and trust in God, or should I tie it and trust in God?" He replied, "Tie it and trust in God."

[Poetry line:] Tie the knee of the camel while trusting in God. (Tie the knee of the camel while putting trust in Allah. - T)

[Arabic Reference Box:] Narrated by al-Bayhaqi -2 in *Al-Shu'ab* with a good chain from Amr bin Umayyah al-Damri and by at-Tirmidhi in *Al-Jami'* from Anas (may Allah be pleased with both of them), and the wording according to him is: "Tie it and trust." -3

[Urdu Translation Box:] Al-Bayhaqi extracted it in *Shu'ab* with a good chain from Amr bin Umayyah al-Damri (may Allah be pleased with him), and at-Tirmidhi in his *Jami'* from Hazrat Anas (may Allah be pleased with him). The words according to him are: "Tie it and trust."

1. Kanz al-Ummal, with the symbol for Ibn Asakir, from Anas, Hadith 6334, Mu'assasat al-Risalah, Beirut, 3/240.
2. Kanz al-Ummal, with the symbol for Al-Bayhaqi (Hah-Ba), from Amr bin Umayyah, Hadith 5688, Mu'assasat al-Risalah, Beirut, 3/103.
3. Jami' at-Tirmidhi, Chapters on the Description of the Day of Judgment, Chapter regarding it, Amin Company, Delhi, 2/74.

फतावा रज़विया - जिल्द 29

इसके रावी सहीह के रावी हैं। | ये सहीह के रावी हैं। (त)

हदीस 23: इसीलिए जीविका अर्जन (कसब) छोड़ने की साफ़ मनाही आई है। हदीस में है कि हुज़ूर अकदस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं:

[अरबी बॉक्स:] "तुममें से बेहतर वह नहीं है जो अपनी दुनिया आख़िरत के लिए छोड़ दे और न वह जो अपनी आख़िरत दुनिया के लिए छोड़ दे, यहाँ तक कि वह दोनों से हिस्सा ले। क्योंकि दुनिया आख़िरत तक पहुँचने का ज़रिया है। और लोगों पर बोझ बनकर न रहो।" इब्न असाकिर ने अनस बिन मालिक (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत किया है। -1

[उर्दू अनुवाद बॉक्स:] तुम्हारा बेहतर वह नहीं है जो अपनी दुनिया आख़िरत के लिए छोड़ दे और न वह जो अपनी आख़िरत दुनिया के लिए तर्क करे, बेहतर वह है जो दोनों से हिस्सा ले कि दुनिया आख़िरत का वसीला (साधन) है, अपना बोझ औरों पर डाल कर न बैठ रहो। (इसे इब्न असाकिर ने अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है। - त)

इन अहादीस से साबित हुआ कि हलाल रोज़ी की तलाश, जीविका की फ़िक्र और साधनों का उपयोग हरगिज़ तवक्कुल (ईश्वर पर भरोसे) के विपरीत नहीं है, बल्कि यही अल्लाह की इच्छा है कि आदमी तदबीर (उपाय) करे और भरोसा तक़दीर पर रखे।

हदीस 24 और 25: इसीलिए जब एक सहाबी ने हुज़ूर अकदस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से अर्ज़ की, "क्या मैं अपनी ऊँटनी को ऐसे ही छोड़ दूँ और ख़ुदा पर भरोसा रखूँ, या उसे बाँध दूँ और ख़ुदा पर तवक्कुल करूँ?" इरशाद फ़रमाया: "बाँध दे और ख़ुदा पर भरोसा रख।"

[काव्य पंक्ति:] भरोसे पर ऊँटनी का घुटना बाँध दे। (अल्लाह पर भरोसा करते हुए ऊँटनी के घुटने बाँध। - त)

[अरबी संदर्भ बॉक्स:] इसे बैहक़ी ने -2 'शुअब' में अच्छी सनद के साथ अम्र बिन उमैया ज़मरी से और तिर्मिज़ी ने 'जामे' में अनस (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से रिवायत किया है, और उनके यहाँ शब्द ये हैं: "इसे बाँध और तवक्कुल कर।" -3

[उर्दू अनुवाद बॉक्स:] इसकी तख़रीज बैहक़ी ने 'शुअब' में अच्छी सनद के साथ अम्र बिन उमैया ज़मरी (रज़ियल्लाहु अन्हु) से और तिर्मिज़ी ने 'जामे' में हज़रत अनस (रज़ियल्लाहु अन्हु) से की है, उनके नज़दीक शब्द ये हैं: "इसे बाँध और तवक्कुल कर।"

---

1. कंज़ुल उम्माल, इब्न असाकिर के प्रतीक के साथ, अनस से हदीस 6334, मुअस्ससतुर रिसाला, बेरूत, 3/240।
2. कंज़ुल उम्माल, बैहक़ी (हब) के प्रतीक के साथ, अम्र बिन उमैया से हदीस 5688, मुअस्ससतुर रिसाला, बेरूत, 3/103।
3. जामे तिर्मिज़ी, क़यामत के दिन के गुणों के अध्याय, अमीन कंपनी, दिल्ली, 2/74।

رجالہ رجال الصحیح۔ | رجال صحیح کے رجال ہیں۔ ت

حدیث ۲۳: اسی لیے ترک کسب سے صاف ممانعت آئی ہے حدیث میں ہے حضور اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وآلہ وسلم فرماتے ہیں:

[Arabic Box:] لیس بخیرکم من ترك دنیاہ لآخرتہ ولا آخرتہ لدنیاہ حتی یصیب منھما جمیعاً فان الدنیا بلاغ الی الآخرۃ ولا تکونوا کلاً علی الناس رواہ ابن عساکر -1 عن ابن مالك رضي اللہ تعالٰی عنہ۔

[Urdu Translation Box:] تمہارا بہتر وہ نہیں ہے جو اپنی دنیا آخرت کے لیے چھوڑ دے اور نہ وہ جو اپنی آخرت دنیا کے لیے ترک کرے، بہتر وہ ہے جو دونوں سے حصہ لے کہ دنیا آخرت کا وسیلہ ہے، اپنا بوجھ اوروں پر ڈال کر نہ بیٹھ رہو، (اس کو ابن عساکر نے انس بن مالک رضی اللہ تعالٰی عنہ سے روایت کیا ہے۔ ت)

انہیں احادیث سے ثابت ہوا کہ تلاشِ حلال و فکرِ معاش و تعاطیِ اسباب ہرگز منافیِ توکل نہیں بلکہ عین مرضیِ الٰہی ہے کہ آدمی تدبیر کرے اور بھروسہ تقدیر پر رکھے۔

حدیث ۲۴ و ۲۵: اسی لیے جب ایک صحابی نے حضور اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم سے عرض کی اپنی اونٹنی یونہی چھوڑ دوں اور خدا پر بھروسہ رکھوں یا اسے باندھ دوں اور خدا پر توکل کروں؟ ارشاد فرمایا قید و توکل باندھ دے اور تکیہ خدا پر رکھ۔

بر توکل زانوئے اشتر ببند (اللہ پر بھروسہ کرتے ہوئے اونٹنی کے گھٹنے باندھ۔ ت)

[Arabic Reference Box:] اخرجہ البیھقي -2 في الشعب بسند جید عن عمر و بن امیة الضمری والترمذی فی الجامع عن انس رضی اللہ تعالٰی عنھما و اللفظ عندہ اعقلھا و توکل -3۔

[Urdu Translation Box:] اس کی تخریج بیہقی نے شعب میں سند جید کے ساتھ عمرو بن امیہ ضمری رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے اور ترمذی نے جامع میں حضرت انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے، اس کے نزدیک لفظ یہ ہیں، اعقلہا و توکل۔

---

1 کنز العمال برمز ابن عساکر عن انس حدیث ۶۳۳۴ مؤسسة الرساله بیروت ۳/ ۲۴۰ 2 کنز العمال برمز ھب عن عمرو بن امیه حدیث ۵۶۸۸ مؤسسة الرساله بیروت ۳/ ۱۰۳ 3 جامع الترمذی ابواب صفة یوم القیمة باب منه امین کمپنی دہلی ۲/ ۷۴

Fatawa Razawiya Volume 29

See how clear the instruction is: adopt measures (Tadbeer) but do not place your complete trust in them. The heart's focus should remain on destiny (Taqdeer). Maulana (Rumi), may his secret be sanctified, says in the noble Masnavi: "Place your trust (in God) but move your hands and feet; your sustenance is more in love with you than you are with it." (1) (Trust in God and set your hands and feet in motion, for your sustenance is more in love with you than you are with it. - Translator) Almighty Allah Himself, in the Great Quran, directed towards seeking, taking measures, and finding a means (Wasila) towards Allah. (14) Allah Almighty said: "And take provisions, but indeed, the best provision is fear of Allah. And fear Me, O you of understanding." And take provisions with you, for the best provision is piety, and fear Me, O people of understanding. There is no sin upon you if you seek the bounty of your Lord. (T) "There is no blame upon you for seeking bounty from your Lord." (2) Some people from Yemen would come for Hajj without any travel provisions and say, "We are those who trust in God," but then they were forced to beg. The command came: take provisions with you. Some noble companions were concerned about trading during the Hajj season, fearing it might affect their sincerity of intention. The command came: there is no sin if you seek the bounty of your Lord. Similarly, there are numerous verses about seeking Divine bounty. (15) And Allah Almighty said: "O you who have believed, fear Allah and seek the means [of nearness] to Him and strive in His cause that you may succeed." (3) (O you who believe! Fear Allah and seek a means to Him and strive in His path in the hope that you may achieve success. - Translator) A clear command is given to seek a means towards the Lord so that you may reach your goal. If measures and means were useless and idle, what would be the need for them? In fact, if you be just, when is taking measures ever outside of destiny? It is itself a destiny, and the one who performs it...

---

1 2 The Holy Quran 2/197 and 198 3 The Holy Quran 5/35

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

देखो कितना साफ़ इरशाद है कि तदबीर करो मगर उस पर एतमाद न कर लो। दिल की नज़र तक़दीर पर रहे। मौलाना क़ुद्दस सिर्रहु मसनवी शरीफ़ में फ़रमाते हैं: तवक्कुल कुन बज़ुंबां पा ओ दस्त रिज़्क़ तो बर तो ज़ तो आशिक़ तर अस्त (1) (तवक्कुल कर और हाथ पाँव हरकत में ला कि तेरा रिज़्क़ तुझ पर तुझसे ज़्यादा आशिक़ है। - त) ख़ुद हज़रत-ए-इज़्ज़त जल्ल मजदहू ने क़ुरआन-ए-अज़ीम में तलाश व तदबीर और अल्लाह की तरफ़ वसीला ढूँढने की हिदायत फ़रमाई। (14) क़ाल तआला (अल्लाह तआला ने फ़रमाया - त) "व तज़व्वदू फ़ इन्ना ख़ैराज़ ज़ादित तक़वा वत्तक़ूनि या उलिल अलबाब" और तोशा साथ लो कि सब से बेहतर तोशा परहेज़गारी है, और मुझसे डरते रहो ऐ अक्ल वालो। तुम पर कुछ गुनाह नहीं कि अपने रब का फ़ज़ल तलाश करो। - त) "लैसा अलैकुम जुनाहुन अन तब्बतग़ू फ़ज़लम मिर रब्बिकुम" (2) यमन के कुछ लोग बे-ज़ाद-ए-राह लिए हज को आते और कहते हम मुतवक्किल हैं, नाचार भीक माँगनी पड़ती, हुक्म आया तोशा साथ लिया करो। कुछ अस्हाब-ए-किराम ने मौसम-ए-हज में तिजारत से अंदेशा किया कि कहीं इख़्लास-ए-नियत में फ़र्क़ न आए। फ़रमान आया कुछ गुनाह नहीं कि तुम अपने रब का फ़ज़ल ढूँढो। इसी तरह तलाश-ए-फ़ज़ल-ए-इलाही की आयतें ब-कसरत हैं। (15) व क़ाल तआला (और अल्लाह तआला ने फ़रमाया - त) "या अय्युहल लज़ीना आमनुत्तक़ुल्लाह वबतग़ू इलैहिल वसीलत व जाहिदू फ़ी सबीलिही लअल्लकुम तुफ़लिहून" (3) ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो और उसकी तरफ़ वसीला ढूँढो और उसकी राह में जेहाद करो इस उम्मीद पर कि फ़लाह पाओ। - त) साफ़ हुक्म देते हैं कि रब की तरफ़ वसीला ढूँढो ताकि मुराद को पहुँचो। अगर तदबीर व अस्बाब मोअत्तल व मोहमल होते तो इसकी क्या हाजत थी। बल्कि इंसाफ़ कीजिए तो तदबीर कब तक़दीर से बाहर है, वह ख़ुद एक तक़दीर है, और उसका बजा लाने वाला...

---

1 2 अल-क़ुरआन अल-करीम 2/197 व 198 3 अल-क़ुरआन अल-करीम 5/35

دیکھو کیسا صاف ارشاد ہے کہ تدبیر کرو مگر اس پر اعتماد نہ کرلو۔ دل کی نظر تقدیر پر رہے۔ مولانا قدس سرہ مثنوی شریف میں فرماتے ہیں: توکل کن بجنباں پا و دست رزق تو بر تو ز تو عاشق تر است 1 (توکل کر اور ہاتھ پاؤں حرکت میں لا کہ تیرا رزق تجھ پر تجھ سے زیادہ عاشق ہے۔ت) خود حضرت عزت جل مجدہ نے قرآن عظیم میں تلاش و تدبیر اور اللہ کی طرف وسیلہ ڈھونڈنے کی ہدایت فرمائی۔ (۱۴) قال تعالیٰ (اللہ تعالیٰ نے فرمایا۔ ت) "وَتَزَوَّدُوا فَإِنَّ خَيْرَ الزَّادِ التَّقْوٰى ۚ وَاتَّقُوْنِ يٰٓأُولِي الْاَلْبَابِ" اور توشہ ساتھ لو کہ سب سے بہتر توشہ پرہیز گاری ہے، اور مجھ سے ڈرتے رہو اے عقل والو۔ تم پر کچھ گناہ نہیں کہ اپنے رب کا فضل تلاش کرو۔ت) "لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَنْ تَبْتَغُوْا فَضْلًا مِّنْ رَّبِّكُمْ" 2۔ یمن کے کچھ لوگ بے زادِ راہ لیے حج کو آتے اور کہتے ہم متوکل ہیں، ناچار بھیک مانگنی پڑتی، حکم آیا توشہ ساتھ لیا کرو۔ کچھ اصحاب کرام نے موسمِ حج میں تجارت سے اندیشہ کیا کہ کہیں اخلاص نیت میں فرق نہ آئے۔ فرمان آیا کچھ گناہ نہیں کہ تم اپنے رب کا فضل ڈھونڈو۔ اسی طرح تلاشِ فضل الٰہی کی آیتیں بکثرت ہیں۔ (۱۵) وقال تعالیٰ (اور اللہ تعالیٰ نے فرمایا۔ ت) "يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَابْتَغُوْٓا اِلَيْهِ الْوَسِيْلَةَ وَجَاهِدُوْا فِيْ سَبِيْلِهٖ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿۳۵﴾" 3۔ اے ایمان والو! اللہ سے ڈرو اور اس کی طرف وسیلہ ڈھونڈو اور اس کی راہ میں جہاد کرو اس امید پر کہ فلاح پاؤ۔ت) صاف حکم دیتے ہیں کہ رب کی طرف وسیلہ ڈھونڈو تاکہ مراد کو پہنچو۔ اگر تدبیر واسباب معطل و مہمل ہوتے تو اس کی کیا حاجت تھی۔ بلکہ انصاف کیجئے تو تدبیر کب تقدیر سے باہر ہے، وہ خود ایک تقدیر ہے، اور اس کا بجالانے والا

---

1 2 القرآن الکریم ۲/ ۱۹۷ و ۱۹۸ 3 القرآن الکریم ۵/ ۳۵

Fatawa-e-Razviya, Volume 29

...never turns away from destiny.

Hadith 26: In a Hadith, the Master of the World (peace and blessings of Allah be upon him) was asked, "How will medicine be beneficial against destiny?" He replied:

(Arabic)	(Urdu Translation)
الدواء من القدر، ينفع من يشاء بما شاء رواه ابن السني في الطب والديلمي في مسند الفردوس عن ابن عباس رضي الله تعالى عنهما وصدره عنه عند أبي نعيم والطبراني في المعجم الكبير-	Medicine itself is from destiny; Allah grants benefit to whom He wills with whichever medicine He wills. (This was narrated by Ibn al-Sunni in 'Al-Tibb' and al-Daylami in 'Musnad al-Firdaws', and its beginning is attributed to Ibn Abbas by Abu Nu'aym and by al-Tabarani in 'Al-Mu'jam al-Kabir'.)

Hadith 27: When the Commander of the Faithful, Umar al-Farooq al-A'zam (may Allah be pleased with him), reached the village of Sargh in the valley of Tabuk with the intention of going to Syria, the leaders of the army, Abu Ubaidah ibn al-Jarrah, Khalid ibn al-Walid, Amr ibn al-Aas, and others (may Allah be pleased with them), met him and informed him that there was a plague in Syria. The Commander of the Faithful called for consultation from the Muhajirin, Ansar, and other Sahaba (may Allah be pleased with them). The opinion of the majority was to return. The Commander of the Faithful announced the return. Hazrat Abu Ubaidah (may Allah be pleased with him) said: "Is it fleeing from Allah? Is it running away from Allah's destiny?" He (Umar) replied:

(Arabic)	(Urdu Translation)
لو غيرك قالها يا ابا عبيدة. نعم، نفر من قدر الله الى قدر الله ارايت لو كان لك ابل هبطت واديا له عدوتان احدهما خصبة والاخرى جدبة اليس ان رعيت الخصبة رعيتها بقدر الله وان رعيت الجدبة رعيتها بقدر الله-	"I wish someone other than you had said this, O Abu Ubaidah! (meaning it was beneath your level of knowledge and merit). Yes, we are fleeing from Allah's destiny towards Allah's destiny. Tell me, if you had some camels and you brought them down into a valley with two sides, one green and the other dry, isn't it true that if you grazed them in the lush part, it would be by God's destiny, and if you grazed them in the dry part, it would be by God's destiny?"

[1] Kanz al-Ummal with the reference of Ibn al-Sunni from Ibn Abbas, Hadith 28082, Mu’assasat al-Risalah, Beirut, 10/5.

फ़तावा रज़विया, जिल्द २९

...हरगिज़ तक़दीर से रूँगर्दां (मुंह फेरने वाला) नहीं।

हदीस २६: हदीस में हुज़ूर सैय्यद-ए-आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से अर्ज़ की गई, दवा तक़दीर से क्या नाफ़े(फ़ायदेमंद) होगी? फ़रमाया:

(अरबी)

الدواء من القدر، ينفع من يشاء بما شاء
رواه ابن السني في الطب والديلمي
في مسند الفردوس عن ابن عباس
رضي الله تعالى عنهما وصدره عنه عند
أبي نعيم والطبراني في المعجم الكبير-

(उर्दू अनुवाद)

दवा ख़ुद भी तक़दीर से है, अल्लाह तआला जिसे चाहे जिस दवा से चाहे नफ़ा पहुँचा देता है। (इस को रिवायत किया है इब्न सुन्नी ने तिब में और दैलमी ने मुसनद फ़िरदौस में और इसकी इब्तदा इब्न अब्बास से अबू नुऐम के नज़दीक है और तबरानी ने मुअजम कबीर में इसको रिवायत किया है)

हदीस २७: अमीरुल मोमिनीन उमर फ़ारूक़-ए-आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जब बक़स्द-ए-शाम (शाम के इरादे से) वादी-ए-तबूक में क़रिया सरग़ तक पहुंचे, सरदाराने लश्कर अबू उबैदा बिन अल-जर्राह और ख़ालिद बिन अल-वलीद और अम्र बिन अल-आस वग़ैरह रिज़वानुल्लाहि तआला अलैहि उन से मिले और ख़बर दी कि शाम में वबा (महामारी) है, अमीरुल मोमिनीन ने मुहाजिरीन व अन्सार वग़ैरह सहाबा किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम को बुला कर मशवरा लिया, अक्सर की राय रुजू (वापसी) पर क़रार पाई, अमीरुल मोमिनीन ने बाज़-गश्त (वापसी) की मुनादी (एलान) फ़रमाई। हज़रत अबू उबैदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने कहा: 'अ-फ़िरारन मिनल्लाह' क्या अल्लाह तआला की तक़दीर से भागना? फ़रमाया:

(अरबी)

لو غيرك قالها يا ابا عبيدة. نعم،
نفر من قدر الله الى قدر الله
ارايت لو كان لك ابل هبطت
واديا له عدوتان احدهما خصبة
والاخرى جدبة اليس ان رعيت

(उर्दू अनुवाद)

काश ऐ अबू उबैदा! यह बात तुम्हारे सिवा किसी और ने कही होती (यानी तुम्हारे इल्म-ओ-फ़ज़ल से बईद थी), हाँ हम अल्लाह की तक़दीर से अल्लाह की तक़दीर ही की तरफ़ भागते हैं, भला बताओ तो अगर तुम्हारे कुछ ऊँट हों उन्हें लेकर किसी वादी में उतरो जिसके दो किनारे हों, एक सरसब्ज़, दूसरा ख़ुश्क, तो क्या यह बात नहीं है कि अगर तुम

(अरबी)	(उर्दू अनुवाद)
الخصبة رعيتها بقدر الله وان	शादाब (हरे-भरे) में चराओगे तो ख़ुदा की तक़दीर से और
رعيت الجدبة رعيتها بقدر الله-	ख़ुश्क में चराओगे तो ख़ुदा की तक़दीर से।

[1] कन्ज़ुल उम्माल बमुरिद इब्न सुन्नी अन इब्न अब्बास हदीस २८०८२, मुअस्ससतुर्-रिसाला बैरुत १०/५

पृष्ठ ३२१ का ७५०

ہرگز تقدیر سے رُو گرداں نہیں۔

حدیث ۲۶: حدیث میں حضور سید عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم سے عرض کی گئی، دوا تقدیر سے کیا نافع ہوگی؟ فرمایا:

(عربی)	(اردو ترجمہ)
الدواء من القدر، ينفع من يشاء بما شاء رواه ابن السني في الطب والديلمي في مسند الفردوس عن ابن عباس رضي الله تعالى عنهما وصدره عنه عند أبي نعيم والطبراني في المعجم الكبير۔	دوا خود بھی تقدیر سے ہے، اللہ تعالیٰ جسے چاہے جس دوا سے چاہے نفع پہنچا دیتا ہے۔ (اس کو روایت کیا ہے ابن سنی نے طب میں اور دیلمی نے مسند فردوس میں اور اس کی ابتداء ابن عباس سے ابو نعیم کے نزدیک ہے اور طبرانی نے معجم کبیر میں اس کو روایت کیا ہے)

حدیث ۲۷: امیر المومنین عمر فاروق اعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہ جب بقصدِ شام وادی تبوک میں قریہ سرغ تک پہنچے سردارانِ لشکر ابوعبیدہ بن الجراح وخالد بن الولید وعمر وبن العاص وغیرہم رضوان اللہ تعالیٰ علیہم انہیں ملے اور خبر دی کہ شام میں وبا ہے، امیر المومنین نے مہاجرین وانصار وغیرہم صحابہ کرام رضی اللہ تعالیٰ عنہم کو بلا کر مشورہ لیا، اکثر کی رائے رجوع پر قرار پائی، امیر المومنین نے بازگشت کی منادی فرمائی۔ حضرت ابوعبیدہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے کہا: افرارًا من اللہ کیا اللہ تعالیٰ کی تقدیر سے بھاگنا؟ فرمایا:

(عربی)	(اردو ترجمہ)
لو غيرك قالها يا ابا عبيدة. نعم، نفر من قدر الله الى قدر الله ارايت لو كان لك ابل هبطت واديا له عدوتان احدهما خصبة والاخرى جدبة اليس ان رعيت الخصبة رعيتها بقدر الله وان رعيت الجدبة رعيتها بقدر الله-	کاش اے ابوعبیدہ! یہ بات تمہارے سوا کسی اور نے کہی ہوتی (یعنی تمہارے علم وفضل سے بعید تھی) ہاں ہم اللہ کی تقدیر سے اللہ کی تقدیر ہی کی طرف بھاگتے ہیں، بھلا بتاؤ تو اگر تمہارے کچھ اونٹ ہوں انہیں لے کر کسی وادی میں اترو جس کے دو کنارے ہوں، ایک سرسبز، دوسرا خشک، تو کیا یہ بات نہیں ہے کہ اگر تم شاداب میں چراؤ گے تو خدا کی تقدیر سے اور خشک میں چراؤ گے تو خدا کی تقدیر سے۔

[1] کنز العمال برمز ابن سنی عن ابن عباس حدیث ۲۸۰۸۲ مؤسسۃ الرسالہ بیروت ۱۰ / ۵

Fatawa Razawiya, Volume 29

Narrated by the Imams: Malik, Ahmad, Bukhari, Muslim, Abu Dawood, and Nasai from Ibn Abbas (may Allah be pleased with both of them). [T]	**اس کی تخریج کی ہے ائمہ یعنی مالک، احمد، بخاری، مسلم، ابوداؤد اور نسائی نے ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے (ت)**

That is to say, despite the fact that everything is by destiny, if a person leaves a dry forest and chooses a lush green one for grazing, it does not mean he is avoiding divine destiny. Similarly, our not going into a land where an epidemic has spread is also not a flight from destiny. Thus, it is proven that making an effort (tadbeer) is not at all contrary to trust in God (tawakkul); rather, with a correct intention, it is the essence of tawakkul. Yes, it is certainly forbidden and reprehensible for a person to become entirely engrossed in planning and making efforts to the extent that they lose sight of right and wrong, good and evil, lawful and unlawful in their pursuits. This undoubtedly happens to one who, forgetting destiny, begins to rely solely on their own efforts. Satan incites them, making them think success depends only on their efforts, otherwise, there is only despair and failure. Consequently, neglecting everything else, they toil relentlessly to achieve their goal, resorting to humiliation, abasement, flattery, sycophancy, deceit, and trickery however they can. Yet, nothing will come of this greed; what is written in one's destiny is what will happen. Had they not abandoned loftiness of character, sincerity of intention, self-respect, and regard for Shariah, the sustenance that Allah Almighty has taken upon Himself would still have reached them. Their greed caused them to harm themselves, and the wretchedness of greed and sin made them a manifestation of 'He loses both this world and the hereafter' [Quran 22:11]. (T). And even if, hypothetically, they gained a bit of money by losing their honor and becoming a sinner, a thousand curses be upon such wealth.

Wretched is the food acquired through humiliation | Destiny is sometimes elevated and sometimes lowered. (Evil is the food obtained in a state of humiliation; destiny can be high or low. [T])

Hadith 28: This is why the Master of the Messengers (peace and blessings of Allah be upon him and his family) says:

---

1. Sahih al-Bukhari, Kitab al-Tibb, Chapter on what is mentioned regarding plague, Qadimi Kutub Khana, Karachi, 2/853; Sahih Muslim, Kitab al-Salam, Chapter on

plague and bad omens etc., Qadimi Kutub Khana, Karachi, 2/229; Muwatta Imam Malik, Kitab al-Jami', Chapter on what has come regarding plague, Meer Muhammad Kutub Khana, Karachi, p. 699 and 700.

2. Al-Quran al-Karim, 11/22. 3.

Page 322 of 750

फ़तावा रज़विया, खंड 29

इसे इमामों यानी मलिक, अहमद, बुखारी, मुस्लिम, अबू दाऊद और नसाई ने इब्न अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से रिवायत किया है। (त)

اخرجه الائمة مالك واحمد والبخارى ومسلم وابوداؤد والنسائى عن ابن عباس رضى الله تعالى عنهما۔

यानी इसके बावजूद कि सब कुछ तकदीर से है, फिर भी आदमी सूखे जंगल को छोड़कर चराई के लिए हरा-भरा जंगल चुनता है, तो इससे ईश्वरीय तकदीर से बचना अनिवार्य नहीं होता। इसी तरह, हमारा उस ज़मीन में न जाना जहाँ महामारी फैली हो, यह भी तकदीर से भागना नहीं है। अतः यह सिद्ध हुआ कि तदबीर (कोशिश) हरगिज़ तवक्कुल (ईश्वर पर भरोसे) के विरुद्ध नहीं है, बल्कि सही नीयत के साथ यह ऐन तवक्कुल ही है। हाँ, यह निस्संदेह निषिद्ध और निंदनीय है कि व्यक्ति पूरी तरह तदबीर में डूब जाए और उसकी प्राप्ति में सही-गलत, अच्छे-बुरे और हलाल-हराम का ख्याल न रखे। यह बात निश्चित रूप से उसी से होगी जो तकदीर को भूलकर केवल अपनी तदबीर पर भरोसा कर बैठा हो। शैतान उसे उकसाता है कि अगर यह बन पड़ा तो काम बनेगा, वरना निराशा और विफलता ही हाथ लगेगी। विवश होकर वह इन सब बातों से बेखबर होकर उसकी प्राप्ति में खून-पसीना एक कर देता है, और अपमान, चापलूसी, छल-कपट का रास्ता अपनाता है जैसा भी बन पड़े। हालाँकि इस लालच से कुछ हासिल न होगा; वही होगा जो किस्मत में लिखा है। यदि वह ऊँचे हौसले, नीयत की सच्चाई, आत्म-सम्मान और शरीयत के लिहाज़ को हाथ से न जाने देता, तो वह रिज़्क (जीविका) जिसे अल्लाह अज़्ज़वजल ने अपने ज़िम्मे लिया है, तब भी पहुँचता। उसके लालच ने उसके अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारी और लालच व गुनाह की शामत ने उसे 'दुनिया और आखिरत दोनों में घाटे में रहा' (कुरआन 22:11) का उदाहरण बना दिया। (त) और यदि मान लीजिए कि सम्मान खोकर और गुनहगार बनकर दो पैसे पा भी लिए, तो ऐसे धन पर हज़ारों धिक्कार।

अपमान की स्थिति में प्राप्त भोजन बहुत बुरा है | किस्मत कभी बुलंद होती है और कभी पस्त। (बुरा भोजन वह है जिसे अपमान की स्थिति में प्राप्त किया जाए; तकदीर बुलंद भी होती है और पस्त भी। [त])

हदीस 28: इसीलिए सय्यदुल मुर्सलीन (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) फरमाते हैं:

1. सहीह बुखारी, किताबुत्तब, ताऊन के ज़िक्र का बाब, क़दीमी कुतुब खाना कराची 2/853; सहीह मुस्लिम, किताबुस्सलाम, ताऊन और बदफाल का बाब, क़दीमी कुतुब खाना कराची 2/229; मोअत्ता इमाम मालिक, किताबुल जामे, ताऊन के बारे में जो आया, मीर मुहम्मद कुतुब खाना कराची पृ. 699 और 700।
2. अल-कुरआन अल-करीम 11/22। 3.

पृष्ठ 322/750

اخرجه الائمة مالك[8]1 واحمد والبخاری ومسلم وابوداؤد والنسائی عن ابن عباس رضی اللہ تعالی عنهما۔

اس کی تخریج کی ہے ائمہ یعنی مالک، احمد، بخاری، مسلم، ابوداؤد اور نسائی نے ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے (ت)

یعنی باآنکہ سب کچھ تقدیر سے ہے پھر آدمی خشک جنگل چھوڑ کر ہرا بھرا چرائی کے لیے اختیار کرتا ہے، اس سے تقدیر الٰہی سے بچنا لازم نہیں آتا، یو نہی ہمارا اُس زمین میں نہ جانا جس میں وبا پھیلی ہے یہ بھی تقدیر سے فرار نہیں۔ پس ثابت ہوا کہ تدبیر ہرگز منافی توکل نہیں، بلکہ اصلاح نیت کے ساتھ عین توکل ہے۔ ہاں یہ بے شک ممنوع ومذموم ہے کہ آدم ہمہ تن تدبیر میں منہمک ہو جائے اور اس کی درستی میں جاو بیجا ونیک وبد و حلال و حرام کا خیال نہ رکھے۔ یہ بات بیشک اُسی سے صادر ہوگی جو تقدیر کو بھول کر تدبیر پر اعتماد کر بیٹھا، شیطان اُسے ابھارتا ہے کہ اگر یہ بن پڑی جب تو کار برآری ہے ورنہ مایوسی و ناکامی، ناچار سب این و آں سے غافل ہو کر اس کی تحصیل میں لہو پانی ایک کر دیتا ہے، اور ذلت و خواری، خوشامد و چاپلوسی، مکر و دغا بازی جس طرح بن پڑے اس کی راہ لیتا ہے، حالانکہ اس حرص سے کچھ نہ ہوگا۔ ہونا وہی ہے جو قسمت میں لکھا ہے۔ اگر یہ علو ہمت و صدق نیت و پاس عزت و لحاظ شریعت ہاتھ سے نہ دیتا رزق کہ اللہ عزوجل نے اپنے ذمے لیا جب بھی پہنچتا، اس کی طمع نے آپ اس کے پاؤں میں تیشہ مارا اور حرص و گناہ کی شامت نے "خَسِرَ الدُّنْیَا وَالْآخِرَۃَ"[8]2 (دنیا و آخرت دونوں کے اندر گھاٹے میں رہا۔ ت) کا مصداق بنایا، اور اگر بالفرض آبرو کھو کر گناہگار ہو کر دو پیسے پائے بھی تو ایسے مال پر ہزار تف۔

بئس المطاعم حین الذل تکسبھا | القدر منتصب والقدر مخفوض[8]**3** (بری خوراک وہ جسے ذلت کی حالت میں حاصل کرو قسمت بلند بھی ہے اور قسمت پست بھی۔ (ت))

حدیث ۲۸: اسی لیے حضور سید المرسلین صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم فرماتے ہیں:

---

1. صحیح البخاری کتاب الطب باب ما یذکر فی الطاعون قدیمی کتب خانہ کراچی ۲/ ۸۵۳، صحیح مسلم کتاب السلام باب الطاعون والطیرۃ الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ۲/ ۲۲۹، مؤطا الامام مالک کتاب الجامع باب ماجاء فی الطاعون میر محمد کتب خانہ کراچی ص ۶۹۹ و ۷۰۰
2. القرآن الکریم ۱۱/ ۲۲ 3.

Fatawa-e-Razawiyya Volume 29

"Be moderate in seeking the world, for everyone is eased towards what has been written for him of it." Reported by Ibn Majah, Al-Hakim, and At-Tabarani in Al-Kabir, and Al-Bayhaqi in As-Sunan, and Abu Ash-Sheikh in Ath-Thawab from Abu Humayd Al-Sa'idi (may Allah be pleased with him) with an authentic chain of narration, and the wording is according to Al-Hakim. Do not deviate from a good way in seeking the world, for whatever has been decreed in one's destiny, its means will surely be provided. (This was narrated by Ibn Majah, Al-Hakim, and At-Tabarani in Al-Kabir, Al-Bayhaqi in As-Sunan, and Abu Ash-Sheikh in Ath-Thawab with an authentic chain from Abu Humayd Al-Sa'idi (Allah be pleased with him), and the wording is Al-Hakim's. T)

Hadith 29:30: And he (peace and blessings of Allah be upon him) said: "O people! Fear Allah and be moderate in seeking [provision], for no soul shall die until it has received its provision in full. So if it seems slow in coming, fear Allah and be moderate in seeking it. Take what is lawful and leave what is prohibited." Narrated by Ibn Majah and the wording is his, and Al-Hakim who said it is sahih according to the criteria of the two Sheikhs (Bukhari and Muslim), and with another sahih chain according to the criteria of Muslim, and Ibn Hibban in his Sahih, all of them from Jabir bin Abdullah. O people! Fear Allah and seek sustenance in a good manner, for no person will leave this world until they have received their full sustenance. So, if you see a delay in provision, fear God and seek it through praiseworthy methods; take the lawful and abandon the prohibited. (Ibn Majah narrated it and the wording is his, and Al-Hakim narrated it and said it is sahih according to the criteria of the Shaykhayn, and with another chain he said it is sahih according to the criteria of Muslim, and Ibn Hibban narrated it in his Sahih. All of them narrated from Jabir bin Abdullah.)

---

1 Al-Mustadrak lil-Hakim, Book of Sales, Chapter: There is no harm in wealth for one who fears (Allah), Dar al-Fikr Beirut 4/2. Sunan Ibn Majah, Chapters of Trade, Chapter: Moderation in seeking livelihood, etc., H.M. Saeed Company Karachi p. 156. As-Sunan al-Kubra, Book of Sales, Chapter: Moderation in seeking the world, Dar Sadir Beirut 5/264. Kanz al-Ummal from Abu Humayd Al-Sa'idi Hadith 9291, Mu'assasat al-Risala Beirut 4/20. At-Targhib wat-Tarhib, Encouragement for moderation in seeking provision, etc., Mustafa al-Babi Egypt 2/532. 2 Sunan Ibn Majah, Chapters of Trade, Chapter: Moderation in seeking livelihood, etc., H.M. Saeed Company Karachi p. 156. Al-Mustadrak lil-Hakim, Book of Sales, [Chapter:] There is no harm in wealth for one

who fears (Allah), etc., Dar al-Fikr Beirut 4/2. 3 Al-Mustadrak lil-Hakim, Book of Sales, [Chapter:] There is no harm in wealth for one who fears (Allah), etc., Dar al-Fikr Beirut 4/2.

फ़तवा-ए-रज़विया जिल्द 29

"दुनिया की तलाश में मध्यम मार्ग अपनाओ, क्योंकि हर किसी के लिए वह आसान कर दिया जाता है जो उसके नसीब में लिखा गया है।" इसे इब्न माजाह, अल-हाकिम, अत-तबरानी ने 'अल-कबीर' में, अल-बैहकी ने 'अस-सुनन' में और अबू अश-शेख ने 'अथ-थवाब' में अबू हुमैद अल-सादी (अल्लाह उनसे खुश हो) से एक सहीह सनद के साथ रिवायत किया है, और शब्द अल-हाकिम के हैं। दुनिया की तलब में अच्छी राह से मत हटो, क्योंकि जिसके भाग्य में जितना लिखा है, उसके साधन ज़रूर मुहैया होंगे। (इसे इब्न माजाह, हाकिम, तबरानी ने कबीर में, बैहकी ने सुनन में और अबू अल-शेख ने थवाब में सही सनद के साथ अबू हुमैद सादी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया और शब्द हाकिम के हैं। -त)

हदीस 29:30: और आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं: "ओ लोगों! अल्लाह से डरो और (रोजी की) तलाश में मध्यम मार्ग अपनाओ, क्योंकि कोई भी जान तब तक नहीं मरेगी जब तक वह अपनी पूरी रोज़ी न पा ले। तो अगर इसमें देरी महसूस हो, तो अल्लाह से डरो और तलाश में मध्यम मार्ग अपनाओ; जो हलाल है उसे ले लो और जो हराम है उसे छोड़ दो।" इसे इब्न माजाह ने रिवायत किया और शब्द उन्हीं के हैं, और अल-हाकिम ने कहा कि यह दोनों शेखों (बुखारी और मुस्लिम) की शर्त पर सहीह है, और एक अन्य सहीह सनद के साथ मुस्लिम की शर्त पर सहीह है, और इब्न हिब्बान ने अपनी सहीह में, इन सब ने जाबिर बिन अब्दुल्ला से रिवायत किया है। ऐ लोगों! अल्लाह से डरो और अच्छी तरह से रोज़ी की तलाश करो क्योंकि कोई जान दुनिया से नहीं जाएगी जब तक वह अपनी पूरी रोज़ी न ले ले। तो अगर रोज़ी में देरी देखो तो खुदा से डरो और अच्छे तरीके से तलाश करो, हलाल कर लो और हराम को छोड़ो। (इसे इब्न माजाह ने रिवायत किया और शब्द उन्हीं के हैं, और हाकिम ने रिवायत करके कहा कि यह शैखैन की शर्त पर सहीह है और दूसरी सनद के साथ कहा कि मुस्लिम की शर्त पर सहीह है, और इब्न हिब्बान ने अपनी सहीह में रिवायत किया। सब ने जाबिर बिन अब्दुल्ला से।)

---

1 अल-मुस्तदरक लिल-हाकिम, किताबुल बुयू, बाब: जो डरे उसके लिए अमीरी में कोई हर्ज नहीं, दारुल फिक्र बेरुत 4/2। सुनन इब्न माजाह, अबवाबुत तिजारात, बाबुल इक़्तिसाद फ़ी तलबिल मइशा आदि, एच.एम. सईद कंपनी कराची पृ. 156। अस-सुनन अल-कुबरा, किताबुल बुयू, बाबुल इजमाल फ़ी तलबिद दुनिया, दार सादिर बेरुत 5/264। कंजुल उम्माल, अबू हुमैद सादी से हदीस 9291,

मुअस्सतुर रिसाला बेरुत 4/20। अत-तर्गीब वत-तर्हीब, रोज़ी की तलाश में इक़्तिसाद की तर्गीब आदि, मुस्तफा अल-बाबी मिस्र 2/532। 2 सुनन इब्न माजाह, अबवाबुत तिजारात, बाबुल इक़्तिसाद फ़ी तलबिल मइशा आदि, एच.एम. सईद कंपनी कराची पृ. 156। अल-मुस्तदरक लिल-हाकिम, किताबुल बुयू, जो डरे उसके लिए अमीरी में कोई हर्ज नहीं आदि, दारुल फिक्र बेरुत 4/2। 3 अल-मुस्तदरक लिल-हाकिम, किताबुल बुयू, जो डरे उसके लिए अमीरी में कोई हर्ज नहीं आदि, दारुल फिक्र बेरुत 4/2।

أَجْمِلُوا فِي طَلَبِ الدُّنْيَا فَإِنَّ كُلًّا مُيَسَّرٌ لِمَا كُتِبَ لَهُ مِنْهَا۔ رواه ابن ماجة - والحاكم والطبراني في الكبير و البيهقي في السنن وابوالشيخ في الثواب عن ابي حميد الساعدي رضی اللہ تعالٰی عنه باسناد صحيح واللفظ للحاكم۔ دنیا کی طلب میں اچھی روش سے عدول نہ کرو کہ جس کے مقدر میں جتنی لکھی ہے ضرور اس کے سامان مہیا پائے گا۔ (اس کو روایت کیا ابن ماجہ، حاکم، طبرانی نے کبیر میں، بیہقی نے سُنن میں اور ابو الشیخ نے ثواب میں صحیح اسناد کے ساتھ ابو حمید ساعدی رضی اللہ تعالٰی عنہ سے اور لفظ حاکم کے ہیں۔ ت)

حدیث ۳۰:۲۹ اور فرماتے ہیں صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم : يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتقوا واجملوا في الطلب فإنّ نفسًا لن تموت حتى تستوفى رزقها فان ابطأ منها فاتقوا الله و اجملوا في الطلب خذوا ما حلّ ودعُوا ما حرم۔ رواه ابن ماجة واللفظ له والحاكم وقال صحيح على شرطهما وبسند آخر صحيح على شرط مسلم وابن حبان في صحيحه كلهم عن جابر بن عبد الله۔ اے لوگو! اللہ سے ڈرو اور طلبِ رزق نیک طور پر کرو کہ کوئی جان دنیا سے نہ جائے گی، جب تک اپنا رزق پورا نہ لے لے، تو اگر روزی میں دیر دیکھو تو خدا سے ڈرو اور روشِ محمود پر تلاش کرو، حلال کر لو اور حرام کو چھوڑو۔ (اس کو ابن ماجہ نے روایت کیا اور لفظ اسی کے ہیں، اور حاکم نے روایت کر کے کہا کہ یہ شیخین کی شرط پر صحیح ہے اور ایک دوسری سند کے ساتھ کہا کہ مسلم کی شرط پر صحیح ہے، اور ابن حبان نے اپنی صحیح میں روایت کیا۔ سب نے جابر بن عبد اللہ سے۔)

---

1 المستدرك للحاكم كتاب البيوع باب لا بأس بالغنى لمن اتقى دار الفكر بيروت ۴/ ۲، سنن ابن ماجہ ابواب التجارات باب الاقتصاد فی طلب المعیشہ الخ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ص۱۵۶، السنن

الكبرى كتاب البيوع باب الاجمال فى طلب الدنيا دار صادر بيروت ۵/ ۲۶۴، كنز العمال عن ابي حميد ساعدى حديث ۹۲۹۱ مؤسسة الرساله بيروت ۴/ ۲۰، الترغيب والترهيب الترغيب فى الاقتصاد فى طلب الرزق الخ مصطفٰى البابى مصر ۲/ ۵۳۲ 2 سنن ابن ماجہ ابواب التجارات باب الاقتصاد في طلب المعيشه الخ ايچ ايم سعيد كمپنى كراچى ص ۱۵۶، المستدرك للحاكم كتاب البيوع لا بأس بالغنى لمن اتقى الخ دار الفكر بيروت ۲/ ۴ 3 المستدرك للحاكم كتاب البيوع لا بأس بالغنى لمن اتقى الخ دار الفكر بيروت ۲/ ۴

Fatawa Razawiyya, Volume 29

Arabic Text	Urdu Translation
And in its meaning with Abu Ya'la with a sound chain, God willing, from Abu Hurayrah (may Allah be pleased with them).	It is narrated from Hazrat Jabir (may Allah be pleased with him) and with the same meaning from Abu Ya'la with a sound chain (God willing) from Abu Hurayrah (may Allah be pleased with him). - T)

Hadith 31 to 34: And he (peace and blessings of Allah be upon him) says:

Arabic Text	Urdu Translation
Verily, the Holy Spirit (Gabriel) breathed into my heart that no soul shall die until it has completed its lifespan and received its full provision. So fear Allah and be moderate in seeking (your needs), and let not the delay in provision lead any of you to seek it through disobedience to Allah; for what is with Allah cannot be attained except through obedience to Him. (Reported by Abu Nu'aym in al-Hilya[1] - and the wording is his - from Abu Umama al-Bahili, and al-Baghawi in Sharh al-Sunna, and al-Bayhaqi in al-Shu'ab, and al-Hakim in al-Mustadrak from Ibn Mas'ud, and al-Bazzar from Hudhayfa al-Yaman, and similar to it by al-Tabarani in al-Kabir from al-Hasan bin Ali, the Commander of the Faithful (may Allah be pleased with them all), except that al-Tabarani did not mention Gabriel (peace be upon him).	Indeed, the Holy Spirit, Gabriel, put into my heart that no soul will die until it completes its age and its full provision. Therefore, fear God and seek in a good way, and beware, let not the delay of provision lead any of you to seek it through disobedience to God, for the grace of Allah is obtained only through His obedience. (Abu Nu'aym extracted it in al-Hilya and the words are his; al-Baghawi in Sharh al-Sunnah; al-Bayhaqi in al-Shu'ab; and al-Hakim in al-Mustadrak from Ibn Mas'ud (may Allah be pleased with him); also Bazzar from Hudhayfa bin al-Yaman; and similarly in Tabarani's al-Kabir it is narrated from Hasan bin the Commander of the Faithful Ali (may Allah be pleased with them all), but Tabarani did not mention Gabriel (peace be upon him). - T)

Hadith 35: And it is narrated, he (peace and blessings of Allah be upon him) says:

Arabic Text	Urdu Translation
Seek your needs with self-dignity, for indeed all affairs proceed according to destiny. Reported by Tammam.	Seek your needs with self-respect because all works proceed according to destiny. (Reported by Tammam)

[1] Hilyat al-Awliya, Biography 457, Ahmad bin Abi al-Hawari, Dar al-Kitab al-Arabi, Beirut, 10/27. Sharh al-Sunna, Chapter on Trust in Allah, Hadith 4111, al-Maktab al-Islami, Beirut, 14/302.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 29

अरबी पाठ

और इसी अर्थ में अबू याला के यहाँ हसन सनद के साथ, इंशा अल्लाह, अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हुम) से।

उर्दू अनुवाद

हज़रत जाबिर (रज़ियल्लाहु अन्हु) से और इसके हम-मानी अबू याला के नज़दीक इंशा अल्लाह तआला सनद-ए-हसन के साथ अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से मरवी है। - त)

हदीस 31 से 34: और आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं:

अरबी पाठ

बेशक रूहुल क़ुदुस (जिब्रील) ने मेरे दिल में डाला कि कोई जान तब तक नहीं मरेगी जब तक वह अपनी उम्र और अपना रिज़्क पूरा न कर ले। पस अल्लाह से डरो और तलब में एतदाल (उदारता) अपनाओ, और रिज़्क की देरी तुम में से किसी को इस बात पर न उकसाये कि वह अल्लाह की नाफ़रमानी के ज़रिए उसे तलब करे; क्योंकि अल्लाह के पास जो कुछ है वह उसकी इबादत के बिना नहीं मिल सकता। (इसे अबू नुऐम ने अल-हिलया[1] में निकाला है - और शब्द उन्हीं के हैं - अबू उमामा अल-बाहीली से, और अल-बग़वी ने शरह अल-सुन्नाह में, और अल-बैहक़ी ने अल-शुआब में, और अल-हाकिम ने अल-मुस्तदरक में इब्न मसूद से, और अल-बज्ज़ार ने हुज़ैफ़ा अल-यमान से, और इसी तरह अल-तबरानी ने अल-कबीर में अमीरुल मोमिनीन अली के बेटे हसन से मरवी है (अल्लाह उन सब से राज़ी हो), मगर तबरानी ने जिब्रील (अलैहिस्सलाम) का ज़िक्र नहीं किया।

उर्दू अनुवाद

बेशक रूहुल क़ुदुस जिब्रील ने मेरे दिल में डाला कि कोई जान न मरेगी जब तक अपनी उम्र और अपना रिज़्क पूरा न कर ले, तो खुदा से डरो और नेक तरीके से तलाश करो, और खबरदार रिज़्क की देरंगी तुम में किसी को इस पर न लाए कि नाफरमानी खुदा से उसे तलब करे कि अल्लाह का फज़ल तो उसकी ताअत ही से मिलता है। (अबू नुऐम ने हिल्या में इसकी तख़रीज की और लफ़्ज़ इसी के हैं, बग़वी ने शरह अल-सुन्नाह में, बैहक़ी ने शुअब में और हाकिम ने मुस्तदरक में इब्न मसूद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से नीज़ बज़्ज़ार ने हुज़ैफ़ा बिन अल-यमान से और इसी की मिस्ल तबरानी की कबीर में हसन बिन अमीरुल मोमिनीन अली से मरवी है रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन मगर तबरानी ने जिब्रील अलैहिस्सलाम का ज़िक्र नहीं किया। - त)

हदीस 35: और रिवायत हुई, आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं:

अरबी पाठ	उर्दू अनुवाद
अपनी ज़रूरतें आत्म-सम्मान के साथ तलब करो, क्योंकि बेशक तमाम मामलात तक़दीर के मुताबिक चलते हैं। इसे तमाम ने रिवायत किया।	हाजतें इज़्ज़त-ए-नफ़्स के साथ तलब करो कि सब काम तक़दीर पर चलते हैं। (इस को तमाम ने)

---

[1] हिलयतुल औलिया, तर्जुमा 457, अहमद बिन अबी अल-हवारी, दारुल किताब अल-अरबी, बैरूत, 10/27। शरह अल-सुन्नाह, बाब अल-तवक्कुल अलल-ल्लाह, हदीस 4111, अल-मकतब अल-इस्लामी, बैरूत, 14/302।

عربی عبارت	اردو ترجمہ
وبمعناہ عند ابی یعلی بسند حسن ان شاء اللہ تعالٰی عن ابی ھریرۃ رضی اللہ تعالٰی عنھم۔	حضرت جابر رضی اللہ تعالٰی عنہ سے اور اس کے ہم معنی ابویعلیٰ کے نزدیک ان شاء اللہ تعالٰی سندِ حسن کے ساتھ ابو ہریرہ رضی اللہ تعالٰی عنہ سے مروی ہے۔ ت)

حدیث ۳۱ تا ۳۴: اور فرماتے ہیں صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم :

عربی عبارت	اردو ترجمہ
ان روح القدس نفث فی روعی ان نفسا لن تموت حتی تستکمل اجلھا وتستوعب رزقھا فاتقوا اللہ واجملوا فی الطلب ولا یحملن احدکم استبطاء الرزق ان یطلبہ بمعصیۃ اللہ فان اللہ تعالٰی لا ینال ما عندہ الا بطاعتہ، اخرجہ ابو نعیم فی الحلیۃ۱ - واللفظ لہ عن ابی امامۃ الباھلی، والبغوی فی شرح السنۃ والبیھقی فی الشعب والحاکم فی المستدرک عن ابن مسعود، و البزار عن حذیفۃ الیمان ونحو ہ للطبرانی فی الکبیر عن الحسن بن علی امیر المؤمنین رضی اللہ تعالٰی عنھم	بے شک روح القدس جبریل نے میرے دل میں ڈالا کہ کوئی جان نہ مرے گی جب تک اپنی عمر اور اپنا رزق پورا نہ کر لے، تو خدا سے ڈرو اور نیک طریقے سے تلاش کرو، اور خبردار رزق کی دیرنگی تم میں کسی کو اس پر نہ لائے کہ نافرمانی خدا سے اسے طلب کرے کہ اللہ کا فضل تو اس کی طاعت ہی سے ملتا ہے۔ (ابونعیم نے حلیہ میں اس کی تخریج کی اور لفظ اسی کے ہیں، بغوی نے شرح السنہ میں، بیہقی نے شعب میں اور حاکم نے مستدرک میں ابن مسعود رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے نیز بزار نے حذیفہ بن الیمان سے اور اسی کی مثل طبرانی کی کبیر میں حسن بن

عربی عبارت	اردو ترجمہ
اجمعین غیر ان الطبرانی لم یذکر جبریل علیہ الصلوۃ والسلام۔	امیر المومنین علی سے مروی ہے رضی اللہ تعالیٰ عنہم اجمعین مگر طبرانی نے جبریل علیہ الصلوۃ والسلام کا ذکر نہیں کیا۔ ت)

حدیث ۳۵: اور مروی ہوا، فرماتے ہیں صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم :

عربی عبارت	اردو ترجمہ
اُطْلُبُوا الْحَوَائِجَ بِعِزَّۃِ الاَنفسِ فَاِنَّ الامور تجری بالمقادیر رواہ تمام	حاجتیں عزتِ نفس کے ساتھ طلب کرو کہ سب کام تقدیر پر چلتے ہیں۔ (اس کو تمام نے)

---

۱ حلیۃ الاولیاء ترجمہ ۴۵۷ احمد بن ابی الحواری دارالکتاب العربی بیروت ۱۰ / ۲۷، شرح السنۃ باب التوکل علی اللہ حدیث ۴۱۱۱ المکتب الاسلامی بیروت ۱۴ / ۳۰۲

Fatawa Razawiyya, Volume 29

In Al-Fawa'id and Ibn Asakir in his History narrated from Abdullah bin Busr (may Allah be pleased with him). (T) In all these hadiths as well, guidance was given towards seeking and planning (*tadbir*), but the command was to keep regard for Sharia and honor. Do not become unconscious or senseless in planning; keep the hands busy with work and the heart with the Beloved. Let the hands be in planning and the heart with destiny (*taqdir*). Outwardly towards this side, inwardly towards that side. Take the name of the causes, but work with the Causer of causes. This is how one should live; this is the path of guidance, this is the will of God, this is the way of the Prophets, this is the character of the Saints—peace and blessings be upon them all. (T)

So, in this matter, this is the final word and the straight path. Other than this, forgetting destiny or not accepting it as truth, or considering planning to be completely useless, are both, God forbid, misguidance, error, madness, or foolishness. And we seek refuge with Allah, the Lord of the worlds.

Regarding the chapter of planning, there are so many verses and hadiths that no one can encompass them. This humble servant (may Allah forgive him) claims that, God willing, if effort is made, more than ten thousand verses and hadiths can be found on this. But what is the need, for: *The sun arrived as evidence of the sun.* (The sun itself is the proof of the sun. T)

For a matter upon which the business of the entire world depends, to prolong its discussion is futile and useless. In this very writing, this humble servant has mentioned fifteen verses and thirty-five hadiths—a total of fifty (50) texts—and provided clues for hundreds, rather thousands more. Are these few? From them, it is proven what a high degree of folly, the vilest of diseases, and clear aversion from the Quran and Hadith, and open objection to God and His Messenger it is to deny planning. There is no power or strength except through Allah, the Exalted, the Magnificent.

It is obligatory for Walid to repent and rectify his belief from the Book and Sunnah, otherwise the misfortune of bad religious beliefs is extremely agonizing, and refuge is sought with Allah, Lord of the Worlds. As for his saying that repulsive word regarding teaching Arabic and imparting knowledge, if there were no room for the interpretation that perhaps he is objecting to those people who...

1. Kanz al-Ummal with complete codes and Ibn Asakir from Abdullah bin Busr, Hadith 12805, Mu'assasat al-Risalah, Beirut, 6/518.

फतावा रज़विय्या, खंड २९

'अल-फवाइद' और इब्न असाकिर ने अपनी तारीख में अब्दुल्ला बिन बुसर (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) से रिवायत किया। (त) इन सभी हदीसों में भी तलाश और तदबीर (योजना) की ओर मार्गदर्शन किया गया है, लेकिन हुक्म दिया गया कि शरीयत और इज़्ज़त का लिहाज़ रखो। तदबीर में बेसुध और बदहवास मत हो जाओ; हाथ काम में और दिल यार (प्रिय) के साथ रहे। तदबीर में हाथ रहे और दिल तक़दीर के साथ। ज़ाहिर में इस तरफ, बातिन (अंतर्मन) में उस तरफ। असबाब (साधनों) का नाम लो, लेकिन काम मुसब्बब (कारणों के कर्ता) से रखो। इसी तरह जीवन व्यतीत करना चाहिए; यही हिदायत की राह है, यही खुदा की मर्ज़ी है, यही अंबिया (नबियों) की सुन्नत है, यही औलिया (संतों) की सीरत है—उन सभी पर दरूद और सना (प्रशंसा) हो। (त)

बस इस बारे में यही अंतिम फैसला और सिराते मुस्तकीम (सीधा रास्ता) है। इसके सिवा तक़दीर को भूलना या उसे हक़ न मानना, या तदबीर को बिल्कुल निरर्थक समझना, दोनों ही अल्लाह की पनाह, गुमराह और गुमराही या पागलपन और बेवकूफी है। और हम अल्लाह, जो तमाम जहानों का रब है, की पनाह माँगते हैं।

तदबीर के विषय में आयतें और हदीसें इतनी अधिक हैं कि कोई उन्हें गिन नहीं सकता। यह फ़क़ीर (अल्लाह उसे क्षमा करे) दावा करता है कि इंशाअल्लाह तआला अगर मेहनत की जाए तो इस पर दस हज़ार से अधिक आयतें और हदीसें मिल सकती हैं। मगर इसकी ज़रूरत क्या है, क्योंकि: आफ़ताब आमद दलील-ए-आफ़ताब (सूरज की दलील खुद सूरज ही है। त)

जिस मसले को स्वीकार करने पर पूरी दुनिया के कामकाज का दारोमदार है, उसमें व्यर्थ विस्तार करना बेकार है। इसी लेख में, इस फ़क़ीर ने पंद्रह आयतें और पैंतीस हदीसें—कुल पचास (५०) नुसूस (प्रमाण) ज़िक्र किए और सैकड़ों बल्कि हज़ारों के पते दिए, क्या ये कम हैं? इन्हीं से साबित होता है कि तदबीर से इनकार करना कितनी बड़ी मूर्खता, सबसे बुरी बीमारी, और कुरआन व हदीस से साफ़ मुँह मोड़ना और खुदा व रसूल पर खुला ऐतराज़ है। और अल्लाह के सिवा न कोई ताकत है न कुव्वत, जो बुलंद और अज़ीम है।

वलीद पर फ़र्ज़ है कि तौबा करे और किताब व सुन्नत से अपना अक़ीदा (आस्था) दुरुस्त करे, वरना बद-मज़हबी की शामत बहुत ही पीड़ादायक है, और हम रब्बुल आलमीन की पनाह माँगते हैं। रही

बात अरबी पढ़ाने और इल्म सिखाने के संबंध में उस घृणित शब्द कहने की, अगर यह गुंजाइश न होती कि शायद वह उन लोगों पर ऐतराज़ कर रहा है जो...

---

१ कन्ज़ुल उम्माल पूर्ण संकेतों के साथ और इब्न असाकिर अब्दुल्ला बिन बुसर से, हदीस १२८०५, मुअस्ससतुर रिसाला, बेरूत, ६/५१८।

فی فوائدہ و ابن عساکر فی تاریخہ عن عبداللہ بن بُسر رضی اللہ تعالیٰ عنہ۔ فوائد میں اور ابن عساکر نے اپنی تاریخ میں عبداللہ بن بسر رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کیا۔ت

ان سب حدیثوں میں بھی تلاش و تدبیر کی طرف ہدایت فرمائی مگر حکم دیا کہ شریعت و عزت کا پاس رکھو، تدبیر میں بے ہوش و مد ہوش نہ ہو جاؤ، دست درکار و دل بایار، تدبیر میں ہاتھ، دل تقدیر کے ساتھ، ظاہر میں ادھر باطن میں ادھر، اسباب کا نام، مسبّب سے کام، یوں بسر کرنا چاہیے، یہی روشِ ہدی ہے، یہی مرضیِ خدا، یہی سنتِ انبیاء، یہی سیرتِ اولیاء علیہم جمیعاً الصلوٰۃ والثناء (ان سب کے لیے درود اور ثناء ہو۔ت)

بس اس بارے میں یہی قولِ فیصل و صراطِ مستقیم ہے، اس کے سوا تقدیر کو بھولنا یا حق نہ ماننا، یا تدبیر کو اصلاً مہمل جاننا دونوں معاذ اللہ گمراہی ضلالت یا جنون و سفاہت، والعیاذ باللہ رب العلمین۔

بابِ تدبیر میں آیات و احادیث اتنی نہیں جنہیں کوئی حصر کر سکے۔ فقیر غفر اللہ تعالیٰ لہ دعویٰ کرتا ہے کہ ان شاء اللہ تعالیٰ اگر محنت کی جائے تو دس ہزار سے زائد آیات و احادیث اس پر ہو سکتی ہیں مگر کیا حاجت کہ۔ ع آفتاب آمد دلیلِ آفتاب (سورج کی دلیل خود سورج ہے۔ت)

جس مسئلہ کے تسلیم پر تمام جہان کے کاروبار کا دار و مدار، اس میں زیادہ تطویل عبث و بیکار، اسی تحریر میں کہ فقیر نے پندرہ آیتیں اور پینتس حدیثیں جملہ پچاس ۵۰ نصوص ذکر کیے اور صدہا بلکہ ہزار ہا کے پتے دیئے، یہ کیا تھوڑے ہیں، انہیں سے ثابت کہ انکارِ تدبیر کس قدر اعلیٰ

درجہ کی حماقت، اخبث الامراض، اور قرآن و حدیث سے صریح اعراض اور خدا و رسول پر کھلا اعتراض ولا حول ولا قوۃ الا باللہ العلی العظیم۔

ولید پر فرض ہے کہ تائب ہو، اور کتاب و سنت سے اپنا عقیدہ درست کرے، ورنہ بد مذہبی کی شامت سخت جانکاہ ہے والعیاذ باللہ رب العلمین، باقی رہا اس کا عربی پڑھانے، علم سکھانے کی نسبت وہ شنیع لفظ کہنا، اگر اس تاویل کا درمیان نہ ہوتا کہ شاید وہ ان لوگوں پر معترض ہے جو

---

1 کنزالعمال برمز تمام و ابن عساکر عن عبداللہ بن بسر حدیث ۱۲۸۰۵ مؤسسۃ الرسالہ بیروت ۵۱۸/۶

They teach knowledge for the sake of the world, and such people are undoubtedly worthy of objection. Thus, it was an explicit statement of disbelief (Kufr) because he belittled and insulted religious knowledge. Even more severe than that is his calling Khalid a disbeliever on the basis that he (Khalid), despite believing in destiny, considers planning better and commendable, whereas his actual belief is the truth and correct. Walid's own statement is false and heinous; calling a Muslim a disbeliever is no trivial matter. (Hadith 36 to 39): It is stated in authentic Hadiths that whoever calls another a disbeliever, if that person was not one, the caller himself becomes a disbeliever.

[Arabic Column]: As extracted by the Imams Malik, Ahmad, al-Bukhari, Muslim, Abu Dawud, and al-Tirmidhi from Abdullah bin Umar; al-Bukhari from Abu Hurairah; Ahmad and the Shaykhayn (al-Bukhari and al-Muslim) from Abu Dharr; and Ibn Hibban with an authentic chain from Abu Sa'id al-Khudri (may Allah be pleased with them all) through numerous chains with varying wordings but close meanings.

[Urdu Column]: Just as it has been documented by the esteemed Imams, namely Imam Malik, Ahmad, Bukhari, Muslim, Abu Dawud, and Tirmidhi from Abdullah bin Umar; and Bukhari from Abu Hurairah; and Ahmad and the Shaykhayn (Bukhari and Muslim) from Abu Dharr; and Ibn Hibban with an authentic chain from Abu Sa'id al-Khudri (may Allah be pleased with them all) through multiple chains whose wordings differ but meanings are very close. (T)

And although the researched and refined stance of the Ahl al-Sunnah is that caution is still necessary for us and issuing a ruling of takfir (declaring one a disbeliever) on such grounds is forbidden and inappropriate, and the possibility of various

interpretations remains in the aforementioned Hadiths. Yet, hundreds of Imams, such as Imam Abu Bakr al-A'mash and the majority of the jurists of Balkh, etc. (may Allah's mercy be upon them), acted upon the apparent meanings of the Hadiths and called anyone who labels a Muslim as a disbeliever, a disbeliever unconditionally. As we have detailed all of this in our treatise, "An-Nahyu al-Akid 'an as-Salati Wara'a Adiyyat-Taqleed" (The Strong Prohibition of Praying Behind a Non-Conformist). (As we have detailed all this in our treatise... T)

Therefore, it is incumbent upon Walid to recite the Kalimah (testimony of faith) of Islam anew, and if he is married, he should renew his marriage with his wife.

[1] Sahih al-Bukhari, Book of Manners, Chapter: Whoever declares his brother a disbeliever without interpretation, Qadimi Kutub Khana, Karachi, 2/901. Sahih Muslim, Book of Faith, Chapter: Describing the faith of one who says to his Muslim brother 'O disbeliever', Qadimi Kutub Khana, Karachi, 1/57. Musnad Ahmad bin Hanbal from Ibn Umar, Al-Maktab al-Islami, Beirut, 2/113.

वे दुनिया (सांसारिक लाभ) के लिए ज्ञान प्रदान करते हैं, और ऐसे लोग निश्चित रूप से आपत्ति के पात्र हैं। यह स्पष्ट कुफ़्र (अधर्म) का शब्द था क्योंकि उसने दीन (धर्म) के ज्ञान का तिरस्कार और अपमान किया। और इससे भी अधिक गंभीर उसका खालिद को इस आधार पर काफ़िर कहना है कि वह तक़दीर (भाग्य) पर विश्वास के बावजूद तदबीर (योजना) को बेहतर और सराहनीय समझता है, जबकि उसका वास्तविक विश्वास सत्य और सही है। और वलीद का अपना कथन असत्य और घृणित है; किसी मुसलमान को काफ़िर कहना कोई छोटी बात नहीं है। (हदीस 36 से 39): सही हदीसों में फ़रमाया गया है कि जो व्यक्ति दूसरे को काफ़िर कहे, यदि वह काफ़िर नहीं था, तो यह (कहने वाला स्वयं) काफ़िर हो जाए।

[अरबी कॉलम]: जैसा कि इसे अइम्मा (इमामों) मालिक, अहमद, अल-बुखारी, मुस्लिम, अबू दाऊद और अल-तिर्मिज़ी ने अब्दुल्लाह बिन उमर से उद्धृत किया है; अल-बुखारी ने अबू हुरैरा से; अहमद और शैख़ैन ने अबू ज़र से; और इब्न हिब्बान ने सही सनद (शृंखला) के साथ अबू सईद अल-खुद़री (रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम) से अनेक सनदों के साथ किया है जिनके शब्द भिन्न हैं परंतु अर्थ समान हैं।

[उर्दू कॉलम]: जैसा कि इसका विवरण अइम्मा किराम यानी इमाम मालिक, अहमद, बुखारी, मुस्लिम, अबू दाऊद और तिर्मिज़ी ने अब्दुल्लाह बिन उमर से दिया है; और बुखारी ने अबू हुरैरा से; और अहमद और शैख़ैन (बुखारी और मुस्लिम) ने अबू ज़र से; और इब्न हिब्बान ने सनदे सहीह के साथ अबू सईद खुद़री से (रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन) अनेक सनदों के साथ किया है जिनके शब्द अलग हैं मगर अर्थ करीब-करीब एक जैसे हैं। (त)

और यद्यपि सुन्नत के अनुयायियों (अहले सुन्नत) का शोधित और स्पष्ट मत यही है कि हमें सावधानी बरतनी चाहिए और इतनी सी बात पर कुफ़्र का फ़तवा (तकफ़ीर) देना वर्जित और अनुचित है, और पूर्वोक्त हदीसों में कई व्याख्याओं की संभावना बनी रहती है। फिर भी सैकड़ों इमाम, जैसे इमाम अबू बक्र आमश और बल्ख के अधिकांश फ़ुक़हा (विधिवेत्ता) आदि (रहमतुल्लाह अलैहिम), हदीसों के प्रत्यक्ष अर्थ पर ही अमल करते थे और मुसलमान को काफ़िर कहने वाले को पूर्णतः काफ़िर कहते थे। जैसा कि हमने अपनी पुस्तिका "अन-नह्यु अल-अकीद अन अस्सलाति वराअ अदिय्यत तक्लीद" में विस्तार से बताया है। (जैसा कि हमने इस सब का विवरण अपनी पुस्तिका... में कर दिया है। त)

इसलिए वलीद के लिए अनिवार्य है कि वह नए सिरे से इस्लाम का कलमा पढ़े और यदि वह विवाहित है तो अपनी पत्नी के साथ निकाह का नवीनीकरण (तजदीद-ए-निकाह) करे।

[1] सही अल-बुखारी, किताबुल अदब, बाब: जो बिना किसी व्याख्या के अपने भाई को काफ़िर कहे, क़दीमी कुतुब ख़ाना कराची, 2/901; सही मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाब: उस व्यक्ति के ईमान की स्थिति का वर्णन जो अपने मुस्लिम भाई को 'ओ काफ़िर' कहे, क़दीमी कुतुब ख़ाना कराची, 1/57; मुस्नद अहमद बिन हंबल, अब्दुल्लाह बिन उमर से, अल-मक्तब अल-इस्लामी बेरुत, 2/113।

دنیا کے لیے علم پڑھاتے ہیں، اور ایسے لوگ بے شک لائق اعتراض ہیں، تو صریح کلمہ کفر تھا کہ اس نے علم دین کی تحقیر و توہین کی، اور اس سے سخت تر ہے اُس کا خالد کو اس بنا پر کافر کہنا کہ وہ باوجود ایمانِ تقدیر، تدبیر کو بہتر و مستحسن جانتا ہے، حالانکہ جو اُس کا عقیدہ ہے وہی حق و صحیح ہے، اور ولید کا قول خود باطل و قبیح، مسلمان کو کافر کہنا سہل بات نہیں۔ (حدیث ۳۶ تا ۳۹): صحیح حدیثوں میں فرمایا کہ جو دوسرے کو کافر کہے اگر وہ کافر نہ تھا یہ کافر ہو جائے۔

[عربی کالم]: کما اخرج ائمة مالک و احمد و البخاری و مسلم و ابوداؤد والترمذی عن عبداللہ بن عمر، والبخاری عن ابی ہریرة واحمد والشیخان عن ابی ذر وابن حبان بسند صحیح عن ابی سعید الخدری رضی اللہ تعالیٰ عنہم باسانید عدیدة و الفاظ متبائنة ومعانی متقاربة۔

[اردو کالم]: جیسا کہ اس کی تخریج کی ہے ائمہ کرام یعنی امام مالک، احمد، بخاری، مسلم، ابوداؤد، اور ترمذی نے عبداللہ بن عمر سے اور بخاری نے ابوہریرہ سے اور احمد اور شیخین نے ابوذر سے اور ابن حبان نے سندِ صحیح کے ساتھ ابوسعید خدری سے رضی اللہ تعالیٰ عنہم اجمعین متعدد سندوں کے ساتھ جن کے الفاظ مختلف مگر معانی قریب قریب ہیں۔ (ت)

اور اگرچہ اہل سنت کا مذہب محقق و منقح یہی ہے کہ ہمیں تاہم احتیاط لازم اور اتنی بات پر حکم تکفیر ممنوع و نا ملائم، اور احادیث مذکورہ میں تاویلات عدیدہ کا احتمال قائم۔ مگر پھر بھی صدہا ائمہ مثل امام ابوبکر اعمش و جمہور فقہاء بلخ و غیر ہم رحمۃ اللہ تعالی علیہم ظاہر احادیث ہی پر عمل کرتے، اور مسلمان کے کفر کو مطلقاً کافر کہتے ہیں، کما فصلناہ کل ذلك فی رسالتنا، النہی الاکید عن الصلوۃ وراء عدی التقلید (جیسا کہ ہم نے اس تمام کی تفصیل اپنے رسالہ النہی الاکید عن الصلوۃ وراء عدی التقلید میں کردی ہے۔ ت)

تو ولید پر لازم کہ از سر نو کلمہ اسلام پڑھے اور اگر صاحبِ نکاح ہو تو اپنی زوجہ سے تجدیدِ نکاح کرے۔

۱ صحیح البخاری کتاب الادب باب من اکفر اخاہ بغیر تاویل قدیمی کتب خانہ کراچی ۲/ ۹۰۱، صحیح مسلم کتاب الایمان باب بیان حال ایمان من قال لاخیہ المسلم یا کافر قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/ ۵۷، مسند احمد بن حنبل عن ابن عمر المکتب الاسلامی بیروت ۲/ ۱۱۳

Fatawa Razawiyya Volume 29

In al-Durr al-Mukhtar, it is narrated from the commentary of al-Wahbaniyyah by Allama Hasan al-Shurunbulali: "That which is unanimously considered blasphemy (kufr) nullifies good deeds and marriage; without the renewal of faith and marriage, his offspring will be children of adultery. As for matters in which there is disagreement, the speaker is ordered to seek forgiveness, repent, and renew the marriage." (T)

Hadith 40: And just as these heinous words were spoken publicly, the repentance and renewal of faith should also be announced. The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says: "When you commit a sin, offer repentance for it immediately; secretly for secret [sins] and openly for open [sins]." (Narrated by Imam Ahmad in Kitab al-Zuhd and al-Tabarani in al-Mu'jam al-Kabir from Mu'adh bin Jabal (may Allah be pleased with him) with a good chain of narration.)

And Allah Almighty knows best. The treatise 'al-Tahbir bi Bab al-Tadbir' has concluded.

Issue 123: From the town of Mau Nath Bhanjan, District Azamgarh, Madrasa Darul Uloom, sent by Abdul Rahim Khan, 11 Safar 1338 AH. What do the scholars of religion say regarding this issue: Is the soul pure or impure? If it is pure, why does punishment occur after death? And if it is impure, why did it enter the pure heart of the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah and his progeny be upon him)?

1. Al-Durr al-Mukhtar, Book of Jihad, Chapter on Apostates, Mujtabai Press, Delhi, 1/359.
2. Al-Zuhd by Ahmad bin Hanbal, Hadith 451, Dar al-Kitab al-Arabi, Beirut, p. 49; Al-Mu'jam al-Kabir, Hadith 331, Al-Maktabah al-Faysaliyyah, Beirut, 20/159. Page 327 of 750

फ़तावा रज़विया जिल्द २९

अल-दुर्र अल-मुख्तार में अल्लामा हसन अल-शुरुनबुलाली की शरह अल-वहबानिया से उद्धृत है: "जो भी सर्वसम्मति से कुफ़्र (ईश-निंदा) माना जाता है, वह कर्मों और निकाह को बातिल (शून्य) कर देता है। ईमान और निकाह के नवीनीकरण के बिना, उसकी संतानें व्यभिचार की संतान होंगी। और जिस मामले में मतभेद है, उसे कहने वाले को इस्तिगफ़ार (क्षमा याचना), तौबा और निकाह के नवीनीकरण का आदेश दिया जाएगा।" (त)

हदीस ४०: जिस तरह ये घिनौने शब्द सार्वजनिक रूप से कहे गए, उसी तरह तौबा और ईमान के नवीनीकरण की घोषणा भी सार्वजनिक होनी चाहिए। अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं: "जब तुम कोई गुनाह करो, तो तुरंत उसके लिए तौबा करो; छिपे हुए के लिए गुप्त रूप से और खुले हुए के लिए सार्वजनिक रूप से।" (इमाम अहमद ने किताब अल-ज़ुहद में और तबरानी ने अल-मुअजम अल-कबीर में हज़रत मुआज़ बिन जबल (रज़ियल्लाहु अन्हु) से हसन सनद के साथ रिवायत किया है।)

और अल्लाह तआला ही सबसे बेहतर जानता है। रिसाला 'अल-तहबीर बि बाब अत-तदबीर' समाप्त हुआ।

मसला १२३: कस्बा मऊ नाथ भंजन, जिला आजमगढ़, मदरसा दारुल उलूम से, प्रेषक अब्दुल रहीम खान, ११ सफ़र १३३८ हिजरी। धर्म के विद्वान इस मसले में क्या कहते हैं कि रूह (आत्मा) पाक है या नापाक? यदि पाक है, तो मरने के बाद अज़ाब (दंड) क्यों होता है? और यदि नापाक है, तो वह अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि वसल्लम) के कलब-ए-अतहर (पवित्र हृदय) में क्यों प्रविष्ट हुई?

1. अल-दुर्र अल-मुख्तार, किताब अल-जिहाद, बाब अल-मुरतद, मुतबा मुज्तबाई दिल्ली १/३५९।
2. अज़-ज़ुहद अहमद बिन हंबल द्वारा, हदीस ४५१, दार अल-किताब अल-अरबी बेरूत पृ. ४९; अल-मुअजम अल-कबीर, हदीस ३३१, अल-मकतबा अल-फैसलिया बेरूत २०/१५९। पेज ३२७ ऑफ़ ७५०

فی الدُّرِّ المختار عن شرح الوھبانیة للعلامة حَسَن الشُّرُنْبُلَالِی مایکون کفرًا اتفاقًا یبطل العمل والنکاح واولادہ اولاد زنا و ما فیہ خلاف یؤمر بالاستغفار والتوبة وتجدید النکاح 1۔ دُرِّ مختار میں علامہ حسن شُرنبلالی کی شرح وہبانیہ سے منقول ہے جو بالاتفاق کفر ہو اس سے عمل اور نکاح باطل ہوجائیں گے بلا تجدیدِ ایمان و نکاح اس کی اولاد اولادِ زنا ہوگی، اور جس میں اختلاف ہے قائل کو استغفار، توبہ، تجدیدِ نکاح کا حکم دیا جائے گا۔ (ت)

حدیث ۴۰: اور جس طرح یہ کلماتِ شنیعہ علانیہ کہے یونہی توبہ و تجدیدِ ایمان کا بھی اعلان چاہیے۔ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں: اذا عملت سیئة فأحدث عندھا توبة السرُّ بالسّرو العلانیة بالعلانیة رواہ الامام احمد في کتاب الزھد والطبراني في المعجم الکبیر عن معاذ بن جبل رضی اللہ تعالی عنہ بسند حسن۔ جب تو کوئی گناہ کرے تو فوراً از سرِ نو توبہ کر، پوشیدہ کی پوشیدہ، اور آشکارا کی آشکارا (اس کو امام احمد نے کتاب الزہد میں اور طبرانی نے معجمِ کبیر میں سند حسن کے ساتھ حضرت معاذ بن جبل رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کیا۔) ۔

واللہ تعالٰی اعلم رسالہ التحبیر بباب التدبیر ختم ہوا۔

مسئلہ ۱۲۳: از قصبہ موناتھ بھنجن ضلع اعظم گڑھ مدرسہ دار العلوم مرسلہ عبدالرحیم خان ۱۱ صفر ۱۳۳۸ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ روح پاک ہے یا ناپاک؟ اگر پاک ہے تو بعدِ مُردن عذاب کیوں ہوتا ہے؟ اور اگر ناپاک ہے تو رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے قلب اطہر میں کیوں داخل ہوا؟

1 الدر المختار كتاب الجهاد باب المرتد مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۳۵۹ 2 الزهد لاحمد بن حنبل حدیث ۴۵۱ دار الکتاب العربی بیروت ص ۴۹، المعجم الکبیر حدیث ۳۳۱ المکتبۃ الفیصلیۃ بیروت ۲۰/

Fatawa Razawiyya Volume 29

The Answer: The soul is pure in its original creation; then, if bad beliefs and bad actions are adopted, it becomes impure because of them, due to which it becomes deserving of punishment. And Allah the Almighty knows best.

Issue 124: From Sahawar, 24 Safar 1338 AH

What do the scholars of religion say in this regard? A gentleman has mentioned two topics below with reference to Hadith and called the first one Hadith Qudsi. The first topic is that if the hearts of all creatures become like the heart of the Master of the Universe (peace and blessings be upon him) or like the heart of the accursed Satan, Allah the Almighty says, "I absolutely do not care."

The second topic is that on the Day of Judgment, there will be an argument between Paradise and Hell. Hell will say, "I am the place of the oppressors and the arrogant, and you are the place of the poor and the destitute, therefore I am superior or deserving that all of mankind be handed over to me." Paradise will not give any answer and will be weakened in the conversation. Then Allah the Almighty will decide that "neither of you has any right to argue; I will send whomsoever I wish wherever I want." So the question is, are these two topics correct according to Hadith as stated by that gentleman? And regarding the first one, how is it possible for any other heart to become like the blessed heart of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him)? Scholars have downgraded such Hadiths, like those narrated by the author of *Ad-Durr al-Manthur* and others from the Scholar of the Ummah, Hazrat Abdullah bin Abbas (may Allah be pleased with them both), from the status of reliability. Furthermore, in the second topic, how can the presence of the oppressors and the arrogant, who will be polytheists and infidels, be a cause of superiority and excellence for Hell? It is hoped that a correct answer will be provided so that the doubt of a group of Muslims is removed. Explain, and you shall be rewarded. (T)

The Answer: In the first Hadith, the sacred name of the Master of the World (peace and blessings of Allah be upon him) is not mentioned at all. Instead, it is as follows:

"Upon the heart of the most God-fearing man among you." Meaning, if they all become like the heart of the most pious person among you.

---

[1] *Sahih Muslim*, Kitab al-Birr was-Silah, Chapter: Prohibition of Oppression, Qadimi Kutub Khana Karachi, 2/319.

फतावा रज़विया जिल्द २९

अल-जवाब (उत्तर): रूह (आत्मा) अपनी मूल रचना में पाक (शुद्ध) है, फिर यदि बुरे विश्वास और बुरे कर्म अपना लिए जाएं तो उनसे वह नापाक हो जाती है, जिसके कारण वह अज़ाब (दंड) की पात्र बनती है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला १२४: सहावर से, २४ सफर १३३८ हिजरी

धर्म के विद्वान इस बारे में क्या कहते हैं कि एक सज्जन ने हदीस के हवाले से नीचे दिए गए दो विषयों का उल्लेख किया है और पहले को हदीस-ए-कुदसी कहा है। पहला विषय यह है कि यदि सभी प्राणियों के हृदय ब्रह्मांड के स्वामी (उन पर श्रेष्ठ दुरूद और सलाम हो) के हृदय के समान हो जाएं या शापित शैतान के समान हो जाएं तो अल्लाह तआला फरमाता है कि मुझे इसकी बिल्कुल परवाह नहीं।

दूसरा विषय यह है कि कयामत के दिन जन्नत और दोज़ख के बीच बहस होगी। दोज़ख कहेगी कि मैं ज़ालिमों और अहंकारियों का स्थान हूँ और तू गरीबों और बेसहारा लोगों का स्थान है, इसलिए मैं श्रेष्ठ हूँ या इस बात की पात्र हूँ कि सभी मनुष्यों को मेरे हवाले कर दिया जाए। जन्नत कोई जवाब नहीं देगी और बातचीत में कमजोर पड़ जाएगी, फिर अल्लाह तआला फैसला करेगा कि "तुम दोनों में से किसी को भी तर्क करने का अधिकार नहीं है, मैं जिसे चाहूँ जहाँ चाहूँ भेजूँगा।" तो सवाल यह है कि क्या ये दोनों विषय उन साहब के हदीस के अनुसार सही हैं या नहीं? और पहले मामले में, यह कैसे संभव हो सकता है कि किसी और का हृदय पैगंबर (उन पर अल्लाह की शांति और कृपा हो) के मुबारक हृदय के समान हो जाए? विद्वानों ने ऐसी हदीसों को, जिन्हें 'दुर-ए-मंसूर' आदि के लेखक ने हबर-उल-उम्मत हजरत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (अल्लाह उन दोनों से प्रसन्न हो) से रिवायत किया है, विश्वसनीयता के स्तर से गिरा दिया है। और साथ ही दूसरे विषय में, ज़ालिमों और अहंकारियों का होना, जो मुशरिक (बहुदेववादी) और काफिर होंगे, दोज़ख के लिए श्रेष्ठता और प्रधानता का कारण कैसे हो सकता है? आशा है कि सही उत्तर दिया जाएगा ताकि मुसलमानों के एक समूह का संदेह दूर हो सके। बयान कीजिए और पुण्य प्राप्त कीजिए। (त)

अल-जवाब: पहली हदीस में हुज़ूर सैय्यद-ए-आलम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का पवित्र नाम बिल्कुल नहीं है, बल्कि वह इस प्रकार है:

"तुम में से जो सबसे अधिक परहेज़गार (ईश्वर-भीरु) व्यक्ति हो, उसके हृदय पर (अर्थात सबके हृदय वैसे हो जाएं)।"

---

[1] सहीह मुस्लिम, किताब अल-बिर्र वस-सिलाह, अध्याय: ज़ुल्म की मनाही, पुरानी कुतुब खाना कराची, २/३१९।

الجواب: روح اصل خلقت میں پاک ہے، پھر اگر بداعتقاد بداعمال اختیار کیے تو ان سے ناپاک ہو جاتی ہے، جس کے سبب مستحق عذاب ہوتی ہے۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۱۲۴: از سہاور ۲۴ صفر ۱۳۳۸ھ

کیا فرماتے ہیں علمائے دین اندریں باب کہ ایک صاحب نے دو مضامین ذیل بحوالہ حدیث بیان فرمائے اور اول کو حدیث قدسی کہا مضمون اول یہ ہے کہ اگر تمام مخلوقات کے قلب مثل قلب حضور سرورِ کائنات علیہ افضل الصلوٰت والتحیات کے ہو جائیں یا مثل شیطان لعین کے ہو جائیں تو اللہ تعالیٰ فرماتا ہے، کہ مجھ کو مطلق پروا نہیں۔

دوسرا مضمون یہ ہے کہ بروز قیامت جنت و دوزخ میں حجت ہوگی۔ دوزخ کہے گی کہ میں محل جبارہ و فاخرہ ہوں اور تو محل مساکین و غرباء ہے اس لیے میں افضل ہوں یا مستحق اس کی ہوں کہ تمام بنی آدم میرے حوالے ہوں۔ جنت کچھ جواب نہ دے گی، مکالمہ میں کمزور پڑے گی، پس اللہ تعالیٰ فیصلہ فرمائے گا کہ تم دونوں کو استحقاقِ حجت کسی طرح نہیں ہے میں جس کو جہاں چاہوں گا بھیجوں گا۔ پس سوال یہ ہے کہ آیا یہ دونوں مضمون ان صاحب کے صحیح موافق حدیث کے ہیں یا نہیں؟ اور بر تقدیر اول یہ کیونکر ہوسکتا ہے کہ کوئی دوسرا قلب مثل قلب مبارک حضرت صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے ہو جائے، علماء نے تو ایسی احادیث کو جو صاحب در منشور وغیرہ نے حبر الامہ حضرت عبداللہ بن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کی ہے درجہ اعتبار سے گرایا ہے، اور نیز دوسرے مضمون میں جبارہ و فاخرہ کا ہونا دوزخ کے لیے کب موجب فضیلت و فوقیت ہو سکتا ہے کہ وہ مشرکین و کفار ہوں گے، امید کہ جواب باصواب

عنایت ہو کہ ایک جماعت مسلمین کا شک رفع ہو، بینوا توجروا، (بیان فرمائیے اجر دیئے جاؤ گے۔ ت)

الجواب: حدیث اول میں ہرگز نام اقدس حضور سیدِ عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نہیں بلکہ یوں ہے کہ:

علی اتقٰی قلب رجل واحد منکم۔ تم میں کا جو بڑا پرہیز گار شخص ہو اس کے دل پر ہو جائیں۔

---

[1] صحیح مسلم کتاب البر والصلۃ باب تحریم الظلم قدیمی کتب خانہ کراچی ۲/۳۱۹

Fatawa Razawiya Volume 29

And possibility is not a condition for an obligation. Allah Almighty says:

"Say, [O Muhammad], 'If the Most Merciful had a son, then I would be the first of [His] worshippers.'"[1] - (Quran 43:81) You say, if by some impossible chance the Most Merciful had a son, then I would be the first to worship him. (T)

The Hadith starts with the word 'law' (if), such as:

"If the first and last of you, humans and jinn alike, were as pious as the most God-fearing heart among you..." etc.[2] (T)

In the noble verse, the word used is 'in' (if). The narration of the second Hadith is incorrect in stating that the argument will occur on the Day of Judgment. It is also incorrect that all descendants of Adam will be handed over to me, and it is also wrong that Paradise will not give any answer or will weaken. Similarly, there were several errors in the narration of the first Hadith. The Hadith is as follows:

"Paradise and Hell-fire argued. Hell-fire said: 'I have been favored with the arrogant and the tyrants.' Paradise said: 'What is with me that only the weak and humble among people enter me?'"[3] - The Hadith. Paradise and Hell argued, and Hell said, "I have been given preference because of the arrogant and the tyrants," while Paradise said, "What is wrong with me that only the weak enter into me?" - Al-Hadith. (T)

This is a narration of a past event; why was it necessary at that time for the Fire's knowledge to encompass that it is meant for disbelievers and polytheists? Just as Paradise's statement indicates it was unaware of the virtue and proximity of those weak ones; once it became aware, it became longing for them. And Allah Almighty knows best.

Problem 125: From Balochistan, sent by Qadir Bakhsh, 5 Rabi al-Akhar 1338 AH. Regarding this narration, what do the noble scholars say? Is it reported from a reliable source? Is it a fact? In which book is it? (Persian text in original) What do the noble scholars say regarding this narration, is it transmitted from a reliable saying? Can a preacher mention it in his sermon?

Footnotes: 1. Al-Quran al-Karim 43/81 2. Sahih Muslim, Kitab al-Birr wal-Sillah, Bab Tahrim al-Zulm, Qadeemi Kutub Khana, Karachi, 2/319 3. Sahih Bukhari, Kitab al-Tafsir, Surah Qaf, Qadeemi Kutub Khana, Karachi, 2/197; Sahih Muslim, Kitab al-Jannah, Bab Jahannam A'adhana Allahu Minha, Qadeemi Kutub Khana, Karachi, 2/381

फ़तावा रज़विया जिल्द २९

और फ़र्ज़ के लिए इमकान (संभावना) शर्त नहीं। अल्लाह तआला फ़रमाता है:

"कह दो (ऐ नबी), 'अगर रहमान के कोई बेटा होता, तो मैं सबसे पहले (उसकी) इबादत करने वाला होता।'"[1] - (क़ुरान ४३:८१) तुम फ़रमाओ, अगर बफ़र्ज़-ए-महाल (असंभवत) रहमान के कोई बच्चा होता तो सब से पहले मैं पूजता। (त)

हदीस तो लफ़्ज़ 'लौ' (अगर) के साथ है कि:

"अगर तुम्हारे पहले और पिछले इंसान और जिन्न सब से बड़े परहेज़गार के दिल पर हो जाएँ.." इत्यादि।[2] (त)

और आयत-ए-करीमा में तो लफ़्ज़ 'इन' है, बयान-ए-हदीस-ए-दोम में ग़लत है कि हुज्जत (बहस) रोज़-ए-क़यामत होगी और ये भी ग़लत कि तमाम बनी आदम मेरे हवाले होंगे और ये भी ग़लत कि जन्नत कुछ जवाब न देगी या कमज़ोर पड़ेगी, इसी तरह बयान-ए-हदीस-ए-अवल में कई ग़लतियां थीं। ये हदीस यूँ है:

"जन्नत और दोज़ख़ में बहस हुई, तो दोज़ख़ ने कहा: 'मुझे मुतकब्बिरों (अहंकारियों) और जाबिरों (ज़ालिमों) के सबब फ़ज़ीलत दी गई।' और जन्नत ने कहा: 'मुझे क्या है कि मेरे अंदर सिर्फ़ कमज़ोर लोग दाख़िल होते हैं?'"[3] - अल-हदीस। जन्नत और दोज़ख़ में झगड़ा हुआ तो दोज़ख़ ने कहा मुझे मुतकब्बिरों और जाबिरों के कारण तरजीह दी गई और जन्नत ने कहा मुझे क्या है कि मेरे अंदर सिर्फ़ कमज़ोर लोग दाख़िल होते हैं, अल-हदीस। (त)

ये गुज़री हुई बात का बयान है, उस वक़्त आग का इल्म उसे घेरे होना क्या ज़रूरी था कि उसके लिए काफ़िर और मुशरिक हैं जिस तरह जन्नत का ये कहना बता रहा है कि उसे उन कमज़ोरों की फ़ज़ीलत और नज़दीकी मालूम न थी, जब से मालूम हुआ खुद उनकी मुश्ताक़ (इच्छुक) है। वल्लाहु तआला आलम (अल्लाह बेहतर जानता है)।

मसला १२५: बलूचिस्तान से, मुरसला क़ादिर बख़्श, ५ रबी-उल-आख़िर १३३८ हिजरी। इस हिकायत (कथा) के बारे में उलमा-ए-किराम क्या फ़रमाते हैं कि क्या यह किसी मोतबर (विश्वसनीय) क़ौल से है? क्या वा'इज़ इसका ज़िक्र करे या यह हकीकत है? किस किताब में है? (मूल फ़ारसी पाठ) इस

हिकायत के बारे में उलमा-ए-किराम क्या फ़रमाते हैं कि क्या ये किसी मोतबर क़ौल से मन्क़ूल (उद्धृत) है? क्या वा'इज़ (उपदेश देने वाला) इसे अपने वा'ज़ में बयान कर सकता है?

फ़ुटनोट: १. अल-क़ुरान अल-करीम ४३/८१ २. सहीह मुस्लिम, किताब अल-बिर्र वस-सिलह, बाब तहरीम अल-ज़ुल्म, क़दीमी कुतुब ख़ाना, कराची, २/३१९ ३. सहीह बुख़ारी, किताब अत-तफ़्सीर, सूरह क़ाफ़, क़दीमी कुतुब ख़ाना, कराची, २/१९७; सहीह मुस्लिम, किताब अल-जन्नत, बाब जहन्नम अआज़ना अल्लाहु मिन्हा, क़दीमी कुतुब ख़ाना, कराची, २/३८१

पृष्ठ ३२९/७५०

اور فرض کے لیے امکان شرط نہیں۔ قال اللہ تعالی: "قُلْ اِنْ كَانَ لِلرَّحْمٰنِ وَلَدٌ ۖ فَأَنَا اَوَّلُ الْعٰبِدِيْنَ"-۱ تم فرماؤ اگر بفرضِ محال رحمن کے کوئی بچہ ہوتا تو سب سے پہلے میں پوجتا (ت)

حدیث تو لفظ 'لَوْ' سے ہے کہ: لو ان اولکم وآخرکم وانسکم وجنکم کانوا علی اتقٰی۲ اگر تمہارے پہلے، پچھلے انسان اور جن سب سے بڑے پرہیز گار کے دل پر ہو جائیں۔ الخ (ت)

اور آیہ کریمہ میں تو لفظ 'اِن' ہے، بیان حدیث دوم میں غلط ہے کہ حجت روزِ قیامت ہوگی اور یہ بھی غلط کہ تمام بنی آدم میرے حوالہ ہوں اور یہ بھی غلط کہ جنت کچھ جواب نہ دے گی یا کمزور پڑے گی، اسی طرح بیان حدیث اول میں متعدد اغلاط تھے۔ یہ حدیث یوں ہے: تحاجت الجنة والنار فقالت النار اوثرت بالمتکبرین والمتجبرین وقالت الجنة فمالی لا یدخلني الا ضعفاء الناس ۳-الحدیث۔ جنت اور دوزخ میں جھگڑا ہوا تو دوزخ نے کہا مجھے متکبروں اور جابروں کے سبب ترجیح دی گئی اور جنت نے کہا مجھے کیا ہے کہ میرے اندر صرف کمزور لوگ داخل ہوتے ہیں، الحدیث (ت)

یہ گزشتہ کی حکایت ہے اُس وقت نار کا علم اُسے محیط ہونا کیا ضرور کہ اس کے لیے کفار و مشرکین ہیں جس طرح جنت کا یہ کہنا بتا رہا ہے کہ اُسے ان کمزوروں کا فضل و تقرب معلوم نہ تھا جب سے معلوم ہوا خود ان کی مشتاق ہے واللہ تعالٰی اعلم۔ مسئلہ ۱۲۵: از بلوچستان مرسلہ قادر بخش، ۵ ربیع الآخر ۱۳۳۸ھ اندریں حکایت علمائے کرام چہ می فرمایند کہ قولے معتبر است آیا واعظ ذکر بکند یا حقیقت است در کدام کتاب۔ اس حکایت کے بارے میں علمائے کرام کیا فرماتے

ہیں کہ کیا یہ کسی معتبر قول سے منقول ہے وعظ کرنے والا اس کو اپنے وعظ میں بیان کر سکتا ہے؟

۱ القرآن الکریم ۸۱/۴۳ ۲ صحیح مسلم کتاب البر والصلة باب تحریم الظلم قدیمی کتب خانہ کراچی ۲ / ۳۱۹ ۳ صحیح بخاری کتاب التفسیر سورة ق قدیمی کتب خانہ کراچی ۲ / ۱۹۷ ، صحیح مسلم کتاب الجنة باب جهنم اعاذنا الله منها قدیمی کتب خانہ کراچی ۲ / ۳۸۱

Is there any truth to this? In which book is it narrated? The story is this. This is the narration, and the story is as follows: (1) I remember a story about the Prophet; may it be accepted by all people of acceptance. (2) So that his high resolve may be known to you; and to what extent his compassion for the Ummah reaches. (3) After that, we shall come to the praise of the four companions; O brother, listen for a moment. (4) All nights Mustafa (the Prophet) used to stay awake; by chance, one night sleep overcame him. (5) He was in sleep until the time of prayer; suddenly a call came from the Independent One (Allah). (6) I created you for this purpose; that you might be a protector for the Ummah. (7) O Muhammad, sleep does not befit you; whoever is not in service is not a servant. (8) Since you are flying in the sleep of midnight; I have now directed wrath upon your Ummah. (9) I will throw all of them, common and elite, into Hell; I will not let a single one of them be saved. (10) When the Best of Mankind heard this verse; he came out from there, calling "O my Ummah." (11) He departed from there and no one saw him; only the Knower of Secrets knows of him. (12) When two or three days had passed since this event; his companions consumed the blood of their hearts in grief. (13) Finally, on the third day after prayer; they all went back to Aisha. (14) When they inquired from the Mother of the Believers; she gave them an answer like this. (15) She said, on this night a call came from the Truth (Allah); an ayat of punishment for the Ummah. (16) Since this verse reached his ears; he went out from the chamber and no one saw him. (17) Such a cry arose from the companions; that tremors fell upon jinn and demons. (18) Suddenly they saw a shepherd from afar; their hearts found joy from that shepherd. (19) They went before him and asked him; if you have any news of the Prophet, tell us. (20) He said, when have I seen Mustafa?; rather, I have not even heard of him from anyone. (21) But for three days a loud message/shout; has been reaching my ears from the midst of the mountain. (22) The animals are heart-broken by his lamentation; they have closed their mouths from the grazing ground. (23) Every moment water flows from their eyes; they have closed the path of sleep through the path of the eyes.

क्या इसमें कोई सच्चाई है? यह किस किताब में वर्णित है? कहानी इस प्रकार है। यह वर्णन है, और कहानी इस प्रकार है: (१) मुझे रसूल (स.) की एक कहानी याद है; यह सभी स्वीकार करने वालों द्वारा स्वीकार की जाए। (२) ताकि उनकी हिम्मत और संकल्प तुम्हें पता चल जाए; और उम्मत के लिए उनकी करुणा किस हद तक है। (३) इसके बाद हम चार साथियों की प्रशंसा पर आएंगे; ऐ भाई, एक क्षण के लिए सुनो। (४) मुस्तफ़ा (स.) सारी रात जागते रहते थे; इत्तेफाक से एक रात उन्हें नींद आ गई। (५) वह नमाज़ के समय तक नींद में थे; अचानक बे-नियाज़ (अल्लाह) की ओर से पुकार आई। (६) मैंने तुम्हें इसी काम के लिए पैदा किया था; कि तुम उम्मत के लिए रक्षक (आश्रय) बनो। (७) ऐ मोहम्मद, नींद आपको शोभा नहीं देती; जो सेवा में नहीं है, वह बंदा (दास) नहीं है। (८) चूँकि तुम आधी रात की नींद में उड़ रहे हो; मैंने अब तुम्हारी उम्मत पर क्रोध किया है। (९) मैं उन सभी को, आम और खास, नर्क में डाल दूँगा; उनमें से एक को भी छुटकारा नहीं दिलाऊँगा। (१०) जब मानव जाति के सर्वश्रेष्ठ (स.) ने यह आयत सुनी; तो वह वहाँ से 'ऐ मेरी उम्मत' कहते हुए बाहर निकल गए। (११) वह वहाँ से चले गए और किसी ने उन्हें नहीं देखा; केवल रहस्यों का जानने वाला (अल्लाह) ही उनके बारे में जानता है। (१२) जब इस घटना को दो-तीन दिन बीत गए; तो उनके साथियों ने दुख में अपने दिल का खून पिया (अत्यधिक दुखी हुए)। (१३) अंततः तीसरे दिन नमाज़ के बाद; वे सब फिर से आयशा (र.) के पास गए। (१४) जब उन्होंने मोमिनों की माँ से पूछा; तो उन्होंने उन्हें इस तरह जवाब दिया। (१५) उन्होंने कहा, इस रात सत्य (अल्लाह) की ओर से पुकार आई; उम्मत के लिए अज़ाब (दंड) की आयत। (१६) चूँकि यह आयत उनके कानों तक पहुँची; वह हुजरे (कमरे) से बाहर चले गए और किसी ने उन्हें नहीं देखा। (१७) साथियों के बीच से ऐसी पुकार उठी; कि जिन्न और शैतानों में भी कंपन पैदा हो गया। (१८) अचानक उन्होंने दूर से एक चरवाहे को देखा; उस चरवाहे से उनके दिलों को सुकून मिला। (१९) वे उसके पास गए और उससे पूछा; अगर तुम्हें पैगंबर की कोई खबर है, तो बताओ। (२०) उसने कहा, मैंने मुस्तफ़ा (स.) को कब देखा है?; बल्कि मैंने तो उनके बारे में किसी से सुना भी नहीं है। (२१) लेकिन तीन दिनों से एक ज़ोरदार पुकार; पहाड़ के बीच से मेरे कानों में आ रही है। (२२) जानवर उनके विलाप से हृदयविदारक स्थिति में हैं; उन्होंने चरागाह से अपना मुँह मोड़ लिया है। (२३) हर क्षण उनकी आँखों से पानी बहता है; उन्होंने आँखों के रास्ते से सोने का रास्ता बंद कर दिया है।

पृष्ठ ३३० / ७५·

اس کی کوئی حقیقت ہے؟ کون سی کتاب میں منقول ہے؟ حکایت یہ ہے۔ این نقل است، آن حکایت این است۔ (۱) یک حکایت یاد دارم از رسول | باد مقبول ہمہ اہل قبول (۲) تاکہ معلوم تو گردد، ہمتش | تا چہ حد است امتاں را شفقتش (۳) بعد ازاں آئیم بمدح چار یار | اے برادر یک زمان گوش دار (۴) جملہ شبہا مصطفیٰ بیدار بود | اتفاقاً یک شبے خوابش ربود (۵) بود اندر خواب تا وقتے نماز | ناگہاں آمد خطابش بے نیاز (۶) آفریدم من ترا از بہر آں | تا شدی پشت پناہی امتاں (۷) اے محمد خواب تو زیبندہ نیست | ہر کہ در خدمت نباشد بندہ نیست (۸) چوں بہ پروازی بخواب نیم شب | کردم اکنوں امتانت را غضب (۹) دوزخ اندازم ہمہ از عام و خاص | یک تنے زیشان نگردانم خلاص (۱۰) چوں شنید ایں آیہ خیر البشر | افت زانجا امتی گویا بدر (۱۱) رفت زانجا وندیدش ہیچ کس | داند او را عالم الاسرار بس (۱۲) چوں گزشت از دو سہ روز ایں قصہ را | خون دل خوردند یاراں غصہ را (۱۳) عاقبت روز سوئم بعد از نماز | جملہ پیش عائشہ رفتند باز (۱۴) چوں بپرسید نزد ام مومنین | داد ایشاں را جواب ایں چنیں (۱۵) گفت او دیں شب رسید از حق خطاب | امتاں را آیہ از بہر عذاب (۱۶) چونکہ ایں آیہ بگوش او رسید | شد برون از حجرہ او را کس ندید (۱۷) آنچناں برخاست از یاراں غریو | لرزہ افتادند اندر جن و دیو (۱۸) ناگہاں دیدند یک چوبان زدور | یافت زاں چوباں دل ایشاں سرور (۱۹) پیش او رفتند و پرسیدند ازو | گر خبر داری ز پیغمبر بگو (۲۰) گفت من کے مصطفیٰ را دیدہ ام | بلکہ او را از کسے نشنیدہ ام (۲۱) لیک سہ روز است پیغام خروش | از میان کوہ می آید بگوش (۲۲) جانوراں نالہ او دل خستہ اند | از چراگاہ دہاں رابستہ اند (۲۳) ہر زماں از دیدہ می رانند آب | بستہ اند از راہ دیدہ راہ خواب

(24) When that group heard this news, they all turned their faces towards the mountain. (25) A cave became apparent in the midst of the mountain; they saw the great leader in that cave. (26) He had placed his head in prostration before the Self-Sufficient; he was speaking secrets with his God. (27) He was weeping and saying: O God, until You forgive the sins of my Ummah, (28) I will not lift my head from the ground, until the day of resurrection of the world in this manner. (29) He was saying this and wailing pitifully, tears falling like spring clouds. (30) When those secret-keepers heard this, their hearts bled from his lamentation. (31) Siddiq, the intercessor of the believers, said: Out of mercy, lift your head from the ground. (32) Whatever obedience I have done in my life, whatever worship I have performed in this world, (33) I give that reward for the sake of the Ummah, O Prophet of the end of times. Until the end of the story (Until the end of the story, T) - this story is in the treatise 'Milad-e-Ghulam-e-Shaheed'.

(Translation of the Story) (1) I remember a story about the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) which is popular among all righteous people. (2) So that you may know about his holy ambition and how much compassion he has for the Ummah. (3) After this, I will turn to the praise of the four companions; O brother! Listen attentively for a little while. (4) Mustafa (peace and blessings of Allah be upon him) used to stay awake all night; one night, by chance, sleep overcame him. (5) He was asleep until the time of prayer. Suddenly, the command of the Self-Sufficient God reached him. (6) That I have created you so that you may be the support of the Ummah. (7) O my Beloved (peace and blessings of Allah be upon him), sleeping does not suit you; he who is not busy in service is not a servant. (8) If you are busy in sleep at midnight, then I will descend My wrath upon your Ummah. (9) I will throw everyone, common and elite, into Hell; I will not give escape to any one of them. (10) When the Best of Mankind (peace and blessings of Allah be upon him) heard this command, he immediately came out from there saying "Ummah" and left.

फ़तावा रिज़विया जिल्द २९

(२४) जब उस गिरोह ने यह खबर सुनी, तो सबने अपने चेहरे पहाड़ की ओर कर लिए। (२५) पहाड़ के बीच में एक गुफा दिखाई दी; उन्होंने उस महान नेता को उस गुफा में देखा। (२६) उन्होंने बेनयाज़ (परमेश्वर) के सामने अपना सिर सजदे में रख दिया था; वह अपने खुदा से राज़ की बातें कर रहे थे। (२७) वह रो रहे थे और कह रहे थे: ऐ इलाही, जब तक तू मेरी उम्मत के गुनाहों को माफ न कर दे, (२८) मैं अपना सिर ज़मीन से नहीं उठाऊंगा, दुनिया के हश्र तक इसी तरह। (२९) वह इस तरह कह रहे थे और ज़ार-ज़ार रो रहे थे, आँसू बहार के बादलों की तरह बरस रहे थे। (३०) जब उन राज़दारों ने यह सुना, तो उनके विलाप से सबके कलेजे खून हो गए। (३१) मोमिनों के शफीअ सिद्दीक ने कहा: करम फ़रमाकर अपना सिर ज़मीन से उठाइये। (३२) मैंने अपनी उम्र में जितनी भी इबादत की है, दुनिया में जितनी भी बंदगी की है, (३३) वह सारा सवाब उम्मत के लिए देता हूँ, ऐ आख़िरी ज़माने के पैगंबर। इला आखिर अल-हिकायत (कहानी के अंत तक, त) - यह कहानी रिसाला 'मीलाद गुलाम शहीद' में है।

(कहानी का अनुवाद) (१) रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के बारे में मुझे एक कहानी याद है जो सभी नेक लोगों में मशहूर है। (२) ताकि आपको आपकी अज़ीम हिम्मत का पता चले कि उम्मत पर आपकी कितनी शफ़क़त (दया) है। (३) इसके बाद मैं चारों यारों की मदह (प्रशंसा) की तरफ आऊँगा, ऐ भाई! थोड़ा समय ध्यान से सुन, (४) मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) सारी रात जागते थे, एक रात इत्तेफाक से आप पर नींद ग़ालिब आ गई। (५) नमाज़ के वक्त तक आप नींद में थे। अचानक आपको खुदा-ए-बेनयाज़ का हुक्म पहुँचा। (६) कि मैंने आपको इसलिए पैदा किया है कि आप उम्मत के पुश्तपनाह (सहायक) बनें। (७) ऐ मेरे महबूब (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम), सोना आपको शोभा नहीं देता, जो खिदमत में व्यस्त न हो वह बंदा (सेवक) नहीं है। (८) जब आधी रात को नींद में मशगूल हैं तो मैं आपकी उम्मत पर ग़ज़ब नाज़िल करूँगा। (९) हर खास ओ आम को दोज़ख में डालूँगा, उनमें से किसी एक को भी छुटकारा नहीं दूँगा। (१०) जब खैरुल बशर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने यह हुक्म सुना तो फौरन वहाँ से 'उम्मती' कहते हुए बाहर निकल गए।

पेज ३३१ ऑफ़ ७५०

(۲۴) چوں شنیدند این خبر را آں گروہ / جملہ آوردند روئے سوئے کوہ (۲۵) شد نمایاں در میانِ کوہ غار / دید و در آں غار آں صدر کبار (۲۶) سر بسجدہ بردہ پیش بے نیاز / باخدائے خویشتن میگفت راز (۲۷) گریہ میکرد و ہمی گفت اے الٰہ / تانہ بخشی امتّام را گناہ (۲۸) مانہ بردارم سر خود از زمیں / تا برو حشر عالم ایں چنیں (۲۹) ایں چنیں میگفت و می نالہ زار / اشک میبارید چوں ابر بہار (۳۰) چوں شنید ندایں خفاش راز ور / جملہ را از نالہ اش خون شد جگر (۳۱) گفت صدیقِ شفیع المومنین / از کرم بردار سر را از زمیں (۳۲) آنچہ من در عمر طاعت کردہ ام / آنچہ در دنیا عبادت کردہ ام (۳۳) آں ثواب از برائے امتاں / دارم اے پیغمبر آخر زماں الی اخر الحکایت (حکایت کے آخر تک، ت) یہ حکایت رسالہ میلاد غلامِ شہید میں ہے۔

(ترجمہ حکایت) (۱) رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے بارے میں مجھے ایک حکایت یاد ہے جو تمام نیک لوگوں میں مقبول ہے۔ (۲) تاکہ تجھے آپ کی ہمتِ اقدس کا پتا چلے کہ امت پر آپ کی کس قدر شفقت ہے۔ (۳) اس کے بعد میں چاروں یاروں کی مدح کی طرف آؤں گا، اے بھائی! تھوڑا سا وقت غور سے سُن، (۴) مصطفیٰ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم تمام راتیں بیدار رہتے، ایک رات اتفاقاً آپ پر نیند غالب آگئی۔ (۵) نماز کے وقت تک آپ نیند میں تھے۔ اچانک آپ کو خدائے بے نیاز کا حکم پہنچا۔ (۶) کہ میں نے آپ کو اس لیے پیدا فرمایا ہے کہ آپ امت کے پشت پناہ بنیں۔ (۷) اے میرے محبوب (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) سونا آپ کو زیب نہیں دیتا، جو خدمت میں مشغول نہ ہو وہ بندہ نہیں ہے۔ (۸) جب آدھی رات کو نیند میں مشغول ہیں تو میں آپ کی اُمت پر غضب نازل کروں گا۔ (۹) ہر خاص وعام کو دوزخ میں ڈالوں گا ان میں سے کسی ایک کو چھٹکارا نہیں دوں

گا۔ (۱۰) جب خیر البشر (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) نے یہ آیت سنی تو فوراً وہاں سے امتی کہتے ہوئے باہر نکل گئے۔

(11) From there you went away; no one saw you. Knowledge about you was only with the Knower of hidden things. (12) When two or three days passed after this incident, your friends, i.e., the noble companions, continued to drink the blood of their hearts out of grief. (13) Finally, on the third day after prayer, all the noble companions went to Sayyidah Aisha Siddiqa (may Allah be pleased with her). (14) When they asked the Mother of the Believers, she gave them this answer. (15) She said that last night Rasulullah (peace and blessings of Allah be upon him) was addressed by the Truth (Allah), and an ayah regarding the punishment of the Ummah was revealed. (16) When this ayah reached his blessed ears, he went out of the chamber and no one saw him. (17) Such a loud cry rose from the friends of the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) that it caused a tremor in jinns and giants. (18) Suddenly, the companions saw a shepherd from afar. Seeing that shepherd brought some peace to their hearts. (19) They approached him and asked, "If you have any news of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him and his family), then tell us." (20) He said, "When have I seen Mustafa (peace and blessings of Allah be upon him and his family)? In fact, I haven't even heard about him from anyone." (21) "But for three days, the sound of an outcry from within the mountains has been reaching my ears." (22) "Due to his crying, the hearts of animals have been wounded; they have closed their mouths from the pasture." (23) "They shed tears from their eyes all the time; they have kept their eyes shut from sleep." (24) When the group of companions heard this news, they all turned their faces towards the mountain. (25) A cave appeared within the mountain; inside that cave, they saw the leader of the greats. (26) He had placed his head in prostration in the presence of the Self-Sufficient One (Allah), and was speaking in secrecy to his God. (27) He was pleading and saying, "O Allah! As long as You do not forgive the sins of my Ummah," (28) "I will not lift my head from the ground; I will continue to cry like this until the Day of Resurrection." (29) He was speaking like this and crying bitterly; tears were flowing like the spring season. (30) When the bats of the cave and the noble companions heard the intensity of this wailing, their livers turned to blood due to the crying of the Master (peace be upon him).

फतावी रज़विया, जिल्द 29

(11) वहां से आप तशरीफ ले गए, किसी ने आपको नहीं देखा, आपके बारे में केवल छुपी बातें जानने वाले को ज्ञान था। (12) इस घटना को जब दो-तीन दिन बीत गए, तो आपके मित्र यानी सहाबा इकराम दुख से दिल का खून पीते रहे। (13) अंततः तीसरे दिन नमाज़ के बाद सभी सहाबा इकराम सैयदा आयशा सिद्दीका (रज़ियल्लाहु अन्हा) के पास गए। (14) जब उन्होंने उम्मुल मोमिनीन से पूछा, तो आपने उन्हें यह उत्तर दिया। (15) आपने कहा कि पिछली रात रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को हक की तरफ से खिताब हुआ, उम्मत के अज़ाब से संबंधित आयत नाज़िल हुई। (16) जब आपके मुबारक कानों तक यह आयत पहुंची, तो आप कमरे से बाहर चले गए और किसी ने आपको नहीं देखा। (17) नबी करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के दोस्तों से इस कदर शोर उठा कि जिन्नों और राक्षसों पर कंपकंपी तारी हो गई। (18) सहाबा ने अचानक दूर से एक चरवाहे को देखा। उस चरवाहे को देखकर उनके दिलों को कुछ चैन मिला। (19) उसके पास पहुंचे और पूछा, "अगर पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की तुझे कोई खबर है तो बता।" (20) उसने कहा, "मैंने मुस्तफा (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को कब देखा है, बल्कि मैंने उनके बारे में किसी से सुना भी नहीं है।" (21) "लेकिन तीन दिनों से पहाड़ के बीच से शोर की आवाज़ मेरे कानों में आ रही है।" (22) "उनके रोने से जानवरों के दिल ज़ख्मी हो गए हैं, चरागाह से उन्होंने अपने मुँह बंद कर लिए हैं।" (23) "हर वक्त आँखों से आँसू बहाते हैं, नींद से उन्होंने आँखें बाँध रखी हैं।" (24) सहाबा की जमात ने जब यह खबर सुनी, तो उन सब ने अपना रुख पहाड़ की तरफ कर लिया। (25) पहाड़ के बीच एक गुफा दिखाई दी, उस गुफा के अंदर उन्होंने बड़ों के सरदार को देखा। (26) बेनियाज़ (अल्लाह) की बारगाह में सिर सजदे में रखे हुए थे, अपने खुदा से राज़दारी में कह रहे थे। (27) फरियाद कर रहे थे और कह रहे थे, "ऐ अल्लाह! जब तक तू मेरी उम्मत के गुनाह नहीं बख्श देगा," (28) "मैं अपना सिर ज़मीन से नहीं उठाऊंगा, रोज़-ए-हश्र तक मैं इसी तरह रोता रहूँगा।" (29) इस तरह कह रहे थे और ज़ार-ओ-कतार रो रहे थे, मौसम-ए-बहार की तरह आँसू बह रहे थे। (30) जब गुफा के चमगादड़ों और सहाबा इकराम ने गिरिया-ओ-ज़ारी का यह ज़ोर सुना, तो सरकार के रोने से सबके जिगर खून हो गए।

पेज 332 का 750

(۱۱) وہاں سے آپ تشریف لے گئے، کسی نے آپ کو نہیں دیکھا، آپ کے بارے میں فقط چھپی باتیں جاننے والے کو علم تھا۔ (۱۲) اس قصہ کو جب دو تین دن گزر گئے آپ کے دوست یعنی صحابہ کرام غم سے دل کا خون پیتے رہے۔ (۱۳) آخر کار تیسرے دن نماز کے بعد تمام صحابہ کرام سیدہ عائشہ صدیقہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا کے پاس گئے۔ (۱۴) جب انہوں نے اُم المومنین سے پوچھا تو آپ نے انہیں یہ جواب دیا۔ (۱۵) آپ نے کہا کہ پچھلی رات رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کو حق کی طرف سے خطاب ہوا، امت کے عذاب سے متعلق آیت نازل ہوئی۔ (۱۶) جب آپ کے کان مبارک تک یہ آیت پہنچی آپ حجرہ سے باہر چلے گئے کسی نے آپ کو نہیں دیکھا۔ (۱۷) نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے دوستوں سے اس قدر شور بلند ہوا کہ جنوں اور دیوؤں پر لرزہ طاری ہو گیا۔ (۱۸) صحابہ نے اچانک دور سے ایک چرواہے کو دیکھا اس چرواہے کو دیکھنے سے ان کے دلوں کو کچھ چین آیا۔ (۱۹) اس کے پاس پہنچے اور پوچھا اگر پیغمبر صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کی تجھے کوئی خبر ہے تو بتا۔ (۲۰) اس نے کہا میں نے مصطفی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کو کب دیکھا ہے بلکہ میں نے ان کے بارے میں کسی سے سُنا بھی نہیں ہے ۔ (۲۱) لیکن تین دنوں سے پہاڑ کے درمیان سے شور کی آواز میرے کانوں میں آتی ہے۔ (۲۲) اس کے رونے سے جانوروں کے دل زخمی ہو گئے ہیں، چراگاہ سے انہوں نے اپنے منہ بند کر لیے ہیں۔ (۲۳) ہر وقت آنکھوں سے آنسو بہاتے ہیں، نیند سے انہوں نے آنکھیں باندھ رکھی ہیں۔ (۲۴) جماعت صحابہ نے جب یہ خبر سنی تو ان سب نے اپنا رُخ پہاڑ کی طرف کر لیا۔ (۲۵) پہاڑ کے درمیان ایک غار ظاہر ہوئی، اس غار کے اندر انہوں نے بڑوں کے سردار کو دیکھا۔ (۲۶) بے نیاز کی بارگاہ میں سر سجدہ میں رکھے ہوئے تھے، اپنے خدا سے راز داری میں کہہ رہے تھے۔

(۲۷) فریاد کر رہے تھے اور کہہ رہے تھے اے اللہ ! جب تک تو میری اُمت کے گناہ نہیں بخشے گا، (۲۸) میں اپنا سر زمین سے نہیں اٹھاؤں گا، روز حشر تک میں اسی طرح روتا رہوں گا۔ (۲۹) اس طرح کہہ رہے تھے اور زار و قطار رو رہے تھے، موسمِ بہار کی طرح آنسو بہہ رہے تھے۔ (۳۰) جب غار کے چمگادڑوں اور صحابہ کرام نے گریہ وزاری کا یہ زور سنا تو سرکار کے رونے سے سب کے جگر خون ہو گئے۔

Fatawa Razawiyya, Volume 29

(31) Siddiq-e-Akbar (may Allah be pleased with him) said: O Intercessor of the believers! Have mercy, raise your head from the ground. (32) Whatever obedience I have performed throughout my life, and however much worship I have done in the world. (33) I give its reward to your Ummah, O Prophet of the end of times (peace and blessings of Allah be upon him).

The Answer: This narration is false and baseless, and there is no sign of it in any reliable book, and Allah Almighty knows best. [Urdu text]: This narration is false and baseless; there is no trace of it in any reliable book. And Allah Almighty knows best.

Issue 126: Bareilly, Mohalla Baharipur, sent via Sultan Ahmad Khan, petitioner Peer Muhammad Abdullah, 8 Rabi al-Akhir 1338 AH. When will the following condition occur: Venus (Zuhra) is rising in the sign of Pisces (Hut), and the Moon (Qamar) is in the sign of Cancer (Saratan) in a trine aspect (tathleeth) with Venus, but Mars (Mirrikh) should not be observing Saturn (Zuhal) in a square (tarbee') or opposition (muqabalah) aspect. Hopeful for a correct answer from experts in astronomy.

The Answer: It is the petitioner's mistake that Mars should not observe Saturn through square or opposition; rather, the intent here is that neither of these two should look at Venus with an inimical aspect. Whether they are detached from Venus or hold mutual enmity, what harm is there? In short, the point is that Venus should be in its exalted sign, the Moon in its own house, looking at Venus with complete friendship (trine), and Venus should be protected from the inimical aspects of Mars and Saturn (square and opposition). This condition does not exist this year nor next year. Yes, the one the petitioner described will occur on March 7, 1920. Venus will be at 11 degrees of Pisces, the Moon at 11 degrees of Cancer, which is a full 120-degree distance and a perfect trine aspect. Mars will be at 8 degrees 6 minutes of Scorpio, and Saturn at 6 degrees 6 minutes of Virgo, which is a perfect sextile aspect—a partial friendly aspect—neither a square nor an opposition. However, the distance between Venus and Saturn will be only 5 degrees more than 6 signs. Although Venus has already moved away from the opposition of Saturn, since the distance is less than half the sum of their ray-projection distances (7 and 9 degrees, i.e., 8 degrees), the ruling of opposition still persists. It will disappear on the third day, by which time the Moon will also have left Cancer and passed the trine. Yes, although Mars is not detached from Venus, it is in a trine aspect, which signifies complete friendship, not square or opposition. Only.

फ़तावा रज़विया, खंड 29

(31) सिद्दीक़-ए-अकबर (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) ने कहा: ऐ मोमिनों की शफ़ाअत (सिफारिश) करने वाले! कृपा करें, ज़मीन से अपना सिर उठाएं। (32) मैंने अपनी पूरी ज़िंदगी जो आज्ञाकारिता की है, और दुनिया में जितनी भी इबादत की है। (33) मैं उसका सवाब आपकी उम्मत को देता हूँ, ऐ आख़िरुज़्ज़माँ नबी (अल्लाह की शांति और आशीर्वाद उन पर हों)।

उत्तर: यह रिवायत झूठी और बेबुनियाद है और किसी भी विश्वसनीय किताब में इसका कोई निशान नहीं है, और अल्लाह बेहतर जानता है। यह रिवायत झूठी और बेबुनियाद है; किसी भी विश्वसनीय किताब में इसका नामोनिशान नहीं है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 126: बरेली, मोहल्ला बहारीपुर, सुल्तान अहमद खां के माध्यम से प्रेषित, प्रार्थी पीर मोहम्मद अब्दुल्ला, 8 रबी-उल-आख़िर 1338 हिजरी। निम्नलिखित स्थिति कब उत्पन्न होगी: शुक्र (ज़ोहरा) मीन राशि (हूत) में उदय हो रहा हो और चंद्रमा (क़मर) कर्क राशि (सरतान) में शुक्र के साथ त्रिकोण दृष्टि (तथ्लीथ) में हो, लेकिन मंगल (मिरीख़) शनि (ज़ुहल) को केंद्र (तर्बीअ) या समसप्तक (मुक़ाबला) दृष्टि से न देख रहा हो। खगोल विज्ञान के विशेषज्ञों से सही उत्तर की आशा है।

उत्तर: यह प्रार्थी की गलती है कि मंगल को शनि को केंद्र या समसप्तक दृष्टि से नहीं देखना चाहिए; बल्कि यहाँ उद्देश्य यह है कि इन दोनों में से कोई भी शुक्र को शत्रुतापूर्ण दृष्टि से न देखे। यदि वे शुक्र से अलग हों और आपस में शत्रुतापूर्ण दृष्टि रखते हों, तो इसमें क्या हर्ज है? संक्षेप में, बात यह है कि शुक्र अपनी उच्च राशि में हो, चंद्रमा अपने घर में हो और शुक्र को पूर्ण मित्रता (त्रिकोण) की दृष्टि से देख रहा हो, और शुक्र मंगल और शनि की शत्रुतापूर्ण दृष्टि (केंद्र और समसप्तक) से सुरक्षित हो। यह स्थिति न तो इस वर्ष है और न ही आने वाले वर्ष में। हाँ, प्रार्थी ने जिसका वर्णन किया है वह 7 मार्च 1920 को होगी। शुक्र मीन के11 अंश पर होगा, चंद्रमा कर्क के11 अंश पर, जो कि पूरे 120 अंश की दूरी और पूर्ण त्रिकोण दृष्टि है। मंगल वृश्चिक के8 अंश 6 मिनट पर और शनि कन्या के6 अंश 6 मिनट पर होंगे, जो पूर्ण षडाष्टक (तस्दीस) दृष्टि है—एक आंशिक मित्र दृष्टि—न तो केंद्र है और न ही समसप्तक। हालांकि, शुक्र और शनि के बीच की दूरी 6 राशियों से केवल 5 अंश अधिक होगी। यद्यपि शुक्र शनि के समसप्तक से अलग हो चुका है, लेकिन चूंकि दूरी उनके किरण-प्रक्षेपण दूरियों (7 और 9 अंश, यानी 8 अंश) के योग के आधे से कम है, इसलिए समसप्तक का प्रभाव अभी भी बना हुआ है। यह तीसरे दिन समाप्त होगा, तब तक चंद्रमा भी कर्क राशि से निकल जाएगा और त्रिकोण

से भी गुजर जाएगा। हाँ, मंगल भले ही शुक्र से अलग न हो, लेकिन वह त्रिकोण दृष्टि में है जो पूर्ण मित्रता है, केंद्र या समसप्तक नहीं। बस।

पृष्ठ 750 में से 333

(۳۱) صدیق اکبر رضی اللہ تعالٰی عنہ نے کہا اے مومنوں کی شفاعت فرمانے والے ! مہربانی فرمائیں ، زمین سے سر اٹھائیں۔ (۳۲) میں نے عمر بھر جو طاعت کی ہے ، اور دنیا میں جتنی عبادت کی ہے۔ (۳۳) اس کا ثواب آپ کی امت کے لیے دیتا ہوں میں اے نبی آخر الزماں صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم)

الجواب: ایں نقل باطل و بے اصل است و در بیچ کتاب معتبر از و نشانے نیست ، واللہ تعالی اعلم۔ یہ نقل باطل اور بے اصل ہے ، کسی معتبر کتاب میں اس کا نام نشان نہیں ہے ، واللہ تعالی اعلم۔

مسئلہ ۱۲۶: بریلی محلہ بہاری پور مرسلہ بمعرفت سلطان احمد خاں سائل پیر محمد عبداللہ ۸ ربیع الآخر شریف ۱۳۳۸ھ حالت مندرجہ ذیل کب واقع ہوگی ، زہرہ برج حوت میں طالع ہو اور قمر برج سرطان میں بنظر تثلیث زہرہ ہو لیکن بتر بیع و مقابلہ مریخ ناظر بز حل نہ ہو۔ امیدوار ماہر ان علم ہیئت جواب باصواب دیں۔

الجواب: یہ سائل کی غلطی ہے کہ مریخ تربیع یا مقابلہ سے ناظر زحل نہ ہو بلکہ یہاں مقصود یہ ہے کہ ان دونوں میں سے کوئی زہرہ کو نظر دشمنی سے نہ دیکھتا ہو کہ تربیع یا مقابلہ ہے زہرہ سے اگر ساقط ہوں اور باہم نظر عداوت رکھتے ہوں کیا حرج ہے ، بالجملہ عرض یہ ہے کہ زہرہ برج شرف میں ہو اور قمر اپنے بیت میں اور زہرہ کو بنظر تمام دوستی دیکھتا ہو اور زہرہ مریخ و زحل کی نظر عداوت تربیع و مقابلہ سے محفوظ ہو یہ صورت نہ اس سال ہے نہ سالِ آئندہ ہے، ہاں وہ کہ سائل نے بیان کیا ۔ ۷ مارچ ۱۹۲۰ء کو ہوگی زہرہ حوت کے ۱۱ درجہ میں ہوگی قمر سرطان کے ۱۱ درجہ میں کہ پورے ۱۲۰ درجے (ایک سو بیس درجہ) کا فاصلہ اور کامل نظر

تثلیث ہے ، مریخ عقرب کے ۸ درجے ۶ دقیقے زحل سنبلہ کے ۶ درجے ۶ دقیقے کہ کامل نظر تسدیس نظر نیم دوستی ہے نہ تربیع ہے نہ مقابلہ لیکن زہرہ و زحل کا فاصلہ ۶ برج سے صرف ۵ درجے زائد ہوگا، زہرہ اگرچہ مقابلہ زحل سے منصرف ہو چکی ہے مگر دونوں کے مطرح شعاع ۷ و ۹ درجے کے مجموع کے نصف یعنی ۸ درجے سے فاصلہ کم ہے تو ہنوز حکم مقابلہ باقی ہے تیسرے دن زائل ہو گا جب تک ماہ سرطان سے بھی نکل جائے گا اور تثلیث سے بھی گزر جائے گا ، ہاں مریخ اگر چہ زہرہ سے ساقط نہیں مگر تثلیث میں ہے کہ تمام دوستی ہے نہ تربیع و مقابلہ فقط

Fatawa Razawiyya, Volume 29

Issue 712: From city neighborhood Malukpur, questioned by Qudrat Ali Khan, 15 Shawwal 1338 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: one person says that all Prophets and Angels (peace be upon them) are infallible (Ma'soom). A second person says that no one is infallible except the 'Panjtan-e-Paak' (the Pure Five). And a third person says that 'Panjtan-e-Paak' are nothing besides the Rightly Guided Caliphs (Khulafa-e-Rashideen).

The Answer: The statement of the first person is the truth and the creed of the Ahl-e-Sunnat. The statement of the second person is clear misguidance, 'Rafz' (heresy), and a word of disbelief (Kufr). The statement of the third person, in even worse speech, contains an open aspect of disbelief. And Allah Almighty knows best.

Issue 128: From Nangal Lakri, district Gurgaon, post office Dhambla, questioned by Hafiz Ghulam Kibria Sahib, Imam of the Mosque. What do the scholars of religion say regarding these issues: (1) Zaid says that asking for help from the 'Awliya' (saints) from afar and considering them 'Hazir o Nazir' (present and observant) at all times is polytheism (shirk), because this is a specific attribute of Allah Almighty and no one else's. He provides proof from the Holy Quran (9th Juz'): "Say, I do not possess for myself benefit nor harm." (2) How is it to take the dust from the graves of the friends of Allah (Awliya Allah) in one's hand and rub it on the face? And what about performing 'Tawaf' (circumambulation) of the graves of Awliya? Some say Tawaf is only for the Holy Kaaba. (3) Sheikh Abdul Haq has stated in the translation of 'Mishkat' that not all prayers (duas) of the Prophets are accepted. (4) Proof from Hadith is given against gathering at the shrines (Khanqahs) of saints, stating that the Messenger of Allah (peace and blessings be upon him) said: "O Allah! Do not make my grave a place of celebration ('Eidgah)." (5) If one considers a Prophet to be an 'All-Knower of the Unseen' (Ghaib-daan), he is a disbeliever (Kafir), because they have 'bestowed knowledge' (ilm-e-ataiya) which cannot be 'the Unseen' (Ghaib), as the meaning of Ghaib is that which is known without being informed. That is Ghaib.

The Answer: (1) Whoever said that hearing from afar is only His attribute has diminished the majesty of the Lord (Exalted is He). He is transcendent above 'hearing from afar'; He is closer than any closeness. Hearing from afar, by His bestowal, is the attribute of His beloved ones only. He cannot even be called 'Hazir o Nazir' (in a limited sense); He is 'Shaheed' (Witness) and 'Baseer' (All-Seeing). 'Hazir o Nazir', by His bestowal, are His beloved ones (peace and blessings be upon them), as stated in

the treatises of Sheikh Abdul Haq Muhaddith Dehlavi (may his secret be sanctified). What proof is there for this from that noble verse...

फ़तावा रज़विया, जिल्द २९

मसला ७१२: शहर मोहल्ला मलुकपुर से, मुस्तौलिह कुदरत अली खान १५ शव्वाल १३३८ हि. दीन के उलेमा इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि एक शख्स कहता है कि तमाम अंबिया और मलाइका अलैहिमुस्सलाम मासूम हैं, दूसरा शख्स कहता है कि पंजतन पाक के इलावा कोई मासूम नहीं। और तीसरा शख्स कहता है कि पंजतन पाक खुलफा-ए-राशिदीन के अलावा कुछ नहीं हैं।

अल-जवाब: पहले शख्स का कौल हक और अहले सुन्नत का अकीदा है, और दूसरे का कौल खुली गुमराही, रफ्ज़ और कुफ्र का कलमा है, और तीसरे शख्स का कौल बदतरीन बात होने के साथ-साथ कुफ्र का एक खुला पहलू भी रखता है। वल्लाहु तआला आलम।

मसला १२८: नांगल लकड़ी जिला गुड़गांव डाकखाना ढंबला से, मुस्तौलिह हाफ़िज़ गुलाम किबरिया साहब पेश इमाम मस्जिद। उलेमा-ए-दीन इन मसाइल में क्या फ़रमाते हैं कि: (१) ज़ैद कहता है औलिया से दूर से मदद मांगना, और उन्हें हर वक्त हाज़िर व नाज़िर समझना शिर्क है, क्योंकि यह खास अल्लाह तआला की सिफ़त है किसी दूसरे की नहीं। वह क़ुरान शरीफ़ से सुबूत देता है (नवां पारा): "कह दो कि मैं अपनी जान के नफ़े और नुक़सान का मालिक नहीं हूँ।" (२) औलिया अल्लाह की कब्रों की खाक (धूल) हाथ में लेकर मुँह पर मलना कैसा है? औलिया की कब्र का तवाफ़ करना कैसा है? कुछ लोग कहते हैं कि तवाफ़ सिर्फ काबा शरीफ के लिए मखसूस है। (३) शेख अब्दुल हक ने तर्जुमा-ए-मिशकात में फ़रमाया है कि पैग़म्बरों की तमाम दुआएं मक़बूल नहीं होतीं। (४) औलिया की खानकाहों पर जमा न होने के लिए हदीस का सुबूत दिया जाता है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "या अल्लाह! मेरी कब्र को ईदगाह न बनाना।" (५) अगर कोई नबी को 'ग़ैब-दाँ' (अदृश्य को जानने वाला) समझे तो काफ़िर है, क्योंकि उन्हें 'इल्म-ए-अताइया' (प्रदत्त ज्ञान) हासिल है। वह 'ग़ैब' नहीं हो सकता, क्योंकि ग़ैब का मतलब वह है जो बिना इत्तिला (सूचना) के मालूम हो, वही ग़ैब है।

अल-जवाब: (१) जिसने यह कहा कि दूर से सुनना सिर्फ उसकी शान है, उसने रब्ब-ए-अज़्ज़-व-जल्ल की शान घटाई। वह इससे पाक है कि दूर से सुने; वह तो हर करीब से करीब तर है। दूर से सुनना, उसकी अता (देन) से उसके महबूबों की ही शान है। उसे 'हाज़िर व नाज़िर' भी नहीं कह सकते, वह 'शहीद' (गवाह) और 'बसीर' (देखने वाला) है। हाज़िर व नाज़िर तो उसकी अता से उसके महबूब

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं, जैसा कि शेख अब्दुल हक मुहद्दिस देहलवी (कुद्दिसा सिर्रहु) के रसायल (लेखों) में है। इस आयत-ए-करीमा से उसका क्या सुबूत...

सफ़ा ३३४/७५०

فتاویٰ رضویہ، جلد ۲۹

مسئلہ ۷۱۲: از شہر محلہ ملوکپور مسئولہ قدرت علی خان ۱۵ شوال ۱۳۳۸ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ایک شخص کہتا ہے کہ جملہ انبیاء و ملائکہ علیہم السلام معصوم ہیں دوسرا شخص کہتا ہے کہ سوائے پنجتن پاک کے کوئی معصوم نہیں۔ اور تیسرا شخص کہتا ہے کہ پنجتن پاک کوئی چیز نہیں ہیں سوائے خلفائے راشدین کے۔

الجواب: پہلے شخص کا قول حق و عقیدہ اہلسنت ہے، اور دوسرے کا قول صریح گمراہی و رفض و کلمہ کفر ہے، اور تیسرے شخص کا قول بدتراز بول میں بھی ایک کھلا پہلو کفر کا ہے۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۱۲۸: از نانگل لکڑی ضلع گورگانوہ ڈاکخانہ ڈھنبلہ مسئولہ حافظ غلام کبریا صاحب پیش امام مسجد کیا فرماتے ہیں علمائے دین ان مسائل میں کہ۔ (۱) زید کہتا ہے اولیاء سے مدد مانگنا دور سے، اور ہر وقت حاضر ناظر سمجھنا شرک ہے، کیونکہ یہ خاص اللہ تعالیٰ کی صفت ہے دوسرے کی نہیں، قرآن شریف کا ثبوت دیتا، (نواں پارہ) کہہ دو میں نہیں مالک اپنی جان کا نہ نفع کا نہ ضرر کا۔ (۲) اولیاء اللہ کی قبروں کی خاک ہاتھ میں لے کر منہ پر ملنا کیسا ہے؟ طوافِ قبر اولیاء کا کرنا بعضے کہتے ہیں طواف صرف کعبہ شریف کے واسطے ہے۔ (۳) شیخ عبدالحق نے ترجمہ مشکوٰۃ میں فرمایا ہے پیغمبروں کی سب دعا مقبول نہیں ہوتی۔ (۴) خانقاہ اولیاء پر جمع نہ ہونا حدیث کا ثبوت دیتا ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا ہے یا اللہ ! میری قبر کو عید گاہ نہ بنائیو۔ (۵) اگر نبی کو غیب داں سمجھے تو کافر ہے کیونکہ ان کو علم عطائیہ ہے وہ غیب نہیں ہوسکتا کیونکہ غیب کے معنی یہ ہیں کہ بے اطلاع کیے معلوم ہو وہ غیب ہے۔

الجواب: (۱) جس نے کہا کہ دور سے سننا صرف اُس کی شان ہے اس نے رب عزوجل کی شان گھٹائی وہ پاک ہے اس سے کہ دور سے سنے، وہ ہر قریب سے قریب تر ہے، دور سے سننا اس کی عطا سے اس کے محبوبوں ہی کی شان ہے، اُسے حاضر و ناظر بھی نہیں کہہ سکتے، وہ شہید و بصیر ہے، حاضر و ناظر اس کی عطا سے اُس کے محبوب علیہ افضل الصلوٰۃ والسلام ہیں، کما فی رسائل الشیخ عبدالحق محدث الدہلوی قدس سرہ اس آیہ کریمہ سے اس کا کیا ثبوت

صفحہ 334/750

...it was a false claim and a slander against the Holy Quran, which is not the work of a Muslim. No one is the essential owner of benefit and harm except that Single Truth; the verse denies it for others. Otherwise, Shah Abdul Aziz has written in Tafsir-e-Azizi that even Pharaoh is the owner of benefit and harm. Then what to say of the beloved ones of the divine court? Undoubtedly, by His bestowal, they are the owners of our benefit and harm, the description of which from verses and Hadiths is in the book "Al-Amn wal-Ula".

(2) Rubbing the soil of shrines on the face is permissible, and tawaf of reverence is only for the honorable Kaaba, and Allah knows best.

(3) All the prayers of the Prophets (peace be upon them) are answered. There is a promise from the Honorable Presence to the believers, "Pray to Me, and I will accept," and His promise cannot be broken. Then the Prophets are Prophets; sometimes, to express that a matter is contrary to destiny, they present it in the form of a prayer. These are accepted in an exalted way, but the apparent desired outcome does not occur. To the outward eye, it is termed as non-acceptance. This is mentioned in the commentary of Mishkat.

(4) Visiting the shrines of saints is proven from the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) himself and the Rightly Guided Caliphs. There is no prohibition for it anywhere in this Hadith. Its meaning is that Muslims should not make my noble shrine an 'Eid' (festival) which comes only once a year, but rather visit frequently so that their sins are forgiven and they receive blessings, and Allah knows best.

(5) The 'Unseen' (Ghaib) is that which cannot be known without being told. Whoever says that the Prophets were not given the knowledge of the unseen is an infidel because he denies Prophethood. The leaders of the religion say:

| An-Nabiyyu huwal muttali'u 'alal ghaib[1] | The Prophet is the one who is informed about the unseen. |

To say they are not unaware of the unseen by [Allah's] bestowal is a denial of many verses that cannot be written on a card. And Allah knows best.

Issue 133 & 134: From Ramah, Tehsil Gujar Khan, District Rawalpindi, sent by Tajuddin, Imam of the Mosque. What do the scholars of religion say regarding these matters? (1) Hazrat Aisha Siddiqa (may Allah be pleased with her) said that the

Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) did not see Allah with his own eyes on the night of Meraj.

---

[1] Al-Mawahib al-Ladunniyyah, Al-Maqsad ath-Thani, Al-Fasl al-Awwal, Al-Maktab al-Islami Beirut, 2/47.

फ़तावा रज़विया जिल्द २९

...झूठा दावा करना और कुरान मजीद पर इसका इल्जाम लगाना मुसलमान का काम नहीं। नफा और नुकसान का असली मालिक उस एक हकीकी (ईश्वर) के अलावा कोई नहीं, आयत में इसी की मनाही है। वरना शाह अब्दुल अजीज साहब ने तफसीर-ए-अजीजी में तो फिरौन को भी नफा और नुकसान का मालिक लिखा है। फिर अल्लाह के महबूबों का क्या कहना, वे बेशक उसकी अता (दी हुई शक्ति) से हमारे नफा और नुकसान के मालिक हैं, जिसका बयान आयतों और हदीसों से किताब "अल-अम्न वल-उला" में है।

(२) मजारों की मिट्टी चेहरे पर मलना जायज है, और ताजीमी तवाफ सिर्फ काबा मुअज्जमा का है, और अल्लाह ताला सबसे बेहतर जानता है।

(३) अंबिया अलैहिमुस्सलाम की सभी दुआएं कबूल होती हैं। मोमिनों से अल्लाह का वादा है कि 'मुझसे दुआ करो, मैं कबूल फरमाऊंगा', और उसका वादा खिलाफ नहीं हो सकता। फिर अंबिया तो अंबिया हैं, कभी-कभी वे यह जाहिर करने के लिए कि यह मामला तकदीर के खिलाफ है, उसे दुआ की सूरत में जाहिर करते हैं। वे आला दर्जे पर कबूल होती हैं मगर जाहिरी मतलब हासिल नहीं होता, जाहिरी नजर उसे ना-कबूलियत कहती है। शराह मिश्कात में इसका जिक्र है।

(४) औलिया के मजारों पर जाना खुद हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और खुलफा-ए-राशिदीन से साबित है और हदीस में कहीं इसकी मनाही नहीं है। इसका मतलब यह है कि मुसलमान मेरे मजार-ए-करीम को ईद न बना लें जो साल में एक ही बार आती है, बल्कि कसरत से हाजिरी दें ताकि उनके गुनाह माफ हों और उन्हें बरकतें मिलें, और अल्लाह ताला सबसे बेहतर जानता है।

(५) गैब (अदृश्य) वह है जो बिना बताए मालूम न हो सके। जो कहे कि अंबिया को गैब का इल्म नहीं दिया गया वह काफिर है क्योंकि वह नबुवत का मुनकिर (इनकारी) है। आईम्मा-ए-दीन फरमाते हैं:

| 1 النبی ھو المطلع علی الغیب | नबी वही है जो गैब पर आगाह हो। |

अल्लाह की अता से गैब से वाकिफ न होना बहुत सी आयतों का झुठलाना है जिन्हें कार्ड पर नहीं लिखा जा सकता। और अल्लाह ताला सबसे बेहतर जानता है।

मसला १३३ और १३४: मुकाम रामा, तहसील गुजर खान, जिला रावलपिंडी, प्रेषक ताजउद्दीन, इमाम मस्जिद। उलमा-ए-दीन इन मसलों में क्या फरमाते हैं कि: (१) हजरत आयशा सिद्दीका रज़ियल्लाहु

तआला अन्हा ने फरमाया है कि हजरत सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने मेराज की रात में अपनी आंखों से अल्लाह तआला को नहीं देखा।

---

1 अल-मवाहिब अल-लदुन्निया, अल-मक़सद अत्तनी, अल-फ़स्ल अल-अव्वल, अल-मक़्तब अल-इस्लामी बेरुत, २/४७।

ہوا، جھوٹا دعوی کرنا اور قرآن مجید پر اس کی تہمت رکھنا مسلمان کا کام نہیں، نفع و ضرر کا مالک بالذات اُس واحد حقیقی کے سوا کوئی نہیں، آیت میں اسی کی نفی ہے، ورنہ شاہ عبدالعزیز صاحب نے تفسیر عزیزی میں تو فرعون کو مالک نفع و ضرر لکھا ہے۔ پھر محبوبانِ بارگاہ کا کیا کہنا وہ بے شک اس کی تملیک سے ہمارے نفع و ضرر کے مالک ہیں، جس کا بیان آیات و احادیث سے کتاب الامن والعلیٰ میں ہے۔

(۲) مزارات کی مٹی منہ پر ملنا جائز ہے، اور طواف تعظیمی صرف کعبہ معظمہ کا ہے، واللہ تعالیٰ اعلم۔

(۳) انبیاء علیہم الصلوٰۃ والسلام کی سب دُعائیں مستجاب ہیں، مومنین سے حضرت عزت کا وعدہ ہے مجھ سے دعا کرو میں قبول فرماؤں گا، اور اس کا وعدہ خلاف نہیں ہو سکتا، پھر انبیاء تو انبیاء بعض وقت وہ اس اظہار کے لیے کہ یہ امر خلاف مقدر ہے اسے صورتِ دعا میں ظاہر کرتے ہیں وہ اعلیٰ وجہ پر قبول ہوتی ہیں مگر مطلوب ظاہری واقع نہیں ہوتا نظرِ ظاہر اسے عدم قبول سے تعبیر کرتی ہے، شرح مشکوٰۃ میں اسی کا ذکر ہے۔

(۴) مزارات اولیاء پر تشریف لے جانا خود حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم و خلفائے راشدین سے ثابت ہے اور اس حدیث میں اس کی کہیں ممانعت نہیں، اس کا یہ مطلب ہے کہ میرے مزار کریمہ کو مسلمان عید نہ بنائیں جو سال میں ایک ہی بار آتی ہے بلکہ بکثرت حاضری دیں کہ ان کے گناہ معاف ہوں اور انہیں برکات ملیں، واللہ تعالیٰ اعلم۔

(۵) غیب وہ ہے کہ بے بتائے معلوم نہ ہو سکے، جو کہے کہ انبیاء کو غیب کے علم نہ دیئے گئے وہ کافر ہے کہ نبوت کا منکر ہے، ائمہ دین فرماتے ہیں:

| النبی ھو المطلع علی الغیب 1 | نبی وہی ہے جو غیب پر مطلع ہو۔ |

عطاسے غیب نہ رہنا آیات کثیرہ کی تکذیب ہے جو کارڈ پر نہیں لکھی جاسکتیں۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۱۳۳ و ۱۳۴: از مقام رامہ تحصیل گوجر خان ضلع راولپنڈی مرسلہ تاج الدین امام مسجد کیا فرماتے ہیں علمائے دین ان مسائل میں کہ۔ (۱) حضرت عائشہ صدیقہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا نے فرمایا ہے کہ حضرت صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے معراج کی رات میں بچشمِ خود اللہ تعالیٰ کو نہیں دیکھا۔

---

1 المواہب اللدنیہ المقصد الثانی الفصل الاول المکتب الاسلامی بیروت ۲/ ۴۷

Fatawa Ridawiyya Volume 29

(2) No Hadith or verse has come in such a way that says you must follow the school of thought (Madhhab) of the Imam. Explain it, and you will be rewarded. (T)

The Answer: (1) Umm al-Mu'minin Siddiqah (may Allah be pleased with her) denies vision (of Allah) in the sense of encompassing (Ahata), citing the verse "Vision perceives Him not" (Al-An'am 6:103). In the authentic Hadiths, the affirmation of vision is not in the sense of encompassing, for nothing can encompass Allah Almighty; He encompasses everything. And affirmation takes precedence over negation. Allah Almighty knows best. (2) The Hadith and verse have come in this way: if you do not know, ask the scholars. Imam-e-Azam (Abu Hanifa) is among the leaders of the scholars. Allah Almighty knows best.

Problem 135 & 136: From Lahore, Begum Shahi Mosque, Inside Masti Gate, sent by Sufi Ahmaduddin, a student, 26 Safar 1338 AH. O Guide and Leader of the seekers, Qibla of both worlds, may his grace endure, peace be upon you and the mercy of Allah and His blessings. What does the Honorable Master say about the following matters: (1) Hazrat Ali (may Allah Almighty ennoble his countenance) once became angry with Hazrat Amir Muawiya (may Allah be pleased with him), and the Rawafid (Shia) say this is the reason for him being a rebel. Furthermore, there is a book titled 'I'tiqad Nama' authored by Maulana Haji Sahib, which is taught to children, in which this couplet is also included:

Haq dar aanja badast-e-Haider bood / Jang ba o khata-o-munkar bood (Truth there was in the hands of Haider-e-Karrar (may Allah be pleased with him); fighting against him was a mistake and undesirable.)

(2) Imam Hasan (may Allah be pleased with him) handed over the Caliphate to Amir Muawiya (may Allah be pleased with him) to prevent war.

The Answer: (1) The statement of the Rawafid is sheer lies. In 'Aqaid Nama', it is not 'khata-o-munkar bood' but 'khata-e-munkar bood'. According to the Ahl-e-Sunnat, the mistake of Amir Muawiya (may Allah be pleased with him) was an error of judgment (Ijtihadi mistake). Censuring someone for Ijtihad is not permissible. Ijtihadi error is of two types: 'Muqarrar' and 'Munkar'. 'Muqarrar' is that whose owner is maintained upon it...

---

[1] Al-Quran al-Karim 6/103 Page 336 of 750

फ़तावा रज़विया, जिल्द 29

(2) हदीस और आयत इस तरह नहीं आई कि तुम लोग इमाम साहब के मज़हब पर चलें। बयान फरमाइए, आपको अज्र (पुण्य) दिया जाएगा। (त)

जवाब: (1) उम्मुल मोमिनीन सिद्दीक़ा (रज़ियल्लाहु अन्हा) रुय्यत (दीदार) का अर्थ 'अहाता' (घेरना) के मायने में इनकार फरमाती हैं और "ला तुद्रिकुहुल अब्सार" (दृष्टियाँ उसे नहीं पा सकतीं) से दलील लाती हैं। सही हदीसों में रुय्यत का प्रमाण 'अहाता' के मायने में नहीं है, क्योंकि अल्लाह तआला को कोई चीज़ घेर नहीं सकती, वही हर चीज़ को घेरे हुए है। और प्रमाण निषेध पर प्रधान है। अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (2) हदीस और आयत इस तरह आई है कि अगर तुम्हें ज्ञान न हो तो उलेमा (विद्वानों) से पूछो। इमाम-ए-आज़म (अबू हनीफ़ा) उलेमा के सरदारों में शामिल हैं। अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 135 व 136: लाहौर, बेगम शाही मस्जिद, अंदरून मस्ती दरवाज़ा, प्रेषक सूफी अहमद उद्दीन, विद्यार्थी, 26 सफ़र 1338 हिजरी। हज़रत हादी व रहनुमा-ए-सालिकान, क़िबला-ए-दो जहाँ, दाम फ़ैज़हुम, अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातहु। निम्नलिखित मसलों में हज़रत क्या फरमाते हैं: (1) हज़रत अली (कर्रमल्लाहु वज्हहुल करीम) एक दिन हज़रत अमीर मुआविया (रज़ियल्लाहु अन्हु) पर नाराज़ हुए, और रवाफिज़ (शिया) कहते हैं कि यही उनके बागी होने का कारण है। फिर मौलाना हाजी साहब की लिखी एक किताब 'एतिक़ाद नामा' है जो बच्चों को पढ़ाई जाती है, उसमें यह शेर भी दर्ज है:

हक़ दर आँजा बदस्त-ए-हैदर बूद / जंग बा ओ ख़ता-ओ-मुनकर बूद (सत्य वहाँ हैदर-ए-कर्रार (रज़ि.) के हाथ में था; उनके साथ युद्ध करना गलत और अरुचिकर था।)

(2) इमाम हसन (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने जंग रोकने के लिए खिलाफत अमीर मुआविया (रज़ियल्लाहु अन्हु) के सुपुर्द की थी।

जवाब: (1) रवाफिज़ का कहना निरा झूठ है। 'अक़ायद नामा' में 'ख़ता-ओ-मुनकर बूद' नहीं है बल्कि 'ख़ता-ए-मुनकर बूद' है। अहल-ए-सुन्नत के नज़दीक अमीर मुआविया (रज़ियल्लाहु अन्हु) की गलती 'ख़ता-ए-इज्तिहादी' (निर्णय की त्रुटि) थी। इज्तिहाद पर ताना देना जायज़ नहीं है। ख़ता-ए-इज्तिहादी दो प्रकार की होती है: 'मुक़र्रर' और 'मुनकर'। मुक़र्रर वह है जिसके करने वाले को उस पर बरकरार...

[1] अल-कुरआन अल-करीम 6/103 पृष्ठ 336 / 750

(۲) حدیث اور آیت اس طور پر نہیں آئی کہ تم لوگ امام صاحب کے مذہب پر چلیں۔ بَیِّنُوْا تُؤْجَرُوْا (بیان فرمائیے اجر دیئے جاؤ گے۔ت)

الجواب: (۱) ام المؤمنین صدیقہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا رؤیت بمعنی احاطہ کا انکار فرماتی ہیں کہ "لَا تُدْرِکُہُ الْاَبْصَارُ" سے سند لاتی ہیں اور احادیث صحیحہ میں رؤیت کا اثبات بمعنی احاطہ نہیں کہ اللہ عزوجل کو کوئی شے محیط نہیں ہو سکتی وہی ہر شے کو محیط ہے اور اثبات نفی پر مقدم، واللہ تعالیٰ اعلم۔ (۲) حدیث اور آیت اس طور پر آئی ہے کہ تمہیں علم نہ ہو تو علماء سے پوچھو۔ امام اعظم سردارانِ علماء میں داخل ہیں۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۱۳۵ و ۱۳۶: از لاہور مسجد بیگم شاہی اندرون دروازہ مستی مرسلہ صوفی احمد الدین طالب علم ۲۶ صفر ۱۳۳۸ھ حضرت ہادی و رہنمائے سالکاں قبلہ دو جہاں دام فیضہ السلام علیکم ورحمۃ اللہ وبرکاتہ مسائل ذیل میں حضرت کیا فرماتے ہیں۔ (۱) حضرت علی کرم اللہ تعالیٰ وجہہ الکریم حضرت امیر معاویہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ پر ایک روز خفا ہوئے، اور روافض کہتے ہیں یہی وجہ ہے باغی ہونے کی، پھر ایک کتاب مولانا حاجی صاحب کی تصنیف اعتقاد نامہ ہے جو بچوں کو پڑھایا جاتا ہے اس میں یہ شعر بھی درج ہے:

حق در آنجا بدستِ حیدر بود / جنگ با او خطا و منکر بود (حق وہاں حیدر کرار رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے ہاتھ میں تھا ان کے ساتھ جنگ غلط اور ناپسندیدہ تھی)

(۲) امام حسن رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے خلافت امیر معاویہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے سپرد کی تھی واسطے دفع جنگ کے۔

الجواب: (۱) روافض کا قول کذبِ محض ہے، عقائد نامہ میں خطا و منکر بود نہیں ہے بلکہ خطائے منکر بود۔ اہل سنت کے نزدیک امیر معاویہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی خطا خطائے اجتہادی تھی، اجتہاد پر طعن جائز نہیں، خطائے اجتہادی دو قسم ہے، 'مقرر و منکر، مقرر وہ جس کے صاحب کو اس پر برقرار

---

۱ القرآن الکریم ۶/ ۱۰۳ Page 336 of 750

It will be maintained and not interfered with, just as for the Hanafis, a follower of the Shafi'i school reciting Surah al-Fatiha behind the Imam; and 'munkar' (evil) is that which will be objected to when it causes a fitna (strife) to arise, such as the eminent companions of the Battle of the Camel, may Allah be pleased with them. Their number is definitive, and their error was certainly 'ijtihadi' (due to independent legal reasoning) in which no person claiming to be a Sunni has the right to speak out. Nor was it mandatory to object to this, as the Commander of the Faithful, Mawla Ali, may Allah the Almighty honor his face, did. Meddling in the rest of the disputes of the Companions, may Allah be pleased with them, is forbidden. In a Hadith, the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) says:

When my companions are mentioned, then hold your tongues.[1]	*Idha dhukira as-habi fa-amsiku.*

In another Hadith, he (peace and blessings of Allah be upon him) says:

There will be a slip by my companions after me which Allah will forgive them because of their precedence (in Islam). Then after them, a people will come whom Allah will throw face-first into the Fire.[2]	*Satakunu li-as-habi ba'di zallatun yaghfiruhallahu lahum li-sabiqatihim thumma ya'ti mim ba'dihim qawmun yakubbuhumullahu 'ala manakhirihim fin-nar.*

These are those who will criticize the Companions because of those slips. Allah the Almighty has categorized all the Companions of the Master of the World (peace and blessings of Allah be upon him) into two types in the Great Quran:

(1) Believers before the conquest of Mecca and believers after the conquest. He gave preference to the former over the latter and clearly stated, "And to all, Allah has promised good."[3] Allah has promised goodness to all of them. And at the same time, He silenced those who scrutinize their actions, saying, "And Allah is aware of what you do."[4] Allah knows well whatever you are going to do; despite that, He has already promised goodness to all of you. Then who else is there to criticize any of their matters? Allah is the Guide, and Allah the Almighty knows best. (2) Verily, Imam al-Mujtaba (Hasan ibn Ali), may Allah be pleased with him, handed over the Caliphate to Amir Muawiya, may Allah be pleased with him.

---

1. Al-Mu'jam al-Kabir, Hadith 4741, Al-Maktabah al-Faysaliyyah, Beirut, 2/96

2. Al-Mu'jam al-Awsat, Hadith 3243, Maktabat al-Ma'arif, Riyadh, 4/124; and Majma' al-Zawa'id, 7/234
3. Al-Qur'an al-Karim, 57/10
4. Al-Qur'an al-Karim, 57/10

जिल्द २९ फ़तावा रज़विया

इसे बरकरार रखा जाएगा और इसमें हस्तक्षेप नहीं किया जाएगा, जैसे कि हनफियों के नज़दीक शाफ़ई संप्रदाय के अनुयायी का इमाम के पीछे सूरह फातिहा पढ़ना; और 'मुनकर' (बुराई) वह है जिस पर तब आपत्ति की जाएगी जब उसके कारण कोई फितना (विवाद) पैदा हो, जैसे जमल के युद्ध के महान साथी, अल्लाह उन पर प्रसन्न हो। उनकी संख्या निश्चित है, और उनकी गलती निश्चित रूप से 'इज्तिहादी' (स्वतंत्र कानूनी तर्क के कारण) थी, जिसमें किसी भी सुन्नी कहलाने वाले व्यक्ति के लिए ज़ुबान खोलने की कोई जगह नहीं है। और न ही इस पर आपत्ति करना अनिवार्य था जैसा कि अमीरुल मोमिनीन मौला अली (अल्लाह उनके मुख को सम्मानित करे) ने किया था। सहाबा (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) के बाकी विवादों में हस्तक्षेप करना हराम है। हदीस में है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं:

जब मेरे सहाबा का ज़िक्र आए, तो अपनी ज़बान रोको।[1] इज़ा ज़ुक़िरा अस्-हाबी फ़अमसिकू

दूसरी हदीस में आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं:

करीब है कि मेरे सहाबा से कुछ चूक होगी जिसे अल्लाह उनके पिछले (इस्लाम में योगदान) के कारण माफ़ कर देगा। फिर उनके बाद कुछ ऐसे लोग आएंगे जिन्हें अल्लाह ताला नाक के बल जहन्नुम में औंधा कर देगा।[2]

सतकूनु लि-अस्-हाबी बअ्दी ज़ल्लतुन यग़्फ़िरुहुल्लाहु लहुम लि-साबीक़तिहिम सुम्मा यअ्ती मिम बअ्दिहिम क़ौमुन यकुब्बुहुमुल्लाहु अला मनाख़िरिहिम फ़िन-नार

ये वे लोग हैं जो इन चूकों के कारण सहाबा पर आक्षेप करेंगे। अल्लाह अज़्वजल ने कुरआन अज़ीम में सैय्यद आलम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के तमाम सहाबा को दो श्रेणियों में बांटा है:

(१) मक्का की जीत से पहले के मोमिन और जीत के बाद के मोमिन। पहले वालों को दूसरे वालों पर श्रेष्ठता दी और स्पष्ट रूप से फरमाया, "और अल्लाह ने सभी से भलाई का वादा किया है।"[3] अल्लाह ने उन सभी से भलाई का वादा फरमा लिया। और साथ ही उनके कार्यों की जांच-पड़ताल करने वालों का मुंह बंद फरमा दिया, "और अल्लाह उससे वाकिफ़ है जो तुम करते हो।"[4] अल्लाह अच्छी तरह जानता है जो कुछ तुम करने वाले हो; इसके बावजूद वह तुम सबसे भलाई का वादा फरमा चुका है। फिर दूसरा कौन है जो उनमें से किसी की बात पर आक्षेप करे? अल्लाह मार्गदर्शक है, और अल्लाह

बेहतर जानता है। (२) बेशक इमाम मुजतबा (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने अमीर मुआविया (रज़ियल्लाहु अन्हु) को खिलाफत सौंप दी थी।

---

1. अल-मुअ्जम अल-कबीर, हदीस ४७४१, अल-मकतबा अल-फ़ैसलिया, बैरुत, २/९६
2. अल-मुअ्जम अल-औसत, हदीस ३२४३, मकतबा अल-मआरिफ़, रियाद, ४/१२४; और मजमा अल-ज़वाइद, ७/२३४
3. अल-कुरआन अल-करीम, ५७/१०
4. अल-कुरआन अल-करीम, ५७/१०

رکھا جائے گا اور اس سے تعرض نہ کیا جائے گا، جیسے حنفیہ کے نزدیک شافعی المذہب مقتدی کا امام کے پیچھے سورہ فاتحہ پڑھنا، اور منکر وہ جس پر انکار کیا جائے گا جب کہ اس کے سبب کوئی فتنہ پیدا ہوتا ہو جیسے اجلہ اصحاب جمل رضی اللہ تعالیٰ عنہم کہ قطعی جتنی ہیں اور ان کی خطاء یقیناً اجتہادی جس میں کسی نام سنیت لینے والے کو محل لب کشائی نہیں، یا یہ نہ اس پر انکار لازم تھا جیسا امیر المؤمنین مولیٰ علی کرم اللہ تعالیٰ وجہہ الکریم نے کیا باقی مشاجراتِ صحابہ رضی اللہ تعالیٰ عنہم میں مداخلت حرام ہے، حدیث میں ہے نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں:

جب میرے صحابہ کا ذکر آئے تو زبان روکو۔[1] اذا ذکر اصحابی فامسکوا

دوسری حدیث میں ہے فرماتے ہیں صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم :

قریب ہے کہ میرے اصحاب سے کچھ لغزش ہوگی جسے اللہ بخش دے گا اس سابقہ کے سبب جو ان کو میری سرکار میں ہے پھر ان کے بعد کچھ لوگ آئیں گے جن کو اللہ تعالیٰ ناک کے بل جہنم میں اوندھا کر دے گا۔[2] ستکون لاصحابی بعد زلة یغفرها اللہ لهم لسابقتهم ثم یاتی من بعد هم قوم یکبهم اللہ علی مناخرهم فی النار

یہ وہ ہیں جو ان لغزشوں کے سبب صحابہ پر طعن کریں گے، اللہ عزوجل نے تمام صحابہ سید عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کو قرآن عظیم میں دو قسم کیا:

(۱) مؤمنین قبل فتح مکہ و مؤمنین بعد فتح۔ اول کو دوم پر تفضیل دی اور صاف فرمادیا "وَكُلًّا وَعَدَ اللَّهُ الْحُسْنَىٰ" ۳۔ سب سے اللہ نے بھلائی کا وعدہ فرمالیا۔ اور ساتھ ہی ان کے افعال کی تفتیش کرنے

والوں کا منہ بند فرمادیا "وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ط" ۴۔ اللہ خوب جانتا ہے جو کچھ تم کرنے والے ہو، باینہ وہ تم سب سے بھلائی کا وعدہ فرما چکا پھر دوسرا کون ہے کہ ان میں سے کسی کی بات پر طعن کرے، واللہ الہادی، واللہ تعالیٰ اعلم (۲) بے شک امام مجتبیٰ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے امیر معاویہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کو خلافت سپرد فرمائی۔

۱۔ المعجم الکبیر حدیث ۴۷۴۱ المکتبۃ الفیصلیۃ بیروت ۲/ ۹۶ ۲۔ المعجم الاوسط حدیث ۳۲۴۳ مکتبۃ المعارف ریاض ۴/ ۱۲۴ و مجمع الزوائد ۷/ ۲۳۴ ۳۔ القرآن الکریم ۵۷/ ۱۰ ۴۔ القرآن الکریم ۵۷/ ۱۰

Fatawa Razawiya Volume 29

And by this, reconciliation and cessation of war were intended, and this reconciliation and handover of the caliphate were in accordance with the liking of Allah and His Messenger. The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) took Imam Hasan in his lap and said:

[Arabic]: "Indeed, this son of mine is a leader (Sayyid), and perhaps Allah will bring about peace through him between two great groups of Muslims." [1] [Urdu Translation]: "This son of mine is a Sayyid (leader), I hope that Allah will bring about reconciliation between two large groups of Muslims because of him."

If Amir Muawiya (may Allah be pleased with him) were not worthy of the caliphate, Imam Mujtaba (Hasan) would never have handed it over to him, nor would Allah and His Messenger have deemed it permissible. And Allah Almighty knows best.

---

1. Sahih al-Bukhari, Kitab al-Manaqib, virtues of al-Hasan and al-Husayn, Qadimi Kutub Khana Karachi, 1/530; Mishkat al-Masabih, Chapter on the virtues of the People of the Prophet's House (peace and blessings of Allah be upon him), Matba' Mujtabai Delhi, p. 569.

और इससे सुलह और युद्ध विराम का उद्देश्य था, और यह सुलह और खिलाफत का सौंपना अल्लाह और उसके रसूल की पसंद के अनुसार था। अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने इमाम हसन को अपनी गोद में लिया और फ़रमाया:

[अरबी]: "बेशक मेरा यह बेटा सैय्यद है और शायद अल्लाह इसके ज़रिए मुसलमानों के दो बड़े समूहों के बीच सुलह करा दे।" [1] [उर्दू अनुवाद]: "मेरा यह बेटा सैय्यद है, मैं उम्मीद करता हूँ कि अल्लाह इसके कारण मुसलमानों के दो बड़े समूहों में सुलह करा देगा।"

अगर अमीर मुआविया (रज़ियल्लाहु अन्हु) खिलाफत के योग्य न होते, तो इमाम मुज्तबा (हसन) उन्हें कभी भी इसे नहीं सौंपते, और न ही अल्लाह और उसके रसूल इसे जायज़ ठहराते। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

---

1. सहीह अल-बुखारी, किताब अल-मनाकिब, अल-हसन और अल-हुसैन के गुण, कदीमी कुतुब खाना कराची, 1/530; मिश्कात अल-मसाबीह, नबी के घर वालों के गुणों का अध्याय (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम), मतबा मुज्तबाई दिल्ली, पृष्ठ 569।

اور اس سے صلح و بندش جنگ مقصود تھی اور یہ صلح و تفویض خلافت اللہ و رسول کی پسند سے ہوئی۔ رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے امام حسن کو گود میں لے کر فرمایا تھا :

ان ابنی ھذا سید ولعل اللہ ان یصلح بہ بین فئتین عظمتین من المسلمین۔ 1 میرا یہ بیٹا سید ہے میں امید کرتا ہوں کہ اللہ اس کے سبب سے مسلمانوں کے دو بڑے گروہوں میں صلح کرادے گا۔

امیر معاویہ رضی اللہ تعالٰی عنہ اگر خلافت کے اہل نہ ہوتے تو امام مجتبٰی ہر گز انہیں تفویض نہ فرماتے نہ اللہ و رسول اسے جائز رکھتے واللہ تعالٰی اعلم۔

---

1 صحیح البخاری کتاب المناقب مناقب الحسن والحسین قدیمی کتب خانہ کراچی ۱ / ۵۳۰، مشکوۃ المصابیح باب مناقب اہل بیت النبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم مطبع مجتبائی دہلی ص ۵۶۹

Fatawa Rizwia Volume 29

Treatise Itiqad al-Ahbab fi al-Jamil wa al-Mustafa wa al-Aal wa al-Ashab (1298 AH) (Belief of friends concerning the Beautiful [Allah Almighty], al-Mustafa [blessings and peace of Allah Almighty be upon him], his progeny and companions)

First Belief: _____ Regarding the Essence and Attributes of Allah Almighty

The Honorable, Glorified, Blessed, and Exalted One is One. (In His Lordship and Divinity, He has no partner. He is unique in His actions; He alone created the creation. He is alone in His Essence; there is no divider for Him. He is unique in His attributes; there is none like Him. He is unique and one in Essence and Attributes, but) [12] not by number (that He can be counted, and if another like Him or of His kind could be called 'with Allah', His...)

[12]: Note by the compiler: When this humble servant was first honored with the sight and study of the blessed treatise "Itiqad al-Ahbab" by the Imam of the Ahl-e-Sunnat, Imam Ahmad Raza Khan Qadri Barkati Barelvi (may his secret be sanctified), the thought immediately occurred that by the grace of Allah, it should be brought to the general public with a new arrangement and concise detail so that, God willing, the common people may also benefit. Relying on divine help, I have taken this step, and with the blessings of honorable teachers, exceedingly... (continued on the next page)

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

रिसाला इतिक़ाद अल-अहबाब फ़िल जमील वल मुस्तफ़ा वल आल वल असहाब (1298 हिजरी)
(अहबाब का अक़ीदा जमील [अल्लाह तआला], मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम, आपकी आल और असहाब के बारे में)

अक़ीदा अव्वल: _____ ज़ात व सिफ़ात-ए-बारी तआला के बारे में

हज़रत हक़ सुब्हानहू व तबारक व तआला शानुहू वाहिद है। (अपनी रुबूबियत व उलूहीयत में, कोई उसका शरीक नहीं, वह यकता है अपने अफ़आल में, मसनूआत को तन्हा उसी ने बनाया। वह अकेला है अपनी ज़ात में कोई उसका क़सीम नहीं। बेगाना है अपनी सिफ़ात में। कोई उसका शबीह नहीं। ज़ात व सिफ़ात में यकता व वाहिद मगर) [12] न अदद से (कि शुमार व गिनती में आ सके और कोई उसका हम सानी व जिंस कहला सके तो अल्लाह के साथ, उसकी...)

[12]: अरज़े मुर्तब (संकलनकर्ता का कथन): इमाम-ए-अहले सुन्नत इमाम अहमद रज़ा ख़ान साहब क़ादरी बरकाती बरेलवी (क़ुद्दसा सिर्रहु) के रिसाला-ए-मुबारका "इतिक़ाद अल-अहबाब" की ज़ियारत व मुताला से यह फ़क़ीर जब पहली बार हाल ही में शरफ़याब हुआ तो मआ' ख्याल आया कि ब-तौफ़ीक़-ए-तआला इसे नई तरतीब और इजमाली तफ़सील के साथ आम-ए-नासा तक पहुँचाया जाए तो इंशा अल्लाह तआला इससे अवाम भी फ़ैज़ पाएँ। नुसरत-ए-इलाही के भरोसे पर क़दम उठाया और ब-फ़ैज़ान-ए-असातिज़ा-ए-कराम निहायत... (बाक़ी अगले सफ़हे पर)

पृष्ठ 750 में से 340

فتاویٰ رضویہ جلد ۲۹

رسالہ اعتقاد الاحباب فی الجمیل والمصطفی والآل والاصحاب ۱۲۹۸ھ (احباب کا اعتقاد جمیل (اللہ تعالی)، مصطفی صلی اللہ تعالی علیہ وسلم ، آپ کی آل اور اصحاب کے بارے میں)

عقیدہ اولیٰ ____ ذات و صفات باری تعالی

حضرت حق سبحانہ و تبارک و تعالی شانہ واحد ہے۔ (اپنی ربوبیت والوہیت میں، کوئی اس کا شریک نہیں، وہ یکتا ہے اپنے افعال میں ، مصنوعات کو تنہا اسی نے بنایا۔ وہ اکیلا ہے اپنی ذات میں کوئی اس کا قسیم نہیں۔ بیگانہ ہے اپنی صفات میں۔ کوئی اس کا شبیہ نہیں۔ ذات و صفات میں یکتا و واحد مگر) ۱۲ نہ عدد سے (کہ شمار و گنتی میں آسکے اور کوئی اس کا ہم ثانی و جنس کہلا سکے تو اللہ کے ساتھ ، اس کی

۱۲: عرضِ مرتب: امام اہلسنت امام احمد رضا خاں صاحب قادری برکاتی بریلوی قدس سرہ کے رسالہ مبارکہ اعتقاد الاحباب کی زیارت و مطالعہ سے یہ فقیر جب پہلی بار حال ہی میں شرفیاب ہوا تو معاً خیال آیا کہ بتوفیقہ تعالیٰ اسے نئی ترتیب اور اجمالی تفصیل کے ساتھ عامۃ الناس تک پہنچایا جائے توان شاء اللہ تعالیٰ اس سے عوام بھی فیض پائیں۔ نصرت الہی کے بھر و سا پر قدم اٹھایا اور بفیضانِ اساتذہ کرام نہایت (باقی بر صفحہ آئندہ)

Fatawa Razawiyya Volume 29

(The existence of a partner in [His] Essence and Attributes is merely an invention and creation of human imagination.) He is the Creator. (Everything, whether entities or actions, are all created by Him.) Not through a cause (His actions are not in need of cause and means, nor is there any underlying motive for His actions; for motive refers to that benefit which returns to the doer. Nor is there an ultimate purpose for His actions, as the essence of an ultimate purpose is also that same motive). He is the Doer (He who always does whatever He wills) not through limbs (and tools) (whereas man is dependent upon his limbs, i.e., bodily organs, in every task. For example, the heart and brain for knowledge; eyes and ears for seeing and hearing. However, the Holy Lord hears even the lowest of sounds and sees even the smallest [particle] that cannot be perceived by a microscope; but His hearing and seeing is not through ears or eyes, nor is His speech through a tongue, as these are all physical bodies. And He is pure from body and physicality.) He is Near. (Through His perfect power, knowledge, and mercy) not (by) distance (that His proximity could be contained in measurement and scale). He is the Sovereign (the King and Emperor of the earth and heaven) but without a minister (unlike the worldly kings who have astute ministers to bear their burdens and assist them in state affairs).

(Remaining part of the footnote from the previous page) I was graced with success in a short period despite my preoccupations. To what extent I have succeeded in my objective, you will decide; and if my lack of understanding or deficiency in knowledge occurs to your noble mind, then please inform this insignificant one about it. And in expressing this reality, this humble servant feels pride that whatever you find in this blessed treatise in the interlinear notes and explanation of the text (which is separate from the original text, confined within parentheses, and the original text is underlined), it is mostly extracted and selected from the books and treatises of Ala Hazrat (may his secret be sanctified) himself and the world-renowned book 'Bahar-e-Shariat' by my teacher and the master of scholars, Sadr al-Shari'ah Maulana al-Shah Amjad Ali Qadri Barkati Ridawi Azmi (may Allah have mercy upon him). It is hoped that the honorable readers will continue to remember this humble servant in their pious prayers, as the journey to the Hereafter is ahead and this humble servant is empty-handed and empty-pocketed; there is only their support, and God-willing, they will rectify my poor state, for I have spent all my earnings in faults.

Wassalam, The servant Muhammad Khalil Khan Qadri al-Barkati al-Marehravi (may he be forgiven).

फतावा रज़विया जिल्द 29

(ज़ात और सिफ़ात में शरीक का वजूद, महज़ मानवीय कल्पना की एक ईजाद है) वह रचयिता है। (हर चीज़, चाहे वह सत्ता हो या कार्य, सब उसी के बनाए हुए हैं) न कि किसी कारण से (उसके कार्य कारण और हेतु के मोहताज नहीं हैं, न ही उसके कार्य का कोई स्वार्थ है; क्योंकि स्वार्थ उस लाभ को कहते हैं जो कर्ता की ओर लौटे। और न ही उसके कार्यों का कोई अंतिम प्रयोजन है, क्योंकि अंतिम प्रयोजन का सार भी वही स्वार्थ है)। वह सक्रिय है (जो सदैव वही करता है जो वह चाहता है) अंगों (और साधनों) के बिना (जबकि मनुष्य अपने प्रत्येक कार्य में अपने अंगों अर्थात् शारीरिक अवयवों का मोहताज है। उदाहरण के लिए, ज्ञान के लिए हृदय और मस्तिष्क; देखने और सुनने के लिए आँख और कान। किंतु पवित्र ईश्वर अत्यंत धीमी ध्वनि को भी सुनता है और सूक्ष्म से सूक्ष्म चीज़ को भी देखता है जिसे सूक्ष्मदर्शी से भी महसूस न किया जा सके, परंतु उसका सुनना और देखना कान या आँख के माध्यम से नहीं है, और न ही उसकी वाणी जिह्वा से है, क्योंकि ये सभी भौतिक शरीर हैं। और वह शरीर और शारीरिकता से पवित्र है।) वह निकट है। (अपनी पूर्ण शक्ति, ज्ञान और करुणा के माध्यम से) न कि दूरी (से) (कि उसकी निकटता माप और तौल में समा सके)। वह साम्राज्य (पृथ्वी और आकाश का सुल्तान और सम्राट) है, परंतु बिना किसी मंत्री के(जैसे दुनिया के सुल्तानों के पास बुद्धिमान मंत्री होते हैं जो उनके शासन के कार्यों में उनका बोझ उठाते हैं और सहायता करते हैं)।

(पिछले पृष्ठ के हाशिये का शेष) अपनी व्यस्तताओं के बावजूद थोड़े ही समय में सफलता प्राप्त हुई। मैं अपने उद्देश्य में किस सीमा तक सफल हुआ हूँ, इसका निर्णय आप करेंगे; और यदि मेरी समझ की कमी और ज्ञान का अभाव आपके पावन विचार में आए, तो इस तुच्छ व्यक्ति को उससे अवगत कराएँ। और इस सत्य को प्रकट करने में यह विनम्र सेवक गर्व अनुभव करता है कि इस धन्य पुस्तिका में पंक्तियों के बीच के हाशिये और अर्थों की व्याख्या (जो मूल पाठ से अलग कोष्ठक में सीमित है, और मूल पाठ रेखांकित है) में आप जो कुछ भी पाएँगे, वह अधिकांशतः स्वयं आला हज़रत (क़ुद्दिस सिर्रहु) की पुस्तकों और पुस्तिकाओं, तथा मेरे शिक्षक और विद्वानों के उस्ताद सदरुश्शरिया मौलाना अल-शाह अमजद अली कादरी बरकाती रज़वी आज़मी (रहमतुल्लाह अलैह) की विश्व प्रसिद्ध पुस्तक 'बहार-ए-शरीअत' से उद्धृत और संकलित है। आशा है कि माननीय पाठक इस विनम्र सेवक को अपनी मंगल कामनाओं में याद रखेंगे क्योंकि परलोक की यात्रा सम्मुख है और यह सेवक खाली हाथ और खाली झोली है; बस उन्हीं का सहारा है और ईश्वर ने चाहा तो वे ही मेरी बिगड़ी बनाएँगे, अन्यथा मैंने तो अपनी सारी कमाई बुराइयों में ही गँवा दी है।

वस्सलाम, सेवक मुहम्मद खलील खाँ कादरी अल-बरकाती अल-मारेहरवी (क्षम्य)।

पेज 341/750

ذات و صفات میں، شریک کا وجود، محض وہمِ انسانی کی ایک اختراع وایجاد ہے) خالق ہے۔ (ہر شے کا، ذوات ہوں خواہ افعال، سب اسی کے پیدا کئے ہوئے ہیں) نہ علت سے (اس کے افعال نہ علت و سبب کے محتاج، نہ اس کے فعل کے لیے کوئی غرض، کہ غرض اس فائدہ کو کہتے ہیں جو فاعل کی طرف رجوع کرے اور نہ اس کے افعال کے لیے غایت، کہ غایت کا حاصل بھی وہی غرض ہے۔ فعال ہے (ہمیشہ جو چاہے کر لینے والا) نہ جوارح (وآلات) سے (جب کہ انسان اپنے ہر کام میں اپنے جوارح یعنی اعضائے بدن کا محتاج ہے۔ مثلاً علم کے لیے دل و دماغ کا۔ دیکھنے اور سننے کے لیے آنکھ، کان کا، لیکن خداوند قدوس کہ ہر پست سے پست آواز کو سنتا اور ہر باریک سے باریک کو کہ خوردبین سے محسوس نہ ہو دیکھتا ہے، مگر کان آنکھ سے اس کا سننا دیکھنا اور زبان سے کلام کرنا نہیں کہ یہ سب اجسام ہیں۔ اور جسم و جسمانیت سے وہ پاک) قریب ہے۔ (اپنے کمال قدرت و علم ورحمت سے) نہ (کہ) مسافت سے (کہ اس کا قرب ماپ و پیمائش میں سما سکے) ملک (وسلطان و شہنشاہ زمین و آسمان ہے مگر بے وزیر (جیسا کہ سلاطین دنیا کے وزیر بادبیر ہوتے ہیں کہ اس کے امورِ سلطنت میں اس کا بوجھ اٹھاتے اور ہاتھ بٹاتے ہیں۔)

(بقیہ حاشیہ صفحہ گزشتہ) قلیل مدت میں اپنی مصروفیات کے باوجود کامیابی سے سرفراز ہوا۔ میں اپنے مقصد میں کہاں تک کامیاب ہوا، اس کا فیصلہ آپ کریں گے، اور میری کوتاہ فہمی و قصور علمی آپ کے خیال مبارک میں آئے تو اس سے اس ہیچمد آں کو مطلع فرمائیں گے۔ اور اس حقیقت کے اظہار میں یہ فقیر فخر محسوس کرتا ہے کہ اس رسالہ مبارکہ میں حاشیہ بین السطور اور تشریح مطالب (جو اصل عبارت سے جدا، قوسین میں محدود ہے، اور اصل عبارت خط کشیدہ) جو کچھ پائیں گے وہ اکثر و بیشتر مقامات پر اعلیحضرت قدس سرہ ہی کے کتب ورسائل اور

حضرت استادی و استاذ العلماء صدر الشریعہ مولانا الشاہ امجد علی قادری برکاتی رضوی اعظمی رحمتہ اللہ علیہ کی مشہور زمانہ کتاب بہار شریعت سے ماخوذ و ملتقط ہے۔ امید ہے کہ ناظرین کرام اس فقیر کو اپنی دعائے خیر میں یاد فرماتے رہیں گے کہ سفرِ آخرت درپیش ہے اور یہ فقیر خالی ہاتھ، خالی دامن، بس ایک انہیں کا سہارا ہے اور ان شاء اللہ تعالیٰ وہی بگڑی بنائیں گے ورنہ ہم نے تو کمائی سب عیبوں میں گنوائی ہے۔ والسلام، العبد محمد خلیل خاں قادری البرکاتی المار ہر وی عفی عنہ۔

Guardian (He is. He is the absolute Owner and Ruler. He does whatever He wills and however He wills, but) without an advisor (there is no one to advise Him, nor is He in need of anyone's advice, nor can anyone restrain Him from His will. All powers of guardianship, ownership, mastery, and sovereignty belong to Him alone. No one, in any capacity, has any reach over His Holy Essence. He is the true owner of the kingdom and government, as all existing beings are under His ownership and rule, and His mastery and sovereignty are eternal and never-failing). Life, speech, hearing, sight, will, power, and knowledge (which are His essential attributes. Besides these, the attributes of creation, origination, and providing sustenance—namely causing death, giving life, granting health, making ill, making wealthy, making poor, ordering the entire universe and gradually bringing everything to its full measure according to its nature, and providing them with sustenance suitable for their states) etc. (attributes that relate to the creation, also called relational attributes and active attributes, which should be understood as details of the attributes of creation and origination. And negative attributes—that is, those attributes from which Allah Almighty's essence is pure and free, for example, He is not ignorant, not helpless, not without choice or powerless, not united with anyone as ice melts in water and becomes one. In short, He, with His essential attributes, relational attributes, and negative attributes) is characterized by all attributes of perfection from eternity past to eternity future (and just as His Essence is ancient, eternal, and everlasting, all His attributes are also ancient, eternal, and everlasting. Everything besides the Essence and attributes of the Creator is created and emergent, meaning they did not exist before and then came into being. Anyone who calls the attributes of God 'created' or 'emergent' is astray and irreligious. His Essence and attributes) are free from all flaws (all deficiencies and shortcomings), blemishes, and faults (every type of loss and disadvantage) from beginning to end (for when He is the collection of all attributes of perfection and encompasses every perfection and goodness, it is impossible for any fault, any deficiency, or any shortcoming to exist in Him. Indeed, even that which contains neither perfection nor deficiency is also impossible for Him).

His Holy Essence is pure from likeness and opposition (peer and rival), similarity and resemblance (similar and alike), quality and quantity (nature and measure), form, body, direction, place, duration (limit and end), and time (since the belief is that the Essence of Allah Almighty is ancient, eternal, and everlasting, and all His attributes are also ancient, eternal, and everlasting, it must also be accepted that He is free

from all those things that are emergent or possess spatiality—meaning movement from one place to another, or any kind of change found in them, or the change of His attributes, or His attributes being like those of the creation. All these matters for Him…)

वाली (है। वह संपूर्ण और निरपेक्ष स्वामी और शासक है। वह जो चाहे और जैसा चाहे करता है, लेकिन) बिना किसी सलाहकार के(कोई उसे सलाह देने वाला नहीं है। न ही वह किसी की सलाह का मोहताज है, और न ही कोई उसे उसकी इच्छा से रोक सकता है। विलायत, स्वामित्व, मालिकाना हक और शासन के सभी अधिकार केवल उसी के पास हैं। किसी को भी किसी भी हैसियत से उस पवित्र सत्ता पर कोई पहुंच नहीं है। वह राज्य और सरकार का वास्तविक स्वामी है, क्योंकि सभी मौजूद वस्तुएं उसके स्वामित्व और शासन के अधीन हैं, और उसका स्वामित्व और शासन शाश्वत है जिसे कभी क्षय नहीं होता।) जीवन, वाणी, सुनना, देखना, इच्छा, शक्ति और ज्ञान (जो उसके व्यक्तिगत गुण हैं। इनके अलावा सृष्टि, रचना और जीविका प्रदान करना - अर्थात् मारना, जीवित करना, स्वास्थ्य देना, बीमार करना, धनी करना, गरीब करना, पूरे ब्रह्मांड की व्यवस्था करना और हर चीज़ को धीरे-धीरे उसकी प्रकृति के अनुसार पूर्ण मात्रा तक पहुँचाना, उन्हें उनकी स्थितियों के अनुकूल जीविका प्रदान करना) आदि (वे गुण जिनका संबंध सृष्टि से है और जिन्हें सापेक्ष गुण और क्रियात्मक गुण भी कहा जाता है, और जिन्हें सृष्टि और रचना के गुणों के विवरण के रूप में समझा जाना चाहिए। और नकारात्मक गुण, यानी वे गुण जिनसे अल्लाह तआला की सत्ता पवित्र और मुक्त है, उदाहरण के लिए, वह अज्ञानी नहीं है, मजबूर नहीं है, विवश और बेबस नहीं है, किसी के साथ एकीकृत नहीं है जैसे बर्फ पानी में घुलकर एक हो जाती है। संक्षेप में, वह अपने व्यक्तिगत गुणों, सापेक्ष गुणों और नकारात्मक गुणों के साथ) अनंत काल से अनंत काल तक सभी पूर्णता के गुणों से सुशोभित (है। और जिस प्रकार उसकी सत्ता प्राचीन और शाश्वत है, उसके सभी गुण भी प्राचीन और शाश्वत हैं। ईश्वरीय सत्ता और गुणों के अलावा सब कुछ 'हादिस' (नया) और नश्वर है, यानी पहले नहीं थे फिर अस्तित्व में आए। जो ईश्वरीय गुणों को 'मखलूक' (सृजित) या 'हादिस' कहे, वह गुमराह और अधर्मी है। उसकी सत्ता और गुण) सभी दोषों (सभी कमियों और त्रुटियों) और कलंक और दोष (हर प्रकार की कमी और नुकसान) से आदि और अंत तक मुक्त (हैं। क्योंकि जब वह सभी पूर्ण गुणों का संग्रह है, हर पूर्णता और अच्छाई का समावेश है, तो उसमें किसी भी दोष, किसी भी कमी या किसी भी त्रुटि का होना असंभव है। बल्कि जिस बात में न पूर्णता हो और न ही कमी, वह भी उसके लिए असंभव है।)

उसकी पवित्र सत्ता समानता और विरोध (समकक्ष और प्रतिद्वंद्वी), समानता और सदृशता (समान और जैसा), गुणवत्ता और मात्रा (प्रकृति और माप), आकार, शरीर, दिशा, स्थान, अवधि (अंत और सीमा) और समय से पवित्र है (जब विश्वास यह है कि अल्लाह तआला की सत्ता प्राचीन और शाश्वत है और

उसके सभी गुण भी प्राचीन और शाश्वत हैं, तो यह भी मानना पड़ेगा कि वह उन सभी चीज़ों से जो नई हैं या जिनमें स्थानिकता है, यानी एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना, या उनमें किसी प्रकार का परिवर्तन पाया जाना, या उसके गुणों का बदलना, या उसके गुणों का सृष्टि के गुणों के समान होना, ये सभी मामले उसके लिए...)

पृष्ठ ३४२ / ७५०

والی (ہے۔ مالک و حاکم علی الاطلاق ہے۔ جو چاہے اور جیسا چاہے کرے مگر) بے مشیر (نہ کوئی اس کو مشورہ دینے والا۔ نہ وہ کسی کے مشورہ کا محتاج، نہ کوئی اس کے ارادے سے اسے باز رکھنے والا۔ ولایت، ملکیت، مالیکت، حاکمیت، کے سارے اختیارات اسی کو حاصل، کسی کو کسی حیثیت سے بھی اس ذات پاک پر دسترس نہیں، ملک و حکومت کا حقیقی مالک کہ تمام موجودات اس کے تحتِ ملک و حکومت ہیں، اور اس کی مالیکت و سلطنت دائمی ہے جسے زوال نہیں) حیات و کلام و سمع و بصر و ارادہ و قدرت و علم (کہ اس کے صفاتِ ذاتیہ ہیں اور ان کے علاوہ تکوین و تخلیق و رزاقیت یعنی مارنا، جلانا، صحت دینا، بیمار کرنا، غنی کرنا، فقیر کرنا، ساری کائنات کی ترتیب فرمانا اور ہر چیز کو بتدریج اس کی فطرت کے مطابق کمالِ مقدار تک پہنچانا، انہیں ان کے مناسب احوال روزی رزق مہیا کرنا) وغیرہ ہا (صفات جن کا تعلق مخلوق سے ہے اور جنہیں صفاتِ اضافیہ اور صفاتِ فعلیہ بھی کہتے ہیں اور جنہیں صفاتِ تخلیق و تکوین کی تفصیل سمجھنا چاہیے، اور صفاتِ سلبیہ یعنی وہ صفات جن سے اللہ تعالیٰ کی ذات منزہ اور مبرا ہے، مثلاً وہ جاہل نہیں عاجز نہیں، بے اختیار و بے بس نہیں، کسی کے ساتھ متحد نہیں جیسا کہ برف پانی میں گھل کر ایک ہو جاتا ہے، غرض وہ اپنی صفاتِ ذاتیہ، صفاتِ اضافیہ اور صفاتِ سلبیہ) تمام صفاتِ کمال سے ازلاً ابداً موصوف (ہے، اور جس طرح اس کی ذات قدیم ازلی ابدی ہے اس کی تمام صفات بھی قدیم ازلی ابدی ہیں، اور ذات و صفات باری تعالیٰ کے سوا سب چیزیں حادث و نوپید، یعنی پہلے نہ تھیں پھر موجود ہوئیں، صفاتِ الٰہی کو جو مخلوق کہے یا حادث بتائے گمراہ بے دین ہے۔ اس کی ذات و صفات) تمام شیون (تمام نقائص تمام کوتاہیوں سے) و شین و عیب (ہر قسم کے نقص و نقصان) سے اولاً و آخراً بری (کہ جب وہ مجتمع ہے تمام صفات کمال کا جامع

ہے ہر کمال و خوبی کا، تو کسی عیب کسی نقص، کسی کوتاہی کا اس میں ہونا محال، بلکہ جس بات میں نہ کمال ہو نہ نقصان وہ بھی اس کے لیے محال) ذاتِ پاک اس کی ندّ و ضد (نظیر و مقابل) شبیہ و مثل (مشابہ و مماثل) کیف و کم (کیفیت و مقدار) شکل و جسم و جہت و مکان وامد (غایت وانتہا اور) زمان سے منزہ (جب عقیدہ یہ ہے کہ ذات باری تعالیٰ قدیم ازلی ابدی ہے اور اس کی تمام صفات بھی قدیم ازلی ابدی ہیں تو یہ بھی ماننا پڑے گا کہ وہ ان تمام چیزوں سے جو حادث ہیں یا جن میں مکانیت ہے یعنی ایک جگہ سے دوسری طرف نقل و حرکت، یا ان میں کسی قسم کا تغیر پایا جانا، یا اس کے اوصاف کا متغیر ہونا، یا اس کے اوصاف کا مخلوق کے اوصاف کے مانند ہونا، یہ تمام امور اس کے لیے

Fatawa Razawiyya Volume 29

...are impossible, or rather say that the essence of Allah Almighty is pure from all those occurrences and needs which are characteristics of humanity. He is neither a father nor a son (neither is He anyone's father nor anyone's son, because no one is His contemporary or of His kind, and since He is eternal and being born is the trait of something originated and created). Nor is there anything like Him (meaning He has no peer, no equal. He is free from any likeness, peer, or resemblance and is characterized by attributes of greatness and perfection in His Lordship and Divinity). And just as His noble essence is free from any resemblance to other essences, similarly His perfect attributes are free from any resemblance to other attributes. (Every perfection of His is great and every attribute high; no creature, no matter how noble and lofty, can be His partner in any capacity or at any level). For a Muslim, believing in "La ilaha illa Allah" (There is no god but Allah), and knowing Allah, Subhanahu wa Ta'ala, as One, Eternal, and without partner, is the first obligation and the core of faith. Allah is One, He has no partner, neither in essence: "La ilaha illa Allah" (Allah is He, besides Whom there is no deity worthy of worship); nor in attributes: "There is nothing like unto Him" [1] - there is no one like Him; nor in names: "Do you know any of His namesakes?" [2] - Do you know another by His name?; nor in decrees: "And He associates no one in His decree" [3] - and He does not associate anyone in His command; nor in actions: "Is there any creator other than Allah?" [4] - is there any other creator besides Allah?; nor in sovereignty: "And He has no partner in the kingdom" [5] - and there is no partner for Him in kingship. So, just as His essence is not similar to other essences, likewise His attributes are not similar to the attributes of the creation.

And as for the application of the same names to Him and to some of His creation, such as Al-Alim (The All-Knowing), Al-Hakim (The Wise), Al-Karim (The Generous), As-Sami' (The All-Hearing), Al-Basir (The All-Seeing), and others like them, this is merely linguistic correspondence and not spiritual partnership. There is no resemblance in true meaning. Therefore, for example, the knowledge and power of others are similar to His knowledge and power (merely linguistically, i.e.) only in the letters 'A, L, M, Q, D, R, T'. (Not in a meaningful partnership). Beyond this (formal and linguistic correspondence), the veil of His Highness and Pride (superiority and greatness) is for no one...

1. Al-Quran Al-Karim 42/11

2. Al-Quran Al-Karim 19/65
3. Al-Quran Al-Karim 18/26
4. Al-Quran Al-Karim 35/3
5. Al-Quran Al-Karim 25/2

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

...असंभव हैं, या यूँ कहें कि अल्लाह तआला की ज़ात उन तमाम हादसों और ज़रूरतों से पाक है जो मानव स्वभाव हैं। न वह पिता है न पुत्र (न वह किसी का बाप है न किसी का बेटा, क्योंकि कोई उसके समान या उसकी जाति का नहीं है, और चूँकि वह प्राचीन (अनादि) है और पैदा होना नूतन और सृजित होने की शान है)। न कोई वस्तु उसके मेल की है (यानी कोई उसका साथी या बराबर नहीं। वह उपमा, समकक्ष और समानता से पाक है और अपनी रब्बुलआलमीन और उलूहीयत में महानता और पूर्णता के गुणों से युक्त है)। और जिस तरह उसकी करीम ज़ात दूसरी ज़ातों से मेल खाने से मुक्त है, उसी तरह उसके कमाल के गुण भी अन्य गुणों की समानता से मुक्त हैं। (उसकी हर पूर्णता महान है और हर गुण उच्च है; कोई भी रचना चाहे कितनी भी महान और ऊँची हो, किसी भी हैसियत से या किसी भी स्तर पर उसकी साझीदार नहीं हो सकती)। एक मुसलमान के लिए 'ला इलाहा इल्लल्लाह' मानना, अल्लाह सुब्हानहु व तआला को एक, शाश्वत और बे-शरीक (अद्वितीय) जानना पहला कर्तव्य और ईमान का आधार है। अल्लाह एक है, उसका कोई साझीदार नहीं, न ज़ात में कि 'ला इलाहा इल्लल्लाह' (अल्लाह वह है जिसके सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं); न गुणों में कि "उसके जैसा कोई नहीं" [1] - उसके जैसा कोई नहीं है; न नामों में कि "क्या तुम उसके नाम का दूसरा जानते हो?" [2] - क्या तुम उसके नाम का कोई दूसरा जानते हो?; न आदेशों में कि "और वह अपने फ़ैसले में किसी को साझीदार नहीं बनाता" [3] - और वह अपने हुक्म में किसी को साझीदार नहीं करता; न कार्यों में कि "क्या अल्लाह के सिवा कोई और स्रष्टा है?" [4] - क्या अल्लाह के सिवा कोई और स्रष्टा है?; न संप्रभुता में कि "और राज्य में उसका कोई साझीदार नहीं" [5] - और बादशाही में उसका कोई साझीदार नहीं है। तो, जिस तरह उसकी ज़ात दूसरी ज़ातों के समान नहीं है, उसी तरह उसके गुण भी रचना के गुणों के समान नहीं हैं।

और यह जो एक ही नाम का प्रयोग उस पर और उसकी किसी रचना पर देखा जाता है जैसे अलीम, हकीम, करीम, समीअ, बसीर और उनके जैसे अन्य, तो यह केवल भाषाई समानता है न कि अर्थ की साझेदारी। इसमें वास्तविक अर्थों में कोई समानता नहीं है। इसलिए उदाहरण के तौर पर, दूसरों के ज्ञान और शक्ति की समानता उसके ज्ञान और शक्ति से (केवल भाषाई यानी) केवल अक्षरों 'अ, ल, म,

क, द, र, त' में है। (न कि अर्थपूर्ण साझेदारी)। इस (औपचारिक और भाषाई समानता) से आगे (कदम बढ़े तो) उसकी महानता और गर्व (श्रेष्ठता और बड़प्पन) का पर्दा किसी के लिए...

1. अल-क़ुरआन अल-करीम 42/11
2. अल-क़ुरआन अल-करीम 19/65
3. अल-क़ुरआन अल-करीम 18/26
4. अल-क़ुरआन अल-करीम 35/3
5. अल-क़ुरआन अल-करीम 25/2

محال ہیں، یا یوں کہئے کہ ذات باری تعالٰی ان تمام حوادث و حوائج سے پاک ہے جو خاصہ بشریت ہیں) نہ والد ہے نہ مولود (نہ وہ کسی کا باپ ہے نہ کسی کا بیٹا، کیونکہ کوئی اس کا مجالس و ہم جنس نہیں، اور چونکہ وہ قدیم ہے اور پیدا ہونا حادث و مخلوق کی شان) نہ کوئی شے اس کے جوڑ کی (یعنی کوئی اس کا ہمتا کوئی اس کا عدیل نہیں۔ مثل و نظیر و شبیہ سے پاک ہے اور اپنی ربوبیت والوہیت میں صفات عظمت و کمال کے ساتھ موصوف) اور جس طرح ذات کریم اس کی، مناسبت ذوات سے مبرا اسی طرح صفات کمالیہ اس کی، مشابہت صفات سے معرا (اس کا ہر کمال عظیم اور ہر صفت عالی، کوئی مخلوق کیسی ہی اشرف واعلٰی ہو اس کی شریک کسی حیثیت سے، کسی درجہ میں نہیں ہو سکتی) مسلمان پر لا الہ الا اللہ ماننا، اللہ سبحانہ وتعالیٰ کو احد، صمد، لا شریک لہ جاننا فرض اول و مدار ایمان ہے کہ اللہ ایک ہے اس کا کوئی شریک نہیں، نہ ذات میں کہ لا الہ الا اللہ (اللہ ہے جس کے سوا کوئی معبود نہیں) نہ صفات میں کہ "لَیْسَ کَمِثْلِہٖ شَیْءٌ" 1- اس جیسا کوئی نہیں، نہ اسماء میں کہ "ہَلْ تَعْلَمُ لَہٗ سَمِیًّا" 2- کیا اس کے نام کا دوسرا جانتے ہو؟ نہ احکام میں کہ "وَلَا یُشْرِکُ فِیْ حُکْمِہٖ اَحَدًا" 3- اور وہ اپنے حکم میں کسی کو شریک نہیں کرتا، نہ افعال میں کہ "ہَلْ مِنْ خَالِقٍ غَیْرُ اللہِ" 4- کیا اللہ کے سوا کوئی اور خالق ہے، نہ سلطنت میں کہ "وَلَمْ یَکُنْ لَّہٗ شَرِیْکٌ فِی الْمُلْکِ" 5- اور بادشاہی میں کوئی اس کا شریک نہیں، تو جس طرح اس کی ذات اور ذاتوں کے مشابہ نہیں یونہی اس کی صفات بھی صفاتِ مخلوق کے مماثل نہیں۔

اور یہ جو ایک ہی نام کا اطلاق اس پر اور اس کی کسی مخلوق پر دیکھا جاتا ہے جیسے علیم، حکیم، کریم، سمیع، بصیر اور ان جیسے اور، تو یہ محض لفظی موافقت ہے نہ کہ معنوی شرکت، اس میں حقیقی معنی میں کوئی مشابہت نہیں ولہذا مثلاً) اوروں کے علم و قدرت کو اس کے علم و

قدرت سے (محض لفظی یعنی) فقط ع، ل، م، ق، د، ر، ت میں مشابہت ہے۔ (نہ کہ شرکت معنوی) اس (صوری و لفظی موافقت) سے آگے (قدم بڑھے تو) اس کی تعالیٰ و تکبر (برتری و کبریائی) کا سراپردہ کسی کو

1 القرآن الکریم ۴۲/ ۱۱ 2 القرآن الکریم ۱۹/ ۶۵ 3 القرآن الکریم ۱۸/ ۲۶ 4 القرآن الکریم ۳۵/ ۳ 5 القرآن الکریم ۲۵/ ۲

...does not give entry. (And no one can even reach around this royal court. No bird can flap its wings there, no one can interfere in it.) All honors are low before His presence (whether they be angels, jinn, humans, or any other creature, none are independent of Him, all are in need of His grace, and with the language of state and speech, they acknowledge their lowliness and needs and are beggars before Him, with hands outstretched in His court, and all creatures, whether earthly or heavenly, seek their respective needs and desires from that very Truth, the Most High.) And all existences are non-existent before Him (neither is any being truly a being, nor any existence truly an existence) "Everything will perish save His Face"[1] - (Survival is only for His Noble Face, for all others there is annihilation; the Permanent is Permanent, the rest is ephemeral; the Singular Existence (of that Living and Self-Sustaining, Eternal and Everlasting) is the only truly present one (that same one Living and Self-Sustaining, Eternal and Everlasting), all else are mere considerations (if considered they exist, otherwise they are purely non-existent). The particles of the universes (i.e., every atom of created things) have a relationship with His Essence whose nature is unknown (Majhool-ul-Kaifiyat). Because of which 'I and thou' (me and you, this and that) are called 'existent' and 'being' (and are expressed as existence and becoming). (If this relationship were removed from between them, 'is' would become 'is not' and 'existence' would become 'non-existence', no atom would remain such that it could be called 'existent'.) And there is a reflection (a shadow, a mirror image, a ray) of the Sun of His Existence such that every atom of the universe is displaying splendors in the outward gaze. (And the manifestations of His perfect power are evident from every atom of this theatre of the world.) If one ignores this relationship and reflection (which every atom of space and time receives from that Sun of True Existence) (and turns one's gaze away from it for a moment), then the world would remain but a confused dream, a desolate field like pure non-existence (purely non-existent and utterly wasteland, so in the rank of existence there is only one True Essence, all others exist by the reflection of His existence; in the rank of 'becoming' He is the eternal light sun, and the whole world is its mirrors. If the step of this relationship of emanation were removed from the middle, the world would suddenly become sheer annihilation, for many reflections of that same light have received countless names. The Essence of the Creator, the Most High, is the One True One; change and difference have no path around the sanctuary of His honor. But from the multiplicity of manifestations, these different forms, countless names, and innumerable effects

are born. The radiance of the Light of Oneness is limitless. And both the eye of the body and the eye of the intellect are blind there, and more than this description...)

[1] The Holy Quran 28:88 Page 344 of 750

फ़तावा रज़विया जिल्द २९

...प्रवेश नहीं देता। (और कोई इस शाही दरबार के आसपास भी नहीं पहुँच सकता। वहाँ परिंदा भी पर नहीं मार सकता, कोई इसमें दखल नहीं दे सकता।) तमाम प्रतिष्ठाएँ उनके सामने तुच्छ हैं (चाहे वे फ़रिश्ते हों या जिन्न या इंसान या कोई और रचना, कोई भी उनसे बेनय्याज़ (स्वतंत्र) नहीं है, सब उनकी कृपा के मोहताज हैं, और ज़बान-ए-हाल और काल से अपनी दीनता और अपनी आवश्यकताओं को स्वीकार करते हुए उनके सम्मुख याचक हैं, उनके दरबार में हाथ फैलाए हुए हैं, और सभी रचनाएँ चाहे वे ज़मीनी हों या आसमानी, अपनी-अपनी ज़रूरतें और मुरादें उसी हक़ तआला (परम सत्य) से माँगती हैं।) और सभी हस्तियां उनके सामने शून्य हैं (न कोई हस्ती हस्ती है, न कोई अस्तित्व अस्तित्व) "हर चीज़ नष्ट होने वाली है सिवाय उसके चेहरे (सत्ता) के[1] - (स्थायित्व केवल उनके उदार चेहरे (सत्ता) के लिए है, बाकी सबके लिए विनाश है; जो शाश्वत है वही शाश्वत है, बाकी सब क्षणभंगुर है; एकमात्र अस्तित्व (उसी नित्य और शाश्वत जीवंत और आत्मनिर्भर का) ही एकमात्र वर्तमान अस्तित्व है (वही एक नित्य और शाश्वत जीवंत और आत्मनिर्भर), बाकी सब केवल विचार हैं (विचार करें तो मौजूद, अन्यथा पूरी तरह से गैर-मौजूद)। ब्रह्मांड के कणों (अर्थात रचनाओं के कण-कण) का उनकी सत्ता के साथ एक ऐसा संबंध है जिसकी प्रकृति अज्ञात (मझूलुल कैफ़ियत) है। जिसके आधार पर 'मैं और तू' (हम और तुम, यह और वह) को मौजूद और अस्तित्ववान कहा जाता है (और होने और रहने से व्यक्त किया जाता है)। (यदि इस संबंध को बीच से हटा दिया जाए, तो 'है' 'नहीं' हो जाए और 'अस्तित्व' 'शून्य' हो जाए, किसी कण का अस्तित्व न रहे कि उस पर हस्ती (होने) का शब्द लागू हो सके।) और उनके अस्तित्व के सूर्य का एक प्रतिबिंब (एक साया, एक अक्स, एक किरण) है कि ब्रह्मांड का हर कण बाहरी दृष्टि में जलवा-अफ़रोज़ (प्रकाशमान) हो रहा है। (और इस विश्व की रंगशाला के कण-कण से उनकी पूर्ण शक्ति के जलवे प्रकट हैं।) यदि इस संबंध और प्रतिबिंब को (जो हर कण को स्थान और काल में उस वास्तविक अस्तित्व के सूर्य से प्राप्त है) अनदेखा कर दिया जाए (और एक पल के लिए उससे नज़र हटा ली जाए), तो दुनिया एक परेशान सपने का नाम बनकर रह जाए, और शून्य के मैदान की तरह उजाड़ हो जाए (पूर्णतः शून्य और पूरी तरह से वीरान, तो अस्तित्व के स्तर पर केवल एक हक़ (परम सत्य) की सत्ता है, बाकी सब उसी के अस्तित्व के प्रतिबिंब से मौजूद हैं; रचना के स्तर पर वह अनंत प्रकाश सूर्य है, और पूरी दुनिया उसके दर्पण हैं। यदि इस अनुग्रह के संबंध को बीच से निकाल लें, तो दुनिया अचानक पूर्णतः विलुप्त हो जाए, क्योंकि उसी प्रकाश के अनेक प्रतिबिंबों ने अनगिनत नाम पाए हैं। ईश्वर की सत्ता वास्तविक एक है, परिवर्तन

और अंतर को उनके सम्मान के पर्दे के पास बिल्कुल रास्ता नहीं है। लेकिन अभिव्यक्तियों की बहुलता से ये विभिन्न रूप, अनगिनत नाम और अनगिनत प्रभाव पैदा हुए हैं। ईश्वर की एकता के प्रकाश की चमक असीमित है। और शरीर की आँख और बुद्धि की आँख दोनों वहाँ अंधी हैं, और इससे अधिक वर्णन...)

[1] अल-कुरान अल-करीम ८८/२८ पेज 344 का 750

بار نہیں دیتا۔ (اور کوئی اس شاہی بارگاہ کے ارد گرد بھی نہیں پہنچ سکتا۔ پرندہ وہاں پر نہیں مار سکتا کوئی اس میں دخل انداز نہیں) تمام عزتیں اس کے حضور پست (فرشتے ہوں یا جن یا انسان یا اور کوئی مخلوق، کوئی بھی اس سے بے نیاز نہیں، سب اس کے فضل کے محتاج ہیں، اور زبانِ حال و قال سے اپنی پستیوں، اپنی احتیاجوں کے معترف اور اس کے حضور سائل، اس کی بارگاہ میں ہاتھ پھیلائے ہوئے، اور ساری مخلوقات چاہے، وہ زمینی ہوں یا آسمانی اپنی اپنی حاجتیں اور مرادیں اسی حق تعالیٰ سے طلب کرتی ہیں) اور سب ہستیاں اس کے آگے نیست (نہ کوئی ہستی ہستی، نہ کوئی وجود وجود) "كُلُّ شَيْءٍ هَالِكٌ إِلَّا وَجْهَهُ " 1 - (بقا صرف اس کی وجہ کریم کے لیے ہے باقی سب کے لیے فنا، باقی باقی، باقی فانی، وجودِ واحد (اسی حی و قیوم ازلی ابدی کا) موجودِ واحد (وہی ایک حی و قیوم ازلی ابدی) باقی سب اعتبارات ہیں (اعتبار کیجئے تو موجود ورنہ محض معدوم) ذراتِ اکوان (یعنی موجودات کے ذرہ ذرہ) کو اس کی ذات سے ایک نسبت مجہولۃ الکیف ہے۔ (نامعلوم الکیفیت) جس کے لحاظ سے من و تو (ما و شما و این و آں) کو موجود و کائن کہا جاتا (اور ہست و بود سے تعبیر کیا جاتا) ہے۔ (اگر اس نسبت کا قدم درمیان سے اٹھالیں۔ ہست، نیست اور بود، نابود ہو جائے، کسی ذرہ موجود کا وجود نہ رہے کہ اس پر ہستی کا اطلاق روا ہو ۔) اور اس کے آفتاب وجود کا ایک پر تو (ایک ظل ، ایک عکس، ایک شعاع ہے کہ کائنات کا ہر ذرہ نگاہِ ظاہر میں جلوہ آرائیاں کر رہا ہے۔ (اور اس تماشاگاہِ عالم کے ذرہ ذرہ سے اس کی قدرت کاملہ کے جلوے ہویدا ہیں) اگر اس نسبت و پر تو سے (کہ ہر ذرہ کون و مکان کو اس آفتاب وجود حقیقی سے حاصل ہے) قطع نظر کی جائے (اور ایک لحظہ کو اس سے نگاہ ہٹا لی جائے) تو عالم ایک خواب پریشان کا نام رہ جائے ، ہو کا میدان عدمِ بحت کی طرح سنسان (محض معدوم و

یکسر ویران، تو مرتبہ وجود میں صرف ایک ذات حق ہے باقی سب اسی کے پر توِ وجود سے موجود ہیں، مرتبہ کون میں نور ابدی آفتاب ہے، اور تمام عالم اس کے آئینے اس نسبت فیضان کا قدم، درمیان سے نکال لیں تو عالم دفعتاً فنائے محض ہو جائے کہ اسی نور کے متعدد پر توؤں نے بے شمار نام پائے ہیں، ذاتِ باری تعالیٰ واحد حقیقی ہے، تغیر و اختلاف کو اصلاً اس کے سرا پر دہ عزت کے گرد بار نہیں۔ پر مظاہر کے تعدد سے یہ مختلف صورتیں ، بے شمار نام ، بے حساب آثار پیدا ہیں، نورِ احدیت کی تابش غیر محدود ہے۔ اور چشمِ جسم و چشمِ عقل دونوں وہاں نابینا ہیں، اور اس سے زیادہ بیان

1 القرآن الکریم ۸۸/۲۸ Page 344 of 750

Fatawa Razawiya, Volume 29

...outside (perception) and beyond intellect.)

He is the Existing One, not a unity formed by the combination of parts (and the term 'one' was applied to Him), nor a unity that can be analyzed into parts (like a human being is called one, but is composed of flesh, skin, blood, bone, etc., and his analysis and decomposition would lead back to those limbs and parts from which he was composed and called a composite, for this is the nature of a body; and the Essence of Allah Almighty is pure and free from body and physicality). Nor is He a unity subject to the accusation of incarnation (that an accusation be laid against His holy Essence that He has incarnated into something or is contained within it, or that something has incarnated into His Essence of Oneness and is joined with it, and thus, Allah forbid, He descends from the height of unity and uniqueness to the depths of duality and partnership). The noble verse: "Exalted and high is He above what they associate [with Him]"[1] refutes partnership in divinity. (And it tells us that there is no partner in the divinity, lordship, and godhood of the Holy Lord. "And it is He who is [the only] deity in the heaven and on the earth [the only] deity"[2]. He is the God of the inhabitants of heaven and the God of the inhabitants of earth, so how could anyone be His partner in the essence of divinity and lordship? Even in His perfect attributes, there is no partner to Him. "There is nothing like unto Him"[3]. This noble verse similarly denies partnership in existence (so His Essence is pure and all His perfect attributes are free from all those unworthy matters that the people of shirk and ignorance attribute to Him. The truth is that existence belongs only to that True Essence, all else are mere shadows and reflections).

His 'otherness' left nothing other in the world... inevitably, He became the essence of all meaning.

(And all the meanings and concepts of 'Unity of Existence' (Wahdat-ul-Wujood) that the intellect can grasp are these: that Existence is One, the Existent is One, and everything else is His manifestations and mirrors, which in their own essence have no share in existence and being).

[1] Al-Quran al-Karim 30/40 [2] Al-Quran al-Karim 43/84 [3] Al-Quran al-Karim 42/11

फ़तावा रज़विया, खंड 29

...बाहर है, बुद्धि से परे है।)

वह मौजूद 'एक' (واحد) है, न कि वह एक जो कई अंगों और भागों से मिलकर बना हो (और उसे 'एक' नाम दिया गया हो), और न ही वह एक जिसे भागों में विभाजित किया जा सके(जैसे मनुष्य एक है, जो मांस, त्वचा, रक्त और हड्डियों आदि अंगों और भागों से मिलकर बना है और उसका विश्लेषण और विभाजन उन्हीं अंगों और भागों की ओर होगा जिनसे वह बना है, क्योंकि यही शरीर की प्रकृति है; और अल्लाह सर्वशक्तिमान की सत्ता शरीर और भौतिकता से पवित्र और मुक्त है)। न ही वह 'एक' है जिस पर 'हलूल' (अवतार) का आरोप लगाया जा सके(कि उसकी पवित्र सत्ता पर यह आरोप लगाया जाए कि वह किसी चीज़ में समा गया है या किसी चीज़ में समाया हुआ है, या कोई चीज़ उसकी एकता की सत्ता में समा गई है और उससे जुड़ गई है, और इस प्रकार, अल्लाह न करे, वह एकता और अद्वितीयता की ऊंचाइयों से द्वैत और साझेदारी की गहराइयों में उतर आए)। पवित्र आयत: "वह पवित्र और उच्च है उन चीज़ों से जिन्हें वे शरीक (साझेदार) ठहराते हैं"[1] जिस तरह दिव्यता में साझेदारी का खंडन करती है। (और बताती है कि पवित्र ईश्वर की खुदाई और उस सच्चे पूज्य की दिव्यता और प्रभुत्व में कोई शरीक नहीं है। "और वही है जो आसमानों में भी इलाह (ईश्वर) है और ज़मीन में भी इलाह है"[2]। वही आसमान वालों का खुदा है और वही ज़मीन वालों का खुदा है, तो फिर दिव्यता और प्रभुत्व की वास्तविकता में उसका कोई शरीक कैसे हो सकता है? उसके पूर्ण गुणों में भी उसका कोई शरीक नहीं। "उसके जैसा कोई नहीं है"[3]। इसी तरह यह पवित्र आयत 'अस्तित्व में साझेदारी' (اشتراک فی الوجود) का भी खंडन करती है (तो उसकी सत्ता भी पवित्र है और उसके सभी पूर्ण गुण उन सभी अयोग्य बातों से मुक्त हैं जिन्हें शिर्क और अज्ञानता वाले लोग उसकी ओर जोड़ते हैं। सच यह है कि अस्तित्व केवल उसी सत्य सत्ता के लिए है, बाकी सब परछाइयां और प्रतिबिंब हैं)।

उसके'ग़ैर' (दूसरे) ने दुनिया में कोई दूसरा नहीं छोड़ा... अनिवार्य रूप से, वह संपूर्ण अर्थ का सार बन गया।

(और 'वदत-उल-वजूद' (अस्तित्व की एकता) के जितने भी अर्थ और अवधारणाएं बुद्धि में आ सकती हैं, वे यही हैं कि अस्तित्व एक है, मौजूद एक है, बाकी सब उसी के प्रदर्शन (मज़ाहिर) और दर्पण हैं जिनका अपने स्वयं के अस्तित्व में वास्तव में अस्तित्व और होने का कोई हिस्सा नहीं है)।

[1] अल-कुरान अल-करीम 30/40 [2] अल-कुरान अल-करीम 43/84 [3] अल-कुरान अल-करीम 42/11

سے باہر ، عقل سے وراء ہے ۔)

موجود واحد ہے نہ وہ واحد جو چند (ابعاض واجزاء) سے مل کر مرکب ہوا(اور شے واحد کا نام اس پر روا ٹھہرا) نہ وہ واحد جو چند کی طرف تحلیل پائے (جیسا کہ انسان واحد یا شے واحد کہ گوشت پوست و خون واستخوان وغیرہا اجزاء وابعاض سے ترکیب پا کر مرکب ہوا اور ایک کہلایا اور اس کی تحلیل و تجزی اور تجزیہ ، انہیں اعضاء واجزاء وابعاض کی طرف ہو گا جن سے اس نے ترکیب پائی اور مرکب کہلایا کہ یہی جسم کی شان ہے ، اور ذات باری تعالٰی عرشانہ جسم وجسمانیات سے پاک و منزہ ہے ۔) نہ وہ واحد جو بہ تہمت حلول عینیت (کہ اس کی ذات قدسی صفات پر یہ تہمت لگائی جائے کہ وہ کسی چیز میں حلول کیے ہوئے یا اس میں سمائی ہوئی ہے یا کوئی چیز اسکی ذاتِ احدیت میں حلول کیے ہوئے اور اس میں پیوست ہے اور یوں معاذ اللہ وہ) اوج وحدت (وحدانیت و یکتائی کی رفعتوں) سے حضیض اثنینیت (دوئی اور اشتراک کی پستیوں) میں اتر آئے۔ ھو ولا موجود الا ھو آیۃ کریمہ "سُبْحٰنَهٗ وَ تَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ۝" 1 ۔ (پاکی اور برتری ہے اسے ان شریکوں سے) جس طرح شرک فی الالوہیت کو رد کرتی ہے۔ (اور بتاتی ہے کہ خداوند قدوس کی خدائی اور اس معبودِ برحق کی الوہیت وربوبیت میں کوئی شریک نہیں ۔ "وَ هُوَ الَّذِیْ فِی السَّمَآءِ اِلٰهٌ وَّ فِی الْاَرْضِ اِلٰهٌ" 2 ۔ وہی آسمان والوں کا خدا اور وہی زمین والوں کا خدا، تو نفس الوہیت وربوبیت میں کوئی اس کا شریک کیا ہوتا ، اس کی صفاتِ کمال میں بھی کوئی اس کا شریک نہیں۔ "لَیْسَ كَمِثْلِهٖ شَیْءٌ" 3 ۔ اس جیسا کوئی نہیں) یونہی (یہ آیتِ کریمہ) اشتراک فی الوجود کی نفی فرماتی ہے (تو اس کی ذات بھی منزہ اور اس کی تمام صفات کمال بھی مبرا ان

تمام نالائق امور سے جو اہل شرک وجاہلیت اس کی جانب منسوب کرتے ہیں۔ حق یہ ہے کہ وجود اسی ذاتِ برحق کے لیے ہے ، باقی سب ظلال و پرتو۔

غیر تش غیر در جہاں نہ گذاشت ... لاجرم عین جملہ معنی شد

(اور وحدت الوجود کے جتنے معنی اور جس قدر مفاہیم عقل میں آسکتے ہیں وہ یہی ہیں کہ وجود واحد ، موجود واحد ، باقی سب اسی کے مظاہر اور آئینے کہ اپنی حد ذات میں اصلاً وجود وہستی سے بہرہ نہیں۔

1 القرآن الکریم ۳۰/۴۰ 2 القرآن الکریم ۴۳/۸۴ 3 القرآن الکریم ۴۲/۱۱

Fatawa Rizwia Volume 29

...maintain, and God forbid, this absolutely does not mean that 'me and you, us and them, this and that, every thing is God'; this is the saying of the people of 'Itihaad' (unity/pantheism), which is a sect of disbelievers. And the first point is the path of the people of 'Tauheed' (monotheism), that the people of Islam are the true possessors of faith.

The Highest of all, the Foremost of all Second Creed With all this (that His Noble Essence is devoid of any similarity with other essences and His exalted attributes are free from resemblance to the attributes of others), He created the world (i.e., everything besides Allah) according to His perfect wisdom (and comprehensive mercy) just as He knew it (with His ancient, eternal knowledge). He brought it into existence (bestowed the robe of existence upon the entire universe. Created His servants, gave them ears, eyes, hands, feet, tongue, etc., and inspired them with the method of using them. Then, He distinguished them with the noble essence of intellect, which raised the status of humans above all animals. Then there are millions of things which the intellect could not perceive. Therefore, by sending prophets and revealing books, He explained every minute detail. He left no room for any excuse). And among those bound by religious obligations (who are eligible for Shari'a obligations, capable of being addressed with commands and prohibitions, adult and sane), He divided them into two groups through His grace and justice: "one group in Paradise"[1] - (one destined for paradise and salvation, who accepted the truth) and "another group in the Blazing Fire"[2] - (the other destined for hell and destruction, who turned away from accepting the truth). And just as everyone received a share from the reflection of existence (of the True Existent, Majestic is His Glory) (and in this respect were called 'existent' and 'present'), similarly, the group of Paradise received a special portion of His perfect attributes (the doors of success and prosperity were opened for them in this world and the hereafter, and their laps were filled with the wealth of special knowledge and virtue). In the school of "And taught you that which you knew not"[3] and the university of "Taught man that which he knew not"[4], He educated them (teaching them what they did not know, then) "And the Grace of Allah upon you is great"[5] - He added more colors (so that Allah Almighty's great grace continued to manifest upon him; the Noble Master blessed him with various bounties. Adorned him with countless virtues and beauties. Purified his heart and mold, body and soul, exterior and interior from vices and repulsive, blameworthy characteristics, and adorned him with praises and beautiful morals and...)

[1] The Holy Qur'an 42 / 7 [2] The Holy Qur'an 42 / 7 [3] The Holy Qur'an 4 / 113 [4] The Holy Qur'an 96 / 5 [5] The Holy Qur'an 4 / 113

फ़तावा रिज़विया जिल्द 29

...रखते हैं, और अल्लाह न करे इसका मतलब हरगिज़ यह नहीं कि 'मैं और तुम, हम और वे, यह और वह, हर चीज़ ख़ुदा है'; यह इत्तिहाद (अद्वैतवाद) वालों का कहना है, जो काफ़िरों का एक फ़िरक़ा है। और पहली बात तौहीद (एकेश्वरवाद) वालों का मज़हब है, कि इस्लाम वाले ही सच्चे ईमान वाले हैं।

सबसे आला, सबसे औला दूसरा अक़ीदा इसके साथ ही (कि उनकी पाक ज़ात दूसरी ज़ातों की समानता से मुक्त है और उनके उच्च गुण दूसरों के गुणों की समानता से बरी हैं), उन्होंने अपनी पूर्ण हिकमत (और व्यापक दया) के अनुसार दुनिया (यानी अल्लाह के अलावा सब कुछ) को वैसा ही बनाया जैसा वे (अपने प्राचीन, शाश्वत ज्ञान से) जानते थे। उन्होंने इसे अस्तित्व प्रदान किया (पूरी कायनात को अस्तित्व का चोला बख्शा। अपने बंदों को पैदा किया, उन्हें कान, आँख, हाथ, पैर, ज़बान आदि दिए और उन्हें काम में लाने का तरीक़ा भी बताया। फिर, उन्हें अक़्ल (बुद्धि) के शरीफ़ जौहर से विशिष्ट किया, जिसने तमाम जानवरों पर इंसान का मर्तबा बढ़ाया। फिर लाखों बातें ऐसी हैं जिन्हें अक़्ल समझ नहीं सकती थी। इसलिए नबियों को भेजकर और किताबें उतारकर ज़रा-ज़रा सी बात बता दी। और किसी के लिए उज़्र (बहाने) की कोई जगह नहीं छोड़ी)। और मुकल्लफ़ीन (जो शरीअत के अहकाम के पात्र, आदेश और निषेध के संबोधन के योग्य, बालिग़ और अक़्लमंद हैं) को अपने फ़ज़्ल और इंसाफ़ से दो समूहों में बाँट दिया: "एक समूह जन्नत में होगा"[1] - (एक जन्नती और कामयाब, जिसने हक़ (सत्य) को स्वीकार किया) और "दूसरा समूह दहकती आग में होगा"[2] - (दूसरा जहन्नमी और तबाह होने वाला, जिसने हक़ स्वीकार करने से जी चुराया)। और जिस तरह वजूद (अस्तित्व) के अक्स (सच्चे वजूद, जिसकी महिमा महान है) से सबको हिस्सा मिला (और इसी लिहाज़ से वे 'हैं' और 'मौजूद' कहलाए), उसी तरह जन्नत वाले समूह को उनके पूर्ण गुणों से विशेष हिस्सा मिला (दुनिया और आख़िरत में उनके लिए कामयाबी और फ़लाह के दरवाज़े खुले और विशेष इल्म और फ़ज़्ल की दौलतों से उनकी झोली भरी गई)। "और (अल्लाह ने) तुम्हें वह सिखाया जो तुम नहीं जानते थे"[3] के मदरसे (स्कूल) और "इंसान को वह सिखाया जो वह नहीं जानता था"[4] के दारुल-उलूम (यूनिवर्सिटी) में उन्हें शिक्षा दी (कि जो कुछ वे नहीं जानते थे वह सिखाया, फिर) "और तुम पर अल्लाह का बहुत बड़ा फ़ज़्ल है"[5] - ने और रंग भरे (कि अल्लाह तआला का महान फ़ज़्ल उन पर छाया रहा, मौला-ए-करीम ने उन्हें तरह-तरह की नेमतों से नवाज़ा। अनगिनत ख़ूबियों और अच्छाइयों

से उन्हें सँवारा। दिल और शरीर, तन और मन, ज़ाहिर और बातिन को बुराइयों और निंदनीय गुणों से पाक-साफ़ किया और अच्छे गुणों और सुंदर अख़्लाक़ से उन्हें सजाया और...)

[1] अल-क़ुरआन अल-करीम 42 / 7 [2] अल-क़ुरआन अल-करीम 42 / 7 [3] अल-क़ुरआन अल-करीम 4 / 113 [4] अल-क़ुरआन अल-करीम 96 / 5 [5] अल-क़ुरआन अल-करीम 4 / 113

رکھتے ، اور حاشا ثم حاشا یہ معنی ہرگز نہیں کہ من و تو، ما و شما ، ایں و آں، ہر شے خدا ہے، یہ اہل اتحاد کا قول ہے جو ایک فرقہ کافروں کا ہے۔ اور پہلی بات مذہب ہے اہل توحید کا، کہ اہل اسلام وہ صاحب ایمان حقیقی ہیں)

سب سے اعلیٰ، سب سے اولیٰ عقیدہ ثانیہ بایں ہمہ (کہ اُس کی ذات کریم دوسری ذوات کی مناسبت سے معرّا ہے اور اس کی صفات عالیہ اوروں کی صفات کی مشابہت سے مبرّا) اس نے اپنی حکمت کاملہ (ورحمت شاملہ) کے مطابق عالم (یعنی ماسوی اللہ) کو جس طرح وہ (اپنے علم قدیم ازلی سے) جانتا ہے۔ ایجاد فرمایا (تمام کائنات کو خلعت وجود بخشا۔ اپنے بندوں کو پیدا فرمایا انہیں کان، آنکھ، ہاتھ، پاؤں زبان وغیرہ عطا فرمائے اور انہیں کام میں لینے کا طریقہ الہام فرمایا۔ پھر اعلیٰ درجہ کے شریف جوہر یعنی عقل سے ممتاز فرمایا جس نے تمام حیوانات پر انسان کا مرتبہ بڑھایا۔ پھر لاکھوں باتیں ہیں جن کا عقل ادراک نہیں کر سکتی تھی۔ لہٰذا انبیاء بھیج کر کتابیں اتار کر ذرا ذرا سی بات بتا دی۔ اور کسی کو عذر کی کوئی جگہ باقی نہ چھوڑی) اور مکلفین کو (جو تکلیف شرعی کے اہل، امر و نہی کے خطاب کے قابل، بالغ عاقل ہیں) اپنے فضل وعدل سے دو فرقے کر دیا " فَرِيقٌ فِي الْجَنَّةِ" 1 - (ایک جنتی و ناجی، جس نے حق قبول کیا) " وَ فَرِيقٌ فِي السَّعِيرِ " 2 - (دوسرا جہنمی و ہالک، جس نے قبول حق سے جی چرایا۔) اور جس طرح پر تو وجود (موجود حقیقی جل جلالہ) سے سب نے بہرہ پایا (اور اسی اعتبار سے وہ ہست و موجود کہلایا) اسی طرح فریق جنت کو اس کے صفات کمالیہ سے نصیبہ خاص ملا (دنیا و آخرت میں اس کے لیے فوز و فلاح کے دروازے کھلے اور علم و فضل خاص کی دولتوں سے اس کے دامن بھرے) دبستان (مدرسہ) " عَلَّمَكَ مَا لَمْ تَكُنْ تَعْلَمُ" 3 - (اور دارالعلوم " عَلَّمَ الْإِنْسَانَ مَا لَمْ يَعْلَمْ " 4 (میں تعلیم

فرمایا (کہ جو کچھ وہ نہ جانتا تھا اُسے سکھایا پھر) " وَ كَانَ فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكَ عَظِيمًا " 5 - نے اور رنگ آمیزیاں کیں (کہ اللہ تعالی کا فضل عظیم اس پر جلوہ گر رہا، مولائے کریم نے گونا گوں نعمتوں سے اسے نوازا۔ بے شمار فضائل و محاسن سے اسے سنوارا۔ قلب و قالب، جسم و جاں، ظاہر و باطن کو رذائل اور خصائل قبیحہ مذمومہ سے پاک صاف اور محامد و اخلاق حسنہ سے اسے آراستہ و

1 القرآن الکریم 42 / 7 2 القرآن الکریم 42 / 7 3 القرآن الکریم 4 / 113 4 القرآن الکریم 96 / 5 5 القرآن الکریم 4 / 113

...adorned. And set him on the paths of Divine Proximity. And all this was through the benevolence (charity and mediation) of the Essence, the Giver of all Blessings, Whom He made His special beloved. (He honored him with the rank of Great Belovedness, such that all creation, including Prophets, Messengers, and Archangels, seek God's pleasure, while He seeks his pleasure). He made him the center of the circle of 'Kun' (Be) and the circle of the center of 'Kaf' and 'Nun' (the letters forming 'Kun'). He adorned his proportionate stature with the high-ranking robe of His perfect Caliphate, so that all beings of the universe find rest under his dense shade (the extended shade of compassion) and grand hem (the mantle filled with mercy). Even the great ones near to God (who are honored with special proximity in his high court) cannot reach the Real King (Exalted be His Name and Great be His Glory) unless they seek mediation through this refuge of the world (the sanctuary of existence and place) and make him a means to His high presence. The keys to the treasures of knowledge, power, governance, and disposal were placed in his hand. He made the great ones like fragments of the moon (bright stars) and made him the world-illuminating sun, so they may derive light from him (filling their bosoms with the lights of gnosis and recognition) and not bring their own merits (and their virtues and excellences, in comparison to his, into account). To the sanctuary of honor and glory of that (most sublime and high beloved), He granted such honor and elevation that thousands upon thousands of Great Thrones ('Arsh) would be lost in it like a tiny, insignificant particle in a shoreless wilderness (a vast and wide desert whose horizon is invisible). What would be the worth, power, or status of its flight in a desolate desert? He granted such vast and profound knowledge that the sciences of the first and the last ones appear as mere streams from his ocean of knowledge or droplets from the overflow of his bounties. (He showed him from East to West, from the Throne to the Earth; He made him a witness to the kingdom of the heavens and the earth). He told him everything of 'what was' and 'what will be', from the first day to the last. He has complete information (and full awareness) of all the unseen and seen from eternity past to eternity future, except what Allah wills (and still in the encompassment of his knowledge, those thousands upon thousands of boundless and shoreless oceans are surging, whose reality only he knows or his Giver, his Master and Lord, Exalted and High). His vision (and sight) is so encompassing (and its scope so broad) that the six directions are before him (such that his sight has complete command over them). He lifted the world before him so that the entire

universe until the Day of Resurrection is in view in a single instant. Thus, he sees the world and whatever is to happen in the world until Resurrection as clearly as his own palm; and in the eyes of faith, this is not [beyond] Divine Power.

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

...सुशोभित किया। और ईश्वर की निकटता के मार्गों पर उसे डाल दिया) और यह सब उस बरकतों वाली हस्ती का सदक़ा (दान और माध्यम) था जिसे अपना विशेष प्रिय (महबूब) बनाया। (बड़ी महबूबियत के पद से सम्मानित किया कि समस्त सृष्टि यहाँ तक कि नबी, रसूल और निकटवर्ती फ़रिश्ते ईश्वर की प्रसन्नता के खोजी हैं और वह उनकी प्रसन्नता का आकांक्षी है)। उसे 'कुन' (हो जा) के घेरे का केंद्र और 'काफ़-नून' के केंद्र का घेरा बनाया, अपनी पूर्ण खिलाफत का उच्च पद वाला वस्त्र उसके सुडौल शरीर पर सजाया कि ब्रह्मांड के सभी व्यक्ति उसकी घनी छाया (दया और करुणा की लंबी छाया) और विशाल दामन (रहमत से भरे आँचल) में विश्राम करते हैं। महान निकटवर्ती लोग (जो उसके उच्च दरबार में विशेष निकटता से सम्मानित हैं), वे (भी) जब तक इस विश्व के शरण-स्थल (ब्रह्मांड का आश्रय) के माध्यम से मध्यस्थता न करें (उन्हें उसके उच्च दरबार में वसीला न बनाएँ), सच्चे सम्राट (अल्लाह - जिसका नाम महान और जिसकी महिमा ऊँची है) तक पहुँचना संभव नहीं। ज्ञान और शक्ति, प्रबंधन और नियंत्रण के खजाने की कुंजियाँ उसके हाथ में रखीं, महान लोगों को चाँद के टुकड़े (रोशन सितारे) बनाया और उसे 'आफ़ताब-ए-आलमताब' (जगत को प्रकाशित करने वाला सूर्य) बनाया ताकि वे उससे प्रकाश प्राप्त करें (ज्ञान और पहचान की रोशनी से अपना आँचल भरें) और उसके सामने अपनी महिमा (और अपने गुणों और खूबियों को उसके सामने गणना में) न लाएँ। उस (परम और महान प्रिय) की महिमा और प्रताप के परदे को वह गौरव और ऊंचाई प्रदान की कि महान अर्श जैसे हज़ारों-हज़ार उसमें इस तरह खो जाएँ जैसे एक विशाल रेगिस्तान (जिसका किनारा न दिखाई दे) में एक छोटा सा कण (कि विशाल मरुस्थल में उसकी उड़ान की क्या बिसात और क्या शक्ति और प्रतिष्ठा)। ज्ञान वह विशाल और गहरा प्रदान किया कि पूर्व और बाद के समस्त ज्ञान उसके ज्ञान के समुद्र की नहरें या कृपा की बौछारों के छींटे मात्र ठहरें। (पूर्व से पश्चिम, अर्श से फर्श तक उन्हें दिखाया, आसमानों और ज़मीन के साम्राज्यों का गवाह बनाया)। सृष्टि के पहले दिन से आखिरी दिन तक का, जो कुछ हो चुका और जो होने वाला है, सब उन्हें बताया। अनंत काल से अनंत काल तक के समस्त परोक्ष और प्रत्यक्ष (गायब और हाज़िर) का पूर्ण ज्ञान (और पूर्ण जागरूकता उन्हें) प्राप्त है, सिवाय उसके जो अल्लाह चाहे (और अभी भी उनके ज्ञान की सीमा में वे हज़ारों-हज़ार, असीम और अनंत समुद्र लहरा रहे हैं जिनकी वास्तविकता या तो वे जानें या उन्हें देने वाला उनका स्वामी और ईश्वर)। उसकी दृष्टि (और नज़र) ऐसी व्यापक है (और उसकी सीमा इतनी विस्तृत है) कि छः दिशाएं सामने हों (कि दृष्टि को उन पर पूर्ण नियंत्रण प्राप्त हो), दुनिया उसके सामने इस तरह उठा

ली कि प्रलय के दिन तक का संपूर्ण ब्रह्मांड एक क्षण में सामने है (तो वे दुनिया को और जो कुछ दुनिया में प्रलय तक होने वाला है, सब कुछ ऐसे देख रहे हैं जैसे अपनी हथेली को, और ईमान वाली निगाहों में यह ईश्वर की शक्ति से बाहर नहीं)।

पृष्ठ 347/750

پیراستہ کیا۔ اور قربِ خداوندی کی راہوں پر اُسے ڈال دیا) اور یہ سب تصدق (صدقہ و طفیل) ایک ذات جامع البرکات کا تھا جسے اپنا محبوبِ خاص فرمایا۔ (مرتبہ محبوبیت کُبریٰ سے سرفراز فرمایا کہ تمام خلق حتی کہ نبی و مرسل و ملک مقرب جویائے رضائے الٰہی ہے اور وہ ان کی رضا کا طالب) مرکزِ دائرہ (کُن) و دائرۂ مرکزِ کاف و نون بنایا، اپنی خلافتِ کاملہ کا خلعت رفیع المنزلت اُس کے قامتِ موزوں پر سجایا کہ تمام افرادِ کائنات اس کے ظلِ ظلیل (سایۂ ممد و رافت) اور ذیل جلیل (دامنِ معمورِ رحمت) میں آرام کرتے ہیں۔ اعاظمِ مقربین (کہ اُس کی بارگاہِ عالی جاہ میں قربِ خاص سے مشرف ہیں) (ان) کو (بھی) جب تک اس مامنِ جہاں (پناہ گاہِ کون و مکان) سے توسّل نہ کریں (انہیں اس کی جنابِ والا میں وسیلہ نہ بنائیں) بادشاہ (حقیقی عزّاسمہ وجلّ مجدہ) تک پہنچنا ممکن نہیں کنجیاں، خزائنِ علم و قدرت، تدبر و تصرف کی، اس کے ہاتھ میں رکھیں، عظمت والوں کو مہ پارے (چاند کے ٹکڑے، روشن تارے) اور اس کو اس نے آفتابِ عالم تاب کیا کہ اس سے اقتباسِ انوار کریں (عرفان و معرفت کی روشنیوں سے اپنے دامن بھریں) اور اس کے حضورِ اناز بان پر (اور اپنے فضائل و محاسن ، ان کے مقابل، شمار میں) نہ لائیں اس (محبوبِ اجل و اعلیٰ) کے سراپردۂ عزت و اجلال کو وہ عزت و رفعت بخشی کہ عرشِ عظیم جیسے ہزاراں ہزار اس میں یوں گم ہو جائیں جیسے بیدائے ناپیداکنار (وسیع و عریض بیابان، جس کا کنارہ نظر نہ آئے اس) میں ایک شلنگ ذرۂ کم مقدار (کہ لق ودق صحرا میں اس کی اڑان کی کیا وقعت اور کیا قدرت و منزلت) علم وہ وسیع و غزیر (کثیر در کثیر) عطا فرمایا کہ علومِ اوّلین و آخرین اس کے بحرِ علوم کی نہریں یا جوششِ فیوض کے چھینٹے قرار پائے (شرق تا غرب، عرش تا فرش انہیں دکھایا، ملکوت السموات والارض کا شاہد بنایا) روزِ اوّل سے روزِ آخر تک کا، سب ماکان وما یکون انہیں

بتایا، ازل سے ابد تک تمام غیب و شہادت (غائب و حاضر) پر اطلاعِ تام (و آگاہی تمام انہیں) حاصل ، الا ماشاء اللہ (اور ہنوز ان کے احاطۂ علم میں وہ ہزار در ہزار، بے حد و بے کنار سمندر لہرا رہے ہیں جن کی حقیقت وہ جانیں یا اُن کا عطا کرنے والا اُن کا مالک و مولیٰ جل و علا) بصر (و نظر) وہ محیط (اور اس کا احاطہ اتنا بسیط) کہ شش جہت مقابل (کہ بصارت کو ان پر اطلاع تام حاصل) دنیا اس کے سامنے اٹھالی کہ تمام کائنات تا بروزِ قیامت، آنِ واحد میں پیشِ نظر (تو وہ دنیا کو اور جو کچھ دنیا میں قیامت تک ہونے والا ہے سب کو ایسے دیکھ رہے ہیں جیسے اپنی ہتھیلی کو، اور ایمانی نگاہوں میں نہ یہ قدرت الٰہی)

Fatawa Razawiyya Volume 29

(It is not difficult for him, compared to the great honor and dignity of the prophets). For the one with keen hearing, a sound from a five-hundred-year distance is like a voice reaching the ear. And what can be said about the power (and authority) bestowed by the Absolute Power? For they are the model and mirror of the power of the Omnipotent (Exalted is He). His command is effective in the upper and lower worlds (the regions and sides of the earth and sky). The rule of "Kun" (Be) respects his tongue; if he tells a dead person (to stand up by Allah's command), he comes alive, and if he signals to the moon, it immediately splits into two. Whatever he desires, Allah desires; for he only desires what Allah desires. The decree of absolute vicegerency (the general mandate, the symbol, the word) and the royal command of complete delegation was read in his noble name (honorable name). His currency and sermon are current from the lowest assemblies to the highest worlds. (Thus, he is the absolute deputy of Allah Almighty, and everything other than Allah, the entire universe, is under his disposal, under his authority, entrusted to him to do as he pleases, give to whom he pleases, and take back from whom he pleases. No one in the entire world can turn back his command. And indeed, how could anyone turn back his command when the command of Allah is not turned back by anyone's turning? The entire universe is his subject, and he is the master of all people; he who does not consider him his master is deprived of the sweetness of the Sunnah. The kingdoms of the heavens and the earth are under his command; the entire earth is his property and all of paradise is his estate). Whatever anyone receives in this world and the religion, they receive it from his throne-like court. (The keys to Paradise and Hell were given into his holy hands. Sustenance, goodness, and every kind of gift are distributed from the Prophet's court. This world and the hereafter are but a part of the Prophet's bounty.

For among your bounties are this world and its co-wife (the hereafter)[1] (Undoubtedly, this world and the hereafter are from your generosity and bounty).

So, whatever blessing, worldly or hereafter, physical or spiritual, small or large, everything other than Allah has received, they received it through his hand of bestowal. It was received through his kindness, through his sake, and for him. Allah bestows, and it was received through his hands, is received, and will continue to be received forever. Just as religion and community, Islam and Sunnah, righteousness and worship, asceticism and purity, and knowledge and gnosis—all religious blessings—are his bestowed gifts. Likewise, wealth and riches, healing and health,

honor and elevation, and children and pleasure—all these worldly blessings have also been received through his holy hand.

[1] Majmu' al-Mutun, Qasida Burda in his praise (peace and blessings of Allah be upon him), Religious Affairs Department, State of Qatar, p. 10. Page 348 of 750

फतावा रज़विया जिल्द 29

(अंबिया की महान गरिमा और प्रतिष्ठा के मुकाबले यह उनके लिए कठिन नहीं है)। सुनने वाले के लिए पाँच सौ साल की दूरी की आवाज़ वैसी ही है जैसे कान में पड़ती आवाज़। और (क़ादिरे मुतलक़ की अता से) उनकी कुदरत (और अधिकार) का क्या कहना, कि वे क़ादिरे क़दीर (अल्लाह) की कुदरत के नमूने और आईने हैं, ऊपर और नीचे के आलम (ज़मीन और आसमान के कोनों) में उनका हुक्म जारी है। हुक्मे 'कुन' उनकी ज़बान का सम्मान करता है; मुर्दे को कहें (कि अल्लाह के हुक्म से खड़ा हो जा तो वह) ज़िंदा हो जाए और चाँद को इशारा करें (तो) तुरंत दो टुकड़े हो जाए। जो (वे) चाहते हैं, खुदा वही चाहता है; क्योंकि वे वही चाहते हैं जो खुदा चाहता है। मुतलक़ खिलाफत का घोषणापत्र (आम पत्र, पगड़ी, कलमा) और पूर्ण सुपुर्दगी का शाही फरमान उनके पाक नाम पर पढ़ा गया और उनका सिक्का और खुतबा निचले आलम से लेकर ऊपरी आलम तक जारी हुआ। (तो वे अल्लाह अज़्वजल के मुतलक़ नायब हैं और अल्लाह के सिवा सब कुछ, सारा आलम उनके अधिकार में है, उनके सुपुर्द है कि जो चाहें करें, जिसे जो चाहें दें और जिससे जो चाहें वापस ले लें। पूरे संसार में कोई उन्हें रोकने वाला नहीं और हाँ, कोई उनका हुक्म कैसे टाल सकता है जबकि अल्लाह का हुक्म किसी के टालने से नहीं टलता। सारा संसार उनका महकूम (प्रजा) है और वे तमाम इंसानों के मालिक हैं; जो उन्हें अपना मालिक न समझे, वह सुन्नत की मिठास से महरूम है। आसमानों और ज़मीन की सल्तनत उनके अधीन है, पूरी ज़मीन उनकी मिल्कियत है और सारा जन्नत उनकी जागीर है)। दुनिया और दीन में जो जिसे मिलता है, वह उनके अर्श जैसा दरबार से मिलता है। (जन्नत और जहन्नुम की चाबियाँ उनके मुकद्दस हाथों में दे दी गईं। रिज़्क, खैर और हर तरह की अता हुज़ूर ही के दरबार से तकसीम होती है। दुनिया और आखिरत हुज़ूर ही की अता का एक हिस्सा है।

बेशक दुनिया और आखिरत आपकी सखावत (दानशीलता) से है[1] (बेशक दुनिया और आख़िरत आपके जूद-ओ-सख़ा से है)

तो अल्लाह के सिवा तमाम मखलूक ने जो नेमत, दुनियावी हो या आखिरती, जिस्मानी हो या रूहानी, छोटी हो या बड़ी पाई, वह उन्हीं के अता करने वाले हाथ से पाई। उन्हीं के करम, उन्हीं के तुफैल, उन्हीं के लिए मिली। अल्लाह अता फरमाता है और उनके हाथों से मिली, मिलती है और हमेशा मिलती रहेगी। जिस तरह दीन-ओ-मिल्लत, इस्लाम-ओ-सुन्नत, भलाई और इबादत, परहेज़गारी और पाकीज़गी, और इल्म-ओ-मारिफत—तमाम दीनी नेमतें उन्हीं की अता की हुई हैं। वैसे ही धन-दौलत,

शिफा और सेहत, इज़्ज़त और बुलंदी, और औलाद और खुशहाली—ये तमाम दुनियावी नेमतें भी उन्हीं के मुकद्दस हाथों से मिली हैं।

[1] मजमूअल मुतून, कसीदा बुर्दा उनकी तारीफ में (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम), धार्मिक मामले विभाग, कतर राज्य, पृष्ठ 10। पेज 348 का 750

پر دشوار نہ عزت و وجاہتِ انبیاء کے مقابل بسیار) سمع والا کے نزدیک پانچ سو برس راہ کی صدا جیسے کان پڑی آواز ہے اور (بعطائے قادرِ مطلق) قدرت (و اختیارات) کا تو کیا پوچھنا، کہ قدرتِ قدیر علی الاطلاق جل جلالہ کی نمونہ و آئینہ ہیں، عالم علوی و سفلی (اقطار و اطرافِ زمین و آسمان) میں اس کا حکم جاری۔ فرمانروائی کن کو اس کی زباں کی پاسداری، مردہ کو تم کہیں (کہ بحکم الہی کھڑا ہو جا تو وہ) زندہ اور چاند کو اشارہ کریں (تو) فوراً دو پارہ ہو ۔ جو (یہ) چاہتے ہیں خدا وہی چاہتا ہے کہ یہ وہی چاہتے ہیں جو خدا چاہتا ہے۔ منشورِ خلافتِ مطلقہ (نامہ، عامہ، شملہ، کلمہ) و تفویضِ تام کا فرمانِ شاہی) ان کے نام نامی (اسم گرامی) پر پڑھا گیا اور سکہ و خطبہ ان کا ملاءِ ادنیٰ سے عالمِ بالا تک جاری ہوا۔ (تو وہ اللہ عزوجل کے نائب مطلق ہیں اور تمام ماسوی اللہ تمام عالم ان کے تحت تصرف ان کے زیر اختیار، ان کے سپرد کہ جو چاہیں کریں جسے جو چاہیں دیں اور جس سے جو چاہیں واپس لیں تمام جہان میں کوئی ان کا پھیرنے والا نہیں اور ہاں کوئی کیونکر ان کا حکم پھیر سکے کہ حکم الہی کسی کے پھیرے نہیں پھرتا۔ تمام جہان ان کا محکوم اور تمام آدمیوں کے وہ مالک، جو انہیں اپنا مالک نہ جانے حلاوتِ سنت سے محروم مل۔ ملکوت السموات والارض ان کے زیر فرمان، تمام زمین ان کی ملک اور تمام جنت ان کی جاگیر) دنیا و دیں میں جو جسے ملتا ہے ان کی بارگاہِ عرش اشتباہ سے ملتا ہے۔ (جنت و نار کی کنجیاں دستِ اقدس میں دے دی گئیں۔ رزق و خیر اور ہر قسم کی عطائیں حضور ہی کے دربار سے تقسیم ہوتی ہیں۔ دنیا و آخرت حضور ہی کی عطا کا ایک حصہ ہے۔

فان من جودك الدنیا وضرتها[1] (بے شک دنیا و آخرت آپ کے جود و سخا سے ہے)

تو تمام ماسوی اللہ نے جو نعمت، دنیاوی و اخروی، جسمانی یا روحانی، چھوٹی یا بڑی پائی انہیں کے دستِ عطا سے پائی۔ انہیں کے کرم، انہیں کے طفیل، انہیں کے اسطے سے ملی۔ اللہ عطا فرماتا ہے اور ان کے ہاتھوں ملا، ملتا ہے اور ابد الآباد تک ملتا رہے گا جس طرح دین و ملت، اسلام و سنت، صلاح و عبادت، زہد و طہارت اور علم و معرفت ساری دینی نعمتیں ان کی عطا فرمائی ہوئی ہیں۔ یونہی مال و دولت، شفاء و صحت، عزت و رفعت اور فرزند و عشرت یہ سب دنیاوی نعمتیں بھی انہیں کے دستِ اقدس سے ملی ہیں۔

[1] مجموع المتون قصیدة بردة فی مدحه صلی الله تعالی علیه وسلم الشئون الدینیه دولة قطر ص ۱۰

Fatawa Razawiya, Volume 29

Al-Rida said: That God should grant something without their mediation—God forbid, this is totally wrong; it is the desire of one lacking insight.[1]

And the poor one [the author] said: Without their intercession, one does not receive even if they ask; without their mediation, there is neither questioning nor hearing. That superior ruler, to whom everything besides Allah is a subject, and there is no other ruler in the universe except them. (Their command is operative in the kingdom of the heavens and the earth; all of God's creation is commanded to obey and follow them. They belong to God, and whatever belongs to God, belongs to them. I will call you 'Master' alone, for you are the Beloved of the Master. Meaning between the beloved and the lover, there is no 'mine' or 'thine'.[2] Whatever head there is, it is bowed towards them; and whatever hand there is, it is stretched towards them.) Everyone is needy of them, and they are needy of God (they are the heirs of the Divine Presence and the entire world receives through their mediation). The Great Quran is the register of their praise and commendation, and their name is everywhere alongside the name of God. The shadow of 'And We exalted for you your renown' is upon you; your mention is high, your word is supreme.[3] The legislative commands, the decrees of Sharia, the commands and prohibitions are all in their control, all entrusted to them. Whatever they declare in any matter on their own behalf, that becomes Sharia; whatever they wish to forbid for whomever, and whatever they wish to make lawful for whomever, and whatever obligation they wish to waive, that becomes the law. In short, they are the absolute vicegerents of the Divine factory, and the kings of the world are dependent and needy of them.

---

[1] Hadaiq-e-Bakhshish, 'Haziri-e-Bargah-e-Be-Hamain Jae', Part 1, Maktaba Razawiya, Karachi, p. 94. [2] Hadaiq-e-Bakhshish, 'Wasl Awwal, in praise of the Messenger of Allah, peace and blessings of Allah be upon him', Part 1, Maktaba Razawiya, Karachi, p. 2. [3] Hadaiq-e-Bakhshish, 'Wasl Chaharum, in refutation of enemies etc.', Part 1, Maktaba Razawiya, Karachi, p. 9.

फ़तावा रज़विया, खंड 29

अल-रिदा ने कहा: उनके माध्यम के बिना ईश्वर कुछ प्रदान करे—ईश्वर न करे, यह पूरी तरह गलत है; यह दृष्टिहीन की लालसा है।[1]

फ़क़ीर (लेखक) ने कहा: उनके वसीले के बिना, माँगने पर भी नहीं मिलता; उनके माध्यम के बिना, न कोई पूछताछ है न सुनवाई। वह श्रेष्ठ शासक जिसके अल्लाह के सिवा सभी अधीन हैं, और उनके अलावा ब्रह्मांड में कोई और शासक नहीं है। (आकाशों और पृथ्वी के साम्राज्य में उनका आदेश लागू है, समस्त ईश्वरीय सृष्टि को उनकी आज्ञा मानने और पालन करने का आदेश है। वे ईश्वर के हैं, और जो कुछ ईश्वर का है, वह सब उनका है। मैं तो तुम्हें मालिक ही कहूँगा क्योंकि तुम मालिक के महबूब (प्रिय) हो। यानी प्रेमी और प्रिय के बीच मेरा-तेरा का कोई भेद नहीं होता।[2] जो भी सिर है वह उनकी ओर झुका हुआ है, और जो भी हाथ है वह उनकी ओर फैला हुआ है।) सभी उनके मोहताज हैं और वे ईश्वर के मोहताज हैं (वही ईश्वरीय दरबार के वारिस हैं और पूरे संसार को उन्हीं के माध्यम से मिलता है)। महान कुरान उनकी प्रशंसा और स्तुति का रजिस्टर है, और उनका नाम हर जगह ईश्वर के नाम के बराबर है। 'व-रफ़अना ल-क ज़िक्रक' (हमने तुम्हारे लिए तुम्हारा ज़िक्र बुलंद किया) की छाया तुम पर है; तुम्हारा ज़िक्र ऊँचा है, तुम्हारी बात सर्वोपरि है।[3] विधायी आदेश, शरीयत के फरमान, आदेश और निषेध सब उनके अधिकार में हैं, सब उन्हें सौंपे गए हैं। वे जिस बात में जो चाहें अपनी ओर से कह दें, वही शरीयत है; जिस पर जो चाहें हराम (वर्जित) कर दें, और जिसके लिए जो चाहें हलाल (वैध) कर दें, और जो कर्तव्य चाहें माफ कर दें, वही शरीयत है। संक्षेप में, वे ईश्वरीय कारखाने के पूर्ण मुख्तार (सर्वेसर्वा) हैं, और दुनिया के शासक उनके आश्रित और मोहताज हैं।

---

[1] ह़दाइक़-ए-बख़्शिश, 'ह़ाज़िरी-ए-बारगाह-ए-बे-ह़मईं जाए', भाग 1, मकतबा रज़विया, कराची, पृष्ठ 94. [2] ह़दाइक़-ए-बख़्शिश, 'वस्ल अव्वल, रसूल-ए-अकरम ﷺ की नात में', भाग 1, मकतबा रज़विया, कराची, पृष्ठ 2. [3] ह़दाइक़-ए-बख़्शिश, 'वस्ल चहारुम, दुश्मनों के खंडन में आदि', भाग 1, मकतबा रज़विया, कराची, पृष्ठ 9.

قال الرضا: بے ان کے واسطے کے خدا کچھ عطا کرے حاشا غلط غلط، یہ ہوسِ بے بصر کی ہے ۱

وقال الفقیر: بے اُن کے توسل کے، مانگے بھی نہیں ملتا بے اُن کے توسط کے، پرسش ہے نہ شنوائی وہ بالا دست حاکم کہ تمام ماسویٰ اللہ ان کا محکوم اور ان کے سوا عالم میں کوئی حاکم نہیں۔ (ملکوت السموات والارض میں ان کا حکم جاری ہے ، تمام مخلوق الہیٰ کو ان کے لیے حکمِ اطاعت وفرمانبرداری ہے وہ خدا کے ہیں ، اور جو کچھ خدا کا ہے سب ان کا ہے۔ میں تو مالک ہی کہوں گا کہ ہو مالک کے حبیب یعنی محبوب و محب میں نہیں میرا، تیرا ۲ جو سر ہے اُن کی طرف جھکا ہوا، اور جو ہاتھ ہے وہ ان کی طرف پھیلا ہوا۔) سب ان کے محتاج اور وہ خدا کے محتاج (وہی بارگاہ الٰہی کے وارث ہیں اور تمام عالم کو انہیں کی وساطت سے ملتا ہے) قرآن عظیم ان کی مدح وستائش کا دفتر (اور) نام ان کا ہر جگہ نام الہی کے برابر۔ ورفعنالک ذکرکا ہے سایہ تجھ پر ذکراونچا ہے ترا، بول ہے بالا تیرا ۳ احکامِ تشریعیہ، شریعت کے فرامین ، اوامر و نواہی سب ان کے قبضہ میں، سب ان کے سپرد، جس بات میں جو چاہیں اپنی طرف سے فرمادیں ، وہی شریعت ہے ، جس پر جو چاہیں حرام فرمادیں ، اور جس کے لیے جو چاہیں حلال کردیں ، اور جو فرض چاہیں معاف فرمادیں وہی شرع ہے ، غرض وہ کارخانہ الٰہی کے مختارِ کل ہیں ، اور خُسر وانِ عالم اس کے دستِ نگر و محتاج

۱ حدائق بخشش حاضری بارگاہِ بہمیں جائے حصہ اول مکتبہ رضویہ کراچی ص ۹۴ ۲ حدائق بخشش وصل اول در نعت رسول اکرم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم حصہ اول مکتبہ رضویہ کراچی ص ۳ ۲ حدائق بخشش وصل چہارم، در منافحت اعداء الخ حصہ اول مکتبہ رضویہ کراچی ص ۹

Fatawa Razawiyya, Volume 29

(Who is he?) I mean, the Master of the Messengers (Leader of leaders), the Seal of the Prophets (The last of the Prophets), a Mercy to the worlds (Mercy for both worlds), the Intercessor for the sinners (Intercessor for the wrongdoers), the Leader of the radiant-faced ones (Guide for the luminous and bright-foreheaded ones), the Hidden Secret of Allah (the secret of the Lord of Honor), the Treasured Pearl of Allah (the pearl of the Divine treasury, precious and hidden), the Joy of the Grieving Heart (Support for broken hearts), the Knower of what was and what will be (Knowledgeable of the past and future), the Crown of the Pious (the crown upon the heads of the righteous), the Prophet of Prophets (the crown of all prophets) Muhammad al-Mustafa ﷺ, the Messenger of the Lord of the worlds, peace and blessings of Allah Almighty be upon him, his family, and his companions until the Day of Judgement.

Despite all this (his beautiful virtues, great merits, praised qualities, and commendable attributes), he is a servant of God and needy (and an embodiment of "Whatever is in the heavens and the earth asks of Him"[1]). God forbid that any thought of identity or likeness (the thought or whim that his noble essence is identical to the Essence of Allah, the Glorious, or like it, similar, comparable, or equal) could occur to anyone but an unbeliever. Within the treasury of Power, all imaginable perfections (for the created and originated) were found in him, such that no one else has the possibility of rivalry (or equality and levelness in those lofty ranks), yet he did not, and could not, step outside the circle of servitude and indigence (bondage and need). Greatness belongs to Allah; what similarity (or likeness) can there be with the Essence and Attributes of the Almighty? (The suspicion of being similar or equal to Him is not even worthy of passing through the heart of a believer, since it is the faith of the People of Truth that the Most Noble Prophet, Master of the World, most knowledgeable, peace and blessings of Allah Almighty be upon him, his family, and companions, could not fully offer the thanks and praise due for those divine favors which are bestowed from the Divine Court every moment, every hour, every second, every instant upon his refuge of the helpless; nor is it possible to do so, because the very gratitude they offer is another blessing requiring further thanks, on and on without end). The divine favors and blessings (Lordly bounties and gifts, especially upon you) are infinite. There is no limit or end to them; no one can count or number them. Allah Almighty said: "And the hereafter is better for you than the first"[2] - (O Prophet, indeed every coming moment is better for you than the past moment, and

from hour to hour your lofty ranks are in progression) to the stage of 'two bows' length' (Qaba Qawsayn).

[1] The Holy Quran 55/29 [2] The Holy Quran 93/4

फ़तावा रज़विया, जिल्द 29

(वह कौन?) यानी सैयदुल मुरसलीन (रहबरों के रहबर), खातमुन्नबीय्यीन (नबियों के अंत), रहमतुल्लिल आलमीन (दोनों जहानों के लिए रहमत), शफीउल मुज़निबीन (गुनहगारों के शिफ़ाअत करने वाले), क़ाइदुल ग़ुर्रिल मुहाज्जलीन (नूरानी और रोशन पेशानी वालों के हादी), सिर्रुल्लाहिल मंकनून (रब्बुल इज़्ज़त का ढका हुआ राज़), दुर्रुल्लाहिल मखज़ून (इलाही खज़ाने का मोती, कीमती और पोशीदा), सरूरुल क़ल्बिल महज़ून (टूटे दिलों का सहारा), आलम मा काना व मा यकून (माज़ी और मुस्तक़बिल के जानने वाले), ताजुल अतकिया (नेक लोगों के सर का ताज), नबीउल अंबिया (तमाम नबियों के सरताज) मुहम्मद मुस्तफ़ा ﷺ, रब्बुल आलमीन के रसूल, अल्लाह तआला की रहमत और सलामती हो उन पर, उनकी आल पर और उनके सहाबा पर क़ियामत के दिन तक।

इसके बावजूद (तमाम सुंदर खूबियों, महान श्रेष्ठताओं, सराहनीय गुणों और प्रशंसनीय प्रशंसाओं के साथ), वह अल्लाह के बंदे और मोहताज हैं (और 'आसमानों और ज़मीन में जो कुछ है वह उसी से मांगता है'[1] के मिस्दाक़)। खुदा न करे कि ऐनियत या मिस्लियत का गुमान (यानी यह गुमान या वहम कि उनकी ज़ात-ए-करीम, अल्लाह तआला की ज़ात के ऐन है या उसके मिस्ल, ममासिल, शबीह या नज़ीर है) काफ़िर के सिवा किसी मुसलमान को हो सके। कुदरत के खज़ाने में मुमकिन (हादिस और मखलूक) के लिए जो कमालात सोचे जा सकते थे, वे सब उनमें पाए गए कि किसी और के लिए उनमें बराबरी की गुंजाइश नहीं, मगर उन्होंने बंदगी और एहतियाज के दायरे से कदम बाहर न निकाला और न निकाल सके। बड़ाई अल्लाह के लिए है; अल्लाह तआला की ज़ात और सिफ़ात में समानता कैसी? (उससे समानता या बराबरी का शक भी इस काबिल नहीं कि किसी मुसलमान के ईमान वाले दिल में आए, जबकि अहल-ए-हक़ का ईमान है कि हुज़ूर अकदस, सरवर-ए-आलम, सबसे ज़्यादा इल्म वाले ﷺ उन इलाही एहसानों का, जो हर पल, हर घड़ी, हर लम्हा उनकी बारगाह-ए-बेकस पनाह पर होते रहते हैं, उन नेमतों का पूरा शुक्र और सना अदा न कर सके और न अदा करना मुमकिन है, क्योंकि जो शुक्र वे अदा करेंगे वह खुद एक ऐसी नेमत है जो एक और शुक्र का कारण बनेगी, और यह सिलसिला कभी खत्म न होने वाला है)। खुदाई नेमतें और नवाज़िशें (विशेष रूप से आप पर) असीमित हैं। उनकी कोई सीमा या अंत नहीं है, उन्हें कोई गिन या शुमार नहीं कर सकता। अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "और बेशक आख़िरत तुम्हारे लिए पहली (हालत) से बेहतर है"[2] - (ऐ नबी! बेशक हर आने वाला लम्हा तुम्हारे लिए बीते हुए लम्हे से बेहतर है और पल-पल आपके बुलंद मर्तबे तरक्की में हैं) मर्तबा-ए-क़ाबा क़ौसैन तक।

[1] अल-कुरान अल-करीम 29/55 [2] अल-कुरान अल-करीम 93/4

पृष्ठ 350 का 750

(وہ کون؟) اعنیٰ سید المرسلین (رہبر رہبراں)، خاتم النبیین (خاتم پیغمبراں) رحمتہ للعالمین (رحمت ہر دو جہاں)، شفیع المذنبین (شافع خطا کاراں)، قائد الغر المحجلین (ہادی نوریاں و روشن جبیناں)، سر اللہ المکنون (رب العزت کا راز سربستہ) دُرّ اللہ المخزون (خزانہ الٰہی کا موتی، قیمتی و پوشیدہ) سرور القلب المحزون (ٹوٹے دلوں کا سہارا) عالم ماکان وما سیکون (ماضی و مستقبل کا واقف کار) تاج الاتقیاء (نیکوکاروں کے سر کا تاج) نبی الانبیاء (تمام نبیوں کا سرتاج) محمد المصطفیٰ ﷺ رسول رب العالمین صلی اللہ تعالٰی علیہ وعلی آلہ وصحبہ وبارک وسلم الی یوم الدین۔

بایں ہمہ (فضائل جمیلہ و فواضل جلیلہ و محاسن حمیدہ و محامد محمودہ وہ) خدا کے بندہ و محتاج ہیں (اور یسئلہ من فی السموات والارض کے مصداق ۱۔ حاش اللہ کہ عینیت یا مثلیت کا گمان (تو گمان یہ وہم بھی ان کی ذاتِ کریمہ، ذات الہیٰ عزشانہ کی عین یا اس کے مثل و مماثل یا شبیہ و نظیر ہے) کافر کے سوا مسلمان کو ہوسکے۔ خزانہ قدرت میں ممکن۔ (و حادث و مخلوق) کے لیے جو کمالات متصور تھے (تصور و گمان میں آسکتے تھے یا آسکتے ہیں) سب پائے کہ دوسری کو ہم عنانی (و ہمسری اور ان مراتبِ رفیعہ میں برابری) کی مجال نہیں، مگر دائرہ عبدیت وافتقار (بندگی و احتیاج) سے قدم نہ بڑھا، نہ بڑھاسکے۔ العظمۃ اللہ خدائے تعالیٰ سے ذات و صفات میں مشابہت (و مماثلت) کیسی۔ (اس سے مشابہ و مماثل ہونے کا شبہ بھی اس قابل نہیں کہ مسلمان کے دل ایمان منزل میں اس کا خطرہ گزر سکے، جب کہ اہل حق کا ایمان ہے کہ حضور اقدس سرور عالم عالم اعلم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ واصحابہ وبارک وسلم ان احسانات الہی کا جو بارگاہ الہی سے ہر آن، ہر گھڑی، ہر لحظہ، ہر لمحہ ان کی بارگاہِ بیکس پناہ پر مبذول رہتے ہیں، ان انعامات اور ان) نعمائے خداوندی کے لائق جو شکر و ثناء ہے اسی پورا پورا بجا نہ لاسکے نہ ممکن کہ

بجالائیں کہ جو شکر کریں وہ بھی نعمت آخر موجبِ شکر دیگر الیٰ مالا نہایۃ لہ نعم وافضالِ خداوندی (ربانی نعمتیں اور بخششیں خصوصاً آپ پر) غیر متناہی ہیں۔ ان کی کوئی حد و نہایت نہیں، انہیں کوئی گنتی و شمار میں نہیں لاسکتا۔ قال اللہ تعالٰی "وَلَلْآخِرَةُ خَيْرٌ لَّكَ مِنَ الْأُولَىٰ" ۲- (اے نبی بے شک ہر آنے والا لمحہ تمہارے لیے گزرے ہوئے لمحہ سے بہتر ہے اور ساعت بساعت آپ کے مراتبِ رفیعہ ترقیوں میں ہیں) مرتبہ قاب قوسین

۱ القرآن الکریم ۲۹/۵۵ ۲ القرآن الکریم ۹۳/۴

Volume 29

Fatawa Razawiyya

Found the [station of] "or even closer"[1]. (And this is a station that no one else found nor is it possible for anyone to reach it. He himself states that on the night of the journey, my Lord brought me so close that the distance between Him and me remained two bows length, or even less.)[2]. It was just a name of separation for the sake of distinction.

O false points of the bow of possibility! You are in the whirlpool of coming first. Ask the movement of the circumference, from where did they come, where did they go?[3]

He saw the vision of the Divine with his physical eyes, heard the Word of the Divine without an intermediary, (with the sacred body, in wakefulness, and this is that special proximity which was never attained by any sent prophet or archangel, nor will it ever be attained). The litter of Layla (beyond perception) is millions of stages away from millions of stages (and) the microscopic intellect (the subtle mind, the discerning intellect) is stunned. (How can anyone know, let alone inform others) It is a new scene, a new color (senses and consciousness are lost in those vastness and the hem of sight is narrow). Distance in proximity, proximity in distance, separation in union. Ah! What a strange moment it was that union and separation, parted for ages, embraced each other[4].

Reason and consciousness do not have awareness of themselves; they are bound hand and foot, having lost their senses. Intellect and wisdom are themselves in distress; where can delusions and conjectures run to? They stumbled and fell.

Where was the clue of 'where' and 'when', where was the sign of 'how' and 'whither'? There was no traveler, no companion, no milestone, no stages[5].

(The secret which Allah [Glorious and Majestic is He] does not reveal, who can understand it without being told? And what audacity does any lowly one have to step into the inner private chamber?) The diver of the pearl of the sea (as if the pearl is swimming in water), but (in such a way that) the shell (meaning the oyster) has...

[1] Al-Quran Al-Karim 53/9 [2] Sahih al-Bukhari, Book of Tawheed, Chapter on the Statement of Allah Almighty: "And Allah spoke to Moses directly," Qadimi Kutub Khana, Karachi, 4/120. [3] Hadaiq-e-Bakhshish, Me'raj poem, Nazr-e-Gada presented to the Sultan of the Prophets, etc., Part 1, Maktaba Razawiyya, Karachi, p. 105. [4] Hadaiq-

e-Bakhshish, Me'raj poem, Nazr-e-Gada presented to the Sultan of the Prophets, etc., Part 1, Maktaba Razawiyya, Karachi, p. 110. [5] Hadaiq-e-Bakhshish, Me'raj poem, Nazr-e-Gada presented to the Sultan of the Prophets, etc., Part 1, Maktaba Razawiyya, Karachi, p. 110.

जिल्द 29

फ़तावा रज़विया

"या उससे भी करीब" का मुक़ाम पाया[1]। (और यह वह मंज़िल है जो न किसी ने पाई और न किसी के लिए वहाँ तक पहुँचना मुमकिन है। वह ख़ुद फ़रमाते हैं कि मेराज की रात मेरे रब ने मुझे इतना करीब किया कि मेरे और उसके दरमियान दो कमानों या उससे भी कम का फ़ासला रह गया।)[2]। केवल फ़र्क बताने के लिए दूरी का नाम रह गया।

ऐ मुमकिन की कमान के झूठे नुक्तों! तुम पहले आने के चक्कर में हो। घेरे की चाल से तो पूछो, वे किधर से आए, किधर गए?[3]

ईश्वरीय दर्शन आँखों से देखा, ईश्वरीय वाणी बिना किसी माध्यम के सुनी, (पवित्र शरीर के साथ, जाग्रत अवस्था में, और यह वह विशेष निकटता है जो न कभी किसी भेजे गए नबी या निकटवर्ती फ़रिश्ते को प्राप्त हुई और न कभी होगी)। लैला का महमल (बोध से परे) करोड़ों मंज़िलों से करोड़ों मंज़िल दूर है और सूक्ष्म बुद्धि (बारीकियाँ समझने वाली बुद्धि) दंग है। (कोई जाने तो क्या जाने और कोई ख़बर दे तो क्या ख़बर दे) नया समाँ है, नया रंग है (होश और हवास उन विसातों में खो गए और नज़रों का दामन तंग है)। करीब में दूरी, दूरी में करीब, मिलन में जुदाई। आह! क्या अजीब घड़ी थी कि मिलन और जुदाई, जो ज़मानों से बिछड़े थे, गले मिले थे[4]।

अक्ल और समझ को ख़ुद अपनी समझ नहीं, हाथ-पाँव बंधे हुए हैं और हवास खो चुके हैं। बुद्धि और विवेक ख़ुद अपनी जान के लाले पड़े हैं; वहम और गुमान दौड़ें तो कहाँ तक पहुँचें, ठोकर खाई और गिर पड़े।

'कहाँ' और 'कब' का सुराग़ कहाँ था, 'कैसा' और 'कहाँ' का निशान कहाँ था? न कोई मुसाफ़िर था, न कोई साथी, न कोई मील का पत्थर, न कोई मंज़िलें थीं[5]।

(जिस राज़ को अल्लाह [उसकी शान बुलंद हो] ज़ाहिर न फ़रमाए, बिना बताए किसकी समझ में आए? और किसी अदने की क्या मजाल कि उस ख़ास अंदरूनी कमरे तक कदम बढ़ाए?) समुद्र के मोती का गोताखोर (जैसे मोती पानी में तैर रहा हो), लेकिन (इस तरह कि) सीप ने वह...

[1] अल-कुरान अल-करीम 53/9 [2] सहीह अल-बुखारी, किताब अत-तौहीद, अध्याय: अल्लाह तआला का कथन: "और अल्लाह ने मूसा से सीधे बात की," कदीमी कुतुब खाना, कराची, 4/120। [3]

हदाइक़-ए-बख़्शिश, मेराज नज़्म, नज़्र-ए-गदा हुज़ूर सुल्तानुल अंबिया की सेवा में, भाग 1, मकतबा रज़विया, कराची, पृ. 105। [4] हदाइक़-ए-बख़्शिश, मेराज नज़्म, नज़्र-ए-गदा हुज़ूर सुल्तानुल अंबिया की सेवा में, भाग 1, मकतबा रज़विया, कराची, पृ. 110। [5] हदाइक़-ए-बख़्शिश, मेराज नज़्म, नज़्र-ए-गदा हुज़ूर सुल्तानुल अंबिया की सेवा में, भाग 1, मकतबा रज़विया, कराची, पृ. 110।

पृष्ठ 351/750

جلد ۲۹

فتاوی رضویہ

او ادنیٰ کا پایا ۱۔ (اور یہ وہ منزل ہے کہ نہ کسی نے پائی اور نہ کسی کے لیے ممکن ہے اس تک رسائی وہ خود ارشاد فرماتے ہیں کہ شب اسریٰ مجھے میرے رب نے اتنا نزدیک کیا کہ مجھ میں اور اس میں دو کمانوں بلکہ اس سے بھی کم کا فاصلہ رہ گیا۔) ۲۔ قسم کھانے کو فرق کا نام رہ گیا۔

کمانِ امکاں کے جھوٹے نقطو! تم اول آکر کے پھیر میں ہو محیط کی چال سے تو پوچھو کدھر سے آئے، کدھر گئے تھے ۳

دیدارِ الٰہی بچشم سر دیکھا، کلام الٰہی بے واسطہ سنا، (بدن اقدس کے ساتھ ، بیداری میں ، اور یہ وہ قرب خاص ہے کہ کسی نبی مرسل و ملک مقرب کو بھی نہ کبھی حاصل ہوا اور نہ کبھی حاصل ہو) محملِ لیلیٰ (ادراک سے ماوراء) کروڑوں منزل سے کروڑوں منزل (دور) (اور) خردِ خردہ بیں (عقلِ نکتہ دان، دقیقہ شناس) دنگ ہے۔ (کوئی جانے تو کیا جانے اور کوئی خبر دے تو کیا خبر دے) نیا سماں ہے نیا رنگ (ہوش و حواس ان وسعتوں میں گم اور دامانِ نگاہ تنگ) قُرب میں بعد (نزدیکی میں دوری) بعد میں قرب (دوری میں نزدیکی) وصل میں ہجر (فرقت میں وصال) ع عجب گھڑی تھی کہ وصل و فرقت جنم کے بچھڑے گلے ملے تھے ۴۔

عقل و شعور کو خود اپنا شعور نہیں، دست و پابستہ خود گم کردہ حواس ہے، ہوش و خرد کو خود اپنے لالے پڑے ہیں وہم و گمان دوڑیں تو کہاں تک پہنچیں، ٹھوکر کھائی اور گرے۔

سراغِ این و متیٰ کہاں تھا، نشانِ کیف والی کہاں تھا نہ کوئی راہی، نہ کوئی ساتھی، نہ سنگ منزل، نہ مرحلے تھے ۵

(جس راز کو اللہ جل شانہ ظاہر نہ فرمائے بے بتائے کس کی سمجھ میں آئے اور کسی بے وقار کی کیا مجال کہ درونِ خانہ خاص تک قدم بڑھائے) گوہرِ شناور دریا (گویا موتی پانی میں تیر رہا ہے) مگر (یوں کہ) صدف (یعنی سیپی) نے وہ

۱ القرآن الکریم ۵۳/ ۹ ۲ صحیح البخاری کتاب التوحید باب قول اللہ تعالی وکلم اللہ موسی تکلیما قدیمی کتب خانہ کراچی ۴/ ۱۲۰ ۳ حدائق بخشش معراج نظم نذرِ گدا بحضور سلطان الانبیاء الخ حصہ اول مکتبہ رضویہ کراچی ص۱۰۵ ۴ حدائق بخشش معراج نظم نذرِ گدا بحضور سلطان الانبیاء الخ حصہ اول مکتبہ رضویہ کراچی ص۱۱۰ ۵ حدائق بخشش معراج نظم نذرِ گدا بحضور سلطان الانبیاء الخ حصہ اول مکتبہ رضویہ کراچی ص۱۱۰

has cast a veil such that it is not acquainted with moisture (not a drop, not even a trace of moisture). O ignorant fool, leave the knowledge (and the essence of reality) to the knowledgeable and from this difficult field of galloping (from which crossing safely is like bringing a river of milk and falling into severe hardships) turn the reins (bridle) of the ocean of expression (the swift and sharp ride of speech and address) (for the expression of the heights, ranks, and proximities of that exalted one) the tongue is tied, but they say this much that he is the master of creation, the servant of the Creator, worshipping (and adoration) of him is disbelief (and an unpardonable crime) and without honoring him, faith is ruined (destroyed, unreliable, worthy of being thrown back at the face). Faith is the name of his love and greatness (and optional honor, after faith, is prior to every obligation) and a Muslim is the one whose work is with the name of God, in his name. Peace be upon the best of mankind, the family, and the companions forever.

Third Belief: The presiding ones of the assembly of honor and majesty

After that Exalted Personage of the Throne-like dome (whose sacred shrine and radiant dome's heights meet the Throne), the rank is of the Prophets and Messengers. May the blessings and peace of Allah be upon them all, that there is a distinction (and preference of some over others) among them, but anyone other than them, even if he reaches any rank of sainthood, be he an angel (though proximate) or a human, whether a Companion or of the Household (Ahl al-Bayt) (though most honored and grand), it is impossible (for that other) to reach their rank. The proximity to Allah which they have achieved, no one else can attain, and just as they are the beloved of God, no other can ever be. These are the eminent presiding figures of the assembly of honor and majesty (and the high-ranked ones of the gathering of respect and dignity and those close to the Presence of Honor) that the Lord of the worlds, Blessed and Exalted, Himself commands their Master and Leader (the Chosen Prophet, peace and blessings be upon him until the day of judgment): "Those are the ones whom Allah has guided, so follow their guidance."[1] (Allah! Allah! Who can estimate that holy chosen personality, whom his Lord, Blessed and Exalted, bestowed with beautiful praises, grand virtues, good morals, and praiseworthy traits; placed the crown of supreme belovedness on his sacred head; clothed him in the high-ranking robe of the Great Caliphate; for whose sake He created the whole universe; to whom He showed the door of graces and blessings for everything other than Allah. From them...

[1] Al-Quran Al-Kareem 6/90

फ़तावा रज़विया जिल्द २९

पर्दा डाल रखा है कि नम से आशना नहीं (क़तरा तो क़तरा, नमी से भी बहरह-वर नहीं)। ऐ जाहिल-ए-नादाँ, इल्म (और कुन्ह-ए-हक़ीक़त) को इल्म वाले पर छोड़ और इस मैदान-ए-दुश्वार जौलान से (जिससे सलामती से गुज़र जाना जुए-शीर लाना है और सख़्त मशक़्क़तों में पड़ना है) समंदर-ए-बयान (कलाम ओ ख़िताब की तेज़ ओ तर्रार सवारी) की अनान (बागडोर) मोड़। (उस आला जनाब की रफ़अतों, मन्ज़िलतों और क़ुर्बतों के इज़हार के लिए) ज़बान बंद है पर इतना कहते हैं कि ख़ल्क़ के आक़ा हैं, ख़ालिक़ के बंदे, इबादत (ओ परस्तिश) उनकी कुफ़्र (और नाक़ाबिल-ए-मुआफ़ी जुर्म) और बे उनकी ताज़ीम के हब्त (बर्बाद, नाक़ाबिल-ए-एतबार, मुँह पर मार दिए जाने के क़ाबिल) ईमान उनकी मुहब्बत ओ अज़मत का नाम (और नफ़्ल ताज़ीम, बा'द ईमान, हर फ़र्ज़ से मुक़द्दम) और मुसलमान वो जिसका काम है नाम-ए-ख़ुदा के साथ, उनके नाम पर। तमाम और अस्सलामु अला ख़ैरिल अनाम वल आल वल असहाब अलद-दवाम।

अक़ीदा-ए-सालिसा: सदर-नशीनान-ए-बज़्म-ए-इज़्ज़ ओ जाह

इस जनाब-ए-अर्श-ए-क़िबाब के बा'द (जिनके क़ुब्बा-ए-अतहर और गुंबद-ए-अनवर की रफ़अतें अर्श से मिलती हैं) मर्तबा अंबिया और मुर्सलीन का है। सलवातुललाहि व सलामुहू अलैहिम अजमईन कि बाहम उनमें तफ़ाज़ुल (और बा'ज़ को बा'ज़ पर फ़ज़ीलत) है मगर उनका ग़ैर, गो किसी मर्तबा-ए-विलायत तक पहुँचे, फ़रिश्ता हो (अगरचे मुक़र्रब ख़्वाह आदमी सहाबी हो ख़्वाह अहले-बैत (अगरचे मुकर्रम-तर ओ मुअज़्ज़म-तरीन) उनके दर्जे तक (उस ग़ैर को) वसुल मुहाल, जो क़ुर्ब-ए-इलाही उन्हें हासिल, कोई उस तक फ़ाइज़ नहीं, और जैसे ये ख़ुदा के महबूब, दूसरा हरगिज़ नहीं, ये वो सदर (ओ बाला) नशीनान-ए-बज़्म-ए-इज़्ज़ ओ जाह हैं (और वाला मक़ामानान-ए-महफ़िल-ए-इज़्ज़ ओ वजाहत और मुक़र्रबान-ए-हज़रत-ए-इज़्ज़त) कि रब्बुल आलमीन तबारक व तआला ख़ुद उनके मौला ओ सरदार (नबी-ए-मुख़्तार अलैहिस सलातु वस्सलाम इला यौमिल क़रार) को हुक्म फ़रमाता है: "उलाइकाल लज़ीना हदल लाहू फ़बिहुदाहुमुक़ तदिह"[1]। (अल्लाह अल्लाह! कोई क्या अंदाज़ा कर सकता है उस मुक़द्दस ज़ात-ए-बरगुज़ीदा सिफ़ात का जिसे उसके रब तबारक व तआला ने महामिद-ए-जमीला, महासिन-ए-जलीला, अख़्लाक़-ए-हसना, ख़साइल-ए-महमूदा से नवाज़ा, सर-ए-अक़दस पर महबूबियत-ए-कुबरा का ताज-ए-वाला इब्तिहाज रखा, जिसे ख़िलाफ़त-ए-उज़मा का ख़िलअत-ए-वाला मर्तबत पहनाया जिसके तुफ़ैल सारी कायनात को बनाया, जिसके फ़ुयूज़ ओ बरकात का दरवाज़ा तमाम मा-सिवा अल्लाह को दिखाया। उन्हीं से...

[1] अल-क़ुरान अल-करीम ६ / ९०

पेज ३५२ ऑफ़ ७५०

پر دہ ڈال رکھا ہے کہ نم سے آشنا نہیں (قطرہ تو قطرہ ، نمی سے بھی بہرہ ور نہیں) اے جاہلِ ناداں ، علم (وکنہ حقیقت) کو علم والے پر چھوڑ اور اس میدانِ دشوار جولان سے (جس سے سلامتی سے گزر جانا جوئے شیر لانا ہے اور سخت مشقتوں میں پڑنا) سمندرِ بیان (کلام و خطاب کی تیز و طرار سواری) کی عنان (باگ ڈور) موڑ (اس والا جناب کی رفعتوں ، منزلتوں اور قربتوں کے اظہار کے لیے) زبان بند ہے پر اتنا کہتے ہیں کہ خلق کے آقا ہیں، خالق کے بندے، عبادت (وپرستش) ان کی کفر (اور ناقابلِ معافی جرم) اور بے ان کی تعظیم کے حبط (برباد، ناقابلِ اعتبار، منہ پر مار دیئے جانے کے قابل) ایمان ان کی محبت و عظمت کا نام (اور نفل تعظیم ، بعدِ ایمان ، ہر فرض سے مقدم) اور مسلمان وہ جس کا کام ہے نامِ خدا کے ساتھ ، ان کے نام پر تمام و السلام علی خیر الانام والآل والاصحاب علی الدوام۔

عقیدہ ثالثہ: صدر نشینانِ بزم عز و جاہ

اس جناب عرشِ قباب کے بعد (جن کے قبہ اطہر اور گنبدِ انور کی رفعتیں عرش سے ملتی ہیں) مرتبہ اور انبیاء و مرسلین کا ہے۔ صلوات اللہ وسلامہ علیہم اجمعین کہ باہم ان میں تفاضل (اور بعض کو بعض پر فضیلت) مگر ان کا غیر، گو کسی مرتبہ ولایت تک پہنچے، فرشتہ ہو (اگرچہ مقرب خواہ آدمی صحابی ہو خواہ اہلبیت (اگرچہ مکرم تر و معظم ترین) ان کے درجے تک (اس غیر کو) وصول محال، جو قربِ الہی انہیں حاصل، کوئی اس تک فائز نہیں، اور جیسے یہ خدا کے محبوب، دوسرا ہرگز نہیں، یہ وہ صدر (و بالا) نشینانِ بزم عزوجاہ ہیں (اور والا مقامانِ محفلِ عزت و وجاہت اور مقربانِ حضرتِ عزت) کہ رب العالمین تبارک و تعالی خود ان کے مولی و سردار (نبی مختار علیہ الصلوۃ والسلام الی یوم القرار) کو حکم فرماتا ہے: "اُوْلٰٓئِکَ الَّذِیْنَ ھَدَی اللّٰہُ فَبِھُدٰىھُمُ

اقْتَدِہْ"[1]۔ (اللہ اللہ ! کوئی کیا اندازہ کر سکتا ہے اس مقدس ذاتِ برگزیدہ صفات کا جسے اس کے رب تبارک و تعالی نے محامدِ جمیلہ، محاسنِ جلیلہ، اخلاقِ حسنہ، خصائلِ محمودہ سے نوازا، سرِ اقدس پر محبوبیتِ کبری کا تاج والا ابتہاج رکھا، جسے خلافتِ عظمیٰ کا خلعت والا مرتبت پہنایا جس کے طفیل ساری کائنات کو بنایا، جس کے فیوض و برکات کا دروازہ تمام ماسوی اللہ کو دکھایا۔ انہیں سے

[1] القرآن الکریم ۶ / ۹۰

Fatawa Razawiyya Volume 29

This address was made: "These are the ones whom Allah has guided, so follow their path." And He says: "So follow the religion of Abraham, the upright."[1]- Follow the Sharia of Abraham, who turned away from all false religions and inclined towards the true religion.

(In short, among the prophets and messengers, peace and blessings be upon them, until the Day of Judgment, every prophet, every messenger holds great honor and dignity in the court of the Exalted, and his status is very high. Therefore, the veneration of every prophet is an individual obligation (fard-e-ayn), rather, it is the root of all obligations; and) their slightest insult is like that of the Master of Messengers, peace and blessings of Allah be upon him and his family, an absolute disbelief (kufr). (To deny or disparage any of them, to insult any of them, or the slightest insolence in their presence is absolutely disbelief, just like insolence and impudence in the pure presence of the Prophet himself, peace and blessings of Allah be upon him and his family, we seek refuge in Allah). And regarding anyone, whether it be Siddiq or Murtada, may Allah be pleased with them both, claiming equality (that they are also equal and equivalent to them in high ranks and lofty degrees) beyond their service and obedience (that they are at their service and are their obedient followers), is sheer irreligiousness (atheism and heresy). The eye of majesty and reverence (honor and veneration) with which it is obligatory to look upon them (and it is a permanent obligation), God forbid that even one part in a hundred (1/100) of it be given to another. After all, did you not see that Siddiq and Murtada, may Allah be pleased with them both, who are the slaves of the Master of Eternal Stability (and the Head of Affairs), are commanded to walk in their path and not to leave their following (how much more does this apply to others?).

(O intellect, beware! There is no room to speak here.)

Fourth Creed: The Highest Class, the Archangels (Mala'ikah Muqarrabeen) After them (the Prophets and Messengers, peace and blessings be upon them) is the highest class of Archangels, such as our masters and patrons (for example, among our leaders and vanguard helpers) Gabriel (who is responsible for bringing divine revelation to the prophets), Michael (who is appointed to bring rain and provide sustenance to God's creation), Israfil (who will blow the trumpet on the Day of Resurrection), and Azrael (to whom the service of taking souls has been entrusted),

and the Bearers (i.e., the carriers) of the Great Throne, blessings and peace of Allah be upon them.

[1] The Holy Quran 3 / 95

फतावा रज़विया जिल्द २९

यह संबोधन दिया गया: "ये वे हैं जिन्हें अल्लाह ने राह दिखाई तो तुम उनके मार्ग का अनुसरण करो।" और वह फ़रमाता है: "इब्राहीम के दीन का अनुसरण करो जो एक अल्लाह के होकर रहे।"[1]- तुम इब्राहीम की शरीयत का अनुसरण करो, जो तमाम असत्य धर्मों से किनाराकशी करके सत्य धर्म की ओर झुक गए।

(सारांश यह कि कयामत तक के तमाम नबियों और रसूलों (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) में से हर नबी और हर रसूल अल्लाह की बारगाह में बड़ी इज्जत और प्रतिष्ठा वाला है, और उनका स्थान बहुत ऊँचा है। इसलिए हर नबी का सम्मान करना फर्ज़-ए-ऐन है बल्कि यह तमाम फर्ज़ों की जड़ है; और) उनका मामूली सा अपमान भी सैय्यदुल मुर्सलीन (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के अपमान की तरह स्पष्ट कुफ्र है। (उनमें से किसी को झुठलाना या उनकी शान में गुस्ताखी करना, किसी का अपमान करना, या उनकी बारगाह में मामूली सी ढिठाई करना बिल्कुल वैसा ही कुफ्र है जैसा कि स्वयं हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की बारगाह में गुस्ताखी और बदज़ुबानी करना, अल्लाह की पनाह)। और किसी के बारे में, चाहे वह सिद्दीक हों या मुर्तज़ा (अल्लाह उन दोनों से राज़ी हो), उनकी खिदमत और ताबेदारी (कि वे उनके सेवादार और आज्ञाकारी हैं) से बढ़कर बराबरी का दावा करना (कि वे भी ऊंचे पदों और उच्च श्रेणियों में उनके समकक्ष और बराबर हैं) कोरा अधर्म (कुफ्र और बेदीनी) है। जिस महिमा और सम्मान की दृष्टि से उन्हें देखना फर्ज़ है (और स्थायी फर्ज़ है), खुदा न करे कि उसका सौवां हिस्सा (१/१००) भी किसी दूसरे के लिए समझा जाए। आखिर क्या आपने नहीं देखा कि सिद्दीक और मुर्तज़ा (अल्लाह उन दोनों से राज़ी हो), जो उस सरकार (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के गुलाम हैं, उन्हें भी उन्हीं की राह पर चलने और उनके अनुसरण से बाहर न निकलने का हुक्म होता है (तो दूसरों का क्या कहना?)।

(ऐ बुद्धि! सावधान! यहाँ कुछ बोलने की गुंजाइश नहीं है)

चौथा अकीदा: सर्वोच्च श्रेणी, मुकर्रब फरिश्ते (मलैका मुकर्रबीन) उन (नबियों और रसूलों) के बाद सर्वोच्च श्रेणी मुकर्रब फरिश्तों की है, जैसे हमारे सरदार और सहायक हज़रत जिब्रील (जिनके ज़िम्मे नबियों की सेवा में वह्य-ए-इलाही लाना है), हज़रत मीकाइल (जो वर्षा करने और अल्लाह की मख्लूक को रोज़ी पहुँचाने पर नियुक्त हैं), हज़रत इस्राफील (जो कयामत के दिन सूर फूँकेंगे), और हज़रत

इज़राइल (जिन्हें रूहें कब्ज़ करने की सेवा सौंपी गई है) और अर्श-ए-अज़ीम को उठाने वाले फरिश्ते, उन सब पर अल्लाह का दुरूद और सलाम हो।

[1] अल-कुरान अल-करीम ३ / ९५

یہ خطاب فرمایا کہ) یہ وہ ہیں جنہیں خدا نے راہ دکھائی تو تو ان کی پیروی کر۔ اور فرماتا ہے:
"فَاتَّبِعُوا مِلَّةَ إِبْرَاهِيمَ حَنِيفًا"۔ ۱- تو پیروی کر شریعت ابراہیم کی، جو سب ادیان باطلہ سے کنارہ کش ہو کر دین حق کی طرف جھک آیا۔

(غرض انبیاء و مرسلین علیہم الصلوۃ والسلام الی یوم الدین میں سے، ہر نبی، ہر رسول بارگاہِ عزتِ جل مجدہ میں بڑی عزت و وجاہت والا ہے، اور اس کی شان بہت رفیع، ولہذا ہر نبی کی تعظیم فرض عین بلکہ اصل جملہ فرائض ہے اور) ان کی ادنی توہین مثل سید المرسلین صلی اللہ تعالٰی علیہ والہ وسلم، کفر قطعی (ان میں سے کسی کی تکذیب و تنقیص، کسی کی اہانت، کسی کی بارگاہ میں ادنی گستاخی ایسے ہی قطعاً کفر ہے جیسے خود حضور صلی اللہ تعالٰی علیہ وآلہ وسلم کی جناب پاک میں گستاخی و دریدہ دہنی، والعیاذ باللہ تعالیٰ) اور کسی کی نسبت، صدیق ہوں خواہ مرتضیٰ رضی اللہ تعالٰی عنہما ان (حضرات قدسی صفات) کی خادمی و غاشیہ برادری (اطاعت و فرمانبرداری کہ یہ ان کے پیش خدمت و اطاعت گزار ہیں، اس) سے بڑھ کر (افضیلت و برتری در کنار) دعویٰ ہم سری (کہ یہ بھی مراتب رفیعہ اور ان کے درجات علیہ میں ان کے ہمسر و برابر ہیں) محض بے دینی (الحاد و زندیقی ہے) جس نگاہِ اجلال و توقیر (تکریم و تعظیم) سے انہیں دیکھنا فرض ہے (اور دائمی فرض) حاشا کہ اس کے سو حصے سے ایک حصہ (۱/۱۰۰) دوسرے کو دیکھیں آخر نہ دیکھا کہ صدیق و مرتضیٰ رضی اللہ تعالیٰ عنہما جس سرکارِ ابد قرار (و سر پر کار) کے غلام ہیں، اسی کو حکم ہوتا ہے ان کی راہ پر چل اور ان کی اقتداء سے نہ نکل (تا بہ دیگراں چہ رسد)

(اے عقل خبردار! یہاں مجال دم زدن نہیں)

عقیدہ رابعہ: اعلی طبقہ، ملائکہ مقربین ان (انبیاء و مرسلین علیہم الصلوۃ والسلام) کے بعد اعلیٰ طبقہ ملائکہ مقربین کا ہے مثل ساداتنا و موالینا (مثلاً ہمارے سرداروں اور پیش رو مددگاروں میں سے حضرت) جبرائیل (جن کے ذمہ پیغمبروں کی خدمت میں وحی الہی لانا ہے) و (حضرت) میکائیل (جو پانی برسانے والے اور مخلوق خدا کو روزی پہنچانے پر مقرر ہیں) و (حضرت) اسرافیل (جو قیامت کو صور پھونکیں گے) و (حضرت) عزرائیل (جنہیں قبض ارواح کی خدمت سپرد کی گئی ہے) و حملہ (یعنی حاملان) عرش جلیل، صلوات اللہ وسلامہ علیہم

۱ القرآن الکریم ۳ / ۹۵

...all of them, none among the saints reaches their elevated status and high rank (grandeur, greatness, and high position), regardless of how close they are to the Divine Court. Any disrespect towards them carries exactly the same ruling as disrespect towards the exalted courts of the Prophets and Messengers, which is absolute disbelief. Among these proximate angels, especially Gabriel (peace be upon him) is, in a sense, the teacher of the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him).

Allah Almighty said: "He was taught by one of mighty powers" (1). (He taught him, i.e., the Master of the World (peace and blessings of Allah be upon him and his family), the one of intense powers and strength, meaning Gabriel (peace be upon him), who is the complete manifestation of Divine power and majesty, perfect in terms of physical strength, intellect, and vision, capable of bearing the weight of Divine revelation, reaching Sidrat al-Muntaha in the blink of an eye, whose wisdom and faith-based discernment are such that he descends with majesty to the courts of all the noble Prophets (peace be upon them) with Divine revelation and complete...)

Note: Imam Fakhr al-Din al-Razi (may Allah have mercy on him) said that in Allah's statement "Shadid al-Quwa" (Mighty in Power), there are several benefits. The first benefit is that the praise of the teacher is the praise of the student. If Allah had said that Gabriel taught him and had not described him with the attribute "Mighty in Power," then a clear virtue would not have been established for the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him). The second benefit is that it contains a refutation against those who said these are stories of the ancients which he heard during his journey to Syria. So, Allah Almighty said that none of the people taught him; rather, his teacher is "Mighty in Power" etc. Therefore, what Imam Ahmad Raza said is a proven truth, and Allah knows best. (T)

The slave, Muhammad Khalil, may he be forgiven.

1. The Holy Quran 53/5
2. Mafatih al-Ghayb (Al-Tafsir al-Kabir) under verse 53/5, Dar al-Kutub al-Ilmiyyah, Beirut, 28/225.

...सब के सब, उनकी शान की बुलंदी और मकाम की रफ़अत (शौकत व अज़मत और उच्च पद) तक कोई भी वली नहीं पहुँचता (चाहे वह दरबार-ए-इलाही का कितना ही मुकर्रब क्यों न हो) और उनकी बारगाह में गुस्ताखी का भी ठीक वही हुक्म है (जो अंबिया मुर्सलीन की अज़ीमुश्शान बारगाहों में गुस्ताखी का है कि कुफ़्र-ए-कतई है)। इन मुकर्रब फ़रिश्तों में विशेष रूप से जिब्रील अलैहिस्सलाम एक लिहाज़ से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के उस्ताद हैं।

अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "उसे सख़्त ताक़त वाले ने सिखाया" (1)। (उन्हें सिखाया यानी सैय्यद-ए-आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सख़्त कुव्वतों वाले ताक़तवर ने, यानी जिब्रील अलैहिस्सलाम ने जो ईश्वरीय शक्ति और जलाल के पूर्ण स्वरूप हैं, शारीरिक शक्ति, बुद्धि और दृष्टि के लिहाज़ से कामिल, वह्य-ए-इलाही के बोझ को उठाने वाले, पलक झपकते ही सिद्रतुल मुंतहा तक पहुँचने वाले, जिनकी दानिशमंदी और ईमान की समझ का यह हाल है कि तमाम नबियों की बारगाहों में वह्य-ए-इलाही लेकर नाज़िल होते और पूरी...)

नोट: इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी अलैहिर्रहमा ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला के इरशाद 'शदीदुल.क़ुव्वा' में कई फ़ायदे हैं, पहला फ़ायदा यह है कि शिक्षक की प्रशंसा छात्र की प्रशंसा होती है। अगर अल्लाह तआला इस तरह फ़रमाता कि जिब्रील ने उसे सिखाया है, और 'शदीदुल.क़ुव्वा' के गुण से उसे विभूषित न फ़रमाता, तो इससे नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को स्पष्ट श्रेष्ठता प्राप्त न होती। दूसरा फ़ायदा यह है कि इसमें उन लोगों का खंडन है जिन्होंने कहा कि ये पुराने लोगों की कहानियाँ हैं जो उन्होंने शाम की यात्रा के दौरान सुनी हैं, तो अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि उन्हें लोगों में से किसी ने नहीं सिखाया, बल्कि उनका शिक्षक तो 'शदीदुल.क़ुव्वा' है आदि। इसीलिए इमाम अहमद रज़ा अलैहिर्रहमा ने जो कहा है वह हक़ और साबित है। वल्लाहु आलम। (त)

अब्द मुहम्मद ख़लील, अफ़ु अन्हु

1. अल-क़ुरआन अल-करीम 53/5
2. मफ़ातीहुल् ग़ैब (अत-तफ़्सीरुल कबीर) आयत 53/5 के तहत, दारुल कुतुब अल-इल्मिया बेरुत 28/225.

اجمعین، ان کے علوِ شان و رفعت مکان (شوکت و عظمت اور عالی مرتبت) کو بھی کوئی ولی نہیں پہنچتا (خواہ کتنا ہی مقرب بارگاہِ احدیت ہو) اور ان کی جناب میں گستاخی کا بھی بعینہ وہی حکم (جو انبیاء مرسلین کی رفعت پناہ بارگاہوں میں گستاخی کا ہے کہ کفر قطعی ہے ان ملائکہ مقربین میں بالخصوص) جبریل علیہ السلام مِن وجہ رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم کے استاذ عہ ہیں

قال تعالٰی "عَلَّمَہٗ شَدِیْدُ الْقُوٰی" ۱۔ (سکھایا ان کو یعنی سید عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کو سخت قوتوں والے طاقتور نے، یعنی جبرائیل علیہ السلام نے جو قوت و اجلالِ خداوندی کے مظہر اتم، قوتِ جسمانی و عقل و نظر کے اعتبار سے کامل وحی الہی کے بار کے متحمل، چشم زدن میں سدرۃ المنتہیٰ تک پہنچ جانے والے جن کی دانشمندی اور فراست ایمانی کا یہ عالم کہ تمام انبیائے کرام علیہم الصلوٰۃ والسلام کی بارگاہوں میں وحی الہی لے کر نزول اجلال فرماتے اور پوری

عہ: قال الامام الفخرالرازی وقوله شدید القوی، فیه فوائد الاولی ان مدح المعلم مدح المتعلم فلو قال علمه جبرائیل ولم یصفه ماکان یحصل للنبی صلی الله تعالی علیه وسلم به فضیلة ظاهرة. الثانیة هی ان فیه رداً علیهم حیث قالوا اساطیر الاولین سمعها وقت سفره الی الشام فقال لم یعلمه احد من الناس بل معلمه شدید القوی ۲۔ الخ ولهذا قال الامام احمد رضا ماقال وهو حق ثابت، والله اعلم۔

امام فخر الدین رازی علیہ الرحمہ نے فرمایا کہ اللہ تعالیٰ کے ارشاد شدید القوی میں کئی فائدے ہیں، پہلا فائدہ یہ ہے کہ معلم کی مدح متعلم کی مدح ہوتی ہے، اگر اللہ تعالیٰ یوں فرماتا کہ اس کو جبرائیل نے سکھایا ہے، اور وصف شدید القوی سے اس کو متصف نہ فرماتا تو اس سے نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کو فضیلت ظاہرہ حاصل نہ ہوتی، دوسرا فائدہ یہ ہے کہ اس میں رد ہے

ان لوگوں کا جنہوں نے کہا یہ پہلے لوگوں کے قصے ہیں جن کو انہوں نے شام کی طرف سفر کے دوران سُن لیا ہے، تو اللہ تعالیٰ نے فرمایا کہ انہیں لوگوں میں سے کسی نے نہیں سکھایا ان کا معلم تو شدید القوی ہے الخ، اسی لیے امام احمد رضا علیہ الرحمہ نے جو کہا ہے وہ حق ثابت ہے۔ (ت)

العبد محمد خلیل عفی عنہ

۱ القرآن الکریم ۵/۵۳ ۲ مفاتیح الغیب (التفسیر الکبیر) تحت الآیۃ ۵/۵۳ دارالکتب العلمیہ بیروت ۲۲۵/۲۸

صفحہ ۳۵۴ از ۷۵۰

...performed this trust with honesty) then how could they be anyone's student whom he would make his teacher? Consider him the teacher of the teachers of the Master of the Universe (Peace and blessings of Allah be upon him). These are the ones about whom Allah, the Blessed and Exalted, says: [1] Noble Messenger, [2] possessed of power and established in the presence of the Lord of the Throne (meaning they hold great honor in the presence of the Owner of the Throne, they are the leaders of the high assembly such that all angels are their obedient followers, trustees of the Divine revelation, such that no one has the audacity to utter a word against their trust; in delivering the message of revelation, there is no possibility of error, misunderstanding, or mistake, nor of any negligence or carelessness; they fully bear the office of messengership, are protectors of secrets and lights in every way, their rank and status among angels is the highest, and they have achieved the goal of proximity and acceptance; they are possessors of honor and respect such that) they are servants to none but the Noble Prophet (Peace and blessings of Allah be upon him). (And in all creation, besides the Prophet (Peace and blessings of Allah be upon him), no one else is their master and followed leader. Their inclusion as a soldier in the Prophet's army with a group of angels in the Battle of Badr is well-known, and the prominent companions and great saints (who are the means for the descent of blessings) would consider it the pride and fortune of both worlds if they were granted the wealth of serving them. Then whose servants or followers would they be? (And the Master of the World (Peace and blessings of Allah be upon him and his family) is the King of both worlds, the served master and the followed leader of both worlds, may Allah's peace and blessings be upon him and all of them.

Fifth Belief: The Companions of the Master of Messengers and the Noble Household (Ahl al-Bayt)

After those (the messenger angels and the leaders of the near-stationed angels), the companions of the Master of Messengers (Peace and blessings of Allah be upon him and his family) are (ranked high in honor, status, and proximity of acceptance by the Oneness). Included among them are Hazrat Batul, the piece of the Prophet's heart, the Lady of the World, the Princess of the World, the Leader of Women, Fatima al-Zahra, and the two princes of this lady of both worlds, the two stars of the eyes of the Great Throne, the moons of the sphere of leadership (heaven of miracles), the beloved flowers of the Garden of Purification, both the delights of the eyes of the Prophet, the two noble Imams (the honorable and pure guides), the fortunate sons

of the two martyrs (the blessed and the martyrs of oppression), the two pious and pure ones (chaste in character, pure in heart), the two luminaries (two moons, sun-faced and moon-countenanced), the two pure ones (pure in conduct, noble in nature), Abu Muhammad (Hazrat...

1. Al-Quran Al-Karim 81/19
2. Al-Quran Al-Karim 81/20 & 21

फतावा रज़विया, खंड 29

...ईमानदारी के साथ इस अमानत को अदा करते रहे) फिर वे किसके शागिर्द होंगे जिसे उनका उस्ताद बनाया जाए? उन्हें विश्व के स्वामी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का उस्ताद-उल-उस्ताद मानिए। ये वही हैं जिनके बारे में अल्लाह तबारक व ताला फरमाता है: [1] सम्मानित रसूल, [2] शक्ति संपन्न, अर्श के मालिक के पास प्रतिष्ठित (अर्थात वे अर्श के मालिक के हुज़ूर बड़े सम्मान वाले हैं, उच्च सभा के नेता हैं कि सभी फरिश्ते उनके आज्ञाकारी हैं, ईश्वरीय प्रकाश (वही) के अमानतदार हैं, कि उनकी अमानत में किसी को बोलने का साहस नहीं; वही पहुँचाने में न तो भूल की गुंजाइश है, न किसी गलतफहमी या गलती की, और न ही किसी शिथिलता या लापरवाही की; वे रिसालत के पद को पूरी तरह वहन करने वाले हैं, हर तरह से रहस्यों और नूर के संरक्षक हैं, फरिश्तों में उनका पद और स्थान सबसे ऊंचा है और वे स्वीकृति और निकटता के लक्ष्य पर आसीन हैं, वे ऐसे सम्मान और आदर वाले हैं कि) नबी करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के अलावा किसी और के खादिम नहीं। (और समस्त सृष्टि में हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के अलावा कोई और उनका स्वामी और आज्ञाप्रदाता नहीं है। और जंग-ए-बदर में फरिश्तों के एक समूह के साथ हुज़ूर के लश्कर के एक सिपाही बनकर शामिल होना प्रसिद्ध है, बड़े-बड़े सहाबा और महान औलिया (जो बरकतों के उतरने का ज़रिया हैं) अगर उनकी सेवा (का सौभाग्य) मिल जाए तो उसे दोनों जहाँ का गौरव और सौभाग्य समझें। फिर ये किसके सेवादार या अनुयायी होंगे? (और सैय्यद-ए-आलम (सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि वसल्लम) तो दोनों जहाँ के बादशाह, दोनों जहाँ के स्वामी और आज्ञाप्रदाता हैं, अल्लाह ताला उन पर और उन सब पर दरूद व सलाम भेजे और बरकतें नाजिल करे।

पाँचवाँ अकीदा: सैय्यद-उल-मुर्सलीन के साथी और प्रतिष्ठित अहले बैत

उन (मुर्सल फरिश्तों और निकटवर्ती फरिश्तों के सरदारों) के बाद (बड़े सम्मान, पद और अहदियत की निकटता पर आसीन) सैय्यद-उल-मुर्सलीन (सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि वसल्लम) के साथी (असहाब) हैं। और उन्हीं में हज़रत बतुल, रसूल के जिगर का टुकड़ा, विश्व की स्वामिनी, जगत की रानी, महिलाओं की सरदार फातिमा ज़हरा (शामिल) हैं, और इस दोनों जहाँ की स्वामिनी के दोनों शहज़ादे, अर्श-ए-आज़म की आँखों के दोनों तारे, नेतृत्व के आकाश (करामत के आसमान) के चाँद के टुकड़े, पाकीज़गी के बगीचे के प्यारे फूल, रसूल की दोनों आँखों की ठंडक, इमामैन करीमैन (महान और पवित्र मार्गदर्शक), शहीदों के सौभाग्यशाली पुत्र (नेक बख्त और ज़ुल्म के शहीद), पवित्र

और निर्मल (पाक दामन, पाक बातिन), दो चमकते सितारे (दो चाँद, सूरज जैसा चेहरा और चाँद जैसी सूरत), पावन चरित्र वाले (पाक सीरत, पाकीज़ा मिजाज़) अबू मुहम्मद (हज़रत...

1 अल-क़ुरान अल-करीम 81/19 2 अल-क़ुरान अल-करीम 81/20 और 21

دیانتداری سے اس امانت کو ادا کرتے رہے) پھر وہ کسی کے شاگرد کیا ہوں گے جسے ان کا استاذ بنائیے۔ اسے سرورِ عالم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کا استاذ الاستاد ٹھہرائیے یہ وہی ہیں جنہیں حق تبارک و تعالٰی رسولِ کریم ۱۔ مکین امین ۲۔ فرماتا ہے (کہ وہ عزت والے مالکِ عرش کے حضور بڑی عزت والے ہیں ملاءِ اعلیٰ کے مقتداء کہ تمام ملائکہ ان کے اطاعت گزار و فرماں بردار، وحی الہی کے امانت دار، کہ انکی امانت میں کسی کو مجالِ حرف زدن نہیں پیام رسانی وحی میں امکانِ نہ سہو کا نہ کسی غلط فہمی و غلطی کا اور نہ کسی سہل پسندی اور غفلت کا، منصبِ رسالت کے پوری طرح متحمل، اسرار و انوار کے ہر طرح محافظ، فرشتوں میں سب سے اونچا ان کا مرتبہ و مقام اور قربِ قبول پر فائز المرام، وہ صاحبِ عزت و احترام کہ) نبی کریم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کے سوا دوسرے کے خادم نہیں۔ (اور تمام مخلوقات میں حضور صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کے علاوہ کوئی اور ان کا مخدوم و مطاع نہیں۔ اور جنگِ بدر میں فرشتوں کی ایک جمعیت کے ساتھ حضور کے لشکر کا ایک سپاہی بن کر شامل ہونا مشہور، زبان زد خاص و عام اکابر صحابہ و اعاظم اولیاء کو (کہ واسطہ نزولِ برکات ہیں) اگر ان کی خدمت (کی دولت) ملے دو جہاں کی فخر و سعادت جانیں پھر یہ کس کے خدمت گار یا غاشیہ بردار ہوں گے (اور سید عالم صلی اللہ تعالٰی علیہ وآلہ وسلم تو بادشاہِ کون و مکاں، مخدوم و مطاعِ ہر دو جہاں ہیں صلی اللہ تعالٰی علیہ وعلیہم اجمعین و بارک وسلم۔

عقیدہ خامسہ اصحابِ سید المرسلین واہلِ بیت کرام

ان (ملائکہ مرسلین و ساداتِ فرشتگانِ مقربین) کے بعد (بڑی عزت و منزلت اور قربِ قبول احدیت پر فائز) اصحابِ سید المرسلین صلی اللہ تعالٰی علیہ وآلہ وسلم ہیں، اور انہیں میں حضرت بتول،

جگر پارہ رسول، خاتونِ جہاں، بانوئے جہاں، سیدۃ النساء فاطمہ زہرا (شامل) اور اس دو جہاں کی آقا زادی کے دونوں شہزادے، عرشِ اعظم کی آنکھ کے دونوں تارے، چرخِ سیادت (آسمانِ کرامت) کے مہ پارے، باغِ تطہیر کے پیارے پھول، دونوں قرۃ العین رسول، امامین کریمین (ہادیانِ با کرامت و با صفا)، سعید بن شہیدین (نیک بخت و شہیدانِ جفا) تقیین نقیین (پاک دامن، پاک باطن) نیرین (قمرین، آفتابِ رُخ و ماہتابِ رُو) طاہرین (پاک سیرت، پاکیزہ خو) ابو محمد (حضرت

1 القرآن الکریم ۸۱/ ۱۹ 2 القرآن الکریم ۸۱/ ۲۰ و ۲۱

Fatawa Razawiyya Volume 29

Imam Hasan and Abu Abdullah (Imam) Husayn, and all the Mothers of the Ummah, the ladies of the Prophetic household (Umm-ul-Mu'minin), the pure wives (may peace and blessings be upon the Chosen One and all of them)—they are included in the category of the Noble Companions. For a Companion is every Muslim who was honored with a vision of that face reflecting God (and that essence reaching the Truth) while in a state of Islam and departed from this world upon Islam (whether male or female, adult or minor). Only he who is aware of the honor and loftiness of the Master of Messengers (may Allah, the Exalted, grant him peace and blessings) truly knows the value and status of their high ranks and stations. (His chest is illuminated with the lights of gnosis, and his eyes are honored with the beauty of Truth; he walks on the Truth, lives on the Truth, dies for the Truth, and the acceptance of Truth is his nature). It is brighter than the midday sun that when a lover (a true seeker) has the power, he protects his beloved from evil company (wicked associates and sinful companions). (And every child of the Muslims knows that) Allah, the Exalted, is Omnipotent (and everything possible is under His power) and (that) the Messenger of Allah (may Allah, the Exalted, grant him peace and blessings) is His beloved and the Master of the Beloved (the leader and crown of all beloveds in the presence). Does a sound intellect (provided it is sound) suggest (consider it permissible or tolerable) that such an All-Powerful One (Who does whatever He wills and however He wills), for such a magnificent possessor of dignity, the life of belovedness and the mine of honor (that whatever has happened, whatever will happen, and whatever is happening was, will be, and is according to His will; for such a beloved, such an accepted one), would not appoint the best of creation (who excel all creation after the Prophets and Messengers; the Prophet's companions) as companions and confidants (associates and sympathizers), friends, and helpers? (No, definitely not! So when the All-Powerful and Mighty Master, Glory be to Him, chose them for his friendship, assistance, companionship, and society, then) whoever slanders any of them, levels a charge of deficiency and incompleteness against the perfection of Wisdom and total Power of Allah, the Exalted, or casts doubt on the ultimate belovedness (perfect glory of belovedness) and supreme status (that ultimate honor and dignity and those high ranks and grand offices) which they possess in the presence of the Eternal One. This is insolent loquacity and foul-mouthedness in the presence of the Holy Lord, Glory be to Him, or in the pure presence of His Beloved (may Allah, the Exalted, grant him peace and

blessings), and it is open rebellion. This is why the Master of the Universe (may Allah, the Exalted, grant him peace and blessings) says: "Fear Allah, fear Allah regarding my companions! Do not make them a target [of criticism] after me. Whoever loves them, loves them out of love for me; and whoever hates them, hates them out of hatred for me. Whoever harms them has harmed me, and whoever harms me has harmed Allah. And whoever harms Allah, it is near that He will seize him." Fear Allah, fear Allah regarding my companions, do not make them a target after me; he who loves them...

फ़तावा रजविया, जिल्द 29

इमाम हसन और अबू अब्दुल्ला (इमाम) हुसैन, और उम्मत की तमाम माएं रिसालत की देवियाँ (उम्म-उल-मोमिनीन), पाकीज़ा पत्नियाँ (अल्लाह तआला के मुस्तफ़ा और उन सब पर दरूद और सलाम हो)—ये सभी सहाबा-ए-किराम की श्रेणी में शामिल हैं। क्योंकि सहाबी वह हर मुसलमान है जिसने इस्लाम की स्थिति में उस खुदा-नुमा चेहरे (और हक तक पहुँचाने वाली जात) के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त किया और इस्लाम पर ही इस दुनिया से विदा हुआ (चाहे पुरुष हो या महिला, वयस्क हो या नाबालिग)। उनके(इन उच्च दर्जों और स्थानों) की कद्र और मर्तबा वही बेहतर जानता है जो सैयदुल मुर्सलीन (अल्लाह उन पर अपनी रहमत और सलामती नाज़िल फरमाए) की इज़्ज़त और बुलंदी से वाकिफ है। (उसका सीना मारिफत के नूर से रोशन है और आँखें जमाल-ए-हक के दर्शन से मुशर्रफ हैं, वह हक पर चलता है, हक पर जीता है और हक के लिए मरता है और हक को स्वीकार करना उसकी फितरत है)। यह दोपहर के सूरज से भी अधिक स्पष्ट है कि जब एक प्रेमी (सच्चा चाहने वाला) शक्ति पाता है, तो वह अपने प्रिय को बुरी सोहबत (बुरे साथियों और दुष्ट साथियों) से बचाता है। (और मुसलमानों का बच्चा-बच्चा जानता है कि) अल्लाह तआला कादिर-ए-मुतलक है (और हर मुमकिन चीज़ उसकी कुदरत के अधीन है) और (यह कि) अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) उसके महबूब और सैयदुल महबूबीन (बारगाह के तमाम महबूबों के सरदार और सिर के ताज) हैं। क्या अक्ल-ए-सलीम (इस शर्त पर कि वह सलीम हो) यह तजवीज़ करती (जायज़ और गवारा समझती) है कि ऐसा कादिर (जो चाहे और जैसा चाहे करे), ऐसे महान और गरिमामयी, महबूबियत की जान और इज़्ज़त की खान (कि जो कुछ हुआ, जो होगा और जो हो रहा है, वह उन्हीं की मर्जी से हुआ, उन्हीं की मर्जी से होगा और उन्हीं की मर्जी से हो रहा है; ऐसे महबूब, ऐसे मकबूल) के लिए मखलूक में से सबसे बेहतर लोगों को (जो नबियों और रसूलों के बाद तमाम मखलूक पर फज़ीलत रखते हैं; हुज़ूर के सहाबी) मुसाहिब और हमराज़ (साथी और हमदर्द), दोस्त और मददगार मुकर्रर न फरमाए? (नहीं, हरगिज़ नहीं! तो जब मौला-ए-कादिर व कदीर जल्ला जलालुहू ने उन्हें उनकी दोस्ती, मददगारी, रफाकत और सोहबत के लिए चुन लिया, तो अब) जो उनमें से किसी पर भी तंज करता है, वह जनाब-ए-बारी तआला की कामिल हिकमत और पूरी कुदरत पर (नुकस और कमी का इल्जाम लगाता है) या रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की इन्तेहाई महबूबियत (महबूबियत की कमाल शान) और बुलंद मर्तबे (इज़्ज़त और वकार की वह इन्तेहा और वे ऊँचे दर्जे और बड़े ओहदे) पर सवाल उठाता है जो उन्हें बारगाह-ए-समदियत में हासिल हैं। तो यह मौला-ए-

कुद्दूस तआला शानुहू की बारगाह में या उसके महबूब (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की पाक बारगाह में गुस्ताखाना ज़बान-दराज़ी और बेहूदगी है और खुली बगावत है। इसीलिए सरवर-ए-आलम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं: "मेरे सहाबा के बारे में अल्लाह से डरो, अल्लाह से डरो! मेरे बाद उन्हें (निशाना) न बनाना। जो उनसे मोहब्बत करता है, वह मेरी मोहब्बत की वजह से उनसे मोहब्बत करता है; और जो उनसे बुग्ज़ रखता है, वह मुझसे बुग्ज़ रखने की वजह से उनसे बुग्ज़ रखता है। जिसने उन्हें तकलीफ पहुँचाई, उसने मुझे तकलीफ पहुँचाई; और जिसने मुझे तकलीफ पहुँचाई, उसने अल्लाह को तकलीफ पहुँचाई। और जिसने अल्लाह को तकलीफ पहुँचाई, तो करीब है कि अल्लाह उसे पकड़ ले।" अल्लाह से डरो, अल्लाह से डरो मेरे सहाबा के हक में, उन्हें निशाना न बना लेना मेरे बाद, जो उन्हें दोस्त रखता है मेरी...

पृष्ठ 356/750

امام) حسن و ابو عبداللہ (حضرت امام) حسین، اور تمام مادرانِ اُمت، بانوانِ رسالت (امہات المومنین) ازواجِ مطہرات علی المصطفی و علیہم کلہم الصلوٰۃ والتحیۃ (ان صحابہ کرام کے زمرہ میں) داخل کہ صحابی ہر وہ مسلمان ہے جو حالت اسلام میں اس چہرہ خدا نما (اور اس ذاتِ حق رسا) کی زیارت سے مشرف ہوا۔ او را سلام ہی پر دنیا سے گیا۔ (مرد ہو خواہ عورت، بالغ ہو خواہ نابالغ) ان (اعلیٰ درجات والا مقامات) کی قدر و منزلت وہی خوب جانتا ہے جو سید المرسلین صلی اللہ تعالٰی علیہ کی عزت و رفعت سے آگاہ ہے۔ (اس کا سینہ انوارِ عرفان سے منور اور آنکھیں جمالِ حق سے مشرف ہیں، حق پر چلتا، حق پر جیتا اور حق کے لیے مرتا ہے اور قبول حق اس کا وطیرہ ہے) آفتاب نیمروز (دوپہر کے چڑھتے سورج) سے روشن تر کہ محب (سچا چاہنے والا) جب قدرت پاتا ہے اپنے محبوب کو صحبتِ بد (برے ہم نشینوں اور بدکار رفیقوں) سے بچاتا ہے۔ (اور مسلمانوں کا بچہ بچہ جانتا ہے کہ) حق تعالٰی قادر مطلق (اور ہر ممکن اس کے تحت قدرت ہے) اور (یہ کہ) رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم اس کے محبوب و سید المحبوبین (تمام محبوبان بارگاہ کے سردار و سر کے تاج) کیا عقل سلیم (بشرطیکہ وہ سلیم ہو) تجویز کرتی (جائز و گوارہ رکھتی) ہے کہ ایسا قدیر (فعال لما یرید جو چاہے اور جیسا چاہے کرے) ایسے عظیم ذی وجاہت، جانِ محبوبی و کانِ عزت (کہ جو ہو گیا، جو ہوگا، اور جو ہورہا ہے انہیں کی مرضی پر ہوا۔ انہیں کی مرضی پر ہوگا اور انہیں کی مرضی پر ہورہا ہے۔ ایسے محبوب ایسے مقبول) کے لیے خیارِ خلق کو (کہ انبیاء و مرسلین کے بعد تمام خلائق پر فائق ہوں۔ حضور کا صحابی) جلیس و انیس (ہم نشین و غمخوار) و یار و مددگار مقرر نہ فرمائے (نہیں ہر گز نہیں تو جب کہ مولائے قادر و قدیر جل جلالہ نے انہیں، ان کی یاری و مددگاری، رفاقت و صحبت کے لیے منتخب فرمالیا

تو اب) جو ان میں سے کسی پر طعن کرتا ہے جناب باری تعالٰی کے کمال حکمت و تمام قدرت (پر الزام نقص و ناتمامی کا لگاتا ہے) یا رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کی غایت محبوبیت (کمالِ شانِ محبوبی) و نہایتِ منزلت (وہ انتہائے عزت و وجاہت اور ان مراتبِ رفیعہ اور مناصبِ جلیلہ) پر حرف رکھتا ہے۔ (جو انہیں بارگاہ صمدیت میں حاصل ہیں تو یہ مولائے قدوس تعالٰی شانہ کی بارگاہ میں یا اس کے محبوب صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کی جنابِ پاک میں گستاخانہ زبان درازی و دریدہ دہنی ہے اور کھلی بغاوت) اسی لیے سرورِ عالم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم ارشاد فرماتے ہیں۔ اللہ اللہ فی اصحابی، لا تتخذوھم غرضاً من بعدی فمن احبہم فبحبی احبہم ط و من ابغضہم فببغضی ابغضہم ط و من اذاھم فقد اذانی و من اذانی فقد اذی اللہ ط و من اذی اللہ فیوشک ان یاخذہ ط۔ خدا سے ڈرو، خدا سے ڈرو میرے اصحاب کے حق میں انہیں نشانہ نہ بنالینا میرے بعد جو انہیں دوست رکھتا ہے میری

Fatawa Razawiya - Volume 29

...befriends them out of love for me, and whoever is their enemy is my enemy due to enmity towards me. Whoever harmed them has harmed me, and whoever harmed me has harmed Allah, and whoever harmed Allah, it is imminent that Allah the Almighty will seize him (i.e., cast him into worldly punishment and affliction). Narrated by al-Tirmidhi[1] and others.

Now, O Kharijites, O Nasibis! (O you who especially harbor malice and grudge in your hearts against the two sons-in-law and the two noble Imams and who speak disparagingly of them!) Did the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) in this general decree (mentioned above), and the Divine Majesty in the noble verse "Allah is pleased with them and they are pleased with Him"[2] (meaning Allah is pleased with them, i.e., with their obedience and sincerity, and they are pleased with Him, i.e., with His kindness and bounty), exclude the Master of the Two Lights (Commander of the Faithful, Hazrat Uthman Ghani) and the Victorious Lion of Allah (Commander of the Faithful, Ali bin Abi Talib) and the noble grandsons (Imam Hasan and Imam Husain) - may Allah be pleased with them all - and whisper this exclusion into your ears? Or O Shias! O Rafidis! From these comprehensive rulings (which include all the Sahaba, and all noble Sahaba are included in them), have God and the Messenger (Glorified and Exalted be He, and peace and blessings of Allah be upon him) excluded (the Commander of the Faithful, Caliph of the Muslims) Farooq al-A'zam and (Commander of the Faithful, perfect in modesty and faith) Hazrat, the equipper of the Army of Hardship (in the pleasure of the All-Merciful, Uthman bin Affan), and the Mother of the Believers, the beloved of the Lord of the worlds (the pure, clean, chaste) Aisha Siddiqa daughter of Siddiq, and the Honorable Talha, Zubair, and Muawiya? (Regarding the first, a decree was issued: O Talha! This is Gabriel, he offers you greetings and states that I will be with you during the terrors of the Day of Judgment. And regarding the second, he declared: This is Gabriel, he offers you greetings and states that I will be with you on the Day of Resurrection until I repel from your face the flying sparks of Hell. Imam Jalaluddin al-Suyuti states in 'Jami' al-Jawami' that its chain is Sahih[5]. The chain of this Hadith is authentic. And...

---

[1] Jami' al-Tirmidhi, Kitab al-Manaqib, Chapter on those who revile the companions of the Prophet (PBUH), Hadith 3888, Dar al-Fikr, Beirut, 5/643; Musnad Ahmad bin Hanbal from Abdullah bin Mughaffal al-Muzani, al-Maktab al-Islami, Beirut, 5/54 & 57. [2] Al-Quran al-Karim, 9/100. [3] Kanz al-Ummal, Hadith 36436, Mu'assasah al-Risalah,

Beirut, 13/246 & 247. [4] Kanz al-Ummal, Hadith 33294, Mu'assasah al-Risalah, Beirut, 11/683. [5] Kanz al-Ummal, Hadith 36436, Mu'assasah al-Risalah, Beirut, 13/247.

फ़तावा रज़विया - जिल्द 29

...मुझसे प्रेम के कारण उनसे मित्रता रखता है, और जो उनका शत्रु है वह मुझसे शत्रुता के कारण उनका शत्रु है, जिसने उन्हें कष्ट दिया उसने मुझे कष्ट दिया, और जिसने मुझे कष्ट दिया उसने अल्लाह को कष्ट दिया, और जिसने अल्लाह को कष्ट दिया तो निकट है कि अल्लाह सर्वशक्तिमान उसे पकड़ ले (अर्थात, उसे जीवित दंड और विपत्ति में डाल दे)। इसे तिर्मिज़ी[1] और अन्य ने वर्णन किया है।

अब हे खारजियों, नासिबियों! (हे हज़रत ख़तनैन (दो दामादों) और इमामैन जलीलैं (दो महान इमामों) के प्रति विशेष रूप से अपने हृदयों में द्वेष और घृणा रखने वालों और उनके बारे में अपशब्द कहने वालों!) क्या अल्लाह के रसूल (अल्लाह उन पर कृपा और शांति बरसाए) ने इस सामान्य आदेश (ऊपर वर्णित) में, और ईश्वर ने पवित्र आयत "अल्लाह उनसे प्रसन्न है और वे उससे प्रसन्न हैं"[2] के माध्यम से (कि अल्लाह उनसे अर्थात उनकी आज्ञाकारिता और ईमानदारी से प्रसन्न है और वे उससे अर्थात उसकी कृपा और वरदान से प्रसन्न हैं), ज़ुन्नूरैन (मोमिनों के सेनापति हज़रत उस्मान गनी) और असदुल्लाह ग़ालिब (मोमिनों के सेनापति अली बिन अबी तालिब) और हज़रात सिब्तैन करीमैन (इमाम हसन और इमाम हुसैन) - अल्लाह उन सभी से प्रसन्न हो - को अलग कर दिया है और इस अपवाद को तुम्हारे कानों में फूंक दिया है? या हे शियाओं! हे राफ़ज़ियों! इन व्यापक आदेशों से (जो सभी सहाबा को सम्मिलित करते हैं और सभी महान सहाबा उनमें शामिल हैं), क्या ईश्वर और रसूल (महिमामय और श्रेष्ठ, और अल्लाह उन पर कृपा और शांति बरसाए) ने (मोमिनों के सेनापति, मुसलमानों के खलीफा) जनाब फारूक-ए-आजम और (मोमिनों के सेनापति, लज्जा और ईमान में पूर्ण) हज़रत, तंगी की सेना को सुसज्जित करने वाले (अल्लाह की प्रसन्नता में उस्मान बिन अफ़्फ़ान) और मोमिनों की माँ, जगत के स्वामी की प्रिय (पवित्र, शुद्ध, सती) आयशा सिद्दीका बिन्ते सिद्दीक़ और हज़रात तलहा, ज़ुबैर और मुआविया को अलग कर दिया है? (पहले के बारे में आदेश आया है कि: हे तलहा! ये जिब्रील हैं, वे तुम्हें सलाम करते हैं और कहते हैं कि मैं प्रलय के दिन के आतंक में तुम्हारे साथ रहूँगा। और दूसरे के बारे में फ़रमाया: ये जिब्रील हैं, वे तुम्हें सलाम करते हैं और कहते हैं कि मैं कयामत के दिन तुम्हारे साथ रहूँगा यहाँ तक कि तुम्हारे चेहरे से उड़ने वाली नर्क की चिंगारियों को दूर कर दूँ। इमाम जलालुद्दीन सुयूती 'जमाउल जवामे' में कहते हैं कि इसकी सनद सही है[5]। इस हदीस की सनद सही है। और...

[1] जामिअ अल-तिर्मिज़ी, किताब अल-मनाकिब, नबी के साथियों को गाली देने वालों के बारे में अध्याय, हदीस 3888, दार अल-फ़िक्र, बेरूत, 5/643; मुसनद अहमद बिन हंबल, अब्दुल्लाह बिन मुग़फ़्फ़ल अल-मुज़ानी से, अल-मकतब अल-इस्लामी, बेरूत, 5/54 और 57। [2] अल-क़ुरान अल-करीम, 9/100। [3] कंज़ अल-उम्माल, हदीस 36436, मुअस्सा अल-रिसाला, बेरूत, 13/246 और 247। [4] कंज़ अल-उम्माल, हदीस 33294, मुअस्सा अल-रिसाला, बेरूत, 11/683। [5] कंज़ अल-उम्माल, हदीस 36436, मुअस्सा अल-रिसाला, बेरूत, 13/247।

محبت سے انہیں دوست رکھتا ہے، اور جوان کا دشمن ہے میری عداوت سے ان کا دشمن ہے، جس نے انہیں ایذا دی اس نے مجھے ایذا دی، اور جس نے مجھے ایذا دی اس نے اللہ کو ایذا دی، اور جس نے اللہ کو ایذا دی تو قریب ہے کہ اللہ تعالیٰ اس کو گرفتار کرلے۔(یعنی زندہ عذاب و بلا میں ڈال دے)رواہ الترمذی ۱ وغیرہ۔

اب اے خارجیو، ناصبیو! (حضرت ختنین وامامین جلیلین سے خصوصاً اپنے سینوں میں بغض و کینہ رکھنے اور انہیں چنین و چناں کہنے والو!) کیا رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے (مذکورہ بالا) اس ارشاد عام اور جناب باری تعالیٰ نے آیت کریمہ "رَضِیَ اللّٰہُ عَنْھُمْ وَ رَضُوا عَنْہُ" ۲ سے (کہ اللہ تعالیٰ ان سے یعنی ان کی اطاعت واخلاص سے راضی اور وہ اس سے یعنی اس کے کرم و عطا سے راضی) جناب ذوالنورین (امیر المومنین حضرت عثمان غنی) و حضرت اسد اللہ غالب (امیر المومنین علی بن ابی طالب) و حضرات سبطین کریمین (امام حسن وامام حسین) رضی اللہ تعالیٰ عنہم اجمعین کو مستثنیٰ کر دیا اور اس استثناء کو تمہارے کان میں پھونک دیا ہے) یا اے شیعیو! اے رافضیوا ان احکام شاملہ سے (کہ سب صحابہ کو شامل ہیں اور جملہ صحابہ کرام ان میں داخل ہیں۔ خدا اور رسول (جل و علا وصلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) نے (امیر المومنین خلیفۃ المسلمین) جناب فاروق اکبر (وامیر المومنین کامل الحیاء والایمان) حضرت مجہز جیش العسرۃ (فی رضی الرحمن عثمان بن عفان) و جناب ام المومنین، محبوبہ سید العالمین (طیبہ، طاہرہ، عفیفہ) عائشہ صدیقہ بنت صدیق و حضرات طلحہ و زبیر و معاویہ (کہ اوّل کے بارے میں ارشاد وارد کہ اے طلحہ! یہ جبریل ہیں تجھے سلام کہتے ہیں اور بیان کرتے ہیں کہ میں قیامت کے ہولوں میں تمہارے ساتھ رہوں گا۔ اور ثانی کے باب میں ارشاد فرمایا یہ جبریل ہیں تجھے سلام کہتے ہیں اور

بیان کرتے ہیں کہ میں روز قیامت تمہارے ساتھ رہوں گا یہاں تک کہ تمہارے چہرہ سے جہنم کی اُڑتی چنگاریاں دور کر دوں گا۔ امام جلال الدین سیوطی جمع الجوامع میں فرماتے ہیں سَنَدُہٗ صحیح ۵۔ اس حدیث کی سند صحیح ہے۔ اور

---

۱ جامع الترمذی کتاب المناقب باب فی من سب اصحاب النبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم حدیث ۳۸۸۸ دارالفکر بیروت ۵/ ۶۴۳، مسند احمد بن حنبل عن عبداللہ بن مغفل المزنی المکتب الاسلامی بیروت ۵/ ۵۴ و ۵۷ ۲ القرآن الکریم ۹/ ۱۰۰ ۳ کنز العمال حدیث ۳۶۴۳۶ مؤسسۃ الرسالۃ بیروت ۱۳/ ۲۴۶ و ۲۴۷ ۴ کنز العمال حدیث ۳۳۲۹۴ مؤسسۃ الرسالۃ بیروت ۱۱/ ۶۸۳ ۵ کنز العمال حدیث ۳۶۴۳۶ مؤسسۃ الرسالۃ بیروت ۱۳/ ۲۴۷

Fatawa Rizvia, Volume 29

Hadrat Amir Muawiyah is the first among the kings of Islam and the first king of the Muhammadan Sultanate. This is alluded to in the Holy Torah: "His birthplace is Makkah, his place of migration is Tayyaba (Madinah), and his kingdom is in Syria." That Prophet of the end times, peace and blessings of Allah be upon him, will be born in Makkah, will migrate to Madinah, and his kingdom will be in Syria. (So, although the reign of Amir Muawiyah is a monarchy, whose is it? It is that of Muhammad, the Messenger of Allah, peace and blessings of Allah be upon him). And others like them (may Allah be pleased with them all until the Day of Judgment) were excluded, and (the Messenger of Allah quietly) whispered in your ear that by 'companions' we mean those besides these people (and other companions), whom you, O Kharijites (and O Rafidites), have become enemies of. And God forbid, they began to remember (them) with curses and insults (and due to ill fortune), failed to realize that this enmity is, in reality, enmity towards the Messenger of Allah, peace and blessings of Allah be upon him, and causing them distress is causing distress to Allah, the Exalted (the punishment for which is the eternal torment of Hell, but O Allah! May Your blessed mercy and eternal grace be upon this pure sect of Ahl-e-Sunnat-wa-Jama'at, which has (always and without exception) looked upon all the companions and the chosen flowers of the garden of companionship of Your Beloved, peace and blessings of Allah be upon him, with eyes of reverence and majesty (and a gaze of honor and respect), and made it their hallmark and identity (sign and mark), and held the belief that every single individual among them (righteous and virtuous) is the leader of the just, the chosen, the pious, and the virtuous (and the crown of all the spreaders of justice, nurturers of justice, virtuous, God-fearing, and righteous servants of the Ummah until the Day of Judgment). No saint of the Ummah, from the successors (Tabi'un) until the Day of Resurrection, no matter how great a status they reach, whether they are heads of a spiritual order or not, can ever, ever reach the rank of even the lowliest among them, and none among them is lowly. According to the true saying of the Messenger of Allah, peace and blessings of Allah be upon him, gold equal to Mount Uhud given by others is not equal to even half a Sa' (approximately two kilos) of barley given by them [1]. The proximity to God which they possess...

---

1. Sahih al-Bukhari, Virtues of the Companions of the Prophet (PBUH), Excellence of Abu Bakr after the Prophet (PBUH), Qadimi Kutub Khana, Karachi, 1/518; Sahih Muslim, Book of Virtues, Chapter on the Prohibition of Insulting the

Companions, Qadimi Kutub Khana, Karachi, 2/310; Sunan Ibn Majah, Excellence of the People of Badr, H.M. Saeed Company, Karachi, p. 15; Sunan Abi Dawood, Book of Sunnah, Chapter on the Prohibition of Insulting the Companions of the Messenger of Allah, Aftab-e-Alam Press, Lahore, 2/282.

फ़तावा रिज़विया, खंड 29

हज़रत अमीर मुआविया इस्लाम के सुल्तानों में प्रथम और सल्तनत-ए-मुहम्मदिया के पहले राजा हैं। इसी ओर पवित्र तौरात में संकेत है कि: "उनका जन्म स्थान मक्का है, उनका हिजरत (पलायन) का स्थान तैयबा (मदीना) है और उनका राज्य शाम (सीरिया) में है।" वह आख़िरुज़्ज़मा (अंतिम समय के) नबी, सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, मक्का में पैदा होंगे और मदीना की ओर हिजरत फ़रमाएंगे और उनकी सल्तनत शाम में होगी। (तो अमीर मुआविया की बादशाही यद्यपि एक सल्तनत है, लेकिन किसकी? मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की)। और अन्य (अल्लाह उन सभी से क़यामत के दिन तक राज़ी हो) को निकाल दिया गया, और तुम्हारे कान में (अल्लाह के रसूल ने चुपचाप) कह दिया कि सहाबा से हमारा मतलब उन लोगों के अलावा (और अन्य सहाबा) हैं, जिनके तुम ऐ ख़ारजियों (और ऐ राफ़िज़ियों) दुश्मन हो गए। और अल्लाह की पनाह, (उन्हें) अपशब्दों और गालियों के साथ याद करने लगे (और बदक़िस्मती से) यह न जाना कि यह दुश्मनी, वास्तव में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से दुश्मनी है और उन्हें कष्ट पहुँचाना हक़ तबारक व तआला को कष्ट पहुँचाना है (जिसका दंड जहन्नम का स्थायी अज़ाब है, लेकिन ऐ अल्लाह! तेरी बरकत वाली रहमत और हमेशा रहने वाली इनायत उस पाक फ़िरक़ा अहल-ए-सुन्नत व जमाअत पर हो, जिसने तेरे महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सभी साथियों और सोहबत के गुलिस्तान के फूलों को (हमेशा बिना किसी अपवाद के) सम्मान और महिमा की दृष्टि (और आदर व सत्कार की नज़र) से देखा, अपना प्रतीक और पहचान (अपना निशान) बना लिया और सब को मार्गदर्शन के तारे और सम्मान के आकाश के सितारे माना। यह अक़ीदा (आस्था) बना लिया कि उनमें से हर एक व्यक्ति (नेक और सदाचारी) न्यायपरायणों, श्रेष्ठों, परहेज़गारों और नेक लोगों का सरदार है (और क़यामत तक उम्मत के तमाम न्याय फैलाने वालों, न्याय के संरक्षकों, नेककारों, परहेज़गारों और नेक बंदों के सर का ताज है)। ताबेईन से लेकर क़यामत तक उम्मत का कोई भी वली कितना ही महान पद क्यों न पा ले, चाहे वह किसी सिलसिले का प्रमुख हो या न हो, वह उनमें से किसी अदना (निम्नतम) के रुतबे तक कभी भी, हरगिज़ नहीं पहुँच सकता, और उनमें कोई अदना नहीं है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सच्चे कथन के अनुसार, दूसरों का उहुद पहाड़ के बराबर सोना उनके आधे साअ (लगभग दो किलो) जौ के बराबर नहीं है [1]। जो ईश्वर का सामीप्य उन्हें प्राप्त है...

1. सहीह अल-बुख़ारी, मनाक़िब असहाब अन-नबी (सल्ल.), नबी (सल्ल.) के बाद अबू बक्र की फ़ज़ीलत, क़दीमी कुतुब ख़ाना, कराची 1/518; सहीह मुस्लिम, किताबुल फ़ज़ाइल, सहाबा को बुरा कहने की मनाही का अध्याय, क़दीमी कुतुब ख़ाना, कराची 2/310; सुनन इब्न माजह, अहल-ए-बदर की फ़ज़ीलत, एच.एम. सईद कंपनी, कराची पृ. 15; सुनन अबी दाऊद, किताबुस सुन्नाह, रसूलुल्लाह के सहाबा को बुरा कहने की मनाही का अध्याय, आफ़ताब-ए-आलम प्रेस, लाहौर 2/282।

حضرت امیر معاویہ تو اول ملوک اسلام اور سلطنت محمدیہ کے پہلے بادشاہ ہیں اسی کی طرف تورات مقدس میں اشارہ ہے کہ: مولدہ بمکة ومهاجره طيبة وملكه بالشام۔ وہ نبی آخر الزماں صلی اللہ تعالی علیہ وسلم مکہ میں پیدا ہوگا اور مدینہ کو ہجرت فرمائے گا اور اس کی سلطنت شام میں ہوگی۔ (تو امیر معاویہ کی بادشاہی اگرچہ سلطنت ہے، مگر کس کی؟ محمد رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم کی) وغیرہ ھم رضوان اللہ تعالی علیہم الی یوم الدین کو خارج کر دیا اور تمہارے کان میں (اللہ کے رسول نے چپ چاپ) کہہ دیا کہ اصحاب سے ہماری مراد اور آیت میں ضمیر ھم کے مصداق ان لوگوں کے سوا (اور دوسرے صحابہ) ہیں جو تم ان کے اے خوارج (اور اے روافض) دشمن ہو گئے۔ اور عیاذاً باللہ (انہیں) لعن طعن سے یاد کرنے لگے (اور شوئی بخت سے) نہ یہ جانا کہ یہ دشمنی، در حقیقت رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم سے دشمنی ہے اور ان کی ایذاء حق تبارک و تعالی کی ایذاء (اور جہنم کا دائمی عذاب جس کی سزا، مگر اے اللہ! تیری برکت والی رحمت اور ہمیشگی والی عنایت اس پاک فرقہ اہل سنت و جماعت پر، جس نے تیرے محبوب صلی اللہ تعالی علیہ وسلم کے سب ہم نشینوں اور گلستان صحبت کے گل چینوں کو (ہمیشہ ہمیں کسی استثناء کے بغیر) نگاہ تعظیم واجلال (اور نظر تکریم وتوقیر) سے دیکھا، اپنا شعار و دثار (اپنی علامت و نشان) کر لیا اور سب کو چرخ ہدایت کے ستارے اور فلک عزت کے ستارے جاننا، عقیدہ کر لیا کہ ہر ہر فرد بشر ان کا (بار و نیکوکار) سرور عدول و اخیار واتقیاء و ابرار کا سردار (اور امت کے تمام عدل گستر، عدل پرور، نیکوکار، پرہیز گار اور صالح بندوں کے سر کا تاج ہے) تابعین سے لے کر تا قیامت امت کا کوئی ولی کیسے ہی پایہ عظیم کو پہنچے، صاحب سلسلہ ہو خواہ غیر ان کا، ہر گز ہر گز ان میں سے ادنی سے ادنی کے رتبہ کو نہیں پہنچتا، اور ان میں ادنی

کوئی نہیں، رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم کے ارشاد صادق کے مطابق اوروں کا کوہ احد کے برابر سونا ان کے نیم صاع (تقریباً دو کلو) جو کے برابر نہیں 1۔ جو قرب خدا انہیں حاصل

---

1 صحیح البخاری مناقب اصحاب النبی صلی اللہ تعالی علیہ وسلم فضل ابی بکر بعد النبی صلی اللہ تعالی علیہ وسلم قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/ ۵۱۸، صحیح مسلم کتاب الفضائل باب تحریم سب الصحابۃ قدیمی کتب خانہ کراچی ۲/ ۳لو، سنن ابن ماجۃ فضل اہل بدر ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ص ۱۵، سنن ابی داود کتاب السنۃ باب فی النھی عن سب اصحاب رسول اللہ آفتاب عالم پریس لاہور ۲/ ۲۸۲

Fatawa Rizvia, Volume 29

...is not available to others. And the high ranks that they will attain, others will not be able to reach. (From the elite to the common folk of Ahl-e-Sunnat), all of them collectively (so that no individual is left out, from first to last) are known to be of the highest degree of righteousness and piety. They consider it forbidden to look into the details of their circumstances (as to who did what with whom and why). If any action of theirs (the noble Sahaba) is narrated which seems somewhat below their dignity in a limited view (and a short-sighted person finds room for criticism), they interpret it in a good light. (They attribute it to their sincerity of heart and good intentions). And hearing the true word of Allah 'Allah is well-pleased with them'[1] they do not allow the rust of investigation to take place in the mirror of their hearts. (They don't let the grime named 'researching actual conditions' cover the mirror of the heart). The Messenger of Allah, peace and blessings of Allah be upon him, has already commanded:

“When my companions are mentioned, refrain [from discussion][2].” When the mention of my companions arises, stay away.

(Do not let ill-faith and suspicion come near; do not get into investigating situations and inspecting outcomes). Necessarily, hearing the magnificent command of their master, and these severe warnings, horrific threats (scares and menaces), they silenced their tongues and cleansed their hearts towards everyone. (And without ‘hows’ and ‘whys’) they realized that their ranks are beyond our intellect, so what business do we have interfering in their matters? In the disputes (apparent conflicts and differences) that occurred among them, who are we to judge?

O Hafiz, you are a beggar sitting in the dust, do not cry out Kings themselves know the secrets of their kingdom[3]

(You are a beggar sitting in the dust, O Hafiz! Do not make a noise, for kings know the secrets of their own sultanate).

(Verse: It is a shot in the dark that you speak, these are matters of the masters).

God forbid that they should start speaking ill of one to favor the other, or in those disputes, to one party...

[1] The Holy Quran 9/100 [2] Al-Mu'jam al-Kabir, Hadith 7227, Al-Maktabah al-Faysaliyyah, Beirut 2/92 [3] Diwan-e-Hafiz, Row 'Shin' Mu'ajjamah, Sab Rang Kitab Ghar, Delhi, p. 258

फ़तावा रिज़विया, खंड 29

...दूसरे को उपलब्ध नहीं। और जो उच्च पद ये पाएंगे, वे दूसरों के हाथ नहीं आएंगे। (अहल-ए-सुन्नत के विशिष्ट लोगों से लेकर आम जनता तक) इन सभी को सामूहिक रूप से (ताकि कोई भी व्यक्ति इनमें शामिल होने से न रह जाए, शुरू से अंत तक) उच्चतम श्रेणी का नेक और परहेज़गार जानते हैं और उनके हालातों के विवरण पर (कि किसने किसके साथ क्या किया और क्यों किया, इस पर) नज़र डालना हराम मानते हैं। यदि उनके(इन सहाबा किराम में से) किसी का कोई ऐसा कार्य वर्णित भी हुआ हो जो अल्पदृष्टि में उनकी शान से कुछ गिरा हुआ लगे (और किसी कम-नज़र को उसमें आलोचना की गुंजाइश मिले), तो उसे अच्छे अर्थ में लेते हैं। (और इसे उनके दिल के खुलेपन और अच्छी नीयत पर आधारित मानते हैं)। और अल्लाह का सच्चा वचन 'अल्लाह उनसे राज़ी हुआ'[1] सुनकर दिल के आईने में जाँच-पड़ताल के ज़ंग को जगह नहीं देते। (और वास्तविक हालातों की खोजबीन नाम की गंदगी दिल के आईने पर नहीं चढ़ने देते)। रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) आदेश दे चुके हैं:

“जब मेरे सहाबा का ज़िक्र किया जाए तो रुक जाओ[2]।” जब मेरे सहाबा का ज़िक्र आए तो (बहस से) बाज़ रहो।

(बुरी आस्था और संदेह को पास न फटकने दो, स्थिति की जाँच और माल की खोज में न पड़ो)। लाचार होकर अपने आका का आलीशान फ़रमान और ये सख़्त धमकियाँ, भयानक चेतावनियाँ सुनकर ज़बान बंद कर ली और दिल को सबकी तरफ़ से साफ़ कर लिया। (और बिना किसी बहस के) जान लिया कि उनके पद हमारी बुद्धि से परे हैं, फिर हम उनके मामलों में क्या दखल दें? उनमें जो मतभेद (विवाद और इख़्तिलाफ़ की सूरत) पैदा हुए, हम उनका फ़ैसला करने वाले कौन?

ऐ हाफ़िज़! धूल में बैठने वाले भिखारी होकर शोर मत मचा बादशाह ही अपने राज्य के रहस्यों को जानते हैं[3]

(तू मिट्टी में बैठने वाला भिखारी है ऐ हाफ़िज़! शोर मत कर कि अपनी सल्तनत के राज़ बादशाह ही जानते हैं)।

(मिसरा: तीर-ए-अमना है कि तू बोले ये सरकारों की बातें हैं)।

ईश्वर न करे कि एक की तरफ़दारी में दूसरे को बुरा कहने लगें, या उन विवादों में एक पक्ष को...

[1] अल-क़ुरान अल-करीम 9/100 [2] अल-मुअजम अल-कबीर हदीस 7227, अल-मकतबा अल-फ़ैसलिया, बेरूत 2/92 [3] दीवान-ए-हाफ़िज़, रदीफ़ 'शीन' मुअज्जिमा, सब रंग किताब घर, दिल्ली, पृ. 258

دوسرے کو میسر نہیں۔ اور جو درجاتِ عالیہ یہ پائیں گے غیر کو ہاتھ نہ آئیں گے۔ (اہلسنت کے خواص تو خواص، عوام تک) ان سب کو بالاجمال (کہ کوئی فرد ان کا شمول سے نہ رہ جائے، از اول تا آخر) پرلے درجے کا بر و تقی (نیکوکار متقی) جانتے اور تفاصیل احوال (کہ کس نے کس کے ساتھ کیا کیا اور کیوں کیا، اس) پر نظر حرام مانتے (ہیں) جو فعل (ان حضرات صحابہ کرام میں سے) کسی کا اگر ایسا منقول بھی ہوا جو نظر قاصر (ونگاہ کوتاہ میں) میں ان کی شان سے قدرے گرا ہوا ٹھہرے (اور کسی کوتاہ نظر کو اس میں حرف زنی کی گنجائش ملے) اسے محملِ حسن پر اتارتے ہیں۔ (اور اسے ان کے خلوص قلب و حسن نیت پر محمول کرتے ہیں) اور اللہ کا سچا قول 'رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ'[1] سن کر آئینہ دل میں زنگِ تفتیش کو جگہ نہیں دیتے۔ (اور تحقیق احوالِ واقعی کے نام کا میل کچیل، دل کے آئینے پر چڑھنے نہیں دیتے) رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم حکم فرما چکے۔

اِذَا ذُکِرَ اَصْحَابِیْ فَاَمْسِکُوْا[2]۔ جب میرے اصحاب کا ذکر آئے تو باز رہو۔

(سوءِ عقیدت و بدگمانی کو قریب نہ پھٹکنے دو، تحقیق حال و تفتیش مال میں نہ پڑو) ناچار اپنے آقا کا فرمانِ عالی شان، اور یہ سخت وعیدیں، ہولناک تہدیدیں (ڈراوے اور دھمکیاں) سُن کر زبان بند کرلی اور دل کو سب کی طرف سے صاف کرلیا۔ (اور بلاچون و چرا) جان لیا کہ ان کے رُتبے ہماری عقل سے وراء ہیں پھر ہم ان کے معاملات میں کیا دخل دیں ان میں جو مشاجرات (صورۃ نزاعات و اختلافات) واقع ہوئے ہم ان کا فیصلہ کرنے والے کون؟

گدائے خاک نشینی تو حافظا مخروش رموزِ مملکت خویش خسروان دانند[3]

(تُو خاک نشین گداگر ہے اے حافظ! شور مت کر کہ اپنی سلطنت کے بھید بادشاہ جانتے ہیں)

(ع تیرِ امنہ ہے کہ تُو بولے یہ سرکاروں کی باتیں ہیں)

حاشا کہ ایک کی طرف داری میں دوسرے کو بُرا کہنے لگیں، یا ان نزاعوں میں ایک فریق کو...

[1] القرآن الکریم ۹ / ۱۰۰ [2] المعجم الکبیر حدیث ۷۲۲۷ المکتبة الفیصلیة بیروت ۲ / ۹۲ [3] دیوان حافظ ردیف شین معجمہ سب رنگ کتاب گھر دہلی ص ۲۵۸

Fatawa Razawiyyah, Volume 29

They should not be considered seekers of the world; rather, it is known with certainty that they all sought the interests of religion. (The exaltation of Islam and Muslims was their objective. Furthermore, they were Mujtahids, so) whatever seemed most appropriate and suitable (more beneficial and fitting for the conditions of the Muslims) for the religion of Allah and the Shariah of the Messenger of Allah (the refuge of all), may His glory be magnified and peace and blessings of Allah be upon him, they adopted it, even if an error occurred in their ijtihad and the correct point did not come to mind. But they are all on the truth (and all are worthy of respect). Their situation is exactly like the differences in the branches of religion among the scholars of Ahl-e-Sunnat themselves, or rather among their Mujtahids, for instance, Imam-e-Azam Abu Hanifa and Imam Shafi'i (and others), where these disputes never caused them to consider one another as misguided or transgressive, nor did they become enemies. This is supported by the saying of Mawla Ali (may Allah be pleased with him): "Ikhwanuna baghau 'alayna"[1]. (These are all our brothers who rose against us).

Muslims should see that all these personages are devoted and true servants of the Master of both worlds (Peace and blessings of Allah be upon him), esteemed and honored in the courts of God and the Prophet, and are bright stars in the sky of guidance: "As-habi kan-nujoom"[2].

In short, from the commands of God and the Prophet (may His glory be magnified and peace and blessings be upon him), [this pure group of Ahl-e-Sunnat wa Jama'at has formed its belief and] firmly believes that all [the Noble Companions] are good, just, trustworthy, pious, and pure [the chosen ones of the Lord]. Looking into the details [of their disputes and conflicts] is misleading. An analogy for this is the infallibility of the Prophets (peace and blessings be upon them). The people of truth [Ahl-e-Islam, Ahl-e-Sunnat wa Jama'at] reached their intended destination by walking on the highway of faith. Whereas the proponents of [misguidance and] falsehood, by delving [unjustly] into details, fell into the pits [of misguidance and] irreligion. Somewhere they saw: "And Adam disobeyed his Lord and went astray"[3]. (In which disobedience and apparent deviation from the divine command is attributed to Hazrat Adam, peace be upon him).

[1] Al-Sunan al-Kubra, Kitab Qital Ahl al-Baghy, Dar Sadir, Beirut, 8/173 [2] Kashf al-Khafa, Letter Alif with Sad, Hadith 381, Dar al-Kutub al-Ilmiyyah, Beirut, 1/118 [3] Al-Quran al-Karim, 20/121

फ़तावा रज़विया, जिल्द 29

उन्हें दुनिया का तलबगार न समझा जाए, बल्कि यकीनन ये माना जाए कि वे सब दीन की भलाई के चाहने वाले थे। (इस्लाम और मुसलमानों की सरबुलंदी उनका मक्सद था। फिर वे मुजतहिद भी थे, तो) जिसके इज्तिहाद में जो बात अल्लाह के दीन और शरीअत-ए-रिसालत (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के लिए सबसे ज़्यादा बेहतर और मुनासिब (ज़्यादा मसह़लत वाला और मुसलमानों के हालात के लिए साज़गार) मालूम हुई, उसे अपनाया, चाहे इज्तिहाद में गलती हुई हो और सही बात ज़हन में न आई हो। लेकिन वे सब हक़ पर हैं (और सब काबिले-एहतराम हैं)। उनका हाल बिलकुल वैसा ही है जैसा मज़हब की शाखाओं (फ़ुरुआत) में खुद अहले-सुन्नत के उलेमा, बल्कि उनके मुजतहिदीन मसलन इमाम-ए-आज़म अबू हनीफ़ा और इमाम शाफ़ई (वगैरहमा) के इख़्तिलाफ़ात हैं। इन विवादों के कारण उन्होंने कभी एक-दूसरे को गुमराह या फ़ासिक नहीं समझा, और न ही वे एक-दूसरे के दुश्मन बने। इसकी तस्दीक मौला अली के इस कौल से होती है: 'इख्वानुना बग़ौ अलैना'[1]। (ये सब हमारे भाई हैं जो हमारे खिलाफ उठ खड़े हुए हैं)।

मुसलमानों को तो ये देखना चाहिए कि ये तमाम हज़रात आका-ए-दो आलम (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के जाँनिसार और सच्चे गुलाम हैं, खुदा और रसूल की बारगाहों में मोहतरम और मुअज़्ज़ज़ हैं और हिदायत के आसमान के रोशन सितारे हैं: 'असहाबी कन्नुजूम'[2]।

कुल मिलाकर, अल्लाह और उसके रसूल (अज़्ज़ा वजल्ला व सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के इरशादात से [इस पाक फिरके अहले-सुन्नत व जमाअत ने अपना अकीदा और] इतना यकीन कर लिया है कि सब [सहाबा किराम] नेक, आदिल, काबिले-एतमाद, मुत्तकी और पाकीज़ा [परवरदिगार के खास बंदे] हैं। और उनके[विवादों और झगड़ों] की बारीकियों पर नज़र डालना गुमराह करने वाला है। इसकी मिसाल नबियों (अलैहिमुस्सलाम) की मासूमीयत (इस्मत) है कि अहले-हक़ [अहले-इस्लाम, अहले-सुन्नत व जमाअत] अकीदत की शाहराह पर चलकर मंज़िल-ए-मकसूद तक पहुँचे। और बातिल और गुमराह लोग बेजा तफसीलों में पड़कर गुमराही और बेदीनी की खंदकों में जा गिरे। कहीं उन्होंने देखा: 'व-असा आदमु रब्बहू फ़-ग़वा'[3]। (कि इसमें हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की तरफ नाफरमानी और ज़ाहिरी तौर पर हुक्म-ए-इलाही से रूह-गरदानी की निस्बत की गई है)।

[1] अल-सुनन अल-कुब्रा, किताब क़िताल अहल अल-बग़ी, दार सादर, बेरूत, 8/173 [2] कश्फ़ अल-ख़फ़ा, हर्फ़ अल-हम्ज़ा मअ अस-साद, हदीस 381, दार अल-कुतुब अल-इल्मिया, बेरूत, 1/118 [3] अल-कुरान अल-करीम, 20/121

पृष्ठ 360/750

دنیا طلب ٹھہرائیں بلکہ بالیقین جانتے ہیں کہ وہ سب مصالح دین کے خواستگار تھے (اسلام و مسلمین کی سربلندی ان کا نصب العین تھی پھر وہ مجتہد بھی تھے، تو) جس کے اجتہاد میں جو بات دین الٰہی و شرع رسالت پناہی جل جلالہ و صلی اللہ تعالٰی علیہ و سلم کے لیے اصلح وانسب (زیادہ مصلحت آمیز اور احوال مسلمین سے مناسب تر) معلوم ہوئی، اختیار کی، گو اجتہاد میں خطا ہوئی اور ٹھیک بات ذہن میں نہ آئی۔ لیکن وہ سب حق پر ہیں (اور سب واجب الاحترام) ان کا حال بعینہٖ ایسا ہے جیسا فروع مذہب میں (خود علمائے اہلسنت بلکہ ان کے مجتہدین مثلاً امام اعظم ابو حنیفہ (امام) شافعی (وغیرہما) کے اختلافات نہ ہرگز ان منازعات کے سبب، ایک دوسرے کو گمراہ فاسق جاننا نہ ان کا دشمن ہو جانا (جس کی تائید مولٰی علی کے اس قول سے ہوتی ہے کہ : اخواننا بغوا علینا[1]۔ یہ سب ہمارے بھائی ہیں کہ ہمارے خلاف اٹھ کھڑے ہوئے)۔

مسلمانوں کو تو یہ دیکھنا چاہیے کہ سب حضرات آقائے دو عالم صلی اللہ تعالٰی علیہ و سلم کے جاں نثار اور سچے غلام ہیں، خدا اور رسول کی بارگاہوں میں معظم و معزز اور آسمان ہدایت کے روشن ستارے ہیں اصحابی کالنجوم[2]۔

بالجملہ ارشادات خدا اور رسول عز وجدہ وصلی اللہ تعالٰی علیہ و سلم سے (اس پاک فرقہ اہل سنت و جماعت نے اپنا عقیدہ اور) اتنا یقین کر لیا کہ سب (صحابہ کرام) اچھے اور عدل و ثقہ، تقی، نقی ابرار (خاصانِ پروردگار) ہیں۔ اور ان (مشاجرات و نزاعات کی) تفاصیل پر نظر گمراہ کرنے والی ہے، نظیر اس کی عصمت انبیاء علیہم الصلوٰۃ والثناء ہے کہ اہل حق (اہل اسلام، اہلسنت و جماعت) شاہراہ عقیدت پر چل کر (منزل) مقصود کو پہنچے۔ اور ارباب (غوایت واہل) باطل تفصیلوں میں خوض (و ناحق غور) کر کے مغاک (ضلالت اور) بددینی (کی گمراہیوں) میں جا پڑے کہیں دیکھا

"وَعَصٰی اٰدَمُ رَبَّہٗ فَغَوٰی"[3]۔ (کہ اس میں عصیاں اور بظاہر تعمیل حکم ربانی سے روگردانی کی نسبت حضرت آدم علیہ السلام کی جانب کی گئی ہے۔)

[1] السنن الکبریٰ کتاب قتال اھل البغی دارصادر بیروت ۸ / ۱۷۳ [2] کشف الخفاء حرف الہمزہ مع الصاد حدیث ۳۸۱ دارالکتب العلمیة بیروت ۱ / ۱۱۸ [3] القرآن الکریم ۲۰ / ۱۲۱

Fatawa Razawiyya Volume 29

Somewhere they heard, "That Allah may forgive thee of thy faults that which is past and that which is to come" 1. (From which a suspicion arises regarding the attribution of *dhanb* meaning sin and *ghufran-e-dhanb* meaning forgiveness of sin towards the exalted presence of the Holy Prophet, peace and blessings of Allah be upon him).

Sometimes the story of Musa (peace be upon him) and the Copt (the people of Pharaoh) is recalled (that finding the Copt intent on injustice, you struck him with a punch, and that Copt reached the depth of the grave) 2.

Sometimes they heard the tale of (Prophet) Dawud (peace be upon him and one of his followers) and Uriah (although this was an accusation by the Jews against Prophet Dawud, peace be upon him, which they publicized extensively and it became common knowledge. So much so that, due to its notoriety and without proper investigation and scrutiny of the circumstances, some commentators narrated this incident as is, whereas Imam Razi 3 states that in my research this incident is entirely false and absurd).

In short, when senseless irreligious people and irreligious senseless people heard this tale, they began questioning and arguing. Did they gain any fruit other than descending from the stairs of submission and obedience and incurring the displeasure of God and His Messenger? And (on the contrary) "you indulged in idle talk as they did" 4 (and you fell into absurdity as they did and chose their path in following falsehood) showed them the day of "but the word of punishment has become justified against the disbelievers" 5. (But the word of punishment came true against the disbelievers) "except as my Lord wills" 6. "Indeed, your Lord is the Doer of what He intends" 7.

(Muslims should always keep in mind that the noble Prophets, peace be upon them, are unanimously protected (ma'sum) before and after prophethood from the intentional commission of major sins and absolutely from minor sins, and from every such matter that causes hatred for the creation and causes God's creation to flee from them, as well as from such actions that are against dignity, chivalry, and the status and rank of honorable individuals.)

Dawat I.T. Majlis of Dawatelslami

1 Al-Quran al-Kareem 48/2 2 Al-Quran al-Kareem 28/15 3 Mafatih al-Ghayb (al-Tafsir al-Kabir) under Verse 38/3, Dar al-Kutub al-Ilmiyyah, Beirut 26/125 4 Al-Quran al-

Kareem 9/69 5 Al-Quran al-Kareem 39/71 6 Al-Quran al-Kareem 6/80 7 Al-Quran al-Kareem 11/107

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

कहीं सुना "ताकि अल्लाह आपकी पिछली और अगली लग़्ज़िशें माफ़ फरमा दे" 1। (जिससे ज़ंब यानी गुनाह और गुफ़रान-ए-ज़ंब यानी बख़्शिश-ए-गुनाह की निस्बत का हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की जनाब-ए-वाला की जानिब गुमान होता है)

कभी मूसा (अलैहिस्सलाम) और क़िब्ती (फिरौन की क़ौम) का क़िस्सा याद आया (कि आपने क़िब्ती को ज़ुल्म पर आमादा पाकर एक घूँसा मारा और वह क़िब्ती क़ब्र की गहराई में जा पहुँचा) 2

कभी (हज़रत) दाऊद (अलैहिस्सलातु वस्सलाम और उनके एक उम्मती) ओरिया का फ़साना सुन पाया (हालाँकि यह इल्ज़ाम यहूदियों का हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम पर था, जिसे उन्होंने खूब उछाला और आम लोगों की ज़बान पर चढ़ गया। यहाँ तक कि शोहरत के बिना पर, बिना तहक़ीक़ व तफ़्तीश-ए-अहवाल बाज़ मुफ़स्सिरीन ने इस वाक़िये को जूँ का तूँ बयान फरमा दिया, जबकि इमाम राज़ी 3 फरमाते हैं कि यह वाक़िया मेरी तहक़ीक़ में सरासर बातिल व लग़्व है।

गरज़ बेअक़्ल बेदीनों और बेदीन बदअक़्लों ने यह फ़साना सुन पाया तो लगे चूँ व चरा करने। तस्लीम व गर्दन निहादों (आज्ञाकारिता) की सीढ़ी से उतरने, फिर नाराज़गी-ए-ख़ुदा व रसूल के सिवा और भी कुछ फल पाया? और (उल्टा) "तुम बेहूदा बातों में पड़े जैसे वे पड़े थे" 4 (और तुम बेहूदगी में पड़े जैसे वे पड़े थे और इत्तेबा-ए-बातिल में उनकी राह इख़्तियार की) ने "लेकिन अज़ाब का क़ौल काफ़िरों पर साबित हो चुका है" 5 का दिन दिखाया। (मगर अज़ाब का क़ौल काफ़िरों पर ठीक उतरा) "मगर जैसा मेरा रब चाहे" 6। "बेशक आपका रब जो चाहता है वही करने वाला है" 7।

(मुसलमान हमेशा यह बात ज़हन नशीन रखें कि हज़रात अम्बिया किराम अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम कबीरा गुनाहों से मुतलक़न और गुनाह-ए-सग़ीरा के अमदन इर्तेकाब, और हर ऐसे अम्र से जो ख़ल्क़ के लिए बाइस-ए-नफ़रत हो और मख़लूक़-ए-ख़ुदा उनके बाइस उनसे दूर भागे, नीज़ ऐसे अफ़आल से जो वजाहत व मरव्वत और मोअज़्ज़िज़ीन की शान व मर्तबा के ख़िलाफ़ हैं, क़ब्ल-ए-नबुव्वत और बाअद-ए-नबुव्वत बिल-इज्माअ मासुम हैं)

दावत आई.टी. मज्लिस ऑफ़ दावत-ए-इस्लामी

1 अल-क़ुरआन अल-करीम 48/2 2 अल-क़ुरआन अल-करीम 28/15 3 मफ़ातीह अल-ग़ैब (अत-तफ़्सीर अल-कबीर) आयत 38/3 के तहत, दार अल-कुतुब अल-इलमिया, बैरूत 26/125 4 अल-

क़ुरआन अल-करीम 9/69 5 अल-क़ुरआन अल-करीम 39/71 6 अल-क़ुरआन अल-करीम 6/80 7 अल-क़ुरआन अल-करीम 11/107

पृष्ठ 361 का 750

کہیں سنا "لِیَغْفِرَ لَکَ اللّٰہُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِکَ وَ مَا تَاَخَّرَ" 1۔ (جس سے ذنب یعنی گناہ و غفران ذنب یعنی بخشش گناہ کی نسبت کا حضور اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کی جناب والا کی جانب گمان ہوتا ہے)

کبھی موسیٰ (علیہ السلام) و قبطی (قوم فرعون) کا قصہ یاد آیا (کہ آپ نے قبطی کو آمادہ ظلم پا کر ایک گھونسا مارا اور وہ قبطی قعرِ گور میں پہنچا) 2

کبھی (حضرت) داؤد (علیہ الصلوٰۃ والسلام اور ان کے ایک اُمتی) اور یاہ کا فسانہ سُن پایا (حالانکہ یہ الزام تھا یہودیوں کا حضرت داؤد علیہ السلام پر، جسے انہوں نے خوب اُچھالا اور زبان زدِ عوام الناس ہو گیا۔ حتیٰ کہ بر بنائے شہرت، بلا تحقیق و تفتیش احوال بعض مفسرین نے اس واقعہ کو من و عن بیان فرما دیا، جب کہ امام رازی 3 فرماتے ہیں کہ یہ واقعہ میری تحقیق میں سراسر باطل و لغو ہے۔

غرض بے عقل بے دینوں اور بے دین بد عقلوں نے یہ افسانہ سُن پایا تو لگے چون و چرا کرنے تسلیم و گردن نہادوں کے زینہ سے اُترنے پھر ناراضی خدا و رسول کے سوا اور بھی کچھ پھل پایا؟ اور (الٹا) "خُضْتُمْ کَالَّذِیْ خَاضُوْا" 4 (اور تم بے ہودگی میں پڑے جیسے وہ پڑے تھے اور اتباع باطل میں ان کی راہ اختیار کی) نے "وَلٰکِنْ حَقَّتْ کَلِمَۃُ الْعَذَابِ عَلَی الْکٰفِرِیْنَ ﴿۷۱﴾" 5۔ (مگر عذاب کا قول کافروں پر ٹھیک اترا) "اِلَّآ اَنْ یَّشَآءَ رَبِّیْ شَیْئًا" 6۔ "اِنَّ رَبَّکَ فَعَّالٌ لِّمَا یُرِیْدُ ﴿۱۰۷﴾" 7۔

(مسلمان ہمیشہ یہ بات ذہن نشین رکھیں کہ حضرات انبیاء کرام علیہم الصلوٰۃ والسلام کبیرہ گناہوں سے مطلقاً اور گناہِ صغیرہ کے عمداً ارتکاب، اور ہر ایسے امر سے جو خلق کے لیے باعث نفرت

ہو اور مخلوقِ خدا ان کے باعث ان سے دُور بھاگے نیز ایسے افعال سے جو وجاہت و مروت اور معززین کی شان و مرتبہ کے خلاف ہیں قبل نبوت اور بعد نبوت بالا جماع معصوم ہیں)

Fatawa Razawiya, Volume 29

O Allah! We ask You for steadfastness upon guidance, indeed You are the Most High, the Most Exalted. (O Allah! We ask You for steadfastness upon guidance, indeed You are the Most High, the Most Exalted.) Regarding the noble companions (Sahaba), it should be remembered that: (They, may Allah be pleased with them, were not Prophets, nor were they angels to be infallible; lapses did occur from some of them, but holding them accountable for anything is contrary to the commands of Allah and His Messenger.) Allah Almighty has mentioned two categories of the companions of the Master of Messengers, peace and blessings of Allah be upon him, in Surah al-Hadid: (1) "Those of you who spent before the conquest and fought." (2) "Those who spent afterwards and fought." [1] That is, one category consists of those who embraced Islam before the conquest of Makkah, spent their wealth in the path of Allah, and performed Jihad when their numbers were very few. They were weak and distressed in every way. By enduring severe struggles and putting their lives at risk, they sacrificed their entire wealth for the service of Islam. These are the foremost among the Muhajirun and Ansar; what can be said of their status! The second category consists of those who believed after the conquest of Makkah, spent in the way of the Lord, and participated in Jihad. These people of faith proved their sincerity through financial and physical Jihad when the foundations of the Islamic state had become strong and Muslims had increased in number, rank, and wealth in every respect. Their reward is also great, but it is obvious that it is not of the same level as those foremost ones. Therefore, the Great Quran gave excellence to the former over the latter. And then He said: "And to all has Allah promised the best [reward]." [2] Allah the Almighty has promised goodness to all of them. Meaning everyone will receive a reward according to their respective rank, no one will be deprived. And regarding those to whom He has promised goodness, He says about them:

---

1 The Holy Quran 57/10 2 The Holy Quran 57/10 Page 362 of 750

फ़तावा रज़विया, जिल्द 29

अल्लाहुम्मा इस्बातुन अलल हुदा इन्नका अन्तल अलीयुल आला। (ऐ अल्लाह! हम तुझसे हिदायत पर साबित कदमी माँगते हैं, बेशक तू ही बुलन्द और बरतर है।) सहाबा किराम के बारे में याद रखना चाहिए कि: (वे हज़रात रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम नबी नहीं थे, न ही फ़रिश्ते थे कि मासूम हों, उनमें से बाज़ हज़रात से लग़्ज़िशें (चूक) सादिर हुईं मगर उनकी किसी बात पर गिरफ़्त अल्लाह और रसूल के अहकाम के ख़िलाफ़ है।) अल्लाह अज़्ज़वजल ने सूरह हदीद में सैयदुल मुरसलीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के सहाबा की दो किस्में फ़रमाईं: (1) "जिन्होंने फ़तह से पहले ख़र्च किया और जंग की।" (2) "जिन्होंने उसके बाद ख़र्च किया और जंग की।" [1] यानी एक वे कि जो फ़तह-ए-मक्का से पहले ईमान लाए, खुदा की राह में माल ख़र्च किया और जिहाद किया जब उनकी तादाद भी बहुत कम थी। और वे हर तरह से कमज़ोर और परेशान हाल भी थे, उन्होंने अपने ऊपर जैसे-जैसे सख़्त मुजाहिदे (संघर्ष) बर्दाश्त करके और अपनी जानों को ख़तरों में डाल-डाल कर, बे-दरेग अपना सरमाया इस्लाम की ख़िदमत के लिए नज़्र कर दिया। ये हज़रात मुहाजिरीन और अन्सार में से साबिक़ीन अव्वलीन हैं, उनके मर्तबों का क्या पूछना! दूसरे वे कि जो फ़तह-ए-मक्का के बाद ईमान लाए, मौला की राह में ख़र्च किया और जिहाद में हिस्सा लिया। इन अहले ईमान ने उस इख़्लास (ईमानदारी) का सुबूत माली और जिस्मानी जिहाद से दिया, जब इस्लामी सल्तनत की जड़ मज़बूत हो चुकी थी और मुसलमान हर लिहाज़ से तादाद और शान-ओ-शौकत में बढ़ चुके थे, अज्र उनका भी अज़ीम है लेकिन ज़ाहिर है कि उन साबिक़ीन अव्वलीन वालों के दर्जे का नहीं। इसीलिए कुरआन-ए-अज़ीम ने इन पहले वालों को इन बाद वालों पर फ़ज़ीलत (श्रेष्ठता) दी। और फिर फ़रमाया: "और अल्लाह ने हर एक से भलाई का वादा फ़रमाया है।" [2] इन सब से अल्लाह तआला ने भलाई का वादा फ़रमाया। कि अपने-अपने मर्तबे के लिहाज़ से अज्र मिलेगा सब ही को, महरूम कोई न रहेगा। और जिनसे भलाई का वादा किया उनके हक़ में फ़रमाता है:

---

1 अल-कुरआन उल-करीम 57/10 2 अल-कुरआन उल-करीम 57/10 पृष्ठ 362 का 750

اللّٰھمّ اثبات علی الھدی انك انت العلی الاعلی۔ (اے اللہ ! ہم تجھ سے ہدایت پر ثابت قدمی مانگتے ہیں، بے شک تو ہی بلند و برتر ہے) صحابہ کرام کے باب میں یاد رکھنا چاہیے کہ۔ (وہ حضرات رضی اللہ تعالیٰ عنہم انبیاء نہ تھے، فرشتے نہ تھے کہ معصوم ہوں، ان میں سے بعض حضرات سے لغزشیں صادر ہوئیں مگر ان کی کسی بات پر گرفت اللہ و رسول کے احکام کے خلاف ہے۔ اللہ عزوجل نے سورہ حدید میں صحابہ سید المرسلین صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی دو قسمیں فرمائیں۔ (۱) "مَنْ اَنْفَقَ مِنْ قَبْلِ الْفَتْحِ وَ قٰتَلَ ط"۔ (۲) "الَّذِیْنَ اَنْفَقُوْا مِنْ بَعْدُ وَ قٰتَلُوْا ط" 1۔ یعنی ایک وہ کہ قبل فتح مکہ مشرف بایمان ہوئے راہِ خدا میں مال خرچ کیا اور جہاد کیا جب کہ ان کی تعداد بھی بہت قلیل تھی۔ اور وہ ہر طرح ضعیف و درماندہ بھی تھے، انہوں نے اپنے اوپر جیسے جیسے شدید مجاہدے گوارا کرکے اور اپنی جانوں کو خطروں میں ڈال ڈال کر، بے دریغ اپنا سرمایہ اسلام کی خدمت کی نذر کر دیا ۔ یہ حضرات مہاجرین و انصار میں سے سابقین اولین ہیں، ان کے مراتب کا کیا پوچھنا۔ دوسرے وہ کہ بعد فتح مکہ ایمان لائے، راہ مولا میں خرچ کیا اور جہاد میں حصہ لیا۔ ان اہل ایمان نے اس اخلاص کا ثبوت جہاد مالی و قتالی سے دیا، جب اسلامی سلطنت کی جڑ مضبوط ہو چکی تھی اور مسلمان کثرت تعداد اور جاہ و مال ہر لحاظ سے بڑھ چکے تھے، اجر ان کا بھی عظیم ہے لیکن ظاہر ہے کہ ان سابقون اوّلون والوں کے درجہ کا نہیں۔ اسی لیے قرآن عظیم نے ان پہلوں کو ان پچھلوں پر فضیلت دی۔ اور پھر فرمایا: "کُلًّا وَّعَدَاللّٰہُ الْحُسْنٰی ط" 2۔ ان سب سے اللہ تعالیٰ نے بھلائی کا وعدہ فرمایا۔ کہ اپنے اپنے مرتبے کے لحاظ سے اجر ملے گا سب ہی کو، محروم کوئی نہ رہے گا۔ اور جن سے بھلائی کا وعدہ کیا ان کے حق میں فرماتا ہے:

---

1 القرآن الکریم ۵۷ / ۱۰ 2 القرآن الکریم ۵۷ / ۱۰ Page 362 of 750

Fatawa Razawiyya, Volume 29

"They will be kept far away from it [Hell]."[1] — They have been kept far away from Hell.

"They will not hear even its slightest sound."[2] — They will not hear even a whisper of Hell.

"And they will abide forever in what their souls desire."[3] — They will remain forever in the fulfillments of their hearts' desires.

"The greatest terror will not grieve them,"[4] — The greatest anxiety of the Day of Judgment will not make them sad.

"and the angels will receive them," — The angels will welcome them.

"[saying], 'This is your Day which you were promised.'"[5] — saying that this is your day which was promised to you.

Allah Almighty describes this as the status of every Companion of the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him). So, whoever slanders any Companion belies Allah, the One, the Subduer.

And presenting some of their matters, most of which are fabricated stories, against the divine decree is not the work of the people of Islam.

The Lord Almighty also shut this door in the same verse of Surah Al-Hadid by promising goodness to both groups of Companions (may Allah be pleased with them) and immediately stating:

"And Allah is well-acquainted with what you do."[6] — And Allah is well aware of what you do.

Despite this, knowing your deeds, He ordained that for all of you, Paradise without punishment and with honors and...

---

[1] Al-Quran Al-Kareem 21/101 [2] Al-Quran Al-Kareem 21/102 [3] Al-Quran Al-Kareem 21/102 [4] Al-Quran Al-Kareem 21/103 [5] Al-Quran Al-Kareem 21/103 [6] Al-Quran Al-Kareem 57/10

फ़तावा रज़विया, खंड 29

"वे उससे (जहन्नम से) दूर रखे गए हैं।"[1] — वे जहन्नम से दूर रखे गए हैं।

"वे उसकी आहट तक नहीं सुनेंगे।"[2] — वे जहन्नम की भनक तक नहीं सुनेंगे।

"और वे हमेशा अपनी मनचाही इच्छाओं में रहेंगे।"[3] — वे हमेशा अपनी मन-मानी और दिल को भाने वाली मुरादों में रहेंगे।

"क़यामत की वह सबसे बड़ी घबराहट उन्हें दुखी नहीं करेगी,"[4] — क़यामत की वह सबसे बड़ी घबराहट उन्हें गमगीन नहीं करेगी।

"और फ़रिश्ते उनका स्वागत करेंगे," — फ़रिश्ते उनका इस्तकबाल (स्वागत) करेंगे।

"[यह कहते हुए], 'यह तुम्हारा वह दिन है जिसका तुमसे वादा किया गया था।'"[5] — यह कहते हुए कि यह तुम्हारा वह दिन है जिसका तुमसे वादा किया गया था।

अल्लाह अज़्ज़ वजल रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के हर सहाबी की यह शान बताता है। तो जो कोई किसी सहाबी पर तान (आक्षेप) करता है, वह अल्लाह, जो एक और क़हार है, को झुठलाता है।

और उनके कुछ मामले, जिनमें से अधिकांश मनगढ़ंत कहानियाँ हैं, अल्लाह के कलाम के मुक़ाबले पेश करना मुसलमानों का काम नहीं है।

रब अज़्ज़ वजल ने सूरह अल-हदीद की इसी आयत में इसका दरवाज़ा भी बंद कर दिया कि सहाबा (रज़ियल्लाहु अन्हुम) के दोनों समूहों से भलाई का वादा करके साथ ही फ़रमाया:

"और अल्लाह जो कुछ तुम करते हो उससे अच्छी तरह वाकिफ़ है।"[6] — और अल्लाह को खूब ख़बर है जो तुम करोगे।

इसके बावजूद उसने तुम्हारे आमाल (कार्यों) को जानकर हुक्म फ़रमा दिया कि वह तुम सब के लिए जन्नत बिना किसी अज़ाब और करामत (सम्मान) के साथ...

---

[1] अल-कुरान अल-करीम 21/101 [2] अल-कुरान अल-करीम 21/102 [3] अल-कुरान अल-करीम 21/102 [4] अल-कुरान अल-करीम 21/103 [5] अल-कुरान अल-करीम 21/103 [6] अल-कुरान अल-करीम 57/10

पृष्ठ 363/750

فتاویٰ رضویہ، جلد ۲۹

"أُولَئِكَ عَنْهَا مُبْعَدُونَ"[1] ۔ وہ جہنم سے دُور رکھے گئے ہیں۔

"لَا يَسْمَعُونَ حَسِيسَهَا"[2] وہ جہنم کی بھنک تک نہ سُنیں گے۔

"وَهُمْ فِي مَا اشْتَهَتْ أَنْفُسُهُمْ خَالِدُونَ"[3] ۔ وہ ہمیشہ اپنی من مانتی جی بھاتی مرادوں میں رہیں گے۔

"لَا يَحْزُنُهُمُ الْفَزَعُ الْأَكْبَرُ"[4] ۔ قیامت کی وہ سب سے بڑی گھبراہٹ انہیں غمگین نہ کرے گی۔

"وَتَتَلَقَّاهُمُ الْمَلَائِكَةُ" ۔ فرشتے ان کا استقبال کریں گے۔

"هَذَا يَوْمُكُمُ الَّذِي كُنْتُمْ تُوعَدُونَ"[5] ۔ یہ کہتے ہوئے کہ یہ ہے تمہارا وہ دن جس کا تم سے وعدہ تھا۔

رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے ہر صحابی کی یہ شان اللہ عزوجل بتاتا ہے تو جو کسی صحابی پر طعن کرے اللہ واحد قہار کو جھٹلاتا ہے۔

اور ان کے بعض معاملات جن میں اکثر حکایات کا ذبہ ہیں ارشادِ الہی کے مقابل پیش کرنا اہلِ اسلام کا کام نہیں۔

رب عزوجل نے اسی آیتِ حدید میں اس کا منہ بھی بند کردیا کہ دونوں فریق صحابہ رضی اللہ تعالیٰ عنہم سے بھلائی کا وعدہ کر کے ساتھ ہی ارشاد فرمادیا۔

"وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ"[6] ۔ اور اللہ کو خوب خبر ہے جو تم کرو گے۔

بایں ہمہ اس نے تمہارے اعمال جان کر حکم فرما دیا کہ وہ تم سب سے جنت بے عذاب و کرامات و

[1] القرآن الكريم ٢١/ ١٠١ [2] القرآن الكريم ٢١/ ١٠٢ [3] القرآن الكريم ٢١/ ١٠٢ [4] القرآن الكريم ٢١/ ١٠٣ [5] القرآن الكريم ٢١/ ١٠٣ [6] القرآن الكريم ٥٧/ ١٠

Fatawa Rizvia Volume 29

...has already promised an unaccountable reward. So, what right does another have to taunt them for anything? Does the taunter wish to establish an independent government separate from Allah? After this, whoever utters anything, let them face the consequences themselves and go to Hell. Allama Shahabuddin Khafaji, in Naseem ur Riaz Sharh Shifa by Qazi Iyad, states: Whoever taunts Hazrat Muawiya (may Allah be pleased with him) is a dog from among the dogs of Hell[1]. (Ahkam-e-Shariat, etc.)

Important Caution: The belief of the Ahl-us-Sunnah is: "And we refrain from mentioning the companions except with goodness[2]." That is, whenever the noble companions are mentioned, it is obligatory to do so only with goodness. For those noble companions who remained steadfast in faith, Sunnah, and true Islam until death, and did not devise any new path against the majority of companions, contrary to Islamic teachings, in pursuit of their own desires; and those unfortunate ones who, being deprived of this bliss, set up their own separate stance and became ready to fight against the people of truth. They are by no means the embodiment of this. Therefore, scholars state that the Muslims who faced each other in the Battle of Jamal and Siffin, their ruling is one of a mistake in judicial reasoning (khata-e-ijtihadi). However, the people of Nahrawan who rebelled by declaring Mawla Ali (may Allah honor him) a disbeliever were certainly transgressors, wicked, rebellious, and insurgents, seeking to form a new sect known as the Kharijites, and new tribulations are still spreading within the Ummah because of them. (Siraj-ul-Awarif, etc.)

Sixth Belief: 'The Ten Promised Paradise and the Four Caliphs' Now, among all of them, the most superior, exalted, and perfect are the Ashara Mubashshara (the ten given glad tidings). Those ten companions for whom the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) gave the definitive glad tidings of being inhabitants of Paradise during their lifetimes are called the Ashara Mubashshara. That is, the four Rightly Guided Caliphs, Hazrat Talha bin Ubaidullah, Hazrat Zubair bin Al-Awwam,

I.T. Majlis of Dawatelslam 1 Naseem ur Riaz, Chapter Three, Markaz Ahle Sunnat Barakaat-e-Raza, Gujarat, India, 3/430 2 Sharh Aqa'id an-Nasafi, Dar-ul-Isha'at al-Arabiyya, Kandahar, Afghanistan, p. 116

फ़तावा रज़विया खंड 29

...बेहिसाब सवाब का वादा फ़रमा चुका है। तो अब दूसरे को क्या हक़ रहा कि उनकी किसी बात पर ताना मारे, क्या ताना मारने वाला अल्लाह तआला से अलग अपनी स्वतंत्र हुकूमत क़ायम करना चाहता है, इसके बाद जो कोई कुछ बके वह अपना सिर खाए और ख़ुद जहन्नुम में जाए। अल्लामा शहाबुद्दीन ख़फ़ाजी, 'नसीमुर रियाज़ शरह शिफ़ा' क़ाज़ी अयाज़ में फ़रमाते हैं: जो हज़रत मुआविया (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) पर ताना मारे, वह जहन्नुम के कुत्तों में से एक कुत्ता है[1]। (अहकाम-ए-शरीअत आदि)

ज़रूरी चेतावनी: अहले सुन्नत का यह अक़ीदा है कि "हम सहाबा के ज़िक्र से रुकते हैं सिवाय भलाई के।" यानी सहाबा किराम का जब भी ज़िक्र हो तो भलाई के साथ ही होना फ़र्ज़ है, उन सहाबा किराम के हक़ में जो ईमान व सुन्नत व इस्लाम-ए-हक़ीक़ी पर मरते दम तक साबित क़दम रहे और सहाबा किराम के बहुमत के ख़िलाफ़, इस्लामी तालीमात के मुक़ाबले में, अपनी ख़्वाहिशात के अनुसरण में कोई नई राह न निकाली; और वह बदनसीब जो इस सआदत से महरूम होकर अपनी अलग दुकान जमा बैठे और अहले हक़ के मुक़ाबले में क़िताल (लड़ाई) पर आमादा हो गए। वे हरगिज़ इसके मिस्दाक़ (पात्र) नहीं हैं, इसीलिए उलमा-ए-किराम फ़रमाते हैं कि जंगे जमल व सिफ़्फ़ीन में जो मुसलमान एक-दूसरे के मुक़ाबले में आए, उनका हुक्म 'ख़ता-ए-इज्तिहादी' (विवेकपूर्ण त्रुटि) का है, लेकिन अहले नहरवान जिन्होंने मौला अली (कर्रमल्लाहु तआला वज्हहुल करीम) की तक्फ़ीर करके बग़ावत पर आमादा हुए, वे यक़ीनन फ़ासिक़, फ़ाजिर, ताग़ी व बाग़ी थे और एक नए फ़िरक़े के प्रयासरत साथी जो 'ख़्वारिज' के नाम से मशहूर हुए और उम्मत में नए फ़ितने अब तक उसी के दम से फैल रहे हैं। (सिराजुल अवारिफ़ आदि)

छठा अक़ीदा: 'अशरा मुबश्शरा और ख़ुल्फ़ा-ए-अरबा' अब इन सब में अफ़ज़ल व आला व अकमल हज़रात 'अशरा मुबश्शरा' हैं, वे दस सहाबी जिनके निश्चित रूप से जन्नती होने की बशारत व ख़ुशख़बरी रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने उनकी ज़िंदगी ही में सुना दी थी, वे 'अशरा मुबश्शरा' कहलाते हैं। यानी हज़रात ख़ुल्फ़ा-ए-अरबा राशिदीन (चारों राशिदीन ख़लीफ़ा), हज़रत तलहा बिन उबैदुल्लाह, हज़रत ज़ुबैर बिन अल-अव्वम,

I.T. मज्लिस ऑफ़ दावत-ए-इस्लामी 1 नसीमुर रियाज़, तीसरा अध्याय, मरकज़ अहले सुन्नत बरकात-ए-रज़ा, गुजरात, भारत, 3/430 2 शरह अक़ायद अन-नस्फ़ी, दारुल इशाअत अल-अरबिया, कंधार, अफ़गानिस्तान, पृ. 116

पेज 364 का 750

ثواب بے حساب کا وعدہ فرما چکا ہے۔ تو اب دوسرے کو کیا حق رہا کہ ان کی کسی بات پر طعن کرے، کیا طعن کرنے والا، اللہ تعالیٰ سے جدا اپنی مستقل حکومت قائم کرنا چاہتا ہے، اس کے بعد جو کوئی کچھ بکے وہ اپنا سر کھائے اور خود جہنم میں جائے۔ علامہ شہاب الدین خفاجی، نسیم الریاض شرح شفائے قاضی عیاض میں فرماتے ہیں: جو حضرت معاویہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ پر طعن کرے وہ جہنم کے کتوں میں سے ایک کتا ہے 1۔ (احکام شریعت وغیرہ)

تنبیہ ضروری: اہل سنت کا یہ عقیدہ کہ ونکف عن ذکر الصحابۃ الا بخیر 2۔ یعنی صحابہ کرام کا جب بھی ذکر ہو تو خیر ہی کے ساتھ ہو نا فرض ہے، انہیں صحابہ کرام کے حق میں جو ایمان و سنت و اسلام حقیقی پر تادمِ مرگ ثابت قدم رہے اور صحابہ کرام جمہور کے خلاف، اسلامی تعلیمات کے مقابل، اپنی خواہشات کے اتباع میں کوئی نئی راہ نہ نکالی اور وہ بد نصیب کہ اس سعادت سے محروم ہو کر اپنی دکان الگ جما بیٹھے اور اہل حق کے مقابل، قتال پر آمادہ ہو گئے۔ وہ ہرگز اس کا مصداق نہیں اس لیے علماء کرام فرماتے ہیں کہ جنگ جمل و صفین میں جو مسلمان ایک دوسرے کے مقابل آئے ان کا حکم خطائے اجتہادی کا ہے، لیکن اہل نہروان جو مولا علی کرم اللہ تعالیٰ وجہہ الکریم کی تکفیر کر کے بغاوت پر آمادہ ہوئے وہ یقیناً فساق، فجار، طاغی و باغی تھے اور ایک نئے فرقہ کے ساعی و ساتھی جو خوارج کے نام سے موسوم ہوا اور اُمّت میں نئے فتنے اب تک اسی کے دم سے پھیل رہے ہیں۔ (سراج العوارف وغیرہ)

عقیدہ سادسہ 'عشرہ مبشرہ و خلفائے اربعہ' اب ان سب میں افضل و اعلیٰ و اکمل حضرات عشرہ مبشرہ ہیں، وہ دس صحابی جن کے قطعی جنتی ہونے کی بشارت و خوشخبری رسول اللہ صلی اللہ

علیہ وسلم نے ان کی زندگی ہی میں سنادی تھی وہ عشرہ مبشرہ کہلاتے ہیں۔ یعنی حضرات خلفائے (اتمام) اربعہ راشدین، حضرت طلحہ بن عبید اللہ، حضرت زبیر بن العوام،

I.T. Majlis of Dawatelslam 1 نسیم الریاض الباب الثالث مرکز اہلسنت برکات رضا

گجرات الہند ۳/ ۴۳۰ 2 شرح عقائد النسفی دارالاشاعة العربیہ قندھار افغانستان ص ۱۱۶

Hazrat Abdur Rahman bin Auf, Hazrat Sa'd bin Abi Waqqas, Hazrat Sa'id bin Zayd, Hazrat Abu Ubaidah bin al-Jarrah.

These ten are definitively companions of Paradise: Abu Bakr and Umar, Uthman and Ali. Sa'd is Sa'id and Abu Ubaidah; Talha is Zubair and Abdur Rahman.

And among them, the four Caliphs (may Allah be pleased with them all) and the qualities and virtues of these four pillars of the nation's palace (the four pillars of the magnificent palace of the Islamic nation) and the four rivers of the garden of Shariah (and those four rivers of the rose garden of Shariah) are positioned in such a manner that if you look at the excellence of any one of them alone, it seems (and is understood and implied) that whatever greatness exists, it is within them; who could be greater than them?

Whichever flower I look at from these four gardens, the spring pulls the hem of my heart saying this is the place. (From whichever flower in these four gardens I look at, the spring pulls at my heart's hem [saying] that the real place is here.) Especially the candle of the night-chamber of sainthood, the spring of the garden of gnosis, the leader of those who have attained (union with God), the leader of the gnostics (the leader of those who have reached Truth, the forerunner of the people of gnosis), the seal of the prophetic caliphate, the conqueror of the spiritual orders, the master of the Muslims, the leader of the faithful, the father of the pure Imams (of pure nature and character, the noble forefather of the pure and purified Imams, the distributor of Kawsar, the dominant Lion of Allah, the manifestor of wonders and rarities, the sought after of every seeker, our master and liege lord Ali bin Abi Talib (may Allah Almighty honor his noble face and gather us in his group on the Day of Judgment), whose high-domed presence (whose dome's pinnacle is equal to the sky) has illustrious merits (praiseworthy qualities) and beautiful praises (excellent characters) which are as numerous and famous (vast and well-known, common among both the general public and the elite) as no other's.

(Then) the two Elders (Sheikhain), the two companions, the two sons-in-law (whose daughters were honored with the marriage to the Messenger of Allah, peace and blessings of Allah be upon him, and were called Mothers of the Believers, mothers of the Muslims and the faithful), the two viziers (as stated in the noble Hadith: "I have two viziers in heaven, Jibril and Mika'il, and two viziers on earth, Abu Bakr and Umar"[1] (may Allah be pleased with them both)), the two leaders (as both are leaders of the

faithful), the two advisors (both being great members of the consultative assembly of the Holy Prophet, peace and blessings of Allah be upon him), the two lying side-by-side (sharing the same resting place and today both resting side-by-side with their master and lord), the two companions (each other's friend and sympathizer), our master and liege lord Abdullah al-Atiq.

---

[1] Kanz al-Ummal, Hadith 32661, Mu'assasat al-Risalah, Beirut, 11/563.

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़, हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास, हज़रत सईद बिन ज़ैद, हज़रत अबू उबैदा बिन अल-जर्राह।

ये दसों निश्चित रूप से जन्नती हैं: अबू बक्र और उमर, उस्मान और अली। साद, सईद और अबू उबैदा; तलहा, ज़ुबैर और अब्दुर्रहमान।

और उनमें से चार ख़लीफ़ा (अल्लाह उन सभी से प्रसन्न हो) और मिल्लत के महल के इन चार स्तंभों (इस्लामी मिल्लत के आलीशान महल के चार स्तंभों) और शरीयत के बाग़ की चार नहरों (और शरीयत के गुलिस्तान की उन चार नहरों) के गुण और श्रेष्ठता कुछ इस तरह के हैं कि उनमें से किसी एक की श्रेष्ठता पर ही अकेले नज़र डालें तो यही मालूम (और समझ) होता है कि जो कुछ हैं यही हैं, इनसे बढ़कर कौन होगा।

मैं इन चार बाग़ों में से जिस भी फूल को देखता हूँ, बहार मेरे दिल के दामन को खींचती है कि असली जगह तो यही है। (इन चार बागों में से मैं जिस फूल को देखता हूँ, तो बहार मेरे दिल के दामन को खींचती है कि असली जगह तो यही है।) विशेष रूप से विलायत की रात की महफ़िल की शमा, मारिफ़त के चमनिस्तान की बहार, वासिलीन (सत्य तक पहुँचने वालों) के इमाम, सैयदुल आरिफ़ीन (सत्य तक पहुँचने वालों के इमाम, मारिफ़त वालों के मार्गदर्शक), नबूवत की ख़िलाफ़त की मोहर, तरीक़त के सिलसिलों के विजेता, मुसलमानों के मौला, अमीरुल मोमिनीन, पवित्र इमामों के पिता (नेक फ़ितरत, पाकीज़ा आदतों वाले इमामों के दादा, कौसर बांटने वाले, अल्लाह के ग़ालिब शेर, चमत्कारों और अनूठे कार्यों के प्रकटीकरण स्थल, हर साधक के अभीष्ट, हमारे सरदार और मौला अली बिन अबी तालिब (अल्लाह उनके सम्मानित चेहरे को और गरिमा प्रदान करे और हमें कयामत के दिन उनके समूह में उठाए), कि उस आकाश के समान ऊंचे गुंबद वाली हस्ती (जिनके गुंबद का कलश आकाश के बराबर है) के महान गुणों (प्रशंसनीय गुणों) और सुंदर प्रशंसाओं (अच्छे गुणों) की जितनी अधिकता और प्रसिद्धि (प्रचुर और प्रसिद्ध, आम और ख़ास की ज़ुबान पर) है, वह किसी दूसरे की नहीं।

(फिर) हज़रत शेख़ैन, दो साथी, दो दामाद (कि उनकी बेटियाँ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पत्नियों के सम्मान से सम्मानित हुईं और उम्महातुल मोमिनीन, मुसलमानों और ईमान वालों की माएँ कहलाईं), दो वज़ीर (जैसा कि हदीस शरीफ़ में आया है कि मेरे दो वज़ीर आसमान पर हैं जिब्रईल

और मीकाईल और दो वज़ीर ज़मीन पर हैं अबू बक्र और उमर[1] (अल्लाह उन दोनों से राज़ी हो)), दो अमीर (कि दोनों अमीरुल मोमिनीन हैं), दो सलाहकार (दोनों हुज़ूर अकदस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मजलिसे शूरा के महान सदस्य), दो साथ लेटने वाले (हम-बिस्तर और आज भी अपने आका और मौला के पहलू में आराम कर रहे हैं), दो साथी (एक-दूसरे के यार और ग़मगुसार), हमारे सरदार और मौला अब्दुल्लाह अल-अतीक़।

---

[1] कंज़ुल उम्माल हदीस 32661 मुअस्ससतुर् रसाला बेरूत 11/ 563।

حضرت عبدالرحمن بن عوف، حضرت سعد بن ابی وقاص، حضرت سعید بن زید، حضرت ابو عبیدہ بن الجراح۔

اے دہ یار بہشتی اند قطعی | بو بکر و عمر، عثمان و علی سعد ست سعید و بو عبیدہ | طلحہ ست و زبیر و عبدالرحمن

اور ان میں خلفائے اربعہ رضی اللہ تعالیٰ عنہم اجمعین اور ان چار ارکان قصر ملت (ملت اسلامیہ کے عالی شان محل کے چار ستونوں) و چار انہار باغ شریعت (اور گلستان شریعت کی ان چار نہروں) کے خصائص و فضائل، کچھ ایسے رنگ پر واقع ہیں کہ ان میں سے جس کسی کی فضیلت پر تنہا نظر کیجئے یہی معلوم (و متبادر و مفہوم) ہوتا ہے کہ جو کچھ ہیں یہی ہیں ان سے بڑھ کر کون ہوگا۔

بہر گلے کہ ازیں چار باغ می نگرم | بہار دامن دل می کشد کہ جا اینجاست (ان چار باغوں میں سے جس پھول کو میں دیکھتا ہوں تو بہار میرے دل کے دامن کو کھینچتی ہے کہ اصل جگہ تو یہی ہے۔) علی الخصوص شمع شبستان ولایت، بہار چمنستان معرفت، امام الواصلین، سید العارفین (واصلان حق کے امام، اہل معرفت کے پیش رو) خاتم خلافت نبوت، فاتح سلاسل طریقت، مولی المسلمین، امیر المومنین ابوالائمۃ الطاہرین (پاک طینت، پاکیزہ خصلت، اماموں کے جد امجد طاہر مطہر، قاسم کوثر، اسد اللہ الغالب، مظہر العجائب والغرائب، مطلوب کل طالب، سیدنا و مولانا علی بن طالب کرم اللہ تعالیٰ وجہہ الکریم وحشرنا فی زمرتہ فی یوم عقیم کہ اس جناب گردوں قباب (جن کے قبے کی کلس آسمان برابر ہے ان) کے مناقب جلیلہ (اوصاف حمیدہ) و محامد جمیلہ (خصائل

حسنہ) جس کثرت و شہرت کے ساتھ (کثیر و مشہور، زبان زد عام و خواص) ہیں دوسرے کے نہیں۔

(پھر) حضرات شیخین، صاحبین صہرین (کہ ان کی صاحبزادیاں حضور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے شرف زوجیت سے مشرف ہوئیں اور امہات المومنین، مسلمانوں ایمان والوں کی مائیں کہلائیں) وزیرین (جیسا کہ حدیث شریف میں وارد کہ میرے دو وزیر آسمان پر ہیں جبرائیل و میکائیل اور دو وزیر زمین پر ہیں ابوبکر و عمر ۱ رضی اللہ تعالیٰ عنہما) امیرین (کہ ہر دو امیر المومنین ہیں) مشیرین (دونوں حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی مجلسِ شوریٰ کے رکن اعظم) ضجیعین (ہم خوابہ اور دونوں اپنے آقا و مولیٰ کے پہلو بہ پہلو آج بھی مصروف استراحت) رفیقین (ایک دوسرے کے یار و غمگسار) سیدنا و مولانا عبداللہ العتیق

---

۱ کنزالعمال حدیث ۳۲۶۶۱ مؤسسۃ الرسالہ بیروت ۱۱/ ۵۶۳

Vol. 29 Fatawa Razawiya

The exalted status of Abu Bakr Siddiq and the truthful Abu Hafs Umar Farooq (may Allah be pleased with them) is distinct from all others. After the Prophets, Messengers, and the closest Angels, the greatest grace from God and the Messenger of God (Jalla Jalaalahu wa Sallallahu Alaihi wa Sallam) is upon them. The rank they hold near God is not shared by anyone else. The proximity and closeness they have with the Sustainer, Blessed and Exalted, and the honor and loftiness that is their portion in the celestial court of the Prophethood, is not destined for others. In the stations of Paradise and unearned gifts (Note), their ranks are supreme over all in virtues and excellences (superiorities and special favors) and good deeds and purities (righteousness and cleanliness). They are foremost and leading (this is supreme over all. Our scholars and Imams have achieved the happiness of both worlds and the nobility of both domains by writing independent works in this [chapter], bringing their characteristics into writing, mentioning their merits, and counting their priorities and specialities). Otherwise, they are infinite (beyond the reach of our understanding and wisdom). Who has the power to count them? By Allah the Magnificent, if thousands of volumes were written in explanation of their virtues (and expansion of their excellences), not even one in a thousand would come into writing.

And despite the diversity of those describing his beauty, Time ends while in him remains that which has not been described.

(And because of the excellent eloquence of those praising his beauty, the era has become rich, yet there are such qualities in him that cannot be expressed). But the abundance of virtues and the fame of excellences (the presence of manifold virtues and the renown of pure and superior honors and favors) is something else (another matter), and superiority and miracles (being the most excellent and closest in the court of honor) is another thing (something separate and distinct from it), which is in the hand of Allah's grace; He bestows it upon whom He wills. "Say: Indeed, [all] grace is in the hand of Allah; He grants it to whom He wills." [1]

His Noble Book and His Great Messenger (peace and blessings be upon him and his family) are testifying to this openly. Hadrat Imam Hasan (may Allah be pleased with him) narrates from his noble father Maula Ali (may Allah honor his face):

Note: In the printed treatise, 'wuzab' is printed without a dot, and it is written in the margin that it is like this in the original. This humble person has written it as

'Mawahib' since it rhymes with 'Manazil'. 'Manahil' means springs, and this is more appropriate. 12 Muhammad Khalil.

[1] Al-Qur'an al-Karim 3/73

अबू बक्र सिद्दीक़ और जनाब हक़ मआब अबू हफ़्स उमर फ़ारूक़ (रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा) की शान औरों की शान से अलग है। नबियों, रसूलों और मुक़र्रब फ़रिश्तों के बाद, खुदा और खुदा के रसूल (जल्ला जलालाहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) की सबसे ज़्यादा इनायत उन्हीं पर है। जो मर्तबा खुदा के नज़दीक उनका है, वह किसी दूसरे का नहीं। रब्ब तबारक व तआला से जो क़ुर्ब और नज़दीकी और रिसालत की बारगाह में जो इज़्ज़त व सर-बुलंदी उनका हिस्सा है, वह दूसरों के नसीब में नहीं। और जन्नत की मंज़िलों और बे-मिन्नत अतायों (नोट) में उनके दरजात सब पर ऊँचे हैं। फ़ज़ायल और फ़वाज़िल (श्रेष्ठता और विशेष कृपा) और हसनात-ए-तय्यिबात (नेकी और पाकीज़गी) में वे ही सबसे आगे और मुक़द्दम हैं (यही सब पर मुक़द्दम है। हमारे उलेमा और आइम्मा ने इस [अध्याय] में स्वतंत्र रचनाएँ लिखकर दोनों लोकों का सौभाग्य और दोनों घरों का सम्मान प्राप्त किया, उनके गुणों को लेखनीबद्ध किया, उनके श्रेष्ठ गुणों का वर्णन किया, उनकी विशिष्टताओं को गिनाया)। वरना वे असीमित हैं (जो हमारी समझ और बुद्धिमत्ता की पहुँच से बाहर हैं)। उनका शुमार किसके वश में है? अल्लाह अज़ीम की क़सम, अगर उनकी खूबियों की व्याख्या (और विस्तार) में हज़ारों ग्रंथ लिखे जाएँ तो हज़ार में से एक भी लेखनीबद्ध न हो सकेगा।

और उनके हुस्न का बखान करने वालों की अलग-अलग शैलियों के बावजूद, ज़माना खत्म हो जाएगा लेकिन उनमें वह बाकी रहेगा जिसका वर्णन नहीं किया गया।

(और उनके हुस्न की प्रशंसा करने वालों की उत्तम बयानबाजी के कारण ज़माना समृद्ध हो गया, फिर भी उनमें ऐसी खूबियाँ हैं जिन्हें बयान नहीं किया जा सकता)। लेकिन फ़ज़ायल की अधिकता और फ़वाज़िल की प्रसिद्धि (अनेक श्रेष्ठताओं की उपस्थिति और पवित्र व महान सम्मानों की ख्याति) एक अलग चीज़ है और श्रेष्ठता व करामात (सबसे उत्तम होना और इज़्ज़त की बारगाह में सबसे ज़्यादा क़रीब होना) एक दूसरी बात है (जो इससे अलग और विशिष्ट है), जो अल्लाह के फ़ज़्ल (अनुग्रह) के हाथ में है; वह जिसे चाहे अता फरमाए। "कह दीजिए: बेशक फ़ज़्ल अल्लाह के हाथ में है; वह जिसे चाहता है अता करता है।" [1]

उसकी पाक किताब और उसका अज़ीम रसूल (उन पर और उनकी आल पर दुरूद व सलाम हो) खुलेआम गवाही दे रहे हैं। हज़रत इमाम हसन (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) अपने वालिद-ए-माजिद मौला अली (कर्रमल्लाहु वज्हहुल करीम) से रिवायत करते हैं:

नोट: मुद्रित लेख में 'वज़ाब' बिना नुक्ते के छपा है और हाशिये पर लिखा है कि मूल में ऐसा ही है। इस फ़क़ीर ने इसे 'मवाहिब' लिखा है क्योंकि यह 'मनाज़िल' का हम-क़ाफ़िया है। 'मनाहिल' का अर्थ चश्मा (सोता) है और यही अधिक उपयुक्त है। 12 मोहम्मद खलील।

[1] अल-क़ुरआन अल-करीम 3/73

ابوبکر صدیق و جناب حق مآب ابو حفص عمر فاروق رضی اللہ تعالیٰ عنہما کی شان والا سب کی شانوں سے جدا ہے اور ان پر سب سے زیادہ عنایت خدا اور رسول خدا جل جلالہ و صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم سے بعد انبیاء و مرسلین و ملائکہ مقربین کے جو مرتبہ ان کا خدا کے نزدیک ہے دوسرے کا نہیں اور رب تبارک و تعالیٰ سے جو قرب و نزدیکی اور بارگاہ عرش اشتباہ رسالت میں جو عزت و سربلندی ان کا حصہ ہے اوروں کا نصیب نہیں، اور منازل جنت و مواہب بے منت (عہ) میں انہیں کے درجات سب پر عالی فضائل و فواضل (فضیلتوں اور خصوصی بخششوں) و حسنات طیبات (نیکیوں اور پاکیزگیوں) میں انہیں کو تقدم و پیشی (یہی سب پر مقدم۔ یہی پیش پیش ہمارے علماء و ائمہ نے اس (باب) میں مستقل تصنیفیں فرما کر سعادت کونین و شرافت دارین حاصل کی (ان کے خصائل تحریر میں لائے، ان کے محاسن کا ذکر فرمایا، ان کے اولیات و خصوصیات گنائے) ورنہ غیر متناہی (جو ہماری فہم و فراست کی رسائی سے ماورا ہو۔ اس کا شمار کس کے اختیار واللہ العظیم اگر ہزاروں دفتر ان کے شرح فضائل (اور بسط فواضل) میں لکھے جائیں یکے از ہزار تحریر میں نہ آئیں۔

وعلی تفنن واصفیہ بحسنہ یغنی الزمان وفیہ مالم یوصف

(اور اس کے حسن کی تعریف کرنے والوں کی عمدہ بیانی کی بنیاد پر زمانہ غنی ہو گیا اور اس میں ایسی خوبیاں ہیں جنہیں بیان نہیں کیا جاسکتا) مگر کثرت فضائل و شہرت فواضل (کثیر در کثیر فضیلتوں کا موجود اور پاکیزہ، وبرتر عزتوں مرحمتوں کا مشہور ہونا) چیزے دیگر (اور بات ہے) اور فضیلت و کرامات (سب سے افضل اور بارگاہ عزت میں سب سے زیادہ قریب ہونا۔)

امرے آخر (ایک اور بات ہے اس سے جدا و ممتاز) فضل اللہ تعالیٰ کے ہاتھ ہے جسے چاہے عطا فرمائے۔ "قُلْ إِنَّ الْفَضْلَ بِيَدِ اللَّهِ ۖ يُؤْتِيهِ مَنْ يَشَاءُ ۗ" ۱۔

اس کی کتاب کریم اور اس کا رسول عظیم علیہ وعلی آلہ الصلوٰۃ والتسلیم علی الاعلان گواہی دے رہے ہیں۔ حضرت امام حسن رضی اللہ تعالیٰ عنہ اپنے والد ماجد مولیٰ علی کرم اللہ وجہہ الکریم سے روایت کرتے ہیں:

عہ: مطبوعہ رسالہ میں وزاب بے منت مطبوع ہے اور حاشیہ پر تحریر کہ اصل میں ایسا ہے، فقیر نے اسے مواہب لکھا جب کہ منازل کا ہم قافیہ ہے مناہل یعنی چشمے اور انسب یہی ہے ۱۲ محمد خلیل۔

۱ القرآن الکریم ۳/ ۷۳

Fatawa Razawiyya - Volume 29

That he (Ali) says: "I was with the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) when Abu Bakr and Umar arrived. He said, 'O Ali, these two are the leaders of the middle-aged and the youth of the people of Paradise, after the Prophets and the Messengers.'" - (Narrated by At-Tirmidhi, Ibn Majah, and Abdullah bin Al-Imam Ahmad). I was present in the noble service of the most excellent of Prophets (peace and blessings of Allah be upon him) when Abu Bakr and Umar came before him. The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) stated: "O Ali! These two are the leaders of all the middle-aged and young people of Paradise, after the Prophets and Messengers." Hadrat Abu Huraira (may Allah be pleased with him) narrates from the Master of Messengers (peace and blessings of Allah be upon him), that the Holy Prophet stated: "Abu Bakr and Umar are the best of the first and the last, and the best of the inhabitants of the heavens and the best of the inhabitants of the earths, except for the Prophets and the Messengers." - (Narrated by Al-Hakim in al-Kuna, Ibn 'Adi, and al-Khatib). Abu Bakr and Umar are better than all the predecessors and successors, and they are better than all the inhabitants of the heavens and better than all the inhabitants of the earth, except for the Prophets and Messengers (peace and blessings be upon them). Hadrat Mawla Ali (may Allah Almighty ennoble his countenance) himself repeatedly, from his seat of power and majestic caliphate, clearly stated the absolute superiority of the two Sheikhs (Abu Bakr and Umar) (and explained in clear and explicit words that these two gentlemen are absolutely superior to all the noble companions without any restriction of direction or status). This statement from him has been proven through mass-transmission (tawatur), as more than eighty companions and successors narrated it from him. In fact, regarding this issue (the superiority of the two noble Sheikhs), just as the truthful Murtada (Ali) clearly and explicitly stated it time and again on various occasions, in public and private gatherings, and in general assemblies and congregational mosques (of the general public)...

1. Musnad Ahmad bin Hanbal on the authority of Ali (may Allah be pleased with him), Al-Maktab al-Islami Beirut 1/80; Jami' at-Tirmidhi, Chapters on Merits, Merits of Abu Bakr as-Siddiq, Hadith 3685, Dar al-Fikr Beirut 5/376; Sunan Ibn Majah, Excellence of Abu Bakr as-Siddiq, H.M. Saeed Company Karachi, p. 10.
2. Kanz al-Ummal with reference to Al-Hakim in al-Kuna, Hadith 32625, Muassasat ar-Risalah Beirut 11/560; Al-Sawaiq al-Muhriqah with reference to Al-Hakim, Ibn 'Adi, and Al-Khatib, Chapter 3, Section 3, Dar al-Kutub al-Ilmiyya Beirut, p. 119.

कि वे (अली) फ़रमाते हैं: "मैं नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के पास था, तो अबू बक्र और उमर आए, तो आप ने फ़रमाया: ऐ अली! ये दोनों जन्नत वालों के अधेड़ों और जवानों के सरदार हैं, नबियों और रसूलों के बाद।" - (रिवायत किया तिर्मिज़ी, इब्ने माजह और अब्दुल्लाह बिन अल-इमाम अहमद ने)। मैं हुज़ूर अफ़ज़लुल अंबिया सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की अक़दस ख़िदमत में हाज़िर था कि अबू बक्र और उमर सामने आए। हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि ऐ अली! ये दोनों जन्नत के तमाम अधेड़ों और जवानों के सरदार हैं, अंबिया और मुर्सलीन के बाद। हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु सैयदुल मुर्सलीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से रावी हैं, हुज़ूर का इर्शाद है: "अबू बक्र और उमर अगलों और पिछलों में सबसे बेहतर हैं, और आसमान वालों में सबसे बेहतर हैं और ज़मीन वालों में सबसे बेहतर हैं, नबियों और रसूलों के सिवा।" - (रिवायत किया अल-हाकिम ने अल-कुना में और इब्ने अदी व ख़तीब ने)। अबू बक्र और उमर बेहतर हैं सब अगलों-पिछलों से, और बेहतर हैं सब आसमान वालों से और बेहतर हैं सब ज़मीन वालों से, सिवाए अंबिया और मुर्सलीन अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम के। ख़ुद हज़रत मौला अली कर्रमल्लाहु तआला वज्हहु ने बार-बार अपनी हुकूमत और पुर-दबदबा ख़िलाफ़त के दौरान शैख़ैन (अबू बक्र व उमर) की अफ़ज़लियत-ए-मुतलक़ा की तसरीह फ़रमाई (और साफ़-साफ़ स्पष्ट शब्दों में बयान फ़रमाया कि ये दोनों हज़रात बिना किसी शर्त या हैसियत के तमाम सहाबा किराम से अफ़ज़ल हैं) और यह इर्शाद उनसे तवातुर (लगातार रिवायत) से साबित हुआ क्योंकि अस्सी से ज़्यादा सहाबा और ताबेईन ने इसे रिवायत किया। और वास्तव में इस मसले (शैख़ करीमैन की अफ़ज़लियत) को जैसा हक़ के मार्गदर्शक मुर्तज़वी (अली) ने साफ़-साफ़ और स्पष्ट रूप से बार-बार समय-समय पर अपनी सार्वजनिक और निजी महफ़िलों, और आम सभाओं और जामे मस्जिदों (आम लोगों के बीच) में...

1. मुस्नद अहमद बिन हंबल, अली रज़ियल्लाहु अन्हु से, अल-मकतब अल-इस्लामी बेरूत 1/80; जामे तिर्मिज़ी, अबवाबुल मनाक़िब, मनाक़िब अबी बक्र अस्सिद्दीक़, हदीस 3685, दारुल फ़िक्र बेरूत 5/376; सुनन इब्ने माजह, फ़ज़्ल अबी बक्र अस्सिद्दीक़, एच.एम. सईद कंपनी कराची, पृष्ठ 10।

2. कन्ज़ुल उम्माल, बहवाला-ए-हाकिम फ़िल कुना, हदीस 32625, मुअस्ससतुर रिसाला बेरूत 11/560; अस्सावाइक़ुल मुहरिक़ा, बहवाला-ए-हाकिम, इब्ने अदी और ख़तीब, अध्याय 3, अनुभाग 3, दारुल कुतुब अल-इलमिया बेरूत, पृष्ठ 119।

کہ وہ فرماتے ہیں: کنت عند النبی صلی اللہ تعالی علیہ وسلم فاقبل ابوبکر وعمر فقال یا علی ھذان سیدا کھول اھل الجنۃ وشبابھا بعد النبیین والمرسلین - (رواہ الترمذی، وابن ماجہ وعبد اللہ بن الامام احمد) میں خدمت اقدس حضور افضل الانبیاء صلی اللہ تعالی علیہ وسلم میں حاضر تھا کہ ابوبکر و عمر سامنے آئے حضور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے ارشاد فرمایا کہ علی ! یہ دونوں سردار ہیں اہل جنت کے سب بوڑھوں اور جوانوں کے، بعد انبیاء و مرسلین کے۔ حضرت ابوہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سید المرسلین صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم سے راوی، حضور کا ارشاد ہے: ابوبکر و عمر خیر الاولین والاخرین وخیر اھل السموات وخیر اھل الارضین الا النبیین والمرسلین - (رواہ الحاکم فی الکنی و ابن عدی و خطیب) ابوبکر و عمر بہتر ہیں سب اگلوں پچھلوں کے، اور بہتر ہیں سب آسمان والوں سے اور بہتر ہیں سب زمین والوں سے، سوا انبیاء و مرسلین علیہم الصلوۃ والسلام کے۔ خود حضرت مولیٰ علی کرم اللہ تعالیٰ وجہہ نے بار بار اپنی کرسی مملکت و سطوت (و دبدبہ) خلافت میں افضلیتِ مطلقہ شیخین کی تصریح فرمائی (اور صاف صاف واشگاف الفاظ میں بیان فرمایا کہ یہ دونوں حضرات علی الاطلاق بلا قیدِ جہت و حیثیت تمام صحابہ کرام سے افضل ہیں) اور یہ ارشاد ان سے بتواتر ثابت ہوا کہ اسی سے زیادہ صحابہ و تابعین نے اسے روایت کیا۔ اور فی الواقع اس مسئلہ (افضلیت شیخ کریمین) کو جیسا حق مآب مرتضوی نے صاف صاف واشگاف بہ کرات و مرات (بار بار موقع بہ موقع اپنی) جلوات و خلوات (عمومی محفلوں، خصوصی نشستوں) و مشاہدِ عامہ و مساجد جامعہ (عامۃ الناس کی)...

1 مسند احمد بن حنبل عن علی رضی اللہ عنہ المکتب الاسلامی بیروت ۱/ ۸۰، جامع الترمذی ابواب المناقب مناقب ابی بکر الصدیق حدیث ۳۶۸۵ دار الفکر بیروت ۵/ ۳۷۶، سنن ابن ماجہ فضل ابی

بکر الصدیق ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ص ۱۰ 2 کنز العمال بحوالہ الحاکم فی الکنی حدیث ۳۲۶۲۵ مؤسسۃ الرسالہ بیروت ۱۱ /۵۶۰، الصواعق المحرقہ بحوالہ الحاکم و ابن عدی و الخطیب الباب الثالث الفصل الثالث دار الکتب العلمیۃ بیروت ص ۱۱۹

It was stated in gatherings and congregational mosques, which did not occur from others. (Among these is the noble statement that) Imam Bukhari (may Allah have mercy on him) narrates from Hazrat Muhammad bin Hanafiyyah, the son of the Leader of the Believers, Ali (may Allah be pleased with them): "I said to my father: Who is the best of people after the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him)? He said: Abu Bakr. I asked: Then who? He said: Umar." [1] That is, I asked my noble father, the Leader of the Believers, Mawla Ali (may Allah ennoble his face): "Who is the best of all people after the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him)?" He replied: "Abu Bakr." I asked: "Then who?" He replied: "Umar." Abu Umar bin Abdullah narrates from Hakim bin Hujl, and Darqutni in his Sunan narrates that the Leader of the Believers Ali (may Allah ennoble his face) said: "I shall not find anyone who prefers me over Abu Bakr and Umar except that I will flog him with the punishment of a slanderer." [2] Whoever I find saying that I am superior to the Shaykhayn (Hazrat Abu Bakr and Umar, may Allah be pleased with them) (or giving me excellence over either of them), I will strike him with the punishment for a slanderer (one who levels false accusations), which is 80 lashes. Abu al-Qasim Talhi narrates in 'Kitab as-Sunnah' from Hazrat Alqamah: It reached Ali that some people were preferring him over Abu Bakr and Umar. So he ascended the pulpit, praised and glorified Allah, and then said: "O people! It has reached me that some people prefer me over Abu Bakr and Umar. Had I previously issued a warning regarding this, I would have punished for it. Whoever I hear saying this after today is a slanderer, and upon him is the punishment of a slanderer." Then he said: "Verily, the best of this Ummah after its Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) is Abu Bakr, then Umar, and then Allah knows best who is best after them." The narrator said: Hasan bin Ali was in the gathering and said: "By Allah, had he named the third, he would have named Uthman." [3] That is, the news reached Mawla Ali that people were giving him preference over the Shaykhayn (may Allah be pleased with them) (and calling Mawla superior to them). So he went to the pulpit, praised and glorified Allah, then said: "O people! News has reached me that some people call me superior to Abu Bakr and Umar. And if I had previously..."

[Footnotes] 1. Sahih al-Bukhari, Virtues of the Companions of the Prophet (peace be upon him), Chapter on the Excellence of Abu Bakr after the Prophet (peace be upon him), Qadimi Kutub Khana, Karachi, 1/518. 2. Al-Sawa'iq al-Muhriqah, citing al-Darqutni, Chapter Three, Dar al-Kutub al-Ilmiyah, Beirut, p. 91. 3. Izalat al-Khafa 'an

Khilafat al-Khulafa, citing Abu al-Qasim, Musnad Ali bin Abi Talib, Suhail Academy, 1/68.

सभाओं और जामा मस्जिदों में यह फरमाया गया, जो दूसरों से घटित नहीं हुआ। (इनमें वह महान कथन भी है कि) इमाम बुखारी (रहमतुल्लाह अलैहि), हज़रत मुहम्मद बिन हनफ़िया, जो अमीरुल् मोमिनीन हज़रत अली (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) के साहबज़ादे हैं, से रिवायत करते हैं: "मैंने अपने पिता से पूछा: नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के बाद लोगों में सबसे बेहतर कौन है? उन्होंने कहा: अबू बक्र। मैंने पूछा: फिर कौन? उन्होंने कहा: उमर।" [1] अर्थात् मैंने अपने महान पिता, अमीरुल् मोमिनीन मौला अली (कर्रमल्लाहु वज्हहुल करीम) से अर्ज किया कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के बाद सब आदमियों में सबसे बेहतर कौन हैं? आपने फरमाया: "अबू बक्र"। मैंने अर्ज किया, फिर कौन? फरमाया: "उमर"। अबू उमर बिन अब्दुल्लाह, हाकिम बिन हजल से और दारकुतनी अपनी सुनन में रिवायत करते हैं कि अमीरुल् मोमिनीन अली (कर्रमल्लाहु वज्हहु तआला) फरमाते हैं: "मैं किसी ऐसे व्यक्ति को नहीं पाऊंगा जो मुझे अबू बक्र और उमर पर श्रेष्ठता देता हो, सिवाय इसके कि मैं उसे एक झूठे आरोप लगाने वाले (मुफ़्तरी) की सज़ा (कोड़े) मारूँगा।" [2] जिसे मैं पाऊंगा कि वह मुझे शैखन (हज़रत अबू बक्र और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से अफ़ज़ल (बेहतर) बताता है (या मुझे उनमें से किसी पर फज़ीलत देता है), उसे मुफ़्तरी (झूठ और तोहमत लगाने वाले) की हद मारूंगा, जो कि ८० कोड़े हैं। अबू अल-कासिम तल्ही ने 'किताबुस सुन्नाह' में हज़रत अलकमा से रिवायत की है: हज़रत अली को खबर पहुंची कि कुछ लोग उन्हें अबू बक्र और उमर पर श्रेष्ठता दे रहे हैं। तो वह मिम्बर पर तशरीफ ले गए, अल्लाह तआला की हम्द-ओ-सना की, फिर फरमाया: "ऐ लोगों! मुझे खबर पहुंची है कि कुछ लोग मुझे अबू बक्र और उमर से अफ़ज़ल बताते हैं। अगर मैं पहले इस बारे में कुछ कह चुका होता, तो मैं इसके लिए सज़ा देता। आज के बाद जो कोई मुझे ऐसा कहते हुए सुनाई देगा, वह मुफ़्तरी (झूठा) है और उस पर मुफ़्तरी की हद है।" फिर फरमाया: "बेशक नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के बाद इस उम्मत में सबसे बेहतर अबू बक्र हैं, फिर उमर हैं, और फिर उनके बाद अल्लाह बेहतर जानता है कि कौन बेहतर है।" रावी (रिवायत करने वाला) कहता है: मज्लिस में हज़रत हसन बिन अली भी थे, उन्होंने कहा: "खुदा की कसम, अगर वह तीसरे का नाम लेते, तो उस्मान का नाम लेते।" [3] यानी मौला अली को खबर पहुंची कि लोग उन्हें हज़रात शैखन (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) पर तफ़्ज़ील (श्रेष्ठता) देते हैं (और हज़रत मौला को उनसे अफ़ज़ल बताते हैं)। तो आप मिम्बर पर तशरीफ़ ले गए और अल्लाह तआला की हम्द-ओ-सना

की, फिर फरमाया: "ऐ लोगो! मुझे खबर पहुंची है कि कुछ लोग मुझे अबू बक्र और उमर से अफ़ज़ल बताते हैं, और अगर मैंने पहले से..."

[पाद-टिप्पणियाँ] 1. सहीह अल-बुखारी, मनाकिब अस्हाब नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम), बाब फ़ज़्ल अबी बक्र बा'द नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम), कदीमी कुतुब खाना, कराची, 1/518। 2. अल-सवाइकुल मुह्रिका, बहवाला अल-दारकुतनी, बाब तीसरा, दारुल कुतुब अल-इल्मिया, बेरूत, पृ. 91। 3. इज़ालातुल खफ़ा अन खिलाफ़त अल-खुलफ़ा, बहवाला अबी अल-कासिम, मुस्नद अली बिन अबी तालिब, सुहेल एकेडमी, 1/68।

पृष्ठ 368/750

مجلسوں اور جامع مسجدوں میں ارشاد فرمایا دوسروں سے واقع نہیں ہوا۔ (ازاں جملہ وہ ارشاد گرامی کہ) امام بخاری رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ، حضرت محمد بن حنفیہ صاحبزادہ جناب امیر المومنین علی رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے راوی: قال قلت لابی ای الناس خیر بعد النبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم؟ قال ابوبکر قال قلت ثم من؟ قال عمر ۱۔ یعنی میں نے اپنے والد ماجد امیر المومنین مولی علی کرم اللہ وجہہ سے عرض کیا کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے بعد سب آدمیوں سے بہتر کون ہیں؟ ارشاد فرمایا: ابوبکر میں نے عرض کیا پھر کون؟ فرمایا عمر۔ ابو عمر بن عبداللہ، حاکم بن حجل سے اور دار قطنی اپنی سنن میں راوی، جناب امیر المومنین علی کرم اللہ وجہہ تعالیٰ فرماتے ہیں: لا اجد احداً فضلنی علی ابی بکر وعمر الا جلدتہ حد المفتری ۲۔ جسے میں پاؤں گا کہ شیخین (حضرت ابوبکر و عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما) سے مجھے افضل بتاتا (اور مجھے ان میں سے کسی پر فضیلت دیتا) ہے اسے مفتری (افتراء و بہتان لگانے والے) کی حد ماروں گا کہ اسی ۸۰ کوڑے ہیں۔ ابو القاسم طلحی کتاب السنہ میں جناب علقمہ سے راوی: بلغ علیا ان اقواما یفضلونہ علی ابی بکر و عمر فصعد المنبر فحمد اللہ واثنی علیہ ثم قال ایہا الناس! انہ بلغنی ان اقواما یفضلونی علی ابی بکر وعمر ولو کنت تقدمت فیہ لعاقبت فیہ فمن سمعتہ بعد ہذا الیوم یقول ہذا فھو مفتر علیہ حد المفتری، ثم قال ان خیر ہذہ الامۃ بعد نبیہا صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم ابوبکر ثم عمر ثم اللہ اعلم بالخیر بعدہ قال وفی المجلس الحسن بن علی فقال واللہ لوسمی الثالث لسمّی عثمان ۳۔ یعنی جناب مولی علی کو خبر پہنچی کہ لوگ انہیں حضرات شیخین رضی اللہ تعالیٰ عنہما پر تفضیل دیتے (اور حضرت مولی کو ان سے افضل بتاتے) ہیں۔ پس منبر پر تشریف لے گئے اور اللہ تعالیٰ کی حمد وثنا کی، پھر

فرمایا اے لوگو! مجھے خبر پہنچی کہ کچھ لوگ مجھے ابوبکر و عمر سے افضل بتاتے ہیں اور اگر میں نے پہلے سے

۱ صحیح البخاری مناقب اصحاب النبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم باب فضل ابی بکر بعد النبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم قدیمی کتب خانہ کراچی ۱ / ۵۱۸ ۲ الصواعق المحرقة بحوالہ الدارقطنی الباب الثالث دار الکتب العلمیة بیروت ص ۹۱ ۳ ازالة الخفاء عن خلافة الخلفاء بحوالہ ابی القاسم مسند علی بن ابی طالب سہیل اکیڈمی ۱ / ۶۸

(If I had) heard it, I would have punished for it, meaning this first time I am sufficing with understanding and warning. After today, if I hear anyone saying such a thing, he is a slanderer (one who fabricates a lie), and the legal punishment for a slanderer is mandatory upon him. Then he said: Undoubtedly, the best of this Ummah after the Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him) is Abu Bakr, then Umar. Then Allah knows best who is better after them. Imam Hassan (may Allah be pleased with him) was also present in the gathering; he said: By Allah, if he had named a third person, he would have named Uthman.

In short, there are countless and infinite Marfu' Hadiths and sayings of Hazrat Murtaza and the Ahl al-Bayt of Prophecy in this regard, some of which the humble servant has explained in his treatise "Tafdhil". Now, when the (respected) scholars of Ahl al-Sunnah turned their discerning gaze towards these Hadiths and reports, they found hundreds of explicit statements regarding the superiority of the Shaykhayn (Abu Bakr and Umar) in absolute terms. They did not see any restriction of aspect or status—that they are superior from one aspect and others have superiority from another. Therefore, they held the belief that although special virtues and excellent characteristics (specific excellences and particularities in excellence) are attained by Hazrat Maula (Ali, the solver of difficulties, may Allah honor him) and others besides him (and by divine gift they are the sole possessors of those characteristics) which the Shaykhayn (the two noble and great ones) did not possess—just as the opposite is also true (that the two Leaders and Viziers were granted those high characteristics and high virtues from the Divine Presence which others did not receive any share of)—but the absolute total excellence (absolute universal excellence regardless of any aspect or status), which consists of abundance of reward and increase in proximity to the Lord of Lords, was granted to them alone (and did not fall to the lot of others). (Meaning, the greater honor and status in the presence of Allah Almighty, which is also expressed as abundance of reward, was found only by the Shaykhayn. This does not mean mere abundance and increase in reward and bounty, which often happens for the one of lesser rank [mafdhul]).

It has appeared in a Hadith regarding the companions of our master Imam Mahdi (may Allah be pleased with him) that for each of them is the reward of fifty. The Sahaba asked, "The reward of fifty of them or fifty of us?" He said, "Rather, the reward of fifty of you."

[Note: Ala Hazrat (may his secret be sanctified) wrote a book of about ninety parts named 'Muntaha al-Tafsil li-Mabhath al-Tafdil' on the issue of the superiority of the Shaykhayn (may Allah be pleased with them both), then summarized it in 'Matla' al-Qamarayn fi Abanati Sabqat al-Umarayn'. This noble statement probably refers to that. And Allah knows best. Muhammad Khalil al-Qadri (may he be forgiven).]

(यदि मैंने) सुना होता तो इसमें सज़ा देता, यानी पहली बार समझाइश और चेतावनी पर संतोष करता हूँ। इस दिन के बाद जो किसी को ऐसा कहते सुनूँगा, तो वह मुफ़्तरी (झूठ गढ़ने वाला) है, उस पर मुफ़्तरी की सज़ा (हद) अनिवार्य है। फिर फ़रमाया: निस्संदेह इस उम्मत में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के बाद सबसे बेहतर अबू बक्र हैं, फिर उमर। फिर अल्लाह ही बेहतर जानता है कि उनके बाद कौन बेहतर है। और महफ़िल में इमाम हसन (रज़ियल्लाहु अन्हु) भी मौजूद थे, उन्होंने फ़रमाया: अल्लाह की कसम, अगर वह तीसरे का नाम लेते तो उस्मान का नाम लेते।

संक्षेप में, इस बारे में हज़रत मुर्तज़ा और अहले बैत-ए-नबुव्वत की अनगिनत मरफ़ूअ हदीसें और कथन मौजूद हैं, जिनमें से कुछ की व्याख्या इस खाकसार ने अपने रिसाला "तफ़्ज़ील" में की है। अब अहले सुन्नत (के सम्मानित विद्वानों) ने इन हदीसों और आसार पर जब गौर व फ़िक्र किया, तो उन्होंने शेख़ैन (अबू बक्र और उमर) की श्रेष्ठता के सैकड़ों स्पष्ट प्रमाण पूर्ण रूप से (मुतलक) पाए। उन्होंने कहीं भी पहलू या स्थिति की कोई पाबंदी नहीं देखी कि वे केवल अमुक पहलू से श्रेष्ठ हैं और दूसरों को दूसरी स्थिति से श्रेष्ठता प्राप्त है। इसलिए उन्होंने यह अक़ीदा (मान्यता) बना लिया कि यद्यपि विशेष फ़ज़ीलतें और विशिष्ट गुण हज़रत मौला (अली, मुश्किल कुशा, करम अल्लाहु वजहहु) और उनके अलावा दूसरों को भी ऐसे प्राप्त हैं (और ईश्वरीय देन के रूप में वे अकेले उन विशेषताओं के धारक हैं) जो शेख़ैन (दोनों महानुभावों) को नहीं मिले—जैसा कि इसका विपरीत भी सत्य है (कि उन दोनों वज़ीरों को वे उच्च विशेषताएँ और श्रेष्ठताएँ ईश्वरीय दरबार से प्रदान की गईं जिनमें दूसरों को कोई हिस्सा नहीं मिला)—मगर पूर्ण श्रेष्ठता (मुतलक फ़ज़ीलत, बिना किसी स्थिति के विचार के), जो अल्लाह के पास अधिक सवाब और अधिक निकटता का नाम है, वह केवल उन्हें (शेख़ैन) को ही प्रदान की गई (और दूसरों के हिस्से में नहीं आई)। (अर्थात अल्लाह के यहाँ अधिक सम्मान और पद जिसे अधिक सवाब से भी व्यक्त किया जाता है, वह केवल शेख़ैन ने पाया। इससे तात्पर्य केवल इनाम और सवाब की अधिकता नहीं है जो अक्सर कम मर्तबे वाले को भी मिल जाती है।)

हदीस में हमारे सरदार इमाम मेहदी (रज़ियल्लाहु अन्हु) के साथियों के बारे में आया है कि उनमें से हर एक के लिए पचास का सवाब है। सहाबा ने पूछा: उनमें से पचास का या हममें से पचास का? फ़रमाया: बल्कि तुममें से पचास का सवाब।

[नोट: आला हज़रत (क़ुद्दिस सिर्रहु) ने शेख़ैन की श्रेष्ठता के मसले पर लगभग नब्बे भागों (जुज़) की एक पुस्तक 'मुन्तहा अल-तफ़्सील ली-मबहस अल-तफ़्ज़ील' लिखी थी, फिर 'मतला अल-क़मरैन फ़ी इबानति सबक़त अल-उमरैन' में उसका सारांश लिखा। संभवतः इस कथन का संकेत उसी ओर है। और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है। मुहम्मद खलील अल-क़ादरी (क्षमा प्रार्थी)।]

पेज 369 का 750

سُنا ہوتا تو اس میں سزا دیتا یعنی پہلی بار تفہیم (وتنبیہ) پر قناعت فرماتا ہوں پس اس دن کے بعد جسے ایسا کہتے سنوں گا تو وہ مفتری (بہتان باندھنے والا) ہے اس پر مفتری کی حد لازم ہے، پھر فرمایا بے شک بہتر اس امت کے بعد ان نبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کے ابوبکر ہیں پھر عمر، پھر خدا خوب جانتا ہے بہتر کو ان کے بعد، اور مجلس میں امام حسن (رضی اللہ عنہ) بھی جلوہ فرما تھے انہوں نے ارشاد کیا خدا کی قسم اگر تیسرے کا نام لیتے تو عثمان کا نام لیتے۔

بالجملہ احادیث مرفوعہ و اقوال حضرت مرتضوی و اہلبیتِ نبوت اس بارے میں لاتعداد ولا تحصٰی (بے شمار ولا انتہا) ہیں کہ بعض کی تفسیر فقیر نے اپنے رسالہ "تفضیل" میں کی۔ اب اہل سنت (کے علمائے ذوی الاحترام) نے ان احادیث و آثار میں جو نگاہِ غور کو کام فرمایا تو تفضیلِ شیخین کی صدہا تصریحیں (سینکڑوں صراحتیں) علی الاطلاق پائیں کہیں جہت و حیثیت کی قید نہ دیکھی کہ یہ صرف فلاں حیثیت سے افضل ہیں اور دوسری حیثیت سے دوسروں کو افضلیت (حاصل ہے) لہذا انہوں نے عقیدہ کر لیا کہ گو فضائلِ خاصہ و خصائصِ فاضلہ (مخصوص فضیلتیں اور فضیلت میں خصوصیتیں) حضرت مولٰی (علی مشکل کشا کرم اللہ تعالٰی وجہہ) اور ان کے غیر کو بھی ایسے حاصل (اور عطائے الٰہی وہ ان خصوصیات کے تنہا حامل) جو حضرات شیخین (کریمین جلیلین) نے نہ پائے جیسے کہ اس کا عکس بھی صادق ہے (کہ امیرین وزیرین کو وہ خصائصِ عالیہ اور فضائلِ عالیہ، بارگاہِ الٰہی سے مرحمت ہوئے کہ ان کے غیر نے اس سے کوئی حصہ نہ پایا) مگر فضلِ مطلق کُلی (کسی جہت و حیثیت کا لحاظ کیے بغیر فضیلت مطلقہ کلیہ) جو کثرتِ ثواب و زیادتِ قُربِ رب الارباب سے عبارت ہے وہ انہیں کو عطا ہوا (اوروں کے نصیب میں نہ آیا) (یعنی اللہ عزوجل کے یہاں زیادہ عزت و منزلت جسے کثرتِ ثواب سے بھی تعبیر کرتے ہیں

وہ صرف حضرات شیخین نے پائی۔ اس سے مراد اجر وانعام کی کثرت و زیادت نہیں کہ بارہا مفضول کے لیے ہوتی ہے۔

حدیث میں ہمراہیانِ سیدنا امام مہدی رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی نسبت آیا کہ ان میں سے ہر ایک کے لیے پچاس کا اجر ہے۔ صحابہ نے عرض کیا ان میں کے پچاس کا یا ہم میں کے؟ فرمایا بلکہ تم میں کے تواجر

عہ: اعلیحضرت قدس سرہ العزیز نے مسئلہ تفضیل شیخین رضی اللہ تعالیٰ عنہما پر نوے ۹۰ جز کے قریب ایک کتاب مسمی بہ منتہی التفصیل لمبحث التفضیل لکھی پھر مطلع القمرین فی ابانۃ سبقۃ العمرین میں اس کی تلخیص کی، غالبا اس ارشاد گرامی میں اشارہ اسی کی طرف ہے، واللہ تعالیٰ اعلم۔ محمد خلیل القادری عفی عنہ)

Fatawa Rizvia Volume 29

Their reward and compensation for labor increased, but they cannot equal the Sahaba (Companions) in excellence, let alone exceed them. Where is the companionship of Imam Mahdi and where is the companionship of the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him)! Understand its likeness without comparison: a Sultan sent a minister and some other officers on a mission; upon victory, each officer was given a reward of one hundred thousand rupees, while the minister was given a simple document of royal pleasure. The reward given to the officers was more in monetary terms, and they received more compensation, but where is their status compared to the honor of the Prime Minister? (Bahar-e-Shariat)

And (it is the established and firm belief of the Ahl al-Sunnah wa al-Jama'ah that) contrary to this belief, there is no Sahih Hadith at all. And if, for the sake of argument, a hint of contradiction is found anywhere, know that it is a flaw in our understanding (and our short-sightedness). Otherwise, why would the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him), and Hazrat Mawla (Ali) himself, and the noble Ahl al-Bayt (according to the saying: "The master of the house knows better what is in it," they are more aware of the secrets of the house compared to others), declare them [the Sahaba] as superior, the best of the Ummah, and the leaders of the first and the last, without any restriction (without limiting it to any specific aspect or status)? Why would the noble verse: "Say (O Muhammad SAW): 'Come, let us call our sons and your sons, our women and your women, our selves and your selves, then let us pray and invoke (sincerely) the Curse of Allah upon those who lie.'" [3:61]

1. (So say to them, "Come, let us call our sons and your sons, our women and your women, and our souls and your souls, then let us engage in mutual invocation and invoke the curse of Allah upon the liars") and the authentic Hadith: "Whomever I am the master of, Ali is his master"
2. (Whose master I am, Ali is also his master) and the very weak and highly criticized report: "Your flesh is my flesh and your blood is my blood"
3. (Your flesh is my flesh and your blood is my blood).

---

1 Al-Qur'an al-Karim 3/61 2 Jami' at-Tirmidhi, Chapters on Merits, Chapter on the Merits of Ali (RA), Amin Company Delhi 2/213; Musnad Ahmad bin Hanbal from Ali (RA), Al-Maktab al-Islami Beirut 1/82, 119, 152; Sunan Ibn Majah, Merit of Ali bin Abi

Talib (RA), H.M. Saeed Company Karachi p. 12; Al-Mustadrak lil-Hakim, Book of Knowledge of the Companions, "Whomever I am the master of, Ali is his master," Dar al-Fikr Beirut 3/110; Al-Mu'jam al-Kabir Hadith 3039, Al-Maktabah al-Faysaliyyah Beirut 3/189; Kanz al-Ummal Hadith 32903, 32946, 32950, 32951, Mu'assasat al-Risala Beirut 11/602, 610. 3 Kanz al-Ummal Hadith 32936, Mu'assasat al-Risala Beirut 11/607.

फतावा रिज़विया जिल्द 29

उनकी मेहनत का इनाम और मुआवजा बढ़ गया, लेकिन वे उत्कृष्टता में सहाबा के बराबर भी नहीं हो सकते, अधिक होना तो दूर की बात है। कहाँ इमाम महदी की संगति और कहाँ हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की सोहबत! इसकी मिसाल बिना किसी तुलना के इस तरह समझें कि सुल्तान ने किसी मिशन पर एक वज़ीर और कुछ अन्य अधिकारियों को भेजा; जीत पर प्रत्येक अधिकारी को एक-एक लाख रुपये का इनाम दिया गया और वज़ीर को केवल शाही प्रसन्नता का एक पत्र दिया गया। अधिकारियों को इनाम अधिक मिला और उन्होंने अधिक मुआवजा पाया, लेकिन कहाँ वे और कहाँ वज़ीर-ए-आज़म (प्रधानमंत्री) का सम्मान! (बहार-ए-शरीअत)

और (यह अहले सुन्नत व जमाअत का वह स्थापित और दृढ़ अकीदा है कि) इस अकीदे के विरुद्ध पहली बात तो यह है कि किसी सही हदीस में कुछ है ही नहीं। और यदि मान भी लिया जाए कि कहीं विरोध की कोई झलक मिलती है, तो समझ लें कि यह हमारी समझ की कमी है (और हमारी कम-फ़हमी है)। वरना अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम और स्वयं हज़रत मौला (अली) और अहले बैत किराम (इस कहावत के अनुसार: "घर का मालिक बेहतर जानता है कि उसमें क्या है," वे दूसरों की तुलना में घर के रहस्यों से अधिक वाकिफ हैं) उन्हें बिना किसी शर्त के(किसी पहलू या स्थिति की पाबंदी के बिना) सबसे श्रेष्ठ, उम्मत का सबसे अच्छा और पहले और आखिरी लोगों का सरदार क्यों बताते? क्या आयते करीमा: "तो उनसे कह दो कि आओ हम बुलाएं अपने बेटों को और तुम्हारे बेटों को और अपनी औरतों को और तुम्हारी औरतों को और अपनी जानों को और तुम्हारी जानों को, फिर हम मुबाहला (एक दूसरे पर लानत भेजने की दुआ) करें और झूठों पर अल्लाह की लानत भेजें।" [3:61]

1. (तो उनसे कह दो कि आओ, हम बुलाएं अपने बेटों और तुम्हारे बेटों को, हमारी औरतों और तुम्हारी औरतों को, और हमारी जानों और तुम्हारी जानों को, फिर हम मुबाहला करें तो झूठों पर अल्लाह की लानत डालें) और सही हदीस: "जिसका मैं मौला हूँ, अली भी उसका मौला है"
2. (जिसका मैं मौला हूँ, अली भी उसका मौला है) और अत्यंत कमज़ोर और अत्यधिक आलोचना वाली रिपोर्ट: "तुम्हारा मांस मेरा मांस है और तुम्हारा खून मेरा खून है"
3. (तुम्हारा मांस मेरा मांस है और तुम्हारा खून मेरा खून है)।

1 अल-कुरान अल-करीम 3/61 2 जामी अत-तिर्मिज़ी, अबूवाब अल-मनाकिब, बाब मनाकिब अली (रज़ि.), अमीन कंपनी दिल्ली 2/213; मसनद अहमद बिन हंबल अली (रज़ि.) से, अल-मक्तब अल-इस्लामी बेरूत 1/82, 119, 152; सुनन इब्न माजह, फ़ज़्ल अली बिन अबी तालिब (रज़ि.), एच.एम. सईद कंपनी कराची पृ. 12; अल-मुस्तदरक लिल-हाकिम, किताब मारिफतुल सहाबा, "जिसका मैं मौला हूँ अली उसका मौला है", दार अल-फ़िक्र बेरूत 3/110; अल-मुअजम अल-कबीर हदीस 3039, अल-मक्तब अल-फ़ैसलिया बेरूत 3/189; कंज़ुल उम्माल हदीस 32903, 32946, 32950, 32951, मुअस्सासतुल रिसाला बेरूत 11/602, 610। 3 कंज़ुल उम्माल हदीस 32936, मुअस्सासतुल रिसाला बेरूत 11/607।

ان کا زائد ہوا۔ انعام و معاوضہ محنت انہیں زیادہ ملا مگر افضلیت میں وہ صحابہ کے ہمسر بھی نہیں ہو سکتے، زیادت درکنار، کہاں امام مہدی کی رفاقت اور کہاں حضور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی صحبیت ، اس کی نظیر بلا تشبیہ یوں سمجھئے کہ سلطان نے کسی مہم پر وزیر اور بعض دیگر افسروں کو بھیجا، اس کی فتح پر ہر افسر کو لاکھ لاکھ روپے انعام دیئے اور وزیر کو خالی پروانہ خوشنودی مزاج دیا تو انعام انہیں افسروں کو زیادہ ملا اور اجر و معاوضہ انہوں نے زیادہ پایا مگر کہاں وہ اور کہاں وزیر اعظم کا اعزاز۔ (بہارِ شریعت)

اور (یہ اہل سنت و جماعت کا وہ عقیدہ ثابتہ محکمہ ہے کہ) اس عقیدہ کا خلاف اول تو کسی حدیث صحیح میں ہے ہی نہیں اور اگر بالفرض کہیں ہوئے خلاف پائے بھی تو سمجھ لے کہ یہ ہماری فہم کا قصور ہے (اور ہماری کوتاہ فہمی) ورنہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم اور خود حضرت مولیٰ (علی) واہلبیت کرام (صاحب البیت ادری بما فیہ کے مصداق، اسرارِ خانہ سے مقابلہ واقف تر) کیوں بلا تقیید (کسی جہت وحیثیت کی قید کے بغیر) انہیں افضل و خیر امت و سردارِ اولین و آخرین بتاتے، کیا آیتِ کریمہ فقل "فَقُلْ تَعَالَوْا نَدْعُ اَبْنَاءَنَا وَ اَبْنَاءَكُمْ وَ نِسَاءَنَا وَ نِسَاءَكُمْ وَ اَنْفُسَنَا وَ اَنْفُسَكُمْ ثُمَّ نَبْتَهِلْ فَنَجْعَلْ لَّعْنَتَ اللهِ عَلَى الْكٰذِبِيْنَ "

1- (تو ان سے فرما دو کہ آؤ ہم بلائیں اپنے بیٹے اور تمہارے بیٹے اور اپنی عورتیں اور تمہاری عورتیں اور اپنی جانیں اور تمہاری جانیں پھر مباہلہ کریں تو جھوٹوں پر اللہ کی لعنت ڈالیں) اور حدیث صحیح "من کنت مولاہ فعلی مولاہ"

2- (جس کا میں مولا ہوں تو علی بھی اس کا مولا ہے) اور خبر شدید الضعف وقوی الجرح (نہایت درجہ ضعیف و قابل شدید جرح و تعدیل) "لحمك لحمي و دمك دمی"

3 (تمہارا گوشت میرا گوشت اور تمہارا خون میرا خون ہے)

---

1 القرآن الکریم ۳/ ۶۱ 2 جامع الترمذی ابواب المناقب باب مناقب علی رضی الله عنہ امین کمپنی دہلی ۲/ ۲۱۳، مسند احمد بن حنبل عن علی رضی الله عنہ المکتب الاسلامی بیروت ۱/ ۸۲ و ۱۱۹ و ۱۵۲، سنن ابن ماجہ فضل علی بن ابی طالب رضی الله عنہ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ص ۱۲، المستدرك للحاکم کتاب معرفة الصحابة من کنت مولاه فعلی مولاه دار الفکر بیروت ۳/ ۱۱۰، المعجم الکبیر حدیث ۳۰۳۹ المکتبة الفیصلیة بیروت ۳/ ۱۸۹، کنز العمال حدیث ۳۲۹۰۳ و ۳۲۹۴۶ و ۳۲۹۵۰ و ۳۲۹۵۱ مؤسسة الرساله بیروت ۱۱/ ۶۰۲ و ۶۱۰ 3 کنز العمال حدیث ۳۲۹۳۶ مؤسسة الرساله بیروت ۱۱/ ۶۰۷

Fatawa Razawiya, Volume 29

On the assumption of proof (provided it is accepted as proven and correct) etc. (Hadiths and reports), they were not aware of them. (While being unique in their age in senses, knowledge, consciousness, understanding, and foresight, they remained strangers to these internal secrets and spent their lives in this alienation) or (if they had awareness and information of these secrets) then they did not understand the meaning of (those clear significant words) (and due to a sense of honor and shame, they could not ask anyone else.) Or they understood. (They became aware of the reality) and found in it a contradiction to the superiority of the two Sheikhs (but remained silent and held a belief contrary to the majority of the noble Sahaba, not letting the contradiction come to their tongue, whereas this is insolence towards their pure persons and an accusation of cursed Taqiyyah against them) then (now how can we) consider it contrary (to whom should we say that there was contradiction in their hearts but confession by tongue) and how can we cast aside clear and definitive statements (bright clarifications and absolute significations) etc., which do not tolerate contradiction (in which there is no possibility of contradiction, no deviation). Praise be to Allah, Lord of the worlds, that Allah the Blessed and Exalted taught this humble poor person such a healing answer that is sufficient for the fair-minded (just and sensible person) (and this answer is enough for his correct guidance) and for the biased one (who smolders in the fire of exaggeration and walks the path of stubbornness and self-will) there is endless rage in it ("Say, die in your rage" 1. May burning in the fire of wrath be blessed for them) (According to us, the Muslims of Ahl al-Sunnah, following the master Ali) this is the love for Ali al-Murtada and also his (this very demand) this is required that you obey the beloved and avoid his wrath and deserving millions [of punishments] (God forbid).

Allah! Allah! That Imam of the truthful ones, the most perfect of the saints and gnostics, our leader Siddiq-e-Akbar (may Allah be pleased with him), who prioritized the honor and love of the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) over the preservation of life, even though saving life is the most important duty. If, due to the oppression of a cunning enemy etc., there is certainty of death in praying, God forbid, then at that time permission is given to leave the prayer.

This very veneration, love, self-sacrifice, and being like a moth to the candle of the messengership (peace and blessings be upon him) is what gave Siddiq-e-Akbar superiority over the entire world after the Prophets and Messengers (peace be upon

them all), and made him more superior, honorable, complete, and great than the entire universe, all creation, all saints, and all gnostics after them.

That Siddiq regarding whom it is mentioned in the Hadith that Abu Bakr did not gain superiority over you due to excessive fasting and prayer...

---

1 Al-Quran Al-Karim 3/119

प्रमाण की धारणा पर (बशर्ते कि इसे सिद्ध और सही मान लिया जाए) आदि (हदीस और समाचार), वे उनसे अवगत नहीं थे। (होश और इंद्रियों, ज्ञान और चेतना, और समझ और दूरदर्शिता में अपने समय के अद्वितीय होने के बावजूद, वे इन आंतरिक रहस्यों से अनजान रहे और इसी अनभिज्ञता में अपना जीवन व्यतीत किया) या (उन्हें इन रहस्यों की जानकारी और सूचना थी) तो वे (उन स्पष्ट अर्थ वाले शब्दों) का अर्थ नहीं समझे (और गैरत व शर्म के कारण किसी और से नहीं पूछ सके।) या समझे। (वास्तविक स्थिति से अवगत हुए) और इसमें शेख़ैन (हज़रत अबू बक्र और उमर) की श्रेष्ठता के विरुद्ध पाया (लेकिन चुप रहे और सहाबा के बहुमत के विपरीत अक़ीदा रखा, अपनी ज़ुबान पर इसके विरुद्ध कुछ नहीं आने दिया, जबकि यह उनकी पवित्र हस्तियों के प्रति गुस्ताख़ी है और उन पर शापित तकिया का आरोप लगाना है) तो (अब हम) इसे विपरीत कैसे मान लें (किसे कहें कि उनके दिल में विरोध था और ज़ुबान से इक़रार) और स्पष्ट और निर्णायक वर्णनों (उज्ज्वल स्पष्टीकरण और पूर्ण अर्थ) आदि को, जिनमें विरोध की कोई संभावना नहीं (जिनमें कोई फेरबदल नहीं), उन्हें कैसे पीछे छोड़ दें। अल्लाह रब्बुल आलमीन का शुक्र है कि हक़ तबारक व ताला ने इस फ़क़ीर को ऐसा संतोषजनक उत्तर सिखाया जो इंसाफ़ पसंद (बुद्धिमान व्यक्ति) के लिए पर्याप्त है (और यह उत्तर उसके सही मार्गदर्शन के लिए काफ़ी है) और पक्षपाती के लिए (जो अतिवाद की आग में सुलगता है और हठ व मनमानी की राह पर चलता है) इसमें असीम क्रोध है ("कह दो, अपने क्रोध में मर जाओ" 1. उन्हें क्रोध की आग में जलना मुबारक हो) (हम सुन्नी मुसलमानों के नज़दीक, हज़रत मौला अली का मानना) यही अली मुर्तज़ा की मोहब्बत है और यही उसका तक़ाज़ा भी है कि प्रिय का अनुसरण करें और उनके क्रोध और करोड़ों की लानत के हकदार होने से बचें (अल्लाह की पनाह)।

अल्लाह! अल्लाह! वह सच्चों के इमाम, औलिया और आरिफ़ों के कामिल, हमारे सरदार सिद्दीक़-ए-अकबर (रज़ियल्लाहु अन्हु), जिन्होंने हुज़ूर अकदस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की ताज़ीम और मोहब्बत को अपनी जान बचाने पर प्राथमिकता दी, जबकि जान बचाना सबसे महत्वपूर्ण फ़र्ज़ है। यदि चालाक दुश्मन आदि के ज़ुल्म के कारण नमाज़ पढ़ने में जान जाने का यकीन हो, तो उस समय नमाज़ छोड़ने की अनुमति होगी।

यही ताज़ीम, मोहब्बत, जाँनिसारी और शम-ए-रिसालत (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का परवाना होना है जिसने सिद्दीक़-ए-अकबर को अंबिया और रसूलों (अलैहिमुस्सलाम) के बाद पूरी दुनिया पर

श्रेष्ठता प्रदान की और उन्हें उनके बाद पूरे संसार, पूरी सृष्टि, तमाम औलिया और आरिफ़ों से श्रेष्ठ, प्रतिष्ठित, पूर्ण और महान बना दिया।

वह सिद्दीक़ जिसके बारे में हदीस में आया है कि अबू बक्र को कसरत से रोज़ा और नमाज़ की वजह से तुम पर श्रेष्ठता नहीं मिली...

---

1 अल-क़ुरआन अल-करीम 119/3

بر تقدیر ثبوت (بشر طیکہ ثابت و صحیح مان لی جائے) وغیرہ ذلک (احادیث و اخبار) سے انہیں آگاہی نہ تھی۔ (ہوش و حواس، علم و شعور اور فہم و فراست میں یگانہ روزگار ہوتے ہوئے ان اسرار درون خانہ سے بیگانہ رہے اور اسی بیگانگی میں عمریں گزار دیں) یا (انہیں آگاہی اور ان اسرار پر اطلاع) تھی تو وہ (ان واضح الدلالۃ الفاظ) کا مطلب نہ سمجھے (اور غیرت و شرم کے باعث اور کسی سے پوچھ نہ سکے۔) یا سمجھے۔ (حقیقت حال سے آگاہ ہوئے) اور اس میں تفضیل شیخین کا خلاف پایا (مگر خاموش رہے اور جمہور صحابہ کرام کے برخلاف عقیدہ رکھا زبان پر اس کا خلاف نہ آنے دیا اور حالانکہ یہ ان کی پاک جنابوں میں گستاخی اور ان پر تقیہ ملعونہ کی تہمت تراشی ہے) تو (اب ہم) کیونکر خلاف سمجھ لیں (کسے کہہ دیں کہ ان کے دل میں خلاف تھا زبان سے اقرار) اور تصریحات بینہ و قاطع الدلالتہ (روشن صراحتوں قطعی دلالتوں) وغیرہ محتملۃ الخلاف کو (جن میں کسی خلاف کا احتمال نہیں کوئی ہیر پھیر نہیں) کیسے پس پشت ڈال دیں الحمد للہ رب العلمین کہ حق تبارک و تعالی نے فقیر حقیر کو یہ ایسا جواب شافی تعلیم فرمایا کہ منصف (انصاف پسند ذی ہوش) کے لیے اس میں کفایت (اور یہ جواب اس کی صحیح رہنمائی و ہدایت کے لیے کافی) اور متعصب کو (کہ آتش غلو میں سُلگتا اور ضد و نفسانیت کی راہ چلتا ہے) اس میں غیظ بے نہایت ("قُلْ مُوتُوا بِغَيْظِكُمْ" ۱۔ انہیں آتش غضب میں جلنا مبارک) (ہم مسلمانان اہلسنت کے نزدیک، حضرت مولی کی ماننا) یہی محبت علی مرتضی ہے اور اس کا بھی (یہی تقاضا) یہی مقتضی ہے کہ محبوب کی اطاعت کیجئے اور اس کے غضب اور اسی کروڑوں کے استحقاق سے بچئے (والعیاذ باللہ)

اللہ ! اللہ وہ امام الصدیقین، اکمل اولیاء العارفین سید نا صدیق اکبر رضی اللہ تعالیٰ عنہ جس نے حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی تعظیم و محبت کو حفظ جان پر مقدم رکھا حالانکہ جان کا رکھنا سب سے زیادہ اہم فرض ہے۔ اگر بوجہ ظلم عدو مکار و غیرہ نماز پڑھنے میں معاذ اللہ ہلاک جان کا یقین ہو تو اس وقت ترک نماز کی اجازت ہوگی۔

یہی تعظیم و محبت و جاں نثاری و پروانہ واری شمع رسالت علیہ الصلوۃ والتحیۃ ہے جس نے صدیق اکبر کو بعد انبیاء و مرسلین صلی اللہ تعالیٰ علیہم اجمعین تمام جہان پر تفوق بخشا اور ان کے بعد تمام عالم، تمام خلق، تمام اولیاء تمام عرفاء سے افضل واکرم واکمل و اعظم کر دیا۔

وہ صدیق جس کی نسبت حدیث میں آیا کہ ابوبکر کو کثرت صوم و صلوۃ کی وجہ سے تم پر فضیلت نہ ہوئی

---

۱ القرآن الکریم ۱۱۹/۳

Fatawa Ridawiyya, Volume 29

...rather, because of the secret that is firmly rooted and established in his heart. (1)

That Siddiq (the truthful one) regarding whom it was stated: "If the faith of Abu Bakr were to be weighed against the faith of my entire Ummah, the faith of Abu Bakr would outweigh it." (2)

That Siddiq for whom their noble Master and supreme Lord (peace and blessings of Allah be upon him) said: "There is no one who has shown us such kindness for which we have not compensated him, except for Abu Bakr; for his kindness towards us is such that Allah Almighty will reward him for it on the Day of Resurrection." (3)

That Siddiq whose absolute excellence is attested by the speaking testimony of the Holy Quran, which says: "Indeed, the most noble of you in the sight of Allah is the most righteous (atqa) of you." (4) The most honorable among you in the presence of Allah is the one who is most 'Atqa' (God-fearing/pious) among you.

And in another blessed verse, it is clearly stated: "And the most righteous (Atqa) will be kept away from it (Hell)." (5) It is near that the 'Atqa' will be saved from Hell.

By the testimony of the first verse, these blessed verses refer to the one who is the most superior and noble of the blessed Ummah. According to the Ahl al-Sunnah, this is none other than Siddiq al-Akbar (Abu Bakr), whereas according to the Tafziliyyah and Rawafid (Shia), it refers to the Commander of the Faithful, Maula Ali (may Allah be pleased with him).

But praise be to Allah Almighty, for He left no room for anyone's deception, misrepresentation, or mixing of truth and falsehood. The blessed verse determined the 'Atqa' with such a specific attribute that it cannot apply to anyone except Hazrat Siddiq al-Akbar.

He says: "And no one has with him any favor to be compensated." (6) There is no such favor upon him from anyone for which a reward is given.

---

1. Kashf al-Khafa, Hadith 2226, Dar al-Kutub al-Ilmiyyah Beirut 2/170
2. Tarikh al-Khulafa, Section on what has been narrated from the words of the Companions, etc., Dar Sader Beirut p. 78; Shu'ab al-Iman Hadith 36, Dar al-Kutub al-Ilmiyyah Beirut 1/69

3. Jami' at-Tirmidhi, Chapters on Virtues, Chapter on Virtues of Abu Bakr as-Siddiq (R.A.), Amin Company Delhi 2/207
4. Al-Quran al-Karim 49/13
5. Al-Quran al-Karim 92/17
6. Al-Quran al-Karim 92/19

फ़तावा रज़विया, खंड 29

...बल्कि उस राज के कारण जो उनके दिल में दृढ़ और स्थापित है। (1)

वह सिद्दीक़ जिनके बारे में कहा गया: "अगर अबू बक्र के ईमान को मेरी पूरी उम्मत के ईमान के साथ तोला जाए, तो अबू बक्र का ईमान भारी पड़ेगा।" (2)

वह सिद्दीक़ जिनके लिए उनके नेक आका और महान स्वामी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया: "किसी ने हमारे साथ ऐसा कोई सुलूक नहीं किया जिसका हमने बदला न दिया हो, सिवाय अबू बक्र के, क्योंकि उनका हमारे साथ वह नेक व्यवहार है जिसका बदला अल्लाह तआला उन्हें कयामत के दिन देगा।" (3)

वह सिद्दीक़ जिनकी पूर्ण श्रेष्ठता पर कुरान करीम की स्पष्ट गवाही है: "بیشک، اللہ کے نزدیک تم میں سب سے زیادہ عزت والا وہ ہے جو تم میں سب سے زیادہ متقی (اتقی) ہے۔" (4) तुम में सबसे ज़्यादा सम्माननीय अल्लाह के यहाँ वह है जो तुम सब में अतक़ा है।

और दूसरी आयत-ए-करीमा में साफ़ फरमा दिया: "(5) "الۡاَتۡقٰی ۙ وَسَیُجَنَّبُهَا करीब है कि जहन्नुम से वह अतक़ा बचा लिया जाए।

पहली आयत की गवाही से इन आयतों का अर्थ वही है जो उम्मत-ए-मरहूमा में सबसे अफजल और अकरम है। अहले सुन्नत के नज़दीक वह सिद्दीक़-ए-अकबर हैं, जबकि तफ़ज़ीलीय्या और रवाफ़िज़ (शिया) के नज़दीक यहाँ अमीरुल मोमिनीन मौला अली (रज़ियल्लाहु अन्हु) मुराद हैं।

मगर अल्लाह अज़्ज़-व-जल्ल की हम्द है कि उसने किसी के धोखे, फ़रेब और हक व बातिल के मिश्रण की कोई गुंजाइश नहीं छोड़ी। आयत-ए-करीमा ने 'अतक़ा' की पहचान एक ऐसी विशेष खूबी के साथ कर दी जो हज़रत सिद्दीक़-ए-अकबर के अलावा किसी और पर लागू ही नहीं हो सकती।

अल्लाह फरमाता है: "(6) "وَمَا لِاَحَدٍ عِنۡدَهٗ مِنۡ نِّعۡمَةٍ تُجۡزٰۤی इस पर किसी का ऐसा अहसान नहीं जिसका बदला दिया जाए।

---

1. कश्फ़ अल-ख़फ़ा हदीस 2226 दार अल-कुतुब अल-इल्मिया बेरूत 2/170
2. तारीखुल खुलफ़ा, दार सादिर बेरूत पृष्ठ 78; शुअ़बुल ईमान हदीस 36, दार अल-कुतुब अल-इल्मिया बेरूत 1/69

3. जामिअ् अत-तिर्मिज़ी, अबवाबुल मनाक़िब, बाबू मनाक़िबि अबी बक्र अस्सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु, अमीन कंपनी दिल्ली 2/207
4. अल-कुरान अल-करीम 49/13
5. अल-कुरान अल-करीम 92/17
6. अल-कुरान अल-करीम 92/19

पृष्ठ 372/750

بلکہ اس سر کے سبب جو اس کے دل میں راسخ و متمکن ہے۔1

وہ صدیق جس کی نسبت ارشاد ہوا، اگر ابوبکر کا ایمان میری تمام امت کے ایمان کے ساتھ وزن کیا جائے تو ابوبکر کا ایمان غالب آئے۔2

وہ صدیق کہ خود ان کے مولائے اکرم و آقائے اعظم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے فرمایا، کسی کا ہمارے ساتھ کوئی ایسا سلوک نہیں ہے جس کا ہم نے عوض نہ کردیا ہو سوا ابوبکر کے، کہ ان کا ہمارے ساتھ وہ حسن سلوک ہے جس کا بدلہ اللہ تعالٰی انہیں روزِ قیامت دے گا۔3

وہ صدیق جس کی فضیلت مطلقہ پر قرآن کریم کی شہادت ناطقہ ہے کہ فرمایا: "اِنَّ اَکْرَمَکُمْ عِنْدَ اللّٰہِ اَتْقٰیکُمْ"۔4 تم میں سب سے زیادہ عزت والا اللہ کے حضور وہ ہے جو تم سب میں اتقی ہے۔

اور دوسری آیتِ کریمہ میں صاف فرمادیا "وَسَیُجَنَّبُھَا الْاَتْقَی"۔5 قریب ہے کہ جہنم سے بچایا جائے گا وہ اتقی۔

بشہادت آیتِ اولٰی ان آیاتِ کریمہ سے وہی مراد ہے جو افضل و اکرم امتِ مرحومہ ہے، اور وہ نہیں مگر اہلِ سنت کے نزدیک صدیقِ اکبر، اور تفضیلیہ و روافض کے نزدیک یہاں امیر المومنین مولٰی علی رضی اللہ تعالٰی عنہ۔

مگر اللہ عزوجل کے لیے حمد کہ اس نے کسی کی تلبیس و تدلیس اور حق و باطل میں آمیزش و آویزش کو جگہ نہ چھوڑی، آیتِ کریمہ نے ایسے وصفِ خاص سے اتقی کی تعین فرمادی جو حضرت صدیقِ اکبر کے سوا کسی پر صادق آہی نہیں سکتا۔

فرماتا ہے: "وَمَا لِاَحَدٍ عِنْدَهٗ مِنْ نِّعْمَةٍ تُجْزٰى"-6 اس پر کسی کا ایسا احسان نہیں جس کا بدلہ دیا جائے۔

---

1 کشف الخفا حدیث ۲۲۲۶ دار الکتب العلمیہ بیروت ۲/ ۱۷۰ 2 تاریخ الخلفاء فصل فیما ورد من کلام الصحابۃ الخ دار صادر بیروت ص ۷۸، شعب الایمان حدیث ۳۶ دار الکتب العلمیہ بیروت ۱/ ۶۹ 3 جامع الترمذی ابواب المناقب باب مناقب ابی بکر الصدیق رضی اللہ عنہ امین کمپنی دہلی ۲/ ۲۰۷ 4 القرآن الکریم ۴۹/ ۱۳ 5 القرآن الکریم ۹۲/ ۱۷ 6 القرآن الکریم ۹۲/ ۱۹

Fatawa Rizvia, Volume 29.

And the world knows and acknowledges that it is only Siddiq-e-Akbar, who has always shown servitude, slavery, and devotion, and from Mustafa (peace and blessings of Allah be upon him), as a matter of grace towards his servant, there has been a treatment of acceptance and hospitality. Even he himself stated: "Indeed, among all people, no one has treated me with their life and wealth as Abu Bakr did." While Mawla Ali was brought up in the holy lap of the Master of All, the Leader of the Messengers (peace and blessings of Allah be upon him), he regained consciousness in the lap of the Holy Prophet, and whatever he received apparently was from here. Therefore, the noble verse: "And no one has any favor from him to be repaid" (92:19) cannot mean Mawla Ali at all, but rather Siddiq-e-Akbar is certainly intended, and on this, the consensus of the commentators exists. That Siddiq whom the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) appointed as the leader of the pilgrims (Amir al-Hajj) in the very first year after the obligation of Hajj, and appointed him as the Imam in his place during his final illness. Hadrat Mawla Ali Murtada (may Allah be pleased with him) stated: "After the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him), when we deliberated (we reached the conclusion) that prayer is a pillar of Islam and the establishment of the religion depends on it. Therefore, we expressed our satisfaction for him to carry out the affairs of the Caliphate, whom the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) had liked for our religion. That is why we gave our pledge of allegiance to Abu Bakr." And Farooq-e-Azam (may Allah be pleased with him) is Farooq-e-Azam, for whom the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) prayed: "O Allah, strengthen Islam specifically through Umar ibn al-Khattab." O Lord! increase the honors of Islam through the conversion of Umar ibn al-Khattab. Due to this noble prayer, whatever honors Islam received through Umar Farooq-e-Azam, and whatever calamities were averted from Islam and Muslims, are clear and evident to all, opponents and supporters alike. Hence, our master Abdullah ibn Mas'ood (may Allah be pleased with him) said...

[1] Jami' at-Tirmidhi, Chapters of Virtues, Chapter on the Virtues of Abu Bakr al-Siddiq, Amin Company Delhi, 2/207. [2] The Holy Quran, 92:19. [3] Al-Sawa'iq al-Muhriqah, First Section, Fourth Chapter, Dar al-Kutub al-Ilmiyah Beirut, p. 43. [4] Sunan Ibn Majah, Virtue of Umar (may Allah be pleased with him), H.M. Saeed Company Karachi p. 11; Al-Mustadrak al-Hakim, Book of Knowing the Companions, Dar al-Fikr Beirut, 3/83.

फ़तावा-ए-रज़विया, खंड 29.

और दुनिया जानती और मानती है कि वे केवल सिद्दीक़-ए-अकबर ही हैं जिनकी ओर से सदैव दासता, गुलामी और विनम्रता रही है, और मुस्तफ़ा (अल्लाह उन पर कृपा और शांति बनाए रखे) की ओर से सेवक-सत्कार और स्वीकार्यता का व्यवहार रहा है। यहाँ तक कि स्वयं उन्होंने (पैगंबर ने) फरमाया: "निस्संदेह, सभी लोगों में से किसी ने भी अपनी जान और माल से मेरे साथ वैसा व्यवहार नहीं किया जैसा अबू बक्र ने किया।" जबकि मौला अली ने 'मौला-ए-कुल', 'सय्यिद-उर-रुरुल' (अल्लाह उन पर कृपा और शांति बनाए रखे) के पवित्र आगोश में परवरिश पाई, हुज़ूर की गोद में होश संभाला, और जो कुछ भी प्रत्यक्ष रूप से पाया यहीं से पाया, तो पवित्र आयत: "और किसी का उस पर कोई ऐसा उपकार नहीं है जिसका बदला दिया जाना हो" (92:19) से मौला अली कतई मुराद नहीं हो सकते, बल्कि निश्चित रूप से सिद्दीक़-ए-अकबर ही अभीष्ट हैं, और इस पर टिप्पणीकारों (मुफस्सिरीन) का आम सहमति (इज्मा) मौजूद है। वह सिद्दीक़ जिन्हें हुज़ूर (अल्लाह उन पर कृपा और शांति बनाए रखे) ने हज के अनिवार्य होने के बाद पहले ही साल में 'अमीर-उल-हज्जाज' नियुक्त किया और अपनी अंतिम बीमारी के दौरान अपनी जगह इमाम नियुक्त किया। हज़रत मौला अली मुर्तज़ा (अल्लाह उनके चेहरे को सम्मानित करे) का कथन है कि नबी करीम (अल्लाह उन पर कृपा और शांति बनाए रखे) के बाद जब हमने विचार किया (तो इस नतीजे पर पहुँचे) कि नमाज़ तो इस्लाम का स्तंभ है और उसी पर धर्म की स्थापना टिकी है, इसलिए हमने खिलाफत के मामलों को पूरा करने के लिए भी उन पर अपनी रज़ामंदी ज़ाहिर कर दी, जिन्हें रसूलुल्लाह (अल्लाह उन पर कृपा और शांति बनाए रखे) ने हमारे धर्म के लिए पसंद किया था, और इसीलिए हमने अबू बक्र की बैअत (निष्ठा की शपथ) कर ली। और फ़ारूक-ए-आज़म तो फ़ारूक-ए-आज़म हैं (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो), वह फ़ारूक जिनके लिए रसूलुल्लाह (अल्लाह उन पर कृपा और शांति बनाए रखे) ने दुआ मांगी कि: "ऐ अल्लाह! उमर बिन खत्ताब के विशेष रूप से इस्लाम लाने से इस्लाम की इज़्ज़त बढ़ा।" ऐ प्रभु! उमर बिन खत्ताब के इस्लाम के माध्यम से इस्लाम का सम्मान बढ़ा। इस नेक दुआ के कारण उमर फ़ारूक-ए-आज़म के माध्यम से जो-जो सम्मान इस्लाम को मिले, जो-जो विपत्तियाँ इस्लाम और मुसलमानों से दूर हुईं, वे विरोधियों और समर्थकों दोनों के लिए स्पष्ट और ज़ाहिर हैं, और इसीलिए हमारे स्वामी अब्दुल्ला बिन मसूद (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) ने कहा...

[1] जामे अत-तिरमिज़ी, अबवाब अल-मनाकिब, अबू बक्र अल-सिद्दीक के गुणों का अध्याय, अमीन कंपनी दिल्ली, 2/207। [2] पवित्र कुरान 92/19। [3] अस-सवाइक अल-मुहरिक़ा, पहला खंड, चौथा

अध्याय, दार अल-कुतुब अल-इल्मिया बेरूत, पृष्ठ 43। [4] सुनन इब्न माजाह, उमर की फज़ीलत, एच.एम. सईद कंपनी कराची पृ. 11; अल-मुस्तदरक अल-हाकिम, किताब मारिफत-उस-सहाबा, दार अल-फ़िक्र बेरूत 3/83।

اور دنیا جانتی مانتی ہے کہ وہ صرف صدیق اکبر ہی ہیں جن کی طرف سے ہمیشہ بندگی و غلامی و نیاز مندی اور مصطفیٰ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی طرف سے براہِ بندہ نوازی قبول و پذیرائی کا برتاؤ رہا یہاں تک کہ خود ارشاد فرمایا کہ : بے شک تمام آدمیوں میں اپنی جان و مال سے کسی نے ایسا سلوک نہیں کیا جیسا ابوبکر نے کیا۔ جب کہ مولیٰ علی نے مولائے کل، سید الرسل صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے کنارِ اقدس میں پرورش پائی، حضور کی گود میں ہوش سنبھالا، اور جو کچھ پایا بظاہر حالات یہیں سے پایا، تو آیتِ کریمہ "وَمَا لِأَحَدٍ عِنْدَهُ مِنْ نِّعْمَةٍ تُجْزٰى" (اس پر کسی کا ایسا احسان نہیں جس کا بدلہ دیا جائے) سے مولا علی قطعاً مراد نہیں ہو سکتے بلکہ بالیقین صدیق اکبر ہی مقصود ہیں، اور اسی پر اجماعِ مفسرین موجود۔ وہ صدیق جنہیں حضور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرضیتِ حج کے بعد پہلے ہی سال میں امیر الحجاج مقرر فرمایا اور انہیں کو اپنے سامنے اپنے مرضِ الموت شریف میں اپنی جگہ امام مقرر فرمایا۔ حضرت مولیٰ علی مرتضیٰ کرم اللہ تعالیٰ وجہہ کا ارشاد ہے کہ نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے بعد جب ہم نے غور کیا (تو اس نتیجہ پر پہنچے) کہ نماز تو اسلام کا رکن ہے اور اسی پر دین کا قیام ہے اس لیے ہم نے امورِ خلافت کی انجام دہی کے لیے بھی اس پر رضا مندی ظاہر کردی، جسے رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے ہمارے دین کے لیے پسند فرمایا تھا، اور اسی لیے ہم نے ابوبکر کی بیعت کرلی۔ اور فاروقِ اعظم تو فاروقِ اعظم ہیں رضی اللہ تعالیٰ عنہ، وہ فاروق جن کے لیے رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے دعا مانگی کہ: اَللّٰھُمَّ اَعِزَّ الْاِسْلَامَ بِعُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ خَاصَّةً ۔ الہی! اسلام کی خاص عمر بن خطاب کے اسلام سے عزتیں بڑھا۔ اس دعائے کریم کے باعث عمر فاروقِ اعظم کے

ذریعہ سے جو جو عزتیں اسلام کو ملیں، جو جو بلائیں اسلام و مسلمین سے دفع ہوئیں مخالف موافق سب پر روشن و مبین ، و لہذا سید نا عبد اللہ بن مسعود رضی اللہ تعالیٰ عنہ۔

[1] جامع الترمذی ابواب المناقب باب مناقب ابی بکر الصدیق رضی اللہ عنہ امین کمپنی دہلی ۲/ ۲۰۷ [2] القرآن الکریم ۹۲/ ۱۹ [3] الصواعق المحرقة الباب الاول الفضل الرابع دار الکتب العلمیة بیروت ص ۴۳ [4] سنن ابن ماجہ فضل عمر رضی اللہ عنہ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ص ۱۱، المستدرک للحاکم کتاب معرفة الصحابة دار الفکر بیروت ۳/ ۸۳

Fatawa Razawiyya Volume 29

It is stated that: "Ma zalna a'izzatan mundhu aslama" (1). (Bukhari) We have always been honorable since 'Umar embraced Islam. That Farooq regarding whom the Seal of the Prophets, peace and blessings of Allah be upon him, said: "If there were to be a prophet after me, it would have been 'Umar." (2) (May Allah be pleased with him) (That is, your nature was so perfect that if the door of prophethood were not closed, you could have become a prophet purely by divine grace, for no one is deserving of prophethood in their own right.) That Farooq about whom the statement of the Beloved of the Lord of the worlds exists: "Wherever 'Umar may be, the truth will be in his company." (3) That Farooq for whom there is a consensus among the noble companions that 'Umar took away nine parts of knowledge (4), while Abu Bakr Siddiq was the most knowledgeable among the companions. That Farooq through whose path he passes, the hearts of the devils would tremble. (5) That Farooq that when he embraced Islam, the angels of the Supreme Assembly presented bouquets of congratulations and blessings in the presence of the Messenger of Allah, peace and blessings of Allah be upon him and his family. (6) That Farooq, since the day of whose Islam, Islam has always found honor and eminence. His Islam was a victory, his migration was help, and his caliphate was a mercy (may Allah be pleased with him). And when it has been proven that in proximity to Allah (in gnosis and abundance of reward), the two Sheikhs (Abu Bakr and Umar), may Allah be pleased with them both, have superiority and...

---

1 Sahih al-Bukhari, Book of the Virtues of the Companions of the Prophet (PBUH), Virtues of Umar bin al-Khattab (RA), Qadimi Kutub Khana Karachi 1/520. 2 Jami' al-Tirmidhi, Chapters of Virtues, Virtues of Umar bin al-Khattab (RA), Amin Company Delhi 2/209; Al-Mustadrak al-Hakim, Book of Knowing the Companions, Dar al-Fikr Beirut 3/83. 3 Kanz al-Ummal, Hadith 35732 and 32715, Mu'assasah al-Risalah Beirut 11/573 and 577. 4 Tarikh al-Khulafa, Mention of Umar bin al-Khattab, Chapter on the statements of the Companions regarding him, Dar Ibn Hazm Beirut p. 98. 5 Sahih al-Bukhari, Virtues of Umar Farooq (RA), Qadimi Kutub Khana Karachi 1/520. 6 Kanz al-Ummal, Hadith 32738, Mu'assasah al-Risalah Beirut 11/577.

फ़तावा रज़विया जिल्द २९

वे फ़रमाते हैं कि: मा ज़ल्ना अइज़्ज़तन मुनज़ु अस्लमा १। (बुखारी) जब से उमर इस्लाम लाए, हम हमेशा सम्मानित रहे। वह फ़ारूक़ जिनके बारे में खातमुन नबिय्यीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि: "अगर मेरे बाद कोई नबी होता तो उमर होता।" २। (रज़ियल्लाहु अन्हु) (अर्थात आपकी फितरत इतनी पूर्ण थी कि यदि नुबुव्वत का द्वार बंद न होता, तो विशुद्ध ईश्वरीय कृपा से वे नबी हो सकते थे, क्योंकि अपनी जात के लिहाज़ से कोई भी नुबुव्वत का पात्र नहीं है।) वह फ़ारूक़ जिनके बारे में रब्बुल आलमीन के महबूब का इरशाद मौजूद है कि: "उमर जहाँ कहीं भी हो, सत्य उसकी संगति में रहेगा।" ३। वह फ़ारूक़ जिनके लिए सहाबा किराम का इज्मा (आम सहमति) है कि उमर इल्म के नौ हिस्से ले गए ४। जबकि अबू बक्र सिद्दीक़ सहाबा में सबसे अधिक इल्म वाले थे। वह फ़ारूक़ कि जिस रास्ते से वे गुजरें, शैतानों के दिल दहल जाएं ५। वह फ़ारूक़ कि जब वे इस्लाम लाए, तो मला-ए-आला (ऊपरी लोक) के फ़रिश्तों ने हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वआलिहि वसल्लम की बारगाह में बधाई और शुभकामनाओं की डालियाँ (गुलदस्ते) नज़राने के रूप में पेश कीं ६। वह फ़ारूक़ कि उनके इस्लाम लाने के दिन से इस्लाम हमेशा सम्मान और बुलंदियाँ ही पाता गया। उनका इस्लाम एक विजय थी, उनका हिजरत (प्रवास) मदद थी और उनकी खिलाफत रहमत थी (रज़ियल्लाहु अन्हु)। और जब यह साबित हो गया कि अल्लाह की निकटता (मारिफ़त और सवाब की बहुतायत) में शैखैन (अबू बक्र और उमर) रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा को श्रेष्ठता और...

---

१ सहीह अल-बुखारी, किताब मुनाकिब असहाबुन नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम, मुनाकिब उमर बिन खत्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु, कदीमी कुतुब खाना कराची १/५२०। २ जामिअ अत्तर्मिज़ी, अबवाबुल मुनाकिब, मुनाकिब उमर बिन खत्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु, अमीन कंपनी दिल्ली २/२०९; अल-मुस्तदरक लिल-हाकिम, किताब मारिफ़तुस सहाबा, दारुल फिक्र बेरुत ३/८३। ३ कंज़ुल उम्माल, हदीस ३५७३२ और ३२७१५, मुअस्ससतु ररिसाला बेरुत ११/५७३ और ५७७। ४ तारीख़ुल खुलफ़ा, ज़िक्र उमर बिन खत्ताब, फ़स्ल फ़ी अक़्वालुस सहाबा फ़ीहि, दार इब्न हज़म बेरुत पृष्ठ ९८। ५ सहीह अल-बुखारी, मुनाकिब उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु, कदीमी कुतुब खाना कराची १/५२०। ६ कंज़ुल उम्माल, हदीस ३२७३८, मुअस्ससतु ररिसाला बेरुत ११/५७७।

पृष्ठ ३७४ / ७५०

فرماتے ہیں کہ : مازلنا اعزۃ منذ اسلم ۱۔ (بخاری) ہم ہمیشہ معزز رہے جب سے عمر اسلام لائے۔ وہ فاروق جن کے حق میں خاتم النبیین صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے ارشاد فرمایا کہ : اگر میرے بعد کوئی نبی ہوتا تو عمر ہوتا ۲۔ (رضی اللہ عنہ) یعنی آپ کی فطرت اتنی کاملہ تھی کہ اگر دروازہ نبوت بند نہ ہوتا تو محض فضل الہی سے وہ نبی ہو سکتے تھے کہ اپنی ذات کے اعتبار سے نبوت کا کوئی مستحق نہیں) وہ فاروق جن کے بارے میں ارشاد محبوب رب العالمین موجود کہ : عمر کہیں ہو حق اس کی رفاقت میں رہے گا ۳۔ وہ فاروق جن کے لیے صحابہ کرام کا اجماع کہ عمر علم کے نو حصے لے گئے ۴۔ جب کہ ابوبکر صدیق صحابہ میں سب سے زیادہ علم والے تھے۔ وہ فاروق کہ جس راہ سے وہ گزر جائیں شیاطین کے دل دہل جائیں ۵۔ وہ فاروق کہ جب وہ اسلام لائے ملاء اعلیٰ کے فرشتوں نے حضور صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم کی بارگاہ میں تہنیت و مبارکبادیوں کی ڈالیاں نذرانے میں پیش کیں ۶۔ وہ فاروق کہ ان کے روز اسلام سے اسلام ہمیشہ عزتیں اور سربلندیاں ہی پاتا گیا۔ ان کا اسلام فتح تھا ان کی ہجرت نصرت اور ان کی خلافت رحمت (رضی اللہ عنہ) اور جب ثابت ہو گیا کہ قرب الہی (معرفت و کثرت ثواب میں) شیخین رضی اللہ تعالیٰ عنہما کو مزیت و

---

۱ صحیح البخاری کتاب مناقب اصحاب النبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم مناقب عمر بن خطاب رضی اللہ عنہ قدیمی کتب خانہ کراچی ۱ / ۵۲۰ ۲ جامع الترمذی ابواب المناقب مناقب عمر بن خطاب رضی اللہ عنہ امین کمپنی دہلی ۲/ ۲۰۹، المستدرک للحاکم کتاب معرفۃ الصحابۃ دارالفکر بیروت ۳/ ۸۳ ۳ کنزالعمال حدیث ۳۵۷۳۲ اور ۳۲۷۱۵ مؤسسۃ الرسالہ بیروت ۱۱ / ۵۷۳ و ۵۷۷ ۴ تاریخ الخلفاء ذکر عمر بن الخطاب فصل فی اقوال الصحابۃ فیہ دار ابن حزم بیروت ص ۹۸ ۵ صحیح

البخاری مناقب عمر فاروق رضی اللہ عنہ قدیمی کتب خانہ کراچی ۱ / ۵۲۰ ۶ کنزالعمال حدیث ۳۲۷۳۸ مؤسسۃ الرسالہ بیروت ۱۱ / ۵۷۷

Fatawa Razawiya Volume 29

If there is superiority (increase and preeminence), then Wilayat (a special type of sainthood which is a particular closeness that the Lord Almighty bestows upon His chosen servants purely through His grace and bounty) is also theirs at the highest level (and the Wilayat of the Shaykhayn, above the Wilayat of all the great saints).

(Yes) but one level of proximity to Allah (Exalted be His Majesty, and may Allah provide for us) is essential to consider and especially deserves the attention of the scholars and the virtuous ones of the Ummah; and it is this: that at the stage of completion, the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) established the Shaykhayn towards the perfections of Prophethood, and Hazrat Maula Ali, the solver of difficulties, towards the perfections of Wilayat. Thus, all subsequent saints received the bounty from the house of Maula Ali alone; they were dependent on him, are dependent on him, and will remain dependent on him.

But it is apparent that in 'Sayr il-Allah' (journey towards Allah), all saints are equal, and there, like the verse "We make no distinction between any of His messengers" (1), it is said "We make no distinction between any of His saints" (meaning all the saints of Allah are equal in the original path of Wilayat, i.e., Sayr il-Allah. And the statement of precedence and excellence is made with respect to 'Sayr fi-Allah' (journey in Allah), which begins after the seeker reaches the realm of 'Lahut' [Divinity]. When the journey and spiritual conduct are complete, i.e., after the completion of Sayr il-Allah, Sayr fi-Allah occurs, and there is no ultimate limit to it). When (reaching the realm of Lahut) everything besides the Divine falls from the sight and, reaching the state of 'Fana' (annihilation), one steps forward, that is Sayr fi-Allah. There is no end to it, and here the difference in proximity (the difference in honor, status, and abundance of reward in the presence of the Lord) becomes manifest. He whose Sayr fi-Allah is greater is closer to God. Then some continue to advance (and Divine attraction keeps pulling them towards Himself; this journey of theirs never ends), and to some, He bestows the station of 'Nasut' (Humanity) for the purpose of 'Dawat-e-Khalq' (guiding the creation of Allah) (which is also called the world of witness, the world of creation, and the physical world, etc. In this station, alongside the connection with Allah, a relationship with the creation is developed in them, and they also remain attentive toward the guidance of God's creation). Through them, the custom of 'Khirqa' (sufi cloak) and 'Bay'at' (oath of allegiance) becomes prevalent, and the Sufi order (Silsila Tariqat) comes into motion. However, this meaning does not necessitate (and it does not follow from this) that their Sayr fi-Allah exceeds those

who preceded them. (And this is because of the invitation to the creation and guidance of the people).

1. The Holy Quran 2 / 285

फ़तावा रज़विया खण्ड २९

यदि श्रेष्ठता (आधिक्य और उत्कृष्टता) है तो विलायत (विशेष सामीप्य जो अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त अपने चुनिंदा बंदों को मात्र अपने फ़ज़्ल व करम से अता फरमाता है) भी उन्हीं की आला हुई (और शैख़ैन की विलायत, समस्त बड़े औलिया की विलायत से ऊपर है)।

(हाँ) लेकिन अल्लाह जल्ल जलालुहू के कुर्ब (सामीप्य) का एक दर्जा (जिसका लिहाज़ ज़रूरी है और विशेष रूप से उम्मत के विद्वानों और गुणी जनों के ध्यान का हक़दार है) यह है कि पूर्णता के मर्तबे पर हुज़ूर अकदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने नबुव्वत के कमालात की जानिब हज़रात-ए-शैख़ैन को कायम फ़रमाया, और विलायत के कमालात की जानिब हज़रात-ए-मौला अली मुश्किल कुशा को, तो बाद के तमाम औलिया ने मौला अली ही के घर से नेमत पाई, उन्हीं के दस्त-ए-नगर (आश्रित) थे, उन्हीं के दस्त-ए-नगर हैं और उन्हीं के दस्त-ए-नगर रहेंगे।

पर ज़ाहिर है कि 'सैर इलल्लाह' (अल्लाह की ओर यात्रा) में तो सब औलिया बराबर होते हैं और वहाँ "ला नुफ़र्रिकु बयना अहदिम-मिर रुसुलिह" १ (हम उसके किसी रसूल पर ईमान लाने में फर्क नहीं करते) की तरह 'ला नुफ़र्रिकु बयना अहदिम-मिन औलियाइह' (हम उसके दोस्तों में कोई भेद नहीं करते) कहा जाता है (यानी तमाम औलिया अल्लाह असल तरीक-ए-विलायत यानी सैर इलल्लाह में बराबर होते हैं। और एक दूसरे पर सबक़त (अग्रता) और फज़ीलत का कौल 'सैर फ़िल्लाह' (अल्लाह में यात्रा) के एतबार से किया जाता है कि जब सालिक (पथिक) आलम-ए-लाहूत पर पहुँचा, सैर व सुलूक पूरा हुआ, यानी सैर इलल्लाह से फ़राग़त के बाद सैर फ़िल्लाह होती है और उसकी कोई सीमा नहीं है)। जब (आलम-ए-लाहूत पर पहुँच कर) अल्लाह के सिवा सब नज़रों से गिर गया और मर्तबा-ए-फ़ना तक पहुँच कर आगे कदम बढ़ा तो वह सैर फ़िल्लाह है। उसके लिए कोई अंत नहीं है और यहीं कुर्ब का अंतर (अल्लाह की बारगाह में इज़्ज़त व मंज़िलत और सवाब की अधिकता में अंतर) प्रकट होता है। जिसकी सैर फ़िल्लाह ज़्यादा वही खुदा से ज़्यादा नज़दीक, फिर कुछ बढ़ते चले जाते हैं (और जज़्ब-ए-इलाही उन्हें अपनी ओर खींचता रहता है उनकी यह सैर कभी खत्म नहीं होती) और कुछ को 'दावत-ए-ख़ल्क़' (अल्लाह की मख़्लूक के मार्गदर्शन) के लिए मंज़िल-ए-नासूती अता फरमाते हैं (जिसे आलम-ए-शहादत, आलम-ए-ख़ल्क़ और आलम-ए-जिस्मानी वगैरह भी कहते हैं। और इस मंज़िल में अल्लाह के साथ ताल्लुक के साथ उनमें मख़्लूक से भी संबंध पैदा कर दिया जाता है और वे खुदा की मख़्लूक के मार्गदर्शन की ओर भी ध्यान देते हैं)। उनसे 'ख़िरक़ा' और 'बैअत' का रिवाज चलता है और सिलसिला-ए-तरीकत हरकत में आता है मगर यह अर्थ इसे ज़रूरी नहीं बनाता (और

इससे यह आवश्यक नहीं होता) कि उनकी सैर फ़िल्लाह पूर्वजों से बढ़ जाए। (और यह दावत-ए-ख़ल्क़ और मख़्लूक के मार्गदर्शन के कारण है)।

1. अल-कुरान अल-करीम २ / २८५

पृष्ठ ३७५/७५०

تفوق (زیادت و فوقیت) ہے تو ولایت (خاصہ جو کہ ایک قُربِ خاص ہے کہ مولیٰ عزوجل اپنے برگزیدہ بندوں کو محض اپنے فضل و کرم سے عطا فرماتا ہے یہ) بھی انہیں کی اعلیٰ ہوئی (اور ولایتِ شیخین، جملہ اکابر اولیاء کی ولایت سے بالا)

(ہاں) مگر ایک درجہ قُرب الہی جل جلالہ و رزقنا اللہ کا (ضروری اللحاظ اور خصوصاً حضرات علماء و فضلاء اُمت کی توجہ کا مستحق ہے اور وہ یہ ہے کہ مرتبہ تکمیل پر حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے جانبِ کمالاتِ نبوت حضراتِ شیخین کو قائم فرمایا، اور جانب کمالاتِ ولایت حضرت مولا علی مشکل کشا کو تو جملہ اولیاء ما بعد نے مولیٰ علی ہی کے گھر سے نعمت پائی، انہیں کے دست نگر تھے، انہیں کے دست نگر ہیں اور انہیں کے دست نگر رہیں گے)

پر ظاہر ہے کہ سیر الی اللہ میں تو سب اولیاء برابر ہوتے ہیں اور وہاں "لَا نُفَرِّقُ بَیْنَ اَحَدٍ مِّنْ رُّسُلِہٖ" 1- (ہم اس کے کسی رسول پر ایمان لانے میں فرق نہیں کرتے) کی طرح لا نفرق بین احدٍ من اولیاء ہ (ہم اس کے دوستوں میں کوئی تفریق نہیں کرتے) کہا جاتا ہے (یعنی تمام اولیاء اللہ اصل طریق ولایت یعنی سیر الی اللہ میں برابر ہوتے ہیں۔ اور ایک دوسرے پر سبقت و فضیلت کا قول باعتبار سیر فی اللہ کیا جاتا ہے کہ جب سالک عالم لاہوت پر پہنچا۔ سیر و سلوک تمام ہوا، یعنی سیر الی اللہ سے فراغت کے بعد سیر فی اللہ ہوتی ہے اور اس کی نہایت وحد نہیں) جب (عالم لاہوت پر پہنچ کر) ماسوائے الہی آنکھوں سے گر گیا اور مرتبہ فنا تک پہنچ کر آگے قدم بڑھا تو وہ سیر فی اللہ ہے اس کے لیے انتہا نہیں اور یہیں تفاوتِ قرب (بارگاہِ الہی میں عزت و منزلت اور کثرتِ ثواب میں فرق) جلوہ گر ہوتا ہے جس کی سیر فی اللہ زائد وہی خدا سے زیادہ نزدیک، پھر بعضے بڑھتے چلے جاتے ہیں (اور جذب الہی انہیں اپنی جانب کھینچتا رہتا ہے ان کی یہ سیر کبھی ختم

نہیں ہوتی) اور بعض کو دعوتِ خلق (ور ہنمائی مخلوقِ الہی) کے لیے منزلِ ناسوتی عطا فرماتے ہیں (جسے عالم شہادت و عالم خلق و عالم جسمانی وغیرہ بھی کہتے ہیں۔ اور اس منزل میں تعلق مع اللہ کے ساتھ ان میں خلائق سے علاقہ پیدا کر دیا جاتا ہے اور وہ خلق خدا کی ہدایت کی طرف بھی متوجہ رہتے ہیں) ان سے طریقہ خرقہ و بیعت کا رواج پاتا ہے اور سلسلہ طریقت جنبش میں آتا ہے مگر یہ معنی اسے مستلزم نہیں (اور اس سے یہ لازم نہیں آتا) ان کی سیر فی اللہ اگلوں سے بڑھ جائے۔ (اور یہ دعوتِ خلق و رہنمائی مخلوق کے باعث)

1 القرآن الکریم ۲ / ۲۸۵

Fatawa Razawiyya Volume 29 (May they find more honor, position, and abundance in reward from the Divine Court than them.) Yes, this is a distinct favor that they received and others were not granted, so what of it? (And why this specificity?) Apart from this, hundreds of specific attributes were given to Hazrat Mawla (Ali) that the Shaikhain (Abu Bakr and Umar) did not receive. However, in (the Divine Court) proximity and elevation of ranks, they (the Shaikhain) remained superior (they received the distinction and their steps remained ahead). Otherwise, what is the reason that in the aforementioned statements, they are called superior and better than him (and that too absolutely, without any restriction of aspect or status)? And his (i.e., Hazrat Mawla Ali Murtaza, may Allah honor his face) superiority (and the preference of those personages over him) is denied with the utmost emphasis (confirmed upon confirmation), even though a lower saint (wali) cannot be superior to a higher saint. Finally, look at the noble successors of Hazrat Amir (Mawla Ali, may Allah honor his face); Hazrat Sabt-e-Asghar (Syedna Imam Hussain) and Janab Khwaja Hasan Basri received the spiritual descent, and no chain continued from Hazrat Sabt-e-Akbar (Syedna Imam Hasan, may Allah be pleased with him), even though the proximity of sainthood (wilayat) of Imam Mujtaba (Syedna Imam Hasan, may Allah be pleased with him) is certainly more complete and higher (superior and loftier) than the sainthood and proximity of Khwaja (Hasan Basri), and from apparent Hadiths, his excellence over Sabt-e-Asghar, the prince of the rose-colored robe (the martyr of Karbala), is also established, may Allah be pleased with them all.

Seventh Creed: Conflicts among the Noble Companions Those who had conflicts and disputes with Hazrat Murtazavi (the Leader of the Believers, Syedna Ali al-Murtaza, may Allah be pleased with him). (And those who differed from the opinion of this truthful and right-thinking person, and the events that occurred due to those differences where they came face to face with each other, for example, in the Battle of Jamal, Hazrat Talha, Zubair, and Siddiqa Aisha, and in the Battle of Siffin, Hazrat Amir Muawiyah against Mawla Ali Murtaza, may Allah be pleased with them all.) We, the Ahl-us-Sunnah, believe the truth to be on the side of Hazrat Mawla Ali and consider all others as having committed an error (in mistake and fault, and we consider the Lion of Allah [Ali] to be many degrees more perfect and superior to them). However, despite all this, in view of the aforementioned Hadiths (which have been narrated regarding the merits and virtues of those personages), we do not open our tongues in taunting or vilifying those others and keep them at their ranks which are established for them in Shariah; we do not give superiority to anyone over

another based on personal whims. And we consider interfering in their conflicts as forbidden, and regarding their differences... Page 376 of 750

फ़तावा रज़विया जिल्द 29 (ईश्वरीय दरबार में वे उनसे अधिक सम्मान, पद और प्रतिफल की प्रचुरता प्राप्त करें।) हाँ, यह एक अलग कृपा है कि उन्हें मिली और दूसरों को नहीं दी गई, तो इसमें क्या? (और इसकी क्या विशिष्टता है?) इसके अलावा, हज़रत मौला (अली) को सैकड़ों ऐसी विशिष्टताएं मिलीं जो शैख़ैन (अबू बक्र और उमर) को नहीं मिलीं। लेकिन (ईश्वरीय दरबार में) निकटता और पदों की ऊँचाई में वही (शैख़ैन) श्रेष्ठ रहे (उन्हें ही प्रधानता मिली और उनके कदम आगे रहे)। अन्यथा क्या कारण है कि उपर्युक्त कथनों में उन्हें उनसे श्रेष्ठ और बेहतर कहा जाता है (और वह भी पूर्ण रूप से, किसी भी पहलू या स्थिति के बंधन के बिना)? और उनकी (अर्थात हज़रत मौला अली मुर्तज़ा, अल्लाह उनके चेहरे को सम्मानित करे) श्रेष्ठता (और उन महानुभावों की उन पर वरीयता) का अत्यंत दृढ़ता के साथ (पुष्टि पर पुष्टि) खंडन किया जाता है, जबकि एक कनिष्ठ वली (संत), वरिष्ठ वली से श्रेष्ठ नहीं हो सकता। अंततः देखिये, हज़रत अमीर (मौला अली, अल्लाह उनके चेहरे को सम्मानित करे) के महान उत्तराधिकारियों में; हज़रत सब्त-ए-अज़ग़र (सैय्यदना इमाम हुसैन) और जनाब ख्वाजा हसन बसरी को आध्यात्मिक उत्तराधिकार मिला और हज़रत सब्त-ए-अकबर (सैय्यदना इमाम हसन, अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) से कोई सिलसिला जारी नहीं हुआ, हालाँकि इमाम मुजतबा (सैय्यदना इमाम हसन, अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) की विलायत (संतत्व) की निकटता, ख्वाजा (हसन बसरी) की विलायत और निकटता से निश्चित रूप से अधिक पूर्ण और उच्च (श्रेष्ठ और बुलंद) है, और स्पष्ट हदीसों से सब्त-ए-अज़ग़र, गुलाब के रंग के वस्त्र वाले राजकुमार (कर्बला के शहीद) पर भी उनकी श्रेष्ठता सिद्ध है, अल्लाह उन सब से प्रसन्न हो।

सातवाँ अकीदा: सहाबा-ए-किराम के बीच के मतभेद वे लोग जिन्होंने हज़रत मुर्तज़वी (अमीरुल मोमिनीन सैय्यदना अली अल-मुर्तज़ा, अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) के साथ मतभेद और विवाद किए। (और जो इस सत्यवादी और सही राय रखने वाले व्यक्ति की राय से अलग हुए, और उन मतभेदों के कारण जो घटनाएँ घटीं कि वे एक-दूसरे के आमने-सामने आए, उदाहरण के लिए जंग-ए-जमल में हज़रत तलहा, ज़ुबैर और सिद्दीका आयशा, और जंग-ए-सिफ़्फ़ीन में हज़रत अमीर मुआविया, मौला अली मुर्तज़ा के मुक़ाबले में, अल्लाह उन सब से प्रसन्न हो।) हम अहले सुन्नत हज़रत मौला अली की तरफ को सत्य मानते हैं और उन सबको त्रुटि का पात्र (गलती और चूक पर मानते हैं, और हज़रत असदुल्लाही [अली] को उनसे कई दर्जे अधिक पूर्ण और श्रेष्ठ जानते हैं)। लेकिन इन सबके बावजूद, उपर्युक्त हदीसों के मद्देनज़र (जो उन महानुभावों के गुणों और प्रशंसा में वर्णित हैं) उन दूसरों के विरुद्ध अपनी ज़बान ताने और बुराई के लिए नहीं खोलते और उन्हें उनके उन पदों पर रखते हैं जो

उनके लिए शरीयत में सिद्ध हैं, किसी को किसी पर अपनी मनमानी से श्रेष्ठता नहीं देते। और उनके आपसी विवादों में हस्तक्षेप करने को हराम (वर्जित) मानते हैं, और उनके मतभेदों के बारे में... पेज 376 ऑफ़ 750

فتاوٰی رضویہ جلد ۲۹ بارگاہِ الٰہی میں ان سے سوا عزت و منزلت اور ثواب میں کثرت پاجائیں) ہاں یہ ایک فضلِ جداگانہ ہے کہ انہیں ملا اور دوسروں کو عطا نہ ہوا تو یہ کیا؟ (اور اسی کی تخصیص کیسی؟) اس کے سوا صد ہا خصائص حضرت مولٰی کو ایسے ملے کہ شیخین کو نہ ملے۔ مگر (بارگاہِ الٰہی میں) قرب و رفعتِ درجات میں انہیں کو افزونی رہی (انہیں کو مزیت ملی اور انہیں کے قدم پیش پیش رہے) ورنہ کیا وجہ ہے کہ ارشادات مذکورہ بالا میں انہیں ان سے افضل و بہتر کہا جاتا ہے (اور وہ بھی علی الاطلاق کسی جہت و حیثیت کی قید کے بغیر) اور ان (یعنی حضرت مولٰی علی مرتضٰی کرم اللہ وجہہ الکریم) کی افضلیت (اور ان کی ان حضرات پر تفضیل) کا بہ تاکیدِ اکید (موکد در موکد) انکار کیا جاتا ہے حالانکہ ادنٰی ولی، اعلٰی ولی سے افضل نہیں ہو سکتا ہے، آخر دیکھئے حضرت امیر (مولٰی علی کرم اللہ وجہہ الکریم) کے خلفائے کرام میں حضرت سبط اصغر (سیدنا امام حسین) و جناب خواجہ حسن بصری کو تنزل ناسوقی ملا اور حضرت سبط اکبر (سیدنا امام حسن رضی اللہ تعالٰی عنہ) سے کوئی سلسلہ جاری نہ ہوا حالانکہ قربِ ولایت امام مجتبٰی (سیدنا امام حسن رضی اللہ تعالٰی عنہ) ولایت و قربِ خواجہ (حسن بصری) سے بالیقین اتم و اعلٰی (برتر و بالا) اور ظاہر احادیث سے سبطِ اصغر شہزادہ گلگوں قبا (شہید کرب وبلا) پر بھی ان کا فضل ثابت رضی اللہ تعالٰی عنہم اجمعین۔

عقیدہ سابعہ ـــــــــــــــ مشاجرات صحابہ کرام حضرت مرتضوی (امیر المومنین سیدنا علی المرتضٰی رضی اللہ تعالٰی عنہ سے جنہوں نے مشاجرات و منازعات کیے۔ (اور اس حق مآب صائب الرائے کی رائے سے مختلف ہوئے، اور ان اختلافات کے باعث ان میں جو واقعات رونما ہوئے کہ ایک دوسرے کے مدِ مقابل آئے مثلاً جنگ جمل میں حضرت طلحہ و زبیر و صدیقہ عائشہ اور جنگ صفین میں حضرت امیر معاویہ بمقابلہ مولٰی علی مرتضٰی رضی اللہ تعالٰی عنہم) ہم اہلسنت ان

میں حق، جانب جناب مولیٰ علی (مانتے) اور ان سب کو موردِ لغزش (بر غلط و خطا اور حضرت اسد اللہی کو بدرجہا ان سے اکمل و اعلیٰ جانتے ہیں مگر بایں ہمہ بلحاظِ احادیث مذکورہ (کہ ان حضرات کے مناقب و فضائل میں مروی ہیں) زبانِ طعن و شنیع ان دوسروں کے حق میں نہیں کھولتے اور انہیں ان کے مراتب پر جو ان کے لیے شرع میں ثابت ہوئے رکھتے ہیں، کسی کو کسی پر اپنی ہوائے نفس سے فضیلت نہیں دیتے۔ اور ان کے مشاجرات میں دخل اندازی کو حرام جانتے ہیں، اور ان کے اختلافات

Fatawa Razawiyya Volume 29

...consider it a difference like that between Abu Hanifa and Shafi'i. According to us, the Ahl al-Sunnah, it is not permissible to criticize even the lowest of the Sahaba (Companions), let alone criticizing the exalted presence and majestic court of Umm al-Mu'minin al-Siddiqah (Aisha al-Tayyiba al-Tahira) may Allah be pleased with her. God forbid! This is an insolence towards Allah and His Messenger. Allah revealed verses regarding her purification and innocence (purity, chastity, and exoneration from the slanders of the hypocrites) and threatened those who accuse her with "a painful punishment" (1). The Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) loved her most among all his pure wives; where Aisha al-Siddiqah would place her mouth to drink water, the Prophet would place his blessed lips at that same spot and drink from there. Although all of the Prophet's (peace and blessings of Allah be upon him) wives (pure, good, and clean) are his wives in this world and the hereafter, the state of his love for Aisha was such that it was said about her that she is the Prophet's wife in this world and the hereafter. Hadrat Khayr al-Nisa, meaning Fatima al-Zahra (may Allah be pleased with her), was commanded: O Fatima! If you love me, then love Aisha as well, for I love her. (Accordingly, it is in Sahih Muslim that the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said to Lady Fatima):

"O my little daughter! Do you not love whom I love?" She replied, "Yes." He said, "Then love this one (Aisha)." (2)

(Dear daughter! Do you not love the one whom I love? She submitted: It is exactly right (whomever you love, I will surely love her). He said: Then you also keep love for Aisha.)

Question was asked: Who is most beloved to the Prophet among all people? The answer given was: Aisha. (3)

Note: It is mentioned in the treatise published from Bareilly Sharif that there is a lot of blank space here in the original, with some incomplete lines in between. Whatever came to my deficient understanding according to the context, I have formulated it. This humble servant has merged these additions with the original text and enclosed them in parentheses so that there remains a distinction between the original and the addition, making it easy for the readers to study. If there is an error in it, it should be attributed to this humble servant. (Muhammad Khalil, may he be forgiven).

1. The Holy Quran 24/19

2. Sahih Muslim, Book of Virtues, Virtues of Aisha (may Allah be pleased with her), Qadeemi Kutub Khana 2/285
3. Sahih al-Bukhari, Chapters on the Virtues of the Companions of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him), Qadeemi Kutub Khana 1/517; Sahih Muslim, Chapter on the Virtues of Abu Bakr al-Siddiq (may Allah be pleased with him), Qadeemi Kutub Khana 2/273; Musnad Ahmad ibn Hanbal from Amr ibn al-Aas, Al-Maktab al-Islami Beirut 4/203.

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

...इसे अबू हनीफ़ा और शाफ़ई जैसा मतभेद समझते हैं। तो हम अहले सुन्नत के नज़दीक उनमें से किसी अदना सहाबी पर भी तंज़ (आलोचना) जायज़ नहीं है, तो फिर उम्मुल मोमिनीन सिद्दीक़ा (आयशा तैयबा ताहिरा) रज़ियल्लाहु अन्हा की बारगाह-ए-रफ़ी और बारगाह-ए-वक़ीअ में तंज़ करना तो बहुत दूर की बात है। हशा! यह अल्लाह और उसके रसूल की शान में गुस्ताख़ी है। अल्लाह तआला ने उनकी पाकीज़गी और बेगुनाही (पाकदामनी, इफ़्फ़त और मुनाफ़िक़ों के इल्ज़ाम से बरात) में आयतें नाज़िल फ़रमाईं और तोहमत लगाने वालों को "दर्दनाक अज़ाब" की धमकी सुनाई (1)। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उन्हें अपनी तमाम अज़वाज-ए-मुतह्हरात में सबसे ज़्यादा चाहते थे; जहाँ मुँह रखकर आयशा सिद्दीक़ा पानी पीतीं, हुज़ूर उसी जगह अपने लब-ए-अक़दस रखकर वहीं से पानी पीते। यूँ तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तमाम पत्नियाँ (पवित्र और शुद्ध) दुनिया और आख़िरत में हुज़ूर ही की पत्नियाँ हैं, मगर आयशा से मोहब्बत का यह आलम है कि उनके हक़ में इरशाद हुआ कि यह दुनिया और आख़िरत में हुज़ूर की बीवी हैं। हज़रत ख़ैरुन निसा यानी फ़ातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु अन्हा को हुक्म हुआ कि ऐ फ़ातिमा! अगर तू मुझसे मोहब्बत रखती है, तो आयशा से भी मोहब्बत रख क्योंकि मैं उसे चाहता हूँ। (चुनांचे सहीह मुस्लिम में है कि नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सैयदा फ़ातिमा से फ़रमाया):

"ऐ मेरी बेटी! क्या तू उससे मोहब्बत नहीं करती जिससे मैं मोहब्बत करता हूँ?" उन्होंने कहा, "हाँ (करती हूँ)।" फ़रमाया, "तो फिर इससे (आयशा से) मोहब्बत रख।" (2)

(प्यारी बेटी! जिससे मैं मोहब्बत करता हूँ, क्या तू उससे मोहब्बत नहीं रखती? अर्ज किया: बिल्कुल यही सही है (जिसे आप चाहें मैं ज़रूर उसे चाहूँगी)। फ़रमाया, तब तू भी आयशा से मोहब्बत रखा कर।)

सवाल हुआ: तमाम लोगों में हुज़ूर को सबसे ज़्यादा कौन प्रिय है? जवाब मिला: आयशा। (3)

नोट: बरेली शरीफ़ से प्रकाशित होने वाले रिसाले में उल्लेख है कि यहाँ मूल रूप में काफ़ी रिक्त स्थान है, बीच में कुछ अधूरी पंक्तियाँ हैं। प्रसंग के अनुसार जो कुछ मेरी अल्प समझ में आया, मैंने बना दिया है। इस फ़क़ीर ने इन इज़ाफ़ों (परिवर्धन) को मूल इबारत के साथ मिलाकर कोष्ठक (brackets) में सीमित कर दिया है ताकि मूल और इज़ाफ़े में अंतर रहे और पाठकों के लिए इसका

अध्ययन सरल हो। यदि इसमें कोई त्रुटि हो, तो उसे इस फ़क़ीर की ओर ही मंसूब (संबद्ध) किया जाए। (मोहम्मद ख़लील अफ़ा अन्हु)

1. अल-क़ुरान अल-करीम 24/19
2. सहीह मुस्लिम, किताबुल फ़ज़ाइल, फ़ज़ाइल-ए-आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा, क़दीमी कुतुब ख़ाना 2/285
3. सहीह अल-बुखारी, अबवाब मुनाक़िब असहाबुन नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, क़दीमी कुतुब ख़ाना 1/517; सहीह मुस्लिम, बाब फ़ज़ाइल-ए-अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु, क़दीमी कुतुब ख़ाना 2/273; मुसनद अहमद बिन हंबल अन अम्र बिन अल-आस, अल-मक्तब अल-इस्लामी बेरूत 4/203.

کو ابو حنیفہ و شافعی جیسا اختلاف سمجھتے ہیں۔ تو ہم اہلسنت کے نزدیک ان میں سے کسی ادنیٰ صحابی پر بھی طعن جائز نہیں چہ جائیکہ ام المؤمنین صدیقہ (عائشہ طیبہ طاہرہ) رضی اللہ تعالیٰ عنہا کی جناب رفیع اور بارگاہِ وقیع میں طعن کریں، حاشا! یہ اللہ ورسول کی جناب میں گستاخی ہے۔ اللہ تعالیٰ ان کی تطہیر و بریت (پاکدامنی و عفت اور منافقین کی بہتان تراشی سے براءت) میں آیات نازل فرمائے اور ان پر تہمت دھرنے والوں کو وعیدیں "عَذَابٌ اَلِیْمٌ" کی سنائے ۱۔ حضور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم انہیں اپنی سب ازواج مطہرات میں زیادہ چاہیں، جہاں منہ رکھ کر عائشہ صدیقہ پانی پئیں حضور اسی جگہ اپنا لب اقدس رکھ کر وہیں سے پانی پئیں، یوں تو حضور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی سب ازواج (مطہرات، طیبات طاہرات) دنیا و آخرت میں حضور ہی کی بیبیاں ہیں مگر عائشہ سے محبت کا یہ عالم ہے کہ ان کے حق میں ارشاد ہوا کہ یہ حضور کی بی بی ہیں دنیا و آخرت میں حضرت خیر النساء یعنی فاطمہ زہراء رضی اللہ تعالیٰ عنہا کو حکم ہوا ہے کہ فاطمہ! تو مجھ سے محبت رکھتی ہے تو عائشہ سے بھی محبت رکھ کہ میں اسے چاہتا ہوں۔ (چنانچہ صحیح مسلم میں ہے کہ نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے سیدہ فاطمہ سے فرمایا)

ای بُنیّۃ ! الست تحبّین ما احب؟ فقالت بلی قال فاحبّی ھذہ ۲۔

پیاری بیٹی! جس سے میں محبت کرتا ہوں کیا تو اس سے محبت نہیں رکھتی؟ عرض کیا: بالکل یہی درست ہے (جسے آپ چاہیں میں ضرور اسے چاہوں گی) فرمایا تب تو بھی عائشہ سے محبت رکھا کر)

سوال ہوا سب آدمیوں میں حضور کو کون محبوب ہیں؟ جواب عطا ہوا: عائشہ ۳۔

نوٹ: بریلی شریف سے شائع ہونے والے رسالہ میں مذکور کہ یہاں اصل میں بہت بیاض ہے، درمیان میں کچھ ناتمام سطریں ہیں مناسبت مقام سے جو کچھ فہم قاصر میں آیا بنا دیا ۱۲۔ اس فقیر نے ان اضافوں کو اصل عبارت سے ملا کر قوسین میں محدود کر دیا ہے تاکہ اصل و اضافہ میں امتیاز رہے اور ناظرین کو اس کا مطالعہ سہل ہو۔ اس میں غلطی ہو تو فقیر کی جانب منسوب کیا جائے۔ (محمد خلیل عفی عنہ)

1 القرآن الکریم ۲۴/ ۱۹ 2 صحیح مسلم کتاب الفضائل فضائل عائشہ رضی اللہ عنہا قدیمی کتب خانہ ۲/ ۲۸۵ 3 صحیح البخاری ابواب مناقب اصحاب النبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم قدیمی کتب خانہ ۱/ ۵۱۷، صحیح مسلم باب فضائل ابی بکر الصدیق رضی اللہ عنہ قدیمی کتب خانہ ۲/ ۲۷۳، مسند احمد بن حنبل عن عمرو بن العاص المکتب الاسلامی بیروت ۴/ ۲۰۳

Fatawa Rizvia, Volume 29

(That Aisha Siddiqa bint al-Siddiq, Mother of the Believers, whose being beloved by the Lord of the Worlds is clearer than the midday sun. That Siddiqa whose portrait the Holy Spirit (Gabriel) brought in heavenly silk to the noble presence of the Master of Messengers, peace and blessings of Allah be upon him. That Mother of the Believers whom Gabriel the Trustworthy would salute with such clear excellence and who could not enter her abode of honor and purity without permission. That Siddiqa in whose blanket alone Allah Almighty sent revelations. That Mother of the Believers about whom, if Mustafa (peace be upon him) went on a journey without her, he would say "Wa 'Arusah"[1] in her remembrance.)

That Siddiqa for whom, while a child from the family of Zulaikha testified to the innocence and chastity of Joseph the Truthful (peace be upon him), and Ruhullah (Jesus), the Word of Allah, affirmed the purification and modesty of the Virgin Mary, yet for her (Aisha's) innocence, pure nature, chastity, and purity, the noble verses of the Holy Quran were revealed. That Mother of the Believers whom the Beloved of the Lord of the Worlds (peace be upon him) would watch while she drank water to see where on the vessel she placed her blessed lips; then the Presence full of Light (peace be upon him) would place his own blessed and God-pleasing lips on the same spot and drink. May Allah send blessings and peace upon him, her, and her father.

Let a person place his hand on his heart and see: if someone insults his mother, slanders her, or speaks ill of her, how great an enemy would he become? Blood would rush to his eyes upon seeing his face. And are the mothers of the Muslims so devalued that people recite the Kalima yet taunt them, slander them, and still remain Muslims? There is no power or strength except with Allah, the Most High, the Most Supreme.

And Zubair and Talha are even more superior than them as they are from the 'Ashara Mubashshara' (the ten promised paradise). He (meaning Zubair bin al-Awwam) was the paternal cousin and disciple (valiant supporter and helper) of the Messenger of Allah (peace be upon him), and he (meaning Talha) was a shield for the radiant face of the Messenger of Allah (peace be upon him) in times of self-sacrifice (like a fearless and devoted soldier and bodyguard).

As for Amir Muawiyah (may Allah be pleased with him), his rank is after all of them.

And as for the lofty station (high and exalted ranks) and impregnable glory (firm and supreme greatness and dignity) of Mawla Ali (al-Murtada, may Allah honor his noble face), they are at such distant destinations from them that thousands upon thousands of lightning-paced steeds (horses with wide, long strides like a flash of lightning) and wind-swift runners (those who talk to the wind, fast-moving) [would be needed].

---

[1] Musnad Ahmad ibn Hanbal from Aisha (may Allah be pleased with her), Al-Maktab al-Islami Beirut 6/248

फ़तावा रिज़विया, जिल्द २९

(वे आयशा सिद्दीक़ा बिन्ते अस-सिद्दीक़, उम्मुल मोमिनीन, जिनका रब्बुल आलमीन का महबूब होना दोपहर के सूरज से भी अधिक स्पष्ट है। वे सिद्दीक़ा जिनकी तस्वीर रूह-उल-क़ुदुस (जिब्रील) जन्नती रेशम में सैयदुल मुर्सलीन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बारगाह में लाए। वे उम्मुल मोमिनीन जिन्हें जिब्रील अमीन इस स्पष्ट फ़ज़ीलत के साथ सलाम करें और उनकी इज़्ज़त व पाकीज़गी के घर में बिना अनुमति हाज़िर न हो सकें। वे सिद्दीक़ा कि अल्लाह अज्ज़वजल ने उनके सिवा किसी के लिहाफ़ में वही (प्रकाशना) नहीं भेजी। वे उम्मुल मोमिनीन कि मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अगर उनके बिना सफ़र पर जाते, तो उनकी याद में 'वा अरुसाह'[1] कहते।)

वे सिद्दीक़ा कि यूसुफ़ सिद्दीक़ अलैहिस्सलाम की बेगुनाही और पाकीज़गी की गवाही ज़ुलैख़ा के खानदान के एक बच्चे ने दी, बतुल मरियम की पाकीज़गी और शुचिता रूह-उल्लाह (ईसा) ने घोषित की, लेकिन उनकी (आयशा की) बेगुनाही, पवित्र स्वभाव, और पाकीज़गी की गवाही में क़ुरान करीम की आयतें नाज़िल हुईं। वे उम्मुल मोमिनीन कि महबूब-ए-रब्बुल आलमीन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनके पानी पीने के दौरान देखते रहते कि उन्होंने प्याले में किस जगह अपने मुबारक लब रखकर पानी पिया है, फिर हुज़ूर पुरनूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने मुबारक लब ठीक उसी जगह रखकर पानी पीते। अल्लाह तआला उन पर, उनके पिता पर और हुज़ूर पर रहमत और सलामती भेजे।

इंसान अपने दिल पर हाथ रखकर देखे, यदि कोई उसकी माँ का अपमान करे, उन पर आरोप लगाए या उन्हें बुरा-भला कहे, तो वह उसका कैसा दुश्मन बन जाएगा? उसका चेहरा देखकर आँखों में खून उतर आएगा। और क्या मुसलमानों की माएँ इतनी बेक़द्र हैं कि लोग कलमा पढ़कर उन पर ताने कसें, आरोप लगाएँ और फिर भी मुसलमान बने रहें? अल्लाह के सिवा कोई शक्ति और सामर्थ्य नहीं है, जो सबसे महान और सर्वोच्च है।

और ज़ुबैर और तल्हा उनसे भी श्रेष्ठ हैं क्योंकि वे 'अशरा मुबश्शरा' (जन्नत की खुशखबरी पाने वाले दस) में से हैं। वे (यानी ज़ुबैर बिन अल-अवाम) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के फूफीज़ाद भाई और हवारी (जाँबाज़, सहायक) थे और ये (यानी तल्हा) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चेहरा-ए-अनवर के लिए ढाल थे, जान निछावर करने के समय (जैसे एक निडर और समर्पित सिपाही और अंगरक्षक)।

रही बात अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु की, तो उनका दर्जा इन सबके बाद है।

और हज़रत मौला अली (मुर्तज़ा करमल्लाहु वज्हहुल अस्ना) के ऊंचे मुक़ाम (बुलंद और बाला मर्तबे) और अज़ीम शान (मज़बूत और आला इज़्ज़त) तक तो उनसे वे दूर-दराज़ मंज़िलें हैं जिन्हें हज़ारों बिजली जैसी रफ़्तार वाले (तेज़ दौड़ने वाले) और हवा से बातें करने वाले तेज़ घोड़े भी [नहीं पा सकते]।

---

[1] मुस्नद अहमद बिन हंबल, आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से, अल-मक्तब अल-इस्लामी बेरूत ६/२४८

(وہ عائشہ صدیقہ بنت الصدیق، ام المومنین، جن کا محبوب رب العالمین ہونا آفتاب نیم روز سے روشن تر، وہ صدیقہ جن کی تصویر بہشتی حریر میں روح القدس خدمت اقدس سید المرسلین صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم میں حاضر لائیں۔ وہ ام المومنین کہ جبریل امین بایں فضل مبین انہیں سلام کریں اور ان کے کاشانہ عزت و طہارت میں بے اذن لیے حاضر نہ ہوسکیں، وہ صدیقہ کہ اللہ عزوجل وحی نہ بھیجے ان کے سوا کسی کے لحاف میں۔ وہ ام المومنین کہ مصطفی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم اگر سفر میں بے ان کے تشریف لے جائیں ان کی یاد میں واعرسواہ[1] فرمائیں۔)

وہ صدیقہ کہ یوسف صدیق علیہ الصلوٰۃ والسلام کی براءت و پاکدامنی کی شہادت اہل زلیخا سے ایک بچہ ادا کرے بتول مریم کی تطہیر و عفت مآبی ، روح اللہ کلمتہ اللہ فرمائیں ، مگر ان کی براءت ، پاک طینتی ، پاک دامنی و طہارت کی گواہی میں قرآن کریم کی آیات کریمہ نزول فرمائیں۔ وہ ام المومنین کہ محبوب رب العالمین صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم ان کے پانی پینے میں دیکھتے رہیں کہ کوزے میں کس جگہ لب مبارک رکھ کر پانی پیا ہے حضور پر نور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم اپنے لب ہائے مبارک و خداپسند وہیں رکھ کر پانی نوش فرمائیں۔ صلی اللہ تعالیٰ علیہ و علیھا و علی ابیھا و بارک وسلم۔

آدمی اپنے دل پر ہاتھ رکھ کر دیکھے اگر کوئی اس کی ماں کی توہین کرے اس پر بہتان اٹھائے یا اسے بُرا بھلا کہے تو اس کا کیسا دشمن ہو جائے گا اس کی صورت دیکھ کر آنکھوں میں خون اُتر آئے گا، اور مسلمانوں کی مائیں یوں بے قدر ہوں کہ کلمہ پڑھ کر ان پر طعن کریں تہمت دھریں اور مسلمان کے مسلمان بنے رہیں۔ لا حول ولا قوۃ الا باللہ العلی العظیم۔

اور زبیر و طلحہ ان سے بھی افضل کہ عشرہ مبشرہ سے ہیں۔ وہ (یعنی زبیر بن العوام) رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کے پھوپھی زاد بھائی اور حواری (جاں باز، معاون ومددگار) اور یہ (یعنی طلحہ) رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کے چہرے انور کے لیے سپر، وقت جاں نثاری (جیسے ایک جاں نثار نڈر سپاہی و سرفروش محافظ)

رہے امیر معاویہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ تو ان کا درجہ ان سب کے بعد ہے۔

اور حضرت مولیٰ علی (مرتضیٰ کرم اللہ تعالیٰ وجہہ الاسنی) کے مقام رفیع (مراتب بلند و بالا) و شان منیع (عظمت و منزلت محکم و اعلا) تک تو ان سے وہ دور دراز منزلیں ہیں جن ہزاروں ہزار رہوار برق کردار (ایسے کشادہ فراخ قدم گھوڑے جیسے بجلی کا کوندا) صبا رفتار (ہوا سے بات کرنے والے، تیز رو،)

---

[1] مسند احمد بن حنبل عن عائشہ رضی اللہ تعالٰی عنہا المکتب الاسلامی بیروت ۲۴۸/۶

Fatawa Razawiyya, Volume 29

...they become tired and cannot cover (the distance). However, the excellence of companionship (and the honor of being a Sahabi and excellence) and the honor of divine happiness is faith. (From which a Muslim cannot close their eyes, then how can they tolerate cursing and insulting them or demeaning them, and how can they believe that whatever they did against Moula Ali was based on egoism? Such a thought cannot even occur in the dreams or imagination of a faithful Muslim. Yes, we say one thing, and it is a matter of faith, that by the grace of Allah, we are the household slaves of the household of the Ahl-ul-Bayt (noble) (and hereditary servants, service-providers). What relation do we have with (Amir) Muawiyah (may Allah be pleased with him) that, God forbid, we would support him unjustly? But yes, it is desired to take the side of our own masters (and support and protect them in matters of truth) and to keep him (Hazrat Amir Muawiyah) free from the accusations (especially) of foul-mouthed and (insolent, sharp-tongued) slanderers. Because our elder prince, Hazrat Sibt (the Elder, Hasan) Mujtaba (may Allah be pleased with him), according to the glad tidings of his grandfather, the Master of the Messengers (peace and blessings of Allah be upon him), after the completion of the period (of the Rightly Guided Caliphate, which lasted twenty-three years on the methodology of prophethood and ended with the six-month caliphate of Syedna Imam Hasan Mujtaba), laid down his arms (intentionally and voluntarily) in the midst of a battle (despite having a powerful army) and handed over the kingdom (and the management and administration of the affairs of Muslims) to Amir Muawiyah (and pledged allegiance of obedience to him). If Amir Muawiyah (may Allah be pleased with him) was a disbeliever or a transgressor, or a cruel tyrant, or a usurping oppressor (intent on cruelty and injustice), then the blame falls on Imam Hasan that he himself (without compulsion or coercion, without Shariah necessity, despite having the power) handed over the affairs of Muslims and the management of Sharia and religion to such a person (and put it under his control) and, God forbid, did not act for the welfare of Islam (abandoned it). If the period of caliphate had ended and you (yourself) did not accept the kingship, was there no one else in the companions of Hejaz capable of organizing and managing religion that he chose them? And pledged allegiance of obedience to them? God forbid! Rather, this matter reaches the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) himself, as the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) liked this act of his in his prophecy and declared it a result of his leadership, as is in Sahih al-Bukhari. The

truthful and verified (peace and blessings of Allah be upon him) said regarding Imam Hasan (may Allah be pleased with him): "This son of mine is a leader, perhaps Allah will reconcile two great groups of Muslims through him."

1. Sahih al-Bukhari, Book of Peace, Chapter: The Statement of the Prophet (peace be upon him) for Hasan, etc., and Virtues of Hasan and Husain, Qadimi Kutub Khana Karachi, 1/377 & 530.

फ़तावा रज़विया, खंड 29

...वे थक जाएँ और (दूरी) तय न कर सकें। मगर सोहबत की फ़ज़ीलत (और सहाबियत का शर्फ़ और फ़ज़ीलत) और खुदाई सआदत का शर्फ़ दीन है। (जिससे एक मुसलमान अपनी आँखें बंद नहीं कर सकता, तो फिर उन पर लानत-मलाम या उनकी तौहीन व तन्कीस कैसे बर्दाश्त कर सकते हैं और कैसे यह मान लें कि मौला अली के ख़िलाफ़ उन्होंने जो कुछ किया वह नफ़्सानियत की बुनियाद पर था? एक ईमान वाले मुसलमान के ख़्वाब व ख़याल में भी यह बात नहीं आ सकती। हाँ, एक बात कहते हैं और वह ईमान वाली बात है कि) हम तो अलहम्दुलिल्लाह सरकार-ए-अहल-ए-बैत (किराम) के ख़ानदानज़ाद गुलाम हैं (और मौरूसी ख़िदमतगार, ख़िदमत गुज़ार)। हमें (अमीर) मुआविया (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) से क्या रिश्ता कि ख़ुदा न ख़्वास्ता उनकी बेजा हिमायत करें? मगर हाँ, अपनी सरकार की तरफ़दारी (और हक़ के मामले में उनकी हिमायत व पासदारी) और उन्हें (हज़रत अमीर मुआविया को) (खास तौर पर) बदगोयों (और बदज़बानों, गुस्ताख़ों) की तोहमतों से बरी रखना मंज़ूर है, क्योंकि हमारे शहज़ादा-ए-अकबर हज़रत सिब्त (अकबर, हसन) मुज्तबा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अपने जद्द-ए-अमजद सैयदुल मुरसलीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की बशारत के मुताबिक़, मुद्दत (ख़िलाफ़त-ए-राषिदा जो नबवी तरीक़े पर तेईस साल रही और सैय्यदना इमाम हसन मुज्तबा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की छह महीने की ख़िलाफ़त पर ख़त्म हुई) के इख़्तिताम के बाद, ऐन जंग के मैदान में (एक जार्रार फ़ौज के साथ होने के बावजूद) हथियार रख दिए (क़स्दन और अपनी मर्ज़ी से) और मुल्क (और मुसलमानों के उमूर का नज़्म व नस्क़) अमीर मुआविया के सुपुर्द कर दिया (और उनके हाथ पर बैअत-ए-इताअत फ़रमा ली)। अगर अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु काफ़िर या फ़ासिक़ होते या ज़ालिम व जायर होते या ग़ासिब व जाबिर होते (जुल्म व ज़्यादती पर कमरबस्ता होते), तो इल्ज़ाम इमाम हसन पर आता है कि उन्होंने मुसलमानों का कारोबार और शरीयत व दीन का इंतज़ाम अपनी मर्ज़ी से (बग़ैर किसी मजबूरी और शरई ज़रूरत के ताक़त होने के बावजूद) ऐसे शख़्स को सौंप दिया (और उसके हवाले कर दिया) और माज़ल्लाह इस्लाम की ख़ैरख़्वाही न फ़रमाई (उससे हाथ खींच लिया)। अगर ख़िलाफ़त की मुद्दत ख़त्म हो चुकी थी और आप (ख़ुद) बादशाही मंज़ूर नहीं फ़रमाते थे, तो क्या हिजाज़ के सहाबा में कोई और दीन के नज़्म व नस्क़ की क़ाबिलियत नहीं रखता था कि उन्हें ही मुंतख़ब किया? और उन्हीं के हाथ पर बैअत-ए-इताअत की? अल्लाह की पनाह! बल्कि यह बात ख़ुद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम तक पहुँचती है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने अपनी

पेशीनगोई में उनके इस फ़ेल को पसंद फ़रमाया और इसे उनकी सियादत का नतीजा क़रार दिया, जैसा कि सहीह बुखारी में है। सादिक़ व मसदूक़ सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के बारे में फ़रमाया: "मेरा यह बेटा सरदार है, शायद अल्लाह इसके ज़रिए मुसलमानों के दो बड़े गिरोहों के बीच सुलह करा दे।"

1. सहीह अल-बुखारी, किताब अस-सुलह, बाब: नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का हसन (रज़ियल्लाहु अन्हु) के लिए फरमान, आदि, और मनाक़िब अल-हसन वल-हुसैन, क़दीमी कुतुब ख़ाना कराची, १/३७७ और ५३०।

पृष्ठ 379/750

تیز گام) تھک رہیں اور قطع (مسافت) نہ کر سکیں۔ مگر فضل صحبت (و شرف صحابیت و فضل) و شرف سعادت خدائی دین ہے۔ (جس سے مسلمان آنکھ بند نہیں کر سکتے تو ان پر لعن طعن یا ان کی توہین تنقیص کیسے گوارارکھیں اور کیسے سمجھ لیں کہ مولیٰ علی کے مقابلے میں انہوں نے جو کچھ کیا بر بنائے نفسانیت تھا۔ صاحبِ ایمان مسلمان کے خواب و خیال میں بھی یہ بات نہیں آسکتی۔ ہاں ایک بات کہتے ہیں اور ایمان لگتی کہتے ہیں کہ) ہم تو بحمد اللہ سرکارِ اہلِ بیت (کرام) کے غلامانِ خاندان زاد ہیں (اور موروثی خدمت گار، خدمت گزار) ہمیں (امیر) معاویہ (رضی اللہ تعالیٰ عنہ) سے کیا رشتہ خدا نخواستہ ان کی حمایت بے جا کریں مگر ہاں اپنی سرکار کی طرفداری (اور امر حق میں ان کی حمایت و پاسداری) اور ان (حضرت امیر معاویہ) کا (خصوصاً) الزام بدگویاں (اور دریدہ دہنوں، بدزبانوں کی تہمتوں سے بری رکھنا منظور ہے کہ ہمارے شہزادہ اکبر حضرت سبط (اکبر، حسن) مجتبیٰ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے حسبِ بشارت اپنے جدا مجد سید المرسلین صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے بعد اختتام مدت (خلافت راشدہ کہ منہاجِ نبوت پر تئیس سال رہی اور سید نا امام حسن مجتبیٰ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے چھ ماہ مدتِ خلافت پر ختم ہوئی) عین معرکہ جنگ میں ایک فوجِ جرار کی ہمراہی کے باوجود) ہتھیار رکھ دیے (بالقصد والا اختیار) اور ملک (اور امور مسلمین کا انتظام وانصرام) امیر معاویہ کو سپرد کر دیا (اور ان کے ہاتھ پر بیعت اطاعت فرمالی) اگر امیر معاویہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کافر یا فاسق تھے یا ظالم جائر تھے یا غاصب جابر تھے۔ (ظلم و جور پر کمر بستہ) تو الزام امام حسن پر آتا ہے کہ انہوں نے کاروبار مسلمین و انتظام شرع و دین باختیار خود (بلا جبر و اکراہ بلا ضرورت شرعیہ، باوجودِ مقدرت) ایسے شخص کو تفویض فرمادیا (اور اس کی تحویل میں دے دیا) اور خیر خواہی اسلام کو معاذ اللہ کام نہ فرمایا

(اس سے ہاتھ اٹھا لیا) اگر مدتِ خلافت ختم ہو چکی تھی اور آپ (خود) بادشاہت منظور نہیں فرماتے تھے) تو صحابہ حجاز میں کوئی اور قابلیت نظم و نسق دین نہ رکھتا تھا جو انہیں کو اختیار کیا۔ اور انہیں کے ہاتھ پر بیعت اطاعت کرلی) حاش للہ بلکہ یہ بات خود رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم تک پہنچتی ہے کہ حضور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے اپنی پیش گوئی میں ان کے اس فعل کو پسند فرمایا اور ان کی سیادت کا نتیجہ ٹھہرایا کما فی صحیح البخاری (جیسا کہ صحیح بخاری میں ہے) صادق و مصدوق صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے امام حسن رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی نسبت فرمایا۔ ان ابنی ہذا سید لعل اللہ ان یصلح بہ بین فئتین عظیمتین من المسلمین ۱۔

۱ صحیح البخاری کتاب الصلح باب قول النبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم للحسن الخ و مناقب الحسن و الحسین قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/۳۷۷ و ۵۳۰

Fatawa Razawiyya Volume 29

(This son of mine is a Sayyid, a standard-bearer of leadership) I hope that Allah Almighty will bring peace between two great groups of Islam because of him. The Noble Verse says: "And We shall remove from their hearts any deep-seated grievance"[1]. And We have pulled out the malice from their chests. Whatever was between them in the world and whatever rancor and tension were in their natures, He replaced them with kindness and affection, and nothing remained between them except love and friendship. And it is narrated from Hazrat Ali Murtaza (may Allah be pleased with him) that he said: Insha'Allah, I, Usman, Talha, and Zubair are among those regarding whom Allah Almighty has revealed this verse "Wa Naz'ana...". After this statement of Hazrat Mawla Ali, to still accuse them is a war against intellect and wisdom, a war against Mawla Ali, and a war against Allah and His Messenger. We seek refuge in Allah. While the pages of history are a just witness that as soon as Hazrat Zubair realized his mistake, he immediately withdrew from the war. And concerning Hazrat Talha, it is also found in narrations that he had taken the oath of allegiance and obedience to Hazrat Mawla Ali through one of his helpers. And who can erase these events from history that after the Battle of Jamal ended, Hazrat Mawla Ali Murtaza ordered Hazrat Aisha's respected brother, Muhammad ibn Abi Bakr, to go and see if Hazrat Aisha had, God forbid, received any wounds etc. Rather, he himself went there in great haste and asked, "How is your health?" She replied, "Alhamdulillah, I am well." Mawla Ali (may Allah be pleased with him) said, "May Allah Almighty grant you forgiveness." Hazrat Siddiqa (may Allah be pleased with her) replied, "And yours too." Then, after completing the burial and shrouding of the deceased, Hazrat Mawla Ali arranged for Hazrat Siddiqa's return and, with full honor and respect, under the supervision of Muhammad ibn Abi Bakr, sent her in the company of forty noble women...

---

[1] Al-Quran Al-Karim 7/43

फ़तावा रज़विया खंड 29

(मेरा यह बेटा सैय्यद है, नेतृत्व का ध्वजवाहक) मुझे उम्मीद है कि अल्लाह अज़वजल इसके कारण इस्लाम के दो बड़े समूहों के बीच सुलह करा देगा। आयत-ए-करीमा का इरशाद है: "व नज़अना मा फी सुदूरिहिम मिन गिल्लिन"[1]। और हमने उनके सीनों में से कीना (द्वेष) खींच लिया। जो दुनिया में उनके बीच था और स्वभाव में जो कड़वाहट और तनाव था, उसे दया और स्नेह से बदल दिया और उनके बीच परस्पर केवल प्रेम और स्नेह ही शेष रहा। और हज़रत अली मुर्तज़ा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से वर्णित है कि आपने फ़रमाया: इंशाअल्लाह मैं, उस्मान, तलहा और ज़ुबैर उन लोगों में से हैं जिनके बारे में अल्लाह तआला ने यह इरशाद फ़रमाया कि 'नज़अना' (आयत)। हज़रत मौला अली के इस इरशाद के बाद भी उन पर आरोप लगाना बुद्धि और विवेक के विरुद्ध युद्ध है, मौला अली से युद्ध है, और अल्लाह और रसूल से युद्ध है। वल्-इयाज़ु बिल्लाह (अल्लाह की पनाह)। जबकि इतिहास के पन्ने न्यायपूर्ण गवाह हैं कि जैसे ही हज़रत ज़ुबैर को अपनी गलती का एहसास हुआ, उन्होंने तुरंत युद्ध से किनारा कर लिया। और हज़रत तलहा के बारे में भी रिवायतों में आता है कि उन्होंने अपने एक सहायक के ज़रिए हज़रत मौला अली की बैअत (वफ़ादारी की शपथ) और आज्ञाकारिता स्वीकार कर ली थी। और इतिहास से इन घटनाओं को कौन मिटा सकता है कि जंगे जमल समाप्त होने के बाद हज़रत मौला अली मुर्तज़ा ने हज़रत आयशा के सम्मानित भाई मुहम्मद बिन अबी बक्र को आदेश दिया कि वे जाकर देखें कि हज़रत आयशा को खुदा न करे कोई ज़ख्म आदि तो नहीं पहुँचा। बल्कि बड़ी शीघ्रता से स्वयं भी तशरीफ़ ले गए और पूछा, "आपका मिज़ाज कैसा है?" उन्होंने जवाब दिया, "अलहम्दुलिल्लाह, मैं ठीक हूँ।" मौला अली (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने फ़रमाया: "अल्लाह तआला आपकी मग़फ़िरत (क्षमा) फ़रमाए।" हज़रत सिद्दीका (रज़ियल्लाहु अन्हा) ने जवाब दिया, "और तुम्हारी भी।" फिर मृतकों के कफ़न-दफ़न से फ़ारिग होकर हज़रत मौला अली ने हज़रत सिद्दीका (रज़ियल्लाहु अन्हा) की वापसी का इंतज़ाम किया और पूरे एज़ाज़ व इकराम (सम्मान) के साथ मुहम्मद बिन अबी बक्र की निगरानी में चालीस सम्मानित महिलाओं के झुरमुट में उन्हें...

---

[1] अल-कुरआन अल-करीम 7/43

(میرا یہ بیٹا سید ہے، سیادت کا علمبردار) میں امید کرتا ہوں کہ اللہ عزوجل اس کے باعث دو بڑے گروہِ اسلام میں صلح کرادے۔ آیہ کریمہ کا ارشاد ہے: "وَنَزَعْنَا مَا فِي صُدُورِهِم مِّنْ غِلٍّ"[1]۔ اور ہم نے ان کے سینوں میں سے کینے کھینچ لیے۔ جو دنیا میں ان کے درمیان تھے اور طبیعتوں میں جو کدورت و کشیدگی تھی اسے رفق والفت سے بدل دیا اور ان میں آپس میں نہ باقی رہی مگر مودت و محبت۔ اور حضرت علی مرتضیٰ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی کہ آپ نے فرمایا کہ ان شاء اللہ تعالیٰ میں اور عثمان اور طلحہ وزبیر ان میں سے ہیں جن کے حق میں اللہ تعالیٰ نے یہ ارشاد فرمایا کہ ننزعنا الایۃ۔ حضرت مولیٰ علی کے اس ارشاد کے بعد بھی ان پر الزام دینا عقل و خرد سے جنگ ہے، مولیٰ علی سے جنگ ہے، اور خدا اور رسول سے جنگ ہے۔ والعیاذ باللہ۔ جب کہ تاریخ کے اوراق شاہدِ عادل ہیں کہ حضرت زبیر کو جونہی اپنی غلطی کا احساس ہوا انہوں نے فوراً جنگ سے کنارہ کشی کرلی۔ اور حضرت طلحہ کے متعلق بھی روایات میں آتا ہے کہ انہوں نے اپنے ایک مددگار کے ذریعے حضرت مولیٰ علی سے بیعت اطاعت کرلی تھی۔ اور تاریخ سے ان واقعات کو کون چھیل سکتا ہے کہ جنگ جمل ختم ہونے کے بعد حضرت مولیٰ علی مرتضیٰ نے حضرت عائشہ کے برادر معظم محمد بن ابی بکر کو حکم دیا کہ وہ جائیں اور دیکھیں کہ حضرت عائشہ کو خدانخواستہ کوئی زخم وغیرہ تو نہیں پہنچا۔ بلکہ بعجلت تمام خود بھی تشریف لے گئے اور پوچھا۔ آپ کا مزاج کیسا ہے؟ انہوں نے جواب دیا الحمدللہ اچھی ہوں۔ مولیٰ علی رضی اللہ عنہ نے فرمایا: اللہ تعالیٰ آپ کی بخشش فرمائے۔ حضرت صدیقہ رضی اللہ عنہا نے جواب دیا اور تمہاری بھی۔ پھر مقتولین کی تجہیز و تکفین سے فارغ ہو کر حضرت مولیٰ علی نے حضرت

صدیقہ رضی اللہ عنہا کی واپسی کا انتظام کیا اور پورے اعزاز واکرام کے ساتھ محمد بن ابی بکر کی نگرانی میں چالیس معزز عورتوں کے جھرمٹ میں ان کو

---

[1] القرآن الکریم ۷ / ۴۳

Fatawa Razawiya Volume 29

...departed towards Hijaz. Hazrat Ali himself accompanied her for a long distance to see her off, and stayed with her; Imam Hasan accompanied her for miles. At the time of departure, Hazrat Siddiqa (Hazrat Aisha) declared in the gathering, "I never had any kind of ill-will towards Ali before, nor do I have any now. Yes, the things that sometimes occur between a mother-in-law and son-in-law (or brother-in-law and sister-in-law), I do not deny that."

Hazrat Ali, upon hearing this, said, "O people! Hazrat Aisha is telling the truth. By God, there is no more dispute between me and her than that. Regardless of whatever happened, she is the wife of your noble Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) in this world and the hereafter (and the Mother of the Believers)."

Subhan Allah! Among these companions, who are embodiments of truth and purity, there was this mutual kindness, affection, honor, and respect, and this conduct of reverence and esteem for one another. And yet, look at those devoid of wisdom and the foolish 'supporters' of Ali, who make cursing and reviling them their religion and custom, and equate ill-will and enmity towards them with love and devotion for Maula Ali. There is no power or strength except with Allah, the Most High, the Most Great.

Muslims of the Ahl-us-Sunnah should refresh their faith and keep in mind that if there were deceit in the hearts of the noble Sahaba, corruption in their intentions, and mischief and disorder in their dealings, then the term 'Radhi-Allahu-Anhum' (Allah be pleased with them) could have no meaning at all.

The meaning of the Sahaba being pleasing and liked by Allah is precisely that the Generous Master is pleased with their outward and inward states, satisfied with their intentions and inner thoughts, and their character and actions are pleasing in the Court of Honor. This is why it has been stated:

"But Allah has made faith beloved to you and has beautified it in your hearts..." (The Verse). Meaning, Allah Almighty has made faith dear to you and adorned it in your hearts, and has made disbelief, transgression, and disobedience hateful to you. Now, whoever speaks against this ruins their faith and destroys their hereafter. We seek refuge in Allah.

Eighth Belief: The Leadership (Imamate) of Siddiq-e-Akbar (may Allah be pleased with him)

The absolute vicegerency of the noble Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) is called 'Imamat-e-Kubra' (The Great Leadership), and being appointed to this magnificent position...

---

1 Al-Quran al-Karim 49:7

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

...हिजाज़ की ओर विदा किया। स्वयं हज़रत अली ने काफी दूर तक विदाई दी, साथ रहे, इमाम हसन मीलों तक साथ गए। चलते समय हज़रत सिद्दीक़ा (हज़रत आयशा) ने मजमे (सभा) में स्वीकार किया कि मुझे अली से न किसी प्रकार की कोई कड़वाहट पहले थी और न अब है। हाँ, सास, दामाद (या देवर, भाभी) में कभी-कभी जो बात हो जाती है, उससे मुझे इनकार नहीं।

हज़रत अली ने यह सुनकर फ़रमाया, "ओ लोगो! हज़रत आयशा सच कह रही हैं। ईश्वर की शपथ, मुझमें और उनमें इससे अधिक कोई मतभेद नहीं है। बहरहाल चाहे जो भी हुआ हो, वह इस दुनिया और आख़िरत (परलोक) में तुम्हारे नबी करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की पत्नी हैं (और उम्मुल मोमिनीन हैं)।"

अल्लाह अल्लाह! सत्य और पवित्रता के इन साथियों में आपसी यह नरमी, स्नेह, मान-सम्मान और एक-दूसरे के साथ श्रद्धा और आदर का यह व्यवहार। और दूसरी ओर उन बुद्धिहीन और नादान 'अली के समर्थकों' का यह हाल कि उन पर लानत-मलानत (गाली-गलौज) को अपना धर्म और अपना तौर-तरीका बना लिया है और उनसे कड़वाहट और दुश्मनी को मौला अली से प्रेम और भक्ति मान बैठे हैं। अल्लाह के सिवा न कोई शक्ति है और न सामर्थ्य, जो महान और श्रेष्ठ है।

अहले सुन्नत के मुसलमान अपना ईमान ताज़ा कर लें और सुन रखें कि यदि सहाबा किराम (पैगंबर के साथियों) के दिलों में खोट, नियतों में विकार और मामलों में फ़ितना और फ़साद (अशांति) होता, तो 'रज़ियल्लाहु अन्हुम' (अल्लाह उनसे प्रसन्न हुआ) का कोई अर्थ ही नहीं रह जाता।

सहाबा किराम के अल्लाह के निकट प्रिय और पसंदीदा होने का अर्थ यही तो है कि मौला करीम उनके ज़ाहिर और बातिन (बाहरी और आंतरिक) दोनों से प्रसन्न है, उनकी नियतों और गुप्त विचारों से खुश है, और उनके आचरण और कर्म ईश्वरीय दरबार में पसंदीदा हैं। इसीलिए फ़रमाया गया है कि:

"लेकिन अल्लाह ने ईमान को तुम्हारे लिए प्रिय बना दिया और उसे तुम्हारे दिलों में संवार दिया..." (आयत)। अर्थात अल्लाह तआला ने ईमान को तुम्हें प्यारा बना दिया है और उसे तुम्हारे दिलों में सुशोभित कर दिया है, और कुफ़्र (अविश्वास), अवज्ञा और नाफ़रमानी को तुम्हारे लिए अप्रिय बना दिया है। अब जो कोई इसके विरुद्ध कुछ कहता है, वह अपना ईमान खराब करता है और अपना परलोक बर्बाद करता है। हम अल्लाह की शरण मांगते हैं।

आठवां अक़ीदा (विश्वास): सिद्दीक़-ए-अकबर (रज़ियल्लाहु अन्हु) की इमामत (नेतृत्व)

नबी करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की पूर्ण खिलाफ़त (नयाबत-ए-मुतलक़ा) को 'इमामत-ए-कुबरा' कहा जाता है और इस महान पद पर आसीन...

---

1 अल-क़ुरआन अल-करीम 49:7

جانب حجاز رخصت کیا۔ خود حضرت علی نے دور تک مشایعت کی، ہمراہ رہے، امام حسن میلوں تک ساتھ گئے۔ چلتے وقت حضرت صدیقہ نے مجمع میں اقرار فرمایا کہ مجھ کو علی سے نہ کسی قسم کی کدورت پہلے تھی اور نہ اب ہے۔ ہاں ساس، داماد (یا دیور، بھاوج) میں کبھی کبھی جو بات ہو جایا کرتی ہے اس سے مجھے انکار نہیں۔

حضرت علی نے یہ سن کر ارشاد فرمایا لوگو ! حضرت عائشہ سچ کہہ رہی ہیں خدا کی قسم مجھ میں اور ان میں اس سے زیادہ اختلاف نہیں ہے، بہر حال خواہ کچھ ہو یہ دنیا و آخرت میں تمہارے نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی زوجہ ہیں (اور ام المومنین)۔

اللہ اللہ ! ان یاران پیکر صدق و صفا میں باہمی یہ رفق و مودت اور عزت واکرام اور ایک دوسرے کے ساتھ یہ معاملہ تعظیم و احترام، اور ان عقل سے بیگانوں اور نادان دوستوں کی حمایت علی کا یہ عالم کہ ان پر لعن طعن کو اپنا مذہب اور اپنا شعار بنائیں اور ان سے کدورت و دشمنی کو مولیٰ علی سے محبت و عقیدت ٹھہرائیں۔ ولا حول ولا قوۃ الا باللہ العلی العظیم۔

مسلمانانِ اہلسنت اپنا ایمان تازہ کرلیں اور سن رکھیں کہ اگر صحابہ کرام کے دلوں میں کھوٹ، نیتوں میں فتور اور معاملات میں فتنہ و فساد ہو تو رضی اللہ عنہم کے کوئی معنی ہی نہیں ہو سکتے۔

صحابہ کرام کے عند اللہ مرضی و پسندیدہ ہونے کے معنیٰ یہی تو ہیں کہ وہ مولائے کریم ان کے ظاہر و باطن سے راضی، ان کی نیتوں اور مانی الضمیر سے خوش ہے، اور ان کے اخلاق و اعمال بارگاہ عزت میں پسندیدہ ہیں۔ اسی لیے ارشاد فرمایا ہے کہ:

"وَلَكِنَّ اللهَ حَبَّبَ إِلَيْكُمُ الْإِيْمَانَ وَزَيَّنَهُ فِي قُلُوْبِكُمْ" الآیۃ۔ یعنی اللہ تعالیٰ نے تمہیں ایمان پیارا کردیا ہے اور اسے تمہارے دلوں میں آراستہ کر دیا ہے اور کفر اور حکم عدولی اور نافرمانی تمہیں ناگوار کر دیئے اب جو کوئی اس کے خلاف کہے اپنا ایمان خراب کرے اور اپنی عاقبت بر باد۔ والعیاذ باللہ۔

عقیدہ ثامنہ امامت صدیق اکبر رضی اللہ عنہ

نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی نیابت مطلقہ کو امامتِ کُبریٰ اور اس منصبِ عظیم پر فائز

---

۱ القرآن الکریم ۷/۴۹

Fatawa-e-Razviya Volume 29

...the one who holds [this position] is called an Imam. The Imam of the Muslims, as the deputy of the Presence [Prophet] (peace and blessings of Allah be upon him), has the authority of general administration in all religious and worldly affairs of Muslims according to the Sharia, and obedience to him in matters other than sin is obligatory for the Muslims of the entire world. For this Imam, it is a condition to be a Muslim, free, sane, adult, capable, and of Quraysh descent; being Hashimi, Alawi, or infallible is not a condition for him. Making these a condition is the path of the Rawafid [Shia], whose purpose is to separate the rightful commanders of the believers, the three caliphs—Abu Bakr Siddiq, Umar Farooq, and Uthman Ghani (may Allah be pleased with them)—from the Caliphate of the Messenger. However, there is a consensus (ijma) of all the noble companions (may Allah be pleased with them) on their caliphates. Maula Ali (may Allah honor him) and the honorable Hasan and Husayn (may Allah be pleased with them both) accepted their caliphates. And the condition of being Alawi would exclude even Maula Ali from being a caliph. How can Maula Ali be Alawi? As for infallibility, it is an exclusive attribute of Prophets and Angels; the belief that an Imam must be infallible is the doctrine of the Rawafid. (Bahar-e-Shariat) According to us, the Muslims of the Ahl al-Sunnah wa al-Jama'ah, after the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him), the Caliphate and Imamate of Siddiq al-Akbar (may Allah be pleased with him) is definitively, certainly, and truly a Rightly Guided one (established and correct, based on guidance and rectitude), not a usurped or tyrannical one (obtained by force or oppression). It is adorned with mercy and compassion (kindness and affection), excellent leadership (better and more worthy command), consideration of public interest (keeping all interests in view), protection of the nation (filled with support for Sharia), and refuge for the Ummah. It is beautified with justice and equity (fairness and equality), truthfulness and correctness (rectitude), guidance and instruction (right conduct and showing truth), and the uprooting of corruption and suppression of the people of apostasy (extirpation of apostates). Numerous clear and explicit instructions from the Master of the Universe [Prophet] (peace and blessings be upon him and his family) have been reported in this regard. Secondly, the caliphate of that personification of piety occurred by the consensus of the companions, (and your ascending the throne of the caliphate after the Holy Presence [Prophet] (peace and blessings of Allah be upon him), issuing decrees and orders, managing the administration of Islamic countries, and taking the reins of all affairs of state, war, and assembly in your truthful hand is a

famous and widely reported historical event, clearer than the sun, which no one in the world—ally or adversary, even Christians, Jews, Magians, and Hindus—can deny. And those lovers of God and deputies of Mustafa (peace and blessings of Allah be upon him) are eternally the true followers (Shias) of Ali...

फ़तावा-ए-रज़विया जिल्द 29

...होने वाले को इमाम कहते हैं। मुसलमानों के इमाम, हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की नायबियत (प्रतिनिधित्व) से मुसलमानों के तमाम दीनी व दुनियावी उमूर (कार्यों) में शरीअत के मुताबिक़ सामान्य तसर्रुफ़ (प्रबंधन) का अधिकार रखते हैं, और गुनाह के अलावा अन्य मामलों में उनकी इताअत (आज्ञाकारिता) दुनिया भर के मुसलमानों पर फ़र्ज़ है। इस इमाम के लिए मुसलमान, आज़ाद, आक़िल (बुद्धिमान), बालिग़, क़ादिर (सक्षम) और कुरैशी होना शर्त है; हाशमी, अलवी या मासूम (पापरहित) होना शर्त नहीं है। इन्हें शर्त बनाना रवाफ़िज़ (शिया संप्रदाय) का मज़हब है, जिनका मक़सद यह है कि बरहक़ उमरा-ए-मोमिनीन (ईमान वालों के सच्चे अमीर), खुलफ़ा-ए-सलासा (तीन ख़लीफ़ा)—अबू बकर सिद्दीक़, उमर फ़ारूक़ और उस्मान ग़नी (रज़ियल्लाहु अन्हुम)—को रसूले पाक की ख़िलाफ़त से अलग कर दें। जबकि उनकी ख़िलाफ़तों पर तमाम सहाबा-ए-किराम (रज़ियल्लाहु अन्हुम) का इज्मा (सहमति) है। मौला अली (कर्रमल्लाहु वज्हहुल करीम) और हज़रात-ए-हसनैन (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) ने उनकी ख़िलाफ़तों को तस्लीम किया। और अलवी होने की शर्त ने तो मौला अली को भी ख़लीफ़ा होने से बाहर कर दिया। मौला अली अलवी कैसे हो सकते हैं? रही अस्मत (मासूमियत) की बात, तो यह अंबिया (नबियों) और फ़रिश्तों की विशेषता है, इमाम का मासूम होना रवाफ़िज़ का मज़हब है। (बहार-ए-शरीअत) हम अहले सुन्नत व जमात के मुसलमानों के नज़दीक रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के बाद सिद्दीक़-ए-अकबर (रज़ियल्लाहु अन्हु) की ख़िलाफ़त व इमामत निश्चित रूप से सत्य और राशिदा (सही रास्ते पर आधारित) है (साबित और दुरुस्त, रुश्द व हिदायत पर मबनी), न कि ज़बरदस्ती हासिल की गई (ग़ासिबा)। यह रहमत व शफ़क़त (मेहरबानी और स्नेह), बेहतर नेतृत्व (बेहतर और अधिक योग्य कमान), लोक कल्याण (तमाम मslहतों का लिहाज़), शरीअत की सुरक्षा (शरिअत के समर्थनों से भरपूर) और उम्मत की पनाहगाह होने के गुणों से सुसज्जित है। यह न्याय, सच्चाई, सही मार्गदर्शन और भ्रष्टाचार व धर्मत्याग को मिटाने के गुणों से सजी हुई है। इस बारे में सैयदुल कायनात (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और उनके परिवार) के स्पष्ट निर्देश बड़ी संख्या में मौजूद हैं। दूसरे, उस तक़वा (परहेज़गारी) के प्रतीक की ख़िलाफ़त सहाबा के इज्मा (सर्वसम्मति) से हुई, (और आपका हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के बाद ख़िलाफ़त के तख़्त पर आसीन होना, फ़रमान और आदेश जारी करना, इस्लामी देशों का प्रबंध संभालना और राज्य के तमाम मामलों की बागडोर अपने सच्चे हाथों में लेना एक ऐसी प्रसिद्ध और ऐतिहासिक घटना है जो सूरज की तरह साफ़ है, जिसे दुनिया में कोई भी—चाहे वह दोस्त हो या

दुश्मन, यहाँ तक कि ईसाई, यहूदी, पारसी और हिंदू भी—नकार नहीं सकते। और खुदा के वे महबूब और मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के नायब हमेशा-हमेशा के लिए अली के सच्चे अनुयायी (शिया)...

पृष्ठ 382/750

ہونے والے کو امام کہتے ہیں۔ امام المسلمین حضور صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کی نیابت سے مسلمانوں کے تمام امور دینی و دنیوی میں حسب شرع تصرف عام کا اختیار رکھتا ہے اور غیر معصیت میں اس کی اطاعت تمام جہان کے مسلمانوں پر فرض ہوتی ہے۔ اس امام کے لیے مسلمان آزاد، عاقل، بالغ، قادر، قرشی ہونا شرط ہے، ہاشمی علوی اور معصوم ہونا اس کی شرط نہیں، ان کا شرط کرنا روافض کا مذہب ہے جس سے ان کا مقصد یہ ہے کہ برحق امرائے مومنین، خلفائے ثلاثہ ابوبکر صدیق و عمر فاروق و عثمان غنی رضی اللہ تعالٰی عنہم کو خلافت رسول سے جدا کردیں۔ حالانکہ ان کی خلافتوں پر تمام صحابہ کرام رضی اللہ تعالٰی عنہم کا اجماع ہے۔ مولیٰ علی کرم اللہ وجہہ الکریم و حضرات حسنین رضی اللہ تعالٰی عنہما نے ان کی خلافتیں تسلیم کیں۔ اور علویت کی شرط نے تو مولیٰ علی کو بھی خلیفہ ہونے سے خارج کردیا۔ مولا علی کیسے علوی ہوسکتے ہیں۔ رہی عصمت تو یہ انبیاء و ملائکہ کا خاصہ ہے امام کا معصوم ہونا روافض کا مذہب ہے۔ (بہار شریعت) ہم مسلمانان اہل سنت و جماعت کے نزدیک رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کے بعد (خلافت و امامت صدیق اکبر (رضی اللہ تعالیٰ عنہ) بالقطع التحقیق (قطعاً، یقیناً، تحقیقاً) حقہ راشدہ ہے (ثابت و درست، رشد و ہدایت پر مبنی) نہ غاصبہ جائرہ (کہ غصب یا جور وجبر سے حاصل کی گئی) رحمت و رافت (مہربانی و شفقت) حسن سیادت (بہتر ولائق تر امارت) و لحاظِ مصلحت (تمام مصلحتوں سے ملحوظ) و حمایتِ ملّت (شریعت کی حمایتوں سے معمور) و پناہِ اُمت سے مزین (آراستہ و پیراستہ) اور عدل و داد (انصاف و برابری) و صدق و سداد (راستی و درستی) و رشد و ارشاد (راست روی و حق نمائی) و قطع فساد و قمع اہل ارتداد (مرتدین کی بیخ کنی) سے محلی (سنواری ہوئی) اوّل تلویحات و تصریحاتِ روشن و صریح ارشاداتِ) سید الکائنات علیہ و

علیٰ آلہ افضل الصلوات والتحیات اس بارے میں بہ کثرت وارد۔ دوسرے خلافت اس جناب تقویٰ مآب کی باجماع صحابہ واقع ہوئی، (اور آپ کا حضور اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کے بعد تخت خلافت پر جلوس فرمانا فرامین و احکام جاری کرنا، ممالک اسلامیہ کا نظم و نسق سنبھالنا، اور تمام امور مملکت و رزم و بزم کی باگیں اپنے دست حق پرست میں لینا وہ تاریخی واقعہ مشہور و متواتر اظہر من الشمس ہے، جس سے دنیا میں موافق مخالف حتی کہ نصاریٰ و یہود و مجوس و ہنود کسی کو انکار نہیں۔ اور ان محبان خدا و نوابانِ مصطفیٰ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم ابدالآباد سے شیعیان علی

Fatawa Razawiyya Volume 29

The origin of the excessive enmity is their false assumption that the right to the Caliphate was exclusively for Hazrat Maula (Ali) [May Allah honor his face]. When, by divine decree, the Rightly Guided Caliphate first went to those three leaders of the believers, the Rafidis (Shias), God forbid, labeled them as usurpers of Maula Ali's right and characterized their Caliphate and leadership as oppressive and illegitimate. Not only that, but due to the accusation of the wretched 'Taqiyya' (dissimulation), they portrayed Hazrat 'Asadullah al-Ghalib' (the Victorious Lion of Allah), God forbid, as severely weak, cowardly, a forsaker of truth, and obedient to falsehood.

Friendship with the unwise is enmity. (The friendship of the unintelligent is actually enmity)

(In short, there is a consensus among all the noble companions on their leadership and Caliphate), and a consensus of the Ummah on falsehood (especially the companions of the Messenger [Peace and Blessings be upon him]) is impossible. (And if it were accepted, then by agreeing on usurpation and oppression, God forbid, all would become transgressors; yet these are the very people who bore the clear Quran and narrated the firm religion. Anyone who calls them transgressors should either find another chain of narration back to the Noble Prophet [Peace and Blessings of Allah be upon him] or risk losing their faith. Similarly, after them, the Caliphate of Farooq, then the leadership of Dhun-Nurayn (Uthman), then the appearance of Abul Hasanayn (Ali) [May Allah be pleased with them all].

Ninth Creed: Essentials of Religion

From the Quranic texts (the clear verses of the Criterion on their intent), well-known and mutawatir traditions (supported by fame and continuous transmission), and the consensus of the blessed and forgiven Ummah (which are the foundational pillars of the palace of Sharia, free from doubts and interpretations; each of these is a definitive, certain evidence, mandatory to be accepted and confirmed), whatever is established regarding Divinity (the Essence and Attributes of Allah Almighty), Messengership (and Prophethood of Prophets and Messengers, the revelation of the Lord of the Worlds), (divine books, angels, jinn, resurrection, assembly, reckoning, the establishment of the Day of Judgment, predestination and decree), and what was and what will be (all essentials of religion) are proven (and demonstrated by these definitive proofs and clear evidences). All are true, and we believe in them all:

Paradise and its soul-refreshing states (which "no eye has seen, no ear has heard, and has never occurred to the heart of man")[1] - those great blessings.

[1] Sahih al-Bukhari, Kitab al-Tafsir, under verse 32/7, Qadimi Kutub Khana Karachi 2/704; Jami' at-Tirmidhi, Abwab al-Tafsir, Surah as-Sajdah, Amin Company Delhi 2/151; Sunan Ibn Majah, Abwab az-Zuhd, Bab Sifat al-Jannah, HM Saeed Company Karachi p. 331.

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

अत्यधिक शत्रुता का मूल कारण उनका यह झूठा भ्रम है कि खिलाफत का अधिकार विशेष रूप से हज़रत मौला (अली) [अल्लाह उनके चेहरे को सम्मानित करे] के लिए ही था। जब ईश्वरीय आदेश से, पहली राशिदुन खिलाफत मोमिनों के उन तीन सरदारों तक पहुँची, तो राफ़िदियों (शियाओं) ने, ईश्वर न करे, उन्हें मौला अली का हक छीनने वाला बताया और उनकी खिलाफत और इमामत को अन्यायपूर्ण और अवैध ठहराया। इतना ही नहीं, बल्कि दयनीय 'तकिया' के आरोप के कारण, उन्होंने हज़रत 'असदउल्लाह अल-ग़ालिब' (अल्लाह के विजयी शेर), ईश्वर न करे, को अत्यंत कमज़ोर, कायर, सत्य का त्याग करने वाला और असत्य का आज्ञाकारी चित्रित किया।

मूर्खों से मित्रता शत्रुता है। (अकलमन्दों की मूर्खों से दोस्ती शत्रुता ही होती है)

(संक्षेप में, आपकी इमामत और खिलाफत पर सभी सम्मानित सहाबा का इज्मा (आम सहमति) है) और असत्य पर उम्मत का इज्मा (विशेष रूप से पैगंबर [उन पर शांति और आशीर्वाद हो] के साथियों का) संभव नहीं है। (और यदि यह मान लिया जाए, तो हड़पने और उत्पीड़न पर सहमत होने से, ईश्वर न करे, सभी फासिक (पापी) हो जाएंगे; जबकि यही वे लोग हैं जिन्होंने स्पष्ट कुरान को वहन किया और सुदृढ़ धर्म का वर्णन किया। जो कोई भी उन्हें फासिक कहता है, उसे या तो पवित्र पैगंबर [उन पर अल्लाह की शांति और आशीर्वाद हो] तक पहुंचने वाला कोई दूसरा सिलसिला ढूंढना चाहिए या अपने ईमान से हाथ धो बैठने का जोखिम उठाना चाहिए। इसी तरह उनके बाद फारूक की खिलाफत, फिर ज़ुन-नूरैन (उस्मान) की इमामत, फिर अबुल हसनैन (अली) की उपस्थिति [अल्लाह उन सभी से प्रसन्न हो]।

नौवां अकीदा (विश्वास): दीन (धर्म) की आवश्यकताएं

कुरानी नसों (उनके उद्देश्य पर फुरकानी की स्पष्ट आयतों), प्रसिद्ध और मुतवातिर हदीसों (प्रसिद्धि और निरंतर प्रसारण द्वारा समर्थित) और उम्मत-ए-मरहूमा-मुबारका की आम सहमति (कि ये शरीयत के महल के बुनियादी स्तंभ हैं और शंकाओं और व्याख्याओं से मुक्त हैं, इनमें से प्रत्येक दलील कतई (निश्चित), यकीनी और मानने व पुष्टि करने के लिए अनिवार्य है) से जो कुछ भी ईश्वरीयता (अल्लाह तआला की ज़ात और सिफ़ात), रिसालत (और नबियों और रसूलों की नबुव्वत, रब्बुल आलमीन की वही), (आसमानी किताबें, फरिश्ते, जिन्न, पुनरुत्थान, कयामत के दिन का क़ायम होना, कज़ा और क़दर) और जो कुछ था और जो कुछ होगा (दीन की सभी आवश्यकताएं) सिद्ध है (और इन कतई

दलीलों और स्पष्ट प्रमाणों से प्रमाणित है)। सब सत्य हैं और हम उन सब पर विश्वास करते हैं: जन्नत और उसकी प्राणदायी स्थितियाँ (कि जिसे "न किसी आँख ने देखा, न किसी कान ने सुना, और न ही किसी इंसान के दिल में उसका विचार आया")[1] - वे महान वरदान।

[1] सही अल-बुखारी, किताब अल-तफ़्सीर, आयत 32/7 के तहत, क़दीमी कुतुब खाना कराची 2/704; जामी अत-तिर्मिज़ी, अबवाब अल-तफ़्सीर, सूरह अस-सजदा, अमीन कंपनी दिल्ली 2/151; सुनन इब्न माजह, अबवाब अज़-ज़ुहद, बाब सिफ़त अल-जन्नाह, एचएम सईद कंपनी कराची पृ. 331।

کو زیادہ عداوت کا منشا یہی ہے کہ ان کے زعم باطل میں استحقاق خلافت حضرت مولیٰ کرم اللہ تعالیٰ وجہہ الاسنیٰ میں منحصر تھا۔ جب بحکم الٰہی خلافت راشدہ اول ان تین سردارانِ مومنین کو پہنچی روافض نے انہیں معاذاللہ مولیٰ علی کا حق چھیننے والا اور ان کی خلافت و امامت کو غاصبہ جائرہ ٹھہرایا۔ اتنا ہی نہیں بلکہ تقیہ شقیہ کی تہمت کی بدولت حضرت اسداللہ غالب کو عیاذا باللہ سخت نامرد و بزدل و تارک حق و مطیع باطل ٹھہرایا۔ ع

دوستی بے خرداں دشمنی ست (بے عقلوں کی دوستی دشمنی ہوتی ہے)

(الغرض آپ کی امامت و خلافت پر تمام صحابہ کرام کا اجماع ہے) اور باطل پر اجماع امت (خصوصاً اصحاب حضرت رسالت علیہ وعلیہم الصلوۃ والتحیۃ کا) ممکن نہیں۔ (اور مان لیا جائے تو غصب و ظلم پر اتفاق سے عیاذا باللہ سب فساق ہوئے، اور یہی لوگ حاملان قرآن مبین و راویان دین متین ہیں، جو انہیں فاسق بتائے اپنے لیے نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم تک دوسرا سلسلہ پیدا کرے یا ایمان سے ہاتھ دھو بیٹھے، اسی طرح ان کے بعد خلافت فاروق، پھر امامت ذی النورین، پھر جلوہ فرمائی ابوالحسنین رضی اللہ تعالیٰ عنہم اجمعین۔

عقیدہ تاسعہ ضروریاتِ دین

نصوص قرآنیہ (اپنی مراد پر واضح آیات فرقانیہ) و احادیثِ مشہورہ متواترہ (شہرت اور تواتر سے مؤید) و اجماع امت مرحومہ مبارکہ (کہ یہ قصر شریعت کے اساسی ستون ہیں اور شبہات و تاویلات سے پاک، ان میں سے ہر دلیل قطعی، یقینی واجب الاذعان والثبوت، ان) سے جو کچھ درباره الوہیت (ذات و صفاتِ باری تعالیٰ) و رسالت (و نبوت انبیاء و مرسلین وحی رب العلمین)

(وکتب سماوی، و ملائکہ و جن و بعث و حشر و نشر و قیام قیامت، قضاء وقدر) وماکان و ما یکون (جملہ ضروریاتِ دین) ثابت (اور ان دلائل قطعیہ سے مدلل ان براہین واضحہ سے مبرہن) سب حق ہیں اور ہم سب پر ایمان لائے جنت اور اسکے جانفزا احوال (کہ لا عین رأت ولا اذن سمعت ولا خطر ببال احد) ۱- وہ عظیم نعمتیں

۱ صحیح البخاری کتاب التفسیر تحت آیۃ ۳۲/۷ قدیمی کتب خانہ کراچی ۲/ ۷۰۴، جامع الترمذی ابواب التفسیر سورۃ السجدۃ امین کمپنی دہلی ۲/ ۱۵۱ سنن ابن ماجہ ابواب الزہد باب صفۃ الجنۃ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ص ۳۳۱

Fatawa Razawiyya Volume 29

...those magnificent bounties and pleasures, desired and sought by soul and heart, which no eye has seen, no ear has heard, and no human heart has ever conceived) Hell and its soul-crushing conditions (that every pain and suffering which can be perceived and imagined is but a minor part of its endless torment, we seek refuge in Allah) the bounties and punishment of the grave (that it is either a garden from the gardens of Paradise or a pit from the pits of Hell) the questioning by Munkar and Nakir, the account and weighing of deeds on the Day of Judgment (the reality of which only Allah and His Messenger know), and Kausar (a pool in the field of gathering and a long and wide spring of Paradise), and Sirat (a bridge over Hell, thinner than a hair and sharper than a sword), and the intercession for the sinners of the major sins (i.e., asking for forgiveness for the sinners of the blessed Ummah who were involved in major sins) and because of it, the salvation of those who committed major sins, to all other such occurrences, everything is true and it is essential to accept them all. (Fatalism and absolute free will are both false; to consider oneself completely helpless or completely independent are both misguidances).

Instead, it is "a matter between two matters" (a path of safety between absolute choice and absolute compulsion, and excessive deliberation and thought in this is a cause of destruction; Siddiq and Farooq, may Allah be pleased with them, forbade debating on this issue. Who are we to count?). That which does not enter our intellect (we do not get entangled in it unnecessarily nor run the horses of our blind and upside-down intellect, but rather) we entrust it to God (leave it to Allah Almighty saying: "Allah knows best") and make our portion "We believe in it, all is from our Lord"[1]- (that everything is from the side of truth, everything is true, and our faith is upon everything).

Mustafa is in the midst, he who speaks by intellect, Is like one who seeks a small lamp while the sun is in the world.[2] (When Mustafa, peace and blessings of Allah be upon him, is present, who talks according to his own intellect? When the sun is shining in the world, who looks for a small star? - Trans.)

(Al-Raza said) On reaching the Throne, the bird of intellect fell exhausted and fainted, And there are still many stages ahead, this is only the first threshold.[3]

One must remember that the descent of divine revelation, the sending down of heavenly books, jinn and angels, resurrection and the afterlife, gathering and dispersal...

[1] Al-Quran Al-Karim 3/7 [2] [3] Hadaiq-e-Bakhshish, Maktaba Razawiyya Karachi, Part 1, p. 97

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

...वे महान नियामतें और जान व दिल को प्रिय और वांछित वो लज़्ज़तें जिन्हें न आँखों ने देखा, न कानों ने सुना, और न ही किसी के दिल में उनका विचार आया) जहन्नुम और उसकी जानलेवा स्थितियाँ (कि हर वह दुख और तकलीफ जिसे महसूस किया जा सके और कल्पना में लाया जा सके उसके अनंत अज़ाब का एक छोटा सा हिस्सा है, और हम अल्लाह की पनाह मांगते हैं) कब्र की नियामतें और अज़ाब (कि वह या तो जन्नत के बागों में से एक बाग है या जहन्नुम के गढ्ढों में से एक गढ्ढा है) मुनकर और नकीर के सवाल-जवाब, कयामत के दिन कर्मों का हिसाब-किताब और वज़न (जिसकी हकीकत अल्लाह और उसका रसूल ही जानते हैं) और कौसर (कि मैदान-ए-हश्र का एक हौज है और जन्नत का एक लंबा और चौड़ा चश्मा है) और सिरात (बाल से ज्यादा बारीक, तलवार से ज्यादा तेज़, जहन्नुम की पीठ पर एक पुल) और बड़े गुनहगारों (अह्ल-ए-कबाएर) के लिए शफ़ाअत (यानी उम्मत-ए-मर्हूमा के वे गुनहगार जो बड़े गुनाहों में लिप्त रहे उनके लिए बख्शिश की दुआ) और उसके कारण बड़े गुनहगारों की निजात, और इसी तरह की अन्य तमाम बातें सब सत्य हैं और उन सबको स्वीकार करना अनिवार्य है। (जब्र और कद्र दोनों गलत हैं; अपने आप को पूरी तरह विवश या पूरी तरह स्वतंत्र समझना दोनों ही गुमराही है)।

लेकिन "अम्रुन बैनल अम्रैन" (पूर्ण अधिकार और पूर्ण विवशता के बीच का रास्ता सलामती का रास्ता है और इसमें अधिक सोच-विचार विनाश का कारण है; सिद्दीक और फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने इस मुद्दे पर बहस करने से मना फ़रमाया है। हम और आप किस गिनती में हैं)। जो बात हमारी अक्ल में नहीं आती (उसमें हम खामख्वाह नहीं उलझते और अपनी अंधी अक्ल के घोड़े नहीं दौड़ाते बल्कि) उसे खुदा के हवाले करते हैं (अल्लाह अज़्वजल को सौंपते हैं कि अल्लाह ही बेहतर जानता है) और अपना हिस्सा "हमने इस पर ईमान लाया, सब हमारे रब की तरफ से है"[1]- बनाते हैं (कि सब कुछ हक की तरफ से है, सब हक है और सब पर हमारा ईमान है)।

मुस्तफा के होते हुए जो अक्ल की बात करता है, सूरज के होते हुए छोटे तारे को ढूँढने जैसा है।[2] (मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मौजूद हों तो अपनी अक्ल से कौन बात करता है, सूरज दुनिया में चमक रहा हो तो छोटे से तारे को कौन ढूँढता है। - अनुवाद)

(इमाम अहमद रज़ा ने फ़रमाया) अर्श पर जाकर अक्ल का परिंदा थक कर गिर गया, बेहोश हो गया, और अभी मंज़िलें आगे हैं, यह तो पहली ही देहरी है।[3]

याद रखना चाहिए कि वह्य-ए-इलाही का नुज़ूल, आसमानी किताबों का उतरना, जिन्न और फ़रिश्ते, कयामत और पुनरुत्थान, हश्र और नश्र...

---

[1] अल-कुरान अल-करीम 3/7 [2] [3] हदैके बख्शिश, मकतबा रज़विया कराची, हिस्सा अव्वल, पृ. 97

وہ نعیم عظمتیں اور جان و دل کو مرغوب و مطلوب وہ لذتیں جن کو نہ آنکھوں نے دیکھا نہ کانوں نے سنا، اور نہ کسی کے دل پر اُن کا خطرہ گزرا) دوزخ اور اس کے جاں گزا حالات (کہ وہ ہر تکلیف و اذیت جو ادراک کی جائے اور تصور میں لائی جائے، ایک ادنی حصہ ہے اس کے بے انتہا عذاب کا، والعیاذ باللہ) قبر کے نعیم و عذاب (کہ وہ جنت کی کیاریوں میں سے ایک کیاری ہے یا جہنم کے گڑھوں میں سے ایک گڑھا) منکر نکیر سے سوال وجواب روزِ قیامت حساب و کتاب و وزن اعمال (جس کی حقیقت اللہ جانے اور اس کا رسول) و کوثر (کہ میدانِ حشر کا ایک حوض ہے اور جنت کا طویل و عریض چشمہ) و صراط (بال سے زیادہ باریک، تلوار سے زیادہ تیز، پشتِ جہنم پر ایک پل) و شفاعتِ عصاۃِ اہلِ کبائر (یعنی گناہگار انِ اُمتِ مرحومہ کہ کبیرہ گناہوں میں ملوث رہے ان کے لیے سوالِ بخشش) اور اس کے سبب اہلِ کبائر کی نجات الی غیر ذالک من الواردات سب حق ہے اور سب ضروری القبول (جبر و قدر باطل (اپنے آپ کو مجبورِ محض یا بالکل مختار سمجھنا دونوں گمراہی)۔

وَلٰکِنْ اَمْرٌ بَیْنَ اَمْرَیْنِ (اختیارِ مطلق اور جبرِ محض کے بین بین راہِ سلامتی اور اس میں زیادہ غور و فکر سبب ہلاکت، صدیق و فاروق رضی اللہ تعالیٰ عنہما اس مسئلہ میں بحث کرنے سے منع فرمائے گئے۔ ماوشما کس گنتی میں) جو بات ہماری عقل میں نہیں آتی (اس میں خواہ مخواہ نہیں الجھتے اور اپنی اندھی اوندھی عقل کے گھوڑے نہیں دوڑاتے بلکہ) اس کو موکول بخدا کرتے (اللہ عزوجل کو سونپتے کہ واللہ اعلم بالصواب) اور اپنا نصیبہ "اٰمَنَّا بِہٖ کُلٌّ مِّنْ عِنْدِ رَبِّنَا"۱- بناتے ہیں (کہ سب کچھ حق کی جانب سے ہے سب حق ہے اور سب پر ہمارا ایمان)۔

مصطفیٰ اندر میاں آنکہ کہ می گوید بعقل آفتاب اندر جہاں آنکہ کہ می جوید سبا۲ مصطفیٰ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم تشریف فرما ہوں تو اپنی عقل سے کون بات کرتا ہے سورج دنیا میں جلوہ گر ہو تو چھوٹے سے ستارے کو کون ڈھونڈتا ہے۔ ت)

(قال الرضا) عرش پہ جاکہ مرغِ عقل تھک کے گرا، غش آگیا اور ابھی منزلوں پرے، پہلا ہی آستان ہے۳ یاد رکھنا چاہیے کہ وحی الٰہی کا نزول، کتب آسمانی کی تنزیل، جن و ملائکہ، قیامت و بعث، حشر و نشر

---

۱ القرآن الکریم ۳/ ۷ ۲ ۳ حدائق بخشش مکتبہ رضویہ کراچی حصہ اول ص ۹۷

Fatawa Ridawiyya Volume 29

The reckoning, reward and punishment, and Paradise and Hell bear the same meanings as are famous among Muslims, and which all Muslims and believers since the dawn of Islam until today—for fourteen hundred years—have continued to believe in, just like other essentials of religion. Anyone who acknowledges these things as true and accepts these words, but concocts new meanings for them—for instance, by saying that Paradise, Hell, Resurrection, Gathering, reward, and punishment imply meanings not understood from their apparent words; that reward means being happy seeing one's good deeds, and punishment means being sorrowful seeing one's bad deeds; or that they are merely spiritual pleasures and internal meanings—is an unbeliever (kafir). This is because clear and bright instructions regarding these matters exist in the Holy Quran and the noble Hadith.

Likewise, it is certainly disbelief (kufr) to say that the speech presented by the Prophets to their respective communities as the Word of God was not the Word of God at all, but rather the thoughts of those Prophets' hearts, which gushed forth from their hearts like water from a fountain and then descended back into their own hearts.

Similarly, to say that there are no snakes, scorpions, or chains in Hell, nor the punishments mentioned among Muslims, and that Hell has no external existence but is merely the highest degree of spiritual agony felt from the distress caused to the soul by disobeying Allah Almighty in this world—all this is absolute disbelief (kufr qat'i).

Similarly, to think that in Paradise there are no fruits, gardens, palaces, rivers, houris, or servants, and that Paradise has no external existence but is merely achieving the highest degree of spirituality from the soul's comfort gained by obeying Allah Almighty in this world—this is also certainly and absolutely disbelief (kufr).

Likewise, to say that the angels mentioned by Allah (Mighty and Majestic) in the Great Quran have no real existence nor is their existence possible, but rather that the various powers Allah Almighty has placed in each of His creations—such as the hardness of mountains, the flowing of water, the growth of plants—are what are named 'angels', this is also certainly and surely disbelief (kufr).

In the same way, denying the existence of Jinn and devils and naming the power of evil as Jinn or Satan is disbelief (kufr), and those who hold such views are certainly unbelievers (kafir) and are excluded from the Islamic community.

हिसाब-किताब, सवाब और अज़ाब, और जन्नत और दोज़ख़ के वही अर्थ हैं जो मुसलमानों में प्रसिद्ध हैं, और जिन पर इस्लाम के आरंभ से अब तक चौदह सौ वर्षों से सभी मुस्लिम और मोमिन अन्य आवश्यक धर्म-सिद्धांतों (ज़रूरियात-ए-दीन) की तरह विश्वास रखते आए हैं। जो व्यक्ति इन चीजों को सत्य कहे और इन शब्दों को तो स्वीकार करे, लेकिन उनके नए अर्थ गढ़े—उदाहरण के लिए, यह कहे कि जन्नत, दोज़ख़, हश्र (क़यामत), नश्र (पुनर्जीवन), सवाब और अज़ाब से ऐसे अर्थ अभिप्रेत हैं जो उनके ज़ाहिरी (स्पष्ट) शब्दों से समझ में नहीं आते; अर्थात् सवाब का अर्थ अपने नेक कार्यों को देखकर प्रसन्न होना है, और अज़ाब का अर्थ अपने बुरे कार्यों को देखकर दुखी होना है; या यह कि वे केवल आध्यात्मिक आनंद और आंतरिक अर्थ हैं—तो वह काफ़िर है। क्योंकि इन मामलों पर कुरान पाक और हदीस शरीफ़ में स्पष्ट और उज्ज्वल निर्देश मौजूद हैं।

इसी प्रकार, यह कहना भी निश्चित रूप से कुफ़्र (अविश्वास) है कि पैग़ंबरों ने अपनी-अपनी उम्मतों (समुदायों) के सामने जो कलाम (वाणी) अल्लाह का कलाम बताकर प्रस्तुत किया, वह हरगिज़ अल्लाह का कलाम नहीं था, बल्कि वह सब उन्हीं पैग़ंबरों के दिलों के विचार थे जो फ़व्वारे के पानी की तरह उन्हीं के दिलों से जोश मारकर निकले और फिर उन्हीं के दिलों पर अवतरित हो गए।

इसी तरह, यह कहना कि न तो दोज़ख़ में सांप, बिच्छू और ज़ंजीरें हैं और न ही वह अज़ाब जिनका ज़िक्र मुसलमानों में प्रचलित है, न ही दोज़ख़ का कोई बाहरी अस्तित्व है, बल्कि दुनिया में अल्लाह तआला की नाफ़रमानी से जो रूह (आत्मा) को तकलीफ़ हुई थी, बस उसी रूहानी तकलीफ़ का उच्चतम स्तर महसूस होना ही दोज़ख़ और जहन्नम है—यह सब कतई कुफ़्र है।

इसी प्रकार, यह समझना कि जन्नत में न तो फल हैं, न बाग़, न महल, न नहरें, न हूरें, न ग़ुलाम हैं, और न ही जन्नत का कोई बाहरी अस्तित्व है, बल्कि दुनिया में अल्लाह तआला की फ़रमाबरदारी (आज्ञापालन) से जो रूह को सुख प्राप्त हुआ था, बस उसी रूहानियत का उच्चतम स्तर प्राप्त करना ही जन्नत है—यह भी निश्चित रूप से कुफ़्र है।

इसी प्रकार, यह कहना कि अल्लाह अज़्ज़-व-जल्ल ने महान कुरान में जिन फ़रिश्तों का उल्लेख किया है, उनका न तो कोई वास्तविक अस्तित्व है और न ही उनका अस्तित्व संभव है, बल्कि अल्लाह तआला ने अपनी हर रचना में जो विभिन्न प्रकार की शक्तियाँ रखी हैं—जैसे पहाड़ों की कठोरता, पानी

का प्रवाह, वनस्पतियों की वृद्धि—बस उन्हीं शक्तियों का नाम फ़रिश्ता है, यह भी निश्चित रूप से कुफ़्र है।

इसी तरह, जिन्न और शैतानों के अस्तित्व को नकारना और बुराई की शक्ति का नाम जिन्न या शैतान रखना कुफ़्र है, और ऐसे कथनों के मानने वाले निश्चित रूप से काफ़िर हैं और इस्लामी बिरादरी से बाहर हैं।

حساب وکتاب، ثواب و عذاب اور جنت و دوزخ کے وہی معنی ہیں جو مسلمانوں میں مشہور ہیں اور جن پر صدرِ اسلام سے اب تک چودہ سو سال کے کافہ مسلمین و مومنین دوسرے ضروریات دین کی طرح ایمان رکھتے چلے آرہے ہیں مسلمانوں میں مشہور ہیں۔ جو شخص ان چیزوں کو تو حق کہے اور ان لفظوں کا تو اقرار کرے مگر ان کے نئے معنی گھڑے مثلاً یوں کہے کہ جنت و دوزخ و حشر و نشر و ثواب و عذاب سے ایسے معنی مراد ہیں جو ان کے ظاہر الفاظ سے سمجھ میں نہیں آتے۔ یعنی ثواب کے معنی اپنے حسنات کو دیکھ کر خوش ہونا۔ اور عذاب، اپنے برے اعمال کو دیکھ کر غمگین ہونا ہیں۔ یا یہ کہ وہ روحانی لذتیں اور باطنی معنی ہیں وہ کافر ہے کیونکہ ان امور پر قرآن پاک اور حدیث شریف میں کھلے ہوئے روشن ارشادات موجود ہیں۔

یونہی یہ کہنا بھی یقیناً کفر ہے کہ پیغمبروں نے اپنی اپنی امتوں کے سامنے جو کلام، کلامِ الہی بتا کر پیش کیا وہ ہر گز کلام الہی نہ تھا بلکہ وہ سب انہیں پیغمبروں کے دلوں کے خیالات تھے جو فوارے کے پانی کی طرح انہیں کے قلوب سے جوش مار کر نکلے اور پھر انہیں کے دلوں پر نازل ہو گئے۔

یونہی یہ کہنا کہ نہ دوزخ میں سانپ، بچھو اور زنجیریں ہیں اور نہ وہ عذاب جن کا ذکر مسلمانوں میں رائج ہے، نہ دوزخ کا کوئی وجود خارجی ہے بلکہ دنیا میں اللہ تعالیٰ کی نافرمانی سے جو کلفت روح کو ہوئی تھی بس اسی روحانی اذیت کا اعلی درجہ پر محسوس ہونا اسی کا نام دوزخ اور جہنم ہے، یہ سب کفر قطعی ہے۔

یونہی یہ سمجھنا کہ جنت میں میوے ہیں نہ باغ، نہ محل ہیں نہ نہریں ہیں، نہ حوریں ہیں، نہ غلمان ہیں، نہ جنت کا کوئی وجود خارجی ہے بلکہ دنیا میں اللہ تعالیٰ کی فرمانبرداری کی جو راحت روح کو ہوئی تھی بس اسی روحانیت کا اعلی درجہ پر حاصل ہونا اسی کا نام جنت ہے، یہ بھی قطعاً یقیناً کفر ہے۔

یونہی یہ کہنا کہ اللہ عزوجل نے قرآنِ عظیم میں جن فرشتوں کا ذکر فرمایا ہے نہ ان کا کوئی اصل وجود ہے نہ ان کا موجود ہونا ممکن ہے، بلکہ اللہ تعالیٰ نے اپنی ہر ہر مخلوق میں جو مختلف قسم کی قوتیں رکھی ہیں جیسے پہاڑوں کی سختی، پانی کی روانی، نباتات کی فزونی بس انہیں قوتوں کا نام فرشتہ ہے، یہ بھی بالقطع والیقین کفر ہے۔

یونہی جن و شیاطین کے وجود کا انکار اور بدی کی قوت کا نام جن یا شیطان رکھنا کفر ہے اور ایسے اقوال کے قائل یقیناً کافر اور اسلامی برادری سے خارج ہیں۔

Fatawa Razawiyyah Volume 29

An Illustrious Benefit Accepted matters are of four types. (1) Necessities of Religion (Dharuriyat-e-Din): Their proof is from the Great Quran, Mutawatir Hadith, or Consensus (Ijma) which are definitive in their indications and clear in their meanings, leaving no room for doubt or interpretation. Their denier or one who resorts to false interpretations regarding them is a disbeliever (Kafir). (2) Necessities of the Creed of the People of Sunnah and Community (Dharuriyat-e-Madhab-e-Ahl-e-Sunnat-o-Jama'at): Their proof is also based on definitive evidence. However, in their being definitive in origin, there is a type of doubt and a possibility of interpretation. Therefore, their denier is not a disbeliever but is called misguided, of a corrupt creed, and irreligious. (3) Firmly Established Matters (Thabitat-e-Muhkama): For their proof, speculative (dhanni) evidence is sufficient, provided that the prevailing opinion makes the opposing view discarded, weak, and unworthy of special consideration. For their proof, a single-chain (ahad), authentic (sahih), or good (hasan) Hadith is sufficient, and the statement of the vast majority (Sawad-e-A'zam) and the bulk of scholars is an ample authority; "Indeed, Allah's Hand of Power is over the group." Their denier, after the matter has become clear, is considered a blunderer and a sinner, but not irreligious or misguided, nor a disbeliever or expelled from Islam. (4) Probable Speculative Matters (Dhanniyat-e-Muhtamila): For their proof, even such speculative evidence is sufficient that leaves room for an alternative view. Their denier will only be called mistaken and at fault, not a sinner, let alone misguided or a disbeliever. Each of these matters requires evidence according to its own rank. He who does not differentiate between ranks and demands evidence of a higher rank for a matter of a lower rank is either an ignorant fool or a cunning philosopher. Every word has its time and every point has its place. (Every talk has a time and every nuance has its specific place. T) And if you do not maintain the distinction of ranks, you are a heretic (Zindiq). (If you do not keep the difference of ranks in view, you are a heretic. T)

फतावा रज़विया जिल्द 29

फायदा-ए-जलीला (एक महान लाभ) मानी हुई बातें चार प्रकार की होती हैं। (१)ज़रूरियात-ए-दीन (धर्म की अनिवार्यताएं): इनका प्रमाण कुरान अज़ीम, हदीस-ए-मुतवातिर, या इज्मा (आम सहमति) के ऐसे स्पष्ट और निश्चित प्रमाणों से होता है जिनमें न तो संदेह की गुंजाइश होती है और न ही व्याख्या (तावील) की गुंजाइश। इनका इनकार करने वाला या इनमें गलत व्याख्या करने वाला काफ़िर होता है। (२) ज़रूरियात-ए-मज़हब-ए-अहले सुन्नत व जमाअत (अहले सुन्नत व जमाअत के पंथ की अनिवार्यताएं): इनका प्रमाण भी निश्चित दलील (दलील-ए-क़तई) से होता है। लेकिन इनके निश्चित रूप से सिद्ध होने में एक प्रकार का संदेह और व्याख्या की संभावना होती है। इसलिए इनका इनकार करने वाला काफ़िर नहीं, बल्कि गुमराह, बद-मज़हब, और बद-दीन कहलाता है। (३) साहिबात-ए-मोहकमा (दृढ़ता से स्थापित बातें): इनके प्रमाण के लिए 'ज़न्नी' (अनुमानात्मक) दलील पर्याप्त है, बशर्ते कि उसकी प्रबल राय विपक्षी पक्ष को त्यागने योग्य, कमज़ोर और विशेष ध्यान के अयोग्य बना दे। इनके प्रमाण के लिए हदीस-ए-आहाद, सहीह या हसन हदीस पर्याप्त है, और सवाद-ए-आज़म (बहुमत) और विद्वानों के बहुमत का कथन पर्याप्त प्रमाण है; "बेशक, अल्लाह की शक्ति का हाथ जमाअत (समूह) पर है।" (त) मामला स्पष्ट होने के बाद इनका इनकार करने वाला गलती करने वाला और पापी माना जाता है, न कि बद-दीन, गुमराह, काफ़िर या इस्लाम से बाहर। (४) ज़न्नियात-ए-मुहतमिला (संभावित अनुमानात्मक बातें): इनके प्रमाण के लिए ऐसी 'ज़न्नी' दलील भी काफी है जिसने विपक्षी पक्ष के लिए भी गुंजाइश रखी हो। इनका इनकार करने वाले को केवल गलती करने वाला और कुसूरवार कहा जाएगा, न कि गुनहगार, गुमराह या काफ़िर तो दूर की बात है। इनमें से हर बात अपने ही स्तर (मर्तबे) की दलील चाहती है। जो व्यक्ति स्तरों में अंतर नहीं करता और एक स्तर की बात के लिए उससे उच्च स्तर की दलील मांगता है, वह या तो अज्ञानी मूर्ख है या चालाक दार्शनिक। हर बात का एक वक्त और हर नुक्ते का एक स्थान होता है। (हर बात का कोई समय और हर बारीकी का कोई विशेष स्थान होता है। त) और यदि तू स्तरों के भेद को न रखे, तो तू नास्तिक (ज़ंदीक) है। (यदि आप पदों के अंतर को ध्यान में नहीं रखते हैं, तो आप एक नास्तिक हैं। त)

पृष्ठ 386 का 750

فائدہ جلیلہ مانی ہوئی باتیں چار قسم ہوتی ہیں۔ (۱) ضروریاتِ دین: ان کا ثبوت قرآن عظیم یا حدیث متواتر یا اجماع قطعیات الدلالات واضحۃ الافادات سے ہوتا ہے جن میں نہ شبہے کی گنجائش نہ تاویل کو راہ۔ اور ان کا منکر یا ان میں باطل تاویلات کا مرتکب کافر ہوتا ہے۔ (۲) ضروریاتِ مذہبِ اہل سنت و جماعت: ان کا ثبوت بھی دلیل قطعی سے ہوتا ہے۔ مگر ان کے قطعی الثبوت ہونے میں ایک نوع شبہ اور تاویل کا احتمال ہوتا ہے اسی لیے ان کا منکر کافر نہیں بلکہ گمراہ، بد مذہب، بد دین کہلاتا ہے۔ (۳) ثابتاتِ محکمہ: ان کے ثبوت کو دلیل ظنی کافی، جب کہ اس کا مفاد اکبر رائے ہو کہ جانب خلاف کو مطروح و مضمحل اور التفاتِ خاص کے ناقابل بنا دے۔ اس کے ثبوت کے لیے حدیثِ احاد، صحیح یا حسن کافی، اور قولِ سوادِ اعظم و جمہور علماء کا سندِ وافی، فان ید اللہ علی الجماعۃ (اللہ تعالٰی کا دستِ قدرت جماعت پر ہوتا ہے۔ ت) ان کا منکر وضوحِ امر کے بعد خاطی و آثم خطاکار و گناہگار قرار پاتا ہے، نہ بد دین و گمراہ نہ کافر و خارج از اسلام (۴) ظنیاتِ محتملہ: ان کے ثبوت کے لیے ایسی دلیل ظنی بھی کافی، جس نے جانبِ خلاف کے لیے بھی گنجائش رکھی ہو، ان کے منکر کو صرف مخطی و قصور وار کہا جائے گا نہ گنہگار، چہ جائیکہ گمراہ، چہ جائیکہ کافر۔ ان میں سے ہر بات اپنے ہی مرتبے کی دلیل چاہتی ہے جو فرقِ مراتب نہ کرے اور ایک مرتبے کی بات کو اس سے اعلٰی درجے کی دلیل مانگے وہ جاہل بے وقوف ہے یا مکار فیلسوف ع ہر سخن وقتی و ہر نکتہ مقامے دارد (ہر بات کا کوئی وقت اور ہر نکتے کا کوئی خاص مقام ہوتا ہے۔ ت) اور ع گر فرقِ مراتب نہ کنی زندیقی (اگر تو مراتب کے فرق کو ملحوظ نہ رکھے تو زندیق ہے۔ ت)

Fatawa Razawiyya, Volume 29

And especially, there is absolutely no need for explicit clarification in the Great Quran, or even in the Hadith, even regarding the highest level, i.e., the necessities of faith (Zaruriyat-e-Deen).

Many matters are among the necessities of faith, the denier of which is certainly a disbeliever (kafir), but they are not mentioned explicitly in verses and hadiths. For example, it is impossible for the Exalted Creator to be ignorant.

The Great Quran mentions Allah Almighty's knowledge and encompassment in a hundred thousand places, but the discussion of impossibility and possibility is nowhere to be found. Then, what about the person who says that in reality, of course, Allah Almighty knows everything, He is the Knower of the unseen and the witnessed, not a single atom is hidden from His knowledge.

However, is it possible that He becomes ignorant? Would he not be a disbeliever just because the explicit negation of its possibility is not mentioned in the Quran? God forbid! He is certainly a disbeliever, and whoever does not call him a disbeliever is a disbeliever himself. So, when explicit clarification for every detail of the necessities of faith is not mandatory in the Quran and Hadith, then to be stubborn about matters of a lower degree, saying "show us in the Quran itself or we won't believe," is pure ignorance or explicit misguidance. But no one has a cure for madness and prejudice.

So, listen carefully and engrave it on the tablet of your heart: whomever you hear saying "we do not know the sayings of the Imams, we only need the Quran and Hadith," know that he is misguided. And whomever you hear saying "we do not know the Hadith, we only require the Quran," understand that he is irreligious and an ill-wisher of God's religion.

O Muslims! Do not listen to even one thing from these misguided people. And when they create doubt for you in the Quran, take refuge in the Hadith. If they raise objections in the Hadith, hold on to the hem of the Imams of religion. At this level, truth and falsehood will become clearly manifest, and all the dust raised by these misguided ones will be washed away by the raining clouds of truth, and at that time these straying and misleading groups will be seen running away.

"As if they were frightened donkeys, fleeing from a lion." 1. (As if they were startled donkeys that have fled from a lion) (As-Sarim al-Rabbani, summarized).

Tenth Belief _____ Shariah and Tariqah

Shariah and Tariqah are not two divergent paths (that are separate and contrary to each other). Rather, without following Shariah, reaching God is impossible. Shariah encompasses all commands for body, soul, spirit, and heart.

---

1 Al-Quran al-Karim 74/ 50, 51

और विशेष रूप से, महान कुरान या हदीस में स्पष्ट उल्लेख की बिल्कुल आवश्यकता नहीं है, यहाँ तक कि उच्चतम स्तर यानी दीन की अनिवार्यताओं (ज़रूरियात-ए-दीन) में भी।

दीन की अनिवार्यताओं में से बहुत सी बातें ऐसी हैं जिनका इनकार करने वाला निश्चित रूप से काफिर है, लेकिन उनका स्पष्ट उल्लेख आयतों और हदीसों में नहीं है। उदाहरण के लिए, ईश्वर (बारी अज़्वजल) का अज्ञानी होना असंभव है।

महान कुरान में अल्लाह अज़्वजल के ज्ञान और व्यापकता का लाख जगह ज़िक्र है, लेकिन असंभवता और संभावना की बहस कहीं नहीं है। फिर उस व्यक्ति का क्या होगा जो कहे कि वास्तव में तो बेशक अल्लाह तआला सब कुछ जानता है, वह अदृश्य और दृश्य का ज्ञाता है, कोई कण उसके ज्ञान से छिपा नहीं है।

लेकिन क्या यह संभव है कि वह अज्ञानी हो जाए? तो क्या वह काफिर नहीं होगा क्योंकि इसकी संभावना का स्पष्ट निषेध कुरान में वर्णित नहीं है? अल्लाह की पनाह! वह निश्चित रूप से काफिर है और जो उसे काफिर न कहे वह खुद काफिर है। तो जब दीन की अनिवार्यताओं के हर विवरण का स्पष्ट उल्लेख कुरान और हदीस में अनिवार्य नहीं है, तो उनसे नीचे के स्तर की किसी बात पर यह चिड़चिड़ापन कि "हमें तो कुरान ही में दिखाओ वरना हम नहीं मानेंगे," कोरी अज्ञानता है या स्पष्ट पथभ्रष्टता। लेकिन पागलपन और कट्टरता का इलाज किसी के पास नहीं है।

तो अच्छी तरह कान खोलकर सुन लो और दिल की तख्ती पर लिख लो कि जिसे तुम यह कहते सुनो कि "हम इमामों के कथन को नहीं जानते, हमें तो कुरान और हदीस चाहिए," जान लो कि वह गुमराह है। और जिसे यह कहते सुनो कि "हम हदीस नहीं जानते, हमें सिर्फ कुरान चाहिए," समझ लो कि वह अधर्मी है और ईश्वर के धर्म का बुरा चाहने वाला है।

मुसलमानों! इन गुमराहों की एक न सुनो। और जब वे तुम्हें कुरान में संदेह में डालें तो तुम हदीस की शरण लो। अगर वे हदीस में मीन-मेख निकालें तो तुम धर्म के इमामों का दामन थाम लो। इस स्तर पर पहुँचकर सत्य और असत्य स्पष्ट रूप से प्रकट हो जाएगा और इन गुमराहों द्वारा उड़ाई गई सारी धूल सत्य के बरसते बादलों से धुल जाएगी और उस समय ये पथभ्रष्ट और गुमराह करने वाले समूह भागते हुए नज़र आएंगे।

"जैसे वे बिदके हुए गधे हों, जो शेर से भागे हों।" 1. (जैसे वे डरे हुए गधे हों जो शेर से भागे हों) (अस-सारिम अल-रब्बानी, संक्षिप्त)।

दसवां अकीदा ____ शरीयत और तरीकत

शरीयत और तरीकत दो अलग रास्ते नहीं हैं (कि वे एक-दूसरे से जुदा और एक-दूसरे के खिलाफ हों), बल्कि शरीयत का पालन किए बिना ईश्वर तक पहुँचना असंभव है। शरीयत शरीर, जान, रूह और दिल के सभी आदेशों का संग्रह है।

---

1 अल-कुरान अल-करीम 74/50, 51

اور بالخصوص قرآنِ عظیم بلکہ حدیث ہی میں تصریح ہونے کی تو اصلاً ضرورت نہیں حتیٰ کہ مرتبہ اعلیٰ یعنی ضروریاتِ دین میں بھی۔

بہت باتیں ضروریاتِ دین سے ہیں جن کا منکر یقیناً کافر مگر بالتصریح ان کا ذکر آیات و احادیث میں نہیں، مثلاً باری عزوجل کا جہل محال ہونا۔

قرآنِ عظیم میں اللہ عزوجل کے علم واحاطہ کالا کھ جگہ ذکر ہے مگر امتناعِ وامکان کی بحث کہیں نہیں پھر کیا جو شخص کہے کہ واقع میں تو بے شک اللہ تعالیٰ سب کچھ جانتا ہے، عالم الغیب والشہادۃ ہے، کوئی ذرہ اس کے علم سے چھپا نہیں۔

مگر ممکن ہے کہ جاہل ہو جائے تو کیا وہ کافر نہ ہوگا کہ اس کے امکان کا سلب صریح قرآن میں مذکور نہیں۔ حاشا للہ! ضرور کافر ہے اور جواسے کافر نہ کہے خود کافر، تو جب ضروریاتِ دین ہی کے ہر جزئیہ کی تصریح صریح قرآن و حدیث میں ضرور نہیں تو ان سے اتر کر اور کسی درجے کی بات پر یہ مڑ چڑا پن کہ ہمیں تو قرآن ہی میں دکھاؤ ورنہ ہم نہ مانیں گے، نری جہالت ہے یا صریح ضلالت، مگر جنون و تعصب کا علاج کسی کے پاس نہیں۔

تو خوب کان کھول کر سن لو اور لوحِ دل پر نقش رکھو کہ جسے کہتا سنو ہم اماموں کا قول نہیں جانتے ہمیں تو قرآن و حدیث چاہیے، جان لو کہ یہ گمراہ ہے، اور جسے کہتا سنو کہ ہم حدیث نہیں جانتے ہمیں صرف قرآن درکار ہے سمجھ لو کہ یہ بددین، دینِ خدا کا بدخواہ ہے۔

مسلمانو! تم ان گمراہوں کی ایک نہ سنو۔ اور جب تمہیں قرآن میں شبہ ڈالیں تم حدیث کی پناہ لو۔ اگر حدیث میں ایں و آں نکالیں تم ائمہ دین کا دامن پکڑو۔ اس درجے پر آکر حق و باطل صاف کھل

جائے گا اور ان گمراہوں کا اڑایا ہوا، سارا غبار حق کے برسنے ہوئے بادلوں سے دھل جائے گا اور اس وقت یہ ضال، مضل طائفے بھاگتے نظر آئیں گے۔

"كَاَنَّهُمْ حُمُرٌ مُّسْتَنْفِرَةٌ۟ فَرَّتْ مِنْ قَسْوَرَةٍ۟" 1- (گویا وہ بھڑکے ہوئے گدھے ہوں کہ شیر سے بھاگے ہوں) (الصارم الربانی ملخصاً)

عقیدہ عاشرہ _____ شریعت و طریقت

شریعت و طریقت، دو راہیں متبائن نہیں (کہ ایک دوسرے سے جدا اور ایک دوسرے کے خلاف ہوں) بلکہ بے اتباعِ شریعت، خدا تک وصول محال، شریعت تمام احکام جسم و جان و روح قلب

---

1 القرآن الکریم ۷۴/ ۵۰، ۵۱

Fatawa Rizvia, Volume 29

And it encompasses all divine sciences and infinite gnosis, each piece of which is named 'Tariqat' (the path) and 'Ma'rifat' (gnosis). Therefore, by definitive consensus, it is obligatory to present all the spiritual realities of all noble saints before the pure Shari'ah. If they are in accordance with the Shari'ah, they are truth and acceptable; otherwise, they are rejected and forsaken (expelled and unacceptable).

(So, certainly and definitively, Shari'ah is the core business; Shari'ah is the pivot and axis; Shari'ah is the touchstone and criterion, and the testing stone for distinguishing truth from falsehood). 'Shari'ah' means 'way' or 'path', and the translation of 'Shari'ah Muhammadiyah' (upon its owner be prayers and salutations) is the path of Muhammad, the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him). And this is absolutely general and absolute, not specific only to a few physical rulings.

This is the very path that every Muslim has been commanded to ask for five times a day, in every prayer and every rak'ah, and to pray for patience and steadfastness upon it: "Guide us to the straight path"[1]. (Lead us on the straight path). Lead us on the path of Muhammad (peace and blessings of Allah be upon him), and keep us firm on his Shari'ah.

Similarly, 'Tariq', 'Tariqah', and 'Tariqat' mean the 'way/path', not the 'arrival'. So, certainly, Tariqat is also the name of a path. Now, if it separates from the Shari'ah, then by the testimony of the Great Quran, it will not lead to God but to Satan; it will not lead to Paradise but to Hell, because the Great Quran has already declared all paths other than the Shari'ah as false and rejected.

Inevitably, it must be that Tariqat is this Shari'ah itself; it is a part of this radiant path. Its separation from it is impossible and improper. Whoever considers it separate from the Shari'ah, breaks it from the path of God and considers it the path of Iblis (Satan). But God forbid, the true Tariqat is not the path of Iblis; it is definitively the path of God.) No matter what kind of spiritual exercises and struggles a servant performs, (no matter how much time is spent in spiritual exercises, struggles, and forty-day seclusions), they should not reach a rank where the obligations of the Shari'ah (the commands and prohibitions of the pure Shari'ah) are dropped from them, and they are left like an unbridled horse or a camel without a nose-ring.

The Great Quran says: "Indeed, my Lord is on a straight path"[2]. Indeed, my Lord is found on this very straight path.

[1] Al-Quran al-Kareem 1/5 [2] Al-Quran al-Kareem 11/56 Page 388 of 750

फ़तावा रज़विया, खंड २९

और यह समस्त ईश्वरीय विज्ञान और असीमित ज्ञान का संगम है, जिनमें से प्रत्येक अंश का नाम 'तरीक़त' और 'मआरिफ़त' (ज्ञान) है। इसलिए, सर्वसम्मत निर्णय (इज्मा) के अनुसार, सभी महान संतों की सभी आध्यात्मिक वास्तविकताओं को पवित्र शरीअत के समक्ष प्रस्तुत करना अनिवार्य है। यदि वे शरीअत के अनुसार हैं, तो वे सत्य और स्वीकार्य हैं; अन्यथा, वे अस्वीकृत और त्याग दिए जाने योग्य (बहिष्कृत और अमान्य) हैं।

(तो निश्चित रूप से शरीअत ही मुख्य आधार है; शरीअत ही केंद्र और धुरी है; शरीअत ही कसौटी और मानदंड है, और सत्य और असत्य को परखने की कसौटी है)। 'शरीअत' का अर्थ 'मार्ग' है, और 'शरीअत-ए-मोहम्मदिया' (उन पर कृपा और शांति हो) का अनुवाद मुहम्मद रसूलुल्लाह (अल्लाह उन पर कृपा और शांति बरसाए) का मार्ग है। और यह पूर्णतः व्यापक और निरपेक्ष है, न कि केवल कुछ शारीरिक आदेशों तक सीमित।

यही वह मार्ग है जिसे पाँचों समय, प्रत्येक नमाज़ की प्रत्येक रकात में मांगना और उस पर धैर्य और दृढ़ता के लिए प्रार्थना करना हर मुसलमान पर अनिवार्य किया गया है: "हमें सीधे मार्ग पर चला" १। (हमें सीधे रास्ते पर चला)। हमें मुहम्मद (अल्लाह उन पर कृपा और शांति बरसाए) के मार्ग पर चला, उनकी शरीअत पर अटल रख।

इसी प्रकार, 'तारीक़', 'तरीक़ा' और 'तरीक़त' का अर्थ 'मार्ग' है, न कि 'पहुंचना'। तो निश्चित रूप से तरीक़त भी एक मार्ग का ही नाम है। अब यदि यह शरीअत से अलग हो जाए, तो महान कुरान की गवाही के अनुसार, यह खुदा तक नहीं पहुँचाएगा बल्कि शैतान तक ले जाएगा; यह स्वर्ग तक नहीं ले जाएगा बल्कि नरक में ले जाएगा, क्योंकि महान कुरान शरीअत के अलावा अन्य सभी मार्गों को पहले ही असत्य और अस्वीकृत घोषित कर चुका है।

अनिवार्य रूप से यह हुआ कि तरीक़त यही शरीअत है; यह इसी उज्ज्वल मार्ग का एक हिस्सा है। इसका इससे अलग होना असंभव और अनुचित है। जो इसे शरीअत से अलग मानता है, वह इसे खुदा के रास्ते से तोड़कर इब्लीस (शैतान) का रास्ता मानता है। (लेकिन ईश्वर न करे, सच्ची तरीक़त इब्लीस का रास्ता नहीं है, बल्कि निश्चित रूप से खुदा का रास्ता है।) कोई बंदा चाहे कैसी भी रियाज़त और मुजाहिदा (साधना और संघर्ष) क्यों न करे, (चाहे साधनाओं, संघर्षों और चिल्लों में कितना ही समय बिताया जाए), वह उस पद तक नहीं पहुँच सकता जहाँ शरीअत के दायित्व (पवित्र शरीअत के आदेश

और निषेध) उससे समाप्त हो जाएँ और उसे बिना लगाम के घोड़े या बिना नकेल के ऊँट की तरह छोड़ दिया जाए।

महान कुरान में फरमाया गया: "निस्संदेह, मेरा रब सीधे रास्ते पर है" २। वास्तव में, मेरा रब इसी सीधे रास्ते पर मिलता है।

१ अल-कुरान अल-करीम १/ ५ २ अल-कुरान अल-करीम ११/ ५६ पृष्ठ ३८८ का ७५०

فتاویٰ رضویہ، جلد ۲۹

و جملہ علوم الٰہیہ و معارف نامتناہیہ کو جامع ہے جن میں سے ایک ایک ٹکڑے کا نام طریقت و معرفت ہے و لہٰذا باجماع قطعی جملہ اولیائے کرام کے تمام حقائق کو شریعت مطہرہ پر عرض کرنا فرض ہے، اگر شریعت کے مطابق ہوں حق و قبول ہیں ورنہ مردود و مخذول (مطرود و نا مقبول)

(تو یقیناً قطعاً شریعت ہی اصل کار ہے، شریعت ہی مناط و مدار ہے شریعت ہی محک و معیار ہے اور حق و باطل کے پر کھنے کی کسوٹی) شریعت راہ کو کہتے ہیں اور شریعت محمدیہ علی صاحبہا الصلوٰۃ والتحیۃ کا ترجمہ ہے محمد رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی راہ۔ اور یہ قطعاً عام و مطلق ہے نہ کہ صرف چند احکام جسمانی سے خاص۔

یہی وہ راہ ہے کہ پانچوں وقت، ہر نماز ہر رکعت میں اس کا مانگنا اور اس پر صبر و استقامت کی دُعا کرنا ہر مسلمان پر واجب فرمایا ہے کہ "اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ" 1. (ہم کو سیدھا راستہ چلا) ہم کو محمد صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی راہ پر چلا، ان کی شریعت پر ثابت قدم رکھ۔

یونہی طریق، طریقہ، طریقت راہ کو کہتے ہیں نہ کہ پہنچ جانے کو، تو یقیناً طریقت بھی راہ ہی کا نام ہے، اب اگر وہ شریعت سے جدا ہو تو بشہادت قرآن عظیم خدا تک نہ پہنچائے گی بلکہ شیطان تک جنت تک نہ لے جائے گی بلکہ جہنم میں کہ شریعت کے سوا سب راہوں کو قرآن عظیم باطل و مردود فرما چکا۔

لاجرم ضرور ہوا کہ طریقت یہی شریعت ہے اسی راہِ روشن کا ٹکڑا ہے۔ اس کا اس سے جدا ہونا محال و ناسزا ہے، جو اسے شریعت سے جدا مانتا ہے اسے راہ خدا سے توڑ کر راہِ ابلیس مانتا ہے

مگر حاشا، طریقت حقہ راہِ ابلیس نہیں قطعاً راہِ خدا ہے) نہ بندہ کسی وقت کیسی ہی ریاضات و مجاہدات بجا لائے۔ (کیسی ہی ریاضتوں، مجاہدوں اور چلہ کشیوں میں وقت گزارا جائے۔ اس رُتبہ تک پہنچے کہ تکالیف شرع (شریعت مطہرہ کے فرامین و احکام امر و نہی) اس سے ساقط ہو جائیں اور اسے اسپ بے لگام و شتر بے زمام کرکے چھوڑ دیا جائے۔

قرآن عظیم میں فرمایا: "اِنَّ رَبِّیْ عَلٰی صِرَاطٍ مُّسْتَقِیْمٍ" 2۔ بے شک اسی سیدھی راہ پر میرا رب ملتا ہے۔

1 القرآن الکریم ۱/ ۵ 2 القرآن الکریم ۱۱/ ۵۶ صفحہ 388 از 750

(Heading: Fatawa Ridawiyya Volume 29)

And [Allah] said: "And, [moreover], this is My path, which is straight, so follow it; and do not follow [other] ways" - the Ayah. From the beginning of the Ruku' (section), after explaining the commandments of Sharia, He says: And O Beloved! Say that this Sharia is my straight path, so follow it, and do not follow other paths besides it, for they will separate you from the path of God. Look, the Great Quran has clearly stated that Sharia is the only path whose destination is Allah and through which one reaches Allah; whatever path a person takes other than this, he will fall far from the path of Allah. Whatever is revealed in Tariqah (the spiritual path) is a blessing of following the Sharia; otherwise, without following the Sharia, great revelations are given to monks, yogis, and ascetics, but where do they lead? They lead to the fire of Hell and painful punishment. (Maqal al-Arifa') A Sufi is one who makes his 'hawa' (desires, intentions) subordinate to the Sharia (does not follow any desire without the following of Sharia), not one who renounces the Sharia for the sake of 'hawa' (lust and carnal desires) (and becomes free from following Sharia). Sharia is the food and Tariqah is the strength; when food is abandoned, strength will decline on its own. Sharia is the eye and Tariqah is the vision; and for vision to remain after the eye is destroyed is inconceivable (sound intellect does not accept it, so how can it be accepted or valid in the pure Sharia). If after reaching (the destination), there were indifference towards following the Sharia (and following the commands of Sharia were not mandatory and necessary, or if a servant were given a choice in it), then the Master of the Worlds (Prophet Muhammad) ﷺ and the Imam of the Arrived (Ali) k.a.w. would be most deserving of it (and would be foremost in abandoning servitude and following Sharia). No (this is not the case at all), rather, as much as proximity (to Truth) increases, the reins of Sharia become even tighter, (for) "The good deeds of the righteous are the sins of the near ones" - (Even the virtues of the righteous are counted as shortcomings for those drawn near). Couplet: For those who are near, there is greater bewilderment. (Those who are close experience more wonder).

I.T. Majlis of Dawat-e-Islami 1 Al-Qur'an al-Karim 6/153 2 Kashf al-Khafa, Hadith 1135, Dar al-Kutub al-Ilmiyyah, Beirut 1/318 Page 389 of 750

(शीर्षक: फतावा रजविया खंड 29)

और फरमाया: "और यह कि यह मेरा सीधा रास्ता है, तो तुम इसी पर चलो, और दूसरे रास्तों पर न चलो" - आयत। रुकू के शुरू से शरीयत के अहकाम बयान करके फरमाता है। और ऐ महबूब! आप फरमा दीजिए कि यह शरीयत मेरा सीधा रास्ता है तो इसकी पैरवी करो और इसके सिवा और रास्तों के पीछे न लग जाओ कि वे तुम्हें खुदा की राह से जुदा कर देंगे। देखो कुरआन ए अजीम ने साफ फरमा दिया कि शरीयत ही सिर्फ वह राह है जिसकी मंज़िल अल्लाह है और जिससे अल्लाह तक पहुँच है, इसके सिवा आदमी जो राह चलेगा अल्लाह की राह से दूर पड़ेगा। तरीकत में जो कुछ ज़ाहिर होता है वह शरीयत ही की पैरवी का सदका है वरना शरीयत की पैरवी के बिना बड़े-बड़े कशफ़ (रहस्योद्घाटन) राहबों, योगियों, संन्यासियों को दिए जाते हैं, फिर वे कहाँ तक ले जाते हैं, उसी जहन्नम की आग और दर्दनाक अज़ाब तक पहुँचाते हैं। (मक़ालुल आरिफ़ा) सूफी वह है जो अपनी हवा (इच्छाओं, इरादों) को शरीयत के अधीन करे (शरीयत की पैरवी के बिना किसी इच्छा पर न चले), न कि वह जो हवा (हवस और नफसानी इच्छाओं) की खातिर शरीयत से दस्तबरदार हो जाए (और शरीयत की पैरवी से आज़ाद हो जाए)। शरीयत भोजन है और तरीकत शक्ति, जब भोजन छोड़ दिया जाएगा तो शक्ति अपने आप खत्म हो जाएगी। शरीयत आँख है और तरीकत नज़र (दृष्टि), और आँख फूटने के बाद नज़र का बाकी रहना अकल्पनीय है (स्वस्थ बुद्धि स्वीकार नहीं करती, तो शरीयत ए मुतहरा में कब मक़बूल व मोतबर होगी)। मंज़िल पर पहुँचने के बाद अगर शरीयत की पैरवी से बेपरवाही होती (और शरीयत के अहकाम की पैरवी लाज़िम व ज़रूर न रहती या बंदा इसमें मुख्तार होता) तो सैयदुल आलमीन ﷺ और इमामुल वासलीन अली करम अल्लाह तआला वज्हहु इसके सबसे ज़्यादा हकदार होते (और बंदगी छोड़ने व शरीयत की पैरवी के मामले में सबसे आगे होते)। नहीं (यह बात नहीं है और हरगिज़ नहीं), बल्कि जितनी कुर्बत (हक की) बढ़ती जाती है, शरीयत की लगाम उतनी ही सख्त होती जाती है (कि) नेक लोगों की नेकियाँ मुकर्रबीन के लिए गुनाह होती हैं - (अबरार की नेकियाँ भी मुकर्रबीन के लिए ऐब होती हैं)। शेर: नज़दीकियों के लिए हैरानी और ज़्यादा होती है। (करीब वालों को हैरत ज़्यादा होती है)

आई.टी. मज्लिस ए दावत-ए-इस्लामी 1 अल-कुरआन अल-करीम 6/153 2 कशफुल खफा हदीस 1135 दारुल कुतुबुल इल्मिया बेरुत 1/318 पृष्ठ 389/750

(فتاوی رضویہ جلد ۲۹)

اور فرمایا: "وَ اَنَّ هٰذَا صِرَاطِیْ مُسْتَقِیْمًا فَاتَّبِعُوْهُ وَ لَا تَتَّبِعُوا السُّبُلَ" الآیۃ - شروع رکوع سے احکام شریعت بیان کر کے فرماتا ہے۔ اور اے محبوب! تم فرما دو کہ یہ شریعت میری سیدھی راہ ہے تو اس کی پیروی کرو اور اس کے سوا اور راستوں کے پیچھے نہ لگ جاؤ کہ وہ تمہیں خدا کی راہ سے جدا کردیں گے۔ دیکھو قرآن عظیم نے صاف فرما دیا کہ شریعت ہی صرف وہ راہ ہے جس کا منتہی اللہ ہے اور جس سے وصول الی اللہ ہے، اس کے سوا آدمی جو راہ چلے گا اللہ کی راہ سے دور پڑے گا، طریقت میں جو کچھ منکشف ہوتا ہے شریعت ہی کے اتباع کا صدقہ ہے ورنہ بے اتباع شرع بڑے بڑے کشف راہبوں، جوگیوں، سنیاسیوں کو دیئے جاتے ہیں، پھر وہ کہاں تک لے جاتے ہیں، اسی نارِ جحیم و عذاب الیم تک پہنچاتے ہیں۔ (مقال العرفاء) صوفی وہ ہے کہ اپنے ہوا (اپنی خواہشوں، اپنی مرادوں) کو تابع شرع کرے (بے اتباع شرع کسی خواہش پر نہ لگے) نہ وہ کہ ہوا (وہوس اور نفسانی خواہشوں) کی خاطر شرع سے دستبردار ہو (اور اتباع شریعت سے آزاد) شریعت غذا ہے اور طریقت قوت، جب غذا ترک کی جائے گی قوت آپ زوال پائے گی، شریعت آنکھ ہے اور طریقت نظر (اور) آنکھ پھوٹ کر نظر کا باقی رہنا غیر متصور (عقل سلیم قبول نہیں کرتی تو شریعت مطہرہ میں کب مقبول و معتبر) بعد از وصول (منزل) اگر اتباع شریعت سے بے پرواہی ہوتی (اور احکام شرع کا اتباع لازم و ضرور نہ رہتا یا بندہ اس میں مختار ہوتا) تو سید العالمین صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم اور امام الواصلین علی کرم اللہ تعالیٰ وجہہ اس کے ساتھ احق ہوتے (اور ترک بندگی و اتباع شرع کے باب میں سب سے مقدم و پیش رفت) نہیں (یہ بات نہیں اور ہر گز نہیں) بلکہ جس قدر قرب (حق) زیادہ ہوتا ہے شرع کی باگیں اور زیادہ سخت ہوتی جاتی ہیں

(کہ) حسنات الابرار سیئات المقربین - (ابرار کی نیکیاں بھی مقربین کے لیے عیب ہوتی ہیں) ع

نزدیکاں را بیش بود حیرانی (قریب والوں کو حیرت زیادہ ہوتی ہے)

I.T. Majlis of Dawat-e-Islami 1 القرآن الکریم ۶/۱۵۳ 2 کشف الخفاء حدیث ۱۱۳۵

دارالکتب العلمیۃ بیروت ۳۱۸/۱ Page 389 of 750

Fatawa Razawiya Volume 29

And 'Ain Those whose ranks are higher, their trials are also greater. After all, did you not see that the Leader of the Infallibles, may Allah the Almighty bless him and grant him peace, spent whole nights engaged in worship and voluntary prayers, weeping and grieving for his Ummah. While the five daily prayers were already obligatory for his excellence, the performance of the Tahajjud prayer was also made mandatory, indeed obligatory, for the Holy Prophet, may Allah the Almighty bless him and grant him peace, whereas for the Ummah, it remains a Sunnah of the Sunnah. It was mentioned to Hazrat Sayyid al-Ta'ifa Junaid Baghdadi (may Allah be pleased with him) that some people claim that the rulings of Shariah were just a means to 'reach' (God), and now they have 'reached' (the goal), so what need do they have for Shariah? He replied: They speak the truth; they have certainly reached, but where? To Hell. A thief or an adulterer is better than those with such beliefs. If I were to live for a thousand years, then Fara'iz (obligatory acts) and Wajibat (necessary acts) are significant things; even in those voluntary and recommended acts (Nawafil and Mustahabbat) that have been prescribed, I would not reduce anything without a valid Shariah excuse. So, all paths are closed to creation except for the one who follows the footsteps of the Messenger of Allah, may Allah the Almighty bless him and grant him peace. Whoever chooses a path contrary to the Prophet,[1] Will never reach the destination. (Whoever chooses a path against the Prophet, may Allah the Almighty bless him and grant him peace, will never reach the intended destination). Insulting the Shariah is disbelief (and cursing and abusing the scholars of religion leads to disgrace and humiliation in the Hereafter). And deviating from its circle is transgression (and disobedience). A sincere Sufi (pious-natured), a truthful (in action) Sunni scholar of correct creed always holds the belief according to the command of God and the Messenger (which must be obeyed) that (here is a blank in the original) (they are the scholars of the clear Shariah and the heirs of the Seal of the Prophets, and the guardians and standard-bearers of the sciences of Shariah. So, honoring and respecting them is honoring and respecting the Master of the Shariah, may Allah the Almighty bless him and grant him peace, and the pivot of religion is upon this). And a religious, God-seeking (God-worshipping, God-fearing, God-conscious) scholar will always (here is a blank in the original) (approach a Sufi with humility and submissiveness, seeing that he is aware of the Truth and under the protection of the Truth) and will consider him better and more perfect than himself (as he is pure from worldly defilements). Those actions of his (the pure, Truth-worshipping, and Truth-

conscious Sufi) which appear outside the laws of piety in his (the scholar's) eyes (he will overlook them and leave the matter to the Knower of the Unseen...

---

[1] Bustan Saadi, Preface to the book, Maktaba Shirkat-e-Ilmiya Multan, p. 8

और ऐन जिनके रुतबे हैं सिवा, उनको सिवा मुश्किल है। आख़िर देखा नहीं कि सय्यद-उल-मासूमीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम रात-रात भर इबादत और नवाफ़िल में व्यस्त और उम्मत के लिए रोते और दुखी रहते थे। पाँच वक़्त की नमाज़ तो हुज़ूर पर फ़र्ज़ थी ही, तहज्जुद की नमाज़ अदा करना भी हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम पर लाज़िम बल्कि फ़र्ज़ करार दिया गया, जबकि उम्मत के लिए वही सुन्नत की सुन्नत है। हज़रत सय्यद-उत-ताइफ़ा जुनैद बगदादी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से अर्ज़ किया गया कि कुछ लोग दावा करते हैं कि शरीअत के अहकाम तो मंज़िल तक पहुँचने का ज़रिया थे और हम 'वासिल' हो गए (यानी मंज़िल पर पहुँच गए), तो अब हमें शरीअत की क्या ज़रूरत है। फ़रमाया: वे सच कहते हैं, वासिल ज़रूर हुए, मगर कहाँ तक? जहन्नुम तक। चोर और ज़ानी ऐसे अक़ीदे (विश्वास) वालों से बेहतर हैं। अगर मैं हज़ार बरस जीऊँ तो फ़राइज़ और वाजिबात तो बड़ी चीज़ें हैं, जो नवाफ़िल और मुस्तहब्बात मुकर्रर कर दिए गए हैं, बिना किसी शरई उज़्र (बहाने) के उनमें भी कुछ कमी न करूँ। तो मख़्लूक़ के लिए तमाम रास्ते बंद हैं, सिवाय उसके जो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के पदचिन्हों का अनुसरण करे। खिलाफ़-ए-पैग़म्बर कसे राह गुज़ीद[1] कि हरगिज़ ब-मंज़िल न ख़्वाहद रसीद (जिस किसी ने पैग़म्बर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के खिलाफ़ रास्ता अपनाया, वह कभी भी मंज़िल-ए-मक़सूद तक नहीं पहुँचेगा) शरीअत की तौहीन (अपमान) कुफ़्र है (और उलेमा-ए-दीन को गाली-गलौज करना, आख़िरत में ज़िल्लत और रुसवाई का कारण है)। और इसके दायरे से बाहर निकलना फ़िस्क़ (और नाफ़रमानी) है। एक सूफ़ी (परहेज़गार), सादिक़ (अमल में सच्चा), सुन्नी सही-उल-अक़ीदा आलिम हमेशा अल्लाह और रसूल के हुक्म (जिसका मानना अनिवार्य है) के अनुसार यह अक़ीदा रखता है कि (यहाँ मूल रूप से रिक्त स्थान है) (वे शरीअत-ए-मुबीन के आलिम और ख़ातम-उल-नबीयीन के वारिस हैं और शरीअत के उloom के निगहबान और अलमबरदार हैं, तो उनकी ताज़ीम और तकरीम साहिब-ए-शरीअत सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की ताज़ीम और तकरीम है और इसी पर दीन का मदार है)। और एक दीनदार, ख़ुदा-तलब (ख़ुदा-परस्त, ख़ुदा-तरस, ख़ुदा-आगाह) आलिम हमेशा सूफ़ी से (यहाँ मूल रूप से रिक्त स्थान है) (तवाज़ो और इंक़िसारी (विनम्रता) के साथ पेश आएगा कि वह हक़-आगाह और हक़ की पनाह में है) और उसे अपने से अफ़ज़ल और अकमल (श्रेष्ठ और पूर्ण) समझेगा (कि वह दुनियावी बुराइयों से पाक है)। उसके(उस सूफ़ी साफ़ हक़-परस्त और हक़-आगाह के) जो आमाल

उसकी नज़र में तक़वा (परहेज़गारी) के कानून से बाहर नज़र आएंगे (उनसे नज़रअंदाज़ करके मामला आलिम-उल-ग़ैब...

---

[1] बूस्ताँ सादी, किताब की भूमिका, मकतबा शिर्कत-ए-इल्मिया मुल्तान, पृ. ८

اور ع جن کے رتبے ہیں سوا، ان کو سوا مشکل ہے آخر نہ دیکھا کہ سید المعصومین صلی اللہ تعالی علیہ وسلم رات، رات بھر عبادات و نوافل میں مشغول اور کارِ امت کے لیے گریاں و ملول رہتے، نماز پنجگانہ تو حضور پر فرض تھی ہی نمازِ تہجد کا ادا کرنا بھی حضور صلی اللہ تعالی علیہ وسلم پر لازم بلکہ فرض قرار دیا گیا جب کہ امت کے لیے وہی سنت کی سنت ہے۔ حضرت سید الطائفہ جنید بغدادی رضی اللہ تعالی عنہ سے عرض کیا گیا کہ کچھ لوگ زعم کرتے ہیں کہ احکام شریعت تو وصول کا ذریعہ تھے اور ہم واصل ہو گئے یعنی اب ہمیں شریعت کی کیا حاجت۔ فرمایا وہ سچ کہتے ہیں، واصل ضرور ہوئے مگر کہاں تک؟ جہنم تک۔ چور اور زانی ایسے عقیدے والوں سے بہتر ہیں اگر ہزار برس جیوں تو فرائض و واجبات تو بڑی چیز ہیں، جو نوافل و مستحبات مقرر کر دیئے ہیں بے عذر شرعی ان میں کچھ کم نہ کروں۔ تو خلق پر تمام راستے بند ہیں مگر وہ جو رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم کی نشان قدم کی پیروی کرے۔ خلاف پیغمبر کسے راہ گزید[1] کہ ہر گز بم منزل نہ خواھد رسید (جس کسی نے پیغمبر صلی اللہ تعالی علیہ وسلم کے خلاف راستہ اختیار کیا ہر گز منزلِ مقصود پر نہ پہنچے گا) توہین شریعت کفر (اور علمائے دین کو سب و شتم، آخرت میں فضیحت اور رسوائی کا موجب) اور اس کے دائرہ سے خروج فسق (و نافرمانی) صوفی (تقوی شعار) صادق (العمل) عالم سنی صحیح العقیدہ پر خدا اور رسول کے فرمان (واجب الاذعان کے مطابق) ہمیشہ یہ عقیدت رکھتا ہے کہ (یہاں اصل میں بیاض ہے) (علمائے شرع مبین و وارثان خاتم النبیین ہیں اور علوم شریعت کے نگہبان و علمبردار، تو ان کی تعظیم و تکریم صاحب شریعت صلی اللہ تعالی علیہ وسلم کی تعظیم و تکریم ہے اور اس پر دین کا مدار) اور عالم متدین خدا طلب (خدا پرست، خدا ترس، خدا آگاہ) ہمیشہ صوفی سے (یہاں اصل میں

بیاض ہے) (بتواضع و انکسار پیش آئے گا کہ وہ حق آگاہ اور حق کی پناہ میں ہے) اور اسے اپنے سے افضل و اکمل جانے گا (کہ وہ دنیاوی آلائشوں سے پاک ہے) جو اعمال اس (صوفی صاف حق پرست و حق آگاہ) کے اس کی نظر میں قانون تقوی سے باہر نظر آئیں گے (ان سے صرف نظر کر کے معاملہ عالم الغیب

---

[1] بوستان سعدی دیباچہ کتاب مکتبہ شرکت علمیہ ملتان ص ۸

Volume 29 - Fatawa Razawiyya

...and will leave it to testimony according to the maxim: "Since you bear the burden of your own faults, do not taunt others for their faults." (O bearers of your own faults! Do not taunt others for their faults). O Allah! Grant guidance to everyone and grant them steadfastness (firmness) in it, and take us from this transitory world while being associated with Your beloveds and having true and firm beliefs. Ameen, O Most Merciful of the Merciful. O Allah, all praise is for You, the complaint is to You, and You are the Helper. There is no power nor might except with Allah, the Most High, the Most Great. May Allah the Almighty's peace and blessings be upon the Beloved Chosen One (Al-Mustafa), and upon his pure family and all his virtuous companions. The treatise "I'tiqad al-Ahbab fil Jamil wal Mustafa wal Aal wal Ashab" is finished. Issue 137: From Bareilly, Madrasa Manzar al-Islam, questioned by Mawlawi Muhammad Afzal Sahab, 15 Rabi al-Awwal Sharif 1338 AH.

[Persian Column]: Why did Prophet Moses (peace be upon him) desire to be a follower (ummati) of the Master of the Universe (peace and blessings of Allah be upon him), while there is no rank higher than the rank of prophethood, and the rank of the ummah is below it? Furthermore, how does such a Hadith relate to beliefs? For the Prophets (peace be upon them) are in such a high station that the entire world is in need of them, and they are not in need of anyone. Inform us, and you will be rewarded. [Urdu Column]: Why did Prophet Moses (peace be upon him) desire to be a follower (ummati) of the Master of the Universe (peace and blessings of Allah be upon him), while no rank is higher than the rank of prophethood and the rank of the ummah is below the rank of prophethood? Then, how can such a Hadith be useful in matters of belief? Since the Prophets (peace be upon them) are established at such a height that the entire world is dependent on them, and they are not dependent on anyone. Explain, and you will be rewarded. (T)

The Answer: [Persian Column]: The superior is not independent of virtue. The Master of the Universe (peace and blessings of Allah be upon him) was granted the rank of supreme belovedness (Mahbubiyat al-Kubra) and all lofty virtues such that no one's mount can reach even the dust of his path. Those with dark hearts envy the virtues of others, but when the people of perfection see that we have no access to that, they desire association with that beloved. [Urdu Column]: The superior is not independent of virtue. The Master of the Universe (peace and blessings of Allah be upon him) attained the high rank of supreme belovedness (Mahbubiyat al-Kubra) and all lofty virtues in such a manner that no one's mount can reach even the dust of his path.

Dark-hearted ones envy the virtues of others, and people of perfection, when they see that we have no access to that great...

जिल्द 29 - फतावा रज़विया

...और गवाही पर छोड़ देगा, इस शेर के अनुसार: "ऐ अपने ऐब के बोझ ढोने वालो! दूसरों के ऐब पर ताना मत मारो।" (ऐ अपने ऐबों को उठाने वालो! दूसरों के ऐब पर तानाज़नी मत करो) ऐ अल्लाह! सबको हिदायत और उस पर साबित-क़दमी (मज़बूती) अता फरमा और हमें अपने महबूबों और सच्चे-पक्के अकीदों के साथ इस फ़ानी दुनिया से उठा, आमीन या अर्हमर राहिमीन। अल्लाहुम्मा लकल हम्दु व इलैक्ल मुश्तका व अन्तल् मुस्तआनु ला हौला वला क़ुव्वता इल्ला बिल्लाहिल अलिय्यिल अज़ीम व सल्लल्लाहु तआला अलल हबीबिल मुस्तफ़ा व अला आलिहित तय्यिबीन व सहबिहित ताहिरीन अजमईन। रिसाला "एतिकाद अल-अहबाब फ़िल जमील वल मुस्तफ़ा वल आलि वल असहाब" समाप्त हुआ। मसला 137: बरेली मदरसा मंज़र-ए-इस्लाम से, प्रेषक मौलवी मुहम्मद अफ़ज़ल साहब, 15 रबी-उल-अव्वल शरीफ़ 1338 हिजरी।

[फ़ारसी कॉलम]: हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने सैय्यद-ए-आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का उम्मती होने की इच्छा क्यों की? जबकि नबूवत के मर्तबे से ऊपर कोई दूसरा मर्तबा नहीं है, और उम्मत का मर्तबा उससे नीचे है। इसके अलावा इस तरह की हदीस का अकीदों में क्या काम? क्योंकि अंबिया अलैहिमुस्सलाम ऐसी बुलंदी पर हैं कि पूरी दुनिया उनकी मोहताज है, वे किसी के मोहताज नहीं। स्पष्ट करें, पुण्य प्राप्त होगा। [उर्दू कॉलम]: हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने सैय्यद-ए-आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का उम्मती होने की ख्वाहिश क्यों की, जबकि मर्तबा-ए-नुबूवत से कोई और मर्तबा बुलंद नहीं है और उम्मत का मर्तबा नुबूवत के मर्तबे से नीचे है, फिर इस तरह की हदीस अकीदों में कैसे काम आ सकती है? इसलिए अंबिया अलैहिमुस्सलाम बुलंदी के उस मुकाम पर फाइज़ हैं कि तमाम जहान उनका मोहताज है, वे किसी के मोहताज नहीं। बयान फरमाएं, आपको अज्र दिया जाएगा। (त)

उत्तर: [फ़ारसी कॉलम]: अफ़ज़ल (श्रेष्ठ) फ़ज़ीलत से बेनियाज़ नहीं होता। सैय्यद-ए-आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को 'महबूबियत-ए-कुबरा' का मर्तबा और तमाम उच्च श्रेष्ठताएं ऐसी प्रदान की गईं कि किसी की सवारी उनकी गर्द (धूल) तक नहीं पहुँच सकती। काले दिल वाले दूसरों की फ़ज़ीलत पर ईर्ष्या करते हैं और पूर्णता प्राप्त लोग जब देखते हैं कि हमें वहां तक पहुँच नहीं है, तो उस महबूब से जुड़ने की इच्छा रखते हैं। [उर्दू कॉलम]: अफ़ज़ल, फ़ज़ीलत से बेनियाज़ नहीं होता। सैय्यद-ए-आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को महबूबियत-ए-कुबरा का बुलंद मर्तबा और तमाम फ़ज़ाइल-ए-ॉलिया

इस तरह हासिल हुए कि किसी की सवारी उनके धूल तक नहीं पहुँच सकती। स्याह दिल वाले दूसरों की फ़ज़ीलत पर हसद करते हैं और अहल-ए-कमाल जब देखते हैं कि हमें उस अज़ीम...

والشہادۃ پر چھوڑے گا بمصداق۔ ایکہ حمال عیب خویشتید طعنہ بر عیب دیگران مکنید (اے اپنے عیبوں کو اٹھانے والو! دوسروں کے عیب پر طعنہ زنی مت کرو) اے اللہ ! سب کو ہدایت اور اس پر ثبات و استقامت (ثابت قدمی) اور اپنے محبوبوں اور سچے پکے عقیدوں پر جہانِ گزران سے اٹھا، آمین یا ارحم الراحمین۔ اللھم لك الحمد والیك المشتکی وانت المستعان ط ولا حول ولا قوۃ الا باللہ العلی العظیم وصلی اللہ تعالیٰ علی الحبیب المصطفیٰ وعلی آلہ الطیبین وصحبہ الطاہرین اجمعین رسالہ اعتقاد الاحباب فی الجمیل والمصطفٰی والآل والاصحاب ختم ہوا۔ مسئلہ ۱۳۷: از بریلی مدرسہ منظر الاسلام مسئولہ مولوی محمد افضل صاحب ۱۵ ربیع الاول شریف ۱۳۳۸ھ

[فارسی کالم]: موسیٰ علیہ الصلوٰۃ والسلام خواہش امتی بودن سید عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم چرا کرد حالانکہ از مرتبہ نبوت دیگر مرتبہ نیست فوق آں، و مرتبہ امت اسفل ازاں دیگر اینکہ این طور حدیث را بر عقائد چکار زیرا کہ انبیاء علیہم السلام در علوئیں تمام عالم احتیاج ایشاں اند ایشاں احتیاج کسے نیستند، بینوا توجروا [اردو کالم]: حضرت موسیٰ علیہ الصلوٰۃ والسلام نے سید عالم صلی اللہ علیہ وسلم کا امتی ہونے کی خواہش کیوں کی حالانکہ مرتبہ نبوت سے کوئی اور مرتبہ بلند نہیں ہے اور امت کا مرتبہ نبوت کے مرتبہ سے نیچے ہے، پھر اس طرح کی حدیث عقائد میں کیسے کار آمد ہو سکتی ہے اس لیے انبیاء علیہم الصلوٰۃ والسلام بلندی کے اس مقام پر فائز ہیں کہ تمام جہان ان کا محتاج ہے وہ کسی کے محتاج نہیں، بیان فرماؤ اجر دیئے جاؤ گے۔ (ت)

الجواب: [فارسی کالم]: افضل غنی از فضل نیست سید عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ و سلم را مرتبہ از محبوبیت کبریٰ و جملہ فضائل عالیہ چناں بخشیدند کہ مرکب کسے بغبار او رسد تیرہ دروناں بر فضل دیگراں حسد برند واہل کمال چوں بینند کہ مارا بآں دسترس نیست انتساب بآں محبوب خواہند

[اردو کالم]: افضل فضیلت سے مستغنی نہیں ہوتا۔ سید عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کو محبوبیت کبریٰ کا بلند مرتبہ اور تمام فضائل عالیہ اس طور پر حاصل ہوئے کہ کسی کا مرکب ان کے غبار تک نہیں پہنچ سکتا۔ تاریک دل والے دوسروں کی فضیلت پر حسد کرتے ہیں اور اہلِ کمال جب دیکھتے ہیں کہ ہمیں اس عظیم

Fatawa Razawiyya, Volume 29

[Top Right Column]: That under His grace, Prophets are in a special way such that they do not need others. However, all are in need of our Master of Prophets, peace and blessings of Allah be upon him, just as the noble verse of "taking the covenant from the Prophets" and the Sahih Muslim Hadith "All of creation will incline towards me, even Abraham, the Friend of Allah"[1] are just witnesses. Such Hadiths do not contradict any belief, and Allah Almighty knows best.

[Top Left Column]: If they cannot reach a station, they prefer to attribute themselves to that great Beloved so that they may come under His special gaze of grace. It is an accepted fact that the Prophets, peace be upon them, are not in need of others, but everyone is in need of the Leader of the Prophets, peace and blessings of Allah be upon him, as the noble verse regarding taking the covenant from the Prophets and this Hadith from Sahih Muslim are just witnesses to it, that "All of creation is inclined towards me, even Ibrahim, the Friend of Allah, peace be upon him". These types of Hadiths do not contradict any creed. And Allah Almighty knows best. (T)

Problem 138: From Gondal, sent by Qazi Qasim Mian Sahib, 26 Rabi-ul-Akhir Sharif 1338 AH. What do the scholars of religion say on this matter: Is the status of the common angels higher than the common believers or not? Please explain the term 'common believers'.

Answer: It is in the Hadith, the Lord of Honor, Glorified and Exalted, says: "Abdi al-mu'minu ahabbu ilayya min ba'di mala'ikati"[2] - My believing servant is more beloved to me than some of my angels. Our Messengers are superior to the Messengers of angels, and the Messengers of angels are superior to our saints (Awliya), and our saints are superior to common angels, i.e., non-messenger angels, and here "common believers" refers to them (saints). Not the sinners and transgressors, as they cannot be superior to angels in any way. Human beings combine angelic, bestial, predatory, and satanic qualities. Whichever quality dominates him, he will exceed the one it is attributed to; if the angelic quality dominates, he will be superior to millions of angels, and if the bestial quality dominates, he will be worse than animals "Those are like cattle, nay, even more astray."

[1] Sahih Muslim, Book of the Virtues of the Qur'an, Chapter explaining the Qur'an was revealed in seven dialects, Qadimi Kutub Khana Karachi, 1/273. [2] Ithaf al-Sada al-Muttaqin, Book of the Secrets of Fasting, Dar al-Fikr Beirut, 4/193.

फतावा रज़विया, जिल्द 29

[ऊपरी दायां कॉलम]: कि उनकी कृपा के अधीन नबियों का एक विशेष दर्जा है कि वे दूसरों के मोहताज नहीं हैं। लेकिन हमारे आका, नबियों के सरदार, सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सबको ज़रूरत है, जैसा कि नबियों से मीसाक (वचन) लेने वाली आयते करीमा और सहीह मुस्लिम की हदीस "तमाम मख्लूक मेरी तरफ राग़िब (झुकाव) है यहाँ तक कि अल्लाह के खलील इब्राहिम भी"[1] इस पर गवाह हैं। ऐसी हदीसें किसी भी अकीदे के खिलाफ नहीं हैं, और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।

[ऊपरी बायां कॉलम]: अगर वे किसी मकाम तक नहीं पहुँच पाते, तो वे उस अज़ीम महबूब की तरफ अपनी निस्बत करना पसंद करते हैं ताकि वे विशेष रूप से उनकी कृपा की नज़र में आ जाएँ। यह बात मुस्लिम है कि नबी अलैहिमुस्सलाम दूसरों के मोहताज नहीं हैं लेकिन सैयदुल अंबिया सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सबको मोहताजी है, जैसा कि अंबिया से अख़्ज़े मीसाक वाली आयते करीमा और सहीह मुस्लिम की यह हदीस इस पर शाहिदे आदिल है कि "तमाम मख़्लूक मेरी तरफ राग़िब है यहाँ तक कि जनाब इब्राहिम खलीलुल्लाह अलैहिस्सलातु वस्सलाम भी।" इस किस्म की हदीसें किसी अकीदे के मुख़ालिफ नहीं। वल्लाहु तआला आलम। (त)

मसला 138: गोंडल से, मुरसला काज़ी कासिम मियां साहब, 26 रबीउल आखिर शरीफ 1338 हिजरी। उलेमा-ए-दीन इस मसले में क्या फरमाते हैं कि अवाम मोमिनीन का रुतबा अवाम मलाइका से ज़्यादा है या नहीं? अवाम मोमिनीन की तशरीह फरमाएं।

अल-जवाब: हदीस में है, रब्बे इज़्ज़त जल्ला व अला फरमाता है: "अब्दी अल-मुमिनु अहब्बु इलय्या मिन बा'दि मलाइकाती"[2] - मेरा मुसलमान बंदा मुझे मेरे बाज़ फरिश्तों से ज़्यादा प्यारा है। हमारे रसूल फरिश्तों के रसूलों से अफ़ज़ल हैं, और फरिश्तों के रसूल हमारे औलिया से अफ़ज़ल हैं, और हमारे औलिया अवाम मलाइका यानी गैर-रुसुल फरिश्तों से अफ़ज़ल हैं और यहाँ अवाम मोमिनीन से यही मुराद है। न कि फुस्साक व फुज्जार (गुनाहगार) कि वे फरिश्तों से किसी तरह अफ़ज़ल नहीं हो सकते। इंसान में मलकूती (फरिश्तों जैसी), बहीमी (जानवरों जैसी), सबई (दरिंदों जैसी) और शैतानी, सब सिफतें शामिल हैं। जो सिफत उस पर गालिब (हावी) होगी, वह उसके मंसूब इलैह से बढ़ जाएगा; अगर मलकूती सिफत गालिब हुई तो करोड़ों फरिश्तों से अफ़ज़ल होगा, और अगर बहीमी गालिब हुई तो जानवरों से बदतर "वे चौपायों की तरह हैं बल्कि उनसे भी ज़्यादा गुमराह"।

[1] सहीह मुस्लिम, किताब फज़ाइलुल कुरआन, बाब बयानुल कुरआन अनज़ला अला सबअति अहुरुफ, कदीमी कुतुब खाना कराची, 1/273। [2] इत्हाफुस सादतुल मुत्तकीन, किताब असरारुस सौम, दारुल फिक्र बैरूत, 4/193।

[دائیں کالم]: کہ در زیر عنایتش بروجے خاص باشند انبیاء را بدیگراں احتیاج نبودن مسلم فاما بہ سیدنا انبیاء صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم ہمہ رانیاز ست چنانچہ کریمہ اخذ میثاق از انبیاء و حدیث صحیح مسلم یرغب الی الخلق کلھم حتی خلیل اللہ ابراھیم ۱۔راں شاہد عدل ست ایں چنیں احادیث را با ہیچ عقیدہ خلاف نیست، واللہ تعالیٰ اعلم۔

[بائیں کالم]: مقام تک رسائی حاصل نہیں تو وہ اس عظیم محبوب کی طرف اپنی نسبت کرنے کی پسند کرتے ہیں تاکہ بطورِ خاص اس کی نظرِ عنایت میں ہو جائیں، یہ بات مسلم ہے کہ انبیاء علیہم الصلوٰۃ والسلام دوسروں کے محتاج نہیں لیکن سیدالانبیاء صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی سب کو محتاجی ہے، جیسا کہ انبیاء سے اخذِ میثاق والی آیتِ کریمہ اور صحیح مسلم کی یہ حدیث اس پر شاہدِ عادل ہے کہ تمام مخلوق میری طرف راغب ہے حتی کہ جناب ابراہیم خلیل اللہ علیہ الصلوٰۃ والسلام بھی۔ اس قسم کی حدیثیں کسی عقیدہ کے مخالف نہیں۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔ (ت)

مسئلہ ۱۳۸: از گوندل مرسلہ قاضی قاسم میاں صاحب ۲۶ ربیع الآخر شریف ۱۳۳۸ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ عوام مومنین سے عوام ملائکہ کا مرتبہ زیادہ ہے یا نہیں عوام مومنین کی تشریح فرمائیں۔

الجواب: حدیث میں ہے رب العزت جل وعلا فرماتا ہے: عبدی المؤمن احب الی من بعض ملئکتی ۲۔ میرا مسلمان بندہ مجھے میرے بعض فرشتوں سے زیادہ پیارا ہے۔ ہمارے رسول ملائکہ کے رسولوں سے افضل ہیں، اور ملائکہ کے رسول ہمارے اولیاء سے افضل ہیں، اور ہمارے اولیاء عوام ملائکہ یعنی غیر رسل سے افضل ہیں اور یہاں عوام مومنین سے یہی مراد ہے۔ نہ فساق و

فجار کہ ملائکہ سے کسی طرح افضل نہیں ہوسکتے۔ انسان صفتِ ملکوتی و بہیمی و سبعی و شیطانی سب کا جامع ہے جو صفت اس پر غلبہ کرے گی اس کے منسوب الیہ سے زائد ہوجائے گا کہ اگر ملکوتی صفت غالب ہوئی کروڑوں ملائکہ سے افضل ہوگا، اور بہیمی غالب ہوئی تو بہائم سے بدتر اولئک کالانعام بل ہم

۱ صحیح مسلم کتاب فضائل القرآن باب بیان القرآن انزل علی سبعۃ احرف قدیمی کتب خانہ کراچی ۱ / ۲۷۳ ۲ اتحاف السادۃ المتقین کتاب اسرار الصوم دارالفکر بیروت ۴ / ۱۹۳

Fatawa Razawiyya Volume 29

"More astray" (Who are like cattle, rather even more astray - T). Similarly, look at the predatory and satanic Wahhabis, Satan takes lessons from them; things that did not occur to Iblis in his thousands of years of age, occur to them. And Allah Almighty knows best.

Issue 139: From Darul Tulba Madrasa Subhania, Allahabad, sent by Maulvi Ibrahim Sahab, 7 Ramadan 1338 AH. (1) Zaid says that individual Taqlid (following a specific scholar) is not obligatory as it is not proven from the Quran and Hadith. If it were obligatory, it would have been mentioned somewhere in the Hadiths. Amr says it is obligatory, especially of Imam Azam (Abu Hanifa), may Allah have mercy on him. Is Zaid's statement correct or Amr's? (2) Zaid says that recitation behind the Imam should be done, and if it is not done, the prayer will not be valid; and he presents Hadiths in its support. Amr says it should not be done. Zaid does not accept any evidence other than Hadiths and Tafseers (exegeses), saying that jurisprudence (Fiqh) is based on analogy (Qiyas) and is not actionable against Hadiths and Tafseers. (3) Zaid says that saying 'Ameen' loudly should be done as it is proven from Hadiths. Amr forbids it. Whose statement is correct?

Answer: (1) Taqlid is a definitive obligation (Fard Qati). Allah Almighty says: "So ask the people of knowledge if you do not know." - O people! Ask the people of knowledge if you do not have knowledge. (T) And the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said: "Why did they not ask when they did not know? Indeed, the cure for ignorance is asking." - If they do not know, then why don't they ask, because the cure for ignorance is asking. (T) If adherence to one school of thought (Madhab) is not maintained, then at one and the same time, one will consider a single thing as both forbidden (Haram) and lawful (Halal). For example, recitation by the follower (Muqtadi) is obligatory according to the Shafi'is and forbidden according to the Hanafis, and at one and the same time, a thing...

1. Al-Quran al-Kareem 7/179
2. Al-Quran al-Kareem 16/43
3. Sunan Abi Dawud, Kitab al-Taharah, Bab al-Majdur Yatayammam, Aftab Alam Press Lahore 1/49.

फतावा रज़विया जिल्द २९

"अधिक गुमराह" (जो चौपायों की तरह हैं बल्कि उनसे भी बढ़कर गुमराह हैं - त)। इसी तरह हिंसक और शैतानी वहाबियों को देखो, शैतान जिनसे सबक लेता है; इब्लीस को हज़ारों बरसों की उम्र में जो बातें नहीं सूझी थीं, वो उन्हें सूझती हैं। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला १३९: दारुल तलबा मदरसा सुभानिया इलाहाबाद से प्रेषित मौलवी इब्राहिम साहब, ७ रमज़ान १३३८ हिजरी। (१) ज़ैद कहता है कि तक़लीद-ए-शख़्सी (किसी विशेष इमाम का अनुसरण) वाजिब नहीं है क्योंकि यह कुरान और हदीस से साबित नहीं है। अगर वाजिब होती तो हदीसों में कहीं न कहीं इसका ज़िक्र होता। अम्र कहता है कि वाजिब है, विशेष रूप से इमाम-ए-आज़म रहमतुल्लाह अलैहि की। ज़ैद का कहना सही है या अम्र का? (२) ज़ैद कहता है कि इमाम के पीछे किराअत (कुरान पाठ) करनी चाहिए, अगर नहीं की गई तो नमाज़ सही नहीं होगी, और इसके प्रमाण में वह हदीसें पेश करता है। अम्र कहता है कि नहीं करनी चाहिए। ज़ैद हदीसों और तफ़सीरों के अलावा और किसी दलील को नहीं मानता, वह कहता है कि फिक़्ह (इस्लामी कानून) कयासी (अनुमान पर आधारित) है और हदीसों व तफ़सीरों के मुकाबले अमल के काबिल नहीं है। (३) ज़ैद कहता है कि 'आमीन' ज़ोर से (बिल्जहर) कहना चाहिए क्योंकि यह हदीसों से साबित है। अम्र मना करता है। किसका कहना सही है?

उत्तर: (१) तक़लीद फ़र्ज़-ए-क़तई (निश्चित रूप से अनिवार्य) है। अल्लाह तआला फरमाता है: "तो ऐ लोगो! इल्म वालों से पूछो अगर तुम्हें इल्म नहीं है।" (त) और नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया: "अगर वो नहीं जानते तो पूछते क्यों नहीं क्योंकि जहालत (अज्ञानता) की शिफ़ा (इलाज) सवाल करना है।" (त) अगर एक ही मज़हब की पाबंदी न की जाए तो एक ही समय में व्यक्ति एक ही चीज़ को हराम भी मानेगा और हलाल भी। जैसे मुक़्तदी (अनुयायी) के लिए किराअत शाफ़इया के यहाँ वाजिब है और हनफिया के यहाँ हराम, और एक ही समय में एक चीज़ का...

1. अल-कुरान अल-करीम ७/१७९
2. अल-कुरान अल-करीम १६/४३
3. सुनन अबी दाऊद, किताबत-तहारत, बाबुल मज़्दूर यतयम्मम, आफ़ताब-ए-आलम प्रेस लाहौर १/४९।

اَضَلُّ (جو چوپایوں کی طرح ہیں بلکہ ان سے بڑھ کر گمراہ ہیں۔ت) یو نہی سبعی و شیطانی وہابیہ کو دیکھو ، شیطان کہ ان سے سبق لیتا ہے، ابلیس کو ہزاروں برس کی عمر میں نہ سوجھی تھیں جو انہیں سوجھتی ہیں۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۱۳۹: از دارالطلبہ مدرسہ سبحانیہ الہ آباد مرسلہ مولوی ابراہیم صاحب ۷ رمضان ۱۳۳۸ھ

(۱) زید کہتا ہے کہ تقلید شخصی واجب نہیں کہ قرآن و حدیث سے ثابت نہیں اگر واجب ہوتی تو احادیث میں کہیں نہ کہیں ذکر ہوتا۔ عمرو کہتا ہے واجب ہے بالخصوص امام اعظم رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ کی، زید کا قول صحیح ہے یا عمرو کا؟ (۲) زید کہتا ہے قرأت خلف الامام کرنی چاہئے نہ کی جائے گی تو نماز صحیح نہ ہوگی، اور اس کے ثبوت میں احادیث پیش کرتا ہے، عمرو کہتا ہے نہ کرنا چاہئے، زید احادیث و تفاسیر کے علاوہ اور کسی دلیل کو نہیں مانتا، کہتا ہے کہ فقہ قیاسی ہے احادیث و تفاسیر کے مقابل قابل عمل نہیں۔ (۳) زید کہتا ہے آمین بالجہر کرنا چاہیے کہ احادیث سے ثابت ہے۔ عمرو مانع ہے، کس کا قول ٹھیک ہے؟

الجواب: (۱) تقلید فرض قطعی ہے، قال اللہ تعالٰی: "فَسْئَلُوْا اَھْلَ الذِّکْرِ اِنْ کُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ" تو اے لوگو! علم والوں سے پوچھو اگر تمہیں علم نہیں ہے۔ (ت) وقال صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم: الاسئلو ان لم یعلموا فانما شفاء العی السؤال۔ اگر وہ نہیں جانتے تو پوچھتے کیوں نہیں کیونکہ جہالت کی شفاء سوال کرنا ہے۔(ت) اگر ایک مذہب کی پابندی نہ کی جائے تو یا وقت واحد میں شیئی واحد کو حرام

بھی جانے گا اور حلال بھی جیسے قرأت مقتدی شافعیہ کے یہاں واجب اور حنفیہ کے یہاں حرام اور وقت واحد میں شے کا

1. القرآن الکریم ۱۷۹/۷
2. القرآن الکریم ۴۳/۱۶
3. سنن ابی داؤد کتاب الطھارۃ باب المجدور یتیمم آفتاب عالم پریس لاہور ۴۹/۱

Fatawa Razawiyyah Volume 29

It is impossible for something to be both forbidden (haram) and permissible (halal) at the same time, or that one considers it permissible at one time and forbidden at another. Doing so would mean being included in this verse: "They make it lawful one year and forbid it another year." [1] (One year they declare it halal and another year they declare it haram. - T) Therefore, adherence to a school of jurisprudence (madhab) is necessary, and its details are in our fatwas. And Allah Almighty knows best.

(2) He who does not follow jurisprudence (fiqh) is a devil. He who does not hold onto the garment of the Imams cannot prove any controversial issue from Hadith until the Day of Judgment. Let whoever claims otherwise come forward; can they even prove whether eating 'Sakta' (a type of small animal/bird) is halal or haram? The Quranic verse has restricted prohibited foods to only four: carrion, flowing blood, the flesh of swine, and that which is sacrificed in the name of other than Allah. So, from where would dog, and the fat, kidneys, and offal of a pig be forbidden? Their prohibition is not in any Hadith, and the verse mentions 'flesh' (lahm) which does not include them. In short, these people are devils; it is not permissible to listen to them. And Allah Almighty knows best.

(3) Amr's statement is correct; 'Amin' is a prayer, and there is a command for the concealment of prayer in the Great Quran. A raised (Marfu') Hadith also benefits this, stating: "And when he (the Imam) says 'wa la-d-dallin', then say 'Amin', for surely the Imam says it." [2] When the Imam says 'wa la-d-dallin', you say 'Amin', because the Imam will also say it. It is known that he (the Imam) will say it silently. The point is that his (the follower's) action should coincide with the Imam's action. If he (the Imam) said 'Amin' loudly, the followers would know it, and then it would have been said, "When he says 'Amin', you say it too." This was not said here; instead, his action was stated: "When he says 'wa la-d-dallin', you say 'Amin'," and his (the Imam's) agreement, which was hidden, was made manifest that he also says it. And Allah Almighty knows best.

Problem 142: From the city, Mohalla Saudagaran, submitted by Ihsan Ali, student at Madrasah Manzar-ul-Islam, 18 Safar 1339 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: Zaid says that if the standing (Qiyam) during Mawlid Sharif is strictly for the mention of goodness...

[1] Al-Quran al-Karim 9 / 37 [2] Sunan an-Nasa'i, Book of Commencement, Chapter on Imam Reciting 'Amin' Aloud, Nur Muhammad Karkhana Tijarat Kutub Karachi, 1 / 147; Musnad Ahmad bin Hanbal from Abu Hurayrah (Allah be pleased with him), Al-Maktab al-Islami Beirut, 2 / 270.

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

एक ही समय में हराम और हलाल दोनों होना असंभव है, या वह यह करेगा कि एक समय उसे हलाल समझेगा और दूसरे समय हराम, तो यह इस आयत में शामिल होना होगा कि: "वे इसे एक वर्ष हलाल ठहराते हैं और एक वर्ष हराम ठहराते हैं।" [1] (एक साल उसे हलाल ठहराते हैं और एक साल उसे हराम ठहराते हैं। - त) इसलिए किसी मज़हब (न्यायशास्त्र के स्कूल) का पालन करना आवश्यक है, और इसका विवरण हमारे फ़तवों में है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

(2) जो फ़िक़्ह (इस्लामी न्यायशास्त्र) को नहीं मानता वह शैतान है। जो इमामों का दामन नहीं थामता, वह क़यामत तक हदीस से किसी विवादास्पद मसले को साबित नहीं कर सकता। जिसे दावा हो वह सामने आए, क्या वह इसका सबूत दे सकता है कि 'सकता' (एक प्रकार का छोटा जानवर) खाना हलाल है या हराम? आयत ने तो खाने की हराम चीज़ों को सिर्फ चार में सीमित कर दिया है: मुर्दार (सड़ा हुआ मांस), बहता हुआ खून, सूअर का मांस, और वह जो अल्लाह के अलावा किसी और के नाम पर ज़िबह किया गया हो। तो कुत्ता, और सूअर की चर्बी, गुर्दे और ओझड़ी कहाँ से हराम होंगे? किसी हदीस में उनकी मनाही नहीं है और आयत में 'लहम' (मांस) शब्द आया है जो उन्हें शामिल नहीं करता। संक्षेप में, ये लोग शैतान हैं, उनकी बात सुनना जायज़ नहीं है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

(3) अम्र की बात सही है, 'आमीन' एक दुआ है और महान कुरान में दुआ को छिपाने (धीरे से कहने) का हुक्म है। एक मरफू हदीस भी यही बताती है कि: "और जब वह (इमाम) 'व ला-द-दाल्लीन' कहे, तो तुम 'आमीन' कहो, क्योंकि इमाम भी उसे कहता है।" [2] जब इमाम 'व ला-द-दाल्लीन' कहे तो तुम आमीन कहो क्योंकि इमाम भी कहेगा। मालूम हुआ कि वह इसे धीरे से कहेगा। असल बात यह है कि इमाम के कार्य के साथ उसका (मुक्तदी का) कार्य होना चाहिए। अगर वह 'आमीन' ज़ोर से कहता तो मुक्तदियों को पता चल जाता, तब यह कहा जाता कि "जब वह आमीन कहे तुम भी कहो।" यहाँ यह नहीं फ़रमाया गया, बल्कि उसका कार्य बताया गया कि "जब वह 'व ला-द-दाल्लीन' कहे तुम आमीन कहो," और उसकी सहमति जो छिपी हुई थी उसे ज़ाहिर कर दिया कि वह भी कहता है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 142: शहर मोहल्ला सौदागरान से, प्रेषक एहसान अली, छात्र मदरसा मंज़र-उल-इस्लाम, 18 सफ़र 1339 हिजरी। उलेमा-ए-दीन इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि ज़ैद कहता है कि मिलाद शरीफ़ का क़ियाम (खड़े होना) अगर केवल खैर के ज़िक्र के लिए...

---

[1] अल-कुरान अल-करीम 9 / 37 [2] सुनन अन-नसाई, किताबुल इफ़्तिताह, बाब जह्रुल इमाम आमीन, नूर मुहम्मद कारख़ाना तिज़ारत कुतुब कराची, 1/147; मुस्नद अहमद बिन हंबल, हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से, अल-मकतब अल-इस्लामी बेरूत, 2/270।

حرام و حلال دونوں ہونا محال، یا یہ کرے گا کہ ایک وقت حلال سمجھے گا دوسرے وقت حرام، تو یہ اس آیت میں داخل ہونا ہوگا کہ "یُحِلُّوْنَہٗ عَامًا وَّیُحَرِّمُوْنَہٗ عَامًا" ۱۔ (ایک سال اسے حلال ٹھہراتے ہیں اور ایک سال اسے حرام ٹھہراتے ہیں۔ ت) لاجرم پابندی مذہب لازم، اور اس کی تفصیل ہمارے فتاوٰی میں ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ (۲) فقہ کا نہ ماننے والا شیطان ہے، ائمہ کا دامن جو نہ تھامے وہ قیامت تک کوئی اختلافی مسئلہ حدیث سے ثابت نہیں کر سکتا، جسے دعوٰی ہو سامنے آئے اور زیادہ نہیں اسی کا ثبوت دے سکتا کھانا حلال ہے یا حرام؟ آیت نے تو کھانے کی حرام چیزوں کو صرف چار میں حصر فرمایا ہے۔ مردار اور رگوں کا خون، اور خنزیر کا گوشت اور وہ جو غیر خدا کے نام پر ذبح کیا جائے تو کتا اور کنار سور کی چربی اور گردے اور اوجھڑی کہاں سے حرام ہوگی کسی حدیث میں ان کی تحریم نہیں اور آیت میں لحم فرمایا ہے جو ان کو شامل نہیں، غرض یہ لوگ شیاطین ہیں، ان کی بات سننا جائز نہیں، واللہ تعالٰی اعلم۔ (۳) عمرو کا قول ٹھیک ہے، آمین دعا ہے اور دعا کے اخفاء کا قرآن عظیم میں حکم ہے اور حدیث مرفوع بھی اسی کا افادہ فرماتی ہے کہ: وَاِذَا قَالَ وَلَا الضَّآلِّیْنَ فَقُوْلُوا اٰمِیْنَ فَاِنَّ الْاِمَامَ یَقُوْلُھَا ۲۔ جب امام ولا الضالین کہے تم آمین کہو کہ امام بھی کہے گا۔ معلوم ہوا کہ آہستہ کہے گا، اصل یہ ہے کہ امام کے فعل کے ساتھ اس کا فعل ہو اگر وہ آمین بالجہر کہتا مقتدیوں کو معلوم ہوتا تو یہ فرمایا جاتا کہ جب وہ آمین کہے تم بھی کہو۔ یہاں یہ نہ فرمایا بلکہ اس کا فعل بتایا کہ جب وہ ولا الضالین کہے تم آمین کہو اور اس کی موافقت کہ خفی تھی ظاہر فرمادی کہ وہ بھی کہے گا۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۱۴۲: از شہر محلہ سوداگراں مسئولہ احسان علی طالب علم مدرسہ منظر الاسلام ۱۸ صفر ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید کہتا ہے کہ قیام میلاد شریف اگر مطلقاً ذکر خیر کی

---

۱ القرآن الکریم ۹ / ۳۷ ۲ سنن النسائی کتاب الافتتاح باب جهر الامام آمین نور محمد کارخانه تجارت کتب کراچی ۱ / ۱۴۷، مسند احمد بن حنبل عن ابی هریره رضی الله تعالیٰ عنه المکتب الاسلامی بیروت ۲ / ۲۷۰

Fatawa Ridawiyya Volume 29

...done for this reason, then why is it not done from the very beginning? Because from the start, it is the mention of goodness. And if it is done with the thought that the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) graces the gathering with his presence, then does the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) not grace it from the beginning? If he does, then why doesn't the start of the blessed gathering begin with standing? And if not, then does he grace only at the time of "fa-zahara fa-wulida" (appeared and was born - peace and blessings of Allah be upon him) and stay until the standing, and leave as soon as people sit down? From this, it seems that the Prophet's arrival is dependent on people standing and the Milad-reciter saying "fa-zahara fa-wulida". Is this statement of Zaid absurd or not, and what is the sufficient answer to it? *Bainu tujaru* (Explain and you shall be rewarded).

The Answer: All these are Zaid's foolishness, ignorance, and stupidity. He has invented useless and meaningless points from his own side and has not been guided towards the real reason. Venerating the noble mention is like venerating the luminous essence (peace and blessings of Allah be upon him). Veneration of the essence differs with different circumstances. Standing is done at the time of the arrival of the venerable one, and sitting respectfully in his presence is veneration. In the noble mention as well, the veneration of the mention of his arrival is by standing, and the veneration of the rest of the time is by sitting respectfully. *But the Wahhabis are a people who do not understand.* And Allah Almighty knows best.

Problem 143: Queried by Maulana Maulvi Syed Ghulam Qutbuddin Sahib Pardesi Ji, Brahmachari from the city, Basmandi neighborhood, 3rd Rabi-ul-Awwal Sharif 1339 AH. What do the scholars of religion say about this: In the January 10th issue, Rama Singham, citing three verses of the Great Quran, has (God forbid) declared Muhammad the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) a sinner. In the first two of these, the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) is addressed as: "Ask forgiveness for your sins." The meaning of the third verse is: "Indeed, we have achieved success for you without doubt, so that God forgives your past and future sins." Mr. Hasan assures us that in these verses, "you" certainly does not mean you (the Prophet), but rather it points towards the sins and mistakes of the followers of the Prophet of Islam. It is difficult to consider this argument credible because if the Arabic language is so complex that every reader can derive a meaning according to their desire, then one can derive any meaning

from the Great Quran. However, Mr. Hasan's statement is that he believes in those meanings of the verses under discussion...

फतावा रज़विया जिल्द 29

...कारण से किया जाता है तो पहले वक्त से क्यों नहीं किया जाता, क्योंकि शुरुआत से ही खैर (भलाई) का ज़िक्र होता है। और अगर इस ख्याल से किया जाता है कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) रौनक अफ़रोज़ होते हैं, तो क्या हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पहले वक्त से रौनक अफ़रोज़ नहीं होते? अगर होते, तो मजलिस-ए-मुबारक की इब्तिदा (शुरुआत) कयाम (खड़े होने) से ही क्यों नहीं होती? और अगर नहीं, तो क्या "फज़हरा फवुलिदा" (प्रकट हुए और पैदा हुए - सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के वक्त ही जलवा अफ़रोज़ होते हैं और कयाम तक तशरीफ़ फ़रमा रहते हैं और फ़ौरन लोगों के बैठते ही तशरीफ़ ले जाते हैं? तो इससे मालूम होता है कि हुज़ूर का आना लोगों के कयाम और मिलाद-ख्वां के"फज़हरा फवुलिदा" कहने पर मौकूफ़ (निर्भर) है। क्या ज़ैद का यह कहना लग़्व (व्यर्थ) है या नहीं और इसका काफ़ी जवाब क्या है? "बयिनू तूजरू" (बयान करें, सवाब पाएंगे)।

अल-जवाब (उत्तर): ज़ैद की ये सब हिमाकतें, जहालतें और सफ़ाहतें हैं। उसने फ़ुज़ूल और बेमानी बातें अपनी तरफ़ से ईजाद की हैं और जो असली वजह है, उसकी तरफ़ उसे हिदायत न हुई। ज़िक्र-ए-अकदस की ताज़ीम, ज़ात-ए-अनवर की ताज़ीम की तरह है (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)। ज़ात की ताज़ीम अलग-अलग हालातों में अलग-अलग होती है। मुअज़्ज़म (सम्मानित) के आने के वक्त खड़ा होना ताज़ीम है और उनकी मौजूदगी में उनके सामने अदब से बैठना ताज़ीम है। ज़िक्र-ए-शरीफ़ में भी आमद (आगमन) के ज़िक्र की ताज़ीम खड़े होने से है और बाकी वक्त की ताज़ीम अदब से बैठने से है। लेकिन वहाबी ऐसी कौम है जो समझ नहीं रखती। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 143: मौलाना मौलवी सैयद ग़ुलाम कुतुबुद्दीन साहब परदेसी जी, ब्रह्मचारी, शहर मोहल्ला बासमंडी, 3 रबी-उल-अव्वल शरीफ़ 1339 हिजरी द्वारा पूछा गया। उलेमा-ए-दीन क्या फ़रमाते हैं कि इस 10 जनवरी के अंक में रामा सिंघम ने कुरआन अज़ीम की तीन आयतों का हवाला देकर मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को (मआज़ल्लाह) गुनहगार करार दिया है। उनमें से पहली दो में रसूल-ए-मकबूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को इस तरह संबोधित किया गया है: "अपने गुनाहों की माफ़ी मांगो।" तीसरी आयत का मतलब यह है कि वास्तव में हमने तुम्हारे लिए बिना किसी संदेह के कामयाबी हासिल की है ताकि खुदा तुम्हारे अगले पिछले गुनाह माफ़ करे। मिस्टर हसन हमें इस बात का यकीन दिलाते हैं कि इन आयतों में "तुम्हें" से मुराद (तात्पर्य) तुम (पैग़म्बर) हरगिज़ नहीं

है, बल्कि इसका इशारा इस्लाम के नबी के अनुयायियों के गुनाहों और ग़लतियों की तरफ़ है। यह बात मुश्किल है कि इस बहस को विश्वसनीय माना जाए, क्योंकि अगर अरबी ज़बान इतनी ही पेचीदा है कि हर एक पढ़ने वाला अपनी इच्छा के अनुसार अर्थ निकाल सकता है, तब तो कुरआन अज़ीम से जो चाहें अर्थ निकाल सकते हैं। फिर भी, मिस्टर हसन का यह बयान है कि वह ज़ेर-ए-बहस आयतों के उन अर्थों पर विश्वास...

وجہ سے کیا جاتا ہے تو اول وقت سے کیوں نہیں کیا جاتا اس لیے کہ اول سے ذکر خیر ہی ہوتا ہے، اور اگر اس خیال سے کیا جاتا ہے کہ حضور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم رونق افروز ہوتے ہیں تو کیا حضور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم اول وقت سے رونق افروز نہیں ہوتے اگر ہوتے تو ابتداءِ مجلس مبارک قیام ہی سے کیوں نہیں ہوتا اور اگر نہیں تو کیا فظھر فولد (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) ہی کے وقت جلوہ افروز ہوتے اور تا قیام تشریف فرما رہتے اور فوراً لوگوں کے بیٹھتے ہی تشریف لے جاتے ہیں تو اس سے معلوم ہوتا ہے، کہ حضور کا آنا لوگوں کے قیام و نیز میلاد خواں کے فظھر فولد کہنے پر موقوف ہے، کیا یہ زید کا کہنا لغو ہے یا نہیں اور اس کا کافی جواب کیا ہے؟ بینوا توجروا (بیان فرماؤ اجر دیئے جاؤ گے ۔ ت)

الجواب: زید کی یہ سب حماقتیں جہالتیں سفاہتیں ہیں مہمل ولا یعنی شقوق اپنی طرف سے ایجاد کیے اور جو وجہ حقیقی ہے اس کی طرف اسے ہدایت نہ ہوئی، تعظیم ذکر اقدس مثل تعظیم ذات انور ہے صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم، تعظیم ذات باختلاف حالات مختلف ہوتی ہے، معظم کے قدوم کے وقت قیام کیا جاتا ہے اور اس کے حضور کے وقت بادب اس کے سامنے بیٹھنا تعظیم ہے۔ ذکر شریف میں بھی ذکر قدوم کی تعظیم قیام سے ہے اور باقی وقت کی تعظیم بادب قعود سے ۔ ولکن الوھابیۃ قوم لا یعقلون (لیکن وہابی بے عقل قوم ہے۔ ت) واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۱۴۳: مسئولہ مولینا مولوی سید غلام قطب الدین صاحب پردیسی جی، بر ہمچاری از شہر محلہ باسمنڈی ۳ ربیع الاول شریف ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین کہ اب کی دس جنوری کی اشاعت میں راما سنگھم نے قرآن عظیم کی تین آیات کا حوالہ دے کر محمد رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کو (معاذ اللہ) گنہگار قرار دیا ہے ان میں سے پہلی دو میں رسول مقبول (صلی اللہ تعالیٰ

علیہ وسلم) کو یوں مخاطب کیا ہے۔ تو اپنے گناہوں کی معافی مانگ۔ تیسری آیت کا مطلب یہ ہے فی الواقعی ہم نے تیرے واسطے بلا شبہ کامیابی حاصل کی ہے کہ خدا تیرے اگلے پچھلے گناہ معاف کرتا ہے مسٹر حسن ہم کو اس بات کا یقین دلاتے ہیں کہ ان آیات میں تو سے مراد تو ہر گز نہیں ہے بلکہ اس کا اشارہ اسلام کے نبی کے پیروؤں کے گناہوں اور غلطیوں کی طرف ہے یہ بات مشکل ہے کہ اس مباحثہ کو قابل یقین سمجھا جائے کیونکہ اگر عربی زبان ایسی ہی پیچیدہ ہے کہ ہر ایک پڑھنے والا اپنی خواہش کے مطابق مطلب لے سکتا ہے تب قرآن عظیم سے جو چاہیں مطلب لے سکتے ہیں ، تاہم مسٹر حسن کا یہ بیان ہے کہ وہ آیات زیر مباحثہ کے ان معنوں پر اعتقاد

Fatawa Razawiyya, Volume 29

...they hold the craft of the commentators of the Great Quran in high regard. I fear that Mr. Hasan has not studied the commentaries carefully. Because I will show below that Muslim commentators of the Great Quran clearly acknowledge (God forbid) the Prophet Muhammad (peace be upon him) as being sinful, and on some occasions, they specify those particular sins for which the Beloved Messenger (peace and blessings of Allah be upon him) was told to seek forgiveness. We take those three verses that Rama Singham has cited. First is the twenty-ninth verse of Surah Muhammad (peace be upon him); its meaning is: seek forgiveness for your sins and for your believers, whether men or women. Here, in any case, the meaning of 'you' cannot be the followers since those people are mentioned separately. And the conjunction clarifies all complexities: the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) was told to seek forgiveness for himself first and then for his followers. The second is the twenty-fifth verse of Surah Momin, and its meaning is: seek forgiveness for your sins. It is difficult to believe that your Mr. Hasan actually consulted the commentators; if he had, he would never have said that those people would clearly show Rama Singham that the Prophet of Muslims (peace and blessings of Allah be upon him) is innocent of every sin. Far from that, they clearly acknowledge the sinfulness of the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him). Ibn Abbas is among the very great commentators, and in his commentary, he says: "And seek forgiveness [footnote] for your sin for the shortcoming in gratitude for what Allah has bestowed upon you and your companions." This means: seek forgiveness for your sins, which is that you neglected to be thankful for the kindness that God showed to your followers.

Zamakhshari, a very great commentator, writes in his commentary Al-Kashshaf: "But Allah may forgive you that which preceded of your sin before the revelation and that which followed, which will be after the revelation until death." Its meaning is that God forgives your sins that occurred before the coming of revelation and after it, i.e., until the time of death. Explain and you shall be rewarded.

The Answer: In this question, the Arya [Samaajist] has acted with slander, ignorance, misunderstanding, and dishonesty.

Footnote: Thus it is in his handwriting. 12 Minhu.

Page 396 of 750

फतावा रज़विया, जिल्द २९

...और महान कुरान के व्याख्याकारों (मुफस्सिरों) की कला को मानते हैं। मुझे डर है कि मिस्टर हसन ने व्याख्याओं (तफ्सीरों) को ध्यान से नहीं पढ़ा है। क्योंकि मैं नीचे यह दिखाऊंगा कि महान कुरान के मुस्लिम व्याख्याकार मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के गुनहगार होने को (अल्लाह की पनाह) स्पष्ट रूप से मानते हैं और कुछ अवसरों पर उन विशेष पापों को बताते हैं जिनके बारे में रसूल-ए-मकबूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से माफी मांगने को कहा गया। हम वे तीन आयतें लेते हैं जिन्हें रामा सिंघम ने उद्धृत किया है। पहली सूरह मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की उनतीसवीं आयत है, इसका अर्थ यह है कि: तू अपने पापों के लिए और अपने मानने वालों के लिए, चाहे वे पुरुष हों या स्त्री, माफी मांग। यहाँ किसी भी स्थिति में 'तू' का अर्थ अनुयायी नहीं हो सकता क्योंकि उन लोगों का उल्लेख स्वयं आ चुका है। और संयोजक शब्द (हर्फ़ए-अत्फ़) सभी जटिलताओं को स्पष्ट कर देता है: नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से पहले अपने लिए और बाद में अपने अनुयायियों के लिए माफी मांगने को कहा गया है। दूसरी सूरह मोमिन की पच्चीसवीं आयत है और इसका अर्थ यह है कि: तू अपने पापों की माफी मांग। इस बात पर विश्वास करना कठिन है कि आपके मिस्टर हसन ने वास्तव में व्याख्याकारों से पूछताछ की होगी; यदि उन्होंने की होती, तो वे कभी नहीं कहते कि वे लोग रामा सिंघम पर यह स्पष्ट कर देंगे कि मुसलमानों के पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) हर पाप से मासूम हैं। इससे कहीं दूर, वे स्पष्ट रूप से अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की गुनाहगारी को मानते हैं। इब्न अब्बास महान व्याख्याकारों में से हैं और अपनी व्याख्या में इस प्रकार कहते हैं: "और अपने पाप के लिए क्षमा मांगें [पादलेख] उस एहसान के लिए शुक्र अदा करने में कमी के कारण जो अल्लाह ने आप पर और आपके साथियों पर किया।" इसका अर्थ यह है कि: तू अपने पापों की माफी मांग, और वह यह कि तूने खुदा की उस मेहरबानी का शुक्रगुजार होने में लापरवाही की जो खुदा ने तेरे अनुयायियों पर की।

ज़मखशरी, एक बहुत बड़े व्याख्याकार, अपनी व्याख्या 'अल-कश्शाफ' में इस प्रकार लिखते हैं: "लेकिन अल्लाह आपके उन पापों को माफ कर दे जो वह्य (प्रकाशना) आने से पहले हुए और जो बाद में हुए, यानी मौत के समय तक।" इसका अर्थ यह है कि खुदा तेरे उन पापों को जो वह्य आने से पहले हुए और जो उसके बाद यानी मरते वक्त तक हुए, माफ कर दे। स्पष्ट करें, आपको पुण्य मिलेगा।

उत्तर: इस प्रश्न में आर्य ने मिथ्यारोप (इफ़्तरा), अज्ञानता, नासमझी और बेईमानी से काम लिया है।

पादलेख: उनकी लिखावट में ऐसा ही है। १२ मिन्हु।

पृष्ठ ३९६/७५०

رکھتے اور قرآن عظیم کے مفسرین کی صنعت کو مانتے ہیں مجھ کو خوف ہے کہ مسٹر حسن نے تفسیروں کو غور سے نہیں پڑھا ہے۔ کیونکہ میں ذیل میں یہ دکھاؤں گا کہ قرآن عظیم کے مسلم مفسرین محمد رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے گنہگار ہونے کو (معاذ اللہ) صاف طور سے مانتے ہیں اور بعض موقعوں پر ان خاص گناہوں کو بتاتے ہیں جن کی بابت رسول مقبول (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) سے معافی مانگنے کو کہا گیا ہم وہ تین آیات لیتے ہیں جو راما سنگھم نے نقل کی ہیں، اول سورہ محمد (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) کی انتیسویں آیت ہے اس کا مطلب یہ ہے کہ تو معافی مانگ اپنے گناہوں اور اپنے معتقدین کی خواہ مرد ہوں خواہ عورت، یہاں پر کسی حالت میں بھی تو کے معنی پیروؤں کے نہیں ہو سکتے چونکہ ان لوگوں کا ذکر خود بھی آچکا ہے۔ اور حرف عطف سب پیچیدگیوں کو صاف کر دیتا ہے نبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم سے پہلے اپنی اور بعد کو اپنے پیروؤں کی معافی مانگنے کو کہا گیا ہے۔ دوسری سورہ مومن کی پچیسویں آیت ہے اور اس کا مطلب یہ ہے تو اپنے گناہوں کی معافی مانگ اس بات کو یقین کرنا دشوار ہے کہ آپ کے مسٹر حسن نے درحقیقت مفسرین سے دریافت کیا ہوگا اگر وہ دریافت کر لیتے تو کبھی نہ کہتے کہ وے لوگ اس بات کو راما سنگھم پر صاف عیاں کر دیں گے کہ مسلمانوں کے پیغمبر (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) ہر گناہ سے معصوم ہیں اس سے کہیں دور وہ صاف طور سے رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی گنہگاری کو مانتے ہیں، ابن عباس بڑے بھاری مفسرین میں سے ہیں اور اپنی تفسیر میں اس طرح سے کہتے ہیں: واستغفر عه لذنبك لتقصير والشكر على ما انعم الله عليک وعلى اصحابک اس کے معنی یہ ہیں کہ تو معافی مانگ اپنے گناہوں کی وہ یہ کہ تو نے خدا کی اس مہربانی کے شکر گزار ہونے میں غفلت کی جو کہ خدا نے تیرے پیروؤں پر کی۔

زمخشری ایک بڑے بھاری مفسر اپنی تفسیر الکشاف میں یوں لکھتے ہیں: لکن یغفر اللہ لک ما تقدم من ذنبک قبل الوحی وما تأخر و مایکون بعد الوحی الی الموت اس کے معنی یہ ہیں کہ خدا تیرے گناہ جو کہ وحی آنے کے قبل ہوئے ہیں اور اس کے بعد میں یعنی مرتے وقت تک معاف کر دے۔ بینوا توجروا۔

الجواب: اس سوال میں آریہ نے افتراء و جہالت و ناہمی وبے ایمانی سے کام لیا۔

عہ: ھکذا بخطہ۔ ۱۲ منہ

Fatawa Razawiyya Volume 29

The statement attributed to Kashshaf is a pure slander; there is no trace of it in Kashshaf. (2) Hypothetically, even if it were in Kashshaf, it is the work of a Mu'tazilite, a person of bad faith and ill-manners; what reliability does it have? (3) This exegesis (Tafsir), attributed to our master Ibn Abbas (may Allah be pleased with both of them), is neither his book nor proven from him. It is narrated through the chain of Muhammad bin Marwan from al-Kalbi from Abi Salih. The leaders of religion say about this chain that it is a chain of lies. It is stated in the noble Tafsir al-Itqan: "The weakest of its paths is the path of al-Kalbi from Abi Salih from Ibn Abbas. If the narration of Muhammad bin Marwan al-Suddi al-Saghir is added to it, then it is a chain of lies." [1] Among its paths, the weakest is the narration of al-Kalbi from Abu Salih, and his from Ibn Abbas (may Allah be pleased with them). If the narration of Muhammad bin Marwan al-Suddi is joined with it, it becomes a chain of lies. (T)

(4) The Arya has also committed distortion in its translation. The text is: "To apologize for the deficiency in gratitude for what Allah has bestowed upon you and your companions." Meaning, seek forgiveness for whatever deficiency occurred in thanking Allah Almighty for the blessings He bestowed upon you and your companions. Where is the talk of deficiency and where is negligence? Divine blessings on every individual are literally countless and infinite in actuality, as verified by Mufti Abu al-Sa'ud in Irshad al-'Aql al-Salim (As Mufti Abu al-Sa'ud has researched in Irshad al-Aql al-Salim. - T). Allah Almighty said: "And if you should count the favor of Allah, you could not enumerate them." [2]. If you want to count Allah's blessings, you won't be able to. When no one can count His blessings, then who can offer complete thanks for every blessing? From whose hand and tongue is it possible That he can fulfill the obligation of thanking Him? (With whose hand and tongue is it possible to fulfill the responsibility of His gratitude. - T)

[1] Al-Itqan fi 'Ulum al-Qur'an, Chapter 79: Rare aspects of Tafsir, Mustafa al-Babi Egypt 2/189 [2] The Noble Quran 14 / 34

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

यह कथन कि इसे 'कशाफ़' की ओर मंसूब किया गया है, महज़ एक बोहतान (झूठा आरोप) है; कशाफ़ में इसका कोई सुराग नहीं है। (2) फर्ज़ करें कि अगर यह कशाफ़ में होता भी, तो वह एक मोतज़ली, बद-मज़हब और बदतमीज़ व्यक्ति की रचना है; उसका क्या एतबार। (3) यह तफ़सीर जो हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) की ओर मंसूब है, न तो उनकी किताब है और न ही उनसे साबित है। यह मोहम्मद बिन मरवान अल-कल्बी, अबू सालेह के माध्यम से वर्णित है। उलेमा-ए-दीन इस सनद (शृंखला) के बारे में कहते हैं कि यह झूठ का सिलसिला है। तफ़सीर 'इतकान शरीफ' में है: "इसके रास्तों में सबसे कमज़ोर कल्बी का अबू सालेह से और उसका इब्ने अब्बास से रिवायत करना है। अगर इसके साथ मोहम्मद बिन मरवान सुद्दी की रिवायत मिल जाए, तो यह झूठ का सिलसिला है।" [1] इसके मार्गों में से सबसे कमज़ोर तरीक़ कल्बी का अबू सालेह से और उनका इब्ने अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से रिवायत करना है। अगर इसके साथ मोहम्मद बिन मरवान असदी की रिवायत मिल जाए तो यह झूठ का सिलसिला है। (त)

(4) इसके अनुवाद में भी आर्य ने तहरीफ़ (बदलाव) की है। इबारत यह है: "अल्लाह ने आप पर और आपके साथियों पर जो उपकार किए हैं, उनके शुक्र में कमी के लिए क्षमा माँगना।" अर्थात, अल्लाह अज़्ज़-व-जल्ल ने आप पर और आपके साथियों पर जो नेमतें फ़रमाईं, उनके शुक्र में जो कमी हुई, उसके लिए इस्तिग़फ़ार (क्षमा याचना) करें। कमी और लापरवाही कहाँ, ईश्वरीय अनुकंपाएँ प्रत्येक व्यक्ति पर वास्तव में अनगिनत और अनंत हैं, जैसा कि मुफ्ती अबू अल-सऊद ने इर्शाद अल-अक्ल अल-सलीम में शोध किया है (जैसा कि मुफ्ती अबुल सऊद ने इर्शाद अल-अक्ल अल-सलीम में इसकी तहक़ीक़ की है। - त)। अल्लाह अज़्ज़-व-जल्ल ने फ़रमाया: "और अगर तुम अल्लाह की नेमतों को गिनना चाहो, तो उन्हें गिन न सकोगे।" [2]। अगर आप अल्लाह की नेमतों को गिनना चाहें, तो नहीं गिन सकेंगे। जब अल्लाह की नेमतों को कोई गिन नहीं सकता, तो हर नेमत का पूरा शुक्र कौन अदा कर सकता है। किसके हाथ और ज़ुबान से यह मुमकिन है कि वह उसके शुक्र की ज़िम्मेदारी से मुक्त हो सके। (किसके हाथ और ज़ुबान से मुमकिन है कि उसके शुक्र से सुर्खरू हो सके। - त)

[1] अल-इतकान फ़ी उलूम अल-क़ुरआन, अल-नूअ अल-तासि' वल-सब'ऊन फ़ी ग़रा'इब अल-तफ़सीर, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र 2/189 [2] अल-क़ुरआन अल-करीम 14/34

पेज 397 ऑफ़ 750

عبارت کہ کشاف کی طرف نسبت کی محض بہتان ہے، کشاف میں اس کا پتہ نہیں۔ (۲) بالفرض اگر کشاف میں ہوتی تو وہ ایک معتزلی بد مذہب بے ادب کی تصنیف ہے اس کا کیا اعتبار۔ (۳) یہ تفسیر کہ منسوب بسید نا ابن عباس رضی اللہ تعالٰی عنہما ہے نہ اُن کی کتاب ہے نہ اُن سے ثابت یہ بسند محمد بن مروان عن الکلبی عن ابی صالح مروی ہے اور ائمہ دین اس سند کو فرماتے ہیں کہ یہ سلسلہ کذب ہے تفسیر اتقان شریف میں ہے: واوہی طریقہ طریق الکلبی عن ابی صالح عن ابن عباس فان انضم الی ذلک روایۃ محمد بن مروان اسدی الصغیر فھی سلسلۃ الکذب ۱۔ اس کے طُرق میں سے کمزور ترین طریق کلبی کا ابوصالح سے اور اس کا ابن عباس رضی اللہ تعالٰی عنہما سے روایت کرنا ہے اگر اس کے ساتھ محمد بن مروان اسدی کی روایت مل جائے تو کذب کا سلسلہ ہے۔ (ت)

(۴) اس کے ترجمے میں بھی آریہ نے تحریف کی ہے، عبارت یہ ہے: لتقصیر الشکر علی ما انعم اللہ علیک وعلی اصحابک۔ یعنی اللہ عزوجل نے آپ پر اور آپ کے اصحاب پر جو نعمتیں فرمائیں ان کے شکر میں جس قدر کمی واقع ہوئی اس کے اس لیے استغفار فرمائیے۔ کہاں کمی اور کہاں غفلت، نعمائے الہیہ ہر فرد پر بے شمار حقیقتہً غیر متناہی بالفعل ہیں کما حققہ المفتی ابو السعود فی ارشاد العقل السلیم (جیسا کہ مفتی ابوالسعود نے ارشاد العقل السلیم میں اس کی تحقیق کی ہے۔ ت) قال اللہ عزوجل "وَاِنْ تَعُدُّوْا نِعْمَتَ اللہِ لَا تُحْصُوْھَا" ۲۔ اگر اللہ کی نعمتیں گننا چاہو تو نہ گن سکو گے، جب اس کی نعمتوں کو کوئی گن نہیں سکتا تو ہر نعمت کا پورا شکر کون ادا کر سکتا ہے۔ از دست و زباں کہ بر آید کز عہدہ شکرش بدر آید (کس کے ہاتھ اور زبان سے ممکن ہے کہ اس کے شکر سے عہدہ برآ ہوسکے۔ت)

١ الاتقان فى علوم القرآن النوع التاسع والسبعون فى غرائب التفسير مصطفى البابى مصر ٢ / ١٨٩ ٢

القرآن الكريم ١٤ / ٣٤

Such a deficiency in gratitude is not at all a sin in the well-known sense; rather, it is a requirement of human nature. Divine blessings are increasing at every moment, every second, every instant, in every state, especially upon the elite, and particularly upon those who are the leaders of all the elite. And for a human being, involvement in eating, drinking, and sleeping at some time is necessary. Although these actions of the elite are also acts of worship, they are one degree lower than original worship. This deficiency was termed as 'taqseer' (shortcoming), and this 'taqseer' was expressed as 'dhunb' (sin/fault).

(5) In fact, the text itself is a witness that what was called 'dhunb' is not at all a 'dhunb' in the sense of a real sin. What was meant by 'ma taqaddam' (what preceded)? Before the revelation of Wahi (revelation). And what is called sin? Opposing a command. And how will the command be known? Through Wahi. So until Wahi had descended, where was the command? When there was no command, what is the meaning of opposing the command? And when there is no opposition to the command, where is the sin?

(6) Just as it was proven in 'ma taqaddam' that it is not a real 'dhunb', similarly in 'ma taakhkhar' (what follows), it is timely. Before the initial revelation, those actions that were permissible, then later a command was revealed prohibiting them, and they were expressed in this way, even though their being real sins made no sense at all. Similarly, after the revelation of Wahi and the manifestation of prophethood, those actions which were permitted and later prohibited, in the same way, they were called 'ma taakhkhar' because Wahi was revealed gradually, not all at once.

(7) Not every commentary is reliable, nor is every commentator correct. It is the injustice of a polytheist that he takes the name of the verses but clings to unreliable commentaries. If it is like this, then those absurdities, jokes, and obscenities that a refined person would feel ashamed to speak or even quote from another, which are roaming around in the Aryas' Vedas, and the followers of the Vedas themselves have written the same extreme level of dirty, repulsive obscenities in its translations—how will the Aryas escape from them? For example, in Yajurveda, the state of Ishwar's illness is written, that he is lying on a sickbed calling out: "O you who possess wisdom and knowledge like hundreds! You have hundreds and thousands of types of herbs; from them, make my body disease-free. O Mother! You also do the same." Furthermore, he is saying: "O Devi Mata who gives benefits like herbs! I, your son,

advise you a lot." The 'Mama Ji' (Mother) says: "O worthy son! I, your mother, protect and nourish your horses, cows, land, clothes, life; do not advise me." In the same Yajurveda, Adhyaya 31, Mantra 1, it is about Ishwar that he has a thousand heads, a thousand eyes, a thousand feet; he is everywhere on earth, whether upside down or straight, yet he is sitting ten fingers away in front of every person. Also, in the Vedas, his name is 'Sarv-vyapak' (Omnipresent), meaning he is contained everywhere, permeated in everything, penetrated into every void; Ishwar is in the anus of every animal, in the vagina of every female, in every heap of feces.

फतवा रज़विया, खंड 29

कृतज्ञता में ऐसी कमी बिल्कुल भी प्रसिद्ध अर्थ में पाप नहीं है, बल्कि यह मानव स्वभाव की आवश्यकता है। ईश्वरीय आशीर्वाद हर समय, हर पल, हर क्षण, हर स्थिति में बढ़ रहे हैं, विशेष रूप से विशिष्ट लोगों पर, और विशेष रूप से उन लोगों पर जो सभी विशिष्ट लोगों के सरदार हैं। और एक मनुष्य के लिए किसी समय खाने, पीने और सोने में व्यस्त होना आवश्यक है। यद्यपि विशिष्ट लोगों के ये कार्य भी इबादत (पूजा) ही हैं, लेकिन वे मूल इबादत से एक श्रेणी कम हैं। इस कमी को 'तक़सीर' (कमी) कहा गया और इस 'तक़सीर' को 'ज़ुन्ब' (पाप/दोष) के रूप में व्यक्त किया गया।

(5) वास्तव में, पाठ स्वयं गवाह है कि जिसे 'ज़ुन्ब' कहा गया है, वह वास्तविक अर्थ में पाप कतई नहीं है। 'मा तक़द्दुम' (जो पहले हुआ) से क्या तात्पर्य है? वह्य (प्रकाशना) के अवतरण से पहले। और पाप किसे कहते हैं? आदेश का विरोध करना। और आदेश किससे ज्ञात होगा? वह्य से। तो जब तक वह्य नहीं उतरी थी, आदेश कहाँ था? जब आदेश नहीं था, तो आदेश के विरोध का क्या अर्थ? और जब आदेश का विरोध नहीं है, तो पाप क्या?

(6) जिस तरह 'मा तक़द्दुम' में यह सिद्ध हुआ कि यह वास्तव में 'ज़ुन्ब' नहीं है, उसी तरह 'मा ताअख़्ख़र' (जो बाद में आया) में भी समय की बात है। आदेश के प्रारंभिक अवतरण से पहले जो कार्य जायज़ (अनुमेय) थे, बाद में उनके निषेध पर आदेश आया और उन्हें इस प्रकार व्यक्त किया गया, हालाँकि उनका वास्तविक पाप होना कोई अर्थ ही नहीं रखता था। इसी तरह वह्य के अवतरण और पैग़ंबरी के प्रकटीकरण के बाद भी जो कार्य जायज़ किए गए और बाद में उनका निषेध आया, इसी तरह उन्हें 'मा ताअख़्ख़र' कहा गया क्योंकि वह्य धीरे-धीरे अवतरित हुई, न कि एक साथ।

(7) न हर व्याख्या (तफ़सीर) विश्वसनीय है और न ही हर व्याख्याकार सही। यह एक मुशरिक (बहुदेववादी) का अन्याय है कि वह आयतों का नाम लेता है लेकिन अविश्वसनीय व्याख्याओं का सहारा लेता है। यदि ऐसा है, तो वे बकवास, मज़ाक और अश्लीलताएं जिन्हें एक सभ्य व्यक्ति बोलने में या दूसरे से उद्धृत करने में भी शर्म महसूस करे, जो आर्यों के वेदों में भरी पड़ी हैं और स्वयं वेदों के अनुयायियों ने इसके अनुवादों में उसी चरम स्तर की गंदी, घृणित अश्लीलताएं लिखी हैं—आर्य उनसे कैसे बचेंगे? उदाहरण के लिए, यजुर्वेद में ईश्वर की बीमारी का वर्णन है कि वह बीमार बिस्तर पर पड़े पुकार रहे हैं: "ओ सैकड़ों की तरह बुद्धि और ज्ञान रखने वालो! तुम्हारे पास सैकड़ों-हजारों प्रकार की जड़ी-बूटियाँ हैं; उनमें से मेरे शरीर को निरोग करो। हे माँ! तुम भी वैसा ही करो।" साथ ही

यह भी कह रहे हैं कि "हे जड़ी-बूटियों की तरह लाभ देने वाली देवी माता! मैं पुत्र तुझे बहुत सलाह देता हूँ।" 'मामा जी' (माता) कहती हैं: "हे सुयोग्य पुत्र! मैं माता तेरे घोड़ों, गायों, ज़मीन, कपड़ों, जीवन की रक्षा और पालन-पोषण करती हूँ; मुझे सलाह मत दे।" इसी यजुर्वेद के अध्याय 31, मंत्र 1 में ईश्वर के बारे में है कि उनके हज़ार सिर हैं, हज़ार आँखें हैं, हज़ार पाँव हैं; वे पृथ्वी पर हर जगह हैं, उल्टा-सीधा तब भी दस उंगली की दूरी पर हर आदमी के सामने बैठे हैं। साथ ही वेदों में उनका नाम 'सर्वव्यापक' है यानी वे हर जगह समाए हुए हैं, हर चीज़ में रमे हुए हैं, हर शून्य में घुसे हुए हैं; ईश्वर हर जानवर के गुदा (मलद्वार) में, हर मादा की योनि में, हर गोबर/मल की ढेरी में हैं।

पृष्ठ 398/750

شکر میں ایسی کمی ہرگز گناہ بمعنی معروف نہیں بلکہ لازمہ بشریت ہے نعمائے الہیہ ہر وقت ہر لمحہ ہر آن ہر حال میں متزائد ہیں خصوصاً خاصوں پر خصوصاً ان پر جو سب خاصوں کے سردار ہیں اور بشر کو کسی وقت کھانے پینے سونے میں مشغولی ضرور ، اگرچہ خاصوں کے یہ افعال بھی عبادت ہی ہیں مگر اصل عبادت سے تو ایک درجہ کم ہیں اس کمی کو تقصیر اور اس تقصیر کو ذنب سے تعبیر فرمایا گیا۔

(۵) بلکہ خود نفس عبارت گواہ ہے کہ یہ جسے ذنب فرمایا گیا ہر گز حقیقۃً ذنب بمعنی گناہ نہیں۔ ما تقدم سے کیا مراد لیا، وحی اترنے سے پیشتر کے، اور گناہ کسے کہتے ہیں، مخالفت فرمان کو، اور فرمان کا ہے سے معلوم ہوگا، وحی سے۔ تو جب تک وحی نہ اتری تھی فرمان کہاں تھا جب فرمان نہ تھا مخالفت فرمان کے کیا معنی، اور جب مخالفت فرمان نہیں تو گناہ کیا۔

(۶) جس طرح ما تقدم میں ثابت ہوا لیا کہ حقیقۃً ذنب نہیں۔ یوں ہی ما تاخر میں نقد وقت ہے قبل ابتدائے نزول فرمان جو افعال جائز ہوئے کہ بعد کو فرمان ان کے منع پر اترا اور انہیں یوں تعبیر فرمایا گیا حالانکہ ان کا حقیقۃً گناہ ہونا کوئی معنی ہی نہ رکھتا تھا۔ یونہی بعد نزول وحی و ظہور رسالت بھی جو افعال جائز فرمائے اور بعد کو ان کی ممانعت اتری اسی طریقے سے ان کو ما تاخر فرمایا کہ وحی بتدریج نازل ہوئی نہ کہ دفعۃً۔

(۷) نہ ہر تفسیر معتبر نہ ہر مفسر مصیب ، مشرک کا ظلم ہے کہ نام لے آیات کا اور دامن پکڑے نامعتبر تفسیرات کا۔ ایسا ہی ہے تو وہ لغویات و مہزلیات و فحشیات کہ ایک مہذب آدمی کو انہیں بکتے بلکہ دوسرے آدمی سے نقل کرتے عار آئے جو آریہ کے ویدوں میں ابلی گھبلی پھر رہی ہیں

اور خود بندگانِ وید نے اس کے ترجموں میں وہی حد بھر کے گندے گھناؤنے فحش لکھے ان سے آریہ کی جان کیونکر چھوٹے گی مثلاً یجر وید میں ایشور کی بیماری کا حال لکھا کہ بستر بیماری پر پڑے پکار رہے ہیں کہ او سکیڑوں کی طرح کی عقل و علم رکھنے والو ! تمہاری سیکڑوں ہزاروں طرح کی بوٹیاں ہیں ان میں سے میرے شریر کو نیروگ کرو، اے اماں جان ! تو بھی ایسا ہی کر نیز یہ بھی فرما رہے ہیں کہ اے بوٹیوں کے مانند فائدہ دینے والی دیوی ماتا ! میں فرزند تجھ کو بہت نصیحت کرتا ہوں ماما جی کہتی اے لائق بیٹے ! میں والدہ تیرے گھوڑے گائیں، زمین، کپڑے، جان کی حفاظت و پرورش کرتی تو مجھے نصیحت مت کرواسی یجر وید کے ادھیائے ۳۱ منتر اول میں ایشور کے متعلق ہے اس کے ہزار سر ہیں ہزار آنکھیں ہیں ہزار پاؤں ہیں زمین پر وہ سب جگہ ہے الٹا سیدھا تب بھی دس انگلی کے فاصلے پر ہر آدمی کے آگے بیٹھا ہے۔ نیز ویدوں میں اس کا نام سرو بپاک ہے یعنی وہ ہر جگہ سمایا ہوا، ہر چیز میں رما ہوا، ہر خلا میں گھسا ہوا ہے، ہر جانور کی مقعد ہر مادہ کی فرج ہر پاخانہ کی ڈھیری میں ایشور۔

Fatawa Razawiyya Volume 29

He is Ishwar. Dayanand forcibly changed their form and removed them from obscenity, but where will the translations of other translators disappear? A commentator explains the meaning from his own perspective, while a translator expresses the original speech itself in another language. If there is an error in translation, it might be in the meaning of one or two words, not that the entire speech is shifted from mere obscenity to wisdom. And if Sanskrit is such a complex language where lines upon lines can be translated either as obscenity or wisdom, then that speech is not divine; it is just a juggler's trick. How can any word in it be trusted? One wouldn't know if it's a prayer or an insult. (8) Argumentation is a task of great responsibility; how can the poor Arya manage to fulfill it? Logic and research cannot be performed with kachori, puri, bhajiya, and dal. The condition for the completion of an argument is the exclusion of all possibility. It is an accepted principle of knowledge:

Idhā jā'a al-iḥtimāl baṭala al-istidlāl [1]	**When possibility arises, the argument becomes invalid. (T)**

What definitive proof is there in the blessed verses of Surah Mu'min and Surah Muhammad (peace and blessings of Allah be upon him) that the address is specifically to the noble presence of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him)? In Surah Mu'min, it only says: "And ask forgiveness for your sin" (2). "O person, seek forgiveness for your mistake." There is no specific name, no proof for the particularity of the speech. The Great Quran was revealed for the guidance of the entire world, not just for those present at that time but addressing everyone coming until the Day of Resurrection. "Establish prayer" (3). This address was for the companions (may Allah be pleased with them) just as it is for us and for the generations to come until the Day of Judgment. In the same Great Quran, it is said:

"li-undhirakum bihi wa man balagh" [4]	**So that I may warn you with it and whomever it reaches. (T)**

It is a general rule of books that the address is to every listener. Know this, may Allah Almighty grant you happiness (so know, Allah Almighty).

1 2 Al-Quran al-Karim 40 / 55 3 Al-Quran al-Karim 2 / 43 4 Al-Quran al-Karim 6 / 19

वही ईश्वर है। दयानंद ने केवल ज़बरदस्ती उनका रूप बदल दिया और उन्हें अश्लीलता से निकाल दिया, लेकिन अन्य अनुवादकों के अनुवाद कहाँ मिट जाएँगे? भाष्यकार तो अपनी ओर से अर्थ कहता है और अनुवादक स्वयं मूल वाणी को दूसरी भाषा में व्यक्त करता है। अनुवाद की ग़लती यदि होती है तो एक-दो शब्दों के अर्थ में, न कि सारी की सारी वाणी केवल अश्लीलता से बुद्धिमत्ता की ओर मोड़ दी जाए। और यदि संस्कृत ऐसी ही जटिल भाषा है जिसकी पंक्तियाँ की पंक्तियाँ चाहे अश्लीलता से अनुवाद कर दो या बुद्धिमत्ता से, तो वह वाणी क्या हुई, वह तो जादूगर का खेल हो गया। उसके किस शब्द पर विश्वास किया जा सकता है? नहीं मालूम कि माला जपना है या गाली बकना है। (८) तर्क करना बड़ी ज़िम्मेदारी का काम है; आर्य बेचारा इसे कैसे निभा सकता है? अनुसंधान के नियमों के बिना तर्क नहीं हो सकता, यह कचोरी, पूरी, भजिया और दाल का काम नहीं है। तर्क की पूर्णता की शर्त हर संभावना को समाप्त करना है। ज्ञान का यह एक स्वीकृत सिद्धांत है:

इज़ा जा-अल इहतिमाल बतल अल-इस्तिदलाल [1]	**जब संभावना आ जाए तो तर्क अमान्य हो जाता है। (त)**

सूरह मोमिन और सूरह मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की आयतों में कौन सा निश्चित प्रमाण है कि संबोधन हुज़ूर अकदस (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से है? सूरह मोमिन में तो इतना है: "और अपने पाप की क्षमा माँगो" (२)। "ऐ व्यक्ति, अपनी भूल की क्षमा चाह।" किसी का कोई विशेष नाम नहीं, वाणी की विशेषता का कोई प्रमाण नहीं। महान कुरान पूरे विश्व के मार्गदर्शन के लिए उतरा है, न केवल उस समय के उपस्थित लोगों के लिए बल्कि प्रलय तक आने वालों को संबोधित करता है, "नमाज़ स्थापित करो" (३)। यह संबोधन जैसा सहाबा किराम (रज़ियल्लाहु अन्हुम) के लिए था, वैसा ही हमारे लिए भी है और प्रलय तक हमारे बाद आने वाली पीढ़ियों के लिए भी। इसी महान कुरान में है:

"लि-उन्ज़िरकुम बिही व मन बलग़" [4]	**ताकि मैं इसके द्वारा तुम्हें डराऊँ और उन सबको जिन तक यह पहुँचे। (त)**

पुस्तकों का सामान्य नियम है कि संबोधन हर श्रोता से होता है। जान लो, अल्लाह तआला तुम्हें सुखी रखे (तो जान ले अल्लाह तआला)।

१ २ अल-कुरान अल-करीम ४० / ५५ ३ अल-कुरान अल-करीम २ / ४३ ४ अल-कुरान अल-करीम ६ / १९

पृष्ठ ३९९/७५०

ہی ایشور ہے۔ دیانند نے محض زبردستی ان کی کایا پلٹ دی اور انہیں فحش سے نکالا مگر اور مترجموں کا ترجمہ کہاں مٹ جائے گا مفسر تو اپنی طرف سے مطلب کہتا ہے اور مترجم خود اصل کلام کو دوسری زبان میں بیان کرتا ہے ترجمے کی غلطی اگر ہوتی ہے تو دوا ایک لفظ کے معنی میں نہ کہ سارے کا سارا کلام محض فحش سے حکمت کی طرف پلٹ دیا جائے اور اگر سنسکرت ایسی ہی پیچیدہ زبان ہے جس کی سطروں کی سطریں چاہے فحش سے ترجمہ کر دو خواہ حکمت سے تو وہ کلام کیا ہوا بھان متی کا گورکھ دھندا ہوا اور اس کے کس حرف پر اعتماد ہو سکتا ہے، نہیں معلوم کہ مالا جپی ہے یا گالی بکی ہے۔ (۸) استدلال بڑی ذمہ داری کا کام ہے آریہ بیچارہ کیا کھا کر اس سے عہدہ برآمد ہو سکتا ہے۔ نباشد بہ آئین تحقیق دال کچوری و پوری و بھجیا ودال شرط تمامی استدلال قطع ہر احتمال ہے علم کا قاعدہ مسلمہ ہے۔

اذا جاء الاحتمال بطل الاستدلال ۱۔ جب احتمال آجائے تو استدلال باطل ہو جاتا ہے۔ (ت)

سورہ مومن و سورہ محمد صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کی آیات کریمہ میں کون سی دلیل قطعی ہے۔ کہ خطاب حضور اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم سے ہے ، مومن میں تو اتنا ہے۔ "وَاسْتَغْفِرْ لِذَنْبِكَ" ۲۔ اے شخص اپنی خطا کی معافی چاہ کسی کا خاص نام نہیں کوئی دلیل تخصیص کلام نہیں، قرآن عظیم تمام جہاں کی ہدایت کے لیے اترا نہ صرف اس وقت کے موجودین بلکہ قیامت تک کے آنے والوں سے وہ خطاب فرماتا ہے، "اَقِیْمُوا الصَّلٰوۃَ" ۳۔ نماز برپا رکھو۔ یہ خطاب جیسا صحابہ کرام رضی اللہ تعالٰی عنہم سے تھا ویسا ہی ہم سے بھی ہے اور تا قیام قیامت ہمارے بعد آنے والی نسلوں سے بھی۔ اسی قرآن عظیم میں ہے:

"لِاُنْذِرَكُمْ بِهٖ وَمَنْ بَلَغَ" ۴۔ تاکہ میں اس سے تمہیں ڈراؤں اور جن جن کو پہنچے (ت)

کتب کا عام قاعدہ ہے کہ خطاب ہر سامع سے ہوتا ہے بداں اسعدک اللہ تعالٰی (تو جان لے اللہ تعالٰی)

1 2 القرآن الکریم ۴۰ / ۵۵ 3 القرآن الکریم ۲ / ۴۳ 4 القرآن الکریم ۶ / ۱۹

Fatawa Razawiyya, Volume 29

...made you fortunate. T) in which no specific person is intended. The Great Quran itself says:

| (The accursed Abu Jahl tried to stop the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) from praying, upon which these noble verses were revealed) Have you seen him who forbids a servant when he prays? See, if he is on guidance or commands piety. | "أَرَأَيْتَ الَّذِي يَنْهَىٰ ۝ عَبْدًا إِذَا صَلَّىٰ ۝ أَرَأَيْتَ إِنْ كَانَ عَلَى الْهُدَىٰ ۝ أَوْ أَمَرَ بِالتَّقْوَىٰ ۝" 1 -|

Here, 'servant' refers to the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him), and the third-person pronouns refer to the Prophet, while the addressee is every listener, rather He says:

| (After these clear proofs) what causes you to deny the Day of Judgment? | "فَمَا يُكَذِّبُكَ بَعْدُ بِالدِّينِ ۝" 2 -|

This address is specifically to the disbelievers, rather even among them specifically to those who deny the Day of Judgment like the polytheists of Arya and Hindus. Likewise, in both noble Surahs, the letter 'Kaf' of address is for every listener, meaning: O listener! Seek forgiveness for your sins and for all your Muslim brothers. (9) Rather, in the verse of Muhammad (peace and blessings of Allah be upon him), there is a clear contextual clue that the address is not to the Prophet; its beginning is like this:

| Know that there is no god but Allah, and seek forgiveness for your sin and for the believing men and believing women. | "فَاعْلَمْ أَنَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا اللَّهُ وَاسْتَغْفِرْ لِذَنْبِكَ وَلِلْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ ۝" 3 -|

So this address is to the one who does not yet know 'La ilaha illAllah' (There is no god but Allah), and to command someone who already knows to know is a redundancy. Thus, the meaning is: O listener who does not yet have conviction in Monotheism, whoever it may be, bring conviction in Monotheism and seek forgiveness for your sins and for your fellow Muslims. In the conclusion of the verse, this generality is made clear that:

| Allah knows your moving about and your resting places. | "وَاللَّهُ يَعْلَمُ مُتَقَلَّبَكُمْ وَمَثْوَاكُمْ ۝" 4- |

If interpretation is done in 'Fa'lam' (then know), then what prevents interpretation in 'Dhanbik' (your sin), and if there is no interpretation in 'Dhanbik'...

---

1 Al-Quran Al-Karim 96 / 9 to 12 2 Al-Quran Al-Karim 95 / 7 3 Al-Quran Al-Karim 47 / 19 4 Al-Quran Al-Karim 47 / 19

फ़तावा रज़विया, जिल्द २९

...तुझे सौभाग्यशाली बनाए। त) में कोई विशेष व्यक्ति अभिप्रेत नहीं है। स्वयं कुरआन अज़ीम में फ़रमाया:

| (मलऊन अबू जहल ने हुज़ूर अकदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को नमाज़ से रोकना चाहा, जिस पर ये आयतें उतरीं) क्या तुमने उसे देखा जो एक बंदे को रोकता है जब वह नमाज़ पढ़ता है? भला देखो तो अगर वह बंदा हिदायत पर हो या परहेज़गारी का हुक्म देता हो। | "أَرَأَيْتَ الَّذِي يَنْهَىٰ ۝ عَبْدًا إِذَا صَلَّىٰ ۝ أَوْ أَمَرَ بِالتَّقْوَىٰ ۝" 1अ -رَأَيْتَ إِنْ كَانَ عَلَى الْهُدَىٰ ۝ |

यहाँ बंदे से मुराद हुज़ूर अकदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम हैं, और गायब के ज़मीर (सर्वनाम) हुज़ूर की तरफ़ हैं और मुख़ातब (संबोधित) हर सुनने वाला है, बल्कि फ़रमाता है:

| (इन रौशन दलीलों के बाद) क्या चीज़ तुझे रोज़-ए-क़यामत के झुठलाने पर उकसाती है। | "فَمَا يُكَذِّبُكَ بَعْدُ بِالدِّينِ ۝" 2 -|

यह ख़िताब विशेष रूप से काफ़िरों से है, बल्कि उनमें भी विशेष रूप से क़यामत का इनकार करने वालों जैसे आर्य और हिंदुओं के मुशरिकों से। इसी तरह दोनों सूरह करीमा में ख़िताब का 'काफ़' हर सुनने वाले के लिए है कि ऐ सुनने वाले! अपने और अपने तमाम मुसलमान भाइयों के गुनाह की माफ़ी मांग। (९) बल्कि आयत-ए-मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम में तो साफ़ तौर पर यह संकेत मौजूद है कि ख़िताब हुज़ूर से नहीं है, इसकी शुरुआत यूँ है:

| जान लो कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और अपने और मुसलमान मर्दों और औरतों की माफ़ी चाहो। | "فَاعْلَمْ أَنَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا اللَّهُ وَاسْتَغْفِرْ لِذَنْبِكَ وَلِلْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ ۝" 3 -|

तो यह ख़िताब उससे है जो अभी 'ला इलाहा इल्लल्लाह' नहीं जानता, और न जानने वाले को जानने का हुक्म देना निरर्थक है। तो अर्थ यह हुए कि ऐ सुनने वाले जिसे अभी तौहीद पर यक़ीन नहीं है, चाहे कोई भी हो, तौहीद पर यक़ीन ला और अपने और अपने भाई मुसलमानों के गुनाह की माफ़ी माँग। आयत के अंत में इस व्यापकता को स्पष्ट कर दिया कि:

| अल्लाह जानता है जहाँ तुम सब लोग करवटें ले रहे हो और जहाँ तुम सब का ठिकाना है। | "وَاللَّهُ يَعْلَمُ مُتَقَلَّبَكُمْ وَمَثْوَاكُمْ ۝" 4 -|

अगर 'फा'लम' (तो जान लो) में तावील (व्याख्या) की जाए तो 'ज़न्बिक' (तुम्हारे गुनाह) में तावील से कौन रोकता है और अगर 'ज़न्बिक' में तावील नहीं है...

---

1 अल-कुरआन अल-करीम 96 / 9 से 12 2 अल-कुरआन अल-करीम 95 / 7 3 अल-कुरआन अल-करीम 47 / 19 4 अल-कुरआन अल-करीम 47 / 19

تجھ سے سعادت مند بنائے۔ ت) میں کوئی خاص شخص مراد نہیں۔ خود قرآن عظیم میں فرمایا:

| (ابوجہل لعین نے حضور اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کو نماز سے روکنا چاہا اس پر یہ آیت کریمہ اتریں) کہ کیا تو نے دیکھا اُسے جو روکتا ہے بندے کو جب وہ نماز پڑھے، بھلا دیکھو تو اگر وہ بندہ ہدایت پر ہو یا پرہیزگاری کا حکم فرمائے۔ | "اَرَاَیْتَ الَّذِیْ یَنْہٰی ۙ عَبْدًا اِذَا صَلّٰی ؕ اَرَاَیْتَ اِنْ کَانَ عَلَی الْہُدٰۤی ۙ اَوْ اَمَرَ بِالتَّقْوٰی ؕ " 1- |

یہاں بندے سے مراد حضور اقدس ہیں صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم، اور غائب کی ضمیریں حضور کی طرف ہیں اور مخاطب کی ہر سامع کی طرف، بلکہ فرماتا ہے:

| (ان روشن دلیلوں کے بعد) کیا چیز تجھے روزِ قیامت کے جھٹلانے پر باعث ہو رہی ہے۔ | "فَمَا یُکَذِّبُکَ بَعْدُ بِالدِّیْنِ ؕ" 2- |

یہ خطاب خاص کفار سے ہے بلکہ ان میں بھی خاص منکرانِ قیامت مثلِ مشرکینِ آریہ وہنود سے، یونہی دونوں سورہ کریمہ میں کاف خطاب ہر سامع کے لیے ہے کہ اے سننے والے اپنے اور اپنے سب مسلمان بھائیوں کے گناہ کی معافی مانگ۔ (۹) بلکہ آیت محمد صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم میں تو صاف قرینہ موجود ہے کہ خطاب حضور سے نہیں، اس کی ابتداء یوں ہے:

| جان لے کہ اللہ کے سوا کوئی معبود نہیں اور اپنی اور مسلمان مردوں اور عورتوں کی معافی چاہ۔ | "فَاعْلَمْ اَنَّہٗ لَاۤ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَ اسْتَغْفِرْ لِذَنْۢبِکَ وَ لِلْمُؤْمِنِیْنَ وَ الْمُؤْمِنٰتِ ؕ" 3- |

تو یہ خطاب اُس سے ہے جو ابھی لا الہ الا اللہ نہیں جانتا اور نہ جاننے والے کو جاننے کا حکم دینا تحصیلِ حاصل ہے، تو معنی یہ ہوئے کہ اے سُننے والے جسے ابھی توحید پر یقین نہیں کسے باشد

توحید پر یقین لا اور اپنے اور اپنے بھائی مسلمانوں کے گناہ کی معافی مانگ، تتمہ آیت میں اس عموم کو واضح فرمادیا کہ:

| اللہ جانتا ہے جہاں تم سب لوگ کروٹیں لے رہے ہو، اور جہاں تم سب کا ٹھکانا ہے۔ | "وَاللّٰہُ یَعْلَمُ مُتَقَلَّبَکُمْ وَ مَثْوٰىکُمْ" 4- |

اگر فاعلم میں تاویل کرے تو ذنبک میں تاویل سے کون مانع ہے اور اگر ذنبک میں تاویل نہیں

---

1 القرآن الکریم ۹۶ / ۹ تا ۱۲ 2 القرآن الکریم ۹۵ / ۷ 3 القرآن الکریم ۴۷ / ۱۹ 4 القرآن الکریم ۴۷ / ۱۹

صفحہ 400 کا 750

Fatawa Ridawiyya, Volume 29

...if done, how could I interpret it in 'Fa'lam'? On both, our objective is achieved, and the argument of the obstinate claimant is nullified.

(10) In both noble verses, the imperative mood is used, and an imperative is an origination (insha). Origination does not signify occurrence. Thus, the result is only that *if* occurrence were to happen, seeking forgiveness would be mandatory; it does not mean, God forbid, that it actually occurred. It is like telling someone, "Akrim Dayfak" (Honor your guest). This does not mean a guest is present now, nor is it a report that a guest will definitely come. It simply means if it happens, do so.

(11) 'Dhanb' refers to disobedience (ma'siyat). In the terminology of the Great Quran, the application of 'disobedience' is not exclusive to intentional acts. Allah Almighty said: "And Adam disobeyed his Lord and went astray" [1]. Adam disobeyed his Lord, while He Himself says: "But he forgot, and We found in him no resolve" [2]. Adam forgot; We did not find intent in him. However, oversight is neither a sin nor subject to punishment. The Holy Quran itself taught servants this prayer: "Our Lord, do not take us to task if we forget or make a mistake" [3] - O our Lord! Do not seize us if we forget or err.

(12) The greater the proximity, the greater the severity of rulings. (Couplet): Those whose ranks are exceptional have exceptional difficulties. A mighty, majestic king might tolerate certain behavior from a rustic villager that he would never accept from city dwellers. Among city dwellers, dealings with commoners might be easy, but stricter with special people. Among the special ones, it is stricter for courtiers, and among courtiers, for ministers. Each carries a heavier burden than the other. Hence, it was stated: "The good deeds of the righteous are the sins of those close to God" [4]. There, even leaving a better action (tark-e-awla) is described as a sin, although leaving a better action is never actually a sin.

(13) Poor Aryas, whose ancestors never even heard the name of Arabic; if they do not know, then at the very least...

---

1. Al-Quran Al-Karim 20/121
2. Al-Quran Al-Karim 20/115
3. Al-Quran Al-Karim 2/286
4. Lubab al-Ta'wil (Tafsir al-Khazin) under verse 2/194, Mustafa al-Babi Egypt 6/180, Irshad al-Aql al-Salim under verse 2/19 Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut 8/97

फतावा रजविया, खंड २९

...करते तो 'फा'लम' (Fa'lam) में व्याख्या कैसे कर सकता, दोनों पर हमारा उद्देश्य प्राप्त है, और हठधर्म दावेदार का तर्क निरस्त है।

(१०) दोनों महान आयतों में 'अम्र' (आदेशात्मक) शब्द का प्रयोग है और अम्र 'इन्शा' (रचना/आरम्भ) है, और इन्शा किसी घटना के होने का प्रमाण नहीं है। इसका अर्थ केवल इतना है कि यदि कोई घटना घटती है तो क्षमा माँगना अनिवार्य होगा, न कि यह कि अल्लाह न करे वह घटना घटी हो। जैसे किसी से कहना "अकरिम ज़ैफ़क" (अपने अतिथि का सत्कार करो), इसका अर्थ यह नहीं है कि इस समय कोई अतिथि उपस्थित है और न ही यह कोई समाचार है कि अवश्य ही कोई अतिथि आएगा, बल्कि इसका अर्थ केवल इतना है कि यदि ऐसा हो तो ऐसा करना।

(११) 'ज़न्ब' (Dhanb) का अर्थ अवज्ञा (मासियत) है और कुरान अज़ीम की परिभाषा में अवज्ञा शब्द का प्रयोग केवल जानबूझकर किए गए कार्यों तक सीमित नहीं है। अल्लाह तआला ने फरमाया: "और आदम ने अपने रब की अवज्ञा की और राह से भटक गए" -१-। हालांकि वह स्वयं फरमाता है: "वह (आदम) भूल गए और हमने उनमें संकल्प नहीं पाया" -२-। आदम भूल गए, हमने उनके इरादे को नहीं पाया। लेकिन विस्मृति न तो पाप है और न ही उस पर कोई पकड़ है। स्वयं पवित्र कुरान ने बंदों को यह दुआ सिखाई है: "रब्बना ला तुआख़िज़ना इन-नसीना औ अख़्तअना" -३- ऐ हमारे रब! हमें न पकड़ अगर हम भूलें या चूकें।

(१२) जितना अधिक सामीप्य (निकटता) होगी, नियमों में उतनी ही अधिक कठोरता होगी। (शेर): जिनके पद ऊँचे होते हैं, उनके लिए कठिनाइयाँ भी वैसी ही होती हैं। एक प्रतापी राजा किसी जंगली गँवार की जिस बात को सुन लेगा और उसे सहन कर लेगा, वह उसे शहरवासियों के लिए कदापि पसंद नहीं करेगा। शहरवासियों में बाजार के लोगों के साथ व्यवहार आसान होगा, लेकिन विशिष्ट लोगों के साथ कठोर। विशिष्ट लोगों में दरबारियों के साथ, और दरबारियों में मंत्रियों के साथ प्रत्येक पर उत्तरदायित्व दूसरे से अधिक है। इसलिए कहा गया है: "हसनातुल अबरार सय्यियातुल मुक़र्रबीन" (भले लोगों के नेक काम, अल्लाह के निकटतम लोगों के हक़ में पाप के समान हैं) -४-। वहाँ 'तर्कए-औला' (बेहतर कार्य का त्याग) को भी पाप कहा जाता है, हालांकि बेहतर कार्य का त्याग वास्तव में पाप नहीं होता।

(१३) बेचारे आर्य, जिनके पूर्वजों ने कभी अरबी का नाम तक नहीं सुना, अगर वे नहीं जानते तो कम से कम...

---

1. अल-कुरान अल-करीम २०/१२१
2. अल-कुरान अल-करीम २०/११५
3. अल-कुरान अल-करीम २/२८६
4. लुबाब अल-तावील (तफ़सीर अल-खाज़िन) आयत २/१९४ के तहत, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र ६/१८०, इरशाद अल-अक़्ल अल-सलीम आयत २/१९ के तहत, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी बेरुत ८/९७

पृष्ठ ४०१ / ७५०

کرتا تو فاعلم میں تاویل کیسے کر سکتا ہے، دونوں پر ہمارا مطلب حاصل ، اور مدعی معاند کا استدلال زائل۔

(۱۰) دونوں آیۂ کریمہ میں صیغہ امر ہے اور امر انشا ہے اور انشا وقوع پر دال نہیں تو حاصل اس قدر کہ بفرض وقوع استغفار واجب نہ یہ کہ معاذ اللہ واقع ہوا، جیسے کسی سے کہنا اکرم ضیفک اپنے مہمان کی عزت کرنا، اس سے یہ مراد نہیں کہ اس وقت کوئی مہمان موجود ہے نہ یہ خبر ہے کہ خواہ مخواہ کوئی مہمان آئے گا ہی بلکہ صرف اتنا مطلب ہے کہ اگر ایسا ہو تو یوں کرنا۔

(۱۱) ذنب معصیت کو کہتے ہیں اور قرآن عظیم کے عرف میں اطلاق معصیت عمد ہی سے خاص نہیں، قال اللہ تعالٰی "وَعَصٰٓی اٰدَمُ رَبَّهٗ فَغَوٰی" -۱- آدم نے اپنے رب کی معصیت کی، حالانکہ خود فرماتا ہے: "فَنَسِیَ وَلَمْ نَجِدْ لَهٗ عَزْمًا" -۲- آدم بھول گیا ہم نے اس کا قصد نہ پایا، لیکن سہو نہ گناہ ہے نہ اس پر مواخذہ، خود قرآن کریم نے بندوں کو یہ دعا تعلیم فرمائی: "رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَآ اِنْ نَّسِیْنَآ اَوْ اَخْطَاْنَا" -۳- اے ہمارے رب! ہمیں نہ پکڑ اگر ہم بھولیں یا چوکیں۔

(۱۲) جتنا قرب زائد اسی قدر احکام کی شدت زیادہ ع جن کے رتبے ہیں سوا ان کو سوا مشکل ہے۔ بادشاہ جبار جلیل القدر ایک جنگلی گنوار کی جو بات سُن لے گا جو برتاؤ گوارا کرے گا ہر گز شہریوں سے پسند نہ کرے گا، شہریوں میں بازاریوں سے معاملہ آسان ہوگا اور خاص لوگوں سے سخت اور خاصوں میں درباریوں اور درباریوں میں وزراء ہر ایک پر بار دوسرے سے زائد ہے

اس لیے وارد ہوا۔ حسنات الابرار سیئات المقربین -۴- نیکوں کے جو نیک کام ہیں مقربوں کے حق میں گناہ ہیں۔ وہاں ترک اولیٰ کو بھی گناہ سے تعبیر کیا جاتا ہے حالانکہ ترک اولیٰ ہر گز گناہ نہیں۔

(۱۳) آریہ بے چارے جن کے باپ دادا نے بھی کبھی عربی کا نام نہ سُنا، اگر نہ جانے تو بہر ادنیٰ۔

---

۱ القرآن الکریم ۱۲۱/۲۰ ۲ القرآن الکریم ۱۱۵/۲۰ ۳ القرآن الکریم ۲۸۶/۲ ۴ لباب التاویل (تفسیر الخازن) تحت آیة ۲/ ۱۹۴، مصطفی البابی مصر ۶/ ۱۸۰، ارشاد العقل السلیم تحت آیة ۲/ ۱۹ دار احیاء التراث العربی بیروت ۸/ ۹۷

Fatawa Razawiyya, Volume 29

A student of knowledge knows that even a minimal connection is sufficient for 'idhafat' (attribution/possession); in fact, this is commonly prevalent in Persian, Urdu, and Hindi languages. Just as a house is attributed to its owner, it is also attributed similarly to a tenant, and similarly to one who is living there on loan. Anyone visiting will say, 'We went to so-and-so's house.' Furthermore, when surveyors are measuring fields, they ask each other, 'How many jaribs (a unit of measure) was your field?' even though there is no ownership, lease, or loan involved, yet the 'idhafat' exists. Similarly, if something comes from a son's house, it can be said to the father that 'this was given from your place.' Therefore, 'dhanb' (shortcoming) refers to the lapses of the noble Ahl al-Bayt (the Prophet's family), and the subsequent mention of 'believing men and believing women' is a generalization after specification, meaning: intercede for your noble Ahl al-Bayt and for all men and women. Now, there is also a cure for this obsession of the Arya [Samaj] that the followers are mentioned later. An example of generalization after specification is present in the Great Quran itself:

"My Lord! Forgive me and my parents and whoever enters my house as a believer, and all believing men and believing women."[1]

(14) For this reason, in the noble verse of Surah al-Fath, the 'Lam' in 'Laka' (for you) is for 'Ta'lil' (causality), and 'what preceded of your dhanb' refers to the sins of those before you, i.e., our leader Abdullah and our leader Aamina (Allah be pleased with them both) up to the end of the noble lineage, all noble fathers and pure mothers with the exception of the noble Prophets like Adam, Seth, Noah, Khalil (Abraham), and Ishmael (peace be upon them all). And 'what followed' refers to those after you, i.e., your Ahl al-Bayt and the forgiven Ummah until the Day of Resurrection. The result of the noble verse is that: We have granted you a clear victory so that Allah may forgive, for your sake, the sins of all the previous and later ones connected to you. Praise be to Allah, Lord of the worlds.

(15) Just as the intent of 'what preceded and what followed' being before and after the revelation of the Wahi was clearly stated in the text of the commentary, it is certainly plausible in the verse. And we have proven that the reality of 'dhanb' itself is now refuted. Praise be to Allah. And may the peace and blessings of Allah be upon the intercessor for the sinners and his descendants and companions all until the Day of Judgment. And Allah the Almighty knows best.

[1]The Noble Quran 71/28 Page 402 of 750

फ़तावा रज़विया, खंड 29

एक छात्र जानता है कि 'इज़ाफ़त' (संबंध या अधिकार) के लिए मामूली संबंध भी पर्याप्त है; वास्तव में यह आमतौर पर फ़ारसी, उर्दू और हिंदी सभी भाषाओं में प्रचलित है। जिस तरह एक घर का संबंध उसके मालिक से जोड़ा जाता है, उसी तरह किरायेदार से भी जोड़ा जाता है, और उसी तरह उससे भी जो उधार लेकर वहाँ रह रहा है। जो कोई भी मिलने आएगा वह यही कहेगा कि 'हम फलां के घर गए थे।' इसके अलावा, जब सर्वेक्षणकर्ता खेतों को माप रहे होते हैं, तो वे एक-दूसरे से पूछते हैं, 'आपका खेत कितने जरीब (माप की एक इकाई) का था?' भले ही वहाँ कोई स्वामित्व, पट्टा या ऋण शामिल न हो, फिर भी 'इज़ाफ़त' मौजूद है। इसी तरह, यदि बेटे के घर से कोई चीज़ आती है, तो पिता से कहा जा सकता है कि 'यह आपके यहाँ से दिया गया था।' इसलिए, 'ज़म्ब' (कमी) से तात्पर्य महान अहल-ए-बैत (पैगंबर के परिवार) की चूक से है, और उसके बाद 'आस्तिक पुरुषों और आस्तिक महिलाओं' का उल्लेख विशिष्टता के बाद सामान्यीकरण है, जिसका अर्थ है: अपने महान अहल-ए-बैत और सभी पुरुषों और महिलाओं के लिए मध्यस्थता (शफ़ाअत) करें। अब, आर्य [समाज] के इस जुनून का भी इलाज हो गया है कि अनुयायियों का उल्लेख बाद में आता है। विशिष्टता के बाद सामान्यीकरण का उदाहरण स्वयं महान कुरान में मौजूद है:

"ऐ मेरे रब! मुझे और मेरे माता-पिता को और जो कोई मेरे घर में आस्तिक होकर प्रवेश करे उसे और सभी आस्तिक पुरुषों और आस्तिक महिलाओं को क्षमा कर दे।"[1]

(14) इसी कारण से, सूरा अल-फतह की महान आयत में 'लका' (तुम्हारे लिए) में 'लाम' 'तालील' (कारण) के लिए है, और 'जो तुम्हारे ज़म्ब में से पहले हो चुका' से तात्पर्य उन लोगों के पापों से है जो तुमसे पहले थे, अर्थात हमारे नेता अब्दुल्ला और हमारी नेता आमिना (अल्लाह उन दोनों से प्रसन्न हो) से लेकर महान वंश के अंत तक सभी महान पूर्वज और पवित्र माताएँ, सिवाय आदम, शीथ, नूह, खलील (इब्राहिम) और इस्माइल (उन सभी पर शांति हो) जैसे महान पैगंबरों के। और 'जो बाद में आया' से तात्पर्य तुम्हारे बाद आने वाले लोगों से है, अर्थात कयामत के दिन तक तुम्हारे अहल-ए-बैत और क्षमा प्राप्त उम्मत। तो महान आयत का निष्कर्ष यह हुआ कि: हमने तुम्हें एक स्पष्ट विजय प्रदान की है ताकि अल्लाह तुम्हारे कारण तुम्हारे क्षेत्र/वंश से जुड़े सभी पूर्वजों और बाद के लोगों के पापों को क्षमा कर दे। सभी प्रशंसाएँ अल्लाह के लिए हैं, जो दुनिया का रब है।

(15) जिस तरह 'जो पहले हुआ और जो बाद में हुआ' से अभिप्राय वह्य (प्रकाशना) के अवतरण से पहले और बाद का होना टीका के पाठ में स्पष्ट रूप से बताया गया था, वह आयत में निश्चित रूप से संभावित है। और हम साबित कर चुके हैं कि 'ज़म्ब' की वास्तविकता स्वयं अब खंडित है। अल्लाह की प्रशंसा हो। और पापियों के लिए मध्यस्थता करने वाले (पैगंबर) और उनके वंशजों और साथियों सभी पर प्रलय के दिन तक अल्लाह की शांति और आशीर्वाद बना रहे। और अल्लाह सर्वशक्तिमान सबसे अच्छा जानता है।

[1]महान कुरान 71/28 पृष्ठ 402/750

طالب علم جانتا ہے کہ اضافت کے لیے ادنیٰ ملابست بس ہے بلکہ یہ عام طور پر فارسی، اردو، ہندی سب زبانوں میں رائج ہے مکان کو جس طرح اس کے مالک کی طرف نسبت کریں گے یونہی کرایہ دار کی طرف، یونہی جو عاریت لے کر بس رہا ہے اس کے پاس جو ملنے آئے گا یہی کہے گا کہ ہم فلانے کے گھر گئے تھے بلکہ پیمائش کرنے والے جن کھیتوں کو ناپ رہے ہوں ایک دوسرے سے پوچھئے گا تمہارا کھیت کے جریب ہوا، یہاں نہ ملک نہ اجارہ نہ عاریت، اور اضافت موجود یونہی بیٹے کے گھر سے جو چیز آئے گی، باپ سے کہہ سکتے ہیں کہ آپ کے یہاں سے یہ عطا ہوا تھا، تو ذنب سے مراد اہلبیت کرام کی لغزشیں ہیں اور اس کے بعد وللمؤمنین وللمؤمنات تعمیم بعد تخصیص ہے یعنی شفاعت فرمائیے اپنے اہلبیت کرام اور سب مردوں عورتوں کے لیے۔ اب آریہ کے اس جنون کا بھی علاج ہو گیا کہ پیروؤں کا ذکر تو بعد کو موجود ہے۔ تعمیم بعد تخصیص کی مثال خود قرآن عظیم میں ہے:

"رَبِّ اغْفِرْ لِي وَلِوَالِدَيَّ وَلِمَنْ دَخَلَ بَيْتِيَ مُؤْمِنًا اے میرے رب ! مجھے بخش دے اور میرے ماں باپ کو اور جو میرے گھر میں ایمان کے ساتھ آیا اور سب مسلمان مردوں اور مسلمان عورتوں کو۔" وَلِلْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ"۔

(۱۴) اسی وجہ پر آیۃ کریمہ سورہ فتح میں لام لک تعلیل کا ہے اور ما تقدم من ذنبک تمہارے اگلوں کے گناہ یعنی سید نا عبداللہ و سیدتنا آمنہ رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے منتہائے نسب کریم تک تمام آبائے کرام و امہات طیبات باستثناء انبیاء کرام مثل آدم و شیت و نوح و خلیل و اسمعیل علیہم الصلوۃ والسلام، اور ما تأخر تمہارے پچھلے یعنی قیامت تک تمہارے اہلبیت و امتِ مرحومہ تو حاصل آیۃ

کریمہ یہ ہوا کہ ہم نے تمہارے لیے فتح مبین فرمائی تاکہ اللہ تمہارے سبب سے بخش دے تمہارے علاقہ کے سب اگلوں پچھلوں کے گناہ والحمدللہ رب العالمین۔

(۱۵) ما تقدم و ما تأخر سے قبل و بعد نزول وحی کا ارادہ جس طرح عبارت تفسیر میں مصرح تھا آیت میں قطعاً محتمل، اور ہم ثابت کر چکے کہ اب حقیقت ذنب خود مندفع وللہ الحمد و صلی اللہ تعالیٰ علی شفیع المذنبین وبارك وسلم الی یوم الدین وعلی آله وصحبه اجمعین، واللہ تعالیٰ اعلم۔

[1]القرآن الکریم ۷۱ / ۲۸ Page 402 of 750

Fatawa Razawiyya Volume 29

Problem 144: Asked from city by Maulvi Ghulam Qutb-ud-Din Sahib, 4 Rabi al-Awwal 1339 AH Rama Singham is no longer an Arya but a Christian; the response should be directed towards Christians.

The Answer: By the grace of Allah, that answer is sufficient and complete. In the preamble of the discourse and in sections 4 and 8, write 'Christian' instead of 'Arya', and delete the couplet in section 8, and write 'Christian' instead of 'Arya' in section 13. Yes, section 7 will change completely; write it as follows:

(7) Not every interpretation is reliable, nor every interpreter correct. It is the injustice of the Christian to name the verses while clinging to unreliable interpretations. The Arabic language is a clear tongue; not every context is open to reinterpretation, nor is every reinterpretation worthy of acceptance, such that anyone could fashion a meaning according to their own desires wherever they wish. In ambiguous contexts, the door to correct interpretation is indeed wide and common and widespread in every language and nation; no one but a stubborn deviant would deny it, and no one but a raving lunatic would fail to admit it. Yes, the language of the Bible is so convoluted that even the altering author himself cannot comprehend it. In the Second Book of Chronicles [Tawarikh], Chapter 21, Verse 20 and Chapter 22, Verses 1 and 2, it is written that he became king at thirty-two years of age, reigned for 8 years, passed away and was buried in the city of David; and the inhabitants of Jerusalem [Shalam] made Ahaziah, his youngest son, king in his stead. Ahaziah was forty-two years old when he became king. This means the father died at age forty, and at that time the son was forty-two. He was born two years before his father. In the Gospel of Matthew, there are 26 generations between Christ and David (peace be upon them), and it even specifies the number, stating that there are 28 persons from Christ to David. However, in the Gospel of Luke, there are 34 individuals from Christ to David, 15 more generations, and the names are also completely inconsistent. Furthermore, in the Gospel of Matthew, Chapter 5, Verse 17: 'Do not think that I have come to abolish the Law or the Prophets; I have not come to abolish them but to fulfill them.' Verse 18: 'For truly I tell you, until heaven and earth disappear, not the smallest letter, not the least stroke of a pen, will by any means disappear from the Law until everything is accomplished.' Here there is such a vehement denial of abrogation [naskh], yet in various places throughout the Gospel itself, the abrogation of the laws of the Torah is expressed. In the same Gospel, in the same chapter, verses 31 and 32, it says: 'It has also been written, "Whoever divorces his wife must give her a

certificate of divorce." But I tell you that anyone who divorces his wife, except for sexual immorality, makes her the victim of adultery, and anyone who marries a divorced woman commits adultery.' Similarly, verses 33 and 34: 'Again, you have heard that it was said to the ancients, "Do not break your oath, but fulfill your vows to the Lord." But I tell you, do not swear an oath at all.' Likewise, verses 38 and 39: 'You have heard that it was said, "An eye for an eye, and a tooth for a tooth." But I tell you, do not resist an evil person; but whoever...'

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

मसला 144: शहर से मौलवी गुलाम कुतुब-उद-दीन साहिब द्वारा पूछा गया, 4 रबी-अल-अव्वल 1339 हिजरी। रामा सिंघम अब आर्य नहीं ईसाई है, उत्तर का रुख ईसाइयों की ओर होना चाहिए।

अल-जवाब: अल्लाह की प्रशंसा है, वह जवाब पर्याप्त और पूर्ण है। प्रवचन के आरम्भ में और 4 तथा 8 में 'आर्य' के स्थान पर 'नसरानी' (ईसाई) लिख लें और 8 का शेर काट दें और 13 में 'आर्य' के स्थान पर 'क्रिश्चियन'। हाँ, 7 पूरी तरह बदल जाएगा, उसे इस तरह लिखें:

(7) न हर व्याख्या विश्वसनीय है न हर व्याख्याता सही, ईसाई का यह अन्याय है कि आयतों का नाम ले और अविश्वसनीय व्याख्याओं का पल्ला पकड़े। अरबी भाषा तो स्पष्ट भाषा है; न हर स्थान व्याख्या के योग्य है, न हर व्याख्या स्वीकार्य कि हर व्यक्ति जहाँ चाहे अपनी इच्छा के अनुसार अर्थ बना ले। और संदिग्ध स्थानों में सही व्याख्या का द्वार निस्संदेह विस्तृत है और हर भाषा तथा हर कौम में प्रसिद्ध एवं प्रचलित है, इसका इनकार केवल हठी पथभ्रष्ट ही करेगा और इसकी स्वीकारोक्ति केवल पागल ही नहीं करेगा। हाँ, बाइबल की भाषा इतनी पेचीदा है कि और तो और स्वयं विकृत करने वाला लेखक ही उसे समझ नहीं पाता। तवारीख (इतिहास) की दूसरी किताब अध्याय 21 आयत 20 और अध्याय 22 आयत 1 व 2 में लिखा है कि वह बत्तीस वर्ष की आयु में राजा हुआ, 8 वर्ष राज किया और चल बसा, दाऊद के नगर में गाड़ा गया और शलम (यरूशलम) के निवासियों ने उसके छोटे पुत्र अहज्याह को उसके स्थान पर राजा बनाया। अहज्याह बयालीस वर्ष की आयु में राजा हुआ। अर्थात पिता चालीस वर्ष की आयु में मरा और उस समय पुत्र बयालीस वर्ष का था। वह पिता से दो वर्ष पहले पैदा हो गया था। मत्ती के सुसमाचार में मसीह और दाऊद (अलैहिमुस्सलाम) के बीच 26 पीढ़ियां हैं और उसमें संख्या भी गिना दी है कि मसीह से दाऊद तक 28 व्यक्ति हैं। लेकिन लूका के सुसमाचार में मसीह से दाऊद तक 34 आदमी हैं, 15 पीढ़ियां अधिक और नाम भी बिल्कुल असंगत। इसी प्रकार मत्ती का सुसमाचार अध्याय 5 आयत 17: 'यह विचार मत करो कि मैं तौरेत या नबियों की किताबों को निरस्त करने नहीं बल्कि पूरा करने आया हूँ।' आयत 18: 'क्योंकि मैं तुमसे सच कहता हूँ कि जब तक आकाश और पृथ्वी टल न जाएँ तौरेत का एक नुक्ता या एक शोशा हरगिज़ नहीं मिटेगा।' यहाँ तो 'नस्ख' (निरसन) का इतनी तीव्रता से इनकार है और स्थान-स्थान पर सुसमाचार में ही तौरेत के आदेशों के निरसन का वर्णन है। उसी सुसमाचार के उसी अध्याय आयत 31, 32 में है: यह भी लिखा गया कि जो कोई अपनी पत्नी को छोड़े उसे तलाकनामा लिख दे, पर मैं तुम्हें कहता हूँ कि जो कोई अपनी पत्नी को व्यभिचार के सिवा किसी और कारण से छोड़े उससे व्यभिचार करवाता

है और जो कोई उस छोड़ी हुई से विवाह करे व्यभिचार करता है। इसी प्रकार आयत 33 व 34: तुम सुन चुके हो कि पूर्वजों से कहा गया कि अपनी शपथ प्रभु के लिए पूरी करो, पर मैं तुम्हें कहता हूँ कि कभी शपथ न खाना। इसी प्रकार आयत 38, 39: तुम सुन चुके हो कि कहा गया आँख के बदले आँख और दाँत के बदले दाँत, पर मैं तुम्हें कहता हूँ कि ज़ालिम का सामना न करना बल्कि जो तुम्हारे...

مسئلہ ۱۴۴: از شہر مسئولہ مولوی غلام قطب الدین صاحب ۴ ربیع الاول ۱۳۳۹ھ راما سنگھم اب آریہ نہیں نصرانی ہے، روئے جواب جانبِ نصاریٰ ہونا چاہیے۔

الجواب: بحمد اللہ وہ جواب کافی و وافی ہے صدر کلام اور ۴ و ۸ میں آریہ کی جگہ نصرانی لکھ لیجئے اور ۸ کا شعر کاٹ دیجئے اور ۱۳ میں آریہ کی جگہ کرسچن، ہاں ۷ بالکل تبدیل ہوگا اسے یوں لکھئے۔

(۷) نہ ہر تفسیر معتبر نہ ہر مفسر مصیب، نصرانی کا ظلم ہے کہ نام لے آیات کا اور دامن پکڑے نا معتبر تفسیرات کا، عربی زبان تو لسان مبین ہے، نہ ہر محل قابل تاویل، نہ ہر تاویل لائق تحویل کہ ہر شخص جہاں چاہے اپنی خواہش کے مطابق مطلب بنالے، اور محل محتمل میں تاویل صحیح کا باب بے شک واسع اور ہر زبان اور ہر قوم میں شائع و ذائع اس کا انکار نہ کرے گا مگر مکابر مفتون، اور اس کا اقرار نہ کرے گا مگر دیوانہ مجنون، ہاں بائبل کی زبان ایسی پیچیدہ ہے کہ اور تو اور خود مصنف محرف کی سمجھ میں نہیں آتی۔ تواریخ کی دوسری کتاب باب ۲۱ درس ۲۰ اور باب ۲۲ درس ۱ و ۲ میں لکھا وہ بتیس برس کی عمر میں بادشاہ ہوا ۸ برس بادشاہت کی اور جاتا رہا داؤد کے شہر میں گاڑا گیا اور شلم کے باشندوں نے اس کے چھوٹے بیٹے اخزیاہ کو اس کی جگہ بادشاہ کیا اخزیاہ ۴۲ برس کی عمر میں بادشاہ ہوا۔ یعنی باپ ۴۰ برس کی عمر میں مرا اس وقت بیٹا ۴۲ برس کا تھا۔ باپ سے دو برس پہلے پیدا ہو لیا تھا۔ متی کی انجیل میں مسیح و داؤد علیہما الصلوۃ والسلام کے بیچ میں ۲۶ پشتیں ہیں اور اس میں عدد بھی گنا دیا ہے کہ مسیح تا داؤد ۲۸ شخص ہیں۔ لیکن لوقا کی انجیل میں مسیح سے داؤد تک ۳۴ آدمی ہیں، ۱۵ پشتیں زائد اور اسماء بھی بالکل نامطابق، ایضاً انجیل متی باب ۵ درس ۱۷: یہ خیال مت کرو کہ میں توریت یا

نبیوں کی کتابیں منسوخ کرنے نہیں بلکہ پوری کرنے آیا ہوں۔ درس ۱۸ کیونکہ میں تم سے سچ کہتا ہوں کہ جب تک آسمان و زمین ٹل نہ جائیں ایک نقطہ یا ایک شوشہ توریت کا ہرگز نہ مٹے گا۔ یہاں تو نسخ کا اس شدت سے انکار ہے اور جابجا انجیل ہی میں نسخ احکام توریت کا اظہار ہے۔ اسی انجیل کے اسی باب درس ۳۲، ۳۱ میں ہے یہ بھی لکھا گیا کہ جو کوئی اپنی جورو کو چھوڑ دے اسے طلاق نامہ لکھ دے پر میں تمہیں کہتا ہوں کہ جو کوئی اپنی جورو کو زنا کے سوا کسی اور سبب سے چھوڑ دیوے اس سے زنا کرواتا ہے اور جو کوئی اس چھوڑی ہوئی سے بیاہ کرے زنا کرتا ہے ایضاً درس ۳۳ و ۳۴ تم سن چکے ہو کہ اگلوں سے کہا گیا کہ اپنی قسمیں خداوند کے لیے پوری کر، پر میں تمہیں کہتا ہوں کہ ہر گز قسم نہ کھانا ایضاً درس ۳۸، ۳۹ تم سن چکے ہو کہ کہا گیا آنکھ کے بدلے آنکھ اور دانت کے بدلے دانت، پر میں تمہیں کہتا ہوں کہ ظالم کا مقابلہ نہ کرنا بلکہ جو تیرے

Vol 29 Fatawa Razawiya

...if someone slaps you on the right cheek, turn the other toward him also. Likewise, Chapter 5, Verses 38 and 39. Moses permitted leaving wives, but I tell you that whoever leaves his wife for any reason except adultery and marries another, commits adultery; and whoever marries that divorced woman commits adultery. The same subject is in the Gospel of Mark, Chapter 10, Verses 2 to 12. Apart from these, there are many examples of contradiction and negation. Thus, it is proven that the Hebrew language itself is so complex that the author of the book does not understand his own writing. And after (15), add these numbers:

(16) Every minor thing, however small, can be called a sin even if it was before the manifestation of prophethood. Broadly speaking, even that which is contrary to the best (Khilaf-e-Aula), though not at all inconsistent with prophethood, but being good is necessary for a prophet, not for one who is considered the son of God. But these Gospels say that Christ is not good at all. See Matthew, Chapter 19, Verses 16 and 17: someone said to him, 'O good teacher,' he said, 'Why do you call me good? No one is good except one, that is God.' The same subject is in the Gospel of Mark, Chapter 10, Verses 17 and 18, and Gospel of Luke, Chapter 18, Verses 18 and 19. If some commentators there accepted being sinful (God forbid), here the Gospels themselves are clearly portraying Christ as bad (God forbid).

(17) It is not sin but opposition to the Sharia. But the Bible is completely nullifying the Sharia. Paul's letter to the Galatians, Chapter 3, Verse 7: all who rely on the works of the law are under a curse. Verse 11: no one is justified before God by the law. Verse 12: the law is not based on faith. And if Christ (peace be upon him) is a true righteous person and perfect in faith, then he must be separate from the law; therefore, they are sinners. In the book of Jeremiah, Chapter 9, Verses 12 and 13: Why is the land ruined and laid waste like a desert? The Lord says: because they have forsaken my law and did not walk according to it.

(18) Moreover, let alone the occurrence of leaving a better action or a minor sin, the Bible clearly calls Christ (peace be upon him) cursed (God forbid). The aforementioned letter, Chapter 3, Verse 13: Christ redeemed us from the curse of the law by becoming a curse for us, for it is written: 'Cursed is everyone who is hung on a tree.' We seek refuge in Allah Almighty. Why do followers of such a hollow and weak religion tangle with the servants of the true religion, Islam? They should look within themselves and manage their own affairs which will never be stable. And Allah

guides whom He wills to the straight path. (Allah guides whomever He wishes to the straight path. - T). And Allah Almighty knows best.

खंड 29 फ़तावा रज़विया

...दाहिने गाल पर थप्पड़ मारे तो दूसरा भी उसकी तरफ फेर दे। इसी तरह अध्याय 5, पद 38 और 39। मूसा ने पत्नियों को छोड़ने की अनुमति दी, लेकिन मैं तुमसे कहता हूँ कि जो कोई अपनी पत्नी को व्यभिचार के अलावा किसी और कारण से छोड़ दे और दूसरी से विवाह कर ले, वह व्यभिचार करता है; और जो कोई उस छोड़ी हुई स्त्री से विवाह करता है, वह व्यभिचार करता है। यही विषय मरकुस के सुसमाचार, अध्याय 10, पद 2 से 12 में है। इनके अलावा विरोधाभास और नकार के कई उदाहरण हैं। तो यह सिद्ध हुआ कि इब्रानी भाषा ही इतनी जटिल है कि पुस्तक का लेखक स्वयं अपनी बात नहीं समझता। और (15) के बाद इन नंबरों को जोड़ें:

(16) हर छोटी से छोटी बात को गुनाह कहा जा सकता है, भले ही वह पैगंबरी के प्रकटीकरण से पहले की हो। व्यापक रूप से, वह भी जो श्रेष्ठ के विपरीत (खिलाफ-ए-औला) हो, हालांकि पैगंबरी के बिल्कुल विपरीत नहीं है, लेकिन एक पैगंबर के लिए नेक होना आवश्यक है, न कि उसके लिए जिसे ईश्वर का पुत्र माना जाए। लेकिन ये सुसमाचार कहते हैं कि मसीह बिल्कुल भी नेक नहीं हैं। देखें मत्ती, अध्याय 19, पद 16 और 17: एक ने उनसे कहा, 'हे नेक उस्ताद', उन्होंने कहा, 'तू मुझे नेक क्यों कहता है? कोई नेक नहीं सिवाय एक के यानी ईश्वर।' यही विषय मरकुस के सुसमाचार, अध्याय 10, पद 17 और 18, और लूका के सुसमाचार, अध्याय 18, पद 18 और 19 में है। वहाँ यदि कुछ व्याख्याकारों ने (अल्लाह न करे) गुनहगार होना स्वीकार किया था, तो यहाँ तो स्वयं सुसमाचार मसीह को स्पष्ट रूप से (अल्लाह न करे) बुरा बता रहे हैं।

(17) यह गुनाह नहीं बल्कि शरीयत का विरोध है। लेकिन बाइबल तो शरीयत को पूरी तरह से निरस्त कर रही है। गलातियों को पौलुस का पत्र, अध्याय 3, पद 7: जो कोई शरीयत के कामों पर भरोसा करते हैं, वे शाप के अधीन हैं। पद 11: ईश्वर के सामने शरीयत से कोई धर्मी नहीं ठहरता। पद 12: शरीयत का विश्वास से कोई संबंध नहीं है। और यदि मसीह (अलैहिस्सलाम) सच्चे धर्मी और पूर्ण विश्वासी हैं, तो वे निश्चित रूप से शरीयत से अलग हैं; इसलिए वे गुनहगार हैं। यिर्मयाह की पुस्तक, अध्याय 9, पद 12 और 13 में है: भूमि क्यों उजाड़ हुई और मरुस्थल की तरह जल गई? यहोवा कहता है: इसलिए कि उन्होंने मेरी शरीयत को त्याग दिया और उसके अनुसार नहीं चले।

(18) बल्कि किसी बेहतर काम को छोड़ने या किसी छोटी गलती की बात तो दूर, बाइबल मसीह (अलैहिस्सलाम) को स्पष्ट रूप से (अल्लाह न करे) अभिशप्त बताती है। उपर्युक्त पत्र, अध्याय 3, पद

13: मसीह ने हमें शरीयत के शाप से मोल लेकर छुड़ाया कि वह हमारे बदले में शाप बने, क्योंकि लिखा है: 'जो कोई काठ पर लटकाया गया हो वह शापित है।' अल्लाह तआला की पनाह। ऐसे खोखले और लचर धर्म के अनुयायी सच्चे धर्म इस्लाम के सेवकों से क्यों उलझते हैं? उन्हें अपने गिरेबान में झाँकना चाहिए और अपनी स्थिति सुधारनी चाहिए जो कभी नहीं सुधरेगी। और अल्लाह जिसे चाहता है सीधे रास्ते की ओर मार्गदर्शन करता है। (अल्लाह जिसे चाहता है सीधे रास्ते की ओर हिदायत देता है। - त)। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

पृष्ठ 404/750

دینے گال پر طمانچہ مارے دوسرا بھی اس کی طرف پھیر دے ایضاً باب ۵ درس ۳۸ و ۳۹ موسیٰ نے جوروں کو چھوڑ دینے کی اجازت دی پر میں تم سے کہتا ہوں جو کوئی اپنی جورو کو سوا زنا کے اور سبب سے چھوڑ دے اور دوسری سے بیاہ کرے زنا کرتا ہے اور جو کوئی اس چھوڑی ہوئی عورت کو بیاہتا ہے زنا کرتا ہے۔ یہی مضمون انجیل مرقس باب ۱۰ درس ۲ تا ۱۲ میں ہے ان کے سوا بہت نظائر تناقض و نافی کے ہیں تو ثابت ہوا کہ عبرانی زبان ہی ایسی پیچیدہ ہے کہ اس میں کتاب تصنیف کرنے والا خود اپنی نہیں سمجھتا، اور (۱۵) کے بعد یہ نمبر اور اضافہ کیجئے:

(۱۶) ہر صغیرہ سے صغیرہ کو گناہ کہہ سکتے ہیں اگرچہ قبل ظہور رسالت ہو اور توسعاً خلاف اولیٰ کو بھی جو ہرگز منافی نبوت نہیں لیکن نیک ہونا تو نبی کے لیے لازم ہے نہ وہ کہ جو خدا کا بیٹا ٹھہرے مگر یہ انجیلیں کہتی ہیں کہ مسیح ہرگز نیک نہیں، دیکھو متی باب ۱۹ درس ۱۶ و ۱۷ ایک نے اس سے کہا اے نیک استاد، اس نے کہا تو کیوں مجھے نیک کہتا ہے، نیک تو کوئی نہیں مگر ایک یعنی خدا، یہی مضمون انجیل مرقس باب ۱۰ درس ۱۷ و ۱۸ و انجیل لوقا باب ۱۸ درس ۱۸ اور ۱۹ میں ہے۔ وہاں اگر بعض مفسرین نے معاذ اللہ گناہگار ہونا مانا تھا تو یہاں تو خود انجیلیں مسیح کو معاذ اللہ صاف طور سے بد بتا رہی ہیں۔

(۱۷) گناہ نہیں مگر شریعت کی مخالفت لیکن بائبل تو شریعت کو راساً باطل کر رہی ہے گلیتوں کو پولس کا خط باب ۳ درس ۷ سب جو شریعت ہی کے اعمال پر تکیہ کرتے ہیں سو لعنت کے تحت ہیں درس ۱۱: کوئی خدا کے نزدیک شریعت سے راستباز نہیں ٹھہرتا۔ درس ۱۲: شریعت کو ایمان سے کچھ نسبت نہیں اور مسیح علیہ الصلوۃ والسلام کچے راستباز و کامل الایمان ہیں تو ضرور شریعت سے جدا ہیں لوگنا ہگار ہیں کتاب یرمیاہ باب ۹ درس ۱۲ و ۱۳ میں ہے۔ سرزمین کس لیے

ویران ہوئی اور بیابان کے مانند جل گئی خداوند کہتا ہے اسی لیے کہ انہوں نے میری شریعت کو ترک کر دیا اور اس کے موافق نہ چلے۔

(۱۸) بلکہ ترک اولےٰ یا کسی صغیرہ کا صدور یابد ہونا بھی در کنار بائبل تو مسیح علیہ الصلوۃ والسلام کو معاذ اللہ صاف ملعون بتاتی ہے، خط مذکور باب ۳ درس ۱۳ مسیح نے ہمیں مول لے کر شریعت کی لعنت سے چھڑایا کہ وہ ہمارے بدلے میں لعنت ہوا کیونکہ لکھا ہے جو کوئی کاٹھ پر لٹکایا گیا ہو سو لعنتی ہے۔ والعیاذ باللہ تعالیٰ، ایسے پوچ و لچر مذہب کے پابند کیوں دین حق اسلام کے خدام سے الجھتے ہیں اپنے گریبان میں منہ ڈالیں اور اپنی پگڑی کہ کبھی نہ سنبھلے گی سنبھالیں۔ واللہ یھدی من یشاء الی صراط مستقیم (اللہ جسے چاہتا ہے سیدھے راستے کی طرف ہدایت دیتا ہے۔ت) واللہ تعالیٰ اعلم۔

Fatawa Razawiyya Volume 29

Problem 125: From the village of Para, Pargana Moranwan, District Unnao, submitted by Muhammad Abdul Rauf Sahab, 3 Rabi' al-Awwal 1339 AH.

What do the scholars of religion and the jurists of the clear Sharia say in this matter? Zaid holds the belief that since 'Knower of the Unseen' (Alim al-Ghayb) is an exclusive attribute of Allah Almighty, it is not permissible to use the term 'Alim al-Ghayb' for the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him), even indirectly or as a gift from Allah. Furthermore, he believes that the complete knowledge of the unseen—from eternity past to eternity future—was not granted to the Radiant Prophet on the Night of Mi'raj. However, he acknowledges some partial knowledge of the unseen and presents several incidents documented by Deobandi scholars as proof for his belief. For example, regarding Surah al-Kahf, when asked how long the People of the Cave slept, the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said, "I will tell you tomorrow," and because he did not say 'Insha'Allah' (if Allah wills), revelation did not descend for eighteen days. Zaid argues that if the Prophet had knowledge of the unseen, he would not have hesitated.

Secondly, he cites the incident involving Hazrat Aisha Siddiqa (may Allah be pleased with her), where the disbelievers of Makkah slandered her, and the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) became inclined towards divorce. Zaid asks why there would be such hesitation if the Prophet had prior knowledge. The Prophet only became certain upon the descent of revelation. Zaid claims that if complete knowledge of the unseen were granted, there would have been no need for revelation.

(Amr's Belief) Contrary to this, Amr's belief is that on the Night of Mi'raj, Allah Almighty illuminated all knowledge of the first and the last for the Radiant Prophet, the Master of the Day of Resurrection, Hazrat Muhammad Mustafa (peace and blessings of Allah be upon him), like a brilliant sun. The blessed heart of the Radiant Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) was enlightened with all knowledge of what was and what will be. Regarding the matters he did not answer and chose silence upon, Amr attributes those to hidden secrets between God and His Beloved. He considers all knowledge from the first day until the Day of Resurrection to be equivalent to just a single wave of the vast ocean of knowledge of the Master of the Universe and Pride of Existence (peace and blessings of Allah be upon him).

THE ANSWER: By the grace of Allah, several books have been authored here on this issue. 'Al-Dawla al-Makkiyya bi'l-Madda al-Ghaybiyya' was endorsed with the seals of the great scholars of Makkah the Noble, Medina the Radiant, and other Islamic cities, who also wrote valuable commendations. 'Khalis al-I'tiqad' has been in publication for ten years. 'Anba al-Mustafa' has been published in thousands for twenty years across Mumbai, Bareilly, and Moradabad, circulating nationwide. By the praise of Allah, all these books remain unanswered to this day. Yet, the Wahhabis do not desist from their shamelessness. Regarding the granting of knowledge of the unseen and the application of the term 'Alim al-Ghayb,' even in the writings of some prominent elders, the explicit phrase 'ya'lamu al-ghayb' (he knows the unseen) has been used even for a common believer, as mentioned in 'Mirqat al-Mafatih Sharh Mishkat al-Masabih'.

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

मसाला 125: मौज़ा पारा, परगना मोरनवां, जिला उन्नाव से, सायल मोहम्मद अब्दुल रऊफ़ साहब, 3 रबीउल अव्वल 1339 हिजरी।

क्या फरमाते हैं उलमा-ए-दीन और मुफ़्तियान-ए-शरअ-ए-मतीन इस मसले में कि ज़ैद का अक़ीदा है कि चूंकि 'आलिमुल ग़ैब' बारी तआला की मख़्सूस सिफ़त है, इसलिए रसूले पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की निस्बत लफ्ज़ 'आलिमुल ग़ैब' बिल-वास्ता या बिल-अताया कहना भी जायज़ नहीं है और न ही हुज़ूर पुर नूर को शब-ए-मेराज में कुल इल्म-ए-ग़ैब यानी अज़ल से अबद तक का अता फ़रमाया गया था। अलबत्ता, वह कुछ जुज़वी ग़ैबी उलूम का कायल है और अपने अक़ीदे की दलील में देवबंदी उलमा के लिखे हुए चंद वाक़ियात पेश करता है, मसलन सूरह कहफ़ के मुताल्लिक़ जब सवाल हुआ कि असहाब-ए-कहफ़ कितनी मुद्दत तक सोए थे, तो रसूले पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया "कल बताऊंगा", और इंशाअल्लाह न कहने की वजह से अठारह दिन तक वही का नुज़ूल न हुआ। ज़ैद का तर्क है कि अगर इल्म-ए-ग़ैब होता तो तवक्कुफ़ (देरी) न फ़रमाते।

दूसरे, वह हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के वाक़िये का ज़िक्र करता है, कि मक्का के काफ़िरों ने उन पर तोहमत लगाई और रसूले पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम तलाक़ देने पर आमादा हो गए। ज़ैद पूछता है कि अगर आपको इल्म होता तो यह दुविधा क्यों होती? वही के नुज़ूल पर ही आप मुतमईन हुए। वह कहता है कि अगर सारा इल्म-ए-ग़ैब अता कर दिया जाता तो फिर वही आने की क्या ज़रूरत थी?

(अम्र का अक़ीदा) इसके बरअक्स अम्र का अक़ीदा यह है कि शब-ए-मेराज में अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने हुज़ूर पुर नूर सैयदुल यौमुन नुशूर हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम पर अव्वलीन व आख़िरीन की तमाम बातें चमकते सूरज की तरह रौशन कर दी थीं और हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के सीना-ए-मुबारक को 'मा-कान व मा-यकून' (जो हो चुका और जो होने वाला है) के तमाम इल्म से मुनव्वर कर दिया था। और जिन बातों का आपने जवाब नहीं दिया बल्कि ख़ामोशी इख़्तियार फ़रमाई, उन्हें खुदा और उसके हबीब के दरमियानी पोशीदा राज़ों की तरफ मन्सूब करता है। वह रोज़-ए-अव्वल से क़यामत तक के तमाम उलूम को हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के उलूम के समंदर की एक लहर के बराबर समझता है।

अल-जवाब: इस मसले में अल्लाह के फ़ज़ल से यहाँ से कई किताबें लिखी गईं। 'अल-दौलतुल मक्किय्या बिल-माद्दतुल ग़ैबिय्या' पर मक्का मुअज़्ज़मा और मदीना तैयबा वगैरह इस्लामी शहरों के बड़े उलमा ने अपनी मोहरें लगाईं और क़ीमती त़क़रीज़ें (प्रशंसा लेख) लिखीं। 'ख़ालिसुल एति'क़ाद' दस साल से शाया हो रही है। 'अंबाउल मुस्तफ़ा' बीस साल से हज़ारों की तादाद में बम्बई, बरेली और मुरादाबाद में छपकर पूरे मुल्क में फैल चुकी है और अल्लाह के शुक्र से ये तमाम किताबें आज तक लाज़वाब हैं। मगर वहाबी अपनी बेशर्मी से बाज़ नहीं आते। इल्म-ए-ग़ैब अता होना और लफ्ज़ 'आलिमुल ग़ैब' का इतलाक़, और बाज़ बड़े बुज़ुर्गों के कलाम में तो एक आम मोमिन बंदे के लिए भी साफ़ तौर पर 'या'लमुल ग़ैब' (वह ग़ैब जानता है) के अल्फ़ाज़ आए हैं, जैसा कि 'मिरक़ातुल मफ़ातीह शरह मिश्कातुल मसाबीह' में ज़िक्र है।

पेज 405/750

فتاویٰ رضویہ جلد ۲۹

مسئلہ ۱۲۵: از موضع پارہ پرگنہ مورانواں ضلع اناؤمسئولہ محمد عبد الرؤف صاحب ۳ ربیع الاول ۱۳۳۹ھ

کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیانِ شرع متین اس مسئلہ میں کہ زید کا عقیدہ ہے کہ چونکہ عالم الغیب صفتِ مختصہ باری تعالیٰ ہے لہذا آنحضرت صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی نسبت لفظ عالم الغیب بالواسطہ یا بالعطایا کہنا بھی جائز نہیں اور نہ حضور پر نور کو کل علم غیب یعنی از روز ازل تا ابد شب معراج میں عطا فرمایا گیا تھا۔ البتہ بعض بعض علوم غیبیہ کا قائل ہے اور اپنے عقیدہ کی دلیل میں چند واقعات بطور اثبات نوشتہ علمائے دیوبند پیش کرتا ہے، مثلاً سورہ کہف کہ آنحضرت صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے بجواب اس سوال کے کہ اصحاب کہف کس مدت تک سوئے تھے، فرمایا کل بتلاؤں گا، اور لفظ ان شاء اللہ تعالیٰ نہ کہنے کی وجہ سے اٹھارہ روز تک وحی کا نزول نہ ہوا، اگر علمِ غیب ہوتا تو توقف نہ فرماتے۔

دوئم حضرت عائشہ صدیقہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا کا حادثہ کہ کفارِ مکہ نے آپ کو متہم کیا اور آنحضرت صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم طلاق دینے پر آمادہ ہو گئے۔ اور اگر آپ کو علم ہوتا تو تذبذب کیوں ہوتا، وحی کے نزول پر آپ مطمئن ہوئے اور کہتا ہے کہ اگر کل علمِ غیب عطا فرمایا جاتا تو پھر وحی آنے کی کیا ضرورت تھی؟

(عقیدہ عمرو) برعکس اس کے عمرو کا عقیدہ یہ ہے کہ حضور پر نور سید یوم النشور حضرت محمد مصطفیٰ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم پر شب معراج میں اللہ رب العزت نے جملہ اولین و آخرین مانند آفتاب درخشاں روشن کر دیئے تھے اور تمام علم ماکان و مایکون سے صدرِ مبارک حضور

پر نور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کو جلوہ افروز کر دیا تھا اور جن باتوں سے آپ نے جواب نہیں دیا بلکہ سکوت اختیار فرمایا ان کو خدا اور حبیبِ خدا کے درمیانی اسرارِ مخفی کی جانب مبذول کرتا ہے، اور روز اول سے لے کر یوم الحشر کے تمام علوم کو حضور سرور کائنات و مفخر موجودات صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے علوم کے سمندر کی ایک لہر کی برابر تصور کرتا ہے۔

الجواب: اس مسئلہ میں بفضلہ تعالیٰ یہاں سے متعدد کتابیں تصنیف ہوئیں۔ الدولۃ المکیۃ بالمادۃ الغیبیۃ پر اکابر علمائے مکہ معظمہ ومدینہ طیبہ وغیرہ ہا بلاد اسلامیہ نے مہریں کیں، گرانقدر تقریظیں لکھیں خالص الاعتقاد دس سال سے شائع ہوا انباء المصطفیٰ بیس سال سے ہزار کی تعداد میں بمبئی و بریلی و مراد آباد میں چھپ کر تمام ملک میں شائع ہوا اور بحمدہ تعالیٰ سب کتابیں آج تک لاجواب ہیں، مگر وہابیہ اپنی بے حیائی سے باز نہیں آتے۔ علم غیب عطا ہونا اور لفظ عالم الغیب کا اطلاق اور بعض اجلہ اکابر کے کلام میں اگرچہ بندہ مومن کی نسبت صرح لفظ یعلم الغیب وارد ہے کما فی مرقاۃ المفاتیح شرح مشکوۃ المصابیح

Fatawa Rizwia - Volume 29

By Mulla Ali al-Qari (as mentioned in Mirqat al-Mafatih, the commentary on Mishkat al-Masabih. T), but even in the Hadith of Sayyiduna Abdullah ibn Abbas (may Allah be pleased with them both), it is stated regarding Sayyiduna Khidr (peace be upon him):

"He was a man who knew the knowledge of the unseen (Ghayb)."[1]	He is a perfect man who knows the knowledge of the unseen. T)

However, in our research, the application of the term 'Alim al-Ghayb' (Knower of the Unseen) is specific to the Majesty of Allah (Exalted be His Glory), because from it, conventionally, 'knowledge by essence' (Ilm bid-Dhat) is immediately understood. It is stated in al-Kashshaf:

"What is meant by it is the hidden thing that cannot be reached initially except by the knowledge of the Subtle, the Aware (Allah). Therefore, it is not permissible to say absolutely that so-and-so knows the unseen."[2]	This refers to a hidden matter which initially (by essence) no one's knowledge reaches except for the Knower of subtleties or the All-Aware (Allah Almighty). This is the reason why saying absolutely that so-and-so knows the unseen is not permissible (T).

And from this, it does not necessarily follow that the meaning is denied. The Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) definitely knows countless unseen matters and what was and what will be, but only Allah (Mighty and Majestic) will be called 'Alim al-Ghayb'. Just as the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) is definitely possessed of honor and majesty, and there is no one in the entire world as dear and majestic as him, nor can there be; yet it is not permissible to say 'Muhammad Azz-wa-Jall' (Mighty and Majestic), but rather 'Allah Azz-wa-Jall' and 'Muhammad Sallallahu Alaihi Wasallam'. In short, the truth and form of a meaning does not necessitate the permissibility of applying the term, nor does prohibiting the application of a term mean denying the correctness of the meaning. Imam Ibn al-Munayyir al-Iskandari says in the book 'al-Insaf':

"How many beliefs there are concerning which the statement is not uttered for fear of creating an illusion of something else whose belief is not permissible; hence there is no necessary link between belief and application (of a term)."[3]	There are many beliefs regarding which the term is not applied for fear that it may create an illusion of something else whose belief is not permissible, therefore there is no necessity between belief and application. (T)

All this is in the case where it is applied without restriction (absolute application), for example 'Alim al-Ghayb' or 'Alim al-Ghayb absolutely'. And if it is not so, but rather specified by 'mediated' or 'by bestowal', then it is not prohibited, as the ambiguity is removed and the intended meaning is achieved. Allama Sayyid Sharif (may his secret be sanctified) says in the marginal notes of al-Kashshaf:

"And the absolute application was only not permissible for others..."	The absolute application of 'Knowledge of the Unseen' on other than Allah is impermissible for this reason.

---

[1] Jami' al-Bayan (Tafsir al-Tabari) under the verse "And We taught him knowledge from Our Presence," Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 15/323 [2] Al-Kashshaf under the verse 2/3, Intisharat Aftab Tehran, 1/121 [3] Al-Intisaf

फ़तावा रिज़विया - जिल्द 29

मुल्ला अली अल-क़ारी (जैसा कि मिश्कात अल-मसाबीह की शरह मिरक़ात अल-मफ़ातीह में है। त) बल्कि खुद सैयदना अब्दुल्ला इब्न अब्बास (रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा) की हदीस में सैयदना खिज़्र (अलैहिस्सलाम) के बारे में इरशाद है:

"वह एक ऐसे व्यक्ति थे जो ग़ैब का इल्म जानते थे।"[1]

वह कामिल मर्द हैं जो ग़ैब का इल्म जानते हैं। त)

मगर हमारी तहक़ीक़ में 'आलिमुल ग़ैब' शब्द का प्रयोग अल्लाह तआला की ज़ात के साथ विशिष्ट है, क्योंकि इससे सामान्यतः'इल्म बिज़-ज़ात' (स्वयं का ज्ञान) समझा जाता है। कश्शाफ़ में है:

"इससे मुराद वह छुपी हुई चीज़ है जिस तक इब्तिदा (स्वयं) लतीफ़ और खबीर (अल्लाह तआला) के इल्म के अलावा किसी की रसाई नहीं है। इसीलिए यह कहना जायज़ नहीं है कि फलां ग़ैब जानता है।"[2]

इससे मुराद वह छिपी हुई चीज़ है जिस तक आरंभ में (स्वयं) बारीकी जानने वाले या खबीर (अल्लाह तआला) के अलावा किसी के ज्ञान की पहुँच नहीं है। यही कारण है कि आम तौर पर यह कहना कि फलां ग़ैब जानता है, जायज़ नहीं है (त)।

और इससे अर्थ का इनकार लाज़िम नहीं आता। हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) निश्चित रूप से अनगिनत ग़ैबों और 'मा काना व मा यकून' (जो हो चुका और जो होगा) के जानकार हैं, लेकिन 'आलिमुल ग़ैब' केवल अल्लाह (अज़्ज़ व जल्ल) को कहा जाएगा। जिस तरह हुज़ूर अक़दस (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) निश्चित रूप से इज़्ज़त व जलालत वाले हैं, पूरी दुनिया में उनके बराबर कोई अज़ीज़ व जलील नहीं है और न हो सकता है; फिर भी 'मुहम्मद अज़्ज़ व जल्ल' कहना जायज़ नहीं है, बल्कि 'अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल' और 'मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम' (कहा जाता है)। संक्षेप में, किसी अर्थ की सच्चाई और स्वरूप से शब्द के प्रयोग की अनुमति अनिवार्य नहीं होती, और न ही शब्द के प्रयोग की मनाही का अर्थ यह है कि उस अर्थ की सच्चाई से इनकार किया गया है। इमाम इब्न अल-मुनय्यर अल-इस्कंदरी 'किताबुल इंसाफ़' में फरमाते हैं:

"कितने ही अक़ीदे ऐसे हैं जिनके बारे में बयान इसलिए नहीं दिया जाता कि कहीं उससे किसी ऐसी चीज़ का भ्रम न हो जाए जिसका अक़ीदा

बहुत से अक़ीदे ऐसे हैं जिनके साथ शब्द का प्रयोग इस डर से नहीं किया जाता कि उनमें ऐसी किसी गैर-चीज़ का भ्रम होता है जिसका अक़ीदा जायज़

जायज़ नहीं है; इसलिए अक़ीदे और शब्द के प्रयोग के बीच कोई अनिवार्य संबंध नहीं है।"[3]	नहीं है, इसलिए अक़ीदे और शब्द के प्रयोग के बीच कोई अनिवार्यता नहीं है। (त)

यह सब उस स्थिति में है जब शब्द का प्रयोग बिना किसी शर्त के(बिला क़ैद) किया जाए, जैसे 'आलिमुल ग़ैब' या 'आलिमुल ग़ैब अलल इतलाक़'। और अगर ऐसा न हो, बल्कि 'तवसुल' (माध्यम) या 'अता' (प्रदान) के साथ स्पष्ट कर दिया जाए, तो वह वर्जित नहीं है क्योंकि भ्रम दूर हो जाता है और उद्देश्य प्राप्त हो जाता है। अल्लामा सैयद शरीफ (क़ुद्दसा सिर्रहु) कश्शाफ़ के हाशिया में फरमाते हैं:

"और दूसरों के लिए इसका प्रयोग इसलिए जायज़ नहीं हुआ..."	ग़ैब के इल्म का प्रयोग अल्लाह के अलावा किसी और पर इसलिए नाजायज़ है।

---

[1] जामिउल बयान (तफ़सीर अल-तबरी) आयत 'व अल्लमनाहु मिल-लदुनना इल्मा' के तहत, दार इहया अल-तुराथ अल-अरबी बेरूत 15/323 [2] अल-कश्शाफ़ आयत 2/3 के तहत, इंतिशारात आफ़ताब तेहरान 1/121 [3] अल-इंतिसाफ़

لملا علی القاری (جیسا کہ ملا علی القاری کی مرقاۃ المفاتیح شرح مشکوۃ المصابیح میں ہے۔ ت)

بلکہ خود حدیث سیدنا عبداللہ بن عباس رضی اللہ تعالٰی عنہما میں سیدنا خضر علیہ الصلوٰۃ والسلام کی نسبت ارشاد ہے:

کان رجلا یعلم علم الغیب 1 وہ مرد کامل ہیں جو علم غیب جانتے ہیں۔ ت)

مگر ہماری تحقیق میں لفظ عالم الغیب کا اطلاق حضرت عزت عز جلالہ کے ساتھ خاص ہے کہ اس سے عرفاً علم بالذات متبادر ہے۔ کشاف میں ہے :

المراد بہ الخفی الذی لا ینفذ فیہ ابتداء الا علم اللطیف الخبیر ولھذا لا یجوز ان یطلق فیقال فلان یعلم الغیب 2

اس سے مراد پوشیدہ شے ہے جس تک ابتداء (بالذات) سوائے باریکی جاننے والے یا خبیر (اللہ تعالٰی) کے کسی کے علم کی رسائی نہیں۔ یہی وجہ ہے کہ علی الاطلاق یوں کہنا کہ فلاں غیب جانتا ہے جائز نہیں (ت)

اور اس سے انکار معنی لازم نہیں آتا۔ حضور صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم قطعاً بے شمار غیوب و ماکان و مایکون کے عالم ہیں مگر عالم الغیب صرف اللہ عزوجل کو کہا جائے گا جس طرح حضور اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم قطعاً عزت جلالت والے ہیں تمام عالم میں ان کے برابر کوئی عزیز و جلیل ہے نہ ہو سکتا ہے مگر محمد عزوجل کہنا جائز نہیں بلکہ اللہ عزوجل و محمد صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم۔ غرض صدق وصورت معنی کو جواز اطلاق لفظ لازم نہیں نہ منع اطلاق لفظ کو نفی صحت معنی۔ امام ابن المنیر اسکندری کتاب الانصاف میں فرماتے ہیں :

بہت سے معتقدات ہیں کہ جن کے ساتھ قول کا اطلاق اس ڈر سے نہیں کیا جاتا کہ ان میں ایسے غیر کا ایہام ہوتا ہے جس کا اعتقاد جائز نہیں، لہذا اعتقاد اور اطلاق کے درمیان کوئی لزوم نہیں۔ (ت)

كم من معتقد لا يطلق القول به خشية ايهام غيره مما لا يجوز اعتقاده فلا ربط بين الاعتقاد والاطلاق - 3

یہ سب اس صورت میں ہے کہ مقید بقید اطلاق کیا جائے یا بلا قید علی الاطلاق مثلاً عالم الغیب یا عالم الغیب علی الاطلاق اور اگر ایسا نہ ہو بلکہ بالواسطہ یا بالعطاء کی تصریح کر دی جائے تو وہ محذور نہیں کہ ایہام زائل اور مراد حاصل۔ علامہ سید شریف قدس سرہ حواشی کشاف میں فرماتے ہیں:

وانما لم يجز الاطلاق في غيره - علم غیب کا اطلاق غیر اللہ پر اس لیے ناجائز ہے

---

1 جامع البیان (تفسیر الطبری) تحت آیۃ وعلمنہ من لدنا علماً دار احیاء التراث العربی بیروت ۱۵ / ۳۲۳ 2 الکشاف تحت آیۃ ۲ / ۳ انتشارات آفتاب تہران ۱/ ۱۲۱ 3 الانتصاف

Fatawa Razawiya Volume 29

| (Arabic) ...Exalted is He, because it is immediately understood from it that his knowledge relates to it from the beginning (intrinsically), so a contradiction arises. But if it is restricted and said 'Allah the Almighty gave him knowledge of the unseen' or 'informed him of it', then there is no issue in it[1]. | (Urdu) ...because from this, the connection of non-Allah's knowledge with the unseen starting (intrinsically) is understood, so in this way a contradiction becomes necessary. But if some restriction is added with 'knowledge of the unseen' and it is said that Allah the Almighty has granted him the knowledge of the unseen or informed him about the unseen, then in this case there is no prohibition. (T) |

Zaid's statement is a clear lie and an ugly ignorance. The lie is obvious because, without a Sharia prohibition, he is imposing a ruling of impermissibility from himself and thus slandering the Sharia, the Lawgiver (peace and blessings be upon him), and the Lord of Honor, Exalted and Majestic.

| (Arabic) Allah the Almighty said: "And do not say about what your tongues assert of falsehood, 'This is lawful and this is forbidden,' to invent falsehood about Allah. Indeed, those who invent falsehood about Allah will not succeed. [It is but] a brief enjoyment, and they will have a painful punishment."[2] | (Urdu) Allah the Almighty said: "And do not say what your tongues falsely describe: 'This is halal and this is haram,' so as to invent a lie against Allah. Verily, those who invent a lie against Allah will never succeed. A brief enjoyment, and for them is a painful torment." (T) |

And the blatant ignorance is that he is deriving the impermissibility of saying "mediated" and "granted" from the fact that "knower of the unseen" is an exclusive attribute of Allah Almighty. Perhaps according to him, mediated and granted knowledge of the unseen is an exclusive attribute of Allah Almighty, meaning Allah Almighty has knowledge of the unseen granted by another, while for others besides Him, it is intrinsic and without mediation. If it is so, what could be a greater and more severe disbelief than this? Gangohi Sahib did not consider the belief that the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) possessed intrinsic knowledge of the unseen without Allah's grant to be disbelief, but only called it a 'fear of disbelief'. In his Fatawa, Part 1, page 83, it says: "Whoever holds the belief that he had knowledge by himself without being informed by Allah Almighty, then there is a fear of disbelief."

[1] Hashiya Sayyid al-Sharif on Al-Kashshaf under verse 2/3, Aftab Tehran Publications, 1/28 [2] The Noble Quran, 16/116 & 117

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

| (अरबी) ...अल्लाह तआला का इल्म ग़ैब के साथ इब्तिदा (बिज़ात) मुताल्लिक़ होना मुतबादिर (तुरंत समझ में आने वाला) होता है, तो इस तरह तनाक़ुज़ (विरोधाभास) लाज़िम आता है। लेकिन अगर इल्म ग़ैब के साथ कोई क़ैद लगा दी जाए और यूँ कहा जाए कि अल्लाह तआला ने उसको ग़ैब का इल्म अता फ़रमा दिया है या उसको ग़ैब पर मुत्तला फ़रमा दिया है, तो इस सूरत में कोई मुमानअत (मनाही) नहीं।[1] | (उर्दू) ...क्योंकि इससे ग़ैर-अल्लाह के इल्म का ग़ैब के साथ इब्तिदा (बिज़ात) मुताल्लिक़ होना मुतबादिर होता है, तो इस तरह तनाक़ुज़ लाज़िम आता है। लेकिन अगर इल्म ग़ैब के साथ कोई क़ैद लगा दी जाए और यूँ कहा जाए कि अल्लाह तआला ने उसको ग़ैब का इल्म अता फ़रमा दिया है या उसको ग़ैब पर मुत्तला फ़रमा दिया है, तो इस सूरत में कोई मुमानअत नहीं। (त) |

ज़ैद का क़ौल सरासर झूठ और बदतरीन जहालत है। झूठ तो ज़ाहिर है कि बग़ैर किसी शरई पाबंदी के अपनी तरफ़ से अदम जवाज़ (नाजाएज़ होने) का हुक्म लगाकर शरीअत, शारेअ (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) और रब्बे इज़्ज़त (अज़ व जल्ल) पर इफ़्तरा (झूठ बाँधना) कर रहा है।

| (अरबी) अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "और न कहो उसे जो तुम्हारी ज़बानें झूठ बयान करती हैं, यह हलाल है और यह हराम है कि अल्लाह तआला पर झूठ बाँधो, बेशक जो अल्लाह तआला पर झूठ बाँधते हैं उनका भला न होगा, थोड़ा बरतवा है और उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है।"[2] | (उर्दू) अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमाया: "और न कहो उसे जो तुम्हारी ज़बानें झूठ बयान करती हैं, यह हलाल है और यह हराम है कि अल्लाह तआला पर झूठ बाँधो, बेशक जो अल्लाह तआला पर झूठ बाँधते हैं उनका भला न होगा, थोड़ा बरतवा है और उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है। (त)" |

और यह फ़ाश (खुली हुई) जहालत है कि 'आलिमुल् ग़ैब' की सिफ़त बारी तआला के साथ मख़सूस होने पर बिल-वास्ता और बिल-अता कहने की मुमानअत मुतफ़र्रअ कर रहा है। शायद उसके नज़दीक बिल-वास्ता और बिल-अता इल्म ग़ैब अल्लाह तआला की मख़सूस सिफ़त है, यानी अल्लाह तआला को इल्म ग़ैब किसी दूसरे के दिए से होता है और उसके ग़ैर के लिए इल्म ग़ैब बिज़ात (बिना किसी वास्ते के) है। अगर ऐसा है तो इससे बढ़ कर और क्या कुफ़्र होगा। गंगोही साहब ने तो नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को इल्म ग़ैब बिज़ात बग़ैर अल्लाह की अता के मिलने के अक़ीदे को कुफ़्र नहीं माना था, सिर्फ़ अंदेशा-ए-कुफ़्र कहा था। उनके फ़तावा हिस्सा अव्वल सफ़हा

83 में है: "जो यह अक़ीदा रखे कि ख़ुद-ब-ख़ुद आप को इल्म था बिना अल्लाह तआला के बताए, तो अंदेशा-ए-कुफ़्र है।"

[1] हाशिया सैय्यद शरीफ़ अल-जुरजानी अलल कश्शाफ़, आयत 2/3 के तहत, इंतेशारात-ए-आफ़ताब तेहरान, 1/28 [2] अल-क़ुरआन अल-करीम 16/116 व 117

पृष्ठ 407/750

| تعالی لانه یتبادر منه تعلق علمه به ابتداء فیکون تناقضاً واما اذا قید وقیل اعلمه الله تعالی الغیب او اطلعه علیه فلا محذور فیه[1]۔ | کہ اس سے غیر اللہ کے علم کا غیب کے ساتھ ابتداء (بالذات) متعلق ہونا متبادر ہوتا ہے تو اس طرح تناقض لازم آتا ہے لیکن اگر علم غیب کے ساتھ کوئی قید لگا دی جائے اور یوں کہا جائے کہ اللہ تعالٰی نے اس کو غیب کا علم عطا فرما دیا ہے یا اس کو غیب پر مطلع فرما دیا ہے تو اس صورت میں کوئی ممانعت نہیں۔ (ت) |

زید کا قول کذب صریح و جہل قبیح ہے، کذب تو ظاہر کہ بے ممانعت شرعی اپنی طرف سے عدم جواز کا حکم لگا کر شریعت و شارع علیہ الصلوۃ والسلام اور رب العزۃ جل وعلا پر افتراء کر رہا ہے۔

| قال اللہ تعالی: "وَلَا تَقُولُوا لِمَا تَصِفُ أَلْسِنَتُكُمُ الْكَذِبَ هَذَا حَلَالٌ وَهَذَا حَرَامٌ لِتَفْتَرُوا عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ ۚ إِنَّ الَّذِينَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُونَ ۝ مَتَاعٌ قَلِيلٌ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝"[2]۔ | اللہ تعالٰی نے ارشاد فرمایا: اور نہ کہو اسے جو تمہاری زبانیں جھوٹ بیان کرتی ہیں، یہ حلال ہے اور یہ حرام ہے کہ اللہ تعالٰی پر جھوٹ باندھو، بے شک جو اللہ تعالٰی پر جھوٹ باندھتے ہیں ان کا بھلا نہ ہوگا، تھوڑا برتنا ہے اور انکے لیے دردناک عذاب ہے۔ (ت) |

اور جہلِ فاحش یہ کہ عالم الغیب صفت مختصہ باری تعالٰی ہونے پر بالواسطہ و بالعطاء کہنے کے عدم جواز کو متفرع کر رہا ہے شاید اس کے نزدیک علم غیب بالواسطہ، و بالعطاء خاصہ باری تعالٰی ہے یعنی دوسرے کے دیئے سے علم غیب خاص اللہ تعالٰی کو ہوتا ہے اس کے غیر کو علم غیب بالذات بلا واسطہ ہے ایسا ہے تو اس سے بڑھ کر اور کفر اشد کیا ہے۔ گنگوہی صاحب نے تو

نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کو علم غیب بالذات بے عطائے الٰہی ملنے کے اعتقاد کو کفر نہ مانا تھا صرف اندیشہ کفر کہا تھا ان کے فتاوی حصہ اول صفحہ ۸۳ میں ہے: جو یہ عقیدہ رکھے کہ خود بخود آپ کو علم تھا بدونِ اطلاقِ حق تعالیٰ کے تو اندیشہ کفر کا ہے۔

[1] حاشیہ سید الشریف علی الکشاف تحت آیۃ ۳/۲ انتشارات آفتاب تہران ۱/ ۲۸ [2] القرآن الکریم ۱۶/ ۱۱۶ و ۱۱۷

Fatawa Razawiyya Volume 29

Therefore, he should not be made an Imam, even if one restrains their tongue from calling him a disbeliever (kafir). However, this statement of Mr. Gangohi is itself explicit disbelief (kufr). Undoubtedly, whoever believes that someone other than God possesses knowledge inherently without divine bestowal is definitely a disbeliever, and whoever hesitates in their disbelief is also a disbeliever. Mr. Ismail Dehlvi took the second position, that he considered the knowledge of the unseen (Ghayb) of Allah Almighty to be incidental and optional. It is stated in Taqwiyat al-Iman: "To have the discovery of the unseen in one's own power, to do it whenever one wants, this is the majesty of Allah alone." 2- This is also an explicit word of disbelief, but to combine both aspects—that Allah Almighty's knowledge is bestowed and the other's is inherent—is the specific outcome of Zaid's statement. Two incidents that Zaid presented, although there are other discussions on them, but in Anba al-Mustafa it was not clearly stated that, by the grace of Allah Almighty, it became bright through definitive text (Nass-e-Qat'i) that Allah Almighty gave our Master, peace and blessings of Allah be upon him, the knowledge of all existents, all that was and all that will be (ma kana wa ma yakunu). And when this knowledge was given by the Great Quran being "an explanation of everything" (tibyanan li-kulli shay), and it is evident that this attribute belongs to the entire Glorious Speech, not every verse or surah. So before the revelation of the entire Great Quran, if it was said regarding some, "We have not related to you" (meaning, We did not explain to you), it is by no means a denial of the comprehensive knowledge of Mustafa. Whatever the opponents present are all of these types. Yes, yes! There is a general invitation to all Najdis, Dehlvis, and Gangohis; let them all gather and bring one verse or one reliable, definitive Hadith which explicitly proves that even after the revelation of the entire Quran, such and such an affair from ma kana wa ma yakunu remained hidden from the Prophet. If you cannot bring such a text—and we say that you will never be able to—then know that Allah does not guide the plots of the deceptive. (Summary from 3). After this, to present such incidents is severe shamelessness. Undoubtedly, Amr's statement is correct: the comprehensive knowledge of all that was and all that will be, and all the contents of the Preserved Tablet (Lawh-e-Mahfuz), is but a wave from the oceans of the noble knowledge of the Holy Prophet, peace and blessings of Allah be upon him, as is explicitly mentioned in Allama Qari's Zubda Sharh Burda. And Allah Almighty knows best.

1 Fatawa Rashidiya 2 Taqwiyat al-Iman, Chapter 2, Matba' 'Ilmi, Inside Lohari Gate, Lahore, p. 14 3 Anba al-Mustafa, Raza Academy, Bombay, pp. 7 to 10

इसलिए उन्हें इमाम नहीं बनाया जाना चाहिए, भले ही कोई उन्हें काफिर कहने से अपनी ज़बान रोके। हालाँकि गंगोही साहब का यह कथन स्वयं स्पष्ट कुफ्र (ईश्वरनिंदा) है। निस्संदेह, जो कोई भी ईश्वर के अलावा किसी अन्य को ईश्वरीय दान के बिना स्वयं ज्ञान रखने वाला मानता है, वह निश्चित रूप से काफिर है, और जो उसके कुफ्र में संदेह करता है वह भी काफिर है। इस्माइल देहलवी साहब ने दूसरा पक्ष लिया था कि उन्होंने अल्लाह अज्ज़वजल के ग़ैब (परोक्ष) के ज्ञान को आकस्मिक और ऐच्छिक माना। तक़्वियतुल ईमान में है: "ग़ैब की जानकारी अपने अधिकार में होना कि जब चाहे कर लें, यह अल्लाह साहब की ही शान है।" 2- यह भी स्पष्ट कुफ्र का शब्द है, लेकिन दोनों पक्षों को जोड़ना कि अल्लाह तआला का ज्ञान अताई (प्रदान किया हुआ) है और दूसरे का ज़ाती (स्वयं का), यह ज़ैद के कथन का विशेष परिणाम है। दो घटनाएं जो ज़ैद ने पेश कीं, हालाँकि उन पर और भी चर्चाएं हैं, लेकिन 'अनबा अल-मुस्तफा' में स्पष्ट रूप से यह नहीं कहा गया था कि अल्लाह तआला की कृपा से यह निश्चित प्रमाण (नस्से क़तई) से स्पष्ट हो गया कि हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को अल्लाह अज्ज़वजल ने समस्त अस्तित्वों, जो हो चुका और जो होगा (मा काना व मा याकून) का ज्ञान दिया। और जब यह ज्ञान महान कुरआन के"हर चीज़ का विवरण" (तिब्यानन लिकुल्ली शय) होने से दिया गया, और यह स्पष्ट है कि यह विशेषता पूरे कलाम-ए-मजीद की है, न कि हर आयत या सूरत की। तो संपूर्ण महान कुरआन के अवतरण से पहले यदि कुछ के संबंध में कहा गया कि "हमने आप पर बयान नहीं किया", तो यह किसी भी तरह मुस्तफ़वी ज्ञान की पूर्णता का निषेध नहीं है। विरोधी जो कुछ भी पेश करते हैं, वे सब इन्हीं श्रेणियों के हैं। हाँ, हाँ! सभी नजदियों, देहलवियों और गंगोहियों को एक आम निमंत्रण है; सभी एक साथ मिलकर एक आयत या एक ऐसी हदीस लाएँ जो निश्चित रूप से स्पष्ट रूप से प्रमाणित करे कि कुरआन के संपूर्ण अवतरण के बाद भी 'मा काना व मा याकून' में से अमुक मामला हुज़ूर से छिपा रहा। यदि आप ऐसा प्रमाण नहीं ला सकते —और हम कहते हैं कि आप कभी नहीं ला सकेंगे—तो जान लें कि अल्लाह धोखेबाजों की चालों को मार्ग नहीं देता। (संक्षेप 3)। इसके बाद भी ऐसी घटनाएं पेश करना कितनी गंभीर बेशर्मी है। निस्संदेह, अम्र का कथन सही है कि 'मा काना व मा याकून' का समस्त ज्ञान और लौह-ए-महफूज़ की समस्त सामग्री हुज़ूर अकदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के महान ज्ञान के समुद्रों की एक लहर मात्र है, जैसा कि अल्लामा क़ारी की 'ज़ुब्दा शरह बुर्दा' में स्पष्ट रूप से वर्णित है। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।

1 फ़तावा रशीदिया 2 तक़्वियतुल ईमान, अध्याय 2, मतबा इल्मी, अंदरून लोहारी दरवाज़ा, लाहौर, पृष्ठ 14 3 अनबा अल-मुस्तफ़ा, रज़ा एकेडमी, बॉम्बे, पृष्ठ 7 से 10

لہذا امام نہ بنانا چاہیے اگرچہ کافر کہنے سے بھی زبان کو روکے- حالانکہ گنگوہی صاحب کا یہ قول خود ہی صریح کفر ہے بلاشبہ جو غیر خدا کو بے عطائے الٰہی خود بخود علم مانے قطعاً کافر ہے اور جو اس کے کفر میں تردد کرے وہ بھی کافر۔ اسمعیل دہلوی صاحب نے دوسری شق لی تھی کہ اللہ عزوجل کے علم غیب کو حادث و اختیاری مانا۔ تقویت الایمان میں ہے: غیب کا دریافت کرنا اپنے اختیار میں ہو کہ جب چاہے کرلیجئے یہ اللہ صاحب کی ہی شان ہے ۲- یہ بھی صریح کلمہ کفر ہے مگر دونوں شقیں جمع کرنا کہ اللہ تعالیٰ کا علم عطائی اور دوسرے کا ذاتی یہ اسی نتیجہ قولِ زید کا خاصہ ہے۔ دو واقعے کہ زید نے پیش کیے اگرچہ ان پر ابحاث اور بھی ہیں مگر انباء المصطفیٰ میں صاف نہ کہہ دیا گیا تھا کہ بحمد اللہ تعالیٰ نص قطعی سے روشن ہوا کہ ہمارے حضور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کو اللہ عزوجل نے تمام موجودات جملہ ماکان ومایکون (جو ہو چکا اور جو ہوگا) کا علم دیا اور جب یہ علم قرآنِ عظیم کے تبیاناً لکل شیی ہونے نے دیا اور پر ظاہر کہ یہ وصف تمام کلام مجید کا ہے نہ ہر آیت یا سورت کا تو نزولِ جمیع قرآن عظیم سے پہلے اگر بعض کی نسبت ارشاد ہوا ہم نقص علیک (ہم نے آپ پر بیان نہیں کیا-ت) ہر گز احاطہ علم مصطفوی کا کنافی نہیں، مخالفین جو کچھ پیش کرتے ہیں سب انہیں اقسام کے ہیں۔ ہاں ہاں تمام نجدیہ دہلوی گنگوہی کو ہی سب کو دعوت عام ہے سب اکٹھے ہو کر ایک آیت یا ایک حدیث متواتر یقینی الافادہ لائیں جس سے صریح ثابت ہو کہ تمام نزولِ قرآن کے بعد بھی ماکان و مایکون سے فلاں امر حضور پر مخفی رہا اگر ایسا نص نہ لاسکو اور ہم کہے دیتے ہیں کہ ہرگز نہ لاسکو گے تو جان لو کہ اللہ راہ نہیں دیتا دغا بازوں کے مکر کو ۱ھ ملخصاً ۳۔ اس کے بعد بھی ایسے وقائع پیش کرنا کیسی شدید بے حیائی ہے، بلاشبہ عمرو کا قول صحیح ہے جمیع ماکان و مایکون جملہ

مندرجات لوح محفوظ کا علم محیط حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے علم کریم کے سمندروں سے ایک لہر ہے جیسا کہ علامہ قاری کی زبدہ شرح بردہ میں مصرح ہے۔ واللہ تعالیٰ اعلم

۱ فتاویٰ رشیدیہ ۲ تقویۃ الایمان الفصل الثانی مطبع علمی اندرون لوہاری دروازہ لاہور ص ۱۴ ۳ انباء المصطفیٰ رضا اکیڈمی بمبئی ص ۷ تا ۱۰

Fatawa Rizvia Volume 29

Problem 146: From Sitapur, Mohalla Narainpur, house of Maulana Ilahi Bakhsh, enquired by Ali Husain Khan, 29 Ramadan 1339 AH. What do the scholars of the religion say about this issue: if a person says that no one knows the state of the unseen except for Allah Almighty, to the extent that even the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) did not know it, citing the narration that once Abu Jahl dug a well on the path, covered it with grass, and feigned illness to stay there. When the Prophet went to visit him, the said well was right on the path; at that time, Gabriel (peace be upon him) informed him through revelation. Therefore, the saints of Allah also cannot know except through Kashf (unveiling) and Ilham (inspiration). Please state and be rewarded.

The Answer: It is true that no one knows the state of the unseen except the Lord Almighty, meaning by their own essence without Him telling them. But it is false that the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) did not know. It is proven from the Holy Quran and authentic Hadiths that all the unseen of "what has been and what will be until the end of days" has been revealed to the Holy Prophet (peace and blessings be upon him). And by the Prophet's telling, his servants, the noble saints, know. Kashf and Ilham are both means for their knowing, and there is no limit upon them. The detail of all these topics is in our books 'Anba-ul-Mustafa', 'Khalis-ul-I'tiqad', etc. And that story of Abu Jahl's well is purely fabricated and baseless. And Allah Almighty knows best.

Problem 147: From Post Office Molviganj, District Gaya, enquired by Abdul Majeed, 29 Ramadan 1339 AH. What do the scholars of the religion say about this issue: did the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) know the matters of the unseen or not? In response to the twenty-fourth question of 'Ma'at-e-Masail', there is a legal narration in Mulla Ali Qari's commentary on Fiqh al-Akbar: it should be known that the Prophets (peace be upon them) did not know any matter of the unseen except to the extent that Allah Almighty informed them of something at any time; then they would know. Whoever believes that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) would come to know matters of the unseen [by himself], the Hanafis have given an explicit ruling of Takfir (infidelity) against that person. This is due to it contradicting the word of Allah Almighty: "Say, 'None in the heavens and earth knows the unseen except Allah, and they do not perceive when they will be resurrected.'"[1] (Due to the contradiction with this command of Allah Almighty, Say...

[1] The Holy Quran 27/65

फतावा रज़विया जिल्द २९

मसला १४६: सीतापुर, मोहल्ला नारायणपुर, मौलवी इलाही बख्श के घर से, अली हुसैन खान द्वारा प्रेषित, २९ रमज़ान १३३९ हिजरी। धर्म के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं: यदि कोई व्यक्ति कहता है कि अल्लाह तआला के अलावा कोई भी परोक्ष (गैब) का हाल नहीं जानता, यहाँ तक कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को भी नहीं मालूम था, इस रिवायत के प्रमाण के साथ कि एक बार अबू जहल ने रास्ते में कुआँ खोदा और उसे घास-फूस से ढक दिया और खुद बीमारी का बहाना करके पड़ रहा। जिस समय हुज़ूर मिज़ाजपुर्सी के लिए गए, तो उक्त कुआँ ठीक रास्ते में था, उस समय जिब्रईल अलैहिस्सलाम ने वह्य (ईश्वरीय प्रकाशना) के माध्यम से सूचित किया। इसलिए अल्लाह के वली (संत) भी कश्फ़ और इल्हाम के बिना नहीं जान सकते। बयान फ़रमाएँ पुण्य पाएँगे।

अल-जवाब (उत्तर): यह सत्य है कि परोक्ष (गैब) का हाल अल्लाह तआला के सिवा कोई नहीं जानता, अर्थात स्वयं अपनी सत्ता से बिना उसके बताए। और यह मिथ्या है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को भी नहीं मालूम था। कुरान करीम और सही हदीसों से यह सिद्ध है कि "जो हो चुका और जो कयामत तक होगा" के तमाम परोक्ष हुज़ूर अकदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम पर प्रकट कर दिए गए। और हुज़ूर के बताने से हुज़ूर के गुलाम औलिया-ए-किराम जानते हैं। कश्फ़ और इल्हाम दोनों उनके जानने के माध्यम हैं और उन पर कोई सीमा नहीं है। इन तमाम विषयों का विवरण हमारी पुस्तक 'अन्बा-उल-मुस्तफा' और 'खालिस-उल-एतेकाद' आदि में है। और वह अबू जहल के कुएँ वाली कहानी पूरी तरह से गढ़ी हुई और निराधार है। वल्लाहु तआला आलम (अल्लाह तआला बेहतर जानता है)।

मसला १४७: डाकखाना मौलवीगंज, ज़िला गया से, अब्दुल मजीद द्वारा प्रेषित, २९ रमज़ान १३३९ हिजरी। धर्म के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को परोक्ष (गैब) की बातें मालूम थीं या नहीं? 'माअत-ए-मसाइल' के चौबीसवें प्रश्न के उत्तर में मुल्ला अली कारी की शरह फ़िक़्ह अकबर की एक फ़िक़्ही रिवायत है: यह जानना चाहिए कि नबी अलैहिमुस्सलाम परोक्ष की कोई बात नहीं जानते थे सिवाय उस सीमा के जितना अल्लाह तआला उन्हें किसी समय कोई चीज़ मालूम करा देता था, तो वे जान लेते थे। जो कोई इस बात का अकीदा (विश्वास) रखे कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम [स्वयं] परोक्ष की बातें जान लेते थे, तो हनफियों ने उस व्यक्ति पर स्पष्ट कुफ्र (तक्फीर) का हुक्म दिया है। अल्लाह तआला के इस फरमान के विरोध के कारण: "कह दो कि आसमानों और ज़मीन में अल्लाह के सिवा कोई परोक्ष नहीं

जानता, और उन्हें पता नहीं कि वे कब उठाए जाएँगे।"[1] (अल्लाह तआला के इस फरमान के विरोध के कारण, तुम फ़रमाओ...

[1] अल-कुरानुल करीम २७/ ६५

पृष्ठ ४०९ (कुल ७५० में से)

فتاویٰ رضویہ جلد ۲۹

مسئلہ ۱۴۶: از سیتاپور محلہ نرائن پور مکان مولوی الہی بخش صاحب مسئولہ علی حسین خان ۲۹ رمضان ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ اگر کوئی شخص کہے کہ غیب کا حال سوائے خدا تعالیٰ کے کوئی نہیں جانتا ہے حتی کہ حضور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کو بھی نہیں معلوم تھا بہ ثبوت اس روایت کے کہ ایک بار ابوجہل نے کنواں راستے میں کھود کر خس پوش کر دیا تھا اور خود بیماری کا حیلہ کر کے پڑ رہا تھا جس وقت حضور عیادت کو گئے تو چاہ مذکور عین رہگزر میں تھا اس وقت جبریل علیہ السلام نے بذریعہ وحی معلوم کیا لہذا اولیاء اللہ بھی نہیں جان سکتے بجز کشف والہام کے۔ بینوا توجروا (بیان فرمایئے اجر دیئے جاؤ گے۔ت)

الجواب: یہ حق ہے کہ غیب کا حال سوار ب عزوجل کے کوئی نہیں جانتا یعنی اپنی ذات سے بے اس کے بتائے اور یہ باطل ہے کہ حضور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کو بھی نہیں معلوم تھا قرآن کریم و احادیث صحیحہ سے یہ ثابت ہے کہ ماکان و مایکون الی اخر الایام (جو ہو چکا اور قیامت تک ہو گا ۔ ت) کے تمام غیب حضور اقدس علیہ افضل الصلوٰۃ والسلام پر منکشف فرما دیئے گئے اور حضور کے بتائے سے حضور کے غلام اولیائے کرام جانتے ہیں کشف والہام دونوں ان کے جاننے کے ذریعہ ہیں اور ان پر کوئی حد بندی نہیں۔ ان تمام مضامین کی تفصیل ہماری کتاب انباء المصطفیٰ و خالص الاعتقاد وغیرہما میں ہے اور وہ ابو جہل کے کنویں والی حکایت محض ساختہ وبے اصل ہے۔ وھو تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۱۴۷: از ڈاکخانہ مولوی گنج ضلع گیا، مسئولہ عبدالمجید ۲۹ رمضان ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ جناب رسول خدا صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کو غیب کی باتیں معلوم تھیں یا نہیں، مائتہ مسائل کے چوبیسویں سوال کے جواب میں روایت فقہی ملا علی قاری کی شرح

فقہ اکبر ہے جاننا چاہیے کہ کوئی بات غیب کی انبیاء علیہم الصلوٰۃ والسلام نہیں جانتے تھے مگر جس قدر کہ اللہ تعالیٰ ان کو کسی وقت کوئی چیز معلوم کرا دیتا تھا تو جانتے تھے جو کوئی اس بات کا اعتقاد کرے کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم غیب کی باتیں معلوم کر لیتے تھے حنفیہ نے اس شخص پر صریح تکفیر کا حکم دیا ہے۔ لمعارضۃ قولہ تعالیٰ "قُل لَّا يَعْلَمُ مَنْ فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ الْغَيْبَ إِلَّا اللَّهُ ۚ وَمَا يَشْعُرُونَ أَيَّانَ يُبْعَثُونَ ﴿٦٥﴾"١ ۔ (اللہ تعالیٰ کے اس فرمان کے معارضہ کی وجہ سے، تم فرماؤ

١ القرآن الكريم ٢٧/ ٦٥

Fatawa Razawiyya Volume 29

None in the heavens and the earth knows the unseen except Allah, and they do not perceive when they will be resurrected. (T) Explain, you shall be rewarded. (T)

Answer: Zaid or Amr may say anything, but the command of the Holy Quran and authentic Hadiths is that the Holy Prophet (peace and blessings be upon him) was granted the knowledge of all the unseen from the Day of Beginning to the Day of Ending. This is undoubtedly the truth that the Prophets know the unseen only as much as their Lord has informed them. Certainly, no one can know without Him informing. And this is also the truth that it was informed occasionally, as Revelation (Wahy) would descend from time to time, and not continuously every moment from the time of his mission until the time of his passing. However, to understand from this that only a few things were known and to declare their knowledge as meager and insignificant is not the work of a Muslim. In that very occasional teaching, the condition of every atom of the East and West and the Throne and the Earth from the Day of Beginning to the Day of Ending was fully revealed. In the noble verse, it is the negation of personal (inherent) knowledge that no person knows the unseen without God informing him. This is undoubtedly true, and the Hanafis have termed the opposition to this as disbelief (Kufr). Otherwise, to say that no one knows even with God informing him is a clear denial of faith and a rejection of numerous verses. For the details of this matter, one should consult 'Anba-ul-Mustafa' and 'Khalis-ul-I'tiqad' so that faith remains correct. And Allah Almighty knows best.

Page 410 of 750

फतावा रज़विया जिल्द 29

आकाशों और पृथ्वी में जो कोई भी है, वह परोक्ष (ग़ैब) को नहीं जानता सिवाय अल्लाह के, और उन्हें यह खबर नहीं कि वे कब उठाए जाएंगे। (त) स्पष्ट करें, आपको पुण्य मिलेगा। (त)

उत्तर: ज़ैद और अम्र जो चाहें कहें, लेकिन पवित्र कुरान और सही हदीसों का फरमान यह है कि हुज़ूर अकदस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को सृष्टि के आरंभ से प्रलय के दिन तक के सभी परोक्ष (ग़ैब) का ज्ञान प्रदान किया गया। यह निस्संदेह सत्य है कि नबी परोक्ष के बारे में उतना ही जानते हैं जितना उनके रब ने उन्हें बताया है। निस्संदेह, उनके बताए बिना कोई नहीं जान सकता। यह भी सत्य है कि समय-समय पर बताया गया, क्योंकि वह्य (ईश्वरीय संदेश) समय-समय पर उतरती थी, न कि नबुव्वत के समय से वफ़ात के समय तक हर पल निरंतर। लेकिन इससे यह समझ लेना कि केवल कुछ चुनिंदा चीज़ें ही ज्ञात हुईं और उनके ज्ञान को कम और तुच्छ करार देना किसी मुसलमान का काम नहीं है। उसी सामयिक शिक्षा में पूर्व और पश्चिम, अर्श और फर्श के कण-कण की स्थिति सृष्टि के आरंभ से अंत तक पूरी तरह प्रकट कर दी गई। पवित्र आयत में स्वयं के ज्ञान (इल्म-ए-ज़ाती) का निषेध है—कि कोई भी व्यक्ति ईश्वर के बताए बिना परोक्ष को नहीं जानता। यह निस्संदेह सत्य है और इसके विरोध को ही हनफ़ियों ने कुफ़्र (अधर्म) कहा है। अन्यथा यह कहना कि ईश्वर के बताने से भी कोई नहीं जानता, स्पष्ट कुफ़्र और बहुत सी आयतों का खंडन है। इस विषय के विवरण के लिए 'अनबा-उल-मुस्तफा' और 'खालिस-उल-इ'तिक़ाद' का अध्ययन करना चाहिए ताकि ईमान सही रहे। और अल्लाह ही बेहतर जानता है।

पृष्ठ 410 / 750

غیب نہیں جانتے جو کوئی آسمانوں اور زمین میں ہیں مگر اللہ اور انہیں خبر نہیں کہ کب اٹھائے جائیں گے۔ ت) بینوا توجروا (بیان فرمائیے اجر دیئے جاؤ گے۔ ت)

الجواب: زید عمر و کچھ کہیں مگر قرآن مجید و احادیث صحیحہ کا ارشاد یہ ہے کہ حضور اقدس علیہ افضل الصلوۃ والسلام کو روز ازل سے روزِ آخر تک کے تمام غیوب کا علم عطا فرمایا گیا یہ بے شک حق ہے کہ انبیاء غیب اسی قدر جانتے ہیں جتنا اُن کو ان کے رب نے بتایا بلا شبہ بے اس کے بتائے کوئی نہیں جان سکتا اور یہ بھی حق ہے کہ احیانا بتایا گیا کہ وحی حیناً بعد حین ہی اُترتی نہ کہ وقتِ بعثت سے وقتِ وفات تک ہر آن علی الاتصال ، مگر اس سے یہ سمجھ لینا کہ گنتی کی چیزیں معلوم ہوئیں اور ان کے علم کو قلیل و ذلیل قرار دینا مسلمان کا کام نہیں ، اسی احیاناً تعلیم میں شرق و غرب و عرش و فرش کے ذرہ ذرہ کا حال روز ازل سے روزِ آخر تک تمام منکشف کر دیا، آیہ کریمہ میں علم ذاتی کی نفی ہے کہ کوئی شخص بے خدا کے بتائے غیب نہیں جانتا ، یہ بے شک حق ہے اور اسی کے معارضہ کو حنفیہ نے کفر کہا ہے ورنہ یہ کہ خدا کے بتائے سے بھی کوئی نہیں جانتا اس کا انکار صریح کفر اور بکثرت آیات کی تکذیب ہے۔ اس مسئلہ کی تفصیل انباء المصطفٰی و خالص الاعتقاد میں دیکھنا چاہیے کہ ایمان درست ہو، وھو تعالٰی اعلم۔

Volume 29 Fatawa Razawiya

Treatise Rimah al-Qahhar 'ala Kufr al-Kuffar 1328 AH (The Subduer's spear striking the disbelief of the disbelievers) (Introductory portion "Pure Belief")

In the name of Allah, the Most Gracious, the Most Merciful.

Arabic Text	**Urdu Translation**
All praise be to Allah, the Guide of hearts. And the best blessings and peace be upon	All praise be to Allah Almighty, Who is the Granter of guidance to the hearts,
the Prophet who is aware of the unseen, purified from all shortcomings	and the best blessings and peace be upon that noble Prophet who is aware of all the unseen
and flaws, and upon his pure family and companions, who are free from sins,	and is pure from all flaws and defects; and upon his family and
conquerors over every wretched slandering liar; such blessings and peace	companions who are protected from sins and are dominant over every wretched slanderer
that are renewed with every sunrise and sunset.	(liar); such blessings and peace that are renewed with every sunrise and sunset. (T)

Those hearts to which Allah (Almighty and Glorious) grants guidance, their step of steadfastness does not slip from the path of truth. Even if the progeny of Satan casts some of its whispers and schemes, they never place any trust in them because their...

जिल्द 29 फ़तावा रज़विया

रिसाला (ग्रंथ) रिमाह अल-क़हार अला कुफ्र अल-कुफ़्फ़ार 1328 हिजरी (क़हार का नेज़ा मारना काफ़िरों के कुफ्र पर) (तमहीद "ख़ालिस अल-एतिकाद")

बिस्मिल्लाह हिर-रहमान निर-रहीम

अरबी पाठ	**उर्दू अनुवाद**
तमाम तारीफें अल्लाह के लिए, जो दिलों का मार्गदर्शक है। और श्रेष्ठ दुरूद और सलाम हो	तमाम तारीफें अल्लाह तआला के लिए हैं जो दिलों को हिदायत देने वाला
उस नबी पर जो परोक्ष (ग़ैब) का ज्ञाता है, सभी कमियों	है, और अफजल दरूद व सलाम उस नबी करीम पर जो तमाम ग़ैबों पर
और दोषों से पवित्र है, और उनके पवित्र परिवार और साथियों पर, जो पापों से मुक्त हैं,	आगाह और तमाम ऐबों और नक़ाइस से पाक हैं और आपकी आल पर और
हर अभागे झूठे पर विजयी हैं; ऐसा दुरूद और सलाम	सहाबा पर जो गुनाहों से महफूज़ और हर बदबख्त इफ़्तरा परदाज़
जो हर सूर्योदय और सूर्यास्त के साथ नया होता रहे।	(झूठे) पर ग़ालिब हैं; ऐसा दरूद व सलाम जो हर तुलू व ग़ुरूब के साथ नया होता रहे। (त)

अल्लाह अज़्ज़वजल जिन दिलों को हिदायत फरमाता है उनका कदम साबित-क़दमी के साथ हक़ की राह से नहीं डगमगाता। अगर शैतान की नस्ल अपने वसवसे और शरारतें डालती भी हैं, तो वे उन पर कभी भरोसा नहीं करते क्योंकि उनके..

पृष्ठ 750 में से 412

جلد ۲۹ فتاویٰ رضویہ

رسالہ رماح القہار علی کفر الکفار ۱۳۲۸ھ (قہار کا نیزہ مارنا کافروں کے کفر پر) (تمہید "خالص الاعتقاد")

بسم اللہ الرحمن الرحیم

عربی متن	اردو ترجمہ
الحمد للہ ہادی القلوب وافضل الصلوٰۃ والسلام علی النبی المطلع علی الغیوب المنزہ من جمیع النقائص والعیوب وعلی آلہٖ وصحبہ المطہرین من الذنوب القاہرین علی کل شقی مفتر کذوب صلوٰۃ وسلاماً یتجددان بکل طلوع وغروب۔	تمام تعریفیں اللہ تعالیٰ کے لیے جو دلوں کو ہدایت دینے والا ہے، اور افضل درود و سلام اس نبی کریم پر جو تمام غیبوں پر آگاہ اور تمام عیوب و نقائص سے پاک ہے اور آپ کی آل پر اور صحابہ پر جو گناہوں سے محفوظ اور ہر بدبخت افتراء پرداز (جھوٹے) پر غالب ہیں ایسا درود و سلام جو ہر طلوع و غروب کے ساتھ متجدد ہوتا رہے۔) (ت)

اللہ عزوجل جن قلوب کو ہدایت فرماتا ہے اُن کا قدم ثبات جادہ حق سے لغزش نہیں کرتا اگر ذریت شیطان اپنے وسوسے شوشے کچھ ڈالتی بھی ہے تو ہر گز اس پر اعتماد نہیں کرتے کہ ان کے

Volume 29 Fatawa Razawiyya

The Lord has said: "If a wicked person comes to you with any news, verify it immediately." (1) If a transgressor brings you news, investigate it at once, do not believe it without verification.

Then, when the truth reveals its glimmer, their condition immediately becomes what their Lord has stated: "Verily, those who are God-fearing, when an evil thought from Satan touches them, they remember (Allah), and at once they see (the truth) clearly." (2) Doubtless, those who fear God, when they are pricked by a satanic thought, they become alert, and at that very moment, their eyes are opened. (T)

Immediately they become alert and their eyes open; the veil that the progeny of the accursed Iblis tried to cast, vanishes like smoke, and the sun of truth begins to shine with its radiant rays. When the Wahabis (may Allah Almighty forsake them) reached such an extent of insult and denial of Allah, the One and All-Prevailing, and His Beloved, the Master of the Pious (peace and blessings of Allah be upon him), that it surpassed the thousands of years of earnings of the accursed Iblis. On the other hand, Allah Blessed and Exalted appointed His servant, the scholar of the Ahl al-Sunnah, the Reviver of Religion and Nation (may his holy shadow endure), to suppress these wicked ones. Praise be to Allah, such a suppression was carried out that the Arab and non-Arab worlds resonated with it. The senior scholars of the Two Holy Sanctuaries declared them kafir (disbelievers), murtad (apostates), zindiq (heretics), and mulhid (atheists) for their statements of denial and insult, and clearly stated: "He who doubts their disbelief and punishment, has himself committed disbelief." (3) Anyone who, being aware of such statements of theirs, doubts their disbelief and punishment is also a disbeliever like them, because he considered the honor of Allah Almighty and the greatness of Muhammad, the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) as light, and did not consider their revilers as disbelievers. Praise be to Allah, this blessed fatwa named "Hussam al-Harmain 'ala Manhar al-Kufr wal-Mayn" (1324 AH) was compiled in such a matchless manner that it struck terror into the hearts of Wahabism and caused earthquakes in their strongholds. Then, the exquisite and exemplary "Tamheed-e-Iman bi-Ayaat-e-Quran" (1326 AH) was like a further polish on this Muhammadi dagger, which erased all the excuses of the revilers of God and His Messenger, and the verses of the Great Quran clearly pronounced the decree of disbelief upon them. Against the disbelievers, they...

1 The Holy Quran 49/6 2 The Holy Quran 7/201 3 Hussam al-Harmain 'ala Manhar al-Kufr wal-Mayn, Matba' Ahl-e-Sunnat-o-Jama'at, Bareilly, p. 94 Page 413 of 750

खंड 29 फतावा रज़विया

रब ने फरमाया है: "अगर कोई फासिक (दुराचारी) तुम्हारे पास कोई खबर लाए तो फौरन तहकीक (जांच) कर लो।" (1) अगर कोई फासिक तुम्हारे पास खबर लाए तो फौरन जांच कर लो, बिना जांच के भरोसा न कर बैठो।

फिर जब हकीकत अपनी झलक दिखाती है, तो फौरन उनका वह हाल होता है जो उनके रब ने फरमाया: "बेशक वे जो डर वाले (परहेजगार) हैं, जब उन्हें किसी शैतानी विचार की ठेस लगती है, वे होशियार हो जाते हैं, उसी समय उनकी आँखें खुल जाती हैं।" (2) निस्संदेह वे जो खुदा से डरते हैं, जब उन्हें कोई शैतानी ख्याल आता है, तो वे सचेत हो जाते हैं और उसी क्षण उनकी आँखें खुल जाती हैं। (त)

तुरंत वे सचेत हो जाते हैं और उनकी आँखें खुल जाती हैं; लानती इब्लीस (शैतान) की संतानों ने जो पर्दा डालना चाहा था वह धुआं बनकर उड़ जाता है और सत्य का सूर्य अपनी नूरानी किरणों से चमकने लगता है। वहाबियों (अल्लाह उन्हें त्याग दे) ने जब अल्लाह वाहिद कहार और उसके हबीब सैय्यद अबरार (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का अपमान और खंडन इस हद तक पहुँचाया कि वह लानती इब्लीस की हज़ारों सालों की कमाई से भी आगे निकल गया। दूसरी ओर अल्लाह तबारक व तआला ने अपने बंदे, आलेम-ए-अहले सुन्नत, मुजद्दिद-ए-दीन-ओ-मिल्लत (दाम ज़िल्लुहुमुल अकदस) को इन खबीसों (दुष्टों) के दमन के लिए नियुक्त किया। अल्हम्दुलिल्लाह, दमन भी ऐसा किया जिससे अरब और अजम गूँज उठे। हरमैन शरीफैन के बड़े उलेमा ने उनके इन अपमानजनक और झूठे कथनों पर उन्हें काफिर, मुर्तद, ज़िंदीक और मुलहिद करार दिया और साफ तौर पर फरमाया: "जिसने उनके कुफ्र (अविश्वास) और अज़ाब (दंड) में संदेह किया, वह स्वयं काफिर हो गया।" (3) जो ऐसे लोगों के इन कथनों से अवगत होकर उनके कुफ्र और अज़ाब में शक करे, वह भी उन्हीं की तरह काफिर है क्योंकि उसने अल्लाह अज़्ज़वजल की इज़्ज़त और मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की अज़मत को हल्का समझा और उनके निंदकों को काफिर नहीं माना। अल्हम्दुलिल्लाह, यह मुबारक फतवा जिसका नाम "हुसामुल हरमैन अला मन्हरिल कुफ्रे वल मैन" (1324 हिजरी) है, ऐसा बेजोड़ संकलित हुआ जिसने वहाबियत के दिलों में खौफ और उनके किलों में भूकंप पैदा कर दिया। फिर नफीस और बेमिसाल "तम्हीद-ए-ईमान ब-आयाते कुरआन" (1326 हिजरी) इस मुहम्मदी खंजर पर और अधिक धार देने जैसा था जिसने खुदा और रसूल के निंदकों के

सभी बहानों को मिटा दिया और कुरआन अज़ीम की आयतों ने साफ-साफ उन पर कुफ्र का हुक्म लगा दिया। काफिरों के पास इसके..

---

1 अल-कुरआन अल-करीम 49/6 2 अल-कुरआन अल-करीम 7/201 3 हुसामुल हरमैन अला मन्हरिल कुफ्रे वल मैन, मतबा अहले सुन्नत व जमाअत बरेली, पृ. 94 पेज 413 of 750

رب نے فرمایا ہے: "اِنْ جَآءَکُمْ فَاسِقٌ بِنَبَاٍ فَتَبَیَّنُوْا" -۱- اگر کوئی فاسق تمہارے پاس خبر لائے تو فوراً تحقیق کرلو بے تحقیق اعتبار نہ کر بیٹھو۔ پھر جب امر حق اپنی جھلک دکھاتا ہے فوراً ان کا وہ حال ہوتا ہے جو ان کے رب نے فرمایا: " اِنَّ الَّذِیْنَ اتَّقَوْا اِذَا مَسَّھُمْ طٰٓئِفٌ مِّنَ الشَّیْطٰنِ تَذَکَّرُوْا فَاِذَا ھُمْ مُّبْصِرُوْنَ " -۲- بے شک وہ جو ڈر والے ہیں جب انہیں کسی شیطانی خیال کی ٹھیس لگتی ہے، ہوشیار ہوجاتے ہیں اسی وقت ان کی آنکھیں کھل جاتی ہیں۔ (ت)

معاً ہوشیار ہوجاتے اور ان کی آنکھیں کھل جاتی ہیں ابلیس لعین کی ذریت نے جو پردہ ڈالنا چاہا تھا دھواں بن کر اڑ جاتا اور آفتاب حق اپنی نورانی کرنوں سے شعاعیں ڈالنا چمک آتا ہے۔ وہابیہ خذلہم اللہ تعالیٰ نے جب اللہ واحد قہار اور اس کے حبیب سید ابرار صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی توہین و تکذیب اس حد تک پہنچائی کہ ابلیس لعین کی ہزارہا سال کی کمائی پر فوق لے گئی ادھر اللہ تبارک و تعالیٰ نے اپنے بندہ عالم اہلسنت مجدد دین وملت دام ظلہم الاقدس کو ان خبثا کی سرکوبی پر مقرر فرمایا، الحمد للہ سرکوبی بھی وہ فرمائی جس سے عرب وعجم گونج اٹھے، اکابر علمائے کرام حرمین شریفین نے ان شیاطین کے اقوال تکذیب و توہین پر ان کو کافر مرتد زندیق ملحد لکھا اور صاف فرمادیا کہ "من شك في كفره وعذابه فقد كفر"۳۔ جوا یسوں کے ان اقوال پر مطلع ہو کر ان کے کفر و عذاب میں شک کرے وہ بھی انہیں طرح کافر ہے کہ اس نے اللہ عزوجل کی عزت محمد رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی عظمت کو ہلکا جانا ان کے بد گوئیوں کو کافر نہ مانا ، الحمد للہ یہ مبارک فتویٰ مسمی بہ حسام الحرمین علی منحر الکفر والمیین (۱۳۲۴ھ) ایسا بے نظیر مرتب ہوا جس نے وہابیت کے دلوں میں رعب، قلعوں میں زلزلے ڈال دیئے۔ پھر نفیس و بے مثال تمہید ایمان بآیات قرآن (۱۳۲۶ھ) اس محمدی خنجر پر اور الٹی صیقل ہوئی جس نے خدا اور رسول

کے دشنام دہندوں کے سب حیلے مٹا دیئے اور صاف صاف صرف قرآن عظیم کی آیتوں نے ان پر حکم کفر لگا دیئے۔ کافروں کے پاس اس کے

---

۱ القرآن الکریم ۶ / ۴۹ ۲ القرآن الکریم ۲۰۱ / ۷ ۳ حسام الحرمین علی منح الکفر والمین مطبع اہلسنت و جماعت بریلی ص ۹۴ Page 413 of 750

What answers could they give, and how could they repent without the divine guidance (Tawfiq) of Allah? Forced by their helplessness, they resorted to deception, trickery, lies, falsehood, slander, fabrication, calumny, insults, and ravings—the final tactic of the weak. The servants of the Sunnah ignored the insults and even overlooked the slanders and fabrications related to their own persons. As for the other deceptions, responses were given through works like 'Zafar ad-Din al-Jayyid', 'Kin-Kash Panja-Pech', 'Barish-e-Sangi', 'Paikan-e-Jan-Gudaz', 'Zaruri Notice', 'Naya Zamana', 'Kashf-e-Raaz', and other inquiries and announcements. To the responses of these booklets and advertisements, the 'Kufur Party' (the party of disbelief) once again turned a deaf ear and remained silent; they didn't answer a single thing but did not stop their incessant chatter. When they saw that things were not working out this way, eventually, like a desperate person forced to do anything, the party thought of two unparalleled tactics that even the accursed Iblis (Satan) would have been amazed by and would have succumbed to their 'beauty'.

First Tactic: Retaliation in kind. That is, the scholars of Islam published the fatwa (decree) of the two holy sanctuaries (Makkah and Madinah) regarding the disbelief of the Kufur Party. In the entire Islamic world, the cursed Kufur Party was being condemned and spat upon. The party members turned pale, their hearts split, their breaths reversed, and their livers burst, but what answer could there be to the wrath of the Subduer (Allah)? Since there could be no answer to it, they thought, "Let us roll out the papads (resort to elaborate schemes) of unique fabrications to deceive the ignorant and mislead the foolish, and play the game of 'retaliation in kind'." That is, while the party has denied the essentials of religion, called Allah (Almighty and Glorious) a liar, disrupted the concept of the finality of prophethood, and started the tune of new prophethoods; somewhere they have increased the knowledge of their elder, the accursed Iblis, over the knowledge of the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him), and somewhere they have equated the knowledge of the Most Holy (Prophet) with the knowledge of madmen and cattle. They have associated the accursed Satan with the attributes of God. For these things, the scholars of Islam have issued rulings of disbelief and apostasy. [They thought] "Let's see if any Mufti in Arabia disagrees with these noble scholars on any contentious or controversial issue, let's get them to write something. And in that, mix in disgusting slanders and filthy fabrications from our own side. And despite all this, if a ruling is not as desired, then invent a ruling ourselves; the fabrication machine is running at

home, let's cast it in a domestic mold. All we need is a hint of disagreement." Then what? Iblis gives and his progeny takes. Thinking and thinking, they found an issue regarding the 'Knowledge of the Five' (Ilm-e-Khums), about which Mufti Barzanji, a Shafi'i of Madinah, had some doubt. And why only him? This issue has been disputed among the scholars of the Ummah before. Most literalists have been on the side of denial, while the great saints and their servants among the noble scholars have been on the side of affirmation and acknowledgment. In such an issue, takfir (calling someone a disbeliever) is out of the question; what to speak of misguidance (tazlil) or even calling someone a transgressor (tafsiq). O Muslims! Issues are of three types.

One is the 'Essentials of Religion' (Zaruriyat-e-Din). He who denies them, or even has the slightest doubt in them, is certainly a disbeliever, such that...

जवाब क्या होते और बिना अल्लाह की तौफ़ीक़ (ईश्वरीय मार्गदर्शन) के तौबा कैसे करते? लाचार होकर वे मक्कारी, फरेब, झूठ, असत्य, तोहमत, इफ़्तरा (गढ़ा हुआ आरोप), बहतान, गालियों और प्रलापों पर उतर आए, जो बेबसों की आखिरी तदबीर (उपाय) है। सुन्नत के खादिमों ने गालियों से परहेज़ किया और अपनी ज़ात से संबंधित तोहमतों और इफ़्तराओं को भी नज़रअंदाज़ किया। बाकी धोखेबाज़ियों के जवाब 'ज़फ़र उद-दीन अल-जय्यद', 'कीन-कश पंजा-पेच', 'बारिश-ए-संगी', 'पैकान-ए-जां-गुदाज़', 'ज़रूरी नोटिस', 'नया ज़माना', 'कश्फ़-ए-राज़' और अन्य पूछताछ व विज्ञापनों के माध्यम से देते रहे। इन पुस्तिकाओं और विज्ञापनों के जवाब में 'कुफ़्र पार्टी' ने फिर एक कान गूँगा और एक बहरा कर लिया, किसी भी बात का कोई जवाब नहीं दिया और अपनी बकवास से बाज़ भी नहीं आए। जब देखा कि इस तरह काम नहीं चलता, तो अंततः'मरता क्या न करता' वाली स्थिति में पार्टी ने ऐसी दो बेमिसाल तदबीरें सोचीं कि लानती इब्लीस भी दंग रह गया और उनके'हुस्न' पर फ़िदा हो गया।

पहली तदबीर: बदला चुकाना। यानी, इस्लाम के विद्वानों ने कुफ़्र पार्टी के कुफ़्र पर हरमैन तैय्यबैन (मक्का और मदीना) का फतवा प्रकाशित किया। पूरी इस्लामी दुनिया में फिटकारी कुफ़्र पार्टी पर थू-थू हो रही थी। पार्टी के रंग उड़ गए, जिगर फट गए, सांसें उलट गईं, कलेजे फट गए, लेकिन क़ह्र-ए-क़ह्हार (अल्लाह के प्रकोप) का क्या जवाब? अच्छा, अगर इसका जवाब नहीं हो सकता, तो लाओ जाहिलों को बहकाने और मूर्खों को गुमराह करने के लिए अनोखे इफ़्तरा (गढ़ंत) के पापड़ बेलें, 'मुआरज़ा बिल-मिस्ल' (जैसे को तैसा) का खेल खेलें। यानी पार्टी ने तो धर्म की अनिवार्यताओं (ज़रूरियात-ए-दीन) का इनकार किया है, अल्लाह अज़्ज़-ओ-जल्ल को झूठा कहा है, ख़त्म-ए-नुबुव्वत (पैग़म्बरी की समाप्ति) के मसले को बिगाड़ा है, नई नुबुव्वतों का राग छेड़ा है, रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इल्म (ज्ञान) से कहीं अपने बुजुर्ग इब्लीस लईन के इल्म को बढ़ाया है, और कहीं मुकद्दस नबी के इल्म को पागलों और चौपायों के इल्म के बराबर बताया है। शैतान लईन को खुदा की सिफ़त में शरीक ठहराया है। इन बातों पर इस्लाम के विद्वानों से कुफ़्र और इर्तदाद (धर्मत्याग) का हुक्म मिला है। [उन्होंने सोचा] "देखो, क्या अरब का कोई मुफ्ती किसी विवादास्पद मसले में इन उलमा-ए-किराम के खिलाफ हो, तो उनसे कुछ लिखवाएं। और उसमें घिनौनी तोहमतें और गंदे इफ़्तरा अपनी तरफ से मिला दें। और इसके बावजूद अगर हुक्म मनमाना न मिले, तो हुक्म भी खुद से गढ़ लें; इफ़्तरा की मशीन तो घर में चल ही रही है, घरेलू सांचे में ढाल लें। बस नाम के लिए

कहीं विरोध की बू मिलनी चाहिए।" फिर क्या? इब्लीस दे और उसकी औलाद ले। सोचते-सोचते उन्हें 'इल्म-ए-खुम्स' (पाँच चीज़ों का ज्ञान) का एक मसला मिला जिसमें मदीना तैय्यबा के शाफ़ई मज़हब के मुफ़्ती बरज़ंजी साहब को संदेह था। और अकेले उन्हें ही क्यों? यह मसला पहले से उम्मत के विद्वानों के बीच मतभेद का रहा है। अधिकांश ज़ाहिरीन इनकार की ओर रहे हैं और औलिया-ए-इज़ाम और उनके गुलाम उलमा-ए-किराम पुष्टि और इकरार की ओर रहे हैं। ऐसे मसले में किसी तरफ तक़फ़ीर (काफ़िर कहना) का क्या मतलब? तज़लील (गुमराह कहना) कैसी? यहाँ तक कि तफ़्सीक (गुनाहगार कहना) भी नहीं हो सकती। ऐ मुसलमानों! मसले तीन तरह के होते हैं।

एक है 'ज़रूरियात-ए-दीन' (धर्म की अनिवार्यताएं), उनका इनकार करने वाला, बल्कि उनमें ज़रा सा भी संदेह करने वाला निश्चित रूप से काफ़िर होता है, ऐसा कि...

جواب کیا ہوتے اور بے توفیق الٰہی توبہ کیونکر کرتے ناچار مکر و فریب، جھوٹ، کذب، تہمت افترا، بہتان گالیوں، ہذیانوں پر اترے جو عاجزوں کی پچھلی تدبیر ہے خادمانِ سنت نے گالیوں سے اعراض اور اپنی ذات سے متعلق تہمتوں افتراؤں سے بھی اغماض ہی کیا، باقی دھوکے بازیوں کے جواب ظفر الدین الجید وکین کش پنجہ پیچ و بارش سنگی و پیکان جانگداز و ضروری نوٹس و نیا زمانہ و کشف راز و غیر بار سائل و اعلانات سے دیتے رہے ان رسالوں اشتہاروں کے جواب سے کفر پارٹی نے پھر ایک کان گونگا ایک بہرار کھا اصلاً کسی بات کا جواب نہ دیا اور اپنی ٹائیں ٹائیں سے باز بھی نہ آئی جب دیکھا کہ یوں کام نہیں چلتا بالاخر مرتا کیا نہ کرتا پارٹی نے دو تدبیریں وہ بے مثال سوچیں کہ ابلیس لعین بھی عش عش کر گیا کان ٹیک دیئے ان کے حسن پر غش کر گیا۔ تدبیر اول: معاوضہ بالمثل یعنی علمائے اسلام نے کفر پارٹی کے کفر پر حرمین طیبین کا فتوی شائع فرمایا تمام اسلامی دنیا میں کفر پارٹی ملعونہ پر تھو تھو ہو رہی ہے، پارٹی کے رنگ فق ہوئے، جگر شق ہوئے، دم الٹ گئے، کلیجے پھٹ گئے مگر قہر قہار کا کیا جواب۔ اچھا اس کا جواب نہیں ہو سکتا تو لاؤ جاہلوں کے پھسلانے احمقوں کے بہکانے کو انوکھے افتراء کے پاپڑ بیلیں، معارضہ بالمثل کا جل کھیلیں یعنی پارٹی نے تو ضروریاتِ دین کا انکار کیا ہے اللہ عزوجل کو جھوٹا کہا ہے، ختم نبوت کا بکھیڑا اکھیڑا ہے، نئی نبوتوں کا راگ چھیڑا ہے، رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے علم سے کہیں اپنے بزرگ ابلیس لعین کے علم کو بڑھایا ہے، کہیں پاگلوں چوپایوں کے علم کو علم اقدس کے مثل بنایا ہے۔ شیطان لعین کو خدا کی صفت میں شریک ٹھہرایا ہے، ان باتوں پر علمائے اسلام سے کفر و ارتداد کا حکم پایا ہے، دیکھو کسی نزاعی اختلافی مسئلے میں عرب کے کسی مفتی کو ان علمائے کرام سے خلاف ہو تو اس کے متعلق کچھ

لکھوائیں۔ اور اس میں گھناؤنی تہمتیں گندے افتراء اپنی طرف سے ملائیں، اور بایں ہمہ حکم من مانتانہ ملے تو حکم بھی جی سے نکال لیں افتراء کی مشین تو گھر میں چل رہی ہے خانگی سانچے میں ڈھال لیں- بس نام کو کہیں ہوئے خلاف ملنی چاہیے، پھر کیا ہے ابلیس دے اور ذریت لے، سوچتے سوچتے ایک مسئلہ علم خمس کا ملا جس میں مدینہ طیبہ کے شافعی المذہب مفتی برزنجی صاحب کو شبہ تھا اور ایک انہیں کو کیا یہ مسئلہ پہلے سے علمائے امت میں مختلف رہا ہے اکثر ظاہرین جانب انکار رہے اور اولیائے عظام اور ان کے غلام علمائے کرام جانب اثبات و اقرار رہے، ایسے مسئلے میں کسی طرف تکفیر چہ معنی تضلیل کیسی تفسیق بھی نہیں ہو سکتی۔

مسلمانوں! مسائل تین قسم کے ہوتے ہیں۔ ایک ضروریاتِ دین ان کا منکر بلکہ ان میں ادنیٰ شک کرنے والا بالیقین کافر ہوتا ہے ایسا کہ

Fatawa Razawiyya Volume 29

Anyone who doubts his disbelief is also a disbeliever. Second: Essential beliefs of the Ahl al-Sunnah; anyone who denies them is a deviant and misguided person of innovation. Third: Those issues in which the scholars of Ahl al-Sunnah differ; in such matters, declaring someone a disbeliever (takfir) or misguided is not possible. It is another matter if someone considers a certain opinion more preponderant in their own view, whether through personal research—meaning, through evidence, they see it as the preferred view—or through following (taqlid), having found it to be the opinion of the majority of scholars or those they rely upon. Sometimes, all three types can be found within the different facets of a single issue. For example, the issue of 'Hand' (Yad) and 'Eye' ('Ayn) for Allah Almighty: Allah the Almighty says: 'The Hand of Allah is over their hands' [1]. (Allah Almighty said: His hand is upon their hands.) And Allah the Almighty said: 'And that you may be brought up under My eye' [2]. (And Allah Almighty said: and so that you may be prepared before My sight.) 'Yad' means hand, and 'Ayn' means eye. Now, whoever says that these are bodily parts for Allah Almighty, just like our hands and eyes, is definitely a disbeliever. Allah Almighty being free from such 'Yad' and 'Ayn' (bodily limbs) is among the essentials of religion. And whoever says that He has 'Yad' and 'Ayn' so He must have a body, but not like other bodies, rather He is free and pure from resemblance to bodies, is a misguided irreligious person, because Allah Almighty being absolutely free and pure from having a body or physical attributes is among the essential beliefs of the Ahl al-Sunnah wa'l-Jama'ah. And whoever says that Allah Almighty has 'Yad' and 'Ayn' that are completely free and immune from corporeality, and they are His eternal attributes whose reality we do not know, nor do we interpret (ta'wil) them—he is definitely a Muslim Sunnī of sound belief. Although this issue of non-interpretation is a matter of difference among the Ahl al-Sunnah. Later scholars adopted interpretation, yet they did not become misguided because of it, as they interpret them to mean manifestations of higher effects, the gist of which is only: 'We believe in it; all is from our Lord' [3]. (We believe in it; all is from our Lord.)

Precisely the same is the case with the issue of the Knowledge of the Unseen (Ilm al-Ghaib). All three types of matters exist in this as well. (1) Allah Almighty alone possesses essential knowledge (bi-dhat); without His teaching, no one can know even a single letter. (2) Allah Almighty granted the knowledge of some of His unseen matters to the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) and other noble Prophets (peace be upon them). (3) The knowledge of the Messenger of

Allah (peace and blessings of Allah be upon him) is greater than that of others; as for the knowledge of Iblis, God forbid...

1 Al-Quran Al-Karim 48/10 2 Al-Quran Al-Karim 20/39 3 Al-Quran Al-Karim 3/7

जो उसके कुफ़्र (अविश्वास) में संदेह करे, वह भी काफ़िर है। दूसरा: अहले सुन्नत की मान्यताओं की अनिवार्यताएं, इनका इनकार करने वाला विधर्मी और पथभ्रष्ट होता है। तीसरा: वे मसले जिनमें अहले सुन्नत के विद्वानों के बीच मतभेद हो, उनमें किसी भी पक्ष को काफ़िर या गुमराह कहना संभव नहीं है। यह दूसरी बात है कि कोई व्यक्ति अपने विचार में किसी कथन को प्रबल (राजिह) माने, चाहे वह शोध (तहकीक) के माध्यम से हो, यानी प्रमाण के आधार पर उसे ही श्रेष्ठ देखे, या अनुकरण (तक़लीद) के माध्यम से, कि उसे अपने पास अधिकांश विद्वानों या अपने विश्वसनीय लोगों का कथन मिला। कभी-कभी एक ही मसले की विभिन्न सूरतों में ये तीनों प्रकार मौजूद होते हैं। उदाहरण के लिए, अल्लाह अज़वज्जल के लिए 'यद् (हाथ) और 'ऐन' (आंख) का मसला: अल्लाह तआला ने फ़रमाया: 'यदुल्लाहि फ़ौक़ा ऐदीहिम' 1- (अल्लाह तआला ने फ़रमाया: उनके हाथों पर अल्लाह का हाथ है।) और अल्लाह तआला ने फ़रमाया: 'वलितुसनाअ अला ऐनी' 2- (और अल्लाह तआला ने फ़रमाया: और इसलिए कि तू मेरी निगाह के सामने तैयार हो।) 'यद् हाथ को कहते हैं, 'ऐन' आंख को। अब जो यह कहे कि जैसे हमारे हाथ-आंख हैं, वैसे ही शरीर के अंग अल्लाह अज़वज्जल के लिए हैं, वह निश्चित रूप से काफ़िर है। अल्लाह अज़वज्जल का ऐसे यद् और ऐन (शारीरिक अंगों) से पाक होना धर्म की अनिवार्यताओं (जरूरियात-ए-दीन) में से है। और जो कहे कि उसके लिए यद् और ऐन भी हैं तो शरीर भी है लेकिन शरीरों जैसा नहीं, बल्कि शरीरों की समानता से पाक और पवित्र है, वह गुमराह और विधर्मी है, क्योंकि अल्लाह अज़वज्जल का शरीर और शारीरिकता से पूर्णतः पाक और पवित्र होना अहले सुन्नत वल जमात की मान्यताओं की अनिवार्यताओं में से है। और जो कहे कि अल्लाह अज़वज्जल के लिए यद् और ऐन हैं जो पूर्णतः शारीरिकता से मुक्त और परे हैं, वे उसके शाश्वत गुण (सिफ़ात-ए-कदीमा) हैं जिनकी वास्तविकता हम नहीं जानते और न ही उनमें व्याख्या (तावील) करते हैं, वह निश्चित रूप से सही विश्वास वाला सुन्नी मुसलमान है। हालाँकि यह व्याख्या न करने का मसला अहले सुन्नत के बीच मतभेदों वाला है, बाद के विद्वानों ने व्याख्या अपनाई, फिर भी वे इससे गुमराह नहीं हुए क्योंकि वे व्याख्या का अर्थ उच्च प्रभावों का प्रकटीकरण (इजरा-ए-आला-अल-मज़ाहिर) करते हैं, जिसका सार केवल इतना है कि 'आ़मन्ना बिही कुल्लुम मिन इन्दि रब्बिना' 3- (हमने उस पर ईमान लाया, सब हमारे रब के पास से है)।

ठीक यही स्थिति इल्म-ए-ग़ैब (परोक्ष ज्ञान) के मसले की है। इसमें भी तीनों प्रकार के मसले मौजूद हैं। (१) अल्लाह अज़वज्जल ही स्वयं से जानने वाला (आलिम-बिज़-ज़ात) है, उसके बताए बिना कोई एक

अक्षर भी नहीं जान सकता। (२) अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) और अन्य नबियों (अलैहिमुस्सलाम) को अल्लाह अज़वज्जल ने अपने कुछ ग़ैबों का ज्ञान दिया। (३) अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का ज्ञान दूसरों से अधिक है; इब्लीस का ज्ञान, अल्लाह की पनाह...

1 अल-कुरान अल-करीम 10/48 2 अल-कुरान अल-करीम 20/39 3 अल-कुरान अल-करीम 3/7

جو اس کے کفر میں شک کرے وہ بھی کافر۔ دوم ضروریات عقائد اہلسنت، ان کا منکر بد مذہب گمراہ ہوتا ہے۔ سوم وہ مسائل کہ علمائے اہلسنت میں مختلف فیہ ہوں اُن میں کسی طرف تکفیر و تضلیل ممکن نہیں۔ یہ دوسری بات ہے کہ کوئی شخص اپنے خیال میں کسی قول کو راجح جانے خواہ تحقیقاً یعنی دلیل سے اسے وہی مرجح نظر آیا خواہ تقلید کہ اسے اپنے نزدیک اکثر علماء یا اپنے معتمد علیہم کا قول پایا۔ کبھی ایک ہی مسئلہ کی صورتوں میں یہ تینوں قسمیں موجود ہو جاتی ہیں۔ مثلاً اللہ عزوجل کے لیے ید و عین کا مسئلہ: قال اللہ تعالیٰ 'یَدُ اللّٰہِ فَوْقَ أَیْدِیھِمْ' 1- (اللہ تعالیٰ نے فرمایا: ان کے ہاتھوں پر اللہ کا ہاتھ ہے۔ ت) وقال تعالیٰ: 'وَلِتُصْنَعَ عَلَی عَیْنِي' 2- (اور اللہ تعالیٰ نے فرمایا: اور اس لیے کہ تو میری نگاہ کے سامنے تیار ہو۔ ت) ید ہاتھ کو کہتے ہیں، عین آنکھ کو۔ اب جو یہ کہے کہ جیسے ہمارے ہاتھ آنکھ ہیں ایسے ہی جسم کے ٹکڑے اللہ عزوجل کے لیے ہیں وہ قطعاً کافر ہے اللہ عزوجل کا ایسے ید و عین سے پاک ہونا ضروریات دین سے ہے، اور جو کہے کہ اس کے ید و عین بھی ہیں تو جسم ہی مگر نہ مثل اجسام، بلکہ مشابہت اجسام سے پاک و منزہ ہیں وہ گمراہ بددین کہ اللہ عزوجل کا جسم و جسمانیات سے مطلقاً پاک و منزہ ہونا ضروریات عقائد اہلسنت و جماعت سے ہے، اور جو کہے کہ اللہ عزوجل کے لیے ید و عین ہیں کہ مطلقاً جسمیت سے بری و مبرا ہیں وہ اس کی صفات قدیمہ ہیں جن کی حقیقت ہم نہیں جانتے نہ اُن میں تاویل کریں وہ قطعاً مسلم سُنّی صحیح العقیدہ ہے اگرچہ یہ عدم تاویل کا مسئلہ اہلسنت کا اختلافیہ ہے متاخرین نے تاویل اختیار کی پھر اس سے نہ یہ گمراہ ہوئے کہ وہ کہ اجر اعلی المظاہر بمعنی مذکور کرتے ہیں جس کا حاصل صرف اتنا کہ 'اٰمَنَّا بِہٖ کُلٌّ مِّنْ عِنْدِ رَبِّنَا' 3- (ہم اس پر ایمان لائے، سب ہمارے رب کے پاس سے ہے۔ ت) بعینہ یہی حالت مسئلہ علم غیب کی ہے۔ اس میں بھی تینوں

قسم کے مسائل موجود ہیں۔ (۱) اللہ عزوجل ہی عالم بالذات ہے اُس کے بتائے ایک حرف کوئی نہیں جان سکتا۔ (۲) رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم اور دیگر انبیائے کرام علیہم الصلوۃ والسلام کو اللہ عزوجل نے اپنے بعض غیوب کا علم دیا۔ (۳) رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کا علم اوروں سے زائد ہے ابلیس کا علم معاذ اللہ

1 القرآن الکریم ۱۰/۴۸ 2 القرآن الکریم ۳۹/۲۰ 3 القرآن الکریم ۷/۳

Fatawa Razviya, Volume 29

...is by no means more extensive than the sacred knowledge.

(4) The knowledge which is a specific attribute of Allah Almighty, in which even associating His beloved Muhammad, the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) would be polytheism (shirk), can never belong to Iblis. Anyone who believes so is a categorical polytheist (mushrik), a disbeliever (kafir), and an accursed servant of Iblis.

(5) To state that Zaid, Amr, every child, madman, or quadruped is equal to Muhammad, the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) in the knowledge of the unseen (Ilm-ul-Ghayb) is an explicit insult to the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) and clear disbelief (kufr). All these matters are among the necessities of religion (dharuriyat-e-din), and he who denies them or has even the slightest doubt about them is categorically a disbeliever. This was the first category.

(6) The noble saints (awliya), may Allah benefit us with their blessings in both worlds, also receive some knowledge of the unseen, but through the mediation of the Messengers (peace and blessings be upon them). The Mu'tazilites (may Allah forsake them) who believe that the revelation of the unseen is only for the Messengers and do not believe that the noble saints (may Allah be pleased with them) have any share in the knowledge of the unseen at all, are misguided and innovators.

(7) Allah Almighty has bestowed upon His beloveds, especially the Master of the Beloveds (peace and blessings of Allah be upon him), knowledge of many particulars from the 'Five Unseen Things' (Ghuyub-e-Khamsa). Whoever says that knowledge of any individual part of the 'Five' was given to no one is a denier of thousands of hadiths that are mutawatir in meaning (mutawatir-ul-ma'na), and is a misguided loser. This was the second category.

(8) The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) was also given knowledge of the designated time of the Day of Judgment.

(9) The Prophet has knowledge of all the particulars of the 'Five [Unseen Things]' without exception.

(10) He is the knower of all the secrets of the Pen and the inscriptions of the Tablet, in short, everything from the first day to the last day—all that has happened and all that

will happen (Ma Kana wa Ma Yakun) recorded in the Preserved Tablet (Lawh-e-Mahfuz)—and much more beyond that. In this, regarding beyond the Resurrection, all individuals of the 'Five' are included. And regarding the Resurrection, if it is proven that the designation of its time is also written in the Tablet, then that is included too; otherwise, both possibilities remain.

(11) The Radiant Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) also has knowledge of the reality of the soul (ruh).

(12) He also has knowledge of all the allegorical verses (mutashabihat) of the Quran. These five issues belong to the third category, regarding which the scholars and imams of the Ahl-us-Sunnah themselves have differed. The explanation of this will, with Allah's help, soon become clear. Regarding these, neither a ruling of disbelief (kufr) nor even of misguidance (dalal) or transgression (fisq) can be applied to anyone who affirms or denies them, as long as they believe in the first seven issues.

फतावा रज़विया, जिल्द २९

...ज्ञान पवित्र ज्ञान से कतई अधिक व्यापक नहीं है।

(४) वह ज्ञान जो अल्लाह अज़्ज़-व-जल्ल का विशेष गुण है, जिसमें उसके प्रिय मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को शरीक करना भी शिर्क हो, वह हरगिज़ इबलीस के लिए नहीं हो सकता। जो ऐसा माने वह कतई मुशरिक, काफिर और इबलीस का लानती बंदा है।

(५) ज़ैद, उम्र, हर बच्चे, पागल या चौपाए को ग़ैब के इल्म (परोक्ष ज्ञान) में मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के समान कहना हुज़ूर अकदस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की खुली तौहीन और स्पष्ट कुफ्र है। ये सभी मसले ज़रूरीयाते-दीन (धर्म की अनिवार्य आवश्यकताएँ) में से हैं और इनका इनकार करने वाला या इनमें ज़रा सा भी शक करने वाला कतई काफिर है। यह पहली किस्म हुई।

(६) औलिया-ए-किराम (अल्लाह हमें दोनों जहानों में उनकी बरकतों से लाभान्वित करे) को भी ग़ैब के कुछ उलूम (ज्ञान) मिलते हैं, लेकिन रसूलो (अलैहिमुस्सलाम) की मध्यस्थता से। मोतज़िला (अल्लाह उन्हें छोड़ दे) जो यह मानते हैं कि ग़ैब की जानकारी सिर्फ रसूलो के लिए है और औलिया-ए-किराम (रज़ियल्लाहु अन्हुम) का ग़ैब के उलूम में बिल्कुल हिस्सा नहीं मानते, वे गुमराह और बिदअती हैं।

(७) अल्लाह अज़्ज़-व-जल्ल ने अपने महबूबों, विशेष रूप से सैय्यदुल महबूबीन (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को 'ग़ुयूब-ए-ख़मसा' (पांच परोक्ष बातें) से बहुत सी जुज़इयात (विवरणों) का ज्ञान प्रदान किया। जो यह कहे कि उन पांचों में से किसी भी एक का इल्म किसी को नहीं दिया गया, वह हज़ारों मुतवातिरुल-माना हदीसों का मुन्किर (इनकार करने वाला) और बद-मज़हब घाटे में रहने वाला है। यह दूसरी किस्म हुई।

(८) रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को कयामत के वक्त के निर्धारण का भी इल्म दिया गया।

(९) हुज़ूर को बिना किसी अपवाद के ग़ुयूब-ए-ख़मसा की तमाम जुज़इयात का इल्म है।

(१०) कलम के तमाम रहस्यों और लौह (तख्ती) के लेखों, संक्षेप में पहले दिन से आखिरी दिन तक 'मा काना व मा यकून' (जो हो चुका और जो होने वाला है) जो लौहे महफ़ूज़ में दर्ज है और उससे भी बहुत अधिक के जानने वाले हैं। इसमें कयामत के बाद के मामले तो तमाम पांचों बातों में शामिल हैं, और

कयामत के बारे में यदि यह सिद्ध हो जाए कि उसके समय का निर्धारण भी लौह में दर्ज है, तो वह भी शामिल है, वरना दोनों संभावनाएं हैं।

(११) हुज़ूर पुरनूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को रूह (आत्मा) की हकीकत का भी इल्म है।

(१२) कुरान के तमाम मुतशाबिहात (अलंकारिक आयतें) का भी इल्म है। ये पांचों मसले तीसरी किस्म से हैं जिनमें स्वयं अहले सुन्नत के उलमा और आइम्मा के बीच मतभेद रहा है, जिसका विवरण अल्लाह की मदद से जल्द ही स्पष्ट होगा। इनमें सकारात्मक या नकारात्मक पक्ष रखने वाले किसी पर भी, माज़अल्लाह, कुफ्र तो क्या गुमराही या फिस्क (पाप) का हुक्म भी नहीं लगाया जा सकता, बशर्ते कि वह पहले सात मसलों पर ईमान रखता हो।

पृष्ठ ४१६ / ७५०

علم اقدس سے ہر گز وسیع تر نہیں۔

(۴) جو علم اللہ عزوجل کی صفتِ خاصہ ہے جس میں اُس کے حبیب محمد رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کو شریک کرنا بھی شرک ہو وہ ہر گز ابلیس کے لیے نہیں ہو سکتا جو ایسا مانے قطعاً مشرک کافر ملعون بندہ ابلیس ہے۔

(۵) زید و عمرو ہر بچے پاگل، چوپائے کو علم غیب میں محمد رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کے مماثل کہنا حضور اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کی صریح توہین اور کھلا کفر ہے، یہ سب مسائل ضروریاتِ دین سے ہیں اور اُن کا منکر ان میں ادنٰی شک لانے والا قطعاً کافر، یہ قسم اول ہوئی۔

(۶) اولیاءِ کرام نفعنا اللہ تعالٰی ببرکاتہم فی الدارین کو بھی کچھ علومِ غیب ملتے ہیں مگر بوساطتِ رسل علیہم الصلوٰۃ والسلام۔ معتزلہ خذ لھم اللہ تعالٰی کہ صرف رسولوں کے لیے اطلاعِ غیب مانتے اور اولیاءِ کرام رضی اللہ تعالٰی عنھم کا علومِ غیب کا اصلاً حصہ نہیں مانتے گمراہ و مبدع ہیں۔

(۷) اللہ عزوجل نے اپنے محبوبوں خصوصاً سید المحبوبین صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کو غیوبِ خمسہ سے بہت جزئیات کا علم بخشا جو یہ کہے کہ خمس میں سے کسی فرد کا علم کسی کو نہ دیا گیا ہزار ہا احادیث متواترۃ المعنٰی کا منکر اور بد مذہب خاسر ہے، یہ قسم دوم ہوئی۔

(۸) رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کو تعیینِ وقتِ قیامت کا بھی علم ملا۔

(۹) حضور کو بلا استثناء جمیع جزئیاتِ خمس کا علم ہے۔

(۱۰) جملہ مکنوناتِ قلم و مکتوباتِ لوح با لجملہ روزِ اول سے روزِ آخر تک تمام ما کان وما یکون مندرجہ لوح محفوظ اور اس سے بہت زائد کا عالم ہے جس میں ماورائے قیامت تو جملہ افرادِ خمس داخل اور درباره قیامت اگر ثابت ہو کہ اس کی تعیینِ وقت بھی درجِ لوح ہے تو اسے بھی شامل، ورنہ دونوں احتمال حاصل۔

(۱۱) حضورِ پُر نور صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کو حقیقتِ روح کا بھی علم ہے۔

(۱۲) جملہ متشابہاتِ قرآنیہ کا بھی علم ہے، یہ پانچوں مسائل قسمِ سوم سے ہیں کہ ان میں خود علماء و آئمہ اہل سنت مختلف رہے ہیں جس کا بیان بعونہ تعالٰی عنقریب واضح ہوگا ان میں مثبت و نافی کسی پر معاذ اللہ کفر کیا معنی ضلال یا فسق کا بھی حکم نہیں ہو سکتا جب کہ پہلے سات مسئلوں پر ایمان

Volume 29 Fatawa Razawiyya

...possesses, and the denial of these five is not based on that disease of the heart which is in the impure hearts of the Wahhabis, may Allah Almighty destroy them, for they burn with jealousy at the virtues of Muhammad, the Messenger of Allah, peace and blessings of Allah be upon him, and walk the path of derogation and diminishment as much as possible. "In their hearts is a disease, so Allah has increased their disease" [Quran 2:10], and may there be the best pleasure from Allah Almighty for the People of the Sunnah, Ahmad Raza, Amen. (There is a disease in their hearts, so their disease increased, and for the Ahl-e-Sunnat, may there be best pleasure from Allah Almighty, Amen.)

The Deceptions of the Wahhabis

Now, see the deceptions of the Wahhabis.

Firstly: They learned that in the great city of Medina Tayyiba, the Mufti of the Shafi'is has a difference of opinion in some issues of the third category, following the literalists (Ahl-e-Zahir). The wicked ones' own difference was in issues of the first category—denying the essentials of religion and insulting the radiant presence of the Master of Messengers, peace and blessings of Allah be upon him. By doing so, they had already been established as kafir (disbelievers), apostates, and deserving of eternal curse by the clear fatwas of the Shafi'i Mufti and all the noble Muftis of the two Holy Sanctuaries. Immediately, they brought up a disagreement in the lightest, third category. They thought of two benefits: one, that since the issue is itself a matter of disagreement within the Ahl-e-Sunnat, quotes will be found on this side as well. This would give them room to create an uproar before the uninformed. The second, and biggest trick, is that they might get some writing from the Mufti which they could present, through verbal force and force of slander, as a compensation for "Husam al-Harmayn" and start shouting at the top of their lungs: "Come, debate on the Knowledge of the Unseen (Ilm-e-Ghayb)!" Say to these blind ones that issues of the first category are the fundamental principles of the issues of the Knowledge of the Unseen. O wicked ones! By denying them, you have already been established as disbelievers by the consensus of the scholars of the Two Holy Sanctuaries. Leaving those aside, where are you going towards the lightest issues of the third category, which are against us, the Ahl-e-Sunnat, ourselves? First become a Muslim, then touch upon any subsidiary issue. An example of this would be if some cursed one—Allah forbid—believes Allah Almighty to be composed of hands, feet, eyes, ears, flesh, skin,

and bones like ours, and when the people of Islam declare him a disbeliever, he takes cover behind the scholarly debate of Interpretation (Ta'wil) and Delegation (Tafwid) regarding the issues of 'Hand' and 'Eye'. To him, it will be said: "O clown of Iblis! You have already become a disbeliever by explicitly believing the Holy and Exalted Lord to have a body like yours. What relation do you have with this controversial issue of the Ahl-e-Sunnat? O donkey of Dajjal! First become a human, then a Muslim. Then ask about Delegation and Interpretation." O Muslims! This is the result of these wicked ones reciting [about] the Knowledge of the Unseen.

Destruction to them and He has made their deeds go astray.

ज़िल्द २९ फ़तावा रज़विय्या

...रखता हो और इन पाँच का इनकार उस मर्ज़-ए-क़ल्ब (दिल की बीमारी) की बिना पर न हो जो वहाबिया, क़ातलहुमुल अल्लाह तआला (अल्लाह उन्हें तबाह करे), के नजिस दिलों को है कि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के फ़ज़ाइल से जलते और जहाँ तक बन पड़े तन्क़ीस व कमी (अपमान) की राह चलते हैं, 'फ़ि क़ुलूबिहिम मरज़ुन फ़ज़ादहुमुल अल्लाहु मरज़ा' (उनके दिलों में बीमारी है, पस अल्लाह ने उनकी बीमारी बढ़ा दी)। और अहले सुन्नत के लिए अल्लाह अज्ज़वजल की तरफ़ से बेहतरीन रज़ा हो, अहमद रज़ा, आमीन। (उनके दिलों में बीमारी है उनकी बीमारी और बढ़ गई और अहले सुन्नत के लिए अल्लाह अज्ज़वजल की तरफ़ से बेहतरीन रज़ा हो, आमीन।)

वहाबिया की मकारियाँ

अब वहाबिया की मकारियाँ देखिए।

अव्वलन: उन्हें मालूम हुआ कि सरकार-ए-आज़म मदीना तय्यबा में मुफ़्ती-ए-शाफ़िया को बा-इत्तेबा-ए-अहले ज़ाहिर कुछ मसाइल क़िस्म-ए-सव्वम (तीसरी श्रेणी) में इख़्तिलाफ़ है। ख़बीसों का अपना इख़्तिलाफ़ तो मसाइल क़िस्म-ए-अव्वल में था, जहाँ उन्होंने ज़रूरीयात-ए-दीन का इनकार किया और हुज़ूर पुरनूर सय्यदुल मुर्सलीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की तौहीन करके ख़ुद को मुफ़्ती-ए-शाफ़िया और हरम के तमाम मुफ़्तियों के रौशन फ़तवों से काफ़िर, मुर्तद और दायमी लानत के मुस्तहिक साबित कर लिया था। उन्होंने फ़ौरन सबसे हल्की तीसरी श्रेणी के मसाइल में इख़्तिलाफ़ खड़ा कर दिया। उन्होंने इसके दो फ़ायदे सोचे: एक यह कि जब मसला ख़ुद अहले सुन्नत का इख़्तिलाफ़ी है, तो इधर भी इबारतें (हवाले) मिल जाएँगी, जिससे ना-वाक़िफ़ों के सामने शोर मचाने की गुंजाइश होगी। दूसरा और सबसे बड़ा हीला (बहाना) यह कि मुफ़्ती साहब से कोई तहरीर मिल जाएगी जिसे वे ज़बान और बोहतान (झूठ) के ज़ोर पर 'हुसामुल हरमैन' का मुआविज़ा (बदला) बना सकेंगे और गला फाड़कर चिल्लाना शुरू कर देंगे कि 'इल्म-ए-ग़ैब' पर मुनाज़रा (बहस) कर लो। इन अंधों से कहिए कि मसाइल क़िस्म-ए-अव्वल ही तो इल्म-ए-ग़ैब के असल उसूल हैं। ऐ ख़बीसों! तुम उनका इनकार करके हरमैन शरीफ़ैन के उलेमा के इजमा (आम सहमति) से काफ़िर ठहर चुके हो। उन्हें छोड़कर सबसे हल्के तीसरी श्रेणी के मसाइल की तरफ़ कहाँ जा रहे हो जो ख़ुद हमारे (अहले सुन्नत के) ख़िलाफ़ हैं? पहले मुसलमान तो बन जाओ, फिर किसी फ़ई (गौण) मसले को छेड़ना।

इसकी मिसाल ऐसी है जैसे कोई मलऊन, माज़अल्लाह, अल्लाह अज्ज़वजल के लिए हमारे जैसे हाथ, पाँव, आँख, कान, गोश्त, खाल और हड्डियों का वजूद माने, और जब अहले इस्लाम उसे काफ़िर कहें, तो वह 'यदु' (हाथ) और 'ऐन' (आँख) के इख़्तिलाफ़ी मसले में तावील (व्याख्या) और तफ़वीज़ (सौंपना) की आड़ ले। उससे यही कहा जाएगा कि ऐ इबलीस के मसखरे! तू तो साफ़ तौर पर उस पाकीज़ा रब्ब को अपने जैसा जिस्म मानकर काफ़िर हो चुका है, तेरा अहले सुन्नत के इस इख़्तिलाफ़ी मसले से क्या लेना-देना? ऐ दज्जाल के गधे! पहले आदमी तो बन, फिर मुसलमान बन। उसके बाद तफ़वीज़ और तावील पूछना। ऐ मुसलमानों! इन ख़बीसों के इल्म-ए-ग़ैब रटने का यही नतीजा है।

तअसा लहुम व अज़ल्ला (उनके लिए हलाकत हो और उनके आमाल बर्बाद हो जाएँ)।

पेज ४१७ ऑफ़ ७५०

رکھتا ہو اور ان پانچ کا انکار اُس مرضِ قلب کی بنا پر نہ ہو جو وہابیہ قاتلہم اللہ تعالیٰ کے نجس دلوں کو ہے کہ محمد رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کے فضائل سے جلتے اور جہاں تک بنے تنقیص و کمی کی راہ چلتے ہیں،فی قلوبہم مرض فزادھم اللہ مرضا ولا ھل السنۃ من اللہ احمد رضا آمین ۔(ان کے دلوں میں بیماری ہے ان کی بیماری اور بڑھ گئی اور اہل سنت کے لیے اللہ عزوجل کی طرف سے بہترین رضا ہو ، آمین ات)

وہابیہ کی مکاریاں

اب وہابیہ کی مکاریاں دیکھیئے۔ اولاً: انہیں معلوم ہوا کہ سرکارِ اعظم مدینہ طیبہ میں مفتی شافعیہ کو باتباع اہلِ ظاہر بعض مسائل قسم سوم میں خلاف ہے، خبیثاء کا اپنا خلاف تو مسائل قسم اول میں تھا انکار ضروریاتِ دیں و توہینِ حضور پر نور سید المرسلین صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کر کے خود انہیں مفتی شافعیہ و جملہ مفتیانِ کرام ہر دو حرم محترم کے روشن فتووں سے کافر مرتد مستحق لعنتِ ابد ٹھہر چکے تھے، جھٹ سب سے ہلکی قسم سوم میں خلاف لاڈالا۔ دو فائدے سوچ کر ایک یہ کہ جب مسئلہ خود اہلسنت کا اختلافیہ ہے تو ادھر بھی عبارات مل جائیں گی۔ ناواقفوں کے سامنے غل مچانے کی گنجائش تو ہو گی، دوسرے سب سے بڑا حیلہ یہ کہ مفتی صاحب سے کوئی تحریر ہاتھ آسکے گی جسے بزورِ زبان وزورِ بہتان حسام الحرمین کا معاوضہ ٹھہرا سکیں اور گلے پھاڑ کر چیخنا شروع کیا کہ علمِ غیب میں مناظرہ کرلو۔ ہیے کی پھوٹوں سے کہیے کہ مسائل قسم اول تو اصل الاصول مسائل علمِ غیب ہیں۔ خبیثو! تم ان کے منکر ہو کر باجماع علمائے حرمین شریفین کافر ٹھہر چکے ہو۔ انہیں چھوڑ کر سب سے ہلکے مسائل قسم سوم کی طرف کہاں رہے جاتے ہو جو خود ہم اہلسنت کے خلاف یہ ہیں۔ پہلے مسلمان تو ہولو پھر کسی فرعی مسئلہ کو

چھیڑو۔ اس کی نظیر یہی ہو سکتی ہے کہ کوئی ملعون معاذ اللہ اللہ عزوجل کے لیے ہمارے ہی سے ہاتھ، پاؤں، آنکھ، کان، گوشت، پوست، استخواں سے مرکب مانے، اور جب اہلِ اسلام اس کی تکفیر کریں تو ید و عین میں مسئلہ خلافیہ تاویل و تفویض میں بحث کی آڑ لے، اس سے یہی کہا جائے گا کہ ابلیس کے مسخرے تو تو صراحتاً اُس قدوس متعالی عزجلالہ کو اپنا سا جسم مان کر کافر ہو چکا ہے تجھ سے اور اس مسئلہ خلافیہ اہلسنت سے کیا علاقہ۔ دجال کے گدھے پہلے آدمی تو بن مسلمان تو ہو ۔ پھر تفویض و تاویل پوچھیو، مسلمانو! ان خبیثاء کے علمِ غیب رٹنے کا یہ حاصل ہے۔

تعسالھم واضل

A'maluhum (May destruction fall upon them and may Allah ruin their deeds. -T)

Secondly: After devising these plans within himself, he appointed a defeated, disgraced, sinful, and criminal individual [named] Zangi Kafur (who, by the help of Allah Almighty, had already been disappointed, frustrated, humiliated, and disgraced in Makkah al-Mukarramah to the extent that the noble scholars of the Haram Sharif had changed his name to 'Mahsoom' [the disgraced one]). It was determined that since his schemes did not work in Makkah al-Mukarramah—as the lights of knowledge from the Reviver of Religion and Community (Ala Hazrat) had illuminated the streets of the Haram Sharif and the noble scholars there, by the help of the King, the All-Knowing, would not come near him—[he thought] the sun of "Al-Daulat al-Makkiyya bil-Madat al-Ghaibiyya (1323 AH)" has not yet risen in the Great City of Madinah al-Tayyibah, and the Shafi'i Mufti has doubts about the [issue of] Khums. Let's play our game there. Mahsoom is a criminal; a sensible person would realize how such a small thing could be a balm for the deep, agonizing internal wounds caused by the tragedy of disbelief and apostasy of his beloved ones. At most, the issue itself is a matter of difference within the Ahl al-Sunnah; the Mufti would write his preferred opinion and declare the other opinion as against investigation. This has been happening among the Imams and scholars since the time of the Sahabah (Companions) until today and will continue. How would that serve the purpose? Therefore, some "salt and pepper" was added to it: [claiming] that Ala Hazrat, the Reviver of Religion and Nation, in his treatise, established that the knowledge of the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) encompasses all infinite Divine information bil-fi'l (in actuality), except for the knowledge of the Essence and Attributes of Allah, and in this encompassment, he stated that the only difference between Divine knowledge and Prophetic knowledge is that of pre-eternity (qidam) and contingency (huduth).

The fruit of the perfect wrath of Allah upon the fabricators is that they attributed these fabricated things to Ala Hazrat's treatise, which contains a clear and brilliant refutation of these falsehoods, as will be mentioned soon with Allah's help. Had there been no mention of these things in the treatise, even then attributing them to him would have been a wicked slander. But to attribute to him the very things that are clearly and explicitly refuted in the treatise by name is like some cursed person saying that the Great Quran has described Jesus Christ as God: "Indeed, Allah is the Messiah, the son of Mary" (1). (Truly, Allah is the Messiah, son of Mary. -T). To such a

person, it would be said: O cursed, insane one, captivated by Iblis (Satan), look carefully! Does the Great Quran say this, or was it revealed as a refutation, stating:

Annotation 1: Ma'thoom - A punished criminal whom God has brought to his deserved end. 12.

Footnote 1: Al-Quran al-Karim 5/17

आमालहुम (उन पर तबाही पड़े और अल्लाह उनके आमाल बर्बाद करे। -त)

द्वितीय: अपने मन में ये मंसूबे गाँठकर एक पराजित, अपमानित, पापी और अपराधी व्यक्ति (जिसे मक्का मुकर्रमा में अल्लाह तआला की सहायता से असफलता, निराशा और अपमान का सामना करना पड़ा था, यहाँ तक कि हरम शरीफ के विद्वानों ने उसका नाम बदलकर 'महसूम' [अपमानित] रख दिया था) को नियुक्त किया। यह तय किया गया कि मक्का मुकर्रमा में तो उसकी दाल नहीं गली क्योंकि दीन और मिल्लत के पुनरुद्धारक (आला हज़रत) के ज्ञान के प्रकाश ने हरम शरीफ की गलियों को रोशन कर दिया है और यहाँ के विद्वान अल्लाह की मदद से उसके पास भी नहीं फटकेंगे। [उसने सोचा] अभी मदीना तय्यबा में "अल-दौलतुल मक्किया बिल-मादतुल गैबिया (1323 हिजरी)" का सूरज उदय नहीं हुआ है और शाफ़ई मुफ़्ती को 'खुम्स' के बारे में संदेह है ही, वहीं अपना खेल खेलें। महसूम अपराधी है; एक बुद्धिमान व्यक्ति समझ जाएगा कि इतने भर से उसके प्रियजनों के कुफ्र और धर्मत्याग (इर्तिदाद) की त्रासदी के गहरे, दर्दनाक आंतरिक घावों का मरहम कैसे होगा? अधिक से अधिक यह मामला स्वयं अहले सुन्नत के बीच मतभेद का होगा; मुफ़्ती साहब अपना पसंदीदा विचार लिख देंगे और दूसरे विचार को शोध के विरुद्ध बता देंगे। यह तो सहाबा के समय से लेकर आज तक इमामों और विद्वानों के बीच होता आया है और होता रहेगा। इससे क्या काम चलेगा? इसलिए इसमें कुछ 'नमक-मिर्च' मिलाया गया: [यह दावा करते हुए] कि आला हज़रत मुजद्दिद-ए-दीन-ओ-मिल्लत ने अपने शोधपत्र में रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के ज्ञान को अल्लाह की ज़ात और सिफ़ात (गुणों) के ज्ञान के अलावा सभी अनंत दैवीय जानकारियों को वास्तव में (बिल-फ़िल) पूर्ण रूप से घेरने वाला (मुहीत) ठहराया है, और इस घेराव में दैवीय ज्ञान और नबवी ज्ञान के बीच केवल प्राचीनता (क़िदम) और नवीनता (हुदूस) का अंतर बताया है।

झूठ गढ़ने वालों पर अल्लाह के पूर्ण प्रकोप का फल यह है कि उन्होंने ये मनगढ़ंत बातें आला हज़रत के शोधपत्र की ओर मन्सूब (संबद्ध) कर दीं, जिसमें इन झूठों का स्पष्ट और शानदार खंडन (रद्द) मौजूद है, जिसका उल्लेख अल्लाह की सहायता से जल्द ही आएगा। यदि शोधपत्र में इन बातों के बारे में हाँ या ना कुछ भी न होता, तो भी उन्हें उनकी ओर मन्सूब करना एक घृणित मिथ्यारोप होता। लेकिन जिन बातों का शोधपत्र में नाम लेकर स्पष्ट रूप से खंडन किया गया है, उन्हीं को उनकी ओर मन्सूब कर देना ठीक वैसा ही है जैसे कोई शापित व्यक्ति कहे कि महान कुरान में ईसा मसीह को खुदा लिखा गया है: "बेशक अल्लाह ही मसीह इब्न मरियम है" (1)। (बेशक अल्लाह मसीह इब्न मरियम ही है। -त)। ऐसे व्यक्ति से यही कहा जाएगा कि ओ शापित, पागल, शैतान (इबलीस) के

वशीभूत व्यक्ति, देख तो सही कि क्या महान कुरान में ऐसा कहा गया है या इसका खंडन करते हुए यह फ़रमाया गया है कि:

एनोटेशन 1: माथूम - एक सजायाफ्ता अपराधी जिसे ईश्वर ने उसके अंजाम तक पहुँचा दिया है। 12.

फुटनोट 1: अल-कुरान अल-करीम 5/17।

اعمالھم (ان پر تباہی پڑے اور اللہ ان کے اعمال برباد کرے۔ ت)

ثانیا: پیش خویش یہ منصوبے گانٹھ کر ایک مقہور محصوم آثم ماثوم ع ۱ زنگی کافور موسوم کو (کہ مکہ معظمہ میں بعون اللہ تعالی خائب و خاسر و ذلیل و محصوم ہو چکا تھا یہاں تک کہ علمائے کرام حرم شریف نے اس کا نام ہی بدل کر محصوم رکھ دیا تھا۔) متعین کیا کہ مکہ معظمہ میں تو چل پچ نہ چلا مجدد دین وملت کے انوار علم نے حرم شریف کے کوچے کو جگمگا دیا ہے یہاں کے علمائے کرام بعون الملک العلام قریب میں نہ آئیں گے سرکار اعظم مدینہ طیبہ میں ہنوز "الدولۃ المکیۃ بالمادۃ الغیبیۃ (۱۳۲۳ھ)" کا آفتاب طالع نہیں ہوا اور مفتی شافعیہ کو خمس میں اشتباہ ہے ہی وہاں جل کھیلیں، محصوم ماثوم ہے، ذی ہوش سمجھا کہ اس قدر سے اپنی جگری چہیتوں کفر و ارتداد کی مصیبت بیتون کے اندرونی گہرے زخم جانکاہ کا کیا مرہم ہو گا کہ مسئلہ خود اہلسنت کا خلافیہ ہے بڑھ سے بڑھ اتنا ہو گا کہ مفتی صاحب اپنا قول مختار لکھ دیں اور دوسرے قول کو خلاف تحقیق بتائیں، یہ تو آئمہ و علماء میں صحابہ کرام کے وقت سے آج تک برابر ہوتا آیا ہے اور ہوتا رہے گا اس سے کیا کام چلے گا، لہذا اس میں یہ نمک مرچ ملائے گئے کہ اعلیحضرت مجدد دین وملت نے اپنے رسالہ میں علم رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم کو سوا علوم ذات و صفات الہی کے جملہ معلومات الہیہ غیر متناہیہ بالفعل کو بتفصیل تام محیط ٹھہرایا اور اس احاطہ میں علم الہی و علم نبوی میں صرف قدم و حدوث کا فرق بتایا ہے۔

مفتریوں پر کمال قہر الہی کا ثمرہ یہ کہ یہ من گھڑت باتیں رسالہ اعلیحضرت کی طرف نسبت کیں جس میں صراحۃ ان اباطیل کا روشن رد ہے جس کا ذکر بعونہ تعالی عنقریب آتا ہے رسالے میں اگر ان باتوں کی نسبت ہاں و نہ، کچھ نہ ہوتا تو ان کا اس کی طرف منسوب کرنا سخت خبیث افتراء تھانہ کہ رسالے میں بتصریح نام روشن و واضح طور پر جن باتوں کا رد ہوا انہیں کو اس کی طرف

نسبت کر دیا جائے اس کی نظیر یہی ہو سکتی ہے کہ کوئی ملعون کہے قرآن عظیم میں عیسیٰ مسیح کو خدا لکھا ہے "اِنَّ اللّٰہَ ھُوَ الْمَسِیْحُ ابْنُ مَرْیَمَ ط" ۱۔ (بے شک اللہ مسیح ابن مریم ہی ہے۔ ت) اس سے یہی کہا جائے گا کہ او ملعون مجنون ابلیس کے مفتون سوجھ کر قرآن عظیم میں ایسا فرمایا ہے یا اس کا رد ارشاد ہوا ہے کہ :

ع ۱ : ماثوم مجرم سزا یافتہ کہ خدائے کیفر کردارش بکنارش نہاد ۱۲۔

۱ القرآن الکریم ۱۷/۵

Fatawa Razawiyya Volume 29

"Indeed, those who say that Allah is the Messiah, the son of Mary, have disbelieved. Say, 'Then who has any power against Allah if He intended to destroy the Messiah, the son of Mary, and his mother and everyone on earth altogether?'" 1- Without doubt, they are disbelievers who call Christ son of Mary God. You say, 'Does anyone have any authority over Allah if He should intend to destroy Christ son of Mary, his mother, and all the inhabitants of the earth?'

Alahazrat authored this blessed treatise in Makkah al-Mukarramah. The prominent scholars of Makkah desired to take copies of it. Regarding the first part of this treatise, Mr. Mufti Barzanji had it read and said, "Sunni, God forbid! A thousand times God forbid! Never is it reasonable or acceptable that, God forbid, the praised personage himself would carve out such most foul and impure cursed slanders, or consider their carving permissible. Rather, surely these blind-hearted ones took advantage of the outward blindness of this sacred Mufti, and some deceptive act of fraud, distortion, or alteration was carried out."

"Only they invent falsehood who do not believe." 2- (Only those fabricate who do not have faith. T) Their old... "Those who spread rumors in Medina." 3- (Those who spread lies in Medina. T) Found their trace... "And those who have wronged are going to know to what [kind of] return they will be returned." 4- (And now the wrongdoers want to know on which side they will turn. T)

Thirdly: The wicked ones ate and didn't even lose their cheeks: Mufti sahib gave the same ruling on these fabricated statements that it is an incorrect and baseless audacity against the interpretation of the Quran. The hearts of the entire group of wretches were torn apart, saying 'alas, alas', they brought down God's wrath upon themselves in the city of the Prophet and nothing worked. Now in Rampur, Bareilly, Deoband, Thana Bhawan, Nanauta, Gangoh, Delhi, Punjab, etc., all the five-member hidden committees gathered and passed an opinion: 'O satanic mockers! Lament and grieve. The machine of fabrication is running in your own homes. You had fabricated lies against the Mujaddid of the nation; why do you die fabricating them against Mufti sahib?' Consequently, in the first fabrication, the exception regarding the knowledge of the Essence and Attributes of Allah that was kept, was also removed from their own published treatise 'Ghait-ul-Mamul'. Mr. Munawwar Ali Rampuri & Co., who are the publishers and printers of this treatise 'Ghait-ul-Mamul', Muslims should

first observe their broad daylight theft and arrogance. On page 3 of the treatise, Mufti sahib...

1. Al-Qur'an al-Karim 5 / 17
2. Al-Qur'an al-Karim 16 / 105
3. Al-Qur'an al-Karim 33 / 60
4. Al-Qur'an al-Karim 26 / 227

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

"बेशक काफ़िर हैं वह जो कहते हैं कि अल्लाह ही मसीह इब्ने मरयम है। तुम फ़रमा दो कि फिर अल्लाह पर किसका इख़्तियार है अगर वह मसीह इब्ने मरयम और उनकी माँ और तमाम ज़मीन वालों को फ़ना कर देना चाहे?" 1- बेशक काफिर हैं वह जो मसीह इब्न मरयम को खुदा कहते हैं। तुम फरमा दो कि किसी को अल्लाह पर कुछ अधिकार है अगर वह मसीह इब्न मरयम और उनकी माँ और तमाम धरती वालों को नष्ट कर देना चाहे?

आला हज़रत ने यह मुबारक रिसाला मक्का मुअज़्ज़मा में तसनीफ़ फ़रमाया। मक्का के बड़े उलेमा ने ख़्वाहिश करके इसकी नकलें लीं। इस रिसाले की पहली किस्म जनाब मुफ्ती बरज़ंजी साहब ने पढ़वाई और कहा, "सुन्नी, हश लिल्लाह! हज़ार-हज़ार बार हश लिल्लाह! हरगिज़ माकूल व मक़बूल नहीं कि मुआज़ अल्लाह ख़ुद हज़रत ममदूह ऐसे निहायत ही नापाक और लानती बोहतान गढ़ें या उनका गढ़ना जायज़ समझें। बल्कि यक़ीनन इन दिल के अंधों ने इस मुक़द्दस मुफ्ती की ज़ाहिरी नाबीनाई (अंधेपन) का फ़ायदा उठाया और धोखे, फरेब या तहरीफ़ (फेरबदल) की कोई न कोई कार्रवाई की गई।"

"झूठ तो वही गढ़ते हैं जो ईमान नहीं रखते।" 2- (इफ़्तरा वही बांधते हैं जो ईमान नहीं रखते। त) अपने पुराणों... "मदीना में अफ़वाहें फैलाने वाले।" 3- (मदीना में झूठ उड़ाने वालों। त) का सुराग पाया... "और ज़ालिमों को जल्द ही पता चल जाएगा कि वे किस ओर पलटे जाते हैं।" 4- (और अब ज़ालिम जानना चाहते हैं कि किस करवट पर पलटा खाएंगे। त)

तीसरा: ख़बीसों ने खाया भी और गाल भी नहीं कटा: मुफ्ती साहब ने इन झूठे बयानों पर भी यही हुक्म दिया कि यह ग़लत और क़ुरान की तफ़सीर पर बिना दलील की जुर्रत है। बदबख़्तों की पूरी जमात की छातियाँ फट गईं कि हाय-हाय रसूल के शहर में ख़ुदा का क़हर सर पर ले लिया और कुछ काम न चला। अब रामपुर, बरेली, देवबंद, थाना भवन, अनबैठा, गंगोह, दिल्ली, पंजाब वग़ैरह की तमाम ग़ैबी कमेटियाँ इकट्ठी हुईं और राय पास हुई कि ऐ इब्लीसी मज़ाक़िया! तुम मातम करो। अरे, झूठ की मशीन तो तुम्हारे घर में चल रही है। मुजद्दिद-ए-मिल्लत पर बोहतान गढ़े थे, अब मुफ्ती साहब पर गढ़ते हुए क्यों मरे जा रहे हो? लिहाज़ा, पहले बोहतान में जो अल्लाह की ज़ात व सिफ़ात के इल्म का इस्तिसना (अपवाद) रखा था, अपने ही छपे हुए रिसाले 'ग़ायतुल मामूल' से उसे भी निकाल दिया। जनाब मुनव्वर अली रामपुरी एंड कंपनी, जो इस रिसाले 'ग़ायतुल मामूल' के लाने और छापने वाले हैं,

मुसलमान सबसे पहले उन्हीं की दिन-दहाड़े चोरी और सीनाज़ोरी मुलाहिज़ा फरमाएँ। रिसाले के सफ़ा 3 पर मुफ्ती साहब...

1. अल-कुरान अल-करीम 5 / 17
2. अल-कुरान अल-करीम 16 / 105
3. अल-कुरान अल-करीम 33 / 60
4. अल-कुरान अल-करीम 26 / 227

पृष्ठ 419 का 750

فتاوی رضویہ جلد ۲۹

"لَقَدْ كَفَرَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْمَسِيْحُ ابْنُ مَرْيَمَ ؕ قُلْ فَمَنْ يَّمْلِكُ مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا اِنْ اَرَادَ اَنْ يُّهْلِكَ الْمَسِيْحَ ابْنُ مَرْيَمَ وَ اُمَّهٗ وَ مَنْ فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا ؕ" 1- بے شک کافر ہیں وہ جو مسیح ابن مریم کو خدا کہتے ہیں تم فرمادو کہ کسی کو اللہ پر کچھ اختیار ہے اگر وہ مسیح ابن مریم اور انکی ماں اور تمام اہل زمین کو فنا کر دینا چاہیے۔

اعلیٰحضرت نے یہ مبارک رسالہ مکہ معظمہ میں تصنیف فرمایا اکابر علمائے مکہ نے خواہش کرکے اس کی نقلیں لیں اس رسالہ کی قسم اول جناب مفتی برزنجی صاحب نے پڑھوا کر سنی حاش للہ ہزار ہزار بار حاش للہ زنہار معقول و مقبول نہیں کہ معاذ اللہ خود حضرت ممدوح ایسے اخبث انجس افترائے ملعون تراشیں یا ان کا تراشناروار رکھیں بلکہ ضرور ضرور ان دل کے اندھوں نے اس مقدس مفتی کی ظاہری نابینائی سے فائدہ اٹھایا اور کوئی نہ کوئی کارروائی دھوکے فریب یا تحریف تصحیف کی عمل میں لائی گئی۔

"اِنَّمَا يَفْتَرِى الْكَذِبَ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ" 2- (افتراء وہی باندھتے ہیں جو ایمان نہیں رکھتے۔ ت) اپنے پرانوں "الْمُرْجِفُوْنَ فِي الْمَدِيْنَةِ" 3- (مدینہ میں جھوٹ اڑانے والوں۔ ت) کاتر کہ پایا "وَ سَيَعْلَمُ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا اَىَّ مُنْقَلَبٍ يَّنْقَلِبُوْنَ" 4- (اور اب جانا چاہتے ہیں ظالم کہ کس کروٹ پر پلٹا کھائیں گے۔ ت)

ثالثاً: خبیثاء نے کھایا بھی اور گال بھی نہ کٹا: مفتی صاحب نے ان افترائی اقوال پر بھی اتنا ہی حکم دیا کہ غلط اور تفسیر قرآن پر بے دلیل جرات ہے اشقیاء کے طائفہ بھر کی چھاتیاں پھٹ گئیں کہ ہائے ہائے رسول کے شہر میں خدا کا قہر سر پر اوڑھا اور کچھ کام نہ چلا۔ اب رامپور، بریلی، دیوبند، تھانہ بھون، انبیٹھ گنگوہ، دہلی، پنجاب وغیرہ کے سب پنچ غیب جڑ جڑا کر کمیٹیاں ہوئیں

اور رائے پاس ہوئی کہ ابلیسی مسخرو! تم اور غم کرو۔ ارے افترا کی مشین تو تمہارے گھر چل رہی ہے۔ مجدد ملت پر افترا جوڑے تھے حضرت مفتی صاحب پر جوڑتے ہوئے کیوں مرے جاتے ہو، بنابر آں پہلے افتراء میں وہ جو علوم ذات و صفات الہی کا استثناء رکھا تھا اپنے ہی چھپے ہوئے رسالے غایۃ المامول سے اسے بھی اڑا دیا جناب منور علی رامپوری اینڈ کو جو اس رسالہ غایۃ المامول کے لانے والے چھاپنے والے ہیں مسلمان سب سے پہلے انہیں کی دن دہاڑے چوری اور سینہ زوری ملاحظہ فرمائیں۔ رسالے کے صفحہ ۳ پر مفتی صاحب

1 القرآن الکریم ۵ / ۱۷ 2 القرآن الکریم ۱۶ / ۱۰۵ 3 القرآن الکریم ۳۳ / ۶۰ 4 القرآن الکریم ۲۶ / ۲۲۷

Fatawa-e-Razawiyyah, Volume 29

(They) printed the following statement attributed to him:

[Arabic Box Text]: ذهب فيها الى صلى الله تعالىٰ عليہ وسلم علمه محيط بكل شيئ حتى المغيبات الخمس وانه لايستثنى من ذلك الا العلم المتعلق بذات الله تعالى وصفاته۔ [Urdu Translation in Box]: His belief is that the knowledge of the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) encompasses everything, even the five hidden matters, and he does not exempt any knowledge from it except the knowledge related to the Essence and Attributes of Allah Almighty. (T)

In this, there is a clear exemption of knowledge related to the Divine Essence and Attributes. Yet, a fabricated summary translation of this statement was printed at the end of the book as follows: "The knowledge of the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) is also encompassing in the same way as that of Allah Almighty, and there is no difference between your knowledge and Allah Almighty's knowledge except for origination (haduth) and eternity (qidam)."

Observe how the exemption of the knowledge of the Essence and Attributes was suddenly removed. And the slander of considering all Divine information to be encompassed by Prophetic knowledge without any exception was fabricated. Poor religious people often concoct slanders; there is no complaint about that, but... (Persian Verse): How brave is the thief who carries a lamp in his hand! (Urdu Translation of Verse): How daring the thief is that he holds a lamp in his hand. (T)

This matter has a different flavor altogether; they distort the book and print it on the back of the same book, and then brazenly confront the Muslims in the market. What is the use of saying 'fie, fie, fie' when there is no fear of God's curse left? Then what to complain about this trickery, that they attributed this statement to the Mufti: "Announcing about a treatise in which he went...", the clear implication of which is that this subject matter is in that treatise. Whereas, in the treatise itself, a clear refutation of this is written. And the leader of the internal Najdi faction [Footnote: In Ismail Dehlvi's Sirat-e-Mustaqeem], the innocent low-life full moon of the sky of lies and fabrication, concocts its translation thus: "He informed me of his other treatise on the knowledge of the unseen and stated this claim." That is, this claim was made in a verbal statement, not in the treatise.

So that no one can deliver a slap with the treatise, the liar claims the slanderer wrote this saying in the treatise or refuted it. Then what to complain about this small

distortion that they attributed this statement to the Mufti: "So there was no effort in explaining that the mentioned verse does not indicate his claim with definitive indication."

Footnote: In Ismail Dehlvi's Sirat-e-Mustaqeem.

फतावा रज़विया, खंड 29

उनकी ओर जो इबारत (कथन) मंसूब (श्रेय) की गई, वह यह छपी है:

[अरबी बॉक्स]: ذهب فيها الى صلى الله تعالىٰ عليہ وسلم علمه محيط بكل شيئ حتى المغيبات الخمس وانه لايستثنى من ذلك الا العلم المتعلق بذات الله تعالى وصفاته۔ [उर्दू अनुवाद बॉक्स]: उनका अकीदा यह है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का इल्म (ज्ञान) हर चीज़ को घेरे हुए है यहाँ तक कि पांच छुपी हुई चीज़ों (मुग़य्यिबात-ए-खम्स) को भी, और वह अल्लाह तआला की ज़ात (अस्तित्व) और सिफ़ात (गुणों) से संबंधित इल्म के अलावा किसी भी इल्म को इससे अलग (मुस्तस्ना) नहीं करते। (त)

जिसमें खुदा की ज़ात और खुदा की सिफ़ात से मुताल्लिक इल्म का साफ़ तौर पर इस्तस्ना (अपवाद) मौजूद है। और इस इबारत के मनगढ़ंत खुलासे का अनुवाद किताब के अंत में इस तरह छापा गया कि "रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का इल्म भी वैसा ही घेरे हुए है जैसा अल्लाह तआला का, और आपके इल्म और अल्लाह तआला के इल्म में सिवाए हुदूथ (उत्पन्न होना) और क़िदम (सनातन होना) के कोई फ़र्क़ नहीं है।"

ग़ौर करें कि कैसे ज़ात और सिफ़ात के इल्म का अपवाद अचानक उड़ा दिया गया। और बिना किसी अपवाद के सभी ईश्वरीय जानकारियों को नबी के इल्म के दायरे में मानने का झूठा इल्ज़ाम गढ़ दिया गया। बेचारे दीनदार लोग अक्सर झूठ गढ़ते रहते हैं, उसका कोई गिला नहीं है लेकिन... (फ़ारसी शेर): वह चोर कितना बहादुर है जिसके हाथ में चिराग है! (शेर का उर्दू अनुवाद): चोर कितना दिलेर है कि हाथ में चिराग रखता है। (त)

इसका अंदाज़ ही कुछ और है, जिस किताब में बदलाव करें उसी के पीछे उसे छाप दें और फिर सरे बाज़ार मुसलमानों को आँखें दिखाएं। 'थू-थू' कहने से क्या होता है जब खुदा की लानत का ही डर नहीं रहा। फिर इस चालाकी की क्या शिकायत कि मुफ़्ती साहब की तरफ यह इबारत मंसूब की "अल-अलनी अला रिसालतिन ज़हाबा फ़ीहा", जिसका साफ़ मतलब यह है कि यह विषय उस रिसाले (लेख) का है, जबकि रिसाले में इसका साफ़ खंडन लिखा है। और बातिनी नजदी गिरोह के इमाम [पादटिप्पणी: इस्माइल देहलवी की सिरात-ए-मुस्तकीम में], झूठ और बनावट के आसमान के रोशन चाँद ने इसका अनुवाद इस तरह गढ़ा है: "अपने दूसरे रिसाले इल्म-ए-ग़ैब की मुझे ख़बर दी और उसका यह मुद्दा बयान किया।" यानी यह मुद्दा ज़बानी बयान में था न कि रिसाले में।

ताकि कोई रिसाले का सुबूत देकर झूठ बोलने वाले को आईना न दिखा सके, तो झूठ बोलने वाले ने कहा कि मुफ़्ती ने यह बात रिसाले में लिखी है या इसका खंडन किया है। फिर इस छोटी सी काट-छाँट का क्या गिला कि मुफ़्ती साहब की तरफ यह इबारत मंसूब की "फ़लम अल-जुहदु फ़ी बयानी अनल आयतुल मज़्कूरता ला तदुल्लु अला मुद्दआहु दलालातन कतइयतन"।

पादटिप्पणी: इस्माइल देहलवी की सिरात-ए-मुस्तकीम में।

पृष्ठ 420 का 750

کی طرف منسوب عبارت تو یہ چھاپی :

[عربی عبارت]: ذهب فیها الی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم علمه محیط بکل شیئ حتی المغیبات الخمس وانه لایستثنی من ذلك الا العلم المتعلق بذات اللہ تعالی وصفاته۔ [ترجمہ]: اس کا عقیدہ یہ ہے کہ نبی کریم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کا علم ہر شے کو محیط ہے حتی کہ مغیبات خمسہ کو بھی، اور وہ اللہ تعالٰی کی ذات و صفات سے متعلق علم کے سوا کسی علم کو اس سے مستثنٰی نہیں کرتا۔ (ت)

جس میں علم متعلق بذات الٰہی و صفات الٰہی کا صریح استثناء موجود ہے اور اس عبارت کے منگھڑت خلاصہ کا ترجمہ آخر کتاب میں یوں چھاپا کہ "رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کا علم بھی ایسا ہی محیط ہے جیسے اللہ تعالٰی کا اور آپ کے علم اور اللہ تعالٰی کے علم میں کوئی فرق نہیں سوائے حدوث و قدم کے"۔ ملاحظہ ہو کہ وہ علم ذات و صفات کا استثناء یک لخت اڑ گیا۔ اور بلا استثناء جمیع معلومات الٰہی کو علمِ نبوی محیط ماننے کا بہتان جڑ گیا۔ بیچارہ دین لوگ اکثر افتراء گانٹھا کرتے ہیں اس کا کچھ گلہ نہیں مگر۔ ع چہ دلاور است دزدے کہ بکف چراغ دارد (چور کتنا دلیر ہے کہ ہاتھ میں چراغ رکھتا ہے۔ ت) کاسماں اور ہی مزہ رکھتا ہے، جس کتاب میں تحریف کریں اسی کے ساتھ اسی کی پشت پر چھاپ دیں اور پھر سرِ بازار مسلمانوں کو آنکھیں دکھائیں۔ تف تف تف سے کیا ہوتا ہے جب خدا کی لعنت ہی کا خوف نہیں پھرا، پھر اس چالبازی کی کیا شکایت کہ مفتی صاحب کی طرف عبارت تو یہ منسوب کی "العلنی علی رسالة ذهب فیها"، جس کا صاف مفاد یہ کہ یہ مضمون اس رسالہ کا ہے، حالانکہ رسالہ میں اس کا صاف رد لکھا ہے، اور باطنی طائفہ نجدیت کے امام عہ معصوم سفلی آسمان کذب و افتراء کے بدر منور اس کا ترجمہ یوں گانٹھتے ہیں "اپنے دوسرے رسالہ علم غیب کی مجھ کو خبر دی اور اس کا یہ مدعا بیان کیا۔" یعنی

یہ مدعا زبانی بیان میں تھانہ کہ رسالہ میں۔ تاکہ کوئی رسالہ کا تپانچہ دے کر جھوٹ بکنے والا لوٹ دے کر مفتریو رسالہ میں یہ قول لکھا ہے یا اس کا رد کیا ہے۔ پھر اس ننھی سی کتر بیونت کا کیا گلہ کہ مفتی صاحب کی طرف عبارت تو یہ منسوب کی "فلم الـ جهد في بيان ان الآية المذكورة لاتدل على مدعاه دلالة قطعية"۔

عہ: اسماعیل دہلوی کی صراط مستقیم میں۔

صفحہ 420 از 750

Fatawa Rizvia Volume 29

The clear translation of which is that I did not fall short in my ongoing statement that the verse does not signify their claim in a way that is certain and definitive. Now listen to the shining translation of the illuminated palace of Wahhabism's deficiency. The aforementioned verse cannot be evidence for your claim. Where is the negation of certainty—that there is no proof with certainty—and where can it not be evidence of impossibility? In a two-line translation, these impudences and these devious tricks, these fascinations, and then the claim of religion and honesty remains stable.

Like the firm and strong ablution of Bibi Tameez. (Explanation)

Then this shy glance is particularly worthy of a reward, that on the same page 3 in the Mufti's statement, Qadiani, then the Amiria group's Amir Hasan Sahaswani, then the Naziria group's Nazir Husain Dehlavi, then the Qasimia group's Qasim Nanotwi, then Rashid Ahmad Gangohi, then Ashraf Ali Thanwi—all these were mentioned by name, and when they were their sayings, rulings of infidelity and misguidance were written upon them. The enlightened soul of Wahhabism, which might come to the translation from wintry eyes, gives a glimpse and vanishes such that: "In India, some people are misguided and people of infidelity who say such and such. Among them are Ghulam Ahmad Qadiani and so on and so forth." See how he seated his five [leaders] under the veil of "and so forth", and by throwing the dust of "and so forth", hid them like a cat. In short:

You are cunning, you are deceitful, whatever you are today You are servants [of God], but you have no fear of God O bold one! What can be said about this "and so forth" of yours? This very veil covers all the riff-raff

The Wahhabis of Bareilly also, elated by their master's trick, sat down to publicize their light-filled writing in the marketplace. Muslims advertised a reward of five hundred rupees if they could provide proof for their fabrications within a week. The period passed, then twice that time passed, and it reached three times, but the lips of no lying fabricator opened. "So the disbeliever was confounded, and Allah does not guide the wrongdoing people"[1]. (Then the senses of the disbeliever flew away, and Allah does not show the way to the wrongdoers. Explanation) Twenty days later, some shameless veiled ones published the results of Deobandi committees under the fictitious cover of someone named Saeed. Earlier there were two injustices, then in this, there were piles of fabrication upon fabrication, fabrication upon fabrication, and truly any...

[1] Al-Quran al-Kareem 2/258 Page 421 of 750

फतावी रज़विया जिल्द 29

जिसका स्पष्ट अनुवाद यह है कि मैंने अपने इस निरंतर कथन में कोई कमी नहीं की कि आयत उनके दावे पर ऐसी दलात (प्रमाण) नहीं करती जो निश्चित और अंतिम हो। अब वहाबियत के चमकते महल का प्रकाशित अनुवाद सुनें। उपर्युक्त आयत आपके दावे का प्रमाण नहीं हो सकती। कहाँ निश्चितता का निषेध कि निश्चित रूप से प्रमाण नहीं है, और कहाँ यह असंभवता का प्रमाण ही नहीं हो सकती? दो पंक्तियों के अनुवाद में ये ढिटाइयां और वे चालाकियां, ये दिलकश अदाएं और फिर धर्म और ईमानदारी के दावे पर अडिग रहना।

बीबी तमीज़ के पक्के और मज़बूत वज़ू की तरह। (व्याख्या)

फिर यह शर्मीली झाँकी तो विशेष पुरस्कार के योग्य है कि इसी पृष्ठ 3 पर मुफ्ती साहब के कथन में क़ादियानी, फिर अमीरिया गिरोह के अमीर हसन सहसवानी, फिर नज़ीरिया गिरोह के नज़ीर हुसैन देहलवी, फिर का़सिमिया गिरोह के का़सिम नानौतवी, फिर रशीद अहमद गंगोही, फिर अशरफ अली थानवी - ये सभी नाम-ब-नाम वर्णित थे और जब वे उन्हीं के कथन थे, तो उन पर कुफ्र और गुमराह होने के हुक्म दर्ज थे। वहाबियत की रोशन जान जो शीतकालीन नज़रों से इसके अनुवाद पर आए तो इस तरह झलक दिखाकर गायब हो जाए कि: "हिंदुस्तान में कुछ लोग गुमराह और कुफ्र वाले हैं जो ऐसा-ऐसा कहते हैं, उनमें गुलाम अहमद क़ादियानी वगैरह वगैरह शामिल हैं।" देखिए, अपने पाँचों को 'वगैरह वगैरह' के पर्दे में बैठा दिया, और 'वगैरह' की धूल डालकर बिल्ली की तरह छुपा दिया। सारांश:

अय्यार हो, मक्कार हो, जो आज हो तुम हो बंदे हो मगर खौफ-ए-खुदा नहीं रखते अरे बेबाक! क्या कहना है तेरी इस 'वगैरह' का यही पर्दा है सारे ऐरे-गैरे नत्थू-खैरे का

बरेली के वहाबी भी अपने हज़रत की चाल पर फूले नहीं समाए और अपनी बत्तियों वाली तहरीर बाज़ार के बीचों-बीच प्रचारित करने बैठ गए। मुसलमानों ने पाँच सौ रुपये इनाम का विज्ञापन दिया कि यदि वे एक सप्ताह के भीतर अपने मिथ्यारोपों का प्रमाण दे दें। मियाद गुज़र गई और उससे दोगुना समय गुज़र गया, और फिर तिगुना समय हो गया, लेकिन किसी झूठे रचनाकार के होंठ नहीं खुले। "अतः वह काफ़िर हक्का-बक्का रह गया, और अल्लाह ज़ालिम लोगों को रास्ता नहीं दिखाता"[1]। (तो काफ़िर के होश उड़ गए, और अल्लाह ज़ालिमों को राह नहीं दिखाता। व्याख्या) बीस दिन बाद कुछ बेशर्म पर्दे के पीछे बैठने वालों ने अपने किसी 'सईद' की काल्पनिक आड़ में देवबंदी

कमेटियों का परिणाम छापा। पहले दो अंधेरे थे, फिर इसमें आरोप पर आरोप, आरोप पर आरोप के ढेर लग गए और वास्तव में कोई...

---

[1] अल-क़ुरआन अल-करीम 2/258 पृष्ठ 750 में से 421

جس کا صاف ترجمہ یہ ہے کہ میں نے اپنے چلتی اس بیان میں کمی نہ کی کہ آیت ان کے دعوٰی پر ایسی دلالت نہیں کرتی جو یقینی قطعی ہو۔ اب قصر وہابیت کے منور محل کا چمکتا ترجمہ سنئے۔ آیت مذکورہ تمہارے دعویٰ کی دلیل نہیں ہو سکتی۔ کہاں نفی تیقن کہ یقینی طور پر اثبات نہیں اور کہاں استحالہ کی دلیل ہو ہی نہیں سکتی دو سطر کے ترجمہ میں یہ ڈھٹائیاں اور واں گھائیاں یہ دلربائیاں اور پھر دین و دیانت کا دعوٰی پر قرار ع

چوں وضوئے محکم بی بی تمیز (بی بی تمیز کے محکم مضبوط وضو کی طرح۔ ت)

پھر یہ شرمیلی جھانولی تو خاص انعام دینے کے قابل کہ اسی صفحہ ۳ عبارت مفتی صاحب میں قادیانی، پھر طائفہ امیر یہ امیر حسن سہسوانی، پھر طائفہ نذیر یہ نذیر حسین دہلوی، پھر طائفہ قاسمیہ قاسم نانوتوی، پھر رشید احمد گنگوہی، پھر اشرف علی تھانوی، یہ سارے کے سارے نام بنام مذکور تھے اور ان سب پر جب کہ وہ اقوال ان کے ہوں احکام کفر و ضلال مسطور تھے، تن وہابیت کی منور جان جو سرمائی نظروں سے اس کے ترجمہ پر آئیں تو یوں جھلک دے کر الوپ ہو جائیں کہ ہندوستان میں کچھ لوگ گمراہ اور اہل کفر ہیں جو ایسا ایسا کہتے ہیں منجملہ ان کے غلام احمد قادیانی وغیرہ وغیرہ ملاحظہ ہو اپنے پانچوں کو کیا وغیرہ وغیرہ کے پردے میں بٹھایا، وغیرہ کی خاک ڈال کر بلی کی طرح چھپایا ہے غرض ؎

عیار ہو مکار ہو جو آج ہو تم ہو بندے ہو مگر خوفِ خدا نہیں رکھتے ارے بیباک! کیا کہنا ہے تیری اس وغیرہ کا یہی پردہ ہے سارے ایر غیر انتھو خیر اکا

بریلی کے وہابیہ بھی انہیں حضرت کی چال پر پھول کر اپنی بتیاں والی تحریر سرِ بازار تشہیر کر ابیٹھے۔ مسلمانوں نے پانسو روپے انعام کا اشتہار دیا اگر ایک ہفتہ میں اپنے افتراؤں کا ثبوت دے دیں۔ میعاد گزری اور اس سے دو چند زمانہ گزرا، اور پھر سہ چند تک نوبت پہنچی مگر کسی مفتری کذب کے لب نہ کھلے "فَبُهِتَ الَّذِي كَفَرَ ۗ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ" 1۔ تو ہوش اڑ گئے کافر کے، اور اللہ راہ نہیں دکھاتا ظالموں کو۔ت) بیس ۲۰ روز بعد بعض بے حیا پر دہ نشینوں نے کسی اپنے سعید کی فرضی آڑ سے دیوبندی کمیٹیوں کا نتیجہ چھاپا۔ پہلے دو اندھیر تھے تو اس میں افترا برافترا، افترا برافترا کے ڈھیر تھے اور واقعی کوئی

---

1 القرآن الکریم ۲/ ۲۵۸ Page 421 of 750

Where would the accursed group bring proof of their cursed fabrications, except that they wrap themselves in curse upon curse and wrath upon wrath? Upon this, Muslims descended on them 'Al-Adhab al-Ba'is ala Anjas Halail Iblis' (The Terrible Punishment on the Filthiest Spouses of Iblis) and announced a reward of three thousand rupees and gave them a three-week deadline. As a testimony, the basket of their words was placed on the head of the apparent spiritual leader of Darbhanga and others, Thanvi Sahib. Although years of experience witness that they will not open their lips even after seeing those three bags [of money]. Their mouth-seal will only break when they see some possibility [of gain]. Well, this was one scheme of the 'Kuffar (Infidels) Party'. The second scheme was the 'cursed donkey-making' - a most accursed talking picture, the full moon of the firmament of Satanism, the elder sister of the accursed Iblis, a naked sword of the Kuffar Party for attacking Allah and His Messenger, i.e., the cursed and wretched pamphlet unjustly named 'Saif-an-Naqi'. This vile, cursed pamphlet adopted such a style that it cleared the 35-year debt of the Wahhabis (may Allah Almighty humiliate them) in one go.

It has been a full thirty-five years since the refutation of the Wahhabis has been published from the Alviya Razawiyya threshold, and by the grace of the All-Bestower, Exalted and Majestic, it remains unanswered to this day. No Gangohi, Nanotvi, Ambethvi, Thanvi, Deobandi, Dehlvi, or Amritsari had the courage to write even a single letter in reply. And when the demand for names of books in reply came, the polemicists of the group, who keep chanting about debate, performed such acrobatics and showed such flights of fancy - as described in the treatise 'Al-Istumta bi Dhawat al-Qina' - that Shari'fah Zarifah Rashidah Rashidah, with her extensive fortune, taught such spaciousness of courage to their adversity and narrowness that if they wish, they can write a reply to every single book of their opponents in one minute. And that too, unparalleled and unanswered; meaning, they can quote whatever saying of the opponent they wish, and forge as many opposing passages as they want attributed to the opponent's ancestors and elders, even invent names for their works, cast their printing presses in their own fabricative molds, and shamelessly show off in the marketplace, saying: 'You say this, while your honorable father says thus in such-and-such book against it; this is the statement of your grandfather in such-and-such book. Such-and-such venerable elders have said so in such-and-such book. These are the names of those books, printed in such-and-such press, and these passages are on such-and-such pages. Say, what could be a more

solid and complete proof than this?' And by Divine grace, if you look at the reality, there is fundamentally no trace of those books on the face of the earth; they are merely fabricated, imaginary, carved-out troubled dreams, the only interpretation of which is 'The Curse of Allah upon...'

Note: This happened more than ten years ago; Thanvi Sahib remains silent and bewildered.

फतावा रज़विया जिल्द 29

मलऊन (अभिशप्त) गिरोह अपनी लानती मनगढ़ंत बातों का सबूत कहाँ से लाता, सिवाय इसके कि लानतों पर लानत और गज़बों पर गज़ब ओढ़े रहे। इस पर मुसलमानों ने उन पर 'अल-अज़ाब अल-बईस अला अनजस हलाईल इबलीस' (इबलीस की नापाक पत्नियों पर भयानक अज़ाब) नाज़िल किया और तीन हज़ार रुपये का इनाम घोषित किया और उन्हें तीन हफ्ते की मोहलत दी। गवाही के तौर पर उनके शब्दों की टोकरी दरभंगी वगैरह सब के ज़ाहिरी पीर थानवी साहब के सिर पर रख दी। हालाँकि वर्षों का अनुभव गवाह है कि वे उन तीन थैलियों को देखकर भी होंठ नहीं खोलेंगे। उनके मुँह की सील तभी टूटेगी जब कोई गुंजाइश नज़र आएगी। खैर, एक तदबीर तो 'कुफ्र पार्टी' की यह थी। दूसरी तदबीर लानत की 'तहमीरे अश्द मलऊनी' (गधा बनाने) की बोलती तस्वीर, शैतानियत के आसमान का चमकता चाँद, लानती इबलीस की बड़ी बहन, अल्लाह और उसके रसूल पर हमले के लिए कुफ्र पार्टी की नंगी तलवार, यानी मलऊन और बदबख्त ज़ुल्म से भरा रिसाला जिसका नाम 'सैफ-उन-नकी' रखा गया। इस नापाक मलऊन रिसाले ने वह तरीका अपनाया कि वहाबियों (अल्लाह तआला उन्हें ज़लील करे) का 35 साल का कर्ज़ एक झटके में उतार दिया।

आस्ताना अलविया रज़विया से पूरे पैंतीस साल हो गए हैं कि वहाबियों का खंडन प्रकाशित हो रहा है और आज तक अल्लाह के फ़ज़ल से इसका कोई जवाब नहीं आया है। किसी गंगोही, नानोतवी, अम्बेठवी, थानवी, देवबंदी, देहलवी, या अमृतसरी में इतनी हिम्मत नहीं हुई कि एक अक्षर का जवाब लिख सकें। और जब जवाब देने वाली किताबों के नाम मांगे गए, तो उस गिरोह के मुतकल्लिमों (वक्ताओं) ने, जो मुनाज़रे रट रहे हैं, ऐसी कलाबाज़ियाँ दिखाईं और ऐसी ऊँची उड़ानें भरीं - जैसा कि रिसाला 'अल-इस्तेमता बि दवात अल-किना' में बयान किया गया है - कि शरीफ़ा ज़रीफ़ा रशीदा रशीदा ने अपनी अपार सफलता से उनके बुरे भाग्य और तंगी को ऐसी दिलेरी सिखाई है कि अगर वे चाहें तो एक मिनट में अपने विरोधियों की हर एक किताब का जवाब लिख दें। और वह भी बेमिसाल और लाजवाब; यानी विरोधी का जो भी कथन चाहें उद्धृत करें और उसके खिलाफ जितने चाहें उतने जुमले विरोधियों के पूर्वजों और बुज़ुर्गों की ओर से गढ़ लें, उनकी रचनाओं के नाम भी तराश लें, उनके छापाखानों को भी अपने मनगढ़ंत साँचों में ढाल लें और बाज़ार में बड़ी बेशर्मी से आँखें दिखाने लगें कि 'तुम तो यह कहते हो और तुम्हारे सम्मानित पिता इसके खिलाफ फलां किताब में ऐसा फरमाते हैं, तुम्हारे दादा का फलां किताब में यह इरशाद है। फलां बुज़ुर्ग फलां किताब में ऐसा कह गए हैं। इन किताबों के ये-ये नाम हैं, फलां-फलां प्रेस में छपी हैं, उनके फलां-फलां पेज पर ये इबारतें

हैं। कहिए, इससे बढ़कर पक्का और मुकम्मल सबूत और क्या होगा?' और खुदा की मेहरबानी से हकीकत देखें तो उन किताबों का ज़मीन पर कहीं नाम-ओ-निशान तक नहीं है; ये महज़ मनगढ़ंत, खयाली, तराशे हुए परेशान सपने हैं जिनकी व्याख्या केवल इतनी है कि 'लानत हो अल्लाह की उन पर...'

नोट: यही वाकया हुआ, दस साल से ज़्यादा बीत गए, थानवी साहब खामोश और हक्का-बक्का हैं।

पृष्ठ 422 का 750

ملعون طائفہ اپنے لعنتی افتراؤں کا ثبوت کہاں سے لائے سوا اس کے کہ لعنتوں پر لعنت، غضبوں پر غضب اوڑھے، اس پر مسلمانوں نے العذاب البئیس علی انجس حلائل ابلیس ان پر نازل کیا اور تین ہزار روپے کا اعلان دیا اور ان کی مہلت تین ہفتے کر دی اور برسم شہادت ان کے الفاظ کی ٹوکری در بھنگی وغیرہ سب کے ظاہر پیر تھانوی صاحب کے سر دھر دی، اگرچہ برسوں کا تجربہ شاہد ہے کہ وہ تین توڑے دیکھ کر بھی لب نہ کھولیں گے۔ اُن کی مہر دہن جب ٹوٹے کہ کچھ گنجائش سوجھے، خیر ایک تدبیر تو کفر پارٹی کی یہ تھی۔ دوسری تدبیر لعنت تحمیر اشد ملعونی کی بولتی تصویر فلک شیطنت کی بدر منیر ابلیس لعین کی بڑی ہمشیر اللہ و رسول پر حملہ کے لیے کفر پارٹی کی ننگی شمشیر، یعنی رسالہ ملعون و شقی ظلماً مسمّی سیف النقی۔ اس خبیثہ ملعونہ رسالہ نے وہ طرز اختیار کی کہ وہابیہ خذلہم اللہ تعالی پر سے ۳۵ برس کا قرضہ ایک دم میں اتروادی،

آستانہ علویہ رضویہ سے پینتیس سال کامل ہوئے کہ وہابیہ کا رد اشاعت پارہا ہے اور آج تک بفضل وہاب جل وعلا لا جواب رہا ہے۔ کسی گنگوہی، نانوتوی، انبیٹھی، تھانوی، دیوبندی، دہلوی، امرتسری کو تاب نہ ہوئی کہ ایک حرف کا جواب لکھیں اور جب مطالبہ جواب کتب کا نام آیا ہے، متکلمین طائفہ نے جو مناظرہ رٹ رہے ہیں وہ وہ چک پھیریاں لیں، وہ وہ اڑان گھاٹیاں دکھائیں جن کا بیان رسالہ الاستمتاع بذوات القناع سے ظاہر شریفہ ظریفہ رشیدہ رسیدہ نے اپنے اقبال وسیع سے ان کے ادبار پر و ضیق کو ایسی فراخی حوصلہ کی لے سکھائی ہے کہ چاہیں تو ایک ایک منٹ میں اپنے خصموں کی ایک ایک کتاب کا جواب لکھ دیں۔ اور وہ بھی بے مثل و لاجواب لکھ دیں یعنی خصم کا جو قول چاہیں نقل کریں اور اس کے مخالف جتنی عبارات چاہیں خصم کے آباء

واجداد و مشائخ کی طرف سے گھڑلیں اور ان کی تصانیف کے نام بھی تراش لیں، ان کے مطبع بھی اپنے افترائی سانچے میں ڈھال لیں اور سرِ بازار بکمال حیا آنکھیں دکھانے کو ہو جائیں کہ تم تو کہتے ہو اور تمہارے والد ماجد اس کے خلاف فلاں کتاب میں یوں فرماتے ہیں، تمہارے جد امجد کا فلاں کتاب میں یہ ارشاد ہے۔ فلاں مشائخ کرام فلاں کتاب میں یوں فرما گئے ہیں ان کتابوں کے یہ یہ نام ہیں، فلاں فلاں مطبع میں چھپی، ان کے فلاں فلاں صفحہ پر یہ عبارات ہیں، کہیے اس سے بڑھ کر پکا اور کامل ثبوت اور کیا ہوگا۔ اور بعنایت الہی حقیقت دیکھئے تو ان کتابوں کا اصلاً کہیں روئے زمین پر نام و نشان نہیں، نری من گھرت خیالی تراشیدہ خوابہائے پریشان جن کی تعبیر فقط اتنی کہ "لَعْنَتُ اللهِ عَلٰی"

عہ: یہی واقع ہوا دس برس سے زیادہ گزرے تھانوی صاحب خاموش باختہ ہوش۔

صفحہ ۴۲۲ از ۷۵۰

Fatawa Razawiyya (Volume 29)

الْكٰذِبِيْنَ ۙ١ (May Allah's curse be upon the liars, T) For example: (1) On page 3, a book named 'Tuhfa-tul-Muqallideen' was fabricated in the name of Ala Hazrat's noble father, Hazrat Maulana Molvi Muhammad Naqi Ali Khan (may his secret be sanctified), and with extreme shamelessness, it was claimed to be on page 15 of 'Subh-e-Sadiq', printed in Sitapur. (2) On page 11, a book named 'Bidayat-ul-Islam' was carved out in the name of Ala Hazrat's illustrious grandfather, Sayyiduna Molvi Muhammad Raza Ali Khan Sahib (may Allah Almighty be pleased with him), and with extreme accursedness, it was claimed to be on page 30 of 'Subh-e-Sadiq', printed in Sitapur. (3) On page [blank] and page 20, besides 'Hidayat-ul-Barriya' printed in 'Subh-e-Sadiq', another 'Hidayat-ul-Barriya' printed in Lahore was fabricated in the name of Ala Hazrat's father (may his soul be blessed), and his own carved-out passages were attributed to it, claiming he says on page 13, and he says on page 41, while it's all mere fabrication. (4) On page 11, a book named 'Khazinat-ul-Awliya' was fabricated in the sacred name of the most holy and luminous Hazrat Sayyiduna Shah Hamza Marahrawi (may Allah Almighty be pleased with him), and with extreme wretchedness, it was claimed to be on page 15 of the Kanpur edition. (5) On page 20, a book named 'Tuhfa-tul-Muqallideen' was fabricated in the name of Ala Hazrat's grandfather (may Allah Almighty enlighten his grave), and with extreme devilry, it was claimed to be on page 12 of the Lucknow edition. (6) On page 21, the discourses (malfoozaat) of Hazrat Sayyiduna Shah Hamza (may Allah Almighty be pleased with him) were fabricated from the heart, and with extreme incompetence, it was claimed to be on page 7 of the 'Mustafai' edition. The wretched one fabricated a passage from her own heart; if it were real, it would have been a letter (maktoob) and not a discourse (malfoozaat), and she even forged a signature at the end: 'Written by Shah Hamza Marahrawi, may he be forgiven'. It is the effect of Allah's seal that the blind wretched woman does not even know the difference between a discourse and a letter, and called her own fabrication an 'Aandhi' (storm). Couplet: Even to do wrong, one needs a skill. Moving forward in transgression is better. (7) On page 24, the accursed wretched woman fabricated a book named 'Mirat-ul-Haqiqah' in the name of the most luminous and noble Ghaus of the two worlds...

1. Al-Quran Al-Karim 61/3. Page 423 of 750

फ़तावा रज़विया (खण्ड 29)

الْكٰذِبِيْنَ ۙ۱ (झूठों पर अल्लाह की लानत, त) उदाहरण के लिए: (1) पृष्ठ 3 पर, आला हज़रत के पूज्य पिता हज़रत मौलाना मौलवी मुहम्मद नक़ी अली ख़ान (क़ुद्दस सर्रहु) के नाम से 'तुहफ़तुल मुक़ल्लिदीन' नामक एक पुस्तक गढ़ी गई और बड़ी बेशर्मी के साथ कहा गया कि यह 'सुब्हे सादिक़' सीतापुर संस्करण के पृष्ठ 15 पर है। (2) पृष्ठ 11 पर, आला हज़रत के प्रपितामह हुज़ूर पुरनूर सय्यदुना मौलवी मुहम्मद रज़ा अली ख़ान साहिब (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) के नाम से 'बिदायतुल इस्लाम' नामक एक पुस्तक तराशी गई और बड़ी लानत के साथ कहा गया कि यह 'सुब्हे सादिक़' सीतापुर संस्करण के पृष्ठ 30 पर है। (3) पृष्ठ [रिक्त] और पृष्ठ 20 पर 'सुब्हे सादिक़' में छपी 'हिदायतुल बर्रिया' के अलावा, लाहौर में छपी एक और 'हिदायतुल बर्रिया' आला हज़रत के पिता (रूह अल्लाह रूहहु) के नाम से गढ़ी गई और अपनी तराशी हुई इबारतें उनके नाम मढ़ दीं कि पृष्ठ 13 में वे फ़रमाते हैं, पृष्ठ 41 में फ़रमाते हैं, जबकि सब महज़ बनावट है। (4) पृष्ठ 11 पर, हुज़ूर अक़दस अनवर हज़रत सय्यदुना शाह हमज़ा मारहरवी (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) के पाक नाम से 'ख़ज़ीनतुल औलिया' नामक एक पुस्तक गढ़ी गई और बड़ी बदबख़्ती के साथ कहा गया कि यह कानपुर संस्करण के पृष्ठ 15 पर है। (5) पृष्ठ 20 पर, आला हज़रत के प्रपितामह (नूरल्लाह तआला मर्क़दहु) के नाम से 'तुहफ़तुल मुक़ल्लिदीन' नामक एक पुस्तक गढ़ी गई और बड़ी शैतानियत के साथ कहा गया कि यह लखनऊ संस्करण के पृष्ठ 12 पर है। (6) पृष्ठ 21 पर हज़रत अक़दस हुज़ूर सय्यदुना शाह हमज़ा (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) के मलफ़ूज़ात दिल से गढ़े और बड़ी नालायक़ी (अक्षमता) के साथ कहा गया कि मुस्तफ़ाई संस्करण के पृष्ठ 7 पर है। उस खबीसा शक्रिया ने जो इबारत अपने मन से गढ़ी, अगर वह असली होती तो मकतूब (पत्र) होती न कि मलफ़ूज़ (कथन), और अंत में हस्ताक्षर भी गढ़ लिए: 'कातिब शाह हमज़ा मारहरवी अफ़ि अन्हु'। यह अल्लाह की मुहर का असर है कि उस अंधी खबीसा को मलफ़ूज़ और मकतूब के बीच का अंतर भी नहीं पता, और दिल से गढ़ी बात को 'आंधी' कह दिया। शेर: बुराई करने के लिए भी हुनर चाहिए। पाप की राह में बढ़ा एक कदम ही बेहतर है। (7) उस लानती खबीसा ने पृष्ठ 24 पर दो आलम के ग़ौस, हुज़ूर अनवर व अकरम के नाम से 'मिरअतुल हक़ीक़ह' नामक एक पुस्तक गढ़ी...

1. अल-क़ुरआन अल-करीम 61/3. पृष्ठ 423 / 750

الْكٰذِبِيْنَ ۙ۱ (جھوٹوں پر اللہ کی لعنت، ت) مثلاً (۱) صفحہ ۳ پر ایک کتاب بنام تحفۃ المقلدین اعلیحضرت کے والد ماجد اقدس حضرت مولانا مولوی محمد نقی علی خاں قدس سرہ العزیز کے نام سے گھڑی اور بحال بے حیائی کہہ دیا کہ مطبوعہ صبح صادق سیتا پور صفحہ ۱۵۔ (۲) صفحہ ۱۱ پر ایک کتاب بنام بدایۃ الاسلام اعلیحضرت کے جدِ امجد حضور پُر نور سیدنا مولوی محمد رضا علی خاں صاحب رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے نام سے تراشی اور بحال ملعونی کہہ دیا کہ مطبوعہ صبح صادق سیتا پور صفحہ ۳۰۔ (۳) صفحہ اور صفحہ ۲۰ پر ہدایۃ البریہ مطبوعہ صبح صادق کے علاوہ ایک ہدایۃ البریہ مطبوعہ لاہور اعلیحضرت کے والد روح اللہ روحہ کے نام سے گھڑی اور اپنی تراشیدہ عبارتیں اس کی طرف منسوب کردیں کہ صفحہ ۱۳ میں فرماتے ہیں، صفحہ ۴۱ میں فرماتے ہیں اور سب محض بناوٹ۔ (۴) صفحہ ۱۱ پر ایک کتاب بنام خزینۃ الاولیاء حضور اقدس انور حضرت سیدنا شاہ حمزہ مارہروی رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے نام اقدس سے گھڑی اور بحال شقاوت کہہ دیا کہ مطبوعہ کانپور صفحہ ۱۵۔ (۵) صفحہ ۲۰ پر ایک کتاب بنام تحفۃ المقلدین اعلیحضرت کے جدِ امجد نور اللہ تعالیٰ مرقدہ کے نام سے گھڑی اور بحال شیطنت کہہ دیا مطبوعہ لکھنؤ صفحہ ۱۲۔ (۶) صفحہ ۲۱ پر حضرت اقدس حضور سیدنا شاہ حمزہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے ملفوظات دل سے گھڑے اور بحال بے اہلیتی کہہ دیا کہ مطبوعہ مصطفائی صفحہ ۷ اور خبیثہ شقیہ نے جو عبارت جی سے گھڑی وہ ہوتی تو مکتوب ہوتی نہ کہ ملفوظ اور اس کے اخیر میں دستخط بھی گھڑ لیے کتبہ شاہ حمزہ مارہروی عفی عنہ اللہ کی مہر کا اثر کہ اندھی خبیثہ کو ملفوظ و مکتوب کا فرق تک معلوم نہیں اور دل سے گھڑنت کو آندھی۔ ع عیب بھی کرنے کو ہنر

چاہیے ع قدم فسق پیشتر بہتر (۷) خبیثہ ملعونہ نے صفحہ ۲۴ پر ایک کتاب بنام مراۃ الحقیقۃ حضور انور واکرم غوث دو عالم

1 القرآن الکریم ۶۱/۳ Page 423 of 750

Fatawa Rizvia, Volume 29

It was fabricated using the name of the luminous seal of Sayyiduna Ghous-e-Azam (may Allah be pleased with him) and with extreme dishonesty, it was claimed to be on page 18 of the Egyptian publication.

(8) On page 20, the blessed seal of Ala Hazrat's noble father (may Allah perfume his grave) was also fabricated from the heart, and its form was made like this: [Seal: Naqi Ali Hanafi Sunni 1201] Whereas the actual sacred seal of the noble saint, which has been printed on numerous books, was this: [Seal: 1269 Maulvi Raza Ali Muhammad Naqi Ali Khan]

(9) The noble passing of Ala Hazrat (may his secret be sanctified) occurred in 1297 AH. The wretched person wrote the year 1301 on the seal, meaning the seal was engraved four years after his passing. It is true that when one deserves divine curse, eyes, ears, and heart all become shut.

(10) To forcefully remove objections from 'Taqwiyat-ul-Iman', on page 28, a version of 'Taqwiyat-ul-Iman' printed in Mustafa-i-Garhi was cited, and from it, such passages were quoted for which there is no trace in any version of 'Taqwiyat-ul-Iman' in the world.

When this is the situation, what is there to complain about fabricating imaginary works from his own side. The person named Muhammad Naqi Ajmeri, who is appointed as its author, is probably also an imaginary fabrication, or at least from the same fictional source. A gentleman had previously written a treatise of the same nature in support of Ala Hazrat and sent it here to be printed, in which the words of the opponents of the noble saint were quoted in the same fictional way. Praise be to Allah, when would the People of Sunnah like such cursed things? It was rejected from here. Then, turning against us, he sought refuge with the Wahhabis and sent them this treatise named "Saif-un-Naqi". The worshippers of false gods were hungry for such people. They accepted it saying "In the name of the worshipped lying villain" and published an announcement that through this servant, all the works of elders like Ashraf Ali can be obtained. Writer: Asghar Husain, Madrasa Deoband.

A Muslim judges based on his own character; he thought those gentlemen were shameless due to immodesty.

फतावा रज़विया, खंड 29

सैय्यदना ग़ौस-ए-आज़म (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) की रौशन मुहर के नाम से इसे गढ़ा गया और बड़ी बेईमानी से कहा गया कि यह मिस्र के प्रकाशन के पृष्ठ 18 पर है।

(8) पृष्ठ 20 पर आला हज़रत के वालिद-ए-माजिद (अत्तरल्लाहु मरक़दहु) की मुबारक मुहर भी दिल से गढ़ ली गई, और उसका रूप ऐसा बनाया गया: [मुहर: नक़ी अली हनफ़ी सुन्नी 1201] जबकि हज़रत की वास्तविक मुकद्दस मुहर वह थी जो कसरत से किताबों पर छपी है: [मुहर: 1269 मौलवी रज़ा अली मुहम्मद नक़ी अली ख़ान]

(9) हज़रत आला (क़ुद्दसा सिर्रहु) का इंतिक़ाल 1297 हिजरी में हुआ। उस दुष्ट ने मुहर पर साल 1301 लिखा, यानी उनके इंतिक़ाल के चार साल बाद मुहर बनाई गई। सच है कि जब ईश्वरीय लानत का हक़दार इंसान होता है, तो आँख, कान, और दिल सब बंद हो जाते हैं।

(10) 'तक़वियत-उल-ईमान' से एतराज़ात को ज़बरदस्ती हटाने के लिए, पृष्ठ 28 पर मुस्तफ़ाई गढ़ी में छपी 'तक़वियत-उल-ईमान' का हवाला दिया गया, और उससे ऐसे इबारतें नक़ल कर दी गईं जिनका दुनिया की किसी भी 'तक़वियत-उल-ईमान' में कोई निशान नहीं है।

जब हालत यह है तो अपनी तरफ़ से फ़र्ज़ी खयाली किताबें गढ़ देने की क्या शिकायत। मुहम्मद नक़ी अजमेरी, जिसे इसका लेखक ठहराया गया है, शायद वह भी एक खयाली गढ़ा हुआ व्यक्ति है या कम से कम उसी फ़र्ज़ीवाड़े का हिस्सा है। एक महानुभाव ने पहले इसी तरह का एक रिसाला (पुस्तिका) आला हज़रत के समर्थन में लिखकर यहाँ छपने के लिए भेजा था, जिसमें हज़रत के विरोधियों के कलाम को इसी तरह फ़र्ज़ी तौर पर नक़ल किया गया था। अल्हम्दुलिल्लाह, सुन्नत वाले लोग ऐसी लानती बातें कब पसंद करेंगे? यहाँ से उसे दुत्कार दिया गया, तो वह विरोध में आकर वहाबियों के साथ हो गया और उन्हें यह रिसाला "सैफ़-उल-नक़ी" भेज दिया। झूठे माबूद के पुजारी तो ऐसे ही लोगों के भूखे थे। "बासिमुल माबूदुल कज़्ज़ाबुल लईम" (झूठे मलयून माबूद के नाम से) कहकर इसे स्वीकार कर लिया और विज्ञापन छपवा दिया कि इस बंदे के माध्यम से अशरफ़ अली आदि बुज़ुर्गों की तमाम किताबें मिल सकती हैं। लेखक: असग़र हुसैन, मदरसा देवबंद।

मुसलमान अपनी ही आदत पर कयास करता है, उसे गुमान था कि वे हज़रत बेशर्मी की वजह से बेशर्म होंगे।

سید نا غوثِ اعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے اسمِ مہر انور سے گھڑی اور بکمالِ بے ایمانی کہہ دیا کہ مطبوعہ مصر صفحہ ۱۸۔ (۸) صفحہ ۲۰ پر اعلیحضرت کے والدِ ماجد عطر اللہ مرقدہ کی مہرِ مبارک بھی دل سے گھڑ لی، اور اس کی یہ صورت بنائی۔ [نقی علی حنفی سنّی ۱۲۰۱] حالانکہ حضرت والا کی مہرِ اقدس یہ تھی جو بکثرت کتب پر طبع ہوئی ہے۔ [۱۲۶۹ مولوی رضا علی محمد نقی علی خاں] (۹) حضرت اعلیٰ قدس سرہ کی وفات شریف ۱۲۹۷ھ میں واقع ہوئی خبیثہ نے مہر کا سن ۱۳۰۱ لکھا یعنی وصال شریف کے چار برس بعد مہر کندہ ہوئی۔ سچ ہے جب لعنت الہی کا استحقاق آتا ہے، آنکھ، کان، دل سب پٹ ہو جاتے ہیں۔ (۱۰) تقویت الایمان پر سے اعتراضات بزورِ زبان اٹھانے کو صفحہ ۲۸ پر ایک تقویت الایمان مطبوعہ مصطفائی گڑھی، اور اس سے وہ عبارتیں نقل کر دی جس کا دنیا بھر کی کسی تقویت الایمان میں نشان نہیں۔ جب حالت یہ ہے تو اپنی طرف کی فرضی خیالی تصانیف گھڑ دینے کی کیا شکایت۔ محمد نقی اجمیری جو کوئی شخص اس کا مصنف ٹھہرایا ہے، غالباً یہ بھی خیالی گھڑایا کم از کم اسی فرضی ہے۔ ایک بزرگوار نے پہلے ایک اسی رنگ کا رسالہ حمایت اعلیحضرت میں لکھ کر یہاں چھاپنے کو بھیجا تھا جس میں مخالفانِ حضرت والا کے کلام ایسے ہی فرضی نقل کیے تھے۔ الحمد للہ اہلِ سنت ایسی ملعون باتیں کب پسند کریں یہاں سے دھتکار دیا تو مخالف ہو کر دامنِ وہابیوں کا پکڑا اور ان کو یہ رسالہ "سیف النقی" بھیجا، جھوٹے معبود کے پجاری تو ایسوں کے بھوکے ہی تھے۔ "باسم المعبود الکذاب اللئیم" کہہ کر قبول کر لیا اور اعلان چھاپا کہ بندہ کی معرفت یہ رسالہ اشرف علی وغیرہ بزرگان کی جملہ تصانیف مل سکتی ہیں۔ راقم اصغر حسین مدرسہ دیوبند۔ مسلمان اپنی ہی عادت پر قیاس کرتا ہے، گمان تھا کہ وہ حضرات بیحیائی سے بے حیا ہوں،

Even then, they would feel some shame taking the name of such a severely impure, wicked, dirty, disgusting, diabolical, and cursed writing, the like of which in its extreme shamelessness and audacity cannot be found anywhere in the whole world. But it became clear that there, by the wrath of God, they are all 'naked in the same bath.' We have already seen its publication from Madrasa Deoband; now observe the modesty of the gentleman from Darbhanga. On the 14th of Rabi' al-Akhir Sharif, a registered notice was sent to Mr. Thanvi inquiring whether he was ready for a debate. Did he appoint the gentleman from Darbhanga as his absolute representative (Wakil)? Over a month has passed today; Mr. Thanvi, as per his habit, either fell into whatever stupor he usually does, or his noble mind, drowsy from the snuff of dry ginger, became even sleepier. However, on the 30th of Rabi' al-Akhir Sharif, the gentleman from Darbhanga jumped up and, according to his own character and lineage, spat out many impure and filthy words from his noble mouth and blackened a page or two like his own fate. The essence of it was merely this: yes, we are the representatives of Mr. Thanvi. Do we not say that we are Thanvi's representatives? We have said before respected people that we are Thanvi's representatives. Yes, yes, behold! By God, we are Thanvi's representatives. Why ask Thanvi whether he appointed a representative or not? We are the ones saying we are Thanvi's representatives. Alright, if Thanvi doesn't say that we are his representatives, will his silence negate that we are Thanvi's voice? We ourselves are saying that we are Thanvi's representatives, so by the very nature of this conversation, we are Thanvi's representatives. O Muslims! For God's sake, be just; are these the ways to conduct a debate? The kind of respect they have for Allah and His Messenger (Exalted is He and may Allah's peace and blessings be upon him) is public knowledge; this is why they are cursed throughout Arabia and Persia, in the secular and the sacred. Yes, the heavy burden of some worldly honors fell upon them, so to stall for time, the gentleman from Darbhanga, for the sake of deception, appointed himself as the representative of Mr. Thanvi. From day one, in all pamphlets and announcements, the demand upon Mr. Thanvi was that he should come to the debate himself, or if he wishes to benefit, let him appoint someone as a representative with his seal and signature. Finally, after a long time, having heard a whisper of representation, its investigation is prohibited. The self-proclaimed representative's arrogant command is: what seal of Mr. Thanvi? Where are the signatures? To ask him is itself irregular. We ourselves are saying that we are Thanvi's representatives. What greater proof is

there than this? A registered notice reached Thanvi in which he was asked about appointing a representative; he did not speak. Let him not speak a million times; what happened by his not speaking? Just this much, and it wasn't understood that he definitely did not appoint the gentleman from Darbhanga as a representative. Then what difference does it make? We ourselves are saying that yes, Thanvi has appointed us as his representative. In this, our...

फिर भी ऐसी ही कठोर से कठोर, अत्यंत अशुद्ध, दुष्ट, गंदी, घृणित, शैतानी और अभिशप्त लेख का नाम लेते हुए वे कुछ तो शरमाएंगे, जिसकी चरम बेशर्मी और ढिठाई का उदाहरण पूरे संसार में कहीं नहीं मिलेगा। लेकिन यह स्पष्ट हो गया कि वहाँ ईश्वर के प्रकोप से 'एक ही हमाम में सब नंगे' हैं। मदरसा देवबंद से इसका प्रकाशन तो देख ही चुके हैं, अब दरभंगा वाले साहब की हया (लज्जा) देखिए। १४ रबी-उल-आखिर शरीफ को जनाब थानवी साहब से पंजीकृत नोटिस के माध्यम से पूछा गया था कि क्या आप शास्त्रार्थ (मुनाज़रा) के लिए तैयार हैं? क्या आपने दरभंगा वाले साहब को अपना पूर्ण प्रतिनिधि (वकील) नियुक्त किया है? आज सवा महीना बीत गया, थानवी साहब को तो अपनी आदत के अनुसार जो नशा चढ़ता था सो चढ़ गया, या उनका शरीफ़ दिमाग सूखे अदरक की नसवार से ऊंघता ही रहता है और वह और भी ऊंघ गया। लेकिन ३० रबी-उल-आखिर शरीफ को दरभंगा जी उछले और अपने स्वभाव और संबंध के अनुसार अपने मुखारविंद से बहुत से अपवित्र और गंदे शब्द उगल दिए और एक-दो पन्ने अपने नसीब की तरह काले कर दिए, जिसका सार केवल इतना था कि हाँ, हम थानवी साहब के प्रतिनिधि हैं। क्या हम नहीं कहते कि हम थानवी के प्रतिनिधि हैं? हमने सम्मानित लोगों के सामने कह दिया है कि हम थानवी के प्रतिनिधि हैं। हाँ-हाँ, यह लो, खुदा की कसम हम थानवी के प्रतिनिधि हैं। थानवी जी से क्यों पूछते हो कि तुमने प्रतिनिधि नियुक्त किया या नहीं? हम जो कह रहे हैं कि हम थानवी के प्रतिनिधि हैं। अच्छा, थानवी जी नहीं बोलते कि हम उनके प्रतिनिधि हैं, तो उनके न बोलने से क्या यह मिट जाएगा कि हम थानवी के शब्द हैं? हम खुद तो बोल रहे हैं कि हम थानवी के प्रतिनिधि हैं, तो बातचीत की कसम हम थानवी के प्रतिनिधि हैं। मुसलमानों! खुदा के लिए न्याय करो, क्या ये शास्त्रार्थ करने के तरीके हैं? अल्लाह और उसके रसूल (अल्लाह उन पर कृपा और शांति बरसाए) का जो सम्मान उनकी नज़रों में है, वह जग-जाहिर है; इसी कारण अरब और अजम में, हलाल और हराम (मक्का और मदीना) में उन पर लानतों की झड़ी है। हाँ, कुछ सांसारिक प्रतिष्ठा का भारी बोझ पड़ा तो समय टालने के लिए दरभंगा साहब ने धोखेबाजी के लिए अपने आप को जनाब थानवी साहब का प्रतिनिधि घोषित कर दिया। पहले दिन से थानवी साहब पर सभी पत्रों और घोषणाओं में यही दबाव था कि वे स्वयं शास्त्रार्थ में आएँ या फिर अपनी मुहर और हस्ताक्षर के साथ किसी को प्रतिनिधि नियुक्त करें। अंततः अब बड़ी मुश्किल से प्रतिनिधित्व की कोई भनक सुनाई दी, तो उसकी जाँच करना मना है। स्वयंभू प्रतिनिधि साहब का अहंकारी आदेश है कि थानवी साहब की मुहर कैसी? हस्ताक्षर कहाँ के? उनसे पूछना ही नियम के विरुद्ध है। हम खुद जो कह रहे हैं कि

हम थानवी के प्रतिनिधि हैं, इससे बढ़कर और क्या प्रमाण है? थानवी को पंजीकृत नोटिस पहुँचा जिसमें प्रतिनिधि नियुक्त करने या न करने के बारे में उनसे पूछा गया, वे नहीं बोले। लाख न बोलें, उनके न बोलने से क्या हुआ? बस इतना ही, न कि यह समझा जाए कि उन्होंने दरभंगा साहब को हरगिज़ प्रतिनिधि नहीं बनाया। फिर इससे क्या होता है, हम खुद जो कह रहे हैं कि हाँ हमें थानवी जी ने प्रतिनिधि बनाया है। इसमें हमारी...

पेज ४२५/७५०

پھر بھی ایسی ہی سخت سے سخت ناپاک تر خبیث گندی گھناؤنی ابلیسی ملعون تحریر کا نام لیتے کچھ تو شرمائیں گے جس کی کمال بے حیائیوں ڈھٹائیوں کی نظیر جہان بھر میں کہیں نہ پائیں گے۔ مگر واضح ہوا کہ وہاں بغضب الٰہی ایک حمام میں سب ننگے ہیں، مدرسہ دیوبند سے اس کی اشاعت تو دیکھ ہی چکے، اب در بھنگی صاحب کی حیاء ملاحظہ ہو، ۱۴ ربیع الآخر شریف کو جناب تھانوی صاحب سے رجسٹری شدہ نوٹس میں استفسار فرمایا تھا کہ کیا آپ مناظرہ کو آمادہ ہوئے ہیں۔ کیا آپ نے در بھنگی صاحب کو اپنا وکیل مطلق کیا ہے۔ آج سوا مہینہ گزرا تھانوی صاحب کو تو حسب عادت جو سونگھ جاتا تھا سونگھ گیا یا دماغ شریف سونٹھ کی ناس سے اونگھتا ہی رہتا ہے اور بھی اونگھ گیا۔ مگر ۳۰ ربیع الآخر شریف کو در بھنگی جی اچھلے، اور اپنی ہی خصلت و نسبت کے موافق بہت کچھ کلمات ناپاک اور غلیظ اپنے دہن شریف سے اگلے اور ایک دو ورقہ اپنے نصیبوں کی طرح سیاہ فرمایا جس کا حاصل صرف اس قدر کہ ہاں ہم تھانوی صاحب کے وکیل ہیں، کیا ہم نہیں کہتے کہ ہم تھانوی کے وکیل ہیں ہم نے معززوں کے سامنے کہہ دیا ہے کہ ہم تھانوی کے وکیل ہیں۔ ہاں ہاں اے لو، خدا کی قسم ہم تھانوی کے وکیل ہیں تھانوی جی سے کیوں پوچھو کہ تم نے وکیل کیا یا نہیں، ہم جو کہہ رہے ہیں کہ ہم تھانوی کے وکیل ہیں۔ اچھا تھانوی جی نہیں بولتے کہ ہم ان کے وکیل ہیں تو ان کے نہ بولنے سے کیا یہ مٹ جائے گا کہ ہم تھانوی کے بول ہیں، ہم خود تو بول رہے ہیں کہ ہم تھانوی کے وکیل ہیں تو گفتگو ہی کی قسم ہم تھانوی کے وکیل ہیں۔ مسلمانو! خدارا انصاف یہ صورتیں مناظرہ کرنے کی ہیں۔ اللہ و رسول (جل و علا وصلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم) کی جیسی عزت ان کی نگاہوں میں ہے طشت از بام ہے اسی پر تو عرب و عجم میں حل و حرم میں ان پر لعنتوں کا لام ہے۔ ہاں بعض دنیاوی عزتوں کا بھاری بوجھ

پڑا کہ دفع الوقتی کو در بھنگی صاحب مغالطہ دہی کے لیے اپنے منہ آپ جناب تھانوی صاحب کے وکیل بن بیٹھے۔ اوّل روز سے تھانوی صاحب پر تمام رسائل و اعلانات میں یہی تقاضا سوار تھا کہ خود مناظرہ میں آتے ہوں کھاتے ہو، کھاؤ اپنے مہر و دستخط سے کسی کو وکیل بناؤ، بارے اب خدا خدا کرکے وکالت کی بھنک سنی تو اس کی تحقیقات حرام ہے۔ خود ساختہ وکیل صاحب کا جبروتی حکم ہے کہ جناب تھانوی صاحب کی مہر کیسی، دستخط کہاں کے۔ ان سے پوچھنا ہی بے ضابطہ ہے۔ ہم خود ہی جو کہہ رہے ہیں کہ ہم تھانوی کے وکیل ہیں۔ اس سے بڑھ کر اور کیا ثبوت ہے۔ تھانوی کو رجسٹری شدہ نوٹس پہنچا جس میں وکیل کرنے نہ کرنے کو ان سے پوچھا وہ نہ بولے، لاکھ نہ بولیں، ان کے نہ بولنے سے کیا ہوا، بس اتنا ہی، نہ کہ یہ سمجھا گیا کہ انہوں نے در بھنگی صاحب کو وکیل ہر گز نہ کیا۔ پھر اس سے کیا ہوتا ہے ہم خود جو فرما رہے ہیں کہ ہاں ہم کو تھانوی جی نے وکیل کیا ہے۔ اس میں ہماری

Volume 29 Fatawa Razawiyya

Indeed, what weight is there in the movements of Thanvi ji, whether they are new or brought forth, or evasive, or nonsense, or his speech and actions? Have you not heard that: 'A barber from home is trustworthy' (Proverb). O Muslims! Not only Muslims, but anyone in the world with even a little sense and discernment! Have you ever heard of such a peculiar advocacy? It is as if in this old age, the Deobandis surrounded him and wrapped a two-yard skein as a turban around his head. The government of Gangohiyat has pinned a 'Bir Sari' badge on Mr. Darbhangwi, implying that there is no need for the client's denial or admission; just his saying so is enough. Or was it intended to hand over a general diploma of representation for all Deobandis, even for Thanvi Sahib's household, to him, after which inquiring about the lawyer is considered an irregularity? O Muslims! Is advocacy proven in this way? Did this not burst the hollow bubble of Mr. Darbhangwi's mere false advocacy? Mr. Thanvi did not even utter a subdued word saying 'I have indeed appointed a lawyer.' Are these the faces for a debate? God forbid, the avoidance, the flight, the terror, the fear, the silence of Mr. Thanvi, and these conditions of his followers, and then tarnishing the name of 'Munazara' (debate). Oh, manliness is given by God, but keep beating away. O eternal unfortunates, you write to the scholars of Islam in these states; can you ward off the humiliation and disgrace that God has made a collar around your neck in your final years with these impure moves and shameless excuses?

'Humiliation and wretchedness were stamped upon them' (Disgrace and poverty were fixed upon them. - T). Being the manifestation of this, seeking honor is futile and vain.

O hypocrites! Your predecessors said even more than this: 'If we return to Medina, the more honored will surely expel therefrom the meaner.' (Quran 63:8) If we return to Medina, certainly the one most honorable will expel from there the one most base. (T)

What response did the Great Quran give to this: 'But honor belongs to Allah and to His Messenger and to the believers, but the hypocrites do not know.' (Quran 63:8) Honor is for Allah, His Messenger, and for the Muslims, but the hypocrites know not.

1. Al-Quran Al-Kareem 8/63
2. Al-Quran Al-Kareem 8/63

हाँ, थानवी जी की नई-नई या लाई हुई, या टाल-मटोल वाली, या ऊल-जुलूल, या उनकी किसी भी कथनी और करनी का वास्तव में क्या ऐतबार है? क्या आपने नहीं सुना कि: 'घर से आया है मोतबर (विश्वसनीय) नाई' मुसलमानों! न केवल मुसलमानों, बल्कि दुनिया भर के ज़रा सी भी समझ और तमीज़ रखने वालों! क्या कभी इस तरह की वकालत कहीं सुनी है? मानो इस बुढ़ापे में देवबंदियों ने घेर-घार कर उनके सिर पर दो गज़ की पगड़ी (अटिया) बाँध दी। गंगोहियत की सरकार ने दरभंगी साहब पर 'बीर सड़ी' का बिल्ला लगा दिया कि मुवक्किल के इनकार या इक़रार की कोई ज़रूरत नहीं, बस उनका कहना ही काफ़ी है। या उन तमाम देवबंदियों, यहाँ तक कि थानवी साहब के घर की भी आम मुख्तारी (प्रतिनिधित्व) का डिप्लोमा उन्हें सुपुर्द कर देना था, जिसके बाद वकील के बारे में पूछना ही अनियमितता हो। मुसलमानों! क्या वकालत इसी तरह साबित होती है? क्या इससे दरभंगी साहब की महज़ झूठी वकालत का हवाई बिगौला (बुलबुला) नहीं फूट गया? जनाब थानवी साहब ने दबी ज़बान से भी यह नहीं कहा कि मैंने वकील किया है। क्या ऐसे ही मुँह मुनाज़रा (शास्त्रार्थ) करने के लिए होते हैं? अल्लाह-अल्लाह, जनाब थानवी साहब की यह कतराना, यह भागना, यह खौफ, यह डर, यह चुप्पी (सूमूत) और उनके अनुयायियों का यह हाल, और फिर 'मुनाज़रा' का नाम बदनाम करना। अरे, मर्दानगी तो खुदा ने दी है, मगर मार-मार तो किए जाओ। ऐ शाश्वत बदकिस्मतों, इन हालातों में तुम इस्लाम के उलमा को लिखते हो; क्या तुम उस ज़िल्लत और रुसवाई को, जिसे खुदा ने आखिरी उम्र में तुम्हारी गर्दन का तौक़ (पट्टा) बना दिया है, इन नापाक चालों और बेशर्मी के हीलों से टाल सकते हो?

'उन पर ज़िल्लत और मोहताजी थोप दी गई' (उन पर ख्वारी और नादारी मुकर्रर कर दी गई। - त) के मिस्दाक़ (प्रमाण) होकर इज़्ज़त की तलाश फ़ुज़ूल और बेकार है।

अरे मुनाफ़िक़ों! तुम्हारे पूर्वज तो इससे भी बढ़कर कह गए थे कि: 'अगर हम मदीना लौटेंगे, तो ज़रूर जो ज़्यादा इज़्ज़त वाला है, वह वहाँ से उसे निकाल देगा जो निहायत ज़लील है।' (1) अगर हम मदीना फिर कर गए तो ज़रूर जो बड़ी इज़्ज़त वाला है वह उसमें से निकाल देगा उसे जो निहायत ज़िल्लत वाला है। (त)

इस पर कुरआन-ए-अज़ीम ने क्या जवाब दिया: 'इज़्ज़त तो अल्लाह और उसके रसूल और ईमान वालों के लिए है, लेकिन मुनाफ़िक़ों को खबर नहीं।' (2) इज़्ज़त तो अल्लाह और रसूल और मुसलमानों के लिए है मगर मुनाफ़िक़ों को खबर नहीं।

1. अल-कुरआन अल-करीम 8/63
2. अल-कुरआन अल-करीम 8/63

पृष्ठ 426/750

ہاں کے آگے تھانوی جی کے نئے نئے یا لائے ہوئے یا ٹال مٹول یا اول فول یا قول فعل کسی حرکت کا اصلاً اعتبار ہی کیا ہے، آپ نے نہیں سنا کہ ع گھر سے آیا ہے معتبر نائی مسلمانو ! نہ فقط مسلمانوں، جہان بھر کے ذرا سی بھی عقل و تمیز رکھنے والو! کبھی اس مزہ کی وکالت کہیں سنی ہے، گویا اس پیرانہ سالہ میں دیوبندیوں نے گھیر گھار کر دو گز اٹیا کیا سر پر لپیٹ دی۔ گورنمنٹ گنگوہیت نے دربھنگی صاحب کے بیر سڑی کا بلا لگا دیا کہ موکل کے انکار اقرار کی کچھ حاجت نہیں فقط ان کا فرمانا کافی ہے، یا وہ تمام دیوبندیوں خواہ خواص تھانوی صاحب کے گھر کی عام مختاری کا ڈپلومہ ان کے سپرد دینا تھا جس کے بعد تو وکیل کی نسبت دریافت کرنا ہی بے ضابطگی ہے۔ مسلمانو ! کیا وکالت یونہی ثابت ہوتی ہے، کیا اس سے دربھنگی صاحب کی محض جھوٹی وکالت کا ہوائی بگولا نہ پھوٹ گیا۔ جناب تھانوی صاحب نے دبی زبان بھی اتنی ہانک نہ دی کہ میں نے وکیل تو کیا ہے، کیا ایسے ہی منہ مناظرہ کرنے کے ہوتے ہیں۔ اللہ اللہ جناب تھانوی صاحب کی یہ گریز، یہ فرار، یہ ہول، یہ خوف، یہ صموت اور اس پر اذناب کی یہ حالتیں، اور پھر مناظرہ کا نام بدنام، ارے نامردی تو خدا نے دی ہے، مار مار تو کیے جاؤ ازلی نصیبوا نہیں حالتوں پر علمائے اسلام کو لکھتے ہو کہ خدا نے جو ذلت اور رسوائی آخری عمر میں آپ کی گردن کا طوق بنادیا ہے کیا ان ناپاک چالوں اور بے شرمی کے حیلوں سے ٹال سکتے ہیں۔ "ضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الذِّلَّةُ وَالْمَسْكَنَةُ" (ان پر مقرر کر دی گئی خواری اور ناداری۔ت) کے مصداق ہو کر عزت کی طلب فضول اور عبث ہے۔ ارے منافقو ! تمہارے اگلے تو اس سے بھی بڑھ کر کہہ گئے تھے کہ : "لَئِنْ رَّجَعْنَا إِلَى الْمَدِيْنَةِ لَيُخْرِجَنَّ الْاَعَزُّ مِنْهَا الْاَذَلَّ ط" ۱۔ اگر ہم مدینہ پھر کر گئے تو ضرور جو بڑی عزت والا ہے وہ اس میں سے نکال دے گا اُسے جو نہایت ذلت والا ہے۔ (ت) اس

پر قرآن عظیم نے کیا جواب دیا: "وَ لِلّٰهِ الْعِزَّةُ وَلِرَسُوْلِهٖ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَلٰكِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ" ۲۔ عزت تو اللہ اور رسول اور مسلمانوں کے لیے ہے مگر منافقین کو خبر نہیں۔

۱ القرآن الکریم ۸/۶۳ ۲ القرآن الکریم ۸/۶۳

Fatawa Razawiyya Volume 29

Those accursed ones always interpret divine honor as humiliation, or the blind descendants of the blind Iblis do not understand the humiliation of honor; it is on this that the Great Quran said:

"May Allah destroy them; how are they perverted!"[1] - May God strike them, where are they turned upside down.

If you have inherited this, what complaint is there? Truly, those whom Allah Almighty calls "perverted" or "turned upside down," what could be more impure than their twisted conduct and shameless excuses? Let Zaid be questioned and Amr answer for you as your representative. Did you appoint him as your representative? And what a perfectly pure conduct and very "modest" trickery it is that after receiving blows for 35 years, when pressured by some worldly leaders and under duress, he became a meaningless self-appointed representative. When confirmation was sought from the fictional client, "Did you appoint him as your representative?", then Oh Manifestor of Wonders, the answer disappeared along with the answerer. That's all I can say, and what better can I say than what the Great Quran has already stated:

"May Allah destroy them; how are they perverted!"[2] - May God strike them, where are they turned upside down.

Anyway, this was the end of the Delhi debate, which resulted in the extreme cowardice, relentless flight of Thanvi Sahab, or in Darbhangi terms, the severe humiliation and disgrace of his later life. And it had to be so, as the Holy Quran had stated:

"Indeed, Allah does not guide the defiantly disobedient people."[3] - Verily, Allah Almighty does not give the way to the transgressors.

And clearly stated:

"May Allah destroy them; how are they perverted!"[4] - May God strike them, where are they turned upside down.

What needs to be said here is that you have observed the antics of the aforementioned cursed and vile pamphlet, and by no means is it even a fourth of its antics. It was thought that even though its publication was announced from the Deobandi madrasa, some Deobandi cleric would hesitate to call such an impure, cursed thing his own. But this thought proved wrong. Now this same Darbhangvi

Sahab—no, no, rather for a few days their mouthpiece, this same Thanvi Sahab—yes, yes, these same problem-solvers, debaters, barristers, pleaders for all Deobandis, encompassing all principles and precedents, say in their own book of humiliation dated 30th Rabi-ul-Akhar. Now your reality is to be seen in writing too, Saif al-Naqi and...

[1] Al-Quran Al-Kareem 9/30 [2] Al-Quran Al-Kareem 9/30 [3] Al-Quran Al-Kareem 63/6 (transcribed as 6/23) [4] Al-Quran Al-Kareem 9/30

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

वे शापित लोग हमेशा ईश्वरीय सम्मान को अपमान के रूप में व्याख्यायित करते हैं, या अंधे इबलीस (शैतान) के अंधे वंशज सम्मान के अपमान को नहीं समझते; इसी पर महान कुरान ने फरमाया:

"क़ातलहुमुल्लाहु अन्ना युअफ़कून"[1] - अल्लाह उन्हें तबाह करे; वे कहाँ औंधे मुँह फिरे जा रहे हैं! - खुदा उन्हें मारे, वे कहाँ औंधे जाते हैं।

यदि आपको यही विरासत मिली है, तो क्या शिकायत है? वास्तव में, जिन्हें अल्लाह सर्वशक्तिमान 'औंधा' कहे, उनकी इस उलटी बुद्धि में इससे बढ़कर नापाक चाल और बेशर्म बहानेबाजी क्या होगी? ज़ैद से सवाल किया जाए और अम्र जवाब दे कि मैं आपका वकील (प्रतिनिधि) हूँ। क्या आपने उसे अपना वकील बनाया है? और क्या ही 'पवित्र' चाल और बड़ी 'शर्मीली' चालबाज़ी है कि 35 वर्षों तक मार खाने के बाद, जब कुछ सांसारिक रईसों के दबाव में जान पर बनी, तो एक अर्थहीन स्वयंभू वकील बन गए। जब काल्पनिक मुवक्किल (क्लाइंट) से पुष्टि मांगी गई कि "क्या आपने उसे अपना वकील बनाया है?", तो फिर 'ऐ चमत्कारों के प्रकटकर्ता', उत्तर देने वाले के साथ उत्तर भी गायब हो गया। बस मैं और क्या कहूँ, और इससे बेहतर क्या कह सकता हूँ जो महान कुरान पहले ही फरमा चुका है:

"क़ातलहुमुल्लाहु अन्ना युअफ़कून"[2] - अल्लाह उन्हें तबाह करे; वे कहाँ औंधे मुँह फिरे जा रहे हैं! - खुदा उन्हें मारे, वे कहाँ औंधे जाते हैं।

खैर, यह दिल्ली के मुनाज़रे (बहस) का अंत था, जो थानवी साहब की अत्यंत कायरता, निरंतर पलायन या दरभंगी शब्दों में उनके अंतिम जीवन की भीषण अपमान और जिल्लत पर समाप्त हुआ। और ऐसा होना ही चाहिए था, जैसा कि पवित्र कुरान ने कहा था:

"इन्नल्लाहा ला यहदिल क़ौमल फ़ासिक़ीन"[3] - बेशक अल्लाह ताला नाफ़र्मानों को रास्ता नहीं दिखाता।

और साफ़ तौर पर इरशाद फ़रमाया:

"क़ातलहुमुल्लाहु अन्ना युअफ़कून"[4] - अल्लाह उन्हें तबाह करे; वे कहाँ औंधे मुँह फिरे जा रहे हैं! - खुदा उन्हें मारे, वे कहाँ औंधे जाते हैं।

यहाँ यह कहना है कि आप उपर्युक्त शापित और नीच रिसाले (पर्चे) के करतब देख चुके हैं, और हर्गिज़ वह इसके चौथाई करतब भी नहीं हैं। सोचा था कि यद्यपि देवबंदी मदरसे से इसके प्रकाशन की घोषणा हुई है, लेकिन कोई देवबंदी मौलवी ऐसी नापाक लानती चीज़ को अपनी कहने से कतराएगा। लेकिन यह विचार गलत निकला। अब यही दरभंगी साहब—नहीं, नहीं, बल्कि कुछ दिनों के लिए उनके मुँह यही थानवी साहब—हाँ, हाँ, यही सारे देवबंदियों के मुश्किल कुशा (संकटमोचक), मुनाज़िर, बैरिस्टर, प्लीडर, तमाम उसूलों और नज़ीरों के स्वामी, अपने उसी 'ख़्वारी नामा' (अपमान नामा) 30 रबी-उल-आख़िर में फरमाते हैं। अब लेखन में भी आपकी हकीकत देखनी है, 'सैफ अल-नकी' और...

[1] अल-कुरान अल-करीम 9/30 [2] अल-कुरान अल-करीम 9/30 [3] अल-कुरान अल-करीम 63/6 (मूल में 6/23) [4] अल-कुरान अल-करीम 9/30

पृष्ठ 427/750

وہ ملعونہ ہمیشہ الٰہی عزت کو ذلت ہی تعبیر کرتے یا اندھے ابلیس کی اندھی نسلوں کو عزت کی ذلت نہیں سوجھتی، اسی پر تو قرآن عظیم نے فرمایا:

"قٰتَلَهُمُ اللّٰهُ اَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ۝" - خدا انہیں مارے کہاں اوندھے جاتے ہیں۔

یہی ترکہ اگر آپ نے پایا کیا جائے شکایت ہے، واقعی جن کو اللہ تعالٰی اوندھا کہے ان کی اوندھی اوندھی مت میں اس سے بڑھ کر ناپاک چال اور بے شرمی کا حیلہ کیا ہے کہ زید سے پوچھا جائے عمرو جواب دے آپ کو تیرا وکیل بتاتا ہے کیا تو نے اسے وکیل کیا ہے اور کمال پاک چال اور بڑی شرمیلی حیلہ گری کیا ہے یہ کہ ۳۵ سال ضربیں کھا کر بعض دنیاوی رئیسوں کے دباؤ سے جب دم پر بنی تو ایک بے معنی خود وکیل بنے، جب فرضی موکل صاحب سے تصدیق طلب ہو کہ کیا آپ نے اسے وکیل کیا تو پھر یا مظہر العجائب جواب مع مجیب غائب، بس اور تو کیا کہوں اور اس سے بہتر کہہ بھی کیا سکوں جو قرآن عظیم فرما چکا کہ :

"قٰتَلَهُمُ اللّٰهُ اَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ۝" - خدا انہیں مارے کہاں اوندھے جاتے ہیں۔

خیر یہ تو مناظرہ دہلی کا خاتمہ تھا جو تھانوی صاحب کی کمال دہشت خواری بے تکان فراری یا در بھنگی بولوں میں ان کی آخری عمر کی سخت ذلت و خواری پر ہوا، اور ہونا ہی چاہیے تھا کہ قرآن پاک فرما چکا تھا :

"اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ۝" - بے شک اللہ تعالٰی فاسقوں کو راہ نہیں دیتا (ت)

اور صاف ارشاد فرمایا

"قٰتَلَهُمُ اللّٰهُ اَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ۝" - خدا انہیں مارے کہاں اوندھے جاتے ہیں۔

یہاں کہنا یہ ہے کہ رسالہ ملعونہ خبیثہ مذکورہ کے کوتک آپ ملاحظہ فرما چکے اور حاشا وہ اس کے چہارم کوتک بھی نہیں ۔ خیال تھا کہ دیوبندی مدرسہ سے اگر چہ اس کی اشاعت کا اعلان ہے مگر کوئی دیوبندی ملا ایسی ناپاک ملعونہ کو اپنی کہتے کچھ تلے جائے گا۔ لیکن یہ خیال غلط نکلا۔ اب یہی دربھنگی صاحب، نہیں نہیں بلکہ کچھ دنوں کے لیے ان کے منہ یہی تھانوی صاحب، ہاں ہاں یہی سارے کے سارے دیوبندیوں کے مشکل کشا، مناظر، بیرسٹر، پلیڈر، حاوی جملہ اصول و نظائر اپنے اسی خواری نامہ ۳۰ ربیع الاخر میں فرماتے ہیں، تحریر میں بھی اب آپ کی حقیقت دیکھنی ہے ، سیف النقی اور

[1] القرآن الکریم ۳۰/۹ [2] القرآن الکریم ۳۰/۹ [3] القرآن الکریم ۶/۲۳ [4] القرآن الکریم ۳۰/۹

Fatawa Razawiyya Volume 29

"Justice demanded that you should have silenced your followers and made them feel ashamed of such unspeakable actions in matters of religion. If it was not with your encouragement, then at the very least your silence emboldened them, to the extent that they published a writing like 'Saif-un-Naqi', the like of which has not been produced even by any Arya or Christian priest to this day."

Then he said in inquiries: (7) After all, you also take the name of Allah, the One, the Subduer, Exalted and High. By the testimony of that same One, Subduer, Mighty, tell me whether these actions being performed by the debating scholars among you are clear and manifest evidence of their total helplessness and extremely foul cowardice or not? (8) Can those gentlemen who adopt such actions with such casualness, who hide, evade, distribute, publish and make public, present, give references, take pride, allow the aforementioned matters, and fail to prevent or deny them, be considered worthy of address by any heedless person? Or has it become crystal clear that the debate has concluded? (9) By the testimony of the same One, Subduer, Exalted be His Glory, also state whether that cursed treatise, which is being published specifically from your Madrasa Deoband, you obviously have knowledge of this publication, but does it involve your consultation or participation? If not, then is it with your pleasure and inclination? If not, then is your silence on it, and the result of this silence, an authorization or not? Etc.

Thanvi Sahib, as usual, remained silent and self-oblivious; the long and short of it is that everyone is naked in the same bathhouse. Couplet: Be shameless, then do whatever you wish. (Become shameless, then do as you please. - Translation)

Anyway, how long can one deal with such people? Let us present the actual point with which this introduction began: that the hearts Allah (the Mighty and Majestic) guides, their foot of steadfastness does not slip from the path of truth. If the progeny of Satan sows doubts, they do not rely on them. Then, when the matter of truth shows a glimpse, they immediately become alert and their eyes are opened. A confirmation of this is the refined incident of His Highness, the exalted, eminent, blessed Sayyid Husain Haider Mian Sahib Qibla Hussaini Zaidi Wasiti Marahrawi (may his blessings continue). His Highness is among the great Sayyids and progeny of the sanctuary of Marahra, and a student of Aala Hazrat, Taj-ul-Fuhul, Muhib-ur-Rasool, Maulana Maulvi Hafiz Haji Shah Muhammad Abdul Qadir Sahib Qadri Usmani Badayuni (may his secret be sanctified). From Lucknow, with some of his relatives...

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

"इंसाफ़ तो यह था कि आप अपने अनुयायियों का मुँह बंद करते और दीन के मामले में ऐसी अकथनीय हरकतों पर उन्हें शर्मिंदा करते। अगर आपकी तरफ़ से प्रोत्साहन नहीं था, तो कम से कम आपकी ख़ामोशी ने उन्हें बढ़ावा दिया, यहाँ तक कि उन्होंने 'सैफ़-उन-नक़ी' जैसी तहरीर प्रकाशित की, जिसकी मिसाल आज तक किसी आर्य या पादरी से भी न बन पड़ी।"

फिर पूछताछ में फ़रमाया: (7) आख़िर आप भी अल्लाह वाहिद क़हार जल्ला व आला का नाम तो लेते ही हैं। उसी वाहिद क़हार जब्बार की गवाही से बताइए कि ये हरकतें जो आपके यहाँ के मुनाज़िरीन (बहस करने वाले विद्वान) कर रहे हैं, क्या वे उनके मुकम्मल बेबसी और निहायत गंदी बुज़दिली की साफ़ और स्पष्ट दलील हैं या नहीं? (8) जो हज़रात ऐसी हरकतें और इतनी बेतक़ल्लुफ़ी अख्तियार करें, छुपाएँ, बचें, बाँटें, प्रकाशित और ज़ाहिर करें, पेश करें, हवाला दें, फ़ख़्र करें, उल्लेखित बातों को रवा रखें, उन्हें रोकने और उनसे इनकार करने में कोताही करें, क्या वे किसी ग़ाफ़िल के नज़दीक भी संबोधन के पात्र ठहर सकते हैं? या यह साफ़ ज़ाहिर हो गया कि मुनाज़रा ख़त्म हो गया। (9) उसी वाहिद क़हार जल्ल जलालाहु की गवाही से यह भी बता दीजिए कि वह मलऊन रिसाला (शापित पत्रिका) जो ख़ास आपके मदरसा देवबंद से प्रकाशित हो रहा है, उस प्रकाशन की आपको सूचना तो ज़ाहिर है, मगर क्या उसमें आपकी सलाह या भागीदारी है या नहीं? यदि नहीं, तो क्या इसमें आपकी रज़ा और मर्ज़ी है या नहीं? यदि नहीं, तो क्या आपकी ख़ामोशी और इस ख़ामोशी का नतीजा अनुमति है या नहीं? इत्यादि।

थानवी साहब आदत के मुताबिक़ ख़ामोश और सुध-बुध खोए रहे; संक्षेप में बात वही है कि 'हमाम में सब नंगे हैं'। मिसरा: बे हया बाश आन्चा ख़वाही कुन (बेशर्म हो जाओ, फिर जो चाहो करो। - अनुवाद)

ख़ैर, ऐसों के मुँह कहाँ तक लगेंगे। असल बात जिस पर इस भूमिका की शुरुआत हुई थी, वह अर्ज़ करें कि अल्लाह अज्ज़वजल जिन दिलों को हिदायत देता है, उनके साबित-क़दमी का पैर हक़ के रास्ते से नहीं डगमगाता। अगर शैतान की औलाद वसवसे (शंकाएं) डाले, तो वे उस पर भरोसा नहीं करते। फिर जब हक़ (सत्य) की झलक दिखाई देती है, तो वे फ़ौरन होशियार हो जाते हैं और उनकी आँखें खुल जाती हैं। इसकी तस्दीक़ (पुष्टि) करने वाला हज़रत-ए-वाला, बुलंद मर्तबा, मुबारक हस्ती सैयद हुसैन हैदर मियाँ साहब क़िबला हुसैनी ज़ैदी वास्ती मारहरवी (दामत बरकातुहुम) का एक उम्दा

वाक़या है। हज़रत-ए-वाला महान सादात और मारहरा मुतहरा के शहज़ादों में से हैं और आला हज़रत, ताज-उल-फ़ुहूल, मुहिब-उर-रसूल, मौलाना मौलवी हाफ़िज़ हाजी शाह मोहम्मद अब्दुल क़ादिर साहब क़ादरी उस्मानी बदायूँनी (क़ुद्दिसा सिर्रहुश-शरीफ़) के शागिर्द हैं। लखनऊ से अपने कुछ अज़ीज़ों (रिश्तेदारों) के साथ...

میں انصاف یہ تھا کہ اپنے اتباع کا منہ بند کرتے معاملہ دین میں ایسی ناگفتنی حرکات پر انہیں لجاتے شرماتے، اگر جناب کی سے ترغیب نہ تھی تو کم از کم آپ کے سکوت نے انہیں شہ دی یہاں تک کہ انہوں نے سیف النقی جیسی تحریر شائع کی جس کی نظیر آج تک کسی آریہ یا پادری سے بھی بن نہ پڑی"۔

پھر استفسارات میں فرمایا: (۷) آخر آپ بھی اللہ واحد قہار جل وعلا کا نام تو لیتے ہیں اسی واحد قہار جبار کی شہادت سے بتائیے کہ یہ حرکات جو آپ کے یہاں کے علمائے مناظرین کر رہے ہیں صاف صریح ان کے عجز کامل اور نہایت گندے جملہ بزدل کی دلیل روشن ہیں یا نہیں۔ (۸) جو حضرات ایسی حرکات اور اتنی بے تکلفی اختیار کریں، چھپائیں، بچیں، بانٹیں، شائع و آشکار کریں، پیش کریں، حوالہ دیں، افتخار کریں، امور مذکورہ کو روا رکھیں، ترک انسداد و انکار کریں کسی غافل کے نزدیک لائق خطاب ٹھہر سکتے ہیں یا صاف ظاہر ہو گیا کہ مناظرہ آخر ہو گیا۔ (۹) اُسی واحد قہار جل جلالہ کی شہادت سے یہ بھی بتا دیجئے کہ وہ رسالہ ملعونہ جو خاص جناب کے مدرسہ دیوبند سے اشاعت ہو رہا ہے اس اشاعت کی آپ کو اطلاع تو ظاہر مگر اس میں آپ کے مشورے آپ کی شرکت ہے یا نہیں؟ نہیں تو آپ کی رضا و رغبت ہے یا نہیں، نہیں تو آپ کو سکوت اور اس سکوت کا محصل اجازت ہے یا نہیں۔ الخ۔

تھانوی صاحب حسب عادت خاموش و خود فراموش، غرض بات وہی ہے کہ ایک حمام میں سب ننگے۔ ع بے حیا باش آنچہ خواہی کن (بے حیا ہو جا پھر جو چاہے کر۔ت)

خیر ایسوں کے منہ کہاں تک لگیں اصل بات جس پر اس تمہید کا آغاز تھا عرض کریں کہ اللہ عزوجل جن قلوب کو ہدایت فرماتا ہے ان کا قدم ثبات جادہ حق سے لغزش نہیں کرتا اگر ذریت شیطان وسوسے ڈالے تو اس پر اعتماد نہیں کرتے پھر جب امر حق جھلک دکھاتا ہے معاً ہوشیار ہو جاتے اور ان کی آنکھیں کھل جاتی ہیں اس کی تصدیق والا حضرت بالا درجت معلی برکت حضرت سید حسین حیدر میاں صاحب قبلہ حسینی زیدی واسطی مارہری دامت برکاتہم کا واقعہ نفیسہ ہے حضرت والا اجلہ سادات عظام و صاحبزادگان سرکار مارہرہ مطہرہ و تلامذہ اعلیحضرت تاج الفحول محب الرسول مولینا مولوی حافظ حاجی شاہ محمد عبدالقادر صاحب قادری عثمانی بدایونی قدس سرہ الشریف سے ہیں لکھنؤ اپنے بعض اعزہ کے

Volume 29 Fatawa Razawiya

They had come for treatment; the croaks of the carrion-eating devils of Deoband had spread across India like monsoon pests. They were staying at Jhwai Tola. One night, near the door, some Deobandi "ravens" were heard talking amongst themselves, saying that Maulvi Ahmad Raza Khan Sahib has become a believer in the Prophet's (peace and blessings of Allah be upon him) knowledge of the unseen (Ilm-e-Ghaib), and that this belief is one of disbelief (Kufr). Following their habit, they were spewing slanders and accusations. This was very unpleasant for the Hazrat. But Allah is Great, there was the command of the Lord Almighty:

"If a wicked person comes to you with any news, then investigate it thoroughly."[1] | When a sinner brings you some news, verify it well.

On the other hand, with the fervor of the firm religion in his heart, he (Hazrat) wrote a noble letter early in the morning addressed to A'la Hazrat, the Renewer of the present century. Its Hashimite tone was such that [he said], "In any case, I need to satisfy myself. If possible for you, please explain." He even went as far as to say, "If you do not provide a satisfactory answer to this request of mine, I will have to change my belief regarding the knowledge of the unseen."

The Renewer of religion and nation (A'la Hazrat) immediately sent this letter, which is now before you under the title 'Khalis-ul-I'tiqad', via registered mail to the noble Hazrat. Along with it, he also sent 'Anba-ul-Mustafa', 'Husam-ul-Haramain', 'Tamheed-e-Iman', 'Batsh-e-Ghaib', 'Zafar-ud-Din-ut-Tayyib', etc.

Praise be to Allah, as the manifestation of this noble verse occurred: "They remember [Allah], and at once they see [clearly]."[2]

When the devil casts a whisper upon those who are pious, they immediately become alert and their eyes are opened.

After reviewing these letters and treatises in their entirety over three weeks, the noble Hazrat sent these two esteemed letters to A'la Hazrat.

First Letter: In the name of Allah, the Most Gracious, the Most Merciful. We seek His help and send blessings and peace upon His Noble Prophet. Hazrat Maulana, and by virtue our foremost, may his shadow, blessings, and life be prolonged. From the humble Syed Hussain Haider, after offering greetings and respects, the submission to your high service is that your kind letter was brought by the bearer.

Note: The second edition of Moradabad was very poorly printed, causing difficulty in reading.

[1] Al-Quran al-Kareem 49/6 [2] Al-Quran al-Kareem 7/201

वे उपचार के लिए आए थे; देवबंद के मुर्दाखोर शैतानों की कांव-कांव पूरे भारत में मानसूनी कीटों की तरह फैल गई थी। वे झवई टोला में ठहरे हुए थे। एक रात दरवाज़े के पास कुछ देवबंदी "कौवों" को आपस में यह बात करते सुना गया कि मौलवी अहमद रज़ा खान साहिब पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के ग़ैब के इल्म (परोक्ष ज्ञान) के कायल हो गए हैं, और यह अकीदा कुफ्र (नास्तिकता) का है। अपनी आदत के अनुसार वे झूठे आरोप और तोहमत लगा रहे थे। हज़रत को यह बहुत नागवार गुज़रा। लेकिन अल्लाह महान है, उधर रब अज़्ज़वजल का इरशाद था कि:

"यदि कोई फासिक (दुष्ट व्यक्ति) तुम्हारे पास कोई समाचार लाए, तो उसकी अच्छी तरह जांच कर लो।"[1] | जब कोई पापी तुम्हारे पास कोई खबर लेकर आए, तो उसकी अच्छी तरह पुष्टि कर लो।

दूसरी ओर हज़रत में दीन-ए-मतीन की हरारत (धर्म के प्रति जोश) के कारण, सुबह ही आला हज़रत, मुजद्दिद-ए-माइत-ए-हाज़िरा के नाम एक पत्र लिखा, जिसका हाशिमी अंदाज़ ऐसा था कि [उन्होंने कहा], "हर हाल में मुझे अपने इत्मीनान (संतुष्टि) की ज़रूरत है, अगर आप से मुमकिन हो तो बता दें।" यहाँ तक कि कह दिया कि "अगर आप मेरे इस अर्ज़े (निवेदन) का संतोषजनक उत्तर नहीं देंगे, तो मुझे इल्म-ए-ग़ैब के बारे में अपना अकीदा बदलना पड़ेगा।"

दीन और मिल्लत के मुजद्दिद (आला हज़रत) ने तुरंत यह खत, जो इस समय 'खालिसुल एतकाद' के नाम से आपके सामने है, हज़रत-ए-वाला को रजिस्टर्ड डाक से भेजा और इसके साथ 'अंबा-उल-मुस्तफा', 'हुसाम-उल-हरमौन', 'तमहीद-ए-ईमान', 'बतश-ए-ग़ैब', 'ज़फ़र-उद-दीन-अत-तय्यब' आदि भी भेजे।

अल्हम्दुलिल्लाह कि इसी आयते करीमा का ज़ुहूर हुआ कि "वे (अल्लाह को) याद करते हैं और तुरंत उनकी आँखें खुल जाती हैं।"[2]

जब मुत्तकी (परहेजगार) लोगों पर शैतान कोई वसवसा (संदेह) डालता है, तो वे फौरन होशियार हो जाते हैं और उनकी आँखें खुल जाती हैं।

इन पत्रों और किताबों को पूरी तरह तीन सप्ताह तक देखने के बाद हज़रत-ए-वाला ने ये दो गरिमापूर्ण पत्र आला हज़रत को भेजे।

पहला पत्र: अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील और दयावान है। हम उसी से सहायता मांगते हैं और उसके नेक नबी पर दुरूद ओ सलाम भेजते हैं। हज़रत मौलाना, और फ़ज़्ल में हमारे अव्वल, उनका साया, बरकतें और उम्र दराज़ हो। हकीर (विनीत) सैयद हुसैन हैदर की ओर से तस्लीम-ए-नियाज़ के बाद आपकी खिदमत-ए-आली में अर्ज़ है कि आपका इनायत नामा (कृपा पत्र) अर्ज़दार लाया।

टिप्पणी: मुरादाबाद का दूसरा संस्करण बहुत खराब छपा था, जिससे पढ़ने में दिक्कत हुई।

[1] अल-कुरान अल-करीम 49/6 [2] अल-कुरान अल-करीम 7/201

पृष्ठ 430/750

معالجہ کو تشریف لائے تھے، شیاطین غراب خوار دیوبندیہ کی غرائیں تو ہندوستان میں برساتی حشرات الارض کی طرح پھیلی ہیں حضرت جھوائی ٹولہ میں فروکش تھے دروازہ کے قریب ایک شب کچھ دیوبندی غرابوں کا آپس میں یہ ذکر کرتے سنا کہ مولوی احمد رضا خاں صاحب رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کے علم غیب کے قائل ہو گئے ہیں اور یہ عقیدہ کفر کا ہے، اور حسبِ عادت افتراء و تہمت بک رہے تھے حضرت کو بہت ناگوار گزرا۔ مگر اللہ اکبر ادھر رب عزوجل کا ارشاد کہ:

"اِنْ جَآءَكُمْ فَاسِقٌۢ بِنَبَاٍ فَتَبَيَّنُوْٓا"[1]۔ | جب کوئی فاسق تمہارے پاس کچھ خبر لے کر آئے تو خوب تحقیق کرلو۔

ادھر حضرت میں دین متین کی حرارت، صبح ہی اعلیحضرت مجدد المائۃ الحاضرہ کے نام والا نامہ تحریر فرمایا جس کے ہاشمی تیور یہاں تک تھے کہ بہر نوع مجھ کو اپنی تسکین کی ضرورت ہے اگر آپ سے ممکن ہو تو فرمادیجئے۔ حتی کہ ارشاد فرمایا تھا۔ اگر اس میرے عریضہ کا جواب شافی آپ نہ دیں گے تو یہ عقیدہ علم غیب کا مجھ کو اپنا تبدیل کرنا پڑے گا۔ اعلیحضرت مجدد دین و ملت نے فوراً یہ خط جو اس وقت بنام خالص الاعتقاد آپ کے پیشِ نظر ہے حضرت والا کور رجسٹری بھیجا اور اس کے ساتھ انباء المصطفی و حسام الحرمین و تمہید ایمان و بطش غیب و ظفر الدین الطیب و غیر ہا بھی ارسال کئے۔ الحمد للہ کہ اسی آیہ کریمہ کا ظہور ہوا کہ "تَذَكَّرُوْا فَاِذَا هُمْ مُّبْصِرُوْنَ"[2]۔ تقویٰ والوں پر شیطان کچھ وسوسہ ڈالے تو وہ معاً ہوشیار ہو جاتے اور ان کی آنکھیں کھل جاتی ہیں۔ اس خط و رسائل کو تمام و کمال تین ہفتہ میں ملاحظہ فرما کر حضرت والا نے یہ دو گرامی نامے اعلیحضرت کو ارسال فرمائے۔ نامہ اول: بسم اللہ الرحمن الرحیم ط و بہ نستعین و

نصلی و نسلم علی نبیہ الکریم ط حضرت مولینا وبالفضل اولنا دام ظلہم و برکاتہم و عمرہم۔ از حقیر سید حسین حیدر بعد تسلیم نیاز عرض خدمت عالی اینکہ نوازش نامہ عالی عرض دار لایا۔

عہ: مراد آباد کی طبع دوم کا بہت ناقص چھپا تھا کہ پڑھنے میں دقت تھی ۱۲۔

1 القرآن الکریم ۶/۴۹ 2 القرآن الکریم ۷/۲۰۱

Fatawa Rizwiya Volume 29

May Allah keep the honorable personality safe with the renewal and foundation of the firm religion. For this century, Allah the Almighty has sent your noble self for all of us. I have read the treatises bestowed by your excellency word for word, and the whole day passes in studying them. Although whatever I had heard from your tongue from time to time on this issue, I was holding firmly to that same strong rope. Now, this noble discourse has made my belief like steel, such that it cannot be described. The fatwa "Inba-ul-Mustafa" did not benefit me because of its printing [see note 12], nor did I have any need after this writing. Seeing the copy of "Tamheed-e-Iman", how can I express the state of my joy? Whatever the scholars of the Two Holy Harams have written is just a small sample of a large quantity. And this is my belief that now there is no one like you in India and Arabia. This matter has become firmly rooted in my heart without exaggeration. The people with whom I had conversations about this matter have not met me yet. Now, when they meet, I will show them the treatise of "Harmain Tayyibain" and seek an answer. Among them, I wrote to the late Diwan-e-Nemat brother Hasan Raza Khan Sahib. The deceased had promised me that he would certainly send it to me after printing. May Allah keep him in the embrace of His mercy. Dated 7th Rabi-ul-Thani, Monday. Please do send me the newly printed treatises along with the Diwan. Nowadays, my heart finds solace in them, rather they remain in constant study. May Allah keep you alive and safe. Nothing more than humility. The humble Syed Hussain Haider from Lucknow, Jhawai Tola, house of the late Hakim Hasan Raza.

During this period, the treatises "Keen Kashan", "Panja-e-Tegh", and "Barish-e-Sang-o-Paikan-e-Jang-Gudaz" were also prepared by the grace of Allah. According to the order, they were sent to your excellency along with the "Diwan-e-Naat Shareef" by the author Hazrat Maulana Molvi Haji Hasan Raza Khan Sahib (may Allah have mercy on him). On the other hand, during this period, your excellency also met those opponents whom your excellency forced to retreat by showing these divine swords. And this second noble letter was presented:

Second Letter Hazrat Maulana, who is foremost in grace and glory, may their shadow and blessings be upon all Muslims. After humble greetings, let it be known that the bundle of "Diwan-e-Naat Shareef" along with the gifted treatises from your presence has reached me. May Allah keep you alive. The people with whom I had discussions are followers of that Marzi Hasan Darbhangvi. I have related to all of them "Barish-e-Sangi" and the advertisements.

Note: The second printing of Moradabad was very poorly printed, causing difficulty in reading. 12

Page 431 of 750

फतावा रज़विया जिल्द 29

अल्लाह ताला सम्मानित व्यक्तित्व को दीन-ए-मतीन (मज़बूत धर्म) के नवीनीकरण और स्थापना के साथ सुरक्षित रखे। इस सदी के लिए अल्लाह ताला ने हम सबके लिए आपकी महान हस्ती को भेजा है। आपके द्वारा प्रदान किए गए शोध पत्रों (रसाइल) को मैंने शब्द-दर-शब्द पढ़ा है और पूरा दिन उन्हीं के अध्ययन में बीतता है। हालाँकि इस मसले में जो कुछ मैंने समय-समय पर आपकी ज़बान से सुना था, मैं उसी मज़बूत रस्सी (हब्ल-ए-मतीन) को मजबूती से पकड़े हुए था। अब इस महान व्याख्या ने मेरे इस अक़ीदे (विश्वास) को ऐसा फौलाद बना दिया है जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता। 'इन्बा-उल-मुस्तफ़ा' के फतवे ने अपनी छपाई (नोट 12) के कारण मुझे कोई लाभ नहीं दिया और न ही इस लेखन के बाद मुझे इसकी आवश्यकता रही। 'तमहीद-ए-ईमान' की प्रति देखकर मैं अपनी प्रसन्नता का हाल क्या बयान करूँ? हरमैन शरीफैन के विद्वानों ने जो कुछ लिखा है, वह तो बस एक नमूना मात्र है और मेरा यही विश्वास है कि अब हिन्दुस्तान और अरब में आपका कोई सानी नहीं है। यह बात बिना किसी अतिशयोक्ति के मेरे दिल में घर कर गई है। जिन लोगों से इस बारे में मेरी बातचीत हुई थी, वे अभी तक मुझे नहीं मिले हैं। अब जब वे मिलेंगे, तो उन्हें 'हरमैन तय्यिबन' का रिसाला दिखाऊँगा और जवाब माँगूँगा। इनमें से मैंने मरहूम दीवान-ए-नेमत भाई हसन रज़ा खां साहब को लिखा था। मरहूम ने मुझसे वादा किया था कि छपने के बाद तुम्हें ज़रूर भेजूँगा। अल्लाह ताला उन्हें अपनी रहमत की आगोश में रखे। दिनांक 7 रबी-उल-थानी, सोमवार। नये छपे हुए रिसाले दीवान के साथ मुझे ज़रूर भेज दें। आजकल उन्हीं से दिल बहलता है, बल्कि वही अध्ययन में रहते हैं। अल्लाह ताला आपको ज़िंदा और सलामत रखे। बस बहुत अधिक नियाज़ (विनम्रता)। तुच्छ सैयद हुसैन हैदर, लखनऊ झवाई टोला, मकान हकीम हसन रज़ा मरहूम।

इस अवधि के दौरान 'कीन कशन', 'पंजा-ए-तेग' और 'बारिश-ए-संग-ओ-पैकन-ए-जांगुदाज़' जैसे रिसाले भी अल्लाह के फज़ल से तैयार हो गए। आदेशानुसार, लेखक हज़रत मौलाना मौलवी हाजी हसन रज़ा खान साहब (रहमतुल्लाह अलैहि) द्वारा रचित 'दीवान-ए-नात शरीफ' के साथ हज़रत की सेवा में भेजे गए। दूसरी ओर, इस अवधि में हज़रत को वे विरोधी भी मिले जिन्हें हज़रत ने ये ईश्वरीय तलवारें दिखाकर पीछे हटने पर मजबूर कर दिया। और यह दूसरा पत्र पेश किया गया:

दूसरा पत्र हज़रत मौलाना, जो फज़ल और महिमा में अग्रणी हैं, उनका साया और बरकतें तमाम मुसलमानों पर बनी रहें। विनम्र अभिवादन के बाद, विदित हो कि आपकी ओर से भेंट किए गए रिसालों के साथ 'दीवान-ए-नात शरीफ' का पुलिंदा मिल गया है। अल्लाह आपको ज़िंदा रखे। जिन

लोगों से मेरी बातचीत हुई थी, वे उसी मर्ज़ी हसन दरभंगवी के अनुयायी हैं। 'बारिश-ए-संगी' और विज्ञापनों के बारे में मैंने उन सबको बता दिया।

नोट: मुरादाबाद की दूसरी छपाई बहुत घटिया थी जिससे पढ़ने में कठिनाई हो रही थी। 12

पृष्ठ 431 / 750

معزز فرمایا او تعالیٰ ذات والا کو بائیں تجدید و تاسیس دین متین سلامت رکھے اس صدی کے مجد اللہ تعالیٰ نے ہمارے سب کے واسطے ذات عالی کو بھیجا ہے رسائل عنایت فرمودہ جناب میں نے حرف بحرف پڑھے اور تمام دن انہیں کے مطالعہ میں گزرتا ہے اگرچہ اس مسئلہ میں جو کچھ میں نے وقتاً فوقتاً آپ کی زبان سے سنا تھا اسی حبل متین کو مضبوط پکڑے ہوئے تھا اب اس تقریر والا نے تو میرے اس عقیدہ کو ایسا فولاد کردیا ہے کہ جس کا بیان نہیں، فتویٰ انباء المصطفیٰ نے بوجہ اپنی طبع ۱۲ کے مجھ کو کوئی فائدہ نہیں دیا اور نہ اس تحریر کے بعد مجھ کو حاجت رہی، نسخہ "تمہید ایمان" کو دیکھ کر میں اپنی مسرت کا حال کیا عرض کروں علمائے حرمین شریفین نے جو کچھ تحریر فرمایا وہ مشتے نمونہ خروار ہے اور میرا یہی عقیدہ ہے کہ اب ہندوستان و عرب میں آپ کا مثل نہیں ہے اور یہ امر بلا مبالغہ میرے دل میں راسخ ہو گیا ہے وہ لوگ جن سے اس بات میں مجھ سے گفتگو ہوئی تھی ابھی تک مجھ کو نہیں ملے ہیں اب وہ ملیں تو رسالہ حرمین طیبین دکھاؤں اور جواب لوں میں سے دیوان نعمت برادرم حسن رضا خان صاحب مرحوم کو لکھا مرحوم مجھ سے وعدہ فرما گئے تھے کہ بعد طبع تجھ کو ضرور بھیجوں گا اللہ تعالیٰ ان کو اپنی آغوشِ رحمت میں رکھے مورخہ ۷ ربیع الثانی یوم دوشنبہ رسائل مطبوعہ جدید مجھ کو ضرور مع دیوان بھیج دیں آج کل انہیں سے دل بہلتا ہے مکر وہی مطالعہ میں رہتے ہیں اللہ تعالیٰ آپ کو زندہ و سلامت رکھے زیادہ نیاز فقط ، احقر سید حسین حیدر از لکھنؤ جھوائی ٹولہ، مکان حکیم حسن رضا مرحوم۔

اس مدت میں رسائل کین کشن پنجہ تیغ و بارش سنگ و پیکان جانگداز بھی بفضلہ تعالیٰ تیار ہو گئے کہ حسب الحاکم مع دیوان نعت شریف مصنف حضرت مولنا مولوی حاجی حسن رضا خان

صاحب رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ روانہ خدمت حضرت والا کیے گئے ادھر اس مدت میں حضرت والا کو وہ مخالفین بھی مل گئے جن کو یہ الہی تلواریں دکھا کر حضرت نے پسپا کیا ، اور یہ دوسرا نامہ نامی احضا فرمایا:

نامہ دوم حضرت مولنا و بالفضل والمجد اولنامد ظلہم و برکاتہم علی سائر المسلمین، بعد تسلیم نیاز آنکہ پولندہ دیوان نعت شریف مع رسائل عطیہ حضور پہنچے اللہ آپکو زندہ رکھے جن لوگوں سے میری گفتگو ہوئی تھی وہ انہیں مرضی حسن در بھنگی کے اتباع میں ہیں بارش سنگی و اشتہارات میں نے سب سنائے۔

عہ : مراد آباد کی طبع دوم کا بہت ناقص چھپا تھا کہ پڑھنے میں دقت تھی ۱۲

Fatawa Ridawiyya, Volume 29

Expressed great surprise at this, I said that Maulana Sahab did not refuse the debate, rather he expressed readiness for discussion and debate with the entire group on those conditions; seeing the advertisements etc., he said that these did not reach them, otherwise they were not such that they would not have replied to the pamphlet immediately. I submitted that this is an old, well-worn truth that 'the mail was looted'. On this, it was said that now we are writing the names of the pamphlets etc., the answers to which will come. You (note) will inform them. Then it was said that it was not necessary for Maulana Sahab to issue takfir (decree of infidelity) against the scholars of religion, his pen is very sharp. I said that this nation was born for Jihad against the enemies of Allah. Now that the sword is no longer there, Almighty Allah has granted that same cutting edge to their pen. During the conversation, it was also mentioned that Maulana Sahab's entire Arab world became an enemy in competition with a student of Maulana Rashid Ahmad Sahab; had he not left from there, it would have been very difficult. I said this is the one sentence you have spoken truly; the testimony of your content which the scholars of the Harams (Makkah and Madinah) have given is with me, see how grandly it's written, but if you can produce any such sentence, then I shall believe. I started reading the passages. And the color of those 'modest' ones started changing; I stood up reciting 'Lahawl' (a prayer seeking refuge in Allah from evil). Dated: 29-4-1.

O Muslims! Witness the cunning, deceit, and 'modesty' of these gentlemen. Anyone whom God grants wisdom, faith, and justice, like the respected Sayyid Sahab (may his blessings last), will surely rise reciting 'Lahawl' upon these deceitful people who follow the ways of Iblis.

Now, by the help of Almighty Allah, study 'Khalis al-I'tiqad' and refresh your faith, certainty, love, and servitude to the Master of Messengers, may the peace and blessings of Almighty Allah be upon him.

And all praise is for Allah, Lord of the worlds, and the best of blessings and most perfect peace be upon our Master and Leader, his Family, his Companions, his Son, and all his party. Ameen. Sayyid Abdul Rahman, may he be forgiven.

Note: Until now, these gentlemen have not even turned a side (replied), so it seems they are all afflicted with the same fatal disease. 12.

Page 432 of 750

फतावा रज़विया, खंड 29

इस पर बड़ा आश्चर्य व्यक्त किया, मैंने कहा कि मौलाना साहब ने मुनाज़रा (बहस) से इनकार नहीं किया, बल्कि उन शर्तों पर पूरी जमात से बहस व मुबाहसा करने को कहा; विज्ञापन आदि देखकर उन्होंने कहा कि ये उन तक पहुँचे नहीं, वरना वे ऐसे नहीं थे कि रिसाले (पुस्तिका) का जवाब तुरंत न देते। मैंने अर्ज़ किया कि यह तो पुराना घिसा-पिटा सच है कि 'डाक लुट गई'। इस पर कहा गया कि अब हम उन रिसालों के नाम आदि लिख रहे हैं जिनका जवाब आएगा। आप (नोट) उन्हें सूचित करेंगे। फिर कहा गया कि मौलाना साहब के लिए यह ज़रूरी न था कि वे दीन के उलेमा की तकफ़ीर (काफ़िर ठहराना) करें, उनकी कलम बहुत तेज़ है। मैंने कहा कि यह कौम अल्लाह के दुश्मनों पर जिहाद के लिए पैदा हुई है। अब तलवार नहीं रही तो अल्लाह तआला ने वही काट-छाँट उनकी कलम को अता फरमा दी है। बातचीत के दौरान यह भी कहा गया कि मौलाना रशीद अहमद साहब के एक शागिर्द के मुक़ाबले में मौलाना साहब का सारा अरब दुश्मन हो गया; अगर वहाँ से न आते तो बड़ी मुश्किल होती। मैंने कहा कि यही एक जुमला आपने सच फरमाया है; आपके मज़मून की गवाही जो हरमैन (मक्का व मदीना) के उलेमा ने दी है, वह मेरे पास है, उसे देख लीजिए कि कितना बड़ा लिखा है, मगर आप ऐसा कोई जुमला निकाल लाएँ तो मैं मानूँ। मैंने इबारतें (अनुच्छेद) पढ़ना शुरू कीं। और उन 'हयादारों' का रंग बदलना शुरू हो गया; मैं 'लाहौल' पढ़ कर उठ खड़ा हुआ। फ़क़त 29-4-1

मुसलमानों! इन हज़रात की चालबाज़ियाँ, मक्कारियाँ और 'हयादारियाँ' देखिये। जिस बंदे को खुदा अक़्ल, ईमान और इंसाफ़ देगा, वह हज़रत वाला सैयद साहब (दामत बरकातुहुम) की तरह इन इब्लीस के तौर-तरीकों वाले मक्कारों पर 'लाहौल' ही पढ़ कर उठेगा।

अब अल्लाह तआला की मदद से 'खालिसुल एतिकाद' का मुताला (अध्ययन) कीजिये और हुज़ूर सैयदुल मुरसलीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के प्रति अपने ईमान, यकीन, मुहब्बत और गुलामी को ताज़गी दीजिये।

और तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं जो तमाम जहानों का रब है, और सबसे बेहतरीन दुरूद और सबसे कामिल सलाम हमारे आका व मौला, उनकी आल, असहाब, बेटे और उनकी पूरी जमात पर हो। आमीन। सैयद अब्दुल रहमान, अल्लाह उनकी मग़फ़िरत फ़रमाए।

नोट: अब तक इन साहबों ने करवट नहीं ली (कोई जवाब नहीं दिया), तो ऐसा लगता है कि उन सबको एक ही मर्ज़-उल-मौत (जानलेवा बीमारी) लगी हुई है। 12.

اس پر بڑا تعجب ظاہر کیا، میں نے کہا کہ مولانا صاحب نے مناظرہ سے انکار نہ فرمایا، بلکہ ان شرائط پر مباحثہ و مناظرہ تمام طائفہ سے فرمایا، اشتہارات وغیرہ دیکھ کر کہا کہ یہ ان تک پہنچے نہیں ورنہ وہ ایسے نہ تھے کہ رسالہ کا جواب فوری نہ دیتے۔ میں نے عرض کیا کہ یہ تو پرانا منجھا ہوا سچ ہے کہ ڈاک لٹ گئی۔ اس پر کہا کہ اب ہم تحریر کرتے ہیں رسائل کا نام وغیرہ جو جواب آئے گا۔ آپ عہ کو مطلع کریں گے۔ پھر کہا کہ مولوی صاحب کو لازم نہ تھا کہ علمائے دین کی تکفیر کرتے قلم ان کا بہت تیز ہے۔ میں نے کہا کہ یہ قوم اعداء اللہ پر جہاد کے لیے پیدا ہوئی ہے۔ اب تلوار نہیں رہی تو خدائے تعالیٰ نے وہی کاٹ چھانٹ ان کے قلم کو عطا فرمادی ہے۔ اثنائے ذکر میں یہ بھی کہا کہ مولوی رشید احمد صاحب کے ایک شاگرد کے مقابلہ میں مولوی صاحب کا سارا عرب دشمن ہو گیا اگر وہاں سے چلے نہ آتے تو بڑی مشکل پڑتی۔ میں نے کہا یہ ہی ایک فقرہ آپ نے سچ فرمایا ہے آپ کے مضمون کی شہادت جو علماء حرمین نے دی ہے وہ میرے پاس ہے اسے دیکھ لیجئے کیسا بڑا لکھا مگر اس طرح کا کوئی فقرہ آپ نکال لائیں تو میں مانوں، عبارات میں نے پڑھنا شروع کیں۔ اور ان حیاداروں کا رنگ متغیر ہونا شروع ہوا میں لاحول پڑھ کر اٹھ کھڑا ہوا فقط ۲۹۔ ۴۔۱

مسلمانو! حضرات کی عیاریاں مکاریاں حیاداریاں ملاحظہ کیں حضرت والا سید صاحب قبلہ دامت برکاتہم کی طرح جس بندہ کو خدا عقل و ایمان و انصاف دے گا وہ ان مکارون ابلیس شعاروں پر لاحول ہی پڑھ کر اٹھے گا۔

اب بعونہ تعالیٰ خالص الاعتقاد مطالعہ کیجئے اور اپنے ایمان و یقین و محبت و غلامی حضور سید المرسلین صلی اللہ تعالیٰ علیہ و سلم کو تازگی دیجئے۔

والحمد للہ رب العلمین وافضل الصلوٰۃ واکمل السلام علی سیدنا و مولانا الہ وصحبہ و ابنہ و حزبہ اجمعین آمین۔ سید عبد الرحمن غفر لہ

عہ: اب تک ان صاحبوں نے بھی کروٹ نہ لی تو وہ سب کو ایک ہی مرض الموت لاحق ہے ۱۲۔

Fatawa Razawiyya Volume 29

Treatise Khalis al-I'tiqad (Pure Belief) 1328 AH (Sincere Belief)

In the name of Allah, the Most Gracious, the Most Merciful. We praise Him and send blessings upon His Noble Messenger.

To the noble presence of the high-ranking, eminent, and blessed Hazrat Maulana Maulvi Sayyid Hussain Hyder Mian Sahib Qibla (may his academic blessings continue), after respectful greetings and humble salutations, it is submitted: (1) Your Excellency must be aware of the accursed words that the Wahhabis of Gangoh, Deoband, Nanauta, Thana Bhawan, Delhi, and Sahaswan (may Allah Almighty forsake them) have uttered in the majesty of Allah (Glorified and Exalted) and the Presence of the Radiant Master of Prophets (upon them be the best of prayers and praise).

Note: This book was written as a correspondence in response to the letters of the esteemed Hazrat Sayyid Hussain Hyder Mian Sahib Marehrawi (may Allah have mercy on him). He had written to the author (may Allah have mercy on him) for investigation after becoming distressed by the situation arising from the accusations made by certain Deobandis. Those letters are mentioned in the preamble of the treatise a few pages earlier.

Page 434 of 750

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

रिसाला ख़ालिसुल एतिकाद 1328 हि. (एतिकाद-ए-ख़ालिस)

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम नहमदुहु व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम

आली जनाव हज़रत मौलाना मौलवी सैयद हुसैन हैदर मियाँ साहब क़िबला (दामत बरकातुहुम अल-इल्मिया) की खिदमत में अर्ज़ है, सलाम और आदाब के बाद: (1) हज़रत को मालूम होगा कि गंगोह, देवबंद, नानौता, थाना भवन, दिल्ली और सहसवान के वहाबियों (अल्लाह उन्हें ज़लील करे) ने अल्लाह तआला की शान में और नबियों के सरदार (उन पर बेहतरीन दुरूद और सलाम हो) की शान में क्या-क्या मलऊन (शापित) शब्द कहे हैं।

नोट: यह किताब मोहतरम हज़रत सैयद हुसैन हैदर मियाँ साहब मारहरवी (रहमतुल्लाह अलैह) के उन ख़तों के जवाब में एक पत्राचार के रूप में लिखी गई थी, जो उन्होंने कुछ देवबंदियों के आरोपों से पैदा हुई स्थिति से परेशान होकर तहक़ीक़ (जाँच) के लिए मुसन्निफ़ (लेखक) को लिखे थे। वे ख़त रिसाले की भूमिका में कुछ पन्ने पहले मौजूद हैं।

पेज 434 / 750

فتاویٰ رضویہ جلد ۲۹

رسالہ خالص الاعتقاد ۱۳۲۸ھ (اعتقادِ خالص)

بسم اللہ الرحمن الرحیم نحمدہ و نصلی علی رسولہ الکریم

بشرفِ ملاحظہ عالیہ حضرت والا در جیت، بالا منزلت، عظیم البرکتہ حضرت مولنا مولوی سید حسین حیدر میاں صاحب قبلہ دامت برکاتہم العلمیہ، بعد تسلیم و آداب خادمانہ عارض۔ (۱) حضرت والا کو معلوم ہو گا کہ وہابیہ گنگوہ و دیوبند و نانو تہ و تھانہ بھون و دہلی و سہسوان خذ لہم اللہ تعالیٰ نے اللہ عز و علا و حضور پر نور سید الانبیاء علیہم افضل الصلوۃ والثناء کی شان میں کیا کیا کلماتِ ملعونہ

نوٹ: یہ کتاب حضرت گرامی مرتبت سید حسین حیدر میاں صاحب مارہروی علیہ الرحمہ کے ان خطوط کے جواب میں بطور مراسلہ لکھی گئی جو موصوف نے بعض دیابنہ کی الزام تراشیوں سے پیدا شدہ صورتِ حال پر پریشان ہو کر تحقیق کے لیے مصنف علیہ الرحمہ کو تحریر فرمائے تھے اور وہ خطوط چند صفحات قبل رسالہ کی تمہید میں مذکور ہیں۔

Fatawa Ridawiyya Volume 29

...were sold, written, and printed, upon which the general scholars of Arabia and India declared them as infidels. The book 'Husam al-Haramayn' along with 'Tamheed-e-Iman' and 'Khulasa Fawaid-e-Fatawa' are presented in service. If not more, then please observe word for word at least the first two treatises, 'Tamheed-e-Iman' and 'Khulasa Fawaid', so that the truth becomes clearer than the sun. (2) The state of agitation and restlessness among the detractors of God and the Prophet (Glorified is He and peace and blessings of Allah be upon him) upon the publication of this noble book is beyond description. For two years since the printing of this book, they have been screaming, shouting, and making all sorts of noise, piling up insults in pamphlets and newspapers, changing positions a hundred times, tossing and turning here and there, but far from answering the actual subject, they are terrified even to mention its name. Among the detractors, Murtaza Hasan Chandpuri Deobandi and his close friend Sanaullah Amritsari Ghair-Muqallid were selected solely for the purpose of creating turmoil, changing arguments, and printing insults. In response to their noise, five treatises each from my friends have reached them; for all of them, the answer is missing and the screaming continues as before. All this situation will become clear to His Eminence from the observation of the treatises 'Zafar al-Din al-Jayyid' and 'Zafar al-Din al-Tayyib' and the 'Ashtihar Zaruri Notice' and 'Ashtihar Niyaz Manah'. All have been sent to your service, and more details will be apparent from observing the poor author's friend's treatises 'Kin Kush Panja Peech', 'Risala Barish-e-Sangi', and 'Risala Paikan-e-Jangudaz'. These are all under print; after printing, by the help of God Almighty, I will tell them to send them to your noble service. (3) Now, I briefly state a few necessary matters which, by the help of God Almighty, will suffice for the manifestation of truth and the nullification of falsehood.

Matter One: The Fabrications of the Wahhabis In addition to these tricks, the detractors of God and the Prophet (Glorified is He and peace and blessings of Allah be upon him) have devised this deception here to somehow make a heart-to-heart opposition, meaning to attribute something here as well upon which, God forbid, a ruling of disbelief and misguidance could be applied. For this, they started inventing fabrications regarding the issue of the Unseen (Ghaib). (1) Sometimes [claiming] that he believes the knowledge of the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) to be intrinsic, without divine bestowal. (2) Sometimes [claiming] that he considers the knowledge of the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) to be equal to Divine Knowledge, [differing] only in eternity...

...बेचे गए, लिखे गए और छापे गए, जिन पर अरब और हिंद के आम विद्वानों (उलेमा) ने उनके कुफ़्र का फतवा दिया, किताब 'हुसाम अल-हरमैन' साथ में 'तमहीद-ए-ईमान' और 'खुलासा फवाइद-ए-फ़तावा' सेवा में प्रस्तुत हैं। ज़्यादा न हो तो केवल पहली दो पुस्तिकाओं 'तमहीद-ए-ईमान' और 'खुलासा फवाइद' को अक्षर-अक्षर देख लें ताकि सत्य सूरज से भी अधिक स्पष्ट हो जाए। (२) इस प्रतिष्ठित पुस्तक के प्रकाशन पर ईश्वर और रसूल (जल्ल जलालाहु व सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के निंदकों की जो व्याकुलता और बेचैनी की स्थिति है, वह वर्णन से बाहर है। इस पुस्तक की छपाई के दो साल बाद से वे चीख-चिल्ला रहे हैं और तरह-तरह का शोर मचा रहे हैं, पर्चों और अखबारों में गालियों के ढेर लगा रहे हैं, सौ-सौ करवटें बदल रहे हैं, इधर-उधर पलट रहे हैं, लेकिन मूल विषय का उत्तर देना तो दूर, उसका नाम लेने से भी घबराते हैं। निंदकों में मुर्तज़ा हसन चांदपुरी देवबंदी और उनके घनिष्ठ मित्र सनाउल्लाह अमृतसरी गैर-मुक़ल्लिद केवल इसलिए चुने गए हैं ताकि वे हंगामा करें, बहसें बदलें और गालियाँ छापें, जिनके शोर पर मेरे मित्रों की पाँच-पाँच पुस्तिकाएं उन तक पहुँच चुकी हैं, उन सभी के लिए भी उत्तर गायब है और चीखें वैसे ही जारी हैं। यह सारी स्थिति श्रीमान को पुस्तिका 'ज़फ़र अल-दीन अल-जय्यद' और 'ज़फ़र अल-दीन अल-तय्यब' और 'इश्तिहार ज़रूरी नोटिस' तथा 'इश्तिहार नियाज़ मानह' के अवलोकन से स्पष्ट हो जाएगी। सभी आपकी सेवा में भेजे गए हैं, और अधिक विवरण मुझ फकीर के मित्रों की पुस्तिकाओं 'कीन कुश पंजा पीच', 'रिसाला बारिश-ए-संगी' और 'रिसाला पैकान-ए-जाँगुदाज़' के अवलोकन से प्रकट होगा। ये सब छपाई के अधीन हैं, छपने के बाद ईश्वर की सहायता से मैं उनसे कह दूँगा कि वे इन्हें आपकी सेवा में भेज दें। (३) अब मैं संक्षेप में कुछ आवश्यक बातें प्रस्तुत करता हूँ जो ईश्वर की सहायता से सत्य को प्रकट करने और असत्य को मिटाने के लिए पर्याप्त होंगी।

प्रथम विषय: वहाबियों के झूठ (गढ़ंत बातें) इन चालों के अलावा ईश्वर और रसूल (जल्ल जलालाहु व सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के निंदकों ने यहाँ यह जाल बुना है कि किसी तरह 'मुआरज़ा बिल-क़ल्ब' (हृदय से विरोध) करें, यानी यहाँ भी कोई ऐसी बात जोड़ दें जिस पर, ईश्वर न करे, कुफ़्र और गुमराह करने का हुक्म लगाया जा सके। इसके लिए उन्होंने 'ग़ैब' (परोक्ष) के मसले में झूठ गढ़ना शुरू कर दिया। (१) कभी यह कि वह रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के ज्ञान को व्यक्तिगत (ज़ाती), बिना ईश्वरीय देन के मानता है। (२) कभी यह कि वह रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के ज्ञान को ईश्वरीय ज्ञान के समान मानता है, केवल शाश्वतता (क़दम)...

بکے، لکھے اور چھاپے، جن پر عامہ علماء عرب و ہند نے ان کی تکفیر کی، کتاب حسام الحرمین مع تمہید ایمان و خلاصہ فوائد فتاویٰ حاضر خدمت ہیں۔ زیادہ نہ ہو تو صرف دو رسالے اولین تمہید ایمان و خلاصہ فوائد کو حرفاً حرفاً ملاحظہ فرمالیں کہ حق آفتاب سے زیادہ واضح ہے۔ (۲) اس کتابِ مستطاب کی اشاعت پر خدا اور رسول (جل وعلا وصلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) کے بد گویوں کی جو حالتِ اضطراب و پیچ و تاب ہے، بیان سے باہر ہے۔ دو سال سے اسی کتاب کی طبع کے بعد چیختے چلاتے اور طرح طرح کے غل مچاتے، پرچوں، اخباروں میں گالیوں کے انبار لگاتے، سو سو پہلو بدلتے، ادھر ادھر پلٹے کھاتے ہیں مگر اصل مبحث کا جواب دینا در کنار، اس کا نام لیے ہول کھاتے ہیں، بد گویوں میں مرتضیٰ حسن چاند پوری دیوبندی اور ان کے یار غار ثناء اللہ امر تسری غیر مقلد صرف اسی لیے غلم چانے، بحثیں بدلنے، گالیاں چھاپنے کے لیے منتخب کیے گئے ہیں جن کے غل پر پانچ پانچ رسالے میرے احباب کے ان کو پہنچے ہوئے ہیں ان سب کو بھی جوابِ غائب اور چیخ بدستور، یہ تمام حال حضرت والا کو ملاحظہ رسالہ ظفر الدین الجید و ظفر الدین الطیب و اشتہار ضروری نوٹس واشتہار نیاز مانہ کے ملاحظہ سے واضح ہوگا۔ سب مرسل خدمت ہیں، اور زیادہ تفصیل احباب فقیر کے رسالہ کین کش پنجہ پیچ و رسالہ بارش سنگي و رسالہ پیکان جانگداز کے ملاحظہ سے ظاہر ہوگی۔ یہ سب زیر طبع ہیں، بعد طبع بعونہ تعالیٰ ان سے کہہ دوں گا کہ ارسال خدمت اقدس کریں۔ (۳) اب چند امور ضروری مختصراً عرض کروں کہ بعونہ تعالیٰ اظہارِ حق و ابطالِ باطل کو بس ہوں۔ امر اوّل وہابیہ کی افترا پردازیاں ان چالوں کے علاوہ خدا اور رسول جل وعلا وصلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے بد گویوں نے ادھر یہ مکر گانٹھا کہ کسی طرح معارضہ بالقلب کیجئے یعنی ادھر بھی کوئی بات ایسی نسبت کریں جس پر معاذ اللہ حکم

کفریہ اضلال لگا سکیں۔ اس کے لیے مسئلہ غیب میں افترا چھانٹنے شروع کیے۔ (۱) کبھی یہ کہ وہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کا علم، ذاتی، بے عطائے الٰہی مانتا ہے۔ (۲) کبھی یہ کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کا علم، علمِ الٰہی سے مساوی جانتا ہے صرف قدم و

Fatawa Rizvia Volume 29

...differentiates creation. (3) Sometimes [it is claimed] that, with the exception of the Divine Essence and Attributes, the knowledge of the Holy Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him) encompasses all other Divine information. (4) Sometimes [it is claimed] that the knowledge of the Radiant Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him) covers in complete detail matters that are actually infinite. Whereas the One Subduer [Allah] is seeing that all this is the fabrication of these wretched people. If they are truthful, let them show which of these sentences is in which treatise, which fatwa, or which piece of writing of this humble one?

"Say: Bring your proof if you are truthful."[1]	Say: Bring your proof if you are truthful. (T)
"Then since they did not bring the witnesses, they are the liars in the sight of Allah."[2]	So when they did not bring witnesses, they are the liars in the sight of Allah. (T)
"Only those fabricate falsehood who do not believe in the signs of Allah, and it is they who are the liars."[3]	Only they concoct lies who do not believe in the verses of Allah, and they are the liars. (T)

By presenting these statements before the people, they trouble them. Their being troubled is justified. If any scholar opposes this, it is necessary and appropriate for him. If the lying fabricators had themselves inquired of me about these words, I would have been the first to refute and invalidate these false things. This humble one authored the treatise 'Al-Dawlat al-Makkiyyah bi'l-Maddat al-Ghaybiyyah' in Makkah al-Mu'azzamah regarding this chapter, of which many copies were taken by the noble scholars of Makkah. It contains a clear refutation of all these absurdities. Any scholar who opposes or writes a refutation of these total or partial falsehoods, that refutation and opposition will in reality fall upon those cursed fabrications. Not upon the one who, by the grace of Allah, is as free from these lies as those lying fabricators are from religion and shame.

"And those who have wronged will come to know by what overturning they will be overturned."[4]	And now the wrongdoers wish to know to what kind of return they will be returned. (T)

[1] Al-Quran al-Karim 2/111 [2] Al-Quran al-Karim 24/13 [3] Al-Quran al-Karim 16/105 [4] Al-Quran al-Karim 26/227

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

...सृजन का अंतर करता है। (3) कभी यह कि ईश्वर की सत्ता और गुणों के अपवाद के साथ, पवित्र पैगंबर (उन पर ईश्वर की शांति और कृपा हो) का ज्ञान शेष सभी ईश्वरीय जानकारियों को घेरे हुए है। (4) कभी यह कि देदीप्यमान पैगंबर (उन पर ईश्वर की शांति और कृपा हो) का ज्ञान वास्तव में अनंत मामलों को पूर्ण विवरण के साथ समाहित करता है। जबकि वह एक सर्वशक्तिमान [अल्लाह] देख रहा है कि यह सब इन दुष्टों का मिथ्यारोप है। यदि वे सच्चे हैं तो बताएं कि इनमें से कौन सा वाक्य इस फ़क़ीर के किस शोध प्रबंध, किस फतवे या किस लेख में है?

"कहो: अपना प्रमाण लाओ यदि तुम सच्चे हो।"[1]	आप फ़रमाइए कि अपनी दलील लाओ अगर तुम सच्चे हो। (त)
"फिर जब वे गवाह नहीं लाए, तो अल्लाह के निकट वही झूठे हैं।"[2]	तो जब गवाह न लाए तो वही अल्लाह के नज़दीक झूठे हैं। (त)
"झूठ का आरोप तो वही लोग लगाते हैं जो अल्लाह की आयतों पर विश्वास नहीं करते, और वही लोग झूठे हैं।"[3]	झूठ और बहतान वही बांधते हैं जो अल्लाह की आयतों पर ईमान नहीं रखते और वही लोग झूठे हैं। (त)

यही बयान लोगों के सामने पेश करके उन्हें परेशान करते हैं, उनका परेशान होना जायज़ है। इस पर अगर कोई आलिम मुखालफत (विरोध) करे तो यह उसके लिए ज़रूरी और उचित है। झूठे आरोप लगाने वाले अगर इन शब्दों के बारे में खुद मुझसे पूछताछ करते तो सबसे पहले इन बातिल (झूठी) बातों का खंडन मैं ही करता। फ़क़ीर ने मक्का मुअज्जमा में इस विषय पर 'अद-दौलत अल-मक्किया बिल-माद्दत अल-गैबिया' नामक जो ग्रंथ लिखा, जिसकी मक्का के कई सम्मानित विद्वानों ने प्रतियां लीं, उसमें इन सभी बेतुकी बातों का स्पष्ट खंडन मौजूद है। इन संपूर्ण या आंशिक मिथ्या बातों का जो भी विद्वान विरोध करे या खंडन लिखे, वह विरोध और खंडन वास्तव में उन शापित मिथ्यारोपों पर लागू होगा। उस व्यक्ति पर नहीं जो अल्लाह की कृपा से इन झूठों से उतना ही बरी है जितना कि वे झूठे आरोप लगाने वाले धर्म और हया से बरी हैं।

"और ज़ुल्म करने वालों को जल्द ही पता चल जाएगा कि वे किस करवट पलटेंगे।"[4]	और अब ज़ालिम जानना चाहते हैं कि किस करवट पलटा खाएंगे। (त)

[1] अल-कुरआन अल-करीम 2/111 [2] अल-कुरआन अल-करीम 24/13 [3] अल-कुरआन अल-करीम 16/105 [4] अल-कुरआन अल-करीम 26/227

पृष्ठ 436/750

حدوث کا فرق کرتا ہے۔ (۳) کبھی یہ کہ باستثنائے ذات وصفات الٰہی باقی تمام معلومات الٰہیہ کو حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کا علم محیط بتاتا ہے۔ (۴) کبھی یہ کہ امور غیر متناہیہ بالفعل کو حضور پر نور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کا علم بتفصیل تمام حاوی ٹھہراتا ہے۔ حالانکہ واحد قہار یہ دیکھ رہا ہے کہ یہ سب ان اشقیاء کا افتراء ہے۔ سچے ہیں تو بتائیں کہ ان میں سے کون سا جملہ فقیر کے کس رسالے، کس فتوے، کس تحریر میں ہے؟

"قُلْ هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ"[1] تم فرماؤ لاؤ اپنی دلیل اگر سچے ہو۔ (ت)

"فَإِذْ لَمْ يَأْتُوْا بِالشُّهَدَاءِ فَأُولٰٓئِكَ عِنْدَ اللهِ هُمُ الْكٰذِبُوْنَ"[2] تو جب گواہ نہ لائے تو وہی اللہ کے نزدیک جھوٹے ہیں۔ (ت)

"اِنَّمَا يَفْتَرِي الْكَذِبَ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاٰيٰتِ اللهِ وَ أُولٰٓئِكَ هُمُ الْكٰذِبُوْنَ"[3] جھوٹ بہتان وہی باندھتے ہیں جو اللہ کی آیتوں پر ایمان نہیں رکھتے اور وہی لوگ جھوٹے ہیں۔ (ت)

یہی بیانات لوگوں کے سامنے بیان کر کے ان کو پریشان کرتے ہیں ان کا پریشان ہونا حق بجانب ہے اس پر اگر کوئی عالم مخالفت کرے تو ضرور اسے لائق و مناسب ہے۔ مفتریانِ کذاب اگر ان کلمات کا خود مجھ سے استفسار کرتے تو سب سے پہلے ان باطل باتوں کا رد و ابطال میں کرتا۔ فقیر نے مکہ معظمہ میں جو رسالہ الدولۃ المکیۃ بالمادۃ الغیبیۃ اس باب میں تصنیف کیا جس کی متعدد نقول علماء کرام مکہ نے لیں اس میں ان تمام خرافات کا رد صریح موجود ہے۔ ان اباطیل کل یا بعض پر جو عالم مخالفت کرے یا رد لکھے وہ رد و خلافۃ حقیقۃً انہیں ملعون افتراؤں پر عائد ہو گا۔ نہ اس پر جو ان اکاذیب سے بحمداللہ ایسا بری ہے جیسے وہ مفتریانِ کذاب دین و حیا سے۔

"وَ سَیَعْلَمُ الَّذِیْنَ ظَلَمُوْۤا اَیَّ مُنْقَلَبٍ یَّنْقَلِبُوْنَ"[4]

اور اب جاننا چاہتے ہیں ظالم کہ کس کروٹ پر پلٹا کھائیں گے۔ (ت)

[1] القرآن الکریم ۲/۱۱۱ [2] القرآن الکریم ۲۴/۱۳ [3] القرآن الکریم ۱۶/۱۰۵ [4] القرآن الکریم ۲۶/۲۲۷

Volume 29 Fatawa Razawiyya

May Allah, the Glorious and Exalted, grant His Eminence complete and speedy recovery. If you would kindly visit here with your old favor and immense kindness to honor this servant, I would present for your noble inspection the original treatise which contains the original endorsements of Maulana Tajuddin Ilyas and Maulana Usman bin Abdus Salaam, the Muftis of Madinah Munawwarah, with their signed and sealed approvals.

For the time being, I submit a few excerpts from it, which will make it clear to what extent the fabrications of the slanderers are baseless and futile. An example of this would be like some ill-intentioned person saying that the path of the Ahl al-Sunnah is to revile Siddiq al-Akbar (may Allah be pleased with him) and to slander Siddiqah Tahirah (may Allah be pleased with her). We seek refuge in Allah, the Lord of the worlds. In the first part of my treatise, it is stated:

(1) "Intrinsic knowledge is exclusive to Allah, the Glorious and Exalted; it is impossible for anyone other than Him. Whoever attributes any part of it, even less than the smallest atom, to any creation, has indeed disbelieved and committed polytheism." [1] Intrinsic knowledge is specific to Allah, the Almighty and Majestic; it is impossible for anyone else. Whoever acknowledges anything from it, even less than an atom, for anyone besides God, is certainly a disbeliever and a polytheist.

(2) In the same treatise: "Actual quantitative infinity is exclusive to the knowledges of Allah Almighty." [2] Encompassing the actually infinite is reserved only for Divine knowledge.

(3) In the same treatise: "It is impossible, both by Shariah and reason, for any creation to fully encompass the information of Allah Almighty in complete detail. Rather, if the entire knowledge of all beings, from the first to the last, were gathered together, it would have absolutely no comparison to the knowledge of Allah, the Glorious and Exalted, just as one part out of a million parts of a drop has no comparison to a million oceans." [3] For any creature to encompass Divine knowledge in full detail is impossible according to both religious law and reason. In fact, if the collective knowledge of all the people of the world, past and present, were gathered together, it would not have that proportion to Divine knowledge as one part of a millionth of a drop has to a million oceans.

[1] Al-Dawla al-Makkiya, First View, Ahl al-Sunnat Press, Bareilly, p. 6. [2] Al-Dawla al-Makkiya, First View, Ahl al-Sunnat Press, Bareilly, p. 6. [3] Al-Dawla al-Makkiya, First View, Ahl al-Sunnat Press, Bareilly, p. 6.

जिल्द 29 फ़तावा रज़विया

हज़रत वाला को हक़ सुब्हानहू व तआला शफ़ा-ए-कामिल व आज़िल अता फ़रमाए। अगर बराहे करम कदीम व लुत्फ़-ए-अमीम यहाँ तशरीफ़ फ़रमा होकर खादिम नवाज़ी करें तो असल रिसाला जिस पर मौलाना ताजुल दीन इलियास व मौलाना उस्मान बिन अब्दुस सलाम मुफ़्तियाने मदीना मुनव्वरा की असल तक़रीज़ात उन की मोहरी दस्तख़ती मौजूद हैं, नज़रे अनवर से गुज़ारूँगा।

फ़िलहाल उस की दो चार इबारतें अर्ज़ करता हूँ जिन से रौशन हो जाएगा कि मुफ़्तरियों (झूठ गढ़ने वालों) के इफ़्तरा (झूठ) किस दर्जा बातिल व बेबुनियाद हैं, जिस की मिसाल यही हो सकती है कि कोई बद-बातिन कहे अहल-ए-सुन्नत का मज़हब सिद्दीक़-ए-अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु पर बुरा कहना और सिद्दीक़ा ताहिरा (रज़ियल्लाहु तआला अन्हा) पर बोहतान लगाना है। वल-इयाज़ु बिल्लाहि रब्बिल आलमीन (अल्लाह की पनाह, जो तमाम जहानों का रब है), मेरे रिसाले की पहली ही नज़र में है:

(1) अल-इल्मुज़-ज़ाती मुख़्तसुन बिल-मौला सुब्हानहू व तआला ला युमकिनु लिग़ैरिही व मन अस्बता शैअम-मिन्हु वलौ अदना मिन अदना मिन ज़र्रतिल-लिअहादिम-मिनल आलमीना फ़क़द कफ़रा व अशरका। 1. इल्म-ए-ज़ाती अल्लाह अज़्वजल के लिए ही ख़ास है, उसके ग़ैर (दूसरों) के लिए नामुमकिन है। जो उस (इल्म) में से कोई भी चीज़, चाहे वह एक ज़र्रे से भी कम क्यों न हो, ग़ैर-ख़ुदा के लिए माने, वह निश्चित रूप से काफ़िर और मुशरिक है।

(2) उसी में है: अल्ला-तनाहिल कमी मख़्सूसुन बि-उलूमि ल्लाहि तआला। 2. अनंत को पूर्णतः समाहित करना केवल ईश्वर के ज्ञान के लिए ही विशिष्ट है।

(3) उसी में है: इहाअततु अहादिम-मिनल ख़ल्क़ि बि-मा'लूमाती ल्लाहि तआला 'अला जिहतिल तफ़्सीलित-ताम्मि मुहालुन शरअन व अक़्लन बल लौ जुमि'आ 'उलूमु जमी'इल आलमीना अव्वलन व आख़िरन लमा कानत लहू निसबतुम-मा असलल इला 'उलूमि ल्लाहि सुब्हानहू व तआला हत्ता क-निसबति हिस्सतिम-मिन अल्फ़ अल्फ़ हिस्सतिन क़तरतिन इला अल्फ़ अल्फ़ बहर। 3. किसी मख़्लूक़ (रचना) का अल्लाह के ज्ञान को पूरी तरह विस्तृत रूप से घेर लेना शरीयत के अनुसार भी असंभव है और विवेक के अनुसार भी। बल्कि यदि दुनिया के समस्त लोगों के पहले और बाद के

सभी ज्ञानों को इकट्ठा कर लिया जाए, तो उनकी अल्लाह के ज्ञान के साथ वह तुलना भी नहीं होगी जो एक बूंद के दस लाखवें हिस्से की दस लाख समुद्रों के साथ होती है।

1. अद-दौलतुल मक्किया, अन-नज़रुल अव्वल, मतबा अहल-ए-सुन्नत बरेली, पृ. 6
2. अद-दौलतुल मक्किया, अन-नज़रुल अव्वल, मतबा अहल-ए-सुन्नत बरेली, पृ. 6
3. अद-दौलतुल मक्किया, अन-नज़रुल अव्वल, मतबा अहल-ए-सुन्नत बरेली, पृ. 6

حضرت والا کو حق سبحانہ و تعالیٰ شفائے کامل و عاجل عطا فرمائے۔ اگر براہ کرم قدیم و لطف عمیم یہاں تشریف فرما ہو کر خادم نوازی کریں تو اصل رسالہ جس پر مولانا تاج الدین الیاس و مولانا عثمان بن عبدالسلام مفتیان مدینہ منورہ کی اصل تقریظات اُن کی مُہری دستخطی موجود ہیں، نظرِ انور سے گزاروں گا۔

فی الحال اُس کی دو چار عبارات عرض کرتا ہوں جن سے روشن ہو جائے گا کہ مفتریوں کے افتراء کس درجہ باطل و پادر ہوا ہیں، جس کی نظیر یہی ہو سکتی ہے کہ کوئی بد باطن کہے اہلسنت کا مذہب صدیق اکبر رضی اللہ تعالیٰ عنہ پر تبر اور صدیقہ طاہرہ (رضی اللہ تعالیٰ عنہا) پر بہتان اٹھانا ہے۔ والعیاذ باللہ رب العالمین، میرے رسالہ کی نظر اول میں ہے۔

(۱) العلم ذاتی مختص بالمولی سبحنہ و تعالیٰ لا یمکن لغیرہ ومن اثبت شیئاًمنہ ولو ادنی من ادنی من ذرۃ لاحد من العلمین فقد کفر واشرک ۱۔ علمِ ذاتی اللہ عزوجل سے خاص ہے اس کے غیر کے لیے محال ہے، جو اس میں سے کوئی چیز اگرچہ ایک ذرہ سے کمتر سے کمتر غیر خدا کے لیے مانے وہ یقینا کافر و مشرک ہے۔

(۲) اُسی میں ہے: اللا تناہی الکمی مخصوص بعلوم اللہ تعالیٰ ۲۔ غیر متناہی بالفعل کو شامل ہونا صرف علم الہی کے لیے ہے۔

(۳) اُسی میں ہے: احاطۃ احد من الخلق بمعلومات اللہ تعالی علی جھۃ التفصیل التام محال شرعاً وعقلاً بل لو جمع علوم جمیعاً العلمین اولاً وآخراً لما کانت لہ نسبۃ ما اصلا الی علوم اللہ سبحانہ وتعالی حتی کنسبۃ حصۃ من الف الف حصص قطرۃ الی الف الف بحر ۳۔ کسی مخلوق کا معلومات الہیہ کو

بتفصیل تام محیط ہو جانا شرع سے بھی محال ہے، اور عقل سے بھی، بلکہ اگر تمام اہل عالم اگلے پچھلوں سب کے جملہ علوم جمع کیے جائیں تو اُن کو علوم الہیہ سے وہ نسبت نہ ہوگی جو ایک بوند کے دس لاکھ حصوں سے ایک حصے کو دس لاکھ سمندروں سے۔

۱ الدولۃ المکیۃ النظر الاول مطبع اہلسنت بریلی ص ۶ ۲ الدولۃ المکیۃ النظر الاول مطبع اہلسنت بریلی ص ۶ ۳ الدولۃ المکیۃ النظر الاول مطبع اہلسنت بریلی ص ۶

Fatawa Razawiya Volume 29

(4) In its revision, it is written: [Arabic]: It has become clear from our discourse that the suspicion of the equality of the collective knowledge of all created beings with the knowledge of our Lord Allah, the Lord of the worlds, is not such that it should even cross the mind of a Muslim. 1 [Urdu]: It has become bright and shining from our discourse that even if the entire knowledge of all creation were combined, the suspicion of it being equal to Divine knowledge is not worthy of even passing as a danger through the heart of a Muslim.

(5) In the same, it is written: [Arabic]: We have established overwhelming proofs that it is absolutely impossible, both rationally and traditionally, for the knowledge of any created being to encompass all Divine knowns. 2 [Urdu]: We have established powerful proofs that for the knowledge of creation to encompass the entirety of Divine information is certainly impossible according to both reason and Sharia.

(6) In its third revision, it is written: [Arabic]: Essential, absolute, and detailed encompassing knowledge is specific to Allah Almighty, and for the servants, there is nothing but a portion of bestowed knowledge. 3 [Urdu]: Essential knowledge and comprehensively encompassing detailed knowledge are specific to Allah, the Mighty and Sublime; for the servants, there is only a certain degree of knowledge bestowed by Allah.

(7) In its fifth revision, it is written: [Arabic]: We do not claim equality with the knowledge of Allah Almighty, nor its attainment independently, nor do we affirm through the bestowal of Allah Almighty except a part. 4 [Urdu]: We neither accept equality with Divine knowledge nor do we consider essential knowledge for anyone other than Him, and even through Divine bestowal, we only accept the receipt of some knowledge, not all.

My short fatwa "Abna al-Mustafa" was printed and published three times in Mumbai and Muradabad since 1318 AH in thousands of copies. A copy of that, which was printed along with the treatise "Al-Kalimat al-Ulya" (f), is being sent for your service. Anyone who attributes an object of belief to me beyond this is a lying fabricator, and his account is with Allah.

1. Al-Dawlat al-Makkiyah, the second revision, Ahl-e-Sunnat Press, Bareilly, p. 15
2. Al-Dawlat al-Makkiyah, the second revision, Ahl-e-Sunnat Press, Bareilly, p. 16
3. Al-Dawlat al-Makkiyah, the third revision, Ahl-e-Sunnat Press, Bareilly, p. 19

4. Al-Dawlat al-Makkiyah, the fifth revision, Ahl-e-Sunnat Press, Bareilly, p. 28 f: Al-Kalimat al-Ulya, authored by Sadr al-Afadil Maulana Naeem al-Din Muradabadi (Mercy of Allah be upon him).

फ़तावा रज़विया, जिल्द 29

(4) इसके पुनरीक्षण में है: [अरबी]: हमारी व्याख्या से यह स्पष्ट और प्रकाशमान हो गया कि समस्त सृष्टि के कुल ज्ञान का हमारे रब अल्लाह रब्बुल आलमीन के ज्ञान के बराबर होने का संदेह इस योग्य नहीं कि किसी मुसलमान के दिल में इसका खटका भी आए। 1 [उर्दू]: हमारी तक़रीर से रौशन व ताबां हो गया कि तमाम मख़लूक़ के जुमला उलूम मिल कर भी इल्म-ए-इलाही से मसावी होने का शुबह इस क़ाबिल नहीं कि मुसलमान के दिल में इसका ख़तरा गुज़रे।

(5) इसी में है: [अरबी]: हमने प्रबल प्रमाण स्थापित कर दिए हैं कि किसी मख़लूक़ (सृष्टि) के ज्ञान का समस्त ईश्वरीय ज्ञातव्य चीजों को घेरना अक़्ल और शरीअत दोनों की दृष्टि से निश्चित रूप से असंभव है। 2 [उर्दू]: हम क़ाहिर दलीलें क़ायम कर चुके कि इल्म-ए-मख़लूक़ का जमीअ मालूमात-ए-इलाहिया को मुहीत होना अक़्ल व शरअ दोनों की रू से यक़ीनन मुहाल है।

(6) इसके तीसरे पुनरीक्षण में है: [अरबी]: ज़ाती (स्वयं का), मुतलक़ (निरपेक्ष) और विस्तृत घेरे वाला ज्ञान अल्लाह तआला के साथ विशिष्ट है, और बंदों के लिए अल्लाह के दिए हुए ज्ञान के सिवा कुछ नहीं है। 3 [उर्दू]: इल्म-ए-ज़ाती और बिल-इस्तियाब मुहीत-ए-तफ़सीली ये अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल के साथ ख़ास हैं बंदों के लिए सिर्फ एक गूनह इल्म-ए-अता-ए-इलाही है।

(7) इसके पांचवें पुनरीक्षण में है: [अरबी]: हम अल्लाह तआला के ज्ञान के साथ समानता के कायल नहीं हैं, और न ही इसे स्वतंत्र रूप से प्राप्त होने के, और अल्लाह तआला के प्रदान करने से भी हम केवल कुछ (ज्ञान) ही सिद्ध करते हैं। 4 [उर्दू]: हमने इल्म-ए-इलाही से मसावात मानिन न ग़ैर के लिए इल्म-ए-बिज़्ज़ात जानें, और अता-ए-इलाही से भी बाज़ इल्म ही मिलना मानते हैं न कि जमीअ।

मेरा संक्षिप्त फ़तवा 'अब्रा-उल-मुस्तफ़ा' बम्बई और मुरादाबाद में तीन बार 1318 हिजरी से हज़ारों की संख्या में छपकर प्रकाशित हुआ। उसी की एक प्रति जो रिसाला 'अल-कलिमतुल उल्या' (फ़) के साथ प्रकाशित हुई थी, सेवा में प्रेषित है। इससे बढ़कर जो बात भी मेरी ओर कोई विश्वास (अक़ीदा) के रूप में जोड़े, वह झूठा इल्ज़ाम लगाने वाला है और अल्लाह के यहाँ उसका हिसाब है।

1. अद-दौलतुल मक्किया, दूसरा पुनरीक्षण, अहले सुन्नत प्रेस, बरेली, पृष्ठ 15
2. अद-दौलतुल मक्किया, दूसरा पुनरीक्षण, अहले सुन्नत प्रेस, बरेली, पृष्ठ 16
3. अद-दौलतुल मक्किया, तीसरा पुनरीक्षण, अहले सुन्नत प्रेस, बरेली, पृष्ठ 19

4. अद-दौलतुल मक्किया, पांचवां पुनरीक्षण, अहले सुन्नत प्रेस, बरेली, पृष्ठ 28 फ़: अल-कलिमतुल उल्या, लेखक: सद्रुल अफ़ाज़िल मौलाना नईमुद्दीन मुरादाबादी (अल्लाह की उन पर रहमत हो)।

(۴) اُسی کی نظر ثانی میں ہے: زھر وبھر مما تقرران شبھة مساواة علوم المخلوقین طرا اجمعین بعلم ربنا اللہ العلمین ما کانت لتخطر ببال المسلمین - 1 ہماری تقریر سے روشن وتاباں ہو گیا کہ تمام مخلوق کے جملہ علوم مل کر بھی علم الٰہی سے مساوی ہونے کا شبہہ اس قابل نہیں کہ مسلمان کے دل میں اس کا خطرہ گزرے۔

(۵) اسی میں ہے: قد اقمنا الدلائل القاھرة علی ان احاطة علم المخلوق بجمیع المعلومات الالھیة محال قطعاً، عقلاً و سمعاً - 2 ہم قاہر دلیلیں قائم کر چکے کہ علم مخلوق کا جمیع معلومات الٰہیہ کو محیط ہونا ہونا عقل و شرع دونوں کی رو سے یقیناً محال ہے۔

(۶) اسی کی نظر ثالث میں ہے: العلم الذاتی والمطلق والمحیط التفصیلي مختص باللہ تعالٰی وما للعباد الا مطلق العلم العطائی - 3 علم ذاتی اور بالاستیعاب محیط تفصیلی یہ اللہ عز وجل کے ساتھ خاص ہیں بندوں کے لیے صرف ایک گونہ علم عطائے الٰہی ہے۔

(۷) اسی کی نظر خامس میں ہے: لانقول بمساواة علم اللہ تعالٰی ولا بحصولہ بالاستقلال ولا نثبت بعطاء اللہ تعالٰی ایضاً الا البعض - 4 ہم نے علم الٰہی سے مساوات مانیں نہ غیر کے لیے علم بالذات جانیں، اور عطائے الٰہی سے بھی بعض علم ہی ملنا مانتے ہیں نہ کہ جمیع۔

میرا مختصر فتوی ابناء المصطفٰی بمبئی مراد آباد میں تین بار ۱۳۱۸ھ سے ہزاروں کی تعداد میں طبع ہو کر شائع ہوا، ایک نسخہ اسی کا کہ رسالہ الکلمۃ العلیا ف کے ساتھ مطبوع ہوا مرسل خدمت ہے، اس سے بڑھ کر جس امر کا اعتقاد میری طرف کوئی نسبت کرے مفتری کذاب ہے اور اللہ کے یہاں اس کا حساب۔

1 الدولة المكيه النظر الثاني مطبع اہل سنت بریلی ص ۱۵ 2 الدولة المكيه النظر الثاني مطبع اہل سنت بریلی ص ۱۶ 3 الدولة المكيه النظر الثالث مطبع اہل سنت بریلی ص ۱۹ 4 الدولة المكيه النظر الخامس مطبع اہل سنت بریلی ص ۲۸ ف: الكلمة العليا مصنفہ صدر الافاضل مولانا نعيم الدين مراد آبادی علیہ الرحمہ

Fatawa Razawiya Volume 29

Second Matter Proofs for Servants being Granted the Knowledge of the Unseen and the Meaning of the Verses of Negation

Through these passages, it has also become clear that being characterized by the knowledge of the unseen is indeed a prerogative of the Divine Presence, and why not, for the Lord Almighty says:

"Say, 'None in the heavens and the earth knows the unseen except Allah.'" [1] | Tell them that in the heavens and the earth, none is the Knower of the Unseen except Allah.

And by this is meant that inherent knowledge and encompassing knowledge which is established for and exclusive to the Creator Almighty. Bestowed knowledge, which is given by another, or non-encompassing knowledge—where one is informed of some things and unaware of others—cannot possibly be attributed to Allah Almighty; its being exclusive to Him is a different matter altogether. And it is absolutely true that Prophets (peace and blessings be upon them) receive non-encompassing knowledge of the unseen through the bestowal of Allah Almighty. And why not, as the Lord Almighty says:

(1) "And Allah would not inform you of the unseen, but Allah chooses from His messengers whom He wills." [2] | Allah is not such as to inform you [common people] of the unseen, but Allah chooses from His messengers whom He wills.

(2) And He says: "[He is] the Knower of the unseen, and He does not disclose His [knowledge of the] unseen to anyone, except whom He has approved of messengers..." [3] | Allah is the Knower of the unseen, so He does not grant anyone access to His unseen except His chosen messengers.

(3) And He says: "And he [the Prophet] is not a withholder of [knowledge of] the unseen." [4] | This Prophet is not miserly in conveying the unseen.

(4) And He says: "That is from the news of the unseen which We reveal to you." [5] | O Prophet! These are matters of the unseen that We reveal to you secretly.

---

[1] Al-Quran Al-Karim 27/65 [2] Al-Quran Al-Karim 3/179 [3] Al-Quran Al-Karim 72/26 & 27 [4] Al-Quran Al-Karim 81/24 [5] Al-Quran Al-Karim 12/102

फतावा रज़विया जिल्द 29

दूसरा विषय बंदों को इल्मे-ग़ैब (परोक्ष ज्ञान) प्रदान किए जाने के प्रमाण और निषेध वाली आयतों का अर्थ

इन इबारतों (कथनों) से यह भी स्पष्ट हो गया कि इल्मे-ग़ैब की विशेषता हज़रत-ए-इज़्ज़त (अल्लाह) की होना निस्संदेह सत्य है, और क्यों न हो कि रब अज़्ज़वजल फ़रमाता है:

"कहो कि आसमानों और ज़मीन में अल्लाह के सिवा कोई ग़ैब का जानने वाला (आलिम-उल-ग़ैब) नहीं है।" [1] | तुम फ़रमा दो कि आसमानों और ज़मीन में अल्लाह के सिवा कोई आलिम-उल-ग़ैब नहीं है।

और इससे मुराद (तात्पर्य) वही 'इल्मे-ज़ाती' (स्वयं का ज्ञान) और 'इल्मे-मुहीत' (पूर्णतः व्यापक ज्ञान) है जो उसी बारी-ए-तआला के लिए प्रमाणित और उसी से विशिष्ट हैं। 'इल्मे-अताई' (प्रदत्त ज्ञान) जो किसी दूसरे का दिया हुआ हो, या 'इल्मे-ग़ैर-मुहीत' (सीमित ज्ञान) जिसमें कुछ चीज़ों की जानकारी हो और कुछ से अनभिज्ञता, अल्लाह अज़्ज़वजल के लिए हो ही नहीं सकता। उससे विशिष्ट होना तो दूसरा दर्जा है। और अल्लाह अज़्ज़वजल की अता (दान) से अंबिया अलैहिमुस्सलाम को ग़ैब के सीमित ज्ञान मिलना भी निश्चित रूप से सत्य है, और क्यों न हो कि रब अज़्ज़वजल फ़रमाता है:

(1) "और अल्लाह ऐसा नहीं है कि तुम्हें ग़ैब पर सूचित कर दे, लेकिन अल्लाह अपने रसूलों में से जिसे चाहता है चुन लेता है।" [2] | अल्लाह इसलिए नहीं कि तुम लोगों को ग़ैब पर सूचित करे, हाँ अल्लाह अपने रसूलों में से जिसे चाहता है चुन लेता है।

(2) और फ़रमाता है: "वह ग़ैब का जानने वाला है, सो वह अपने ग़ैब पर किसी को हावी नहीं करता, सिवाय अपने पसंदीदा रसूलों के।" [3] | अल्लाह आलिम-उल-ग़ैब है तो अपने ग़ैब पर किसी को मुसल्लत (अधिकार प्राप्त) नहीं करता सिवाय अपने पसंदीदा रसूलों के।

(3) और फ़रमाता है: "और वह (नबी) ग़ैब की बातें बताने में कंजूस नहीं है।" [4] | यह नबी ग़ैब बताने में बखील (कंजूस) नहीं हैं।

(4) और फ़रमाता है: "यह ग़ैब की ख़बरों में से है जिसे हम तुम्हारी ओर वह्य (प्रकाशना) करते हैं।" [5] | ऐ नबी! यह ग़ैब की बातें हम तुमको गुप्त रूप से बताते हैं।

[1] अल-कुरान अल-करीम 27/65 [2] अल-कुरान अल-करीम 3/179 [3] अल-कुरान अल-करीम 72/26 और 27 [4] अल-कुरान अल-करीम 81/24 [5] अल-कुरान अल-करीम 12/102

पृष्ठ 439 / 750

امر دوم بندوں کو علم غیب عطا ہونے کی سندیں اور آیات نفی کی مراد

انہیں عبارات سے یہ بھی واضح ہوگیا کہ علم غیب کا خاصہ حضرت عزت ہونا بے شک حق ہے، اور کیوں نہ ہو کہ رب عزوجل فرماتا ہے:

"قُل لَّا يَعْلَمُ مَنْ فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ الْغَيْبَ إِلَّا اللَّهُ" ۱- | تم فرما دو کہ آسمانوں اور زمین میں اللہ کے سوا کوئی عالم الغیب نہیں۔

اور اس سے مراد وہی علم ذاتی و علم محیط ہے کہ وہی باری عزوجل کے لئے ثابت اور اس سے مخصوص ہیں۔ علم عطائی کہ دوسرے کا دیا ہوا ہو۔ علم غیر محیط کہ بعض اشیاء سے مطلع بعض سے ناواقف ہو، اللہ عزوجل کے لیے ہو ہی نہیں سکتا، اس سے مخصوص ہونا تو دوسرا درجہ ہے، اور اللہ عزوجل کی عطا سے علوم غیب غیر محیط کا انبیاء علیہم الصلوۃ والسلام کو ملنا بھی قطعاً حق ہے، اور کیوں نہ ہو کہ رب عزوجل فرماتا ہے۔

(۱) "وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُطْلِعَكُمْ عَلَى الْغَيْبِ وَلَكِنَّ اللَّهَ يَجْتَبِي مِنْ رُسُلِهِ مَنْ يَشَاءُ" ۲- | اللہ اس لیے نہیں کہ تم لوگوں کو غیب پر مطلع کرے ہاں اللہ اپنے رسولوں سے جسے چاہتا ہے چن لیتا ہے۔

(۲) اور فرماتا ہے: "عَالِمُ الْغَيْبِ فَلَا يُظْهِرُ عَلَى غَيْبِهِ أَحَدًا ﴿۲۶﴾ إِلَّا مَنِ ارْتَضَى مِنْ رَسُولٍ" ۳- | اللہ عالم الغیب ہے تو اپنے غیب پر کسی کو مسلط نہیں کرتا سوا اپنے پسندیدہ رسولوں کے۔

(۳) اور فرماتا ہے: "وَمَا هُوَ عَلَى الْغَيْبِ بِضَنِينٍ ﴿۲۴﴾" ۴- | یہ نبی غیب کے بتانے میں بخیل نہیں۔

(۴) اور فرماتا ہے: "ذٰلِكَ مِنْ أَنْبَاءِ الْغَيْبِ نُوحِيهِ إِلَيْكَ" ۵- | اے نبی ! یہ غیب کی باتیں ہم تم کو مخفی طور پر بتاتے ہیں۔

---

1 القرآن الکریم ۲۷/ ۶۵ 2 القرآن الکریم ۳/ ۱۷۹ 3 القرآن الکریم ۷۲/ ۲۶ و ۲۷ 4 القرآن الکریم ۸۱/ ۲۴ 5 القرآن الکریم ۱۲/ ۱۰۲

Fatawa Razawiyya Volume 29

(5) Even He says to the Muslims: "They believe in the unseen." 1 - They bring faith in the unseen. Faith is verification, and verification is knowledge. How is it possible to bring faith in something of which there is no knowledge at all? Inevitably, it is in Tafsir Kabir: (6) "It is not prohibited to say that we know of the unseen that for which we have proof." 2 - It is not at all prohibited to say that we have knowledge of the unseen for which we have a reason. (7) In Naseem-ur-Riyadh it is stated: "Allah did not obligate us to believe in the unseen except that He opened for us the door of His unseen." 3 - Allah Almighty only commanded us to believe in the unseen when He opened the door of His unseen for us. The humble author (Faqir) had said this for the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him). It is not known what judgment the opponents will pass on these Imams and scholars who are acknowledging it for themselves. (8 & 9) Imam Sha'rani, in the book Al-Yawaqit wal-Jawahir, narrates from Hazrat Sheikh-ul-Akbar: "The mujtahid Imams have a firm foothold in the sciences of the unseen." 4 - There is a firm footing for the mujtahid Imams in the knowledge of the unseen. (10 & 11) Maulana Ali Qari (from whom opponents, out of misunderstanding, bring evidence in this matter) narrates in Mirqat, the commentary on Mishkat Sharif, from the Book of Beliefs authored by Hazrat Sheikh Abu Abdullah Shirazi: "We believe that the servant moves through states until he reaches the spiritual quality, then he knows the unseen." 5 - Our belief is that a servant, by progressing through stages, reaches a spiritual quality, and at that time he attains knowledge of the unseen. (12) The same Ali Qari narrates in Mirqat from the same book:

1 Al-Qur'an al-Karim 2/3 2 Mafatih al-Ghayb (Al-Tafsir al-Kabir) under verse 2/3, Al-Matba'ah al-Bahiyyah al-Misriyyah, Egypt, 2/28 3 Naseem al-Riyadh, Section 'Regarding what he was informed of the unseen', Markaz-e-Ahle Sunnat Barakat-e-Raza, Gujarat, India, 3/151 4 Al-Yawaqit wal-Jawahir, Forty-ninth research, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/280 5 Mirqat al-Mafatih, Book of Faith, Chapter One, under Hadith 2, Al-Maktabah al-Habibiyyah, Quetta, 1/128

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

(5) यहाँ तक कि मुसलमानों से फ़रमाता है: "वे ग़ैब (परोक्ष) पर ईमान लाते हैं।" 1 - वे परोक्ष पर विश्वास लाते हैं। ईमान तस्दीक़ (पुष्टि) है और तस्दीक़ ज्ञान है। जिस वस्तु का मूल रूप से ज्ञान ही न हो, उस पर ईमान लाना कैसे संभव है? लाज़मी तौर पर तफ़सीर कबीर में है: (6) "यह कहना वर्जित नहीं है कि हम उस ग़ैब को जानते हैं जिसके लिए हमारे पास प्रमाण है।" 2 - यह कहने में कोई मनाही नहीं है कि हमें उस परोक्ष का ज्ञान है जिसमें हमारे पास दलील है। (7) नसीम-उर-रियाज़ में है: "अल्लाह ने हमें ग़ैब पर ईमान लाने का आदेश तभी दिया जब उसने हमारे लिए अपने ग़ैब का दरवाज़ा खोल दिया।" 3 - हमें अल्लाह तआला ने ईमान बिल-ग़ैब का हुक्म तभी दिया है जब उसने अपने ग़ैब का दरवाज़ा हमारे लिए खोल दिया है। फ़क़ीर ने तो रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) के लिए कहा था, यह अइम्मा, उलेमा जो अपने लिए मान रहे हैं, मालूम नहीं कि विरोधी उन पर कौन सा हुक्म जड़ेंगे। (8 और 9) इमाम शेरानी किताब 'अल-यवाक़ीत वल-जवाहर' में हज़रत शैख़ अकबर से नक़ल फ़रमाते हैं: "मुजतहिद इमामों के लिए ग़ैब के उलूम (विद्याओं) में मज़बूत क़दम है।" 4 - इल्म-ए-ग़ैब में अइम्मा मुजतहिदीन के लिए मज़बूत क़दम है। (10 और 11) मौलाना अली क़ारी (जिनसे विरोधी नासमझी के कारण इस मसले में दलील लाते हैं) मिर्क़ात शरह मिश्कात शरीफ़ में हज़रत शैख़ अबू अब्दुल्ला शीराज़ी द्वारा रचित 'किताबुल अक़ायद' से नक़ल फ़रमाते हैं: "हमारा विश्वास है कि बंदा हालात में तरक़्क़ी करते हुए रूहानी सिफ़त (आध्यात्मिक विशेषता) तक पहुँचता है, उस समय उसे इल्म-ए-ग़ैब प्राप्त होता है।" 5 - हमारा अक़ीदा है कि बंदा तरक़्क़ी-ए-मक़ामात पाकर सिफ़त-ए-रूहानी तक पहुँचता है, उस वक़्त उसे इल्म-ए-ग़ैब हासिल होता है। (12) यही अली क़ारी मिर्क़ात में उसी किताब से नक़ल करते हैं:

1 अल-क़ुरान अल-करीम 2/3 2 मफ़ातीह अल-ग़ैब (अत-तफ़सीर अल-कबीर) आयत 2/3 के अंतर्गत, अल-मत्बअह अल-बहिय्या अल-मिसरिया, मिस्र 2/28 3 नसीम अल-रियाज़, फ़स्ल 'और उनमें से वह जिस पर उन्हें परोक्ष की सूचना दी गई', मरकज़-ए-अहले सुन्नत बरकात-ए-रज़ा, गुजरात, भारत 3/151 4 अल-यवाक़ीत वल-जवाहर, 49वीं शोध, दार इह्या अल-तुरास अल-अरबी, बेरुत 2/280 5 मिर्क़ात अल-मफ़ातीह, किताबुल ईमान, अध्याय एक, हदीस 2 के अंतर्गत, अल-मक्तबा अल-हबीबिया, क्वेटा 1/128

(۵) حتی کہ مسلمانوں کو فرماتا ہے: "یُؤْمِنُوْنَ بِالْغَیْبِ" 1- | غیب پر ایمان لاتے ہیں۔ ایمان تصدیق ہے اور تصدیق علم ہے جس شی کا اصلاً علم ہی نہ ہو اس پر ایمان لانا کیونکر ممکن، لاجرم تفسیر کبیر میں ہے۔ (۶) لا یمتنع ان تقول نعلم من الغیب مالنا علیہ دلیل 2- | یہ کہنا کچھ منع نہیں کہ ہم کو اس غیب کا علم ہے جس میں ہمارے لیے دلیل ہے۔ (۷) نسیم الریاض میں ہے: لم یکلفنا اللہ الایمان بالغیب الا وقد فتح لنا باب غیبہ 3- | ہمیں اللہ تعالٰی نے ایمان بالغیب کا جبھی حکم دیا ہے کہ اپنے غیب کا دروازہ ہمارے لیے کھول دیا ہے۔ فقیر نے تو رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کے لیے کہا تھا یہ ائمہ، علماء جو اپنے لیے مان رہے ہیں معلوم نہیں کہ مخالفین ان پر کون سا حکم جڑیں۔ (۸ و ۹) امام شعرانی کتاب الیواقیت والجواہر میں حضرت شیخ اکبر سے نقل فرماتے ہیں: للمجتہدین القدم الراسخ فی علوم الغیب 4- | علم غیب میں ائمہ مجتہدین کے لیے مضبوط قدم ہے۔ (۱۰ و ۱۱) مولانا علی قاری (کہ مخالفین براہ نافہمی اس مسئلہ میں ان سے سند لاتے ہیں) مرقاۃ شرح مشکوٰۃ شریف میں کتاب عقائد تالیف حضرت شیخ ابو عبد اللہ شیرازی سے نقل فرماتے ہیں: نعتقدان العبد ینتقل فی الاحوال حتی یصیر الی نعت الروحانیۃ فیعلم الغیب 5- | ہمارا عقیدہ ہے کہ بندہ ترقی مقامات پا کر صفتِ روحانی تک پہنچتا ہے اس وقت اسے علم غیب حاصل ہوتا ہے۔ (۱۲) یہی علی قاری مرقاۃ میں اُسی کتاب سے ناقل:

1 القرآن الکریم ۳/۲ 2 مفاتیح الغیب (التفسیر الکبیر) تحت آیۃ ۲ / ۳ المطبعۃ البہیۃ المصریہ مصر ۲۸/۲ 3 نسیم الریاض فصل ومن ذلك ما اطلع علیه من الغیوب مرکز اہلسنت برکات رضا گجرات ہند ۳ / ۱۵۱ 4 الیواقیت والجواہر البحث التاسع والاربعون دار احیاء التراث العربی بیروت ۲ / ۲۸۰ 5 مرقاۃ المفاتیح کتاب الایمان الفصل الاول تحت حدیث ۲ المکتبۃ الحبیبیۃ کوئٹہ ۱ / ۱۲۸

Fatawa Rizwia, Volume 29

- The servant becomes aware of the realities of things and the unseen and the unseen of the unseen become manifest to him. [1]
- Through the strength of the light of faith, a servant becomes informed of the realities of things, and not only the unseen, but the unseen of the unseen becomes clear to him.

(13) The same Ali Qari says in the same 'Mirqat': - People are divided into the perceptive who perceive the unseen like the observed, and these are the Prophets; and those who are dominated by following their senses and imagination only, and these are the majority of creation. So they must have a teacher who reveals the hidden things to them, and that teacher is none other than the Prophet sent for this purpose. [2] - Human beings are of two types: one is the perceptive who know the unseen as if it were witnessed, and these are the Prophets; the other are those who are mostly dominated by their senses and imagination, and the majority of creation belongs to this type. Thus, they need a guide who can reveal the unseen to them, and that guide is none other than a Prophet, who is sent specifically for this purpose.

(14 & 15) The same Ali Qari in 'Sharh Fiqh al-Akbar' narrates from Hazrat Abu Sulaiman Darani (may Allah be pleased with him): - Insight (Firasah) is the unveiling of the soul and the observation of the unseen, and it is one of the stations of faith. [3] - The insight of a believer (which is mentioned in the Hadith) is the unveiling of the spirit and the witnessing of the unseen. And it is one of the stages of faith.

(16 & 17) Imam Ibn Hajar Makki in the book 'al-I'lam', then Allama Shami in 'Sall al-Husam' say: - It is permissible for the elite (saints) to know the unseen in a matter or matters, as occurred for many of them and became well-known. [4] - It is permissible for saints to be granted knowledge of the unseen in an event or multiple events, as has occurred and become famous among many of them.

(18 & 19) In 'Tafsir Ma'alim' and 'Tafsir Khazin', under the word of Allah Almighty: "And he [the Prophet] is not a stinter of [knowledge of] the unseen." (81:24) [5]. - It says that he (peace and blessings of Allah be upon him)... - Meaning Allah Almighty says: My Prophet (peace and blessings of Allah be upon him)...

1. Mirqat al-Mafatih, Kitab al-Iman, Chapter 1, under Hadith 2, al-Maktabah al-Habibiyah, Quetta, 1/119

2. Mirqat al-Mafatih, Kitab al-Iman, Chapter 1, under Hadith 2, al-Maktabah al-Habibiyah, Quetta, 1/120
3. Manh al-Rawd al-Azhar Sharh al-Fiqh al-Akbar, Khawariq al-Adat etc., Mustafa al-Babi, Egypt, p. 80
4. Al-I'lam bi-Qawati' al-Islam, Maktaba al-Haqiqah, Dar al-Shafaqah, Istanbul, Turkey, p. 359; Sall al-Husam, a treatise from the treatises of Ibn Abidin, Suhail Academy, Lahore, 2/311
5. The Holy Quran, 81/24

फ़तावा रज़विया, जिल्द 29

- बन्दा चीज़ों की हक़ीक़तों से वाक़िफ़ हो जाता है और उस पर ग़ैब और ग़ैब का ग़ैब ज़ाहिर हो जाता है। [1]
- ईमान की रोशनी की ताक़त बढ़ कर बन्दा हक़ीक़त-ए-अशिया पर मत्तले होता है और उस पर ग़ैब न सिर्फ़ ग़ैब बल्कि ग़ैब का ग़ैब रौशन हो जाता है।

(13) यही अली क़ारी इसी मिर्क़ात में फ़रमाते हैं: - लोग दो क़िस्मों में बँटे हुए हैं: एक वे समझदार जो ग़ैब को देखे हुए के समान समझते हैं और ये नबी हैं; और दूसरे वे जिन पर केवल इंद्रियों और कल्पना का अनुसरण हावी है, और ये अधिकांश सृष्टि है। अतः उनके लिए एक शिक्षक का होना आवश्यक है जो उनके लिए छिपी हुई चीज़ों को प्रकट करे, और वह शिक्षक कोई और नहीं बल्कि इस उद्देश्य के लिए भेजा गया नबी है। [2] - आदमी दो क़िस्म के होते हैं, एक वो ज़ीरक कि ग़ैब को मुशाहदे की तरह जानते हैं और ये अम्बिया हैं, दूसरे वो जिन पर सिर्फ़ हिस व वहम की पैरवी ग़ालिब है, अक्सर मख़्लूक इसी क़िस्म की है। तो उनको एक बताने वाले की ज़रूरत है जो उन पर ग़ैबों को खोल दे और वो बताने वाला नहीं मगर नबी कि खुद इस काम के लिए भेजा जाता है।

(14 व 15) यही अली क़ारी शरह फ़िक्ह अकबर में हज़रत अबू सुलैमान दारानी रज़ी अल्लाहु तआला अन्हु से नक़्ल करते हैं: - फ़रासत (सूझ-बूझ) आत्मा का अनावरण और ग़ैब का अवलोकन है, और यह ईमान के उच्च स्तरों में से एक है। [3] - मोमिन की फ़रासत (जिसका ज़िक्र हदीस में इर्शाद हुआ है) वो रूह का कशफ़ और ग़ैब का मुआइना है। और ये ईमान के मुक़ामों में से एक मुक़ाम है।

(16 व 17) इमाम इब्न हजर मक्की किताब अल-एलाम में, फिर अल्लामा शामी सल् अल-हुसाम में फ़रमाते हैं: - विशिष्ट लोगों (औलिया) के लिए यह जायज़ है कि उन्हें किसी मामले या मामलों में ग़ैब का ज्ञान हो, जैसा कि उनमें से कई के साथ हुआ और प्रसिद्ध हुआ। [4] - जाइज़ है कि औलिया को किसी वाक़ये या वाक़यात में इल्म-ए-ग़ैब मिले जैसा कि उनमें बहुत के लिए वाक़े होकर मुश्तेहर हुआ।

(18 व 19) तफ़्सीर मआलिम और तफ़्सीर ख़ाज़िन में अल्लाह तआला के क़ौल: "और वो (नबी) ग़ैब (की बातों के बताने) में कंजूस नहीं" (81:24) के तहत है। [5] - यह कहता है कि वह (सल्लल्लाहु

अलैहि वसल्लम)... - यानी अल्लाह अज़्ज़वजल फ़रमाता है: मेरे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम...

1. मिर्क़ात अल-मफ़ातीह, किताब अल-ईमान, बाब 1, हदीस 2 के तहत, अल-मकतबा अल-हबीबिया, क्वेटा, 1/119
2. मिर्क़ात अल-मफ़ातीह, किताब अल-ईमान, बाब 1, हदीस 2 के तहत, अल-मकतबा अल-हबीबिया, क्वेटा, 1/120
3. मन्ह अल-रौद अल-अज़हर शरह अल-फ़िक्ह अल-अकबर, ख़वारिक़ अल-आदात आदि, मुस्तफ़ा अल-बाबी, मिस्र, पृ. 80
4. अल-एलाम बि-क़वाती अल-इस्लाम, मकतबा अल-हक़ीक़ा, दार अल-शफ़क़ा, इस्तांबुल, तुर्की, पृ. 359; सल् अल-हुसाम, इब्न आबिदीन के शोध प्रबंधों में से एक, सुहैल अकादमी, लाहौर, 2/311
5. अल-क़ुरान अल-करीम, 81/24

یطلع العبد علی حقائق الاشیاء ویتجلی لہ الغیب و غیب الغیب ۱۔ نورِ ایمان کی قوت بڑھ کر بندہ حقائقِ اشیاء پر مطلع ہوتا ہے اور اس پر غیب نہ صرف غیب بلکہ غیب کا غیب روشن ہو جاتا ہے۔

(۱۳) یہی علی قاری اسی مرقاۃ میں فرماتے ہیں: الناس ینقسم الی فطن یدرك الغائب کالمشاھد وھم الانبیاء والی من الغالب علیھم متابعۃ الحس و متابعۃ الوھم فقط وھم اکثر الخلائق فلا بد لھم من معلم یکشف لھم المغیبات و ما ھو الا النبی المبعوث لھذا الامر ۲۔ آدمی دو قسم کے ہوتے ہیں، ایک وہ زیرک کہ غیب کو مشاہد کی طرح جانتے ہیں اور یہ انبیاء ہیں، دوسرے وہ جن پر صرف حس و وہم کی پیروی غالب ہے اکثر مخلوق اسی قسم کی ہے۔ تو ان کو ایک بتانے والے کی ضرورت ہے جو ان پر غیبوں کو کھول دے اور وہ بتانے والا نہیں مگر نبی کہ خود اس کام کے لیے بھیجا جاتا ہے۔

(۱۴ و ۱۵) یہی علی قاری شرح فقہ اکبر میں حضرت ابو سلیمان دارانی رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے ناقل: الفراسۃ مکاشفۃ النفس ومعاینۃ الغیب وھی من مقامات الایمان ۳۔ فراستِ مومن (جس کا ذکر حدیث میں ارشاد ہوا ہے) وہ رُوح کا کشف اور غیب کا معائنہ ہے۔ اور یہ ایمان کے مقاموں میں سے ایک مقام ہے۔

(۱۶ و ۱۷) امام ابن حجر مکی کتاب الاعلام، پھر علامہ شامی سل الحسام میں فرماتے ہیں:

الخواص یجوزان ان یعلموا الغیب في قضیۃ او قضایا کما وقع لکثیر منھم واشتھر ۴۔ جائز ہے کہ اولیاء کو کسی واقعے یا وقائع میں علمِ غیب ملے جیسا کہ ان میں بہت کے لیے واقع ہو کر مشتہر ہوا۔

(۱۸ و ۱۹) تفسیر معالم و تفسیر خازن میں زیر قولہ تعالیٰ: "وَمَا هُوَ عَلَى الْغَيْبِ بِضَنِيْنٍ ۲۴" ۵- ہے۔ یقول انه صلی الله تعالی علیه وسلم یعنی الله عزوجل فرماتا ہے: میرے نبی صلی الله تعالیٰ علیہ وسلم

۱۔ مرقاة المفاتیح کتاب الایمان الفصل الاول تحت حدیث ۲ المکتبة الحبیبیہ کوئٹہ ۱/ ۱۱۹ ۲۔ مرقاة المفاتیح کتاب الایمان الفصل الاول تحت حدیث ۲ المکتبة الحبیبیہ کوئٹہ ۱/ ۱۲۰ ۳۔ منح الروض الازہر شرح الفقه الاکبر خوارق العادات الخ مصطفی البابی مصر ص ۸۰ ۴۔ الاعلام بقواطع الاسلام مکتبہ الحقیقہ بشارع دار الشفقة استنبول ترکی ص ۳۵۹، سل الحسام رسالہ من رسائل ابن عابدین سہیل اکیڈمی لاہور ۲/ ۳۱۱ ۵۔ القرآن الکریم ۸۱/ ۲۴

Fatawa-e-Razawiyya, Volume 29

“The knowledge of the unseen (Ghayb) comes to him (the Prophet), and he is not stingy in sharing it with you; rather, he also imparts this knowledge to you.” [1]

(20) Tafsir Baydawi, under the verse of Allah: “And We had taught him knowledge from Ourself” [2] states: “That is, knowledge which is exclusive to Us and cannot be known except through Our guidance; it is the knowledge of the unseen.” [3] Meaning, Allah Almighty says, “That knowledge which is specific to Us and cannot be known without Our telling, We have bestowed that knowledge of the unseen upon Khidr.”

(21) In Tafsir Ibn Jarir, it is narrated from Hazrat Sayyiduna Abdullah bin Abbas (may Allah be pleased with them): “He (Khidr) said: Indeed, you will not be able to have patience with me. And he was a man who knew the knowledge of the unseen, having been taught it.” [4] Hazrat Khidr (peace be upon him) said to Musa (peace be upon him): “You will not be able to stay with me.” Khidr knew the knowledge of the unseen; he had been given knowledge of the unseen.

(22) In the same source, Abdullah ibn Abbas said: Hazrat Khidr (peace be upon him) said: “Your knowledge does not encompass the knowledge of the unseen that I know.” [5]

(23) Imam Qastallani states in Al-Mawahib al-Ladunniyya al-Sharif: “Prophethood itself means being informed of the unseen (Ghayb).” [6] The meaning of Prophethood is to know the knowledge of the unseen.

(24) In the same source, it is mentioned regarding the blessed name of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him): “Prophethood (Nubuwwat) is derived from ‘Naba’ which means news; that is, Allah Almighty informed him of His unseen.” [7] The Prophet is called ‘Nabi’ because Allah Almighty gave him knowledge of His own unseen.

---

[1] Ma’alim al-Tanzil under verse 3/81, Dar al-Kutub al-Ilmiyya Beirut 2/424, Lubab al-Ta’wil fi Ma’ani al-Tanzil (Tafsir al-Khazin) 2/399 [2] Al-Qur'an al-Karim 18/65 [3] Anwar al-Tanzil (Tafsir al-Baydawi) under verse 18/65, Dar al-Fikr Beirut 3/510 [4] Jami’ al-Bayan (Tafsir al-Tabari) under verse 18/67, Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut 15/323 [5] Jami’ al-Bayan (Tafsir al-Tabari) under verse 18/68, Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut 15/323 [6] Al-Mawahib al-Ladunniyya, Second Chapter, First Section, al-Maktab al-Islami Beirut

2/47 [7] Al-Mawahib al-Ladunniyya, Second Chapter, First Section, al-Maktab al-Islami Beirut 2/46, 47

फ़तावा रज़विया, खंड 29

“उन (नबी) को ग़ैब (अदृश्य) का ज्ञान आता है, वह तुम्हें बताने में कंजूसी नहीं करते, बल्कि तुम्हें भी इसका ज्ञान देते हैं।” [1]

(20) तफ़सीर बैज़ावी में अल्लाह के इस कथन के तहत: “और हमने उसे अपने पास से एक ज्ञान सिखाया था” [2] है: “अर्थात वह ज्ञान जो हमारे लिए विशिष्ट है और हमारी तौफ़ीक़ (अनुग्रह) के बिना नहीं जाना जा सकता, और वह ग़ैब का ज्ञान है।” [3] यानी अल्लाह अज़्ज़वजल फरमाता है, “वह ज्ञान जो हमारे साथ विशेष है और हमारे बताए बिना ज्ञात नहीं होता, वह ग़ैब का ज्ञान हमने खिज़र को प्रदान किया है।”

(21) तफ़सीर इब्न जरीर में हज़रत सैयदना अब्दुल्ला बिन अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से रिवायत है: “उसने (खिज़र ने) कहा: निश्चय ही तुम मेरे साथ सब्र नहीं कर सकोगे। और वह एक ऐसे व्यक्ति थे जो ग़ैब का ज्ञान जानते थे, उन्हें वह सिखाया गया था।” [4] हज़रत खिज़र अलैहिस्सलाम ने मूसा अलैहिस्सलाम से कहा: “आप मेरे साथ नहीं ठहर सकेंगे।” खिज़र ग़ैब का ज्ञान जानते थे, उन्हें ग़ैब का ज्ञान दिया गया था।

(22) उसी में है, अब्दुल्ला इब्न अब्बास ने फ़रमाया: हज़रत खिज़र अलैहिस्सलाम ने कहा: “जो ग़ैब का ज्ञान मैं जानता हूँ, आपका ज्ञान उसे घेरता नहीं है।” [5]

(23) इमाम क़स्तलानी मवाहिब अल-लदुन्निया शरीफ़ में फरमाते हैं: “नुबुव्वत (पैग़म्बरी) का अर्थ ही है ग़ैब की जानकारी होना।” [6] नुबुव्वत का अर्थ ही यह है कि ग़ैब का ज्ञान जानना।

(24) उसी में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुबारक नाम ‘नबी’ के बयान में फरमाया: “नुबुव्वत ‘नबा’ से लिया गया है जिसका अर्थ है समाचार; अर्थात अल्लाह तआला ने उन्हें अपने ग़ैब की जानकारी दी।” [7] हुज़ूर को नबी इसलिए कहा जाता है क्योंकि अल्लाह तआला ने हुज़ूर को अपने ग़ैब का ज्ञान दिया।

---

[1] मआलिम अत-तन्ज़ील आयत 3/81 के तहत, दार अल-कुतुब अल-इल्मिया बेरूत 2/424, लुबाब अत-तावील फ़ी मआनी अत-तन्ज़ील (तफ़सीर अल-ख़ाज़िन) 2/399 [2] अल-क़ुरआन अल-करीम 18/65 [3] अनवार अत-तन्ज़ील (तफ़सीर अल-बैज़ावी) आयत 18/65 के तहत, दार अल-फ़िक्र बेरूत 3/510 [4] जामिअल-बयान (तफ़सीर अत-तब्री) आयत 18/67 के तहत, दार इहया अत-तुराथ अल-

अरबी बेरूत 15/323 [5] जामिअल-बयान (तफ़सीर अत-तब़री) आयत 18/68 के तहत, दार इहया अत-तुराथ अल-अरबी बेरूत 15/323 [6] अल-मवाहिब अल-लदुन्निया, दूसरा अध्याय, पहला खंड, अल-मक्तब अल-इस्लामी बेरूत 2/47 [7] अल-मवाहिब अल-लदुन्निया, दूसरा अध्याय, पहला खंड, अल-मक्तब अल-इस्लामी बेरूत 2/46, 47

فتاوی رضویہ، جلد ۲۹

یأتیه علم الغیب فلا یبخل به علیکم بل یعلمکم [1]- علیہ وسلم کو غیب کا علم آتا ہے وہ تمہیں بتانے میں بخل نہیں فرماتے بلکہ تم کو بھی اس کا علم دیتے ہیں۔

(۲۰) تفسیر بیضاوی زیر قولہ تعالٰی: "وَعَلَّمْنٰهُ مِنْ لَّدُنَّا عِلْمًا" [2] ہے۔ ای مما یختص بنا ولا یعلم الا بتوفیقنا وھو علم الغیوب [3]۔ یعنی اللہ عزوجل فرماتا ہے وہ علم کہ ہمارے ساتھ خاص ہے اور بے ہمارے بتائے ہوئے معلوم نہیں ہوتا وہ علم غیب ہم نے خضر کو عطا فرمایا ہے۔

(۲۱) تفسیر ابن جریر میں حضرت سیدنا عبداللہ بن عباس رضی اللہ تعالٰی عنہما سے روایت ہے۔ قال انك لن تستطیع معی صبرا. وکان رجلا یعلم علم الغیب قد علم ذلك [4]- حضرت خضر علیہ الصلوٰۃ والسلام نے موسیٰ علیہ السلام سے کہا: آپ میرے ساتھ نہ ٹھہر سکیں گے۔ خضر علم غیب جانتے تھے انہیں علم غیب دیا گیا تھا۔

(۲۲) اُسی میں ہے عبداللہ ابن عباس نے فرمایا: خضر علیہ الصلوٰۃ والسلام نے کہا: لم تحط من علم الغیب بما اعلم [5]۔ جو علم غیب میں جانتا ہوں آپ کا علم اُسے محیط نہیں۔

(۲۳) امام قسطلانی مواہب لدنیہ شریف میں فرماتے ہیں: النبوۃ التي هي الاطلاع علی الغیب [6]۔ نبوت کے معنی ہی یہ ہیں کہ علم غیب جاننا۔

(۲۴) اُسی میں نبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کے اسم مبارک نبی کے بیان میں فرمایا: النبؤاۃ مأخوذۃ من النباء وھو الخبر ای ان اللہ تعالٰی اطلعه علی غیبه [7]- حضور کو نبی اس لیے کہا جاتا ہے کہ اللہ تعالٰی نے حضور کو اپنے غیب کا علم دیا۔

[1] معالم التنزیل تحت آیة ۳/۸۱ دار الکتب العلمیہ بیروت ۲/۴۲۴، لباب التأویل فی معانی التنزیل (تفسیر الخازن) ۲/۳۹۹ [2] القرآن الکریم ۱۸/۶۵ [3] انوار التنزیل (تفسیر البیضاوی) تحت آیة ۱۸/۶۵ دار الفکر بیروت ۳/۵۱۰ [4] جامع البیان (تفسیر الطبری) تحت آیة ۱۸/۶۷ دار احیاء التراث العربی بیروت ۱۵/۳۲۳ [5] جامع البیان (تفسیر الطبری) تحت آیة ۱۸/۶۸ دار احیاء التراث العربی بیروت ۱۵/۳۲۳ [6] المواهب اللدنیہ المقصد الثانی الفصل الاول المکتب الاسلامی بیروت ۲/۴۷ [7] المواهب اللدنیہ المقصد الثانی الفصل الاول المکتب الاسلامی بیروت ۲/۴۶، ۴۷

Volume 29 - Fatawa Razawiya

(25) It is in the same [book]: - [Arabic]: Indeed, the matter of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) became well-known and widespread among his companions regarding his knowledge of the unseen. - [Urdu]: Undoubtedly, it was well-known and famous among the noble companions that the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) has knowledge of the unseen.

(26) In its commentary by Zarqani, it is stated: - [Arabic]: His companions (peace and blessings of Allah be upon him) were certain of his awareness of the unseen. - [Urdu]: The noble companions used to judge with certainty that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) has knowledge of the unseen.

(27) Ali Qari states in the commentary of Burdah Sharif: - [Arabic]: His knowledge (peace and blessings of Allah be upon him) encompasses all arts of knowledge... and among them is his knowledge of unseen matters. - [Urdu]: The knowledge of the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) encompasses all types of knowledge; the knowledge of the unseen is also one branch from the branches of his knowledge.

(28) In the Tafsir of Imam Tabari and Tafsir Durr al-Manthur, narrated by Abu Bakr bin Abi Shaybah, the teacher of Imam Bukhari and Muslim and other leading scholars of Hadith, from Sayyiduna Imam Mujahid, the special student of Sayyiduna Abdullah ibn Abbas (may Allah be pleased with them):

- [Arabic]: He said regarding the verse of Allah Almighty "And if you ask them, they will surely say, 'We were only conversing and playing'": A man from among the hypocrites said, "Muhammad tells us that so-and-so's she-camel is in such-and-such valley, yet what does he know of the unseen?"
- [Urdu]: He said in the commentary of the word of Allah "And if you ask them..." that a person from among the hypocrites said, "Muhammad (peace and blessings of Allah be upon him) narrates to us that so-and-so's she-camel is in such-and-such valley, whereas what does he know of unseen matters?"

Meaning, someone's she-camel was lost, and the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) stated that it was in such-and-such forest. A hypocrite [said this].

---

1 Al-Mawahib al-Ladunniyyah, Al-Maqsad Al-Thamin, Al-Fasl Al-Thalith, Al-Maktab al-Islami, Beirut, 3/552 2 Sharh al-Zarqani 'ala al-Mawahib al-Ladunniyyah, Al-Fasl Al-Thalith, Dar al-Ma'rifah, Beirut, 7/200 3 Az-Zubdah al-'Umdah Sharh al-Burdah, under the verse "wa waqifuna ladayhi 'inda haddihim", Jam'iyyat Ulama Sikandaria, Khairpur Sindh, p. 75 4 Jami' al-Bayan (Tafsir al-Tabari), under verse 9:65, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 10/196; ad-Durr al-Manthur with reference to Ibn Abi Shaybah etc., under verse 9:65, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 4/210

जिल्द 29 - फ़तावा रज़विया

(25) उसी में है: - [अरबी]: निस्संदेह, नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का मामला उनके साथियों के बीच परोक्ष (ग़ैब) के ज्ञान के बारे में प्रसिद्ध और व्यापक हो गया। - [उर्दू]: निस्संदेह, सहाबा किराम में यह बात प्रसिद्ध और ज्ञात थी कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को ग़ैब का ज्ञान है।

(26) उसी की शरह ज़रक़ानी में है: - [अरबी]: उनके साथी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) उनके ग़ैब के ज्ञान के प्रति निश्चित थे। - [उर्दू]: सहाबा किराम पूर्ण विश्वास के साथ यह हुक्म लगाते थे कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को ग़ैब का ज्ञान है।

(27) अली क़ारी शरह बुर्दा शरीफ़ में फ़रमाते हैं: - [अरबी]: उनका ज्ञान (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ज्ञान की सभी कलाओं को समेटे हुए है... और उनमें से परोक्ष मामलों का उनका ज्ञान भी है। - [उर्दू]: रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का ज्ञान ज्ञान के विभिन्न प्रकारों को समेटे हुए है; ग़ैब का ज्ञान भी हुज़ूर के ज्ञान की शाखाओं में से एक शाखा है।

(28) इमाम तबरी की तफ़सीर और तफ़सीर दुर्रे मन्सूर में इमाम बुखारी और मुस्लिम के उस्ताद अबू बक्र बिन अबी शैबा और अन्य मुहद्दिसीन की रिवायत से, सैयदुना इमाम मुजाहिद, जो सैयदुना अब्दुल्लाह इब्न अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हुम) के विशेष शिष्य थे, से वर्णित है:

- [अरबी]: उन्होंने अल्लाह के फरमान 'और अगर आप उनसे पूछें, तो वे ज़रूर कहेंगे, हम तो सिर्फ बातचीत और खेल कर रहे थे' के बारे में कहा: मुनाफ़िक़ों में से एक व्यक्ति ने कहा, 'मुहम्मद हमें बताते हैं कि फलां की ऊंटनी फलां-फलां घाटी में है, जबकि वह ग़ैब की बातें क्या जानें?'
- [उर्दू]: उन्होंने अल्लाह के फरमान 'वलइन सअल्तहुम' आदि की तफ़सीर में कहा कि मुनाफ़िक़ों में से एक व्यक्ति ने कहा, 'मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) हमसे बयान करते हैं कि फलां की ऊंटनी फलां-फलां घाटी में है, भला वह ग़ैब की बातें क्या जानें?'

यानी किसी की ऊंटनी खो गई थी, रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि वह फलां जंगल में है। एक मुनाफ़िक़ [ने यह कहा] ।

---

1 अल-मवाहिब अल-लदुन्निया, अल-मक़सद अल-सामिन, अल-फ़स्ल अल-सालिस, अल-मक्तब अल-इस्लामी, बेरूत, 3/552 2 शरह अल-ज़रक़ानी अलल मवाहिब अल-लदुन्निया, अल-फ़स्ल अल-

सालिस, दार अल-मआरिफ़ा, बेरूत, 7/200 3 अज़-ज़ुबदा अल-उमदा शरह अल-बुर्दा, 'व वाक़िफ़ूना लदैहि' के तहत, जमीयत उलेमा सिकंदरिया, खैरपुर सिंध, पृष्ठ 75 4 जामे अल-बयान (तफ़सीर अल-तबरी), आयत 9:65 के तहत, दार इह्या अल-तुरास अल-अरबी, बेरूत, 10/196; अद-दुर्र अल-मन्सूर, इब्न अबी शैबा आदि के हवाले से, आयत 9:65 के तहत, दार इह्या अल-तुरास अल-अरबी, बेरूत, 4/210

(۲۵) اُسی میں ہے: قد اشتھر و انتشر امرہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم بین اصحابہ بالاطلاع علی الغیوب۔ 1 | بے شک صحابہ کرام میں مشہور و معروف تھا کہ نبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کو غیبوں کا علم ہے۔

(۲۶) اُسی کی شرح زرقانی میں ہے: اصحابہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم جازمون باطلاعہ علی الغیب 2۔ | صحابہ کرام یقین کے ساتھ حکم لگاتے تھے کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کو غیب کا علم ہے۔

(۲۷) علی قاری شرح بردہ شریف میں فرماتے ہیں: علمہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم حاو لفنون العلم (الی ان قال) ومنھا علمہ بالامور الغیبیۃ 3۔ | رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کا علم اقسام علم کو حاوی ہے غیبوں کا علم بھی علم حضور کی شاخوں سے ایک شاخ ہے۔

(۲۸) تفسیر امام طبری اور تفسیر در منشور میں بروایت ابو بکر بن ابی شیبہ استاذ امام بخاری و مسلم و غیرہ ائمہ محدثین سیدنا امام مجاہد تلمیذ خاص حضرت سیدنا عبداللہ ابن عباس رضی اللہ تعالٰی عنہم سے ہے: انہ قال فی قولہ تعالٰی ولئن سألتھم لیقولن انما کنّا نخوض ونلعب قال رجل من المنافقین یحدثنا محمد ان ناقۃ فلان بوادی کذا و کذا وما یدریہ بالغیب 4۔ | انہوں نے فرمایا اللہ کے قول ولئن سألتہم الخ کی تفسیر میں کہ منافقین میں سے ایک شخص نے کہا کہ محمد (صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم) ہم سے بیان کرتے ہیں کہ فلاں کی اونٹنی فلاں فلاں وادی میں ہے بھلا وہ غیب کی باتیں کیا جانیں۔ (ت)

یعنی کسی کا ناقہ گم ہو گیا تھا رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا کہ وہ فلاں جنگل میں ہے ایک منافق

---

1 المواہب اللدنیۃ المقصد الثامن الفصل الثالث المکتب الاسلامی بیروت ۳ / ۵۵۲ 2 شرح الزرقانی علی المواہب اللدنیۃ الفصل الثالث دارالمعرفۃ بیروت ۷ / ۲۰۰ 3 الزبدۃ العمدۃ شرح البردۃ تحت شعر و واقفون لدیہ عند حدھم جمعیۃ علماء سکندریہ خیرپور سندھ ص ۷۵ 4 جامع البیان(تفسیر الطبری)تحت آیۃ ۹ / ۶۵ داراحیاء التراث العربی بیروت ۱۰ / ۱۹۶، الدرالمنثور بحوالہ ابن ابی شیبہ وغیرہ تحت آیۃ ۹ / ۶۵ داراحیاء التراث العربی بیروت ۴ / ۲۱۰

Fatawa Razawiyya Volume 29

He said, "What does Muhammad know of the unseen?" Upon this, Allah (Almighty) revealed this noble verse: "Say to them, 'Were you mocking Allah and His signs and His Messenger? Make no excuse; you have disbelieved after your belief.'" (Quran 9:65-66). Sir, observe what a calamity this verse is for the opponents.

Escalation of Wraths upon the Wahhabis

First Wrath: Upon them were the sayings of the Imams, of which only a drop from the ocean was presented. According to their stance, these opponents of religion would, God forbid, be deemed disbelievers and polytheists based on the creed of the Saba'iyyah.

Second Wrath: An even greater calamity than that was in the Hadith of Ibn Abbas, where, God forbid, Abdullah ibn Abbas would be declared a disbeliever for attributing knowledge of the unseen to Khidr (peace be upon him).

Third Wrath: A more magnificent and severe calamity than that was in the texts of Mawahib al-Ladunniyah and Sharh az-Zarqani, according to which not only Abdullah ibn Abbas but the general Companions (may Allah be pleased with them) would become disbelievers in the Wahhabi religion for believing in the Messenger of Allah's (peace and blessings be upon him) knowledge of the unseen.

Fourth Wrath: A more intense and horrific calamity than that was in another Hadith of Ibn Abbas (may Allah be pleased with them both), where Syedna Khidr (peace be upon him) is a Prophet and, by stating he has knowledge of the unseen himself, would, God forbid (may the Wahhabis' mouths be sealed), be deemed a disbeliever.

Fifth Wrath: An even more extreme and limit-crossing calamity than that: How could Syedna Musa Kaleemullah (peace be upon him), who is by consensus, definitively, certainly, and by faith a Messenger and Prophet of Allah and one of the 'Ulul-'Azm' (Arch-Prophets) among the Messengers, escape the takfir (labeling as disbeliever) of the Wahhabis?

Khidr (peace be upon him) himself said to him, "I have knowledge of the unseen which you do not have," and Musa (peace be upon him) did not express any denial of this. Would a Wahhabi not say about this: "Alas, there was an objection for breaking a plank of a boat or straightening a falling wall without wages, despite the promise of

patience, yet he heard a mouthful of words of disbelief according to Wahhabi law and remained silent as if swallowing a gulp of syrup."

Anyway, for all these calamities, the Wahhabis had a remedy in three proverbs.

Musa (peace be upon him) accepted the knowledge of the unseen for Hazrat Khidr, so the Wahhabis could have said that Musa himself was irreligious (God forbid). When Hazrat Khidr (peace be upon him) stated he had knowledge of the unseen for himself, they could have taken cover under that satanic example.

उसने कहा, "मुहम्मद गैब (परोक्ष) का क्या जानते हैं?" इस पर अल्लाह अज़्ज़-व-जल्ल ने यह आयत-ए-करीमा उतारी: "उनसे कह दीजिये, 'क्या तुम अल्लाह और उसकी आयतों और उसके रसूल के साथ मज़ाक कर रहे थे? बहाने मत बनाओ, तुम अपने ईमान के बाद काफ़िर हो चुके हो।'" हुज़ूर, गौर करें कि यह आयत विरोधियों के लिए कैसी आफ़त है।

वहाबियों पर गज़बों (क्रोध) की तरक्कियाँ

पहला गज़ब: उन पर इमामों के ऐसे कथन थे जिनमें से समुद्र से एक बूँद पेश की गई थी। उनके अनुसार, ये धर्म के विरोधी अपने धर्म में माज़अल्लाह (ईश्वर न करे) काफ़िर और मुशरिक ठहरते हैं।

दूसरा गज़ब: इससे बड़ी आफ़त इब्ने अब्बास की उस हदीस में थी कि माज़अल्लाह, अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास, ख़िज़्र अलैहिस्सलाम के लिए इल्म-ए-ग़ैब बताकर काफ़िर क़रार पाते हैं।

तीसरा गज़ब: इससे भी बड़ी और अधिक गंभीर आफ़त मवाहिब शरीफ़ और ज़रक़ानी के ग्रंथों में थी कि न केवल अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास बल्कि आम सहाबा-ए-किराम (रज़ियल्लाहु अन्हुम) रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के इल्म-ए-ग़ैब पर ईमान लाकर वहाबियों के धर्म में काफ़िर होते जा रहे हैं।

चौथा गज़ब: इससे भी सख़्त और भयानक आफ़त इब्ने अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) की दूसरी हदीस में थी कि सैय्यदना ख़िज़्र अलैहिस्सलाम नबी हैं और खुद अपने लिए इल्म-ए-ग़ैब बताकर माज़अल्लाह (वहाबियों के मुँह पर ताला लगे) काफ़िर ठहरते हैं।

पाँचवाँ गज़ब: इससे भी चरम सीमा पार करने वाली आफ़त यह कि सैय्यदना मूसा कलीमउल्लाह अलैहिस्सलाम, जो सर्वसम्मति से, निश्चित रूप से, यकीनन और ईमान के साथ अल्लाह के रसूल और नबी हैं और प्रेरितों में से 'उलुल-अज़्म' (महान पैगंबर) हैं, वे वहाबियों के तकफ़ीर (काफ़िर ठहराने) से कहाँ बचते हैं।

ख़िज़्र अलैहिस्सलाम ने खुद उनसे कहा कि मेरे पास वो इल्म-ए-ग़ैब है जो आपके पास नहीं है, और मूसा अलैहिस्सलाम ने इस पर कोई इनकार नहीं फ़रमाया। क्या इस पर एक वहाबी यह नहीं कहेगा कि "अफ़सोस, एक नाव का तख्ता तोड़ देने या गिरती दीवार को बिना मज़दूरी के सीधा कर देने पर

तो आपत्ति थी कि सब्र के वादे के बावजूद सब्र न हो सका, और वहाबी शरीयत के अनुसार मुँह भरकर कुफ़्र (अविश्वास) का शब्द सुना और शरबत का घूँट पीकर चुप रहे।"

खैर, इन सभी आफ़तों का वहाबियों के पास तीन कहावतों के रूप में इलाज था।

जब मूसा अलैहिस्सलाम ने हज़रत ख़िज़्र के लिए इल्म-ए-ग़ैब स्वीकार किया, तो वहाबी कह सकते थे कि मूसा (माज़अल्लाह) खुद बददीन हैं। जब हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम ने अपने लिए इल्म-ए-ग़ैब बताया, तो वे उस शैतानी मिसाल की आड़ ले सकते थे।

पृष्ठ 750 में से 444

بولا محمد غیب کیا جانیں اسی پر اللہ عزوجل نے یہ آیت کریمہ اتاری کہ ان سے فرمادیجئے کہ اللہ اور اس کے رسول اور اس کی آیتوں سے ٹھٹھا کرتے ہو ، بہانے نہ بناؤ تم کافر ہو چکے ایمان کے بعد۔ حضرت ملاحظہ فرمائیں کہ یہ آیت مخالفین پر کیسی آفت ہے۔

وہابیہ پر غضبوں کی ترقیاں

پہلا غضب : ان پر ائمہ کے اقوال تھے کہ دریا سے قطرہ عرض کیے ان پر تو یہیں تک تھا کہ یہ سبائمیہ دین ان مخالفین دین کے مذہب پر معاذاللہ کافر و مشرک ٹھہرتے ہیں۔

دوسرا غضب : اس سے زیادہ آفت اس حدیث ابن عباس میں تھی کہ معاذ اللہ عبداللہ ابن عباس خضر علیہ الصلوٰۃ والسلام کے لیے علم غیب بتا کر کافر قرار پاتے ہیں۔

تیسرا غضب : اس سے عظیم تر اشد آفت مواہب شریف اور زرقانی کی عبارات میں تھی کہ نہ صرف عبداللہ ابن عباس بلکہ عام صحابہ کرام رضی اللہ تعالیٰ عنہم رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے علم غیب پر ایمان لا کر وہابیہ کے دھرم میں کافر ہوئے جاتے ہیں۔

چوتھا غضب : اس سے سخت تر ہولناک آفت ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما کی دوسری حدیث میں تھی کہ سیدنا خضر علیہ الصلوٰۃ والسلام نبی ہیں خود اپنے لیے علم غیب بتا کر معاذ اللہ (حاکم بدہنِ وہابیہ) کافر ٹھہرتے ہیں۔

پانچواں غضب : اس سے بھی انتہا درجے کی حد سے گزری ہوئی آفت کہ سید نا موسیٰ کلیم اللہ علیہ الصلوٰۃ والسلام کہ اجماعاً قطعاً، یقیناً، ایمانًا اللہ کے رسول و نبی اور اولوالعزم من الرسل سے ہیں وہابیہ کی تکفیر سے کہاں بچتے ہیں۔

خضر علیہ الصلوٰۃ والسلام نے خود ان سے کہا کہ مجھے علم غیب ہے جو آپ کو نہیں، اور موسیٰ علیہ الصلوٰۃ والسلام نے اس پر کچھ انکار نہ فرمایا۔ کیا اس پر ایک وہابی نہ کہے گا کہ افسوس ایک ناؤ کا تختہ توڑ دینے یا گرتی دیوار بے اُجرت سیدھی کر دینے پر وہ اعتراض کہ با وصفِ وعدہ صبر نہ ہوسکا اور وہابی شریعت کی رو سے منہ بھر کلمہ کفر سنا اور شربت کا گھونٹ پی کر چپ رہے۔

خیر ، ان سب آفتوں کا وہابیہ کے پاس تین کہاوتوں سے علاج تھا۔

موسیٰ علیہ الصلوٰۃ والسلام نے حضرت خضر کے لیے علم غیب تسلیم کیا تو وہابیہ کہہ سکتے تھے کہ موسیٰ بددین خود مایا ں بددین خود، حضرت خضر علیہ الصلوٰۃ والسلام نے اپنے لیے علم غیب بتایا تو وہ اس شیطانی مثل کی آڑ لے سکتے تھے

Fatawa Razawiyya Volume 29

“Who sank the boat? Khwaja Khidr did.” If Ibn Abbas and the Noble Companions (may Allah be pleased with them) believed in the knowledge of the unseen (Ilm-ul-Ghaib) for the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him), what stops some foul-mouthed Wahhabi from saying:

“Peers (spiritual guides) do not fly; rather, it's their disciples who make them fly.” (T)

“The curse of Allah be upon the wrongdoers.” (The curse of Allah Almighty is upon the oppressors. T) But the sixth calamity: The havoc of the day of judgment was brought down by the One, the Subduer Allah Himself; His full wrath descended through this blessed verse and its occasion of revelation. Here, Allah Almighty is decreeing that whoever denies the knowledge of the unseen of the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) is an infidel (Kafir), he mocks Allah and His Messenger, he becomes an apostate (Murtad) even after reciting the Kalima. Alas, here there is no room for anything except this fourth couplet:

“We had expected friendship from friends; whatever we had imagined was itself wrong.” (We hoped for friendship from friends, but what we thought was incorrect. T)

Behold! To preserve His Oneness (Tawheed), He broke ties with the Prophets, He broke ties with the Messengers, He struck a blow to everyone's knowledge; it's a disaster that the same God would leave the Wahhabis and side with the Prophet, and instead impose a decree of infidelity (Kufr) on the Wahhabis. It is true that now the duty of friendship remains with no one. It is unknown whether the opponents now follow the Fatwa of their leaders or that of Allah, the One, the Subduer. “There is no power to avoid sin nor strength to do good except from Allah, the Sublime, the Great.” (T)

Third Matter The division of knowledge into ‘Intrinsic’ (Zaati) and ‘Bestowed’ (Ataai) and the clarifications of the scholars. Hostility towards the noble virtues of Muhammad, the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) has made the opponents blind and deaf; they cannot see the truth. However, anyone with a little intellect can understand that there is no difficulty here. Knowledge is certainly one of those attributes that can be granted to someone other than God by God's bestowal. Therefore, its division into Intrinsic and Bestowed is certain. Similarly, the division into ‘Encompassing’ (Muheet) and ‘Non-encompassing’ (Ghayr-Muheet) is evident. In these, the exclusivity with Allah Almighty...

फतावा रज़विया खंड २९

“कि नाव किसने डुबोई, ख्वाजा खिज़्र ने।” इब्ने अब्बास और सहाबा किराम (रज़ियल्लाहु अन्हुम) ने नबी करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के लिए इल्म-ए-ग़ैब (परोक्ष ज्ञान) माना, तो किसी बदज़ुबान वहाबी को यह कहने में क्या लगता कि:

“पीराँ नमी परंद मुरीदाँ मे परानन्द” (पीर नहीं उड़ते बल्कि मुरीद उन्हें उड़ाते हैं। त)

“लानतुललाहि अलज़-ज़ालिमीन” (ज़ालिमों पर अल्लाह तआला की लानत। त) मगर छठा गज़ब: कहर की कयामत तो खुद अल्लाह वाहिद कह्हार ने ढा दी, पूरा कहर इस आयत-ए-करीमा और इसकी शान-ए-नुज़ूल ने तोड़ दिया। यहाँ अल्लाह अज़्ज़वजल यह हुक्म लगा रहा है कि जो शख्स रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की ग़ैब दानी से इनकार करे वह काफिर है, वह अल्लाह और रसूल से मज़ाक करता है, वह कलमा पढ़कर भी मुर्तद हो जाता है। अफ़सोस कि यहाँ इस चौथी मिसाल के सिवा कोई गुंजाइश नहीं कि:

“मा याराँ चश्म-ए-यारी दाश्तेम, खुद ग़लत बूद आँचे मा पिन्दाश्तेम” (हमने दोस्तों से दोस्ती की उम्मीद रखी थी, जो कुछ हमने गुमान किया वह खुद गलत था। त)

भला जिस खुदा की तौहीद बनाए रखने के लिए नबी से बिगाड़ी, रसूलों से बिगाड़ी, सबके इल्म पर चोट मारी, गजब है वही खुदा वहाबियों को छोड़ कर रसूल का हो जाए, उल्टा वहाबियों पर कुफ्र का हुक्म लगाए। सच है अब किसी से दोस्ती का धर्म न रहा। मालूम नहीं कि अब मुखालिफीन (विरोधी) अपने सरगनाओं का फतवा मानते हैं या अल्लाह वाहिद कह्हार का। “ला हौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाह” (न गुनाह से बचने की ताकत है न ही नेकी करने की कुवत मगर बुलंदी और अज़मत वाले खुदा की तरफ से। त)

तीसरा मामला ज़ाती और अताई की जानिब इल्म का इनकिसाम (विभाजन) और उलमा की तशरीहात। मुखालिफीन को तो मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के फ़ज़ाइल-ए-करीमा की दुश्मनी ने अंधा-बहरा कर दिया, उन्हें हक नहीं सूझता मगर थोड़ी सी अक्ल वाला समझ सकता है कि यहाँ कुछ भी दुश्वारी नहीं। इल्म यकीनन उन सिफात में से है जो गैर-खुदा को अता-ए-इलाही से मिल सकता है, तो ज़ाती और अताई की तरफ इसका इनकिसाम यकीनी है, यूँ ही मुहीत और गैर-मुहीत की तक़सीम बदीही है, इनमें अल्लाह अज़्ज़वजल के साथ खास होने के..

পৃষ্ঠ ৪৪৫/৭৫০

کہ ناؤ کس نے ڈبوئی، خواجہ خضر نے۔ ابن عباس و صحابہ کرام رضی اللہ تعالٰی عنہم نے نبی کریم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کے لیے علم غیب جانا تو کسی دہن دریدہ وہابی کو کہنے کیا لگتا کہ:

پیراں نمی پرند مریاں می پرانند (پیر نہیں اڑتے بلکہ مرید انہیں اڑاتے ہیں۔ ت)

لعنۃ اللہ علی الظلمین (ظالموں پر اللہ تعالٰی کی لعنت، ت) مگر چھٹا غضب : ڈھر کی قیامت تو خود اللہ واحد قہار نے ڈھا دی، پورا قہر اس آیہ کریمہ اور اس کی شان نزول نے توڑا۔ یہاں اللہ عزوجل یہ حکم لگا رہا ہے کہ جو شخص رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کی غیب دانی سے منکر ہو وہ کافر ہے، وہ اللہ و رسول سے ٹھٹھا کرتا ہے، وہ کلمہ گوئی کر کے مرتد ہوتا ہے، افسوس کہ یہاں اس چوتھی مثل کے سوا کچھ گنجائش نہیں کہ ؎

ما یاران چشم یاری داشتیم خود غلط بود آنچہ ما پنداشتیم (ہم نے دوستوں سے دوستی کی امید رکھی تھی جو کچھ ہم نے گمان کیا وہ خود غلط تھا۔ ت)

بھلا جس خدا کی توحید بنی رکھنے کے لیے نبی سے بگاڑی، رسولوں سے بگاڑی، سب کے علم پر دولتی جھاڑی، غضب ہے وہی خدا وہابیہ کو چھوڑ کر رسول کا ہو جائے، الٹا وہابیہ پر حکم کفر لگائے، سچ ہے اب کسی سے دوستی کا دھرم نہ رہا، معلوم نہیں کہ اب مخالفین اپنے سر گروہوں کا فتوی مانتے ہیں یا اللہ واحد قہار کا، ولا حول ولا قوۃ الا باللہ (نہ گناہ سے بچنے کی طاقت ہے نہ ہی نیکی کرنے کی قوت مگر بلندی و عظمت والے خدا کی طرف سے، ت)

امر سوم ذاتی و عطائی کی جانب علم کا انقسام اور علماء کی تصریحات مخالفین کو تو محمد رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے فضائل کریمہ کی دشمنی نے اندھا بہرا کر دیا، انہیں حق نہیں سوجھتا مگر تھوڑی سی عقل والا سمجھ سکتا ہے کہ یہاں کچھ بھی دشواری نہیں۔ علم یقیناً ان صفات میں سے ہے کہ غیر خدا کو بعطائے خدا مل سکتا ہے، تو ذاتی و عطائی کی طرف اس کا انقسام یقینی، یونہی محیط و غیر محیط کی تقسیم بدیہی، ان میں اللہ عزوجل کے ساتھ خاص ہونے کے

Fatawa Rizvia, Volume 29

In every division, only the first category is considered, i.e., essential knowledge (ilm-e-dhati) and truly encompassing knowledge (ilm-e-muheet haqiqi). So, the verses, traditions, and statements of scholars that deny the affirmation of knowledge of the unseen (ilm-e-ghayb) for others definitely refer to these categories. The jurists (fuqaha) who issue rulings of disbelief (takfir) do so based on these categories; for the basis of takfir is that a specific attribute of God was affirmed for someone else. Now see whether essential knowledge is specific to God or is it granted (ata'i); God forbid, having granted knowledge attributed to God is out of the question, it is absolutely impossible for God to gain knowledge from someone else's giving. Then, is encompassing knowledge specific to God or is it non-encompassing; God forbid, non-encompassing knowledge is absolutely impossible for God, in which some information remains unknown. So, how did affirming granted, non-encompassing knowledge for someone other than God become affirming a specific attribute of God? If the jurists' takfir refers to this, the meaning would be: "See, you affirm for someone other than God an attribute that cannot be an attribute of God, therefore you are an infidel," meaning that an attribute should have been affirmed for others which is specifically God's attribute. Can any fool tolerate such a vile madness? "But the Najdis are a people who do not understand" (But Najdi is a mindless nation. T).

(29 & 30) Imam Ibn Hajar Makki states in Fatawa Hadithiyyah:

Arabic Text	**Urdu Translation**
وما ذكرناه في الآية صرح به النووي رحمة الله تعالى في فتاواه فقال معناها لا يعلم ذلك استقلالا وعلم احاطة بكل المعلومات الا الله تعالى۔	Meaning, the interpretation we gave of the verses was confirmed by Imam Nawawi (may Allah have mercy on him) in his Fatawa. He states that the meaning of the verse is that such knowledge of the unseen belongs only to God, which is by His own self and encompasses all information.

(31) Also, in Sharh Hamziyah, he states:

Arabic Text	**Urdu Translation**
انه تعالى اختص به لكن من حيث الاحاطة فلا ينافى ذلك اطلاع الله تعالى لبعض خواصه على كثير من المغيبات حتى من الخمس	The unseen is specific to Allah, but in the sense of encompassing knowledge. So, it is not contradictory that Allah Almighty has given the knowledge of many unseen things to some of His chosen ones, even from

Arabic Text	Urdu Translation
التي قال صلى الله تعالى عليه وسلم فيهن خمس لا يعلمهن الا الله۔	those five about which the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said that no one knows them except Allah.

1. Fatawa Hadithiyyah, topic on ruling when someone says so-and-so knows the unseen, Mustafa al-Babi Egypt, p. 228.
2. Afdal al-Qira' al-Qurra' Umm al-Qura under the verse 'dhat al-'ulum', etc., Majma' al-Thaqafi Abu Dhabi, pp. 473-474.

फ़तावा रज़विया, खंड 29

हर विभाजन में केवल पहली श्रेणी ही विचारणीय है, यानी आवश्यक ज्ञान (इल्म-ए-ज़ाती) और वास्तविक व्यापक ज्ञान (इल्म-ए-मुहीत हक़ीक़ी)। अतः वे आयतें, हदीसें और विद्वानों के कथन जिनमें दूसरों के लिए ग़ैब के ज्ञान (इल्म-ए-ग़ैब) की पुष्टि का खंडन किया गया है, उनमें निश्चित रूप से यही श्रेणियां अभिप्रेत हैं। न्यायविद (फ़ुक़्हा) जो कुफ़्र (तक्फ़ीर) का फ़तवा देते हैं, वे इन्हीं श्रेणियों के आधार पर देते हैं; क्योंकि तक्फ़ीर का आधार यही तो है कि ईश्वर की विशिष्ट विशेषता किसी दूसरे के लिए सिद्ध की गई। अब यह देख लीजिए कि क्या आवश्यक ज्ञान ईश्वर के लिए विशिष्ट है या प्रदत्त (अताई); ईश्वर न करे, प्रदत्त ज्ञान का ईश्वर के साथ होना तो दूर, ईश्वर के लिए यह पूर्णतः असंभव है कि वह किसी दूसरे के देने से ज्ञान प्राप्त करे। फिर, क्या व्यापक ज्ञान ईश्वर के लिए विशिष्ट है या गैर-व्यापक; ईश्वर न करे, गैर-व्यापक ज्ञान ईश्वर के लिए पूर्णतः असंभव है, जिसमें कुछ जानकारी अज्ञात रहे। तो, किसी अन्य के लिए प्रदत्त, गैर-व्यापक ज्ञान सिद्ध करना ईश्वर की विशिष्ट विशेषता सिद्ध करना कैसे हुआ? यदि न्यायविदों का तक्फ़ीर इस ओर इशारा करता है, तो अर्थ यह होगा: "देखो, तुम ईश्वर के अलावा किसी और के लिए वह गुण सिद्ध कर रहे हो जो ईश्वर का गुण नहीं हो सकता, इसलिए तुम काफ़िर हो," अर्थात दूसरों के लिए वह गुण सिद्ध करना चाहिए था जो विशेष रूप से ईश्वर का गुण है। क्या कोई मूर्ख ऐसा घृणित पागलपन सहन कर सकता है? "लेकिन नजद के लोग एक ऐसी कौम हैं जो समझ नहीं रखते" (लेकिन नजदी एक बुद्धिहीन राष्ट्र हैं। त)।

(29 और 30) इमाम इब्न हजर मक्की फ़तावा हदीथिया में फरमाते हैं:

अरबी पाठ	**उर्दू अनुवाद**
وما ذكرناه في الآية صرح به النووي رحمة الله تعالى في فتاواه فقال معناها لا يعلم ذلك استقلالا وعلم احاطة بكل المعلومات الا الله تعالى۔	यानी हमने जो आयतों की व्याख्या की, इमाम नवावी (अल्लाह उन पर रहम करे) ने अपने फ़तावा में उसकी पुष्टि की। वह कहते हैं कि आयत का अर्थ यह है कि ग़ैब का ऐसा ज्ञान केवल ईश्वर के पास है, जो स्वयं से है और सभी जानकारियों को घेरे हुए है।

(31) साथ ही, शर्ह हमज़िया में वे फरमाते हैं:

अरबी पाठ	उर्दू अनुवाद
انه تعالى اختص به لكن من حيث الاحاطة فلا ينافى ذلك اطلاع الله تعالى لبعض خواصه على كثير من المغيبات حتى من الخمس التي قال صلى الله تعالى عليه وسلم فيهن خمس لا يعلمهن الا الله۔	ग़ैब अल्लाह के लिए विशिष्ट है, लेकिन व्यापकता [ज्ञान] के अर्थ में। इसलिए, यह विरोधाभासी नहीं है कि अल्लाह सर्वशक्तिमान ने अपने कुछ खास लोगों को बहुत सी ग़ैबी बातों का ज्ञान दिया है, यहाँ तक कि उन पाँचों में से भी जिनके बारे में नबी (अल्लाह की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने फरमाया कि उन्हें अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता।

1. फ़तावा हदीथिया, उस हुक्म पर चर्चा जब कोई कहे कि फलां व्यक्ति ग़ैब जानता है, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, पृ. 228।
2. अफ़ज़ल अल-क़िरा, अल-क़ुर्रा उम्म अल-क़ुरा आयत 'ज़ात अल-उलूम' के तहत, आदि, मजमा अल-थकाफ़ी अबू धाबी, पृ. 473-474।

قابلِ صرف ہر تقسیم کی قسم اول ہے یعنی علمِ ذاتی و علم محیط حقیقی۔ تو آیات و احادیث و اقوالِ علماء جن میں دوسرے کے لیے اثباتِ علمِ غیب سے انکار ہے ان میں قطعاً یہی قسمیں مراد ہیں۔ فقہاء کہ حکمِ تکفیر کرتے ہیں انہیں قسموں پر حکم لگاتے ہیں کہ آخر بنائے تکفیر یہی تو ہے کہ خدا کی صفتِ خاصہ دوسرے کے لیے ثابت کی۔ اب یہ دیکھ لیجئے کہ خدا کے لیے علمِ ذاتی خاص ہے یا عطائی، حاشا للہ علم عطائی خدا کے ساتھ ہونا درکنار خدا کے لیے محال قطعی ہے کہ دوسرے کے دیئے سے اسے علم حاصل ہو پھر خدا کے لیے علم محیط حقیقی خاص ہے یا غیر محیط، حاشا للہ علم محیط خدا کے لیے محال قطعی ہے جس میں بعض معلومات مجہول رہیں، تو علم عطائی غیر محیط حقیقی غیر خدا کے لیے ثابت کرنا خدا کی صفت خاصہ ثابت کرنا کیونکر ہوا۔ تکفیر فقہاء اگر اس طرف ناظر ہو تو معنی یہ ٹھہریں گے کہ دیکھو تم غیر خدا کے لیے وہ صفت ثابت کرتے ہو جو ذاتِ خدا کی صفت نہیں ہو سکتی لہذا کافر ہو یعنی وہ صفت غیر کے لیے ثابت کرنی چاہیے تھی جو خاص خدا کی صفت ہے، کیا کوئی احمق ایسا اخبث جنون گوارا کر سکتا ہے۔ ولکن النجدیة قوم لا یعقلون (لیکن نجدی بے عقل قوم ہے۔ت)

(۲۹ و ۳۰) امام ابن حجر مکی فتاویٰ حدیثیہ میں فرماتے ہیں:

عربی عبارت	اردو ترجمہ
وما ذکرناہ في الآیة صرح بہ النووي رحمة اللہ تعالی في فتاواہ فقال معناھا لا	یعنی ہم نے جو آیات کی تفسیر کی امام نووی رحمۃ اللہ تعالیٰ نے اپنے فتاویٰ میں اس کی تصریح کی، فرماتے ہیں

عربی عبارت	اردو ترجمہ
يعلم ذلك استقلالا وعلم احاطة بكل المعلومات الا الله تعالى۔	آیت کے معنی یہ ہیں کہ غیب کا ایسا علم صرف خدا کو ہے جو بذاتِ خود ہو اور جمیع معلومات کو محیط ہو۔

(۳۱) نیز شرحِ ہمزیہ میں فرماتے ہیں:

عربی عبارت	اردو ترجمہ
انه تعالى اختص به لكن من حيث الاحاطة فلا ينافى ذلك اطلاع الله تعالى لبعض خواصه على كثير من المغيبات حتى من الخمس التي قال صلى الله تعالى عليه وسلم فيهن خمس لا يعلمهن الا الله۔	غیب اللہ کے لیے خاص ہے مگر بمعنی احاطہ تو اس کے منافی نہیں کہ اللہ تعالیٰ نے اپنے بعض خاصوں کو بہت سے غیبوں کا علم دیا یہاں تک کہ ان پانچ میں سے جن کو نبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا کہ ان کو اللہ کے سوا کوئی نہیں جانتا ہے۔

1 فتاویٰ حدیثیہ مطلب فی حکم ما اذا قال فلان یعلم الغیب مصطفی البابی مصر ص ۲۲۸ 2 افضل القراء ام القری تحت شعر ذات العلوم الخ مجمع الثقافی ابوظبی ص ۴۷۴-۴۷۳

Fatawa Razawiya - Volume 29

(32) In Tafsir-e-Kabir it is stated: "The statement 'And I do not know the unseen' indicates his admission that he does not encompass all knowledge." (1) | Meaning, the command given to the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) in the verse to say, "I do not know the unseen," its meaning is that my knowledge does not encompass the entirety of Divine information.

(33 & 34) Imam Qadi Iyad in Shifa Sharif and Allama Shihab al-Din Khafaji in its commentary Nasim al-Riyad state: "(This miracle) of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) being informed about the unseen (certainly known facts) is such that no sane person can deny it or hesitate about it (due to the abundance of its narrators and the consensus of their meanings regarding the knowledge of the unseen). This does not contradict the verses indicating that none knows the unseen but Allah, and the statement 'If I knew the unseen, I would have gathered much good for myself.' For what is denied is knowledge without an intermediary. As for the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) being informed by Allah's teaching, it is a proven fact according to Allah's word: 'He does not reveal His unseen to anyone, except to a Messenger with whom He is pleased.'" (2) | The miracle of the knowledge of the unseen of the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) is certainly proven, in which no sane person has room for denial or doubt because hadiths have come in abundance, and from all of them, the Prophet's knowledge of the unseen is established by consensus. This is in no way contradictory to those verses which state that no one knows the unseen except Allah, and that the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) was commanded to say that if he knew the unseen, he would have collected much good for himself. This is because the negation in the verses is of that knowledge which is without God's telling. The Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) receiving knowledge of the unseen through Allah's teaching is established from the Great Quran: that Allah does not grant anyone mastery over His unseen except His chosen Messenger.

(35) In Tafsir Nishapuri it is stated: "'I do not know the unseen' contains an indication that the unseen independently is known by none but Allah." (3) | The meaning of the verse is that knowledge of the unseen which is intrinsic is exclusive to God.

1. Mafatih al-Ghayb

2. Nasim al-Riyad, commentary on al-Shifa by Qadi Iyad, part "And from that which he was informed of from the unseen," Markaz Ahl-e-Sunnat Barkat-e-Raza, 3/150.
3. Ghara'ib al-Quran (Tafsir al-Nishapuri) under verse 6/50, Mustafa al-Babi Egypt, 6/110.

फतावा रज़विया - जिल्द 29

(32) तफ़सीर-ए-कबीर में है: "कथन 'और मैं ग़ैब (अदृश्य) नहीं जानता' उनके इस स्वीकारोक्ति को दर्शाता है कि वह समस्त जानकारियों को घेरने वाले नहीं हैं।" (1) | अर्थात, आयत में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को जो आदेश दिया गया कि आप कह दें 'मैं ग़ैब नहीं जानता', इसका अर्थ यह है कि मेरा ज्ञान समस्त ईश्वरीय जानकारियों को घेरे हुए नहीं है।

(33 व 34) इमाम क़ाज़ी अयाज़ 'शिफ़ा शरीफ़' में और अल्लामा शिहाब उद्दीन ख़फ़ाजी इसकी व्याख्या 'नसीम अर-रियाज़' में फ़रमाते हैं: "(यह चमत्कार) नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को ग़ैब (निश्चित रूप से ज्ञात तथ्यों) से अवगत कराए जाने का ऐसा है कि कोई भी बुद्धिमान व्यक्ति इससे इनकार नहीं कर सकता और न ही इसमें संदेह कर सकता है (क्योंकि इसके वर्णनकर्ताओं की बहुतायत है और ग़ैब के बारे में उनके अर्थों की सहमति है)। यह उन आयतों के विपरीत नहीं है जो दर्शाती हैं कि अल्लाह के सिवा कोई ग़ैब नहीं जानता, और न ही इस कथन के कि 'यदि मैं ग़ैब जानता होता, तो मैं अपने लिए बहुत सी भलाई जमा कर लेता'। क्योंकि जिस ज्ञान का खंडन किया गया है वह बिना किसी माध्यम के है। जहाँ तक अल्लाह द्वारा नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को दी गई जानकारी का प्रश्न है, तो यह अल्लाह के इस वचन से सिद्ध तथ्य है: 'वह अपने ग़ैब पर किसी को अवगत नहीं कराता, सिवाय उस रसूल के जिससे वह प्रसन्न हो'।" (2) | अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का ग़ैब का इल्म (अदृश्य का ज्ञान) का चमत्कार निश्चित रूप से सिद्ध है, जिसमें किसी बुद्धिमान व्यक्ति के लिए इनकार या संदेह की कोई गुंजाइश नहीं है क्योंकि इस विषय में हदीसें बहुत अधिक आई हैं और उन सब से सर्वसम्मति से हुज़ूर का इल्म-ए-ग़ैब सिद्ध है। और यह उन आयतों के ज़रा भी विपरीत नहीं है जो बताती हैं कि अल्लाह के सिवा कोई ग़ैब नहीं जानता और यह कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को यह कहने का हुक्म हुआ कि अगर मैं ग़ैब जानता तो अपने लिए बहुत सी भलाई जमा कर लेता। ऐसा इसलिए है क्योंकि आयतों में उस ज्ञान का निषेध है जो बिना ख़ुदा के बताए हो, और अल्लाह के बताने से नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को ग़ैब का ज्ञान मिलना तो कुरान-ए-अज़ीम से सिद्ध है, कि अल्लाह अपने ग़ैब पर किसी को अधिकार नहीं देता सिवाय अपने पसंदीदा रसूल के।

(35) तफ़सीर-ए-निशापुरी में है: "'मैं ग़ैब नहीं जानता' इसमें इस बात का संकेत है कि स्वतंत्र रूप से ग़ैब का ज्ञान अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता।" (3) | आयत का अर्थ यह है कि ग़ैब का वह ज्ञान जो स्वयं के वजूद से हो, वह केवल ख़ुदा के साथ विशिष्ट है।

1. मफ़ातीह अल-ग़ैब
2. नसीम अर-रियाज़ शरह अल-शिफ़ा लिल-क़ाज़ी अयाज़, खंड "और उनमें से जिसे वह ग़ैब से अवगत कराया गया", मरकज़ अहले सुन्नत बरकात-ए-रज़ा, 3/150।
3. ग़राइब अल-क़ुरान (तफ़सीर अन-निशापुरी), आयत 6/50 के अंतर्गत, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, 6/110।

(۳۲) تفسیر کبیر میں ہے : قولہ ولا اعلم الغیب یدل علی اعترافہ بانہ غیر عالم بکل المعلومات ۱۔ | یعنی آیت میں جو نبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کو ارشاد ہوا تم فرمادو میں غیب نہیں جانتا، اس کے یہ معنی ہیں کہ میرا علم جمیع معلومات الہیہ کو حاوی نہیں۔

(۳۳ و ۳۴) امام قاضی عیاض شفاء شریف اور علامہ شہاب الدین خفاجی اس کی شرح نسیم الریاض میں فرماتے ہیں۔ (ھذہ المعجزۃ) فی اطلاعہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم علی الغیب (المعلومۃ علی القطع) بحیث لایمکن انکارھا اوالتردد فیھا لا حرج من العقلاء (لکترۃ روا تھا و اتفاق معانیھا علی اطلاع علی الغیب) وھذا لا ینافی الآیات الدالۃ علی انہ لا یعلم الغیب الا اللہ و قولہ ولو کنت اعلم الغیب لاستکثرت من الخیر فان المنفی علمہ من غیر واسطۃ و اما اطلاعہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم با علام اللہ تعالٰی لہ فامر متحقق بقولہ تعالٰی فلایظھر علی غیبہ احدا الامن ارتضٰی من رسول ۲۔ | رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کا معجزہ علم غیب یقیناً ثابت ہے جس میں کسی عاقل کو انکار یا تردد کی گنجائش نہیں کہ اس میں احادیث بکثرت آئیں اور ان سب سے بالاتفاق حضور کا علم غیب ثابت ہے اور یہ ان آیتوں کے کچھ منافی نہیں جو بتاتی ہیں کہ اللہ کے سوا کوئی غیب نہیں جانتا اور یہ کہ نبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کو اس کہنے کا حکم ہوا کہ میں غیب جانتا تو اپنے لیے بہت خیر جمع کرلیتا، اس لیے کہ آیتوں میں نفی اس علم کی ہے جو بغیر خدا کے بتائے ہو اور اللہ تعالٰی کے بتائے سے نبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کو علم غیب ملنا تو قرآن عظیم سے ثابت ہے، کہ اللہ اپنے غیب پر کسی کو مسلط نہیں کرتا سوا اپنے پسندیدہ رسول کے۔

(۳۵) تفسیر نیشاپوری میں ہے: لا اعلم الغیب فیہ دلالۃ علی ان الغیب بالاستقلال لا یعلمہ الا اللہ ۳۔ | آیت کے یہ معنی ہیں کہ علم غیب جو بذاتِ خود ہو وہ خدا کے ساتھ خاص ہے۔

۱ مفاتیح الغیب ۲ نسیم الریاض شرح الشفا للقاضی عیاض و من ذلک ما اطلاع علیہ من الغیوب مرکز اہلسنت برکات رضا ۳ / ۱۵۰ ۳ غرائب القرآن (تفسیر النیسابوری) تحت آیۃ ۵۰/۶ مصطفی البابی مصر ۶ / ۱۱۰

Fatawa Rizvia Volume 29

(36) In *Tafsir Unmuzaj Jaleel* it is stated: | Meaning: None knows the unseen without proof except Allah, or without being taught except Allah, or encompasses the entire unseen except Allah. | The meaning of the verse is that knowing the unseen without proof and without being taught, or encompassing the entire unseen, is exclusive to Allah Almighty. | | :--- | :--- |

(37) In *Jami' al-Fusulayn* it is stated: | The answer is that reconciliation is possible: what is negated is independent knowledge, not knowledge through notification; or what is negated is certain knowledge, not speculative knowledge. This is supported by Allah's words: "Will You place therein one who will cause corruption therein..." [Al-Baqarah: 30], for it is unseen that the angels informed about based on their speculation or through Allah's notification. Thus, one should be declared a disbeliever if they claim it independently, not if they inform about it through notification in sleep or wakefulness via some form of spiritual unveiling (*kashf*), as there is no contradiction between this and the verse due to the aforementioned reconciliation. | (That is, jurists have declared claiming knowledge of the unseen as disbelief, yet many reports of the unseen exist in Hadiths and books of trustworthy Imams which cannot be denied.) The answer is that they can be reconciled such that jurists negated that knowledge of the unseen be attributed to someone inherently (by themselves); they did not negate knowledge of the unseen given by God. Or, they negated certain knowledge, not speculative. This is supported by the noble verse: the angels said, "Will You place therein those who will spread corruption and shed blood?" The angels spoke of unseen news but speculatively or through God's notification. Therefore, *takfir* (declaring one a disbeliever) is warranted for someone who claims to attain knowledge of the unseen without God's granting, not for someone who receives it through God's notification via *kashf* while awake or asleep; such knowledge of the unseen is not at all contrary to the verse. | | :--- | :--- |

(38 & 39) In *Radd al-Muhtar*, from Imam Sahab Hedaya's *Mukhtarat al-Nawazil*: | If he claimed knowledge of the unseen by himself | If one claims to have acquired knowledge of the unseen inherently. | | :--- | :--- |

---

1 2 *Jami' al-Fusulayn*, Chapter 38, Islami Kutub Khana Karachi, 2/302.

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

(36) तफ़सीर उन्मूज़ज जलील में है: | अर्थ: अल्लाह के सिवा कोई बिना प्रमाण के परोक्ष (ग़ैब) को नहीं जानता, या अल्लाह के सिवा कोई बिना सिखाए नहीं जानता, या अल्लाह के सिवा कोई संपूर्ण परोक्ष को नहीं जानता। | आयत का अर्थ यह है कि बिना प्रमाण और बिना सिखाए ग़ैब को जानना या संपूर्ण ग़ैब पर हावी होना, यह अल्लाह तआला के साथ विशिष्ट है। | | :--- | :--- |

(37) जामे अल-फ़ुसूलैन में है: | उत्तर यह है कि सामंजस्य संभव है: जो नकारा गया है वह स्वतंत्र ज्ञान है, न कि सूचना के माध्यम से प्राप्त ज्ञान; या जो नकारा गया है वह निश्चित ज्ञान है, न कि अनुमानित ज्ञान। इसकी पुष्टि अल्लाह के इन शब्दों से होती है: "क्या तू उसमें ऐसे को रखेगा जो उसमें बिगाड़ पैदा करेगा..." [अल-बक़रह: 30], क्योंकि यह परोक्ष बात थी जिसके बारे में फरिश्तों ने अपने अनुमान या अल्लाह की सूचना के आधार पर बताया। अत; यदि कोई स्वतंत्र रूप से इसका दावा करता है तो उसे काफ़िर करार दिया जाना चाहिए, न कि तब जब वह नींद या जागृति में कश्फ़ (आध्यात्मिक अनावरण) के माध्यम से अल्लाह की सूचना पर आधारित जानकारी देता है, क्योंकि उपर्युक्त सामंजस्य के कारण इसके और आयत के बीच कोई विरोधाभास नहीं है। | (अर्थात् फ़ुक़हा (विधिवेत्ताओं) ने इल्म-ए-ग़ैब (परोक्ष के ज्ञान) के दावे पर कुफ़्र का हुक्म दिया है और हदीसों तथा विश्वसनीय इमामों की किताबों में ग़ैब की बहुत सी खबरें मौजूद हैं जिनका इनकार नहीं किया जा सकता) इसका उत्तर यह है कि उनमें सामंजस्य इस प्रकार हो सकता है कि फ़ुक़हा ने इसकी मनाही की है कि किसी के लिए स्वयं से इल्म-ए-ग़ैब माना जाए, खुदा के बताए हुए इल्म-ए-ग़ैब की मनाही नहीं की, या निश्चित ज्ञान की मनाही की है न कि अनुमानित की, और इसकी पुष्टि यह आयत-ए-करीमा करती है, फरिश्तों ने अर्ज किया "क्या तू ज़मीन में ऐसों को खलीफा करेगा जो उसमें फ़साद और खून-खराबा करेंगे?"। मलैका (फरिश्तों) ने ग़ैब की खबर कही मगर अनुमानतः या खुदा के बताने से, तो तक़फ़री (काफ़िर कहना) उस पर होनी चाहिए कि कोई बिना खुदा के बताए इल्म-ए-ग़ैब मिलने का दावा करे, न कि इस प्रकार कि कश्फ़ के ज़रिए जागते या सोते में खुदा के बताने से, ऐसा इल्म-ए-ग़ैब आयत के ज़रा भी विपरीत नहीं है। | | :--- | :--- |

(38 और 39) रद्दुल मुहतार में इमाम साहब हेदाया की मुख़्तारात अल-नवाज़िल से है: | यदि उसने स्वयं से इल्म-ए-ग़ैब का दावा किया | अगर स्वयं से इल्म-ए-ग़ैब हासिल कर लेने का दावा किया | | :--- | :--- |

---

1 2 जामे अल-फुसूलैन, अध्याय 38, इस्लामी कुतुब खाना कराची, 302/2.

(۳۶) تفسیر انموذج جلیل میں ہے: | معناہ لا یعلم الغیب بلا دلیل الا اللہ او بلا تعلیم الا اللہ او جمیع الغیب الا اللہ ۱۔ | آیت کے یہ معنی ہیں کہ غیب کو بلا دلیل و بلا تعلیم جاننا یا جمیع غیب کو محیط ہونا یہ اللہ تعالیٰ کے ساتھ خاص ہے۔ | | :--- | :--- |

(۳۷) جامع الفصولین میں ہے: | یجاب بأنہ یمکن التوفیق بأن المنفی ھو العلم بالاستقلال لا العلم بالاعلام او المنفی ھو المجزوم بہ لا المظنون ویؤیدہ قولہ تعالیٰ اتجعل فیہا من یفسد فیھا الآیۃ لا نہ غیب اخبر بہ الملئکۃ ظنا منھم او با علام الحق فینبغی ان یکفر لو ادعاہ مستقلاً لا لو اخبر بہ بأعلام فی نومہ او یقظتہ بنوع من الکشف اذ لا منافاۃ بینہ وبین الآیۃ لما مر من التوفیق ۲۔ | (یعنی فقہائے نے دعویٰ علم غیب پر حکم کفر کیا اور حدیثوں اور آئمہ ثقات کی کتابوں میں بہت غیب کی خبریں موجود ہیں جن کا انکار نہیں ہو سکتا) اس کا جواب یہ ہے کہ ان میں تطبیق یوں ہو سکتی ہے کہ فقہاء نے اس کی نفی کی ہے کہ کسی کے لیے بذات خود علم غیب مانا جائے، خدا کے بتائے سے علم غیب کی نفی نہ کی، یا نفی قطعی کی ہے نہ ظنی کی، اور اس کی تائید یہ آیت کریمہ کرتی ہے، فرشتوں نے عرض کیا تو زمین میں ایسوں کو خلیفہ کرے گا جو اس میں فساد و خونریزی کریں گے۔ ملائکہ غیب کی خبر بولے مگر ظناً یا خدا کے بتائے سے، تو تکفیر اس پر چاہیے کہ کوئی بے خدا کے بتائے علم غیب ملنے کا دعویٰ کرے نہ یوں کہ براہ کشف جاگتے یا سوتے میں خدا کے بتائے سے، ایسا علم غیب آیت کے کچھ منافی نہیں۔ | | :--- | :--- |

(۳۸ و ۳۹) ردالمحتار میں امام صاحب ہدایہ کی مختارات النوازل سے ہے: | لو ادعی علم الغیب بنفسہ | اگر بذات خود علم غیب حاصل کر لینے کا دعویٰ | | :--- | :--- |

Fatawa Razawiyya, Volume 29

...if he does so, he is a disbeliever.

(40 to 44) In the same it is mentioned: It is stated in Al-Tatar-Khaniya and in Al-Hujja, mentioned in Al-Multaqat: "He who performs marriage by making Allah and His Messenger witnesses does not become a disbeliever. This is because things are presented to the blessed soul of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him), and indeed, messengers know some of the unseen. Allah Almighty says: '(He is) the Knower of the Unseen, and He reveals to none His Unseen, except to a messenger with whom He is well-pleased.'" I say: Rather, they mentioned in books of creed that from the total miracles of the saints (Awliya) is the acquaintance with some of the unseen matters, and they refuted the Mu'tazilites who used this verse as evidence to negate it from the saints. Our imams refuted them, i.e., they established that the noble verse does not absolutely negate the knowledge of the unseen from the saints either.

(45) In the Tafsir Ghara'ib al-Qur'an wa Ragha'ib al-Furqan, it is stated: "He did not negate anything except knowledge from his own self, and he did not negate knowledge through revelation." Meaning, the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) negated knowing from his own self, but did not negate knowing through what God has told him.

(46 and 47) In Tafsir Jamal Sharh Jalalayn and Tafsir Khazin, it is stated: "The meaning is: I do not know the unseen, except that..." In the verse where it was said that I do not know the unseen...

Footnotes: 1. Radd al-Muhtar, Book of Jihad, Chapter on the Apostate, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 3/297 2. Radd al-Muhtar, Book of Marriage, Section on Forbidden Relationships, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/276 3. Ghara'ib al-Qur'an (Tafsir al-Naysaburi), under verse 46/9, Mustafa al-Babi, Egypt, 26/8

फ़तावा रज़विया, खंड 29

...करे तो काफ़िर है।

(40 से 44) इसी में है: तातारखानिया और हुज्जा में है, मुल्तक़त में फ़रमाया: कि जिसने अल्लाह और रसूल को गवाह बनाकर निकाह किया, वह काफ़िर नहीं होगा। इसलिए कि चीज़ें नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की रूह-ए-मुबारक पर पेश की जाती हैं और बेशक रसूलों को कुछ इल्म-ए-ग़ैब (परोक्ष का ज्ञान) है। अल्लाह तआला फ़रमाता है: "ग़ैब का जानने वाला तो अपने ग़ैब पर किसी को मुसल्लत नहीं करता, सिवाय अपने पसंदीदा रसूलों के।" मैंने कहा: बल्कि उन्होंने अक़ायद की किताबों में ज़िक्र किया कि औलिया की करामात में से कुछ ग़ैब की बातों पर सूचित होना है, और उन्होंने मोअतज़िला का रद किया जिन्होंने इस आयत को औलिया से उसकी नफ़ी (नकारने) पर दलील बनाया। हमारे इमामों ने इसका रद किया यानी साबित फ़रमाया कि आयत-ए-करीमा औलिया से भी मुतलक़न इल्म-ए-ग़ैब की नफ़ी नहीं फ़रमाती।

(45) तफ़सीर ग़राइबुल-क़ुरआन व रग़ाइबुल-फ़ुरक़ान में है: "उसने अपनी ज़ात की ओर से ज्ञान के सिवा किसी चीज़ की नफ़ी नहीं की, और उसने वहि (प्रकाशना) के माध्यम से ज्ञान की नफ़ी नहीं की।" अर्थात रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने अपनी ज़ात से जानने की नफ़ी फ़रमाई है, ख़ुदा के बताए से जानने की नफ़ी नहीं फ़रमाई।

(46 और 47) तफ़सीर जमल शरह जलालैन और तफ़सीर ख़ाज़िन में है: "अर्थ यह है कि मैं ग़ैब नहीं जानता सिवाय इसके कि..." आयत में जो इर्शाद हुआ कि मैं ग़ैब नहीं जानता...

पाद टिप्पणियाँ: 1. रद्दुल मुहतार, किताबुल जिहाद, बाबू मर्त्यद, दार इह्याउत तुरास अल-अरबी, बेरूत, 3/297 2. रद्दुल मुहतार, किताबुन निकाह, फ़स्ल फ़िल मुह्रमात, दार इह्याउत तुरास अल-अरबी, बेरूत, 2/276 3. ग़राइबुल क़ुरआन (तफ़सीर अन-नैसापूरी), आयत 46/9 के तहत, मुस्तफ़ा अल-बाबी, मिस्र, 26/8

पृष्ठ 449 का 750

فتاویٰ رضویہ، جلد ۲۹

یکفر ۱۔ کرے تو کافر ہے۔

(۴۰ تا ۴۴) اسی میں ہے: قال في التتارخانية وفی الحجة ذكر في الملتقط انه لا يكفر لان الاشياء تعرض على روح النبي صلى الله تعالیٰ عليه وسلم وان الرسل يعرفون بعض الغيب قال الله تعالیٰ عالم الغيب فلا يظهر على غيبه احد ا الا من ارتضى من رسول اه قلت بل ذكروا في كتب العقائد ان من جملة كرامات الاولياء الاطلاع على بعض المغيبات و ردوا على المعتزلة المستدلين بهذه الآية على نفيها ۲۔ تاتار خانیہ میں ہے کہ فتاویٰ حجہ میں ہے، ملتقط میں فرمایا: کہ جس نے اللہ ورسول کو گواہ کرکے نکاح کیا کافر نہ ہوگا۔ اس لیے کہ اشیاء نبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی روح مبارک پر عرض کی جاتی ہیں اور بے شک رسولوں کو بعض علم غیب ہے، اللہ تعالیٰ فرماتا ہے غیب کا جاننے والا تو اپنے غیب پر کسی کو مسلط نہیں کرتا۔ مگر اپنے پسندیدہ رسولوں کو، میں نے کہا بلکہ انہوں نے کتب عقائد میں ذکر فرمایا کہ بعض غیبوں پر مطلع ہونا اولیاء کی کرامات میں سے ہے اور انہوں نے معتزلہ کا رد کیا جنہوں نے اس آیت کو اولیاء کرام سے اس کی نفی پر دلیل بنایا۔ ہمارے ائمہ نے اس کا رد کیا یعنی ثابت فرمایا کہ آیہ کریمہ اولیاء سے بھی مطلقاً علم غیب کی نفی نہیں فرماتی۔

(۴۵) تفسیر غرائب القرآن و رغائب الفرقان میں ہے: لم ينف الا الدراية من قبل نفسه وما نفى الدراية من جهة الوحى ۳۔ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے اپنی ذات سے جاننے کی نفی فرمائی ہے خدا کے بتائے سے جاننے کی نفی نہیں فرمائی۔

(۴۶ و ۴۷) تفسیر جمل شرح جلالین و تفسیر خازن میں ہے: المعنی لا اعلم الغیب الا ان آیت میں جو ارشاد ہوا کہ میں غیب نہیں جانتا۔

حواشی: ۱ رد المحتار کتاب الجہاد باب المرتد دار احیاء التراث العربی بیروت ۳ / ۲۹۷ ۲ رد المحتار کتاب النکاح قبیل فصل فی المحرمات دار احیاء التراث العربی بیروت ۲ / ۲۷۶ ۳ غرائب القرآن (تفسیر النیساپوری) تحت آیة ۴۶ / ۹ مصطفیٰ البابی مصر ۲۶/۸

Fatawa Rizvia Volume 29

(48) It is in Tafsir al-Baydawi: - 'Allah Almighty informs me about it'[1]: Its meaning is that I do not know except what God tells me. - 'I do not know the unseen as long as it is not revealed to me and no evidence is established for it'[2]: The meaning of the verse is that until some revelation or evidence is established, I do not have knowledge of the unseen by myself.

(49) It is in Tafsir 'Inayat al-Qadi: - 'And with Him are the keys of the unseen; the aspect of their exclusivity to Allah Almighty is that no one knows them as they are in essence at their origin except Him.'[3]: The statement in the verse that the keys of the unseen are with Allah alone, and no one knows them besides Him, means that their reality does not open to others at the beginning without being told.

(50) It is in Tafsir Allama Nishapuri: - '(Say, I do not tell you) He did not say I do not have the treasures of Allah, so that it might be known that the treasures of Allah, which are the knowledge of the realities of things and their essences, are with him (peace and blessings of Allah be upon him) as an answer to his prayer, "Show us things as they are," but he speaks to people according to the level of their intellect. (And I do not know the unseen) meaning I do not say this to you, although he (peace and blessings of Allah be upon him) said...': That is, it was commanded: O Prophet! Say that I do not tell you that I have the treasures of Allah. It did not say that the treasures of Allah are not with me. Rather, it said, 'I do not tell you that I have them,' so that it may be known that the treasures of Allah are with the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him), but the Prophet speaks to people according to their understanding. And what are those treasures? The knowledge of the reality and essence of all things. The Prophet prayed for this, and Allah Almighty accepted it. Then he said:

[1] Lubab al-Ta'wil (Tafsir al-Khazin) under verse 7/188, 2/280 and al-Futuhat (Tafsir al-Jamal) 3/158. [2] Anwar al-Tanzil (Tafsir al-Baydawi) under verse 6/50 Dar al-Fikr Beirut 2/410. [3] 'Inayat al-Qadi 'ala Tafsir al-Baydawi under verse 6/58 Dar Sadir Beirut 2/73.

फ़तावा रज़विया जिल्द २९

(४८) तफ़्सीर अल-बैज़ावी में है: - 'अल्लाह तआला मुझे इस पर मुत्तला फरमाता है'[1]: इसका अर्थ यह है कि मैं ख़ुदा के बताए बिना नहीं जानता। - 'मैं गैब नहीं जानता जब तक कि मेरी तरफ वह्य न की जाए और उस पर कोई दलील न दी जाए'[2]: आयत का अर्थ यह है कि जब तक कोई वह्य या दलील कायम न हो, मुझे खुद से गैब का इल्म नहीं होता।

(४९) तफ़्सीर इनायत अल-क़ाज़ी में है: - 'और उसके पास गैब की कुंजियाँ हैं; अल्लाह तआला के लिए उनके ख़ास होने का पहलू यह है कि उनके असल हकीकत को इब्तिदा में उसके सिवा कोई नहीं जानता।'[3]: यह जो आयत में फरमाया कि गैब की कुंजियाँ अल्लाह ही के पास हैं, उसके सिवा उन्हें कोई नहीं जानता, इस खुसूसियत का अर्थ यह है कि इब्तिदा में बिना बताए उनकी हकीकत दूसरों पर नहीं खुलती।

(५०) तफ़्सीर अल्लामा निशापुरी में है: - '(कह दो, मैं तुमसे नहीं कहता) उन्होंने यह नहीं कहा कि मेरे पास अल्लाह के खजाने नहीं हैं, ताकि यह जाना जा सके कि अल्लाह के खजाने, जो कि चीज़ों की हकीकतों और उनकी माहियत का इल्म है, हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पास हैं, उनकी दुआ "हमें चीज़ें वैसी दिखाओ जैसी वे हैं" की कबूलियत के तौर पर। लेकिन वह लोगों से उनकी अक्ल के मुताबिक बात करते हैं। (और मैं गैब नहीं जानता) यानी मैं तुमसे यह नहीं कहता, हालाँकि हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया...': यानी इरशाद हुआ कि ऐ नबी! फरमा दें कि मैं तुमसे नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह तआला के खजाने हैं, यह नहीं फरमाया कि अल्लाह के खजाने मेरे पास नहीं हैं। बल्कि यह फरमाया कि मैं तुमसे यह नहीं कहता कि मेरे पास हैं, ताकि मालूम हो जाए कि अल्लाह के खजाने हुज़ूर अकदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के पास हैं मगर हुज़ूर लोगों से उनकी समझ के काबिल बातें फरमाते हैं, और वे खजाने क्या हैं, तमाम चीज़ों की हकीकत व माहियत का इल्म हुज़ूर ने इसी के मिलने की दुआ की और अल्लाह अज्जवजल ने कबूल फरमाई फिर फरमाया:

[1] लुबाब अल-तावील (तफ़्सीर अल-ख़ाज़िन) आयत ७/१८८, २/२८० के तहत और अल-फुतुहात (तफ़्सीर अल-जमल) ३/१५८। [2] अनवार अल-तन्ज़ील (तफ़्सीर अल-बैज़ावी) आयत ६/५० के तहत दार अल-फ़िक्र बेरुत २/४१०। [3] इनायत अल-क़ाज़ी अला तफ़्सीर अल-बैज़ावी आयत ६/५८ के तहत दार सादिर बेरुत २/७३।

(۴۸) تفسیر البیضاوی میں ہے: یطلعنی اللہ تعالٰی علیہ ۱ - اس کے معنی یہ ہیں کہ میں بے خدا کے بتائے نہیں جانتا۔ لا اعلم الغیب مالم یوح الی ولم ینصب علیہ دلیل ۲ - آیت کے یہ معنی ہیں کہ جب تک کوئی وحی یا کوئی دلیل قائم نہ ہو مجھے بذات خود غیب کا علم نہیں ہوتا۔

(۴۹) تفسیر عنایۃ القاضی میں ہے: وعندہ مفاتیح الغیب وجہ اختصاصہا بہ تعالٰی انہ لا یعلمہا کما ھي ابتداءً الّا ھو ۳ - یہ جو آیت میں فرمایا کہ غیب کی کنجیاں اللہ ہی کے پاس ہیں اس کے سوا انہیں کوئی نہیں جانتا اس خصوصیت کے یہ معنی ہیں کہ ابتداءً بغیر بتائے ان کی حقیقت دوسرے پر نہیں کھلتی۔

(۵۰) تفسیر علامہ نیشاپوری میں ہے: (قل لا اقول لکم) لم یقل لیس عندی خزائن اللہ لیعلم ان خزائن اللہ وہی العلم بحقائق الاشیاء وما ہیاتہا عندہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم باستجابۃ دعاءہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فی قولہ ارنا الاشیاء کما ہی ولکنہ یکلم الناس علی قدر عقولہم (ولا اعلم الغیب) ای لا اقول لکم ھذا مع انہ قال صلی اللہ تعالٰی علیہ - یعنی ارشاد ہوا کہ اے نبی ! فرما دو کہ میں تم سے نہیں کہتا کہ میرے پاس اللہ تعالی کے خزانے ہیں، یہ نہیں فرمایا کہ اللہ کے خزانے میرے پاس نہیں ۔ بلکہ یہ فرمایا کہ میں تم سے یہ نہیں کہتا کہ میرے پاس ہیں ، تاکہ معلوم ہو جائے کہ اللہ کے خزانے حضور اقدس صلی اللہ تعالی علیہ وسلم کے پاس ہیں مگر حضور لوگوں سے انکی سمجھ کے قابل باتیں فرماتے ہیں ، اور وہ خزانے کیا ہیں، تمام اشیاء کی حقیقت و ماہیت کا علم حضور نے اسی کے ملنے کی دعا کی اور اللہ عزوجل نے قبول فرمائی پھر فرمایا:

١ لباب التاويل (تفسير الخازن) تحت الآية ٧ / ١٨٨، ٢ / ٢٨٠ والفتوحات (تفسير الجمل) ٣ / ١٥٨ ٢ انوار التنزيل (تفسير البيضاوى) تحت آية ۶ / ٥٠ دار الفكر بيروت ٢ / ٤١٠ ٣ عناية القاضى على تفسير البيضاوى تحت آيته ۶ / ٥٨ دار صادر بيروت ٢ / ٧٣

Volume 29 Fatawa Razawiyya

[Boxed Text] Right: ...and peace be upon him, I knew what was and what will be (end of summary).[1] Left: I do not know, meaning I do not say to you that I have the knowledge of the unseen (Ghayb); otherwise, the Holy Prophet (peace be upon him) himself says, "I was given the knowledge of what was and what will be," meaning everything that has passed and everything that will happen until Judgment Day. (Finis).

Praise be to Allah, one interpretation of the blessed verse "Say: I do not know the unseen" was mentioned from Tafsir al-Kabir, stating that it is a negation of encompassing all types of the unseen, not a negation of having any knowledge of the unseen at all.

The second interpretation, mentioned in many books, is that it negates knowing the unseen without being told by God, not that I don't have knowledge of the unseen even after being told.

Now, by the grace of Allah Almighty, here is the most subtle third interpretation: "I do not tell you that I have knowledge of the unseen" because, O disbelievers! you are not worthy of these things, whereas in reality, I have been given the knowledge of what was and what will be. And all praise is due to Allah, the Lord of the worlds.

Fourth Point Collective Issues Regarding the Knowledge of the Unseen

Everything presented so far is agreed upon by the majority of the leaders (Imams) of the religion. (1) Undoubtedly, no one other than God possesses personal (inherent/independent) knowledge of even a single particle. This is so fundamental to the religion that a denier is a disbeliever. (2) Undoubtedly, the knowledge of anyone besides God cannot encompass the knowledge of Allah. Leaving aside equality, the combined knowledge of all the first and last generations, prophets, messengers, angels, and those near to Allah cannot hold the same relationship to the knowledge of Allah as a ten-millionth part of a tiny drop holds to millions of oceans. This is because both the oceans and the ten-millionth part of a drop are finite, and there is certainly a ratio between two finite things. In contrast, the knowledge of Allah is infinite upon infinite upon infinite. Even if the knowledge of the creation were to encompass the Throne (Arsh) and the earth, the East and the West, and the entire universe from the first day to the last, it would still be finite, as the Throne and the earth are two boundaries.

[1] Ghara'ib al-Qur'an (Tafsir al-Nisaburi) under verse 7/50, Mustafa al-Babi Egypt, 7/112.

जिल्द 29 फ़तावा रज़विया

[बॉक्स में लिखा पाठ] दाएं ...और उन पर शांति हो, मैंने जाना जो था और जो होगा (संक्षिप्त अंत)।[1] बाएं मैं नहीं जानता यानी मैं तुमसे यह नहीं कहता कि मुझे ग़ैब (परोक्ष) का इल्म है, वरना हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) तो स्वयं फ़रमाते हैं कि मुझे 'माकान व मा यकून' (जो हो चुका और जो होगा) का इल्म मिला, यानी जो कुछ गुज़रा और जो कुछ क़यामत तक होने वाला है। (समाप्त)।

अल्हम्दुलिल्लाह, इस आयत-ए-करीमा "फ़रमा दो मैं ग़ैब नहीं जानता" की एक तफ़सीर वह थी जो तफ़सीर-ए-कबीर से गुज़री कि यह तमाम ग़ैबों के घेराव (इहाता) की नफ़ी है, न कि सिरे से ग़ैब के इल्म की ही नफ़ी है।

दूसरी वह थी जो बहुत सी किताबों से गुज़री कि बिना ख़ुदा के बताए जानने की नफ़ी है, न कि यह कि ख़ुदा के बताने से भी मुझे ग़ैब का इल्म नहीं है।

अब बहम्दुलिल्लाह तआला, सबसे अधिक सूक्ष्म (लतीफ़) तीसरी तफ़सीर यह है कि "मैं तुमसे नहीं कहता कि मुझे ग़ैब का इल्म है," इसलिए कि ऐ काफ़िरों! तुम इन बातों के पात्र (अहल) नहीं हो, वरना वास्तव में मुझे 'माकान व मा यकून' का इल्म मिला है। और सब प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जो सारे संसारों का रब है।

चौथा बिंदु इल्म-ए-ग़ैब से संबंधित सामूहिक मुद्दे

यहाँ तक जो कुछ पेश किया गया, वह दीन के अधिकांश इमामों का सर्वसम्मत दृष्टिकोण है। (1) निस्संदेह, ख़ुदा के सिवा किसी के लिए एक ज़र्रे का भी ज़ाती (स्वयं का/स्वतंत्र) इल्म नहीं है। यह इस कदर दीन की ज़रूरतों में से है कि इसका इनकार करने वाला काफ़िर है। (2) निस्संदेह, ख़ुदा के अलावा किसी का इल्म अल्लाह की जानकारियों (मालूमात) को नहीं घेर सकता। बराबर होना तो दूर की बात है, तमाम अव्वलीन व आख़िरीन, नबियों, रसूलों, फ़रिश्तों और मुक़र्रब बंदों का सारा इल्म मिलकर भी अल्लाह के इल्म के मुक़ाबले वह अनुपात नहीं रख सकता जो करोड़ों-करोड़ समुद्रों के मुक़ाबले एक छोटी सी बूंद के करोड़वें हिस्से का होता है। क्योंकि वह तमाम समुद्र और बूंद का करोड़वाँ हिस्सा दोनों ही सीमित (मुतनाही) हैं, और एक सीमित चीज़ का दूसरी सीमित चीज़ से अनुपात होना निश्चित है। इसके विपरीत, अल्लाह का इल्म असीमित दर असीमित दर असीमित (ग़ैर-मुतनाही) है। और मख़लूक़ (सृष्टि) का इल्म चाहे अर्श-व-फ़र्श, पूरब-पश्चिम और समस्त ब्रह्मांड को

पहले दिन से आख़िरी दिन तक घेर ले, आख़िरकार वह सीमित ही है क्योंकि अर्श और फ़र्श दो सीमाएँ(हदें) हैं।

[1] ग़रायबुल क़ुरआन (तफ़सीर अन-नैसापूरी) आयत 7/50 के तहत, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, 7/112।

पृष्ठ 451/750

[باکس کا متن] دائیں: وسلم علمت ماکان وماسیکون اھـ مختصراً ۱۔ بائیں: میں نہیں جانتا یعنی تم سے نہیں کہتا کہ مجھے غیب کا علم ہے، ورنہ حضور تو خود فرماتے ہیں مجھے ماکان و مایکون کا علم ملا یعنی جو کچھ ہو گزرا اور جو کچھ قیامت تک ہونے والا ہے انتہی۔

الحمد للہ اس آیہ کریمہ کی فرما دو میں غیب نہیں جانتا ایک تفسیر وہ تھی جو تفسیر کبیر سے گزری کہ احاطہ جمیع غیوب کی نفی ہے، نہ کہ غیب کا علم ہی نہیں۔

دوسری وہ تھی جو بہت کتب سے گزری کہ بے خدا کے بتائے جاننے کی نفی ہے نہ یہ کہ بتائے سے بھی مجھے علم غیب نہیں۔

اب بحمد اللہ تعالیٰ سب سے لطیف تر یہ تیسری تفسیر ہے کہ میں تم سے نہیں کہتا کہ مجھے علم غیب ہے، اس لیے کہ اے کافرو! تم ان باتوں کے اہل نہیں ہو ورنہ واقع میں مجھے ماکان و مایکون کا علم ملا ہے۔ والحمد للہ رب العلمین۔

امر چہارم علم غیب سے متعلق اجتماعی مسائل

یہاں تک جو کچھ معروض ہوا جمہور ائمہ دین کا متفق علیہ ہے۔ (۱) بلاشبہ غیر خدا کے لیے ایک ذرہ کا علم ذاتی نہیں اس قدر خود ضروریات دین سے اور منکر کافر۔ (۲) بلاشبہ غیر خدا کا علم معلومات الہیہ کو حاوی نہیں ہو سکتا، مساوی درکنار تمام اولین و آخرین و انبیاء و مرسلین و ملائکہ و مقربین سب کے علوم مل کر علوم الہیہ سے وہ نسبت نہیں رکھ سکتے جو کروڑہا کروڑ سمندروں سے ایک ذرا سی بوند کے کروڑویں حصے کو کہ وہ تمام سمندر اور یہ بوند کا کروڑواں حصہ دونوں متناہی ہیں، اور متناہی کو متناہی سے نسبت ضرور ہے۔ بخلاف علوم الہیہ

کو غیر متناہی در غیر متناہی در غیر متناہی ہیں۔ اور مخلوق کے علوم اگرچہ عرش و فرش شرق و غرب و جملہ کائنات از روز اول تا روز آخر کو محیط ہو جائیں آخر متناہی ہیں کہ عرش و فرش دو حدیں۔

۱ غرائب القرآن (تفسیر النیسابوری) تحت الآیۃ ۷/۵۰ مصطفیٰ البابی مصر ۷/۱۱۲

Fatawa Razawiyya, Volume 29

There are two limits: the first day and the last day. And whatever is within two limits is all finite. Creatures cannot possibly receive detailed knowledge of the actually infinite, so it is an absolute impossibility for the total knowledge of creation to have any proportion to the knowledge of Allah; far be it from Allah to even imagine equality.

(3) Likewise, there is a consensus (ijma) that by the grant of Allah (Exalted and Majestic), the Noble Prophets (peace and blessings be upon them) have knowledge of many and abundant unseen matters. This is also from the necessities of religion (daruriyat al-din); whoever denies it is a disbeliever (kafir) because he is denying prophethood itself.

(4) There is also a consensus that in this grand excellence, the share of Muhammad, the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him), is more perfect and greater than all prophets and the entire universe. By the grant of Allah (Exalted and Majestic), the Beloved Noble One (peace and blessings of Allah be upon him) has knowledge of so many unseen matters that only Allah (Exalted and Majestic) knows their count. This was the consensus among Muslims until here, but how could the greatness of Muhammad, the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him), be tolerable to the Wahhabis' hearts? They plainly said that:

(1) The Prophet does not even have news of what is behind a wall.[1] (2) Not to mention others, he did not even know about his own end.[2] At the same time, they also said that: (3) Even if the knowledge of some unseen things through Allah's telling is accepted for him, it is still polytheism (shirk).[3] (4) Compounding this oppression, they do not accept news of what's behind a wall for Muhammad, the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him), yet they consider comprehensive knowledge of the entire earth to be established for the accursed Iblis.[4] (5) On top of that, the excuse is that the vastness of Iblis's knowledge is proven by text (nass), while what definitive text (nass qat'i) is there for the vastness of the knowledge of the Pride of the Universe?[5] (6) Then the ultimate cruelty and oppression is that what they themselves accepted as proven for Iblis, for Muhammad, the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him)...

[1] Al-Barahin al-Qati'ah, discussion on knowledge of the unseen, Matba' Balsa, Deoband, p. 51 [2] Al-Barahin al-Qati'ah, discussion on knowledge of the unseen, Matba' Balsa, Deoband, p. 51 [3] Al-Barahin al-Qati'ah, discussion on knowledge of the

unseen, Matba' Balsa, Deoband, p. 51 [4] Al-Barahin al-Qati'ah, discussion on knowledge of the unseen, Matba' Balsa, Deoband, p. 51 [5] Al-Barahin al-Qati'ah, discussion on knowledge of the unseen, Matba' Balsa, Deoband, p. 51

फतावा रज़विया, खंड 29

दो सीमाएँ हैं: प्रथम दिन और अंतिम दिन। और जो कुछ भी दो सीमाओं के भीतर है, वह सब परिमित (सीमित) है। वास्तव में अनंत का विस्तृत ज्ञान सृष्टि को प्राप्त हो ही नहीं सकता, इसलिए सृष्टि के संपूर्ण ज्ञान का अल्लाह के ज्ञान से कोई अनुपात होना पूर्णतः असंभव है; अल्लाह की पनाह, समानता की कल्पना करना तो दूर की बात है।

(3) इसी प्रकार, इस पर आम सहमति (इज्मा) है कि अल्लाह (अज़्ज़ व जल्ल) के प्रदान करने से, नबियों (अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम) को कई और प्रचुर परोक्ष (ग़ैब) बातों का ज्ञान है। यह भी धर्म की अनिवार्यताओं (ज़रूरियात-ए-दीन) में से है; जो इसका खंडन करता है वह काफ़िर है क्योंकि वह सिरे से नुबुव्वत (पैग़म्बरी) का ही खंडन कर रहा है।

(4) इस पर भी आम सहमति है कि इस महान श्रेष्ठता में मुहम्मद, अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का हिस्सा तमाम नबियों और पूरे ब्रह्मांड से अधिक पूर्ण और महान है। अल्लाह (अज़्ज़ व जल्ल) की कृपा से हुज़ूर अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को इतनी परोक्ष बातों का ज्ञान है जिनकी गिनती केवल अल्लाह (अज़्ज़ व जल्ल) ही जानता है। यहाँ तक मुसलमानों में आम सहमति थी, लेकिन वहाबियों के दिलों को मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की महानता कैसे स्वीकार होती? उन्होंने साफ तौर पर कह दिया कि:

(1) हुज़ूर को दीवार के पीछे की भी खबर नहीं है।[1] (2) दूसरों की तो बात ही क्या, वह अपने अंत के बारे में भी नहीं जानते थे।[2] साथ ही यह भी कह दिया कि: (3) खुदा के बताने से भी अगर कुछ परोक्ष बातों का ज्ञान उनके लिए माना जाए, तब भी शिर्क(बहुदेववाद) है।[3] (4) इस पर ज़ुल्म यह कि मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के लिए तो दीवार के पीछे की भी खबर न मानें और लानती इबलीस के लिए पूरी ज़मीन का व्यापक ज्ञान प्राप्त मानें।[4] (5) इस पर बहाना यह कि इबलीस के ज्ञान की विशालता धार्मिक प्रमाण (नस्स) से सिद्ध है, जबकि ब्रह्मांड के गौरव (हुज़ूर) के ज्ञान की विशालता के लिए कौन सा निश्चित प्रमाण (नस्स-ए-क़तई) है?[5] (6) फिर सितम और ज़ुल्म यह कि जो कुछ इबलीस के लिए खुद प्रमाणित माना, उसे मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के लिए...

[1] अल-बराहीन अल-कातिआ, इल्म-ए-ग़ैब पर चर्चा, मतबा बल्सा, देवबंद, पृ. 51 [2] अल-बराहीन अल-कातिआ, इल्म-ए-ग़ैब पर चर्चा, मतबा बल्सा, देवबंद, पृ. 51 [3] अल-बराहीन अल-कातिआ, इल्म-ए-

ग़ैब पर चर्चा, मतबा बल्सा, देवबंद, पृ. 51 [4] अल-बराहीन अल-कातिआ, इल्म-ए-ग़ैब पर चर्चा, मतबा बल्सा, देवबंद, पृ. 51 [5] अल-बराहीन अल-कातिआ, इल्म-ए-ग़ैब पर चर्चा, मतबा बल्सा, देवबंद, पृ. 51

ہیں۔ روزِ اول و روزِ آخر دو حدیں ہیں۔ اور جو کچھ دو حدوں کے اندر ہو سب متناہی ہے۔ بالفعل غیر متناہی کا علمِ تفصیلی مخلوق کو مل ہی نہیں سکتا تو جملہ علومِ خلق کو علمِ الٰہی سے اصلاً نسبت ہونی محالِ قطعی ہے نہ کہ معاذ اللہ توہمِ مساوات۔

(۳) یوں ہی اس پر اجماع ہے کہ اللہ عزوجل کے دیئے سے انبیاء کرام علیہم الصلوٰۃ والسلام کو کثیر و وافر غیبوں کا علم ہے یہ بھی ضروریاتِ دین سے ہے جو اس کا منکر ہو کافر ہے کہ سرے سے نبوت ہی کا منکر ہے۔

(۴) اس پر بھی اجماع ہے کہ اس فضلِ جلیل میں محمد رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کا حصہ تمام انبیاء و تمام جہان سے اتم و اعظم ہے، اللہ عزوجل کی عطا سے حبیبِ اکرم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کو اتنے غیبوں کا علم ہے جن کا شمار اللہ عزوجل ہی جانتا ہے، مسلمانوں کا یہاں تک اجماع تھا مگر وہابیہ کو محمد رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی عظمت کس دل سے گوارا ہو۔ انہوں نے صاف کہہ دیا کہ:

(۱) حضور کو دیوار کے پیچھے کی بھی خبر نہیں ۱۔ (۲) وہ اور تو اور اپنے خاتمے کا بھی نہ جانتے تھے ۲۔ ساتھ ہی یہ بھی کہہ دیا کہ: (۳) خدا کے بتائے سے بھی اگر بعض مغیبات کا علم ان کے لیے مانے جب بھی شرک ہے ۳۔ (۴) اس پر قہریہ کہ محمد رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کو تو دیوار کے پیچھے کی بھی خبر نہ مانیں اور ابلیسِ لعین کے لیے تمام زمین کا علمِ محیط حاصل جانیں ۴۔ (۵) اس پر عذر کہ ابلیس کی وسعتِ علم نص سے ثابت ہے، فخرِ عالم کی وسعتِ

علم کی کون سی نصِ قطعی ہے ۵۔ (۶) پھر ستم، قہریہ کہ جو کچھ ابلیس کے لیے خود ثابت مانا محمد رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم ---

۱ البراہین القاطعہ بحث علم غیب مطبع بلسا واقع ڈھور ص ۵۱ ۲ البراہین القاطعہ بحث علم غیب مطبع بلسا واقع ڈھور ص ۵۱ ۳ البراہین القاطعہ بحث علم غیب مطبع بلسا واقع ڈھور ص ۵۱ ۴ البراہین القاطعہ بحث علم غیب مطبع بلسا واقع ڈھور ص ۵۱ ۵ البراہین القاطعہ بحث علم غیب مطبع بلسا واقع ڈھور ص ۵۱

Fatawa Razawiyya Volume 29

...to believe in it for him, they immediately issued a ruling of Shirk (associating partners with God), meaning a specific attribute is established for Iblis, so he is a partner of God, but if you establish it for the Prophet, then you are a polytheist. (7) On this, some extremists went further and clearly said that the kind of knowledge of the unseen (Ilm-ul-Ghaib) that Muhammad, the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) has, the same is possessed by every madman and every animal[1]. Inna lillahi wa inna ilayhi raji'un (Indeed we belong to Allah, and indeed to Him we will return. - T). The actual debate is regarding these cursed words. The wicked ones, to avoid the retort, shift the ground and run into an unrelated debate about knowledge being specific or non-specific, saying that verses and traditions have declared the knowledge of the unseen specific to God. Jurists have called its attribution to others as disbelief (Kufr). The answer to this has already been presented above: that only that inherent (dhati) and encompassing (muhit) knowledge is specific to God, and it is the attribution of this to others that the jurists call disbelief. Attributed (ata'i) non-encompassing knowledge cannot possibly belong to God, let alone be His specific attribute (Allah forbid). We have neither accepted such knowledge for anyone other than God, nor do those texts and sayings apply to us. But ask these gentlemen: do the verses and traditions of restriction, and the sayings of the jurists, also include attributed non-encompassing knowledge? If not, how insane are you to present them against us? What contradiction do they have with our claim? And if they do include it, then tell us: Gangohi Sahib, who accepts encompassing knowledge of the earth for Iblis, and Thanvi Sahib, who accepts knowledge of the unseen for every madman and every animal, do they believe in inherent, real knowledge for them or something else? In the first case, they are definitely disbelievers. In the second case, by your own mouth, those verses, traditions, and sayings of jurists apply to you. And by the very arguments you presented, you yourself become a disbeliever and an apostate. Now say, where is the escape? Yes, the only escape is to say that Iblis, madmen, and animals all possess knowledge of the unseen, and the verses, traditions, and sayings of the jurists are not for them; they are only to deny the knowledge of Muhammad, the Messenger. Ala la'natullahi 'alal-zalimeen (Beware! The curse of Allah is upon the wrongdoers. - T).

[1] Taghyir-ul-Unwan ma' Hifz-ul-Iman, Dareeba Kalan, Delhi, India, p. 17. Page 453 of 750

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

...उनके लिए इसे मानने पर तुरंत शिर्क(ईश्वर के साथ किसी को शरीक करना) का हुक्म लगा दिया, यानी इबलीस (शैतान) के लिए तो एक विशेष गुण सिद्ध है तो वह ईश्वर का शरीक है, लेकिन यदि हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के लिए सिद्ध करो तो मुशरिक हो जाओ। (7) इस पर कुछ अतिवादी और आगे बढ़े और साफ कह दिया कि जैसा इल्म-ए-ग़ैब (परोक्ष का ज्ञान) मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को है, वैसा तो हर पागल और हर चौपाये (जानवर) को होता है[1]। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन (बेशक हम अल्लाह ही के हैं और हमें उसी की तरफ लौटना है। - त)। असल बहस इन लानती शब्दों की है। दुष्ट लोग काट से बचने के लिए पैंतरा बदलकर इल्म के खास और गैर-खास होने की बहस में बिना किसी संबंध के कूद पड़ते हैं कि इल्म-ए-ग़ैब को आयतों और हदीसों ने ईश्वर के लिए खास बताया है। फकीहों (धर्मशास्त्रियों) ने दूसरों के लिए इसे सिद्ध करने को कुफ्र (अविश्वास) कहा है। इसका उत्तर तो ऊपर दिया जा चुका है कि ईश्वर के साथ खास वही जाति (ज़ाती) और वास्तविक व्यापक (मुहीत) ज्ञान है, और दूसरों के लिए इसी को सिद्ध करने को फकीह कुफ्र कहते हैं। अताई (प्रदान किया हुआ) गैर-व्यापक ज्ञान तो ईश्वर के लिए हो ही नहीं सकता, अल्लाह की पनाह कि वह उसका विशेष गुण हो। यह ज्ञान न तो हमने ईश्वर के अलावा किसी के लिए माना है, और न ही वे ग्रंथ और कथन हम पर लागू होते हैं। लेकिन इन सज्जनों से पूछिए कि क्या आयतें, हदीसें और फकीहों के कथन अताई गैर-व्यापक ज्ञान को भी शामिल करते हैं? यदि नहीं, तो आप कितने पागल हैं कि उन्हें हमारे खिलाफ पेश करते हैं, उनका हमारे दावे से क्या विरोध है? और यदि वे इसे शामिल करते हैं, तो अब बताइए: गंगोही साहब, जो इबलीस के लिए ज़मीन के व्यापक ज्ञान के कायल हैं, और थानवी साहब, जो हर पागल और हर चौपाये के लिए इल्म-ए-ग़ैब के कायल हैं, क्या वे उनके लिए ज़ाती हकीकी इल्म मानते हैं या उसके अलावा? पहली सूरत में वे निश्चित रूप से काफ़िर हैं। दूसरी सूरत में, आपके अपने ही मुंह से वे आयतें, हदीसें और फकीहों के कथन आप पर लागू होते हैं। और आप अपने ही पेश किए गए तर्कों से खुद काफ़िर और मुर्तद (धर्मत्यागी) हो गए। अब कहिए, भागने का रास्ता कहाँ है? हाँ, भागने का रास्ता यही है कि इबलीस, पागल और चौपाये सभी तो इल्म-ए-ग़ैब रखते हैं, और आयतों और हदीसों और फकीहों के कथन उनके लिए नहीं हैं, वे तो सिर्फ मुहम्मद रसूलुल्लाह के इल्म की नफी (इनकार) के लिए हैं। अला लानतुललाहि अलल-ज़ालिमीन (खबरदार! ज़ालिमों पर अल्लाह की लानत है। - त)।

[1] तग़य्युरुल उनवान मअ हिफ़्ज़ुल ईमान, दरीबा कलाँ, दिल्ली, भारत, पृ. 17. Page 453 of 750

کے لیے اس کے ماننے پر جھٹ حکم شرک جڑ دیا یعنی خاص صفت ابلیس کے لیے تو ثابت ہے وہ تو خدا کا شریک ہے ، مگر حضور کے لیے ثابت کرو تو مشرک ہو۔ (۷) اس پر بعض غالی اور بڑھے اور صاف کہہ دیا کہ جیسا علم غیب محمد رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کو ہے ایسا تو ہر پاگل ہر چوپائے کو ہوتا ہے ۱۔ اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّا اِلَیْہِ رٰجِعُوْن (بے شک ہم اللہ کے مال ہیں اور ہم کو اُسی کی طرف پھرنا ہے۔ ت) اصل بحث ان کلمات ملعونہ کی ہے، خبیثاء کا واکاٹ کہ (پینترا بدل کر) اس سے بچتے اور علم کے خاص و غیر خاص ہونے کی بحث بے علاقہ لے دوڑتے ہیں کہ علم غیب کو آیات واحادیث نے خاص بخدا بتایا۔ فقہاء نے دوسرے کے لیے اس کے اثبات کو کفر کہا ہے، اس کا جواب تو اوپر معروض ہو چکا کہ خدا کے ساتھ خاص وہی علم ذاتی و محیط حقیقی ہے غیر کے لیے اسی کے اثبات کو فقہاء کفر کہتے ہیں۔ علم عطائی غیر محیط حقیقی خدا کے لیے ہو ہی نہیں سکتا نہ کہ معاذ اللہ اس کی صفت خاصہ ہو یہ علم ہم نے نہ غیر خدا کے لیے مانا، نہ وہ نصوص و اقوال ہم پر وارد۔ مگر ان حضرات سے پوچھیے کہ آیات واحادیث حصر و اقوال فقہاء علم عطائی غیر محیط حقیقی کو بھی شامل ہیں یا نہیں۔ اگر نہیں تو تمہارا کتنا جنون ہے کہ انہیں ہم پر پیش کرتے ہو ان کو ہمارے دعوے سے کیا منافات ہوئی اور اگر اسے بھی شامل ہیں تو اب بتائیے کہ گنگوہی صاحب آپ ابلیس کے لیے جو علم محیط زمین اور تھانوی صاحب آپ ہر پاگل ہر چوپائے کے لیے جو علم غیب کے قائل ہیں آیا ان کے لیے علم ذاتی حقیقی مانتے ہیں یا اس کا غیر، برتقدیر اول قطعاً کافر ہو، برتقدیر ثانی بھی خود تمہارے ہی منہ سے وہ آیات وہ احادیث و اقوال فقہاء تم پر وارد۔ اور تم اپنے ہی پیش کردہ دلائل سے خود کافر و مرتد۔ اب کہیے، مفر کدھر؟ ہاں مفر وہی ہے کہ ابلیس اور پاگل اور چوپائے سب تو علم غیب رکھتے ہیں ، آیات و احادیث و اقوال

فقہاء ان کے لیے نہیں، وہ تو صرف محمد رسول کی نفی علم کے لیے ہیں۔ الا لعنۃ اللہ علی الظلمین

(خبردار! ظالموں پر اللہ تعالٰی کی لعنت ہے۔ ت)

۱ تغییر العنوان مع حفظ الایمان درییہ کلاں دہلی بھارت، ص۱۷ Page 453 of 750

Fatawa Razawiyya Volume 29

Fifth Matter Disputed limits of the knowledge of the unseen (Ilm-ul-Ghaib) and the path of the Gnostics (Arifeen)

Let the deniers of the grace of Muhammad, the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him), go to Hell. Listen to the conclusion of the discourse; after all these consensuses, a difference arose among our scholars as to whether the countless knowledges of the unseen that the Lord Almighty bestowed upon His greatest beloved (peace and blessings of Allah be upon him) encompass the entire universe from the first day to the last day, as is the implication of the generality of verses and hadiths, or if there is any specificity in them. Many literalist scholars (Ahl-e-Zahir) have leaned towards specificity; some said it excludes the 'mutashabihat' (ambiguous matters), some said the 'khums' (five specific matters of the unseen), some said the 'Sa'at' (the Hour of Resurrection). However, the general body of spiritual scholars (Ulama-e-Batin) and many literalist scholars following them have kept the verses and hadiths on their generality, meaning 'what has happened and what will happen' (ma kana wa ma yakun), because entry and exit are both possible at the extreme; whether the Hour is included or not, in any case, this collection is still a small part of the divine knowledge, rather the news of the Chosen One (Anba-ul-Mustafa) is present.

I have proven from the 'Qasida Burda' and its commentary by Mulla Ali Qari that divine knowledge is indeed divine knowledge, which is infinite upon infinite upon infinite. This collection of knowledge of 'what has been' (ma kana) is just one wave from the ocean of the knowledge of Muhammad, the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him). Then, what is its count compared to the infinite knowledge of Allah? Those who do not know the greatness of Allah equate this (the Prophet's knowledge), God forbid, with divine knowledge. "And they did not estimate Allah with His true estimation" 1. (i.e., they did not value Allah as He deserves to be valued). Truly, when according to their leader of the sect (Imam-ut-Taifa), counting the leaves of a tree equates to divinity, then 'what has been and what will be' (ma kana wa ma yakun) is a much greater thing. Anyway, leave them aside; this particular issue, as it is discussed among our Sunni scholars, is like the disputed matters between the Ash'aris and Maturidis, which are not essentially a cause for blame.

Indeed, our preferred view is the latter one, which is the school of thought of common noble gnostics and many prominent scholars. Regarding this, you will find

some verses, hadiths, and sayings of the Imams in this humble servant's treatise 'Anba-ul-Mustafa'. And 'Al-Lulu-ul-Maknun fi Ilm-il-Bashir wa ma kana wa ma yakun' and other treatises of this humble servant contain, by the grace of Allah Almighty, much and abundant information.

1 The Holy Quran 6/91 Page 454 of 750

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

पाँचवाँ मामला इल्मे ग़ैब की विवादास्पद सीमाएँ और आरिफ़ीन (ज्ञानियों) का मार्ग

अल्लाह के रसूल मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की श्रेष्ठता के मुनकिरों (इन्कार करने वालों) को जहन्नुम में जाने दीजिये। चर्चा का निष्कर्ष सुनिए; इन तमाम इज्माआत (सहमति) के बाद हमारे उलेमा में मतभेद हुआ कि अल्लाह तआला ने अपने सबसे प्रिय महबूब (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को जो बेशुमार इल्मे ग़ैब अता फ़रमाए, क्या वे सृष्टि के पहले दिन से आखिरी दिन तक पूरी कायनात को घेरे हुए हैं, जैसा कि आयतों और हदीसों की व्यापकता से संकेत मिलता है, या उनमें कोई विशिष्टता (तख़्सीस) है। बहुत से अहले ज़ाहिर (शाब्दिक व्याख्या करने वाले) विशिष्टता की ओर गए हैं; किसी ने मुतशाबिहात (अस्पष्ट आयतों) को अलग किया, किसी ने 'ख़ुम्स' (पांच विशेष बातें) को, किसी ने 'साअत' (क़यामत का समय) को। जबकि आम उलेमा-ए-बातिन (आध्यात्मिक विद्वान) और उनके अनुसरण में बहुत से उलेमा-ए-ज़ाहिर ने आयतों और हदीसों को उनके व्यापक अर्थ 'मा काना व मा यकून' (जो हो चुका और जो होगा) पर ही रखा है। क्योंकि अंत में प्रवेश और निकास दोनों संभव हैं; क़यामत का समय शामिल हो या न हो, बहरहाल यह संग्रह भी ईश्वरीय ज्ञान का एक छोटा सा हिस्सा है, बल्कि अम्बाय-ए-मुस्तफ़ा (मुस्तफ़ा की खबरें) हाज़िर है।

मैंने 'क़सीदा बुर्दा' शरीफ और मुल्ला अली क़ारी की इसकी शरह (व्याख्या) से साबित किया है कि इल्म-ए-इलाही तो इल्म-ए-इलाही है जो अनंत पर अनंत पर अनंत है, यह 'मा काना' का ज्ञान संग्रह मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के इल्म के समंदर की एक लहर है। फिर अल्लाह के अनंत ज्ञान के सामने इसकी क्या गिनती? अल्लाह की कद्र न जानने वाले इसे ही मआज़ल्लाह (अल्लाह की पनाह) अल्लाह के इल्म के बराबर ठहराते हैं, "और उन्होंने अल्लाह की वैसी कद्र न की जैसी कद्र करने का हक़ है" 1 । (अनुवाद: और उन्होंने अल्लाह की वैसी कद्र नहीं की जैसी कि कद्र करने का हक़ था)। और वास्तव में जब उनके इमाम-उत-ताइफ़ा के नज़दीक एक पेड़ के पत्ते गिन देने पर खुदाई (ईश्वरत्व) आ गई, तो 'मा काना व मा यकून' तो बहुत बड़ी चीज़ है। खैर उन्हें जाने दीजिये; यह विशेष मसला जिस तरह हमारे सुन्नी उलेमा में प्रचलित है, वह अशअरी और मातुरिदी के बीच के विवादास्पद मुद्दों की तरह है, जो मूल रूप से निंदा का विषय नहीं हैं।

हाँ, हमारा चुना हुआ विचार अंतिम वाला है, जो आम आरिफ़ीन और बहुत से बड़े उलेमा का मार्ग है। इस बारे में कुछ आयतें, हदीसें और इमामों के कथन इस फ़कीर (लेखक) के रिसाले 'अम्बाय-उल-

मुस्तफ़ा' में मिलेंगे। और 'अल-लुलु-उल-मकनूं फ़ी इल्म-इल-बशीर व मा काना व मा यकून' और इस फ़कीर के अन्य रिसालों में अल्हम्दुलिल्लाह (अल्लाह का शुक्र है) बहुत सी और प्रचुर जानकारी मौजूद है।

1 अल-कुरान अल-करीम 6/ 91 पेज 454 of 750

امر پنجم علم غیب کی اختلافی حدود اور مسلک عرفاء

فضل محمد رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کے منکروں کو جہنم جانے دیجئے۔ تتمہ کلام استماع فرمایئے، ان تمام اجماعات کے بعد ہمارے علماء میں اختلاف ہوا کہ بے شمار علوم غیب جو مولٰی عزوجل نے اپنے محبوب اعظم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کو عطا فرمائے آیا وہ روزِ اول سے یومِ آخرت تک تمام کائنات کو شامل ہیں جیسا کہ عمومِ آیات واحادیث کا مفاد ہے یا ان میں تخصیص ہے۔ بہت اہل ظاہر جنابِ خصوص گئے ہیں، کسی نے کہا متشابہات کا، کسی نے کہا خمس کا، کسی نے کہا ساعت کا، اور عام علماء باطن اور ان کے اتباع سے بکثرت علماء ظاہر نے آیات واحادیث کو ان کے عموم پر رکھا ماکان ومایکون بمعنی مذکور میں از انجا کہ غایت میں دخول وخروج دونوں محتمل ہیں، ساعت داخل ہو یا نہیں بہر حال یہ مجموعہ بھی علومِ الٰہیہ سے ایک بعض خفیف بلکہ انباء المصطفٰی حاضر ہے۔ میں نے قصیدہ بردہ شریف اور اس کی شرح ملا علی قاری سے ثابت کیا ہے کہ علم الٰہی تو علم الٰہی جو غیر متناہی در غیر متناہی در غیر متناہی ہے، یہ مجموعہ ماکان کا علم علومِ محمد رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کے سمندر سے ایک لہر ہے، پھر علم الٰہی غیر متناہی کے آگے اس کی کیا گنتی، اللہ کی قدر نہ جاننے والے اسی کو معاذ اللہ علم الٰہی سے مساوات ٹھہراتے ہیں، "وَمَا قَدَرُوا اللّٰہَ حَقَّ قَدْرِہٖ" 1 ۔ (اللہ کی ویسی قدر نہ کی جیسی قدر کرنے کا حق ہے۔ت) اور واقعی جب ان کے امام الطائفہ کے نزدیک ایک پیڑ کے پتے گن دینے پر خدائی آگئی تو ماکان ومایکون تو بڑی چیز ہے۔ خیر انہیں جانے دیجئے یہ خاص مسئلہ جس طرح ہمارے علماء اہلسنت میں دائر ہے مسائل خلافیہ اشاعرہ وماتریدیہ کے مثل ہے کہ اصلاً محل لوم نہیں۔ ہاں ہمارا مختار قول اخیر ہے جو عام عرفائے کرام و بکثرت اعلام کا مسلک ہے،

اس بارے میں بعض آیات واحادیث واقوالِ ائمہ حضرات کو فقیر کے رسالہ انباء المصطفیٰ میں ملیں گے۔ اور اللؤلؤ المکنون فی علم البشیر وماکان ومایکون وغیرہ رسائل فقیر میں بحمد اللہ تعالیٰ کثیر و وافر ہیں۔

1 القرآن الکریم ۶/ ۹۱ Page 454 of 750

And the sayings of the noble saints and great scholars are so numerous that their count would require a vast register. Here, we limit ourselves to just a few pointers from the Imams as an example, and my success is only by Allah, the Mighty, the Forgiving. A Sahih Hadith from Jami' al-Tirmidhi, in which the Holy Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him) said:

"Everything became manifest to me and I recognized it."1

And he said: "I have known all that is in the heavens and all that is in the earth."2

(51) The research scholar Maulana Abdul Haq Muhaddith Dehlavi, in Ashi'at al-Lam'at, a commentary on Mishkat, says under this Hadith: "I have known all that was in the heavens and all that was in the earths" refers to the attainment of all partial and universal knowledge and encompassing them. (T)

(52) Imam Muhammad Busiri says in the noble Qasida Burda: "For indeed, the world and its counterpart (the hereafter) are from your generosity, and from your knowledge is the knowledge of the Preserved Tablet and the Pen."4

Translation: O Messenger of Allah! Both this world and the hereafter are but a portion of your bestowal, and the knowledge of the Tablet and the Pen (which contains all that was and all that will be) is just a piece of your knowledge.

(53) Allama Ali Qari says in its commentary: "The fact that the knowledge of both (Tablet and Pen) is from the knowledge of the Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him) is because his knowledge branches out into universals, particulars, and realities..."

Translation: The knowledge of the Tablet and Pen is a piece from the knowledge of the Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him) because the Prophet's knowledge has various types: universals, particulars, realities...

---

1 Jami' Sunan al-Tirmidhi, Book of Tafsir, Surah Sad, Hadith 3226, Dar al-Fikr, Beirut, 5/160 2 Jami' Sunan al-Tirmidhi, Book of Tafsir, Surah Sad, Hadith 3224, Dar al-Fikr, Beirut, 5/159 3 Ashi'at al-Lam'at, Book of Prayer, Chapter on Mosques, Maktaba Nooria Razawiyya, Sukkur, 1/333 4 Majmu' al-Mutoon, Text of Qasida al-Burda, Religious Affairs Department, Doha, Qatar, p. 10

और प्रतिष्ठित संतों और महान विद्वानों के कथन इतने अधिक हैं कि उनकी गणना के लिए एक विशाल रजिस्टर की आवश्यकता होगी। यहाँ, उदाहरण के तौर पर केवल इमामों के कुछ संकेतों तक ही सीमित हैं, और मेरी सफलता केवल अल्लाह के साथ है, जो सर्वशक्तिमान और क्षमाशील है। जामी अल-तिर्मिज़ी की एक सही हदीस, जिसमें पवित्र नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया:

"हर चीज़ मुझ पर स्पष्ट हो गई और मैंने उसे पहचान लिया।"1

और फरमाया: "मैंने जान लिया जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है।"2

(51) शोध विद्वान मौलाना अब्दुल हक मुहद्दिस देहलवी, मिशकात की व्याख्या 'अशिअतुल लम्आत' में इसी हदीस के तहत फरमाते हैं: "मैंने जान लिया जो कुछ आसमानों और ज़मीनों में था" - यह अभिव्यक्ति सभी आंशिक और सार्वभौमिक ज्ञान की प्राप्ति और उन्हें समाहित करने के बारे में है। (T)

(52) इमाम मुहम्मद बुसीरी क़सीदा बुर्दा शरीफ में अर्ज़ करते हैं: "निश्चित रूप से दुनिया और इसके समकक्ष (आख़िरत) आपकी उदारता का एक हिस्सा हैं, और आपका ज्ञान 'लोह व क़लम' (संरक्षित पट्टिका और कलम) के ज्ञान से बढ़कर है।"4

अनुवाद: या रसूल अल्लाह! दुनिया और आख़िरत दोनों हुज़ूर की अता का एक हिस्सा हैं, और लोह व क़लम का ज्ञान (जिसमें सब कुछ है जो हुआ और जो होगा) हुज़ूर के ज्ञान का एक टुकड़ा मात्र है।

(53) अल्लामा अली क़ारी इसकी व्याख्या में फरमाते हैं: "इन दोनों (लोह व क़लम) का ज्ञान नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के ज्ञान से होने का कारण यह है कि हुज़ूर का ज्ञान विभिन्न प्रकारों में विभाजित है: सार्वभौमिक, आंशिक और वास्तविकताएं.."

अनुवाद: लोह व क़लम का ज्ञान नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के ज्ञान का एक टुकड़ा है क्योंकि हुज़ूर के ज्ञान के कई प्रकार हैं जैसे कि कुल्लियात (सार्वभौमिक), जुज़ियात (आंशिक), हक़ाएक़ (वास्तविकताएं)...

---

1 जामी सुनन अल-तिर्मिज़ी, किताब अल-तफ़्सीर, सूरह साद, हदीस 3226, दार अल-फ़िक्र, बेरूत, 5/160 2 जामी सुनन अल-तिर्मिज़ी, किताब अल-तफ़्सीर, सूरह साद, हदीस 3224, दार अल-फ़िक्र,

बेरूत, 5/159 3 अशिअत अल-लम्आत, किताब अल-सलात, मस्जिदों का अध्याय, मकतबा नूरिया रज़विया, सुक्कुर, 1/333 4 मजमू अल-मुतून, क़सीदा अल-बुर्दा का पाठ, धार्मिक मामलों का विभाग, दोहा, कतर, पृष्ठ 10

पृष्ठ 455 का 750

اور اقوال اولیائے کرام و علمائے عظام کی کثرت تو اس درجہ ہے کہ ان کے شمار کو ایک دفتر عظیم درکار، یہاں بطور نمونہ صرف بعض اشاراتِ ائمہ پر اقتصار، وما توفیقی الا باللہ العزیز الغفار، حدیث صحیح جامع ترمذی جس میں نبی کریم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے فرمایا:

تجلّی کل شیئ وعرفْتُ 1 | ہر چیز مجھ پر روشن ہوگئی اور میں نے پہچان لی۔

اور فرمایا: علمتُ ما فی السمٰوٰت وما فی الارض 2 | میں نے جان لیا جو کچھ آسمانوں اور جو کچھ زمین میں ہے۔

(۵۱) شیخ محقق مولانا عبدالحق محدث دہلوی اشعۃ اللمعات شرح مشکوٰۃ میں اسی حدیث کے نیچے فرماتے ہیں: دانستم ہر چہ در آسما نہا و ہر چہ در زمینہا بود عبارت ست از حصول تمامہ علوم جزئی و کلّی و احاطہ آں 3۔ | "میں نے جان لیا جو کچھ آسمانوں اور زمینوں میں تھا اس حدیث میں تمام علوم جزوی و کلی کے حاصل ہونے اور ان کے احاطہ کرنے کا بیان ہے۔ (ت)

(۵۲) امام محمد بوصیری قصیدہ بردہ شریف میں عرض کرتے ہیں۔ فان من جودك الدنیا وضرتها | یا رسول اللہ ! دنیا و آخرت دونوں حضور کی بخشش سے ایک حصہ ہیں ومن علومك علم اللوح والقلم 4۔ | اور لوح و قلم کا علم (جس میں تمام ماکان و مایکون ہے) حضور کے علوم سے ایک ٹکڑا ہے۔

(۵۳) علامہ علی قاری اس کی شرح میں فرماتے ہیں: کون علمہما من علومہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم ان علومہ تتنوع الی الکلیات والجزئیات وحقائق و | لوح و قلم کا علم علوم نبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم سے ایک ٹکڑا اس لیے ہے کہ حضور کے علم متعدد انواع ہیں کلیات، جزئیات، حقائق

1 جامع سنن الترمذی کتاب التفسیر من سورۃ ص حدیث ۳۲۲۶ دار الفکر بیروت ۵/ ۱۶۰ 2 جامع سنن الترمذی کتاب التفسیر من سورۃ ص حدیث ۳۲۲۴ دار الفکر بیروت ۵/ ۱۵۹ 3 اشعۃ اللمعات کتاب الصلوۃ باب المساجد مکتبہ نوریہ رضویہ سکھر ۱/ ۳۳۳ 4 مجموع المتون متن قصیدہ البردۃ الشئون الدینیۃ دوحہ قطر ص ۱۰

Fatawa Ridawiyya - Volume 29

Subtleties, profound insights, and cognitions related to the Divine Essence and Attributes—the knowledge of the Tablet and the Pen is but a single line from the writings of his [the Prophet's] knowledge and a single stream from the oceans of his knowledge. Furthermore, all of this exists solely due to the blessing of his existence, may Allah Almighty bless him and grant him peace.

(54) It is stated in 'Umm al-Qura Sharif': "He encompassed the two worlds in knowledge and forbearance." The knowledge and forbearance of the Prophet encompass the entire universe.

(55) Imam Ibn Hajar al-Makki states in its commentary: "Because Allah Almighty informed him about the world, he came to know the knowledge of the first and the last, what has passed and what is yet to be." This is because Allah Almighty granted the Prophet insight into the entire universe, thus he received the knowledge of all those from the beginning to the end, knowing everything that has occurred and everything that will occur.

(56 & 57) It is stated in 'Nasim al-Riyad': "Al-Iraqi mentioned in the commentary of 'al-Muhadhdhab' that all of creation from the time of Adam (peace be upon him) until the Day of Judgment was presented to him [the Prophet] (may Allah Almighty bless him and grant him peace), so he recognized all of them just as Adam (peace be upon him) was taught all the names." Imam Iraqi states in the commentary of 'al-Muhadhdhab' that all creations of God, from Adam (peace be upon him) until the Day of Resurrection, were presented before the Holy Prophet (may Allah Almighty bless him and grant him peace). Thus, the Prophet (peace be upon him) recognized them all, just as Adam (peace be upon him) was taught all the names.

(58) For this reason, Imam al-Busiri presents in the 'Hamziyya' panegyric:

1. Al-Zubdat al-Umdah fi Sharh al-Burdah, Publisher: Jam'iat Ulama, Sakandariya, Khairpur Sindh, p. 117.
2. Majmu' al-Mutun, Matn Qasida al-Hamziyya fi Madh Khayr al-Bariyya, Ash-Shu'un al-Diniyya, State of Qatar, p. 18.
3. Afdal al-Qura li-Qira'at Umm al-Qura.
4. Nasim al-Riyad, Chapter 3, section regarding his status, Markaz Ahle Sunnat Barkat-e-Raza, Gujarat, India, 2/208.

फतवा रज़विया - जिल्द 29

सूक्ष्मताएँ गहरा ज्ञान और अनुभूतियाँ जो ईश्वरीय सत्ता और गुणों से संबंधित हैं—लौह-ओ-कलम (सुरक्षित पट्टिका और कलम) का ज्ञान हुज़ूर [सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम] के ज्ञान के लेख की एक पंक्ति और उनके ज्ञान के समुद्रों की एक नहर मात्र है। इसके अलावा, यह सब कुछ हुज़ूर के ही अस्तित्व की बरकत से है, अल्लाह उन पर कृपा करे और उन्हें शांति प्रदान करे।

(54) 'उम्म अल-कुरा शरीफ़' में उल्लेख है: "उनका ज्ञान और धैर्य दोनों लोकों में व्याप्त है।" हुज़ूर का ज्ञान और धैर्य समस्त ब्रह्मांड को घेरे हुए है।

(55) इमाम इब्न हजर मक्की इसकी व्याख्या में फरमाते हैं: "क्योंकि अल्लाह तआला ने उन्हें पूरे ब्रह्मांड से अवगत कराया, इसलिए उन्होंने पहले और बाद के सभी लोगों का ज्ञान प्राप्त कर लिया, जो बीत चुका और जो होने वाला है।" ऐसा इसलिए है क्योंकि अल्लाह तआला ने हुज़ूर को पूरे ब्रह्मांड की जानकारी दी, जिससे उन्हें आदि से अंत तक का ज्ञान प्राप्त हुआ, और जो कुछ हो चुका है और जो होने वाला है, वह सब जान लिया।

(56 और 57) 'नसीम अल-रियाद' में लिखा है: "अल-इराकी ने 'शरह अल-मुहज़्ज़ब' में उल्लेख किया है कि आदम (अलैहिस्सलाम) के समय से लेकर कयामत के दिन तक की पूरी सृष्टि हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के सामने पेश की गई थी, इसलिए उन्होंने उन सभी को पहचान लिया, जैसे आदम (अलैहिस्सलाम) को सभी नाम सिखाए गए थे।" इमाम इराकी 'शरह मुहज़्ज़ब' में फरमाते हैं कि आदम अलैहिस्सलाम से लेकर कयामत तक की समस्त ईश्वरीय रचनाएँ हुज़ूर अकदस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के समक्ष प्रस्तुत की गईं। अतः हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने उन सभी को पहचान लिया, जिस तरह आदम अलैहिस्सलाम को सभी नाम सिखाए गए थे।

(58) इसीलिए इमाम बुसीरी 'हमज़िया' प्रशस्ति में कहते हैं:

1. अल-ज़ुबदतुल उम्दा फी शरहिल बुर्दा, प्रकाशक: जमीयत उलेमा, सकंदरिया, खैरपुर सिंध, पृ. 117।
2. मजमू अल-मुतून, मतन कसीदा अल-हमज़िया फी मदह खैर अल-बरिया, अश-शूऊन अद-दीनिया, कतर राज्य, पृ. 18।
3. अफ़ज़ल अल-कुरा ली-किरात उम्म अल-कुरा।

4. नसीम अल-रियाद, अध्याय 3, उनके स्थान के उल्लेख का खंड, मरकज़ अहले सुन्नत बरकात-ए-रज़ा, गुजरात, भारत, 2/208।

पृष्ठ 456 का 750

دقائق وعوارف ومعارف تتعلق بالذات والصفات وعلمهما یکون سطرا من سطور علمه ونهرا من بحور علمه ثم مع هذا هو من برکة وجوده صلی اللہ تعالی علیه وسلم_ 1 دقائق، عوارف اور معارف کہ ذات و صفاتِ الٰہی سے متعلق ہیں اور لوح و قلم کا علم تو حضور کے مکتوب علم سے ایک سطر اور اس کے سمندروں سے ایک نہر ہے پھر بایں ہمہ وہ حضور ہی کی برکتِ وجود سے تو ہے صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم۔

(۵۴) ام القرٰی شریف میں ہے: وسع العلمین علما و حلمًا _ 2 حضور کا علم و حلم تمام جہان کو محیط ہے۔

(۵۵) امام ابن حجر مکی اس کی شرح میں فرماتے ہیں: لان اللہ تعالی اطلعه علی العالم فعلم علم الاولین والاخرین ما کان و ما یکون _ 3 اس لیے کہ اللہ تعالٰی نے حضور کو تمام عالم پر اطلاع دی، تو سب اولین و آخرین کا علم حضور کو ملا جو ہو گزرا اور جو ہونے والا ہے سب جان لیا۔

(۵۶ و ۵۷) نسیم الریاض میں ہے: ذکر العراقي في شرح المهذب انه صلی اللہ تعالی علیه وسلم عرضت علیه الخلائق من لدن ادم علیه الصلوٰۃ والسلام الی قیام الساعة فعرفهم کلهم کما علم آدم الاسماء _ 4 امام عراقی شرح مہذب میں فرماتی ہیں کہ آدم علیہ الصلوٰۃ و السلام سے لے کر قیامت تک کی تمام مخلوقات الٰہی حضور اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم پر عرض کی گئیں تو حضور علیہ الصلوٰۃ والسلام نے ان سب کو پہچان لیا جس طرح آدم علیہ الصلوٰۃ والسلام کو تمام نام تعلیم ہوئے تھے۔

(۵۸) اسی لیے امام بوصیری مدحیہ ہمزیہ میں عرض کرتے ہیں:

1 الزبدة العمدة في شرح البردة ناشر جمعية علماء سكندريہ خير پور سندھ ص ۱۱۷ 2 مجموع المتون متن قصيدة الهمزيه في مدح خير البرية الشؤن الدينية دولته قطر ص ۱۸ 3 افضل القرا القراء ام القرى 4 نسيم الرياض الباب الثالث فصل فيما ورد من ذكر مكانته مركز اهلسنت بركات رضا گجرات الہند ۲/ ۲۰۸

Fatawa Razawiyya Volume 29

“For you [the Prophet] is the essence of sciences from the Knower of the Unseen, and for Adam are the Names.”[1] From the Knower of the Unseen, the essence of sciences is for the Holy Prophet, and names were for Adam (peace be upon him).

(59 & 60) Imam Ibn al-Hajj al-Makki in ‘Al-Madkhal’ and Imam Ahmad al-Qastallani in ‘Al-Mawahib al-Ladunniyyah’ say:

| Indeed, our scholars (may Allah Almighty have mercy on them) have said that the visitor should realize that he is standing before the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him), just as it was during his apparent life. This is because there is no difference between his death and his life (peace and blessings of Allah be upon him), meaning in his witnessing of his Ummah and his knowledge of their states, intentions, resolutions, and thoughts. All of this is clear to him with no obscurity.[2] | Undoubtedly our scholars (may Allah Almighty have mercy on them) have said that the visitor should inform his soul that he is present before the Exalted Messenger (peace and blessings of Allah be upon him) just as it was during the apparent life of the Prophet, because there is no difference in this matter between the life and passing of the Exalted Messenger (peace and blessings of Allah be upon him); he is watching his Ummah and recognizes their conditions, intentions, resolutions, and the thoughts of their hearts, and all this is bright upon the Prophet, in which there is fundamentally no concealment. |

(61) Also, in Mawahib Sharif it is stated:

| There is no doubt that Allah Almighty has certainly made him aware of more than that, and bestowed upon him the knowledge of the first and the last.[3] | There is no doubt that surely Allah Almighty gave the Prophet knowledge even beyond that and inspired the knowledge of all those who came before and those who came after unto the Prophet. |

(62 to 64) Imam Qazi, then Allama Qari, then Allama Munawi write in ‘Taysir Sharh Jami' al-Saghir’ of Imam Suyuti:

| The sacred souls, when they become detached... | Pure souls, when they detach from the regions of the body... |

---

[1] Majmu' al-Mutun, Matn Qasidah al-Hamziyah, Religious Affairs, State of Qatar, p. 11.
[2] Al-Madkhal by Ibn al-Hajj, Chapter on Visiting the Master of Messengers, Dar al-

Kitab al-Arabi, Beirut, 1/252; Al-Mawahib al-Ladunniyyah, Tenth Objective, Second Chapter, Al-Maktab al-Islami, Beirut, 4/580. [3] Al-Mawahib al-Ladunniyyah, Eighth Objective, Third Chapter, Al-Maktab al-Islami, Beirut, 3/560.

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

“आपके लिए ग़ैब के जानने वाले (अल्लाह) की ओर से विज्ञान का सार है, और आदम के लिए नाम हैं।”[1] ग़ैब के जानने वाले से हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के लिए उलूम (विज्ञान) की ज़ात है और आदम अलैहिस्सलाम के लिए नाम।

(59 और 60) इमाम इब्ने हज मक्की 'मदख़ल' में और इमाम अहमद क़स्तलानी 'मवाहिब-ए-लदुनिय्या शरीफ़' में फ़रमाते हैं:

| बेशक हमारे उलेमा (रहमतुल्लाहि अलैहि) ने फ़रमाया कि ज़ायर (दर्शनार्थी) अपने नफ़्स (आत्मा) को आगाह कर दे कि वह हुज़ूर अक़दस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के सामने हाज़िर है जैसा कि हुज़ूर की हयात-ए-ज़ाहिर (प्रकट जीवन) में, इसलिए कि हुज़ूर अक़दस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की हयात और वफ़ात में इस बात में कुछ फ़र्क़ नहीं कि वह अपनी उम्मत को देख रहे हैं और उनकी हालतों, नियतों, इरादों और दिल के ख़तरों (विचारों) को पहचानते हैं, और यह सब हुज़ूर पर रौशन है जिसमें असल में कोई पोशीदगी (गोपनीयता) नहीं।[2] | बेशक हमारे उलेमा (रहमहुमुल्लाह तआला) ने फ़रमाया कि ज़ायर अपने नफ़्स को आगाह कर दे कि वह हुज़ूर अक़दस (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) के सामने हाज़िर है जैसा कि हुज़ूर की हयात-ए-ज़ाहिर में, इसलिए कि हुज़ूर अक़दस (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) की हयात और वफ़ात में इस बात में कुछ फ़र्क़ नहीं कि वह अपनी उम्मत को देख रहे हैं और उनकी हालतों, नियतों, इरादों और दिल के ख़तरों को पहचानते हैं, और यह सब हुज़ूर पर रौशन है जिसमें असल में पोशीदगी नहीं। |

(61) साथ ही मवाहिब शरीफ़ में है:

| इसमें कोई शक नहीं कि निस्संदेह अल्लाह तआला ने इससे भी ज़्यादा हुज़ूर को इल्म दिया और तमाम अगले-पिछलों का इल्म हुज़ूर पर इलक़ा (प्रदान) फ़रमाया।[3] | कुछ शक नहीं कि बिलाशुबा अल्लाह तआला ने इससे भी ज़ायद हुज़ूर को इल्म दिया और तमाम अगले पिछलों का इल्म हुज़ूर पर इलक़ा फ़रमाया। |

(62 से 64) इमाम क़ाज़ी, फिर अल्लामा क़ारी, फिर अल्लामा मुनावी तयसीर शरह जामे सगीर इमाम सुयूती में लिखते हैं:

| पावन आत्माएं जब विलग हो जाती हैं... | पाक जानें जब बदन के इलाक़ों से जुदा... |

[1] मजमूअतुल मुतून, मतन कसीदा हम्ज़िया, धार्मिक मामले, कतर राज्य, पृष्ठ 11. [2] अल-मदख़ल ले इब्निल हज, सैयदुल मुर्सलीन की ज़ियारत पर अध्याय, दारुल किताब अल-अरबी, बेरूत, 1/252; अल-मवाहिब अल-लदुनिय्या, दसवां मक़सद, दूसरा अध्याय, अल-मकतब अल-इस्लामी, बेरूत, 4/580. [3] अल-मवाहिब अल-लदुनिय्या, आठवां मक़सद, तीसरा अध्याय, अल-मकतब अल-इस्लामी, बेरूत, 3/560.

لک ذات العلوم من عالم الغیب ومنها لأدم الاسماء 1 عالم غیب سے حضور کے لیے علوم کی ذات ہے اور آدم علیہ الصلوۃ والسلام کے لیے نام۔ (۵۹ و ۶۰) امام ابن حاج مکی مدخل اور امام احمد قسطلانی مواہب لدنیہ شریف میں فرماتے ہیں:

| قد قال علماؤ نار حمہم اللہ تعالٰی ان الزائر یشعر نفسه بانه واقف بین یدیه صلی اللہ تعالی علیه وسلم کما هو في حیاته اذلا فرق بین موته وحیاته صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم اعنی فی مشاهدته لامته و معرفته بأحوالهم و نیاتهم و عزائمهم و خواطرهم و ذلك عنده جلی لا خفاء فیه 2۔ | بے شک ہمارے علماء رحمہم اللہ تعالٰی نے فرمایا کہ زائر اپنے نفس کو آگاہ کر دے کہ وہ حضور اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کے سامنے حاضر ہے جیسا کہ حضور کی حیاتِ ظاہر میں ،اس لیے کہ حضور اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کی حیات و وفات میں اس بات میں کچھ فرق نہیں کہ وہ اپنی امت کو دیکھ رہے ہیں اور ان کی حالتوں، نیتوں، ارادوں اور دل کے خطروں کو پہچانتے ہیں، اور یہ سب حضور پر روشن ہے جس میں اصلاً پوشیدگی نہیں۔ |

(۶۱) نیز مواہب شریف میں ہے: | لاشك ان اللہ تعالیٰ قد اطلعه علی ازید من ذلك والقی علیه علوم الاولین والاخرین 3۔ | کچھ شک نہیں کہ بلاشبہ اللہ تعالیٰ نے اس سے بھی زائد حضور کو علم دیا اور تمام اگلے پچھلوں کا علم حضور پر القافر مایا۔ |

(۶۲ تا ۶۴) امام قاضی پھر علامہ قاری پھر علامہ مناوی تیسیر شرح جامع صغیر امام سیوطی میں لکھتے ہیں: | النفوس القدسیة اذا تجردت | پاک جانیں جب بدن کے علاقوں سے جدا |

1 مجموع المتون متن قصيدة الهمزية الشئون الدينية دولة قطر ص ١١ 2 المدخل لابن الحاج فصل فى الكلام على زيارة سيد المرسلين دار الكتاب العربى بيروت ١/ ٢٥٢، المواهب اللدنية المقصد العاشر الفصل الثانى المكتب الاسلامى بيروت ۴/ ٥٨٠ 3 المواهب اللدنية المقصد الثامن الفصل الثالث المكتب الاسلامى بيروت ٣/ ٥۶٠

Fatawa Razawiyya Volume 29

[Arabic Box:] Regarding the physical connections, they reached the highest assembly (Mala-i-A'la) and no veil remains for them, so they see and hear everything as if they are witnesses. [Footnote 1]

[Translation Box:] They reach the highest assembly, and for them no veil remains, so they see and hear everything as if they are present here.

(65) Mulla Ali Qari states in Sharh Shifa:

[Arabic Box:] Verily, the soul of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) is present in the houses of the people of Islam. [Footnote 2]

[Translation Box:] The noble soul of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) is present in the house of every Muslim throughout the entire world.

(66) It is stated in Madarij al-Nubuwwah:

[Persian Box:] Whatever is in the world from the time of Adam until the first blast of the trumpet has been revealed to him (peace and blessings of Allah be upon him), so that he knows all its conditions from beginning to end, and he also informed his companions of some of those conditions. [Footnote 3]

[Translation Box:] Whatever is in the world from the time of Adam (peace be upon him) until the first blast of the trumpet has been revealed to the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him), so much so that all events from the beginning to the end became known to you, and you also told some of them to your friends.

(67) He also states (may his secret be sanctified):

[Arabic/Persian Box:] And he is completely hearing and knowledgeable, and he (peace and blessings of Allah be upon him) is aware of everything regarding the matters of the Divine Essence, the rulings of the Truth's attributes, names, actions, and effects. He has encompassed all sciences, outward and inward, first and last, and became the manifestation of "above every possessor of knowledge is a Knower". Upon him be the best of prayers and the most complete and perfect greetings. [Footnote 4]

[Translation Box:] He is the Knower of everything, and the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) knows all things; the matters of Allah, His rulings, the rulings of His attributes, and names, actions and effects. He has encompassed all

sciences, outward and inward, first and last, and has become the manifestation of "above every possessor of knowledge is a Knower". May Allah's best blessings be upon him and the most complete and perfect greetings.

---

1. Al-Taysir Sharh al-Jami' al-Saghir, under the Hadith "Wherever you are, send blessings...", Maktabah al-Imam al-Shafi'i, Riyadh, 1/502.
2. Sharh al-Shifa by Mulla Ali Qari, chapter on places where prayers and peace are recommended, Dar al-Kutub al-Ilmiyyah, Beirut, 2/118.
3. Madarij al-Nubuwwah, chapter five, section on the characteristics of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him), Maktabah Nooriya Razawiyya, Sukkur, 1/144.
4. Madarij al-Nubuwwah, introduction to the book, Maktabah Nooriya Razawiyya, Sukkur, 1/2 & 3.

फ़तावा रज़विया, जिल्द २९

[अरबी बॉक्स:] शारीरिक संबंधों के बारे में, वे उच्चतम सभा (मला-ए-आला) तक पहुँच गए और उनके लिए कोई पर्दा नहीं रहा, इसलिए वे सब कुछ ऐसे देखते और सुनते हैं जैसे वे गवाह हों। [फुटनोट १]

[अनुवाद बॉक्स:] वे उच्चतम सभा से मिल जाती हैं और उनके लिए कुछ पर्दा नहीं रहता, तो सब कुछ ऐसा देखती और सुनती हैं जैसे यहाँ मौजूद हों।

(६५) मुल्ला अली कारी शरीफ़ 'शराह शिफ़ा' में फ़रमाते हैं:

[अरबी बॉक्स:] बेशक नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की रूह इस्लाम वालों के घरों में मौजूद रहती है। [फुटनोट २]

[अनुवाद बॉक्स:] नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की रूह-ए-करीम पूरी दुनिया में हर मुसलमान के घर में तशरीफ़ फ़रमा है।

(६६) 'मदारिजुन नुबुव्वह' शरीफ़ में है:

[फ़ारसी बॉक्स:] जो कुछ दुनिया में आदम के ज़माने से लेकर पहले सूर (नफ़ख़-ए-ऊला) फूँके जाने तक है, वह हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर ज़ाहिर कर दिया गया है, ताकि वे शुरू से आखिर तक के तमाम हालात जान लें, और उन्होंने अपने साथियों को भी इनमें से कुछ हालात की खबर दी। [फुटनोट ३]

[अनुवाद बॉक्स:] जो कुछ दुनिया में आदम (अलैहिस्सलाम) के ज़माने से नफ़ख़-ए-ऊला तक है, हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर मुनकशफ़ कर दिया (खोल दिया) गया है, यहाँ तक कि तमाम अहवाल आप को शुरू से आखिर तक मालूम हो गए, उनमें से कुछ अपने दोस्तों को भी बता दिए।

(६७) आप (रहमतुल्लाह अलैहि) मज़ीद फ़रमाते हैं:

[अरबी/फ़ारसी बॉक्स:] और वह पूरी तरह सुनने और जानने वाला है, और वह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) अल्लाह की ज़ात, उसके अहकाम, उसकी सिफ़ात, नामों, कामों और निशानियों की हर चीज़ को जानने वाले हैं। उन्होंने तमाम ज़ाहिरी और बातिनी, अव्वल और आखिर के इल्म का अहाता

कर लिया है और वह इस आयत "हर इल्म वाले के ऊपर एक बहुत बड़ा जानने वाला है" का प्रमाण बन गए। उन पर अल्लाह की बेहतरीन रहमतें और मुकम्मल सलाम हों। [फुटनोट ४]

[अनुवाद बॉक्स:] वह हर चीज़ का जानने वाला है और हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) तमाम चीज़ों को जानते हैं, अल्लाह की शान और उसके अहकाम और सिफ़ात के अहकाम और अस्मा-ओ-अफ़आल व आसार हैं, और तमाम उलूम ज़ाहिर व बातिन, अव्वल व आखिर का अहाता कर लिया और "फ़ौक़ा कुल्लि ज़ी इल्मिन अलीम" का मिस्दाक़ हो गए, उन पर अल्लाह की बेहतरीन रहमतें हों और मुकम्मल सलाम हों।

---

1. अल-तयसीर शरह अल-जामिअ अस-सगीर, हदीस के तहत "तुम जहाँ भी हो मुझ पर दरूद भेजो...", मकतबा अल-इमाम अल-शाफ़ई, रियाद, १/५०२।
2. शरह अश्-शिफ़ा मुल्ला अली क़ारी द्वारा, उन स्थानों का अध्याय जहाँ प्रार्थना और शांति की सिफारिश की जाती है, दार अल-कुतुब अल-इल्मिया, बेरूत, २/११८।
3. मदारिजुन नुबुव्वह, पाँचवाँ अध्याय, नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की विशेषताओं का खंड, मकतबा नूरिया रज़विया, सुक्कुर, १/१४४।
4. मदारिजुन नुबुव्वह, पुस्तक की भूमिका, मकतबा नूरिया रज़विया, सुक्कुर, १/२ और ३।

فتاوٰی رضویہ جلد ۲۹

[Arabic Box:] عن العلائق البدنیۃ اتصلت بالملأ الاعلٰی و لم یبق لھا حجاب فتری و تسمع الکل کالمشاھد ۔۱۸

[Translation Box:] ہوتی ہیں، ملاءِ اعلیٰ سے مل جاتی ہیں اور ان کے لیے کچھ پردہ نہیں رہتا تو سب کچھ ایسا دیکھتی سنتی ہیں جیسے یہاں موجود ہیں۔

(۶۵) ملا علی قاری شریف شفاء شریف میں فرماتے ہیں:

[Arabic Box:] ان روح النبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم حاضرۃ فی بیوت اھل الاسلام ۔۲۸

[Translation Box:] نبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی روح کریم تمام جہان میں ہر مسلمان کے گھر میں تشریف فرما ہے۔

(۶۶) مدارج النبوۃ شریف میں ہے:

[Persian Box:] ہر چہ در دنیا است از زمانِ آدم تا اوان نفخہ اولٰی بروی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم منکشف ساختند تا ہمہ احوال او را از اول تا آخر معلوم کرد و یاران خود را نیز از بعضے ازاں احوال خبر داد ۔۳۸

[Translation Box:] جو کچھ دنیا میں ہے آدمی علیہ السلام کے زمانے سے نفخہ اولیٰ تک حضور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم پر منکشف کر دیا ہے یہاں تک کہ تمام احوال آپ کو اول سے آخر تک معلوم ہوگئے ان میں سے کچھ اپنے دوستوں کو بھی بتا دیئے۔

(۶۷) نیز فرماتے ہیں قدس سرہ:

[:Arabic/Persian Box] وھو بالکل سمیع علیم و وے صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم دانا ست بر ہمہ چیز از شیونات ذات الٰہی و احکام صفات حق و اسماء و افعال و آثار بجمیع علوم ظاہر و باطن اول و آخر احاطہ نمودہ و مصداق فوق کل ذی علم علیم شدہ۔ علیہ من الصلوات افضلھا و من التحیات اتمھا و اکملھا ۔۸4

[:Translation Box] وہ ہر چیز کا جاننے والا ہے اور حضور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم تمام چیزوں کو جانتے ہیں، اللہ کی شانوں اور اس کے احکام اور صفات کے احکام اور اسماء وافعال و آثار ہیں، اور تمام علوم ظاہر و باطن، اول و آخر کا احاطہ کر لیا اور فوق کل ذی علم علیم کا مصداق ہو گئے، ان پر اللہ کی بہترین رحمتیں ہوں اور اتم و اکمل تحیات ہوں۔

---

۱۸ التیسیر شرح الجامع الصغیر تحت حدیث حیثما کنتم فصلوا علی الخ مکتبہ الامام الشافعی ریاض ۱/ ۵۰۲ ۲۸ شرح الشفاء لملا علی قاری فصل فی المواطن التی تستحب فیہا الصلوۃ والسلام دار الکتب العلمیہ بیروت ۲/ ۱۱۸ ۳۸ مدارج النبوۃ باب پنجم ، وصل خصائص آنحضرت صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم مکتبہ نوریہ رضویہ سکھر ۱/ ۱۴۴ 4۸ مدارج النبوۃ مقدمۃ الکتاب مکتبہ نوریہ رضویہ سکھر ۱/ ۲ و ۳

(68) Shah Waliullah Sahib writes in *Fuyuz al-Haramayn*:

[Arabic]: It was poured upon me from his sacred presence, may Allah Almighty bless him and grant him peace, the manner in which a servant ascends from his realm to the realm of holiness. At that moment, everything becomes manifest to him, just as he informed about this witnessing in the story of the dream-ascension (Mi'raj) [1].

[Urdu]: It was bestowed upon me from the court of the Messenger of Allah, may Allah Almighty bless him and grant him peace, how a servant progresses from his station to the sacred station, such that everything becomes manifest to him, just as the Messenger of Allah, may Allah Almighty bless him and grant him peace, informed about this station in the event of the story of the Ascension.

(69) Also in the same [book]:

[Arabic]: The gnostic is drawn to the realm of Truth and becomes a servant of Allah, so everything becomes manifest to him [2].

[Urdu]: The gnostic is drawn towards the station of Truth and resides in the court of proximity, so everything becomes manifest to him.

(70) In the same [book], concerning the characteristics of the *Wali-e-Fard* (Singular Saint), it is written that he dominates all physical elemental forms; then it is written that this dominance is apparent in the Prophets, peace and blessings be upon them.

[Arabic]: As for those other than them, there are positions of inheritance from the Prophets, such as being a Mujaddid (Renewer) and Qutbiyat (Pole-ship), and the manifestation of their effects and rulings, and reaching the reality of every knowledge and state [3].

[Urdu]: As for those other than the Prophets, they possess the positions of inheritance from the Prophets, such as being a Mujaddid and a Qutb. The manifestation of their effects and rulings, and reaching the reality of every knowledge and state.

(71) In the same [book], after the aforementioned discourse and the detail of the subtleties of the *Fard*, it states:

[Arabic]: After all that, his soul was fashioned as a sacred soul which is not distracted by one affair from another, nor does any state from the states come upon him until his abstraction to the universal point, but that he is aware.

[Urdu]: And after all this, the point is that the man's soul is made into a sacred soul in its original creation; one affair does not distract him from another (meaning it does not happen that being in one thought, he loses track of another; rather, his gaze remains equal towards every direction).

---

1 *Fuyuz al-Haramayn*, Mashhad 'Allah Ta'ala' while revealing the book towards creation, Muhammad Saeed & Sons Karachi, p. 169 2 *Fuyuz al-Haramayn*, Mashhad 'Qadam Sidq 'inda Rabbihim' commentary, Muhammad Saeed & Sons Karachi, p. 175 3 *Fuyuz al-Haramayn*, Mashhad 'Mashhad Akhar' i.e., subtleties and their effects, Muhammad Saeed & Sons Karachi, p. 280 & 281

जिल्द 29 | फतावा रज़विया

(68) शाह वलीउल्लाह साहब 'फ्यूज़ुल हरमैन' में लिखते हैं:

[अरबी]: मुझ पर उनकी मुक़द्दस बारगाह से, अल्लाह तआला उन पर रहमत और सलामती भेजे, वह कैफ़ियत नाज़िल हुई जिससे एक बंदा अपने मुक़ाम से मुक़द्दस मुक़ाम की ओर तरक्की करता है। उस वक़्त हर चीज़ उस पर रोशन हो जाती है जैसा कि मेराज के ख़्वाब वाले वाक़ये में अल्लाह के रसूल ने इस मुक़ाम की ख़बर दी [1] ।

[उर्दू]: मुझ पर रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बारगाह से यह फ़ैज़ हुआ कि बंदा किस तरह अपनी जगह से मुक़ाम-ए-मुक़द्दस तक तरक्की करता है कि हर शय उस पर रोशन हो जाती है जैसा कि किस्सा-ए-मेराज के वाक़ये में रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस मुक़ाम से ख़बर दी।

(69) साथ ही इसी में है:

[अरबी]: आरिफ़ (ज्ञान-प्राप्त) हक़ के मुक़ाम की तरफ खिंच जाता है और अल्लाह का बंदा हो जाता है, फिर हर चीज़ उस पर रोशन हो जाती है [2] ।

[उर्दू]: आरिफ़ मुक़ाम-ए-हक़ तक खिंच कर बारगाह-ए-क़ुर्ब में होता है तो हर चीज़ उस पर रोशन हो जाती है।

(70) इसी में 'वली-ए-फर्द' की विशेषताओं के बारे में लिखा है कि वह तमाम जिस्मानी तत्वों पर हावी होता है, फिर लिखा है कि यह वर्चस्व पैग़म्बरों (अलैहिमुस्सलाम) में तो ज़ाहिर है।

[अरबी]: जहाँ तक उनके अलावा दूसरों की बात है, तो उनमें पैग़म्बरों की विरासत के पद हैं जैसे मुजद्दिद और कुत्ब होना, और उनके प्रभावों और आदेशों का प्रकट होना और हर ज्ञान और अवस्था की वास्तविकता तक पहुँचना [3] ।

[उर्दू]: रहे ग़ैर-अंबिया, उनमें विरासत के मन्सब हैं जैसे मुजद्दिद और कुत्ब होना। उनके आसार और अहकाम का ज़ाहिर होना और इल्म और हाल की हक़ीक़त को पहुँच जाना।

(71) इसी में उपरोक्त बयान और 'फर्द' के बारीक नक़ात की तफ़सील के बाद है:

[अरबी]: और इस सब के बाद, उसकी रूह एक मुक़द्दस रूह के रूप में गढ़ी गई है जिसे एक काम दूसरे काम से विचलित नहीं करता, और न ही उस पर कोई ऐसी अवस्था आती है जो उसे सार्वभौमिक बिंदु तक न ले जाए बिना कि वह उससे अवगत न हो।

[उर्दू]: और इस सब के बाद बात यह है कि मर्द का नफ़्स असल ख़ल्क़त में नफ़्स-ए-क़ुदसी बनाया जाता है, उसे एक बात दूसरी बात से मश्गूल नहीं करती (यानी यह नहीं होता कि एक ध्यान में होने से दूसरी तरफ का ख़याल न रहे बल्कि हर जानिब उसकी निगाह एक सी रहती है)।

---

1 फ्यूज़ुल हरमैन, मशहद अल्लाह तआला मख़लूक़ की तरफ़ किताब नाज़िल करने के वक़्त कहा करता है, मुहम्मद सईद एंड संस कराची, पृ. 169 2 फ्यूज़ुल हरमैन, मशहद 'क़दम सिद्क़' की तफ़सीर, मुहम्मद सईद एंड संस कराची, पृ. 175 3 फ्यूज़ुल हरमैन, मशहद 'मशहद आख़िर' यानी दक़ाइक़ और उनके असरात, मुहम्मद सईद एंड संस कराची, पृ. 280 और 281

(۶۸) شاہ ولی اللہ صاحب فیوض الحرمین میں لکھتے ہیں :

افاض علیّ من جناب المقدّس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کیفیۃ ترقی العبد من حیزہ الی حیز القدس فیتجلی لہ حینئذ کل شیئ کما اخبر عن ھذا المشھد فی قصۃ المعراج المنامی ۱۔

مجھ پر رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی بارگاہ سے فائض ہوا کہ بندہ کیونکر اپنی جگہ سے مقام مقدس تک ترقی کرتا ہے کہ ہر شے اس پر روشن ہو جاتی ہے جیسا کہ قصہ معراج کے واقعہ میں رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے اس مقام سے خبر دی۔

(۶۹) نیز اسی میں ہے :

العارف ینجذب الی حیز الحق فیصی عبداللہ فتجلی لہ کل شیئ ۲۔

عارف مقام حق تک کھنچ کر بارگاہ قرب میں ہوتا ہے تو ہر چیز اس پر روشن ہو جاتی ہے۔

(۷۰) اسی میں ولی فرد کے خصائص سے لکھا ہے کہ وہ تمام نشأۃ عنصری جسمانی پر مستولی ہوتا ہے، پھر لکھا کہ یہ استیلاء انبیاء علیہم الصلوٰۃ والسلام میں تو ظاہر ہے۔

واما فی غیر ھم فمناصب وراثۃ الانبیاء کالمجددیۃ و القطبیعیۃ وظھور آثارھا واحکامھا والبلوغ الی حقیقۃ کل علم وحال ۳۔

رہے غیر انبیاء، ان میں وراثت کے منصب ہیں جیسے مجدد و قطب ہونا۔ ان کے آثار و احکام کا ظاہر ہونا اور علم و حال کی حقیقت کو پہنچ جانا۔

(۷۱) اسی میں تقریر مذکور و تفصیل دقائق فرد کے بعد ہے :

بعد ذلك كله جبلت نفسه نفسًا قدسية لايشغلها شان عن شان ولايأتى عليه حال من الاحوال الى التجرد الى النطقة الكلية الا وهو خبير

اور اس سب کے بعد بات یہ ہے کہ مرد کا نفس اصل خلقت میں نفس قدسی بنایا جاتا ہے اسے ایک بات دوسری سے مشغول نہیں کرتی (یعنی یہ نہیں ہوتا کہ ایک دھیان میں اور طرف کا خیال نہ رہے بلکہ ہر جانب اس کی نگاہ ایک سی رہتی ہے)

---

۱ فیوض الحرمین مشہد اللہ تعالی مخلوق کی طرف کتاب نازل کرنے کے وقت کہا کرتا ہے، محمد سعید اینڈ سنز کراچی ص ۱۶۹ ۲ فیوض الحرمین مشہد قدّم صدق عند ربھم کی تفسیر محمد سعید اینڈ سنز کراچی ص ۱۷۵ ۳ فیوض الحرمین مشہد مشہد آخر یعنی دقائق اور ان کے اثرات محمد سعید اینڈ سنز کراچی ص ۲۸۰ و ۲۸۱

Volume 29 Fatawa Razawiyya

“...by it now, and what follows is a detail of the summary.”[1] And from now until the time he separates from everyone and meets the center of the world, meaning until the time of death, whatever state is to come upon him, he has news of all that at this time; what will come will only be the detail of the summary.

(72) Imam Qadi Iyad says in Shifa Sharif: “This is despite the fact that he (peace and blessings of Allah be upon him) did not write, but he was given knowledge of everything, even to the extent that narrations have come regarding his knowledge of the letters of calligraphy and the beauty of their forms, such as his saying: ‘Do not stretch (the letters of) Bismillahir Rahmanir Rahim’, narrated by Ibn Sha'ban through Ibn Abbas. And his saying in another Hadith narrated from Mu'awiya (may Allah be pleased with him) who was writing in front of him (the Prophet), peace and blessings of Allah be upon him, so he said to him: ‘Put wool in the inkwell, cut the pen diagonally, stand the 'Ba' (ب) of 'Bismillah' upright, keep the teeth (of the 'Seen' س) separate, do not make the 'Meem' (م) blind (keep its eye open), write 'Allah' beautifully, stretch 'Ar-Rahman' (write it with 'kashish'), and write 'Ar-Rahim' well.’”[2]

Meaning although the Noble Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) did not write, he was bestowed with knowledge of everything, to the extent that indeed Hadiths mention that the Prophet recognized the letters of writing and how they should be written to be beautiful. For instance, a Hadith narrated by Ibn Sha'ban from Abdullah ibn Abbas (may Allah be pleased with them) states that the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said: “Do not write Bismillah with a stretch (there should be teeth in the letter 'Seen', not just a straight line)”. Another Hadith (Musnad al-Firdous) narrated from Ameer Mu'awiya (may Allah be pleased with him) says that he was writing in front of the Prophet, and the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said to him: “Put wool in the inkwell, give the pen a diagonal cut, write the 'Ba' of 'Bismillah' upright, keep its (Seen's) teeth separate, and do not make the 'Meem' blind (let the whiteness of its eye remain open), and write the word 'Allah' beautifully, and let there be a stretch in the word 'Rahman' (Rahman or Rahman or Rahman or Rahman), and write the word 'Rahim' well.”

(73 & 74) Imam Sha'rani (may his secret be sanctified) in the book ‘Al-Jawahir wal-Durar’ and also in the book ‘Durrat al-Ghawwas’ from Sayyid Ali Khawwas...

[1] Fuyuz al-Haramayn, Mashhad Aakhir, Al-Ayni wa Daqa'iq and their effects, Muhammad Saeed & Sons, Karachi, 86-285 [2] Al-Shifa bi Huquq al-Mustafa, chapter on his clear miracles, Al-Matba'a al-Sharikat al-Sahafiya, 1/298 & 299

जिल्द 29 फ़तावा रज़विया

“...इसके द्वारा अभी, और जो आने वाला है वह संक्षेप का विवरण है।”[1] और अब से लेकर उस वक्त तक कि वह सबसे जुदा होकर मरकज़-ए-आलम (संसार के केंद्र) से जा मिलें यानी वफात (मृत्यु) के वक्त तक जो कुछ हाल उन पर आने वाला है, उस सबकी उन्हें इस वक्त खबर है; जो आएगा वह इज्माल (संक्षेप) का तफ्सील (विवरण) ही होगा।

(72) इमाम काज़ी अयाज़ शिफा शरीफ में फरमाते हैं: “यह इसके बावजूद है कि वह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) लिखते नहीं थे, लेकिन उन्हें हर चीज़ का इल्म अता किया गया था, यहाँ तक कि लिखावट के अक्षरों की पहचान और उनके सुंदर चित्रण के बारे में रिवायतें आई हैं, जैसे कि उनका कहना: ‘बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम को लंबा न खींचो’, जिसे इब्न शाबान ने इब्न अब्बास के माध्यम से रिवायत किया है। और दूसरी हदीस में उनका कहना जो अमीर मुआविया (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत है कि वह हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के सामने लिख रहे थे, तो हुज़ूर ने उनसे फरमाया: ‘दवात में ऊन डालो, कलम को तिरछा काटो, बिस्मिल्लाह की 'बा' (ب) को सीधा खड़ा लिखो, ('सीन' س के) दांतों को अलग रखो, 'मीम' (م) को अंधा न करो (उसका छेद खुला रहने दो), 'अल्लाह' शब्द को सुंदर लिखो, 'रहमान' में कशिश (लंबा खिंचाव) दो, और 'रहीम' शब्द अच्छा लिखो।”[2]

यानी हालाँकि नबी करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) लिखते न थे मगर हुज़ूर को हर चीज़ का इल्म अता हुआ था यहाँ तक कि बेशक हदीसें आती हैं कि हुज़ूर लिखावट के हुरूफ (अक्षर) पहचानते थे और यह कि किस तरह लिखे जाएं तो खूबसूरत होंगे, जैसे एक हदीस इब्न शाबान ने अब्दुल्लाह इब्न अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से रिवायत की कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया: “बिस्मिल्लाह कशिश से न लिखो (सीन में दंदाने हों निरा कशिश न हो)”। दूसरी हदीस (मुसनद अल-फिरदौस) में अमीर मुआविया (रज़ियल्लाहु अन्हु) से मरवी हुई कि यह हुज़ूर के सामने लिख रहे थे, नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने उनसे फरमाया कि: “दवात में सूफ (ऊन) डालो और कलम पर तिरछा क़त (कट) दो और बिस्मिल्लाह की 'ब' खड़ी लिखो और उसके दंदाने जुदा रखो और मीम अंधा न कर दो (उसके चश्मे की सफेदी खुली रहे) और लफ्ज़ 'अल्लाह' खूबसूरत लिखो और लफ्ज़ 'रहमान' में कशिश हो (रहमान या रहमान या रहमान या रहमान) और लफ्ज़ 'रहीम' अच्छा लिखो।”

(73 व 74) इमाम शेरानी (क़ुद्दिस सिर्रहु) किताब 'अल-जवाहर वल-दुरर' और किताब 'दुर्रतुल ग़व्वास' में सैयद अली ख़व्वास...

[1] फ़ुयूज़ अल-हरमैन, मशहद आख़िर, अल-अनी व दक़ा-इक़ और उनके प्रभाव, मुहम्मद सईद एंड संस, कराची, 86-285 [2] अल-शिफ़ा बि-हुक़ूक़ अल-मुस्तफ़ा, उनके स्पष्ट चमत्कारों का अध्याय, अल-मतबा अल-शरिकत अल-सहफिया, 1/298 और 299

بھا الآن وانما الآتی تفصیل لاجمال ۸1- اور اب سے لے کر اس وقت تک کہ وہ سب سے جدا ہو کر مرکز عالم سے جاملے یعنی وقت وفات تک جو کچھ حال اس پر آنے والا ہے اس سب کی اس وقت اسے خبر ہے، وہ جو آئے گا اجمال کی تفصیل ہی ہوگا۔

(۷۲) امام قاضی عیاض شفا شریف میں فرماتے ہیں: ہذا مع انہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کان لا یکتب و لکنہ اوتی علم کل شیئ حتی قد وردت آثار بمعرفتہ حروف الخط و حسن تصویرہا کقولہ لا تمدوا بسم اللہ الرحمن الرحیم رواہ ابن شعبان من طریق ابن عباس و قولہ الحدیث الآخر الذی روی عن معویۃ رضی اللہ تعالیٰ عنہ انہ کان یکتب بین یدیہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فقال لہ الق الدواۃ و حرف القلم واقم الباء و فرق السین و لا تعور المیم وحسن اللہ و مد الرحمن وجود الرحیم ۸2-

یعنی حالانکہ نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم لکھتے نہ تھے مگر حضور کو ہر چیز کا علم عطا ہوا تھا یہاں تک کہ بے شک حدیثیں آتی ہیں کہ حضور کتابت کے حروف پہچانتے تھے اور یہ کہ کس طرح لکھے جائیں تو خوبصورت ہوں گے، جیسے ایک حدیث ابن شعبان نے عبداللہ ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کی کہ نبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: بسم اللہ کشش سے نہ لکھو (سین میں دندانے ہوں نری کشش نہ ہو) دوسری حدیث (مسند الفردوس) میں امیر معاویہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی ہوئی کہ یہ حضور کے سامنے لکھ رہے تھے نبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے ان سے فرمایا کہ دوات میں صوف ڈالو اور قلم پر ترچھا قط دو اور بسم اللہ کی ب کھڑی لکھو اور اس کے دندانے جدا رکھو اور میم اندھا نہ کردو (اس کے چشمہ کی سفیدی کھلی رہے) اور لفظ اللہ خوبصورت لکھو اور لفظ رحمن میں کشش ہو (رحمٰن یا رحمن یا رحمن یا رحمن) اور لفظ رحیم اچھا لکھو۔

(۷۳ و ۷۴) امام شعرانی قدس سرہ کتاب الجواہر والدرر نیز کتاب درۃ الغواص میں سید علی خواص

[1] فیوض الحرمین مشہد آخر العینی و دقائق اور ان کے اثرات محمد سعید اینڈ سنز کراچی

[2] الشفاء بحقوق المصطفی فصل و من معجزاتہ الباہرۃ المطبعۃ الشرکۃ الصحافیۃ ۱/ ۲۹۸-۲۸۵ و ۲۹۹

Fatawa Razawiyya Volume 29

Transmitted from him, may Allah be pleased with him:

[Arabic Column]: Muhammad (peace and blessings of Allah be upon him) is the First, the Last, the Manifest, and the Hidden. During his Night Journey (Isra), he entered the celestial realm, which begins at the center of the earth and ends at the worldly sky, with all its laws and associations. Then he entered the Barzakh until its end, which is the seventh heaven. Then he entered the knowledge of the Throne ('Arsh) into that which has no end. Thus, the images of the divine and cosmic realms were revealed within his barzakh state.

[Urdu Column]: Muhammad (peace and blessings of Allah be upon him) is the First, the Last, the Manifest, and the Hidden. On the night of Mi'raj, he traveled from the center of the earth to the sky and learned all the commands and relations of this world. Then from the sky to the Throne and from the Throne to infinity, and in the presence of his barzakh, all the forms of the upper and lower worlds were revealed.

1. Excerpted.

(75) In Tafsir Kabir, under the noble verse: "And thus We showed Ibrahim the kingdom of the heavens and the earth" (6:75). (And in the same way, We show Abraham all the kingdom of the heavens and the earth. T) it is stated:

[Arabic Column]: Gaining insight into the traces of Allah's wisdom in every single one of the creations of this world according to their genera, species, categories, individuals, and states is something that is not achieved except by the great ones among the Prophets (peace be upon them). For this reason, our Messenger (peace and blessings of Allah be upon him) used to say in supplication: "O Allah! Show us things as they [truly] are."

[Urdu Column]: In all the genera, species, categories, individuals, and bodies of every creation of this world, the awareness of the traces of divine wisdom is granted to those great ones who are Prophets (peace be upon them). That is why the Master of the Universe (peace and blessings of Allah be upon him) prayed: "O Allah! Show us all things as they are."

I say (Aqool): The intent here is that according to this Imam of the Ahl al-Sunnah, the noble Prophets (peace be upon them) have detailed knowledge of the genus, species,

category, individual, and body of every single atom of the creations of this world and the wisdom of Allah within them.

1. Al-Jawahir wal-Durar on the margins of Al-Ibriz, Mustafa al-Babi, Egypt, pp. 211-213.
2. Holy Quran 6/75.
3. Mafatih al-Ghayb (Tafsir al-Kabir) under verse 6/75, Al-Matba'ah al-Bahiyyah al-Misriyyah, Egypt, 13/45.

फ़तावा रज़विया खंड 29

उनसे उद्धृत है, अल्लाह उन पर प्रसन्न हो:

[अरबी कॉलम]: मुहम्मद (अल्लाह उन पर कृपा और शांति बरसाए) ही प्रथम, अंतिम, प्रकट और गुप्त हैं। मेराज की रात वे पृथ्वी के केंद्र से आकाश तक गए और इस दुनिया के सभी नियमों और संबंधों को जान लिया। फिर आकाश से बरज़ख तक और अंत में सातवें आसमान तक गए। फिर उन्होंने अर्श (सिंहासन) के ज्ञान में प्रवेश किया जिसकी कोई सीमा नहीं है। इस प्रकार, उनकी बरज़ख अवस्था में दिव्य और ब्रह्मांडीय लोकों के रूप प्रकट हो गए।

[उर्दू कॉलम]: मुहम्मद (अल्लाह उन पर कृपा और शांति बरसाए) ही प्रथम, अंतिम, प्रकट और गुप्त हैं। मेराज की रात वे पृथ्वी के केंद्र से आकाश तक तशरीफ़ ले गए और इस दुनिया के सभी नियमों और संबंधों को जान लिया। फिर आकाश से अर्श और अर्श से अनंत तक गए, और हुज़ूर के बरज़ख में ऊपरी और निचले लोकों के सभी रूप प्रकट हो गए।

1. उद्धृत (मुल्तक़तन)।

(75) तफ़सीर कबीर में इस आयत के तहत: "और इसी तरह हम इब्राहीम को आकाशों और पृथ्वी का साम्राज्य दिखाते हैं" (6:75)। (और उसी तरह हम इब्राहिम को आसमानों और ज़मीन की सारी बादशाही दिखाते हैं। त) फ़रमाया:

[अरबी कॉलम]: इस संसार की प्रत्येक रचना के गुणों, प्रजातियों, श्रेणियों, व्यक्तियों और स्थितियों में अल्लाह की बुद्धिमत्ता के निशानों की जानकारी प्राप्त करना केवल महान पैगंबरों (उन पर शांति हो) के लिए ही संभव है। इसी कारण हमारे रसूल (अल्लाह उन पर कृपा और शांति बरसाए) अपनी दुआ में कहते थे: "हे अल्लाह! हमें चीजों को उनके वास्तविक स्वरूप में दिखा।"

[उर्दू कॉलम]: इस दुनिया की तमाम जिन्सों, किस्मों, श्रेणियों, व्यक्तियों और जिस्मों की हर-हर मखलूक में हिकमत-ए-इलाहिया के निशानों की जानकारी उन पैग़म्बरों (अलैहिमुस्सलाम) को होती है जो महान हैं। इसीलिए हुज़ूर सैय्यद-ए-आलम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने दुआ फ़रमाई कि: "ऐ इलाही! हमें तमाम चीज़ें वैसी ही दिखा जैसी वे हैं।"

मैं कहता हूँ (अक़ूल): यहाँ उद्देश्य यह है कि इन इमाम-ए-अहले सुन्नत के नज़दीक, अंबिया-ए-किराम (अलैहिमुस्सलाम) को इस दुनिया की तमाम मख़्लूक़ात के एक-एक ज़र्रे की जिन्स, नौअ (प्रजाति), सिन्फ़ (श्रेणी), शख़्स, जिस्म और उन सब में अल्लाह की हिकमतों (बुद्धिमत्ता) की विस्तृत जानकारी होती है।

1. अल-जवाहर वल-दुरर, हाशियतुल इब्रीज़, मुस्तफ़ा अल-बाबी, मिस्र, पृ. 211-213
2. अल-कुरान अल-करीम 6/75
3. मफ़ातीह अल-ग़ैब (तफ़सीर अल-कबीर) आयत 6/75 के तहत, अल-मतबा अल-बहिय्या अल-मिस्रिया, मिस्र, 13/45

पृष्ठ 750 का 461

فتاوٰی رضویہ جلد ۲۹

رضی اللہ تعالٰی عنہ سے ناقل:

[عربی کالم]: محمد صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فھو الاول والاخر و الظاھر والباطن و قد ولج حین اسری بہ عالم السماء الذی اولھا مرکز الارض واخرھا السماء الدنیا بجمیع احکامھا و تعلقاتھا ثم ولج البرزخ الی انتھائہ وھو السماء السابعۃ ثم ولج علم العرش الی مالا نھایۃ الیہ وانفتح فی برزخیتہ تصور العوالم الالھیۃ والکونیۃ اھ

[اردو کالم]: محمد صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم ہی اول و آخر و ظاہر و باطن ہیں وہ شب معراج مرکز زمین سے آسمان تک تشریف لے گئے اور اس عالم کے جملہ احکام اور تعلقات جان لیے پھر آسمان سے عرش اور عرش سے لانہایت تک اور حضور کے برزخ میں تمام عالم علوی و سفلی کی صورتیں منکشف ہوگئیں۔

1 ملتقطاً۔

(۷۵) تفسیر کبیر میں زیرِ آیہ کریمہ: "وَكَذَٰلِكَ نُرِي إِبْرَاهِيمَ مَلَكُوتَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ" 2۔ (اور اسی طرح ہم ابراہیم کو دکھاتے ہیں ساری بادشاہی آسمانوں اور زمین کی۔ ت) فرمایا:

[عربی کالم]: الاطلاع علی آثار حکمۃ اللہ تعالٰی فی کل واحد من مخلوقات ھذا العالم بحسب اجناسھا وانواعھا و اصنافھا واشخاصھا و احوالھا مما لا یحصل الاللا کابر من الانبیاء علیھم الصلوۃ والسلام ولھذا المعنی کان رسولنا صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم یقول فی دعاء اللھم ارنا الاشیاء کما ہی 3۔

[اردو کالم]: اس عالم کی تمام جنسوں اور نوعوں اور صنفوں اور شخصوں اور جرموں ہر ہر مخلوق میں حکمت الہیہ کے آثار پر انہیں اکابر کو اطلاع ہوتی ہے جو انبیاء ہیں علیہم الصلوۃ

والسلام اسی لیے حضور سید عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے دعا فرمائی کہ الہی! ہم کو تمام چیزیں جیسی وہ ہیں دکھادے اھ

اقول: یہاں مقصود اس قدر ہے کہ ان امام اہلسنت کے نزدیک انبیاء کرام علیہم الصلوۃ والسلام اس عالم کی تمام مخلوقات کے ایک ایک ذرہ کی جنس، نوع، صنف، شخص، جسم اور ان سب میں اللہ کی حکمتیں بالتفصیل

1 الجواهر والدرر على هامش الابريز مصطفى البابى مصر ص ۲۱۱ تا ۲۱۳ 2 القرآن الكريم ۶/ ۷۵ 3 مفاتيح الغيب (التفسير الكبير) تحت آية ۶/ ۷۵ المطبعة البهيته المصرية مصر ۱۳/ ۴۵

Fatawa Razawiyya Volume 29

...know that for the Wahhabis, being a disbeliever (Kafir) and polytheist (Mushrik) is enough for this, rather, according to them, the praised Imam should be called much more than a Kafir and Mushrik. Gangohi Sahab said only this much that wherever a Mawlid assembly is held in the world, the Noble Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him) should be informed; he considered the knowledge of the earth to be encompassing and clearly labeled it as Shirk, saying if this is not Shirk, then what part of faith is it?[1] So the Imam, who considers not just the earth, but the knowledge of the earth and heavens, the floor and the throne, and all the genera, species, individuals, and celestial bodies of the entire universe to be encompassing not only for the Leader of the Messengers (may Allah's peace and blessings be upon him) but also for the noble Prophets (peace be upon them); in Gangohi's religion, he should be a double Kafir many lakhs of times over, and refuge is sought with Allah Almighty. Otherwise, the reality is that essentially having knowledge of the unseen and through bestowed vicariousness, even for their servants among the prominent saints (may Allah be pleased with them), being granted detailed knowledge of every single atom of the universe is by no means prohibited; rather, it has occurred by the explicit statement of the saints, as is coming soon, and praise be to Allah. (76) This same subject is in the commentary of Tafsir al-Naysaburi in these words: [Arabic Table Content] Left side: Al-Ittila' 'ala tafasil athar hikmat Allah Ta'ala fi kulli ahadin min makhluqat hadhihi al-'awalim bi-hasabi ajnasiha wa-anwa'iha wa-asnafiha wa-ashkhasiha wa-'awaridiha wa-lawahiqiha kama hiya la tahsulu illa li-akabir al-anbiya' wa-li-hadha qala salla Allahu Ta'ala 'alayhi wa-sallam fi du'a'ihi arini al-ashya'a kama hiya.[2] Right side: Being informed about the details of all the effects of Divine wisdom in each of the creations of these worlds according to their genera, types, categories, and individuals, as well as their actual accidents and consequences, is not attained by anyone except the great Prophets. This is why the Holy Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him) requested in prayer: "Show me the realities of things." (T)

In this, "details" (tafasil) is added along with the "effects of Allah's wisdom". Instead of "this world", it says "these worlds", which indicates more towards a detailed view, and along with genera, types, categories, and individuals, accidents and consequences are also mentioned so that it is more explicit in encompassing all substances and accidents, even if the genera of the world...

[1] Al-Barahin al-Qati'ah, discussion on knowledge of the unseen, Balasa Press, Dhore, p. 51. [2] Gharaib al-Quran (Tafsir al-Naysaburi), Ayah 2/57, Mustafa al-Babi, Egypt, 1/121.

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

...जानते हैं, वहाबियों के नज़दीक काफ़िर और मुशरिक होने के लिए यही काफ़ी है, बल्कि उनके नज़दीक प्रशंसित इमाम को काफ़िर और मुशरिक से बहुत बढ़कर कहना चाहिए। गंगोही साहब ने सिर्फ़ इतनी बात कही कि दुनिया में जहाँ कहीं भी मिलाद की महफ़िल हो, हुज़ूर अकदस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को इत्तिला हो जाए, उन्होंने ज़मीन के इल्म को मुहीत (घेरने वाला) माना और साफ़ शिर्क का हुक्म जड़ दिया कि अगर यह शिर्क नहीं है तो ईमान का कौन सा हिस्सा है?[1] तो इमाम जो न सिर्फ़ ज़मीन बल्कि ज़मीन व आसमान, फर्श व अर्श और तमाम आलम के तमाम अजनास (लिंग/श्रेणी), असनाफ़ (प्रकार), अश्ख़ास (व्यक्ति) और अजराम (पिंडों) के इल्म को न सिर्फ़ हुज़ूर सैयदुल मुर्सलीन (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) बल्कि उन अंबिया किराम (अलैहिमुस्सलाम) के लिए भी मुहीत मानते हैं, गंगोही मज़हब में उन्हें तो कई लाख गुना डबल काफ़िर होना चाहिए, वल-इयाज़ु बिल्लाह तआला। वरना असल बात यह है कि असलातन (वास्तविक रूप से) इल्म-ए-ग़ैब और अता-ए-नियाबत (प्रतिनिधित्व के तौर पर प्रदान किया गया) से उनके ख़ुद्दाम और बड़े औलिया किराम (रज़ियल्लाहु अन्हुम) को भी आलम के एक-एक ज़र्रे का तफ़सीली इल्म अता होना हरगिज़ मना नहीं है, बल्कि औलिया के स्पष्ट विवरण के अनुसार ऐसा हुआ है, जैसा कि जल्द ही आने वाला है, वलिल्लाहिल हम्द। (७६) यही विषय तफ़सीर अल-नैसापुरी में इन शब्दों में है: [अरबी और उर्दू सारिणी] बायां हिस्सा: अल-इत्तिला अला तफ़ासील आसार-ए-हिकमतुल्लाह तआला फ़ी कुल्लि अहदिन मिन मख्लूक़ात हाज़िहिल अवालिम बि-हसबि अजनासिहा व अनवाइहा व असनाफ़िहा व अश्ख़ासिहा व अवारिज़िहा व लवाहिक़िहा कमा हिया ला तह्सुलु इल्ला लि-अकाबिरिल अंबियाइ वलिहाज़ा काला सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फ़ी दुआइहि अरिनिल अशिया-अ कमा हिया।[2] दायां हिस्सा: इन आलमों की मख़लूक़ात में से हर एक के तमाम आसार-ए-हिकमत-ए-इलाहिया पर उनकी जिंसों, प्रकारों, श्रेणियों और व्यक्तियों, तथा उनके वास्तविक गुणों और लक्षणों से अवगत होना बड़े नबियों के अलावा किसी को हासिल नहीं होता। इसी वजह से नबी करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने दुआ में अर्ज़ किया कि "मुझे चीज़ों की हकीकतें दिखा।" (त)

इसमें "आसार-ए-हिकमतुल्लाह" के साथ "तफ़ासील" (विवरण) बढ़ा हुआ है। "हाज़ल आलम" की जगह "हाज़िहिल अवालिम" है जो तफ़सीली नज़र पर ज़्यादा दलालत करता है, और अजनास, अनवा, असनाफ़ और अश्ख़ास के साथ अवारिज़ और लवाहिक़ का भी ज़िक्र है ताकि तमाम जोहरों और अवारिज़ (गुणों) को घेरने में बात और स्पष्ट हो जाए, हालाँकि आलम की जिंसों...

[1] अल-बराहीन अल-कातिआ, इल्म-ए-ग़ैब पर चर्चा, प्रेस बलसा, ढोर, पृष्ठ 51। [2] ग़राइब अल-क़ुरान (तफ़सीर अल-नैसापुरी), आयत 2/57, मुस्तफ़ा अल-बाबी, मिस्र, 1/121।

पृष्ठ 750 में से 462

جانتے ہیں، وہابیہ کے نزدیک کافر و مشرک ہونے کو یہی بہت ہے، بلکہ ان کے نزدیک امام ممدوح کو کافر و مشرک سے بہت بڑھ کر کہنا چاہیے۔ گنگوہی صاحب نے صرف اتنی بات کہی کہ دنیا میں جہاں کہیں مجلس میلاد ہو حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کو اطلاع ہو جائے، زمین کا علم محیط مانا اور صاف حکم شرک جڑ دیا کہ شرک نہیں تو کون سا حصہ ایمان کا ہے ۱۔ تو امام کہ صرف زمین در کنار، زمین وآسمان و فرش و عرش و تمام عالم کے جملہ اجناس و اصناف و اشخاص و اجرام کو نہ صرف حضور سید المرسلین صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم بلکہ وہ انبیاء کرام علیہم الصلوۃ والسلام کا بھی علم محیط مانتے ہیں گنگوہی دھرم میں ان کو تو کئی لاکھ درجے ڈبل کافر ہونا چاہیے والعیاذ باللہ تعالیٰ ورنہ اصل بات یہ ہے کہ اصالۃً علوم غیب اور ان کے عطاء نیابت سے ان کے خدام اکابر اولیائے کرام رضی اللہ تعالیٰ عنہم کو بھی ایک ایک ذرہ عالم کا تفصیلی علم عطا ہونا ہرگز ممنوع نہیں بلکہ بتصریح اولیاء واقع ہے، جیسا کہ عنقریب آتا ہے وللہ الحمد۔ (۷۶) یہی مضمون شریف تفسیر نیشاپوری میں بائیں عبارت ہے:

الاطلاع علی تفاصیل آثار حکمۃ اللہ تعالی فی کل احد من مخلوقات ھذہ العوالم بحسب اجناسھا وانواعھا واصنافھا واشخاصھا وعوارضھا ولواحقھا کما ھی لا تحصل الا لاکابر الانبیاء و لھذا قال صلی اللہ تعالی علیہ وسلم فی دعائہ ارنی الاشیاء کما ھی۲۔

ان عالموں کی مخلوقات میں سے ہر ایک کے تمام آثار حکمت الہیہ پر انکی جنسوں ، نوعوں ، قسموں اور فردوں ، نیز عوارض و لواحق حقیقہ پر مطلع ہونا اکابر انبیاء کے علاوہ کسی کو

حاصل نہیں ہوتا۔ اسی وجہ سے نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے دعا میں عرض کیا کہ مجھے اشیاء کی حقیقتیں دکھا۔ (ت)

اس میں آثار حکمۃ اللہ کے ساتھ تفاصیل زائد ہے۔ ھذا العالم کی جگہ ھذہ العوالم ہے کہ نظر تفصیلی پر زیادہ دلالت کرتا ہے اور اجناس و انواع و اصناف و اشخاص کے ساتھ عوارض و لواحق بھی مذکور ہے کہ احاطہ جملہ جواہر و اعراض میں تصریح تر ہو ، اگرچہ اجناس عالم

۱ البراھین القاطعۃ بحث علم غیب مطبع بلسا واقع ڈھور ص ۵۱ ۲ غرائب القرآن (تفسیر النیسابوری) آیت ۲/۵۷ مصطفی البابی مصر ۱/۱۲۱

...ailments were also included, then the word 'Kama Hi' (as it is) was further added to emphasize that the correctness of knowledge is unmixed with error and illusion (free from the impurity of mistake and whim. -T). May Allah Almighty reward them with the best reward, Ameen.

(77) In Nishapuri, under the blessed verse "And [We will] bring you, [O Muhammad], as a witness over these [people]"[1] (And O Beloved! We will bring you as a witness and guardian over all of them. -T), it is stated:

[Table Content] Left: Because his soul, peace and blessings of Allah be upon him, is a witness over all souls, hearts, and selves because of his saying, peace and blessings of Allah be upon him: "The first thing Allah created was my soul."[2]

Right: This is what the Lord Almighty said to His beloved, peace and blessings of Allah be upon him, that 'We will bring you as a witness over all of them'. The reason for this is that the noble soul of the Holy Prophet, peace and blessings of Allah be upon him, observes every soul, every heart, and every self in the entire world. (No soul, no heart, no self is hidden from his merciful sight, hence they will be brought as a witness over all, for a witness must have observation). This is because the Prophet, peace and blessings of Allah be upon him, said: "Allah first created my noble soul" (so whatever happened in the universe happened in front of him).

(78) Hafiz al-Hadith Sayyidi Ahmad Suljamasi (may Allah sanctify his secret) narrates from his noble Sheikh Hazrat Sayyidi Abdul Aziz bin Mas'ood Dabbagh (may Allah be pleased with him) in the blessed book 'Ibreez' regarding the verse "And He taught Adam the names - all of them"[3] (And Allah taught Adam, peace be upon him, the names of all things. -T):

[Table Content] Left: What is meant by 'names' are the 'High Names' (al-Asma al-Aliya), not the 'Lower Names' (al-Asma al-Nazila), for every creature has a high name and a lower name. The lower name is that which gives a general awareness of the named thing, while the high name is that which...

Right: The summary of this luminous discourse and divine notification, which is faith-igniting and infidelity-destroying, is that every thing has two names: celestial (Alawi) and terrestrial (Sufli). The terrestrial name only provides a kind of awareness of the named. And upon hearing the celestial name, it becomes known...

[1] Al-Quran al-Kareem 4/41 [2] Ghara'ib al-Quran [3] Al-Quran al-Kareem 2/31

...व्याधियां भी शामिल थीं, फिर उनके साथ 'कमा ही' (जैसा कि वह है) शब्द और अधिक जोड़ा गया है ताकि ज्ञान की शुद्धता जो त्रुटि और भ्रम से रहित है (गलती और वहम की मिलावट से पाक। -त) पर जोर दिया जा सके। अल्लाह तआला उन्हें बेहतरीन बदला दे, आमीन।

(77) निशापूरी में आयत "व जिअना बिका अला हाऊला-इ शहीदा"[1] (और ऐ महबूब! हम तुम्हें इन सब पर गवाह और निगहबान बना कर लाएंगे। -त) के तहत फ़रमाया:

[तालिका सामग्री] बायां: क्योंकि आपकी रूह (आत्मा) सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम तमाम रूहों, दिलों और नफ्सों पर गवाह है, क्योंकि आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का फरमान है: "अल्लाह ने सबसे पहले मेरी रूह को पैदा किया।"[2]

दायां: यह जो रब अज़्ज़ व जल्ल ने अपने हबीब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से फ़रमाया कि हम तुम्हें इन सब पर गवाह बना कर लाएंगे, इसकी वजह यह है कि हुज़ूर अकदस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रूह-ए-अनवर तमाम जहान में हर एक की रूह, हर एक के दिल, हर एक के नफ्स का मुशाहदा (अवलोकन) फ़रमाती है। (कोई रूह, कोई दिल, कोई नफ्स उनकी नज़रे करम से ओझल नहीं है, जब तो सब पर गवाह बना कर लाए जाएंगे, क्योंकि गवाह के लिए मुशाहदा ज़रूरी है)। इसलिए कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "अल्लाह तआला ने सबसे पहले मेरी रूह-ए-करीम को पैदा किया" (तो आलम में जो कुछ हुआ हुज़ूर के सामने ही हुआ)।

(78) हाफ़िज़ुल हदीस सैयदी अहमद सलजमासी (अल्लाह उनके राज़ को पवित्र करे), अपने शैख़-ए-करीम हज़रत सैयदी अब्दुल अज़ीज़ बिन मसूद दब्बाग़ (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) से किताब 'इब्रीज़' में रिवायत करते हैं कि उन्होंने आयत "व अल्लामा आदमल अस्मा-अ कुल्लहा"[3] (और अल्लाह तआला ने आदम अलैहिस्सलाम को तमाम चीज़ों के नाम सिखाए। -त) के मुताल्लिक फ़रमाया:

[तालिका सामग्री] बायां: 'नामों' से मुराद 'आलिया' (उच्च) नाम हैं न कि 'नाज़िला' (निम्न) नाम, क्योंकि हर मख़लूक (रचना) के दो नाम हैं, एक आलिया और एक नाज़िला। पस नाज़िला नाम वह है जो मूसम्मी (नामित वस्तु) के बारे में संक्षिप्त जानकारी देता है, और आलिया नाम वह है जो...

दायां: इस रूहानी कलाम और ईश्वरीय सूचना, जो ईमान को रोशन करने वाली और कुफ़्र को मिटाने वाली है, का सारांश यह है कि हर चीज़ के दो नाम हैं: अलवी (आकाशीय) और सुफ़ली (सांसारिक)।

सुफ़ली नाम तो केवल नामित वस्तु के बारे में कुछ जानकारी देता है। और अलवी नाम सुनते ही यह मालूम हो जाता है...

[1] अल-क़ुरान अल-करीम 4/41 [2] ग़राइबुल क़ुरान [3] अल-क़ुरान अल-करीम 2/31

पेज 750 का 463

میں عوارض بھی داخل تھے پھر ان کے ساتھ کما ھی کا لفظ اور زیادہ ہے کہ صحت علم غیر مشوب بالخطاء والوھم (غلطی اور وہم کی آلائش سے پاک۔ ت) کی تاکید ہو، فجزاھم اللہ تعالٰی خیر جزا آمین۔

(۷۷) نیشاپوری میں زیر آیہ کریمہ "وَجِئْنَا بِكَ عَلَى هٰؤُلَاءِ شَهِيدًا" ۱ (اور اے محبوب تمہیں ان سب پر گواہ اور نگہبان بنا کر لائیں گے۔ ت) فرمایا:

لان روحه صلی اللہ تعالٰی علیه وسلم شاہد علی جمیع الارواح والقلوب والنفوس لقوله صلی اللہ تعالٰی علیه وسلم اول ما خلق اللہ روحی ۲۔ یہ جو رب عز و جل نے اپنے حبیب صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم سے فرمایا کہ ہم تمہیں ان سب پر گواہ بنا کر لائیں گے اس کی وجہ یہ ہے کہ حضور اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کی روح انور تمام جہان میں ہر ایک کی روح، ہر ایک کے دل، ہر ایک کے نفس کا مشاہدہ فرماتی ہے۔ (کوئی روح، کوئی دل، کوئی نفس ان کی نظر کرم سے اوجھل نہیں جب تو سب پر گواہ بنا کر لائے جائیں گے کہ شاہد کو مشاہدہ ضرور ہے) اس لیے کہ حضور صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے فرمایا سب سے پہلے اللہ تعالٰی نے میری روحِ کریم کو پیدا کیا (تو عالم میں جو کچھ ہوا حضور کے سامنے ہی ہوا)

(۷۸) حافظ الحدیث سیدی احمد سلجماسی قدس سرہ، اپنے شیخ کریم حضرت سیدی عبدالعزیز بن مسعود دباغ رضی اللہ تعالٰی عنہ سے کتاب مستطاب ابریز میں روایت فرماتے ہیں کہ انہوں نے آیہ کریمہ "وَعَلَّمَ آدَمَ الْأَسْمَاءَ كُلَّهَا" ۳۔ (اور اللہ تعالٰی نے آدم علیہ السلام کو تمام اشیاء کے نام سکھائے۔ ت) کے متعلق فرمایا:

المراد بالاسماء الاسماء العالية لا الاسماء النازلة فان کل مخلوق لہ اسم عال واسم نازل فالاسم النازل هو الذی یشعر بالمسمی فی الجملة والاسم العالی هو الذی اس کلام نورانی و اعلام ربانی ایمان افروز، کفران سوز کا خلاصہ یہ ہے کہ ہر چیز کے دو نام ہیں علوی و سفلی، سفلی نام تو صرف مسمّی سے ایک گونہ آگاہی دیتا ہے۔ اور علوی نام سنتے ہی یہ معلوم ہو جاتا ہے

۱ القرآن الکریم ۴/۴۱ ۲ غرائب القرآن ۳ القرآن الکریم ۲/۳۱

It signifies the essence of the named entity, what it is made of, the purpose of the named entity, and what uses an axe (as an example) serves among all things it is used for, and the method of the blacksmith's craft for it. Thus, just by hearing its name, these sciences and pieces of knowledge related to the axe are known. Similarly, this applies to every creature. The meaning of Allah's words "all the names" refers to names that Adam could comprehend and which all humans need, beginning with those that concern them first. These include every creature from beneath the Throne to beneath the Earth. This encompasses Paradise, Hell, the seven heavens, and everything within them, between them, between heaven and earth, and everything on earth including plains, deserts, valleys, seas, and trees. Thus, for every creature, whether articulate or inanimate, Adam (A.S.) knew through its name those three matters: its origin, its purpose, and its orderly arrangement and form. For instance, from the name "Paradise," he knew its origin, why it was created, the arrangement of its ranks, all the houris within it, and the number of inhabitants after the Resurrection. Similarly, from the word "Hell," he knew the same. From the word "Heaven," he knew its origin, why the first heaven is in its place and the second in its, and so on for every heaven. From the word "Angels," he knew what they were created from, why they were created, the manner of their creation, the arrangement of their ranks, and what deeds made them deserving of their respective positions. Similarly, for every angel from the Throne to the lowest earth, their state and...

यह नामांकित वस्तु के सार को सूचित करता है, वह किस चीज़ से बनी है, नामांकित वस्तु का लाभ क्या है, और कुल्हाड़ी (एक उदाहरण के रूप में) उन सभी चीज़ों में से किस काम आती है जिनके लिए इसका उपयोग किया जाता है, और लोहार की इसे बनाने की कला की विधि। इस प्रकार, केवल इसका नाम सुनने से, कुल्हाड़ी से संबंधित ये विज्ञान और ज्ञान ज्ञात हो जाते हैं। इसी तरह, प्रत्येक प्राणी के लिए भी यही है। अल्लाह के शब्दों "सभी नाम" का अर्थ उन नामों से है जिन्हें आदम समझ सकते थे और जिनकी सभी मनुष्यों को आवश्यकता है, जो सबसे पहले उनसे संबंधित हैं। इनमें अर्श (सिंहासन) के नीचे से लेकर पृथ्वी के नीचे तक के प्रत्येक प्राणी शामिल हैं। इसमें स्वर्ग, नर्क, सातों आसमान और उनके भीतर की सभी चीज़ें, उनके बीच की चीज़ें, आसमान और ज़मीन के बीच की चीज़ें, और ज़मीन पर मौजूद मैदान, मरुस्थल, घाटियाँ, समुद्र और पेड़ शामिल हैं। इस प्रकार, प्रत्येक प्राणी के लिए, चाहे वह सजीव हो या निर्जीव, आदम (अ.स.) ने उसके नाम के माध्यम से उन तीन बातों को जान लिया: उसका मूल, उसका लाभ, और उसकी व्यवस्था और रूप। उदाहरण के लिए, "जन्नत" (स्वर्ग) नाम से उन्होंने जान लिया कि वह कहाँ से बनी है, किस लिए बनी है, उसके दर्जों की व्यवस्था क्या है, उसमें कितनी हूरें हैं, और प्रलय के बाद कितने लोग उसमें आएंगे। इसी तरह, "नार" (नर्क) शब्द से भी उन्होंने यही जाना। "आसमान" शब्द से उन्होंने उसका मूल जाना, पहला आसमान अपनी जगह क्यों है और दूसरा अपनी जगह क्यों, और इसी तरह हर आसमान के बारे में। "फ़रिश्ते" शब्द से उन्होंने जान लिया कि वे किस चीज़ से बने हैं, किस लिए बने हैं, उनके निर्माण की विधि, उनके दर्जों की व्यवस्था, और किस वजह से वह फ़रिश्ता उस स्थान का पात्र हुआ। इसी तरह, अर्श से लेकर ज़मीन के नीचे तक हर फ़रिश्ते का हाल और...

يشعر باصل المسّمى ومن ایّ شیئ هو وبفائدة المسّمى ولاي شیئ یصلح الفاس من سائر ما یستعمل فیه وکیفیة صنعة الحداد له فیعلم من مجرد سماع لفظه وهذ ه العلوم والمعارف المتعلّقة بالفاس وهکذا کل مخلوق، والمراد بقوله تعالی الاسماء کلّها الاسماء التی یطیقها آدم ویحتاج الیها سائر البشر اولهم بها تعلق وهی من کل مخلوق تحت العرش الی ماتحت الارض فیدخل فی ذلك الجنّة والنار والسموات السبع وما فیهن وما بینهن وما بین السماء والارض وما فی الارض من البراری والقفار والاودیة والبحار والاشجار فکل مخلوق فی ذلك ناطق او جامد آلآو آدم یعرف من اسمه تلك الامور الثلثة اصله وفائدته وکیفیة ترتیبه ووضع شکله فیعلم من اسم الجنّة من این خلقت ولایّ شیئ خلقت وترتیب مراتبها وجمیع ما فیها من الحور وعدد من یسکنها بعد البعث ویعلم من لفظ النار مثل ذلك ویعلم من لفظ السماء مثل ذلك ولایّ شیئ کانت الاولی فی محلّها والثانیة وهکذا فی کل سماء ویعلم من لفظ الملئکة من ایّ شیئ خلقوا ولایّ شیئ خلقوا وکیفیة خلقهم وترتیب مراتبهم وبأیّ شیئ استحق

کہ مُسمّیٰ کی حقیقت وماہیت کیا ہے اور کیونکر پیدا ہوا اور کاہے سے بنا اور کس لیے بنا، آدم علیہ الصلوۃ والسلام کو تمام اشیاء کے یہ علوی نام تعلیم فرمائے گئے جس سے انہوں نے حسبِ طاقت وحاجتِ بشری تمام اشیاء جان لیں اور یہ زیرِ عرش سے زیرِ فرش تک کی تمام چیزیں ہیں جس میں جنت و دوزخ و ہفت آسمان اور جو کچھ ان میں ہے اور جو کچھ ان کے درمیان ہے اور جو کچھ آسمان و زمین کے درمیان ہے اور جو کچھ زمین میں ہے اور جنگل اور صحرا اور نالے اور دریا اور درخت وغیرہ جو کچھ زمین میں ہے غرض یہ تمام مخلوقات ناطق و غیر ناطق ان کے صرف نام سننے سے آدم علیہ الصلوۃ والسلام کو معلوم ہو گیا کہ عرش سے فرش تک ہر شے کی حقیقت یہ ہے اور فائدہ یہ ہے اور اس ترتیب سے اس شکل پر ہے۔ جنت کا نام سنتے ہی انہوں نے جان لیا

کہ کہاں سے بنی اور کس لیے بنی اور اس کے مرتبوں کی ترتیب کیا ہے اور جس قدر اس میں حوریں ہیں اور قیامت کے بعد اتنے لوگ اس میں آجائیں گے اسی طرح نار (دوزخ) یوں ہی آسمان، اور یہ کہ پہلا آسمان وہاں کیوں ہوا اور دوسرا دوسری جگہ کیوں ہوا، اسی طرح ملائکہ کا لفظ سننے سے انہوں نے جان لیا کہ کاہے سے بنے اور کیونکر بنے اور ان کے مرتبوں کی ترتیب کیا ہے اور کس لیے یہ فرشتہ اس مقام کا مستحق ہوا اور دوسرا دوسرے کا۔ اسی طرح عرش سے زیرِ زمین تک ہر فرشتے کا حال، اور یہ

Volume 29 Fatawa Razawiyya

[Left Column - Arabic Original] This dominion, this station, and someone else deserved another station, and so on for every angel in the Throne down to what is below the earth. These are the sciences of Adam and his offspring from the Prophets, peace and blessings be upon them, and the perfect saints, may Allah Almighty be pleased with them all. Adam was specifically mentioned because he was the first to know these sciences, and whoever among his offspring learned them, learned them after him. It is not meant that no one but Adam knows them. Rather, we specified them according to what he and his offspring need, and what they can bear, so that non-specification does not imply encompassing all the knowledge of Allah Almighty. He said this as an indication of the difference between the knowledge of the Prophet, peace and blessings of Allah be upon him, regarding these sciences, and the knowledge of Adam and other Prophets, peace be upon them. For when they turn towards these sciences, a state similar to absence from the witnessing of the Truth, Glorified and Exalted be He, occurs to them. And when they turn towards witnessing the Truth, Glorified and Exalted be He, a state similar to sleep regarding these sciences occurs to them. But our Prophet, peace and blessings of Allah be upon him, due to his strength, is not distracted by one from the other. Thus, when he turns towards the Truth, Glorified and Exalted be He, complete witnessing occurs to him, and along with that, the witnessing of these sciences and others that cannot be uttered also occurs. And when he turns towards these sciences, he achieves them along with the achievement of this witnessing of the Truth.

[Right Column - Urdu Original] All sciences were not granted only to Adam, peace be upon him, but to every Prophet and every perfect saint, peace be upon them. Adam's name was specifically mentioned because he received these sciences first. Then he stated that we have set the limit of capacity and need and kept the encompassing of all things from the Throne to the earth only so that the encompassing of all Divine knowledge does not become necessary. The difference between our Prophet, peace and blessings of Allah be upon him, and other Prophets, peace be upon them, in these sciences is that when others turn towards these sciences, they experience a kind of neglect from the witnessing of the Presence of Majesty and Glory. And when they turn their attention towards witnessing the Truth, a kind of sleepiness towards these sciences comes over them. However, our Prophet, peace and blessings of Allah be upon him, due to his perfect strength, one knowledge does not preoccupy him from another. At the very moment of witnessing the Truth, he knows all these

sciences and other sciences that no one else has the capacity for. And in the very attention towards these sciences, he witnesses the Truth. For him, witnessing the Truth is not a veil from witnessing the creation, nor is witnessing the creation a veil from witnessing the Truth. Purity and highness be to Him Who bestowed these sciences and these powers upon him, peace be upon him.

[बायाँ कॉलम - अरबी अनुवाद] यह प्रभुत्व, यह स्थान, और कोई अन्य किसी दूसरे स्थान का पात्र था, और इसी तरह अर्श के हर फरिश्ते से लेकर पृथ्वी के नीचे तक जो कुछ भी है। ये आदम और उनकी संतान में से नबियों (पैगंबरों), उन पर सलाम और रहमत हो, और पूर्ण वलियों (संतों), अल्लाह उन सब से राजी हो, के ज्ञान हैं। आदम का विशेष उल्लेख इसलिए किया गया क्योंकि वह इन ज्ञानों को जानने वाले पहले व्यक्ति थे, और उनकी संतान में से जिसने भी उन्हें सीखा, उसने उनके बाद सीखा। इसका अर्थ यह नहीं है कि आदम के अलावा कोई और उन्हें नहीं जानता। बल्कि, हमने उन्हें उसके और उसकी संतान की आवश्यकता के अनुसार और वे जितना सह सकते हैं, उसके अनुसार निर्दिष्ट किया है, ताकि विनिर्दिष्ट न करने से अल्लाह तआला के सभी ज्ञान को समाहित करने का भ्रम न हो। उन्होंने यह बात नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इन ज्ञानों के संबंध में ज्ञान और आदम तथा अन्य नबियों, उन पर सलाम हो, के ज्ञान के बीच अंतर की ओर संकेत के रूप में कही। क्योंकि जब वे इन ज्ञानों की ओर मुड़ते हैं, तो उन्हें हक सुब्हानहु व तआला के मुशाहदे (साक्षात्कार) से अनुपस्थिति जैसी स्थिति महसूस होती है। और जब वे हक सुब्हानहु व तआला के मुशाहदे की ओर मुड़ते हैं, तो उन्हें इन ज्ञानों के प्रति नींद जैसी स्थिति महसूस होती है। लेकिन हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, अपनी शक्ति के कारण, एक से दूसरे की ओर विचलित नहीं होते। इसलिए, जब वह हक सुब्हानहु व तआला की ओर मुड़ते हैं, तो उन्हें पूर्ण मुशाहदा प्राप्त होता है, और उसके साथ ही इन ज्ञानों और अन्य ज्ञानों का मुशाहदा भी प्राप्त होता है जिन्हें व्यक्त नहीं किया जा सकता। और जब वह इन ज्ञानों की ओर मुड़ते हैं, तो हक के इस मुशाहदे की प्राप्ति के साथ ही उन्हें ये भी प्राप्त हो जाते हैं।

[दायाँ कॉलम - उर्दू अनुवाद] सभी ज्ञान केवल आदम अलैहिस्सलाम को ही नहीं बल्कि हर नबी और हर कामिल वली को दिए गए हैं, अलैहिमुस्सलाम। आदम का नाम विशेष रूप से इसलिए लिया गया कि उन्हें ये ज्ञान पहले मिले। फिर फ़रमाया कि हमने शक्ति और आवश्यकता की शर्त लगाकर केवल अर्श से फर्श तक की सभी चीज़ों का घेरा इसलिए रखा ताकि अल्लाह के कुल ज्ञान का घेरा आवश्यक न हो जाए। हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और अन्य नबियों अलैहिमुस्सलाम के बीच इन ज्ञानों में यह अंतर है कि जब वे इन ज्ञानों की ओर मुड़ते हैं तो उन्हें हज़रत इज़्ज़त जलालह के मुशाहदे से एक प्रकार की गफ़लत (बेखबरी) सी हो जाती है। और जब वे हक़ के मुशाहदे की ओर ध्यान देते हैं तो इन ज्ञानों की ओर से एक नींद सी आ जाती है। मगर हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को उनकी पूर्ण शक्ति के कारण एक ज्ञान दूसरे ज्ञान से विचलित नहीं करता। वह हक़ के

मुशाहदे के ऐन (ठीक) समय पर उन तमाम ज्ञानों और उनके अलावा उन ज्ञानों को जानते हैं जिनकी शक्ति किसी में नहीं है। और इन ज्ञानों की ओर ऐन तवज्जो (पूरे ध्यान) में हक़ का मुशाहदा करते हैं। उनके लिए न तो हक़ का मुशाहदा, सृष्टि के मुशाहदे से पऱ्ा है और न ही सृष्टि का मुशाहदा, हक़ के मुशाहदे से। वह पाक और बुलंद है जिसने उन्हें ये ज्ञान और ये शक्तियाँ प्रदान कीं, सल्लल्लाहु।

पृष्ठ ४६५/७५०

[بایاں کالم - عربی متن] هذا الملك هذا المقام واستحق غيره مقامًا اخر وهكذا فی كل ملك فی العرش الی ماتحت العرض فهذه علوم ادم واولاده من الانبياء عليهم الصلوة و السلام والاولياء الكمل رضی الله تعالی عنهم اجمعين، وانما خص ادم بالذكر لانه اول من علم هذه العلوم و من علمها من اولاده فانما علمها بعده وليس المراد انه لا يعلمها الاادم وانما خصصناها بما يحتاج اليه وذريته و بما يحتاج اليه و ذريته و بما يطيقونه لئلا يلزم من عدم التخصيص الا حاطة بمعلومات الله تعالی وانما قال تنزلت اشارة الی الفرق بين علم النبی صلی الله تعالی عليه وسلم بهذه العلوم و بين علم ادم و غيره من الانبياء عليهم الصلوة بها فانهم اذا توجهوا اليها يحصل لهم شبه مقام عن مشاهدة الحق سبحانه وتعالی واذا توجهوا نحو مشاهدة الحق سبحانه وتعالی حصل لهم شبه النوم عن هذه العلوم، و نبينا صلی الله تعالی عليه وسلم لقوته لا يشغله هذا عن هذا فهواذا توجه نحو الحق سبحانه و تعالی حصلت له المشاهدة التامة وحصل له مع ذلك مشاهدة هذه العلوم وغيرها مما لا يطلق واذا توجه نحو هذه العلوم حصلت له مع حصول هذه المشاهدة فی الحق

[دایاں کالم - اردو متن] تمام علوم صرف آدم علیہ الصلوۃ والسلام ہی کو نہیں بلکہ ہر نبی اور ہر ولی کامل کو عطا ہوئے ہیں، علیہم الصلوۃ والسلام، آدم کا نام خاص اس لیے لیا کہ انکو یہ علوم پہلے ملے، پھر فرمایا کہ ہم نے بقدر طاقت و حاجت کی قید لگا کر صرف عرش تا فرش کی تمام اشیاء کا احاطہ اس لیے رکھا کہ جملہ معلومات الہیہ کا احاطہ نہ لازم آئے اور ان علوم میں ہمارے نبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم و دیگر انبیاء علیہم الصلوۃ والسلام میں یہ فرق ہے کہ اور جب ان علوم کی طرف متوجہ ہوتے ہیں تو ان کو مشاہدہ حضرت عزت جلالہ، سے ایک گونہ غفلت سی ہو جاتی ہے اور جب مشاہدہ حق کی طرف توجہ فرمائیں تو ان علوم کی طرف سے ایک نیند سی آ

جاتی ہے مگر ہمارے نبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کو ان کی کمال قوت کے سبب ایک علم دوسرے علم سے مشغول نہیں کرتا، وہ عین مشاہدہ حق کے وقت ان تمام علوم اور ان کے سوا اور علموں کو جانتے ہیں جن کی طاقت کسی میں نہیں اور ان علوم کی طرف عین توجہ میں مشاہدہ حق فرماتے ہیں اور ان کو نہ مشاہدہ حق، مشاہدہ خلق سے پردہ ہو نہ مشاہدہ خلق مشاہدہ حق سے، پاکی و بلندی اسے جس نے ان کو یہ علوم اور یہ قوتیں بخشیں صلی اللہ

صفحہ ۴۶۵ از ۷۵۰

Fatawa Ridawiyyah Volume 29

[Boxed Header] Glory be to Him and Exalted is He, witnessing the Truth (God) does not veil Him from witnessing the creation | Peace and blessings of Allah be upon him. And witnessing the creation does not veil [the mystic] from witnessing the Truth, Glory be to Him and Exalted is He (1).

Why, O Wahhabis! Is there any strength left? Yes, yes, run with your 'shirk'-detecting pot of Taqwiyat al-Iman and Barahin-e-Qati'ah, keep reciting your rosary of 'shirk, shirk'. Tomorrow on the Day of Resurrection, it will be revealed who was the polytheist, infidel, apostate, and loser. "They will know tomorrow who is the liar, the insolent one" (2). (Very soon, tomorrow they will know who was the big liar and arrogant one).

Insolence (Ashar) is also of two types: (1) Verbal insolence: blabbering with the tongue. (2) Behavioral insolence: remaining silent while being malicious and not refraining from wickedness.

Wahhabis possess both verbal and behavioral insolence. "May Allah destroy them! How are they deluded?" (3). (May Allah destroy them, how they are turned away).

Hazrat Sayyidi Shah Abdul Aziz (may Allah sanctify his noble secret) is from the most prominent of the great saints and the greatest of the noble descendants (Sadat). It is no surprise that the unbridled Wahhabis, according to their base habit, commit insolence and talk back in his noble presence. Therefore, it is appropriate that in support of this pure, blessed, and beloved son, I mention some of the sayings of his kind father, the master of Muslims, the victorious lion of the One, Almighty Allah, our master the Commander of the Faithful, Maula Ali, the solver of problems, the fulfiller of needs, the slayer of infidels, the refuge of believers (may Allah honor his face), so that the jackal-brothers of the yellow dogs flee upon smelling the scent of this Lion of the Majestic One, and let there be stones of wrath in the mouths of those who cry 'shirk, shirk', and may they be burnt by stones.

(79) Ibn al-Najjar reports from Abu al-Mu'tamir Muslim bin Aws and Jariyah bin Qudamah al-Sa'di that the Commander of the Faithful, the father of the pure Imams, our master Ali (may Allah honor his face), said:

[Boxed Quote] Ask me before you lose me, for I am not asked about anything below the Throne except that I [answer]... | Ask me before you do not find me, for whatever is asked of me regarding anything below the Throne, I [will answer].

Footnotes: 1. Al-Ibreez, Chapter Seven, Dar al-Kutub al-Ilmiyah, Beirut, pp. 382-383. 2. Al-Quran al-Kareem 54/26. 3. Al-Quran al-Kareem 9/30.

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

[बॉक्स हेडर] वह पाक और महान है, हक़ (ईश्वर) का दर्शन उसे सृष्टि के दर्शन से ओझल नहीं करता | उन पर अल्लाह की कृपा और शांति हो। और सृष्टि का दर्शन [साधक को] हक़ (ईश्वर) के दर्शन से ओझल नहीं करता, वह पाक और महान है (1)।

क्यों वहाबियो! कुछ दम है? हाँ हाँ, 'तक़्वियत-उल-ईमान' और 'बराहीन-ए-क़ातिआ' की शिर्कदानी लेकर दौड़ो, 'शिर्क शिर्क की तस्बीह जपते रहो। कल क़यामत के दिन खुल जाएगा कि मुशरिक, काफ़िर, मुर्तद और घाटे में रहने वाला कौन था। "वे कल जान लेंगे कि कौन बड़ा झूठा और घमंडी था" (2)। (बहुत जल्द कल वे जान जाएंगे कि कौन बड़ा झूठा और अहंकारी था)।

धृष्टता (अशर) भी दो प्रकार की होती है: (1) शाब्दिक धृष्टता: ज़बान से बक-बक करना। (2) व्यावहारिक धृष्टता: ज़बान से चुप रहना लेकिन खबासत (बुराई) से बाज़ न आना।

वहाबी शाब्दिक और व्यावहारिक दोनों प्रकार के धृष्ट हैं। "अल्लाह उन्हें नष्ट करे! वे कहाँ भटके फिर रहे हैं?" (3)। (अल्लाह उन्हें मारे, वे कैसे उल्टे फिर रहे हैं)।

हज़रत सय्यदी शाह अब्दुल अज़ीज़ (अल्लाह उनके पवित्र रहस्य को और पवित्र करे) महान औलिया-ए-किराम और श्रेष्ठ सादात में से हैं। यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि बेलगाम वहाबी अपनी नीच आदत के अनुसार उनकी शान में गुस्ताखी और ज़बान दराज़ी करें। इसलिए उचित है कि इस पाक, मुबारक और लाडले बेटे के समर्थन में उनके कृपालु पिता, मुसलमानों के मौला, अल्लाह वाहिद-ओ-क़हार के ग़ालिब शेर, हमारे सरदार अमीरल मोमिनीन मौला अली मुश्किल कुशा, हाजत रवा, काफ़िरकुश, मोमिन पनाह (अल्लाह उनके चेहरे को सम्मानित करे) के कुछ कथनों का उल्लेख करूँ ताकि पीले कुत्तों के सियार-भाई इस असादुल्लाह (अल्लाह के शेर) की गंध सूंघ कर भाग जाएँ और 'शिर्क शिर्क बकने वाले मुँह में क़हर के पत्थर हों और वे पत्थरों से घिर जाएँ।

(79) इब्न-ए-नज्जार, अबू अल-मुअतमिर मुस्लिम बिन औस और जारिया बिन क़ुदामा सादी से रिवायत करते हैं कि अमीरुल मोमिनीन, पवित्र इमामों के पिता, हमारे सरदार अली (अल्लाह उनके चेहरे को सम्मानित करे) ने फ़रमाया:

[बॉक्स उद्धरण] मुझसे पूछो इससे पहले कि तुम मुझे न पाओ, क्योंकि अर्श के नीचे जिस किसी चीज़ के बारे में मुझसे पूछा जाएगा, मैं [उसका उत्तर दूँगा]... | मुझसे सवाल करो इससे पहले कि तुम मुझे

न पाओ, क्योंकि अर्श के नीचे जिस किसी चीज़ के बारे में मुझसे पूछा जाएगा, मैं [उसका जवाब दूँगा]।

फुटनोट्स: 1. अल-इबरीज़, अध्याय सात, दार अल-कुतुब अल-इल्मिया, बेरुत, पृष्ठ 382-383। 2. अल-क़ुरआन अल-करीम 54/26। 3. अल-क़ुरआन अल-करीम 9/30।

पृष्ठ 466/750

فتاوٰی رضویہ جلد ۲۹

[اوپری خانہ] سبحانہ وتعالٰی فلا تحجبہ مشاھدۃ الحق عن مشاھدۃ الخلق | تعالٰی علیہ وسلم۔ ولا مشاھدۃ الخلق عن مشاھدۃ الحق سبحانہ وتعالٰی ۱۔

کیوں وہابیو! ہے کچھ دم؟ ہاں ہاں تقویۃ الایمان و براہین قاطعہ کی شرک دانی لے کر دوڑ یو، مشرک مشرک کی تسبیح بھانیو، کل قیامت کو کھل جائے گا کہ مشرک ، کافر، مرتد خاسر کون تھا، "سَيَعْلَمُونَ غَدًا مَّنِ الْكَذَّابُ الْأَشِرُ ﴿٢٦﴾"۔ (بہت جلد کل جان جائیں گے کون تھا بڑا جھوٹا اترو نبات)

اشر بھی دو قسم کے ہوتے ہیں: (۱) اشر قولی کہ زبان سے بک بک کرے۔ (۲) اشر فعلی کہ زبان سے چپ اور خباثت سے باز آئے۔

وہابیہ اشر قولی و اشر فعلی دونوں ہیں۔ "قَتَلَهُمُ اللَّهُ ۚ أَنَّىٰ يُؤْفَكُونَ ﴿٩﴾"۔ (اللہ انہیں مارے کیا اوندھے جاتے ہیں)

حضرت سیدی شاہ عبدالعزیز قدسنا اللہ بسرہ العزیز، اجلہ اکابر اولیاء عظام و اعاظم سادات کرام سے ہیں، بد لگام وہابیہ سے کچھ تعجب نہیں کہ ان کی شان کریم میں حسبِ عادتِ لئیم گستاخی و زبان درازی کریں، لہٰذا مناسب کہ اس پاک، مبارک، لاڈلے بیٹے کی تائید میں اس کے مہربان باپ، مسلمانوں کے مولٰی، اللہ واحد قہار کے غالب شیر، سید نا امیر المومنین مولٰی علی مشکل کشا حاجت روا، کافرکش، مومن پناہ کرم اللہ تعالٰی وجہہ الکریم کے بعض ارشادات ذکر کروں کہ سگانِ زرد کے برادرِ شغال اس اسد ذوالجلال کی بو سونگھ کر بھاگیں، اور شرک شرک بکنے والے منہ میں قہر کے پتھر ہوں، اور پتھروں سے آگیں۔

(۷۹) ابن النجار ابوالمعتمر مسلم بن اوس و جاریہ بن قدامہ سعدی سے راوی کہ امیر المومنین ابوالائمۃ الطاہرین سیدنا علی کرم اللہ وجہہ نے فرمایا:

[درمیانی خانہ] سلونی قبل ان تفقدونی فانی لا أسأل عن شيء دون العرش الا | مجھ سے سوال کرو قبل اس کے کہ مجھے نہ پاؤ کہ عرش کے نیچے جس کسی چیز کو مجھ سے پوچھا جائے میں

حواشی: ۱- الابریز الباب السابع دار الکتب العلمیہ بیروت ص ۳۸۲ و ۳۸۳ ۲- القرآن الکریم ۲۶/۵۴ ۳- القرآن الکریم ۳۰/۹

Fatawa Razawiyya Volume 29

[Box 1] Arabic: Akhbaratu 'anhu (I told about it) Urdu: I will tell / inform.

Everything under the Throne (Arsh), the Chair (Kursi), the seven heavens, the seven earths, and whatever is between the heavens and the earths, down to the depths of the earth (Taht-al-Thara), is included. Mawla Ali (may Allah be pleased with him) says, "My knowledge encompasses all of this; ask me about anything among them, and I will inform you."

(80) Imam Ibn al-Anbari in 'Kitab al-Masahif' and Imam Abu Umar bin Abd al-Barr in 'Kitab al-Ilm' narrate from Abu al-Tufail Amir bin Wathilah (may Allah be pleased with them both):

[Box 2] Arabic: He said: I witnessed Ali bin Abi Talib delivering a sermon, and he said in his sermon: "Ask me, for by Allah, you will not ask me about anything until the Day of Resurrection but I will tell you about it." Urdu: I was present at the sermon of Mawla Ali (may Allah honor him). The Commander of the Faithful said in the sermon, "Ask me. By God, ask me about whatever is going to happen until the Day of Judgment, and I will tell you."

The Commander of the Faithful says: My knowledge encompasses the entire universe until the Day of Judgment. Both these hadiths were mentioned by the glorious Imam Jalal al-Millah wa al-Din al-Suyuti in 'Jami' al-Kabir'.

(81 to 83) Ibn Qutaybah, then Ibn Khallikan, then Imam Damiri, then Allama Zarqani in the commentary of 'Mawahib al-Ladunniyyah' say:

[Box 3] Arabic: Al-Jafr is a volume written by Ja'far al-Sadiq, in which he wrote for the People of the House (Ahl al-Bayt) everything they would need to know and everything that will happen until the Day of Resurrection. Urdu: Jafr is a volume that Imam Ja'far Sadiq (may Allah be pleased with him) wrote, and in it, he recorded everything the Noble People of the House (Ahl al-Bayt) might need knowledge of, and everything that is to happen until the Day of Judgment.

(84) Allama Sayyid Sharif (may Allah have mercy on him) says in the commentary of 'Al-Mawaqif':

[Box 4] Arabic: Al-Jafr and Al-Jamia are two books for Ali (may Allah be pleased with him). Urdu: Meaning Jafr and Jamia belong to the Commander of the Faithful Ali (may Allah honor him).

1.
2. Jami' Bayan al-Ilm wa Fadlihi, Chapter on the beginning of world gatherings with benefit and his saying "Ask me", Dar al-Fikr Beirut, 1/138.
3. Hayat al-Hayawan al-Kubra under the word 'al-Jafrah', Mustafa al-Babi Egypt, 1/279, and Wafayat al-A'yan, translated by Abd al-Mu'min, Sahib al-Maghrib, 308, Dar al-Thaqafa Beirut, 3/240.

फ़तावा रज़विय्या खंड 29

[बॉक्स 1] अरबी: अख़बरतु अन्हु (मैंने इसके बारे में बताया) उर्दू: मैं बता दूँगा।

अर्श (सिंहासन) के नीचे कुर्सी, सात आसमान, सात ज़मीन और आसमानों और ज़मीनों के बीच जो कुछ भी है, तह्त-अत-थरा (पाताल) तक सब शामिल है। मौला अली (रज़ियल्लाहु अन्हु) फ़रमाते हैं कि मेरा इल्म इन सब को घेरे हुए है; इनमें से जो भी चीज़ मुझसे पूछोगे, मैं तुम्हें बता दूँगा।

(80) इमाम इब्न अल-अंबारी 'किताब अल-मसाहिफ़' में और इमाम अबू उमर बिन अब्द अल-बर्र 'किताब अल-इल्म' में अबू अल-तुफ़ैल आमिर बिन वाथिला (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से रिवायत करते हैं:

[बॉक्स 2] अरबी: उन्होंने कहा: मैंने अली बिन अबी तालिब को खुतबा (भाषण) देते हुए देखा, तो उन्होंने अपने खुतबे में कहा: 'मुझसे पूछो, क्योंकि खुदा की कसम, तुम मुझसे कयामत के दिन तक किसी भी चीज़ के बारे में नहीं पूछोगे मगर मैं तुम्हें उसके बारे में बता दूँगा।' उर्दू: मैं मौला अली (करमल्लाहु वज्हहुल करीम) के खुतबे में हाज़िर था। अमीरुल मोमिनीन ने खुतबे में इर्शाद फ़रमाया, "मुझसे पूछो। खुदा की कसम, कयामत तक जो चीज़ होने वाली है, मुझसे पूछो, मैं बता दूँगा।"

अमीरुल मोमिनीन फ़रमाते हैं: कि मेरा इल्म कयामत तक की पूरी कायनात (ब्रह्मांड) पर हावी है। ये दोनों हदीसें इमाम जलील जलालुल मिल्लत वद-दीन सुयूती ने 'जामे कबीर' में ज़िक्र फ़रमाई हैं।

(81 से 83) इब्न कुतैबा, फिर इब्न खल्लिकान, फिर इमाम दमीरी, फिर अल्लामा ज़रक़ानी 'शरह-ए-मवाहिब अल-लदुन्निय्या' में फ़रमाते हैं:

[बॉक्स 3] अरबी: अल-जफ़र एक जिल्द (किताब) है जिसे जाफ़र अल-सादिक़ ने लिखा है, जिसमें उन्होंने अहले बैत (नबी के परिवार) के लिए वह सब कुछ लिखा है जिसे जानने की उन्हें ज़रूरत होगी और जो कुछ भी कयामत के दिन तक होने वाला है। उर्दू: जफ़र एक जिल्द है जिसे इमाम जाफ़र सादिक़ (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने लिखी और इसमें अहले बैत किराम के लिए जिस चीज़ के इल्म की उन्हें हाजत (ज़रूरत) पड़े और जो कुछ कयामत तक होने वाला है, सब तहरीर (लिख) फ़रमा दिया।

(84) अल्लामा सैयद शरीफ़ (रहमतुल्लाहि अलैहि) 'शरह-ए-मवाक़िफ़' में फ़रमाते हैं:

[बॉक्स 4] अरबी: अल-जफ़र और अल-जामिया अली (रज़ियल्लाहु अन्हु) के लिए दो किताबें हैं। उर्दू: यानी जफ़र और जामिया अमीरुल मोमिनीन अली (करमल्लाहु वज्हहुल करीम) की किताबें हैं।

1.
2. जामे बयान अल-इल्म व फ़दलिहि, अध्याय: दुनिया की महफिलों की शुरुआत और उनका कहना "मुझसे पूछो", दार अल-फ़िक्र बेरूत, 1/138।
3. हयात अल-हैवान अल-कुबरा, शब्द 'अल-जफ़राह' के तहत, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, 1/279, और वफ़यात अल-अयान, अनुवादक अब्दुल मोमिन साहब अल-मग़रिब, 308, दार अल-थक़ाफ़ा बेरूत, 3/240।

فتاویٰ رضویہ جلد ۲۹

[پہلا خانہ] عربی: اخبرت عنہ[1] اردو: بتادوں گا۔

عرش کے نیچے کرسی، ہفت آسمان، ہفت زمین اور آسمانوں اور زمینوں کے درمیان جو کچھ ہے تحت الثریٰ تک سب داخل ہے، مولیٰ علی فرماتے ہیں کہ اس سب کو میرا علم محیط ہے ان میں جو شے مجھ سے پوچھو میں بتادوں گا، رضی اللہ تعالیٰ عنہ۔

(۸۰) امام ابن الانباری کتاب المصاحف میں اور امام ابو عمر بن عبد البر کتاب العلم میں ابوالطفیل عامر بن واثلہ رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے راوی:

[دوسرا خانہ] عربی: قال شہدت علی بن ابی طالب یخطب فقال فی خطبتہ سلونی فواللہ لاتسألونی عن شیئی الی یوم القیامۃ الا حدثتکم بہ[2]۔ اردو: میں مولیٰ علی کرم اللہ تعالیٰ وجہہ کے خطبہ میں حاضر تھا امیر المومنین نے خطبہ میں ارشاد فرمایا مجھ سے دریافت کرو خدا کی قسم قیامت تک جو چیز ہونے والی ہے مجھ سے پوچھو میں بتادوں گا۔

امیر المومنین فرماتے ہیں: کہ میرا علم قیامت تک کی تمام کائنات کو حاوی ہے، یہ دونوں حدیثیں امام جلیل جلال الملۃ والدین سیوطی نے جامع کبیر میں ذکر فرمائیں۔

(۸۱ تا ۸۳) ابن قتیبہ پھر ابن خلکان پھر امام دمیری پھر علامہ زرقانی شرح مواہب اللدنیہ میں فرماتے ہیں:

[تیسرا خانہ] عربی: الجفر جلد کتبہ جعفر الصادق کتب فیہ لاھل البیت کل ما یحتاجون الیٰ علمہ وکل مایکن الی یوم القیمۃ[3]۔ اردو: جفر ایک جلد ہے کہ امام جعفر صادق رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے لکھی

اور اس میں اہل بیت کرام کے لیے جس چیز کے علم کی انہیں حاجت پڑے اور جو کچھ قیامت تک ہونے والا ہے سب تحریر فرمادے۔

(۸۴) علامہ سید شریف رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ شرح مواقف میں فرماتے ہیں:

[چوتھا خانہ] عربی: الجفر والجامعۃ کتابان لعلی رضی اللہ تعالیٰ اردو: یعنی جفر و جامعہ امیر المومنین علی کرم اللہ تعالیٰ وجہہ الکریم

.1

2. جامع بیان العلم وفضلہ باب فی ابتداء العالم جلساء بالفائدۃ وقولہ سلونی دار الفکر بیروت ۱/۱۳۸

3. حیوۃ الحیوان الکبریٰ تحت لفظ الجفرۃ مصطفیٰ البابی مصر ۱/ ۲۷۹، ووفیات الاعیان ترجمہ عبد المومن صاحب المغرب ۳۰۸ دار الثقافت بیروت ۳/ ۲۴۰

Fatawa Razawiyya Volume 29

[Arabic Quote]: "It is mentioned regarding him that in those two books, he detailed events until the end of the world using the method of the Science of Letters (Ilm al-Huroof). The well-known Imams from among his descendants knew these two books and derived rulings through them. In the book of acceptance of succession which Ali bin Musa (may Allah be pleased with them both) wrote to al-Ma'mun, he stated: 'You have recognized our rights which your forefathers did not, so I accept your succession, except that the Jafr and al-Jami'a indicate that it will not be completed.' The masters (mashayikh) of the West have a portion of the Science of Letters, tracing their lineage in it back to the Ahl al-Bayt. I saw a poem in Syria in which symbols pointed to the conditions of the kings of Egypt, and I heard it was extracted from those two books. End."

...of him there are two books. Indeed, the Commander of the Faithful has described in both of them all the events that will occur until the end of the world based on the method of the Science of Letters. The illustrious Imams from his noble progeny (may Allah be pleased with them) used to recognize the secrets of these books and derive rulings from them. When Ma'mun al-Rashid appointed Imam Ali al-Rida, son of Imam Musa al-Kadhim (may Allah be pleased with them both), as his successor and wrote the decree of caliphate, the Imam (may Allah be pleased with him) wrote a decree to Ma'mun al-Rashid regarding its acceptance. In it, he stated: "You have recognized our right which your ancestors did not recognize, therefore I accept your succession. However, Jafr and Jami'a indicate that this task will not be completed." (And so it happened, and Imam al-Rida was martyred during Ma'mun al-Rashid's lifetime). The spiritual masters (Mashayikh) of the West have a share in this science and maintain their chain of affiliation in it to the noble Ahl al-Bayt (may Allah be pleased with them). I saw a poem in Syria in which there were symbolic references to the conditions of the kings of Egypt. I heard that those rulings were extracted from those two books. End.

The grand research on the discussion of this noble, blessed, celestial science and its legal ruling is, by the grace of Allah, present in this humble servant's treatise "Mujtali al-Aroos wa Murad al-Nufoos" (1328 AH), which cannot be found elsewhere.

(86) His radiant presence, Sayyiduna Ghaus al-Azam (may Allah be pleased with him), states: [Arabic Quote]: "By the glory of my Lord! Verily, the blessed and the wretched are presented before my eyes on the Tablet." By the glory of God! Verily all the

fortunate and the wretched are presented before my eyes, my eye is on the Preserved Tablet (Lauh-e-Mahfuz).

1. Sharh al-Mawaqif, Second Type, Second Purpose, Publications of Sharif al-Radi, Qom, Iran, 2/22.

फतावा रज़विय्या जिल्द 29

[अरबी उद्धरण]: "उनके बारे में उल्लेख है कि उन दो किताबों में उन्होंने इल्म-अल-हुरूफ (अक्षरों का विज्ञान) की पद्धति पर दुनिया के अंत तक की घटनाओं का वर्णन किया है। उनकी संतान में से प्रसिद्ध इमाम इन दोनों को जानते थे और उनके माध्यम से निर्णय देते थे। उत्तराधिकार की स्वीकृति की पुस्तक में जो अली बिन मूसा (अल्लाह उन दोनों से प्रसन्न हो) ने अल-मामून को लिखी थी, उन्होंने कहा: 'तुमने हमारे उन अधिकारों को पहचाना जिन्हें तुम्हारे पूर्वजों ने नहीं पहचाना था, इसलिए मैं तुम्हारा उत्तराधिकार स्वीकार करता हूँ, सिवाय इसके कि ज़फ़्र और अल-जामिआ संकेत देते हैं कि यह पूरा नहीं होगा।' पश्चिम के मशायख का इल्म-अल-हुरूफ में हिस्सा है, वे इसमें अपना वंश अहल-अल-बैत तक ले जाते हैं। मैंने शाम (सीरिया) में एक कविता देखी जिसमें मिस्र के राजाओं की स्थितियों की ओर प्रतीकों में संकेत किया गया था, और मैंने सुना कि यह उन दो किताबों से निकाला गया था। इति।"

...उनकी दो किताबें हैं। बेशक अमीर-उल-मोमिनीन ने इन दोनों में इल्म-उल-हुरूफ की पद्धति पर दुनिया के अंत तक जितने भी वाकयात होने वाले हैं, सब ज़िक्र फरमा दिए हैं और उनकी औलाद-ए-अमजाद से अइम्मा-ए-मशहूरिन (रज़ियल्लाहु अन्हुम) इन किताबों के रमज़ों (रहस्यों) को पहचानते और उनसे अहकाम (नियम) निकालते थे। और मामून रशीद ने जब हज़रत इमाम अली रज़ा इब्न इमाम मूसा काज़िम (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) को अपने बाद वली-अहद (उत्तराधिकारी) बनाया और खिलाफ़त नामा लिख दिया, तो इमाम (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने उसकी क़बूलियत में मामून रशीद के नाम फरमान तहरीर फ़रमाया। उसमें इरशाद फ़रमाते हैं कि तुमने हमारे हक़ को पहचाना जिसे तुम्हारे बाप-दादा ने न पहचाना, इसलिए मैं तुम्हारी वली-अहदी क़बूल करता हूँ। मगर ज़फ़्र और जामिआ बता रही हैं कि यह काम पूरा न होगा। (चुनांचे ऐसा ही हुआ और इमाम रज़ियल्लाहु अन्हु ने मामून रशीद की ज़िंदगी ही में शहादत पाई)। और मशायख़-ए-मग़रिब इस इल्म से हिस्सा रखते हैं और इसमें अहल-ए-बैत-ए-किराम (रज़ियल्लाहु अन्हुम) से अपने इंतसाब (संबद्धता) का सिलसिला रखते हैं, और मैंने मुल्क-ए-शाम में एक नज़्म देखी जिसमें शाहान-ए-मिस्र के अहवाल की तरफ़ रमज़ों में इशारा किया गया है, मैंने सुना कि वे अहकाम उन्हीं दोनों किताबों से निकाले गए हैं। इति।

इस इल्म-ए-अलवी शरीफ़ मुबारक की बहस और इसके शरई हुक्म की जलील तहक़ीक़, अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से, फ़क़ीर के रिसाले 'मुज्तली अल-अरूस व मुराद अल-नुफ़ूस' (1328 हिजरी) में है, जो इसके अलावा कहीं नहीं मिलेगी।

(86) हुज़ूर पुर नूर सैयदुना गौस-ए-आज़म (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) फ़रमाते हैं: [अरबी उद्धरण]: "मेरे रब की इज़्ज़त की क़सम! बेशक सौभाग्यशाली और दुर्भाग्यशाली मेरे सामने पटल (लौह) पर पेश किए जाते हैं।" इज़्ज़त-ए-इलाही की क़सम! बेशक सब सईद (सौभाग्यशाली) व शक़ी (दुर्भाग्यशाली) मेरे सामने पेश किए जाते हैं, मेरी आँख लौह-ए-महफ़ूज़ (संरक्षित पटल) पर है।

1. शरह अल-मवाक़िफ़, दूसरी क़िस्म, दूसरा मक़सद, शरीफ़ अल-रज़ी के प्रकाशन, क़ोम, ईरान, 2/22.

पेज 468/750

عنه قد ذکر فیهما علی طریقة علم الحروف الحوادث التی تحدث الی انقراض العالم وکانت الائمة المعروفون من اولاده یعرفونهما ویحکمون بهما وفی کتاب قبول العهد الذی کتبه علی بن موسی رضی اللہ تعالی عنهما الی المأمون انک قد عرفت من حقوقنا ما لم یعرفه اباؤک فقبلت منک عهدک الا ان الجفر والجامعة یدلان علی انه لا یتم ولمشائخ المغاربة نصیب من علم الحروف ینتسبون فیه الی اهل البیت ورأیت انا بالشام نظما اشیر فیه بالرموز الی احوال ملوک مصر و سمعت انه مستخرج من ذینک الکتابین اھ - کی دو کتابیں ہیں بے شک امیر المومنین نے ان دونوں میں علم الحروف کی روش پر ختم دنیا تک جتنے واقعات ہونے والے ہیں سب ذکر فرمادیئے ہیں اور ان کی اولاد امجاد سے ائمہ مشہورین رضی اللہ تعالٰی عنہم ان کتابوں کے رموز پہچانتے اور ان سے احکام لگاتے تھے۔ اور مامون رشید نے جب حضرت امام علی رضا ابن امام موسٰی کاظم رضی اللہ تعالٰی عنہما کو اپنے بعد ولیعہد کیا اور خلافت نامہ لکھ دیا امام رضی اللہ تعالٰی عنہ نے اس کے قبول میں فرمان بنام مامون رشید تحریر فرمایا اس میں ارشاد فرماتے ہیں کہ تم نے ہمارے حق پہچاننے جو تمہارے باپ دادا نے نہ پہچانے اس لیے میں تمہاری ولی عہد قبول کرتا ہوں۔ مگر جفر و جامعہ بتارہی ہیں کہ یہ کام پورا نہ ہوگا۔ (چنانچہ ایسا ہی ہوا اور امام رضی اللہ تعالٰی عنہ نے مامون رشید کی زندگی ہی میں شہادت پائی) اور مشائخ مغرب اس علم سے حصہ اور اس میں اہل بیت کرام رضی اللہ تعالٰی عنہم سے اپنے انتساب کا سلسلہ رکھتے ہیں، اور میں نے ملک شام میں ایک نظر دیکھی جس میں شاہانِ مصر کے احوال کی طرف رمزوں میں اشارہ کیا ہے میں نے سنا کہ وہ احکام انہی دونوں کتابوں سے نکالے ہیں۔ انتہٰی اس علم علوی شریف مبارک کی بحث اور اس کے حکم شرعی کی جلیل تحقیق بحمد اللہ تعالٰی فقیر کے رسالہ مجتلی العروس ومراد النفوس ۱۳۲۸ھ میں ہے جو اس کے

غیر میں نہ ملے گی۔ (۸۶) حضور پر نور سیدنا غوث الاعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہ فرماتے ہیں:

وعزة ربی ان السعداء والاشقیاء لیعرضون علی عینی فی اللوح عزت الہی کی قسم بے شک سب سعید و شقی میرے سامنے پیش کیے جاتے ہیں میری آنکھ لوحِ محفوظ

۱ شرح مواقف النوع الثانی المقصد الثانی منشورات شریف الرضی قم ایران ۲ / ۲۲

Fatawa Razawiyya, Volume 29

... is in Al-Mahfuz 1.

(87) And he (may Allah be pleased with him) says: "If the bridle of the Sharia were not on my tongue, I would have informed you of what you eat and what you store in your houses. You are before me like glassware; I see everything in your inner and outer selves." 2.

(88) And he (may Allah be pleased with him) says: "My heart is privy to the secrets of creation, looking into the faces of hearts. Allah the Almighty has purified it from the filth of seeing anything other than Him, until it became a tablet towards which what is written in the Preserved Tablet (Al-Lauh al-Mahfuz) is transferred. The reins of the affairs of the people of the age have been handed over to it (my heart), and its disposal is in giving to them and withholding from them." 3.

(89, 90, and 91) And praise be to Allah, Lord of the worlds. These and similar sacred words of the great senior Imams, like the peerless Imam, my master Nur al-Haq wad-Din Abul Hasan Ali Shatnoufi, author of the book "Bahjat al-Asrar," and the most glorious Imam, my master Abdullah bin As'ad Yafi'i Shafi'i, author of "Khulasat al-Mafakhir," and others, have related from His Eminence with authentic chains of transmission. And scholars like Ali Qari and others have mentioned them in "Nuzhat al-Khatir" and other books of noble virtues (manaqib).

(92) The great gnostic, one of the four poles (aqtab), our master Hadrat Sayyid Ahmad Rifa'i (may Allah be pleased with him), says concerning perfect advancements:

1 Bahjat al-Asrar, mention of words he spoke about himself as a narration of the blessings of his Lord, Dar al-Kutub al-Ilmiyah, Beirut, p. 50. 2 Bahjat al-Asrar, mention of words he spoke about himself as a narration of the blessings of his Lord, Dar al-Kutub al-Ilmiyah, Beirut, p. 55. 3 Bahjat al-Asrar, mention of words he spoke about himself as a narration of the blessings of his Lord, Dar al-Kutub al-Ilmiyah, Beirut, p. 50.

फतवा रज़विया, जिल्द 29

... अल-महफ़ूज़ 1 में है।

(87) और आप (रज़ियल्लाहु अन्हु) फरमाते हैं: "यदि मेरी ज़बान पर शरीअत की लगाम न होती, तो मैं तुम्हें वह सब बता देता जो तुम खाते हो और जो कुछ अपने घरों में जमा करके रखते हो। तुम मेरे सामने शीशे की तरह हो, मैं तुम्हारे ज़ाहिर और बातिन (बाहरी और आंतरिक) सब देख रहा हूँ।" 2.

(88) और आप (रज़ियल्लाहु अन्हु) फरमाते हैं: "मेरा दिल मख्लूक (सृष्टि) के रहस्यों से अवगत है, सभी दिलों को देख रहा है। अल्लाह तआला ने इसे अपने सिवा किसी और को देखने की गंदगी से पाक कर दिया है, यहाँ तक कि यह एक ऐसी तख्ती (लोह) बन गया है जिसकी ओर वह सब स्थानांतरित होता है जो 'लोह-ए-महफ़ूज़' में लिखा है। (अल्लाह तआला ने) ज़माने के सभी लोगों के कार्यों की बागडोर इसके सुपुर्द कर दी है और अनुमति दी है कि जिसे चाहें अता करें और जिसे चाहें मना कर दें।" 3.

(89, 90 और 91) और तमाम तारीफें अल्लाह के लिए हैं जो तमाम जहानों का रब है। ये और इनके जैसे पवित्र शब्द महान इमामों, जैसे अद्वितीय इमाम, मेरे आका नूरुल हक़ वद-दीन अबुल हसन अली शतनूफ़ी, 'बहजतुल असरार' किताब के लेखक, और महान इमाम, मेरे आका अब्दुल्ला बिन असअद याफ़ई शाफ़ई, 'ख़ुलासतुल मफ़ाख़िर' के लेखक, और अन्य लोगों ने हुज़ूर से सही सनदों के साथ रिवायत किए हैं। और अली क़ारी जैसे विद्वानों ने 'नुज़हतुल ख़ातिर' और अन्य मनाक़िब (महिमा) की किताबों में इनका ज़िक्र किया है।

(92) आरिफ़-ए-कबीर, चारों अक़्ताब में से एक, हमारे आका हज़रत सैय्यद अहमद रिफ़ाई (रज़ियल्लाहु अन्हु) कामिल तरक्कियों के बारे में फरमाते हैं:

1 बहजतुल असरार, उन शब्दों का ज़िक्र जो उन्होंने अपने रब की नेमतों के बयान के तौर पर अपने बारे में कहे, दारुल कुतुबुल इल्मियाह, बेरूत, पृष्ठ 50। 2 बहजतुल असरार, उन शब्दों का ज़िक्र जो उन्होंने अपने रब की नेमतों के बयान के तौर पर अपने बारे में कहे, दारुल कुतुबुल इल्मियाह, बेरूत, पृष्ठ 55। 3 बहजतुल असरार, उन शब्दों का ज़िक्र जो उन्होंने अपने रब की नेमतों के बयान के तौर पर अपने बारे में कहे, दारुल कुतुबुल इल्मियाह, बेरूत, पृष्ठ 50।

पेज 469 / 750

فتاوی رضویہ، جلد ۲۹

المحفوظ ۱ --- میں ہے۔

(۸۷) اور فرماتے ہیں رضی اللہ تعالیٰ عنہ : لولالجام الشریعۃ علی لسانی لاخبرتکم بماتأکلون و ما تدخرون فی بیوتکم انتم بین یدی کالقوارير یری مافی بواطنکم وظواھرکم ۲۔ اگر میری زبان پر شریعت کی روک نہ ہوتی تو میں تمہیں خبر دیتا جو کچھ تم کھاتے اور جو کچھ اپنے گھروں میں اندوختہ کر کے رکھتے ہو تم میرے سامنے شیشہ کی مانند ہو، میں تمہارا ظاہر و باطن سب دیکھ رہا ہوں۔

(۸۸) اور فرماتے ہیں رضی اللہ تعالیٰ عنہ : قلبی مطلع علی اسرارالخلیفۃ ناظرا الی وجوہ القلوب قد صفاہ الحق عن دنس رویۃسواہ حتی صار لوحاً ینقل الیہ مافی اللوح المحفوظ وسلم علیہ ازمۃ امور اہل زمانہ وصرفہ فی عطائھم ومنعھم ۳۔ میرا دل اسرار مخلوقات پر مطلع ہے سب دلوں کو دیکھ رہا ہے اللہ تعالیٰ نے اسے رویت ماسوا کے میل سے صاف کردیا کہ ایک لوح ہوگیا جس کی طرف وہ منتقل ہوتا ہے، جولوح محفوظ میں لکھا ہے۔ (اللہ تعالیٰ نے) تمام اہل زمانہ کے کاموں کی باگیں اسے سپردفرمائیں اور اجازت فرمائی کہ جسے چاہیں عطا کریں، جسے چاہیں منع فرمادیں۔

(۸۹ و ۹۰ و ۹۱) والحمدللہ رب العالمین یہ اور ان کے مثل اور کلمات قدسیہ اجلہ اکابر ائمہ مثل امام اوحد سیدی نور الحق والدین ابوالحسن علی شطنوفی صاحب کتاب بھجۃ الاسرار وامام اجل سیدی عبداللہ بن اسعد یافعی شافعی صاحب خلاصۃ المفاخر وغیر ہما نے حضور سے بہ اسانید صحیحہ روایت فرمائے، اور علی قاری وغیرہ علماء نے نزہۃ الخاطر و غیر ہا کتب مناقب شریفہ میں ذکر کیے۔

(۹۲) عارف کبیر احد الاقطاب الاربعہ سیدنا حضرت سید احمد رفاعی رضی اللہ تعالیٰ عنہ ترقیات کامل کے بارے میں فرماتے ہیں:

۱ بہجۃ الاسرار ذکر کلمات اخبر بھا عن نفسہ محدثاً بنعمۃ ربہ دارالکتب العلمیہ بیروت ص ۵۰ ۲ بہجۃ الاسرار ذکر کلمات اخبر بھا عن نفسہ محدثاً بنعمۃ ربہ دارالکتب العلمیہ بیروت ص ۵۵ ۳ بہجۃ الاسرار ذکر کلمات اخبر بھا عن نفسہ محدثاً بنعمۃ ربہ دارالکتب العلمیہ بیروت ص ۵۰

Fatawa Razawiyya, Volume 29

[Arabic]: He informs him of His unseen (Ghaib) so that no tree grows and no leaf turns green except that it is before his sight. (1) [Urdu Translation]: Allah Almighty informs him of His unseen (Ghaib) to the extent that no tree grows and no leaf turns green except that it is in front of his vision.

(93) Arif Billah Hazrat Sayyidi Raslan Dimashqi (may Allah be pleased with him) says: [Arabic]: The Arif (knower of God) is the one in whose heart Allah Almighty has placed an inscribed tablet with the secrets of existents, and by supporting him with the lights of Haq-ul-Yaqin (the truth of certainty), he perceives the realities of those lines despite their different states, and he perceives the secrets of actions. Thus, no movement, outward or inward, occurs in the kingdom (Mulk) and the celestial realm (Malakut) except that Allah Almighty reveals it through his spiritual insight and sight of witnessing, so he witnesses it through knowledge and unveiling (Kashf). (2) [Urdu Translation]: The Arif is the one in whose heart Allah Almighty has placed a tablet such that all the secrets of existents are inscribed in it, and He has supported him with the lights of Haq-ul-Yaqin so that he knows the realities of those written things well, even though their states are very different. He knows the secrets of actions, so no movement, outward or inward, occurs in the physical or spiritual kingdom (Mulk and Malakut) except that Allah Almighty opens the eye of his faith and the eye of his witnessing, then the Arif sees it and knows it through his knowledge and unveiling.

(94) (The above) Both of these noble statements were quoted by Sayyidi Imam Abdul Wahhab Sha'rani (may his secret be sanctified) in Tabaqat al-Kubra. (95) The Imam of the Great Naqshbandi Order, Hazrat Azizan (may Allah be pleased with him), used to say: [Persian]: The earth in the sight of this group is like a dining cloth (spread). (3) [Urdu Translation]: In the sight of this group, the earth is like a dining cloth (Dastarkhwan). (T) (96) Hazrat Khwaja Baha'ul Haq wa al-Din Naqshbandi (may Allah be pleased with him) quoted this pure statement and said: [Persian]: And we say it is like the surface of a fingernail; nothing is hidden from their sight. (4) [Urdu Translation]: We say it is like the surface of a fingernail, no thing is hidden from their sight.

1. Statement of Sayyid Ahmad Rifa'i.
2. Al-Tabaqat al-Kubra, Biography 274, Raslan al-Dimashqi, Dar al-Fikr Beirut, p. 212.

3. Nafahat al-Uns, translation of Khwaja Baha'ul Haq wa al-Din al-Naqshbandi, Intisharat Kitab Faroshi, p. 387.
4. Nafahat al-Uns, translation of Khwaja Baha'ul Haq wa al-Din al-Naqshbandi, Intisharat Kitab Faroshi, p. 387-88.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 29

[अरबी]: वह उसे अपने गैब (परोक्ष) पर सूचित करता है यहाँ तक कि कोई पेड़ नहीं उगता और कोई पत्ती हरी नहीं होती मगर उसकी नज़र के सामने। (1) [उर्दू अनुवाद]: अल्लाह तआला उसे अपने गैब पर सूचित करता है यहाँ तक कि कोई पेड़ नहीं उगता और कोई पत्ती हरी नहीं होती मगर उसकी नज़र के सामने।

(93) आरिफ़ बिल्लाह हज़रत सैयदी रस्लान दमिश्की (रज़ियल्लाहु अन्हु) फरमाते हैं: [अरबी]: आरिफ़ वह है जिसके दिल में अल्लाह तआला ने एक तख्ती (लौह) रखी है जिसमें तमाम मौजूद चीज़ों के रहस्य अंकित हैं, और हक़-उल-यकीन (निश्चित सत्य) के नूरों से उसकी मदद की ताकि वह उन पंक्तियों की हकीकतों को उनके विभिन्न रूपों के बावजूद जान ले, और वह कार्यों के रहस्यों को जानता है। अतः मुल्क और मलकूत (भौतिक और आध्यात्मिक जगत) में कोई भी ज़ाहिरी या बातिनी हरकत नहीं होती, मगर यह कि अल्लाह तआला उसे उसकी ईमान की दृष्टि और साक्षात दर्शन की आँख के माध्यम से प्रकट कर देता है, तो वह उसे इल्म और कश्फ़ (दिव्य दृष्टि) के साथ देखता है। (2) [उर्दू अनुवाद]: आरिफ़ वह है जिसके दिल में अल्लाह तआला ने एक तख्ती (लौह) रखी है कि तमाम मौजूदा चीज़ों के राज़ उसमें नक़्श हैं और हक़-उल-यकीन के नूरों से उसे मदद दी कि वह उन लिखी हुई चीज़ों की हकीकतों को अच्छी तरह जानता है हालाँकि उनके हाल किस कदर मुख़्तलिफ़ (अलग) हैं। वह कामों के राज़ जानता है, तो कोई ज़ाहिरी या बातिनी हरकत मुल्क या मलकूत में वाक़े(घटित) नहीं होती, मगर यह कि अल्लाह तआला उसके ईमान की निगाह और उसके मुआयने (देखने) की आँख खोल देता है तो आरिफ़ उसे देखता है और अपने इल्म और कश्फ़ से जानता है।

(94) (उपरोक्त) ये दोनों मुबारक कलाम सैयदी इमाम अब्दुल वहाब शेरानी (क़ुद्दिस सिर्रहु) ने 'तबक़ात-ए-कुबरा' में नक़ल किए हैं। (95) सिलसिला-ए-आलिया नक़्शबंदिया के इमाम हज़रत अज़ीज़ान (रज़ियल्लाहु अन्हु) फरमाया करते थे: [फ़ारसी]: इस गिरोह की नज़र में ज़मीन एक दस्तरख्वान की तरह है। (3) [उर्दू अनुवाद]: इस गिरोह की नज़र में ज़मीन दस्तरख्वान की तरह है। (त) (96) हज़रत ख़्वाजा बहाउल हक़ वद्दीन नक़्शबंदी (रज़ियल्लाहु अन्हु) यह पाक कलाम नक़ल करके फरमाते थे: [फ़ारसी]: और हम कहते हैं कि (ज़मीन) नाख़ून की सतह की तरह है, कोई चीज़

उनकी नज़र से छिपी नहीं है। (4) [उर्दू अनुवाद]: हम कहते हैं कि नाखून की सतह की तरह है, कोई चीज़ उनकी नज़र से ओझल नहीं है।

1. सैय्यद अहमद रिफ़ाई का कथन।
2. अत-तबक़ात अल-कुबरा, अनुवाद 274, रस्लान अद-दमिश्की, दार अल-फ़िक्र बेरुत, पृ. 212।
3. नफ़हात अल-उन्स, अनुवाद ख़्वाजा बहाउल हक़ वद्दीन अन-नक़्शबंदी, इंतिशारात किताब फ़रोशी, पृ. 387।
4. नफ़हात अल-उन्स, अनुवाद ख़्वाजा बहाउल हक़ वद्दीन अन-नक़्शबंदी, इंतिशारात किताब फ़रोशी, पृ. 387-88।

اطلعه علی غیبه حتی لا تنبت شجرة ولا تخضر ورقة الا بنظره ۱- | اللہ تعالٰی اسے اپنے غیب پر مطلع کرتا ہے یہاں تک کہ کوئی پیڑ نہیں اُگتا اور کوئی پتی نہیں ہریاتا مگر اس کی نظر کے سامنے۔

(۹۳) عارف باللہ حضرت سیدی رسلان دمشقی رضی اللہ تعالٰی عنہ فرماتے ہیں: العارف من جعل اللہ تعالی فی قلبه لوحاً منقوشاً بأسرار الموجودات و بأمداده بأنوار حق الیقین یدرك حقائق تلك السطور علی اختلاف اطوارها و یدرك اسرار الافعال فلا تتحرك حركة ظاهرة ولا باطنة فی الملك والملكوت الا ویكشف اللہ تعالی عن بصیرة ایمانه وعین عیانه فیشهدها علماً وكشفاً ۲- | عارف وہ ہے جس کے دل میں اللہ تعالٰی نے ایک لوح رکھی ہے کہ جملہ اسرارِ موجودات اس میں منقوش ہیں اور حق الیقین کے نوروں سے اسے مدد دی کہ وہ ان لکھی ہوئی چیزوں کی حقیقتیں خوب جانتا ہے باآنکہ انکے طور کس قدر مختلف ہیں اور افعال کے راز جانتا ہے تو ظاہری یا باطنی کوئی جنبش ملک یا ملکوت میں واقع نہیں ہوتی، مگر یہ کہ اللہ تعالٰی اس کے ایمان کی نگاہ اور اس کے معائنہ کی آنکھ کھول دیتا ہے تو عارف اسے دیکھتا ہے اور اپنے علم و کشف سے جانتا ہے۔

(۹۴) (مذکورہ بالا) یہ دونوں کلام کریم سیدی امام عبدالوہاب شعرانی قدس سرہ الربانی نے طبقات کبری میں نقل کیے۔ (۹۵) سلسلہ عالیہ نقشبندیہ کے امام حضرت عزیزان رضی اللہ تعالٰی عنہ فرمایا کرتے: زمین در نظر این طائفہ چو سفرہ ایست ۳۔ | اس گروہ کی نظر میں زمین دسترخوان کی طرح ہے۔ (ت) (۹۶) حضرت خواجہ بہاؤ الحق والدین نقشبندی رضی اللہ تعالٰی عنہ یہ کلام پاک نقل کر کے فرماتے: وما می گوئیم چوں روئے ناخنے ست ہیچ چیز از نظر ایشاں غائب نیست ۴۔ | ہم کہتے ہیں کہ ناخن کی سطح کی طرح ہے، کوئی چیز ان کی نظر سے غائب نہیں۔

١ قول سید احمد رفاعی ٢ الطبقات الکبری ترجمه ٢٧۴ رسلان الدمشقی دار الفکر بیروت ص ٢١٢ ٣ نفحات الانس ترجمه خواجه بهاء الحق والدین النقشبندی انتشارات کتاب فروشی ص ٣٨٧ ۴ نفحات الانس ترجمه خواجه بهاء الحق والدین النقشبندی انتشارات کتاب فروشی ص ٣٨٧-٨٨

Fatawa Razawiya Volume 29

Gangohi Sahib! Now take note of your satanic polytheism in Braheen. (97) These two blessed sayings were mentioned by Hazrat Maulana Jami (may his secret be sanctified) in Nafahat-ul-Uns. (98) The great Imam, my master Ali Wafa (may Allah be pleased with him) says:

[Arabic]: A man is not one who is restricted by the Throne and what the heavens, Paradise, and Hell encompass. Rather, a man is one whose sight penetrates beyond all this existence, and there he recognizes the magnitude of the greatness of the Creator of the universe, Glorified and Exalted is He. (1) [Urdu]: A man is not one who is limited or confined by the Throne and whatever it encompasses—the heavens, Paradise, and Hell. A man is he whose gaze passes beyond this entire universe; there, the magnitude of the greatness of the Originator of the universe (Glorified and Exalted is He) is revealed to him.

(99) This pure speech was quoted in the book al-Yawaqit wa al-Jawahir fi Aqa’id al-Akabir. (100) In al-Ibriz al-Sharif, it is mentioned:

[Arabic]: I heard him (may Allah be pleased with him) say at times: "The seven heavens and the seven earths in the sight of a believing servant are but like a ring cast into a vast desert." (2) [Urdu]: Meaning, I have heard Hazrat Syed (may Allah be pleased with him) say many times that the seven heavens and the seven earths, in the expansive vision of a perfect believer, are like a ring lying in a vast and desolate field.

(101) Imam Sha'rani relates from Hazrat Sayyidi Ali Khawwas (may Allah be pleased with him) in the book al-Jawahir:

[Arabic]: The heart of the perfect person is a mirror for the entire celestial and terrestrial existence in detail. (3) [Urdu]: The heart of a perfect person is a mirror for the entire higher (celestial) and lower (terrestrial) worlds in a detailed manner.

(102) Imam Razi, while establishing proofs for the reality of the miracles of saints in response to the Mu'tazilites in Tafsir al-Kabir, says:

[Arabic]: The sixth proof: There is no doubt that the manager of actions is the soul, not the body. Therefore, we see that whoever has more knowledge of the conditions of the unseen world... [Urdu]: That is, the sixth argument of the People of Sunnah is that undoubtedly the soul is the controller of actions, not the body. For this reason,

we observe that one who has greater knowledge of the conditions of the unseen realm...

---

1 al-Yawaqit wa al-Jawahir, 34th discussion, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/370. 2 al-Ibriz, Chapter 6, Mustafa al-Babi, Egypt, p. 242. 3 al-Jawahir wa al-Durar on the margin of al-Ibriz, Chapter 6, Mustafa al-Babi, Egypt, p. 223.

फ़तावा रज़विया खंड 29

गंगोही साहब! अब 'बराहीन' में अपने शैतानी शिर्क(बहुदेववाद) की खबर लीजिए। (97) ये दोनों मुबारक इरशाद हज़रत मौलाना जामी (क़ुद्दिस सिर्रहु) ने 'नफ़हात-उल-उन्स' में ज़िक्र किए हैं। (98) अज़ीम इमाम, मेरे आका सैय्यदी अली वफ़ा (रज़ियल्लाहु अन्हु) फ़रमाते हैं:

अरबी: पुरुष वह नहीं है जिसे अर्श (सिंहासन) और उसके भीतर के आकाश, जन्नत और जहन्नम सीमित कर लें। बल्कि पुरुष वह है जिसकी दृष्टि इस पूरे अस्तित्व के पार चली जाए, और वहां उसे ब्रह्मांड के रचयिता (सुब्हानहु व तआला) की महानता का पता चले। (1) [उर्दू]: मर्द वह नहीं जिसे अर्श और जो कुछ उसके घेरे में है—आसमान, जन्नत और जहन्नम—यही चीजें सीमित और कैद कर लें। मर्द वह है जिसकी निगाह इस तमाम ब्रह्मांड के पार गुज़र जाए; वहाँ उसे ब्रह्मांड के रचयिता (सुब्हानहु व तआला) की अज़मत (महानता) की क़दर खुलेगी।

(99) यह पाकीज़ा कलाम 'अल-यवाक़ीत वल-जवाहर फ़ी अक़ाएदिल अकाबिर' नामक पुस्तक में उद्धृत है। (100) 'इब्रीज़ शरीफ़' में है:

अरबी: मैंने उन्हें (रज़ियल्लाहु अन्हु) कई बार कहते सुना: "सात आसमान और सात ज़मीनें एक मोमिन बंदे की दृष्टि में सिर्फ एक विस्तृत जंगल में पड़ी एक अंगूठी के समान हैं।" (2) [उर्दू]: यानी मैंने हज़रत सैय्यद (रज़ियल्लाहु अन्हु) से बार-बार सुना कि फ़रमाते: सातों आसमान और सातों ज़मीनें कामिल (पूर्ण) मोमिन की वसाअत-ए-निगाह (दृष्टि की व्यापकता) में ऐसे हैं जैसे एक बे-आब-ओ-गयाह (सुनसान) मैदान में एक छल्ला पड़ा हुआ हो।

(101) इमाम शेरानी पुस्तक 'अल-जवाहर' में हज़रत सैय्यदी अली ख़वास (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत करते हैं:

[उर्दू]: कामिल का दिल तमाम आलमे उलवी (उच्च लोक) और सिफ़्ली (निम्न लोक) का विस्तारपूर्वक आईना है।

(102) इमाम राज़ी 'तफ़्सीर-ए-कबीर' में मोतज़िला के जवाब में औलिया की करामात की हक़ीक़त पर दलीलें देते हुए फ़रमाते हैं:

अरबी: छठी दलील: इसमें कोई संदेह नहीं है कि कार्यों का संचालक आत्मा है, शरीर नहीं। इसीलिए हम देखते हैं कि जिसे ग़ैब की दुनिया के हालातों का ज्ञान अधिक है... [उर्दू]: यानी अहले सुन्नत की

छठी दलील यह है कि बिला-शुबा (निस्संदेह) कार्यों का मुतवल्ली (संचालक) तो रूह है न कि बदन। इसी लिए हम देखते हैं कि जिसे आलमे ग़ैब के अहवाल का इल्म ज़्यादा है उसका...

---

1 अल-यवाक़ीत वल-जवाहर, 34वीं बहस, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 2/370। 2 अल-इब्रीज़, छठा अध्याय, मुस्तफ़ा अल-बाबी, मिस्र, पृ. 242। 3 अल-जवाहर वल-दुरर, अल-इब्रीज़ के हाशिये पर, छठा अध्याय, मुस्तफ़ा अल-बाबी, मिस्र, पृ. 223।

گنگوہی صاحب ! اب اپنے شیطانی شرک براہین کی خبر لیجئے۔ (۹۷) یہ دونوں ارشاد مبارک حضرت مولینا جامی قدس سرہ السامی نے نفحات الانس میں ذکر کیے۔ (۹۸) امام اجل سیدی علی وفارضی اللہ تعالٰی عنہ فرماتے ہیں:

لیس الرجل من یقیدہ العرش وما حواہ من الافلاک والجنۃ والنار، وانما الرجل من نفذ بصرہ الی خارج ھذا الوجود کلہ وھناك یعرف قدر عظمۃ موجوہ سبحانہ وتعالٰی ۔ 1 | مرد وہ نہیں جسے عرش اور جو کچھ اس کے احاطہ میں ہے آسمان و جنت و نار، یہی چیزیں محدود مقید کرلیں، مرد وہ ہے جس کی نگاہ اس تمام عالم کے پار گزر جائے وہاں اسے موجد عالم سبحانہ و تعالٰی کی عظمت کی قدر کھلے گی۔

(۹۹) یہ پاکیزہ کلام کتاب الیواقیت والجواہر فی عقائد الاکابر میں نقل فرمایا۔ (۱۰۰) ابریز شریف میں ہے :

سمعتہ رضی اللہ تعالی عنہ احیانا یقول ما السموات السبع والارضون السبع فی نظر العبد المؤمن الا کحلقۃ ملقاۃ فی فلاۃ من الارض 2۔ | یعنی میں نے حضرت سید رضی اللہ تعالٰی عنہ سے بارہا سنا کہ فرماتے ساتویں آسمان اور ساتویں زمینیں مومن کامل کی وسعت نگاہ میں ایسے ہیں جیسے ایک میدان لق و دق میں ایک چھلا پڑا ہوا۔

(۱۰۱) امام شعرانی کتاب الجواہر میں حضرت سیدی علی خواص رضی اللہ تعالٰی عنہ سے راوی:

الکامل قلبہ مراۃ للوجود العلوی و السفلی کلہ علی التفصیل 3۔ | کامل کا دل تمام عالم علوی و سفلی کا بروجہ تفصیل آئینہ ہے۔

(۱۰۲) امام رازی تفسیر کبیر میں رد معتزلہ کے لیے حقیقت کرامات اولیاء پر دلائل قائم کرنے میں فرماتے ہیں :

الحجة السادسة لا شك ان المتولی للافعال هو الروح لا البدن و لهذا نری ان کل من کان اکثر علماً باحوال عالم الغیب | یعنی اہل سنت کی چھٹی دلیل یہ ہے کہ بلا شبہ افعال کی متولی تو روح ہے نہ کہ بدن، اسی لیے ہم دیکھتے ہیں کہ جسے احوال عالم غیب کا علم زیادہ ہے اس کا

---

1 الیواقیت والجواہر البحث الرابع والثلاثون دار احیاء التراث العربی بیروت ۲/ ۳۷۰ 2 الابریز الباب السادس مصطفٰی البابی مصر ص ۲۴۲ 3 الجواہر والدرر علی ھامش الابریز الباب السادس مصطفیٰ البابی مصر ص ۲۲۳

Fatawa Razawiya, Volume 29

Page 472 of 750

[Arabic Box Text]: His heart was stronger, hence [Imam] Ali (Karam Allahu Wajhahu) said: "By Allah, I did not uproot the door of Khaybar with physical strength, but with divine power." Similarly, when a servant persists in acts of obedience, he reaches a station regarding which the Lord (Almighty) says: "I become his hearing and his sight." So, when the light of Divine Majesty becomes his hearing, he hears what is near and far. When that light becomes his sight, he sees what is near and far. And when that light becomes his hand, he gains power to act in difficult and easy, far and near matters.

[Urdu Column Text]: The heart is much stronger, therefore Moula Ali said: By God, I did not uproot the door of Khaybar by physical strength but by divine power. Similarly, when a servant always remains in obedience, he reaches that position about which the Lord Almighty says that there I myself become his ear and eye. So when the light of Divine Majesty becomes his ear, the servant hears everything near and far, and when that light becomes his eye, the servant sees everything near and far, and when that light becomes his hand, he carries out actions in easy and difficult, far and near [matters].

(103) Hazrat Maulvi Ma'navi (may his secret be sanctified) says in the third volume of Mathnawi Sharif regarding the blessed Hadith of the 'Sock and the Eagle', that the Holy Prophet, Master of Messengers (peace and blessings of Allah be upon him) said: [Persian]: Although God showed us every unseen thing, at that moment the heart was occupied with itself. (Translation: Although God has shown us every unseen thing, the heart at that time was occupied with its own essence.)

(104) Maulana Bahr-ul-Uloom, Malik-ul-Ulama (may his secret be sanctified), says in the commentary: [Persian]: Muhammad Raza says that [the heart] had no concern for the body, and due to immersion (istighraq), some unseen things remain hidden from the prophets. The meaning of the verse is thus: that the heart was occupied with itself, that the heart was observing the soul of the heart, and the Essence of Uniqueness (Ahadit) with all the Names is in the heart, so because of... [Urdu Column]: i.e., Muhammad Raza says the heart had no concern for the body and due to immersion, some hidden things are hidden from prophets. The meaning of the verse is that the heart was observing the essence of the heart and the Essence of Uniqueness with all the Names is in the heart, then due to this...

Footnotes: 1. Mafatih al-Ghayb (Tafsir Kabir), under Verse 18/9, Dar al-Kutub al-Ilmiyah, Beirut, 21/77. 2. Mathnawi Ma'navi, 'The Eagle stealing the sock of the Messenger of Allah (peace be upon him)', Noorani Kutub Khana Peshawar, Vol 3, p 81.

फ़तावा रज़विया, खंड २९

पृष्ठ ७५० का ४७२

[अरबी बॉक्स पाठ]: उनका हृदय अधिक शक्तिशाली था, इसीलिए मौला अली (करम अल्लाहू वज्हहु) ने फ़रमाया: "अल्लाह की कसम, मैंने खैबर का दरवाज़ा शारीरिक शक्ति से नहीं बल्कि ईश्वरीय शक्ति से उखाड़ा था।" इसी तरह, जब कोई सेवक निरंतर आज्ञाकारिता (इबादत) में लगा रहता है, तो वह उस स्थान पर पहुँच जाता है जिसके बारे में अल्लाह (सर्वशक्तिमान) फ़रमाता है कि: "मैं उसके कान और उसकी आँख बन जाता हूँ।" अतः जब ईश्वरीय महिमा का नूर उसके कान बन जाता है, तो वह निकट और दूर सब कुछ सुनता है। जब वह नूर उसकी आँख बन जाता है, तो वह निकट और दूर सब कुछ देखता है। और जब वह नूर उसका हाथ बन जाता है, तो वह कठिन और सरल, दूर और निकट के कार्यों में सामर्थ्य प्राप्त कर लेता है।

[उर्दू कॉलम पाठ]: दिल बहुत अधिक शक्तिशाली होता है, इसलिए मौला अली ने फरमाया: खुदा की कसम, मैंने खैबर का दरवाजा शारीरिक शक्ति से नहीं बल्कि ईश्वरीय शक्ति से उखाड़ा था। इसी तरह, जब कोई बंदा हमेशा इबादत में लगा रहता है, तो वह उस मुकाम पर पहुँच जाता है जिसके बारे में अल्लाह रब्बुल इज्ज़त फरमाता है कि वहां मैं खुद उसके कान और आँख बन जाता हूँ। तो जब रब्बे-जुलजलाल का नूर उसके कान बन जाता है, तो बंदा पास और दूर सब कुछ सुनता है, और जब वह नूर उसकी आँख बन जाता है, तो बंदा पास और दूर सब कुछ देखता है, और जब वह नूर उसका हाथ बन जाता है, तो वह आसान और मुश्किल, पास और दूर के मामलात में तसर्रुफ़ (कार्य) करता है।

(१०३) हज़रत मौलवी मानवी (क़ुद्दिस सिर्रहु) मसनवी शरीफ़ के तीसरे दफ़्तर में 'मोज़ा और उक़ाब' की मुस्तताह (पवित्र) हदीस के बारे में फ़रमाते हैं कि सैयदुल मुर्सलीन (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया: [फ़ारसी]: यद्यपि खुदा ने हमें हर छिपी चीज़ दिखाई, लेकिन उस पल दिल अपनी ज़ात में मशगूल (व्यस्त) था। (अनुवाद: हालाँकि खुदा ने हमें हर ग़ैब (छिपी चीज़) दिखाई है, लेकिन दिल उस वक्त अपनी ज़ात में मशगूल था।)

(१०४) मौलाना बहर-उल-उलूम, मलिक-उल-उलमा (क़ुद्दिस सिर्रहु), शरह (व्याख्या) में फरमाते हैं: [फ़ारसी]: मुहम्मद रज़ा कहता है कि [दिल को] जिस्म की कोई फ़िक्र न थी, और इस्तिग्राक़ (मग्नता) के कारण कुछ ग़ैब (छिपी बातें) नबियों से ओझल हो जाती हैं। शेर का अर्थ इस प्रकार है: कि दिल

अपनी ही ज़ात में मशग़ूल था, यानी दिल रूह-ए-दिल का मुशाहिदा (अवलोकन) कर रहा था और तमाम नामों के साथ ज़ात-ए-अहदियत दिल में है, इसलिए... [उर्दू कॉलम]: यानी मुहम्मद रज़ा कहता है कि दिल को बदन की फ़िक्र न थी और इस्तिग़्राक़ की वजह से कुछ ग़ैब नबियों से छिप जाते हैं। शेर के मानी यह हैं कि दिल ज़ात-ए-दिल का मुशाहिदा कर रहा था और तमाम अस्मा (नामों) के साथ ज़ात-ए-अहदियत दिल में है, तो इस सबब (कारण) से...

पादलेख: १. मफ़ातीह अल-ग़ैब (तफ़सीर कबीर), आयत १८/९ के अंतर्गत, दार अल-कुतुब अल-इल्मिया, बेरुत, २१/७७। २. मसनवी मानवी, 'अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का मोज़ा उक़ाब द्वारा ले जाना', नूरानी कुतुब खाना पेशावर, खंड ३, पृष्ठ ८१।

كان اقوى قلبًا ولهذا قال على كرم الله تعالى وجهه والله ماقلعت باب خيبر بقوة جسدانية ولكن بقوة ربانية وكذلك العبد اذا واظب على الطاعات بلغ الى المقام الذى يقول الله تعالى كنت له سمعًا وبصرًا فاذا صار نور اجلال الله تعالى سمعًا له سمع القريب و البعيد واذا صار ذلك النور بصرا له رأى القريب و البعيد واذا صار ذلك النور يداله قدر على التصرف فى الصعب والسهل والبعيد والقريب۔

دل زیادہ زبردست ہوتا ہے، و لہذا مولیٰ علی نے فرمایا: خدا کی قسم میں نے خیبر کا دروازہ جسم کی قوت سے نہ اکھاڑا بلکہ ربانی طاقت سے، اسی طرح بندہ جب ہمیشہ طاعت میں لگا رہتا ہے تو اس مقام تک پہنچتا ہے جس کی نسبت رب عزوجل فرماتا ہے کہ وہاں میں خود اس کے کان آنکھ ہو جاتا ہوں تو جب اجلال الٰہی کا نور اس کا کان ہو جاتا ہے بندہ نزدیک، دور سب سنتا ہے اور جب وہ نور اس کی آنکھ ہو جاتا ہے بندہ نزدیک و دور، سب دیکھتا ہے اور جب وہ نور اس کا ہاتھ ہو جاتا ہے بندہ سہل و دشوار و نزدیک و دور میں تصرفات کرتا ہے۔

(۱۰۳) حضرت مولوی معنوی قدس سرہ العلوی دفتر ثالث مثنوی شریف میں موزہ و عقاب کی حدیث مستطاب میں فرماتے ہیں حضور پر نور سید المرسلین صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا:

گرچہ ہر غیب خدامارا نمود / دل دراں لحظہ بخود مشغول بود (اگرچہ ہر غیب خدا نے ہم کو دکھایا ہے لیکن دل اس وقت اپنی ذات میں مشغول تھا۔)

(۱۰۴) مولانا بحر العلوم ملک العلماء قدس سرہ، شرح میں فرماتے ہیں: محمد رضا گفتہ اے فکر تن نداشت و از جہت استغراق بعضی مغیبات برانبیاء مستور شوند انتی، معنی بیت این چنیں ست کہ

دل بخود مشغول بود کہ دل نفس دل را مشاہدہ می کرد و ذات باحدیث جمیع اسماء در دل ست پس بسبب یعنی محمد رضا کہتا ہے دل کو بدن کی فکر نہ تھی اور استغراق کی وجہ سے بعض غیوب انبیاء سے چھپ جاتے ہیں انتی، شعر کے معنی یہ ہیں کہ دل ذات دل کا مشاہدہ کر رہا تھا اور ذات احدیت تمام اسماء کے ساتھ دل میں ہے، پس اس

حواشی: ۱۔ مفاتیح الغیب (تفسیر کبیر) تحت آیۃ ۱۸/ ۹ دار الکتب العلمیہ بیروت ۲۱/ ۷۷ ۲۔ مثنوی معنوی ربودن عقب موزہ رسول خدا صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نورانی کتب خانہ پشاور دفتر سوم ص ۸۱

Fatawa Rizwiya - Volume 29

[Box 1] (Persian) Being absorbed in these contemplations, there was no attention towards the creatures, so some creations remained unnoticed; and this is an excellent explanation. (Urdu Translation) Due to being occupied in contemplation, the attention was not towards the universe, therefore some states remained hidden; this is the best justification. (T)

(105, 106, 107, and 108) Imam Qurtubi, the commentator of Sahih Muslim, then Imam Ayni Badr Mahmood, then Imam Ahmad Qastalani, the commentator of Sahih Bukhari, then Allama Ali Qari in 'Mirqat Shara Mishkat', in the explanation of the Hadith 'and five (unseen things) which no one knows except Allah', state:

[Box 2] (Arabic) So whoever claims knowledge of any of them without attributing it to the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him), his claim is a lie. (Urdu Translation) That is, whoever claims knowledge of any of the five things like the Day of Judgment etc., and does not attribute it to the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) by stating that 'this knowledge came to me through the teaching of the Holy Prophet', he is a liar in his claim.

It became clear that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) knows these five unseen things and from these, he can inform whichever of his servants he wishes, and whoever claims their knowledge through the teaching of the Holy Prophet, his claim will not be falsified.

(109) From 'Rawd al-Nadir', a commentary on 'Jami' al-Saghir' by the Great Imam Jalal al-Millah wa al-Din al-Suyuti, regarding this Hadith:

[Box 3] (Arabic) As for his saying (peace and blessings of Allah be upon him) 'except Him', it is explained as follows: no one knows them by himself or from his own essence except Him. However, they may be known through the teaching of Allah Almighty, for indeed there are those who know them, and we have found this for more than one person, as we have seen a group. (Urdu Translation) What the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said—that 'no one knows these five unseen things except Allah'—means that only Allah knows them by His own self and essence. However, through Allah's teaching, others also sometimes receive knowledge of them. Undoubtedly, there are people here who know these unseen things, and we have seen several individuals.

1 2. 'Umdat al-Qari Sharh al-Bukhari, Book of Faith, Chapter on Gabriel's Question to the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him), Idarat al-Tiba'ah al-Muniriyya, Beirut, 1/290; Irshad al-Sari Sharh al-Bukhari, Book of Faith, Chapter on Gabriel's Question to the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him), Dar al-Kutub al-Arabi, Beirut, 1/121.

फतवा रिज़विया - खंड 29

[बॉक्स 1] (फारसी) इन अवलोकनों में तल्लीन होने के कारण, सृष्टि की ओर ध्यान नहीं था, इसलिए कुछ रचनाएँ अनदेखी रह गईं; और यह एक उत्कृष्ट व्याख्या है। (उर्दू अनुवाद) अवलोकन में व्यस्त होने के कारण, ध्यान ब्रह्मांड की ओर नहीं था, इसलिए कुछ स्थितियाँ छिपी रहीं; यह सबसे अच्छा औचित्य है। (टी)

(105, 106, 107, और 108) सहीह मुस्लिम के टीकाकार इमाम कुर्तुबी, फिर इमाम ऐनी बदर महमूद, फिर सहीह बुखारी के टीकाकार इमाम अहमद क़स्तलानी, फिर अल्लामा अली क़ारी 'मिर्क़ात शरह मिश्कात' में हदीस "और पाँच (अनदेखी बातें) जिन्हें अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता" की व्याख्या में कहते हैं:

[बॉक्स 2] (अरबी) तो जो कोई अल्लाह के रसूल (उन पर अल्लाह की शांति और आशीर्वाद हो) की ओर संकेत किए बिना उनमें से किसी के ज्ञान का दावा करता है, उसका दावा झूठ है। (उर्दू अनुवाद) यानी, जो कोई कयामत आदि पाँच चीजों में से किसी के ज्ञान का दावा करता है, और उसे अल्लाह के रसूल (उन पर अल्लाह की शांति और आशीर्वाद हो) की ओर यह कहते हुए संकेत नहीं करता है कि 'यह ज्ञान मुझे पवित्र नबी की शिक्षा के माध्यम से प्राप्त हुआ है', वह अपने दावे में झूठा है।

यह स्पष्ट हो गया कि अल्लाह के रसूल (उन पर अल्लाह की शांति और आशीर्वाद हो) इन पाँच अनदेखी चीजों को जानते हैं और इनमें से वे अपने जिस सेवक को चाहें सूचित कर सकते हैं, और जो पवित्र नबी की शिक्षा के माध्यम से उनके ज्ञान का दावा करता है, उसका दावा गलत नहीं ठहराया जाएगा।

(109) महान इमाम जलाल अल-मिल्लाह व अल-दीन अल-सुयुती द्वारा 'जामि अल-सगीर' की टिप्पणी 'रौज़ अल-नदीर' से, इस हदीस के बारे में है:

[बॉक्स 3] (अरबी) जहाँ तक उनके(उन पर अल्लाह की शांति और आशीर्वाद हो) कहने का सवाल है "उनके सिवा," तो इसे इस प्रकार समझाया गया है: कोई भी उन्हें अपने आप से या अपनी स्वयं की सत्ता से नहीं जानता है, उनके सिवा। हालाँकि, उन्हें सर्वशक्तिमान अल्लाह की शिक्षा के माध्यम से जाना जा सकता है, क्योंकि वास्तव में ऐसे लोग हैं जो उन्हें जानते हैं, और हमने इसे एक से अधिक व्यक्तियों के लिए पाया है, जैसा कि हमने एक समूह देखा है। (उर्दू अनुवाद) पवित्र नबी (उन पर अल्लाह की शांति और आशीर्वाद हो) ने जो कहा कि 'अल्लाह के सिवा कोई भी इन पाँच अनदेखी

चीजों को नहीं जानता', उसका अर्थ है कि केवल अल्लाह ही उन्हें अपने स्वयं के और सार से जानता है। हालाँकि, अल्लाह की शिक्षा के माध्यम से, दूसरों को भी कभी-कभी उनका ज्ञान प्राप्त होता है। निस्संदेह, यहाँ ऐसे लोग मौजूद हैं जो इन अनदेखी चीजों को जानते हैं, और हमने कई व्यक्तियों को देखा है।

---

1 2. 'उम्दत अल-क़ारी शरह अल-बुखारी, आस्था की पुस्तक, नबी (उन पर अल्लाह की शांति और आशीर्वाद हो) से जिब्राइल के प्रश्न पर अध्याय, इदारात अल-तिबा'ह अल-मुनीरिया, बेरूत, 1/290; इरशाद अल-सारी शरह अल-बुखारी, आस्था की पुस्तक, नबी (उन पर अल्लाह की शांति और आशीर्वाद हो) से जिब्राइल के प्रश्न पर अध्याय, दार अल-कुतुब अल-अरबी, बेरूत, 1/121.

فتاوی رضویہ - جلد ۲۹

[باکس ۱] استغراق دریں مشاہدات توجہ بسوئے اکوان نبود پس بعض اکوان مغفول عنہ ماند وایں وجہ وجیہ است۔ مشاہدہ میں مشغول ہونے کی وجہ سے توجہ عالم کی طرف نہ تھی اس لیے بعض حالات پوشیدہ رہے یہ بہترین توجیہ ہے۔ (ت)

(۱۰۵ و ۱۰۶ و ۱۰۷ و ۱۰۸) امام قرطبی شارح صحیح مسلم، پھر امام عینی بدر محمود، پھر امام احمد قسطلانی شارح صحیح بخاری، پھر علامہ علی قاری مرقاۃ شرح مشکوۃ حدیث و خمس لا یعلمھن الا اللہ کی شرح میں فرماتے ہیں۔

[باکس ۲] فمن ادعی علم شئ منھا غیر مسند الی رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم کان کاذباً دعواہ -2 یعنی جو کوئی قیامت وغیرہ خمس سے کسی شے کے علم کا ادعا کرے اور اسے رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی طرف نسبت نہ کرے کہ حضور کے بتائے سے مجھے یہ علم آیا، وہ اپنے دعوے میں جھوٹا ہے۔

صاف معلوم ہوا کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم ان پانچوں غیبوں کو جانتے ہیں اور اس میں سے جو چاہیں اپنے جس غلام کو چاہیں بتا سکتے ہیں، اور جو حضور کی تعلیم سے ان کے علم کا دعویٰ کرے اس کی تکذیب نہ ہوگی۔

(۱۰۹) روض النضیر شرح جامع صغیر امام کبیر جلال الملۃ والدین سیوطی سے اس حدیث کے متعلق ہے۔

[باکس ۳] اما قولہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم الا ھو ففسر بانہ لا یعلمھا احد بذاتہ و من ذاتہ الا ھو لکن قد تعلم باعلام اللہ تعالی فان ثمہ من یعلمھا وقد وجدنا ذلك لغیر واحد کما راینا جماعتہ نبی کریم صلی

اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے یہ جو فرمایا کہ ان پانچوں غیبوں کو اللہ کے سوا کوئی نہیں جانتا اس کے یہ معنی ہیں کہ بذات خود اپنی ذات سے انہیں اللہ ہی جانتا ہے مگر خدا کے بتائے سے کبھی ان کو بھی ان کا علم ملتا ہے بے شک یہاں ایسے موجود ہیں جو ان غیبوں کو جانتے ہیں اور ہم نے متعدد اشخاص

---

2 1 عمدة القاری شرح البخاری کتاب الایمان باب سوال جبریل النبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم ادرة طباعة المنیریة بیروت ۱ / ۲۹۰، ارشاد الساری شرح البخاری کتاب الایمان باب سوال جبریل النبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم دار الکتاب العربی بیروت ۱ / ۱۲۱

Fatawa Razawiya, Volume 29

Arabic Text	Urdu/English Translation
"They knew when my community would die and they knew what was in the wombs during the state of the woman's pregnancy [and] even before that."[1]	Among those who know them, we have seen a group that knew when they would die, and they knew what was in the womb during the period of a woman's pregnancy, and even before pregnancy, they knew what was in the womb.

(110) Shaykh Muhaqqiq (may his secret be sanctified) states in *Lama'at Sharh Mishkat* under this same hadith:

Arabic Text	Urdu/English Translation
"What is meant is that it is not known without the teaching of Allah Almighty from Him."[2]	The meaning is that matters of the unseen, such as the Day of Judgment etc., are not known unless revealed by God.

(111) Allama Bajuri states in the commentary of *Burda Sharif*:

Arabic Text	Urdu/English Translation
"He (peace and blessings of Allah be upon him) did not depart from this world until Allah Almighty had taught him these matters, i.e., the five [unseen things]."[3]	The Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) did not depart from the world until Allah Almighty granted him the knowledge of those five unseen matters.

(112) Allama Shinwani stated in *Jam'ul Nihaya* as a Hadith that:

Arabic Text	Urdu/English Translation
"It has been narrated that Allah Almighty did not take the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) until He had informed him of everything."[4]	Indeed, it has been narrated that Allah Almighty did not take the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) from the world until He granted him the knowledge of all things.

(113) Hafiz al-Hadith Sayyidi Ahmad Maliki narrates from the Saint of the time, Sayyid Sharif Abdul Aziz Masood Hasani (may Allah be pleased with him):

Arabic Text	Urdu/English Translation
"He (peace and blessings of Allah be upon him) – nothing is hidden from	That is, when the Day of Judgment will come, when, where, and how much rain will fall, what is

Arabic Text	Urdu/English Translation
him of the five mentioned in the noble verse; and how could it be hidden from him when the seven Qutubs (saints) of his community [also know them]...”	in the mother's womb, what will happen tomorrow, where so-and-so will die; nothing of these five unseen matters mentioned in the noble verse [is hidden from] the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him).

[1] *Rawd al-Nadir Sharh al-Jami' al-Saghir* [2] *Lama'at al-Tanqih Sharh Mishkat al-Masabih*, under hadith 30, Maktaba al-Ma'arif al-Ilmiyya Lahore 1/73 [3] *Hashiya al-Bajuri 'ala al-Burda* under the verse "For indeed, from your generosity is the world..." Mustafa al-Babi Egypt p. 92 [4]

फतावा रज़विया, जिल्द 29

अरबी पाठ	उर्दू/हिंदी अनुवाद
"वे जानते थे कि मेरी उम्मत कब मरेगी और वे जानते थे कि औरतों के पेट में उनके गर्भधारण के दौरान और उससे पहले भी क्या है।"[1]	उनको जानने वालों में से हमने एक जमात को देखा कि उन्हें मालूम था कि वे कब मरेंगे और उन्होंने औरत के हमल (गर्भावस्था) के ज़माने में बल्कि हमल से भी पहले जान लिया कि पेट में क्या है।

(110) शेख मुहक्किक (अल्लाह उनके रहस्य को पवित्र करे), मिश्कात की व्याख्या 'लमाआत' में इसी हदीस के तहत फरमाते हैं:

अरबी पाठ	उर्दू/हिंदी अनुवाद
"इसका अर्थ यह है कि अल्लाह तआला की शिक्षा के बिना यह ज्ञात नहीं होता।"[2]	मुराद यह है कि क़यामत वगैरह ग़ैब (परोक्ष बातें) अल्लाह के बताए बिना मालूम नहीं होते।

(111) अल्लामा बाजूरि बुर्दा शरीफ की व्याख्या में फरमाते हैं:

अरबी पाठ	उर्दू/हिंदी अनुवाद
"हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) इस दुनिया से तब तक तशरीफ नहीं ले गए जब तक कि अल्लाह तआला ने उन्हें इन पाँचों ग़ैबों का इल्म नहीं दे दिया।"[3]	नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दुनिया से तशरीफ नहीं ले गए मगर इसके बाद कि अल्लाह तआला ने हुज़ूर को उन पाँच ग़ैबों का इल्म दे दिया।

(112) अल्लामा शनवानी ने जमउल निहाया में इसे बतौर-ए-हदीस बयान किया कि:

अरबी पाठ	उर्दू/हिंदी अनुवाद
"यह रिवायत है कि अल्लाह तआला ने नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को तब तक दुनिया से नहीं उठाया जब तक कि हुज़ूर को तमाम चीज़ों का इल्म अता नहीं फरमाया।"[4]	बेशक यह वारिद हुआ कि अल्लाह तआला नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दुनिया से तब तक नहीं ले गया जब तक कि हुज़ूर को तमाम अशिया (चीज़ों) का इल्म अता न फरमाया।

(113) हाफ़िज़ुल हदीस सैय्यदी अहमद मालिकी गौस-उज़-ज़मां सैय्यद शरीफ अब्दुल अज़ीज़ मसूद हसनी रज़ियल्लाहु अन्हु से रावी हैं:

अरबी पाठ	उर्दू/हिंदी अनुवाद
“हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से पाक आयत में ज़िक्र की गई पाँचों चीज़ें छिपी नहीं हैं, और उनसे यह कैसे छिप सकती हैं जबकि उनकी उम्मत के सात कुतुब (संत)...”	यानी क़यामत कब आएगी, बारिश कब और कहाँ और कितनी बरसेगी, मादा के पेट में क्या है, कल क्या होगा, फलां कहाँ मरेगा, ये पाँचों ग़ैब जो आयह करीमा में मज़कूर हैं उनमें से कोई चीज़ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम [से छिपी नहीं है]।

---

[1] रौज़ुन नज़ीर शरह अल-जामि’ अस-सग़ीर [2] लमाआतुल तनक़ीह शरह मिश्कातुल मसाबीह, हदीस 30 के तहत, मकतबा अल-मआरिफ अल-इल्मिय्या लाहौर 1/73 [3] हाशिया अल-बाजूरि अलल बुर्दा, शे'र 'फइन मिंन जूदि क अद्दुन्या...' के तहत, मुस्तफा अल-बाबी मिस्र पृ. 92 [4]

पृष्ठ 750 का 474

عربی عبارت	اردو ترجمہ
علمو امتی یموتون و علمو ان کے جاننے والے پائے ایک جماعت کو ہم نے دیکھا کہ ان کو معلوم ما فی الارحام حال حمل تھا کب مریں گے اور انہوں نے عورت کے حمل کے زمانے میں بلکہ المرأۃ قبلہ ۱۔	حمل سے بھی پہلے جان لیا کہ پیٹ میں کیا ہے۔

(۱۱۰) شیخ محقق قدس سرہ، لمعات شرح مشکوۃ میں اسی حدیث کے ماتحت فرماتے ہیں:

عربی عبارت	اردو ترجمہ
المراد لا تعلم بدون تعلیم اللہ تعالیٰ منہ ۲۔	مراد یہ ہے کہ قیامت وغیرہ غیب بے خدا کے بتائے معلوم نہیں ہوتے۔

(۱۱۱) علامہ ہبجوری شرح بردہ شریف میں فرماتے ہیں:

عربی عبارت	اردو ترجمہ
لم یخرج صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم من الدنیا الا بعد ان اعلمہ اللہ تعالی بھذہ الامور ای الخمسہ ۳۔	نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم دنیا سے تشریف نہ لے گئے مگر بعد اس کے کہ اللہ تعالیٰ نے حضور کو ان پانچ غیبوں کا علم دے دیا۔

(۱۱۲) علامہ شنوانی نے جمع النہایہ میں اسے بطورِ حدیث بیان کیا کہ:

عربی عبارت	اردو ترجمہ
قد ورد ان الله تعالى لم يخرج النبي صلى الله تعالى عليه وسلم حتى اطلعه على كل شيئ ۴۔	بے شک وارد ہوا کہ اللہ تعالیٰ نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کو دنیا سے نہ لے گیا جب تک کہ حضور کو تمام اشیاء کا علم عطا نہ فرمایا۔

(۱۱۳) حافظ الحدیث سیدی احمد مالکی غوث الزماں سید شریف عبدالعزیز مسعود حسنی رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے راوی:

عربی عبارت	اردو ترجمہ
هو صلى الله تعالى عليه وسلم لا يخفى يعنى قيامت كب آئے گى، مينہ كب اور كہاں اور كتنا برسے عليه شيئ من الخمس المذكورة فى الاية گا، مادہ كے پيٹ ميں كيا ہے، كل كيا ہوگا، فلاں كہاں مرے الشريفة و كيف يخفى عليه ذلك و گا، يہ پانچوں غيب جو آيہ كريمہ ميں مذكور ہيں ان ميں الاقطاب السبعة من امته سے كوئى چيز رسول الله صلى الله عليہ وسلم	

---

۱ روض النضير شرح الجامع الصغير ۲ لمعات التنقيح شرح مشكاة المصابيح تحت حديث ۳۰ مكتبة المعارف العلمية لاهور ۱ / ۳ ۷۳ حاشية الباجوري على البردة تحت البيت فان من جودك الدنيا الخ مصطفى البابي مصر ص ۹۲ ۴

Fatawa Razawiya, Volume 29

Arabic Text	Urdu Translation/Explanation
...the noble [saints] know them while they are below the status of the Ghaus, so how about the master of the first and the last ones, who is the cause of everything and from whom everything originates. [1]	...are not hidden from him (peace and blessings of Allah be upon him). And how could these things be concealed from the Holy Prophet, while the seven Qutbs from his Ummah know them, and their rank is below that of the Ghaus. What can be said then about the Ghaus, and what about his [the Prophet's] rank? He who is the leader of all predecessors and successors and the whole world, and the cause of every thing, and every thing is from him, may Allah send peace and blessings upon him.

(114) Also mentioned in 'Al-Ibriz al-Aziz': | قلت للشيخ رضى الله تعالى عنه فان علماء الظاهر من المحدثين وغيرهم اختلفوا في النبى صلى الله تعالى عليه وسلم هل كان يعلم الخمس فقال رضى الله تعالى عنه كيف يخفى امر الخمس عليه صلى الله تعالى عليه وسلم والواحد من اهل التصرف من امته الشريفة لايمكنه التصرف الا بمعرفة هذه الخمس [2] | i.e., I submitted to Hazrat Sheikh (may Allah be pleased with him) that the outward scholars and Hadith scholars hold differing views on the issue of 'Khams' (the five unseens). One group of scholars says the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) had knowledge of them, while the other denies it. What is the truth in this? He replied: (Those who believe the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) had knowledge of the five unseens are on the right path). How can these unseens be hidden from him, while those among the noble Ummah who are saints with spiritual authority (who exercise authority in the universe), as long as they believe in the knowledge of these five unseens are on the right path) how can these unseens be hidden from him, while those among the noble Ummah who are saints with spiritual authority (who exercise authority in the universe), until they know these five unseens, they cannot exercise spiritual authority. |

(115) In Tafsir Kabir, under the verse: "[He is] Knower of the unseen, and He does not disclose His unseen to anyone, Except whom He has approved of messengers" [3] it is said: | اى وقت وقوع القيمة من غيب | i.e., the time of the occurrence of the Day of Judgment is from the Unseen. |

---

[1] [2] Al-Ibriz, Chapter Two, Mustafa al-Babi Egypt, pp. 167 & 168 [3] Al-Quran al-Karim 72 / 26

फ़तावा रज़विया, खंड 29

अरबी पाठ	उर्दू अनुवाद/व्याख्या
...वे कुलीन [संत] उन्हें जानते हैं जबकि वे ग़ौस के पद से नीचे हैं, तो फिर प्रथम और अंतिम के स्वामी के बारे में क्या, जो हर चीज़ का कारण है और जिनसे हर चीज़ की उत्पत्ति हुई है। [1]	...उन पर (अल्लाह की कृपा और शांति हो) गुप्त नहीं हैं। और ये चीज़ें हुज़ूर से कैसे छिपी हो सकती हैं, जबकि हुज़ूर की उम्मत के सात कुतूब उन्हें जानते हैं और उनका दर्जा ग़ौस से नीचे है। फिर ग़ौस का क्या कहना और फिर उनका [हुज़ूर का] क्या पूछना। जो सभी पूर्ववर्तियों और उत्तराधिकारियों और पूरी दुनिया के सरदार हैं, और हर चीज़ का कारण हैं, और हर चीज़ उन्हीं से है, अल्लाह उन पर कृपा और शांति बरसाए।

(114) इसके अलावा 'इब्रीज़ अज़ीज़' में फ़रमाया: | قلت للشیخ رضی اللہ تعالی عنہ فان علماء الظاہر من المحدثین وغیرھم اختلفوا في النبی صلی اللہ تعالی علیہ وسلم ھل کان یعلم الخمس فقال رضی اللہ تعالی عنہ کیف یخفی امر الخمس علیہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم والواحد من اھل التصرف من امتہ الشریفۃ لایمکنہ التصرف الا بمعرفۃ ھذہ الخمس [2] | यानी मैंने हज़रत शेख (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) से अर्ज़ की कि ज़ाहिरी उलेमा और मुहद्दिसीन 'ख़म्स' (पाँच रहस्यों) के मसले में आपस में मतभेद रखते हैं। उलेमा का एक समूह कहता है कि नबी करीम (उन पर अल्लाह की कृपा और शांति हो) को उनका ज्ञान था, दूसरा उनका इनकार करता है, इसमें सच क्या है? फ़रमाया: (जो नबी (उन पर अल्लाह की कृपा और शांति हो) को पाँचों ग़ैबों का ज्ञान मानते हैं वे हक़ पर हैं)। हुज़ूर से ये ग़ैब कैसे छिपे रह सकते हैं, जबकि हुज़ूर की उम्मत-ए-शरीफ़ा में जो औलिया-ए-किराम अहल-ए-तसर्रुफ़ हैं (जो दुनिया में तसर्रुफ़ फ़रमाते हैं), वे जब तक उन पाँचों ग़ैबों का ज्ञान मानते हैं वे हक़ पर हैं) हुज़ूर से ये ग़ैब कैसे छिपे रह सकते हैं, जबकि हुज़ूर की उम्मत-ए-शरीफ़ा में जो औलिया-ए-किराम अहल-ए-तसर्रुफ़ हैं (जो दुनिया में तसर्रुफ़ फ़रमाते हैं), वे जब तक उन पाँचों ग़ैबों को जान न लें, तसर्रुफ़ नहीं कर सकते। |

(115) तफ़सीर कबीर में इस आयत के तहत: "वह ग़ैब का जानने वाला है, तो वह अपने ग़ैब पर किसी को आगाह नहीं करता, सिवाय उस रसूल के जिसे उसने पसंद कर लिया हो" [3] फ़रमाया: | ای وقت وقوع القیمۃ من غیب | यानी क़यामत के वाक़े होने का वक़्त उस ग़ैब से है। |

[1] [2] अल-इब्रीज़, अध्याय दो, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, पृष्ठ 167 और 168 [3] अल-क़ुरान अल-करीम 72/26

पृष्ठ 750 में से 475

عربی عبارت **اردو ترجمہ و تشریح**

الشريفة يعلمونها وهم دون الغوث فكيف بسيد الاولين والآخرين الذى هو سبب كل شيئ ومنه كل شيئ 1 -

تعالٰی علیہ وسلم پر مخفی نہیں، اور کیونکر یہ چیزیں حضور سے پوشیدہ ہیں، حالانکہ حضور کی امت سے ساتوں قطب ان کو جانتے ہیں اور ان کا مرتبہ غوث کے نیچے ہے، غوث کا کیا کہنا پھر ان کا کیا پوچھنا۔ جو سب اگلوں پچھلوں سارے جہان کے سردار اور ہر چیز کے سبب ہیں اور ہر شے انہیں سے ہے صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم۔

(۱۱۴) نیز ابریز عزیز میں فرمایا : | قلت للشیخ رضی اللہ تعالی عنہ فان علماء الظاھر من المحدثین وغیرھم اختلفوا في النبی صلی اللہ تعالی علیہ وسلم ھل کان یعلم الخمس فقال رضی اللہ تعالی عنہ کیف یخفی امر الخمس علیہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم والواحد من اھل التصرف من امتہ الشریفۃ لایمکنہ التصرف الا بمعرفۃ ھذہ الخمس 2 _ | یعنی میں نے حضرت شیخ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے عرض کی کہ علماء ظاہر محدثین مسئلہ خمس میں باہم اختلاف رکھتے ہیں، علماء کا ایک گروہ کہتا ہے نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کو ان کا علم تھا، دوسرا ان کا رد کرتا ہے، اس میں حق کیا ہے؟ فرمایا (جو نبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کو پانچوں غیبوں کا علم مانتے ہیں وہ حق پر ہیں) حضور سے یہ غیب کیونکر چھپے رہیں گے حالانکہ حضور کی امت شریفہ میں جو اولیائے کرام اہل تصرف ہیں (کہ عالم میں تصرف فرماتے ہیں) وہ جب تک ان پانچوں غیبوں کا علم مانتے ہیں وہ حق پر ہیں) حضور سے یہ غیب کیونکر چھپے رہیں گے حالانکہ حضور کی امت شریفہ میں جو اولیائے کرام اہل تصرف ہیں (کہ عالم میں تصرف فرماتے ہیں) وہ جب تک ان پانچوں غیبوں کو جان نہ لیں تصرف نہیں کر سکتے۔ |

(۱۱۵) تفسیر کبیر میں زیر آیہ کریمہ "عٰلِمُ الْغَیْبِ فَلَا یُظْهِرُ عَلٰی غَیْبِهٖۤ اَحَدًا ۙ۝ لَّا مَنِ ارْتَضٰی مِنْ رَّسُوْلٍ" 3 فرمایا : | ای وقت وقوع القیمة من غیب | یعنی قیامت کے واقع ہونے کا وقت اس غیب |

---

2 1 الابریز الباب الثانی مصطفی البابی مصر ص ۱۶۷ و ۱۶۸ 3 القرآن الکریم ۷۲ / ۲۶

[Arabic Box Text]: "The one that Allah does not manifest to anyone. If it is asked: since you have applied this to the knowledge of the Resurrection, then how did He say 'except to a messenger whom He has chosen', despite the fact that this unseen (Ghayb) Allah does not manifest to anyone? We reply: He will manifest it near the onset of the Resurrection (summarized)."

[Urdu Translation on Right]: "...is among those that Allah Almighty does not reveal to anyone. If it is asked that since you have interpreted this verse as referring to the knowledge of the Day of Judgment, then why did Allah say: 'except whom He has approved of messengers,' despite the fact that Allah will not reveal this unseen to anyone? We will answer that He will reveal it near the Day of Judgment. (T)"

This fine interpretation clearly establishes the meaning of the verse that Allah is the Knower of the Unseen; He does not give the knowledge of the time of the Day of Judgment to anyone except His chosen Messengers.

(116) Allama Sa'd al-Din al-Taftazani, in 'Sharh al-Maqasid', while mentioning and refuting the false sect of the Mu'tazilah (may Allah Almighty forsake them) and their denial of the miracles of the saints (karamat al-awliya) and their corrupted doubts, states:

[Table - Left Column (Arabic)]: Fifthly, regarding informing about the unseen, the statement of the Almighty: "[He is] Knower of the unseen, and He does not disclose His unseen to anyone. Except whom He has approved of messengers." He specified messengers from among those approved to be informed about the unseen, so no one else is informed even if they are approved saints (awliya). The answer is that "unseen" here is not for generality but is absolute or specific, which is the time of the occurrence of the Resurrection based on the context of what precedes it, and it is not unlikely that [someone else] is informed...

[Table - Right Column (Urdu)]: That is, the fifth argument of the Mu'tazilah regarding specific knowledge of the unseen is that those deviates say that saints cannot have knowledge of the unseen because Allah Almighty says: "The Knower of the unseen does not grant mastery over His unseen to anyone, except to His chosen messengers." When being informed of the unseen is exclusive to messengers, how can saints know the unseen? The leaders of the Ahl al-Sunnah (Note A) replied that "unseen" here is not general, which would mean that He doesn't reveal any unseen

to anyone except messengers, thus absolutely negating the knowledge of the unseen for saints.

Note A: Benefit: From this fine passage of the book of Ahl al-Sunnah beliefs, it is proven that the Wahhabis are even more vile than the Mu'tazilah. The Mu'tazilah only had an issue with the knowledge of the unseen of the noble saints and accepted it for the prophets; these vile ones have denied it for the prophets themselves. It is also proven that the leaders of the Ahl al-Sunnah accept it for both prophets and saints. Praise be to Allah. 12 (Author).

1. Mafatih al-Ghayb (al-Tafsir al-Kabir) under verse 72/27, Al-Matba'at al-Bahiyyat al-Misriyyah, Egypt, 30/168.

[अरबी बॉक्स]: "जिसे अल्लाह किसी पर ज़ाहिर नहीं करता। अगर कहा जाए कि जब आपने इस आयत को कयामत के इल्म पर महमूल किया तो अल्लाह ने यह क्यों फ़रमाया: 'मगर जिसे उसने रसूलों में से पसंद किया', बावजूद इसके कि यह ग़ैब अल्लाह किसी पर ज़ाहिर नहीं करेगा। हम जवाब देंगे: वह कयामत के करीब ज़ाहिर कर देगा। (संक्षिप्त)"

[उर्दू अनुवाद]: "...में से है जिसे अल्लाह तआला किसी पर ज़ाहिर नहीं करता। अगर कहा जाए कि जब आपने आयत को कयामत के इल्म पर महमूल किया तो कैसे अल्लाह ने फ़रमाया: 'मगर जिसे उसने रसूलों में से पसंद किया', बावजूद इसके कि यह ग़ैब अल्लाह किसी पर ज़ाहिर नहीं करेगा, हम जवाब देंगे कि कयामत के करीब ज़ाहिर करेगा। (त)"

इस नफ़ीस (उम्दा) तफ़सीर ने आयत का साफ़ मतलब यह तय किया कि अल्लाह ग़ैब का जानने वाला है, वह कयामत के समय का इल्म किसी को नहीं देता सिवाय अपने पसंदीदा रसूलों के।

(116) अल्लामा साद-उद-दीन तफ़्ताज़ानी 'शरह मकासिद' में बातिल फ़िरक़े मुतज़िला (अल्लाह उन्हें ज़लील करे) द्वारा औलिया के करामात के इनकार और उनके फ़ासिद शुकूक के ज़िक्र और उन्हें रद्द करते हुए फ़रमाते हैं:

[तालिका - बायां कॉलम (अरबी)]: पाँचवाँ: ग़ैब की ख़बरों के बारे में अल्लाह तआला का इरशाद है: "[वह] ग़ैब का जानने वाला है, और वह अपने ग़ैब पर किसी को आगाह नहीं करता। सिवाय उस रसूल के जिसे उसने पसंद कर लिया हो।" उसने रसूलों को उनके पसंदीदा होने की वजह से ग़ैब की जानकारी के लिए खास किया, तो उनके अलावा किसी और को जानकारी नहीं दी जाती चाहे वे पसंदीदा वली (औलिया) ही क्यों न हों। जवाब यह है कि यहाँ 'ग़ैब' आम नहीं है बल्कि मुतलक़ या मुअय्यन है जो कि पिछली बातों के संदर्भ में कयामत के होने का समय है, और यह मुमकिन है कि कोई और आगाह हो जाए...

[तालिका - दायां कॉलम (उर्दू)]: यानी मुतज़िला की पाँचवीं दलील खास इल्म-ए-ग़ैब के बारे में है, वे गुमराह कहते हैं कि औलिया को ग़ैब का इल्म नहीं हो सकता क्योंकि अल्लाह अज़्ज़-ओ-जल्ल फ़रमाता है: "ग़ैब का जानने वाला तो अपने ग़ैब पर मुसल्लत नहीं करता, मगर अपने पसंदीदा रसूलों को।" जब ग़ैब पर जानकारी रसूलों के साथ खास है तो औलिया कैसे ग़ैब जान सकते हैं। अइम्मा-ए-अहले सुन्नत (नोट अ) ने जवाब दिया कि यहाँ ग़ैब आम नहीं है जिसके ये मायने हों कि कोई ग़ैब

रसूलों के सिवा किसी को नहीं बताता, जिससे मुतलक़न औलिया के उलूम-ए-ग़ैब की नफ़ी (इनकार) हो जाए।

नोट अ: फ़ायदा: अक़ाइद-ए-अहले सुन्नत की किताब की इस उम्दा इबारत से साबित हुआ कि वहाबी मुतज़िला से भी ज़्यादा खबीस (बुरे) हैं। मुतज़िला को सिर्फ़ औलिया-ए-किराम के इल्म-ए-ग़ैब पर एतराज़ था, वे अंबिया के लिए इसे मानते थे। ये खबीस तो खुद अंबिया से भी मुनकिर हो गए। और यह भी साबित हुआ कि अइम्मा-ए-अहले सुन्नत अंबिया और औलिया दोनों के लिए मानते हैं। वलिल्लाहिल हम्द। 12 (लेखक)।

1. मफ़ातीह उल-ग़ैब (तफ़सीर कबीर), आयत 27/72 के तहत, अल-मतबअतुल बहिय्यतुल मिसरिय्या, मिस्र, 30/168

الذی لایظهره الله لاحد فان قیل فاذا حملتم ذلک علی القیمۃ فکیف قال الا من ارتضی من رسول مع انہ لایظهر هذا الغیب لاحد قلنا بل یظهره عند قرب القیمۃ ۱ (ملخصاً) | میں سے ہے جس کو اللہ تعالیٰ کسی پر ظاہر نہیں کرتا اگر کہا جائے کہ جب تم نے آیت کو علم قیامت پر محمول کیا تو کیسے اللہ نے فرمایا: الا من ارتضٰی من رسول با وجود یہ کہ یہ غیب اللہ کسی پر ظاہر نہیں کرے گا، ہم جواب دیں گے کہ قیامت کے قریب ظاہر کرے گا۔(ت)

اس نفیس تفسیر نے صاف معنی آیت یہ ٹھہرائے کہ اللہ عالم الغیب ہے، وہ وقت قیامت کا علم کسی کو نہیں دیتا سوائے اپنے پسندیدہ رسولوں کے۔

(۱۱۶) علامہ سعد الدین تفتازانی شرح مقاصد میں فرقہ باطلہ معتزلہ خذلهم اللہ تعالیٰ کے کرامات اولیاء سے انکار اور ان کے شبہات فاسدہ کے ذکر وابطال میں فرماتے ہیں:

الخامس وهو فی الاخبار عن المغیبات قولہ تعالٰی عالِمُ الْغَیْبِ فَلَا یُظْهِرُ عَلٰی غَیْبِہٖ اَحَدًا اِلَّا مَنِ ارْتَضٰی مِنْ رَّسُوْلٍ خص الرسل من بین المرتضین بالاطلاع علی الغیب فلا یطلع غیر هم وان کانوا اولیاء مرتضین، الجواب ان الغیب ههنا لیس للعموم بل مطلق او معین هو وقت وقوع القیمۃ بقرینۃ السباق ولا یبعد ان یطلع | یعنی معتزلہ کی پانچویں دلیل خاص علم غیب کے بارے میں ہے وہ گمراہ کہتے ہیں کہ اولیاء کو غیب کا علم نہیں ہوسکتا کہ اللہ عزوجل فرماتا ہے غیب کا جاننے والا تو اپنے غیب پر مسلط نہیں کرتا۔ مگر اپنے پسندیدہ رسولوں کو، جب غیب پر اطلاع رسولوں کے ساتھ خاص ہے تو اولیاء کیونکر غیب جان سکتے ہیں۔ ائمہ اہلسنت عہ نے جواب دیا کہ یہاں غیب عام نہیں جس کے

یہ معنی ہوں کہ کوئی غیب رسولوں کے سوا کسی کو نہیں بتاتا جس سے مطلقاً اولیاء کے علوم غیب کی نفی

عہ: فائدہ: اس نفیس عبارت کتاب العقائد اہلسنت سے ثابت ہوا کہ وہابیہ معتزلہ سے بھی بہت خبیث تر ہیں، معتزلہ کو صرف اولیائے کرام کے علوم غیب میں کلام تھا انبیاء کے لئے مانتے تھے، یہ خبیث خود انبیاء سے منکر ہو گئے، اور یہ بھی ثابت ہوا کہا ئمہ اہلسنت انبیاء واولیاء سب کے لئے مانتے ہیں واللہ الحمد ۱۲ منہ۔

۱ مفاتیح الغیب(التفسیر الکبیر)تحت آیۃ ۲۷/۷۲ المطبعۃ البھیۃ المصریۃ مصر ۳۰ / ۱۶۸

1- عليه بعض الرسل من الملئكة او البشر فيصح الاستثناء ...upon some of the messengers among the angels or humans, so the exception is correct. Rather, it is absolute (meaning some unseen matters are not known to non-messengers) or it refers to the specific time of the occurrence of the Day of Judgment (that He does not give information about this specific unseen matter to anyone other than the messengers), and the context for this is that the Day of Judgment is mentioned in the preceding verse. (So, the only thing derived from the verse is that the saints are not informed about certain unseen matters or the specific determination of the time of Judgment, not that the saints do not know any unseen matters at all. If a doubt arises here that Allah is making an exception for the messengers, stating they are informed of those unseen matters which others do not know, and if you take 'determination of the time of Judgment' from this, then the exception for messengers would also not remain, as it is said that even they are not told. The answer given to this is that) it is not far-fetched for some messengers, whether angels or humans, to be given knowledge of the determination of the time of Judgment, so the exception that Allah Almighty mentioned is certainly correct.

(117) Imam Qastalani, the commentator of Bukhari, states in the commentary of Surah Ra'd:

2- لا يعلم متى تقوم الساعة الا الله الا من ارتضى من رسول فانه يطلعه من غيبه والولى التابع له يأخذ عنه None knows when the Hour will be established except Allah, and except for the messenger He is pleased with, for He informs him of His unseen, and the saint who follows him receives it from him. No one besides God knows when Judgment Day will come, except for His chosen messengers, whom He informs about whatever of His unseen He wills. (Meaning, knowledge of the time of Judgment is not withheld from them either.) As for the saints, they are followers of the messengers and acquire knowledge from them.

Here, even in the knowledge of this specific unseen matter, a path was kept for the saints, but in a way that inherently belongs to the prophets, and they receive it from them. The truth is that the noble verse denies inherency of the knowledge of the unseen for those other than messengers, not absolute knowledge.

(118 & 119) Allama Hasan bin Ali Madabighi in the footnote of 'Fath al-Mubin' by Imam Ibn Hajar Makki, and the learned Ibn 'Atiyyah in 'Futuhāt al-Wahbiyyah' commentary on Imam Nawawi's 'Forty Hadith', state regarding the chapter on the

Holy Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him) being granted knowledge of the Day of Judgment:

الحق كما قال جمع ان اللہ سبحانہ The truth is as a group has said, that Allah Subhanah... Meaning, the true creed is that which a group of scholars has...

---

1 Sharh al-Maqasid, Eighth Discussion, the first is the Knower of Allah Almighty, Dar al-Ma'arif al-Nu'maniyyah, Lahore, 2/404 & 405. 2 Irshad al-Sari Sharh Sahih al-Bukhari, Kitab al-Tafsir, Surah al-Ra'd, Dar al-Kitab al-Arabi, Beirut, 7/186.

1- عليه بعض الرسل من الملئكة او البشر فيصح الاستثناء ...फ़रिश्तों या मनुष्यों में से कुछ रसूलों पर, इसलिए अपवाद सही है। बल्कि यह तो मुतलक़ (निरपेक्ष) है (अर्थात कुछ ग़ैब ऐसे हैं जो ग़ैर-रसूल को मालूम नहीं होते) या कयामत आने का विशेष समय मुराद है (कि इस विशेष ग़ैब की सूचना रसूलों के अलावा औरों को नहीं देते) और इस पर संकेत यह है कि ऊपर की आयत में कयामत के ग़ैब का ही ज़िक्र है। (तो आयत से केवल इतना निकला कि कुछ ग़ैबों या कयामत के विशेष समय के निर्धारण पर औलिया को सूचना नहीं होती, न कि यह कि औलिया कोई ग़ैब नहीं जानते। इस पर यदि संदेह करें कि अल्लाह तो रसूलों का अपवाद फ़रमा रहा है कि वे उन ग़ैबों पर अवगत होते हैं जिन्हें अन्य लोग नहीं जानते, अब यदि इससे कयामत के समय का निर्धारण लें तो रसूलों का भी अपवाद न रहेगा क्योंकि यह तो उन्हें भी नहीं बताया जाता। इसका उत्तर यह दिया गया कि) फ़रिश्तों या मनुष्यों में से कुछ रसूलों को कयामत के समय के निर्धारण का ज्ञान मिलना कुछ दूर नहीं, तो अपवाद जो अल्लाह अज़्ज़-व-जल्ल ने फ़रमाया निश्चित रूप से सही है।

(117) इमाम क़स्तलानी, बुखारी के व्याख्याता, सूरह राद की व्याख्या में फ़रमाते हैं:

لا يعلم متى تقوم الساعة الا الله الا من ارتضى من رسول فانه يطلعه من غيبه والولى التابع له يأخذ عنه -2 कोई नहीं जानता कि घड़ी (कयामत) कब स्थापित होगी सिवाय अल्लाह के और उसके पसंदीदा रसूल के सिवाय, क्योंकि वह उसे अपने ग़ैब की सूचना देता है, और उसका अनुयायी वली (संत) उससे प्राप्त करता है। खुदा के अलावा कोई नहीं जानता कि कयामत कब आएगी, सिवाय उसके पसंदीदा रसूलों के कि उन्हें अपने जिस ग़ैब पर चाहे सूचना देता है। (अर्थात कयामत के समय का ज्ञान भी उन पर बंद नहीं है।) रहे औलिया, वे रसूलों के अनुयायी हैं और उनसे ज्ञान प्राप्त करते हैं।

यहाँ इस विशेष ग़ैब के ज्ञान में भी औलिया के लिए मार्ग रखा गया, लेकिन इस तरह कि यह मूल रूप से (असालतन्) नबियों को है और उन्हें उनसे प्राप्त होता है, और सत्य यही है कि आयत-ए-करीमा ग़ैर-रसूलों से ग़ैब के ज्ञान में असलियत (निजी ज्ञान) का निषेध करती है, न कि पूर्ण ज्ञान का।

(118 और 119) अल्लामा हसन बिन अली मदाबिगी, इमाम इब्न हजर मक्की की 'फतह अल-मुबीन' के हाशिये में, और विद्वान इब्न अतिय्या 'फुतूहात अल-वहाबिय्या' (इमाम नववी की चालीस हदीसों की

व्याख्या) में, नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को कयामत का ज्ञान प्रदान किए जाने के अध्याय में फ़रमाते हैं:

الحق کما قال جمع ان اللہ سبحانہ। सत्य वही है जैसा कि एक समूह ने कहा है कि अल्लाह सुब्हानहू... अर्थात सत्य पंथ वह है जिसे विद्वानों के एक समूह ने...

---

1 शरह अल-मक़ासिद, आठवां शोध, प्रथम वह जो अल्लाह तआला का ज्ञाता है, दार अल-मआरिफ़ अल-नुमानिया, लाहौर, 2/404 और 405। 2 इरशाद अल-सारी शरह सहीह अल-बुखारी, किताब अल-तफ़्सीर, सूरह अल-राद, दार अल-किताब अल-अरबी, बेरूत, 7/186।

पृष्ठ 477/750

علیہ بعض الرسل من الملئکۃ او البشر فیصح الاستثناء -1 ہوئے، بلکہ یہ تو مطلق ہے (یعنی کچھ غیب ایسے ہیں کہ غیر رسول کو نہیں معلوم ہوتے) یا خاص وقتِ وقوعِ قیامت مراد ہے (کہ خاص اس غیب کی اطلاع رسولوں کے سوا اوروں کو نہیں دیتے) اور اس پر قرینہ یہ ہے کہ اوپر کی آیت میں غیبِ قیامت ہی کا ذکر ہے۔ (تو آیت سے صرف اتنا نکلا کہ بعض غیبوں یا خاص وقتِ قیامت کی تعیین پر اولیاء کو اطلاع نہیں ہوتی نہ یہ کہ اولیاء کوئی غیب نہیں جانتے، اس پر اگر شبہ کیجئے کہ اللہ تو رسولوں کا استثناء فرمارہا ہے کہ وہ ان غیبوں پر مطلع ہوتے ہیں جن کو اور لوگ نہیں جانتے اب اگر اس سے تعیین وقتِ قیامت لیجئے تو رسولوں کا بھی استثناء نہ رہے گا کہ یہ تو اُن کو بھی نہیں بتایا جاتا۔ اس کا جواب یہ فرمایا کہ) ملائکہ یا بشر سے بعض رسولوں کو تعیین وقتِ قیامت کا علم ملنا کچھ بعید نہیں تو استثناء کہ اللہ عزوجل نے فرمایا ضرور صحیح ہے۔

(۱۱۷) امام قسطلانی شارح بخاری تفسیر سورہ رعد میں فرماتے ہیں:

لا یعلم متی تقوم الساعۃ الا اللہ الا من ارتضی من رسول فانہ یطلعہ من غیبہ والولی التابع لہ یأخذ عنہ -2 کوئی غیرِ خدا نہیں جانتا کہ قیامت کب آئے گی سوا اس کے پسندیدہ رسولوں کے کہ انہیں اپنے جس غیب پر چاہے اطلاع دیتا ہے۔ (یعنی وقتِ قیامت کا علم بھی ان پر بند نہیں۔) رہے اولیاء وہ رسولوں کے تابع ہیں ان سے علم حاصل کرتے ہیں۔

یہاں اس خاص علمِ غیب کے علم میں بھی اولیاء کے لیے راہ رکھی، مگر یوں کہ اصالۃً انبیاء کو ہے اور ان کو ان سے ملتا ہے، اور حق یہی ہے کہ آیہ کریمہ غیرِ رسل سے علمِ غیب میں اصالت کی نفی فرماتی ہے نہ کہ مطلق علم کی۔

(۱۱۸ و ۱۱۹) علامہ حسن بن علی مدابغی حاشیہ فتح المبین امام ابن حجر مکی اور فاضل ابن عطیہ فتوحات وہبیہ شرح اربعین امام نووی میں نبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کو علمِ قیامت عطا ہونے کے باب میں فرماتے ہیں:

الحق کما قال جمع ان اللہ سبحانہ یعنی حق مذہب وہ ہے جو ایک جماعت علماء نے

---

1 شرح المقاصد المبحث الثامن اولی ھو العارف باللہ تعالی دار المعارف النعمانیۃ لاہور ۲ / ۴۰۴ و ۴۰۵ 2 ارشاد الساری شرح صحیح البخاری کتاب التفسیر سورۃ الرعد دار الکتاب العربی بیروت ۷ / ۱۸۶

Fatawa Rizvia Volume 29

(Arabic text:) "And Exalted is He, He did not take our Prophet, may Allah Almighty bless him and grant him peace, until He informed him of all that had been hidden from him, except that He commanded him to conceal some and to announce some."[1]

(Urdu translation:) It was stated that Allah Almighty did not take our Holy Prophet (may Allah Almighty bless him and grant him peace) from the world until He had granted the Prophet knowledge of everything that had been hidden from him. Yes, regarding some knowledge, the Prophet (may Allah Almighty bless him and grant him peace) was commanded not to tell anyone, and regarding some, he was commanded to tell.

(120) Allama Ashmawi states in the esteemed book 'Ajab al-'Ujab Sharh Salat Sayyidi Ahmad Badawi Kabir' (may Allah Almighty be pleased with him): (Arabic text:) "It was said that he, may Allah Almighty bless him and grant him peace, was given their knowledge (i.e., the five) in the end, but he was commanded to conceal it, and this saying is the correct one."[2] That is, it was said that the Prophet (may Allah Almighty bless him and grant him peace) was also granted knowledge of those five unseen things in the end, but there was a command to hide them, and this is the correct view.

Great Warning Praise be to Allah, these are one hundred and twenty "Overwhelming Statements" as a sample, by which the hollow, base structure of Wahhabism is not only demolished but, by the grace of Allah Almighty, reaches the depths of the earth like Qarun and his house. And by the praise of Allah, these are but a fraction of the whole. If you wish to see hundreds of such clear and magnificent texts, look into this humble servant's book 'Malī' al-Habīb bi-'Ulūm al-Ghayb (1318 AH)' and the treatise 'al-Lu'lu' al-Maknūn fī 'Ilm al-Bashīr mā kāna wa mā yakūn (1318 AH)'. You will see oceans of texts overflowing, the moons of the love for Mustafa (may Allah Almighty bless him and grant him peace) shining, the suns of honor for the Prophet blazing, the stars of the light of faith sparkling, the gardens of truth fragrant, the flowers of guidance blossoming, the crows of Najdism mourning, the owls of Wahhabism hooting, and the foul-smelling insolent ones fluttering in distress. And all praise is for Allah, Lord of the worlds. The Wahhabis, may Allah Almighty humble them, in opposition to these overwhelming texts, bring forth some stray phrases regarding specification... Annotation: may Allah Almighty bless him and grant him peace.

फ़तावा रज़विया जिल्द २९

(अरबी इबारत:) "और वह बुलंद है, उसने हमारे नबी (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) की रूह कब्ज़ नहीं की यहाँ तक कि उन्हें उन तमाम चीज़ों से आगाह कर दिया जो उनसे पोशीदा रखी गई थीं, सिवाय इसके कि उन्हें कुछ को छुपाने और कुछ को बयान करने का हुक्म दिया गया।"[1]

(उर्दू अनुवाद:) फ़रमाया कि अल्लाह अज़्ज़वजल ने हमारे नबी करीम (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) को दुनिया से तब तक नहीं उठाया जब तक कि हुज़ूर से जो कुछ पोशीदा रहा था, उस सबका इल्म हुज़ूर को अता फ़रमा दिया। हाँ, कुछ उलूम के मुतअल्लिक हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) को हुक्म दिया कि किसी को न बताएं और कुछ के बताने का हुक्म दिया।

(१२०) अल्लामा अश्मावी अपनी मुस्तताब किताब 'अजब उल उज्जाब शरह सलात सय्यदी अहमद बदवी कबीर' (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) में फ़रमाते हैं: (अरबी इबारत:) "कहा गया कि उन्हें (यानी उन पाँचों का) इल्म आख़िरी वक़्त में दे दिया गया था, लेकिन उन्हें उनमें पोशीदा रखने का हुक्म दिया गया था और यही कौल सही है।"[2] यानी कहा गया कि नबी (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) को आख़िर में उन पाँचों ग़ैबों का भी इल्म अता हो गया मगर उनके छुपाने का हुक्म था, और यही कौल सही है।

अज़ीम चेतावनी (तम्बीह-ए-जलील) अल्हम्दुलिल्लाह, ये बतौर नमूना एक सौ बीस "इबारात-ए-काहिरा" हैं जिनसे वहाबियत की पोच ज़लील इमारत न सिर्फ़ मुनहदिम हुई बल्कि फ़ज़्ल-ए-ताला कारून और उसके घर की तरह तह-उल-सरा (ज़मीन की गहराइयों) में पहुँचती है, और बहम्दहु तआला ये कुल से जुज़ हैं। ऐसे ही सैंकड़ों नुसूस-ए-जलीला व अज़ीमा देखना हों तो फ़कीर की किताब "मलीउल हबीब बि-उलूमिल ग़ैब १३१८ हि." व रिसाला "अल-लुअलु उल मक़नून फ़ी इल्मिल बशीर मा काना व मा यकून १३१८ हि." मुलाहिज़ा हों कि नुसूस के दरिया हैं छलकते, और महब्बत-ए-मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) के चाँद चमकते और ताज़ीम-ए-हुज़ूर के सूरज दहकते, और नूर-ए-ईमान के तारे झलकते, और हक़ के बाग़ महकते और हिदायत के फूल चहकते और नज्दियत के कौवे सिसकते और वहाबियत के बूम (उल्लू) लगते, और बदबूदार गुस्ताख फड़फड़ाते। वल-हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन। वहाबिया (अल्लाह तआला उन्हें रुस्वा करे) इन नुसूस-ए-काहिरा के मुक़ाबले इधर-उधर से कुछ इबारात दरबारे तख़्सीस... हवाला: सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम

१२ अजब उल उज्जाब शरह सलात सय्यद अहमद कबीर बदवी

पेज ४७८ ऑफ़ ७५०

وتعالی لم یقبض نبینا صلی اللہ تعالی علیہ وسلم حتی اطلعہ علی کل ما ابہمہ عنہ الا انہ امر بکتم بعض والاعلام ببعض[1]۸۔

فرمایا کہ اللہ عزوجل ہمارے نبی کریم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کو دنیا سے نہ لے گیا یہاں تک کہ جو کچھ حضور سے مخفی رہا تھا اس سب کا علم حضور کو عطا فرما دیا، ہاں بعض علوم کی بنسبت حضور (صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم) کو حکم دیا کہ کسی کو نہ بتائے اور بعض کے بتانے کا حکم کیا۔

(۱۲۰) علامہ عشماوی کتاب مستطاب عجب العجاب شرح صلاۃ سیدی احمد بدوی کبیر صلی اللہ تعالٰی عنہ میں فرماتے ہیں: قیل انہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم اوتی علمھا (ای الخمس) في آخر الامر لکنہ امر فیھا بالکتمان وھذا القیل ھو الصحیح[2]۸۔ یعنی کہا گیا کہ نبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کو آخر میں ان پانچوں غیبوں کا بھی علم عطا ہو گیا مگر ان کے چھپانے کا حکم تھا، اور یہی قول صحیح ہے۔

تنبیہ جلیل الحمد للہ یہ بطورِ نمونہ ایک سو بیس "عبارات قاہرہ میں جن سے وہابیت کی پوچ ذلیل عمارت نہ صرف منہدم ہوئی بلکہ قارون اور اس کے گھر کی طرح بفضلہ تعالٰی تحت الثرٰی پہنچتی ہے، اور بحمدہ تعالٰی یہ کل سے جز ہیں، ایسے ہی صد ہا نصوص جلیلہ و عظیمہ دیکھنا ہوں تو فقیر کی کتاب "مالیئ الحبیب بعلوم الغیب ۱۳۱۸ھ" و رسالہ اللؤلؤ المکنون فی علم البشیر ما کان وما یکون ۱۳۱۸ھ" ملاحظہ ہوں کہ نصوص کے دریا ہیں چھلکتے، اور مَحبتِ مصطفٰی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کے چاند چمکتے اور تعظیم حضور کے سورج دہکتے، اور نورِ ایمان کے

تارے جھلکتے، اور حق کے باغ مہکتے اور ہدایت کے پھول چہکتے اور نجدیت کے کوے سکتے اور وہابیت کے بوم لگتے، اور بد بوح گستاخ پھڑکتے۔ والحمد للہ رب العالمین۔ وہابیہ خذلہم اللہ تعالیٰ ان نصوصِ قاہرہ کے مقابل ادھر ادھر سے کچھ عبارات درباره تخصیص عہ: صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم

Fatawa Razawiyya, Volume 29

They bring up unseen matters and rejoice, even though this is sheer ignorance, misunderstanding, rather explicit deceit and stubbornness; in fairness, they are showing the other side of our own statement. The humble servant [the author] has already submitted that the issue of general vs. specific regarding these gatherings, as presented in the fourth point, is a matter of disagreement (ikhtilafi) among the scholars of Ahl-e-Sunnat. The generality of noble saints (Awliya) and a vast number of prominent scholars lean towards generality, and this is the apparent meaning of the texts of the Great Quran and the implications of the Hadiths of the Radiant Prophet, upon whom be the most excellent prayers and peace. And many practitioners of customs leaned towards specificity. Among them as well, this might perhaps be the view of only the dry-ascetics; otherwise, there is a reason for them, which is explained along with several precious examples in the humble servant's treatise "Anba'ul Hayy 'anna Kalamahul Masun Tibyaanun li Kulli Shayy" (1320 AH). So, what harm do such statements cause us? Had we claimed consensus (ijma') that you are showing a contradiction? There, you were claimants of consensus out of your ignorance, to the extent that you went as far as declaring the opponent an infidel (takfir). So, the strike of divine wrath is upon you in every way. Seeking to prove a universal positive statement from a particular affirmative one is the hallmark of a madman. Bring ten statements regarding specificity; we will show a hundred texts regarding generality. Furthermore, the apparent meanings of the Quran, Hadith, and the generality of ancient and modern saints are with us. In this very regard, the progress of the excellence of our Beloved (Sallallahu Ta'ala 'Alayhi Wa Sallam) is found, and regarding this very matter, his Lord has already stated: "And taught you that which you knew not. And ever has the favor of Allah upon you been great." [1] He whom Allah calls great, how can one try to diminish him? God forbid, even if for the sake of a false premise, Allah's great favor were small and brief. But by following the apparent meanings of the Quran and Hadith and the explicit statements of hundreds of masters of both outer and inner knowledge, we desired and acknowledged the greater loftiness of the status of Muhammad, the Messenger of Allah (Sallallahu Ta'ala 'Alayhi Wa Sallam) as being great; so, Praise be to Allah, this was indeed the glorification of Allah's favor and His Beloved. And if in reality that Divine favor is indeed that great, and you, contrary to the apparent texts of the Quran and Hadith, considered it light and small, then your case is reversed. "So which of the two parties has more right to security?" [2]. Consider which party is more

deserving of peace. In short, reciting a few scattered statements regarding specificity here is pure ignorance or severe deceit; the discussion is actually about...

---

1 Al-Quran Al-Karim 4/113 2 Al-Quran Al-Karim 6/81

वे अनदेखी बातों को उद्धृत करते हैं और खुशियां मनाते हैं, हालांकि यह कोरा अज्ञान, नासमझी, बल्कि स्पष्ट छल और हठधर्मिता है; निष्पक्ष रूप से देखा जाए तो वे हमारे ही बयान का दूसरा पहलू दिखा रहे हैं। यह विनीत (लेखक) पहले ही निवेदन कर चुका है कि इन सभाओं के संबंध में सामान्य और विशेष (عموم و خصوص) का मुद्दा, जैसा कि चौथे बिंदु में प्रस्तुत किया गया है, अहले सुन्नत के विद्वानों के बीच मतभेद (إختلافی) का विषय है। अधिकांश महान औलिया और बड़ी संख्या में प्रतिष्ठित विद्वान व्यापकता (सामान्य होने) के पक्ष में हैं, और यही महान कुरान के ग्रंथों का स्पष्ट अर्थ और प्रकाशमय नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की हदीसों का निहितार्थ है। और रीति-रिवाजों के बहुत से लोग विशिष्टता (विशेष होने) की ओर गए, उनमें भी शायद केवल शुष्क संन्यासियों का ही यह विचार हो; अन्यथा उनके लिए इसका एक कारण है, जिसका विवरण कई अनमोल उदाहरणों के साथ विनीत के शोध प्रबंध "अनबाउल हय अन कलामहुअल मून तिब्यानुल ली कुल्ली शय" (1320 हिजरी) में विस्तार से दिया गया है। तो ऐसे कथनों से हमें क्या हानि, क्या हमने सर्वसम्मति (इज्मा) का दावा किया था कि आप इसके विपरीत दिखा रहे हैं? वहां आप अपने अज्ञान के कारण सर्वसम्मति के दावेदार थे, यहां तक कि विरोधी को काफिर करार दे बैठे। तो हर तरह से आप पर ईश्वरीय प्रकोप की मार है। एक विशेष सकारात्मक कथन से एक सार्वभौमिक सकारात्मक कथन को सिद्ध करने का प्रयास करना एक पागल का लक्षण है। आप विशिष्टता के संबंध में दस कथन लाएं हम व्यापकता के संबंध में सौ पाठ (नसूस) दिखाएंगे। फिर कुरान और हदीस के स्पष्ट अर्थ और प्राचीन तथा आधुनिक औलिया की सामान्य राय हमारे साथ है। इसी में हमारे प्रिय (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की श्रेष्ठता की प्रगति निहित है और इसी बारे में उनके रब ने पहले ही फरमाया है: "व अल्लमका मा लम् तकुन तालमु व काना फ़ज़्लुल्लाहि अलैका अज़ीमा" [1] अर्थात् "और उसने तुम्हें वह सिखाया जो तुम नहीं जानते थे। और तुम पर अल्लाह की बड़ी कृपा रही है।" जिसे अल्लाह बड़ा कहे, उसे कोई घटाने वाला कैसे बन सकता है? ईश्वर न करे, यदि एक गलत आधार के लिए भी मान लिया जाए कि अल्लाह की महान कृपा छोटी और संक्षिप्त है। लेकिन हमने कुरान और हदीस के स्पष्ट अर्थों और सैकड़ों ज़ाहिरी और बातिनी इमामों के स्पष्ट बयानों का अनुसरण करते हुए अल्लाह के रसूल मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की प्रतिष्ठा की अधिक उच्चता को चाहा और उसे बड़ा माना, तो अल्लाह की स्तुति है कि यह वास्तव में अल्लाह की कृपा और उसके प्रिय का सम्मान ही था। और यदि वास्तव में वह दैवीय कृपा वैसी ही बड़ी है और आपने कुरान और हदीस के स्पष्ट ग्रंथों के

विपरीत उसे हल्का और छोटा समझा, तो आपका मामला उल्टा हो गया। "फ़-अय्युल फ़रीक़ैनि अहक्कु बिल-अम्न" [2] अर्थात् "तो दोनों पक्षों में से कौन सुरक्षा का अधिक हकदार है?"। विचार करें कि कौन सा पक्ष शांति का अधिक पात्र है। संक्षेप में, यहां विशिष्टता के संबंध में कुछ बिखरे हुए बयानों को सुनाना केवल अज्ञानता या घोर छल है; चर्चा तो वास्तव में इसमें है...

---

1 अल-कुरान अल-करीम 4/113 2 अल-कुरान अल-करीम 6/81

غیوب نقل کر لاتے اور بغلیں بجاتے ہیں حالانکہ یہ محض جہالت، کج فہمی بلکہ صریح مکاری اور ہٹ دھرمی ہے انصافاً وہ ہمارے ہی بیان کا دوسرا پہلو دکھاتے ہیں۔ فقیر گزارش کر چکا کہ مسئلہ عموم و خصوص ان اجتماعات بعد کہ امر چہارم میں معروض ہوئے علمائے اہلسنت کا اختلافی (اختلافی) ہے۔ عامہ اولیاء کرام و بکثرت علمائے عظام جانب تعمیم ہیں اور یہی ظاہر نصوص قرآن عظیم و مفادات احادیث حضور پر نور علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم ہے۔ اور بہت اہل رسوم جانب خصوص گئے، ان میں بھی شاید نرے منتقشفوں کا یہ خیال ہو ورنہ ان کے لیے اس پر ایک باعث ہے جس کا بیان مع چند نظائر نفسیہ فقیر کے رسالے انباء الحی ان کلامہ المصون تبیان لکل شیئ (۱۳۲۰ھ) میں مشرح ہے تو ایسی عبارات سے ہمیں کیا ضرر، ہم نے کیا دعویٰ اجماع کیا تھا کہ خلاف دکھاؤ۔ وہاں تم اپنی جہالت سے مدعی اجماع تھے یہاں تک کہ مخالف کی تکفیر کر بیٹھے۔ تو ہر طرح تم پر قہر کی مار ہے ایجاب جزئی سے موجبہ کلیہ کا ثبوت چاہنا مجنون کا شعار ہے۔ تم دس عبارتیں خصوص میں لاؤ ہم سو نصوص عموم میں دکھائیں گے پھر ظواہر قرآن و حدیث و عامہ اولیاء قدیم و حدیث ہمارے ساتھ ہیں، اور اسی میں ہمارے محبوب صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی فضیلت کی ترقی اور خود اسی بارے میں ان کا رب فرما چکا کہ "وَعَلَّمَكَ مَا لَمْ تَكُنْ تَعْلَمُ ۚ وَكَانَ فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكَ عَظِيمًا" 1 " سکھا دیا تمہیں جو کچھ تم نہ جانتے تھے اور اللہ کا فضل تم پر بڑا ہے۔ جسے اللہ بڑا کہے اسے گھٹائے کیونکر بنے، معاذ اللہ اگر بفرض باطل خدا کا فضل عظیم چھوٹا اور مختصر ہی ہو۔ مگر ہم نے ظواہر قرآن وحدیث و تصریحات صدہا ائمہ ظاہر و باطن کے اتباع سے محمد رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی زیادہ رفعت شان چاہ کر اسے بڑا مانا تو بحمد اللہ تعالیٰ اللہ کے فضل اور اس کے حبیب کی تعظیم ہی کی۔ اور اگر واقع میں وہ فضل

الٰہی ویسا ہی بڑا ہے اور تم نے برخلاف ظواہر نصوص قرآن و حدیث اسے ہلکا اور چھوٹا جانا تو تمہارا معاملہ معکوس ہوا۔ "فَأَيُّ الْفَرِيقَيْنِ أَحَقُّ بِالْأَمْنِ" 2۔ خیال کر لو کہ کون سا فریق زیادہ مستحق امن ہے۔ غرض یہاں چند پریشان عبارات خصوص کا سنانا محض جہل ہے یا سخت مکر، کلام تو اس میں ہے

---

1 القرآن الکریم ۱۱۳/۴ 2 القرآن الکریم ۸۱/۶

Fatawa Razawiyya Volume 29

...that you are basing rulings of shirk and kufr on general sayings in the stated sense, in fact, on things millions of degrees lighter. Look at Gangohi ji's 'Qati'a-e-Barahin'. Only on the point that where a gathering for the blessed Milad of the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) takes place, he should be informed, he called it an encompassing knowledge of the earth. Then he called it a special attribute of God alone and with it he openly gave a ruling of shirk for proving such an encompassing knowledge for his deity and Iblis, and what kind of shirk? One in which there is no part of faith. Then compared the knowledge from the Throne to the Carpet to the encompassing knowledge of the earth as being millions of millions of degrees greater. Then what can be said about 'ma kana wa ma yakoon' (what has been and what will be).

Similarly, other generalizations that passed among the great Imams of religion and trusted scholars. If the one who believes this, God forbid, was one part a kafir, then the one who believes the one who believes it would be a kafir equal to billions and trillions of kafirs.

Similarly, your Imam, whatever is due to him, has already called the matter of believing in the knowledge of the unseen even by Allah's bestowal as shirk in 'Taqwiyat-ul-Iman'. Then Gangohi ji's shirk only erupted at the mention of news of the blessed Milad. That Imam ji vomited shirk on just the knowledge of a leaf of a tree.

All scholars, saints, companions, prophets are targets of Wahhabi takfir

Now see that Gangohi and Isma'il and Wahhabis have, God forbid, made which Imams, scholars, muhaddithin, jurists, exegetes, theologians, saints, companions, and prophets (peace be upon them) into kafirs.

Let us count those whose statements and sayings passed in brief in this.

(1) Shah Waliullah Sahib Dehlawi (2) Maulana Malik-ul-Ulama Bahr-ul-Uloom (3) Allama Shami, author of Radd-ul-Muhtar (4) Imams of Ahl-us-Sunnah and authors of creeds (5) Sheikh Muhaqqiq Maulana Abdul Haq Muhaddith Dehlawi (6) Allama Shihabuddin Khafaji (7) Imam Fakhruddin Razi (8) Allama Sayyid Sharif Jurjani (9) Allama Sa'd-ud-Din Taftazani (10) Ali Qari Makki (11) Imam Ibn Hajar Makki (12) Allama Muhammad Zarqani (13) Allama Abdur Rauf Munawi (14) Allama Ahmad Qastalani (15) Imam Qurtubi (16) Imam Badruddin Ayni (17) Imam Baghawi (author of Tafsir Ma'alim) (18) Sheikh Ala-ud-Din Ali Baghdadi (author of Tafsir Khazin) (19)

Allama Baydawi (20) Allama Nizam-ud-Din Nishapuri (author of Tafsir Ghara'ib-ul-Quran)

...कि तुम कहे गए अर्थ में सामान्य कथनों पर, बल्कि उससे भी लाखों गुना हल्की बातों पर शिर्क और कुफ्र का हुक्म थोप रहे हो। गंगोही जी की 'क़ाते-ए-बाराहीन' देखो। केवल इस बात पर कि जहाँ हुज़ूर अकदस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की मीलाद शरीफ़ की महफिल हो, उन्हें सूचित किया जाए, उन्होंने उसे पूरी ज़मीन का व्यापक ज्ञान माना। फिर उसे अल्लाह की विशेषता करार दिया और उसके साथ ही अपने माबूद और इबलीस के लिए ऐसी व्यापक ज्ञान की विशेषता साबित करने पर साफ़ तौर पर शिर्क का हुक्म जड़ दिया, और कैसा शिर्क? जिसमें ईमान का कोई हिस्सा नहीं। फिर अर्श से फर्श तक के ज्ञान को ज़मीन के व्यापक ज्ञान से करोड़ों-करोड़ गुना बड़ा बताया। फिर 'मा काना व मा यकून' (जो हुआ और जो होगा) का तो कहना ही क्या है।

इसी तरह की अन्य सामान्यीकरण की बातें जो धर्म के महान इमामों और विश्वसनीय विद्वानों में गुज़री हैं। इसका मानने वाला अगर माज़अल्लाह एक हिस्सा काफ़िर था तो मानने वाले को मानने वाला तो अरबों-खरबों काफ़िरों के बराबर एक काफ़िर होगा।

इसी तरह तुम्हारे इमाम (उन पर जो है सो है) ने 'तक्वियतुल ईमान' में अल्लाह की अता से ग़ैब के इल्म की बात को मानने को भी शिर्क कह चुका है। फिर गंगोही जी का शिर्क तो मीलाद मुबारक की सूचना पर ही उछला था। उन इमाम जी ने तो एक पेड़ के पत्ते को जानने पर ही शिर्क उगल दिया।

सभी विद्वान, वली, सहाबा, नबी वहाबियों की तकफीर (काफिर ठहराने) का निशाना

अब देखें कि गंगोही और इस्माइल और वहाबियों ने माज़अल्लाह किन-किन इमामों, विद्वानों, मुहद्दिसीन, फकीहों, मुफस्सिरों, मुतकल्लिमीन, वलियों, सहाबा और नबियों (अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम) को काफिर बना दिया।

उन्हें गिनें जिनके कथन और निर्देश इस संक्षिप्त अंश में गुज़रे हैं।

(1) शाह वलीउल्लाह साहब देहलवी (2) मौलाना मलिकुल उलेमा बहरुल उलूम (3) अल्लामा शामी, रद्दुल मुहतार के लेखक (4) अइम्मा अहले सुन्नत और अकीदे की किताबों के लेखक (5) शैख मुहक्क़िक मौलाना अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी (6) अल्लामा शिहाबुद्दीन खफाजी (7) इमाम फखरुद्दीन राजी (8) अल्लामा सैय्यद शरीफ़ जुर्जानी (9) अल्लामा सादउद्दीन तफ्ताज़ानी (10) अली क़ारी मक्की (11) इमाम इब्न हजर मक्की (12) अल्लामा मुहम्मद ज़रकानी (13) अल्लामा अब्दुल

रऊफ़ मुनावी (14) अल्लामा अहमद क़स्तलानी (15) इमाम कुर्तुबी (16) इमाम बदरुद्दीन ऐनी (17) इमाम बगवी (तफसीर माआलिम के लेखक) (18) शैख अलाउद्दीन अली बगदादी (तफसीर खाज़िन के लेखक) (19) अल्लामा बैज़ावी (20) अल्लामा निज़ामुद्दीन निशापुरी (तफसीर ग़रइबुल कुरान के लेखक)

पृष्ठ 750 का 480

کہ تم اقوال عموم بمعنی مرقوم بلکہ اس سے بھی لاکھوں درجے ہلکے پر حکم شرک و کفر جڑ رہے ہو۔ گنگوہی جی کی قاطعہ براہین دیکھو۔ صرف اتنی بات کہ جہاں مجلس میلاد مبارک ہو حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کو اطلاع ہو جائے، علم محیط زمین ٹھہرا دیا۔ پھر اسے خدا کا خاصہ اور ساتھ ہی اپنے معبود و ابلیس کی صفت بتا کر صاف حکم شرک پھٹا دیا اور شرک بھی کیسا جس میں کوئی حصہ ایمان کا نہیں پھر عرش تا فرش کا علم توز مین کے علم محیط سے کروڑ ہا کروڑ درجے بڑا ہے پھر ماکان و مایکون کا تو کیا ہی کہنا ہے۔ اسی طرح اور تعمیمات کہ کلائمہ دین و علمائے معتمدین میں گزریں۔ اس کا ماننے والا اگر معاذ اللہ ایک حصہ کافر تھا تو ان کا ماننے والا تو پد موں سنکھوں کافروں کے برابر ایک کافر ہو گا۔ یونہی تمہارا امام علیہ ماعلیہ تقویتہ الایمان میں عطائے الٰہی بھی غیب کی بات کا علم ماننے کو شرک کہہ چکا پھر گنگوہی جی کا شرک تو میلاد مبارک کی اطلاع پر اچھلا تھا۔ ان امام جی نے ایک پیڑ کے پتے ہی جاننے پر شرک اگل دیا۔ تمام علماء، اولیاء، صحابہ، انبیاء وہابیوں کی تکفیر کا نشانہ اب دیکھئے کہ گنگوہی و اسمعیل و وہابیہ نے معاذ اللہ کن کن آئمہ ، علماء و محدثین وفقہاء و مفسرین و متکلمین و اولیاء و صحابہ و انبیاء علیہم الصلوۃ والثناء کو کافر بنا دیا۔ انہیں کو گنئے جن کے اقوال و ارشادات اس مختصر میں گزرے۔

(۱) شاہ ولی اللہ صاحب دہلوی (۲) مولانا ملک العلماء بحر العلوم (۳) علامہ شامی صاحب ردالمحتار (۴) ائمہ اہلسنت و مصنفان عقائد (۵) شیخ محقق مولانا عبدالحق محدث دہلوی (۶) علامہ شہاب الدین خفاجی (۷) امام فخر الدین رازی (۸) علامہ سید شریف جرجانی (۹) علامہ سعد الدین تفتازانی (۱۰) علی قاری مکی (۱۱) امام ابن حجر مکی (۱۲) علامہ محمد زرقانی (۱۳) علامہ

عبدالرؤف مناوی (۱۴) علامہ احمد قسطلانی (۱۵) امام قرطبی (۱۶) امام بدرالدین عینی (۱۷) امام بغوی (صاحب تفسیر معالم) (۱۸) شیخ علاؤ الدین علی بغدادی (صاحب تفسیر خازن) (۱۹) علامہ بیضاوی (۲۰) علامہ نظام الدین نیشاپوری (صاحب تفسیر غرائب القرآن)

Volume 29 Fatawa Razawiyya

(21) Allama Jamal (Commentator of Jalalayn) (22) Imam Abu Bakr Razi (Author of Tafsir Unmudhaj al-Jalil) (23) Imam Qadi Iyad (24) Imam Zayn al-Din Iraqi (Teacher of Imam Ibn Hajar al-Asqalani) (25) Hafiz al-Hadith Ahmad Saljamasi (26) Ibn Qutaybah (27) Ibn Khallikan (28) Imam Kamal al-Din Damiri (29) Allama Ibrahim Bajuri (30) Allama Shanwani (31) Allama Madabighi (32) Allama Ibn Atiyyah (33) Allama Ashmawi (34) Imam Nasir al-Din Samarqandi (Author of al-Multaqat) (35) Allama Badr al-Din Mahmud bin Isra'il (Author of Jami' al-Fusulayn) (36) Shaykh Alam bin Sahib Tatarkhaniyah (37) Imam Faqih, Author of Fatawa Hujjah (38) Imam Abd al-Wahhab al-Sha'rani (39) Imam Yafii (40) Imam Awhad Abu al-Hasan Shatnufi (41) Imam Ibn Hajar Makki (42) Imam Muhammad, Author of Madihah Burdah Sharif (43) Hadrat Maulana Jami (44) Hadrat Mawlawi Ma'nawi (45) Hadrat Sayyid Abd al-Aziz Dabbagh (46) Hadrat Sayyidi Ali Khawwas (47) Hadrat Khwaja Baha al-Haqq wa'l-Din (48) Hadrat Khwaja Azizan Ramitani (49) Hadrat Shaykh Akbar (50) Hadrat Sayyidi Ali Wafa (51) Hadrat Sayyidi Raslan Dimashqi (52) Hadrat Sayyidi Abu Abdullah Shirazi (53) Hadrat Sayyidi Abu Sulayman Darani (54) Hadrat Qutb al-Kabir Sayyid Ahmad Rifa'i (55) Presence of Qutb al-Aqtab Sayyiduna Ghawth al-A'zam (56) Hadrat Imam Ali Rida (57) Hadrat Imam Ja'far Sadiq (58) Sublime presence of other Pure Imams (59) Imam Mujahid (60) Hadrat Sayyiduna Abdullah ibn Abbas (61) Presence of our leader Commander of the Faithful Ali al-Murtada (62) General noble Companions (63) Hadrat Khidr, rather (64) Hadrat Musa, rather (65) (Dust be in the mouths of enemies) the Leader of Prophets himself (Sallallahu Ta'ala Alayhi wa Sallam), rather (66) (The curse of Allah be upon the oppressors) Allah Lord of the Worlds Himself.

Page 481 of 750

जिल्द 29 फ़तावा रज़विया

(21) अल्लामा जमल (शारह जलालैन) (22) इमाम अबू बक्र राज़ी (साहब-ए-तफ़्सीर उनमूज़ज अल-जलील) (23) इमाम क़ाज़ी अयाज़ (24) इमाम ज़ैनुद्दीन इराक़ी (उस्ताद इमाम इब्न-ए-हजर अस्क़लानी) (25) हाफ़िज़ुल हदीस अहमद सलजमासी (26) इब्न-ए-क़ुतैबाह (27) इब्न-ए-ख़ल्लकान (28) इमाम कमालुद्दीन दमीरी (29) अल्लामा इब्राहिम बिजौरी (30) अल्लामा शनवानी (31) अल्लामा मदाबिग़ी (32) अल्लामा इब्न-ए-अतिय्याह (33) अल्लामा अश्मावी (34) इमाम नासिरुद्दीन समरक़ंदी (साहब-ए-मुल्तक़त) (35) अल्लामा बदरुद्दीन महमूद बिन इस्राईल (साहब-ए-जामे अल-फ़ुसूलैन) (36) शैख़ आलम बिन साहब-ए-तातारी ख़ानिया (37) इमाम फ़क़ीह साहब-ए-फ़तावा हुज्जाह (38) इमाम अब्दुल वहाब शेरानी (39) इमाम याफ़ई (40) इमाम औहद अबुल हसन शतनुफ़ी (41) इमाम इब्न-ए-हजर मक्की (42) इमाम मुहम्मद साहब-ए-मदीहा बुर्दा शरीफ (43) हज़रत मौलाना जामी (44) हज़रत मौलवी मानवी (45) हज़रत सैय्यद अब्दुल अज़ीज़ दब्बाग़ (46) हज़रत सैय्यदी अली ख़व्वास (47) हज़रत ख़्वाजा बहाउल हक़ वद्दीन (48) हज़रत ख़्वाजा अज़ीज़ान रामीतीनी (49) हज़रत शैख़ अकबर (50) हज़रत सैय्यदी अली वफ़ा (51) हज़रत सैय्यदी रसलान दिमश्क़ी (52) हज़रत सैय्यदी अबू अब्दुल्लाह शिराज़ी (53) हज़रत सैय्यदी अबू सुलेमान दारानी (54) हज़रत क़ुत्ब-ए-कबीर सैय्यद अहमद रिफ़ाई (55) हुज़ूर क़ुत्बुल अक़ताब सैय्यदुना ग़ौस-ए-आज़म (56) हज़रत इमाम अली रज़ा (57) हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ (58) हज़रत आलिया दिगर अइम्मा अतहार (59) इमाम मुजाहिद (60) हज़रत सैय्यदुना अब्दुल्लाह इब्न अब्बास (61) हुज़ूर सैय्यदुना अमीरुल मोमिनीन अली मुर्तज़ा (62) आमह सहाबा किराम (63) हज़रत ख़िज़्र बल्कि (64) हज़रत मूसा बल्कि (65) (खाक ब-दहन दुश्मनान) खुद हुज़ूर सैय्यदुल अम्बिया (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) बल्कि (66) (लअ'नतुल्लाहि अलल ज़ालिमीन) खुद अल्लाह रब्बुल आलमीन

पेज 481/750

(۲۱) علامہ جمل (شارح جلالین) (۲۲) امام ابوبکر رازی (صاحب تفسیر انموذج جلیل) (۲۳) امام قاضی عیاض (۲۴) امام زین الدین عراقی (استاد امام ابن حجر عسقلانی) (۲۵) حافظ الحدیث احمد سلبجماسی (۲۶) ابن قتیبہ (۲۷) ابن خلکان (۲۸) امام کمال الدین دمیری (۲۹) علامہ ابراہیم بیجوری (۳۰) علامہ شنوانی (۳۱) علامہ مدابغی (۳۲) علامہ ابن عطیہ (۳۳) علامہ عشماوی (۳۴) امام ناصر الدین سمرقندی (صاحب ملتقط) (۳۵) علامہ بدر الدین محمود بن اسرائیل (صاحب جامع الفصولین) (۳۶) شیخ عالم بن صاحب تاتارخانیہ (۳۷) امام فقیہ صاحب فتاویٰ حجہ (۳۸) امام عبدالوہاب شعرانی (۳۹) امام یافعی (۴۰) امام اوحد ابوالحسن شطنوفی (۴۱) امام ابن حجر مکی (۴۲) امام محمد صاحب مدیحہ بردہ شریف (۴۳) حضرت مولانا جامی (۴۴) حضرت مولوی معنوی (۴۵) حضرت سید عبدالعزیز دباغ (۴۶) حضرت سیدی علی خواص (۴۷) حضرت خواجہ بہاؤ الحق والدین (۴۸) حضرت خواجہ عزیزان رامتینی (۴۹) حضرت شیخ اکبر (۵۰) حضرت سیدی علی وفا (۵۱) حضرت سیدی رسلان دمشقی (۵۲) حضرت سیدی ابوعبداللہ شیرازی (۵۳) حضرت سیدی ابوسلیمان درانی (۵۴) حضرت قطب کبیر سید احمد رفاعی (۵۵) حضور قطب الاقطاب سیدنا غوث اعظم (۵۶) حضرت امام علی رضا (۵۷) حضرت امام جعفر صادق (۵۸) حضرت عالیہ دیگر ائمہ اطہار (۵۹) امام مجاہد (۶۰) حضرت سیدنا عبداللہ ابن عباس (۶۱) حضور سیدنا امیر المومنین علی مرتضیٰ (۶۲) عامہ صحابہ کرام (۶۳) حضرت خضر بلکہ (۶۴) حضرت موسیٰ بلکہ (۶۵) (خاک بہ دہن دشمنان) خود حضور سیدالانبیاء (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) بلکہ (۶۶) (لعنۃ اللہ علی الظالمین) خود اللہ رب العالمین

Fatawa Razawiyya Volume 29

There is no power or might except with Allah, the Most High, the Supreme. "And those who have wronged will come to know to what [kind of] return they will be returned."[1] There is neither strength to avoid sin nor power to do good except from God, the Sublime and Magnificent. Soon the wrongdoers will know to what place they will return. (T)

These are sixty-six in number, and among them are the Imams of Ahl-e-Sunnat, the authors of the creeds referred to by Allama Shami, the pure Imams referred to by Allama Sayyid Sharif, and all the noble Companions referred to by Imam Qastalani and Allama Zarqani—all are themselves groups. And the point is that when it comes down to Allah and His Messenger, then all the past and future jinn, humans, and masters of all believers are included in the Wahhabis' takfir (declaration of infidelity).

Look at the spectacle of these irreligious people. When the blasphemers against Muhammad, the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him and his progeny) were declared kafir, how they lamented, saying, "Alas, they called the whole world kafir!" (As if the "world" consists only of their two and a half people). "Alas, they narrowed the circle of Islam!" (As if "Islam" is the name of these irreligious people's rhyme—when their rhyme narrowed, the circle of Islam itself narrowed).

And their own condition is such that these wretched people spare neither scholars, nor saints, nor companions, nor the Chosen One (peace and blessings of Allah be upon him and his progeny), nor even the Lord of Greatness (Mighty and Majestic is He). They pass the decree of kufr (infidelity) on everyone and still remain "healthy little children of Muslims." "Verily, the curse of Allah is upon the wrongdoers."[2] (Beware! The curse of Allah is upon the wrongdoers. T) Yes, O Wahhabis! Gangohis! Deobandis! Thanvis! Delhis! Amritsaris! If you are firm in your word and true to your speech, then close your eyes, open your mouths, and say clearly: "Yes, from Shah Waliullah to the jurists, traditionists, exegetes, theologians, great scholars; from great scholars to the saints; from saints to the pure Imams; from the pure Imams to the great Prophets; from the great Prophets to the Master of Prophets; and from the Master of Prophets (peace and blessings of Allah be upon him and his progeny) to the One Absolute Subduer—everyone, according to your religion, is a kafir." This is the point of discussion; this is the matter at hand. Showing a few special phrases, twisting and turning, whining, denying, or evading won't work.

[1] The Noble Quran 26/227 [2] The Noble Quran 11/18

फ़तावा रज़विया खंड 29

अल्लाह के सिवा कोई शक्ति या सामर्थ्य नहीं है, जो सबसे ऊँचा और महान है। "और जिन्होंने ज़ुल्म किया है, वे जल्द ही जान लेंगे कि वे किस पलटने की जगह पलटेंगे।"[1] न गुनाह से बचने की ताक़त है और न ही नेकी करने की कुव्वत मगर बुलंदी व अज़मत वाले ख़ुदा की तरफ़ से। अनक़रीब ज़ालिम जानेंगे किस लौटने की जगह लौटते हैं। (त)

ये गिनती में तो छियासठ (66) हैं और इनमें अइम्मा-ए-अहले सुन्नत, मुसन्निफ़ान-ए-अक़ाएद जिनका हवाला अल्लामा शामी ने दिया, और अइम्मा-ए-अतहार जिनका हवाला अल्लामा सैय्यद शरीफ़ ने दिया, और तमाम सहाबा-ए-किराम जिनका हवाला इमाम क़स्तलानी व अल्लामा ज़रक़ानी ने दिया सब ख़ुद जमातें (समूह) हैं। और है ये कि जब अल्लाह व रसूल तक नौबत है तो अगले पिछले जिन व इंस व मालिक तमाम मोमिनीन सब ही वहाबिया की तक़्फ़ीर (काफ़िर घोषित करने) में आ गए।

इन बेदीनों का तमाशा देखो, मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के बदगोइयों (अपशब्द कहने वालों) की तक़्फ़ीर हुई, इस पर क्या-क्या रोए हैं कि हाय सारे जहान को काफ़िर कह दिया। (गोया जहान उन्हें ढाई नफ़रों से इबारत है) हाय इस्लाम का दायरा तंग कर दिया (गोया इस्लाम इन बेदीनों के क़ाफ़िया का नाम है, उनका क़ाफ़िया तंग हुआ तो इस्लाम ही का दायरा तंग हो गया)।

और ख़ुद ये हालत कि अश्क़िया (बदक़िस्मत) न उलेमा को छोड़ें, न औलिया को, न सहाबा को, न मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को, न जनाब-ए-किबरिया (अज़्ज़ वजल्ला) को। सब पर हुक्म-ए-कुफ़्र लगाएँ और ख़ुद हट्टे-कट्टे मुसलमानों के बच्चे बने रहें। "सावधान! ज़ालिमों पर अल्लाह की लानत है।"[2] (ख़बरदार! ज़ालिमों पर अल्लाह की लानत है। त) हाँ हाँ वहाबियो! गंगोहियो! देवबंदियो! थानवियो! देहलवियो! अमृतसरियो! बात के पक्के और क़ौल के सच्चे हो तो आँखें बंद करके मुँह खोलकर साफ़ कह डालो कि हाँ हाँ शाह वलीउल्लाह से लेकर फ़ुक़हा, मुहद्दिसीन, मुफ़स्सिरीन, मुतक़ल्लिमीन, अकाबिर उलेमा; अकाबिर उलेमा से लेकर औलिया; औलिया से लेकर अइम्मा-ए-अतहार; अइम्मा-ए-अतहार से लेकर अंबिया-ए-इज़ाम; अंबिया-ए-इज़ाम से लेकर सैय्यदुल अंबिया; सैय्यदुल अंबिया (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से लेकर वाहिद-ए-क़हार तक तुम्हारे धरम में सब काफ़िर हैं। इसकी बहस है, इसमें कलाम (चर्चा) है। दो-चार, दस-बीस इबारत तख़्सीस (विशेषता) दिखाने, करवटें बदलने, कहने, मुकरने, अड़े-अड़े फिरने से काम नहीं चलता।

[1] अल-क़ुरान अल-करीम 26 / 227 [2] अल-क़ुरान अल-करीम 11 / 18

ولاحول ولاقوۃ الا باللہ العلی العظیم۔ "وَسَیَعْلَمُ الَّذِیْنَ ظَلَمُوْا أَیَّ مُنْقَلَبٍ یَّنْقَلِبُوْنَ" ۔1 نہ گناہ سے بچنے کی طاقت ہے اور نہ ہی نیکی کرنے کی قوت مگر بلندی و عظمت والے خدا کی طرف سے۔ عنقریب ظالم جانیں گے کس لوٹنے کی جگہ لوٹتے ہیں۔(ت)

یہ گنتی میں تو چھیاسٹھ ہیں اور ان میں آئمہ اہلسنت، مصنفان عقائد جن کا حوالہ علامہ شامی نے دیا، اور آئمہ اطہار جن کا حوالہ علامہ سید شریف نے اور تمام صحابہ کرام جن کا حوالہ امام قسطلانی و علامہ زرقانی نے دیا سب خود جماعتیں ہیں۔ اور ہے یہ کہ جب اللہ و رسول تک نوبت ہے تو اگلے پچھلے جن و انس و مالک تمام مومنین سب ہی وہابیہ کی تکفیر میں آگئے۔

ان بے دینوں کا تماشا دیکھو محمد رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وآلہ وسلم کے بدگوئیوں کی تکفیر ہوئی اس پر کیا کیا روئے ہیں کہ ہائے سارے جہان کو کافر کہہ دیا۔ (گویا جہان انہیں ڈھائی نفروں سے عبارت ہے) ہائے اسلام کا دائرہ تنگ کر دیا (گویا اسلام ان بے دینوں کے قافیہ کا نام ہے ان کا قافیہ تنگ ہوا تو اسلام ہی کا دائرہ تنگ ہو گیا۔

اور خود یہ حالت کہ اشقیاء نہ علماء کو چھوڑیں، نہ اولیاء کو نہ صحابہ کو نہ مصطفی (صلی اللہ تعالٰی علیہ وآلہ وسلم) کو نہ جناب کبریا (عز وجلالہ) کو سب پر حکم کفر لگائیں اور خود ہٹے کٹے مسلمانوں کے بچے بنے رہیں "اَلَا لَعْنَۃُ اللہِ عَلَی الظّٰلِمِیْنَ" 2 (خبردار! ظالموں پر اللہ کی لعنت ہے۔ ت) ہاں ہاں وہابیو! گنگوھیو! دیوبندیو! تھانویو دہلیو! امرتسریو! بات کے پکے اور قول کے سچے ہو تو آنکھیں بند کر کے منہ کھول کر صاف کہہ ڈالو کہ ہاں ہاں شاہ ولی اللہ سے لے کر فقہاء محدثین مفسرین متکلمین اکابر علماء، اکابر علماء سے لے کر اولیاء اولیاء سے لے کر آئمہ اطہار،

آئمہ اطہار سے لے کر انبیاء عظام، انبیاء عظام سے لے کر سید الانبیاء، سید الانبیاء (صلی اللہ تعالٰی علیہ وآلہ وسلم) سے لے کر واحد قہار تک تمہارے دھرم میں سب کافر ہیں، اس کی بحث ہے اس میں کلام ہے۔ دو چار، دس بیس عبارات تخصیص دکھانے، کروٹیں بدلنے، کہنے، مکرنے، اڑے اڑے پھرنے سے کام نہیں چلتا۔

1 القرآن الکریم ۲۶ / ۲۲۷ 2 القرآن الکریم ۱۱ / ۱۸

Volume 29 Fatawa Razawiyya

It was easy to say that Ahmed Raza became a believer in the Prophet's (peace and blessings of Allah be upon him) knowledge of the unseen and that this belief is disbelief (kufr). But you did not see whose pure skirts Ahmed Raza's soul is attached to. Ahmed Raza's chain of belief is continuously connected from scholars, saints, imams, and companions to Muhammad, the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him and his family), and from Muhammad, the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him and his family), to Allah, the Lord of the worlds. Praise be to Allah, the Lord of the worlds.

Although we are small, the connection is grand. (Translation: Even though we are small, our affiliation is lofty.)

Hazrat Maulana Rumi (may his secret be sanctified), may countless mercies of Allah Almighty be upon him, has said so beautifully: Rumi has not spoken words of disbelief and shall not; do not become his denier. The one who rose in denial became a disbeliever and was rejected by the world.

(Translation: Rumi never spoke words of disbelief nor will he. Do not deny him. A disbeliever is the one who manifested denial and became rejected in the world.)

Now think about your own condition, where the flame of your fire has reached. It has, God forbid, applied that same cursed ruling even to scholars, saints, imams, companions, prophets, Mustafa (peace and blessings of Allah be upon him), and the Almighty (exalted is He), and earned the badge of "becoming a disbeliever and rejected by the world." Will this fire of yours harm Allah and His Messenger (Exalted is He and peace be upon him)? Heaven forbid! Rather, it will burn you. And if you die without repentance, then by the will of Allah the Subduer, for all eternity, it will make you taste: "Taste this! Indeed, you are the most noble and honorable" (an ironical Quranic reference to the punishment of the arrogant).

Even then, we will speak with justice. If you call all imams, saints, and beloveds of God disbelievers, there is no ground for complaint. They have committed such a 'fault': the vastness of Iblis's knowledge was accepted by you, which was the relief of your heart and the coolness of your eyes, as sung in the book 'Barahin-e-Qatia'. They didn't say that. You took the vastness of knowledge of your enemy Muhammad, the Messenger of Allah, and his slaves (peace and blessings of Allah be upon him and

them). Why then not impose this ruling on them, as to which part of faith this belongs to?

Up to this point, it was easy for you, but declaring God as a disbeliever (takfir of God) will be a tough nut to crack. You called Him a liar, but to call Him a disbeliever, the eye would blink. And above all, there is the matter under the stone of Shah Waliullah Sahab's skirt, which for the Wahhabis is like a muskrat in a snake's mouth—it's appropriate to say they can't swallow it nor spit it out. He passed away saying that:

यह कहना आसान था कि अहमद रज़ा रसूल अल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के इल्म-ए-ग़ैब (परोक्ष ज्ञान) का कायल हो गया और यह अकीदा कुफ्र (अधर्म) का है, मगर यह न देखा कि अहमद रज़ा की जान किन-किन पाकदामनों से वाबस्ता है। अहमद रज़ा का सिलसिला-ए-एतकाद उलमा, औलिया, अइम्मा, सहाबा से मुहम्मद रसूल अल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि वसल्लम) और मुहम्मद रसूल अल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि वसल्लम) से अल्लाह रब्बुल आलमीन तक मुसलसल मिला हुआ है। और सब प्रशंसा अल्लाह के लिए है जो सारे संसार का रब है।

गरचे खुर्दीम निस्बतेस्त बुजुर्ग (अगरचे हम छोटे हैं मगर निस्बत बुलंद है।)

हजरत मौलवी मानवी (रूमी) कुद्दिस सर्रहु पर अल्लाह अज्जवजल की बेशुमार रहमतें हों, क्या खूब फरमाया है: रूमी सुखन-ए-कुफ्र नगुफ्तस्त व नगोयद, मुनकिर मशोयेदश काफिर शवद आं कस कि बा इन्कार बरामद मरदूद-ए-जहां शुद

(रूमी ने कुफ्र की बात नहीं कही है और न कहेगा। उसके मुनकिर मत बनो। काफिर वह शख्स होता है जिसने इनकार जाहिर किया और दुनिया में मरदूद हो गया।)

अब अपना ही हाल सोचो कि तुम्हारी आग का लूका (लपट) कहां तक पहुंचा जिसने उलमा, औलिया, अइम्मा, सहाबा, अम्बिया, मुस्तफा (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) और हजरत-ए-किबरिया (जल्ला व अला) सब पर मुआज अल्लाह वही मलऊन हुक्म लगा दिया और "काफिर शवद मरदूद-ए-जहां शुद" का तमगा ले लिया। फिर क्या तुम्हारी यह आग अल्लाह और रसूल (जल्ला व अला सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को नुकसान पहुंचाएगी? हशल्लिलाह (कदापि नहीं)! बल्कि तुम्हें ही जलाएगी, और बे-तौबा मरे तो इन्शा अल्लाह अल-कहहार अबद-उल-आबाद तक "ज़ुक इन्नका अन्तल अज़ीज़ुल करीम" (इसका मजा चख, बेशक तू ही बड़ा इज्जत वाला और शरीफ है) का मजा चखाएगी।

फिर भी हम इंसाफ की ही कहेंगे। तमाम अइम्मा, औलिया और खुदा के महबूबों को तुम काफिर कहो तो कोई शिकायत नहीं, उन्होंने कसूर ही ऐसा किया है; इब्लीस के इल्म की वअसत (विस्तार) मानी तो तुम्हारे कलेजे की ठंडक और आंखों की ठंडक हुई, जैसा कि 'बराहिन-ए-कातिआ' में गीत गाया गया है। उन्होंने यह तो नहीं कहा, बल्कि वे तो तुम्हारे दुश्मन मुहम्मद रसूल अल्लाह और उनके गुलामों की इल्म की वअसत लेकर चले (सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि वसल्लम)। फिर उन पर यह हुक्म क्यों न जड़ो कि यह ईमान का कौन सा हिस्सा है।

यहाँ तक तो तुम पर आसानी थी, मगर खुदा की तकफीर (ईश्वर को काफिर कहना) जरा टेढ़ी खीर होगी। काज़िब (झूठा) तो कह दिया, काफिर कहते वक्त तो आंख झपकेगी। और सबसे बढ़कर पत्थर के नीचे हजरत शाह वलीउल्लाह साहब के दामन का मामला है, जिसे वहाबियों के लिए सांप के मुंह की छछूंदर कहें तो बजा है, न उगलते बनती है न निगलते। वह यह कह कर चल बसे कि:

पृष्ठ 483 / 750

یہ کہنا آسان تھا کہ احمد رضا رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے علم غیب کا قائل ہو گیا اور یہ عقیدہ کفر کا ہے، مگر نہ دیکھا کہ احمد رضا کی جان کن کن پاک دامنوں سے وابستہ ہے، احمد رضا کا سلسلہ اعتقاد علماء ، اولیاء ، آئمہ صحابہ سے محمد رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم اور محمد رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم سے اللہ رب العالمین تک مسلسل ملا ہوا ہے۔ والحمد للہ رب العالمین ع

گرچہ خوردیم نسبتی ست بزرگ (اگر چہ ہم چھوٹے ہیں مگر نسبت بلند ہے۔ت)

حضرت مولوی معنوی قدس سرہ ، پر اللہ عزوجل کی بے شمار رحمتیں ، کیا خوب فرمایا ہے:

رومی سخن کفر نگفتست و نگوید، منکر مشویدش کافر شود آنکس که با نکار بر آمد مردود جہاں شد

(رومی نے کفر کی بات نہیں کہی ہے اور نہ کہے گا۔ اس کے منکر مت ہو۔ کافر وہ شخص ہوتا ہے جس نے انکار ظاہر کیا مردودِ جہاں ہو گیا۔ ت)

اب اپنا ہی حال سوچو کہ تمہاری آگ کا لوکا کہاں تک پہنچا جس نے علماء ، اولیاء و ائمہ و صحابہ و انبیاء و مصطفیٰ (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) و حضرت کبریا (جل وعلا) سب پر معاذ اللہ وہی معلون حکم لگا دیا اور کافر شود مردود جہاں شد کا تمغہ لیا۔ پھر کیا تمہاری یہ آگ اللہ و رسول (جل وعلا صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) کو ضرر پہنچائے گی؟ حاش للہ بلکہ تمہیں کو جلائے گی، اور بے توبہ مرے تو ان شاء اللہ القہار ابد الآباد تک "ذق انک انت الاشرف الرشید" (اس کا مزہ چکھ بے شک تو اشرف رشید ہے۔ ت) کا مزہ چکھائے گی۔

پھر بھی ہم کہیں گے انصاف ہی کی ۔ تمام آئمہ و اولیاء و محبوبانِ خدا کو تم کافر کہو تو جائے شکایت نہیں، انہوں نے قصور ہی ایسا کیا ہے، ابلیس کی وسعتِ علم مانی تمہارے کلیجے کا سنگھ آنکھوں کی ٹھنڈک ہوئی، براہینِ قاطعہ میں جس کا گیت گایا ہے، انہوں نے یہ تو کہا نہیں، لے کر چلے وسعت علم تمہارے دشمن محمد رسول اللہ اور ان کے غلاموں کی ، صلی اللہ تعالیٰ علیہ وعلیہ وسلم پھر ان پر کیوں نہ یہ حکم جڑو کہ کون سا ایمان کا حصہ ہے۔

یہاں تک تو تم پر آسانی تھی مگر ذرا خدا کی تکفیر ٹیڑھی کھیر ہو گی ، کاذب تو کہہ دیا کافر کہتے کچھ تو آنکھ جھپکے گی ، اور سب سے بڑھ کر پتھر کے تلے دامن جناب شاہ ولی اللہ صاحب کا معاملہ ہے جسے وہابیہ کے لیے سانپ کے منہ کی چھچھوندر کہئے تو بجا ہے ، نہ اگلتی بنتی ہے نہ نگلتے ، وہ کہہ کر چل بسے کہ

Fatawa Razawiya, Volume 29

Everything is clear to the servant-gnostics of Muhammad, the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him and his family). They reach the reality of every knowledge and every state. Whatever was to occur until their passing, they have knowledge of it in every state. On one hand, for the 'brave' Gangohi, believing in the Prophet's awareness of gatherings of Milad is chilling polytheism (shirk); rather, in his warped understanding, he issues charges of disbelief (takfir) against Fatawa-e-Hanafiya for believing in such knowledge even regarding a single marriage. And on the other hand, there are these 'divine friends' whose big claims are like empty drums. Now, if they are not called disbelievers, how can the takfir of poor Sunnis be justified? And the disgrace of Wahhabism would be separate. If one were to take heart and strike at the root of disbelief in them as well, then poor Wahhabism would be totally uprooted. As soon as they become disbelievers, Ismail Ji—whose songs they sing, and whom they consider their Imam, leader, spiritual guide, chief, sage of the Ummah, and recipient of revelation and infallibility—would also be a disbeliever among disbelievers, children of disbelievers, and disciples of disbelievers. And all of you who were followers and admirers of Ismail Ji's Shah Sahib would also be caught up. Like weevils in wheat, all of you would be ancient disbelievers. SubhanAllah! What a love you have for disbelief; whichever way you turn or whatever form you take, it ultimately becomes a noose around your own neck.

Persian Couplet: If driven away, it does not depart; and if it goes, it returns, The fly of disbelief is the beauty-spot on a Wahhabi's face. (Urdu Translation: If driven away, it doesn't leave; and if it goes, it returns; the fly of disbelief is like a mole on the Wahhabi's face. - T)

[Table/Box Section] Arabic: "Such is the punishment; and the punishment of the Hereafter is greater, if they but knew." [68:33]. And may Allah Almighty send blessings upon our Master and Lord Muhammad, and upon his family and all his companions. And all praise is due to Allah, the Lord of all worlds.

Urdu: Punishment is like this, and indeed the punishment of the Hereafter is the greatest. How good it would have been if they knew. And may Allah Almighty send blessings upon our Master and Leader Muhammad Mustafa (peace and blessings of Allah be upon him and his family) and upon his descendants and all his companions. And all praises are for Allah Almighty, who is the Sustainer of all the worlds. (T)

Faqeer Ahmad Raza Khan Qadri, may he be forgiven. From Bareilly, 14th Rabi-ul-Awwal Sharif, Saturday, 1328 AH. The treatise 'Khalis-ul-I'tiqad' is concluded.

1. Al-Quran al-Kareem 68/33

मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के गुलाम आरिफों पर हर चीज़ रोशन होती है। वे हर इल्म और हर हाल की हकीकत तक पहुँचे होते हैं। वफ़ात तक जो कुछ आने वाला है, वे हर हाल की उस वक्त खबर रखते हैं। कहाँ तो वह मिलाद की महफ़िलों पर इत्तला (जानकारी) मानने से गंगोही बहादुर की ठंडी शिर्क, बल्कि औंधी समझ में एक ही निकाह की खबर मानने से वे फ़तावा-ए-हनफ़िया की तकफ़ीरें करते हैं और कहाँ ये वली इलाही बड़े बोल जो ढोल की तरह खोखले हैं। अब अगर उन्हें काफ़िर न कहा जाए तो गरीब सुन्नियों की तकफ़िर कैसे बन पड़े? और वहाबियत की मट्टी पलीद हो वह अलग। और अगर दिल कड़ा करके उन पर भी कुफ़्र की जड़ जमा दी जाए तो बेचारी वहाबियत का नामो-निशान मिट जाए। उनके काफ़िर होते ही इस्माइल जी, जिनके वे गुण गाते हैं, जिन्हें वे इमाम, मुक्तदा, पीर, पेशवा, हकीम-ए-उम्मत और साहिबे-वही व इस्मत मानते हैं, काफ़िर दर काफ़िर, काफ़िरों के बच्चे, काफ़िरों के चेले ठहरेंगे। और तुम सब जो इस्माइल जी के शाह साहब के अकीदतमंद और प्रशंसक बनते थे, तो गेहूँ के साथ घुन की तरह तुम सब के सब पुराने काफ़िर हो जाओगे। अल्लाह! अल्लाह! कुफ़्र से भी तुम्हें कैसी मुहब्बत है कि किसी पहलू चलो, कोई रूप बदलो, वह हर हाल में घूम-फिर कर तुम्हारे ही गले का हार बनता है।

फारसी शेर: गर बराँद नज़द दूर बरवद बाज़ आयद / मगस-ए-कुफ़्र बुद खाल-ए-रुख़-ए-वहाबी (शेर का उर्दू अनुवाद: अगर भगाएं तो नहीं जाती और अगर जाए तो लौट आती है, कुफ़्र की मक्खी वहाबी के चेहरे का तिल है। - त)

[बॉक्स अनुभाग] अरबी: "इसी तरह अज़ाब होता है, और बेशक आखिरत का अज़ाब सबसे बड़ा है, काश! वे जानते।" और अल्लाह के दुरूद हों हमारे आका और मौला मुहम्मद पर और उनकी आल और उनके तमाम असहाब पर, और सब तारीफें अल्लाह के लिए हैं जो तमाम जहानों का पालने वाला है।

हिंदी: मार ऐसी ही होती है और बेशक आखिरत की मार सबसे बड़ी है, क्या अच्छा होता अगर वे जानते। और अल्लाह तआला दुरूद नाज़िल फरमाए हमारे आका व मौला मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम पर और आपकी आल पर और आपके तमाम असहाब पर, और सब तारीफें अल्लाह तआला के लिए हैं जो परवरदिगार है सब जहानों का। (त)

फ़कीर अहमद रज़ा खान क़ादरी, अल्लाह उन्हें माफ़ फरमाए। बरेली से, 14 रबीउल अव्वल शरीफ़, शनिवार, 1328 हिजरी। रिसाला 'खालिसुल एतिकाद' समाप्त हुआ।

1 अल-कुरान अल-करीम 33/68 (68:33)

محمد رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وآلہ وسلم ان کے غلاموں عارفوں پر ہر چیز روشن ہوتی ہے، وہ ہر علم ہر حال کی حقیقت کو پہنچے ہوتے ہیں، وفات تک جو کچھ آنے والا ہے ہر حال کی اس وقت خبر رکھتے ہیں کہاں تو وہ مجالس میلاد پر اطلاع ماننے سے گنگوہی بہادر کا ٹھنڈ شرک بلکہ اوندھی سمجھ میں ایک ہی نکاح کی خبر ماننے سے وہ فتاویٰ حنفیہ کی تکفیریں اور کہاں یہ ولی الہی بڑے بول جو کھال لگی رکھیں نہ ڈھول۔ اب انہیں کافر نہیں کہے تو غریب سنیوں کی تکفیر کیسے بن پڑے اور وہابیت کی مٹی پلید ہو وہ الگ، اور اگر دل کڑا کر کے ان پر بھی کفر کی جڑ دی تو وہابیت بیچاری کا کٹھم ناتھ ہو گیا۔ ان کے کافر ہوتے ہی اسمعیل جی کہ انہیں کے گیت گائیں، انہیں کو امام و مقتد و پیر و پیشوا و حکیمِ امت و صاحب وحی و عصمت مانیں، کافر در کافر، کافروں کے بچے، کافروں کے چیلے ہوئے اور تم سب کہ اسمعیل جی کے شاہ صاحب کے معتقد ومداح بنتے تھے۔ تو ساتھ لگے گیہوں کے گھن تم سب کے سب کافرانِ کہن اللہ کفر کو بھی تم سے کیا محبت ہے کہ کسی پہلو چلو، کوئی روپ بدلو وہ ہر پھر کر تمہارے ہی گلے کا ہار ہوتا ہے۔

گر براند نزد دور برود باز آید / مگس کفر بود خالِ رخِ وہابی (اگر بھگائے تو نہیں جاتی اور اگر جائے تو لوٹ آتی ہی کفر کی مکھی وہابی کے چہرے کا تل ہے۔ت)

[جدول/باکس] "كَذٰلِكَ الْعَذَابُ ؕ وَلَعَذَابُ الْآخِرَةِ أَكْبَرُ ۚ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ" ۱ وصلی اللہ تعالیٰ علیہ سیدنا و مولینا محمد و الہ وصحبہ اجمعین، والحمد للہ رب العلمین۔ مار ایسی ہوتی ہے اور بے شک آخرت کی مار سب سے بڑی ہے، کیا اچھا تھا اگر وہ جانتے اور درود نازل فرمائے اللہ تعالیٰ ہمارے آقا و

مولیٰ محمد مصطفیٰ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم پر اور آپ کی آل پر اور آپ کے تمام اصحاب پر، اور سب تعریفیں اللہ تعالیٰ کے لیے ہیں جو پروردگار ہے سب جہانوں کا۔ (ت)

فقیر احمد رضا خان قادری عفی عنہ از بریلی ۱۴ ربیع الاول شریف روز شنبہ ۱۳۲۸ھ رسالہ خالص الاعتقاد ختم ہوا۔

۱ القرآن الکریم ۳۳/۶۸

Treatise Inba' al-Mustafa bi-hal Sirrin wa Akhfa 1318 AH (Informing the Chosen One, peace and blessings of Allah be upon him, of the hidden and the most hidden)

In the name of Allah, the Most Gracious, the Most Merciful

Problem 148: From Delhi, Chandni Chowk, Moti Bazar, sent by some scholars of the Ahl-e-Sunnat, 21st Rabi al-Akhir 1318 AH. What do the noble scholars of the Ahl-e-Sunnat say about this matter: Zaid* claims that Allah Almighty has bestowed the knowledge of the unseen (Ghaib) upon the Messenger of Allah, peace and blessings of Allah be upon him and his progeny. He knows everything that has happened and will happen in the world, from the beginning of creation until the entry into Hell and Paradise. He knows the good and evil of his Ummah in detail. He observes all the first and the last just as he observes his own blessed palm. To prove this claim, he presents verses, hadiths, and statements of scholars. Bakr calls this belief infidelity (kufr) and polytheism (shirk), and claims with great harshness that the Master of the Universe, peace and blessings of Allah be upon him, knows nothing, even to the extent that he did not know the state of his own end. And for his claim...

- By Zaid is meant Maulana Hidayat Rasul Sahib Lucknawi, the deceased.

रिसाला अंबाल मुस्तफ़ा बहाल-ए-सिर्रिन वा अख़्फ़ा १३१८ हिजरी (मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को छिपी हुई और सबसे छिपी हुई चीज़ों की ख़बर देना)

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मसला १४८: दिल्ली के चांदनी चौक, मोती बाज़ार से, सुन्नी विद्वानों द्वारा प्रेषित, २१ रबी-उल-आख़िर १३१८ हिजरी। अहले सुन्नत के प्रतिष्ठित विद्वान इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि ज़ैद* दावा करता है कि हक़ तआला ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वआलिही वसल्लम को इल्म-ए-ग़ैब अता फ़रमाया है। दुनिया में जो कुछ हुआ और होगा, यहाँ तक कि सृष्टि के आरंभ से लेकर जहन्नुम और जन्नत में दाख़िल होने तक का तमाम हाल और अपनी उम्मत के ख़ैर-ओ-शर (भले-बुरी) को विस्तार से जानते हैं। और तमाम अव्वलीन (अगले) और आख़िरीन (पिछले) लोगों को इस तरह देखते हैं जैसे अपनी मुबारक हथेली को देखते हों। और इस दावे के सबूत में आयतें, हदीसें और विद्वानों के कथन पेश करता है। बक्र इस अक़ीदे (विश्वास) को कुफ़्र और शिर्क कहता है और बड़ी सख़्ती के साथ दावा करता है कि हुज़ूर सरवर-ए-आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम कुछ नहीं जानते, यहाँ तक कि आपको अपने ख़ात्मे (अंत) का हाल भी मालूम न था, और अपने इस दावे के लिए...

• ज़ैद से मुराद जनाब मौलाना हिदायत रसूल साहब लखनवी मरहूम हैं।

رسالہ انباء المصطفیٰ بحال سرّ واخفیٰ ۱۳۱۸ھ (مصطفیٰ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کو خبر دینا پوشیدہ کی اور پوشیدہ ترین کی)

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

مسئلہ ۱۴۸: از دہلی چاندنی چوک موتی بازار، مرسلہ بعض علماء اہلسنت ۲۱ ربیع الآخر شریف ۱۳۱۸ھ حضرت علمائے کرام اہلسنت کیا فرماتے ہیں اس مسئلہ میں کہ زید عہ دعویٰ کرتا ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وآلہ وسلم کو حق تعالیٰ نے علم غیب عطا فرمایا ہے، دنیا میں جو کچھ ہوا اور ہوگا حتیٰ کہ بدء الخلق سے لے کر دوزخ وجنت میں داخل ہونے تک کا تمام حال اور اپنی امت کا خیر و شر تفصیل سے جانتے ہیں۔ اور جمیع اولین و آخرین کو اس طرح ملاحظہ فرماتے ہیں جس طرح اپنے کفِ دستِ مبارک کو ، اور اس دعوے کے ثبوت میں آیات واحادیث واقوالِ علماء پیش کرتا ہے۔ بکر اس عقیدے کو کفر و شرک کہتا ہے اور بکمال درشتی دعویٰ کرتا ہے کہ حضور سرور عالم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کچھ نہیں جانتے، حتیٰ کہ آپ کو اپنے خاتمے کا حال بھی معلوم نہ تھا، اور اپنے اس دعوے کے

عہ: زید سے مراد جناب مولانا ہدایت رسول صاحب لکھنوی مرحوم ہیں۔

Volume 29 Fatawa Razawiyya

In proof, he presents passages from the book 'Taqwiyat-ul-Iman' and says that regarding the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him and his family), the belief that he had personal knowledge, whether bestowed by God or not, is shirk (polytheism) in both ways. Now, the request to the divine scholars is, which of these two is on the path of truth, consistent with the beliefs of the righteous predecessors (Salaf al-Salih), and who is an innovator destined for Hell? Furthermore, Amr claims that Satan's knowledge, God forbid, is greater than the knowledge of the Master of the Universe (peace and blessings of Allah be upon him). His Gangohi spiritual guide writes on page 47 of his book 'Barahin-e-Qati'ah' that the vastness of Satan's knowledge is proven by text (Nass), while what definitive text is there for the vastness of the knowledge of the pride of the world?[1]

Answer: In the name of Allah, the Most Gracious, the Most Merciful.

[Arabic Box] O Allah, for You is all praise eternally. Send blessings, peace, and benedictions upon the one whom You taught the Unseen and purified from every defect, and upon his family and companions forever. My Lord, I seek refuge in You from the promptings of the devils, and I seek refuge in You, my Lord, lest they attend me.

[Urdu translation in box] O Allah, all praise is always for You. Send blessings, peace, and benedictions upon the one whom You granted knowledge of the Unseen and made pure from every defect, and upon his family and companions forever and ever. O my Sustainer! I seek Your refuge from the whispers of the devils, and O my Sustainer! I seek Your refuge from their coming near me. (T)

Zaid's statement is true and correct, and Bakr's assumption is rejected and foul. Undoubtedly, the Almighty in His Majesty bestowed upon His Noble Beloved (peace and blessings of Allah be upon him and his family) the knowledge of all those from the beginning to the end. He showed him everything from the East to the West, from the Divine Throne to the earth. He made him a witness to the dominion of the heavens and the earth. He informed him of everything that occurred from the first day to the last day; not a single atom from the aforementioned things remained outside the Prophet's knowledge. The immense knowledge of the Noble Beloved (upon him be the best of blessings and peace) encompassed all of them. Not just in general, but specifically and in detail—every small and large thing, every moist and dry thing, every leaf that falls, every grain lying somewhere in the depths of the earth

—he knew them all individually. Much praise be to Allah. In fact, all that has been described is by no means the full extent of the knowledge of Muhammad, the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him, his family, and all his companions); rather, it is just a small portion of the Prophet's knowledge. Within the encompassment of the Muhammadi knowledge, there are still thousands of boundless oceans.

[1] Al-Barahin al-Qati'ah, Discussion on Knowledge of the Unseen, Matba' le-Bala-sa, situated in Dhor, p. 51.

सबूत में वह किताब 'तक़वियत-उल-ईमान' के अंश पेश करता है और कहता है कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के बारे में यह अक़ीदा कि उन्हें ज़ाती इल्म (व्यक्तिगत ज्ञान) था, चाहे वह अल्लाह ने अता किया हो, दोनों तरह से शिर्क है। अब रब्बानी उलमा की सेवा में निवेदन है कि इन दोनों में से कौन हक़ पर है, जो सलफ़ सालेहीन के अक़ीदे के अनुकूल है और कौन बद-मज़हब जहन्नमी है? साथ ही, अम्र का दावा है कि शैतान का इल्म, अल्लाह की पनाह, हुज़ूर सरवर-ए-काएनात (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के इल्म से ज़्यादा है। उसका गंगोही मुर्शिद अपनी किताब 'बराहिन-ए-क़ातिआ' के पृष्ठ ४७ पर लिखता है कि शैतान के ज्ञान का विस्तार नस (धार्मिक प्रमाण) से सिद्ध है, फ़ख़्र-ए-आलम के ज्ञान के विस्तार के लिए कौन सा नस-ए-क़तई (निश्चित प्रमाण) है?[1]

अल-जवाब: बिस्मिल्लाह हिर्रहमान निर्रहीम

[अरबी बॉक्स] ऐ अल्लाह, तेरे लिए अनंत प्रशंसा है। दुरूद, सलाम और बरकत नाज़िल फ़रमा उस पर जिसे तूने ग़ैब (अदृश्य) का ज्ञान अता किया और उसे हर दोष से पवित्र किया, और उसकी आल (संतान) और साथियों पर हमेशा-हमेशा के लिए। ऐ मेरे रब, मैं शैतानों के वसवसों (उकसावे) से तेरी पनाह माँगता हूँ, और ऐ मेरे रब, मैं तेरी पनाह माँगता हूँ कि वे मेरे पास आएँ।

[उर्दू अनुवाद बॉक्स] ऐ अल्लाह, तमाम तारीफ़ें हमेशा तेरे लिए हैं। दुरूद-ओ-सलाम और बरकत नाज़िल फ़रमा उस पर जिसे तूने ग़ैब का इल्म अता फ़रमाया है और उसे हर ऐब से पाक बनाया है और उसकी आल और असहाब पर हमेशा-हमेशा के लिए। ऐ मेरे परवरदिगार! तेरी पनाह शैतानों के वसवसों से, और ऐ मेरे परवरदिगार! तेरी पनाह कि वे मेरे पास आएँ। (त)

ज़ैद का कथन सत्य और सही है और बक्र का दावा अस्वीकार्य और बुरा है। निस्संदेह, ईश्वर ने अपनी महानता में अपने प्रिय हबीब (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को शुरू से अंत तक के सभी लोगों का ज्ञान प्रदान किया। पूर्व से पश्चिम तक, अर्श (सिंहासन) से लेकर फर्श (पृथ्वी) तक सब उन्हें दिखाया। उन्हें स्वर्ग और पृथ्वी के साम्राज्यों का गवाह बनाया। पहले दिन से लेकर आखिरी दिन तक जो कुछ भी हुआ (मा काना व मा यकून), उन्हें बताया; उपरोक्त चीजों में से कोई भी कण हुज़ूर के ज्ञान से बाहर नहीं रहा। हबीब-ए-करीम (उन पर श्रेष्ठ दुरूद और सलाम हो) का महान ज्ञान उन सभी को घेरे हुए है। न केवल सामान्य रूप से, बल्कि विस्तार से—हर छोटी और बड़ी चीज़, हर गीली और सूखी चीज़, जो पत्ता गिरता है, पृथ्वी के अंधकार में जो दाना कहीं पड़ा है—सब को अलग-अलग विस्तार से

जान लिया। अल्लाह की बहुत प्रशंसा है। वास्तव में, यह जो कुछ भी वर्णित किया गया है, वह किसी भी तरह से मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, उनके परिवार और उनके सभी साथियों) का पूर्ण ज्ञान नहीं है; बल्कि, हुज़ूर का ज्ञान तो केवल एक छोटा सा हिस्सा है। मुहम्मदी ज्ञान के घेरे में अभी भी हजारों असीम समुद्र हैं।

[1] अल-बराहिन अल-क़ातिआ, इल्म-ए-ग़ैब पर चर्चा, मतबा ले-बाला-सा, ढोर में स्थित, पृष्ठ ५१।

اثبات میں کتاب تقویۃ الایمان کی عبارتیں پیش کرتا ہے اور کہتا ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وآلہ وسلم کی نسبت یہ عقیدہ کہ آپ کو علمِ ذاتی تھا خواہ یہ کہ خدا نے عطا فرما دیا تھا۔ دونوں طرح شرک ہے۔ اب علمائے ربانی کی جناب میں التماس ہے کہ ان دونوں سے کون برسرِ حق موافق عقیدہ سلف صالح ہے اور کون بد مذہب جہنمی ہے، نیز عمرو کا دعویٰ ہے کہ شیطان کا علم معاذ اللہ حضور سرورِ کائنات صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کے علم سے زیادہ ہے۔ اس کا گنگوہی مرشد اپنی کتاب براہین قاطعہ کے صفحہ ۴۷ پر یوں لکھتا ہے کہ شیطان کو وسعتِ علم نص سے ثابت ہوئی فخرِ عالم کی وسعتِ علم کی کون سی نص قطعی ہے ۱۔

الجواب: بسم اللہ الرحمن الرحیم ط

اللھم لك الحمد سرمدًا صل وسلم وبارك على من علمته الغيب و نزهته من كل عيب وعلى آله وصحبه ابدًا رب اني اعوذ بك من همزات الشياطين واعوذ بك رب ان يحضرون۔ اے اللہ تمام تعریفیں ہمیشہ تیرے لیے ہیں، درود و سلام اور برکت نازل فرما اس پر جس کو تو نے غیب کا علم عطا فرمایا ہے اور اس کو ہر عیب سے پاک بنایا ہے اور اس کی آل و اصحاب پر ہمیشہ ہمیشہ کے لیے۔ اے میرے پروردگار! تیری پناہ شیاطین کے وسوسوں سے، اور اے میرے پروردگار! تیری پناہ کہ وہ میرے پاس آئیں۔ (ت)

زید کا قول حق و صحیح اور بکر کا زعم مردود و قبیح ہے۔ بے شک حضرت عزت عظمتہ نے اپنے حبیب اکرم صلی اللہ تعالٰی علیہ وآلہ وسلم کو تمام اولین و آخرین کا علم عطا فرمایا۔ شرق تا غرب، عرش تا فرش سب انہیں دکھایا۔ ملکوت السموت والارض کا شاہد بنایا، روز اول سے روز

آخر تک سب ماکان ومایکون انہیں بتایا، اشیائے مذکورہ سے کوئی ذرہ حضور کے علم سے باہر نہ رہا۔ علم عظیم حبیب کریم علیہ افضل الصلوۃ والتسلیم ان سب کو محیط ہوا۔ نہ صرف اجمالاً بلکہ صغیر و کبیر، ہر رطب و یابس، جو پتہ گرتا ہے، زمین کی اندھیریوں میں جو دانہ کہیں پڑا ہے سب کو جدا جدا تفصیلاً جان لیا، اللہ الحمد کثیرًا۔ بلکہ یہ جو کچھ بیان ہوا ہر گز ہر گز محمد رسول اللہ کا پورا علم نہیں صلی اللہ تعالٰی علیہ وآلہ وصحبہ اجمعین وسلم، بلکہ علم حضور سے ایک چھوٹا حصہ ہے، ہنوز احاطہ علمِ محمدی میں وہ ہزار دو ہزار بے حد و کنار سمندر

۱ البراہین القاطعہ بحث علمِ غیب مطبع لے بلا سا واقع ڈھور ص ۵۱

...are waving, the reality of which they themselves know, or He who bestowed it upon them, their Master and Lord (may His Glory be exalted). All praise is for Allah, the Highest, the Most Exalted. In the books of Hadith and the works of ancient and modern scholars, there is an extensive and sufficient explanation and a complete discourse of its proofs. And even if there were nothing else, then by the grace of Allah, the Great Quran itself is a just witness and a decisive decree.

Quranic Verses: Allah the Almighty said:

"And We have sent down to you the Book as an exposition of everything, and a guidance, a mercy, and glad tidings for the Muslims."[1] - We have sent down to you the Book which is a clear exposition of everything and a guidance, mercy, and glad tidings for the Muslims.

Allah the Almighty said:

"It was not a narrated tale, but a confirmation of what was before it and a detailed explanation of all things."[2] - The Quran is not a fabricated tale but a confirmation of previous books and a clear, distinct explanation of everything.

And Allah the Almighty said:

"We have not neglected anything in the Book."[3] - We have not left out anything in the Book.

I say, and with the success granted by Allah: When every thing is mentioned in the Criterion (Quran), and what a description it is—bright, and to what an extent bright, detailed! And according to the school of Ahl-us-Sunnah, 'thing' refers to everything that exists. Thus, the entire universe from the Throne to the Earth, all existing things, are included in the scope of this description. Among existing things is the writing of the Preserved Tablet (Lawh-e-Mahfuz), so necessarily, these encompassing descriptions also include its writings in detail. Now, let's ask the Great Quran itself what is written in the Preserved Tablet. Allah the Almighty said:

"And every small and great thing is inscribed."[4] - Every small and big thing is written down.

---

[1] Quran Al-Kareem 16/89 [2] Quran Al-Kareem 12/111 [3] Quran Al-Kareem 6/38 [4] Quran Al-Kareem 54/53

...लहरा रहे हैं, जिनकी वास्तविकता को वे स्वयं जानें या उन्हें प्रदान करने वाला उनका स्वामी और प्रभु (उसकी महिमा बुलंद हो)। सभी प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जो सर्वोच्च और सबसे ऊंचा है। हदीस की पुस्तकों और प्राचीन एवं आधुनिक विद्वानों की रचनाओं में इसके प्रमाणों का विस्तृत और पर्याप्त विवरण और पूर्ण वर्णन है। और यदि कुछ न भी हो, तो अल्लाह की कृपा से, महान कुरान स्वयं एक न्यायपूर्ण साक्षी और निर्णायक फैसला है।

कुरान की आयतें: अल्लाह तआला ने फरमाया:

"और हमने तुम पर वह किताब उतारी जो हर चीज़ का स्पष्ट वर्णन है और मुसलमानों के लिए मार्गदर्शन, दया और शुभ समाचार है।"[1] - हमने तुम पर किताब उतारी जो हर चीज़ का स्पष्ट वर्णन है और मुसलमानों के लिए मार्गदर्शन, दया और शुभ समाचार है।

अल्लाह तआला ने फरमाया:

"यह (कुरान) कोई गढ़ी हुई बात नहीं है, बल्कि यह उन (किताबों) की पुष्टि है जो इससे पहले आ चुकी हैं और हर चीज़ का स्पष्ट विवरण है।"[2] - कुरान वह बात नहीं है जो बनाई जाए बल्कि पिछली किताबों की तस्दीक है और हर चीज़ का साफ़ अलग-अलग बयान है।

और अल्लाह तआला ने फरमाया:

"हमने किताब में कोई चीज़ नहीं छोड़ी है।"[3] - हमने किताब में कोई चीज़ उठा नहीं रखी।

मैं कहता हूँ, और अल्लाह की तौफ़ीक के साथ: जब फुरकान-ए-मजीद (कुरान) में हर चीज़ का बयान है और बयान भी कैसा, रौशन और किस दर्जे का रौशन, सविस्तार! और अहले सुन्नत के मज़हब में 'चीज़' हर मौजूद को कहते हैं, तो अर्श से फर्श तक पूरी कायनात की तमाम मौजूद चीज़ें इस बयान के घेरे में आ गईं। और मौजूद चीज़ों में लौह-ए-महफूज़ का लेखन भी शामिल है, तो अनिवार्य रूप से ये व्यापक बयान उसके लिखे हुए को भी विस्तार से शामिल करते हैं। अब यह भी महान कुरान से ही पूछ कर देखिए कि लौह-ए-महफूज़ में क्या लिखा है। अल्लाह तआला ने फरमाया:

"और हर छोटी और बड़ी चीज़ लिखी हुई है।"[4] - हर छोटी-बड़ी चीज़ लिखी हुई है।

---

[1] कुरान अल-करीम 16/89 [2] कुरान अल-करीम 12/111 [3] कुरान अल-करीम 6/38 [4] कुरान अल-करीम 54/53

पृष्ठ 488 का 750

لہرا رہے ہیں جن کی حقیقت کو وہ خود جانیں یا ان کا عطا کرنے والا ان کا مالک و مولیٰ جل وعلا الحمد للہ العلی الاعلی۔ کتب حدیث و تصانیف علمائے قدیم و حدیث میں اس کے دلائل کا بسط شافی اور بیان وافی ہے اور اگر کچھ نہ ہو تو بحمد اللہ قرآن عظیم خود شاہد عدل و حکم فصل ہے۔

آیات قرآنی: قال اللہ تعالیٰ (اللہ تعالیٰ نے فرمایا-ت):

"وَنَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ تِبْيَانًا لِّكُلِّ شَيْءٍ وَّ هُدًى وَّرَحْمَةً وَّبُشْرٰى لِلْمُسْلِمِيْنَ ﴿۸۹﴾"[1] - اتاری ہم نے تم پر کتاب جو ہر چیز کا روشن بیان ہے اور مسلمانوں کے لیے ہدایت و رحمت و بشارت۔

قال اللہ تعالیٰ (اللہ تعالیٰ نے فرمایا-ت):

"مَا كَانَ حَدِيْثًا يُّفْتَرٰى وَلٰكِنْ تَصْدِيْقَ الَّذِيْ بَيْنَ يَدَيْهِ وَتَفْصِيْلَ كُلِّ شَيْءٍ"[2] - قرآن وہ بات نہیں جو بنائی جائے بلکہ اگلی کتابوں کی تصدیق ہے اور ہر شے کا صاف جدا جدا بیان ہے۔

وقال اللہ تعالیٰ (اللہ تعالیٰ نے فرمایا-ت):

"مَا فَرَّطْنَا فِي الْكِتٰبِ مِنْ شَيْءٍ"[3] - ہم نے کتاب میں کوئی شے اٹھا نہیں رکھی۔

اقول: وباللہ التوفیق (میں کہتا ہوں اللہ تعالیٰ کی توفیق کے ساتھ-ت) جب فرقان مجید میں ہر شے کا بیان ہے اور بیان بھی کیسا، روشن اور روشن بھی کس درجہ کا، مفصل، اور اہلسنت کے مذہب میں شے ہر موجود کو کہتے ہیں، تو عرش تا فرش تمام کائنات جملہ موجودات اس بیان کے احاطے میں داخل ہوئے اور منجملہ موجودات کتابت لوح محفوظ بھی ہے تا بالضرورت یہ بیانات محیط، اس

کے مکتوب بھی بالنفصیل شامل ہوئے۔ اب یہ بھی قرآن عظیم سے ہی پوچھ دیکھئے کہ لوح محفوظ میں کیا لکھا ہے۔ قال اللہ تعالیٰ (اللہ تعالیٰ نے فرمایا-ت):

"وَكُلُّ صَغِيْرٍ وَّكَبِيْرٍ مُّسْتَطَرٌ ﴿۵۳﴾"[4] - ہر چھوٹی بڑی چیز لکھی ہوئی ہے۔

---

1 القرآن الکریم ۸۹/۱۶ 2 القرآن الکریم ۱۱۱/۱۲ 3 القرآن الکریم ۳۸/۶ 4 القرآن الکریم ۵۳/۵۴

Fatawa Razawiyya Volume 29

And Allah the Almighty has said (and Allah the Almighty said): 1. "And We have recorded everything in a clear record (Imam Mubeen)." | We have gathered everything in a bright leader (i.e., the Preserved Tablet).

And Allah the Almighty has said (and Allah the Almighty said): 2. "And there is no grain in the darknesses of the earth nor anything fresh or dry but is [written] in a clear record (Kitab Mubeen)." | There is no grain in the darknesses of the earth, nor anything moist or dry, but it is all written in a clear book.

In the principles (of jurisprudence), it has been established that an indefinite noun in a negative context signifies generality. And the word 'Kull' (everything/all) is so general that it is never used in a specific sense; and the general expression is definitive in conveying comprehensiveness. Texts will always be understood according to their apparent meaning. Without Shariah proof, specification and interpretation are not permitted. Otherwise, security from Shariah would be lost. Isolated hadiths (Ahad), no matter how high their status, cannot specify the generality of the Quran; rather, they would be suppressed before it. Indeed, a later specification is considered abrogation (Naskh), and the abrogation of reports (Akhbar) is impossible. Intellectual specification does not lower a general definitive text from its certainty, nor can specification be made based on any speculative evidence relying on it. By the praise of Allah Almighty, it became clear from a correct definitive text that Allah the Almighty has granted our Master, the Owner of the Quran, peace and blessings of Allah be upon him and his progeny, knowledge of all existents—everything that has been and everything that will be until the Day of Judgment—including all the contents of the Preserved Tablet (Lawh-e-Mahfuz). Not a single atom in the east or west, heaven or earth, or from the Throne (Arsh) to the soil (Farsh), remained outside the knowledge of the Holy Prophet. And to Allah belongs the brilliant argument.

And when this knowledge was given by the Great Quran's quality of being "an explanation for all things" (Tibyanan li-kulli shay - every thing's clear statement), and it is clear that this attribute belongs to the entire Holy Speech, not to every individual verse or Surah, then if before the revelation of the entire Quran, it is said regarding some Prophets (peace be upon them): "We have not told you their stories," or if it is said regarding the hypocrites: "You do not know them," these are by no means contrary to those verses or negators of the Mustafawi (Prophetic) knowledge. All

praise be to Allah for the extent of stories, narrations, reports, and accounts in the vast knowledge of Muhammad, the Messenger of Allah, peace and blessings of Allah be upon him and his progeny.

1. Al-Quran Al-Karim 36/12
2. Al-Quran Al-Karim 6/59
3. Al-Quran Al-Karim 16/89
4. Al-Quran Al-Karim 40/78
5. Al-Quran Al-Karim 9/101

फतावा रज़विया जिल्द 29

और अल्लाह तआला ने फ़रमाया (और अल्लाह तआला ने फ़रमाया): 1. "और हमने हर चीज़ को एक स्पष्ट रिकॉर्ड (इमाम मुबीन) में दर्ज कर लिया है।" | हर चीज़ हमने एक रौशन पेशवा में जमा फ़रमा दी है।

और अल्लाह तआला ने फ़रमाया (और अल्लाह तआला ने फ़रमाया): 2. "और न ज़मीन के अंधेरों में कोई दाना है और न कोई तर और न कोई खुश्क चीज़ मगर ये कि वह सब एक स्पष्ट किताब (किताब मुबीन) में है।" | कोई दाना नहीं ज़मीन के अंधेरों में और न कोई तर और न कोई खुश्क मगर ये कि सब एक रौशन किताब में लिखा है।

उसूलों में यह साबित हो चुका है कि नकारात्मक संदर्भ में एक अनिश्चित संज्ञा व्यापकता का अर्थ देती है। और 'कुल्ल' (सब/हर) शब्द इतना व्यापक है कि यह कभी भी विशिष्ट अर्थ में उपयोग नहीं होता है, और सामान्य उपयोग पूर्ण व्याप्ति (इस्तेग़राक़) में निश्चित है। और नुसूस (धार्मिक ग्रंथ के वाक्य) हमेशा अपने ज़ाहिरी अर्थ पर महमूल रहेंगे। बिना शरीयत की दलील के विशिष्टीकरण (तख़्सीस) और व्याख्या (तावील) की अनुमति नहीं है। वरना शरीयत से अमन उठ जाएगा, न ही 'अहाद' हदीसें चाहे वे कितनी ही उच्च दर्जे की हों, कुरान की व्यापकता को सीमित कर सकती हैं बल्कि वे उसके सामने दब जाएँगी। बल्कि बाद में किया गया विशिष्टीकरण 'नस्ख़' (निरसन) है, और 'अखबार' (खबरों) का नस्ख़ असंभव है। बौद्धिक विशिष्टीकरण सामान्य निश्चितता को कम नहीं करता, और न ही इसके आधार पर किसी संदेहास्पद साक्ष्य से विशिष्टीकरण हो सकता है। अल्लाह तआला की प्रशंसा है कि सही निश्चित पाठ से यह स्पष्ट हो गया कि हमारे हुज़ूर साहब-ए-कुरान सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को अल्लाह अज़्वजल ने तमाम मौजूद चीज़ों, जो हो चुका और जो क़यामत के दिन तक होने वाला है, और लौह-ए-महफूज़ की तमाम बातों का ज्ञान दिया। पूरब और पश्चिम, आकाश और पृथ्वी, और अर्श से लेकर फर्श तक कोई भी ज़र्रा हुज़ूर के ज्ञान से बाहर नहीं रहा। और अल्लाह ही के लिए सब दलीलें हैं।

और जब यह ज्ञान महान कुरान के'तिब्यानल लिकुल्लि शय' (हर चीज़ का स्पष्ट वर्णन) होने की वजह से मिला, और यह स्पष्ट है कि यह विशेषता पूरे कलाम-ए-मजीद की है, न कि हर आयत या सूरा की, तो सम्पूर्ण कुरान के अवतरण से पहले अगर कुछ नबियों (अलैहिमुस्सलाम) के बारे में कहा गया: "हमने उनके किस्से आपको बयान नहीं किए," या मुनाफिकीन के बारे में कहा गया: "आप उन्हें नहीं

जानते," तो ये आयतें कभी भी उन आयतों के विरोधी या मुस्तफ़वी (पैग़म्बरी) ज्ञान का खंडन करने वाली नहीं हैं। अल्हम्दुलिल्लाह, जिस कदर किस्से, रिवायतें, खबरें और हिकायतें मोहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के महान ज्ञान में हैं।

1. अल-कुरान अल-करीम 36/12
2. अल-कुरान अल-करीम 6/59
3. अल-कुरान अल-करीम 16/89
4. अल-कुरान अल-करीम 40/78
5. अल-कुरान अल-करीम 9/101

فتاوٰی رضویہ جلد ۲۹

وقال اللہ تعالٰی (اور اللہ تعالٰی نے فرمایا): 1 "وَكُلَّ شَيْءٍ اَحْصَيْنٰهُ فِيْٓ اِمَامٍ مُّبِيْنٍ" - | ہر شے ہم نے ایک روشن پیشوا میں جمع فرمادی ہے۔

وقال اللہ تعالٰی (اور اللہ تعالٰی نے فرمایا): 2 "وَلَا حَبَّةٍ فِيْ ظُلُمٰتِ الْاَرْضِ وَلَا رَطْبٍ وَّلَا يَابِسٍ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ" - | کوئی دانہ نہیں زمین کی اندھیروں میں اور نہ کوئی تر اور نہ کوئی خشک مگر یہ کہ سب ایک روشن کتاب میں لکھا ہے۔

اور اصول میں مبرہن ہوچکا کہ نکرہ چیز نفی میں مفید عموم ہے اور لفظ 'کُل' تو ایسا عام ہے کہ کبھی خاص ہو کر مستعمل ہی نہیں ہوتا اور عام افادہ استغراق میں قطعی ہے، اور نصوص ہمیشہ ظاہر پر محمول رہیں گی۔ بے دلیل شرعی تخصیص و تاویل کی اجازت نہیں۔ ورنہ شریعت سے امان اٹھ جائے، نہ احادیث احادا اگرچہ کیسے ہی اعلی درجے کی ہوں، عموم قرآن کی تخصیص کرسکیں بلکہ اس کے حضور مضمحل ہو جائیں گی بلکہ تخصیص متراخی نسخ ہے اور اخبار کا نسخ ناممکن اور تخصیص عقلی عام کو قطعیت سے نازل نہیں کرتی نہ اس کے اعتماد پر کسی ظنی سے تخصیص ہو سکے تو بحمد اللہ تعالٰی کیسے نص صحیح قطعی سے روشن ہوا کہ ہمارے حضور صاحب قرآن صلی اللہ تعالٰی علیہ وآلہ وسلم کو اللہ عزوجل نے تمام موجودات جملہ ماکان ومایکون الی یوم القیمۃ جمیع مندرجات لوح محفوظ کا علم دیا اور شرق و غرب و سماء و ارض و عرش فرش میں کوئی ذرہ حضور کے علم سے باہر نہ رہا۔ وللہ الحجۃ الساطعۃ

اور جب کہ یہ علم قرآن عظیم کے "تِبْيَانًا لِّكُلِّ شَيْءٍ" 3- (ہر چیز کا روشن بیان۔ت) ہونے نے دیا، اور بلاشبہ ظاہر کہ یہ وصف تمام کلام مجید کا ہے، نہ ہر آیت یا سورت کا، تو نزول جمیع قرآن

شریف سے پہلے اگر بعض انبیاء علیہم الصلوۃ والسلام کی نسبت ارشاد ہو "لَمْ نَقْصُصْ عَلَيْكَ" 4- (ان کا قصہ ہم نے آپ پر بیان نہیں کیا۔ت) یا منافقین کے باب میں فرمایا جائے: "لَا تَعْلَمُهُمْ" 5- (آپ ان کو نہیں جانتے۔ت) ہرگز ان آیات کے منافی اور علم مصطفوی کا نافی نہیں۔ الحمد للہ جس قدر قصص وروایات واخبار و حکایات علم عظیم محمد رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم

1 القرآن الکریم ۱۲/۳۶ 2 القرآن الکریم ۶/۵۹ 3 القرآن الکریم ۱۶/۸۹ 4 القرآن الکریم ۴۰/۷۸ 5 القرآن الکریم ۹/۱۰۱

Fatawa Razawiya, Volume 29

The response to all the definitive Quranic verses presented to diminish (them) has been provided in these two sentences. It cannot be outside of two states: either history will be known from these stories or not. If not, then reasoning from them is not correct because when history is unknown, their complete revelation before the Quran is clearly rational. And if yes, then again it is not outside of two states: either that history will be before the complete revelation or after it. In the first case, reasoning is not correct. In the second case, if there is no explicit text in favor of the opponent's claim, then relying on it is purely a difficult task (clutching at straws). Everything the opponents present falls into these categories. They cannot show a single authentic, explicit, and definitively beneficial evidence against these verses. And if, for the sake of argument, we assume (their point) incorrectly, then this one comprehensive, beneficial, and silencing response is healing and sufficient for all: that relying on solitary reports (akhbar-e-ahad) in opposition to the generality of definitive Quranic verses is purely wrong. I should argue this point with the clear statements of the masters of principles (Aimma-e-Usool); it is better to present the testimony of the opponents' own elders.

Verse: Even if the claimant is millions, your testimony weighs heavy.

Listening to solitary traditions (ahadith-e-ahad) against the definitive texts (nusoos-e-qati'ah) of the Great Quran is out of the question. These elders clearly state that reasoning from a solitary report (khabar-e-wahid) is not permissible here, nor can any attention be paid to it. In the same "Barahin-e-Qati'ah" regarding "what Allah commanded to be joined", they write the discourse on the issue of the Unseen (Ilm-e-Ghayb) as follows: Matters of belief are not analogical (qiyasi) to be proven by analogy, but they are definitive. They are proven by definitive texts, for a solitary report is not beneficial here either. Therefore, its proof is worthy of attention only when it is established from definitive sources.

Also on page 81 it is written: In matters of belief, definitive proofs are considered, not the speculative ones even from authentic (sahih) reports.

On page 87 it is: Even authentic solitary reports are not reliable, as is proven in the science of principles (Usool).

Praise be to Allah, there is a general invitation to all opponents: "So gather your partners" (اپنے شرکاء کو جمع کرلو۔ ت).

1. Al-Barahin al-Qati'ah, discussion on Ilm-e-Ghayb, printed at Balasa-waqe' Dhor, p. 51.
2. Al-Barahin al-Qati'ah, in proving the return of souls to their homes on Thursday night, all narrations are questionable, p. 89.
3. Al-Barahin al-Qati'ah, the issue of Fatiha is a matter of belief, in which not only weak but even authentic solitary reports are not reliable, p. 96.

फ़तावा रज़विया, जिल्द २९

उन सभी निश्चित कुरानी आयतों ۵ जवाब जो (उन्हें) घटाने के लिए पेश की जाती हैं, इन दो वाक्यों में दे दिया गया है। यह दो स्थितियों से खाली नहीं है: या तो इन किस्सों से इतिहास ज्ञात होगा या नहीं। यदि नहीं, तो उनसे तर्क करना सही नहीं है क्योंकि जब इतिहास अज्ञात है, तो उनका कुरान से पहले पूरी तरह अवतरित होना स्पष्ट रूप से तर्कसंगत है। और यदि हाँ, तो फिर से यह दो स्थितियों से खाली नहीं है: या तो वह इतिहास पूर्ण अवतरण से पहले का होगा या बाद का। पहली स्थिति में तर्क करना सही नहीं है। दूसरी स्थिति में, यदि विरोधी के दावे के पक्ष में कोई स्पष्ट प्रमाण (नस्स-ए-सरीह) न हो, तो उस पर भरोसा करना केवल मुश्किल काम है। विरोधी जो कुछ भी पेश करते हैं, वे सभी इन्हीं श्रेणियों में आते हैं। वे इन आयतों के खिलाफ एक भी प्रामाणिक, स्पष्ट और निश्चित रूप से लाभदायक प्रमाण नहीं दिखा सकते। और यदि, तर्क के लिए गलत मान भी लिया जाए, तो यह एक व्यापक, लाभकारी और चुप कराने वाला उत्तर सभी के लिए उपचारात्मक और पर्याप्त है: कि निश्चित कुरानी आयतों की व्यापकता के विरोध में एकल समाचारों (अख़बार-ए-आहाद) पर भरोसा करना पूरी तरह गलत है। मुझे इस बात को सिद्धांतों के इमामों (अइम्मा-ए-उस्सूल) के स्पष्ट बयानों के साथ तर्क देना चाहिए; बेहतर यही है कि खुद विरोधियों के बुज़ुर्गों की गवाही पेश करूँ।

पद्य: दावेदार लाख हों, तुम्हारी गवाही भारी है।

महान कुरान के निश्चित प्रमाणों (नुसूस-ए-क़तईय्यह) के खिलाफ एकल हदीसों (अहादीस़-ए-आहाद) को सुनना तो दूर की बात है। ये बुज़ुर्ग स्पष्ट रूप से कहते हैं कि यहाँ एकल समाचार (ख़बर-ए-वाहिद) से तर्क करना ही जायज़ नहीं है, न ही इस पर कोई ध्यान दिया जा सकता है। उसी "बराहिन-ए-क़ाति'आ" में जहाँ "जिसका अल्लाह ने जुड़ने का हुक्म दिया" का वर्णन है, वे इल्म-ए-ग़ैब (परोक्ष ज्ञान) के मसले पर अपनी बात इस प्रकार लिखते हैं: विश्वास के मामले कयास (तर्क/अनुमान) पर आधारित नहीं होते कि कयास से साबित हो जाएं बल्कि वे निश्चित होते हैं। वे निश्चित प्रमाणों से साबित होते हैं, क्योंकि एकल समाचार यहाँ भी लाभदायक नहीं है। इसलिए, इसका प्रमाण तभी ध्यान देने योग्य है जब वह इसे निश्चित प्रमाणों से साबित करे।

साथ ही पेज ८१ पर लिखा है: विश्वास (एतिकादात) में निश्चित प्रमाणों को ही माना जाता है, न कि प्रामाणिक (सहीह) लेकिन अनुमानित बातों को।

पेज ८७ पर है: प्रामाणिक एकल समाचार भी विश्वसनीय नहीं हैं, जैसा कि उसूल (सिद्धांतों के विज्ञान) में सिद्ध है।

अल्हम्दुलिल्लाह, सभी विरोधियों के लिए एक सामान्य निमंत्रण है: "तो अपने सहयोगियों को इकट्ठा कर लो।" (اپنے شرکاء کو جمع کرلو۔ ت)

1. अल-बराहिन अल-क़ाति'आ, इल्म-ए-ग़ैब पर चर्चा, मतबा ले बलासावाक़े ढोर, पृ. ५१।
2. अल-बराहिन अल-क़ाति'आ, जुमे की रात रूहों के अपने घर आने के प्रमाण में सभी रिवायतें संदिग्ध हैं, पृ. ८९।
3. अल-बराहिन अल-क़ाति'आ, फातिहा का मसला विश्वास से संबंधित है, इसमें केवल कमज़ोर ही नहीं बल्कि प्रामाणिक एकल समाचार भी विश्वसनीय नहीं हैं, पृ. ९६।

کے گھٹانے کو آیات قطعیہ قرآنیہ میں پیش کی جاتی ہیں ان سب کا جواب انہیں دو فقروں میں ہو گیا ہے دو حال سے خالی نہیں ، یا تو ان قصص سے تاریخ معلوم ہوگی یا نہیں ، اگر نہیں تو ان سے استدلال درست نہیں کہ جب تاریخ مجہول تو ان کا تمامی نزول قرآن سے پہلے ہونا صاف معقول اور اگر ہاں تو دو حال سے خالی نہیں یا وہ تاریخ تمامی نزول سے پہلے کی ہوگی یا بعد کی ، پہلی صورت میں استدلال کرنا درست نہیں ، بر تقدیر ثانی اگر مدعائے مخالف میں نص صریح نہ ہو تو استناد محض خرط القتاد ، مخالفین جو پیش کرتے ہیں سب انہیں اقسام کی ہیں۔ ان آیات کے خلاف پر اصلاً ایک دلیل صحیح صریح قطعی الافادہ نہیں دکھا سکتے ، اور اگر بفرضِ غلط تسلیم ہی کرلیں تو ایک یہی جواب جامع و نافع و قامع سب کے لیے شافی و کافی، کہ عمومِ آیات قطعیہ قرآنیہ کی مخالفت میں اخبارِ آحاد سے استناد محض غلط ہے۔ اس مطلب پر تصریحاتِ آئمہ اصول سے احتجاج کروں اس سے یہی بہتر ہے کہ خود مخالفین کے بزرگوں کی شہادت پیش کروں۔ ع

مدعی لاکھ پرہ بھاری ہے گواہی تیری

نصوص قطعیہ قرآن عظیم کے خلاف پر احادیث آحاد کا سنا جانا بالائے طاق ، یہ بزرگوار صاف تصریح کرتے ہیں کہ یہاں خبر واحد سے استدلال ہی جائز نہیں، نہ اصلاً اس پر التفات ہو سکے، اسی براہین قاطعہ ما امر اللہ بہ ان یوصل میں اسی مسئلہ علم غیب کی تقریر یوں لکھتے ہیں : عقائد مسائل قیاسی نہیں کہ قیاس سے ثابت ہو جائیں ، بلکہ قطعی ہیں ، قطعیات نصوص سے ثابت ہوتے ہیں کہ خبرِ واحد یہاں بھی مفید نہیں ، لہذا اس کا اثبات اس وقت قابل التفات ہو کہ قطعیات سے اس

کو ثابت کرے ۱۔ نیز صفحہ ۸۱ پر لکھا : اعتقادات میں قطعیات کا اعتبار ہوتا ہے ، نہ ظنیات صحاح کا ۲۔ صفحہ ۸۷ پر ہے : احاد صحاح بھی معتبر نہیں ، چنانچہ فن اصول میں مبرہن ہے ۳۔ الحمد للہ تمام مخالفین کو دعوت عام ہے فاجتمعوا شرکاء کم (اپنے شرکاء کو جمع کرلو۔ ت)

1 البراھین القاطعہ بحث علم غیب مطبع لے بلاساواقع ڈھور ص ۵۱ 2 البراھین القاطعہ شب جمعہ میں ارواح کے اپنے گھر آنے کے اثبات میں روایات سب مخدوش ہیں ص ۸۹ 3 البراھین القاطعہ مسئلہ فاتحہ اعتقادیہ ہے اس میں ضعاف کیا احاد صحاح بھی قابل اعتماد نہیں ص ۹۶

Fatawa Razawiyya - Volume 29

Let all, small and great, gather together and bring forth a verse of definite meaning (Qat'i-ul-Dilala) or a mutawatir (mass-transmitted) Hadith of certain benefit, from which it is clearly and explicitly proven that even after the complete revelation of the Great Quran, from the aforementioned things—'what was' (ma kana) and 'what will be' (ma yakunu)—any particular matter remained hidden from the Holy Presence (peace and blessings of Allah be upon him and his family), the knowledge of which was never given to him.

Arabic	Translation
"فَإِن لَّمْ تَفْعَلُوا وَلَنْ تَفْعَلُوا"[1]	If you cannot do it—and we say that you will never be able to do it—
"فَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي كَيْدَ الْخَائِنِينَ (52)"[2]	Then know well that Allah does not guide the plot of the betrayers.

And praise be to Allah, Lord of the worlds. (And all praises are for Allah who is the Sustainer of all the worlds. - T). The same Maulvi Rashid Ahmad sahib writes again: The pride of the world (peace be upon him) himself says: "By Allah, I do not know what will be done with me or with you" (Hadith). (And by God, I do not know what will happen to me and what will happen to you - T). And Sheikh Abdul Haqq narrates that "I do not even have knowledge of what is behind the wall"[3]. Regardless of what the meaning of this verse and Hadith is, and regardless of when these were said, and regardless of the fact that the Great Quran itself and authentic Hadiths in Sahih Bukhari and Sahih Muslim contain their abrogation (Nasikh), so that when the noble verse:

Arabic	Translation
"لِّيَغْفِرَ لَكَ اللَّهُ مَا تَقَدَّمَ مِن ذَنبِكَ وَمَا تَأَخَّرَ"[4]	(So that Allah may forgive for you what preceded of your sin and what will follow)

was revealed, the Companions (Sahaba) submitted:

Arabic	Translation
هَنِيئًا لَّكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ لَقَد بَيَّنَ اللَّهُ لَكَ مَاذَا يُفْعَلُ بِكَ	O Messenger of Allah! Congratulations to you, by God! Allah Almighty has clearly stated for the Holy Presence...

---

[1] Quran al-Karim 2/24 [2] Quran al-Karim 12/52 [3] Al-Barahin al-Qati'ah, Discussion on Knowledge of Ghaib, Matba' Lay Bilas, Dhor, p. 51 [4] Quran al-Karim 48/2

फतावा रज़विया - जिल्द 29

छोटे-बड़े सभी इकट्ठा होकर एक ऐसी आयत (क़तई-उद-दलाला) या मुतवातिर हदीस पेश करें जिससे स्पष्ट रूप से सिद्ध हो कि संपूर्ण कुरान के अवतरण के बाद भी, 'जो हो चुका' (मा काना) और 'जो होगा' (मा यकुन्) में से कोई बात हुज़ूर अकदस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर छिपी रही, जिसका ज्ञान उन्हें कभी नहीं दिया गया।

अरबी	**अनुवाद**
"فَإِن لَّمْ تَفْعَلُوا وَلَنْ تَفْعَلُوا"[1]	अगर तुम ऐसा न कर सको—और हम कहे देते हैं कि हरगिज़ न कर सकोगे—
"فَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي كَيْدَ الْخَائِنِينَ (52)"[2]	तो जान लो कि अल्लाह धोखेबाज़ों की मक्कारी को राह नहीं देता।

तमाम तारीफें अल्लाह के लिए हैं जो तमाम जहानों का रब है। यही मौलवी रशीद अहमद साहब फिर लिखते हैं: खुद फख्रे आलम (अलैहिस्सलाम) फरमाते हैं: 'अल्लाह की कसम, मैं नहीं जानता कि मेरे साथ क्या किया जाएगा और तुम्हारे साथ क्या किया जाएगा' (हदीस)। (और खुदा की कसम, मैं नहीं जानता कि मेरे साथ क्या होगा और तुम्हारे साथ क्या होगा)। और शेख अब्दुल हक रिवायत करते हैं कि 'मुझे तो दीवार के पीछे का भी इल्म नहीं है'[3]। इस से हटकर कि इस आयत और हदीस का क्या अर्थ है और यह किस समय के इरशाद हैं, और इस बात से भी परे कि खुद कुरान और सहीह बुखारी और सहीह मुस्लिम की सहीह हदीसों में इसका नासिख (निरस्त करने वाला) मौजूद है कि जब आयते करीमा:

अरबी	**अनुवाद**
"لِّيَغْفِرَ لَكَ اللَّهُ مَا تَقَدَّمَ مِن ذَنبِكَ وَمَا تَأَخَّرَ"[4] ।	(ताकि अल्लाह तुम्हारे लिए तुम्हारे अगले और पिछले गुनाहों को क्षमा कर दे)

नाज़िल हुई तो सहाबा ने अर्ज़ की:

अरबी	**अनुवाद**
هَنِيئًا لَّكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ لَقَد بَيَّنَ اللَّهُ لَكَ مَاذَا يُفْعَلُ بِكَ	या रसूल अल्लाह! आपको मुबारक हो, खुदा की कसम! अल्लाह अज़्ज़वजल ने तो यह साफ़ बयान फरमा दिया कि हुज़ूर के..

[1] अल-कुरान अल-करीम 2/24 [2] अल-कुरान अल-करीम 12/52 [3] अल-बराहीन अल-कातिआ, बहस इल्मे गैब, मतबा ले बिलास, ढोर पृ. 51 [4] अल-कुरान अल-करीम 48/2

पृष्ठ 491 / 750

چھوٹے بڑے سب اکٹھے ہو کر ایک آیت قطعی الدلالۃ یا ایک حدیث متواتر یقینی الافادہ چھانٹ لائیں جس سے صاف صریح طور پر ثابت ہو کہ تمام نزول قرآن عظیم کے بعد بھی اشیائے مذکورہ ماکان وما یکون سے فلاں امر حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم پر مخفی رہا جس کا علم حضور کو دیا ہی نہ گیا۔

عربی	ترجمہ
"فَإِن لَّمْ تَفْعَلُوا وَلَنْ تَفْعَلُوا"[1]	اگر ایسی نص نہ لا سکو اور ہم کہے دیتے ہیں کہ ہرگز نہ کر سکو
"فَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي كَيْدَ الْخَائِنِينَ (52)"[2]	گے، تو خوب جان لو کہ اللہ راہ نہیں دیتا دغا بازوں کے مکر کو۔

والحمد للہ رب العالمین (اور سب تعریفیں اللہ کے لیے ہیں جو پروردگار ہے تمام جہانوں کا۔ ت) یہی مولوی رشید احمد صاحب پھر لکھتے ہیں: خود فخر عالم علیہ السلام فرماتے ہیں واللہ لا ادری ما یفعل بی ولا بکم (الحدیث) (اور بخدا میں نہیں جانتا کہ میرے ساتھ کیا ہو گا اور تمہارے ساتھ کیا ہو گا ت) اور شیخ عبدالحق روایت کرتے ہیں کہ مجھ کو دیوار کے پیچھے کا بھی علم نہیں 3۔ قطع نظر اس سے کہ اس آیت و حدیث کے کیا معنی ہیں اور قطع نظر اس سے کہ یہ کس وقت کے ارشاد ہیں اور قطع نظر اس سے کہ خود قرآن عظیم و احادیث صحیحہ صحیح بخاری اور صحیح مسلم میں اس کا ناسخ موجود کہ جب آیۂ کریمہ :

عربی	ترجمہ
"لِّيَغْفِرَ لَكَ اللَّهُ مَا تَقَدَّمَ مِن ذَنبِكَ وَمَا تَأَخَّرَ"[4]	(تاکہ اللہ بخش دے تمہارے واسطے سے سب اگلے پچھلے گناہ)

نازل ہوئی تو صحابہ نے عرض کی :

عربی	ترجمہ
هَنِيئًا لَّكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ لَقَد بَيَّنَ اللَّهُ لَكَ مَاذَا يُفْعَلُ بِكَ	یا رسول اللہ ! آپ کو مبارک ہو ، خدا کی قسم ! اللہ عزوجل نے یہ تو صاف بیان فرما دیا کہ حضور کے

---

1 القرآن الكريم ٢/ ٢٤ 2 القرآن الكريم ١٢/ ٥٢ 3 البراهين القاطعہ بحث علم غيب مطبع لے بلاس واقع ڈھور ص ٥١ 4 القرآن الكريم ٤٨ / ٢

Fatawa Razawiyya Volume 29

...what will he do with [them], now the question is what he will do with us.

"So what will be done with us?" [Footnote 1]

Upon this, the following verse was revealed:

"That He may admit the believing men and the believing women into gardens underneath which rivers flow, to abide therein forever and that He may remove from them their evil deeds; and that is a great success in the sight of Allah." [Footnote 2] Here, it means attaining the ultimate goal.

This verse and its peerless examples, and this grand and famous Hadith. As for the reference to Shaykh 'Abd al-Haqq, regardless of the fact that there is a difference between a narration (riwayah) and an anecdote (hikayah), to seek evidence from this baseless anecdote and attribute it to the Researching Shaykh (Shaykh al-Muhaqqiq, may his secret be sanctified) is a mark of great audacity and insolence. The Shaykh (mercy of Allah be upon him) stated in Madarij al-Sharif as follows:

[Persian text]: Here a problem is raised that it has come in some narrations that the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him and his family) said, "I am a servant, I do not know what is behind this wall." The answer to this is that this statement has no basis, and it is not established as authentic through narration. [Footnote 3]

[Urdu translation]: On this occasion, an objection is raised that it is mentioned in some narrations that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said, "I am a servant, I do not know what is behind this wall." The answer is that this statement has no basis and this narration is not authentic.

Similarly, if you act upon "Do not approach prayer" (without considering the context), you will remain in great peace. Fear the eye that does not fear God. Imam Ibn Hajar al-Asqalani (mercy of Allah be upon him) says: "It has no basis [Footnote 4]." This is merely an anecdote.

1. Sahih al-Bukhari, Kitab al-Maghazi 2/200 and Sunan al-Tirmidhi, Kitab al-Tafsir, Hadith 3274 / 5 / 176.
2. Al-Quran al-Karim 48:5.
3. Madarij al-Nubuwwah, "La a'lam ma wara'a jidari" (I know not what is behind the wall), this statement has no basis, Maktaba Nuriya Razawiyya, Sukkur 1/71.

4. Al-Mawahib al-Ladunniyyah, Al-Maqsad al-Thalith, Chapter 1, Al-Maktab al-Islami, Beirut 2/228.

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

...उसके साथ क्या करेगा, अब रहा यह कि हमारे साथ क्या करेगा।

"तो हमारे साथ क्या किया जाएगा?" [फुटनोट 1]

इस पर यह आयत उतरी:

"ताकि अल्लाह ईमान वाले मर्दों और ईमान वाली औरतों को उन बागों में दाखिल करे जिनके नीचे नहरें बहती हैं, वे उनमें हमेशा रहेंगे और वह उनसे उनकी बुराइयाँ दूर कर दे; और यह अल्लाह के नज़दीक बड़ी कामयाबी है।" [फुटनोट 2] यहाँ बड़ी मुराद (मकसद) पाना मुराद है।

यह आयत और इसकी बेमिसाल मिसालें, और यह महान और प्रसिद्ध हदीस। जहाँ तक शेख अब्दुल हक़ के हवाले की बात है, इस तथ्य के अलावा कि रिवायत (कथन) और हिकायत (कहानी) में अंतर है, इस निराधार कहानी पर भरोसा करना और शेखुल मुहक़्क़िक (अल्लाह उनके रहस्य को पवित्र करे) की ओर इसे जोड़ना बड़ी ढिठाई और अशिष्टता है। शेख (अल्लाह की उन पर रहमत हो) ने मदारिज शरीफ में यूँ फ़रमाया है:

[फारसी]: यहाँ एक आपत्ति उठाई जाती है कि कुछ रिवायतों में आया है कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया, 'मैं एक बंदा हूँ, मुझे नहीं मालूम कि इस दीवार के पीछे क्या है।' इसका जवाब यह है कि इस बात का कोई आधार नहीं है, और यह रिवायत सही साबित नहीं हुई है। [फुटनोट 3]

[उर्दू]: इस अवसर पर एक आपत्ति की जाती है कि कुछ रिवायतों में है कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया कि मैं एक बंदा हूँ, मुझे नहीं मालूम कि इस दीवार के पीछे क्या है। इसका जवाब यह है कि इसका कोई आधार नहीं है और यह रिवायत सही नहीं है।

इसी तरह "नमाज़ के करीब मत जाओ" (बिना संदर्भ के) पर अमल करोगे तो खूब चैन से रहोगे। उस आँख से डरो जो ख़ुदा से न डरे। इमाम इब्न हजर अस्क़लानी (अल्लाह की उन पर रहमत हो) फ़रमाते हैं: "इसका कोई आधार नहीं है [फुटनोट 4]।" यह महज़ एक कहानी है।

1. सहीह अल-बुखारी, किताब अल-मगाज़ी 2/200 और सुनन अल-तिर्मिज़ी, किताब अत-तफ़्सीर, हदीस 3274 / 5 / 176।

2. अल-क़ुरआन अल-करीम 48:5।
3. मदारिज अन-नुबुव्वह, "ला आलम मा वरा जदारी" (मैं नहीं जानता दीवार के पीछे क्या है), इस कथन का कोई आधार नहीं है, मकतबा नूरिया रज़विया, सक्खर 1/71।
4. अल-मवाहिब अल-लदुननिया, अल-मक़्सद अल-सालिस, अध्याय 1, अल-मक़्तब अल-इस्लामी, बेरूत 2/228।

ساتھ کیا کرے گا، اب رہا یہ کہ ہمارے ساتھ کیا کرے گا۔

فَمَاذَا يُفْعَلُ بِنَا۸1

اس پر یہ آیت اتری:

"لِيُدْخِلَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا وَيُكَفِّرَ عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ وَكَانَ ذَلِكَ عِنْدَ اللهِ فَوْزًا عَظِيمًا"۸2

تاکہ داخل کرے اللہ ایمان والے مردوں اور ایمان والی عورتوں کو باغوں میں جن کے نیچے نہریں بہتی ہیں ہمیشہ رہیں گے ان میں اور مٹادے ان سے ان کے گناہ، اور یہ اللہ کے یہاں بڑی مراد پانا ہے۔

یہ آیت اور ان کے امثال بے نظیر اور یہ حدیث جلیل و شہیر۔ رہا شیخ عبدالحق کا حوالہ، قطع نظر اس سے کہ روایت و حکایت میں فرق ہے، اس بے اصل حکایت سے استناد اور شیخ محقق قدس سرہ العزیز کی طرف اسناد کیسی جرات و وقاحت ہے، شیخ رحمۃ اللہ علیہ نے مدارج شریف میں یوں فرمایا ہے:

اینجا اشکال می آرند کہ در بعض روایات آمدہ است کہ گفت آں حضرت صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم من بندہ ام نمی دانم آں چہ در پس این دیوار ست، جوابش آنست کہ این سخن اصلے نہ دارد، و روایت بداں صحیح نشدہ است۔۸3

اس موقعہ پر ایک اعتراض کیا جاتا ہے کہ بعض روایات میں ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا ہے کہ میں بندہ ہوں مجھے معلوم نہیں کہ اس دیوار کے پیچھے کیا ہے۔ اس کا جواب یہ ہے کہ اسکی کوئی اصل نہیں اور یہ روایت صحیح نہیں۔

ایسا ہی لَا تَقْرَبُوا الصَّلٰوۃَ (نماز کے قریب مت جاؤ۔ت) پر عمل کروگے تو خوب چین سے رہو گےع

اس آنکھ سے ڈرئیے جو خدا سے نہ ڈرے آنکھ

امام ابن حجر عسقلانی (رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ) فرماتے ہیں۔ لَا أَصْلَ لَهُ۸4۔ یہ حکایت محض۔

1 صحیح البخاری کتاب المغازی ۲/ ۲۰۰ و سنن الترمذی کتاب التفسیر حدیث ۳۲۷۴ / ۵ / ۱۷۶ 2 القرآن الکریم ۵/۴۸ 3 مدارج النبوت لا علم ماورای جداری این سخنے اصل ندارد مکتبہ نوریہ رضویہ سکھر ۱/۷۱ 4 المواهب الدنية المقصد الثالث الفصل الاول المكتب الاسلامی بیروت ۲/ ۲۲۸

is baseless. Imam Ibn Hajar al-Makki stated in Al-Afdal al-Qura: "No chain of narration has been identified." [1] — No chain of narration was found for it. Alas, with the same mouth, defining points of belief, declaring authentic hadiths as unacceptable, and from the same mouth, diminishing the great knowledge of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him and his progeny), and bringing support from such a baseless story and writing the name of Shaykh Muhaqqiq for the sake of embellishment, who is explicitly saying that this story has neither root nor foundation. What can you say to this except that there is neither appreciation nor complaint for such people. By Allah! By Allah! They lead people out of the great virtues and the chapter of excellences of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) and force them into this narrowness so that they can also make the hadiths of the Sahihayn (Bukhari and Muslim) rejected, and show such broadness in belittling the status of the Prophet that all baseless and unverified sayings are accommodated. (Poetic line): *The state of faith is known, just let it be.* In short, by the grace of Allah Almighty, the claim of Zaid Sunni (may Allah Almighty preserve him) is proven by definitive Quranic verses in such a magnificent and beautiful manner that there is absolutely no room for speech. Even if some conjectural evidence was established here through specification, it would fade away before the definitive generality of the Great Quran. Let alone that the explicit, numerous, and famous hadiths from Sahih Muslim, Sahih Bukhari, and other Sunan, Sahihs, Musnads, and Mu'jams are further emphasizing and supporting this generality and absolute nature. Blessed Hadiths: In the Sahihayn of Bukhari and Muslim, it is narrated from Hazrat Hudhayfah (may Allah be pleased with him):

"Qama fina Rasulullahi sallallahu 'alayhi wa sallama maqaman ma taraka shay'an yakunu fi maqamihi dhalika ila qiyam-is-sa'ati illa haddatha bihi hafizahu man hafizahu wa nasiyahu man nasiyahu." [2]	**The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him and his progeny) once stood among us and described everything that was to happen from the beginning of creation until the Day of Judgment, leaving nothing out; whoever remembered it, remembered it, and whoever forgot it, forgot it.**

[1] Afdal al-Qura' Umm al-Qura [2] Mishkat al-Masabih with the symbol for Muttafaq 'Alayh (Agreed upon), Book of Fitn, First Section, Matba' Mujtabai, Delhi, p. 461; Sahih Muslim, Book of Fitn, Qadeemi Kutub Khana, Karachi, 2/390; Musnad Ahmad bin

Hanbal from Hudhayfah (may Allah be pleased with him), Al-Maktab al-Islami, Beirut, 5/385 and 389. Page 493 of 750

बे-अस्ल है। इमाम इब्न हजर मक्की ने अफ़ज़ल अल-क़ुरा में फ़रमाया: "कोई सनद (वर्णन श्रृंखला) नहीं पहचानी गई।" [१] - इसके लिए कोई सनद नहीं मिली। अफ़सोस उसी मुँह से अक़ीदे के मुक़ाम बताना, सही हदीसों को भी अस्वीकार्य ठहराना, उसी मुँह से नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के अज़ीम इल्म को घटाना, ऐसी बे-अस्ल कहानी से सनद लाना और दिखावे के लिए शैख़ मुक़क़िक़ का नाम लिख देना, जो स्पष्ट रूप से कह रहे हैं कि इस कहानी की न कोई जड़ है और न कोई बुनियाद। ऐसे लोगों के बारे में क्या कहा जाए, सिवाय इसके कि इनकी न कोई दाद है न फ़रियाद। अल्लाह! अल्लाह! नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के अज़ीम मनाक़िब (गुणों) और फ़ज़ाइल (श्रेष्ठताओं) के अध्याय से निकालकर इस तंग रास्ते में दाखिल कराएं ताकि सहीहैन बुखारी और मुस्लिम की हदीसों को भी मतरूक (अस्वीकृत) बना दें, और हुज़ूर की शान घटाने में इतनी गुंजाइश दिखाएं कि सभी बे-अस्ल और बे-सनद बातें समा जाएं। (काव्य पंक्ति): ईमान की हालत मालूम है, बस जाने दो। संक्षेप में, अल्लाह तआला के फ़ज़ल से ज़ैद सुन्नी (अल्लाह उनकी रक्षा करे) का दावा क़ुरआन की कतई (निश्चित) आयतों से ऐसे शानदार और ख़ूबसूरत तरीके से साबित है जिसमें ज़रा भी बहस की गुंजाइश नहीं है। अगर यहाँ कोई ज़न्नी (संभावित) दलील भी मुक़ाबले में होती, तो वह अज़ीम क़ुरआन की कतई उमूमियत (व्यापकता) के सामने ख़त्म हो जाती। जबकि सहीह मुस्लिम, सहीह बुखारी और अन्य सुनन, सिहाह, मसानिद और मआजिम की स्पष्ट, अनगिनत और मशहूर हदीसें इस उमूम (व्यापकता) और इत्लाक़ (पूर्णता) की ताकीद और ताईद कर रही हैं। मुबारक हदीसें: सहीहैन बुखारी और मुस्लिम में हज़रत हुज़ैफा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत है:

क़ामा फ़ीना रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा मक़ामन मा तरका शैअन यकूनु फ़ी मक़ामिही ज़ालिका इला क़ियाम-इस-साअति इल्ला हद्दसा बिही हफ़िज़हु मन हफ़िज़हु व निसियहु मन निसियहु। [२]

रसूल अल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) एक बार हमारे बीच खड़े हुए और सृष्टि की शुरुआत से लेकर कयामत तक जो कुछ होने वाला था, सब बयान फरमा दिया, कोई चीज़ नहीं छोड़ी; जिसे याद रहा याद रहा, जो भूल गया वह भूल गया।

[१] अफ़ज़ल अल-क़ुरा उम्म अल-क़ुरा [२] मिश्कात अल-मसाबीह, मुत्तफ़क़ अलैह के प्रतीक के साथ, किताब अल-फ़ितन, पहला खंड, मतबा मुजतबाई, दिल्ली, पृष्ठ ४६१; सहीह मुस्लिम, किताब

अल-फ़ितन, क़दीमी कुतुब खाना, कराची, २/३९०; मुस्नद अहमद बिन हंबल, हज़रत हुज़ैफा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से, अल-मक्तब अल-इस्लामी, बेरूत, ५/३८५ और ३८९। पृष्ठ ७५० में से ४९३

بے اصل ہے۔ امام ابن حجر مکی نے افضل القری میں فرمایا: لم یُعرف سَنَدٌ ۱۔ اس کے لیے کوئی سند نہ پہنچائی گئی۔ افسوس اسی منہ سے مقام اعتقادیات بتانا، احادیث صحیحہ بھی نامقبول ٹھہرانا، اسی منہ سے نبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کا علمِ عظیم گھٹانا ایسی بے اصل حکایت سے سند لانا اور ملمع کاری کے لیے شیخ محقق کا نام لکھ جانا جو صراحۃً فرمارہے ہیں کہ اس حکایت کی جڑ نہ بنیاد، آپ اس کے سوا کیا کہیے کہ ایسوں کی داد نہ فریاد۔ اللہ اللہ نبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے مناقبِ عظیمہ اور باب فضائل سے نکلوا کر اس تنگنائے میں داخل کرائیں تاکہ صحیحین بخاری و مسلم کی حدیثیں بھی مردود بنائیں اور حضور کی تنقیصِ شان میں یہ فراخی دکھائیں کہ بے اصل بے سند مقولے سب سما جائیں۔ ع حالِ ایمان کا معلوم ہے بس جانے دو بالجملہ بحمد اللہ تعالیٰ زید سنی حفظہ اللہ تعالیٰ کا دعویٰ آیات قطعیہ قرآنیہ سے ایسے جلیل و جمیل طور سے ثابت جس میں اصلاً مجالِ دم زدن نہیں، اگر یہاں کوئی دلیل ظنی تخصیص سے قائم بھی ہوتی تو عمومِ قطعی قرآن عظیم کے حضور مضمحل ہو جاتی۔ نہ کہ صحیح مسلم و صحیح بخاری و غیرہا سُنن و صحاح و مسانید و معاجم کی احادیث صریحہ، کثیرہ، شہیرہ اس عموم و اطلاق کی اور تاکید و تائید فرمارہی ہیں۔ احادیث مبارکہ : صحیحین بخاری و مسلم میں حضرت حذیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے ہے:

قام فینا رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم مقاماً ماترك شیئا یکون في مقامه ذلك الی قیام الساعة الا حدّث به حفظه من حفظه و نسیه من نسیه ۲۔

رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے ایک بار ہم میں کھڑے ہو کر ابتدائے آفرنیش سے قیامت تک جو کچھ ہونے والا تھا سب بیان فرمادیا، کوئی چیز نہ چھوڑی، جسے یاد رہا یاد رہا، جو بھول گیا بھول گیا۔

۱ افضل القراء ام القری ۲ مشکوۃ المصابیح برمز متفق علیہ کتاب الفتن الفصل الاول مطبع مجتبائی دہلی ص ۴۶۱، صحیح مسلم کتاب الفتن قدیمی کتب خانہ کراچی ۲ / ۳۹۰، مسند احمد بن حنبل عن حذیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ المکتب الاسلامی بیروت ۵ / ۳۸۵ و ۳۸۹ Page 493 of 750

This same subject was narrated by Ahmad in Musnad, Bukhari in Tarikh, and Tabarani in Mu'jam al-Kabir from Hazrat Mughirah bin Shu'bah (may Allah be pleased with him).

In Sahih Bukhari Sharif, it is narrated from the Commander of the Faithful, Hazrat Umar Farooq (may Allah be pleased with him):

Arabic	Translation
"The Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him) stood among us at a place and informed us about the beginning of creation until the people of Paradise entered their abodes and the people of Hell entered their abodes. Whoever remembered it, remembered it, and whoever forgot it, forgot it."[1]	Once, the Master of the World (may Allah's peace and blessings be upon him and his family) stood among us and narrated to us everything from the beginning of creation until the entry of the people of Paradise into Paradise and the people of Hell into Hell. He who remembered it, remembered it; and he who forgot it, forgot it.

In Sahih Muslim Sharif, it is from Hazrat Amr bin Akhtab al-Ansari (may Allah be pleased with him): One day the Messenger of Allah (may Allah's peace and blessings be upon him and his family) delivered a sermon from the Fajr prayer until sunset. Except for the Zuhr and Asr prayers, no other work was done. He informed us of everything that is to happen until the Day of Resurrection. The most knowledgeable among us is the one who remembered it best. In Jami' al-Tirmidhi Sharif and many other books of the Imams of Hadith, it is narrated through numerous chains of narrators and various paths from ten companions (may Allah be pleased with them) that the Messenger of Allah (may Allah's peace and blessings be upon him and his family) said:

Arabic	Translation
"I saw my Lord, the Mighty and Sublime. He placed His palm between my shoulders, and I felt the coolness of His fingertips between my breasts. At that moment, everything became manifest to me, and I recognized everything."[3]	I saw my Lord, the Mighty and Sublime. He placed His hand of power on my back so that I felt its coolness in my chest. At that moment, everything became bright to me, and I recognized everything.

Imam Tirmidhi says:

Arabic	Translation
This is a good (Hasan) authentic (Sahih) Hadith. I asked Muhammad bin Isma'il [al-Bukhari]...	This Hadith is Hasan Sahih. I asked Imam Bukhari...

[1] Sahih al-Bukhari, Book of the Beginning of Creation, Chapter: Concerning the Statement of Allah, "And He it is Who begins creation..." Qadimi Kutub Khana, Karachi, 1/453. [2] Sahih Muslim, Book of Tribulations (Al-Fitan), Qadimi Kutub Khana, Karachi, 2/390. [3] Sunan al-Tirmidhi, Book of Commentary (At-Tafsir), Hadith 3266, Dar al-Fikr, Beirut, 5/160.

यही विषय अहमद ने मुसनद में, बुखारी ने तारीख़ में, और तबरानी ने मुअजम अल-कबीर में हज़रत मुग़ीरा बिन शुबा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत किया है।

सहीह बुखारी शरीफ़ में अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत है:

अरबी	अनुवाद
"नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) हमारे बीच एक स्थान पर खड़े हुए और हमें सृष्टि के आरंभ से लेकर जन्नतियों के अपने निवासों में और जहन्नमियों के अपने निवासों में प्रवेश करने तक की जानकारी दी। जिसने इसे याद रखा, उसने याद रखा और जो इसे भूल गया, वह भूल गया।"[1]	एक बार सैय्यद-ए-आलम (सल्लल्लाहु अलैहि वआलिहि वसल्लम) ने हमारे बीच खड़े होकर सृष्टि के आरंभ से लेकर जन्नतियों के जन्नत और दोज़खियों के दोज़ख जाने तक का हाल हमसे बयान फ़रमा दिया। जिसे याद रहा उसने याद रखा और जो भूल गया सो भूल गया।

सहीह मुस्लिम शरीफ़ में हज़रत अम्र बिन अख्तब अंसारी (रज़ियल्लाहु अन्हु) से है: एक दिन अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वआलिहि वसल्लम) ने फज्र की नमाज़ से सूर्यास्त तक खुतबा दिया। ज़ुहर और अस्र की नमाज़ों के अलावा बीच में और कोई काम नहीं किया गया। उन्होंने हमें उन सभी बातों की जानकारी दी जो कयामत के दिन तक होने वाली थीं। हममें से अधिक ज्ञानी वह है जिसे सबसे अधिक याद रहा। जामे तिर्मिज़ी शरीफ़ और हदीस के इमामों की अन्य कई किताबों में अनेक सनदों और विविध तरीकों से दस सहाबा किराम (रज़ियल्लाहु अन्हुम) से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वआलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया:

अरबी	अनुवाद
"मैंने अपने रब अज़्ज़ व जल्ल को देखा। उसने अपनी हथेली मेरे दोनों कंधों के बीच रखी, तो मैंने अपनी छाती के बीच उसकी उंगलियों की ठंडक महसूस की। उसी समय हर चीज़ मुझ पर स्पष्ट हो गई और मैंने पहचान लिया।"[3]	मैंने अपने रब अज़्ज़ व जल्ल को देखा, उसने अपना कुदरत का हाथ मेरी पीठ पर रखा कि मेरे सीने में उसकी ठंडक महसूस हुई, उसी समय हर चीज़ मुझ पर रोशन हो गई और मैंने सब कुछ पहचान लिया।

इमाम तिर्मिज़ी फ़रमाते हैं:

अरबी	अनुवाद
यह हदीस हसन सहीह है। मैंने मुहम्मद बिन इस्माइल [इमाम बुखारी] से पूछा...	यह हदीस हसन सहीह है, मैंने इमाम बुखारी से...

[1] सहीह अल-बुखारी, किताब: बद उल-खल्क, बाब: अल्लाह के इस कौल के बारे में कि 'वही है जो सृष्टि की शुरुआत करता है...', पुरानी कुतुब खाना कराची, 1/453। [2] सहीह मुस्लिम, किताब अल-फितन, पुरानी कुतुब खाना कराची, 2/390। [3] सुनन अल-तिर्मिज़ी, किताब अत-तफ़सीर, हदीस 3266, दारुल फिक्र बेरुत, 5/160।

یہی مضمون احمد نے مسند، بخاری نے تاریخ، طبرانی نے معجم کبیر میں حضرت مغیرہ بن شعبہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کیا۔

صحیح بخاری شریف میں حضرت امیر المومنین عمر فاروق رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت ہے :

عربی	اردو ترجمہ
"قام فینا النبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم مقاماً فاخبرنا عن بدء الخلق حتی دخل اھل الجنۃ منازلھم واھل النار منازلھم حفظ ذلک من حفظہ ونسیہ من نسیہ"1	ایک بار سید عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے ہم میں کھڑے ہو کر ابتدائے آفرنیش سے لے کر جنتیوں کے جنت اور دوزخیوں کے دوزخ جانے تک کا حال ہم سے بیان فرما دیا۔ یاد رکھا جس نے یاد رکھا اور بھول گیا جو بھول گیا۔

صحیح مسلم شریف میں حضرت عمرو بن اخطب انصاری رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے ہے: ایک دن رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے نماز فجر سے غروب آفتاب تک خطبہ فرمایا، بیچ میں ظہر و عصر کی نمازوں کے علاوہ کچھ کام نہ کیا فاخبرنا بما ھو کائن الی یوم القیمۃ فاعلمنا احفظہ2 - اس میں سب کچھ ہم سے بیان فرما دیا جو کچھ قیامت تک ہونے والا تھا ہم میں زیادہ علم والا وہ ہے جسے زیادہ یاد رہا۔ جامع ترمذی شریف وغیرہ کتب کثیرہ آئمہ حدیث میں باسانید عدیدہ و طرق متنوعہ دس صحابہ کرام رضی اللہ تعالیٰ عنہم سے ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا :

عربی	اردو ترجمہ
فرأیتہ عزوجل وضع کفہ بین کتفی فوجدت برد اناملہ بین ثدی فتجلی لی کل شیئ و عرفت3	میں نے اپنے رب عزوجل کو دیکھا اس نے اپنا دستِ قدرت میری پشت پر رکھا کہ میرے سینے میں اس کی ٹھنڈک محسوس ہوئی اسی وقت ہر چیز مجھ پر روشن ہو گئی اور میں نے سب کچھ پہچان لیا۔

امام ترمذی فرماتے ہیں :

عربی	اردو ترجمہ
هذا حديث حسن سألت محمد بن اسمعيل یہ حدیث حسن صحیح ہے، میں نے امام بخاری سے	

1 صحیح البخاری کتاب بدء الخلق باب ماجاء فی قول اللہ و ھو الذی یبدء الخلق الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/ ۴۵۳ 2 صحیح مسلم کتاب الفتن قدیمی کتب خانہ کراچی ۲/ ۳۹۰ 3 سنن الترمذی کتاب التفسیر حدیث ۳۲۶۶ دارالفکر بیروت ۵/ ۱۶۰

Fatawa Razawiyya, Volume 29

| Regarding this Hadith, he said: It is Sahih (authentic) 1. | Asked about its status, he said it is Sahih. |

In the same source, Hazrat Abdullah bin Abbas (may Allah be pleased with them both) narrates concerning the same dream of Ascension (Mi'raj-e-Manami), that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said:

| "So I knew what is in the heavens and what is in the earth" 2. | Whatever is in the heavens and the earth has all come into my knowledge. |

Sheikh Muhaqqiq (may Allah have mercy on him) in the commentary of Mishkat (Sharh Mishkat), states under this Hadith:

| "Thus I knew whatever was in the heavens and whatever was in the earths, which refers to the acquisition of all partial and universal sciences and their encompassment" 3. | Accordingly, I have known what is in the heavens and what is in the earths; this is an expression for the acquisition of all sciences and their encompassment, whether those sciences be partial or universal. (T) |

Imam Ahmad in 'Musnad', Ibn Sa'd in 'Tabaqat', and Tabarani in 'Mu'jam' narrate with an authentic chain from Hazrat Abu Dharr al-Ghifari (may Allah be pleased with him); and Abu Ya'la, Ibn Mani', and Tabarani from Hazrat Abu al-Darda (may Allah be pleased with him) narrate:

| "Indeed, the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) left us while not even a bird flaps its wings in the sky except that he mentioned to us knowledge about it" 4. | The Prophet (peace and blessings of Allah be upon him and his progeny) left us in such a state that there is no bird flapping its wings in the air about which the Prophet had not mentioned knowledge before us. |

It is stated in 'Naseem al-Riyadh' (commentary on 'Ash-Shifa' of Qazi Iyad) and 'Sharh al-Zurqani alal-Mawahib':

| "This is an illustration for the detailed explanation of everything." | This is an example given to show that the Holy Prophet (peace be upon him)... |

1. Sunan al-Tirmidhi, Book of Tafsir, Hadith 3262, Dar al-Fikr Beirut, 5/161
2. Sunan al-Tirmidhi, Book of Tafsir, Hadith 3264, Dar al-Fikr Beirut, 5/159

3. Ashi'at al-Lam'at, Book of Prayer, Chapter on Mosques and Places of Prayer, Maktaba Nooria Razawiyya Sukkur, 1/333
4. Musnad Ahmad bin Hanbal from Abu Dharr al-Ghifari (RA), Al-Maktab al-Islami Beirut 5/153; Majma' al-Zawa'id from Abu al-Darda, Book of Signs of Prophethood, Chapter: On Knowledge Given to him, etc., Dar al-Kitab 8/264

फ़तावा रज़विया, खंड 29

| इस हदीस के बारे में उन्होंने कहा कि यह सहीह है - 1। | इसकी स्थिति के बारे में पूछा गया, उन्होंने कहा कि यह सहीह है। |

इसी में हज़रत अब्दुल्ला बिन अब्बास (अल्लाह उन दोनों से प्रसन्न हो) से उसी मेअराज-ए-मनामी (सपने में मेअराज) के वर्णन में है कि अल्लाह के रसूल (उन पर अल्लाह की शांति और कृपा हो) ने फ़रमाया:

| "तो मैंने जान लिया जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है" - 2। | जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है, वह सब मेरे ज्ञान में आ गया। |

शेख मुहक़्क़िक़ (अल्लाह उन पर रहम करे) 'शरह मिशकात' में इस हदीस के नीचे फरमाते हैं:

| "फिर मैंने जान लिया जो कुछ आसमानों में था और जो कुछ ज़मीनों में था, जिसका अर्थ है सभी आंशिक और पूर्ण विज्ञानों की प्राप्ति और उनका घेरा" - 3। | चुनाँचे मैंने जान लिया जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीनों में है; यह सभी विज्ञानों की प्राप्ति और उनके घेरे की अभिव्यक्ति है, चाहे वे विज्ञान आंशिक हों या पूर्ण। (त) |

इमाम अहमद 'मुसनद' में, इब्न साद 'तबाक़ात' में, और तबरानी 'मुअजम' में एक सहीह सनद के साथ हज़रत अबू ज़र ग़फ़ारी (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) से; और अबू याला, इब्न मनी' और तबरानी हज़रत अबू दरदा (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) से रिवायत करते हैं:

| "निश्चित रूप से अल्लाह के रसूल (उन पर अल्लाह की शांति और कृपा हो) ने हमें छोड़ा और कोई भी पक्षी आसमान में अपने पंख नहीं फड़फड़ाता जिसके बारे में उन्होंने हमें ज्ञान न दिया हो" - 4। | नबी (उन पर और उनके परिवार पर अल्लाह की शांति और कृपा हो) ने हमें इस हाल में छोड़ा कि हवा में कोई पक्षी ऐसा नहीं है जो पंख फड़फड़ाता हो जिसके बारे में हुज़ूर ने हमारे सामने बयान न फ़रमाया हो। |

'नसीम अल-रियाज़' (क़ाज़ी अयाज़ की 'शिफ़ा' की व्याख्या) और 'शरह ज़ुरक़ानी अलल-मवाहिब' में है:

| "यह हर चीज़ के विस्तृत विवरण के लिए एक उदाहरण है।" | यह एक उदाहरण दिया गया है कि नबी-ए-करीम (उन पर शांति हो)... |

1. सुनन अत-तिर्मिज़ी, किताब अल-तफ़्सीर, हदीस 3262, दार अल-फ़िक्र बेरुत, 5/161
2. सुनन अत-तिर्मिज़ी, किताब अल-तफ़्सीर, हदीस 3264, दार अल-फ़िक्र बेरुत, 5/159
3. अशिअत अल-लमात, किताब अल-सलात, अध्याय: मस्जिदें और नमाज़ की जगहें, मकतबा नूरया रज़विया सुक्कुर, 1/333
4. मुसनद अहमद बिन हंबल अबू ज़र ग़फ़ारी (रज़ि.) से, अल-मकतब अल-इस्लामी बेरुत 5/153; मजमा अल-ज़वाइद अबू दरदा से, किताब: नबुवत की निशानियाँ, अध्याय: जो ज्ञान उन्हें दिया गया, आदि, दार अल-किताब 8/264

فتاوی رضویہ جلد ۲۹

| عن هذا الحدیث فقال صحیح - ۱ | اس کا حال پوچھا، فرمایا صحیح ہے۔ |

اسی میں حضرت عبداللہ بن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے اسی معراج منامی کے بیان میں ہے رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا:

| فعلمت ما فی السموات وما فی الارض - ۲ | جو کچھ آسمانوں اور زمین میں ہے سب میرے علم میں آگیا۔ |

شیخ محقق رحمۃ اللہ علیہ شرح مشکوۃ میں اس حدیث کے نیچے فرماتے ہیں:

| پس دانستم ہر چہ در آسمانہا و ہر چہ در زمین ہا بود عبارت است از حصول تمامہ علوم جزوی و کلی واحاطہ آں ۳۔ | چنانچہ میں نے جان لیا جو کچھ آسمانوں میں ہے اور جو کچھ زمینوں میں ہے یہ تعبیر ہے تمام علوم کے حصول اور ان کے احاطہ سے چاہے وہ علوم جزوی ہوں یا کلی۔ (ت) |

امام احمد مسند اور ابن سعد طبقات اور طبرانی معجم میں بسند صحیح حضرت ابوذر غفاری رضی اللہ تعالیٰ عنہ اور ابو یعلی وابن منیع و طبرانی حضرت ابودرداء رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے راوی:

| لقد ترکنا رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ و سلم وما یحرّك طائر جناحیه فی السماء الا ذکر لنا منه علماً - ٤ | نبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے ہمیں اس حال پر چھوڑا کہ ہوا میں کوئی پرندہ پر مارنے والا ایسا نہیں جس کا علم حضور نے ہمارے سامنے بیان نہ فرما دیا ہو۔ |

نسیم الریاض شرح شفاء قاضی عیاض و شرح زرقانی للمواہب میں ہے :

| ھذا تمثیل لبیان کل شیئ تفصیلاً | یہ ایک مثال دی ہے اس کی کہ نبی کریم صلی اللہ |

۱ سنن الترمذی کتاب التفسیر حدیث ۳۲۶۲ دار الفکر بیروت ۵/۱۶۱ ۲ سنن الترمذی کتاب التفسیر حدیث ۳۲۶۴ دار الفکر بیروت ۵/۱۵۹ ۳ اشعۃ اللمعات کتاب الصلوٰۃ باب المساجد و مواضع الصلوٰۃ مکتبہ نوریہ رضویہ سکھر ۱/ ۳۳۳ ۴ مسند احمد بن حنبل عن ابی ذر غفاری رضی اللہ عنہ المکتب الاسلامی بیروت ۵ /۱۵۳، مجمع الزوائد عن ابی الدرداء کتاب علامات النبوۃ باب فیما اوتی من العلم۔ الخ دار الکتاب ۸ / ۲۶۴

Fatawa Razawiyya Volume 29

Sometimes in detail, sometimes in brief. The Prophet (peace and blessings of Allah be upon him and his family) has explained everything, sometimes in detail and sometimes concisely.

In Mawahib of Imam Qastalani, it is stated:

Arabic: And there is no doubt that Allah the Almighty has informed him of more than that and cast upon him the knowledge of the first and the last. Urdu Translation: And there is no doubt that Allah the Almighty gave the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) more knowledge than that and cast the knowledge of all those who came before and all those who will come after upon him, peace and blessings of Allah be upon him.

Tabarani in Al-Mu'jam al-Kabir, Nu'aym bin Hammad in Kitab al-Fitan, and Abu Nu'aym in Al-Hilya narrate from Hazrat Abdullah bin Umar (may Allah be pleased with him), that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him and his family) says:

Arabic: Indeed, Allah has lifted up the world for me, and I look at it and at what will be in it until the Day of Resurrection, as if I am looking at this palm of mine; a clarity from Allah which He has clarified for His Prophet as He clarified it for the prophets before him. Urdu Translation: Indeed, Allah the Almighty has held up the world before me, and I am seeing it and everything that is going to happen in it until the Day of Resurrection, just as I am seeing my palm, due to the light that Allah the Almighty has brightened for His Prophet as He had brightened it for the prophets before Muhammad. Peace and blessings of Allah be upon him.

From this Hadith, it is clear that the knowledge of whatever is in the heavens and the earth and whatever will happen until the Day of Judgment was also given to the previous noble Prophets (peace be upon them), and Allah Almighty placed all of space and all events (what was and what will be) before His beloved ones, for example, from East to West, from the heights to the depths, from the earth to the sky.

Footnotes: 1. Naseem al-Riyad fi Sharh Shifa al-Qadi Iyad, Chapter: And among that what [he] informed of, etc., Markaz Ahl-e-Sunnat Barkat-e-Raza Gujarat, 3/153; Sharh al-Zarqani 'ala al-Mawahib al-Ladunniyah, Objective 8, Chapter 3, Part 2, Dar al-Ma'rifah Beirut, 7/206 2. Al-Mawahib al-Ladunniyah, Objective 8, Chapter on what the

Prophet (PBUH) informed of the unseen, al-Maktab al-Islami Beirut, 3/560 3. Hilyat al-Awliya, Biography 338, Hadid bin Kuraib, Dar al-Kitab al-Arabi Beirut, 6/101; Kanz al-Ummal, Hadith 31810 and 17/319, Mu'assasat al-Risalah Beirut, 11/8/4203

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

कभी विस्तार से, कभी संक्षेप में। नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने हर चीज़ बयान फ़रमा दी, कभी विस्तार से, कभी संक्षेप में।

इमाम कस्तलानी की किताब 'मवाहिब' में है:

अरबी: और इसमें कोई संदेह नहीं कि अल्लाह तआला ने उन्हें इससे भी अधिक सूचित किया है और उन पर आदि और अंत (प्रथम और अंतिम) का ज्ञान डाल दिया है। उर्दू अनुवाद: और इसमें कोई संदेह नहीं कि अल्लाह तआला ने हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को उससे भी अधिक ज्ञान दिया और तमाम अगले-पिछले लोगों का ज्ञान हुज़ूर पर इल्का (प्रवाहित) किया, सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम।

तबरानी मुअजम कबीर में और नुऐम बिन हमाद किताबुल फ़ितन में और अबू नुऐम हिल्या में हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत करते हैं कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) फ़रमाते हैं:

अरबी: बेशक अल्लाह ने मेरे लिए दुनिया उठा ली है और मैं उसे और जो कुछ इसमें क़यामत तक होने वाला है देख रहा हूँ, जैसे मैं अपनी इस हथेली को देख रहा हूँ; अल्लाह की ओर से एक स्पष्टता जो उसने अपने नबी के लिए स्पष्ट की है जैसे उसने उससे पहले के नबियों के लिए स्पष्ट की थी। उर्दू अनुवाद: बेशक मेरे सामने अल्लाह अज्ज़वजल ने दुनिया उठा ली है और मैं इसे और जो कुछ इसमें क़यामत तक होने वाला है, सब कुछ ऐसा देख रहा हूँ जैसे अपनी हथेली को देख रहा हूँ, उस रोशनी के कारण जो अल्लाह तआला ने अपने नबी के लिए रौशन फ़रमाई जैसे मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से पहले अंबिया के लिए रौशन की थी। सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम।

इस हदीस से पता चलता है कि जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है और जो क़यामत तक होगा, उस सबका ज्ञान पिछले अंबिया किराम (अलैहिमुस्सलाम) को भी दिया गया था और हज़रत इज़्ज़त अज्ज़ वजल्ल ने उस तमाम मकान और 'मा यकून' (जो होने वाला है) को अपने उन महबूबों के सामने रख दिया, जैसे पूर्व से पश्चिम तक, गहराई से ऊँचाई तक, ज़मीन से आकाश तक।

फ़ुटनोट्स: 1. नसीम-उर-रियाज़ फ़ी शरह शिफ़ा अल-क़ाज़ी इयाज़... मरकज़ अहले सुन्नत बरकात-ए-रज़ा गुजरात, 3/153; शरह अल-ज़रक़ानी अलल मवाहिब अल-लदुन्निया... 2. अल-मवाहिब अल-

लदुन्निया, हुज़ूर (सल्ल.) द्वारा ग़ैब की ख़बर देने का अध्याय... 3. हिल्यत-उल-औलिया... कंज़-उल-उम्माल हदीस 31810...

فتاویٰ رضویہ جلد ۲۹

تارۃً واجمالاً اُخریٰ -1 تعالٰی علیہ وآلہ وسلم نے ہر چیز بیان فرمادی، کبھی تفصیلاً کبھی اجمالاً۔

مواہب امام قسطلانی میں ہے:

عربی: ولا شك ان الله تعالی قد اطلعه علی ازیَدَ من ذلك والقٰی علیه علم الاولین والآخرین -2 اردو ترجمہ: اور کچھ شک نہیں کہ اللہ تعالٰی نے حضور صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کو اس سے زیادہ علم دیا اور تمام اگلے پچھلوں کا علم حضور پر القاء کیا، صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم۔

طبرانی معجم کبیر اور نعیم بن حماد کتاب الفتن اور ابو نعیم حلیہ میں حضرت عبداللہ بن عمر رضی اللہ تعالٰی عنہ سے راوی، رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وآلہ وسلم فرماتے ہیں:

عربی: ان الله قد رفع لی الدنیا فانا انظر الیها والی ما هو کائن فیها الی یوم القیامة کانما انظر الی کفی هذه جلیان من الله جلاه لنبیه کما جلاه للنبیین من قبله -3 اردو ترجمہ: بے شک میرے سامنے اللہ عزوجل نے دنیا اٹھالی ہے اور میں اسے اور جو کچھ اس میں قیامت تک ہونے والا ہے سب کچھ ایسا دیکھ رہا ہوں جیسے اپنی ہتھیلی کو دیکھ رہا ہوں، اس روشنی کے سبب جو اللہ تعالٰی نے اپنے نبی کے لیے روشن فرمائی جیسے محمد سے پہلے انبیاء کے لیے روشن کی تھی۔ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم۔

اس حدیث سے ہے کہ جو کچھ سماوات وارض میں ہے اور جو قیامت تک ہوگا اس سب کا علم اگلے انبیاء کرام علیہم السلام کو بھی عطا ہوا تھا اور حضرت عزت عزوجلالہ نے اس تمام مکان ومایکون کو اپنے ان محبوبوں کے پیش نظر فرمادیا، مثلاً مشرق سے مغرب تک سماک سے سمک تک، ارض سے فلک۔

حواشی: 1۔ نسیم الریاض فی شرح شفاء القاضی عیاض فصل و من ذلك ما اطلع الخ مرکز اہلسنت برکات رضا گجرات ۳/ ۱۵۳، شرح الزرقانی علی المواہب اللدنیہ المقصد الثامن الفصل الثالث القسم الثانی دار المعرفۃ بیروت ۷ / ۲۰۶ 2۔ المواہب اللدنیہ المقصد الثامن الفصل ما اخبر بہ صلی اللہ علیہ وسلم من الغیب المکتب الاسلامی بیروت ۳ / ۵۶۰ 3۔ حلیۃ الاولیاء ترجمہ ۳۳۸ حدید بن کریب دار الکتاب العربي بیروت ۶/ ۱۰۱، کنز العمال حدیث ۳۱۸۱۰ و ۱۷ / ۳۱۹ موسستہ الرسالہ بیروت ۱۱/ ۸ / ۴۲۰۳

Fatawa-e-Razvia Volume 29

Until that time, what was happening, our leader Ibrahim the Friend (peace and blessings be upon him) saw it all thousands of years ago as if he were present everywhere at that moment. In the eye of faith, this is neither difficult for divine power nor too much compared to the honor and status of the prophets. But the poor objectors, whose concept of divinity is so limited that if a few leaves of a tree are counted, they want to call these hadiths 'shirk-e-akbar' (the greatest polytheism). And those great Imams and prominent scholars who brought evidence from them and kept them accepted by Muslims, such as the Imam Khatam al-Huffaz Jalal al-Millah wal-Din al-Suyuti, author of 'Khasa'is al-Kubra', and Imam Shahab Ahmad Muhammad Khatib Qastallani, author of 'Mawahib al-Ladunniyyah', and Imam Abu al-Fadl Shihab ibn Hajar al-Makki al-Haythami, commentator of 'Hamziyyah', and 'Allamah Shahab Ahmad al-Misri al-Khafaji, author of 'Nasim al-Riyad Sharh al-Shifa' by Qadhi Iyad, and 'Allamah Muhammad Abd al-Baqi al-Zurqani, commentator of 'Mawahib', and others, may Allah Almighty have mercy on them—let them call them mushriks (polytheists). We seek refuge in Allah, the Lord of the worlds.

In Sahih Muslim, Musnad Imam Ahmad, and Sunan Ibn Majah, it is narrated from Abu Dharr (may Allah be pleased with him) that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him and his family) said:

'Urudat 'ala ummati bi-a'maliha hasaniha wa-qabihiha[1]	My entire Ummah, with all their good and bad deeds, was presented before me.

Narrated by Hudhayfah bin Asid (may Allah be pleased with him) in Tabarani and Diya Mukhtarah, the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him and his family) said:

"'Urudat 'ala ummati al-barihata lada hadhihi al-hujrati hatta la-ana a'rafu bi-ar-rajuli minhum min ahadikum bi-sahibihi[2]"	Last night, my Ummah was presented before me near this room. Indeed, I recognize every individual among them more than any of you recognizes your companion.

And all praise is due to Allah, Lord of the worlds (All praise belongs to Allah, who is the Sustainer of all the worlds. T)

---

[1] Sahih Muslim, Book of Mosques, Chapter on the prohibition of spitting in the mosque, Qadeemi Kutub Khana Karachi, 1/277; Musnad Ahmad bin Hanbal from Abu Dharr (may Allah be pleased with him), Al-Maktab al-Islami Beirut, 5/180. [2] Al-Mu'jam

al-Kabir, Hadith 3052, Al-Maktabah al-Faysaliyyah Beirut, 3/181; Kanz al-Ummal, Hadith 31911, Mu'assasat al-Risalah Beirut, 11/408.

फ़तावा-ए-रज़विया जिल्द २९

उस समय तक जो कुछ हो रहा था, हमारे स्वामी इब्राहीम ख़लील (अलैहिस्सलाम) हज़ारों साल पहले उस सबको ऐसे देख रहे थे मानो वह उस समय हर जगह मौजूद हों। ईमान की नज़र में यह न तो ईश्वरीय शक्ति पर कठिन है और न ही नबियों के सम्मान और प्रतिष्ठा के मुकाबले अधिक। लेकिन बेचारे आपत्तिकर्ता, जिनके यहाँ ईश्वर की वास्तविकता इतनी है कि एक पेड़ के पत्ते गिन दिए, वे ही इन हदीसों को शिर्कए-अकबर (सबसे बड़ा बहुदेववाद) कहना चाहते हैं। और जो महान इमाम और प्रमुख विद्वान उनसे प्रमाण लाए और उन्हें मुसलमानों द्वारा स्वीकार्य रखा, जैसे इमाम ख़ातमुल हुफ़्फ़ाज़ जलालुद्दीन सुयूती, 'ख़साइस अल-कुबरा' के लेखक, और इमाम शहाब अहमद मुहम्मद ख़तीब क़स्तलानी, 'मवाहिब अल-लदुन्निया' के लेखक, और इमाम अबुल फ़ज़्ल शिहाब इब्न हजर मक्की हैतमी, 'हम्ज़िया' के व्याख्याकार, और अल्लामा शहाब अहमद मिस्री ख़फ़ाजी, क़ाज़ी अयाज़ की 'शिफ़ा' की व्याख्या 'नसीम अल-रियाद' के लेखक, और अल्लामा मुहम्मद अब्दुल बाक़ी ज़रक़ानी, 'मवाहिब' के व्याख्याकार, और अन्य, अल्लाह उन पर दया करे—वे उन्हें मुशरिक (बहुदेववादी) कहें। अल्लाह, दुनिया के रब, की पनाह।

सहीह मुस्लिम, मसनद इमाम अहमद और सुनन इब्न माजा में अबू ज़र (रज़ियल्लाहु अन्हु) से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया:

'अरज़त 'अला उम्मती बि-अ'मालिहा हसनिहा व-क़बीहिहा[1]	मेरी पूरी उम्मत अपने सभी अच्छे और बुरे कर्मों के साथ मेरे सामने पेश की गई।

तबरानी और ज़िया मुख्तारा में हुज़ैफ़ा बिन असद (रज़ियल्लाहु अन्हु) से वर्णित है, अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया:

"'अरज़त 'अला उम्मती अल-बारिहता लदा हाज़िहि अल-हुजरती हत्ता ल-अना अ'रफ़ु बि-अर-रजुलि मिन्हुम मिन अहदिकुम बि-साहिबिहि[2]"	कल रात, मेरी उम्मत इस कमरे के पास मेरे सामने पेश की गई। वास्तव में, मैं उनमें से प्रत्येक व्यक्ति को उससे अधिक पहचानता हूँ जितना आप में से कोई अपने साथी को पहचानता है।

अलहम्दुलिल्लाहि रब्बिल आलमीन (सब प्रशंसा अल्लाह के लिए है जो तमाम जहानों का पालनहार है।)

---

[1] सहीह मुस्लिम, किताबुल मसाजिद, मस्जिद में थूकने की मनाही का अध्याय, क़दीमी कुतुब ख़ाना कराची, 1/277; मसनद अहमद bin हंबल अबू ज़र (रज़ियल्लाहु अन्हु) से, अल-मकतब अल-इस्लामी बेरूत, 5/180। [2] अल-मुअजम अल-कबीर, हदीस 3052, अल-मकतबा अल-फ़ैसलिया बेरूत, 3/181; कंजुल उम्माल, हदीस 31911, मुअस्ससतुर् रसाला बेरूत, 11/408।

تک اس وقت جو کچھ ہو رہا ہے، سیدنا ابراہیم خلیل علیہ الصلوۃ والسلام والتسلیم ہزار ہا برس پہلے اس سب کو ایسا دیکھ رہے تھے گویا اس وقت ہر جگہ موجود ہیں، ایمانی نگاہ میں یہ نہ قدرت الٰہی پر دشوار اور نہ عزت و وجاہت انبیاء کے مقابل بسیار، مگر معترض بیچارے جن کے یہاں خدائی کی حقیقت اتنی ہو کہ ایک پیڑ کے پتے گن دیئے وہ آپ ہی ان حدیثوں کو شرک اکبر کہنا چاہیں اور جو ائمہ کرام و علمائے اعلام ان سے سند لائے، انہیں مقبول مسلم رکھتے آئے، جیسے امام خاتم الحفاظ جلال الملۃ والدین سیوطی مصنف خصائص کبری و امام شہاب احمد محمد خطیب قسطلانی صاحب مواہب لدنیہ و امام ابوالفضل شہاب ابن حجر مکی ہیشمی شارح ہمزیہ و علامہ شہاب احمد مصری خفاجی صاحب نسیم الریاض شرح شفاء قاضی عیاض و علامہ محمد عبد الباقی زرقانی شارح مواہب وغیرہم رحمہم اللہ تعالٰی انہیں مشرک کہیں۔ والعیاذ باللہ رب العالمین۔

صحیح مسلم و مسند امام احمد و سنن ابن ماجہ میں ابو ذر رضی اللہ تعالٰی عنہ سے ہے رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وآلہ وسلم فرماتے ہیں :

عرضت علی امتی باعمالھا حسنھا وقبیحھا ۱۔ میری ساری امت اپنے سب اعمال نیک و بد کے ساتھ میرے حضور پیش کی گئی۔

طبرانی اور ضیاء مختارہ میں حذیفہ بن اسید رضی اللہ تعالٰی عنہما سے راوی، رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وآلہ وسلم فرماتے ہیں :

گزشتہ رات مجھ پر میری اُمت اس حجرے کے پاس میرے سامنے پیش کی گئی بے شک میں ان کے ہر شخص کو اس

"عرضت علی امتی البارحة لدی هذه الحجرة حتی لانا اعرف بالرجل منهم من احدکم بصاحبه ۲۔

سے زیادہ پہچانتا ہوں جیسا تم میں کوئی اپنے ساتھی کو پہچانے۔

والحمد للہ رب العالمین (سب تعریفیں اللہ کے لیے ہیں جو تمام جہانوں کا پروردگار ہے۔ ت)

---

۱ صحیح مسلم کتاب المساجد باب النہی عن البصاق فی المسجد قدیمی کتب خانہ کراچی ۱ / ۲۷۷، مسند احمد بن حنبل عن ابی ذر رضی اللہ عنہ المکتب الاسلامي بیروت ۵ / ۱۸۰ ۲ المعجم الکبیر حدیث ۳۰۵۲ المکتبة الفیصلیة بیروت ۳ / ۱۸۱، کنز العمال حدیث ۳۱۹۱۱ موسستہ الرسول بیروت ۱۱ / ۴۰۸

Fatawa Razawiyya Volume 29

Sayings of the Eminent Imams:

The great Imam Sayyidi Busiri (may his secret be sanctified) says in Umm al-Qura: "He encompassed the worlds in knowledge and wisdom." [1] The knowledge and wisdom of the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) encompassed the entire universe.

Imam Ibn Hajar Makki says in its commentary, Afzal al-Qura: "Because Allah Almighty made him aware of the world, so he knew the knowledge of the first and the last, and what was and what will be." [2] This is because, indeed, the Almighty granted the Noble Prophet (peace and blessings of Allah be upon him and his progeny) awareness of the entire universe; thus, the knowledge of all those who came before and after, and what was and what will be, was obtained by the radiant Prophet (peace and blessings of Allah be upon him and his progeny).

The glorious Imam, leader of the Hadith scholars, Sayyidi Zayn al-Din al-Iraqi, teacher of the illustrious Imam Hafiz al-Sha'n Ibn Hajar al-Asqalani, in Sharh al-Muhadhdhab, and then Allama Khafaji in Nasim al-Riyad say: "Verily, the creations from Prophet Adam (peace be upon him) until the standing of the Hour were presented to him (peace and blessings of Allah be upon him), and he recognized them all, just as Adam was taught the names [of all things]." [3] All of God's creations, from Prophet Adam (peace be upon him) until the day of resurrection, were presented to the Leader of the World (peace and blessings of Allah be upon him and his progeny). The Prophet (peace and blessings of Allah be upon him and his progeny) recognized all creations, past and future, just as Prophet Adam (peace be upon him) was taught all names.

Allama Abd al-Ra'uf al-Munawi says in al-Taysir: "When holy souls are divested of bodily attachments, they connect with the Highest Assembly, and no veil remains for them." When pure souls separate from bodily ties and meet with the upper realm, no veil remains for them; they see everything in such a way and...

---

1. Majmu' al-Mutun, Matn Qasidat al-Hamziyya fi Madh Khayr al-Bariyya, Religious Affairs, State of Qatar, p. 18.
2. Afzal al-Qura li-Qurra' Umm al-Qura.
3. Nasim al-Riyad, Book Three, Chapter One, concerning what has been reported regarding his status, Markaz Ahle Sunnat Barkat-e-Raza, Gujarat, India, 2/208.

फ़तावा रज़विया खंड २९

प्रमुख इमामों के कथन:

महान इमाम सैय्यदी बुसीरी (अल्लाह उनके रहस्य को पवित्र रखे) उम्मुल क़ुरा में फ़रमाते हैं: "उन्होंने ज्ञान और हिकमत (बुद्धिमत्ता) में संसारों को घेर लिया।" [१] अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का ज्ञान और हिकमत पूरे ब्रह्मांड में समाहित है।

इमाम इब्न हजर मक्की इसकी व्याख्या अफ़ज़लुल क़ुरा में फ़रमाते हैं: "क्योंकि अल्लाह तआला ने उन्हें दुनिया के बारे में सूचित किया, इसलिए उन्होंने उगलें और पिछलों का ज्ञान प्राप्त किया, और जो कुछ हुआ और जो कुछ होगा।" [२] यह इसलिए है क्योंकि वास्तव में अल्लाह अज़्ज़-व-जल्ल ने हुज़ूर अक़दस (सल्लल्लाहु अलैहि व आलेही व सल्लम) को पूरे ब्रह्मांड की जानकारी प्रदान की, जिससे हुज़ूर पुर नूर (सल्लल्लाहु अलैहि व आलेही व सल्लम) को पहले और बाद के सभी लोगों का और 'मा काना व मा यकून' (जो हो चुका और जो होगा) का ज्ञान प्राप्त हो गया।

महान इमाम, हदीस के विद्वानों के अगुआ सैय्यदी ज़ैनुद्दीन इराक़ी, जो महान इमाम हाफ़िज़ुश-शान इब्न हजर असक़लानी के उस्ताद हैं, 'शरह मुहज़्ज़ब' में और फिर अल्लामा ख़फ़ाजी 'नसीमुल रियाज़' में फ़रमाते हैं: "बेशक हज़रत आदम (अलैहिस्सलाम) से लेकर क़यामत आने तक की तमाम मखलूक़ात (सृष्टि) हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के सामने पेश की गईं और आपने उन सबको पहचान लिया, ठीक उसी तरह जैसे आदम को सभी नाम सिखाए गए थे।" [३] हज़रत आदम (अलैहिस्सलाम) से लेकर क़यामत के क़ायम होने तक की ईश्वर की सभी मखलूक़ात हुज़ूर सैय्यद-ए-आलम (सल्लल्लाहु अलैहि व आलेही व सल्लम) को पेश की गईं। हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि व आलेही व सल्लम) ने पिछली और भविष्य की सभी मखलूक़ात को पहचान लिया, जिस तरह हज़रत आदम (अलैहिस्सलाम) को तमाम नाम सिखाए गए थे।

अल्लामा अब्दुर रऊफ़ मुनावी 'तयसीर' में फ़रमाते हैं: "जब पवित्र आत्माएं शारीरिक बंधनों से मुक्त होकर उच्च लोक से मिलती हैं, तो उनके लिए कोई पर्दा नहीं रहता।" पवित्र आत्माएं जब शरीर के बंधनों से अलग होकर ऊपरी दुनिया (आलम-ए-बाला) से मिलती हैं, तो उनके लिए कोई पर्दा नहीं रह जाता, वे हर चीज़ को इस तरह देखती हैं और...

१ मजमूअल मुतून, मतन क़सीदतुल् हम्ज़िया फ़ी मदह ख़ैरुल बरिया, धार्मिक मामले, कतर राज्य, पृ. १८ २ अफ़ज़लुल क़ुर्रा लिकुर्रा उम्मुल क़ुरा ३ नसीमुल रियाज़, भाग ३, अध्याय १, उनकी स्थिति के उल्लेख के विषय में, मरकज़ अहले सुन्नत बरकात-ए-रज़ा, गुजरात, भारत, २/२०८

اقوالِ ائمہ کرام:

امام اجل سیدی بوصیری قدس سرہ، ام القری میں فرماتے ہیں: وسع العالمین علماً وحکماً - ۱ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کا علم و حکمت تمام جہان کو محیط ہوا۔

امام ابن حجر مکی اس کی شرح افضل القری میں فرماتے ہیں: لان اللہ تعالیٰ اطلعه علی العالم فعلم علم الاولین والآخرین وما کان و مایکون - ۲ یہ اس لیے کہ بے شک عزوجل نے حضور اقدس صلی اللہ اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کو تمام جہان پر اطلاع بخشی تو سب اگلے پچھلوں اور ماکان ومایکون کا علم حضور پر نور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کو حاصل ہو گیا۔

امام جلیل قدوۃ المحدثین سیدی زین الدین عراقی استاذ امام حافظ الشان ابن حجر عسقلانی شرح مہذب میں پھر علامہ خفاجی نسیم الریاض میں فرماتے ہیں: ان صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم عرضت علیہ الخلائق من لدن آدم علیہ الصلوۃ والسلام الی قیام الساعۃ فعرفهم کلهم کما علّم آدم الاسماء - ۳ حضرت آدم علیہ الصلوۃ والسلام سے لے کر قیام قیامت تک کی تمام مخلوقاتِ الہی حضور سید عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کو پیش کی گئی حضور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے جمیع مخلوقات گزشتہ اور آئندہ سب کو پہچان لیا۔ جس طرح آدم علیہ الصلوۃ والسلام کو تمام نام سکھائے گئے تھے۔

علامہ عبد الرؤف مناوی تیسیر میں فرماتے ہیں: النفوس القدسیۃ اذا تجرّدت عن العلائق البدنیۃ اتصلت بالملاء الاعلی ولم یبق لها حجاب پاکیزہ جانیں جب بدن کے علاقوں سے جدا ہو کر عالمِ بالا سے ملتی ہیں ان کے لیے کوئی پردہ نہیں رہتا ہے وہ ہر چیز کو ایسا دیکھتی اور

١ مجموع المتون متن قصيدة الهمزية فى مدح خير البريہ الشؤن الدينيہ دولتہ قطر ص ١٨ ٢ افضل القراء لقراء ام القرى ٣ نسيم الرياض الباب الثالث الفصل الاول فيما ورد من ذكر مكانتہ مركز اہلسنت بركات رضا گجرات الهند ٢ / ٢٠٨

Fatawa Rizvia, Volume 29

- You see and hear everyone as if you are a witness[1] | They hear as if they are present right there.

Imam Ibn al-Hajj al-Makki states in 'Al-Madkhal' and Imam al-Qastalani in 'Al-Mawahib':

- (Arabic): Indeed, our noble scholars (may Allah Almighty have mercy on them) have said: There is no difference between his (the Prophet's) death and life (peace and blessings of Allah be upon him) in terms of his observation of his Ummah, his knowledge of their states, intentions, resolves, and thoughts. All of this is clear to him, with no concealment.[2] | (Urdu): Indeed, our noble scholars (may Allah Almighty have mercy on them) said: There is no difference between the worldly state of the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him and his family) and his current state regarding the fact that the Prophet is watching his Ummah, recognizing their every condition, their every intention, their every resolve, and every thought in their hearts. All these things are so clear to the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him and his family) that there is absolutely no hiddenness in them.

These are the beliefs of the divine scholars regarding the exalted presence of Muhammad, the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him and his family), may His Glory be exalted, and may Allah’s peace and blessings be upon him.

The Sheikh of the scholars of India, Maulana Sheikh Muhaqqiq (may Allah illuminate his noble resting place), states in 'Madarij al-Sharif':

- (Persian): Mention him and send blessings upon him (peace and blessings of Allah be upon him). During this remembrance, be as if you are present before him during his lifetime, and you are seeing him, showing etiquette with majesty, reverence, awe, and hope. Know that he (peace and blessings of Allah be upon him and his family) sees and hears your words because he (peace and blessings of Allah be upon him and his family)... | (Urdu): Remember him and send blessings upon him, and at the time of remembrance, become as if you are present before him in his lifetime and are seeing him. Maintain full respect and reverence, with both awe and hope. And know that the Messenger of Allah

(peace and blessings of Allah be upon him and his family) is seeing you and hearing your words because he is adorned with Divine attributes and...

---

[1] Al-Taysir Sharh al-Jami' al-Saghir, under the Hadith: 'Wherever you are, send blessings upon me...' etc., Maktabah al-Imam al-Shafi'i, Riyadh, 1/502. [2] Al-Madkhal by Ibn al-Hajj, Chapter on discussing the visit to the Master of Messengers, Dar al-Kitab al-Arabi, Beirut, 1/252; Al-Mawahib al-Ladunniyyah, Tenth Objective, Second Chapter, Al-Maktab al-Islami al-Arabi, Beirut, 4/580.

फतवा-ए-रिज़विया, खंड 29

- तुम देखते और सुनते हो सबको एक उपस्थित गवाह की तरह[1]। | वे सुनते हैं जैसे पास उपस्थित हों।

इमाम इब्न अल-हाज मक्की 'मदखल' में और इमाम क़स्तलानी 'मवाहिब' में फरमाते हैं:

- (अरबी): बेशक हमारे उलेमा-ए-किराम (रहमहुमुल्लाह तआला) ने फरमाया: अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) की मृत्यु और जीवन के बीच उनकी उम्मत के अवलोकन, उनकी स्थितियों, नीयतों, संकल्पों और विचारों के ज्ञान में कोई अंतर नहीं है। और यह सब उनके लिए स्पष्ट है, जिसमें कोई रहस्य नहीं है।[2] | (उर्दू): बेशक हमारे उलेमा-ए-किराम (रहमहुमुल्लाह तआला) ने फरमाया: अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वआलिही वसल्लम) की सांसारिक स्थिति और वर्तमान स्थिति में इस बात में कोई अंतर नहीं है कि हुज़ूर अपनी उम्मत को देख रहे हैं, उनकी हर स्थिति, उनकी हर नीयत, उनके हर इरादे और उनके दिलों के हर विचार को पहचानते हैं। और ये सब चीजें हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वआलिही वसल्लम) पर ऐसी स्पष्ट हैं जिनमें मूल रूप से किसी भी प्रकार की गोपनीयता नहीं है।

ये अक़ीदे (विश्वास) ईश्वरीय विद्वानों के हैं मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वआलिही वसल्लम) की आलीशान बारगाह के बारे में, जल जलालाहु, व सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम।

भारत के विद्वानों के शेख, मौलाना शेख मुहक्किक (अल्लाह उनकी कब्र को पवित्र करे) 'मदारिज शरीफ' में फरमाते हैं:

- (फारसी): उनका ज़िक्र करो और उन पर दुरूद भेजो (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम), और ज़िक्र के समय ऐसे हो जाओ जैसे तुम उनके जीवन काल में उनके सामने उपस्थित हो और उन्हें देख रहे हो। पूरे अदब और सम्मान के साथ रहो, मन में हैबत (डर) भी हो और उम्मीद भी। और जान लो कि वे (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) तुम्हें देख रहे हैं और तुम्हारी बातें सुन रहे हैं... | (उर्दू): उनकी याद करो और उन पर दुरूद भेजो, और ज़िक्र के समय ऐसे हो जाओ जैसे तुम उनके जीवन में उनके सामने उपस्थित हो और उन्हें देख रहे हो। पूरे अदब और सम्मान के साथ रहो, हैबत भी हो और उम्मीद भी, और जान लो कि अल्लाह के

रसूल (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वआलिही वसल्लम) तुम्हें देख रहे हैं और तुम्हारी बातें सुन रहे हैं। क्योंकि वे ईश्वरीय गुणों से युक्त हैं और...

---

[1] अत-तयसीर शरह अल-जामि' अस-सगीर, हदीस के तहत 'जहाँ भी तुम हो...', मकतबा अल-इमाम अश-शाफई, रियाद, 1/502. [2] अल-मदखल इब्न अल-हाज द्वारा, सैय्यद अल-मुर्सलीन की ज़ियारत के अध्याय में, दार अल-किताब अल-अरबी, बेरूत, 1/252; अल-मवाहिब अल-लदुनिया, दसवां उद्देश्य, दूसरा अध्याय, अल-मकतबा अल-इस्लामी अल-अरबी, बेरूत, 4/580.

فتریٰ وتسمع الکل کالمشاھد[1] ۔ سنتی ہیں جیسے پاس حاضر ہیں۔

امام ابن الحاج مکی مدخل امام قسطلانی مواہب میں فرماتے ہیں:

قد قال علماؤنارحمہم اللہ تعالیٰ لافرق بین موتہ وحیاتہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فی مشاھدتہ لامتہ ومعرفتہ باحوالہم ونیاتہم وعزائمہم وخواطرہم وذلك جلی عندہ، لاخفاء بہ[2] ۔ بے شک ہمارے علمائے کرام رحمہم اللہ تعالیٰ نے فرمایا رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کی حالت دنیوی اور اس وقت کی حالت میں کچھ فرق نہیں ہے اس بات میں کہ حضور اپنی امت کو دیکھ رہے ہیں ان کے ہر حال، ان کی ہر نیت، ان کے ہر ارادے، ان کے دلوں کے ہر خطرے کو پہچانتے ہیں، اور یہ سب چیزیں حضور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم پر ایسی روشن ہیں جن میں اصلاً کسی طرح کی پوشیدگی نہیں۔

یہ عقیدے ہیں علمائے ربانیین کے محمد رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کی جناب ارفع میں، جل جلالہ ، وصلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم۔

شیخ شیوخ علمائے ہند مولانا شیخ محقق نور اللہ تعالیٰ مرقدہ المکرم مدارج شریف میں فرماتے ہیں:

ذکر کن او را ودرود بفرست‌بروے صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم، وباش در حال ذکر گویا حاضرست پیش او در حالت حیات ومی بینی تواو رامتادب باجلال وتعظیم و ہیبت وامید بداں کہ وے صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم می بیندومی شنود کلام ترا زیرا کہ وے صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم ان کی یاد کرو اور ان پر درود بھیجو، اور ذکر کے وقت ایسے ہو جاؤ گویا تم ان کی زندگی میں ان کے سامنے حاضر ہو اور ان کو دیکھ رہے ہو، پورے ادب اور تعظیم سے رہو، ہیبت بھی ہو اور امید بھی، اور

جان لو کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم تمہیں دیکھ رہے ہیں اور تمہارا کلام سن رہے ہیں۔ کیونکہ وہ صفات الہیہ سے متصف ہیں اور

---

[1] التیسیر شرح الجامع الصغیر تحت حدیث حیثما کنتم فصلوا علی الخ مکتبہ الامام الشافعی ریاض ۱/ ۵۰۲ [2] المدخل لابن الحاج فصل فی الکلام علی زیارۃ سید المرسلین دارالکتاب العربی بیروت ۱/ ۲۵۲، المواہب اللدنیۃ المقصد العاشر الفصل الثانی المکتب الاسلامی العربی بیروت ۴/ ۵۸۰

Fatawa Razawiya Volume 29

Characterized by the attributes of Allah, and one of the Divine attributes is that 'I am the companion of him who remembers Me'[1].	**One of Allah's attributes is that whoever remembers Me, I am with him.**

Countless mercies of Allah be upon Shaykh al-Muhaqqiq; when explaining the 'seeing' of the Prophet (may Allah the Exalted grant him and his family peace and blessings), he elaborated so that no one would consider it as something lesser. In short, he painted a picture of this holy Hadith before faithful eyes that:

"Worship Allah as if you see Him, for if you do not see Him, He surely sees you[2]."	**Worship Allah the Exalted as if you are seeing Him, and even if you do not see Him, He certainly sees you.**

He also states:

Whatever is in the world from the time of Adam until the first blowing of the Trumpet has been revealed to him (may Allah the Exalted grant him peace and blessings), so that he became aware of all affairs from the beginning to the end, and he informed some of his companions about some of those affairs[3].	**Whatever is in the world from the time of Adam until the blowing of the Trumpet has been revealed to him (may Allah the Exalted grant him and his family peace and blessings), to the extent that he came to know all affairs from the beginning to the end. He informed some companions of some of these affairs.**

He also states:

"And He has knowledge of everything." And he (may Allah the Exalted grant him peace and blessings) is knowledgeable about everything from the manifestations of the Divine Essence, the rulings of the attributes of Truth, names, actions, traces, and encompassing all sciences of the manifest and the hidden, the first and the last, and is the embodiment of "Above every possessor of knowledge is one more knowing." The best and most complete blessings be upon him.	**"And He has knowledge of everything." And he (may Allah the Exalted grant him and his family peace and blessings) is the knower of everything; encompassing the affairs of Divine commands, commands of the attributes of Truth, names, actions, effects, all manifest and hidden sciences, the first and the last. And he is the embodiment of the verse "Above every possessor of knowledge is one more knowing"; the best and most complete blessings be upon you.**

---

[1] Madarij al-Nubuwwah, Chapter 11, Section of the second type which relates to spiritual connection etc., Maktabah Nooriyah Razawiyah Sukkur, 2/261. [2] Sahih Bukhari, Book of Faith, Chapter on Jibril asking the Prophet (pbuh) about faith, Qadeemi Kutub Khana 1/12; Sahih Muslim, Book of Faith, Chapter on Jibril asking the Prophet (pbuh), Qadeemi Kutub Khana Karachi 1/29. [3] Madarij al-Nubuwwah, Book of Faith, Chapter 5, Section on the characteristics of the Prophet (pbuh), Maktabah Nooriyah Razawiyah Sukkur, 1/44.

अल्लाह के गुणों से संपन्न है, और ईश्वरीय गुणों में से एक यह है: 'मैं उसका साथी हूँ जो मुझे याद करता है'[1]।

अल्लाह का एक गुण यह है कि जो मुझे याद करता है, मैं उसके पास होता हूँ।

शेख अल-मुहक्क़िक़ पर अल्लाह की अनगिनत रहमतें हों; जब नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के देखने का वर्णन किया गया, तो उन्होंने इसे इतना विस्तृत किया कि कोई इसे कमतर न समझे। संक्षेप में, उन्होंने ईमान वाली आँखों के सामने इस पवित्र हदीस की एक तस्वीर खींच दी कि:

"अल्लाह की इबादत ऐसे करो जैसे तुम उसे देख रहे हो, और अगर तुम उसे नहीं देख रहे हो, तो वह तो तुम्हें निश्चित रूप से देख रहा है[2]।"

अल्लाह तआला की इबादत करो, जैसे कि तुम उसे देख रहे हो, और अगर तुम उसे नहीं देखते, तो वह तुम्हें निश्चित रूप से देख रहा है।

वे यह भी फरमाते हैं:

दुनिया में आदम के समय से लेकर पहली बार सूर फूँके जाने तक जो कुछ भी है, वह उन (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर प्रकट कर दिया गया, यहाँ तक कि उन्हें आदि से अंत तक की सभी घटनाओं का पता चल गया और उन्होंने अपने कुछ साथियों को इन घटनाओं में से कुछ की जानकारी दी[3]।

दुनिया में आदम के ज़माने से पहले सूर फूँके जाने तक जो कुछ भी है, वह उन (सल्लल्लाहु अलैहि वआलिही वसल्लम) पर प्रकट कर दिया गया, यहाँ तक कि उन्हें आदि से अंत तक के सभी हालात मालूम हो गए। उन्होंने कुछ सहाबा को उन हालात में से कुछ की इत्तिला दी।

वे यह भी फरमाते हैं:

"और वह हर चीज़ का ज्ञान रखने वाला है।" और वे (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ईश्वरीय अस्तित्व की विशेषताओं, सत्य के गुणों के आदेशों, नामों, कार्यों, प्रभावों और ज़ाहिर और बातिन, आदि और अंत के सभी विज्ञानों का घेरा किए हुए सब कुछ जानने वाले हैं। और वे "हर ज्ञान रखने वाले के ऊपर एक ज्ञानवान है" के मिसाल हैं। आप पर सर्वश्रेष्ठ और पूर्ण दुरूद।

"और वह हर चीज़ का ज्ञान रखने वाला है।" और वे (सल्लल्लाहु अलैहि वआलिही वसल्लम) सब चीज़ों को जानने वाले हैं; ईश्वरीय आदेशों के हालात, हक़ की सिफ़ात के अहकाम, अस्मा, अफ़आल, आसार, तमाम उलूम ज़ाहिर व बातिन, अव्वल व आख़िर का अहाता किए हुए हैं। और "हर ज्ञान रखने वाले के ऊपर एक ज्ञानवान है" के मिसाल हैं; आप पर अफ़ज़ल और मुकम्मल दुरूद।

---

1. मदारीजुन नुबुव्वह, अध्याय 11, दूसरे प्रकार का खंड जिसका आध्यात्मिक संबंध है आदि, मकतबा नूरिया रज़विया सुक्कुर, 2/261।
2. सहीह बुखारी, ईमान की किताब, पैगंबर (स.अ.व.) से जिब्रील के ईमान के बारे में पूछने का अध्याय, क़दीमी कुतुब ख़ाना 1/12; सहीह मुस्लिम, ईमान की किताब, जिब्रील के पैगंबर (स.अ.व.) से पूछने का अध्याय, क़दीमी कुतुब ख़ाना कराची 1/29।
3. मदारीजुन नुबुव्वह, ईमान की किताब, अध्याय 5, पैगंबर (स.अ.व.) की विशेषताओं का खंड, मकतबा नूरिया रज़विया सुक्कुर, 1/44।

متصف است بصفات اللہ ویکے از صفات الٰہی آنست کہ انا جلیس من ذکرنی۱۔

اللہ کی ایک صفت یہ ہے کہ جو مجھے یاد کرتا ہے میں اس کے پاس ہوتا ہوں۔

اللہ تعالیٰ کی بے شمار رحمتیں شیخ محقق پر، جب نبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کا دیکھنا ہمیں بیان کیا بدانکہ بڑھایا تاکہ اسے کوئی گویا کے نیچے داخل نہ سمجھے، غرض ایمانی نگاہوں کے سامنے اس حدیث پاک کی تصویر کھینچ دی کہ:

اعبد اللہ کانك تراہ فان لم تکن تراہ فانہ یراك ۲۔

اللہ تعالیٰ کی عبادت کر، گویا تو اسے دیکھ رہا ہے اور اگر تو اسے نہ دیکھے تو وہ تو یقیناً تجھے دیکھتا ہے۔

نیز فرماتے ہیں:

ہر چہ در دنیاست زمان آدم تانفخہ اولیٰ بروے صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم منکشف ساختند تا ہمہ احوال را از اول تا آخر معلوم کرد و یاران خود را نیز بعضے ازاں احوال خبر داد ۳۔

جو کچھ دنیا میں زمانہ آدم سے پہلے صور پھونکے جانے تک ہے ان (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) پر منکشف کردیا یہاں تک کہ انہیں اول سے آخر تک تمام احوال معلوم ہو گئے۔ انہوں نے بعض اصحاب کو ان احوال میں سے بعض کی اطلاع دی۔

نیز فرماتے ہیں:

وھو بکل شیئ علیم ہ و وے صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم دانا است ہمہ چیز از شیونات ذات الہی و احکام صفات حق واسماء وافعال و آثار و جمیع علوم ظاہر و باطن اول و آخر احاطہ نمودہ و مصداق فوق کل ذی علم علیم علیہ من الصلوات افضلھا

وھو بکل شیئ علیم، اور وہ (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) سب چیزوں کو جاننے والے ہیں، احوال احکام الہی احکام صفات حق، اسماء افعال آثار، تمام علوم ظاہر و باطن، اول و آخر کا احاطہ کیے ہوئے ہیں۔ اور فوق کل ذی علم علیم کے مصداق ہیں، آپ پر افضل درود اور اتم

---

۱ مدارج النبوۃ باب یاز دہم وصل نوع ثانی کہ تعلق معنوی است الخ مکتبہ نوریہ رضویہ سکھر

۲ ۲۶۱/۲ صحیح بخاری کتاب الایمان باب سوال جبریل النبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم عن الایمان قدیمی کتب خانہ ۱۲/۱، صحیح مسلم کتاب الایمان باب سوال جبریل النبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم قدیمی کتب خانہ کراچی ۲۹/۱ ۳ مدارج النبوۃ کتاب الایمان باب پنجم وصل خصائص آنحضرت صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم مکتبہ نوریہ رضویہ سکھر ۱/ ۴۴

Fatawa Rizwiya Volume 29

...from the greetings, the most complete and perfect ones.[1]	...and perfect peace be upon him. (Trans.)

Shah Waliullah Dehlawi writes in *Fiyuz-ul-Harmayn*:

Knowledge of the manner in which a servant ascends from his sphere to the sphere of holiness flowed upon me from the sacred presence of [the Prophet], peace and blessings of Allah be upon him and his family. At that point, everything becomes manifest to him, as he informed about this station in the story of the visionary Ascension (Mi'raj).[2]	From the holy presence of the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him and his family), knowledge was bestowed upon me in such a state that I understood how a servant progresses from his station to the station of holiness, whereby everything becomes clear to him, just as the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him and his family) informed about this state in the narration of the dream of Me'raj.

There are countless arguments for this point from the Quran, Hadith, and the sayings of the Imams of Hadith. If God grants justice, even the few mentioned above are many. In short, it is as clear as the sun and yesterday that calling the aforementioned belief of Zaid "disbelief and polytheism" (Kufr and Shirk) is, God forbid, slandering the Great Quran itself and rejecting numerous, famous, clear, and authentic Hadiths, as well as many leaders of religion, prominent practicing scholars, and the greatest complete scholars (may Allah be pleased with them all). This goes so far that it amounts to declaring even Shah Waliullah and Shah Abdul Aziz as disbelievers and polytheists (God forbid). According to the clear meanings of authentic Hadiths and reliable jurisprudential narrations, the one who makes such accusations becomes a disbeliever and polytheist himself. For details on this, please refer to the faqir's (humble author's) treatises "*Al-Nahi al-Akid an al-Salat Wara Adi al-Taqlid*" and "*Al-Kawakib al-Shahabiyah ala Kufriyat Abi al-Wahhabiyah*," etc.

Alas, these blind sellers of 'shirk' do not realize that Divine Knowledge is intrinsic (Dhati) and created knowledge is bestowed (Ata'i). One is Necessary (Wajib), the other is Possible (Mumkin); one is Eternal (Qadim), the other is Created (Hadith); one is Uncreated, the other is Created; one is Infinite in power, the other is limited; one is necessarily permanent, the other is liable to perish; one is unchangeable, the other is changeable. After such great distinctions, only a madman could perceive a possibility of shirk. Those blind of insight consider affirming the knowledge of "what was and

what will be" in the aforementioned sense as equating it to Divine Knowledge (God forbid), whereas "Greatness is for Allah" — Divine Knowledge is that in which there are infinite sciences...

---

[1] *Madarij-un-Nabuwwat*, Introduction of the book, Maktaba Nooria Razavia Sukkur 1/402 [2] *Fiyuz-ul-Harmayn*, Mashhad Allah Ta'ala ... for sending the book to creation ... Muhammad Saeed and Sons Karachi 169

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

...सलामों में से सबसे पूर्ण और मुकम्मल।[1] ...और पूर्ण शांति हो। (त.)
शाह वलीउल्लाह देहलवी, फ़ुयूज़-उल-हरमैन में लिखते हैं:

पवित्र सान्निध्य (पैगंबर), अल्लाह की उन पर और उनके परिवार पर कृपा और शांति हो, से मुझ पर वह ज्ञान प्रवाहित हुआ जिसमें बताया गया है कि कैसे एक सेवक अपने क्षेत्र से पवित्रता के क्षेत्र में ऊपर उठता है। उस बिंदु पर, सब कुछ उस पर प्रकट हो जाता है जैसा कि उन्होंने दर्शनिक आरोहण (मिराज) की कहानी में इस स्थिति के बारे में सूचित किया था।[2]

हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वआलिहि वसल्लम की बारगाहे अक़दस से मुझ पर इस हालत का इल्म फ़ायज़ हुआ कि बंदा अपने मुक़ाम से मुक़ाम-ए-क़ुद्स तक क्योंकर तरक़्क़ी करता है कि उस पर हर चीज़ रोशन हो जाती है जिस तरह हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वआलिहि वसल्लम ने अपने इस मुक़ाम से मेराज-ए-ख़्वाब के क़िस्से में ख़बर दी।

क़ुरान और हदीस और अइम्मा-ए-हदीस के अक़वाल से इस मतलब पर दलीलें बेशुमार हैं और ख़ुदा इंसाफ़ दे तो यही अक़ल्ल-ए-क़लील कि मज़कूर हुए बिसियार हुए, ग़रज़ शम्स-ओ-अम्स की तरह रोशन हुआ कि अक़ीदा-ए-मज़कूरा ज़ैद को मुआज़ल्लाह कुफ़्र-ओ-शिर्क कहना ख़ुद क़ुरान-ए-अज़ीम पर तोहमत रखना और अहादीस-ए-सहीहा सरीहा शहीरा कसीरा को रद्द करना और बह-कसरत अइम्मा-ए-दीन और अकाबिर उलमा-ए-आमिलीन व आज़म उलमा-ए-कामिलिन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन, यहाँ तक कि शाह वलीउल्लाह, शाह अब्दुल अज़ीज़ साहब को भी अयाज़बिल्लाह काफ़िर-ओ-मुशरिक बनाना और हुक्म-ए-ज़वाहिरे अहादीस-ए-सहीहा व रिवायाते मोअतमदा फ़क़ीहिया ख़ुद काफ़िर-ओ-मुशरिक बनना है इसके मुतअल्लिक़ अहादीस व रिवायत व अक़वाल-ए-अइम्मा व तरजीहात व तसरीहात फ़क़ीर के रिसाला 'अन्-नह्युल अकीद अनिस सलाते वरा अदीइत तक़लीद' और रिसाला 'अल-कवाकिबुश शहाबिया अला कुफ़्रियाते अबिल वहाबिया' वग़ैरहुमा में मुलाहिज़ा कीजिए।

अफ़सोस कि इन शिर्क फ़रोश अंधों को इतना नहीं सूझता कि इल्म-ए-इलाही ज़ाती है और इल्म-ए-ख़ल्क़ अताई, वो वाजिब ये मुमकिन, वो क़दीम ये हादिस, वो नामख़लूक़ ये मख़लूक़, वो नामक़दूर ये मक़दूर, वो ज़रूरी-उल-बक़ा ये जाइज़-उल-फ़ना, वो मुमतनि-उत-तग़य्युर ये मुमकिन-उत-तबद्दल।

इन अज़ीम तफ़रुक़ों के बाद एहतेमाल-ए-शिर्क न होगा मगर किसी मजनून को, बसीरत के अंधे इस इल्म 'मा काना व मा यकून' ब-माना-ए-मज़कूर साबित जानने को मुआज़ल्लाह इल्म-ए-इलाही से मसावात मान लेना समझते हैं हालाँकि अज़मत अल्लाह के लिए है, इल्म-ए-इलाही तो इल्म-ए-इलाही है जिसमें ग़ैर-मुतनाही उलूम...

---

[1] मदारीजुन् नबुव्वत मुक़द्दमतुल किताब मकतबा नूरया रज़विया सक्खर 1/402 [2] फ़ुयूज़-उल-हरमैन मशहद अल्लाह तआला मख़लूक़ की तरफ़ किताब नाज़िल करने के लिए वक़्त किया करता है मोहम्मद सईद एंड संस कराची 169

पृष्ठ 501/750

من التحیات اتمہا وا کملہا- ۱ وواکمل سلام ہو۔ ت)

شاہ ولی اللہ دہلوی، فیوض الحرمین میں لکھتے ہیں:

فاض علیّ من جناب المقدّس صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم کیفیۃ ترق العبد من حیزہ الی حیز القدس فیتجلّٰی لہ حینئذ کلّ شئی کما اخبر عن ھذا المشھد فی قصّۃ المعراج المنامی - ۲

حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کی بارگاہِ اقدس سے مجھ پر اس حالت کا علم فائض ہوا کہ بندہ اپنے مقام سے مقام قدس تک کیونکر ترقی کرتا ہے کہ اس پر ہر چیز روشن ہو جاتی ہے جس طرح حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے اپنے اس مقام سے معراج خواب کے قصے میں خبر دی۔

قرآن وحدیث واقوالِ ائمہ حدیث سے اس مطلب پر دلائل بے شمار ہیں اور خدا انصاف دے تو یہی اقلِ قلیل کہ مذکور ہوئے بسیار ہوئے، غرض شمس وامس کی طرح روشن ہوا کہ عقیدہ مذکورہ زید کو معاذ اللہ کفر وشرک کہنا خود قرآن عظیم پر تہمت رکھنا اور احادیث صحیحہ صریحہ شہیرہ کثیرہ کو رد کرنا اور بہ کثرت ائمہ دین واکابر علمائے عاملین واعظم علمائے کاملین رضی اللہ تعالیٰ عنہم اجمعین، یہاں تک کہ شاہ ولی اللہ ، شاہ عبدالعزیز صاحب کو بھی عیاذاً باللہ کافر ومشرک بنانا اور بحکم ظواہر احادیث صحیحہ وروایاتِ معتمدہ فقیہہ خود کافر ومشرک بننا ہے اس کے متعلق احادیث وروایات واقوالِ ائمہ وترجیحات و تصریحات فقیر کے رسالہ النھی الاکید عن الصلوۃ وراء عدی التقلید ورسالہ الکواکبۃ الشھابیۃ علی کفریات ابی الوھابیہ وغیرہما میں ملاحظہ کیجئے۔

افسوس کہ ان شرک فروش اندھوں کو اتنا نہیں سوجھتا کہ علم الٰہی ذاتی ہے اور علم خلق عطائی، وہ واجب یہ ممکن، وہ قدیم یہ حادث، وہ نامخلوق یہ مخلوق وہ نامقدور یہ مقدور، وہ ضروری البقاء یہ جائز الفناء وہ ممتنع التغییر یہ ممکن التبدل۔ ان عظیم تفرقوں کے بعد احتمالِ شرک نہ ہوگا مگر کسی مجنون کو، بصیرت کے اندھے اس علم ماکان وما یکون بمعنی مذکور ثابت جاننے کو معاذ اللہ علم الٰہی سے مساوات مان لینا سمجھتے ہیں حالانکہ العظمۃ للہ علم الٰہی تو علم الٰہی جس میں غیر متناہی علوم

---

۱ مدارج النبوۃ مقدمۃ الکتاب مکتبہ نوریہ رضویہ سکھر ۱/ ۲ ۴۰۲ فیوض الحرمین مشہد اللہ تعالیٰ مخلوق کی طرف کتاب نازل کرنے کے لیے وقت کیا کرتا ہے محمد سعید اینڈ سنز کراچی ۱۶۹

Volume 29, Fatawa Razawiyya

Detailed, abundant, and actually existing infinite chains, or what could be called a cube of infinity in mathematical terms, exist eternally from pre-eternity to post-eternity. To know the detail of every atom from the East to the West, heavens and earth, from the Divine Throne to the ground, and everything that has happened and will happen from the first day to the last - in short, to encompass the details of all that is written on the Tablet (Lawh) and the hidden contents of the Pen (Qalam) - is but a small portion of the knowledge of Muhammad, the Messenger of Allah, peace and blessings of Allah be upon him and his family. This knowledge was granted to his brothers, the noble messengers, peace be upon them, and even through his bestowal, to his servants—some of the great saints (Awliya), may their secrets be sanctified—and it is still being received. In the Muhammadi sciences, there are vast, bottomless oceans upon which their total and absolute superiority is based.

Innumerable mercies of Allah Almighty be upon the greatest Imam, Muhammad Busiri, the Honor of Truth and Religion, mercy of Allah be upon him, who says in the noble Qasida Burda:

For truly, the world and its afterlife are among your generosity, and among your sciences is the knowledge of the Tablet and the Pen.

That is, O Messenger of Allah, peace and blessings of Allah be upon him and his family, both this world and the hereafter are but a fragment from the table of your generosity and benevolence. And all the knowledge of the Tablet and the Pen, including everything that has happened and will happen, is but a part of your knowledge, peace and blessings of Allah be upon him, his family, and companions.

Maulana Ali Qari, may the mercy of the Creator be upon him, says in 'Zubdat-ul-Sharh al-Burda':

(Arabic Text)	**(Urdu Translation)**
Its clarification is that the meaning of the knowledge of the Tablet is the holy inscriptions and unseen forms inscribed therein, and by the knowledge of the Pen is meant what Allah Almighty willed to deposit in it. The attribution of knowledge to both is due to a minimal connection, meaning the	That is, its explanation is that by 'knowledge of the Tablet' is meant the holy inscriptions and unseen forms which are inscribed in it, and by 'knowledge of the Pen' is meant those things which Allah Almighty, as He willed, deposited in it. The attribution

(Arabic Text)	(Urdu Translation)
locus of inscription and establishment, and that their knowledge is from his (the Prophet's) sciences, peace and blessings of Allah be upon him.	of knowledge to both is due to a minimal connection, meaning being the locus of inscription and establishment, and that...

Note: The knowledge of all that has passed and all that is to come is one (part) of the knowledge of the Prophet; this is even granted to his servants, the great saints, from his bestowal. -12 Minhu.

---

[1] Majmu' al-Mutun, Text of Qasida al-Burda, Religious Affairs, Doha, Qatar, p. 10. Page 502 of 750

जिल्द 29, फ़तावा रज़विया

विस्तृत, प्रचुर और वास्तव में मौजूद अनंत श्रृंखलाएं या जिसे गणितीय शब्दावली में अनंत का घन कहा जा सकता है, अनादि काल से अनंत काल तक वास्तव में और स्थायी रूप से मौजूद हैं। पूर्व से पश्चिम, आकाश और पृथ्वी, अर्श (सिंहासन) से फर्श (जमीन) तक और पहले दिन से लेकर अंतिम दिनों तक जो कुछ भी हुआ है और जो कुछ भी होगा, उसके हर कण के विवरण को विस्तार से जानना, संक्षेप में, 'लौह' (पट्टिका) पर लिखे गए सभी लेखों और 'कलम' की गुप्त बातों को विस्तार से समाहित करना, मुहम्मद अल्लाह के रसूल, अल्लाह उन पर और उनके परिवार पर कृपा और शांति बरसाए, के ज्ञान का एक छोटा सा हिस्सा है। यह ज्ञान उनके भाइयों, महान पैगंबरों (सलाम हो उन पर) को दिया गया, बल्कि उनकी अता से उनके दासों—महान सूफी संतों (अवलिया), अल्लाह उनके रहस्यों को पवित्र करे—को भी मिला और अभी भी मिल रहा है। मुहम्मदी विज्ञान में वे अथाह और असीम समुद्र हैं जिन पर उनकी पूर्ण और निरपेक्ष श्रेष्ठता आधारित है।

अल्लाह अज़्ज़वजल की अनगिनत रहमतें महान इमाम मुहम्मद बुसीरी शरफ-उल-हक़ व-दीन (अल्लाह उन पर रहमत करे) पर हों, जो क़सीदा बुर्दा शरीफ़ में फ़रमाते हैं:

बेशक दुनिया और उसकी आख़िरत आपकी सखावत में से है, और लौह व कलम का इल्म आपके उलूम *(ज्ञान)* में से है।

यानी ऐ अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम), दुनिया और आख़िरत दोनों हुज़ूर के जूद व करम के दस्तरख़्वान से एक टुकड़ा हैं, और लौह व कलम का तमाम इल्म जिसमें 'मा कान व मा यकून' (जो हो चुका और जो होगा) शामिल है, हुज़ूर के उलूम में से एक हिस्सा है (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)।

मौलाना अली क़ारी (अल्लाह की उन पर रहमत हो) 'जुबदतुश शरह अल-बुर्दा' में फ़रमाते हैं:

(अरबी पाठ)	**(उर्दू अनुवाद)**
इसकी तौज़ीह यह है कि इल्म-ए-लौह से मुराद वे पवित्र नक़्श और अदृश्य चित्र हैं जो उसमें अंकित हुए, और इल्म-ए-कलम से मुराद वे हैं जो अल्लाह अज़्ज़वजल ने जिस तरह चाहा उसमें अमानत रखे।	यानी इसकी तौज़ीह (स्पष्टीकरण) यह है कि 'इल्म-ए-लौह' से मुराद वे पवित्र नक़्श और अदृश्य चित्र हैं जो उसमें अंकित हुए, और 'इल्म-ए-क़लम' से मुराद वे हैं जो अल्लाह

(अरबी पाठ)

इन दोनों की तरफ इल्म का जुड़ाव मामूली संबंध के कारण है, यानी नक़्श और स्थापना का स्थान होने के कारण, और यह कि उनका इल्म हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के उलूम में से है।

(उर्दू अनुवाद)

अज़्ज़वजल ने जिस तरह चाहा उसमें अमानत रखे। इन दोनों की तरफ़ इल्म का जुड़ाव मामूली संबंध के कारण है, यानी नक़्श और स्थापना का स्थान होने के कारण, और यह कि...

नोट: तमाम 'मा कान व मा यकून' का इल्म हुज़ूर के उलूम में से एक इल्म है, यह तो उनकी अता से उनके दासों, बड़े औलिया को भी मिलता है। -12 मिन्हु।

---

[1] मजमू अल-मुतून, मतन क़सीदा अल-बुर्दा, धार्मिक मामले, दोहा कतर, पृष्ठ 10। पेज 502 of 750

تفصیلی فراوانی بالفعل کے غیر متناہی سلسلے غیر متناہی یا وہ جسے گویا مصطلح حساب کے طور پر غیر متناہی کا مکعب کہئے بالفعل وبالدوام ازلاً ابداً موجود ہیں۔ یہ شرق تا غرب و سماوات وارض و عرش تا فرش و ماکان و مایکون من اوّل یوم الی آخر الایام سب کے ذرے ذرے کا حال تفصیل سے جاننا وہ بالجملہ جملہ مکتوبات لوح و مکنونات قلم کو تفصیلاً محیط ہونا علومِ محمد رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم سے ایک چھوٹا سا ٹکڑا ہے، یہ تو ان کے بھائیوں حضرات مرسلین، کرام علیہ وعلیہم افضل الصلوۃ واکمل السلام بلکہ ان کی عطا سے ان کے غلاموں ف بعض اعاظم اولیائے عظام قدست اسرارہم کو ملا، اور ملتا ہے ہنوز علومِ محمدیہ میں وہ بحار زخار ناپید کنار ہیں جن پر ان کی افضیلت کلیہ اور افضیلت مطلقہ کی بناء ہے۔

اللہ عزوجل کے بے شمار رحمتیں امام اجل محمد بوصیری شرف الحق والدین رحمۃ اللہ علیہ پر قصیدہ بردہ شریف میں فرماتے ہیں۔

فإنّ من جودك الدّنیا وضرّتها ۱ ومن علومك علم اللّوح والقلم ۱

یعنی یا رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم دنیا وآخرت دونوں حضور کے خوانِ جود و کرم سے ایک ٹکڑا ہیں اور لوح و قلم کا تمام علم جن میں ماکان و مایکون مندرج ہے حضور کے علوم سے ایک حصہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم وعلی آلہ وصحبہ وبارک وسلم

مولانا علی قاری علیہ الرحمۃ الباری زبدہ شرح بردہ میں فرماتے ہیں:

| توضیحه ان المراد بعلم اللوح ما اثبت فیه من النقوش القدسیة و الصور الغیبیة وبعلم القلم ما اثبت فیه کما شاء والا ضافة لادنی ملابسة وکون علمهما من علومه صلی الله تعالی علیه وسلم | یعنی توضیح

اس کی یہ ہے کہ علم لوح سے مراد نقوشِ قدس وصورِ غیب ہیں جو اس میں منقوش ہوئے، اور قلم کے علم سے مراد وہ ہیں جو اللہ عزوجل نے جس طرح چاہا اس میں ودیعت رکھے، ان دونوں کی طرف علم کی اضافت ادنیٰ علاقے یعنی محلیت نقش واثبات کے باعث ہے اور ان |

ف: تمام ماکان ومایکون کا علم علومِ حضور سے ایک علم ہے، یہ تو ان کی عطا سے ان کے غلاموں اکابر اولیاء کو بھی ملتا ہے ۱۲منہ۔

Fatawa Ridawiyyah, Volume 29

Indeed, his sciences diversify into universals and particulars, and truths, cognitions, and conditions relating to the Essence and the Attributes, and the knowledge of them (Lauh and Qalam) is but a line from the lines of his knowledge and a river from the seas of his knowledge. Then, with all this, it is from the blessing of his existence, may Allah Almighty bless him and grant him peace[1]. [Urdu explanation]: Whatever sciences are inscribed in both of them (the Tablet and the Pen), their knowledge is but a portion of the sciences of Muhammad (peace and blessings of Allah be upon him). This is because the sciences of the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) are of many types: universal sciences, particular sciences, sciences of the realities of things, and sciences of hidden secrets. And those sciences and cognitions that relate to the Essence and Attributes of the Almighty (Glory be to Him) and the entire sciences of the Tablet and the Pen are one line from the lines of the Muhammadi sciences, and one river from their oceans. Then, despite all this, they exist only through the blessing of his existence. If the Holy Prophet were not there, there would be neither the Tablet nor the Pen, nor their sciences. May Allah Almighty bless him, his family, and companions and grant them peace.

The rejectors are distressed that for Muhammad, the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him and his family), a detailed knowledge of all that was and all that will be (ma kana wa ma yakun) from the first day until the Day of Resurrection is accepted. However, by the grace of Allah Almighty, all that knowledge of 'ma kana wa ma yakun' is considered but a river from the great oceans of the sciences of Muhammad, the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him and his family), or rather a wave from the bottomless waves.

And all praise is for Allah, the Lord of the worlds. And there the followers of falsehood suffered loss. In their hearts is a disease, so Allah has increased their disease. And it was said: Away with the unjust people! [Urdu explanation]: And all praise is for Allah, who is the Sustainer of all the worlds. And the people of falsehood are in loss there. There is a disease in their hearts, so Allah increased their disease, and it was said, "May the unjust people be far away." (T)

Texts of Exclusivity: Meaning, the verses and hadiths which state that the knowledge of the Unseen (Ghaib) is a specific attribute of God Almighty, and no one knows it except the Almighty (Mawla Azza wa Jall), are absolutely true and, by the grace of Allah Almighty, are part of a Muslim's faith. However, the arrogant rejector's

reasoning from them for his false claim, and based on that, [denying] the knowledge of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) regarding 'ma kana wa ma yakun' in the sense of...

[1] Az-Zubdat al-'Umdah fi Sharh al-Burdah, Publisher: Jam'iyyat 'Ulama' Sikandariyah, Khairpur, Sindh, p. 171.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 29

निश्चय ही, उनके ज्ञान कई प्रकार के हैं, जिनमें सार्वभौमिक (कुल्लियात) और विशिष्ट (जुज़इयात), और वास्तविकताएं पहचान और गुण जो स्व (ज़ात) और विशेषताओं (सिफ़ात) से संबंधित हैं, शामिल हैं। और उन दोनों (लौह और कलम) का ज्ञान उनके ज्ञान की पंक्तियों में से एक पंक्ति और उनके ज्ञान के समुद्रों में से एक नदी मात्र है। फिर इन सबके साथ, यह उनके अस्तित्व की बरकत से है, अल्लाह तआला उन पर कृपा और शांति बरसाए।[1] [उर्दू व्याख्या]: उन दोनों में जितना भी ज्ञान अंकित है, वह मोहम्मदी ज्ञान (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का एक हिस्सा है, क्योंकि हुज़ूर अकदस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के ज्ञान कई प्रकार के हैं: समग्र ज्ञान, विशिष्ट ज्ञान, वस्तुओं की वास्तविकता का ज्ञान और गुप्त रहस्यों का ज्ञान। और वे ज्ञान और पहचान जो महामहिम अल्लाह की ज़ात और सिफ़ात से संबंधित हैं, और लौह और कलम के समस्त ज्ञान मोहम्मदी ज्ञान की पंक्तियों में से एक पंक्ति और उनके समुद्रों में से एक नदी हैं। फिर भी, वे हुज़ूर ही के अस्तित्व की बरकत से हैं। यदि हुज़ूर न होते, तो न लौह और कलम होते और न उनका ज्ञान। अल्लाह तआला उन पर, उनके परिवार और साथियों पर कृपा और शांति बरसाए।

विरोधियों को इस बात का दुख है कि मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के लिए सृष्टि के पहले दिन से कयामत तक की समस्त 'मा काना व मा यकून' (जो हो चुका और जो होगा) का विस्तृत ज्ञान माना जाता है। लेकिन अल्लाह तआला के फ़ज़ल से, वह समस्त 'मा काना व मा यकून' का ज्ञान मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के ज्ञान के विशाल समुद्रों में से एक नदी, बल्कि असीम लहरों में से एक लहर मात्र है।

और समस्त प्रशंसा अल्लाह के लिए है जो समस्त संसारों का रब है। और वहाँ बातिल (झूठ) वाले घाटे में रहे। उनके दिलों में बीमारी है, तो अल्लाह ने उनकी बीमारी और बढ़ा दी। और कहा गया कि ज़ालिम लोग दूर हों। [उर्दू व्याख्या]: और तमाम तारीफें अल्लाह के लिए हैं जो तमाम जहानों का पालने वाला है। और बातिल वालों का वहाँ नुकसान है। उनके दिलों में बीमारी है, तो अल्लाह ने उनकी बीमारी और बढ़ा दी और कहा गया कि बेइंसाफ लोग दूर हों। (त)

नुसूस-ए-हसर (अनन्यता के प्रमाण): अर्थात् जिन आयतों और हदीसों में यह कहा गया है कि ग़ैब का ज्ञान अल्लाह तआला की विशेषता है, मौला अज़्वजल के सिवा कोई नहीं जानता, वे बिल्कुल सत्य हैं और अल्लाह तआला के फ़ज़ल से मुसलमान के ईमान का हिस्सा हैं। लेकिन घमंडी मुनकिर (इनकार

करने वाला) का अपने झूठे दावे के लिए उनसे दलील लेना और उसके आधार पर हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के'मा काना व मा यकून' के ज्ञान के बारे में...

[1] अज़-ज़ुबदतुल उम्दा फी शरहिल बुरदा, प्रकाशक: जमीअत उलेमा-ए-सिकंदरिया, खैरपुर सिंध, पृष्ठ 171।

انّ علومہ تتنوع الی الکلیات والجزئیات وحقائق ومعارف وعوارف تتعلق بالذات والصفات وعلمھما انما یکون سطرا من سطور علمہ ونھرا من بحور علمہ ثم مع ھذا ھو من برکۃ وجودہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم[1] دونوں میں جس قدر علوم ثبت ہیں ان کا علم علوم محمدیہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم سے ایک پارہ ہونا، اس لیے کہ حضور اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کے علوم بہت اقسام کے ہیں، علوم کلیہ، علوم جزئیہ، علوم حقائق اشیاء و علوم اسرار خفیہ اور وہ علوم اور معرفتیں کہ ذات و صفات حضرت عزت جل جلالہ سے متعلق ہیں اور لوح و قلم کے جملہ علوم علوم محمدیہ کی سطروں سے ایک سطر، اور ان کے دریاؤں سے ایک نہر ہیں، پھر بہ ایں ہمہ وہ حضور ہی کی برکت وجود سے تو ہیں۔ کہ اگر حضور نہ ہوتے تو نہ لوح و قلم ہوتے نہ اُن کے علوم، صلی اللہ تعالٰی علیہ وآلہ وصحبہ وبارک وسلم۔

منکرین کو صدمہ ہے کہ محمد رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وآلہ وسلم کے لیے روز اول سے قیامت تک کے تمام ماکان ومایکون کا علم تفصیلی مانا جاتا ہے لیکن بحمداللہ تعالٰی وہ جمیع علم ماکان ومایکون علوم محمد رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وآلہ وسلم کے عظیم سمندروں سے ایک نہر بلکہ بے پایاں موجوں سے ایک لہر قرار پاتا ہے۔

والحمد للہ رب العلمین ہ وخسر ھنالك المبطلون ہ فی قلوبھم مرض فزادھم اللہ مرضا، وقیل بُعداً للقوم الظلمین ہ اور تمام تعریفیں اللہ کے لیے ہیں جو پروردگار ہے تمام جہانوں کا اور باطل والوں کا وہاں خسارہ ہے، ان کے دلوں میں بیماری ہے تو اللہ نے ان کی بیماری اور بڑھائی اور فرمایا گیا کہ دور ہوں بے انصاف لوگ (ت)

نصوص حصر: یعنی جن آیات واحادیث میں ارشاد ہوا ہے کہ علم غیب خاصہ خدا تعالیٰ ہے، مولیٰ عزوجل کے سوا کوئی نہیں جانتا، قطعاً حق اور بحمد اللہ تعالیٰ مسلمان کے ایمان ہیں مگر منکر متکبر کا اپنے دعوائے باطلہ پر ان سے استدلال اور اس کی بنا پر حضور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے علم ماکان ومایکون بمعنی۔

[1] الزبدة العمدة فی شرح البردة ناشر جمعیت علماء سکندریہ خیر پور سندھ ص ۱۷۱

To believe in the aforementioned is to decree kuf'r (infidelity) and misguidance, sheer madness and raw thought, rather it is itself necessary for kuf'r and misguidance. Knowledge, in terms of its origin, is of two types: 'Zati' (inherent), which is from one's own essence without being given by anyone, and 'Ata'i' (bestowed), which is a gift from Allah Almighty. In terms of its object, it is also of two types: 'Ilm-e-Mutlaq' (Absolute Knowledge), meaning encompassing and actual detailed knowledge where in an infinite set of knowns, all chains are also infinite and also non-encompassing but within the essence of God and encompassing all eternal divine attributes, including every individual, and 'Mutlaq-e-Ilm' (General Knowledge), meaning to know something, even if it is not encompassing or actual. In these divisions, inherent knowledge and absolute knowledge are exclusively for Allah Almighty, and no one else besides God is even a claimant to their acquisition. We have just stated that the knowledge of 'ma kana wa ma yakun' (what was and what will be), even in a detailed way, by the most perfect and complete method, which is the breadth of the Muhammadi knowledge, does not reach the divine knowledge. Then the Muhammadi knowledge, God forbid, is never exclusive to Allah Almighty, but being of the 'Ata'i' (bestowed) type, it is specific to the creation. Since the bestowed knowledge of the Lord Almighty is free from being limited, the intended meaning of 'hasr' (limitation) in the texts must certainly be the first type, not the latter type. And it is clear as day that the knowledge of the details of all particles of 'ma kana wa ma yakun' mentioned above is hundreds of thousands of times greater than the knowledge which is considered to be of the 'Ata'i' type from the latter category. So, if the texts of 'hasr' are contrary to the claim, it wouldn't be at all, rather it is a clear ignorance of the texts. And praise be to Allah, this meaning is itself clear and evident, the Imams of the religion have also explicitly stated it. The most noble Imam Abu Zakariya Nawawi, may Allah have mercy on him, then Imam Ibn Hajar Makki, may Allah have mercy on him, say in their Fatawa Hadithiyya:

لايعلم ذلك استقلالاً وعلم احاطةٍ بكل المعلومات الا الله تعالى اما المعجزات والكرامات فباعلام الله تعالى لهم علمت وكذا ما عُلم باجراء العادة[1]۔	That is, in the verse, the negation of the knowledge of the unseen from other than God means that knowing the unseen from one's own self without being told by anyone, and such knowledge that encompasses all divine information, belongs to no one except Allah Almighty. As for the miracles of the Prophets and the wonders of the Saints, they obtained knowledge of them through the informing of Allah Almighty; similarly, those things that are known in accordance with custom.

[1] Fatawa Hadithiyya, chapter on the ruling if someone says 'so-and-so knows the unseen', Mustafa al-Babi Egypt, p. 228.

उपर्युक्त को मानने वाले पर कुफ़्र और गुमराह होने का हुक्म है, यह सरासर पागलपन और कच्चा ख्याल है, बल्कि यह स्वयं कुफ़्र और गुमराही को आवश्यक बनाता है। ज्ञान, अपने स्रोत के आधार पर, दो प्रकार का है: 'ज़ाती' (स्वयं का), जो बिना किसी के दिए अपनी सत्ता से हो, और 'अताई' (प्रदत्त), जो अल्लाह सर्वशक्तिमान का उपहार हो। और अपने उद्देश्य के आधार पर भी दो प्रकार का है: 'इल्म-ए-मुतलक' (निरपेक्ष ज्ञान), यानी व्यापक और वास्तविक विस्तृत ज्ञान जिसमें अनंत ज्ञेय चीजों में अनंत श्रृंखलाएं हों और वह भी बिना अंत के, बल्कि स्वयं ईश्वरीय सत्ता में समाहित और सभी शाश्वत दैवीय गुणों को घेरे हुए, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति व्यक्तिगत रूप से शामिल हो, और 'मुतलक-ए-इल्म' (सामान्य ज्ञान), यानी कुछ जानना, चाहे वह व्यापक या वास्तविक न हो। इन विभाजनों में ज़ाती ज्ञान और मुतलक ज्ञान बिना किसी संदेह के अल्लाह सर्वशक्तिमान के लिए विशिष्ट हैं और ईश्वर के अलावा कोई भी इनके प्राप्त करने का दावा करने वाला नहीं है। हमने अभी बताया कि 'मा काना वा मा याकूँ (जो हो चुका और जो होगा) का ज्ञान, भले ही विस्तृत रूप से सबसे पूर्ण और श्रेष्ठ तरीके से हो, जो मुहम्मदी ज्ञान की विशालता है, वह ईश्वरीय ज्ञान तक नहीं पहुँचता। फिर मुहम्मदी ज्ञान, ईश्वर न करे, कभी भी अल्लाह सर्वशक्तिमान के लिए विशिष्ट नहीं है, बल्कि अताई (प्रदत्त) श्रेणी का होने के कारण सृष्टि के साथ विशिष्ट है। चूंकि भगवान सर्वशक्तिमान का अताई ज्ञान सीमित होने से मुक्त है, तो ग्रंथों में 'हस्र' (सीमा) का अर्थ निश्चित रूप से पहला प्रकार ही हो सकता है, बाद वाला प्रकार नहीं। और यह दिन के उजाले की तरह स्पष्ट है कि ऊपर वर्णित 'मा काना वा मा याकूँ के सभी कणों के विवरण का ज्ञान उस ज्ञान से लाखों गुना अधिक है जिसे बाद वाली श्रेणी से अताई माना जाएगा। तो अगर हस्र के ग्रंथ दावे के विपरीत हों, तो यह बिल्कुल नहीं होगा बल्कि यह ग्रंथों की स्पष्ट अज्ञानता है। और अल्लाह का शुक्र है, यह अर्थ अपने आप में स्पष्ट है, धर्म के इमामों ने भी इसकी स्पष्ट व्याख्या की है। सबसे महान इमाम अबू ज़कारिया नववी, अल्लाह उन पर दया करे, फिर इमाम इब्न हजर मक्की, अल्लाह उन पर दया करे, अपने फ़तावा हदीथिया में कहते हैं:

لايعلم ذلك استقلالاً وعلم احاطةٍ بكل المعلومات الا الله تعالى اما المعجزات والكرامات فباعلام الله تعالى لهم علمت وكذا ما عُلم باجراء العادة[1]۔	**अर्थात् आयत में ईश्वर के अतिरिक्त अन्य से गैब (परोक्ष) के ज्ञान के निषेध का अर्थ यह है कि बिना किसी के बताए अपनी स्वयं की सत्ता से गैब को जानना, और ऐसा ज्ञान जो अल्लाह की समस्त जानकारी को घेर ले, यह अल्लाह तआला के सिवा किसी के पास नहीं है। नबियों के मोजिज़े और वलियों की करामातें तो अल्लाह अज़्ज़वजल के बताने से उन्हें मालूम हुईं, इसी तरह वे बातें जो सामान्य अभ्यास के अनुसार मालूम होती हैं।**

[1] फ़तावा हदीथिया, अध्याय: उस व्यक्ति के हुक्म के बारे में जो कहे कि 'अमुक गैब जानता है', मुस्तफा अल-बाबी मिस्र, पृ. 228।

مذکور ماننے والے پر حکم کفر و ضلال، نص جنون و خام خیال بلکہ خود مستلزم کفر و ضلال ہے۔ علم بہ اعتبار منشاء ۲ قسم ہے: ذاتی کہ اپنی ذات سے بے عطائے غیر ہو، اور عطائی کہ اللہ عزوجل کا عطیہ ہو، اور بہ اعتبار متعلق بھی دو قسم ہے، علم مطلق یعنی محیط حقیقی، تفصیلی فعلی فروانی کہ جمیع معلومات الٰہیہ کو جن میں غیر متناہی معلومات کے سلاسل وہ بھی غیر متناہیہ وہ بھی غیر متناہی بار داخل اور خود کنہ ذات الٰہی و احاطہ تام صفات الٰہیہ نامتناہی سب کو شامل فرداً فرداً تفصیلیلاً مستغرق ہو اور مطلق علم یعنی جاننا، اگر محیط باحاطہ حقیقیہ نہ ہو، ان تقسیمات میں علم ذاتی و علم مطلق یعنی مذکور بلاشبہ اللہ عزوجل کے لیے خاص ہیں اور ہرگز کسی غیر خدا کے لیے ان کے حصول کا کوئی بھی قائل نہیں ہے۔ ہم ابھی بیان کر آئے کہ علم ماکان وما یکون بمعنی مسطور اگرچہ کیسا ہی تفصیلی بوجہ اتم واکمل ہو علوم محمدیہ کی وسعت عظیمہ کو نہیں پہنچتا، پھر علوم محمدیہ تو علوم الٰہیہ ہیں، جل وعلا وصلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم، مطلق علم ہرگز حضرت حق عزوعلا سے خاص نہیں بلکہ قسم عطائی تو مخلوق ہی کے ساتھ خاص ہے۔ مولٰی عزوجل کا علم عطائی ہونے سے پاک ہے، تو نصوص حصر میں یقیناً قطعاً وہی قسم اول مراد ہوسکتی ہے۔ نہ کہ قسم اخیر، اور بداہۃً ظاہر کہ علم تفصیل جملہ ذرات ماکان و مایکون مزبور بلکہ اس سے ہزار در ہزار ہزار در ہزار افزوں علم بھی کہ بہ عطائے الٰہی مانا جائے اسی قسم اخیر سے ہوگا۔ تو نصوص حصر کو مدعائے مخالف سے اصلاً مس نہیں بلکہ وہ اس کی صریح جہالت پر نص ہیں، وللہ الحمد، یہ معنٰی بآنکہ خود بدیہی و واضح ہے، آئمہ دین نے اس کی تصریح بھی فرمائی۔ امام اجل ابوزکریا نووی رحمتہ اللہ علیہ اپنے فتاوٰی پھر امام ابن حجر مکی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ اپنے فتاوٰی حدیثیہ میں فرماتے ہیں:

یعنی آیت میں غیرِ خدا سے نفیِ علمِ غیب کے یہ معنی ہیں کہ غیب اپنی ذات سے بے کسی کے بتائے جاننا اور ایسا علم کہ جمیع معلومات الٰہیہ کو محیط ہو جائے یہ اللہ تعالیٰ کے سوا کسی کو نہیں رہے انبیاء کے معجزات اور اولیاء یہ تو اللہ عزوجل کے بتانے سے انہیں علم ہوا ہے یونہی وہ باتیں کہ عادت کی مطابقت سے جن کا علم ہوتا ہے۔

لایعلم ذلك استقلالاً وعلم احاطةٍ بكل المعلومات الا الله تعالى اما المعجزات والكرامات فباعلام الله تعالى لهم علمت وكذا ما عُلم باجراء العادة[1]۔

[1] فتاویٰ حدیثیہ مطلب فی حکم ما اذا قال قائل فلان یعلم الغیب مصطفی البابی مصر ص ۲۲۸

Fatawa Razawiyyah, Volume 29

The reasoning of the opponents has been revealed to be purely false and an impossible notion right here. However, the humble author has proven in his treatises that this reasoning is a badge of their own self-confessed disbelief and misguidance. Furthermore, it has been clarified therein that the ruling of disbelief by the jurists (Fuqaha) for claiming knowledge of the unseen (Ghaib) for the creation is, in the first degree of truth, specific to inherent/personal knowledge (Ilm-e-Zati), and in the second degree of the jurists' method, it is specific to absolute knowledge (Ilm-e-Mutlaq) with the mentioned meaning, as stipulated in the discourse of the researchers.

The rejected assumption of Bakar's deception, in which he used the impure word "Fa" regarding the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him), saying he knows nothing, is also an insolent word of disbelief and misguidance. The belief which Bakar labeled as disbelief and polytheism, and in refutation of which he uttered this ill-fated word, itself contains the clarification that the Lord (Allah) has bestowed this knowledge upon the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him). Necessarily, this absolute negation by Bakar also includes bestowed knowledge (Ilm-e-Ata'i). And relying on the statement of some human devils is clear evidence for this teaching, that in this statement, whether in one way or the other, the ruling of polytheism is given in both cases. Now, what hesitation can there be in this foul word being an explicit word of disbelief? It is a denial of the clear verses of the Great Quran, rather a denial of the entire Quran, a denial of the messengership of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him), rather a denial of the prophethood of all prophets, a belittling of the status of the Master of the Universe (peace and blessings of Allah be upon him), rather an insult to the majesty of the Lord of Honor. If there were one or two disbeliefs, they could be counted. We seek refuge with Allah, the Lord of the worlds.

Similarly, his statement that [the Prophet] did not even know the state of his own end is an explicit word of disbelief and loss, and a denial of countless Quranic verses and continuous (mutawatir) hadiths. Consider the blessed verse "li-yaghfira laka Allah..." along with the Sahih hadiths of Bukhari and Muslim. Listen to some more; Allah the Almighty said:

Verse	Translation
"And your Lord is going to give you, and you will be satisfied."[1]	O Prophet! Indeed, the Hereafter is better for you than the world.

And Allah the Almighty said:

Verse	Translation
"And indeed, the Hereafter is better for you than the first [life]."[2]	Indeed, it is near that your Lord will bestow upon you so much that you will be satisfied.

Note: Not believing that the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) knew the state of his end is explicit disbelief.

[1] The Holy Quran 93/4 [2] The Holy Quran 93/5

फ़तावा रज़विया, जिल्द 29

विरोधियों का तर्क पूरी तरह से बातिल (असत्य) और असम्भव होना यहीं से स्पष्ट हो गया है, किन्तु फ़कीर (लेखक) ने अपने शोधपत्रों में यह सिद्ध किया है कि यह तर्क उन गुमराहों के स्वयं के स्वीकृत कुफ्र और भटकाव का प्रतीक है। साथ ही, उनमें यह भी स्पष्ट किया गया है कि सृष्टि के लिए इल्म-ए-ग़ैब (परोक्ष ज्ञान) का दावा करने पर फुक़हा (विधिवेत्ताओं) का कुफ्र का हुक्म मुख्य रूप से 'इल्म-ए-ज़ाती' (निजी ज्ञान) की स्थिति में है, और फुक़हा के दूसरे तरीके के अनुसार, यह बताए गए अर्थ के साथ 'इल्म-ए-मुतलक' (निरपेक्ष ज्ञान) के लिए विशिष्ट है, जैसा कि शोधकर्ताओं के विमर्श में सप्रमाण उल्लेखित है।

बकर का वह अस्वीकृत धोखे का गुमान जिसमें उसने हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के बारे में 'फ़ा' (तो) का अपवित्र शब्द इस्तेमाल किया कि वे कुछ नहीं जानते, वह भी कुफ्र और खुले भटकाव का शब्द है। बकर ने जिस अकीदे (आस्था) को कुफ्र और शिर्क कहा और उसके खंडन में यह बुरा शब्द बोला, उसमें स्वयं यह स्पष्ट रूप से स्वीकार किया गया है कि रसूले करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को अल्लाह तआला ने यह ज्ञान प्रदान किया है। परिणामत; बकर का यह पूर्ण निषेध 'इल्म-ए-अताई' (प्रदत्त ज्ञान) को भी सम्मिलित करता है। और कुछ इंसानी शैतानों के कथन पर भरोसा करना भी इस शिक्षा पर एक स्पष्ट प्रमाण है कि इस कथन में चाहे इस तरह हो या उस तरह, दोनों ही स्थितियों में शिर्क का हुक्म दिया गया है। अब इस घृणित शब्द के स्पष्ट कुफ्र होने में क्या संकोच हो सकता है? यह कुरआन अज़ीम की स्पष्ट आयतों का खंडन है, बल्कि पूरे कुरआन का खंडन है, नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के संदेश (रिसालत) का इनकार है, बल्कि तमाम नबियों की नबूवत का इनकार है, सैय्यदे आलम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की शान में कमी करना है बल्कि रब्बुल इज़्ज़त की शान की तौहीन है। यदि एक-दो कुफ्र होते तो गिने जाते। अल्लाह रब्बुल आलमीन की पनाह।

इसी तरह उसका यह कहना कि उन्हें [नबी को] अपने अंत का भी हाल मालूम न था, कुफ्र और घाटे का स्पष्ट शब्द है और अनगिनत कुरआन की आयतों और मुतवातिर हदीसों का इनकार है। आयत-ए-करीमा "लियग़्फ़िरा लका अल्लाहु..." और बुखारी व मुस्लिम की सहीह हदीसों के साथ, कुछ और सुनिए; अल्लाह तआला ने फरमाया:

आयत	अनुवाद

"व ल सौफ़ युअतीक रब्बुक फ़-तरज़ा"[1] ऐ नबी! बेशक आख़िरत तुम्हारे लिए दुनिया से बेहतर है।

और अल्लाह तआला ने फरमाया:

आयत	अनुवाद
"व लल आख़िरतु ख़ैरुल लका मिनल ऊला"[2]	बेशक नज़दीक है कि तुम्हारा रब्ब तुम्हें इतना अता फरमाएगा कि तुम राज़ी हो जाओगे।

फ़ (नोट): अपने अंत का हाल हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को मालूम न मानना स्पष्ट कुफ्र है।

[1] अल-कुरआन अल-करीम 93/4 [2] अल-कुरआन अल-करीम 93/5

مخالفین کا استدلال محض باطل و خے ال محال ہونا تو یہیں سے ظاہر ہو گیا ، مگر فقیر نے اپنے رسائل میں ثابت کیا ہے کہ یہ استدلال ان ضلال کے خود اقراری کفر و ضلال کا تمغہ ہے ، نیز انہیں میں روشن کیا کہ خلق کے لیے ادعائے علم غیب پر فقہا کا حکم کفر بھی درجہ اولائے حقیقت حق میں اسی صورت علم ذاتی اور درجہ اخرائے طرزِ فقہاء میں علم مطلق بمعنیٰ مرقوم کے ساتھ مخصوص ہے ، جیسا کہ محققین کے کلام میں منصوص ہے۔

بکر پر مکر کا وہ زعم مردود جس میں حضور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کی نسبت کچھ نہیں جانتے ف کا لفظ نا پاک ہے وہ بھی کلمہ کفر و ضلال بیباک ہے بکر نے جس عقیدے کو کفر و شرک کہا اور اس کے رد میں یہ کلمہ بدفر جام بکا، خود اس میں تصریح ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کو حضرت حق جل شانہ نے یہ علم عطا فرمایا ہے ، لاجرم بکر کی یہ نفی مطلق شامل علم عطائی بھی ہے اور خود بعض شیاطین الانس کے قول سے استناد بھی اس تعلیم پر دلیل جلی ہے کہ اس قول میں خواہ یوں اور خواہ یوں ، دونوں صورت پر حکم شرک دیا ہے ، اب اس لفظ قبیح کے کلمہ کفر صریح ہونے میں کیا تامل ہو سکتا ہے۔ قرآن عظیم کی روشن آیتوں کی تکذیب بلکہ سارے قرآن کی تکذیب رسالت نبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کا انکار بلکہ نبوت تمام انبیاء کا انکار، سید عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کی تنقیص مکان بلکہ رب العزۃ جلالہ کی توہین شان ، ایک دو کفر ہوں تو گنے جائیں۔ والعیاذ باللہ رب العالمین۔

یوں ہی اس کا قول کہ اپنے خاتمے کا بھی حال معلوم نہ تھا صریح کلمۂ کفر و خسار اور بیشمار آیات قرآنیہ و احادیث متواترہ کا انکار ہے۔ آیہ کریمہ لیغفر لک اللہ مع حدیث صحیحین بخاری و مسلم ، بعض اور سنئے ، قال اللہ تعالیٰ (اللہ تعالیٰ نے فرمایا۔ ت):

آیت	ترجمہ
"وَلَسَوْفَ يُعْطِيكَ رَبُّكَ فَتَرْضَىٰ" 1	اے نبی ! بے شک آخرت تمہارے لیے دنیا سے بہتر ہے۔

وقال اللہ تعالیٰ (اللہ تعالیٰ نے فرمایا۔ت):

آیت	ترجمہ
"وَلَلْآخِرَةُ خَيْرٌ لَّكَ مِنَ الْأُولَىٰ" 2	بے شک نزدیک ہے کہ تمہارا رب تمہیں اتنا عطا فرمائے گا کہ تم راضی ہو جاؤ گے۔

ف: اپنے خاتمے کا حال حضور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کو معلوم نہ ماننا صریح کفر ہے۔

1 القرآن الکریم ۹۳/ ۴ 2 القرآن الکریم ۹۳/ ۵

Fatawa Rizvia, Volume 29

And Allah Almighty said (Allah the Most High said - T): "On the day when Allah will not disgrace the Prophet and those who believed with him. Their light will run before them and on their right." [1] Translation: On the day when Allah will not disgrace the Prophet and his companions, their light will be running in front of them and to their right.

And Allah Almighty said (Allah the Most High said - T): "It may be that your Lord will raise you to a praised position (Maqam-e-Mahmud)." [2] Translation: It is near that your Lord will send you to a place of praise where the first and the last ones will all praise you.

And Allah Almighty said (And Allah the Most High said - T): "Blessed is He who, if He willed, could have made for you better than that - gardens under which rivers flow - and could have made for you palaces." [3] Translation: Greatly blessed is He who, by His will, has made for you better things than this treasure and garden (which these disbelievers are seeking) - gardens under which rivers flow, and He will grant you high palaces in the highest paradise.

According to the nominative recitation (Marfu'), which is the recitation of Ibn Kathir and Ibn 'Amir, and the narration of Abu Bakr from 'Asim, there are many other verses like this. (T) [Explanation of the Arabic text: Based on the reading of 'Yaj'al' in the nominative case, which is the recitation of Ibn Kathir and Ibn Amir, and this is the narration of Abu Bakr from Asim...]

And in the noble Hadiths, the grand detail in which the virtues and special characteristics of the Holy Presence (Prophet Muhammad) ﷺ are mentioned regarding the time of his blessed death, the pure Barzakh, the luminous Resurrection, intercession, Kawthar, the supreme caliphate, the great leadership, entry into Paradise, seeing (Allah), and others—if they were to be collected, it would make a long registry. Here only...

Note (عـ): will run. 12

[1] The Holy Quran 66/8 [2] The Holy Quran 17/79 [3] The Holy Quran 25/10

फ़तावा रिज़विया, जिल्द 29

और अल्लाह तआला ने फ़रमाया (अल्लाह तआला ने फ़रमाया - त): "जिस दिन अल्लाह रुस्वा न करेगा नबी और उन लोगों को जो उनके साथ ईमान लाए। उनका नूर उनके आगे और उनके दाहिने तरफ़ दौड़ेगा।" [1] अनुवाद: जिस दिन अल्लाह रुस्वा न करेगा नबी और उनके सहाबा को, उनका नूर उनके आगे और दाहिने तरफ़ दौड़ेगा।

और अल्लाह तआला ने फ़रमाया (अल्लाह तआला ने फ़रमाया - त): "करीब है कि तुम्हारा रब तुम्हें मकामे महमूद (प्रशंसा का स्थान) में भेजे।" [2] अनुवाद: करीब है कि तुम्हारा रब तुम्हें तारीफ़ के मकाम में भेजेगा जहाँ पहले और बाद के सभी लोग तुम्हारी प्रशंसा करेंगे।

और अल्लाह तआला ने फ़रमाया (और अल्लाह तआला ने फ़रमाया - त): "बड़ी बरकत वाला है वह जिसने अपनी मर्जी से तुम्हारे लिए इस ख़ज़ाने और बाग़ से (जिसकी मांग ये काफ़िर कर रहे हैं) बेहतर चीज़ें कर दीं—जन्नतें जिनके नीचे नहरें बहती हैं और वह तुम्हें जन्नतुल फ़िरदौस के ऊँचे-ऊँचे महल बख्शेगा।" [3] अनुवाद: 'यजअल' को मरफूअ (पेश के साथ) पढ़ने की सूरत में, जो कि इब्न कसीर और इब्न आमिर की क़िरात है और अबू बकर की आसिम से रिवायत है, इसके अलावा और भी कई आयतें हैं। (त)

और अहादीस-ए-करीमा में जिस अज़ीम तफ़सील से हुज़ूर अकदस ﷺ के फ़ज़ाइल और खुसूसियत, विसाल के वक्त, पाकीज़ा बरज़ख़, रोशन हश्र, शफ़ाअत, हौज़े कौसर, ख़िलाफ़ते उज़मा, कबीर सियादत, जन्नत में दाख़िला, दीदारे इलाही वग़ैरह के बारे में ज़िक्र है, अगर उन्हें जमा किया जाए तो एक लंबा दफ्तर बन जाए। यहाँ सिर्फ़..

हाशिया (عـ): दौड़ेगा। 12

[1] अल-कुरान अल-करीम 66/8 [2] अल-कुरान अल-करीम 17/79 [3] अल-कुरान अल-करीम 25/10

وقال اللہ تعالٰی (اللہ تعالٰی نے فرمایا۔ ت) : "يَوْمَ لَا يُخْزِي اللَّهُ النَّبِيَّ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ نُورُهُمْ يَسْعَى بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَبِأَيْمَانِهِمْ" 1۔ جس دن اللہ رسوا نہ کرے گا نبی اور ان کے صحابہ کو ان کا نور ان کے آگے اور داہنے جوالاں عـ کرے گا۔

وقال اللہ تعالٰی (اللہ تعالٰی نے فرمایا۔ ت) : "عَسَى أَن يَبْعَثَكَ رَبُّكَ مَقَامًا مَّحْمُودًا" 2۔ قریب ہے کہ تمہارا رب تمہیں تعریف کے مکان میں بھیجے گا جہاں اولین و آخرین سب تمہاری حمد کریں گے۔

وقال اللہ تعالٰی (اور اللہ تعالٰی نے فرمایا۔ ت) : "تَبَارَكَ الَّذِي إِن شَاءَ جَعَلَ لَكَ خَيْرًا مِّن ذَٰلِكَ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ وَيَجْعَل لَّكَ قُصُورًا" 3۔ بڑی برکت والا ہے وہ جس نے اپنی مشیت سے تمہارے لیے اس خزانہ و باغ سے (جس کی طلب پہ کافر کر رہے ہیں) بہتر چیزیں کر دیں جنتیں جن کے نیچے نہریں رواں اور وہ تمہیں بہشت بریں کے اونچے اونچے محل بخشے گا۔

علی قراءۃ الرفع قراءۃ بن کثیر وابن عامر وروایۃ ابی بکر عن عاصم، الی غیر ذلك من الآیات۔ (ت) یجعل کو مرفوع پڑھنے کی تقدیر پر جو کہ ابن کثیر اور ابن عامر کی قراءت ہے اور ابوبکر کی عاصم سے یہ روایت ہے اس کے علاوہ اور بھی متعدد آیات ہیں۔ (ت)

اور احادیثِ کریمہ میں تو جس تفصیلِ جلیل سے حضورِ اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وآلہ وسلم کے فضائل و خصائص وقتِ وفاتِ مبارک و برزخِ مطہر و حشرِ منور و شفاعت و کوثر و خلافتِ عظمٰی و سیادتِ کبرٰی و دخولِ جنت و رویت و غیرہا وارد ہیں، انہیں جمع کیجئے تو ایک دفترِ طویل ہوتا ہے۔ یہاں صرف

عـ: دوڑے گا۔ ۱۲

1 القرآن الكريم ٨/٦٦ 2 القرآن الكريم ١٧/٧٩ 3 القرآن الكريم ٢٥/١٠

Fatawa Rizvia - Volume 29

Listen to one Hadith for the sake of blessing. It is recorded in Jami' at-Tirmidhi and others from Anas bin Malik (may Allah be pleased with him) that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said:

[Arabic Box Text]: I will be the first of people to come forth when they are resurrected, and I will be their spokesman when they arrive, and I will be their spokesman when they are silent. I will be their intercessor when they are detained, and I will be the one to give them glad tidings when they are in despair. The banner of honor and the keys will be in my hand on that day. And I am the most honored of the children of Adam before my Lord. Around me will roam a thousand servants, as if they were well-preserved eggs or scattered pearls.[1]

[Urdu Translation Box Text]: When the people are gathered for judgment, I will be the first to emerge from the noble resting place (mazar-e-athar). When they are all struck dumb with awe, I will be their orator. When they are detained, I will be their intercessor. When they lose hope, I will be the one giving them glad tidings. On that day, for honor and all the keys will be in my hand; the banner of praise (Liwa-ul-Hamd) will be in my hand. In the court of honor, my status is greater than all the children of Adam. A thousand servants will revolve around me, looking like eggs purified from dust and safely preserved, or like shining scattered pearls.

In summary, there is no doubt at all about Bakr being misguided and irreligious through his trickery. Even if there was nothing else, the fact that his faith is based on 'Taqwiyat-ul-Iman' (which is in reality [destructive to] faith) is enough to not let his faith remain safe, as is evident from the study of this humble servant's treatise 'Al-Kawkabat al-Shahabiyyah' and others.

"When the crow is the guide of a people, it will lead them to the path of the perished."[2] (Translation: When a crow is the leader of a nation, it will cast them onto the path of destruction. - Trans.)

And refuge is sought with Allah the Almighty.

[1] Jami' at-Tirmidhi, Chapters on Merits, Chapter on it, Amin Company Delhi 2/201; Dala'il al-Nubuwwah, mentioning the fourth merit in the divisions of Allah's life for him (peace and blessings of Allah be upon him), 'Alim al-Kutub Beirut, p. 13; Sunan ad-Darimi, Chapter on what was given to the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him), Hadith 29, Dar al-Mahasin for Printing 1/30; Al-Durr al-Manthur, citing

Ibn Marduwayh from Anas (may Allah be pleased with him), Library of Ayatollah al-Uzma Qom Iran 6/301. [2]

Page 507 of 750

बरकत के लिए एक हदीस सुनें। जामे तिरमिज़ी आदि में हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं:

[अरबी पाठ]: "मैं लोगों में सबसे पहले निकलने वाला हूँगा जब वे (पुनर्जीवित होकर) उठाए जाएँगे, और मैं उनका प्रवक्ता हूँगा जब वे आएँगे, और मैं उनका प्रवक्ता हूँगा जब वे चुप होंगे, और मैं उनका शिफ़ाअत (सिफारिश) करने वाला हूँगा जब वे रोक लिए जाएँगे, और मैं उन्हें खुशखबरी देने वाला हूँगा जब वे निराश हो जाएँगे। सम्मान और (जन्नत की) तमाम कुंजियाँ उस दिन मेरे हाथ में होंगी, और मैं अपने रब के यहाँ आदम की तमाम सन्तानों में सबसे अधिक सम्मानित हूँ। मेरे चारों ओर हज़ार सेवक घूमेंगे मानो वे सुरक्षित रखे हुए अंडे हों या बिखरे हुए चमकते मोती हों।"[1]

[उर्दू अनुवाद]: जब लोगों का हश्र होगा तो सबसे पहले मैं मज़ार-ए-अतहर से बाहर तशरीफ़ लाऊँगा, और जब वे सब दम-ब-खुद (स्तब्ध) रहेंगे तो उनका ख़ुत्बा ख़्वाँ मैं हूँगा, और जब वे रोके जाएँगे तो उनका शफ़ाअत ख़्वाह मैं हूँगा। और जब वे नाउम्मीद हो जाएँगे तो उनका बशारत देने वाला मैं हूँगा, इज़्ज़त के लिए और तमाम कुंजियाँ उस दिन मेरे हाथ होंगी, लिवा-उल-हम्द उस दिन मेरे हाथ में होगा, बारगाह-ए-इज़्ज़त में मेरी इज़्ज़त तमाम औलाद-ए-आदम से ज़ायद (अधिक) है, हज़ार ख़िदमतगार मेरे इर्द-गिर्द घूमेंगे गोया वो गर्दो ग़ुबार से पाकीज़ा अंडे हैं महफ़ूज़ रखे हुए या जगमगाते मोती हैं बिखेरे हुए।

संक्षेप में, बकर के छल-कपट के कारण गुमराह और विधर्मी होने में रत्ती भर भी संदेह नहीं है। और अगर कुछ और न भी होता, तो केवल इतना ही कि उसका ईमान 'तक़वियतुल ईमान' पर है (जो वास्तव में ईमान के लिए घातक है), उसके ईमान को सुरक्षित न रहने देने के लिए पर्याप्त था, जैसा कि इस फ़क़ीर के रिसाले 'अल-कौकबतुल शहाबिया' आदि के अध्ययन से स्पष्ट है।

"जब कौआ किसी क़ौम का मार्गदर्शक होता है, तो वह उन्हें विनाश के मार्ग पर ले जाता है।"[2] (अनुवाद: जब कौआ किसी कौम का रहनुमा हो, तो वह उसे हलाकत (विनाश) की राह पर डाल देगा। - अनु.)

और अल्लाह तआला की पनाह (माँगते हैं)।

[1] जामे अल-तिरमिज़ी, अबवाब अल-मनाक़िब, बाबू मिन्हु, अमीन कंपनी दिल्ली २/ २०१; दलाइल अल-नुबुव्वह, अल्लाह के जीवन की श्रेणियों में चौथी श्रेष्ठता का उल्लेख (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम), आलिम अल-कुतुब बेरूत, पृ. १३; सुनन अद-दारिमी, पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को जो दिया गया था उसका अध्याय, हदीस २९, दार अल-महासिम मुद्रण के लिए १/ ३०; अल-दुर अल-मंसूर, इब्न मरदुवैह के हवाले से अनस (रज़ियल्लाहु अन्हु) से, मकतबा आयतुल्ला अल-उज़मा क़ोम ईरान ६/ ३०१। [2]

पृष्ठ ७५० का ५०७

ایک حدیث تبرکاً سُن لیجئے۔ جامع ترمذی وغیرہ میں انس بن مالک رضی اللہ تعالٰی عنہ سے ہے، رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں:

انا اول الناس خروجا اذا بعثوا و انا خطیبہم اذا وفدوا، وانا خطیبہم اذا اُنصتوا، وانا مستشفعہم اذا حُبسوا، وانا مبشرہم اذا یئسوا الکرامۃ والمفاتیح یومئذ بیدی، وانا اکرم ولد آدم علی ربی یطوف علی الف خادم کانہم بیض مکنون او لؤلؤ منثور ۱۔ جب لوگوں کا حشر ہوگا تو سب سے پہلے میں مزار اطہر سے باہر تشریف لاؤں گا، اور جب وہ سب دم بخود رہیں گے تو اُن کا خطبہ خواں میں ہوں گا، اور جب وہ روکے جائیں گے تو ان کا شفاعت خواہ میں ہوں گا۔ اور جب وہ ناامید ہو جائیں گے تو ان کا بشارت دینے والا میں ہوں گا، عزت کے لیے اور تمام کنجیاں اس دن میرے ہاتھ ہوں گی، لواء الحمد اس دن میرے ہاتھ میں ہوگا، بارگاہ عزت میں میری عزت تمام اولادِ آدم سے زائد ہے، ہزار خدمتگار میرے ارد گرد گھومیں گے گویا وہ گردو غبار سے پاکیزہ انڈے ہیں محفوظ رکھے ہوئے یا جگمگاتے موتی ہیں بکھیرے ہوئے۔

بالجملہ بکر پر مکر کے گمراہ و بد دین ہونے میں اصلاً شبہ نہیں، اور اگر کچھ نہ ہوتا تو صرف اتنا ہی کہ تقویۃ الایمان پر جو حقیقتاً تقویۃ الایمان ہے اس کا ایمان ہے، یہی اس کا ایمان سلامت نہ رکھنے کو بس تھا، جیسا کہ فقیر کے رسالہ الکوکبۃ الشھابیۃ وغیرہ ہائے مطالعے سے ظاہر ہے ۔

اذا کان الغرابُ دلیل قومٍ سیھدیھم طریق الھالکینا ۲ (جب کوا کسی قوم کا رہبر ہو تو وہ اس کو ہلاکت کی راہ پر ڈال دے گا۔ ت)

والعیاذ باللہ تعالٰی۔

۱ جامع الترمذی ابواب المناقب باب منہ امین کمپنی دہلی ۲/ ۲۰۱ ، دلائل النبوۃ ذکر الفضیلۃ الرابعۃ باقسام اللہ بحیاتہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم عالم الکتب بیروت ص ۱۳، سنن الدارمی باب ما اعطی النبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم حدیث ۲۹ دارالمحاسن للطباعۃ ۱/ ۳۰ ، الدرالمنثور بحوالہ ابن مردویہ عن انس رضی اللہ عنہ مکتبہ آیۃ العظمی قم ایران ۶/ ۳۰۱ ۲

Fatawa Razawiyya Volume 29

What answer can there be in this land of disbelief (India) for that person who says that the knowledge of the accursed Satan is more than the sacred knowledge of the Radiant Presence, the Knower of what was and what will be, peace and blessings of Allah be upon him. If Allah, the Almighty Subduer, wills, on the Day of Recompense, that filthy, wicked person will meet the retribution for his blasphemous speech. "And those who do wrong will come to know by what overturning they will be overturned."[1] (Now the wrongdoers will know to which side they will turn. - T). It is sufficient here that this filthy word is explicitly attributing a defect to Muhammad, the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him). And if attributing a defect to the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) is not a word of disbelief, then what else would be a word of disbelief?

"And those who hurt the Messenger of Allah - for them is a painful punishment."[2]	**And those who cause pain to the Messenger of Allah, for them is a painful punishment.**
"Indeed, those who abuse Allah and His Messenger - Allah has cursed them in this world and the Hereafter and prepared for them a humiliating punishment."[3]	Those who cause pain to Allah Almighty and His Messenger, Allah has cursed them in this world and the hereafter, and has prepared for them a humiliating punishment.

It is stated in the "Shifa" of the great Imam Qadi Iyad and its commentary "Nasim al-Riyadh" by Allama Shihab al-Khafaji:

(Arabic text) All who revile the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) by insulting him or attributing a defect to him - which is broader than reviling. For whoever says about someone that his knowledge is more than that of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) has surely attributed a defect to him and belittled him, even if he did not revile him. (He is thus a reviler and the ruling regarding him is the same as the ruling for a reviler) without any distinction between them (we do not make any exception to this) in any case (nor do we have any doubt) whether it was explicitly stated.

That is, the person who reviles the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) or attributes a defect to him - and this is broader than just reviling, because whoever says about someone that his knowledge is more than the knowledge of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) has surely attributed a defect to the Prophet, insulted him, even if he did not give a verbal abuse. All this comes under the ruling of a reviler; there is no difference between his ruling and that of a reviler, nor do we make any exception in any case, nor is there any doubt or hesitation in this.

[1] The Holy Quran 26/227 [2] The Holy Quran 9/61 [3] The Holy Quran 33/57

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

उस व्यक्ति का इस कुफ्रिस्तान-ए-हिंद में क्या उत्तर हो सकता है जो कहता है कि लानती शैतान का ज्ञान हुज़ूर पुरनूर, आलम मा कान व मा यकून (जो हुआ और जो होगा उसके ज्ञाता), सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पवित्र ज्ञान से अधिक है। इंशाल्लाह अल-क़हार (यदि अत्यंत कहर बरसाने वाले ईश्वर ने चाहा), प्रतिफल के दिन वह अपवित्र दुष्ट अपने कुफ्र भरे वचनों का फल पाएगा। "और ज़ुल्म करने वालों को जल्द ही पता चल जाएगा कि वे किस करवट पलटेंगे।"[1] (अब ज़ालिमों को पता चल जाएगा कि वे किस तरफ़ पलटेंगे। - त)। यहाँ इतना ही काफी है कि यह अपवित्र शब्द स्पष्ट रूप से मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) में दोष निकालना है, और यदि हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) में दोष निकालना कुफ्र का शब्द नहीं है, तो फिर कुफ्र का शब्द और क्या होगा।

"और जो लोग अल्लाह के रसूल को दुख पहुँचाते हैं, उनके लिए दर्दनाक सजा है।"[2]	**और जो लोग अल्लाह के रसूल को दुख पहुँचाते हैं, उनके लिए दुख की मार है।**
"बेशक जो लोग अल्लाह और उसके रसूल को दुख पहुँचाते हैं, अल्लाह ने उन पर दुनिया और आख़िरत में लानत भेजी है और उनके लिए अपमानजनक सजा तैयार कर रखी है।"[3]	जो लोग अल्लाह तआला और उसके रसूल को दुख पहुँचाते हैं, अल्लाह ने उन पर दुनिया और आख़िरत में लानत की है, और उनके लिए ज़िल्लत वाली मार तैयार कर रखी है।

इमाम-ए-अजल क़ाज़ी अयाज़ की 'शिफ़ा' और अल्लामा शिहाब ख़फ़ाजी की उसकी शरह (व्याख्या) 'नसीम अल-रियाज़' में है:

(अरबी पाठ) वे सभी जो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को गाली देकर या उनमें दोष निकालकर अपमानित करते हैं - जो कि गाली देने से अधिक व्यापक है। क्योंकि जिसने किसी के बारे में कहा कि उसका ज्ञान नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के ज्ञान से अधिक है, उसने निश्चित रूप से हुज़ूर में दोष निकाला और उन्हें कमतर बताया, भले ही उसने गाली न दी हो। (अतः वह गाली देने वाला है और उसके बारे में वही फैसला है जो गाली देने वाले का होता है) उनके बीच बिना किसी भेद के(हम इससे कोई अपवाद नहीं करते) किसी भी स्थिति में (और न ही हमें इसमें कोई संदेह है) चाहे वह स्पष्ट रूप से कहा गया हो।

यानी जो व्यक्ति नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को गाली दे या हुज़ूर में दोष निकाले - और यह गाली देने से अधिक व्यापक है - क्योंकि जिसने किसी के बारे में कहा कि उसका ज्ञान नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के ज्ञान से अधिक है, उसने निश्चित रूप से हुज़ूर में दोष निकाला, हुज़ूर का अपमान किया, भले ही गाली न दी हो। यह सब गाली देने वाले के हुक्म (श्रेणी) में है, उनके और गाली देने वाले के हुक्म में कोई अंतर नहीं है, न ही हम इससे किसी भी स्थिति में अपवाद करेंगे और न ही इसमें कोई संदेह या हिचकिचाहट है।

[1] अल-कुरान अल-करीम 26/227 [2] अल-कुरान अल-करीम 9/61 [3] अल-कुरान अल-करीम 33/57

وہ شخص جو شیطان کے علم ملعون کو علم اقدس حضور پر نور عالم ماکان ومایکون صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم سے زائد ہے اس کا جواب اس کفرستان ہند میں کیا ہو سکتا ہے، ان شاء اللہ القھار (اگر بہت قہر فرمانے والا خدا نے چاہا ت) روز جزا وہ ناپاک ناہنجار اپنے کیفر کفری گفتار کو پہنچے گا۔ "وَسَيَعْلَمُ الَّذِينَ ظَلَمُوا أَيَّ مُنْقَلَبٍ يَنْقَلِبُونَ (227)"1 (اب جاننا چاہتے ہیں ظالم کہ کون سی کروٹ پر پلٹا کھائیں گے۔ ت) یہاں اسی قدر کافی ہے کہ یہ ناپاک کلمہ صراحتاً محمد رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کو عیب لگانا ہے، اور حضور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کو عیب لگانا کلمہ کفر نہ ہوا تو اور کیا کلمہ کفر ہوگا۔

"وَالَّذِينَ يُؤْذُونَ رَسُولَ اللَّهِ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ (61)"2۔	**اور جولوگ رسول اللہ کو ایذا دیتے ہیں ان کے لیے دکھ کی مار ہے۔**
"إِنَّ الَّذِينَ يُؤْذُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ لَعَنَهُمُ اللَّهُ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَأَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا مُهِينًا (57)"3۔	جو لوگ ایذا دیتے ہیں اللہ تعالیٰ اور اس کے رسول کو، اللہ نے اُن پر لعنت فرمائی ہے دنیا اور آخرت میں، اور ان کے لیے تیار کر رکھی ہے ذلت والی مار۔

شفائے امام اجل قاضی عیاض اور شرح علامہ شہاب خفاجی مسمی بہ نسیم الریاض میں ہے:

جمیع من سبّ النبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم بشتمۃ او عابہ ھو اعم من السب فان من قال فلان اعلم منہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فقد عابہ و نقصہ وان لم یسبہ (فھو ساب والحکم فیہ حکم الساب) من غیر فوق بینھما (لا نستثنی منہ) (فصلًا) آی صورۃً (ولا نتمتری) فیہ تصریحاً کان

یعنی جو شخص نبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کو گالی دے یا حضور کو عیب لگائے اور یہ گالی دینے سے عام تر ہے کہ جس نے کسی کی نسبت کہا کہ فلاں کا علم نبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے علم سے زیادہ ہے اس نے ضرور حضور کو عیب لگایا، حضور کی توہین کی، اگرچہ گالی نہ دی، یہ سب گالی دینے والے کے حکم میں ہے، ان کے اور گالی دینے والے کے حکم میں کوئی فرق نہیں، نہ ہم اس سے کسی صورت کا استثناء کریں نہ اس میں شک و تردد کو

1 القرآن الکریم ۲۶ / ۲۲۷ 2 القرآن الکریم ۹ / ۶۱ 3 القرآن الکریم ۳۳ / ۵۷

Fatawa Rizvia, Volume 29

[Boxed Text] ...or by implication. All of this is a consensus among scholars and masters of fatwa from the time of the companions (may Allah be pleased with them) until now, without interruption. Shortened. We ask Allah for forgiveness and well-being in this world and the hereafter, and we seek refuge in Him from decline after increase. There is no power or strength except through Allah, the Almighty, the Great. May Allah the Almighty send blessings upon the Master of the Messengers, and Allah the Exalted knows best.

Whether shown the way explicitly or through implication, there is a consensus among all scholars and leaders of fatwa on all these rulings, which has continued uninterrupted from the era of the noble Companions (may Allah be pleased with them) until today. End of abbreviated quote. We seek forgiveness and well-being from Allah Almighty in this world and the hereafter, and we seek His refuge from scarcity after abundance. There is no strength to avoid sin nor the power to do good except through the guidance of God, the One of Height and Majesty. And may Allah Almighty send blessings upon the leader of the Messengers, and Allah Glory be to Him and Exalted knows best. (T)

Upon the arrival of this question, this humble servant (may the Almighty Lord forgive him) laid the foundation for an extensive book 'Bahr-e-Abab', divided into four chapters and titled with the historical name 'Ma'i al-Habib bi-Uloom al-Ghayb' (1318 AH). Chapter One: 'Fusoos', meaning great benefits and precious subtleties, which serve as prefaces for the arrangement of the proofs of the Ahl al-Sunnat. Chapter Two: 'Nusoos', meaning clear and glorious proofs from the Quran, Hadith, and the sayings of ancient and modern imams in support of the claim. Chapter Three: 'Umoom-o-Khusoos', regarding the encompassment of the sciences of Prophet Muhammad (peace be upon him), to clarify the point of contention in writing. Chapter Four: 'Qat' al-Lusoos', meaning the refutation of all the nonsense, new and old, of the Najdis in this matter and breaking their arrogance. However, the abundance and overflow of 'Fusoos' and 'Nusoos' made it evident that the length would likely lead to boredom. Therefore, by the permission of Allah Almighty, for public benefit, a brilliant and shining pearl—as if a chosen gem from the treasures of secrets—historically named 'Al-Lulu al-Maknun fi 'Ilm al-Bashir Ma Kana wa Ma Yakun' (1318 AH) (The Hidden Pearls regarding the knowledge of the Giver of Glad Tidings, peace be upon him, about what was and what will be. T) was selected. This work, by the grace of Allah, focused more on benefit and investigation rather than

just compilation and aggregation. Every ray of its light, with the help of the Light of the Heavens and the Earth (Jalla Jalaluhu), showed such radiance that the darknesses of falsehood appeared to vanish.

---

1. Nasim al-Riyadh, Part Four, Chapter One, Markaz-e-Ahle Sunnat Barakat-e-Raza Gujarat India 4/335 & 336. Page 509 of 750

फ़तावा रज़विया, जिल्द 29

[बक्से का पाठ] ...चाहे स्पष्ट रूप से कहा गया हो या संकेत में, इन सभी आदेशों पर तमाम विद्वानों और फ़तवा के इमामों की सहमति है कि यह सहाबा किराम (रज़ियल्लाहु अन्हुम) के ज़माने से आज तक निरंतर चला आ रहा है। संक्षेप। हम अल्लाह तआला से दुनिया और आख़िरत में माफ़ी और सलामती चाहते हैं और ज़्यादती के बाद कमी से उसकी पनाह चाहते हैं। न गुनाह से बचने की ताक़त है और न ही नेकी करने की शक्ति मगर बुलंदी और बड़ाई वाले ख़ुदा की तौफ़ीक़ से। और अल्लाह तआला तमाम रसूलों के सरदार पर दरूद नाज़िल फ़रमाए, और अल्लाह सुब्हानहु व तआला बेहतर जानता है।

चाहे राह साफ़-साफ़ दिखाई गई हो या इशारे में, इन सभी आदेशों पर तमाम विद्वानों और फ़तवा के इमामों की सर्वसम्मति है कि यह सहाबा किराम (रज़ियल्लाहु अन्हुम) के युग से आज तक लगातार चला आ रहा है। संक्षेप। हम अल्लाह तआला से दुनिया और आख़िरत में माफ़ी और सलामती की दुआ करते हैं और अधिकता के बाद कमी से उसकी पनाह माँगते हैं। न पापों से बचने की क्षमता है और न ही भलाई करने की शक्ति, सिवाय ऊँचाई और महिमा वाले ईश्वर की सहायता के। और अल्लाह तआला रसूलों के सरदार पर अपनी कृपा बरसाए, और अल्लाह सुब्हानहु व तआला अच्छी तरह जानता है। (त)

इस फ़कीर (जिसके लिए सर्वशक्तिमान ईश्वर से क्षमा की प्रार्थना है) ने इस सवाल के आने पर एक विस्तृत पुस्तक 'बहर-ए-अबाब' की नींव रखी, जो चार अध्यायों में विभाजित है और जिसका ऐतिहासिक नाम 'माई अल-हबीब बि-उलूम अल-ग़ैब' (1318 हिजरी) है। पहला अध्याय: 'फ़ुसूस' अर्थात महान लाभ और बहुमूल्य सूक्ष्मताएँ, जो सुन्नत वालों (अहल-ए-सुन्नत) के प्रमाणों की व्यवस्था की प्रस्तावना हों। दूसरा अध्याय: 'नुसूस' अर्थात अपने दावे पर क़ुरआन, हदीस और प्राचीन व आधुनिक इमामों के कथनों के शानदार प्रमाण। तीसरा अध्याय: 'उमूम-ओ-ख़ुसूस', जो मुहम्मदी विज्ञान की व्यापकता के बारे में विवाद के बिंदु को स्पष्ट करे। चौथा अध्याय: 'क़त अल-लुसूस', अर्थात इस मसले में नजदियों की तमाम नई और पुरानी बेतुकी बातों का खंडन और उनके अहंकार को कुचलना। मगर 'फ़ुसूस' और 'नुसूस' की प्रचुरता ने यह स्पष्ट कर दिया कि विस्तार इतना अधिक हो जाएगा कि अरुचि की संभावना है। इसलिए, अल्लाह तआला की अनुमति से जनहित के लिए, इस विशाल सागर से एक देदीप्यमान मोती चुना गया—मानो रहस्यों के ख़ज़ाने से एक विशेष रत्न—जिसका ऐतिहासिक नाम 'अल-लुलु अल-मक्नून फ़ी इल्म अल-बशीर मा काना व मा यकून' (1318

हिजरी) रखा गया (शुभ समाचार देने वाले नबी, सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम, के'जो हुआ और जो होगा' के ज्ञान के बारे में छिपे हुए मोती। त)। इस कार्य ने, अल्लाह के अनुग्रह से, केवल संकलन और एकत्रीकरण के बजाय लाभ और शोध की ओर अधिक ध्यान दिया। इसके एक-एक प्रकाश ने आसमानों और ज़मीन के नूर (जल्ल जलालुहू) की मदद से वह चमक दिखाई कि असत्य के अंधकार मिटते हुए नज़र आए।

---

1. नसीम अर-रियाज़, भाग चार, अध्याय एक, मरकज़-ए-अहल-ए-सुन्नत बरकात-ए-रज़ा गुजरात भारत 4/335 व 336। पृष्ठ 509 का 750

او تلویحاً و ھذا کلہ اجماع من العلماء وائمۃ الفتوٰی من لدن الصحابۃ رضی اللہ تعالٰی عنھم الٰی ھلم جراً ۱ اھ مختصراً۔ نسأل اللہ العفو والعافیۃ فی الدنیا والآخرۃ ونعوذ بہ من الحور بعد الکور ولاحول ولاقوۃ الا باللہ العلی العظیم وصلی اللہ تعالٰی علیہ سید المرسلین واللہ سبحانہ تعالٰی اعلم۔

راہ دیں، صاف صاف کہا ہو یا کنایہ سے، ان سب احکام پر تمام علماء اور آئمہ فتوٰی کا اجماع ہے کہ زمانہ صحابہ کرام رضی اللہ عنہم سے آج تک برابر چلا آیا ہے۔ اھ مختصراً ہم اللہ تعالٰی سے دنیا و آخرت میں معافی اور عافیت چاہتے ہیں اور کثرت کے بعد قلت سے اس کی پناہ چاہتے ہیں نہ گناہ سے بچنے کی طاقت ہے اور نہ ہی نیکی کرنے کی قوت مگر بلندی و عظمت والے خدا کی توفیق سے اور درود نازل فرمائے اللہ تعالٰی رسولوں کے سردار پر، اور اللہ سبحانہ و تعالٰی خوب جانتا ہے۔ (ت)

فقیر غفرلہ المولی القدیر نے اس سوال کے ورود پر ایک مسبوط کتاب بحر عباب منقسم بہ چار باب مسمّٰی بہ نام تاریخی مائی الحبیب بعلوم الغیب (۱۳۱۸ھ) کی طرح ڈالی۔ باب اول: فصوص یعنی فوائد جلیلہ ونفائس جزیلہ کہ ترصیف دلائل اہلسنت کے مقدمات ہوں۔ باب دوم: نصوص یعنی اپنے مدعا پر دلائل جلائل قرآن وحدیث واقوال آئمہ قدیم وحدیث۔ باب سوم: عموم و خصوص کہ احاطہ علوم محمدیہ میں تحریر محل نزاع کرے۔ باب چہارم: قطع اللصوص یعنی اس مسئلے میں تمام مہملات نجدیہ نو و کہن کی سر افکنی و تکبر شکنی، مگر فصوص و نصوص کے ہجوم و وفور نے ظاہر کردیا کہ اطالت تا حدِّ ملالت متوقع، لہذا باذن اللہ تعالٰی نفع عامہ کے لیے اس بحر ذخار سے ایک گوہر شہوار لامع الانوار گویا خزائن الاسرار سے در مختار مسمّی بہ نام تاریخی اللؤلؤ المکنون فی علم البشیر ماکان وما یکون " (۱۳۱۸ھ) (پوشیدہ موتی بشیر صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم

کے علم ماکان وما یکون کے بارے میں۔ت) چن لیا جس نے جمع و تلفیق کے عوض نفع و تحقیق کی طرف بحمد اللہ زیادہ رُخ کیا۔ اس کے ایک ایک نور نے نور السموت والارض جل جلالہ کے عون سے وہ تابشیں دکھائیں کہ ظلمات باطلہ کافور ہوتی نظر آئیں۔

---

۱ نسیم الریاض القسم الرابع الباب الاول مرکز اہل سنت برکات رضا گجرات ہند ۴/ ۳۳۵ و ۳۳۶

Fatawa Razawiyya Volume 29

This brief fatwa, named "Abna-ul-Mustafa bi Hal-i-Sirr-o-Akhfa" (Informing about the hidden and the most hidden state of Mustafa, peace and blessings of Allah be upon him), contains a spark from its brilliance. The detailed explanation of all its subtle indications is referred back to it. A learned expert can, God willing, use these few words to deal a blow to all the nonsense and absurdities of the opponents. However, those who seek more detail, by the help of God, may benefit from the subsequent shining treatises. I also request the opposing gentlemen that if divine grace assists them, these brief words of guidance would be best; otherwise, if due to limited understanding, dominance of illusion, lack of experience, and intense prejudice, they cannot see the exposure of their gross ignorances in these brief lines, then they should wait for that world-illuminating sun. Which, by the grace of God and the assistance of the Messenger, peace and blessings of Allah be upon him, will turn all their darkness into morning. It will fill every cup of their questioning with the clear water of refutation and nullification.

(Arabic) Behold! Their appointed time is the morning. Is not the morning near? (Quran 11:81) And my success is not but through Allah. Upon Him I have relied, and to Him I return. (Quran 11:88)	**Beware! Indeed, their promise is for the time of morning. Is the morning not near? And my guidance is only from Allah; in Him I have put my trust, and to Him I return. (T)**

What use is it if at this time your sleep of negligence shows some color of delirium (Note: H), and when the morning of guidance rises from the horizon of fortune, it becomes clear that: *"Whatever was seen was a dream, whatever was said was a myth."*

Moreover, it is appropriate for the group of rabbits and foxes that when they see the fierce lion strolling, they should move away from the front and hide their lives in their holes; not that they should be deceived by his gentle gait at that time and come to incite his fire of wrath and call for their own death with their own mouths.

"Listen to the advice, O dear one, for they want to keep far from life the defeated jackals from the anger of the battle-lion." (O friend! Listen to the advice that they wish to keep the defeatist jackals away from the anger of the enraged lion for the sake of their lives. T)

Note: H: Absurd talk.

Page 510 of 750

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

यह संक्षिप्त फ़तवा "अब्बा-उल-मुस्तफ़ा बि हाल-ए-सिर्र-ओ-अख़फ़ा" (मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के गुप्त और अत्यंत गुप्त हाल की जानकारी देना) के नाम से प्रसिद्ध है। इसके सभी सूक्ष्म संकेतों का विस्तृत विवरण इसी पर आधारित है। एक विद्वान और विशेषज्ञ व्यक्ति इन कुछ शब्दों के माध्यम से, ईश्वर ने चाहा तो, विरोधियों की सभी बेतुकी बातों और बकवासों का मुंहतोड़ जवाब दे सकता है। लेकिन जो लोग विस्तार के इच्छुक हैं, वे ईश्वर की सहायता से बाद के चमकते हुए शोध-पत्रों से लाभान्वित हों। विरोधी सज्जनों से भी मेरा निवेदन है कि यदि ईश्वरीय कृपा सहायक हो, तो मार्गदर्शन के ये संक्षिप्त शब्द ही काफी होंगे; अन्यथा, यदि समझ की कमी, भ्रम की प्रधानता, अनुभव की कमी और तीव्र पक्षपात के कारण वे इन संक्षिप्त पंक्तियों में अपनी घोर अज्ञानता के खुलासे को नहीं देख पाते हैं, तो उन्हें उस विश्व-प्रकाशक सूर्य की प्रतीक्षा करनी चाहिए। जो ईश्वर की कृपा और रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की सहायता से उनके सभी अंधकारों को सुबह में बदल देगा। वह उनके सवाल के हर प्याले को खंडन और निरस्तीकरण के निर्मल जल से भर देगा।

(अरबी) सावधान! उनका निश्चित समय सुबह है। क्या सुबह करीब नहीं है? और मेरी सफलता केवल अल्लाह से है। उसी पर मैंने भरोसा किया है और उसी की ओर मैं झुकता हूँ।	**सावधान! निःसंदेह उनका वादा सुबह के समय का है। क्या सुबह करीब नहीं है? और मेरा मार्गदर्शन केवल अल्लाह की ओर से है; मैंने उसी पर भरोसा किया है और उसी की ओर लौटता हूँ। (त)**

क्या लाभ कि इस समय आपकी उपेक्षा की नींद कुछ प्रलाप (अ- ह) का रंग दिखाए, और जब सौभाग्य के क्षितिज से मार्गदर्शन की सुबह उदय हो तो स्पष्ट हो जाए कि: "जो कुछ देखा वह सपना था, जो कुछ कहा वह एक किस्सा था।"

इसके अतिरिक्त, खरगोशों और लोमड़ियों के समूह के लिए यही उचित है कि जब वे भयंकर शेर को टहलते हुए देखें, तो सामने से हट जाएं और अपने-अपने बिलों में अपनी जान छिपा लें; ऐसा न हो कि उस समय उसकी कोमल चाल से धोखा खाकर आएं और उसके क्रोध की अग्नि को भड़काएं और अपने मुँह से अपनी मृत्यु को बुलाएं।

"हे प्रिय! सलाह सुनें, क्योंकि वे पराजित गीदड़ों को युद्ध-शेर के क्रोध से दूर रखना चाहते हैं।" (हे मित्र! सलाह सुनें कि वे अपनी जान की खातिर हार मानने वाले गीदड़ों को गुस्सैल शेर के गुस्से से दूर रखना चाहते हैं। त)

पाद टिप्पणी: ह: बेतुकी बातें।

पृष्ठ 510 का 750

یہ چند حرفی فتوٰی کہ اس کے لمعات سے ایک شعلہ اور بلحاظ تاریخ بنام ابناء المصطفٰی بحالِ سرّ و اخفٰی (مصطفٰی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کو پوشیدہ اور پوشیدہ ترین کے حال کی خبر دینا۔ ت) مسمّٰی ہے۔ اس کے تمام اشاراتِ خفیہ کا بیان مفصل اسی پر محول ذی علم ماہر تو ان ہی چند حروف سے ان شاء اللہ تعالٰی سب خرافات وجزافات مخالفین کو کیفرِ چشانی کر سکتا ہے مگر جو صاحب تفصیل کے ساتھ دست نگر ہوں بعونہ تعالٰی رسائل مذکورہ کے تالی متلالی سے بہرہ ور ہوں، حضرات مخالفین سے بھی گزارش ہے کہ اگر توفیق الٰہی مساعدت کرے یہی حرف مختصر ہدایت کرے تو ازیں چہ بہتر، ورنہ اگر بوجہ کوتاہی فہم و غلبی وہم و قلّت تدرّب و شدت تعصب اپنی تمام جہالاتِ فاحشہ کی پردہ دری ان مختصر سطور میں نہ دیکھ سکیں۔ تو اسی مہر جہاں تاب کا انتظار کریں۔ جو بہ عنایت الٰہی واعانت رسالت پناہی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم ان کی تمام ظلمتوں کی صبح کر دے گا۔ ان کا ہر کاسہ سوال آب زلال رد و ابطال سے بھر دے گا۔

الا اِنّ موعدھم الصبح الیس خبردار! بے شک ان کا وعدہ صبح کے وقت ہے کیا صبح قریب الصبح بقریب ط وما توفیقی الّا نہیں، اور میری توفیق اللہ ہی کی طرف سے ہے، میں نے اسی باللہ علیہ توکلت والیہ انیب ط پر بھروسہ کیا اور اسی کی طرف رجوع کرتا ہوں۔ (ت)

کیا فائدہ کہ اس وقت آپ کا خواب غفلت کچھ ہذیان (ع- ہ) کا رنگ دکھائے، اور جب صبح ہدایت افق سعادت سے طالع ہو تو کھل جائے کہ ع خواب تھا جو کچھ کہ دیکھا جو کہا افسانہ تھا

معہذا طائفہ ارانب و ثعالب کو یہی مناسب کہ جب شیر ژیاں کو چہل قدمی کرتا دیکھ لیں سامنے سے ٹل جائیں اپنے اپنے سوراخوں میں جان چھپائیں، نہ یہ کہ اس وقت اس کے خرام نرم پر غرّہ

ہو کر آئیں اس کی آتش غضب کو بھڑکائیں اپنی موت اپنے منہ بلائیں، ع نصیحت گوش کن جاناں کہ از جاں دورتر خواہند شغالانِ ہزیمت مند خشم شیرِ ہیجارا (اے دوست! نصیحت سُن کہ اپنی جان سے دور چاہتے ہیں، شکست پسند گیدڑ بھرے ہوئے شیر کے غصے کو۔ ت)

عہ: بے ہودہ گوئی۔

Fatawa Ridawiyya Volume 29

[Left Column (Arabic)]: I say: This is my word, and I seek forgiveness from Allah for myself and for all believing men and believing women. May pure blessings and growing greetings be upon our master Muhammad, the Prophet of the unseen things, the manifestor of hidden matters, and upon his family and companions, the noble leaders. And Allah, Glorified and Exalted is He, knows best, and His knowledge, Majestic be His glory, is most complete and most perfect.

[Right Column (Urdu)]: I say this is my word, and I seek forgiveness from Allah Almighty for myself and for all believing men and women, and I seek pure blessings and increasing peace upon our leader Muhammad, who gives news of the unseen and reveals hidden things, and upon his family and companions who are the noble leaders, and Allah Subhanahoo wa Ta'ala knows best, and the Word of Allah, Jalla Majdahu, is most complete and most firm. (T)

His sinful servant, Ahmad Raza Bareilly. Written by: May he be forgiven for the sake of Muhammad, the Chosen One, the Unlettered Prophet, may Allah Almighty bless him and grant him peace.

Treatise: Inba al-Mustafa bi Haal Sirr wa Akhfa Ended.

Page 511 of 750

फ़तावा रज़विया जिल्द २९

[बायां स्तंभ (अरबी)]: मैं कहता हूं: यह मेरा कथन है, और मैं अपने लिए और सभी मोमिन पुरुषों और मोमिन महिलाओं के लिए अल्लाह से क्षमा मांगता हूं। हमारे आका मुहम्मद पर पवित्र दरूद और बढ़ने वाली सलामती हो, जो ग़ैब की खबरें देने वाले और छिपी हुई बातों को प्रकट करने वाले हैं, और उनकी आल और असहाब पर जो सम्मानित सरदार हैं। और अल्लाह सुब्हानहू व तआला बेहतर जानता है, और अल्लाह जल्ला मजदहु का ज्ञान सबसे पूर्ण और सबसे सुदृढ़ है।

[दायां स्तंभ (उर्दू)]: मैं कहता हूँ यह मेरा कौल है, और मैं अल्लाह तआला से अपने लिए और तमाम मोमिन मर्दों और औरतों के लिए मग़फ़िरत तलब करता हूँ, पाकीज़ा दरूद और बढ़ने वाले सलाम हों हमारे सरदार मुहम्मद पर जो ग़ैब की ख़बरें देने वाले और पोशीदा बातों को ज़ाहिर फ़रमाने वाले हैं और आप की आल व अस्हाब पर जो बुज़ुर्गी वाले सरदार हैं, और अल्लाह सुब्हानहू व तआला खूब जानता है और अल्लाह जल्ला मजदहु का कलाम अतम और मुस्तहकम है। (त)

उसका गुनहगार बंदा अहमद रज़ा बरेलवी लिखने वाला: मुहम्मद मुस्तफ़ा नबी-ए-उम्मी (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) के वसीले से उसे माफ किया जाए।

रिसाला: इनबा अल-मुस्तफ़ा बि हाल सिर्र व अख़फ़ा ख़त्म हुआ।

पृष्ठ ५११ / ७५०

اقول: قولی ھذا واستغفراللہ لی ولسائر المؤمنین | میں کہتا ہوں یہ میرا قول ہے، اور میں اللہ تعالٰی سے اپنے والمؤمنات والصلوۃ الزاکیات والتحیات النامیات | لیے اور تمام مومن مردوں اور عورتوں کے لیے مغفرت علی سید نا محمد نبی المغیبات مظہر الخفیات وعلی | طلب کرتا ہوں، پاکیزہ درود اور بڑھنے والے سلام ہوں الہ وصحبہ الاکارم السادات واللہ سبحنہ تعالٰی اعلم | ہمارے سردار محمد پر جو غیب کی خبریں دینے والے اور پوشیدہ وعلمہ جل مجدہ اتمّ واحکم | باتوں کو ظاہر فرمانے والے ہیں اور آپ کی آل و اصحاب پر جو | بزرگی والے سردار ہیں، اور اللہ سبحانہ و تعالٰی خوب جانتا ہے | اور اللہ جل مجدہ کا کلام اتم اور مستحکم ہے۔ (ت)

عبدہ المذنب احمد رضا البریلوی کتبہ عفی عنہ بمحمدن المصطفٰی النبی الامّی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم

رسالہ انباء المصطفٰی بحال سرّ وا خفٰی ختم ہوا۔

صفحہ 511 از 750

Fatawa Rizvia, Volume 29

Treatise Izahat al-Ayb bi Saif al-Ghayb (Removing the Blemish with the Sword of the Unseen)

In the name of Allah, the Most Gracious, the Most Merciful. We praise Him and send blessings upon His Noble Messenger.

Question 149: From Madrasa Deoband, Saharanpur District, sent by one of the Ahl-e-Sunnat, may Allah Almighty grant them victory, through the mediation of Respected Maulvi Wasi Ahmad Sahib Muhaddith Surti, may Allah Almighty keep him safe. After respectful salutations with folded hands, it is submitted that this servant is currently staying in Wahhab Garh, Madrasa Deoband. Your Honor (referring to Maulana Wasi Ahmad Sahib Muhaddith Surti), whatever you said regarding these people is all true; there is not a hair's breadth of difference. On the day of Eid, after the prayer, all the senior scholars, students, and elites gathered at the Eidgah and prayed for about an hour that may Allah Almighty keep King George V of London always established over our heads and may God forgive his father. And when George V came from England to Bombay, a tribute of twenty-four rupees was sent as a welcome or greeting. And on the 13th of Dhu al-Hijjah, a grand assembly was held for four hours where various scholars praised and prayed for the British King. Sweets were distributed for joy, and during the sermon itself, it was mentioned that Imam Ahmad bin Hanbal saw the Messenger of Allah, peace and blessings of Allah be upon him, in a dream...

Page 512 of 750

फ़तावा रज़विया, जिल्द 29

रिसाला इज़ाहतुल ऐब बि-सैफ़िल ग़ैब (ग़ैब की तलवार से ऐब को दूर करना)

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम

मसाला 149: मदरसा देवबंद, ज़िला सहारनपुर से, अहले सुन्नत में से किसी एक द्वारा भेजा गया, अल्लाह तआला उनकी मदद फ़रमाए, जनाब मौलवी वसी अहमद साहब मुहद्दिस सूरती (सल्लमहू अल्लाह तआला) की मध्यस्थता से। हाथ जोड़कर सलाम के बाद अर्ज़ है कि यह बंदा इस वक़्त वहाब गढ़ मदरसा देवबंद में ठहरा हुआ है। जनाब-ए-आली (यानी जनाब मौलाना वसी अहमद साहब मुहद्दिस सूरती), आपने इन लोगों के बारे में जो कुछ भी फ़रमाया था, वह सब सच है; रत्ती भर भी फ़र्क़ नहीं है। ईद के दिन नमाज़ के बाद तमाम बड़े उलमा, तालिब-ए-इल्मों और रईसों ने मिलकर ईदगाह में लगभग एक घंटे तक यह दुआ माँगी कि अल्लाह तआला लंदन के बादशाह जॉर्ज पंचम को हमेशा हमारे सिरों पर क़ायम रखे और उसके वालिद (पिता) की मग़फ़िरत (क्षमा) करे। और जिस वक़्त जॉर्ज पंचम विलायत (इंग्लैंड) से बम्बई आया, तो स्वागत यानी सलामी के तौर पर चौबीस रुपये का नज़राना भेजा गया। और 13 ज़िलहिज्जा को एक बड़ा जलसा आयोजित किया गया, जिसमें चार घंटे तक विभिन्न उलमा ने अंग्रेज़ बादशाह की तारीफ़ और दुआ बयान की और ख़ुशी के तौर पर मिठाई बाँटी गई। और ख़ुतबे के बीच में बयान किया गया कि इमाम अहमद बिन हंबल ने ख़्वाब में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को देखा...

पेज 512 / 750

رسالہ ازاحۃ العیب بسیف الغیب (عیب کو دور کرنا غیب کی تلوار سے)

بسم اللہ الرحمن الرحیم نحمدہ ونصلی علی رسولہ الکریم ط

مسئلہ ۱۴۹: از مدرسہ دیوبند ضلع سہارن پور مرسلہ یکے از اہل سنت نصر ہم اللہ تعالٰی بوساطت جناب مولوی وصی احمد صاحب محدث سورتی سلمہ اللہ تعالٰی۔ تسلیمات دست بستہ کے بعد گزارش ہے بندہ اس وقت وہاب گڑھ مدرسہ دیوبند میں مقیم ہے۔ جناب عالی (یعنی جناب مولانا وصی احمد صاحب محدث سورتی) جو جو باتیں آپ نے ان لوگوں کے حق میں فرمائی تھیں وہ سب سچ ہیں سر مو فرق نہیں۔ عید کے دن بعد نماز جمیع اکابر علماء، و طلباء وروسا نے مل کر عید گاہ میں بقدر ایک گھنٹہ یہ دعا مانگی کہ اللہ تعالٰی جارج پنجم بادشاہ لندن کو ہمیشہ ہمارے سروں پر قائم رکھے اور اس کے والد کی خدا مغفرت کرے۔ اور جس وقت جارج پنجم ولایت سے بمبئی کو آیا اور مبلغ چوبیس روپیہ کا نذرانہ برائے خیر مقدم یعنی سلامی روانہ کردیا اور بتاریخ ۱۳ ذی الحجہ ایک بڑا جلسہ کردیا کہ جو چار گھنٹے مختلف علماء نے بادشاہ انگریز کی تعریف اور دعا بیان کیا اور خوشی کے واسطے مٹھائی تقسیم کیا اور عین خطبہ میں بیان کیا کہ امام احمد بن حنبل نے خواب میں دیکھا رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی

Fatawa Razawiyya Volume 29

...to him (peace and blessings of Allah be upon him and his family). Imam Ahmad asked, "O Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him and his family), how much of my life is remaining?" You raised five fingers. Then for interpretation, he went to Muhammad bin Sirin, who said: "Khamsun la ya'lamuha illahu"[1] (There are five things which no one knows except Allah the Almighty. - Translation). So it was known that you are not informed of the unseen. Secondly, he mentioned the Hadith of Dhal-Yadayn that you forgot in prayer; when Dhal-Yadayn inquired repeatedly and you asked the companions, you then completed the prayer. From this Hadith, it is known that a deficiency was proven in your observational knowledge, being informed about the knowledge of the unseen is still far off. (End of quote). The people here are so wicked that Mawlawi Mahmud Hasan, the first-grade teacher of Hadith, in the lesson of Sahih Muslim, in the chapter of intercession, regarding the Hadith that when you interceded for all Muslims and gave salvation to everyone but some people remained, i.e., hypocrites etc., then you interceded for them but the angels prevented it saying you do not know what these people innovated after you. From this, it became clear that those who say that the deeds of the Ummah are presented to the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him and his family) every Friday, it is wrong, it is merely a fabrication. What to speak of the knowledge of the unseen! Allah is Greatest. It is in the lesson of Tirmidhi Sharif, page 176 at the end, a woman was raped under compulsion, so that woman pointed to a person. You ordered that person to be stoned. Then another person stood up and confessed to the adultery; the first person was released and the second was stoned. You said "Taaba tawbatan etc." (He repented a sincere repentance etc. - Translation). If the second person had not confessed, the first person's neck would have been cut; this is "good" knowledge of the unseen. This is all his statement. (Translation). And occasionally, he doesn't leave without saying something or the other in Hadiths. Allah is Greatest, may Allah protect us from his evil (Allah is very Great, Allah's refuge from his evil. - Translation).

The Answer: May Allah Almighty grant refuge from misguidance and shamelessness. The humble servant (Faqir) has given a healing (sufficient) answer to these doubts, even if there were thousands like them, in the brief sentences of "Anba al-Mustafa" (peace and blessings of Allah be upon him and his family). But the Wahhabis do not desist from their absurdities. In "Ad-Dawlat-ul-Makkiyya" and its commentary "Al-Fuyuz al-Makkiyya", the statement is secure/trustworthy. I remind again so that, God

willing, there is no need for repeated questions, and an intelligent Sunni, even if there were a hundred thousand such doubts, would answer them all himself. The humble servant (Faqir) has proven from the definitive verses of the Great Quran that the Great Quran, by descending majestically over 23 years, informed its beloved (peace and blessings of Allah be upon him and his family) of everything that was and everything that will be (Jami' Ma Kana wa Ma Yakun).

[1] Musnad Ahmad bin Hanbal, Hadith of Abi Amir al-Ash'ari, Al-Maktab al-Islami Beirut 4 / 129 & 164.

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

...उनसे (सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि वसल्लम) पूछा गया। इमाम अहमद ने पूछा कि ऐ अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि वसल्लम), मेरी कितनी उम्र बाकी है? आपने पाँच उंगलियाँ उठाईं। फिर ताबीर के लिए मुहम्मद बिन सीरीन के पास आए, उन्होंने फ़रमाया: "ख़मसुँ ला या'लमुहा इल्लाहू"[1] (पाँच चीज़ें हैं जिन्हें अल्लाह तआला के सिवा कोई नहीं जानता। - त)। तो मालूम हुआ कि आप ग़ैब पर मुत्तला (अवगत) नहीं हैं। दूसरा वालिदैन (धुल-यदैन) की हदीस बयान की कि आपको नमाज़ में सहव (भूल) हो गया, जब धुल-यदैन ने बार-बार दरियाफ़्त किया और आपने सहाबा से पूछकर फिर नमाज़ को पूरा किया। इस हदीस से यह मालूम होता है कि आपके मुशाहिदा के इल्म में नुक़सान साबित हो गया, इल्म-ए-ग़ैब पर इत्तला तो अभी दूर है। (इति)। यहाँ के लोग इस कदर बदमाश हैं कि मौलवी महमूद हसन, जो हदीस के अव्वल दर्जे के मुदर्रिस हैं, उन्होंने मुस्लिम शरीफ़ के सबक़ में बाब-ए-शफ़ाअत में उस हदीस में कि जब आपने तमाम मुस्लिमों की शफ़ाअत की और सब को निजात दे दी मगर कुछ लोग रह गए यानी मुनाफ़िक़ीन वगैरह, तो आपने उनके वास्ते शफ़ाअत की तो फ़रिश्तों ने मना कर दिया कि आप नहीं जानते कि इन लोगों ने आपके बाद क्या कुछ निकाला (बदला), तो इससे ज़ाहिर हो गया कि जो लोग यह कहते हैं कि हर जुमे में रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि वसल्लम) पर उम्मत के आमाल पेश होते हैं, यह ग़लत है, महज़ इफ़्तरा (गढ़ा हुआ) है। इल्म-ए-ग़ैब का क्या ज़िक्र, अल्लाहू अकबर। तिर्मिज़ी शरीफ़ के सबक़ 176 सफ़ा के आख़िर में है, एक औरत के साथ ज़बरदस्ती ज़िना हो गया, तो उस औरत ने एक शख़्स पर हाथ रखा (इशारा किया)। आपने उस शख़्स को रज्म (पत्थरों से मारना) का हुक्म फ़रमाया। फिर दूसरा शख़्स उठा, उसने ज़िना का इक़रार कर लिया, पहले शख़्स को छोड़ दिया और दूसरा मरजूम हो गया। आपने फ़रमाया "ताबा तौबतन इलख़" (उसने सच्ची तौबा की इलख़ - त)। अगर दूसरा शख़्स इक़रार न करता तो पहले शख़्स की गर्दन उड़ा देते, यह अच्छी ग़ैब-दानी है। 'हाज़ा कुल्लुहु कौलुहु' (यह सब उसका कौल है - त)। और भी वक़्तन-फ़वक़्तन अहादीस में कुछ न कुछ कहे बग़ैर नहीं छोड़ते। अल्लाहू अकबर, मुआज़ल्लाहि मिन शर्रिही (अल्लाह तआला बहुत बड़ा है, अल्लाह की पनाह उसके शर से - त)।

अल-जवाब: अल्लाह अज़-व-जल्ल गुमराही और बेहयाई से पनाह दे। फ़क़ीर ने 'अन्बाउल मुस्तफ़ा' (सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि वसल्लम) के मुख़्तसर जुमलों में इन शुबहात (संदेहों) और इन जैसे हज़ारों हों तो सब का शाफ़ी (संतोषजनक) जवाब दे दिया है, मगर वहाबिय्या अपनी ख़ुराफ़ात से बाज़

नहीं आते। 'अद-दौलतुल मक्किया' और उसकी तालीक़ 'अल-फ़ुयूज़ुल मक्किया' में बयान अमीन है। मैं फिर तज़कीर (याद दिलाना) कर दूँ कि इंशाअल्लाह बार-बार सवाल की हाजत न हो और ज़ी-फ़हम सुन्नी ऐसे लाख शुबहे हों तो सब का जवाब ख़ुद दे। फ़क़ीर ने क़ुरआन-ए-अज़ीम की आयात-ए-क़तईया से साबित किया कि क़ुरआन-ए-अज़ीम ने 23 बरस में ब-तदरीज़ नुज़ूल-ए-इजलाल फ़रमाकर अपने हबीब (सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि वसल्लम) को 'जमी-ए-मा काना व मा यकून' (जो कुछ हो चुका और जो कुछ होगा) का इल्म दे दिया।

[1] मुसनद अहमद बिन हंबल, हदीस अबी आमिर अल-अशअरी, अल-मक्तबतुल इस्लामी बैरूत 4/129 व 164।

पृष्ठ 513/750

علیہ وآلہ وسلم کو ،امام احمد نے پوچھا کہ یارسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم، میری کتنی عمر باقی ہے؟ آپ نے پانچ انگشت اٹھائیں، پھر برائے تعبیر محمد بن سیرین کے پاس آئے انہوں نے فرمایا : خمس لا یعلمھا الّا ھو ۔ ۱ (پانچ اشیاء ہیں جن کو اللہ تعالیٰ کے بغیر کوئی نہیں جانتا۔ت) تو معلوم ہوا کہ آپ مطلع علی الغیب نہیں ،دوسرا والدین کی حدیث کو بیان کیا کہ آپ کو نماز میں سہو ہو گیا جب ذوالیدین نے بار بار استفسار کیا اور آپ نے صحابہ سے دریافت کیا تو پھر نماز کو پورا کیا۔ اس حدیث سے یہ معلوم ہوتا ہے کہ آپ کے علم مشاہدہ میں نقصان ثابت ہو گیا، علم غیب پر اطلاع تو ابھی دور ہے انتہی، یہاں کے لوگ اس قدر بد معاش ہیں کہ مولوی محمود حسن مدرس اول درجہ حدیث نے مسلم شریف کے سبق میں باب شفاعت اس حدیث میں کہ آپ نے جب تمام مسلمین کی شفاعت کی اور سب کو نجات دے دیا مگر کچھ لوگ رہ گئے یعنی منافقین وغیرہ تو آپ نے انکے واسطے شفاعت کی تو فرشتوں نے منع کردیا کہ تم نہیں جانتے ہو کہ ان لوگوں نے کیا کچھ نکالا بعد آپ کے، تو اس سے ظاہر ہو گیا کہ جو لوگ یہ کہتے ہیں کہ ہر جمعہ میں رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم پر امت کے اعمال پیش ہوتے ہیں۔ یہ غلط ہے، محض افتراء ہے، علم غیب کا کیا ذکر، اللہ اکبر، ترمذی شریف کے سبق ۱۷۶ صفحہ آخر میں ہے، ایک عورت کے ساتھ زنا ہو گیا اکراہ کے ساتھ تو اس عورت نے ایک شخص پر ہاتھ رکھا، آپ نے اس شخص کو رجم کا حکم فرمایا۔ پس دوسرا شخص اٹھا، اس نے اقرار زنا کر لیا، پہلے شخص کو چھوڑا اور دوسرا مرجوم ہو گیا۔ آپ نے فرمایا تاب توبۃ الخ (اس نے پکی توبہ کی الخ ت) اگر شخص ثانی اقرار نہ کرتا تو پہلے شخص کی گردن اڑا دیتے، یہ اچھی غیب دانی ہے۔ ھذا کلہ قولہ (یہ سب اس کا قول

ہے۔ ت) اور بھی وقتاً فوقتاً احادیث میں کچھ نہ کچھ کہے بغیر نہیں چھوڑتے۔ اللہ اکبر، معاذ اللہ من شرہ (اللہ تعالٰی بہت بڑا ہے ، اللہ کی پناہ اس کے شر سے، ت)

الجواب: اللہ عزوجل گمراہی وبے حیائی سے پناہ دے، فقیر نے انباء المصطفٰی صلی اللہ تعالٰی علیہ وآلہ وسلم کے مختصر جملوں میں ان شبہات اور ان جیسے ہزاروں ہوں تو سب کا جواب شافی دے دیا مگر وہابیہ اپنی خرافات سے باز نہیں آتے اور الدولۃ المکیہ اور اس کی تعلیق الفیوض الملکیہ میں بیان امین ہے، میں پھر تذکیر کردوں کہ ان شاء اللہ بار بار سوال کی حاجت نہ ہو اور ذی فہم سُنّی ایسے لاکھ شبہے ہوں تو سب کا جواب خود دے ، فقیر نے قرآن عظیم کی آیات قطعیہ سے ثابت کیا کہ قرآن عظیم نے ۲۳ برس میں بتدریج نزول اجلال فرما کر اپنے حبیب صلی اللہ تعالٰی علیہ وآلہ وسلم کو جمیع ما کان ومایکون

۱ مسند احمد بن حنبل حدیث ابی عامر الاشعری المکتب الاسلامی بیروت ۴ / ۱۲۹ و ۱۶۴

Fatawa Razvia, Volume 29

That is, the knowledge of everything and every matter from the first day to the last day was bestowed [upon the Prophet]. It has been proven in the principles of jurisprudence that no solitary (ahad) hadith can be accepted against definitive (qat'i) verses of the Quran. Even if it is authentic in terms of its chain of narration (isnad), if someone presents an argument against the Great Quran, four things must be considered:

First: That verse must be definitive in its indication (Qat'i-ud-Dalalah) or it must be a similarly recurring (mutawatir) hadith. Second: The incident must have occurred after the completion of the entire Quranic revelation. Third: From that argument, it should be proven directly that knowledge was not attained, which the opponent seeks to establish. And in a state of distraction (dhuhool), certainty about it is impossible; and that does not negate the attainment of knowledge but rather affirms and necessitates it. Fourth: It should explicitly negate knowledge; otherwise, many sciences are not disclosed for some wisdom. Phrases like 'Allah knows best', 'only God knows', or 'none knows besides Allah' are sometimes used to cut off expectations for an answer, and negating inherent (dhati) reality does not necessitate negating bestowed (ata'i) reality. Allah Almighty will gather the messengers on the Day of Judgment and ask, "What was the response you received?" (referring to what the disbelievers responded when given guidance). They will say, "We have no knowledge." (1)

These four sentences are sufficient to refute these doubts and their likes. And here is a fifth point: that the incident relates to events from the first day until the Day of Resurrection, i.e., those events which are recorded in the Preserved Tablet (Lauh-e-Mahfuz), as the claim is regarding encompassing those. If it concerns matters related to the Essence, Attributes, Eternity, etc., which are infinite, then it is a departure from the discussion and an explicit entry into the realm of madness and folly. After considering these sentences, all the doubts of the Wahhabis are destroyed "like a foul tree uprooted from the surface of the earth, having no stability." (2) (Translator's note: Like a rotten tree that has been cut off from above the ground, it no longer has a stand. - T)

Now observe here: Firstly: All four doubts are rejected by the first point; which verse or hadith among them is definitive in indication (Qat'i-ud-Dalalah)? Secondly: The second and fourth doubts are rejected again by the second point, as these are

occurrences of the days of revelation, or at least it is not proven that they occurred after the completion of revelation. Thirdly: The second doubt is rejected a third time by the third point, and the third doubt is rejected a second time. In the second doubt, there was a clear, self-evident, and certain state of distraction (dhuhool). Prayer is a voluntary act, and a voluntary act is impossible without knowledge and consciousness, but the Wahhabis...

---

1. Al-Quran al-Karim 5/109
2. Al-Quran al-Karim 14/26

यानी पहले दिन से आख़िरी दिन तक की हर चीज़ और हर बात का इल्म अता फ़रमाया, और उसूलों में यह साबित हो चुका है कि क़तई आयतों के ख़िलाफ़ कोई हदीस-ए-आहाद भी स्वीकार नहीं की जा सकती, चाहे वह सनद के लिहाज़ से सही ही क्यों न हो। अगर कोई क़ुरान-ए-अज़ीम के ख़िलाफ़ कोई दलील पेश करे, तो चार बातों का ध्यान रखना ज़रूरी है:

अव्वल: वह आयत क़तई-उद-दलाला (निश्चित संकेत वाली) हो या वैसी ही मुतवातिर हदीस हो। दोयम: वह वाक़िया (घटना) मुकम्मल क़ुरान के नुज़ूल (अवतरण) के बाद का हो। सोयम: उस दलील से सीधे तौर पर इल्म का हासिल न होना साबित हो, जैसा कि विरोधी पक्ष साबित करना चाहता है। और ज़ेहनी ग़फ़लत (बिस्मृति/ज़ुहूल) की स्थिति में उस पर यक़ीन करना असंभव है, और वह इल्म के हासिल होने के विपरीत नहीं है बल्कि उसे साबित करने वाला और उसका तक़ाज़ा करने वाला है। चहारुम: वह स्पष्ट रूप से इल्म की नफ़ी (नकार) करे, वरना बहुत से इल्म का ज़ाहिर करना किसी मसलहत (भलाई) के तहत नहीं होता। 'अल्लाहु आलम' (अल्लाह बेहतर जानता है) या 'ख़ुदा ही जाने' या 'अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता' जैसी बातें जवाब की उम्मीद ख़त्म करने के लिए भी होती हैं। और ज़ाती हक़ीक़त की नफ़ी, अताई (प्रदत्त) हक़ीक़त की नफ़ी को लाज़िम नहीं करती। अल्लाह अज़्ज़-व-जल्ल क़यामत के दिन रसूलों को जमा करके फ़रमाएगा, "तुम्हें क्या जवाब मिला?" (यानी तुम जो काफ़िरों के पास हिदायत लेकर गए थे, उन्होंने क्या जवाब दिया), वे अर्ज़ करेंगे, "हमें कुछ इल्म नहीं"। (1)

इन शंकाओं और इनके जैसे अन्य के खंडन के लिए ये चार जुमले ही काफ़ी हैं। और यहाँ पाँचवीं बात यह है कि वह वाक़िया पहले दिन से क़यामत तक का हो, यानी उन हादसों से हो जो लौह-ए-महफ़ूज़ में दर्ज हैं, क्योंकि उनके ही अहाते (घेरे) का दावा है। अगर मामला ज़ात-ओ-सिफ़ात और अबद (अनंत काल) आदि जैसी असीमित चीज़ों से हो, तो यह बहस से बाहर निकलना और पागलपन व बेवकूफ़ी के दायरे में साफ़ तौर पर दाख़िल होना है। इन जुमलों को ध्यान में रखने के बाद वहाबियों की तमाम शंकाएँ बर्बाद हो जाती हैं, "जैसे एक ख़राब पेड़ जिसे ज़मीन के ऊपर से उखाड़ दिया गया हो, जिसमें कोई स्थिरता न हो"। (2) (अनुवादक नोट: जैसे एक गंदा पेड़ जो ज़मीन के ऊपर से काट दिया गया है, अब उसे ठहराव नहीं। - त)

अब यहाँ मुलाहिज़ा कीजिए: अव्वलन: चारों शंकाएँ पहले बिंदु से खारिज हैं; उनमें कौन सी आयत या हदीस क़तई-उद-दलाला है? सानियन: दूसरी और चौथी शंका दूसरे बिंदु से दोबारा खारिज हैं कि ये नुज़ूल (रहस्योद्घाटन) के दिनों की घटनाएँ हैं या कम से कम यह साबित नहीं है कि वे नुज़ूल के मुकम्मल होने के बाद की हैं। सालिसन: दूसरी शंका तीसरे बिंदु से तीसरी बार और तीसरी शंका दूसरी बार खारिज है। दूसरी शंका में तो स्पष्ट, स्वतः सिद्ध और निश्चित रूप से ग़फ़लत (ज़ुहूल) थी। नमाज़ एक स्वैच्छिक कार्य (फ़ेल-ए-इख़्तियारी) है और बिना ज्ञान और चेतना के स्वैच्छिक कार्य असंभव है, लेकिन वहाबी...

---

1. अल-क़ुरान अल-करीम 109/5
2. अल-क़ुरान अल-करीम 14/26

یعنی روز اول سے روز آخر تک کی ہر شئے ہر بات کا علم عطا فرمایا، اور اصول میں مبرہن ہو چکا کہ آیات قطعیہ کے خلاف کوئی حدیث احاد بھی مسلم نہیں ہو سکتی، اگرچہ سنداً صحیح ہو تو مخالف قرآن عظیم کے خلاف پر جو دلیل پیش کرے اس پر چار باتوں کا لحاظ لازم :

اول: وہ آیت قطعی الدلالتہ یا ایسی ہی حدیث متواتر ہو۔ دوم: واقعہ تمامی نزول قرآن کے بعد کا ہو۔ سوم: اس دلیل سے راساً عدم حصول علم ثابت ہو کہ مخالف مستدل ہے اور محل ذہول میں اس پر جزم محال، اور وہ منافی حصول علم نہیں بلکہ اس کا مثبت و مقتضی ہے۔ چہارم: صراحتہ نفی علم کرے ورنہ بہت علوم کا اظہار مصلحت نہیں ہوتا اور اللہ اعلم یا خدا ہی جانے یا اللہ کے سوا کوئی نہیں جانتا ایسی جگہ قطع طمع جواب کے لیے بھی ہوتا ہے اور نفی حقیقت ذاتیہ، نفی عطائیہ کو مستلزم نہیں۔ اللہ عزوجل روز قیامت رسولوں کو جمع کر کے فرمائے گا "مَاذَآ اُجِبْتُمْ" "تم جو کفار کے پاس ہدایت لے کر گئے انہوں نے کیا جواب دیا، عرض کریں گے "لَا عِلْمَ لَنَا" ۱۔ ہمیں کچھ علم نہیں۔

ان شبہات اور انکے امثال کے رد کو بھی چار جملے بس ہیں، اور یہاں امر پنجم اور ہے کہ وہ واقعہ روز اول سے قیام قیامت تک یعنی ان حوادث سے ہو جو لوح محفوظ میں ثبت ہیں کہ انہیں کے احاطہ کا دعویٰ ہے۔ امور متعلقہ ذات و صفات وابد و غیرہ نامتناہیات سے ہو تو بحث سے خروج اور دائرہ جنون و سفاہت میں صریح ولوج ہے۔ ان جملوں کے لحاظ کے بعد وہابیہ کے تمام شبہات بر باد ہو جاتے ہیں "كَشَجَرَةٍ خَبِيْثَةِ نِ اجْتُثَّتْ مِنْ فَوْقِ الْاَرْضِ مَا لَهَا مِنْ قَرَارٍ" ۲۔ (جیسے ایک گندہ پیڑ کہ زمین کے اوپر سے کاٹ دیا گیا ہے اب اسے قیام نہیں۔ ت)

اب یہیں ملاحظہ کیجئے: اولاً: چاروں شبہے امر اول سے مردود ہیں ان میں کون سی آیت یا حدیث قطعی الدلالتہ ہے۔ ثانیاً: دوسرا اور چوتھا شبہ امر دوم سے دوبارہ مردود ہیں کہ یہ ایام نزول کے وقائع ہیں یا کم از کم ان کا بعد تمامی نزول ہونا ثابت نہیں۔ ثالثاً: دوسرا شبہ امر سوم سے سہ بارہ اور تیسرا دوبارہ مردود ہے، شبہ دوم میں تو صریح بدیہی یقینی ذہول تھا، نماز فعل اختیاری ہے اور فعل اختیاری بے علم و شعور ناممکن مگر وہابیہ

---

۱ القرآن الکریم ۱۰۹/۵ ۲ القرآن الکریم ۲۶/۱۴

Fatawa Rizvia, Volume 29

They deny even self-evident truths. *Dhalika bi'annahum qawmun yukabirun* (This is because they are a nation that rejects the truth. - Transl.) And the situation of the third doubt is also clear: the massive crowd on the Day of Judgment, the gathering of all the first and the last, humans and jinn, the location spanning millions of stages, and on the Reservoir (Hawdh), the Bridge (Sirat), and the Scales (Mizan), numbers beyond counting, different tasks, and in every place, only one Muhammad, the Messenger of Allah, the Master of Mankind (peace and blessings be upon him and his family) is the caretaker. Even a ten-millionth of a ten-millionth portion of this crowd, these great and important tasks, if placed on ten thousand people whose intellect is perfectly complete, senses fully gathered, and heart of the highest stability, their senses would fly away, they would lose their wits. This is the pure chest of Muhammad, the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him), in the presence of whose vastness, the Great Throne along with all the worlds is like a small insect in a vast, desolate desert, of which his Lord says: "Have We not expanded for you your breast?" (1). Then, besides these great and beyond-limit tasks, that terrifying time when great Prophets and Messengers will cry "Myself, myself!", and the Lord, Mighty and Majestic, manifests with such intense wrath as has never happened before and will never happen after. Then, a Muslim is dearer to Him than a single child is to a kind mother. That surge of awe, that abundance of work, that overflowing mercy, the tour of millions of stages, looking towards millions of directions, thinking towards trillions of sides—in such a state, if some things slip from the holy mind, it is pure miracle, above which is only the knowledge of Allah and that's it. *Wa lakin al-wahhabiyyata qawmun la ya'qilun* (But the Wahhabis are a people who do not understand. - Transl.) And a clear proof of this is the showing of the entire Ummah to the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him and his family); the deeds of the entire Ummah are continuously presented to the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him and his family), about which numerous Hadiths speak. Although the Wahhabis deny this with their stubbornness, the clearest, most explicit, and definitive proof is that who is narrating the Hadith about this event occurring regarding some people at the end of the Day of Judgment? It is the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him and his family) himself who is stating it. If there were no oversight in that great crowd and significant tasks, this event would not have occurred; at that time, such oversight was

inevitable. "So that Allah might accomplish a matter already ordained." (2). But the Wahhabis are a group that creates division (Transl.).

Fourthly: The first doubt is again rejected by the fourth point; telling someone the duration of their life and the time of their death...

1. The Holy Quran 94/1
2. The Holy Quran 8/42 Page 515 of 750

वे स्पष्ट सत्यों को भी नकारते हैं। दालिका बि-अन्नहुम क़ौमुन युकाबिरून (यह इसलिए है क्योंकि वे सत्य को नकारने वाली जाति हैं। - अनु.) और तीसरे संदेह की स्थिति भी स्पष्ट है: क़यामत के दिन की विशाल भीड़, सभी पहले और बाद वालों, इंसानों और जिन्न का जमावड़ा, लाखों मंज़िलों की दूरी पर स्थित स्थान, और हौज, सिरात तथा मीज़ान पर गिनती की सीमा से बाहर संख्या, अलग-अलग कार्य और हर जगह देखभाल करने वाले केवल एक मुहम्मद, अल्लाह के रसूल, मानव जाति के स्वामी (उन पर और उनके परिवार पर अल्लाह की सर्वश्रेष्ठ कृपा और शांति हो)। इस भीड़ का दस-करोड़वां हिस्सा, ये महान और महत्वपूर्ण कार्य यदि ऐसे दस हज़ार लोगों पर हों जिनकी बुद्धि अत्यंत पूर्ण, इंद्रियां पूरी तरह से संचित और हृदय उच्चतम कोटि का स्थिर हो, तो उनके होश उड़ जाएं, उनकी इंद्रियां काम करना बंद कर दें। यह मुहम्मद, अल्लाह के रसूल (अल्लाह उन पर कृपा और शांति बरसाए) का पवित्र सीना है, जिसकी विशालता के सामने महान अर्श (सिंहासन) अपने सभी लोकों के साथ एक विशाल सुनसान रेगिस्तान में एक मामूली कीड़े के समान है, जिसके बारे में उनका रब फ़रमाता है: "क्या हमने तुम्हारा सीना नहीं खोल दिया?" (1)। फिर, इन महान और सीमा-रहित कार्यों के अलावा, वह भयानक समय जब बड़े-बड़े नबी और रसूल 'नफ़्सी-नफ़्सी' (मेरा क्या होगा) पुकारेंगे, और रब अज़्ज़-ओ-जल्ल ऐसे प्रचंड प्रकोप के साथ प्रकट होगा जैसा न उससे पहले कभी हुआ और न उसके बाद कभी होगा। फिर, एक मुसलमान उन्हें एक दयालु माँ के इकलौते बच्चे से भी अधिक प्रिय है। वह रौब का उफ़ान, वह काम की बहुतायत, वह दया की प्रचुरता, लाखों मंज़िलों का दौरा, करोड़ों दिशाओं में दृष्टि, खरबों तरफ़ का विचार—ऐसी स्थिति में यदि कुछ बातें पवित्र मस्तिष्क से ओझल हो जाएं तो यह साक्षात चमत्कार है, जिससे ऊपर केवल अल्लाह का ज्ञान है। व लाकिन अल-वहाबियात क़ौमुन ला याअक़िलून (लेकिन वहाबी वे लोग हैं जिन्हें अक्ल नहीं है। - अनु.) और इस पर स्पष्ट प्रमाण हुज़ूर अकदस (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को पूरी उम्मत का दिखाया जाना है; हुज़ूर अकदस के सामने पूरी उम्मत के कर्म निरंतर प्रस्तुत होते रहते हैं, जिस पर अनेक हदीसें गवाह हैं। हालाँकि वहाबी अपनी ढिठाई से इनकार करें, लेकिन सबसे साफ़, स्पष्ट और निश्चित प्रमाण यह है कि क़यामत के अंत में कुछ लोगों के संबंध में इस घटना के घटने की हदीस कौन बयान कर रहा है? स्वयं हुज़ूर अकदस (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ही तो फ़रमा रहे हैं। यदि उस विशाल भीड़ और महत्वपूर्ण कार्यों में ध्यान न भटकता, तो यह घटना ही न होती; उस समय ऐसे विस्मरण के बिना कोई

चारा नहीं था। "ताकि अल्लाह उस काम को पूरा कर दे जिसे होना ही था।" (2)। लेकिन वहाबी एक फूट डालने वाली जमात है।

चौथा: पहला संदेह चौथी बात से फिर से खंडित हो जाता है; किसी को उसकी आयु की अवधि और मृत्यु का समय बता देना...

1. अल-क़ुरान अल-करीम 94/1
2. अल-क़ुरान अल-करीम 8/42 पृष्ठ 515 का 750

بدیہیات میں بھی انکار رکھتے ہیں۔ ذلک بانھم قوم یکابرون (یہ اس لیے ہے کہ وہ حق کا انکار کرنے والی قوم ہے۔ت) اور شُبہ سوم کا حال بھی ظاہر، روزِ قیامت کا عظیم ہجوم، تمام اولین و آخرین و انس و جن کا ازدحام، لاکھوں منزل کے دور میں مقام اور حوض و صراط و میزان پر گنتی شمار کی حد سے باہر، مختلف کام اور ہر جگہ خبر گیر اں صرف ایک محمد رسول اللہ سید الانام علیہ و علٰی آلہ افضل الصلوۃ و السلام اس سے کروڑ ویں حصے کا کروڑ واں حصہ ہجوم، کار ہائے عظیمہ مہمہ اگر ایسے دس ہزار پر ہو جن کی عقل نہایت کامل اور حواس کمالِ مجتمع اور قلب اعلٰی درجہ کا ثابت تو ان کے ہوش پراں ہو جائیں، آئے حواس گم ہوں یہ تو محمد رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کا سینہ پاک ہے جس کی وسعت کے حضور عرش اعظم مع جملہ عوالم صحرائے لق و دق میں بھنگے کے مانند ہیں جسے ان کا رب فرماتا ہے: "اَلَمْ نَشْرَحْ لَكَ صَدْرَكَ ۱"۔ (کیا ہم نے تمہارا سینہ کشادہ نہ کیا۔ت) پھر ان عظیم و خارج از حد کاموں کے علاوہ وقت وہ سہناک کہ اکابر انبیاء و مرسلین نفسی نفسی پکاریں، رب عز و جل اس غضب شدید کے ساتھ تجلی فرمائے ہو کہ نہ اس سے پہلے کبھی ہوئی نہ اس کے بعد کبھی ہو، پھر ایک مسلمان انہیں اس سے زیادہ پیارا جیسے مہربان ماں کو اکلوتا بچہ، وہ جوش ہیبت، وہ کام کی کثرت، وہ وفور رحمت، وہ لاکھوں منزل کا دورہ، وہ کروڑوں طرف نظر، سنکھوں طرف خیال، ایسی حالت میں اگر بعض باتیں ذہن اقدس سے اتر جائیں تو عین اعجاز ہے، جس سے بالا صرف علم الٰہی ہے وبس۔ "ولکن الوھابیۃ قوم لایعقلون" (لیکن وہابی وہ قوم ہیں جنہیں عقل نہیں۔ت) اور اس پر صریح دلیل حضور اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وآلہ وسلم کو تمام امت کا دکھایا جانا حضور اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وآلہ وسلم کے تمام امت کے اعمال برابر عرض ہوتے رہنا تو ہے ہی، جس پر احادیث

کثیرہ ناطق، اگرچہ وہابیہ اپنی ڈھٹائی سے انکار کریں مگر سب سے زیادہ صاف صریح دلیل قطعی یہ ہے کہ آخر روز قیامت کچھ لوگوں کی نسبت یہ واقعہ پیش آنے کی حدیث بیان کون فرما رہا ہے، خود حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم ہی تو ارشاد فرما رہے ہیں اگر اس ہجوم عظیم، کار ہائے خطیر میں ذہول نہ ہوتا تو یہ واقعہ ہی نہ ہوتا تو اس وقت اتنے ذہول سے چارہ نہیں- "لِيَقْضِيَ اللهُ اَمْرًا كَانَ مَفْعُوْلًا ۲"۔ (تاکہ اللہ پورا کرے جو کام ہونا ہے۔ت) ولکن الوہابیہ قوم یفرقون (لیکن وہابی تفریق پیدا کرنے والی قوم ہے۔ت)

رابعا: پہلا شبہ امر چہارم سے دوبارہ مردود ہے کسی کی مقدار عمر وقت موت اسے بتا دینا

۱ القرآن الکریم ۱/۹٤ ۲ القرآن الکریم ۸ / ٤۲ Page 515 of 750

Fatawa Razawiyyah (Volume 29)

...most of the time it is against the religious welfare for most people, so he refrained from answering such a futile question and referred it to God; how is this far-fetched?

Benefit: From these sentences, multiple rebuttals to those four doubts have been made. Now, by the grace of Allah, I will mention some benefits so that the complete state of the Wahhabis becomes clearer than the sun, and for each of the four doubts, four rebuttals are produced.

I say: And with Allah is success (i.e., I say, and success is from Allah alone. - T)

The first doubt: Two rebuttals have passed from the first and fourth points. Thirdly, the ignorance of the Wahhabi scholars is something to behold. Imam Ahmad bin Hanbal saw a dream and asked Imam Ibn Sirin for its interpretation. Subhan Allah! If one is to fabricate a lie, let it be such a lie! Imam Ahmad was born fifty-three and a half (53 1/2) years after the death of Imam Ibn Sirin. Ibn Sirin's death was on the 9th of Shawwal, 110 AH, and Imam Ahmad's birth was in Rabi' al-Awwal, 164 AH. It is stated in Al-Taqreeb:

Muhammad bin Sirin was trustworthy, reliable, a worshipper, and of great stature; he died in the year 110 AH. [1]	**Muhammad bin Sirin is trustworthy, reliable, a worshipper, and of great worth and status; his passing occurred in 110 AH. (T)**

It is stated in Wafayat al-A'yan:

Muhammad bin Sirin had great mastery in the interpretation of dreams; he died on the ninth of Shawwal, Friday, in the year 110 AH in Basra. [2]	**Muhammad bin Sirin, who possessed complete expertise in the interpretation of dreams, passed away on 9 Shawwal 110 AH on Friday in Basra. (T)**

It is stated in Al-Taqreeb:

Ahmad bin Muhammad bin Hanbal died in [the year] forty-one [after 200 AH] and he was seventy-seven years old. [3]	**Imam Ahmad bin Muhammad bin Hanbal passed away in 241 AH when his blessed age was 77 years. (T)**

[1] Taqreeb al-Tahdheeb, Biography 5966, Muhammad bin Sirin, Dar al-Kutub al-Ilmiyyah, Beirut, 2/85 [2] Wafayat al-A'yan, Biography 525, Muhammad bin Sirin, Dar

al-Thaqafah, Beirut, 4/182 [3] Taqreeb al-Tahdheeb, Biography 96, Ahmad bin Muhammad bin Hanbal, Dar al-Kutub al-Ilmiyyah, Beirut, 1/24

फ़तावा रज़विया (खण्ड २९)

...ज़्यादातर समय अधिकांश लोगों के लिए धार्मिक कल्याण के विरुद्ध है, इसलिए उन्होंने ऐसे व्यर्थ प्रश्न का उत्तर देने से परहेज़ किया और इसे ईश्वर के हवाले कर दिया; यह कैसे असंभव है?

फ़ायदा: इन वाक्यों से उन चारों संशयों के कई खंडन हो गए हैं। अब, अल्लाह की तौफ़ीक से, मैं कुछ लाभों का उल्लेख करूँगा ताकि वहाबियों की पूर्ण स्थिति सूर्य से भी अधिक स्पष्ट हो जाए, और चारों संशयों में से प्रत्येक के लिए चार-चार खंडन हो जाएँ।

मैं कहता हूँ: और अल्लाह की ही तौफ़ीक से सफलता है (यानी, मैं कहता हूँ, और सफलता केवल अल्लाह की ओर से है। - त)

पहला संशय: पहले और चौथे बिंदु से दो खंडन बीत चुके हैं। तीसरा, वहाबी विद्वानों की अज्ञानता देखने लायक है। इमाम अहमद बिन हंबल ने एक सपना देखा और इमाम इब्न सिरीन से उसकी व्याख्या पूछी। सुभान अल्लाह! अगर कोई झूठ गढ़ना ही है, तो ऐसा झूठ गढ़ो! इमाम अहमद का जन्म इमाम इब्न सिरीन की मृत्यु के साढ़े तिरपन (५३-१/२) वर्ष बाद हुआ था। इब्न सिरीन की मृत्यु ९ शव्वाल ११० हिजरी को हुई थी, और इमाम अहमद का जन्म रबी-उल-अव्वल १६४ हिजरी में हुआ था। अल-तक़रीब में है:

मुहम्मद बिन सिरीन भरोसेमंद, प्रामाणिक, उपासक और बड़े पद वाले थे; उनकी मृत्यु वर्ष ११० हिजरी में हुई। १	**मुहम्मद बिन सिरीन विश्वसनीय, प्रामाणिक, इबादत गुज़ार और बड़े मान-सम्मान वाले हैं, उनका निधन ११० हिजरी में हुआ। (त)**

वफ़यातुल अयान में है:

मुहम्मद बिन सिरीन को स्वप्न की व्याख्या में महारत हासिल थी; उनकी मृत्यु ९ शव्वाल, शुक्रवार, ११० हिजरी में बसरा में हुई। २	**मुहम्मद बिन सिरीन, जिन्हें सपनों की ताबीर में पूर्ण दक्षता प्राप्त थी, उन्होंने ९ शव्वाल ११० हिजरी को बसरा में शुक्रवार के दिन वफ़ात पाई। (त)**

तक़रीब में है:

अहमद बिन मुहम्मद बिन हंबल का निधन इकतालीस [२४१ हिजरी] में हुआ और वह सतहत्तर वर्ष के थे। ३

इमाम अहमद बिन मुहम्मद बिन हंबल ने २४१ हिजरी में वफ़ात पाई जब आपकी मुबारक उम्र ७७ वर्ष थी। (त)

१ तक़रीब अल-तहज़ीब, जीवनी ५९६६, मुहम्मद बिन सिरीन, दार अल-कुतुब अल-इल्मिया, बेरुत २/८५ २ वफ़यातुल अयान, जीवनी ५२५, मुहम्मद बिन सिरीन, दार अल-सक़ाफ़ा, बेरुत ४/१८२ ३ तक़रीब अल-तहज़ीब, जीवनी ९६, अहमद बिन मुहम्मद बिन हंबल, दार अल-कुतुब अल-इल्मिया, बेरुत १/२४

पृष्ठ ५१६/७५०

غالب اوقات اکثر ناس کے لیے مصلحت دینیہ کے خلاف ہے تو ایسے مہمل سوال کے جواب سے اعراض فرمایا اور حوالہ بخدا فرمایا، کیا مستبعد ہے۔

فائدہ : یہ انہیں جملوں سے ان چاروں شبہوں کے متعدد رد ہوگئے، اب بتوفیقہ تعالٰی بعض افادیت ذکر نہ کریں کہ وہابیہ کی کمال حالت آفتاب سے زیادہ روشن ہو اور چاروں شبہوں میں ہی ایک پر چار چار رد ہو جائیں۔

فاقول: وباللہ التوفیق (چنانچہ میں کہتا ہوں اور توفیق اللہ ہی کی طرف سے ہے۔ت)

شبھہ اولٰی: کے دو رد گزرے امرادل و چہارم سے، ثالثاً حضرات علمائے وہابیہ کی جہالت تماشا کردنی۔ امام احمد بن حنبل نے خواب دیکھا اور امام ابن سیرین سے تعبیر پوچھی۔ اے سبحان اللہ! جھوٹ گھڑے تو ایسا گھڑے، امام ابن سیرین کی وفات سے ساڑھے تریپن (۵۳-۱/۲) برس بعد امام احمد کی ولادت ہوئی ہے۔ ابن سیرین کی وفات نہم شوال ایک سو دس (۱۱۰ھ) کو ہے اور امام احمد کی ولادت ربیع الاول ایک سو چونسٹھ (۱۶۴ھ) میں۔ تقریب میں ہے:

محمد بن سیرین ثقة ثبت عابد کبیر القدر مات سنة عشر ومائة ۱۔

محمد بن سیرین ثقہ، ثبت، عبادت گزار اور بڑی قدر ومنزلت والے ہیں، ان کا وصال ۱۱۰ھ میں ہوا ت)

وفیات الاعیان میں ہے:

محمد بن سيرين له اليد الطولى في تعبير الرؤيا توفى تاسع شوال يوم الجمعة سنة عشر ومائة بالبصرة ۲۔

محمد بن سیرین جو کہ خوابوں کی تعبیر میں کامل مہارت رکھتے تھے، نے ۹ شوال ۱۱۰ھ بروز جمعہ میں بصرہ میں وفات پائی۔ت)

تقریب میں ہے:

احمد بن محمد بن حنبل مات احدى واربعين وله سبع وسبعون سنة ۳۔

امام احمد بن محمد بن حنبل نے ۲۴۱ھ میں وصال فرمایا جب کہ آپ کی عمر مبارک ۷۷ برس تھی۔ (ت)

۱ تقریب التهذیب ترجمه ۵۹۶۶ محمد بن سیرین دار الکتب العلمیة بیروت ۲ / ۸۵ ۲ وفیات الاعیان ترجمه ۵۲۵ محمد بن سیرین دار الثقافة بیروت ۴ / ۱۸۲ ۳ تقریب التهذیب ترجمه ۹۶ احمد بن محمد بن حنبل دار الکتب العلمیة بیروت ۱ / ۲۴

In *Wafayat al-A'yan* it is stated:

[Arabic Box Left]: Imam Ahmad bin Hanbal's mother left Merv while she was pregnant with him, and she gave birth to him in Baghdad in the month of Rabi' al-Awwal in the year one hundred and sixty-four. [Urdu Box Right]: Imam Ahmad bin Hanbal's noble mother left Merv while Imam Ahmad was in her womb. Consequently, his mother gave birth to him in the city of Baghdad in Rabi' al-Awwal 164 AH. (T)

But say that Imam Ahmad (may Allah have mercy on him) saw this dream when he was still seed in the loins of his great-grandfather, and Imam Ibn Sirin knew of a hidden matter even more subtle than what is in the wombs (i.e., that which is in the loins) and gave its interpretation. If, according to you, such knowledge of the unseen did not belong to the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him), then Ibn Sirin possessed knowledge of the unseen. This might be easier for the Wahhabi gentlemen to accept, as they do not harbor as much enmity toward the virtues of others as they do toward the source and origin of all virtues, namely the holy personage of the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him).

A Splendid Anecdote: The ignorance of the Deobandi scholars is noteworthy; the ignorance of their elders was even greater than theirs. The eminent "Imam of the Wahhabis," the late Maulvi Gangohi, showcasing his "prowess" in one of his fatwas, states: Regarding the execution of Husayn bin Mansur, both Imam Abu Yusuf—the student of Imam Abu Hanifa and the "Master of Scholars"—and Sayyid al-Ta'ifa Junayd Baghdadi (may Allah have mercy on him)—who is the reference point for all Sufi orders—issued a fatwa for his execution, and it was justified. (Footnote: A fatwa of "execution for execution" is also a sight to behold, meaning whether execution itself should be executed or the executioner. 12). They also possess excellence in the art of history. (They also claim mastery in historical studies. T)

Our master Imam Abu Yusuf (may Allah be pleased with him) passed away on the 5th of Rabi' al-Awwal or Rabi' al-Akhir in 182 AH, while the incident involving Hadrat Husayn bin Mansur Hallaj (may his secret be sanctified) took place on 24 Dhu al-Qi'dah 309 AH. There is a gap of nearly one hundred and twenty-eight (128) years between the two. Yet, call Imam Abu Yusuf (may Allah be pleased with him) a knower of the unseen, for knowing of an event occurring a century and a quarter after his

death, he issued an advance fatwa for Hallaj's execution. In *Tadhkirat al-Huffaz* by Allama Dhahabi, it is written:

[Arabic Box Left]: Al-Qadi Abu Yusuf, the Imam, the great scholar, the jurist of the two Iraqs, the companion of Abu Hanifa... [Urdu Box Right]: Qadi Abu Yusuf is an Imam, a great scholar, the jurist of the people of Kufa and Basra, and a student of Imam Abu Hanifa; all Muslims...

1. *Wafayat al-A'yan*, biography 20, Ahmad bin Hanbal, Dar al-Thaqafa, Beirut, 1/64.

वफ़यात अल-अयान में उल्लेख है:

[अरबी बॉक्स]: इमाम अहमद बिन हंबल की माता मर्व से निकलीं जब वे उनके गर्भ में थे, और उन्होंने बगदाद में रबी-उल-अव्वल महीने में वर्ष एक सौ चौंसठ में उन्हें जन्म दिया। [उर्दू बॉक्स]: इमाम अहमद बिन हंबल की आदरणीय माता मर्व से निकलीं जबकि इमाम अहमद उनके गर्भ में थे, इसलिए उनकी माता ने उन्हें बगदाद शहर में रबी-उल-अव्वल शरीफ 164 हिजरी में जन्म दिया। (त)

लेकिन यह कहें कि इमाम अहमद (रहमतुल्लाह अलैह) ने यह सपना तब देखा जब वे अपने परदादा की पीठ में नूतफ़ा (अंश) के रूप में थे, और इमाम इब्न सिरीन ने 'मा फ़िल अरहाम' (जो गर्भाशयों में है) से भी अधिक सूक्ष्म 'ग़ैब मा फ़िल असलायब' (जो पीठों में है) को जाना और उसकी व्याख्या बताई। यदि इस प्रकार रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के लिए ग़ैब (परोक्ष) का ज्ञान सिद्ध नहीं हुआ, तो इब्न सिरीन को ग़ैब का ज्ञान हुआ। यह शायद वहाबी सज्जनों के लिए आसान हो क्योंकि उन्हें दूसरों के गुणों से उतनी शत्रुता नहीं है जितनी समस्त गुणों के मूल स्रोत, अर्थात हुज़ूर अकदस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की पवित्र हस्ती से है।

एक शानदार किस्सा: देवबंदी विद्वानों की अज्ञानता उल्लेखनीय है; उनके बड़ों की अज्ञानता तो उनसे भी बढ़कर थी। वहाबियों के'इमाम' मरहूम मौलवी गंगोही साहब ने अपने एक फ़तवे में अपनी काबिलियत दिखाते हुए कहा है: हुसैन बिन मंसूर की हत्या पर, इमाम अबू यूसुफ़—जो इमाम अबू हनीफ़ा के छात्र और 'विद्वानों के सरदार' थे—और सैय्यद-उत-तायफ़ा जुनैद बग़दादी (रहमतुल्लाह अलैह)—जो सभी सूफ़ी सिलसिलों के केंद्र हैं—दोनों ने उनकी हत्या का फ़तवा दिया, और वह उचित था। (फुटनोट: हत्या पर हत्या का फ़तवा भी देखने लायक है, यानी हत्या को मारा जाए या हत्यारे को। 12)। वे इतिहास की कला में भी महारत रखते हैं। (इतिहास के अध्ययन में भी वे पूर्णता रखते हैं। त)

हमारे स्वामी इमाम अबू यूसुफ़ (रज़ियल्लाहु अन्हु) की मृत्यु 5 रबी-उल-अव्वल या रबी-उल-आख़िर 182 हिजरी में हुई, जबकि हज़रत हुसैन बिन मंसूर हल्लाज (कुद्दसा सिर्रहु) की घटना 24 ज़िलक़ादा 309 हिजरी की है। दोनों के बीच लगभग एक सौ अट्ठाइस (128) वर्षों का अंतर है। फिर भी इमाम अबू यूसुफ़ (रज़ियल्लाहु अन्हु) को ग़ैब का ज्ञाता कहें कि उन्होंने अपनी मृत्यु के सवा सौ साल बाद की घटना को जानकर हल्लाज की हत्या का पहले से ही फ़तवा दे दिया। अल्लामा ज़हबी की तज़किरात अल-हुफ़्फ़ाज़ में लिखा है:

[अरबी बॉक्स]: अल-काज़ी अबू यूसुफ़, इमाम, महान विद्वान, दो इराक़ों के फ़क़ीह, अबू हनीफ़ा के साथी... [उर्दू बॉक्स]: काज़ी अबू यूसुफ़ इमाम, अल्लामा, कूफ़ा और बसरा के लोगों के फ़क़ीह और इमाम अबू हनीफ़ा के छात्र हैं; समस्त मुसलमान...

1. वफ़यात अल-अयान, जीवनी 20, अहमद बिन हंबल, दार अल-सकाफ़ा बेरुत, 1/64।

पृष्ठ 517 / 750

وفیات الاعیان میں ہے:

[عربی عبارت]: الامام احمد بن حنبل خرجت أُمُّه من مرو وهي حامل به فولدته في بغداد في شهر ربیع الاول سنة اربع وستین ومائة 1- [اردو ترجمہ]: امام احمد بن حنبل کی والدہ ماجدہ مرو سے نکلیں جبکہ امام احمد ان کے شکم میں تھے، چنانچہ آپ کی والدہ نے آپ کو شہر بغداد میں ربیع الاول شریف ۱۶۴ھ میں جنا۔ (ت)

مگر یہ کہئے کہ امام احمد علیہ الرحمہ نے جب کہ اپنے جد امجد کی پشت میں نطفے تھے یہ خواب دیکھا اور امام ابن سیرین نے مافی الارحام (جو رحموں میں ہے۔ت) سے بھی خفی تر غیب مافی الاصلاب (جو پشتوں میں سے۔ت) کو جانا اور تعبیر بیان کی۔ یوں آپ کے طور پر رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وآلہ وسلم کی غیب دانی نہ ہوئی تو ابن سیرین کو علم غیب ہوا۔ یہ شاید حضرات وہابیہ پر آسان ہو کہ ان کو اوروں کو فضائل سے اتنی عداوت نہیں جتنی اصل اُصول جملہ فضائل یعنی حضور اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وآلہ وسلم سے ہے۔

لطیفہ جلیلہ: دیوبندی علماء کی جہالت اپنے قابل ہے، ان کے اکابر کی ان سے بھی بڑھ کر ان کے قابل تھی، عالیجناب امام الوہابیہ مولوی گنگوہی صاحب آنجہانی اپنے ایک فتوے میں اپنی دادِ قابلیت دیتے ہوئے فرماتے ہیں، حسین بن منصور کے قتل پر امام ابو یوسف شاگرد امام ابو حنیفہ جو کہ سیّد العلماء تھے اور سید الطائفہ جنید بغدادی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ جو تمام سلاسل کے مرجع ہیں دونوں نے فتوٰی قتل کا دیا، بجا ہے۔ (حاشیہ: قتل پر قتل کا فتوٰی بھی قابلِ تماشہ ہے، یعنی قتل کو قتل کیا جائے یا قاتل کو۔۱۲) در فن تاریخ ہم کمالے دارند (فن تاریخ میں بھی کمال رکھتے ہیں۔ت)

سیدنا امام ابو یوسف رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی وفات پنجم ربیع الاول یا ربیع الآخر ایک سو بیاسی ہجری (۱۸۲ھ) کو ہے اور حضرت حسین بن منصور حلاج قدس سرہ، کا یہ واقعہ ۲۴ ذی القعدہ (۳۰۹ھ) تین سو نو ہجری میں، دونوں میں قریب ایک سو اٹھائیس (۱۲۸) برس کے فاصلہ ہے مگر امام ابو یوسف رضی اللہ تعالیٰ عنہ کو غیب داں کہیے کہ اپنی وفات سے سوا سو برس بعد کے واقعہ کو جان کر حلاج کے قتل کا پیشگی فتویٰ دے گئے۔ تذکرۃ الحفاظ علامہ ذہبی میں ہے:

[عربی عبارت]: القاضی ابو یوسف الامام العلامۃ الفقیہ العراقین صاحب ابی حنیفۃ اجتمع [اردو ترجمہ]: قاضی ابو یوسف امام، علامہ، اہلِ کوفہ و بصرہ کے فقیہ اور امام ابو حنیفہ کے شاگرد ہیں، تمام مسلمان

1 وفیات الاعیان ترجمہ ۲۰ احمد بن حنبل دار الثقافۃ بیروت ۶۴/۱

Fatawa Rizvia Volume 29

(Arabic) The Muslims are unanimous about him. He passed away in the month of Rabi' al-Thani 182 AH at the age of 69 years. There are numerous reports regarding his knowledge and leadership. (T)

It is in Wafayat al-A'yan:

(Arabic) The birth of Qazi Abu Yusuf was in 113 AH and he passed away on 5th Rabi' al-Awwal 182 AH on Thursday at the time of early Zuhr in Baghdad. (T)

In the same book, regarding the date of the martyrdom of Hazrat Hallaj, it is written:

(Arabic) 23rd or 24th Dhu al-Qi'dah 309 AH, Tuesday (T)

The famous story of Sultan Aurangzeb Muhiuddin Alamgir (may Allah illuminate his proof) is that hearing the fame of a claimant to sainthood, he went to visit him. His age was said to be very long. The Sultan asked, "What is your honorable age?" He replied, "I don't remember exactly, but I was a young man at the time when Alexander the Great was fighting Amir Timur." The Sultan remarked: "Besides miracles and unveilings, he also possesses excellence in the art of history." (T)

The Deobandi gentlemen had kept the limit to fifty-three or fifty-four years, but Mr. Gangohi flew higher than one and a quarter hundred years, meaning the status according to knowledge. Following this tradition, if some Deobandi or Thanwi had written in the account of Hazrat Gangohi that his highness, the repository of Gangohism, was given a bath by Ibn Muljam, Yazid led his funeral prayer, and Shimr lowered him into the grave, would it have been far-fetched? In fact, it would have been closer to it for two reasons.

---

1. Tadhkirat al-Huffaz, biography 4/72 62, Abu Yusuf Yaqub bin Ibrahim, Dar al-Kutub al-Ilmiyyah Beirut 1/213.
2. Wafayat al-A'yan, biography 822, Qazi Abu Yusuf Yaqub bin Ibrahim, Dar al-Thaqafah Beirut 6/388.
3. Wafayat al-A'yan, biography 189, Al-Haj Husain bin Mansur, Dar al-Thaqafah Beirut 2/125.

फ़तावा रिज़विया खंड 29

(अरबी) मुसलमान उन पर एकमत हैं। उन्होंने रबी-उल-थानी 182 हिजरी में 69 वर्ष की आयु में निधन पाया। उनके ज्ञान और नेतृत्व के बारे में कई खबरें हैं। (त)

वफ़यात अल-अयान में है:

(अरबी) क़ाज़ी अबू यूसुफ़ का जन्म 113 हिजरी में हुआ और उनका निधन 5 रबी-उल-अव्वल 182 हिजरी को गुरुवार के दिन बगदाद में ज़ुहर के शुरुआती समय में हुआ। (त)

उसी में हज़रत हल्लाज की शहादत की तारीख के बारे में लिखा है:

(अरबी) 23 या 24 ज़ुल-क़ादा 309 हिजरी, मंगलवार (त)

सुल्तान औरंगज़ेब मुहीउद्दीन आलमगीर (अल्लाह उनके प्रमाण को रोशन करे) की प्रसिद्ध कहानी है कि एक विलायत (संतत्व) के दावेदार की प्रसिद्धि सुनकर वे उनसे मिलने गए। उनकी उम्र बहुत लंबी बताई जाती थी। सुल्तान ने पूछा, "आपकी सम्मानीय आयु कितनी है?" उन्होंने कहा, "मुझे ठीक से याद नहीं है, लेकिन जिस समय सिकंदर ज़ुल-क़रनैन अमीर तैमूर से लड़ रहा था, मैं जवान था।" सुल्तान ने कहा: "कश्फ़ और करामात के अलावा वे इतिहास की कला में भी पूर्णता रखते हैं।" (त)

देवबंदी साहबों ने तो तिरपन-चवन (53-54) वर्ष ही रखा था, लेकिन गंगोही साहब सवा सौ वर्ष से भी ऊँचे उड़ गए, यानी इल्म के अनुसार रुतबा। इस सुन्नत (परंपरा) पर कायम रहते हुए अगर कोई देवबंदी या थानवी हज़रत गंगोही के उल्लेख में लिख देता कि महामहिम गंगोहियत-मआब को इब्न मुल्ज़िम ने गुसल (स्नान) दिया, यज़ीद ने नमाज़ पढ़ाई और शिमर ने कब्र में उतारा, तो इसमें क्या असंभव था? बल्कि वह दो कारणों से इसके और भी निकट होता।

---

1. तज़किरात अल-हुफ़्फ़ाज़, जीवनी 4/72 62, अबू यूसुफ़ याक़ूब बिन इब्राहिम, दार अल-कुतुब अल-इल्मिया बेरुत 1/213।
2. वफ़यात अल-अयान, जीवनी 822, क़ाज़ी अबू यूसुफ़ याक़ूब बिन इब्राहिम, दार अल-सक़ाफ़ा बेरुत 6/388।
3. वफ़यात अल-अयान, जीवनी 189, अल-हज हुसैन बिन मंसूर, दार अल-सक़ाफ़ा बेरुत 2/125।

علیہ المسلمون مات فی ربیع الآخر سنۃ ثنتین وثمانین ومائۃ عن سبعین سنۃ الا سنۃ ولہ اخبار فی العلم والسیادۃ ۱۔

آپ پر متفق ہیں۔ آپ نے ماہ ربیع الثانی ۱۸۲ ہجری کو ۶۹ برس کی عمر میں وصال فرمایا۔ علم و سیادت میں ان کی متعدد خبریں ہیں۔ (ت)

وفیات الاعیان میں ہے:

کانت ولادۃ القاضی ابی یوسف سنۃ ثلث عشرۃ ومائۃ وتوفی یوم الخمیس اول وقت الظہر لخمس خلون من شہر ربیع الاول سنۃ اثنتین وثمانین ومائۃ ببغداد ۲۔

قاضی ابو یوسف کی ولادت ۱۱۳ھ کو اور وفات ۵ ربیع الاول ۱۸۲ھ بروز جمعرات بوقت اول ظہر بغداد میں ہوئی ۔ت)

اسی میں تاریخ شہادت حضرت حلاج میں لکھا:

"یوم الثلثاء لسبع بقین وقیل لست بقین من ذی القعدۃ سنۃ تسع وثلثمائۃ ۳۔

۲۳ یا ۲۴ ذوالقعدہ ۳۰۹ھ بروز منگل(ت)

سلطان اورنگزیب محی الدین عالمگیر انار اللہ تعالٰی برہانہ کی حکایت مشہور ہے کہ کسی مدعی ولایت کا شہرہ سن کر اس کے پاس تشریف لے گئے، اس کی عمر طویل بتائی جاتی تھی۔ سلطان نے پوچھا۔ جناب کی عمر شریف کس قدر ہے؟ کہا مجھے تحقیق تو یاد نہیں مگر جس زمانے میں سکندر ذوالقرنین امیر تیمور سے لڑ رہا تھا میں جوان تھا سلطان نے فرمایا: علاوہ کشف و کرامات در فن تاریخ ہم کمالے دارند (کشف و کرامات کے علاوہ فن تاریخ میں بھی کمال رکھتے ہیں۔ ت)

دیوبندی صاحبوں نے تو ترپن چون ہی برس کا بل رکھا تھا، جناب گنگوہی صاحب سوا سو برس سے بھی اونچے اڑ گئے یعنی شملہ بمقدار علم، اس سنت پر قائم ہو کر اگر کوئی دیوبندی یا تھانوی

حضرت گنگوہی صاحب کے تذکرہ میں لکھ دیتا کہ عالیجناب گنگوہیت مآب کو ابن ملجم نے غسل دیا اور یزید نے نماز پڑھائی اور شمر نے قبر میں اتارا تو کیا مستبعد تھا بلکہ وہ اس سے قریب تر ہوتا دو وجہ سے۔

---

۱ تذکرۃ الحفاظ ترجمہ ۴ / ۶۲ ۷۲ ابو یوسف یعقوب بن ابراہیم دارالکتب العلمیہ بیروت ۱ / ۲۱۳ ۲ وفیات الاعیان ترجمہ ۸۲۲ قاضی ابو یوسف یعقوب بن ابراہیم دارالثقافۃ بیروت ۶ / ۳۸۸ ۳ وفیات الاعیان ترجمہ ۱۸۹ الحاج حسین بن منصور دارالثقافۃ بیروت ۲ / ۱۲۵

Fatawa Razawiyya, Volume 29

Firstly: It is possible that there is a commonality of names, and the people who were involved in those tasks at the time of Gangohi Sahib's death had these names.

Secondly: The door of analogy is wide; as "for every Pharaoh, there is a Moses" (i.e., there is a Moses to oppose every Pharaoh. - Translator). However, in the words of Gangohi Sahib regarding Imam Abu Yusuf, the student of Imam Abu Hanifa, who was the leader of the scholars, no interpretation seems possible except that it is either a display of such immense ignorance or a bold, far-fetched fabrication against the honorable Imam. There is no power or strength except with Allah, the Mighty, the Glorious.

Fourthly: Assuming the story is correct, this is the interpreter's own extent of knowledge. It is possible that the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him and his family) did indeed state the age, whether the total age or the remaining age. In signaling with five fingers, there are twelve possibilities: five or six days, weeks, months, or years; or sixty-seven years; or thirty years, ten months, and eleven days; or thirty-one years, four months, and a few days. What is the proof that the age of the dreamer, even if incorrectly assumed to be Imam Ahmad, from the day of the dream until the end, did not match any of these durations? The noble age of Imam Ahmad was seventy-seven (77) years. If he saw the dream at the age of five, then the largest possibility of seventy years is possible among all, and the others are even clearer. Or perhaps the names of Imam Ahmad and Imam Ibn Sirin were just made up by the Deobandis as being the dreamers. What is the proof that the entire life of the actual dreamer did not fall into any count of the last four possibilities? Were the date of the dream and the dreamer's dates of birth and death accurately known and proven such that neither his total age nor his remaining age fits any of these possibilities? Only then would there be room to say that the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him and his family) did not signal towards the lifespan. And since none of this is proven, it is possible that the Holy Presence (peace and blessings of Allah be upon him and his family) did state the age, but the interpreter had no way to know it, so he redirected it towards the "Five Unseens" (Ghayub-e-Khamsa) according to his own understanding. It might be difficult for Deobandis to even understand these twelve possibilities in this sign, even though they are very clear, and there were other more subtle possibilities besides these that we have omitted.

The second doubt: Three refutations have passed regarding the first, second, and third matters. Fourthly, the statement of the Deobandis that "a deficiency was proven in your observational knowledge, let alone access to the knowledge of the unseen," which occurred in such a filthy and bold manner—its answer will be received on the Day of Judgment, God willing. But these fools have no touch with intellect, just as they have none with religion. In matters that are important, great, magnificent, and sublime, being occupied repeatedly causes the neglect of simple matters. In such a case, the existence of something itself signifies its presence, and its absence cannot be used as an argument for its denial. "But the Wahhabis are an ignorant people" (i.e., Wahhabis are an ignorant nation. - Translator).

फ़तावा रज़विया, खंड २९

प्रथम: यह संभव है कि नामों में समानता हो, और गंगोही साहब की मृत्यु के समय जो लोग उन कार्यों में लगे हुए थे, उनके ये नाम हों।

द्वितीय: उपमा का द्वार विस्तृत है जैसे 'प्रत्येक फ़िरऔन के लिए एक मूसा है' (यानी हर फ़िरऔन के मुक़ाबले में एक मूसा होता है। - अनुवादक)। लेकिन गंगोही साहब के शब्दों में इमाम अबू यूसुफ़, जो इमाम अबू हनीफ़ा के छात्र और विद्वानों के सरदार थे, के बारे में कोई व्याख्या संभव नहीं लगती सिवाय इसके कि यह या तो अगाध अज्ञानता है या आदरणीय इमाम पर एक साहसिक, दूर की कौड़ी जैसा गढ़ा हुआ आरोप है। अल्लाह के अलावा कोई शक्ति या सामर्थ्य नहीं है, जो शक्तिशाली और महिमामय है।

चतुर्थ: कहानी के सही होने की धारणा पर, यह व्याख्याकार (मुअब्बिर) के ज्ञान की अपनी सीमा है। यह संभव है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने आयु ही बताई हो, चाहे कुल आयु या शेष आयु। पाँच उंगलियों से इशारा करने में बारह संभावनाएं हैं: पाँच या छह दिन, सप्ताह, महीने या वर्ष; या सत्तर वर्ष; या तीस वर्ष, दस महीने और ग्यारह दिन; या इकतीस वर्ष, चार महीने और कुछ दिन। इसका क्या प्रमाण है कि स्वप्न देखने वाले की आयु, भले ही गलत तरीके से इमाम अहमद मान लिया जाए, स्वप्न के दिन से अंत तक इनमें से किसी भी अवधि के बराबर नहीं थी? इमाम अहमद की पवित्र आयु सतहत्तर (७७) वर्ष थी। यदि पाँच वर्ष की आयु में स्वप्न देखा गया हो, तो सब में बड़ी संभावना सत्तर वर्ष संभव है और बाकी और भी स्पष्ट हैं। या असल में देखने वाले के रूप में इमाम अहमद और इमाम इब्न सिरीन का नाम तो देवबंदियों ने खुद बना लिया। क्या प्रमाण है कि वास्तविक स्वप्न देखने वाले का पूरा जीवन अंतिम चार संभावनाओं में से किसी भी गणना में नहीं आया? क्या स्वप्न देखने की तिथि और देखने वाले की जन्म और मृत्यु की तिथियाँ सही ढंग से ज्ञात थीं और यह सिद्ध था कि उसकी कुल आयु या शेष आयु इनमें से किसी भी संभावना पर फिट नहीं बैठती? तभी यह कहने की गुंजाइश होती कि नबी करीम (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने आयु की मात्रा की ओर इशारा नहीं फ़रमाया। और जब इनमें से कुछ भी सिद्ध नहीं है, तो संभव है कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने आयु ही बताई हो, व्याख्याकार के पास उसे जानने का कोई मार्ग नहीं था, इसलिए उसने अपनी समझ के अनुसार इसे 'ग़यूब-ए-ख़मसा' (पाँच परोक्ष बातें) की ओर मोड़ दिया। देवबंदियों के लिए शायद इस इशारे में इन बारह संभावनाओं को समझना भी कठिन हो, हालांकि वे बहुत स्पष्ट हैं और इनके अलावा अन्य सूक्ष्म संभावनाएँ भी थीं जिन्हें हमने छोड़ दिया।

दूसरा संशय: प्रथम, द्वितीय और तृतीय मामलों में तीन खंडन बीत चुके हैं। चतुर्थ, देवबंदियों का यह कथन कि "आपके अवलोकन ज्ञान में कमी सिद्ध हो गई, परोक्ष ज्ञान (इल्म-ए-ग़ैब) की जानकारी तो अभी दूर की बात है," जो इस तरह के अपवित्र और साहसिक अंदाज़ में हुआ है—इसका उत्तर तो इंशा अल्लाह क़यामत के दिन मिलेगा। लेकिन इन मूर्खों को धर्म की तरह बुद्धि का भी स्पर्श नहीं है। महत्वपूर्ण, महान, भव्य और उच्च मामलों में बार-बार व्यस्त रहने से सरल मामलों में विस्मरण (ज़हूल) हो जाता है। ऐसी स्थिति में उसके अस्तित्व से ही उसकी उपस्थिति का पता चलता है, न कि उसके अभाव से उसके इनकार का तर्क दिया जाए। "लेकिन वहाबी एक अज्ञानी कौम है" (यानी वहाबी जाहिल कौम है। - अनुवादक)।

पृष्ठ 519 / 750

اولاً: ممکن کہ اشتراک اسماء ہو، وفات گنگوہی صاحب کے وقت جو لوگ ان کاموں میں ہوں انکے یہ نام ہوں۔

ثانیاً: باب تشبیہ واسع ہے جیسے لکل فرعون موسیٰ (ہر فرعون کے مقابلے میں موسیٰ ہوتا ہے۔ت) مگر جناب گنگوہی صاحب کے کلام میں کہ امام ابو یوسف شاگرد امام ابوحنیفہ جو سید العلماء تھے کوئی تاویل بنتی نظر نہیں آتی سوا اس کے اتنا عظیم جہل شدید یا حضرت امام پر اتنا بیباکانہ افترائے بعید و لاحول ولاقوۃ الا باللہ العزیز المجید۔

رابعاً: بفرض صحت حکایت یہ معبر کی اپنی مقدار علم ہے ممکن کہ نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے عمر ہی بتائی ہو خواہ مجموع خواہ باقی۔ پانچ انگلیوں سے اشارے میں پانچ یا چھ دن یا ہفتے یا مہینے یا برس یا ساٹھ بہتر برس یا تیس سال دس مہینے گیارہ دن یا اکتیس سال چار مہینے چند دن، بارہ احتمال ہیں، کیا دلیل ہے کہ خواب دیکھنے والے کی عمر اگر چہ بفرض غلط امام احمد ہی ہوں روزِ خواب سے آخر تک ان میں سے کسی مقدار پر نہ ہوئی امام احمد کی عمر شریف ستتر (۷۷) سال ہوئی، اگر پانچ برس کی عمر میں خواب دیکھا ہو تو سب میں بڑا احتمال بہتر سال ممکن ہے اور باقی زیادہ واضح ہیں، یا اصل دیکھنے تو امام احمد و امام ابن سیرین کا نام تو دیوبندیوں نے بنالیا۔ کیا دلیل کہ واقعی خواب دیکھنے والے کی ساری عمر چار احتمال اخیر سے کسی شمار پر نہ ہوئی خواب دیکھنے والے کی تاریخ اور دیکھنے والے کی تاریخ ولادت وفات یہ سب صحیح طور پر معلوم ہوئیں اور ثابت ہو کہ اس کی مجموع عمر و باقی عمر کوئی ان میں سے کسی احتمال پر ٹھیک نہیں آتی، اس وقت اس کہنے کی گنجائش ہو کہ نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے اس سے مقدار عمر کی طرف اشارہ نہ فرمایا، اور جب کہ ان میں سے کچھ ثابت

نہیں تو ممکن کہ حضور انور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے عمر ہی بتائی ہو معبر کو اس کے جاننے کی طرف راہ نہ تھی لہذا اپنی سمجھ کے قابل اسے غیوب خمسہ کی طرف پھیر دیا، دیوبندیوں کو تو شاید اس اشارہ میں یہ بارہ احتمال سمجھنے بھی دشوار ہوں حالانکہ وہ نہایت واضح ہیں اور ان کے سوا اور دقیق احتمام بھی تھے کہ ہم نے ترک کردیئے۔

شبہ ثانیہ: کے تین رَد گزری امر اول ودوم وسوم سے۔ رابعاً دیوبندیوں کی عبارت کہ آپ کے علم مشاہدہ میں نقصان ثابت ہو گیا علم غیب پر اطلاع تو ابھی دور ہے جس ناپاک و بیباک طرز پر واقع ہوئی اس کا جواب تو ان شاء اللہ تعالیٰ روز قیامت ملے گا مگر ان سفیہوں کو دین کی طرح عقل سے بھی مس نہیں، امر اہم و اعظم و اجل و اعلیٰ میں اشتعال بار بار امر سہل سے ذہول کا باعث ہوتا ہے، ایسی جگہ اس کے ثبوت سے ہی اس کا انتفاء ہوتا ہے نہ کہ اس کی نفی سے اس کی نفی پر استدلال کیا جائے۔ ولکن الوھابیۃ قوم یجھلون (لیکن وہابی جاہل قوم ہے۔ ت)

Fatawa Razawiyya Volume 29

Third Doubt: Two rebuttals have passed from the first and third points. Thirdly: This Hadith, as described by the Deobandi, is a blatant fabrication; there is no trace of it anywhere in Sahih Muslim. Fourthly: To call the presentation of the Ummah's deeds to the Holy Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him and his family) wrong and pure fabrication is itself wrong and pure fabrication. Al-Bazzar narrates in his Musnad with a sound and excellent chain from Hadrat Abdullah bin Mas'ud (may Allah be pleased with him) that the Messenger of Allah (may Allah's peace and blessings be upon him and his family) said:

My life is better for you; you speak to me and I speak to you. And my passing away is also better for you; your deeds will be presented to me. When I see good, I will praise Allah for it, and when I see evil, I will seek Allah's forgiveness for you. 1 Translation: My life is better for you, you talk with me and we talk with you, and my death is also better for you, your deeds will be presented to me, when I see goodness I will perform praise of Allah and when I see evil I will seek your forgiveness. (T)

O Allah! Send blessings, peace, and benediction upon him, a blessing that is pleasing to You and to him, and fulfills his great right. Ameen. Translation: O Allah! Bestow blessings, peace and prosperity upon him, such a blessing which is a means of Your and his pleasure and through it his great right is fulfilled. Ameen. (T)

In Musnad Harith, it is from Anas (may Allah be pleased with him), the Messenger of Allah (may Allah's peace and blessings be upon him and his family) says:

My life is better for you; you speak to me and I speak to you. When I die, my passing will be better for you. Your deeds will be shown to me; if I see good, I will praise Allah, and if I see bad in that, I will seek Allah's forgiveness for you. 2 Translation: My living is better for you, you talk with me and we speak things of benefit to you, when I pass away my death will be good for you, your deeds will be presented to me if I see goodness I will do praise of Allah and if I find other things I will seek your forgiveness.

1. Al-Bahr al-Zakhkhar known as Musnad al-Bazzar, Hadith 1925, Maktaba al-Ulum wal-Hikam, Madinah al-Munawwarah, 5/308-309.
2. At-Tabaqat al-Kubra by Ibn Sa'd, mentioning what brought the Messenger of Allah (peace and blessings be upon him) closer to his end, Dar Sadir, Beirut,

2/104. F: The above-mentioned words of the Hadith are narrated from Bakr bin Abdullah al-Muzani in Tabaqat Ibn Sa'd.

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

तीसरी शंका: इसके दो उत्तर पहले और तीसरे बिंदु से गुजर चुके हैं। तीसरा: यह हदीस जिस तरह देवबंदी ने बताई है वह सरासर झूठ है, सहीह मुस्लिम में कहीं इसका पता नहीं है। चौथा: हुज़ूर अकदस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर उम्मत के आमाल पेश किए जाने को गलत और सरासर झूठ कहना खुद गलत और सरासर झूठ है। बज़ार अपनी मसनद में सनद-ए-सहीह जय्यद के साथ हज़रत अब्दुल्ला बिन मसूद (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया:

"मेरा जीवन तुम्हारे लिए बेहतर है; तुम मुझसे बातें करते हो और मैं तुमसे बातें करता हूँ। और मेरा निधन भी तुम्हारे लिए बेहतर है; तुम्हारे कर्म मेरे सामने पेश किए जाएँगे। जब मैं भलाई देखूँगा तो अल्लाह की प्रशंसा करूँगा और जब मैं बुराई देखूँगा तो तुम्हारे लिए अल्लाह से माफ़ी माँगूँगा।" 1 अनुवाद: मेरी ज़िंदगी तुम्हारे लिए बेहतर है मुझसे बातें करते हो और हम तुमसे बातें करते हैं, और मेरी वफ़ात भी तुम्हारे लिए बेहतर, तुम्हारे आमाल मुझ पर पेश किए जाएँगे जब भलाई देखूँगा हम्द-ए-इलाही बजा लाऊँगा और जब बुराई देखूँगा तुम्हारी बख्शिश चाहूँगा। (त)

अल्लाहुम्मा सल्ले वसल्लिम व बारिक अलैहि सलवतन तकूनु लका व लहू रिदन व लिहक़्क़िहिल अज़ीम अदा-अन् आमीन। अनुवाद: ऐ अल्लाह! दुरूद-ओ-सलाम और बरकत अता फ़रमा आप पर ऐसा दुरूद जो तेरी और उनकी रज़ा का ज़रिया हो और इससे उनके अज़ीम हक़ की अदायगी हो। आमीन। (त)

मसनद हारिस में अनस (रज़ियल्लाहु अन्हु) से है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं:

"मेरा जीना तुम्हारे लिए बेहतर है; तुम मुझसे बातें करते हो और मैं तुमसे बातें करता हूँ। जब मैं मर जाऊँगा तो मेरा निधन तुम्हारे लिए बेहतर होगा। तुम्हारे कर्म मुझे दिखाए जाएँगे; अगर मैं भलाई देखूँगा तो अल्लाह की प्रशंसा करूँगा, और अगर उसमें बुराई देखूँगा तो तुम्हारे लिए अल्लाह से माफ़ी माँगूँगा।" 2 अनुवाद: मेरा जीना तुम्हारे लिए बेहतर ही मुझसे बातें करते हो और हम तुम्हारे नफ़े की बातें तुम से फ़रमाते हैं, जब मैं इंतकाल फ़रमाऊँगा तो मेरी वफ़ात तुम्हारे लिए खैर होगी,

तुम्हारे आमाल मुझ पर पेश किए जाएँगे अगर नेकी देखूँगा हम्द-ए-इलाही करूँगा और दूसरी बात पाऊँगा तो तुम्हारी मग़फ़िरत तलब करूँगा।

1. अल-बह्रुल ज़ख़्ख़ार अल-मारूफ़ बिमसनद अल-बज़ार हदीस 1925 मकतबा अल-उलूम वल-हिकम मदीना अल-मुनव्वरा 5/308 व 309।
2. अत-तबाक़ात अल-कुबरा लिब्न साद ज़िक्र मा कर्रबुल रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) मिन अजलिही दार सादिर बैरूत 2/104। फ़: हदीस के ऊपर बताए गए शब्द तबाक़ात इब्न साद में बक्र बिन अब्दुल्ला मुज़नी से नकल किए गए हैं।

पृष्ठ 520 / 750

شبہ ثالثہ : کے دو رد گزرے امر اول و سوم سے۔ ثالثاً: یہ حدیث جس طرح دیوبندی نے بتائی صریح افترا ہے، نہ صحیح مسلم میں کہیں اس کا پتا ہے۔ رابعاً: حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم پر اعمالِ اُمت پیش کیے جانے کو غلط و محض افترا کہنا غلط و محض افترا ہے۔ بزار اپنی مسند میں بسندِ صحیح جیّد حضرت عبداللہ بن مسعود رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کرتے ہیں، رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم فرماتے ہیں:

حیاتی خیر لکم تحدثون ونحدث لکم ،ووفاتی خیر لکم تعرض علیّ اعمالکم فمارأیت من خیر حمدت اللہ علیہ ومارأیت من شراستغفرت اللہ لکم۔ 1 میری زندگی تمہارے لیے بہتر ہے مجھ سے باتیں کرتے ہو اور ہم تم سے باتیں کرتے ہیں، اور میری وفات بھی تمہارے لیے بہتر، تمہارے اعمال مجھ پر پیش کیے جائیں گے جب بھلائی دیکھوں گا حمدِ الٰہی بجالاؤں گا اور جب برائی دیکھوں گا تمہاری بخشش چاہوں گا۔ (ت)

اللھم صل وسلم وبارك علیه صلوة تكون لك وله رضاء ولحقه العظیم اداء آمین۔ اے اللہ ! درود و سلام اور برکت عطا فرما آپ پر ایسا درود جو تیری اور ان کا رضا کا ذریعہ ہو اور اس سے انکے عظیم حق کی ادائیگی ہو۔ آمین۔ (ت)

مسند حارث میں انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے ہے رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم فرماتے ہیں :

حیاتی خیر لکم تحدثون وتحدث لکم فاذا انامت کانت وفاتی خیرالکم تعرض علیّ اعمالکم فان رأیت خیرا حمدت اللہ وان رأیت شرا ذلک استغفرت اللہ لکم 2۔ میری جینا تمہارے لیے بہتر ہی مجھ سے

باتیں کرتے ہو اور ہم تمہارے نفع کی باتیں تم سے فرماتے ہیں، جب میں انتقال فرماؤں گا تو میری وفات تمہارے لیے خیر ہوگی، تمہارے اعمال مجھ پر پیش کیے جائیں گے اگر نیکی دیکھوں گا حمد الٰہی کروں گا اور دوسری بات پاؤں گا تو تمہاری مغفرت طلب کروں گا۔

1 البحر الزخار المعروف بمسند البزار حدیث ۱۹۲۵ مکتبہ العلوم والحکم مدینہ المنورۃ ۳۰۸/۵ و ۳۰۹ 2 الطبقات الکبری لابن سعد ذکر ما قرب الرسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم من اجلہ دار صادر بیروت ۲/ ۱۰۴ ف: حدیث کے مذکورہ بالا الفاظ طبقات ابن سعد میں بکر بن عبد اللہ مزنی سے منقول ہے۔

Fatawa Razawiyya, Volume 29

O Allah! Send blessings, peace, and bounty upon him as much as his compassion and mercy for his Ummah, forever, Ameen.

O Allah! Send blessings, peace, and bounty upon him as much as his compassion and mercy for his Ummah, forever, Ameen. (T)

Ibn Sa'd in 'Tabaqat' and Harith in 'Musnad' and Qazi Ismail narrate from reliable chains through Bakr bin Abdul Bar Mazni in a 'Mursal' fashion, that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him and his family) said:

My life is better for you; whatever new happens with you, we provide a fresh remedy for it. When I pass away, my death will be better for you. Your deeds will be presented before me; I will praise Allah for your good deeds and seek forgiveness for your bad deeds.

My life is better for you; whatever new happens with you, we provide a fresh remedy for it. When I pass away, my death will be better for you. Your deeds will be presented before me; I will praise Allah for your good deeds and seek forgiveness for your bad deeds.

O Allah! Send blessings, peace, and bounty upon this Beloved, whom You sent as a mercy and appointed as a blessing, and upon his family and companions, equal to the number of every deed and word, Ameen.

O Allah Almighty! Send blessings, peace, and bounty upon this Beloved whom You have sent as a mercy and a blessing, equal to the number of all deeds and all words, Ameen. (T)

Imam Tirmidhi, Muhammad bin Ali narrates from his father Abdul Aziz, that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him and his family) said:

Deeds are presented before Allah on Mondays and Thursdays, and presented before the Prophets and parents on Fridays. They rejoice at good deeds, and the radiance and brightness of their faces increase. So fear Allah and [do not hurt] your deceased ones with your bad deeds...

Deeds are presented before Allah on Mondays and Thursdays, and presented before the Prophets and parents on Fridays. They rejoice at good deeds, and the radiance and brightness of their faces increase. So fear Allah and [do not hurt] your deceased ones with your bad deeds...

Footnote 1: Kanz al-Ummal with reference to Ibn Sa'd from Bakr bin Abdullah, Mursal Hadith 31903, Mu'assasat al-Risalah Beirut 11/407, Al-Jami' al-Saghir with reference to Ibn Sa'd from Bakr Hadith 3717, Dar al-Kutub al-Ilmiyah Beirut 1/229.

फ़तावा रज़विया, खंड २९

ऐ अल्लाह! उन पर हमेशा उतनी मात्रा में दुरूद, सलाम और बरकत नाज़िल फ़रमा जितनी मात्रा में वह अपनी उम्मत पर मेहरबान हैं, आमीन।

ऐ अल्लाह! आप पर हमेशा इस क़दर दुरूद व सलाम और बरकत नाज़िल फ़रमा जिस क़दर आप अपनी उम्मत पर मेहरबान हैं, आमीन (त)

इब्ने साद ने 'तबाक़ात' में, हारिस ने 'मुसनद' में और क़ाज़ी इस्माइल ने मोतबर सनदों के साथ बक्र बिन अब्दुल बर मज़नी से मुरसलन रिवायत की है कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया:

मेरा जीवन तुम्हारे लिए बेहतर है, जो भी नई बात तुमसे पेश आती है हम उसका ताज़ा इलाज फ़रमाते हैं। जब मेरा देहांत होगा, तो मेरी मृत्यु तुम्हारे लिए बेहतर होगी। तुम्हारे कर्म मेरे सामने पेश किए जाएंगे; मैं नेक कामों पर अल्लाह का शुक्र अदा करूँगा और तुम्हारी बुराइयों पर तुम्हारे लिए क्षमा प्रार्थना (इस्तग़फ़ार) करूँगा।

मेरी हयात तुम्हारे लिए बेहतर है, जो नई बात तुम से वाक़े होती है हम उस का ताज़ा इलाज फ़रमाते हैं जब मैं इंतिक़ाल करूँगा मेरी वफ़ात तुम्हारे लिए बेहतर होगी तुम्हारे आमाल मेरे हुज़ूर मअरूज़ होंगे मैं नेकियों पर शुक्र और बदी पर तुम्हारे लिए इस्तग़फ़ार फ़रमाऊँगा।

ऐ अल्लाह! तमाम आमाल (कर्मों) और तमाम कलिमात (शब्दों) की संख्या के अनुसार उस हबीब पर दुरूद, सलाम और बरकत नाज़िल फ़रमा जिसे तूने रहमत और नेमत बनाकर भेजा है, आमीन।

ऐ अल्लाह तआला! तमाम आमाल और तमाम कलिमात की तादाद के मुताबिक़ दुरूद व सलाम और बरकत नाज़िल फ़रमा इस हबीब पर जिसे तूने रहमत और नेमत बना कर भेजा है, आमीन। (त)

इमाम तिरमिज़ी, मुहम्मद बिन अली अपने पिता अब्दुल अज़ीज़ से रिवायत करते हैं कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया:

हर सोमवार और गुरुवार को कर्म अल्लाह के हुज़ूर पेश किए जाते हैं, और हर जुमा को नबियों और माता-पिता के सामने। वे नेक कामों पर खुश होते हैं और उनके चेहरों की नूरानियत और चमक बढ़ जाती है। तो अल्लाह से डरो और अपने मृतकों को अपने बुरे कर्मों से...

हर दोशन्बा व पंजशन्बा को आमाल अल्लाह के हुज़ूर पेश होते हैं और हर जुमा को अम्बिया और माँ बाप के सामने, वो नेकियों पर खुश होते हैं और उन के चेहरों की नूरानियत और चमक बढ़ जाती है, तो अल्लाह से डरो और अपने मुर्दों को अपनी बद आमालियों...

हाशिया १: कन्ज़ुल उम्माल, इब्ने साद के हवाले से, बक्र बिन अब्दुल्लाह से मुरसलन, हदीस ३१९०३, मुअस्ससतुर रिसाला, बेरूत ११/४०७; अल-जामिउल सगीर, इब्ने साद के हवाले से, बक्र से हदीस ३७१७, दारुल कुतुबुल इलमिया, बेरूत १/२२९।

पृष्ठ ५२१/७५०

اللھم صل وسلم وبارك علیه قدر رأفته ورحمة بأمته ابد آمین۔

اے اللہ! آپ پر ہمیشہ اس قدر درود و سلام اور برکت نازل فرما جس قدر آپ اپنی امت پر مہربان ہیں، آمین (ت)

ابن سعد طبقات اور حارث مسند میں اور قاضی اسمعیل بہ سند ثقات بکر بن عبد البر مزنی سے مرسلًا راوی، رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وآلہ وسلم فرماتے ہیں:

حیاتي خیر لکم تحدثونی و نحدث لکم فاذا انا مت کانت وفاتی خیر الکم تعرض علی اعمالکم فان رأیت خیر احمدت اللہ وان رأیت شرا استغفرت لکم۔

میری حیات تمہارے لیے بہتر ہے، جو نئی بات تم سے واقع ہوتی ہے ہم اس کا تازہ علاج فرماتے ہیں جب میں انتقال کروں گا میری وفات تمہارے لیے بہتر ہوگی تمہارے اعمال میرے حضور معروض ہوں گے میں نیکیوں پر شکر اور بدی پر تمہارے لیے استغفار فرماؤں گا۔

اللھم صل وسلم وبارك علی ھذا الحبیب الذی ارسلته رحمة وبعثته نعمة وعلی اله وصحبه عدد کل عمل وکلمة امین۔

اے اللہ تعالٰی! تمام اعمال اور تمام کلمات کی تعداد کے مطابق درود و سلام اور برکت نازل فرما اس حبیب پر جسے تو نے رحمت اور نعمت بنا کر بھیجا ہے، آمین۔ (ت)

امام ترمذی محمد بن علی والد عبدالعزیز سے راوی، رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وآلہ وسلم فرماتے ہیں:

تعرض الاعمال یوم الاثنین و یوم الخمیس علی اللہ تعالیٰ وتعرض علی الانبیاء وعلی الاباء والامھات یوم الجمعۃ فیفرحون بحسناتھم وتزداد وجوھھم بیضا ونزھۃ فاتقوا

ہر دوشنبہ و پنجشنبہ کو اعمال اللہ کے حضور پیش ہوتے ہیں اور ہر جمعہ کو انبیاء اور ماں باپ کے سامنے، وہ نیکیوں پر خوش ہوتے ہیں اور انکے چہروں کی نورانیت اور چمک بڑھ جاتی ہے، تو اللہ سے ڈرو اور اپنے مردوں کو اپنی بد اعمالیوں

1 کنز العمال بحوالہ ابن سعد عن بکر بن عبداللہ مرسلًا حدیث ۳۱۹۰۳ موسستہ الرسالہ بیروت ۱۱/ ۴۰۷، الجامع الصغیر بحوالہ ابن سعد عن بکر حدیث ۳۷۱۷ دار الکتب العلمیہ بیروت ۱/ ۲۲۹

[Arabic]: Allah Almighty, and do not cause pain to your dead ones. — 1 [Arabic]: O Allah! Grant us the success to perform such deeds that You and our Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) are pleased with, and through them, the radiance and glow of our parents' faces increase, Ameen. [Urdu]: ...and do not cause pain. O Allah! Grant us the success to perform such deeds that You and our Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) are pleased with, and through them, the radiance and glow of our parents' faces increase, Ameen. (T)

Abu Nu'aym in Hilyat al-Awliya narrates from Anas (may Allah be pleased with him), the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him and his progeny) says: [Arabic]: Verily, the deeds of my Ummah are presented to me every Friday, and Allah's severe wrath is upon the adulterers. — 2 | [Urdu]: Indeed, every Friday the deeds of my Ummah are presented to me, and there is severe wrath of God upon adulterers. And we seek refuge in Allah Almighty.

Imam Ajall Abdullah bin Mubarak narrates from Sa'id bin al-Musayyib bin Hazn (may Allah be pleased with them): [Arabic]: There is no day in which the deeds of his Ummah are not presented to the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) morning and evening, so he recognizes them by their marks and their deeds. — 3 | [Urdu]: There is no day in which the deeds of the Ummah are not presented twice, morning and evening, to the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him and his progeny), so the Master (peace and blessings of Allah be upon him and his progeny) recognizes them by their indicative features and also by their deeds, peace and blessings of Allah be upon him.

In Taysir Sharh Jami' al-Saghir, it is stated: [Arabic]: And that is every day as mentioned by the author, and he counted it among his [the Prophet's] specialties (peace and blessings of Allah be upon him), and they are also presented to him along with the Prophets. | [Urdu]: Presentation before the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him and his progeny) is every day, as Imam Jalaluddin al-Suyuti mentioned and counted it among the Prophet's specialties, and also every Monday and Thursday before the Master (peace and blessings of Allah be upon him).

1. Nawadir al-Usul, 167th Principle etc., Dar Sadir, Beirut, p. 213.
2. Hilyat al-Awliya, translation 358 Imran al-Qasir, Dar al-Kitab al-Arabi, Beirut, 6/179.

3. Kitab al-Zuhd, chapter on presenting the deeds of the living to the dead, Hadith, Dar al-Kutub al-Ilmiyyah, Beirut, Part 4, p. 42.

[अरबी]: अल्लाह तआला, और अपने मृतकों को कष्ट न पहुँचाओ। — 1 [अरबी]: ऐ अल्लाह! हमें ऐसे कर्म करने की तौफीक अता फरमा जिनसे तू और हमारे नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) प्रसन्न हों, और उनके द्वारा हमारे माता-पिता के चेहरों की नूरानियत और चमक में वृद्धि हो, आमीन। [उर्दू]: ...और ईज़ा (कष्ट) न दो। ऐ अल्लाह! हमें ऐसे आमाल की तौफीक अता फरमा जिन पर तू और हमारा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम खुश हों और उनसे हमारे माँ बाप के चेहरों की नूरानियत और चमक में इज़ाफा हो, आमीन। (त)

अबू नुऐम ने 'हिल्यातुल औलिया' में अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत की है, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वआलिहि वसल्लम फरमाते हैं: [अरबी]: बेशक मेरी उम्मत के आमाल हर जुमा के दिन मुझ पर पेश किए जाते हैं, और ज़िना करने वालों पर अल्लाह का सख्त गज़ब है। — 2 | [उर्दू]: बेशक हर जुमा के दिन मेरी उम्मत के आमाल मुझ पर पेश होते हैं और ज़ानियों पर खुदा का सख्त गज़ब है। वल-इयाज़ु बिल्लाहि तआला।

इमाम अजल्ल अब्दुल्लाह बिन मुबारक, सईद बिन मुसय्यब बिन हज़्न रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम से रावी हैं: [अरबी]: कोई ऐसा दिन नहीं है जिसमें नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम पर उनकी उम्मत के आमाल सुबह और शाम पेश न किए जाते हों, तो वे उन्हें उनकी निशानी और आमाल से पहचानते हैं। — 3 | [उर्दू]: कोई दिन ऐसा नहीं जिसमें नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वआलिहि वसल्लम पर उनकी उम्मत के आमाल सुबह व शाम दो दफा पेश न होते हों तो हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वआलिहि वसल्लम उन्हें उनकी निशानी सूरत से भी पहचानते हैं और उनके आमाल से भी, सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम।

'तयसीर शरह जामे सगीर' में है: [अरबी]: और यह हर दिन है जैसा कि लेखक ने ज़िक्र किया और इसे उनकी विशेषताओं में गिना, सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम, और अंबिया के साथ भी उन पर पेश किए जाते हैं। | [उर्दू]: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वआलिहि वसल्लम के हुज़ूर में पेशी तो हर रोज़ है जैसा कि इमाम जलालुद्दीन सुयूती ने ज़िक्र फरमाया और इसे हुज़ूर के खसाइस (विशेषताओं) से गिना और हर दो शम्बा (पीर) व पंज शम्बा (जुमेरात) को भी हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम।

1. नवादिर अल-उसूल, असल 67 आदि, दार सादिर बेरूत, पृ. 213

2. हिल्यातुल औलिया, तर्जुमा 358 इमरान अल-क़सीर, दार अल-किताब अल-अरबी बेरूत, 6/179
3. किताबुज़ जुहद, बाब फ़ी अर्ज़ अमल अल-अहिया अला अल-अमवात, हदीस, दार अल-कुतुब अल-इल्मिया बेरूत, हिस्सा 4, पृ. 42

पृष्ठ 522/750

اللہ تعالٰی ولا تؤذوا موتاکم - ۱ | سے ایذانہ دو۔ اللھم وفقنا لما ترضاہ ویرضاہ نبینا صلی اللہ تعالی علیہ وسلم و تزداد وجوہ آبائنا وامھاتنا بیاضا واشراقا آمین۔ | اے اللہ! ہمیں ایسے اعمال کی توفیق عطا فرما جن پر تو اور ہمارا نبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم خوش ہوں اور ان سے ہمارے ماں باپ کے چہروں کی نورانیت اور چمک میں اضافہ ہو، آمین۔ (ت)

ابونعیم حلیۃ الاولیاء میں انس رضی اللہ تعالی عنہ سے راوی، رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وآلہ وسلم فرماتے ہیں: ان اعمال امتی تعرض علی فی کل یوم جمعۃ، واشتد غضب اللہ علی الزناۃ ۔ ۲ | بے شک ہر جمعہ کے دن میری امت کے اعمال مجھ پر ہوتے ہیں اور زانیوں پر خدا کا سخت غضب ہے۔ والعیاذ باللہ تعالٰی۔

امام اجل عبداللہ بن مبارک سعید بن مسیب بن حزن رضی اللہ تعالی عنہم سے راوی: لیس من یوم الاتعرض فیہ علی النبی صلی اللہ تعالی علیہ وسلم اعمال امتہ غدوۃ وعشیۃ فیعرفھم بسیماھم واعمالھم ۔ ۳ | کوئی دن ایسا نہیں جس میں نبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وآلہ وسلم پر ان کی امت کے اعمال صبح و شام دو دفعہ پیش نہ ہوتے ہوں تو حضور صلی اللہ تعالٰی علیہ وآلہ وسلم انہیں ان کی نشانی صورت سے بھی پہچانتے ہیں اور ان کے اعمال سے بھی، صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم۔

تیسیر شرح جامع صغیر میں ہے: وذلک کل یوم کما ذکرہ المؤلف وعدہ من خصوصیاتہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم و تعرض علیہ ایضا مع الانبیاء | رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وآلہ وسلم کے حضور میں پیشی تو ہر روز ہے جیسا کہ امام جلال الدین سیوطی نے ذکر فرمایا اور اسے حضور کے خصائص سے گنا اور ہر دو شنبہ و پنجشنبہ کو بھی حضور صلی اللہ تعالٰی

١ نوادر الاصول الاصل السابع والستون والمائة الخ دار صادر بيروت ص ٢١٣ ٢ حلية الاولياء ترجمہ ٣٥٨ عمران القصير دار الكتاب العربى بيروت ۶/ ١٧٩ ٣ كتاب الزهد باب فى عرض عمل الاحياء على الاموات حديث دار الكتب العلميہ بيروت الجزء الرابع ص ۴٢

Fatawa Razawiyyah Volume 29

- The deeds of the Ummah are presented to him [the Prophet], peace and blessings be upon him and his progeny, along with the Prophets and ancestors. (Imam Munawi stated this under the aforementioned Hadith of Ibn Sa'd, and Allah Almighty knows best. - Translator)
- "And parents on Monday and Thursday" [Reference 1] was stated under the mentioned Hadith of Ibn Sa'd, and Allah Almighty knows best.

Similarly, the presentation of the Ummah's deeds in the presence of the Prophet occurs daily every morning and evening separately, then separately every Monday and Thursday, and then separately every Friday for the whole week's deeds. In short, the Deobandis calling this wrong and a mere fabrication is solely because they are jealous of the virtues of Muhammad, the Messenger of Allah, peace and blessings of Allah be upon him and his progeny. How can they accept authentic Hadiths when they even try to escape from the Great Qur'an, walking upside down? "In what discourse after Allah and His signs will they believe?" [Reference 2] (Then leaving Allah and His signs, what word will they believe in? - Translator)

Fourth Doubt: Two refutations have passed from the first and second points.

Thirdly: The Hadith of Tirmidhi, through which they tried to level a severe objection against Muhammad, the Messenger of Allah, peace and blessings of Allah be upon him and his progeny. "And those who have wronged are going to know to what [kind of] return they will be returned." [Reference 3] (And now the wrongdoers want to know on which side they will turn. - Translator). According to the principles of the Hadith scholars, it is subject to discussion and absolutely lacks authority in the principles of religion. Here are its words in Tirmidhi:

- Muhammad bin Yahya narrated to us, Muhammad bin Yusuf narrated to us, from Israil, Simak bin Harb narrated to us, from Alqamah bin Wa'il al-Kindi, from his father, that a woman went out during the era of the Prophet, peace and blessings of Allah be upon him, intending to pray. A man met her and overwhelmed her, fulfilling his desire with her. She screamed, and he fled. Another man passed by her, and she said, "That man did such and such to me." Then a group passed by...
- Alqama bin Wa'il al-Kindi narrates from his father (Wa'il) that during the sacred era of the Holy Prophet, peace and blessings of Allah be upon him and his

progeny, a woman went out to pray and met a man who covered her and fulfilled his desire with her. The woman screamed, so the man left. Another person passed by the woman, and she said that the man did such and such to me. And that lady [met] a group of Muhajirin...

- Al-Taysir Sharh al-Jami' al-Saghir, under the Hadith "My life is better for you", Maktabah al-Imam al-Shafi'i, Riyadh 1/502.
- Al-Qur'an al-Karim 45/6.
- Al-Qur'an al-Karim 26/227.

फतावा रज़विय्या जिल्द 29

- उन पर और उनकी संतान पर शांति हो, उम्मत के कर्म नबियों और पूर्वजों के साथ पेश किए जाते हैं। (यह बात इमाम मुनावी ने इब्न साद की उपर्युक्त हदीस के तहत कही है, और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। -त)
- "और सोमवार और गुरुवार को माता-पिता" [संदर्भ 1] इब्न साद की उक्त हदीस के तहत कहा गया है, और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

इसी तरह हुज़ूर की दरगाह में उम्मत के कर्मों की पेशी रोजाना हर सुबह और शाम को अलग होती है, फिर हर सोमवार और गुरुवार को अलग, फिर हर जुमा को पूरे हफ्ते के कर्मों की पेशी अलग। संक्षेप में, देवबंदियों का इसे गलत और निराधार कहना केवल इसलिए है क्योंकि वे मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के गुणों से जलते हैं। वे सही हदीसों को क्या मानेंगे जब वे महान कुरान से ही बच निकलते हैं, उल्टे चलते हैं? "फिर अल्लाह और उसकी आयतों के बाद वे किस बात पर ईमान लाएंगे?" [संदर्भ 2] (फिर अल्लाह और उसकी आयतों को छोड़कर वे किस बात पर विश्वास करेंगे। -त)

चौथा संदेह: पहले और दूसरे मामले से दो खंडन बीत चुके हैं।

तीसरा: तिरमिज़ी की हदीस, जिसके माध्यम से वे मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर कड़ी आपत्ति जताना चाहते थे। "और ज़ुल्म करने वालों को जल्द ही पता चल जाएगा कि वे किस ओर पलटेंगे।" [संदर्भ 3] (और अब ज़ालिमों को पता चल जाएगा कि वे किस करवट बैठेंगे। -त) हदीस के सिद्धांतों के अनुसार यह चर्चा का विषय है और धर्म के सिद्धांतों में पूरी तरह से प्रमाणिकता से वंचित है, तिरमिज़ी में इसके शब्द ये हैं:

- मुहम्मद बिन याह्या ने हमें बताया, मुहम्मद बिन यूसुफ ने हमें इसराइल से बताया, सिमाक बिन हर्ब ने हमें अलक़मा बिन वाइल अल-किंदी से, उन्होंने अपने पिता से बताया कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के समय में एक महिला नमाज़ के इरादे से निकली। एक आदमी उसे मिला और उस पर हावी हो गया, और उसके साथ अपनी इच्छा पूरी की। वह चिल्लाई, और वह भाग गया। एक और आदमी उसके पास से गुज़रा, तो उसने कहा, "उस आदमी ने मेरे साथ ऐसा-ऐसा किया है।" फिर एक समूह गुज़रा...

- अलक़मा बिन वाइल किंदी अपने पिता (वाइल) से वर्णन करते हैं कि नबी करीम (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पवित्र युग में एक महिला नमाज़ पढ़ने के लिए निकली, तो उसे एक आदमी मिला जिसने उसे ढक लिया और उससे अपनी ज़रूरत पूरी की। वह महिला चीखी तो वह व्यक्ति चला गया। एक अन्य व्यक्ति उस महिला के पास से गुज़रा तो उस महिला ने कहा कि उस आदमी ने मेरे साथ ऐसा-ऐसा किया है। और वह महिला मुहाजिरीन की...
- अत-तयसीर शरह अल-जामिअ अस-सगीर, हदीस के तहत "मेरा जीवन तुम्हारे लिए बेहतर है", मकतबा अल-इमाम अश-शाफ़ई, रियाद 1/502।
- कुरान करीम 45/6।
- कुरान करीम 26/227।

पृष्ठ 523/750

والاباء یوم الاثنین والخمیس1 قالہ تحت حدیث ابن سعد المذکور، واللہ تعالٰی اعلم۔ | علیہ وآلہ وسلم پر اعمالِ امت انبیاء اور آباء کے ساتھ پیش ہوتے ہیں۔ (یہ بات امام مناوی نے حدیث ابن سعد مذکور کے تحت فرمائی ہے، اور اللہ تعالٰی خوب جانتا ہے۔ت)

اس طرح بارگاہِ حضور میں اعمالِ امت کی پیشی روزانہ ہر صبح و شام کو الگ ہوتی ہے پھر ہر دوشنبہ اور پنجشنبہ کو جدا، پھر ہر جمعہ کو ہفتہ بھر کے اعمال کی پیشی جدا۔ باالجملہ دیوبندیوں کا اسے غلط و افتراے محض کہنا محض اسی بنا پر ہے کہ فضائل محمد رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وآلہ وسلم سے جلتے ہیں، صحیح حدیثوں کو کیا مانیں جب قرآنِ عظیم ہی سے بچ نکلتے ہیں، اوندھے چلتے ہیں، "فَبِاَیِّ حَدِیۡثٍۭ بَعۡدَ اللّٰہِ وَاٰیٰتِہٖ یُؤۡمِنُوۡنَ ﴿۱﴾"-2 (پھر اللہ اور اس کی آیتوں کو چھوڑ کر کون سی بات پر ایمان لائیں گے۔ت)

شبہ رابعہ: کے دو ردّ گزرے امر اول و دوم سے۔

ثالثاً: حدیث ترمذی، جس سے محمد رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وآلہ وسلم پر شدید اعتراض جمانا چاہا "وَ سَیَعْلَمُ الَّذِیۡنَ ظَلَمُوۡۤا اَیَّ مُنْقَلَبٍ یَّنْقَلِبُوۡنَ ﴿۳﴾" -3 (اور اب جانا چاہتے ہیں ظالم کہ کس کروٹ پر پلٹا کھائیں گے۔ت) اصولِ محدثین پر محل کلام اور اصولِ دین پر قطعاً حجیت سے ساقط ہے، ترمذی کے یہاں اس کے لفظ یہ ہیں۔

حدثنا محمد بن یحیٰی ثنا محمد بن یوسف عن اسرائیل ثنا سماک بن حرب عن علقمۃ بن وائل الکندی عن ابیہ ان امرأۃ خرجت علی عہد النبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم ترید الصلوۃ فتلقا ھارجل فتجللھا فقضی حاجتہ منہا فصاحت فانطلق ومر علیھا رجل فقالت ان ذلک الرجل فعل بی کذا وکذا ومرت

بعصابۃ | علقمہ بن وائل کندی اپنے باپ (وائل) سے روایت کرتے ہیں کہ نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کے عہدِ اقدس میں ایک عورت نماز پڑھنے کے لیے نکلی تو اسے ایک مرد ملا جس نے اسے ڈھانپ لیا اور اس سے اپنی حاجت پوری کی وہ عورت چیخی تو وہ شخص چلا گیا، ایک اور شخص اس عورت کے پاس سے گزرا تو اس عورت نے کہا کہ اس مرد نے میرے ساتھ ایسا ایسا کیا ہے۔ اور وہ خاتون مہاجرین کی

1 التیسیر شرح الجامع الصغیر تحت الحدیث حیاتی خیر لکم مکتبۃ الامام الشافعی ریاض ۱ / ۵۰۲ 2 القرآن الکریم ۶/۴۵ 3 القرآن الکریم ۲۶ / ۲۲۷

Fatawa Razawiyya Volume 29

[Main Table Text] (Left Column - Arabic Original) ...from the Muhajireen. She said, "That man did such and such to me." So they went and caught the man whom she thought had committed the act with her, and brought her. She said, "Yes, it is him." So they brought him to the Messenger of Allah (may Allah grant him peace and blessings). When he ordered him to be stoned, the man who actually committed the act with her stood up and said, "O Messenger of Allah! I am the one who did it." So he said to her, "Go, for Allah has forgiven you." And he spoke kindly to the (first) man. And he said about the man who (actually) committed the act, "Stone him." And he said, "He has repented with such a repentance that if the people of Madinah were to repent like it, it would be accepted from them." This is a Hasan Gharib Sahih Hadith. And Alqama bin Wael bin Hajar heard from his father, and he is older than Abdul Jabbar bin Wael, and Abdul Jabbar bin Wael did not hear anything from his father. [1]-

(Right Column - Urdu Translation) She passed by a group and said, "This man has done such and such to me." Those people went and caught the man whom the woman suspected had committed adultery with her. When they brought him to the woman, she said, "Yes, this is the one." Consequently, they brought him to the Messenger of Allah (may Allah grant him peace and blessings). Then, when you (the Prophet) ordered him to be stoned, the person who had actually committed adultery with the woman stood up and submitted, "O Messenger of Allah! I have committed adultery with her." Thus, you said to the woman: "Go, Allah Almighty has forgiven you," and spoke kindly to the first man. Regarding the second man who had actually committed adultery, you ordered, "Stone him." Then you said, "He has repented in such a way that if all the people of Madinah were to make this repentance, it would be accepted from them." This Hadith is Hasan Sahih Gharib. Alqama bin Wael bin Hajar heard it from his father, and he is older than Abdul Jabbar bin Wael; Abdul Jabbar did not hear anything from his father. (T))

[Bottom Section] (1) There is a discussion about Alqama's hearing from Wael (may Allah be pleased with him). Imam Yahya bin Ma'een considers his narration disconnected (Munqati'), and on this, Hafiz has affirmed in at-Taqreeb. It is stated in al-Mizan:

[Comparison Table] Alqama bin Wael bin Hajar is truthful, except that... | Alqama bin Wael bin Hajar is truthful, but Yahya bin Ma'een...

[Footer] [1] Jami' at-Tirmidhi, Book of Legal Punishments, Chapter on what has been narrated regarding a woman when she is forced into adultery, Amin Company Delhi 11/57

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

[मुख्य सारणी पाठ] (बायाँ कॉलम - अरबी मूल) ...मुहाजिरीन में से। उसने कहा, "उस आदमी ने मेरे साथ ऐसा-ऐसा किया है।" तो वे गए और उस आदमी को पकड़ लाए जिसके बारे में उस महिला को लगा था कि उसने उसके साथ वह काम किया है, और उसे लाए। उसने कहा, "हाँ, यही वह है।" तो वे उसे अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के पास ले आए। जब आपने उसे संगसार (पत्थर मार-मार कर जान से मारना) करने का हुक्म दिया, तो वह व्यक्ति खड़ा हो गया जिसने वास्तव में उस महिला के साथ व्यभिचार किया था और कहा, "हे अल्लाह के रसूल! मैं वह हूँ जिसने यह किया है।" तो आपने उस महिला से कहा, "जाओ, अल्लाह ने तुम्हें माफ़ कर दिया है।" और पहले आदमी से अच्छी बात कही। और उस आदमी के बारे में जिसने वास्तव में वह काम किया था, कहा, "इसे संगसार कर दो।" और फरमाया, "उसने ऐसी तौबा (पछतावा) की है कि अगर मदीना के सभी लोग ऐसी तौबा करें, तो उनकी तौबा स्वीकार कर ली जाएगी।" यह हदीस हसन गरीब सहीह है। और अलक़मा बिन वायल बिन हजर ने अपने पिता से सुना है, और वह अब्दुल जब्बार बिन वायल से बड़े हैं, और अब्दुल जब्बार ने अपने पिता से कुछ नहीं सुना। [1]-

(दायाँ कॉलम - उर्दू अनुवाद) वह एक जमात (समूह) के पास से गुज़री और कहा कि इस मर्द ने मेरे साथ ऐसा-ऐसा किया है। वे लोग गए और उस मर्द को पकड़ लाए जिसके बारे में उस महिला ने गुमान किया था कि उसने उसके साथ ज़िना (व्यभिचार) किया है। जब वे उसे महिला के पास लाए तो उसने कहा, "हाँ, यही वही है।" चुनाँचे वे उसे रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के पास ले आए। फिर जब आपने उसे संगसार करने का हुक्म दिया, तो वह शख्स उठ खड़ा हुआ जिसने वास्तव में उस औरत से ज़िना किया था और अर्ज़ किया, "या रसूलुल्लाह! मैंने इसके साथ ज़िना किया है।" चुनाँचे आपने उस औरत से फ़रमाया: "जा, अल्लाह तआला ने तेरी मग्फ़िरत (क्षमा) कर दी," और पहले मर्द से अच्छी बात कही। और दूसरे मर्द, जिसने हकीकत में ज़िना किया था, के बारे में फ़रमाया कि "इसे संगसार कर दो।" फिर फ़रमाया, "उसने ऐसी तौबा की है कि अगर तमाम अहले मदीना यह तौबा करते तो उनसे क़बूल कर ली जाती।" यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है। अलक़मा बिन वायल बिन हजर ने अपने बाप से समाअत (श्रवण) की है और वह अब्दुल जब्बार बिन वायल से बड़े हैं; अब्दुल जब्बार ने अपने बाप से कुछ नहीं सुना। (त))

[निचला भाग] (1) वायल (रज़ियल्लाहु अन्हु) से अलक़मा के समाअत (सुनने) के बारे में चर्चा है। इमाम याह्या बिन मुईन उनके वर्णन को मुनक़ती (विच्छिन्न) बताते हैं और इसी पर हाफ़िज़ ने तक़रीब में जज़्म (पुष्टि) किया है। मीज़ान में है:

[तुलना सारणी] अलक़मा बिन वायल बिन हजर सच बोलने वाला है सिवाय इसके कि... | अलक़मा बिन वायल बिन हजर सच बोलने वाला है मगर याह्या बिन मुईन...

[पाद लेख] [1] जामि अत-तिर्मिज़ी, अबवाबुल हुदूद, बाब मा जाआ फ़िल मरअती इज़ा-स्तुकरीहत अलिज़-ज़िना, अमीन कंपनी दिल्ली 11/57

[مرکزی جدول] (بایاں کالم - عربی اصل) من المهاجرين فقالت ان ذالك الرجل فعل بي كذا كذا فانطلقوا فاخذوا الرجل الذى ظنت انه وقع عليها واتوا بها فقالت نعم هو هذا فاتوا به رسول الله صلى الله تعالى عليه وسلم فلما امر به لرجم قام صاحبها الذى وقع عليها فقال يارسول الله انا صاحبها فقال لها اذهبى فقد غفر الله لك. وقال للرجل قولا حسناً. وقال للرجل الذى وقع عليها ارجموه وقال لقد تاب توبة لو تابها اهل المدينة لقبل منهم. هذا حديث حسن غريب صحيح. و علقمة بن وائل بن حجر سمع من ابيه وهو اكبر من عبد الجبار بن وائل وعبد الجبار بن وائل لم يسمع من ابيه [1]-

(دایاں کالم - اردو ترجمہ) ایک جماعت کے پاس سے گزری اور کہا اس مرد نے میرے ساتھ ایسا ایسا کیا ہے۔ وہ لوگ گئے اور اس مرد کو پکڑ لائے جس کے بارے میں اس خاتون نے گمان کیا تھا کہ اس نے اس کے ساتھ زنا کیا ہے، جب وہ اسے خاتون کے پاس لائے تو اس نے کہا ہاں یہ وہی ہے، چنانچہ وہ اسے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے پاس لے آئے پھر جب آپ نے اس کو سنگسار کرنے کا حکم دیا تو وہ شخص اٹھ کر کھڑا ہو گیا جس نے فی الواقع اس عورت سے زنا کیا تھا اور عرض کی کہ یا رسول اللہ! میں نے اس کے ساتھ زنا کیا ہے، چنانچہ آپ نے اس عورت سے فرمایا: جا اللہ تعالیٰ نے تیری مغفرت کر دی، اور پہلے مرد سے اچھا کلام فرمایا اور دوسرے مرد جس نے حقیقتًا زنا کیا تھا کے بارے میں فرمایا کہ اس کو سنگسار کر دو پھر فرمایا اس نے ایسی توبہ کی کہ اگر تمام اہل مدینہ یہ توبہ کرتے تو ان سے قبول کر لی جاتی۔ یہ حدیث حسن صحیح غریب ہے، علقمہ بن وائل بن حجر نے اپنے باپ سے سماعت کی ہے اور وہ عبدالجبار بن وائل سے بڑے ہیں عبدالجبار نے اپنے باپ سے کچھ نہیں سُنا۔ت)

[نیچے والا حصہ] (۱) وائل رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے علقمہ کے سماع میں کلام ہے، امام یحییٰ بن معین ان کی روایت کو منقطع بتاتی ہیں اور اسی پر حافظ نے تقریب میں جزم کیا، میزان میں ہے:

[تقابلی جدول] علقمہ بن وائل بن حجر صدوق الا ان | علقمہ بن وائل بن حجر صدوق ہے مگر یحییٰ بن معین

[فٹر] [1] جامع الترمذی ابواب الحدود باب ماجاء فی المرأة اذا استکرھت علی الزنا امین کمپنی دہلی ۱۱/۵۷

Yahya ibn Ma'in says about it, his narration from his father is Mursal (disconnected). [1]

It is said that his narration from his father is Mursal. (T)

It is mentioned in Taqrib:

'Alqamah ibn Wa'il is truthful (Saduq), except that he did not hear from his father. [2]

'Alqamah ibn Wa'il is truthful, but he did not hear anything from his father. (T)

(2) Then there is a discussion about Simak ibn Harb, it is mentioned in Taqrib:

He changed (deteriorated in memory) at the end of his life, so he would sometimes be prompted (given Talqeen). [3]

In the last part of his life, he became changed (mentally/memory-wise), so often he was prompted/suggested [what to narrate]. (T)

Imam Nasa'i decided regarding this chapter that a hadith for which he is the sole narrator is not an authority. It is mentioned in Mizan:

An-Nasa'i said: "When he is unique in a primary source (Asl), it is not a proof because he used to be prompted and would accept it." [4] End of quote. Indeed, the Hafiz [Ibn Hajar] critiqued Al-Tirmidhi's authentications (tas-hihat) and even his gradings as 'good' (tahsinat), as we have explained in 'Madarij Tabaqat al-Hadith' and our other works.

Nasa'i said that any hadith in which 'Alqamah is the sole narrator is not a proof because things were explained to him and then he would understand, and Al-Hafiz critiqued Tirmidhi on his authentications and even on his 'good' gradings, just as we have described in our books 'Madarij Tabaqat al-Hadith' etc. (T)

And it is clear from this that the basis of this hadith is upon Simak. (3) Abu Dawud narrated this hadith exactly with this same chain, and in it, the word "Liyurjam" (so that he may be stoned. (T)) which is the basis of the Wahhabi's objection, does not exist at all. Its chain is this:

Muhammad ibn Yahya ibn Faris narrated to us

Muhammad ibn Yahya ibn Faris narrated the hadith to us, he...

1. Mizan al-I'tidal, biography 5716, 'Alqamah ibn Wa'il, Dar al-Ma'rifah, Beirut, 3/108
2. Taqrib al-Tahdhib, biography 4700, 'Alqamah ibn Wa'il, Dar al-Kutub al-Ilmiyyah, Beirut, 1/687
3. Taqrib al-Tahdhib, biography 2632, 'Alqamah ibn Wa'il, Dar al-Kutub al-Ilmiyyah, Beirut, 1/393
4. Mizan al-I'tidal, biography 3528, Simak ibn Harb, Dar al-Ma'rifah, Beirut, 2/233

यया बिन मईन उसके बारे में कहते हैं, उनकी अपने पिता से रिवायत मुरसल (खंडित) है। [1]

कहते हैं कि उनकी अपने पिता से रिवायत मुरसल है। (त)

तक़रीब में है:

अलक़मा बिन वाइल सच बोलने वाले (सदूक़) हैं, सिवाय इसके कि उन्होंने अपने पिता से नहीं सुना। [2]

अलक़मा बिन वाइल सदूक़ हैं मगर उन्होंने अपने पिता से कुछ नहीं सुना। (त)

(2) फिर सिमाक बिन हर्ब के बारे में चर्चा है,
तक़रीब में है:

वह उम्र के आखिरी हिस्से में बदल गए (स्मृति दोष) थे, इसलिए कभी-कभी उन्हें तल्क़ीन (संकेत/सुझाव) दी जाती थी। [3]

उम्र के आखिरी हिस्से में वह मुतग़य्यर (परिवर्तित) हो गए थे, लिहाज़ा अक्सर उन्हें तल्क़ीन की जाती थी। (त)

इमाम नसाई ने इस बाब में यह फैसला किया कि जिस हदीस के वह अकेले रावी हों, वह हुज्जत (प्रमाण) नहीं। मीज़ान में है:

नसाई ने कहा: "जब वह किसी असल (मूल) में अकेले हों तो वह हुज्जत नहीं है क्योंकि उन्हें तल्क़ीन दी जाती थी और वह उसे स्वीकार कर लेते थे।" [4] समाप्त। और हाफ़िज़ (इब्ने हजर) ने तिर्मिज़ी की तस़हीहात (सहीह करार देना) बल्कि उनकी तह़सीनाह (हसन करार देना) पर भी तन्क़ीद (आलोचना) की है, जैसा कि हमने अपनी किताबों 'मदारिज तबक़ात अल-हदीस' आदि में इसे बयान किया है।

नसाई ने कहा कि जिस हदीस में अलक़मा अकेले हों वह हुज्जत नहीं है क्योंकि उन्हें बात समझाई जाती थी तब वह समझते थे और हाफ़िज़ ने तिर्मिज़ी पर उनकी तस़हीहात बल्कि उनकी तह़सीनाह पर भी तन्क़ीद की है, जैसा कि हमने अपनी तस़ानीफ़ मदारिज तबक़ात अल-हदीस वग़ैरह में बयान किया है। (त)

और इस पर ज़ाहिर है कि इस हदीस का दारोमदार सिमाक पर है। (3) अबू दाऊद ने यही हदीस इसी सनद से रिवायत की और उसमें यह लफ़्ज़ "लियुरजम" (ताकि उसे रज्म किया जाए। (त)) जो वहाबी के एतराज़ (आपत्ति) की वज़ह है, असल में नहीं है, उसकी सनद यह है:

हद्दसना मुहम्मद बिन यया बिन फ़ारिस हमें हदीस बयान की मुहम्मद बिन यया बिन फ़ारिस ने वह

---

1. मीज़ान अल-एतेदाल, जीवनी 5716, अलक़मा बिन वाइल, दार अल-मअरिफ़ा, बेरूत, 3/108
2. तक़रीब अल-तहज़ीब, जीवनी 4700, अलक़मा बिन वाइल, दार अल-कुतुब अल-इल्मिया, बेरूत, 1/687
3. तक़रीब अल-तहज़ीब, जीवनी 2632, अलक़मा बिन वाइल, दार अल-कुतुब अल-इल्मिया, बेरूत, 1/393
4. मीज़ान अल-एतेदाल, जीवनी 3528, सिमाक बिन हर्ब, दार अल-मअरिफ़ा, बेरूत, 2/233

یحیی بن معین یقول فیہ روایۃ عن ابیہ مرسلۃ[8]1 کہتے ہیں کہ اس کی روایت اپنے باپ سے مرسل ہے۔ (ت)

تقریب میں ہے:

علقمہ بن وائل صدوق الا انہ لم یسمع من علقمہ بن وائل صدوق ہے مگر اپنے باپ سے اس نے ابیہ[8]2 کچھ نہ سنا۔ (ت)

(۲) پھر سماک بن حرب میں کلام ہے،

تقریب میں ہے:

قد تغیر باخرہ فکان ربما یلقن[8]3 آخر عمر میں وہ متغیر ہوگئے تھے چنانچہ بسا اوقات انہیں تلقین کی جاتی تھی۔ (ت)

امام نسائی نے اس کے باب میں یہ فیصلہ کیا کہ جس حدیث کے تنہا وہی راوی ہوں حجت نہیں۔ میزان میں ہے:

قال النسائی اذا انفرد باصل لم یکن بحجۃ لانہ کان یلقن فیتلقن[8]4 اھ وقد انقد الحافظ علی الترمذی تصحیحاتہ بل و تحسیناتہ کما بیناہ فی مدارج طبقات الحدیث وغیرھا من تصانیفنا۔ نسائی نے کہا جس حدیث میں علقمہ منفرد ہو وہ حجت نہیں کیونکہ انہیں بات سمجھائی جاتی تب وہ سمجھتے اور حافظ نے ترمذی پر اس کی تصحیحات بلکہ اس کی تحسینات پر تنقید کی، جیسا کہ ہم نے اپنی تصانیف مدارج طبقات الحدیث وغیرہ میں اس کو بیان کیا ہے۔ (ت)

اور اس پر ظاہر کہ اس حدیث کا مدار سماک پر ہے۔ (۳) ابوداؤد نے یہ حدیث بعینہ اسی سند سے روایت کی اور اسی میں یہ لفظ لیرجم (کہ اسے رجم کیا جائے۔(ت)) جو منشاء اعتراض وہابی ہے، اصلاً نہیں، اس کی سند یہ ہے:

حدثنا محمد بن یحیی بن فارس ہمیں حدیث بیان کی محمد بن یحیی بن فارس نے وہ

---

1۸ میزان الاعتدال ترجمہ ۵۷۱۶ علقمہ بن وائل دارالمعرفۃ بیروت ۳/ ۱۰۸ 2۸ تقریب التہذیب ترجمہ ۴۷۰۰ علقمہ بن وائل دارالکتب العلمیہ بیروت ۱ / ۶۸۷ 3۸ تقریب التہذیب ترجمہ ۲۶۳۲ علقمہ بن وائل دارالکتب العلمیہ بیروت ۱ / ۳۹۳ 4۸ میزان الاعتدال ترجمہ ۳۵۲۸ سماک بن حرب دارالمعرفۃ بیروت ۲ / ۲۳۳

- Narrated to us by Faryabi, narrated to us by Isr'ail, narrated to us by Samak bin Harb from Alqama bin Wa'il from his father - 1. (They say Faryabi told us, who said Israel told us, who said Samak bin Harb narrated the hadith to us from Alqamah bin Wail, who narrated from his father.) (T)

And in the place of argument, the words are only these: - She said, "Yes, he is the one." So they brought him to the Messenger of Allah (may Allah peace and blessings be upon him). When he gave a command regarding him, the man who had committed the act with her stood up and the Messenger of Allah said, "I am the one." - 2. (That woman said, "Yes, this is the one." So those people brought him to the Messenger of Allah (may Allah peace and blessings be upon him). When you gave the command about him, that person stood up who in reality had committed adultery with that woman and submitted, "O Messenger of Allah (may Allah peace and blessings be upon him), I have committed adultery with her.") (T)

At the end: - Abu Dawood said, Asbat bin Nasr also narrated it from Samak - 3. (Abu Dawood said Asbat bin Nasr has also narrated this from Samak.) (T)

Here the command is absolute; it is possible it was ordered for investigation. This is also correct that according to the need, some strictness should be shown, or he should be imprisoned so that if he has committed a sin, he may confess, as sharia-wise, the chastisement (ta'zeer) of an accused is permissible. In Jami' Tirmidhi, it is narrated from Hasan bin Muawiyah bin Haidah Qushayri (may Allah be pleased with him): - Ali bin Sa'id al-Kindi narrated to us, Ibn al-Mubarak narrated to us from Ma'mar from Bahz bin Hakim from his father from his grandfather that the Prophet (may Allah peace and blessings be upon him) imprisoned [a person]. (Ali bin Sa'id al-Kindi narrated the hadith to us, he said Ibn al-Mubarak narrated the hadith to us, who from Ma'mar, who from Bahz bin Hakim, who through his father from his grandfather narrated that the Holy Prophet (may Allah peace and blessings be upon him) had imprisoned a person.)

1 Sunan Abi Dawood, Kitab al-Hudud, Chapter: Regarding the person to whom punishment is due, comes and confesses, Aftab-e-Alam Press Lahore, 2/245. 2 Sunan Abi Dawood, Kitab al-Hudud, Chapter: Regarding the person to whom punishment is due, comes and confesses, Aftab-e-Alam Press Lahore, 2/245. 3 Sunan Abi Dawood,

Kitab al-Hudud, Chapter: Regarding the person to whom punishment is due, comes and confesses, Aftab-e-Alam Press Lahore, 2/246.

- फ़र्याबी ने हमसे कहा, इसराइल ने हमसे कहा, समाक बिन हर्ब ने हमसे कहा, अलक़मा बिन वायल से, उन्होंने अपने पिता से - 1. (वे कहते हैं कि फ़र्याबी ने हमें बताया, उन्होंने कहा कि इसराइल ने हमें बताया, उन्होंने कहा कि समाक बिन हर्ब ने हमें अलक़मा बिन वायल के माध्यम से उनके पिता से हदीस सुनाई।) (त)

और तर्क के स्थान पर शब्द केवल ये हैं: - उसने कहा, "हाँ, वही है।" सो वे उसे अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के पास ले आए। जब आपने उसके बारे में आदेश दिया, तो वह व्यक्ति खड़ा हो गया जिसने उसके साथ वह कार्य किया था और अल्लाह के रसूल ने कहा, "मैं ही वह हूँ।" - 2. (उस महिला ने कहा, "हाँ, यही वह है।" अतः वे लोग उसे अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के पास ले आए। जब आपने उसके बारे में आदेश दिया, तो वह व्यक्ति खड़ा हो गया जिसने वास्तव में उस महिला के साथ व्यभिचार किया था और निवेदन किया, "हे अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम), मैंने उसके साथ व्यभिचार किया है।") (त)

अंत में: - अबू दाऊद ने कहा, असबात बिन नस्र ने भी इसे समाक से रिवायत किया है - 3. (अबू दाऊद ने कहा कि असबात बिन नस्र ने भी इसे समाक से रिवायत किया है।) (त)

यहाँ आदेश निरपेक्ष है; संभव है कि जाँच के लिए आदेश दिया गया हो। यह भी सही है कि आवश्यकतानुसार कुछ सख्ती की जाए, उसे कैद किया जाए ताकि यदि उसने पाप किया हो तो वह स्वीकार कर ले, क्योंकि शरीयत के अनुसार एक अभियुक्त को दंडित (ताज़ीर) करना जायज़ है। जामिअ तिरमिज़ी में हसन बिन मुआविया बिन हैदा कुशैरी (रज़ियल्लाहु अन्हु) से वर्णित है: - हमसे अली बिन सईद अल-किंदी ने हदीस बयान की, उन्होंने कहा कि हमसे इब्न अल-मुबारक ने म'अमर से, उन्होंने बहज़ बिन हकीम से, उन्होंने अपने पिता के माध्यम से अपने दादा से रिवायत की कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने एक व्यक्ति को कैद किया... (हमें अली बिन सईद अल-किंदी ने हदीस सुनाई, उन्होंने कहा कि इब्न अल-मुबारक ने हमें हदीस सुनाई, जिन्होंने म'अमर से, जिन्होंने बहज़ बिन हकीम से, जिन्होंने अपने पिता के माध्यम से अपने दादा से रिवायत की कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने एक व्यक्ति को...)

1 सुनन अबी दाऊद, किताबुल हुदूद, बाब: उस व्यक्ति के बारे में जिस पर दंड लागू होता है और वह आकर स्वीकार कर लेता है, आफ़ताब-ए-आलम प्रेस लाहौर, 2/245. 2 सुनन अबी दाऊद, किताबुल

हुदूद, बाब: उस व्यक्ति के बारे में जिस पर दंड लागू होता है और वह आकर स्वीकार कर लेता है, आफ़ताब-ए-आलम प्रेस लाहौर, 2/245. 3 सुनन अबी दाऊद, किताबुल हुदूद, बाब: उस व्यक्ति के बारे में जिस पर दंड लागू होता है और वह आकर स्वीकार कर लेता है, आफ़ताब-ए-आलम प्रेस लाहौर, 2/246.

पृष्ठ 526 / 750

• نا فریابی نا اسرائیل نا سماك بن حرب عن علقمة بن وائل عن ابیه - ۱ کہتے ہیں ہمیں فریابی نے وہ کہتے ہیں ہمیں اسرائیل نے وہ کہتے ہیں ہمیں سماک بن حرب نے علقمہ بن وائل سے انہوں نے اپنے باپ سے حدیث بیان کی۔ (ت)

اور محلِ احتجاج میں لفظ صرف یہ ہیں: - فقالت نعم هو هذا فاتوا به رسول الله صلی الله تعالی علیه وسلم فلما امر به قام صاحبها الذی وقع علیها فقال رسول الله انا صاحبها - ۲ اس عورت نے کہا ہاں یہ وہی ہے چنانچہ وہ لوگ اس کو رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم کے پاس لے آئے۔ جب آپ نے اس کے بارے میں حکم دیا تو وہ شخص کھڑا ہو گیا جس نے فی الواقع اس عورت سے زنا کیا تھا اور عرض کی کہ یا رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وآلہ وسلم میں نے اس کے ساتھ زنا کیا ہے۔ (ت)

آخر میں : - قال ابو داؤد رواه اسباط بن نصر ایضا عن سماک - ۳ ابوداؤد نے کہا اس کو اسباط بن نصر نے بھی سماک سے روایت کیا ہے۔ (ت)

یہاں امر بہ مطلق ہے ممکن کہ تحقیقات کے لیے حکم فرمایا یہ بھی سہی کہ بقدرِ حاجت کچھ سخت گیری کرو قید کرو کہ اگر گناہ کیا ہو اقرار کرے کہ شرعاً متہم کی تعزیر جائز ہے۔ جامع ترمذی میں حسن بن معاویہ بن حیدہ قشیری رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے ہے: - حدثنا علی بن سعید الکندی ثنا ابن المبارک عن معمر عن بهز بن حکیم عن ابیه عن جده ان النبی صلی الله تعالی علیه وسلم حبس ہمیں حدیث بیان کی علی بن سعید کندی نے انہوں نے کہا ہمیں حدیث بیان کی ابن مبارک نے انہوں نے معمر سے انہوں نے بہز بن حکیم سے انہوں نے بواسطہ اپنے باپ اپنے دادا سے روایت کیا کہ نبی اکرم صلی اللہ تعالی علیہ وآلہ وسلم نے ایک شخص کو

١ سنن ابی داؤد کتاب الحدود باب فی صاحب الحد یجیئ فیقر آفتاب عالم پریس لاہور ۲/ ۲۴۵ ۲ سنن ابی داؤد کتاب الحدود باب فی صاحب الحد یجیئ فیقر آفتاب عالم پریس لاہور ۲/ ۲۴۵ ۳ سنن ابی داؤد کتاب الحدود باب فی صاحب الحد یجیئ فیقر آفتاب عالم پریس لاہور ۲/ ۲۴۶

Fatawa Razawiyya - Volume 29

[Arabic Text]: "...a man under accusation, then he released him." At-Tirmidhi said: In this chapter, there is also a narration from Abu Huraira. The hadith of Bahz, narrated from his father, from his grandfather, is a 'Hasan' (good) hadith. Verily, Ismail bin Ibrahim narrated this hadith from Bahz bin Hakim in a more complete and longer form. [End of citation]. I say: The chain of At-Tirmidhi is Hasan. Ali, Bahz, and Hakim are all 'Saduq' (truthful). Regarding the narration of Ismail bin Ibrahim that At-Tirmidhi pointed to, it was narrated by Ibn Abi 'Asim in 'Kitab al-Afw'. He said: Abu Bakr bin Abi Shaybah narrated to us, who said: Ibn Ulayyah narrated to us from Bahz, from his father, from his grandfather, that his brother came to the Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him) and said: "My neighbors, for what were they taken?" He (the Prophet) turned away from him. He repeated his question, and he turned away from him again. And he (the narrator) recounted the story. It says at the end: "Release his neighbors for his sake."

[Urdu Translation/Explanation]: He kept him imprisoned under some accusation and then released him. In this chapter, there is also a narration from Hazrat Abu Huraira (may Allah be pleased with him). The hadith of Bahz through his father from his grandfather is 'Hasan'. Research shows that Ismail bin Ibrahim narrated this hadith from Bahz bin Hakim in a more complete and lengthy form. I say: the chain of Tirmidhi is Hasan; Ali, Bahz, and Hakim are all truthful. The narration of Ismail bin Ibrahim, which Tirmidhi alluded to, was recorded by Ibn Abi Asim in 'Kitab al-Afw'. He said: Abu Bakr bin Abi Shaibah informed us, who said: Ibn Ulayyah informed us from Bahz from his father from his grandfather that his brother came to the Holy Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him) and asked: "On what basis were my neighbors arrested?" You (the Prophet) turned away from him. He repeated the words, and You turned away again, and he narrated the whole story, at the end of which it is mentioned that You said: "Release the neighbors for his sake." (T)

(4) Imam Baghawi mentioned this hadith in 'Masabih' and completely omitted the story of the second person who was falsely accused. The words of 'Masabih' are these:

[Arabic]: From Alqamah bin Wa'il from his father [Urdu]: Alqamah bin Wa'il narrates from his father Wa'il that...

1. Jami' at-Tirmidhi, Chapters of Blood Money, Chapter on Imprisonment for Accusation, Amin Company Delhi, 1/170.
2. Hadith by meaning, Sunan Abi Dawud, Book of Judgments, 2/155 and Musnad Ahmad bin Hanbal, 5/2.

फ़तावा रज़विया - जिल्द २९

[अरबी पाठ]: "...एक व्यक्ति को आरोप में (नज़रबंद किया), फिर उसे छोड़ दिया।" तिर्मिज़ी ने कहा: इस अध्याय में हज़रत अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से भी रिवायत है। बहज़ की हदीस अपने पिता के माध्यम से अपने दादा से 'हसन' है। तहक़ीक़ यह है कि इसमाईल बिन इब्राहीम ने बहज़ बिन हकीम से इस हदीस को अधिक पूर्ण और लंबी रिवायत किया है। [इंतिहा] मैं कहता हूँ कि तिर्मिज़ी की सनद हसन है। अली, बहज़ और हकीम सभी 'सदूक़' (सच्चे) हैं। इसमाईल बिन इब्राहीम की रिवायत, जिसकी ओर तिर्मिज़ी ने इशारा किया है, उसे इब्न अबी आसिम ने 'किताब अल-अफ़्व' में रिवायत किया है। उन्होंने कहा कि हमसे अबू बक्र बिन अबी शैबा ने हदीस बयान की, उन्होंने कहा कि हमसे इब्न उलय्या ने बहज़ से रिवायत करते हुए बयान किया, उन्होंने अपने पिता के माध्यम से अपने दादा से रिवायत की कि उनके भाई नबी करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की खिदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ की कि मेरे पड़ोसी किस बुनियाद पर पकड़े गए? आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने उनसे मुँह मोड़ लिया। उन्होंने अपनी बात दोहराई, आपने फिर मुँह मोड़ लिया, और पूरा क़िस्सा बयान किया, जिसके आख़िर में है कि आपने फ़रमाया "उसकी ख़ातिर उसके पड़ोसियों को छोड़ दो"।

[उर्दू अनुवाद/व्याख्या]: किसी तहमत (आरोप) में महबूस (कैद) फ़रमाया फिर छोड़ दिया। इस बाब (अध्याय) में हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से भी रिवायत है। बहज़ की हदीस बवास्ता अपने बाप अपने दादा से हसन है। तहक़ीक़ इसमाईल बिन इब्राहीम ने बहज़ बिन हकीम से इस हदीस को अतम व अतवल (अधिक पूर्ण और विस्तृत) रिवायत किया है। अह, मैं कहता हूँ तिर्मिज़ी की सनद हसन है, अली, बहज़ और हकीम तमाम सदूक़ हैं। इसमाईल बिन इब्राहीम की रिवायत से जिस हदीस की तरफ तिर्मिज़ी ने इशारा किया है, उसको इब्न अबी आसिम ने 'किताबुल अफ़्व' में रिवायत किया, कहा कि हमें हदीस बयान की अबू बक्र बिन अबी शैबा ने, उन्होंने कहा हमें हदीस बयान की इब्न उलय्या ने उन्होंने बहज़ से उन्होंने बवास्ता अपने बाप के अपने दादा से रिवायत की कि उनके भाई नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ की कि मेरे पड़ोसी किस बुनियाद पर पकड़े गए, आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने उनसे एराज़ फ़रमाया। उन्होंने बात दोहराई, आपने फिर एराज़ फ़रमाया, और पूरा क़िस्सा बयान किया, उसके आख़िर में है कि आपने फ़रमाया इसकी ख़ातिर इसके पड़ोसियों को छोड़ दो। (त)

(४) इमाम बगवी ने 'मसाबीह' में यह हदीस ज़िक्र की और इसमें सिरे से दूसरे शख़्स का जिस पर ग़लती से तोहमत हुई थी क़िस्सा ही न रखा, मसाबीह के लफ़्ज़ ये हैं:

[अरबी]: अन अलक़मा बिन वाइल अन अबीहि [उर्दू]: अलक़मा बिन वाइल अपने बाप वाइल से रावी हैं कि

---

1. जामिअ तिर्मिज़ी, अबवाब अल-दियात, बाब मा जा'अ फ़िल हब्स फ़ित तोहमत, अमीन कंपनी दिल्ली, १/१७०
2. हदीस मफ़हूम के अनुसार, सुनन अबी दाऊद, किताब अल-क़ज़ा, २/१५५ और मुसनद अहमद बिन हंबल, ५/२

رجلًا فی تھمة ثم خلی عنه" قال الترمذی وفی الباب عن ابی ھریرة حدیث بھز عن ابیه عن جده حدیث حسن، وقد روی اسمعیل بن ابراھیم عن بھز بن حکیم ھذا الحدیث اتم من ھذا واطول اھ قلت سند الترمذی حسن، علی و بھز و حکیم کلھم صدوق ما اشار الیه من روایة اسمعیل بن ابراھیم فقد رواھا ابن ابی عاصم فی کتاب العفو . قال حدثنا ابوبکر بن ابی شیبة ثناء ابن علیة عن بھز عن ابیه عن جده ان اخاه اتی النبی صلی اللہ تعالی علیه وسلم فقال جیرانی علی ما اخذوا فاعرض عنه فأعاد قوله فاعرض عنه وساق القصة قال فی آخرھا خلوا له عن جیرانه۸2 -

کسی تہمت میں محبوس فرمایا پھر چھوڑ دیا۔ اس باب میں حضرت ابوہریرہ رضی اللہ تعالٰی عنہ سے بھی روایت ہے۔ بہز کی حدیث بواسطہ اپنے باپ اپنے دادا سے حسن ہے۔ تحقیق اسمٰعیل بن ابراہیم نے بہز بن حکیم سے اس حدیث کو اتم واطول روایت کیا ہے۔ اھ میں کہتا ہوں ترمذی کی سند حسن ہے ، علی ، بہز اور حکیم تمام صدوق ہیں۔ اسمٰعیل بن ابراہیم کی روایت سے جس حدیث کی طرف ترمذی نے اشارہ کیا ہے۔ اس کو ابن ابی عاصم نے کتاب العفو میں روایت کیا ، کہا کہ ہمیں حدیث بیان کی ابوبکر بن ابی شیبہ نے انہوں نے کہا ہمیں حدیث بیان کی ابن علیہ نے انہوں نے بہز سے انہوں نے بواسطہ اپنے باپ کے اپنے دادا سے روایت کی کہ ان کے بھائی نبی کریم صلی اللہ تعالٰی علیہ وآلہ وسلم کی خدمت میں حاضر ہو کر عرض کی کہ میری پڑوسی کس بنیاد پر پکڑے گئے ، آپ صلی اللہ تعالٰی علیہ وآلہ وسلم نے ان سے اعراض فرمایا۔ انہوں نے بات دہرائی ، آپ نے پھر اعراض فرمایا، اور پورا قصہ بیان کیا ، اس کے آخر میں ہے کہ آپ نے فرمایا اس کی خاطر اس کے پڑوسیوں کو چھوڑ دو۔ (ت)

(۴) امام بغوی نے مصابیح میں یہ حدیث ذکر کی اور اس میں سرے سے دوسرے شخص کا جس پر غلطی سے تہمت ہوئی تھی قصہ ہی نہ رکھا، مصابیح کے لفظ یہ ہیں :

عن علقمة بن وائل عن ابیه علقمہ بن وائل اپنے باپ وائل سے راوی ہیں کہ

---

1 جامع الترمذی ابواب الدیات باب ماجاء فی الحبس فی التهمة امین کمپنی دہلی ۱/ ۱۷۰ 2 حدیث بالمفهوم سنن ابی داؤد کتاب القضاء ۲/ ۱۵۵ ومسند احمد بن حنبل ۵/ ۲

Fatawa Razawiya Volume 29

A woman went out during the era of the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) intending to pray. A man met her, overpowered her, and satisfied his desire with her. She cried out, and he ran away. A group of Muhajireen (emigrants) passed by, and she told them that such-and-such a man had done this and that to me. So they caught the man and brought him to the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him). He said to her, "Go, for Allah has forgiven you," and he said regarding the man who had assaulted her, "Stone him." And he said, "He has repented with such a repentance that if the people of Medina were to repent with it, it would be accepted from them."[1]

This is completely clear and without doubt; it is mentioned in Mishkat where it says "narrated by Tirmidhi and Abu Dawood"[2] (Tirmidhi and Abu Dawood narrated it. - T). (5) The actual reason behind this word of Tirmidhi is that if a woman falsely accuses a man of adultery by deception, and before the ruler neither does the man confess nor is there any eyewitness testimony—let alone four witnesses, not even one witness—then in such a case, is it permissible for the ruler to order his stoning and execution just based on the woman mentioning his name? Absolutely not. Such an order is strictly, certainly, and by consensus, completely contrary to the Great Quran and the pure Shari'ah, and is an explicit falsehood, injustice, and violation of justice; no one [can deny this].

[1] Misbah al-Sunnah, Kitab al-Hudud, Hadith 655, Dar al-Kutub al-Ilmiyya, Beirut, 2/112. [2] Mishkat al-Masabih, Kitab al-Hudud, Al-Fasl al-Thani, Qadimi Kutub Khana, Karachi, p. 312.

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के समय में एक महिला नमाज़ के इरादे से निकली। एक आदमी उसे मिला, उसने उस पर हमला किया और उसके साथ अपनी इच्छा पूरी की। वह चिल्लाई और वह आदमी भाग गया। मुहाजिरों का एक समूह वहां से गुजरा, तो उस महिला ने उनसे कहा कि इस व्यक्ति ने मेरे साथ ऐसा-ऐसा किया है। लोगों ने उस आदमी को पकड़ लिया और उसे अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के पास ले आए। आपने उस महिला से कहा, "जा, अल्लाह ने तुझे माफ़ कर दिया है," और उस आदमी के बारे में कहा जिसने उस पर हमला किया था, "उसे संगसार (पत्थरों से मारना) कर दो।" और आपने फ़रमाया, "उसने ऐसी तौबा (प्रायश्चित) की है कि अगर मदीना के सभी लोग ऐसी तौबा करते तो उनकी तौबा क़बूल हो जाती।"[1]

यह पूरी तरह से स्पष्ट और निस्संदेह है; मिशकात में इसका ज़िक्र करते हुए कहा गया है कि इसे तिर्मिज़ी और अबू दाऊद ने रिवायत किया है[2] (इसे तिर्मिज़ी और अबू दाऊद ने रिवायत किया। - टी)। (5) तिर्मिज़ी के इस शब्द में मूल कारण यह है कि अगर कोई महिला धोखे से किसी पुरुष पर ज़िना (व्यभिचार) का इल्ज़ाम लगा दे और हाकिम के सामने न तो वह पुरुष स्वीकार करे और न ही कोई चश्मदीद गवाही हो—चार तो दूर की बात है, एक गवाह भी न हो—तो क्या ऐसी स्थिति में हाकिम के लिए यह जायज़ है कि वह सिर्फ महिला के नाम लेने पर उसे संगसार करने और कत्ल करने का आदेश दे दे? हरगिज़ नहीं, ऐसा आदेश पूरी तरह से, यकीनन और इज्मा (आम सहमति) के साथ अज़ीम क़ुरआन और पाक शरीयत के बिल्कुल ख़िलाफ़ है और स्पष्ट बातिल, ज़ुल्म और इंसाफ़ का खून है, इससे कोई व्यक्ति इनकार [नहीं कर सकता]।

[1] मिस्बाह अस-सुन्नाह, किताब अल-हुदूद, हदीस 655, दार अल-कुतुब अल-इल्मिया, बेरुत, 2/112।
[2] मिशकात अल-मसाबीह, किताब अल-हुदूद, अल-फस्ल अल-थानी, कदीमी कुतुब खाना, कराची, पृ. 312।

ان امرأة خرجت على عهد رسول الله صلى الله تعالى عليه وسلم تريد الصلوة فتلقاها رجل فتجللها فقضى حاجته منها فصاحت صحية وانطلق ومرت بعصابة من المها جرين فقالت ان ذلك فعل بي كذا وكذا، فاخذوا الرجل فاتوا به رسول الله صلى الله تعالى عليه وسلم فقال لها اذهبي فقد غفر الله لك وقال للرجل الذي وقع عليها ارجموه وقال لقد تاب توبة لو تابها اهل المدينة لقبل منهم۔[1]

ایک عورت نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کے زمانہ اقدس میں نماز کے ارادہ سے نکلی تو ایک مرد اسے ملا جو اس پر چھا گیا۔ اس نے عورت سے اپنی حاجت پوری کرلی۔ وہ چیخی تو وہ مرد چلا گیا، مہاجرین کی ایک جماعت وہاں سے گزری تو وہ عورت بولی کہ اس شخص نے مجھ سے ایسا ایسا کیا ہے۔ لوگوں سے اس شخص کو پکڑ لیا پھر اسے رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کی خدمت میں لائے تو حضور علیہ الصلوۃ والسلام نے اس عورت سے فرمایا تو جا تجھے اللہ تعالیٰ نے بخش دیا ہے۔ اس شخص کے بارے میں فرمایا جو اس پر چھا گیا تھا کہ اسے رجم کردو، اور فرمایا یقیناً اس نے ایسی توبہ کی ہے کہ اگر یہ توبہ سارے مدینہ والے کرتے تو ان کی توبہ قبول ہو جاتی۔

یہ بالکل وبے دغدغہ ہے، مشکوٰۃ میں اسے ذکر کر کے کہا رواہ الترمذی وابوداؤد[2] (اس کو ترمذی اور ابوداؤد نے روایت کیا۔ ت)۔ (۵) اس لفظ ترمذی میں اصل علت یہ ہے کہ اگر کوئی عورت دھوکے سے کسی مرد پر زنا کی تہمت رکھ دے اور حاکم کے حضور نہ وہ مرد اقرار کرے نہ اصلاً کوئی شہادتِ معائنہ گزرے تو چار درکنار ایک گواہ بھی نہ ہو تو کیا ایسی صورت میں حاکم کو روا ہے کہ صرف عورت کے نام لے دینے سے اس کے رجم و قتل کا حکم دے دے، حاشا ہر

گز نہیں، ایسا حکم قطعاً، یقیناً، اجماعاً قرآنِ عظیم و شریعتِ مطہرہ کے بالکل خلاف اور صریح باطل و ظلم و خونِ انصاف ہے، اس سے کوئی شخص انکار

[1] مصباح السنة کتاب الحدود حدیث ۲۵۵ دارالکتب العلمیة بیروت ۱۱۲/۲ [2] مشکوة المصابیح کتاب الحدود، الفصل الثانی قدیمی کتب خانہ کراچی ص ۳۱۲

Fatawa Razawiyya Volume 29

...cannot do, and here only this much was the incident which is acceptable among our Imams, but inner disconnection (inqita-e-batin) by the consensus of scholars is rejected, false, and forsaken, regardless of how fine and authentic the chain may be, let alone this chain which is subject to scrutiny for various reasons. Apart from Simak, there is also disagreement regarding Isra'il, although the predominant view is his reliability. Imam Ali al-Madini said: Isra'il is weak [1]. (Isra'il is weak. T) Ibn Sa'd said: Among them are those who consider him weak [2]. (Some of them consider him weak. T) Ya'qub bin Shaybah said: He is truthful in Hadith (salih al-hadith), but there is weakness (leen) in his Hadith [3]. (He is truthful in Hadith, there is weakness in his Hadith. T) In 'Mizan' it is stated: Yahya al-Qattan was not satisfied with him [4]. (Yahya al-Qattan did not like him. T)

Ibn Hazm said: Weak; and the state of Asbat bin Nasr who followed him is even worse. In 'Taqrib' it is said:

Arabic	**Urdu**
Truthful but makes many mistakes and narrates rare/unreliable reports [5].	He is truthful, makes many mistakes, and narrates rare reports. (T)
As for what was attempted to clarify it in the margin of the printed edition, where it was said: Perhaps the meaning is that when he was close to ordering it, and that was said by the narrator looking at the apparent matter because they brought him to the court before the Imam and the Imam was occupied with investigating his condition [6].	In the margin of the printed edition, the commentator (Muhashshi) intended to avoid an objection by saying: Perhaps what is meant is that when you were near to ordering stoning (rajm), the narrator, seeing the apparent situation, said that you had ordered stoning. This is because people presented that person in the Imam's court and the Imam was busy investigating his state. (T)
So I say: It is of no benefit.	So I say: (Thus I say) this is of no use.

1. Mizan al-I'tidal, biography 820, Isra'il bin Yunus, Dar al-Ma'rifah Beirut, 209/1
2. Mizan al-I'tidal, biography 820, Isra'il bin Yunus, Dar al-Ma'rifah Beirut, 209/1
3. Mizan al-I'tidal, biography 820, Isra'il bin Yunus, Dar al-Ma'rifah Beirut, 209/1
4. Mizan al-I'tidal, biography 820, Isra'il bin Yunus, Dar al-Ma'rifah Beirut, 209/1

5. Taqrib al-Tahdhib, biography 321, Asbat bin Nasr, Dar al-Kutub al-Ilmiyyah Beirut, 66/1
6. Jami' al-Tirmidhi, Book of Punishments, Chapter on a woman when she is forced into adultery (Margin), Amin Company Delhi, 175/1

फ़तावा रज़विया जिल्द २९

...नहीं कर सकता, और यहाँ इसी क़दर वाक़िआ था जो हमारे इमामों के यहाँ मक़बूल है, लेकिन उलमा के इजमा (सहमति) से बातिनी इनक़िता (आंतरिक विच्छेद) मरदूद, बातिल और मख़ज़ूल है, चाहे वह कितनी ही बारीक और सही सनद से क्यों न आए, न कि यह सनद जो कई कारणों से जांच के दायरे में है। समाक के अलावा इस्राइल के बारे में भी मतभेद है, हालाँकि सही राय उनकी विश्वसनीयता की है। इमाम अली मदैनी ने फ़रमाया: इस्राइल ज़ईफ़ (कमज़ोर) है [१]। (इस्राइल ज़ईफ़ है। त) इब्न साद ने कहा: उनमें से कुछ उन्हें कमज़ोर क़रार देते हैं [२]। (उनमें से कुछ उसी को कमज़ोर क़रार देते हैं। त) याक़ूब बिन शैबा ने कहा: वह हदीस में नेक (सालिह) हैं लेकिन उनकी हदीस में नरमी (कमज़ोरी) है [३]। (सालिह अल-हदीस है, उसकी हदीस में कमज़ोरी है। त) 'मीज़ान' में है: यहया अल-क़त्तान उन्हें पसंद नहीं करते थे [४]। (यहया क़त्तान उसे पसंद नहीं करते थे। त)

इब्न हज़्म ने कहा: ज़ईफ़; और उनकी पैरवी असबात बिन नस्र ने की, उनका हाल तो बहुत गिरा हुआ है। 'तक़रीब' में कहा गया है:

अरबी	उर्दू
सच्चा है लेकिन बहुत गलतियाँ करता है और अजीब रिवायतें बयान करता है [५]।	सच्चा है, बहुत गलती करता है, नादिर बातें बयान करता है। (त)
रहा वह जो छपे हुए संस्करण के हाशिए (मार्जिन) में इसे स्पष्ट करने की कोशिश की गई, जहाँ कहा गया: शायद इसका मतलब यह है कि जब वह आदेश देने के करीब थे, और वह रावी ने स्पष्ट मामले को देखते हुए कहा क्योंकि वे उसे इमाम के पास कचहरी में लाए थे और इमाम उसकी स्थिति की जांच में व्यस्त थे [६]।	छपे हुए संस्करण के हाशिए में टिप्पणीकार (मुहशशी) ने इस तरह कहकर आपत्ति से बचने का इरादा किया है कि शायद इससे मुराद यह हो कि जब आप रजम (पत्थर मार कर सज़ा देने) का हुक्म देने के करीब हुए और रावी ने ज़ाहिरी तौर को देखते हुए यह कह दिया कि आपने रजम का हुक्म दिया। इसलिए कि लोगों ने उस व्यक्ति को इमाम के पास कचहरी में पेश किया और इमाम उसके हाल की तफ़्तीश में मसरूफ़ हुए। (त)
तो मैं कहता हूँ: यह कोई लाभ नहीं देता।	तो मैं कहता हूँ: (तो मैं कहता हूँ) यह कुछ लाभ नहीं।

1. मीज़ान अल-इतिदाल, अनुवाद ८२०, इस्राइल बिन यूनुस, दार अल-मअरिफ़ा बेरुत, २०९/१

2. मीज़ान अल-इतिदाल, अनुवाद ८२०, इस्राइल बिन यूनुस, दार अल-मअरिफ़ा बेरुत, २०९/१
3. मीज़ान अल-इतिदाल, अनुवाद ८२०, इस्राइल बिन यूनुस, दार अल-मअरिफ़ा बेरुत, २०९/१
4. मीज़ान अल-इतिदाल, अनुवाद ८२०, इस्राइल बिन यूनुस, दार अल-मअरिफ़ा बेरुत, २०९/१
5. तक़रीब अल-तहज़ीब, अनुवाद ३२१, असबात बिन नस्र, दार अल-कुतुब अल-इल्मिय्या बेरुत, ६६/१
6. जामी अल-तिर्मिज़ी, किताब अल-हुदूद, उस महिला के बारे में जो ज़िना के लिए मजबूर की गई हो (हाशिया), अमीन कंपनी दिल्ली, १७५/१

पृष्ठ ५२९/७५०

نہیں کر سکتا، اور یہاں اسی قدر واقعہ تھا ہمارے ائمہ کے یہاں مقبول ہے مگر انقطاع باطن باجماع علماء مردود و باطل و مخذول ہے اگرچہ کیسی ہے سند لطیف و صحیح سے آئے نہ کہ یہ سند کہ بوجوہ محل نظر ہے، سماک کے سوا اسرائیل میں بھی اختلاف ہے اگرچہ راجح توثیق ہے۔ امام علی مدینی نے فرمایا: اسرائیل ضعیف^1۔ (اسرائیل ضعیف ہے۔ ت) ابن سعد نے کہا: منهم من يستضعفه^2۔ (ان میں سے بعض اُسی ضعیف قرار دیتے ہیں۔ ت) یعقوب بن شیبہ نے کہا: صالح الحديث وفي حديثه لين^3 (صالح الحدیث ہے اس کی حدیث میں کمزوری ہے۔ ت) میزان میں ہے: كان يحيى القطان لا يرضاه^4۔ (یحیٰی قطان اسے پسند نہ کرتے تھے۔ ت)

ابن حزم نے کہا: ضعیف، اور ان کی متابعت کہ اسباط بن نصر نے کی، ان کا حال تو بہت گرا ہوا ہے۔ تقریب میں کہا:

Arabic	Urdu
صدوق كثير الخطأ يغرب اھ^5۔	صدوق ہے بہت خطا کرتا ہے نوادرات بیان کرتا ہے۔ اھ (ت)
اما ما حاول به التقصى عنه فى هامش نسخة الطبع اذ قال لعل المراد فلما قارب ان يامر به وذلك قاله الراوى نظر الى ظاهرا لا مرحيث انهم نے ظاہر امر کو دیکھتے ہوئے یہ کہہ دیا کہ آپ نے رجم کا حکم دیا۔ اس لیے کہ لوگوں نے اُس شخص کو امام کے پاس	مطبوعہ نسخے کے حاشیے میں مُحشی نے یوں کہہ کر اشکال سے بچنے کا ارادہ کیا ہے کہ شاید مراد اس سے یہ ہو کہ جب آپ رجم کا حکم دینے کے قریب ہوئے اور راوی

Arabic	Urdu
احضروہ فی المحکم عند الامام والامام اشتغل بالتفتیش عن حالہ اھ۸6	کچہری میں پیش کیا اور امام اس کے حال کی تفتیش میں مشغول ہوئے۔ اھ (ت)
فاقول: لا یجدی نفعا	فاقول: (تو میں کہتا ہوں) یہ کچھ نفع نہیں

1 میزان الاعتدال ترجمہ ۸۲۰ اسرائیل بن یونس دار المعرفۃ بیروت ۲۰۹/۱ 2 میزان الاعتدال ترجمہ ۸۲۰ اسرائیل بن یونس دار المعرفۃ بیروت ۲۰۹/۱ 3 میزان الاعتدال ترجمہ ۸۲۰ اسرائیل بن یونس دار المعرفۃ بیروت ۲۰۹/۱ 4 میزان الاعتدال ترجمہ ۸۲۰ اسرائیل بن یونس دار المعرفۃ بیروت ۲۰۹/۱ 5 تقریب التہذیب ترجمہ ۳۲۱ اسباط بن نصر دار الکتب العلمیہ بیروت ۶۷/۱ 6 جامع الترمذی باب الحدود باب ما جاء فی المرأۃ اذا استکرھت علی الزناء (حاشیہ) امین کمپنی دہلی ۱۷۵/۱

Fatawa Rizvia Volume 29

| (Arabic) For engagement in investigation does not imply the closeness of the command for stoning as long as there is nothing there to prove it. There were no witnesses nor a confession, and the Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him) would not order the killing of a Muslim without proof. So how does the closeness of the command for stoning appear to an observer as a mere conjecture? Rather, attributing such a weak and false understanding, which common people would transcend, to the Sahaba (may Allah be pleased with them), and then claiming that they relied on it completely until they attributed the command for stoning to the Messenger of Allah (may Allah's peace and blessings be upon him), is a slight against the Sahaba and removes trust from their narrations. There is no power or might except with Allah, the Most High, the Most Great. | (Urdu) ...gives because being occupied with investigation is not considered close to giving the command of stoning unless something that proves it is found there, whereas there were neither witnesses nor a confession, and the Holy Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him and his family) does not order the killing of any Muslim without proof. So how did the matter of stoning become apparent to the observer merely by estimation? Rather, to attribute such false and weak understanding, from which even common people would be free, to the noble Sahaba, and then to claim that they fully trusted it and attributed the matter of stoning to the Messenger of Allah (may Allah's peace and blessings be upon him), is a boldness against the noble Sahaba and it will remove the safety from their narration. There is no power to avoid sin nor strength to do good without the guidance of the High and Great Deity. (T) |

Fourthly: All of this was in terms of external knowledge, and if you take the knowledge of reality, then the strange upside-down state of the Wahhabis is worth seeing. That Hadith which is a bright proof of the knowledge of the unseen of the Holy Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him and his family), they consider it a proof of negation. Allah the Mighty and Majestic made our Beloved (may Allah's peace and blessings be upon him and his family) the ruler of both Sharia (law) and Reality. The Prophet's commands would be based on the external Sharia and sometimes he would command based on the internal reality, but pressure was not exerted on that. Ibn Abi Shayba, Abu Ya'la, Bazzar, and Bayhaqi narrate from Anas (may Allah be pleased with him):

| (Arabic) He said: They mentioned a man in the presence of the Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him), mentioning his strength in Jihad and his diligence

in worship. Then they saw the man approaching, and the Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him and his family) said: "Indeed, I find on his face a mark from Satan." When he drew near and offered salutations, he said to him: | (Urdu) The Sahaba (may Allah be pleased with them) praised a man, saying that he possesses such strength in Jihad and makes such effort in worship. Meanwhile, he passed from in front. The Holy Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him and his family) said: "I find on his face a mark of Satan." He came close and offered salutations, the Messenger of Allah (may Allah...) |

फतावा रज्विया जिल्द 29

| (अरबी) क्योंकि जांच में व्यस्त होने का अर्थ पत्थर मारने (रज्म) के आदेश की निकटता नहीं समझा जाता जब तक कि वहां उसे प्रमाणित करने वाली कोई चीज़ न हो। वहां न गवाह थे और न ही इकबालिया बयान, और नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) बिना सबूत के किसी मुसलमान की हत्या का आदेश नहीं देते थे। तो फिर देखने वाले को केवल अनुमान से रज्म का मामला कैसे स्पष्ट दिखाई दे गया? बल्कि ऐसी कमज़ोर और गलत समझ, जिससे आम लोग भी दूर रहते हैं, उसे सहाबा (रज़ियल्लाहु अन्हुम) की ओर जोड़ना और फिर यह दावा करना कि उन्होंने उस पर पूरा भरोसा किया यहाँ तक कि रज्म के आदेश को अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की ओर संबद्ध कर दिया, यह सहाबा की तौहीन है और उनकी रिवायतों से विश्वसनीयता को खत्म कर देता है। महान और बुलंद खुदा की मदद के बिना न तो बुराई से बचने की शक्ति है और न ही नेकी करने का सामर्थ्य। | (उर्दू) ...देता क्योंकि तफ्तीश (जांच) में मसरूफ होने से रज्म का हुक्म देने के करीब होना नहीं समझा जाता जब तक वहां उसको साबित करने वाली कोई चीज़ न पाई जाए, जबकि वहां न गवाह हैं न इकरार और नबी करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) बिना सबूत के किसी मुसलमान के कत्ल का हुक्म नहीं देते तो नाज़िर (देखने वाले) पर महज़ तख्मीने (अनुमान) से अम्र-ए-रज्म कैसे ज़ाहिर हो गया? बल्कि ऐसे बातिल और रकीक फ़हम (कमज़ोर समझ) जिससे आम लोग भी पाक हों, की निस्बत सहाबा किराम की तरफ करना फिर यह दावत करना कि उन्होंने इस पर मुकम्मल एतिमाद कर लिया और अम्र-ए-रज्म को उन्होंने रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की तरफ मंसूब कर दिया सहाबा किराम पर जसारत (दुस्साहस) है और यह उनकी रिवायत से अमान को उठा देगा। बुलंदी और अज़मत वाले माबूद की तौफीक के बगैर न गुनाह से बचने की ताकत है न नेकी करने की कुव्वत है। (त) |

चौथा: यह सब ज़ाहिरी इल्म के तौर पर था और इल्म-ए-हकीकत (सत्य का ज्ञान) लीजिये तो वहाबियों का अजीब औंधापन देखने लायक है। वह हदीस जो हुज़ूर अकदस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के इल्म-ए-ग़ैब (परोक्ष ज्ञान) पर रौशन दलील है, उसे वे नकारात्मक दलील ठहराते हैं। अल्लाह अज़्वजल ने हमारे हबीब (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को शरीयत और हकीकत दोनों का हाकिम बनाया। हुज़ूर के अहकाम ज़ाहिरी शरीयत पर होते और कभी बातिनी हकीकत पर हुक्म फरमाते मगर उस पर ज़ोर न दिया जाता। इब्न अबी शैबा, अबू याला, बज़्ज़ार और बैहकी हज़रत अनस (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत करते हैं:

| (अरबी) उन्होंने कहा: नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के पास एक आदमी का ज़िक्र किया गया, उन्होंने उसके जिहाद में ताकत और इबादत में उसकी कोशिश का ज़िक्र किया। तभी वह आदमी आता हुआ दिखाई दिया, तो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया: "बेशक मैं उसके चेहरे पर शैतान का एक निशान पाता हूँ।" जब वह करीब आया और सलाम किया, तो आपने उससे फरमाया: | (उर्दू) सहाबा (रज़ियल्लाहु अन्हुम) ने एक शख्स की तारीफ की कि जिहाद में ऐसी कुव्वत रखता है और इबादत में ऐसी कोशिश करता है, इतने में वह सामने से गुज़रा। हुज़ूर अकदस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया: "मैं इसके चेहरे पर शैतान का दाग पाता हूँ।" उसने पास आकर सलाम किया, रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि...) |

पृष्ठ 530 का 750

| فان الاشتغال بالتفتیش لایفهم قرب الامر بالرجم مالم یکن هناك شیئ یثبته وماکان هناك شهود ولا اقرار وما کان النبی صلی الله تعالی علیه وسلم لیأمر بقتل مسلم من دون ثبت فکیف یظهر للناظر قرب الامر بالرجم رجما بالغیب بل نسبة مثل هذا الفهم الرکیك الباطل الذي یترفع عنه احاد الناس الی الصحابة رضی الله تعالی عنهم ثم ادعاء انهم اعتمدوا علیه کل الاعتماد حتی نسبوا الامر بالرجم الی رسول الله صلی الله تعالی علیه وسلم ازراء بالصحابة وهو یرفع الامان عن روایاتهم ، ولا حول ولا قوة الا بالله العلی العظیم ۔ | دیتا کیونکہ تفتیش میں مشغول ہونے سے رجم کا حکم دینے کے قریب ہونا نہیں سمجھا جاتا جب تک وہاں اس کو ثابت کرنے والی کوئی شے نہ پائی جائے ، جب کہ وہاں نہ گواہ ہیں نہ اقرار اور نبی کریم صلی اللہ تعالٰی علیہ وآلہ وسلم بغیر ثبوت کے کسی مسلمان کے قتل کا حکم نہیں دیتے تو ناظر پر محض تخمینے سے امرِ رجم کیسے ظاہر ہو گیا ، بلکہ ایسے باطل و رکیک فہم جس سے عام لوگ بھی منزہ ہوں کی نسبت صحابہ کرام کی طرف کرنا پھر یہ دعوت کرنا کہ انہوں نے اس پر مکمل اعتماد کر لیا اور امرِ رجم کو انہوں نے رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کی طرف منسوب کردیا صحابہ کرام پر جسارت ہے اور یہ ان کی روایت سے امان کو اٹھا دے گا ۔ بلندی و عظمت والے معبود کی توفیق کے بغیر نہ گناہ سے بچنے کی طاقت ہے نہ نیکی کرنے کی قوت ہے۔ (ت) |

رابعاً : یہ سب علمِ ظاہر کے طور پر تھا اور علمِ حقیقت لیجئے تو وہابیہ کا عجب اوندھا پن قابلِ تماشا ہے وہ حدیث کہ حضور اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وآلہ وسلم کے علومِ غیب پر روشن دلیل ہے اس کو کوالٹی دلیل نفی ٹھہراتے ہیں، اللہ عزوجل نے ہمارے حبیب صلی اللہ تعالٰی علیہ وآلہ وسلم کو شریعت و حقیقت دونوں کا حکم بنایا حضور کے احکام شریعت ظاہرہ پر ہوتے اور کبھی

حقیقتِ باطنہ پر حکم فرماتے مگر اس پر زور نہ دیا جاتا۔ ابن ابی شیبہ وابویعلی وبزار و بیہقی انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کرتے ہیں :

| قال ذكروا رجلا عند النبى صلى الله تعالى عليه وسلم فذكروا قوته في الجهاد واجتهاده في العبادة فاذا هم بالرجل مقبل فقال النبى صلى الله تعالى عليه واله وسلم انى لاجد في وجهه سفعة من الشيطان فلما دنى فسلم فقال له | صحابہ رضی اللہ تعالیٰ عنہم نے ایک شخص کی تعریف کی کہ جہاد میں ایسی قوت رکھتا ہے اور عبادت میں ایسی کوشش کرتا ہے ، اتنے میں وہ سامنے سے گزرا حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا : میں اس کے چہرے پر شیطان کا داغ پاتا ہوں ۔ اس نے پاس آکر سلام کیا ، رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ |

Fatawa Rizvia Volume 29

[Table Content] Arabic Text: The Messenger of Allah (peace and blessings be upon him) asked, "Did you tell yourself that there is no one in this nation better than you?" He said, "Yes." Then he went, marked out a place for prayer, and stood praying. The Messenger of Allah (peace and blessings be upon him) said, "Who will get up and kill him?" Abu Bakr stood up and went, found him praying, and returned. He said, "I found him standing in prayer, and I was afraid to kill him." Then the Messenger of Allah (peace and blessings be upon him) said, "Who will get up and kill him?" Umar stood up and did as Abu Bakr had done. Then the Messenger of Allah (peace and blessings be upon him) said, "Who will get up and kill him?" Ali said, "I will." He said, "You, if you catch him." He went and found that he had departed. He returned, and the Messenger of Allah (peace and blessings be upon him) said, "This is the first horn that has emerged from my nation. If you had killed him, no two people from my nation would have disagreed after him."

Urdu Text: The Messenger of Allah (peace and blessings be upon him) told him what was in his heart: "Why did you say to yourself that there is no one better than you in this nation?" He said, "Yes," then he went away, designated a mosque, and stood up to pray. The noble Prophet (peace and blessings be upon him) said, "Who is there who will go and kill him?" Siddiq-e-Akbar (may Allah be pleased with him) went, saw that he was praying, returned and submitted, "I saw him in prayer and I felt fear in killing him." The Prophet then asked, "Who among you is such that he will go and kill him?" Farooq-e-Azam (may Allah be pleased with him) went, and seeing him praying, left him and gave the same excuse. The Prophet then asked, "Who among you is such that he will go and kill him?" Maula Ali (may Allah honor his face) submitted, "I will." The Prophet said, "Yes, you, if you find him." He went, but the man had already gone. The holy Prophet (peace and blessings be upon him) said, "This was the first horn emerging from my nation; if he had been killed, no disagreement would have occurred in the future nation."

A person was brought before the holy presence who had committed theft. It was ordered, "Kill him." It was submitted, "He has only committed theft." He said, "Fine, cut off his hand." Then he stole again and it was cut. A third time, during the era of Siddiq-e-Akbar, he stole again and it was cut. A fourth time he stole again and it was cut. A fifth time he stole again.

[Footnotes] 1. Dala'il al-Nubuwwah by al-Bayhaqi, Chapter on what was narrated regarding his reports (peace and blessings be upon him) about the man who was described, etc., Dar al-Kutub al-Ilmiyyah, Beirut 6/287 & 288; Musnad Abu Ya'la on the authority of Anas, Hadith 3656, 4113 & 4128, Mu'assasat Ulum al-Qur'an, Beirut 8/10, 154, 155 & 162; Kashf al-Astar 'an Zawa'id al-Bazzar, Book of the People of Rebellion, Chapter on their signs and worship, Mu'assasat al-Risalah, Beirut 2/360.

फतावा रज़विया जिल्द 29

[तालिका सामग्री] अरबी पाठ: अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने पूछा, "क्या तुमने खुद से कहा कि इस कौम में तुमसे बेहतर कोई नहीं है?" उसने कहा, "हाँ।" फिर वह गया, नमाज़ के लिए एक जगह चिह्नित की और नमाज़ पढ़ने लगा। अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने कहा, "कौन उठकर उसे कत्ल करेगा?" अबू बक्र उठे और गए, उसे नमाज़ पढ़ते पाया और वापस आ गए। उन्होंने कहा, "मैंने उसे नमाज़ में खड़ा पाया, और मुझे उसे कत्ल करने में डर लगा।" फिर अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने कहा, "कौन उठकर उसे कत्ल करेगा?" उमर उठे और वैसा ही किया जैसा अबू बक्र ने किया था। फिर अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने कहा, "कौन उठकर उसे कत्ल करेगा?" अली ने कहा, "मैं।" उन्होंने कहा, "तुम, अगर तुम उसे पकड़ लो।" वह गए और पाया कि वह जा चुका था। वह लौटे और अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने कहा, "यह मेरी उम्मत से निकला पहला सींग है। अगर तुम उसे कत्ल कर देते, तो मेरे बाद मेरी उम्मत के कोई दो लोग आपस में इख्तिलाफ (मतभेद) न करते।"

उर्दू पाठ: अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने उसके दिल की बात बताई कि "क्यों तुमने अपने दिल में कहा कि इस कौम में तुमसे बेहतर कोई नहीं है?" उसने कहा, "हाँ," फिर वह चला गया और एक मस्जिद मुकर्रर (नियत) करके नमाज़ पढ़ने खड़ा हो गया। हुज़ूर अनवर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया कि "कौन ऐसा है जो उठकर जाए और उसे कत्ल कर दे?" सिद्दीक-ए-अकबर (रज़ियल्लाहु अन्हु) गए, देखा वह नमाज़ पढ़ रहा है, वापस आए और अर्ज़ किया कि "मैंने उसे नमाज़ में देखा, मुझे कत्ल करते हुए खौफ आया।" हुज़ूर ने फिर फरमाया, "तुममें कौन ऐसा है कि उठकर जाए और उसे कत्ल कर दे?" फारूक-ए-आज़म (रज़ियल्लाहु अन्हु) गए और नमाज़ पढ़ता देखकर छोड़ आए और वही उज़्र (बहाना) किया। हुज़ूर ने फिर फरमाया, "तुममें कौन ऐसा है जो उठकर जाए और उसे कत्ल कर दे?" मौला अली (करमल्लाहु वज्हहुल करीम) ने अर्ज़ की "मैं।" हुज़ूर ने फरमाया, "हाँ तुम, अगर उसे पाओ।" वह गए तो वह जा चुका था। हुज़ूर अकदस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया, "यह मेरी उम्मत से पहला सींग निकला था; अगर यह कत्ल हो जाता तो आइंदा उम्मत में कुछ इख्तिलाफ न पड़ता।"

खिदमत-ए-अकदस में एक शख्स हाज़िर किया गया जिसने चोरी की थी। इरशाद हुआ, "इसे कत्ल कर दो।" अर्ज़ की गई, "उसने चोरी ही तो की है।" फरमाया, "खैर, हाथ काट दो।" फिर उसने दोबारा चोरी की और (हाथ) काट दिया गया। तीसरी बार सिद्दीक-ए-अकबर के ज़माने में फिर चोरी

की और (पैर) काट दिया गया। चौथी बार फिर चोरी की और काट दिया गया। पांचवीं बार फिर चोरी की।

[पाद लेख] 1. दलाइल अल-नुबुव्वह अल-बैहकी, बाब मा रबी फी अख़बारही सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल-रजुल अल-जुई वस्फ अलख, दार अल-कुतुब अल-इल्मिया बेरुत 6/287 और 288; मसनद अबू यला अन अनस हदीस 3656, 4113 और 4128, मुअस्ससत उलूम अल-कुरान बेरुत 8/10, 154, 155 और 162; कशफ अल-अस्तार अन ज़वैद अल-बज़ार, किताब अहल अल-बगी बाब अलामतिहिम व इबादतिहिम, मुअस्ससत अल-रिसाला बेरुत 2/360।

पृष्ठ 531/750

[باکس کی تحریر] عربی کالم: رسول صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم هل حدثت نفسك بانه ليس في القوم احد خير منك؟ قال نعم ، ثم ذهب فاختط مسجدا و وقف يصلى ، فقال رسول الله ايكم يقوم فيقتله ؟ فقام ابوبكر فانطلق، فوجده يصلى، فرجع، فقال وجدته قائماً يصلى ، هبت ان اقتله ؟ فقال رسول الله صلى الله تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم ايكم يقوم فيقتله ؟ فقال عمر فصنع كما صنع ابوبكر ، فقال رسول الله صلى الله تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم ايكم يقوم فيقتله ؟ فقال على انا قال انت ان ادركته فذهب فوجده قد انصرف فرجع ، فقال رسول الله صلى الله تعالیٰ علیہ وسلم هذا اول قرن خرج فى امتى لو قتلته ما اختلف اثنان بعده من امتى

اردو کالم: علیہ وآلہ وسلم نے اس کے دل کی بات بتائی کہ کیوں تو نے اپنے دل میں کہا کہ اس قوم میں تجھ سے بہتر کوئی نہیں۔ کہا ہاں، پھر چلا گیا اور ایک مسجد مقرر کرکے نماز پڑھنے کھڑا ہوا، حضور انور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا کہ کون ایسا ہے جو اٹھ کر جائے اور اسے قتل کر دے؟ صدیق اکبر رضی اللہ تعالیٰ عنہ گئے ، دیکھا وہ نماز پڑھتا ہے واپس آئے اور عرض کیا کہ میں نے اسے نماز میں دیکھا مجھے قتل کرتے خوف آیا۔ حضور نے پھر فرمایا تم میں کون ایسا ہے کہ اٹھ کر جائے اور اسے قتل کر دے؟ فاروقِ اعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہ گئے اور نماز پڑھتا دیکھ کر چھوڑ آئے اور وہی عذر کیا۔ حضور نے پھر فرمایا۔ تم میں کون ایسا ہے جو اٹھ کر جائے اور اسے قتل کردے؟ مولیٰ علی کرم اللہ وجہہ نے عرض کی میں حضور نے فرمایا: ہاں تم اگر اسے پاؤ۔ یہ گئے وہ جا چکا تھا۔ حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: یہ میری امت سے پہلی سینگ نکلا تھا اگر یہ قتل ہو جاتا تو آئندہ امت میں کچھ اختلاف نہ پڑتا۔

خدمتِ اقدس میں ایک شخص حاضر کیا گیا جس نے چوری کی تھی، ارشاد ہوا اسے قتل کر دو، عرض کی گئی اس نے چوری ہی تو کی ہے۔ فرمایا: خیر ہاتھ کاٹ دو۔ پھر اس نے دوبارہ چوری کی اور قطع کیا گیا، سہ بارہ زمانہ صدیق اکبر میں پھر چرایا اور قطع کیا گیا۔ چوتھی بار پھر چوری کی اور قطع کیا گیا۔ پانچویں بار پھر چرایا۔

[حواشی] 1 دلائل النبوة للبیهقی باب ماروی في اخباره صلی الله علیہ وسلم الرجل الذی وصف الخ دار الکتب العلمیہ بیروت ۶/ ۲۸۷ و ۲۸۸ ، مسند ابو یعلی عن انس حدیث ۳۶۵۶ و ۴۱۱۳ و ۴۱۲۸ مؤسسة علوم القرآن بیروت ۸/ ۱۰ و ۱۵۴ و ۱۵۵ و ۱۶۲ ، کشف الاستار عن زوائد البزار کتاب اہل البغی باب علامتهم وعبادتهم مؤسسة الرساله بیروت ۲/ ۳۶۰

Vol. 29 Fatawa Rizvia

Siddiq-e-Akbar (may Allah be pleased with him) said: The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) knew your reality well when he first ordered your execution. Your treatment is only what the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) commanded. Take him away and execute him. Now he was executed. Abu Ya'la, al-Shashi, and al-Tabarani in al-Mu'jam al-Kabir, al-Hakim in al-Mustadrak, and Diya' al-Maqdisi in al-Sahih al-Mukhtara narrate from Muhammad bin Hatib, and al-Hakim in al-Mustadrak narrates with an authentic chain from his brother Harith bin Hatib (may Allah be pleased with them both):

Arabic	Urdu Translation
He said: A thief was brought to the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him). He ordered his execution. It was said, "He has only stolen." So he said, "Cut off his hand." Then he was brought to Abu Bakr after that, and his limbs had already been cut off. Abu Bakr said, "I find nothing for you except what the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) decreed on the day he ordered your execution, for he knew you better." So he ordered his execution. 1	It was said that a thief was brought to the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him). You ordered his execution. It was submitted that he had only committed theft. You said, "Cut off his hand." Then he was brought to Siddiq-e-Akbar (may Allah be pleased with him) in a state where all his hands and feet had already been cut off. So he (Siddiq-e-Akbar) said, "I know no treatment for you other than what the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) decided about you, that he should be killed. He knew your condition well." Consequently, Siddiq-e-Akbar (may Allah be pleased with him) ordered his execution. (T)

The words of Sahih al-Mustadrak from Harith bin Hatib are these:

Arabic	Urdu Translation
A man stole during the time of the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him). He was brought [to him] and he said, "Execute him." They said, "He has only stolen." He said, "Then cut off his hand." Then he stole again and was cut.	A person stole during the sacred era of the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him). He was brought to your presence. You said, "Execute him." It was submitted that he had only committed theft. You said, "Cut off his hand." He...

1 Kanz al-'Ummal with reference to 'A, al-Shashi, Tab, K, p. Hadith 13861, Mu'assasat al-Risala, Beirut 5/538.

सिद्दीक़-ए-अकबर (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) ने फरमाया: अल्लाह के रसूल (अल्लाह की उन पर कृपा और शांति हो) तुम्हारी असलियत अच्छी तरह जानते थे जब उन्होंने पहली बार तुम्हारी हत्या का आदेश दिया था। तुम्हारा वही इलाज है जो हुज़ूर का हुक्म था। इसे ले जाओ और मार डालो। अब उसे मार दिया गया। अबू याला, शाशी और तबरानी मुअजम अल-कबीर में, हाकिम सहीह मुस्तदरक में, ज़िया अल-मक़दिसी सहीह मुख्तारा में मुहम्मद बिन हातिब से, और हाकिम मुस्तदरक में उनके भाई हारिस बिन हातिब (अल्लाह उन दोनों से प्रसन्न हो) से रिवायत करते हैं:

अरबी	**उर्दू अनुवाद**
उन्होंने कहा: अल्लाह के रसूल (अल्लाह की उन पर कृपा और शांति हो) के पास एक चोर लाया गया, और उन्होंने उसे मार डालने का आदेश दिया। कहा गया, "उसने केवल चोरी की है।" तो उन्होंने कहा, "उसका हाथ काट दो।" फिर उसके बाद उसे अबू बक्र के पास लाया गया, और उसके अंग काटे जा चुके थे। अबू बक्र ने कहा, "मैं तुम्हारे लिए उसके अलावा कुछ नहीं पाता जो अल्लाह के रसूल (अल्लाह की उन पर कृपा और शांति हो) ने उस दिन तय किया था जब उन्होंने तुम्हारी हत्या का आदेश दिया था, क्योंकि वे तुम्हें बेहतर जानते थे।" इसलिए उन्होंने उसकी हत्या का आदेश दिया। 1	कहा जाता है कि अल्लाह के रसूल (अल्लाह की उन पर कृपा और शांति हो) के पास एक चोर लाया गया। आपने उसकी हत्या का आदेश दिया। यह निवेदन किया गया कि उसने केवल चोरी की है। आपने कहा, "उसका हाथ काट दो।" फिर उसे सिद्दीक़-ए-अकबर (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) के पास इस स्थिति में लाया गया जहाँ उसके सभी हाथ और पैर काटे जा चुके थे। तो आपने कहा, "मैं तुम्हारे लिए अल्लाह के रसूल (अल्लाह की उन पर कृपा और शांति हो) द्वारा तुम्हारे बारे में किए गए फैसले के अलावा कोई और इलाज नहीं जानता, कि उसे मार दिया जाए। वे तुम्हारी स्थिति को अच्छी तरह जानते थे।" परिणामस्वरूप, सिद्दीक़-ए-अकबर (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) ने उसकी हत्या का आदेश दिया। (त)

हारिस बिन हातिब से सहीह मुस्तदरक के शब्द ये हैं:

अरबी	उर्दू अनुवाद
एक व्यक्ति ने अल्लाह के रसूल (अल्लाह की उन पर कृपा और शांति हो) के समय में चोरी की, और उसे [उनके पास] लाया गया। उन्होंने कहा, "उसे मार डालो।" उन्होंने कहा, "उसने केवल चोरी की है।" उन्होंने कहा, "फिर उसका हाथ काट दो।" फिर उसने दोबारा चोरी की और उसे काट दिया गया।	अल्लाह के रसूल (अल्लाह की उन पर कृपा और शांति हो) के पवित्र युग के दौरान एक व्यक्ति ने चोरी की। उसे आपके सामने लाया गया। आपने कहा, "उसे मार डालो।" यह निवेदन किया गया कि उसने केवल चोरी की है। आपने कहा, "उसका हाथ काट दो।" उसने...

1 कंज़ अल-उम्माल संदर्भ 'अ, अल-शाशी, तबरानी, कंज़, पृ. हदीस 13861, मुअस्सत अल-रिसाला, बेरुत 5/538.

صدیق اکبر رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے فرمایا: رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم تیری حقیقت خوب جانتے تھے جب کہ اول ہی بار تیرے قتل کا حکم فرمایا تھا تیرا وہی علاج ہے جو حضور کا ارشاد تھا۔ لے جاؤ اسے قتل کر دو۔ اب قتل کیا گیا۔ ابو یعلی اور شاشی اور طبرانی معجم کبیر اور حاکم صحیح مستدرک میں، ضیائے مقدسی صحیح مختارہ میں محمد بن حاطب اور حاکم مستدرک میں بافادہ تصحیح ان کے بھائی حارث بن حاطب رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے راوی:

عربی	اردو ترجمہ
قال اتی رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم بلص فامر بقتلہ فقیل انہ سرق فقال اقطعوہ ثم جیئی بہ بعد ذلک الی ابی بکر وقد قطعت قوائمہ فقال ابوبکر ما اجد لك شیئا الاماقضی فیك رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم یوم امر بقتلك فانہ کان اعلم بك فامر بقتلہ 1-	کہا کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کے پاس ایک چور لایا گیا آپ نے فرمایا اس کو قتل کر دو، عرض کی گئی کہ اس نے چوری ہی تو کی ہے، فرمایا اس کا ہاتھ کاٹ دو پھر اسے صدیق اکبر رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے پاس اس حال میں لایا گیا کہ اس کے تمام ہاتھ پاؤں کاٹے جا چکے تھے۔ تو آپ نے فرمایا میں اس کے بغیر تیرا علاج نہیں جانتا جو رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے تیرے بارے میں فیصلہ فرمایا تھا کہ اس کو قتل کر دو وہ تیرا حال خوب جانتے تھے۔ چنانچہ صدیق اکبر رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے اس کے قتل کا حکم دیا۔ (ت)

صحیح مستدرک کے لفظ حارث بن حاطب سے یہ ہیں:

عربی	اردو ترجمہ
ان رجلا سرق علی عهد رسول الله صلی الله تعالیٰ علیه وسلم فاتی به فقال اقتلوه فقالوا انما سرق، قال فاقطعوه ثم سرق ایضا فقطع	ایک شخص نے رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے زمانہ اقدس میں چوری کی اُسے آپ کی بارگاہ میں لایا گیا آپ نے فرمایا۔ اس کو قتل کر دو، عرض کی گئی اس نے چوری ہی تو کی ہے، فرمایا اس کا ہاتھ کاٹ دو۔ اس

1 کنز العمال بحوالہ ع و الشاشی طب ك ص حدیث ۱۳۸۶۱ مؤسسة الرسالة بیروت ۵ / ۵۳۸

Fatawa Razawiyya Volume 29

"Then he stole during the era of Abu Bakr and was cut, then he stole and was cut, until all his limbs were cut off. Then he stole for the fifth time, so Abu Bakr (may Allah be pleased with him) said: The Messenger of Allah (may Allah bless him and grant him peace) was most knowing of this when he ordered his execution. Take him and kill him."^1

He stole again and was cut. During the time of Abu Bakr, he stole again and was cut, then stole again and was cut. Until all his hands and feet were cut off. For the fifth time, he committed theft again. Abu Bakr Siddique (may Allah be pleased with him) said: The Messenger of Allah (may Allah bless him and grant him peace and his family) knew his state very well when he issued the order for his execution the very first time. Take him and kill him. (T)

It is evident that the order for the execution of both of them was given by the Holy Prophet (may Allah bless him and grant him peace and his family) based on knowledge of the unseen (Ghayb), otherwise in the outward Sharia they were not deserving of death. The great Imam Jalal al-Millah wa ad-Din al-Suyuti (may Allah preserve him) states in Al-Khasa'is al-Kubra:

Chapter: Among his (may Allah bless him and grant him peace) special characteristics is that he combined the two Qiblas and the two migrations, and that Sharia and Haqiqat (Divine Reality) were combined for him, while for other prophets there was only one of the two, as evidenced by the story of Moses and Khidr (peace be upon them both) and his saying: "Verily, I possess knowledge from the knowledge of Allah which you should not know, and you possess knowledge from the knowledge of Allah which I should not know."

Chapter: Among the special characteristics of the Luminous Prophet (may Allah bless him and grant him peace and his family) is that he is the gatherer of two Qiblas and two migrations. And that Sharia and Haqiqat were combined for him. These two attributes were not combined in any of the other Prophets (peace be upon them), rather they were characterized by only one attribute. The proof of this is the story of our master Moses (peace be upon him) and Hazrat Khidr (peace be upon him). And the statement of Hazrat Khidr (peace be upon him) which he said to Hazrat Moses (peace be upon him): "I possess such knowledge from Allah..."

^1 Al-Mustadrak al-Hakim, Kitab al-Hudud, Story of a thief killed on the fifth time, Dar al-Fikr Beirut 4/382 Page 533 of 750

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

"फिर उसने अबू बक्र के युग में चोरी की और (उसका हाथ/पैर) काट दिया गया, फिर उसने चोरी की और काट दिया गया, यहाँ तक कि उसके सभी अंग काट दिए गए। फिर उसने पाँचवीं बार चोरी की, तो अबू बक्र (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने कहा: अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) इस बारे में सबसे अधिक जानते थे जब उन्होंने उसकी हत्या का आदेश दिया था। इसे ले जाओ और मार डालो।"^1

उसने फिर चोरी की और काट दिया गया। सिद्दीकी काल में फिर चोरी की और काट दिया गया, फिर चोरी की और काट दिया गया। यहाँ तक कि उसके सभी हाथ-पाँव काट दिए गए। पाँचवीं बार उसने फिर चोरी कर ली। अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वआलिही वसल्लम उसका हाल खूब जानते थे जब कि आप ने पहली मर्तबा ही उसके कत्ल का हुक्म सादिर फ़रमाया था। इसे ले जाओ और कत्ल कर दो। (त)

ज़ाहिर है कि इन दोनों के कत्ल का हुक्म हुज़ूर अकदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वआलिही वसल्लम ने उलूमे ग़ैब ही की बिना पर फ़रमाया था वरना ज़ाहिरे शरीयत में वह मुस्तहिक़-ए-कत्ल न थे। इमाम जलील जलालुल मिल्लत वद्दीन सुयूती सलमहू अल्लाह तआला ख़साइसे कुबरा शरीफ़ में फ़रमाते हैं:

बाब: और आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की विशेषताओं में से यह है कि आपने दो किब्लों और दो हिजरतों को जमा किया, और यह कि आपके लिए शरीयत और हकीकत को जमा कर दिया गया, जबकि अन्य नबियों के लिए उनमें से केवल एक ही था, जिसका प्रमाण मूसा और ख़िज़्र (अलैहिमुस्सलाम) की कहानी और उनका यह कहना है: "मैं अल्लाह के इल्म में से वह इल्म रखता हूँ जो तुम्हें नहीं जानना चाहिए, और तुम अल्लाह के इल्म में से वह इल्म रखते हो जो मुझे नहीं जानना चाहिए।"

बाब और हुज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वआलिही वसल्लम के ख़साइस में से यह है कि आप दो किब्लों और दो हिजरतों के जामे हैं। और यह कि आपके लिए शरीयत व हकीकत को जमा कर दिया गया। दीगर अंबिया अलैहिमुस्सलाम में से किसी में ये दोनों वस्फ़ जमा न हुए बल्कि वो सिर्फ एक वस्फ़ के साथ मुत्तसिफ़ हुए। इसकी दलील सैय्यदना मूसा अलैहिस्सलाम और हज़रत ख़िज़्र

अलैहिस्सलाम का क़िस्सा है। और हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम का वह कौल कि आप ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से कहा: मैं अल्लाह तआला की तरफ से ऐसे इल्म का हामिल...

^1 अल-मुस्तदरक लिल-हाकिम, किताबुल हुदूद, पाँचवीं बार कत्ल किए गए चोर की कहानी, दारुल फिक्र बेरुत 4/382 पेज 533 का 750

ثم سرق علی عهد ابي بكر فقطع، ثم سرق فقطع، حتی قطعت قوائمه، ثم سرق الخامسة فقال ابو بكر رضي الله تعالی عنه كان رسول الله صلی الله تعالی علیه وسلم اعلم بهذا حیث امر بقتله اذهبوا به فاقتلوه[1]

نے پھر چوری کی پھر قطع کیا گیا۔ زمانہ صدیقی میں پھر چوری کی پھر قطع کیا گیا، پھر چوری کی پھر قطع کیا گیا، یہاں تک کہ اس کے تمام ہاتھ پاؤں کاٹ دیئے گئے پانچویں مرتبہ اس نے پھر چوری کر لی۔ ابوبکر صدیق رضی اللہ تعالٰی عنہ نے فرمایا : رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وآلہ وسلم اس کا حال خوب جانتے تھے جب کہ آپ نے پہلی مرتبہ ہی اس کے قتل کا حکم صادر فرمایا تھا۔ اس کو لے جاؤ اور قتل کر دو۔(ت)

ظاہر ہے کہ ان دونوں کے قتل کا حکم حضور اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وآلہ وسلم نے علوم غیب ہی کی بناء پر فرمایا تھا ورنہ ظاہر شریعت میں وہ مستحقِ قتل نہ تھے۔ امام جلیل جلال الملۃ والدین سیوطی سلمہ اللہ تعالٰی خصائص کبرٰی شریف میں فرماتے ہیں:

باب ومن خصائصه صلی الله تعالی علیه وسلم انه جمع بین القبلتین والهجرتین وانه جمعت له الشریعة والحقیقة ولم یكن للانبیاء الا احدهما بدلیل قصة موسی مع الخضر علیهما الصلوة و السلام وقوله انی علی علم من علم الله لاینبغي لك ان تعلمه وانت علی علم من علم الله تعالی لا ینبغی لی ان اعلمه

باب اور حضور پر نور صلی اللہ تعالٰی علیہ وآلہ وسلم کے خصائص میں سے یہ ہے کہ آپ دو قبلوں اور دو ہجرتوں کے جامع ہیں۔ اور یہ کہ آپ کے لیے شریعت و حقیقت کو جمع کر دیا گیا۔ دیگر انبیاء علیہم الصلوۃ والسلام میں سے کسی میں یہ دونوں وصف جمع نہ ہوئے بلکہ وہ صرف

ایک وصف کے ساتھ متصف ہوئے۔ اس کی دلیل سیدنا موسیٰ علیہ السلام اور حضرت خضر علیہ السلام کا قصہ ہے۔ اور حضرت خضر علیہ السلام کا وہ قول کہ آپ نے حضرت موسیٰ علیہ السلام سے کہا: میں اللہ تعالیٰ کی طرف سے ایسے علم کا حامل

1۸ المستدرک للحاکم کتاب الحدود حکایۃ سارق قتل فی الخامسۃ دار الفکر بیروت ۴ / ۳۸۲ Page of 750 533

Fatawa Ridawiyya, Volume 29

[Arabic Column Text] I had initially said this statement as an inference from this Hadith without having come across it in the speech of any of the scholars. Then I saw Al-Badr bin Al-Musahib alluded to it in his 'Tadhkirah', and I found among its supporting evidence the Hadith of the thief who was ordered to be killed and the one praying who was ordered to be killed, and both have already been mentioned in the chapter on 'Reports of the Unseen'.

Further Clarification for this Chapter: Understanding this has become difficult for some people. If they were to reflect, the meaning would become clear to them: that 'Sharia' refers to ruling by the outward (apparent), and 'Haqiqah' refers to ruling by the inward (hidden). Scholars have explicitly stated that most of the Prophets (peace and blessings be upon them) were sent only to rule according to the outward, not according to the inward matters and their realities that they were made aware of. Whereas Khidr (peace be upon him) was sent to rule according to what he was made aware of regarding the inward matters and their realities. Because the Prophets were not sent for that...

[Urdu Column Text] ...I am one whom it is not appropriate for you to know, and you have been granted such knowledge by Allah that is not appropriate for me to know. (Imam Suyuti says) I used to say this before based on deduction from Hadith, without being informed of any scholar's words on this matter. Afterwards, I saw that Badr bin Al-Musahib pointed towards it in his 'Tadhkirah'. And I found in its supporting evidence that Hadith in which the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) ordered the killing of a thief, and that Hadith in which you issued an order to kill a person praying; both mentioned Hadiths have passed before in the chapter 'Reports of the Unseen'.

Further clarification of this chapter: Research shows people faced difficulty in understanding this. If they would ponder and think, the meaning would become clear: that Sharia means outward ruling and Reality (Haqiqah) means inward ruling. Undoubtedly, the noble scholars have clarified this point that most Prophets (peace and blessings be upon them) were sent so that they judge based on the apparent, not on the hidden matters and their realities of which they were informed. And the mission of Hazrat Khidr (peace be upon him) is that he rules on those matters which pertain to the hidden affairs and their realities, and regarding which he was informed...

फ़तावा रिज़विया, जिल्द 29

[अरबी कॉलम का पाठ] मैंने शुरू में यह बात इस हदीस से इस्तंबात (निष्कर्ष) करके कही थी, बिना किसी विद्वान के कलाम में इसे देखे। फिर मैंने देखा कि अल-बद्र बिन अल-मुसाहिब ने अपनी 'तज़किरा' में इसकी ओर इशारा किया है, और मैंने इसके साक्ष्यों में उस चोर की हदीस पाई जिसे मारने का हुक्म दिया गया था और उस नमाज़ी की जिसे मारने का हुक्म दिया गया था, और ये दोनों हदीसें पहले 'अख़बार बिल-मुग़ैयबात' (ग़ैब की ख़बरों) के अध्याय में गुज़र चुकी हैं।

इस अध्याय का और अधिक स्पष्टीकरण: कुछ लोगों के लिए इसे समझना मुश्किल हो गया है। अगर वे विचार करें, तो उनके लिए अर्थ स्पष्ट हो जाएगा: कि 'शरीअत' से मुराद ज़ाहिरी (बाहरी) हुक्म है और 'हक़ीक़त' से मुराद बातिनी (आंतरिक) हुक्म है। विद्वानों ने स्पष्ट रूप से कहा है कि अधिकांश पैग़म्बर (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) केवल ज़ाहिर के अनुसार निर्णय लेने के लिए भेजे गए थे, न कि उन बातिनी मामलों और उनकी सच्चाइयों के अनुसार जिनसे उन्हें अवगत कराया गया था। जबकि हज़रत ख़िज़्र (उन पर शांति हो) को उन बातिनी मामलों और उनकी सच्चाइयों के अनुसार निर्णय लेने के लिए भेजा गया था जिनसे उन्हें अवगत कराया गया था। क्योंकि पैग़म्बरों को इसके लिए नहीं भेजा गया था...

[उर्दू कॉलम का पाठ] ...मैं वह हूँ जिसे जानना आपके लिए उचित नहीं है और आपको अल्लाह की ओर से ऐसा ज्ञान दिया गया है जिसे जानना मेरे लिए उचित नहीं है। (इमाम सुयूती फरमाते हैं) मैं पहले यह बात हदीस से इस्तंबात करके कहा करता था बिना इसके कि मैं इस बारे में किसी विद्वान के कलाम से अवगत होता। इसके बाद मैंने देखा कि बद्र बिन अल-मुसाहिब ने अपने तज़किरा में इसकी ओर इशारा फरमाया है। और मैंने इसके साक्ष्यों में वह हदीस पाई जिसमें अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने एक चोर को कत्ल करने का हुक्म दिया और वह हदीस जिसमें आपने एक नमाज़ी को कत्ल करने का हुक्म जारी फरमाया, दोनों वर्णित हदीसें इससे पहले 'अख़बार बिल-मुग़ैयबात' के अध्याय में गुज़र चुकी हैं।

इस अध्याय की और अधिक व्याख्या: शोध से पता चलता है कि लोगों को इसे समझने में कठिनाई हुई और अगर वे गौर-ओ-फ़िक्र करते तो मतलब साफ़ हो जाता कि शरीअत से मुराद ज़ाहिरी हुक्म है और हक़ीक़त से मुराद बातिनी हुक्म है, बेशक उलमा-ए-किराम ने इस बात की तसरीह (व्याख्या) फरमाई कि अक्सर अंबिया (अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम) इसलिए मबऊस (भेजे गए) हुए कि वे ज़ाहिर

पर हुक्म करें न कि उमूर-ए-बातिनिया और उनके हक़ायक़ पर जिनसे वे मुत्तला (अवगत) हुए। और हज़रत ख़िज़्र (अलैहिस्सलाम) की बअसत (भेजा जाना) इस पर है कि वह उन पर हुक्म दें जो उमूर-ए-बातिनिया और उसके हक़ायक़ से मुताल्लिक़ हैं और जिस पर उन्हें इत्तला (जानकारी)...

فتاوی رضویه، جلد ۲۹

[عربی عبارت] وقد كنت قلت هذا الكلام اولاً استنباطاً من هذا الحديث من غير ان اقف عليه فی كلام احد من العلماء ثم رأيت البدر بن المصاحب اشارالیه فی تذكرته و وجدت من شواهده حديث السارق الذی امر بقتله والمصلی الذی امر بقتله وقد تقدم فی باب الاخبار بالمغيبات۔

زيادة ايضاح لهذا الباب: فقد اشكل فهمه علی قوم ولو تأملوا لا تضح لهم المراد بالشريعة الحكم بالظاهر وبالحقيقة الحكم بالباطن وقد نص العلماء علی ان غالب الانبياء عليهم الصلوة والسلام انما بعثو اليحكموا بالظاهر دون ما اطلعوا عليه من بواطن الامورو حقائقها وبعث الخضر عليه السلام ليحكم بما اطلع عليه من بواطن الامور و حقائقهاولكون الانبياء لم يبعثوا بذلک

[اردو کالم کی عبارت] ہوں جسے جاننا آپ کو مناسب نہیں اور آپ کو منجانب اللہ ایسا علم عطا ہوا جس کو جاننا مجھے مناسب نہیں۔ (امام سیوطی فرماتے ہیں) میں پہلے یہ بات حدیث سے استنباط کر کے کہا کرتا تھا بغیر اس کے کہ میں اس بارے میں کسی عالم کے کلام پر مطلع ہوتا۔ اس کے بعد میں نے دیکھا کہ بدر بن المصاحب نے اپنے تذکرہ میں اس کی طرف اشارہ فرمایا ہے۔ اور میں نے اس کے شواہد میں وہ حدیث پائی جس میں رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم نے ایک چور کو قتل کرنے کا حکم دیا اور وہ حدیث کہ جس میں آپ نے ایک نمازی کو قتل کرنے کا حکم صادر فرمایا، دونوں مذکورہ حدیثیں اس سے قبل الاخبار بالمغیبات کے باب میں گزر چکی ہیں۔

اس باب کی مزید وضاحت: تحقیق لوگوں کو اس کے سمجھنے میں مشکل پیش آئی اور اگر وہ غور و فکر کرتے تو مطلب واضح ہو جاتا کہ شریعت سے مراد ظاہری حکم اور حقیقت سے مراد باطنی حکم ہے، بے شک علمائے کرام نے اس بات کی تصریح فرمائی کہ اکثر انبیاء علیہم الصلوۃ والسلام

اس لیے مبعوث ہوئے کہ وہ ظاہر پر حکم کریں نہ کہ امور باطنیہ اور ان کے حقائق پر جن سے وہ مطلع ہوئے۔ اور حضرت خضر علیہ السلام کی بعثت اس پر ہے کہ وہ اس پر حکم دیں اور جو امور باطنیہ اور اس کے حقائق سے متعلق ہیں اور جس پر ان کو اطلاع و

Fatawa Razawiyya Volume 29

[Arabic part]: Musa (peace be upon him) objected to the killing of the boy and said to him: "Verily, you have done a monstrous thing" because this was against the Shari'ah. So he (Khidr) answered him that he was commanded to do so and was sent for it, saying: "And I did it not of my own accord" (that is the interpretation). This is the meaning of his saying to him: "Verily, you possess a knowledge..." etc.

[Urdu part]: The news is that since the Prophets (peace and blessings be upon them) were not sent with this (type of knowledge), this is the reason why Prophet Musa (peace be upon him) objected to the killing of that child whom Prophet Khidr (peace be upon him) had killed, and said to him: "Truly, you have done an evil thing," because killing a person is against the Shari'ah. Therefore, Prophet Khidr (peace be upon him) replied that he was commanded for this very thing and was sent with it, and said that he did not do this killing of his own will. And this is the meaning of his statement when he said: "I possess such knowledge from Allah Almighty which it is not appropriate for you to know," etc.

[Arabic part]: Sheikh Siraj-ud-Din al-Bulqini said in the commentary of al-Bukhari: "The intention of 'knowledge' is its implementation. The meaning is: 'It is not appropriate for you to know it in order to act upon it, because acting upon it is contrary to the requirements of the Shari'ah. And it is not appropriate for me to know it and act upon its requirement because it is contrary to the requirements of reality (haqiqa)." He said: "Based on this, it is not permissible for a saint (wali) who follows the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him)..."

[Urdu part]: Sheikh Siraj-ud-Din Bulqini (may Allah have mercy on him) stated in the commentary of Bukhari that "knowledge" refers to the implementation of the command. His meaning was that it is not appropriate for you to acquire this knowledge so that you may implement the command, because acting upon it is against the requirement of Shari'ah; nor is it appropriate for me to acquire it and act upon its requirement, because this too is against the requirement of reality. Sheikh Siraj-ud-Din (may Allah be pleased with him) said that according to this rule, it is not permissible for a saint who is a follower of the Noble Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) [incomplete sentence]...

फतवा रज़विया जिल्द 29

[अरबी हिस्सा]: मूसा (उन पर शांति हो) ने लड़के की हत्या पर आपत्ति जताई और उससे कहा: "निश्चित रूप से, आपने एक बहुत बुरा काम किया है" क्योंकि यह शरीयत के खिलाफ था। तो उन्होंने (खिज़्र) उन्हें उत्तर दिया कि उन्हें ऐसा करने का आदेश दिया गया था और इसके लिए भेजा गया था, उन्होंने कहा: "और मैंने यह अपनी मर्जी से नहीं किया" (यही व्याख्या है)। यही उनके इस कथन का अर्थ है: "निश्चित रूप से, आप एक ऐसे ज्ञान पर हैं..." इत्यादि।

[उर्दू हिस्सा]: सूचना यह है कि चूंकि नबियों (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) को इसके(इस प्रकार के ज्ञान) साथ नहीं भेजा गया था, यही कारण है कि हज़रत मूसा (उन पर शांति हो) ने उस बच्चे की हत्या पर आपत्ति की जिसे हज़रत खिज़्र (उन पर शांति हो) ने मार डाला था, और उनसे कहा: "निश्चित रूप से, आपने बहुत बुरा काम किया," क्योंकि किसी की हत्या करना शरीयत के खिलाफ है। इसलिए, हज़रत खिज़्र (उन पर शांति हो) ने उत्तर दिया कि उन्हें इसी बात का आदेश दिया गया था और उसी के साथ भेजा गया था, और कहा कि यह हत्या उन्होंने अपनी इच्छा से नहीं की थी। और उनकी उस बात का यही अर्थ है जो उन्होंने कहा था: "मैं अल्लाह तआला की ओर से ऐसे ज्ञान का स्वामी हूँ जिसे जानना आपके लिए उचित नहीं है।" इत्यादि।

[अरबी हिस्सा]: शेख सिराजुद्दीन अल-बुलकिनी ने बुखारी की व्याख्या में कहा: "ज्ञान का अर्थ उसके कार्यान्वयन से है। इसका अर्थ है: 'आपके लिए यह उचित नहीं है कि आप इसे जानें ताकि आप इस पर अमल करें, क्योंकि इस पर अमल करना शरीयत की आवश्यकताओं के विपरीत है। और मेरे लिए यह उचित नहीं है कि मैं इसे जानूँ और इसकी आवश्यकता के अनुसार कार्य करूँ क्योंकि यह हकीकत (वास्तविकता) की आवश्यकताओं के विपरीत है।'" उन्होंने कहा: "इसके आधार पर, उस वली के लिए यह जायज नहीं है जो नबी (अल्लाह की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) का अनुयायी हो..."

[उर्दू हिस्सा]: शेख सिराजुद्दीन बुलकिनी (रहमतुल्लाह अलैह) ने बुखारी की व्याख्या में फरमाया कि ज्ञान से मुराद हुक्म का नाफ़िज़ करना है। उनकी बात का मतलब यह था कि यह मुनासिब नहीं है कि आप इस इल्म को हासिल करें ताकि आप इस पर हुक्म नाफ़िज़ करें, क्योंकि इस पर अमल करना शरीयत के तकाज़े के खिलाफ है; और न ही यह मुनासिब है कि मैं इसे हासिल करूँ और इसके तकाज़े पर अमल करूँ क्योंकि यह भी हकीकत के तकाज़े के मनाफी (खिलाफ) है। शेख सिराजुद्दीन

(अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) ने फरमाया कि इस नियम के मुताबिक उस वली के लिए जायज़ नहीं है जो नबी ए करीम (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के ताबे हो [अधूरा वाक्य]...

पृष्ठ संख्या 535

انکر موسیٰ علیہ قتلہ الغلام وقال لہ لقد جئت شیئا نکرا لان ذلک خلاف الشرع فاجابہ بانہ امر بذالک و بعث بہ فقال وما فعلتہ عن امری (ذلک تاویل) و ھذا معنی قولہ لہ انک علی علم الی اخرہ۔

خبر ہے چونکہ انبیاء علیہم الصلوٰۃ والسلام کی اس کے ساتھ بعثت نہیں ہوئی یہی وجہ ہے کہ حضرت موسیٰ علیہ السلام نے اس بچہ کے قتل پر اعتراض کیا جس کو حضرت خضر علیہ السلام نے قتل کیا تھا اور ان سے کہا بے شک تم نے بہت بری بات کی اس لیے کہ قتل نفس شریعت کے خلاف ہے ، لہٰذا اس کا جواب حضرت خضر علیہ السلام نے دیا کہ انہیں اسی کا حکم دیا گیا ہے اور اسی کے ساتھ بھیجا گیا ہے اور کہا کہ یہ قتل میں نے اپنے ارادے سے نہیں کیا ہے اور یہی مطلب ان کے اس کہنے کا ہے جو کہ انہوں نے کہا تھا میں اللہ تعالیٰ کی طرف سے ایسے علم کا حامل ہوں جسے جاننا آپ کو مناسب نہیں ۔الخ

قال الشیخ سراج الدین البلقینی فی شرح البخاری المراد بالعلم التنفیذ والمعنی لاینبغی لك ان تعلمہ لتعمل بہ لان العمل بہ مناف لمقتضی الشرع ولا ینبغی ان اعلمہ فاعمل بمقتضاہ لانہ مناف لمقتضی الحقیقۃ قال فعلی ھذا لا یجوز لولی التابع للنبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم

شیخ سراج الدین بلقینی رحمتہ تعالیٰ علیہ نے شرح بخاری میں فرمایا کہ علم سے مراد حکم کا نافذ کرنا ہے اور ان کے اس کہنے کا مطلب یہ تھا کہ مناسب نہیں ہے کہ آپ اس کا علم حاصل کریں تاکہ آپ اس پر حکم نافذ کریں ، کیونکہ اس پر عمل کرنا تقاضائے شریعت کے خلاف ہے ، اور نہ یہ مناسب ہے کہ میں اسے حاصل کروں اور اس کے مقتضاء پر عمل کروں کیونکہ یہ بھی

مقتضائے حقیقت کے منافی ہے۔ شیخ سراج الدین رحمتہ اللہ تعالیٰ عنہ نے فرمایا اس قاعدے کے بموجب اس ولی کے لیے جائز نہیں ہے جو نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم

Fatawa Razawiyya - Volume 29

[Arabic]: When he becomes aware of the truth, he executes it according to the requirement of the truth, but it is only upon him to execute the apparent ruling. Ended. [Urdu translation]: ...is a follower of [Prophet Muhammad] (may Allah bless him and grant him peace) such that when he becomes aware of the truth, he executes it according to the requirement of the truth. Indeed, it is incumbent upon him to execute the apparent ruling. Ended.

[Arabic]: Al-Hafiz Ibn Hajar said in 'al-Isaba': Abu Hayyan said in his exegesis that the majority of scholars agree that Khidr was a prophet. His knowledge was the recognition of hidden matters revealed to him, while the knowledge of Moses was the ruling based on the apparent. He pointed out that the meaning of 'two knowledges' in the Hadith is judging by the hidden and judging by the apparent, nothing else. [Urdu translation]: Hafiz Ibn Hajar (may Allah the Almighty have mercy on him) stated in 'al-Isaba' that Abu Hayyan (may Allah the Almighty have mercy on him) mentioned in his exegesis that the majority are agreed that Prophet Khidr (peace be upon him) is a prophet and his knowledge was the recognition of those hidden matters of which he was given revelation, while the knowledge of Prophet Moses (peace and blessings be upon him) was to pass judgment on the apparent. In the Hadith, the two knowledges referred to mean judging based on the apparent and the hidden; no other meaning is intended besides this.

[Arabic]: Sheikh Taqi al-Din al-Subki said that what Khidr was sent with was a Sharia for him, so everything was Sharia. As for our Prophet (may Allah the Almighty bless him and grant him peace), he was initially commanded to judge by the apparent rather than what he was aware of from the hidden and the truth, like the majority of prophets (peace and blessings be upon them). Therefore, he said: 'We judge by the apparent', and in one wording: 'I only judge by the apparent'. [Urdu translation]: Sheikh Taqi al-Din al-Subki (may Allah the Almighty have mercy on him) said that the command with which Prophet Khidr (peace and blessings be upon him) was sent was his Sharia, therefore all of it is Sharia. As for our Holy Prophet (may Allah the Almighty bless him and grant him peace and his family), he was initially commanded to judge based on the apparent and not based on that hidden reality and truth of which he (peace be upon him) was aware, just as was the practice of most prophets (peace be upon them). On this basis, the Holy Prophet (may Allah the Almighty bless him and grant him peace and his family) stated: "We judge on the apparent".

फतावा रजविया - जिल्द 29

[अरबी]: जब वह सत्य से अवगत हो जाता है, तो वह उसे सत्य की आवश्यकता के अनुसार क्रियान्वित करता है, लेकिन उसके लिए केवल प्रत्यक्ष नियम को लागू करना अनिवार्य है। समाप्त। [उर्दू अनुवाद]: ... [पैगंबर मुहम्मद] (अल्लाह उन पर और उनके परिवार पर आशीर्वाद और शांति बरसाए) के अनुयायी हैं कि जब वे सत्य से अवगत हो जाते हैं, तो वे सत्य की आवश्यकता के अनुसार इसे लागू करते हैं। वास्तव में, उनके लिए यह अनिवार्य है कि वे प्रत्यक्ष नियम को लागू करें। समाप्त।

[अरबी]: हाफ़िज़ इब्न हजर ने 'अल-इसाबा' में कहा: अबू हयान ने अपनी व्याख्या में कहा कि विद्वानों का बहुमत इस बात पर सहमत है कि खिज्र एक नबी थे। उनका ज्ञान उन आंतरिक रहस्यों की पहचान थी जिसकी उन्हें वही (प्रकाशना) दी गई थी, जबकि मूसा का ज्ञान प्रत्यक्ष के आधार पर निर्णय देना था। उन्होंने संकेत दिया कि हदीस में 'दो ज्ञान' का अर्थ आंतरिक और प्रत्यक्ष के आधार पर निर्णय देना है, कुछ और नहीं। [उर्दू अनुवाद]: हाफिज इब्न हजर (अल्लाह उन पर दया करे) ने 'अल-इसाबा' में कहा कि अबू हयान (अल्लाह उन पर दया करे) ने अपनी व्याख्या में बताया कि बहुमत इस बात पर सहमत है कि हज़रत खिज्र (उन पर शांति हो) एक नबी हैं और उनका ज्ञान उन आंतरिक रहस्यों की पहचान थी जिसकी उन्हें वही (प्रकाशना) दी गई थी, जबकि हज़रत मूसा (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) का ज्ञान प्रत्यक्ष पर निर्णय देना था। हदीस में जिन दो ज्ञानों की ओर संकेत किया गया है, उससे तात्पर्य प्रत्यक्ष और आंतरिक पर निर्णय देना है; इसके अलावा कोई अन्य अर्थ अभिप्रेत नहीं है।

[अरबी]: शेख तकी अल-दीन अल-सुबकी ने कहा कि खिज्र को जिसके साथ भेजा गया था वह उनके लिए शरीयत थी, इसलिए सब शरीयत थी। जहाँ तक हमारे नबी (अल्लाह उन पर और उनके परिवार पर आशीर्वाद और शांति बरसाए) की बात है, उन्हें शुरू में यह आदेश दिया गया था कि वे प्रत्यक्ष के आधार पर निर्णय लें, न कि उस आंतरिक और सत्य के आधार पर जिससे वे अवगत थे, जैसा कि अधिकांश नबियों (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) का मामला था। इसीलिए उन्होंने फ़रमाया: 'हम प्रत्यक्ष पर निर्णय लेते हैं', और एक शब्द में: 'मैं केवल प्रत्यक्ष पर निर्णय देता हूँ'। [उर्दू अनुवाद]: शेख तकी अल-दीन सुबकी (अल्लाह उन पर दया करे) ने फरमाया कि वह आदेश जिसके साथ हज़रत खिज्र (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) भेजे गए थे, वह उनकी शरीयत थी, इसलिए यह सब शरीयत है। और हमारे नबी-ए-करीम (अल्लाह उन पर और उनके परिवार पर आशीर्वाद और शांति बरसाए) को शुरुआत में यह आदेश दिया गया था कि वे प्रत्यक्ष पर निर्णय लें और उस आंतरिक और सत्य पर

निर्णय न दें जिसकी आपको खबर है, जैसा कि अधिकांश नबियों (उन पर शांति हो) का दस्तूर था। इसी आधार पर हुजूर नबी-ए-करीम (अल्लाह उन पर और उनके परिवार पर आशीर्वाद और शांति बरसाए) ने फरमाया: "हम तो प्रत्यक्ष पर निर्णय देते हैं"।

पृष्ठ 536/750

[عربی]: اذا اطلع حقیقة ان ینفذ ذلك بمقتضی الحقیقة وانما علیه ان ینفذ الحکم الظاهر انتهی۔ [اردو ترجمہ]: تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کا تابع ہے کہ جب وہ حقیقت پر مطلع ہو تو وہ بہ مقتضائے حقیقت اس کا نفاذ کرے بے شک اس پر یہی لازم ہے کہ حکم ظاہر کو نافذ کرے۔ انتہی۔

[عربی]: وقال الحافظ ابن حجر فی الاصابة قال ابوحبان فی تفسیر الجمهور علی ان الخضر نبی وکان علمه معرفة بواطن اوحیت الیه وعلم موسی الحکم بالظاهر فاشار الی ان المراد فی الحدیث بالعلمین الحکم بالباطن والحکم بالظاهر لاامر آخر۔ [اردو ترجمہ]: حافظ ابن حجر رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ نے الاصابہ میں فرمایا کہ ابو حیان رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ نے اپنی تفسیر میں بیان کیا کہ جمہور اس بات پر متفق ہیں کہ حضرت خضر علیہ السلام نبی ہیں اور انکا علم ان امور باطنیہ کی معرفت تھی جس کی انہیں وحی کی گئی جب کہ حضرت موسیٰ علیہ الصلوۃ والسلام کا علم ظاہر پر حکم لگانا تھا حدیث میں دو علوم جن کی طرف اشارہ فرمایا ہے اس سے مراد ظاہر و باطن پر حکم لگانا ہے، اس کے علاوہ کوئی دوسرا مطلب مراد نہیں ہے۔

[عربی]: وقد قال الشیخ تقی الدین السبکی ان الذی بعث به الخضر شریعة له فالکل شریعة واما نبینا صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فانه امر اولاً ان یحکم بالظاهر دون ما اطلع علیه من الباطن والحقیقة کغالب الانبیاء علیهم الصلوة والسلام. ولهذا قال نحن نحکم بالظاهر، وفی لفظ انما اقضی بالظاهر۔ [اردو ترجمہ]: شیخ تقی الدین سبکی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ نے فرمایا وہ حکم جس کے ساتھ حضرت خضر علیہ الصلوۃ والسلام مبعوث ہوئے وہ ان کی شریعت تھی لہذا یہ سب شریعت ہے، اور ہمارے نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کو ابتداء میں یہ حکم فرمایا گیا کہ ظاہر پر حکم فرمائیں اور اس باطن و حقیقت پر حکم نہ دیں جس کی آپ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کو خبر ہے جس طرح کہ

اکثر انبیاء علیہم السلام کا معمول تھا۔ اسی بناء پر حضور نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے ارشاد فرمایا ہم تو ظاہر پر حکم دیتے ہیں"۔

Vol. 29 Fatawa Razawiyya

Arabic Text: And Allah takes charge of the secrets. And he said: "I only judge according to what I hear. So for whomever I have judged in his favor regarding another's right, it is but a piece of fire." And he said to Abbas: "As for your outwardness, it was upon us, but as for your secret, it is unto Allah." And he used to accept the excuses of those who remained behind from the expedition of Tabuk and entrust their secrets to Allah. And he said regarding that woman: "If I were to stone anyone without clear evidence, I would have stoned her." And he also said: "Were it not for the Quran, there would have been a different matter for me and her." This is all explicit in that he only judges by the outward aspect of the Shariah, by evidence or confession, not by what Allah has informed him of concerning the hidden matters and their realities. Then indeed Allah increased him in honor and permitted him to judge by the hidden and what he was informed of.

Urdu Column Translation: In one narration it is like this: "I judge based on what is apparent; God Almighty is the master of the inner states." And that the Holy Prophet (may peace and blessings of Allah be upon him and his progeny) said: "I judge based only on what I hear, so whoever I have decided for in favor of another's right, let him know that it is a piece of fire." And that the Radiant Messenger (may peace and blessings of Allah be upon him and his progeny) said to Hazrat Abbas (may Allah be pleased with him): "As far as your apparent condition is concerned, it is our responsibility, but your inner state is God Almighty's responsibility." And that the Holy Prophet (may peace and blessings of Allah be upon him and his progeny) used to accept the excuses of those who stayed behind from the Battle of Tabuk and would leave their inner states to Allah Almighty. And that the Holy Prophet (may peace and blessings of Allah be upon him and his progeny) said regarding a woman: "If I were to stone someone without evidence and testimony, I would have certainly stoned this woman." And he also said: "If it were not for the Qur'an, the matter would surely have been different for me and for this woman." All these examples and evidences manifest that you were commanded to give judgements according to the apparent Shariah based on evidence and testimony or confession and acknowledgement, not according to those hidden matters which Allah Almighty made you aware of.

जिल्द 29 फ़तावा रज़विया

अरबी पाठ: और अल्लाह भेदों का ज़िम्मा लेता है। और उन्होंने कहा: "मैं तो सिर्फ उसी के अनुसार फैसला करता हूँ जो मैं सुनता हूँ। इसलिए जिसके पक्ष में मैंने किसी दूसरे के हक का फैसला कर दिया हो, तो वह आग का एक टुकड़ा ही है।" और उन्होंने अब्बास से कहा: "जहाँ तक तुम्हारे प्रकट पक्ष की बात है, वह हम पर था, लेकिन तुम्हारा गुप्त भेद अल्लाह पर है।" और वह तबुक के युद्ध से पीछे रह जाने वालों के बहानों को स्वीकार कर लेते थे और उनके गुप्त भेदों को अल्लाह को सौंप देते थे। और उन्होंने उस महिला के बारे में कहा: "अगर मैं बिना स्पष्ट प्रमाण के किसी को संगसार करता, तो मैं उसे संगसार कर देता।" और उन्होंने यह भी कहा: "अगर कुरान न होता, तो मेरे और उसके लिए मामला कुछ और होता।" यह सब इस बात में स्पष्ट है कि वह केवल शरीयत के प्रकट पक्ष के आधार पर, प्रमाण या स्वीकारोक्ति के माध्यम से फैसला करते हैं, न कि उन गुप्त मामलों और उनकी वास्तविकताओं के आधार पर जिनसे अल्लाह ने उन्हें अवगत कराया। फिर वास्तव में अल्लाह ने उनके सम्मान में वृद्धि की और उन्हें गुप्त और जिससे वह अवगत कराए गए, उसके आधार पर फैसला करने की अनुमति दी।

उर्दू कॉलम का अनुवाद: एक रिवायत में इस तरह है कि मैं तो ज़ाहिर (प्रत्यक्ष) पर फ़ैसला देता हूँ, बातिन (आंतरिक) हालात का मालिक ख़ुदा अज़्ज़ व जल्ल है। और यह कि हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "मैं तो उसी पर फ़ैसला देता हूँ जैसा कि मैं सुनता हूँ, लिहाज़ा मैंने जिसके लिए दूसरे के हक़ का फ़ैसला कर दिया है, तो वह यह जान ले कि वह आग का टुकड़ा है।" और यह कि हुज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से फ़रमाया: "जहाँ तक तुम्हारे ज़ाहिर का ताल्लुक़ है तो वह हमारे ज़िम्मे है लेकिन जो तुम्हारी बातिनी हालत है वह अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल के ज़िम्मे है।" और यह कि हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ग़ज़वा-ए-तबुक से रह जाने वालों की माज़िरत (क्षमायाचना) क़बूल फ़रमाते थे और उनके बातिनी हालात को अल्लाह तआला के सुपुर्द फ़रमाते थे। और यह कि हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने एक औरत के बारे में फ़रमाया: "अगर मैं बग़ैर दलील व शहादत (सबूत और गवाही) के किसी को संगसार (पत्थर मार-मार कर मार देना) करता तो ज़रूर इस औरत को संगसार करता।" और यह भी फ़रमाया कि अगर क़ुरआन न होता तो यक़ीनन मेरे लिए और इस औरत के लिए कुछ और ही मामला होता। ये तमाम नज़ाइर और शवाहिद (उदाहरण और प्रमाण) इस बात के मज़हर (प्रतीक) हैं कि आपको दलील व शहादत या

एतराफ़ (स्वीकृति) व इक़रार के साथ ज़ाहिर-ए-शरीयत पर फ़ैसला देने का हुक्म हुआ न कि उस पर जो बातिनी उमूर पर अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल ने आपको मुत्तला फ़रमाया।

पेज 537/750

عربی متن: والله يتولى السرائر وقال انما اقضى بنحو ما اسمع فمن قضيت له بحق اخرفا نما هي قطعة من النار وقال للعباس اما ظاهرك فكان علينا واما سريرتك فالى الله وكان يقبل عذر المتخلفين عن غزوة تبوك ويكل سرائرهم الى الله وقال فى تلك المرأة لو كنت راجما احدا من غير بينة لرجمتها وقال ايضاً لولا القرآن لكان لى ولهأ شان فهذا كله صريح فى انه انما يحكم بظاهر الشرع بالبينة او الاعتراف دون ما اطلعه الله عليه من بواطن الامور وحقائقها ثم ان الله زاده شرفاً واذن له ان يحكم بالباطن وما اطلع

اردو کالم: ایک روایت میں اس طرح ہے میں تو ظاہر پر فیصلہ دیتا ہوں باطن حالات کا خدا عزوجل مالک ہے۔ اور یہ کہ حضور نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا۔ میں تو اسی پر فیصلہ دیتا ہوں جیسا کہ میں سنتا ہوں، لہذا میں نے جس کے لیے دوسرے کے حق کا فیصلہ کردیا ہے تو وہ یہ جان لے کہ وہ آگ کا ٹکڑا ہے۔ اور یہ کہ حضور پر نور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے حضرت عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے فرمایا جہاں تک تمہارے ظاہر کا تعلق ہے تو وہ ہمارے ذمہ ہے لیکن جو تمہاری باطنی حالت ہے وہ اللہ عزوجل کے ذمہ ہے اور یہ کہ حضور نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم غزوہ تبوک سے رہ جانے والوں کی معذرت قبول فرماتے تھے اور ان کے باطنی حالات کو اللہ تعالیٰ کے سپرد فرماتے تھے۔ اور یہ کہ حضور نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے ایک عورت کے بارے میں فرمایا۔ اگر میں بغیر دلیل و شہادت کے کسی کو سنگسار کرتا تو ضرور اس عورت کو سنگسار کرتا اور یہ بھی فرمایا کہ اگر قرآن نہ ہوتا تو یقیناً میرے لیے اور اس عورت کے لیے کچھ اور ہی معاملہ ہوتا۔ یہ تمام نظائر اور شواہد اس بات کے مظہر ہیں کہ آپ کو دلیل و شہادت یا اعتراف واقرار کے ساتھ ظاہر شریعت پر فیصلہ دینے کا حکم ہوا نہ کہ اس پر جو باطنی امور پر اللہ عزوجل نے آپ کو مطلع فرمایا

Fatawa Razawiyya Volume 29

[Arabic Column] ...upon him from the realities of matters. So He combined for him what was for the Prophets and what was specifically for Al-Khidr, which Allah singled him out with, and He did not combine these two matters for anyone else. Al-Qurtubi said in his exegesis (Tafsir): The scholars have unanimously agreed that no one has the right to kill based on his [hidden] knowledge except for the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him). Evidence for this is the Hadith of the one praying and the thief whom he ordered to be killed, because he was informed about their inner affairs and knew from them what necessitated death.

If those who did not understand were to reflect on my citing these two Hadiths at the end of the chapter...

[Urdu Column] ...and made its realities clear to you. After that, Allah Almighty further increased your honor and permitted you to pass judgment based on the inward/ unseen, and to decide on those matters whose realities you were informed of. Thus, you were the gatherer of all those practices which were for the noble Prophets (peace and blessings be upon them) and that specialty which Allah Almighty had specifically assigned to Hazrat Khidr (peace be upon him). And this matter was not combined in any other prophet besides you (peace and blessings of Allah be upon him and his family). And Imam Qurtubi (mercy of Allah be upon him) said in his Tafsir: There is a consensus among scholars that it is not permissible for anyone to order the killing of someone based on his [internal] knowledge except for the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him and his family). Witness to this is the Hadith of the one praying and the thief whose killing the Radiant Prophet (peace and blessings of Allah be upon him and his family) had ordered because Allah Almighty had informed the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him and his family) about the internal states of both of them, and you gained knowledge about both of them that they deserved to be killed. Even though their killing took place after some time.

(Imam Suyuti (mercy of Allah be upon him) says) I wish these eminent scholars could understand what they did not understand, to which I pointed at the end of the chapter...

फ़तवा-ए-रजविया जिल्द 29

[अरबी खंड] ...उन पर मामलों की हकीकतों में से। तो उनके लिए वह सब इकट्ठा कर दिया गया जो नबियों के लिए था और जो विशेष रूप से खिज़्र के लिए था जिसे अल्लाह ने उनके लिए खास किया था, और अल्लाह ने इन दोनों बातों को किसी और के लिए इकट्ठा नहीं किया। अल-कुर्तुबी ने अपनी तफ़सीर में कहा है: विद्वानों ने सर्वसम्मति से सहमति व्यक्त की है कि पैगंबर (अल्लाह उन पर कृपा और शांति बनाए रखे) के अलावा किसी को भी अपने [छिपे हुए] ज्ञान के आधार पर मारने का अधिकार नहीं है। इसका प्रमाण नमाज पढ़ने वाले और उस चोर वाली हदीस है जिसे उन्होंने मारने का आदेश दिया था, क्योंकि उन्हें उनके आंतरिक मामलों के बारे में सूचित किया गया था और उनसे वह बात जान ली थी जो हत्या को अनिवार्य करती है।

यदि वे लोग जो नहीं समझे, अध्याय के अंत में इन दो हदीसों को मेरे द्वारा उद्धृत करने पर विचार करते...

[उर्दू खंड] ...और इसकी हकीकतें आप पर स्पष्ट कर दीं। इसके बाद अल्लाह अज़्ज़वजल ने आपके सम्मान को और बढ़ाया और आपको अनुमति दी कि आप बातिन (आंतरिक/परोक्ष) पर हुक्म लगाएं और उन मामलों की हकीकतों पर फैसला फरमाएं जिनकी आपको सूचना दी गई थी। इस तरह आप उन तमाम मामूलात के जामि (संग्रहकर्ता) थे जो अंबिया किराम (अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम) के लिए थे और उस खुसूसियत (विशेषता) के साथ जो हज़रत खिज़्र (अलैहिस्सलाम) के लिए अल्लाह अज़्ज़वजल ने खास फरमाई थी। और यह बात आप (सल्लल्लाहु अलैहि वआलिही वसल्लम) के अलावा किसी और नबी में जमा नहीं की गई। और इमाम कुर्तुबी (रहमतुल्लाहि अलैहि) ने अपनी तफ़सीर में फरमाया: विद्वानों का इस बात पर इज्मा (आम सहमति) है कि किसी के लिए यह जायज़ नहीं है कि अपने इल्म के साथ किसी के कत्ल का हुक्म दे सिवाए नबी-ए-करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वआलिही वसल्लम) के। इसकी गवाह वह नमाज़ी और चोर वाली हदीस है जिनके कत्ल करने का हुक्म हुज़ूर पुरनूर (सल्लल्लाहु अलैहि वआलिही वसल्लम) ने दिया था क्योंकि अल्लाह तआला ने उन दोनों के बातिनी (आंतरिक) हालात पर आप (सल्लल्लाहु अलैहि वआलिही वसल्लम) को मुत्तला (अवगत) फरमा दिया था और उन दोनों के बारे में आपको इल्म हो गया था कि वे वाजिबुल कत्ल (वध के पात्र) हैं। अगरचे उनका कत्ल कुछ अरसे बाद वाके(घटित) हुआ।

(इमाम सुयूती रहमतुल्लाहि अलैहि फरमाते हैं) काश कि ये उलमा-ए-आलाम (प्रख्यात विद्वान) इस बात को समझ सकते जिसे उन्होंने नहीं समझा जिसकी तरफ मैंने आखिर-ए-बाब (अध्याय के अंत) में...

पृष्ठ 538 का 750

[عربی کالم] علیه من حقائق الامور فجمع له بین ما کان للانبیاء و ما کان للخضر خصوصیة خصه الله بها ولم یجمع الامر ان لغیره، وقد قال القرطبي في تفسیره اجمع العلماء عن بکرة ابیهم ان لیس لاحد ان یقتل بعلمه الا النبي صلی الله تعالی علیه وسلم وشاهد ذلك حدیث المصلی والسارق الذین امر بقتلهما فأنه اطلع علی باطن امرهما وعلم منهما ما یوجب القتل۔

ولو تفطن الذین لم یفهموا الی استشهادي بهذین الحدیثین في اخر الباب

[اردو کالم] اور اس کے حقائق آپ پر واضح فرمائے۔ اس کے بعد اللہ عزوجل نے آپ کے شرف کو اور زیادہ فرمایا اور آپ کو اجازت فرمائی کہ آپ باطن پر حکم لگائیں اور جن امور کی حقیقتوں کی آپ کو اطلاع دی گئی ہے اس پر فیصلہ فرمائیں تو اس طرح آپ ان تمام معمولات کے جو انبیاء کرام علیہم الصلوٰۃ والسلام کے لیے تھے اور اس خصوصیت کے ساتھ جو حضرت خضر علیہ السلام کے لیے اللہ عزوجل نے خاص فرمائے جامع تھے اور یہ امر آپ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کے علاوہ کسی اور نبی میں جمع نہیں کیا گیا۔ اور امام قرطبی علیہ الرحمۃ نے اپنی تفسیر میں فرمایا علماء کا اس بات پر اجماع ہے کہ کسی کے لیے یہ جائز نہیں ہے کہ اپنے علم کے ساتھ کسی کے قتل کا حکم دے سوائے نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کے۔ اس کی شاہد اس نمازی اور چور والی حدیث ہے جن کے قتل کرنے کا حکم حضور پر نور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے دیا تھا کیونکہ اللہ تعالیٰ نے ان دونوں کے باطنی حالات پر آپ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کو مطلع فرما دیا تھا اور ان دونوں کے بارے میں آپ کو علم ہو گیا تھا کہ واجب القتل ہیں۔ اگرچہ ان کا قتل کچھ عرصہ بعد واقع ہوا۔)

(امام سیوطی رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں) کاش کہ یہ علماء اعلام اس بات کو سمجھ سکتے جس کو انہوں نے نہیں سمجھا جس کی طرف میں نے آخر باب میں ان

[Arabic Column]: They would know that what is meant is judging by the apparent and the hidden only, nothing else; no Muslim, nor disbeliever, nor the insane in a hospital would say [anything] else. Some of the Salaf mentioned that al-Khidr until now executes the reality, and those who die suddenly are those whom he kills. If that is correct, then it is in this Ummah by way of deputyship from the Prophet (PBUH), for he became one of his followers, just as Jesus (AS) when he descends will judge by the Sharia of the Prophet (PBUH) as a deputy for him and will become one of his followers and his Ummah.

[Urdu Column]: Evidence has been drawn from both hadiths. If they understood this, they would surely know that the meaning is only to judge by the apparent and the hidden, and nothing else. No Muslim, nor infidel, nor even the insane and mad would say otherwise. Some predecessors (may Allah have mercy on them) mentioned that Hadrat Khidr (peace be upon him) executes reality even now, and those who die suddenly are those whom he has killed. If this is correct, then this action of his in this Ummah would be as a deputy on behalf of the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him), and he would be among the followers of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him). Just as Hadrat Jesus (peace be upon him) when he descends, will judge according to the Sharia (law) of the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) as his deputy, and he will be from among the followers and the Ummah of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him). (End)

From this exquisite discourse, it is proven that general prophets (peace be upon them) are authorized to act only upon the apparent Sharia, while our leader Khidr (peace be upon him) is commanded to act upon his knowledge of the unseen. Therefore, he killed the innocent boy without any apparent crime, and those who die from sudden death now are also killed by him. And our Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) [is authorized to act upon] the apparent Sharia...

---

1. Al-Khasa'is al-Kubra, Chapter: 'And from his special characteristics is that he combined between the two Qiblas' etc., Markaz-e-Ahle-Sunnat, Barkat-e-Raza, Gujarat, India, 2/191, 192.

फ़तावा-ए-रज़विया जिल्द 29

[अरबी कॉलम]: वे जान लेते कि इसका अर्थ केवल ज़ाहिर (बाह्य) और बातिन (आंतरिक) के साथ निर्णय लेना है, और इसके अलावा कुछ भी नहीं। इसके अलावा कोई और बात न कोई मुसलमान कह सकता है, न काफ़िर और न ही पागलखाने के पागल। कुछ पूर्वजों ने उल्लेख किया है कि अल-ख़िज़्र अभी भी हक़ीक़त (वास्तविकता) को लागू करते हैं, और जो लोग अचानक मर जाते हैं वे वही होते हैं जिन्हें उन्होंने मारा होता है। यदि यह बात सही है, तो इस उम्मत में उनका यह कार्य नबी करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की ओर से उनके प्रतिनिधि के रूप में होगा और वे हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के अनुयायियों में से होंगे। जिस प्रकार ईसा (अलैहिस्सलाम) जब अवतरित होंगे, तो वे नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की शरीयत के साथ उनकी ओर से प्रतिनिधि के रूप में निर्णय देंगे और उनके अनुयायियों और उनकी उम्मत में से होंगे।

[उर्दू कॉलम]: दोनों हदीसों के साथ साक्ष्य दिया गया है। अगर वे यह बात समझ जाते, तो वे निश्चित रूप से जान लेते कि इसका अर्थ केवल ज़ाहिर और बातिन के साथ निर्णय लेना है, और इसके अलावा कुछ भी नहीं। इसके अलावा कोई और बात न कोई मुसलमान कह सकता है, न काफ़िर और न ही पागल और विक्षिप्त। कुछ पूर्वजों (अल्लाह उन पर रहम करे) ने उल्लेख किया है कि हज़रत ख़िज़्र (अलैहिस्सलाम) अभी भी हक़ीक़त को लागू करते हैं, और जो लोग अचानक मर जाते हैं वे वही होते हैं जिन्हें उन्होंने मारा होता है। यदि यह बात सही है, तो इस उम्मत में उनका यह कार्य नबी करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की ओर से उनके प्रतिनिधि के रूप में होगा और वे हुज़ूर पुरनूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के अनुयायियों में से होंगे। जिस प्रकार हज़रत ईसा (अलैहिस्सलाम) जब अवतरित होंगे, तो वे नबी अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की शरीयत के साथ आपकी खिलाफत में निर्णय देंगे, वे आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के अनुयायियों और आपकी उम्मत में से होंगे। (समाप्त)

इस उत्कृष्ट चर्चा से सिद्ध होता है कि सामान्य पैग़ंबरों (अलैहिमुस्सलाम) को केवल ज़ाहिर शरीयत पर अमल करने की अनुमति होती है, और सैयदना ख़िज़्र (अलैहिस्सलाम) को अपने ग़ैब (परोक्ष) के ज्ञान पर अमल करने का आदेश है। इसलिए उन्होंने एक नासमझ बच्चे को बिना किसी प्रत्यक्ष अपराध के मार दिया, और अब जो आकस्मिक मृत्यु से मरते हैं उन्हें भी वे ही मारते हैं, और हमारे हुज़ूर अकदस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को ज़ाहिर शरीयत...

1. अल-ख़साइस अल-कुबरा, अध्याय: 'और उनकी विशेषताओं में से यह है कि उन्होंने दो किबलों को संयोजित किया' आदि, मरकज़-ए-अहले सुन्नत, बरकत-ए-रज़ा, गुजरात, भारत, 2/191, 192।

पेज 539/750

[عربی عبارت]: لعرفوا ان المراد الحکم بالظاھر والباطن فقط لا شیئ آخر لا یقولہ مسلم ولا کافر ولا مجانین المارستان، وقد ذکر بعض السلف ان الخضر الی الآن ینفذ الحقیقۃ وان الذین یموتون فجأۃً ھو الذین یقتلھم فان صح ذلك فھو فی ھذہ الامۃ بطریق النیابۃ عن النبی صلی اللہ تعالی علیہ وسلم فإنہ صار من اتباعہ کما ان عیسی علیہ السلام لما ینزل یحکم بشریعۃ النبی صلی اللہ تعالی علیہ وسلم نیابۃ عنہ ویصیر من اتباعہ وامتہ۔

[اردو ترجمہ و تشریح]: دونوں حدیثوں کے ساتھ استشہاد کیا ہے۔ اگر وہ یہ بات سمجھ جاتے تو یقیناً جان لیتے کہ مراد فقط ظاہر اور باطن کے ساتھ حکم فرمانا ہے اس کے علاوہ کچھ نہیں، اس کے سوا اور کوئی بات نہ مسلمان کہہ سکتا ہے اور نہ کافر اور نہ مجنون و پاگل۔ بعض اسلاف رحمہم اللہ تعالیٰ نے ذکر فرمایا ہے کہ حضرت خضر علیہ الصلوٰۃ و السلام اب تک حقیقت کو نافذ کرتے ہیں، اور وہ لوگ جو اچانک مر جاتے ہیں وہ وہی ہوتے ہیں جن کو انہوں نے قتل کیا ہوتا ہے۔ اگر یہ بات صحیح ہے تو ان کا یہ عمل اس اُمت میں نبی کریم صلی اللہ تعالٰی علیہ وآلہ وسلم کی طرف سے بطور نیابت ہو گا اور وہ حضور پر نور صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کے متبعین میں سے ہوں گے جس طرح کہ حضرت عیسیٰ علیہ السلام جب نازل ہوں گے تو وہ نبی اکرم صلی اللہ تعالٰی علیہ وآلہ وسلم کی شریعت کے ساتھ آپ کی نیابت میں حکم دیں گے وہ آپ صلی اللہ تعالٰی علیہ وآلہ وسلم کے متبعین اور آپ صلی اللہ تعالٰی علیہ وآلہ وسلم کی اُمت میں سے ہوں گے۔ اھ (ت)

اس کلام نفیس سے ثابت کہ عامہ انبیاء علیہم الصلوٰۃ والسلام کو صرف ظاہر شرع پر عمل کا اذن ہوتا ہے، اور سیدنا خضر علیہ الصلوٰۃ والسلام کو اپنے علم مغیبات پر عمل کا حکم ہے، ولہٰذا انہوں نے ناسمجھ بچہ کو بغیر کسی جرمِ ظاہر کے قتل کردیا اور یہ کہ اب جو ناگہانی موت سے مرجاتے ہیں انہیں بھی وہی قتل فرماتے ہیں، اور ہمارے حضور اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وآلہ وسلم کو ظاہر شرع

---

۱ الخصائص الکبریٰ باب و من خصائصه انه جمع بین القبلتین الخ مرکز اہلسنت برکت رضا گجرات ہند ۲ / ۱۹۱، ۱۹۲

Fatawa Razawiyya Volume 29

And the Lord, Almighty and Majestic, has given the authority to act and command based on both of his (the Prophet's) hidden knowledges (Ilm-ul-Ghaib). And Imam Qurtubi has quoted the consensus of scholars that the Noble Prophet, may Allah the Almighty's peace and blessings be upon him and his family, has the authority to order execution solely based on his knowledge, even if there may be no witnesses. And this authority belongs to no one other than the Prophet. So, if he ordered the execution of that person who prayed, or that thief, or that person against whom a woman had falsely accused, it would certainly be based on the Prophet's hidden knowledges, not on his lack of them. Why, O Wahhabis! Are you now informed of your own upside-down intellect? "So whither are you going?" (Quran 6:95 - translated as: So whither are you going? - Translator) Muslims! Reflect on the intent of the Wahhabis as well. There are only two sources of judgment: either the outward Shariah or the inward hidden knowledges. It is clear that here, from an outward perspective, there was fundamentally no room for the punishment of stoning, nor was there a confession from the accused, nor any original sin. To order execution simply upon hearing a claimant's false claim... the status of the Prophet is far more sublime and high. If any scholar of today, or any ignorant ruler, were to do such a thing, every rational person would call him either extremely ignorant or a confirmed oppressor. There was no way but to accept the Hadith as authentic, but they (Wahhabis) brought this Hadith precisely towards the side that the Prophet never gave this order based on an accusation, but rather, in their own estimation, to invalidate it. Now understand what their meaning was and what a heavy accusation they leveled against your beloved Noble Prophet, may Allah the Almighty's peace and blessings be upon him and his family. Why should it not be so? This is the demand of enmity.

"Indeed, hatred has appeared from their mouths, and what their breasts conceal is greater. We have certainly made clear to you the signs, if you will use reason." 1	Enmity has flared up from their talks, and what they hide in their chests is greater. We have recounted the signs openly for you if you have sense.
"And those who abuse the Messenger of Allah - for them is a painful punishment." 2	And those who cause pain to the Messenger of Allah, for them is a painful punishment.

"My Lord, I seek refuge in You from the incitements of the devils, and I seek refuge in You, my Lord, lest they be present with me." 3 And may Allah the Almighty send blessings upon our Master and Protector.

O my Lord! I seek Your refuge from the whispers of the devils, and O my Lord! I seek Your refuge lest they come near me. And may Allah send blessings upon our Master and Protector.

1 Al-Quran Al-Karim 3/118 2 Al-Quran Al-Karim 9/61 3 Al-Quran Al-Karim 23/97 & 98

और अपने दोनों इल्म-ए-ग़ैब पर अमल और हुक्म का इख़्तियार रब्ब-ए-अज़वजल ने दिया है। और इमाम क़ुर्तुबी ने उलमा का इज्मा नक़ल फ़रमाया कि नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वआलिहि वसल्लम को इख़्तियार है कि महज़ अपने इल्म की बुनियाद पर क़त्ल का हुक्म फ़रमा दें चाहे गवाह शायद कुछ न हो, और हुज़ूर के सिवा किसी और को यह इख़्तियार नहीं। तो अगर उस नमाज़ वाले या उस चोर या उस शख़्स को जिस पर औरत ने धोखे से तोहमत रखी थी क़त्ल का हुक्म फ़रमाएं तो यक़ीनन वह हुज़ूर के इल्म-ए-ग़ैब ही पर मबनी है न कि उनके न होने पर। क्यों वहाबियो! अब तो अपनी औंधी अक़्ल पर आगाह हुए। "फ़अन्नी तुअफ़कून" (तो तुम कहाँ औंधे जाते हो-त) मुसलमानों! वहाबिया के मतलब पर भी ग़ौर किया, हुक्म के दो ही मम्बे हुए, या ज़ाहिर-ए-शरअ या बातिनी इल्म-ए-ग़ैब। ज़ाहिर है कि यहाँ ज़ाहिर की रूह से तो असलन हुक्म-ए-रज़्म की गुंजाइश न थी, न मुलज़िम का इक़रार न असलन कोई गुनाह, सिर्फ़ मुद्दई का ग़लत दावा सुनकर क़त्ल का हुक्म फ़रमा दें। नबी की शान तो अरफ़-ओ-आला है। आज कल का कोई आलिम न आलिम कोई जाहिल हाकिम ही ऐसा कर बैठे तो हर आक़िल उसे या सख़्त जाहिल या पक्का ज़ालिम कहे। तो हदीस सही मानकर राह न थी मगर इसी तरफ़ कि हुज़ूर ने बरबिनाए तोहमत हरगिज़ यह हुक्म न दिया बल्कि बज़ोअम-ए-ख़ुद उसी के इब्ताल को यह हदीस लाए हैं। तो अब समझ लीजिये कि उनका मतलब क्या हुआ और उन्होंने तुम्हारे प्यारे नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वआलिहि वसल्लम पर कैसा भारी इल्ज़ाम क़ायम किया। क्यों न हो अदावत का यही तक़ाज़ा है।

"नफ़रत उनके मुँह से ज़ाहिर हो चुकी है और जो उनके सीने छुपाए हुए हैं वह कहीं बढ़कर है। हमने तुम्हारे लिए निशानियाँ साफ़ बयान कर दी हैं अगर तुम अक़्ल रखते हो।" 1	उनके बातों से दुश्मनी ज़ाहिर हो गई और जो उनके सीनों में छुपा है वह बहुत बड़ा है। हमने तुम्हारे लिए निशानियाँ खोलकर सुना दीं अगर तुम अक़्ल रखते हो।
"और जो लोग अल्लाह के रसूल को तकलीफ़ पहुँचाते हैं उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है।" 2	और जो रसूलुल्लाह को ईज़ा (तकलीफ़) पहुँचाते हैं उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है।
"ऐ मेरे रब! मैं शैतानों के वसवसों से तेरी पनाह माँगता हूँ, और ऐ मेरे रब! मैं इससे तेरी पनाह	ऐ मेरे रब! तेरी पनाह शैतानों के वसवसों से और ऐ मेरे रब! तेरी पनाह कि वे मेरे पास

माँगता हूँ कि वे मेरे पास आएँ।" 3 और सल्लल्लाहु तआला अलैहि सय्यदिना व मौलाना।

आएँ। और अल्लाह दरूद नाज़िल फ़रमाए हमारे आक़ा और मौला पर।

1 अल-क़ुरान अल-करीम 3/118 2 अल-क़ुरान अल-करीम 9/61 3 अल-क़ुरान अल-करीम 23/97-98

اور اپنے علوم غیب دونوں پر عمل و حکم کا رب عزوجل نے اختیار دیا ہے۔ اور امام قرطبی نے اجماع علماء نقل فرمایا کہ نبی کریم صلی اللہ تعالٰی علیہ وآلہ وسلم کو اختیار ہے کہ محض اپنے علم کی بناء پر قتل کا حکم فرمادیں اگرچہ گواہ شاید کچھ نہ ہو، اور حضور کے سوا دوسرے کو یہ اختیار نہیں، تو اگر اس نماز والے یا اس چور یا اس شخص کو جس پر عورت نے دھوکے سے تہمت رکھی تھی قتل کا حکم فرمائیں تو یقیناً وہ حضور کے علوم غیب ہی پر مبنی ہے نہ کہ ان کا نافی۔ کیوں وہابیو! اب تو اپنی اوندھی مت پر مطلع ہوئے۔ فانی تؤفکون (تو کہاں اوندھے جاتے ہو۔ ت) مسلمانو! وہابیہ کے مطلب پر بھی غور کیا، حکم کے دو ہی منبے ہوئے، یا ظاہر شرع یا باطنی علوم غیب، ظاہر ہے کہ یہاں ظاہر کی رُو سے تو اصلاً حکمِ رجم کی گنجائش نہ تھی، نہ ملزم کا اقرار نہ اصلاً کوئی گناہ، صرف مدعی کا غلط دعوٰی سن کر قتل کا حکم فرمادیں۔ نبی کی شان تو ارفع و اعلٰی ہے۔ آج کل کا کوئی عالم نہ عالم کوئی جاہل حاکم ہی ایسا کر بیٹھے تو ہر عاقل اسے یا سخت جاہل یا پکا ظالم کہے تو حدیث صحیح مان کر راہ نہ تھی مگر اسی طرف کہ حضور نے بربنائے تہمت ہر گز یہ حکم نہ دیا بلکہ بزعم خود اسی کے ابطال کو یہ حدیث لائے ہیں، تو اب سمجھ لیجئے کہ ان کا مطلب کیا ہوا اور انہوں نے تمہارے پیارے نبی کریم صلی اللہ تعالٰی علیہ وآلہ وسلم پر کیسا بھاری الزام قائم کیا۔ کیوں نہ ہو عداوت کا یہی مقتضی ہے۔

"قَدْ بَدَتِ الْبَغْضَاءُ مِنْ اَفْوَاهِهِمْ وَ مَا تُخْفِيْ صُدُوْرُهُمْ اَكْبَرُ ؕ قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ الْاٰيٰتِ اِنْ كُنْتُمْ تَعْقِلُوْنَ" ۱

بیر ان کی باتوں سے جھلک اٹھا اور وہ جو سینے میں چھپائے ہیں بڑا ہے، ہم نے نشانیاں تمہیں کھول کر سنا دیں اگر تمہیں عقل ہو۔

"وَ الَّذِیْنَ یُؤْذُوْنَ رَسُوْلَ اللّٰہِ لَھُمْ عَذَابٌ اَلِیْمٌ" ۲ اور جو رسول اللہ کو ایذا دیتے ہیں ان کے لیے دردناک عذاب ہے۔

"رَّبِّ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ ھَمَزٰتِ الشَّیٰطِیْنِ ۙ وَ اَعُوْذُ بِكَ رَبِّ اَنْ یَّحْضُرُوْنِ" ۳ وصلی اللہ تعالیٰ علیہ سیدنا و مولانا اے میرے رب تیری پناہ شیطانوں کے وسوسوں سے اور اے میرے رب تیری پناہ کہ وہ میرے پاس آئیں۔ اور اللہ درود نازل فرمائے ہمارے آقا و مولیٰ

۱ القرآن الکریم ۱۱۸/۳ ۲ القرآن الکریم ۶۱/۹ ۳ القرآن الکریم ۹۷/۲۳ و ۹۸

Fatawa Rizvia, Volume 29

[Arabic Text Box] Blessings be upon Muhammad, his family, and all his companions. Our final call is that all praise belongs to Allah, the Lord of all worlds. And Allah, Glory be to Him and Most High, knows best, and the knowledge of His majesty is most complete and most perfect.

[Urdu Text Box] [Blessings be] upon Muhammad the Chosen, upon his family, and upon all his companions. And the conclusion of our prayer is that Allah, who is praised with all virtues and is the Lord of the entire world, [is Supreme]. And Allah, Glory be to Him and Most High, knows well, and His knowledge is most complete and definitive. (T)

The treatise 'Izahat al-Ayb bi-Sayf al-Ghayb' is concluded.

Issue 150: From the village of Parah, Pargana Mauranwan, district Unnao, submitted by Muhammad Abdul Rauf Sahib, 3rd Rabi-ul-Awwal 1339 AH.

What do the scholars of religion say regarding this issue: Zaid believes that standing at the time of mentioning the noble birth (Mawlid) is a bad innovation (bid'at sayyiah) because its proof is absolutely not found in the Quran and Hadith, nor is something established after the first three generations (Qurun Thalatha) worthy of acceptance. He asks, is the luminous Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) born at that very moment for which this respectful standing is done? Or is it that he arrives at that very moment? If this is true, then in which part of the gathering does he manifest? If he graces the attendees of the gathering, then it is even more disrespectful that the reciter of the Mawlid is on the pulpit (minbar) and you [the Prophet] are on the floor. And if you grace the pulpit, even that would be disrespectful as it implies equality in rank. Therefore, in any case, standing is a bad innovation. On the contrary, 'Amr considers the Mawlid gathering, respectful standing, distribution of sweets, etc., as his professional duty, highly commendable, a means of salvation, and a source of religious and worldly success. Only.

The Answer: Standing at the time of mentioning the birth of the Master of Mankind (peace and blessings of the best prayers be upon him and his descendants) is undoubtedly recommended (mustahabb) and commendable (mustahsan) according to the prominent scholars and the habit of noble lovers, and it is a cause of fury for the base Wahhabis. We have proved this from several verses of the Holy Quran in our treatise 'Iqamat al-Qiyamah 'ala Ta'in al-Qiyamah li-Nabiyy Tihamah' (peace and

blessings of Allah be upon him) etc. But what can a Wahhabi understand? "They have eyes but they see not with them"[1] - (they have eyes...

[1] Al-Quran 7/179

फ़तावा रज़विया, जिल्द २९

[अरबी पाठ बॉक्स] मुहम्मद, उनके परिवार और उनके सभी साथियों पर [दरूद हो]। और हमारी अंतिम पुकार यह है कि समस्त प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जो तमाम जहानों का रब है। और अल्लाह सुब्हानहू व तआला बेहतर जानता है, और उसकी महानता का इल्म सबसे पूर्ण और सबसे सुदृढ़ है।

[उर्दू पाठ बॉक्स] मुहम्मद मुस्तफ़ा पर, आपकी आल और आपके तमाम सहाबा पर। और हमारी दुआ का ख़ात्मा यह है कि सब खूबियों के साथ सराहा गया अल्लाह, जो रब है सारे जहान का, [सर्वोच्च है]। और अल्लाह सुब्हानहू व तआला खूब जानता है, और उसका इल्म अतम्म व अहकम है। (त)

रिसाला 'इज़ाहतुल ऐब बि-सैफ़िल ग़ैब' ख़त्म हुआ।

मसला १५०: मौज़' पारा, परगना मौरानवां, ज़िला उन्नाव से, सायल मुहम्मद अब्दुल रऊफ़ साहब, ३ रबी-उल-अव्वल १३३९ हिजरी।

उलेमा-ए-दीन इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि ज़ैद का अक़ीदा है कि ज़िक्र-ए-विलादत-ए-शरीफ़ के वक़्त क़याम करना बिदअत-ए-सय्यिया (बुरी नवीनता) है क्योंकि इसका सुबूत क़ुरआन व हदीस से मुतलक़ नहीं पाया जाता, और न ही वह बात जो क़ुरून-ए-सलासा (शुरुआती तीन पीढ़ियां) के बाद क़ायम की गई हो, मानने के क़ाबिल है। और वह कहता है कि क्या उसी वक़्त हुज़ूर पुरनूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की पैदाइश होती है जिसके लिए यह ताज़ीमी क़याम किया जाता है? या यह कि उसी वक़्त आपकी तशरीफ़-आवरी होती है? अगर यह सही है तो मजलिस के किस मकाम पर आप मुतजल्ली (प्रकट) होते हैं? अगर आप महफ़िल में हाज़िरीन के बीच रौनक अफ़रोज़ होते हैं, तो यह और भी बेअदबी है कि मीलाद पढ़ने वाला मिम्बर पर हो और आप [नबी] ज़मीन के फ़र्श पर, और अगर आप मिम्बर पर जलवा-अफ़रोज़ होते हैं तो यह भी बेअदबी हुई कि बराबरी का मर्तबा ज़ाहिर होता है, लिहाज़ा हर सूरत में क़याम बिदअत-ए-सय्यिया है। इसके बर-अक्स अम्र मीलाद शरीफ़ की महफ़िल, ताज़ीमी क़याम और शीरीनी (मिठाई) तक़्सीम करने वग़ैरा को अपना फ़र्ज़े-मन्सबी और निहायत दर्जे मुस्तहसन और वसीला-ए-निजात व ज़रिया-ए-फ़लाह दीनी व दुनियावी समझता है, फ़क़त।

अल-जवाब: सैयदुल अनाम (इंसानों के सरदार) अलैहि व अला ज़वीहि अफ़ज़लुस सलात वस-सलाम की विलादत के ज़िक्र के वक़्त क़याम करना बिला-शुबा मुस्तहब व मुस्तहसन है, और यह बड़े उलेमा

का तरीक़ा और मुहिब्बीन (प्रेमियों) की आदत और ज़लील वहाबियों के लिए रंज व ग़ुस्से का सबब है। हमने अपने रिसाले 'इक़ामतुल क़ियामा अला ताइनिल क़ियामा लि-नबिय्ये तिहामा' सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम वग़ैरा में इसे क़ुरआन मजीद की मुताअद्दिद आयतों से साबित किया है, मगर वहाबियों को क्या सूझे? "उनके पास आँखें हैं मगर वे उनसे देखते नहीं"[1] - (वे आँखें रखते हैं...

[1] अल-क़ुरआन ७ / १७९

فتاوٰی رضویہ، جلد ۲۹

[عربی متن] محمد وآلہ وصحبہ اجمعین واٰخر دعوانا ان الحمد للہ رب العالمین، واللہ سبحانہ وتعالی اعلم وعلم مجدہ اتم واحکم

[اردو متن] محمد مصطفٰی پر، آپ کی آل اور آپ کے تمام صحابہ پر۔ اور ہماری دعا کا خاتمہ یہ ہے کہ سب خوبیوں سراہا اللہ جو رب ہے سارے جہان کا، اور اللہ سبحانہ وتعالٰی خوب جانتا ہے، اور اس کا علم اتم و احاکم ہے۔ (ت)

رسالہ ازاحۃ العیب بسیف الغیب ختم ہوا۔

مسئلہ ۱۵۰: از موضع پارہ پرگنہ مورانواں ضلع اناؤ مسئولہ محمد عبدالرؤف صاحب ۳ ربیع الاول ۱۳۳۹ھ

کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید کا عقیدہ ہے کہ قیام کرنا بوقت ذکر ولادت شریف بدعت سیئہ ہے کیونکہ اس کا ثبوت قرآن و حدیث سے مطلق پایا نہیں جاتا اور نہ وہ بات جو بعد قرون ثلاثہ قائم کی گئی قابل ماننے کے ہے۔ اور کہتا ہے کہ کیا اُسی وقت حضور پر نور صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کی پیدائش ہوتی ہے جو یہ تعظیمی قیام کیا جاتا ہے، یا یہ کہ اُسی وقت آپ کی تشریف آوری ہوتی ہے۔ اگر یہ صحیح ہے تو کس مقام مجلس میں آپ متجلی ہوتے ہیں، اگر حضار محفل میں آپ رونق افروز ہوتے ہیں، تو یہ اور بے ادبی ہے کہ میلاد خوان منبر پر اور آپ فرش زمین پر، اور اگر آپ منبر پر جلوہ فگن ہوتے ہیں تو یہ بھی بے ادبی ہوئی کہ برابری کا مرتبہ ظاہر ہوتا ہے، لہذا بہر نوع قیام بدعت سیئہ ہے، اس کے بر عکس عمر و محفل میلاد شریف اور

قیام تعظیمی و تقسیم شیرینی وغیرہ کو اپنا فرض منصبی اور نہایت درجہ مستحسن اور وسیلہ نجات اور ذریعہ فلاح دینی و دنیوی سمجھتا ہے، فقط

الجواب: قیام وقت ذکر ولادت سید الانام علیہ وعلی ذویہ افضل الصلوٰۃ والسلام بلا شبہ مستحب و مستحسن علمائے اعلام و عادتِ محبین کرام و غیظ وہابیہ لئام ہے، ہم نے اپنے رسالہ اقامۃ القیامۃ علی طاعن القیامۃ لنبی تہامۃ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم و غیرہ میں اسے متعدد آیاتِ قرآن مجید سے ثابت کیا، مگر وہابیہ کو کیا سوجھے۔ "لَهُمْ اَعْيُنٌ لَّا يُبْصِرُوْنَ بِهَا" ۱ - (وہ آنکھیں رکھتے ہیں...

۱ القرآن ۷ / ۱۷۹

Fatawa Razawiya, Volume 29

...with which they do not see - T) Especially, how can their understanding reach the Great Quran? Allah the Almighty said:

"And We have placed coverings over their hearts, lest they should understand it"[1]. (We have placed covers on their hearts so that they do not understand it - T)

How can they hear the verses we recite? "And in their ears is deafness"[2]. (And heaviness in their ears - T). How can the call to the path of truth benefit them?

"And if you invite them to guidance, they will never be guided, then, ever"[3]. (And if you call them towards guidance, then even then they will never find the way - T)

In the debate over the "Three Generations" (Qarun-e-Thalatha), the Wahhabis have been countered thousands of times in their own homes, a clear account of which is in 'Usul al-Rashad', a refined composition by the Leader of Scholars, Hazrat Sayyiduna our Father (may his secret be sanctified). The Deoband school, with its invented laws, was established after the mid-twelfth century. First, demolish its foundation, smash its bricks to pieces, or is this issue only about making things forbidden in which there is honor and love for the Master of the Universe (Peace and blessings of Allah be upon him and his family) and the Noble Saints (may Allah's complete pleasure be upon them)? This standing (Qiyam) is for the honor of mentioning the arrival (of the Prophet). If there is greatness in the heart, one would know that honoring the mention of the noble person is like honoring his holy self. As explained by Imam al-Qadi Iyad (may Allah have mercy on him) in the book 'ash-Shifa' and Imam Ahmad al-Qastalani in 'al-Mawahib al-Ladunniyyah'. (As Imam Qadi Iyad explained in 'ash-Shifa' and Imam Ahmad Qastalani explained in 'al-Mawahib al-Sharifa' - T). Those blind of heart forget this and look for the actual physical arrival of the Noble Being himself. Disrespectful insolents go so far as to ask, "Does the Prophet's birth occur at that very moment?" We do not claim that his arrival is necessary at every blessed gathering. Yes, it does happen; the great Saints have witnessed it many times, as mentioned in 'Bahjat al-Asrar' by Imam Awhad Abul Hasan al-Lakhmi al-Shatanufi, 'Tanwir al-Hawalik' by Imam Jalaluddin al-Suyuti, and the works of Shah Waliullah Dehlawi, etc. And making absurd distinctions like "Is he sitting on the floor or the pulpit?" is deep ignorance. Such an ignorant question would apply to all those arrivals mentioned by the Imams and...

[1] Al-Quran 6/25 [2] Al-Quran 6/25 [3] Al-Quran 18/57

फ़तावा रज़विया, जिल्द 29

...जिनसे वे देखते नहीं - त) विशेष रूप से, महान कुरान तक उनकी समझ कैसे पहुँच सकती है? अल्लाह तआला ने फ़रमाया:

"और हमने उनके दिलों पर पर्दे डाल दिए हैं, ताकि वे इसे न समझें"[1]। (हमने उनके दिलों पर आवरण कर दिए कि इसे न समझें - त)

हम जो आयतें तिलावत करें, उनके कान भला कैसे सुनें? "और उनके कानों में भारीपन है"[2]। (और उनके कानों में भारीपन - त)। सत्य के मार्ग की दावत उन्हें क्या लाभ देगी?

"और यदि आप उन्हें मार्गदर्शन की ओर बुलाएं तो वे कभी भी मार्गदर्शन प्राप्त नहीं करेंगे"[3]। (और अगर आप उन्हें हिदायत की तरफ बुलाएं तो जब भी हरगिज़ कभी राह न पाएंगे - त)

'क़ुरून-ए-सलासा' (तीन पीढ़ियों) की बहस में वहाबियों को हज़ारों बार उनके घर पहुँचाया गया है, जिसका उज्ज्वल वर्णन 'उसूल अल-रशाद' में है, जो उलेमा के इमाम हज़रत सैयदुना वालिद माजिद (क़द्दस सिर्रहु) की परिष्कृत रचना है। देवबंद मदरसा, अपने आविष्कृत नियमों के साथ, बारहवीं शताब्दी के बाद स्थापित हुआ। पहले इसकी नींव गिराएं ईंट से ईंट बजाएं या यह मुद्दा केवल उन चीज़ों को हराम करने के लिए है जिनमें हज़ूर सरवर-ए-आलम (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) और औलिया किराम (अलैहिमुर्रिज़वान) का सम्मान और प्रेम है? यह क़ियाम (खड़े होना) उनके आने के ज़िक्र के सम्मान में है। यदि दिल में महानता हो, तो जान लें कि शरीफ़ ज़िक्र का सम्मान करना पाक ज़ात के सम्मान के समान है। जैसा कि इमाम क़ाज़ी अयाज़ (रहमतुल्लाहि तआला) ने 'किताब अल-शिफ़ा' में और इमाम अहमद क़स्तलानी ने 'अल-मवाहिब अल-लदुन्निया' में स्पष्ट किया है। (जैसा कि इमाम क़ाज़ी अयाज़ रहमतुल्लाहि अलैहि ने किताबुश शिफ़ा में और इमाम अहमद क़स्तलानी ने मवाहिब शरीफ़ा में इसे बयान किया। त) दिल के अंधे इसे भुलाकर स्वयं पाक ज़ात के आगमन को ढूँढते हैं और गुस्ताख यहाँ तक बढ़ जाते हैं कि "क्या उसी समय हुज़ूर की पैदाइश होती है?" हम यह दावा नहीं करते कि हर मुबारक महफ़िल में तशरीफ़ लाना ज़रूरी है। हाँ, होता है, बड़े औलिया ने इसे कई बार देखा है, जैसा कि इमाम अवहद अबुल हसन लखमी शतनूफ़ी की 'बहजतुल असरार', इमाम जलालुद्दीन सुयूती की 'तन्वीरुल हवालिक' और शाह वलीउल्लाह देहलवी आदि की रचनाओं में उल्लेख है। और इस पर निरर्थक बहस कि "फर्श पर बैठे हैं या मिम्बर पर" घोर अज्ञानता है। ऐसा जाहिलाना सवाल उन तमाम तशरीफ़ आवरियों पर होगा जिनका ज़िक्र अइम्मा और...

[1] अल-क़ुरान 6/25 [2] अल-क़ुरान 6/25 [3] अल-क़ुरान 18/57

جن سے دیکھتے نہیں_ت) خصوصاً قرآنِ عظیم تک ان کی فہم کیا پہنچے، قال اللہ تعالٰی:

"وَ جَعَلْنَا عَلٰی قُلُوْبِهِمْ اَكِنَّةً اَنْ یَّفْقَهُوْهُ"[1]۔ ہم نے ان کے دلوں پر غلاف کر دیئے کہ اسے نہ سمجھیں۔ (ت)

ہم جو آیات تلاوت کریں ان کا کان کیو نکر سنے "وَ فِیْۤ اٰذَانِهِمْ وَقْرًا"[2]۔ (اور ان کے کانوں میں گرانی۔ ت) راہِ حق کی دعوت انہیں کیا نفع دے۔

"وَ اِنْ تَدْعُهُمْ اِلَى الْهُدٰى فَلَنْ یَّهْتَدُوْۤا اِذًا اَبَدًا"[3]۔ اور اگر انہیں تم ہدایت کی طرف بلاؤ تو جب بھی ہر گز کبھی راہ نہ پائیں گے۔ (ت)

قرونِ ثلاثہ کی بحث میں وہابیہ کو ہزاروں بار ان کے گھر پہنچا دیا گیا جس کا روشن بیان اصول الرشاد تصنیف لطیف امام العلماء حضرت سیدنا الوالد قدس سرہ الماجد میں ہے۔ مدرسہ دیو بند بایں قوانین مخترعہ تو قرونِ اثناء عشر کے بعد قائم ہوا پہلے اس کی بنا ڈھائیں اینٹ سے اینٹ بجائیں، یا یہ مسئلہ صرف انہیں چیزوں کے حرام کرنے کو ہے جن میں تعظیم و محبت حضور سرور عالم صلی اللہ تعالٰی علیہ وآلہ وسلم و الیاء کرام علیہم الرضوان الاتم ہے یہ قیام ذکرِ تشریف آوری کی تعظیم ہے دل میں عظمت ہو تو جانیں کہ تعظیمِ ذکرِ شریف مانند تعظیمِ ذات اقدس ہے۔ کما بینہ الامام القاضی عیاض رحمۃ اللہ تعالٰی فی کتاب الشفاء والامام احمد القسطلانی فی المواھب الشریفۃ جیسا کہ امام قاضی عیاض رحمہ اللہ تعالٰی نے کتاب الشفاء میں اور امام احمد القسطلانی نے مواہب شریفہ میں اسے بیان کیا۔ ت) دل کے اندھے اسے بھلا کر خود ذاتِ کریم کی تشریف آوری ڈھونڈتے ہیں اور بے ادبی گستاخ یہاں تک بڑھتے ہیں کہ کیا اسی وقت حضور کی پیدائش ہوتی ہے ہم مدعی

نہیں کہ ہر مجلسِ مبارک میں تشریف آوری ضرور ہے۔ ہاں ہوتی ہے، اکابر اولیاء نے بارہا مشاہدہ کی ہے جیسا۔ بہجتہ الاسرار امام اوحد ابوالحسن لخمی شطنوفی و تنویر الحوالک امام جلال الدین سیوطی و تصانیف شاہ ولی اللہ دہلوی و غیرہا میں مذکور ہے اور اس پر بے ہودہ تشقیق کہ فرش پر تشریف رکھتے ہیں یا منبر پر جہلِ سحیق ہے، ایسا جاہلانہ سوال ان تمام تشریف آوریوں پر ہوگا جن کا ذکر ائمہ و

[1] القرآن ٢٥/٦ [2] القرآن ٢٥/٦ [3] القرآن ١٨/٥٧

Fatawa Razawiya - Volume 29

The elders have stated, and how did the coming and presence occur during his noble apparent life? And they completely ignored that Hadith from Sahih Bukhari where the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him and his family) would place a pulpit in the Noble Mosque for Hassan bin Thabit Ansari (may Allah be pleased with him), and he would stand on it to recite praises of the Prophet. Where was the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) seated at that time - on the floor below Hassan, or on the pulpit equal to Hassan? Whatever answer is given there, a similar and even higher presence is here, that his presence is invisible to the physical eye, and the manifestation of light is separate and transcendent from the floor, etc., by the decree of the Worshipped. Allama Ali Qari states in the noble commentary:

Arabic	Urdu Translation
Indeed, the soul of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) is present in the houses of the people of Islam (1).	The pure soul of the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him and his family) is present in the houses of all Muslims.

Is this presence on the ground, such that those with a roof are high, or on the roof such that those on the second floor are high, and for those who have no roof but a low thatched shed, how is the presence in that house? Rather, the Lord Almighty says:

Arabic	Urdu Translation
"And We are closer to him than his jugular vein" (2).	We are closer to man than his jugular vein.

Now one person is lying down, the second is sitting, the third is standing, and the fourth is on the roof in front. Is the Lord Almighty, who is closer to the jugular vein of the one lying down, higher than those three? What severe disrespect and insolence! Similarly, it is in a Hadith Qudsi, the Lord Almighty says:

Arabic	Urdu Translation
I am the companion of the one who remembers Me (3).	I am the companion of the one who remembers Me.

He is being remembered by those on the floor and also by those on the pulpit; so is He equal to all of them and lower than the one on the pulpit?

Arabic	Urdu Translation
But the Wahhabis are a people who do not understand, and there is no power nor might except with Allah, the Most High, the Supreme.	But the Wahhabis are a senseless people; without the guidance of Allah Almighty, one cannot avoid sin nor can any (good be done).

1. Sharh al-Shifa by Mulla Ali Qari on the margins of Naseem al-Riyadh, chapter on places where prayer is recommended, etc., 3/464.
2. Al-Quran 50:16.
3. Kashf al-Khafa, Hadith 211, Dar al-Kutub al-Ilmiyya, Beirut, 1/183.

अकाबिर (बुजुर्गों) ने फरमाया और स्वयं ज़ाहिरी हयाते अकदस में तशरीफ आवरी (आगमन) और तशरीफ फरमाई किस तरह होती थी, और सहीह बुखारी शरीफ की उस हदीस को तो बिल्कुल नज़रअंदाज़ कर दिया कि हुज़ूर अकदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वआलिही वसल्लम मस्जिद-ए-करीम में हसान बिन साबित अंसारी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के लिए मिम्बर बिछाते और वह उस पर खड़े होकर नात-ए-अकदस सुनाते। उस समय हुज़ूर अकदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम कहाँ विराजमान थे, फर्श पर हसान से नीचे या मिम्बर पर हसान के बराबर? जो वहां जवाब मिले, वैसा बल्कि उससे भी आला यहां मौजूद है कि जलवा फरमाई ज़ाहिरी आँख से ओझल है और नूर की जलवा अफ़रोज़ी फर्श आदि से अलग और माबूद (ईश्वर) के हुक्म से बुलंद है। अल्लामा अली कारी शरह-ए-शरीफ में फरमाते हैं:

अरबी	उर्दू अनुवाद
बेशक नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की रूह इस्लाम वालों के घरों में मौजूद है (1)।	रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वआलिही वसल्लम की पाक रूह तमाम मुसलमानों के घरों में तशरीफ फरमा है।

यह तशरीफ फरमाई ज़मीन पर है कि छत वाले ऊंचे हों या छत पर कि दो मंज़िला वाले बुलंद, और जिनके पास छत नहीं बस एक नीचा छप्पर है, उनके घर और उसके गिर्द मकान में तशरीफ फरमाई किस तरह है? बल्कि रब अज़्ज़वजल फरमाता है:

अरबी	उर्दू अनुवाद
"और हम आदमी से उसकी शह-रग (गर्दन की नस) से भी ज़्यादा करीब हैं" (2)।	हम आदमी से उसकी शह-रग से भी ज़्यादा करीब हैं।

अब एक शख्स लेटा है, दूसरा बैठा है, तीसरा खड़ा है, चौथा सामने की छत पर चढ़ा है; रब अज़्ज़वजल जो उस लेटे हुए की शह-रग से करीब है, क्या ये तीनों उससे ऊंचे हैं? कैसी सख्त बे-अदबी और गुस्ताखी है! इसी तरह हदीस-ए-कुदसी में है, रब अज़्ज़वजल फरमाता है:

अरबी	उर्दू अनुवाद
मैं अपने याद करने वाले का साथी हूँ (3)।	मैं अपने याद करने वाले का हम-नशीन हूँ।

याद वह भी कर रहे हैं जो फर्श पर हैं और वह भी जो मिम्बर पर, तो क्या उन सबके बराबर हुआ और मिम्बर वाले से नीचा?

अरबी	उर्दू अनुवाद
लेकिन वहाबी ऐसी कौम है जो अक्ल नहीं रखती, और अल्लाह तआला की तौफीक के बिना न गुनाह से बचा जा सकता है और न ही कोई ताक़त है।	लेकिन वहाबी बे-अक्ल कौम है, अल्लाह तआला की तौफीक के बिना न गुनाह से बचा जा सकता है और न ही कोई (नेकी की जा सकती है)।

1. शरह अल-शिफ़ा मुल्ला अली कारी, नसीम अल-रियाज़ के हाशिये पर, उन स्थानों का अध्याय जहाँ नमाज़ मुस्तहब है आदि, 3/464।
2. अल-क़ुरान 50:16।
3. कश्फ़ अल-ख़फ़ा हदीस 211, दार अल-कुतुब अल-इल्मिया बेरूत, 1/183।

اکابر نے فرمایا اور خود ظاہری حیات اقدس میں تشریف آوری اور تشریف فرمائی کس طرح ہوتی تھی، اور صحیح بخاری شریف کی اُس حدیث کو تو بالکل جھیل کر پھینک دیا کہ حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم مسجد کریم میں حسان بن ثابت انصاری رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے لیے منبر بچھاتے اور وہ اس پر قیام کر کے نعتِ اقدس سُناتے اس وقت حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کہاں تشریف رکھتے تھے، فرش پر حسان سے نیچے یا منبر پر حسان کے برابر؟ جو وہاں جواب دے ویسا بلکہ اس سے اعلیٰ یہاں موجود ہے کہ جلوہ فرمائی چشمِ ظاہر سے غیر مشہود ہے اور نور کی جلوہ افروزی فرش وغیرہ سے جدا متعالی از معبود ہے۔ علامہ علی قاری شرحِ شریف میں فرماتے ہیں:

عربی عبارت	اردو ترجمہ
ان روح النبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم حاضرۃ فی بیوت اہل الاسلام ۱۔	رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کی روح پاک تمام مسلمانوں کے گھروں میں تشریف فرما ہے،

یہ تشریف فرمائی زمین پر ہے کہ چھت والے اونچے ہوں یا چھت پر کہ دو منزلہ والے بُلند، اور جن کے چھت نہیں ایک نیچا چھپر ہے اور اس کے گرد مکان اس گھر میں تشریف فرمائی کس طرح ہے، بلکہ رب عزوجل فرماتا ہے:

عربی عبارت	اردو ترجمہ
"وَنَحْنُ اَقْرَبُ اِلَیْہِ مِنْ حَبْلِ الْوَرِیْدِ" ۲۔	ہم آدمی سے اس کی رگِ گردن سے بھی زیادہ قریب ہیں۔

اب ایک شخص لیٹا، دوسرا بیٹھا، تیسرا کھڑا، چوتھا سامنے کی چھت پر چڑھا ہے، رب عزوجل کہ اس لیٹے کی شہ رگ سے قریب ہے کیا یہ تینوں اُس سے اونچے ہیں، کیسی سخت بے ادبی و گستاخی ہے، یونہی حدیثِ قدسی میں ہے، رب عزوجل فرماتا ہے:

عربی عبارت **اردو ترجمہ**

انا جلیس من ذکرنی ۳۔ میں اپنے یاد کرنے والے کا ہمشین ہوں۔

یاد وہ بھی کر رہے ہیں جو فرش پر ہیں اور وہ بھی جو منبر پر، تو کیا ان سب کے برابر ہوا اور منبر والے سے نیچا؟

عربی عبارت **اردو ترجمہ**

و لکن الوھابیۃ قوم لا یعقلون ولا حول ولا قوۃ الا باللہ العلی العظیم — لیکن وہابی بے عقل قوم ہے، اللہ تعالیٰ کی توفیق کے بغیر نہ گناہ سے بچا جاسکتا ہے اور نہ ہی کوئی

۱ شرح الشفاء لملا علی القاری علی ھامش نسیم الریاض فصل فی المواطن التی یستحب فیھا الصلوۃ الخ ۳ / ۴۶۴ ۲ القرآن ۵۰ / ۱۶ ۳ کشف الخفا حدیث ۲۱۱ دارالکتب العلمیہ بیروت ۱ / ۱۸۳

Fatawa-e-Razviya, Vol. 29

[Box] (Arabic): And may Allah Almighty's peace and blessings be upon our master and leader and all his kinsfolk. Allah Almighty knows best. We have only added the last two reasons to manifest his ignorance in analogizing the seen (shāhid) to the unseen (ghāʾib). So know, and your Lord knows best. (Urdu): [There is] power to do good. May Allah Almighty send peace and blessings upon our leader and master and all his companions. And Allah Almighty knows well. We have added the last two reasons only so that his ignorance in the process of analogizing the seen with the unseen becomes manifest. So know, and your Lord knows well. (T) [/Box]

Question 151: From the city, Mohalla Ban Khana, queried by Muhammad Bakhsh Sahib, 23 Jumada al-Ula 1339 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: A person organizes Milad-e-Sharif and also offers Niyaz and vows (Nazr) for all the Saints (Awliya Allah) and believes in them all. However, he says to do everything, but he prohibits these things: do not go to the shrines (Mazar Sharif) to ask for wishes, rather ask for wishes from Allah, though do perform Niyaz and vows at the shrine. He says, do not ask for wishes in this manner, such as 'let such and such need of mine be fulfilled.' Do not ask [for needs] at the shrine. Go to the shrine, recite Al-Fatiha, convey rewards (Thawab), and perform visitation (Ziyarat) to see what great personages have passed away. Do anything, but do not ask for wishes from the shrine; petition God instead.

The Answer: If that person does not hold any other Wahhabi traits and considers Wahhabis to be infidels, then by saying just this much, he cannot be [considered] a Wahhabi. And Allah Almighty knows best.

Question 152 to 154: From the town of Nizamabad, District Azamgarh, queried by Syed Ali Asghar, 9 Shaban, Wednesday, 1339 AH. What do the scholars of religion and jurists of the clear Sharia say regarding the following issues: (1) Who is called a Hanafi? What is the complete definition? (2) Zaid is a graduate of Arabic sciences and calls himself a follower (muqallid) of the Hanafi school. He does not believe in saying 'Amin' aloud (Amin bil-Jahr), raising the hands (Raf' al-Yadayn), or reciting Al-Fatiha behind the Imam. He prays 20 rak'ahs in Tarawih and three rak'ahs for Witr, and acts upon books of jurisprudence (Fiqh). Should Muslims pray behind Zaid or not? And in such a situation, will Zaid be called a Hanafi or not? (3) What is the ruling on standing (Qiyam) in the assembly of Milad-e-Sharif?

फ़तावा रिज़विया, खंड 29

[बॉक्स] (अरबी): और अल्लाह तआला हमारे आका और मौला और उनके सभी परिवार पर शांति और दया भेजे। अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है। हमने पिछली दो वजहें केवल इसलिए जोड़ी हैं ताकि साक्ष्य (शाहिद) को अदृश्य (ग़ायब) से जोड़ने में उसकी अज्ञानता स्पष्ट हो सके। तो जान लो, और तुम्हारा पालनहार बेहतर जानता है। (उर्दू): [पिछली बात का अंत] ...नेकी करने की शक्ति होती है। हमारे सरदार और मालिक और उनके सभी साथियों पर अल्लाह तआला दरूद और सलाम भेजे, और अल्लाह तआला अच्छी तरह जानता है। अंतिम दो कारण हमने केवल इसलिए बढ़ा दिए हैं ताकि प्रत्यक्ष को अप्रत्यक्ष पर अनुमान करने के मामले में उसकी अज्ञानता उजागर हो जाए, तो जान लो और तुम्हारा पालनहार अच्छी तरह जानता है। (त) [/बॉक्स]

मसला 151: शहर, मोहल्ला बान खाना से, प्रार्थी मुहम्मद बख्श साहब, 23 जमादी-उल-उला 1339 हिजरी। उलमा-ए-दीन इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि एक व्यक्ति मिलाद शरीफ भी करवाता है और तमाम औलिया अल्लाह की नियाज़ और नज़र भी पेश करता है और सबको मानता है। मगर वह व्यक्ति कहता है कि सब काम करो लेकिन वह इन बातों से मना करता है कि मज़ार शरीफ पर जाकर मुरादें मत मांगो बल्कि अल्लाह से मुराद मांगो और मज़ार पर जाकर नियाज़ और नज़र सब कुछ करो। वह कहता है कि मुरादें इस तरीके से मत मांगो कि मेरी फलां-फलां ज़रूरत पूरी हो जाए। मज़ार पर जाकर मत मांगो, मज़ार पर जाकर फातिहा पढ़ो, सवाब पहुँचाओ, ज़ियारत करो कि कैसे-कैसे महान लोग गुज़रे हैं। कुछ भी करो लेकिन मज़ार से मुराद मत मांगो, खुदा से अर्ज़ करो।

उत्तर: यदि वह व्यक्ति वहाबियत की कोई अन्य बात नहीं रखता और वहाबियों को काफिर मानता है, तो केवल इतना कहने से वह वहाबी नहीं हो सकता। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 152 से 154: कस्बा निज़ामाबाद, ज़िला आज़मगढ़ से, प्रार्थी सैयद अली असगर, 9 शाबान, बुधवार, 1339 हिजरी। उलमा-ए-दीन और शरीअत के मुफ्ती इन मसलों में क्या फ़रमाते हैं कि: (1) हनफ़ी किसे कहते हैं, पूरी परिभाषा क्या है? (2) ज़ैद अरबी शिक्षाओं से स्नातक है और अपने आप को हनफ़ी संप्रदाय का मुक़ल्लिद (अनुयायी) कहता है। वह ज़ोर से 'आमीन' कहना (आमीन बिल-जहर), हाथ उठाना (रफ़-ए-यदैन), और इमाम के पीछे फातिहा पढ़ने का समर्थक नहीं है। वह तरावीह में 20 रकात और वित्र में तीन रकात पढ़ता है, और फिकह (धर्मशास्त्र) की किताबों पर अमल करता है। क्या मुसलमानों को ज़ैद के पीछे नमाज़ पढ़नी चाहिए या नहीं? और ऐसी स्थिति में

क्या ज़ैद को हनफ़ी कहेंगे या नहीं? (3) महफ़िल-ए-मिलाद शरीफ में क़याम (खड़ा होना) करना कैसा है?

पृष्ठ 750 का 544

[Box] وصلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم علی سیدنا ومولانا وذویہ اجمعین، واللہ تعالٰی اعلم، وانما زدنا الوجھین الآخرین لابانۃ جھلہ فی قیاس الشاھد علی الغائب فاعلم وربک اعلم۔ نیکی کرنے کی طاقت ہوتی ہے۔ ہمارے سردار و مالک اور ان کے تمام اصحاب پر اللہ تعالٰی درود و سلام بھیجے، اور اللہ تعالٰی خوب جانتا ہے۔ آخری دونوں وجہیں ہم نے صرف اس لیے زیادہ کردی ہیں تاکہ شاہد کو غائب پر قیاس کرنے کے سلسلہ میں اس کی جہالت ظاہر ہو جائے، تو جان لے اور تیرا پروردگار خوب جانتا ہے۔ (ت) [/Box]

مسئلہ ۱۵۱: از شہر محلہ بان خانہ مسئولہ محمد بخش صاحب ۲۳ جمادی الاولٰی ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ایک شخص میلاد شریف بھی کراتا ہے اور تمام اولیاء اللہ کی نیاز نذر بھی کرتا ہے اور سب کو مانتا ہے، اور وہ شخص یہ بات کہتا ہے کہ تمام کام کرو لیکن وہ شخص ان باتوں کو منع کرتا ہے کہ مزار شریف پر جاکر مرادیں مت مانگو بلکہ اللہ سے مراد مانگو اور مزار پر جاکر نیاز نذر سب کچھ کرو۔ اور کہتا ہے کہ مرادیں اس طریقہ پر مت مانگو کہ فلاں فلاں میری حاجت رفع ہو۔ مزار پر جا کر مت مانگو، مزار پر جا کر فاتحہ پڑھو، ثواب پہنچاؤ، زیارت کرو کہ کیسے کیسے بزرگ آدمی گزرے ہیں، کچھ کرو لیکن مراد مت مانگو خدا سے عرض کرو۔ الجواب: اگر وہ شخص اور کوئی بات وہابیت کی نہیں رکھتا اور وہابیوں کو کافر جانتا ہے تو اتنا کہنے سے وہابی نہیں ہوسکتا۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۱۵۲تا۱۵۴: از قصبہ نظام آباد ضلع اعظم گڑھ مسئولہ سید علی اصغر ۹ شعبان چہار شنبہ ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیان شرع متین مسائل ذیل میں کہ: (۱) حنفی کس کو کہتے ہیں، پوری پوری تعریف کیا ہے؟ (۲) زید ایک فارغ التحصیل علوم عربیہ کا ہے اور اپنے

کو حنفی مذہب کا مقلد کہتا ہے، آمین بالجہر، رفع یدین، قراءت فاتحہ خلف الامام کا قائل نہیں، تراویح میں ۲۰ رکعت پڑھتا ہے اور وتر تین رکعت، کتب فقہیہ پر عمل کرتا ہے۔ مسلمانوں کو زید کے پیچھے نماز پڑھنا چاہیے یا نہیں؟ اور ایسی صورت میں زید کو حنفی کہیں گے یا نہیں؟ (۳) محفل میلاد شریف میں قیام کرنا کیسا ہے؟

Fatawa Razviya Volume 29

(4) Zaid participates in the Milad Sharif gathering, considers standing (Qiyam) recommended (mustahab), and does it himself. Shall we call him a Hanafi or a Wahhabi? (5) Who is called a Wahhabi or a Non-Muqallid? And what is their identification? Clarify and you shall be rewarded. (t)

Answer: (1) In the terminology of scholars, a Hanafi is one who follows the Hanafi school in branches (furu'). Furthermore, if he also follows the truth in principles (usool), then he is a Sunni Hanafi; otherwise, he is deviant like the Mu'tazilites. Allah Almighty knows best. (2) If proven from these things, it only means Zaid is a Hanafi in branches, and this much is not sufficient for the validity of prayer behind him. Previously there were Mu'tazilites, now there are such definitively apostate sects who call themselves Hanafi and claim to follow Hanafi jurisprudence in branches. How can their Hanafism benefit them? For leadership in prayer (Imamat), one must be a Sunni of correct belief, with correct purification, correct recitation, and fulfilling all conditions of validity and lawfulness. Allah Almighty knows best. (3) It is recommended by the noble scholars. Allah Almighty knows best. (4) Scholars of all four schools of thought and common Muslims hold blessed gatherings of Milad and perform Qiyam; this is not exclusive to Hanafis. Some Wahhabis also act upon them out of dissimulation (Taqiyya), as has been observed many times. If one openly and without bias accepts Taqviyat-ul-Iman as misguidance and deviance, and Deobandism as disbelief (kufr) and apostasy, then he shall not be called a Wahhabi. Only the Knower of the Unseen knows what is in the heart. Allah Almighty knows best. (5) One who follows Ismail Dehlvi and Taqviyat-ul-Iman or holds beliefs according to it, even if he does not verbally admit to following it, is a Wahhabi. This is enough for his identification. Then, if he claims to follow jurisprudence (Fiqh), he is a Muqallid Wahhabi, and if along with that he also does not follow Fiqh, then he is a Non-Muqallid Wahhabi. Allah Almighty knows best.

Problem 175: From Faridpur Hospital, Main Post Office, Station Patanbarpur, District Bareilly, questioned by Azeemullah Compounder, 8 Ramadan 1339 AH.

Do the Sufi saints (Awliya Allah) remain alive after death or not, just as the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) is 'Hayat-un-Nabi' (alive in his grave)? Is it permissible to go to the shrines of the saints and seek their mediation (tawassul) or ask them for supplication? Clarify and you shall be rewarded. (t)

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

(4) ज़ैद मिलाद शरीफ़ की महफ़िल में शामिल होता है और क़याम (खड़े होने) को मुस्तहब (पसंदीदा) कहता है और खुद भी करता है। उसे हनफ़ी कहेंगे या वहाबी? (5) वहाबी या गैर मुक़ल्लिद किसे कहते हैं? और उसकी पहचान क्या है? बयान फ़रमाएं, आपको अज्र (पुण्य) दिया जाएगा। (त)

जवाब: (1) उलेमा (विद्वानों) की परिभाषा में हनफ़ी वह है जो फ़ुरू (शाखाओं) में हनफ़ी मज़हब का पैरोकार (अनुयायी) हो। फिर अगर वह उसूल (सिद्धांतों) में भी हक़ का पालन करने वाला है, तो वह सुन्नी हनफ़ी है; वर्ना मुअतज़िला की तरह गुमराह है। अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (2) इन बातों से अगर साबित हुआ तो सिर्फ इतना कि ज़ैद फ़ुरूई तौर पर हनफ़ी है, और इतनी बात उसके पीछे नमाज़ की सेहत (वैधता) के लिए काफी नहीं है। पहले मुअतज़िला थे, अब ऐसे निश्चित रूप से मुर्तद (धर्मत्यागी) फ़िरक़े(सम्प्रदाय) हैं जो खुद को हनफ़ी कहते हैं और फ़ुरू में हनफ़ी फ़िक़्ह पर चलने का दावा करते हैं। उनकी हनफ़ियत उन्हें क्या फ़ायदा पहुँचा सकती है? इमामत (नमाज़ का नेतृत्व) के लिए सुन्नी सहीह-उल-अक़ीदा (सही विश्वास वाला), सहीह तहारत (शुद्धता), सहीह क़िरात (कुरान पाठ) और सेहत व हिल्लत की तमाम शर्तों को पूरा करने वाला होना चाहिए। अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (3) यह सम्मानित उलेमा के नज़दीक मुस्तहसन (सराहनीय) है। अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (4) मिलाद-ए-मुबारक की महफ़िल और क़याम चारों मज़हबों के उलेमा और आम मुसलमान करते हैं; यह केवल हनफ़ियों के लिए विशेष नहीं है। कुछ वहाबी भी तक़िय्या (दिखावे) के तौर पर इन पर अमल करते हैं जैसा कि कई बार देखा गया है। अगर कोई बिना किसी स्वार्थ के, खुले दिल से तक़वियतुल ईमान को गुमराही और भटकाव, और देवबंदियत को कुफ़्र (अविश्वास) और इरतदाद (धर्मत्याग) साफ़ तौर पर मान ले, तो उसे वहाबी नहीं कहा जाएगा। दिल का हाल तो सिर्फ आलिम-उल-ग़ैब (अल्लाह) ही जानता है। अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (5) इस्माईल देहलवी और तक़वियतुल ईमान को मानने वाला या उसके अनुसार अक़ीदा (विश्वास) रखने वाला, चाहे वह ज़बान से उसे मानना न कहे, वहाबी है। यही उसकी पहचान के लिए काफ़ी है। फिर अगर वह फ़िक़्ह पर चलने का दावा करे तो मुक़ल्लिद वहाबी है, और अगर उसके साथ फ़िक़्ह को भी न माने तो गैर मुक़ल्लिद वहाबी है। अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 175: शफ़ाखाना फ़रीदपुर, डाकखाना ख़ास, स्टेशन पतनबरपुर, ज़िला बरेली से अज़ीमुल्लाह कंपाउंडर द्वारा पूछा गया, 8 रमज़ान 1339 हिजरी।

क्या औलिया-ए-कराम वफ़ात (मृत्यु) के बाद जीवित रहते हैं या नहीं, जैसा कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) 'हयात-उन-नबी' हैं? और क्या औलिया-ए-कराम के मज़ार पर जानकर उनके वसीले (मध्यस्थता) से इल्तिजा (प्रार्थना) करना और उनसे दुआ कराना जायज़ है या नहीं? बयान फ़रमाएं, अज्र दिए जाओगे। (त)

पेज 545 का 750

(۴) زید محفلِ میلاد شریف میں شریک ہوتا ہے اور قیام کو مستحب کہتا ہے اور خود کرتا ہے اس کو حنفی کہیں گے یا وہابی؟ (۵) وہابی یا غیر مقلد کس کو کہتے ہیں؟ اور اس کی پہچان کیا ہے بینوا توجروا (بیان فرمائیے اجر دیئے جاؤ گے۔ ت)

الجواب: (۱) علماء کی اصطلاح میں حنفی وہ کہ فروع میں مذہب حنفی کا پیرو ہو، پھر اگر اصول میں بھی حق کا متبع ہے تو سنی حنفی ہے ورنہ گمراہ جیسے معتزلہ ،واللہ تعالٰی اعلم۔ (۲) ان باتوں سے اگر ثابت ہوا تو اتنا کہ زید فروعاً حنفی ہے اور اس قدر سے اس کے پیچھے صحتِ نماز لازم نہیں ، پہلے تو معتزلہ تھے اب قطعی مرتد فرقے ایسے ہیں کہ اپنے آپ کو حنفی کہتے اور فروع میں فقہ حنفی پر چلنے کا دعوٰی رکھتے ہیں اُن کی حنفیت انہیں کیا مفید ہو سکتی ہے، امامت کے لیے سنی صحیح العقیدہ صحیح الطہارۃ صحیح القراءۃ جامع شرائط صحت وحلت ہونا چاہیے، واللہ تعالٰی اعلم۔ (۳) مستحسن علمائے کرام ہے واللہ تعالٰی اعلم۔ (۴) مجلسِ میلاد مبارک و قیام چاروں مذہب کے علماء و عام اہل اسلام کرتے ہیں یہ کچھ حنفیہ سے خاص نہیں اور بعض وہابیہ بھی براہِ تقیہ ان کے عامل ہوتے ہیں جیسا کہ بار ہا کا مشاہدہ ہے تقویۃ الایمان کو گمراہی و ضلالت اور دیوبندیت کو کفر وردت صراحۃً بلا غرض بکشادہ پیشانی مانے تو اسے وہابی نہ کہا جائے گا اور قلب کا عالم عالم الغیب کو۔ واللہ تعالٰی اعلم، (۵) اسمعیل دہلوی و تقویۃ الایمان کو ماننے والا یا اس کے مطابق عقائد رکھنے والا اگرچہ زبان سے اس کا ماننا نہ کہے وہابی ہے، اور یہ ہی اس کی پہچان کو بس ہے، پھر اگر فقہ پر چلنے کا ادعا کرے تو مقلد وہابی ہے، اور اگر اس کے ساتھ فقہ کو بھی نہ مانے تو غیر مقلد وہابی ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۱۷۵: از شفا خانہ فرید پور ڈاک خانہ خاص اسٹیشن پتنبر پور ضلع بریلی مسئولہ عظیم اللہ کمپونڈر ۸ رمضان ۱۳۳۹ھ

اولیاء کرام بعد وفات کے حیات رہتے ہیں یا نہیں جیسے کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم حیاۃ النبی ہیں، اور اولیاء کرام کے مزار پر جان کر ان کے توسط سے التجاء کرنا اور ان سے دعا کرانا جائز ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا۔ (بیان فرمائیے اجر دیئے جاؤ گے۔ ت)

Fatawa Razawiyya Volume 29

The Answer: The noble saints (Awliya-e-Kiram) are alive after death, but not in the same manner as the Prophets (peace and blessings be upon them). The life of the Prophets is spiritual, physical, and worldly; they are alive with their bodies exactly as they were in the world. The life of the saints is lesser than theirs but greater than that of the martyrs, regarding whom the Great Qur'an states in two places, "Do not call them dead, they are alive." This life is a spiritual and physical life of Barzakh (the interval between death and resurrection). The life of the soul is attained by everyone, as the soul does not perish after death; a detailed explanation of this is in our book "Hayat al-Mawat". Seeking intercession (Tawassul) from the noble saints and requesting their prayers is undoubtedly commendable and is customary and established among scholars and the righteous. And Allah Almighty knows best.

Issue 158: From Bengal, Post Office Talshar, same village, petitioner Abdul Samad, 22 Ramadan 1339 AH. What do the scholars of religion say regarding whether on the Day of Judgment all Muslims will rise from their graves with their shrouds or naked? Explain and be rewarded. (T)

The Answer: They will rise in shrouds, then those shrouds will decay and fall away due to the length of time. And Allah Almighty knows best.

Issue 159 & 160: From Nagal Lakri, District Gujargano, Post Dhenia State, petitioner Hafiz Ghulam Kibria, 3 Ramadan 1339 AH. What do the scholars of religion say that: (1) How is it to call upon the saints of Allah from afar in difficulty? Do the saints of Allah hear sometimes from afar or all the time? (2) If someone calls "O Messenger of Allah" and holds the belief that you hear by yourself, some say this belief is not correct. Explain and be rewarded.

The Answer: Shah Abdul Aziz Sahib states: "For the soul, spatial proximity and distance are the same." That is, for the soul, spatial nearness and distance are equal. (T)

फ़तावा रज़विया खंड 29

उत्तर: औलिया-ए-किराम वफ़ात के बाद जीवित हैं, लेकिन नबियों (अलैहिमुस सलातु वसलाम) की तरह नहीं। नबियों का जीवन रूहानी, जिस्मानी और दुनियावी है, वे उसी तरह अपने शरीर के साथ जीवित हैं जैसे दुनिया में थे। और औलिया का जीवन उनसे कम और शहीदों से अधिक है, जिनके बारे में महान कुरान में दो जगहों पर फ़रमाया गया है कि उन्हें मुर्दा मत कहो, वे जीवित हैं। यह जीवन रूहानी और जिस्मानी बरज़खी जीवन है। रूह का जीवन सभी को प्राप्त है कि मृत्यु के बाद रूह नष्ट नहीं होती, इसका विस्तृत विवरण हमारी पुस्तक 'हयातुल मवात' में है। औलिया-ए-किराम से तवसुल (वसीला पकड़ना) और उनसे दुआ मांगना निस्संदेह सराहनीय है और विद्वानों और नेक लोगों में यह प्रचलित और मान्य है। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसला 158: बंगाल से, डाकखाना तालशर, उसी गाँव के निवासी अब्दुल समद द्वारा प्रेषित, 22 रमज़ान 1339 हिजरी। धर्मशास्त्री इस बारे में क्या कहते हैं कि हश्र के दिन सभी मुसलमान अपनी कब्रों से कफन पहनकर उठेंगे या नग्न? उत्तर दें, पुण्य पायें। (त)

उत्तर: वे कफन में उठेंगे, फिर समय बीतने के कारण वे कफन गलकर गिर जाएंगे। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसला 159 और 160: नागल लकड़ी, जिला गोजरगानोह, पोस्ट ढेनिया राज्य, प्रेषित हाफिज़ गुलाम किबरिया, 3 रमज़ान 1339 हिजरी। धर्मशास्त्री इस बारे में क्या कहते हैं कि: (1) अल्लाह के औलिया को मुसीबत में दूर से पुकारना कैसा है? क्या अल्लाह के औलिया दूर से कुछ समय सुनते हैं या हर समय सुनते हैं? (2) अगर कोई 'या रसूलुल्लाह' कहकर पुकारे और यह विश्वास रखे कि आप स्वयं सुनते हैं, कुछ लोग कहते हैं कि यह विश्वास सही नहीं है। उत्तर दें, पुण्य पायें।

उत्तर: शाह अब्दुल अज़ीज़ साहब फरमाते हैं: "आत्मा के लिए स्थान की निकटता और दूरी समान है।" यानी रूह के लिए स्थान का पास होना या दूर होना बराबर है। (त)

पृष्ठ 546 में से 750

الجواب: اولیاءِ کرام بعدِ وفات زندہ ہیں مگر نہ مثلِ حضراتِ انبیاء علیہم الصلوٰۃ والسلام انبیاء کی حیات روحانی جسمانی دنیاوی ہے بعینہ اسی طرح جسم کے ساتھ زندہ ہوتے ہیں جس طرح دنیا میں تھے اور اولیاء کی حیات اُن سے کم اور شہداء سے زائد، جن کے لیے قرآنِ عظیم میں دو جگہ ارشاد ہوا کہ ان کو مردہ نہ کہو وہ زندہ ہیں۔ یہ حیات حیاتِ روحانی و جسمانی برزخی ہے۔ حیاتِ روح سب کو حاصل ہے کہ رُوح بعد موت فنا نہیں ہوتی ، اس کا مفصل بیان ہماری کتاب حیاۃ الموات میں ہے۔ اولیاءِ کرام سے توسل اور اُن سے طلبِ دُعا بلا شبہ محمود ہے اور علماء و صلحاء میں معمول و معہود واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۱۵۸: از بنگالہ ڈاکخانہ تالشر موضع ایضاً مسئولہ عبدالصمد ۲۲ رمضان ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں، علمائے دین کہ حشر کے دن سب مسلمان قبر سے کفن لے کر اٹھیں گے یا برہنہ ؟ بینوا توجروا (بیان فرمایئے اجر دیئے جاؤ گے۔ت)

الجواب: کفن میں اٹھیں گے پھر وہ کفن طولِ مدت کی وجہ سے گل کر گر جائیں گے۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۱۵۹ و ۱۶۰: از ناگل لکڑی ضلع گوجرگانوہ پوسٹ ڈھینایاست مسئولہ حافظ غلام کبریا ۳ رمضان ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین کہ: (۱) اولیاء اللہ کو دُور سے مشکل کے واسطے پکارنا کیسا ہے؟ اولیاء اللہ دور سے بعض وقت سُنتی ہیں یا سب وقت سُنتے ہیں؟ (۲) اگر کوئی یار رسول اللہ پکارے اور یہ اعتقاد رکھے کہ آپ بذات خود سنتے ہیں، بعض کہتے ہیں کہ یہ اعتقاد ٹھیک نہیں۔ بینوا توجروا۔

الجواب: شاہ عبدالعزیز صاحب فرماتے ہیں: روح را قرب و بُعد مکانی یکسانی ست ۱- روح کے مکانی قُرب و بُعد برابر ہیں (ت)

Fatawa Razawiyyah Volume 29

So they can hear all the time, but the focus towards the heavenly realm (Mala-e-A'la) and absorption in it can prevent most from hearing at all times, except for the elders whom Shah Abdul Aziz has written about in Tafsir Azizi.

[Persian Text]: Their absorption, due to the perfect vastness of their perceptions, does not prevent them from paying attention to this direction, and those in need seek solutions to their problems from them and find them. (1) [Urdu Translation]: Due to the perfect vastness of their perception, their absorption does not prevent them from turning in this direction, and those in need and seeking solutions to their problems ask them and find them. (T)

They hear at all times and grant requests because, by the permission of Allah Almighty, they are manifestations of the name "Qadi al-Hajat" (Fulfiller of Needs). (2) If someone says "by themselves" with the meaning that they hear by their own innate power without the gift of God, then this is undoubtedly false, rather it is disbelief, and this is never the thought of any Muslim. And if "by themselves" means that by the gift of God, the Prophet's power of hearing encompasses the entire East and West, and he himself hears everyone's petitions and voices—even though the etiquettes of the Royal Court are before every atom of theirs and every sound of the earth and sky is in their blessed ears. It is written in Shah Waliullah's Fuyuz al-Haramayn:

[Arabic Text]: One state does not distract him from another. (2) [Urdu Translation]: One of his states does not make him heedless of another state. (T)

And Allah Almighty knows best.

Problem 161: From Delhi, Bazar Chitli Qabar, Chhatta Mom Garan, asked by Muhammad Sahib Dad Khan, 6 Shawwal 1339 AH.

What do the scholars of religion say regarding this matter: that the Qadianis claim Prophet Isa (peace and blessings be upon him) did not ascend to heaven alive but died his own death, and that ascending to heaven alive is proven neither by the Quran nor by the Hadith? They argue this because they claim it diminishes the pure dignity of the Beloved Prophet Muhammad Mustafa (peace and blessings be upon him and his family), that he, being the most superior and exalted in both worlds, passed away and remains beneath the earth, while Prophet Isa...

1. Fath al-Aziz (Tafsir Azizi), Para 'Amma, Surah al-Inshiqaq, Muslim Book Depot, Lal Kuan, Delhi, p. 206.
2. Fuyuz al-Haramayn, Mashhad al-Akhira, meaning in the description of subtleties and their effects, Muhammad Saeed & Sons, Quran Mahal, Karachi, pp. 71, 72.

फतावा रजविया जिल्द 29

तो वे सब समय सुन सकते हैं, लेकिन उच्च लोक (मला-ए-आला) की ओर ध्यान और उसमें तल्लीनता अधिकांश को हर समय सुनने से रोक सकती है, सिवाय उन बड़ों के जिनके बारे में शाह अब्दुल अजीज साहब ने तफ़सीर अजीजी में लिखा है।

[फ़ारसी पाठ]: उनकी समझ की पूर्ण व्यापकता के कारण, उनका तल्लीन होना उन्हें इस दिशा में मुड़ने से नहीं रोकता, और ज़रूरतमंद लोग अपनी समस्याओं का समाधान उनसे माँगते हैं और पाते हैं। (1) [उर्दू अनुवाद]: पूर्ण समझ की व्यापकता के कारण उनका तल्लीन होना इस ओर ध्यान देने से बाधक नहीं होता और ज़रूरतमंद लोग अपनी समस्याओं का समाधान उनसे माँगते हैं और पाते हैं। (त)

वे हर समय सुनते हैं और आवश्यकताएं पूरी करते हैं क्योंकि अल्लाह तआला की अनुमति से वे 'काज़ी अल-हाजात' (ज़रूरतें पूरी करने वाले) नाम के प्रतिबिंब हैं। (2) अगर कोई 'स्वयं से' कहे और इसका अर्थ यह हो कि वे ईश्वरीय उपहार के बिना अपनी व्यक्तिगत शक्ति से सुनते हैं, तो यह निस्संदेह गलत है, बल्कि कुफ्र (अविश्वास) है, और यह किसी भी मुसलमान का विचार कभी नहीं हो सकता। और अगर 'स्वयं से' का अर्थ यह हो कि ईश्वरीय उपहार से हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की सुनने की शक्ति पूरे पूर्व और पश्चिम को घेरे हुए है, वे सबकी प्रार्थनाएं और आवाज़ें खुद सुनते हैं—यद्यपि शाही दरबार के शिष्टाचार उनके हर परमाणु के सामने हैं और धरती और आकाश की हर आवाज़ उनके पवित्र कानों में है। शाह वलीउल्लाह की फ़ियूज़ अल-हरमैन में है:

[अरबी पाठ]: एक अवस्था उसे दूसरी अवस्था से बेखबर नहीं करती। (2) [उर्दू अनुवाद]: उसकी एक स्थिति उसे दूसरी स्थिति से गाफिल (अचेत) नहीं करती। (त)

और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 161: दिल्ली, बाज़ार चितली क़ब्र, छत्ता मोम गरां से, मोहम्मद साहब दाद खां द्वारा पूछा गया, 6 शव्वाल 1339 हिजरी।

धर्म के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं कि कादियानी कहते हैं कि हज़रत ईसा (अलैहिस्सलाम) जीवित स्वर्ग नहीं गए बल्कि अपनी मृत्यु मरे, जीवित स्वर्ग जाना न तो कुरान से सिद्ध है और न ही हदीस शरीफ से, क्योंकि इसमें हज़रत रसूल-ए-मकबूल मोहम्मद मुस्तफा (सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम) की पवित्र शान घटती है कि हुज़ूर दोनों जहानों में सबसे श्रेष्ठ और उच्च होकर वफ़ात पा गए और ज़मीन के नीचे रहे और हज़रत ईसा...

---

1. फतह अल-अजीज (तफसीर अजीजी), पारा अम्मा, सूरह अल-इनशिकाक, मुस्लिम बुक डिपो, लाल कुआं, दिल्ली, पृ. 206।
2. फियूज़ अल-हरमैन, मशहद अल-आखिरा, यानी सूक्ष्मताओं और उनके प्रभावों के वर्णन में, मोहम्मद सईद एंड संस, कुरान महल, कराची, पृ. 71, 72।

تو وہ سب وقت سن سکتے ہیں مگر ملاءِ اعلٰی کی طرف توجہ اور اس میں استغراق اکثر کو ہر وقت سننے سے مانع ہو سکتا ہے مگر اکابر جن کو شاہ عبدالعزیز صاحب نے تفسیر عزیزی میں لکھا۔

[فارسی عبارت]: استغراق آنہا بجہت کمال وسعت مدارک آنہا مانع توجہ بایں سمت نمی گردد و ارباب حاجات و مطالب حل مشکلات خود را از انہا می طلبند و می یابند ۱۔ [اردو ترجمہ]: کامل وسعت مدارک کی وجہ سے ان کا استغراق اس طرف متوجہ ہونے سے مانع نہیں ہوتا اور غرض مند محتاج لوگ اپنی مشکلات کا حل ان سے طلب کرتے اور پاتے ہیں۔ (ت)

یہ ہر وقت سنتے اور حاجت روائی فرماتے ہیں کہ باذنہ تعالٰی اسم قاضی الحاجات کے مظہر ہیں۔ (۲) بذات خود کہے اگر یہ معنی کہ بے عطائے الٰہی خود اپنی ذاتی قدرت سے سنتے ہیں تو یہ بے شک باطل بلکہ کفر ہے اور یہ ہرگز کسی مسلمان کا خیال بھی نہیں۔ اور اگر بذات خود کہے یہ معنی کہ بعطائے الٰہی حضور کی قوت سامعہ تمام شرق و غرب کو محیط ہے سب کی عرضیں آوازیں خود سنتے ہیں اگرچہ آداب دربار شاہی ہر ذرہ اُن کے پیش نظر ہے اور ارض و سما کی ہر آواز ان کے گوش مبارک میں ہے۔ شاہ ولی اللہ کی فیوض الحرمین میں ہے:

[عربی عبارت]: لایشغلہ شأن عن شأن ۲۔ [اردو ترجمہ]: اس کی ایک حالت اس کو دوسری حالت سے غافل نہیں کرتی۔ (ت)

وھو تعالٰی اعلم

مسئلہ ۱۶۱: از دہلی بازار چتلی قبر چھتا موم گراں مسئولہ محمد صاحب داد خاں ۶ شوال ۱۳۳۹ھ

کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ قادیانی کہتے ہیں حضرت عیسیٰ علیہ الصلوٰۃ والسلام زندہ آسمان پر نہیں گئے بلکہ اپنی موت مرے، زندہ آسمان پر جانا نہ قرآن سے ثابت ہے نہ حدیث شریف سے، کیونکہ اس میں حضرت رسول مقبول محمد مصطفیٰ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کی شانِ پاک گھٹتی ہے کہ حضور دونوں عالم سے افضل و اعلیٰ ہو کر وفات پائیں اور زمین کے نیچے رہیں اور حضرت عیسیٰ

---

۱ فتح العزیز (تفسیر عزیزی) پارہ عم سورۃ الانشقاق مسلم بکڈپو لال کنواں دہلی ص ۲۰۶ ۲ فیوض الحرمین مشہد آخرایعنی دقائق اور ان کے اثرات کے بیان میں محمد سعید اینڈ سنز قرآن محل کراچی ص ۷۱، ۷۲

Fatawa Razawiyya Volume 29

Question: They go to the sky, this is not possible; what is the answer to this nonsense? Explain and be rewarded.

The Answer: It is a deception of the Qadiani tricksters that they hide the explicit blasphemy of Mirza and the vile insults he hurled at the Prophets (peace be upon them), especially our master Jesus (peace be upon him), and instead debate the issue of the life and death of our master Jesus (peace be upon him), upon which faith or disbelief in Islam does not depend. The consensus of the noble Imams is that our master Jesus (peace be upon him) has not yet passed away. He will descend near the Day of Judgment, slay the Dajjal, live for several years, and then pass away. There is a vacant spot for a grave in the sacred shrine of the Master of the Worlds (peace and blessings of Allah be upon him and his progeny), where he will be buried. His ignorant and foolish notion is refuted right here. If merely being in the sky was a cause of excellence, then one would have to consider angels superior. Allah the Almighty said: "And how many angels there are in the heavens"[1] - there are many angels in the heavens. He himself says the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him and his progeny) is superior to both worlds; will he not consider him superior to the angels? Or will he think, God forbid, that the Holy Prophet's status is diminished because he remains on earth after passing away while angels are in the sky? Even if not angels, the moon, sun, and stars are in the sky; is it superior to them? Especially the site of the sacred burial chamber, which is higher and more superior than the Great Throne. The blind have only seen up and down in terms of direction and did not realize that the heart is the king of all organs and the most superior, even though many organs are above it. And Allah knows best.

Issue 162: What do the scholars of religion say on this matter: when did the Milad Sharif start and who started it? Was it present in the time of our Imam-e-Azam (may Allah be pleased with him) or not? Did our Imam perform it or not? Was it in the time of the Companions or not? Did anyone hold a gathering or not? Explain and be rewarded.

The Answer: The description of Milad Sharif was originated by the Holy Quran, and it commanded it in numerous verses, card...

---

[1] Al-Quran Al-Karim 26/53 Page 548 of 750

फ़तावा रज़विया खंड २९

प्रश्न: आसमान पर चले जाएँ यह मुमकिन नहीं, इस बकवास का क्या जवाब है? बयान करें और पुण्य पायें।

उत्तर: यह क़ादियानी मकारों का छल है कि वे मिर्ज़ा के स्पष्ट कुफ़्र और नबियों (अलैहिमुस्सलाम), विशेष रूप से हमारे आका हज़रत ईसा (अलैहिस्सलाम), को दी गई उसकी गंदी गालियों को छुपाते हैं और हज़रत ईसा (अलैहिस्सलाम) की हयात (जीवन) और मौत के मसले पर बहस करते हैं, जिस पर विश्वास करने या न करने से इस्लाम और कुफ़्र का कोई लेना-देना नहीं है। अधिकांश प्रतिष्ठित इमामों का मत यही है कि हज़रत ईसा (अलैहिस्सलाम) ने अभी वफ़ात नहीं पाई है, वे क़यामत के निकट अवतरित होंगे, दज्जाल का वध करेंगे, कई वर्षों तक जीवित रहकर वफ़ात पाएंगे। हुज़ूर सैयदे आलम (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पाक रोज़े में एक मज़ार की जगह खाली है, वहीं उन्हें दफ़न किया जाएगा। उनका वह जाहिलाना और मूर्खतापूर्ण विचार यहीं ख़ारिज हो गया। और यदि केवल आसमान पर होना ही श्रेष्ठता का कारण होता, तो फिर वह फ़रिश्तों को श्रेष्ठ मानेगा। अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "आसमानों में बहुत से फ़रिश्ते हैं"[1]। ख़ुद हुज़ूर अक़दस (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को दोनों जहानों से अफ़ज़ल (श्रेष्ठ) कह रहा है, तो क्या वह उन्हें फ़रिश्तों से अफ़ज़ल नहीं मानेगा? या क्या वह हुज़ूर के वफ़ात पाकर ज़मीन पर रहने और फ़रिश्तों के आसमान पर होने से, ख़ुदा न करे, उनकी शान में कमी समझेगा? और अगर फ़रिश्ते न भी हों, तो चाँद, सूरज और तारे तो आसमान पर हैं; क्या वे श्रेष्ठ हैं? विशेष रूप से पवित्र मज़ार का स्थान जो अर्श-ए-आज़म से भी ऊँचा और श्रेष्ठ है। अंधों ने केवल दिशा में ऊपर-नीचे देख लिया और यह नहीं जाना कि दिल सभी अंगों का सुल्तान और सबसे श्रेष्ठ है, भले ही कई अंग उसके ऊपर हों। और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है।

मसला १६२: दीनी उलेमा इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि मिलाद शरीफ़ कब से निकला और किसने निकाला? हमारे इमाम-ए-आज़म (रज़ियल्लाहु अन्हु) के ज़माने में था या नहीं? हमारे इमाम साहब ने इसे किया है या नहीं? सहाबा के ज़माने में था या नहीं? किसी ने महफ़िल की थी या नहीं? बयान करें और पुण्य पायें।

उत्तर: मिलाद शरीफ़ का ज़िक्र क़ुरआन मजीद ने निकाला और उसने कई आयतों में इसका हुक्म दिया, कार्ड...

---

[1] अल-क़ुरआन अल-करीम २६/५३ पृष्ठ ५४८ (७५० में से)

آسمان پر چلے جائیں یہ ممکن نہیں، اس خرافات کا کیا جواب ہے؟ بینوا توجروا۔

الجواب: قادیانی مکاروں کا فریب ہے کہ مرزا کے صریح کفر اور انبیاء علیہم الصلوٰۃ والسلام خصوصاً سیدنا عیسیٰ علیہ الصلوٰۃ والسلام کو جو اس نے سڑی سڑی گالیاں دی ہیں چھپاتے اور مسئلہ حیات و موتِ سیدنا عیسیٰ علیہ الصلوٰۃ والسلام میں بحث کرتے ہیں جس کے ماننے نہ ماننے پر کچھ اسلام و کفر کامدار نہیں۔ جمہور ائمہ کرام کا مذہب یہی ہے کہ سیدنا عیسیٰ علیہ الصلوٰۃ والسلام نے ابھی انتقال نہ فرمایا، قریب قیامت نزول فرمائیں گے، دجال کو قتل کریں گے، برسوں رہ کر انتقال فرمائیں گے، روضہ پاک حضور سید عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم میں ایک مزار کی جگہ خالی ہے وہاں دفن ہوں گے۔ اُس کا وہ جاہلانہ احمقانہ خیال تو یہیں سے دفع ہو گیا۔ او فقط آسمان پر ہونا اگر موجبِ فضل ہو تو فرشتوں کو تو آسمان پر مانے گا۔ قال تعالیٰ "وَكَم مِّن مَّلَكٍ فِي السَّمَاوَاتِ"[1] آسمانوں میں بہتیرے فرشتے ہیں۔ خود حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کو دونوں عالم سے افضل کہہ رہا ہے کیا ملائکہ سے افضل نہ مانے گا یا حضور کے وفات پا کر زمین پر رہنے اور ملائکہ کے آسمان پر ہونے سے معاذ اللہ شان اقدس کا گھٹنا جانے گا، اور فرشتے بھی نہ سہی چاند سورج ستارے تو آسمان پر سے افضل ہے خصوصاً محلِ تربت اقدس کہ عرشِ اعظم سے بھی اعلیٰ وافضل ہے اندھوں نے جہت میں اوپر نیچے دیکھ لیا اور یہ نہ جانا کہ دل تمام اعضاء کا سلطان اور سب سے افضل ہے اگر چہ بہت اعضاء اس سے اوپر ہیں۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۱۶۲: کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ میلاد شریف کب سے نکلا اور کس نے نکالا؟ اپنے امام اعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے زمانے میں تھا یا نہیں؟ اپنے امام صاحب نے اس کو کیا ہے یا نہیں؟ صحابہ کے زمانے میں تھا یا نہیں؟ کسی نے محفل کی تھی یا نہیں؟ بینوا توجروا۔

الجواب: بیان میلاد شریف قرآن مجید نے نکالا اور اس نے متعدد آیتوں میں اس کا حکم دیا، کارڈ...

---

[1] القرآن الکریم ۲۶/۵۳ Page 548 of 750

Fatawa Rizvia, Volume 29

...verses could not be written. The purpose is what matters; something does not become new just because its name is new. What is intended from it was performed by the Holy Prophet himself (may the best of blessings and peace be upon him). It is mentioned in Sahih Bukhari that the Holy Prophet (may the best of blessings and peace be upon him) himself used to lay out a pulpit for Hazrat Hassan bin Thabit Ansari (may Allah be pleased with him) in the Mosque of Madinah, and he would stand on it and recite praise (Na'at) of the Prophet. The Holy Prophet and his companions would listen. And Allah Almighty knows best.

Problem 163: From District Hoshangabad, Post Office and Station 51, Musari. Questioner: Daulat-ud-Din, 12 Shawwal 1339 AH. What do the scholars of the religion say about this matter: that some scholars and clerics object that performing the wazifa (spiritual litany) of "Ya Sheikh Abdul Qadir Jilani Shai'an Lillah" is impermissible. Please kindly write a summary of this issue. State the ruling and be rewarded.

The Answer: This blessed wazifa is undoubtedly permissible. In Fatawa al-Khayriyya by Allama Khayr al-Din al-Ramli, the teacher of the author of Durr al-Mukhtar, it is stated:

Arabic/Urdu Text in Box: "As for their saying 'Ya Sheikh Abdul Qadir', it is a calling (nida). So, what is the cause for its prohibition?" (T)

Those who call it impermissible here are Wahhabis, and Wahhabis are irreligious; listening to them is not permissible. And Allah Almighty knows best.

Footnotes: 1 Jami' at-Tirmidhi, Chapters of Manners, Chapter on what has been narrated that some poetry is wisdom, Amin Company Delhi 2/17, and Ihya 'Ulum al-Din with reference to As-Sahihayn, Book of Manners of Listening and Ecstasy, Matba'ah Mashhad al-Husayni Cairo 2/274. 2 Al-Fatawa al-Khayriyya, Book of Dislike and Excellence, Dar al-Ma'rifah Beirut 2/182.

Page 549 of 750

फ़तावा रज़विया, जिल्द २९

...आयतें नहीं लिखी जा सकीं। गर्ज़ मक़सूद से है, नाम नया होने से चीज़ नई नहीं हो सकती, जो इससे मक़सूद है वह खुद हुज़ूर अकदस अलैहि अफ़ज़ल-उस-सलात व-सलाम ने किया। सहीह बुख़ारी शरीफ़ में है कि खुद हुज़ूर अकदस अलैहि अफ़ज़ल-उस-सलात व-सलाम मस्जिद-ए-मदीना तैयबा में हज़रत हस्सान बिन साबित अंसारी अलैहिर-रिज़वान के लिए मिम्बर बिछाते और वह उस पर खड़े होकर नात-ए-अकदस सुनाते, हुज़ूर और सहाबा किराम सुनते। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला १६३: जिला होशंगाबाद, डाकखाना व स्टेशन ५१ मुसारे, प्रेषक: दौलत-उद-दीन, १२ शव्वाल १३३९ हिजरी। उलेमा-ए-दीन इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि कुछ आलिम और मौलवी एतराज करते हैं कि "या शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी शैअन लिल्लाह" का वज़ीफ़ा करना नाज़ायज़ है, मेहरबानी फ़रमाकर मसले का सारांश लिखें। बयान करें ताकि आप पुण्य के पात्र बनें।

जवाब: यह मुबारक वज़ीफ़ा बेशक जायज़ है। "फ़तावा खैरिया" में अल्लामा खैर-उद-दीन रमली (जो 'दुर्रे मुख्तार' के लेखक के उस्ताद हैं) फ़रमाते हैं:

बॉक्स में अरबी/उर्दू पाठ: "जहाँ तक उनके'या शैख़ अब्दुल क़ादिर' कहने का सवाल है, तो यह एक पुकार (निदा) है। तो फिर इसकी हुरमत (निषेध) का कारण क्या है?" (त)

यहाँ इसे नाज़ायज़ कहने वाले वहाबी हैं और वहाबी बेदीन हैं, उनकी बात सुनना जायज़ नहीं। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

पादटिप्पणियाँ (Footnotes): १ जामिअ तिर्मिज़ी, अबवाबुल अदब, बाब मा जाआ अन्ना मिनश शे'री हिक्मतुन, अमीन कंपनी दिल्ली २/१७, और इहयाउल उलूम बहवाला अस्सहीहैन, किताबुल आदाब समाअ वल वजद, मतबा मशहद अल हुसैनी क़ाशिरा २/२७४। २ अल-फ़तावा अल-खैरिया, किताबुल कराहिय्यत वल एहसान, दारुल मारिफ़ा बेरुत २/१८२।

पृष्ठ ७५० में से ५४९

میں آیتیں نہیں لکھی جاسکیں غرض مقصود سے ہے، نام نیا ہونے سے شئی نئی نہیں ہو سکتی، جو اس سے مقصود ہے وہ خود حضور اقدس علیہ افضل الصلوۃ والسلام نے کیا۔ صحیح بخاری شریف میں ہے خود حضور اقدس علیہ افضل الصلوۃ والسلام مسجد مدینہ طیبہ میں حضرت حسان بن ثابت انصاری علیہ الرضوان کے لیے منبر بچھاتے اور وہ اس پر قیام کر کے نعت اقدس سُناتی، حضور اور صحابہ کرام سنتے، وھو تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۱۶۳: از ضلع ہوشنگ آباد مقام و ڈاکخانہ واٹیشن ۵۱ ر موسارے مسئولہ دولت الدین ۱۲ شوال ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ بعض عالم و مولوی اعتراض کرتے ہیں کہ یا شیخ عبدالقادر جیلانی شیئا للہ کا وظیفہ کرنا ناجائز ہے، مہربانی فرما کر خلاصہ مسئلہ تحریر فرمائیں۔ بینوا توجروا۔

الجواب: یہ مبارک وظیفہ بے شک جائز ہے۔ فتاوٰی خیریہ علامہ خیر الدین رملی استاذ صاحبِ در مختار میں ہے:

جدول کے اندر عبارت: اما قولھم یا شیخ عبد القادر فنداء فما الموجب لحرمتہ[2]۔ | ان کا یا شیخ عبدالقادر کہنا نداء ہے تو اس کی حرمت کا موجب کیا ہے۔ (ت)

یہاں اس کو ناجائز کہنے والے وہابی ہیں اور وہابیہ بے دین ہیں ان کی بات سننی جائز نہیں۔ وھو تعالٰی اعلم۔

حواشی: 1 جامع الترمذی ابواب الادب باب ماجاء ان من الشعر حکمۃ امین کمپنی دہلی ۲/ ۱۷ ، و احیاء العلوم بحوالہ الصحیحین کتاب آداب السماع والوجد مطبعہ مشہد الحسینی قاہرہ ۲ / ۲۷۴ 2 الفتاویٰ خیریہ کتاب الکراھیۃ والاحسان دار المعرفۃ بیروت ۲ / ۱۸۲

صفحہ ۵۴۹ از ۷۵۰

Fatawa Razawiyya Volume 29

Treatise Anwar al-Intibah fi Hall Nida' Ya Rasul Allah (Luminous warnings regarding the permissibility of saying Ya Rasul Allah)

Question 164: What do the scholars of religion say regarding this matter: Zaid is a monotheist Muslim who recognizes God as God and the Messenger as the Messenger. After prayers and at other times, he addresses the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) with words of calling (nida) and says, "As-salatu was-salamu 'alayka ya Rasul Allah" (Blessings and peace be upon you, O Messenger of Allah) or "As'aluka ash-shafa'ata ya Rasul Allah" (I ask you for intercession, O Messenger of Allah). Is saying this permissible or not? And what is the ruling for those who call him a disbeliever (kafir) or polytheist (mushrik) because of these words? Explain from the Book, and you will be rewarded on the Day of Judgment. (Explain from the book, you will be given a reward on the day of reckoning. T)

Page 550 of 750

फ़तावा रज़विया जिल्द २९

रिसाला (लघुग्रंथ): अनवारुल इन्तिबाह फ़ी हल्ले निदा-ए या रसूलल्लाह (या रसूलल्लाह कहने के जवाज़ (अनुमति) के बारे में नूरानी तन्बीहें)

मसला १६४: क्या फ़रमाते हैं उलमा-ए-दीन इस मसले में कि ज़ैद एक मुवह्हिद (एकेश्वरवादी) मुसलमान है जो ख़ुदा को ख़ुदा और रसूल को रसूल जानता है। नमाज़ के बाद और दीगर औकात में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को कलिमा-ए-निदा (पुकारने के शब्द) के साथ याद करता है और "अस्सलातु वस्सलामू अलैक या रसूलल्लाह" या "अस-अलुकश-शफ़ाअता या रसूलल्लाह" कहा करता है, यह कहना जाइज़ है या नहीं? और जो लोग उसे इस कलिमे की वजह से काफ़िर व मुशरिक कहें उनका क्या हुक्म है? बय्यिनू बिल किताब तूजरू यौमल हिसाब (किताब से बयान फ़रमाइए, रोज़-ए-हिसाब अज्र (पुण्य) दिए जाओगे। त)

पृष्ठ ५५० (७५० में से)

رسالہ انوار الانتباہ فی حل نداء یارسول اللہ (یارسول اللہ کہنے کے جواز کے بارے میں نورانی تنبیہیں)

مسئلہ ۱۶۴: کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید موحد مسلمان جو خدا کو خدا اور رسول کو رسول جانتا ہے۔ نماز کے بعد اور دیگر اوقات میں رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کو بکلمہ یاندا کرتا اور الصلوۃ والسلام علیک یارسول اللہ یا اسئلک الشفاعۃ یارسول اللہ کہا کرتا ہے، یہ کہنا جائز ہے یا نہیں؟ اور جو لوگ اسے اس کلمہ کی وجہ سے کافر و مشرک کہیں ان کا کیا حکم ہے؟ بینوا بالکتاب توجروا یوم الحساب (کتاب سے بیان فرمائیے روزِ حساب اجر دیئے جاؤگے۔ ت)

Fatawa Rizwiya Volume 29

The Answer: In the name of Allah, the Most Gracious, the Most Merciful. Praise be to Allah, and peace and blessings be upon His chosen Beloved, and his family and companions, the people of truth and purity.

The mentioned words are undoubtedly permissible. No one would object to their permissibility except a foolish ignorant person or a misguided misleader. Whoever wishes to see a bit of detail regarding this issue should refer to *Shifa al-Saqam* by the great Imam, the remnant of the noble Mujtahideen, Taqiyuddin; the works of Allama Zarqani; *Matali' al-Masarrat* by Allama Fasi; *Mirqat Sharh Mishkat* by Allama Ali Qari; *Lama'at* and *Ashia'at al-Lama'at* (commentaries on Mishkat); *Jadhb al-Qulub ila Diyar al-Mahbub* and *Madarij al-Nubuwwah* by Sheikh Abdul Haq Muhaddith Dehlawi; *Afzal al-Qura Sharh Umm al-Qura* by Imam Ibn Hajar Makki, and other books and words of the noble scholars and great excellencies (may Allah have mercy on them). Or they may study the humble servant's treatise *Al-Ihlal bi-Fayd al-Awliya ba'd al-Wisal*.

Here, the humble servant writes a few brief words as per necessity. A Sahih Hadith, adorned with the precious jewels of authentication, narrated by Imam Nasa'i, Imam Tirmidhi, Ibn Majah, Hakim, Bayhaqi, Imam al-A'immah Ibn Khuzaymah, and Imam Abul Qasim Tabarani from Hazrat Uthman bin Hunaif (may Allah be pleased with him). Tirmidhi called it "Hasan Gharib Sahih," while Tabarani and Bayhaqi classified it as Sahih, and Hakim stated it meets the criteria of Bukhari and Muslim. In this Hadith, the Holy Prophet, Master of the World (peace and blessings of Allah be upon him), taught a blind man a prayer to say after the prayer as follows:

Arabic Supplication	**Urdu Translation**
O Allah! I ask You and turn towards You through Your Prophet Muhammad, the Prophet of Mercy. O Muhammad! I turn through you to my Lord regarding this need of mine so that it may be fulfilled for me. O Allah! Accept his intercession on my behalf.[1]	O Allah! I ask You and turn towards You by the means of Your Prophet Muhammad (peace and blessings of Allah be upon him), who is the Prophet of Kindness. O Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him)! I turn towards my Lord through your means regarding this need so that my need is fulfilled. O my Lord! Accept his intercession in my favor.

[1] Jami' al-Tirmidhi, Book of Supplications, Chapter on Waiting for Relief etc., Amin Company Delhi 2/197; Sunan Ibn Majah, Chapter on Prayer for Need, HM Saeed

Company Karachi p. 100; Al-Mustadrak al-Hakim, Book of Supplication, Maktaba Islamia Beirut 1/519; and Sahih Ibn Khuzaymah, Chapter on Encouraging Prayer 2/226.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 29

जवाब: बिस्मिल्लाह हिर्रहमान निर्रहीम। अल्हम्दुलिल्लाह व कफ़ा वस्सलातु वस्सलामु अला हबीबिहिल मुस्तफ़ा व आलिही व असहाबिही उली अस्सिदक़ वस्सफ़ा।

उल्लिखित शब्द निःसंदेह जायज़ हैं, जिनकी अनुमति में कोई भी बहस नहीं करेगा सिवाय किसी मूर्ख अज्ञानी या पथभ्रष्ट गुमराह करने वाले के। जिसे इस मसले के बारे में थोड़ी विस्तार से जानकारी चाहिए हो, उसे इमाम अल्लाम, नेक मुजतहिदीन के अवशेष तक़ियुद्दीन की 'शिफ़ा अस्सक़ाम'; अल्लामा ज़रक़ानी और अल्लामा फ़ासी की 'मत़ालिअ अल-मसर्रात'; अल्लामा अली क़ारी की 'मिरक़ात शरह मिश्कात'; मिश्कात की शरह 'लमात' और 'अशिआत अल-लमात'; शेख अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी की 'जज़्ब अल-क़ुलूब इला दियार अल-महबूब' और 'मदारिज अन-नुबुव्वह'; इमाम इब्न हजर मक्की की 'अफ़ज़ल अल-क़ुरा शरह उम्म अल-क़ुरा' और अन्य महान विद्वानों की किताबों और बातों की ओर रुजू करना चाहिए, या इस फ़क़ीर (विनम्र सेवक) का रिसाला (लेख) 'अल-इहलाल बि-फ़ैज़ अल-औलिया बाद अल-विसाल' का अध्ययन करना चाहिए।

यहाँ फ़क़ीर ज़रूरत के मुताबिक़ कुछ संक्षिप्त शब्द लिखता है। एक सही हदीस, जो प्रमाणीकरण के कीमती ज़ेवरों से सजी है, जिसे इमाम नसाई, इमाम तिर्मिज़ी, इब्न माजा, हाकिम, बैहक़ी, इमामुल अइम्मा इब्न खुज़ैमा और इमाम अबुल क़ासिम तबरानी ने हज़रत उस्मान बिन हुनैफ़ (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) से रिवायत किया है। तिर्मिज़ी ने इसे 'हसन ग़रीब सही' कहा, और तबरानी और बैहक़ी ने 'सही' और हाकिम ने बुखारी और मुस्लिम की शर्त पर सही बताया, जिसमें हुज़ूर अक़दस सैयदे आलम (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) ने एक नेत्रहीन को दुआ सिखाई कि नमाज़ के बाद इस प्रकार कहे:

अरबी दुआ	**उर्दू अनुवाद**
ऐ अल्लाह! मैं तुझसे मांगता हूँ और तेरी तरफ़ तवज्जो करता हूँ तेरे नबी मुहम्मद, जो रहमत के नबी हैं, के ज़रिये। ऐ मुहम्मद! मैं आपके ज़रिये अपने रब की तरफ़ अपनी इस ज़रूरत में तवज्जो करता हूँ ताकि मेरी ज़रूरत पूरी	ऐ अल्लाह! मैं तुझसे मांगता हूँ और तेरी तरफ़ तवज्जो करता हूँ तेरे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के वसीले (माध्यम) से कि वे मेहरबानी के नबी हैं। या रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम! मैं हुज़ूर के वसीले से अपने रब की तरफ़ इस ज़रूरत में तवज्जो करता हूँ कि मेरी ज़रूरत पूरी

अरबी दुआ	उर्दू अनुवाद
हो। ऐ अल्लाह! मेरे हक़ में उनकी शफ़ाअत (सिफारिश) स्वीकार फरमा।[1]	हो। इलाही! उनके शफ़ाअत मेरे हक़ में कुबूल फरमा।

---

[1] जामिअ तिर्मिज़ी, अबवाब अद-दअवात, बाब फ़ी इंतज़ार अल-फ़रज व ग़ैर ज़ालिक, अमीन कंपनी दिल्ली 2/197; सुनन इब्न माजा, बाब मा जाअ फ़ी सलात अल-हाजह, एचएम सईद कंपनी कराची पृ. 100; अल-मुस्तदरक लिल-हाकिम, किताब अद-दुआ, मकतबा इस्लामिया बेरूत 1/519; और सही इब्न खुज़ैमा, बाब सलात अत-तरग़ीब 2/226।

الجواب: بسم اللہ الرحمن الرحیم ط الحمد للہ وکفٰی والصلوۃ والسلام علی حبیبہ المصطفٰی وآلہ واصحابہ اولی الصدق والصفا۔

کلمات مذکورہ بے شک جائز ہیں جن کے جواز میں کلام نہ کرے گا مگر سفیہ جاہل یا ضال مضل، جسے اس مسئلہ کے متعلق قدرے تفصیل دیکھنی ہو شفاء السقام امام علام بقیۃ المجتہدین الکرام تقی الملۃ والدین علامہ زرقانی و مطالع المسرات علامہ فاسی و مرقاۃ شرح مشکوۃ علامہ علی قاری و لمعات و اشعۃ اللمعات شروح مشکوۃ و جذب القلوب الی دیار المحبوب و مدارج النبوۃ تصانیف شیخ عبدالحق محدث دہلوی وافضل القرٰی شرح ام القرٰی امام ابن حجر مکی و غیر ہا کتب و کلام علمائے کرام وفضلائے عظام علیہم رحمۃ اللہ العلام کی طرف رجوع لائے یا فقیر کا رسالہ الاھلال بفیض الاولیاء بعد الوصال مطالعہ کرے۔

یہاں فقیر بقدرِ ضرورت چند کلمات اجمالی لکھتا ہے، حدیث صحیح مذیل بطراز گرانبہائے تصحیح جسے امام نسائی و امام ترمذی و ابن ماجہ و حاکم و بیہقی و امام الائمہ ابن خزیمہ و امام ابوالقاسم طبرانی نے حضرت عثمان بن حنیف رضی اللہ تعالٰی عنہ سے روایت کیا اور ترمذی نے حسن غریب صحیح اور طبرانی و بیہقی نے صحیح اور حاکم نے بر شرط بخاری و مسلم جس میں حضور اقدس سید عالم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے ایک نابینا کو دعا تعلیم فرمائی کہ بعد نماز یوں کہے:

عربی دعا	اردو ترجمہ
اللھم انی اسئلک واتوجه الیك بنبیك محمدٍ نبی الرحمة یا محمد انی اتوجه بك الی ربی فی حاجتی هذه لتقضی لی اللھم فشفعه فیَّ -1	اے اللہ! میں تجھ سے مانگتا ہوں اور تیری طرف توجہ کرتا ہوں بوسیلہ تیرے نبی محمد صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے کہ مہربانی کے نبی ہیں، یا رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم! میں حضور کے وسیلے سے اپنے رب کی طرف اس حاجت میں توجہ کرتا ہو کہ میری حاجت روا ہو۔ الٰہی ان کے شفاعت میرے حق میں قبول فرما۔

---

1 جامع ترمذی ابواب الدعوات باب فی انتظار الفرج و غیر ذلک امین کمپنی دہلی ۲/ ۱۹۷، سنن ابن ماجہ باب ماجاء فی صلوۃ الحاجۃ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ص ۱۰۰، المستدرک للحاکم کتاب الدعاء مکتبہ اسلامیہ بیروت ۱/ ۵۱۹ و صحیح ابن خزیمہ باب صلوۃ الترغیب ۲/ ۲۲۶

Fatawa Razawiya, Volume 29

In the Mu'jam of Imam Tabarani, it is narrated as follows:

[Arabic Column]: Indeed, a man used to visit Uthman bin Affan (may Allah be pleased with him) regarding a need of his. Uthman would not pay attention to him nor look into his need. So he met Uthman bin Hunaif (may Allah be pleased with him) and complained about this matter to him. Uthman bin Hunaif (may Allah be pleased with him) said to him: "Go to the place of ablution, perform wudu, then go to the mosque and pray two rak'ahs. Then say: 'O Allah, I ask You and turn to You through our Prophet, Muhammad, the Prophet of Mercy. O Muhammad! I turn through your mediation to my Lord so that He may fulfill my need.' And mention your need. Then come to me so that I may go with you." The man went and did as he was told. Then he came to the door of Uthman (may Allah be pleased with him). The gatekeeper came, took him by the hand, and ushered him in to Uthman bin Affan (may Allah be pleased with him). He seated him beside him on the carpet and asked: "What is your need?" He mentioned his need and it was fulfilled for him. Then Uthman said: "You haven't mentioned your need until this hour," and added, "Whatever need you may have, come to us." Then the man left and met Uthman bin Hunaif (may Allah be pleased with him) and said to him: "May Allah reward you with good. He was not looking into my need nor paying attention to me until..."

[Urdu Column]: That is, a needy person used to visit the presence of the Commander of the Faithful, Uthman Ghani (may Allah be pleased with him), for his need. The Commander of the Faithful would neither pay attention to him nor look into his need. He complained about this matter to Uthman bin Hunaif (may Allah be pleased with him). He said, "Perform wudu, pray two rak'ahs of prayer in the mosque, then pray: 'O God, I ask You and turn towards You through the means of Your Prophet Muhammad (may Allah's peace and blessings be upon him). O Messenger of Allah! I turn towards my Lord through your mediation so that He may fulfill my need.' And mention your need, then come to me in the evening so that I may also go with you." The needy man (who was also a companion or at least among the senior Successors) did exactly that. Then he presented himself at the threshold of the Caliphate. The doorkeeper came, took his hand, and led him into the presence of the Commander of the Faithful. The Commander of the Faithful seated him with him on the bolster, asked for his purpose, he presented it, it was immediately fulfilled, and he said: "You have expressed your purpose at this time after so many days," then he said: "Whatever need arises for you, come to us." This gentleman left there, met Uthman

bin Hunaif, and said, "May Allah Almighty give you a good reward; the Commander of the Faithful was not looking at my need nor paying attention to me until..."

फतावा रज़विया, जिल्द 29

इमाम तबरानी की मुअजम में इस प्रकार है:

[अरबी कॉलम]: बेशक, एक व्यक्ति अपनी किसी ज़रूरत के लिए उस्मान बिन अफ़्फ़ान (रज़ियल्लाहु अन्हु) की सेवा में आता-जाता था। उस्मान न तो उसकी ओर ध्यान देते थे और न ही उसकी ज़रूरत पर विचार करते थे। तब वह उस्मान बिन हुनैफ़ (रज़ियल्लाहु अन्हु) से मिला और उनसे इस बात की शिकायत की। उस्मान बिन हुनैफ़ (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने उससे कहा: "वुज़ू की जगह जाओ, वुज़ू करो, फिर मस्जिद जाओ और वहाँ दो रकात नमाज़ पढ़ो। फिर कहो: 'ऐ अल्लाह, मैं तुझसे माँगता हूँ और तेरे नबी मुहम्मद, जो रहमत के नबी हैं, के ज़रिये तेरी ओर रुख करता हूँ। ऐ मुहम्मद! मैं आपके वसीले से अपने रब की ओर मुतवज्जह होता हूँ ताकि वह मेरी ज़रूरत पूरी कर दे।' और अपनी ज़रूरत का ज़िक्र करो। फिर मेरे पास आना ताकि मैं तुम्हारे साथ चलूँ।" वह व्यक्ति गया और वैसा ही किया जैसा उसे बताया गया था। फिर वह उस्मान (रज़ियल्लाहु अन्हु) के दरवाज़े पर आया। दरबान आया और उसका हाथ पकड़कर उस्मान बिन अफ़्फ़ान (रज़ियल्लाहु अन्हु) के पास ले गया। उन्होंने उसे अपने पास गलीचे पर बिठाया और पूछा: "तुम्हारी क्या ज़रूरत है?" उसने अपनी ज़रूरत बताई और वह उसके लिए पूरी कर दी गई। फिर उस्मान ने कहा: "तुमने अब तक अपनी ज़रूरत का ज़िक्र नहीं किया था," और कहा, "तुम्हें जो भी ज़रूरत हो, हमारे पास आया करो।" फिर वह व्यक्ति वहाँ से निकला और उस्मान बिन हुनैफ़ (रज़ियल्लाहु अन्हु) से मिला और उनसे कहा: "अल्लाह आपको इसका अच्छा बदला दे। वह न तो मेरी ज़रूरत पर नज़र डाल रहे थे और न ही मेरी ओर ध्यान दे रहे थे, जब तक कि..."

[उर्दू कॉलम]: यानी एक ज़रूरतमंद व्यक्ति अपनी ज़रूरत के लिए अमीर-उल-मोमिनीन उस्मान ग़नी (रज़ियल्लाहु अन्हु) की सेवा में आता-जाता था। अमीर-उल-मोमिनीन न तो उसकी ओर ध्यान देते थे और न ही उसकी ज़रूरत पर विचार करते थे। उसने उस्मान बिन हुनैफ़ (रज़ियल्लाहु अन्हु) से इस बात की शिकायत की। उन्होंने फ़रमाया: "वुज़ू करके मस्जिद में दो रकात नमाज़ पढ़ो, फिर दुआ माँगो: 'ऐ अल्लाह, मैं तुझसे माँगता हूँ और तेरे नबी मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के वसीले से तेरी ओर रुख करता हूँ। ऐ अल्लाह के रसूल! मैं आपके तवस्सुल से अपने रब की ओर मुतवज्जह होता हूँ ताकि वह मेरी ज़रूरत पूरी फ़रमाए।' और अपनी ज़रूरत का ज़िक्र करो, फिर शाम को मेरे पास आना ताकि मैं भी तुम्हारे साथ चलूँ।" ज़रूरतमंद व्यक्ति ने (जो स्वयं एक सहाबी या कम से कम बड़े ताबेईन में से थे) वैसा ही किया। फिर वे खिलाफत के आस्ताने पर हाज़िर हुए। दरबान आया और

हाथ पकड़कर अमीर-उल-मोमिनीन के सामने ले गया। अमीर-उल-मोमिनीन ने उन्हें अपने पास मसनद पर बिठाया, मतलब पूछा, उन्होंने अर्ज़ किया, और उसे तुरंत पूरा कर दिया गया। फिर फ़रमाया: "इतने दिनों बाद अब आपने अपना मतलब बयान किया," और आगे कहा: "जो भी ज़रूरत पेश आए, हमारे पास आ जाया करो।" वह साहब वहाँ से निकलकर उस्मान बिन हुनैफ़ से मिले और कहा: "अल्लाह तआला आपको इसका बेहतरीन सिला दे। अमीर-उल-मोमिनीन न मेरी ज़रूरत पर गौर करते थे और न ही मेरी तरफ़ ध्यान देते थे, जब तक कि..."

पृष्ठ 750 में से 552

جلد ۲۹

فتاویٰ رضویہ

امام طبرانی کی معجم میں یوں ہے:

[Arabic Column]: ان رجلا کان یختلف الی عثمان بن عفان رضی اللہ تعالی عنه فی حاجة له وکان عثمان لا یلتفت الیه ولا ینظر فی حاجته فلقی عثمان بن حنیف رضی اللہ عنه فشکی ذلك الیه فقال له عثمان بن حنیف رضی اللہ تعالی عنه ائت المیضأة فتوضأ ثم ائت المسجد فصل فیه رکعتین ثم قل اللھم انی اسئلك و اتوجه الیك بنبینا نبی الرحمة یا محمد انی اتوجه بك الی ربی فیقضی حاجتی، وتذکر حاجتك ورح الیّ حتی اروح معك فانطلق الرجل فصنع ما قال له ثم اتی باب عثمان رضی اللہ تعالی عنه فجاء البواب حتی اخذه بیده فادخله علی عثمان بن عفان رضی اللہ تعالی عنه فاجلسه معه علی الطنفسة وقال حاجتك؟ فذکر حاجته فقضاها له ثم قال ما ذکرت حاجتك حتی کانت هذه الساعة وقال ما کان لك من حاجة فاتنا، ثم ان الرجل خرج من عنده فلقی عثمان بن حنیف رضی اللہ تعالی عنه فقال له جزاک اللہ خیرا ما کان ینظر فی حاجتی ولا یلتفت الیّ حتّٰی

[Urdu Column]: یعنی ایک حاجتمند اپنی حاجت کے لیے امیر المومنین عثمان غنی رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی خدمت میں آتا جاتا، امیر المومنین نہ اس کی طرف التفات فرماتے نہ اس کی حاجت پر نظر فرماتے، اس نے عثمان بن حنیف رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے اس امر کی شکایت کی، انہوں نے فرمایا وضو کرکے مسجد میں دو رکعت نماز پڑھ پھر دعا مانگ " الٰہی میں تجھ سے سوال کرتا ہوں اور تیری طرف اپنے نبی محمد صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے وسیلے سے توجہ کرتا ہوں، یا رسول اللہ ! میں حضور کے توسل سے اپنے رب کی طرف متوجہ ہوتا ہوں کہ میری حاجت

روا فرمائے۔" اور اپنی حاجت ذکر کر ، پھر شام کو میرے پاس آنا کہ میں بھی تیرے ساتھ چلوں۔ حاجتمند نے (کہ وہ بھی صحابی یا لااقل کبار تابعین میں سے تھے۔) یوں ہی کیا، پھر آستانِ خلافت پر حاضر ہوئے ، دربان آیا اور ہاتھ پکڑ کر امیر المومنین کے حضور لے گیا، امیر المومنین نے اپنے ساتھ مسند پر بٹھالیا، مطلب پوچھا، عرض کیا، فوراً روا فرمایا، اور ارشاد کیا اتنے دنوں میں اس وقت اپنا مطلب بیان کیا، پھر فرمایا: جو حاجت تمہیں پیش آیا کرے ہمارے پاس چلے آیا کرو۔ یہ صاحب وہاں سے نکل کر عثمان بن حنیف سے ملے اور کہا اللہ تعالیٰ تمہیں جزائے خیر دے امیر المومنین میری حاجت پر نظر اور میری طرف توجہ نہ فرماتے تھے یہاں تک کہ

Fatawa Rizwia Volume 29

[Table Content] Arabic Text: كلمته في فقال عثمن بن حنيف رضى اللہ تعالى عنه English Translation: I spoke to him (Caliph Uthman bin Affan) about your matter. Uthman bin Hanif (may Allah be pleased with him) said:

Arabic Text: واللہ ما كلمته، ولكن شهدت رسول اللہ لى اللہ تعالى عليه وسلم واتاه رجل ضرير فشكا اليه ذهاب بصره English Translation: By Allah! I did not speak to the Commander of the Faithful about your matter at all. But what happened was that I saw the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him). A blind man came to the presence of the Holy Prophet and complained about his loss of sight.

Arabic Text: فقال له النبى صلى اللہ تعالى عليہ وسلم ائت الميضأة فتوضأ ثم صل ركعتين ثم ادع بهذه الدعوات English Translation: The Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) told him: Go to the place of ablution, perform ablution, then pray two units (rak'ahs) of prayer, and then supplicate with these prayers.

Arabic Text: فقال عثمان بن حنيف رضى اللہ تعالى عنہ فواللہ ماتفرقنا وطال بنا الحديث حتى دخل علينا الرجل كانه لم يكن به ضر قط 1. English Translation: Uthman bin Hanif (may Allah be pleased with him) said: By Allah, we had not yet dispersed, and our conversation had not even prolonged, when that man entered upon us as if he had never been blind at all (1).

Imam Tabarani and then Imam Mundhiri say "wal-hadithu sahih" (2). (This hadith is authentic). Imam Bukhari in his book Al-Adab al-Mufrad and Imam Ibn al-Sunni and Imam Ibn Bashkuwal narrate:

Arabic Text: ان ابن عمر رضى اللہ تعالى عنهما خدرت رجله فقيل له: اذكر احب الناس اليك فصاح يا محمداہ فانتشرت 3 English Translation: The leg of Ibn Umar (may Allah be pleased with them both) became numb (slept). It was said to him: "Mention the most beloved of people to you." So he shouted out loud, "Ya Muhammadah!" (O Muhammad!). Immediately, his leg became normal again (3).

Note: The wording of Bukhari in Al-Adab al-Mufrad is: The leg of Ibn Umar became numb, so a man said to him: "Mention the most beloved of people to you." He said: "Ya Muhammad!" (O Muhammad!) (4). [End of quote]

[Footnotes] 1. Al-Targhib wa al-Tarhib, cited from al-Tabarani; Al-Targhib fi Salat al-Hajah, Hadith 1, Mustafa al-Babi Egypt 1/473 to 476; Majma' al-Zawa'id, cited from al-Tabarani, Chapter on Prayer for Need, Dar al-Kitab Beirut 2/279. 2. Al-Targhib wa al-

Tarhib, cited from al-Tabarani; Al-Targhib fi Salat al-Hajah, Hadith 1, Mustafa al-Babi Egypt 1/473 to 476; Majma' al-Zawa'id, cited from al-Tabarani, Chapter on Prayer for Need, Dar al-Kitab Beirut 2/279. 3. 'Amal al-Yawm wa al-Laylah, Hadith 168, Da'irat al-Ma'arif al-Nu'maniyyah p. 74. 4. Al-Adab al-Mufrad, Hadith 964, Maktabah al-Athariyyah Sangla p. 250.

फ़तावा रिज़विया जिल्द 29

[सारणी सामग्री] अरबी पाठ: كلمته في فقال عثمن بن حنيف رضى اللہ تعالى عنه हिंदी अनुवाद: मैंने उनसे (खलीफा उस्मान बिन अफ़्फ़ान) आपके बारे में बात की। उस्मान बिन हनीफ़ (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने कहा:

अरबी पाठ: واللہ ما كلمته، ولكن شهدت رسول اللہ لى اللہ تعالى عليه وسلم واتاه رجل ضرير فشكا اليه ذهاب بصره हिंदी अनुवाद: खुदा की कसम! मैंने अमीरुल मोमिनीन से आपके मामले में कुछ भी नहीं कहा। लेकिन हुआ यह कि मैंने अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को देखा। हुज़ूर की खिदमते अकदस में एक अंधा हाज़िर हुआ और अपनी आँखों की रोशनी चले जाने की शिकायत की।

अरबी पाठ: فقال له النبى صلى اللہ تعالى عليہ وسلم ائت الميضأة فتوضأ ثم صل ركعتين ثم ادع بهذه الدعوات हिंदी अनुवाद: हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने उसे यूँ ही इरशाद फरमाया कि वुज़ू की जगह जाओ, वुज़ू करो और फिर दो रकअत नमाज़ पढ़ो, फिर ये दुआ करो।

अरबी पाठ: فقال عثمان بن حنيف رضى اللہ تعالى عنہ فواللہ ماتفرقنا وطال بنا الحديث حتى دخل علينا الرجل كانه لم يكن به ضر قط 1. हिंदी अनुवाद: उस्मान बिन हनीफ़ (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने कहा: खुदा की कसम! हम अभी वहां से हटे भी नहीं थे और हमारी बातें भी ज़्यादा लंबी नहीं हुई थीं कि वह आदमी हमारे पास इस हाल में आया गोया वह कभी अंधा था ही नहीं (1)।

इमाम तबरानी और फिर इमाम मुन्ज़िरी फरमाते हैं "वल्-हदीसु सहीह" (2)। (यह हदीस सही है)। इमाम बुखारी किताब अल-अदब अल-मुफ़्रद में और इमाम इब्न-उस-सुन्नी व इमाम इब्न बशकुवाल रिवायत करते हैं:

अरबी पाठ: رجله فقيل له: اذكر احب الناس اليك تان ابن عمر رضى اللہ تعالى عنهما خدر فصاح يا محمداہ فانتشرت 3 हिंदी अनुवाद: हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) का पैर सुन्न हो गया। उनसे कहा गया: "उन्हें याद कीजिए जो आपको लोगों में सबसे ज़्यादा महबूब हैं।" हज़रत ने बा-आवाज़ बुलंद कहा, "या मुहम्मदाह!" (ऐ मुहम्मद!)। फौरन उनका पैर ठीक हो गया (3)।

नोट: अल-अदब अल-मुफ़्रद में बुखारी के शब्द हैं: इब्न उमर का पैर सुन्न हो गया, तो एक आदमी ने उनसे कहा: "उन्हें याद कीजिए जो आपको लोगों में सबसे ज़्यादा महबूब हैं।" उन्होंने कहा: "या मुहम्मद!" (ऐ मुहम्मद!) (4)। [उद्धरण समाप्त]

[पाद टिप्पणियाँ] 1. अत-तरग़ीब वत-तरहीब बहवाला अत-तबरानी; अत-तरग़ीब फी सलात अल-हाजह, हदीस 1, मुस्तफा अल-बाबी मिस्र 1/473-476; मजमा-उज़-ज़वाइद बहवाला अत-तबरानी, बाब सलात अल-हाजह, दारुल किताब बैरुत 2/279। 2. अत-तरग़ीब वत-तरहीब बहवाला अत-तबरानी; अत-तरग़ीब फी सलात अल-हाजह, हदीस 1, मुस्तफा अल-बाबी मिस्र 1/473-476; मजमा-उज़-ज़वाइद बहवाला अत-तबरानी, बाब सलात अल-हाजह, दारुल किताब बैरुत 2/279। 3. अमल अल-यौम वल-लैला हदीस 168, दाइरतुल मआरिफ अल-नोमानिया सफ़ा 74। 4. अल-अदब अल-मुफ़्रद हदीस 964, मकतबा अल-असरिया सांगला सफ़ा 250।

كلمته في فقال عثمن بن حنيف رضی اللہ تعالی عنه | آپ نے ان سے میری سفارش کی، عثمان بن حنیف رضی اللہ واللہ ما كلمته، ولكن شهدت رسول اللہ لی اللہ تعالی | تعالیٰ عنہ نے فرمایا : خدا کی قسم ! میں نے تو تمہارے معاملے علیه وسلم واتاه رجل ضرير فشكا اليه ذهاب بصره | میں امیر المؤمنین سے کچھ بھی نہ کہا مگر ہوا یہ کہ میں نے فقال له النبی صلی اللہ تعالی علیہ وسلم ائت الميضأة | سید عالم صلی اللہ تعالی علیہ وسلم کو دیکھا حضور کی خدمت فتوضأ ثم صل ركعتين ثم ادع بهذه الدعوات فقال | اقدس میں ایک نابینا حاضر ہوا اور نابینائی کی شکایت کی حضور عثمان بن حنیف رضی اللہ تعالی عنہ فواللہ ماتفرقنا | نے یونہی اس سے ارشاد فرمایا کہ وضو کر کے دو رکعت نماز وطال بنا الحديث حتى دخل علينا الرجل كانه لم | پڑھے پھر یہ دعا کرے۔ خدا کی قسم ہم اٹھنے بھی نہ پائے تھے یکن به ضر قط ۱۔ | باتیں ہی کر رہے تھے کہ وہ ہمارے پاس آیا گویا کبھی وہ اندھا نہ تھا۔

امام طبرانی پھر امام منذری فرماتے ہیں والحديث صحيح ۲ ۔ (یہ حدیث صحیح ہے)۔ امام بخاری کتاب الادب المفرد میں اور امام ابن السنی و امام ابن بشکوال روایت کرتے ہیں :

ان ابن عمر رضی اللہ تعالی عنهما خدرت رجله فقيل | یعنی حضرت عبد اللہ بن عمر رضی اللہ تعالی عنہما کا پاؤں سو گیا، له: اذكر احب الناس اليك فصاح يا محمداه فانتشرت | کسی نے کہا انہیں یاد کیجئے جو آپ کو سب سے زیادہ محبوب ۳ | ہیں۔ حضرت نے با آواز بلند کہا۔ یا محمداہ ! فوراً پاؤں کھل گیا۔

عه : ولفظ البخاري فى الادب المفرد خدرت رجل ابن عمر فقال له رجل اذكر احب الناس اليك فقال يا محمد ۴ اھ ۱۲ منہ ۔

۱ الترغيب والترهيب بحواله الطبرانى الترغيب فى صلوة الحاجة حديث ا مصطفى البابى مصر ۱ / ۴۷۳ تا ۴۷۶، مجمع الزوائد بحوالہ الطبرانى باب صلوة الحاجة دار الكتاب بيروت ۲ / ۲۷۹ ۲ الترغيب والترهيب بحواله الطبرانى الترغيب فى صلوة الحاجة حديث ا مصطفى البابى مصر ۱ / ۴۷۳ تا ۴۷۶، مجمع الزوائد بحوالہ الطبرانى باب صلوة الحاجة دار الكتاب بيروت ۲ / ۲۷۹ ۳ عمل اليوم والليلة حديث ۱۶۸ دائرة المعارف النعمانيہ ص ۷۴ ۴ الادب المفرد حديث ۹۶۴ مكتبة الاثرية سانگلہ ص ۲۵۰

Fatawa Razawiyya Volume 29

Imam Nawawi, the commentator of Sahih Muslim (may Allah have mercy on him), narrated in the book "Al-Adhkar" from Hazrat Abdullah bin Abbas (may Allah be pleased with them) that a person's foot went numb in his presence. Abdullah bin Abbas said: "Remember the person you love the most." So he said, "Ya Muhammad!" and he became well.[1] And this practice was narrated from others besides these two companions as well. Among the people of Madinah, the custom of saying "Ya Muhammadah" has been going on since ancient times. Allamah Shahab al-Khafaji al-Misri states in "Nasim al-Riyad," a commentary on "Al-Shifa" by Imam Qadi Iyad:

| هذا مما تعاهده اهل المدينة[2] - This is among the customary practices of the people of Madinah. (T) |

In the year 18 AH, during the great famine of Ramadah after the caliphate of Hazrat Faruq (Umar), the tribe of Bani Muzayna requested Hazrat Bilal bin al-Harith al-Muzani to slaughter a goat as they were dying of hunger. He said there was nothing left in the goats. They insisted, and finally, he slaughtered one. Upon skinning it, only red bones were found. Seeing this, Bilal (may Allah be pleased with him) called out: "Ya Muhammadah!" Then the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) appeared in a dream and gave glad tidings. This is mentioned in "Al-Kamil."[3] (Mentioned in Al-Kamil. T) Imam Mujtahid, the great jurist Abd al-Rahman al-Hudhali al-Kufi al-Mas'udi, who was the grandson of Hazrat Abdullah bin Mas'ud (may Allah be pleased with him) and among the prominent Tabi' al-Tabi'in and great Imams, used to wear a tall hat on his head on which was written: "Muhammad, Ya Mansur." It is evident that "the pen is one of the two tongues" (meaning writing is a form of speech. T). Shaym bin Jamil al-Antaki, from the reliable scholars of Hadith, states about this great Imam:

| رأيته وعلى رأسه قلنسوته اطول من ذراع مكتوب فيها مُحَمَّد يامنصور ذكره فى تهذيب التهذيب وغيره[4]. | I saw him, and on his head was a cap longer than an arm's length, on which was written: "Muhammad, Ya Mansur." This is mentioned in Tahdhib al-Tahdhib etc. (I saw him with a hat a hand-span long on his head, on which was written: Muhammad, Ya Mansur. This is mentioned in Tahdhib al-Tahdhib etc. T) |

In the Fatawa of Imam Shaykh al-Islam Shahab al-Ramli al-Ansari, it is mentioned:

| سُئِلَ عما يقع من العامة من قولهم | That is, he was asked about what the common people do in hardships... |

[1] Al-Adhkar, Chapter on what to say when the foot goes numb, Dar al-Kitab al-Arabi Beirut, p. 17 [2] Nasim al-Riyad Sharh al-Shifa, section on what was narrated from the predecessors, Markaz-e-Ahlesunnat Barkat-e-Raza Gujarat, 3/355 [3] Al-Kamil fi al-Tarikh by Ibn al-Athir, mention of famine and year of Ramadah, Dar Sadir Beirut 2/556 [4] Mizan al-I'tidal fi Naqd al-Rijal, entry 7907, Dar al-Ma'rifah, 2/547

फ़तावा रज़विया जिल्द २९

इमाम नववी, सहीह मुस्लिम के व्याख्याकार (अल्लाह उन पर रहम करे), ने "किताब अल-अज़कार" में हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (अल्लाह उन दोनों से प्रसन्न हो) से नक़ल किया है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास के पास एक आदमी का पैर सो गया (सुन्न हो गया), तो अब्दुल्लाह बिन अब्बास ने फरमाया: "उस शख्स को याद करो जो तुम्हें सबसे ज़्यादा महबूब है", तो उसने 'या मुहम्मद!' कहा, और वह ठीक हो गया।[1] और यह बात इन दो सहाबियों के अलावा औरों से भी रिवायत हुई। अहले मदीना में प्राचीन काल से ही "या मुहम्मदाह" कहने की आदत चली आ रही है। अल्लामा शहाब ख़फ़ाजी मिस्री, इमाम क़ाज़ी अयाज़ की "अल-शिफ़ा" की व्याख्या "नसीम अल-रियाज़" में फरमाते हैं:

| هذا مما تعاهده اهل المدينة[2]- | यह अहले मदीना के मामूलात (प्रथाओं) में से है। (त) |

हज़रत बिलाल बिन अल-हारिस मुज़नी से आमुल रमादा के अकाल में, जो फ़ारूक़ी ख़िलाफ़त के बाद १८ हिजरी में हुआ, उनकी क़ौम बनी मुज़ैना ने दरख्वास्त की कि हम मरे जा रहे हैं, कोई बकरी ज़बह कीजिए। उन्होंने फरमाया बकरियों में कुछ नहीं बचा है। उन्होंने ज़िद की, आखिर ज़बह की, खाल खींची तो केवल लाल हड्डी निकली। यह देखकर हज़रत बिलाल (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) ने सदा दी (पुकारा): "या मुहम्मदाह!" फिर हुज़ूर अकदस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने ख़्वाब में तशरीफ़ लाकर बशारत (खुशखबरी) दी। इसका ज़िक्र "अल-कामिल" में है।[3] (इसे कामिल में ज़िक्र किया गया है। त) इमाम मुजतहिद अज़ीम फ़क़ीह अब्दुर रहमान हुज़ली कूफ़ी मसऊदी, जो हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) के पोते हैं और बड़े तबअ ताबेईन और अइम्मा मुजतहिदीन में से हैं, अपने सर पर एक लंबी टोपी पहनते थे जिस पर लिखा था: "मुहम्मद या मंसूर"। और ज़ाहिर है कि "क़लम दो ज़बानों में से एक है" (क़लम भी बोलने का एक ज़रिया है। त), शैम बिन जमील अंताकिया के विश्वसनीय मुहद्दिसों में से हैं, वे इस अज़ीम इमाम के बारे में फरमाते हैं:

| د یامنصور ذکرہٗ رأیته وعلی رأسه قلنسوته اطول من ذراع مکتوب فیها مُحَ فی تهذیب التهذیب وغیره[4]۔ | मैंने उन्हें देखा, उनके सर पर हाथ भर से लंबी टोपी थी जिस पर लिखा था: "मुहम्मद या मंसूर"। इसका ज़िक्र तहज़ीब अल-तहज़ीब आदि में है। (मैंने उन्हें देखा उनके सर पर हाथ भर लंबी टोपी थी जिसमें लिखा हुआ था: मुहम्मद या मंसूर। इसे तहज़ीब अल-तहज़ीब वगैरह में ज़िक्र किया गया है। त) |

इमाम शैखुल इस्लाम शहाब रमली अंसारी के फ़तावा में है:

| سُئِلَ عما يقع من العامة من قولهم | यानी उनसे इस्तफ़ता (सवाल) हुआ कि आम लोग जो सख्तियों में कहते हैं... |

---

[1] अल-अज़कार, बाब: पैर सुन्न होने पर क्या कहें, दार अल-किताब अल-अरबी बेरूत, पृ. १७ [2] नसीम अल-रियाज़ शरह अल-शिफ़ा, फ़स्ल: सलफ़ से जो रिवायत हुआ, मरकज़-ए-अहले सुन्नत बरकात-ए-रज़ा गुजरात, ३/३५५ [3] अल-कामिल फ़ी अल-तारीख लिल-इब्न अल-असीर, अकाल और आमुल रमादा का ज़िक्र, दार सादिर बेरूत २/५५६ [4] मीज़ान अल-इ'तिदाल फ़ी नक़द अल-रिजाल, अनुवाद ७९०७, दार अल-मआरिफ़ा २/५४७

امام نووی شارح صحیح مسلم رحمۃ اللہ تعالیٰ نے کتاب الاذکار میں اس کی مثل حضرت عبداللہ بن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے نقل فرمایا کہ حضرت عبداللہ بن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما کے پاس کسی آدمی کا پاؤں سوگیا تو عبداللہ بن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما نے فرمایا: تو اس شخص کو یاد کر جو تمہیں سب سے زیادہ محبوب ہے، تو اس نے یا محمدؐ کہا، اچھا ہو گیا۱۔ اور یہ امر ان دو صحابیوں کے سوا اوروں سے بھی مروی ہوا۔ اہلِ مدینہ میں قدیم سے اس یا محمدّاہ کہنے کی عادت چلی آتی ہے۔ علامہ شہاب خفاجی مصری نسیم الریاض شرح شفاء امام قاضی عیاض میں فرماتے ہیں۔

| هذا مما تعاهده اهل المدينة[2]- | یہ اہلِ مدینہ کے معمولات میں سے ہے۔(ت) |

حضرت بلال بن الحارث مزنی سے قحطِ عام الرماده میں کہ بعد خلافتِ فاروقی ۱۸ھ میں واقع ہوا، ان کی قوم بنی مزینہ نے درخواست کی کہ ہم مرے جاتے ہیں کوئی بکری ذبح کیجئے فرمایا بکریوں میں کچھ نہیں رہا ہے، انہوں نے اصرار کیا، آخر ذبح کی، کھال کھینچی تو نری سرخ ہڈی نکلی، یہ دیکھ کر بلال رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے ندا کی۔ یا محمدّاہ پھر حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے خواب میں تشریف لا کر بشارت دی۔ ذکرہ فی الکامل۳۔ (اس کو کامل میں ذکر کیا گیا ت) امام مجتہد فقیہ اجل عبد الرحمن ہذلی کوفی مسعودی کہ حضرت عبداللہ بن مسعود رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے پوتے اور اجلہ تبع تابعین و اکابر ائمہ مجتہدین سے ہیں سر پر بلند ٹوپی رکھتے جس میں لکھا تھا: محمد یا منصور "اور ظاہر ہے کہ "اَلْقَلَمُ اَحَدُ اللِّسَانَیْنِ" (قلم دوزبانوں میں سے ایک ہے۔ت)، شیم بن جمیل انطاکیہ ثقات علمائے محدثین سے ہیں، انہیں امام اجل کی نسبت فرماتے ہیں:

| رأیته وعلی رأسه قلنسوته اطول من ذراع مکتوب فیها مُحَمَّد یامنصور ذکره فی تهذیب التهذیب وغیره[4]۔ | میں نے ان کو دیکھا ان کے سر پر ہاتھ بھر سے لمبی ٹوپی تھی جس میں لکھا ہوا تھا۔ محمد یا منصور۔ اس کو تہذیب التہذیب وغیرہ میں ذکر کیا ہے۔ت) |

امام شیخ الاسلام شہاب رملی انصاری کے فتاویٰ میں ہے:

| سُئِلَ عما یقع من العامة من قولهم | یعنی ان سے استفتاء ہوا کہ عام لوگ جو سختیوں |

---

۱ الاذکار باب مایقوله اذا خدرت رجله دار الکتاب العربي بیروت ص ۲۷۱ نسیم الریاض شرح الشفاء فصل فیما روی عن السلف مرکز اہلسنت برکات رضا گجرات ۳/ ۳۵۵ ۳ الکامل فی التاریخ لابن الاثیر ذکر القحط وعام الرماده دار صادر بیروت ۲ / ۵۵۶ ۴ میزان الاعتدال فی نقدالرجل ترجمہ ۷۹۰۷ دارالمعرفة للطباعة ۲/ ۵۴۷

Fatawa Razawiyya Volume 29

[Section 1 Table] Arabic: [Seeking aid] in times of hardship by saying 'O Sheikh so-and-so' and the like from the Prophets, Messengers, and the righteous: Is it permissible or not? And do the masters [Sheikhs] provide aid after their death or not? He replied with the text: Indeed, seeking aid from Prophets, Messengers, Saints (Awliya), and righteous scholars is permissible. And the Prophets, Messengers, Saints, and the righteous do provide aid after their death, etc. Urdu: At times of [distress], people call out to Prophets, Messengers, Saints, and the righteous, saying 'O Sheikh so-and-so' (O Messenger of Allah, O Ali, O Sheikh Abdul Qadir Jilani) and words like these. Is this permissible or not? And do the Saints help even after passing away or not? He replied that indeed, seeking help from Prophets, Messengers, Saints, and scholars is permissible, and they do provide assistance even after passing away. etc.

Allama Khayr al-Din al-Ramli, teacher of the author of Durr al-Mukhtar, says in Fatawa Khayriyya: [Section 2 Table] Arabic: Their saying 'O Sheikh Abdul Qadir' is a calling [nida]. So, what is the cause for its prohibition? Urdu: People saying: "O Sheikh Abdul Qadir", this is a calling. Then what is the reason for its prohibition?

Sayyidi Jamal bin Abdullah bin Umar al-Makki says in his Fatawa: [Section 3 Table] Arabic: I was asked about someone who says in times of hardship, 'O Messenger of Allah' or 'O Ali' or 'O Sheikh Abdul Qadir', for example. Is it legally permissible or not? I replied: Yes, seeking aid from the Saints, calling them, and using them as a means [tawassul] is a prescribed matter and a desirable practice that no one denies except a stubborn or malicious person, and such a person is deprived of the blessings of the noble Saints. etc. Urdu: That is, I was asked about the person who says at a time of calamity 'O Messenger of Allah', 'O Ali', or 'O Sheikh Abdul Qadir', for example. Is this legally permissible or not? I replied: Yes, seeking help from Saints, calling them, and initiating tawassul through them is a permissible and favored thing in Sharia, which no one will deny except the stubborn or the antagonistic, and indeed he is deprived of the blessings of the noble Saints.

Imam Ibn al-Jawzi in the book 'Uyun al-Hikayat' [mentioned] a grand event of three great Saints with a continuous chain of narration.

Footnotes: 1. Fatawa al-Ramli, in the Branches of Shafi'i Jurisprudence, Miscellaneous Issues, Dar al-Kutub al-Ilmiyyah, Beirut, 4/337. 2. Fatawa Khayriyya, Book of Disliked

and Commendable Acts, Dar al-Ma'rifah for Printing, Beirut, 2/182. 3. Fatawa Jamal bin Abdullah bin Umar al-Makki.

फतावा रज़विया जिल्द 29

[अनुभाग 1 तालिका] अरबी: कठिनाइयों के समय 'या शेख फलां' और नबियों, रसूलों और नेक लोगों से मदद माँगने के इसी तरह के अन्य रूपों के बारे में: क्या यह जायज़ है या नहीं? और क्या बुजुर्ग अपनी मृत्यु के बाद भी मदद करते हैं या नहीं? उन्होंने इन शब्दों के साथ उत्तर दिया: वास्तव में नबियों, रसूलों, औलिया और नेक विद्वानों से मदद माँगना जायज़ है। और नबी, रसूल, औलिया और नेक लोग अपनी मृत्यु के बाद भी मदद करते हैं, आदि। उर्दू: मुसीबत के समय नबियों, रसूलों, औलिया और नेक लोगों से फरियाद करते हैं और 'या शेख फलां' (या रसूल अल्लाह, या अली, या शेख अब्दुल कादिर जिलानी) और इनके जैसे शब्द कहते हैं, क्या यह जायज़ है या नहीं? और क्या औलिया इंतकाल के बाद भी मदद फरमाते हैं या नहीं? उन्होंने जवाब दिया कि बेशक नबियों, रसूलों, औलिया और उलेमा से मदद माँगना जायज़ है और वे इंतकाल के बाद भी इमदाद फरमाते हैं। आदि।

अल्लामा खैर-उद-दीन अल-रमलती, 'दुर्र-ए-मुख्तार' के लेखक के उस्ताद, 'फतावा खैरिय्या' में फरमाते हैं: [अनुभाग 2 तालिका] अरबी: उनका कहना 'या शेख अब्दुल कादिर' एक पुकार (निदा) है। तो इसकी मनाही का क्या कारण है? उर्दू: लोगों का कहना कि: "या शेख अब्दुल कादिर" यह एक निदा है फिर इसकी हुरमत (मनाही) का सबब क्या है?

सय्यदी जमाल बिन अब्दुल्लाह बिन उमर अल-मक्की अपने फतावा में फरमाते हैं: [अनुभाग 3 तालिका] अरबी: मुझसे उस व्यक्ति के बारे में पूछा गया जो कठिनाई के समय कहता है, 'या रसूल अल्लाह' या 'या अली' या 'या शेख अब्दुल कादिर' आदि। क्या यह शरीयत के अनुसार जायज़ है या नहीं? मैंने उत्तर दिया: हाँ, औलिया से मदद माँगना, उन्हें पुकारना और उनके माध्यम से वसीला (तवस्सुल) करना एक शरीयत द्वारा निर्धारित मामला और पसंदीदा कार्य है जिसका इनकार केवल एक अड़ियल या द्वेषी व्यक्ति ही करेगा, और वह वास्तव में नेक औलिया की बरकत से वंचित है। आदि। उर्दू: यानी मुझसे उस शख्स के बारे में सवाल हुआ जो मुसीबत के वक्त में कहता हो 'या रसूल अल्लाह', 'या अली' या 'या शेख अब्दुल कादिर', मसलन, आया यह शरीयत के अनुसार जायज़ है या नहीं? मैंने जवाब दिया: हाँ, औलिया से मदद माँगना और उन्हें पुकारना और उनके साथ तवस्सुल करना शरअ में जायज़ और पसंदीदा चीज़ है जिसका इनकार न करेगा मगर हठधर्मी या साहब-ए-अनाद (द्वेषी), और बेशक वह औलिया किराम की बरकत से महरूम है।

इमाम इब्न-ए-जौज़ी ने किताब 'उयून अल-हिकायात' में तीन महान औलिया का एक महान वाकिया मुसलसल सनद के साथ (जिक्र किया)।

पाद-टिप्पणियाँ (Footnotes): 1. फतावा अल-रमलती, शाफी न्यायशास्त्र की शाखाएँ, विविध मुद्दे, दार अल-कुतुब अल-इल्मियाह, बेरूत, 4/337। 2. फतावा खैरिय्या, नापसंदीदा और सराहनीय कार्यों की पुस्तक, दार अल-मारिफा, बेरूत, 2/182। 3. फतावा जमाल बिन अब्दुल्लाह बिन उमर अल-मक्की।

فتاوی رضویہ جلد ۲۹

[پہلا حصہ - ٹیبل] عربی: عند الشدائد یا شیخ فلان ونحو ذلك من الاستغاثة بالانبیاء والمرسلین والصالحین وھل للمشائخ اغاثة بعد موتھم ام لا؟ فاجاب بما نصہ، ان الاستغاثة بالانبیاء والمرسلین والاولیاء والعلماء الصالحین جائزة وللانبیاء و للرسل والاولیاء والصالحین اغاثة بعد موتھم الخ - اردو: کے وقت انبیاء و مرسلین و اولیاء و صالحین سے فریاد کرتے اور یا شیخ فلاں (یا رسول اللہ، یا علی، یا شیخ عبد القادر جیلانی) اور ان کی مثل کلمات کہتے ہیں یہ جائز ہے یا نہیں؟ اور اولیاء بعد انتقال کے بھی مدد فرماتے ہیں یا نہیں؟ انہوں نے جواب دیا کہ بے شک انبیاء و مرسلین و اولیاء و علماء سے مدد مانگنی جائز ہے اور وہ بعد انتقال بھی امداد فرماتے ہیں۔ الخ-

علامہ خیر الدین رملی استاذ صاحب در مختار، فتاویٰ خیر یہ میں فرماتے ہیں: [دوسرا حصہ - ٹیبل] عربی: قولھم یا شیخ عبد القادر فھونداء فما الموجب للحرمتہ 2- اردو: لوگوں کا کہنا کہ: یا شیخ عبد القادر " یہ ایک ندا ہے پھر اس کی حرمت کا سبب کیا ہے۔

سیدی جمال بن عبداللہ بن عمر مکی اپنے فتاویٰ میں فرماتے ہیں: [تیسرا حصہ - ٹیبل] عربی: سئلت ممن یقول في حال الشدائد یارسول اللہ او یا علي او یا شیخ عبدالقادر مثلا ھل ھو جائز شرعا ام لا؟ اجبت نعم الاستغاثة بالاولیاء ونداؤھم والتوسل بھم امر مشروع وشیع مرغوب لا ینکرہ الا مکابر او معاند وقد حرم برکة الاولیاء الکرام 3 الخ۔ اردو: یعنی مجھ سے سوال ہوا اس شخص کے بارے میں جو مصیبت کے بارے میں کہتا ہو یا رسول اللہ یا علی یا شیخ عبدالقادر، مثلاً آیا یہ شرعاً جائز ہے یا نہیں؟ میں نے جواب دیا: ہاں اولیاء سے مدد مانگنی اور انہیں پکارنا اور ان کے ساتھ توسل کرنا شروع میں جائز اور پسندیدہ چیز ہے جس کا انکار نہ کرے گا مگر ہٹ دھرم یا صاحب عناد، اور بے شک وہ اولیاء کرام کی برکت سے محروم ہے۔

امام ابن جوزی نے کتاب عیون الحکایات میں تین اولیائے عظام کا عظیم الشان واقعہ بسند مسلسل

حواشی: 1 فتاویٰ الرملی فی فروع الفقه الشافعی مسائل شتّٰی دار الکتب العلمیه بیروت ۴ / ۳۳۷ 2 فتاوی خیریه کتاب الکراهیة والاستحسان دار المعرفة للطباعة بیروت ۲/ ۱۸۲ 3 فتاویٰ جمال بن عبدالله بن عمر مکی

صفحہ 555 از 750

Fatawa Razawiyya - Volume 29

It is narrated that they were three brave horsemen, residents of Syria, who were always engaged in Jihad in the path of Allah:

Arabic Text	Urdu Translation / Explanation
fa'asarahu al-rumu marratan qala lahumu al-maliku inni aj'alu fikum al-mulka wa uzawwijukum banati wa tadkhuluna fi al-nasraniyyati fa'abaw wa qalu ya muhammadah.[1]	Meaning, once the Christians of Rome captured them. The King said, "I will give you the kingdom and marry my daughters to you if you become Christian." They did not agree and called out, "O Muhammad!"

The King had oil heated in large cauldrons and threw two of the gentlemen into it; the third one was saved by Allah the Almighty through a created means. After six months, those two came to him while he was awake along with a group of angels and said: "Allah the Almighty has sent us to participate in your wedding." He asked about their state, they said:

Arabic Text	Urdu Translation / Explanation
ma kanat illa al-ghatsata allati ra'ayta hatta kharajna fi al-firdaws.	It was just that one dip in the oil that you saw, after that we were in the highest Paradise.

The Imam says:

Arabic Text	Urdu Translation / Explanation
kana mashhurayni bidhalika ma'rufayni bi al-shami fi al-zamani al-awwal.	These gentlemen were famous in the early times and this incident of theirs was well-known.

Then he said: Poets wrote odes in their praise, among them is this verse:

Sayu'ta al-sadiqina bifadli sidqin
Najatun fi al-hayati wa fi al-mammati[2]

It is near that Allah the Almighty will grant salvation in life and death to the people of true faith by the blessing of their truthfulness.

This incident is strange and soul-refreshing. I have shortened it to avoid lengthiness; the complete account is in Imam Jalaluddin Suyuti's *Sharh as-Sudur*. Whoever wishes for details should refer to it. (Translator's Note: T). The purpose here is only this much: if saying "O Messenger of Allah" in a time of calamity is *shirk* (polytheism), then

what is the meaning of a polytheist's forgiveness and martyrdom, and having found a place in Jannat al-Firdous, and participating in their wedding?

---

[1] *Sharh as-Sudur* with reference to *Uyun al-Hikayat*, Chapter on Ziyarah of Graves and Knowledge of the Dead, etc., Khilafat Academy, Mingora, Swat, p. 89. [2] *Sharh as-Sudur* with reference to *Uyun al-Hikayat*, Chapter on Ziyarah of Graves and Knowledge of the Dead, etc., Khilafat Academy, Mingora, Swat, p. 90.

फ़तावा रज़विया - जिल्द 29

रिवायत किया गया है कि वे तीन भाई सीरिया के बहादुर घुड़सवार थे जो हमेशा अल्लाह के रास्ते में जिहाद करते थे:

अरबी पाठ	उर्दू अनुवाद / स्पष्टीकरण
फ़असरहु अर-रूमू मर्रतन काला लहुमुल मलिकु इन्नी अजअ़लु फ़ीकुमल मुल्का व उज़व्विजुकुम बनाती व तदखुलूना फ़िन नस्रानिय्यती फ़अ़बौ व कालू या मुहम्मदाह।[1]	यानी एक बार रोम के ईसाइयों ने उन्हें कैद कर लिया। राजा ने कहा, "मैं तुम्हें सल्तनत दूँगा और अपनी बेटियाँ तुम्हें ब्याह दूँगा, तुम ईसाई हो जाओ।" उन्होंने नहीं माना और आवाज़ दी, "या मुहम्मद!"

राजा ने कड़ाहों में तेल गर्म करवाया और उनमें से दो सज्जनों को उसमें डाल दिया; तीसरे को अल्लाह तआला ने एक सबब पैदा करके बचा लिया। छह महीने के बाद वे दोनों फ़रिश्तों की एक जमात के साथ जागते हुए उनके पास आए और कहा: "अल्लाह तआला ने हमें तुम्हारी शादी में शरीक होने के लिए भेजा है।" उन्होंने हाल पूछा, तो उन्होंने कहा:

अरबी पाठ	उर्दू अनुवाद / स्पष्टीकरण
मा कानत इल्लल ग्तसत्तल लती रअय्त हत्ता खरजना फ़िल फ़िरदौस।	बस वही तेल का एक गोता था जो आपने देखा, उसके बाद हम जन्नत-ए-आला में थे।

इमाम फ़रमाते हैं:

अरबी पाठ	उर्दू अनुवाद / स्पष्टीकरण
काना मशहूरैनी बिज़ालिका मअ़रूफ़ैनी बिश शामि फ़िज़ ज़मानिल अव्वल।	ये महानुभाव पुराने ज़माने में मशहूर थे और उनकी यह घटना प्रसिद्ध थी।

फिर फ़रमाया: शायरों ने उनकी मनकबत (प्रशंसा) में कसीदे लिखे, उनमें से यह शेर है:

सयुअ़तल सादीकीना बिफ़ज़्लि सिदकिन
नजातुन फ़िल हयाति व फ़िल ममाती[2]

करीब है कि अल्लाह तआला सच्चे ईमान वालों को उनके सच की बरकत से जीवन और मृत्यु में निजात बख्शेगा।

यह घटना अजीब और रूह को ताज़गी देने वाली है। मैंने विस्तार के डर से इसे संक्षिप्त कर दिया है; पूरी कहानी इमाम जलालुद्दीन सुयूती की 'शरह अस-सुदूर' में है। जो कोई विस्तार चाहता है वह उसकी ओर रुजू (संदर्भ) करे। (अनुवादक का नोट: त)। यहाँ मक़सद सिर्फ इतना है कि मुसीबत में "या रसूल अल्लाह" कहना अगर शिर्क है, तो मुशरिक की मग़फ़िरत (क्षमा) और शहादत कैसी, और जन्नत-उल-फ़िरदौस में जगह पाना क्या मायने रखता है, और उनकी शादी में...

---

[1] शरह अस-सुदूर, उयून अल-हिकायात के हवाले से, ज़ियारतुल क़ुबूर व इल्मुल मौता आदि का अध्याय, खिलाफत अकादमी, मिंगोरा, स्वात, पृष्ठ 89। [2] शरह अस-सुदूर, उयून अल-हिकायात के हवाले से, ज़ियारतुल क़ुबूर व इल्मुल मौता आदि का अध्याय, खिलाफत अकादमी, मिंगोरा, स्वात, पृष्ठ 90।

روایت کیا کہ وہ تین بھائی سوارانِ دلاور ساکنانِ شام تھے کہ ہمیشہ راہِ خدا میں جہاد کرتے:

عربی عبارت	اردو ترجمہ و وضاحت
فأسره الروم مرّة قال لهم الملك انی اجعل فیکم الملك وازوجکم بناتی وتدخلون فی النصرانیة فأبوا وقالوا یا محمّداه۔[1]	یعنی ایک بار نصاریٰ روم انہیں قید کر کے لے گئے بادشاہ نے کہا میں تمہیں سلطنت دوں گا اور اپنی بیٹیاں تمہیں بیاہ دوں گا تم نصرانی ہو جاؤ۔ انہوں نے نہ مانا اور ندا کی یا محمّداہ۔

بادشاہ نے دیگوں میں تیل گرم کرا کر دو صاحبوں کو اس میں ڈال دیا، تیسرے کو اللہ تعالیٰ نے ایک سبب پیدا فرما کر بچالیا۔ وہ دونوں چھ مہینے کے بعد مع ایک جماعت ملائکہ کے بیداری میں ان کے پاس آئے اور فرمایا: اللہ تعالیٰ نے تمہاری شادی میں شریک ہونے کو بھیجا ہے انہوں نے حال پوچھا فرمایا:

عربی عبارت	اردو ترجمہ و وضاحت
ما کانت الا الغطسة التی رأیت حتّٰی خرجنا فی الفردوس۔	بس وہی تیل کا ایک غوطہ تھا جو تم نے دیکھا اس کے بعد ہم جنت اعلیٰ میں تھے۔

امام فرماتے ہیں:

عربی عبارت	اردو ترجمہ و وضاحت
کانا مشهورین بذلک معروفین بالشام فی الزمن الاول۔	یہ حضرات زمانہ سلف میں مشہور تھے اور ان کا یہ واقعہ معروف۔

پھر فرمایا: شعراء نے ان کی منقبت میں قصیدے لکھے، ازان جملہ یہ بیت ہے:

سیعطی الصادقین بفضل صدق نجاۃ فی الحیاۃ وفی الممات [2]

قریب ہے کہ اللہ تعالیٰ سچے ایمان والوں کو ان کے سچ کی برکت سے حیات وموت میں نجات بخشے گا۔

یہ واقعہ عجیب، نفس و روح پرور ہے، میں بخیال تطویل اسے مختصر کر گیا، تمام وکمال امام جلال الدین سیوطی کی شرح الصدور میں ہے من شاء فلیرجع الیہ (جو تفصیل چاہتا ہے اس کی طرف رجوع کرے۔ ت) یہاں مقصود اس قدر ہے کہ مصیبت میں "یا رسول اللہ" کہنا اگر شرک ہے تو مشرک کی مغفرت و شہادت کیسی، اور جنت الفردوس میں جگہ پائی کیا معنی، اور ان کی شادی میں---

---

1 شرح الصدور بحوالہ عیون الحکایات باب زیادۃ القبور و علم الموتی الخ خلافت اکیڈمی منگورہ سوات ص ۸۹ 2 شرح الصدور بحوالہ عیون الحکایات باب زیادۃ القبور و علم الموتی الخ خلافت اکیڈمی منگورہ سوات ص ۹۰

Fatawa Razawiyya Volume 29

How is sending angels reasonable? And why did these leaders of religion accept this narration and consider their martyrdom and sainthood as established? And those men of God were themselves among the righteous predecessors (Salaf-e-Salih), as this event occurred before the habitation of the city of Tarsus, "as mentioned in the narration itself" (T). And Tarsus is a frontier city of Dar-ul-Islam which was inhabited by Caliph Harun al-Rashid, "as mentioned by Imam Jalaluddin Suyuti (may Allah have mercy on him) in Tarikh al-Khulafa" (T). The era of Harun al-Rashid was the era of the Tabi'un (followers of the Companions) and the Tab-e-Tabi'un (followers of the followers). So, these three noble martyrs, if they were not Tabi'un, they were at least from the Tab-e-Tabi'un. And Allah is the Guide. (And Allah alone is the Provider of guidance. T)

His Eminence, our master Ghaus-e-Azam (may Allah be pleased with him) says:

[Arabic Column]: "Whoever seeks help through me in any distress, it shall be removed from him; and whoever calls upon my name in any hardship, it shall be dispelled from him; whoever seeks mediation through me to Allah the Almighty for any need, it shall be fulfilled for him. And whoever performs two cycles of prayer (rak'ahs), reciting Surah al-Ikhlas eleven times after Surah al-Fatihah in each cycle, then sends blessings upon the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) after the salam and greets him, and remembers me, then walks eleven steps towards the direction of Iraq, mentioning my name in them and stating his need, then it shall be fulfilled by the permission of Allah."

[Urdu Column]: "That is, whoever cries out to me in any distress, that distress will be removed; and whoever calls out by taking my name in any hardship, that hardship will be dispelled; and whoever seeks mediation to Allah Almighty through me in any need, that need will be fulfilled. And whoever performs two cycles of prayer, in each cycle after Fatihah reads Surah Ikhlas eleven times, then sends blessings and salutations (salam) and remembers me, then walks eleven steps towards Iraq Sharif, continues to take my name in them and remembers his need, his that need will be fulfilled by the leave of Allah."

1. Sharh as-Sudur, Chapter on Visiting Graves, Mustafa al-Babi Egypt, p. 89.
2. Bahjat al-Asrar, Mention of the Excellence of his Companions and Glad Tidings for them, Mustafa al-Babi Egypt, p. 102; Zubdat al-Asrar, Mention of the

Excellence of his Companions, Disciples, and Lovers, Booklink Company Bombay, p. 101.

फ़रिश्तों को भेजना कैसे तर्कसंगत है? और धर्म के इन इमामों ने इस रिवायत को कैसे स्वीकार किया और उनकी शहादत और विलायत को किस आधार पर मान्यता दी? और वे अल्लाह के नेक बंदे स्वयं भी सलफ़-ए-सालिहीन (नेक पूर्वजों) में से थे, क्योंकि यह घटना तरसूस शहर की आबादी से पहले की है "जैसा कि स्वयं रिवायत में उल्लेख है" (त) और तरसूस एक सरहदी शहर है यानी दारुल इस्लाम की सीमा का शहर जिसे ख़लीफ़ा हारून रशीद ने बसाया था "जैसा कि इमाम जलालुद्दीन सुयूती (रहमतुल्लाह अलैह) ने तारीख़ अल-ख़ुलफ़ा में इसका उल्लेख किया है" (त)। हारून रशीद का ज़माना ताबिईन और तब-ए-ताबिईन का ज़माना था, तो ये तीनों महान शहीद अगर ताबिई नहीं थे, तो कम से कम तब-ए-ताबिईन में से ज़रूर थे। और अल्लाह ही मार्गदर्शन करने वाला है। (और अल्लाह ही हिदायत देने वाला है। त)

हुज़ूर पुरनूर सैय्यदना गौस-ए-आज़म (रज़ियल्लाहु अन्हु) इरशाद फरमाते हैं:

[अरबी कॉलम]: "जिसने किसी मुसीबत में मुझसे मदद माँगी, उसकी वह मुसीबत दूर हो जाएगी; और जिसने किसी कठिनाई में मेरा नाम लेकर पुकारा, उसकी वह कठिनाई दूर हो जाएगी; जिसने किसी ज़रूरत के लिए मेरे ज़रिए अल्लाह की तरफ तवस्सुल (मध्यस्थता) किया, उसकी वह ज़रूरत पूरी हो जाएगी। और जो दो रकअत नमाज़ अदा करे, हर रकअत में सूरह फ़ातिहा के बाद ग्यारह बार सूरह इख़्लास पढ़े, फिर सलाम के बाद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर दरूद और सलाम भेजे और मुझे याद करे, फिर इराक़ शरीफ़ की दिशा में ग्यारह क़दम चले, उनमें मेरा नाम लेता जाए और अपनी हाजत (ज़रूरत) याद करे, तो वह हाजत अल्लाह के हुक्म से पूरी हो जाएगी।"

[उर्दू कॉलम अनुवाद]: "यानी जो किसी तकलीफ़ में मुझसे फ़रियाद करे वह तकलीफ़ दफ़ा हो और जो किसी सख़्ती में मेरा नाम लेकर निदा (पुकार) करे वह सख़्ती दूर हो और जो किसी हाजत में अल्लाह तआला की तरफ मुझसे तवस्सुल करे वह हाजत बर आए। और जो दो रकअत नमाज़ अदा करे हर रकअत में फ़ातिहा के बाद सूरह इख़्लास ग्यारह बार पढ़े फिर सलाम भेजे और मुझे याद करे, फिर इराक़ शरीफ़ की तरफ़ ग्यारह क़दम चले उन में मेरा नाम लेता जाए और अपनी हाजत याद करे उसकी वह हाजत रवा हो अल्लाह के इज़न से।"

1. शरह अस-सुदूर, क़ब्रों की ज़ियारत का अध्याय, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, पृ. 89।

2. बहजतुल असरार, उनके साथियों की फ़ज़ीलत और उनके लिए खुशखबरी का ज़िक्र, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, पृ. 102; ज़ुबदतुल असरार, उनके साथियों, मुरीदों और चाहने वालों की फ़ज़ीलत का ज़िक्र, बुकलिंक कंपनी बॉम्बे, पृ. 101।

पृष्ठ 557/750

فرشتوں کو بھیجنا کیونکر معقول؟ اور ان ائمہ دین نے یہ روایت کیونکر مقبول اور ان کی شہادت و ولایت کس وجہ سے مسلم رکھی۔ اور وہ مردانِ خدا خود بھی سلفِ صالح میں تھے کہ واقعہ شہر طرسوس کی آبادی سے پہلے کا ہے "کما ذکرہ فی الروایۃ نفسھا" (جیسا کہ خود روایت میں ذکر کیا ہے۔ت) اور طرسوس ایک ثغر ہے یعنی دار الاسلام کی سرحد کا شہر جسے خلیفہ ہارون رشید نے آباد کیا "کما ذکرہ الامام السیوطی فی تاریخ الخلفاء" جیسا کہ امام جلال الدین سیوطی علیہ الرحمہ نے تاریخ الخلفاء میں اس کا ذکر کیا ہے۔ت) ہارون رشید کا زمانہ زمانہ تابعین و تبع تابعین تھا تو یہ تینوں شہدائے کرام اگر تابعی نہ تھے لا اقل تبع تابعین سے تھے واللہ الھادی (اور اللہ ہی ہدایت دینے والا ہے۔ت) حضور پر نور سید نا غوثِ اعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہ ارشاد فرماتے ہیں:

| من استغاث بی فی کربۃٍ کشفت عنه ومن نادی باسمی فی شدۃٍ فرجت عنه من توسّل بی الی اللہ عز وجل فی حاجۃٍ قضیت له ومن صلّی رکعتین یقرأ في کل رکعۃٍ بعد الفاتحۃ سورۃ اخلاص إحدی عشرۃ مرۃً ثم یصلّي علی رسول اللہ صلی اللہ علیه تعالی علیه وسلم بعد السلام ویسلم علیه ویذکرني ثم یخطو الی جھۃ العراق احدی عشرۃ خطوۃ یذکرھا اسمی ویذکر حاجته فإنھا تقضی باذن اللہ۔ | یعنی جو کسی تکلیف میں مجھ سے فریاد کرے وہ تکلیف دفع ہو اور جو کسی سختی میں میرا نام لے کر ندا کرے وہ سختی دور ہو اور جو کسی حاجت میں اللہ تعالیٰ کی طرف مجھ سے توسل کرے وہ حاجت بر آئے۔ اور جو دو رکعت نماز ادا کرے ہر رکعت میں فاتحہ کے بعد سورہ اخلاص گیارہ بار پڑھے پھر سلام بھیجے اور مجھے یاد کرے ، پھر عراق شریف کی طرف گیارہ قدم چلے ان میں میرا نام لیتا جائے اور اپنی حاجت یاد کرے اس کی وہ حاجت روا ہو اللہ کے اذن سے۔ |

1 شرح الصدور باب زيارة القبور مصطفى البابى مصر ص ٨٩ 2 بهجة الاسرار ذكر فضل اصحابه و بشر اهم مصطفى البابى مصر ص ١٠٢، زبدة الاسرار ذكر فضل اصحابہ و مريد يہ و محبيہ بكملنگ كمپنى بمبئى ص ١٠١

Fatawa Rizvia Volume 29

Grand scholars and great saints, such as Imam Abul Hasan Nuruddin Ali bin Jarir al-Lakhmi al-Shattanawfi, Imam Abdullah bin Asad al-Yafi'i al-Makki, Mowlana Ali al-Qari al-Makki (author of Mirqat, a commentary on Mishkat), Mowlana Abul Ma'ali Muhammad al-Sulami al-Qadri, and Shaykh al-Muhaqqiq Mowlana Abdul Haq al-Muhaddith al-Dehlawi, and others (may Allah have mercy on them), have quoted and narrated these words of grace from His Eminence Ghaus-e-Azam (may Allah be pleased with him) in their magnificent works: Bahjat al-Asrar, Khulasat al-Mafakhir, Nuzhat al-Khatir, Tuhfa al-Qadriya, Zubdat al-Athar, etc.

This Imam Abul Hasan Nuruddin Ali, the author of Bahjat al-Asrar, is among the greatest scholars, masters of recitation (Qira'at), grand saints, and leaders of the spiritual path. He is only two intermediaries away from Ghaus al-Thaqalayn (may Allah be pleased with him). He gained spiritual benefits from the eminent Imam, Hazrat Abu Salih Nasr (may his secret be sanctified), who in turn received them from his noble father, Hazrat Abu Bakr Tajuddin Abdul Razzaq (may Allah illuminate his resting place), who received them from his noble father, the Radiant Master, Ghaus-e-Azam (may Allah be pleased with him).

Shaykh al-Muhaqqiq (may Allah have mercy on him) states in Zubdat al-Athar: "This book Bahjat al-Asrar is a magnificent, noble, and famous book. Its author is a well-known and renowned scholar among the scholars of recitation, and his noble biography is mentioned and written in books [1]."

Imam Shamsuddin al-Dhahabi, whose high stature in the fields of Hadith and biographical evaluation (Asma' al-Rijal) is known to the world, attended his lectures and wrote praises for him in his book Tabaqat al-Muqri'in.

Imam al-Muhaddith Muhammad bin Muhammad bin al-Jazari, the author of Hisn al-Hasin, is among his chain of students. He studied this blessed book, Bahjat al-Asrar, under his master and obtained its certificate and permission [2].

The details of all these matters and the grand proof of this blessed prayer through Shari'ah evidence and the sayings and deeds of scholars and saints are in the treatise of the humble servant (may Allah forgive him) titled 'Anhar al-Anwar min Yamm Salat al-Asrar'.

Fa-alayka bima tajidu fiha ma yashfi al-sudur | Study of this treatise is incumbent upon you; in it, you will find [what heals the hearts].

Note: Imam Jalaluddin al-Suyuti described him as "al-Imam al-Awhad," meaning the peerless and unique Imam. -12 Minhu.

[1] Zubdat al-Athar, Booklink Company, Bombay, p. 2 [2] Zubdat al-Athar, Booklink Company, Bombay, p. 2

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

बड़े विद्वान और महान सूफी संत जैसे कि इमाम अबुल हसन नूरुद्दीन अली बिन ज़रीर लख़मी शतनूफ़ी, इमाम अब्दुल्लाह बिन असद याफ़ई मक्की, मौलाना अली कारी मक्की (मिरक़ात शरह मिश्क़ात के लेखक), मौलाना अबुल मुआली मुहम्मद सुल्मी क़ादरी और शैख़ मुहक़्क़िक़ मौलाना अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी आदि (अल्लाह उन पर रहम करे) ने अपनी महान कृतियों जैसे बहजतुल असरार, ख़ुलासतुल मफ़ाख़िर, नुज़हतुल ख़ातिर, तोहफ़ा क़ादरिया और ज़ुबदतुल आसार आदि में हज़रत गौस-ए-आज़म (रज़ियल्लाहु अन्हु) के इन बरकत भरे शब्दों को उद्धृत किया है।

यह इमाम अबुल हसन नूरुद्दीन अली, बहजतुल असरार के लेखक, महान विद्वानों, क़िरात के इमामों, और महान संतों व तरीक़त के सरदारों में से हैं। हज़रत गौसुल सक़लैन (रज़ियल्लाहु अन्हु) तक उनके बीच केवल दो माध्यम हैं। उन्होंने महान इमाम हज़रत अबू सालेह नस्र (अल्लाह उनके रहस्य को पवित्र रखे) से.फ़ैज़ हासिल किया, उन्होंने अपने पिता हज़रत अबू बक्र ताजउद्दीन अब्दुर रज़्ज़ाक़ (अल्लाह उनकी क़ब्र को रोशन करे) से, और उन्होंने अपने पिता हज़रत गौस-ए-आज़म (रज़ियल्लाहु अन्हु) से।

शैख़ मुहक़्क़िक़ (अल्लाह उन पर रहम करे) ज़ुबदतुल आसार में फ़रमाते हैं: "यह पुस्तक बहजतुल असरार एक महान, सम्माननीय और प्रसिद्ध पुस्तक है और इसके लेखक क़िरात के विद्वानों में एक प्रसिद्ध और नामी विद्वान हैं और उनके जीवन के हालात किताबों में वर्णित हैं [1]।"

इमाम शम्सुद्दीन ज़हबी, जिनका इल्म-ए-हदीस और अस्मा-उर-रिजाल में ऊंचा स्थान दुनिया जानती है, उनकी दर्स की महफ़िल में शामिल हुए और अपनी पुस्तक तबक़ातुल मुक़रिईन में उनकी प्रशंसा लिखी।

इमाम मुहद्दिस मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन अल-जज़री, हिस्न-ए-हसीन के लेखक, उनके शिष्यों की श्रृंखला में हैं। उन्होंने यह पवित्र पुस्तक बहजतुल असरार अपने शैख़ से पढ़ी और उसकी सनद और इजाज़त हासिल की [2]।

इन सब बातों का विवरण और इस मुबारक नमाज़ का शरई दलीलों और विद्वानों व संतों के कथनों और कार्यों से महान प्रमाण इस फ़क़ीर (अल्लाह उसे क्षमा करे) के रिसाले 'अन्हारुल अनवार मिन यम्म सलातिल असरार' में है।

फ़-अलयका बिमा तज़िदु फ़ीहा मा यश्फ़िस सुदूर | इस रिसाले का अध्ययन तुम पर लाज़िम है, इसमें तुम [वह पाओगे जो सीनों को शिफ़ा देता है]।

नोट: इमाम जलालुद्दीन सुयूती ने उन्हें 'अल-इमाम अल-अवहद' लिखा है, यानी अद्वितीय और बेनज़ीर इमाम। -12 मिन्हु।

[1] ज़ुबदतुल आसार, बुकलिंक कंपनी, बम्बई, पृ. 2 [2] ज़ुबदतुल आसार, बुकलिंक कंपनी, बम्बई, पृ. 2

اکابر علمائے کرام و اولیائے عظام مثل امام ابوالحسن نور الدین علی بن جریر لخمی شطنوفی و امام عبداللہ بن اسد یافعی مکی، مولانا علی قاری مکی صاحب مرقاۃ شرح مشکوٰۃ، مولینا ابوالمعالی محمد سلمی قادری و شیخ محقق مولانا عبدالحق محدث دہلوی و غیرہم رحمۃ اللہ علیہم اپنی تصانیف جلیلہ بہجۃ الاسرار و خلاصۃ المفاخر و نزہۃ الخاطر و تحفہ قادریہ و زبدۃ الآثار وغیرہا میں یہ کلمات رحمت آیات حضور غوثِ اعظم رضی اللہ تعالٰی عنہ سے نقل و روایت فرماتے ہیں۔

یہ امام ابوالحسن نور الدین علی مصنف بہجۃ الاسرار شریف اعاظم علماء و ائمہ قراءت و اکابر اولیاء و ساداتِ طریقت سے ہیں، حضور غوث الثقلین رضی اللہ تعالٰی عنہ تک صرف دو واسطے رکھتے ہیں، امام اجل حضرت ابوصالح نصر قدس سرہ، سے فیض حاصل کیا انہوں نے اپنے والد ماجد حضرت ابو بکر تاج الدین عبدالرزاق نور اللہ مرقدہ، سے انہوں نے اپنے والد ماجد حضور پُر نور سید السادات غوثِ اعظم رضی اللہ تعالٰی عنہ سے،

شیخ محقق رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ زبدۃ الآثار شریف میں فرماتے ہیں: یہ کتاب بہجۃ الاسرار کتاب عظیم و شریف و مشہور ہے اور اس کے مصنف علمائے قراءت سے عالم معروف و مشہور اور ان کے احوال شریفہ کتب میں مذکور و مسطور ۱۔

امام شمس الدین ذہبی کہ علم حدیث و اسماء الرجال میں جن کی جلالت شان عالم آشکار اس جناب کی مجلس درس میں حاضر ہوئے اور اپنی کتاب طبقات المقرئین میں ان کے مدائح لکھے۔

امام محدث محمد بن محمد بن الجزری مصنف حصن حصین اس جناب کے سلسلہ تلامذہ میں ہیں انہوں نے یہ کتاب مسطاب بہجۃ الاسرار شریف اپنے شیخ سے پڑھی اور اس کی سند و اجازت حاصل کی ۲۔

ان سب باتوں کی تفصیل اور اس نماز مبارک کا دلائل شرعیہ و اقوال و افعال علماء و اولیاء سے ثبوت جلیل فقیر غفر اللہ تعالیٰ لہ کے رسالہ انہار الانوار من یم صلوٰۃ الاسرار میں ہے۔

فعلیک بما تجد فیھا ما یشفی الصدور | اس رسالہ کا مطالعہ تجھ پر لازم ہے اس میں تُو

عہ: امام جلال الدین سیوطی نے ان جناب کو الامام الاوحد لکھا یعنی امام یکتا بے نظیر ۱۲ منہ۔

۱ زبدۃ الآثار بکملنگ کمپنی بمبئی ص ۲ ۲ زبدۃ الآثار بکملنگ کمپنی بمبئی ص ۲

Fatawa Razawiyya Volume 29

[Arabic]: ...and removes blindness. All praise is due to Allah, the Lord of all worlds. [Urdu Translation]: He will find that which cures the hearts and removes blindness, and all praise is for Allah Almighty who is the sustainer of all the worlds. (T)

Imam Arif Billah Sayyidi Abdul Wahhab Sha'rani (may Allah sanctify his secret) states in the noble book "Lawaqih al-Anwar fi Tabaqat al-Akhyar": A disciple of Sayyidi Muhammad Ghamri (may Allah be pleased with him) was going through a market. His animal's foot slipped, and he called out loudly, "O my master Muhammad! O Ghamri!" Meanwhile, Ibn Umar, the ruler of Sa'id, was being taken to prison by the command of Sultan Chaqmi. Ibn Umar heard the poor man's call and asked, "Who is this Sayyidi Muhammad?" The man replied, "He is my Sheikh." Ibn Umar, feeling humbled, also said, "O my master! O Ghamri! Look upon me! O my leader, O Muhammad Ghamri! Cast a glance of grace upon me." After he said this, Hazrat Sayyidi Muhammad Ghamri (may Allah be pleased with him) appeared and helped him such that the King and his soldiers were put in a dire situation. Ibn Umar was forced to be honored with a robe of honor and released.

In the same book, it is stated: Sayyidi Shams-ud-Din Muhammad Hanafi (may Allah be pleased with him) was performing ablution (Wudu) in his private chamber. Suddenly, he threw a wooden sandal (khadaon) into the air and it disappeared, although there was no opening in the chamber for it to go out. He gave the second sandal to his servant and told him to keep it until the first one returned. After some time, a person came from Syria with that sandal and some gifts. He presented them and said, "May Allah Almighty reward your eminence with goodness. When a thief sat on my chest to slaughter me, I said in my heart, 'O my master Muhammad! O Hanafi!' At that very moment, this sandal came from the unseen and hit his chest so hard that he fainted and fell back, and through this blessing from Allah (Exalted and Majestic), I was granted salvation."

1 Lawaqih al-Anwar fi Tabaqat al-Akhyar, Translation 324, Al-Sheikh Muhammad al-Ghamri, Mustafa al-Babi, Egypt, 2/88. 2 Lawaqih al-Anwar fi Tabaqat al-Akhyar, Translation 325, Sayyiduna wa Maulana Shams-ud-Din Hanafi, Mustafa al-Babi, Egypt, 2/95.

फ़तावा रज़विया खंड 29

[अरबी]: ...और अंधापन दूर करता है। सभी प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जो सभी दुनिया का रब है। [उर्दू अनुवाद]: वह कुछ ऐसा पाएगा जो दिलों को शफ़ा देता है और अंधापन दूर करता है, और सब तारीफें अल्लाह तआला के लिए हैं जो तमाम जहानों का परवरदिगार है। (त)

इमाम आरिफ़ बिल्लाह सय्यदी अब्दुल वहाब शेरानी (अल्लाह उनके रहस्य को पवित्र करे) अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "लवाक़िह अल-अनवार फ़ी तबक़ात अल-अखयार" में फरमाते हैं: सय्यदी मुहम्मद ग़मरी (रज़ियल्लाहु अन्हु) के एक मुरीद बाज़ार से गुज़र रहे थे। उनके जानवर का पैर फिसल गया, तो उन्होंने ज़ोर से पुकारा, "या सय्यदी मुहम्मद! या ग़मरी!" इसी दौरान सुल्तान चकमी के आदेश पर सईद के हाकिम इब्न उमर को कैद करके ले जाया जा रहा था। इब्न उमर ने फकीर की पुकार सुनी और पूछा, "ये सय्यदी मुहम्मद कौन हैं?" उसने कहा, "मेरे शेख हैं।" इब्न उमर ने आज़िज़ी से कहा, "या सय्यदी या ग़मरी! ला हज़िनी, ऐ मेरे सरदार ऐ मुहम्मद ग़मरी! मुझ पर नज़र-ए-इनायत फरमाएं।" उनका यह कहना था कि हज़रत सय्यदी मुहम्मद ग़मरी (रज़ियल्लाहु अन्हु) तशरीफ़ ले आए और ऐसी मदद फरमाई कि बादशाह और उसके लश्कर मुसीबत में घिर गए। मजबूरन इब्न उमर को खिलअत (सम्मान का वस्त्र) देकर विदा किया गया।

इसी में लिखा है: सय्यदी शम्स-उद-दीन मुहम्मद हनफ़ी (रज़ियल्लाहु अन्हु) अपने एकांत कमरे (हुजरा-ए-ख़लवत) में वज़ू फरमा रहे थे। अचानक उन्होंने एक खड़ाऊं(लकड़ी की सैंडल) हवा में फेंकी और वह गायब हो गई, हालांकि कमरे में हवा में बाहर जाने का कोई रास्ता नहीं था। दूसरी खड़ाऊं अपने खादिम को दे दी कि इसे अपने पास रखे जब तक कि पहली वापस न आ जाए। एक अरसे के बाद मुल्क-ए-शाम से एक व्यक्ति वह खड़ाऊं और कुछ तोहफ़ों के साथ हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया कि अल्लाह तआला हज़रत को जज़ा-ए-खैर दे। जब एक चोर मेरे सीने पर मुझे ज़िबह करने के लिए बैठा, तो मैंने अपने दिल में कहा, "या सय्यदी मुहम्मद या हनफ़ी!" उसी वक़्त यह खड़ाऊं ग़ैब (अदृश्य) से आकर उसके सीने पर लगी कि वह बेहोश होकर उल्टा गिर गया और अल्लाह अज़्ज़-व-जल्ल की इस बरकत से मुझे निजात मिली।

1. लवाक़िह अल-अनवार फ़ी तबक़ात अल-अख़यार, अनुवाद 324, अल-शेख मुहम्मद अल-ग़मरी, मुस्तफा अल-बाबी, मिस्र, 2/88।

2. लवाक़िह अल-अनवार फ़ी तबक़ात अल-अख़यार, अनुवाद 325, सय्यदुना व मौलाना शम्स-उद-दीन हनफ़ी, मुस्तफा अल-बाबी, मिस्र, 2/95।

पेज 750 में से 559

ویکشف العمی والحمد للہ رب العلمین۔ وہ کچھ پائے گا جو دلوں کو شفا دیتا ہے اور اندھاپن کو دور کرتا ہے اور سب تعریفیں اللہ تعالٰی کے لیے ہیں جو تمام جہانوں کا پروردگار ہے۔ (ت)

امام عارف باللہ سیدی عبدالوہاب شعرانی قدس سرہ ربانی کتاب مستطاب "لواقح الانوار فی طبقات الاخیار" میں فرماتے ہیں: سیدی محمد غمری رضی اللہ تعالی عنہ کے ایک مرید بازار میں تشریف لیے جاتے تھے ان کے جانور کا پاؤں پھسلا، با آواز پکارا یا سیدی محمد یا غمری، ادھر ابن عمر حاکم صعید کو بحکم سلطان چقمی قید کیے لیے جاتے تھے، ابن عمر نے فقیر کا نداء کرنا سنا، پوچھا یہ سیدی محمد کون ہیں؟ کہا میرے شیخ کہا میں ذلیل بھی کہتا ہوں یا سیدی یا غمری لا حظنی اے میرے سردار اے محمد غمری! مجھ پر نظر عنایت کرو، ان کا یہ کہنا کہ حضرت سیدی محمد غمری رضی اللہ تعالی عنہ تشریف لائے اور مدد فرمائی کہ بادشاہ اور اس کے لشکریوں کی جان پر بن گئی، مجبورانہ ابن عمر کو خلعت دے کر رخصت کیا۔

اسی میں ہے: سیدی شمس الدین محمد حنفی رضی اللہ تعالی عنہ اپنے حجرہ خلوت میں وضو فرما رہے تھے ناگاہ ایک کھڑاؤں ہوا پر پھینکی کہ غائب ہو گئی حالانکہ حجرے میں کوئی راہ اس کے ہوا پر جانے کی نہ تھی۔ دوسری کھڑاؤں اپنے خادم کو عطا فرمائی کہ اسے اپنے پاس رہنے دے جب تک وہ پہلی واپس آئے، ایک مدت کے بعد ملک شام سے ایک شخص وہ کھڑاؤں مع اور ہدایا کے حاضر لایا اور عرض کی کہ اللہ تعالٰی حضرت کو جزائے خیر دی جب چور میرے سینہ پر مجھے ذبح کرنے بیٹھا میں نے اپنے دل میں کہا۔ "یاسیدی محمد یا حنفی" اسی وقت یہ کھڑاؤں غیب سے آکر اس کے سینہ پر لگی کہ غش کھا کر الٹا ہو گیا اور مجھے یہ برکت حضرت اللہ عزوجل نے نجات بخشی۔

1 لواقح الانوار فی طبقات الاخیار ترجمه ۳۲۴ الشیخ محمد الغمری مصطفی البابی مصر ۸۸/۲ 2 لواقح الانوار فی طبقات الاخیار ترجمه ۳۲۵ سیدنا و مولانا شمس الدین حنفی مصطفی البابی مصر ۹۵/۲

It is mentioned in the same: When the holy wife of the praised Wali (Saint), may his secret be sanctified, was near death due to illness, she used to call out thus: "O my master Ahmad, O Badawi, your consideration is with me!" One day she saw Hazrat Sidi Ahmad Kabir Badawi (may Allah be pleased with him) in a dream saying, "How long will you call me and plead with me? Don't you know that you are under the protection of a great man of stability (i.e., your husband)? And whoever is in the presence of a great saint, we do not respond to their call. Say thus, 'O Sidi Muhammad, O Hanafi', if you say this, Allah Almighty will grant you health." That lady said so, and in the morning she woke up quite healthy, as if she was never ill at all [1]. In the same, it is mentioned that the praised one (may Allah be pleased with him) used to say during his final illness:

[Arabic]: Whoever has a need, let him come to my grave and ask for his need, I will fulfill it for him. For there is nothing between me and you except a cubit of earth, and any man whom a cubit of earth veils from his companions is not a man [2]. [Urdu Translation]: Whoever has any need, let him present himself at my grave and ask for the need; I will fulfill it. For between me and you, there is only this hand-span of soil in between, and what kind of man is he who lets this much soil become a veil between him and his companions?

Similarly, in the noble accounts of Hazrat Sidi Muhammad bin Ahmad Farghal (may Allah be pleased with him), it is written:

[Arabic]: He (may Allah be pleased with him) used to say: "I am among those who exercise authority in their graves. So whoever has a need, let him come facing my face and mention it to me, I will fulfill it for him." [3] [Urdu Translation]: He used to say: "I am among those who exercise disposal in their graves. Whoever has a need, let him present himself in front of my blessed face and tell me his need; I will fulfill it."

It is also in the same: It is narrated that once Hazrat Sidi Madyan bin Ahmad Ashmuni (may Allah be pleased with him) performed ablution...

---

1. Lawaqih al-Anwar fi Tabaqat al-Akhyar, Biography 325, Sayyiduna wa Mawlana Shamsuddin al-Hanafi, Mustafa al-Babi Egypt, 2/96
2. Lawaqih al-Anwar fi Tabaqat al-Akhyar, Biography 325, Sayyiduna wa Mawlana Shamsuddin al-Hanafi, Mustafa al-Babi Egypt, 2/96

3. Lawaqih al-Anwar fi Tabaqat al-Akhyar, Biography 329, Al-Sheikh Muhammad bin Ahmad al-Farghal, Mustafa al-Babi Egypt, 2/105

जिल्द 29 | फतावा रजविया

इसी में है: वली-ए-ममदूह (प्रशंसित वली) कुद्दिस सिर्रहु की मुकद्दस बीवी बीमारी के कारण मौत के करीब थीं, तो वह इस तरह पुकारती थीं: "या सैय्यदी अहमद या बदवी! खातिरुक मई" (ऐ मेरे आका ऐ अहमद बदवी! आपकी तवज्जो मेरे साथ है)। एक दिन हज़रत सैय्यदी अहमद कबीर बदवी (रज़िअल्लाहु तआला अन्हु) को ख़्वाब में देखा कि फ़रमाते हैं, कब तक मुझे पुकारेगी और मुझसे फ़रियाद करेगी? तू जानती नहीं कि तू एक बड़े साहिब-ए-तमकीन (यानी अपने शौहर) की हिमायत में है, और जो किसी वली-ए-कबीर की दरगाह में होता है हम उसकी पुकार पर जवाब नहीं देते। यूँ कह 'या सैय्यदी मुहम्मद या हनफी', जब तू यह कहेगी तो अल्लाह तआला तुझे आफ़ियत बख्शेगा। उन बीवी ने वैसा ही कहा, सुबह को काफी तंदुरुस्त उठीं, मानो कभी बीमार ही न थीं [1]। इसी में है कि हज़रत ममदूह (रज़िअल्लाहु तआला अन्हु) अपनी मर्ज़-ए-मौत (अंतिम बीमारी) में फ़रमाते थे।

[अरबी]: जिसकी कोई हाजत (ज़रूरत) हो उसे मेरी कब्र पर आना चाहिए और अपनी ज़रूरत मांगनी चाहिए, मैं उसे पूरा करूँगा। क्योंकि मेरे और तुम्हारे बीच मिट्टी की एक हाथ की दूरी के अलावा कुछ नहीं है, और वह कैसा मर्द है जिसे मिट्टी का एक हाथ अपने साथियों से ओझल कर दे [2]। [उर्दू अनुवाद]: जिसे कोई हाजत हो वह मेरी कब्र पर हाजिर होकर हाजत मांगे, मैं उसे पूरा कर दूँगा। क्योंकि मुझमें और तुममें यही हाथ भर मिट्टी ही तो आड़ है, और वह कैसा मर्द जिसे इतनी मिट्टी अपने साथियों से ओझल कर दे।

इसी तरह हज़रत सैय्यदी मुहम्मद बिन अहमद फ़रग़ल (रज़िअल्लाहु तआला अन्हु) के पाक हालात में लिखा है:

[अरबी]: आप (रज़िअल्लाहु तआला अन्हु) फ़रमाया करते थे: "मैं उन लोगों में से हूँ जो अपनी कब्रों में तसर्रुफ़ (अधिकार) रखते हैं। तो जिसकी कोई हाजत हो, वह मेरे चेहरे के सामने आए और मुझसे उसका ज़िक्र करे, मैं उसे पूरा कर दूँगा।" [3] [उर्दू अनुवाद]: फ़रमाया करते थे: मैं उनमें हूँ जो अपनी कब्रों में तसर्रुफ़ फ़रमाते हैं। जिसे कोई हाजत हो, मेरे पास मेरे चेहरा-ए-मुबारक के सामने हाज़िर होकर मुझसे अपनी हाजत कहे, मैं उसे पूरा कर दूँगा।

इसी में है: रिवायत है कि एक बार हज़रत सैय्यदी मद्यन बिन अहमद अश्मुनी (रज़िअल्लाहु तआला अन्हु) ने वज़ू...

1. लवाक़िह-उल-अनवार फ़ी तबक़ात-इल-अखियार, तर्जुमा 325, सैय्यदना व मौलाना शम्सुद्दीन अल-हनफ़ी, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, 2/96
2. लवाक़िह-उल-अनवार फ़ी तबक़ात-इल-अखियार, तर्जुमा 325, सैय्यदना व मौलाना शम्सुद्दीन अल-हनफ़ी, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, 2/96
3. लवाक़िह-उल-अनवार फ़ी तबक़ात-इल-अखियार, तर्जुमा 329, अल-शेख मुहम्मद बिन अहमद अल-फ़रग़ल, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, 2/105

اسی میں ہے: ولیِ ممدوح قدس سرّہ کی زوجہ مقدسہ بیماری سے قریبِ مرگ ہوئیں تو وہ یوں ندا کرتی تھیں: "یاسیدی احمد یا بدوی خاطرک معی" اے میرے سردار اے احمد بدوی! حضرت کی توجہ میرے ساتھ ہے۔ ایک دن حضرت سیدی احمد کبیر بدوی رضی اللہ تعالیٰ عنہ کو خواب میں دیکھا کہ فرماتے ہیں، کب تک مجھے پکارے گی اور مجھ سے فریاد کرے گی تو جانتی نہیں کہ تو ایک بڑے صاحبِ تمکین (یعنی اپنے شوہر) کی حمایت میں ہے، اور جو کسی ولیِ کبیر کی درگاہ میں ہوتا ہے ہم اس کی نداء پر اجابت نہیں کرتے، یوں کہہ یا سیدی محمد یا حنفی کہ یہ کہے گی تو اللہ تعالیٰ تجھے عافیت بخشے گا۔ ان بی بی نے یو نہی کہا، صبح کو خاصی تندرست اٹھیں، گویا کبھی مرض نہ تھا1۔ اسی میں ہے حضرت ممدوح رضی اللہ تعالیٰ عنہ اپنے مرضِ موت میں فرماتے تھے۔

[عربی]: من کانت حاجة فلیأت الی قبری و یطلب حاجته اقضها له فان مابینی وبینکم غیر ذراع من تراب وکل رجل یحجبه عن اصحبه ذراع من تراب فلیس برجل 2۔ [اردو ترجمہ]: جسے کوئی حاجت ہو وہ میری قبر پر حاضر ہو کر حاجت مانگے میں روا فرما دوں گا کہ مجھ میں تم میں یہی ہاتھ بھر مٹی ہی تو حائل ہے اور جس مرد کو اتنی مٹی اپنے اصحاب سے حجاب میں کر دے وہ مرد کاہے کا۔

اسی طرح حضرت سیدی محمد بن احمد فرغل رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے احوالِ شریفہ میں لکھا:

[عربی]: کان رضی اللہ تعالیٰ عنہ یقول انا من المتصرفین فی قبورهم فمن کانت له حاجة فلیأت الی قبالة وجهی ویذکرها لی اقضها له 3۔ [اردو ترجمہ]: فرمایا کرتے تھے میں ان میں ہوں جو اپنی

قبور میں تصرف فرماتے ہیں جسے کوئی حاجت ہو میرے پاس میرے چہرہ مبارک کے سامنے حاضر ہو کر مجھ سے اپنی حاجت کہے میں روا فرما دوں گا۔

اسی میں ہے: مروی ہوا ایک بار حضرت سیدی مدین بن احمد اشمونی رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے وضو...

---

1 لواقح الانوار فی طبقات الاخیار ترجمہ ۳۲۵ سیدنا و مولانا شمس الدین الحنفی مصطفٰی البابی مصر ۹۶/۲ 2 لواقح الانوار فی طبقات الاخیار ترجمہ ۳۲۵ سیدنا و مولانا شمس الدین الحنفی مصطفٰی البابی مصر ۹۶/۲ 3 لواقح الانوار فی طبقات الاخیار ترجمہ ۳۲۹ الشیخ محمد بن احمد الفرغل مصطفٰی البابی مصر ۱۰۵/۲

He states that he threw a wooden sandal towards the eastern lands. After a year, a person arrived and had that sandal with him. He related the event that in a forest, an ill-mannered person attempted to assault his daughter. At that time, the girl did not know the name of her father's spiritual guide, Hazrat Sayyidi Madin, so she called out like this: "Ya Sheikh abi lahizni" - "O my father's Sheikh, look upon me!" "O my father's Saint, save me!" As soon as she made this call, the sandal arrived and the girl was saved. That sandal is still present among his descendants. In the same [book], while mentioning Sayyidi Musa Abu Imran (may Allah the Almighty have mercy on him), it is written:

[Boxed Text] "Kaana idha nadahu muriduho ajabahu min maseerati sanatin aw akthar" - Whenever his disciple called him from anywhere, he would answer him, even if he was at a distance of a year's journey or more.

Hazrat Sheikh Muhaqqiq Maulana Abdul Haq Muhaddith Dehlvi, in 'Akhbar al-Akhyar Sharif', while mentioning the blessed life of the most eminent Hazrat Sheikh Baha-ul-Haq wal-Deen bin Ibrahim Ataullah al-Ansari al-Qadri al-Shatari al-Hussaini (may Allah the Almighty be pleased with him), quotes from the praised one's blessed treatise:

[Table] | Column 1 (Original Persian/Urdu) | Column 2 (Urdu Translation) | |---|---| | The dhikr for uncovering spirits (Kashf-e-Arwah) 'Ya Ahmad Ya Muhammad' is of two ways. One way is to say 'Ya Ahmad' on the right and 'Ya Muhammad' on the left and strike 'Ya Rasulullah' on the heart. The second way is to say 'Ya Ahmad' on the right and 'Ya Muhammad' on the left and contemplate 'Ya Mustafa' in the heart. Other dhikr like 'Ya Ahmad, Ya Muhammad, Ya Ali, Ya Hassan, Ya Hussain, Ya Fatima', if done in six directions, all spirits are uncovered. Other names... | There are two ways in the dhikr of 'Ya Ahmad' and 'Ya Muhammad' for uncovering spirits. The first way is to say 'Ya Ahmad' from the right side and 'Ya Muhammad' from the left side while striking 'Ya Rasulullah' on the heart. The second way is to say 'Ya Ahmad' from the right side and 'Ya Muhammad' from the left side while establishing the thought of 'Ya Mustafa' in the heart. Besides this, by doing the six-directional dhikr of other

invocations like 'Ya Muhammad, Ya Ahmad, Ya Ali, Ya Hassan, Ya Hussain, Ya Fatima'...
|

1. Al-Waqh al-Anwar fi Tabaqat al-Akhyar, Biography 326, Al-Sheikh Muhammad bin Ahmad al-Farghal, Mustafa al-Babi, Egypt 2/102.
2. Al-Waqh al-Anwar fi Tabaqat al-Akhyar, Biography 313, Al-Sheikh Muhammad bin Ahmad al-Farghal, Mustafa al-Babi, Egypt 2/21.

फरमाते हैं कि उन्होंने एक खड़ाऊँ पूर्वी देशों की ओर फेंकी, एक साल बाद एक व्यक्ति उपस्थित हुआ और वह खड़ाऊँ उसके पास थी। उन्होंने हाल बताया कि जंगल में एक दुराचारी ने उनकी साहिबज़ादी पर हाथ डालना चाहा, लड़की को उस समय अपने पिता के पीर-ओ-मुर्शिद हज़रत सय्यदी मदीन का नाम ज्ञात न था, तो उसने इस प्रकार पुकारा "या शैख अबी लाि़हज़नी" - "ऐ मेरे पिता के पीर मुझे बचाइए", यह पुकारते ही वह खड़ाऊँ आ गई, लड़की ने निजात पाई, वह खड़ाऊँ उनकी औलाद में अब तक मौजूद है। इसी में सय्यदी मूसा अबू इमरान (रहमतुल्लाह अलैह) के ज़िक्र में लिखते हैं:

[बॉक्स किया गया टेक्स्ट] "कान इज़ा नादाहु मुरीदुहु अजाबाहु मिन मसीरति सनतिन औ अक़्सर" - जब उनका मुरीद जहाँ कहीं से उन्हें पुकारता, वे जवाब देते, चाहे वह साल भर की राह पर हो या उससे भी अधिक।

हज़रत शैख मुहक़्क़िक़ मौलाना अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी 'अख़बारुल अख़यार शरीफ़' में ज़िक्र-ए-मुबारक हज़रत सय्यद अजल शैख बहाउल हक़ वद्दीन बिन इब्राहिम अताउल्लाह अल-अंसारी अल-क़ादरी अल-शत्तारी अल-हुसैनी (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) में हज़रत-ए-ममदूह के रिसाला-ए-मुबारका से नक़्ल फरमाते हैं:

[तालिका] | कॉलम १ | कॉलम २ | |---|---| | कश़्फ-ए-अरवाह 'या अहमद या मुहम्मद' के ज़िक्र में दो तरीके हैं, एक तरीका यह है कि 'या अहमद' दाईं ओर कहे और 'या मुहम्मद' बाईं ओर कहे और दिल पर 'या रसूलल्लाह' की ज़र्ब (चोट) लगाए। दूसरा तरीका यह है कि 'या अहमद' दाईं ओर कहे और 'या मुहम्मद' बाईं ओर और दिल में 'या मुस्तफा' का ख्याल जमाए। इसके अलावा अन्य ज़िक्र या अहमद, या मुहम्मद, या अली, या हसन, या हुसैन, या फातिमा का छह तरफा ज़िक्र करने से तमाम अरवाह (आत्माएं) प्रकट हो जाती हैं। अन्य नाम... | कश़्फ-ए-अरवाह के ज़िक्र 'या अहमद' और 'या मुहम्मद' में दो तरीके हैं। पहला तरीका यह है कि 'या अहमद' दाईं ओर से और 'या मुहम्मद' बाईं ओर से कहते हुए दिल पर 'या रसूलल्लाह' की ज़र्ब लगाए। दूसरा तरीका यह है कि 'या अहमद' दाईं ओर से और 'या मुहम्मद' बाईं ओर से कहते हुए दिल में 'या मुस्तफा' का ख्याल जमाए। इसके

अलावा अन्य अज़कार 'या मुहम्मद, या अहमद, या अली, या हसन, या हुसैन, या फातिमा' का छह तरफा ज़िक्र करने से... |

1. अल-वक़ा अल-अनवार फ़ी तबक़ात अल-अख़यार, अनुवाद ३२६, अल-शैख़ मुहम्मद बिन अहमद अल-फ़रग़ल, मुस्तफ़ा अल-बाबी, मिस्र २/१०२.
2. अल-वक़ा अल-अनवार फ़ी तबक़ात अल-अख़यार, अनुवाद ३१३, अल-शैख़ मुहम्मद बिन अहमद अल-फ़रग़ल, मुस्तफ़ा अल-बाबी, मिस्र २/२१.

पृष्ठ ५६१/७५०

فرماتے ہیں ایک کھڑاؤں بلاد مشرق کی طرف پھینکی، سال بھر کے بعد ایک شخص حاضر ہوئے اور وہ کھڑاؤں ان کے پاس تھی انہوں نے حال عرض کیا کہ جنگل میں ایک بد وضع نے ان کی صاحبزادی پر دست درازی چاہی، لڑکی کو اس وقت اپنے باپ کے پیر و مرشد حضرت سیدی مدین کا نام معلوم نہ تھا یوں ندا کی "یا شیخ ابی لاحظنی" "اے میرے باپ کے پیر مجھے بچائیے، یہ ندا کرتے ہی وہ کھڑاؤں آئی لڑکی نے نجات پائی وہ کھڑاؤں ان کی اولاد میں اب تک موجود ہے۔ اسی میں سیدی موسیٰ ابو عمران رحمہ اللہ تعالیٰ کے ذکر میں لکھتے ہیں:

[باکس شدہ عبارت] کان اذا ناداہ مریدہ اجابہ من مسیرۃ سنۃ او اکثر - جب ان کا مرید جہاں کہیں سے انہیں نداء کرتا جواب دیتے اگرچہ سال بھر کی راہ پر ہوتا یا اس سے بھی زائد۔

حضرت شیخ محقق مولانا عبد الحق محدث دہلوی اخبار الاخیار شریف میں ذکرِ مبارک حضرت سید اجل شیخ بہاء الحق والدین بن ابراہیم عطاء اللہ الانصاری القادری الشطاری الحسینی رضی اللہ تعالیٰ عنہ میں حضرت ممدوح کے رسالہ مبارکہ سے نقل فرماتے ہیں:

[ٹیبل] | پہلا کالم | دوسرا کالم | |---|---| | ذکرِ کشفِ ارواح یا احمد یا محمد در دو طریق ست، یک طریق آنست یا احمد را در راستا بگوید و یا محمد را در چپّا بگوید و در دل ضرب کند یا رسول اللہ طریق دوم آنست کہ یا احمد را در راستا بگوید و چپا یا محمد و در دل و ہم کند یا مصطفی دیگر ذکر یا احمد یا محمد یا علی یا حسن یا حسین یا فاطمہ شش طرفی ذکر کند کشف جمیع ارواح شود دیگر اسمائے | کشف ارواح کے ذکر یا احمد و یا محمد میں دو طریقے ہیں پہلا طریقہ یہ ہے کہ یا احمد دائیں طرف اور یا محمد بائیں طرف سے کہتے ہوئے دل پر یا رسول اللہ کی ضرب

لگائے دوسرا طریقہ یہ ہے کہ یا احمد دائیں طرف اور یا محمد بائیں طرف سے کہتے ہوئے دل میں یا مصطفیٰ کا خیال جمائے۔ اس کے علاوہ دیگر اذکار یا محمد، یا احمد، یا علی، یا حسن، یا حسین، یا فاطمہ کا چھ طرفی ذکر کرنے سے |

1 الوقح الانوار فی طبقات الاخیار ترجمہ ۳۲۶ الشیخ محمد بن احمد الفرغل مصطفی البابي مصر ۱۰۲/۲ 2 الوقح الانوار فی طبقات الاخیار ترجمہ ۳۱۳ الشیخ محمد بن احمد الفرغل مصطفی البابي مصر ۲۱/۲

Fatawa Razawiya, Volume 29

[Box 1 - Top Left] Angels of proximity have their influence, like Jibril, Mikhail, Israfil, or Izrail. Perform the four-stroke (chahar-zarbi) remembrance (dhikr). Another is the dhikr of the name of the Shaykh; that is, say 'Ya Shaykh, Ya Shaykh' a thousand times such that you pull the 'harf-e-nida' (particle of calling) from the heart towards the right side and strike the word 'Shaykh' onto the heart. [1]

[Box 2 - Top Right] Discovery of all souls is achieved. Mentioning the names of the proximate angels also has an effect; one should perform the four-stroke dhikr of Jibril, Mikhail, Israfil, or Izrail. Similarly, while performing the dhikr of the Shaykh's name, say 'Ya Shaykh' a thousand times in a way that, while pulling the 'harf-e-nida' from the heart, take it to the right side and strike the heart with the word 'Shaykh'. (T)

Hazrat Sayyidi Noor-ud-Din Abdur Rahman Maulana Jami (may his secret be sanctified) writes in 'Nafahat al-Uns' regarding the life of Hazrat Mawlawi Ma'nawi [Rumi] (may his lofty secret be sanctified) that Maulana (may Allah sanctify his soul) said near his passing:

[Box 3 - Middle Left] Do not be sorrowful at my departure, for the light of Mansur (may Allah have mercy on him) manifested upon the soul of Shaykh Farid-ud-Din Attar (may Allah have mercy on him) after one hundred and fifty years and became his guide (Murshid). [2]

[Box 4 - Middle Right] Do not be grieved by our departure, for the light of Hazrat Mansur (may mercy be upon him) became the guide for Shaykh Farid-ud-Din Attar's soul by manifesting upon it after one hundred and fifty years. (T)

And he said:

[Box 5 - Lower Middle Left] In whatever state you may be, remember me so that I may be your helper, in whatever garment I may be. [3]

[Box 6 - Lower Middle Right] In whatever state you are, remember me so that I may become your helper, regardless of what attire I am in. (T)

And he said:

[Box 7 - Bottom Left] In the world, I have two attachments: one with the body and one with you. And when, by the grace of Allah the Glorified and Exalted, I become solitary and detached, and the world...

[Box 8 - Bottom Right] In the world, we have two attachments: one with the body and the second with you. When by the grace of Allah Almighty I become solitary and detached and the world...

[Footnotes] 1. Akhbar-ul-Akhyar, translated by Shaykh Bahauddin Ibrahim Ataullah Ansari, Maktaba Nooria Razavia Sukkur, p. 199; Nafahat al-Uns, translated by Maulana Jalaluddin Rumi, Kitab Faroshi Mahmudi, pp. 462 & 463. 2. Nafahat al-Uns, translated by Maulana Jalaluddin Rumi, Kitab Faroshi Mahmudi, pp. 462 & 463. 3. Nafahat al-Uns, translated by Maulana Jalaluddin Rumi, Kitab Faroshi Mahmudi, pp. 462 & 463.

फ़तावा रज़विया, खंड 29

[बॉक्स 1 - ऊपर बाएँ निकटवर्ती फरिश्ते अपना प्रभाव रखते हैं, जैसे जिब्रील, मीकाइल, इसराफ़ील या इज़राइल। चार-स्ट्रोक (चहार-ज़रबी) ज़िक्र करें। दूसरा शेख के नाम का ज़िक्र है; यानी 'या शेख, या शेख' एक हज़ार बार इस तरह कहें कि दिल से 'हर्फ़ए-निदा' (पुकारने का शब्द) को दाईं ओर खींचें और 'शेख' शब्द को दिल पर मारें। [1]

[बॉक्स 2 - ऊपर दाएँ सभी रूहों का कशफ़ (रहस्योद्घाटन) प्राप्त हो जाता है। निकटवर्ती फरिश्तों के नामों का उल्लेख भी प्रभाव रखता है; जिब्रील, मीकाइल, इसराफ़ील या इज़राइल का चार-ज़रबी ज़िक्र करे। इसी तरह शेख के नाम का ज़िक्र करते हुए एक हज़ार बार 'या शेख' इस तरह कहे कि हर्फ़ए-निदा को दिल से खींचते हुए दाईं ओर ले जाए और शब्द 'शेख' से दिल पर चोट (ज़रब) लगाए। (त)

हज़रत सैयदी नूरुद्दीन अब्दुर रहमान मौलाना जामी (उनका रहस्य पवित्र हो) 'नफ़हातुल उन्स' में हज़रत मौलवी मानवी [रूमी] (उनका उच्च रहस्य पवित्र हो) के जीवन के बारे में लिखते हैं कि मौलाना (अल्लाह उनकी रूह को पवित्र करे) ने अपने इंतक़ाल के समय फ़रमाया:

[बॉक्स 3 - मध्य बाएँ मेरे जाने से दुखी न हों, क्योंकि मंसूर (अल्लाह उन पर रहम करे) का नूर एक सौ पचास साल बाद शेख फरीदुद्दीन अत्तार (अल्लाह उन पर रहम करे) की रूह पर प्रकट हुआ और उनका मुर्शिद बन गया। [2]

[बॉक्स 4 - मध्य दाएँ हमारे जाने से दुखी न हों क्योंकि हज़रत मंसूर अलैहिर्रहमा का नूर एक सौ पचास साल बाद शेख फरीदुद्दीन अत्तार की रूह पर जलवाअफ़रोज़ होकर उनका मुर्शिद हो गया। (त)

और फ़रमाया:

[बॉक्स 5 - निचला मध्य बाएँ तुम जिस भी हाल में हो मुझे याद करो ताकि मैं तुम्हारा मददगार बनूँ, चाहे मैं किसी भी लिबास में हूँ। [3]

[बॉक्स 6 - निचला मध्य दाएँ तुम जिस हाल में रहो मुझे याद करो ताकि मैं तुम्हारा मददगार बनूँ, चाहे मैं जिस भी लिबास में हूँ। (त)

और फ़रमाया:

[बॉक्स 7 - नीचे बाएँ] दुनिया में मेरे दो लगाव हैं: एक शरीर के साथ और एक तुम्हारे साथ। और जब हक सुभानहु व तआला की कृपा से मैं अकेला और मुक्त हो जाऊँगा और दुनिया...

[बॉक्स 8 - नीचे दाएँ] दुनिया में हमारे दो लगाव हैं: एक बदन के साथ और दूसरा तुम्हारे साथ। जब हक़ तआला की इनायत से मैं फ़र्द और मुजर्रद (अकेला और मुक्त) हो जाऊँगा और आलम...

[फुटनोट] 1. अख़बारुल अख़यार, अनुवाद शेख़ बहाउद्दीन इब्राहीम अताउल्लाह अंसारी, मकतबा नूरिया रज़विया सुक्कुर, पृ. 199; नफ़हातुल उन्स, अनुवाद मौलाना जलालुद्दीन रूमी, किताब फ़रोशी महमूदी, पृ. 462 और 463। 2. नफ़हातुल उन्स, अनुवाद मौलाना जलालुद्दीन रूमी, किताब फ़रोशी महमूदी, पृ. 462 और 463। 3. नफ़हातुल उन्स, अनुवाद मौलाना जलालुद्दीन रूमी, किताब फ़रोشی महमूदी, पृ. 462 और 463।

فتاوی رضویہ، جلد ۲۹

[پہلا باکس - اوپر بائیں] ملائکہ مقرب ہمیں تاثیر دارند یا جبریل، یا میکائیل یا اسرافیل یا عزرائیل چہار ضربی، دیگر ذکر اسم شیخ یعنی بگوید یا شیخ یا شیخ ہزار بار بگوید کہ حرف نداء را از دل بکشد طرف راستا برد و لفظ شیخ را در دل ضرب کند۔1

[دوسرا باکس - اوپر دائیں] تمام ارواح کا کشف حاصل ہوجاتا ہے۔ مقرب فرشتوں کے ناموں کا ذکر بھی تاثیر رکھتا ہے، یا جبرائیل، یا میکائیل، یا اسرافیل، یا عزرائیل کا چار ضربی ذکر کرے، نیز اسم شیخ کا ذکر کرتے ہوئے یا شیخ ہزار بار اس طرح کرے کہ حرفِ ندا کو دل سے کھینچتے ہوئے دائیں طرف لے جائے اور لفظِ شیخ سے دل پر ضرب لگائے۔(ت)

حضرت سیدی نور الدین عبد الرحمن مولانا جامی قدس سرہ السامی نفحات الانس شریف میں حضرت مولوی معنوی قدس سرہ العلی کے حالات میں لکھتے ہیں کہ مولانا روح اللہ روحہ، نے قریب انتقال ارشاد فرمایا:

[تیسرا باکس - درمیانی بائیں] از رفتنِ من غمناک مشوید کہ نور منصور رحمۃ اللہ تعالیٰ بعد از صدو پنجاہ سال بر روحِ شیخ فرید الدین عطار رحمۃ اللہ تعالیٰ تجلی کرد و مرشد او شد 2۔

[چوتھا باکس - درمیانی دائیں] ہمارے جانے سے غمگین مت ہوں کہ حضرت منصور علیہ الرحمہ کا نور ایک سو پچاس سال بعد شیخ فرید الدین عطار کی روح پر تجلی کرتے ہوئے ان کا مرشد ہو گیا۔(ت)

اور فرمایا:

[پانچواں باکس - نچلا درمیانی بائیں] در ہر حالتے کہ باشید مرا یاد کنید تا من شما را مدد باشم در ہر لبا سے کہ باشم 3-

[چھٹا باکس - نچلا درمیانی دائیں] تم جس حالت میں رہو مجھے یاد کرو تاکہ میں تمہارا مددگار بنوں میں چاہے جس لباس میں ہوں۔(ت)

اور فرمایا:

[ساتواں باکس - نیچے بائیں] در عالمِ ما را دو تعلق ست، یکے بہ بدن و یکے بہ شما، و چوں بہ عنایتِ حق سبحانہ و تعالیٰ فرد و مجرد شوم و

[آٹھواں باکس - نیچے دائیں] دنیا میں ہمارے دو تعلق ہیں ایک بدن کے ساتھ اور دوسرا تمہارے ساتھ ، جب حق تعالیٰ کی عنایت سے میں فرد و مجرد ہو جاؤں گا اور عالم

[حواشی] 1 اخبار الاخیار ترجمہ شیخ بہاؤ الدین ابراہیم عطاء اللہ انصاری مکتبہ نوریہ رضویہ سکھر ص ۱۹۹، نفحات الانس ترجمہ مولانا جلال الدین رومی، کتاب فروشی محمودی ص ۴۶۲ و ۴۶۳ 2 نفحات الانس ترجمہ مولانا جلال الدین رومی، کتاب فروشی محمودی ص ۴۶۲ و ۴۶۳ 3 نفحات الانس ترجمہ مولانا جلال الدین رومی، کتاب فروشی محمودی ص ۴۶۲ و ۴۶۳

Volume 29 Fatawa Razawiyya

When the world of isolation and singleness manifests itself, then this connection will also be yours. (1) [Translation: When the state of isolation and detachment is revealed, then this connection will also be for you. (T)]

Shah Waliullah Dehlavi writes in 'Atyab al-Nagham fi Madh Sayyid al-Arab wal-Ajam': "May Allah send blessings upon you, O best of His creation, and O best of those hoped for and O best of givers. And O best of those from whom hope is sought to remove affliction, and whose generosity has surpassed the generosity of clouds. And you are my protector from the onset of calamities, when they dig their worst claws into the heart." (2)

And he says in its commentary and translation: (Chapter eleven on humble supplication in the court of the Prophet, peace and blessings of Allah be upon him): May God send mercy upon you, O best of God's creation, O best one who can be hoped for, O best giver, O best one in whom hope is placed for the removal of misfortune, and O best one whose generosity is more than rain. I bear witness many times that you are my refuge from the onslaught of a calamity and distress that sinks the worst claws into the heart. (3) (Summarized)

(Chapter eleven about the humble plea in the court of the Prophet, peace and blessings of Allah be upon him): O better than the creation of God! May Allah send blessings upon you, O best person from whom hope is sought and O best giver, O best person that is hoped in for removing calamity, and whose generosity has excellence over rain. You are the one who gives me refuge from the crowd of calamities when they dig their worst claws into my heart. (T)

In the beginning of the same work he writes: Mention after the accidents of time, that in those accidents it is inevitable to seek help from the soul of the Prophet, peace and blessings of Allah be upon him (4).

Mention of some accidents of time in which it is necessary to seek help from the holy soul of the Noble Prophet, peace and blessings of Allah be upon him. (T)

1 Nafahat al-Uns, translation of Maulana Jalaluddin Rumi, Kitab Faroshi Mahmoodi, pp. 462 & 463. 2 Atyab al-Nagham fi Madh Sayyid al-Arab wal-Ajam, chapter eleven, Mujtabai Delhi, p. 22. 3 Atyab al-Nagham fi Madh Sayyid al-Arab wal-Ajam, chapter eleven, Mujtabai Delhi, p. 22. 4 Atyab al-Nagham fi Madh Sayyid al-Arab wal-Ajam, chapter one, Mujtabai Delhi, p. 2.

जिल्द 29 फ़तावा रज़विया

आलम-ए-तजरीद व तफ़रीद रूए नुमायद आं ताल्लुक नीज़ अज़ आं शुमा ख़्वाहद बुद (1) [अनुवाद: तफ़रीद और तजरीद ज़ाहिर हो जाएगा तो यह ताल्लुक भी तुम्हारे लिए होगा। (त)]

शाह वलीउल्लाह देहलवी 'अत्यब अल-नगम फी मदह सैय्यद अल-अरब वल-अजम' में लिखते हैं: "अल्लाह आप पर कृपा बरसाए, ऐ उसकी रचना में सबसे श्रेष्ठ, और ऐ जिनसे सबसे अधिक आशा की जाती है और ऐ सबसे श्रेष्ठ दाता। और ऐ उन लोगों में सबसे श्रेष्ठ जिनसे विपत्ति दूर करने की आशा की जाती है, और जिनकी उदारता बादलों की उदारता से भी बढ़कर है। और जब विपत्तियाँ दिल में अपने सबसे बुरे पंजे गड़ा देती हैं, तब आप ही उनके प्रहार से मुझे बचाने वाले हैं।" (2)

और वह स्वयं इसकी व्याख्या और अनुवाद में कहते हैं: (ग्यारहवाँ अध्याय नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दरबार में विनम्र प्रार्थना के बारे में): ऐ ईश्वर की रचना में सबसे श्रेष्ठ, ईश्वर आप पर दया बरसाए, ऐ सबसे श्रेष्ठ व्यक्ति जिससे आशा की जा सकती है, ऐ सबसे श्रेष्ठ दाता, ऐ सबसे श्रेष्ठ व्यक्ति जिसमें विपत्ति दूर करने के लिए आशा रखी जाती है, और ऐ सबसे श्रेष्ठ व्यक्ति जिसकी उदारता वर्षा से अधिक है। मैं बार-बार गवाही देता हूँ कि जब कोई विपत्ति और संकट हृदय में सबसे बुरे पंजे गड़ा देता है, तब आप ही मुझे उससे शरण देने वाले हैं। (3) (संक्षेपित)

(ग्यारहवीं फ़स्ल हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम की बारगाह में आज़िज़ाना फ़रियाद के बारे में): ऐ ख़ल्क़-ए-ख़ुदा से बेहतर! आप पर अल्लाह तआला दुरूद भेजे, ऐ बेहतरीन शख़्स जिससे उम्मीद की जाती है और ऐ बेहतरीन अता करने वाले ऐ बेहतरीन शख़्स कि मुसीबत को दूर करने में जिससे उम्मीद रखी जाती है, और जिसकी सख़ावत बारिश पर फ़ौक़ियत रखती है। आप ही मुझे मुसीबतों के हुजूम से पनाह देने वाले हैं जब वो मेरे दिल में बदतरीन पंजे गाड़ती हैं। (त)

इसी के आरंभ में वे लिखते हैं: ज़िक्र बाद हवादिस-ए-ज़मां कि दर आं हवादिस ला बुद अस्त अज़ इस्तमदाद बरूह-ए-आँ हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम (4)। ज़माने के कुछ हादसों का ज़िक्र जिन हादसों में हुज़ूर अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रूहे अक़दस से मदद तलब करना ज़रूरी है। (त)

1 नफ़हात अल-उन्स, मौलाना जलालुद्दीन रूमी का अनुवाद, किताब फरोशी महमूदी, पृष्ठ 462 और 463। 2 अत्यब अल-नगम फी मदह सैय्यद अल-अरब वल-अजम, ग्यारहवाँ अध्याय, मुजतबाई दिल्ली, पृष्ठ 22। 3 अत्यब अल-नगम फी मदह सैय्यद अल-अरब वल-अजम, ग्यारहवाँ अध्याय,

मुजतबाई दिल्ली, पृष्ठ 22। 4 अत्यब अल-नगम फी मदह सैय्यद अल-अरب वल-अजम, पहला अध्याय, मुजतबाई दिल्ली, पृष्ठ 2।

पृष्ठ 563 / 750

عالم تجرید و تفرید روئے نماید آں تعلق نیز از آں شما خواهد بود (۱) تفرید و تجرید ظاہر ہو جائے گا تو یہ تعلق بھی تمہارے لیے ہو گا۔ (ت)

شاہ ولی اللہ صاحب دہلوی اطیب النغم فی مدح سید العرب و العجم میں لکھتے ہیں۔ وصلی علیك الله یا خیر خلقه ویا خیر مأمول ویا خیر واهب ویا خیر من یرجی لکشف رزیة ومن جوده قد فاق جود السحائب وانت مجیري من هجوم ملمة اذا انشبت في القلب شر المخالب (۲)

اور خود اس کی شرح و ترجمہ میں کہتے ہیں: (فصل یازدهم در ابتهال بجناب آنحضرت صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) رحمت فرستد بر تو خدائے تعالیٰ اے بہترین خلق خدا، وائے بہترین کسیکه امید داشته شود، اے بہترین عطا کننده وائے بہترین کسیکه امید داشته باشد برائے ازالہ مصیبت و بہترین کسیکه سخاوت او زیاده است از باراں، بارہا گواهی مید ہم کہ تو پناہ دہندہ منی از ہجوم کردن مصیبتے و تنے کہ بخلا ند در دل بدترین چنگالها را (۳) اھ ملخصاً

(گیارہویں فصل حضور علیہ الصلوۃ والسلام کی بارگاہ میں عاجزانہ فریاد کے بارے میں) اے خلق خدا سے بہتر! آپ پر اللہ تعالیٰ درود بھیجے، اے بہترین شخص جس سے امید کی جاتی ہے اور اے بہترین عطا کرنے والے اے بہترین شخص کہ مصیبت کو دور کرنے میں جس سے امید رکھی جاتی ہے، اور جس کی سخاوت بارش پر فوقیت رکھتی ہے۔ آپ ہی مجھے مصیبتوں کے ہجوم سے پناہ دینے والے ہیں جب وہ میرے دل میں بدترین پنجے گاڑتی ہیں۔ (ت)

اسی کے شروع میں لکھتے ہیں: ذکر بعد حوادث زماں کہ دراں حوادث لا بدست از استمداد بروح آنحضرت صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم (۴)۔ بعض حوادث زمانہ کا ذکر جن حوادث میں حضور انور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی روح اقدس سے مدد طلب کرنا ضروری ہے۔ (ت)

۱ نفحات الانس ترجمہ مولانا جلال الدین الرومی کتاب فروشی محمودی ص ۴۶۲ و ۴۶۳ ۲ اطیب النغم فی مدح سید العرب و العجم فصل یازدہم مجتبائی دہلی ص ۲۲ ۳ اطیب النغم فی مدح سید العرب و العجم فصل یازدہم مجتبائی دہلی ص ۲۲ ۴ اطیب النغم فی مدح سید العرب و العجم فصل اول مجتبائی دہلی ص ۲

Fatawa Razawiyya, Volume 29

In its first chapter, he writes: [Table] Left Column: To me, no one appears except the noble Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) as a place for the grieved to turn in every hardship. 1. Right Column: I see none other than the luminous presence of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him), for in every difficulty, he alone is the refuge for the sorrowful. (T)

The same Shah Sahib writes in the qasida "Madhiya Hamziyah":

He calls out humbly with a submissive heart, humiliation, supplication, and seeking refuge. O Messenger of Allah, O best of creation! I seek your bounty on the Day of Judgment. When a dark, calamitous event descends, you are the fortress against every affliction. To you is my orientation, and in you is my reliance; in you are my desires, and in you is my hope. 2

And he himself writes in its commentary and translation: [Table] Left Column: Sixth chapter on addressing the noble excellence (upon him be the best prayers and most perfect greetings and salutations). He calls out, wretched and humbled, with a broken heart and expression of worthlessness, sincerely in supplication and seeking refuge in this way: O Messenger of God, O best of creatures, I seek a gift on the day of decision, a time when a great matter descends in ultimate darkness. Then you are the refuge from every calamity. My turning is towards you, and my seeking refuge is through you, and my hope is in you. Summarized. 3. Right Column: The sixth chapter is about calling upon the high-ranking leader of the universe (peace and blessings of Allah be upon him). May the best blessings and most complete peace be upon you. A low and wretched person, with a broken heart and feelings of humiliation and disgrace, calls out while seeking refuge with humility and submission: O Messenger of Allah, O best of creation! I am a seeker of your gift on the day of judgment. When a massive calamity descends in extreme darkness, you alone are the refuge from every trouble. My focus is towards you, I take refuge in you alone, and I hold greed and hope from you alone. Summarized. (T)

1. Atyab al-Nagham fi Madh Sayyid al-Arab wal-Ajam, Chapter 1, Mujtabai Delhi, p. 4.
2. Atyab al-Nagham fi Madh Sayyid al-Arab wal-Ajam, Chapter 6, Matba' Mujtabai Delhi, p. 33.

3. Atyab al-Nagham fi Madh Sayyid al-Arab wal-Ajam, Chapter 6, Matba' Mujtabai Delhi, p. 33 & 34.

फ़तावा रज़विया, खंड 29

इसकी पहली फ़सल (अध्याय) में लिखते हैं: [Table] बायाँ कॉलम: मुझे हुज़ूर अनवर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के सिवा कोई नज़र नहीं आता क्योंकि हर सख़्ती में ग़मज़दों की पनाहगाह आप ही हैं। 1. दायाँ कॉलम: मुझे हुज़ूर अनवर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के सिवा कोई नज़र नहीं आता क्योंकि हर सख़्ती में ग़मज़दों की पuहगाह आप ही हैं। (त)

यही शाह साहब क़सीदा "मदहिया हमज़िया" में लिखते हैं:

वह दिल की आज़ज़ी, ज़िल्लत, गिड़गिड़ाहट और पनाह की तलब के साथ पुकारता है। ऐ अल्लाह के रसूल, ऐ मख़लूक़ात में सबसे बेहतर! मैं फ़ैसले के दिन आपकी अता (दान) का तलबगार हूँ। जब कोई घोर अंधेरी मुसीबत नाज़िल हो, तो आप ही हर बला से बचने का मज़बूत क़िला हैं। मेरी तवज्जो आपकी तरफ़ है और मेरा सहारा आप ही हैं, और आप ही से मेरी उम्मीदें और आस बंधी है। 2

और ख़ुद ही इसकी शरह (व्याख्या) और तर्जुमे में लिखते हैं: [Table] बायाँ कॉलम: छठी फ़सल आली मर्तबत सरवर-ए-आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को पुकारने के बयान में। आप पर बेहतरीन दरूद और कामिल तरीन सलाम हो। ज़लील ओ ख़्वार शख़्स शिकस्ता दिल, ज़िल्लत ओ रुसवाई, अज्ज़ ओ इंकिसार के साथ पनाह तलब करते हुए यूँ पुकारता है: ऐ अल्लाह के रसूल, ऐ बेहतरीन मख़लूक़! मैं फ़ैसले के दिन आपकी अता का तलबगार हूँ, जब इंतहाई अंधेरे में बहुत बड़ी मुसीबत नाज़िल हो तो हर बला में पनाहगाह तो ही है। मेरी तवज्जो तेरी तरफ़ है, तुझ ही से मैं पनाह लेता हूँ, तुझ ही से लालच और उम्मीद रखता हूँ। सारांश। 3. दायाँ कॉलम: छठी फ़सल आली मर्तबत सरवर-ए-आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को पुकारने के बयान में। आप पर बेहतरीन दरूद और कामिल तरीन सलाम हो। ज़लील ओ ख़्वार शख़्स शिकस्ता दिल, ज़िल्लत ओ रुसवाई, अज्ज़ ओ इंकिसार के साथ पनाह तलब करते हुए यूँ पुकारता है, ऐ अल्लाह तआला के रसूल, ऐ बेहतरीन ख़ल्क़! मैं फ़ैसले के दिन आपकी अता का तलबगार हूँ, जब इंतहाई अंधेरे में बहुत बड़ी मुसीबत नाज़िल हो तो हर बला में पनाहगाह तो ही है। मेरी तवज्जो तेरी तरफ़ है, तुझ ही से मैं पनाह लेता हूँ, तुझ ही से तमा ओ उम्मीद रखता हूँ। सारांश। (त)

1. अतयबुल नग़ाम फ़ी मदह सैयदुल अरब वल अजम, फ़सल अव्वल, मुज्तबाई दिल्ली, पृ. 4.
2. अतयबुल नग़ाम फ़ी मदह सैयदुल अरब वल अजम, फ़सल शशुम, मतबअ मुज्तबाई दिल्ली, पृ. 33.

3. अतयबुल नग़म फ़ी मदह सैयदुल अरब वल अजम, फ़सल शशुम, मतबअ मुज्तबाई दिल्ली, पृ. 33 और 34.

فتاوی رضویہ، جلد ۲۹

اسی کی فصل اول میں لکھتے ہیں: [Table] بایاں کالم: به نظر نمی آید مرا مگر آنحضرت صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کہ جائے دست زدن اندوہگین ست در ہر شدتے ۱۔ دایاں کالم: مجھے حضور انور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے سوا کوئی نظر نہیں آتا کیونکہ ہر سختی میں غمزدوں کی پناہ گاہ آپ ہی ہیں۔ (ت)

یہی شاہ صاحب قصیدہ "مدحیہ حمزہ" میں لکھتے ہیں:

ینادی ضارعًا لخضوع قلب وذل وابتهال والتجاء رسول الله یا خیر البرایا نوالک ابتغی یوم القضاء اذا ما حل خطب مدلهم فانت الحصن من کل البلاء الیک توجهی وبک استنادی وفیک مطامعی وبک ارتجائی ۲

اور خود ہی اس کی شرح وترجمہ میں لکھتے ہیں: [Table] بایاں کالم: فصل ششم در مخاطبہ جناب عالی علیہ افضل الصلوات واکمل التحیات والتسلیمات ندا کند زاد و خوار شدہ بشکستگی دل و اظہار بے قدری خود بہ اخلاص در مناجات و بہ پناہ گرفتن بایں طریق کہ اے رسولِ خدا اے بہترین مخلوقات عطائے مے خواہم روزِ فیصل کردن، وقتے کہ فرود آید کارِ عظیم در غایت تاریکی پس توئی پناہ از ہر بلا بسوئے تست رو آوردن من و بہ تست پناہ گرفتن من و در تست امید داشتن من اھ ملخصاً ۳۔ دایاں کالم: چھٹی فصل عالی مرتبت سرورِ عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کو پکارنے کے بیان میں۔ آپ پر بہترین درود اور کامل ترین سلام ہو۔ ذلیل و خوار شخص شکستہ دل، ذلت و رسوائی عجز و انکسار کے ساتھ پناہ طلب کرتے ہوئے یوں پکارتا ہے، اے اللہ تعالیٰ کے رسول، اے بہترین خلق! میں فیصلے کے دن آپ کی عطا کا طلبگار ہوں، جب انتہائی اندھیرے میں بہت

بڑی مصیبت نازل ہو تو ہر بلا میں پناہ گاہ تو ہی ہے۔ میری توجہ تیری طرف ہے، تجھ ہی سے میں پناہ لیتا ہوں، تجھ ہی سے طمع و امید رکھتا ہوں اھ ملخصاً (ت)

۱ اطیب النغم فی مدح سید العرب والعجم فصل اول مجتبائی دہلی ص ۴ ۲ اطیب النغم فی مدح سید العرب والعجم فصل ششم مطبع مجتبائی دہلی ص ۳۳ ۳ اطیب النغم فی مدح سید العرب والعجم فصل ششم مطبع مجتبائی دہلی ص ۳۳ و ۳۴

Fatawa Razawiyya Volume 29

The same Shah Sahib, in "Intibah fi Salasil Auliya Allah", narrates the method of a 'Khatm' (ritual completion) for the fulfillment of needs as follows:

First, two units (rak'ahs) of voluntary prayer (Nafil), then 111 times Durood.	First pray two rak'ahs then 111 times Durood Sharif,
After that, 111 times Kalima Tamjeed and 111 times	111 times Kalima Tamjeed, then read this 111 times: O Sheikh
Shay'an lillah ya Sheikh Abdul Qadir Jilani [1].	Abdul Qadir Jilani, for God's sake grant me something. (T)

It is proven from this same 'Intibah' that this Shah Sahib and his Sheikh and teacher of Hadith, Maulana Tahir Madani, in whose service Shah Sahib remained for a long time studying Hadith, and his Sheikh, teacher, and father Maulana Ibrahim Kurdi, and his teacher's teacher Maulana Ahmed Nakhli — these four gentlemen are also included in most of Shah Sahib's Hadith chains. And Shah Sahib's spiritual guide (Pir-o-Murshid) Sheikh Muhammad Saeed Lahori, whom he called "a long-lived, trustworthy Sheikh" in 'Intibah' and counted among the prominent masters of the Sufi path, and his Pir Sheikh Muhammad Ashraf Lahori, and his Sheikh Maulana Abdul Malik, and his guide Sheikh Yazid Thani, and Sheikh Shinnawi's Pir Hazrat Syed Sibghatullah Baruji, and the guide of these two gentlemen Maulana Wajihuddin Alvi, the commentator of 'Hidayah' and 'Sharh Wiqayah', and their Sheikh Hazrat Shah Muhammad Ghaus Gwalior (may the mercy of the Creator King be upon them) — all these elders used to take authorizations (sanads) for 'Nad-e-Ali' and give permissions to their students and beneficiaries, and practiced the litany of 'Ya Ali Ya Ali'. To Allah belongs the high argument (evidence). Whoever wishes to see its details should refer to this humble servant's treatise "Anhaar al-Anwaar wa Hayaat al-Amwaat fi Bayaan Sama' al-Amwaat".

Shah Abdul Aziz Sahib in "Bustan al-Muhadditheen" regarding the most sublime and exalted Imam of scholars, Nizam-ul-Awliya...

Note: 'Al-Intibah' consists of two parts. In the first part, the Sufi orders (Salasil Tariqat) are described, and in the second part, the authorizations (sanads) of Jurisprudence (Fiqh) and Hadith are mentioned. The second part was published by Maktaba Salafiyya, Lahore under the name "Wassaf al-Nabih". The publisher has clarified in the introduction that one chapter of this part could not be found, and it was not very

necessary either. Most likely, this reference was omitted in that "unnecessary" part. (12 Ashraf Qadri)

---

[1] Al-Intibah fi Salasil Auliya Allah Page 565 of 750

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

यही शाह साहब "इन्तिबाह फ़ी सलासिल औलिया अल्लाह" में हाजत पूरी होने के लिए एक ख़त्म की तरकीब इस तरह बयान करते हैं:

पहले दो रकअत नफ़्ल, उसके बाद एक सौ ग्यारह बार दरूद।	पहले दो रकअत पढ़े फिर एक सौ ग्यारह बार दरूद शरीफ,
उसके बाद एक सौ ग्यारह बार कलिमा-ए-तमजीद और एक सौ ग्यारह बार	एक सौ ग्यारह बार कलिमा-ए-तमजीद, फिर एक सौ ग्यारह बार यह पढ़े: ऐ शैख़
शयन लिल्लाह या शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी [1]।	अब्दुल क़ादिर जीलानी ख़ुदा के लिए कुछ अता फरमाएं। (त)

इसी 'इन्तिबाह' से साबित है कि यही शाह साहब और उनके शैख़ और हदीस के उस्ताद मौलाना ताहिर मदनी, जिनकी सेवा में शाह साहब ने लंबे समय तक रहकर हदीस पढ़ी, और उनके शैख़, उस्ताद और पिता मौलाना इब्राहीम कुर्दी, और उनके उस्ताद के उस्ताद मौलाना अहमद नखली - ये चारों हज़रात भी शाह साहब के अधिकांश हदीस सिलसिलों में शामिल हैं। और शाह साहब के पीर-ओ-मुर्शिद शैख़ मुहम्मद सईद लाहोरी, जिन्हें 'इन्तिबाह' में "शेख मुअम्मर सक़ह" (दीर्घजीवी विश्वसनीय शैख़) कहा गया और तरीक़त के प्रमुख बुजुर्गों में गिना गया, और उनके पीर शैख़ मुहम्मद अशरफ लाहोरी, और उनके शैख़ मौलाना अब्दुल मालिक, और उनके मुर्शिद शैख़ यजीद सानी, और शैख़ शन्वावी के पीर हज़रत सैयद सिबगतुल्लाह बरूजी, और इन दोनों हज़रात के पीर-ओ-मुर्शिद मौलाना वजीहुद्दीन अल्वी (हिदाया और शरह विक़ाया के व्याख्याकार), और उनके शैख़ हज़रत शाह मुहम्मद ग़ौस ग्वालियर (अल्लाह की रहमत उन पर हो) - ये सभी बुज़ुर्ग 'नाद-ए-अली' की सनदें लेते थे और अपने छात्रों और लाभान्वित होने वालों को इजाज़त देते थे, और 'या अली या अली' का वज़ीफ़ा करते थे। अल्लाह ही की दलील बुलंद है। जिसे इसकी तफसील देखनी हो, वह इस फ़क़ीर के रिसाले "अन्हारुल अनवार व हयातुल अमवात फी बयान समाअल अमवात" की ओर संदर्भ करे।

शाह अब्दुल अज़ीज़ साहब ने "बुस्तानुल मुहद्दीसीन" में हज़रत अफ़्रा व आला इमामुल उलेमा निज़ामुद-औलिया...

नोट: 'अल-इन्तिबाह' दो हिस्सों पर आधारित है। पहले हिस्से में सलासिल-ए-तरीक़त बयान किए गए हैं और दूसरे हिस्से में फ़िक़्ह और हदीस की सनदें बयान की गई हैं। दूसरा हिस्सा मकतबा

सलफिया, लाहौर ने "वसाफुन नबीह" के नाम से प्रकाशित किया था। प्रकाशक ने प्रस्तावना में स्पष्ट किया है कि इस हिस्से का एक अध्याय नहीं मिल सका और वह कुछ ज़रूरी भी नहीं था। संभवतः यह संदर्भ उसी "गैर-ज़रूरी" हिस्से में हटा दिया गया है। (12 अशरफ क़ादरी)

---

[1] अल-इन्तिबाह फ़ी सलासिल औलिया अल्लाह पृष्ठ 565 / 750

یہی شاہ صاحب "انتباہ فی سلاسل اولیاء اللہ" میں قضائے حاجت کے لیے ایک ختم کی ترکیب یوں نقل کرتے ہیں۔

اول دو رکعت نفل، بعد ازاں ایک صدو یازدہ بار درود و بعدازاں ایک صدو یازدہ بار کلمہ تمجید و یک صدو یازدہ بار شیئاً للہ یا شیخ عبد القادر جیلانی ۱۔

پہلے دو رکعت پڑھے پھر ایک سو گیارہ بار درود شریف، ایک سو گیارہ بار کلمہ تمجید، پھر ایک سو گیارہ بار یہ پڑھے، اے شیخ عبد القادر جیلانی خدارا کچھ عطا فرمائیں۔ (ت)

اسی انتباہ سے ثابت کہ یہی شاہ صاحب اور ان کے شیخ واستاد حدیث مولانا طاہر مدنی جن کی خدمت میں مدتوں رہ کر شاہ صاحب نے حدیث پڑھی اور ان کے شیخ و استاذ و والد مولینا ابراہیم کردی اور ان کے استاذ الاستاذ مولینا احمد نخلی کہ یہ چاروں حضرات بھی شاہ صاحب کے اکثر سلاسل حدیث میں داخل اور شاہ صاحب کے پیر و مرشد شیخ محمد سعید لاہوری جنہیں انتباہ میں "شیخ معمر ثقہ" کہا اور اعیان مشائخ طریقت سے گنا اور ان کے پیر شیخ محمد اشرف لاہوری اور ان کے شیخ مولینا عبد المالک اور ان کے مرشد شیخ یزید ثانی اور شیخ شناوی کے پیر حضرت سید صبغتہ اللہ بروجی اور ان دو صاحبوں کے پیر و مرشد مولانا وجیہ الدین علوی شارح ہدایہ و شرح وقایہ اور ان کے شیخ حضرت شاہ محمد غوث گوالیاری علیہم رحمتہ الملک الباری، یہ سب اکابر نادِ علی کی سندیں لیتے اور اپنے تلامذہ و مستفیدین کو اجاز تیں دیتے اور یا علی یا علی کا

وظیفہ کرتے واللہ الحجۃ السامیہ، جسے اس کی تفصیل دیکھنی ہو فقیر کے رسالہ "انہار الانوار وحیات الموات فی بیان سماع الاموات" کی طرف رجوع کرے۔

شاہ عبدالعزیز صاحب نے بُستان المحدثین میں حضرت ارفع واعلیٰ امام العلما نظام الاولیا

نوٹ: الانتباہ دو حصوں پر مشتمل ہے، پہلے حصہ میں سلاسل طریقت بیان کیے گئے ہیں اور دوسرے حصہ میں فقہ و حدیث کی سندیں بیان کی گئی ہیں دوسرا حصہ مکتبہ سلفیہ لاہور نے "وصاف النبیہ" کے نام سے شائع کیا تھا، ناشر نے مقدمہ میں تصریح کی ہے کہ اس حصہ کا ایک باب نہیں مل سکا اور وہ کچھ ضروری بھی نہ تھا، غالباً یہ حوالہ اسی "غیر ضروری" حصہ میں قلم زد ہو گیا ہے ۱۲ اشرف قادری

Fatawa Rizwia Volume 29

Hadrat Sayyidi Ahmad Zarruq al-Maghribi (may Allah sanctify his secret), teacher of Shams al-Din al-Laqqani and Imam Shihab al-Din al-Qastalani, the commentator of Sahih al-Bukhari, has written a great praise that he is from the seven Abdals and the realized Sufis, a gatherer of Sharia and Haqiqat, with an elevated inner state. His works in the outer sciences are also beneficial, useful, and numerous. Great scholars take pride in being students of such a high-ranking scholar and gnostic, to the extent that it is written: "In short, he is a man of such high stature that his level of perfection is beyond mention." The summary is that he is a person of great honor and status, such that his station and rank are beyond words. (T) Then he quoted two couplets from the speech of that exalted personage, who says: "I am the gatherer of the scattered pieces for my disciple when the oppression of the time attacks with its misfortune. And if you are in distress, anguish, and loneliness, then call out 'O Zarruq', I will come to you with speed."[1] Meaning, I am the one who provides composure in the troubles of my disciple when the oppression of the time transgresses against him with its misfortune, and if you are in constriction, suffering, and loneliness, then call out: O Zarruq, I will be present immediately. Allama Ziyari, then Allama Ajhuri, the author of many famous works, then Allama Dawoodi, the annotator of Sharh Manhaj, then Allama Shami, author of Radd al-Muhtar Hashiya Durr al-Mukhtar, state for finding a lost item: go to a high place and recite Fatiha for Hadrat Sayyidi Ahmad ibn Alwan al-Yamani (may Allah sanctify his secret), then call him: O Sayyidi Ahmad, O Ibn Alwan[2]. Shami is a famous and well-known book. This humble servant (faqir) mentioned this passage from its marginalia in the supplement to my treatise "Hayat al-Mawat". In short, these are the many Imams, saints, and scholars from the time of the Sahaba until now, whose sayings this humble servant collected in a short hour. Now, those who call it polytheism (shirk) should be asked plainly that...

[1] Bustan al-Muhaddithin, Annotation of Sayyid Zarruq Fasi Ulya al-Najjari, H.M. Saeed Company Karachi, p. 322. [2] Hawashi al-Shami 'ala Radd al-Muhtar, Kitab al-Luqatah, Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut, 3/324.

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

हज़रत सय्यदी अहमद ज़र्रूक मग़रिबी (अल्लाह उनके रहस्य को पवित्र करे), जो शम्सुद्दीन लक्क़ानी और सहीह बुखारी के व्याख्याकार इमाम शिहाबुद्दीन क़स्तलानी के उस्ताद हैं, ने उनकी महान प्रशंसा लिखी है कि वह सात अब्दालों और सूफी शोधकर्ताओं में से हैं, शरीयत और हक़ीक़त के ज्ञाता हैं, उच्च आंतरिक अवस्था के साथ। उनकी रचनाएँ बाहरी विज्ञानों में भी लाभदायक, उपयोगी और प्रचुर हैं। बड़े विद्वान इस बात पर गर्व करते हैं कि वे ऐसे उच्च पदस्थ विद्वान और आरिफ़ के छात्र हैं, यहाँ तक कि लिखा गया है: "संक्षेप में, वह इतने उच्च कद के व्यक्ति हैं कि उनकी पूर्णता का स्तर उल्लेख से परे है।" सारांश यह है कि वे बहुत सम्मान और पद वाले बुज़ुर्ग हैं कि उनका स्थान और पद वर्णन से परे है। (त) फिर उस महान व्यक्ति के कलाम से दो शेर उद्धृत किए कि वे फरमाते हैं: "मैं अपने मुरीद की बिखरी हुई चीज़ों को समेटने वाला हूँ जब ज़माने का ज़ुल्म अपनी बदकिस्मती के साथ उस पर हमला करता है। और अगर तुम तंगी, दुख और अकेलेपन में हो, तो पुकारो 'ऐ ज़र्रूक', मैं तेज़ी से तुम्हारे पास आऊँगा।"[1] अर्थात्, मैं अपने मुरीद की परेशानियों में उसे सांत्वना देने वाला हूँ जब ज़माना अपनी मनहूसियत से उस पर ज़्यादती करे, और यदि तुम तंगी, तकलीफ और घबराहट में हो, तो इस तरह पुकारो: ऐ ज़र्रूक, मैं तुरंत हाज़िर हो जाऊँगा। अल्लामा ज़ियारी, फिर अल्लामा अजहूरी (अनेक प्रसिद्ध पुस्तकों के लेखक), फिर अल्लामा दाऊदी (शह्ह मन्हाज के टीकाकार), फिर अल्लामा शामी (रद्दुल मुहतार हाशिया दुर्रे मुख्तार के लेखक) खोई हुई वस्तु पाने के लिए फरमाते हैं कि: किसी ऊँचे स्थान पर जाकर हज़रत सय्यदी अहमद बिन अलवान यमनी (अल्लाह उनके रहस्य को पवित्र करे) के लिए फातिहा पढ़े, फिर उन्हें पुकारे कि ऐ सय्यदी अहमद, ऐ इब्ने अलवान[2]। शामी एक प्रसिद्ध और जानी-मानी किताब है। इस फ़क़ीर ने इसके हाशिये की यह इबारत अपने रिसाले "हयातुल मवात" के हाशिये के परिशिष्ट में ज़िक्र की है। संक्षेप में, सहाबा किराम से लेकर अब तक इतने सारे इमाम, औलिया और विद्वान हैं जिनके कथन इस फ़क़ीर ने एक थोड़े से समय में जमा किए। अब शिर्क कहने वालों से साफ़-साफ़ पूछना चाहिए कि...

[1] बुस्तानुल मुहद्दिसीन, हाशिया सय्यद ज़र्रूक फ़ासी उल्या अल-नज्जारी, एच.एम. सईद कंपनी कराची, पृ. 322। [2] हवाशी अल-शामी अला रद्दुल मुहतार, किताबुल लुक़्ताह, दार इह्या अत-तुरास अल-अरबी बेरुत, 3/324।

حضرت سیدی احمد زروق مغربی قدس سرہ استاذ شمس الدین لقانی وامام شہاب الدین قسطلانی شارح صحیح بخاری کی مدح عظیم لکھی کہ وہ جناب ابدالِ سبعہ و محققین صوفیہ سے ہیں، شریعت و حقیقت کے جامع، باوصف علوِّ باطن، ان کی تصانیف علوم ظاہری میں بھی نافع و مفید و بکثرت ہیں، اکابر علماء فخر کرتے ہیں کہ ہم ایسے جلیل القدر عالم و عارف کے شاگرد ہیں، یہاں تک کہ لکھا: "بالجملہ مردے جلیل القدرے ست کہ مرتبہ کمالِ اُو فوق الذکر است"۔ خلاصہ یہ کہ وہ بڑی قدر و منزلت والے بزرگ ہیں کہ ان کا مقام و مرتبہ ذکر سے ماوراء ہے۔ (ت) پھر اس جناب جلالت مآب کے کلام سے دو بیتیں نقل کیں کہ فرماتے ہیں۔ انا لمریدی جامع لشتات اذا ما سطا جور الزمان بنکبتہ وان کنت فی ضیق و کرب و وحشۃ فناد بیا زروق اتِ بسرعتہ[1] یعنی میں اپنے مرید کی پریشانیوں میں جمعیت بخشنے والا ہوں جب ستم زمانہ اپنی نحوست سے اس پر تعدی کرے اور تو تنگی و تکلیف و وحشت میں ہو تو یوں نداء کر: یَازَرُوق میں فوراً موجود ہوں گا۔ علامہ زیاری، پھر علامہ اجہوری صاحبِ تصانیف کثیرہ مشہورہ پھر علامہ داؤدی محشی شرح منہج، پھر علامہ شامی صاحب ردالمحتار حاشیہ در مختار گم شدہ چیز ملنے کے لیے فرماتے ہیں کہ: بلندی پر جا کر حضرت سیدی احمد بن علوان یمنی قدس سرہ کے لیے فاتحہ پڑھے پھر انہیں نداء کرے کہ یا سیدی احمد یا ابن علوان[2]۔ شامی مشہور و معروف کتاب ہے، فقیر نے اس کے حاشیہ کی یہ عبارت اپنے رسالہ حیاۃ الموات کے ہامش تکملہ پر ذکر کی۔ غرض یہ صحابہ کرام سے اس وقت تک کے اس قدر ائمہ اولیاء و علماء ہیں جن کے اقول فقیر نے ایک ساعتِ قلیلہ میں جمع کیے۔ اب مشرک کہنے والوں سے صاف صاف پوچھنا چاہیے کہ

[1] بستان المحدثین حاشیہ سید زروق فاسی علیا لنجاری ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ص ۳۲۲ [2] حواشی الشامی علی ردالمحتار کتاب اللقطہ دار احیاء التراث العربی بیروت ۳ / ۳۲۴

Fatawa Razawiyya Volume 29

Do you call everyone from Uthman bin Hunaif, Abdullah bin Abbas, and Abdullah bin Sahaba Kiraam (may Allah be pleased with them) down to Shah Waliullah and Shah Abdul Aziz and their teachers and mentors disbelievers (kafir) and polytheists (mushrik) or not? If you deny it, then praise be to Allah, guidance has been found and the truth has become clear. But if you boldly issue a fatwa of disbelief and polytheism against all of them, then tell them may Allah guide you. Open your eyes and see who said what and to whom "To Allah we belong and to Him we return". And know that based on this creed, all the elders from the companions until now would, God forbid, be considered polytheists and disbelievers. How hostile would that religion be towards God and His Messenger? It has appeared in authentic hadiths that "he who calls a Muslim a disbeliever is himself a disbeliever"[1]. And many imams of the religion have given a fatwa on this unconditionally, the details of which this humble servant has mentioned in his treatise "An-Nahy al-Akid 'an as-Salah wara' 'Adi at-Taqlid". Although we do not pronounce takfir (excommunication) out of caution, there is no dispute that according to a group of imams, those who call Muslims saying "Ya Rasul Allah", "Ya Ali", "Ya Husayn", and "Ya Ghawth al-Thaqalayn" disbelievers and polytheists, are themselves disbelievers. So it is mandatory for them to recite the Kalimah of Islam afresh and renew their marriages with their wives. It is stated in Durr al-Mukhtar[2]: Whatever is disputed (as to whether it constitutes disbelief), the person committing it is ordered to seek forgiveness, repent, and renew the marriage. And the perpetrator of what is disputed as disbelief shall be ordered to seek forgiveness, repent, and renew the marriage. (T) Benefit: Among the excellent proofs for calling upon (nida) the Master of the Universe (peace and blessings of Allah be upon him) is "At-Tahiyyat," which every person praying recites in every two rak'ahs of prayer, addressing the Noble Prophet (peace and blessings be upon him) saying "Peace be upon you, O Prophet, and the mercy of Allah and His blessings." If calling out is, God forbid, polytheism (shirk), then this is a strange shirk that is included and entered right in the middle of the prayer. There is no power or strength except with Allah, the Exalted, the Magnificent. And this ignorant thought is purely false that At-Tahiyyat has come down from the sacred era as it is, so the intention is only the utterance of those words, not that the Noble Prophet (peace and blessings of Allah be upon him)...

[1] Sahih al-Bukhari, Kitab al-Adab, Chapter: Whoever excommunicates his brother without interpretation, Qadimi Kutub Khana, Karachi, 2/901; Sahih Muslim, Kitab al-

Iman, Chapter: Explanation of the state of faith of one who says to his Muslim brother 'O Disbeliever', Qadimi Kutub Khana, Karachi, 1/57 [2] Ad-Durr al-Mukhtar, Kitab al-Jihad, Chapter: The Apostate, Mujtabai Press, Delhi, 1/359

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

क्या आप उस्मान बिन हुनैफ़, अब्दुल्लाह बिन अब्बास और सहाबा किराम के बेटे अब्दुल्लाह (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) से लेकर शाह वलीउल्लाह और शाह अब्दुल अज़ीज़ साहब और उनके शिक्षकों और गुरुओं तक सभी को काफ़िर और मुशरिक कहते हैं या नहीं? यदि आप इनकार करते हैं, तो अल्हम्दुलिल्लाह, मार्गदर्शन मिल गया और सच्चाई स्पष्ट हो गई। और यदि आप बेधड़क उन सभी पर कुफ़्र और शिर्क का फ़तवा जारी करते हैं, तो उनसे इतना ही कहिए कि अल्लाह आपको हिदायत दे। ज़रा आँखें खोलकर देखें कि किसने किससे क्या कहा, "बेशक हम अल्लाह ही के हैं और उसी की ओर लौटने वाले हैं"। और जान लीजिए कि मज़हब (धर्म) के आधार पर सहाबा से लेकर अब तक के सभी बुज़ुर्ग, अल्लाह न करे, मुशरिक और काफ़िर ठहरेंगे। वह मज़हब ख़ुदा और रसूल का कितना बड़ा दुश्मन होगा। सही हदीसों में आया है कि "जो किसी मुसलमान को काफ़िर कहे, वह खुद काफ़िर है"[1]। और धर्म के बहुत से इमामों ने इस पर बिना शर्त फ़तवा दिया है, जिसका विवरण इस फ़क़ीर (लेखक) ने अपने रिसाले "अन-नहयुल अकीद अनिस सलाति वराअ अदित तक़लीद" में दिया है। हालाँकि हम एहतियात के तौर पर तकफ़ीर (काफ़िर कहना) नहीं करते, फिर भी इस बात में कोई विवाद नहीं है कि इमामों के एक समूह के अनुसार, जो लोग "या रसूल अल्लाह", "या अली", "या हुसैन" और "या गौसुल सक़लैन" कहने वाले मुसलमानों को काफ़िर और मुशरिक कहते हैं, वे खुद काफ़िर हैं। इसलिए उन पर लाज़मी है कि वे नए सिरे से इस्लाम का कलमा पढ़ें और अपनी औरतों से निकाह दोबारा करें। 'दुर्रे मुख़्तार'[2] में है: जिस बात के कुफ़्र होने में मतभेद हो, उसके करने वाले को तौबा, इस्तिगफ़ार और निकाह दोबारा करने का हुक्म दिया जाएगा। और जिस चीज़ के कुफ़्र होने में मतभेद हो, उसके करने वाले को इस्तिगफ़ार और तौबा और निकाह की तजदीद (नवीनीकरण) का हुक्म दिया जाएगा। (त) फ़ायदा: हुज़ूर सैयदे आलम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को पुकारने (नदा करने) की बेहतरीन दलीलों में से "अत-तहीयात" है जिसे हर नमाज़ी हर नमाज़ की दो रकात पर पढ़ता है और अपने नबी करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से अर्ज़ करता है "अस्सलामु अलैक अय्युहन नबिय्यु व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू" (ऐ नबी! आप पर सलाम हो और अल्लाह की रहमत और उसकी बरकतें हों)। अगर नदा करना, अल्लाह न करे, शिर्क है, तो यह अजीब शिर्क है कि ऐन नमाज़ के अंदर शामिल और दाख़िल है। 'ला हौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाहिल अलीयिल अज़ीम'। और यह जाहिलाना ख़्याल महज़ बातिल (ग़लत) है कि अत-तहीयात

अहदे रिसालत से वैसी ही चली आ रही है, इसलिए मक़सद उन लफ़्ज़ों की अदायगी है न कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि...

[1] सही अल-बुखारी, किताबुल अदब, बाब: मन अक्फ़रा अखाहु बिग़ैरि तावील, कदीमी कुतुब खाना, कराची, 2/901; सही मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाब: बयान हालुल ईमान मन काला लि-अखीहिल मुस्लिम या काफ़िर, कदीमी कुतुब खाना, कराची, 1/57 [2] अद-दुरुल मुख़्तार, किताबुल जिहाद, बाबुल मुर्तद, मतबा मुजतबाई, दिल्ली, 1/359

عثمان بن حنیف و عبد اللہ بن عباس و عبد اللہ بن صحابہ کرام رضی اللہ تعالیٰ عنہم سے لے کر شاہ ولی اللہ و شاہ عبدالعزیز صاحب اور ان کے اساتذہ و مشائخ تک سب کو کافر و مشرک کہتے ہو یا نہیں؟ اگر انکار کریں تو الحمد اللہ ہدایت پائی اور حق واضح ہو گیا اور بے دھڑک ان سب پر کفر و شرک کا فتوی جاری کریں تو ان سے اتنا کہئے کہ اللہ تمہیں ہدایت کرے۔ ذرا آنکھیں کھول کر دیکھو تو کسے کیا اور کیا کچھ کہا "انااللہ وانا الیہ راجعون" اور جان لیجئے کہ مذہب کی بنا پر صحابہ سے لے کر اب تک کے اکابر سب معاذ اللہ مشرک و کافر ٹھہریں۔ وہ مذہب خدا اور رسول کو کس قدر دشمن ہو گا۔ صحیح حدیثوں میں آیا کہ "جو مسلمان کو کافر کہے خود کافر ہے"[1]۔ اور بہت ائمہ دین نے مطلقاً اس پر فتوی دیا جس کی تفصیل فقیر نے اپنے رسالہ "النھی الاکید عن الصلوۃ وراء عدی التقلید" میں ذکر کی۔ ہم اگرچہ بحکم احتیاط تکفیر نہ کریں تاہم اس قدر میں کلام نہیں کہ ایک گروہ ائمہ کے نزدیک یہ حضرات کہ یارسول اللہ و یا علی و یا حسین و یا غوث الثقلین کہنے والے مسلمانوں کو کافر و مشرک کہتے ہیں خود کافر ہیں تو ان پر لازم کہ نئے سرے سے کلمہ اسلام پڑھیں اور اپنی عورتوں سے نکاح جدید کریں۔ در مختار میں ہے[2]: مافیہ خلاف یؤمر بالاستغفار و التوبۃ و تجدید النکاح ۔ اور جس چیز کے کفر میں اختلاف ہو اس کے مرتکب کو استغفار و توبہ اور تجدید نکاح کا حکم دیا جائے گا۔ (ت) فائدہ: حضور سید عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کو نداء کرنے کے عمدہ دلائل سے "التحیات" ہے جسے ہر نمازی ہر نماز کی دو رکعت پر پڑھتا ہے اور اپنے نبی کریم علیہ افضل الصلوۃ والتسلیم سے عرض کرتا ہے السلام علیك ایھا النبی و رحمۃ اللہ و برکاتہ سلام حضور پر اے نبی اور اللہ کی رحمت اور اس کی برکتیں۔ اگر نداء معاذ اللہ شرک ہے، تو یہ عجب شرک ہے کہ عین نماز میں شریک و داخل ہے۔ ولاحول ولاقوۃ الاباللہ

العلی العظیم۔ اور یہ جاہلانہ خیال محض باطل کہ التحیات زمانہ اقدس سے ویسے ہی چلی آتی ہے تو مقصود ان لفظوں کی ادا ہے نہ کہ نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ۔۔۔

[1] صحیح البخاري کتاب الادب باب من اکفر اخاہ بغیر تاویل قدیمی کتب خانہ کراچی ۲/ ۹۰۱، صحیح مسلم کتاب الایمان باب بیان حال الایمان من قال اخیہ المسلم یا کافر قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/ ۵۷ [2] الدر المختار کتاب الجہاد باب المرتد مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۳۵۹

Fatawa Ridawiyya, Vol 29

...calling upon [the Prophet] (peace and blessings be upon him). God forbid! The pure Shari'ah has not established any remembrance in prayer where words are merely uttered by the tongue without intending their meaning. No, absolutely not; that is precisely what is required. From 'At-tahiyyatu lillahi was-salawatu' (All greetings are for Allah and prayers), one should intend the praise of Allah. And from 'As-salamu 'alayka ayyuhan-nabiyyu wa rahmatullahi wa barakatuh' (Peace be upon you, O Prophet, and the mercy of Allah and His blessings), one should intend that at this moment I am greeting my Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) and intentionally submitting to him: Peace be upon you, O Prophet, and the mercy of Allah and His blessings. In Fatawa al-Alamgiri, it is stated from the commentary of Al-Quduri:

Arabic Text	Urdu Translation
It is necessary to intend with the words of Tashahhud their meanings for which they were established by him, as if he is saluting Allah the Almighty and greeting the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) and himself and the saints of Allah the Almighty. 1	It is necessary to intend those meanings with the words of Tashahhud for which these words have been established and which are intended by the worshiper. It is as if the worshiper is presenting an offering of worship in the court of Allah Almighty, and sending greetings upon the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him), upon his own self, and upon the saints of Allah. (T)

In Tanwir al-Absar and its commentary Durr al-Mukhtar, it states:

Arabic Text	Urdu Translation
(And he intends with the words of Tashahhud) their meanings intended for him in the way of (origination/ Insha'), as if he is saluting Allah the Almighty and greeting His Prophet and himself and his saints (not as reporting/Akhbar) about that. It was mentioned in al-Mujtaba. 2	He should intend the intended meanings from the words of Tashahhud as origination (Insha'), as if he is expressing servitude in the presence of Allah Almighty and sending greetings upon His Prophet (peace and blessings of Allah be upon him), his own self, and the saints of Allah. He should not intend narration or news with these words. This has been mentioned in al-Mujtaba. (T)

Allama Hasan Shurunbulali in Maraqi al-Falah, commentary on Nur al-Idah, states:

Arabic Text	Urdu Translation
He intends its meanings, intended for him, upon...	He should intend the intended meaning in such a way that the worshiper...

1. Al-Fatawa al-Hindiyya, Book of Prayer, Second Chapter, Nurani Kutub Khana, Peshawar, 1/72.
2. Al-Durr al-Mukhtar Sharh Tanwir al-Absar, Book of Prayer, Chapter on the Description of Prayer, Mujtabai Press, Delhi, 1/77.

फतावा रज़विया, जिल्द 29

...सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पुकार। हाशा-ओ-कल्ला! शरीअते मुतहरा ने नमाज़ में कोई ऐसा ज़िक्र नहीं रखा है जिसमें सिर्फ ज़बान से लफ़्ज़ निकाले जाएं और मानी मुराद न हों, नहीं नहीं बल्कि क़तअन यही दरकार है। 'अत-तहीयातु लिल्लाही वस-सलवातु' से हम्दे इलाही का क़स्द रखे और 'अस-सलामु अलैका अय्युहन-नबिय्यु व रहमतुल्लाही व बरकातुहु' से ये इरादा करे कि इस वक़्त मैं अपने नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को सलाम करता हूँ और हुज़ूर से बिल-क़स्द अर्ज़ कर रहा हूँ कि सलाम हुज़ूर ऐ नबी और अल्लाह की रहमत और उसकी बरकतें। फ़तावा-ए-आलमगीरी में शरह कुदूरी से है:

अरबी पाठ	उर्दू अनुवाद
तशाहहुद के शब्दों के साथ उनके उन अर्थों का इरादा करना आवश्यक है जिनके लिए उन्हें निर्धारित किया गया है, मानो वह अल्लाह तआला का अभिवादन कर रहा है और नबी (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) और स्वयं पर और अल्लाह तआला के वलियों पर सलाम भेज रहा है। 1	तशाहहुद के अल्फ़ाज़ से उन मआनी का क़स्द करना ज़रूरी है जिनके लिए उन अल्फ़ाज़ को वज़अ किया गया है और जो नमाज़ी की तरफ़ से मक़सूद हों। गोया कि नमाज़ी अल्लाह तआला की बारगाह में नज़राना-ए-इबादत पेश कर रहा है, और नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम पर, खुद अपनी ज़ात पर और औलिया अल्लाह पर सलाम भेज रहा है। (त)

तन्वीरुल अबसार और उसकी शरह दुर्रे मुख्तार में है:

अरबी पाठ	उर्दू अनुवाद
(और वह तशाहहुद के शब्दों के साथ) उनके अर्थों का इरादा करता है जो उसके लिए (इन्शा) के तौर पर अभिप्रेत हैं, मानो वह अल्लाह तआला का अभिवादन कर रहा है और उसके नबी और खुद पर और उसके वलियों पर सलाम भेज रहा है (न कि खबर देने के तौर पर)। इसका उल्लेख अल-मुज्तबा में किया गया है। 2	अल्फ़ाज़े तशाहहुद से उनके मानी-ए-मक़सूदा का बतौरे इन्शा क़स्द करे, गोया कि वो अल्लाह तआला की बारगाह में इज़हारे बंदगी कर रहा है और उसके नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम, खुद अपनी ज़ात और औलिया अल्लाह पर सलाम भेज रहा है, इन अल्फ़ाज़ से हिकायत व ख़बर का क़स्द न करे, इसको मुज्तबा में ज़िक्र किया है। (त)

अल्लामा हसन शुरुनबुलाली मराक़िल फ़लाह शरह नूरुल ईज़ाह में फ़रमाते हैं:

अरबी पाठ	**उर्दू अनुवाद**
वह इसके अर्थों का इरादा करता है, जो उसके लिए अभिप्रेत हैं, इस पर...	क़स्द करे मानी-ए-मक़सूदा का बा-ईं तौर कि नमाज़ी

1. अल-फ़तावा अल-हिंदिया, किताबुस सलात, फ़स्ल-ए-सानी, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 1/72.
2. अद-दुर्रुल मुख्तार शरह तन्वीरुल अबसार, किताबुस सलात, बाब सिफ़तुस सलात, मतबा मुज्तबाई दिल्ली, 1/77.

وسلم کی نداء حاشا و کلا شریعتِ مطہرہ نے نماز میں کوئی ایسا ذکر نہیں رکھا ہے جس میں صرف زبان سے لفظ نکالے جائیں اور معنی مراد نہ ہوں، نہیں نہیں بلکہ قطعاً یہی درکار ہے۔ التحیات اللہ والصلوات سے حمدِ الٰہی کا قصد رکھے اور السلام علیک ایھا النبی ورحمتہ اللہ وبرکاتہ، سے یہ ارادہ کرے کہ اس وقت میں اپنے نبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کو سلام کرتا اور حضور سے بالقصد عرض کر رہا ہوں کہ سلام حضور اے نبی اور اللہ کی رحمت اور اس کی برکتیں۔ فتاوائے عالمگیری میں شرح قدوری سے ہے:

عربی عبارت	اردو ترجمہ
لابد من ان یقصد بالفاظ التشھد معانیھا التی وضعت لھا من عندہ کأنہ یحیّ اللہ تعالٰی و یسلم علی النبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم و علی نفسہ و علی اولیاء اللہ تعالٰی ۱۔	تشہد کے الفاظ سے ان معانی کا قصد کرنا ضروری ہے جن کے لیے ان الفاظ کو وضع کیا گیا ہے اور جو نمازی کی طرف سے مقصود ہوں ہوں۔ گویا کہ نماز ی اللہ تعالٰی کی بارگاہ میں نذرانہ عبادت پیش کر رہا ہے، اور نبی کریم صلی اللہ تعالٰی علیہ و سلم پر، خود اپنی ذات پر اور اولیاء اللہ پر سلام بھیج رہا ہے۔ (ت)

تنویر الابصار اور اس کی شرح دُرِّ مختار میں ہے:

عربی عبارت	اردو ترجمہ
(ویقصد بالفاظ التشھد) معانیھا مرادۃ لہ علی وجہ (الانشاء) کأنہ یحیّ اللہ	الفاظ تشہد سے اُن کے معنی مقصودہ کابطور انشاء قصد کرے، گویا کہ وہ اللہ تعالٰی کی بارگاہ میں اظہارِ بندگی کر رہا

عربی عبارت **اردو ترجمہ**

تعالیٰ و یسلم علی نبیه و علی نفسه و اولیائه (لا الاخبار) عن ذلك ذكره فی المجتبی ۲۔

ہے اور اس کے نبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم، خود اپنی ذات اور اولیاء اللہ پر سلام بھیج رہا ہے، ان الفاظ سے حکایت و خبر کا قصد نہ کرے اس کو مجتبیٰ میں ذکر کیا ہے۔ (ت)

علامہ حسن شرنبلالی مراقی الفلاح شرح نور الایضاح میں فرماتے ہیں:

عربی عبارت **اردو ترجمہ**

یقصد معانیه، مرادة له، علی قصد کرے معنی مقصودہ کا بایں طور کہ نمازی

۱ الفتاوی الهندیة کتاب الصلوة الفصل الثانی نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۷۲ ۲ الدرالمختار شرح تنویر الابصار کتاب الصلوة باب صفت الصلوة مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۷۷

Indeed, he offers greeting and salutation from himself.	He presents greeting and salutation from his side. (T)

Similarly, many scholars have explicitly stated this. Upon this, some foolish deniers fabricate an excuse that angels are appointed to convey prayers and salutations, so calling upon them is permissible through them but impermissible beyond them. However, this is severe and tasteless ignorance, setting aside many objections that arise against it. These intelligent people did not even see that not only prayers and salutations, but rather all words, deeds, and actions of the Ummah are presented twice daily before the Master of the Throne and Dignity, the Master of the Pious, may Allah's peace and blessings be upon him. It is explicitly stated in numerous Hadiths that absolutely all good and bad deeds are presented in the noble court of the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him), and likewise, deeds are presented to all the noble Prophets (peace and blessings be upon them) and parents, relatives, and kin. This humble servant [Faqir] has collected all those Hadiths in his treatise "Saltanat al-Mustafa fi Malakut Kull al-Wara". Here it suffices that the great Imam Abdullah bin Mubarak (may Allah have mercy on him) narrates from Hazrat Sa'id bin al-Musayyib (may Allah be pleased with both of them):

There is no day in which the deeds of his Ummah are not presented to the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) morning and evening, so he recognizes them by their marks and their deeds.	That is, there is no day in which the deeds of the Ummah are not presented to the Master of the Universe (peace and blessings of Allah be upon him) every morning and evening. Thus, the Prophet's recognition of his followers is due to both their signs and their deeds. (May Allah send peace and blessings upon him and his family and companions, and grant him honor and nobility).

This humble servant (may Allah forgive him), by the grace of Allah Almighty, could write an extensive book on this issue, but for a fair-minded person, this much appreciation is enough, and if God gives guidance, then one word is sufficient.

Suffice us from the evil of the misguiders, O Sufficient One! and send blessings upon our Master and Leader Muhammad, the Healer,	O Sufficient Provider! Protect us from the evil of those who mislead. Send blessings upon our Master and

and upon his family and companions, the protectors of religion.

Leader, Muhammad the Chosen One.

1. Maraqi al-Falah on the margins of Hashiyat al-Tahtawi, Book of Prayer, Noor Muhammad Karkhana Tijarat Kutub Karachi, p. 155.
2. Al-Mawahib al-Laduniyya, quoting Ibn al-Mubarak from Sa'id ibn al-Musayyib, the Fourth Objective, Second Chapter, Beirut 2/297.

वास्तव में, वह अपनी ओर से अभिवादन और सलाम पेश करता है।	अपनी तरफ से तहिया और सलाम पेश कर रहा है। (त)

इसी तरह बहुत से विद्वानों ने स्पष्ट किया है। इस पर कुछ मूर्ख इनकार करने वाले यह बहाना बनाते हैं कि दुरूद और सलाम पहुँचाने के लिए फ़रिश्ते नियुक्त हैं, इसलिए उनमें पुकारना जायज़ है और उनके अलावा नाज़ायज़ है। हालाँकि यह घोर और नीरस अज्ञानता है, उन कई आपत्तियों को छोड़कर जो इस पर होती हैं। इन बुद्धिमानों ने इतना भी नहीं देखा कि केवल दुरूद और सलाम ही नहीं, बल्कि उम्मत के सभी कथन, कार्य और कर्म प्रतिदिन दो बार अर्श और गरिमा के स्वामी, पवित्र लोगों के स्वामी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की सेवा में प्रस्तुत किए जाते हैं। अनेक हदीसों में यह स्पष्ट है कि पूर्ण रूप से सभी अच्छे और बुरे कर्म पवित्र पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के दरबार में पेश किए जाते हैं, और इसी तरह सभी नबियों (अलैहिमुस्सलाम) और माता-पिता, रिश्तेदारों और करीबियों के सामने कर्मों की प्रस्तुति होती है। इस फ़कीर ने अपने शोध ग्रंथ "सल्तनतुल मुस्तफ़ा फ़ी मलकूति कुल्लिल वरा" में वे सभी हदीसें एकत्र की हैं। यहाँ इतना ही पर्याप्त है कि महान इमाम अब्दुल्लाह बिन मुबारक (रहमतुल्लाह अलैहि) हज़रत सईद बिन अल-मुसय्यब (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से रिवायत करते हैं:

ऐसा कोई दिन नहीं है जिसमें उम्मत के कर्म नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के सामने सुबह और शाम पेश न किए जाते हों, इसलिए वह उन्हें उनके निशानों और उनके कर्मों से पहचानते हैं।	यानी कोई दिन ऐसा नहीं जिसमें सैयदे आलम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर उम्मत के आमाल हर सुबह व शाम पेश न किए जाते हों, तो हुज़ूर का अपने उम्मतीं को पहचानना उनकी अलामत और उनके आमाल दोनों वजह से है। (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम व अला आलिही व सहबिही व शर्रफ़ा व कर्रमा)।

यह फ़कीर (अल्लाह उसे माफ़ करे), अल्लाह अज़वज्जल की तौफीक से इस मसले पर एक विस्तृत किताब लिख सकता है, लेकिन एक न्यायप्रिय व्यक्ति के लिए इतनी ही कद्रदानी काफी है, और अगर खुदा हिदायत दे तो एक शब्द ही काफी है।

हमें गुमराह करने वालों की बुराई से बचा ले, ऐ काफी ऐ किफ़ायत फ़रमाने वाले! हमारी तरफ़ से होने वाले! और हमारे आका और मौला मुहम्मद	गुमराह करने वालों के शर का डिफ़ा फ़रमा।

(शफ़ा देने वाले) और उनके परिवार और साथियों पर दुरूद भेज जो दीन के रक्षक हैं।

हमारे आका व मौला मुहम्मद मुस्तफ़ा पर दुरूद नाज़िल फ़रमा।

1. मराक़ी अल-फ़लाह, हाशिया अल-तहतावी के हाशिए पर, किताबुस-सलात, नूर मुहम्मद कारखाना तिजारत कुतुब कराची, पृ. 155।
2. अल-मवाहिब अल-लदुन्निया, इब्न अल-मुबारक के हवाले से सईद इब्न अल-मुसय्यब से, चौथा मक़सद, दूसरा अध्याय, बेरूत 2/297।

اَنَّہٗ یُنشِئُھَا تَحِیَّۃً وَّسَلَامًا مِّنْہُ ۔ اپنی طرف سے تحیہ اور سلام پیش کر رہا ہے۔ت)

اسی طرح بہت علماء نے تصریح فرمائی۔ اس پر بعض سفہائے منکرین یہ عذر گھڑتے ہیں کہ صلوۃ و سلام پہنچانے پر ملائکہ مقرر ہیں تو ان میں نداء جائز اور ان کے ماوراء میں نا جائز، حالانکہ یہ سخت جہالت بے مزہ ہے قطع نظر بہت اعتراضوں سے جو اس پر وارد ہوتے ہیں ان ہوشمندوں نے اتنا بھی نہ دیکھا کہ صرف درود و سلام ہی نہیں بلکہ امت کے تمام اقوال و افعال و اعمال روزانہ دو وقت سرکار عرش وقار حضور سیدالابرار صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم میں عرض کیے جاتے ہیں۔ احادیث کثیرہ میں تصریح ہے کہ مطلقاً اعمال حسنہ وسئیہ سب حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی بارگاہ میں پیش ہوتے ہیں، اور یونہی تمام انبیائے کرام علیہم الصلوۃ والسلام اور والدین و اعزاء و اقارب سب پر عرضِ اعمال ہوتی ہے۔ فقیر نے اپنے رسالہ "سلطنت المصطفیٰ فی ملکوت کل الوریٰ" میں وہ سب حدیثیں جمع کیں، یہاں اسی قدر بس ہے کہ امام اجل عبد اللہ بن مبارک رحمتہ اللہ تعالیٰ علیہ حضرت سعید بن المسیب رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے راوی :

لیس من یوم الا و تعرض علی النبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم اعمال اُمّتہ غدوۃ و عشیاً فیعرفھم بسیماھم و اعمالھم ۔

یعنی کوئی دن ایسا نہیں جس میں سید عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم پر اعمالِ اُمت ہر صبح و شام پیش نہ کیے جاتے ہوں، تو حضور کا اپنے امتیوں کو پہچاننا ان کی علامت اور ان کے اعمال دونوں وجہ سے ہے۔ (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم وعلیٰ آلہ وصحبہ وشرف وکرم)۔

فقیر غفر اللہ تعالیٰ لہ، بتوفیق اللہ عزوجل اس مسئلے میں ایک کتاب مبسوط لکھ سکتا ہے مگر منصف کے لیے اسی قدر دانی، اور خدا ہدایت دے تو ایک حرف کافی۔

اکفنا شر المضلین یا کافی وصلّ علی سیّدنا و مولینا محمد ن الشافی وآلہ وصحبہ حُمَاۃِ الدین ۔

اے کفایت فرمانے والے! ہماری طرف سے گمراہ کرنے والوں کے شر کا دفاع فرما۔ ہمارے آقا و مولیٰ محمد مصطفیٰ پر درود نازل فرما۔

1. مراقی الفلاح علی ھامش حاشیۃ الطحطاوی کتاب الصلوۃ نور محمد کارخانہ تجارت کتب کراچی ص ۱۵۵
2. المواہب اللدنیہ بحوالہ ابن المبارك عن سعید ابن مسیب المقصد الرابع الفصل الثانی بیروت ۲/ ۲۹۷

Fatawa Razawiyya, Volume 29

Al-Safi, Ameen, and praise be to Allah, Lord of the worlds. Who grants healing, and upon your family and companions who are the supporters of the pure religion. Ameen, and praise be to Allah, Lord of the worlds.

Written by the sinful servant Ahmad Raza al-Barelvi, may he be forgiven for the sake of the Chosen One (Al-Mustafa), the Unlettered Prophet, peace and blessings of Allah Almighty be upon him.

Muhammad Sunni Hanafi Qadri 1301 Abdul Mustafa Ahmed Raza Khan

Treatise Anwar al-Intibah fi Hall Nida Ya Rasul Allah (Lights of Attention in Resolving the Call 'O Messenger of Allah')

Finished.

Page 570 of 750

फ़तावा रज़विया, खंड 29

अस-साफ़ी, आमीन और प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जो दुनिया का रब है। जो शिफ़ा (आरोग्य) प्रदान करने वाले हैं, और आप के परिजनों और साथियों पर जो शुद्ध धर्म (दीन-ए-साफ़ी) के समर्थक हैं। आमीन और प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जो दुनिया का रब है।

इसे पापी सेवक अहमद रज़ा बरेलवी ने लिखा है, मुस्तफ़ा, नबी-ए-उम्मी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के सदके में उन्हें क्षमा किया जाए।

मुहम्मद सुन्नी हनफी कादरी 1301 अब्दुल मुस्तफ़ा अहमद रज़ा ख़ान

ग्रंथ अनवारुल इंतिबाह फ़ी हल निदा या रसूल अल्लाह (या रसूल अल्लाह पुकारने के समाधान में ध्यान का प्रकाश)

समाप्त हुआ।

750 में से पृष्ठ 570

الصافی آمین والحمد للہ رب العالمین۔ جو شفاء عطا فرمانے والے ہیں اور آپ کے آل و اصحاب پر جو دین صافی کے حمایتی ہیں آمین والحمد للہ رب العالمین۔

کتبہ عبدہ المذنب احمد رضا البریلوی عفی عنہ بجاہ المصطفے النبی الامی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم۔

محمد سنی حنفی قادری ۱۳۰۱ عبد المصطفے احمد رضا خاں

رسالہ انوار الانتباہ فی حل نداء یا رسول اللہ

ختم ہوا۔

صفحہ ۵۷۰ از ۷۵۰

Volume 29 Fatawa Razawiya

Treatise Isma' al-Arba'in fi Shafa'at Sayyid al-Mahbubin (Reciting forty Hadiths regarding the intercession of the leader of the beloveds)

In the name of Allah, the Most Gracious, the Most Merciful.

Question 165: What do the scholars of religion say regarding this matter: from which Hadith is it proven that the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) is an intercessor? Explain and you shall be rewarded. (T)

The Answer:

Praise be to Allah, the All-Seeing, the All-Hearing, and peace and blessings be upon the Bringer of Good Tidings, the Intercessor, and upon his family and companions every evening and every morning. All praise is for Allah Almighty who is the All-Seeing, the All-Hearing, and may peace and blessings be upon the one who gives glad tidings, the one who intercedes, and upon his family and companions every evening and every morning. (T)

Subhan Allah! It is surprising to hear such questions, that Muslims and claimants of Sunnism, and such clear [matters]...

जिल्द 29 फ़तावा रज़विया

रिसाला इस्माउल अर्बईन फ़ी शफ़ाअति सैय्यिदिल महबूबीन (महबूबों के सरदार की शफ़ाअत के बारे में चालीस हदीसें सुनाना)

बिस्मिल्लाह हिर्रहमान निर्रहीम

मसअला 165: क्या फ़रमाते हैं उलेमा-ए-दीन इस मसअले में कि नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का शफ़ीअ (सिफ़ारिशी) होना किस हदीस से साबित है? बयान फ़रमाएं अज्र दिए जाएंगे। (त)

अल-जवाब:

तारीफ़ अल्लाह के लिए है जो देखने वाला, सुनने वाला है, और दुरूद व सलाम हो बशारत देने वाले शफ़ीअ पर और उनके आल और असहाब पर हर शाम और सुबह। सब तारीफें अल्लाह तआला के लिए जो देखने वाला सुनने वाला है, और दुरूद व सलाम नाज़िल हो बशारत देने वाले शफ़ाअत करने वाले पर और उसके आल व असहाब पर हर शाम को और हर सुबह को। (त)

सुभान अल्लाह! ऐसे सवाल सुनकर ताज्जुब आता है कि मुसलमान और सुन्नियत के दावेदार और ऐसे वाज़ेह...

पृष्ठ 572/750

جلد ۲۹ فتاویٰ رضویہ

رسالہ اسماع الاربعین في شفاعة سید المحبوبین (محبوبوں کے سردار کی شفاعت کے بارے میں چالیس حدیثیں سنانا)

بسم اللہ الرحمن الرحیم ط

مسئلہ ۱۶۵: کیا فرماتے ہیں علماء دین اس مسئلہ میں کہ نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کا شفیع ہونا کس حدیث سے ثابت ہے؟ بینوا توجروا (بیان فرمائیے اجر دیئے جاؤ گے۔ت)

الجواب:

الحمد للہ البصیر السمیع والصلوٰۃ والسلام علی البشیر الشفیع و علی الہ و صحبہ کل مساء و سطیع سب تعریفیں اللہ تعالی کے لیے جو دیکھنے والا سننے والا ہے، اور درود و سلام نازل ہو بشارت دینے والے شفاعت کرنے والے پر اور اس کے آل و اصحاب پر ہر شام کو اور ہر صبح کو۔ (ت)

سبحان اللہ! ایسے سوال سُن کر تعجب آتا ہے کہ مسلمان و مدعیان سنیت اور ایسے واضح

Fatawa Razawiyya, Volume 29

The affliction of doubt in beliefs is also a sign of the nearing of the Day of Judgment. "Indeed, to Allah we belong and to Him we shall return." The hadiths regarding intercession (shafa'at) are also such that they cannot be hidden in any way. Dozens of companions, hundreds of successors (tabi'in), thousands of hadith scholars (muhaddithin) are their narrators. Every kind of hadith book—Sahah, Sunan, Masanid, Ma'ajim, Jawami', Musannafat—is full of them. Every soul of the Ahl al-Sunnat, even women and children, even villagers everywhere, are aware of this belief. The vision of God and the intercession of Muhammad (Peace be upon him) is on the tongue of every child; may Allah Almighty's peace, blessings, honor, glory, and generosity be upon him. The poor servant (the author), may Allah forgive him, has collected and summarized these hadiths in abundance in the treatise "Sam'u wa Ta'at al-Ahadith al-Shafa'at." (Here) with extreme brevity, I point towards only forty hadiths, and before them, I recite a few Quranic verses.

The Verses:

First Verse: Allah the Almighty said: "It may be that your Lord will raise you to a praised station (Maqam-e-Mahmud)."[1] | It is near that your Lord will send you to the praised station. In the noble hadith, the intercessor of the sinners (peace be upon him) was asked, what is Maqam-e-Mahmud? He replied: "It is intercession."[2] — That is intercession.

Second Verse: Allah the Almighty said: "And your Lord will surely give you [so much] that you will be satisfied."[3] | And it is very near that your Lord will give you so much that you will be satisfied. Daylami in Musnad al-Firdous narrates from the Commander of the Faithful, Mawla Ali (may Allah honor him), that when this verse was revealed, the Prophet, the intercessor of sinners (peace be upon him), said: "Then I will not be satisfied if even one of my followers (ummat) remains in the Hellfire."[4] | That is, when Allah Almighty promises to make me satisfied, I will not be satisfied if even one of my followers remains in hell.

---

[1] Al-Quran al-Karim 17/79 [2] Jami' at-Tirmidhi, Chapters of Tafsir, Surah Bani Isra'il, Amin Company Delhi 2/142 [3] Al-Quran al-Karim 93/5 [4] Mafatih al-Ghayb (al-Tafsir al-Kabir) under verse 93/5, Al-Matba'a al-Bahiyya al-Misriyya, Egypt 3/213 Page 573 of 750

फतावा रजविया, जिल्द 29

अकीदों में संदेह की आफत, यह भी कयामत के करीब होने की एक निशानी है। "इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन" (बेशक हम अल्लाह ही के हैं और हमें उसी की तरफ लौटना है)। शफ़ाअत (सिफारिश) की हदीसें भी ऐसी चीज़ हैं जो किसी भी तरह छिप नहीं सकतीं। दर्जनों सहाबा, सैकड़ों ताबईंन, हज़ारों मुहद्दिसिन इनके रावी हैं। हदीस की हर तरह की किताबें—सिहाह, सुनन, मसानिद, मुआजिम, जवामे, मुसन्निफ़ात इनसे भरी पड़ी हैं। अह्ले सुन्नत का हर व्यक्ति, यहाँ तक कि औरतें और बच्चे, यहाँ तक कि देहाती भी जहाँ कहीं हों, इस अकीदे से वाकिफ हैं। खुदा का दीदार और मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की शफ़ाअत हर बच्चे की ज़बान पर जारी है; अल्लाह तआला उन पर दरूद, बरकत, शर्फ़, महिमा और करम नाज़िल फरमाए। फ़कीर (लेखक), अल्लाह उसे माफ़ करे, ने रिसाला (पुस्तिका) "समअ़ व ताअतुल अहादीसुल शफ़ाअत" में इन हदीसों का बड़ी बहुतायत से संग्रह और सारांश किया है। (यहाँ) अत्यंत संक्षेप में सिर्फ चालीस हदीसों की ओर संकेत करता हूँ, और उनसे पहले कुरान की कुछ आयतों की तिलावत करता हूँ।

आयात (आयतेँ):

पहली आयत: अल्लाह तआला ने फरमाया: "अ़सा अंय यबअ़सका रब्बुका मक़ामम मह़मूदा"[1] | करीब है कि तेरा रब तुझे मकाम-ए-महमूद (प्रशंसित स्थान) में भेजे। हदीस शरीफ में है कि गुनहगारों के शफी (सिफारिशी), सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा गया कि मकाम-ए-महमूद क्या चीज़ है? फरमाया: "वह शफ़ाअत (सिफारिश) है।"[2] — वह शफ़ाअत है।

दूसरी आयत: अल्लाह तआला ने फरमाया: "वलसौफ़ा युअ़तीका रब्बुका फ़तरज़ा"[3] | और करीब है कि तेरा रब तुझे इतना देगा कि तू राजी (संतुष्ट) हो जाएगा। दैलमी ने 'मुसनद अल-फिरदौस' में अमीरुल मोमिनीन मौला अली (करमल्लाहु तआला वज्हहु) से रिवायत की है कि जब यह आयत उतरी, तो हुज़ूर शफीउल मुज़निबीन (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया: "इज़न ला अरज़ा व वाहिदुम मिन उम्मती फिन् नार"[4] | यानी जब अल्लाह तआला मुझे राजी कर देने का वादा फरमाता है, तो मैं राजी नहीं हूँगा अगर मेरा एक उम्मती भी दोज़ख (नरक) में रहा।

---

[1] अल-कुरान अल-करीम 17/79 [2] जामिअ़ अत-तिर्मिज़ी, अबवाबुत-तफ़्सीर, सूरह बनी इस्राईल, अमीन कंपनी दिल्ली 2/142 [3] अल-कुरान अल-करीम 93/5 [4] मफ़ातीह उल-ग़ैब (अत-तफ़्सीर अल-कबीर) आयत 93/5 के तहत, अल-मतबअ़तुल बहिय्यतुल मिस्रिय्या, मिस्र 3/213 पेज 573/750

فتاوی رضویہ، جلد ۲۹

عقائد میں تشکیک کی آفت، یہ بھی قرب قیامت کی ایک علامت ہے۔ "اناللہ وانا الیہ راجعون"

احادیث شفاعت بھی ایسی چیز ہیں جو کسی طرح چھپ سکیں۔ بیسیوں صحابہ، صدہا تابعین، ہزار ہا محدثین ان کے راوی، حدیث کی ہر گونہ کتابیں صحاح، سنن، مسانید، معاجم، جوامع، مصنفات ان سے مالا مال۔ اہل سنت کا ہر متنفس یہاں تک کہ زنان و اطفال بلکہ دہقانی جہاں بھی اس عقیدے سے آگاہ، خدا کا دیدار محمد کی شفاعت ایک ایک بچے کی زبان پر جاری، صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم و بارک و شرف و مجد و کرم۔ فقیر غفر لہ اللہ تعالیٰ لہ نے رسالہ "سمع وطاعۃ الاحادیث الشفاعۃ" میں بہت کثرت سے ان احادیث کی جمع و تلخیص کی، (یہاں) بہ نہایت اجمال صرف چالیس حدیثوں کی طرف اشارت، اور ان سے پہلے چند آیات قرآنیہ کی تلاوت کرتا ہوں۔

الآیات:

آیت اولٰی: قال اللہ تعالیٰ (اللہ تعالیٰ نے فرمایا): "عَسٰۤى اَنْ یَّبْعَثَكَ رَبُّكَ مَقَامًا مَّحْمُوْدًا ۝"[1] | قریب ہے کہ تیرا رب تجھے مقام محمود میں بھیجے۔ حدیث شریف میں ہے حضور شفیع المذنبین صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم سے عرض کی گئی، مقام محمود کیا چیز ہے؟ فرمایا: ھو الشفاعۃ [2]۔ وہ شفاعت ہے۔

آیت ثانیہ: قال اللہ تعالیٰ (اللہ تعالیٰ نے فرمایا): "وَلَسَوْفَ یُعْطِیْكَ رَبُّكَ فَتَرْضٰى ۝"[3] | اور قریب تر ہے تجھے تیرا رب اتنا دے گا کہ تو راضی ہو جائے گا۔ دیلمی مسند الفردوس میں امیر المومنین مولیٰ علی کرم اللہ تعالیٰ وجہہ، سے راوی، جب یہ آیت اتری حضور شفیع المذنبین صلی اللہ تعالیٰ

علیہ وسلم نے فرمایا: اذًا لا ارضٰی وواحد من امتی فی النار[4]۔ | یعنی جب اللہ تعالیٰ مجھ سے راضی کر دینے کا وعدہ فرماتا ہے تو میں راضی نہ ہوں گا اگر میرا ایک امتی بھی دوزخ میں رہا۔

---

[1] القرآن الکریم ۱۷/ ۷۹ [2] جامع الترمذی ابواب التفسیر سورۃ بنی اسرائیل امین کمپنی دہلی ۲ /۱۴۲

[3] القرآن الکریم ۹۳ /۵ [4] مفاتیح الغیب (التفسیر الکبیر) تحت آیۃ ۹۳ /۵ المطبعۃ البھیۃ المصریۃ مصر ۲۱۳ /۳

Volume 29, Fatawa Razawiyya

O Allah, send blessings, peace, and benedictions upon him. Tabarani in Al-Mu'jam al-Awsat and Bazzar in Musnad narrate from the Master of Muslims [Ali], may Allah be pleased with him, that the Intercessor of the Sinners, peace and blessings of Allah be upon him, says:

Arabic	Translation
Ashfa' li Ummati hatta yunadiya Rabbi qad ardaita ya Muhammad faqoolu ay Rabbi qad radeet	I will intercede for my Ummah until my Lord calls me: 'O Muhammad! are you satisfied?' I will reply: 'O my Lord! I am satisfied.'[1]

Third Verse[3]: Allah Almighty said (Allah Almighty stated): | Arabic | Translation | | :--- | :--- | | "Wastaghfir lidhanbika wa lil-mu'minina wal-mu'minat"[2] | O Beloved! Seek forgiveness for the sins of your special ones and common Muslim men and women. |

In this verse, Allah Almighty commands His noble Beloved (upon whom be the best of prayers and salutations) to ask forgiveness for the sins of Muslim men and women from Me; and what else is intercession called?

Fourth Verse[4]: Allah Almighty said (Allah Almighty stated): | Arabic | Translation | | :--- | :--- | | "Wa lau annahum idh dhalamu anfusahum ja'ooka fastaghfarullaha wastaghfara lahumur-Rasoolu la-wajadullaha Tawwabar-Rahima"[3] | And if they, having wronged themselves, come to you [O Prophet], then seek Allah's forgiveness, and the Messenger seeks forgiveness for them, they will surely find Allah to be Accepting of Repentance, Merciful. |

In this verse, He instructs Muslims that after committing a sin, they should present themselves in the court of this Prophet and request intercession from him; the Beloved will intercede for you. Then We will surely forgive your sins.

Fifth Verse[5]: Allah Almighty said (Allah Almighty stated):

---

[1] Al-Mu'jam al-Awsat Hadith 2083 Maktabat al-Ma'arif Riyadh 3/424, Al-Targhib wat-Tarhib Kitab al-Ba'th Fasl fish-Shafa'ah Mustafa al-Babi Misr 4/447, Al-Durr al-Manthur under the Verse 5/93 Maktabah Ayatullah al-Uzma Qom Iran 6/361 [2] Al-Quran al-Karim 47/19 [3] Al-Quran al-Karim 4/64

जिल्द 29, फतावा रज़विया

ऐ अल्लाह! उन पर दुरूद, सलाम और बरकतें नाज़िल फ़रमा। तबरानी ने 'अल-मुअजम अल-औसत' में और बज़्ज़ार ने 'मुसनद' में मौला-ए-मुस्लिमीन रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की है कि हुज़ूर शफ़ी-उल-मुज़निबीन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं:

अरबी	अनुवाद
अशफ़अ' लि उम्मती हत्ता युनादिया रब्बी क़द अरद़ैता या मुहम्मद फ़अक़ूलु ऐ रब्बी क़द रद़ैत	मैं अपनी उम्मत की शफ़ाअत (सिफारिश) करूँगा यहाँ तक कि मेरा रब पुकारेगा: ऐ मुहम्मद! क्या तू राज़ी हुआ? मैं अर्ज़ करूँगा: ऐ मेरे रब! मैं राज़ी हुआ।[1]

तीसरी आयत[3]: अल्लाह तआला ने फ़रमाया: | अरबी | अनुवाद | | :--- | :--- | | "वस्तग़फ़िर लि-ज़म्बिका व लिल-मुअमिनीना वल-मुअमिनात"[2] | ऐ महबूब! अपने खासों और आम मुसलमान मर्दों और औरतों के गुनाहों की माफ़ी मांगो। |

इस आयत में अल्लाह तआला अपने हबीब-ए-करीम (उन पर अफ़ज़ल दुरूद व सलाम हो) को हुक्म देता है कि मुसलमान मर्दों और मुसलमान औरतों के गुनाह मुझसे बख्शवाओ, और शफ़ाअत (सिफारिश) और किस चीज़ का नाम है।

चौथी आयत[4]: अल्लाह तआला ने फ़रमाया: | अरबी | अनुवाद | | :--- | :--- | | "व लौ अन्नहुम इज़ ज़लमू अनफ़ुसहूम जा-ऊका फ़स्तग़फ़रुल्लाहा वस्तग़फ़रा लहुमुर-रसूला लव-जदुल्लाहा तव्वाबुर-रहीमा"[3] | और अगर वे अपनी जानों पर ज़ुल्म करें, तेरे पास हाज़िर हों, फिर ख़ुदा से इस्तग़फ़ार (माफ़ी) करें, और रसूल उनकी बख्शिश माँगे तो बेशक अल्लाह तआला को तौबा क़बूल करने वाला मेहरबान पाएँगे। |

इस आयत में मुसलमानों को इरशाद फ़रमाता है कि गुनाह कर के इस नबी की सरकार में हाज़िर हो और उससे शफ़ाअत की दरख़्वास्त करो, महबूब तुम्हारी शफ़ाअत फ़रमाएगा। तो हम यकीनन तुम्हारे गुनाह बख्श देंगे।

पाँचवीं आयत[5]: अल्लाह तआला ने फ़रमाया:

---

[1] अल-मुअजम अल-औसत हदीस 2083 मकबबतुल मआरिफ रियाज़ 3/424, अत-तर्गीब वत-तर्हीब किताबुल बअ'स फ़स्ल फ़िश-शफ़ाअह मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र 4/447, अद-दुर्रुल मंसूर तहतुल

आयह 5/93 मकबतह आयतुल्लाह अल-उज़मा क़ुम ईरान 6/361 [2] अल-क़ुरआन अल-करीम 47/19 [3] अल-क़ुरआन अल-करीम 4/64

पृष्ठ 574/750

اللہم صل وسلم وبارک علیہ۔ طبرانی معجم اوسط اور بزار مسند میں جناب مولی المسلمین رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے راوی حضور شفیع المذنبین صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں:

| اشفع الامتی حتی ینادینی ربی قد ارضیت یا محمد فاقول ای رب قد رضیت | میں اپنی امت کی شفاعت کروں گا یہاں تک کہ میرا رب پکارے گا اے محمد! تو راضی ہوا؟ میں عرض کروں گا: اے رب میرے! میں راضی ہوا۔ |

آیت ثالثہ ۳: قال اللہ تعالیٰ (اللہ تعالیٰ نے فرمایا): | "وَاسْتَغْفِرْ لِذَنْۢبِکَ وَلِلْمُؤْمِنِیْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ"۲ | اے محبوب! اپنے خاصوں اور عام مسلمان مردوں اور عورتوں کے گناہوں کی معافی مانگو۔ |

اس آیت میں اللہ تعالیٰ اپنے حبیب کریم علیہ افضل الصلوۃ والتسلیم کو حکم دیتا ہے کہ مسلمان مردوں اور مسلمان عورتوں کے گناہ مجھ سے بخشواؤ، اور شفاعت کا ہے کا نام ہے۔

آیت رابعہ ۴: قال اللہ تعالیٰ (اللہ تعالیٰ نے فرمایا): | "وَلَوْ اَنَّهُمْ اِذْ ظَّلَمُوْۤا اَنْفُسَهُمْ جَآءُوْكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللّٰهَ وَ اسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُوْلُ لَوَجَدُوا اللّٰهَ تَوَّابًا رَّحِیْمًا"۳ | اور اگر وہ اپنی جانوں پر ظلم کریں، تیرے پاس حاضر ہوں، پھر خدا سے استغفار کریں، اور رسول ان کی بخشش مانگے تو بیشک اللہ تعالیٰ کو توبہ قبول کرنے والا مہربان پائیں۔ |

اس آیت میں مسلمانوں کو ارشاد فرماتا ہے کہ گناہ کر کے اس نبی کی سرکار میں حاضر ہو اور اُس سے درخواست شفاعت کرو، محبوب تمہاری شفاعت فرمائے گا۔ تو ہم یقیناً تمہارے گناہ بخش دیں گے۔

آیت خمسہ ۵: قال اللہ تعالیٰ (اللہ تعالیٰ نے فرمایا):

١ المعجم الاوسط حديث ٢٠٨٣ مكتبة المعارف رياض ٣/ ٤٢٤، الترغيب الترہيب كتاب البعث فصل فى الشفاعة مصطفى البابى مصر ۴/ ۴۴۷، الدر المنثور تحت الآية ۵/ ۹۳ مكتبة آية الله العظمى قم ايران ۶/ ۳۶۱ ۲ القرآن الكريم ۱۹/ ۴۷ ۳ القرآن الكريم ۴/ ۶۴

Fatawa Razawiyya, Volume 29

"And when it is said to them, 'Come, the Messenger of Allah will ask forgiveness for you,' they turn their heads..." 1 When it is said to these hypocrites, "Come, let the Messenger of Allah seek forgiveness for you," they turn their heads away. This verse describes the ill-fate of the hypocrites, showing that they do not desire intercession from the Presence of the Intercessor of the Sinners (peace and blessings of Allah be upon him). Thus, those who do not desire it today will not receive it tomorrow. May Allah grant us benefit from his intercession in this world and the hereafter. In the Gathering, we too shall witness the spectacle; Let the denier not beseech him today. And may Allah Almighty send blessings upon the Intercessor of the Sinners, and upon his family, his companions, and his entire party. May Allah Almighty send blessings upon the one who intercedes for the sinners and upon his family, companions, and the entire Ummah. (T)

The Hadiths The hadiths concerning the 'Great Intercession' (Shafa'at-e-Kubra) clearly state that the Day of Gathering will be a long day that seems endless. The sun and Hell will be brought near heads. On that day, the heat of ten complete years will be concentrated in the sun and it will be placed just a short distance above heads. May God not show such intensity of thirst; may Allah protect from such heat of the Day of Judgment. Sweat will soak into the earth to the depth of bamboo poles and then rise up, even higher than the throats. If ships were released, they would float. People will be drowning in it; their hearts will reach their throats out of extreme distress. Wearied by these immense calamities, people will wander in search of an intercessor. They will go to Adam, Noah, the Friend (Ibrahim), the Interlocutor (Moses), and the Messiah (Jesus) — peace and blessings be upon them all — and will receive a clear answer. All prophets will say, "This is not our rank, we are not worthy of this, we cannot accomplish this task. My soul, my soul (Nafsi Nafsi), go to someone else." Finally, they will arrive in the presence of the Radiant Prophet, the Seal of Prophets, the Leader of the first and the last, the Intercessor of the Sinners, the Mercy to the worlds (peace and blessings of Allah be upon him). The Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) will say, "I am for it, I am for it." 2

1 Al-Quran al-Karim 63/5 2 Al-Bidayah wan-Nihayah, Mention of Allah's and His Noble Messenger's praise for His servant and friend Ibrahim, Maktaba al-Ma'arif Beirut 1/171; Sahih Muslim, Book of Faith, Chapter on the Affirmation of Intercession etc., Qadimi Kutub Khana Karachi 1/110.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 29

"और जब उनसे कहा जाता है, 'आओ, अल्लाह का रसूल तुम्हारे लिए माफ़ी माँगेगा,' तो वे अपने सिर फेर लेते हैं..." 1 जब इन मुनाफ़िक़ों (पाखंडियों) से कहा जाता है कि आओ अल्लाह का रसूल तुम्हारी मग़फ़िरत (माफ़ी) माँगे, तो वे अपने सिर फेर लेते हैं। इस आयत में मुनाफ़िक़ों के बुरे अंजाम का बयान हुआ है कि वे हुज़ूर शफ़ीउल मुज़निबीन (गुनहगारों के शिफ़ाअत करने वाले) सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से शिफ़ाअत नहीं चाहते। फिर जो आज नहीं चाहते, वे कल (क़यामत के दिन) नहीं पाएंगे। अल्लाह दुनिया और आख़िरत में उनकी शिफ़ाअत से हमें लाभान्वित फ़रमाए। हश्र (प्रलय का मैदान) में हम भी नज़ारा देखेंगे; आज जो इनकार करता है, वह उनसे इल्तिजा (प्रार्थना) न करे। और अल्लाह तआला गुनहगारों के शिफ़ाअत करने वाले और उनके परिवार, साथियों और उनके पूरे समूह पर अपनी कृपा और शांति भेजे। अल्लाह तआला दरूद (कृपा) नाज़िल फ़रमाए गुनहगारों की शिफ़ाअत फ़रमाने वाले पर और उनकी आल (वंश), असहाब (साथियों) और तमाम उम्मत (अनुयायियों) पर। (त)

अहादीस (हदीसें) शिफ़ाअते कुबरा (महान शिफ़ाअत) की हदीसें जिनमें साफ़ और स्पष्ट तौर पर कहा गया है कि हश्र के मैदान में वह दिन इतना लंबा होगा कि काटे नहीं कटेगा और सिरों पर सूरज और जहन्नम (नरक) नज़दीक होंगे। उस दिन सूरज में दस साल की मुकम्मल गर्मी जमा की जाएगी और सिरों से महज़ कुछ ही फ़ासले पर लाकर रख दी जाएगी। प्यास की वह शिद्दत कि ख़ुदा न दिखाए, गर्मी की वह क़यामत कि अल्लाह बचाए। पसीना ज़मीन में बाँसों की गहराई तक जज़्ब होकर ऊपर चढ़ेगा, यहाँ तक कि गलों से भी ऊपर हो जाएगा। अगर जहाज़ छोड़ें तो तैरने लगें। लोग उसमें गोते खाएंगे, घबरा-घबरा कर दिल गले तक आ जाएंगे। लोग इन महान विपत्तियों में जान से तंग आकर शफ़ीअ (शिफ़ाअत करने वाले) की तलाश में दर-दर भटकेंगे। आदम, नूह, ख़लील (इब्राहिम), कलीम (मूसा) और मसीह (ईसा) अलैहिमुस्सलाम के पास हाज़िर होकर साफ़ जवाब सुनेंगे। सब नबी फ़रमाएंगे कि हमारा यह रुतबा नहीं है, हम इस लायक़ नहीं हैं, हमसे यह काम नहीं हो पाएगा, नफ़्सी-नफ़्सी (मेरा क्या होगा), तुम किसी और के पास जाओ। यहाँ तक कि सबसे आख़िर में लोग हुज़ूर पुरनूर ख़ातिमुन्नबीयीन, सैयदुल अव्वलीन वल आख़िरीन, शफ़ीउल मुज़निबीन, रहमतुल लिल आलमीन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बारगाह में हाज़िर होंगे। हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाएंगे, "अना लहा, अना लहा" (मैं इसके लिए हूँ, मैं इसके लिए हूँ)। 2

1 अल-क़ुरान अल-करीम 63/5 2 अल-बिदाया वन-निहाया, अल्लाह और उसके नेक रसूल की अपने बंदे और ख़लील इब्राहिम की प्रशंसा का ज़िक्र, मकतबा अल-मआरिफ़ बेरूत 1/171; सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान, शिफ़ाअत साबित होने का बाब आदि, क़दीमी कुतुब ख़ाना कराची 1/110।

"وَ اِذَا قِیْلَ لَهُمْ تَعَالَوْا یَسْتَغْفِرْ لَكُمْ رَسُوْلُ اللّٰهِ لَوَّوْا رُءُوْسَهُمْ" 1 جب ان منافقوں سے کہا جائے کہ آؤ رسول اللہ تمہاری مغفرت مانگیں تو اپنے سر پھیر لیتے ہیں۔ اس آیت میں منافقوں کا حال بد مآل ارشاد ہوا کہ وہ حضور شفیع المذنبین صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم سے شفاعت نہیں چاہتے ، پھر جو آج نہیں چاہتے وہ کل نہ پائیں گے۔ اللہ دنیا و آخرت میں ان کی شفاعت سے بہرہ مند فرمائے۔ حشر میں ہم بھی سیر دیکھیں گے منکر آج ان سے التجا نہ کرے وصلی اللہ تعالٰی علی شفیع المذنبین وآلہ وصحبہ وحزبہ اجمعین۔ اللہ تعالٰی درود نازل فرمائے گنہگاروں کی شفاعت فرمانے والے پر اور ان کی آل، اصحاب اور تمام امت پر۔ (ت)

الاحادیث شفاعتِ کبرٰی کی حدیثیں جن میں صاف صریح ارشاد ہوا کہ عرصاتِ محشر میں وہ طویل دن ہوگا کہ کاٹے نہ کٹے اور سروں پر آفتاب اور دوزخ نزدیک ، اُس دن سورج میں دس برس کامل کی گرمی جمع کریں گے اور سروں سے کچھ ہی فاصلہ پر لا رکھیں گے، پیاس کی وہ شدت کہ خدا نہ دکھائے، گرمی وہ قیامت کہ اللہ بچائے، بانسوں پسینہ زمین میں جذب ہو کر اوپر چڑھے گا، یہاں تک کہ گلے گلے سے بھی اونچے ہوگا، جہاز چھوڑیں تو بہنے لگیں، لوگ اس میں غوطے کھائیں گے، گھبرا گھبرا کر دل حلق تک آ جائیں گے۔ لوگ ان عظیم آفتوں میں جان سے تنگ آکر شفیع کی تلاش میں جا بجا پھریں گے، آدم و نوح، خلیل و کلیم و مسیح علیہم الصلوٰۃ والتسلیم کے پاس حاضر ہو کر جواب صاف سنیں گے ، سب انبیاء فرمائیں گے ہمارا یہ مرتبہ نہیں ہم اس لائق نہیں ہم سے یہ کام نہ نکلے گا، نفسی نفسی، تم اور کسی کے پاس جاؤ ، یہاں تک کہ سب کے بعد حضور پُر نور خاتم النبیین، سیّدالاولین والآخرین، شفیع المذنبین، رحمۃ للعالمین صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کی خدمت میں حاضر ہوں گے۔ حضور اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم "اَنَا لَهَا اَنَا لَهَا" 2

1 القرآن الکریم ۶۳/ ۵ 2 البدایة والنهایة ذکر ثناء الله و رسوله الکریم علی عبده و خلیله ابراهیم مکتبه المعارف بیروت ۱/ ۱۷۱، صحیح مسلم کتاب الایمان باب اثبات الشفاعة الخ قدیمی کتب خانه کراچی ۱/ ۱۱۰

Fatawa Razawiyya Volume 29

They will say, "I am for intercession, I am for intercession." Then they will present themselves in the presence of their Generous Lord (Exalted is His Majesty) and prostrate. Their Lord (Blessed and Exalted) will say:

[Arabic Box] O Muhammad, raise your head, speak and you shall be heard, ask and you shall be given, and intercede and your intercession shall be accepted. 1

This will be the Maqam-e-Mahmud (Praised Station) where a roar of praise, glorification, and commendation for the Holy Prophet will arise among all the former and later people, and it will become clear to everyone, supporters and opponents alike. The standing that our Master has in the presence of God belongs to no one else, and the grandeur that our Master has with the Great Sovereign (Exalted is His Majesty) belongs to no one else. And all praise is due to Allah, Lord of the worlds. (And all praises are for Allah Almighty, Who is the Sustainer of all the worlds. T) For this reason, Allah Almighty, according to His perfect wisdom, will put it in the hearts of the people to go to the earlier Prophets (peace and blessings be upon them) first, and then, having returned disappointed from there, to come to his service, so that everyone may know that the office of intercession is the exclusive privilege of this Sovereign. No one else has the audacity to open its door. And all praise is due to Allah, Lord of the worlds (And all praises are for Allah Almighty, Who is the Sustainer of all the worlds. T)

These Hadiths are mentioned in Sahih Bukhari and Sahih Muslim, in all books, and are well-known and famous among the people of Islam. There is no need to mention them all as they are very long. If a skeptic has read even a bit, let him call for a translation of Mishkat Sharif in Urdu and see, or ask a Muslim to read it to him. And at the end of these Hadiths, it has also been stated that after performing the intercession, the Prophet, the Intercessor of sinners (peace and blessings of Allah be upon him), for the forgiveness of sinners...

---

1 Sahih al-Bukhari, Kitab al-Anbiya, Chapter: Allah's Statement: 'And We sent Noah...' Qadimi Kutub Khana Karachi, 1/470; Sahih al-Bukhari, Kitab al-Riqaq, Chapter: Description of Paradise and Hell, Qadimi Kutub Khana Karachi, 2/971; Sahih al-Bukhari, Kitab al-Tawhid, Chapter: Allah's Statement: 'To what I created with My hands,' Qadimi Kutub Khana Karachi, 2/1071; Sahih al-Bukhari, Kitab al-Tawhid, Chapter: Allah's Statement: 'Faces that day shall be radiant,' Qadimi Kutub Khana

Karachi, 2/1081; Sahih al-Bukhari, Kitab al-Tawhid, Chapter: Statement of the Lord on the Day of Resurrection, Prophets and others, Qadimi Kutub Khana Karachi, 2/1118; Sahih Muslim, Kitab al-Iman, Chapter: Establishing Intercession etc., Qadimi Kutub Khana Karachi, 1/108 to 111.

वे फरमाएंगे यानी मैं शफ़ाअत के लिए हूँ, मैं शफ़ाअत के लिए हूँ। फिर अपने रब्बे करीम जल्ला जलालुहू की बारगाह में हाज़िर होकर सज्दा करेंगे, उनका रब तबारक व तआला इरशाद फरमाएगा:

[अरबी बॉक्स] ऐ मोहम्मद! अपना सिर उठाओ और अर्ज़ करो तुम्हारी बात सुनी जाएगी और मांगो कि तुम्हें अता होगा और शफ़ाअत करो कि तुम्हारी शफ़ाअत कुबूल है। १

यही मकामे महमूद होगा जहाँ तमाम अव्वलीन व आख़िरीन में हुज़ूर की तारीफ़ व हम्द ओ सना का गुल पड़ जाएगा और मुवाफ़िक व मुखालिफ़ सब पर खुल जाएगा। बारगाहे इलाही में जो वजाहत हमारे आका की है किसी की नहीं और मालिले अज़ीम जल्ला जलालुहू के यहाँ जो अज़मत हमारे मौला के लिए है किसी के लिए नहीं वलहम्दुलिल्लाहि रब्बिल आलमीन। (और तमाम तारीफ़ें अल्लाह तआला के लिए हैं जो सब जहानों का परवरदिगार है। त) इसी लिए अल्लाह तआला अपनी हिकमते कामिला के मुताबिक़ लोगों के दिलों में डालेगा कि पहले और अंबिया किराम अलैहिमुस्सलाम के पास जाएँ और वहाँ से महरूम फिर कर उनकी खिदमत में हाज़िर आएँ ताकि सब जान लें कि मंसबे शफ़ाअत इसी सरकार का खासा है दूसरे की मजाल नहीं कि उसका दरवाज़ा खोल सके वलहम्दुलिल्लाहि रब्बिल आलमीन (और तमाम तारीफ़ें अल्लाह तआला के लिए हैं जो सब जहानों का परवरदिगार है। त)

ये हदीसें सहीह बुखारी व सहीह मुस्लिम तमाम किताबों में मज़कूर और अहले इस्लाम में मारूफ़ व मशहूर हैं, ज़िक्र की हाजत नहीं कि बहुत तवील हैं। शक लाने वाला अगर दो हरफ़ भी पढ़ा हो तो मिश्कात शरीफ़ का उर्दू में तर्जुमा मंगा कर देख ले या किसी मुसलमान से कहे कि पढ़ कर सुना दे। और इन्हीं हदीसों के आख़िर में ये भी इरशाद हुआ है कि शफ़ाअत करने के बाद हुज़ूर शफ़ीयुल मुज़निबीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम बख़्शिश गुनहगारों के लिए...

---

१ सहीह अल-बुखारी, किताब अल-अंबिया, बाब: अल्लाह का कौल: 'बेशक हमने नूह को भेजा...' कदीमी कुतुब खाना कराची, १/४७०; सहीह अल-बुखारी, किताब अल-रिकाक, बाब: जन्नत और दोज़ख की सिफ़त, कदीमी कुतुब खाना कराची, २/९७१; सहीह अल-बुखारी, किताब अल-तौहीद, बाब: अल्लाह का कौल: 'जिसे मैंने अपने हाथों से बनाया', कदीमी कुतुब खाना कराची, २/१०७१; सहीह अल-बुखारी, किताब अल-तौहीद, बाब: अल्लाह का कौल: 'उस दिन चेहरे खिले होंगे', कदीमी

कुतुब खाना कराची, २/१०८१; सहीह अल-बुखारी, किताब अल-तौहीद, बाब: क़यामत के दिन रब का फरमान, अंबिया और अन्य, कदीमी कुतुब खाना कराची, २/१११८; सहीह मुस्लिम, किताब अल-ईमान, बाब: शफ़ाअत का सुबूत आदि, कदीमी कुतुब खाना कराची, १/१०८ से १११।

पृष्ठ ७५० में से ५७६

فرمائیں گے یعنی میں ہوں شفاعت کے لیے، میں ہوں شفاعت کے لیے۔ پھر اپنے رب کریم جلالہ، کی بارگاہ میں حاضر ہو کر سجدہ کریں گے ان کا رب تبارک و تعالی ارشاد فرمائے گا:

یامحمد ارفع رأسك وقل تُسمع وسل تعطه واشفع تشفع ۱۔ اے محمد ! اپنا سر اٹھاؤ اور عرض کرو تمہاری بات سنی جائے گی اور مانگو کہ تمہیں عطا ہوگا اور شفاعت کرو کہ تمہاری شفاعت قبول ہے۔

یہی مقام محمود ہوگا جہاں تمام اولین و آخرین میں حضور کی تعریف و حمد وثنا کا غل پڑ جائے گا اور موافق و مخالف سب پر کھل جائے گا۔ بارگاہ الہی میں جو وجاہت ہمارے آقا کی ہے کسی کی نہیں اور مالک عظیم جل جلالہ کے یہاں جو عظمت ہمارے مولے کے لیے ہے کسی کے لیے نہیں والحمد للہ رب العالمین۔ (اور تمام تعریفیں اللہ تعالیٰ کے لیے ہیں جو سب جہانوں کا پروردگار ہے۔ ت) اسی لیے اللہ تعالیٰ اپنی حکمتِ کاملہ کے مطابق لوگوں کے دلوں میں ڈالے گا کہ پہلے اور انبیاء کرام علیہم الصلوۃ والسلام کے پاس جائیں اور وہاں سے محروم پھر کر ان کی خدمت میں حاضر آئیں تاکہ سب جان لیں کہ منصبِ شفاعت اسی سرکار کا خاصہ ہے دوسرے کی مجال نہیں کہ اس کا دروازہ کھول سکے، والحمد للہ رب العالمین (اور تمام تعریفیں اللہ تعالیٰ کے لیے ہیں جو سب جہانوں کا پروردگار ہے۔ت)

یہ حدیثیں صحیح بخاری و صحیح مسلم تمام کتابوں میں مذکور اور اہل اسلام میں معروف و مشہور ہیں، ذکر کی حاجت نہیں کہ بہت طویل ہیں۔ شک لانے والا اگر دو حرف بھی پڑھا ہو تو مشکوۃ شریف کا اردو میں ترجمہ منگا کر دیکھ لے یا کسی مسلمان سے کہے کہ پڑھ کر سنا دے۔ اور

انہیں حدیثوں کے آخر میں یہ بھی ارشاد ہوا ہے کہ شفاعت کرنے کے بعد حضور شفیع المذنبین صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم بخشش گنہگاران کے لیے

---

۱ صحیح البخاری کتاب الانبیاء باب قول اللہ تعالی ولقد ارسلنا نوحا الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ۱ / ۴۷۰، صحیح البخاری کتاب الرقاق باب صفۃ الجنۃ والنار قدیمی کتب خانہ کراچی ۲ / ۹۷۱، صحیح البخاری کتاب التوحید باب قول اللہ تعالی لما خلقت بیدی قدیمی کتب خانہ کراچی ۲ / ۱۰۷۱، صحیح البخاری کتاب التوحید باب قول اللہ تعالی وجوہ یومئذ ناضرۃ الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ۲ / ۱۰۸۱، صحیح البخاری کتاب التوحید باب قول الرب یوم القیمۃ الانبیاء وغیرھم قدیمی کتب خانہ کراچی ۲ / ۱۱۱۸، صحیح مسلم کتاب الایمان باب اثبات الشفاعۃ الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ۱ / ۱۰۸ تا ۱۱۱

He will intercede again and again, and each time Allah Almighty will say the same words, and His Presence will grant salvation to countless servants of God every time. Besides those famous hadiths, I am writing an Arba'een, i.e., forty (40) hadiths that have reached the ears of common people less often, so that the faith of Muslims may advance, and the heart of the denier may burn in the fire of rage, especially those which are a noble refutation of that impure distortion which some irreligious, godless, unjust, and false people have made in the meaning of intercession, and have fabricated from their hearts a false form called intercession to hide the filthy face of denial of intercession.

From these hadiths, it will be clear, these hadiths will manifest that God and His Messenger have clearly told us the beloved name of the Intercessor and stated plainly that he is Muhammad, the Messenger of Allah (may Allah Almighty bless him and grant him peace), and not that the matter was left vague as a wretched person says that 'leave it to His choice, let Him make whom He wills our intercessor'.

These hadiths will give soul-refreshing good news that the intercession of the Prophet is not for him who accidentally committed a sin and is constantly remorseful, worried, fearful, and trembling about it, just as a hidden thief says that theft has been proven against the thief but he is not a perpetual thief and has not made theft his profession, but a mistake happened due to the mischief of the self, so he is ashamed of it and fears night and day. No, no, by their Lord Who made him the 'Intercessor of Sinners'. His intercession is for black-faced, sinful, evil-doers, and transgressors like us, who are bound hair-to-hair in sin, whose names even sin feels restricted and ashamed of.

I fear that the skirt of sin might be defiled by me (I fear that the cloak of my sins might be stained because of me. - T)

And Allah Almighty is sufficient for us, and what an excellent Disposer of affairs He is. And blessings and peace be upon the beautiful Intercessor and upon his family and companions with thousands of honors and respect, and all praise is for Allah.

And Allah Almighty is sufficient for us, and what an excellent Disposer of affairs He is. And blessings and peace be upon the beautiful Intercessor and upon his family and companions with thousands of honors and respect, and all praise is for Allah.

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

वह बार-बार शिफ़ाअत (सिफारिश) फरमाएंगे और हर बार अल्लाह तआला वही शब्द फरमाएगा और हुज़ूर हर बार अल्लाह के अनगिनत बंदों को निजात (मुक्ति) दिलाएंगे। मैं उन मशहूर हदीसों के अलावा एक अरबईन यानी चालीस (40) हदीसें और लिखता हूँ जो आम लोगों के कानों तक कम पहुँची हैं, जिनसे मुसलमानों का ईमान बढ़े, मुनकिर (इनकार करने वाले) का दिल गुस्से की आग में जल जाए, खासकर उन हदीसों से उस नापाक मिलावट का रद (खंडन) हो जो कुछ बद-दीनों, ख़ुदा से न डरने वालों, ना-हक़ कोशिश करने वालों और बातिल पर चलने वालों ने शिफ़ाअत के अर्थ में की है और शिफ़ाअत के इनकार के गंदे चेहरे को छिपाने के लिए दिल से शिफ़ाअत के नाम की एक झूठी सूरत गढ़ ली है।

इन हदीसों से स्पष्ट होगा, ये हदीसें ज़ाहिर करेंगी कि हमें ख़ुदा और रसूल ने कान खोलकर शफ़ीअ (सिफारिश करने वाले) का प्यारा नाम बता दिया और साफ़ फरमाया कि वह मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) हैं, न कि यह कि बात गोल रखी हो जैसा कि एक बदनसीब कहता है कि 'उसी के इख़्तियार (अधिकार) पर छोड़ दीजिए जिसे वह चाहे हमारा शफ़ीअ बना दे'।

ये हदीसें रूह को ताज़गी देने वाली खुशख़बरी देंगी कि हुज़ूर की शिफ़ाअत उस व्यक्ति के लिए नहीं है जिससे संयोग से गुनाह हो गया हो और वह उस पर हर वक्त शर्मिंदा, परेशान, डरा हुआ और कांप रहा हो, जिस तरह एक चोर दिल में कहता है कि चोर पर चोरी तो साबित हो गई मगर वह हमेशा का चोर नहीं है और उसने चोरी को अपना पेशा नहीं बनाया बल्कि नफ़्स (मन) की शरारत से गलती हो गई, तो वह उस पर शर्मिंदा है और दिन-रात डरता है। नहीं नहीं, उनके रब की कसम जिसने उन्हें 'शफीउल मुज़निबीन' (गुनाहगारों का सिफारिशी) बनाया। उनकी शिफ़ाअत हम जैसे स्याह-रूह (काले चेहरे वाले), गुनाहगारों, बदकारों और ज़ालिमों के लिए है जिनका रोम-रोम गुनाह में बंधा है, जिनके नाम से गुनाह भी तंग और शर्मिंदा रहता है।

मुझे डर है कि गुनाहों का दामन मेरी वजह से मैला न हो जाए (मैं डरता हूँ कि गुनाहों का दामन मेरी वजह से आलोडित हो जाएगा।। त)

वहसबुना अल्लाहु तआला व नि'मल	और अल्लाह तआला हमारे लिए काफी है और वह क्या ही
वकील वस्सलातु वस्सलाम अला अश-	बेहतरीन कारसाज़ है, और दुरूद व सलाम नाज़िल हो
शफ़ील जमील व अला आलिही व	जमाल वाले शफ़ीअ पर और उनके आल (वंशजों) और

सहबिही बि-अल्फ़ित तबजील वल हम्दु लिल्लाह	अस्हाब (साथियों) पर हज़ारों ताज़ीम व तकरीम (सम्मान) के साथ, और तमाम तारीफें अल्लाह के लिए हैं।

بار بار شفاعت فرمائیں گے اور ہر دفعہ اللہ تعالیٰ وہی کلمات فرمائے گا اور حضور ہر مرتبہ بے شمار بندگانِ خدا کو نجات بخشیں گے۔ میں ان مشہور حدیثوں کے سوا ایک اربعین یعنی چالیس ۴۰ حدیثیں اور لکھتا ہوں جو گوشِ عوام تک کم پہنچی ہوں ، جن سے مسلمانوں کا ایمان ترقی پائے ، منکر کا دل آتشِ غیظ میں جل جائے ، بالخصوص جن سے اس ناپاک تحریف کا ردِ شریف ہو جو بعض بددینوں، خدا ناترسوں، ناحق کوشوں، باطل کیشوں نے معنی شفاعت میں کیں اور انکارِ شفاعت کے چہرہ نجس چھپانے کو ایک جھوٹی صورت نام کی شفاعت دل سے گھڑی۔

ان حدیثوں سے واضح ہو گا یہ حدیثیں ظاہر کریں گی کہ ہمیں خدا اور رسول نے کان کھول کر شفیع کا پیارا نام بتا دیا اور صاف فرمایا کہ وہ محمد رسول اللہ ہیں (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) نہ یہ کہ بات گول رکھی ہو جیسے ایک بد بخت کہتا ہے کہ اسی کے اختیار پر چھوڑ دیجئے جس کو وہ چاہے ہمارا شفیع کر دے۔

یہ حدیثیں مژدہ جانفزا دیں گی کہ حضور کی شفاعت نہ اس کے لیے ہے جس سے اتفاقاً گناہ ہو گیا ہو اور وہ اس پر ہر وقت نادم و پریشان و ترساں و لرزاں ہے جس طرح ایک دزدِ باطن کہتا ہے کہ چور پر تو چوری ثابت ہو گئی مگر وہ ہمیشہ کا چور نہیں اور چوری کو اس نے کچھ اپنا پیشہ نہیں ٹھہرایا مگر نفس کی شامت سے قصور ہو گیا سو اس پر شرمندہ ہے اور رات دن ڈرتا ہے۔ نہیں نہیں ان کے رب کی قسم جس نے انہیں شفیع المذنبین کیا۔ ان کی شفاعت ہم جیسے روسیاہوں پُرگناہوں، سیاہ کاروں ستم گاروں کے لیے ہے جن کا بال بال گناہ میں بندھا ہے جن کے نام سے گناہ بھی تنگ و عار رکھتا ہے۔ ع

ترسم آلودہ شود دامنِ عصیاں از من (میں ڈرتا ہوں کہ گناہوں کا دامن میری وجہ سے آلودہ ہو جائے گا۔ ت)

وحسبنا اللہ تعالیٰ و نعم الوکیل و	اور اللہ تعالیٰ ہمارے لیے کافی ہے اور کیا ہی خوب کارساز
الصلوۃ والسلام علی الشفیع الجمیل	ہے، اور درود و سلام نازل ہو جمال والے شفیع پر اور ان کے
و علی اٰلہٖ وصحبہٖ بالوف التبجیل و	آل و اصحاب پر ہزاروں تعظیم و تکریم کے ساتھ، اور تمام
الحمد للہ	تعریفیں اللہ کے لیے ہیں

Fatawa Rizwia, Volume 29

Lord of all worlds. | Who is the Sustainer of all worlds. (T)

Hadith 1 & 2: Imam Ahmad with a sound chain in his Musnad from Hazrat Abdullah bin Umar (may Allah be pleased with them both) and Ibn Majah from Hazrat Abu Musa Ash'ari (may Allah be pleased with him) relate that the Intercessor of the Sinners, Prophet Muhammad (peace and blessings of Allah be upon him), said:

[Arabic Box Left]: "I was given the choice between intercession (shafa'at) and half of my Ummah entering Paradise. I chose intercession because it is more encompassing and sufficient. Do you think it is for the pious? No, rather it is for the sinful, wrongdoers, and those stained with transgressions." [Urdu Box Right]: Allah Almighty gave me the choice to either take intercession or that half of my Ummah enters Paradise. I took intercession because it is more comprehensive and useful. Do you think that my intercession is for pure Muslims? No, but it is for those sinners who are stained with sins and are severe wrongdoers.

[Arabic Box Left]: O Allah! Send blessings, peace, and benediction upon him, and all praise is for Allah, the Lord of all worlds. [Urdu Box Right]: O Allah! Send blessings, peace, and benediction upon him, and all praise is for Allah who is the Sustainer of all worlds. (T)

Hadith 3: Ibn Adi relates from the Mother of the Believers, Hazrat Umm Salama (may Allah be pleased with her), that the Intercessor of the Sinners, Prophet Muhammad (peace and blessings of Allah be upon him), said:

[Arabic Box Left]: My intercession is for the perished ones of my Ummah. [Urdu Box Right]: My intercession is for those of my Ummah who have been ruined by their sins.

It is true, O my Intercessor, I sacrifice myself for you, peace be upon you.

Hadith 4 to 8: Hazrat Abu Dawood, Tirmidhi, Ibn Hibban, Hakim, and Bayhaqi with a sound benefit from Hazrat Anas bin Malik, and Tirmidhi, Ibn Majah, Ibn Hibban, and Hakim from Hazrat Jabir bin Abdullah, and Tabarani in Mu'jam al-Kabir from Hazrat Abdullah bin Abbas...

---

1. Sunan Ibn Majah, Chapters on Asceticism, Chapter on Intercession, H.M. Saeed Company Karachi, p. 429; Musnad Ahmad bin Hanbal from Abdullah bin Umar, Al-Maktab al-Islami Beirut 2/57

2. Al-Kamil by Ibn Adi, biography of Amr bin al-Muharram, Dar al-Fikr Beirut 5/1801; Kanz al-Ummal Hadith 39073, Mu'assasat al-Risala Beirut 14/401

फ़तावा रिज़विया, जिल्द 29

रब्बुल आलमीन। | जो सब जहानों का पालनहार है। (त)

हदीस 1 और 2: इमाम अहमद ने सहीह सनद के साथ अपनी मुसनद में हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से और इब्न माजा ने हज़रत अबू मूसा अशअरी (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत की है कि हुज़ूर शफ़ीउल मुज़निबीन (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं:

[अरबी बॉक्स बाएँ: "मुझे शफ़ाअत (सिफारिश) और मेरी आधी उम्मत के जन्नत में दाखिल होने के बीच इख़्तियार दिया गया। मैंने शफ़ाअत को चुना क्योंकि वह अधिक व्यापक और पर्याप्त है। क्या तुम इसे परहेज़गारों के लिए समझते हो? नहीं, बल्कि यह गुनाहगारों, ख़ताकारों और गुनाहों में लिप्त लोगों के लिए है।" [उर्दू बॉक्स दाएँ: अल्लाह तआला ने मुझे विकल्प दिया कि या तो शफ़ाअत ले लूँ या यह कि तुम्हारी आधी उम्मत जन्नत में जाए। मैंने शफ़ाअत ले ली क्योंकि वह अधिक पूर्ण और काम आने वाली है। क्या तुम यह समझ बैठे हो कि मेरी शफ़ाअत पवित्र मुसलमानों के लिए है? नहीं, बल्कि वह उन गुनहगारों के लिए है जो गुनाहों में डूबे हुए और सख्त खताकार हैं।

[अरबी बॉक्स बाएँ: ऐ अल्लाह! उन पर दुरूद, सलाम और बरकत नाज़िल फ़रमा, और तमाम तारीफें अल्लाह के लिए हैं जो सब जहानों का पालनहार है। [उर्दू बॉक्स दाएँ: ऐ अल्लाह! उन पर दुरूद, सलाम और बरकत नाज़िल फ़रमा, और तमाम तारीफें अल्लाह के लिए हैं जो सब जहानों का पालनहार है। (त)

हदीस 3: इब्न अदी हज़रत उम्मुल मोमिनीन उम्मे सलमा (रज़ियल्लाहु अन्हा) से रिवायत करते हैं कि हुज़ूर शफ़ीउल मुज़निबीन (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं:

[अरबी बॉक्स बाएँ: मेरी शफ़ाअत मेरी उम्मत के तबाह होने वालों के लिए है। [उर्दू बॉक्स दाएँ: मेरी शफ़ाअत मेरी उम्मत के उन लोगों के लिए है जिन्हें गुनाहों ने तबाह कर डाला।

सच है ऐ मेरे शफ़ीअ (सिफारिश करने वाले), मैं तुम पर क़ुर्बान, तुम पर दुरूद हो।

हदीस 4 से 8: हज़रत अबू दाऊद, तिर्मिज़ी, इब्न हब्बान, हाकिम और बैहक़ी ने सहीह रिवायत के साथ हज़रत अनस बिन मालिक से, और तिर्मिज़ी, इब्न माजा, इब्न हब्बान, और हाकिम ने हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह से, और तबरानी ने मुअजमुल कबीर में हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास से...

1. सुनन इब्न माजा, अबवाबुज़ जुहद, बाब ज़िक्रुश शफ़ाअत, एचएम सईद कंपनी कराची, पृ. 429; मुसनद अहमद बिन हंबल, अब्दुल्लाह बिन उमर से, अल-मक्तब अल-इस्लामी बेरुत 2/57
2. अल-कामिल इब्न अदी, अम्र बिन अल-मुहर्रम का अनुवाद, दारुल फिक्र बेरुत 5/1801; कन्जुल उम्माल हदीस 39073, मुअस्ससतुर् रिसाला बेरुत 14/401

رب العالمین۔ | جو سب جہانوں کا پروردگار ہے۔ (ت)

حدیث ۱ و ۲: امام احمد بسندِ صحیح اپنی مسند میں حضرت عبداللہ بن عمر رضی اللہ تعالٰی عنہما سے اور ابن ماجہ حضرت ابو موسٰی اشعری رضی اللہ تعالٰی عنہ سے راوی حضور شفیع المذنبین صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں:

خُیِّرت بین الشفاعۃ وبین ان یدخل نصف امتی الجنۃ فاخترت الشفاعۃ لانھا اعم واکفٰی ترونھا للمتقین لا ولکنھا للمذنبین الخطائین المتلوثین ۱۔ | اللہ تعالٰی نے مجھے اختیار دیا کہ یا تو شفاعت لو یا یہ کہ تمہاری آدھی امت جنت میں جائے میں نے شفاعت لی کہ وہ زیادہ تمام اور زیادہ کام آنے والی ہے، کیا تم یہ سمجھ لیے ہو کہ میری شفاعت پاکیزہ مسلمانوں کے لیے ہے؟ نہیں بلکہ وہ ان گنہگاروں کے واسطے ہے جو گناہوں میں آلودہ اور سخت خطا کار ہیں۔

اللھم صل وسلم وبارک علیہ والحمد للہ رب العالمین۔ | اے اللہ! درود و سلام اور برکت نازل فرما ان پر، اور تمام تعریفیں اللہ کے لیے ہیں جو سب جہانوں کا پروردگار ہے۔ (ت)

حدیث ۳: ابن عدی حضرت ام المومنین ام سلمہ رضی اللہ تعالٰی عنہا سے راوی حضور شفیع المذنبین صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں:

شفاعتی للھالکین من اُمتی ۲۔ | میری شفاعت میرے ان امتیوں کے لیے ہے جنہیں گناہوں نے ہلاک کر ڈالا۔

حق ہے اے شفیع میرے، میں قربان تیرے، صلی اللہ علیک۔

حدیث ۴ تا ۸: حضرت ابو داؤد و ترمذی و ابن حبان و حاکم و بیہقی بافادہ صحیح حضرت انس بن مالک اور ترمذی، ابن ماجہ، ابن حبان، وحاکم حضرت جابر بن عبداللہ اور طبرانی معجم کبیر میں حضرت عبداللہ بن عباس

---

۱ سنن ابن ماجہ ابواب الزہد باب ذکر الشفاعة ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ص ۴۲۹، مسند احمد بن حنبل عن عبداللہ بن عمر المکتب الاسلامی بیروت ۲/ ۵۷ ۲ الکامل لابن عدی ترجمہ عمرو بن المحرم دارالفکر بیروت ۵/ ۱۸۰۱، کنز العمال حدیث ۳۹۰۷۳ مؤسسة الرسالة بیروت ۱۴/ ۴۰۱

Fatawa Razawiyya Volume 29

And Khatib Baghdadi narrates from Hazrat Abdullah ibn Umar Farooq and Hazrat Ka'b ibn 'Ujrah (may Allah be pleased with them) that the Intercessor of the sinners, the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him), says:

'My intercession on the Day of Resurrection is for those of my Ummah who committed major sins.' — My intercession in my Ummah is for those who are major sinners.

May Allah send blessings and peace upon you, and all praise is due to Allah, Lord of the worlds. May Allah Almighty send blessings and peace upon you and all praise is for Allah Almighty who is the Provider of all worlds. (T)

Hadith 9: Abu Bakr Ahmad bin Baghdadi narrates from Hazrat Abu Darda (may Allah be pleased with him) that the Intercessor of the sinners (peace and blessings of Allah be upon him) said: 'My intercession is for the sinful ones of my Ummah.' My intercession is for my sinful followers.

Hazrat Abu Darda (may Allah be pleased with him) submitted: 'Even if he commits adultery and even if he steals?' He (the Prophet, peace be upon him) said: 'Even if he commits adultery and even if he steals, despite the dislike of Abu Darda.' (Even if he commits adultery, even if he steals, contrary to the desire of Abu Darda).

Hadith 10 & 11: Tabarani and Bayhaqi narrate from Hazrat Buraidah, and Tabarani in Al-Mu'jam al-Awsat narrates from Hazrat Anas (may Allah be pleased with him) that the Intercessor of the sinners (peace and blessings of Allah be upon him) says:

[Seal: I.T. Majlis of Dawat-e-Islami]

---

1 Sunan Ibn Majah, Chapters on Asceticism, Chapter on Mentioning Intercession, H.M. Saeed Company Karachi, p. 329; Sunan Abi Dawud, Book of the Sunnah, Chapter on Intercession, Aftab-e-Alam Press Lahore, 2/296; Jami` at-Tirmidhi, Chapters on the Description of Resurrection, Chapter on what has been narrated regarding Intercession, Amin Company Delhi, 2/26; Al-Mustadrak al-Hakim, Book of Faith, 'My intercession is for those of my Ummah who committed major sins', Dar al-Fikr Beirut, 1/29; As-Sunan al-Kubra, Book of Crimes, 8/17 and Book of Testimonies, Dar Sader Beirut, 10/190; Al-Mu'jam al-Kabir, Hadith 11352, Al-Maktaba al-Faysaliyya Beirut, 11/189; Mawarid al-Zaman ila Zawa'id Ibn Hibban, Hadith 2596, Al-Matba'a al-Salafiyya, p. 545; Kanz al-Ummal, Hadith 39055, Muassasat al-Risala Beirut, 14/398. 2

Tarikh Baghdad, Biography of Muhammad ibn Ibrahim al-Ghazi ibn al-Basri, Dar al-Kitab al-Arabi Beirut, 1/216.

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

और खतीब बग़दादी हज़रत अब्दुल्लाह इब्न उमर फ़ारूक़ और हज़रत काब बिन उजरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम से रावी (वर्णनकर्ता) हैं, हुज़ूर शफ़ीउल मुज़निबीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं:

'शफ़ाअती यौमल कियामति लिहिल कबाएरि मिन उम्मती।' — मेरी शफ़ाअत मेरी उम्मत में उन लोगों के लिए है जो बड़े गुनाह (कबीरा गुनाह) करने वाले हैं।

सल्लल्लाहु अलैका वसल्लम, वलहम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन। अल्लाह तआला आप पर दरूद व सलाम नाज़िल फ़रमाए और तमाम तारीफ़ें अल्लाह तआला के लिए हैं जो सब जहानों का परवरदिगार है। (त)

हदीस 9: अबू बक्र अहमद बिन बग़दादी हज़रत अबू दरदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रावी हैं, हुज़ूर शफ़ीउल मुज़निबीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: 'शफ़ाअती लिअहलिज़ जुनूबि मिन उम्मती।' — मेरी शफ़ाअत मेरे गुनहगार उम्मतीयों के लिए है।

हज़रत अबू दरदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अर्ज़ की: 'व इन ज़ना व इन सरक़ा' (चाहे उसने ज़िना किया हो और चाहे चोरी की हो?) फ़रमाया: 'व इन ज़ना व इन सरक़ा अला रग्मि अन्फ़ि अबिद्दरदा' — (चाहे ज़िना किया हो और चाहे चोरी की हो, अबू दरदा की नापसंदगी के बावजूद)।

हदीस 10 व 11: तबरानी और बैहक़ी हज़रत बुरैदा से और तबरानी मोअजम औसत में हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रावी हैं, हुज़ूर शफ़ीउल मुज़निबीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं:

[मोहर: मजलिस-ए-दावत-ए-इस्लामी]

---

1 सुनन इब्न माजा, अबवाबुज़ जुहद, बाब ज़िक्रुश शफ़ाअत, एच.एम. सईद कंपनी कराची, पृ. 329; सुनन अबी दाऊद, किताबुस सुन्नह, बाब फ़िश शफ़ाअत, आफ़ताब-ए-आलम प्रेस लाहौर, 2/296; जामिअ अत-तिर्मिज़ी, अबवाब सिफ़तुल क़ियामह, बाब मा जाआ फ़िश शफ़ाअत, अमीन कंपनी दिल्ली, 2/26; अल-मुस्तदरक लिल हाकिम, किताबुल ईमान, 'शफ़ाअती लिअहिल कबाएरि मिन उम्मती', दारुल फ़िक्र बेरूत, 1/29; अस-सुननुल कुबरा, किताबुल जिनायात, 8/17 और किताबुश शहादात, दार सादिर बेरूत, 10/190; अल-मोअजम अल-कबीर, हदीस 11352, अल-मकतबतुल

फ़ैसलिया बेरूत, 11/189; मवारिदुज़ ज़मान इला ज़वाइद इब्न हिब्बान, हदीस 2596, अल-मतबअतुल सलफ़िया, पृ. 545; कंजुल उम्माल, हदीस 39055, मुअस्ससतुर् रिसाला बेरूत, 14/398। 2 तारीख़ बग़दाद, मुहम्मद बिन इब्राहीम अल-ग़ाज़ी इब्न अल-बसरी की जीवनी, दारुल किताबुल अरबी बेरूत, 1/216।

اور خطیب بغدادی حضرت عبد اللہ ابن عمر فاروق و حضرت کعب بن عجرہ رضی اللہ تعالٰی عنہم سے راوی حضور شفیع المذنبین صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں :

شفاعتی یوم القیمۃ لاھل الکبائر من امتی ۔ میری شفاعت میری امت میں ان کے لیے ہے جو کبیرہ گناہ والے ہیں۔

صلی اللہ علیک وسلم، والحمد للہ رب العلمین۔ اللہ تعالٰی آپ پر درود و سلام نزل فرمائے اور تمام تعریفیں اللہ تعالٰی کے لیے ہیں جو سب جہانوں کا پروردگار ہے۔(ت)

حدیث ۹: ابوبکر احمد بن بغدادی حضرت ابو درداء رضی اللہ تعالٰی عنہ سے راوی حضور شفیع المذنبین صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے فرمایا: شفاعتی لاھل الذنوب من امتی۔ میری شفاعت میرے گنہگار امتیوں کے لیے ہے۔

ابو درداء رضی اللہ تعالٰی عنہ نے عرض کی : وان زنی و ان سرق (اگرچہ زانی ہو ، اگرچہ چور ہو) فرمایا : وان زنی وان سرق علی رغم انف ابی الدرداء ۔ (اگرچہ زانی ہو ، اگرچہ چور ہو ، برخلاف خواہش ابو درداء کے)

حدیث ۱۰ و ۱۱: طبرانی و بیہقی حضرت بریدہ اور طبرانی معجم اوسط میں حضرت انس رضی اللہ تعالٰی عنہ سے راوی حضور شفیع المذنبین صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں :

[مہر: I.T. Majlis of Dawat-e-Islami]

1 سُنن ابن ماجہ ابواب الزہد باب ذکر الشفاعة ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ص۳۲۹، سُنن ابی داؤد کتاب السنة باب فی الشفاعة آفتاب عالم پریس لاہور ۲/ ۲۹۶، جامع الترمذی ابواب صفة القیمة باب ماجاء فی الشفاعة امین کمپنی دہلی ۲/ ۲۶ المستدرک للحاکم کتاب الایمان شفاعتی لاھل الکبائر من امتی دار الفکر بیروت ۱/ ۲۹، السنن الکبری کتاب الجنایات ۸/ ۱۷ و کتاب الشہادات دار صادر بیروت ۱۰/ ۱۹۰، المعجم الکبیر حدیث ۱۱۳۵۲ المکتبة الفیصلیة بیروت ۱۱/ ۱۸۹، موارد الظمآن الی زوائد ابن حبان حدیث ۲۵۹۶ المطبعة السلفیة ص ۵۴۵، کنز العمال حدیث ۳۹۰۵۵ مؤسسة الرسالة بیروت ۱۴/ ۳۹۸ 2 تاریخ بغداد ترجمہ محمد بن ابراھیم الغازی ابن البصری دار الکتاب العربی بیروت ۱/ ۲۱۶

Fatawa Rizwia Volume 29

"Indeed, on the Day of Resurrection, I will intercede for more people than there are trees, stones, and clods of earth on the face of the earth." [1]	**That is, I will intercede for more people on the Day of Resurrection than the number of trees, stones, and clumps of mud on the face of the earth.**

Hadith 12: Bukhari, Muslim, Hakim, and Bayhaqi narrate from Hazrat Abu Huraira (may Allah be pleased with him), and the wording is that of the latter two (Hakim and Bayhaqi). The intercessor of sinners, the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him), said:

"My intercession is for whoever bears witness that there is no god but Allah, sincerely, with his heart testifying to what his tongue says." [2]	**My intercession is for every person who recites the Kalima (declaration of faith), who reads it with a sincere heart such that the heart confirms what the tongue speaks.**

Hadith 13: Ahmad, Tabarani, and Bazzar narrate from Hazrat Mu'adh bin Jabal and Hazrat Abu Musa al-Ash'ari (may Allah be pleased with them). The intercessor of sinners, the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him), said:

"It (intercession) is more spacious for them, and it is for whoever dies without associating anything with Allah." [2]	**There is more vastness in intercession for the Ummah (community), as it is for every person who does not associate anyone with Allah Almighty, meaning whose end is upon faith.**

Hadith 14: In Tabarani Mu'jam al-Awsat, Hazrat Abu Huraira (may Allah be pleased with him) narrates that the intercessor of sinners, the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him), said:

"I will come to Hell and strike its gate, and it will be opened for me. Then I will enter it and praise Allah with such praises as no one before me has praised Him with the like of, nor will anyone after me praise Him [so]."	**I will go to Hell and have its gate opened, then enter and praise God there. I will offer such praise as no one before me has done, nor will anyone after me. Then I will take out from Hell every person...**

1. Musnad Ahmad bin Hanbal from Buraidah al-Aslami, Al-Maktab al-Islami Beirut 5/377, Al-Mu'jam al-Awsat Hadith 5356 Maktabat al-Ma'arif Riyadh 6/271, Kanz al-Ummal Hadith 39062 Mu'assasat al-Risalah Beirut 14/399.
2. Al-Mustadrak al-Hakim Kitab al-Iman Bab Shafa'ati li-man Yashhadu etc. Dar al-Fikr Beirut 1/70, Musnad Ahmad bin Hanbal from Abu Musa al-Ash'ari Al-Maktab al-Islami Beirut 4/404 & 415, Kanz al-Ummal Hadith 39079 & 39080 Mu'assasat al-Risalah Beirut 10/368 & 369, Majma' al-Zawa'id Kitab al-Ba'th Bab Ma Ja'a fi al-Shafa'ah Dar al-Kitab Beirut 10/368 & 369.

फ़तावा रिज़विया जिल्द 29

"निस्संदेह, कयामत के दिन, मैं पृथ्वी पर मौजूद पेड़ों, पत्थरों और मिट्टी के ढेलों से भी अधिक लोगों के लिए शफ़ाअत (सिफारिश) करूँगा।" [1]

यानी रूए ज़मीन पर जितने पेड़, पत्थर, ढेले हैं, मैं कयामत के दिन उन सबसे ज़्यादा आदमियों की शफ़ाअत फ़रमाऊंगा।

हदीस 12: बुखारी, मुस्लिम, हाकिम, बैहकी हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत करते हैं, और शब्द बाद के दो (हाकिम और बैहकी) के हैं। गुनाहगारों के शफी (सिफारिशी) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं:

"मेरी शफ़ाअत उस शख्स के लिए है जो इखलास के साथ गवाही दे कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, और उसका दिल उसकी ज़ुबान की तस्दीक (पुष्टि) करता हो।" [2]

मेरी शफ़ाअत हर कलमा पढ़ने वाले के लिए है जो सच्चे दिल से कलमा पढ़े कि ज़ुबान की तस्दीक दिल करता हो।

हदीस 13: अहमद, तबरानी और बज़ार हज़रत मुआज़ बिन जबल और हज़रत अबू मूसा अश्अरी रज़ियल्लाहु अन्हुम से रिवायत करते हैं कि गुनाहगारों के शफी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं:

"यह (शफ़ाअत) उनके लिए अधिक व्यापक है, और यह उस शख्स के लिए है जिसकी मृत्यु इस हाल में हो कि उसने अल्लाह के साथ किसी को शरीक (साझीदार) न ठहराया हो।" [2]

शफ़ाअत में उम्मत के लिए ज़्यादा वुसअत (विस्तार) है कि वह हर शख़्स के वास्ते है जो अल्लाह तआला के साथ किसी को शरीक न ठहराए यानी जिसका खात्मा ईमान पर हो।

हदीस 14: तबरानी मुअजम औसत में हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि गुनाहगारों के शफी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं:

"मैं जहन्नुम के पास आऊंगा और उसका दरवाज़ा खटखटाऊंगा, तो वह मेरे लिए खोल दिया जाएगा। फिर मैं उसमें दाखिल होऊंगा और अल्लाह की ऐसी हम्द (तारीफ़) बयान करूँगा जैसी न मुझसे पहले किसी ने की होगी और न मेरे बाद कोई कर सकेगा।"

मैं जहन्नुम का दरवाज़ा खुलवा कर तशरीफ़ ले जाऊंगा वहां खुदा की तारीफ़ करूँगा, ऐसी न मुझसे पहले किसी ने कीं न मेरे बाद कोई करे, फिर दोज़ख से हर उस शख्स को निकाल...

---

1. मसनद अहमद बिन हंबल अन बुरैदा अल-अस्लमी अल-मकतब अल-इस्लामी बेरूत 5/377, अल-मुअजम अल-औसत हदीस 5356 मकतबतुल मआरिफ रियाज़ 6/271, कंज़ुल उम्माल हदीस 39062 मुअस्ससतुल रिसाला बेरूत 14/399.
2. अल-मुस्तदरक लिल-हाकिम किताबुल ईमान बाब शफ़ाअती लि-मन यश्हदु अलख दारुल फिक्र बेरूत 1/70, मसनद अहमद बिन हंबल अन अबी मूसा अल-अश्अरी अल-मकतब अल-इस्लामी बेरूत 4/404 और 415, कंज़ुल उम्माल हदीस 39079 और 39080 मुअस्ससतुल रिसाला बेरूत 10/368 और 369, मजमाउज़ ज़वाइद किताबुल बाअस बाब मा जाअ फ़िश-शफ़ाअति दारुल किताब बेरूत 10/368 और 369.

ان اشفع یوم القیامۃ لاکثر مما علی وجہ الارض من شجر وحجر ومدر ^1

یعنی روئے زمین پر جتنے پیڑ ، پتھر ، ڈھیلے ہیں میں قیامت میں ان سب سے زیادہ آدمیوں کی شفاعت فرماؤں گا۔

حدیث ۱۲: بخاری، مسلم، حاکم، بیہقی حضرت ابوہریرہ رضی اللہ تعالٰی عنہ سے راوی، واللفظ لہٰذین(اور لفظ حاکم و بیہقی کے ہیں ۔ ت) حضور شفیع المذنبین صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں :

شفاعتی لمن شھدان لا الہ الا اللہ مخلصاً یصدق قلبہ لسانہ ^2۔

میری شفاعت ہر کلمہ گو کے لیے ہے جو سچے دل سے کلمہ پڑھے کہ زبان کی تصدیق دل کرتا ہو۔

حدیث ۱۳: احمد، طبرانی و بزار حضرت معاذ بن جبل و حضرت ابو موسٰی اشعری رضی اللہ تعالٰی عنہ سے راوی حضور شفیع المذنبین صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں :

انھا اوسع لھم وھی لمن مات ولا یشرك باللہ شیئاً ^2 -

شفاعت میں امت کے لیے زیادہ وسعت ہے کہ وہ ہر شخص کے واسطے ہے جو اللہ تعالٰی کے ساتھ کسی کو شریک نہ ٹھہرائے یعنی جس کا خاتمہ ایمان پر ہو۔

حدیث ۱۴: طبرانی معجم اوسط میں حضرت ابوہریرہ رضی اللہ تعالٰی عنہ سے راوی حضور شفیع المذنبین صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں:

اتی جھنم فاضرب بابھا فیفتح لی میں جہنم کا دروازہ کھلوا کر تشریف لے جاؤں گا وہاں خدا فادخلھا فاحمد اللہ محامد ما حمدہ کی تعریف کروں گا، ایسی نہ مجھ سے پہلے کسی نے کیں نہ احد قبلی مثلھا ولا یحمد احد بعدی میرے بعد کوئی کرے، پھر دوزخ سے ہر اس شخص کو نکال

---

1. مسند احمد بن حنبل عن بریدہ الاسلمی المکتب الاسلامی بیروت ۵ / ۳۷۷، المعجم الاوسط حدیث ۵۳۵۶ مکتبۃ المعارف ریاض ۶ / ۲۷۱، کنز العمال حدیث ۳۹۰۶۲ مؤسسۃ الرسالہ بیروت ۱۴/ ۳۹۹
2. المستدرک للحاکم کتاب الایمان باب شفاعتی لمن یشھد الخ دارالفکر بیروت ۱ / ۷۰، مسند احمد بن حنبل عن ابی موسیٰ الاشعری المکتب الاسلامی بیروت ۴ / ۴۰۴ و ۴۱۵، کنز العمال حدیث ۳۹۰۷۹ و ۳۹۰۸۰ مؤسسۃ الرسالہ بیروت ۱۰ / ۳۶۸ و ۳۶۹، مجمع الزوائد کتاب البعث باب ما جاء فی الشفاعۃ دارالکتاب بیروت ۱۰ / ۳۶۸ و ۳۶۹

Fatawa Razawiya Volume 29

...then I will take out from it whoever said "There is no god but Allah" (summarized).

Hadith 15: Hakim (noting its authenticity) and Tabarani and Bayhaqi narrate from Hazrat Abdullah bin Abbas (may Allah be pleased with him) that the Messenger, the Intercessor of Sinners, may Allah's peace and blessings be upon him, said:

"Gold pulpits will be placed for the Prophets and they will sit on them, and my pulpit will remain vacant; I will not sit on it or preside over it, but will remain standing upright before my Lord, fearing that He might send me to Paradise while my Ummah (community) remains behind me. Then I will say, 'O my Lord! My Ummah! My Ummah!' Then Allah the Almighty will say, 'O Muhammad, what do you want Me to do with your Ummah?' I will say, 'O my Lord, hasten their accountability.' So I will continue to intercede until I am given written discharges for men who had already been sent to Hell, until Malik, the gatekeeper of Hell, says: 'O Muhammad! You have not left any trace of your Lord's wrath within your Ummah.'"

O Allah! Send blessings and mercy upon him, and all praise is due to Allah, the Lord of the worlds. (T)

1. Al-Mu'jam al-Awsat, Hadith 385, Maktaba al-Ma'arif, Riyadh, 2/503.
2. Al-Mustadrak lil-Hakim, Kitab al-Iman, Chapter: The Prophets' Golden Pulpits, Dar al-Fikr, Beirut, 1/265 & 26; Al-Mu'jam al-Awsat, Hadith 2958, Maktaba al-Ma'arif, Riyadh, 3/446 & 447; Al-Targhib wa al-Tarhib, Kitab al-Ba'th, Section on Intercession, Mustafa al-Babi, Egypt, 4/446.

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

...फिर मैं उसमें से उसे निकाल लूँगा जिसने सच्चे दिल से 'ला इलाहा इल्लल्लाह' कहा (संक्षिप्त)।

हदीस 15: हाकिम (प्रमाणिकता के उल्लेख के साथ) और तबरानी और बैहकी हज़रत अब्दुल्ला बिन अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत करते हैं कि गुनहगारों के शफीअ (सिफ़ारिशी), सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया:

"अंबिया (नबियों) के लिए सोने के मिम्बर (मंच) बिछाए जाएंगे, वे उन पर बैठेंगे, और मेरा मिम्बर बाकी रहेगा (खाली रहेगा); मैं उस पर नहीं बैठूँगा बल्कि अपने रब के सामने सीधा खड़ा रहूँगा इस डर से कि कहीं ऐसा न हो कि मुझे जन्नत में भेज दिया जाए और मेरी उम्मत मेरे पीछे रह जाए। फिर मैं अर्ज़ करूँगा 'ऐ मेरे रब! मेरी उम्मत, मेरी उम्मत!' फिर अल्लाह तआला फरमाएगा 'ऐ मुहम्मद! तुम क्या चाहते हो कि मैं तुम्हारी उम्मत के साथ क्या करूँ?' मैं अर्ज़ करूँगा 'ऐ मेरे रब, उनका हिसाब जल्द फ़रमा दे।' तो मैं शफ़ाअत (सिफ़ारिश) करता रहूँगा यहाँ तक कि मुझे उन लोगों की रिहाई की चिट्ठियाँ (परवाने) मिलेंगी जिन्हें जहन्नुम में भेजा जा चुका था, यहाँ तक कि मालिक (जहन्नुम का दारोगा) अर्ज़ करेगा: 'ऐ मुहम्मद! आपने अपनी उम्मत में रब के ग़ज़ब (क्रोध) का नाम तक न छोड़ा।'"

ऐ अल्लाह! उन पर दुरूद और बरकतें नाज़िल फरमा, और तमाम तारीफें अल्लाह तआला के लिए हैं जो तमाम जहानों का पालने वाला है। (त)

1. अल-मुअजम अल-औसत, हदीस 385, मकतबा अल-मआरिफ़, रियाज़, 2/503।
2. अल-मुस्तदरक लिल-हाकिम, किताब अल-ईमान, बाब: अंबिया के सोने के मिम्बर, दारुल फ़िक्र, बेरूत, 1/265 व 26; अल-मुअजम अल-औसत, हदीस 2958, मकतबा अल-मआरिफ़, रियाज़, 3/446 व 447; अत-तर्गीब वत-तरहीब, किताबुल बाअस, फ़सल फ़िश-शफ़ाअत, मुस्तफ़ा अल-बाबी, मिस्र, 4/446।

ثم اخرج منها من قال لا اله الا الله ملخصًا | لوں گا جس نے خالص دل سے لا الہ الا اللہ کہا۔

حدیث ۱۵: حاکم بافادہ تصحیح اور طبرانی و بیہقی حضرت عبداللہ بن عباس رضی اللہ تعالٰی عنہ سے راوی حضور شفیع المذنبین صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں:

یوضع للانبیاء منابر من ذهب فیجلسون علیها ویبقی منبري لا اجلس علیه او لا اقعد علیه قائماً بین یدي ربي مخافة ان یبعث بي الی الجنة ویبقی أمتي بعدي فاقول یارب امتی امتی فیقول الله عزوجل یا محمد ما ترید ان اصنع بامتك فاقول یا رب عجل حسابهم فما ازال اشفع حتی اعطی صکاکاً برجال قد بعث بهم الی النار حتی ان مالکاً خازن النار فیقول یا محمد ما ترکت لغضب ربك في امتك من نقمة 2- | انبیا کے لیے سونے کے منبر بچھائیں گے وہ ان پر بیٹھیں گے، اور میرا منبر باقی رہے گا کہ میں اس پر جلوس نہ فرماؤں گا بلکہ اپنے رب کے حضور سر و قد کھڑا رہوں گا اس ڈر سے کہ کہیں ایسا نہ ہو مجھے جنت میں بھیج دے اور میری امت میرے بعد رہ جائے پھر عرض کروں گا اے رب میرے ! میری امت، میری امت ، اللہ تعالٰی فرمائے گا اے محمد، تیری کیا مرضی ہے میں تیری امت کے ساتھ کیا کروں ؟ عرض کروں گا اے رب میرے ان کا حساب جلد فرمادے، پس میں شفاعت کرتا رہوں گا۔ یہاں تک کہ مجھے ان کی رہائی کی چٹھیاں ملیں گی جنہیں دوزخ بھیج چکے تھے یہاں تک کہ مالک داروغہ دوزخ عرض کرے گا اے محمد ! آپ نے اپنی امت میں رب کا غضب نام کو نہ چھوڑا۔

اللهم صلی و بارك علیه و الحمد لله رب العلمین۔ | اے اللہ ! درود و برکت نازل فرما ان پر، اور تمام تعریفیں اللہ تعالٰی کے لیے ہیں جو سب جہانوں کا پروردگار ہے۔ (ت)

1 المعجم الاوسط حدیث ۳۸۵ مکتبہ المعارف ریاض ۲ / ۵۰۳ 2 المستدرک للحاکم کتاب الایمان باب الانبیاء منابر من ذھب دارالفکر بیروت ۱ / ۲۶۵ و ۲۶ المعجم الاوسط حدیث ۲۹۵۸ مکتبہ المعارف ریاض ۳ / ۴۴۶ و ۴۴۷، الترغیب والترہیب کتاب البعث فصل فی الشفاعة مصطفیٰ البابی مصر ۴ / ۴۴۶

Fatawa Razawiyya Volume 29

Hadith 16 to 21: Narrated by Bukhari, Muslim, and Nasai from Hazrat Jabir bin Abdullah; and Ahmad with a Hasan chain, and Bukhari in Tarikh, and Bazzar, and Tabarani, and Bayhaqi, and Abu Nu'aym from Hazrat Abdullah bin Abbas; and Ahmad with a Hasan chain, and Bazzar with a Jayyid (excellent) chain, and Darimi, and Ibn Abi Shaybah, and Abu Ya'la, and Abu Nu'aym, and Bayhaqi from Hazrat Abu Dharr; and Tabarani in Mu'jam al-Awsat with a chain from Hazrat Abu Sa'id al-Khudri; and in al-Kabir from Hazrat Sa'ib bin Zayd; and Ahmad with a Hasan chain, and Ibn Abi Shaybah, and Tabarani from Hazrat Abu Musa al-Ash'ari (may Allah be pleased with them all):

[Table Header] The wording is for Jabir who said: The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: "I have been given what was not given to anyone before me" until his saying (peace and blessings of Allah be upon him) "and I have been granted (the right of) intercession." 1

And the wording of Hazrat Jabir (may Allah be pleased with him) is that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: "I have been granted that which was not given to anyone before me."

In these six Ahadith, it is explained that the Intercessor of the Sinners (peace and blessings of Allah be upon him) says: "I have been appointed as an intercessor, and special intercession will be granted to me alone; no other Prophet besides me received this rank."

Hadith 22 and 23: From Ibn Abbas, Abu Sa'id, and Abu Musa, these Ahadith also contain the subject matter that Ahmad, Bukhari, and Muslim narrated from Anas, and the Shaykhayn (Bukhari and Muslim) narrated from Abu Hurayra (may Allah be pleased with them all), that the Intercessor of the Sinners (peace and blessings of Allah be upon him) says:

1 Sahih Bukhari, Kitab al-Tayammum and the Word of Allah 'but if you find no water' (5:6), Qadimi Kutub Khana Karachi, 1/88; Sahih Bukhari, Kitab al-Salah, Chapter on the Prophet's (PBUH) saying 'The earth has been made a mosque for me', Karachi, 1/62; Sahih Muslim, Kitab al-Masajid wa Mawadi' al-Salah, Qadimi Kutub Khana Karachi, 1/199; Sunan al-Nasa'i, Kitab al-Ghusl wa al-Tayammum, Chapter on Tayammum with clean soil, Noor Muhammad Karkhana Tijarat-e-Kutub Karachi, 1/72; Musnad Ahmad bin Hanbal from Ibn Abbas (RA), Al-Maktab al-Islami Beirut, 1/301; Al-

Mu'jam al-Kabir from Ibn Abbas (RA), Al-Maktab al-Islami Beirut, 1/301; Al-Mu'jam al-Kabir from Ibn Abbas (RA), Hadith 11085, Al-Maktab al-Islami Beirut, 11/37; Musnad Ahmad bin Hanbal from Abu Dharr, Al-Maktab al-Islami Beirut, 5/162; Al-Targhib wa al-Tarhib with reference to Al-Bazzar, Chapter on Intercession, Mustafa al-Babi Egypt, 4/434; Al-Mu'jam al-Awsat, Hadith 4335, Maktabah al-Ma'arif Riyadh, 8/212; Al-Mu'jam al-Kabir from Sa'ib bin Zayd, Hadith 6673, Al-Maktabah al-Faysaliyya Beirut, 7/155; Musnad Ahmad bin Hanbal from Abu Musa, Al-Maktab al-Islami Beirut, 4/404.

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

हदीस 16 से 21: बुखारी, मुस्लिम और नसाई हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह से; और अहमद हसन सनद के साथ, और बुखारी तारीख़ में, और बज़्ज़ार, और तबरानी, और बैहक़ी, और अबू नुऐम हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास से; और अहमद हसन सनद के साथ, और बज़्ज़ार ज़य्यद सनद के साथ, और दारिमी, और इब्न अबी शैबा, और अबू यअला, और अबू नुऐम, और बैहक़ी हज़रत अबू ज़र से; और तबरानी मुअजम अल-औसत में हज़रत अबू सईद खुदरी की सनद से; और कबीर में हज़रत साइब बिन ज़ैद से; और अहमद हसन इसनाद के साथ और इब्न अबी शैबा व तबरानी हज़रत अबू मूसा अशअरी (रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम) से रावी हैं:

[तालिका शीर्षक] अलफ़ाज़ जाबिर के हैं, उन्होंने कहा: अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) ने फरमाया: "मुझे वह दिया गया जो मुझसे पहले किसी को नहीं दिया गया" आपके इस क़ौल तक "और मुझे शफ़ाअत (सिफारिश का अधिकार) अता की गई।" 1

और हज़रत जाबिर (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) के शब्द ये हैं कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) ने फरमाया: "मुझे वह अता हुआ जो मुझसे पहले किसी को नहीं दिया गया।"

इन छहों हदीसों में यह बयान हुआ है कि हुज़ूर शफ़ीउल मुज़नबीन (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं कि मैं शफ़ीअ (सिफारिश करने वाला) मुक़र्रर कर दिया गया और ख़ास शफ़ाअत मुझे ही अता होगी, मेरे अलावा किसी नबी को यह मर्तबा नहीं मिला।

हदीस 22 और 23: इब्न अब्बास, अबू सईद और अबू मूसा से इन्हीं हदीसों में वह मज़मून भी है जिसे अहमद, बुखारी और मुस्लिम ने अनस से और शैख़ैन ने अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन) से रिवायत किया कि हुज़ूर शफ़ीउल मुज़नबीन (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं:

1 सहीह बुखारी किताब अत-तयम्मुम और अल्लाह का कौल 'फिर तुम पानी न पाओ', क़दीमी कुतुब ख़ाना कराची, 1/88; सहीह बुखारी किताब अल-सलाह बाब नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का कौल 'मेरे लिए ज़मीन को मस्जिद बना दिया गया', कराची, 1/62; सहीह मुस्लिम किताब अल-मसाजिद व मवादि अल-सलाह, क़दीमी कुतुब ख़ाना कराची, 1/199; सुनन अल-नसाई किताब अल-गुस्ल व अत-तयम्मुम बाब पाक मिट्टी से तयम्मुम, नूर मुहम्मद कारखाना तिजारत-ए-कुतुब कराची,

1/72; मुसनद अहमद बिन हंबल इब्न अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हा) से, अल-मकतबा अल-इस्लामी बेरूत, 1/301; अल-मुअजम अल-कबीर इब्न अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हा) से, अल-मकतबा अल-इस्लामी बेरूत, 1/301; अल-मुअजम अल-कबीर इब्न अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हु) से, हदीस 11085, अल-मकतबा अल-इस्लामी बेरूत, 11/37; मुसनद अहमद बिन हंबल अबू ज़र से, अल-मकतबा अल-इस्लामी बेरूत, 5/162; अल-तरगीब व अल-तरहीब ब-हवाला अल-बज़्ज़ार बाब शफाअत, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, 4/434; अल-मुअजम अल-औसत, हदीस 4335, मकतबा अल-मआरिफ रियाद, 8/212; अल-मुअजम अल-कबीर साइब बिन ज़ैद से, हदीस 6673, अल-मकतबा अल-फ़ैसलिया बेरूत, 7/155; मुसनद अहमद बिन हंबल अबू मूसा से, अल-मकतबा अल-इस्लामी बेरूत, 4/404।

فتاوی رضویہ جلد ۲۹

حدیث ۱۶ تا ۲۱ : بخاری و مسلم و نسائی حضرت جابر بن عبداللہ اور احمد بسند حسن اور بخاری تاریخ میں اور بزار اور طبرانی و بیہقی و ابونعیم حضرت عبداللہ بن عباس، اور احمد بسند حسن و بزار بسند جید و دارمی و ابن ابی شیبہ و ابو یعلی و ابونعیم و بیہقی حضرت ابوذر، اور طبرانی معجم اوسط میں بسند حضرت ابوسعید خدری، اور کبیر میں حضرت سائب بن زید، اور احمد باسناد حسن اور ابن ابی شیبہ و طبرانی حضرت ابو موسیٰ اشعری رضی اللہ تعالیٰ عنہم سے راوی :

واللفظ لجابر قال قال رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم أُعطیتُ مالم یعط احد قبلی الی قولہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم واعطیت الشفاعۃ - 1 اور لفظ حضرت جابر رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے ہیں کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: "مجھے وہ کچھ عطا ہوا جو مجھ سے پہلے کسی کو نہیں دیا گیا۔"

ان چھیوں حدیثوں میں یہ بیان ہوا ہے کہ حضور شفیع المذنبین صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں میں شفیع مقرر کر دیا گیا اور شفاعت خاص مجھی کو عطا ہو گی میرے سوا کسی نبی کو یہ منصب نہ ملا۔

حدیث ۲۲ و ۲۳ : ابن عباس و ابوسعید وابو موسیٰ سے انہیں حدیثوں میں وہ مضمون بھی ہے جو احمد و بخاری و مسلم نے انس اور شیخین نے ابوہریرہ (رضی اللہ تعالیٰ عنہم اجمعین) سے روایت کیا کہ حضور شفیع المذنبین صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں:

1 صحیح بخاری کتاب التیمم وقولہ تعالی فلم تجدوا ماءً قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/ ۸۸، صحیح بخاری کتاب الصلوۃ باب قولہ النبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم جعلت لی الارض مسجدًا کراچی ۱ /

۶۲، صحیح مسلم کتاب المساجد ومواضع الصلوۃ قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/ ۱۹۹، سنن النسائی کتاب الغسل والتیمم باب التیمم بالصعید نور محمد کارخانہ تجارت کتب کراچی ۱/ ۷۲، مسند احمد بن حنبل عن ابن عباس رضی اللہ عنہا المکتب الاسلامی بیروت ۱/ ۳۰۱، المعجم الکبیر عن ابن عباس رضی اللہ عنہا المکتب الاسلامی بیروت ۱/ ۳۰۱، المعجم الکبیر عن ابن عباس رضی اللہ عنہ حدیث ۱۱۰۸۵ المکتب الاسلامی بیروت ۱۱ / ۳۷، مسند احمد بن حنبل عن ابی ذر المکتب الاسلامی بیروت ۵ / ۱۶۲، الترغیب والترہیب بحوالہ البزار فصل فی الشفاعۃ مصطفےٰ البابی مصر ۴/ ۴۳۴، المعجم الاوسط حدیث ۴۳۳۵ مکتبۃ المعارف ریاض ۸ / ۲۱۲، المعجم الکبیر عن سائب بن زید حدیث ۶۶۷۳ المکتبۃ الفیصلیہ بیروت ۷/ ۱۵۵، مسند احمد بن حنبل عن ابی موسیٰ المکتب الاسلامی بیروت ۴ / ۴۰۴

Fatawa Razawiyyah - Volume 29

'Every Prophet has a special supplication that he has already made for his Ummah, and it was accepted.' This is the wording of Anas (may Allah be pleased with him). The wording of Abu Sa'id (may Allah be pleased with him) is: 'There is no prophet but that he was granted a special supplication which he hastened to use in this world.' The wording of Ibn Abbas (may Allah be pleased with them both) is: 'No prophet remained who was not granted his request.' Let us return to the wording of Anas; the wordings of other narrators are similar in meaning. He (the Holy Prophet, peace and blessings be upon him) said: 'I have reserved my supplication for the intercession of my Ummah on the Day of Resurrection.' (Abu Musa added:) 'I have made it for whoever from my Ummah dies in a state of not associating anything with Allah.' (T)

This means that although thousands of prayers of the Prophets (peace be upon them) are accepted, they receive one special prayer from the presence of Allah Almighty, which is like: 'Ask for whatever you want, it will surely be granted.' All Prophets from Adam to Jesus (peace be upon them) have already used that prayer of theirs in this world, and I have kept mine for the Hereafter.

---

1 Sahih Bukhari, Kitab al-Da'wat, Chapter: Statement of Allah Almighty 'Call upon Me, I will respond to you', Qadimi Kutub Khana Karachi 2/932; Sahih Muslim, Kitab al-Iman, Chapter: Affirmation of Intercession, Qadimi Kutub Khana Karachi 1/113; Musnad Ahmad bin Hanbal on the authority of Anas (may Allah be pleased with him), Al-Maktab al-Islami Beirut 3/208. 2 Musnad Ahmad bin Hanbal on the authority of Abu Sa'id al-Khudri (may Allah be pleased with him), Al-Maktab al-Islami Beirut 3/20. 3 Al-Sunan al-Kubra, Kitab al-Salat, Chapter: Wherever the prayer catches you, Section etc., Dar Sader Beirut 2/433. 4 Sahih Muslim, Kitab al-Iman, Chapter: Affirmation of Intercession, Qadimi Kutub Khana Karachi 1/113; Musnad Ahmad bin Hanbal on the authority of Anas (may Allah be pleased with him), Al-Maktab al-Islami Beirut 3/208. 5 Musnad Ahmad bin Hanbal on the authority of Abu Musa al-Ash'ari (may Allah be pleased with him), Al-Maktab al-Islami Beirut 4/416.

फतावा रज़विया - जिल्द २९

'प्रत्येक नबी के लिए एक विशेष दुआ है जो वह अपनी उम्मत के बारे में कर चुका है और वह स्वीकार हुई है।' ये हज़रत अनस (रज़ियल्लाहु अन्हु) के शब्द हैं। और हज़रत अबू सईद (रज़ियल्लाहु अन्हु) के शब्द इस प्रकार हैं कि कोई भी नबी ऐसा नहीं है जिसे एक विशेष दुआ प्रदान की गई हो और उसने उसे दुनिया में ही शीघ्रता से मांग न लिया हो। इब्ने अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) के शब्द हैं कि कोई नबी नहीं बचा जिसे विशेष दुआ प्रदान न हुई हो। हम हज़रत अनस (रज़ियल्लाहु अन्हु) के शब्दों की ओर लौटते हैं, बाकी रिवायत करने वालों के शब्द अर्थ के लिहाज़ से उन्हीं के समान हैं। सरकार-ए-दो-आलम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया: 'मैंने अपनी दुआ को कयामत के दिन अपनी उम्मत की शफाअत (सिफारिश) के लिए बचा रखा है।' (अबू मूसा ने यह जोड़ा कि) 'मैंने इसे अपनी उम्मत के उस व्यक्ति के लिए रखा है जो इस हाल में मरा कि अल्लाह के साथ किसी को शरीक (साझीदार) नहीं ठहराता था।' (त)

इसका अर्थ है कि यद्यपि अम्बिया (अलैहिमुस्सलाम) की हज़ारों दुआएं स्वीकार होती हैं, लेकिन एक दुआ उन्हें अल्लाह की बारगाह से ऐसी मिलती है कि 'जो चाहो मांग लो, बेशक दिया जाएगा'। आदम से ईसा तक तमाम अम्बिया (अलैहिमुस्सलाम) अपनी वह दुआ दुनिया में ही कर चुके और मैंने उसे आख़िरत (परलोक) के लिए उठा रखा है।

---

1 सही बुखारी, किताब अद-दावात, बाब: अल्लाह का फरमान 'मुझसे दुआ करो, मैं तुम्हारी पुकार सुनूँगा', कदीमी कुतुब खाना कराची २/९३२; सही मुस्लिम, किताब अल-ईमान, बाब: शफाअत की पुष्टि, कदीमी कुतुब खाना कराची १/११३; मसनद अहमद बिन हंबल, हज़रत अनस (रज़ियल्लाहु अन्हु) से, अल-मकतब अल-इस्लामी बेरूत ३/२०८। 2 मसनद अहमद बिन हंबल, हज़रत अबू सईद अल-खुदरी (रज़ियल्लाहु अन्हु) से, अल-मकतब अल-इस्लामी बेरूत ३/२०। 3 अल-सुनन अल-कुबरा, किताब अस-सलात, बाब: जहाँ कहीं नमाज़ तुम्हें पाए, खंड आदि, दार सादिर बेरूत २/४३३। 4 सही मुस्लिम, किताब अल-ईमान, बाब: शफाअत की पुष्टि, कदीमी कुतुब खाना कराची १/११३; मसनद अहमद बिन हंबल, हज़रत अनस (रज़ियल्लाहु अन्हु) से, अल-मकतब अल-इस्लामी बेरूत ३/२०८। 5 मसनद अहमद बिन हंबल, हज़रत अबू मूसा अल-अशअरी (रज़ियल्लाहु अन्हु) से, अल-मकतब अल-इस्लामी बेरूत ४/४१६।

पृष्ठ ७५० का ५८३

ان لكل نبي دعوة قد دعا بها في امته واستجيب له 1- ہر نبی کے لئے ایک خاص دعا ہے جو وہ اپنی امت کے بارے میں کر چکا ہے اور وہ قبول ہوئی ہے، یہ حضرت انس رضی اللہ تعالٰی عنہ کے لفظ ہیں، وھذا اللفظ لانس ولفظ ابي سعید لیس من نبي الا وقد اعطی دعوة فتعجلها 2- اور حضرت ابو سعید رضی اللہ تعالٰی عنہ کے لفظ یوں ہیں کہ نہیں ہے کوئی نبی مگر یہ کہ اسے ایک خاص دعا عطا ہوئی جسے اس نے دنیا میں مانگ لیا۔ (ولفظ ابن عباس) لم یبق نبي الا اعطی سؤله 3- ابن عباس رضی اللہ تعالٰی عنہما کے لفظ ہیں کہ کوئی نبی نہ بچا جس کو خاص دعا عطا نہ ہوئی ہو، رجعنا الی لفظ انس والفاظ الباقین کمثله معنیً قال واني اختبأت دعوتي شفاعة لامتي یوم القیمة 4- ہم حضرت انس رضی اللہ تعالٰی عنہ کے الفاظ کی طرف رجوع کرتے ہیں، باقی راویوں کے الفاظ معنی کے اعتبار سے ان ہی کی مثل ہیں۔ سرکار دو عالم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے فرمایا۔ میں نے اپنی دعا کو قیامت کے دن اپنی امت کی شفاعت کے لیے بچا رکھا ہے۔ (زاد موسی) جعلتها لمن مات من امتی لا یشرك بالله شیئا 5- ابو موسٰی نے اضافہ کیا کہ میں ہر اس امتی کے لیے شفاعت کروں گا جو اس حال پر مرا کہ اللہ تعالٰی کے ساتھ کسی کو شریک نہیں ٹھہراتا تھا۔ (ت)

یعنی انبیاء علیہم الصلوۃ والسلام کی اگرچہ ہزاروں دعائیں قبول ہوتی ہیں مگر ایک دعا انہیں خاص جناب باری تبارک و تعالٰی سے ملتی ہے کہ جو چاہے مانگ لو بے شک دیا جائے گا تمام انبیاء آدم سے عیسٰی تک (علیہم الصلوۃ والسلام) سب اپنی اپنی وہ دعا دنیا میں کر چکے اور میں نے آخرت کے لیے اٹھا رکھی،

1 صحیح بخاری کتاب الدعوات باب قول اللہ تعالیٰ ادعونی استجب لکم قدیمی کتب خانہ کراچی ۲ / ۹۳۲، صحیح مسلم کتاب الایمان باب اثبات الشفاعۃ قدیمی کتب خانہ کراچی ۱ / ۱۱۳، مسند احمد بن حنبل عن انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ المکتب الاسلامی بیروت ۳ / ۲۰۸ 2 مسند احمد بن حنبل عن ابی سعید الخدری رضی اللہ تعالیٰ عنہ المکتب الاسلامی بیروت ۳ / ۲۰ 3 السنن الکبری کتاب الصلوۃ باب اینما ادرکتک الصلوۃ فصل الخ دار صادر بیروت ۲ / ۴۳۳ 4 صحیح مسلم کتاب الایمان باب اثبات الشفاعۃ قدیمی کتب خانہ کراچی ۱ / ۱۱۳، مسند احمد بن حنبل عن انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ المکتب الاسلامی بیروت ۳ / ۲۰۸ 5 مسند احمد بن حنبل عن ابی موسیٰ الاشعری رضی اللہ تعالیٰ عنہ المکتب الاسلامی بیروت ۴ / ۴۱۶

That is my intercession for my Ummah on the Day of Resurrection; I have reserved it for my entire Ummah who depart from this world with faith.

[Box 1] Arabic: O Allah, provide for us through his status with You, Amen! Urdu: O Allah! Bestow upon us for the sake of that honor which he holds in Your presence. (T)

Allah is Greatest! O sinners of the Ummah! Have you not seen this perfect compassion and mercy of your Master and Patron (peace and blessings of Allah be upon him) upon your state? Three petitions were granted to him from the court of Allah (Exalted and Majestic), to ask for whatever he wished and it would be granted. He did not keep any of those requests for his own pure self; he spent them all for your sake. He made two requests in the world, and those too were for you, and he saved the third for the Hereafter, for that great need of yours when no one else will be of help or restorer of affairs except this merciful Master, the Kind and Compassionate Patron (peace and blessings of Allah be upon him). (May Allah bless him and grant him peace). The Almighty Truth has spoken truly:

[Box 2] Arabic: "Grievous to him is what you suffer; [he is] concerned over you and to the believers is kind and merciful." Urdu: It is heavy upon him that you should fall into hardship, he is intensely desirous of your welfare, and to the believers most kind and merciful. (T)

By Allah the Magnificent! By the One Who made him merciful towards you, never ever is any mother so merciful towards her dear beloved only son as much as he is merciful towards even one member of his Ummah. (May Allah bless him and grant him peace). O God! You know our helplessness and weakness and the magnitude of his great rights. O Powerful One! O Unique One! Send upon him and his family such blessed prayers from our side that are sufficient for his rights and commensurate with his mercies.

[Box 3] Arabic: O Allah, send blessings, peace, and favor upon him and his family and companions to the extent of his compassion and mercy for his Ummah, and to the extent of Your compassion and mercy for him. Amen, Amen, O God of Truth, Amen. Urdu: O Allah! Send blessings, peace, and favor upon him, his family, and his companions as much as he is merciful towards his Ummah and as much as You are merciful towards him. O true God! Accept our prayer. (T)

Glory be to Allah! This is how the members of the Ummah have reciprocated his mercies: some find faults in his superiority, some think they know his praise well enough by themselves, some get upset at his veneration. Labeling acts of love as innovation, and respect and etiquette as such.

---

1 Al-Quran Al-Karim 9/128

वह कयामत के दिन मेरी उम्मत के लिए मेरी शफ़ाअत (सिफारिश) है, मैंने इसे अपनी पूरी उम्मत के लिए रखा है जो ईमान पर दुनिया से विदा हुई।

[बॉक्स 1] अरबी: हे अल्लाह! हमें उनके उस गौरव के माध्यम से प्रदान कर जो उन्हें तेरे दरबार में प्राप्त है, आमीन! उर्दू: हे अल्लाह! हमें उनकी इस प्रतिष्ठा के सदके में अता फरमा जो उन्हें तेरी बारगाह में हासिल है। (त)

अल्लाह अकबर! ऐ उम्मत के गुनहगारों! क्या तुमने अपने मालिक और मौला (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की यह पूर्ण दया और कृपा अपनी स्थिति पर नहीं देखी कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की बारगाह से हुज़ूर को तीन प्रार्थनाएँ मिलीं कि जो चाहो मांग लो, दिया जाएगा। हुज़ूर ने उनमें से कोई भी प्रार्थना अपनी पवित्र ज़ात के लिए नहीं रखी, सब तुम्हारी भलाई में खर्च कर दीं। दो प्रार्थनाएँ दुनिया में कीं, वे भी तुम्हारे ही लिए थीं, और तीसरी आखिरत (परलोक) के लिए बचा रखी, तुम्हारी उस महान आवश्यकता के लिए जब इस दयालु मौला, रऊफ और रहीम आका (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के सिवा कोई काम आने वाला, बिगड़ी बनाने वाला न होगा। (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) सत्य फ़रमाया हज़रत हक़ अज़वजल ने:

[बॉक्स 2] अरबी: "उन पर तुम्हारा कष्ट में पड़ना भारी है; [वह] तुम्हारे लिए चिंतित हैं और मोमिनों के प्रति दयालु और कृपालु हैं।" उर्दू: उन पर तुम्हारा मुश्किल में पड़ना भारी गुज़रता है, वह तुम्हारी भलाई के अत्यंत चाहने वाले और मुसलमानों पर पूर्ण दयालु हैं। (त)

अल्लाह की कसम! उस रब्ब की कसम जिसने उन्हें आप पर दयालु बनाया, कभी भी कोई माँ अपने प्यारे इकलौते बेटे पर इतनी मेहरबान नहीं होती जितनी वह अपने उम्मती पर मेहरबान हैं। (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) हे ईश्वर! तू हमारी बेबसी और कमज़ोरी और उनके महान अधिकारों की गरिमा को जानता है। ऐ शक्तिशाली! ऐ बेजोड़! हमारी ओर से उन पर और उनकी आल (वंश) पर वह बरकत भरी दुरूदें नाज़िल फरमा जो उनके अधिकारों के लिए पर्याप्त हों और उनकी रहमतों का बदला हों।

[बॉक्स 3] अरबी: हे अल्लाह! उन पर और उनके परिवार और साथियों पर दुरूद, सलाम और बरकत नाज़िल फरमा उतनी जितनी कि वह अपनी उम्मत पर दयालु हैं और जितनी तू उन पर दयालु है। आमीन, आमीन, हे सत्य के ईश्वर, आमीन। उर्दू: हे अल्लाह! दुरूद, सलाम और बरकत नाज़िल

फरमा आप पर, आपकी आल पर और आपके साथियों पर जितनी कि वह अपनी उम्मत पर मेहरबान हैं और जितनी तू उन पर मेहरबान है। ऐ माबूद-ए-बरहक़! हमारी दुआ स्वीकार फरमा। (त)

सुब्हान अल्लाह! उम्मतियों ने उनकी रहमतों का यह बदला चुकाया है कि कोई उनकी श्रेष्ठता में कमियाँ निकालता है, कोई अपनी समझ के अनुसार उनकी प्रशंसा करता है, कोई उनकी गरिमा देख कर चिढ़ता है। मुहब्बत के कामों को बिदअत (नवाचार) का नाम देना और आदर-सम्मान को कुछ और समझना।

---

1 अल-कुरान अल-करीम 9/128

وہ میری شفاعت ہے میری امت کے لیے قیامت کے دن، میں نے اسے اپنی ساری امت کے لیے رکھا ہے جو ایمان پر دنیا سے اٹھی۔

[باکس ۱] عربی: اللھم ارزقنا بجاھه عندك آمین! اردو: اے اللہ! ہمیں ان کی اس وجاہت کے صدقے میں عطا فرما جو ان کو تیری بارگاہ میں حاصل ہے۔ (ت)

اللہ اکبر! اے گنہگارانِ امت! کیا تم نے اپنے مالک و مولٰی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کی یہ کمال رافت و رحمت اپنے حال پر نہ دیکھی کہ بارگاہِ الٰہی عزوجلالہ سے تین سوال حضور کو ملے کہ جو چاہو مانگ لو عطا ہوگا۔ حضور نے ان میں کوئی سوال اپنی ذاتِ پاک کے لیے نہ رکھا، سب تمہارے ہی کام میں صرف فرما دیئے دو سوال دنیا میں کیے وہ بھی تمہارے ہی واسطے، تیسرا آخرت کو اٹھا رکھا، وہ تمہاری اس عظیم حاجت کے واسطے جب اس مہربان مولٰی رؤف و رحیم آقا صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کے سوا کوئی کام آنے والا، بگڑی بنانے والا نہ ہوگا۔ (صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم) حق فرمایا حضرت حق عزوجل نے:

[باکس ۲] عربی: "عَزِیْزٌ عَلَیْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِیْصٌ عَلَیْكُمْ بِالْمُؤْمِنِیْنَ رَءُوفٌ رَّحِیْمٌ" اردو: ان پر تمہارا مشقت میں پڑنا گراں ہے، تمہاری بھلائی کے نہایت چاہنے والے، مسلمانوں پر کمال مہربان۔ (ت)

واللہ العظیم! قسم اس کی جس نے انہیں آپ پر مہربان کیا ہر گز ہرگز کوئی ماں اپنے عزیز پیارے اکلوتے بیٹے پر زنبار اتنی مہربان نہیں جس قدر وہ اپنے ایک امتی پر مہربان ہیں۔ (صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم) الٰہی! تو ہمارا عجز و ضعف اور ان کے حقوقِ عظیمہ کی عظمت جانتا ہے۔ اے قادر!

اے واجد! ہماری طرف سے ان پر اور ان کی آل پر وہ برکت والی درودیں نازل فرما جو ان کے حقوق کو وافی ہوں اور ان کی رحمتوں کو مکافی۔

[باکس ۳] عربی: اللهم صلّ وسلم وبارك عليه وعلى اله وصحبه قدر رأفته و رحمة بأمته وقدر رأفتك و رحمتك به آمين أمين اله الحق آمين۔ اردو: اے اللہ! درود و سلام اور برکت نازل فرما آپ پر، آپ کی آل پر اور آپ کے اصحاب پر جتنا کہ وہ اپنی امت پر مہربان ہیں اور جس قدر تو ان پر مہربان ہے۔ اے معبودِ برحق! ہماری دُعا قبول فرما۔ (ت)

سبحن اللہ! امتیوں نے ان کی رحمتوں کا یہ معاوضہ رکھا کہ کوئی افضلیت میں تشکیلیں نکالتا ہے۔ کوئی ان کی تعریف اپنی سی جانتا ہے، کوئی ان کی تعظیم پر بگڑ کر کراتا ہے۔ افعالِ محبت کا بدعت نام اجلال و ادب۔

---

1 القرآن الکریم ۹/ ۱۲۸

Fatawa Razawiyya Volume 29

On the rulings of Shirk, "Indeed we belong to Allah, and indeed to Him we will return. And those who have wronged will soon know to what [kind of] return they will be returned. And there is no power and no strength except in Allah, the Most High, the Most Great." Truly, we belong to Allah and to Him we shall return; soon the oppressors will know which way they will turn back; and there is no power to avoid sin nor strength to do good except by the guidance of Allah, the Exalted and Magnificent. (T)

Hadith 24: It is narrated in Sahih Muslim from Hazrat Ubayy bin Ka'b (may Allah be pleased with him) that the Messenger, the Intercessor of Sinners (peace and blessings of Allah be upon him), said: Allah the Almighty granted me three requests. I made two of them in this world: "O Allah, forgive my Ummah! O Allah, forgive my Ummah!" (O My Lord! Forgive my nation, O My Lord! Forgive my nation). "And I have deferred the third for the Day when all creation will turn to me, even Ibrahim" (1). And I have reserved the third request for that Day when all of Allah's creation will be in need of me, even Ibrahim, the Friend of Allah (peace and blessings be upon him). "Blessings, peace, and abundance be upon him, and praise be to Allah, Lord of the worlds." And send blessings, peace, and barakah upon him, and all praise is due to Allah, the Sustainer of all the worlds. (T)

Hadith 25: Bayhaqi narrates from Hazrat Abu Huraira (may Allah be pleased with him) that the Intercessor of Sinners (peace and blessings of Allah be upon him) on the Night of Ascension (Shab-e-Asra) requested his Lord: "You have bestowed such and such virtues upon the Prophets (peace be upon them)." The Lord Almighty replied: "I have given you better than that (until the words) I have hidden your intercession and have not hidden it for any Prophet other than you." (2) "What I have bestowed upon you is better than all of those; I have reserved intercession for you and have not given it to anyone else besides you."

Hadith 26: Ibn Abi Shaybah and Tirmidhi with a note of authentication (Tahsin and Tashih), and Ibn Majah and Hakim with a ruling of authenticity (Tashih), narrate from

Hazrat Ubayy bin Ka'b (may Allah be pleased with him) that the Intercessor of Sinners (peace and blessings of Allah be upon him) said:

1. Musnad Ahmad bin Hanbal from Ubayy bin Ka'b, Al-Maktab al-Islami Beirut 5/127; Sahih Muslim, Book of the Virtues of the Quran, Chapter on the revelation of the Quran in seven modes, Qadimi Kutub Khana Karachi 1/273.
2. Al-Shifa bi Ta'rif Huquq al-Mustafa, Part 3, Chapter 1, Al-Matba'ah al-Sharika al-Sahafiyya 1/144.

शिर्क के अहकाम पर, "बेशक हम अल्लाह के लिए हैं और हम उसी की ओर लौटने वाले हैं। और ज़ुल्म करने वालों को जल्द ही पता चल जाएगा कि वे किस ओर लौटेंगे। और अल्लाह, जो बहुत बुलंद और महान है, की तौफ़ीक़ के बिना न गुनाह से बचने की ताक़त है और न ही नेकी करने की कुव्वत।" बेशक हम अल्लाह के लिए हैं और हमें उसी की ओर लौटना है, जल्द ही ज़ालिम जान लेंगे कि वे किस करवट पलटते हैं, और अल्लाह बुलंद व अज़ीम की तौफ़ीक़ के बिना न गुनाह से बचने की ताक़त है और न ही नेकी करने की कुव्वत। (त)

हदीस 24: सहीह मुस्लिम में हज़रत उबय बिन काब रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी हुज़ूर शफीउल मुज़निबीन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं: अल्लाह तआला ने मुझे तीन सवाल (दुआएँ) अता फ़रमाए, मैंने दो बार तो दुनिया में अर्ज़ कर ली: "ऐ अल्लाह! मेरी उम्मत की मग़फ़िरत फ़रमा, ऐ अल्लाह! मेरी उम्मत की मग़फ़िरत फ़रमा।" ऐ मेरे रब! मेरी उम्मत को बख्श दे, ऐ मेरे रब! मेरी उम्मत को बख्श दे। "और तीसरी को मैंने उस दिन के लिए बचा रखा है जब सारी मख्लूक मेरी ओर रुजू करेगी, यहाँ तक कि इब्राहीम भी।" (1) और तीसरी अर्ज़ उस दिन के लिए उठा रखी जिसमें अल्लाह की मख्लूक मेरी तरफ़ नियाज़मंद होगी यहाँ तक कि इब्राहीम खलीलुल्लाह अलैहिस्सलातु वस्सलाम भी। "उन पर दुरूद व सलाम व बरकत नाज़िल हो और तमाम तारीफ़ें अल्लाह रब्बुल आलमीन के लिए हैं।" और उन पर दुरूद व सलाम व बरकत नाज़िल फ़रमा, और तमाम तारीफ़ें अल्लाह तआला के लिए हैं जो सब जहानों का पालने वाला है। (त)

हदीस 25: बैहक़ी हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रावी हैं कि हुज़ूर शफीउल मुज़निबीन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने शब-ए-अस्र (मेराज की रात) अपने रब से अर्ज़ की: "तूने अंबिया अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम को ये-ये फ़ज़ाइल बख्शे," रब अज़्ज़वजल ने फ़रमाया: "मैंने तुझे इससे बेहतर अता किया (यहाँ तक कि फ़रमाया) मैंने तेरी शफ़ाअत छुपा रखी है और उसे तेरे सिवा किसी और नबी के लिए नहीं रखा।" (2) "मैंने तुझे जो अता फ़रमाया वह उन सब से बेहतर है, मैंने तेरे लिए शफ़ाअत छुपा रखी है और तेरे सिवा दूसरे को न दी।"

हदीस 26: इब्न अबी शैबा और तिर्मिज़ी ने तहसीन व तसहीह के साथ, और इब्न माजा और हाकिम ने तसहीह के हुक्म के साथ हज़रत उबय बिन काब रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की कि हुज़ूर शफीउल मुज़निबीन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं:

1. मुसनद अहमद बिन हंबल उबय बिन काब से, अल-मक्तब अल-इस्लामी बेरुत 5/127; सहीह मुस्लिम किताब फ़ज़ाइलुल क़ुरआन, बाब बयान अनुल क़ुरआन अनज़ल अला सबअत हर्फ़ क़दीमी कुतुब खाना कराची 1/273.
2. अल-शिफ़ा बि-तारीफ़ हुक़ूक़ अल-मुस्तफ़ा, भाग 3, अध्याय 1, अल-मतबअ अल-शारिका अल-सहाफ़िया 1/144.

पृष्ठ 585/750

پر شرک کے احکام، اِنَّا للّٰہِ واِنّا الیہ راجعون، وسیعلم الذین ظلموا ای منقلب ینقلبون، ولا حول ولا قوۃ الا باللہ العلی العظیم۔ بے شک ہم اللہ تعالٰی کے لیے ہیں اور ہم کو اسی کی طرف لوٹنا ہے، عنقریب ظالم جان لیں گے کہ کس کروٹ پر پلٹتے ہیں، اور اللہ بلند و عظیم کی توفیق کے بغیر نہ گناہ سے بچنے کی طاقت ہے اور نہ ہی نیکی کرنے کی قوت۔ (ت)

حدیث ۲۴: صحیح مسلم میں حضرت ابی بن کعب رضی اللہ تعالٰی عنہ سے مروی حضور شفیع المذنبین صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں: اللہ تعالٰی نے مجھے تین سوال عطا فرمائے، میں نے دو بار تو دنیا میں عرض کرلی: اللھم اغفر لامتی اللھم اغفر لامتی الہی! میری اُمت کی مغفرت فرما، الہی میری اُمت کی مغفرت فرما۔ "واخّرت الثالثۃ لیوم یرغب الیّ فیہ الخلق حتی ابراھیم" ۱۔ اور تیسری عرض اس دن کے لیے اٹھا رکھی جس میں مخلوق الہی میری طرف نیاز مند ہوگی یہاں تک کہ ابراہیم خلیل اللہ علیہ الصلوۃ والسلام۔ وصل وسلم بارك علیه والحمد للہ رب العلمین۔ اور درود و سلام و برکت نازل فرما اُن پر، اور تمام تعریفیں اللہ تعالٰی کے لیے ہیں جو سب جہانوں کا پروردگار ہے۔ (ت)

حدیث ۲۵: بیہقی حضرت ابوہریرہ رضی اللہ تعالٰی عنہ سے راوی حضور شفیع المذنبین صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے شبِ اسرٰی اپنے رب سے عرض کی۔ تُونے انبیاء علیہم الصلوٰۃ والسلام کو یہ یہ فضائل بخشے، رب عزوجل نے فرمایا: اعطیتك خیرا من ذلك (الی قولہ) خبأت شفاعتك ولم اخبأھا لنبی غیرك۔ ۲ میں نے تجھے جو عطا فرمایا وہ ان سب سے بہتر ہے، میں نے تیرے لیے شفاعت چھپا رکھی اور تیرے سوا دوسرے کو نہ دی۔

حدیث ۲۶: ابن ابی شیبہ و ترمذی بافادہ تحسین و تصحیح اور ابن ماجہ و حاکم بحکم تصحیح

حضرت ابی بن کعب رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے راوی حضور شفیع المذنبین صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں:

۱ مسند احمد بن حنبل عن ابی بن کعب المکتب الاسلامی بیروت ۵ / ۱۲۷، صحیح مسلم کتاب فضائل القرآن باب بیان ان القرآن انزل علی سبعة حرف قدیمی کتب خانہ کراچی ۱ / ۲۷۳ ۲ الشفاء بتعریف حقوق المصطفی الباب الثالث الفصل الاول المطبعة الشرکة الصحافیة ۱ / ۱۴۴

(Arabic Text)	(Translation)
If it were the Day of Resurrection, I would be the leader of the Prophets, their orator, and the one with their intercession, without pride.	On the Day of Resurrection, I am the leader of the Prophets and their orator and the one with intercession for them, and I do not say this out of pride.

Hadith 27 to 40: Narrated by Ibn Mani', Hazrat Zaid bin Arqam, and fourteen other Companions (may Allah be pleased with them), the Intercessor of the Sinners (peace and blessings of Allah be upon him) says:

(Arabic Text)	(Translation)
My intercession on the Day of Resurrection is true; whoever does not believe in it will not be among its people.	My intercession on the Day of Resurrection is a truth; he who does not believe in it will not be worthy of it.

Let the poor denier look at this mutawatir (consistently narrated) Hadith and, having mercy on his own soul, believe in the intercession of Mustafa (peace and blessings of Allah be upon him).

(Arabic Text)	(Translation)
"O Allah, You know that You have guided us, so we have believed in the intercession of Your beloved Muhammad (peace and blessings of Allah be upon him). So make us among its people in this world and the hereafter, O Possessor of Piety and Forgiveness. And grant Your most honorable blessings, Your most flourishing bounties, and Your purest greetings upon this chosen Beloved and the approved Intercessor, and upon his family and companions always and forever. Amen, O Most Merciful of the merciful. And praise be to Allah, the Lord of the worlds."	O Allah! You know, surely You have granted guidance, so we have believed in the intercession of Your beloved Muhammad Mustafa (peace and blessings of Allah be upon him). O Allah! Make us worthy of intercession in this world and the hereafter. O Possessor of piety and forgiveness! Send Your most excellent blessings, most abundant bounties, and purest greetings upon this chosen beloved whose intercession is hoped for, and upon his family and his companions forever and ever. Amen, O Best of those who show mercy! Accept our prayer. And all praises are for Allah, who is the Sustainer of all the worlds. (T)

1 Jami` at-Tirmidhi, Book of Virtues, Chapter from it, Amin Company Delhi 2/201; Sunan Ibn Majah, Book of Asceticism, Chapter on the Mention of Intercession, H.M. Saeed Company Karachi p. 303; Al-Mustadrak al-Hakim, Book of Faith, Chapter: When it is the Day of Resurrection etc., Dar al-Fikr Beirut 1/71 2 Kanz al-Ummal with reference to Ibn Mani' from Zaid bin Arqam etc., Hadith 39059, Mu'assasat al-Risala Beirut 14/399

(अरबी पाठ)

इज़ा काना यौमल क़ियामती कुन्तु इमामन्नबिय्यीना व ख़तीबहुम व साहिबा शफ़ाअतिहिम ग़ैरा फ़ख़्रिन।

(अनुवाद)

क़ियामत के दिन मैं अंबिया का पेशवा और उनका ख़तीब और उनकी शफ़ाअत वाला हूँ और यह कुछ फ़ख़्र की राह से नहीं फ़रमाता।

हदीस 27 से 40: इब्ने मनीअ, हज़रत ज़ैद बिन अरक़म वग़ैरा चौदह सहाबा किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम से रावी, हज़रत शफ़ीउल मुज़्नबीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं:

(अरबी पाठ)

शफ़ाअती यौमल क़ियामती हक़्क़ुन फ़मन लम युअमिन बिहा लम यकुन मिन अहलिहा।

(अनुवाद)

मेरी शफ़ाअत रोज़-ए-क़ियामत हक़ है, जो इस पर ईमान न लाएगा वह इसके क़ाबिल न होगा।

मुनकिर मिस्कीन इस हदीस-ए-मुतवातिर को देखे और अपनी जान पर रहम करके शफ़ाअत-ए-मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम पर ईमान लाए।

(अरबी पाठ)

"अल्लाहुम्मा इन्नका तअलमु हदैता फ़-आमन्ना बि-शफ़ाअति हबीबिका मुहम्मदिन सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फ़जअल्ना मिन अहलिहा फ़िद-दुनिया वल-आख़िरति या अहलत-तक़्वा व अहलल-मग़्फ़िरह। वजअल अशरफ़ा सलवातिका व अनमा बरकातिका व अज़का तहिय्यातिका अला हाज़ल हबीबिल मुज्तबा वश-शफ़ीइल मुर्तज़ा व अला आलिही व सहबिही दाइमन अबदन। आमीन या अर्हमर-राहमीन, वल-हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आ़लमीन।"

(अनुवाद)

ऐ अल्लाह! तू जानता है, बेशक तूने हिदायत अता फ़रमाई है, तो हम तेरे हबीब मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की शफ़ाअत पर ईमान लाए हैं। ऐ अल्लाह! तू हमें दुनिया व आख़िरत में लाइक़-ए-शफ़ाअत बना दे। ऐ तक़वा व मग़्फ़िरत वाले! अपना अफ़ज़ल दरूद, अक्सर बरकात और पाकीज़ा तहिय्यात भेज इस मुन्तख़ब महबूब पर जिसकी शफ़ाअत की उम्मीद की जाती है और आपकी आल पर और आपके सहाबा पर हमेशा हमेशा के लिए। ऐ बेहतरीन रहम फ़रमाने वाले! हमारी दुआ को क़बूल फ़रमा। और तमाम तारीफ़ें अल्लाह तआला के लिए हैं जो सब जहानों का परवरदिगार है। (त)

1 जामेअ तिर्मिज़ी अबवाबुल मनाक़िब बाब मिन्हु, अमीन कंपनी दिल्ली 2/201; सुनन इब्ने माजह अबवाबुज़-जुहद बाब ज़िक्रुश-शफ़ाअह, एच.एम. सईद कंपनी कराची पृ. 303; अल-मुस्तदरक अलल-हाकिम किताबुल ईमान बाब इज़ा काना यौमल क़ियामती इलख़, दारुल फ़िक्र बैरुत 1/71 2 कन्ज़ुल उम्माल बहवाला इब्ने मनीअ अन ज़ैद बिन अरक़म इलख़, हदीस 39059, मुअस्ससतुर रिसाला बैरुत 14/399

(عربی متن)	(ترجمہ)
اذاکان یوم القیمۃ کنت امام النبیین وخطیبھم و صاحب شفاعتھم غیر فخر ۱۔	قیامت کے دن میں انبیاء کا پیشوا اور ان کا خطیب اور ان کا شفاعت والا ہوں اور یہ کچھ فخر کی راہ سے نہیں فرماتا۔

حدیث ۲۷ تا ۴۰ : ابن منیع، حضرت زید بن ارقم وغیرہ چودہ صحابہ کرام رضی اللہ تعالی عنہم سے راوی، حضرت شفیع المذنبین صلی اللہ تعالی علیہ وسلم فرماتے ہیں :

(عربی متن)	(ترجمہ)
شفاعتی یوم القیمۃ حق فمن لم یؤمن بھا لم یکن من اھلھا ۲۔	میری شفاعت روزِ قیامت حق ہے جو اس پر ایمان نہ لائے گا اس کے قابل نہ ہو گا۔

منکر مسکین اس حدیث متواتر کو دیکھے اور اپنی جان پر رحم کر کے شفاعتِ مصطفے صلی اللہ تعالی علیہ وسلم پر ایمان لائے۔

(عربی متن)	(ترجمہ)
"اللھم انك تعلم ھدیت فآمنّا بشفاعۃ حبیبك محمد صلی اللہ تعالی علیہ وسلم فاجعلنا من اھلھا فی الدنیا والآخرۃ یا اھل التقوی واھل المغفرۃ واجعل اشرف صلواتك وانمی برکاتك	اے اللہ ! تو جانتا ہے، بے شک تو نے ہدایت عطا فرمائی ہے، تو ہم تیرے حبیب محمد مصطفے صلی اللہ تعالی علیہ وسلم کی شفاعت پر ایمان لائے ہیں۔ اے اللہ ! تو ہمیں دنیا و آخرت میں لائق شفاعت بنا دے۔اے تقوی و مغفرت والے ! اپنا افضل درود، اکثر برکات اور پاکیزہ تحیات بھیج اس

(عربی متن)	(ترجمہ)
وازکی تحیاتك علی ھذا الحبیب المجتبی والشفیع المرتضی وعلی آلہ و صحبہ دائما ابدًا امین یا ارحم الرحمین، والحمد للہ رب العلمین۔"	منتخب محبوب پر جس کی شفاعت کی امید کی جاتی ہے اور آپ کی آل پر اور آپ کے صحابہ پر ہمیشہ ہمیشہ کے لیے، اے بہترین رحم فرمانے والے ! ہماری دُعا کو قبول فرما۔ اور تمام تعریفیں اللہ تعالیٰ کے لیے ہیں جو سب جہانوں کا پروردگار ہے۔ (ت)

---

۱ جامع الترمذی ابواب المناقب باب منہ امین کمپنی دہلی ۲ /۲۰۱، سنن ابن ماجہ ابواب الزہد باب ذکر الشفاعۃ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ص ۳۰۳، المستدرک للحاکم کتاب الایمان باب اذاکان یوم القیمۃ الخ دارالفکر بیروت ۱/ ۷۱ ۲ کنز العمال بحوالہ ابن منیع عن زید بن ارقم الخ حدیث ۳۹۰۵۹ مؤسسۃ الرسالۃ بیروت ۱۴/ ۳۹۹

Volume 29

Fatawa Razawiyyah

Issue 166: Asked by Maulvi Ahmad Shah, resident of village Sa'adat. Question: Do all things like trees, stones etc., perform prostration (Sajda) on Laylat al-Qadr or not? The Answer: Yes, everything performs prostration. Saints (Awliya) have observed this. And Allah the Almighty knows best.

Issue 167: From Udaipur, Mewar, Rajputana, Madrasa Islamia; asked by Maulana Maulvi Syed Ahmed Sahib, Principal of Madrasa Islamia, on 15 Dhu al-Qi'dah 1329 AH. The exemplar of scholars, the choice of jurists, Hazrat Maulana Sahib (may his bounties continue). After the customary Sunnah greeting filled with humbleness, it is presented for the service of your noble presence that on the day your kind letter arrived, Maulvi Zahir Hasan Sahib also arrived and is well, performing the duties of teaching and lecturing. Your honorable remembrance made me grateful like an elder. Please remember me for any service. Furthermore, I am tasked [to inquire] that Maulvi Abdul Rahim Sahib of Ahmedabad along with Maulvi Alauddin Sahib of Sindh are pursuing the noble Sayyids and honorable Faqirs without reason, and by placing various accusations on them, they have summoned fatwas of Takfir (apostasy). In short, by talking such nonsense with the Faqirs, they hurt the hearts of the elders of religion. The specific reason is that the people of Ahmedabad did not recognize them before. Now they have reached the point of showing contempt for Sayyids and Faqirs. A hint is sufficient for your presence in this matter. I desire that in such a matter, until an investigation is conducted from both sides, a ruling of Takfir etc. should not be granted. Pursuing Sayyids and Faqirs without reason and trying to uproot their foundation for the sake of contempt is Shariah-wise impermissible. Thus, Hazrat Farid Mian Sahib, the custodian of the shrine, is among the offspring of Hazrat Khwaja Muhammad Hussain Chishti (mercy of Allah Almighty be upon him). And from that side, regarding Qazi Ahmad Mian Sahib Qadri, they hurt hearts by giving sermons etc. claiming he is not a Sayyid. So now, please record as a fatwa to what extent it is permissible to [dispute] the Sayyid lineage of Hazrat Shah Farid Mian Sahib, Qadir Mian Sahib, and Ahmed Mian Sahib, and to insult the status of Sayyids and Faqirs, demanding proof from them and speaking ill when it is not provided? And what is the ruling in the noble Shariah regarding such a person? So please write a clear fatwa for this out of kindness. Beyond the limits of respect, this humble petitioner is also deeply pained due to the suspicion regarding the Sayyids.

जिल्द 29

फतावा रज़विया

मसला 166: प्रेषक: मौलवी अहमद शाह, निवासी ग्राम सादात। प्रश्न: क्या शब-ए-कद्र में पेड़, पत्थर आदि जैसी तमाम चीज़ें सजदा करती हैं या नहीं? उत्तर: हाँ, हर चीज़ सजदा करती है। संतों (औलिया) ने इसे देखा है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 167: उदयपुर, मेवाड़, राजपूताना, मदरसा इस्लामिया से; प्रेषक: मौलाना मौलवी सैयद अहमद साहब, मदरसा इस्लामिया के प्रबंधक, 15 ज़िल-क़ादा 1329 हिजरी। विद्वानों के आदर्श, न्यायविदों के सार, हज़रत मौलाना साहब (उनकी कृपा जारी रहे)। सुन्नत के अनुसार सलाम और विनम्रता के बाद, आपकी महान सेवा में निवेदन है कि जिस दिन आपका कृपा पत्र प्राप्त हुआ, उसी दिन मौलवी ज़हीर हसन साहब भी पहुँचे और वे कुशल हैं, पठन-पाठन का कार्य कर रहे हैं। आपकी बुजुर्गों जैसी याददिहानी के लिए मैं आभारी हूँ। सेवा के कार्यों के लिए याद फ़रमाएँ। इसके अतिरिक्त, मुझे यह कार्य सौंपा गया है कि मौलवी अब्दुल रहीम साहब अहमदाबादी, मौलवी अलाउद्दीन साहब सिंधी के साथ मिलकर, महान सैयदों और आदरणीय फ़कीरों के पीछे बिना कारण पड़े हुए हैं और उन पर विभिन्न आरोप लगाकर तकफ़ीर (धर्मत्याग) के फ़तवे मँगवा लिए हैं। संक्षेप में, फ़कीरों के साथ ऐसी फ़ालतू बातें करके वे धर्म के बुजुर्गों का दिल दुखाते हैं। इसका विशेष कारण यह है कि अहमदाबाद के लोग उन्हें पहले नहीं मानते थे। अब वे सैयदों और फ़कीरों का अपमान करने तक पहुँच गए हैं। इस मामले में आपके लिए संकेत ही पर्याप्त है। मैं चाहता हूँ कि ऐसे मामले में जब तक दोनों पक्षों की ओर से जाँच न हो जाए, तकफ़ीर आदि का आदेश न दिया जाए। बिना किसी कारण के सैयदों और फ़कीरों के पीछे पड़ना और अपमान के लिए उनकी नींव खोदना शरीयत के अनुसार नाजायज़ है। उदाहरण के तौर पर, हज़रत फ़रीद मियाँ साहब, जो सज्जादा नशीन हैं, हज़रत ख्वाजा मुहम्मद हुसैन चिश्ती (अल्लाह उन पर दया करे) की संतान में से हैं। और उस पक्ष से, काज़ी अहमद मियाँ साहब कादरी के सैयद न होने के बारे में उपदेश आदि देकर वे दिल दुखाते हैं। तो अब एक फ़तवे के रूप में लिखें कि हज़रत शाह फ़रीद मियाँ साहब, कादिर मियाँ साहब और अहमद मियाँ साहब के सैयद वंश [पर संदेह जताना] और सैयदों तथा फ़कीरों की शान में गुस्ताखी करना, उनसे प्रमाण माँगना और प्रमाण न मिलने पर बुरा कहना कहाँ तक जायज़ है? और ऐसा कहने वाले

व्यक्ति के बारे में शरीयत शरीफ़ में क्या आदेश है? कृपया इस पर एक स्पष्ट फ़तवा लिखने की कृपा करें। अदब की मर्यादाओं से परे, यह तुच्छ प्रार्थी भी सैयदों के प्रति संशय के कारण बहुत दुखी है।

पृष्ठ 587 का 750

جلد ۲۹

فتاوی رضویہ

مسئلہ ۱۶۶: مسئولہ مولوی احمد شاہ ساکن موضع سادات شب قدر میں تمام چیزیں مثل درخت و پتھر وغیرہ کے سجدہ کرتی ہیں یا نہیں؟ الجواب: ہاں ہر چیز سجدہ کرتی ہے، اولیاء نے اسے مشاہدہ کیا ہے، واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۱۶۷: از اودے پور میواڑ راجپوتانہ مدرسہ اسلامیہ، مسئولہ مولانا مولوی سید احمد صاحب مہتمم مدرسہ اسلامیہ ۱۵ ذوالقعدہ ۱۳۲۹ھ قدوۃ العلماء زبدۃ الفقہاء حضرت مولانا صاحب دام فیوضہم، بعد سلام مسنون نیاز مشحون، معروض خدمت بندگان والا ہوں، آپ کا مکرمت نامہ جس روز پہنچا اسی روز مولوی ظہیر حسن صاحب بھی پہنچے اور بخیریت ہیں، کار درس و تدریس انجام دے رہے ہیں، حضور نے یاد آوری بزرگانہ سی مشکور فرمایا۔ کار خدمت سے یاد فرمائیں۔ دیگر مکلف ہوں کہ مولوی عبدالرحیم صاحب احمد آبادی مع مولوی علاؤالدین صاحب سندھی سادات عظام و فقراء ذوی الاحترام کے پیچھے بلاوجہ پڑ رہے ہیں اور طرح طرح کے الزام ان کے ذمہ لگا کر تکفیر کے فتوے منگا لیے ہیں۔ اسی طرح سے فقراء سے غرضیکہ ایسی فضول باتیں کر کے بزرگان دین کا دل دکھاتے ہیں وجہ خاص اس کی یہ ہے کہ ان کو احمد آباد کے لوگ پہلے نہیں مانتے تھے۔ سادات اور فقراء کی حقارت کرنے میں اب پہنچ گئے۔ اس بارہ میں حضور کو اشارہ کافی ہے۔ میں چاہتا ہوں کہ ایسے معاملہ میں جب تک فریقین کی جانب سے تحقیق نہ ہو تکفیر وغیرہ کا حکم نہ بخشا جائے، اور بلاوجہ سادات و فقراء کے پیچھے پڑنا اور جڑ بنیاد حقارت کے واسطے اکھڑنا شرعاً ناجائز ہے، چنانچہ حضرت فرید میاں صاحب سجادہ نشین

حضرت خواجہ محمد حسین چشتی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ کی اولاد میں ہیں۔ اور اسی طرف سے قاضی احمد میاں صاحب قادری کی نسبت سادات نہ ہونے کی وعظ وغیرہ کہہ کر دل دکھا جاتے ہیں۔ سو اب بطور فتویٰ ارقام فرما دیں کہ حضرت شاہ فرید میاں صاحب اور قادر میاں صاحب اور احمد میاں صاحب سادات کا دکھانا اور کسر شان سادات و فقیرانہ کی کرنا اور ان سے سند طلب کرنا اور نہ ملنے پر برا کہنا کہاں تک جائز ہے۔ اور ایسا کہنے والے کی نسبت شرع شریف میں کیا حکم ہے؟ سو برائے کرم اس کا فتویٰ صاف تحریر فرمائیں زیادہ حد ادب، فقیر کو بھی بوجہ غمان سادات ہونے کے سخت رنج ہے۔

Volume 29 Fatawa Rizvia

The Answer:

For the noble observation of the esteemed possessor of glory and kindness, Janab Maulana Maulvi Syed Qazi Ahmed Ali Sahib Madani, may his glory continue. After offering the prophetic greeting (Salam), I am requesting: Your kind letter arrived, I am grateful for your remembrance. Maulvi Abdul Rahim Sahib took a fatwa from me twice regarding only one person. One, in the matter that he called the Pure Imams as Prophets and Messengers; regarding this, I wrote "Jaza Allahu Aduwwahu" (May Allah recompense his enemy), which was published twelve (12) years ago. Second, in the matter that he does not accept the Mu'awwidhatayn (last two chapters of Quran) as part of the Quran; my fatwa on this was published in 'Nazir al-Munafiqeen' years ago. Apart from these, I did not send them any fatwa written on anyone's disbelief. Yes, there was a question regarding some verses of a person in which he had gone to extremes in praising his spiritual guide (Pir). On that, I did not give a fatwa of explicit disbelief, but rather pointed towards interpretations. And regarding these two names you have written, I do not remember at all what kind of fatwa was written about them on any matter. Yes, if they sent some question using names like Zaid and Amr and I wrote an answer, I don't know, but a fatwa of disbelief was not only written on those matters but also published and sent, which was 72 years ago, and the fatwa regarding the verses was also probably published there.

This humble faqir, by the grace of Allah Almighty, is the lowliest slave and dust under the feet of the noble descendants (Sayyids). I consider their love and respect a means of salvation and intercession. I have already published in my books that if a Sayyid becomes an innovator (bad-mazhab), his respect is not lost as long as his innovation does not reach the level of disbelief. Yes, after disbelief, Sayyid-hood itself does not remain, then his respect becomes forbidden. And this faqir has also given fatwas many times that it is not necessary for us to know someone as a Sayyid through our personal knowledge in order to consider them a Sayyid and respect them. Those who are called Sayyids, we will respect them; we have no need for investigations, nor have we been commanded to ask for proof of Sayyid-hood. And it is not at all permissible to force someone to show proof against their will, and if they don't show it, to speak ill of them or defame them. "An-nasu amna'u 'ala ansabihim" (People are trusted regarding their lineages). Yes, if it is well-known to us through thorough investigation that a person is not a Sayyid and yet poses as one, we will not respect him nor call him a Sayyid, and it would be appropriate to inform the unaware about his

deception. In my opinion, there is a story upon which I act, that a person got into an argument with a Sayyid. He (the Sayyid) said, "I am a Sayyid." He (the other person) said...

उत्तर:

सम्मानित, महिमा और दया के स्वामी जनाब मौलाना मौलवी सैयद काज़ी अहमद अली साहब मदनी (उनकी महिमा बनी रहे) के सादर अवलोकन हेतु। सुन्नत के अनुसार सलाम पेश करने के बाद अर्ज़ है कि आपका कृपा-पत्र प्राप्त हुआ, याद करने के लिए आभारी हूँ। मौलवी अब्दुल रहीम साहब ने केवल एक व्यक्ति के बारे में मुझसे दो बार फतवा लिया। एक इस बारे में कि उसने पवित्र इमामों को नबी और रसूल बताया, इसके बारे में मैंने "जज़ा अल्लाह अदुव्वहु" (अल्लाह उसके दुश्मन को बदला दे) लिखा जिसे प्रकाशित हुए बारह (१२) वर्ष बीत गए। दूसरा इस बारे में कि वह 'मुअव्वज़तैन' (कुरान के अंतिम दो सूरे) को कुरान का हिस्सा नहीं मानता, इस पर मेरा फतवा 'नज़ीर अल-मुनाफ़िक़ीन' में बरसों पहले छपा था। इनके अलावा मैंने उन्हें किसी के कुफ्र (अधर्म) पर कोई लिखा हुआ फतवा नहीं भेजा। हाँ, एक व्यक्ति की कुछ कविताओं (अशआर) के बारे में सवाल था जिसमें उसने अपने पीर की प्रशंसा में बहुत अतिशयोक्ति की थी। उस पर मैंने स्पष्ट कुफ्र का फतवा नहीं दिया बल्कि उसमें व्याख्याओं (तावीलात) की ओर संकेत किया। और ये दो नाम जो आपने लिखे हैं, उनके बारे में मुझे बिल्कुल याद नहीं कि किसी मामले में कैसा फतवा लिखा गया हो। हाँ, यदि उन्होंने ज़ैद और अम्र जैसे नाम देकर कोई प्रश्न भेजा हो और मैंने उत्तर लिखा हो, तो मुझे ज्ञात नहीं, लेकिन कुफ्र का फतवा न केवल उन बातों पर लिखा गया बल्कि छापकर भेजा गया है जिसे ७२ वर्ष हो गए, और कविताओं वाला फतवा भी संभवतः वहीं प्रकाशित हो गया है।

यह तुच्छ फकीर, अल्लाह तआला की कृपा से, आदरणीय सादात (सैयदों) का एक मामूली गुलाम और उनके कदमों की धूल है। उनकी मुहब्बत और अज़मत (सम्मान) को नजात (मुक्ति) और शफाअत (सिफारिश) का ज़रिया समझता हूँ। अपनी किताबों में पहले ही लिख चुका हूँ कि यदि कोई सैयद बद-मज़हब (गुमराह) भी हो जाए, तो उसका सम्मान तब तक खत्म नहीं होता जब तक कि उसकी गुमराही कुफ्र की सीमा तक न पहुँच जाए। हाँ, कुफ्र के बाद सैयदियत ही नहीं रहती, फिर उसका सम्मान हराम (निषिद्ध) हो जाता है। और यह फकीर कई बार फतवा दे चुका है कि किसी को सैयद समझने और उसका सम्मान करने के लिए हमारे पास व्यक्तिगत ज्ञान होना ज़रूरी नहीं है। जो लोग सैयद कहलाते हैं, हम उनका सम्मान करेंगे, हमें जाँच-पड़ताल की आवश्यकता नहीं है, न ही हमें सैयद होने का प्रमाण माँगने का आदेश दिया गया है। और अपनी मर्ज़ी के बिना प्रमाण दिखाने के लिए मजबूर करना और प्रमाण न दिखाने पर बुरा कहना या अपमानित करना हरगिज़ जायज़ नहीं

है। "अन-नासु अमिना अला अनसाबिहिम" (लोग अपने वंश के बारे में विश्वसनीय हैं)। हाँ, जिसके बारे में हमें अच्छी जाँच-पड़ताल से पता चल जाए कि वह सैयद नहीं है और वह सैयद बना हुआ है, हम उसका सम्मान नहीं करेंगे और न ही उसे सैयद कहेंगे और उचित होगा कि अनजान लोगों को उसके धोखे से अवगत करा दिया जाए। मेरे विचार में एक किस्सा है जिस पर मेरा अमल है कि एक व्यक्ति किसी सैयद से उलझ गया, उन्होंने कहा मैं सैयद हूँ, तो उसने कहा...

पृष्ठ ७५० का ५८८

الجواب:

بگرامی ملاحظہ مکرم ذی المجد والکرم جناب مولانا مولوی سید قاضی احمد علی صاحب مدنی دام مجدہم۔ بعد ادائے ہدیہ سنّت ملتمس، نوازش نامہ تشریف لایا، ممنون یاد آوری فرمایا، مولوی عبدالرحیم صاحب نے صرف ایک شخص کی نسبت مجھ سے دو بار فتوی لیا، ایک اس بارہ میں کہ اس نے حضرات ائمہ اطہار کو نبی ورسول بتایا، اس کے بارے میں میں نے "جزاء اللہ عدوہ" لکھی جس کو طبع ہوئے بارہ ۱۲ برس گذرے۔ دوسرا اس بارے میں کہ وہ معوذتین کو قرآن نہیں مانتا اس پر میرا فتوی نذیر المنافقین میں چھپا جسے سال ہوئے ۔ ان کے سوا میں نے ان کو کوئی فتوی کسی کے کفر پر لکھ کر نہ بھیجا۔ ہاں ایک شخص کے کچھ اشعار کی نسبت سوال تھا جس میں اس نے اپنے پیر کی تعریف میں بہت غلو وافراط کیا۔ اس پر میں نے صریح کفر ہونے کا فتوی نہ دیا بلکہ اس میں تاویلات کی طرف اشارہ کیا۔ اور یہ دو نام جو آپ نے تحریر فرمائے ان کی بابت مجھے اصلاً یاد نہیں کہ کسی امر کا کوئی فتوی کیسا ہی لکھا گیا ہو۔ ہاں زید وعمر کرکے کوئی سوال انہوں نے بھیجا اور میں نے جواب لکھا ہو تو معلوم نہیں، مگر کفر کا فتوی صرف انہیں باتوں پر لکھا نہیں بلکہ چھاپ کر بھیجا ہے جسے ۷۲ برس ہوئے، اور اشعار والا فتوی بھی غالباً وہیں طبع ہو گیا ہے۔

یہ فقیر ذلیل بحمدہ تعالیٰ حضرات سادات کرام کا ادنی غلام و خاکپا ہے۔ ان کی محبت و عظمت ذریعہ نجات و شفاعت جانتا ہے، اپنی کتابوں میں چھاپ چکا ہے کہ سید اگر بد مذہب بھی ہو جائے تو اس کی تعظیم نہیں جاتی جب تک بد مذہب حدِ کفر تک نہ پہنچے، ہاں بعدِ کفر سیادت ہی نہیں

رہتی، پھر اس کی تعظیم حرام ہو جاتی ہے۔ اور یہ بھی فقیر بارہا فتوی دے چکا ہے کہ کسی کو سید سمجھنے اور اس کی تعظیم کرنے کے لیے ہمیں اپنے ذاتی علم سے اسے سید جاننا ضروری نہیں، جو لوگ سید کہلائے جاتے ہیں ہم ان کی تعظیم کریں گے، ہمیں تحقیقات کی حاجت نہیں، نہ سیادت کی سند مانگنے کا ہم کو حکم دیا گیا ہے۔ اور خواہی نخواہی سند دکھانے پر مجبور کرنا اور نہ دکھائیں تو برا کہنا مطعون کرنا ہرگز جائز نہیں۔ "الناس امنأ علی انسابھم" (لوگ اپنے نسب پر امین ہیں)، ہاں جس کی نسبت ہمیں خوب تحقیق معلوم ہو کہ یہ سید نہیں اور وہ سید بنے اس کی ہم تعظیم نہ کریں گے نہ اسے سید کہیں گے اور مناسب ہوگا کہ ناواقفوں کو اس کے فریب سے مطلع کر دیا جائے۔ میرے خیال میں ایک حکایت ہے جس پر میرا عمل ہے کہ ایک شخص کسی سید سے الجھا، انہوں نے فرمایا میں سید ہوں کہا۔

Fatawa Razawiyya Volume 29

What proof is there of you being a Sayyid? At night, I was honored with a holy vision that it is the battleground of resurrection. This person sought intercession, but (the Prophet) turned away. He submitted: 'I too am an Ummati (follower) of Your Presence.' (The Prophet) said: 'What proof is there of you being an Ummati? I will write to Maulvi Abdul Rahim Sahib about this. And if they act like this, I will forbid it; I hope they will accept my request.' You should consider this writing of the humble servant as a Fatwa.

The humble servant Ahmed Raza, may he be forgiven, from Bareilly, 25 Dhu al-Hijjah 1329 AH.

Problem 168: In the name of Allah, the Most Gracious, the Most Merciful. We praise Him and send blessings upon His Noble, Compassionate and Merciful Messenger. Afterwards! A question to the most excellent scholar, the unparalleled savant, Hazrat Maulana Maulvi Muhammad Ahmed Raza Khan Sahib, resident of Bareilly, may his outward and inward grace be eternal. My respected, honored, exalted, and dignified Hazrat, the supporter of the firm religion, Maulana Maulvi Muhammad Ahmed Raza Khan Sahib, may your love endure. After greetings of peace and the mercy of Allah and His blessings, be it clear to your noble mind that here in the city of Ahmedabad, an eight-page pamphlet was printed and published at Hamidi Press, located in Ahmedabad, Kalupur Market. Its promoter is Maulvi Sher Muhammad bin Shah Muhammad, resident of Ahmedabad, Mohalla Mirzapur near the butchers' village. And the date of publication written in the pamphlet is "dated 2 Jumada al-Akhira 1330 AH, Saturday," and in that pamphlet, from page 5 to page 7, there is a Fatwa, and that Fatwa was written on the date 11 Jumada al-Ula, Wednesday, 1327 AH. Respected Maulana Sahib! With folded hands, it is submitted to your service that the printed Fatwa is being presented to your service via registered mail. Did you write this Fatwa or not? Here some gentlemen say that Maulana Ahmed Raza Khan Sahib did not write this Fatwa. This Fatwa has been attributed to Maulana Sahib. Maulana denies writing this Fatwa. Is this statement of these gentlemen correct or incorrect? And did you write this Fatwa six years ago or not? And we have also seen a handwritten, sealed Fatwa of yours in the possession of Maulvi Sher Muhammad Sahib. Should we consider it true or not? Please explain to us, may the Lord of the worlds grant you a great reward and abundant recompense. Written by your servant Mehrbaz Khan bin Muhammad Khan, resident of Ahmedabad, Mohalla Jamalpur, Khariya near the mosque.

फतावा रज़विया जिल्द 29

आपके सैयद होने का क्या सबूत है? रात को मुझे एक पवित्र दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ कि यह महशर (पुनरुत्थान) का मैदान है। इस व्यक्ति ने शफ़ाअत (सिफ़ारिश) चाही, तो (हुज़ूर ने) मुँह फेर लिया। उसने निवेदन किया: 'मैं भी हुज़ूर का उम्मती हूँ।' फ़रमाया: 'तेरे उम्मती होने का क्या सबूत है, मैं इस बारे में मौलवी अब्दुल रहीम साहब को लिखूँगा। और अगर वे ऐसा करते हैं तो मैं उन्हें मना करूँगा, मुझे उम्मीद है कि वे मेरी गुज़ारिश क़बूल करेंगे।' आप फ़कीर की इसी तहरीर को फ़तवा समझें।

फ़कीर अहमद रज़ा, अल्लाह उन्हें क्षमा करे, बरेली से, 25 ज़ुल-हिज्जा 1329 हिजरी।

मसला 168: बिस्मिल्लाह हिर्रहमान निर्रहीम नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल रऊफ़िर रहीम अम्मा बाद! अफ़ज़ल-ए-अजल (महान विद्वान), बे-मिसाल आलिम हज़रत मौलाना मौलवी मुहम्मद अहमद रज़ा ख़ान साहब, निवासी बरेली, अल्लाह उनके ज़ाहिरी और बातिनी फ़ैज़ को जारी रखे, की सेवा में एक सवाल। मेरे मोहतरम, मुअज़्ज़म और दीन-ए-मतीन के हिमायती हज़रत मौलाना मौलवी मुहम्मद अहमद रज़ा ख़ान साहब, आपकी मोहब्बत सलामत रहे। सलाम, अल्लाह की रहमत और उसकी बरकतें हों। आपकी आली जनाब को मालूम हो कि यहाँ अहमदाबाद शहर में एक आठ पन्नों का रिसाला (पुस्तिका) कालूपुर बाज़ार स्थित हमीदी प्रेस में छपकर प्रकाशित हुआ है। इसके प्रकाशक मौलवी शेर मुहम्मद बिन शाह मुहम्मद निवासी अहमदाबाद, मोहल्ला मिर्ज़ापुर, कसाबों के गाँव के पास के रहने वाले हैं। इस रिसाले में प्रकाशन की तारीख "2 जमादी उल-उख़रा 1330 हिजरी, शनिवार" लिखी है और उस रिसाले के सफ़ा 5 से 7 तक एक फ़तवा है जो तारीख 11 जमादी उल-ऊला, बुधवार 1327 हिजरी को लिखा गया है। जनाब मौलाना साहब! हाथ जोड़कर आपकी सेवा में अर्ज़ है कि यह छपा हुआ फ़तवा आपकी सेवा में रजिस्टर्ड डाक से भेजा जा रहा है। क्या यह फ़तवा आपने ही लिखा है या नहीं? यहाँ कुछ लोग कहते हैं कि मौलाना अहमद रज़ा ख़ान साहब ने यह फ़तवा नहीं लिखा। यह फ़तवा मौलाना साहब के नाम से जोड़ दिया गया है। मौलाना इस फ़तवे के लिखने से इनकार करते हैं। उन लोगों की यह बात सही है या ग़लत? और क्या आपने यह फ़तवा छह साल पहले लिखा है या नहीं? हमने मौलवी शेर मुहम्मद साहब के पास आपके हाथ का लिखा हुआ और मुहर लगा हुआ फ़तवा भी देखा है। क्या हम उसे सच समझें या नहीं? आप हमें समझा दें, रब्बुल आलमीन आपको इसका अज़ीम अज्र और बड़ा सवाब अता फ़रमाए। तहरीर: आपका खादिम महरबाज़ ख़ान बिन मुहम्मद ख़ाँ, निवासी अहमदाबाद, मोहल्ला जमालपुर, खाड़िया मस्जिद के पास।

کیا سند ہے تمہارے سید ہونے کی۔ رات کو زیارت اقدس سے مشرف ہوا کہ معرکہ حشر ہے یہ شفاعت خواہ ہوا، اعراض فرمایا: اس نے عرض کی: میں بھی حضور کا امتی ہوں۔ فرمایا: کیا سند ہے تیرے امتی ہونے کی، میں مولوی عبدالرحیم صاحب کو اس بارے میں لکھوں گا۔ اور اگر وہ ایسا کرتے ہیں تو منع کروں گا، امید ہے کہ وہ میری گزارش قبول کریں گے۔ آپ فقیر کی اسی تحریر کو فتویٰ تصور فرمائیں۔

فقیر احمد رضا غفر لہ از بریلی ۲۵ ذوالحجہ ۱۳۲۹ھ

مسئلہ ۱۶۸: بسم اللہ الرحمن الرحیم ط نحمدہ و نصلی علی رسولہ الرؤف الرحیم ط امابعد! سوال از فاضل اجل عالم بے بدل حضرت مولانا مولوی محمد احمد رضا خان صاحب ساکن بریلی عم فیضہ الصوری والمعنوی۔ مخدومی مکرمی معظمی مفخمی حضرت حامی دین متین مولانا مولوی محمد احمد رضا خان صاحب دام محبتکم، بعد السلام علیکم ورحمۃ اللہ وبرکاتہ واضح رائے عالی ہو کہ ہمارے یہاں شہر احمد آباد میں ایک رسالہ آٹھ صفحہ کا مطبع حمیدی پریس واقع احمد آباد بازار کالو پور میں چھپ کر شائع ہوا ہے۔ اس کے مشتہر مولوی شیر محمد بن شاہ محمد ساکن احمد آباد محلہ مرزا پور متصل قصابان گاؤ ہیں۔ اور اس میں رسالہ کی اشاعت کی تاریخ یہ لکھی ہے "مورخہ ۲ جمادی الاخریٰ ۱۳۳۰ھ روز و شنبہ" اور اس رسالہ کے صفحہ ۵ سے صفحہ ۷ تک ایک فتویٰ ہے اور وہ فتویٰ تاریخ ۱۱ جمادی الاولیٰ یوم الاربعاء ۱۳۲۷ھ کو لکھا گیا ہے۔ جناب مولانا صاحب! دست بستہ خدمت میں عرض یہ ہے کہ چھپا ہوا فتویٰ آپ کی خدمت میں رجسٹرڈ حاضر کیا جاتا ہے۔ یہ فتویٰ آپ نے تحریر فرمایا ہے یا نہیں؟ یہاں بعض حضرات یہ فرماتے ہیں کہ مولانا احمد رضا خان صاحب نے یہ فتویٰ نہیں لکھا۔ یہ فتویٰ مولانا صاحب کی طرف منسوب کر دیا ہے۔

مولانا اس فتویٰ کے لکھنے سے انکار فرماتے ہیں۔ یہ فرمانا ان حضرات کا صحیح ہے یا غلط ہے؟ اور یہ فتویٰ آپ نے چھ سال پہلے لکھا ہے یا نہیں، اور ہم نے آپ کا قلمی مہر کیا ہوا فتویٰ بھی مولوی شیر محمد صاحب کے پاس دیکھا ہے اس کو ہم سچا سمجھیں یا نہیں؟ آپ ہم کو سمجھا دیجئے رب العالمین آپ کو اجر عظیم و ثواب جزیل عطا فرمائے گا۔ رقیمہ آپ کا خادم مہرباز خان بن محمد خاں ساکن احمد آباد محلہ جمال پور کھاڑیہ متصل مسجد

Fatawa Razawiya, Volume 29

Dadi Bi, Dated 25 Jumada al-Thani 1330 AH, Wednesday.

Answer: The humble servant, may the Almighty Lord forgive him, when returning from the journey to Madinah al-Tayyibah in Jumada al-Ula 1324 AH, arrived in Karachi, and from there, friends insisted on bringing him to Ahmedabad. Here, there was a dispute between two honorable students of my esteemed friend, the supporter of Sunnah and eradicator of innovation, the late and forgiven Maulana Molvi Nazir Ahmad Sahib: Molvi Abdur Rahim Sahib and Molvi Alauddin Sahib, may Allah Almighty protect them. Two factions were forming. Before this, Molvi Alauddin Sahib had visited my humble home and presented a pamphlet in which he wanted to level severe accusations against Molvi Abdur Rahim Sahib, reaching the point of Takfir (declaring him a disbeliever). This humble servant explained it to him and restrained him from publishing that pamphlet, and amicably pointed out the errors in those accusations. Praise be to Allah, Molvi Alauddin Sahib accepted the humble servant's request, but factionalism continued until the humble servant returned from Hajj. At that time, Molvi Abdur Rahim Sahib presented this question, to which I wrote that answer. That answer is indeed mine, but it pertained to the situation at that time. I had stated in that very answer that Molvi Alauddin Sahib had not performed Takfir of Molvi Abdur Rahim Sahib out of malice; rather, he had understood the issue in a certain way, from which he recanted after this humble servant's explanation. Therefore, no harsh ruling applies to him. Yes, if after understanding the truth, he turns towards Takfir without a legal Shariah reason, then a harsh ruling would necessarily apply. After that, during the days of this humble servant's stay, both parties agreed to my decision, and by the grace of Allah Almighty, a reconciliation was brokered between them. I have not found it to be a broken peace since then. In fact, recently, when some mischief-makers again raised a baseless and meaningless clamor about the Takfir of Molvi Abdur Rahim Sahib, and the old irrelevant advertisement by Molvi Qandahari was reprinted under someone named Wazir-ud-Din, Molvi Abdur Rahim Sahib needed a fatwa from here to repel the mischief. The facts were asked of him, to which he sent a detailed reply on the 7th of Dhu al-Hijjah 1329 AH. In that letter, these words were also present: "Your blessed feet had graced Ahmedabad from Karachi, and you brokered a peace settlement between me and Molvi Alauddin Sahib; since then until now, by the grace of Allah Almighty, there is peace, and he is in agreement with me, end quote." After this, Sher Muhammad Sahib published that same fatwa of mine. Molvi Abdur Rahim had sent me a copy of

it, and he had crossed out all those lines relating to Molvi Alauddin Sahib with red ink, saying that they were no longer needed. Molvi Alauddin Sahib.

फतावा रज़विया, जिल्द 29

दादी बी, दिनांक 25 जमादी-उल-सानी 1330 हिजरी, बुधवार।

उत्तर: फ़क़ीर (विनम्र सेवक), जिसे सर्वशक्तिमान प्रभु क्षमा करे, जब जमादी-उल-ऊला 1324 हिजरी में मदीना तैयबा की यात्रा के बाद कराची आया, तो वहाँ से मित्रों ने अहमदाबाद लाने पर ज़ोर दिया। यहाँ मेरे सम्मानित मित्र, सुन्नत के समर्थक और बिदअत (नवाचार) को मिटाने वाले, स्वर्गीय मौलाना मौलवी नज़ीर अहमद साहब के दो माननीय शिष्यों, मौलवी अब्दुल रहीम साहब और मौलवी अलाउद्दीन साहब (अल्लाह उनकी रक्षा करे) के बीच विवाद था, दो गुट बन रहे थे। इससे पहले मौलवी अलाउद्दीन साहब गरीब-खाने (मेरे घर) पर तशरीफ़ लाए थे और एक रिसाला (पुस्तिका) पेश की थी जिसमें उन्होंने मौलवी अब्दुल रहीम साहब पर कड़े आरोप लगाए थे, यहाँ तक कि बात तकफ़ीर (काफ़िर घोषित करने) तक पहुँच गई थी। इस फ़क़ीर ने उन्हें समझाया और उस रिसाले के प्रकाशन से रोक दिया और उन आरोपों की गलती के प्रति मित्रतापूर्वक सचेत किया। अल्हम्दुलिल्लाह, मौलवी अलाउद्दीन साहब ने फ़क़ीर के अनुरोध को स्वीकार कर लिया, लेकिन आपसी गुटबाजी तब तक बनी रही जब तक फ़क़ीर हज से वापस नहीं आया। उस समय मौलवी अब्दुल रहीम साहब ने यह प्रश्न प्रस्तुत किया जिसका मैंने वह उत्तर लिखा। वह उत्तर मेरा ही है, लेकिन वह उस समय की स्थिति से संबंधित था। मैंने उसी उत्तर में बता दिया था कि मौलवी अलाउद्दीन साहब ने मौलवी अब्दुल रहीम साहब की तकफ़ीर शत्रुता के कारण नहीं की थी, बल्कि मामला उनकी समझ में ऐसे ही आया था, जिससे उन्होंने फ़क़ीर के समझाने के बाद रुजू (वापसी) कर ली थी, इसलिए उन पर कोई कठोर आदेश नहीं है। हाँ, अगर सच को समझ लेने के बाद वे बिना किसी शरीयत के कारण के तकफ़ीर की ओर मुड़ते हैं, तो उस समय कठोर आदेश होना आवश्यक है। इसके बाद फ़क़ीर के प्रवास के दौरान दोनों पक्ष फ़क़ीर के फैसले पर सहमत हुए और अल्लाह के अनुग्रह से उनके बीच मेल-मिलाप करा दिया गया। मैंने तब से अब तक सुलह को टूटते नहीं पाया, बल्कि हाल के दिनों में जब कुछ उपद्रवियों ने मौलवी अब्दुल रहीम साहब की तकफ़ीर का बेबुनियाद और निरर्थक शोर फिर से उठाया और मौलवी कंधारी का पुराना व्यर्थ विज्ञापन किसी वज़ीर-उद-दीन के नाम से दोबारा छपवाया, तो मौलवी अब्दुल रहीम साहब को फ़ितने (विद्रोह) को दूर करने के लिए यहाँ के फ़तवे की आवश्यकता हुई। उनसे तथ्यों के बारे में पूछा गया, जिसका उन्होंने 7 ज़िल-हिज्जा 1329 हिजरी को विस्तृत उत्तर भेजा। उस पत्र में ये शब्द भी मौजूद थे: "अहमदाबाद में आपके मुबारक क़दम कराची से रौनक अफ़रोज़ हुए थे और आपने मेरी और

मौलवी अलाउद्दीन साहब की सुलह कराई थी; तब से अब तक अल्लाह के अनुग्रह से सुलह है और वे मेरे अनुकूल हैं, इति (समाप्त)।" इसके बाद मेरा वही फ़तवा शेर मोहम्मद साहब ने छापा। मौलवी अब्दुल रहीम ने उसकी एक प्रति मुझे भेजी थी और उसमें से उन सभी पंक्तियों पर जो मौलवी अलाउद्दीन साहब के बारे में थीं, लाल स्याही से कलम फेर दी थी कि अब उनकी ज़रूरत नहीं है। मौलवी अलाउद्दीन साहब।

पेज 590/750

فتاوی رضویہ جلد ۲۹

دادی بی مورخہ ۲۵ جمادی الثانی ۱۳۳۰ ھ چہار شنبہ۔

الجواب: فقیر غفر لہ المولیٰ القدیر جب جمادی الاولیٰ ۱۳۲۴ھ میں بعد سفر مدینہ طیبہ کراچی آیا اور وہاں سے احباب احمد آباد لانے پر مصر ہوئے۔ یہاں میرے معظم دوست حامی سنت ماحی بدعت مولانا مولوی نذیر احمد صاحب مرحوم و مغفور کے دو معزز شاگردوں مولوی عبد الرحیم صاحب و مولوی علاؤ الدین صاحب سلمہما اللہ تعالیٰ میں نزاع تھی، دو فریق ہو رہے تھے۔ اور اس سے پہلے مولوی علاؤ الدین صاحب غریب خانہ پر تشریف لائے تھے اور ایک رسالہ پیش کیا جس میں مولوی عبد الرحیم صاحب پر سخت الزام قائم کرنے چاہے حتی کہ نوبت بہ تکفیر پہنچائی تھی، فقیر نے انہیں سمجھایا اور اس رسالہ کی اشاعت سے باز رکھا اور ان الزامات کی غلطی پر دوستانہ متنبہ کیا۔ الحمد للہ مولوی علاؤ الدین صاحب نے گزارشِ فقیر کو قبول کیا مگر باہم فریق بندی اس وقت تک تھی کہ فقیر حج سے واپس آیا اس وقت مولوی عبد الرحیم صاحب نے یہ سوال پیش کیا جس کا میں نے وہ جواب لکھا، وہ جواب میرا ہی ہے مگر اس وقت کی حالت سے متعلق تھا۔ میں نے اس جواب ہی میں بتا دیا تھا کہ مولوی علاؤ الدین صاحب نے مولوی عبد الرحیم صاحب کی تکفیر عنادانہ کی تھی بلکہ مسئلہ ان کی سمجھ میں یوں ہی آیا تھا جس سے انہوں نے بعد تفہیم فقیر رجوع کی تو ان پر کوئی حکم سخت نہیں، ہاں اگر وہ بعد اس کے کہ حق سمجھ لیے پھر بلا وجہ شرعی تکفیر کی طرف رجوع کریں تو اس وقت حکم سخت ہونا لازم ہے۔ اس کے بعد وہیں ایامِ اقامت فقیر میں فریقین فیصلہ فقیر پر راضی ہوئے اور بحمد اللہ تعالیٰ باہم صلح کرا دی گئی، میں نے اس وقت تک صلح شکن نہ پایا بلکہ قریب زمانہ میں جب کہ بعض فساد پسندوں نے تکفیر مولوی عبد الرحیم صاحب کا باطل و بے معنی غلغلہ پھر اٹھایا اور پرانا مہمل اشتہار مولوی

قندھاری نے دوبارہ کسی شخص وزیر الدین کے نام سے چھاپا، زاور مولوی عبد الرحیم صاحب کو دفع فتنہ کے لیے یہاں کے فتویٰ کی ضرورت ہوئی ہے اور اس پر ان سے واقعات پوچھے گئے جس کا مفصل جواب انہوں نے ہفتم ذی الحجہ ۱۳۲۹ھ کو بھیجا، اس خط میں بھی یہ لفظ موجود ہیں "احمد آباد میں آپ کے قدم مبارک کراچی سے رونق افروز ہوئے تھے اور آپ نے صلح بندی کی اور مولوی علاؤ الدین صاحب کی کرائی تھی، جب سے اب تک بحمد اللہ تعالیٰ صلح ہے وہ میرے موافق ہیں انتہیٰ بلفظہ"۔ اس کے بعد میرا وہی فتویٰ جواب شیر محمد صاحب نے چھاپا مولوی عبد الرحیم نے اس کی نقل مجھے بھیجی تھی اور اس میں سے اُن تمام سطروں پر کہ مولوی علاوہ الدین صاحب کے متعلق تھیں سُرخی سے قلم پھیر دیا کہ اب اُن کی ضرورت نہیں۔ مولوی علاؤ الدین صاحب

Fatawa Razawiyya, Volume 29

The letter that came to the humble servant (faqeer) also explicitly states that "we are still established on peace as before." Similarly, an even more recent kind letter from Janab Shah Sahib Wajihi Alavi mentions this. Thus, this humble servant cannot say what the need was for printing this fatwa and what benefit could come from it. In it, a harsh ruling on Maulvi Ala-ud-Din Sahib was conditional on the requirement that, God forbid, he should return to the practice of declaring a Muslim an infidel (takfir) after the clarification of the doubt. Since this condition is not met, there is no harm to Maulvi Ala-ud-Din Sahib from this fatwa, nor any benefit to the one who printed it. And if, God forbid, the condition were fulfilled, then its state is known to Allah. In short, this is a matter of religion, and in religion, there is no favoritism for anyone. Both gentlemen are my friends, and both are men of knowledge and students of the same teacher. I hope they will remain established on peace as before, as I have learned from the writings of both. Otherwise, whichever side breaches the agreement will surely deserve its legal ruling, whoever it may be. Both parties should keep this noble verse in mind.

"And say to My servants that they should say those words that are best. Indeed, Satan sows discord among them. Indeed, Satan is to man a clear enemy." (1) - Allah Almighty knows best. | And tell My servants to say that which is best, for surely Satan stirs up strife between them; surely Satan is an open enemy to man. And Allah Almighty knows best. (T)

Allah Almighty knows best.

Case 169: What do the scholars of religion and jurists of the firm Sharia say on this issue: Zaid states that Allah Almighty created the blessed light (noor) of the Pride of the World, the Sultan of Prophets (peace and blessings of Allah be upon him) from His own Personal Light, and that sacred light is eternal (qadeem). And Bakr states that by "blessed light" is meant the light of His Power, and that light is contingent (hadith).

And another issue: Zaid states that "Then he drew near and came down, so he was at a distance of two bow-lengths or even nearer" (2) - (Then that manifestation drew near, then descended fully, and there remained a distance of two hands between that manifestation and the Beloved, rather even less. T) - It refers to proximity to Allah Almighty, that in the noble Ascension (Me'raj), the Lord of the World (peace and blessings of Allah be upon him) became so close to Allah that the difference between

them was only the length of two bows. And this description is often mentioned in Milad-un-Nabi gatherings.

---

1. Al-Quran Al-Karim 17/53
2. Al-Quran Al-Karim 53/9

जो पत्र इस फ़क़ीर के नाम आया है, उसमें वे यह भी स्पष्ट करते हैं कि "हम अभी तक पूर्ववत सुलह (शांति) पर कायम हैं।" इसी तरह, जनाब शाह साहब वजीही अलवी के एक और भी ताज़ा कृपा-पत्र में यही उल्लेख है। फिर यह फ़क़ीर नहीं कह सकता कि इस फ़तवे को छापने की क्या आवश्यकता थी और इससे क्या लाभ हो सकता है। उसमें मौलवी अलाउद्दीन साहब पर सख्त हुक्म इस शर्त के साथ था कि वे शंका निवारण के बाद फिर से किसी मुसलमान को काफिर कहने (तकफीर) की ओर मुड़ें (अल्लाह की पनाह)। जब यह शर्त ही नहीं है, तो इस फ़तवे से न तो मौलवी अलाउद्दीन साहब को कोई हानि है और न ही छापने वाले को कोई लाभ। और अगर खुदा न करे कि शर्त पूरी हो जाए, तो उसका हाल अल्लाह ही जानता है। संक्षेप में, यह दीन का मामला है और दीन में किसी की कोई रियायत नहीं है। दोनों साहब मेरे मित्र हैं, दोनों विद्वान हैं और एक ही उस्ताद के शिष्य हैं। मुझे आशा है कि वे पूर्ववत शांति पर कायम रहेंगे, जैसा कि मुझे दोनों की लिखावट से पता चला है। अन्यथा, जिस ओर से भी समझौते का उल्लंघन होगा, वह निश्चित रूप से अपने कानूनी हुक्म का पात्र होगा, चाहे वह कोई भी हो। दोनों पक्ष इस पवित्र आयत को ध्यान में रखें।

"और मेरे बंदों से कह दो कि वे वह बात कहें जो सबसे अच्छी हो। बेशक शैतान उनके बीच फसाद डाल देता है। बेशक शैतान आदमी का खुला दुश्मन है।" (1) - अल्लाह तआला बेहतर जानता है। | और मेरे बंदों से कह दो कि वह बात कहें जो सबसे अच्छी हो, निस्संदेह शैतान उनके बीच फूट डाल देता है, बेशक शैतान मनुष्य का खुला शत्रु है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 169: धर्म के विद्वान और सुदृढ़ शरीयत के मुफ्ती इस मसले में क्या कहते हैं कि ज़ैद बयान करता है कि अल्लाह तआला ने 'फ़ख्र-ए-आलम सुल्तान-उल-अंबिया' (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के नूर-ए-मुबारक को अपने नूर-ए-ज़ाती (निजी प्रकाश) से पैदा किया, और वह नूर-ए-मुक़द्दस 'क़दीम' (अनादि) है। और बक्र बयान करता है कि नूर-ए-मुबारक से तात्पर्य अल्लाह की कुदरत का नूर है और वह नूर 'हादिस' (नश्वर/नया) है।

और एक अन्य मसला यह है कि ज़ैद बयान करता है कि "फिर वह करीब हुआ और उतर आया, तो दो कमानों का फासला रह गया या उससे भी कम।" (2) - (फिर वह जलवा करीब हुआ, फिर खूब नीचे उतर आया और उस जलवे और महबूब के बीच दो हाथों का फासला रहा, बल्कि उससे भी

कम। त) - इससे तात्पर्य अल्लाह तआला की समीपता से है कि मेराज शरीफ में 'सरवर-ए-आलम' (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) अल्लाह के इतने करीब हुए कि बीच में केवल दो कमानों का फर्क रह गया। और अक्सर यह बयान मिलाद शरीफ की महफ़िलों में ज़िक्र होता है।

---

1. अल-कुरान अल-करीम 17/53
2. अल-कुरान अल-करीम 53/9

کا جو خط فقیر کے نام آیا اس میں وہ بھی تصریح کرتے ہیں کہ ہم اس وقت تک بدستور صلح پر قائم ہیں۔ یوں ہی اس سے بھی تازہ تر عنایت نامہ جناب شاہ صاحب وجیہی علوی میں ہے، پھر فقیر نہیں کہہ سکتا کہ اس فتوے کے چھاپنے کی کیا ضرورت ہوئی اور اس سے کیا نفع ہو سکتا ہے، اس میں تو مولوی علاؤ الدین صاحب پر حکم سخت ہونا اس شرط سے مشروط تھا کہ وہ بعدِ کشفِ شبہ تکفیرِ مسلم کی طرف معاذ اللہ پھر عود کریں، جب یہ شرط نہیں تو ہرگز اس فتوے سے نہ مولوی علاؤ الدین صاحب کو ضرر نہ چھاپنے والے کو نفع، اور خدانخواستہ شرط متحقق ہوئی تو اس کا حال اللہ جانتا ہے۔ بالجملہ یہ امر دین ہے اور دین میں کسی کی رعایت نہیں۔ دونوں صاحب میرے دوست ہیں اور دونوں صاحب ذی علم اور ایک استاد کے شاگرد ہیں، میں امید کرتا ہوں کہ بدستور صلح پر قائم ہوں گے جیسا کہ دونوں صاحبوں کی تحریر سے مجھے معلوم ہوا، ورنہ جس طرف سے نقضِ عہد واقع ہو وہ ضرور اپنے حکم شرعی کا مستحق ہو گا کائنا من کان (جو کوئی بھی ہو ،ت) فریقین اس آیہ کریمہ کو پیش نظر رکھیں۔

"وَقُلْ لِّعِبَادِیْ یَقُوْلُوا الَّتِیْ ھِیَ اَحْسَنُ ؕ اِنَّ الشَّیْطٰنَ یَنْزَغُ بَیْنَھُمْ ؕ اِنَّ الشَّیْطٰنَ کَانَ لِلْاِنْسَانِ عَدُوًّا مُّبِیْنًا " 1- واللہ تعالٰی اعلم۔ | اور میرے بندوں سے فرمادو وہ بات کہیں جو سب سے اچھی ہو، بے شک شیطان ان کے درمیان فساد ڈال دیتا ہے، بے شک شیطان آدمی کا کھلا دشمن ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت)

تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۱۶۹: کیا فرماتے ہیں علمائے دین ومفتیانِ شرع متین اس مسئلہ میں کہ زید بیان کرتا ہے کہ فخر عالم سلطان الانبیاء صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے نورِ مبارک کو اللہ تعالیٰ نے اپنے نورِ ذاتی سے پیدا کیا، اور وہ نورِ مقدس قدیم ہے۔ اور بکر بیان کرتا ہے اپنے نورِ مبارک سے مراد نورِ قدرت اس کی کا ہے اور وہ نور حادث ہے۔

اور مسئلہ دیگر یہ کہ زید بیان کرتا ہے کہ "ثُمَّ دَنَا فَتَدَلّٰی ۙ﴿۸﴾ فَكَانَ قَابَ قَوْسَيْنِ اَوْ اَدْنٰی ۚ﴿۹﴾" 2- (پھر وہ جلوہ نزدیک ہوا پھر خوب اتر آیا اور اس جلوے اور محبوب میں دو ہاتھ کا فاصلہ رہا بلکہ اس سے بھی کم۔ت) سے مراد قرب اللہ تعالیٰ کا ہے کہ معراج شریف میں سرورِ عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم اتنے قریب ہوئے اللہ سے کہ درمیان فرق دو کمان کا رہ گیا۔ اور اکثر یہ بیان مولود شریف میں ذکر ہوتا ہے۔

---

1 القرآن الکریم ۱۷/ ۵۳ 2 القرآن الکریم ۵۳/ ۹

Fatawa Rizwia - Volume 29

...and Bujar states that this 'being near' refers to the beloved Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) being at that station in relation to Gabriel (peace be upon him), and not to Allah the Almighty. Give your verdict and be rewarded. (Give your statement, you will be given a reward)

Answer: It is obligatory for the common Muslims to correct their prayers, fasting, wudu (ablution), ghusl (bath), and recitation, for which they will be questioned and held accountable on the Day of Judgment. Meddling in matters beyond one's status, brewing schemes, and expressing opinions is the gateway to misguidance. Seeking refuge in Allah Almighty, and Allah Almighty knows best.

Problem 170 to 179: From Lahore, Anjuman Numaniyah, sent by Maulana Shah Muharram Ali Sahib Chishti, Vice President of the Anjuman, 15 Jumadi al-Akhra 1330 AH.

My respected master, Hazrat Maulana Sahib (may Allah continue your blessings), after the gift of the Islamic greeting (Salam), it is submitted that your registered letter arrived. Maulana Maulvi Haji Khalifah Tajuddin Ahmad Sahib brought that honorific letter to my humble home. Although the health of Hazrat Maulana Muhammad Ikramuddin Sahib Bukhari has been very poor for fifteen to twenty days, he was troubled at that time, and he too came. At the time of writing this petition, two gentlemen are present at my humble home. The unparalleled and authoritative fatwa (Footnote) that you have penned with such enlightened conscience and spiritual assistance in such haste with clear texts (nusoos) - seeing it, both my companions present at this time are in a state of ecstasy and are repeatedly reciting 'O Allah! Bless their lives, fortune, greatness, high status, and faith in both worlds.' I have not yet had the opportunity for a thorough study because both gentlemen have made it a 'protection of life' (amulet) and are insisting on keeping it with them for two days. Now, may your Excellency kindly also state the answers to my questions.

(1) Was the mistake made by those who gave the fatwa in this matter very obvious and manifest, or is it a very subtle kind of mistake where even top-tier scholars can fall into delusion? (2) To what extent should one blindly trust the authoritative scholars of Bareilly, Badaun, Pilibhit, etc., and those who have benefited from them? This question is on behalf of those poor Hanafi Muslims.

Footnote: i.e., the fatwa named "Al-Jali al-Hasan fi Hurmat Walad Akhi al-Laban" which is in the Book of Marriage. This treatise is on page 748 of Volume 11 of Fatawa Rizwia published by Raza Foundation Lahore.

फ़तावा रिज़विया - खंड 29

...और बुजर बयान करता है कि यह 'निकट होना' रसूल-ए-मक़बूल (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) का इस स्थान पर जिब्रईल (अ़लैहिस्सलाम) से मुराद है, न कि अल्लाह तआ़ला से। बयान फ़रमाएं और सवाब पायें। (बयान फ़रमाइए, आपको अजर दिया जाएगा)

उत्तर: आम मुसलमानों के लिए नमाज़, रोज़े, वज़ू, ग़ुस्ल, क़िरात (क़ुरआन पाठ) की शुद्धि अनिवार्य (फ़र्ज़) है, जिसके बारे में क़ियामत के दिन उनसे सवाल और जवाब होगा। अपनी हैसियत से ऊँची बातों में टाँग अड़ाना, खिचड़ी पकाना और अपनी राय थोपना गुमराह होने का दरवाज़ा है। अल्लाह तआ़ला की पनाह मांगता हूँ और अल्लाह तआ़ला बेहतर जानता है।

मसला 170 से 179: लाहौर से, अंजुमन नोमानिया, मौलाना शाह मुहर्रम अली साहब चिश्ती, उपाध्यक्ष अंजुमन द्वारा प्रेषित, 15 जमादी-उल-उखरा 1330 हिजरी।

मेरे सम्मानित गुरुवर हज़रत मौलाना साहब (अल्लाह आपकी कृपा जारी रखे), इस्लामी सलाम के उपहार के बाद निवेदन है कि आपका पंजीकृत पत्र प्राप्त हुआ। मौलाना मौलवी हाजी ख़लीफ़ा ताज-उद-दीन अहमद साहब वह सम्मानजनक पत्र लेकर मेरे ग़रीब खाने (घर) पर तशरीफ़ लाए। हालाँकि हज़रत मौलाना मोहम्मद इकराम-उद-दीन साहब बुखारी की तबीयत पिछले पंद्रह-बीस दिनों से काफ़ी ख़राब है, फिर भी उन्हें उस समय कष्ट दिया गया और वे भी तशरीफ़ लाए। इस अर्ज़ी को लिखते समय मेरे घर पर दो सज्जन मौजूद हैं। आपने जिस रौशन ज़मीरी और रूहानी मदद से इतनी जल्दी स्पष्ट प्रमाणों (नुसूस) के साथ ऐसा बेमिसाल और विश्वसनीय फ़तवा (पादलेख) लिखा है, उसे देखकर मेरे दोनों साथी इस समय वज्द (आध्यात्मिक परमानंद) की स्थिति में हैं और बार-बार 'ऐ अल्लाह! उनकी उम्र, भाग्य, महानता, उच्च प्रतिष्ठा और ईमान में दोनों दुनियाओं में बरकत अता फ़रमा' का विर्द (जप) कर रहे हैं। मुझे अभी तक विस्तार से पढ़ने का अवसर नहीं मिला क्योंकि उन दोनों हज़रात ने इसे अपनी 'जान की सुरक्षा' (तावीज़) बना लिया है और दो दिनों तक अपने पास रखने की ज़िद कर रहे हैं। अब आप महोदय कृपया मेरे सवालों के जवाब भी दें।

(1) क्या इस मसले में फ़तवा देने वालों से जो ग़लती हुई है, वह बहुत स्पष्ट और साफ़ है या वह कोई बहुत बारीक प्रकार की ग़लती है जिसमें उच्च स्तर के विद्वान भी भ्रमित हो सकते हैं? (2) बरेली, बदायूं और पीलीभीत आदि के विश्वसनीय विद्वानों और उनके शिष्यों पर किस हद तक आँखें बंद करके भरोसा करना चाहिए? यह सवाल उन बेचारे हनफ़ी मुसलमानों की ओर से है।

पादलेख: यानी फ़तवा जिसका नाम 'अल-जली अल-हसन फ़ी हुरमत वलद अखी अल-लबन' है, जो निकाह की किताब में है। यह रिसाला रज़ा फ़ाउंडेशन लाहौर द्वारा प्रकाशित फ़तावा रिज़विया के खंड 11 के पृष्ठ 748 पर है।

पृष्ठ 592/750

اور بجز بیان کرتا ہے کہ یہ قریب ہونا رسول مقبول صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کا اس مقام پر مراد جبرئیل علیہ السلام سے ہے نہ خدائے تعالٰی سے، بینوا توجروا۔ (بیان فرمائیے اجر دیئے جاؤ گے)

الجواب: عوام مسلمین کو نماز، روزے، وضو، غسل، قراءت کی تصحیح فرض ہے جس سے روز قیامت ان پر مطالبہ و مواخذہ ہوگا، اپنے مرتبہ سے اونچی باتوں میں کھچڑیاں جمانا اور کھچڑیاں پکانا اور رائیں لگانا گمراہی کا پھاٹک ہے۔ والعیاذ باللہ تعالٰی واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۱۷۰ اتا ۱۷۹: از لاہور، انجمن نعمانیہ مرسلہ مولانا شاہ محرم علی صاحب چشتی صدر ثانی انجمن ۱۵ جمادی الاخری ۱۳۳۰ھ

جناب مخدوم معظم من حضرت مولانا صاحب ادام اللہ فیوضکم، بعد ہدیہ سلام سنت الاسلام گزارش، والا نامہ رجسٹری شدہ پہنچا، مولانا مولوی حاجی خلیفہ تاج الدین احمد صاحب وہ افتخار نامہ لے کر غریب خانہ پر تشریف لائے باوجودیکہ حضرت مولانا محمد اکرام الدین صاحب بخاری کی طبیعت پندرہ بیس روز سے سخت ناساز ہے اسی وقت ان کو تکلیف دی گئی، اور وہ بھی تشریف لائے، عریضہ ہذا لکھنے کے وقت پر دو صاحبان غریب خانہ پر موجود ہیں، جناب نے جس روشن ضمیری اور امداد باطنی سے قلم برداشتہ اس قدر عجلت میں ایسا بے نظیر و مستند فتوٰی عہ بنصوص صریحہ رقم فرمایا ہے اس کو دیکھ کر میرے دونوں ہم جلیس حاضر وقت تاحال حالت وجد میں ہیں اور بار بار اللھم بارک فی عمرھم و اقبالھم و مجدھم و ایمانھم و علوشانھم فی الدارین (اے اللہ! ان کی عمر، بخت، بزرگی، بلند شان اور ایمان میں دونوں جہانوں میں برکت عطا فرمات) کا وظیفہ کر رہے ہیں۔ مجھے تا حال بغور مطالعہ کا موقع نہ ملا کیونکہ دونوں حضرات اس کو

حرزِ جاں بنائے ہوئے ہیں اور دو دن تک اپنے پاس رکھنے کا اصرار کر رہے ہیں۔ اب آنجناب براہ عنایت میرے سوالات کا جواب بھی ارشاد فرمائیں۔

(۱) کیا اس مسئلہ میں جو غلطی فتویٰ دینے والوں کو ہوئی وہ بہت کھلی اور فاش ہے یا بہت باریک قسم کی غلطی ہے جہاں اعلیٰ درجہ کے علماء بھی مغالطہ میں پڑھ سکتے ہیں؟ (۲) بریلی، بدایوں اور پیلی بھیت وغیرہ کے مستند علماء اور ان کے فیض یافتوں پر کس حد تک آنکھیں بند کر کے اعتماد کرنا چاہیے۔ یہ سوال ان بیچارے حنفی مسلمانوں کی طرف سے ہے۔

عہ: یعنی فتویٰ مسمّٰی بہ "الجلی الحسن فی حرمۃ ولد اخی اللبن" کہ کتاب النکاح میں ہے۔ یہ رسالہ فتاویٰ رضویہ مطبوعہ رضا فاؤنڈیشن لاہور کی جلد ۱۱ صفحہ ۷۴۸ پر ہے۔

Fatawa Rizvia, Volume 29

...who do not look towards me with eyes of knowledge, and they are many in number. (3) From where should we procure the materials for the scholars and teachers of our like-minded Hanif Hanafi madrasa? (4) That Anjuman No'mania has not yet attained such a special status in your service that at least your blessed published works be sent for the Anjuman's library, despite repeated written requests and verbal requests by Khalifa Tajuddin Ahmed Sahib himself, even though the Anjuman has always been ready to pay for them. If at the time of this Fatwa, the books "Saif al-Mustafa 'ala Adyan al-Iftira", "Naqd al-Bayan li-Hurmat Ibnat Akhi al-Laban", and "Kasir al-Safiyah al-Wahim" were present in the library, this humble servant would have taken them out and presented them to your service. (5) In your opinion, is there a need to create a collective center for Hanif Hanafis and strengthen them or not? If yes, what measures and means are in your mind for this? (6) What measures are in your noble mind to defend against the attacks of the 'La-Mazhabs' (those without a school of thought) in Punjab specifically, and misbelievers in general? (7) Regarding the beliefs of Hanafis, after a face-to-face discussion and agreement was reached with Maulana Maulvi Muhammad Hamid Raza Khan Sahib, the draft of 'Aqaid-e-Hanfiyah' (Hanafi Beliefs) was still not sent from your side. Compelled by its non-arrival, a draft was prepared here and sent to your service, but far from any revision, correction, or verification, even an acknowledgment of receipt was not granted. What is the real reason for this lack of attention? Now, the 'Aqaid-e-Hanfiyah' which we have published as per the consultation of scholars are sent for your service; they are also attached with this petition. If they are correct, please sign them for verification and return them, keeping the second extra copy with you. Otherwise, please return them after making corrections. (8) If there is a need for verbal debate with 'La-Mazhabs' or misbelievers, which scholars do you consider capable who, in addition to their ability, are also willing to bear the hardships of travel etc., purely for the sake of Allah?

फ़तावा रज़विया, जिल्द 29

...जो मेरी तरफ इल्म की आँखों से नहीं देखते और उनकी तादाद बहुत ज़्यादा है। (3) हमारे हम-अक़ीदा हनीफ़ हनफ़ियों के मदरसे के उलेमा और मुदर्रिसीन का मसाला (सामग्री) हमें कहाँ से मुहैया करना चाहिए? (4) यह कि अंजुमन नोमानिया को अब तक आपकी ख़िदमत में इस क़दर ख़ुसूसियत हासिल नहीं हुई कि कम से कम आपकी मुबारक छपी हुई तसानीफ़ (रचनाएं) अंजुमन के कुतुबख़ाने (लाइब्रेरी) के लिए, मुतवातिर (लगातार) तहरीरी तक़ाज़ों और ख़ुद जनाब ख़लीफ़ा ताजुद्दीन अहमद साहब के ज़बानी तक़ाज़ों के बावजूद, भेजी जाएँ हालाँकि अंजुमन उनकी क़ीमत अदा करने के लिए हमेशा तैयार रही है। अगर इस फ़तवे के वक़्त "सैफ़ुल मुस्तफ़ा अल अदयानिल इफ़्तिरा" और "नक़दुल बयान लिहुरमति इब्नति अख़िल लब्बान" और "कासिरुस सफ़ीहिल वाहिम" किताबें कुतुबख़ाने में मौजूद होतीं, तो यह ख़ाकसार उन्हें निकाल कर आपकी ख़िदमत में पेश कर देता। (5) क्या आपकी राय में हनीफ़ हनफ़ियों का मजमुई मरकज़ बनाने और उन्हें तक़वियत (मजबूती) देने की ज़रूरत है या नहीं? अगर है, तो इसके लिए आपकी सोच में क्या तदबीर (उपाय) और सामान हैं? (6) पंजाब में ख़ास तौर पर ला-मज़हबों और आम तौर पर बद-मज़हबों के हमलों के बचाव की क्या तदबीरें आपके मुबारक ख़याल में हैं? (7) अक़ाइदे हनफ़िया के मुताल्लिक़ जनाब मौलाना मौलवी मुहम्मद हामिद रज़ा खाँ साहब की ख़िदमत में रूबरू गुफ़्तगू होकर फ़ैसला होने के बाद भी, आपकी तरफ़ से अक़ाइदे हनफ़िया का मसौदा नहीं भेजा गया, और उसके न पहुँचने पर मजबूरन यहाँ से मसौदा तैयार करके आपकी ख़िदमत में भेजा गया, जिसकी कोई तरमीम (संशोधन) व इस्लाह (सुधार) या तस्दीक़ (सत्यापन) तो दरकिनार, उसकी रसीद भी अता नहीं हुई। इस कम तवज्जो (उपेक्षा) की असली वजह क्या है? अब अक़ाइदे हनफ़िया जो उलेमा के मशवरे के मुताबिक़ हम लोगों ने प्रकाशित किए हैं, आपकी सेवा में भेजे जा रहे हैं; वे भी इस अर्ज़ी (प्रार्थना पत्र) के साथ जुड़े हुए हैं। अगर वे सही हैं, तो उन पर दस्तख़त करके तस्दीक़ फरमा कर वापस कर दें, दूसरी अतिरिक्त प्रति अपने पास रखें, वरना सुधार करके वापस भेज दें। (8) अगर ला-मज़हबों या बद-मज़हबों के साथ ज़बानी बहस की ज़रूरत पड़े, तो आप किन-किन उलेमा को इस क़ाबिल समझते हैं जो काबिलियत के अलावा सफ़र की तकलीफ़ वगैरह भी सिर्फ़ अल्लाह के लिए उठाने को तैयार हों?

पेज 593/750

جو میری طرف علم کی آنکھیں نہیں رکھتے اور جن کی تعداد کثیر ہے۔ (۳) ہمارے ہم اعتقاد حنیف حنفیوں کے مدرسہ کے علماء ومدرسین کا مصالحہ ہمیں کہاں سے فراہم کرنا چاہیے۔ (۴) یہ کہ انجمن نعمانیہ کو تاحال جناب کی خدمت میں اس قدر خصوصیت حاصل نہیں ہوئی کہ کم از کم آنجناب کی تصانیف مبارکہ طبع شدہ انجمن کے کتب خانے کے لیے باوجود متواتر تحریری تقاضوں اور خود جناب خلیفہ تاج الدین احمد صاحب کی زبانی تقاضوں کے بھی ارسال کی جائیں حالانکہ انجمن ان کا ہدیہ ادا کرنے پر بھی ہمیشہ تیار رہی ہے۔ اگر اس فتویٰ کے وقت "سیف المصطفیٰ علی ادیان الافتراء" و "نقد البیان لحرمۃ ابنۃ اخی اللبان" اور "کاسر السفیہ الواہم" کتب خانہ میں موجود ہوتیں تو یہی خاکسار ان کو نکال کے۔۔۔۔۔ کی خدمت میں پیش کردیتا۔ (۵) کیا جناب کی رائے میں حنیف حنفیوں کا مجموعی مرکز بنانے اور ان کو تقویت دینے کی ضرورت ہے یا نہیں، اگر ہے تو اس کی کیا تدبیر اور سامان جناب کے خیال میں ہیں؟ (۶) لامذہبوں کے پنجاب میں بالخصوص اور بد مذہبوں کے بالعموم حملوں کی مدافعت کی کیا تدابیر جناب کے خیال مبارک میں ہیں؟ (۷) عقائد حنفیہ کے متعلق جناب مولانا مولوی محمد حامد رضا خاں صاحب کی خدمت میں بالمشافہ گفتگو ہو کر قرار داد ہونے کے بعد بھی مسودہ عقائد حنفیہ آنجناب کی طرف سے نہ بھیجا، اور اس کے نہ پہنچنے پر مجبوراً یہاں سے مسودہ تیار کرکے آنجناب کی خدمت میں بھیجا گیا جس کی کوئی ترمیم واصلاح یا تصدیق تو درکنار اس کی رسید بھی مرحمت نہ ہوئی۔ اس کم توجہی کی اصل وجہ کیا ہے؟ اب عقائد حنفیہ جو حسب مشورہ علماء ہم لوگوں نے شائع کیے ہیں ارسال خدمت ہیں وہ بھی اس عریضہ کے ساتھ منسلک ہیں، اگر وہ صحیح ہیں تو اس پر دستخط تصدیق فرما کر واپس فرمائیں، دوسری زائد کاپی اپنے پاس رکھیں، ورنہ اصلاح فرما کر واپس فرمائیں۔ (۸)

لامذہبوں یا بد مذہبوں کے ساتھ اگر زبانی مباحثہ کی ضرورت پڑے تو آنجناب کون کون سے علماء کو اس قابل سمجھتے ہیں جو علاوہ قابلیت کے تکلیف سفر وغیرہ بھی خالصاً للہ اٹھانے کے لیے آمادہ ہوں۔

Fatawa Rizvia Volume 29

(9) Why has a list of Islamic scholars who are completely like-minded and authentic, along with their full addresses, not yet reached the service of Hazrat Maulana Maulvi Muhammad Hamid Raza Khan Sahib, despite requests? And how soon can it be provided?

(10) Despite the Anjuman-e-Nu'maniya being well-known across India for its association with you, and the members of the Anjuman having such heartfelt sincerity and devotion, why has no special attention from friends towards it become apparent? What are the reasons behind this? If there are matters in the Anjuman that need reform, what are they?

The Answer:

(1) Looking at the present times, this mistake, in a very subtle and deep matter, should be considered of the nature of an error in 'Takfir' (declaring someone an infidel), which was made by the distinguished student of Maulvi Ishaq Sahib Dehlavi, Maulvi Alam Sahib Muradabadi. Then, the Sheikh-ul-Kull of the non-conformists (Ghair-Muqallids), the Mujtahid of the era, Nazir Hussain Sahib, made the same mistake. Then, a claimant, 'Ana wala ghair' (I and no one else), Maulvi Bardwani Sahib, made it and wrote a lengthy treatise, in his own estimation, in its proof. Then, in recent times, it caught these gentlemen too. But looking at the reality, it is a very open, glaring mistake among our Sunni knowledgeable personalities, which has only that answer which Hazrat Syed-ut-Taifa Junaid Baghdadi (may Allah be pleased with him) gave when he was asked: "Can a gnostic (Arif) commit adultery?" (Ayuzni al-Arif). He remained with his head bowed for a long time, then raised his head and said: "And the command of Allah is a decree determined." (Al-Ahzab 33:38). (The command of Allah must come to pass). Since when destiny arrives, the physician becomes a fool; when fate comes, sight is blinded, and when the divine decree arrives, the vast space becomes narrow. (When the command of destiny comes, the eye becomes blind, and at the time of the Lord's command, the atmosphere becomes constricted). We ask Allah for forgiveness and well-being. Indeed, to Allah we belong and to Him we shall return. There is no protector today except for him on whom He has mercy. (We seek forgiveness and safety from Allah Almighty; undoubtedly we belong to Allah Almighty and are to return to Him; today only he will be saved upon whom Allah Almighty shows mercy). There is no might nor power except with Allah, the Most High, the Most Great (There is no power to avoid sin nor power to do good except by

the grace of the Exalted and Great Worshiped One). Maulana, keeping this false fatwa alive is not right at all.

---

[1] The Holy Quran 33/38

फ़तावा रिज़विया खंड 29

(9) उन इस्लामी विद्वानों की सूची जो आपके विचारों के पूरी तरह अनुकूल और विश्वसनीय हों, उनके पूरे पते के साथ, अब तक मौलाना मौलवी मुहम्मद हामिद रज़ा खान साहब की सेवा में प्रस्तुत करने के अनुरोध के बावजूद क्यों नहीं पहुँची, और वे कब तक उपलब्ध हो सकती हैं?

(10) अंजुमन-ए-नुमानिया का आपके साथ पूरे भारत में विशेष रूप से प्रसिद्ध होने और अंजुमन के सदस्यों का आपके प्रति ऐसा हार्दिक निष्ठा और श्रद्धा होने के बावजूद, मित्रों की ओर से इसके प्रति किसी विशेष ध्यान का प्रकट न होना किन कारणों पर आधारित है? यदि अंजुमन में कुछ बातें सुधार के योग्य हैं, तो वे क्या हैं?

उत्तर:

(1) वर्तमान समय को देखते हुए, यह गलती बहुत ही सूक्ष्म और गहरी बात में 'ख़ता फ़िल कुफ़्र' (कुफ़्र के निर्णय में गलती) की श्रेणी में होनी चाहिए, जो मौलवी इसहाक साहब देहलवी के योग्य शिष्य मौलवी आलम साहब मुरादाबादी ने की थी। फिर ग़ैर-मुक़ल्लिदों के शेख-उल-कुल्ल, युग के मुजतहिद नज़ीर हुसैन साहब ने की। फिर एक दावेदार 'अना वला ग़ैर' (मैं और कोई नहीं) मौलवी बर्द्वानी साहब ने की और अपने विचार में इसे सिद्ध करने के लिए एक लंबा लेख लिखा। फिर वर्तमान समय में इन हज़रत को भी आड़े आई। लेकिन वास्तव में यह हमारे सुन्नी विद्वानों में एक बहुत ही स्पष्ट और खुली हुई गलती है, जिसका वही उत्तर है जो हज़रत सैयदुत-ताइफ़ा जुनैद बग़दादी रज़ियल्लाहु अन्हु ने दिया था जब उनसे प्रश्न किया गया: "क्या आरिफ़ (ज्ञानी) व्यभिचार कर सकता है?" (अयज़नी अल-आरिफ़)। उन्होंने काफी समय तक सिर झुकाए रखा, फिर सिर उठाकर फ़रमाया: "और अल्लाह का हुक्म तयशुदा फैसला है।" (कुरआन 33:38)। (अल्लाह का हुक्म तो होकर रहेगा)। चूँकि जब भाग्य आता है तो हकीम मूर्ख हो जाता है; जब तक़दीर आती है तो दृष्टि अंधी हो जाती है और जब दैवीय आदेश आता है तो विशाल स्थान संकुचित हो जाता है। (भाग्य का आदेश आता है तो आँख अंधी हो जाती है और रब्बानी हुक्म के समय वातावरण तंग हो जाता है)। हम अल्लाह से माफ़ी और सलामती माँगते हैं। बेशक हम अल्लाह के लिए हैं और उसी की ओर लौटने वाले हैं। आज उसके सिवा कोई बचाने वाला नहीं जिस पर वह दया करे। (हम अल्लाह तआला से दरगुज़र और सलामती तलब करते हैं, निस्संदेह हम अल्लाह तआला की संपत्ति हैं और उसी की तरफ़ लौटने वाले हैं; आज वही बचेगा जिस पर अल्लाह तआला रहम फ़रमाए)। न गुनाह से बचने की शक्ति है और न ही नेकी

करने की ताक़त, मगर बुलंद और अज़मत वाले माबूद (ईश्वर) की तौफ़ीक़ से। मौलाना, इस बातिल (झूठे) फ़तवे को बनाए रखना हरगिज़ ठीक नहीं।

---

[1] अल-क़ुरआन उल-करीम 33/38

(۹) ایک فہرست ایسے علماء اسلام کی جو بالکل آپ کے ہم خیال اور مستند ہوں، مع ان کے پورے پتے کے کس لیے تاحال باوجود جناب مولانا مولوی محمد حامد رضا خان صاحب کی خدمت میں گزارش کرنے کے نہیں پہنچی، اور کب تک وہ بہم پہنچ سکتی ہے؟

(۱۰) باوجود انجمن نعمانیہ کی آنجناب کے ساتھ تمام ہندوستان میں خصوصیات مشہور ہو جانے اور اراکین انجمن کو آنجناب کے ساتھ ایسا دلی خلوص اور نیاز ہونے کے احباب کی طرف سے کسی خاص التفات کا اس کی نسبت ظاہر نہ ہونا کون سی وجوہات پر مبنی ہے، اگر انجمن میں کوئی امور قابل اصلاح ہیں تو وہ کیا ہیں۔

الجواب:

(۱) نظر بحال زمانہ تو یہ غلطی نہایت دقیق و عمیق بات میں خطا فی الکفر کے قبیل سے ہونی چاہیے کہ مولوی اسحق صاحب دہلوی کے شاگرد رشید مولوی عالم صاحب مراد آبادی نے کھائی۔ پھر غیر مقلدوں کے شیخ الکل فی الکل مجتہد العصر نذیر حسین صاحب نے کھائی، پھر ایک مدعی، انا ولا غیر مولوی بردوانی صاحب نے کھائی اور ایک طویل تحریر بزعم خود اس کے اثبات میں لکھی، پھر زمانہ حال میں ان حضرات کے آڑے آئی۔ مگر نظر بواقع وہ بہت کھلی فاحش جبیں میں ہمارے سنی ذی علم حضرات کا وقوع صرف وہی جواب رکھتا ہے جو حضرت سید الطائفہ جنید بغدادی رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے فرمایا جب کہ اس جناب سے سوال ہوا: أیزنی العارف (کیا عارف زنا کر سکتا ہے؟ ت) دیر تک سر بگریباں رہے، پھر سر اٹھا کر فرمایا: "وَ کَانَ أَمْرُ اللّٰہِ قَدَرًا مَّقْدُوْرًا" ۱۔ (اللہ تعالیٰ کا حکم تو ہو کر رہے گا) چونکہ قضا آید طبیب ابلہ شود اذا جاء القدر

عمی البصر واذا جاء القضاء ضاق الفضاء (حکم تقدیر آتا ہے تو آنکھ اندھی ہو جاتی ہے اور حکم ربانی کے وقت فضا تنگ ہو جاتی ہے) نسأل اللہ العفو والعافیۃ۔ انا للہ وانا الیہ راجعون لا عاصم الیوم الامن رحم ربی۔ ہم اللہ تعالیٰ سے درگزر اور سلامتی طلب کرتے ہیں، بے شک ہم اللہ تعالیٰ کا مال ہیں اور اس کی طرف لوٹنے والے ہیں آج وہی بچے گا جس پر اللہ تعالیٰ رحم فرمائے۔ ت) لا حول ولا قوۃ الا باللہ العلی العظیم (نہ گناہ سے بچنے کی طاقت ہے اور نہ نیکی کرنے کی قوت مگر بلندی اور عظمت والے معبود کی توفیق سے۔ ت) مولانا اس فتوئ باطلہ کا ابقاء ہر گز ٹھیک نہیں۔

---

۱ القرآن الکریم ۳۳/ ۳۸

Fatawa Razawiyyah, Volume 29

The elimination and destruction of falsehood are required, not its preservation and sustenance. Publicizing the falsehoods that fall outside the established tenets of religion originating from misguided innovators is a matter of Shariah interest, so that Muslims lose their trust in them and do not follow them in their misguidance. It is stated in a noble Hadith:

Arabic	English
Do you abstain from mentioning the wrongdoing of a wicked person? When will people recognize him? Mention the wickedness present in a wicked person so that people may beware of him. - 1	اترغبون عن ذكر الفاجر متى يعرفه الناس اذكروا للفاجر بما فيه يحذره الناس

And if, by divine decree, a grave slip occurs from among the Ahl-us-Sunnah, it is obligatory to conceal it, because—God forbid—if people lose faith in them, the benefit that reached Islam and the Sunnah through their speech and writing would be disrupted. Publicizing such a slip is the dissemination of indecency (fuhsh). And the dissemination of indecency is forbidden (haram) by the clear text of the Great Quran. Allah Almighty says:

Arabic	English
"Indeed, those who like that immorality should be spread among those who have believed will have a painful punishment in this world and the hereafter." - 2	اِنَّ الَّذِیْنَ یُحِبُّوْنَ اَنْ تَشِیْعَ الْفَاحِشَةُ فِی الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا لَهُمْ عَذَابٌ اَلِیْمٌ فِی الدُّنْیَا وَالْاٰخِرَةِ

Especially when those servants of God have already returned to the truth without any excuse or hesitation. The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says:

Arabic	English
Whoever shames his brother for a sin will not die until he himself commits that sin. - 3	من عير اخاه بذنب لم يمت حتى يعمله

Ibn al-Mani' and others say that this refers to a sin for which repentance has been made. I say that this condition of repentance is mentioned in the narration as found in 'Shara'at al-Islam' and then in 'Al-Hadiqa al-Nadiyya'.

1. Nawadir al-Usul, regarding mentioning a wicked person for caution, Dar Sadir Beirut, p. 213.

2. The Holy Quran, 24:19.
3. Jami' at-Tirmidhi, Chapters on the Description of the Day of Judgment, Chapter from it, Amin Company Delhi, 2/73.
4. Sharh Shara'at al-Islam, Section on the Sunnahs of Speech and its Etiquette, Maktaba Islamia Quetta, p. 333.

फतावा रज़विया, खंड 29

असत्य (बातिल) का विनाश और अंत आवश्यक है, न कि उसका संरक्षण और रखरखाव। गुमराह नवप्रवर्तकों (बद-मज़हबों) से उत्पन्न होने वाली असत्य बातें जो धर्म के स्थापित मसलों से बाहर हों, उनका प्रचार करना शरीयत के हित में है ताकि मुसलमानों का उन पर से विश्वास उठ जाए और वे उनके गुमराह रास्तों पर न चलें। एक महान हदीस में है:

अरबी	हिंदी
क्या तुम एक दुष्ट (फाजिर) की बुराइयों का उल्लेख करने से बचते हो? लोग उसे कब पहचानेंगे? दुष्ट में जो बुराइयां हैं उनका उल्लेख करो ताकि लोग उससे सावधान रहें। - 1	اترغبون عن ذكر الفاجر متى يعرفه الناس اذكروا للفاجر بما فيه يحذره الناس

और यदि, ईश्वर की इच्छा से, अहले सुन्नत के बीच किसी से कोई गंभीर भूल हो जाए, तो उसे छिपाना अनिवार्य (वाजिब) है, क्योंकि—ईश्वर न करे—यदि लोग उनसे विश्वास खो देंगे, तो उनके भाषण और लेखन के माध्यम से इस्लाम और सुन्नत को जो लाभ पहुँचता था, उसमें बाधा आएगी। ऐसी भूल का प्रचार करना अश्लीलता (फाहिशा) का प्रचार करना है। और अश्लीलता का प्रचार महान कुरान के स्पष्ट पाठ द्वारा हराम (वर्जित) है। अल्लाह सर्वशक्तिमान फरमाता है:

अरबी	हिंदी
"निस्संदेह, जो लोग यह पसंद करते हैं कि ईमान वालों के बीच अश्लीलता फैले, उनके लिए दुनिया और आखिरत में दर्दनाक सजा है।" - 2	اِنَّ الَّذِیْنَ یُحِبُّوْنَ اَنْ تَشِیْعَ الْفَاحِشَةُ فِی الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا لَهُمْ عَذَابٌ اَلِیْمٌ فِی الدُّنْیَا وَالْاٰخِرَةِ

विशेष रूप से तब जब ईश्वर के वे सेवक बिना किसी बहाने और हिचकिचाहट के सत्य की ओर लौट आए हों। अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) फरमाते हैं:

अरबी	हिंदी
जिसने अपने भाई को किसी पाप के कारण शर्मिंदा किया, वह तब तक नहीं मरेगा जब तक वह स्वयं वही पाप न कर ले। - 3	من عير اخاه بذنب لم يمت حتى يعمله

इब्न अल-मनिअ और अन्य कहते हैं कि इसका तात्पर्य उस पाप से है जिससे तौबा (तपस्या) कर ली गई हो। मैं कहता हूँ कि 'शरअतुल इस्लाम' और फिर 'अल-हदीक़तुल नदिया' की रिवायत में तौबा की शर्त लगी हुई है।

1. नवादिर अल-उसूल, दुष्ट का उल्लेख करने के बारे में ताकि सावधान रहा जा सके दार सादिर बेरुत, पृष्ठ 213।
2. पवित्र कुरान, 24:19।
3. जामिअ अत-तिर्मिज़ी, प्रलय के दिन के वर्णन पर अध्याय, अमीन कंपनी दिल्ली, 2/73।
4. शरह शरअतुल इस्लाम, बातचीत के सुन्नतों और उसके शिष्टाचार पर अनुभाग, मकतबा इस्लामिया क्वेटा, पृष्ठ 333।

باطل کا اعدام وافناء چاہیے نہ کہ تحفظ وابقاء بد مذہبوں گمراہوں سے جو اباطیل خارج از مسائل مذہب واقع ہوں ان کی اشاعت مصلحت شرعی ہے کہ مسلمانوں کا ان پر سے اعتبار اٹھے۔ ان کی ضلالات میں بھی اتباع نہ کریں۔ حدیث شریف میں ہے :

عربی	اردو
اترغبون عن ذکر الفاجر متی یعرفه الناس اذکروا للفاجر بما فیه یحذره الناس - 1	کیا فاجر کی برائیاں بیان کرنے سے پر ہیز کرتے ہو ، لوگ اسے کب پہچانیں گے ، فاجر میں جو برائیوں ہیں بیان کرو کہ لوگ اس سے حذر کریں۔

اور اہلسنت سے بتقدیر الہی جو ایسی لغزش فاحش واقع ہو اس کا اخفاء واجب ہے کہ معاذ اللہ لوگ ان سے بداعتقاد ہوں گے تو جو نفع ان کی تقریر اور تحریر سے اسلام و سنت کو پہنچتا تھا اس میں خلل واقع ہو گا۔ اس کی اشاعت اشاعت فاحشہ ہے۔ اور اشاعت فاحشہ بنص قرآن عظیم حرام ، قال اللہ تعالیٰ :

عربی	اردو
"اِنَّ الَّذِیْنَ یُحِبُّوْنَ اَنْ تَشِیْعَ الْفَاحِشَةُ فِی الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا لَهُمْ عَذَابٌ اَلِیْمٌ فِی الدُّنْیَا وَالْاٰخِرَةِ " 2	جو لوگ یہ پسند کرتے ہیں کہ مومنوں میں فاحشہ کی اشاعت ہو ان کے لیے دنیا اور آخرت میں دردناک عذاب ہے۔

خصوصاً جب کہ وہ بندگان خدا حق کی طرف بے کسی عذر و تامل کے رجوع فرما چکے۔ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں:

عربی	اردو
من عير اخاه بذنب لم يمت حتى يعمله 3-	جس نے اپنے بھائی کو کسی گناہ کی وجہ سے عار دلایا وہ مرنے سے قبل اسی گناہ میں ضرور مبتلا ہوگا۔

قال ابن المنيع وغيره المراد ذنب تاب عنه ، قلت وقد جاء كذا مقيد فى الرواية كما فى الشرعة 4 ثم فى الحديقة الندية - (ابن منیع وغیرہ کہتے ہیں کہ گناہ سے مراد وہ ہے کہ اس سے توبہ کر لی گئی ہو۔ میں کہتا ہوں شرعہ اور حدیقہ میں روایت میں توبہ کی قید لگی ہوئی ہے۔ت)

1 نوادر الاصول الاصل فی ذکر الفاجر بما فیہ للتحذیر منہ دار صادر بیروت ص ۲۱۳ 2 القرآن الکریم ۱۹/۲۴ 3 جامع الترمذی ابواب صفة القيمة باب منہ امین کمپنی دہلی ۲/۷۳ 4 شرح شرعة الاسلام فصل فی سنن الکلام و آدابہ مکتبہ اسلامیہ کوئٹہ ص ۳۳۳

Fatawa Razvia Volume 29

Therefore, with extreme emphasis, in matters where the prominent scholars of the Ahl-us-Sunnah wa al-Jama'ah are united, i.e., the well-known and prevalent beliefs, our general brothers should act upon their instructions without hesitation. Similarly, those subsidiary matters (furu'at) that have become a distinction between the Ahl-us-Sunnah and their opponents, such as blessed gatherings (Mawlid), Fateha, Urs, seeking help (Istimdad), calling upon (Nida), and the like. As for the remaining jurisprudential branch matters (furu'at-e-fiqhiya) in which they might differ, whether due to difference in narrations, or due to an error in thought, or due to haste and lack of deliberation, or due to less practice and engagement in jurisprudence (fiqh), what should this humble servant (faqir) say about them?

There is a burning in my heart; if I speak, my tongue burns. And if I remain silent, I fear the marrow of my bones will burn. (There is a burning in my heart; if I speak, the tongue burns, and if I keep quiet, there is fear that the marrow of the bones will burn, t)

Ah, ah, ah! In India, during my years of awareness, there were two servants of God in whom total reliance in all principles, branches, beliefs, and jurisprudence was permissible. First, the most sacred Hazrat Khatam-ul-Muhaqqiqin, our master and father, may his secret be sanctified. By God, not because he was my father, guardian, and benefactor, but because Truth is truth and I speak the truth; it is honesty, and Allah loves honesty. (t: This is the truth and I say the truth, this is truthfulness and Allah Almighty holds truthfulness dear. t) I experienced the practice of this truthful physician for years and saw that his peer was not found in the Arab or non-Arab world. That exalted presence, may his wondrous secret be sanctified, possessed the mastery of deriving branch rulings (furu') from Hanafi principles. Although he would not sometimes pronounce judgment on it, it would appear that no rare, delicate, or complex problem was presented whose trace was not in prevalent books, that this humble servant was not ordered to refer to books and extract the specific ruling (juz'iyya), and he would say, "Apparently, the ruling should be thus." What he said would be what came out, or if in some books the opposite was found, then extensive study clarified that preference was given in other books to what Hazrat had stated. You are already observing the state of the non-Arab world (Ajam). As for the state of the Arab world, this humble gleaner and gatherer of crumbs of that presence, may his secret be sanctified, who was present in Makkah al-Mukarramah this time, there, sessions of scholarly discussion with the most learned of scholars and those well-

versed in jurisprudence would last for six hours each. When they observed that this person knew a couple of letters of Hanafi jurisprudence, they began to present on the table many problems of the era of their fatwa-giving, in which there was disagreement or ambiguity among the scholars there. In whichever problem or ruling this humble one expressed agreement with them, signs of joy appeared on their luminous faces, and in whichever I submitted that in the opinion of the jurist (faqih) the ruling is contrary to it, before hearing the evidence, signs of sorrow became apparent and...

फतावा रज़विया जिल्द २९

इसलिए, अत्यंत बल देते हुए, जिन मामलों में अहल-ए-सुन्नत व जमात के प्रमुख और प्रसिद्ध विद्वान एकमत हैं, यानी प्रसिद्ध और प्रचलित अकीदे (विश्वास), उनमें हमारे आम भाइयों को बिना किसी हिचकिचाहट के उनके निर्देशों पर अमल करना चाहिए। इसी तरह वे गौण मामले (फुरआत) जो अहल-ए-सुन्नत और उनके विरोधियों के बीच पहचान बन गए हैं, जैसे महफ़िल-ए-पाक, फातिहा, उर्स, इस्तिम्दाद (मदद मांगना), निदा (पुकारना) और इसी तरह के अन्य। रही बात बाकी फिकही गौण मामलों (फुरआत-ए-फिकहिया) की, जिनमें वे मतभेद रख सकते हैं, चाहे वह रिवायतों (वर्णनों) के अंतर के कारण हो, या सोच में गलती के कारण, या जल्दबाजी और चिंतन की कमी के कारण, या फिकह में अभ्यास और अनुभव की कमी के कारण हो, उनमें यह फ़कीर (विनम्र सेवक) क्या अर्ज़ करे।

मरा सोज़ेस्त अंदर दिल अगर गोयम ज़बाँ सोज़द व गर्दम दर कशम तरसम कि मगज़े उस्तख़्वाँ सोज़द (मेरे दिल में एक जलन है, अगर कहता हूँ तो ज़बान जलती है। और अगर चुप रहता हूँ तो डर है कि हड्डियों का मगज़ जल जाएगा।)

आह आह आह! हिंदुस्तान में मेरे होश के ज़माने में खुदा के दो बंदे ऐसे थे जिन पर उसूल (सिद्धांत), फुरूअ (शाखाओं), अक़ायद (विश्वासों) और फिकह (धर्मशास्त्र) सब में पूर्ण विश्वास की अनुमति थी। पहले, अत्यंत पवित्र हज़रत खातमुल मोहक़्क़िक़ीन हमारे आका और वालिद (पिता) क़ुद्दस सिर्रहु, खुदा न करे इसलिए कि वे मेरे पिता और संरक्षक थे, बल्कि इसलिए कि सत्य सत्य है और मैं सत्य कहता हूँ, यह सच्चाई है और अल्लाह सच्चाई को पसंद करता है। (त: यह हक़ है और मैं हक़ कहता हूँ, यह सच्चाई है और अल्लाह तआला सच्चाई को प्रिय रखता है। त) मैंने वर्षों तक उस सच्चे हकीम (तबीब) का साथ पाया और देखा कि अरब और अजम (गैर-अरब) में उनका कोई सानी नहीं था। उस उच्च हस्ती क़ुद्दस सिर्रहु को हनफी उसूलों से फुरूअ (शाखाओं) के इस्तनबात (निष्कर्ष) का महारत हासिल थी। हालांकि कभी वे इस पर हुक्म नहीं फरमाते थे, लेकिन ऐसा ज़ाहिर होता था कि कोई ऐसा दुर्लभ, बारीक और जटिल मसला पेश नहीं हुआ जिसका प्रचलित पुस्तकों में पता न हो, और इस तुच्छ सेवक को पुस्तकों के अध्ययन और जुज़इय्या (विशिष्ट हुक्म) निकालने का आदेश न दिया गया हो, और आप फरमाते "ज़ाहिरन हुक्म ऐसा होना चाहिए"। जो वे फरमाते वही निकलता, या अगर कुछ किताबों में इसके विपरीत निकलता, तो विस्तृत अध्ययन ने स्पष्ट कर दिया कि दूसरी किताबों में उसी को प्राथमिकता दी गई थी जो हज़रत ने फरमाया था। अजम की स्थिति तो आप देख ही रहे हैं।

अरब का हाल यह है कि उस हस्ती का यह मामूली ज्ञान-प्राप्तकर्ता, जो इस बार मक्का मुअज़्ज़मा में हाज़िर हुआ, वहाँ के बड़े विद्वानों और फिकह के जानकारों के साथ छह-छह घंटे की इल्मी (शैक्षिक) चर्चा की महफिलें जमी रहतीं। जब उन्होंने देखा कि यह व्यक्ति हनफी फिकह के दो अक्षर जानता है, तो उन्होंने अपने ज़माने के इफ्ता (फतवा देने) के उन अनेक मसलों को मेज़ पर पेश करना शुरू किया जिनमें वहाँ के विद्वानों के बीच मतभेद या संदेह था। जिस मसले या हुक्म में इस तुच्छ सेवक ने उनसे सहमति व्यक्त की, उनके नूरानी चेहरों पर प्रसन्नता के लक्षण दिखाई दिए, और जिसमें मैंने अर्ज़ किया कि फकीह (धर्मशास्त्री) की राय में हुक्म इसके विपरीत है, दलील सुनने से पहले ही दुख के लक्षण दिखाई देने लगे और...

पृष्ठ ५९६/७५०

و لہذا ابتاکید اکید گزار علما و مشاہیر علمائے اہلسنت و جماعت جس امر میں متفق ہیں یعنی عقائد مشہورہ متداولہ ان میں ہمارے عام بھائی بلا دغدغہ ان کے ارشادات پر عامل ہوں۔ یوں ہی وہ فرعیات جو اہل سنت اور ان کے مخالفین میں مابہ الامتیاز ہو رہے ہیں جیسے مجلس مبارک و فاتحہ و عرس و استمداد و نداء و امثالہا باقی رہی ہیں فرعیات فقہیہ جن میں وہ مختلف ہو سکتے ہیں خواہ بسبب اختلاف روایات، خواہ بوجہ خطاء فی الفکر یا بسبب عجلت و قلت تدبر یا بوجہ کمی ممارست و مزاولت فقہ، ان میں فقیر کیا عرض کرے۔

مرا سوز یست اندر دل اگر گویم زباں سوزد و گردم در کشم ترسم کہ مغز استخواں سوزد (میرے دل میں جلن ہے اگر کہتا ہوں تو زبان جلتی ہے اور اگر چپ رہوں تو ڈر ہے کہ ہڈیوں کا مغز جل جائے گا، ت)

آہ آہ آہ! ہندوستان میں میرے زمانہ ہوش میں دو بندہ خدا تھے جن پر اصول و فروع و عقائد و فقہ سب میں اعتماد کلی کی اجازت تھی۔ اول اقدس حضرت خاتم المحققین سیدنا الوالد قدس سرہ الماجد حاش للہ نہ اس لیے کہ وہ میرے والد والی و ولی نعمت تھے بلکہ اس لیے کہ الحق و الحق اقول، الصدق واللہ یحب الصدق (یہ حق ہے اور میں حق کہتا ہوں، یہ صدق ہے اور اللہ تعالٰی صدق کو محبوب رکھتا ہے۔ ت) میں نے اس طبیب صادق کا برسوں مطب پایا اور وہ دیکھا کہ عرب و عجم میں جس کا نظیر نظر نہ آیا اس جناب رفیع قدس سرہ البدیع کو اصول حنفی سے استنباط فروع کا ملکہ حاصل تھا۔ اگرچہ کبھی اس پر حکم نہ فرماتے، مگر یوں ظاہر ہوتا تھا کہ نادر و دقیق و معضل مسئلہ پیش نہ ہوا کہ کتب متداولہ میں جس کا پتہ نہیں، خادم کمینہ کو مراجعت کتب و استخراج جزئیہ کا حکم ہوتا اور ارشاد فرماتے "ظاہراً حکم یوں ہونا چاہیے" جو وہ فرماتے وہی

نکلتا، یا بعض کتب میں اس کا خلاف نکلتا تو زیادتِ مطالعہ نے واضح کردیا کہ دیگر کتب میں ترجیح اسی کو دی جو حضرت نے ارشاد فرمایا تھا۔ عجم کی حالت تو آپ ملاحظہ ہی فرماتے ہیں۔ عرب کا حال یہ ہے کہ اس جناب قدس سرہ کا یہ ادنیٰ خوشہ چیں و زلہ رہا، جو مکہ معظمہ میں اس بار حاضر ہوا، وہاں کے اعلم العلماء واقفہ الفقہاء سے چھ چھ گھنٹے مذاکرہ علمیہ کی مجلس گرم رہتی، جب انہوں نے ملاحظہ فرمایا کہ یہ فقہ حنفی کے دو حرف جانتا ہے اپنے زمانہ کے عہد افتاء کے مسائل کثیرہ جن میں وہاں کے علماء سے اختلاف پڑا یا اشتباہ رہا، اس بیچ میز پر پیش فرمانا شروع کیے جس مسئلہ و حکم میں اس احقر نے ان کی موافقت عرض کی آثار بشاشت ان کے چہرہ نورانی پر ظاہر ہوئے اور جس میں عرض کردیا کہ فقیہ کی رائے میں حکم اس کے خلاف ہے، سماع دلیل سے پہلے آثار حزن نمایاں ہوئے اور

They would have thought that a slip occurred from us in this ruling; this is the blessing of following that skilled physician's footsteps (lit. dust of his shoes).

(2) Secondly, His Excellency Taj-ul-Fuhul, Lover of the Prophet, Maulana Maulvi Abdul Qadir Sahib Qadri Badayuni (may his noble secret be sanctified); this humble servant (faqir) had the company of this master for twenty-five years. After him, I have seen no one with such breadth of vision, power of memory, and refined research. After the setting of these two sun and moon, no one is seen in India regarding whom I can say with closed eyes that one should act upon his fatwa.

This humble servant specified the prominent and renowned scholars of Ahl-e-Sunnat in the answer, and the gentleman also asked about those who benefited from them; for receiving benefit, there is a wide submission. I cannot submit here even as much as I reported regarding the prominent figures.

Maulana! Do not take this humble servant's discourse on a disputed principle that the speaker is not included in his general speech. Heaven forbid, this humble servant is deficient, lacking, and a lowly seeker of knowledge, never established any rank of knowledge for myself even in a dream. And by the grace of Allah Almighty, apparently, this is the reason why Divine mercy supports me; I know my insignificance, therefore I tread very cautiously (lit. blow on every step). Mustafa (peace and blessings of Allah be upon him) helps me by his grace and pours the knowledge of truth upon me, and praise be to their Generous Lord, and eternal peace and blessings be upon them.

(3) For a teacher, it is sufficient to be knowledgeable, understanding, and a Sunni of sound belief; regarding the assessment of sound belief, a submission will be made in answer number seven. And if these people are not known themselves, they should be taken through the knowledge of the people of number nine, and it should be requested of them that the gentlemen should not act on any recommendation, flattery, or partiality, as the consultant is a trustee.

(4) Out of the humble servant's four hundred compositions, only a little over a hundred and twenty-five have been printed and distributed in thousands without charge, due to which whichever booklet was printed was soon exhausted. Some were printed three or four times. In Anjuman Nu'maniya, probably in Ramadan-ul-Mubarak 1320 AH, I personally presented all the booklets available at that time, and

an acknowledgment was also received from the Anjuman. Their list is no longer remembered by the humble servant; it is probably in the Anjuman's office. If it becomes known, the remaining booklets that were printed here and whose copies remain in the press would be offered to the Anjuman without charge most willingly (lit. with head and eyes). For two years, an association has taken control of the press, which has abolished the humble servant's method of extensive free distribution; nevertheless, for Anjuman Nu'maniya...

उन्होंने सोचा होगा कि हमसे इस हुक्म में कोई चूक हुई है; यह उसी कुशल हकीम की सेवा का ही सदका है।

(२) दूसरा, महामहिम ताज-उल-फुहूल, प्रेमी-ए-रसूल मौलाना मौलवी अब्दुल कादिर साहब कादरी बदायूंनी (अल्लाह उनके रहस्य को पवित्र रखे); इस फ़क़ीर (विनम्र सेवक) ने पच्चीस वर्षों तक उनकी संगति प्राप्त की। उनके बाद मुझे किसी में भी वैसा व्यापक दृष्टिकोण, याददाश्त की शक्ति और परिष्कृत शोध नज़र नहीं आया। इन दोनों सूरज और चाँद के डूबने के बाद भारत में ऐसा कोई नज़र नहीं आता जिसके बारे में मैं कहूँ कि आँखें बंद करके उसके फतवे पर अमल किया जाए।

फ़क़ीर ने जवाब में अहले सुन्नत के प्रमुख और प्रसिद्ध विद्वानों का विशेष उल्लेख किया और जनाब ने फ़ैज़ पाने वालों के बारे में भी पूछा है; फ़ैज़ के लिए एक व्यापक निवेदन है। मैं यहाँ उतना भी निवेदन नहीं कर सकता जितना उन प्रमुख हस्तियों के बारे में किया गया है।

मौलाना! फ़क़ीर की इस बात को सिद्धांतों के एक विवादास्पद मसले के उस कथन पर आधारित न समझें कि वक्ता अपनी सामान्य बातों में शामिल नहीं होता। खुदा न करे, फ़क़ीर तो एक अपूर्ण, अक्षम और मामूली छात्र है, कभी सपने में भी अपने लिए ज्ञान का कोई पद तय नहीं किया। और अल्लाह तआला के फज़ल से, ज़ाहिरी तौर पर यही एक कारण है कि ईश्वरीय दया मेरा हाथ थामती है, मैं अपनी असमर्थता जानता हूँ, इसलिए फूँक-फूँक कर कदम रखता हूँ, मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) अपने करम से मेरी मदद फरमाते हैं और मुझ पर हक़ का इल्म इफ़ाज़ा (प्रदान) फरमाते हैं, और उनके करीम रब की ही हम्द (प्रशंसा) है, और उन पर शाश्वत दुरूद व सलाम हो।

(३) एक शिक्षक के लिए जानकार, समझदार और सही अकीदे वाला सुन्नी होना ही काफी है; अकीदे की सत्यता की जाँच के बारे में सातवें जवाब में निवेदन किया जाएगा। और अगर ये लोग खुद प्रसिद्ध न हों, तो नौवें नंबर के लोगों के माध्यम से उनकी पहचान की जाए और उनसे निवेदन किया जाए कि ये हज़रात किसी सिफारिश, चापलूसी या पक्षपात पर काम न करें, क्योंकि 'परामर्शदाता विश्वसनीय होता है'।

(४) इस विनीत की चार सौ रचनाओं में से केवल सवा सौ से कुछ अधिक ही प्रकाशित हुई हैं और हज़ारों की संख्या में बिना किसी शुल्क के वितरित की गई हैं, जिसके कारण जो भी रिसाला

(पुस्तिका) छपा, वह जल्दी ही समाप्त हो गया। कुछ तो तीन-चार बार छपे। अंजुमन नुमानिया में शायद रमज़ान-उल-मुबारक १३२० हिजरी में मैंने उस समय तक की सभी उपलब्ध पुस्तिकाएं खुद पेश की थीं और अंजुमन से रसीद भी मिल गई थी। उनकी सूची अब फ़क़ीर को याद नहीं है, शायद अंजुमन के दफ्तर में हो। अगर वह मिल जाए, तो शेष पुस्तिकाएं जो यहाँ छपीं और प्रेस में उनकी प्रतियां मौजूद हैं, वे अंजुमन को बिना किसी शुल्क के पूरे दिल से भेंट की जाएँगी। दो साल से प्रेस का नियंत्रण एक अंजुमन ने अपने हाथ में ले लिया है, जिसने फ़क़ीर के व्यापक मुफ्त वितरण के तरीके को समाप्त कर दिया है; फिर भी अंजुमन नुमानिया के लिए...

पेज 597/750

خیال فرمالیتے کہ ہم سے اس حکم میں لغزش واقع ہوئی یہ اسی طبیب حاذق کی کفش برادری کا صدقہ ہے۔

(۲) دوم والا حضرت تاج الفحول محب رسول مولانا مولوی عبدالقادر صاحب قادری بدایونی قدس سرہ الشریف، پچیس برس فقیر کو اس جناب سے بھی صحبت رہی ان کی سی وسعت نظر و قوت حفظ و تحقیق انیق ان کے بعد کسی میں نظر نہ آئی۔ ان دونوں آفتاب و ماہتاب کے غروب کے بعد ہندوستان میں کوئی ایسا نظر نہیں آتا جس کی نسبت عرض کروں کہ آنکھیں بند کر کے اس کے فتوے پر عمل ہو۔

فقیر نے جواب میں عمائد و مشاہیر علمائے اہلسنت کی تخصیص کی اور جناب نے فیض یافتوں سے بھی سوال فرمایا ہے فیض کے لیے عرض عریض ہے۔ میں یہاں مطلقاً اتنا بھی عرض نہیں کر سکتا جو حضرات عمائد کی نسبت گزارش کیا۔

مولانا! اس تقریر فقیر کو اصول کے ایک اختلافی مسئلہ میں اس قول پر محمول نہ فرمائیں کہ متکلم اپنے عمومی کلام میں داخل نہیں ہوتا۔ حاشا فقیر تو ایک ناقص، قاصر، ادنیٰ طالب علم ہے، کبھی خواب میں بھی اپنے لیے کوئی مرتبہ علم قائم نہ کیا۔ اور بحمدہ تعالیٰ بظاہر اسباب یہی ایک وجہ ہے کہ رحمت الٰہی میری دستگیری فرماتی ہے، میں اپنی بے بضاعتی جانتا ہوں، اس لیے پھونک پھونک کر قدم رکھتا ہوں، مصطفیٰ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم اپنے کرم سے میری مدد فرماتے ہیں اور مجھ پر علم حق کا افاضہ فرماتے ہیں، اور انہیں کے رب کریم کے لیے حمد ہے، اور ان پر ابدی صلوۃ والسلام۔

(۳) مدرس کے لیے ذی علم، ذی فہم، سنی صحیح العقیدہ ہونا کافی ہے صحت عقیدہ کی جانچ کی نسبت جواب نمبر ہفتم میں گزارش ہوگی۔ اور یہ لوگ خود معروف نہ ہوں تو اہالی نمبر نہم کی معرفت لیے جائیں اور ان سے عرض کی جائے کہ حضرات کسی سفارش، خوشامد، رعایت پر کاربندی نہ فرمائیں المستشار موتمن پر۔

(۴) نیاز مند کی چار سو تصانیف سے صرف کچھ اوپر سوا سو تک مطبوع ہوئیں اور ہزاروں کی تعداد میں بلا معاوضہ تقسیم ہوئیں جس کے سبب جو رسالہ چھپا جلد ختم ہوگیا۔ بعض تین تین چار بار چھپے۔ انجمن نعمانیہ میں غالباً رمضان المبارک ۱۳۲۰ھ میں اس وقت تک کے تمام موجودہ رسائل میں نے خود حاضر کیے ہیں اور انجمن سے رسید بھی آگئی۔ ان کی فہرست اب فقیر کو یاد نہیں، غالباً دفتر انجمن میں ہو۔ اگر وہ معلوم ہو جائے تو بقیہ رسائل جو ادھر چھپے اور مطبع میں ان کے نسخے رہے، بالراس والعین نذر انجمن بلا معاوضہ ہوں گے۔ دو برس سے عنانِ مطبع ایک انجمن نے اپنے ہاتھ میں لی ہے جس نے طریقہ فقیر تقسیم کثیر بلا عوض کو منسوخ کردیا پھر بھی انجمن نعمانیہ کے لیے

Even this association cannot refuse to present a gift. (5) There is definitely a need for a collective strength of the pure Ahl-e-Sunnat, but for that, three things are severely required: (1) Unity of the scholars, (2) Extraordinary endurance, (3) Unity of the wealthy for the sake of the Creator.

All these things are missing here, "Surely we belong to Allah and to Him shall we return." Our wealthy desire fame; they squander thousands in sin, rather, in manifest misguidance, they open the mouths of their treasuries. For the university, how quickly thirty lakhs were gathered! A woman gave fifty thousand to the Deoband seminary, but did any Sunni seminary ever see such a day? Firstly, they would panic at the very mention of supporting the religion and creed. Sir! These are just the squabbles of these clerics. And if out of sheer embarrassment they did fix some meager and petty donation, then:

"He will not return it to you unless you are constantly standing over him." — He will not return it to you unless you are riding on his head [demanding it]. (T)

Instead, if you make a demand, they get offended, and if you grant them slack, they fall asleep. On the other hand, our workers are unaware of those schemes and traps through which the Wahhabis—may Allah Almighty forsake them—deceive God's servants and extort money not only from their co-religionists but also from their fellow travelers. For this, ostentation, hypocrisy, craftiness, deception, shamelessness, and dishonor are necessary; these are neither in you nor does your Sharia permit them. Then tell me, how will the work proceed? Recently, a top-tier Wahhabi went to an influential Sufi to collect donations. He (the Sufi) said, "I have heard that you are an opponent of Ahmad Raza." He replied, "God forbid, I am but a dog of that very threshold," and by pretending it was for a book, he took away five hundred.

The condition of the scholars is such that they are more comfort-seeking than the wealthy; they are petrified by the name of religious advocacy. Any servant of God who dedicates his life to it is considered a fool, even a troublemaker. Compromise has set into their hearts. Experience was gained across India during the days of Nadwa. Upon hearing the passages from Nadwa, they would keep shouting "misguidance, misguidance." But when asked, "Venerable sir, please write it down," they would say, "Brother, do not make us write; our such-and-such friend will take offense."

[1] Al-Quran al-Kareem 3/75 Page 598 of 750

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

नज़राना पेश करने से यह अंजुमन भी इनकार नहीं कर सकती। (5) शुद्ध अहल-ए-सुन्नत की एक सामूहिक शक्ति की निश्चित रूप से आवश्यकता है, परन्तु इसके लिए तीन चीजों की अत्यधिक आवश्यकता है: (1) विद्वानों (उलेमा) की एकता, (2) असाधारण सहनशीलता, (3) रचयिता की प्रसन्नता हेतु धनवानों की एकता।

यहाँ ये सब बातें नदारद हैं, "निश्चित ही हम अल्लाह के लिए हैं और उसी की ओर हमें लौटकर जाना है।" हमारे धनवानों को प्रसिद्धि चाहिए; वे पाप में, बल्कि स्पष्ट पथभ्रष्टता में हज़ारों उड़ा देते हैं, अपने खज़ानों के मुँह खोल देते हैं। विश्वविद्यालय के लिए कितनी जल्दी तीस लाख एकत्रित हो गए! देवबंद मदरसे को एक स्त्री ने पचास हज़ार दे दिए, परन्तु क्या किसी सुन्नी मदरसे को भी ऐसा दिन नसीब हुआ? पहली बात तो यह है कि वे धर्म और सम्प्रदाय के समर्थन के नाम से ही घबरा जाएँगे। साहब! ये तो इन मौलवियों के झगड़े हैं। और यदि लोक-लाज के कारण उन्होंने कुछ अत्यंत न्यून और तुच्छ चंदा तय भी कर लिया, तो:

"वह तुम्हें वह (अमानत) नहीं लौटाएगा जब तक कि तुम उसके सिर पर सवार (खड़े) न रहो।" — वह तुम्हें लौटा कर नहीं देगा जब तक कि तुम उसके सिर पर सवार न हो जाओ। (त)

बल्कि यदि आप तकाज़ा करें तो वे अप्रसन्न होंगे और यदि ढील दें तो सोए रहेंगे। दूसरी ओर, हमारे कार्यकर्ताओं को वे चालें और वे जाल ज्ञात नहीं हैं जिनसे वहाबी—अल्लाह तआला उन्हें अपमानित करे—ईश्वर के सेवकों को छलकर न केवल अपने सह-धर्मियों से, अपितु अपने साथियों से भी धन ऐंठ लेते हैं। इसके लिए दिखावा, पाखंड, कपट, छल, निर्लज्जता और अपमान आवश्यक हैं; ये न तो आप में हैं और न ही आपका धर्म-शास्त्र (शरीयत) इसकी अनुमति देता है। फिर बताइए कार्य कैसे चलेगा? अभी हाल ही में एक चोटी का वहाबी एक प्रभावशाली सूफी के पास चंदा लेने गया। उन्होंने कहा, "सुना है तुम अहमद रज़ा के विरोधी हो।" उसने कहा, "कदापि नहीं, मैं तो उसी द्वार का कुत्ता हूँ," और पुस्तक का बहाना बनाकर पाँच सौ ले उड़ा।

विद्वानों की यह स्थिति है कि वे धनवानों से भी अधिक विलासी हैं; वे धर्म के समर्थन के नाम से ही कतराते हैं। ईश्वर का जो सेवक अपना जीवन इसके लिए समर्पित कर दे, वे उसे मूर्ख, यहाँ तक कि उपद्रवी समझते हैं। उनके हृदयों में समझौतापरस्ती घर कर गई है। नदवा के दिनों में संपूर्ण भारत का अनुभव हुआ। नदवा के लेखों को सुनकर वे "पथभ्रष्टता, पथभ्रष्टता" की रट लगा देंगे, परन्तु जब

कहा जाए कि "श्रीमान, कृपया इसे लिख दीजिये," तो कहेंगे, "भाई, लिखवाओ मत; हमारे अमुक मित्र बुरा मान जाएँगे।"

---

[1] अल-कुरान अल-करीम 3/75 पृष्ठ 598/750

ہدیہ حاضر کرنے سے اس انجمن کو بھی انکار نہیں ہو سکتا۔ (۵) خالص اہل سنت کی ایک قوت اجتماعی کی ضرور ضرورت ہے، مگر اس کے لیے تین چیزوں کی سخت حاجت ہے۔ (۱) علماء کا اتفاق (۲) تحمل ساق قدر بالطاق۔ (۳) امراء کا اتفاق لوجہ الخلاق۔

یہاں یہ سب باتیں مفقود ہیں، فانا للہ وانا الیہ راجعون، ہمارے اغنیاء نام چاہتے ہیں، معصیت بلکہ صریح ضلالت میں ہزاروں اڑا دیں، خزانوں کے منہ کھول دیں، یونیورسٹی کے لیے کتنی جلد تیس لاکھ جمع ہو گیا۔ مدرسہ دیوبند کو ایک عورت نے پچاس ہزار دے دیا، مگر کسی سنی مدرسہ کو بھی یہ دن نصیب ہوا؟ اوّل تو تائید دین و مذہب جن کا نام لیے گھبرائیں گے، میاں! یہ ان مولویوں کے جھگڑے ہیں اور شرما شرمی خفیف و ذلیل چندہ بھی مقرر کیا تو۔

"لَا یُؤَدِّہِ إِلَیْكَ إِلَّا مَا دُمْتَ عَلَیْہِ قَائِمًا" ۱ - وہ تجھے پھیر کر نہ دے گا مگر جب تک سر پر سوار ہو۔ (ت)

بلکہ تقاضا کیجئے تو بگڑیں اور ڈھیل دیجئے تو سو رہیں، ادھر ہمارے کارکنوں کو وہ چال وہ جال معلوم نہیں جس سے وہابیہ خذلھم اللہ تعالی۔ (اللہ تعالیٰ ان کو رسوا کرے، ت) بندگانِ خدا کو چھل کر نہ صرف اپنے ہم مذہبوں بلکہ اپنے ہم مشربوں سے روپیہ اینٹھتے ہیں، اس کے لیے ریا و نفاق و مکر و خداع و بے حیائی و بے عزتی لازم ہے، وہ نہ آپ میں ہے نہ آپ کی شریعت اس کی اجازت دے، پھر کہئے کام کیوں کر چلے۔ ابھی ایک نمبری وہابی ایک بااثر صوفی کے یہاں چندہ لینے گیا انہوں نے فرمایا سنا ہے تم احمد رضا کے مخالف ہو، کہا حاشا میں تو اسی در کا کتا ہوں، کتاب بن کر پانچ سو لے آیا۔

علماء کی یہ حالت ہے کہ رئیسوں سے بڑھ کر آرام طلب ہیں، حمایتِ مذہب کے نام سے گھبراتے ہیں، جو بندہِ خدا اپنی جان اس پر وقف کرے اسے احمق بلکہ مفسد سمجھتے ہیں۔ مداہنت ان کے دلوں میں پیری ہوئی ہے۔ ایام ندوہ میں ہندوستان بھر کا تجربہ ہوا۔ عبارات ندوہ سُن کر ضلالت ضلالت کی رٹ لگا دیں۔ اور جب کہئے حضرت لکھ دیجئے، بھائی لکھواؤ نہیں، ہمارے فلاں دوست برا مانیئں گے۔

---

۱ القرآن الکریم ۳/ ۷۵ Page 598 of 750

Fatawa Ridawiyya Volume 29

"Our such-and-such teacher will feel bad," and many think, "Why should I voluntarily put my head in a mortar and bear the pestle? Misguided enemies will arise and hold a grudge. They will print insults and jibes in newspapers and advertisements, and hurl various slanders and fabrications. Why put a perfectly good life into turmoil?" Some have the concern that supporting the religion would mean an end to total reconciliation. Popularity will vanish, and there will be a decline in treats like pulao, korma, and offerings. Or at least, the customary welcome will no longer be common. The state of agreement among scholars is such that the market of jealousy is hot. If one's name becomes famous even among liars, the better people among them become his opponents and join the misguided in insulting and mocking him, saying, "People ask about him and not us." Now tell me, how can a group that cannot bear to see someone of merit among them strive to make their deficient members complete and their limited ones meritorious? Far from it, this is not a universal rule, but the rule for the majority is the same as the rule for all. (The ruling of the majority is the ruling of all. - T) Praise be to Allah, the speaker here is certainly excluded from the general discourse. And to the face of my Lord be praise forever. (Always praise be to my Sustainer's essence. - T) There are millions of faults in this pauper, but my Lord has kept me completely pure from envy. If I found someone superior to me in worldly wealth and riches, my heart internally regarded it as insignificant; then why envy insignificance? And if someone is superior in religious honor and excellence, I considered kissing his hands and feet as my pride; then why envy one's own exalted and blessed person? Whomever I saw supporting the religion, I strived through writing and speech to spread his virtues and incline people towards him. I coined and published grand titles for them, as my book "Al-Mu'tamad al-Mustanid" etc. bear witness. Envy arises from a desire for fame, and praise be to the Noble Face of my Generous Lord, I never desired it; rather, I have always been averse to it and a lover of seclusion. Staying away from meetings, associations, and tours was for two reasons: First, the love for obscurity; second: "The times do not buy defects, and I have nothing but half-defects. Where shall I go with my donkey and this unsellable merchandise?" (The times do not buy the defective, and I have nothing besides that. Where should I take my donkey with this flawed goods? - T) And now, for many years, the intense pressure of work, the total lack of leisure, and the overwhelming weakness and exhaustion have completely...

"हमारे अमुक उस्ताद को बुरा लगेगा," और बहुतों का यह विचार है कि "मुफ़्त में ओखली में सिर देकर मूसल कौन खाए? कुमार्गी दुश्मन बन जाएंगे, दांतों पर रख लेंगे। गालियाँ, फब्तियाँ अखबारों और इश्तिहारों में छापेंगे, तरह-तरह के तोहमत और इफ़्तरा (झूठ) उछालेंगे। अच्छी-भली जान को कौन जंजाल में डाले।" कुछ लोगों को यह हठ है कि मज़हब (धर्म) की हिमायत करने से सुलह-ए-कुल्ली (पूर्ण शांति/मेल-मिलाप) नहीं रहेगी। लोकप्रियता चली जाएगी और पुलाव, कोरमा और नज़राने में कमी आ जाएगी। या कम से कम आओ-भगत तो आम नहीं रहेगी। उलेमा (विद्वानों) के बीच इत्तेफ़ाक़ (सहमति) का यह हाल है कि हसद (ईर्ष्या) का बाज़ार गर्म है। यदि किसी का नाम झूठों में भी मशहूर हो गया, तो बेहतर लोग उसके मुखालिफ (विरोधी) हो गए और उसकी तौहीन और तशनीअ (अपमान) में गुमराहों के हमज़ुबान बन गए कि "लोग उसे पूछते हैं और हमें नहीं पूछते।" अब फरमाएं कि वह कौम जो अपने बीच किसी गुणी व्यक्ति को नहीं देख सकती, वह अपने अपूर्णों को पूर्ण और अक्षमों को गुणी बनाने की क्या कोशिश करेगी? हाशा (बिल्कुल नहीं), यह कोई सार्वभौमिक नियम नहीं है, लेकिन 'अक्सर का हुक्म वही होता है जो कुल का होता है' (बहुमत का नियम ही सबका नियम होता है। - त) अलहम्दुलिल्लाह (अल्लाह का शुक्र है), यहाँ वक्ता (लेखक) सामान्य चर्चा से निश्चित रूप से बाहर है। व-लवजहि रब्बी अल-हम्द अबदा (मेरे परवरदिगार की ज़ात के लिए हमेशा हम्द है। - त) मुझ फकीर में लाखों दोष हैं, लेकिन मेरे रब ने मुझे हसद से बिल्कुल पाक रखा है। जिसे अपने से ज़्यादा पाया, अगर वह दुनिया के धन-दौलत में ज़्यादा है, तो दिल ने उसे अंदर से तुच्छ माना; फिर तुच्छता पर हसद क्या? और अगर वह दीनी शरफ़ (धार्मिक सम्मान) और अफज़ाल (गुणों) में ज़्यादा है, तो उसके दस्त-बोसी (हाथ चूमना) और कदम-बोसी को अपना गौरव माना; फिर अपने सम्मानित और मुबारक व्यक्ति पर हसद क्या? जिसे अपने में दीन (धर्म) की हिमायत करते देखा, उसके गुणों के प्रसार और लोगों को उसकी ओर आकर्षित करने में लिखित और मौखिक रूप से प्रयासरत रहा। उनके लिए उत्कृष्ट उपाधियाँ गढ़कर प्रकाशित कीं, जिस पर मेरी पुस्तक "अल-मुअतमद अल-मुस्तनिद" आदि गवाह हैं। हसद शोहरत-तलबी (प्रसिद्धि की चाह) से पैदा होता है और मेरे रब-ए-करीम की वजहे-करीमा के लिए हम्द है कि मैंने कभी इसकी चाहत नहीं की, बल्कि हमेशा इससे दूर भागने वाला और एकांत-प्रिय रहा। जलसों और अंजुमनों के दौरों से दूर रहना दो कारणों से था। पहला: गुमनामी की चाह, दूसरा: ज़माना मी न-ख़्रद ऐब व ग़ैर अज़ नीम नेस्त, जा-बरम खर-ए-खुद रा बा ईं कसादे-मताअ 1 (ज़माना दोषपूर्ण वस्तु को नहीं खरीदता और मेरे

पास इसके अलावा कुछ नहीं है। इस खोटे सामान के साथ मैं अपने गधे को लेकर कहाँ जाऊँ - त) और अब तो बरसों से काम के भारी बोझ, फुर्सत की मुकम्मल कमी और कमजोरी व थकावट के अत्यधिक प्रभाव ने बिल्कुल ही...

पृष्ठ 599/750

ہمارے فلاں استاد کو برا لگے گا، بہت کو یہ خیال کہ مفت میں اوکھلی میں سر دے کر موسل کون کھائے، بد مذہب دشمن ہو جائیں گے، دانتوں پر رکھ لیں گے۔ گالیاں، پھبتیاں اخباروں اشتہاروں میں چھاپیں گے، طرح طرح کے بہتان، افتراء اچھالیں گے۔ اچھی بھلی جان کو کون جنجال میں ڈالے۔ بعض کو یہ کد کہ حمایت مذہب کی تو صلح کلی نہ رہے گی۔ ہر دل عزیزی جا کر پلاؤ، قورمے، نذرانہ میں فرق آئے گا۔ یا کم از کم آؤ بھگت تو عام نہ رہے گی۔ اتفاق علماء کا یہ حال کہ حسد کا بازار گرم، ایک کا نام جھوٹوں بھی مشہور ہوا تو بہتر سے بچے اس کے مخالف ہو گئے اس کی توہین تشنیع میں گمراہوں کے ہم زبان بنے کہ "لوگ اسے پوچھتے ہیں اور ہمیں نہیں پوچھتے۔" اب فرمائیں کہ وہ قوم کو اپنے میں کسی ذی فضل کو نہ دیکھ سکے، اپنے ناقصوں کو کامل قاصروں کو ذی فضل بنانے کی کیا کوشش کرے گی۔ حاشا یہ کلیہ نہیں مگر لاملک شر حکم الکل (اکثر کا حکم وہی ہوتا ہے جو کل کا ہوتا ہے۔ت) الحمد للہ یہاں متکلم عموم کلام سے ضرور خارج ہے۔ ولوجہ ربي الحمد ابدا (میرے پروردگار کی ذات کے لیے ہمیشہ حمد ہے۔ت) فقیر میں لاکھوں عیب ہیں مگر میرے رب نے مجھے حسد سے بالکل پاک رکھا ہے، اپنے سے جسے زیادہ پایا اگر دنیا کے مال و منال میں زیادہ ہے قلب نے اندر سے اسے حقیر جانا، پھر حسد کیا حقارت پر؟ اور اگر دینی شرف و افضال میں زیادہ ہے اس کی دست بوسی و قدم بوسی کو اپنا فخر جانا، پھر حسد کیا اپنے معظم بابرکت پر؟ اپنے میں جسے حمایت دین پر دیکھ اس کے نشر فضائل اور خلق کو اس کی طرف مائل کرنے میں تحریراً و تقریراً مساعی رہا۔ اس کے لیے عمدہ القاب وضع کرکے شائع کیے جس پر میری کتاب "المعتمد المستند" وغیرہ شاہد ہیں، حسد شہرت طلبی سے پیدا ہوتا ہے اور میرے رب کریم کے وجہِ کریمہ کے لیے حمد ہے کہ میں نے کبھی اس کے لیے خواہش نہ کی

بلکہ ہمیشہ اس سے نفور اور گوشہ نشینی کا دلدادہ رہا۔ جلسوں انجمنوں کے دوروں سے دور رہنا انہیں دو وجہ پر تھا۔ اول حُبّ خمول دومـہ زمانہ می نخر د عیب و غیر از نیم نیست جبرم خر خود را بایں کساد متاع ۱ (زمانہ عیب دار کو خریدتا نہیں اور میرے پاس اس کے علاوہ نہیں ہے۔ اس کھوٹے سامان کے ساتھ اپنے گدھے کو کہاں لے کر جاؤں۔ت) اور اب تو سالہا سال سے شدت ہجوم کار وانعدام کلی فرصت و غلبہ ضعف نقاہت نے بالکل ہی

Fatawa Razawiyya Volume 29

[...has] set it up, which my friends have attributed to touchiness, and some even to pride and arrogance. And Allah knows the intention of His servant. In short, three things are missing from the Ahl-e-Sunnat; tell me then, what is the way forward? In countering the misguided, whatever this humble, insignificant person could do, by the grace of Allah, I have been engaged in it since the age of 14. And praise be to my Generous Lord's Noble Countenance, that He granted benefit from it thousands of times more than my capacity, my courage, and my works. As for what you desire, it depends on that collective strength whose condition was reported above. The major deficiency is the lack of attention from the wealthy and the lack of funds. The Hadith's saying has come true: "A time is coming when even religious work will not proceed without money." You have no formal grand Madrasa in your hands, no newspaper or publication with you. You do not have an abundance of teachers, preachers, debaters, and authors according to your needs. Those who can do something are not well-off. Those who are well-off are not capable. Some who wrote works by pouring their heart's blood, where would they get them printed? Even if somehow something is printed, how would its propagation happen? It's not a collection of poetry or a novel that our brothers would eagerly buy for one rupee what is worth two annas. Here it's a headache; if money were abundant, it's possible these complaints would be removed. First, grand Madrasas should be opened with formal education. Second, students should receive stipends so they are drawn to it by necessity. Third, substantial salaries should be given for the activities of the schools so that people strive with all their might out of incentive. Fourth, the temperaments of students should be evaluated; whoever is found more suitable for a particular task should be given a reasonable stipend and assigned to it. Thus, some among them should be trained as teachers, some as preachers, some as authors, some as debaters. Then, within writing and debating, there should also be distribution: one for one art, another for another. Fifth, those who are prepared among them should be spread across the country with salaries so that they may propagate the religion and faith through writing, speech, sermons, and debates. Maulana! In this deteriorated state, by the grace of Allah, no one can come before you. They make noise from afar and run away at the critical moment. When your scholars spread out like this, then who...

1 Kashf al-Khafa, Hadith 3269, Dar al-Kutub al-Ilmiyah, Beirut, 2/366 Page 600 of 750

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

[...ने] बिठा दिया है, जिसे मेरे मित्रों ने नाज़ुक मिज़ाजी, बल्कि कुछ हज़रात ने गर्व और अहंकार पर आधारित किया। और अल्लाह अपने बंदे की नियत जानता है। संक्षेप में, अहले सुन्नत से तीन बातें गायब हैं; फिर बताएं कि सूरत क्या हो। गुमराहों को रोकने में जो कुछ इस तुच्छ और नगण्य व्यक्ति से बन पड़ता है, अल्लाह के शुक्र से, मैं 14 वर्ष की आयु से इसमें लगा हुआ हूँ। और मेरे उदार प्रभु के महान मुख की प्रशंसा हो कि उसने मेरी बिसात, मेरे साहस और मेरे कार्यों से हज़ारों गुना अधिक लाभ पहुँचाया। बाकी जो आप चाहते हैं, वह उसी सामूहिक शक्ति पर निर्भर है जिसकी स्थिति ऊपर बताई गई थी। बड़ी कमी अमीरों की बेरुखी और रुपयों की कमी है। हदीस का यह कथन सत्य सिद्ध हुआ कि: "वह समय आने वाला है जब दीन का काम भी बिना रुपयों के नहीं चलेगा"। आपके पास कोई औपचारिक शानदार मदरसा नहीं है, कोई समाचार पत्र या पत्रिका आपके पास नहीं है। शिक्षकों, उपदेशकों, शास्त्रार्थ करने वालों और लेखकों की प्रचुरता आपकी आवश्यकता के अनुसार आपके पास नहीं है। जो कुछ कर सकते हैं, वे आर्थिक रूप से सुखी नहीं हैं। जो आर्थिक रूप से सुखी हैं, वे योग्य नहीं हैं। कुछ ने अपना खून जलाकर रचनाएँ कीं, तो वे छपें कहाँ से? यदि किसी तरह कुछ छप भी जाए, तो उसका प्रसार कैसे हो? यह कोई दीवान (कविता संग्रह) या उपन्यास नहीं है कि हमारे भाई दो आने की चीज़ के लिए एक रुपया देकर चाव से खरीदें। यहाँ तो सिर खपाना है; यदि रुपया प्रचुर मात्रा में हो तो संभव है कि ये सभी शिकायतें दूर हो जाएँ। प्रथम, भव्य मदरसे खोले जाएँ और उनमें औपचारिक शिक्षा दी जाए। द्वितीय, छात्रों को वजीफ़ा (छात्रवृत्ति) मिले ताकि वे मजबूरन इसकी ओर आकर्षित हों। तृतीय, मदरसों के कार्यों के लिए भारी वेतन दिया जाए ताकि लालच में आकर लोग जी-तोड़ कोशिश करें। चतुर्थ, छात्रों के स्वभाव की जाँच हो; जो जिस कार्य के लिए अधिक उपयुक्त पाया जाए, उसे उचित वजीफ़ा देकर उसी काम में लगाया जाए। इस प्रकार उनमें से कुछ शिक्षक बनाए जाएँ कुछ उपदेशक, कुछ लेखक, कुछ शास्त्रार्थ करने वाले। फिर लेखन और शास्त्रार्थ में भी बँटवारा हो, कोई किसी विषय पर तो कोई किसी पर। पंचम, उनमें से जो तैयार हो जाएँ उन्हें वेतन देकर देश भर में फैलाया जाए ताकि वे लेखन, भाषण, उपदेश और शास्त्रार्थ के माध्यम से दीन और धर्म का प्रसार करें। मौलाना! इस दयनीय स्थिति में, अल्लाह की कृपा से, कोई आपके सामने नहीं आ सकता। वे दूर से शोर मचाते हैं और समय आने पर दुम दबाकर भाग जाते हैं। जब आपके विद्वान इस तरह फैलेंगे, तब कौन...

1 कश्फ अल-ख़फ़ा हदीस 3269, दारुल कुतुब अल-इलमिया, बेरूत, 2/366 पृष्ठ 600 का 750

بٹھادیا ہے، جسے میرے احباب نے نازک مزاجی بلکہ بعض حضرات نے غرور و تکبر پر حمل کیا۔ اور اللہ اپنے بندہ کی نیت جانتا ہے، با جملہ اہل سنت سے امور ثلاثہ مفقود ہیں پھر فرمائیں صورت کیا ہو۔ دفع گمراہان میں جو کچھ اس حقیر پیچ میرزے بن پڑتا ہے بحمد اللہ تعالیٰ ۱۴ برس کی عمر سے اس میں مشغول ہے۔ اور میرے رب کریم کے وجہہ کریم کو حمد کہ اس نے میری بساط، میرے حوصلے، میرے کاموں سے ہزاروں درجہ زائد اس سے نفع بخشا۔ باقی جو آپ چاہتے ہیں اسی قوت متفقہ پر موقوف ہے جس کا حال اوپر گزارش ہوا۔ بڑی کمی امراء کی بے توجہی اور روپے کی ناداری ہے، حدیث کا ارشاد صادق آیا کہ: "وہ زمانہ آنے والا ہے کہ دین کا کام بھی بے روپیہ کے نہ چلے گا"۔ کوئی باقاعدہ عالی شان مدرسہ تو آپ کے ہاتھ میں نہیں، کوئی اخبار پرچہ آپ کے یہاں نہیں، مدرسین، واعظین، مناظرین، مصنفین کی کثرت بقدر حاجت آپ کے پاس نہیں۔ جو کچھ کر سکتے ہیں فارغ البال نہیں۔ جو فارغ البال ہیں وہ اہل نہیں۔ بعض نے خون جگر کھا کر تصانیف کیں تو چھپیں کہاں سے۔ کسی طرح سے کچھ چھپالو کی اشاعت کیونکر ہو۔ دیوان نہیں، ناول نہیں کہ ہمارے بھائی دو آنے کی چیز کا ایک روپیہ دے کر شوق سے خریدیں، یہاں تو سر چپٹینا ہے روپیہ وافر ہو تو ممکن کہ یہ سب شکایت رفع ہوں۔ اول عظیم الشان مدارس کھولے جائیں باقاعدہ تعلیمیں ہوں۔ ثانیاً طلبہ کو وظائف ملیں کہ خواہ مخواہ گرویدہ ہوں۔ ثالثاً مدرسوں کی بیش قرار تنخواہیں ان کی کاروائیوں پر دی جائیں کہ لالچ سے جان توڑ کر کوشش کریں۔ رابعاً طبائع طلبہ کی جانچ ہو جو جس کام کے زیادہ مناسب دیکھا جائے معقول وظیفہ دے کر اس میں لگایا جائے۔ یوں ان میں کچھ مدرسین بنائے جائیں، کچھ واعظین کچھ مصنفین، کچھ مناظرین، پھر تصنیف و مناظرہ میں بھی توزیع ہو، کوئی کسی فن پر کوئی کسی پر۔ خامساً ان میں جو تیار ہوتے

جائیں تنخواہیں دے کر ملک میں پھیلائے جائیں کہ تحریراً و تقریراً وعظاً و مناظرہ اشاعتِ دین و مذہب کریں۔ مولانا! اس گئی گزری حالت میں تو کوئی بفضلہ تعالیٰ آپ کے سامنے آ نہیں سکتا۔ دور سے غل مچاتے اور وقت پر دم دباتے ہیں۔ جب آپ کے اہل علم یوں مل مل میں پھیلیں اس وقت کون

1 کشف الخفاء حدیث ۳۲۶۹ دار لکتب العلمیہ بیروت ۲/ ۳۶۶ Page 600 of 750

Fatawa Razawiyya, Volume 29

...can withstand their strength. Seventh: For the support (of religion), useful books and magazines refuting heretics should be commissioned by providing honorariums to authors. Eighth: Already written and newly commissioned magazines should be printed in good quality and fine calligraphy and distributed throughout the country for free. Eighth: Your ambassadors should act as supervisors in every city; they should inform you wherever there is a need for a preacher, debater, or a book. You should continue to send your forces (magazines and pamphlets) to suppress enemies. Ninth: Those among us who are capable, currently available, and occupied in earning a livelihood should be provided with stipends to make them financially independent and then assigned tasks they are skilled in. Tenth: Your religious newspapers should be published and articles for the defense of religion of all kinds should reach the entire country daily or at least weekly, either for a price or for free. In my opinion, these are the measures; please benefit us with whatever else you deem better. In fact, Maulana! If funds are available, besides expanding our strength, breaking the power of the deviants will also be easy, Insha'Allah al-Aziz. I see that many individuals in deviant groups are spreading poison merely for the greed of salaries. Give one of them twelve instead of ten, and he will start speaking your language, or at least he will be silenced by the morsel provided to him. See how true the saying of the Hadith is: "In the latter days, the work of religion will also be carried out with dirhams and dinars." And why shouldn't it be true? For it is the word of the Truthful and the Verified (Sallallahu Ta'ala Alayhi Wa Sallam), the news from the one who knows what was and what will be (Sallallahu Ta'ala Alayhi Wa Sallam).

(7) The draft of Hanafi beliefs that came here for approval was indeed sent back after some necessary revisions, and it reached the Anjuman (society) as well. The Anjuman accepted most of the revisions too; the fresh draft that you have sent now is itself a witness to this. It contains most of the same revisions that I had suggested in a very superficial glance. However, your statement that 'let alone revision or verification, you didn't even send a receipt' is also correct in its own way. It is true that I sent it back after revising, and it is also true that I didn't send it back after revising. The solution to this enigma is that I am extremely short of time; satisfactory revisions (but that is another story altogether).

---

1. Kashf al-Khafa, Hadith 3269, Dar al-Kutub al-Ilmiyah, Beirut, 2/366.

...उनकी शक्ति का सामना कर सकता है। सातवाँ: (धर्म की) सहायता के लिए, विधर्मियों के खंडन में उपयोगी पुस्तकें और पत्रिकाएँ लेखकों को मानदेय देकर लिखवाई जानी चाहिए। आठवाँ: पहले से लिखी हुई और नई लिखी गई पत्रिकाओं को अच्छी गुणवत्ता और सुंदर लिखावट में छापकर देश भर में मुफ्त में वितरित किया जाना चाहिए। आठवाँ: शहरों में आपके राजदूतों को निरीक्षक के रूप में रहना चाहिए; जहाँ भी किसी उपदेशक, शास्त्रार्थ करने वाले या किसी पुस्तक की आवश्यकता हो, वे आपको सूचित करें। आप दुश्मनों के दमन के लिए अपनी सेनाएं(पत्रिकाएं और पुस्तिकाएं) भेजते रहें। नौवाँ: हममें से जो लोग योग्य हैं, वर्तमान में उपलब्ध हैं और अपनी जीविका कमाने में लगे हुए हैं, उन्हें वजीफा (स्टाइपेंड) देकर आर्थिक रूप से स्वतंत्र बनाया जाना चाहिए और फिर उन्हें उन कार्यों में लगाया जाना चाहिए जिनमें वे कुशल हैं। दसवाँ: आपके धार्मिक समाचार पत्र प्रकाशित होने चाहिए और धर्म की रक्षा के लिए हर तरह के लेख पूरे देश में दैनिक या कम से कम साप्ताहिक रूप से, मूल्य के साथ या बिना मूल्य के पहुँचाते रहने चाहिए। मेरी राय में ये उपाय हैं; आप जो कुछ बेहतर समझें उससे लाभान्वित करें। बल्कि मौलाना! धन होने की स्थिति में, अपनी शक्ति बढ़ाने के अलावा, गुमराहों की शक्ति को तोड़ना भी इंशा-अल्लाह अल-अज़ीज़ आसान होगा। मैं देख रहा हूँ कि गुमराह समूहों के बहुत से व्यक्ति केवल वेतन के लालच में ज़हर उगलते फिर रहे हैं। उनमें से जिसे दस की जगह बारह दीजिये, वह अब आपकी सी कहेगा, या कम से कम उसे दिए गए निवाले से उसका मुँह बंद हो जाएगा। देखिये हदीस का कथन कितना सच है कि: "अंतिम समय में दीन (धर्म) का काम भी दिरहम और दीनार से चलेगा"। और सच क्यों न हो, क्योंकि यह सादिक़ और मसदूफ़ (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) का कलाम है, जो हुआ और जो होगा उस सबका ज्ञान रखने वाले (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) की खबर है।

(7) हनफी अकीदे का मसौदा जो यहाँ परामर्श के लिए आया था, कुछ आवश्यक संशोधनों के बाद भेजा भी गया और अंजुमन को मिल भी गया। और अंजुमन ने इसमें अधिकांश संशोधनों को स्वीकार भी कर लिया। यह नया मसौदा जो आपने अभी भेजा है, स्वयं इसका गवाह है। इसमें अधिकतर वही संशोधन शामिल हैं जो फकीर ने बहुत ही सरसरी नज़र में पेश किए थे। लेकिन आपका यह कहना भी कि 'संशोधन या सत्यापन तो दूर की बात, आपने रसीद तक नहीं भेजी' अपनी जगह सही है। वास्तव में फकीर संशोधन करके भेज चुका और वास्तव में संशोधन करके फकीर ने नहीं भेजा। इस

पहेली का हल यह है कि फकीर के पास समय की बहुत कमी है, संतोषजनक संशोधन (लेकिन वह एक अलग विषय है)।

---

1. कशफ अल-ख़फ़ा, हदीस 3269, दार अल-कुतुब अल-इल्मिया, बेरूत, 2/366।

ان کی قوت کا سامنا کر سکتا ہے۔ ساتواں حمایت (مذہب) وہ رد بد مذہباں میں مفید کتب و رسائل مصنفوں کو نذرانے دے کر تصنیف کرائے جائیں۔ ثامناً تصنیف شدہ اور نو تصنیف رسائل عمدہ اور خوش خط چھاپ کر ملک میں مفت شائع کیے جائیں۔ ثامناً شہروں شہروں آپ کے سفیر نگران رہیں جہاں جس قسم کے واعظ یا مناظر یا تصنیف کی حاجت ہو آپ کو اطلاع دیں۔ آپ سرکوبی اعداء کے لیے اپنی فوجیں میگزین رسالے بھیجتے رہیں۔ تاسعاً جو ہم میں قابل کار ، موجود اور اپنی معاش میں مشغول ہیں وظائف مقرر کر کے فارغ البال بنائے جائیں اور جس کام میں انہیں مہارت ہو لگائے جائیں۔ عاشراً آپ کے مذہبی اخبار شائع ہوں اور وقتاً فوقتاً ہر قسم کے حمایت مذہب میں مضامین تمام ملک میں بقیمت و بلا قیمت روزانہ یا کم از کم ہفتہ وار پہچاتے رہیں۔ میرے خیال میں تو یہ تدابیر ہیں ، آپ اور جو کچھ بہتر سمجھیں افادہ فرمائیں، بلکہ مولانا ! روپیہ ہونے کی صورت میں اپنی قوت پھیلانے کے علاوہ گمراہوں کی طاقتیں توڑنا بھی ان شاء اللہ العزیز آسان ہوگا۔ میں دیکھ رہا ہوں کہ گمراہیوں کے بہت سے افراد صرف تنخواہوں کے لالچ سے زہر اگلتے پھرتے ہیں۔ ان میں جسے دس کی جگہ بارہ دیجئے اب آپ کی سی کہے گا، یا کم از کم بہ لقمہ در ختہ بہ تو ہوگا۔ دیکھئے حدیث کا ارشاد کیسا صادق ہے کہ : "آخر زمانہ میں دین کا کام بھی درہم و دینار سے چلے گا"۔ اور کیوں نہ صادق ہو کہ صادق و مصدوق صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کا کلام ہے، عالم ماکان وما یکون صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی خبر ہے۔

(۷) مسودہ عقائد حنفیہ کہ یہاں بنظر استصواب آیا تھا بعد بعض ترمیمات ضرور یہ گیا بھی، اور انجمن کو پہنچا بھی۔ اور انجمن نے اس میں اکثر ترمیمات کو قبول فرمایا بھی، اس پر گواہ خود یہ مسودہ تازہ ہے کہ جناب نے اب ارسال فرمایا ہے، یہ اکثر انہیں ترمیمات پر مشتمل ہے جو فقیر نے ایک نہایت سرسری نگاہ میں عرض کی تھیں، مگر جناب کا یہ فرمانا بھی کہ ترمیم یا تصدیق در کنار تو نے رسید بھی نہ بھیجی بجائے خود ہے۔

واقعی فقیر ترمیم کر کے بھیج چکا اور واقعی ترمیم کر کے فقیر نے نہ بھیجا۔ اس معمہ کا حل یہ ہے کہ فقیر بے حد عدیم الفرصت ہے خاطر خواہ ترمیمیں (مگر دفترے دیگر)

1 کشف الخفاء حدیث ۳۲۶۹ دارلکتب العلمیہ بیروت ۲ / ۳۶۶

Fatawa Razawiya, Volume 29

...would be the manifestation of (dictation). There was no time for this. Due to an urgent need, I had to go to Pilibhit. Hazrat Maulana Muhaddis Surti (may his blessings last) mentioned it. This humble servant (faqir) submitted that I would listen when I had free time. Around midnight, after finishing the local requirements and meeting friends, that manuscript was read out to this humble servant. I kept suggesting changes, deletions, additions, erasures, and affirmations here and there, and the praised master kept writing them down. This continued until page 18 at that time. Then, in the morning after finishing daily litanies (wazaif), when the train's time was near, the rest was completed in great haste. Maulvi Abul Ala Amjad Ali Sahib (may he be safe) was also accompanying; a request was made to him that a manuscript had also reached him, so he should also write and send these same amendments, and with the concurrence of this humble servant's opinion, inform the Blessed Association (Anjuman Mubarak). However, after returning to Bareilly, Maulvi Sahib did not remember due to excessive work. Thus, those corrections from this humble servant's side reached and yet did not reach.

Now, firstly, in this second manuscript, there are some errors by the scribe; this humble servant has corrected them. Some of these are very important to take note of.

Secondly, some new amendments have come to mind, whether on the previous text or on what the Association itself has erased or affirmed in this second manuscript.

Thirdly, most of the previous corrections were accepted, but there are some that were either omitted in this second manuscript or overlooked. Especially, the absence of some of them can be more troubling to think about, as their current state reflects a severe aspect of least regard and compromise. Yes, if left out inadvertently, then the noble saying is: "Mistakes and forgetfulness have been forgiven for my Ummah"1.

Fourthly, even after all this, by the rule "The one consulted is a trustee"2 (The one who is consulted should be honest. - T), I have something to submit. I shall present all these objectives briefly here. (See next page)

---

1 Kashf al-Khafa, Hadith 1391, Dar al-Kutub al-Ilmiyah, Beirut, 1/382. 2 Sunan Abi Dawud, Kitab al-Adab, Chapter on Consultation, Aftab-e-Alam Press, Lahore, 2/434;

Jami' at-Tirmidhi, Chapters on Manners, Chapter regarding 'The one consulted is a trustee', Amin Company Delhi, 2/105.

फ़तावा रज़विया, जिल्द २९

...इमला (लिखवाना) के मिसदाक़ (उदाहरण) होते। इसके लिए समय नहीं मिलता था। एक अत्यंत आवश्यक कार्य से पीलीभीत जाना हुआ। हज़रत मौलाना मुहद्दिसे सूरती (दामत बरकातुहुम) ने इसका ज़िक्र फ़रमाया। फ़क़ीर (इस विनम्र सेवक) ने अर्ज़ किया कि फ़ुरसत के समय सुन लूँगा। आधी रात के क़रीब वहाँ की ज़रूरतों और मित्रों से मिलने के बाद, वह मसौदा (पाण्डुलिपि) फ़क़ीर को सुनाया गया। मैं जगह-जगह बदलाव, कमियां, बढ़ोतरी, काट-छाँट और पुष्टि अर्ज़ करता गया और हज़रत मम्दूह (प्रशंसित) लिखते गए। उस समय १८ पृष्ठों तक काम हुआ। फिर सुबह वज़ाइफ़ (दुआओं) से फ़ारिग होने के बाद, जब रेल का समय निकट था, शेष कार्य अत्यंत शीघ्रता से पूर्ण किया गया। मौलवी अबुल आला अमजद अली साहब (सल्लमा) भी साथ थे, उनसे गुज़ारिश की गई कि आपके पास भी एक मसौदा आया हुआ है, यही संशोधन आप भी लिखकर भेज दें, और फ़क़ीर की राय के साथ मिलकर अंजुमन मुबारक को सूचित कर दें। मगर बरेली पहुँचकर मौलवी साहब को अत्यधिक कार्य के कारण याद न रहा। इस प्रकार वे सुधार फ़क़ीर की ओर से पहुँचे भी और नहीं भी।

अब सर्वप्रथम, इस दूसरे मसौदे में कुछ तो कातिब (लेखक) की गलतियाँ हैं, उन्हें फ़क़ीर ने ठीक कर दिया है। इनमें से कुछ पर गौर करना बहुत आवश्यक है।

दूसरे, कुछ नए संशोधन और विचार मन में आए हैं, चाहे पिछली इबारत (लिखावट) पर हों, या अब इस दूसरे मसौदे में जिसे अंजुमन ने स्वयं घटाया या बढ़ाया है, उस पर।

तीसरे, पिछले सुधारों में से अधिकांश तो स्वीकार कर लिए गए, लेकिन कुछ ऐसे भी हैं जो इस दूसरे मसौदे में भी छोड़ दिए गए या नज़रअंदाज़ हो गए। विशेष रूप से उनमें से कुछ का न मिलना अधिक चिंताजनक हो सकता है क्योंकि वर्तमान स्थिति में कम से कम लिहाज़ और रियायत का एक कठिन पहलू निकलता है। हाँ, यदि भूलवश छूट गया हो तो "मेरी उम्मत से गलती और भूल को माफ़ कर दिया गया है" १, ऐसा पाक इरशाद है।

चौथे, इन सबके बाद भी "परामर्शदाता विश्वसनीय होता है" २ (जिससे सलाह ली जाए वह अमानतदार होता है। - त) के हुक्म के अनुसार, मुझे कुछ अर्ज़ करना है। ये सब मक़सद मैं यहाँ संक्षेप में प्रस्तुत करता हूँ। (अगला पृष्ठ देखें)

१ कश्फ अल-खफ़ा, हदीस १३९१, दार अल-कुतुब अल-इल्मिया, बेरूत, १/३८२। २ सुनन अबी दाऊद, किताब अल-अदब, मश्वरा का अध्याय, आफ़ताब-ए-आलम प्रेस, लाहौर, २/४३४; जामी अत-तिर्मिज़ी, शिष्टाचार के अध्याय, 'परामर्शदाता विश्वसनीय होता है' के संबंध में अध्याय, अमीन कंपनी दिल्ली, २/१०५।

पृष्ठ ६०२/७५०

املا کند) کی مصداق ہوتیں۔ اس کے لیے وقت نہ ملتا تھا ایک ضرور شدیدہ سے پیلی بھیت جانا ہوا۔ حضرت مولانا محدث سورتی دامت برکاتہم نے اس کا ذکر فرمایا۔ فقیر نے عرض کی وقت فرصت سن لوں گا۔ نصف شب کے قریب وہاں کی ضروریات اور احباب کی ملاقات سے فارغ ہو اس وقت وہ مسودہ فقیر کو سُنایا گیا، جابجا تبدیلیاں و نقص و زیادات و محو و اثبات عرض کرتا گیا اور حضرت ممدوح تحریر فرماتے گئے۔ ۱۸ صفحہ تک اس وقت ہوا پھر صبح بعد فراغ وظائف، جب کہ ریل کا وقت قریب تھا۔ بقیہ بعجلتِ تمام تمام کیا۔ مولوی ابوالعلاء امجد علی صاحب سلمہ بھی ہمراہ تھے ان سے گزارش کی کہ آپ کے پاس بھی ایک مسودہ آیا ہوا ہے یہی ترمیمات آپ بھی لکھ بھیجنا، اور اتفاق رائے فقیر سے بھی انجمن مبارک کو اطلاع دیں۔ مگر بریلی آکر مولوی صاحب کو کثرتِ کار میں یاد نہ رہا۔ یوں وہ اصلاحات فقیر کی طرف سے پہنچیں بھی اور نہیں بھی۔

اب اولاً اس مسودہ ثانیہ میں بعض تو اغلاطِ کاتب ہیں انہیں فقیر نے بنادیا ہے۔ ان میں بعض بہت ضروری اللحاظ ہیں۔

ثانیاً بعض نئی ترمیمات اور خیال میں آئی ہیں، خواہ عبارت سابقہ پر، یا اب جو مسودہ ثانیہ میں خود انجمن نے محو و اثبات کیا اس پر۔

ثالثاً اصلاحات سابقہ میں سے اکثر تو قبول فرمائی گئیں مگر بعض وہ بھی ہیں کہ اس مسودہ ثانیہ میں بھی متروک ہوئیں یا نظر سے رہ گئیں خصوصاً ان میں بعض کا نہ پانا زیادہ مشوش خیال ہو سکتا ہے کہ بحالِ عمر اقل رعایت و مداہنت کا سخت پہلو نکلتا ہے۔ ہاں سہواً ترک ہوا تو "رفع عن

امتی الخطاء والنسیان"۱۔ (میری امت سے خطاء و نسیان کو معاف کر دیا گیا ہے۔ ت) ارشاد والا ہے۔

رابعاً ان سب کے بعد بھی بحکم "المستشار مؤتمن"۲۔ (جس سے مشورہ لیا جائے وہ امین ہوتا ہے۔ ت) مجھے کچھ عرض کرنا ہے۔ یہ سب مقاصد اجمالاً یہاں گوش گزار کروں۔ (اگلا صفحہ ملاحظہ ہو)

---

۱ کشف الخفاء حدیث ۱۳۹۱ دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱/۳۸۲ ۲ سنن ابی داؤد کتاب الادب باب فی المشورۃ آفتاب عالم پریس لاہور ۲/۴۳۴، جامع الترمذی ابواب الادب باب ماجاء ان المستشار مؤتمن امین کمپنی دہلی ۲/۱۰۵

Fatawa Razawiyya Volume 29

New Amendments or New Amendments with Explanation of Reason

Page	Line	Original (Substituted)	Amendment (Substitute)	Reason
3	9	Any partial benevolence or partial correction	Any benevolence or correction or any thing	The restriction of 'partial' should not be understood as exclusionary, lest a universal necessity be mistakenly assumed, whereas nothing is obligatory upon Allah. (t)
4	4	Several (Kai)	Many (Bohat)	'Kai' is the translation for a few.
6	7	Finality of Prophethood	Finality of Prophethood, absolute superiority, the great caliphate, priority in intercession and entry into Paradise, being the origin of every virtue, and the intermediary in every blessing, along with many other non-sharable attributes.	To exalt the sacred status, to delight the hearts of the believers, and despite the spite of the enemy.
6	22	Infinite Divine Knowledge	Infinite Divine Knowledge in actuality	Statement of distinction.
6	22	Your knowledge is finite	The Prophet's knowledge is finite in actuality and infinite in potentiality	So that common people do not misunderstand 'finite' as finished or discontinued.
7	20	Are alive with a special life	Are alive with real worldly and physical life	Special life also includes the spiritual life of Barzakh, which is possessed by everyone.

Page	Line	Original (Substituted)	Amendment (Substitute)	Reason
8	11 & 12	The creatures of the entire face of the earth are helpless	All creatures are helpless	Although the challenge was to jinns and humans, helplessness includes everyone.
Vol 9 Note	21	Hazrat Mahdi (peace be upon him)	Hazrat Imam Mahdi (may Allah be pleased with him)	Invoking blessings and peace independently is specific to Prophets and Angels.
11	9 to 11	For preference among various sayings of the Imam	For preference among various sayings of the Imam against the established saying of the Imam according to the Imam's view	Distinction from the jurists in issuing fatwas.

Note: 'j' is the symbol for new amendment. 12. Page 603 of 750

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

नई तरमीमात (संशोधन) या नई तरमीमात वजह के बयान के साथ

पृष्ठ	पंक्ति	मूल (बदला हुआ)	संशोधन (बदल)	कारण
3	9	कोई आंशिक कृपा या आंशिक सुधार	कोई कृपा या सुधार या कोई वस्तु	'आंशिक' की पाबंदी को एहतराज़ी न समझा जाए, ताकि पूर्ण अनिवार्यता का भ्रम न हो, जबकि अल्लाह पर कुछ भी अनिवार्य नहीं है। (त)
4	4	कई	बहुत	'कई' चंद का अनुवाद है।
6	7	ख़त्म-ए-नुबुव्वत (नुबुव्वत की समाप्ति)	ख़त्म-ए-नुबुव्वत और पूर्ण श्रेष्ठता, महान खिलाफत, शफ़ाअत और जन्नत में प्रवेश में प्राथमिकता, हर फ़ज़ीलत की असलियत, हर नेमत में माध्यम होना और इनके अलावा कई ऐसी सिफ़ात जो किसी और में नहीं हो सकतीं।	मुक़द्दस शान की बुलंदी, मोमिनों के दिलों की खुशी और दुश्मन की ज़िल्लत के लिए।
6	22	अल्लाह का इल्म असीमित है	अल्लाह का इल्म वास्तव में असीमित है	तमाज़ (अंतर) का बयान।
6	22	आपका इल्म सीमित है	हुज़ूर का इल्म वास्तव में सीमित और क्षमता में असीमित है	ताकि आम लोग 'सीमित' को खत्म या समाप्त होने के अर्थ में न समझ लें।
7	20	खास जीवन के साथ जीवित हैं	वास्तविक दुनियावी और शारीरिक जीवन के साथ जीवित हैं	खास जीवन बरज़खी रूहानी जीवन भी है जो हर इंसान को प्राप्त है।
8			तमाम मख्लूकात लाचार है	

पृष्ठ	पंक्ति	मूल (बदला हुआ)	संशोधन (बदल)	कारण
	11 और 12	पूरी ज़मीन की मख्लूकात (सृष्टि) लाचार है		चुनौती यद्यपि जिन्न और इंसानों को थी, लेकिन लाचारी सब में शामिल है।
ज 9 अ	21	हज़रत महदी अलैहिस्सलाम	हज़रत इमाम महदी रज़ियल्लाहु अन्हु	स्वतंत्र रूप से सलात-ओ-सलाम नबियों और फरिश्तों के लिए विशिष्ट है।
11	9 से 11	इमाम के विभिन्न कथनों में प्राथमिकता के लिए	इमाम के विभिन्न कथनों में इमाम के ज़ाहिर के अनुसार इमाम के स्थापित कथन के विरुद्ध प्राथमिकता के लिए	फतवा देने वाले मुजतहिदीन से अलग पहचान के लिए।

अ: ज नई तरमीम का प्रतीक है। 12। पेज 603 का 750

فتاویٰ رضویہ جلد ۲۹

ترمیمات جدیدہ یا ترمیمات جدیدہ مع بیانِ وجہ

صفحہ	سطر	مبدل	بدل	وجہ
۳	۹	کوئی لطف جزئی یا اصلاح جزئی	کوئی لطف یا اصلاح یا کوئی شے	قید جزئی احترازی نہ سمجھی جائے کہ وجوب کلی متوہم ہو حالانکہ لایجب علی اللہ شیئ (اللہ پر کچھ واجب نہیں۔ت)
۴	۴	کئی	بہت	کئی ترجمہ چند کا ہے
۶	۷	ختمِ نبوت	ختمِ نبوت و افضلیت مطلقہ و خلافت کبریٰ و اولویت فی الشفاعۃ وفی دخول الجنۃ واصالت فی کل فضل وساطۃ فی کل نعمۃ و غیرہا صفات کثیرہ ناممکنۃ الاشتراک	اعلاءِ شانِ اقدس و تفریح خاطر مومنین ورغم انف عدو
۶	۲۲	علم الٰہی غیر متناہی	علم الٰہی غیر متناہی بالفعل	بیان تماز
۶	۲۲	آپ کا علم متناہی	حضور کا علم متناہی بالفعل و غیر متناہی بالقوۃ	عوام متناہی کو بمعنی منتہی و منقطع نہ سمجھ لیں
۷	۲۰			

صفحہ	سطر	مبدل	بدل	وجہ
		زندہ بحیاتِ خاصہ ہیں	زندہ بحیاتِ حقیقیہ دنیاویہ و جسمانیہ ہیں	حیاتِ خاصہ حیاتِ برزخیہ روحانیہ بھی ہے کہ ہر شخص کو حاصل۔
۸	۱۱ و ۱۲	تمام روئے زمین کی مخلوقات عاجز ہے	تمام مخلوقات عاجز ہے	تحدی اگرچہ جن و انس سے ہوئی مگر عجز سب کو شامل ہے۔
ج ۹ عہ	۲۱	حضرت مہدی علیہ السلام	حضرت امام مہدی رضی اللہ تعالیٰ عنہ	صلوۃ و السلام بالاستقلال مخصوص بانبیاء و ملائکہ ہے
۱۱	۹ تا ۱۱	مختلفہ اقوال امام میں ترجیح کے لیے	مختلفہ اقوال امام بمظہور امام خلاف قول مستقر امام کو ترجیح کے لیے	مجتہدین فی الفتویٰ سے امتیاز

عہ : ج علامت جدید ترمیم کی ہے ۱۲۔

Fatawa Razawiyyah Volume 29

14 || Their work was only to give preference to some over others. | Their work was only to give preference to some in the presence of the established Imam, and in accordance with the fresh principles of the Imam. | Correction of the restriction and distinction from the Mujtahidin in Fatwa and Mujtahidin in Issues.

15 || After them, mercy appeared. | After them, mercy appeared even more. | This is a new mercy, not the ancient mercy.

21 Vol 11 | Imam Fakhr al-Din Razi | Imam Abu Bakr Ahmad ibn Ali Razi | In the first draft, it was only 'Razi', which was correct. In this draft, 'Fakhr al-Din' was added, and this is also a major mistake as Imam Fakhr al-Din Razi was Shafi'i, not Hanafi.

Previous discarded amendments (these are of two types) (First Type)

Page | Line | Original (Mubaddal) | Revised (Badal) | Reason (Wajah) 1 | 11 | He was characterized from eternity by all of them in the rest of the active attributes. | He is characterized from eternity by all of them, the rest are active, personal, negative, and relational attributes. | All the rest are not active, nor are the remaining ones eternal. 3 | 15 | There are six forms of justice. | Justice and grace etc. | Included in this is the limitation that He does not cause even an atom's weight of loss to anyone's good deeds. If this is justice, then its opposite is oppression, and oppression is impossible, so reward would be mandatory, even though 'nothing is mandatory upon Allah'. In the previous draft, the word 'without a correct purpose' was used, which was very misplaced; now it has been changed to 'wisdom'. This wisdom either refers back to the servant or to Allah; the second is impossible, in any case. 3 | 19 | He does not give any calamity to any of His servants as a matter of wisdom or great reward. | It is His grace that He keeps a reward for His Muslim servants even in the calamities He sends upon them. |

(1)

Page 604 of 750

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

14 || उनका काम केवल कुछ को प्राथमिकता देना था। | उनका काम केवल स्थापित इमाम की उपस्थिति में कुछ को प्राथमिकता देना था और इमाम के ताज़ा सिद्धांतों के अनुसार था। | घेरे की शुद्धि और फतवे के मुजतहिदीन और मसलों के मुजतहिदीन से अंतर।

15 || उनके बाद रहमत का उदय हुआ। | उनके बाद रहमत का और अधिक उदय हुआ। | यह नई रहमत है, न कि पुरानी रहमत।

21 जिल्द 11 | इमाम फखरुद्दीन राजी | इमाम अबू बक्र अहमद बिन अली राजी | पहले मसौदे में केवल राजी था और वह सही था, इस मसौदे में फखरुद्दीन बढ़ाया गया, और यह भी बड़ी गलती है कि इमाम फखरुद्दीन राजी हनफी नहीं शाफई हैं।

पिछली छोड़ी हुई तरमीमें (ये दो प्रकार की हैं) (पहला प्रकार)

पृष्ठ | पंक्ति | मूल (मुबद्दाल) | संशोधित (बदल) | कारण (वजह) 1 | 11 | बाकी फेली (क्रियात्मक) सिफ़ात में उन सब से अज़ल से मोत्तसिफ़ (युक्त) था। | उन सब से अज़ल से मोत्तसिफ़ है, बाकी सिफ़ात-ए-फ़ेलिया, नफ़्सिया, सल्बिया और इज़ाफ़िया हैं। | बाकी सब फेली नहीं हैं और न ही बाकी अज़ली (अनादि) हैं। 3 | 15 | अद्ल (न्याय) के छह रूप हैं। | अद्ल और फ़ज़्ल (कृपा) आदि। | इसमें यह भी सीमित हुआ कि वह किसी के नेक आमाल में ज़रा बराबर नुकसान नहीं करता। यदि यह अद्ल हो तो इसके विपरीत ज़ुल्म हुआ और ज़ुल्म मुहाल (असंभव) है, तो सवाब देना वाजिब होगा, जबकि 'अल्लाह पर कुछ वाजिब नहीं'। पिछले मसौदे में बिना सही उद्देश्य के शब्द था, वह बहुत ही गलत जगह पर था, अब इसे मस्लहत (हित) से बदल दिया। यह मस्लहत बंदे की ओर जाती है या अल्लाह की ओर; दूसरा मुहाल है, किसी भी सूरत में। 3 | 19 | अपने बंदों में से किसी को मस्लहत या अज्र-ए-जज़ील (बड़ा बदला) के लिए कोई मुसीबत नहीं देता। | यह उसका फ़ज़्ल है कि अपने मुसलमान बंदों पर जो मुसीबत भेजे उसमें भी उनके लिए अज्र रखता है। |

(1)

पृष्ठ 604 का 750

فتاویٰ رضویہ جلد ۲۹

۱۴ || ان کا کام صرف بعض کو ترجیح دینا | ان کا کام صرف بعض کو بحضور امام مستقر امام پر ترجیح دینا اور اصول امام کے موافق تازہ | حصر کی تصحیح اور مجتہدین فی الفتویٰ و مجتہدین فی المسائل سے امتیاز

۱۵ || ان کے بعد رحمت کا ظہور ہوا | ان کے بعد رحمت کا اور ظہور ہوا | یہ رحمتِ جدید ہے نہ کہ رحمتِ قدیمہ ہے

۲۱ ج ۱۱ | امام فخرالدین رازی | امام ابوبکر احمد بن علی رازی | پہلے مسودہ میں صرف رازی تھا، اور وہ صحیح تھا اس مسودہ میں فخر الدین بڑھایا گیا، اور یہ بھی باری غلطی ہے امام فخرالدین رازی حنفی نہیں شافعی ہیں۔

ترمیمات سابقہ متروکہ (یہ دو قسم ہیں) (قسم اول)

صفحہ | سطر | مبدل | بدل | وجہ ۱ | ۱۱ | باقی صفات فعلیہ میں ان سب سے ازلگا متصف تھا | ان سب سے ازلگا متصف ہے باقی صفات وفعلیہ و نفسیہ و سلبیہ واضافیہ ہیں۔ | باقی سب فعلیہ نہیں نہ باقیات ازلیہ ۳ | ۱۵ | عدل کی چھ صورتیں ہیں | عدل و فضل کی الخ | ان میں یہ بھی محدود ہوا کہ کسی کے اعمالِ حسنہ سے ذرہ بھر نقصان نہیں فرماتا۔ یہ عدل ہو تو اس کا خلاف ظلم ہوا اور ظلم محال ہے، تو اثابت واجب ہو حالانکہ لایجب علی اللہ شیئ (اللہ پر کچھ واجب نہیں۔ت) مسودہ سابقہ میں بغیر غرضِ صحیح کا لفظ تھا، وہ تو بہت ہی بے جا تھا، اب اسے مصلحت سے بدلا یہ مصلحت راجع الی العبد ہے یا الی اللہ ، ثانی محال ہے ، بہر تقدیر ۳ | ۱۹ |

اپنے بندوں میں سے کسی کو مصلحت یا اجر جزیل کوئی مصیبت نہیں دیتا | اس کا فضل ہے کہ اپنے مسلمان بندوں پر جو مصیبت بھیجے اس میں بھی ان کے لیے اجر رکھتا ہے۔ |

(۱)

Fatawa Razawiyya Volume 29

No.	Page	Content / Explanation	Statement / Ruling
8	22	Firstly, a non-believer who lives on a distant mountain or island, from whom no harm comes to Muslims, but rather is a dhimmi (protected citizen), obedient, and a servant of Islam from whom Muslims derive benefits. In causing him suffering, whose wisdom or what reward is there? To consider pain without compensation as contrary to justice is the creed of the Mu'tazilites. According to the Ahl us-Sunnah, "Allah does what He wills" (1) (Allah does whatever He wants. -T). Indeed, it is His grace that He rewards a believer even for suffering. Praise be to Him. Ultimate certainty comes from both the clarity of indication (dalalat) and proof (thubut); being merely 'definite' (qat'an) is not sufficient.	News and insights that are definitely understood from both types of revelation are truth, without doubt. Meanings that are definitely established from both types of revelation are truth, without doubt.
9	15	The discourse is addressed to the common people. In general application, there is a hint of universalism; therefore, explicit clarification is clearer and more effective for understanding.	The questioning of Munkar and Nakir is bound to happen. Questioning by Munkar and Nakir is certain to occur for whomever God wills.
12	13	'Thiqa' (trustworthy) is the reason ('illa), not the action.	'Thiqat' - Being 'thiqa'.
13	10	Their being definitely of Paradise is also proven from religious texts and explicitly mentioned in books.	Hazrat Imam Hasan and Imam Husain are definitely of Paradise. Hazrat Imam Hasan and Imam Husain, the companions of Badr, and those of the Bay'at al-Ridwan are definitely of Paradise.

No.	Page	Content / Explanation	Statement / Ruling
14	15	Scholars state that 'unrestricted application in a place of restriction is not correct.' (T). Especially where commoners and elite-behaving-like-commoners might extend the general to a universal application. It should only remain as such when free from Sharia prohibitions; otherwise, it would even include the seductive singing of women. Some contemporary pseudo-Sufis practice this.	It is commendable to kindle love by listening to a melodious voice. It is commendable as long as it is free from musical instruments and other Sharia prohibitions.

(1) Al-Qur'an al-Kareem 14/27 Page 605 of 750

फतावा रज़विया जिल्द 29

संख्या	पृष्ठ	सामग्री / व्याख्या	कथन / निर्णय
8	22	प्रथम, वह काफिर जो किसी दूरदराज के पहाड़ या द्वीप पर रहता हो जिससे मुसलमानों को कोई नुकसान न हो, बल्कि वह एक ज़िम्मी (संरक्षित नागरिक), आज्ञाकारी और इस्लाम का सेवक हो जिससे मुसलमानों को लाभ मिलता हो। उसे कष्ट देने में किसकी बुद्धिमत्ता या क्या पुरस्कार है? बिना मुआवजे के दर्द को न्याय के विपरीत मानना मुतज़िला का मत है। सुन्नी मत के अनुसार, "अल्लाह जो चाहता है वही करता है" (1) (अल्लाह जो चाहता है करता है। -टी)। वास्तव में, यह उसकी कृपा है कि वह एक आस्तिक को कष्टों पर भी प्रतिफल देता है। सारी प्रशंसा उसी के लिए है। परम निश्चितता संकेत (दलालत) और प्रमाण (सुबूत) दोनों की निश्चितता से आती है; केवल 'निश्चित' (क़तअन) होना पर्याप्त नहीं है।	दोनों प्रकार की ईश्वरीय वाणी (वही) से जो समाचार और ज्ञान निश्चित रूप से समझ में आते हैं, वे सत्य हैं, इसमें कोई संदेह नहीं है। दोनों प्रकार की वही से जो अर्थ निश्चित रूप से स्थापित हैं, वे सत्य हैं, इसमें कोई संदेह नहीं है।
9	15	संबोधन आम लोगों की ओर है। सामान्य प्रयोग में सार्वभौमिकता का आभास होता है; इसलिए स्पष्टीकरण अधिक स्पष्ट और समझ के लिए प्रभावी है।	मुनकर और नकीर का सवाल होना अनिवार्य है। मुनकर और नकीर द्वारा सवाल करना खुदा जिसकी इच्छा करे उसके लिए निश्चित है।
12	13	'स़िका' (विश्वसनीय) कारण (इल्ला) है, कार्य नहीं।	'स़िकात' - स़िका होना।
13	10	उनका निश्चित रूप से जन्नती होना भी धार्मिक ग्रंथों से सिद्ध है और पुस्तकों में स्पष्ट रूप से वर्णित है।	हजरत इमाम हसन और इमाम हुसैन निश्चित रूप से जन्नती हैं। हजरत इमाम हसन और इमाम हुसैन, बद्र के साथी और

संख्या	पृष्ठ	सामग्री / व्याख्या	कथन / निर्णय
			बैअत-ए-रिज़वान वाले निश्चित रूप से जन्नती हैं।
14	15	विद्वान कहते हैं कि 'प्रतिबंध के स्थान पर सामान्य प्रयोग सही नहीं है।' (टी)। विशेष रूप से जहाँ आम लोग और आम लोगों जैसा व्यवहार करने वाले विशिष्ट लोग सामान्य प्रयोग से सार्वभौमिकता तक पहुँच सकते हों। यह केवल तभी तक रहना चाहिए जब तक वह शरीयत के निषिद्ध कार्यों से मुक्त हो; अन्यथा, इसमें महिलाओं का कामुक गायन भी शामिल हो जाएगा। और आज के कुछ तथाकथित सूफी इस पर अमल करते हैं।	सुरीली आवाज़ सुनकर प्रेम जागृत करना प्रशंसनीय है। यह तब प्रशंसनीय है जब यह संगीत वाद्ययंत्रों और शरीयत के अन्य निषिद्ध कार्यों से मुक्त हो।

(1) अल-क़ुरान अल-करीम 14/27 पृष्ठ 605 का 750

نمبر صفحہ		مضمون / وضاحت	عبارت / حکم
		اول کافر کہ شاہی جبل یا جزیرہ بعیدہ میں رہتا ہو جس سے مسلمانوں کو کوئی ضرر نہ ہو بلکہ ذمی مطیع خدمت گار اسلام جس سے مسلمانوں کو منافع ملتے ہوں اس پر مصائب ڈالنے میں کس کی مصلحت یا کوئی اجر ہے ایلام بلا عوض	ہر دو وحی سے جو اخبار و معارف قطعاً مفہوم ہوتے ہیں حق ہیں کوئی شبہ نہیں۔ ہر دو وحی سے جو معنی قطعاً ثابت ہیں حق ہیں کوئی شبہ نہیں
۸	۲۲	کو خلاف عدل ماننا معتزلہ کا مسلک ہے اہل سنت کے نزدیک "یَفْعَلُ اللّٰہُ مَا یَشَاءُ ط" (۱) (اللہ تعالی جو چاہے کرتا ہے۔ ت) ہاں اس کا فضل ہے کہ مومن کو مصیبت پر بھی ماجور فرماتا ہے ولہ الحمد، انتہائے شبہ قطعیت دلالت و ثبوت دونوں سے ہے، مجرد قطعاً ہونا کافی نہیں۔	
۹	۱۵	روئے سخن سوئے عوام ہے اور اطلاق میں عموم کا ایہام تو تصریح اوضح و امکن فی الافہام،	سوال منکر و نکیر ضرور ہونے والا ہے۔ سوال منکر نکیر جس سے خدا چاہے ضرور ہونے والا ہے۔
۱۲	۱۳	ثقة علة ہے نہ فعل	ثقاہت ثقہ ہونا
۱۳	۱۰	ان کا قطعی جنتی ہونا بھی نصوص سے ثابت اور کتب میں مصرح ہے۔	حضرت امام حسن و امام حسین قطعی جنتی

نمبر صفحہ	مضمون / وضاحت	عبارت / حکم
		ہیں حضرت امام حسن و امام حسین و اصحاب بدر و بیعۃ الرضوان قطعی جنتی ہیں۔
۱۴ ۱۵	علماء فرماتے ہیں الاطلاق فی محل التقیید غیر سدید (تقید کے محل میں اطلاق درست نہیں۔ت) خصوصاً جہاں عوام و خواص کالعوام اطلاق سے عموم تک پہنچے ہوں، صرف اتنا ہی رہتا کہ جب منکرات شرعیہ سے پاک ہو جب بھی سد اطلاق کرتا ورنہ خوش آواز میں غنائے زناں بھی داخل۔ اور بعض متصوفہ زمانہ اس پر عامل۔	خوش آواز سے سن کر محبت بھڑکانا مستحسن ہے۔ مستحسن ہے جب کہ مزامیر و غیرہا منکرات شرعیہ سے خالی ہو۔

(۱) القرآن الکریم ۱۴ / ۲۷ صفحہ ۶۰۵ از ۷۵۰

Fatawa Rizvia Volume 29

Page: 15 Line: 22 Original text: In case of explicit denial, it is absolutely disbelief. Correction: According to jurists, it is absolute disbelief. Reason: Theologians only consider the denial of the essentials of religion as disbelief, and this is more cautious. (T). There is a long dispute regarding the denial of consensus (Ijma').

"Second Category"

Page | Line | Original | Correction | Reason 1 | 8 | The management of the universe, partial and total, is exclusive to His person. | Management of the universe by His own authority etc. | Reason: This had two interpretations: generalization and specialization. First, that every individual act of management encompasses the universe and is exclusive to the Divine presence. Second, that management of any kind in any individual is absolutely exclusive to the Divine Essence. In the first case, there is a negation of generality from anyone other than God, and in the second, a general negation. In the second case, unless the condition of 'independently' or 'by His own authority' is added, it is exactly the creed of Wahhabism and contradicts the noble verse "Then those who manage the matter" (79:5) and other definitive texts. Rather, according to the people of truth, the first interpretation also holds, because the reality applied to its master—upon whom be the best prayers and greetings—is the manager of all through absolute vicegerency from the Presence of Oneness. Therefore, omitting this condition would provide an opening for the Wahhabis.

[1]The Holy Quran 79/5 Page 606 of 750

फ़तावा रज़विया, खंड 29

पृष्ठ: 15 पंक्ति: 22 मूल पाठ: स्पष्ट इनकार के मामले में यह पूर्णतः कुफ़्र है। संशोधन: फुकहा (न्यायविदों) के अनुसार यह पूर्णतः कुफ़्र है। कारण: मुतकल्लिमीन (धर्मशास्त्रियों) केवल धर्म की आवश्यक बातों (ज़रूरियात-ए-दीन) के इनकार को ही कुफ़्र मानते हैं और यही अधिक सावधानीपूर्ण है। (त)। और इज्मा (आम सहमति) के इनकार के बारे में लंबा विवाद है।

"दूसरी श्रेणी"

पृष्ठ | पंक्ति | मूल | सुधार | कारण 1 | 8 | ब्रह्मांड का प्रबंधन, आंशिक और पूर्ण, केवल उसी की सत्ता के साथ विशिष्ट है। | अपने अधिकार से ब्रह्मांड का प्रबंधन आदि। | कारण: इसके दो अर्थ थे: सामान्यीकरण और विशिष्टीकरण। पहला यह कि प्रबंधन का प्रत्येक व्यक्ति ब्रह्मांड के लिए सामान्य और व्यापक है, जो दिव्यता की उपस्थिति के लिए विशिष्ट है। दूसरा यह कि किसी भी व्यक्ति में किसी भी प्रकार का प्रबंधन पूर्णतः ईश्वर की सत्ता के साथ विशिष्ट है। पहले पर ईश्वर के अलावा अन्य से व्यापकता का निषेध होगा और दूसरे पर निषेध की व्यापकता होगी। दूसरे मामले में, जब तक 'स्वतंत्र रूप से' या 'अपने अधिकार से' की शर्त न लगाई जाए, यह ठीक वहाबियत का पंथ है और पवित्र आयत "फिर जो मामले का प्रबंधन करते हैं" (79:5) और अन्य निश्चित पाठों के विपरीत है। बल्कि, सत्य के लोगों (अहले हक़ीक़त) के अनुसार पहला भी, क्योंकि इसके स्वामी—जिन पर सर्वश्रेष्ठ प्रार्थना और अभिवादन हो—पर लागू होने वाली वास्तविकता यह है कि वह ईश्वर की सत्ता की ओर से पूर्ण खिलाफत (प्रतिनिधित्व) के माध्यम से सभी का प्रबंधक है। इसलिए, इस शर्त को छोड़ना वहाबियों को अवसर प्रदान करेगा।

[1]अल-कुरान अल-करीम 79/5 पृष्ठ 606 का 750

فتاوی رضویہ جلد ۲۹

صفحہ: ۱۵ سطر: ۲۲ مبدل: بصورت انکار صریح مطلقا کافر ہے بدل: فقہاء کے نزدیک مطلقا کفر ہے۔ وجہ: متکلمین صرف انکارِ ضروریاتِ دین کو کفر جانتے ہیں وھو الاحوط (اور اسی میں زیادہ احتیاط ہے۔ ت) اور انکارِ اجماع میں نزاعِ طویل ہے۔

"قسم دوم"

صفحہ | سطر | مبدل | بدل | وجہ ۱ | ۸ | تدبیرِ کائناتِ جزئی و کل اسی کی ذات سے مختص | باختیارِ خود تدبیرِ کائنات الخ | وجہ: اس کے دو محمل تھے تخصیص تعمیم و تخصیص۔ اول یہ کہ تدبیر کا ہر فرد کائنات کو عام و شامل ہوتا، مختص بحضرت الوہیت ہے، دوم یہ کہ کسی فرد میں کیسی ہے تدبیر مطلقا مختص بذات احدیت ہے۔ اوّل پر غیرِ خدا سے سلبِ عموم ہوگا اور ثانی پر عموم سلب، ثانی میں جب تک بالا ستقلال یا باختیار خود کی قید نہ لگائیں عین مسلک وہابیت و مخالف کریمہ "فَالْمُدَبِّرٰتِ اَمْرًا ۝۵" (پھر کام کی تدبیر کریں ۔ت) وغیرہا نصوصِ قاطعہ ہے، بلکہ اہل حقیقت کے نزدیک اول بھی کہ حقیقت مجریہ علی صاحبہا افضل الصلوۃ والتحیۃ مدبرۃ الکل ہے بالخلافۃ المطلقۃ عن حضرۃ الاحدیۃ (بارگاہِ احدیت سے خلافتِ مطلقہ کے سبب سے ۔ ت) تو اس قید کا ترک وہابیہ کو گنجائش دے گا۔

[1] القرآن الکریم ۵/۷۹ Page 606 of 750

Fatawa Rizvia Volume 29

Line	Page	Original Text	Correction/Commentary
2	10	The essence of Truth (Allah) is pure from them.	All things that are essentially impossible are impossible for the Essence of Truth. The word 'tanzeeh' (sanctification/purity) does not determine 'istihalah dhatiyyah' (essential impossibility). And after reporting, the same writing again, it is unknown on what basis it is. Is any defect like ignorance, falsehood, etc., possible for the Lord Almighty, or in this time of fitnah (strife) where the deniers are giving their lives on the possibility of falsehood (Imkan-e-Kizb). One should avoid evading the explicit mention of impossibility.
5	21	Among them, following the predecessors (Salaf), whatever permissible forms of customary veneration are prevalent in every country.	Among the Muslims who etc. The speech was definitely open to interpretation that allowing usage in an inappropriate place of prohibition is itself following the Salaf, but there was room for the Wahhabis to say when were such and such matters among the Salaf, so where is the following of Salaf in them?
10	3	The general public is commanded to follow (taqleed) in matters not explicitly stated in texts (ghayr mansoosah).	The general public in definitive matters not explicitly stated in texts etc. Non-followers (Ghair Muqallid) can say that 'Raf-ul-Yadayn' (raising hands in prayer), recitation behind the Imam, loud 'Amin', and similar things are all explicitly stated (mansoosah), so there is no following of the mujtahid imams; this is the same thing as saying what need is there for the Imam's saying when the Hadith exists!
16	14	To believe human faculties are angels and the cognitive faculty is Gabriel is against the text	It is against the text and consensus and is definite infidelity (kufr qati'i) as it is a denial of the necessities of religion. The wisdom behind omitting this addition is not understood; is this not definite infidelity? Is this not a denial of the necessities of

Line	Page	Original Text	Correction/Commentary
		(Nass) and consensus (Ijma).	religion? Or is calling an infidel an infidel against etiquette?
16	7	After the sacred advent, to believe in the advent of a prophet is infidelity (kufr).	After the sacred advent, to consider the advent of a prophet permissible or to not consider it interfering with the finality of prophethood is infidelity. The wisdom of deviating from this is also not understood; is only being a believer in it infidelity? Is considering it permissible not infidelity? Or is not considering it interfering with the finality of prophethood not infidelity? Or should the disbelievers be accommodated? "And be stern with them"[1] and

[1] The Holy Quran 9/73 and 26/9 [Refers to 66:9] Page 607 of 750

फ़तावा रिज़विया जिल्द 29

पंक्ति	पृष्ठ	मूल पाठ	सुधार/टिप्पणी
2	10	ज़ाते हक़ उनसे मुनज़्ज़ह (पवित्र) है।	ज़ाते हक़ पर सब महाल बिल-ज़ाती (स्वयं में असंभव) हैं। शब्द 'तन्ज़ीह' (पवित्रता) इस्तेहाला-ए-ज़ाती (मौलिक असंभवता) का निर्धारण नहीं करता। और रिपोर्ट के बाद फिर वही तहरीर है, पता नहीं किस आधार पर है। क्या जहल (अज्ञान) और किज़ब (असत्य) आदि में कोई दोष रब्बे अज़्ज़-ओ-जल्ल के लिए मुमकिन है या इस फ़ितना के दौर में जहाँ झुठलाने वाले झूठ की संभावना (इमकान-ए-किज़ब) पर जान दे रहे हैं। इस्तेहाला (असंभवता) की स्पष्टता से कतराना नहीं चाहिए।
5	21	उनमें सलफ़ (पूर्वजों) के अनुसरण में जो मुबाह (अनुमेय) और प्रचलित सम्मान के तरीके हर देश में हों।	मुसलमानों में जो आदि। कलाम (भाषण) निश्चित रूप से व्याख्या के योग्य था कि निषेध के अनुचित स्थान पर प्रयोग की अनुमति देना ही सलफ़ का अनुसरण है, लेकिन वहाबियों के लिए यह गुंजाइश थी कि फलां फलां मामले सलफ़ में कब थे, तो उनमें सलफ़ का अनुसरण कहाँ?
10	3	आम जनता उन अहकाम (आदेशों) में तक़लीद (अनुसरण) के लिए पाबंद है जो स्पष्ट रूप से वर्णित (ग़ैर मन्सूसह) नहीं हैं।	आम जनता क़तई ग़ैर मन्सूसह अहकाम में आदि। ग़ैर मुक़ल्लिद कह सकते हैं कि रफ़-उल-यदैन, इमाम के पीछे किराअत, ज़हरी (ज़ोर से) आमीन और इसी तरह की अन्य सभी चीजें मन्सूसह (स्पष्ट वर्णित) हैं, तो मुजतहिद इमामों की तक़लीद नहीं है; यह तो वही बात है कि हदीस के होते हुए इमाम के कौल (कथन) की क्या ज़रूरत!
16	14	मानवीय शक्तियों को फ़रिश्ते और वैचारिक शक्ति को जिब्रील मानना नस्स (स्पष्ट प्रमाण) और इज्मा	नस्स और इज्मा के ख़िलाफ़ है और कुफ़्र-ए-क़तई (निश्चित कुफ़्र) है क्योंकि यह दीन की ज़रूरी बातों (ज़रूरियात-ए-दीन) का इंकार है। इस इज़ाफ़े(वृद्धि) को हटाने में क्या हिकमत (बुद्धिमत्ता) थी यह समझ नहीं आई; क्या यह कुफ़्र-ए-क़तई नहीं है? क्या यह ज़रूरियात-ए-दीन का इंकार नहीं है? या काफ़िर को काफ़िर कहना तहज़ीब (शिष्टाचार) के ख़िलाफ़ है?

पंक्ति	पृष्ठ	मूल पाठ	सुधार/टिप्पणी
		(आम सहमति) के ख़िलाफ़ है।	
16	7	मुकद्दस बेसत (पवित्र आगमन) के बाद किसी नबी की बेसत का कायल होना कुफ़्र है।	मुकद्दस बेसत के बाद नबी की बेसत को जायज़ मानना या उसे ख़त्म-ए-नुबुव्वत में दखल न समझना कुफ़्र है। इससे हटने की हिकमत भी समझ नहीं आई; क्या सिर्फ कायल होना कुफ़्र है? जायज़ मानना कुफ़्र नहीं? या इसे ख़त्म-ए-नुबुव्वत में दखल न जानना कुफ़्र नहीं? या काफ़िरों की मुरव्वत (रिआयत) करनी चाहिए? "और उन पर सख्ती करो"[1] और

[1] अल-क़ुरान अल-करीम 9/73 और 26/9 पृष्ठ 607/750

سطر	صفحہ	عبارت	اصلاح / حاشیہ
			ذاتِ حق پر سب محال بالذات ہیں۔ لفظ تنزیہہ استحالہ ذاتیہ کی تعیین نہیں کرتا۔ اور بعد گزارش پھر وہی نگارش معلوم نہیں
۲	۱۰	ذاتِ حق ان سے منزہ	کس بنا پر ہے۔ کیا جہل و کذب وغیرہ وغیرہ میں کوئی عیب ہے۔ باری عزوجل کے لیے ممکن ہے یا اس زمانہ فتن میں کہ امکان کذب پر مکذبین جان دیتے ہیں۔ تصریح استحالہ سے پہلو تہی چاہیے۔
۵	۲۱	ان میں باتباعِ سلف جو وجوہ مباح تعظیم مروجہ ہر ملک ہوں	مسلمانوں میں جو الخ کلام قابلِ تاویل ضرور تھا کہ غیر محل منع میں اطلاق تجویز ہی اتباعِ سلف ہے مگر وہابیہ کے لیے گنجائش تھی کہ فلاں فلاں امور سلف میں کب تھے تو ان میں اتباع سلف کہاں۔
۱۰	۳	عامۃ الناس احکامِ غیر منصوصہ میں تقلید پر مامور ہیں۔	عامۃ الناس احکامِ غیر منصوصہ قطعیہ میں الخ غیر مقلد کہہ سکتے ہیں کہ رفع یدین و قراءت خلف الامام وجہریہ آمین و امثالہا سب منصوصہ ہیں تو ائمہ مجتہدین کی تقلید نہیں، یہ وہی بات تو ہے کہ حدیث کے ہوتے ہوئے قولِ امام کی کیا حاجت!
۱۶	۱۴	قوائے انسانیہ کو ملائکہ قوتِ نظریہ	خلافِ نص و اجماع اور کفر قطعی ہے کہ ضروریاتِ دین کا انکار ہے۔ اس اضافہ کے اسقاط میں مصلحت سمجھ میں نہ آئی

سطر	صفحہ	عبارت	اصلاح / حاشیہ
		کو جبریل ماننا خلافِ نص و اجماع ہے۔	کیا یہ کفر قطعی نہیں کیا یہ انکارِ ضروریاتِ دین نہیں یا کافر کو کافر کہنا خلافِ تہذیب ہے۔
۱۶	۷	بعدِ بعثتِ اقدس بعثتِ نبی کا قائل ہونا کفر ہے۔	بعدِ بعثتِ اقدس بعثتِ نبی کو جائز ماننا یا اس کو ختمِ نبوت میں مخل نہ جاننا کفر ہے اس سے عدول کی مصلحت بھی مفہوم نہ ہوئی کیا صرف قائل ہونا کفر ہے جائز ماننا کفر نہیں یا اسے ختمِ نبوت میں مخل نہ جاننا کفر نہیں؟ یا کفار کی رعایت کرنی چاہیے۔ "وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ"[1] اور

[1] القرآن الکریم ۹/ ۷۳ و ۲۶/ ۹ صفحہ 607 از 750

Fatawa Razawiyya Volume 29

- "And let them find harshness in you" [1] and
- "You must make it clear to the people and not hide it" [2] and
- "They do not fear the blame of any blamer" [3] and
- "Be firm in justice, witnesses for Allah, even if it be against yourselves" [4] and
- "Let not pity for them withhold you from obedience to Allah in His religion" [5] And what is the ruling of these and other such verses? And is acting upon them an absolute obligation or not?

Final Submission

I have become blood (deeply distressed) from the thought of the end of this standard of truth, If all these reforms are indeed achieved and gained, what of it? Whoever tests like me will be an acquaintance like me, Otherwise, if Iblis (Satan) in human form were to be included, what of it?

(Translation: I am deeply distressed by the concern over the outcome of this standard of truth. If all these reforms are achieved, what then? He who experiences it as I have will become acquainted with it as I am. Otherwise, if Iblis takes human form and is included, what then?)

"He who has experienced my experience, has known my knowledge." - One who tests it as I have, will know it as I do.

Maulana! The purpose of this draft is not merely to inform the general public about some beliefs of Ahl al-Sunnah, but to establish a standard of Sunnism such that whoever confirms it is ours. (Couplet)

From the hand of the Light of Joy, may the eye and the heart receive illumination. (Translation: From this, the eye and the heart will attain the light of joy.)

And he who does not accept is a stranger. (Couplet)

Footnotes: 1. Al-Quran Al-Karim 9 / 123 2. Al-Quran Al-Karim 3 / 187 3. Al-Quran Al-Karim 5 / 54 4. Al-Quran Al-Karim 4 / 135 5. Al-Quran Al-Karim 2 / 24

Page 608 of 750

फ़तावा रज़विया जिल्द २९

- "और उन्हें तुम में सख़्ती पानी चाहिए।" [१] और
- "तुम लोगों के सामने उसे ज़रूर साफ़ बयान करोगे और उसे छुपाओगे नहीं।" [२] और
- "वो किसी मलामत करने वाले की मलामत से नहीं डरते।" [३] और
- "इंसाफ़ पर मज़बूती से क़ायम रहो, अल्लाह के लिए गवाही दो, ख़्वाह वो तुम्हारे अपने ख़िलाफ़ ही क्यों न हो।" [४] और
- "और तुम्हें अल्लाह के दीन के मामले में उन पर तरस नहीं आना चाहिए।" [५] और इन जैसी अन्य आयतों का हुक्म? और इन पर अमल फ़र्ज़-ए-क़तई है या नहीं?

आख़िरी गुज़ारिश (अर्श-ए-अख़ीर)

खूँ शुदम ज़ांदेशा अंजामे ईं मेयार-ए-हक़ | कां हमा इस्लाहा गर बेहस्त व हासिल शुद चे शुद हर कि चूँ मन आज़मायद रू शनासा हमचू मन | वरना गर इब्लीस आदम रू-ए-शामिल शुद चे शुद

(तरजुमा: इस मेयार-ए-हक़ के अंजाम के अंदेशे से मैं लहूलुहान हो गया हूँ। ये तमाम सुधार अगर हासिल हो गए तो क्या हुआ, जो मेरी तरह आज़माए वो मेरी तरह वाक़िफ़ होगा। वरना अगर इब्लीस इंसानी शक्ल अख़्तियार करके शामिल हो गया तो क्या हुआ।)

"मन जर्रब बितजरबती अरफ़ा माअरफ़ती" - जिस ने मेरी तरह आज़माया वो मेरी तरह जान लेगा।

मौलाना! इस मसूदे से बाज़ अक़ाइद-ए-अहल-ए-सुन्नत पर अवाम को सिर्फ़ इत्तेला देना मक़सूद नहीं बल्कि एक मेयार-ए-सुन्नियत क़ायम फ़रमाना है कि इस पर तस्दीक़ कर दे हमारा है। (मिसरा)

चश्म व दिल रा अज़ दस्त नूर सुरूर (तरजुमा: इससे आँख और दिल को ख़ुशी का नूर हासिल होगा।)

और जो न माने बेगाना है। (मिसरा)

हवाले: १. अल-क़ुरआन अल-करीम ९ / १२३ २. अल-क़ुरआन अल-करीम ३ / १८७ ३. अल-क़ुरआन अल-करीम ५ / ५४ ४. अल-क़ुरआन अल-करीम ४ / १३५ ५. अल-क़ुरआन अल-करीम २ / २४

पेज ६०८ / ७५०

فتاوٰی رضویہ جلد ۲۹

- "وَلْيَجِدُوا فِيكُمْ غِلْظَةً" 1 اور
- "لَتُبَيِّنُنَّهٗ لِلنَّاسِ وَلَا تَكْتُمُوْنَهٗ" 2 اور
- "لَا يَخَافُوْنَ لَوْمَةَ لَآئِمٍ" 3 اور
- "كُوْنُوْا قَوّٰمِيْنَ بِالْقِسْطِ شُهَدَآءَ لِلّٰهِ وَلَوْ عَلٰٓى اَنْفُسِكُمْ" 4 اور
- "لَا تَاْخُذْكُمْ بِهِمَا رَاْفَةٌ فِيْ دِيْنِ اللّٰهِ" 5 و غیر ہا آیات کا حکم؟ اور اس پر عمل فرض قطعی ہے یا نہیں؟

عرضِ اخیر

خوں شدم زاندیشہ انجامِ ایں معیارِ حق کایں ہمہ اصلاحا گربہست و حاصل شد چہ شد ہر کہ چوں من آزماید رو شناسہ ہمچو من ورنہ گرا بلیس آدم روئے شامل شد چہ شد

(اس معیارِ حق کے انجام کے اندیشہ سے میں خون ہو گیا ہوں۔ یہ تمام اصلاحات اگر حاصل ہو گئیں تو کیا ہوا، جو میری طرح آزمائے وہ میری طرح آشنا ہوگا۔ ورنہ اگر ابلیس انسانی شکل اختیار کر کے شامل ہو گیا تو کیا ہوا ت)

"من جرّب بتجربتی عرف معرفتی"۔ جس نے میری طرح آزمایا وہ میری طرح جان لے گا۔

مولانا! اس مسودہ سے بعض عقائد اہلسنت پر عوام کو صرف اطلاع دینا مقصود نہیں بلکہ ایک معیارِ سنیت قائم فرمانا ہے کہ اس پر تصدیق کر دے ہمارا ہے۔ ع

چشم و دل را از دست نور سرور (اس سے آنکھ اور دل کو خوشی کا نور حاصل ہوگا۔ ت)

اور جو نہ مانے بیگانہ ہے۔ ع

حواشی: 1 القرآن الکریم 9 / 123 2 القرآن الکریم 3 / 187 3 القرآن الکریم 5 / 54 4 القرآن الکریم 4 / 135 5 القرآن الکریم 2 / 24

Fatawa Rizwia Volume 29

May his shadow be far from us (Its shadow is far from us. - Trans.)

But with a thousand regrets, the submission is that the purpose of this draft can never be achieved unless those misguidances that are spread today among the claimants of Islam, rather claimants of Sunnism, are explicitly mentioned and disassociated from.

Maulana! I have experienced that not just one or two, but hundreds of such human-faced devils will be found who will sign these issues, and they are not only the bitter enemies of Sunnism but also of Islam. By joining your righteous group, they will become the uprooters of your religion. That is why the noble Imams did not consider the declaration of faith (Kalima-e-Shahadat) sufficient for such people's Islam until they explicitly disavow their vile creed. In Jami' al-Fusooleen, Wajeez-e-Kardari, Bahr al-Ra'iq, and Durr al-Mukhtar etc., it is stated:

Arabic	**Urdu**
Even if he recites them (the two testimonies) habitually, it will not benefit him unless he disavows [his false beliefs].[1]	Reciting the Kalima-e-Shahadat habitually does not benefit a misguided person unless he disavows his misguidances.

A few years ago, a certain cleric, a Shah Sahib, and a preacher asked this humble servant for a certificate of his Sunnism. This humble servant wrote to him: Sir! Explicit denial of the prevailing tribulations is necessary.

Arabic / Quranic	**Urdu**
"Alif-Lam-Meem. Do people think they will be left alone because they say: 'We believe,' and will not be tested?"[2]	Do people think that they will be let off for saying "We believe" and they will not be tested?

Then I wrote and sent twenty points. He signed them without hesitation. I sent him the certificate of Sunnism. Those points included some new additions (as there was a need for them in these years because new tribulations arise daily). I request you to consider them. If the Anjuman approves of their publication and makes unhesitating endorsement of them the criterion for Sunnism, then by the grace of Allah Almighty, this is sufficient and complete; more is not needed. And if these are not there, even if you print translations of Sharh al-Aqaid, Maqasid, and Mawaqif and get signatures on them, it will by no means be sufficient. Maulana! By the grace of Allah, I have...

[1] Durr al-Mukhtar, Kitab al-Jihad, Bab al-Murtad, Mujtabai Delhi, 1/256 [2] Al-Quran al-Karim, 29:1-2

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

साया ईश दूर बाद अज़ मादूर (उसका साया हमसे दूर है। - त.)

मगर हज़ारों अफ़सोस के साथ यह गुज़ारिश है कि इस मसौदे से वह मक़सद हरगिज़ हासिल नहीं हो सकता जब तक कि वे गुमराहियाँ, जो आज कल इस्लाम के दावेदारों बल्कि सुन्नियत के दावेदारों में फैली हुई हैं, उनका स्पष्ट रूप से उल्लेख और उनसे तबर्रा (अस्वीकरण) न हो।

मौलाना! मुझे अनुभव हुआ है कि एक-दो नहीं बल्कि सैकड़ों ऐसे इंसानी शक्ल वाले शैतान मिलेंगे जो इन मुद्दों पर दस्तख़त कर देंगे और वे न केवल सुन्नियत बल्कि इस्लाम के कट्टर दुश्मन हैं और आपके हक़ के गिरोह में शामिल होकर आपके मज़हब की जड़ें काटने वाले होंगे। इसीलिए तो आदरणीय इमामों ने ऐसों के इस्लाम के लिए कलमा-ए-शहादत को हरगिज़ काफ़ी नहीं माना जब तक कि वे अपने गंदे अक़ीदे से साफ़ तौर पर बरात (अस्वीकरण) न कर लें। जामे-उल-फ़ुसूलैन, वजीज़-ए-करदरी, बहर-उर-राइक़ और दुर्र-ए-मुख़्तार वग़ैरह में है:

अरबी	**उर्दू**
वलौ अता बिहिमा (अय बिश-शहादतैन) अला वज्हिल आदते लम यनफ-अहु मालम यतबर्रा।[1]	आदतन कलमा-ए-शहादत का पढ़ना गुमराह व्यक्ति को फ़ायदा नहीं देता जब तक कि वह अपनी गुमराहियों से बरात (अस्वीकरण) न करे।

कुछ साल पहले एक मौलवी साहब, शाह साहब और वाअिज़ (उपदेशक) साहब ने फ़क़ीर (मुझ) से अपनी सुन्नियत का प्रमाण माँगा। फ़क़ीर ने उन्हें लिखा: हज़रत! प्रचलित फ़ितनों (उपद्रवों) के स्पष्ट खंडन का दायरा होना चाहिए।

अरबी / क़ुरआनी	**उर्दू**
"अलिफ़-लाम-मीम। क्या लोगों ने यह समझ रखा है कि वे सिर्फ़ इतना कह देने पर छोड़ दिए जाएँगे कि 'हम ईमान लाए' और उन्हें आज़माया नहीं जाएगा?"[2]	क्या लोग यह समझते हैं कि 'आमन्ना' (हम ईमान लाए) कहने से छुट्टी मिल जाएगी और वे आज़माए नहीं जाएँगे।

फिर बीस बातें लिखकर भेजीं, उन्होंने बिना किसी हिचकिचाहट के दस्तख़त कर दिए, फ़क़ीर ने उन्हें सुन्नियत की सनद (प्रमाण) भेज दी। उन बातों में कुछ नई बातें जोड़ी गई थीं (क्योंकि इन सालों में उनकी ज़रूरत महसूस हुई कि फ़ितने रोज़ नए पैदा होते हैं)। गुज़ारिश है कि उन पर ग़ौर फ़रमाएँ।

अंजुमन (संस्था) अगर उनके प्रकाशन को पसंद करे और उन पर बिना किसी झिझक के तस्दीक़ (पुष्टि) को सुन्नियत का पैमाना ठहराए, तो इंशा अल्लाह अल-अज़ीज़ यही काफ़ी है, ज़्यादा की ज़रूरत नहीं। और अगर ये न हों, तो शर्ह-ए-अक़ायद, मक़ासिद और मवाक़िफ़ के तर्जुमे छापकर उस पर दस्तख़त ले लीजिए, वह हरगिज़ काफ़ी नहीं है। मौलाना! अल्हम्दुलिल्लाह मैंने...

---

[1] दुर्र-ए-मुख़्तार, किताबुल जिहाद, बाबुल मुर्तद, मुज्तबाई दिल्ली, 1/256 [2] अल-क़ुरआन अल-करीम, 29:1-2

سایہ ایش دُور باد از مادور (اس کا سایہ ہم سے دُور ہے۔ت)

مگر یہ ہزار افسوس یہ گزارش کہ یہ غرض اس مسودہ سے ہرگز حاصل نہیں ہو سکتی جب تک وہ ضلالتیں کہ آج کل مدعیانِ اسلام بلکہ مدعیانِ سنیت میں پھیلی ہوئی ہیں۔ تصریحاً ان کا ذکر اور ان سے تبریہ نہ ہو۔ مولانا! مجھے تجربہ ہوا ہے، ایک دو نہیں صدہا ایسے ابلیس آدم رو ملیں گے کہ ان مسائل پر دستخط کر دیں گے اور وہ نہ صرف سنیت بلکہ اسلام کے کٹر دشمن اور آپ کے جرگہ حق میں شامل ہو کر آپ کے مذہب کے بیخ کن ہوں گے۔ اسی لیے تو ائمہ کرام نے ایسوں کے اسلام کو کلمہ شہادت ہر گز کافی نہ جانا، جب تک اپنے مسلک خبیثہ سے صراحۃً براءت نہ کریں۔ جامع الفصولین و وجیز کردری و بحرالرائق و در مختار وغیرہ میں ہے:

عربی	اردو
ولو اتی بهما(ای بالشهادتین)علی وجه العادة لم ینفعه مالم یتبرأ ۱-	عادۃً کلمہ شہادت کا پڑھنا گمراہ کو مفید نہیں جب تک وہ اپنی ضلالتوں سے براءت نہ کرے۔

چند سال ہوئے ایک مولیٰ صاحب، شاہ صاحب، واعظ صاحب نے فقیر سے اپنی سنیت کی سند تحریر مانگی، فقیر نے انہیں لکھا۔ حضرت! تصریح نفی فتن دائرہ چاہیے۔

عربی / قرآنی	اردو
"الٓمّٓ ۝ اَحَسِبَ النَّاسُ اَنْ یُّتْرَکُوْٓا اَنْ یَّقُوْلُوْٓا اٰمَنَّا وَ هُمْ لَا یُفْتَنُوْنَ ۝" ۲-	کیا لوگ یہ سمجھتے ہیں کہ آمنا کہنے سے چھٹی مل جائے گی اور وہ آزمائے نہ جائیں گے۔

پھر امورِ عشرین لکھ کر بھیجے، انہوں نے بے تکلف دستخط فرما دیئے، فقیر نے سندِ سنیت انہیں بھیج دی۔ وہ امور بعض اضافاتِ جدیدہ (کہ ان برسوں میں ان کی حاجت ہوئی کہ فتن روزانہ متجدد ہیں۔) عرض کروں انہیں غور فرمائیں۔ انجمن اگر ان کی اشاعت پسند فرمائے اور ان پر بلا دغدغہ تصدیق کو معیارِ سنیت ٹھہرائے تو ان شاء اللہ العزیز یہی کافی و وافی ہے، زیادہ کی ضرورت نہیں، اور یہ نہ ہوں تو شرحِ عقائد و مقاصد و مواقف کے ترجمے چھاپ کر اس پر دستخط لیجئے ہرگز کفایت نہیں۔ مولانا! بحمد اللہ میں نے

---

۱ درمختار کتاب الجہاد باب المرتد مجتبائی دہلی ۱ / ۲۵۶ ۲ القرآن الکریم ۲۹ / ۱-۲

Fatawa Razawiya, Volume 29

From the style of your writing, I understood that you are a plain speaker and in the matter of truth, you prefer only this, and the truth is that this is the preference of Truth (Allah):

"Therefore, proclaim what you are commanded, and turn away from the polytheists."[1] - Proclaim openly what has been commanded, and turn away from the polytheists.

By the grace of the Almighty, this is the way of this pauper (the author).

I speak openly and am delighted with my words; I am a slave of love and free from both worlds.

(I speak openly and my heart is happy with what I have done; I am a slave of love and free from both worlds. - T)

Now here are five scenarios: (1) Statements of misguidance and the name of the speaker and the book in the margins. (b) Only the names of the books. (c) Only statements in the text and the name of the speaker and book in the margins. (d) Only the name of the book in the margins. (e) Mere statements without mentioning the names of the speaker and the book.

Heaven forbid! There is no sufficiency in these five methods. I have seen with my own eyes multiple times in multiple cities that when a question was asked regarding those passages, a clear ruling of disbelief and misguidance was written. When it was said that this statement belongs to such-and-such person or book, they immediately retracted, saying, "I will never say that about them."

O Maulana! Today, the state of faith is such that insulting Allah and His Messenger is certainly disbelief, but if Zaid (a generic person) insults, it is forgiven.

"Indeed, we belong to Allah and to Him we shall return." In any case, I adopt the middle path here and see which one the blessed assembly prefers. "Allah is sufficient for us and He is the best Disposer of affairs," and Allah the Almighty is sufficient for us, and what an excellent Guardian He is! - T)

I had intended to omit those matters from the twenty points that were included in the draft and make some new additions. Now I consider it appropriate that all of

those be presented in a more refined manner than before, along with many magnificent additions.

---

[1] The Holy Quran 15/94

फतावा रज़विया, जिल्द 29

आपके लेखन की शैली से मैंने समझा कि आप स्पष्टवादी हैं और सत्य के मामले में आप इसी को पसंद करते हैं और सत्य यही है कि सत्य (ईश्वर) की पसंद भी यही है:

"इसलिए आप उस बात को खुलेआम कह दें जिसका आपको आदेश दिया गया है, और मुशरिकों (बहुदेववादियों) से मुँह मोड़ लें।"[1] - जिसका आदेश दिया गया है उसे खुलेआम कह दें और मुशरिकों से किनारा करें।

ईश्वर की कृपा से, इस फ़कीर (लेखक) का भी यही तरीका है।

मैं खुलकर कहता हूँ और अपनी बात से प्रसन्न हूँ; मैं प्रेम का दास हूँ और दोनों जहानों से स्वतंत्र हूँ।

(मैं खुलकर बात करता हूँ और अपने किए पर मेरा दिल खुश है; मैं प्रेम का गुलाम हूँ और दोनों जहानों से आज़ाद हूँ। - त)

अब यहाँ पाँच स्थितियाँ हैं: (1) गुमराह करने वाले कथन और हाशिए (मार्जिन) पर वक्ता और पुस्तक का नाम। (ब) केवल पुस्तकों के नाम। (स) मूल पाठ में केवल कथन और हाशिए पर वक्ता और पुस्तक का नाम। (द) हाशिए पर केवल पुस्तक का नाम। (इ) केवल कथन, बिना वक्ता और पुस्तक के नाम के।

ईश्वर न करे! इन पाँचों तरीकों में पर्याप्तता नहीं है। मैंने अपनी आँखों से कई बार कई शहरों में देखा है कि जब उन इबारतों (अनुच्छेदों) के बारे में प्रश्न पूछा गया, तो स्पष्ट रूप से कुफ़्र (अविश्वास) और गुमराही का फैसला लिख दिया गया। जब यह कहा गया कि यह कथन अमुक व्यक्ति या अमुक पुस्तक का है, तो वे तुरंत पलट गए कि मैं उनके बारे में तो हरगिज़ ऐसा नहीं कहूँगा।

मौलाना! आज कल तो ईमान (आस्था) की यह हालत हो गई है कि अल्लाह और उसके रसूल को अपशब्द कहना निश्चित रूप से कुफ़्र है, लेकिन अगर ज़ैद (कोई व्यक्ति) अपशब्द कहे तो माफ़ है।

"बेशक हम अल्लाह ही के हैं और उसी की तरफ लौटने वाले हैं।" बहरहाल, मैं यहाँ मध्यम मार्ग अपनाता हूँ और देखता हूँ कि मुबारक अंजुमन (पवित्र सभा) किसे पसंद करती है। "अल्लाह हमारे लिए काफी है और वह बेहतरीन कार्यसाधक है," और अल्लाह तआला हमारे लिए काफी है और वह क्या ही अच्छा कार्यसाधक है! - त)

मैंने इरादा किया था कि बीस विषयों में से उन बातों को हटा दूँ जो मसौदे (ड्राफ्ट) में आ गई हैं और कुछ नई चीज़ें जोड़ूँ। अब मैं यह उचित समझता हूँ कि वे सभी पहले से अधिक सुंदर शैली में और बहुत सी महान वृद्धियों के साथ हों।

---

[1] अल-क़ुरान अल-करीम 15/94

آپ کے رنگ تحریر سے سمجھا کہ آپ صاف گو ہیں اور امر حق میں اسی کو پسند فرماتے ہیں اور الحق کو یہی پسند حق ہے:

"فَاصْدَعْ بِمَا تُؤْمَرُ وَأَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِينَ ﴿٩٤﴾"[1] - جس کا حکم دیا گیا وہ علی الاعلان فرما دیں اور مشرکین سے اعراض فرمائیں۔

بجمدہ سبحانہ یہی طریقہ فقیر کا ہے

فاش میگویم و از گفتہ خود دلشادم بندہ عشقم و از ہر دو جہاں آزادم

(میں کھلی بات کرتا ہوں اور اپنے کیے ہوئے پر میرا دل خوش ہے، میں عشق کا غلام ہوں اور دونوں جہاں سے آزاد ہوں۔ ت)

اب یہاں پانچ صورتیں ہیں۔ (۱) اقوال ضلال کے قائلین اور حاشیہ پر نام قائل و کتاب۔ (ب) صرف نام کتب (ج) متن میں صرف اقوال اور حاشیہ پر نام قائل و کتاب۔ (د) حاشیہ پر صرف نام کتاب (ہ) مجرد اقوال بے اشعار نام قائل و کتاب۔

حاش للہ ! طریقہ خمسہ میں کفایت نہیں۔ میں نے اپنی آنکھوں سے متعدد بار متعدد شہروں میں وہ دیکھئے ہیں کہ ان عبارات کی نسبت ان سے سوال ہوا، صاف صاف حکم کفر وضلال لکھ دیا۔ جب کہا گیا کہ یہ قول فلاں شخص یا فلاں کتاب کا ہے۔ فوراً پلٹ گئے کہ ان کو تو ہر گز نہ کہوں گا۔

مولانا ! آج کل تو یہ حالت ایمان رہ گئی ہے، اللہ ورسول کو گالی دینا ضرور کفر ہے مگر زید گالی دے تو معاف ہے۔

"إِنَّا لِلَّهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ" بہر حال میں یہاں طریق اوسط اختیار کرتا ہوں اور دیکھتا ہوں کہ مبارک انجمن کون سا پسند فرماتی ہے۔ وحسبنا اللہ ونعم الوکیل اور اللہ تعالیٰ ہمیں کافی ہے اور کیا ہی اچھا کار ساز ہے۔ ت)

میں نے قصد کیا تھا کہ امور عشرین سے وہ باتیں کہ مسودہ میں آ گئی ہیں ساقط اور بعض جدید اضافہ کروں۔ اب یہ مناسب سمجھتا ہوں کہ وہ تمام پہلے سے نفیس تر پیرایہ میں مع زیادات کثیرہ جلیلہ۔

---

[1] القرآن الکریم ۱۵/ ۹۴

Fatawa Razawiyya, Volume 29

I mention profusely that if the society (Anjuman) likes it, then this is enough, otherwise it will remain as a memorial. And Allah Subhanahu wa Ta'ala will take work for whomsoever He wills.

And success is from Allah.

I wanted to write it here, but by the grace of Allah, it has become a sufficient, ample, exquisite, and independent treatise named "Noor-ul-Furqan bayna Jund-il-Ilah wa Ahbab-ish-Shaitan" (The Light of Distinction between the Army of God and the Friends of Satan). After transcription, if Allah Almighty wills and if the blessed society desires, it will be sent separately. All praise be to Allah. The answers to (8 and 9) will be clear from the list which this humble servant (Faqir) has requested Abu al-Ala Amjad Ali Sahab to write, and if Allah Almighty wills, it will be sent with this very humble letter. Those matters which occurred in some previous answers must be kept in mind.

(10) "That makes ten complete"[1] [Quran 2:196] (These became ten in total. -T). May Allah Almighty make the society even more blessed and grant great benefit to the Ahl-e-Sunnat through it. For several years, by the praise of Allah, this humble servant has considered it a pure society of Ahl-e-Sunnat wa Jama'at. And by the grace of Allah, no cause for complaint was found. However, Maulana, there is an extreme abundance of tasks entrusted to this humble servant, and on top of that, exhaustion, weakness of strength, and complete solitude and loneliness are such factors that forcibly prevent this humble servant from attending to other tasks. I don't even get the chance to step into my own school (madrasa). This service that my most noble Master, may Allah's peace and blessings be upon him, is taking from this personification of shortcoming, solely out of His grace, is the service of Ahl-e-Sunnat and the creed of Ahl-e-Sunnat itself. Whosoever wishes may stay with this humble servant for as long as they want, for a month, two months, a year, or two years, and whenever they find a spare minute of this humble servant or see me doing any personal work, they may question me at that time, saying "You could have done other work in this much time." When, by the praise of Allah, all my time is spent in serving your creed, now if this work is futile or another work is more important than this, then I should be guided, otherwise, this humble servant's excuse is acceptable.

Maulvi Syed Deedar Ali Sahab and Maulvi Abul Farah Abdul Majeed Sahab asked this humble servant to establish a society and perform its services. This humble servant

submitted, "Is the work that Allah Almighty is taking from here necessary or not?" They said: "Extremely necessary." This humble servant submitted: "Someone else..."

---

[1] The Holy Quran 2/196

फ़तावा रज़विया, खण्ड २९

मैं विस्तार से उल्लेख करूँ कि यदि अंजुमन (संस्था) इसे पसंद करे तो यही पर्याप्त है, अन्यथा यह एक यादगार रहेगी। और अल्लाह सुब्हानहु व तआला जिससे चाहेगा काम लेगा।

और सफलता अल्लाह की ओर से है।

यहाँ इसे लिखना चाहा था, लेकिन अल्लाह के अनुग्रह से यह एक पर्याप्त, व्यापक, उत्कृष्ट और स्वतंत्र शोध-पत्र बन गया है जिसका नाम "नूर-उल-फुरकान बैन जुन्द-इल-इलाह व अहबाब-इश-शैतान" (ईश्वर की सेना और शैतान के मित्रों के बीच अंतर का प्रकाश) रखा गया है। प्रतिलिपि बनाने के बाद, यदि अल्लाह ने चाहा और यदि धन्य अंजुमन की इच्छा हुई, तो इसे अलग से भेजा जाएगा। सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है। (८ और ९) के उत्तर उस सूची से स्पष्ट होंगे जिसे लिखने के लिए इस फकीर (विनीत सेवक) ने अबू अल-अला अमजद अली साहब से अनुरोध किया है, और यदि अल्लाह ने चाहा तो वह इसी विनीत पत्र के साथ भेजा जाएगा। वे बातें जो कुछ पिछले उत्तरों में आई हैं, उन्हें अवश्य ध्यान में रखा जाए।

(१०) "वह पूरे दस हुए"[1] [कुरान २:१९६] (ये कुल दस हुए। -त)। अल्लाह अज़्ज़वजल अंजुमन को और अधिक धन्य करे और इसके माध्यम से अहल-ए-सुन्नत को महान लाभ पहुँचाए। कई वर्षों से, अल्लाह की प्रशंसा से, यह फकीर इसे अहल-ए-सुन्नत व जमात की एक शुद्ध अंजुमन मानता है। और अल्लाह के अनुग्रह से, शिकायत का कोई कारण नहीं पाया गया। लेकिन मौलाना, इस फकीर के ज़िम्मे कामों की अत्यधिक बहुतायत है, और उस पर थकान, शक्ति की दुर्बलता, और पूर्ण एकांत और अकेलापन ऐसे कारक हैं जो इस फकीर को दूसरे काम की ओर ध्यान देने से मजबूरी में रोकते हैं। खुद अपने मदरसे में कदम रखने तक का समय नहीं मिलता। यह सेवा जो मेरे आका-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इस त्रुटियों के पुतले से केवल अपने अनुग्रह से ले रहे हैं, वह अहल-ए-सुन्नत और अहल-ए-सुन्नत के पंथ की ही सेवा है। जो साहब चाहें, जितने दिन चाहें, फकीर के यहाँ निवास करें। महीना, दो महीना, साल, दो साल और फकीर का जो मिनट खाली देखें या जिस समय फकीर को कोई व्यक्तिगत काम करते देखें, उसी समय मुझसे पूछताछ करें कि "आप इतनी देर में दूसरा काम कर सकते थे।" और जब अल्लाह की प्रशंसा से सारा समय आपके ही पंथ की सेवा में व्यतीत होता है, तो अब यदि यह काम व्यर्थ है या दूसरा काम इससे अधिक महत्वपूर्ण है, तो मुझे निर्देश दिया जाए, अन्यथा फकीर का बहाना स्वीकार्य है।

मौलवी सैयद दीदार अली साहब और मौलवी अबुल फराह अब्दुल मजीद साहब ने फकीर से एक अंजुमन स्थापित करके उसकी सेवाएँ करने को कहा। फकीर ने निवेदन किया कि "जो काम अल्लाह अज़्ज़वजल यहाँ से ले रहा है, वह आवश्यक है या नहीं?" उन्होंने कहा: "अत्यंत आवश्यक।" फकीर ने निवेदन किया: "कोई अन्य साहब..."

---

[1] अल-कुरान अल-करीम २/ १९६

جزیلہ ذکر کروں کہ انجمن پسند فرمائے تو یہی بس ہے، ورنہ یادگار رہے گی۔ اور حق سبحانہ و تعالیٰ جس کے لیے چاہے گا کام دے گی۔

وباللہ التوفیق۔

یہاں اسے لکھنا چاہا تھا مگر یہ بفضلہ تعالی ایک کافی وافی نفیس مستقل رسالہ ہوگیا جس کا نام "نورالفرقان بین جند الالہ و احباب الشیطن" رکھا گیا۔ بعد تبییض ان شاء اللہ العزیز اگر انجمن مبارک کی خواہش ہوئی جداگانہ مرسل ہوگا۔ واللہ الحمد (۸ و ۹) کے جوابات اس فہرست سے واضح ہوں گے جسے لکھنے کے لیے فقیر نے ابو العلاء امجد علی صاحب سے گزارش کردی ہے اور ان شاء اللہ تعالی اسی نیاز نامہ کے ساتھ مرسل ہوگی، وہ امور کہ بعض جوابات سابقہ میں گزرے ضرور ملحوظ خاطر رہیں۔

(۱۰) "تِلْكَ عَشَرَةٌ كَامِلَةٌ"1۔ (یہ پورے دس ہوئے ۔ت) اللہ عزوجل انجمن کو مبارک تر کرے اور اہل سنت کو اس سے نفع عظیم پہنچائے۔ کئی سال سے بحمدہ تعالی فقیر اسے خالص انجمن اہل سنت و جماعت سمجھتا ہے۔ اور بفضلہ تعالی کوئی امر قابل شکایت معلوم نہ ہوا، مگر مولانا اس فقیر حقیر کے ذمہ کاموں کی بے انتہا کثرت ہے، اور اس پر نقاہت و ضعفِ قوت اور اس پر محض تنہائی و وحدت ، ایسے امور ہیں کہ فقیر کو دوسرے کام کی طرف متوجہ ہونے سے مجبورانہ باز رکھتے ہیں۔ خود اپنے مدرسہ میں قدم رکھنے تک کی فرصت نہیں ملتی۔ یہ خدمت کہ فقیر سراپا تقصیر سے میرے مولائے اکرم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم محض اپنے کرم سے لے رہے ہیں۔ اہل سنت و مذہب اہل سنت ہی کی خدمت ہے جو صاحب چاہیں جتنے دن چاہیں فقیر کے یہاں اقامت فرمائیں۔

مہینہ دو مہینہ سال دوسال اور فقیر کا جو منٹ خالی دیکھیں یا جس وقت فقیر کو کوئی ذاتی کام کرتے دیکھیں اسی وقت مواخذہ فرمائیں کہ تو اتنی دیر میں دوسرا کام کرسکتا تھا، اور جب بحمدہ تعالیٰ سارا وقت آپ ہی کے مذہب کی خدمت گاری میں گزرتا ہے تو اب یہ کام اگر فضول یا دوسرا اس سے اہم ہو تو مجھے ہدایت فرمائی جائے، ورنہ فقیر کا عذر قابل قبول ہے۔

مولوی سید دیدار علی صاحب و مولوی ابو الفرح عبدالمجید صاحب نے فقیر سے ایک انجمن قائم کرکے اس کی خدمات انجام دینے کو فرمایا۔ فقیر نے گزارش کی کہ جو کام اللہ عزوجل یہاں سے لے رہا ہے۔ ضروری ہے یا نہیں؟ فرمایا: سخت ضروری، فقیر نے عرض کی۔ دوسرے کوئی صاحب

---

1 القرآن الکریم ۲/ ۱۹۶

Fatawa Rizwia, Vol 29

"Appoint [someone] for this and take some other service for the Ahl-e-Sunnat from me," he said, "No one else can do it, nor can ten people combined accomplish it." This humble servant (faqir) submitted that the excuse is clear again. In short, whatever important objectives the Anjuman Ahl-e-Sunnat desires, if one of them is within my current capacity, then consider that as my service to the Anjuman. Wherever I am and in whatever state I am, I am a lowly servant of the Ahl-e-Sunnat school of thought and a well-wisher for my Sunni brothers. However, due to the aforementioned reasons, I have neither the opportunity nor the strength to travel anywhere, nor the aptitude to leave my own work and take on another.

"Allah is sufficient for us, and He is the best Disposer of affairs. And Allah speaks the truth, and He guides to the [right] path." | Allah Almighty is sufficient for us, and what an excellent Guardian He is! Allah speaks the truth and grants guidance to the straight path. (T)

In this humble message, regarding the matters presented, wherever there is good advice, do inform me. What is the need for this humble servant? The Leader of the Believers, Umar Farooq the Great (may Allah be pleased with him), said during his rightly-guided caliphate:

"There is no good in you if you do not speak [the truth/advice], and there is no good in me if I do not listen." | There is no goodness in you if you do not give good advice, and there is no goodness in me if I do not listen to it.

May Allah Almighty grant us, you, and all His brothers the ability for every good deed and protect us and you from every evil. And may Allah Almighty send blessings, peace, and abundance upon our Master and Lord Muhammad Mustafa, his family, companions, offspring, and the entire Ummah. Ameen. 27 Jumada al-Ukhra 1330 AH | May Allah Almighty grant us, you, and all our brothers the success to do every good and keep us safe from every evil. May Allah Almighty send blessings and peace and abundance upon our Master and Lord Muhammad Mustafa, his family, companions, children and the entire nation. Ameen (T)

Page 612 of 750

फ़तावा रिज़विया, खंड २९

"इस पर नियुक्त फरमा दीजिये और मुझसे कोई और अहले सुन्नत की सेवा लीजिये," उन्होंने फ़रमाया, "न दूसरा कोई इसे कर सकता है, न दस आदमी मिलकर अंजाम दे सकते हैं।" फ़क़ीर ने अर्ज़ किया कि फिर उज़्र स्पष्ट है। सारांश यह है कि अंजुमन अहले सुन्नत जो महत्वपूर्ण उद्देश्य चाहती है, उनमें से यदि कोई एक मेरे वर्तमान सामर्थ्य में है, तो उसे ही अंजुमन की सेवा समझें। मैं जहाँ हूँ और जिस हाल में हूँ, मज़हब-ए-अहले सुन्नत का अदना सा खिदमतगार और अपने सुन्नी भाइयों का शुभचिंतक हूँ। अलबत्ता, उपरोक्त कारणों से कहीं आने-जाने का न अवसर है, न शक्ति है, और न ही अपना काम छोड़कर दूसरा काम लेने की योग्यता है।

"अल्लाह हमारे लिए काफी है और वह सबसे अच्छा कार्यसाधक है, और अल्लाह सत्य कहता है और वही सीधा मार्ग दिखाता है।" | अल्लाह तआला हमारे लिए काफी है और वह क्या ही अच्छा कार्यसाधक है। अल्लाह तआला सत्य फरमाता है और सीधी राह की हिदायत अता फरमाता है। (त)

इस नियाज़ नामे में जो बातें पेश की गई हैं, जहाँ कहीं भी नेक सलाह हो, ज़रूर सूचित फरमाएं। फ़क़ीर की क्या ज़रूरत है। अमीर-उल-मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़ आज़म (रज़ियल्लाहु अन्हु) अपने खिलाफत-ए-राशदा के दौर में फ़रमाते थे:

"तुममें कोई भलाई नहीं जब तक तुम (सच/सलाह) न कहो, और मुझमें कोई भलाई नहीं अगर मैं न सुनूँ।" | तुम नेक सलाह न दो तो तुममें भलाई नहीं, और मैं उसे न सुनूँ तो मुझमें भलाई नहीं।

अल्लाह तआला हमें, तुम्हें और उसके तमाम भाइयों को हर नेक काम की तौफीक अता फरमाए और हमें और तुम्हें हर बुराई से महफूज़ रखे। और अल्लाह तआला हमारे आका और मौला मुहम्मद मुस्तफा, आपकी आल, असहाब, औलाद और तमाम उम्मत पर दुरूद-ओ-सलाम और बरकत नाज़िल फरमाए। आमीन। २७ जमादी-उल-उखरा १३३० हिजरी | अल्लाह तआला हमें, तुम्हें और हमारे तमाम भाइयों को हर खैर की तौफीक अता फरमाए और हर शर से महफूज़ रखे। अल्लाह तआला हमारे आका और मौला मुहम्मद मुस्तफा पर, आपकी आल, असहाब, औलाद और तमाम उम्मत पर दुरूद-ओ-सलाम और बरकत नाज़िल फरमाए। आमीन (त)

पृष्ठ ७५० का ६१२

اس پر مقرر فرما دیجئے اور مجھ سے کوئی اور خدمت اہل سنت لیجئے ، فرمایا نہ دوسرا کوئی اسے کر سکتا ہے نہ دس آدمی مل کر انجام دے سکتے ہیں۔ فقیر نے گزارش کی پھر عذر واضح ہے۔ غرض انجمن اہل سنت جو اہم مقاصد چاہے ان میں سے ایک میرے مقدور بھر بالفعل موجود ہے تو اسی کو خدمت انجمن تصور فرمائیں، میں جہاں ہوں اور جس حال میں ہوں مذہب اہل سنت کا ادنیٰ خدمت گار اور اپنے سنی بھائیوں کا خیر خواہ ہوں۔ البتہ وجوہ مذکورہ بالا سے نہ کہیں آنے جانے کی فرصت نہ طاقت، نہ اپنا کام چھوڑ کر دوسرا کام لینے کی لیاقت۔

"وحسبنا الله و نعم الوكيل، والله يقول الحق ويهدي السبيل" ۔ | اللہ تعالیٰ ہمیں کافی ہے اور کیا ہی اچھا کار ساز ہے۔ اللہ تعالیٰ حق فرماتا ہے اور سیدھی راہ کی ہدایت عطا فرماتا ہے۔ (ت)

اس نیاز نامہ میں جو امور معروض ہوئے ہیں، جہاں کہیں مشورہ خیر ہو ضرور مطلع فرمائیں۔ فقیر کی کیا حاجت ہے۔ امیر المومنین عمر فاروق اعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہ اپنے زمانہ خلافت راشدہ میں فرماتے ہیں:

لا خير فيكم مالم تقولوا ولا خير في مالم اسمع | تم مشورہ خیر نہ دو تو تم میں بھلائی نہیں اور میں اس کو نہ سنوں تو مجھ میں بھلائی نہیں۔

وفقنا اللہ تعالیٰ وایاکم وسائر اخوانہ لکل خیر وحفظنا و ایاکم من کل شر، وصلی اللہ تعالیٰ علی سیدنا و مولانا محمد والہ وصحبہ و ابنہ و حزبہ اجمعین و بارک وسلم امین۔ ۲۷ جمادی الأخری ۱۳۳۰ھ | اللہ تعالیٰ ہمیں تمہیں اور ہمارے تمام بھائیوں کو ہر خیر کی توفیق عطا فرمائے اور ہر شر سے

محفوظ رکھے۔ اللہ تعالیٰ ہمارے آقا و مولیٰ محمد مصطفی، آپ کی آل، اصحاب، اولاد اور تمام امت پر درود و سلام اور برکت نازل فرمائے۔ آمین (ت)

Fatawa Razawiyya Volume 29

Twenty Matters for Distinguishing the Beliefs of Sunnis (Twenty matters for identifying the beliefs of Sunnis)

In the name of Allah, the Most Gracious, the Most Merciful

| Praise be to Allah, Lord of humans and jinn, and blessings and peace be upon our great and benevolent Prophet, the savior from the Fire and the giver of Paradise, whose remembrance is a protection and whose love is a shield, and upon his family, his companions, and the People of the Sunnah. | All praise is due to Allah the Almighty, who is the Lord of humans and jinn, and may blessings and peace be upon our Prophet of greatness and favor, who is the one to save from Hell and grant Paradise, whose remembrance is protection and whose love is a shield, and upon his family and companions and the Ahl-e-Sunnat. (T) |

In the blessed month of Ramadan 1318 Hijri (upon whose owner be blessings and greetings), a letter came to this humble servant from the Sambhar region of Jaipur state (Rajasthan), summarized as follows: Copy of a letter from Hafiz Muhammad Usman Sahib to the humble servant (the author, may mercy be upon him). To the presence of the source of grace, Maulana Maulvi Ahmad Raza Khan Sahib Barelvi, the Muhaddith and Imam of the Ahl-e-Sunnat wa Jama'at. After the Islamic greeting, it is submitted that at this time it is a great fortune for our region of Marwar (Rajasthan) that nowadays here in Sambhar, the honorable Maulana Maulvi Ahmad Ali Shah Sahib Hanafi Naqshbandi Owaisi...

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

उमूर-ए-इशरीन दर इम्तियाज़-ए-अक़ायद-ए-सुन्नियीन (सुन्नियों के अक़ीदों की पहचान में बीस उमूर)

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम

| तमाम प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जो इंसानों और जिन्नों का रब है। और दुरूद-ओ-सलाम हो हमारे अज़मत और एहसान वाले नबी पर, जो जहन्नुम से बचाने और जन्नत अता फ़रमाने वाले हैं, जिनका ज़िक्र हिफ़ाज़त और जिनकी मोहब्बत ढाल है। और आपकी आल पर और सहाबा पर और अहल-ए-सुन्नत पर। | तमाम तारीफें अल्लाह तआला के लिए हैं जो इंसानों और जिन्नों का रब है, और दुरूद व सलाम हो हमारे अज़मत व एहसान वाले नबी पर जो जहन्नुम से बचाने और जन्नत अता फ़रमाने वाला है, जिसका ज़िक्र हिफ़ाज़त और उसकी मोहब्बत ढाल है, और आपकी आल पर और सहाबा पर और अहल-ए-सुन्नत पर। (त) |

माह-ए-रमज़ानुल मुबारक 1318 हिजरी क़ुदसिया (जिनके साहिब पर दुरूद और सलाम हो) में फ़कीर के पास सांभर इलाक़ा रियासत जयपुर (राजस्थान) से एक ख़त इस खुलासे के साथ आया। नक़ल नामा हाफ़िज़ मुहम्मद उस्मान साहब बनाम फ़कीर (मुसन्निफ़ अलैहिर्रहमा) बख़िदमत फ़ैज़ दरजत मौलाना मौलवी अहमद रज़ा खान साहब बरेलवी मुहद्दिस व इमाम अहल-ए-सुन्नत व जमाअत, बाद सलाम सुन्नतुल इस्लाम के अर्ज़े ख़िदमत है कि इस वक़्त हमारे मुल्क मारवाड़ (राजस्थान) की बड़ी ख़ुश-क़िस्मती है कि आज-कल यहाँ सांभर में जनाब मौलाना मौलवी अहमद अली शाह साहब हनफ़ी नक़्शबंदी ओवैसी...

पेज 614 ऑफ़ 750

امور عشرین در امتیاز عقائد سنیین (سنیوں کے عقائد کی پہچان میں بیس امور)

بسم اللہ الرحمن الرحیم

| الحمد للہ رب الانس والجنۃ، والصلوۃ والسلام علی نبینا العظیم والمنۃ، المنقذ من النار والمعطی الجنۃ الذي ذکرہ حرز وحبہ جُنۃ وعلی الہ وصحبہ واھل السنۃ۔ | تمام تعریفیں اللہ تعالٰی کے لیے ہیں جو انسانوں اور جنوں کا رب ہے، اور درود و سلام ہو ہمارے عظمت و احسان والے نبی پر جو جہنم سے بچانے اور جنت عطا فرمانے والا ہے، جس کا ذکر حفاظت اور اس کی محبت ڈھال ہے، اور آپ کی آل پر اور صحابہ پر اور اہلسنت پر۔ (ت) |

ماہِ رمضان المبارک ۱۳۱۸ ہجریہ قدسیہ علی صاحبھا الصلوۃ والتحیۃ میں فقیر کے پاس سانبھر علاقہ ریاست جے پور (راجستھان) سے ایک خط بایں تلخیص آیا۔ نقل نامہ حافظ محمد عثمان صاحب بنام فقیر (مصنف علیہ الرحمہ) بخدمت فیض درجت مولانا مولوی احمد رضا خان صاحب بریلوی محدث و امام اہل سنت و جماعت بعد سلام سنت الاسلام کے عرض خدمت ہے کہ دریں ولا ہماری ملک مارواڑ (راجستھان) کی بڑی خوش قسمتی ہے کہ آج کل یہاں سانبھر میں جناب مولانا مولوی احمد علی شاہ صاحب حنفی نقشبندی اویسی...

Fatawa Razawiyya Volume 29

...have arrived, we have already benefited from your various writings. Now we are benefiting from your eloquent speech, hidden influence, and spiritual attention. Non-conformists (Ghair-Muqallideen) and those with other false beliefs repent and leave your sermons. There is no sermon in which you do not describe the evils of Nadwa (i.e., the total union of heresy). People here were great admirers of Nadwa, but now they have become as repelled as one is repelled by an evil spirit (Jinn). A Nadvi scholar has also come here. He says if Molvi Ahmed Ali Shah Sahib is an opponent, then he himself is ignorant and irreligious. A few people have been misled by his words; they say if Molvi Ahmed Raza Khan Sahib of Bareilly writes regarding Molvi Ahmed Ali Shah Sahib, then we will listen to his words and repent from our thoughts. Therefore, it is requested to describe Molvi Ahmed Ali Shah Sahib as he is in your knowledge. This writing of yours will be very useful for the rebellious ones. Servant Muhammad Usman.

(The leader of the Ahl-e-Sunnat, Ala Hazrat [may Allah's mercy be upon him], writes) The humble one (faqir) did not have a detailed introduction to the aforementioned Maulana before this, and the matter of testimony, especially regarding important and great beliefs, is serious. Therefore, this letter was sent in reply. (Letter of Ala Hazrat)

Letter of the Humble One (the Author [may mercy be upon him]) to Hafiz (Muhammad Usman) Sahib

For the observation of the kind Hafiz Muhammad Usman Sahib (may his kindness increase), Peace be upon you and the mercy and blessings of Allah,

The kind letter arrived, thank you for remembering. Molvi Ahmed Ali Shah Sahib graced my humble home with his presence; it was our first meeting. Afterwards, I had the honor of meeting him again at the great gathering in Azimabad (Patna, Bihar). That too was very brief, such that apart from greetings and shaking hands, there was no opportunity for any conversation. The matter of testimony is great; I do not, God forbid, harbor any ill suspicion, rather I wish to know in detail and evidently those virtues of the aforementioned Maulana which I now know briefly and through hearsay (via the mentioned Hafiz). From the Maulana's love for truth, it is hoped that he will be exceedingly happy and joyful at this request of the humble one. These days, it is not just the fitna (mischief) of non-conformists or Nadwa that is spreading in India, but God forbid, there are hundreds of calamities. The humble one presents

twenty matters; the aforementioned Maulana should record his sufficient and complete verification on them, whereby his complete acceptance with an open heart is clearly proven, and after adorning it with his seal, send it to the humble one.

The humble Ahmad Raza Qadri (may he be forgiven) From Bareilly, 27th Ramadan al-Mubarak 1318H

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

...तशरीफ़ लाए हैं, हम लोग आपकी विभिन्न रचनाओं से लाभान्वित हो चुके थे। अब आपकी वाकपटुता, गुप्त प्रभाव और आध्यात्मिक एकाग्रता से लाभ प्राप्त कर रहे हैं। गैर-मुक़ल्लिदीन और अन्य झूठे अक़ीदे (विश्वास) वाले तौबा करके आपके प्रवचनों से उठते हैं। ऐसा कोई प्रवचन नहीं होता जिसमें आप नदवा (यानी पूर्ण नास्तिकता का मेल) की बुराइयों का वर्णन न करते हों। यहाँ के लोग नदवा के बड़े प्रशंसक थे, अब वे ऐसे घृणा करने लगे हैं जैसे कोई किसी दुष्ट आत्मा (जिन्नात) से घृणा करता है। एक नदवी मौलवी भी यहाँ आया है, वह कहता है कि यदि मौलवी अहमद अली शाह साहब विरोधी हैं, तो वे स्वयं अज्ञानी और अधर्मी हैं। कुछ लोग उसकी बातों से बहक गए हैं, वे कहते हैं कि यदि बरेली के मौलवी अहमद रज़ा खान साहब मौलवी अहमद अली शाह साहब के बारे में लिख दें, तो हम उनकी बात सुनेंगे और अपने विचारों से तौबा करेंगे। अतः सेवा में निवेदन है कि मौलवी अहमद अली शाह साहब आपके ज्ञान में जैसे हों, वैसा लिख भेजें। आपका यह लेखन विद्रोहियों के लिए बहुत उपयोगी होगा। दास मुहम्मद उस्मान।

(सैयद इमाम अहले सुन्नत आला हज़रत रहमतुल्लाह अलैह लिखते हैं) फ़कीर का इससे पहले उक्त मौलाना से विस्तृत परिचय नहीं था और गवाही का मामला, विशेष रूप से महत्वपूर्ण और महान अक़ीदों के संबंध में, गंभीर है। इसलिए जवाब में यह पत्र भेजा गया। (आला हज़रत का पत्र)

फ़कीर (लेखक रहमतुल्लाहि अलैहि) का पत्र हाफ़िज़ (मुहम्मद उस्मान) साहब के नाम

कृपालु हाफ़िज़ मुहम्मद उस्मान साहब (उनका अनुग्रह बढ़े) के अवलोकन हेतु, अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू।

कृपा पत्र प्राप्त हुआ, याद करने के लिए धन्यवाद। मौलवी अहमद अली शाह साहब ने मेरे गरीबखाने पर कृपा की थी, वह पहली मुलाकात थी। उसके बाद, अज़ीमाबाद (पटना, बिहार) के विशाल जलसे में मुलाक़ात का सौभाग्य प्राप्त हुआ। वह मुलाकात भी बहुत संक्षिप्त थी कि सलाम और मुसाफ़ा (हाथ मिलाने) के अलावा किसी बातचीत की नौबत नहीं आई। गवाही का मामला गंभीर है, खुदा न करे मैं कोई बुरा गुमान (संदेह) करूँबल्कि उक्त मौलाना के जिन गुणों को मैं अब संक्षेप में और सुना-सुनाया (उक्त हाफ़िज़ के माध्यम से) जानता हूँ, उन्हें विस्तार से और प्रत्यक्ष रूप से जान लूँ। मौलाना की सत्यप्रियता से आशा है कि फ़कीर के इस निवेदन पर वे अत्यंत प्रसन्न होंगे। आजकल भारत में केवल गैर-मुक़ल्लिदीन या नदवा का ही फ़ितना नहीं फैला है, बल्कि खुदा की पनाह सैकड़ों मुसीबतें

हैं। फ़कीर बीस मामले पेश करता है, उक्त मौलाना उन पर अपनी पर्याप्त और पूर्ण पुष्टि लिखें जिससे उनकी खुले दिल से पूर्ण स्वीकृति स्पष्ट रूप से सिद्ध हो जाए, और अपनी मुहर से सुशोभित करके फ़कीर के पास भेज दें।

फ़कीर अहमद रज़ा क़ादरी (ईश्वर उन्हें क्षमा करे) बरेली से, 27 रमज़ान अल-मुबारक 1318 हिजरी

पृष्ठ 615/750

تشریف لائے ہیں، ہم لوگ آپ کی تصنیفاتِ گوناگوں سے مستفیض ہو چکے تھے۔ اب خوش بیانی، اثر پنہانی و توجہ قلبی سے فیض یاب ہو رہے ہیں، غیر مقلدین و دیگر عقائد باطلہ والے توبہ کر کے وعظ سے اُٹھتے ہیں کوئی وعظ ایسا نہیں ہوتا جس میں آپ ندوی (یعنی صلہ کلی الحاد) کی برائی بیان نہ کرتے ہوں، یہاں کے لوگ ندوے کے بڑے ثنا خواں تھے اب ایسے متنفر ہو گئے جیسے کسی خبیث (جن) سے کوئی متنفر ہوتا ہے۔ ایک مولوی ندوی بھی یہاں آگیا ہے وہ کہتا ہے اگر مولوی احمد علی شاہ صاحب مخالف ہیں تو خود جاہل وبد دین ہیں۔ چند لوگ اس کے کہنے سے بہک گئے ، وہ کہتے ہیں اگر مولوی احمد رضا خان صاحب بریلوی درباره مولوی احمد علی شاہ صاحب لکھ دیں تو ہم ان کی باتیں سنیں گے اور اپنے خیالات سے توبہ کریں گے ، لہذا عرض خدمت ہے کہ مولوی احمد علی شاہ صاحب آپ کے علم میں جیسے ہوں تحریر فرمائیے ، آپ کی یہ تحریر سرکشوں کے لیے بہت مفید ہوگی۔ العبد محمد عثمان۔ (سید امام اہل سنت اعلیحضرت رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ تحریر فرماتے ہیں) فقیر کو اس سے پہلے مولانا موصوف سے تعارف تفصیلی نہ تھا اور امر شہادت خصوصاً در باره عقائد اہم و اعظم ، لہذا جواب میں یہ خط ارسال فرمایا۔ (مکتوب اعلیحضرت) نامہ فقیر (مصنف علیہ الرحمہ) بنام حافظ (محمد عثمان) صاحب بملاحظہ کرم فرما حافظ محمد عثمان صاحب زید لطفہم ، السلام علیکم و رحمۃ اللہ و برکاتہ ، لطف نامہ آیا، ممنون یاد آوری فرمایا، مولوی احمد علی شاہ صاحب نے غریب خانہ پر کرم فرمایا تھا، پہلی ملاقات تھی ، بعدہ، جلسہ عظیم آباد (پٹنہ بہار) میں نیاز حاصل ہوا۔ وہ اس سے بھی مجمل تھا کہ سوائے سلام و مصافحہ کے کسی مکالمہ کی نوبت نہ آئی۔ امرِ شہادت عظیم ہے، میں معاذ اللہ کوئی سوء ظن نہیں کرتا بلکہ مولانا موصوف کے جن فضائل کو اب اجمالاً و سماعاً (بذریعہ حافظ مذکور) جانتا ہوں

تفصیلاً و عیاناً جان لوں۔ مولانا کی حق پسندی سے امید ہے کہ فقیر کی اس عرض پر کمال خوش و مسرور ، آج کل غیر مقلدین یا ندوے ہی کا فتنہ ہندوستان میں ساری نہیں بلکہ معاذ اللہ صد ہا آفتیں ہیں، فقیر بیس امور حاضر کرتا ہے مولانا موصوف ان پر اپنی تصدیق کافی و وافی جس سے بکشادہ پیشانی تسلیم کامل روشن طور پر ثابت ہو تحریر فرما کر اپنی مہر سے مزین فرما کر فقیر کے پاس روانہ کردیں۔ فقیر احمد رضا قادری عفی عنہ از بریلی ۲۷ رمضان المبارک ۱۳۱۸ھ

Volume 29 Fatawa Razawiyya

In the name of Allah, the Most Gracious, the Most Merciful. Twenty matters seeking attestation from جناب Maulana Maulvi Ahmad Ali Shah Sahib Mirzapuri.

(1) Syed Ahmad Khan of Aligarh and all his followers are infidels (kafir). (2) A Rafidi who calls the Great Quran incomplete, or considers Maula Ali (Karam Allah Wajhahu) or any non-prophet to be superior to any of the preceding Prophets (peace be upon them), is an infidel and an apostate (kafir and murtad). (3) A Tabarrai Rafidi is an infidel according to the jurists (fuqaha), and there is consensus (ijma') on him being astray, an innovator (bid'ati), and destined for Hell (jahannami). (4) One who gives preference to Maula Ali (May Allah be pleased with him) over the Shaikhayn (Abu Bakr and Umar - May Allah be pleased with them both) in terms of closeness to Allah is astray and an opponent of the Sunnah. (5) In the battles of Jamal and Siffin, truth was with the truth-loving Commander of the Faithful, Ali (Karam Allah Wajhahu). However, the mistake of the opposing Companions (Sahaba) was an error of judgment (khata-e-ijtihadi), due to which slandering them is strictly forbidden. Uttering any word of insolence against them beyond this is certainly Rafd (the way of the Rafidis) and departure from the circle of Ahl-us-Sunnah. Anyone who utters a word of slander or insult regarding any Companion, considers them bad, calls them transgressive (fasiq), or harbors malice against any of them, is absolutely a Rafidi. (6) For hundreds of years, no one has reached the level of absolute independent reasoning (ijtihad-e-mutlaq). Without reaching the level of ijtihad, following (taqlid) is obligatory. Non-conformists (Ghayr-muqallidin) are astray and irreligious. (7) For hundreds of years, Ahl-us-Sunnah have been confined to four groups; whoever is outside them is an innovator and destined for the Fire. (8) The primary teacher of Wahhabism, Ibn Abd al-Wahhab Najdi, and the secondary teacher, Ismail Dehlvi, the author of Taqwiyat al-Iman, were both severely astray and irreligious. (9) Taqwiyat al-Iman, Sirat-e-Mustaqeem, Risala Yak-Rozi, and Tanwir al-Aynayn, works of Ismail Dehlvi, contain clear deviations, misguidance, and words of blasphemy. (10) Mi'at-e-Masail by Maulvi Ishaq Dehlvi is full of incorrect and rejected matters, and oppositions to the Ahl-us-Sunnah and the majority. (11) Seeking aid and assistance (istimdad and isti'anat) from the Prophets (peace be upon them) and the Saints (may their secrets be sanctified), and calling upon them at the time of need for intercession and help with "O Messenger of Allah" (Ya Rasulallah), "O Ali" (Ya Ali),

जिल्द 29 फ़तावा रज़विया

बिस्मिल्लाह हिर्रहमान निर्रहीम जनाब मौलाना मौलवी अहमद अली शाह साहब मिर्ज़ापुरी से बीस मामलों की तस्दीक तलब है।

(1) सैयद अहमद खां अलीगढ़ और उनके सभी अनुयायी काफ़िर हैं। (2) वह राफ़िज़ी जो महान कुरान को अधूरा कहे, या मौला अली (करम अल्लाह वज्हहू) या किसी गैर-नबी को पिछले नबियों (अलैहिमुस्सलाम) में से किसी से श्रेष्ठ बताए, वह काफ़िर और मुर्तद है। (3) तबराई राफ़िज़ी फ़ुकहा (न्यायशास्त्रियों) के नज़दीक काफ़िर है, और उसके गुमराह, बिदअती और जहन्नमी होने पर इज्मा (आम सहमति) है। (4) जो मौला अली (रज़ियल्लाहु अन्हु) को अल्लाह की निकटता में शैखैन (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) पर फ़ज़ीलत (श्रेष्ठता) देता है, वह गुमराह और सुन्नत का विरोधी है। (5) जमल और सिफ़्फ़ीन के युद्धों में सच्चाई हक़-परस्त अमीर-उल-मोमिनीन अली (करम अल्लाह वज्हहू) के साथ थी। लेकिन विरोधी सहाबा किराम की गलती ख़ता-ए-इज्तिहादी (निर्णय की त्रुटि) थी, जिसकी वजह से उन पर ताना मारना सख्त हराम है। उनके बारे में इससे बढ़कर गुस्ताखी का कोई शब्द निकालना निस्संदेह रफ़्ज़ है और अहले सुन्नत के दायरे से बाहर निकलना है। जो कोई किसी सहाबी की शान में ताना-बाना या अपमानजनक शब्द कहे, उन्हें बुरा जाने, फ़ासिक़ माने, या उनमें से किसी से द्वेष रखे, वह पूर्णतः राफ़िज़ी है। (6) सैकड़ों वर्षों से कोई भी इज्तिहाद-ए-मुत्लक़ (पूर्ण स्वतंत्र शोध) के स्तर तक नहीं पहुँचा है। इज्तिहाद के स्तर तक पहुँचे बिना तक़लीद फ़र्ज़ है, गैर-मुक़ल्लिद गुमराह और बेदीन हैं। (7) अहले सुन्नत सैकड़ों वर्षों से चार समूहों में सीमित हैं; जो इनसे बाहर है वह बिदअती और नरी (जहन्नमी) है। (8) वहाबियत का पहला शिक्षक इब्ने अब्दुल वहाब नजदी और दूसरा शिक्षक इस्माइल देहलवी, जो तक़वियतुल ईमान के लेखक हैं, दोनों घोर गुमराह और बेदीन थे। (9) तक़वियतुल ईमान, सिरात-ए-मुस्तक़ीम, रिसाला यक-रोजी और तनवीर-उल-ऐनैन, इस्माइल देहलवी की ये रचनाएँ स्पष्ट विचलन, गुमराहियों और कुफ्र (ईश-निंदा) के शब्दों से भरी हैं। (10) मौलवी इसहाक देहलवी की 'माइत-ए-मसाइल' गलत और खारिज किए गए मसलों और अहले सुन्नत तथा बहुमत के विरोधों से भरी है। (11) नबियों (अलैहिमुस्सलाम) और औलिया (कुद्दिसत असरारुहुम) से मदद और सहायता (इस्तिम्दाद और इस्तिआ़नत) मांगना और ज़रूरत के समय तवस्सुल और मदद के लिए उन्हें पुकारना, जैसे 'या रसूल अल्लाह', 'या अली',

पृष्ठ 616 (750 में से)

جلد ۲۹ فتاویٰ رضویہ

بسم اللہ الرحمن الرحیم امور عشرین تصدیق طلب از جناب مولانا مولوی احمد علی شاہ صاحب مرزاپوری

(۱) سید احمد خاں علی گڑھ اور اس کے متبعین سب کفار ہیں۔ (۲) رافضی کہ قرآن عظیم کو ناقص کہے یا مولیٰ علی کرم اللہ وجہہ یا کسی غیر نبی کو انبیاء سابقین علیہم السلام میں سے کسی سے افضل بتائے کافر و مرتد ہے۔ (۳) رافضی تبرائی فقہاء کے نزدیک کافر ہے اور اس کے گمراہ ، بدعتی، جہنمی ہونے پر اجماع ہے۔ (۴) جو مولیٰ علی رضی اللہ تعالیٰ عنہ کو حضرات شیخین رضی اللہ تعالیٰ عنہما پر قرب الہی میں تفضیل دے وہ گمراہ مخالف سنت ہے۔ (۵) جنگ جمل و صفین میں حق بدست حق پرست امیر المومنین علی کرم اللہ تعالیٰ وجہہ تھا۔ مگر حضرات صحابہ کرام مخالفین کی خطا خطائے اجتہادی تھی جس کی وجہ سے ان پر طعن سخت حرام، ان کی نسبت کوئی کلمہ اس سے زائد گستاخی کا نکالنا بے شک رفض ہے اور خروج از دائرہ اہلسنت جو کسی صحابی کی شان میں کلمہ طعن و توہین کہے، انہیں بُرا جانے، فاسق مانے، ان میں سے کسی سے بغض رکھے مطلقاً رافضی ہے۔ (۶) صد ہا سال سے درجہ اجتہاد مطلق تک کوئی واصل نہیں ہے بے وصول درجہ اجتہاد تقلید فرض، غیر مقلدین گمراہ بد دین ہیں۔ (۷) اہلسنت صد ہا سال سے چار گروہ میں منحصر ہیں جو ان سے خارج ہے بدعتی ناری ہے۔ (۸) وہابیہ کا معلم اول ابن عبد الوہاب نجدی اور معلم ثانی اسماعیل دہلوی مصنف تقویۃ الایمان دونوں سخت گمراہ بددین تھے۔ (۹) تقویۃ الایمان و صراط مستقیم و رسالہ یکروزی و تنویر العینین تصانیف اسماعیل دہلوی صریح ضلالتوں، گمراہیوں اور کلماتِ کفریہ پر مشتمل ہیں۔ (۱۰) مائتہ مسائل مولوی اسحق دہلوی غلط و مردود مسائل و مخالفات اہلِ سنت و مخالفات جمہور سے پُر ہیں۔ (۱۱) انبیاء علیہم الصلوۃ والسلام اور

اولیاء قدست اسرارہم سے استمداد و استعانت اور انہیں وقتِ حاجت توسل و استمداد کے لیے ندا کرنا

یا رسول اللہ، یا علی،

صفحہ 616 از 750

Fatawa Razawiyya Volume 29

1. Saying 'Ya Sheikh Abdul Qadir Jilani' and considering him a medium of Divine grace is certainly true and permissible.
2. In the world, the influence and authority of Prophets (peace be upon them) and Saints (may their secrets be sanctified) continues during their worldly life and also after their passing away through Divine bestowal, and the river of their grace will remain surging until the Day of Judgment.
3. Generally, the dead see the living, and hear and understand their speech; hearing by the dead (Sama' al-Mawta) is true. Then, the status of the Saints is even higher and more exalted.
4. Allah (Mighty and Majestic) has informed His most noble Beloved (peace and blessings of Allah be upon him, his family, and companions) about every single atom of all that has happened and all that will happen from the first day until the Day of Judgment. The knowledge of the Prophet encompasses all these unseen matters.
5. Believing in the possibility of Divine falsehood, as Isma'il Dehlawi accepted in 'Risala Yakrozi' and now Gangohi has in 'Baraheen-e-Qati'ah', is blatant misguidance. Falsehood for Allah Almighty is absolutely, by consensus, inherently impossible. The issue of 'Khalf al-Wa'id' (changing of threats) has no relation whatsoever to their impure thought.
6. Believing that the knowledge of Satan, God forbid, is greater and more extensive than the knowledge of the Master of the Universe (peace and blessings of Allah be upon him), as stated in 'Baraheen-e-Qati'ah' by Gangohi, is blatant misguidance and an insult to the Prophet (upon him be the best of blessings and peace).
7. Gathering for the blessed Mawlid (birth celebration) and standing out of respect (Qiyam), as has been common and widespread in the two noble Harams for hundreds of years, is permissible.
8. Offerings (Niyaz) for 'Giyarween Shareef', recitation of Fateha for the deceased, and 'Urs' (commemoration) of Saints, provided they are free from musical instruments and other forbidden acts, are all permissible and commendable.
9. Shari'ah and Tariqah are not two contradictory things. Reaching Allah is impossible without following the Shari'ah. No matter how high a rank one reaches, as long as one's intellect remains, Divine commands are not waived. False Sufis who consider perfection to lie in opposing the Shari'ah are all

misguided puppets of Satan. Wahdat al-Wujud (Unity of Existence) is truth, but 'Hulul' (incarnation) and 'Ittihad' (union) which some modern-day pseudo-Sufis spout is blatant disbelief (Kufr).

10. Nadwa is a capital of misguidance and a collection of innovations (bid'ah). Mixing and uniting with the misguided is forbidden. Honoring them invites Divine wrath, and preventing their refutation is inviting Divine curse. Making them workers in religious assemblies is destroying the religion. The lectures and proceedings of Nadwa are filled with things from which Allah and His Messenger are disgusted and free (Mighty is His Majesty and peace and blessings of Allah be upon him). May Allah Almighty [protect us from] all heretics and misguided ones...

फतावा रज़विया जिल्द २९

(११) "या शेख अब्दुल कादिर जिलानी" कहना और उन्हें ईश्वरीय कृपा का माध्यम समझना निश्चित रूप से सत्य और जायज़ है। (१२) संसार में नबियों (उन पर शांति हो) और औलिया (ईश्वर उनके रहस्यों को पवित्र करे) का प्रभाव उनके सांसारिक जीवन में और वफ़ात के बाद भी अल्लाह की देन से जारी रहता है, और उनकी कृपा की नदी कयामत तक लहरें मारती रहेगी। (१३) आम तौर पर मृत जीवितों को देखते हैं, उनकी बातें सुनते और समझते हैं, मुर्दों का सुनना (समा-ए-मौता) सत्य है, फिर औलिया की शान तो और भी ऊंची और महान है। (१४) अल्लाह अज़्ज़वजल ने पहले दिन से कयामत तक की हर एक चीज़ (मा-कान-व-मा-यकून) का हाल अपने सबसे प्यारे हबीब (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को बता दिया है। हुज़ूर का इल्म (ज्ञान) इन सभी परोक्ष (ग़ैब) बातों को घेरे हुए है। (१५) अल्लाह के झूठ बोलने की संभावना को मानना, जैसा कि इस्माइल देहलवी ने 'रिसाला यकरोजी' में और अब गंगोही ने 'बराहीन-ए-क़ातिआ' में माना है, स्पष्ट पथभ्रष्टता है। अल्लाह तआला का झूठ बोलना सर्वसम्मति से पूर्णतः असंभव है। 'खलफ़-ए-वईद' के मसले का उनके इस अपवित्र विचार से कोई लेना-देना नहीं है। (१६) शैतान के ज्ञान को, खुदा न करे, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज्ञान से अधिक और व्यापक मानना जैसा कि गंगोही की 'बराहीन-ए-क़ातिआ' में है, स्पष्ट पथभ्रष्टता और हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का अपमान है। (१७) मजलिस में मिलाद-ए-पाक और उसमें सम्मान में खड़े होना (कियाम) जिस तरह सैकड़ों वर्षों से हरमैन शरीफैन में प्रचलित है, जायज़ है। (१८) ग्यारहवीं शरीफ की नियाज़, मुर्दों की फातिहा और औलिया का उर्स, यदि वे वाद्ययंत्रों और अन्य बुराइयों से मुक्त हों, तो सब जायज़ और प्रशंसनीय हैं। (१९) शरीयत और तरीक़त दो विपरीत चीजें नहीं हैं। शरीयत का पालन किए बिना अल्लाह तक पहुंचना असंभव है। कोई कितना ही ऊंचे पद पर क्यों न पहुंच जाए, जब तक बुद्धि शेष है, ईश्वरीय आदेश उससे समाप्त नहीं हो सकते। वे झूठे सूफ़ी जो शरीयत के विरोध में अपनी पूर्णता समझते हैं, वे सब पथभ्रष्ट और शैतान के खिलौने हैं। 'वहदतुल वुजूद' सत्य है, लेकिन 'हुलूल' और 'इत्तिहाद' जिसके बारे में आजकल के कुछ दिखावटी सूफ़ी बकते हैं, स्पष्ट कुफ़्र है। (२०) नदवा पथभ्रष्टता की पूंजी और बिदअतों का समूह है। गुमराहों से मेल-जोल और एकता हराम है। उनका सम्मान ईश्वरीय क्रोध का कारण है और उनके खंडन को रोकना अल्लाह की लानत की ओर बुलाना है। उन्हें धार्मिक सभाओं का कार्यकर्ता बनाना धर्म को नष्ट करना है। नदवा के भाषणों और कार्यवाहियों में वे बातें भरी हैं जिनसे अल्लाह और उसके रसूल नाखुश और बरी हैं। अल्लाह तआला सभी धर्म-विरोधियों और गुमराहों से... [अगले पृष्ठ पर जारी]

یا شیخ عبد القادر جیلانی کہنا اور انہیں واسطہ فیض الٰہی جاننا ضرور حق و جائز ہے۔ (۱۲) عالم میں انبیاء علیہم السلام اور اولیاء قُدِّسَت اَسرارُہُم کا تصرف حیاتِ دنیوی میں اور بعدِ وصال بھی بعطاء الٰہی جاری اور قیامت تک اُن کا دریائے فیض موجزن رہے گا۔ (۱۳) عام اموات احیاء کو دیکھتے، ان کا کلام سُنتے سمجھتے ہیں، سماعِ موتیٰ حق ہے، پھر اولیاء کی شان تو ارفع واعلٰی ہے۔ (۱۴) اللہ عزوجل نے روزِ اوّل سے قیامت تک کے تمام ماکان ومایکون ایک ایک ذرّے کا حال اپنے حبیب اکرم صلی اللہ تعالٰی علیہ وآلہ واصحابہ وسلم کو بتادیا حضور کا علم ان تمام غیبوں کو محیط ہے۔ (۱۵) امکانِ کذبِ الٰہی جیسا کہ اسمعیل دہلوی نے رسالہ یکروزی اور اب گنگوہی نے براہین قاطعہ میں مانا صریح ضلالت ہے۔ اللہ تعالٰی کا کذب قطعاً اجماعاً محال بالذات ہے۔ مسئلہ خلفِ وعید کو ان کے اس ناپاک خیال سے اصلاً علاقہ نہیں۔ (۱۶) شیطان کے علم کو معاذ اللہ حضور سید عالم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کے علم سے زائد و وسیع تر ماننا جیسا کہ براہین قاطعہ گنگوہی میں ہے صریح ضلالت و توہینِ حضرتِ رسالت علیہ افضل الصلوۃ والتحیۃ ہے۔ (۱۷) مجلس میں میلاد مبارک اور اس میں قیام تعظیمی جس طرح صدہا سال سے حرمین محترمین میں شائع و ذائع ہے جائز ہے۔ (۱۸) گیارہویں شریف کی نیاز اور اموات کی فاتحہ اور عرسِ اولیاء کہ مزامیر و غیرہا منکرات سے خالی ہو سب جائز و مندوب ہے۔ (۱۹) شریعت و طریقت دو متبائن نہیں ہیں، بے اتباعِ شرع وصول الی اللہ ناممکن، کوئی کیسے ہی مرتبہ عالیہ تک پہنچے، جب تک عقل باقی ہے احکامِ الٰہیہ اس پر سے ساقط نہیں ہوسکتے، جھوٹے متصوف کہ مخالفِ شرع میں اپنا کمال سمجھتے ہیں سب گمراہ مسخرگانِ شیطان ہیں، وحدتِ وجود حق ہے اور حلول و اتحاد کہ آج کل کے بعض متصوفہ (بناوٹی صوفی) بکتے ہیں صریح کفر ہے۔ (۲۰) ندوہ سرمایہ ضلالت و

مجموعہ بدعات ہے، گمراہوں سے میل جول اتحاد حرام ہے، ان کی تعظیم موجبِ غضبِ الٰہی اور ان کے رَد کا انسداد لعنتِ الٰہی کی طرف بلانا، انہیں دینی مجلس کارکن بنانا دین کو ڈھانا ہے۔ ندوہ کے لکچروں اور روئیداد میں وہ باتیں بھری ہیں جن سے اللہ ورسول بیزار و بری ہیں جل جلالہ و صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم، اللہ تعالٰی سب بد مذہبوں و گمراہوں

Fatawa Razawiyya Volume 29

...may He grant refuge and keep [us] steadfast upon the pure true Sunnah.

1. His Eminence, the Fazil of Bareilly (may his shadow be extended), had the aforementioned established matters verified by Maulana Shah Ahmad Ali Sahib Mirzapuri, who wrote the following statement: "The twenty matters mentioned above are very correct and right. Wahdat-ul-Wajood is truth, but in the opinion of this humble servant, debate and discussion on it are not good; these are matters of spiritual unveiling (kashf) and are related to state (kaifiyat), and such matters are best understood by the friends of Allah (Awliya Allah). Since this humble servant does not possess a seal, I suffice with a signature."

2 Shawwal 1318 AH, Wednesday.

O Then the Imam of Ahl-e-Sunnat, the Fazil of Bareilly (may his shadow be extended), wrote this and affixed his signature and seal. "Nowadays many people pretend to be Sunnis, and the poor common folk fall into deception. Some say something with their tongue for the sake of temporary expediency and then change their stance when they find an opportunity. In most places, for testing, if Allah Almighty wills, these twenty matters are sufficient as a sample, which by the grace of the Almighty, truly reaches the heights of Sunnism. He will sign without hesitation, otherwise, the 'ebbing of water' (retreating) will itself give news of the lowlands of misguidance."

"So whoever breaks his oath only breaks it to the detriment of himself." 1	**And whoever broke the covenant, the burden of breaking that covenant will fall upon him.**
"And whoever turns back on his heels will never harm Allah at all." 2	And whoever turns back on his heels will not cause any harm to Allah,
"And whoever turns away - then indeed, Allah is the Free of need, the Praiseworthy." 3	and whoever turns away, then surely Allah alone is independent, praised with all excellences,
And praise be to Allah, Lord of the worlds.	and all praises are for the Lord of the worlds. (T)

Written by His sinful servant, Ahmad Raza Barelvi, may he be forgiven, by the grace of Muhammad, the Chosen One, the Unlettered Prophet, peace and blessings of Allah be upon him.

1 Al-Quran Al-Karim 48/10 2 Al-Quran Al-Karim 3/144 3 Al-Quran Al-Karim 57/24

फतवा रज़विया खंड 29

...से पनाह दे और सुन्नत-ए-हक़्क़ा खालिस पर साबित क़दम रखे।

1. हज़रत फ़ाज़िल-ए-बरेलवी मदज़िल्लहु-ल-आली के उन अमूर-ए-मुक़र्ररा मजकूरा की तस्दीक़ जनाब मौलाना शाह अहमद अली साहब मिर्ज़ापुरी ने फ़रमाई और यह इबारत लिखी: "अमूर-ए-इशरीन (बीस मामले) मुंदरजा बाला बहुत दुरुस्त और ठीक हैं। वहदत-उल-वजूद हक़ है मगर इसमें बहस और मुबाहिसा फ़क़ीर के नज़दीक खूब नहीं, यह अमूर-ए-कश्फ़िया से हैं और मुताल्लिक़ ब-कैफ़ियत ऐसे अमूर को औलिया-ए-अल्लाह ही खूब समझे हुए हैं, चूंकि फ़क़ीर के पास मोहर नहीं लिहाज़ा दस्तखत ही पर इक्तिफ़ा किया।"

2 शव्वाल 1318 हिजरी, रोज़-ए-चार शंबा (बुधवार)।

O फिर इमाम-ए-अहले सुन्नत फ़ाज़िल-ए-बरेलवी मदज़िल्लहु ने यह तहरीर फ़रमा कर अपने दस्तखत और मोहर सब्त फ़रमाई: "आज कल बहुत लोग इआद-ए-सुन्नियत (सुन्नी होने का दिखावा) करते हैं और अवाम बेचारे धोखे में पड़ते हैं। बाज़ मसलहत-ए-वक़्त के लिए ज़बान से कुछ कह जाते और मौक़ा पाकर फिर पलटा खाते हैं, अक्सर जगह इम्तिहान के लिए इन्शाअल्लाह-उल-अज़ीज़ यह अमूर-ए-इशरीन बतौर-ए-नमूना काफी हैं जो ब-औन-ए-तआला फ़राज़-ए-सुन्नियत पर सच्चा फ़ाइज़ है। बे-तकल्लुफ़ दस्तखत कर देगा, वरना पानी मरना आप ही नशीब-ए-ज़लालत की ख़बर दे देगा।"

"तो जिसने अहद तोड़ा उसने अपनी ही जान पर अहद तोड़ा।" 1	**और जिसने अहद तोड़ा उस अहद तोड़ने का वबाल उसी पर पड़ेगा।**
"और जो अपने एड़ियों के बल फिरेगा वह अल्लाह का कुछ नुक़सान न करेगा।" 2	और जो उल्टे पाँव फिरेगा अल्लाह का कुछ नुक़सान न करेगा,
"और जो मुंह फेरे तो बेशक अल्लाह ही बे-नियाज़ है सब खूबियों वाला।" 3	और जो मुँह फेरे तो बेशक अल्लाह ही बे-नियाज़ है सब खूबियों सराहा,
और तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं जो तमाम जहानों का रब है।	और सब तारीफ़ें रब-उल-आलमीन के लिए हैं। (त)

कुतबा इब्देहुल मुज़निब अहमद रज़ा बरेलवी अफ़िया अन्हु बि-मुहम्मदि-निल मुस्तफ़ा अन-नबियिल उम्मी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम

1 अल-क़ुरान अल-करीम 48/10 2 अल-क़ुरान अल-करीम 3/144 3 अल-क़ुरान अल-करीम 57/24

पृष्ठ 618/750

سے پناہ دے اور سنت حقہ خالص پر ثابت قدم رکھے۔

۵۔ حضرت فاضل بریلوی مدظلہ العالی کے ان امور مقررہ مذکورہ کی تصدیق جناب مولانا شاہ احمد علی صاحب مرزاپوری نے فرمائی اور یہ عبارت لکھی۔ "امور عشرین مندرجہ بالا بہت درست و ٹھیک ہیں۔ وحدت وجود حق ہے مگر اس میں بحث و مباحثہ فقیر کے نزدیک خوب نہیں، یہ امور کشفیہ سے ہیں اور متعلق بکفیت ایسے امور کو اولیاء اللہ ہی خوب سمجھے ہوئے ہیں چونکہ فقیر کے پاس مہر نہیں لہٰذا دستخط ہی پر اکتفاء کیا۔"

۲ شوال ۱۳۱۸ھ روز چہار شنبہ۔

O پھر امام اہلسنت فاضل بریلوی مدظلہ نے یہ تحریر فرما کر اپنے دستخط اور مہر ثبت فرمائی۔ "آج کل بہت لوگ اعادئے سنیت کرتے اور عوام بیچارے دھوکے میں پڑتے ہیں۔ بعض مصلحت وقت کے لیے زبان سے کچھ کہہ جاتے اور موقعہ پا کر پھر پلٹا کھاتے ہیں، اکثر جگہ امتحان کے لیے ان شاء اللہ العزیز یہ امور عشرین بطور نمونہ کافی ہیں جو بعونہ تعالیٰ فراز سنیت پر سچا فائز ہے۔ بے تکلف دستخط کر دے گا، ورنہ پانی مرنا آپ ہی نشیب ضلالت کی خبر دے گا۔"

"فَمَنْ نَّكَثَ فَإِنَّمَا يَنْكُثُ عَلٰى نَفْسِهٖ" 1 **اور جس نے عہد توڑا اس عہد توڑنے کا وبال اسی پر پڑے گا**

"وَمَنْ يَّنْقَلِبْ عَلٰى عَقِبَيْهِ فَلَنْ يَّضُرَّ اللهَ شَيْئًا" 2 اور جو الٹے پاؤں پھرے گا اللہ کا کچھ نقصان نہ کرے گا،

"وَمَنْ يَتَوَلَّ فَاِنَّ اللهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ" 3

"فَمَنْ نَّكَثَ فَإِنَّمَا يَنْكُثُ عَلٰى نَفْسِهٖ" 1	**اور جس نے عہد توڑا اس عہد توڑنے کا وبال اسی پر پڑے گا**
	اور جو منہ پھیرے تو بے شک اللہ ہی بے نیاز ہے سب خوبیوں سراہا،
والحمدللہ رب العلمین۔	اور سب تعریفیں رب العالمین کے لیے ہیں۔(ت)

کتبہ عبدہ المذنب احمد رضا البریلوی عفی عنہ بمحمدن المصطفٰی النبی الامی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم

1 القرآن الکریم ۱۰/ ۴۸ 2 القرآن الکریم ۳/ ۱۴۴ 3 القرآن الکریم ۵۷/ ۲۴

Fatawa Razawiyya Volume 29

Issue 180: 24 Rabi al-Awwal 1332 AH From Meerut district, Petitioner: Muhammad Afzalur Rahman Sahib A piece of advertisement titled "Parwana-e-Khudawandi" (Divine Decree) was found by me in this town, hence it is being sent to your presence. I hope for a detailed response on how correct this advertisement is.

"Parwana-e-Khudawandi"

In the name of Allah, the Most Gracious, the Most Merciful. May the blessings and peace of Allah be upon our master Muhammad and his family and companions. This is a will from the master Muhammad, the Messenger of Allah (peace and blessings be upon him), to Sheikh Ahmed, the servant of the Prophet's Shrine (peace and blessings be upon him), stating that on Friday night, while reciting the Holy Quran in a dream, he saw and said: O Sheikh Ahmed! This is a second will for you besides the first one, which is that you inform all Muslims on behalf of the Lord of the Worlds that I am severely displeased with them regarding their excessive sins and disobedience. The reason for this is that from one Friday to the next, ninety thousand deaths occurred, among whom seventy thousand were (Kalima-reciting) Muslims while the rest were non-Muslims, i.e., they died in disbelief. When the angels heard this, they said: O Muhammad! Your Ummah has become very inclined towards sins, they have abandoned the worship of Allah Almighty, so Allah Almighty has ordered the transformation of their forms. Then the Messenger of Allah (peace and blessings be upon him) said: O Lord! Have a little patience with them and give them respite until I deliver this news to them. Then if they do not repent, the command is in Your hands. And the truth is that these people have become very inclined towards perpetual sins, major sins, adultery, under-weighing, keeping short scales, consuming interest, and drinking alcohol. And they do not give charity to the poor and needy, and they love the world more than the hereafter, and they have abandoned prayer and do not give Zakat. So O Sheikh Ahmed! Inform them of this matter, tell them that the Day of Judgment is near, and the time is near when the sun will rise from the west, God willing. And We had sent a will before this too, but these people became more bold in disobedience and pride. And this is the final will. Sheikh Ahmed, the servant of the Holy Chamber, said that the Messenger of Allah (peace and blessings be upon him) said that whoever reads this and makes a copy of it and sends it from one city to another, he will be my companion in Paradise and I will intercede for him on the Day of Resurrection, and whoever reads it and does not

copy it, he will be my enemy on the Day of Resurrection. And Sheikh Ahmed said, I swear by Allah, Subhanahu wa Ta'ala, three times that this is absolutely true, and...

फ़तावा रज़विया खंड 29

मसला 180: 24 रबी-उल-अव्वल 1332 हिजरी ज़िला मेरठ से, सवाली: मुहम्मद अफ़ज़ल-उर-रहमान साहब एक विज्ञापन का टुकड़ा "परवाना-ए-खुदावंदी" मुझे इस कस्बे में मिला है, इसलिए आपकी सेवा में भेजा जा रहा है। आशा है कि सविस्तार सूचित किया जाएगा कि यह विज्ञापन कहाँ तक सही है।

"परवाना-ए-खुदावंदी"

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम। अल्लाह के दूत हमारे आका मुहम्मद और उनके परिवार और साथियों पर अल्लाह की कृपा और शांति हो। यह हज़रत जनाब मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की ओर से शेख अहमद, रौज़ा-ए-नबवी (अलैहिस्सलाम) के खादिम के नाम एक वसीयत है। उन्होंने जुमे की रात को सपने में कुरान शरीफ की तिलावत करते हुए देखा और फ़रमाया: ऐ शेख अहमद! यह तुम्हारी ओर दूसरी वसीयत है, उस पहली वसीयत के अलावा। वह यह है कि तुम रब्बुल आलमीन की ओर से सभी मुसलमानों को सूचित कर दो कि मैं उनके पापों और अवज्ञा की अधिकता के कारण उनसे बहुत नाराज़ हूँ। इसका कारण यह है कि एक जुमे से दूसरे जुमे तक (कलमा पढ़ने वाले) नब्बे हज़ार लोगों की मौत हुई, जिनमें से सत्तर हज़ार मुसलमान थे और बाकी सभी गैर-इस्लाम यानी कुफ्र पर मरे। जब फरिश्तों ने यह सुना तो उन्होंने कहा: ऐ मुहम्मद! आपकी उम्मत पापों की ओर बहुत झुक गई है, उन्होंने अल्लाह तआला की इबादत छोड़ दी है, इसलिए अल्लाह तआला ने उनके रूपों को बदलने का हुक्म दे दिया है। फिर रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने कहा: ऐ रब! उन पर थोड़ा सब्र कर और उन्हें मोहलत दे जब तक कि मैं उन्हें यह खबर न पहुँचा दूँ। फिर अगर वे तौबा नहीं करते हैं, तो हुक्म तेरे हाथ में है। और हकीकत यह है कि ये लोग स्थायी पापों, गुनाहे कबीरा (बड़े पापों), व्यभिचार, कम तोलने, कम नापने, सूद (ब्याज) खाने और शराब पीने की ओर बहुत झुक गए हैं। और वे गरीबों और बेसहारों को दान नहीं देते हैं, और दुनिया से आखिरत (परलोक) की तुलना में अधिक प्रेम करते हैं, और नमाज़ छोड़ दी है, और ज़कात नहीं देते हैं। इसलिए ऐ शेख अहमद! उन्हें इस बात की खबर दे दो, उनसे कहो कि कयामत करीब है, और वह समय निकट है जब सूरज पश्चिम से उदय होगा, इंशा अल्लाह तआला। और हमने इससे पहले भी वसीयत भेजी थी लेकिन ये लोग अवज्ञा और अहंकार में और भी दिलेर हो गए। और यह अंतिम वसीयत है। शेख अहमद, हुजरा शरीफ के खादिम ने कहा कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया कि जो कोई इसे पढ़े और इसकी नकल करके एक शहर से दूसरे शहर तक

पहुँचाए, वह जन्नत में मेरा साथी होगा और मैं कयामत के दिन उसकी शफ़ाअत (सिफारिश) करूँगा, और जो इसे पढ़े और इसकी नकल न करे, वह कयामत के दिन मेरा दुश्मन होगा। और शेख अहमद ने कहा, मैं अल्लाह सुब्हानहु व तआला की तीन बार कसम खाता हूँ कि यह बिल्कुल सच बात है, और...

पृष्ठ 619/750

فتاویٰ رضویہ جلد ۲۹

مسئلہ ۱۸۰: ۲۴ ربیع الاول ۱۳۳۲ھ از ضلع میرٹھ مسئولہ محمد افضل الرحمن صاحب ایک قطعہ اشتہار "پروانہ خداوندی" مجھے اس قصبہ میں دستیاب ہوا ہے، لہذا ارسال بحضور ہے، امید کہ مفصل مطلع فرمایا جائے کہ یہ اشتہار کہاں تک صحیح ہے۔

"پروانہ خداوندی"

بسم اللہ الرحمن الرحیم، صلی اللہ علی سیدنا محمد و علیٰ اٰلہ واصحابہ وسلم۔ یہ وصیت حضرت جناب محمد رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی طرف سے شیخ احمد خادم روضہ نبوی علیہ الصلوۃ والسلام کی طرف سے ہے کہ جمعہ کی رات کو خواب میں قرآن شریف کی تلاوت فرماتے ہوئے دیکھا اور فرمایا: اے شیخ احمد! یہ دوسری وصیت تیری طرف ہے علاوہ اس پہلی وصیت کے، وہ یہ ہے کہ تم جملہ مسلمین کو رب العالمین کی طرف سے خبر کردو کہ میں ان کے بابت ان کے کثرت گناہ و معاصی کے سخت بیزار ہوں، جس کا سبب یہ ہے کہ ایک جمعہ سے دوسرے جمعہ تک (کلمہ گو) نوے ہزار اموات ہوئی ہیں جن میں ستر ہزار اسلام باقی تمام غیر اسلام یعنی کفر پر مرے ہیں۔ جس وقت ملائکہ نے یہ بات سُنی تو انہوں نے کہا: یا محمد! آپ کی امت گناہوں کی طرف بہت مائل ہو گئی ہے کہ انہوں نے اللہ تعالیٰ کی عبادت چھوڑ دی ہے پس اللہ تعالیٰ نے ان کی صورتوں کی تبدیلی کا حکم فرما دیا۔ پھر حضرت رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: اے رب! ان پر تھوڑا صبر کر اور ان کو مہلت دے جب تک یہ خبر میں ان کو پہنچادوں، پس اگر وہ تائب نہ ہوئے تو حکم تیرے ہاتھ میں ہے، اور حقیقت یہ ہے کہ یہ لوگ دائمی گناہوں، کبیرہ گناہوں، زناکاری، کم تولنے، کم میزان رکھنے، سود کھانے، شراب کے پینے کی طرف بہت مائل ہو گئے ہیں، اور فقراء و مساکین کو خیرات نہیں دیتے، اور دنیا کی محبت آخرت کی نسبت

زیادہ کرتی ہیں اور نماز کو ترک کر بیٹھے ہیں، اور زکوۃ نہیں دیتے پس اے شیخ احمد! تو ان کو اس بات کی خبر دے، ان کو کہو کہ قیامت قریب ہے، اور وہ وقت قریب ہے کہ آفتاب مغرب سے طلوع کرے ان شاء اللہ تعالیٰ اور ہم نے اس سے پہلے بھی وصیت پہنچائی تھی لیکن یہ لوگ نافرمانی اور غرور میں زیادہ دلیر ہو گئے۔ اور یہ آخری وصیت ہے۔ شیخ احمد خادم حجرہ شریف نے کہا کہ فرمایا رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے کہ جو کوئی اس کو پڑھے اور اس کی نقل کرکے ایک شہر سے دوسرے شہر تک پہنچائے وہ جنت میں میرا رفیق ہو گا اور اس کی میں شفاعت کروں گا دن قیامت کے، اور جو اس کو پڑھے اور اس کی نقل نہ کرے وہ قیامت کو میرا دشمن ہو گا۔ اور کہا شیخ احمد نے میں اللہ سبحانہ و تعالیٰ کی تین مرتبہ قسم کھاتا ہوں کہ یہ بالکل سچی بات ہے، اور

صفحہ 619/750

Fatawa Razawiyya, Volume 29

“If I am lying in this, then may God take me out of this world as a disbeliever, and whoever confirms it will be saved from the fire of Hell. Peace and blessings of Allah be upon our master Muhammad, his family, and his companions.”

The Answer: The instructions given in it are good; their rulings are present in the Quran and Hadith, and acting upon them is necessary. However, the preamble written in the advertisement is baseless. Such advertisements have been published many times; in some, the name of the servant of the Radiant Tomb is Salih, and in others, it is Sheikh Ahmad. Such bold statements are written as: "so many Muslims died, out of which only this many left with faith, and the rest (God forbid) died without faith." In this particular advertisement, there is some leniency, as out of ninety thousand deaths, only twenty thousand (God forbid) are labeled as disbelievers. In other advertisements, only a handful of Muslims are spared. The claim made to the Lord Almighty regarding the connection with the Master of the Universe (peace and blessings of Allah be upon him) is completely meaningless. (We ask Allah for forgiveness and safety; we are seekers of pardon and well-being from Allah Almighty.) And Allah Almighty knows best.

Problem: 7 Rabi' al-Thani 1342 AH What do the scholars of religion and the jurists of the firm Sharia say regarding this issue: an ignorant person committed a sin without knowing definitely whether it was permissible or forbidden. And a scholar committed the same or another sin. Is the Sharia's ruling different for both of them, or not? If it is different, why? And if it is not different, why? Give a clarification, you will be rewarded.

The Answer: It is stated in the Hadith that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: “The sin of a scholar is one sin, and the sin of an ignorant person is two sins.” It was asked: “Why, O Messenger of Allah?” He replied: “The scholar is punished for committing the sin, while the ignorant person is punished once for committing the sin and once for not seeking knowledge.”

1. Al-Jami' al-Saghir, Hadith 4335, Dar al-Kutub al-Ilmiyah, Beirut, 2/264.
2. Fayd al-Qadir, under Hadith 4335, Dar al-Ma'rifah, Beirut, 3/565.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 29

“अगर मैं इसमें झूठा हूँ तो खुदा मुझे दुनिया से काफ़िर करके निकाले, और जो इसकी तस्दीक (पुष्टि) करेगा वह दोज़ख की आग से निजात पाएगा। अल्लाह हमारे आका मुहम्मद, उनके परिवार और उनके साथियों पर अपनी सलामती और रहमतें बरसाए।”

अल-जवाब (उत्तर): जिन बातों की इसमें हिदायत है, वे बातें अच्छी हैं, उनके अहकाम कुरान और हदीस में मौजूद हैं, उन पर अमल करना ज़रूरी है। बाकी यह तमहीद (प्रस्तावना) जो इश्तिहार में लिखी गई है, बे-असल (बेबुनियाद) है। बार-बार इस किस्म के इश्तिहार शाया (प्रकाशित) हुए हैं, किसी में रौज़ा-ए-अनवर के खादिम का नाम सालेह है, किसी में शेख अहमद है। और ऐसे ही बेबाकी के कलमात लिखे हैं कि इतने मुसलमान मरे, उनमें से सिर्फ इतने ईमान के साथ गए और बाकी (माज़अल्लाह) बे-ईमान मरे। इस इश्तिहार में तो इतनी रियायत है कि नब्बे हज़ार मौतों में सिर्फ बीस हज़ार (माज़अल्लाह) काफ़िर रखे हैं। और इश्तिहारों में तो गिनती के मुसलमान रखे हैं। रब-ए-अज़्ज़वजल से जो हुज़ूर सैयदे आलम (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) की अर्ज़-ए-निस्बत की है, किस क़दर बेमानी है। (हम अल्लाह तआला से माफ़ी और सलामती के तलबगार हैं।) और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला: 7 रबी-उल-सानी 1342 हिजरी दीन के उलमा और शरीयत-ए-मतीन के मुफ़्तियान इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि एक जाहिल ने कोई गुनाह किया जिसे वह कतई (निश्चित रूप से) नहीं जानता था कि हलाल है या हराम। और उसी या दूसरे गुनाह को आलिम ने किया, तो उन दोनों के लिए शरीयत की जानिब से हुक्म अलग-अलग है या नहीं? और अगर अलग है तो क्यों? और अगर अलग नहीं है तो क्यों? बयान फरमाएं, आपको अज्र (पुण्य) दिया जाएगा।

अल-जवाब (उत्तर): हदीस में है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं: “आलिम का गुनाह एक गुनाह है और जाहिल का गुनाह दोहरा गुनाह है।” अर्ज़ की गई: “या रसूलुल्लाह! यह किस लिए?” फ़रमाया: “आलिम पर गुनाह करने का अज़ाब है और जाहिल पर एक अज़ाब गुनाह करने का है और एक इल्म न सीखने का।”

1. अल-जामे-उस-सगीर हदीस 4335 दारुल-कुतुबुल-इल्मिया बेरुत 2/264
2. फ़ैज़ुल-क़दीर हदीस 4335 के तहत दारुल-मारफ़त बेरुत 565/3

میں اس میں جھوٹا ہوں تو خدا مجھ کو دنیا سے کافر کر کے نکالے، اور جو اس کی تصدیق کرے گا وہ دوزخ کی آگ سے نجات پائے گا۔ صلی اللہ علی سیدنا محمد وآلہ واصحابہ وسلم۔

الجواب: جن باتوں کی اس میں ہدایت ہے وہ باتیں اچھی ہیں، انکے احکام قرآن و حدیث میں موجود ہیں، ان پر عمل ضرور ہے۔ باقی یہ تمہید جو اشتہار میں لکھی گئی ہے بے اصل ہے۔ بارہا اس قسم کے اشتہار شائع ہوئے ہیں، کسی میں خادم روضہ انور کا نام صالح ہے کسی میں شیخ احمد ہے۔ اور ایسے ہی بے باکی کے کلمات لکھے ہیں کہ اتنے مسلمان مرے ان میں سے صرف اتنے ایمان کے ساتھ گئے اور باقی معاذ اللہ بے ایمان مرے۔ اس اشتہار میں تو اتنی رعایت ہے کہ نوے ہزار اموات میں صرف بیس ہزار معاذ اللہ کافر رکھے ہیں۔ اور اشتہاروں میں تو گنتی کے مسلمان رکھے۔ رب عزوجل سے جو حضور سید عالم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کی عرض نسبت کی ہے، کس قدر بے معنی ہے۔ نسأل اللہ العفو والعافیۃ ہم اللہ تعالٰی سے معافی اور سلامتی کے طلبگار ہیں،ت) واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ : ۷ ربیع الثانی ۱۳۴۲ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین ومفتیان شرع متین اس مسئلہ میں کہ ایک جاہل نے کوئی گناہ کیا جس کو قطعی نہ جانتا تھا کہ حلال ہے یا حرام۔ اور اسی یادوسرے گناہ کو عالم نے کیا، تو ان دونوں کے لیے از جانب شریعت حکم مختلف ہے، یا نہیں؟ اور اگر مختلف ہے تو کیوں؟ اور اگر مختلف نہیں ہے تو کیوں؟ بینوا توجروا (بیان فرمائیے اجر دیئے جاؤ گے۔ت)

الجواب: حدیث میں ہے رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں: ذنب العالم ذنب واحد وذنب الجاھل ذنبان - قیل ولم یارسول اللہ۔ قال العالم یعذب علی رکوبہ الذنب و الجاھل یعذب علی رکوبہ

الذنب وترك التعلم۔ عالم کا گناہ ایک گناہ ہے اور جاہل کا گناہ دوہرا گناہ، عرض کی: یا رسول اللہ! یہ کس لیے؟ فرمایا: عالم پر گناہ کرنے کا عذاب ہے اور جاہل پر ایک عذاب گناہ کرنے کا ہے اور ایک علم نہ سیکھنے کا۔

1 الجامع الصغیر حدیث ۴۳۳۵ دارالکتب العلمیہ بیروت ۲۶۴/۲ 2 فیض القدیر تحت حدیث ۴۳۳۵ دار المعرفت بیروت ۵۶۵/۳

Volume 29 Fatawa-e-Razawiyyah

Problem 182: From Marehra Mutahra, District Etah, Sarkar-e-Kalan, sent by Syed Muhammad Miyan Sahib (may his blessings last), 22 Dhu al-Qi'dah 1332 AH, Monday. The exalted Maulana, possessor of glory and generosity, respected and honored (may his glory endure), after the sunnah greeting, I am at your service. By the grace of Almighty Allah, I pray for your health and well-being. I had requested you to reduce one number from the name of the late Syed Zahoor Haider Sahib and make it his date of death, and you had promised. Now, if it has been done, please send it. Also, please send the prefaces of 'Al-Hudooth wal-Qudooma' and 'Al-Tanasukh', which are Badauni treatises. If any new treatise on the subject of Adhan has been published, please send that as well. I have heard that 'Kanz-ul-Akhira' by Chaudhary Sahib Saharanpuri is newly printed and has gone through your review and correction entirely. Is this correct? And regarding the matters of Imamate on page 72, where covering graves with sheets is called a bad innovation of the creedal type, and in the chapter 'Ziyadat al-Quboor' (Visiting Graves), where offering something or kissing graves is written as forbidden (haram) and innovation (bid'at); is this also correct in your view? Please inform me regarding this. Peace be upon you.

The Answer: In the name of Allah, the Most Gracious, the Most Merciful. We praise Him and send blessings upon His Noble Messenger. With the honor of the noble observation of the honorable Sahibzada, of high rank and great pride, Hazrat Maulana Molvi Syed Muhammad Miyan Sahib (may his blessings last), after greetings with respect, as per the order of Hazrat Maulana Syed Shah Mehdi Miyan Sahib Qibla, in the midst of great busyness, this humble one prepared this book. It was necessary and obligatory to remove severe, numerous, and great legal (Shariah) errors. The order was to correct the verses as well. Without exaggeration, such a large book of poetry and so many extensive footnotes had to be rewritten, rather the effort in creating a new work would not have been even half of the effort put into this. Up to page 123 of the first edition, which is page 133 of the new edition, I have kept a copy of all the corrections with me. I requested Chaudhary Sahib to send it here again for final review after fair-copying. The mentioned gentleman sent some finished parts for review. From studying them, it became clear that severe changes had been made in the corrections. After that, I should have returned the rest of the book. But the order of the superior...

जिल्द 29 फतावा रज़विया

मसला 182: मारहरा मुतहरा, जिला एटा, सरकार-ए-कलां से प्रेषित, सैयद मोहम्मद मियां साहब (दामत बरकातुहुम) द्वारा, 22 ज़िलक़ादा 1332 हिजरी, सोमवार। मौलना अल-मुअज़म, महिमा और उदारता के स्वामी, सम्मानित और आदरणीय (उनका गौरव बना रहे), सुन्नत के अनुसार सलाम के बाद, मैं आपकी सेवा में हाज़िर हूँ। अल्लाह ताला की कृपा से आपकी सेहत और सलामती की दुआ करता हूँ। मैंने आपसे मरहूम सैयद ज़हूर हैदर साहब के लिए उनके नाम से एक अंक कम करके उनकी वफ़ात की तारीख बनाने के लिए कहा था और आपने वादा फ़रमाया था। अब अगर वह हो गया हो तो भेज दें। 'तक़रीज़ात अल-हुदूस वल-क़ुदूम' और 'अल-तनासुख' भी भेजें जो बदायूँनी रिसाले (लेख) हैं। और अगर अज़ान के विषय पर कोई नया रिसाला प्रकाशित हुआ हो, तो उसे भी भेज दें। सुना है कि चौधरी साहब सहारनपुरी की 'कन्ज़ुल आख़िरत' नई छपी है और वह पूरी तरह से आपकी नज़र और सुधार से गुज़री है, क्या यह सही है? और इसमें पृष्ठ 72 पर इमामत के जो मसले हैं, कब्रों पर चादरें चढ़ाने को बिदअत-ए-सय्यिया (बुरी नवीनता) की किस्म का अक़ीदा और 'ज़ियादतुल क़ुबूर' अध्याय में कब्रों पर कुछ चढ़ाने या चूमने को जो हराम और बिदअत लिख दिया गया है; क्या यह आपके नज़दीक भी सही है? इस बारे में सूचित करें। वस्सलाम।

अल-जवाब (उत्तर): अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत दयालु और कृपालु है। हम उसकी प्रशंसा करते हैं और उसके सम्मानित रसूल पर दरूद भेजते हैं। उच्च पद और महान गौरव वाले हज़रत साहबज़ादा, हज़रत मौलाना मौलवी सैयद मोहम्मद मियां साहब (दामत बरकातुहुम) के अवलोकनार्थ, सम्मान के साथ सलाम के बाद, हज़रत सैयदना शाह महदी मियां साहब क़िबला के आदेश से, इन भारी व्यस्तताओं के बीच इस फ़कीर (मुझ) ने यह किताब तैयार की। गंभीर, असंख्य और बड़ी शरीयत संबंधी गलतियों को सुधारना ज़रूरी और वाजिब ही था। आदेश हुआ कि अशआर (काव्य पंक्तियों) को भी सुधारो। बिना किसी अतिशयोक्ति के, इतनी बड़ी नज़्म की किताब और इतने ज़्यादा हाशिये (फुटनोट्स) नए सिरे से लिखने पड़े, बल्कि एक नई रचना तैयार करने में भी उतनी मेहनत नहीं लगती जितनी इसे बनाने में लगी। पहली छपाई के पृष्ठ 123 तक, जो नई छपाई का पृष्ठ 133 है, मैंने सभी सुधारों की एक प्रति अपने पास रखी है, और चौधरी साहब की सेवा में निवेदन किया था कि साफ लिखने के बाद दोबारा यहाँ देखने के लिए भेज दिया करें। उक्त सज्जन ने कुछ तैयार हिस्से देखने के लिए भेजे। उनके अध्ययन से साफ़ हुआ कि सुधारों में भारी बदलाव कर दिए गए हैं। इसके बाद मुझे चाहिए था कि बाकी किताब वापस कर देता। लेकिन हाकिम (श्रेष्ठ) का आदेश...

مسئلہ ۱۸۲: از مارہرہ مطہرہ ضلع ایٹہ سرکار کلاں مرسلہ سید محمد میاں صاحب دامت برکاتہم ۲۲ ذیقعدہ ۱۳۳۲ھ دوشنبہ مولانا المعظم ذوالمجد والکرم معظم و مکرم دام مجد ھم ، پس از سلام مسنون عارضِ خدمت ہوں۔ بفضلہ تعالی جناب کی صحت و عافیت کا مستدعی بخیر ہوں۔ میں نے جناب سے سید ظہور حیدر صاحب مرحوم کے لیے جو ان کے نام سے ایک عدد کم کر کے تاریخ وفات ان کی کر دینے کو کہہ آیا تھا اور جناب نے وعدہ فرمایا تھا۔ اب اگر ہو گئی ہو تو روانہ فرمائیں۔ تقریظات الحدوث والقدوم اور التناسخ بھی روانہ ہوں جو بدایونی رسائل ہیں، اور اگر کوئی جدید رسالہ مبحث اذان میں شائع ہوا ہو تو روانہ ہو، کنزالاخرۃ جو چودھری صاحب سہاروی کی ہے وہ جدید الطبع سنا ہے کہ جناب کی نظر و اصلاح سے بتما مھا گزری ہے، آیا یہ درست ہے؟ اور اس میں جو صفحہ ۷۲ پر امامت کے مسائل ہیں، قبروں پر چادریں چڑھانے کو بدعت سیئہ کے قسم اعتقاد یہ اور باب زیادہ القبور میں قبروں پر کچھ چڑھانے یا چومنے کو جو حرام اور بدعت لکھ دیا ہے۔ آیا یہ بھی جناب کے نزدیک صحیح ہے؟ اس سے مطلع فرمائیے۔ والسلام

الجواب: بسم اللہ الرحمن الرحیم نحمدہ ونصلی علی رسولہ الکریم بشرف ملاحظہ عالیہ حضرت صاحبزادہ والا قدر بالا فخر حضرت جناب مولانا مولوی سید محمد میاں صاحب دامت برکاتہم بعد التسلیم مع التکریم ملتمس والا حضرت سید نا شاہ مہدی میاں صاحب قبلہ کے حکم سے ان عظیم بے فرصتیوں میں یہ کتاب فقیر نے بنائی۔ اغلاط شدید ہ کثیرہ عظیمہ شرعیہ کا نکالنا تولازم وواجب ہی تھا۔ حکم یہ ہوا کہ اشعار کی بھی اصلاح کر۔ جس سے بلا مبالغہ اتنی بڑی کتاب نظم اور اتنے کثیر حواشی از سر نو تصنیف کرنی ہوئی، بلکہ تصنیف جدیدہ میں اس کی نصف محنت بھی نہ ہوتی جو اس کے بنانے میں ہوئی، طبع اول صفحہ ۱۲۳ تک کہ طبع جدید کے صفحہ ۱۳۳ ہے، تمام

اصلاحات کی نقل میں نے اپنے پاس رکھی، اور جناب چودھری صاحب کی خدمت میں گزارش کی کہ بعد تبیض یہاں پھر دیکھنے کو بھیج دیا کریں۔ جناب موصوف نے کچھ اجزاء کافی شدہ دیکھنے کو بھیجے۔ اس کے مطالعہ سے واضح ہوا کہ اصلاح میں شدید تبدیلیں فرمادی ہیں۔ اس کے بعد مجھے چاہیے تھا کہ باقی کتاب واپس کرتا۔ مگر حکم حاکم

Fatawa Rizvia (Volume 29)

...there was no other way. I corrected the rest with the same effort and sent word to Choudhry Sahib that there is no need to send the clean copy here now. As for this issue of the cloth etc. which the Hazrat inquired about, Al-Hamdu Lillah it was on the same page 123 where I can show that my correction was this, and the Hazrat himself will observe what has become of it in the new edition.

On pages 85 and 86 of the first edition, which are now pages 92 to 94, there is this verse "Offering something on the grave or kissing it, etc."

Prostrating to the grave and performing circumambulation (tawaf) with humility, Bowing before them to the extent of ruku. (1)

In the second edition, the same verse remained; here I added these verses:

Seeking help from the saints (Awliya) is permissible; they are your means before God. The Giver and Owner is Allah alone; the Wali (friend) of Allah is our intermediary. Seeking intercession (Tawasul) is sought in the Qur'an; "Seek [a means to Him]" has come in its glory. See Tafsir-e-Azizi, Para Amm; the respected Shah Sahib writes thus: Saints provide help to humans; they go forth for the help of humanity. Those in need, by asking for their needs from them, solve their difficulties completely. He also stated that the offering (nazr) for saints is prevalent among the entire Ummah without error. This is the intent of Shah Abdul Aziz: it is customary (urfi) offering, not legal (shari'i), O dear one. The gift that is taken into the presence of kings, people of intellect call it 'nazr'. Do not be heedless of the difference between custom and Law; do not call the people of 'La ilaha illallah' polytheists. One who calls the Ummah of Ahmad polytheists is himself close to polytheism and disbelief. And as for the hearing and knowledge of the dead in general, O young man, there is a consensus (ijma) of the Ahl al-Sunnah on this. Whether the dead are believers or disbelievers, without a doubt, they see, hear, and understand perpetually. The Hadith speaks of this with continuity (tawatur); the claim of the soul's annihilation is a vile statement.

(1) Kanz-ul-Akhira

फ़तावा रज़विया (जिल्द २९)

...कोई चारा न था। बाकी की भी इसी मेहनत से इस्लाह (सुधार) की और चौधरी साहब से अर्ज़ कर भेजी कि अब मुबय्यज़ा (साफ़ प्रति) यहाँ भेजने की ज़रूरत नहीं। यह मसला चादर वगैरह का जो हज़रत ने दरयाफ़्त फ़रमाया है अलहम्दुलिल्लाह कि इसी सफ़्हा १२३ पर था जिसे मैं यह दिखा सकता हूँ कि मेरी इस्लाह यह थी, और यह हज़रत खुद मुलाहज़ा फ़रमा लेंगे कि तबा-ए-जदीद (नए संस्करण) में इसकी क्या गत हो गई है।

तबा-ए-अव्वल (प्रथम संस्करण) के सफ़्हा ८५ व ८६ पर कि अब सफ़्हा ९२ ता ९४ है, इसमें यह शेर "कुछ चढ़ाना क़ब्र पर या चूमना इल्ख़ (इत्यादि)"

सजदा-ए-क़ब्र और तवाफ़ बा-खुशू-ओ-खुज़ू उनके आगे झुकना ता-हदे-रुकूअ (१)

तबा-ए-दुव्वम (द्वितीय संस्करण) में वही अपना शेर रहा, यहीं मैंने यह अशआर इज़ाफ़ा (जोड़े) किए थे।

औलिया से इस्तआनत (मदद माँगना) है रवा, वो वसाइल हैं तेरे पेश-ए-ख़ुदा मुअ्ती ओ मालिक फ़क़त अल्लाह है, वास्ता अपना वली अल्लाह है है तवस्सुल की तलब अल-क़ुरआन में, 'वाब्तगू' आया है इसकी शान में देख तफ़सीर-ए-अज़ीज़ी पारा 'अम्म', लिखते हैं यूँ शाह साहब मोहतरम औलिया करते हैं इमदाद-ए-बशर, जा रहे हैं बहरे इमदाद-ए-बशर अहल-ए-हाजत उनसे हाजत माँग कर, अपनी मुश्किल करते हैं हल सर-ब-सर यह भी फ़रमाया कि नज़्र-ए-औलिया, है तमाम उम्मत में रायज बे-ख़ता है यह मक़सूद शाह अब्दुल अज़ीज़, नज़्र-ए-उर्फी है, न शरई ऐ अज़ीज़ तोहफ़ा जो ले जाएँ शाहों के हुज़ूर, नज़्र कहते हैं उसे अहल-ए-शुऊर फ़र्क़ए-उर्फ़ ओ शरअ से ग़ाफ़िल न हो, कह न मुशरिक अहल-ए-ला इलाहा इल्लल्लाह को उम्मत-ए-अहमद को जो मुशरिक कहे, खुद है वो नज़दीक शिर्क ओ कुफ़्र से और समाअ् ओ इल्म-ए-मौता मुतलक़न, अहल-ए-सुन्नत का है इज्माअ् ऐ फ़ती मुर्दे मोमिन हों कि काफ़िर ला-कलाम, देखते सुनते समझते हैं मुदाम इस पे नातिक़ है तवातर से हदीस, है फ़ना-ए-रूह तो क़ौल-ए-ख़बीस

(१) कन्ज़ुल आख़िरह

पेज ६२२ ऑफ़ ७५०

سے چارہ نہ تھا۔ باقی کی بھی اسی محنت سے اصلاح کی اور چودھری صاحب سے عرض کر بھیجی کہ اب مبیضہ یہاں بھیجنے کی حاجت نہیں۔ یہ مسئلہ چادر وغیرہ کا جو حضرت نے دریافت فرمایا ہے الحمد للہ کہ اسی صفحہ ۱۲۳ پر تھا جسے میں یہ دکھا سکتا ہوں کہ میری اصلاح یہ تھی، اور یہ حضرت خود ملاحظہ فرمالیں گے کہ طبع جدید میں اس کی کیا گت ہو گئی ہے۔

طبع اول کے صفحہ ۸۵ و ۸۶ پر کہ اب صفحہ ۹۲ تا ۹۴ ہے، اس میں یہ شعر "کچھ چڑھانا قبر پر یا چومنا الخ"

سجدہ قبر اور طواف باخضوع اُن کے آگے جھکنا تاحدِ رکوع (۱)

طبع دوم میں وہی اپنا شعر رہا، یہیں میں نے یہ اشعار اضافہ کیے تھے۔

اولیاء سے استعانت ہے روا وہ وسائل ہیں ترے پیشِ خدا معطی و مالک فقط اللہ ہے واسطہ اپنا ولی اللہ ہے ہے توسّل کی طلب القرآن میں وابتغوا آیا ہے اس کی شان میں دیکھ تفسیرِ عزیزی پارہ عم لکھتے ہیں یوں شاہ صاحب محترم اولیاء کرتے ہیں امدادِ بشر جارہے ہیں بہرِ امدادِ بشر اہلِ حاجت ان سے حاجت مانگ کر اپنی مشکل کرتے ہیں حل سربسر یہ بھی فرمایا کہ نذرِ اولیاء ہے تمام امت میں رائج بے خطا ہے یہ مقصود شاہ عبدالعزیز نذر عرفی ہے، نہ شرعی اے عزیز تحفہ جولے جائیں شاہوں کے حضور نذر کہتے ہیں اسے اہلِ شعور فرق عُرف و شرع سے غافل نہ ہو کہہ نہ مشرک اہل الّا اللہ کو اُمت احمد کو جو مشرک کہے خود ہے وہ نزدیک شرک و کفر سے اور سماع و علم موتیٰ مطلقاً اہل سنت کا ہے اجماع اے فتی مُردے مومن ہوں کہ کافر لا کلام دیکھتے سنتے سمجھتے ہیں مُدام اس پہ ناطق ہے تو اتر سے حدیث ہے فنائے رُوح تو قولِ خبیث

Fatawa Razawiya Volume 29

If they do not hear, why greet them with Salam? Does the Shariah want a conversation with stones?

The common bodies certainly do not hear; These are the very pearls, the very ones in the graves.

They also hear the call whenever Allah wills, because "Indeed, Allah makes whom He wills hear."[1] Observe how they have been changed in the second edition; I am most deeply saddened by these verses which I had added to the Naat Sharif, they are as follows:

The Lord of All Knowledge, without any doubt or suspicion, Has bestowed the knowledge of the unseen (Ghaib) upon the Prophets.

He makes them dominant over the unseen, And others get news through their mediation.

He makes clear to them, indisputably, All of the world and what is in it, until the end.

That which He has bestowed more upon Mustafa, Of which "what was" and "what will be" became a part.

One who accepts the knowledge of the Satan to be more vast than that of the King (the Prophet), From whom else besides Satan can this heinous blasphemy arise?

He who equates their knowledge of the unseen To that of children, madmen, or animals,

That wretched one is an apostate, an enemy of Allah, He is more astray than even the disbelievers.

Those who disparage the status of the King of Religion (the Prophet), The curse of Allah be upon them all.

Mustafa alone is the intercessor on the Day of Judgment; This exalted status is his portion alone.

He is the Opener of the Gate of Intercession; He is the Cave (refuge) for the people of intercession.

Those with major sins who die without repentance, That Generous one (Prophet) will intercede for them as well.

Whoever says he is not the intercessor on that Day, He is astray and foul, O people of faith!

The remnants-eaters of those dogs of Mutazila (Isolationists), Babble such evil, misguiding statements.

Turn your faces away from their misguidance; Do not leave the mantle of your Master.

If he is not the intercessor for our groups, Say, where would the likes of us find a place?[2]

Observe how much and what remains in it; there were footnotes on all these additions, in which every word was clarified like the sun...

[1] Kanz-ul-Akhirah [2] Kanz-ul-Akhirah

अगर वे नहीं सुनते, तो उन पर सलाम क्यों? क्या शरीयत पत्थरों से कलाम (बातचीत) चाहती है?

आम लोगों के ये धड़ यकीनन नहीं सुनते; यही वे मोती हैं, यही वे हैं जो कब्रों में हैं।

वे भी तब सुनते हैं जब हक (अल्लाह) चाहे, क्योंकि "बेशक अल्लाह जिसे चाहता है सुनवा देता है।"[1] देखें कि दूसरे संस्करण में उनमें क्या बदलाव हुआ है, मुझे सबसे ज्यादा उन अशआर (छंदों) का अफ़सोस हुआ जो मैंने नात शरीफ़ में बढ़ाए थे, वे ये हैं:

हज़रत-ए-अल्लाम-ए-कुल (सारे ज्ञान के स्वामी) ने बिना किसी शक व शुबहा के, अंबिया (पैगंबरों) को इल्म-ए-ग़ैब (परोक्ष का ज्ञान) बख्शा है।

वह उन्हें ग़ैब पर मुसल्लत (प्रभावी) करता है, और दूसरों को उनके माध्यम से खबर मिलती है।

उन पर रोशन (स्पष्ट) कर देता है ला-कलाम (निर्विवाद रूप से), पूरी दुनिया और उसमें जो कुछ है, अंत तक।

मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को जिससे ज़्यादा नवाज़ा है, 'मा-यकुन' (जो होगा) और 'मा-कान' (जो हुआ) जिसका हिस्सा बन गया।

जो शैतान का इल्म बादशाह (नबी) से ज़्यादा वसी (व्यापक) माने, शैतान के अलावा और किससे यह घृणित कुफ्र हो सकता है?

जो उनके इल्म-ए-ग़ैब की बराबरी साबित करे, बच्चों, पागलों या जानवरों के साथ,

वह बदकिस्मत मुर्तद (धर्मत्यागी) और अल्लाह का दुश्मन है, काफ़िरों से भी ज़्यादा गुमराह है।

जो दीन के बादशाह (नबी) की शान में गुस्ताखी करें, उन सब पर अल्लाह की लानत हो।

मुस्तफ़ा ही कयामत में शफ़ी (सिफारिशी) हैं, यह बुलंद रुतबा उन्हीं का हिस्सा है।

शफ़ाअत के दरवाज़े को खोलने वाले वही हैं, शफ़ाअत वालों की पनाहगाह वही हैं।

बड़े गुनाह वाले जो बिना तौबा के मरें, वह करीम (नबी) उनकी शफ़ाअत भी करेंगे।

जो कहे कि वह उस दिन शफ़ी नहीं हैं, ऐ अहल-ए-दीन (धर्म के मानने वालों)! वह गुमराह और खबीस है।

मोअतज़िला (मुतज़िला) के उन कुत्तों का बचा-खुचा खाने वाले, ऐसी बुरी और गुमराह करने वाली बातें बकते हैं।

उनकी गुमराही से अपना मुँह फेर लो; अपने मौला (आका) का दामन न छोड़ना।

अगर वह हमारे गिरोहों के शफ़ी न हों, तो कहो कि हम जैसों का ठिकाना फिर कहाँ होगा?[2]

देखें कि इसमें कितना और क्या बाकी रहा, इन तमाम इज़ाफ़ों (वृद्धियों) पर हाशिए (फुटनोट) थे जिनमें हर लफ्ज़ सूरज की तरह साफ़ था...

[1] कंज़ुल आख़िरह [2] कंज़ुल आख़िरह

فتاویٰ رضویہ جلد ۲۹

وہ نہیں سنتے تو کیوں ان پر سلام کیا شریعت چاہے پتھر سے کلام

عام کے یہ دھڑ نہیں سنتے ضرور ہیں یہی موتی یہی من فی القبور

یہ بھی جب حق چاہے سنتے ہیں ندا کیونکہ اِنَّ اللّٰہَ یُسْمِعُ مَنْ یَّشَآءُ ۱ ملاحظہ ہو طبع دوم میں ان کی کیا تبدیلی ہوئی ہے، سب سے زیادہ سخت افسوس مجھے ان اشعار کا ہوا کہ نعت شریف میں میں نے اضافہ کیے تھے وہ یہ ہیں۔

حضرتِ علامِ کل بے شک وریب | بخشا ہے انبیاء کو علم غیب ان کو کرتا ہے مسلط غیب پر | اوروں کو ان کے توسط سے خبر ان پہ کردیتا ہے روشن لا کلام | ختم تک دنیا و مافیہا تمام مصطفیٰ کو جس سے بخشا ہے سوا | مایکون ماکان جس کا جز ہوا علم مانے شہ سے شیطان کا وسیع | کس سے جز شیطاں ہو یہ کفر شنیع علم غیب ان کا ساجو ثابت کرے | بچے پاگل جانور کے واسطے وہ شقی مرتد عدو اللہ ہے | کافروں سے بھی سوا گمراہ ہے جو کریں تنقیص شان شاہ دیں | لعنۃ اللہ علیہم اجمعین مصطفیٰ ہی ہیں، قیامت میں شفیع | ہے انہیں کا حصہ یہ شان رفیع فاتح باب شفاعت ہیں وہی | کہف ارباب شفاعت ہیں وہی جو کبائر والے بے توبہ مریں | وہ کریم ان کی شفاعت بھی کریں جو کہے اس دن کے وہ شافع نہیں | وہ ہے گمراہ و خبیث اے اہل دیں فضلہ خور ان سگان اعتزال | بکتے ہیں ایسے بد اقوال ضلال اُن کی گمراہی سے تم منہ موڑنا | اپنے مولا کا نہ دامن چھوڑنا وہ نہ ہوں شافع ہمارے گروہاں | کہیے ہم سوں کا ٹھکانہ پھر کہاں ۲

ملاحظہ ہو کہ اس میں کتنا اور کیا باقی رہا، ان تمام اضافات پر حواشی تھے جن میں ہر لفظ کا آفتاب سے

Fatawa Rizwia Volume 29

The proof which was more significant was also mostly deleted. Now your Excellency may please observe the requested text. In the first publication, the text of this footnote was as follows: Page 5: 'but it is, etc.' meaning prayer behind a transgressor, a blind person, an innovator (ahl-e-bid'at), and an ignorant person is disliked (makruh). However, behind some it is prohibitory disliked (makruh tahrimi) and behind some it is offensive disliked (makruh tanzihí). Behind innovators and that ignorant person who breaks the recitation and reads with half-cut letters, prayer is prohibitory disliked. And behind a blind and a transgressor, if they are not innovators or ignorant, prayer is offensive disliked. Prayer behind an innovator is so because Prophet Muhammad (peace and blessings of Allah be upon him) said: 'Whoever introduces something new into this affair of ours which is not from it, it is rejected.'[1] That is, the person who invented a new thing from his own side in our religion which is not proven from the Book and Sunnah. (By this is meant an evil innovation). So that person, i.e., the innovator, is rejected.

And he (the Prophet) said in another place: 'Every innovation is a misguidance.'[2] That is, every innovation is the path of misguidance.

Therefore, prayer should never be performed behind a person who commits such an innovation; prayer behind him will be prohibitory disliked. Let it be clear that those who prostrate to graves and those who make vows to the people of the graves, and the deviant sects like the Kharijites, Jabrites, and Qadrites, and those illiterate ignorant people who are completely unaware and devoid of knowledge of the Book and Sunnah and then abandon taqlid (legal conformity) - these people are innovators. One should avoid their company. In short, to hold beliefs contrary to those matters upon which there has been a consensus (ijma) of the Companions, Successors, and Mujtahid Imams (may Allah be pleased with them all) is indeed innovation.

[1] Sahih Muslim, Kitab al-Aqdiyah, Chapter: Annulment of False Rulings, etc., Qadimi Kutub Khana Karachi, 2/77 [2] Sahih Muslim, Kitab al-Jumu'ah, Chapter: Shortening of Prayer and Sermon, Qadimi Kutub Khana Karachi, 1/287; Sunan Ibn Majah, Chapter: Avoidance of Innovations and Disputation, H.M. Saeed Company Karachi, p. 6

फतावा रज़विया जिल्द 29

जो प्रमाण अधिक महत्वपूर्ण था वह भी अधिकतर हटा दिया गया, अब महाशय अपनी माँगी गई इबारत का अवलोकन करें। प्रथम प्रकाशन में इस फुटनोट की इबारत इस प्रकार थी: पृष्ठ 5: 'होती है मगर वह इत्यादि' अर्थात् फासिक, पापी, अंधे, और बिदअती (नवाचारी) तथा जाहिल (अज्ञानी) के पीछे नमाज़ मकरूह होती है। लेकिन कुछ के पीछे मकरूह-ए-तहरीमी और कुछ के पीछे मकरूह-ए-तंज़ीही होती है। अर्थात् बिदअती और उस जाहिल के पीछे जो क़िरात (कुरान पाठ) बिगाड़ता है और कटे-फटे शब्दों से पढ़ता है, उनके पीछे नमाज़ मकरूह-ए-तहरीमी होती है। और अंधे और फासिक के पीछे यदि वे बिदअती और जाहिल न हों, तो नमाज़ मकरूह-ए-तंज़ीही होती है। बिदअती के पीछे इसलिए क्योंकि हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया: 'जिसने हमारे इस धर्म में कोई नई चीज़ निकाली जो इसमें से नहीं है, तो वह रद्द है।'[1] अर्थात् जिस व्यक्ति ने हमारे धर्म में अपनी ओर से कोई नई बात निकाली जो किताब और सुन्नत से प्रमाणित नहीं है। (इससे अभिप्राय बिदअत-ए-सय्यआ यानी बुरी बिदअत है)। अतः वह व्यक्ति यानी बिदअती तिरस्कृत है।

और एक अन्य स्थान पर फ़रमाया: 'प्रत्येक बिदअत गुमराही है।'[2] अर्थात् हर बिदअत भटकाव का रास्ता है।

अतः जो व्यक्ति ऐसी बिदअत का अपराधी हो, उसके पीछे नमाज़ कदापि नहीं पढ़नी चाहिए, उसके पीछे नमाज़ मकरूह-ए-तहरीमी होगी। स्पष्ट रहे कि कब्रों को सजदा करने वाले और कब्र वालों से मन्नतें मानने वाले और गुमराह फिरके जैसे खवारिज, जबरिया और कदरिया, और वे अनपढ़ जाहिल जो किताब और सुन्नत से बिल्कुल अनभिज्ञ और वंचित हैं और फिर तक़लीद का त्याग करते हैं, ये लोग बिदअती हैं। उनकी संगति से बचना चाहिए। संक्षेप में, जिन बातों पर सहाबा, ताबेईन और मुजतहिद इमामों (रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन) का इज्मा (आम सहमति) हो चुका है, उनके विरुद्ध अकीदा (विश्वास) रखना ही बिदअत है।

[1] सहीह मुस्लिम, किताबुल अक़्दिया, बाब: नक़्ज़ुल अहकामिल बातिला इत्यादि, क़दीमी कुतुब खाना कराची, 2/77 [2] सहीह मुस्लिम, किताबुल जुमुआ, बाब: तख़फ़ीफ़ुस सलात वल खुतबा, क़दीमी कुतुब खाना कराची, 1/287; सुनन इब्न माजा, बाब: इज्तिनाबुल बिदा वल जदल, एच.एम. सईद कंपनी कराची, पृ. 6

पृष्ठ 624 का 750

زیادہ ثبوت تھا وہ بھی اکثر حذف ہو گئے، اب حضرت اپنی مسئول عبارت ملاحظہ فرمائیں، اشاعت اولی میں اس حاشیہ کی عبارت یہ تھی۔ ص ۵ ہوتی ہے مگر وہ الخ یعنی فاسق فاجر اور نابینا اور اہل بدعت اور جاہل کے پیچھے نماز مکروہ ہوتی ہے لیکن بعض کے پیچھے مکروہ تحریمہ اور بعض کے پیچھے مکروہ تنزیہہ اور بعض کے پیچھے مکروہ تنزیہی یعنی اہل بدعت اور وہ جاہل جو قرأت توڑئے اور ادھ کٹ حرفوں سے پڑھے، ان کے پیچھے نماز مکروہ تحریمہ ہوتی ہے اور نابینا وفاسق کے پیچھے اگر وہ اہل بدعت اور جاہل نہ ہو تو نماز مکروہ تنزیہی ہوتی ہے، اہل بدعت کے پیچھے اس لیے کہ حضرت محمد صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: من احدث فی امرنا ھذا الیس منہ فھو رد1۔ یعنی جس شخص نے نئی بات نکالی اپنی طرف سے بیچ دین میں ہمارے کے جو کہ کتاب و سنت سے ثابت نہیں ہے۔ (مراد اس سے بدعت سیئہ ہے) پس وہ شخص یعنی بدعتی مردود ہے۔

اور ایک جگہ فرمایا: کل بدعۃ ضلالۃ2۔ یعنی ہر بدعت گمراہی کا راستہ ہے۔

پس جو شخص مرتکب ایسی بدعت کا ہو اس کے پیچھے نماز ہر گز نہ پڑھنا چاہیے، اس کے پیچھے نماز مکروہ تحریمہ ہوگی۔ واضح ہو کہ قبروں کو سجدہ کرنے والے اور اہل قبور سے منت ماننے والے اور فرقہائے باطلہ مثل خوارج و جبریہ و قدریہ کے، اور وہ ان پڑھ جاہل جو کہ کتاب و سنت سے بالکل ناواقف و بے بہرہ ہیں اور پھر ترکِ تقلید کرتے ہیں، یہ لوگ اہل بدعت ہیں انکی صحبت سے بچنا چاہیے، غرضیکہ جن باتوں پر صحابہ و تابعین و آئمہ مجتہدین رضی اللہ تعالیٰ عنہم اجمعین کا اجماع ہو چکا ہے انکے خلاف عقیدہ رکھنا یہی بدعت ہے۔

1 صحیح مسلم کتاب الاقضیۃ باب نقض الاحکام الباطلۃ الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ۲/ ۷۷ 2 صحیح مسلم کتاب الجمعۃ باب تخفیف الصلوۃ والخطبۃ قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/ ۲۸۷، سنن ابن ماجۃ باب اجتناب البدع والجدل ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ص ۶

Fatawa Ridawiyya Volume 29

This humble servant composed it thus: Number 5: In the previous era, etc., meaning it is disliked (Makruh) to pray behind an ignorant person, a blind person, an illegitimate child, a slave, a sinner (fasiq), and an innovator (ahl-e-bid'at). However, praying behind the first four is mildly disliked (Makruh-e-Tanzihi), and behind the latter two, it is severely disliked (Makruh-e-Tahrimi), provided the sinner is 'Mu'lan' (notorious), i.e., his sin is manifest and famous; otherwise, it would also be mildly disliked behind him. And this is when the innovation and heresy of that innovator have not reached the level of disbelief (kufr); otherwise, prayer behind them would be purely void (batil), like the Rawafid, Wahhabis, Necharis, Qadiyanis, and Chakralwis of today who call themselves 'Ahl-e-Quran', and the Ghair-Muqallids. It is stated in the Hadith: Every innovation is a misguidance. | Meaning, every innovation is a deviation.

And this refers to 'Evil Innovation' (Bid'at Sayyi'ah). Thus, one should never pray behind a person who commits such an innovation; the prayer behind him will be performed as Makruh-e-Tahrimi. It should be clear that evil innovation is of two types: practical and doctrinal. Practical includes things like [excessive display of] banners (alams), Taziyas, and prostrating to graves. Doctrinal includes sects like Tafdiliyah, Kharijites, Jabriyah, Qadriyah, etc. These people are innovators; one should avoid their company. In short, holding a belief contrary to what the Companions, Successors, and Mujtahid Imams (may Allah be pleased with them all) have reached a consensus (Ijma) upon is innovation. Furthermore, among them, those whose innovation has not reached the level of disbelief, like the Tafdiliyah, the prayer behind them is Makruh-e-Tahrimi, otherwise, it is purely void. 12 Minhu (from him).

Now, the way it has been done in the second edition is before you. Similarly, there are countless changes; in poetry too, similar types of errors have recurred. The corrections after page 123 are not here; if they were, and if someone were to publish this book according to this humble servant's corrections, it would be the 'Third Book' and, by the grace of Allah Almighty, free from legal (Shari'i) and poetic errors. The date of the passing of Hazrat Syed Zahoor Haider Mian Sahib (may Allah's mercy be upon him) came to mind just now, it is presented: Towards the meeting with his grandfather | Mother of Zahoor Haider Beauty towards the Heavens since | Then Zahoor Haider

फतावा रज़विया जिल्द 29

इस फ़क़ीर ने यूँ बनाया था: नंबर 5: पिछले दौर में अल-ख यानि जाहिल और नाबीना और वल्द-उज़-ज़िना और गुलाम, फासिक़ और अहल-ए-बिदअत के पीछे नमाज़ मकरूह होती है लेकिन अगले चार के पीछे मकरूह-ए-तन्ज़ीही और पिछले दो के पीछे मकरूह-ए-तहरीमी होती है, जब कि वो फासिक़-ए-मुअलन हो यानी उसका फ़िस्क़ ज़ाहिर और मशहूर हो, वर्ना उसके पीछे भी मकरूह-ए-तन्ज़ीही होगी। और जब कि उस मुब्तदिअ की बिदअत व बद-मज़हबी हद-ए-कुफ्र तक न पहुँची हो, वरना उसके पीछे बातिल-ए-महज़ होगी, जैसे आज कल के रवाफ़िज़ व वहाबी व नेचरी व क़ादियानी व चकरालवी कि अपने आप को अहल-ए-क़ुरआन कहते हैं, और गैर मुक़ल्लिद। हदीस में फ़रमाया: कुल बदअतिन दलाला | यानी हर बिदअत गुमराही है।

और इससे मुराद बिदअत-ए-सय्यिया है, पस जो शख़्स मुर्तकिब ऐसी बिदअत का हो उसके पीछे नमाज़ हरगिज़ न पढ़ना चाहिए, उसके पीछे नमाज़ मकरूह-ए-तहरीमी अदा होगी। वाज़ेह हो कि बिदअत-ए-सय्यिया दो क़िस्म की है: अमली और एतिक़ादी। अमली जैसे अलम, तज़िये और क़ब्रों को सज्दा, और एतिक़ादी जैसे तफ़्ज़ीलिया व ख़्वारिज व जबरिया व क़दरिया वग़ैरह। ये लोग अहल-ए-बिदअत हैं, इनकी सोहबत से बचना चाहिए। ग़रज़ ये कि जिन बातों पर सहाबा व ताबेईन व अइम्मा-ए-मुजतहिदीन (रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन) का इज्मा हो चुका है, उनके खिलाफ अक़ीदा रखना ही बिदअत है। फिर उनमें जिनकी बिदअत हद-ए-कुफ्र को न पहुँची हो जैसे तफ़्ज़ीलिया, उसके पीछे नमाज़ मकरूह-ए-तहरीमी है, वरना बातिल-ए-महज़। 12 मिन्हु।

अब इशाअत-ए-सानिया (दूसरे संस्करण) में जिस तरह कर लिया गया है वो पेश-ए-नज़र है। इसी तरह बेशुमार तब्दीलियाँ हैं, अश्आर (शेरों) में भी फिर इसी क़िस्म की अग़लात (ग़लतियों) ने ऊद किया है (लौट आई हैं)। सफ्हा 123 के बाद की इस्लाहात (सुधार) यहाँ न रहीं, अगर वो भी हों और ये किताब मुताबिक़-ए-इस्लाह-ए-फ़क़ीर कोई साहब छापें तो 'किताब-ए-सालिस' (तीसरी किताब) होगी और बफ़ज़्लिहि तआला अग़लात-ए-शरईया व शेअरिया से पाक। हज़रत सैय्यद ज़हूर हैदर मियां साहब (रहमतुल्लाह तआला अलैहि) की तारीख़-ए-विसाल (मृत्यु की तिथि) जभी ख्याल में आ गई थी, मअरूज़ है: नह्वो लिक़ाई जद्दिही | उम्म-ए-ज़हूर हैदर हुस्नुन इलल जिनानी इज़ | सुम्मा ज़हूर हैदर

اس فقیر نے یوں بنایا تھا۔ نمبر ۵: پچھلے دور میں الخ یعنی جاہل اور نابینا اور ولد الزنا اور غلام، فاسق اور اہل بدعت کے پیچھے نماز مکروہ ہوتی ہے لیکن اگلے چار کے پیچھے مکروہ تنزیہی اور پچھلے دو کے پیچھے مکروہ تحریمی ہوتی ہے، جب کہ وہ فاسق معلن ہو یعنی اس کا فسق ظاہر اور مشہور ہو، ورنہ اس کے پیچھے بھی مکروہ تنزیہی ہوگی۔ اور جب کہ اس مبتدع کی بدعت و بد مذہبی حد کفر تک نہ پہنچی ہو، ورنہ اس کے پیچھے باطل محض ہوگی، جیسے آج کل کے روافض و وہابی و نیچری و قادیانی و چکڑالوی کہ اپنے آپ کو اہل قرآن کہتے ہیں، اور غیر مقلد، حدیث میں فرمایا: کل بدعۃ ضلالۃ | یعنی ہر بدعت گمراہی ہے۔

اور اس سے مراد بدعت سیئہ ہے، پس جو شخص مرتکب ایسی بدعت کا ہو اس کے پیچھے نماز ہرگز نہ پڑھنا چاہیے اس کے پیچھے نماز مکروہ تحریمی ادا ہوگی۔ واضح ہو کہ بدعت سیئہ دو قسم ہے: عملی اور اعتقادی، عملی جیسے علم، تعزیے اور قبروں کو سجدہ، اور اعتقادی جیسے تفضیلیہ و خوارج و جبریہ و قدریہ وغیرہ، یہ لوگ اہل بدعت ہیں ان کی صحبت سے بچنا چاہیے، غرضیکہ جن باتوں پر صحابہ و تابعین و ائمہ مجتہدین رضی اللہ تعالیٰ عنہم اجمعین کا اجماع ہو چکا ہے ان کے خلاف عقیدہ رکھنا ہی بدعت ہے۔ پھر ان میں جن کی بدعت حد کفر کو نہ پہنچی ہو جیسے تفضیلیہ، اس کے پیچھے نماز مکروہ تحریمی ہے ورنہ باطل محض ۱۲ منہ۔ اب اشاعت ثانیہ میں جس طرح کر لیا گیا ہے وہ پیش نظر ہے۔ اسی طرح بیشمار تبدیلیاں ہیں، اشعار میں بھی پھر اسی قسم کی اغلاط نے عود کیا ہے۔ صفحہ ۱۲۳ کے بعد کی اصلاحات یہاں نہ رہیں اگر وہ بھی ہوں اور یہ کتاب مطابق اصلاح فقیر کوئی صاحب چھاپیں تو کتاب ثالث ہوگی اور بفضلہ تعالی اغلاط شرعیہ و شعریہ سے پاک۔ حضرت سید ظہور حیدر میاں صاحب رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ کی

تاریخ وصال جبھی خیال میں آگئی تھی معروض ہے: ع نحو لقاء جده | ام ظهور حيدر حسن الی الجنان اذ | ثم ظهور حيدر

Fatawa Ridawiyya, Volume 29

It was asked: "When is this journey?" "They are the manifestation of Haider." I said: "Because the year remains." Then: "The manifestation of Haider." 1332 AH, 1333 AH, 1334 AH

A copy of the words written by the humble servant regarding the treatise on transmigration and the treatise on origination and eternity from Badayun is present here. If a copy of Maulana's letter from Badayun has been received, I would also like to see it.

To the service of His Excellency Janab Syed Shah Abul Qasim Haj Syed Ismail Hassan Miyan Sahib Qibla, greetings. The treatise "Hazar Zarb-e-Aqwa," which contains exactly one thousand refutations of the fourth treatise "Athar al-Mutada'in" by Maulvi Abdul Ghaffar Khan Sahib, will be printed in three or four days, God willing, and will be presented by His grace. The card from the people of Calcutta is present; please distribute it according to the written names. That is all.

Problem 183: Asked by Ahmed Ali Me’mar, Mahalla Bari, on Thursday, 9th Muharram 1337 AH. What do the scholars of religion and the jurists of the clear Sharia say regarding this issue? A person, an Imam of a mosque, refuses to recite Fatiha over sweets and food items. His excuse is that if any part of the food over which Fatiha has been recited falls on the ground or if any other kind of disrespect occurs, the person who offered the Fatiha will be sinful. Legally, can there be any punishment or reward for such a person?

The Answer: This thought of his is false and this excuse is futile. There is no sin on anyone for accidentally falling on the ground. And if some Wahhabi or Rafidi, God forbid, intentionally disrespects it, why should his sin be attributed to the one who offered it? Allah the Almighty said: "And no bearer of burdens shall bear the burden of another"[1] — and no soul shall bear the burden of another soul. (T) Yes, if the giver knowingly gives it to a Wahhabi, a Rafidi, or any infidel, then the disrespect that these people show [is something they should avoid]. Note: 'Baqiya yabqa' comes from both paradigms of 'sama'a' and 'daraba'. Additionally, 'daraba' in the sense of 'waiting' is a known linguistic usage.

[1] The Holy Quran 6/164

फतावा रज़विया, जिल्द २९

पूछा गया: "यह सफर कब है?" "वे हैदर का ज़हूर (प्रकटीकरण) हैं।" मैंने कहा: "क्योंकि साल बाकी है।" फिर: "हैदर का ज़हूर।" १३३२ हिजरी, १३३३ हिजरी, १३३४ हिजरी

बदायुं के'रिसाला तनासुख़' (आवागमन पर ग्रंथ) और 'रिसाला हुदूस-ओ-क़दम' (सृष्टि के आरम्भ पर ग्रंथ) पर इस नियाज़मंद (सेवक) ने जो अल्फाज़ लिखे थे, उनकी नकल हाज़िर है। अगर बदायुं से मौलाना के ख़त की नक़ल मिल गई हो तो मैं भी देखता।

आली ख़िदमत हज़रत जनाब सैय्यद शाह अबुल क़ासिम हज सैय्यद इस्माईल हसन मियां साहब क़िबला, तस्लीम अर्ज़। रिसाला 'हज़ार ज़र्ब-ए-अक़वा', जिसमें मौलवी अब्दुल ग़फ़्फ़ार ख़ां साहब के चौथे रिसाले 'आसार-उल-मुतदईन' पर पूरे एक हज़ार रद्द (खंडन) हैं, इंशाअल्लाह तआला तीन-चार दिन में छप जाएगा, अल्लाह की मदद से पेश किया जाएगा। कलकत्ता वालों का कार्ड हाज़िर है, तहरीर के मुताबिक नाम बाँट दिए जाएँ। फ़क़त।

मसला १८३: सवालकर्ता अहमद अली मेमार, मोहल्ला बरी, जुमेरात ९ मुहर्रम १३३७ हिजरी। क्या फरमाते हैं उलमा-ए-दीन और मुफ़्तियान-ए-शरअ-ए-मतीन इस मसले में कि एक शख़्स इमाम-ए-मस्जिद मिठाई और खाने की चीज़ों पर फ़ातिहा पढ़ने से इनकार करता है। और उज़्र (बहाना) यह पेश करता है कि फ़ातिहा दी हुई चीज़ का अगर कुछ हिस्सा ज़मीन पर गिर गया या और किसी किस्म की बेअदबी हुई तो फ़ातिहा देने वाला गुनहगार होगा। ऐसे शख़्स पर शरअन कोई अज़ाब या सवाब हो सकता है या नहीं?

जवाब: उसका यह ख़याल बातिल (गलत) है और यह बहाना बेकार है। बिला इरादा (अनजाने में) ज़मीन पर गिर जाने में किसी के ज़िम्मे कोई गुनाह नहीं है। और अगर कोई वहाबी या राफ़ज़ी, माज़ल्लाह, जानबूझकर बेअदबी करे तो उसका गुनाह उसके(फ़ातिहा देने वाले के) सर क्यों मढ़ा जाए। अल्लाह तआला का फ़रमान है: "और कोई बोझ उठाने वाली जान दूसरे का बोझ न उठाएगी"[1]। (त) हाँ, अगर देने वाला जान-बूझकर वहाबी या राफ़ज़ी या किसी काफ़िर को दे, तो वह बेअदबी जो ये लोग करेंगे, उससे बचना चाहिए। नोट: 'बक़िया यबक़ा' (बाकी रहना) 'समअ' और 'ज़रब' दोनों बाब से आता है, इसके अलावा 'ज़रब' का एक लुग़वी (भाषाई) अर्थ 'इंतज़ार' भी है।

[1] अल-क़ुरआन अल-करीम ६/१६४

فتاوی رضویہ، جلد ۲۹

قیل متی ھذا السفر ھم ظھور حیدر قلت لان بقی السنۃ عہ ثم ظھور حیدر ۱۳۳۲ھ ۱۳۳۳ھ ۱۳۳۴ھ

بدایوں کے رسالہ تناسخ اور رسالہ حدوث و قدم پر جو الفاظ نیاز مند نے لکھے تھے ان کی نقل حاضر ہے، مولانا کے خط کی نقل اگر بدایوں سے مل گئی ہو تو میں بھی دیکھتا۔

والا خدمت حضرت جناب سید شاہ ابوالقاسم حاج سید اسمعیل حسن میاں صاحب قبلہ تسلیم معروض رسالہ ہزار ضرب اقوی جس میں مولوی عبدالغفار خاں صاحب کے چوتھے رسالہ آثار المتد عین پر کامل ایک ہزار رد ہیں، تین چار روز میں ان شاء اللہ تعالیٰ طبع ہو جائے گا بعونہ تعالیٰ حاضر کیا جائے گا۔ کلکتہ والوں کا کارڈ حاضر ہے حسب تحریر اسماء تقسیم فرما دیا جائے فقط۔

مسئلہ ۱۸۳: مسئولہ احمد علی معمار محلہ بری، روز پنجشنبہ تاریخ ۹ محرم ۱۳۳۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیان شرع متین اس مسئلہ میں کہ ایک شخص امام مسجد شیرینی اور کھانے کی چیزوں پر فاتحہ پڑھنے سے انکار کرتا ہے۔ اور عذر یہ پیش کرتا ہے کہ فاتحہ دی ہوئی چیز کا اگر کچھ حصہ زمین پر گر گیا یا اور کسی قسم کی بے ادبی ہوئی تو فاتحہ دینے والا گنہگار ہوگا۔ ایسے شخص پر شرعاً کوئی عذاب یا ثواب ہو سکتا ہے یا نہیں؟

الجواب: اس کا یہ خیال باطل اور یہ عذر لاطائل ہے، زمین پر بلا قصد گر جانے میں کچھ گناہ کسی کے ذمہ نہیں، اور اگر کوئی وہابی یا رافضی معاذ اللہ قصداً بے ادبی کرے تو اس کا گناہ اس کے سر کیوں باندھا جائے۔ قال اللہ تعالیٰ: "وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَىٰ" ۱۔ اور کوئی بوجھ اٹھانے والی جان دوسرے کا بوجھ نہ اٹھائے گی۔ (ت) ہاں اگر دینے والا جان کر وہابی یا رافضی اور کسی کافر

کو دے تو وہ بے ادبی کہ یہ لوگ کریں اس سے بچنا چاہئے۔ عہ: بقی یبقی، سمع اور ضرب دونوں سے آتا ہے، علاوہ ازیں ضرب سے بمعنی انتظار لغت معروف ہے۔

۱ القرآن الکریم ۶ / ۱۶۴

...will be attributed to him. If the aforementioned person actually holds the belief he expressed verbally, then he is an opponent of the Holy Quran as we have recited. Otherwise, it is apparent that inwardly he is a denier of the Fatiha for the Saints (Awliya Ikram). And under the pretext of Taqiyya (precautionary dissimulation), he makes up this absurd excuse. In both cases, this person deserves punishment. And Allah Almighty knows best.

Question 184: Asked by Mr. Hakim Muqeem-ud-Din Sahib, Baheri district Bareilly, 11 Rajab al-Murajab 1334 AH. What do the scholars of religion and jurists of the bright Sharia say on this matter: when good and evil are weighed in the Scale (Mizan), will the pan of good deeds be heavy or that of evil deeds? Because as a rule, when good deeds are more, the pan of good deeds should be heavy and low, and when evil deeds are more, the pan of evil deeds should be heavy and low. It is also written in books that when good deeds are more, the pan of good deeds will be heavy and will tilt. So will the pan of good deeds actually be heavy if the good deeds are more? Please explain in detail because good deeds should be light compared to sins.

The Answer: That Scale is contrary to the scales of this world; there, if the pan of good deeds is heavy, it will rise up, and the pan of evil deeds will sit down (be low). Allah Almighty said: "To Him ascends good speech, and righteous work raises it." (Surah Fatir, 35:10). Good words ascend towards Him, and he who performs good deeds, He elevates them. (T)

Question 185: From Gondal area, Kathiawar, asked by Abdul Sattar bin Ismail, Tuesday, 13 Rajab al-Murajab 1334 AH. Some heretical Sufis (Zindiqah) like Zaid, Umar, Bakr, etc., who say all are God, bring this argument that for this reason Mansur claimed 'Ana al-Haq' (I am the Truth), Bayazid Bastami (may Allah's mercy be upon him) said 'Subhani ma a'zama shani' (Glory be to me, how great is my majesty! - T). And Shams Tabrizi, for this reason, said 'Qum bi-idhni' (Rise by my permission - T) and brought the dead to life. Now the request is: did these words really originate from the aforementioned elders? And is it correct for this heretical Sufi to say so? And if so, are these words rejected according to Sharia or not? And...

---

1 Al-Quran al-Kareem 35 / 10 Page 627 of 750

...की तरफ आयद होगी। मजकूर शख्स अगर वाकयी ये अकीदा रखता है जो जबान से कहा तो कुरान मजीद का मुखालिफ है जैसा कि हमने तिलावत की। वरना जाहिर ये है कि वो बातिन में फातिहा औलिया किराम का मुन्किर है। और बराहे तकिया ये उज्र-ए-बेहूदा गढ़ता है। दोनों सूरतों में ये शख्स मुस्तहिक-ए-अज़ाब है। वल्लाहु तआला आलम।

मसला १८४: मसूला जनाब हकीम मुकीमुद्दीन साहब बहेड़ी जिला बरेली ११ रजब उल मुरज्जब १३३४ हिजरी। क्या फरमाते हैं उलमा-ए-दीन व मुफ्तीयान-ए-शरअ मतीन इस मसले में कि जब नेकी बदी मीज़ान में तुलेगी तो नेकी का पलड़ा भारी होगा या बदियों का, क्योंकि कायदे से जब नेकियाँ ज्यादा हों नेकियों का पलड़ा भारी और नीचा होगा और बदियाँ ज्यादा हों तो बदी का पलड़ा भारी और नीचा होना चाहिए, और किताबों में लिखा भी ऐसा ही है कि जब नेकियाँ ज्यादा होंगी तो नेकियों का पलड़ा भारी होगा और झुकेगा तो क्या वाकयी नेकियाँ ज्यादा होंगी तो नेकियों का पलड़ा भारी होगा। मुफस्सल बयान हो क्योंकि नेकियाँ बमकाबला गुनाहों के हल्की होनी चाहिए।

अल्-जवाब: वो मीज़ान यहाँ के तराज़ू के खिलाफ है वहाँ नेकियों का पलड़ा अगर भारी होगा तो ऊपर उठेगा और बदी का पलड़ा नीचे बैठेगा। अल्लाह तआला अज्ज़वजल ने फरमाया: "इलैहि यसअदुल कलिमुल तय्यिबु वल अमालुस सालिहु यरफअुहू" १। उसी की तरफ चढ़ना है पाकीज़ा कलाम और जो नेक काम है वो उसको बुलंद करता है। (त)

मसला १८५: अज़ गोंडल इलाका काठियावाड़ मसूला अब्दुल सत्तार बिन इस्माईल बरोज़ सह शंबा तारीख १३ रजब उल मुरज्जब १३३४ हिजरी। बाज़ मुतसव्वफा ज़न्दीका जो ज़ैद, उमर, बक्र ये वो सब का खुदा ही खुदा कहते हैं वो ये दलील लाते हैं कि इस वजह से मन्सूर ने दावा "अनल हक" का किया, बायाज़ीद बसतामी रहमतुल्लाह तआला अलैहि ने इसी लिए "सुब्हानी मा आअज़मा शानी" (मैं पाक हूँ और कितनी अज़ीम मेरी शान है। त) फरमाया। और शम्स तबरेज़ी ने इसी वजह से "क़ुम बि-इज़नी" (उठ मेरे हुक्म से। त) कह कर मुर्दा ज़िन्दा किया। अब अर्ज़ ये है कि क्या वाकयी ये कलमात ऊपर के बुजुर्गों से सादर हुए हैं? और क्या इस सूफी ज़न्दीक का ये कहना सही है? और अगर है तो क्या ये कलमात अिन्दश्शरअ मरद्दूद हैं या नहीं? और...

---

१ अल-कुरानुल करीम ३५ / १० पेज ६२७ ऑफ ७५०

کی طرف عائد ہوگی۔ شخص مذکور اگر واقعی یہ عقیدہ رکھتا ہے جو زبان سے کہا تو قرآن مجید کا مخالف ہے کما تلونا۔ ورنہ ظاہر یہ ہے کہ وہ باطن میں فاتحہ اولیاء کرام کا منکر ہے۔ اور براہ تقیہ یہ عذر بے ہودہ گھڑتا ہے۔ دونوں صورتوں میں یہ شخص مستحق عذاب ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۱۸۴: مسئولہ جناب حکیم مقیم الدین صاحب بہیڑی ضلع بریلی ۱۱ رجب المرجب ۱۳۳۴ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیان شرع متین اس مسئلہ میں کہ جب نیکی بدی میزان میں تولیگی تو نیکی کا پلہ بھاری ہوگا یا بدیوں کا، کیونکہ قاعدے سے جب نیکیاں زیادہ ہوں نیکیوں کا پلہ بھاری اور نیچا ہوگا اور بدیاں زیادہ ہوں تو بدی کا پلہ بھاری اور نیچا ہونا چاہیے، اور کتابوں میں لکھا بھی ایسا ہی ہے کہ جب نیکیاں زیادہ ہوں گی تو نیکیوں کا پلہ بھاری ہوگا اور جھکے گا تو کیا واقعی نیکیاں زیادہ ہوں گی تو نیکیوں کا پلہ بھاری ہوگا۔ مفصل بیان ہو کیونکہ نیکیاں بمقابلہ گناہوں کے ہلکی ہونا چاہیں۔

الجواب: وہ میزان یہاں کے ترازو کے خلاف ہے وہاں نیکیوں کا پلہ اگر بھاری ہوگا تو اوپر اٹھے گا اور بدی کا پلہ نیچے بیٹھے گا۔ قال اللہ تعالٰی عزوجل: "اِلَیْہِ یَصْعَدُ الْکَلِمُ الطَّیِّبُ وَالْعَمَلُ الصَّالِحُ یَرْفَعُہٗ" ط ۱۸۔ اسی کی طرف چڑھنا ہے پاکیزہ کلام اور جو نیک کام ہے وہ اس کو بلند کرتا ہے۔ (ت)

مسئلہ ۱۸۵: از گونڈل علاقہ کاٹھیاوار مسئولہ عبد الستار بن اسمعیل بروز سہ شنبہ تاریخ ۱۳ رجب المرجب ۱۳۳۴ھ بعض متصوفہ زندیقہ جو زید، عمر، بکر یہ وہ سب کا خدا ہی خدا کہتے ہیں وہ یہ دلیل لاتے ہیں کہ اس وجہ سے منصور نے دعوی انا الحق کا کیا، بذیذ بسطامی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ

نے اسی لیے سبحانی ما اعظم شانی (میں پاک ہوں اور کتنی عظیم میری شان ہے۔ ت) فرمایا۔ اور شمس تبریزی نے اسی وجہ سے قم باذنی (اٹھ میرے حکم سے۔ ت) کہہ کر مردہ زندہ کیا۔ اب عرض یہ ہے کہ کیا واقعی یہ کلمات اوپر کے بزرگوں سے صادر ہوئے ہیں؟ اور کیا اس صوفی زندیق کا یہ کہنا صحیح ہے؟ اور اگر ہے تو کیا یہ کلمات عند الشرع مردود ہیں یا نہیں؟ اور

Fatawa Rizvia, Volume 29

Question: If they are rejected (mardood), then what kind of belief should the Ahl-e-Sunnat wa Jamaat hold regarding the three mentioned elders?

Answer: Al-Jawab al-Malfooz

This statement of those heretics (zanadiqa) is explicit disbelief (kufr-e-sareeh), and for the questioner to doubt the correctness of their statement is harmful to his faith; he must renew his Islam. Those three noble personalities are among the great elders of the saints. May Allah sanctify us with their secrets. This statement is not proven from Hazrat Shams Tabrizi (may his secret be sanctified). And even if it were proven, God forbid! what relation does it have with a claim to divinity? Such metaphorical attributions are common.

Hazrat Hussain Mansoor did not say "Ana al-Haq" (I am the Truth/God) but rather "Ana al-Ahaqq" (I am the most worthy). It was a trial from Allah that the listeners misunderstood. His sister was also among the great saints. Every day in the last part of the night, she would go to the forest and occupy herself in the worship of Allah. One day, Hazrat Hussain Mansoor woke up and did not find his sister; Satan cast a doubt. The next night, he stayed awake intentionally. When she got up at her usual time and went out, he followed her quietly. She reached the forest and became busy in worship. He watched, hidden behind trees. Near morning, he saw a cup of ruby descending from the sky on a golden chain, and it came near his sister's blessed mouth.

She began to drink. He became restless and shouted, "Sister! For God's sake, leave a little for me too." She left only one draught for him. As soon as he drank it, he started hearing voices from every tree, stone, door, and wall saying, "Who is most worthy (ahaqq) to be slain in Our path?" He replied to this, "Ana al-Ahaqq" (Indeed, I am the most worthy). People heard something else, and what was destined occurred.

Hazrat Sayyidi Bayazid Bastami (may Allah be pleased with him) himself answered that question. He said: "It is not I who speaks, it is He who speaks, for Whom speaking is befitting." The questioners asked for proof. He said: "All of you take a dagger in your hand and sit. When you hear me say such a thing, strike with the dagger without hesitation, for the punishment of such a speaker is death." They did exactly that. When the state descended upon the saint and the same words came out, they all struck daggers indiscriminately. Wherever each person intended to strike

the saint, they were struck in that same place on their own bodies. When the saint regained consciousness, he saw that they were all lying wounded. He said: "Did I not say that it is not I who speaks, but He speaks whose speaking is justified? Prophet Moses (peace be upon him) heard a call from the tree at Mount Tur: 'Indeed, I am Allah'."

फ़तावा रिज़विया, खंड 29

प्रश्न: यदि वे अस्वीकार्य (मरदूद) हैं, तो अहले सुन्नत व जमात को ऊपर के तीनों बुजुर्गों के बारे में कैसा अकीदा (विश्वास) रखना चाहिए?

उत्तर: अल-जवाबुल मलफ़ूज़

उन नास्तिकों (ज़नादिक़ा) का यह कथन स्पष्ट कुफ़्र (कुफ़्र-ए-सरेह) है और उनके कथन की सत्यता पर संदेह होना भी प्रश्नकर्ता के ईमान के लिए हानिकारक है, उसे इस्लाम का नवीनीकरण (तजदीद-ए-इस्लाम) करना चाहिए। वे तीनों महानुभाव महान औलिया (संतों) में से हैं। अल्लाह हमें उनके रहस्यों से पवित्र करे। हज़रत शम्स तबरेज़ी (क़ुद्दिसा सिर्रुहु) से यह शब्द सिद्ध नहीं है। और यदि सिद्ध होता भी, तो अल्लाह की पनाह! उसका ईश्वरत्व के दावे से क्या संबंध! ऐसी रूपक अभिव्यक्तियाँ प्रचलित हैं।

हज़रत हुसैन मंसूर "अनल हक़" (मैं सत्य/ईश्वर हूँ) नहीं कहते थे, बल्कि "अना अल-अहक़" (मैं ही सबसे अधिक योग्य हूँ) कहते थे। यह अल्लाह की ओर से एक परीक्षा थी कि सुनने वालों ने इसे गलत समझा। उनकी बहन भी महान संतों में से थीं। हर दिन रात के अंतिम प्रहर में वह जंगल चली जातीं और अल्लाह की इबादत में व्यस्त हो जातीं। एक दिन हज़रत हुसैन मंसूर की आँख खुली और बहन को न पाया, शैतान ने संदेह डाल दिया। दूसरी रात वे जानबूझकर जागते रहे। जब वह अपने सामान्य समय पर उठीं और बाहर चलीं, तो वे धीरे से उनके पीछे हो लिए। वह जंगल पहुँचीं और इबादत में मशगूल हो गईं। वे पेड़ों की आड़ में छिपे देख रहे थे। सुबह के करीब उन्होंने देखा कि आसमान से सोने की ज़ंजीर में याकूत (माणिक) का एक जाम उतरा और वह उनकी बहन के मुबारक मुँह के पास आया।

उन्होंने पीना शुरू किया, वे बेचैन हो गए और चिल्ला कर कहा, "बहन! तुम्हें खुदा की कसम, थोड़ा मेरे लिए भी छोड़ दो।" उन्होंने उनके लिए केवल एक घूँट छोड़ा। उसे पीते ही उन्हें हर पेड़, पत्थर, दर और दीवार से आवाज़ आने लगी कि "कौन इसका अधिक हक़दार (अहक़) है कि हमारी राह में कत्ल किया जाए?" उन्होंने इसका उत्तर देते हुए कहा, "अना अल-अहक़" (बेशक मैं ही सबसे अधिक योग्य हूँ)। लोगों ने कुछ सुना और जो मंज़ूर था वही हुआ।

हज़रत सय्यदी बायज़ीद बसतामी (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) ने उस सवाल का खुद जवाब दिया। फ़रमाया: "मैं नहीं कहता, वह फ़रमाता है जिसे फ़रमाना शोभा देता है।" पूछने वालों ने इस पर

दलील चाही। फ़रमाया: "तुम सब एक-एक खंजर हाथ में लेकर बैठ जाओ और जिस वक्त मुझे ऐसा कहते सुनो, बिना झिझक खंजर मारो, क्योंकि ऐसे कहने वाले की सज़ा मौत है।" उन्होंने ऐसा ही किया। जब हज़रत पर वह कैफियत तारी हुई और वही शब्द निकले, तो उन सब ने बेधड़क खंजर मारे। जिसने जिस जगह मारने के इरादे से खंजर मारा था, वह खुद उसी की उसी जगह पर लगा। जब हज़रत को होश आया तो देखा कि वे सब घायल पड़े हैं। फ़रमाया: "क्या मैंने नहीं कहा था कि मैं नहीं कहता, वह कहता है जिसका कहना उचित है? सैय्यदना मूसा कलीम (अलैहिस्सलाम) ने कोहे तूर पर उस पेड़ से आवाज़ सुनी थी कि 'बेशक मैं ही अल्लाह हूँ'।"

اگر مردود ہیں تو اوپر کے تینوں بزرگوں کے ساتھ اہل سنت و جماعت کس طرح کا عقیدہ رکھیں؟

الجواب الملفوظ اُن زنادقہ کا یہ قول کفر صریح ہے اور ان کے قول کی صحت کا شک واقع ہونا سائل کے ایمان کا مضر ہے تجدید اسلام چاہئے، وہ تینوں حضرات کرام اکابر اولیائے عظام سے ہیں۔ قدسنا اللہ باسرارھم، حضرت شمس تبریزی قدس سرہ، سے یہ کلمہ ثابت نہیں، اور ثابت ہو تو معاذ اللہ اُسے ادعائے الوہیت سے کیا علاقہ! ایسی اضافات مجازیہ شائع ہیں۔ حضرت حسین منصور انا الحق نہیں کہتے تھے بلکہ انا الاحق (میں ہی احق ہوں۔ت) ابتلائے الہی کے لیے سامعین کی فہم کی غلطی تھی ان کی بہن اکابر اولیائے کرام سے تھیں۔ ہر روز اخیر شب میں جنگل کو تشریف لے جاتیں اور عبادت الہی میں مشغول ہو جاتیں، ایک روز حضرت حسین منصور کی آنکھ کھلی اور بہن کو نہ پایا، شیطان نے شبہ ڈالا۔ دوسری رات قصدًا جاگتے رہے، جب وہ اپنے وقت معمول پر اٹھ کر باہر چلیں یہ آہستہ اٹھ کر پیچھے ہو لیے، وہ جنگل میں پہنچیں اور عبادت میں مشغول ہوئیں۔ یہ پیڑوں کی آڑ میں چھپے دیکھتے تھے، قریب صبح انہوں نے دیکھا کہ آسمان سے سونے کی زنجیر میں یاقوت کا جام اُترا اور وہ ان کی بہن کے دہن مبارک کے پاس آگیا۔ انہوں نے پینا شروع کیا، یہ بے چین ہوئے اور چلا کر کہا۔ بہن! تمہیں خدا کی قسم تھوڑا میرے لیے بھی چھوڑ دو۔ انہوں نے صرف ایک جرعہ ان کے لیے چھوڑا جس کے پیتے ہی ان کو ہر شجر و حجر و در و دیوار سے آواز آنے لگی کہ کون اس کا زیادہ احق ہے کہ ہماری راہ میں قتل کیا جائے؟ یہ اس کا جواب دیتے انا الاحق بے شک میں احق ہوں۔ لوگوں نے کچھ سنا اور جو منظور تھا واقع ہوا۔

حضرت سیدی بایزید بسطامی رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے اُس سوال کا خود جواب ارشاد فرمایا، فرمایا: میں نہیں کہتا وہ فرماتا ہے جسے فرمانا زیبا ہے، سائلوں نے اس پر دلیل چاہی۔ فرمایا: تم سب ایک

ایک خنجر ہاتھ میں لے کر بیٹھ جاؤ اور جس وقت مجھے ایسا کہتے سنو بے تامل خنجر مارو کہ ایسے قائل کی سزا قتل ہے انہوں نے ایسا ہی کیا۔ جب حضرت پر حالت وارد ہوئی اور وہی کلمہ نکلا اُن سب نے بے مہابا خنجر مارے۔ جس نے جس جگہ کے قصد پر خنجر مارا تھا خود اس کے اسی جگہ لگا۔ جب حضرت کو افاقہ ہوا ملاحظہ فرمایا کہ وہ سب گھائل پڑے ہیں۔ فرمایا: میں نہ کہتا تھا کہ میں نہیں کہتا وہ کہتا ہے جس کا کہنا بجا ہے، سیدنا موسیٰ کلیم علی نبینا وعلیہ الصلوۃ والسلام نے کوہ طور پر اُس درخت میں سے ندا سنی کہ "إِنَّنِیۡ اَنَا اللّٰہُ" (بے شک میں ہی اللہ ہوں)۔

Fatawa Razawiyya Volume 29

"Lord of the worlds" ◯1. (O Musa, I am Allah, Lord of all the worlds). Did the tree say this? Far from it, rather the Lord of the worlds manifested Himself upon the tree and the call was heard by Hazrat Kaleem (Moses) from it. Can He manifest Himself upon a tree, but not upon Bayazid? Is it impossible that He manifests Himself upon Bayazid and "Subhani ma a'zama shani" 2. (Glory be to Me, how great is My status!) and people hear the call from him? Hazrat Moulvi Ma'navi (Rumi), may Allah sanctify his noble secret, says: A Jinn who possesses someone speaks through their tongue and works through their limbs 3. Is the Lord, the Mighty and Sublime, not capable of this in your view? The speech is His and the tongue is Bayazid's. Bayazid is the tree of Moses and the speaker is He who said, "Indeed, I am Allah, Lord of the worlds." So for Allah is the conclusive argument. And Allah Almighty knows best.

Issue 186: Why did the eminent scholars and noble Sufi masters hang Mansur? If he was hanged due to disbelief, should Mansur now be counted among Muslims and the perfected ones, or what belief should be held regarding him? The Spoken Answer: Apparently, what was heard from his speech was something for which the Sharia penalty is execution, hence the command of Sharia was fulfilled. Not drinking water without the command of Sharia is an error, If you shed blood by a fatwa, it is permissible. 4 (Is it not so that drinking water without the command of Sharia is a sin, and if it is with a legal decree of Sharia, then shedding blood is permissible?)

Issue 187: From Rampur State, Koncha Qazi Mirza Sabir Hussain, Saturday, 7 Rajab 1334 AH. What do the scholars of religion, the muftis of the firm Sharia, the noble masters, and the great saints say regarding this matter: that several famous miracles of Hazrat Bare Peer Sahab (Sheikh Abdul Qadir Gilani), may Allah have mercy on him, which are mentioned in Mawlud sharif, sermons, etc., among them is one that an old woman was sitting by the riverbank crying, by chance Hazrat...

---

1 Al-Quran Al-Karim 28 / 30 2 Tazkirat-ul-Auliya (Urdu) Sheikh Farid-ud-Din Attar, Malik & Company, Urdu Bazaar Lahore, p. 83 3 Mathnawi Ma'navi, Book Four, story of "Subhani ma a'zama shani", Muassasa Intisharat Islami Lahore 4 / 205 4 Bostan Sadi, Chapter One, First Discourse, Maktaba Shirkat Ilmiya Multan, p. 29

फतावा रज़विया जिल्द 29

"सारे जहानों का रब" ◯1। (ऐ मूसा, मैं हूँ अल्लाह, तमाम जहानों का पालने वाला)। क्या यह उस दरख्त ने कहा था? हरगिज़ नहीं, बल्कि रब्बुल आलमीन ने दरख्त पर तजल्ली फरमाई और हज़रत कलीम ने उसमें से सदा सुनी। क्या वह एक दरख्त पर तजल्ली फरमा सकता है और बायेज़ीद पर नहीं? क्या यह नामुमकिन है कि बायेज़ीद पर तजल्ली करे और "सुब्हानी मा आज़मा शानी" 2। (मैं पाक हूँ और मेरी शान कितनी अज़ीम है) और लोगों को उनमें से सदा आए? हज़रत मौलवी मानवी (रूमी) कुद्स अल्लाह सिर्रहुल शरीफ़ फरमाते हैं: एक जिन्न जिस पर हावी होता है, उसकी ज़बान से कलाम करता है और उसके अंगों से काम लेता है 3। क्या तुम्हारे नज़दीक रब अज़्वजल ऐसा नहीं कर सकता? कलाम उसका है और ज़बान बायेज़ीद की। बायेज़ीद मूसा का दरख्त हैं और कलाम करने वाला वह है जिसने फरमाया, "बेशक मैं ही अल्लाह हूँ, जहानों का रब।" पस अल्लाह ही के लिए मुकम्मल हुज्जत है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 186: उलेमा-ए-किराम और मशायख-ए-इज़ाम ने मंसूर को सूली क्यों दी? अगर कुफ्र की वजह से सूली दी गई है, तो क्या मंसूर को अब मुसलमान और कामिलीन (पूर्ण सिद्ध) में शुमार करें या उनके बारे में क्या अकीदा रखें? अल-जवाब अल-मलफूज़ (कहा हुआ जवाब): ज़ाहिर तौर पर उनके कलाम से जो सुना गया वह वह था जिस पर शरीअत में कत्ल की सज़ा है, लिहाज़ा शरीअत का हुक्म पूरा किया गया। शरीअत के हुक्म के बिना पानी पीना गलत है, अगर फतवे से खून बहाओ तो जायज़ है। 4 (क्या ऐसा नहीं कि शरीअत के हुक्म के बिना पानी पीना गुनाह है, और अगर शरीअत के फतवे के साथ खून बहाया जाए तो जायज़ है?)

मसला 187: रियासत रामपुर, कूचा काज़ी मिर्ज़ा साबिर हुसैन, बरोज़ हफ्ता, 7 रजब 1334 हिजरी। उलेमा-ए-दीन, मुफ्तीयान-ए-शरा-ए-मतीन, मशायख-ए-किराम और औलिया-ए-इज़ाम इस मसले में क्या इरशाद फरमाते हैं कि हज़रत बड़े पीर साहब (शेख अब्दुल कादिर जिलानी) रहमतुल्लाह अलैहि की चंद मशहूर करामातें जो मौलूद शरीफ और वाज़ (उपदेश) वगैरह में बयान की जाती हैं, उनमें से एक यह है कि एक बुढ़िया दरिया के किनारे बैठी रो रही थी, इत्तेफाक से हज़रत का...

---

1 अल-कुरान अल-करीम 28 / 30 2 तज़किरतुल औलिया (उर्दू) शेख फरीदुद्दीन अत्तार, मलिक एंड कंपनी, उर्दू बाज़ार लाहौर, पृष्ठ 83 3 मसनवी मानवी, दफ्तर चहारुम, किस्सा "सुब्हानी मा आज़मा

शानी", मुअस्सा इंतिशारात इस्लामी लाहौर 4 / 205 4 बोस्तान सादी, बाब अव्वल, पहली गुफ़्तार, मकतबा शिरकत इल्मिया मुल्तान, पृष्ठ 29

पृष्ठ 629/750

رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ﴿۱﴾۔ (اے موسیٰ میں ہوں، اللہ رب سارے جہانوں کا،ت) کیا یہ درخت نے کہا تھا، حاشا بلکہ رب العالمین نے درخت پر تجلی فرمائی اور حضرت کلیم کو اُس میں سے ندا مسموع ہوئی، کیا وہ ایک درخت پر تجلی فرما سکتا ہے۔ اور بایزید پر نہیں؟ کیا محال ہے کہ بایزید پر تجلی کرے اور سبحانی ما اعظم شانی ۲۔ (میں پاک ہوں اور کتنی عظیم میری شان ہے۔ت) اور لوگوں کو ان میں سے ندا آئے۔ حضرت مولوی معنوی قدس اللہ سرہ الشریف فرماتے ہیں۔ ایک جن جس پر تسلط کرتا ہے اس کی زبان سے کلام کرتا ہے اس کے جوارح سے کام کرتا ہے ۳۔ کیا تمہارے نزدیک رب عزوجل ایسا نہیں کر سکتا۔ کلام اس کا ہے اور زبان بایزید کی، بایزید شجرہ موسیٰ ہیں اور متکلم وہ جس نے فرمایا انی انا اللہ رب العلمین۔ فللہ الحجۃ البالغۃ۔ واللہ تعالی اعلم

مسئلہ ۱۸۶: علمائے عظام و مشائخ کرام نے منصور کو کیوں سُولی دی؟ اگر بوجہ کفر سُولی دی گئی ہے تو کیا منصور کو اب مسلمان اور کاملین میں سے شمار کریں یا اُن کی نسبت کیا عقیدہ رکھیں؟ الجواب الملفوظ ظاہر مسموع اُن کا کلام سے وہ تھا جس پر شرعاً تعزیر قتل ہے لہذا حکم شرع پورا کیا گیا۔ نہ بر حکم شرع آب خوردن خطاست دگر خون بہ فتوے بریزی رواست ۴ (کیا ایسا نہیں شرع کے حکم کے بغیر پانی پینا گناہ ہے، اور اگر شرعی فتوی کے ساتھ تو خون بہائے تو جائز ہے۔ت)

مسئلہ ۱۸۷: از ریاست رامپور کو نچہ قاضی مرزا صابر حسین بروز شنبہ ۷ رجب ۱۳۳۴ھ کیا ارشاد فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیان شرع متین و مشائخ کرام اور اولیائے عظام اس مسئلہ میں کہ حضرت بڑے پیر صاحب رحمتہ اللہ علیہ کی چند مشہور کرامتیں جو کہ مولود شریف و وعظ

وغیرہ میں بیان کی جاتی ہیں منجملہ ان کے ایک یہ ہے کہ ایک بڑھیا لب دریا بیٹھی روتی تھی، اتفاقاً حضرت کا

---

۱ القرآن الکریم ۲۸ / ۳۰ ۲ تذکرۃ الاولیاء (اردو) شیخ فرید الدین عطار ملک اینڈ کمپنی اردو بازار لاہور ص ۸۳ ۳ مثنوی معنوی دفتر چہارم قصہ سبحانی ما اعظم شانی مؤسسہ انتشارات اسلامی لاہور ۴ / ۲۰۵ ۴ بوستان سعدی باب اول پہلی گفتار مکتبہ شرکت علمیہ ملتان ص ۲۹

Fatawa Rizvia, Volume 29

[The Saint] passed by that way. He asked, "Why are you crying so much?" The old woman submitted: "O Master! Twelve years ago, my son's wedding party drowned here in the river along with all their belongings. I come here daily and cry." He prayed, and through the blessing of his prayer, the wedding party that had been drowned for twelve years came out safe and sound with all the belongings, and the old woman went home happy and joyful. Secondly, a disciple of the Saint passed away. The disciple's son came to the service of the Saint and submitted that his father had passed away. On this, the boy cried a lot and became distraught. So the Saint felt pity, made a promise, and consoled the boy. Afterwards, he stopped the Angel of Death (Azrael), peace be upon him, through spiritual concentration. When Azrael stopped, he asked, "Have you seized the soul of our disciple?" He replied, "Yes." The Saint said, "Release the soul of our disciple." Azrael said, "I have seized the soul by the command of the Lord of the Worlds. I cannot release it without a command." On this, an altercation occurred. The Saint struck a slap; due to the Saint's slap, one eye of Azrael fell out, and the Saint snatched the satchel from him and released all the souls that had been seized that day. On this, Azrael submitted to the Lord of the Worlds. The command came from there: "Our beloved asked to release one soul, why did you not release it? We find it acceptable for his sake; even if he released all the souls, it wouldn't matter." Is it correct according to Sharia to narrate these stories in gatherings of Mawlid or sermons etc.? Please write with references from authentic books. Explain and you shall be rewarded. (Provide an explanation, you will be rewarded - Translator's note).

Al-Jawab al-Malfooz (The Answered Utterance): The first narration, although it hasn't been seen in any book, is famous on the tongue, and there is nothing in it contrary to Sharia; it should not be denied. And the second narration is fabricated by Iblis (Satan), and both reading it and listening to it are Haraam (forbidden). The foolish, ignorant, and disrespectful person thought that he was honoring our master Ghaus-e-Azam (may Allah be pleased with him) in it, whereas he is severely insulting him. What greater insult to a Muslim scholar could there be than to attribute him towards Kufr (disbelief), let alone the beloveds of Allah. Our master Azrael, peace be upon him, is among the Messenger Angels, and the Messenger Angels are, by consensus, superior to all non-prophets. To perform such an act with any messenger is a cause for disbelief due to the insult to the messenger, God forbid. May Allah [protect from] ignorance and misguidance.

फ़तावा रज़विया, खंड 29

[संत] उस तरफ से गुज़रे। आपने फ़रमाया कि "इतना क्यों रो रही हो?" बुढ़िया ने अर्ज़ किया: "हुज़ूर! मेरे लड़के की बारह साल हुए यहाँ दरिया में साजो-सामान के साथ बारात डूबी है, मैं यहाँ आकर रोज़ाना रोती हूँ।" आपने दुआ फ़रमाइ, आपकी दुआ की बरकत से बारह साल की डूबी हुई बारात पूरे सामान के साथ सही-सलामत निकल आई और बुढ़िया खुशो-खुर्रम अपने घर चली गई। दूसरे यह कि हुज़ूर के एक मुरीद का इंतकाल हो गया, मुरीद का लड़का हुज़ूर की खिदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया कि "मेरे वालिद का इंतकाल हो गया।" इस पर लड़का बहुत रोया और निढाल हो गया। तो आपको रहम आया, आपने वादा फ़रमाया और लड़के को तसल्ली दी। उसके बाद हज़रत इज़राईल अलैहिस्सलाम को मुराक़िबे (ध्यान) के ज़रिए रोका। जब हज़रत इज़राईल अलैहिस्सलाम रुके तो आपने दरयाफ़्त किया कि "क्या हमारे मुरीद की रूह तुमने कब्ज़ की है?" जवाब दिया कि "हाँ।" आपने फ़रमाया, "हमारे मुरीद की रूह छोड़ दो।" इज़राईल अलैहिस्सलाम ने कहा कि "मैंने रब्बुल आलमीन के हुक्म से रूह कब्ज़ की है। बिना हुक्म के नहीं छोड़ सकता।" इस पर झगड़ा हुआ। आपने थप्पड़ मारा, हुज़ूर के थप्पड़ से इज़राईल अलैहिस्सलाम की एक आँख निकल पड़ी और आपने उनसे झोला छीन लिया और उस दिन की तमाम रूहें जो कब्ज़ की थीं, छोड़ दीं। इस पर हज़रत इज़राईल अलैहिस्सलाम ने रब्बुल आलमीन से अर्ज़ किया। वहाँ से हुक्म हुआ कि "हमारे महबूब ने एक रूह छोड़ने को कहा था, तुमने क्यों नहीं छोड़ी? हमें उनकी खातिर मंज़ूर है, अगर उन्होंने तमाम रूहें छोड़ दीं तो कोई हर्ज नहीं।" शरअई तौर पर इन रिवायतों का बयान करना महफ़िल-ए-मौलूद शरीफ़ या वअज़ वगैरह में दुरुस्त है या नहीं? मोतबर किताबों के हवाले से तहरीर फ़रमाएं। बय्यान करें, अज्र पाएँगे। (बयान फरमाइये अज्र दिए जाओगे - अनुवादक का नोट)

अल-जवाब-उल-मलफ़ूज़ (कथित उत्तर): पहली रिवायत अगरचे किसी किताब में नज़र से नहीं गुज़री, मगर ज़बान पर मशहूर है, और इसमें कोई बात शरीयत के खिलाफ नहीं है, इसका इनकार न किया जाए। और दूसरी रिवायत इबलीस की गढ़ी हुई है और इसका पढ़ना और सुनना दोनों हराम हैं। उस बेवकूफ, जाहिल और गुस्ताख ने यह समझा कि वह इसमें हुज़ूर सैय्यदना गौस-ए-आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ताज़ीम कर रहा है, जबकि वह हुज़ूर की सख्त तौहीन कर रहा है। किसी मुसलमान आलिम की इससे बड़ी तौहीन क्या होगी कि मआज़अल्लाह उसे कुफ़्र की तरफ निस्बत दी जाए, न कि अल्लाह के महबूबों को। हमारे आका इज़राईल अलैहिस्सलाम फरिश्तों के रसूलों में से हैं, और फरिश्तों के रसूल इज्मा (आम सहमति) के साथ तमाम गैर-अम्बिया से अफ़ज़ल (श्रेष्ठ) हैं। किसी रसूल

के साथ ऐसी हरकत करना तौहीन-ए-रसूल के सबब मआज़अल्लाह कुफ़्र का बायस (कारण) है। अल्लाह तआला जहालत और गुमराही से [बचाए]।

पेज 630/750

اس طرف سے گزر ہوا۔ حضرت نے فرمایا کہ اس قدر کیوں روتی ہو؟ بڑھیا نے عرض کیا: حضرت! میرے لڑکے کی بارہ برس ہوئے یہاں دریا میں مع سامان کے برات ڈوبی ہے میں یہاں آکر روزانہ روتی ہوں، آپ نے دعا فرمائی آپ کی دعا کی برکت سے بارہ برس کی ڈوبی ہوئی برات مع کل سامان کے صحیح وسالم نکل آئی اور بڑھیا خوش و خرم اپنے مکان کو چلی گئی۔ دوسرے یہ کہ حضرت کے ایک مرید کا انتقال ہو گیا، مولیٰ کا لڑکا حضرت کی خدمت میں حاضر ہوا اور حضرت سے عرض کیا کہ میرے والد کا انتقال ہو گیا۔ اس پر لڑکا زیادہ رویا بیٹھا اور اڑ گیا۔ تو آپ کو رحم آیا آپ نے وعدہ فرمایا اور لڑکے کی تسکین کی۔ بعدہ حضرت عزرائیل علیہ السلام کو مراقب ہو کر روکا، جب حضرت عزرائیل علیہ السلام رکے آپ نے دریافت کیا کہ ہمارے مرید کی روح تم نے قبض کی ہے؟ جواب دیا کہ ہاں آپ نے فرمایا۔ روح ہمارے مرید کی چھوڑ دو عزرائیل علیہ السلام نے کہا کہ میں نے بحکم رب العالمین روح قبض کی ہے۔ بغیر حکم نہیں چھوڑ سکتا۔ اس پر جھگڑا ہوا۔ آپ نے تھپڑ مارا، حضرت کے تھپڑ سے عزرائیل علیہ السلام کی ایک آنکھ نکل پڑی اور آپ نے ان سے زنبیل چھین کر اس روز کی تمام روحیں جو کہ قبض کی تھیں چھوڑ دیں۔ اس پر حضرت عزرائیل علیہ السلام نے رب العالمین سے عرض کیا وہاں سے حکم ہوا کہ ہمارے محبوب نے ایک روح چھوڑنے کو کہا تھا تم نے کیوں نہیں چھوڑی ہم کو ان کی خاطر منظور ہے اگر انہوں نے تمام روحیں چھوڑ دیں تو کچھ مضائقہ نہیں۔ شرعاً ان روایتوں کا بیان کرنا مجلس مولود شریف یا وعظ وغیرہ میں درست ہے، یا نہیں؟ بحوالہ کتب معتبر تحریر فرمائیے۔ بینوا توجروا۔ (بیان فرمائیے اجر دیئے جاؤ گے۔ت)

الجواب الملفوظ: پہلی روایت اگرچہ نظر سے کسی کتاب میں نہ گزری مگر زبان پر مشہور ہے، اور اس میں کوئی امر خلاف شرع نہیں، اس کا انکار نہ کیا جائے۔ اور دوسری روایت ابلیس کی گھڑی ہوئی ہے اور اس کا پڑھنا اور سننا دونوں حرام۔ احمق، جاہل بے ادب نے یہ جانا کہ وہ اس میں حضور سیدنا غوث اعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی تعظیم کرتا ہے حالانکہ وہ حضور کی سخت توہین کر رہا ہے، کسی عالم مسلمان کی اس سے زیادہ توہین کیا ہوگی کہ معاذ اللہ اسے کفر کی طرف نسبت کیا جائے نہ کہ محبوبان الہی سیدنا عزرائیل علیہ السلام مرسلین ملائکہ میں سے ہیں اور مرسلین ملائکہ بالاجماع تمام غیر انبیاء سے افضل ہیں کسی رسول کے ساتھ ایسی حرکت کرنا توہین رسول کے سبب معاذ اللہ اس کے لیے باعث کفر ہے، اللہ تعالیٰ جہالت وضلالت

Fatawa-e-Razvia, Volume 29

...may [Allah] grant refuge. And Allah Almighty knows best.

Issue 188: Sent by Abdul Sattar bin Ismail, Gondal City, Kathiawar region, Sunday, 9 Shaban 1334 AH. These days, many friends have received anonymous letters with the following content: "In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful. Say, He is Allah, the One; Allah, the Eternal Refuge. You alone we worship and You alone we ask for help. [Upon those] You have bestowed favor. Within three days, send nine letters to nine places; you will benefit greatly from this, otherwise, you will suffer loss." Now, the question is, what is the basis of this content according to Sharia? Is it necessary to act upon it? If it is mandatory to act upon, why are anonymous letters sent without names or identification?

Al-Jawab al-Malfuz (The Spoken Answer): This is an abhorrent innovation (Bid'ah Shani'ah) created by some ignorant person who wishes ill for Muslims. It is disrespectful to the Great Quran to send the Word of God on open cards, which postmen—who are often Hindus and generally without ritual purity (wudu)—touch. In post offices, people without wudu or with impure hands stamp them; they place them on the ground to stamp, and specifically, the side with the verses is often facing down on the ground. All these impurities are due to this vile innovation. Furthermore, it is a fabrication against Allah to say that if you do this, you will find happiness in nine days, otherwise, you will be afflicted with calamity.

"Or do you say about Allah that which you do not know?" - Or you say about Allah Almighty that of which you have no knowledge. (T)

Issue 189: Alif Khan, Manager of Madrasa Anjuman-e-Islamia, Sangod Town, Kotah State, Rajputana, Sunday, 4 [Shaban] 1334 AH. Is the coming of the souls of believers or disbelievers to their respective homes at any time proven from authentic Hadiths or not? That is all.

Al-Jawab al-Malfuz (The Spoken Answer): How can the souls of disbelievers come? They are imprisoned and confined. Regarding the souls of believers, it is mentioned in the Hadith:

1 Holy Quran 2/80 Page 631 of 750

फ़तावा रज़विया, खंड 29

...से पनाह दे। वल्लाह तआला आलम।

मसाला 188: प्रेषक अब्दुल सत्तार बिन इस्माइल, गोंडल शहर, काठियावाड़ क्षेत्र, रविवार, 9 शाबान 1334 हिजरी। इन दिनों कई मित्रों को इस आशय के गुमनाम पत्र मिले हैं: "बिस्मिल्लाह हिर्रहमान निर्रहीम। कहो, वह अल्लाह एक है; अल्लाह बेनियाज़ है। हम तेरी ही इबादत करते हैं और तुझ ही से मदद चाहते हैं। जिन पर तूने करम किया। तीन दिनों के भीतर नौ पत्र नौ स्थानों पर भेजें; इससे आपको बहुत लाभ होगा अन्यथा हानि होगी।" अब निवेदन यह है कि शरीयत के अनुसार इस सामग्री का क्या आधार है? क्या इस पर अमल करना ज़रूरी है? यदि अमल करना वाजिब है, तो बिना नाम-ओ-निशान के गुमनाम पत्र लिखने का क्या कारण है?

अल-जवाब अल-मलफ़ूज़ (मौखिक उत्तर): यह एक घृणित नवाचार (बिदअत-ए-शनीया) है जिसे किसी अज्ञानी ने ईजाद किया है जो मुसलमानों का बुरा चाहने वाला है। महान कुरान के साथ यह घोर अपमान है कि अल्लाह का कलाम खुले कार्डों पर लिखकर भेजा जाता है, जिसे डाकिया—जो अक्सर हिंदू होते हैं और आमतौर पर बिना वज़ू के होते हैं—छूते हैं। डाकघरों में मुहर लगाने वाले बिना वज़ू या नापाक हाथों से छूते हैं, ज़मीन पर रखकर मुहर लगाते हैं और विशेष रूप से वही हिस्सा ज़मीन पर होता है जिस पर आयतें लिखी होती हैं। ये सभी नापाकियाँ इस घृणित नवाचार के कारण हैं। और फिर यह अल्लाह पर झूठा आरोप है कि अगर तुम ऐसा करोगे तो नौ दिन में खुशी मिलेगी वरना मुसीबत में पड़ जाओगे।

"अम तक़ूलूना अलल्लाहि मा ला तालमून।" - या अल्लाह तआला पर वह बात कहते हो जिसका तुम्हें ज्ञान नहीं। (त)

मसाला 189: अलिफ़ खान, प्रबंधक मदरसा अंजुमन-ए-इस्लामिया, कस्बा सांगोद, रियासत कोटा, राजपूताना, रविवार, 4 [शाबान] 1334 हिजरी। क्या मोमिनों या काफ़िरों की रूहों का किसी समय अपने-अपने घरों में आना सही हदीसों से साबित है या नहीं? बस।

अल-जवाब अल-मलफ़ूज़ (मौखिक उत्तर): काफ़िरों की रूहों का आना कैसे मुमकिन हो सकता है, वे तो कैद और बंद हैं। और मोमिनों की रूहों के बारे में हदीस में इरशाद हुआ है:

1 अल-कुरान अल-करीम 80/2 पृष्ठ 750 का 631

سے پناہ دے۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ مسئلہ ۱۸۸: مرسلہ عبدالستار بن اسمعیل شہر گونڈل علاقہ کاٹھیاوار یکشنبہ ۹ شعبان ۱۳۳۴ھ ان دنوں اکثر احباب کو گمنام خطوط بدیں مضمون ملے ہیں۔ بسم اللہ الرحمن الرحیم۔ قل ھو اللہ احد اللہ الصمد۔ ایاک نعبد و ایاک نستعین۔ انعمت علیہم عرصہ تین روز میں نو خط نو جگہ بھیجئے اس سے آپ کو بہت فائدہ ہو گا ورنہ نقصان۔ اب عرض یہ ہے کہ اس مضمون کا عند الشرع کیا اصل ہے؟ اس پر عمل ضروری ہے یا نہیں؟ اگر واجب العمل ہے تو بلا نام و نشان کے گمنام خط لکھنے کی کیا وجہ ہے؟

الجواب الملفوظ: یہ بدعت شنیعہ ہے کہ کسی جاہل نے ایجاد کی جو مسلمانوں کا بدخواہ ہے اور قرآن عظیم کے ساتھ بے ادب کھلے ہوئے کارڈوں پر کلام الہی لکھ کر بھیجا جاتا ہے کہ چھٹی رساں جو اکثر ہنود اور عموماً بے وضو ہوتے ہیں اُسے مس کرتے ہیں، ڈاکخانوں میں مہریں لگانے والے بے وضو یا نجس ہاتھوں سے چھوتے ہیں زمین پر رکھ کر مہر لگاتے ہیں اور خصوصاً زمین پر وہی رخ ہوتا ہے جس پر آیات ہیں، یہ سب ناپاکیاں اس بدعت خبیثہ کے سبب ہیں، اور پھر یہ اللہ پر افترا ہے کہ ایسا کرو گے تو نو دن میں خوشی ہو گی ورنہ آفت میں مبتلا ہوگے۔

"اَمْ تَقُوْلُوْنَ عَلَی اللہِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۱" ۔ یا اللہ تعالٰی پر وہ بات کہتے ہو جس کا تمہیں علم نہیں۔ (ت)

مسئلہ ۱۸۹: الف خان مہتمم مدرسہ انجمن اسلامیہ قصبہ سانگور ریاست کوٹہ راجپوتانہ یکشنبہ ۴ ۱۳۳ھ ارواح مومنین یا کافر کا کسی وقت اپنے اپنے مکان میں آنا احادیث صحیحہ سے ثابت ہے یا نہیں؟ فقط۔

الجواب الملفوظ: ارواح کفار کا آنا کیونکر ہو سکتا ہے وہ محبوس و مقید ہیں، اور روح مومنین کی نسبت حدیث میں ارشاد ہوا:

۱ القرآن الکریم ۸۰/۲ صفحہ 631 از 750

Fatawa Razawiyya Volume 29

When a believer dies, their path is left open wherever they wish. 1 **His path is opened, he goes wherever he desires.**

Going anywhere includes entering one's own home, and it is established that the souls of the righteous repeatedly visit their homes and the homes of their relatives and provide help. Shah Waliullah has recorded an account of one of his patients who was bedridden. At night, while he was sleeping, he felt thirsty and needed to cover himself with a cloth, but no one was near him. The soul of one of his elders appeared, gave him water to drink, and covered him with a cloth. 2 And Allah knows best.

Issue 190: Sent by Muhammad Abdul Wahid Khan, Muslim Committee Islampura, via Abdul Latif, Headmaster Municipal Urdu School, 13 Rabi-ul-Awwal Sharif 1335 AH.

Respected Ala Hazrat (may his shadow be prolonged), whatever writings, pamphlets, and books the Qadiani has written in support of his claim, if they are with you and if possible, please send them so that I can consider all his points and form an opinion, which would facilitate during a debate because the opponent refuses to provide their books. If this is not possible, then at least write the names of the books and where they can be obtained. It is not appropriate to trouble you, but no one else is seen who can perform this task. Now for the second point: refutation. That is, whatever pamphlets, advertisements, etc., have been written in his rebuttal, please send them; otherwise, at least provide a list of them. And please remove the following doubts. (It would be excellent if the arguments are from the Quran and Sahah Sitta alone.)

(1) I want to see the Sahah Sitta but I do not know Arabic. Can a word-for-word Urdu translation of it be provided, and which book is more authentic and beneficial? (2) What is described in Mishkat Sharif and what help can be obtained from it? (3) Which books are most authentic among us? (4) What is your opinion on the school of thought (madhhab) of Hazrat Aisha (may Allah be pleased with her)?

---

1 Ittihaf al-Sadat al-Muttaqin, Kitab Dhikr al-Mawt, Fadila Dhikr al-Mawt, Dar al-Fikr Beirut, 10/227. 2 Anfas al-Arifin, Urdu translation, Imdad al-Awliya, p. 369.

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

जब एक आस्तिक की मृत्यु होती है, तो उसका रास्ता जहाँ वह चाहे खुला छोड़ दिया जाता है। 1

उसका रास्ता खोल दिया जाता है, वह जहाँ चाहे जाता है।

जहाँ चाहे में अपना घर भी शामिल है, और बार-बार नेक लोगों की रूहों का अपने और अपने करीबियों के घर आना और मदद करना साबित है। शाह वलीउल्लाह साहब ने अपने एक मरीज़ का वाकया लिखा है कि वह बिस्तर पर थे, रात को जब सो रहे थे उन्हें प्यास लगी और कपड़ा ओढ़ने की ज़रूरत हुई, कोई पास न था, उनके एक बुज़ुर्ग की रूह ज़ाहिर हुई उसने पानी पिलाया और कपड़ा ओढ़ाया। 2 और अल्लाह ही बेहतर जानता है।

मसला 190: भेजने वाले मुहम्मद अब्दुल वाहिद खाँ, मुस्लिम कमेटी इस्लामपुरा, द्वारा अब्दुल लतीफ़ हेड मास्टर म्युनिसिपल उर्दू स्कूल, 13 रबी-उल-अव्वल शरीफ़ 1335 हिजरी।

आदरणीय आला हज़रत (अल्लाह का साया उन पर बना रहे), कादियानी ने अपने दावे के समर्थन में जितने भी लेख, पर्चे और किताबें लिखी हैं, अगर आपके पास हों और मुमकिन हो तो भेज दें ताकि मैं उनकी सभी बातों पर विचार करके एक राय बना सकूँ और बहस के समय आसानी हो जाए, क्योंकि विपक्षी अपनी किताबें देने से मना करता है। अगर यह मुमकिन न हो, तो कम से कम उनकी किताबों के नाम और वे कहाँ मिल सकती हैं, लिख दें। आपको यह तकलीफ देना ठीक नहीं, लेकिन कोई और व्यक्ति ऐसा नज़र नहीं आता जो इस काम को कर सके। अब दूसरी बात: खंडन। यानी उसके जवाब में जितने भी पर्चे, विज्ञापन आदि लिखे गए हैं, उन्हें भेजा जाए, वरना कम से कम उनकी सूची ही दे दें। और निम्नलिखित शंकाओं को दूर करें। (यदि दलीलें केवल कुरान और सहाह सित्ता से हों तो बेहतर है।)

(1) मैं सहाह सित्ता देखना चाहता हूँ लेकिन अरबी नहीं जानता। क्या इसका कोई शब्द-दर-शब्द उर्दू अनुवाद उपलब्ध है और कौन सी किताब ज़्यादा विश्वसनीय और फायदेमंद है? (2) मिश्कात शरीफ़ में क्या बताया गया है और इससे क्या मदद मिल सकती है? (3) हमारे यहाँ सबसे ज़्यादा कौन-कौन सी किताबें विश्वसनीय हैं? (4) हज़रत आयशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) के मज़हब पर आपकी क्या राय है?

---

1 इत्तिहाफ अस-सादाह अल-मुत्तकीन, किताब ज़िक्र अल-मौत, फ़ज़ीलत ज़िक्र अल-मौत, दारुल फ़िक्र बेरूत, 10/227। 2 अनफ़ास अल-आरिफ़ीन, उर्दू अनुवाद, इमदाद अल-औलिया, पृष्ठ 369।

اذا مات المومن یخلی سربہ حیث شاء 1 اس کی راہ کھول دی جاتی ہے، جاتی ہے جہاں چاہے۔

جہاں چاہے میں اپنا گھر بھی داخل ہے، اور بار بار ارواح صالحین کا اپنے اور اپنے متعلقین کے گھر آنا اور مدد کرنا ثابت ہے۔ شاہ ولی اللہ صاحب نے اپنے ایک مریض کا واقعہ لکھا ہے کہ وہ صاحب فراش تھے، رات کو جب سو رہے تھے انہیں پیاس لگی اور کپڑا اوڑھنے کی ضرورت ہوئی، کوئی پاس نہ تھا، ان کے ایک بزرگ کی روح ظاہر ہوئی اس نے پانی پلایا اور کپڑا اوڑھایا 2 واللہ تعالیٰ اعلم۔ مسئلہ ۱۹۰: مرسلہ محمد عبدالواحد خاں مسلم کمیٹی اسلام پورہ معرفت عبداللطیف ہیڈ ماسٹر میونسپل اردو اسکول ۱۳ ربیع الاول شریف ۱۳۳۵ھ واجب الاحترام والتعظیم اعلیحضرت مدظلہم، قادیانی نے جس قدر تحریرات رسائل کتب اپنے دعوے کی تائید میں لکھے ہیں اگر آپ کے پاس ہوں اور ممکن ہو تو روانہ فرمادیجئے تاکہ اس کی تمام باتوں پر میں غور کرکے ایک رائے قائم کر لوں اور مباحثہ کے وقت سہولیت پیدا ہو جائے کیونکہ مخالف کتابیں دینے سے انکار کرتا ہے اگر یہ نہیں ہوسکتا ہے تو کم از کم ان کی کتابوں کے نام اور جگہ جہاں سے وہ دستیاب ہوسکتی ہیں تحریر فرمادیں، یہ تکلیف آپ کو دینا جائز نہیں مگر کوئی اور شخص ایسا نظر نہیں آتا جو اس کام کو انجام دے سکے۔ اب دوسری بات تردید یعنی جس قدر رسائل اشتہارات وغیرہ اس کے رد میں لکھے گئے ہوں روانہ فرمائے جائیں، ورنہ آخر درجہ ان کی فہرست ہی سہی۔ اور مندرجہ ذیل شکوک رفع کردیجئے۔ (قرآن، صحاح ستہ ہی کے دلائل ہوں تو خوب ہے۔) (۱) میں صحاح ستہ کو دیکھنا چاہتا ہوں مگر عربی نہیں جانتا، کیا کوئی اردو ترجمہ تحت اللفظ اس کا فراہم ہو سکتا ہے اور کون سی کتاب زیادہ معتبر اور فائدہ رساں ہے؟ (۲) مشکوٰۃ شریف میں کیا بیان ہے

اس سے کیا مدد مل سکتی ہے؟ (۳) ہمارے یہاں سب سے زیادہ کون کون سی کتابیں معتبر ہیں۔ (۴) حضرت عائشہ رضی اللہ عنہما کے مذہب پر آپ کی کیا رائے ہے؟

---

1 اتحاف السادة المتقين كتاب ذكر الموت فضيلة ذكر الموت دارالفكر بيروت ۱۰ / ۲۲۷ 2 انفاس العارفين مترجم اردو امداد اولياء ص ۳۶۹

Fatawa Ridawiyya (Volume 29)

(5) From which Hadiths can evidence for Prophet Jesus (peace be upon him) being alive be found? (6) What is the specialty in the word 'Subhan' in 'Subhan Alladhi...' etc.? (7) And why did your ascension (Mi'raj) happen at night, why not during the day? (8) Please narrate the stories of Idris, Khidr, Uzair, and Ilyas (peace be upon them) with some detail. (9) Please describe Hazrat Mahdi and Jesus (peace be upon them) as two distinct individuals with some detail.

The Answer: (1) There are Urdu translations of the Sihah Sittah (the six major collections of Hadith), but generally, they have been done by Wahhabis, and no one can understand the Quran and Hadith just by looking at a translation. (2) Mishkat al-Masabih is a comprehensive book, it helps in many matters, but no single book other than the Great Quran is sufficient alone. (3) In our view, after the Great Quran, in Hadith, there are the Sahihayn (Bukhari and Muslim), the Sunan Arba'ah (the four Sunan books), the Musnads of Imam-e-Azam (Abu Hanifa), the Muwatta and Kitab al-Athar of Imam Muhammad, Kitab al-Kharaj of Imam Abu Yusuf, Kitab al-Hajj of Imam Isa bin Aban, Sharh Ma'ani al-Athar of Imam Tahawi, Mushkil al-Athar of Imam Tahawi; in Creed (Aqa'id), Fiqh al-Akbar, the Testaments of Imam-e-Azam, the Creed of Imam Mufti al-Ins wal-Jinn Najm al-Din Umar al-Nasafi; in Jurisprudence (Fiqh), al-Hidayah, Bada'i al-Sana'i, Mabsut, Jami' al-Saghir, Jami' al-Kabir, Khaniyah, Bazzaziyah, Ghurar, Durar, Tanwir al-Absar, Durr al-Mukhtar, Ghunyah, Hulyah, and countless thousands of other books. (4) Umm al-Mu'minin Siddiqah (may Allah be pleased with her) was not even in the holy service until the night of Mi'raj; she was a very young child. Whatever she says, she says about the spiritual ascensions that occurred during her time. The physical ascension had taken place several years before her arrival. (5) For this, one should consult Dur al-Manthur, Ibn Jarir, and other commentaries. I have already said above that debating these issues is a deception by the Qadianis; the debate should be on their blasphemies, a sample of which was mentioned above. (6) The Glorious Lord praises Himself through the praise of His beloveds. Its beginning...

फ़तावा रिज़विया (खंड 29)

(5) हज़रत मसीह (अलैहिस्सलाम) के जीवित होने के प्रमाण किन-किन हदीसों से मिल सकते हैं? (6) 'सुभानल्लाज़ी' आदि में 'सुभान' शब्द की क्या विशेषता है? (7) और आपका मेराज रात को क्यों हुआ, दिन में क्यों नहीं हुआ? (8) इदरीस, खिज़्र, उजैर, इलियास (अलैहिमुस्सलाम) की कहानियों को कुछ स्पष्टता के साथ बयान करें। (9) हज़रत महदी और ईसा (अलैहिमुस्सलाम) दोनों अलग-अलग व्यक्ति हैं, इसे कुछ स्पष्टता के साथ बयान करें।

उत्तर: (1) सिहाह सित्ता के उर्दू में अनुवाद हुए हैं लेकिन आम तौर पर वे वहाबियों ने किए हैं, और अनुवाद देखकर कोई व्यक्ति कुरान और हदीस को नहीं समझ सकता। (2) मिश्कात शरीफ एक व्यापक पुस्तक है, कई बातों में मदद करती है, लेकिन अकेले कुरान ए अज़ीम के अलावा कोई भी किताब पर्याप्त नहीं है। (3) हमारे यहाँ कुरान ए अज़ीम के बाद हदीस में सहीहैन और सुनन अरबअह, मसानिद इमाम ए आज़म, मुअत्ता और किताब अल-आसार इमाम मुहम्मद, किताब अल-खराज इमाम अबू यूसुफ़, किताब अल-हज्ज इमाम ईसा बिन अबान, शरह मानी अल-आसार इमाम तहावी, मुशकिल अल-आसार इमाम तहावी; अकीदे में फिक्ह ए अकबर, वसाया ए इमाम आज़म, अकायद इमाम मुफ़्ती अल-इन्स वल-जिन्न नज्म अल-दीन उमर नसफ़ी; फिक्ह में हिदाया, बदाइ अल-सनाइ, मबसूद, जामे सगीर, जामे कबीर, खानिया, बज़ाज़िया, ग़ुरर, दुरर, तनवीरुल अबसार, दुर्र-ए-मुख्तार, गुनिया, हुलिया और हज़ारों अनगिनत किताबें हैं। (4) उम्मुल मोमिनीन सिद्दीका (रज़ियल्लाहु तआला अन्हा) मेराज की रात तक हुज़ूर की ख़िदमत में हाज़िर भी नहीं हुई थीं, वह बहुत छोटी उम्र की बच्ची थीं। वह जो कुछ फरमाती हैं, उन आध्यात्मिक मेराजों के बारे में फरमाती हैं जो उनके ज़माने में हुईं। शारीरिक मेराज उनकी हाज़िरी से कई साल पहले हो चुका था। (5) इसके लिए दुर-ए-मंसूर और इब्ने जरीर और तफ़सीरें देखनी चाहिए, अभी मैं ऊपर कह चुका हूँ कि इन मसलों में बहस करना कादियानियों का धोखा है, बहस उनके उन कुफ्रों पर होनी चाहिए जिनका नमूना ऊपर ज़िक्र हुआ। (6) हज़रत इज़्ज़त (अल्लाह) जल्ल व अला अपने महबूबों की प्रशंसा के ज़रिए अपनी प्रशंसा फरमाता है। इसकी शुरुआत...

(۵) حضرت مسیح (علیہ السلام) کے زندہ ہونے کی کن کن حدیثوں سے دلیل مل سکتی ہے؟ (٦) 'سبحان الذی' الخ میں 'سبحان' کے لفظ میں کیا خصوصیت ہے؟ (۷) اور آپ کو رات کو کیوں معراج ہوا، دن کو کیوں نہ ہوا؟ (۸) ادریس، خضر، عیز، الیاس (علیہم السلام) ان کے قصص قدرے صراحت کے ساتھ بیان کیجئے۔ (۹) حضرت مہدی اور عیسیٰ (علیہم السلام) دونوں جدا جدا اشخاص قدرے صراحت کے ساتھ بیان کیجئے۔ الجواب: (۱) صحاح ستہ کے اردو میں ترجمے ہوئے ہیں مگر عموماً وہابیہ نے کیے ہیں، اور ترجمہ دیکھ کر کوئی شخص قرآن و حدیث نہیں سمجھ سکتا۔ (۲) مشکوٰۃ شریف ایک جامع کتاب ہے، بہت باتوں میں مدد دیتی ہے، مگر تنہا کوئی کتاب سوا قرآن عظیم کے کافی نہیں۔ (۳) ہمارے یہاں قرآن عظیم کے بعد حدیث میں صحیحین اور سنن اربعہ، مسانید امام اعظم، موطا و کتاب الآثار امام محمد، کتاب الخراج امام ابویوسف، کتاب الحج امام عیسیٰ بن ابان، شرح معانی الآثار امام طحاوی، مشکلات الآثار امام طحاوی، عقائد میں فقہ اکبر، وصایائے امام اعظم، عقائد امام مفتی الانس والجن نجم الدین عمر نسفی، فقہ میں ہدایہ، بدائع مبسوط جامع صغیر، جامع کبیر، خانیہ، بزازیہ، غرر، درر، تنویر الابصار، درمختار، غنیہ، حلیہ اور ہزارہا کتب بے شمار۔ (۴) ام المؤمنین صدیقہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا شب معراج تک خدمت اقدس میں حاضر بھی نہ ہوئی تھیں بہت صغیر السن بچی تھیں۔ وہ جو فرماتی ہیں، ان روحانی معراجوں کی نسبت فرماتی ہیں جو اُن کے زمانے میں ہوئیں۔ معراج جسمانی ان کی حاضری سے کئی سال پیشتر ہو چکا تھا۔ (۵) اس کے لیے دُر منثور و ابن جریر و تفاسیر دیکھنی چاہئیں، ابھی میں اوپر کہہ چکا ہوں کہ ان مسائل میں بحث یہ قادیانیوں کا دھوکا ہے بحث اس کے ان کفریات میں چاہیے

جس کا نمونہ اوپر مذکور ہوا۔ (٦) حضرت عزت جل وعلا اپنے محبوبوں کی مدح سے اپنی حمد فرمایا کرتا ہے۔ اس کی ابتداء

Volume 29, **Fatawa Razawiyya**

In some places, it starts with "Huwa-alladhi" (He is the One who...), such as:

"هُوَ الَّذِي بَعَثَ فِي الْأُمِّيِّينَ رَسُولًا" 1	He is the One Who raised among the unlettered people a Messenger from among themselves. (T)
"هُوَ الَّذِي أَرْسَلَ رَسُولَهُ بِالْهُدَى وَدِينِ الْحَقِّ" 2	He is the One Who has sent His Messenger with guidance and the Religion of truth. (T)

In some places, it starts with "Tabaraka-alladhi" (Blessed is He who...):

"تَبَارَكَ الَّذِي نَزَّلَ الْفُرْقَانَ عَلَىٰ عَبْدِهِ لِيَكُونَ لِلْعَالَمِينَ نَذِيرًا" 3	Most blessed is He who revealed the Criterion (the Quran) to His servant so that he may be a warner to all the worlds. (T)

In some places, with Praise (Hamd), such as:

"الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَنزَلَ عَلَىٰ عَبْدِهِ الْكِتَابَ وَلَمْ يَجْعَل لَّهُ عِوَجًا" 4	All praise be to Allah who revealed the Book to His servant and left no deviation in it. (T)

Here, it has started with glorification (Tasbih) that:

"سُبْحَانَ الَّذِي أَسْرَىٰ بِعَبْدِهِ لَيْلًا مِّنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ" 5	Purity is for Him who took His servant by night from the Sacred Mosque. (T)

In this, there is an explicit point that Tasbih (glorification) is performed for things that are extremely amazing. "Subhan Allah-illadhi", what a wonderful thing it is! "Subhan", what an amazing matter it is, to go to the heavens with a physical body, traversing through intense coldness (Zamhareer), traversing through spheres of fire, covering a path of millions of years in a few moments. To tour the entire earthly and celestial kingdoms. These are indeed extremely amazing clear signs. This much was said to establish proof against the infidels of Makkah, that he (the Prophet) rested in Makkah al-Mukarramah at night, was present in Makkah al-Mukarramah in the morning as well, and within that same night, went to Bayt al-Maqdis and returned.

---

1 Al-Quran Al-Karim 62/2 2 Al-Quran Al-Karim 9/33 & 48/28 3 Al-Quran Al-Karim 25/1 4 Al-Quran Al-Karim 18/1 5 Al-Quran Al-Karim 17/1

जिल्द २९, फ़तावा रज़विया

कहीं "हुवल्लज़ी" (वह वही है जिसने) से शुरू हुआ है, जैसे:

"1 "هُوَ الَّذِي بَعَثَ فِي الْأُمِّيِّينَ رَسُولًا- वही है जिसने अनपढ़ लोगों में उन्हीं में से एक रसूल भेजा। (त)

"هُوَ الَّذِي أَرْسَلَ رَسُولَهُ بِالْهُدَى وَدِينِ वही है जिसने अपने रसूल को हिदायत और सच्चे दीन के
2 "الْحَقِّ- साथ भेजा। (त)

कहीं "तबारकल्लज़ी" (बड़ी बरकत वाला है वह जिसने) से:

"تَبَارَكَ الَّذِي نَزَّلَ الْفُرْقَانَ عَلَىٰ عَبْدِهِ बड़ी बरकत वाला है वह जिसने उतारा क़ुरआन अपने बंदे
3 "لِيَكُونَ لِلْعَالَمِينَ نَذِيرًا- पर जो सारे जहान को डर सुनाने वाला हो। (त)

कहीं "हम्द" (प्रशंसा) से, जैसे:

"الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَنزَلَ عَلَىٰ عَبْدِهِ सब खूबियां अल्लाह को जिसने अपने बंदे पर किताब
4 "الْكِتَابَ وَلَمْ يَجْعَل لَّهُ عِوَجًا- उतारी और उसमें बिल्कुल भी टेढ़ापन न रखा। (त)

यहाँ तस्बीह (महिमागान) से शुरुआत की गई है कि:

"سُبْحَانَ الَّذِي أَسْرَىٰ بِعَبْدِهِ لَيْلًا مِّنَ पाकी है उसे जो अपने बंदे को रातों रात ले गया
5 "الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ- मस्जिद-ए-हराम से। (त)

इसमें एक स्पष्ट सूक्ष्म बात यह है कि जो बात अत्यंत आश्चर्यजनक होती है उस पर तस्बीह की जाती है। "सुब्हान अल्लाहिल्लज़ी" (महिमा है उस अल्लाह की) कितनी उम्दा चीज़ है। "सुब्हान" कितनी अजीब बात है, जिस्म के साथ आसमानों पर तशरीफ़ ले जाना, किसी भीषण ठंड (ज़महरीर) को पार करना, आग की गांठ (आतिश के गोलों) को पार करना, करोड़ों वर्षों के रास्ते को कुछ ही क्षणों में तय करना। पूरे मुल्क और मलकूत (धरती और आकाश) की सैर करना। ये तो अत्यंत अद्भुत स्पष्ट निशानियां हैं। इतनी बात कि मक्का के काफ़िरों पर प्रमाण स्थापित करने के लिए कही गई कि रात को मक्का मुअज़्ज़मा में आराम फरमाएँ सुबह भी मक्का मुअज़्ज़मा में मौजूद हों, और रात ही रात बैतुल मुक़द्दस तशरीफ़ ले जाएँ और वापस आ जाएँ।

१ अल-क़ुरआन अल-करीम ६२/२ २ अल-क़ुरआन अल-करीम ९/३३ और ४८/२८ ३ अल-क़ुरआन अल-करीम २५/१ ४ अल-क़ुरआन अल-करीम १८/१ ५ अल-क़ुरआन अल-करीम १७/१

पृष्ठ ७५० का ६३४

کہیں ھو الذی سے ہوئی ہے، جیسے:

"ھُوَ الَّذِي بَعَثَ فِي الْأُمِّيّٖنَ رَسُولًا" 1- جس نے ان پڑھوں میں انہی میں سے ایک رسول بھیجا۔ (ت)

"ھُوَ الَّذِي أَرْسَلَ رَسُولَهُ بِالْهُدَى وَدِينِ الْحَقِّ" 2- وہی ہے جس نے اپنے رسول کو ہدایت اور سچے دین کے ساتھ بھیجا۔ (ت)

کہیں تبارک الذین سے:

"تَبَارَكَ الَّذِي نَزَّلَ الْفُرْقَانَ عَلٰى عَبْدِهٖ لِيَكُونَ لِلْعَالَمِينَ نَذِيرًا" 3- بڑی برکت والا ہے وہ کہ جس نے اتارا قرآن اپنے بندے پر جو سارے جہان کو ڈر سنانے والا ہو۔ (ت)

کہیں حمد سے، جیسے:

"الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِي أَنزَلَ عَلٰى عَبْدِهِ الْكِتَابَ وَلَمْ يَجْعَل لَّهُ عِوَجًا" 4- سب خوبیاں اللہ کو جس نے اپنے بندے پر کتاب اتاری اور اس میں اصلاً کجی نہ رکھی۔ (ت)

یہاں تسبیح سے ابتداء فرمائی ہے کہ:

"سُبْحَانَ الَّذِي أَسْرٰى بِعَبْدِهٖ لَيْلًا مِّنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ" 5- پاکی ہے اسے جو اپنے بندے کو راتوں رات لے گیا مسجد حرام سے۔ (ت)

اس میں ایک صریح نکتہ یہ ہے کہ جو بات نہایت عجیب ہوتی ہے اس پر تسبیح کی جاتی ہے، سبحن اللہ الذی کیسی عمدہ چیز ہے۔ سبحن کیسی عجیب بات ہے جسم کے ساتھ آسمانوں پر تشریف

لے جانا کوئی زمہریر طے فرمانا، گرہ نار طے فرمانا، کروڑوں برس کی راہ کو چند ساعت میں طے فرمانا۔ تمام ملک و ملکوت کی سیر فرمانا۔ یہ تو انتہائی عجیب آیات بینات ہی ہیں۔ اتنی بات کہ کفارِ مکہ پر حجت قائم فرمانے کے لیے ارشاد ہوئی کہ شب کو مکہ معظمہ میں آرام فرمائیں صبح بھی مکہ معظمہ میں تشریف فرما ہوں، اور رات ہی رات بیت المقدس تشریف لے جائیں اور واپس تشریف لائیں۔

---

1 القرآن الکریم ۲/۶۲ 2 القرآن الکریم ۹/۳۳ و ۲۸/۶۱ 3 القرآن الکریم ۲۵/۱ 4 القرآن الکریم ۱۸/۱ 5 القرآن الکریم ۱۷/۱

Is it any less strange? For this reason, 'Glory be to Him [who took His servant]' was revealed. Where had the disbelievers seen the heavens? To mention the journey there before them would have been a claim they could not verify, unlike Jerusalem (Bait al-Maqdis), where they made two trips every year. "[For] the journey of winter and summer."[1] (T: travel in winter and summer) And they knew well that the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) had never been there, so they could thoroughly verify this miracle, and the divine proof could be fully established against them. Thus, by the grace of Allah Almighty, this is exactly what happened: when the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) described going to Bait al-Maqdis and returning within a single night, the accursed Abu Jahl was very happy in his heart that now a clear proof—God forbid—of him speaking falsely had been found. Therefore, the accursed one did not express disbelief openly but submitted: "Did you go just tonight?" He replied: "Yes." "Where, and you returned tonight?" He replied: "Yes." "Will you say the same in front of others too?" He replied: "Yes." Now he called out to the Quraysh, and they gathered and wanted the Prophet to repeat this statement again. The Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) repeated it. The disbelievers, gloating, presented themselves before Siddiq al-Akbar (Abu Bakr). Their thought was that upon hearing such an impossible thing, he too—God forbid—would turn back from testifying. They submitted to Siddiq: "Have you heard anything else? Your companion says that I went to Jerusalem tonight and returned within the same night." Siddiq al-Akbar said: "Does he say so?" They said: "Yes, he is saying this in the Haram." Siddiq said: "By Allah, he has spoken the truth. This is just the distance from Makkah to Jerusalem; I testify to him on the news of the heavens that reach him every morning and evening." Then the disbelievers asked the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) about the signs of Jerusalem, knowing he had never been there, so how would he tell? Whatever they kept asking, the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) kept describing. The disbelievers said: "By Allah! The signs are perfectly correct." Then they asked about the condition of one of their caravans that had gone to Jerusalem, which the Prophet had also met on the way, where he met them, what their condition was, and when they would arrive. The Prophet said: "I met them at such and such a station, and that we descended and drank water from a bowl belonging to them, and in that, a camel ran away and a person's leg..."

[1] Al-Quran al-Karim 106/2

यह कितनी कम आश्चर्यजनक बात है? इसीलिए 'सुब्हानल्लज़ी' (पवित्र है वह जो...) का इरशाद हुआ। काफ़िरों ने आसमान कहाँ देखे थे? उनके सामने वहाँ तशरीफ़ ले जाने का ज़िक्र करना एक ऐसा दावा होता जिसकी वे जाँच नहीं कर सकते थे, इसके विपरीत बैतुल मुक़द्दस (यरूशलेम) जहाँ वे हर साल दो बार चक्कर लगाते थे। "सर्दियों और गर्मियों की यात्रा"[1] (त: सर्दी और गर्मी में कूच करना) और वे अच्छी तरह जानते थे कि हुज़ूर अकदस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) कभी वहाँ तशरीफ़ नहीं ले गए, तो वे इस चमत्कार की अच्छी तरह जाँच कर सकते थे और उन पर ईश्वरीय प्रमाण पूरी तरह स्थापित हो सकता था। चुनाँचे, अल्लाह तआला की कृपा से ऐसा ही हुआ कि जब हुज़ूर अकदस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने बैतुल मुक़द्दस जाने और रात ही रात में वापस आने का वर्णन किया, तो मलऊन अबू जहल अपने दिल में बहुत खुश हुआ कि अब उनके—अल्लाह न करे—गलत कहने का एक स्पष्ट प्रमाण मिल गया। इसलिए उस मलऊन ने झुठलाने का ज़ाहिर नहीं किया, बल्कि यह अर्ज़ किया: "क्या आप आज ही की रात तशरीफ़ ले गए?" फ़रमाया: "हाँ।" "कहाँ, और आज रात ही वापस आ गए?" फ़रमाया: "हाँ।" "क्या दूसरों के सामने भी ऐसा ही फ़रमाएँगे?" फ़रमाया: "हाँ।" अब उसने कुरैश को आवाज़ दी और वे जमा हुए और हुज़ूर से फिर उस इरशाद को दोहराने को चाहा, हुज़ूर अकदस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने उसे दोहरा दिया। काफ़िर बग़लें बजाते (खुश होते) हुए सिद्दीक़-ए-अकबर के पास हाज़िर हुए। उन्हें गुमान था कि ऐसी असंभव बात सुनकर वे भी—अल्लाह न करे—पुष्टि (तस्दीक़) से मुकर जाएँगे। सिद्दीक़ से अर्ज़ की: "आपने कुछ और भी सुना? आपके यार फ़रमाते हैं कि मैं आज की रात बैतुल मुक़द्दस गया और रात ही में वापस हुआ।" सिद्दीक़-ए-अकबर ने फ़रमाया: "क्या वे ऐसा फ़रमाते हैं?" कहा: "हाँ, वे यह हरम में फ़रमा रहे हैं।" सिद्दीक़ ने फ़रमाया: "तो अल्लाह की क़सम, उन्होंने सच फ़रमाया। यह तो मक्का से बैतुल मुक़द्दस तक का फ़ासला है, मैं तो इस पर उनकी पुष्टि करता हूँ कि सुबह-शाम आसमान की ख़बरें उनके पास आती हैं।" फिर काफ़िरों ने हुज़ूर अकदस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से बैतुल मुक़द्दस के निशान पूछे, जानते थे कि वे तो कभी तशरीफ़ ले गए नहीं, भला कैसे बताएँगे? वे जो कुछ पूछते गए, हुज़ूर अकदस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) बताते गए। काफ़िरों ने कहा: "अल्लाह की क़सम! निशान तो बिल्कुल सही हैं।" फिर अपने एक क़ाफ़िले का हाल पूछा जो बैतुल मुक़द्दस गया हुआ था, कि वह भी रास्ते में हुज़ूर को मिला था, और कहाँ मिला था, उसकी क्या हालत थी और कब तक आएगा? हुज़ूर ने इरशाद

फ़रमाया: "फ़लाँ मंज़िल में हमें मिला था और यह कि उतरकर हमने उसमें एक प्याले से पानी पिया था और उसमें एक ऊँट भागा और एक व्यक्ति का पाँव..."

[1] अल-क़ुरान अल-करीम 106/2

کیا کم عجیب ہے، اس لیے سبحن الذی ارشاد ہوا، کفار نے آسمان کہاں دیکھے، ان پر تشریف لے جانے کا ان کے سامنے ذکر ایک ایسا دعوٰی ہوتا جس کی وہ جانچ نہ کر سکتے، بخلاف بیت المقدس جس میں ہر سال ان کے دو ۲ پھیرے ہوتے۔ "رِحْلَةَ الشِّتَاءِ وَالصَّيْفِ" ۱۔ (سردی اور گرمی میں کوچ کرنا۔ ت) اور وہ خوب جانتے تھے کہ حضور اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کبھی وہاں تشریف نہ لے گئے تو اس معجزے کی خوب جانچ کر سکتے تھے اور ان پر حجت الٰہی پوری قائم ہو سکتی تھی۔ چنانچہ بحمد اللہ تعالٰی یہ ہی ہوا کہ جب حضور اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کا بیت المقدس تشریف لے جانا اور شب ہی شب میں واپس آنا بیان فرمایا، ابو جہل لعین اپنے دل میں بہت خوش ہوا کہ اب ایک صریح حجت معاذ اللہ ان کے غلط فرمانے کی مل گئی، لہذا ملعون نے تکذیب ظاہر نہ کی بلکہ یہ عرض کی کہ آج ہی رات تشریف لے گئے؟ فرمایا: ہاں۔ کہاں اور آج شب میں واپس آئے؟ فرمایا: ہاں کہاں :اوروں کے سامنے بھی ایسا ہی فرما دیجئے گا؟ فرمایا: ہاں اب اس نے قریش کو آواز دی اور وہ جمع ہوئے اور حضور سے پھر اس ارشاد کا اعادہ چاہا، حضور اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے اعادہ فرما دیا۔ کافر بغلیں بجاتی صدیق اکبر کے پاس حاضر ہوئے۔ یہ گمان تھا کہ ایسی ناممکن بات سن کر وہ بھی معاذ اللہ تصدیق سے پھر جائیں گے۔ صدیق سے عرض کی۔ آپ نے کچھ اور بھی سنا آپ کے یار فرماتے ہیں کہ میں آج کی رات بیت المقدس گیا اور شب ہی شب میں واپس ہوا۔ صدیق اکبر نے فرمایا: کیا وہ ایسا فرماتے ہیں ؟ کہاں : ہاں وہ یہ حرم میں تشریف فرما ہیں۔ صدیق نے فرمایا۔ تو واللہ حق فرمایا یہ تو مکہ سے بیت المقدس تک کا فاصلہ ہے میں تو اس پر ان کی تصدیق کرتا ہوں کہ صبح شام آسمان کی خبر ان کے پاس آتی ہے، پھر کافروں نے حضور اقدس صلی اللہ علیہ وسلم سے بیت المقدس کے نشان پوچھے،

جانتے تھے کہ یہ تو کبھی تشریف لے گئے نہیں کیونکر بتائیں گے وہ جو کچھ پوچھتے گئے حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم ارشاد فرماتے گئے۔ کافروں نے کہا: واللہ! نشان تو پورے صحیح ہیں۔ پھر اپنے ایک قافلہ کا حال پوچھا جو بیت المقدس کو گیا ہوا تھا کہ وہ بھی راستہ میں حضور کو ملا تھا اور کہاں ملا تھا اور کیا حالت تھی کب تک آئے گا؟ حضور نے ارشاد فرمایا: فلاں منزل میں ہم کو ملا تھا اور یہ کہ اتر کر ہم نے اس میں ایک پیالہ سے پانی پیا تھا اور اس میں ایک اونٹ بھاگا اور ایک شخص کا پاؤں

۱ القرآن الکریم ۲/۱۰۶

...ended, and the caravan will arrive on such-and-such day at sunrise. This period that was mentioned was not sufficient in any way for the caravan based on the stages of the journey. When that day came, the disbelievers climbed the mountains so that the sun might shine and the caravan might not arrive, and if it didn't arrive, we could say, "See, Allah forbid, that news was false." Some were looking towards the east for the sunrise, and some were looking towards the direction of Sham (Syria/Levant) on the path of the caravan. One of them said: "The sun has shone," while another among them said, "The caravan has arrived." This is true prophethood, in whose news it is impossible for even a hair's breadth of difference to occur. The disbelievers of Makkah had more sense than the Qadiani; they knew that if there was a discrepancy in even one thing, then the claim of prophethood would, Allah forbid, become false. But this false prophet throws around lies and is not ashamed. Nor do his followers have any sense of it; rather, with extreme insolence, he looks into eyes and says, "Yes, yes, the prophecies of four hundred previous prophets also proved wrong." And if that liar, i.e., the false liar prophet of Punjab, turned out to be a liar, what does it matter, as four hundred false prophets have passed before him. No one asks that if prophethood and lies can coexist, then why was the confirmation of prophets a condition of faith and why was their denial considered disbelief?

| But indeed, the curse of Allah is upon the wrongdoers who deny the messengers. | But indeed, the curse of Allah is upon those wrongdoers who deny the Messengers. (T) |

These great and decisive (proofs) have made the physical nature of the blessed Ascension (Mi'raj) clearer than the sun. If it were some spiritual journey or a dream, why the amazement at it? Zaid and Amr go to the Haramayn Sharifayn in their dreams and are back on their beds by morning. To argue from the word "Ru'ya" (vision/dream) and not see "illa fitnatan lin-nas" (except as a trial for mankind) is a manifest error. "Ru'ya" also comes with the meaning of "Ru'yat" (actual seeing). And trial and testing are in wakefulness, not in a dream, hence it was said:

| "Glory be to Him Who took His servant by night..."[1] | Purity is for Him who took His servant. (T) And Allah Almighty knows best. |

(7) Night is the manifestation of gentleness (Latfi), and day is the manifestation of severity (Qahri). The Ascension is the perfection of gentleness beyond which nothing

can be conceived, therefore the time of gentle manifestation was appropriate. The Ascension is the union of the lover and the beloved, and for union...

[1] The Holy Quran 17/1 Page 636 of 750

...टूट गया और क़ाफ़िला फ़लाँ दिन सूर्योदय के समय आएगा। यह अवधि जो बताई गई थी, मंज़िलों के हिसाब से क़ाफ़िले के लिए किसी भी तरह पर्याप्त न थी। जब वह दिन आया, तो काफ़िर पहाड़ पर चढ़ गए ताकि किसी तरह सूरज चमक जाए और क़ाफ़िला न आए, और अगर क़ाफ़िला न आए तो हम कह सकें कि देखो, मआज़अल्लाह वह खबर ग़लत हुई। कुछ लोग पूर्व की ओर सूर्योदय देख रहे थे, कुछ शाम (सीरिया) की ओर क़ाफ़िले के रास्ते पर नज़र रखे हुए थे। उनमें से एक ने कहा: "वह सूरज चमका," तो उनमें से दूसरे ने कहा, "वह क़ाफ़िला आया।" यह होती है सच्ची नबुवत, जिसकी खबर में रत्ती भर भी फ़र्क आना असंभव है। क़ादियानी से ज़्यादा तो इन मक्का के काफ़िरों की ही अकल थी, वे जानते थे कि अगर एक बात में भी कहीं फ़र्क पड़ जाए, तो नबुवत का दावा मआज़अल्लाह ग़लत हो जाएगा। मगर यह झूठा नबी है जो झूठ के गुब्बारे छोड़ता है और उसे शर्म भी नहीं आती। और न ही उसके मानने वालों को इसका एहसास होता है, बल्कि वह तो पूरी ढिठाई के साथ आँखों में आँखें डालकर कहता है कि हाँ हाँ, पिछले चार सौ नबियों की भी पेशगोइयाँ ग़लत हुईं। और अगर वह झूठा यानी पंजाब का झूठा कज़्ज़ाब नबी झूठा निकला तो क्या परवाह है, उससे पहले भी चार सौ नबी झूठे गुज़र चुके हैं। यह कोई नहीं पूछता कि जब नबुवत और झूठ एक साथ हो सकते हैं, तो नबियों की तस्दीक (पुष्टि) ईमान की शर्त क्यों हुई और उनकी तकज़ीब (झुठलाना) कुफ़्र क्यों हुआ।

| लेकिन अल्लाह की लानत हो उन ज़ालिमों पर जो रसूलों को झुठलाते हैं - | लेकिन अल्लाह तआला की लानत हो उन ज़ालिमों पर जो रसूलों को झुठलाते हैं। (त) |

इन महान और निर्णायक (प्रमाणों) ने मेराज-ए-मुबारक का जिस्मानी (शारीरिक) होना सूरज से ज़्यादा स्पष्ट कर दिया है। अगर वह कोई रूहानी सैर या ख़्वाब होता, तो उस पर ताज्जुब कैसा? ज़ैद और अम्र ख़्वाब में हरमैन शरीफ़ैन तक हो आते हैं और फिर सुबह अपने बिस्तर पर होते हैं। शब्द "रूया" (स्वप्न/दृष्टि) से दलील पकड़ना और "इल्ला फ़ितनतल लिन्नास" (मगर लोगों के लिए आज़माइश) को न देखना खुली ग़लती है। "रूया" का अर्थ "रूयत" (प्रत्यक्ष देखना) भी आता है। और फ़ितना और आज़माइश जागने की अवस्था में होती है न कि ख़्वाब में, इसीलिए फ़रमाया गया:

| "सुब्हानल लज़ी असरा बि-अब्दिही" [1] | पाकी है उसे जो अपने बंदे को ले गया। (त) वल्लाहु तआला आलम। |

(7) रात लुत्फ़ी (सौम्य) तजल्ली है और दिन कहरी (कठोर) तजल्ली, और मेराज लुत्फ़ का वो कमाल है जिससे ऊपर कुछ सोचा नहीं जा सकता, इसलिए लुत्फ़ी तजल्ली का समय ही उपयुक्त था। मेराज प्रेमी और प्रिय (आशिक़ और माशूक़) का मिलन है और मिलन के लिए...

[1] अल-क़ुरआन अल-करीम 17/1 पेज 636 / 750

ٹوٹ گیا اور قافلہ فلاں دن طلوعِ شمس کے وقت آئے گا۔ یہ مدت جو ارشاد ہوئی منزلوں کے حساب سے قافلے کے لیے بھی کسی طرح کافی نہ تھی۔ جب وہ دن آیا کفار پہاڑ پر چڑھ گئے کہ کسی طرح آفتاب چمک آئے اور قافلہ نہ آئے اور قافلہ نہ آئے تو ہم کہہ دیں کہ دیکھو معاذ اللہ وہ خبر غلط ہوئی ۔ کچھ جانبِ شرق طلوعِ آفتاب کو دیکھ رہے تھے کچھ جانبِ شام راہِ قافلہ پر نظر رکھتے تھے ان میں سے ایک نے کہا: وہ آفتاب چمکا، کہ اُن میں سے دوسرا بولا کہ وہ قافلہ آیا۔ یہ ہوتی ہے سچی نبوت جس کی خبر میں سرمو فرق آنا محال ہے۔ قادیانی سے زیادہ تو ان کفارِ مکہ ہی کی عقل تھی وہ جانتے تھے کہ ایک بات میں بھی کہیں فرق پڑ جائے تو دعوٰی نبوت معاذ اللہ غلط ہو جائے گا۔ مگر یہ جھوٹا نبی ہے کہ جھوٹ کے پھینکے اڑاتا ہے اور نہ وہ شرماتا ہے۔ اور نہ اس کے ماننے والوں کو اس کا حس ہوتا ہے بلکہ دریکمال شوخ چشمی آنکھوں میں آنکھیں ڈال کر کہتا ہے کہ ہاں ہاں اگلے چار سو انبیاء کی بھی پیشگوئیاں غلط ہوئیں اور وہ جھوٹے یعنی پنجاب کا جھوٹا کذاب نبی اگر دروغ گو نکلا کیا پرواہ ہے اس سے پہلے بھی چار سو نبی جھوٹے گزر چکے ہیں۔ یہ کوئی نہیں پوچھتا کہ جب نبوت اور جھوٹ جمع ہو سکتے ہیں تو انبیاء کی تصدیق شرطِ ایمان کیوں ہوئی انکی تکذیب کفر کیوں ہوئی۔

| ولکن لعنة اللہ علی الظلمین الذین یکذبون المرسلین - | لیکن اللہ تعالٰی کی لعنت ہو ان ظالموں پر جو رسولوں کو جھٹلاتے ہیں۔ (ت) |

ان عظیم و قاطع نے معراجِ مبارک کا جسمانی ہونا بھی آفتاب سے زیادہ واضح کر دیا اگر وہ کوئی روحانی سیر یا خواب تھا تو اس پر تعجب کیا۔ زید و عمر و خواب میں حرمین شریفین تک ہو آتے

ہیں اور پھر صبح اپنے بستر پر ہیں۔ رؤیا کے لفظ سے استدلال کرنا اور الا فتنۃ للناس نہ دیکھنا صریح خطا ہے۔ رؤیا بمعنی رؤیت آتا ہے۔ اور فتنہ و آزمائش بیداری ہی میں ہے نہ کہ خواب میں و لہٰذا ارشاد ہوا۔

| "سُبْحٰنَ الَّذِیْۤ اَسْرٰى بِعَبْدِهٖ" 1 - | پاکی ہے اُسے جو اپنے بندے کو لے گیا۔ (ت) واللہ تعالٰی اعلم۔ |

(۷) رات تجلیِ لطفی ہے اور دن تجلیِ قہری، اور معراجِ کمالِ لطف ہے جس سے مافوق متصور نہیں، لہٰذا تجلیِ لطفی ہی کا وقت مناسب تھا۔ معراج وصلِ محب و محبوب ہے اور وصال کے لیے

1 القرآن الکریم ۱/۱۷ Page 636 of 750

Fatawa Razvia Volume 29

Usually, the night is considered more appropriate. Miraj was a great, powerful, and manifest miracle. And it is the divine practice (Sunnah of Allah) that a nation that does not believe after witnessing such a clear miracle is destroyed; a general punishment is sent upon them, as occurred frequently among previous nations. If the noble Miraj had taken place during the day, then either everyone would have believed or everyone would have been destroyed. Since faith was not in the destiny of the disbelievers, only this possibility remained—that a general punishment would descend upon them. However, the Prophet (peace be upon him) was sent as a mercy for the entire universe, regarding whom his Lord says:

"وَمَا كَانَ اللهُ لِيُعَذِّبَهُمْ وَاَنْتَ فِيهِمْ ۚ" ^1	**O Mercy to the worlds! As long as you are present among them, Allah will not punish them.**

Therefore, the night was appropriate.

(8) Consult 'Stories of the Prophets' (*Qisas al-Anbiya*) in the works of scholars; if any specific matter needs to be inquired about, then ask. The story of Hazrat Uzair (peace be upon him) is mentioned in the Great Quran itself, that [Allah] took his soul and then restored him to life after a hundred years; the food and water he had with him did not spoil during those hundred years. And the bones of his riding animal had decayed; before his very eyes, [Allah] raised its bones, covered them with flesh, and brought it back to life.^2

The story of Hazrat Khidr (peace be upon him) with our master Moses (peace and blessings be upon him) is also in the Great Quran.^3

Hazrat Idris (peace and blessings be upon him) was lifted from the world with his physical body into the highest paradise,

"وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ اِدْرِيْسَ ۫ اِنَّهٗ كَانَ صِدِّيْقًا نَّبِيًّا ۙ وَّرَفَعْنٰهُ مَكَانًا عَلِيًّا ۚ" ^4	**And mention Idris in the Book. Verily, he was a man of truth, a prophet, and We raised him to a high station. (T)**

---

1. Al-Quran al-Karim 8/33
2. Al-Quran al-Karim 2/259
3. Al-Quran al-Karim 18/65 to 82
4. Al-Quran al-Karim 19/56 and 57

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

आमतौर पर रात ही अधिक उपयुक्त मानी जाती है। मेराज एक महान, प्रबल और स्पष्ट चमत्कार था। और ईश्वरीय परंपरा (सुन्नत) यह है कि ऐसे स्पष्ट चमत्कार देखने के बाद जो कौम ईमान नहीं लाती, उसे नष्ट कर दिया जाता है; उन पर सामान्य दंड (अज़ाब) भेजा जाता है, जैसा कि पिछली कौमों के साथ अक्सर हुआ। यदि मेराज शरीफ़ दिन में होती, तो या तो सभी ईमान ले आते या सभी नष्ट कर दिए जाते। चूँकि काफ़िरों के भाग्य में ईमान नहीं था, तो यही सूरत रहती कि उन पर सामान्य अज़ाब उतरता, जबकि हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को सारे संसार के लिए रहमत बनाकर भेजा गया है, जिनसे उनके रब फरमाता है:

"وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ وَاَنْتَ فِيهِمْ ۚ" ^1	**ऐ रहमत-ए-आलम! जब तक तुम उनमें तशरीफ़ फ़रमा हो, अल्लाह उन्हें अज़ाब देने वाला नहीं।**

इसलिए रात ही उपयुक्त रही।

(8) विद्वानों की कृतियों में 'क़िसस अल-अंबिया' (नबियों के किस्से) देखें; यदि कोई विशेष बात पूछनी हो तो पूछें। हज़रत उज़ैर अलैहिस्सलाम का किस्सा महान क़ुरआन ही में वर्णित है कि उनकी रूह क़ब्ज़ फरमाई फिर सौ वर्ष बाद जीवित किया, उनके पास जो खाना और पानी था वह उन सौ वर्षों में खराब नहीं हुआ। और सवारी के जानवर की हड्डियाँ गल चुकी थीं, उनकी नज़रों के सामने उसकी हड्डियाँ उठाईं, उन पर मांस चढ़ाया और उसे जीवित किया।^2

हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम का किस्सा सैय्यदुना मूसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम के साथ भी महान क़ुरआन में है।^3

हज़रत इदरीस अलैहिस्सलातु वस्सलाम को दुनिया से उनके जिस्म के साथ बहिश्त-ए-बरीं (स्वर्ग) में उठा लिया गया,

"وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ اِدْرِيْسَ ۫ اِنَّهٗ كَانَ صِدِّيْقًا نَّبِيًّا ۚ وَّرَفَعْنٰهُ مَكَانًا عَلِيًّا ۭ" ^4	**और किताब में इदरीस को याद करो, निःसंदेह वह सत्यवादी थे, नबी थे। और हमने उन्हें एक ऊँचे स्थान पर उठा लिया। (त)**

---

1. अल-क़ुरआन अल-करीम 33/8

2. अल-क़ुरआन अल-करीम 259/2

3. अल-क़ुरआन अल-करीम 18/ 65 से 82

4. अल-क़ुरआन अल-करीम 19/ 56 व 57

पृष्ठ 637 / 750

عادۃً شب ہی انسب مانی جاتی ہے معراج ایک معجزہ عظیم قاہرہ ظاہر ہ تھا۔ اور سنت الہیہ ہے کہ ایسے واضح معجزہ کو دیکھ کر جو قوم نہ مانے ہلاک کر دی جاتی ہے اُن پر عذاب عام بھیجا جاتا ہے، جیسے اگلی امتوں میں بکثرت واقع ہوا۔ معراج کو شریف لے جانا اگر دن میں ہوتا تو یا سب ایمان لے آتے یا سب ہلاک کیے جاتے، ایمان تو کفار کے مقدر میں تھا نہیں تو یہ ہی شق رہی کہ اُن پر عذاب عام اُترتا اور حضور بھیجے گئے سارے جہان کے لیے رحمت، جنہیں اُن کا رب فرماتا ہے:

"وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ وَاَنْتَ فِيهِمْ ۚ" ۸1

اے رحمت عالم ! جب تک تم ان میں تشریف فرما ہو اللہ انہیں عذاب کرنے والا نہیں۔

لہذا شب ہی مناسب ہوئی۔

(۸) تصانیف علماء میں قصص الانبیاء دیکھئے اگر کوئی خاص بات دریافت کرنی ہو تو پوچھئے۔ حضرت عزیر علیہ السلام کا قصہ قرآن عظیم ہی میں مذکور ہے کہ اُن کی روح قبض فرمائی پھر سو برس بعد زندہ فرمایا، کھانا پانی جو ساتھ تھا وہ اس سو برس میں نہ بگڑا۔ اور سواری کے لیے جانور کی ہڈیاں بھی گل چکی تھیں، ان کی نظر کے سامنے اس کی ہڈیاں ابھاریں ان پر گوشت چڑھایا اسے زندہ فرمایا۔۸2

حضرت خضر علیہ السلام کا قصہ سیدنا موسیٰ علیہ الصلوٰۃ والسلام کے ساتھ بھی قرآن عظیم میں ہے۔۸3

حضرت ادریس علیہ الصلوٰۃ والسلام کو دنیا سے مع جسم بہشت بریں میں اٹھالیا،

"وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ اِدْرِيْسَ ۫ اِنَّهٗ كَانَ صِدِّيْقًا نَّبِيًّا ۙ وَّرَفَعْنٰهُ مَكَانًا عَلِيًّا ۝" 48

اور کتاب میں ادریس کو یاد کرو بے شک وہ صدیق تھا، غیب کی خبریں دیتا اور ہم نے اسے بلند مقام کی طرف اٹھالیا۔ (ت)

---

1. القرآن الکریم ۳۳/۸
2. القرآن الکریم ۲۵۹/۲
3. القرآن الکریم ۱۸/ ۶۵ تا ۸۲
4. القرآن الکریم ۱۹/ ۵۶ و ۵۷

Fatawa Razawiyya Volume 29

Ilyas (peace be upon him) is among the exalted messengers. All Prophets (peace be upon them) are alive with true spiritual and physical life. Their death is only for a moment to fulfill the divine promise. According to the majority of scholars, four prophets are still alive without having experienced death: two in the heavens, our leader Idris and our leader Isa, and two on earth, our leader Ilyas and our leader Khidr (peace be upon them). Both of these figures perform Hajj every year and meet each other at Zamzam Sharif at the conclusion of Hajj. They drink Zamzam water, which suffices for them until the following year, and they feel no need for food or drink thereafter. They conclude their meeting with these words:

Arabic Prayer	Translation
Subhan Allah, Masha Allah, none brings goodness except Allah. Masha Allah, none averts evil except Allah. Masha Allah, whatever blessing there is, it is from Allah. Masha Allah, there is no power to avoid sin nor strength to do good except through the guidance of Allah the Almighty.[2]	Allah the Almighty is Pure; what Allah wills happens, no one brings good except Allah as much as He wills; whatever blessing exists is only from Allah as much as He wills; there is neither power to refrain from sin nor strength to do good except by the guidance of Allah the Almighty. (T)

Ilyas (peace be upon him) was found by the noble army of the Holy Prophet (peace and blessings be upon him) in a cave, reciting this prayer:

Arabic Prayer	Translation
O Allah! Make me from the Ummah (community) of Ahmad (Muhammad, peace be upon him), the one who receives mercy, blessings, and whose prayers are answered.[3]	O Allah! Make me from the Ummah of Ahmad (peace and blessings be upon him) upon whom Your mercy and blessings descend and whose prayers are accepted. (T)

Khidr (peace be upon him) came to the noble companions (may Allah be pleased with them) after the passing of the Master of the World (peace and blessings be upon him) to offer condolences. He was seen talking to and leaning on the Commander of the Faithful, Umar bin Abdul Aziz (may Allah be pleased with him), on the way to the Prophet's Mosque. He frequently visits the leading saints (Awliya). He graced the preaching assemblies of Ghaus al-Azam (may Allah be pleased with him) many times,

and he still meets the saints, especially during times of helplessness in the wilderness.

---

[1] Tarikh Dimashq al-Kabir, Biography 1002 Ilyas bin Isa (PBUH), Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut 9/155 [2] Tarikh Dimashq al-Kabir, Biography 1002 Ilyas bin Isa (PBUH), Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut 9/158 [3] Tarikh Dimashq al-Kabir, Biography 1002 Ilyas bin Isa (PBUH), Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut 9/159

फ़तावा रज़विया जिल्द २९

इलियास अलैहिस्सलाम प्रतिष्ठित रसूलों में से हैं। सभी अंबिया (नबी) अलैहिमुस्सलाम वास्तविक आध्यात्मिक और शारीरिक जीवन के साथ जीवित हैं। उनकी मृत्यु केवल ईश्वरीय वादे की पुष्टि के लिए एक क्षण के लिए होती है। अधिकांश विद्वानों के अनुसार, चार नबी बिना मृत्यु के अब तक जीवित हैं: दो आसमान में, हमारे आका इदरीस और हमारे आका ईसा, और दो ज़मीन पर, हमारे आका इलियास और हमारे आका खिज़र अलैहिमुस्सलाम। ये दोनों महानुभाव हर साल हज करते हैं और हज के अंत में ज़मज़म शरीफ़ के पास एक-दूसरे से मिलते हैं। वे ज़मज़म का पानी पीते हैं जो अगले साल तक उनके लिए पर्याप्त होता है, और फिर उन्हें खाने-पीने की ज़रूरत नहीं होती। वे अपनी मुलाकात इन शब्दों के साथ समाप्त करते हैं:

अरबी दुआ	**अनुवाद**
सुभान अल्लाह, माशा अल्लाह, अल्लाह के सिवा कोई भलाई नहीं लाता। माशा अल्लाह, अल्लाह के सिवा कोई बुराई दूर नहीं करता। माशा अल्लाह, जो भी नेमत (वरदान) है, वह अल्लाह ही की तरफ से है। माशा अल्लाह, न गुनाह से बचने की ताकत है और न ही नेकी करने की कुव्वत, मगर अल्लाह तआला की तौफीक से।[2]	अल्लाह तआला पाक है; जो अल्लाह चाहे वही होता है, भलाई अल्लाह के सिवा कोई नहीं लाता जितना वह चाहे; जो भी नेमत है वह अल्लाह ही की ओर से है जितना वह चाहे; न गुनाह से बचने की शक्ति है और न ही नेकी करने का सामर्थ्य, सिवाय अल्लाह तआला की तौफीक के। (त)

इलियास अलैहिस्सलाम हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पवित्र लश्कर (सेना) को एक गुफा में यह दुआ करते हुए मिले:

अरबी दुआ	**अनुवाद**
ऐ अल्लाह! मुझे अहमद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की उम्मत में से बना दे जिस पर तेरी रहमत और बरकत नाज़िल होती है और जिसकी दुआएं कबूल की जाती हैं।[3]	ऐ अल्लाह! मुझे अहमद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत से बना दे जिस पर तेरी रहमत और बरकत उतरती है और जिसकी दुआएँ स्वीकार की जाती हैं। (त)

खिज़र अलैहिस्सलाम हुज़ूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विशाल (पर्दा फरमाने) के बाद सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम को सांत्वना देने के लिए तशरीफ़ लाए। उन्हें मस्जिद-ए-नबवी

के रास्ते में अमीरुल मोमिनीन उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रज़ियल्लाहु अन्हु से बातें करते और उन पर सहारा लेकर चलते हुए देखा गया। वे अक्सर बड़े औलिया (संतों) के पास तशरीफ़ लाते हैं। उन्होंने हुज़ूर सय्यदना गौस-ए-आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु की मज़ालिस-ए-वाज़ (उपदेश सभाओं) में कई बार शिरकत फरमाई, और वे अब भी औलिया से मिलते हैं, विशेषकर जंगल में बेबसी के समय।

---

[1] तारीख दमिश्क अल-कबीर, जीवनी 1002 इलियास बिन ईसा अलैहिस्सलाम, दार इह्या अत-तुराथ अल-अरबी बेरुत 9/155 [2] तारीख दमिश्क अल-कबीर, जीवनी 1002 इलियास बिन ईसा अलैहिस्सलाम, दार इह्या अत-तुराथ अल-अरबी बेरुत 9/158 [3] तारीख दमिश्क अल-कबीर, जीवनी 1002 इलियास बिन ईसा अलैहिस्सलाम, दार इह्या अत-तुराथ अल-अरबी बेरुत 9/159

الیاس علیہ الصلوۃ والسلام مرسلین کرام میں ہیں، انبیاء علیہم الصلوۃ والسلام سب بحیات حقیقی روحانی جسمانی زندہ ہیں، ان کی موت صرف ایک آن کو تصدیق وعدہ الہیہ کے لیے ہوتی ہے، جمہور علماء کے نزدیک چار نبی بے عروض موت اب تک زندہ ہیں، دو آسمان پر، سیدنا ادریس وسیدنا عیسٰی اور دو زمین میں، سیدنا الیاس وسیدنا خضر علیہم الصلوۃ والسلام اور یہ دونوں حضرات ہر سال حج کرتے ہیں اور ختم حج پر زمزم شریف کے پاس باہم ملتے ہیں، اور آب زمزم شریف پیتے ہیں کہ آئندہ سال تک ان کے لیے کافی ہوتا ہے پھر کھانے پینے کی حاجت نہیں ہوتی۔ ان کلمات پر باہم ملاقات ختم فرماتے ہیں:

عربی کلمات	**ترجمہ**
سبحان اللہ ماشاء اللہ لا یسوق الخیر الا اللہ ماشاء اللہ لا یصرف السوء الا اللہ ماشاء اللہ ما کان من نعمۃ فمن اللہ ماشاء اللہ لا حول ولا قوۃ الا باللہ۔[2]	اللہ تعالٰی پاک ہے جو اللہ چاہے، بھلائی نہیں لاتا، مگر اللہ جس قدر چاہے جو بھی نعمت ہے وہ اللہ ہی کی طرف ہے جس قدر اللہ چاہے، نہ گناہ سے بچنے کی طاقت ہے اور نہ ہی نیکی کرنے کی قوت ہے مگر اللہ تعالٰی کی توفیق سے۔ (ت)

الیاس علیہ الصلوۃ والسلام لشکر اقدس حضور صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کو ایک غار میں یہ دعا کرتے ملے۔

عربی دعا	ترجمہ
اللھم اجعلنی من امۃ احمد المرحومۃ المبارکۃ المستجاب لھا۔[3]	اے اللہ! مجھے احمد صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی امت سے بنا دے جس پر تیری رحمت و برکت نازل ہوتی ہے اور جس کی دعائیں قبول کی جاتی ہیں۔ (ت)

خضر علیہ الصلوۃ والسلام بعد وصال اقدس حضور سید عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی تعزیت کے لیے صحابہ کرام رضی اللہ عنہم کے پاس تشریف لائے، مسجد نبوی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے راستہ میں امیر المومنین عمر بن عبدالعزیز رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے باتیں کرتے اور ان پر تکیہ لگاتے ہوئے راہ چلتے نظر آئے، اکابر اولیاء کے پاس اکثر تشریف لاتے، حضور سیدنا غوث اعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی مجالس وعظ میں بکثرت کرم فرمایا، اور اب تک اولیاء سے ملتے ہیں، جنگل میں بے بسی کے وقت۔

---

[1] تاریخ دمشق الکبیر ترجمہ ۱۰۰۲ الیاس بن عیسیٰ علیہ السلام داراحیاء التراث العربی بیروت ۹/۱۵۵ [2] تاریخ دمشق الکبیر ترجمہ ۱۰۰۲ الیاس بن عیسیٰ علیہ السلام داراحیاء التراث العربی بیروت ۹/۱۵۸ [3] تاریخ دمشق الکبیر ترجمہ ۱۰۰۲ الیاس بن عیسیٰ علیہ السلام داراحیاء التراث العربی بیروت ۹/۱۵۹

Fatawa Razawiya Volume 29

...they help the Muslims. (9) The details of these Ahadith (sayings) are in 'Khasa'is al-Kubra' by Imam Jalaluddin Suyuti and the book 'al-Isha'ah fi Ashrat al-Sa'ah' by Sayyiduna Allama Muhammad ibn Abdur Rasul Barzanji and others. And Allah Almighty knows best.

Problem 199 and 200: Sent by Hakim Abdul Jabbar Khan, Daham Pur, District Bijnor, 29 Rabi-ul-Awwal Sharif 1335 AH. (1) Is the heat of Hell absolutely forbidden for a Sayyid, such that they cannot enter Hell at all as a consequence of any misdeeds? (2) Is the special honor and distinction of the 'Aal-e-Fatima' (offspring of Fatima) through Lady Fatima, the Lady of Paradise, because she is the daughter of the Master of both worlds (peace and blessings of Allah be upon him), or is this rank of the Sayyids due solely to the person of Hazrat Ali (may Allah honor his face)?

The Answer: (1) Regarding the honorable Sayyids who are truly Sayyids in the knowledge of Allah, there is strong hope from the Lord Almighty that they will not be punished for any sin in the Hereafter. It is stated in a Hadith:

[Arabic]: Innama summiyat Fatima li'ann Allaha Ta'ala harramaha wa dhurriyataha 'ala al-nar[1]. [Urdu Translation]: She was named Fatima because Allah has forbidden her and all her offspring from the Fire.

In another Hadith, the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said to Hazrat Batul Zahra (may Allah be pleased with her):

[Arabic]: Inn Allaha ghayra mu'adhhibika wala waladika aw kama qala salla Allahu Ta'ala 'alayhi wa sallam[2]. [Urdu Translation]: O Fatima! Allah will neither punish you nor anyone from your offspring. However, a definitive ruling without definitive textual evidence is impossible.

(2) The Commander of the Faithful, Mawla Ali (may Allah honor his face), has other noble offspring as well; by being Quraishi, Hashmi, and Alawi, their robe of virtues is abundant. However, this supreme honor belongs to the honorable Sayyids, their...

[1] Al-Jami' as-Saghir, Hadith 2309, Dar al-Kutub al-Ilmiyyah, Beirut, 1/139; Al-Mawahib al-Ladunniyyah, Al-Maqsad al-Thani, Al-Fasl al-Thani, Al-Maktab al-Islami, Beirut, 2/64
[2] Al-Mu'jam al-Kabir, Hadith 11685, Al-Maktabah al-Faysaliyyah, Beirut, 11/263

फ़तावा रज़विया जिल्द २९

...मुसलमानों की मदद फरमाते हैं। (९) इन अहादीस (कथनों) का विवरण इमाम जलालुद्दीन सुयूती की 'खसाइस अल-कुबरा' और सैयदुना अल्लामा मुहम्मद इब्न अब्दुर रसूल बरज़ंजी की किताब 'अल-इशाअह फ़ी अशरात अस-साअह' और अन्य में है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला १९९ और २००: प्रेषक हकीम अब्दुल जब्बार खान, दहाम पुर, जिला बिजनौर, २९ रबी-उल-अव्वल शरीफ १३३५ हिजरी। (१) क्या सैयद पर दोज़ख की आग कतई हराम है, और वह किसी बुरे आमाल की सज़ा में दोज़ख में जा ही न सकेगा? (२) आले फातिमा का विशेष सम्मान और विशिष्टता हज़रत फातिमा खातूने जन्नत के ज़रिए से है क्योंकि वह सैयदे कौनेन (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की साहबजादी हैं, या हज़रत अली (करमल्लाहु वजहुल करीम) की ज़ात की वजह से यह मर्तबा सदात है?

अल-जवाब (उत्तर): (१) सादात किराम जो वास्तव में अल्लाह के इल्म में सादात हैं, उनके बारे में रब अज़्ज़वजल से यही पक्की उम्मीद है कि आखिरत में उन्हें किसी गुनाह पर अज़ाब नहीं दिया जाएगा। हदीस में है:

[अरबी]: इन्नमा सुम्मियत फातिमतु लियन अल्लाहु तआला हर्रमहा व जुर्रियतहा अलन्नार[1]। [अनुवाद]: उनका नाम फातिमा इसलिए हुआ कि अल्लाह ने उन्हें और उनकी तमाम औलाद को आग पर हराम कर दिया।

दूसरी हदीस में है कि हुज़ूर अकदस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने हज़रत बतूल ज़हरा (रज़ियल्लाहु अन्हा) से फरमाया:

[अरबी]: इन्न अल्लाहु गैर मुअज्ज़िबेकि वला वलदिक औ कमा काला सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम[2]। [अनुवाद]: ऐ फातिमा! अल्लाह न तुझे अज़ाब करेगा और न तेरी औलाद में किसी को। मगर हुक्मे कतई बे नसे कतई नामुमकिन है।

(२) अमीरुल मोमिनीन मौला अली (करमल्लाहु तआला वज्हहुल करीम) की औलादे अमजाद और भी हैं। कुरैशी, हाशमी और अलवी होने से उनका दामने फज़ाइल मालामाल है, मगर यह शर्फे आज़म हज़रत सादाते किराम को ही है, उन...

[1] अल-जामि' अस-सगीर, हदीस २३०९, दार अल-कुतुब अल-इल्मिया, बेरूत, १/१३९; अल-मवाहिब अल-लदुन्निया, अल-मक़सद अल-थानी, अल-फ़स्ल अल-थानी, अल-मक्तब अल-इस्लामी, बेरूत, २/६४ [2] अल-मुअजम अल-कबीर, हदीस ११६८५, अल-मक्तब अल-फैशालिया, बेरूत, ११/२६३

مسلمانوں کی مدد فرماتے ہیں۔ (۹) ان احادیث کی تفصیل خصائص کبریٰ امام جلال الدین سیوطی وکتاب الاشاعۃ فی اشراط الساعۃ سید ناعلامہ محمد ابن عبدالرسول برزنجی وغیر ہما میں ہے۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۱۹۹ و ۲۰۰: مرسلہ حکیم عبدالجبار خاں دہام پور ضلع بجنور ۲۹ ربیع الاول شریف ۱۳۳۵ھ (۱) کیا سید پر دوزخ کی آنچ قطعاً حرام ہے، اور وہ کسی بد اعمالی کی پاداش میں دوزخ میں جاہی نہ سکے گا؟ (۲) آلِ فاطمہ کا مخصوص اعزاز و امتیاز کیا حضرت فاطمہ خاتونِ جنت کے ذریعہ سے ہے کیونکہ جناب سیدہ موصوفہ سید کونین صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی صاحبزادی ہیں یا حضرت علی کرم اللہ تعالیٰ وجہہ کی ذات خاص کی بدولت یہ رتبہ سادات ہے فقط

الجواب: (۱) سادات کرام جو واقعی علم الٰہی میں سادات ہوں ان کے بارے میں رب عزوجل سے امید واثق یہی ہے کہ آخرت میں ان کو کسی گناہ پر عذاب نہ دیا جائے گا۔ حدیث میں ہے:

انما سمیت فاطمۃ لان اللہ تعالٰی حرمھا و ذریتھا علی النار ۱۔ ان کا نام فاطمہ اس لیے ہوا کہ اللہ نے ان کو اور ان کی تمام ذریت کو نار پر حرام فرمادیا۔

دوسری حدیث میں ہے کہ حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے حضرت بتول زہرا رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے فرمایا:

ان اللہ غیر معذبک ولا ولدک او کما قال صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم۲۔ اے فاطمہ ! اللہ نہ تجھے عذاب کرے گا نہ تیری اولاد میں کسی کو ، مگر حکم قطعی بے نص قطعی ناممکن ہے۔

(۲) امیر المومنین مولیٰ علی کرم اللہ تعالیٰ وجہہ کی اولاد امجاد اور بھی ہیں قریشی ہاشمی علوی ہونے سے ان کا دامان فضائل مالا مال ہے مگر یہ شرف اعظم حضرت سادات کرام کو ہے، ان

[1] الجامع الصغیر حدیث ۲۳۰۹ دارالکتب العلمیۃ بیروت۱ /۱۳۹، المواھب الدنیۃ المقصد الثانی الفصل الثانی المکتب الاسلامی بیروت ۲ / ۶۴ [2] المعجم الکبیر حدیث ۱۱۶۸۵ المکتبۃ الفیصلیۃ بیروت ۱۱ / ۲۶۳

Fatawa Ridawiyya, Volume 29

This honor is not for them; it is from the side of Hazrat Batul Zahra (peace be upon her).

Arabic	English Translation
1- فاطمه بضعة منى۔	Fatima is a part of me.
2- كل بني آدم ينتمون الى عصبة ابيهم الابنى فاطمة فأناابوهم۔	The lineage of all descendants of Adam is attributed to their father, except for the descendants of Fatima, for I am their father. And Allah Almighty knows best.

Problem 201: From Amroha, sent by Rafiq Ahmad Sahib Abbasi, Mohalla, 19 Rabi-ul-Awwal Sharif 1336 AH. My guide and master, may your high blessings endure! After greetings and humble respects, it is reported that some people here claim that among the Sayyids of the progeny of Fatima (peace be upon her), no individual, regardless of their beliefs or actions, will enter the fire of Hell. As proof, they cite the Verse of Purification, the Hadith 'Honor my children' etc., and also the chapter on Salman al-Farsi from Sheikh Akbar Muhyiddin ibn Arabi's 'Futuhat al-Makkiyya'. Please inform me of your noble opinion regarding this. Wishing to kiss your feet, only.

The Answer: 'A Sayyid holding any belief' is a very broad term. Nowadays, many beliefs are clear disbelief (kufr) and apostasy (irtidad), such as Qadiani, Nechari, Rafidi, Wahabi, Chakralwi, Deobandi, etc. Whoever holds such beliefs is by no means a Sayyid.

Arabic	English Translation
4- "إِنَّهُ لَيْسَ مِنْ أَهْلِكَ إِنَّهُ عَمَلٌ غَيْرُ صَالِحٍ"۔	"He is not of your family; indeed, his deeds are very unworthy." (T)

1. Sahih al-Bukhari, Book of Merits, Virtues of Fatima, Qadimi Kutub Khana Karachi 1/532; Sahih al-Bukhari, Book of Merits, Chapter on Virtues of the Proximity to the Messenger of Allah, peace and blessings be upon him, Qadimi Kutub Khana Karachi 1/526; Sahih Muslim, Book of Virtues, Chapter on Virtues of Fatima (may Allah be pleased with them both), Qadimi Kutub Khana Karachi 2/290.
2. Al-Asrar al-Marfu'ah fi Akhbar al-Mawdu'ah, letter Kaf, Hadith 278, Dar al-Kutub al-Ilmiyyah Beirut, p. 176.
3. (Reference marker only)

4. Al-Quran al-Karim 11/46.

फतावा रज़विया, जिल्द 29

यह सम्मान उनके लिए नहीं, बल्कि हज़रत बतूल ज़हरा (सलाम उन पर हो) की ओर से है।

अरबी	हिंदी अनुवाद
1- فاطمه بضعة منى۔	फ़ातिमा मेरा एक हिस्सा है।
2- كل بني آدم ينتمون الى عصبة ابيهم الابنى فاطمة فأناابوهم۔	आदम की सभी संतानों का वंश उनके पिता की ओर माना जाता है, सिवाय फ़ातिमा की संतान के, क्योंकि मैं उनका पिता हूँ। और अल्लाह सर्वशक्तिमान बेहतर जानता है।

मसला २०१: अमरोहा से, रफ़ीक़ अहमद साहब अब्बासी, मोहल्ला, १९ रबी-उल-अव्वल शरीफ़ १३३६ हिजरी द्वारा प्रेषित। मेरे मुर्शिद और आका, आपका उच्च आशीर्वाद बना रहे! अदब और विनम्र निवेदन के बाद अर्ज़ है कि यहाँ कुछ लोग दावा करते हैं कि सादात-ए-बनी फ़ातिमा (सलाम उन पर हो) में से कोई भी व्यक्ति, चाहे वह किसी भी विचारधारा का हो और उसके कर्म कैसे भी हों, नर्क की आग से मुक्त है। प्रमाण के तौर पर वे आयत-ए-ततहीर, हदीस 'मेरी औलाद का सम्मान करो' इत्यादि के अलावा शेख अकबर मुहीउद्दीन इब्न अरबी की 'फ़ुतुहात-ए-मक्किया' का सलमान फ़ारसी वाला अध्याय पेश करते हैं। इस बारे में आपकी पवित्र राय से अवगत कराएं। बस आपके चरणों को चूमने की इच्छा है।

उत्तर: 'सय्यद कोई भी विचारधारा रखता हो' यह शब्द बहुत व्यापक है। आजकल कई विचारधाराएं स्पष्ट कुफ़्र और धर्मत्याग (इरतिदाद) की हैं जैसे क़ादियानी, नेचरी, राफ़िज़ी, वहाबी, चक्रालवी, देवबंदी इत्यादि। जो ऐसी विचारधारा रखता हो, वह हरगिज़ सय्यद नहीं है।

अरबी	हिंदी अनुवाद
4- "إِنَّهُ لَيْسَ مِنْ أَهْلِكَ إِنَّهُ عَمَلٌ غَيْرُ صَالِحٍ"۔	"वह आपके परिवार से नहीं है; वास्तव में उसके कर्म बहुत बुरे हैं।" (त)

1. सहीह अल-बुख़ारी, किताब अल-मनाकिब, मनाकिब-ए-फ़ातिमा, क़दीमी कुतुब ख़ाना कराची 1/532; सहीह अल-बुख़ारी, किताब अल-मनाकिब, बाब मनाकिब क़राबत रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम), क़दीमी कुतुब ख़ाना कराची 1/526; सहीह मुस्लिम, किताब

अल-फ़ज़ाइल, बाब फ़ज़ाइल-ए-फ़ातिमा (रज़ियल्लाहु अन्हा), क़दीमी कुतुब ख़ाना कराची 2/290.

2. अल-असरार अल-मरफ़ुआ फ़ी अख़बार अल-मौज़ूआ, हर्फ़ अल-काफ़, हदीस 278, दार अल-कुतुब अल-इल्मिया बेरूत, पृष्ठ 176.
3. (केवल संदर्भ चिह्न)
4. अल-क़ुरआन अल-करीम 11/46.

کے لیے نہیں یہ شرف حضرت بتول زہرا کی طرف سے ہے۔

عربی	اردو ترجمہ
۱- فاطمة بضعة منی 1	فاطمہ میرا ٹکڑا ہے۔
۲- کل بني آدم ینتمون الی عصبة ابیھم الابنی فاطمة فأناابو ھم 2	سب کی اولادیں اپنے باپ کی طرف نسبت کی جاتی ہیں سوائے اولاد فاطمہ کے کہ میں ان کا باپ ہوں۔ واللہ تعالیٰ اعلم

مسئلہ ۲۰۱: از امروہہ مرسلہ رفیق احمد صاحب عباسی محلہ ۱۹ ربیع الاول شریف ۱۳۳۶ھ

مرشدی و مولائی مدفیوضکم العالی! بعد آداب و نیاز غلامانہ گزارش ہے کہ یہاں بعض اشخاص اس امر کے مدعی ہیں کہ سادات بنی فاطمہ علیہا الصلوٰۃ والسلام میں سے کوئی متنفس خواہ وہ کوئی مشرب رکھتا ہو اور کیسے ہی اعمال کا ہو نار دوزخ سے بری ہے اور ثبوت میں آیت تطہیر و حدیث اکرموا اولادی الخ (میری اولاد کا احترام کروت) وغیرہ کے علاوہ شیخ اکبر محی الدین ابن عربی کی فتوحات مکیہ کا باب سلمان فارسی پیش کرتے ہیں اس کے متعلق آں قبلہ کی جو کچھ رائے اقدس ہو اس سے مطلع فرمائیے، زیادہ آرزوئے قدمبوسی فقط

الجواب: سید کوئی مشرب رکھتا ہو یہ لفظ بہت وسیع ہے، آج کل بہت مشرب صریح کفر و ارتداد کے ہیں جیسے قادیانی، نیچری، رافضی، وہابی، چکڑالوی، دیوبندی وغیرہ ہم، جو مشرب رکھتا ہو ہر گز سید نہیں

عربی	اردو ترجمہ
۴- "إِنَّهُ لَيْسَ مِنْ أَهْلِكَ إِنَّهُ عَمَلٌ غَيْرُ صَالِحٍ" 4	وہ تیرے گھر والوں میں سے نہیں، بے شک اس کے کام بہت نالائق ہیں۔ (ت)

1 صحیح البخاری کتاب المناقب مناقب فاطمة قدیمی کتب خانہ کراچی ۱ / ۵۳۲، صحیح البخاری کتاب المناقب باب مناقب قرابت رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم قدیمی کتب خانہ کراچی ۱ / ۵۲۶، صحیح مسلم کتاب الفضائل باب فضائل من فاطمہ رضی اللہ عنہما قدیمی کتب خانہ کراچی ۲ / ۲۹۰ 2 الاسرار المرفوعة فی اخبار الموضوعة حرف الکاف حدیث ۲۷۸ دارالکتب العلمیة بیروت ص ۱۷۶ 3 4 القرآن الکریم ۱۱ / ۴۶

Fatawa Razawiya, Volume 29

Yes, no matter how the deeds of a sound faith may be, by the grace of Allah Almighty, there is a firm hope that those who are Syeds in His knowledge will not be questioned for any sin at all. The Hadith states that the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said:

"Indeed Fatima guarded her chastity, so Allah forbade the fire of Hell for her and her offspring."

(Narrated by al-Bazzar, Abu Ya'la, and at-Tabarani in al-Mu'jam al-Kabir, and al-Hakim who authenticated it. All of them narrated it from Abdullah bin Mas'ood (may Allah be pleased with him) in his 'Fawa'id'.) (T)

Other hadiths are also reported in this chapter stating that the offspring of Batool Zahra are safe from punishment.

Al-Munawi asserted that regarding the Lady of Paradise herself and her two sons, absolute prohibition of Hell is meant. But for others besides them, what is forbidden is the eternal fire of Hell. I recall that I wrote a comment on this: I say, it is known to the preserved ones from the Ahl al-Sunnah wal Jama'ah that eternal fire is forbidden for everyone who said 'La ilaha illa Allah'. So what is the specialty for the offspring of Zahra? Rather, the meaning by the power of the Mighty, the Powerful, is generalization. And Allah is the Owner of Great Bounty. And Allah knows best. (T)

1. Al-Jami' al-Saghir with reference to al-Bazzar etc., Tabarani, K, Hadith 2309, Dar al-Kutub al-Ilmiyah, Beirut, 1/139.
2. Fayd al-Qadir Sharh al-Jami' al-Saghir, Tabarani, K, Dar al-Ma'rifah, Beirut, 2/462.

फतावा रज़विया, जिल्द 29

हाँ, सलामत-ए-ईमान के आमाल कैसे ही हों, अल्लाह अज़्ज़वजल के करम से उम्मीद-ए-वाशिक़ यही है कि जो उसके इल्म में सैय्यद हैं उनसे असलन किसी गुनाह पर कुछ मुआख़ज़ा न फ़रमाए। हदीस है हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं:

"बेशक फातिमा ने अपनी पारसाई की हिफाज़त की तो अल्लाह तआला ने उस पर और उसकी औलाद पर दोज़ख़ की आग हराम फरमा दी।"

(इसे बज़ार, अबू यअ'ला और तबरानी ने मुअ'जम कबीर में, और हाकिम ने रिवायत किया और इसकी तस्हीह की। यह तमाम उनके'फ़वाइद' में है, सब ने इसे अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया।) (त)

इसी बाब में और अहादीस भी वारिद हैं कि ज़ुर्रियत-ए-बतूल ज़हरा अज़ाब से महफ़ूज़ है।

मुनावी ने कहा कि ख़ुद खातून-ए-जन्नत और उनके दोनों बेटों के हक़ में तो मुतलक़न दोज़ख़ का हराम होना मुराद है। लेकिन उनके ग़ैर में दायमी तौर पर दोज़ख़ में रहना हराम है। मुझे याद है कि मैंने इस पर यूँ लिखा। अक़ूल: (मैं कहता हूँ) अहल-ए-सुन्नत व जमाअत जो कि महफ़ूज़ हैं जानते हैं कि दोज़ख़ में दायमी तौर पर रहना तो हर उस शख़्स पर हराम है जिसने 'ला इलाहा इल्लल्लाह' कहा। इसमें सैयदा ज़हरा रज़ियल्लाहु अन्हा की औलाद की क्या तखसीस हुई? बल्कि इज़्ज़त व इक़्तिदार वाले माबूद की तौफ़ीक़ से मानी में ता'मीम है यानी मुतलक़न हुरमत अल्लाह तआला फ़ज़्ल व अज़मत वाला है। (त) और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

1. अल-जामि' अस-सग़ीर बहवाला अल-बज़ार वग़ैरह, तबरानी, क, हदीस 2309, दारुल कुतुब अल-इल्मिया बेरूत 1/139.
2. फैज़ुल क़दीर शरह अल-जामि' अस-सग़ीर, तबरानी, क, दारुल मारिफ़ा बेरूत 2/462.

पृष्ठ 641 का 750

ہاں سلامتِ ایمان کے اعمال کیسے ہی ہوں اللہ عزوجل کے کرم سے امیدِ واثق یہ ہی ہے کہ جو اس کے علم میں سید ہیں اُن سے اصلاً کسی گناہ پر کچھ مواخذہ نہ فرمائے، حدیث ہے حضور اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں:

ان فاطمة احصنت فرجها فحرمها الله وذريتها على النار رواه البزار و ابو يعلى والطبرانى فى الكبير و الحاكم وصح وتمام في فوائده كلهم عن عبدالله بن مسعود رضي الله تعالى عنه۔

بے شک فاطمہ نے اپنی پارسائی کی حفاظت کی تو اللہ تعالٰی نے اس پر اور اس کی اولاد پر دوزخ کی آگ حرام فرمادی۔ اس کو بزار، ابو یعلی، طبرانی نے معجم کبیر میں، اور حاکم نے روایت کیا اور اس کی تصحیح کی۔ یہ تمام اس کے فوائد میں ہے ، سب نے اس کو عبداللہ بن مسعود رضی اللہ تعالٰی عنہ سے روایت کیا۔ (ت)

اسی باب میں اور احادیث بھی وارد ہیں کہ ذریتِ بتول زہراء عذاب سے محفوظ ہے۔

و زعم المناوى اماهى وابناها فالمراد فى حقهم التحريم المطلق، واما من عداهم فالمحرم عليهم نار الخلود اه ورأيتنى كتبت عليه اقول: قد علم المحفوظون من اهل السنة والجماعة ان نار الخلود محرمة على كل من قال لا اله الا الله فما خصوصية ذرية زهراء بل المعنى بحول العزيز المقتدر هو التعميم والله ذو الفضل العظيم۔ والله تعالى اعلم

مناوی نے کہا کہ خود خاتونِ جنت اور ان کے دونوں بیٹوں کے حق میں تو مطلقاً دوزخ کا حرام ہونا مراد ہے۔ لیکن ان کے غیر میں دائمی طور پر دوزخ میں رہنا حرام ہے اھ مجھے یاد ہے کہ میں نے اس پر یوں لکھا۔ اقول : (میں کہتا ہوں) اہل سنت و جماعت جو کہ محفوظ ہیں جانتے ہیں کہ

دوزخ میں دائمی طور پر رہنا تو ہر اس شخص پر حرام ہے جس نے لا الہ الا اللہ کہا۔ اس میں سیدہ زہرا رضی اللہ تعالیٰ عنہا کی اولاد کی کیا تخصیص ہوئی بلکہ عزت واقتدار والے معبود کی توفیق سے معنی میں تعمیم ہے یعنی مطلقاً حرمت اللہ تعالیٰ فضل و عظمت والا ہے۔ (ت)

1 الجامع الصغیر بحوالہ البزار وع، طب ، ک، حدیث ۲۳۰۹ دار الکتب العلمیہ بیروت ۱ / ۱۳۹ 2 فیض القدیر شرح الجامع الصغیر طب ، ک، دار المعرفۃ بیروت ۲ / ۴۶۲

Fatawa-e-Razvia Volume 29

Issue 202: Sent by Muhammad Ibrahim, Village Gadharpur, Post Office Richha, District Bareilly. A person named Najabat Khan is ignorant and of bad character, and is also a usurer. He considers performing prayers, fasting, charity, etc., to be completely useless. Among all Muslims and Hindus, it is generally famous about this person that if his ill-omened face is seen in the morning, or if he comes in front while going for some work, then one will definitely have to face some delay and trouble. Even if there is complete certainty that the work will be done, their thought is that there will definitely be some obstacle and trouble. Accordingly, these people experience this repeatedly as per their thought, and they constantly keep this in mind that if he happens to come in front while going somewhere, they return to their home and after stopping for a while and making sure that ill-omened person is not in front, they proceed. Now the question is, how is this belief and conduct of these people? Is there any legal (Shari'i) flaw in it?

The Answer: There is no basis for this in the pure Shariah; it is just a superstition of the people. The command in Shariah is: "When you encounter an ill-omen, proceed."^1 When an evil omen comes to mind, do not act upon it. That method is purely Hindu-like. Muslims should, in such a situation, recite:

Allahumma la tayra illa tayruka wa la khayra illa khayruka wa la ilaha ghayruka^2 O Allah! There is no omen except Yours, no good except Your good, and there is no deity besides You. (T) Recite this, trust in your Lord, and proceed with your work; never stop or turn back. And Allah the Almighty knows best.

Issues 203 to 206: From Akbarabad, Mohalla Ghatta Azam Khan, house of Munshi Muzaffar Hussain Khan Mukhtar, sent by Muhammad Raziuddin Chishti Nizami, 2 Jumada al-Ula 1337 AH. What do the scholars of religion say regarding these issues: (1) In what capacity and how can a polytheist (Mushrik) enter the spiritual chain (Silsila) of any masters (Mashaikh)?

---

^1 Fath al-Bari, Kitab al-Tibb, Bab al-Tiyarah, Mustafa al-Babi Egypt 12/323 ^2 Fath al-Bari, Kitab al-Tibb, Bab al-Tiyarah, Mustafa al-Babi Egypt 12/323, Kanz al-Ummal Hadith 28588, Mu'assasat al-Risala Beirut 10/115

फ़तावा-ए-रज़विया जिल्द २९

मसला २०२: प्रेषित मोहम्मद इब्राहिम, ग्राम गधरपुर, डाकखाना ऋछा, जिला बरेली। एक व्यक्ति नजाबत खान अज्ञानी और कुमार्गी है और सूदखोर (ब्याजखोर) भी है, नमाज़, रोज़ा, खैरात आदि करना बिलकुल बेकार समझता है। उस व्यक्ति के बारे में आम तौर पर सभी मुसलमानों और हिंदुओं में यह बात प्रसिद्ध है कि अगर सुबह के समय उसका मनहूस चेहरा देख लिया जाए या कहीं काम पर जाते समय वह सामने आ जाए, तो निश्चित रूप से कुछ न कुछ समय और परेशानी झेलनी पड़ेगी। चाहे काम होने का कितना ही पक्का विश्वास क्यों न हो, लेकिन उनका ख्याल है कि कुछ न कुछ रुकावट और परेशानी ज़रूर होगी। चुनाँचे उन लोगों को उनके ख्याल के अनुसार बार-बार अनुभव होता रहता है और वे लोग बराबर इस बात का ध्यान रखते हैं कि अगर कहीं जाते समय वह सामने पड़ गया, तो अपने घर वापस चले जाते हैं और कुछ देर रुककर यह जानकर कि वह मनहूस सामने तो नहीं है, जाते हैं। अब सवाल यह है कि उन लोगों का यह अकीदा (विश्वास) और व्यवहार कैसा है? क्या इसमें कोई शरीयती खराबी तो नहीं?

अल-जवाब: पाक शरीयत में इसका कोई आधार नहीं है, यह लोगों का वहम है। शरीयत में हुक्म है: "जब तुम्हें कोई अपशकुन महसूस हो, तो आगे बढ़ जाओ।"^1 जब कोई बुरा शगुन मन में आए, तो उस पर अमल न करो, वह तरीका विशुद्ध रूप से हिंदूआना है। मुसलमानों को ऐसी जगह चाहिए कि:

अल्लाहुम्मा ला तैरा इल्ला तैरुका व ला खैरा इल्ला खैरुका व ला इलाहा गैरुका^2 ऐ अल्लाह! नहीं है कोई बुराई मगर तेरी ओर से, और नहीं है कोई भलाई मगर तेरी ओर से, और तेरे सिवा कोई माबूद (इबादत के लायक) नहीं। (त) पढ़ ले, और अपने रब पर भरोसा करके अपने काम के लिए चला जाए, हरगिज़ न रुके और न वापस आए। वल्लाहु तआला आलम (और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है)।

मसला २०३ से २०६: अकबरबाद, मोहल्ला घट्टा आज़म खां, मुंशी मुज़फ़्फ़र हुसैन खां मुख्तार के मकान से, प्रेषित मोहम्मद रज़ीउद्दीन चिश्ती निज़ामी, २ जमादी-उल-उला १३३७ हिजरी। दीन के उलेमा इन मसलों में क्या फरमाते हैं कि: (१) एक मुशरिक (मूर्तिपूजक) किसी मशाइख (आध्यात्मिक गुरुओं) के सिलसिले में किस हैसियत से और किस तरह दाखिल हो सकता है?

^1 फतह अल-बारी, किताब अत-तिब्ब, बाब अत-तियराह, मुस्तफा अल-बाबी मिस्र १२/३२३ ^2 फतह अल-बारी, किताब अत-तिब्ब, बाब अत-तियराह, मुस्तफा अल-बाबी मिस्र १२/३२३, कंज़ अल-उम्माल हदीस २८५८८, मुअस्ससत अल-रिसाला बेरुत १०/११५

पृष्ठ ६४२/७५०

مسئلہ ۲۰۲: مرسلہ از محمد ابراہیم موضع گدھر پور ڈاکخانہ ریچھا ضلع بریلی ایک شخص نجابت خاں جاہل اور بد عقیدہ ہے اور سودخوار بھی ہے، نماز روزہ خیرات وغیرہ کرنا بے کار محض سمجھتا ہے، اس شخص کی نسبت عام طور پر جملہ مسلمانان واہل ہنود میں یہ بات مشہور ہے کہ اگر صبح کو اس کی منحوس صورت دیکھ لی جائے یا کہیں کام کو جاتے ہوئے یہ سامنے آجائے تو ضرور کچھ نہ کچھ وقت اور پریشانی اٹھانی پڑے گی اور چاہے کیسا ہی یقینی طور پر کام ہو جانے کا وثوق ہو لیکن ان کا خیال ہے کہ کچھ نہ کچھ ضرور رکاوٹ اور پریشانی ہوگی چنانچہ ان لوگوں کو ان کے خیال کے مناسب باربار تجربہ ہوتا رہتا ہے اور وہ لوگ برابر اس امر کا خیال رکھتے ہیں کہ اگر کہیں جاتے ہوئے سامنے پڑ گیا تو اپنے مکان کو واپس جاتے ہیں اور چندے توقف کر کے یہ معلوم کر کے وہ منحوس سامنے تو نہیں ہے جاتے ہیں، اب سوال یہ ہے کہ ان لوگوں کا یہ عقیدہ اور طرز عمل کیسا ہے؟ کوئی قباحت شرعیہ تو نہیں؟

الجواب: شرع مطہر میں اس کی کچھ اصل نہیں، لوگوں کا وہم سامنے آتا ہے۔ شریعت میں حکم ہے: اذا تطیرتم فامضوا[1]- جب کوئی شگون بد گمان میں آئے تو اس پر عمل نہ کرو، وہ طریقہ محض ہندوانہ ہے مسلمانوں کو ایسی جگہ چاہیے کہ:

اللّٰھُمَّ لَا طَیْرَ إِلَّا طَیْرُكَ وَلَا خَیْرَ إِلَّا خَیْرُكَ وَلَا إِلٰهَ غَیْرُكَ[2] اے اللہ! نہیں ہے کوئی برائی مگر تیری طرف سے اور نہیں ہے کوئی بھلائی مگر تیری طرف سے اور تیرے بغیر کوئی معبود نہیں۔ (ت)

پڑھ لے، اور اپنے رب پر بھروسا کر کے اپنے کام کو چلا جائے، ہرگز نہ رکے نہ واپس آئے۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۲۰۳ تا ۲۰۶: از اکبر آباد محلہ گھٹا اعظم خاں مکان منشی مظفر حسین خاں مختار مرسلہ محمد رضی الدین چشتی نظامی ۲ جمادی الاولی ۱۳۳۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین ان مسائل میں کہ: (۱) مشرک داخل سلسلہ کسی مشائخ سلسلہ سے کس حیثیت سے اور کس طرح پر داخل سلسلہ ہو سکتا ہے؟

---

1۸ فتح الباری کتاب الطب باب الطیرۃ مصطفی البابی مصر ۱۲ / ۳۲۳ 2۸ فتح الباری کتاب الطب باب الطیرۃ مصطفی البابی مصر ۱۲ / ۳۲۳، کنز العمال حدیث ۲۸۵۸۸ مؤسسۃ الرسالہ بیروت ۱۰ / ۱۱۵

Fatawa Rizwia Volume 29

...the impurity of polytheism is evident in him, just as it is among the Hindus. (2) When and how would the pledge of allegiance (bay'at) to such a person in any Sufi order be valid? (3) Can such a polytheist be a deputy (khalifa), an authorized person (sahib-e-ijazat), or an authorized representative (majaz) of any Sufi order, regarding whom it is certainly apparent that he is not bound by Sharia, nor has he outwardly followed the commands of Sharia. He has not outwardly joined the fold of Islam. Neither did he repent from polytheism, disbelief, and sin in a general assembly of Muslims, nor did he make anyone a witness to his repentance. (4) Can the common people, for their selfish desires, make such a person—regarding whom this query is being made—their guide for righteousness and guidance or not?

Answer: No god but Allah. No disbeliever, whether a polytheist (mushrik) or a monotheist (muwahhid), can ever enter a Sufi order. Neither can his bay'at be valid without Islam, nor can his bay'at taken before Islam be valid, even if he becomes a Muslim later. Whether it is bay'at or any deed, the first condition for everything is Islam. Allah Almighty says: "And We shall turn to whatever deeds they did and make them as scattered dust." [1] | And whatever deeds they had done, We intended and made them into fine dust particles scattered about, as seen in the sunlight through a window. (T) Those who, while he remains in his disbelief, authorize him for bay'at and make him a deputy of the spiritual path, and those who consider him a spiritual guide of growth and guidance, all of them will become disbelievers. It is stated in Al-Bazzaziyya, Majma' al-Anhur, Durr al-Mukhtar, etc.: "He who doubts his disbelief has indeed disbelieved." [2] | One who doubted his disbelief became a disbeliever. (T) Yes, if at the time of bay'at he recited the Kalima Tayyiba and affirmed the religion of Islam, then the bay'at is valid. And if he was authorized before showing disbelief, then the spiritual guide (pir) is not to be blamed. However, when he later committed disbelief and became an apostate, the bay'at is annulled. Now, whoever makes him a guide will be a disbeliever. We seek refuge with Allah Almighty. And Allah Almighty knows best.

[1] The Holy Qur'an 25:23 [2] Ad-Durr al-Mukhtar, Book of Jihad, Chapter on the Apostate, Mujtabai Press, Delhi, 1/ 356 Page 643 of 750

फ़तावा रिज़विया जिल्द 29

...मुशरिक की गंदगी उसमें स्पष्ट रूप से दिखाई देती है, जैसे हिन्दुओं में होती है। (२) किसी सिलसिले के बुजुर्गों में ऐसे व्यक्ति की बैअत (दीक्षा) कब और कैसे मान्य होगी? (३) क्या ऐसा मुशरिक किसी सिलसिले का खलीफा, अनुमति प्राप्त (साहिब-ए-इजाज़त) या अधिकृत (साहिब-ए-मजाज़) हो सकता है जिसके बारे में निश्चित रूप से प्रकट होता है कि वह शरीयत का पाबंद नहीं है, न ही उसने प्रकट रूप से शरीयत के आदेशों का पालन किया है। वह ज़ाहिरी तौर पर इस्लाम के दायरे में शामिल नहीं हुआ। न ही उसने किसी मुसलमानों की आम सभा में शिर्क, कुफ़्र और गुनाहों से तौबा की और न ही किसी को अपनी तौबा का गवाह बनाया। (४) क्या आम लोग अपनी नफ़्सानी इच्छाओं के कारण ऐसे व्यक्ति को, जिसके बारे में पूछा जा रहा है, अपना मार्गदर्शक और हिदायत का हदी बना सकते हैं या नहीं?

उत्तर: अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं। कोई भी काफिर, चाहे वह मुशरिक हो या मुवह्हिद (एकेश्वरवादी), कभी किसी सिलसिले में दाखिल नहीं हो सकता। न तो इस्लाम के बिना उसकी बैअत मान्य हो सकती है, और न ही इस्लाम स्वीकार करने से पहले की गई उसकी बैअत मान्य होगी, भले ही वह बाद में मुसलमान हो जाए। चाहे बैअत हो या कोई अमल, सबके लिए पहली शर्त इस्लाम है। अल्लाह तआला फरमाता है: "और जो कुछ उन्होंने काम किए थे, हमने उनकी ओर रुख किया और उन्हें बिखरी हुई धूल के कणों जैसा बना दिया।" [1] | और जो कुछ काम उन्होंने किए थे, हमने उनका इरादा फरमाकर उन्हें बारीक-बारीक धूल के बिखरे हुए ज़र्रे कर दिया जो रौशनदान की धूप में नज़र आते हैं। (त) जो उसके कुफ़्र पर रहते हुए उसे बैअत के लिए अधिकृत करे और तरीक़त का खलीफा बनाए, और जो उसे रुश्द-ओ-हिदायत का पीर समझे, ये सब काफिर हो जाएंगे। बज़ाज़िया, मजमा-उल-अनहुर और दुर्र-ए-मुख़्तार आदि में है: "जिसने उसके कुफ़्र में शक किया, वह काफ़िर हो गया।" [2] | जिसने उसके कुफ़्र में शक किया वह काफ़िर हो गया। (त) हाँ, अगर बैअत के समय उसने कलमा तैयबा पढ़ा और दीन-ए-इस्लाम का इकरार किया तो बैअत सही हुई, और इसके बाद कुफ़्र ज़ाहिर करने से पहले उसे अनुमति दी गई तो पीर पर इल्ज़ाम नहीं। लेकिन जब बाद में उसने कुफ़्र किया और मुर्तद (धर्मत्यागी) हो गया, तो बैअत रद्द (मंसुख) हो गई। अब जो उसे हदी (मार्गदर्शक) बनाएगा, वह काफ़िर होगा। वल-इयाज़ु बिल्लाहि तआला। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।

[1] अल-क़ुरआन अल-करीम 23/25 [2] अद-दुर्र अल-मुख़्तार किताब अल-जिहाद बाब अल-मुर्तद मतबा मुजतबाई दिल्ली 1/ 356 पृष्ठ 750 का 643

مشرک کی آلودگی ظاہر اُس میں نمایاں ہو جیسے اہل ہنود میں سی۔ (۲) ایسے شخص کی بیعت کسی مشائخ سلسلہ سے کب معتبر اور کیسی ہوگی؟ (۳) ایسا مشرک کسی مشائخ سلسلہ کا خلیفہ اور صاحبِ اجازت یا صاحبِ مجاز ہو سکتا ہے جس کی نسبت یقیناً بظاہر معلوم ہوتا ہے کہ شریعت کا پابند نہیں، نہ اس نے احکام شریعت کی بظاہر پابندی کی۔ دائرہ اسلام میں بظاہر شامل نہیں ہوا۔ نہ اس نے شرک و کفر و فسق و فجور سے کسی جلسہ عام مسلمانوں میں توبہ کی، نہ توبہ کا شاہد بنایا۔ (۴) عوام الناس اپنی اغراضِ نفسانی سے ایسے شخص کو جس کی نسبت عرض کیا جارہا ہے اس کو رشد و ہدایت کا اپنی ہادی بنا سکتے ہیں یا نہیں۔

الجواب: لا الہ الا اللہ کوئی کافر خواہ مشرک ہو یا موحد ہر گز نہ داخلِ سلسلہ ہو سکتا ہے۔ نہ بے اسلام اس کی بیعت معتبر ہو سکتی ہے، نہ قبلِ اسلام اس کی بیعت معتبر ہوا گرچہ بعد کو مسلمان ہو جائے کہ بیعت ہو یا کوئی عمل، سب کے لیے پہلی شرط اسلام ہے قال تعالیٰ: "وَقَدِمْنَا إِلَىٰ مَا عَمِلُوا مِنْ عَمَلٍ فَجَعَلْنَاهُ هَبَاءً مَنْثُورًا"۱ | اور جو کچھ انہوں نے کام کیے تھے ہم نے قصد فرما کر انہیں باریک باریک غبار کے بکھرے ہوئے ذرے کردیا کہ روزن کی دھوپ میں نظر آتے ہیں، (ت) جو اس کے کفر پر رہتے ہوئے اسے مجاز و ماذونِ بیعت و خلیفہ طریقت کرے اور جو اسے پیرِ رشد و ہدایت سمجھے یہ سب کافر ہوجائیں گے۔ بزازیہ، مجمع الانہر ودر مختار وغیرہ میں ہے: من شك في كفره فقد كفر۲ ۔ | جس نے اس کے کفر میں شک کیا وہ کافر ہوگیا۔ (ت) ہاں اگر وقتِ بیعت اس نے کلمہ طیبہ پڑھا اور دینِ اسلام کا مقر ہوا تو بیعت صحیح ہوئی اور اس کے بعد قبلِ اظہارِ کفر ماذون کیا تو پیر پر الزام نہیں مگر جب بعد کو اس نے کفر کیا مرتد ہو گیا بیعت فسخ ہوگئی اب جو اسے ہادی بنائے یہ کافر ہوگا، والعیاذ باللہ تعالیٰ واللہ تعالیٰ اعلم۔

Fatawa Razawiyya Volume 29

Issue 720 to 211: From Calcutta No. 24, Post Shimla Manik Talla, sent by Mansoor Ali Miyan Bagaan Qadam Rasool, 17 Sha'ban 1337 AH. What do the scholars of religion say regarding these issues: (1) What is the relationship between a believer (Mumin) and a saint (Wali)? (2) In the Durood Sharif, why are "family of David" (Aal-e-Dawud) or "family of Zechariah" (Aal-e-Zakariya) etc. not used instead of "family of Abraham" (Aal-e-Ibrahim)? (3) Can the subject matter found in the Holy Quran be called "Madlool-e-Qurani" (Quranic indication) or not? And if it can be called so, what is the difference between "Purify my house" (Tahhara Bayti) and "Purify my heart" (Tahhara Qalbi)? And if it's not a definitive indication (Madlool-e-Nass), then why? (4) Why was the "Family" (Aal) given precedence over the "Companions" (Ashab) in the invocation of blessings upon the Prophet (peace be upon him)? (5) What is the reason for the rank of sainthood (Wilayat) remaining while prophethood (Nubuwwat) has ended?

The Answer: (1) If general sainthood (Wilayat-e-Aamma) is meant, then there is equality: "Allah is the Ally of those who believe" [1]. If specific sainthood is meant, then it is a general-specific absolute relationship: "Its [true] guardians are not but the righteous" [2]. (2) The family of David and the family of Zechariah (peace be upon them) are all included in the family of Abraham (peace be upon him), but not vice versa. (3) Any subject matter indicated by the Great Quran is "Madlool-e-Qurani". There is a world of difference between "my house" (Bayti) and "my heart" (Qalbi). Applying analogy to ambiguous verses (Mutashabihat) is misguidance. "We believe in it. All [of it] is from our Lord" [3]. (We believe in it, all is from our Lord. -T), not from your own self. (-T) (4) "Aal" (Family) also includes the "Ashab" (Companions). Conversely, this is a specification after generalization.

1. Al-Quran al-Karim 2/257
2. Al-Quran al-Karim 8/34
3. Al-Quran al-Karim 3/7

फ़तावा रज़विया खंड 29

मसाला 720 से 211: कलकत्ता नंबर 24, पोस्ट शिमला मानिक तल्ला से, मंसूर अली मियां बगां क़दम रसूल द्वारा भेजा गया, 17 शाबान 1337 हिजरी। धर्म के विद्वान इन मसलों में क्या फरमाते हैं कि: (1) मोमिन और वली के बीच क्या संबंध है? (2) दरूद शरीफ के अंदर 'आले इब्राहीम' की जगह 'आले दाऊद' या 'आले ज़करिया' आदि न आने का क्या कारण है? (3) कुरआन शरीफ में जो विषय है, क्या उसे 'मदलूल-ए-कुरआनी' कह सकते हैं या नहीं? और अगर कह सकते हैं तो 'तहरा बैती' (मेरे घर को पवित्र करो) और 'तहरा कल्बी' (मेरे दिल को पवित्र करो) में क्या अंतर है? और अगर यह 'मदलूल-ए-नस्' (निश्चित संकेत) नहीं है तो क्यों? (4) 'सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम' में 'आल' (वंश) को 'असहाब' (साथियों) पर प्राथमिकता क्यों दी गई? (5) विलायत (संत पद) के शेष रहने और नबुव्वत (पैगंबरी) के समाप्त होने का क्या कारण है?

उत्तर: (1) यदि सामान्य विलायत (विलायत-ए-आम्मा) अभिप्राय है तो समानता है, "अल्लाह उन लोगों का वली (दोस्त) है जो ईमान लाए" (1)। और यदि विशेष विलायत है तो सामान्य-विशेष पूर्ण संबंध है, "उसके वली तो केवल परहेज़गार हैं" (2)। (2) आले इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) में आले दाऊद और आले ज़करिया (अलैहिमुस्सलाम) सभी शामिल हैं, लेकिन इसका उल्टा नहीं। (3) जिस विषय पर महान कुरआन संकेत दे, वह 'मदलूल-ए-कुरआनी' है। 'बैती' (मेरा घर) और 'कल्बी' (मेरा दिल) में ज़मीन-आसमान का अंतर है। मुतशाबिहात (अस्पष्ट आयतों) में कयास (तर्क) करना गुमराह करना है। "हम इस पर ईमान लाए, सब हमारे रब के पास से है" (3)। (हम उस पर ईमान लाए, सब हमारे रब के पास से है। -त), न कि तुम्हारे नफ़्स की ओर से। (-त) (4) 'आल' में 'असहाब' भी शामिल हैं। इसके विपरीत यह सामान्य के बाद विशेष करना है।

1. अल-कुरआन अल-करीम 2/257
2. अल-कुरआन अल-करीम 8/34
3. अल-कुरआन अल-करीम 3/7

पृष्ठ 644 का 750

مسئلہ ۷۲۰ تا ۲۱۱: از کلکتہ نمبر ۲۴ پوسٹ شملہ مانک تلہ مرسلہ منصور علی میاں بگاں قدم رسول ۱۷ شعبان ۱۳۳۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین ان مسائل میں کہ، (۱) مومن اور ولی میں کون سی نسبت ہے؟ (۲) درود شریف کے اندر بجائے علیٰ ابراہیم و علیٰ آل ابراہیم کے علیٰ آل داؤد یا علیٰ آل زکریا و غیرہما نہ آنے کی کیا وجہ ہے؟ (۳) جو مضمون قرآن شریف کے ہے اس کو مدلولِ قرآنی کہہ سکتے ہیں یا نہیں؟ اور اگر کہہ سکتے ہیں تو طہرا بیتی وطہر اقلبی میں کیا فرق ہے؟ اور اگر مدلولِ نص نہیں تو کیوں؟ (۴) صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم میں اصحاب پر آل کو مقدم کیوں کیا؟ (۵) درجہ ولایت باقی رہنے اور نبوت کے ختم ہو جانے کی کیا وجہ ہے؟

الجواب: (۱) اگر ولایتِ عامہ مراد ہے تو تساوی، "اللّٰهُ وَلِيُّ الَّذِينَ آمَنُوا"1۔ (اللہ تعالیٰ ایمان والوں کا ولی ہے۔ت) اور خاصہ تو عموم خصوص مطلق "اِنْ اَوْلِيَـؤُهٗۤ اِلَّا الْمُتَّقُوْنَ"2۔ (اس کے ولی تو پرہیز گار ہیں۔ت) (۲) آلِ ابراہیم علیہ السلام میں آلِ داؤد و آلِ زکریا علیہما السلام سب داخل ولاعکس۔ (۳) جس مضمون پر قرآنِ عظیم دلالت فرمائے مدلولِ قرآنی ہے بیتی اور قلبی میں زمین و آسمان کا فرق ہے اور متشابہات میں قیاس جاری کرنا ضلالت "اٰمَنَّا بِهٖ كُلٌّ مِّنْ عِنْدِ رَبِّنَا"3۔ (ہم اس پر ایمان لائے سب ہمارے رب کے پاس سے ہے۔ت) نہ کہ من عند نفسك (تیرے نفس کے پاس سے۔ت) (۴) آل اصحاب کو بھی شامل ہے ولاعکس یہ تخصیص بعد تعمیم ہے۔

1 القرآن الکریم ۲/ ۲۵۷ 2 القرآن الکریم ۸/ ۳۴ 3 القرآن الکریم ۳/ ۷

Fatawa Razawiyya - Volume 29

(5) Allah Almighty said: "But he is the Messenger of Allah and the seal of the Prophets." [Quran 33:40] Yes, He is the Messenger of Allah and the last of all Prophets. (T)

And the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said: "A group of my Ummah will continue to prevail upon the truth. They will not be harmed by those who forsake them or oppose them until the command of Allah comes while they are in that state." And Allah Almighty knows best. A group of my Ummah will always remain on the truth; those who intend to humiliate them and those who oppose them will not be able to harm them. This will continue until the command of Allah (Resurrection) comes while they are firm on the truth. And Allah Almighty knows best. (T)

Problem 212: From Thana Fatehpur Chaurasi, District Unnao. Sent by Ali Ahmad Khan Sahib, Head Clerk, 23rd Jumada al-Ula 1338 AH. What do the scholars of religion say in this matter: Zaid had a third daughter, and since that day Zaid is extremely worried. Most people say that a third daughter is not auspicious, while a third son is fortunate and good. Zaid inquired from a gentleman, who replied that all these beliefs are fabricated by Hindus and women. He advised that if Zaid has any apprehension, he should give charity, sacrifice a cow or seven goats, and offer 'Tosha' (devotional food offering) in the name of the King of Baghdad (Sheikh Abdul Qadir Gilani), may Allah be pleased with him. By the grace of Ghaus-ul-Azam (may Allah be pleased with him), Allah Almighty will protect him from every kind of calamity and ill omen. There are two types of Tosha. One is 'Khushk Gilani' (Dry Gilani): Rice (5 masha), clarified butter (5 masha), sugar (5 masha), dried fruits (5 masha), cow's milk (5 masha), saffron (5 tola), rose water (one bottle), kewra (one bottle), green cardamom (5 masha), cloves (3 tola).

1. Al-Quran al-Kareem 33/40
2. Al-Durr al-Manthur citing Muslim, Tirmidhi, and Ibn Majah under the verse 'Wa lau la daf'u Allahi al-nasa...' Maktaba Ayatollah al-Uzma, Qum, Iran 1/321; Sahih Muslim, Kitab al-Imarah, Chapter: The Prophet's (pbuh) saying 'A group of my Ummah will continue...', Qadeemi Kutub Khana, Karachi 2/237. Page 645 of 750

फ़तावा रज़विया - जिल्द 29

(5) अल्लाह अज़्ज़-व-जल्ल ने फ़रमाया: "व-النَّبِيّٖنَ وَ خَاتَمَ اللهِ لاکن رسُولَ" [क़ुरान 33:40] हाँ, वह अल्लाह तआला के रसूल हैं और सब नबियों में आख़िरी। (त)

और नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "لا تزال طائفة من امتی ظاهرين علی الحق لا يضرهم من خذلهم ولا خالفهم حتی يأتی امر الله وهم علی ذلك۔" वल्लाहु तआला अअलम। मेरी उम्मत का एक गिरोह हमेशा हक़ पर रहेगा, उनकी रुसवाई का इरादा करने वाला और उनका मुख़ालिफ़ उनको नुक़सान नहीं पहुँचा सकेगा। यहाँ तक कि अल्लाह तआला का अम्र (क़यामत) आ जाए दरआं हालिके वे हक़ पर क़ायम होंगे। और अल्लाह तआला ख़ूब जानता है। (त)

मसला 212: अज़ थाना फ़तेहपुर चौरासी ज़िला उन्नाव। मुरसला अली अहमद ख़ान साहब हेड मुहर्रिर 23 जमादी अल-ऊला 1338 हिजरी। क्या फ़रमाते हैं उलेमा-ए-दीन इस मसले में कि ज़ैद के तीसरी लड़की हुई, उस दिन से ज़ैद निहायत परेशान है। अक्सर लोग कहते हैं कि तीसरी लड़की अच्छी नहीं होती, तीसरा लड़का नसीब वर और अच्छा होता है। ज़ैद ने एक साहब से दरयाफ़्त किया, उन्होंने फ़रमाया ये सब बातें अहल-ए-हनूद और औरतों की बनाई हुई हैं। अगर तुम को वहम हो तो सदक़ात कर दो, एक गाय या सात बकरियाँ क़ुरबानी कर दो और तोशा शाहंशाह-ए-बग़दाद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कर दो, हक़ तआला बसदक़ा सरकार-ए-ग़ौसियत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हर तरह की बला और नुहूसत से महफ़ूज़ रखेगा। तोशा दो हैं। एक खुश्क गिलानी: बिरंज (5 माशा), रोग़न-ए-ज़र्द (5 माशा), शकर (5 माशा), मेवा (5 माशा), शीर-ए-गाऊ (5 माशा), जाफ़रान (5 तोला), गुलाब (एक बोतल), केवड़ा (एक बोतल), इलायची खुर्द (5 माशा), लौंग (3 तोला)।

1. अल-क़ुरान अल-करीम 33/40
2. अल-दुर्र अल-मन्सूर बहवाला मुस्लिम व तिर्मिज़ी व इब्ने माजा तहत आयत 'व-لولا دفع الله الناس...' मकतबा आयतुल्लाह अल-उज़मा क़ुम ईरान 1/321; सहीह मुस्लिम किताब अल-इमारा बाब क़ौलुहू सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम 'لا تزال طائفة من امتی...', क़दीमी कुतुब ख़ाना कराची 2/237. पेज 645 ऑफ़ 750

(۵) اللہ عزوجل نے فرمایا: "وَلٰكِنْ رَّسُولَ اللّٰهِ وَ خَاتَمَ النَّبِيّٖنَ"ط-۱ ہاں وہ اللہ تعالٰی کے رسول ہیں اور سب نبیوں میں پچھلے۔ (ت)

اور نبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے فرمایا: "لا تزال طائفة من امتی ظاهرين على الحق لا يضرهم من خذلهم ولا خالفهم حتى يأتى امر الله وهم على ذلك۔ ۲واللہ تعالٰی اعلم۔" میری اُمت کا ایک گروہ ہمیشہ حق پر رہے گا، ان کی رُسوائی کا ارادہ کرنے والا اور ان کا مخالف ان کو نقصان نہیں پہنچا سکے گا۔ یہاں تک کہ اللہ تعالٰی کا امر (قیامت) آجائے درآں حالیکہ وہ حق پر قائم ہوں گے۔ اور اللہ تعالٰی خوب جانتا ہے۔ (ت)

مسئلہ ۲۱۲: از تھانہ فتح پور چوراسی ضلع اناؤ۔ مرسلہ علی احمد خان صاحب ہیڈ محرر ۲۳ جمادی الاولٰی ۱۳۳۸ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید کے تیسری لڑکی ہوئی ، اس دن سے زید نہایت پریشان ہے۔ اکثر لوگ کہتے ہیں کہ تیسری لڑکی اچھی نہیں ہوتی تیسرا لڑکا نصیب ور اور اچھا ہوتا ہے۔ زید نے ایک صاحب سے دریافت کیا انہوں نے فرمایا یہ سب باتیں اہل ہنود اور عورتوں کی بنائی ہوئی ہیں اگر تم کو وہم ہو صدقات کردو ایک گائے یا سات بکریاں قربانی کر دو اور توشہ شاہنشاہ بغداد رضی اللہ تعالٰی عنہ کردو ، حق تعالٰی بتصدق سرکار غوثیت رضی اللہ تعالٰی عنہ ہر طرح کی بلا و نحوست سے محفوظ رکھے گا۔ توشہ دو ہیں۔ ایک خشک گیلانی : برنج (۵ ما)، روغن زرد (۵ ما)، شکر (۵ ما)، میوہ (۵ ما) شیر گاؤ (۵ ما) زعفران (۵ تولہ)، گلاب (ایک بوتل)، کیوڑا (ایک بوتل) الائچی خورد (۵ ما)، لونگ (۳ تولہ)۔

۱ القرآن الکریم ۳۳ / ۴۰ ۲ الدرالمنثور بحوالہ مسلم والترمذی و ابن ماجہ تحت آیۃ ولولا دفع اللہ الناس الخ مکتبہ آیۃ اللہ العظمیٰ قم ایران ۱ / ۳۲۱، صحیح مسلم کتاب الامارۃ باب قولہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم لا تزال طائفۃ من امتی قدیمی کتب خانہ کراچی ۲ / ۲۳۷ Page 645 of 750

Fatawa Ridawiyya Volume 29

...cook it and perform the Niyaz of the Emperor of Baghdad (Radi Allahu Ta'ala Anhu) and distribute it among Muslims. The second halwa should be prepared as follows: Wheat flour (5 parts), yellow oil/ghee (5 parts), sugar (5 parts), fruit/nuts (5 parts). After cooking the halwa, apply kewra, rose water, and silver foil, perform Fatiha, and distribute it. It is not good for it to be less than five seers; more is up to your discretion. Since Zaid and his wife are followers of yours, you are being troubled to clarify whether these things are correct or wrong. Please prescribe some charities (sadaqat) so that Zaid can comply with them, as these charities would cost a total of one hundred rupees, while Zaid's salary is only seventy rupees, or please reduce the amount of these charities.

Answer: These are purely false and feminine superstitions and devilish Hindu ideas; following them is forbidden (haram). Confirmation (Tasdeeq) and offering (Tosha) to the Eternal Master (Radi Allahu Ta'ala Anhu) is a very good thing, but it is not permissible with the intention of warding off ill-luck, because that would mean acknowledging the existence of such ill-luck and accepting a doubt instilled by the devil, may Allah protect us. Whenever such fears and whispers arise, I write a few brief and immensely beneficial prayers from the Holy Quran and the noble Hadith for them. You and your family members should read them once or more. If the heart becomes firm and the superstition vanishes, well and good; otherwise, whenever that whisper arises, read them once and be certain that the promises of Allah and His Messenger are true, and the frightening of the accursed devil is a lie. Within a few times, by the help of Allah Almighty, that superstition will be completely eradicated and absolutely no harm will ever come from it. Those prayers are:

- "Nothing will reach us except what Allah has written for us; He is our protector, and upon Allah let the believers rely." [1] Urdu Translation: Nothing will reach us except what Allah has written for us; He is our Master, and it is necessary to trust in Allah alone.
- "Allah is sufficient for us, and He is an excellent Disposer of affairs." [2] Urdu Translation: Allah is sufficient for us, and what an excellent disposer He is.

[1] Al-Quran Al-Kareem 9:51 [2] Al-Quran Al-Kareem 3:173

फतवा रज़विया जिल्द 29

...इसे पकाकर बगदाद के शहंशाह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की नियाज़ करके मुसलमानों में बाँट दिया जाए। दूसरा हलवा इस प्रकार हो: मैदा (5 भाग), पीला तेल/घी (5 भाग), चीनी (5 भाग), मेवे (5 भाग)। हलवा पकाकर केवड़ा, गुलाब, चाँदी का वर्क लगाकर फातिहा देकर बाँट दिया जाए। पाँच सेर से कम होना अच्छा नहीं है, अधिक की छूट है। चूँकि ज़ैद और उनकी पत्नी आपके अनुयायी हैं, इसलिए आपको कष्ट दिया जा रहा है कि ये बातें सही हैं या गलत। आप कुछ सदकात (दान) लिख दें ताकि ज़ैद उनका पालन कर सके क्योंकि इन सदकात में कुल एक सौ रुपये खर्च होंगे, जबकि ज़ैद का वेतन केवल सत्तर रुपये है, या इन सदकात में कुछ कमी फरमा दें।

उत्तर: ये पूरी तरह से असत्य, महिलाओं के अंधविश्वास और हिंदू शैतानी विचार हैं; इनका पालन करना हराम (वर्जित) है। तस्दीक और तोशा सरकार-ए-अब्द-करार रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बहुत अच्छी चीज़ है, लेकिन इस नीयत से कि इसकी नहूसत (अपशकुन) दूर हो जाए, जायज़ नहीं है क्योंकि इसमें उस नहूसत को मान लेना और शैतान के डाले हुए वहम को स्वीकार करना शामिल है, अल्लाह की पनाह। इस प्रकार के खतरे और वसवसे जब भी पैदा हों, उनके लिए कुरान करीम और हदीस शरीफ से कुछ संक्षिप्त और अत्यधिक लाभकारी दुआएं लिखता हूँ, उन्हें आप और आपके घर वाले एक-एक बार या अधिक पढ़ लें। यदि दिल मजबूत हो जाए और वह वहम चला जाए तो बेहतर है, अन्यथा जब भी वह वसवसा पैदा हो, एक-एक बार पढ़ लें और यकीन रखें कि अल्लाह और उसके रसूल के वादे सच्चे हैं और शापित शैतान का डराना झूठा है। कुछ ही बार में अल्लाह तआला की मदद से वह वहम बिल्कुल दूर हो जाएगा और वास्तव में कभी किसी प्रकार का कोई नुकसान नहीं होगा। वे दुआएं ये हैं:

- "हमें वही पहुँचेगा जो अल्लाह ने हमारे लिए लिख दिया है; वह हमारा रक्षक है, और अल्लाह ही पर ईमान वालों को भरोसा करना चाहिए।" [1] उर्दू अनुवाद: हमें वही पहुँचेगा जो अल्लाह ने हमारे लिए लिख दिया है, वह हमारा मौला है, और अल्लाह ही पर भरोसा करना लाज़िम (अनिवार्य) है।
- "अल्लाह हमारे लिए पर्याप्त है और वह कितना अच्छा कार्यसाधक है।" [2] उर्दू अनुवाद: अल्लाह हमें काफी है और क्या ही अच्छा बनाने वाला (कार्यसाधक) है।

[1] अल-कुरान अल-करीम 9:51 [2] अल-कुरान अल-करीम 3:173

اس کو پکا کر نیاز شہنشاہ بغداد رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی کر کے مسلمانوں کو تقسیم کر دیا جائے دوسرا حلوہ اس طرح کہ : میدہ گندم (۵ مبا)، روغن زرد (۵ مبا) شکر (۵ مبا) میوہ (۵ مبا) حلوہ پکا کر کیوڑا، گلاب، ورق نقرہ لگا کر فاتحہ دے کر تقسیم کر دیا جائے۔ پانچ سیر سے کم ہونا اچھا نہیں زیادہ کا اختیار ہے۔ چونکہ زید اور اس کی اہلیہ متبع حضور کے ہیں اس وجہ سے حضور کو تکلیف دی جاتی ہے کہ یہ باتیں صحیح ہیں یا غلط آپ کچھ صدقات تحریر فرما دیجئے تاکہ ان کی تعمیل زید کر سکے کیونکہ ان صدقات میں مبلغ ایک سو روپے صرف ہوں گے اور زید کی تنخواہ صرف ۷۰ روپے ہے یا ان صدقات میں کمی فرمادیں۔

الجواب: یہ محض باطل اور زنانہ اوہام اور ہندوانہ خیالات شیطانیہ ہیں ان کی پیروی حرام ہے۔ تصدیق اور توشہ سرکار ابد قرار رضی اللہ تعالیٰ عنہ بہت اچھی چیز ہے مگر اس نیت سے کہ اس کی نحوست دفع ہو جائز نہیں کہ اس میں اس کی نحوست مان لینا ہوا اور یہ شیطان کا ڈالا ہوا وہم تسلیم کر لینا ہوا والعیاذ باللہ تعالیٰ ، اس قسم کے خطرے وسوسے جب بھی پیدا ہوں اُن کے واسطے قرآن کریم و حدیث شریف سے چند مختصر و بیشمار نافع دعائیں لکھتا ہوں انہیں ایک ایک بار خواہ زائد آپ اور آپ کے گھر میں پڑھ لیں۔ اگر دل پختہ ہو جائے اور وہ وہم جاتا رہے بہتر ورنہ جب وہ وسوسہ پیدا ہو ایک ایک دفعہ پڑھ لیجئے اور یقین کیجئے کہ اللہ و رسول کے وعدے سچے

ہیں اور شیطان ملعون کا ڈارنا جھوٹا۔ چند بار میں بعونہ تعالیٰ وہ وہم بالکل زائل ہو جائے گا اور اصلاً کبھی کسی طرح اس سے کوئی نقصان نہ پہنچے گا۔ وہ دعائیں یہ ہیں:

- "لَّن يُصِيبَنَا إِلَّا مَا كَتَبَ اللَّهُ لَنَا هُوَ مَوْلَانَا ۚ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ۝" 1 ہمیں نہ پہنچے گی مگر جو ہمارے لیے اللہ نے لکھ دی وہ ہمارا مولیٰ، اور اللہ ہی پر بھروسا کرنا لازم۔
- "حَسْبُنَا اللَّهُ وَنِعْمَ الْوَكِيلُ ۝" 2 اللہ ہمیں کافی ہے اور کیا اچھا بنانے والا۔

1 القرآن الکریم ۵۱/۹ 2 القرآن الکریم ۱۷۳/۳

Allahum-ma la ya’ti bil hasanati illa anta wa la yazhabus sayyi-ati illa anta wa la hawla wa la quwwata illa bika 1.	**O Allah! None brings good things except You, and none removes evil things except You, and there is no power or strength except from You.**
Allahum-ma la taira illa tairuka wa la khaira illa khairuka wa la ilaha ghairuka 2.	O Allah! Your omen is the [true] omen, and Your goodness is the [only] goodness, and there is no deity except You.

This "Tosha" (offering) that they mentioned is an extremely useful thing and proven for the fulfillment of needs. The method among the masters of our family is as follows: Wheat flour (5 ma), Sugar (5 ma), Ghee (5 ma), Almond kernels (1 ma), Pistachios (1 ma), Raisins (1 ma), Coconut (1 ma). Cloves, Cinnamon, Green Cardamom, one and a quarter "Chhatank" each. Perform the Niyaz (offering) of the Prophet (peace be upon him), feed it to the pious people, and ask them to pray for your objective. These are the original weights; there is discretion to increase or decrease them according to one's capacity. Half, a quarter, an eighth part, or whatever is destined, will give the same effect. And Allah Almighty knows best.

Problem 213: From Madrasah Nu'maniyah Islamiyah, Farashkhana locality, Delhi, asked by Muhammad Ibrahim Ahmad Abadi, 8 Shaban 1339 AH. What do the scholars of the firm religion say on this matter: what is the definition of worship, the performance of which for anyone other than Allah (Almighty and Majestic) makes a person a polytheist (mushrik), which is comprehensive and exclusive, and consists of its genus and differentia or common accident and property?

The Answer: Imam Lamishi, then Abu al-Sa'ud al-Azhari, then Sayyid Ahmad al-Tahtawi, then Sayyid Muhammad al-Shami say:

| Al-Ibadatu 'ibaratu 'anil khudu'i wat-tadhalluli wahdaha fi'lun la yuradu | Worship is the name for extreme humility and submissiveness; its definition is that it is such an act... |

1. Kanz al-Ummal, Hadith 28582, Muassasatu ar-Risalah, Beirut, 10/116
2. Kanz al-Ummal, Hadith 28580, Muassasatu ar-Risalah, Beirut, 10/115

अल्लाहुम्मा ला या'ती बिल हसनाती इल्ला अंता वला यज़हबुस सय्यिआती इल्ला अंता वला हौला वला कुव्वता इल्ला बिका 1.	**ऐ अल्लाह! तेरे सिवा कोई अच्छी बातें नहीं लाता और तेरे सिवा कोई बुरी बातें दूर नहीं करता, और तेरे सिवा कोई ज़ोर और ताक़त नहीं है मगर तेरी तरफ से।**
अल्लाहुम्मा ला तैरा इल्ला तैरुका वला खैरा इल्ला खैरुका वला इलाहा ग़ैरुक़ा 2.	ऐ अल्लाह! तेरी फाल ही फाल है और तेरी ही खैर, खैर है और तेरे सिवा कोई माबूद नहीं।

यह तोशा जो उन्होंने बताया, निहायत मुफीद चीज़ है और हाजतें पूरी होने के लिए मुजर्रब (परखा हुआ) है। हमारे खानदान के मशाइख़ में इसकी तरकीब यूँ है: मैदा गंदम (5 मा), शक्कर (5 मा), घी (5 मा), मगज़ बादाम (1 मा), पिस्ता (1 मा), किशमिश (1 मा), नारियल (1 मा)। लौंग, दालचीनी, छोटी इलायची हर एक सवा छटांक। हुज़ूर की नियाज़ देकर सालेहीन (नेक लोगों) को खिलाए और अपने मतलब की दुआ कराए। असल वज़न ये हैं, बक़दरे कुदरत इनमें कमी बेशी का इख़्तियार है। आधा, चौथाई, आठवां हिस्सा या जितना मुक़द्दर हो, वही असर देगा। वल्लाहु तआला आलम (अल्लाह सबसे बेहतर जानता है)।

मसला 213: मदरसा नेअमानिया इस्लामिया, मुहल्ला फ़राशखाना दिल्ली से, साइल मोहम्मद इब्राहिम अहमद आबादी, 8 शाबान 1339 हिजरी। उलमा-ए-दीन-ए-मतीन इस मसले में क्या फरमाते हैं कि 'इबादत', जिसे अल्लाह तआला के सिवा किसी और के लिए करने से आदमी मुशरिक हो जाता है, उसकी क्या तारीफ (परिभाषा) है जो जामे और माने हो और अपनी जिन्स व फसल या अरज़-ए-आम और खासा पर मुश्तमिल हो?

अल-जवाब: इमाम लामिशी, फिर अबुल सऊद अज़हरी, फिर सैय्यद अहमद तहातावी, फिर सैय्यद मोहम्मद शामी फरमाते हैं:

| अल-इबादतु इबारातुन अनिल खुदुइ वत-तज़ल्लुली वहदहा फेलुन ला युरादु | इबादत इंतिहाई आज़िज़ी और इंकिसारी का नाम है, इसकी परिभाषा यह है कि वह एक ऐसा फेल (कार्य) है जिसका इरादा... |

1. कंजुल उम्माल, हदीस 28582, मुअस्ससतु अर-रिसाला, बेरुत, 10/116

2. कंजुल उम्माल, हदीस 28580, मुअस्ससतु अर-रिसाला, बेरुत, 10/115

पेज 647 का 750

اللھم لا یاتي بالحسنات الا انت ولا یذھب السیئات الا انت ولا حول ولا قوۃ الا بك 1- **الٰہی! اچھی باتیں کوئی نہیں لاتا تیرے سوا اور بری باتیں کوئی دور نہیں کرتا تیرے سوا اور کوئی زور طاقت نہیں مگر تیری طرف سے۔**

اللھم لا طیر الا طیرك ولا خیر الا خیرك ولا الہ غیرك 2- الٰہی تیری فال فال ہے اور تیری ہی خیر ، خیر اور تیری سوا کوئی معبود نہیں۔

یہ توشہ کہ انہوں نے بتایا نہایت مفید چیز ہے اور حاجتیں بر لانے کے لیے مجرب ، ہمارے خاندان کے مشائخ میں اس کی ترکیب یوں ہے۔ میدہ گندم (۵ ما)، شکر (۵ ما)، گھی (۵ ما) مغز بادام (۱ ما)، پستہ (۱ ما)، کشمش (۱-ما) ناریل (۱ ما)۔ لونگ ، دار چینی، چھوٹی الائچی ہر ایک سوا چھٹانک۔ حضور کی نیاز دے کر صالحین کو کھلائے اور اپنے مطلب کی دُعا کرائے۔ اصل وزن یہ ہیں، بقدرِ قدرت ان میں کمی بیشی کا اختیار ہے۔ نصف ، چوتھائی ، آٹھواں حصہ یا جتنا مقدر ہو ہو کرے وہی اثر دے گا واللہ تعالی اعلم۔

مسئلہ ۲۱۳: از مدرسہ نعمانیہ اسلامیہ محلہ فراشخانہ دہلی ، مسئولہ محمد ابراہیم احمد آبادی ۸ شعبان ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین متین اس مسئلہ میں کہ عبادت جس کے غیر خدا عز و جل کو کرنے سے آدمی مشرک ہو جاتا ہے اس کی کیا تعریف ہے جو جامع اور مانع ہو اور اپنی جنس و فصل یا عرض عام اور خاصہ پر مشتمل ہو۔

الجواب: امام لامشی پھر ابوالسعود ازہری پھر سید احمد طحطاوی پھر سید محمد شامی فرماتے ہیں:

| العبادة عبارة عن الخضوع و التذلل وحدها فعل لا يراد | عبادت انتہائی عاجزی اور انکساری کا نام ہے، اس کی تعریف یہ ہے وہ ایک ایسا فعل ہے |

1 کنز العمال حدیث ۲۸۵۸۲ موسسۃ الرسالہ بیروت ۱۰ / ۱۱۶ 2 کنز العمال حدیث ۲۸۵۸۰ موسسۃ الرسالہ بیروت ۱۰ / ۱۱۵

Fatawa Razawiyya Volume 29

[Box 1] Arabic: 1^به الا تعظیم الله تعالی بامره Urdu: By it, nothing is intended except the glorification of Allah Almighty by His command. (T)

Imam Shaykh al-Islam Zakariya Ansari, then Allama Sayyid Ahmad Hamwi in Ghamz al-Uyun, and also Allama Shami in Radd al-Muhtar state: [Box 2] Arabic: العبادة ما یثاب 2^علی فعله ویتوقف علی نیته Urdu: Worship is that for whose performance a reward is given, and it is dependent on the intention of reward. (T)

Also in Sharh al-Ashbah wa'n-Naza'ir: [Box 3] Arabic: العبادة ما یعبد به بشرط النیة ومعرفة 3^المعبود Urdu: Worship is that act through which servitude is expressed, provided there is an intention for reward and a recognition of the One worshipped. (T)

In the Definitions of Allama Sayyid Sharif: [Box 4] Arabic: العبادة هو فعل المکلف علی 4^خلاف هوی نفسه تعظیماً لربه Urdu: Worship is an act of a legally responsible person performed against their own base desires for the glorification of their Lord. (T)

In the Mufradat of Imam Raghib: [Box 5] Arabic: العبودیة اظهار التذلل والعبادة ابلغ منها 5^لانها غایة التذلل ولا یستحقها الا من له غایة الافضال وهو الله تعالی ولهذا قال لا تعبدوا الا ایاه Urdu: Servitude (Abudiyyah) is the manifestation of humility and self-abasement, and worship (Ibadah) is more profound than it because it signifies the ultimate degree of humility. Therefore, none is worthy of worship except the One who possesses the ultimate grace, and He is Allah Almighty. This is why He said: "Worship none but Him". (T)

[Footnotes] 1. Hashiyah al-Tahtawi 'ala al-Durr al-Mukhtar, Muqaddimah al-Kitab, Al-Maktabah al-Arabiyyah Quetta 1/44 2. Ghamz 'Uyun al-Basa'ir ma'a al-Ashbah wa'n-Naza'ir, al-Fann al-Awwal, al-Qa'idah al-Ula, Idarat al-Qur'an Karachi 1/44 3. Ghamz 'Uyun al-Basa'ir ma'a al-Ashbah wa'n-Naza'ir, al-Fann al-Awwal, al-Qa'idah al-Ula, Idarat al-Qur'an Karachi 1/44 4. Kitab al-Ta'rifat, Bab al-'Ayn, Matba'ah al-Khayriyyah al-Munsha'ah bi-Jamaliyah Egypt, 63 5. Al-Mufradat fi Ghara'ib al-Qur'an, al-'Ayn, Karkhana Tijarat Kutub Karachi p. 321

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

[बॉक्स 1] अरबी: 1^ما امره بالله تعالى تعظيم الا به उर्दू: जिससे अल्लाह तआला के हुक्म से उसकी ताज़ीम (महिमा) के सिवा कुछ और मुराद नहीं होता। (त)

इमाम शैखुल इस्लाम ज़करिया अंसारी, फिर अल्लामा सैय्यद अहमद हमवी 'ग़म्ज़ुल उयून' में और अल्लामा शामी 'रद्दुल मुख्तार' में फ़रमाते हैं: [बॉक्स 2] अरबी: العبادة ما يثاب على فعله 2^ويتوقف على نيته उर्दू: इबादत वह है जिसके करने पर सवाब (पुण्य) दिया जाता है और वह सवाब की नीयत पर निर्भर होती है। (त)

साथ ही 'शरह अल-अशबाह वन-नज़ायर' में है: [बॉक्स 3] अरबी: العبادة ما يعبد به بشرط النية 3^ومعرفة المعبود उर्दू: इबादत वह काम है जिसके ज़रिए बंदगी का इज़हार किया जाता है, बशर्ते कि सवाब की नीयत हो और माबूद (पूजनीय) की पहचान हासिल हो। (त)

अल्लामा सैय्यद शरीफ़ की परिभाषाओं में है: [बॉक्स 4] अरबी: العبادة هو فعل المكلف على 4^خلاف هوى نفسه تعظيماً لربه उर्दू: इबादत मुकल्लफ़ (उत्तरदायी व्यक्ति) का वह काम है जो वह अपने रब की ताज़ीम के लिए अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिश के ख़िलाफ़ करे। (त)

इमाम राग़िब के मुफ़्रदात में है: [बॉक्स 5] अरबी: العبودية اظهار التذلل والعبادة ابلغ منها لانها غاية التذلل ولا يستحقها الا من له غاية الافضال وهو الله تعالى ولهذا قال لا تعبدوا الا 5^ایاہ। उर्दू: उबूदियत (दासता) अपनी बेबसी और दीनता को ज़ाहिर करना है, और इबादत उससे ज़्यादा प्रभावशाली है, क्योंकि वह अत्यंत आज़िज़ी और दीनता का नाम है। चुनाँचे इबादत का हक़दार उसके सिवा कोई नहीं हो सकता जो अत्यंत फ़ज़्ल (कृपा) वाला हो और वह अल्लाह तआला है। इसीलिए उसने फ़रमाया है कि: 'सिर्फ उसी की इबादत करो'। (त)

[फ़ुटनोट्स] 1. हाशिया अल-तहतावी अल-दुर्र अल-मुख्तार, मुकद्दमत अल-किताब, अल-मकतब अल-अरबिय्यह क्वेटा 1/44 2. ग़म्ज़ उयून अल-बसार मा अल-अशबाह वन-नज़ायर, अल-फ़न अल-अव्वल, अल-क़ायदा अल-ऊला, इदारत अल-क़ुरआन कराची 1/44 3. ग़म्ज़ उयून अल-बसार मा अल-अशबाह वन-नज़ायर, अल-फ़न अल-अव्वल, अल-क़ायदा अल-ऊला, इदारत अल-क़ुरआन कराची 1/44 4. किताब अल-तारीफ़ात, बाब अल-ऐन, मतबअ अल-ख़ैरिय्या, मिस्र 63 5. अल-मुफ़्रदात फ़ी ग़राइब अल-क़ुरआन, अल-ऐन, कारखाना तिजारत कुतुब कराची पृष्ठ 321

فتاوی رضویہ جلد ۲۹

[پہلا خانہ] عربی: به الا تعظیم الله تعالی بامره^1 اردو: جس سے الله تعالیٰ کے حکم سے اس کی تعظیم کے بغیر کچھ بھی مراد نہیں ہوتا۔ (ت)

امام شیخ الاسلام زکریا انصاری پھر علامہ سید احمد حموی غمز العیون نیز علامہ شامی ردالمختار میں فرماتے ہیں: [دوسرا خانہ] عربی: العبادة ما یثاب علی فعله ویتوقف علی نیته^2 اردو: عبادت وہ ہے کہ جس کے کرنے پر ثواب دیا جاتا ہے اور وہ ثواب کی نیت پر موقوف ہوتی ہے۔ (ت)

نیز شرح الاشباہ والنظائر میں ہے: [تیسرا خانہ] عربی: العبادة ما یعبد به بشرط النیة ومعرفة المعبود^3 اردو: عبادت وہ فعل ہے جس کے ذریعے بندگی کا اظہار کیا جاتا ہے بشرطیکہ ثواب کی نیت ہو اور معبود کی معرفت حاصل ہو۔ (ت)

تعریفات علامہ سید شریف میں ہے: [چوتھا خانہ] عربی: العبادة هو فعل المکلف علی خلاف هوی نفسه تعظیماً لربه^4 اردو: عبادت مکلف کا وہ فعل ہے جو وہ اپنے رب کی تعظیم کے لیے اپنے نفس کی خواہش کے خلاف کرے۔ (ت)

مفردات امام راغب میں ہے: [پانچواں خانہ] عربی: العبودیة اظهار التذلل والعبادة ابلغ منها لانها غایة التذلل ولا یستحقها الا من له غایة الافضال وهو الله تعالی ولهذا قال لا تعبدوا الا ایاه^5 اردو: عبودیت، عجز و رسوائی کو ظاہر کرنا ہے، اور عبادت اس سے زیادہ بلیغ ہے، کیونکہ وہ انتہائی عاجزی اور رسوائی کا نام ہے، چنانچہ عبادت کا مستحق اس کے سوا کوئی نہیں ہو سکتا جو انتہائی فضل والا ہو اور وہ الله تعالیٰ ہے۔ اسی لیے اس نے فرمایا ہے کہ مت عبادت کرو مگر صرف اسی کی۔ (ت)

[حواشی] ۱ حاشیہ الطحطاوی علی الدر المختار مقدمۃ الکتاب المکتبۃ العربیۃ کوئٹہ ۱/ ۴۴ ۲ غمز عیون البصائر مع الاشباہ والنظائر الفن الاول القاعدۃ الاولی ادارۃ القرآن کراچی ۱/ ۴۴ ۳ غمز عیون البصائر مع الاشباہ والنظائر الفن الاول القاعدۃ الاولی ادارۃ القرآن کراچی ۱/ ۴۴ ۴ کتاب التعریفات باب العین مطبعۃ الخیریۃ المنشاۃ بجمالیۃ مصر ۶۳ ۵ المفردات فی غرائب القرآن العین کارخانہ تجارت کتب کراچی ص ۳۲۱

Volume 29

Fatawa Razawiya

It is quoted in Taj al-Arus:

Al-Ibadatu fi'lu ma yarda bihi al-Rabb[1]

Worship is an act by performing which the Lord is pleased. (T)

These definitions are themselves commendable. And I say: And with Allah's success (T) - worship is to perform the glorification of someone considering them worthy of the utmost limits of glorification, and with the aforementioned belief, to humble oneself before them, as well as to comply with their command as it is their command. Recording this definition and detailing the merits and demerits of those definitions would cause lengthiness; let us point here towards some subtle points.

So I say: And from Him I seek help (T):

(1) For true worship to be for the One worthy of worship, Almighty and Majestic, it is necessary for that act to be actual glorification; the mere claim of the doer is not sufficient. In false worship, his claim alone is enough. The whistling and clapping of the polytheists was not worship of God, and their blowing of the conch and ringing of the bell before idols is worship, even if these nonsensical acts are not true glorification. Similarly, in compliance with a command, true worship is only when it is actually His command. The statement of the disbelievers, "Allah has commanded us with it"[2] (7:28), even if it is actually according to their claim, refers to that, and in false worship, only the claim is sufficient.

(2) Intention is a condition for worship and knowledge of the One worshipped is necessary, as is evident from its definition. And no disbeliever fundamentally knows the Lord, Almighty and Majestic, the research of which is in our treatise on the Chapter of Beliefs and Theology. And Imam Rastaghfani has clarified that:

Al-Kufru huwa al-jahlu bi-Allahi Ta'ala[3]

Disbelief is not to know Allah the Almighty (T)

Therefore, a disbeliever is neither a person of intention nor a person of true worship, "as all have explicitly stated." (T) And the polytheist performs false worship by imagining his false deity and performing it for it.

[1] Taj al-Arus Sharh al-Qamus, Chapter Ayn, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/410 [2] The Holy Quran, 7/28 [3]

खण्ड 29

फ़तावा रज़विया

'ताजुल उरूस' में उद्धृत किया गया है:

'अल-इबादतु फ़ेलु मा यरज़ा बिहिल रब्ब'[1] (इबादत वह कर्म है जिससे रब प्रसन्न होता है)।

इबादत वह कर्म है जिसे करने पर रब राजी होता है। (त)

ये परिभाषाएँ स्वयं में सराहनीय हैं। और मैं कहता हूँ: और अल्लाह की तौफ़ीक़ से (त) - इबादत किसी को अत्यधिक सम्मान का पात्र समझकर उसका सम्मान करना है, और इसी उक्त विश्वास के साथ उसके लिए विनम्रता दिखाना, साथ ही उसकी आज्ञा का पालन करना इस हैसियत से कि वह उसकी आज्ञा है। इस परिभाषा को दर्ज करना और उन परिभाषाओं के पक्ष और विपक्ष के विवरण से बात लंबी हो जाएगी, यहाँ कुछ सूक्ष्म बिंदुओं की ओर संकेत करते हैं।

तो मैं कहता हूँ: और उसी से मैं सहायता माँगता हूँ (त):

(1) सच्ची इबादत के लिए जो इबादत के हक़दार अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल के लिए हो, उस क्रिया का वास्तव में सम्मान होना आवश्यक है, केवल कर्ता का दावा पर्याप्त नहीं है। और झूठी इबादत में उसका दावा ही पर्याप्त है। मुशरिकों का सीटियाँ और तालियाँ बजाना ईश्वरीय इबादत नहीं था, और मूर्तियों के सामने शंख और घंटी बजाना इबादत है, भले ही ये व्यर्थ कार्य वास्तव में सम्मान न हों। इसी प्रकार आज्ञा के पालन में सच्ची इबादत तभी है जब वास्तव में वह उसकी आज्ञा हो। काफ़िरों का कहना "अल्लाह ने हमें इसका आदेश दिया है"[2] (7:28), भले ही वास्तव में उनके दावे में भी हो, उसका तात्पर्य वही है और झूठी इबादत में केवल दावा ही पर्याप्त है।

(2) इबादत के लिए नीयत शर्त है और माबूद (उपास्य) की पहचान अनिवार्य है, जैसा कि इसकी परिभाषा से स्पष्ट है। और कोई काफ़िर मूलतः रब अज़्ज़ व जल्ल को नहीं जानता, जिसका शोध हमारे रिसाला 'बाबुल अक़ायद वल कलाम' में है। और इमाम रस्तग़फ़नी ने स्पष्ट किया है कि:

'अल-कुफ़्रु हुवल जहलु बिल्लाहि तआला'[3] (कुफ़्र यह है कि अल्लाह तआला को न जाना जाए)।

कुफ़्र यह है कि अल्लाह तआला को न जाना जाए। (त)

इसलिए काफ़िर न नीयत वाला है और न सच्ची इबादत वाला, "जैसा कि सभी ने इस पर स्पष्ट राय दी है।" (त) और मुशरिक झूठी इबादत करता है कि अपने झूठे माबूद की कल्पना करके उसकी—

1. ताजुल उरूस शरहुल क़ामूस, फ़स्ल अल-ऐन, दारुल इहयाउत तुरासुल अरबी, बैरूत, 2/410
2. अल-क़ुरआन अल-करीम, 7/28 3.

पेज 649/750

جلد ۲۹

فتاوی رضویہ

تاج العروس میں نقل کیا:

العبادۃ فعل مایرضی بہ الرب ۱

عبادت وہ فعل ہے جس کے کرنے پر رب راضی ہوتا ہے۔ (ت)

یہ تعریفیں بجائے خود قابلِ تعریف ہیں واناقول: وباللہ التوفیق (اور میں کہتا ہوں اللہ تعالٰی کی توفیق سے۔ت) عبادت کسی کو اقصی غایاتِ تعظیم کا مستحق جان کر اس کی تعظیم بجالانا ہے اور اسی سے باعتقاد مذکور اس کے لیے تذلل نیز اس کے امر کا امتثال اس حیثیت سے کہ اس کا امر ہے، اس تعریف کی تسجیل اور اور ان تعریفات کے مالہا و ما علیہا کی تفصیل موجبِ تطویل یہاں بعض نکت کے طرف ایما کریں۔

فاقول: وبہ استعین (تو میں کہتا ہوں اور اسی سے مدد چاہتا ہوں۔ت)

(۱) عبادت حقہ کو مستحقِ عبادت عزوجلالہ، کے لیے ہو اس میں اس فعل کا واقعی تعظیم ہونا ضرور، مجرد، زعم فاعل کافی نہیں، اور عبادتِ باطلہ میں اس کا زعم بس، مکاء و تصدیہ مشرکین عبادت الٰہی نہ تھا اور بتوں کے سامنے ان کا سنکھ اور گھنٹی بجانا عبادت، اگرچہ یہ بیہودہ افعال حقیقۃ تعظیم نہ ہوں، یونہی امتثالِ امر میں عبادت حقہ جب ہی ہے کہ واقعی وہ اس کا امر ہو، کفار کا "وَاللّٰہُ اَمَرَنَا بِہَا" ۲۔ (اللہ نے ہمیں اس کا حکم دیا۔ت) کہنا اگر واقعی ان کے زعم میں بھی ہو مراد وہی اور عبادتِ باطلہ میں صرف زعم کافی۔

(۲) عبادت کے لیے نیت شرط ہے اور معرفتِ معبود لازم، جیسا کہ اس کی تعریف سے ظاہر ہے، اور کوئی کافر اصلاً رب عزوجل کو نہیں جانتا جس کی تحقیق ہمارے رسالہ باب العقائد والکلام میں ہے۔ اور امام رستغفنی نے تصریح فرمائی کہ:

الکفر ھو الجھل باللہ تعالیٰ ۳۔

کفر یہ ہے کہ اللہ تعالیٰ کو نہ جانے (ت)

ولہٰذا کافر نہ اہل نیت ہے نہ اہل عبادت حقہ "، کما نصوا علیہ قاطبۃ جیسا کہ اس پر سب نے نص فرمائی۔ (ت) اور مشرک عبادتِ باطلہ کرتا ہے کہ اپنے معبودِ باطل کا تصور کرکے اس کی

۱ تاج العروس شرح القاموس فصل العین دار احیاء التراث العربی بیروت ۲/ ۴۱۰ ۲ القرآن الکریم ۳ ۲۸ /۷

...intends to glorify.

(3) In false worship, the commitment to worship and the claim of divinity for something other than God is a clear proof of considering it worthy of the utmost limits of glorification, even if the perpetrator stubbornly denies it, saying: "We only worship them so that they may bring us nearer to Allah."[1] (We worship them only for this purpose that they may make us close to Allah. - Trans.) The Lord Almighty refutes them, saying: "Then those who disbelieve equate others with their Lord."[2] (Then the disbelievers were setting equals to their Lord. - Trans.) The polytheists themselves will confess on the Day of Judgment:

"When we equated you with the Lord of all the worlds."[3] (When we made you equal to the Lord of the worlds. - Trans.)

(4) Some actions are inherently designated for worship. Performing them with the intention of glorifying someone other than God, and doing so with this false intention, will absolutely lead to a ruling of polytheism (shirk), such as prayer (salat) and fasting (sawm). Otherwise, it depends on the intention of worship, like prostration (sujud), which is not worship in itself. Therefore, apart from the four prostrations (of prayer, forgetfulness, recitation, and gratitude), prostration without a specific reason is merely permissible according to the Hanafis, as stated in *Ad-Durr al-Mukhtar* (as it is in *Ad-Durr al-Mukhtar*. - Trans.) and according to the Shafi'is, it is forbidden, as stated in *Al-Jawhar al-Munazzam* by Imam Ibn Hajar al-Makki (as it is in *Al-Jawhar al-Munazzam* for Imam Ibn Hajar al-Makki. - Trans.). Thus, prostration to other than God as an act of worship is disbelief (kufr), while a prostration of greeting/respect (sajdah tahiyyat) is forbidden (haram) and a major sin (kabirah) but not disbelief, as mentioned in *Al-Fatawa al-Hindiyya*, *Ad-Durr*, and other prominent books. We have established the research on this in our independent treatise refuting some deviants (as it is in *Al-Hindiyya* and *Ad-Durr* etc. shining books; we have carried out its research in our independent treatise refuting some misguided people. - Trans.).

(5) Worship, which linguistically means submission, is necessary for Sharia-based worship; it is not devoid of humility, even if in outward form it may not seem like humility, such as Zakat and Jihad. Regarding the ruler, commander, and subduer, and considering oneself as ruled, commanded, and subjugated, the compliance with orders is the essence of humility. However, it is not necessary to be at the extreme limits of humility; prayer involves more humility than Zakat. In fact, the prostration of

prayer involves more than its bowing (ruku), ruku more than standing (qiyam), and qiyam more than sitting (qu'ud), although all parts of prayer are worship. Yes, it is necessary to consider the object worthy of the utmost limits of glorification.

---

[1] Al-Quran al-Karim 39/3 [2] Al-Quran al-Karim 6/1 [3] Al-Quran al-Karim 26/98

फ़तावा रज़विया - जिल्द २९

...ताज़ीम (सम्मान) का इरादा रखता है।

(३) झूठी इबादत में, इबादत की प्रतिबद्धता और गैर-खुदा के लिए ईश्वरीयता का दावा ही उसे अत्यंत सम्मान (अक़्सा-ए-ग़ायात-ए-ताज़ीम) के योग्य मानने का स्पष्ट प्रमाण है, भले ही अपराधी हठपूर्वक इसे अस्वीकार करे और कहे: "हम तो उनकी पूजा केवल इसलिए करते हैं कि वे हमें अल्लाह के करीब ले आएं।"[1] (हम तो उन्हें सिर्फ इतनी बात के लिए पूजते हैं कि ये हमें अल्लाह के पास नज़दीक कर दें। - त.)। अल्लाह सर्वशक्तिमान उनका खंडन करते हुए कहता है: "फिर भी वे लोग जिन्होंने कुफ्र किया, अपने रब के बराबर (दूसरों को) ठहराते हैं।"[2] (फिर काफ़िर लोग अपने रब के बराबर ठहराते थे। - त.)। स्वयं मुशरिक (मूर्तिपूजक) कयामत के दिन स्वीकार करेंगे:

"जब हम तुम्हें संसारों के रब के बराबर ठहराते थे।"[3] (जब कि हम तुम्हें रब्बुल आलमीन के बराबर ठहराते थे। - त.)

(४) कुछ कार्य विशेष रूप से इबादत के लिए ही बनाए गए हैं। अतः गैर की ताज़ीम के इरादे से और इस गलत इरादे से उन्हें करना पूर्णतः शिर्क(बहुदेववाद) का हुक्म लाएगा, जैसे नमाज़ और रोज़ा। अन्यथा, यह इबादत के इरादे पर निर्भर करेगा, जैसे सजदा, जो अपने आप में इबादत नहीं है। इसीलिए चार सजदों (नमाज़, सहव, तिलावत और शुक्र) के अलावा बिना किसी कारण के सजदा करना हनफ़ियों के अनुसार केवल मुबाह (अनुमेय) है, जैसा कि 'दुर-ए-मुख्तार' में है (जैसा कि दर-ए-मुख्तार में है। - त.) और शाफ़ईयों के अनुसार यह हराम है, जैसा कि इमाम इब्न हजर अल-मक्की की 'अल-जौहर अल-मुनज़्ज़म' में है (जैसा कि जौहरुल मुनज़्ज़म में इमाम इब्न हजर मक्की के लिए है। - त.)। अतः गैर-खुदा के लिए इबादत के रूप में सजदा करना कुफ्र है, और सम्मान का सजदा (सजदा-ए-तहियत) हराम और कबीरा गुनाह है, कुफ्र नहीं, जैसा कि 'अल-हिंदिया', 'अद-दुर' और अन्य प्रसिद्ध पुस्तकों में है। इसकी तहकीकात हमने कुछ गुमराहों के खंडन में अपने एक स्वतंत्र रिसाले (लेख) में कर दी है (जैसा कि हिन्दिया और दुर वग़ैरह रौशन किताबों में है, इसकी तहकीक हमने बाज़ गुमराहों के रद में अपने एक मुस्तक़िल रिसाले में कर दी है। - त.)।

(५) इबादत, जिसका भाषाई अर्थ अधीनता (खुलू) है, शरीयत की इबादत के लिए अनिवार्य है। यह विनम्रता (तज़ल्लुल) से खाली नहीं है, भले ही बाहरी रूप से विनम्रता न दिखे, जैसे ज़कात और जिहाद। शासक, आदेश देने वाले और विजेता के प्रति स्वयं को शासित, आदेशित और विजित

मानकर आदेश का पालन करना ही विनम्रता है। लेकिन यह आवश्यक नहीं है कि यह विनम्रता की अंतिम सीमा हो; नमाज़ ज़कात से अधिक विनम्रता वाला कार्य है। वास्तव में, नमाज़ का सजदा उसके रुकू से, रुकू कयाम से, और कयाम कुऊद से अधिक विनम्रता वाला है, यद्यपि नमाज़ के सभी अंग इबादत हैं। हाँ, इसे अत्यंत सम्मान का पात्र मानना आवश्यक है।

---

१ अल-क़ुरआन अल-करीम ३/३९ २ अल-क़ुरआन अल-करीम १/६ ३ अल-क़ुरआन अल-करीम ९८/४६

تعظیم کا قصد رکھتا ہے۔

(۳) عبادت باطلہ میں التزام عبادت و قول بہ الوہیت غیر ہی اسے اقصیٰ غایاتِ تعظیم کا مستحق جاننے پر دلیل واضح ہے اگرچہ مرتکب عناداً منکر ہو کہ " مَا نَعْبُدُهُمْ إِلَّا لِيُقَرِّبُوْنَا إِلَى اللّٰهِ زُلْفٰى ط " ۱ (ہم تو انہیں صرف اتنی بات کے لیے پوجتے ہیں کہ یہ ہمیں اللہ کے پاس نزدیک کر دیں۔ ت) کہے۔ رب عز وجل اُن کی تکذیب فرماتا ہے کہ " ثُمَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ يَعْدِلُوْنَ " ۲ (پھر کافر لوگ اپنے رب کے برابر ٹھہراتے تھے۔ ت) خود مشرکین روزِ قیامت اعتراف کریں گے۔

" اِذْ نُسَوِّيْكُمْ بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ " ۳ (جب کہ ہم تمہیں رب العالمین کے برابر ٹھہراتے تھے۔ ت)

(۴) بعض افعال کی وضع ہی عبادت کے لیے ہے تو ان سے تعظیم غیر کا قصد اور اس قصدِ باطل سے انہیں کرنا ہی مطلقاً حکمِ شرک لائے گا جیسے صلوۃ وصوم ورنہ قصدِ عبادت پر موقوف رہے گا، جیسے سجدہ کہ فی نفسہ عبادت نہیں ولہذا سجدات اربعہ صلوۃ وسہو و تلاوت و شکر کے سوا سجدہ بے سبب حنفیہ کے نزدیک صرف مباح ہے کما فی الدر المختار (جیسا کہ در مختار میں ہے۔ ت) اور شافعیہ کے نزدیک حرام کما فی الجوھر المنظم للامام ابن حجر المکی جیسا کہ جوہر المنظم للامام ابن حجر مکی میں ہے۔ ت) ولہذا غیرِ خدا کے لیے سجدہ عبادت کفر ہوا اور سجدہ تحیت حرام و کبیرہ ہے کفر نہیں کما فی الھندیۃ والدر وغیرھما من الاسفار الغر وقد حققناہ في رسالتنا مستقلۃ فی الرد علی بعض المضلۃ۔ جیسا کہ ہندیہ اور در و غیرہ روشن کتابوں میں ہے اس کی تحقیق ہم نے بعض گمراہوں کے رد میں اپنے ایک مستقل رسالہ میں کر دی ہے۔ ت)

(۵) عبادت کہ لغتہً خضوع ہے عبادتِ شرعیہ کو لازم ہے وہ تذلل سے خالی نہیں اگرچہ بظاہر صورۃً تذلل نہ ہو جیسے زکوۃ و جہاد کہ اسے حاکم و آمر و قاہر اور اپنے آپ کو محکوم و مامور و مقہور جان کے امتثالِ امر عین تذلل ہے مگر اقصیٰ غایاتِ تذلل ہونا ضرور نہیں کہ نماز زکوۃ سے زائد تذلل ہے بلکہ نماز کا سجدہ اس کے رکوع، رکوع قیام، قیام قعود سے اگر چہ اجزائے نماز سب عبادت ہیں۔ ہاں اسے اقصیٰ غایاتِ تعظیم کا مستحق جاننا ضرور ہے۔

---

۱ القرآن الکریم ۳/۳۹ ۲ القرآن الکریم ۱/۶ ۳ القرآن الکریم ۹۸/۲۶

Fatawa Razawiyya Volume 29

(6) Jurists sometimes look at the act itself; if it is not inherently an act of worship, they do not call it worship, such as manumission (itq) and endowment (waqf). And sometimes they view it with a specific intention and call it worship, as mentioned in 'Qada' and 'Inayah', where it is counted among the noblest acts of worship, to the extent that in 'Durr-ul-Mukhtar' etc., marriage was also called an act of worship. Allama Hamawi interpreted this as referring to lawful sexual intercourse (jama' halila). It is stated in 'Al-Ashbah':

As for manumission, according to us, it is not an act of worship by its original establishment, with the evidence that it is valid even when performed by a disbeliever, whereas no act of a disbeliever is an act of worship. If he intends the countenance of Allah Almighty, it becomes an act of worship for which he is rewarded. If he manumits without an intention, it is valid but there is no reward for him if it was explicit. As for metaphorical expressions, intention is necessary in them. If one manumits for an idol or for Satan, it is valid but he is a sinner. If he manumits for a created being, it is valid and permissible, with neither reward nor sin. It is appropriate that manumission for an idol be specified for when the manumitter is a disbeliever. As for a Muslim, if he manumits for it intending its veneration, he becomes a disbeliever. Just as it is appropriate that manumitting for a created being be considered disliked. Granting the status of a 'Mudabbir' or 'Mukatab' is like manumission. As for Jihad, it is among the greatest acts of worship, so sincerity

But manumission, according to us, is not an act of worship in terms of its establishment, based on the evidence that manumission is valid even from a disbeliever, while no act of a disbeliever is an act of worship. If the one who frees intends the pleasure of Allah, then this manumission will become an act of worship for which he will be rewarded. And if he freed without intention, it is valid but there will be no reward for it if it is explicit. As for metaphors, intention is necessary in them. If someone freed a slave for an idol or Satan, it is valid and he will be a sinner. And if he freed for a created being, it is valid and permissible, and there will be neither reward nor sin for him. And in freeing for an idol, there should be this specification that the one who frees is a disbeliever. As for a Muslim, if he frees for an idol while intending to venerate the idol, he will become a disbeliever. Just as freeing for a created being should be disliked. Making one a 'Mudabbir' or a 'Mukatab' is like manumission. But Jihad is among the greatest acts of worship. Therefore,

of intention is necessary for it. However, a bequest is like manumission.

sincerity of intention is necessary for it. But a bequest is like manumission.

(6) फ़ुक़हा (विधिवेत्ता) कभी स्वयं कार्य को देखते हैं; यदि वह मूल रूप से इबादत (उपासना) नहीं है, तो वे उसे इबादत नहीं कहते, जैसे इत्क़ (दास-मुक्ति) और वक़्फ़। और कभी वे इसे एक विशिष्ट नीयत (संकल्प) के साथ देखते हैं और इसे इबादत कहते हैं, जैसा कि 'क़ज़ा' और 'इनाया' में उल्लेख है कि इसे सबसे महान इबादतों में से एक माना गया है, यहाँ तक कि 'दुर्रे मुख्तार' आदि में निकाह को भी इबादत कहा गया है। अल्लामा हमवी ने इसका अर्थ हलाल सहवास (जमा-ए-ह़लीला) बताया है। 'अशबाह' में है:

जहाँ तक इत्क़ (दास-मुक्ति) का प्रश्न है, तो हमारे निकट यह अपनी स्थापना के आधार पर इबादत नहीं है, इस प्रमाण के साथ कि एक काफ़िर (अविश्वासी) द्वारा किया गया इत्क़ भी सही हो जाता है, जबकि काफ़िर का कोई भी कार्य इबादत नहीं होता। यदि वह अल्लाह तआला की प्रसन्नता की नीयत करे, तो यह इबादत बन जाएगा जिस पर सवाब (पुण्य) दिया जाएगा। और यदि उसने बिना नीयत के आज़ाद किया, तो यह सही है लेकिन उसके लिए कोई सवाब नहीं होगा यदि यह स्पष्ट (सरह़) शब्दों में है। जहाँ तक प्रतीकात्मक शब्दों (किनायात) का सवाल है, उनमें नीयत आवश्यक है। यदि किसी ने बुत (मूर्ति) या शैतान के लिए गुलाम को आज़ाद किया, तो यह सही है लेकिन वह गुनहगार होगा। और यदि किसी मख्लूक (सृष्टि) के लिए आज़ाद किया, तो यह सही और मुबाह़ (अनुमेय) है, इस पर न तो सवाब होगा और न ही गुनाह। और बुत के लिए आज़ाद करने में यह शर्त होनी चाहिए कि आज़ाद करने वाला काफ़िर हो। रहा मुसलमान, यदि वह बुत की ताज़ीम (सम्मान) लेकिन इत्क़ तो वह हमारे नज़दीक वज़ा (स्थापना) के ऐतबार से इबादत नहीं है, इस दलील के साथ कि इत्क़ काफ़िर से भी सही हो जाता है जब कि काफ़िर का कोई फ़ेल (कार्य) इबादत नहीं होता। अगर आज़ाद करने वाला अल्लाह की रज़ा की नीयत करे तो यह इत्क़ इबादत बन जाएगा जिस पर सवाब दिया जाएगा और अगर उसने नीयत के बग़ैर आज़ाद किया तो सही है और उसके लिए कोई सवाब नहीं होगा अगर यह सरह़ (स्पष्ट) है। रहे किनायात तो उनमें नीयत ज़रूरी है। अगर किसी ने बुत या शैतान के लिए गुलाम को आज़ाद किया तो सही है और वह गुनहगार होगा। और अगर मख्लूक के लिए आज़ाद किया तो सही और मुबाह़ है, इस पर न तो उसे सवाब होगा न ही गुनाह। और बुत के लिए आज़ाद करने में यह तखसीस (विशिष्टता) होनी चाहिए कि जब आज़ाद करने वाला काफ़िर हो। रहा मुसलमान, अगर वह बुत के लिए आज़ाद करे दरआंहालके(जबकि) वह बुत की ताज़ीम का इरादा करने वाला हो तो वह

का इरादा रखते हुए उसके लिए आज़ाद करे, तो वह काफ़िर हो जाएगा। जैसा कि मख्लूक के लिए आज़ाद करना मकरूह (नापसंद) होना चाहिए। मुदब्बर और मुकातब बनाना इत्क़ की तरह है। लेकिन जिहाद तो सबसे बड़ी इबादतों में से एक है, इसलिए उसके लिए नीयत का शुद्ध होना आवश्यक है। लेकिन वसीयत तो इत्क़ की तरह है।

पृष्ठ 651/750

काफ़िर हो जाएगा। जैसा कि मख्लूक के लिए आज़ाद करना मकरूह होना चाहिए। मुदब्बर बनाना और मुकातब बनाना इत्क़ की तरह है, लेकिन जिहाद तो वह सबसे बड़ी इबादतों में से है। चुनाँचे उसके लिए खुलूसे-नीयत ज़रूरी है, लेकिन वसीयत तो इत्क़ की मिसाल है।

(۶) فقہاء کبھی نفسِ فعل پر نظر کرتے ہیں اگر وہ وضعاً عبادت نہیں اسے عبادت نہیں کہتے جیسے عتق و وقف اور کبھی نیت مخصوصہ کے ساتھ دیکھتے اور عبادت کہتے ہیں، جیسے قضاء، عنایہ میں اسے منجملہ اشرفِ عبادات بتایا ہی حتی کہ در مختار وغیرہ میں نکاح کو بھی عبادت فرمایا۔ علامہ حموی نے اس سے مراد جماعِ حلیلہ ٹھہرایا۔ اشباہ میں ہے:

اما العتق فعندنا لیس بعبادة وضعاً بدلیل صحته من الکافر ولا عبادة له فان نوی وجه الله تعالی کان عبادة مثاباً علیه وان اعتق بلانیة صح ولا ثواب له ان کان صریحاً، واما الکنایات فلابد لها من النیة فان اعتق للصنم او للشیطان صح واثم وان اعتق لاجل مخلوق صح وکان مباحاً لاثواب ولا اثم وینبغی ان یخصص الاعتاق للصنم بما اذا کان المعتق کافراً. اما المسلم اذا اعتق له قاصداً تعظیمه کفر کما ینبغی ان یکون الاعتاق لمخلوق مکروهاً والتدبیر والکتابة کالعتق، واما الجهاد فمن

لیکن عتق تو وہ ہمارے نزدیک وضع کے اعتبار سے عبادت نہیں اس دلیل کے ساتھ کہ عتق کافر سے بھی صحیح ہو جاتا ہے جب کہ کافر کا کوئی فعل عبادت نہیں ہوتا۔ اگر آزاد کرنے والا اللہ کی رضا کی نیت کرے تو یہ عتق عبادت بن جائے گا جس پر ثواب دیا جائے گا اور اگر اس نے نیت کے بغیر آزاد کیا تو صحیح ہے اور اس کے لیے کوئی ثواب نہیں ہوگا اگر یہ صریح ہے، رہے کنایات تو ان میں نیت ضروری ہے اگر کسی نے بت یا شیطان کے لیے غلام کو آزاد کیا تو صحیح ہے اور وہ گنہگار ہوگا۔ اور اگر مخلوق کے لیے آزاد کیا تو صحیح اور مباح ہے اس پر نہ تو اسے ثواب ہوگا۔ نہ ہی گناہ، اور بت کے لیے آزاد کرنے میں یہ تخصیص ہونی چاہیے کہ جب آزاد کرنے والا کافر ہو۔ رہا مسلمان اگر وہ بت کے لیے آزاد کرے درآنحالیکہ وہ بت کی تعظیم کا ارادہ کرنے والا ہو تو وہ کافر ہو جائے گا۔ جیسا کہ مخلوق کے لیے آزاد کرنا مکروہ ہونا

چاہیے۔ مدبر بنانا اور مکاتب بنانا عتق کی طرح ہے لیکن جہاد

اعظم العبادات فلابد له من خلوص

تو وہ سب سے بڑی عبادتوں میں سے ہے۔ چنانچہ اس کے لیے

النية، واما الوصية فكان لعتق

خلوص نیت ضروری ہے، لیکن وصیت تو وہ عتق کی مثل ہے۔

Volume 29 Fatawa Razawiyya

If one intends to seek closeness (to Allah), they will receive a reward, otherwise, it is merely valid. As for waqf (endowment), it is not considered an act of worship by its nature, the proof being that it is valid even if done by a non-believer. Thus, if one intends it as a means of closeness, they will be rewarded, otherwise not.

Regarding marriage, the scholars have stated that it is closest to acts of worship, to the extent that engaging in it is superior to seclusion solely for worship. According to the correct opinion, marriage during moderate times is a Sunnah Mu'akkadah (emphasized prophetic practice). Therefore, an intention is required to attain a reward, and that is to intend to maintain one's own chastity and to have children. We have explained 'moderation' in 'Sharh al-Kabir,' the commentary on 'Al-Kanz.'

Since intention is not a condition for its validity, the jurists have stated that a marriage remains valid even if conducted in jest. On this basis, all other acts of seeking closeness require an intention, meaning that receiving a reward depends on the intention to draw closer to Allah Almighty through them, such as spreading knowledge by teaching, issuing fatwas, or writing books.

As for serving as a judge (Qada), the scholars said it is among the acts of worship; therefore, the reward for it depends on the intention of worship. The same applies to establishing legal punishments (Hudud) and discretionary punishments (Ta'zirat), and every...

खंड 29 फतावा रजविया

यदि कोई अल्लाह की निकटता प्राप्त करने का इरादा रखता है, तो उसे सवाब (पुण्य) मिलेगा, अन्यथा कार्य केवल वैध होगा। जहाँ तक वक़्फ़ (धार्मिक दान) का प्रश्न है, यह अपनी प्रकृति से इबादत (उपासना) नहीं है, इसका प्रमाण यह है कि यह एक गैर-विश्वासी (काफ़िर) की ओर से भी वैध है। इसलिए, यदि कोई इसे निकटता प्राप्त करने की नियत से करता है, तो उसे सवाब मिलेगा, अन्यथा नहीं।

निकाह (विवाह) के बारे में, विद्वानों ने कहा है कि यह इबादत के सबसे करीब है, यहाँ तक कि इसमें व्यस्त रहना केवल इबादत के लिए एकांतवास से बेहतर है। सही मत के अनुसार, सामान्य स्थिति में निकाह सुन्नत-ए-मुअक्कदा (अत्यधिक अनुशंसित सुन्नत) है। इसलिए सवाब प्राप्त करने के लिए इसमें नियत की आवश्यकता होती है, और वह यह है कि स्वयं के चरित्र की पवित्रता बनी रहे और संतान की प्राप्ति हो। हमने 'अल्-कन्ज़' की व्याख्या 'शरह अल-कबीर' में 'एतदाल' (मध्यम मार्ग/संतुलन) की व्याख्या की है।

चूंकि निकाह की वैधता के लिए नियत कोई शर्त नहीं है, इसलिए न्यायविदों ने कहा है कि मजाक में किया गया निकाह भी वैध हो जाता है। इसी आधार पर, निकटता प्राप्त करने के अन्य सभी कार्यों में नियत आवश्यक है, जिसका अर्थ है कि सवाब प्राप्त करना उनमें अल्लाह की निकटता प्राप्त करने के इरादे पर निर्भर करता है, जैसे कि शिक्षा के माध्यम से ज्ञान फैलाना, फ़तवा देना या कोई पुस्तक लिखना।

जहाँ तक काज़ी (न्यायाधीश) बनने की बात है, विद्वानों ने कहा है कि यह इबादत के कार्यों में से है, इसलिए इसका सवाब इबादत की नियत पर निर्भर करेगा। इसी तरह हुदूद (शरिया दंड) और ताज़ीरात (विवेकाधीन दंड) को लागू करना, और हर...

اگر تقرب کا ارادہ کرے گا تو اسے ثواب ملے گا ورنہ فقط وہ صحیح ہو جائے گی۔ رہا وقف، تو وضع کے اعتبار سے عبادت نہیں ہے، اس پر دلیل یہ ہے کہ وہ کافر کی طرف سے بھی صحیح ہو جاتا ہے، چنانچہ اگر تقرب کی نیت کرے گا تو اسے ثواب ملے گا ورنہ نہیں۔

لیکن نکاح اس کے بارے میں تو مشائخ نے کہا کہ وہ عبادات کے قریب ترین ہے یہاں تک کہ اس میں مشغول ہونا محض عبادت کے لیے خلوت سے افضل ہے۔ اور صحیح قول کے مطابق اعتدال کے وقت نکاح سنتِ مؤکدہ ہے۔ چنانچہ ثواب حاصل کرنے کے لیے اس میں نیت کی حاجت ہے اور وہ یہ کہ نفس کی پاکدامنی اور اولاد حاصل کرنے کا قصد کرے۔ اور اعتدال کی تفسیر ہم نے کنز کی شرح "شرح الکبیر" میں کردی ہے۔

اور جب نکاح کے صحیح ہونے کے لیے نیت شرط نہیں ہے تو فقہاء نے کہا ہے کہ نکاح ہزل کے ساتھ بھی صحیح ہو جائے گا۔ اسی پر باقی عبادات کو قیاس کیا جائے گا کہ ان میں نیت ضروری ہے بایں معنیٰ کہ ثواب کا حصول اس بات پر موقوف ہے کہ ان میں اللہ تعالیٰ کے تقرب کا ارادہ کرے جیسے علم کو پھیلانا چاہیے کسی کو علم سکھا کر یا فتویٰ دے کر یا کوئی کتاب لکھ کر۔

رہا قاضی بننا تو مشائخ نے فرمایا کہ وہ عبادات میں سے ہے چنانچہ اس میں ثواب عبادت کی نیت پر موقوف ہوگا۔ اسی طرح حدود و تعزیرات کا قائم کرنا اور...

Fatawa Razawiyyah, Volume 29

[Box 1] Arabic: That which judges and rulers handle, as well as undertaking and giving testimony and fulfilling it.[1] Urdu: Every task performed by a judge and ruler, and similarly, taking the responsibility of testimony upon oneself and fulfilling it. (T)

In 'Sharh al-Tanwir' by al-Ala'i, or rather in 'al-Ashbah wa al-Nazair', second art: [Box 2] Arabic: We have no act of worship that was prescribed from the time of Adam until now and then continues in Paradise, except for faith and marriage.[2] Urdu: For us, there is no worship that has been prescribed from the time of Prophet Adam (peace be upon him) until now, and will then continue in Paradise as well, except for faith (Iman) and marriage (Nikah). (T)

It is in 'Hamwi': [Box 3] Arabic: The apparent meaning is that what is meant by 'Nikah' here is sexual intercourse, not the contract, even though it is literally the contract according to us.[3] Urdu: It appears that 'Nikah' here means sexual intercourse (wat'i) and not the contract (aqd), although according to us, 'Nikah' literally refers to the contract. (T)

Rather, in its first art it is written: [Box 4] Arabic: What is meant by 'Nikah' here is the intercourse resulting from a valid contract, based on the context of his statement: 'to the extent that being occupied with it is better than being alone for pure worship'.[4] End. I say: There is no indication in this, for perhaps being occupied with the arrangements of the contract takes longer than being occupied with intercourse; rather, the indication for it is the author's statement... Urdu: Here 'Nikah' refers to that sexual intercourse which is a consequence of a valid contract. The context for this is the author's statement: 'to the extent that being occupied with marriage is better than being in seclusion for pure worship', etc. I say that this is not an indication or proof; sometimes being occupied with the arrangements of a marriage contract is longer than being occupied with intercourse, rather the context for this is the author...

---

[1] Al-Ashbah wa al-Nazair, al-Fann al-Awwal, al-Qa'idah al-Ula, Idarah al-Qur'an Karachi, 1/33-34 [2] Al-Ashbah wa al-Nazair, al-Fann al-Thani, Kitab al-Nikah, Idarah al-Qur'an Karachi, 1/246 [3] Ghamz Uyun al-Basa'ir ma' al-Ashbah wa al-Nazair, al-Fann al-Thani, Kitab al-Nikah, Idarah al-Qur'an Karachi, 1/246 [4] Ghamz Uyun al-Basa'ir ma' al-Ashbah wa al-Nazair, al-Fann al-Awwal, al-Qa'idah al-Ula, Idarah al-Qur'an Karachi, 1/33-34

फ़तावा रज़विया, जिल्द 29

[बॉक्स 1] अरबी: वह सब जिसे शासक और अधिकारी संभालते हैं, साथ ही गवाही देना और उसे पूरा करना।[1] उर्दू: हर वह काम जिसे शासक और वली (संरक्षक) अंजाम देते हैं और इसी तरह गवाही को अपने ज़िम्मे लेना और उसे अदा करना। (त)

'शरह अल-तनवीर' अल-अलाई द्वारा, बल्कि स्वयं 'अल-अश्बाह व अन-नज़ायर' के दूसरे फ़न (कला) में है: [बॉक्स 2] अरबी: हमारे पास ऐसी कोई इबादत नहीं है जो आदम के समय से अब तक शरीयत में रही हो और फिर जन्नत में भी जारी रहे, सिवाय ईमान और निकाह के।[2] उर्दू: हमारे लिए कोई ऐसी इबादत नहीं है जो आदम अलैहिस्सलाम के ज़माने से अब तक मशरूअ (निर्धारित) रही हो, फिर वह जन्नत में भी जारी रहेगी सिवाय ईमान और निकाह के। (त)

'हमवी' में है: [बॉक्स 3] अरबी: ज़ाहिर यह है कि यहाँ निकाह से मुराद संभोग (वति) है न कि अनुबंध (अक़्द), हालांकि हमारे नज़दीक निकाह का वास्तविक अर्थ अक़्द (अनुबंध) ही है।[3] उर्दू: ज़ाहिर यह है कि निकाह से मुराद यहाँ पर वति है न कि अक़्द, अगरचे हमारे नज़दीक निकाह अक़्द में हक़ीक़त है। (त)

बल्कि इसके पहले फ़न में है: [बॉक्स 4] अरबी: यहाँ निकाह से मुराद वह संभोग है जो सही अनुबंध पर आधारित है, उनके इस कथन के संदर्भ में: 'यहाँ तक कि इसमें व्यस्त रहना केवल इबादत के लिए एकांत में रहने से बेहतर है'।[4] अंत। मैं कहता हूँ: इसमें कोई स्पष्ट प्रमाण नहीं है, क्योंकि कभी-कभी अनुबंध की व्यवस्था में व्यस्त होना संभोग में व्यस्त होने से अधिक समय ले सकता है; बल्कि इस पर प्रमाण लेखक के कथन में है... उर्दू: यहाँ निकाह से मुराद वह वति है जो अक़्द-ए-सहीह पर मुरत्तब होती है, इस पर क़रीना (सन्दर्भ) मुसन्निफ़ (लेखक) का यह क़ौल है जहाँ तक कि निकाह में मशगूल (व्यस्त) होना महज़ इबादत के खलवत (एकांत) से अफ़ज़ल है, इत्यादि। मैं कहता हूँ यह कोई दलालत व क़रीना नहीं, बसा औक़ात अक़्द की तदबीर में मशगूल होना वति में मशगूल होने से ज़्यादा तवील (लंबा) होता है, बल्कि क़रीना इस पर मुसन्निफ़...

---

[1] अल-अश्बाह व अन-नज़ायर, अल-फ़न अल-अव्वल, अल-क़ायदा अल-ऊला, इदारा अल-क़ुरआन कराची, 1/33-34 [2] अल-अश्बाह व अन-नज़ायर, अल-फ़न अत्तसानी, किताब उन-निकाह, इदारा अल-क़ुरआन कराची, 1/246 [3] ग़म्ज़ उयून अल-बसायर मअ अल-अश्बाह व अन-नज़ायर, अल-फ़न अत्तसानी, किताब उन-निकाह, इदारा अल-क़ुरआन कराची, 1/246 [4] ग़म्ज़ उयून अल-बसायर मअ

अल-अश्बाह व अन-नज़ायर, अल-फ़न अल-अव्वल, अल-क़ायदा अल-ऊला, इदारा अल-क़ुरआन कराची, 1/33-34

पृष्ठ 653 का 750

فتاوی رضویہ، جلد ۲۹

[باکس 1] عربی: مایتعاطاہ الحکام والولاۃ وکذا تحمل الشھادۃ و اداؤھا[1]۔ اردو: ہر وہ کام جس کو حاکم اور ولی سر انجام دیتے ہیں اور یونہی گواہی کو اپنے ذمے لینا اور اسے ادا کرنا۔ (ت)

شرح التنویر للعلائی بلکہ خود اشباہ والنظائر فن ثانی میں : [باکس 2] عربی: لیس لنا عبادۃ شرعت من عھد ادم الی الان ثم تستمر في الجنۃ الا الایمان والنکاح[2]۔ اردو: ہمارے لیے کوئی عبادت ایسی نہیں جو آدم علیہ السلام کے زمانے سے اب تک مشروع رہی ہو پھر وہ جنت میں بھی جاری رہے گی سوائے ایمان اور نکاح کے۔ (ت)

حموی میں ہے: [باکس 3] عربی: الظاھر ان المراد بالنکاح ھنا الوطئ لا العقد وان کان حقیقۃ في العقد عندنا[3]۔ اردو: ظاہر یہ ہے کہ نکاح سے مراد یہاں پر وطی ہے نہ کہ عقد، اگرچہ ہمارے نزدیک نکاح عقد میں حقیقت ہے۔ (ت)

بلکہ اس کے فن اول میں ہے: [باکس 4] عربی: المراد بالنکاح ھنا الوطئ المترتب علی العقد الصحیح بقرینۃ قولہ حتی ان الاشتغال بہ افضل من التخلی لمحض للعبادۃ[4] اہ اقول: لادلالۃ فربما یکون الاشتغال بتدبیر العقد اطول مکثاً من الوطی بل القرینۃ قولہ اردو: یہاں نکاح سے مراد وہ وطی ہے جو عقدِ صحیح پر مرتب ہوتی ہے اس پر قرینہ مصنف کا یہ قول ہے جہاں تک کہ نکاح میں مشغول ہونا محض عبادت کے خلوت سے افضل ہے، الخ میں کہتا ہوں یہ کوئی دلالت و قرینہ نہیں بسا اوقات عقد کی تدبیر میں مشغول ہونا وطی میں مشغول ہونے سے زیادہ طویل ہوتا ہے، بلکہ قرینہ اس پر مصنف

1 الاشباه والنظائر الفن الاول القاعدة الاولى ادارة القرآن كراچی ۱ / ۳۳-۳۴ 2 الاشباه والنظائر الفن الثانی کتاب النکاح ادارة القرآن کراچی ۱ / ۲۴۶ 3 غمز عیون البصائر مع الاشباه والنظائر الفن الثانی کتاب النکاح ادارة القرآن کراچی ۱ / ۲۴۶ 4 غمز عیون البصائر مع الاشباه والنظائر الفن الاول القاعدة الاولى ادارة القرآن کراچی ۱ / ۳۳-۳۴

Fatawa Ridawiyya Volume 29

[Arabic Quote]: "...continues in Paradise, so the occurrence of a contract therein is not established as Al-Hamawi narrated in the chapter on Marriage from Al-'Allama Muhammad bin Abi Sharif."

[Author's Note]: I say: And what need is there for it after the word of Allah the Almighty: "And We will marry them to fair women with large eyes." (1) Just as Umm al-Mu'minin Zainab (may Allah the Almighty be pleased with her) did not need it after the word of Allah the Almighty: "We gave her to you in marriage." (2)

[Urdu Commentary]: ...is this statement, that it will then continue in Paradise. Accordingly, the occurrence of a contract in Paradise is not proven, as narrated by Allama Hamawi in the Chapter of Marriage with reference to Allama Muhammad bin Abu Sharif.

I say: What is the need for it after this declaration of Allah Almighty: "And We have married them to large-eyed maidens." Just as Umm al-Mu'minin Sayyidah Zainab (may Allah be pleased with her) did not feel the need for it after this declaration of Allah Almighty: "We have given her to you in marriage." (T)

Author's Note: The research is that this is a difference of status, otherwise, inherently none of these are acts of worship. Therefore, judicial decisions by a non-believer are also valid if the Imam has appointed him as a judge for the protected non-Muslim citizens (dhimmis). Similarly, manumission (freeing a slave) is also an act of worship when it is with the aforementioned intention. Reward is absolutely dependent on intention even if the act itself is not an act of worship. From this, it is evident that the acts mentioned at the end, i.e., establishing penalties (hudud) and discretionary punishments (ta'zirat), the acts of rulers and governors, and the performance and bearing of testimony—the comparison of all these with judicial decisions is possible in their becoming acts of worship under certain conditions, not just in the suspension of reward upon intention, which applies to every act absolutely... (Incomplete answer received).

Problem 214: From Bombay, Kala Baakani Shop, Syed Wazir Ali Sahib, questioned by Muhammad Ibrahim Sahib, 5 Jumada al-Akhira 1339 AH.

In the presence of the source of abundance, the enlightened spiritual guide, Maulana Maulvi Ahmad Raza Khan Sahib Barelvi: After humble greetings of service, I state that the influence of Christians is very strong here and they cause trouble all the time. At

present, two of their questions are presented for resolution. We are your servants and followers; our honor rests with you. (1) Where is the Kalima Sharif (La ilaha illa Allah Muhammadur Rasulullah) written in the Quran? If not, they ask for its explanation. (2) People say about the Prophet (peace and blessings be upon him) that he is the Intercessor of the Day of Resurrection (Shafi' Mahshar). How so? What is the proof for it?

1. Al-Quran Al-Karim 52 / 20
2. Al-Quran Al-Karim 33 / 37

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

[अरबी उद्धरण]: "...जन्नत में जारी रहेगा, इसलिए उसमें निकाह के अनुबंध का होना साबित नहीं है जैसा कि अल-हमवी ने निकाह के अध्याय में अल्लामा मुहम्मद बिन अबी शरीफ़ के हवाले से नक़ल किया है।"

[लेखक का कथन]: मैं कहता हूँ: और अल्लाह तआला के इस फरमान के बाद इसकी क्या ज़रूरत है: "और हमने उन्हें बड़ी आँखों वाली हूरों से ब्याह दिया।" (1) जैसे उम्मुल मोमिनीन ज़ैनब (रज़ियल्लाहु अन्हा) को अल्लाह तआला के इस फरमान के बाद इसकी ज़रूरत नहीं पड़ी: "हमने उसका आपसे निकाह कर दिया।" (2)

[उर्दू व्याख्या]: ...का यह कथन है कि फिर वह जन्नत में जारी रहेगी, इसलिए जन्नत में निकाह का अनुबंध साबित नहीं है जैसा कि इसे अल्लामा हमवी ने निकाह के अध्याय में अल्लामा मुहम्मद बिन अबू शरीफ़ के हवाले से नक़ल किया है।

मैं कहता हूँ और इसकी क्या ज़रूरत है अल्लाह तआला के इस इरशाद के बाद: "और हमने उन्हें ब्याह दिया बड़ी आँखों वाली हूरों के साथ" जैसा कि उम्मुल मोमिनीन सैयदा ज़ैनब (रज़ियल्लाहु अन्हा) को अल्लाह तआला के इस इरशाद के बाद उसकी ज़रूरत नहीं हुई: "हमने वह तुम्हें निकाह में दे दी।" (त)

लेखक का कथन: शोध यह है कि यह हैसियत का अंतर है, अन्यथा स्वभावतः इनमें से कुछ भी इबादत (उपासना) नहीं हैं। इसीलिए काफ़िर का न्यायिक निर्णय (क़ज़ा) भी सही है यदि इमाम ने उसे ज़िमियों का क़ाज़ी (न्यायाधीश) बनाया हो। और दासमुक्ति (अतक़) भी इबादत है जब वह उल्लेखित नीयत के साथ हो। और सवाब नीयत पर पूरी तरह निर्भर है चाहे कार्य इबादत न हो। यहीं से ज़ाहिर है कि अंत में जिन कार्यों का ज़िक्र किया गया यानी दंडों (हुदूद और ताज़िरात) का क्रियान्वयन, शासकों और गवर्नरों के कार्य, और गवाही का वहन और निष्पादन—इन सबकी न्यायिक निर्णय के साथ तुलना इबादत बनने की शर्त के साथ संभव है, न कि केवल नीयत पर सवाब के रुकने में जो हर कार्य को प्राप्त है... (अपूर्ण उत्तर प्राप्त हुआ)।

मसला 214: बम्बई, कला बाकानी शॉप से सैयद वज़ीर अली साहब, प्रार्थी मुहम्मद इब्राहिम साहब, 5 जमादी-उल-आख़िर 1339 हिजरी।

फ़ैज़ के खज़ाने, रोशन ज़मीर पीर, जनाब मौलाना मौलवी अहमद रज़ा ख़ां साहब बरेलवी की सेवा में: सेवा भाव के साथ विनम्र निवेदन है कि यहाँ ईसाइयों का बहुत ज़ोर है और वे हर समय परेशान करते हैं। फ़िलहाल उनके दो सवाल समाधान के लिए पेश हैं। हम आपके सेवक और नाम लेने वाले हैं, हमारी लाज आपके हाथ है। (1) कलिमा शरीफ़ (ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर रसूलुल्लाह) क़ुरान में किस जगह लिखा है? यदि नहीं, तो वे इसकी व्याख्या माँगते हैं। (2) हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को कहते हैं कि वह महशर के दिन शफ़ीअ (सिफारिश करने वाले) हैं, किस तरह से? इसका प्रमाण क्या है?

1. अल-क़ुरान अल-करीम 52 / 20
2. अल-क़ुरान अल-करीम 33 / 37

पृष्ठ 654/750

یستمر فی الجنة فلم یثبت وقوع العقد فیها کما نقله الحموی فی النکاح عن العلامة محمد بن ابی شریف اقول: وای حاجة الیه بعد قوله تعالی "وَزَوَّجْنٰهُمْ بِحُوْرٍ عِیْنٍ ۝"۱ کما لم تحتج الیه ام المؤمنین زینب رضی الله تعالی عنها بعد قوله عزوجل "زَوَّجْنٰکَهَا"۲۔ کا یہ قول ہے کہ پھر وہ جنت میں جاری رہے گی چنانچہ جنت میں وقوع عقد ثابت نہیں جیسا کہ اس کو علامہ حموی نے باب النکاح میں بحوالہ علامہ محمد بن ابوشریف نقل فرمایا ہے۔ میں کہتا ہوں اور اس کی کیا ضرورت ہے اللہ تعالیٰ کے اس ارشاد کے بعد اور ہم نے انہیں بیاہ دیا بڑی آنکھوں والی حوروں کے ساتھ جیسا کہ نہیں محتاج ہوئیں اس کی طرف ام المومنین سیدہ زینب رضی اللہ تعالیٰ عنہا اللہ تعالیٰ کے اس ارشاد کے بعد ہم نے وہ تمہیں نکاح میں دے دی ت) اقول: تحقیق یہ ہے کہ یہ اختلاف حیثیت ہے ورنہ وضعا ان میں سے کچھ عبادات نہیں ولہٰذا قضا بھی کافر سے صحیح ہے جب کہ امام نے اسے ذمیوں کا قاضی بنایا ہو اور عتق بھی عبادت ہے جب کہ نیت مذکورہ کے ساتھ ہو اور ثواب نیت پر مطلقاً موقوف اگر چہ فعل عبادت نہ ہو اور یہیں سے ظاہر کہ اخیر میں جو افعال ذکر کیے یعنی اقامت حدود و تعزیرات و افعال حکام و ولاۃ و ادا و تحمل و شہادت سب کی تشبیہ قضا کے ساتھ بشرط عبادت ہو جانے میں بھی ممکن نہ صرف توقف ثواب علی النیۃ میں کہ مطلقاً ہر فعل کو حاصل----- (جواب نامکمل دستیاب ہوا) مسئلہ ۲۱۴: از بمبئی کلا باکانی شاپ سید وزیر علی صاحب مسئولہ محمد ابراہیم صاحب ۵ جمادی الآخر ۱۳۳۹ھ بحضور فیض گنجور پیر روشن ضمیر جناب مولانا مولوی احمد رضا خاں صاحب بریلوی، بعد آداب خادمانہ کے عرض پرداز ہوں کہ یہاں پر عیسائیوں کا (عیسائی) بہت زور شور ہے اور ہر وقت یہ لوگ پریشان کرتے ہیں، فی الحال ان کے دو سوال جن کے حل کرنے کے واسطے عرض کی جاتی ہی ہم لوگ حضور کے خادم اور نام لینے والے

حضور کو ہی ہماری لاج ہے (۱) کلمہ شریف (لا الہ الا اللہ محمد رسول اللہ) یہ قرآن میں کس جگہ لکھا ہے اگر نہیں تو وہ اس کی تشریح مانگتے ہیں۔ (۲) حضور صلی اللہ علیہ وسلم کو کہتے ہیں کہ وہ شافع محشر کس طرح سے ؟ اس کا ثبوت

۱ القرآن الکریم ۵۲ / ۲۰ ۲ القرآن الکریم ۳۳ / ۳۷

Fatawa Razawiyya Volume 29

Question: Where is it written in the Holy Quran? Please consider this highly important and honor me with a quick reply.

Answer: (1) In the Holy Quran, Surah Muhammad (peace and blessings of Allah be upon him), there is "La ilaha illa Allah"[1]. And immediately following it in Surah Al-Fath, there is "Muhammadur Rasulullah"[2]. (2) In Surah Bani Isra'il it says: "Soon will your Lord raise you to a station of praise and glory (Maqam al-Mahmud)"[3]. Translation: It is near that your Lord will establish you in a place where everyone will praise you. (T)

Maqam al-Mahmud is the name of the station of intercession. In Surah An-Nisa, Para 5, Ruku 6, it says: "If they had only, when they were unjust to themselves, come unto thee and asked Allah's forgiveness, and the Messenger had asked forgiveness for them, they would have found Allah indeed Oft-returning, Most Merciful."[4] Translation: And if, when they had wronged themselves, they had come to you, O Beloved, and asked forgiveness of Allah, and the Messenger had asked forgiveness for them, they would surely have found Allah Accepting of repentance and Merciful. (T)

The Messenger's asking for forgiveness for sinners is indeed intercession. It is strictly forbidden for an ignorant person to engage in debate with disbelievers. The command of the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) for them is: "Beware of them and let them beware of you, lest they mislead you and lest they tempt you into trial."[5] Keep away from them and keep them away from you, so they do not misguide you or put you into trial. And refuge is with Allah Almighty. And Allah Almighty knows best. (T)

[1] Al-Quran al-Karim 19/47 [2] Al-Quran al-Karim 29/48 [3] Al-Quran al-Karim 79/17 [4] Al-Quran al-Karim 64/4 [5] Sahih Muslim, Chapter on the prohibition of narrating from the weak, etc., Qadimi Kutub Khana Aram Bagh Karachi 10/1

फ़तावा रज़विया जिल्द २९

प्रश्न: बताएं कि कुरान शरीफ में यह कहाँ लिखा है? हुज़ूर इसे अत्यंत महत्वपूर्ण समझकर शीघ्र उत्तर से सम्मानित फरमाएं।

उत्तर: (१) कुरान मजीद की सूरह मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) में "ला इलाहा इल्लल्लाह" है। और इसके साथ जुड़ी सूरह फतह में "मुहम्मदुर रसूलुल्लाह" है। (२) सूरह बनी इस्राईल में है: "असी अय यबअसका रब्बुका मकामाम महमूदा" (३) अनुवाद: करीब है कि तुम्हारा रब तुम्हें ऐसी जगह खड़ा कर दे जहाँ सब तुम्हारी प्रशंसा करें। (त)

मकाम-ए-महमूद शफ़ाअत (सिफारिश) के स्थान का नाम है। सूरह निसा, पारा ५, रुकू ६ में है: "व लौ अन्नहुम इज़ ज़लमू अनफुसहुम जा-उका फ़स्तगफ़रुल लाहा वस्तगफ़रा लहुमुर रसूलु ल-वजदुलर लाहा तव्वाबर रहीमा" (४) अनुवाद: और अगर वे जब अपनी जानों पर ज़ुल्म कर लें, तो ऐ महबूब! आपके हुज़ूर हाज़िर हों और फिर अल्लाह से माफ़ी चाहें और रसूल उनकी शफ़ाअत फ़रमाएं, तो ज़रूर अल्लाह को बहुत तौबा कुबूल करने वाला मेहरबान पाएं। (त)

रसूल का गुनहगारों के लिए दुआ-ए-मग़फ़िरत करना शफ़ाअत ही है। एक बे-इल्म (अज्ञानी) आदमी के लिए काफिरों से उलझना और बहस करना सख़्त हराम है। उनके लिए रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) का यह हुक्म है: "इय्याकुम व इय्याहुम ला युज़िल्लूनकुम वला यफ़्तिनूनकुम"।[5] उनसे दूर रहो और उन्हें अपने से दूर करो, कहीं वे तुम्हें गुमराह न कर दें और तुम्हें फित्ने में न डाल दें। अल्लाह तआला की पनाह और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है। (त)

१ अल-कुरान अल-करीम १९/४७ २ अल-कुरान अल-करीम २९/४८ ३ अल-कुरान अल-करीम ७९/१७ ४ अल-कुरान अल-करीम ६४/४ ५ सहीह मुस्लिम, बाब अन-नही अनिर रिवायती अनिज़ ज़ुअफ़ा इल्ख़, क़दीमी कुतुब खाना आराम बाग कराची १०/१

पेज ६५५/७५०

دو کہ قرآن شریف میں کہاں لکھا ہے؟ حضور اس کو نہایت ضروری تصور فرما کر جلدی جواب سے سرفراز فرمائیں۔ الجواب: (۱) قرآن مجید سورہ محمد صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم میں "لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ" ۱ ہے۔ اور اس کے متصل سورہ فتح میں "مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہِ" ۲ ط (۲) سورہ بنی اسرائیل میں ہے: "عَسٰٓی اَنْ یَّبْعَثَكَ رَبُّكَ مَقَامًا مَّحْمُوْدًا" ۳۔ قریب ہے کہ تمہیں تمہارا رب ایسی جگہ کھڑا کر دے جہاں سب تمہاری حمد کریں۔ (ت)

مقام محمود مقام شفاعت کا نام ہے۔ سورہ نساء پارہ ۵ رکوع ۶ میں ہے: "وَلَوْ اَنَّھُمْ اِذْ ظَّلَمُوْٓا اَنْفُسَھُمْ جَآءُوْكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللّٰہَ وَ اسْتَغْفَرَ لَھُمُ الرَّسُوْلُ لَوَجَدُوا اللّٰہَ تَوَّابًا رَّحِیْمًا" ۴۔ اور اگر جب وہ اپنی جانوں پر ظلم کرلیں تو اے محبوب ! تمہارے حضور حاضر ہوں اور پھر اللہ سے معافی چاہیں اور رسول ان کی شفاعت فرمائے تو ضرور اللہ کو بہت توبہ قبول کرنے والا مہربان پائیں۔ (ت)

رسول کا گناہگاروں کے لیے استغفار کرنا شفاعت ہی ہے۔ بے علم آدمی کو کافروں سے الجھنا بحث کرنا سخت حرام ہے انہیں رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کا یہ حکم ہے ایاکم وایاھم لایضلونکم ولا یفتنونکم۔ ۵ اُن سے دُور رہو انہیں اپنے سے دور کرو وہ تمہیں گمراہ نہ کردیں کہیں وہ تمہیں فتنے میں نہ ڈال دیں۔ والعیاذ باللہ تعالیٰ واللہ تعالیٰ اعلم (اور اللہ تعالیٰ کی پناہ، اور اللہ تعالیٰ خوب جانتا ہے۔ت)

۱ القرآن الکریم ۱۹/۴۷ ۲ القرآن الکریم ۲۹/۴۸ ۳ القرآن الکریم ۷۹/۱۷ ۴ القرآن الکریم ۶۴/۴ ۵ صحیح مسلم باب النہی عن الروایۃ عن الضعفاء الخ، قدیمی کتب خانہ آرام باغ کراچی ۱۰/۱

Fatawa Rizvia Volume 29

Treatise Sharh al-Matalib fi Mabhas Abi Talib 1316 AH (Clarification of the Objectives in the Discussion of Abu Talib)

Problem 215: From Budaun 1294 AH in the wording of the question, and secondly in brief from Ahmedabad, Gujarat, Jamalpur district near the Glass Mosque, sent by the Ahl-e-Sunnat community residing in Ahmedabad on 6 Jumada al-Ula 1316 Hijri.

What do the scholars of religion say regarding this issue that Zaid calls Abu Talib an infidel and compares him to Abu Lahab and Iblis, while Amr rejects this based on the reasons that he provided guardianship, assistance, support, and love to the Master of the World (peace and blessings of Allah be upon him) to the extreme degree, and wrote odes in the Prophet's praise (Na'at)? The Holy Prophet (peace be upon him) prayed for his forgiveness, and it is mentioned in Jami' al-Usul that: According to the Ahl al-Bayt (the Prophet's household), he died as a Muslim.

Sheikh Muhaqqiq (may Allah have mercy on him) stated in the explanation of Safar al-Sa'adah:

“At the very least, they should pause on this issue and observe caution.” | At the very least, they pause on this matter and keep caution in view. (T)

And in Mawahib al-Ladunniyah, a will of his addressed to the Quraysh is quoted which, word for word, testifies to his Islam. Which of these two is on the right path, and what is the ruling on considering Abu Talib like Abu Lahab and Iblis, and is there any Hadith regarding his disbelief?

Page 656 of 750

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

रिसाला शरह अल-मतालिब फ़ी मबहस अबी तालिब 1316 हिजरी (अबू तालिब की चर्चा में उद्देश्यों का स्पष्टीकरण)

मसला 215: बदायूँ से 1294 हिजरी सवाल की इबारत में, और दोबारा संक्षेप में अहमदाबाद, गुजरात, मोहल्ला जमालपुर कांच मस्जिद के पास से, अहमदाबाद के निवासी सुन्नी जमाअत द्वारा भेजा गया, 6 जमादी अल-उला 1316 हिजरी।

धर्मगुरु (उलेमा-ए-दीन) इस मसले में क्या कहते हैं कि ज़ैद अबू तालिब को काफिर कहता है और अबू लहब और इब्लीस के समान बताता है, और अम्र इन दलीलों के साथ इससे इनकार करता है कि उन्होंने सरवर-ए-आलम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की कफ़ालत (देखरेख), मदद, हिमायत और मोहब्बत चरम सीमा तक की और नात शरीफ में क़सीदे लिखे। हुज़ूर ने उनके लिए मगफिरत (क्षमा) की दुआ फरमाई और जामिअ अल-उसूल में है कि: अहल-ए-बैत के नज़दीक वह मुसलमान मरे।

शेख मोहक़्क़िक़ (रहमतुल्लाह अलैहि) ने शरह सफ़र अस-सआदत में फ़रमाया:

"कम अज़ कम इतना होना चाहिए कि इस मसले में खामोश रहें और एहतियात बरतें।" | कम से कम इस मसले में तवक़्क़ुफ़ (मौन) करते हैं और एहतियात को ध्यान में रखते हैं। (त)

और मवाहब-ए-लदुनिया में उनका एक वसीयतनामा कुरैश के नाम नक़ल (उद्धृत) है जो शब्द-दर-शब्द उनके इस्लाम पर गवाह है। इन दोनों में से कौन हक़ (सही) पर है, और अबू तालिब को अबू लहब और इब्लीस जैसा समझना कैसा है और उनके कुफ्र (अविश्वास) के बारे में कोई हदीस है?

पेज 656 का 750

فتاوی رضویہ جلد ۲۹

رسالہ شرح المطالب فی مبحث ابی طالب ۱۳۱۶ھ (مطالب کی وضاحت ابوطالب کی بحث میں)

مسئلہ ۲۱۵: از بدایوں ۱۲۹۴ھ بعبارت سوال وثانیاً بالاجمل از احمد آباد گجرات، محلہ جمال پور قریب مسجد کانچ مرسلہ جماعت اہل سنت ساکنان احمد آباد ۶ جمادی الاولیٰ ۱۳۱۶ ہجری۔

کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید ابوطالب کو کافر اور ابو لہب و ابلیس کا مماثل کہتا ہے اور عمرو بدین دلائل اس سے انکار کرتا ہے کہ انہوں نے جناب سرور عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی کفالت و نصرت و حمایت و محبت بدرجہ غایت کی اور نعت شریف میں قصائد لکھے حضور نے انکے لیے استغفار فرمائی اور جامع الاصول میں ہے کہ : اہل بیت کے نزدیک وہ مسلمان مرے۔

شیخ محقق علیہ الرحمہ نے شرح سفر السعادۃ میں فرمایا :

کم از ان نہ باشد کہ دریں مسئلہ توقف کنند و صرفہ نگہ دارند۔ | کم از کم اس مسئلہ میں توقف کرتے ہیں اور احتیاط کو ملحوظ رکھتے ہیں۔ (ت)

اور مواہب لدنیہ میں ایک وصیت نامہ اُن کا بنام قریشی منقول جو حرفاً حرفاً اُن کے اسلام پر شاہد، ان دونوں میں کون حق پر ہے، اور ابوطالب کو مثل ابو لہب و ابلیس سمجھنا کیسا اور اُن کے کفر میں کوئی حدیث

Fatawa Razawiyya Volume 29

Whether it has been correctly narrated or not, in either case, should they be called 'Radi Allahu Anhu' (May Allah be pleased with him) considering them as the guarantor and sponsor of the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him), or should they be considered like disbelievers? Clarify with proof from the Book; you will be rewarded by the Bestowing King on the Day of Resurrection and Reckoning. (State with the authority of the book, you will be rewarded by the Bestowing King on the day of judgment and reckoning - Translator's note)

The Answer: In the name of Allah, the Most Gracious, the Most Merciful.

(Arabic Column)

O Allah, our Lord, and to Your Face belongs praise, more worthy than what any servant has said, and all of us are Your servants. There is none to withhold what You have given, and none to give what You have withheld, and none to repel what You have decreed. No owner of greatness (wealth) benefits from his greatness before You. To You belongs praise for what You have guided, pardoned, given well-being, bestowed, and preferred. Blessed and Exalted are You. Glory be to You, Lord of the House, seeking refuge in the beauty of Your Generous Face from Your painful punishment, and testifying that there is no power nor strength except by Allah, the High, the Great. You are the Mighty, the Overpowerer. No fugitive can escape You, and no seeker can attain what You have withheld. There is no obligation upon You. You have ordained the destinies, turned the ages, and written in the records what You have written. A doer acts with the deeds of Paradise, so the thinkers among

(Urdu Column)

O Allah! Our Lord! And praise is more worthy of Your Person, compared to what the servant has said. And we are all Your servants, what You have bestowed no one can stop, and what You have stopped no one can give, and no one can reject Your decision and before You the wealth of any wealthy person is not beneficial to him, and before You the wealth of any wealthy person is not beneficial to him, praise is for You alone for that which You guided, forgave, gave health, bestowed and made a guardian, You are blessed and superior, O Lord of the Ka'bah! We proclaim Your purity, seeking refuge in Your Person from Your painful punishment and bearing witness to this that without the guidance of Allah, the High and Great, there is no power to avoid sin nor strength to do good. You are the Possessor of Honor, the Overpowerer, no fugitive can go out of Your control and what You stop no seeker can find it, nothing is obligatory

(Arabic Column)

humans and jinn think that he will surely enter it, and as if it has already happened, then the decree overcomes him and behold, he is disappointed. And a doer acts with the deeds of Fire, so the neighbors and those upon whom the Fire rises think that...

(Urdu Column)

upon You, You ordained the destinies and gave rotation to the ages. And whatever was to be written, You wrote in the books of destiny. A person does deeds like the people of Paradise, so some among humans and jinn imagine...

फतावा रज़विया जिल्द 29

क्या यह सही तौर पर वर्णित हुआ है या नहीं, हर दूसरी स्थिति में उन्हें अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का ज़ामिन और कफील समझकर 'रज़ियल्लाहु अन्हु' कहें या काफ़िरों की तरह समझें? किताब के प्रमाण के साथ स्पष्ट करें; आपको क़यामत और हिसाब के दिन मलिकुल वहाब से अज्र (पुरस्कार) दिया जाएगा। (किताब के प्रमाण के साथ वर्णन कीजिए, क़यामत और हिसाब के दिन मलिकुल वहाब से अज्र दिए जाओगे। - अनुवादक)

जवाब: बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम

(अरबी कॉलम)

ऐ अल्लाह, हमारे रब, और तेरे चेहरे के लिए ही हम्द (प्रशंसा) है, उस से अधिक हक़दार जो किसी बंदे ने कहा, और हम सब तेरे बंदे हैं। जो तूने प्रदान किया उसे कोई रोकने वाला नहीं, और जो तूने रोक दिया उसे कोई देने वाला नहीं, और तेरे फ़ैसले को कोई टालने वाला नहीं। तेरे सामने किसी वैभवशाली का वैभव उसे लाभ नहीं पहुँचाता। तेरे लिए ही हम्द है उस पर जो तूने हिदायत दी, माफ़ फ़रमाया, आफ़ियत दी, अता फ़रमाया और वली बनाया। तू बरकत वाला और बुलंद है। पाक है तू, ऐ काबा के रब, तेरे करम वाले चेहरे के जमाल के साथ तेरे दर्दनाक अज़ाब से तेरी ज़ात की पनाह मांगते हुए और इस पर गवाही देते हुए कि अल्लाह जो बुलंद और अज़ीम है, उसकी तौफीक के बिना न गुनाह से बचने की ताक़त है न नेकी करने की कुव्वत। तू इज़्ज़त वाला ग़ालिब है। कोई भागने वाला तेरे काबू से बाहर नहीं जा सकता और जिसे तू रोक दे कोई चाहने वाला उसे पा नहीं सकता। तुझ पर कुछ भी

(उर्दू कॉलम)

ऐ अल्लाह! हमारे परवरदिगार! और हम्द तेरी ज़ात के ज़्यादा लायक़ है, उसकी तुलना में जो बंदे ने कहा। और हम सब तेरे बंदे हैं, जो तूने अता फ़रमाया उसे कोई रोकने वाला नहीं, और जिसे तूने रोक दिया उसे कोई देने वाला नहीं, और तेरे फ़ैसले को कोई रद्द करने वाला नहीं और तेरे सामने किसी धनवान का धन उसके लिए लाभकारी नहीं, और तेरे सामने किसी धनवान का धन उसके लिए लाभकारी नहीं, तेरे लिए ही हम्द है उस पर जो तूने हिदायत दी, माफ़ फ़रमाया, आफ़ियत दी, अता फ़रमाया और वली बनाया, तू बरकत वाला है और बुलंद है, ऐ रब्बे काबा! हम तेरी पाकी बयान करते हैं, तेरे दर्दनाक अज़ाब से तेरी ज़ात की पनाह माँगते हुए और इस पर गवाही देते हुए कि अल्लाह बुलंद और अज़ीम की तौफ़ीक़ के बग़ैर न गुनाह से बचने की ताक़त है न नेकी करने की कुव्वत। तू इज़्ज़त

(अरबी कॉलम)

वाजिब नहीं। तूने तक़दीरें मुक़द्दर फ़रमाईं और दौरों को गर्दिश दी। और जो तुझे लिखना था, तूने किताबों में लिख दिया। कोई अमल करने वाला जन्नत वालों जैसे अमल करता है तो इंसानों और जिन्नों में से कुछ गुमान करने वाले समझते हैं कि वह ज़रूर उसमें दाखिल होगा और जैसे कि वह दाखिल हो चुका, फिर तक़दीर उस पर ग़ालिब आ जाती है और फिर वह निराश हो जाता है। और कोई अमल करने वाला जहन्नम वालों जैसे अमल करता है तो पड़ोसी और जिन पर आग (जहन्नम) ज़ाहिर होती है वे समझते हैं कि...

(उर्दू कॉलम)

वाला ग़ालिब है, कोई भागने वाला तेरे काबू से बाहर नहीं जा सकता और जो तू रोक दे कोई चाहने वाला उसे पा नहीं सकता, तुझ पर कुछ भी वाजिब नहीं, तूने तक़दीरें मुक़द्दर फ़रमाईं और दौरों को गर्दिश दी। और जो लिखना था उसे तक़दीर की किताबों में लिख दिया। कोई आदमी जन्नतियों जैसे काम करता है तो इंसानों और जिन्नों में से कुछ गुमान करने वाले...

صحیح وارد ہوئی یا نہیں، ہر تقدیر ثانی انہیں ضامن و کفیل رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کا سمجھ کر رضی اللہ تعالٰی عنہ کہیں یا مثل کفار سمجھیں؟ بینوا بسند الکتاب توجروا من الملک الوھاب بیوم القیمۃ والحساب۔ (کتاب کی سند کے ساتھ بیان فرمائیے قیامت اور حساب کے دن ملک الوہاب سے اجر دیئے جاؤ گے۔ ت)

الجواب: بسم اللہ الرحمن الرحیم

(عربی متن)	(اردو ترجمہ)
اللھم ربنا ولوجھك الحمد احق ما قال	اے اللہ ! ہمارے پروردگار ! اور حمد تیری ذات کے زیادہ
العبد وکلنالك عبد لا مانع لما اعطیت	لائق ہے۔ بنسبت اس کے جو بندے نے کہا۔ اور ہم سب تیرے
ولا معطي لما منعت ولا راد لما	بندے ہیں، جو تُو نے عطا فرمایا اُسے کوئی روکنے والے
قضیت ولا ینفع ذا الجد منك الجد لك	نہیں، اور جسے تُو نے روک دیا اُسے کوئی دینے والا نہیں،
الحمد علی ما ھدیت وعفوت وعافیت	اور تیرے فیصلہ کو کوئی رد کرنے والا نہیں اور تیرے
و منحت و اولیت تبارکت و تعالیت	سامنے کسی تونگر کی تونگری اُس کے لیے نافع نہیں، اور
سبحنك ربّ البیت مستجیرین بجمال	تیرے سامنے کسی تونگر کی تونگری اس کے لیے نافع
وجھك الکریم من عذابك الالیم و	نہیں، تیرے لیے ہی حمد ہے اس پر جو تونے ہدایت دی،
شاھدین بان لا حول ولا قوۃ الا باللہ	معاف فرمایا، عافیت دی، عطا فرمایا اور والی بنایا، تو برکت
العلی العظیم انت العزیز الغالب لا	والا ہے اور برتر ہے، اے رب کعبہ ! ہم تیری پاکی بیان
یعجزك ھارب ولا یدرك ما منعت	کرتے ہیں، تیرے دردناک عذاب سے تیری ذات کی پناہ

(عربی متن)

طالب ما عليك من واجب قدرت الاقدار ودورت الادوار و كتبت في الاسفار ما انت كاتب. يعمل عامل بعمل الجنان فيظن الظان من الانس والجان ان سيد خلها و كأن قد كان فيغلبه الكتاب فاذا هو خائب ويفعل فاعل افعال النيران فيحسب الجيران ومن طلع عليه النيران ان

(اردو ترجمہ)

مانگتے ہوئے اور اس پر گواہی دیتے ہوئے کہ اللہ برتر و عظیم کی توفیق کے بغیر نہ گناہ سے بچنے کی طاقت ہے نہ نیکی کرنے کی قوت تو عزت والا غالب ہے، کوئی بھاگنے والا تیرے قابو سے باہر نہیں جاسکتا اور جو تو روک دے کوئی طالب اس کو پا نہیں سکتا تجھ پر کچھ بھی واجب نہیں، تونے تقدیریں مقدر فرمائیں اور ادوار کو گردش دی۔ اور جو نے لکھنا تھا کتب تقدیر میں لکھ دیا۔ کوئی آدمی جنتیوں جیسے کام کرتا ہے تو انسانوں اور جنوں میں سے کچھ گمان کرنے والے

Fatawa Rizvia Volume 29

[Arabic Column] He will enter it, and it was as if the time had come, and fate overtook him, so he repented. You sent the best of Your creation and the lamp of Your horizon, Muhammad, who was sent with Your ease and gentleness as a bringer of glad tidings, a warner, and a shining lamp. His light filled the east and the west, and his light encompassed the distant and the near. Yet Abu Talib, despite being close to his presence, was deprived of the presence of his closeness. For You is the exalted proof. Bless Muhammad with a growing blessing, and his family, his companions, his household, and his group, a blessing that pleases You and pleases him, and protects the one who offers it from what ruins him. Bless and grant peace forever and ever. All praise is for Allah, always and eternally. Amen, Amen, O Most Merciful of those who show mercy!

[Urdu Column - Translation of the above] People begin to think that he will soon enter Paradise, as if it has already happened. Then what was written (destiny) prevails over him, so he fails and a worker continues to do deeds like those of the people of Hell, until his neighbors and others begin to think that he will soon enter it, and it is as if his time has come. Then destiny catches up with him, and he repents. You sent the best from among Your creation who is the lamp of Your horizon, namely Muhammad Mustafa, peace and blessings of Allah be upon him, who was sent from Your side with ease and gentleness, bringing glad tidings, warning, a shining lamp whose light filled the easts and the wests; his light is common to those far and near. And Abu Talib, despite being close to his presence, remained deprived of the presence of his proximity. Thus, Your proof is exalted. O Allah, send such a blessing upon Muhammad Mustafa, his family, his companions, his household, and his group, which is pleasing to You and pleasing to them, and which protects the one who recites the blessing from destruction, and send blessings and peace forever. And all praise is always for Allah alone. O the Best of those who show mercy! Accept our prayer (T).

[Bottom Section] There is no doubt that Abu Talib spent his entire life in the protection, support, sufficiency, and assistance of the Master of the Messengers, the Master of the first and the last, the Master of the righteous, peace and blessings of Allah be upon him and his family until the Day of Judgment. He held the Prophet dearer than his own children, and supported him at a time when a whole world had become his mortal enemy. Out of love for the Prophet, he tolerated opposition from all his relatives and close ones, and accepted leaving everyone. He left no stone

unturned in sympathy and devotion. He certainly knew that the Messenger of Allah, peace and blessings of Allah be upon him, is the best of Messengers and a true Prophet of Allah. In believing in him lies eternal paradise and in denying him lies eternal hell. At the time of his death, he willed the Banu Hashim that Muhammad, peace and blessings of Allah be upon him...

फतावा रिज़विया जिल्द 29

[अरबी कॉलम] वह उसमें प्रवेश करेगा, और ऐसा लगेगा कि समय आ गया है, और नियति उसे पा लेगी, तो वह पश्चाताप कर लेगा। आपने अपनी सृष्टि के सबसे उत्तम और अपने क्षितिज के दीपक, मुहम्मद को भेजा, जिन्हें आपकी आसानी और कोमलता के साथ खुशखबरी सुनाने वाला, डराने वाला और एक चमकता हुआ दीपक बनाकर भेजा गया। उनके प्रकाश ने पूर्व और पश्चिम को भर दिया, और उनका प्रकाश दूर और पास के लोगों में आम हो गया। लेकिन अबू तालिब उनकी बारगाह के करीब होने के बावजूद उनकी नजदीकी से महरूम रहे। आपकी ही दलील बुलंद है। मुहम्मद पर ऐसी बरकत वाली दुरूद भेज, और उनके परिवार, उनके साथियों, उनके घर वालों और उनके समूह पर, ऐसी दुरूद जो तुझे भी पसंद हो और उन्हें भी पसंद हो, और दुरूद पढ़ने वाले को तबाही से बचाए। हमेशा के लिए बरकत और सलामती नाजिल फरमा। और हर प्रशंसा हमेशा अल्लाह ही के लिए है। आमीन, आमीन, ऐ सबसे बड़े रहम करने वाले!

[उर्दू कॉलम - उपरोक्त का अनुवाद] लोग गुमान करने लगते हैं कि अनक़रीब यह जन्नत में दाखिल हो जाएगा, गोया कि ऐसा हो गया। फिर उस पर लिखा हुआ (तकदीर) गालिब आ जाता है तो वह नाकाम हो जाता है और कोई अमल करने वाला जहन्नमियों जैसे काम करता रहता है यहाँ तक कि उसके पड़ोसी और दीगर लोग समझने लगते कि अनक़रीब यह इसमें दाखिल होगा और गोया कि इसका वक्त करीब हो चुका है। फिर तकदीर उसको पा लेती है तो वह ताइब (तौबा करने वाला) हो जाता है। तूने अपनी मखलूक में से बेहतरीन को भेजा जो तेरे उफुक (क्षितिज) का सिराज (दीपक) है यानी मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम, जो तेरी तरफ से आसानी और नरमी के साथ मबऊस हुए (भेजे गए), खुशखबरी सुनाते हुए, डराते हुए, चमका देने वाले चराग जिसकी रोशनी ने मश्रिक़ों और मग़रिबों (पूरब और पश्चिम) को भर दिया, उसका नूर दूर और नज़दीक वालों के लिए आम है। और अबू तालिब उनकी बारगाह के करीब होने के बावजूद उनकी बारगाह-ए-कुर्ब से महरूम रहे। चुनाँचे तेरी ही हुज्जत बुलंद है। मुहम्मद मुस्तफा, आपकी आल, आपके असहाब, आपके अहल-ए-खाना और आपकी जमात पर ऐसा दुरूद नाज़िल फरमा जो तुझे भी पसंद हो और उन्हें भी पसंद हो, जो दुरूद पढ़ने वाले को हलाकत से बचाए और बरकत व सलाम नाज़िल फरमा हमेशा के लिए। और हर हम्द (तारीफ) हमेशा अल्लाह ही के लिए है। ऐ बेहतरीन रहम फरमाने वाले! हमारी दुआ को कुबूल फरमा (त)।

[नीचे का खंड] इसमें कोई शक नहीं कि अबू तालिब ने पूरी उम्र सैयदुल मुर्सलीन, सैयदुल अव्वलीन वल आख़िरीन, सैयदुल अबरार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की हिफाज़त, हिमायत, किफायत और नुसरत में मसरूफ रहे। उन्होंने हुज़ूर को अपनी औलाद से ज़्यादा अज़ीज़ रखा, और उस वक़्त साथ दिया जब पूरी दुनिया हुज़ूर की जान की दुश्मन हो गई थी। हुज़ूर की मोहब्बत में उन्होंने अपने तमाम अज़ीज़ों और क़रीबियों की मुख़ालफ़त बर्दाश्त की, सबको छोड़ देना गवारा किया। हमदर्दी और जां-निसारी में कोई कसर नहीं छोड़ी। और वे निश्चित रूप से जानते थे कि हुज़ूर अफ़ज़लुल मुर्सलीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम अल्लाह के सच्चे रसूल हैं। उन पर ईमान लाने में शाश्वत स्वर्ग है और उन्हें झुठलाने में स्थायी नरक है। मरते वक़्त उन्होंने बनू हाशिम को वसीयत की कि मुहम्मद सल्लल्लाहु...

[عربی کالم] سیوردها وکأن قد حان فیدرك القدر فإذا هو تائب ارسلت خیر خلقك و سراج افقك محمدا المبعوث بیسرك و رفقك بشیرا و نذیرا و سراجا منیرا ملأ ضوؤه المشارق والمغارب وعم نوره الاباعد والاقارب وحرم بقرب حضرته من حضرة قربه ابو طالب فلك الحجة السامیة صل علی محمد صلاة نامیة وعلی اله وصحبه واهله وحزبه صلاة ترضیك و ترضیه وتحفظ المصلی عما یردیه وبارك وسلم ابدا ابدا والحمد لله دائما سرمدا امین امین یا ارحم الراحمین!

[اردو کالم] گمان کرنے لگتے ہیں کہ عنقریب یہ جنت میں داخل ہو جائے گا گویا کہ ایسا ہو گیا۔ پھر اس پر لکھا ہوا غالب آ جاتا ہے تو وہ ناکام ہو جاتا ہے اور کوئی عامل جہنمیوں جیسے کام کرتا رہتا ہے یہاں تک کہ اس کے پڑوسی اور دیگر لوگ سمجھنے لگتے کہ عنقریب یہ اس میں داخل ہو گا اور گویا کہ اس کا وقت قریب ہو چکا ہے، پھر تقدیر اس کو پالیتی ہے تو وہ تائب ہو جاتا ہے، تُو نے اپنی مخلوق میں سے بہترین کو بھیجا جو تیرے افق کا سراج ہے یعنی محمد مصطفی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم جو تیری طرف سے آسانی اور نرمی کے ساتھ مبعوث ہوئے خوشخبری سناتے، ڈر سناتے، چمکا دینے والے چراغ جس کی روشن نے مشرقوں اور مغربوں کو بھر دیا، اس کا نور دور و نزدیک والوں کو عام ہے۔ اور ابو طالب اس کی بارگاہ کے قریب کے باوجود اس کی بارگاہِ قرب سے محروم رہے۔ چنانچہ تیری ہی حجت بلند ہے۔ محمد مصطفٰی آپ کی آل، آپ کے اصحاب، آپ کے اہل خانہ اور آپ کی جماعت پر ایسا پڑھنے والا درود نازل فرما جو تجھے بھی پسند ہو اور انہیں بھی پسند ہو جو درود پڑھنے والے کو ہلاکت سے بچائے اور برکت و سلام نازل فرما ہمیشہ کے لیے۔ اور ہر حمد ہمیشہ اللہ ہی کے لیے ہے۔ اے بہترین رحم فرمانے والے! ہماری دعا کو قبول فرما(ت)

[نیچے والا حصہ] اس میں شک نہیں کہ ابوطالب تمام عمر حضور سید المرسلین سید الاولین والآخرین سید الابرار صلی اللہ تعالیٰ علیہ و علی آلہ وسلم الی یوم القرار کی حفظ و حمایت و کفایت و نصرت میں مصروف رہے۔ اپنی اولاد سے زیادہ حضور کو عزیز رکھا، اور اس وقت میں ساتھ دیا کہ ایک عالم حضور کا دشمن جاں ہو گیا تھا، اور حضور کی محبت میں اپنے تمام عزیزوں قریبیوں سے مخالفت گوارا کی، سب کو چھوڑ دینا قبول کیا، کوئی دقیقہ غمگساری و جاں نثاری کا نامرعی نہ رکھا، اور یقیناً جانتے تھے کہ حضور افضل المرسلین صلی اللہ تعالیٰ علیہ و سلم اللہ کے سچے رسول ہیں، ان پر ایمان لانے میں جنت ابدی اور تکذیب میں جہنم دائمی ہے، بنو ہاشم کو مرتے وقت وصیت کی کہ محمد صلی اللہ

صفحہ 750 میں سے 658

Fatawa Razawiyya, Volume 29

(Prophet Muhammad) Peace and blessings be upon him, testify to him and you will find success. Poems of praise (Na'at) are narrated from him (Abu Talib), and in them, he mentioned matters through intuition that had not occurred at that time. They manifested after the noble Prophet's arrival. All these circumstances are evident from studying Hadith and referring to books of biography (Sirah). One verse from his poem is also narrated in Sahih Bukhari:

And a fair-skinned one, through whose face the clouds are asked for rain, the support of orphans, the protector of widows.[1]

(He is of fair complexion, by the means of whose radiant face rain falls, the refuge of orphans, the guardian of widows, peace and blessings of Allah be upon him. - Trans.)

Muhammad ibn Ishaq, a Successor (Tabi'i) and author of works on biography and battles, narrated this entire poem, which consists of one hundred and ten (110) verses in grand praise and high-status attributes. Sheikh Muhaqqiq Maulana Abdul Haq Muhaddith Dehlvi (may his secret be sanctified), in 'Sharh Sirat-e-Mustaqim', says regarding this poem:

It clearly indicates perfect love and the ultimate recognition of his prophethood. (Trans.) | This poem of Abu Talib indicates perfect love for the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) and the extreme recognition of his prophethood. (Trans.)[2]

However, faith is not established by these matters alone. If only these actions and words had proceeded from him in a state of Islam, he would have been considered superior to Sayyiduna Abbas, and apparently even Sayyiduna Hamza (may Allah be pleased with them both), and would have been called the best of creatures (after) the master of all mankind (peace and blessings be upon him and his family). Divine destiny, based on wisdom known to Him or His Messenger (peace and blessings be upon him), did not intend for him to be counted among the group of Muslims and the slaves of the Intercessor of the Sinners (peace and blessings be upon him). "So take warning, O you who have eyes"[3] (Quran 59:2). Merely knowing, no matter how perfect the recognition, is not faith. Knowing and identifying is one thing, while submitting and believing is another. How few were the disbelievers who were not certain of the Messenger of Allah (peace and blessings be upon him) being a true Prophet? "And they denied them, though their souls were convinced of them"[4]

(Quran 27:14). And the scholars of the People of the Book generally had complete certainty, to the extent that this matter was more than evident to them, an error in observation was impossible.

[1] Sahih al-Bukhari, Chapters of Istisqa (Praying for Rain), Chapter: People asking the Imam for Istisqa, Qadimi Kutub Khana, Karachi, 1/164. [2] Sharh Safar al-Sa'adah, Section on visiting the sick, Maktaba Nooria Razawiyya, Sukkur, p. 249. [3] Al-Quran al-Karim, 59/2. [4] Al-Quran al-Karim, 27/14.

फ़तावा रज़विया, खंड 29

(हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की तस्दीक करो, कामयाबी पाओगे। उनसे नात शरीफ़ में क़सीदे रिवायत किए गए हैं, और उनमें दूरदर्शिता (फ़रासत) से उन बातों का ज़िक्र किया गया है जो उस समय तक घटित नहीं हुई थीं। वे हुज़ूर की बेअसत (नबूवत के ऐलान) के बाद ज़ाहिर हुईं। ये सभी हालात हदीस के अध्ययन और सीरत की किताबों के परामर्श से स्पष्ट हैं। उनके एक क़सीदे का एक शेर सहीह बुखारी शरीफ़ में भी रिवायत किया गया है:

वो गोरे रंग वाले जिनके रोशन चेहरे के वसीले से बारिश माँगी जाती है, यतीमों के ठिकाने और विधवाओं के रखवाले।[1]

(वह गोरे रंग वाले जिनके रोशन चेहरे के वसीले से बारिश बरसती है, यतीमों के ठिकाने और विधवाओं के रखवाले सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम। - अनुवादक)

मुहम्मद बिन इस्हक़ ताबिई, सीरत और मग़ाज़ी (युद्धों) के लेखक, ने इस पूरे क़सीदे को नक़ल किया है जिसमें एक सौ दस (110) शेर अज़ीम प्रशंसा और बुलंद सिफ़ात पर आधारित हैं। शेख़ मोहक़्क़िक़ मौलाना अब्दुल हक़ मोहद्दिस देहलवी (क़ुद्दसा सिर्रहु), 'शरह सिराते मुस्तक़ीम' में इस क़सीदे के बारे में फ़रमाते हैं:

यह उनके कमाल-ए-मोहब्बत और नबूवत की इंतहाई पहचान पर खुली दलील है। (अनु.) | यह क़सीदा अबू तालिब की रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ कमाल-ए-मोहब्बत और आप की नबूवत की इंतहाई मारिफ़त (पहचान) पर दलालत करता है। (अनु.)[2]

लेकिन केवल इन बातों से ईमान साबित नहीं होता। काश ये आमाल और बातें उनसे इस्लाम की स्थिति में ज़ाहिर होतीं, तो वे सैयदना अब्बास बल्कि ज़ाहिर तौर पर सैयदना हमज़ा (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से भी अफ़ज़ल करार पाते और अफ़ज़लुल अनाम हुज़ूर अफ़ज़लुल अनाम (अलैहि वसल्लम) के गुलामों में अफ़ज़ल कहलाते। तक़दीर-ए-इलाही ने हिकमत की बुनियाद पर, जिसे वह जाने या उसका रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम), उन्हें मुसलमानों के समूह और शफ़ीउल मुज़निबीन (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के गुलामों में शुमार किया जाना मंज़ूर न फ़रमाया। "तो इबरत (सबक़) हासिल करो ऐ आँखों वालो!"[3] (कुरान 59:2)। केवल मारिफ़त (पहचान) चाहे कितनी ही कामिल क्यों न हो, ईमान नहीं है। जानना और पहचानना और चीज़ है, और मानना और पैरवी करना और चीज़ है। कितने ही कम काफ़िर थे जिन्हें रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के सच्चे पैग़म्बर होने का

यक़ीन न था? "और उन्होंने उनका इनकार किया हालाँकि उनके दिल उनका यक़ीन कर चुके थे"[4] (कुरान 27:14)। और अहल-ए-किताब के उलेमा तो आमतौर पर पूर्ण निश्चय रखते थे, यहाँ तक कि यह मामला उनके नज़दीक आँखों देखी चीज़ से भी बढ़कर था, मुआयने में कोई ग़लती मुमकिन न थी।

[1] सहीह अल-बुख़ारी, अबवाबुल इस्तिस्का, बाब: लोगों का इमाम से बारिश की दुआ की दरख्वास्त करना, क़दीमी कुतुब खाना कराची 1/164. [2] शरह सफ़रुस सआदत, बीमारों की मिज़ाजपुर्सी के बयान में, मकतबा नूरिया रज़विया सुक्कुर, पृ. 249. [3] अल-कुरान अल-करीम, 59/2. [4] अल-कुरान अल-करीम, 27/14.

تعالٰی علیہ وسلم کی تصدیق کرو فلاح پاؤ گے، نعت شریف میں قصائد ان سے منقول، اور اُن میں براہِ فراست وہ امور ذکر کیے کہ اس وقت تک واقع نہ ہوئے تھے۔ بعد بعثت شریف ان کا ظہور ہوا، یہ سب احوال مطالعہ احادیث و مراجعت کتب سیر سے ظاہر، ایک شعر ان کے قصیدے کا صحیح بخاری شریف میں بھی مروی:

وأبیض یستسقی الغمام بوجھه ثمال الیتامی عصمة للارامل[1]

(وہ گورے رنگ والے جن کے رُوئے روشن کے توسل سے مینہ برستا ہے، یتیموں کے جائے پناہ بیواؤں کے نگہبان صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم۔ت)

محمد بن اسحق تابعی صاحب سیر و مغازی نے یہ قصیدہ بتمامہا نقل کیا جس میں ایک سو ۱۱۰ دس بیتیں مدح جلیل و نعت منیع پر مشتمل ہیں۔ شیخ محقق مولانا عبدالحق محدث دہلوی قدس سرہ، شرح صراطِ مستقیم میں اس قصیدہ کی نسبت فرماتے ہیں:

دلالت صریح دار و بر کمال محبت و نہایت نبوت او انتہی[2]۔ | یہ قصیدہ ابوطالب کی رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کے ساتھ کمال محبت اور آپ کی نبوت کی انتہائی معرفت پر دلالت کرتا ہے۔(ت)

مگر مجرد ان امور سے ایمان ثابت نہیں ہوتا۔ کاش یہ افعال و اقوال اُن سے حالتِ اسلام میں صادر ہوتے تو سیّدنا عباس بلکہ ظاہراً سیّدنا حمزہ رضی اللہ تعالٰی عنہما سے بھی افضل قرار پاتے اور افضل الانعام حضور افضل الانام علیہ وعلٰی آلہ وافضل الصلوۃ والسلام کہلائے جاتے۔ تقدیر الٰہی نے بربنائے حکمت کے جسے وہ جانے یا اُس کا رسول صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم انہیں گروہِ

مسلمین و غلامانِ شفیع المذنبین صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم میں شمار کیا جانا منظور نہ فرمایا "فَاعْتَبِرُوْا یٰۤاُولِی الْاَبْصَارِ"[3]۔ (تو عبرت لو اے نگاہ والو! ت) صرف معرفت گو کیسی ہی کمال کے ساتھ ہو ایمان نہیں، دانستن و شناختن اور چیز ہے اور اذعان و گرویدن اور، کم کافر تھے جنہیں رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے سچے پیغمبر ہونے کا یقین نہ تھا "وَ جَحَدُوْا بِهَا وَ اسْتَیْقَنَتْهَاۤ اَنْفُسُهُمْ"[4] (اور ان کے منکر ہوئے اور ان کے دلوں میں ان کا یقین تھا۔ت) اور علمائے اہل کتاب تو عموماً جزمِ کلی رکھتے تھے حتیٰ کہ یہ امر ان کے نزدیک کالعیان سے بھی زائد تھا معائنہ میں بھر غلطی

[1] صحیح البخاری ابواب الاستسقاء باب سوال الناس الامام الاستسقاء قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/ ۱۶۴

[2] شرح سفر السعادۃ فصل در بیان عیادت بیماراں مکتبہ نوریہ رضویہ سکھر ص ۲۴۹ [3] القرآن الکریم ۵۹/ ۲ [4] القرآن الکریم ۲۷/ ۱۴

Fatawa Ridawiyya - Volume 29

...also does, and there was no doubt or possibility of it here. Allah (Jalla wa 'Ala) said: "They recognize him as they recognize their own sons." 1. They recognize this Prophet as a person recognizes his own sons. (T) And Allah (the Mightiest Speaker) said: "But when there came to them that which they recognized, they disbelieved in it; so the curse of Allah is upon the disbelievers." 2. So when there came to them that which was well-recognized, they became deniers of it; then Allah's curse be upon the deniers. (T)

And Allah (Jalla Zikruhu) said: "They find him written with them in the Torah and the Gospel." 3. They will find it written with them in the Torah and the Gospel. (T) Some blind-eyed, evil-natured Wahhabis of the age talk about this and say that if the mention of the Prophethood of the Holy Prophet was present among the People of the Book, why did they not bring faith? They are deniers of decisive texts (Nusoos-e-Qatiah), liars against God and His Messenger, and supporters and validators of Jews and Christians. I seek refuge in Allah from the whisperings of Satan (T). In Sharh-ul-Aqa'id al-Nasafiyya, it is mentioned: "The essence of 'Tasdiq' (verification/belief) is not merely the occurrence of the relation of truth to the news and the informer in the heart without submission (Adh'an) and acceptance; rather, it is submission and acceptance of such a nature that the name 'Taslim' (submission) applies to it, as clarified by Imam al-Ghazali." 4. The reality of Tasdiq is not that the relation of truth of the news or the informer occurs in the heart without submission and acceptance, but rather it is submission and to accept in such a way that the name 'Taslim' applies to it. As Imam al-Ghazali (may Allah have mercy upon him) has clarified. (T) In the same [source], it is mentioned:

1 Al-Qur'an al-Karim 2:146 2 Al-Qur'an al-Karim 2:89 3 Al-Qur'an al-Karim 7:157 4 Sharh Aqa'id al-Nasafi wal-Iman fil-Lughat al-Tasdiq, Dar-ul-Isha'at al-Arabia, Kandahar, Afghanistan, p. 89 Page 660 of 750

फ़तावा रज़विया - जिल्द 29

...भी करती है और यहाँ किसी तरह का संदेह या संभावना नहीं थी। अल्लाह (जल्ला व अला) ने फ़रमाया: "वे उसे वैसे ही पहचानते हैं जैसे वे अपने पुत्रों को पहचानते हैं।" 1. वे इस नबी को ऐसा पहचानते हैं जैसे आदमी अपने बेटों को पहचानता है। (त) और अल्लाह (महानतम वक्ता) ने फ़रमाया: "परन्तु जब उनके पास वह आया जिसे उन्होंने पहचान लिया, तो उन्होंने उसका इनकार किया; अतः इनकार करने वालों पर अल्लाह की लानत है।" 2. तो जब उनके पास वह जाना-पहचाना आया, वे उसके मुनकिर (इनकार करने वाले) हो गए; तो अल्लाह की लानत हो मुनकिरों पर। (त)

और अल्लाह (जल्ला ज़िक्रुहू) ने फ़रमाया: "वे उसे अपने पास तौरात और इंजील में लिखा हुआ पाते हैं।" 3. लिखा हुआ पाएंगे अपने पास तौरात और इंजील में। (त) इस युग के कुछ अंधे और बद-बातिन वहाबी इस बारे में बात करते हैं और कहते हैं कि अगर अहल-ए-किताब के यहाँ हुज़ूर की रिसालत का ज़िक्र होता तो वे ईमान क्यों न लाते? वे स्पष्ट प्रमाणों (नुसूस-ए-क़ातिआ) का इनकार करने वाले, खुदा और रसूल को झुठलाने वाले और यहूदियों और ईसाइयों के समर्थक और उनकी पुष्टि करने वाले हैं। मैं शैतान के वसवसों से अल्लाह की पनाह माँगता हूँ (त)। शरह अक़ायद-ए-नफ़सी में है: "तस्दीक़ की हकीकत यह नहीं है कि दिल में ख़बर या ख़बर देने वाले की सच्चाई का संबंध बिना समर्पण (अज़ान) और स्वीकृति के उत्पन्न हो जाए, बल्कि वह समर्पण और स्वीकृति ऐसी होनी चाहिए कि उस पर 'तस्लीम' (समर्पण) का नाम लागू हो, जैसा कि इमाम गज़ाली ने स्पष्ट किया है।" 4. तस्दीक़ की वास्तविकता यह नहीं है कि दिल में ख़बर या ख़बर देने वाले की सच्चाई का संबंध बिना अज़ान और क़बूलियत के वाक़े हो जाए, बल्कि वह तो अज़ान और इस तरह क़बूल करना है कि उस पर 'तस्लीम' नाम वाक़े हो। जैसा कि इमाम गज़ाली (अल्लाह उन पर रहम करे) ने इसकी तसरीह (स्पष्टीकरण) फ़रमाई है। (त) इसी में है:

1 अल-क़ुरआन अल-करीम 146/2 2 अल-क़ुरआन अल-करीम 89/2 3 अल-क़ुरआन अल-करीम 157/7 4 शरह अक़ायद अल-नसफ़ी वल-ईमान फ़िल-लुगत अत-तस्दीक़, दारुल-इशाअत अल-अरबिया, कंधार अफ़ग़ानिस्तान, पृ. 89 पेज 660 का 750

بھی کرتی ہے اور یہاں کسی طرح کا شبہ و احتمال نہ تھا۔ قال جل وعلا (اللہ جل وعلا نے فرمایا) : "یَعْرِفُونَهُ كَمَا يَعْرِفُونَ أَبْنَاءَهُمْ" 1۔ وہ اس نبی کو ایسا پہچانتے ہیں جیسے آدمی اپنے بیٹوں کو پہچانتا ہے۔ (ت) وقال عز من قائل: "فَلَمَّا جَاءَهُمْ مَا عَرَفُوا كَفَرُوا بِهِ ۚ فَلَعْنَةُ اللَّهِ عَلَى الْكَافِرِينَ" 2 تو جب تشریف لایا ان کے پاس وہ جانا پہچانا اس کے منکر ہو بیٹھے تو اللہ کی لعنت منکروں پر۔ (ت)

وقال جل ذکرہ: "يَجِدُونَهُ مَكْتُوبًا عِنْدَهُمْ فِي التَّوْرَاةِ وَالْإِنْجِيلِ" 3۔ لکھا ہوا پائیں گے اپنے پاس توریت اور انجیل میں۔ (ت) بعض کور چشم بد باطن وہابیہ عصر کہ اس میں کلام کرتے اور کہتے ہیں اگر اہل کتاب کے یہاں حضور کا ذکر رسالت ہوتا تو ایمان کیوں نہ لاتے ۔ نصوص قاطعہ سے انکار اور خدا اور رسول کی تکذیب اور یہودی و نصاری کی حمایت و تصدیق کرنے والے ہیں۔ اعوذ باللہ من وسواس الشیطان (میں شیطان کے وسوسوں سے پناہ مانگتا ہوں ۔ ت) شرح عقائد نفسی میں ہے: لیست حقیقة التصدیق ان تقع فی القلب نسبة الصدق الی الخبر والمخبر من غیر اذعان وقبول بل ھو اذعان وقبول لذلک بحیث یقع علیہ اسم التسلیم علی ما صرح بہ الامام الغزالی 4۔ حقیقت تصدیق یہ نہیں کہ دل میں خبر یا مخبر کی سچائی کی نسبت واقع ہو جائے بغیر اذعان و قبول کے، بلکہ وہ تو اذعان اور اس طرح قبول کرنا ہے کہ اس پر اسم تسلیم واقع ہو۔ جیسا کہ امام غزالی علیہ الرحمہ نے اس کی تصریح فرمائی ہے۔ (ت) اسی میں ہے:

1 القرآن الکریم ۱۴۶/۲ 2 القرآن الکریم ۸۹/۲ 3 القرآن الکریم ۱۵۷/۷ 4 شرح عقائد النسفی والایمان فی اللغة التصدیق دارالاشاعة العربیہ قندھار افغانستان ص ۸۹ Page 660 of 750

Fatawa Razawiyya, Volume 29

[Section 1] (Arabic): Some of the Qadariyya went towards the view that faith is merely knowledge (ma'rifah). Our scholars are unanimous on the corruption of this statement because the People of the Book used to recognize the prophethood of Muhammad (peace and blessings of Allah be upon him) just as they recognized their own sons, despite the certainty of their disbelief due to the absence of affirmation (tasdiq). Also, among the disbelievers were those who knew the truth with certainty and only denied it out of stubbornness or arrogance. Allah the Almighty said: "And they rejected them, while their inner selves were convinced thereof." [1]

(Urdu Translation): Some Qadariyya have taken the view that faith is only called knowledge, and our scholars have a consensus on the corruption of this saying, because the People of the Book used to recognize the prophethood of Muhammad Mustafa (peace and blessings of Allah be upon him) as they recognized their sons. Despite this knowledge, their disbelief is certain because affirmation was not found there, and also because some disbelievers certainly recognized the truth and denied it merely out of stubbornness and arrogance. Allah the Almighty said: Although they were deniers of them, yet their hearts were certain of them. (T)

Muhaqqiq Dawani states in the commentary of 'Aqa'id 'Adudiyya:

[Section 2] (Arabic): Uttering the two testimonies (Shahadatayn) while being capable of it is a condition [for faith]. So, whoever falls short in it is a disbeliever who will abide forever in the Fire, and heartfelt knowledge without submission and acceptance will not benefit him. For among the disbelievers were those who knew the truth with certainty and their denial was due to stubbornness and arrogance, as Allah the Almighty said: "And they rejected them, while their inner selves were convinced thereof, in injustice and haughtiness." [2]

(Urdu Translation): Pronouncing the two words of testimony (testimony of monotheism and messengership) while being capable of it is a condition of faith. So whoever falls short in it is a disbeliever and will remain in Hell permanently, and heartfelt knowledge without submission and acceptance will not benefit him. Because some disbelievers were such that they certainly recognized the truth. Their denial was due to stubbornness and arrogance. As Allah the Almighty said: And they denied them although their hearts were certain of them due to injustice and arrogance. (T)

[Footnotes] 1. Sharh al-'Aqa'id al-Nasafiyya, al-Iman la Yazidu wa la Yanqasu, Dar al-Isha'at al-Arabiyya, Kandahar, Afghanistan, pp. 93-94. 2. Al-Dawani, al-'Aqa'id al-'Adudiyya, al-Kufr 'Adam al-Iman, Matba' Mujtabai, Delhi, p. 101.

फतावा रज़विया, जिल्द 29

[धारा 1] (अरबी): कुछ कदरिया का यह मानना था कि ईमान केवल ज्ञान (मारिफ़त) है। हमारे विद्वानों की इस कथन की अशुद्धता पर सहमति है क्योंकि अहले किताब (किताब वाले) मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की नबुवत को वैसे ही पहचानते थे जैसे वे अपने बेटों को पहचानते थे, इसके बावजूद उनके कुफ्र पर कोई संदेह नहीं है क्योंकि इसमें तस्दीक (पुष्टि) का अभाव था। और इसलिए भी कि काफ़िरों में से कुछ सत्य को निश्चित रूप से जानते थे और केवल हठ या अहंकार के कारण इसका इनकार करते थे। अल्लाह तआला ने फरमाया: "और उन्होंने उनका इनकार किया, जबकि उनके मन उनके बारे में आश्वस्त थे।" [1]

(उर्दू अनुवाद): कुछ कदरिया इस विचार के थे कि ईमान केवल मारिफ़त को कहते हैं। हमारे उलेमा का इस कथन की अशुद्धता पर इज्मा (सर्वसम्मति) है, क्योंकि अहले किताब मुहम्मद मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की नुबुव्वत को वैसे ही पहचानते थे जैसे अपने बेटों को पहचानते थे, इस मारिफ़त के बावजूद उनका कुफ्र निश्चित है क्योंकि वहाँ तस्दीक नहीं पाई गई, और इसलिए भी कि कुछ काफ़िर निश्चित रूप से सत्य को पहचानते थे और केवल हठधर्मिता और अहंकार की वजह से इनकार करते थे। अल्लाह तआला ने फरमाया: जबकि उन्होंने उनका इनकार किया और उनके दिलों में उनका यकीन था। (त)

मुहक़्क़िक़ दवानी 'शर्ह अकाइद अज़ुदीया' में फरमाते हैं:

[धारा 2] (अरबी): समर्थ होने पर शहादत के दो कलिमों का उच्चारण करना एक शर्त है। अत; जो कोई इसमें कोताही करता है वह काफ़िर है जो हमेशा के लिए आग (नरक) में रहेगा, और आज़ान (आज्ञाकारिता) और स्वीकृति के बिना हृदय का ज्ञान उसे लाभ नहीं देगा। क्योंकि काफ़िरों में से कुछ ऐसे थे जो सत्य को निश्चित रूप से जानते थे और उनका इनकार हठ और अहंकार के कारण था, जैसा कि अल्लाह तआला ने फरमाया: "और उन्होंने उनका इनकार किया, जबकि उनके मन उनके बारे में आश्वस्त थे, ज़ुल्म और सरकशी की वजह से।" [2]

(उर्दू अनुवाद): शहादत (तौहीद और रिसालत की गवाही) के दो कलिमों के साथ तलफ़्फ़ुज़ करना जब कि उस पर क़ादिर (समर्थ) हो, ईमान की शर्त है। तो जिसने इसमें कोताही की तो वह काफ़िर है और स्थायी तौर पर जहन्नुम में रहने वाला है, और अज़ान और क़बूलियत के बिना मारिफ़ते कल्बी उसे लाभ नहीं देगी। क्योंकि कुछ काफ़िर ऐसे हैं जो निश्चित रूप से सत्य को पहचानते थे। उनका

इनकार हठधर्मिता और अहंकार की वजह से था। जैसा कि अल्लाह तआला ने फरमाया और उन्होंने उनका इनकार किया हालांकि उनके दिलों में उनका यक़ीन था ज़ुल्म और तकब्बुर (अहंकार) की वजह से। (त)

[पाद-टिप्पणियाँ] 1. शर्ह अकाइद अन-नस्फी, अल-ईमान ला यज़ीदु व ला यन्कुसु, दार अल-इशाअत अल-अरबिया, कंधार, अफ़गानिस्तान, पृ. 93-94। 2. अद-दवानी, अल-अकाइद अल-अज़ुदीया, अल-कुफ्र अदम अल-ईमान, मतबा मुजतबाई, दिल्ली, पृ. 101।

بعض القدرية ذهب الى ان الايمان هو المعرفة و اطبق علماؤنا على فساده لان اهل الكتاب كانوا يعرفون نبوة محمد صلى الله تعالى عليه وسلم كما كانوا يعرفون ابناء هم مع القطع بكفرهم لعدم التصديق ولان من الكفار من كان يعرف الحق يقينا وانما كان ينكر عنادا اواستكبارا قال الله تعالى وجحدوا بها واستيقنتها انفسهم - 1

بعض قدریہ اس طرف گئے ہیں کہ ایمان فقط معرفت کو کہتے ہیں، اور ہمارے علماء کا اس قول کے فساد پر اجماع ہے، کیونکہ اہل کتاب محمد مصطفی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی نبوت کو ایسے پہچانتے تھے جیسے اپنے بیٹوں کو پہچانتے تھے، اس معرفت کے باوجود ان کا کفر قطعی ہے کیونکہ وہاں تصدیق نہیں پائی گئی، اور اس لئے بھی کہ بعض کافر یقینی طور پر حق کو پہچانتے تھے اور محض عناد و تکبر کی وجہ سے انکار کرتے تھے، اللہ تعالیٰ نے فرمایا: حالانکہ ان کے منکر ہوئے اور ان کے دلوں میں ان کا یقین تھا (ت)

محقق دوانی شرح عقائد عضدی میں فرماتے ہیں:

التلفظ بكلمتى الشهادتين مع القدرة عليه شرط فمن اخل به فهو كافر مخلد في النار ولا تنفعه المعرفة القلبية من غير اذعان وقبول فان من الكفار من كان يعرف الحق يقينا وكان انكاره عنادا واستكبارا كما قال الله تعالى "وَجَحَدُوا بِهَا وَاسْتَيْقَنَتْهَا اَنْفُسُهُمْ ظُلْمًا وَّ عُلُوًّا" 2

شہادت (توحید و رسالت کی شہادت) کے دو کلموں کے ساتھ تلفظ کرنا جب کہ اس پر قادر ہو ایمان کی شرط ہے، تو جس نے اس میں کوتاہی کی تو وہ کافر ہے اور دائمی طور پر جہنم میں رہنے والا ہے، اور اذعان و قبول کے بغیر معرفتِ قلبی اس کو نفع نہیں دے گی۔ کیونکہ بعض کافر ایسے

ہیں جو یقینی طور پر حق کو پہچانتے تھے۔ ان کا انکار عناد و تکبر کی وجہ سے تھا۔ جیسا کہ اللہ تعالیٰ نے فرمایا اور ان کے منکر ہوئے حالانکہ ان کے دلوں میں ان کا یقین تھا ظلم اور تکبر کی وجہ سے۔ (ت)

1 شرح عقائد النسفی و الایمان لایزید ولا ینقص دار الاشاعت العربیہ قندھار افغانستان ص ۹۳ و ۹۴

2 الدوانی العقائد العضدیۃ والکفر عدم الایمان مطبع مجتبائی دہلی ص ۱۰۱

Fatawa-e-Razvia Volume 29

From Quranic verses and authentic, consecutive, and mutually supporting Hadiths, Abu Talib's death in a state of disbelief, his refusal to embrace faith at his last breath, and his ultimate fate as one of the inhabitants of Hell are established by such clear evidence that no Sunni has the opportunity to raise any objection. We divide the discourse here into seven chapters.

Chapter One __ Quranic Verses

First Verse: Allah, the Blessed and Exalted, said: "Indeed, [O Muhammad], you do not guide whom you like, but Allah guides whom He wills. And He is most knowing of the [rightly] guided."[1] Translation: O Prophet! You do not give guidance to whom you love, but Allah guides whom He wills, and He knows best those who are guided.

There is a consensus among commentators that this noble verse was revealed concerning Abu Talib. It is stated in Ma'alim al-Tanzil: [Arabic]: Nazalat fi Abi Talib[2]. Translation: Revealed concerning Abu Talib. (t)

In Jalalayn it is stated: [Arabic]: Nazala fi hirsihī sallallāhu ta'ālā 'alayhi wa sallama 'alā īmāni 'ammihī Abī Tālib[3]. Translation: This verse was revealed regarding the Holy Prophet's (peace and blessings of Allah be upon him) intense desire for his uncle Abu Talib to embrace the faith. (t)

In Madarik al-Tanzil it is stated: [Arabic]: Qala al-Zajjaj ajma'a al-mufassiruna annaha nazalat fi Abi Talib[4]. Translation: Az-Zajjaj said that the commentators have a consensus that this noble verse was revealed concerning Abu Talib. (t)

In Kashaf al-Zamakhshari and Tafsir al-Kabir it is stated:

---

1. Al-Quran Al-Karim 28/56
2. Ma'alim al-Tanzil (Tafsir al-Baghawi), under Verse 28/56, Dar al-Kutub al-Ilmiyya, Beirut, 3/387
3. Tafsir Jalalayn (Tafsir al-Baghawi), under Verse 28/56, Asah al-Matabi, Delhi, p. 332
4. Madarik al-Tanzil (Tafsir al-Nasafi), under Verse 28/56, Dar al-Kitab al-Arabi, Beirut, 3/240

फतावा-ए-रज़विया जिल्द 29

कुरान की आयतों और प्रामाणिक, लगातार और परस्पर सहायक हदीसों से, अबू तालिब की कुफ्र (अविश्वास) की अवस्था में मृत्यु, अपनी अंतिम सांस में विश्वास स्वीकार करने से इनकार और अंततः नर्कवासियों में से एक होना ऐसे स्पष्ट प्रमाणों से सिद्ध है कि किसी भी सुन्नी के लिए आपत्ति करने की कोई गुंजाइश नहीं है। हम यहाँ इस चर्चा को सात अध्यायों में विभाजित करते हैं।

अध्याय एक __ कुरान की आयतें

पहली आयत: अल्लाह तबारक व तआला ने फ़रमाया: "बेशक, [हे मुहम्मद], आप उसे निर्देशित नहीं करते जिसे आप पसंद करते हैं, लेकिन अल्लाह जिसे चाहता है उसे निर्देशित करता है। और वह निर्देशित होने वालों को सबसे अच्छी तरह जानता है।"[1] अनुवाद: ऐ नबी! तुम हिदायत (मार्गदर्शन) नहीं देते जिसे तुम दोस्त रखो, हाँ ख़ुदा हिदायत देता है जिसे चाहे, वह खूब जानता है जो राह पाने वाले हैं।

मुफ़स्सिरों (टीकाकारों) की सहमति है कि यह आयत-ए-करीमा अबू तालिब के बारे में नाज़िल (उतरी) हुई। मआलिम अल-तंज़ील में है: [अरबी]: नज़लत फ़ी अबी तालिब[2]। अनुवाद: अबू तालिब के हक़ में नाज़िल हुई। (त)

जलालैन में है: [अरबी]: नज़ल फ़ी हिरसिही सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम अला ईमानी अम्मीही अबी तालिब[3]। अनुवाद: यह आयत हुज़ूर अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की आपके चाचा अबू तालिब के ईमान लाने की चाहत के बारे में नाज़िल हुई। (त)

मदारिक अल-तंज़ील में है: [अरबी]: क़ाल अल-ज़ज्जाज अजमअ अल-मुफ़स्सिरूना अन्नहा नज़लत फ़ी अबी तालिब[4]। अनुवाद: ज़ज्जाज ने कहा कि मुफ़स्सिरों की सहमति है कि यह आयत-ए-करीमा अबू तालिब के हक़ में नाज़िल हुई। (त)

कशाफ़ ज़मख़शरी और तफ़सीर-ए-कबीर में है:

---

1. अल-कुरान अल-करीम 28/56
2. मआलिम अल-तंज़ील (तफ़सीर अल-बगवी), आयत 28/56 के तहत, दार अल-कुतुब अल-इल्मिया, बेरूत, 3/387

3. तफ़सीर जलालैन (तफ़सीर अल-बगवी), आयत 28/56 के तहत, असह अल-मताबे, दिल्ली, पृ. 332
4. मदारिक अल-तंज़ील (तफ़सीर अन-नसफ़ी), आयत 28/56 के तहत, दार अल-किताब अल-अरबी, बेरूत, 3/240

فتاوی رضویہ جلد ۲۹

آیات قرآنیہ و احادیث صحیحہ متواترہ متظافرہ سے ابو طالب کا کفر پر مرنا اور دم واپسی ایمان لانے سے انکار کرنا اور عاقبت کار اصحاب نار سے ہونا ایسے روشن ثبوت سے ثابت جس سے کسی سنی کو مجالِ دم زدن نہیں، ہم یہاں کلام کو سات فصل پر منقسم کریں۔

فصل اول _ آیات قرآنیہ

آیت اولیٰ: قال اللہ تبارک و تعالیٰ (اللہ تبارک و تعالیٰ نے فرمایا :ت) : "إِنَّكَ لَا تَهْدِي مَنْ أَحْبَبْتَ وَلَكِنَّ اللَّهَ يَهْدِي مَنْ يَشَاءُ ۚ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ ﴿٥٦﴾"1۔ اے نبی! تم ہدایت نہیں دیتے جسے دوست رکھو ہاں خدا ہدایت دیتا ہے جسے چاہے وہ خوب جانتا ہے جو راہ پانے والے ہیں۔

مفسرین کا اجماع ہے کہ یہ آیہ کریمہ ابوطالب کے حق میں نازل ہوئی۔ معالم التنزیل میں ہے: نزلت في ابي طالب 2۔ | ابوطالب کے حق میں نازل ہوئی۔(ت)

جلالین میں ہے: نزل في حرصه صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم علی ایمان عمہ ابی طالب 3۔ | یہ آیت حضور اکرم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی آپ کے چچا ابو طالب کے ایمان لانے کی حرص میں نازل ہوئی۔(ت)

مدارک التنزیل میں ہے: قال الزجاج اجمع المفسرون انها نزلت فی ابی طالب 4۔ | زجاج نے کہا کہ مفسرین کا اجماع ہے کہ یہ آیت کریمہ ابی طالب کے حق میں نازل ہوئی۔(ت)

کشاف زمخشری و تفسیر کبیر میں ہے:

1 القرآن الكريم ۵۶/۲۸ 2 معالم التنزيل(تفسير البغوى)تحت آية ۵۶/۲۸ دار الكتب العلميہ بيروت ۳ / ۳۸۷ 3 تفسير جلالين(تفسير البغوى)تحت آية ۵۶/۲۸ اصح المطابع دہلى ص ۳۳۲ 4 مدارک التنزيل(تفسير النسفى)تحت آية ۵۶/۲۸ دار الكتب العربى بيروت ۳ / ۲۴۰

Fatawa Rizwia Volume 29

[Table Header: Arabic text / Urdu translation] Az-Zajjaj said: The consensus of Muslims is that this noble verse was revealed concerning Abu Talib (1). Zajjaj said that the Muslims have a consensus that this noble verse was revealed concerning Abu Talib. (T)

Imam Nawawi says in Sharh Sahih Muslim, Book of Faith: The commentators have a consensus that it was revealed concerning Abu Talib, and similarly, Az-Zajjaj and others have narrated their consensus on this (2). The commentators' consensus is that this noble verse was revealed concerning Abu Talib, and as Zajjaj and others have narrated their consensus on this. (T)

In Mirqat Sharh Mishkat, it is said: Due to the saying of Allah Almighty concerning him, which by the consensus of commentators is about him: "Indeed, you do not guide whom you like" (3). Due to this command of Allah Almighty which, by the consensus of commentators, is about him (Abu Talib): "O Prophet! You do not guide whom you love" (T)

Hadith 1: In the Sahih Hadith, the reason for the revelation of this noble verse is mentioned as follows: When the Holy Prophet, Master of the Messengers (peace and blessings of Allah be upon him), asked Abu Talib at the time of his death to recite the Kalimah (testimony of faith), he flatly refused and said, "The Quraysh will mock me, saying that I became a Muslim out of fear of the pangs of death; otherwise, I would have gladdened the Prophet's heart." Upon this, Allah, the Lord of Honor, Blessed and Exalted, sent down this noble verse, meaning: O Beloved, do not grieve over this; you have fulfilled your duty of preaching. To give guidance and to create the light of faith in the heart is not your act; it is in the power of Allah, the Mighty and Sublime, and He knows well to whom He will grant this wealth and whom He will keep deprived.

Narrated from Sayyiduna Abu Hurairah (may Allah be pleased with him) in Sahih Muslim, Book of Faith, and Jami' al-Tirmidhi, Book of Commentary: He said: The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said to his uncle (Muslim added in another narration...) Abu Hurairah (may Allah be pleased with him) said that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said to his uncle (Muslim in another...)

Footnotes: 1. Mafatih al-Ghayb (al-Tafsir al-Kabir) under verse 28:56, Al-Matba'a al-Bahiyya Egypt 2/25; Tafsir al-Kashshaf under verse 28:56, Dar al-Kitab al-Arabi Beirut 3/422. 2. Sharh Sahih Muslim by Imam al-Nawawi, Book of Faith, Chapter on Evidence for the Validity of Islam etc., Qadeemi Kutub Khana Karachi 1/41. 3. Mirqat al-Mafatih, Book of Trials, Chapter on the Description of Fire and its Inhabitants, under Hadith 5668, Maktaba Habibiya Quetta 9/620.

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

[तालिका शीर्षक: अरबी पाठ / उर्दू अनुवाद] अज़-ज़ज्जाज ने कहा: मुसलमानों की सहमति (इज्मा) है कि यह नेक आयत अबू तालिब के बारे में नाजिल हुई थी (1)। ज़ज्जाज ने कहा कि मुसलमानों का इज्मा है कि यह आयत-ए-करीमा अबू तालिब के हक में नाजिल हुई। (त)

इमाम नववी शरह सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान में फरमाते हैं: मुफस्सिरीन का इज्मा है कि यह अबू तालिब के बारे में नाजिल हुई, और इसी तरह अज़-ज़ज्जाज और अन्य लोगों ने इस पर उनके इज्मा को नकल किया है (2)। मुफस्सिरीन का इज्मा है कि यह आयत-ए-करीमा अबू तालिब के हक में नाजिल हुई और जैसा कि ज़ज्जाज वगैरह ने इस पर उनका इज्मा नकल किया है। (त)

मिर्कात शरह मिश्कात शरीफ में है: अल्लाह तआला के उस इरशाद की वजह से जो मुफस्सिरीन की सहमति से उनके(अबू तालिब) के बारे में है: "बेशक, आप जिसे चाहें हिदायत नहीं दे सकते" (3)। अल्लाह तआला के इस इरशाद की वजह से जो ब-इत्तेफाक मुफस्सिरीन इसके(अबू तालिब) के बारे में है: ऐ नबी! तुम हिदायत नहीं देते जिसे दोस्त रखो (त)

हदीस अव्वल: सहीह हदीस में इस आयत-ए-करीमा का सबब-ए-नुज़ूल यूँ ज़िक्र है कि जब हुज़ूर अकदस सैयदुल मुरसलीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने अबू तालिब से मरते वक्त कलमा पढ़ने को इरशाद फरमाया, साफ इनकार किया और कहा मुझे कुरैश ऐब लगाएंगे कि मौत की सख्ती से घबरा कर मुसलमान हो गया वरना हुज़ूर की खुशी कर देता। इस पर रब-ए-इज़्ज़त तबारक व तआला ने यह आयत-ए-करीमा उतारी यानी ऐ हबीब तुम इसका गम न करो तुम अपना मन्सब-ए-तबलीग अदा कर चुके हिदायत देना और दिल में नूर-ए-ईमान पैदा करना यह तुम्हारा फेल नहीं अल्लाह अज़्ज़-व-जल्ल के इख्तियार में है और उसे खूब मालूम है कि किसे यह दौलत देगा किसे महरूम रखेगा।

सहीह मुस्लिम शरीफ किताबुल ईमान व जामे तिर्मिज़ी किताबुत तफसीर में सैयदुना अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से मरवी है: उन्होंने कहा: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने अपने चाचा से फरमाया (मुस्लिम ने दूसरी रिवायत में ज़्यादती की...) अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने अपने चाचा से फरमाया (मुस्लिम ने दूसरी...)

पाद-टिप्पणियाँ (फुटनोट्स): 1. मफातीह अल-गैब (तफसीर-ए-कबीर) आयत 28/56 के तहत, अल-मतबा अल-बहिया मिस्र 2/25; तफसीर अल-कशशाफ आयत 28/56 के तहत, दारुल किताबुल अरबी बेरूत 3/422। 2. शरह सहीह मुस्लिम लिल इमाम अल-नववी, किताबुल ईमान, बाब अद-दलील अला सेहतुल इस्लाम आदि, कदीमी कुतुब खाना कराची 1/41। 3. मिर्कातुल मफातीह, किताबुल फितन, बाब सिफत अन-नार व अहलिहा, हदीस 5668 के तहत, मकतबा हबीबिया क्वेटा 9/620।

पेज 663/750

[جدول کی سرخی: عربی متن / اردو ترجمہ] قال الزجاج اجمع المسلمون انها نزلت فی ابی طالب ۱۔ زجاج نے کہا کہ مسلمانوں کا اجماع ہے کہ یہ آیت کریمہ ابی طالب کے حق میں نازل ہوئی۔ (ت)

امام نووی شرح صحیح مسلم شریف کتاب الایمان میں فرماتے ہیں: اجمع المفسرون علی انما نزلت فی ابی طالب و کذا نقل اجماعهم علی هذا الزجاج و غیره ۲۔ مفسرین کا اجماع ہے کہ یہ آیت کریمہ ابوطالب کے حق میں نازل ہوئی اور جیسا کہ زجاج وغیرہ نے اس پر ان کا اجماع نقل کیا ہے۔ (ت)

مرقاۃ شرح مشکوۃ شریف میں ہے: لقوله تعالی في حقه باتفاق المفسرین انك لا تهدی من احببت ۳۔ اللہ تعالٰی کے اس ارشاد کی وجہ سے جو باتفاق مفسرین اس (ابوطالب) کے بارے میں ہے: اے نبی ! تم ہدایت نہیں دیتے جسے دوست رکھو (ت)

حدیث اول: صحیح حدیث میں اس آیہ کریمہ کا سبب نزول یوں مذکور کہ جب حضور اقدس سید المرسلین صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے ابوطالب سے مرتے وقت کلمہ پڑھنے کو ارشاد فرمایا، صاف انکار کیا اور کہا مجھے قریش عیب لگائیں گے کہ موت کی سختی سے گھبرا کر مسلمان ہو گیا ورنہ حضور کی خوشی کر دیتا۔ اس پر رب العزت تبارک و تعالٰی نے یہ آیت کریمہ اتاری یعنی اے حبیب تم اس کا غم نہ کرو تم اپنا منصب تبلیغ ادا کر چکے ہدایت دینا اور دل میں نور ایمان پیدا کرنا یہ تمہارا فعل نہیں اللہ عزوجل کے اختیار میں ہے اور اسے خوب معلوم ہے کہ کسے یہ دولت دے گا کسے محروم رکھے گا۔

صحیح مسلم شریف کتاب الایمان وجامع ترمذی کتاب التفسیر میں سیدنا ابوہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ مروی: قال قال رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم لعمہ (زاد مسلم فی اخری ابوہریرہ رضی اللہ عنہ نے کہا کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے اپنے چچا سے فرمایا (مسلم نے

حواشی: ۱ مفاتیح الغیب (التفسیر الکبیر) تحت آیة ۵۶/۲۸ المطبعة البهیة مصر ۲/۲۵، تفسیر الکشاف تحت آیة ۲۸/۵۶ دار الکتاب العربی بیروت ۳/ ۲۲۲ ۲ شرح صحیح مسلم للامام النووی کتاب الایمان باب الدلیل علی صحة الاسلام الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/ ۴۱ ۳ مرقاة المفاتیح کتاب الفتن باب صفة النار واهلها تحت حدیث ۵۶۶۸ مکتبہ حبیبیہ کوئٹہ ۹/ ۶۲۰

Fatawa Razawiyya Volume 29

| (At the time of death) he said: Say 'La ilaha illa Allah' (there is no god but Allah), I will testify to it for you on the Day of Resurrection. He replied: "If it were not for the fear that the Quraysh would taunt me, saying that only the distress of death drove him to it, I would have gladdened your eye with it." So Allah, the Mighty and Sublime, revealed: "Indeed, [O Muhammad], you do not guide whom you like, but Allah guides whom He wills." 1 | In another narration, it is added that at the time of death, he said: Say 'La ilaha illa Allah', I will testify to it for you on the Day of Resurrection. He replied: "If it were not for the fact that the Quraysh would shame me, saying that the severity of death caused him to become a Muslim, I would have cooled your eye (satisfied you)." Upon this, Allah the Almighty revealed this verse: "O Prophet! You do not give guidance to whom you love, but Allah gives guidance to whom He wills." (T) |

In commentaries like Ma'alim, Madarik, Baidawi, Irshad al-Aql al-Salim, Khazin, Futuhat al-Ilahiyya, etc., the essence of this Hadith is mentioned under this verse.

Second Verse: Allah Jalla Jalaluhu said:

| "It is not for the Prophet and those who believe to ask forgiveness for the polytheists, even if they be near of kin, after it has become clear to them that they are companions of Hellfire." 2 | It is not permissible for the Prophet and the believers to seek forgiveness for the polytheists, even if they are their near relatives, after it has become clear to them that they are going to the blazing fire. |

This noble verse was also revealed regarding Abu Talib. It is in Tafsir Imam Nasafi:

| He (peace and blessings be upon him) intended to seek forgiveness for Abu Talib, so 'It is not for the Prophet...' was revealed. 3 | The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) intended to seek forgiveness for Abu Talib, so this noble verse was revealed: "It is not for the Prophet [to do so]." (T) |

1 Sahih Muslim, Book of Faith, Chapter: Evidence for the Validity of Islam etc., Qadimi Kutub Khana Karachi 1/40; Jami' at-Tirmidhi, Chapters of Interpretation, Surah al-Qasas, Amin Company Delhi 2/150. 2 Al-Quran al-Karim 9/113. 3 Madarik al-Tanzil (Tafsir al-Nasafi), under verse 9/113, Dar al-Kitab al-Arabi Beirut 2/148.

फतावा रज़विया जिल्द 29

| (मृत्यु के समय) उन्होंने कहा: 'ला इलाहा इल्लल्लाह' कहो, मैं कयामत के दिन तुम्हारे लिए इसकी गवाही दूँगा। उन्होंने जवाब दिया: "अगर यह डर न होता कि कुरैश मुझे ताना देंगे, यह कहते हुए कि केवल मृत्यु की घबराहट ने उन्हें ऐसा करने पर मजबूर किया, तो मैं इससे तुम्हारी आँखें ठंडी कर देता (तुम्हें खुश कर देता)।" तब अल्लाह, महाशक्तिशाली और महान, ने नाज़िल फरमाया: "बेशक, [ऐ मुहम्मद], आप जिसे चाहें उसे हिदायत नहीं दे सकते, लेकिन अल्लाह जिसे चाहता है हिदायत देता है।" 1 | दूसरी रिवायत में यह जोड़ा गया है कि मृत्यु के समय उन्होंने कहा: 'ला इलाहा इल्लल्लाह' कह दो, मैं कयामत के दिन तुम्हारे लिए इसकी गवाही दूँगा। उन्होंने जवाब दिया: "अगर यह बात न होती कि कुरैश मुझे शर्मिंदा करेंगे कि मौत की सख्ती के कारण वह मुसलमान हो गया, तो मैं तुम्हारी आँख ठंडी कर देता।" इस पर अल्लाह तआला ने यह आयत नाज़िल फरमाई कि: "ऐ नबी! तुम हिदायत नहीं देते जिसे दोस्त रखो, हाँ खुदा हिदायत देता है जिसे चाहे।" (त) |

मआलिम, मदारिक, बैज़ावी, इरशाद उल-अक़्ल अस-सलीम, खाज़िन और फुतूहात अल-इलाहिया आदि तफसीरों में इसी हदीस का निचोड़ इस आयत के नीचे ज़िक्र किया गया है।

दूसरी आयत: अल्लाह जल्ल जलालाहू ने फ़रमाया:

| "नबी और ईमान वालों के लिए यह जायज़ नहीं है कि वे मुशरिकों के लिए माफ़ी मांगें, चाहे वे उनके क़रीबी ही क्यों न हों, इसके बाद कि उन पर साफ़ हो चुका है कि वे जहन्नम की आग वाले हैं।" 2 | रवा नहीं नबी और ईमान वालों को कि इस्तग़फ़ार (माफ़ी की प्रार्थना) करें मुशरिकों के लिए, अगरचे वे अपने क़राबत (रिश्तेदार) वाले हों, बाद इसके कि उन पर ज़ाहिर हो चुका कि वे भड़कती आग में जाने वाले हैं। |

यह आयत-ए-करीमा भी अबू तालिब के हक़ में नाज़िल हुई। तफसीर इमाम नसफी में है:

| वह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अबू तालिब के लिए माफ़ी मांगने का इरादा रखते थे, तब 'नबी के लिए नहीं है...' नाज़िल हुई। 3 | रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने इरादा फ़रमाया कि अबू तालिब के लिए इस्तग़फ़ार करें तो यह आयत-ए-करीमा नाज़िल हुई कि "नबी को यह रवा नहीं।" (त) |

1 सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाब अद-दलील अला सेहतुल इस्लाम आदि, क़दीमी कुतुब ख़ाना कराची 1/40; जामिउत तिर्मिज़ी, अबवाबुत तफसीर, सूरह अल-क़सस, अमीन कंपनी दिल्ली 2/150. 2 अल-क़ुरआन अल-करीम 9/113. 3 मदारिक अत-तन्ज़ील (तफ़सीर अन-नसफ़ी), आयत 9/113 के तहत, दार अल-किताब अल-अरबी बेरूत 2/148.

पेज 664/750

| عند الموت)قل لا اله الا الله اشهد لك بها يوم القيمة قال لولا ان تعيرنی قريش يقولون انما حمله على ذلك الجزع لاقررت بها عينك فانزل الله عزوجل "اِنَّكَ لَا تَهْدِیْ مَنْ اَحْبَبْتَ وَلٰكِنَّ اللهَ يَهْدِیْ مَنْ يَّشَآءُ ج"۔ 1 | دوسری روایت میں یہ اضافہ کیا کہ بوقت موت فرمایا لا اله الا الله کہہ دو میں تیرے لئے قیامت کے دن اس کی گواہی دوں گا۔ اس نے جواب دیا : اگر یہ بات نہ ہوتی کہ قریش مجھے عار دلائیں گے کہ موت کی شدت کے باعث مسلمان ہو گیا تو میں آپ کی آنکھ ٹھنڈی کر دیتا۔ اس پر الله تعالٰی نے یہ آیت نازل فرمائی کہ : اے نبی ! " تم ہدایت نہیں دیتے جسے دوست رکھو ، ہاں خدا ہدایت دیتا ہے جسے چاہے۔" (ت) |

معالم و مدارک و بیضاوی و ارشاد العقل السلیم و خازن و فتوحات الہیہ وغیرھا تفاسیر میں اسی حدیث کا حاصل اس آیت کے نیچے ذکر کیا۔

آیت ثانیہ : قال جل جلاله (الله جل جلالہ نے فرمایا) :

| "مَا كَانَ لِلنَّبِیِّ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْ يَّسْتَغْفِرُوْا لِلْمُشْرِكِيْنَ وَلَوْ كَانُوْٓا اُولِیْ قُرْبٰی مِنْۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمْ اَنَّهُمْ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ۝" 2 | روا نہیں نبی اور ایمان والوں کو کہ استغفار کریں مشرکوں کے لئے اگرچہ وہ اپنے قرابت والے ہوں بعد اس کے کہ ان پر ظاہر ہو چکا کہ وہ بھڑکتی آگ میں جانیوالے ہیں۔ |

یہ آیت کریمہ بھی ابو طالب کے حق میں نازل ہوئی۔ تفسیر امام نسفی میں ہے :

| هم علیه الصلوۃ والسلام ان یستغفر لابی طالب فنزل ماکان للنبی 3 ۔ | رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم نے ارادہ فرمایا کہ ابو طالب کے لئے استغفار کریں تو یہ آیت کریمہ نازل ہوئی کہ " نبی کو یہ روا نہیں۔" (ت) |

1 صحیح مسلم کتاب الایمان باب الدلیل علی صحۃ الاسلام الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/ ۴۰، جامع الترمذی ابواب التفسیر سورۃ القصص امین کمپنی دہلی ۲/ ۱۵۰ 2 القرآن الکریم ۹/ ۱۱۳ 3 مدارک التنزیل (تفسیر النسفی) تحت آیۃ ۹/ ۱۱۳ دار الکتاب العربی بیروت ۲/ ۱۴۸

Volume 29, Fatawa Rizvia

In Jalalayn it is written:

[Arabic Box Column]: It was revealed regarding the seeking of forgiveness by the Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him) for his uncle Abu Talib. (1)
[Urdu Box Column]: This verse was revealed concerning the Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him) seeking forgiveness for his uncle Abu Talib. (T)

Imam 'Ayni states in 'Umdat al-Qari, the commentary of Sahih al-Bukhari: "Al-Wahidi said: I heard Abu 'Uthman al-Hayri say: I heard Abu al-Hasan bin Miqsam say: I heard Abu Ishaq al-Zajjaj say regarding this verse: The commentators have consensus that it was revealed concerning Abu Talib." (2) Meaning, Al-Wahidi narrated in his exegesis with his own chain from Abu Ishaq al-Zajjaj that there is a consensus among commentators that this verse descended regarding Abu Talib.

[Boxed Text]: [Arabic Column]: I say: This is how it is narrated here, while the well-known statement from al-Zajjaj is regarding the first verse, as you have heard. And what is mentioned here in Al-Ma'alim and others is that at this place there is a difference concerning the cause of revelation. Therefore, one should refer to the exegesis of Al-Wahidi; perhaps he intended the agreement of the majority, and did not pay heed to the disagreement because it contradicts what has been established in the Sahih (authentic tradition). [Urdu Column]: I say: Here it is narrated in this manner, although this statement of Al-Zajjaj is well-known regarding the first verse, as you have heard. And it is mentioned in Al-Ma'alim etc. at this point that there is a difference of opinion regarding the cause of revelation of the verse. Thus, the Tafsir of Al-Wahidi should be consulted; it is possible that his intent was the consensus of most commentators, and he did not concern himself with the opposition because it stands against what has been proven in the Sahih. (T)

In Al-Baydawi, the first opinion mentioned for the revelation of this verse is regarding Abu Talib. Allamah Shihab Khafaji says in his commentary 'Inayat al-Qadi wa Kifayat al-Radi: "This is the correct view regarding the cause of revelation." (3) Meaning, this is the correct one. Similarly, its validation is found in Futuh al-Ghayb and Irshad al-Sari, where it is stated: "This is the truth." As will be mentioned later.

---

1. Tafsir Jalalayn, under verse 9/113, Asah al-Matabi' Delhi, p. 167
2. 'Umdat al-Qari, Book of Funerals, under Hadith 1360, Dar al-Kutub al-Ilmiyah Beirut, 7/262

3. 'Inayat al-Qadi, Hashiyah al-Shihab on Tafsir al-Baydawi, under verse 9/113, Dar al-Kutub al-Ilmiyah Beirut, 4/648

जिल्द 29, फतावा रज़विया

जलालेन में लिखा है:

[अरबी बॉक्स कॉलम]: यह आयत हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) द्वारा अपने चाचा अबू तालिब के लिए क्षमा प्रार्थना (इस्तिग़फ़ार) करने के बारे में नाज़िल हुई। (1) [उर्दू बॉक्स कॉलम]: यह आयत हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के अपने चाचा अबू तालिब के लिए इस्तिग़फ़ार करने के बारे में नाज़िल हुई। (त)

इमाम ऐनी 'उमदतुल क़ारी' शरह सहीह बुखारी में फ़रमाते हैं: "अल-वाहिदी ने कहा: मैंने अबू उस्मान अल-हैरी से सुना, उन्होंने अबू अल-हसन बिन मिकसम से सुना, उन्होंने अबू इसहाक़ अल-ज़ज्जाज को इस आयत के बारे में कहते सुना: मुफ़स्सिरों (टीकाकारों) की सर्वसम्मति है कि यह अबू तालिब के बारे में नाज़िल हुई।" (2) यानी वाहिदी ने अपनी तफ़्सीर में अपनी सनद (शृंखला) से अबू इसहाक़ ज़ज्जाज से रिवायत की कि मुफ़स्सिरों का इजमा (आम सहमति) है कि यह आयत अबू तालिब के हक़ में उतरी।

[बॉक्स टेक्स्ट]: [अरबी कॉलम]: मैं कहता हूँ: यहाँ इसी तरह वर्णित है, जबकि ज़ज्जाज का यह कथन पहली आयत के बारे में प्रसिद्ध है जैसा कि आपने सुना है। और मआलिम आदि में इस स्थान पर उल्लेख है कि नुज़ूल के कारण में मतभेद है। अतः तफ़्सीर-ए-वाहिदी की ओर रुजू करें; संभवतः उनका अर्थ अधिकांश का मत हो, और उन्होंने मतभेद की परवाह न की हो क्योंकि वह सहीह में सिद्ध बात के विरुद्ध है। [उर्दू कॉलम]: मैं कहता हूँ यहाँ तो वह ऐसा ही मन्क़ूल (वर्णित) है, हालाँकि ज़ज्जाज का यह क़ौल (कथन) पहली आयत के बारे में मशहूर है जैसा कि तू सुन चुका है, और मआलिम वगैरह में इस मुक़ाम पर मज़कूर है कि आयत के सबब-ए-नुज़ूल में इख़्तिलाफ़ है। चुनाँचे तफ़्सीर-ए-वाहिदी की तरफ़ रुजू किया जाए, हो सकता है कि उनकी मुराद अक्सर मुफ़स्सिरों का इत्तेफ़ाक़ हो, और उन्होंने मुख़ालिफ़त की इस बुनियाद पर कोई परवाह न की हो कि इसके मुख़ालिफ़ है जो सहीह में साबित हो चुका है। (त)

'बैज़ावी' में इस आयत का नुज़ूल अबू तालिब के बारे में पहला क़ौल लिखा गया है। अल्लामा शिहाब ख़फ़ाजी इसकी शरह 'इनायतुल क़ाज़ी व किफ़ायतुर राज़ी' में फ़रमाते हैं: "नुज़ूल के सबब में यही सहीह है।" (3) यानी यही सहीह है। इसी तरह इसकी तस्दीक़ 'फ़ुतुहुल ग़ैब' और 'इरशादुस सारी' में की गई है और फ़रमाया कि यही हक़ है। जैसा कि आगे आएगा।

1. तफ़्सीर जलालेन, आयत 9/113 के तहत, असहुत त़बा' देहली, पृ. 167
2. 'उमदतुल क़ारी, किताबुल जनाइज़, हदीस 1360 के तहत, दारुल कुतुबुल इलमिया बेरूत, 7/262
3. 'इनायतुल क़ाज़ी, हाशिया अल-शिहाब अला तफ़्सीर अल-बैज़ावी, आयत 9/113 के तहत, दारुल कुतुबुल इलमिया बेरूत, 4/648

جلالین میں ہے:

نزل فی استغفارہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم لعمہ ابی طالب ۱۔ یہ آیت حضور صلی اللہ تعالی علیہ وسلم کے اپنے چچا ابو طالب کے لئے استغفار کرنے کے بارے میں نازل ہوئی۔ (ت)

امام عینی عمدۃ القاری شرح صحیح بخاری میں فرماتے ہیں: قال الواحدی سمعت ابا عثمان الحیری سمعت ابا الحسن بن مقسم سمعت ابا اسحق الزجاج یقول فی ھذہ الایۃ اجمع المفسرون انھا نزلت فی ابی طالب ۲۔ یعنی واحدی نے اپنی تفسیر میں بسند خود ابواسحاق زجاج سے روایت کی کہ مفسرین کا اجماع ہے کہ یہ آیت ابوطالب کے حق میں اتری۔

اقول: ھکذا اثرہ ھھنا والمعروف من الزجاج قولہ ھذا فی الایۃ الاولیٰ کما سمعت والمذکور ھھنا فی المعالم وغیرھا فلیراجع تفسیر الواحدی فلعلہ اراد اتفاق الاکثرین و لم یلق للخلاف بالالکونہ خلاف ماثبت فی الصحیح۔ میں کہتا ہوں یہاں تو وہ ایسا ہی منقول ہے حالانکہ زجاج کا یہ قول پہلی آیت کے بارے میں معروف ہے جیسا کہ تو سن چکا ہے، اور معالم وغیرہ میں اس مقام پر مذکور ہے کہ آیت کے سبب نزول میں اختلاف ہے چنانچہ تفسیر واحدی کی طرف مراجعت کی جائے ہوسکتا ہے کہ اُس کی مراد اکثر مفسرین کا اتفاق ہو اور اس نے مخالفت کی اس بنیاد پر کوئی پرواہ نہ کی ہو کہ اس کے مخالف ہے جو صحیح میں ثابت ہو چکا ہے۔ (ت)

بیضاوی میں پہلا قول اس آیت کا نزول درباره ابی طالب لکھا۔ علامہ شہاب خفاجی اُس کی شرح عنایۃ القاضی وکفایۃ الراضی میں فرماتے ہیں: ھو الصحیح فی سبب النزول ۳۔ یعنی یہی صحیح ہے۔

اسی طرح اس کی تصحیح فتوح الغیب وارشاد الساری میں کی ہے اور فرمایا یہی حق ہے۔ کما سیأتی

۱۔ تفسیر جلالین تحت آیۃ ۱۱۳/۹ اصح المطابع دہلی ص ۱۶۷ ۲۔ عمدۃ القاری کتاب الجنائز تحت حدیث ۱۳۶۰ دار الکتب العلمیۃ بیروت ۷/ ۲۶۲ ۳۔ عنایۃ القاضی حاشیۃ الشہاب علی تفسیر البیضاوی تحت الایۃ ۱۱۳/۹ دار الکتب العلمیۃ بیروت ۴/ ۶۴۸

Fatawa Rizvia, Volume 29

And these corrections also signify opposition, as it is not hidden (and as will be mentioned shortly. T)

Hadith Two: It is narrated in Sahih Bukhari, Sahih Muslim, and Sunan Nasai:

[Table Content]

Left Column (Arabic Text): And the wording is by Muhammad; he said: Mahmoud narrated to us, then mentioned with his chain from Sa'id bin al-Musayyib from his father (may Allah be pleased with them both): When death approached Abu Talib, the Prophet (may Allah's blessings and peace be upon him) came to him. Abu Jahl and Abdullah bin Umayya were present there. He said: 'O Uncle! Say "There is no god but Allah", a word with which I shall plead for you before Allah.' Abu Jahl and Abdullah bin Umayya said: 'O Abu Talib! Do you turn away from the religion of Abdul Muttalib?' They both kept speaking to him until the last thing he said to them was that he was on the religion of Abdul Muttalib. (Al-Bukhari added in 'Funeral' and 'Tafsir Surah al-Qasas', similar to Muslim in 'The Book of Faith', that Abu Talib refused to say 'There is no god but Allah'). Then the Prophet (may Allah's blessings and peace be upon him) said: 'I will certainly seek forgiveness for you as long as I am not forbidden from it.' Then this noble verse was revealed: 'It is not for the Prophet and those who believe to seek forgiveness for the polytheists, even if they be near relatives, after it has become clear to them that they are companions of Hellfire.'

Right Column (Urdu Translation): And the words are from Muhammad, who said that Mahmoud narrated the Hadith to us, then mentioned it with his chain from Sa'id bin Musayyib, and he mentioned it from his father, may Allah be pleased with them both. When Abu Talib was near death, the Messenger of Allah, peace and blessings of Allah be upon him, came to him while Abu Jahl and Abdullah bin Umayyah were present there. You said, 'O uncle, recite the Kalima Tayyibah "La ilaha illallah," I will plead for you with it before Allah.' Abu Jahl and Abdullah bin Umayyah said, 'O Abu Talib! Will you turn away from the religion of Abdul Muttalib?' Both of them kept saying the same thing to Abu Talib until the last thing Abu Talib said to them was that I remain on the religion of Abdul Muttalib. (Imam Bukhari added this in the interpretation of funerals and Surah Al-Qasas, as Imam Muslim did in the Book of Faith, that Abu Talib refused to say "La ilaha illallah"). Then the Holy Prophet, peace and blessings of Allah be upon him, said that as long as I am not forbidden, I will surely seek forgiveness for you. Accordingly, this noble verse was revealed: it is not permissible for the

Prophet and those who believe to seek forgiveness for the polytheists even if they are their close relatives after it has become clear to them that they are (destined for hell).

फ़तावा रज़विया, खंड 29

और ये सुधार भी विरोध का संकेत हैं, जैसा कि स्पष्ट है (और जैसा कि जल्द ही आएगा। त)

हदीस दो: सहीह बुखारी, सहीह मुस्लिम और सुनन नसाई में है:

[तालिका सामग्री]

बायाँ कॉलम (अरबी पाठ): और शब्द मुहम्मद के हैं; उन्होंने कहा: महमूद ने हमें हदीस सुनाई, फिर अपनी सनद के साथ सईद बिन अल-मुसय्यिब से और उन्होंने अपने पिता से ज़िक्र किया (अल्लाह उन दोनों से राज़ी हो): जब अबू तालिब की मृत्यु का समय निकट आया, तो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) उनके पास आए जबकि अबू जहल और अब्दुल्ला बिन उमय्या वहाँ मौजूद थे। आपने फ़रमाया: 'ऐ चाचा! ला इलाहा इल्लल्लाह कहो, यह ऐसा शब्द है जिसके साथ मैं अल्लाह के पास तुम्हारे लिए दलील पेश करूँगा।' अबू जहल और अब्दुल्ला बिन उमय्या ने कहा: 'ऐ अबू तालिब! क्या तुम अब्दुल मुत्तलिब के दीन से मुँह मोड़ लोगे?' वे दोनों लगातार उनसे यही बात कहते रहे, यहाँ तक कि अबू तालिब ने जो आखिरी बात उनसे कही वह यह थी कि मैं अब्दुल मुत्तलिब के दीन पर हूँ। (बुखारी ने 'जनाइज़' और 'सूरह क़सस' की तफ़सीर में यह इजाफ़ा किया जैसा कि मुस्लिम ने 'ईमान' में किया है कि उन्होंने ला इलाहा इल्लल्लाह कहने से इनकार कर दिया)। तो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया: 'जब तक मुझे मना न कर दिया गया मैं तुम्हारे लिए ज़रूर इस्तिग़फ़ार (माफ़ी की दुआ) करूँगा।' तब यह आयत नाज़िल हुई: 'नबी और ईमान वालों के लिए यह उचित नहीं कि वे मुशरिकों के लिए माफ़ी की दुआ करें, चाहे वे उनके क़रीबी रिश्तेदार ही क्यों न हों, इसके बाद कि उन पर ज़ाहिर हो चुका कि वे जहन्नमी हैं।'

दायाँ कॉलम (उर्दू अनुवाद): और शब्द मुहम्मद के हैं, उन्होंने कहा कि हमें महमूद ने हदीस सुनाई, फिर अपनी सनद के साथ सईद बिन मुसय्यिब से और उन्होंने अपने पिता से ज़िक्र किया, अल्लाह उन दोनों से राज़ी हो। जब अबू तालिब मौत के क़रीब थे, तो अल्लाह के रसूल, सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, उनके पास तशरीफ़ लाए जबकि अबू जहल और अब्दुल्ला बिन उमय्या वहाँ मौजूद थे। आपने फ़रमाया, 'ऐ चाचा, कलिमा तय्यिबा "ला इलाहा इल्लल्लाह" पढ़ लो, मैं इसके ज़रिए अल्लाह के यहाँ तुम्हारे लिए पैरवी करूँगा।' अबू जहल और अब्दुल्ला बिन उमय्या ने कहा, 'ऐ अबू तालिब! क्या तुम अब्दुल मुत्तलिब के दीन से मुँह मोड़ लोगे?' वे दोनों अबू तालिब से यही बात कहते रहे यहाँ तक कि अबू तालिब ने जो आखिरी बात उनसे कही वह यह थी कि मैं अब्दुल मुत्तलिब के दीन पर

कायम हूँ। (इमाम बुखारी ने जनाज़ा और सूरह अल-क़सस की व्याख्या में यह जोड़ा, जैसा कि इमाम मुस्लिम ने ईमान की किताब में किया है, कि अबू तालिब ने "ला इलाहा इल्लल्लाह" कहने से इनकार कर दिया)। तब पवित्र नबी, सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जब तक मुझे मना नहीं किया जाता, मैं तुम्हारे लिए ज़रूर माफ़ी की दुआ करूँगा। तदनुसार, यह महान आयत नाज़िल हुई: नबी और ईमान वालों के लिए यह जायज़ नहीं है कि वे मुशरिकों के लिए माफ़ी की दुआ करें, भले ही वे उनके क़रीबी रिश्तेदार ही क्यों न हों, जब यह उन पर स्पष्ट हो गया है कि वे (नर्क के वासी) हैं।

पृष्ठ 666 का 750

فتاوی رضویہ، جلد ۲۹

و ھٰذہ التصحیحات ایضا آیۃ الخلاف کما لیس بخاف۔ (جیسا کہ عنقریب آئے گا اور یہ تصحیحیں بھی مخالفت کی علامت ہیں جیسا کہ پوشیدہ نہیں۔ ت)

حدیث دوم : صحیح بخاری و صحیح مسلم و سنن نسائی میں ہے:

[جدول کا مواد]

بایاں کالم (عربی عبارت): واللفظ محمد قال حدثنا محمود فذکر بسندہ عن سعید بن المسیب عن ابیہ رضی اللہ تعالی عنھما ان ابا طالب لما حضرتہ الوفاۃ دخل علیھا النبي صلی اللہ تعالی علیہ وسلم وعندہ ابو جھل فقال ای عم قال لا الہ الا اللہ کلمۃ احاج لك بھا عند اللہ فقال ابو جھل وعبد اللہ بن امیۃ یا ابا طالب اترغب عن ملۃ عبد المطلب فلم یزالا یکلمانہ حتی قال اخر شیئ کلمھم بہ علی ملۃ عبد المطلب (زاد البخاري في الجنائز و تفسیر سورۃ القص ص کمثل مسلم في الایمان وابی ان یقول لا الہ الا اللہ) فقال النبي صلی اللہ تعالی علیہ وسلم لا ستغفرن لك مالم انہ عنہ. فنزلت "مَا كَانَ لِلنَّبِيِّ وَالَّذِينَ آمَنُوا أَنْ يَسْتَغْفِرُوا لِلْمُشْرِكِينَ وَلَوْ كَانُوا أُولِي قُرْبَىٰ مِنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمْ أَنَّهُمْ أَصْحَابُ الْجَحِيمِ"

دایاں کالم (اردو ترجمہ): اور لفظ محمد کے ہیں، انہوں نے کہا ہم کو حدیث بیان کی محمود نے، پھر اپنی سند کے ساتھ سعید بن مسیب سے اور انہوں نے اپنے باپ سے ذکر کیا۔ رضی اللہ تعالیٰ عنہما، کہ ابوطالب جب قریب الموت ہوئے تو رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم ان کے پاس تشریف لائے جب کہ ابوجہل اور عبداللہ بن امیہ وہاں موجود تھے۔ آپ نے فرمایا اے چچا کلمہ طیبہ لا الہ الا اللہ پڑھ لو میں اس کے ذریعے تمہارے لیے جھگڑا کروں گا۔ ابو جہل اور عبداللہ بن امیہ نے کہا: اے ابوطالب ! کیا عبد المطلب کے دین سے اعراض کرلو گے؟ وہ دونوں مسلسل ابو طالب

سے یہی بات کہتے رہے، یہاں تک کہ ابوطالب نے جو آخری بات انہیں کہی وہ یہ تھی کہ میں عبدالمطلب کے دین پر قائم ہوں۔ (امام بخاری نے جنائز اور سورہ قصص کی تفسیر میں یہ اضافہ کیا جیسا کہ امام مسلم نے کتاب الایمان میں کیا ہے کہ ابوطالب نے لا الہ الا اللہ کہنے سے انکار کردیا) تو نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا کہ جب تک مجھے منع نہ کر دیا گیا میں تیرے لیے ضرور استغفار کروں گا۔ چنانچہ یہ آیت کریمہ نازل ہوئی روا نہیں نبی اور ایمان والوں کو کہ استغفار کریں مشرکوں کے لیے اگرچہ وہ اپنے قرابت والے ہوں بعد اس کے کہ ان پر ظاہر ہو چکا کہ وہ (دوزخی ہیں)۔

Fatawa Razawiya Volume 29

[Al-Jahim 113] "...And [this verse] was revealed: 'Verily, you (O Muhammad) guide not whom you like...'" [1] Translation: They will enter the blazing fire. And this verse was revealed: "O Prophet! You do not guide whom you love." (T)

From this great Hadith it is clear that at the time of death, Abu Talib explicitly refused [to recite] the Kalima Tayyiba and, due to the instigation of the cursed Abu Jahl, did not accept the word of the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him). The Mercy to the Worlds (peace and blessings of Allah be upon him) promised even then that "as long as my Lord, the Almighty, does not forbid me, I will seek forgiveness for you." The Glorified and Exalted Lord revealed these two verses and forbade His Beloved (peace and blessings of Allah be upon him) from seeking forgiveness for Abu Talib and clearly stated that seeking forgiveness for polytheists who are dwellers of hell is not permissible.

[Arabic Column]: We ask Allah for forgiveness and well-being. As for Zamakhshari's rejection of the revelation of the verse concerning him (Abu Talib) on the grounds that Abu Talib's death was before the Hijrah (migration), while this [verse] was among the last to be revealed in Madina [2] etc., it is refuted by what is in 'Irshad al-Sari' from al-Tibi via 'al-Taqrib' that it is possible the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) continued to seek forgiveness for Abu Talib until its revelation, and the sternness against the disbelievers only appeared in this Surah [3] etc. - Al-Qastallani said.

[Urdu Column]: Translation: We ask Allah Almighty for forgiveness and well-being. As for Zamakhshari declaring the revelation of this verse regarding Abu Talib as weak on the basis that Abu Talib's death occurred before the Hijrah, while this noble verse was revealed at the final stage in Madina Munawwara, it is rejected because of the evidence mentioned in 'Irshad al-Sari' from Tibi with reference to 'Taqrib', that it is possible the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) continued to seek forgiveness for Abu Talib until the revelation of this verse. With the disbelievers...

---

1. Sahih al-Bukhari, Book of Funerals, Chapter: When a polytheist says 'La ilaha illAllah' at the time of death, Qadimi Kutub Khana Karachi 1/181; Sahih al-Bukhari, Book of Virtues, Chapter: Story of Abu Talib, Qadimi Kutub Khana Karachi 1/548; Sahih al-Bukhari, Book of Tafsir, Surah al-Bara'ah, Chapter: It is

not for the Prophet and those who believe..., Qadimi Kutub Khana Karachi 2/675; Sahih al-Bukhari, Book of Tafsir, Surah al-Qasas, Chapter: Allah's saying 'Verily you guide not whom you like', Qadimi Kutub Khana 2/703; Sahih Muslim, Book of Faith, Chapter: Evidence for the correctness of Islam for one who is present at death, Qadimi Kutub Khana Karachi 1/40; Sunan al-Nasa'i, Book of Funerals, Prohibition of seeking forgiveness for polytheists, Noor Muhammad Karkhana Tijarat Karachi 1/286.

2. Al-Kashshaf 'an Haqa'iq Ghawamid al-Tanzil under verse 9/113, Maktabat al-A'lam al-Islami in al-Hawzah al-Ilmiyah, Qom Iran 2/315.
3. Irshad al-Sari Sharh Sahih al-Bukhari, Book of Tafsir, Surah Tawbah, Dar al-Kutub al-Arabiyah Beirut 7/158.

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

[अल-जहीम 113] "...और यह आयत नाज़िल हुई: 'बेशक आप (ऐ मुहम्मद) उसे हिदायत नहीं दे सकते जिसे आप चाहें...'" [1] अनुवाद: वे भड़कती आग में जाएंगे। और यह आयत नाज़िल हुई: "ऐ नबी! आप उसे हिदायत नहीं देते जिसे आप दोस्त रखें।" (त)

इस जलील हदीस से वाज़ेह है कि अबू तालिब ने मौत के वक़्त कलमा तय्यिबा से साफ़ इनकार कर दिया और मलऊन अबू जहल के उकसावे पर हुज़ूर अकदस सय्यिदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का इरशाद क़बूल न किया। हुज़ूर रहमतुल लिल आलमीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने इस पर भी वादा फ़रमाया कि "जब तक अल्लाह अज़्ज़वजल मुझे मना न फ़रमाएगा, मैं तुम्हारे लिए इस्तिगफ़ार (माफ़ी की दुआ) करूँगा।" मौला सुब्हानहू व तआला ने ये दोनों आयतें उतारीं और अपने हबीब सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को अबू तालिब के लिए इस्तिगफ़ार से मना किया और साफ़ इरशाद फ़रमाया कि मुशरिकों के लिए, जो कि जहन्नमी हैं, इस्तिगफ़ार जायज़ नहीं।

[अरबी कॉलम]: हम अल्लाह से माफ़ी और आफ़ियत का सवाल करते हैं। रहा ज़मख़्शरी का अबू तालिब के बारे में इस आयत के नुज़ूल को इस बुनियाद पर मुस्तर्द (अस्वीकार) करना कि अबू तालिब की वफ़ात हिजरत से पहले हुई थी, जबकि यह (आयत) मदीना में नाज़िल होने वाली आख़िरी आयतों में से थी [2] इत्यादि, तो यह 'इरशाद-उस-सारी' में तैयबी की उस दलील से रद्द हो जाता है जो 'तक़रीब' के हवाले से है कि मुमकिन है नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम इस आयत के नुज़ूल तक अबू तालिब के लिए इस्तिगफ़ार करते रहे हों, और काफ़िरों के ख़िलाफ़ सख़्ती केवल इसी सूरह [3] में ज़ाहिर हुई आदि। - अल-क़स्तलानी ने कहा।

[उर्दू कॉलम]: अनुवाद: हम अल्लाह तआला से माफ़ी और आफ़ियत का सवाल करते हैं। रहा ज़मख़्शरी का अबू तालिब के बारे में इस आयत के नाज़िल होने को इस बुनियाद पर ज़ईफ़ (कमज़ोर) क़रार देना कि अबू तालिब की मौत हिजरत से पहले हुई, जबकि यह आयत-ए-करीमा आख़िरी मरहले में मदीना मुनव्वरा में नाज़िल हुई, तो वह मरदूद है उस दलील की वजह से जो 'इरशाद-उस-सारी' में तैयबी से ब-हवाला 'तक़रीब' मज़कूर है कि हो सकता है नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम इस आयत के नुज़ूल तक अबू तालिब के लिए इस्तिगफ़ार करते रहे हों। काफ़िरों के साथ...

1. सहीह अल-बुख़ारी, किताबुल जनाइज़, बाब: जब मुशरिक मौत के वक़्त 'ला इलाहा इल्लल्लाह' कहे, क़दीमी कुतुब ख़ाना कराची 1/181; सहीह अल-बुख़ारी, किताबुल मनाक़िब, बाब: अबू तालिब का क़िस्सा, क़दीमी कुतुब ख़ाना कराची 1/548; सहीह अल-बुख़ारी, किताबुत तफ़्सीर, सूरह अल-बराअह, बाब: नबी और ईमान वालों के लिए जायज़ नहीं कि..., क़दीमी कुतुब ख़ाना कराची 2/675; सहीह अल-बुख़ारी, किताबुत तफ़्सीर, सूरह अल-क़सस, बाब: अल्लाह का फरमान 'बेशक आप उसे हिदायत नहीं दे सकते जिसे आप चाहें', क़दीमी कुतुब ख़ाना 2/703; सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाब: मौत के वक़्त हाज़िर होने वाले के लिए इस्लाम की दुरुस्ती की दलील, क़दीमी कुतुब ख़ाना कराची 1/40; सुनन अन-नसाई, किताबुल जनाइज़, मुशरिकों के लिए इस्तिगफ़ार की मनाही, नूर मोहम्मद कारख़ाना तिज़ारत कराची 1/286।
2. अल-कशशाफ़ 'अन हक़ा'इक़ ग़वामिद अत-तन्ज़ील, आयत 9/113 के तहत, मकतबत अल-आलम अल-इस्लामी, अल-हौज़ा अल-इल्मिया, क़ुम ईरान 2/315।
3. इरशाद-उस-सारी शरह सहीह अल-बुख़ारी, किताबुत तफ़्सीर, सूरह तौबा, दार अल-कुतुब अल-अरबिया बेरुत 7/158।

الْجَحِیْمِ ۱۱۳ۙ" . ونزلت " اِنَّكَ لَا تَهْدِیْ مَنْ اَحْبَبْتَ " ۱۔ بھڑکتی آگ میں جائیں گے۔ اور یہ آیت نازل ہوئی۔ اے نبی! تم ہدایت نہیں دیتے جسے دوست رکھو۔ (ت)

اس حدیث جلیل سے واضح کہ ابوطالب نے وقت مرگ کلمہ طیبہ سے صاف انکار کردیا اور ابوجہل لعین کے اغوا سے حضور اقدس سید عالم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کا ارشاد قبول نہ کیا۔ حضور رحمۃ اللعالمین صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے اس پر بھی وعدہ فرمایا کہ جب تک اللہ عزوجل مجھے منع نہ فرمائے گا میں تیرے لیے استغفار کروں گا۔ مولٰی سبحنہ و تعالٰی نے یہ دونوں آیتیں اتاریں اور اپنے حبیب صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کو ابوطالب کے لیے استغفار سے منع کیا اور صاف ارشاد فرمایا کہ مشرکوں دوزخیوں کے لیے استغفار جائز نہیں۔

[Arabic Column]: نسأل اللہ العفو والعافیۃ، اما تزییف الزمخشری نزول الأیۃ فیہ بان موت ابی طالب کان قبل الھجرۃ وھذا اخر مانزل بالمدینۃ اھ فمردود بما فی ارشاد الساری عن الطیبی عن التقریب انہ یجوز ان النبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کان یستغفر لابی طالب الی حین نزولھا والتشدید مع الکفار انما ظھر فی ھذہ السورۃ ۳ اھ قال اعنی القسطلانی

[Urdu Column]: ترجمہ ہم اللہ تعالٰی سے معافی اور عافیت کا سوال کرتے ہیں، رہا زمخشری کا ابوطالب کے بارے میں اس آیت کے نزول کو اس بنیاد پر ضعیف قرار دینا کہ ابوطالب کی موت ہجرت سے پہلے ہوئی، جبکہ یہ آیت کریمہ آخری مرحلہ پر مدینہ منورہ میں نازل ہوئی، تو وہ مردود ہے اس دلیل کی وجہ سے جو ارشاد الساری میں طیبی سے بحوالہ تقریب مذکور ہے کہ ہو

سکتا ہے نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ وسلم اس آیت کے نزول تک ابوطالب کے لئے استغفار کرتے رہے ہوں۔ کافروں کے ساتھ

---

1 صحیح البخاری کتاب الجنائز باب اذا قال المشرک عند الموت لا الہ الا اللہ قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/ ۱۸۱، صحیح البخاری کتاب المناقب باب قصہ ابی طالب قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/ ۵۴۸، صحیح البخاری کتاب التفسیر سورۃ البراءۃ باب ما کان للنبی والذین امنوا الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ۲/ ۶۷۵، صحیح البخاری کتاب التفسیر سورۃ القصص باب قولہ تعالٰی انک لا تھدی من احببت قدیمی کتب خانہ ۲/ ۷۰۳، صحیح مسلم، کتاب الایمان باب الدلیل علی صحۃ الاسلام من حضر الموت قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/ ۴۰، سنن النسائی کتاب الجنائز النھی عن الاستغفار للمشرکین نور محمد کارخانہ تجارت کراچی ۱/ ۲۸۶ 2 الکشاف عن حقائق غوامض التنزیل تحت آیۃ ۱۱۳/۹ مکتبۃ الاعلام الاسلامی فی الحوزۃ العلمیۃ قم ایران ۲/ ۳۱۵ 3 ارشاد الساری شرح صحیح البخاری کتاب التفسیر سورۃ توبہ دار الکتاب العربیہ بیروت ۷/ ۱۵۸

Fatwa Razawiyya | Volume 29

It is stated in 'Futuh al-Ghayb' that this is the truth, and the narration of its revelation regarding Abu Talib is the correct one. Similarly, Imam al-Razi refuted it (the opposing view) in 'al-Kabir'. Allama al-Khafaji, in 'Inayat al-Qadhi', after quoting the statement from 'al-Taqrib', said that all subsequent commentators relied upon it. This does not contradict the narrator's statement in the Hadith, 'fanzalat' (then it was revealed), because of the continuity of his (the Prophet's) seeking forgiveness for him until its revelation, or because the letter 'fa' signifies causality without implying immediate succession.

I say: The evidence for the persistence and continuity of seeking forgiveness is the statement of the Master of the Pious, peace and blessings of Allah be upon him: "I will surely seek forgiveness for you as long as I am not forbidden from it." This is a position of certainty, not of mere possibility or support. Furthermore, the great Imam Jalaluddin al-Suyuti, may Allah have mercy on him, in the book 'al-Itqan', established a section to explain that Makki...

---

1. Irshad al-Sari Sharh Sahih al-Bukhari, Kitab al-Tafsir, Surah Tawbah, Dar al-Kitab al-Arabiyyah Beirut, 7/158.
2. Inayat al-Qadhi Hashiyat al-Shihab on Tafsir al-Baydawi, under verse 9/113, Dar al-Kutub al-Ilmiyyah Beirut, 2/648.
3. Sahih al-Bukhari, Kitab al-Manaqib, Chapter: Story of Abu Talib, 1/528; Surah al-Tawbah, 2/675; Surah al-Qasas, 2/703; Sahih Muslim, Kitab al-Iman, Chapter: Evidence for the validity of Islam of one who attends death, etc., Qadimi Kutub Khana Karachi, 1/40.
4. al-Itqan fi Ulum al-Qur'an, Section mentioning exceptions from Makki and Madani, Dar al-Kitab al-Arabi Beirut, 1/73.

फ़तावा रज़विया | जिल्द 29

'फ़ुतूह अल-ग़ैब' में कहा गया है कि यही सत्य है, और इसके अबू तालिब के बारे में नाज़िल होने वाली रिवायत ही सही है। इसी तरह इमाम राजी ने 'अल-कबीर' में इसका खंडन किया है। अल्लामा खफाजी ने 'इनायत अल-काज़ी' में 'तक़रीब' के कथन को उद्धृत करने के बाद कहा कि बाद के सभी व्याख्याकारों ने इस पर भरोसा किया है। यह हदीस में आए रावी के शब्द 'फ़नज़लत' (तब यह नाज़िल हुई) के विपरीत नहीं है, क्योंकि आयत के अवतरण तक उनके(नबी के) उनके लिए माफ़ी मांगने की निरंतरता के कारण, या इसलिए कि अक्षर 'फ़ा' कारण को दर्शाता है न कि तत्काल अनुक्रम को।

मैं कहता हूँ: माफ़ी मांगने की दृढ़ता और निरंतरता का प्रमाण नेक लोगों के सरदार, उन पर अल्लाह की शांति और आशीर्वाद हो, का यह कथन है: "मैं तुम्हारे लिए तब तक ज़रूर माफ़ी मांगूँगा जब तक मुझे इससे मना न किया जाए।" अतः यह निश्चितता का स्थान है, न कि केवल संभावना या समर्थन का। इसके अतिरिक्त, महान इमाम जलालुद्दीन अल-सुयूती, रहमतुल्लाहि अलैहि ने किताब 'अल-इतक़ान' में यह स्पष्ट करने के लिए एक अध्याय स्थापित किया है कि मक्की...

---

1. इर्शाद अल-सारी शरह सहीह अल-बुखारी, किताब अल-तफ़्सीर, सूरह तौबा, दार अल-किताब अल-अरबिया बेरूत, 7/158।
2. इनायत अल-काज़ी हाशियात अल-शिहाब तफ़्सीर अल-बैज़ावी पर, आयत 9/113 के तहत, दार अल-कुतुब अल-इल्मिया बेरूत, 2/648।
3. सहीह अल-बुखारी, किताब अल-मनाक़िब, अध्याय: अबू तालिब की कहानी, 1/528; सूरह अल-तौबा, 2/675; सूरह अल-क़सस, 2/703; सहीह मुस्लिम, किताब अल-ईमान, अध्याय: मौत के समय इस्लाम की वैधता का प्रमाण, आदि, कदीमी कुतुब खाना कराची, 1/40।
4. अल-इतक़ान फ़ी उलूम अल-क़ुरआन, मक्की और मदनी के अपवादों के उल्लेख पर अध्याय, दार अल-किताब अल-अरबी बेरूत, 1/73।

قال فی فتوح الغیب وھذا ھو الحق وروایۃ نزولھا فی ابی طالب ھی الصحیحۃ اھ وکذا ردہ الامام الرازی فی الکبیر وقال العلامۃ الخفاجی فی عنایۃ القاضی بعد نقل کلام التقریب اعتمدہ من بعدہ، من الشراح ولاینافیہ قولہ فی الحدیث فنزلت لامتداد استغفارہ لہ الی نزولھا اولان الفاء للسببیۃ بدون تعقیب اھ شدت پسندی تو اس سورہ میں ظاہر ہوئی ہے۔ اھ امام قسطلانی نے فرمایا کہ فتوح الغیب میں ہے کہ یہی حق ہے اور اس کے ابوطالب کے بارے میں نزول والی روایت ہی صحیح ہے اھ امام رازی نے تفسیر کبیر میں یو نہی زمحشری کا رد کیا ہے، اور علامہ خفاجی نے عنایۃ القاضی میں تقریب کا کلام نقل کرنے کے بعد کہا کہ بعد والے تمام شارحین نے اس پر اعتماد کیا ہے اور یہ حدیث میں وارد راوی کے قول فنزلت کے منافی نہیں اس لیے کہ نبی کریم صلی اللہ تعالی علیہ وسلم نے نزول آیت تک ابوطالب کے لیے استغفار میں استمرار فرمایا یا اس لیے کہ فاء سببیت کے لیے ہے نہ کہ تعقیب کے لیے اھ (ت)

اقول: والدلیل علی الاستمرار واستدامۃ الاستغفار قول سید الابرار صلی اللہ تعالی علیہ وسلم لا استغفرن لک مالم انہ عنہ فھذا مقام الجزم دون التجویز والاستظھار، علا ان الامام الجلیل الجلال السیوطی فی کتاب الاتقان عقد فصلا لبیان میں کہتا ہوں کہ استغفار کے استمرار و دوام پر دلیل سید الابرار صلی اللہ تعالی علیہ وسلم کا یہ ارشاد ہے کہ میں تیرے لیے ضرور استغفار کروں گا جب تک مجھے منع نہ کیا گیا۔ لہذا یہ مقام جزم ہے نہ کہ مقام تجویز و تائید ، علاوہ ازیں امام جلال الدین سیوطی علیہ الرحمۃ نے کتاب الاتقان میں یہ بیان کرنے کے لیے ایک فصل قائم فرمائی ہے کہ مکی

١ ارشاد الساری شرح صحیح البخاری کتاب التفسیر سورة توبہ دار الکتاب العربیہ بیروت ٧/ ١٥٨

٢ عنایة القاضی حاشیة الشهاب علی تفسیر البیضاوی تحت آیہ ٩/ ١١٣ دار الکتب العلمیہ بیروت ٢/

٣ ٦٤٨ صحیح البخاری کتاب المناقب باب قصہ ابی طالب ١ / ٥٢٨ و سورة التوبة ٢/ ٦٧٥ و سورة القصص ٢/ ٧٠٣ ، صحیح مسلم کتاب الایمان باب الدلیل علی صحة الاسلام من حضر الموت الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ١/ ٤٠ ٤ الاتقان فی علوم القرآن فصل فی ذکر ما استثنی من المکی والمدنی دار الکتاب العربی بیروت ١/ ٧٣

[Arabic Column]: What was revealed of the verses of Makkan surahs in Medina and vice versa. It is mentioned therein from some of them that the verse regarding the Prophet (Mā kāna lil-nabiyyi...) is a Makkan verse revealed concerning the statement of the Holy Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him) to Abu Talib: "I will surely seek forgiveness for you as long as I am not forbidden from it." He [Imam Suyuti] affirmed it; thus, the objection is removed from its root. Then, the wording of Bukhari in the 'Book of Commentary' is: "Then Allah revealed [it] after that." Al-Hafiz said in 'Fath al-Bari': "It is apparent that its revelation was some time after the narration of the commentary (2)." This also eliminates the doubt from its root. Both of these were mentioned by Allama al-Zarqani in 'Sharh al-Mawahib'. After all the complex details, since the Sahih Hadith has clearly stated its revelation concerning him [Abu Talib], how can authentic narrations be rejected based on whims?

[Urdu Column]: Which verses of Makkan surahs were revealed in Medina and vice versa (i.e., which verses of Madani surahs were revealed in Mecca)? And in this, it has been mentioned with reference to some commentators that the noble verse 'Mā kāna lil-nabiyyi' is Makkan and was revealed concerning that statement of the Holy Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him) which he said to Abu Talib: "As long as I am not forbidden, I will surely seek forgiveness for you." And Imam Suyuti maintained this; on this basis, the objection will be removed entirely. Then, in the 'Book of Commentary', the words of Bukhari are that after this, Allah Almighty revealed this noble verse. Al-Hafiz said in 'Fath al-Bari' that based on the narration of commentary, it is apparent that its revelation occurred some time after the aforementioned statement of the Master of Two Worlds (may Allah's peace and blessings be upon him). This also completely removes the doubt. Allama Zarqani mentioned both of these in 'Sharh al-Mawahib'. After this long and short discussion, when the Sahih Hadith has explicitly stated the revelation of the verse concerning Abu Talib, how can Sahih Hadiths be rejected based on whims? (T)

Third Verse: Allah, Exalted is His Glory, said (T): "And they prohibit (others) from him and keep away from him, and they ruin none but themselves..." They stop and restrain others from this Prophet, and they themselves avoid and stay away from believing in him.

1. Sharh al-Zarqani 'ala al-Mawahib al-Ladunniyah, mention of the death of Khadija and Abu Talib, Dar al-Ma'rifah, Beirut, 1/293.
2. Sharh al-Zarqani 'ala al-Mawahib al-Ladunniyah, mention of the death of Khadija and Abu Talib, Dar al-Ma'rifah, Beirut, 1/293.

[अरबी कॉलम]: मक्की सूरतों की कौन सी आयतें मदीना में नाज़िल हुईं और इसके विपरीत। इसमें कुछ लोगों से ज़िक्र किया गया है कि नबी के बारे में आयत (मा काना लिन-नबिय्यि...) एक मक्की आयत है जो नबी-ए-करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के अबू तालिब से कहे गए इस कथन के बारे में नाज़िल हुई: "मैं निश्चित रूप से तुम्हारे लिए तब तक क्षमा मांगूंगा जब तक मुझे इससे मना न किया जाए।" उन्होंने (इमाम सुयूती) इसकी पुष्टि की; इस प्रकार, आपत्ति जड़ से समाप्त हो जाती है। फिर, 'किताबुत्तफ़्सीर' में बुख़ारी के शब्द हैं: "फिर अल्लाह ने उसके बाद (इसे) नाज़िल किया।" हाफ़िज़ ने 'फ़तहुल बारी' में कहा: "ज़ाहिर है कि इसका नुज़ूल तफ़्सीर की रिवायत के कुछ समय बाद हुआ (2)।" यह भी संदेह को जड़ से खत्म कर देता है। अल्लामा अल-ज़रक़ानी ने 'शर्ह अल-मवाहिब' में इन दोनों का उल्लेख किया है। तमाम जटिल विवरणों के बाद, चूंकि सहीह हदीस ने स्पष्ट रूप से उनके(अबू तालिब) के बारे में इसके नुज़ूल को बताया है, तो इच्छाओं के आधार पर प्रामाणिक रिवायतों को कैसे खारिज किया जा सकता है?

[उर्दू कॉलम]: सूरतों की कौन सी आयतें मदीना में नाज़िल हुई हैं और इसके विपरीत (यानी मदनी सूरतों की कौन सी आयतें मक्का मुकर्रमा में नाज़िल हुई हैं)? और इसमें कुछ मुफ़स्सिरीन (व्याख्याकारों) के हवाले से ज़िक्र किया गया है कि आयत-ए-करीमा 'मा काना लिन-नबिय्यि' मक्की है और नबी-ए-करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के उस इरशाद के बारे में नाज़िल हुई जो आपने अबू तालिब से फ़रमाया कि "जब तक मुझे मना न किया गया मैं तेरे लिए इस्तिग़फ़ार (क्षमा प्रार्थना) करूँगा" और इमाम सुयूती ने इसको बरक़रार रखा। इस बुनियाद पर तो ऐतराज़ सिरे से ही दूर हो जाएगा। फिर 'किताबुत्तफ़्सीर' में बुख़ारी के शब्द ये हैं कि इसके बाद अल्लाह तआला ने यह आयत-ए-करीमा नाज़िल फ़रमाई। हाफ़िज़ ने 'फ़तहुल बारी' में कहा कि तफ़्सीर की रिवायत की बुनियाद पर ज़ाहिर यह है कि इसका नुज़ूल सरकार-ए-दो आलम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के उक्त इरशाद के कुछ मुद्दत बाद हुआ। यह भी सिरे से शुभे (संदेह) का निवारण कर देता है। अल्लामा ज़रक़ानी ने 'शर्ह अल-मवाहिब' में इन दोनों का लाभ बताया। इस लंबी और संक्षिप्त गुफ़्तगू के बाद जब सहीह हदीस ने अबू तालिब के बारे में आयत के नुज़ूल की तसरीह (स्पष्टीकरण) कर दी, तो ख़्वाहिशात (मनगढ़ंत इच्छाओं) के साथ सहीह हदीसों को कैसे रद्द किया जा सकता है? (त)

तीसरी आयत: अल्लाह अज़्ज़-ओ-मज्द ने फ़रमाया (त): "वे उससे (दूसरों को) रोकते हैं और उससे दूर रहते हैं, और वे स्वयं के अलावा किसी को नष्ट नहीं करते..." वे इस नबी से औरों को रोकते और बाज़ रखते हैं और ख़ुद उस पर ईमान लाने से बचते और दूर रहते हैं।

---

1. शर्ह अल-ज़रक़ानी अलल मवाहिब अल-लदुन्निया, ख़दीजा और अबू तालिब की वफ़ात का ज़िक्र, दारुल मआरिफ़ा, बैरुत, 1/293।
2. शर्ह अल-ज़रक़ानी अलल मवाहिब अल-लदुन्निया, ख़दीजा और अबू तालिब की वफ़ात का ज़िक्र, दारुल मआरिफ़ा, बैरुत, 1/293।

पृष्ठ 669/750

فتاوی رضویہ جلد ۲۹

[عربی کالم]: مأنزل من آیات السور المکیة بالمدینة وبالعکس وذکر فیه عن بعضهم ان أیة ماکان للنبي اية مكية نزلت في قوله صلى الله تعالى عليه وسلم لا بي طالب لا ستغفرن لك مالم انه عنه واقره عليه فعلى هذا يزهق الاشكال من راسه ثم ان لفظ البخاری فی کتاب التفسیر فأنزل الله بعد ذلك قال الحافظ في فتح الباري الظاهر نزولها بعده بمدة الرواية التفسير ۲ اه وهذا ایضاً یطیع الشبهة من راسها افاد هذین العلامة الزرقاني في شرح المواہب وبعد اللتیا والتی اذ قد افصح الحدیث الصحیح بنزولها فیه فکیف ترد الصحاح بالهوسات۔

[اردو کالم]: سورتوں کی کون سی آیات مدینہ میں نازل ہوئی ہیں اور اس کے برعکس (یعنی مدنی سورتوں کی کون سی آیات مکہ مکرمہ میں نازل ہوئی ہیں) اور اس میں بعض مفسرین کے حوالے سے ذکر کیا ہے کہ آیت کریمہ ماکان للنبی مکی ہے اور نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے اس ارشاد کے بارے میں نازل ہوئی جو آپ نے ابو طالب سے فرمایا کہ جب تک مجھے منع نہ کیا گیا میں تیرے لیے استغفار کروں گا اور امام سیوطی نے اس کو برقرار رکھا اس بنیاد پر تو اشکال سرے سے ہی دفع ہو جائے گا۔ پھر کتاب التفسیر میں بخاری کے لفظ یہ ہیں کہ اس کے بعد اللہ تعالیٰ نے یہ آیت کریمہ نازل فرمائی، حافظ نے فتح الباری میں کہا روایت تفسیر کی بنیاد پر ظاہر یہ ہے کہ اس کا نزول سرکار دو عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے ارشاد مذکور سے کچھ مدت کے بعد ہواھ یہ بھی سرے سے شبہ کا ازالہ کر دیتا ہے، علامہ زرقانی نے شرح مواہب میں ان دونوں کا افادہ فرمایا، اس لمبی اور مختصر گفتگو کے بعد جب حدیث صحیح نے ابو طالب کے بارے میں نزولِ آیت کی تصریح کردی تو خواہشات کے ساتھ صحیح حدیثوں کو کیسے رد کیا جاسکتا ہے۔ (ت)

آیت ثالثہ: قال عزّ مجدہ (اللہ عزّ مجدہ نے فرمایا۔ ت): "وَهُمْ يَنْهَوْنَ عَنْهُ وَيَنْئَوْنَ عَنْهُ وَإِنْ يُهْلِكُونَ إِلَّا أَنْفُسَهُمْ" وہ اس نبی سے اوروں کو روکتے اور باز رکھتے ہیں اور خود اس پر ایمان لانے سے بچتے اور دور رہتے

---

1 شرح الزرقاني على المواهب اللدنية ذكر وفاة خديجة وابى طالب دارالمعرفہ بیروت ۱/ ۲۹۳ 2 شرح الزرقاني على المواهب اللدنية ذكر وفاة خديجة وابي طالب دارالمعرفہ بیروت ۱/ ۲۹۳

Fatawa Razawiyya Volume 29

...they perceive it not. (26) 1. | ...and because of it they only destroy their own souls and they have no awareness.

Meaning, who is more unaware than the one who knowingly acts like the unaware. The Sultan of Commentators, our Master Abdullah bin Abbas (may Allah be pleased with them both), and his brilliant student, the esteemed teacher of our Master the Great Imam, Imam Ata bin Abi Rabah, and Muqatil and other commentators say: this verse was revealed regarding Abu Talib. It is in the Tafsir of Imam Baghawi, Muhi-us-Sunnah:

Ibn Abbas and Muqatil said: It was revealed concerning Abu Talib; he used to forbid people from harming the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) and prevent them, and he would stay away from believing in him, i.e., keep distance. 2. | Ibn Abbas and Muqatil said that this verse was revealed about Abu Talib; he would stop people from causing trouble to the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) and would forbid them, but he himself would stay away from believing in the Holy Master of the World (peace and blessings of Allah be upon him). (T)

It is in Anwar-ut-Tanzil:

They forbid others from bothering the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) and they themselves stay away from him, so they do not believe in him, like Abu Talib. 3. | They stop people from pursuing the Holy Messenger (peace and blessings of Allah be upon him) and they themselves keep a distance from him, thus they do not bring faith in him, like Abu Talib. (T)

Third Hadith: Fariyabi and Abdul Razzaq in his Musannaf, and Said bin Mansur in his Sunan, and Abd bin Humayd, and Ibn Jarir, and Ibn Mundhir, and Ibn Abi Hatim, and Tabarani, and Abu al-Shaykh, and Ibn Mardawayh, and Hakim in Mustadrak with a statement of authenticity, and Bayhaqi in Dala'il al-Nubuwwah narrate from Hazrat Abdullah Ibn Abbas (may Allah be pleased with them both) in its interpretation:

He said: It was revealed concerning Abu Talib; he used to forbid the polytheists from harming the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him). | Meaning, this verse was revealed regarding Abu Talib, that he [stopped] the

disbelievers from [harming] the Holy Master of the World (peace and blessings of Allah be upon him)...

1. Al-Quran Al-Karim 6/26
2. Ma'alim al-Tanzil (Tafsir Baghawi) under verse 6/26, Dar al-Kutub Beirut 2/75
3. Anwar al-Tanzil (Tafsir Baydawi) under verse 6/26, Dar al-Fikr Beirut 2/401

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

...वे नहीं समझते। (26) 1. | ...और इसके कारण वे केवल अपनी ही जानों को नष्ट करते हैं और उन्हें बोध नहीं।

अर्थात, जो जानबूझकर अज्ञानियों जैसा कार्य करे, उससे बड़ा अज्ञानी कौन। मुफ़स्सिरों के सुल्तान हमारे स्वामी अब्दुल्ला बिन अब्बास (अल्लाह उन दोनों से प्रसन्न हो) और उनके प्रखर शिष्य, हमारे स्वामी इमाम-ए-आज़म के आदरणीय शिक्षक इमाम अता बिन अबी रबाह और मुक़ातिल आदि मुफ़स्सिरों का कहना है: यह आयत अबू तालिब के बारे में उतरी। इमाम बग़वी की तफ़सीर 'मुही-उस-सुन्ना' में है:

इब्न अब्बास और मुक़ातिल ने कहा: यह अबू तालिब के बारे में उतरी; वह लोगों को नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को कष्ट पहुँचाने से रोकते थे और उन्हें मना करते थे, और वह स्वयं उन पर ईमान लाने से दूर रहते थे, यानी दूरी बनाए रखते थे। 2. | इब्न अब्बास और मुक़ातिल ने कहा कि यह आयत अबू तालिब के बारे में नाज़िल हुई, वे लोगों को हुज़ूर अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को तकलीफ़ देने से रोकते थे और उन्हें मना करते थे और खुद हुज़ूर सैयदे आलम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर ईमान लाने से दूर रहते। (त)

अनवार-उत-तन्ज़ील में है:

वे दूसरों को अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को परेशान करने से मना करते हैं और वे स्वयं उनसे दूर रहते हैं, इसलिए वे उन पर ईमान नहीं लाते, जैसे अबू तालिब। 3. | वे लोगों को रसूल-ए-पाक (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का पीछा करने से रोकते और खुद आपसे दूर रहते, लिहाज़ा आप पर ईमान नहीं लाते जैसे अबू तालिब (त)

तीसरी हदीस: फ़र्याबी और अब्दुल रज्ज़ाक अपने मुसन्निफ़ में और सईद बिन मंसूर सुनन में और अब्द बिन हुमैद और इब्न जरीर और इब्न मुन्ज़िर और इब्न अबी हातिम और तबरानी और अबू अल-शेख़ और इब्न मरदविया और हाकिम मुस्तदरक में तसहीह के बयान के साथ और बैहक़ी दलाय़ल अल-नुबुव्वह में हज़रत अब्दुल्ला इब्न अब्बास (अल्लाह उन दोनों से प्रसन्न हो) से इसकी तफ़सीर में रिवायत करते हैं:

उन्होंने कहा: यह अबू तालिब के बारे में उतरी; वह मुशरिकों को अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को चोट पहुँचाने से मना करते थे। | यानी यह आयत अबू तालिब के बारे में उतरी कि वे काफ़िरों को हुज़ूर सैयदे आलम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की...

1. अल-क़ुरान अल-करीम 6/26
2. मआलिम अल-तन्ज़ील (तफ़सीर बग़वी) आयत 6/26 के तहत, दार अल-कुतुब बेरूत 2/75
3. अनवार अल-तन्ज़ील (तफ़सीर बैज़ावी) आयत 6/26 के तहत, दार अल-फ़िक्र बेरूत 2/401

पेज 670 का 750

مَا یَشْعُرُوْنَ ﴿۲۶﴾ ۱۔ | ہیں اور اس کے باعث وہ خود اپنی ہی جانوں کو ہلاک کرتے ہیں اور انہیں شعور نہیں۔

یعنی جان بوجھ کر جو بے شعوروں کے سے کام کرے اس سے بڑھ کر بے شعور کون۔ سلطان المفسرین سیدنا عبد اللہ بن عباس رضی اللہ تعالٰی عنہما اور ان کے تلمیذ رشید سید نا امام اعظم کے استاد مجید امام عطاء بن ابی رباح و مقاتل وغیرہ ہم مفسرین فرماتے ہیں، یہ آیت ابو طالب کے باب میں اتری۔ تفسیر امام بغوی محی السنہ میں ہے:

قال ابن عباس و مقاتل نزلت فی ابی طالب کان ینھی الناس عن اذی النبي صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم و یمنعھم وینأی عن الایمان بہ ای یبعد ۲۔ | ابن عباس و مقاتل نے فرمایا کہ یہ آیت ابو طالب کے بارے میں نازل ہوئی، وہ لوگوں کو حضور اکرم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کو تکلفی دینے سے روکتا تھا اور انہیں منع کرتا تھا اور خود حضور سید عالم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم پر ایمان لانے سے دور رہتا۔ (ت)

انوار التنزیل میں ہے:

ینھون عن التعرض الرسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم وینأون عنہ فلا یؤمنون بہ کابی طالب ۳۔ | وہ لوگوں کو رسول پاک صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کا تعاقب کرنے سے روکتے اور خود آپ سے دور رہتے چنانچہ آپ پر ایمان نہیں لاتے جیسے ابو طالب (ت)

حدیث سوم: فاریابی اور عبدالرزاق اپنے مصنف اور سعید بن منصور سنن میں اور عبد بن حمید اور ابن جریر و ابن منذر و ابن ابی حاتم و طبرانی و ابوالشیخ و ابن مردویہ اور حاکم مستدرک میں

بافادہ تصحیح اور بیہقی دلائل النبوۃ میں حضرت عبداللہ ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے اس کی تفسیر میں راوی:

قال نزلت فی ابی طالب کان ینھی عن المشرکین ان یؤذوا رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم | یعنی یہ آیت ابو طالب کے بارے میں اتری کہ وہ کافروں خو حضور سید عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی

١ القرآن الکریم ۶ / ۲۶ ٢ معالم التنزیل (تفسیر بغوی) تحت آیۃ ۶ / ۲۶ دار الکتب بیروت ٢ / ٧٥ ٣ انوار التنزیل (تفسیر بیضاوی) تحت آیۃ ۶ / ۲۶ دار الفکر بیروت ٢ / ۴٠١

Fatawa Rizvia, Volume 29

Page text excerpt: "...and they distance themselves from what he has brought." It is stated in 'Mafatih al-Ghayb' that there are two opinions regarding this verse. Some say it means they prevent others from testifying to the Prophet's (peace and blessings be upon him) prophethood and acknowledging his messengership. Whereas, Ata and Muqatil said that this noble verse was revealed concerning Abu Talib; he used to prevent the Quraysh from harming the Prophet (peace and blessings be upon him) but then stayed away from him and did not follow his religion.

The first opinion is more appropriate for two reasons. First: All the verses preceding this verse necessitate the condemnation of their (Quraysh's) way. Similarly, the word of Allah, "And they forbid [others] from him" (Wa hum yanhauna 'anhu), should also be interpreted as a blameworthy matter. If we interpret it to mean that Abu Talib used to prevent them from harming the Prophet (peace and blessings be upon him), then this thematic coherence would not be achieved. Second: Allah Almighty stated after this, "And they do not destroy except themselves." This refers to what was previously mentioned.

Footnotes: 1. Al-Durr al-Manthur, citing al-Faryabi and Abd al-Razzaq etc., under verse 6:26, Dar Ihya al-Turath al-Arabi 3/227; Jami' al-Bayan (Tafsir al-Tabari) under verse 6:26, Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut 7/202; Dala'il al-Nubuwwah by al-Bayhaqi, Jam'i Abwab al-Mab'ath, Chapter on the death of Abu Talib, Dar al-Kutub al-Ilmiyyah Beirut 2/340; Tafsir Ibn Abi Hatim under verse 6:26, Maktabah Nizar Mustafa al-Baz Makkah al-Mukarramah Riyadh 2/477.

Page 671 of 750

फ़तावा रिज़विया, जिल्द २९

इबारत का हिस्सा: "...और जो कुछ वह लाए उससे दूर रहते।" 'मफ़ातीह अल-ग़ैब' में फ़रमाया गया है कि इस बारे में दो कथन हैं। उनमें से कुछ ने कहा कि मुराद यह है कि वे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नबूवत की तस्दीक और आपकी रिसालत के इक़रार से रोकते हैं। जबकि अता और मुक़ातिल ने कहा कि यह आयत-ए-करीमा अबू तालिब के बारे में नाज़िल हुई; वह क़ुरैश को नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ईज़ा (तकलीफ) पहुँचाने से रोकते थे फिर खुद आपसे दूर रहते और दीन में आपकी इत्तेबा (अनुसरण) नहीं करते थे।

पहला कौल (कथन) दो वजह से ज़्यादा मुनासिब है। वजह अव्वल: यह है कि इस आयत-ए-करीमा से मा-क़ब्ल (पहले) वाली तमाम आयतें क़ुरैश के तरीके की मज़म्मत (निंदा) का तक़ाज़ा करती हैं। इसी तरह अल्लाह तआला का कौल 'व हुम यन्हौना अन्हु' (यानी वे इससे रोकते हैं) भी अम्र-ए-मज़मूम (निंदनीय कार्य) पर महमूल होना चाहिए। अगर हम इसको इस मानी पर महमूल करें कि अबू तालिब नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ईज़ा रसानी से रोकते थे तो यह नज़्म-ए-मज़कूर (विषय की सुसंगति) हासिल न होगा। वजह सानी (दूसरी) यह है कि अल्लाह तआला ने इसके बाद फ़रमाया है कि 'वे खुद अपनी ही जानों को हलाक करते हैं'। इससे मुराद वही है जिसका पहला ज़िक्र हो चुका है।

फ़ुटनोट: १. अद-दुर्र अल-मन्सूर बहवाला अल-फ़र्याबी और अब्द अल-रज्ज़ाक वगैरह, आयत २६/६ के तहत, दार इहया अत-तुराथ अल-अरबी ३/२२७; जामि अल-बयान (तफ़्सीर त़बरी) आयत २६/६ के तहत, दार इहया अत-तुराथ अल-अरबी बेरूत ७/२०२; दलाईल अन-नुबुव्वह लिल-बैहक़ी, जामि अबवाब अल-मबअस, बाब वफ़ात-ए-अबू तालिब, दार अल-कुतुब अल-इल्मिया बेरूत २/३४०; तफ़्सीर इब्न अबी हातिम आयत २६/६ के तहत, मक्तबा निज़ार मुस्तफा अल-बाज़ मक्का मुकर्रमा रियाद २/४७७।

पृष्ठ ६७१/७५०

یتباعد عما جاء بہ - ۱ ایذا سے منع کرتے باز رکھتے اور حضور اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم پر ایمان لانے سے دور رہتے۔ قال فی مفاتیح الغیب فیہ قولان منھم من قال المراد انھم ینھون عن التصدیق نبوتہ والاقرار برسالتہ وقال عطاء ومقاتل نزلت فی ابی طالب کان ینھی قریشا عن ایذاء النبی علیہ الصلوۃ والسلام ثم یتباعد عنہ ولا یتبعہ علی دینہ، و القول الاول اشبہ لوجھین الاول ان جمیع الایات المتقدمۃ علی ھذہ الایۃ تقتضی ذم طریقتھم فلذلك قولہ وھم ینھون عنہ ینبغی ان یکون محمولا علی امر مذموم فلو حملناہ علی ان ابا طالب کان ینھی عن ایذاءہ لما حصل ھذا النظم . والثانی انہ تعالی قال بعد ذلك "وان یھلکون الا انفسھم" یعنی بہ ما تقدم ذکرہ ولا یلیق ذلك ان یکون المراد من قولہ "وھم ینھون عنہ" النھی

مفاتیح الغیب میں فرمایا اس میں دو قول ہیں ان میں سے بعض نے کہا مراد یہ ہے کہ وہ حضور پر نور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی نبوت کی تصدیق اور آپ کی رسالت کے اقرار سے روکتے ہیں جب کہ عطاء اور مقاتل نے کہا کہ وہ یہ آیت کریمہ ابوطالب کے بارے میں نازل ہوئی وہ قریش کو نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی ایذا رسانی سے روکتے تھے پھر خود آپ سے دور رہتے اور دین میں آپ کی اتباع نہیں کرتے تھے، قولِ اوّل دو وجہ سے زیادہ مناسب ہے۔ وجہ اوّل: یہ ہے کہ اس آیتِ کریمہ سے ما قبل والی تمام آیات قریش کے طریقہ کی مذمت کا تقاضا کرتی ہیں۔ اسی طرح یہ اللہ تعالیٰ کا قول وھم یَنْھَوْنَ عَنْہ (یعنی وہ اس سے روکتے ہیں) بھی امرِ مذموم پر محمول ہونا چاہیے اگر ہم اس کو اس معنی پر محمول کریں کہ ابو طالب نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی ایذا رسانی سے روکتے تھے تو یہ نظم مذکور حاصل نہ ہوگا۔ وجہ ثانی یہ ہے کہ اللہ تعالیٰ نے

اس کے بعد فرمایا ہے کہ وہ خود اپنی ہی جانوں کو ہلاک کرتے ہیں۔ اس سے مراد وہی ہے جس کا پہلا ذکر ہوچکا ہے۔

۱ الدر المنثور بحوالہ الفریابی و عبدالرزاق وغیرہ تحت آیۃ ۲۶/۶ دار احیاء التراث العربی ۳/ ۲۲۷، جامع البیان (تفسیر طبری) تحت آیۃ ۲۶/۶ دار احیاء التراث العربی بیروت ۷/ ۲۰۲، دلائل النبوۃ للبیہقی جماع ابواب المبعث باب وفاۃ ابی طالب، دارالکتب العلمیہ بیروت ۲/ ۳۴۰، تفسیر ابن ابی حاتم تحت آیۃ ۲۶/۶ مکتبہ نزار مصطفیٰ الباز مکہ مکرمہ ریاض ۲/ ۴۷۷

Volume 29 Fatawa Razawiya

[Arabic:] ...from harming him, because that is good and does not necessitate destruction (1). [Urdu:] And it is not appropriate that Allah Almighty's saying "and they forbid from it" means preventing the harm to the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him), because this is a good deed which does not cause destruction. (T)

[Arabic:] I say: The origin of the blame is turning away (Al-Na'y), and it was intensified by the prohibition. For the sin after knowledge is more severe than it is during ignorance. So the mention of prohibition is for making clear the intensity of the blame that follows him and the magnitude of the burden that afflicts him in that regard. For knowledge is Allah's proof for you and against you. Do you not see his saying (peace and blessings of Allah be upon him) regarding Abu Talib: "And were it not for me, he would have been in the lowest depth of the Fire (2)," as will follow, along with what is known of his protection, guardianship, support, and love for the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) throughout his life. He was almost in the lowest depth were it not for the intercession of the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him), because he refused faith despite perfect recognition. So the verse... [Urdu:] I say: The original blame is due to the distance, i.e., staying away, which became severe because of the prohibition, because a sin after knowledge is more severe than a sin committed in the time of ignorance. Thus, the mention of prohibition here is to express the intensity and magnitude related to the sin and burden attached to it, because knowledge is Allah Almighty's proof for you and against you. Did you not see the saying of the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) regarding Abu Talib: "If I were not there, he would have been in the lowest level of Hell." As it will come soon, if there were no intercession on behalf of Abu Talib by the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) throughout his life, Abu Talib would have been in the lowest level of Hell, because despite having complete recognition, he refused.

---

1. Mafatih al-Ghayb (Tafsir Kabir) under verse 7/26, Al-Matba'a al-Bahiyya Egypt 12/179.
2. Sahih al-Bukhari, Virtues of the Ansar, Chapter on the story of Abu Talib, Qadimi Kutub Khana Karachi 528/1; Sahih Muslim, Chapter on the Prophet's intercession for Abu Talib, Qadimi Kutub Khana Karachi 115/1.

खंड 29 फ़तावा रज़विया

[अरबी:] ...उसे नुकसान पहुँचाने से, क्योंकि वह अच्छा है और विनाश का कारण नहीं बनता (1)। [उर्दू:] और यह उचित नहीं है कि अल्लाह तआला के इरशाद "और वे उससे रोकते हैं" से मुराद नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को ईज़ा (तकलीफ) पहुँचाने से रोकना हो, क्योंकि यह तो एक नेक काम है जो तबाही का कारण नहीं बनता। (त)

[अरबी:] मैं कहता हूँ: दोष का मूल विमुख होना (अल-नई) है, और इसे निषेध द्वारा और कड़ा किया गया है। क्योंकि ज्ञान के बाद का पाप अज्ञानता के दौरान के पाप से अधिक गंभीर है। इसलिए निषेध का उल्लेख उसके बाद आने वाली निंदा की तीव्रता और उस पर पड़ने वाले बोझ की महानता को स्पष्ट करने के लिए है। क्योंकि ज्ञान तुम्हारे लिए और तुम्हारे विरुद्ध अल्लाह का प्रमाण है। क्या आप अबू तालिब के बारे में उनका कथन (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) नहीं देखते: "और यदि मैं न होता, तो वह आग की सबसे निचली गहराई में होते (2)," जैसा कि आगे आएगा, साथ ही उनके संरक्षण, संरक्षकता, समर्थन और नबी (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) के प्रति उनके पूरे जीवन के प्यार के बारे में जो ज्ञात है। वह लगभग सबसे निचली गहराई में होते यदि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) की शफ़ाअत न होती, क्योंकि उन्होंने पूर्ण पहचान के बावजूद ईमान से इनकार किया था। तो आयत... [उर्दू:] मैं कहता हूँ: मूल निंदा तो दूरी यानी दूर रहने की वजह से है, जो मनाही के कारण और भी गंभीर हो गई है। क्योंकि ज्ञान (इल्म) के बाद किया गया पाप उस पाप से अधिक गंभीर होता है जो अज्ञानता के काल में किया गया हो। अतः यहाँ मनाही का उल्लेख उस गंभीरता और तीव्रता को व्यक्त करने के लिए है जो उससे जुड़े पाप और बोझ से संबंधित है, क्योंकि ज्ञान आपके पक्ष में और आपके विरुद्ध अल्लाह तआला का प्रमाण है। क्या आपने अबू तालिब के बारे में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के इस कथन को नहीं देखा कि "यदि मैं न होता, तो वह नरक के सबसे निचले स्तर में होते।" जैसा कि शीघ्र ही आएगा, यदि नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की ओर से अबू तालिब के लिए जीवन भर शफ़ाअत (सिफारिश) न होती, तो अबू तालिब नरक के सबसे निचले स्तर में होते क्योंकि पूर्ण ज्ञान के बावजूद उन्होंने इनकार किया था।

---

1. मफातीह अल-ग़ैब (तफ़सीर कबीर) आयत 7/26 के तहत, अल-मतबा अल-बहिया मिस्र 12/179।

2. सहीह अल-बुखारी, मनाकिब अल-अंसार, अबू तालिब की कहानी पर अध्याय, कदीमी कुतुब खाना कराची 528/1; सहीह मुस्लिम, अबू तालिब के लिए नबी की शफ़ाअत पर अध्याय, कदीमी कुतुब खाना कराची 115/1।

पृष्ठ 750 का 672

عن اذیتہ لان ذلک حسن لایوجب الھلاك ۱ اھ اور یہ مناسب نہیں کہ اللہ تعالیٰ کے ارشاد "اور وہ اس سے روکتے ہیں" سے مراد نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی ایذاء رسانی سے روکنا ہو اس لیے کہ یہ تو حسن ہے جو موجب ہلاکت نہیں ہوتا ھ (ت)

اقول: اصل الذم النأي وقد تشدد بالنھی فان الذنب بعد العلم اشد منه حین الجھل فذکر النھي لابانة شدة ما یلحقه من الذم و عظمة ما یعتریه من الوزر فیما ھنالك فان العلم حجة اللہ لك و علیك الا تری الی قوله صلی اللہ تعالی علیه وسلم في ابي طالب ولو لا انا لکان في الدرك الاسفل من النار ۲ کما سیأتی مع ما علم من حمایته و کفالته و نصرته و محبته للنبي صلی اللہ تعالی علیه وسلم طول عمرہ فانما کاد یکون في الدرك الاسفل لولا شفاعة رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیه وسلم لما ابی الایمان مع کمال العرفان فالایة میں کہتا ہوں اصل مذمت تو ناہی یعنی دور رہنے کی وجہ سے ہے جو نہی کے سبب سے شدید ہو گئی، کیونکہ علم کے بعد گناہ اس گناہ سے زیادہ شدید ہو جاتا ہے جو زمانہ جہالت میں کیا گیا ہو۔ چنانچہ نہی کا یہاں ذکر اس شدت و عظمت کے اظہار کے لیے جو اس سے ملحق گناہ اور بوجھ سے متعلق ہوتی ہے کیونکہ علم اللہ تعالیٰ کی حجت ہے تیرے حق میں اور تیرے خلاف کیا تو ابوطالب کے بارے میں رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے اس ارشاد کو نہیں دیکھا کہ اگر میں نہ ہوتا تو وہ جہنم کے سب سے نچلے طبقے میں ہوتا۔ جیسا کہ عنقریب آئے گا ابوطالب کی طرف سے تمام عمر نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی شفاعت نہ ہوتی تو ابوطالب جہنم کے سب سے نچلے طبقے میں ہوتے کیونکہ کمال معرفت کے باوجود انہوں نے انکار کیا۔

1 مفاتیح الغیب (تفسیر کبیر) تحت الآیة ۲۶/۷ المطبعة البهیة مصر ۱۲/ ۱۷۹ 2 صحیح البخاری مناقب الانصار باب قصہ ابی طالب قدیمی کتب خانہ کراچی ۵۲۸/۱، صحیح مسلم باب شفاعۃ النبی صلی اللہ تعالی علیہ وسلم لابی طالب قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/ ۱۱۵

Fatawa Ridawiyyah Volume 29

Based on the divine saying of Allah the Exalted: "Do you enjoin right conduct on the people and forget your own selves, while you recite the Scripture? Will you not then understand?" (1). Thus, their commanding of righteousness and their recitation of the Scripture were mentioned in the context of condemnation. The actual intent was their forgetting of their own selves, and these two things were mentioned as a preamble. Rather, Allah the Exalted said: "O you who have believed, why do you say what you do not do? Most hateful it is in the sight of Allah that you say what you do not do." (2). So, He sternly expressed disapproval of speech without action, even if the speech itself is good in essence. In 'Ma'alim al-Tanzil', it is mentioned: The commentators said that the believers said, "If we knew which action is most beloved to Allah Almighty, we would surely do it and sacrifice our wealth and lives for it." Then Allah Almighty revealed this verse: "Indeed, Allah loves those who fight in His cause in a row..." Then they were tested with this on the day of Uhud, but they turned back and fled. So Allah the Exalted revealed this verse: "Why do you say what you do not do?" (3). With this, both reasons become clear for the one who is fair. Verily, Allama Khafaji said:

1. Al-Quran al-Karim 2/44
2. Al-Quran al-Karim 61/2 & 3
3. Ma'alim al-Tanzil (Tafsir al-Baghawi) under verse 61/2, Dar al-Kutub al-Ilmiyyah Beirut 4/307

फतावा रज़विया जिल्द 29

यह अल्लाह तआला के इस फरमान पर आधारित है: "क्या तुम लोगों को भलाई का हुक्म देते हो और अपने आप को भूल जाते हो, जबकि तुम किताब पढ़ते हो? क्या तुम अक्ल नहीं रखते?" (1)। चुनाँचे, उनके नेकी का हुक्म देने और किताब पढ़ने का ज़िक्र निंदा के संदर्भ में किया गया। मूल उद्देश्य तो उनका अपनी जानों को भूल जाना है, और इन दोनों बातों का ज़िक्र भूमिका के रूप में किया गया है। बल्कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "ऐ ईमान वालो! तुम वो क्यों कहते हो जो करते नहीं? अल्लाह के नज़दीक यह बात सख़्त नापसंद है कि तुम वो कहो जो करो नहीं।" (2)। तो यहाँ बिना अमल के केवल बात कहने पर सख़्त नापसंदगी का इज़हार फ़रमाया गया, चाहे वह बात स्वयं में कितनी ही अच्छी क्यों न हो। 'मआलिम अल-तन्ज़ील' में कहा गया कि मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि मोमिनों ने कहा, "अगर हमें मालूम हो जाए कि अल्लाह तआला की बारगाह में सबसे प्रिय अमल कौन सा है, तो हम उसे ज़रूर करेंगे और उसमें अपनी जान और माल कुर्बान कर देंगे।" तब अल्लाह तआला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई: "बेशक अल्लाह उन लोगों को दोस्त रखता है जो उसकी राह में सफ़ बांधकर लड़ते हैं..." फिर उहुद की जंग के दिन उन्हें इसमें आज़माया गया, तो वे पीठ फेर कर भाग गए। तब अल्लाह तआला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई: "तुम वो क्यों कहते हो जो करते नहीं?" (3)। और इससे इन्साफ़ पसंद व्यक्ति के लिए दोनों पहलू स्पष्ट हो जाते हैं। यकीनन, अल्लामा ख़फ़ाजी ने कहा:

1. अल-कुरान अल-करीम 2/44
2. अल-कुरान अल-करीम 61/2 और 3
3. मआलिम अल-तन्ज़ील (तफ़्सीर बग़वी) आयत 61/2 के तहत, दार अल-कुतुब अल-इल्मिया बेरुत 4/307

पृष्ठ 673/750

فتاوی رضویہ جلد ۲۹

علی وزان قولہ تعالیٰ " اَتَاْمُرُوْنَ النَّاسَ بِالْبِرِّ وَتَنْسَوْنَ اَنْفُسَكُمْ وَاَنْتُمْ تَتْلُوْنَ الْكِتٰبَ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ " ۱ - فذکر في سیاق الذم امرھم بالبر وتلاوتھم الکتاب وانما القصد الی نسیانھم انفسھم وذکر ھذین للتسجیل بل قال جل ذکرہ: " یٰاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا لِمَ تَقُوْلُوْنَ مَا لَا تَفْعَلُوْنَ ۝ كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللّٰهِ اَنْ تَقُوْلُوْا مَا لَا تَفْعَلُوْنَ " ۲ - فشدد النکیر علی القول من دون عمل وان کان القول خیرا فی نفسہ قال فی معالم التنزیل: قال المفسرون ان المؤمنین قالوا لو نعلم ای الاعمال احب الی اللہ عز وجل لعملناہ ولبذلنا فیہ اموالنا وانفسنا فانزل عزوجل ان اللہ یحب الذین یقاتلون فی سبیلہ صفا فابتلوا بذلك یوم احد فولوا مدبرین فانزل اللہ تعالیٰ: لِمَ تَقُوْلُوْنَ مَا لَا تَفْعَلُوْنَ ۝ ۳ - اھ وبہ ینحل الوجھان لمن انصف لاجرم ان قال الخفاجی

چنانچہ آیت مذکورہ اللہ تعالیٰ کے اس ارشاد کی طرف پر ہے کہ کیا لوگوں کو بھلائی کا حکم دیتے ہو اور اپنے جان کو بھولتے ہو حالانکہ تم کتاب پڑھتے ہو تو کیا تمہیں عقل نہیں۔ ان کے نیکی کا حکم دینے اور کتاب پڑھنے کو مذمت کے سیاق میں ذکر کیا۔ مقصود تو ان کا اپنی جانوں کو بھلانا ہے اور ان دونوں باتوں کا ذکر بطور تمہید ہے بلکہ اللہ تعالیٰ نے فرمایا: اے ایمان والو! کیوں کہتے ہو وہ جو نہیں کرتے۔ کیسی سخت ناپسند ہے اللہ کو وہ بات کہ وہ کہو جو نہ کرو۔ تو یہاں پر قول بلا عمل پر سخت نفرت کا اظہار فرمایا اگرچہ فی نفسہ قول اچھا ہو۔ معالم التنزیل میں کہا کہ مفسرین نے فرمایا کہ مومنوں نے کہا اگر ہمیں معلوم ہو جائے کہ اللہ تعالیٰ کی بارگاہ میں محبوب ترین عمل کون سا ہے تو ہم اس کو ضرور کریں گے اور اس میں اپنے مال و جان قربان کر دیں گے۔ تو اللہ تعالیٰ نے یہ آیت نازل فرمائی کہ بے شک اللہ دوست رکھتا ہے انہیں جو اس کی راہ میں لڑتے ہیں پرابندھ کر پھر غزوہ اُحد میں انہیں اس میں مبتلا کر دیا گیا تو پیٹھ پھیر کر بھاگ گئے تو

اللہ تعالیٰ نے یہ آیت نازل فرمائی کہ کیوں کہتے ہو وہ جو نہیں کرتے ہو۔ اور اس سے منصف کے لیے دونوں وجہیں کھل گئیں۔ علامہ خفاجی نے

۱ القرآن الکریم ۲/ ۴۴ ۲ القرآن الکریم ۶۱/ ۲ و ۳ ۳ معالم التنزیل (تفسیر بغوی) تحت آیة ۶۱/ ۲ دار الکتب العلمیة بیروت ۴/ ۳۰۷

Fatawa Rizvia, Volume 29

In 'Al-Inaya', after quoting the Imam's words, it is said: "There is room for consideration in it." The summary is that 'Ata knows the styles and arrangement of the Holy Quran better than you and me. What more can be said about this great, profound scholar who surpasses most of the Ummah in the knowledge and understanding of the Holy Quran? And Allah Almighty knows best. (T)

Second Section: Hadiths

Fourth Hadith: In Sahihayn and Musnad Imam Ahmad, from our master 'Abbas, the uncle of the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him).

He said to the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him): "What did you benefit your uncle? For by Allah, he used to protect you and would get angry for your sake." He replied: "He is in a shallow part of the fire, and had it not been for me, he would have been in the lowest depth of the Fire." (2) And in another narration: "I found him in the depths of the fire, so I brought him out to a shallow part." (3)

Imam Ibn Hajar says in Fath al-Bari, the commentary of Sahih Bukhari: "This supports the speciality that after he refused..." That is, due to the specific privilege of the Noble Prophet (peace and blessings of Allah be upon him).

Footnotes: 1. 'Inaya al-Qadi', Hashiya al-Shihab on 'Tafsir al-Baydawi', under verse 6/26, Dar al-Kutub al-Ilmiyah, Beirut, 4/65. 2. 'Sahih al-Bukhari', Book of Virtues, Chapter on the Story of Abu Talib, Qadimi Kutub Khana, Karachi, 1/528; and 'Sahih al-Bukhari', Book of Etiquette, Chapter on the Kunya of a Polytheist, Qadimi Kutub Khana, Karachi, 2/917; 'Sahih Muslim', Book of Faith, Chapter on the Intercession of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) for Abu Talib, Qadimi Kutub Khana, Karachi, 1/115; 'Musnad Ahmad bin Hanbal', narrated from Al-Abbas, Al-Maktab al-Islami, Beirut, 1/206 & 210. 3. 'Sahih Muslim', Book of Faith, Chapter on the Intercession of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) for Abu Talib, 1/115.

फ़तावा रिज़विया, जिल्द 29

'अल-इनाया' में इमाम के शब्दों को उद्धृत करने के बाद कहा गया: "इसमें विचार की गुंजाइश है।" सारांश यह है कि 'अता हम और आप से पवित्र कुरान की शैलियों और व्यवस्था को बेहतर जानते हैं। इस महान, विद्वान ज्ञानी के बारे में और क्या कहा जाए, जो पवित्र कुरान के ज्ञान और समझ में उम्मत के अधिकांश लोगों से श्रेष्ठ हैं। और अल्लाह सर्वशक्तिमान बेहतर जानता है। (त)

दूसरा अध्याय: हदीसें

चौथी हदीस: सहीहैन और मसनद इमाम अहमद में, अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के चाचा हज़रत सैय्यदना अब्बास से वर्णित है।

उन्होंने नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से कहा: "आपने अपने चाचा को क्या लाभ पहुँचाया? क्योंकि खुदा की कसम, वह आपकी रक्षा करते थे और आपके लिए लोगों से लड़ते-झगड़ते थे।" आपने फ़रमाया: "वह आग के उथले हिस्से में हैं, और यदि मैं न होता, तो वह नरक के सबसे निचले स्तर पर होते।" (2) और एक अन्य वर्णन में है: "मैंने उन्हें आग की गहराइयों में पाया, तो मैंने उन्हें निकाल कर उथले हिस्से में कर दिया।" (3)

इमाम इब्न हजर 'फतह अल-बारी' (सहीह बुखारी की व्याख्या) में कहते हैं: "यह इस विशिष्टता का समर्थन करता है कि उनके इनकार करने के बाद भी..." यानी नबी करीम (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की विशेषता के कारण।

पाद टिप्पणियाँ (Footnotes): 1. 'इनाया अल-कादी', हाशिया अल-शिहाब अला तफ़सीर अल-बैदावी, आयत 6/26 के तहत, दार अल-कुतुब अल-इल्मिया, बेरुत, 4/65। 2. 'सहीह अल-बुखारी', किताबुल मनाकिब, बाबू किस्सा अबी तालिब, कदीमी कुतुब खाना कराची, 1/528; और 'सहीह अल-बुखारी', किताबुल अदब, बाबू कुनियतिल मुशरिक, कदीमी कुतुब खाना कराची, 2/917; 'सहीह मुस्लिम', किताबुल ईमान, बाबू शफाअतिन नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) लिअबी तालिब, कदीमी कुतुब खाना कराची, 1/115; 'मसनद अहमद बिन हंबल' अन अल-अब्बास, अल-मक्तब अल-इस्लामी बेरुत, 1/206 व 210। 3. 'सहीह मुस्लिम', किताबुल ईमान, बाबू शफाअतिन नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) लिअबी तालिब, 1/115।

पृष्ठ 674 / 750

فی العنایۃ بعد نقلہ کلام الامام فیہ نظر اھ - بالجملۃ فعطاء اعلم منا ومنکم بأسالیب القرآن ونظمہ فضلا عن ھذا الحبر العظیم الذی قد فاق اکثر الامۃ فی علم القرآن وفھمہ واللہ تعالٰی اعلم۔ عنایہ میں امام کا کلام نقل کرنے کے بعد کہا۔ اس میں نظر ہے۔ اھ خلاصہ یہ کہ عطاء قرآن مجید کے اسالیب و نظم کو ہم سے اور تم سے زیادہ جاننے والا ہے۔ چہ جائیکہ یہ عظیم عالم متبحر جو قرآن مجید کے علم و فہم میں اکثر امت پر فوقیت رکھتا ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم۔(ت)

فصل دوم _____ احادیث

حدیث چہارم: صحیحین و مسند امام احمد میں حضرت سیدنا عباس عم رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم سے ہے۔

انہ قال للنبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم ما اغنیت عن عمک فواللہ کان یحوطک ویغضب لک قال ھو فی ضحضاح من نار ولولا انا لکان فی الدرک الاسفل من النار 2۔ وفي رواية وجدته غمرات من النار فأخرجته الی ضحضاح 3۔ یعنی انہوں نے خدمتِ اقدس حضور سید المرسلین صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم میں عرض کی حضور نے اپنے چچا ابوطالب کو کیا نفع دیا؟ خدا کی قسم وہ حضور کی حمایت کرتا اور حضور کے لیے لوگوں سے لڑتا جھگڑتا تھا۔ فرمایا میں نے اسے سراپا آگ میں ڈوبا ہوا پایا تو اسے کھینچ کر پاؤں تک آگ میں کردیا اور اگر میں نہ ہوتا تو وہ جہنم کے سب سے نیچے طبقے میں ہوتا۔

امام ابن حجر فتح الباری شرح صحیح بخاری میں فرماتے ہیں : یؤید الخصوصیۃ انہ بعد ان امتنع یعنی نبی کریم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کی خصوصیت سے

حواشی: 1 عناية القاضى حاشية الشهاب على تفسير البيضاوى تحت الاية ۲۶/۶ دار الكتب العلمية بيروت ۴ / ۶۵ 2 صحيح البخاري كتاب المناقب باب قصة ابى طالب قديمى كتب خانہ كراچى ۱ / ۵۲۸ وصحيح البخارى كتاب الادب باب كنية المشرك قديمى كتب خانہ كراچى ۲ / ۹۱۷، صحيح مسلم كتاب الايمان باب شفاعة النبى صلى الله تعالىٰ عليه وسلم لابى طالب قديمى كتب خانہ كراچى ۱/ ۱۱۵، مسند احمد بن حنبل عن العباس المكتب الاسلامي بيروت ۱ / ۲۰۶ و ۲۱۰ 3 صحيح مسلم كتاب الايمان باب شفاعة النبى صلى الله تعالىٰ عليه وسلم لابى طالب ۱ / ۱۱۵

Fatawa Razawiyya Volume 29

[Arabic]: He interceded for him until the punishment was lightened for him compared to others. [Urdu]: It happened that even though Abu Talib refused to bring faith, the intercession of the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) worked so much that his punishment was lightened compared to the rest of the disbelievers.

Fifth Hadith: In Sahihayn and Musnad Imam Ahmad, it is narrated from Abu Sa'id al-Khudri (may Allah be pleased with him): [Arabic]: Verily, the Messenger of Allah (peace be upon him) was mentioned in the presence of his uncle Abu Talib, and he said, 'Perhaps my intercession will benefit him on the Day of Resurrection, so he will be placed in a shallow pool of fire that reaches his ankles, from which his brain will boil.' [Urdu]: Meaning, when Abu Talib was mentioned before the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him), he said, 'I hope that on the Day of Judgment my intercession will benefit him in such a way that he will be placed in a fire up to his feet in Hell, which will reach his ankles, causing his brain to boil.'

Yunus bin Bukayr narrated from the Hadith of Muhammad bin Ishaq: [Arabic] His brain will boil from it until it flows over his feet. [Urdu] His brain will boil over and fall onto his feet. It is narrated from Imam Suhayli in Umdat al-Qari and Irshad al-Sari (commentaries of Sahih Bukhari), Al-Mawahib al-Ladunniyyah, etc.: [Arabic]: The wisdom in this is that Abu Talib followed the Messenger of Allah (peace be upon him) in his entirety, except that he remained steadfast on the religion of his people, so the punishment was inflicted on his feet specifically because of his keeping them firm on the religion of his people. [Urdu]: Meaning, the wisdom behind the fire remaining up to Abu Talib's feet is that Allah (Almighty) gives the reward commensurate with the action. Abu Talib's entire body was devoted to supporting the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him), but his steadfastness on the creed of disbelief resulted in the punishment being imposed on his feet.

1. Fath al-Bari Sharh Sahih al-Bukhari, Kitab al-Tafsir, Surah al-Qasas, Chapter: His saying 'Verily, you do not guide...', Mustafa al-Babi, Egypt 10/123.
2. Musnad Ahmad bin Hanbal from Abu Sa'id al-Khudri, Al-Maktab al-Islami, Beirut 3/50; Sahih al-Bukhari, Kitab Manaqib al-Ansar, Chapter on the Story of Abu Talib, Qadimi Kutub Khana, Karachi 1/328.
3. Al-Mawahib al-Ladunniyyah with reference to Ibn Ishaq 1/264 and Irshad al-Sari with reference to Ibn Ishaq under Hadith 3885, 8/351.

4. Umdat al-Qari Sharh Sahih al-Bukhari, Manaqib al-Ansar, Chapter on the Story of Abu Talib, Hadith 3885, Dar al-Kutub al-Ilmiyyah, Beirut 17/24; Irshad al-Sari with reference to Al-Suhayli under Hadith 3885, 8/351; and Al-Mawahib al-Ladunniyyah with reference to Al-Suhayli 1/264.

फतावा रज़विया जिल्द 29

[अरबी]: उन्होंने उनके लिए शफ़ाअत (सिफारिश) की यहाँ तक कि उनके लिए अज़ाब (सज़ा) औरों के मुकाबले हल्का कर दिया गया। [उर्दू]: हुआ कि अबू तालिब ने हालांकि ईमान लाने से इनकार किया फिर भी हुज़ूर अकदस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की शफ़ाअत ने इतना काम दिया कि बाकी काफिरों के मुकाबले अज़ाब हल्का हो गया।

पाँचवीं हदीस: सहीहैन और मसनद इमाम अहमद में अबू सईद खुदरी (रज़ियल्लाहु अन्हु) से है: [अरबी]: बेशक अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के पास उनके चचा अबू तालिब का ज़िक्र आया तो आपने फरमाया, 'शायद कयामत के दिन मेरी शफ़ाअत उन्हें फायदा दे, तो उन्हें आग के उथले हिस्से में रखा जाएगा जो उनके टखनों तक पहुँचेगी जिससे उनका दिमाग खौलेगा।' [उर्दू]: यानी हुज़ूर अकदस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के सामने अबू तालिब का ज़िक्र आया तो फरमाया, 'मैं उम्मीद करता हूँ कि रोज़-ए-क़यामत मेरी शफ़ाअत उसे यह नफा देगी कि जहन्नम में पाँव तक की आग में कर दिया जाएगा जो उसके टखनों तक होगी जिससे उसका दिमाग जोश मारेगा।'

यूनुस बिन बुक़ैर ने हदीस-ए-मुहम्मद बिन इस्हाक से यूँ रिवायत किया: [अरबी] उससे उनका दिमाग खौलेगा यहाँ तक कि वह उनके दोनों पैरों पर बहने लगेगा। [उर्दू] उनका भेजा उबल कर पाँव पर गिरेगा। उम्दतुल क़ारी और इरशाद अल-सारी (सहीह बुखारी की शरह) और मवाहिब अल-दुनिया वगैरह में इमाम सुहैली से मन्कूल है: [अरबी]: इसमें हिकमत यह है कि अबू तालिब अपनी पूरी ज़ात के साथ अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के ताबे (अनुयायी) थे, सिवाय इसके कि वे अपनी कौम के दीन पर डटे रहे, इसलिए अज़ाब खासतौर पर उनके पैरों पर मुसल्लत किया गया क्योंकि उन्होंने उन्हें अपनी कौम के दीन पर साबित कदम रखा था। [उर्दू]: यानी अबू तालिब के पाँव तक आग रहने में हिकमत यह है कि अल्लाह अज़्ज़वजल अमल के मुताबिक जज़ा (बदला) देता है। अबू तालिब का सारा बदन हुज़ूर अकदस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की हिमायत में सर्फ़ रहा, मिल्लत-ए-कुफ्र पर साबित कदमी ने पाँव पर अज़ाब मुसल्लत किया।

1. फ़तहुल बारी शरह सहीह अल-बुखारी, किताब अल-तफ़सीर, सूरह अल-क़सस, बाब: उनका कौल 'बेशक आप हिदायत नहीं देते...', मुस्तफा अल-बाबी, मिस्र 10/123।

2. मसनद अहमद बिन हंबल अबू सईद खुदरी से, अल-मक्तब अल-इस्लामी, बेरूत 3/50; सहीह अल-बुखारी, किताब मनाकिब अल-अंसार, अबू तालिब के किस्से का बाब, कदीमी कुतुब खाना, कराची 1/328।
3. अल-मवाहिब अल-लदुन्निया ह़वाला इब्न इस्हाक 1/264 और इरशाद अल-सारी ह़वाला इब्न इस्हाक हदीस 3885 के तहत, 8/351।
4. उम्दतुल क़ादरी शरह सहीह अल-बुखारी, मनाकिब अल-अंसार, अबू तालिब के किस्से का बाब, हदीस 3885, दार अल-कुतुब अल-इल्मिया, बेरूत 17/24; इरशाद अल-सारी ह़वाला अल-सुहैली हदीस 3885 के तहत, 8/351; और अल-मवाहिब अल-लदुन्निया ह़वाला अल-सुहैली 1/264।

فتاوٰی رضویہ جلد ۲۹

[Arabic]: شفع لہ حتی خفف لہ العذاب بالنسبۃ لغیرہ - [Urdu]: ہوا کہ ابو طالب نے با آنکہ ایمان لانے سے انکار کیا پھر بھی حضور اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کی شفاعت نے اتنا کام دیا کہ بہ نسبت باقی کافروں کے عذاب ہلکا ہو گیا۔

حدیث پنجم: صحیحین و مسند امام احمد میں ابو سعید خدری رضی اللہ تعالٰی عنہ سے ہے :

[Arabic]: ان رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم ذکر عندہ عمہ ابوطالب فقال لعلہ تنفعہ شفاعتی یوم القیمۃ فیجعل فی ضحضاح من النار یبلغ کعبیہ یغلی منہ دماغہ 2 - [Urdu]: یعنی حضور اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کے سامنے ابوطالب کا ذکر آیا فرمایا میں امید کرتا ہوں کہ روز قیامت میری شفاعت اسے یہ نفع دے گی کہ جہنم میں پاؤں تک کی آگ میں کر دیا جائے گا جو اس کے ٹخنوں تک ہوگی جس سے اس کا دماغ جوش مارے گا۔

یونس بکر بکیر نے حدیث محمد بن اسحق سے یوں روایت کیا: [Arabic] یعلی منہ دماغہ حتی یسیل علی قدمیہ 3 - [Urdu] اس کا بھیجا ابل کر پاؤں پر گرے گا۔ عمدۃ القاری و ارشاد الساری شروح صحیح بخاری و مواہب الدنیا وغیرہما میں امام سہیلی سے منقول: [Arabic]: الحکمۃ فیہ ان اباطالب کان تابعالرسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم لجملتہ الا انہ استمر ثابت القدم علی دین قومہ فسلط العذاب علی قدمیہ خاصۃ لتثبیتہ ایاہما علی دین قومہ 4 - [Urdu]: یعنی ابوطالب کے پاؤں تک آگ رہنے میں حکمت یہ ہے کہ اللہ عزوجل جزا بمشکل عمل دیتا ہے ابوطالب کا سارا بدن حضور اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کی حمایت میں صرف رہا ، ملت کفر پر ثابت قدمی نے پاؤں پر عذاب مسلط کیا۔

1 فتح الباری شرح صحیح البخاری کتاب التفسیر سورۃ القصص باب قولہ انک لاتھدی مصطفی البابی مصر ۱۰/ ۱۲۳ 2 مسند احمد بن حنبل عن ابی سعید الخدری المکتب الاسلامی بیروت ۳/ ۵۰ ، صحیح البخاری کتاب مناقب الانصار باب قصہ ابی طالب قدیمی کتب خانہ کراچی ۳۲۸/۱ 3 المواہب اللدنیۃ بحوالہ ابن اسحق ۱/ ۲۶۴ و ارشاد الساری بحوالہ ابن اسحق تحت الحدیث ۳۵۱/۸ ۳۸۸۵ 4 عمدۃ القادری شرح صحیح البخاری مناقب الانصار باب قصہ ابی طالب حدیث ۳۸۸۵ دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۷/ ۲۴ ، ارشاد الساری بحوالہ السہیلی تحت الحدیث ۳۸۸۵، ۳۵۱/۸ والمواہب اللدنیہ بحوالہ السہیلی ۱/ ۲۶۴

Fatawa Razawiyya Volume 29

Similarly, it is mentioned in Taysir Sharh Jami' Saghir etc.

Sixth Hadith: Bazzar, Abu Ya'la, Ibn 'Adi, and Tammam narrate from Hazrat Jabir bin Abdullah Ansari (may Allah be pleased with them both):

[Arabic Box]: It was said to the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him), "Did you benefit Abu Talib?" He said, "I took him out from the depths of Hell to its shallow parts."[1]

[Urdu Box]: That is, it was submitted to the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him), "Did you give some benefit to Abu Talib?" He replied, "I pulled him from being drowned in Hell into fire up to his feet."

Imam 'Ayni says in 'Umda':

[Arabic Box]: If you say the deeds of the disbelievers are scattered dust, so there is no benefit in them, I say: This benefit is from the blessing of the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) and his special characteristics.[2]

[Urdu Box]: Its meaning is also the same, that Abu Talib getting this benefit is only through the blessing of the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him), otherwise the deeds of disbelievers are like dust blown away by the wind.

Seventh Hadith: Tabarani narrates from Hazrat Umm al-Mu'minin Umm Salama (may Allah be pleased with her):

[Arabic Box]: Indeed, Al-Harith bin Hisham came to the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) on the day of the Farewell Pilgrimage and said, "O Messenger of Allah! I used to maintain family ties, be kind to neighbors, shelter orphans, feed guests, and feed the poor. And my father Hisham bin al-Mughira used to do all this. So, what is your opinion about him, O Messenger of Allah?" The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said, "Every grave whose occupant does not bear witness that there is no god but Allah is a coal from the fire, and I have found...

[Urdu Box]: That is, Harith bin Hisham (may Allah be pleased with him) submitted to the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) on the day of the Farewell Pilgrimage: "O Messenger of Allah! I act upon these things: good treatment of relatives, good behavior towards neighbors, giving refuge to orphans, hosting

guests, feeding the needy, and my father Hisham used to do all these things. So what is your estimation regarding him?" He replied: "Whichever grave is made whose dead person does not believe in 'La Ilaha Illallah' (there is no god but Allah), it is an ember of Hell. I myself [found] my uncle Abu Talib...

---

[1] Musnad Abu Ya'la al-Mawsili, from Musnad Jabir bin Abdullah, Hadith 2023, Mu'assasat Ulum al-Qur'an Beirut, 2/399. [2] Umdat al-Qari, Book of Merits of the Ansar, under Hadith 3883, Dar al-Kutub al-Ilmiyya, 17/23.

फतावा रज़विया खंड 29

इसी प्रकार 'तयसीर शरह जामे सगीर' आदि में है।

छठी हदीस: बज़ार, अबू या'ला, इब्न अदी और तमाम हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्ला अंसारी (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से रावी हैं:

[अरबी बॉक्स]: नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से पूछा गया, "क्या आपने अबू तालिब को कोई लाभ पहुँचाया?" उन्होंने कहा, "मैंने उन्हें जहन्नुम की गहराई से निकाल कर उसके उथले हिस्से में पहुँचा दिया।"[1]

[उर्दू बॉक्स]: यानी हुज़ूर अकदस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से अर्ज़ की गई, "क्या हुज़ूर ने अबू तालिब को कुछ नफ़ा (लाभ) दिया?" फ़रमाया, "मैंने उसे दोज़ख के ग़र्क(डूबने) से निकाल कर पैरों की आग में खींच लिया।"

इमाम ऐनी 'उम्दा' में फ़रमाते हैं:

[अरबी बॉक्स]: यदि आप कहें कि काफ़िरों के कर्म बिखरी हुई धूल के समान हैं, तो उनमें कोई लाभ नहीं है, मैं कहता हूँ: यह लाभ अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की बरकत और उनकी विशेषताओं से है।[2]

[उर्दू बॉक्स]: इसका भी वही मतलब है कि अबू तालिब को यह नफ़ा मिलना सिर्फ़ हुज़ूर अकदस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की बरकत से है, वरना काफ़िरों के आमाल (कर्म) तो धूल हैं जो हवा पर उड़ाए हुए हों।

सातवीं हदीस: तबरानी हज़रत उम्मुल मोमिनीन उम्मे सलमा (रज़ियल्लाहु अन्हा) से रावी हैं:

[अरबी बॉक्स]: निश्चय ही अल-हारिस बिन हिशाम विदाई हज के दिन नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के पास आए और कहा, "हे अल्लाह के रसूल! मैं पारिवारिक संबंधों को बनाए रखता था, पड़ोसियों के प्रति दयालु था, अनाथों को आश्रय देता था, मेहमानों को खाना खिलाता था और गरीबों को खाना खिलाता था। और मेरे पिता हिशाम बिन अल-मुग़ीरा यह सब करते थे। तो, हे अल्लाह के रसूल, उनके बारे में आपकी क्या राय है?" अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने कहा, "हर वह कब्र जिसका निवासी यह गवाही नहीं देता कि अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं है, वह आग का कोयला है, और मैंने पाया है...

[उर्दू बॉक्स]: यानी हारिस बिन हिशाम (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने विदाई हज के दिन हुज़ूर अकदस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से अर्ज़ की: "हे अल्लाह के रसूल! मैं इन बातों पर अमल करता हूँ: रिश्तेदारों से नेक सुलूक, पड़ोसी से अच्छा बर्ताव, यतीम को जगह देना, मेहमान को मेहमानी देना, मोहताज को खाना खिलाना और मेरे बाप हिशाम यह सब काम करता था तो हुज़ूर का उसके बारे में क्या गुमान है?" फ़रमाया: "जो कब्र बने जिसका मुर्दा 'ला इलाहा इल्लल्लाह' न मानता हो वह दोज़ख का अंगारा है। मैंने खुद अपने चाचा अबू तालिब को...

---

[1] मुसनद अबू या'ला अल-मौसिली, मुसनद जाबिर बिन अब्दुल्ला से, हदीस 2023, मुअस्ससत उलूम अल-क़ुरान बेरुत, 2/399. [2] उम्दतुल क़ारी, किताब मुनाकिबुल अंसार, हदीस 3883 के तहत, दारुल कुतुब अल-इल्मिया, 17/23.

اسی طرح تیسر شرح جامع صغیر وغیرہ میں ہے۔ حدیث ششم: بزار وابویعلٰی وابن عدی و تمام حضرت جابر بن عبداللہ انصاری رضی اللہ تعالٰی عنہما سے راوی:

قیل للنبي صلی اللہ تعالی علیہ وسلم ھل نفعت ابا طالب قال اخرجتہ من غبرۃ جھنم الی ضحضاح منھا[1]۔ یعنی حضور اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم سے عرض کی گئی حضور نے ابوطالب کو کچھ نفع دیا۔ فرمایا میں نے اسے دوزخ کے غرق سے پاؤں کی آگ میں کھینچ لیا۔

امام عینی عمدہ میں فرماتے ہیں۔

فان قلت اعمال الکفرۃ ھباء منثور الافائدۃ فیھا قلت ھذا النفع من برکۃ رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم و خصائصہ[2]۔ اس کا بھی وہی مطلب ہے کہ ابو طالب کو یہ نفع ملنا صرف حضور اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کی برکت سے ہے ورنہ کافروں کے اعمال تو غبار ہیں ہوا پر اڑائے ہوئے۔

حدیث ہفتم: طبرانی حضرت ام المومنین ام سلمہ رضی اللہ تعالٰی عنہما سے راوی:

ان الحارث بن ھشام اتی النبي صلی اللہ تعالی علیہ وسلم یوم حجۃ الوداع فقال یارسول اللہ انی کنت علی صلۃ الرحم والاحسان الی الجار وایوآء الیتیم واطعام الضیف واطعام المسکین وکل ھذا قد کان یفعلہ ھشام بن المغیرۃ فما ظنك بہ یارسول اللہ فقال رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم کل قبر ای لایشھد صاحبہ ان لا الہ الا اللہ فھو جذوۃ من النار، و قدوجدت یعنی حارث بن ہشام رضی اللہ تعالٰی نے روز حجۃ الوداع حضور اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم سے عرض کی۔ یارسول اللہ ! میں ان باتوں پر عمل کرتا ہوں۔ رشتہ داروں سے نیک سلوک، ہمسایہ سے اچھا برتاؤ، یتیم کو جگہ دینا، مہمان کو مہمانی دینا، محتاج کو کھانا کھلانا اور میرا باپ ہشام یہ سب کام کرتا تھا تو حضور کا اس

کی نسبت کیا گمان ہے؟ فرمایا جو قبر بنے جس کا مردہ لا الہ الا اللہ نہ مانتا ہو وہ دوزخ کا انگارہ ہے میں نے خود اپنے چچا ابو طالب کو

---

[1] مسندا بو یعلی الموصلی عن مسند جابر بن عبداللہ حدیث ۲۰۲۳ موسسۃ علوم القرآن بیروت ۲ / ۳۹۹ [2] عمدۃ القاری کتاب مناقب الانصار تحت الحدیث ۳۸۸۳، دارالکتب العلمیہ ۱۷ / ۲۳

Volume 29 Fatawa Razawiyya

عسی اباطالب فی طمطام من النار فاخرجہ اللہ لمکانہ منی واحسانہ الی فجعلہ فی ضحضاح من النار۱۔	**He was found in fire higher than his head; due to my kinship and service, Allah Almighty took him out from there and put him in fire up to his feet.**

In *Majma' Bihar al-Anwar*, it is quoted from Imam Kirmani, the commentator of Bukhari, marked with the sign 'Kaf': | نفع اباطالب اعمالہ ببرکتہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم وان کان اعمال الکفرۃ ھباء منثورا۲۔ | That is, due to the blessing of the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him), Abu Talib's deeds were made beneficial; otherwise, the works of disbelievers are rendered useless and destroyed. | | :--- | :--- |

Hadith Eight: Imam Ahmad in his Musnad, and Imam Bukhari and Muslim in their Sahihs, narrate from Hadrat Abdullah bin Abbas (may Allah be pleased with both of them) that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: | اھون اھل النار عذابا ابو طالب وھو منتعل بنعلین من نار یغلی منھما دماغہ۳۔ | Indeed, the lightest punishment among the dwellers of Hell is upon Abu Talib; he is wearing two shoes of fire, which cause his brain to boil. | | :--- | :--- |

Also in the *Sahihain*, from the narration of Nu'man bin Bashir (may Allah be pleased with both of them), the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: | ان اھون اھل النار عذابا من لہ نعلان و شراکان من نار یغلی منھما دماغہ کما یغلی المرجل ما یری ان احدا اشد منہ عذابا وانہ لاھونھم عذابا۴۔ | The one with the lightest punishment in Hell is he who will be made to wear two shoes and two laces of fire, causing his brain to boil like a cooking pot. He will think that he is suffering the most severe punishment, even though his punishment is the lightest of all. | | :--- | :--- |

In the same Hadith, the narration of Imam Ahmad is as follows:

I.T. Majlis of DawateIslami

1. *Al-Mu'jam al-Kabir* on the authority of Umm Salama, Hadith 972, Al-Maktaba al-Faisaliyya, Beirut, 23/405; *Al-Mu'jam al-Awsat*, Hadith 3857, Maktaba al-Ma'arif, Riyadh, 8/190.
2. *Majma' Bihar al-Anwar*.
3. *Sahih Muslim*, Kitab al-Iman, Bab Shafa'at an-Nabi (PBUH) li-Abi Talib, Qadimi Kutub Khana, Karachi, p. 115.

4. *Sahih Muslim*, Kitab al-Iman, Bab Shafa'at an-Nabi (PBUH) li-Abi Talib etc., Qadimi Kutub Khana, Karachi, 1/115.

Page 677 of 750

عسی اباطالب فی طمطام من النار فاخرجہ اللہ لمکانہ منی واحسانہ الی فجعلہ فی ضحضاح من النار۱۔	सिर से ऊंची आग में पाया गया, मेरी रिश्तेदारी और सेवा के कारण अल्लाह तआला ने उन्हें वहाँ से निकालकर पैरों तक आग में कर दिया।

मजमा बिहार अल-अनवार में इमाम किरमानी, बुखारी के व्याख्याकार के हवाले से 'काफ़' के निशान के साथ उद्धृत है: | نفع اباطالب اعمالہ ببرکتہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم وان کان اعمال الکفرۃ ہ ا۔ط۲ منثورا ء | यानी नबी करीम (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) की बरकत से अबू तालिब के कर्म लाभदायक हो गए, वरना काफ़िरों के काम तो बर्बाद हो जाते हैं। | | :--- | :--- |

आठवीं हदीस: इमाम अहमद ने अपनी मुसनद में, और इमाम बुखारी और मुस्लिम ने अपनी सहीह में हजरत अब्दुल्ला बिन अब्बास (रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा) से रिवायत की है कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं: | اھون اھل النار عذابا ابو طالب وھو منتعل بنعلین من نار یغلی منھما دماغہ۳۔ | बेशक दोज़खियों में सबसे कम अज़ाब अबू तालिब पर है, वह आग के दो जूते पहने हुए हैं जिससे उनका दिमाग खोलता है। | | :--- | :--- |

तथा सहीहैन में नुअमान बिन बशीर (रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा) की रिवायत से ही रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) ने फरमाया: | ان اھون اھل النار عذابا من لہ نعلان و شراکان من نار یغلی منھما دماغہ کما یغلی المرجل ما یری ان احدا اشد منہ عذابا وانہ لاھونھم عذابا۴۔ | दोज़ख में सबसे हल्के अज़ाब वाला वह है जिसे आग के दो जूते और दो तस्में पहनाए जाएंगे जिनसे उसका दिमाग देग की तरह जोश मारेगा। वह यह समझेगा कि सबसे ज़्यादा सख़्त अज़ाब उसी पर है, हालांकि उस पर सबसे हल्का अज़ाब होगा। | | :--- | :--- |

इसी हदीस में इमाम अहमद की रिवायत इस तरह है:

आई.टी. मजलिस दावत-ए-इस्लामी

1. अल-मुअजम अल-कबीर, उम्मे सलमा से, हदीस ९७२, अल-मकतबा अल-फैसलिया, बेरूत, २३/४०५; अल-मुअजम अल-औसत, हदीस ३८५७, मकतबा अल-माआरिफ, रियाद, ८/१९०।
2. मजमा बिहार अल-अनवार।

3. सहीह मुस्लिम, किताब अल-ईमान, बाब शफाअत अन-नबी (सल्ल.) ली-अबी तालिब, कदीमी कुतुब खाना, कराची, पृ. ११५।
4. सहीह मुस्लिम, किताब अल-ईमान, बाब शफाअत अन-नबी (सल्ल.) ली-अबी तालिब आदि, कदीमी कुतुब खाना, कराची, १/११५।

पृष्ठ ६७७/७५०

عسی اباطالب فی طمطام من النار فاخرجہ اللہ لمکانہ منی واحسانہ الی فجعلہ فی ضحضاح من النار۱۔

سر سے اونچی آگ میں پایا، میری قرابت وخدمت کے باعث اللہ تعالیٰ نے اسے وہاں سے نکال کر پاؤں تک آگ میں کردیا۔

مجمع بحار الانوار میں بعلامت کاف امام کرمانی شارح بخاری سے منقول: | نفع اباطالب اعمالہ ببرکتہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم وان کان اعمال الکفرۃ ھباء منثورا۲۔ | یعنی نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی برکت سے ابوطالب کے اعمال نفع دے گئے ورنہ کافروں کے کام تو نزرے برباد ہوتے ہیں۔ | | :--- | :--- |

حدیث ہشتم: امام احمد مسند اور امام بخاری ومسلم اپنی صحاح میں حضرت عبداللہ بن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے راوی رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں: | اھون اھل النار عذابا ابو طالب وھو منتعل بنعلین من نار یغلی منھما دماغہ۳۔ | بے شک دوزخیوں میں سب سے کم عذاب ابوطالب پر ہے وہ آگ کے دو جوتے پہنے ہوئے ہے جس سے اس کا دماغ کھولتا ہے۔ | | :--- | :---: |

نیز صحیحین میں نعمان بن بشیر رضی اللہ تعالیٰ عنہما کی روایت سے ہی رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: | ان اھون اھل النار عذابا من لہ نعلان و شراکان من نار یغلی منھما دماغہ کما یغلی المرجل ما یری ان احدا اشد منہ عذابا وانہ لاھونھم عذابا۴۔ | دوزخ میں سب سے ہلکے عذاب والا وہ ہے جسے آگ کے دو جوتے اور دو تسمے پہنائے جائیں گے جن سے اس کا دماغ دیگ کی

طرح جوش مارے گا وہ یہ سمجھے گا کہ سب سے زیادہ سخت عذاب اسی پر ہے حالانکہ اس پر سب سے ہلکا عذاب ہو گا۔ | | :--- | :--- |

اسی حدیث میں امام احمد کی روایت یوں ہے:

I.T. Majlis of DawateIslami

1 المعجم الکبیر عن ام سلمہ حدیث ۹۷۲ المکتبۃ الفیصلیہ بیروت ۴۰۵/۲۳، المعجم الاوسط حدیث ۳۸۵۷ مکتبۃ المعارف ریاض ۱۹۰/۸ 2 مجمع بحار الانوار 3 صحیح مسلم کتاب الایمان باب شفاعۃ النبی صلی اللہ علیہ وسلم لابی طالب قدیمی کتب خانہ کراچی ص۱۱۵ 4 صحیح مسلم کتاب الایمان باب شفاعۃ النبی صلی اللہ علیہ وسلم لابی طالب الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ۱۱۵/۱

Fatawa Razawiyyah, Volume 29

[Arabic]: Two embers will be placed under the soles of his feet, from which his brain will boil. [Urdu Translation]: Embers will be placed in his soles from which the brain will boil.

And in the Sahihain (Bukhari and Muslim), there is a narration from Anas (may Allah be pleased with him) that the Messenger of Allah (may Allah's peace and blessings be upon him) said:

[Arabic]: Allah will say to the person who has the lightest punishment in the Fire on the Day of Resurrection: 'If you had everything on earth, would you give it to ransom yourself?' He will say: 'Yes.' Then Allah will say: 'I asked you for something much easier and lighter than this while you were in the loins of Adam—that you should not associate anything with Me, but you insisted on associating others with Me.' [Urdu Translation]: To the person with the lightest punishment among the people of Hell, Allah (Exalted) will say: 'If everything on earth were yours, would you be willing to give it as a ransom to seek salvation from punishment?' He will say: 'Yes.' Allah will say: 'On the Day of the Covenant, when you were in the loins of Adam, I asked for something much lighter and easier than this—that you should not associate anyone with Me. But you did not agree and chose to associate others with Me.'

This Hadith also proves that Abu Talib died in a state of polytheism (shirk). In the book 'Al-Khamis fi Ahwal Anfus Nafis' (peace and blessings be upon him), it is stated:

[Arabic]: Before that, the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) wiped over Abu Talib after his death, but he forgot the underside of his feet, and therefore he wears two sandals of fire. [Urdu Translation]: That is, it was said that after the death of Abu Talib, the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) passed his sacred hands over his body, but forgot to pass them over the soles of his feet. Therefore, on the Day of Resurrection, Abu Talib will be made to wear two shoes of fire. (The rest of the body will remain protected by the blessing of the sacred hand.)

Ninth Hadith: Imam Shafi'i, Imam Ahmad, Imam Ishaq bin Rahwayh, Abu Dawud, and Tayalisi in their Musnads, and Ibn Sa'd...

---

1. Musnad Ahmad bin Hanbal, on the authority of Nu'man bin Bashir, Al-Maktab al-Islami Beirut, 4/274.

2. Sahih al-Bukhari, Kitab ar-Riqaq, Chapter on the Description of Paradise and Hell, Qadimi Kutub Khana Karachi, 2/907; Sahih Muslim, Kitab Sifat al-Munafiqin, Chapter on Disbelievers, Qadimi Kutub Khana Karachi, 2/376; Mishkat al-Masabih, Chapter on the Description of Fire and its People, Section One, Qadimi Kutub Khana Karachi, p. 502.
3. Tarikh al-Khamis fi Ahwal Anfus Nafis, Death of Abu Talib, Mu'assasah Shaban Beirut, 1/300.

फ़तावा रज़विया, खंड 29

[अरबी]: उसके पैरों के तलवों के नीचे दो अंगारे रखे जाएंगे, जिससे उसका मस्तिष्क उबलने लगेगा। [उर्दू अनुवाद]: उसके तलवों में अंगारे रखे जाएंगे जिससे भेजा उबलेगा।

और सहीहैन में अनस रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत से है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

[अरबी]: अल्लाह क़यामत के दिन आग के सबसे हल्के अज़ाब वाले व्यक्ति से कहेगा: 'अगर तेरे पास ज़मीन की तमाम चीज़ें हों, तो क्या तू फ़िदिया देकर खुद को छुड़ाना चाहेगा?' वह कहेगा: 'हाँ।' अल्लाह फ़रमाएगा: 'जब तू आदम की पुश्त में था, तब मैंने तुझसे इससे कहीं ज़्यादा आसान बात चाही थी कि तू मेरा शरीक न ठहराना, मगर तूने नहीं माना और शिर्क किया।' [उर्दू अनुवाद]: दोज़खियों में सबसे हल्के अज़ाब वाले से अल्लाह अज़्ज़वजल फ़रमाएगा: 'तमाम ज़मीन में जो कुछ है अगर तेरी मिल्कियत होता तो क्या तू उसे अपने फ़िदिया में देकर अज़ाब से नजात माँगने पर राज़ी होता?' वह अर्ज़ करेगा: 'हाँ।' फ़रमाएगा: 'मैंने तो तुझसे रोज़-ए-मीसाक़ (वचन के दिन) जब तू आदम की पुश्त में था, इससे भी हल्की और आसान बात चाही थी कि किसी को मेरा शरीक न करना, मगर तूने न माना और मेरा शरीक ठहराया।'

इस हदीस से भी अबू तालिब का शिर्क पर मरना साबित है। किताब 'अल-ख़मीस फ़ी अहवाल अनफ़ुस नफ़ीस' (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) में है:

[अरबी]: इससे पहले नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अबू तालिब की वफ़ात के बाद उनके बदन पर हाथ फेरा था, लेकिन वह अपने पैरों के नीचे भूल गए, इसलिए वह आग के दो जूते पहनते हैं। [उर्दू अनुवाद]: यानी कहा गया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मौत के बाद अबू तालिब के बदन पर दस्ते अक़दस फेरा था मगर तलवों पर हाथ फेरना याद न रहा, इसलिए अबू तालिब को क़यामत के दिन आग के दो जूते पहनाए जाएंगे। (बाकी शरीर दस्ते अक़दस की बरकत से महफ़ूज़ रहेगा।)

नवीं हदीस: इमाम शाफ़ई, इमाम अहमद, इमाम इस्हाक़ बिन राहवैया, अबू दाऊद और तयालिसी अपनी मसानिद में और इब्न साद...

1. मुसनद अहमद बिन हंबल, नोमान बिन बशीर से रिवायत, अल-मकतब अल-इस्लामी बेरुत, 4/274.
2. सहीह अल-बुख़ारी, किताब अर-रिक़ाक़, जन्नत और जहन्नम के वर्णन का अध्याय, क़दीमी कुतुब ख़ाना कराची, 2/907; सहीह मुस्लिम, किताब सिफ़त अल-मुनाफ़िक़ीन, काफ़िरों का अध्याय, क़दीमी कुतुब ख़ाना कराची, 2/376; मिश्कात अल-मसाबीह, आग और उसके रहने वालों के वर्णन का अध्याय, खंड एक, क़दीमी कुतुब ख़ाना कराची, पृष्ठ 502.
3. तारीख़ अल-ख़मीस फ़ी अहवाल अनफ़ुस नफ़ीस, वफ़ात-ए-अबू तालिब, मुअस्ससा शाबान बेरुत, 1/300.

فتاوی رضویہ، جلد ۲۹

یوضع فی اخمص قدمیه جمرتان یغلی منهما دماغه - ۱ اس کے تلوؤں میں انگارے رکھے جائیں گے جس سے بھیجا ابلے گا۔

اور صحیحین میں انس رضی اللہ تعالی عنہ کی روایت سے ہے رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم فرماتے ہیں :

یقول الله لاهون اهل النار عذابا یوم القیمة لو ان لك ما فی الارض من شیئ اکنت تفتدی به فیقول نعم فیقول اردت منك اهون من هذا وانت في صلب آدم ان لا تشرك لی شیئا فابیت ان لا تشرك بی ۲ - دوزخیوں میں سب سے ہلکے عذاب والے سے اللہ عزوجل فرمائے گا تمام زمین میں جو کچھ ہے اگر تیری ملک ہوتا تو کیا اسے اپنے فدیہ میں دے کر عذاب سے نجات مانگنے پر راضی ہوگا ؟ وہ عرض کرے گا ہاں فرمائے گا میں نے تو تجھ سے روز میثاق جب کہ تو پشت آدم میں تھا اس سے بھی ہلکی اور آسان بات چاہی تھی کہ کسی کو میرا شریک نہ کرنا مگر تو نے نہ مانا بغیر میرا شریک ٹھہرائے ہوئے۔

اس حدیث سے بھی ابوطالب کا شرک پر مرنا ثابت ہے۔ کتاب الخمیس فی احوال انفس نفیس صلی اللہ تعالی علیہ وسلم میں ہے: قبل ان النبي صلی اللہ تعالی علیہ وسلم مسح ابا طالب بعد موتہ وانسی تحت قدمیه ولذا ینتعل بنعلین من النار ۳ - یعنی کہا گیا کہ نبی صلی اللہ تعالی علیہ وسلم نے بعد مرگ ابوطالب کے بدن پر دست اقدس پھیر دیا تھا مگر تلوؤں پر ہاتھ پھیرنا یاد نہ رہا اس لیے ابوطالب کو روز قیامت آگ کے دو جوتے پہنائے جائیں گے۔ (باقی جسم بہ برکت دست اقدس محفوظ رہے گا۔)

حدیث نہم: امام شافعی و امام احمد و امام اسحق بن راہویہ و ابوداؤد و طیا لسی اپنی مسانید اور ابن سعد

---

۱ مسندا حمد بن حنبل عن نعمان بن بشیر المکتب الاسلامی بیروت ۴/ ۲۷۴ ۲ صحیح البخاری کتاب الرقاق باب صفۃ الجنۃ والنار قدیمی کتب خانہ کراچی ۲/ ۹۰۷، صحیح مسلم کتاب صفۃ المنافقین باب فی الکفار قدیمی کتب خانہ کراچی ۲/ ۳۷۶، مشکوۃ المصابیح باب صفۃ النار واھلھا الفصل الاول قدیمی کتب خانہ کراچی ص ۵۰۲ ۳ تاریخ الخمیس فی احوال انفس نفیس وفاۃ ابی طالب موسسۃ شعبان بیروت ۱ / ۳۰۰

Fatawa Rizvia Volume 29

Tabaqat, Abu Bakr bin Abi Shaybah in Al-Musannaf, Abu Dawud and Nasai in Sunan, Ibn Khuzaymah in his Sahih, Ibn al-Jarud in Al-Muntaqa, Marwazi in Kitab al-Janaiz, Bazzar and Abu Ya'la in their Musnads, and Bayhaqi in Sunan narrate through numerous chains from the Leader of the Believers, Mawla Ali (may Allah Almighty honor him):

[Box 1] Arabic: He said, I said to the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him), "Indeed, your uncle, the old, misguided man has died." He said, "Go and bury your father." Urdu translation in text: Meaning, I submitted to the Holy Prophet, the Master of the World (peace and blessings of Allah be upon him): "O Messenger of Allah! Your uncle, that old misguided man, has died." [He said,] "Go, bury him."

In the narration of Ibn Abi Shaybah, Mawla Ali submitted:

[Box 2] Arabic: "Indeed, your uncle, the old disbeliever has died. What is your opinion regarding him?" The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said, "I think you should wash him," and he ordered him to perform the ritual bath. Urdu translation in text: "Your uncle, that old disbeliever, has died. What is the Master's opinion about him? That is, should he be given a ritual bath etc. or not?" The Master of the World (peace and blessings of Allah be upon him) said, "Wash and bury him."

In the narration of Imam Shafi'i:

[Box 3] Arabic: So I said, "O Messenger of Allah, he died as a polytheist." He said, "Go and bury him." Urdu translation in text: I submitted: "O Messenger of Allah! He died a polytheist." He said: "Go, bury him."

Imam of Imams Ibn Khuzaymah said: "The Hadith is authentic." Imam Hafiz ash-Sha'n says in 'Al-Isabah fi Tamyiz al-Sahabah': "Ibn Khuzaymah authenticated it." (Ibn Khuzaymah has authenticated it. - Translator note)

1. Nasb al-Rayah, citing Al-Shafi'i, Ishaq bin Rahawayh, Abu Dawud al-Tayalisi, and others, Kitab al-Salah, Section on Funeral Prayer for the Deceased, Hadith 11, Al-Nooria Al-Rizvia Publishing Company Lahore 2/289 & 290; Sunan Abi Dawud, Kitab al-Janaiz, Chapter: A man whose polytheist relative dies, Aftab Alam Press 2/102; Musnad Ahmad bin Hanbal from Ali (RA), Al-Maktab al-Islami Beirut

1/129 & 130; Al-Sunan al-Kubra, Kitab al-Janaiz, Chapter: A Muslim washing his non-Muslim relative, Dar Sadir Beirut 3/358.

2. Al-Musannaf of Ibn Abi Shaybah, Kitab al-Janaiz, Chapter: Regarding a man whose polytheist relative dies, Idaratul Quran Karachi 3/428.
3. Nasb al-Rayah, citing Al-Shafi'i, Kitab al-Salah, Section on Funeral Prayer for the Deceased, Al-Nooria Al-Rizvia etc. 3/290.
4. Al-Isabah fi Tamyiz al-Sahabah, letter Ta, Abu Talib, Dar Sadir Beirut 4/711.

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

तबक़ात और अबू बक्र बिन अबी शैबा मुसन्निफ़ में और अबू दाऊद व नसाई सुनन में और इब्न खुज़ैमा अपनी सहीह और इब्न अल-जारूद मुंतक़ा और मरवज़ी किताब अल-जनाइज़ और बज़्ज़ार व अबू याला मुसनद और बैहक़ी सुनन में अनेक तरीक़ों से अमीरुल मोमिनीन मौला अली (करम अल्लाह तआला वज्हहु अल-करीम) से रिवायत करते हैं:

[बॉक्स 1] अरबी: उन्होंने कहा, मैंने नबी (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) से कहा, "बेशक आपके चाचा, वह बूढ़े गुमराह शख़्स का इंतक़ाल हो गया है।" आपने फ़रमाया, "जाओ और अपने बाप को दफ़ना दो।" उर्दू अनुवाद: यानी मैंने हुज़ूर अक़दस सैयदे आलम (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) से अर्ज़ की: या रसूल अल्लाह! हुज़ूर का चाचा वह बुड्ढा गुमराह मर गया, जा, उसे दबा आ।

इब्न अबी शैबा की रिवायत में है कि मौला अली ने अर्ज़ की:

[बॉक्स 2] अरबी: "बेशक आपका चाचा, वह बूढ़ा काफ़िर मर गया है। तो उनके बारे में आपकी क्या राय है?" अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया, "मेरी राय है कि तुम उन्हें ग़ुस्ल दे दो" और आपने उन्हें ग़ुस्ल देने का हुक्म दिया। उर्दू अनुवाद: हुज़ूर का चाचा वह बुड्ढा काफ़िर मर गया उसके बारे में हुज़ूर की क्या राय है यानी ग़ुस्ल वग़ैरह दिया जाए या नहीं? सैयदे आलम (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया नहला कर दबा दो।

इमाम शाफ़ई की रिवायत में है:

[बॉक्स 3] अरबी: तो मैंने कहा, "या रसूल अल्लाह, वह तो मुशरिक होकर मरा है।" आपने फ़रमाया, "जाओ और उसे दफ़ना दो।" उर्दू अनुवाद: मैंने अर्ज़ किया: या रसूल अल्लाह! वह तो मुशरिक मरा, फ़रमाया: जाओ, दबा आओ।

इमामुल आइम्मा इब्न खुज़ैमा ने फ़रमाया: हदीस सहीह है। इमाम हाफ़िज़ अल-शान 'अल-इसाबा फ़ी तमीज़ अल-सहाबा' में फ़रमाते हैं: इब्न खुज़ैमा ने इसकी तस्दीक़ की है। (इब्न खुज़ैमा ने इसकी तसहीह की है। - त)

1. नसब अल-राया, शाफ़ई, इसहाक़ बिन राहवैया, अबू दाऊद अल-तायालिसी आदि के हवाले से, किताब अल-सलात, मुर्दे पर नमाज़ का अध्याय, हदीस 11, अल-नूरिया अल-रज़विया पब्लिशिंग कंपनी लाहौर 2/289 और 290; सुनन अबू दाऊद, किताब अल-जनाइज़, अध्याय:

मुशरिक रिश्तेदार की मौत, आफ़ताब आलम प्रेस 2/102; मुसनद अहमद बिन हनबल अली (रज़ि.) से, अल-मकतब अल-इस्लामी बेरुत 1/129 और 130; अल-सुनन अल-कुबरा, किताब अल-जनाइज़, अध्याय: मुस्लिम का मुशरिक रिश्तेदार को नहलाना, दार सादिर बेरुत 3/358।

2. मुसन्निफ़ इब्न अबी शैबा, किताब अल-जनाइज़, अध्याय: मुशरिक रिश्तेदार की मौत के बारे में, इदारतुल क़ुरआन कराची 3/428।
3. नसब अल-राया, शाफ़ई के हवाले से, किताब अल-सलात, मुर्दे पर नमाज़ का अध्याय, अल-नूरिया अल-रज़विया आदि 3/290।
4. अल-इसाबा फ़ी तमीज़ अल-सहाबा, हर्फ़ ता, अबू तालिब, दार सादिर बेरुत 4/711।

طبقات اور ابوبکر بن ابی شیبہ مصنف اور ابوداؤد و نسائی سنن اور ابن خزیمہ اپنی صحیح اور ابن الجارود منتقی اور مروزی کتاب الجنائز اور بزار و ابویعلی مسانید اور بیہقی سنن میں بطریق عدیدہ حضرت سیدنا امیر المومنین مولا علی کرم اللہ تعالٰی وجہہ الکریم سے راوی :

[باکس ۱] قال قلت للنبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم ان عمک الشیخ الضال قدمات قال اذھب فوار اباک ۱۔ یعنی میں نے حضور اقدس سید عالم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم سے عرض کی : یارسول اللہ ! حضور کا چچا وہ بڈھا گمراہ مر گیا ، جا ، اسے دبا آ۔

ابن ابی شیبہ کی روایت میں ہے مولا علی نے عرض کی :

[باکس ۲] ان عمک الشیخ الکافر قدمات فما تری فیہ، قال رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم اری ان تغسلہ وامرہ بالغسل ۲۔ حضور کا چچا وہ بڈھا کافر مر گیا اس کے بارے میں حضور کی کیا رائے ہے یعنی غسل وغیرہ دیا جائے یا نہیں؟ سید عالم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے فرمایا نہلا کر دبا دو۔

امام شافعی کی روایت میں ہے :

[باکس ۳] فقلت یارسول اللہ انہ مات مشرکا قال اذھب فوارہ ۳۔ میں نے عرض کیا : یارسول اللہ ! وہ تو مشرک مرا ، فرمایا : جاؤ ، دبا آؤ ۔

امام الائمہ ابن خزیمہ نے فرمایا : حدیث صحیح ہے ۔ امام حافظ الشان اصابہ فی تمییز الصحابہ میں فرماتے ہیں : صححہ ابن خزیمہ ۴ ۔ (ابن خزیمہ نے اس کی تصحیح کی ہے ۔ ت)

۱ نصب الراية بحواله الشافعی واسحق بن راهویه وابي داؤد الطیالسی وغیرهم کتاب الصلوة فصل فی الصلوة علی المیت الحدیث الحادی العشر النوریة الرضویة پبلشنگ کمپنی لاہور ۲۸۹/۲ و ۲۹۰ ، سنن ابی داؤد کتاب الجنائز باب الرجل یموت له قرابة مشرک آفتاب عالم پریس ۱۰۲/۲ ، مسند احمد بن حنبل عن علی رضی الله عنه المکتب الاسلامی بیروت ۱/ ۱۲۹ و ۱۳۰ ، السنن الکبری کتاب الجنائز باب المسلم یغسل ذاقرابته دار صادر بیروت ۳/ ۳۵۸ ۲ المصنف لابن ابی شیبه کتاب الجنائز باب فی الرجل یموت له قرابة المشرک ادارة القرآن کراچی ۳/ ۴۲۸ ۳ نصب الراية بحواله الشافعی کتاب الصلوة فصل فی الصلوة علی المیت النوریة الرضویة الخ ۳/ ۲۹۰ ۴ الاصابة فی تمییز الصحابة حرف الطاء ابوطالب دار صادر بیروت ۴/ ۷۱۱

Volume 29, Fatawa Ridawiyyah

Look at this magnificent Hadith; upon the death of Abu Talib, the Commander of the Faithful Ali (may Allah honor him) himself submitted to the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) that his misguided infidel uncle had died. The Prophet did not deny this, nor did he himself go to the funeral. When the wife of Abu Talib, the venerable mother of the Commander of the Faithful, Lady Fatima bint Asad (may Allah be pleased with both of them) passed away, the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) shrouded her in his own blessed cloak and shirt. He dug the grave with his own blessed hands, removed the soil with his own blessed hands, and then, before her burial, he himself lay in her blessed grave and prayed:

Allah is the One Who gives life and causes death, and He is the Ever-Living Who never dies. Forgive my mother Fatima bint Asad and widen her entry by the right of Your Prophet and the Prophets who were before me, for You are the Most Merciful of the merciful. (Narrated by At-Tabarani in Al-Kabir and Al-Awsat, and by Ibn Hibban and Al-Hakim, who authenticated it; Abu Nu'aym in Al-Hilya narrated it from Anas, and similarly Ibn Abi Shaybah from Jabir, Ash-Shirazi in Al-Alqab, Ibn Abd al-Barr and Abu Nu'aym in Al-Ma'rifa, and Ad-Daylami with a good chain from Ibn Abbas, and Ibn Asakir from Ali, may Allah be pleased with them all.)

If Abu Talib had been a Muslim, would the Master of the Universe (peace and blessings of Allah be upon him) not have attended his funeral? He contented himself with only this instruction: "Go, bury him." Look at the strength of faith of the Commander of the Faithful (may Allah honor him); his own father passed away, and the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) himself gave the decree for ghusl (washing), yet he submitted: "O Messenger of Allah! He died a polytheist." Such was the faith of these servants of God, that they had no concern for father or son against Allah and His Messenger; they were enemies of the opponents of Allah and His Messenger, even if they were their own kin, O friends of God...

1. Majma' al-Zawa'id, Kitab al-Manaqib, Chapter: Manaqib Bint Asad, Dar al-Kitab Beirut 9/257, Kanz al-Ummal Hadith 34428, Muassasat al-Risala Beirut 12/714.

इस अज़ीम हदीस को देखिए; अबू तालिब की मृत्यु पर स्वयं अमीर-उल-मोमिनीन अली (अल्लाह उनके चेहरे को सम्मानित करे) हुज़ूर अकदस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से अर्ज करते हैं कि हुज़ूर का वह गुमराह काफ़िर चचा मर गया। हुज़ूर इस पर इनकार नहीं फ़रमाते और न ही स्वयं जनाज़े में तशरीफ़ ले जाते हैं। अबू तालिब की पत्नी, अमीर-उल-मोमिनीन की आदरणीय माता हज़रत फ़ातिमा बिन्त असद (रज़ियल्लाहु अन्हा) का जब इंतकाल हुआ, तो हुज़ूर अकदस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने अपनी चादर और कमीज़ मुबारका में उन्हें कफ़न दिया। अपने मुबारक हाथों से लहद खोदी, अपने मुबारक हाथों से मिट्टी निकाली, फिर उनके दफ़न से पहले स्वयं उनकी कब्र मुबारका में लेटे और दुआ की:

अल्लाह वह है जो ज़िंदा करता है और मारता है और वह स्वयं जीवित है जिसे कभी मौत नहीं आएगी, मेरी माँ फ़ातिमा बिन्त असद को बख्श दे और उनकी कब्र को वसीअ (विशाल) कर दे अपने नबी के वसीले से और मुझसे पहले के नबियों के वसीले से, बेशक तू सब मेहरबानों से बढ़कर मेहरबान है। (इसे तबरानी ने 'कबीर' और 'औसत' में रिवायत किया है, इब्ने हिब्बान ने, हाकिम ने और उन्होंने इसकी तस्हीह की, अबू नुऐम ने 'हलिया' में हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से, और इसी तरह इब्ने अबी शैबा ने हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु से, शीराज़ी ने 'अलक़ाब' में, इब्ने अब्दुल बर्र ने, अबू नुऐम ने 'मआरिफ़ा' में, और दैलमी ने हज़रत इब्ने अब्बास से सनद-ए-हसन के साथ और इब्ने असाकिर ने हज़रत अली से, रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन।)

काश अबू तालिब मुसलमान होते तो क्या सैय्यद-ए-आलम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) उनके जनाज़े में तशरीफ़ न ले जाते? सिर्फ इतने ही इर्शाद पर किफ़ायत फ़रमाते कि "जाओ, उसे दफ़ना आओ"। अमीर-उल-मोमिनीन (अल्लाह उनके चेहरे को सम्मानित करे) की कुव्वत-ए-ईमान देखिए कि सगे बाप का इंतकाल हुआ है और स्वयं हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) गुस्ल का फतवा दे रहे हैं, और वह अर्ज कर रहे हैं कि या रसूल अल्लाह! वह तो मुशरिक मरा। ईमान खुदा के उन बंदों के थे कि अल्लाह और रसूल के मुक़ाबले में बाप-बेटे का कोई नाता न था, अल्लाह और रसूल के विरोधियों के दुश्मन थे चाहे वह अपना कलेजा ही क्यों न हो, खुदा के दोस्तों...

1. मज्म-उज़-ज़वाइद, किताबुल मनाकिब, बाब: मनाकिब बिन्त असद, दारुल किताब बैरुत ९/ २५७, कंज़ुल उम्माल हदीस ३४४२८, मुअस्ससतुर्-रिसाला बैरुत १२/ ७१४।

पृष्ठ ७५० का ६८०

اس حدیث جلیل کو دیکھئے ابوطالب کے مرنے پر خود امیر المومنین علی کرم اللہ وجہہ الکریم حضور اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم سے عرض کرتے ہیں کہ حضور کا وہ گمراہ کافر چچا مر گیا۔ حضور اس پر انکار نہیں فرماتے نہ خود جنازے میں تشریف لے جاتے ہیں۔ ابو طالب کی بی بی امیر المومنین کی والدہ ماجدہ حضرت فاطمہ بنت اسد رضی اللہ تعالٰی عنہما نے جب انتقال کیا ہے حضور اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے اپنی چادر و قمیص مبارک میں انہیں کفن دیا۔ اپنے دست مبارک سے لحد کھودی، اپنے دست مبارک سے مٹی نکالی، پھر ان کے دفن سے پہلے خود ان کی قبر مبارک میں لیٹے اور دعا کی:

اللہ الذی یحیی ویمیت وھو حیّ لایموت اغفر لأمّي فاطمة بنت اسد و وسّع علیھا مدخلھا بحق نبیك و الانبیاء الذین من قبل، فانك ارحم الراحمین (اللہ جلاتا ہے اور مارتا ہے اور خود زندہ ہے کہ کبھی نہ مرے گا، میری ماں فاطمہ بنت اسد کو بخش دے اور اُن کی قبر وسیع کر صدقہ اپنے نبی کا اور مجھ سے پہلے انبیاء کا، تو سب مہربانوں سے بڑھ کر مہربان ہے۔) رواہ الطبرانی ۱ فی الکبیر والاوسط وابن حبان والحاکم وصححہ وابونعیم في الحلیة عن انس و نحوہ ابن ابی شیبة عن جابر والشیرازی فی الالقاب وابن عبد البر وابونعیم في المعرفة، والدیلمی بسند حسن عن ابن عباس وابن عساکر عن علی رضی اللہ تعالٰی عنھم اجمعین۔

کاش ابوطالب مسلمان ہوتے تو کیا سید عالم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم اُن کے جنازہ میں تشریف نہ لے جاتے۔ صرف اتنے ہی ارشاد پر قناعت فرماتے کہ جاؤ اسے دباؤ آؤ امیر المومنین کرم اللہ تعالٰی وجہہ الکریم کی قوت ایمان دیکھئے کہ خاص اپنے باپ نے انتقال کیا ہے اور خود حضور صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم غسل کا فتویٰ دے رہے ہیں، اور یہ عرض کرتے ہیں کہ یا رسول اللہ! وہ تو

مشرک مرا۔ ایمان ان بندگان خدا کے تھے کہ اللہ و رسول کے مقابلہ میں باپ بیٹے کسی سے کچھ علاقہ نہ تھا، اللہ و رسول کے مخالفوں کے دشمن تھے اگر چہ وہ اپنا جگر ہو، دوستانِ خدا و

۱ مجمع الزوائد کتاب المناقب باب مناقب بنت اسد دار الکتاب بیروت ۹/ ۲۵۷، کنز العمال حدیث ۳۴۴۲۸ مؤسسة الرساله بیروت ۱۲/ ۷۱۴

Fatawa Razawiyya Volume 29

...were friends of the Messenger, even if they faced worldly harm from them.

"Those—He has decreed within their hearts faith and supported them with spirit from Him. And We will admit them to gardens beneath which rivers flow, wherein they abide eternally. Allah is pleased with them, and they are pleased with Him - those are the party of Allah. Unquestionably, the party of Allah - they are the successful."[1] May Allah make us among them for their sake and by the grace of His mercy towards them; indeed, He is the Forgiving, the Merciful. Praise be to Allah, Lord of the worlds, and may Allah Almighty's peace and blessings be upon our master and leader Muhammad, and upon his family and all his companions. Amen.

These are the ones in whose hearts Allah has engraved faith and aided them with a spirit from Himself, and He will enter them into gardens beneath which rivers flow, to abide therein forever. Allah is well-pleased with them, and they are well-pleased with Him. This is the party of Allah. Verily, the party of Allah are the successful ones. May Allah Almighty make us among them for their sake. Truly, He is the Oft-Forgiving, the Most Merciful. All praise is due to Allah, the Lord of all the worlds. May Allah Almighty send blessings upon our master Muhammad Mustafa, upon his progeny, and upon all his companions. O Allah! Accept our prayer! (T)

Tenth Hadith: Bukhari and Muslim in their Sahihs, Ibn Majah in his Sunan, Tahawi in Sharh Ma'ani al-Athar, and Isma'ili in Mustakhraj 'ala Sahih al-Bukhari, narrate via Imam Ali bin Husain Zain al-Abidin from Amr bin Uthman al-Ghani (may Allah be pleased with them) from our master Usama bin Zaid (may Allah be pleased with them both):

That he said, 'O Messenger of Allah, where will you stay in your house in Makkah?' He replied, 'Has Aqeel left any quarters or houses for us?' Aqeel and Talib had inherited from Abu Talib, but Ja'far and Ali (may Allah be pleased with them both) did not inherit anything because they were Muslims, while Aqeel and Talib were non-believers. Thus, Umar bin Al-Khattab (may Allah be pleased with him) used to say, 'He does not inherit...'

That is, he submitted to the service of the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him): "O Messenger of Allah! In which house of your neighborhood will the Holy presence stay in Makkah the Great tomorrow?" He replied: "Has Aqeel left any

neighborhood or house for us?" Imam Zain al-Abidin said: What happened was that Aqeel and Talib received Abu Talib's legacy, while Ja'far and Ali...

---

[1] The Holy Quran 58/22 Page 681 of 750

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

...रसूल के दोस्त थे अगरचे उनसे दुनियावी नुक़सान हो।

"ये वो लोग हैं जिनके दिलों में अल्लाह ने ईमान लिख दिया है और अपनी रूह से उनकी मदद की है। और वो उन्हें ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बहती हैं, जहाँ वो हमेशा रहेंगे। अल्लाह उनसे राज़ी हुआ और वो उससे राज़ी हुए। ये अल्लाह का गिरोह (जमात) है। ख़बरदार! यक़ीनन अल्लाह का गिरोह ही कामयाब होने वाला है।"[1] अल्लाह हमें उनके सदक़े में उनमें से कर दे। बेशक वही बहुत बख़्शने वाला, मेहरबान है। और सब तारीफें अल्लाह के लिए हैं जो तमाम जहानों का रब है। और अल्लाह तआला हमारे आक़ा मुहम्मद मुस्तफ़ा पर, आपकी आल और आपके तमाम सहाबा पर दुरूद नाज़िल फरमाए। आमीन।

ये हैं जिनके दिलों में अल्लाह ने ईमान नक़्श फरमा दिया और अपनी तरफ़ की रूह से उनकी मदद की और उन्हें बाग़ों में ले जाएगा जिनके नीचे नहरें बहें, उनमें हमेशा रहें। अल्लाह उनसे राज़ी और वो अल्लाह से राज़ी। ये अल्लाह की जमात है, सुन लो अल्लाह की जमात ही कामयाब है। अल्लाह तआला हमें उनके सदक़े में उनमें से कर दे। बे-शक वो ही बहुत बख़्शने वाला मेहरबान है, और सब तारीफें अल्लाह तआला के लिए हैं जो परवरदिगार है तमाम जहानों का, और दुरूद नाज़िल फरमाए अल्लाह तआला हमारे आक़ा मुहम्मद मुस्तफ़ा पर! आपकी आल और आपके तमाम सहाबा पर, ऐ अल्लाह! हमारी दुआ क़ुबूल फरमा! (त)

दसवीं हदीस: बुख़ारी और मुस्लिम अपनी सहीह में, इब्ने माजह अपनी सुनन में, तहावी शरह मानी अल-आसार में और इस्माइली मुस्तख़रज अली सहीह अल-बुख़ारी में इमाम अली बिन हुसैन ज़ैनुल आबिदीन के ज़रिये अम्र बिन उस्मान अल-ग़नी (अल्लाह उन सबसे राज़ी हो) से और वो हमारे सरदार उसामा बिन ज़ैद (अल्लाह उन दोनों से राज़ी हो) से रावी हैं कि:

उन्होंने कहा, 'या रसूल अल्लाह! आप कल मक्का में अपने घर में कहाँ ठहरेंगे?' तो आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया: 'क्या अक़ील ने हमारे लिए कोई जगह या मकान छोड़ा है?' अक़ील और तालिब को अबू तालिब की विरासत मिली थी, लेकिन जाफ़र और अली (अल्लाह उन दोनों से राज़ी हो) को कुछ नहीं मिला क्योंकि वे मुसलमान थे, जबकि अक़ील और तालिब काफ़िर थे। चुनाँचे हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (अल्लाह उनसे राज़ी हो) फरमाया करते थे: 'वह विरासत नहीं पाता...'

यानी उन्होंने ख़िदमत-ए-हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम में अर्ज़ की कि 'या रसूल अल्लाह! हुज़ूर कल मक्का मुअज़्ज़मा में अपने मुहल्ले के कौन से मकान में नुज़ूल-ए-इजलाल फरमाएंगे।' फरमाया, 'क्या हमारे लिए अक़ील ने कोई मुहल्ला या मकान छोड़ दिया है।' इमाम ज़ैनुल आबिदीन ने फरमाया: हुआ ये था कि अबू तालिब का तरका (विरासत) अक़ील और तालिब ने पाया, और जाफ़र व अली...

---

[1] अल-क़ुरआन अल-करीम 58/22 पेज 681 ऑफ़ 750

رسول کے دوست تھے اگر چہ ان سے دنیوی ضرر ہو۔ "أُولَٰئِكَ كَتَبَ فِي قُلُوبِهِمُ الْإِيمَانَ وَأَيَّدَهُمْ بِرُوحٍ مِنْهُ ۖ وَيُدْخِلُهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ۚ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ ۚ أُولَٰئِكَ حِزْبُ اللَّهِ ۚ أَلَا إِنَّ حِزْبَ اللَّهِ هُمُ الْمُفْلِحُونَ"۱۔ جعلنا اللہ منھم بھم ولھم بفضل رحمۃ بھم انہ ھو الغفور الرحیم، والحمد للہ رب العلمین وصلی اللہ تعالٰی علیہ سیدنا ومولینا محمد ولہ واصحابہ اجمعین آمین۔

یہ ہیں جن کے دلوں میں اللہ نے ایمان نقش فرمادیا اور اپنی طرف کی روح سے انکی مدد کی اور انہیں باغوں میں لے جائے گا جن کے نیچے نہریں بہیں، ان میں ہمیشہ رہیں۔ اللہ ان سے راضی اور وہ اللہ سے راضی۔ یہ اللہ کی جماعت ہے، سنتا ہے اللہ کی جماعت ہی کامیاب ہے۔ اللہ تعالٰی ہمیں ان کے صدقے میں ان میں سے کردے۔ بے شک وہ ہی بہت بخشنے والا مہربان ہے، اور سب تعریفیں اللہ تعالٰی کے لیے ہیں جو پروردگار ہے تمام جہانوں کا، اور درود نازل فرمائے اللہ تعالٰی ہمارے آقا محمد مصطفٰی! آپ کی آل اور آپ کے تمام صحابہ پر، اے اللہ! ہماری دعا قبول فرما! (ت)

حدیث دہم: بخاری و مسلم اپنی صحاح اور ابن ماجہ اپنی سنن اور طحاوی شرح معانی الآثار اور اسماعیلی مستخرج علی صحیح البخاری میں بطریق امام علی بن حسین زین العابدین عن عمرو بن عثمان الغنی رضی اللہ تعالٰی عنہم سیدنا اسامہ بن زید رضی اللہ تعالٰی عنہما سے راوی:

انہ قال یارسول اللہ این تنزل فی دارک بمکۃ فقال و ھل ترک عقیل من رباع او دور وکان عقیل ورث ابا طالب ھو وطالب ولم یرثہ جعفر ولا علی رضی اللہ تعالٰی عنھما شیئا لانھما کانا مسلمین وکان عقیل و طالب کافرین فکان عمر بن الخطاب رضی اللہ تعالٰی عنہ یقول لا یرث

یعنی انہوں نے خدمت حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم میں عرض کی کہ یا رسول اللہ! حضور کل مکہ معظمہ میں اپنے محلے کے کون سے مکان میں نزول اجلال فرمائیں گے۔ فرمایا، کیا ہمارے لیے عقیل نے کوئی محلہ یا مکان چھوڑ دیا ہے۔ امام زین العابدین نے فرمایا: ہوا یہ تھا کہ ابوطالب کا ترکہ عقیل اور طالب نے پایا، اور جعفر و علی

Fatawa Razawiyya Volume 29

[Regarding] the believer and the disbeliever[1]—and in the words of Ibn Majah and al-Tahawi: "So Umar, because of that, used to say[2]—etc.," and in the words of al-Isma'ili: "Because of that, Umar used to say[3]—"

They (Ali and Ja'far), may Allah be pleased with them both, received nothing. These two individuals were Muslims at the time of Abu Talib's death, while Talib was a disbeliever, and Aqeel, may Allah be pleased with him, had not yet embraced Islam. For this reason, the Commander of the Faithful, Umar Faruq al-Azam, may Allah be pleased with him, used to say that the inheritance of a disbeliever does not go to a Muslim.

Note: There is no doubt that the statement "and Aqeel inherited from Abu Talib" is an insertion (idraj) into the Hadith. Its speaker is not mentioned in the books we have cited. I have preferred the view that it was Imam Zain al-Abidin, may Allah be pleased with him. Al-Aini said in al-Umda: "His saying 'and it was Aqeel' is an insertion from some narrators, and perhaps it was from Usama." Similarly said al-Kirmani. The correct view is what I have mentioned, and I have written a marginal note on al-Umda stating:

Note: There is no doubt that this statement about Aqeel inheriting from Abu Talib was inserted into the Hadith. Its author is not mentioned in the books I've cited, and I have chosen the view that it is Imam Zain al-Abidin (may Allah be pleased with him). Imam Aini stated in Umdat al-Qari that the phrase "and it was Aqeel" was an insertion by some narrators, possibly from Usama. Kirmani said something similar. What I mentioned is correct, and I wrote a footnote on Umdat al-Qari clarifying this. (T)

I say: Rather, it is from Ali bin Hussain bin Ali, may Allah be pleased with them; he clarified it...

I say, rather he is Ali bin Hussain bin Ali (may Allah be pleased with them), Imam Malik mentioned him in his book Muwatta...

---

1. Sahih al-Bukhari, Book of Rituals of Hajj, Chapter on inheritance of houses in Makkah etc., Qadimi Kutub Khana Karachi 1/216; Sahih Muslim, Book of Hajj, Chapter on al-Nuzul in Makkah and inheritance of its houses, Qadimi Kutub Khana Karachi 1/436.

2. Sunan Ibn Majah, Chapters on Inheritance, Chapter on the inheritance of Muslims from polytheists etc., H.M. Saeed Company Karachi p. 200.
3. [No footnote text present].
4. Umdat al-Qari, Book of Rituals of Hajj, Chapter on inheritance of houses in Makkah etc., under Hadith 1588, Dar al-Kutub al-Ilmiyyah Beirut 9/324.

फतावा रज़विया जिल्द 29

[मोमिन और काफ़िर के बारे में][1]—इब्न माजा और अल-तहावी के शब्दों में: "तो उमर इस वजह से कहते थे[2]—इत्यादि," और अल-इस्माइली के शब्दों में: "उमर इसी कारण से कहते थे[3]—"

उन्हें (अली और जाफ़र) रज़ियल्लाहु अन्हुमा को कुछ नहीं मिला। ये दोनों महानुभाव अबू तालिब की मृत्यु के समय मुसलमान थे, जबकि तालिब काफ़िर था और अक़ील रज़ियल्लाहु अन्हु ने भी उस समय तक इस्लाम स्वीकार नहीं किया था। इसी आधार पर अमीरुल मोमिनीन उमर फ़ारूक़-ए-आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाया करते थे कि काफ़िर की विरासत मुसलमान को नहीं मिलती।

नोट: इसमें कोई संदेह नहीं है कि यह कथन "और अक़ील अबू तालिब का वारिस हुआ" हदीस में शामिल किया गया (इदराज) है। इसका उल्लेख करने वाले का नाम उन पुस्तकों में नहीं है जिनका हमने ज़िक्र किया है। मैंने यह विचार चुना है कि वे इमाम ज़ैनुल आबिदीन रज़ियल्लाहु अन्हु हैं। इमाम ऐनी ने 'उमदतुल क़ारी' में कहा है: "उनका कहना 'और वह अक़ील था' कुछ वर्णनकर्ताओं (रावियों) की ओर से हदीस में जोड़ा गया है, और संभवतः यह ओसामा की ओर से हो।" किरमानी ने भी ऐसा ही कहा है। सही वही है जिसका मैंने ज़िक्र किया है, और मैंने 'उमदतुल क़ारी' के हाशिये पर एक नोट लिखा है जिसका विवरण इस प्रकार है:

नोट: इसमें कोई शक नहीं कि अक़ील के अबू तालिब का वारिस होने की यह बात हदीस में शामिल की गई है। मेरी उद्धृत पुस्तकों में इसके लेखक का नाम नहीं है, और मैंने यह राय अपनाई है कि यह इमाम ज़ैनुल आबिदीन (रज़ियल्लाहु अन्हु) का कथन है। इमाम ऐनी ने उमदतुल क़ारी में कहा है कि 'और वह अक़ील था' वाक्यांश कुछ रावियों द्वारा जोड़ा गया था, संभवतः ओसामा द्वारा। किरमानी ने भी इसी तरह की बात कही है। मैंने जो बताया वह सही है, और मैंने इस पर स्पष्टीकरण देते हुए उमदतुल क़ारी पर एक फ़ुटनोट लिखा है। (त)

मैं कहता हूँ: बल्कि वह अली बिन हुसैन बिन अली रज़ियल्लाहु अन्हुम की ओर से है, उन्होंने इसे स्पष्ट किया...

मैं कहता हूँ, बल्कि वे अली बिन हुसैन बिन अली हैं (रज़ियल्लाहु अन्हुम), इमाम मालिक ने अपनी पुस्तक 'मुवत्ता' में उनका उल्लेख किया है...

1. सही अल-बुखारी, किताबुल मनासिक, मक्का के घरों की विरासत का अध्याय आदि, क़दीमी कुतुब ख़ाना कराची 1/216; सही मुस्लिम, किताबुल हज, मक्का में उतरने और वहां के घरों की विरासत का अध्याय, क़दीमी कुतुब ख़ाना कराची 1/436।
2. सुनन इब्न माजा, किताबुल फ़राइज़, मुशरिकों से मुसलमानों की विरासत का अध्याय आदि, एच.एम. सईद कंपनी कराची पृ. 200।
3. [पाद टिप्पणी अनुपलब्ध]।
4. उमदतुल क़ारी, किताबुल मनासिक, मक्का के घरों की विरासत का अध्याय आदि, हदीस 1588 के तहत, दारुल कुतुब अल-इल्मिया बेरुत 9/324।

المؤمن الکافر[1]۔ ولفظ ابن ماجة والطحاوي فکان عمر من اجل ذلك یقول[2]۔ الخ ولفظ الاسماعیلي فمن اجل ذلك کان عمر یقول[3]۔ رضی اللہ تعالٰی عنہما کو کچھ نہ ملا۔ یہ دونوں حضرات وقت موت ابی طالب مسلمان تھے اور طالب کافر تھا اور عقیل رضی اللہ تعالٰی عنہ بھی اس وقت تک ایمان نہ لائے تھے۔ اسی بناء پر امیر المومنین عمر فاروق اعظم رضی اللہ تعالٰی عنہ فرمایا کرتے کہ کافر کا ترکہ مسلمان کو نہیں پہنچتا۔

تنبیہ:لاشک ان قولہ وکان عقیل ورث ابا طالب مدرج في الحدیث ولم یبین قائلہ في الکتب الذي ذکرنا و اخترت انا انہ الامام زین العابدین رضی اللہ تعالٰی عنہ و قال الامال العینی فی العمدة قولہ و کان عقیل ادراج من بعض الرواة و لعلہ من اسامة کذا قال الکرماني[4] اھ والصواب ما ذکرتہ وقد کتبت علی ھامش العمدة ما نصہ تنبیہ: اس میں شک نہیں کہ اس قول اور عقیل وارث ہوا ابو طالب کا حدیث میں داخل کیا گیا اس کا قائل ان کتابوں میں مذکور نہیں جن کا ہم نے ذکر کیا ہے اور میں نے اختیار کیا ہے کہ وہ امام زین العابدین رضی اللہ تعالٰی عنہ ہیں۔ امام عینی نے عمدة القاری میں کہا کہ اس کا قول وکان عقیل بعض راویوں کی طرف سے حدیث میں داخل کیا گیا ہے، ممکن ہے یہ ادراج و ادخال اسامہ کی طرف سے ہو۔ کرمانی نے یوں ہی کہا ہے اھ، اور درست وہی ہے جو میں نے ذکر کیا، اور میں نے عمدة القاری پر حاشیہ لکھا جس کی صراحت یہ ہے۔ (ت)

اقول:بل ھو من علی بن حسین بن علی رضی اللہ تعالٰی عنھم، بینہ میں کہتا ہوں بلکہ وہ علی بن حسین بن علی ہے رضی اللہ تعالٰی عنہم اس کو امام مالک نے اپنی کتاب مؤطا میں

1 صحیح البخاری کتاب المناسک باب توریث دور مکة الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/ ۲۱۶، صحیح مسلم کتاب الحج باب النزول بمکة وتوریث دورها قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/ ۴۳۶ 2 سنن ابن ماجه ابواب الفرائض باب میراث اهل الاسلام من اهل الشرك الخ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ص ۲۰۰ 3 4 عمدة القاری کتاب المناسک باب توریث دور مکه الخ تحت الحدیث ۱۵۸۸ دار الکتب العلمیة بیروت ۹/ ۳۲۴

[Arabic Text]: Malik [stated] in his Muwatta: he first narrated from Ibn Shihab with the chain mentioned in the Book, meaning Sahih al-Bukhari, that the Messenger of Allah (may Allah Almighty send peace and blessings upon him) said, "A Muslim does not inherit from a disbeliever." (1) Then Malik said on the authority of Ibn Shihab, from 'Ali bin Husayn bin 'Ali bin Abi Talib, that he informed him that only 'Aqil and Talib inherited from Abu Talib, while 'Ali did not inherit from him. 'Ali said, "That is why we left our portion of the mountain pass [Shi'b Abi Talib]." (2) Similarly, Muhammad narrated it in his Muwatta from Malik separately and explicitly; he explained it well and acted kindly, may Allah be kind to him and to us. Ameen.

[Urdu Translation]: [Imam Malik] stated in [his Muwatta]: first he mentioned it from Ibn Shihab with the chain mentioned in Sahih al-Bukhari that the Messenger of Allah (may Allah Almighty send peace and blessings upon him) said, "A Muslim does not inherit from a disbeliever." Then Malik narrated from Ibn Shihab, who narrated from 'Ali bin Husayn bin 'Ali bin Abi Talib, who informed that 'Aqil and Talib became the heirs of Abu Talib, whereas Hazrat 'Ali (may Allah be pleased with him) did not inherit from him. Hazrat 'Ali (may Allah be pleased with him) said, "This is the reason we gave up our share from the pass of Abu Talib." Similarly, Imam Muhammad in his book Muwatta narrated explicitly from Imam Malik; he explained it very well and was gracious. May Allah Almighty be gracious to them and to us. Ameen (T).

Eleventh Hadith: 'Umar bin Shabbah in the Book of Makkah, and Abu Ya'la, Abu Bishr, and Sawayya in their Fawa'id, and al-Hakim in al-Mustadrak, via Muhammad bin Salamah bin Hisham bin Hassan from Muhammad bin Sirin, narrate from Anas bin Malik (may Allah be pleased with him) regarding the story of the acceptance of Islam by Abu Quhafah, the father of the Commander of the Faithful Siddiq al-Akbar (may Allah be pleased with them both):

[Arabic Text]: He said: When he extended his hand to pledge allegiance to him, Abu Bakr wept. The Prophet (may Allah Almighty send peace and blessings upon him) asked, "What makes you weep?" He said, "[I wish] your uncle's hand was in place of his hand, and he would embrace Islam and be settled..."

[Urdu Translation]: Meaning when the Holy Prophet (may Allah Almighty send peace and blessings upon him) extended his noble hand to take the pledge of Islam from Abu Quhafah, Siddiq al-Akbar (may Allah be pleased with him) wept. The Radiant

Prophet (may Allah Almighty send peace and blessings upon him) said, "Why do you weep?" He submitted, "In place of his hand, today the Prophet's..."

Footnotes: 1. Muwatta Imam Malik, Kitab al-Fara'id, Bab Mirath Ahl al-Milal, Mir Muhammad Kutub Khana, Karachi, p. 266. 2. Muwatta Imam Malik, Kitab al-Fara'id, Bab Mirath Ahl al-Milal, Mir Muhammad Kutub Khana, Karachi, p. 266.

[अरबी पाठ]: मलिक ने अपनी मुवत्ता में [कहा]: उन्होंने पहले इब्न शिहाब से किताब में उल्लिखित सनद के साथ, यानी सहीह अल-बुखारी में, रिवायत किया कि अल्लाह के रसूल (उन पर अल्लाह की शांति और आशीर्वाद हो) ने फरमाया, "एक मुसलमान काफिर का वारिस नहीं होता।" (1) फिर मलिक ने इब्न शिहाब के हवाले से अली बिन हुसैन बिन अली बिन अबी तालिब से रिवायत की, कि उन्होंने उन्हें खबर दी कि अबू तालिब के वारिस केवल अक़ील और तालिब बने, जबकि अली उनके वारिस नहीं बने। अली ने फरमाया, "यही कारण है कि हमने दर्रे (शेब अबी तालिब) से अपना हिस्सा छोड़ दिया।" (2) इसी तरह, मुहम्मद ने अपनी मुवत्ता में मलिक से अलग और स्पष्ट रूप से रिवायत किया है; उन्होंने इसे अच्छी तरह समझाया और कृपा की, अल्लाह उन पर और हम पर अपनी कृपा बनाए रखे। आमीन।

[उर्दू अनुवाद]: [इमाम मलिक ने अपनी मुवत्ता में] बयान फ़रमाया है: पहले इसको इमाम मलिक ने इब्न शिहाब से ज़िक्र यानी सहीह बुखारी में मज़कूर सनद के साथ ज़िक्र किया कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया मुसलमान काफ़िर का वारिस नहीं बनता। फिर मलिक ने इब्न शिहाब से रिवायत की, उन्होंने अली बिन हुसैन बिन अली इब्न अबी तालिब से, उन्होंने ख़बर दी कि अक़ील और तालिब अबू तालिब के वारिस बने जबकि हज़रत अली (रज़ियल्लाहु अन्हु) उनके वारिस न बने। हज़रत अली (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने फ़रमाया यही वजह है कि हमने शेब अबी तालिब से अपना हिस्सा तर्क कर दिया। इसी तरह इमाम मुहम्मद ने अपनी किताब मुवत्ता में इमाम मलिक से सराहतन रिवायत किया उन्होंने खूब ज़ाहिर किया और एहसान किया, अल्लाह तआला उन पर और हम पर एहसान फ़रमाए। आमीन (त)।

ग्यारहवीं हदीस: उमर बिन शबाह ने किताब मक्का में, और अबू याला, अबू बिश्र और सवैया ने अपने फवायद में, और अल-हाकिम ने अल-मुस्तदरक में, मुहम्मद बिन सलामा बिन हिशाम बिन हस्सान के माध्यम से मुहम्मद बिन सिरीन से, अनस बिन मलिक (रज़ियल्लाहु अन्हु) से अमीरुल मोमिनीन सिद्दीक़ ए अकबर (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) के वालिद अबू कुहाफ़ा के इस्लाम स्वीकार करने के वाकिये में रिवायत किया है:

[अरबी पाठ]: उन्होंने कहा: जब उन्होंने उससे बैअत करने के लिए अपना हाथ बढ़ाया, तो अबू बक्र रो पड़े। नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने पूछा, "तुम्हें किस चीज़ ने रुलाया?" उन्होंने कहा, "[मेरी

तमन्ना थी कि] आपके चाचा का हाथ उनके हाथ की जगह होता, और वह इस्लाम क़ुबूल कर लेते और सुकून पाते..."

[उर्दू अनुवाद]: यानी जब हुज़ूर अकदस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने अपना दस्ते अनवर अबू कुहाफ़ा से बैअते इस्लाम लेने के लिए बढ़ाया, सिद्दीक़ ए अकबर (रज़ियल्लाहु अन्हु) रोए, हुज़ूर पुर नूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया: क्यों रोते हो? अर्ज़ की: उनके हाथ की जगह आज हुज़ूर के..

पाद-टिप्पणियां: 1. मुवत्ता इमाम मलिक, किताबुल फ़राइद, बाब मीरास अहलुल मिलल, मीर मुहम्मद कुतुब ख़ाना, कराची, पृ. 266। 2. मुवत्ता इमाम मलिक, किताबुल फ़राइद, बाब मीरास अहलुल मिलल, मीर मुहम्मद कुतुब ख़ाना, कराची, पृ. 266।

[عربی عبارت]: مالك في موطأه فانه اسند اولا عن ابن شهاب بالسند المذكور في الكتاب اعني صحيح البخاري ان رسول الله صلى الله تعالى عليه وسلم قال لا يرث المسلم الكافر اهـ 1 - ثم قال مالك عن ابن شهاب عن علي بن حسين بن علي بن ابي طالب انه اخبره انما ورث ابا طالب عقيل وطالب ولم يرثه علي قال على فذلك تركنا نصيبنا من الشعب اهـ 2 وهكذا رواه محمد في موطأه عن مالك مفرقاً مصرحاً فقد بين واحسن احسن الله اليه والينا به امين۔

[اردو ترجمہ]: میں بیان فرمایا ہے، پہلے اس کو امام مالک نے ابن شہاب سے ذکر یعنی صحیح بخاری میں مذکور سند کے ساتھ ذکر کیا کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا مسلمان کافر کا وارث نہیں بنتا اھ پھر کہا مالک نے ابن شہاب سے روایت کی اس نے علی بن حسین بن علی ابن ابی طالب سے، اس نے خبر دی کہ عقیل اور طالب ابو طالب کے وارث بنے جب کہ حضرت علی رضی اللہ تعالیٰ عنہ اس کے وارث نہ بنے۔ حضرت علی رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے فرمایا یہی وجہ ہے کہ ہم نے شعب ابی طالب سے اپنا حصہ ترک کر دیا۔ اسی طرح امام محمد نے اپنی کتاب موطا میں امام مالک سے صراحتاً روایت کیا انہوں نے خوب ظاہر کیا اور احسان کیا، اللہ تعالیٰ ان پر اور ہم پر احسان فرمائے۔ آمین (ت)

حدیث یازدہم: عمر بن شبہ کتاب مکہ میں اور ابویعلیٰ وابوبشر اور سمویہ اپنے فوائد اور حاکم مستدرک میں بطریق محمد بن سلمہ بن ہشام بن حسان عن محمد بن سیرین قصہ اسلام ابی قحافہ والد امیر المومنین صدیق اکبر رضی اللہ تعالیٰ عنہما میں انس بن مالک رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے راوی:

[عربی عبارت]: قال فلما مد یده یبایعه بکی ابوبکر فقال النبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم ما یبکیك قال لان تکون ید عمك مکان یده ویسلم ویقر

[اردو ترجمہ]: یعنی جب حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے اپنا دستِ انور ابوقحافہ سے بیعتِ اسلام لینے کے لیے بڑھایا، صدیق اکبر رضی اللہ تعالیٰ عنہ روئے، حضورِ پُر نور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: کیوں روتے ہو؟ عرض کی: ان کے ہاتھ کی جگہ آج حضور کے

حواشی: 1 مؤطا امام مالک کتاب الفرائض باب میراث اہل الملل میر محمد کتب خانہ کراچی ص ۲۶۶ 2 مؤطا امام مالک کتاب الفرائض باب میراث اہل الملل میر محمد کتب خانہ کراچی ص ۲۶۶

Fatawa Razawiyya, Volume 29

[Arabic]: Allah, your eye [being cooled] is dearer to me than that it should be [referring to his father becoming Muslim versus the Prophet's uncle]. 1— [Urdu]: (It would have been better if) it was your uncle's hand and Allah Almighty cooling the eyes of the Prophet (peace and blessings be upon him) through his Islam was dearer to me than my own father becoming Muslim.

Hakim said: This Hadith is authentic according to the conditions of the two Sheikhs (Bukhari and Muslim). Hafiz al-Sha'n (Ibn Hajar) mentioned it in 'Al-Isaba' via Muslim and said: its chain is authentic. 2— (Its chain is authentic. T)

Twelfth Hadith: Abu Qurrah Musa bin Tariq reported from Musa bin Ubaidah, from Abdullah bin Dinar, from Abdullah bin Umar (may Allah be pleased with them):

Arabic	**Urdu**
[Arabic]: He said: Abu Bakr came with Abu Quhafa leading him on the day of the Conquest of Makkah. Then the Messenger of Allah (peace and blessings be upon him) said: "Why didn't you leave the old man until we went to him?" Abu Bakr said: "I desired that Allah reward him. By Him Who sent you with the Truth, I would have been happier if Abu Talib had embraced Islam than I am at my own father's conversion, if he had accepted Islam," by my father. 3—	That is, Siddiq al-Akbar (may Allah be pleased with him) on the day of the Conquest of Makkah brought Abu Quhafa, leading him by the hand, to the sacred presence of the Master of the Universe (peace and blessings of Allah be upon him). The noble Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said, "Why didn't you leave this old man there so that we ourselves would have visited him?" Siddiq replied, "I desired that he receive the reward. By Him Who sent your presence with the Truth, the conversion of Abu Talib would have given me more joy than the conversion of my own father, if he had accepted Islam." (T)

Allah, Allah! This is the station of absolute annihilation in the Beloved. Allah spoke the truth: "And those who believe are stronger in love for Allah" (Quran 2:165). 4— (Allah Almighty spoke the truth and for the believers, there is no love equal to the love for Allah. T) Similarly...

---

1. Al-Isaba fi Tamyiz al-Sahaba, narrated by Umar bin Shayba and others, mention of Abu Talib, Dar Sadr, Beirut, 4/116

2. Al-Isaba fi Tamyiz al-Sahaba, narrated by Umar bin Shayba and others, mention of Abu Talib, Dar Sadr, Beirut, 4/116
3. Al-Isaba fi Tamyiz al-Sahaba, narrated by Abu Qurrah and others, mention of Abu Talib, Dar Sadr, Beirut, 4/117
4. Al-Quran al-Karim, 2/165

फ़तावा रज़विया, जिल्द 29

[अरबी]: अल्लाह, आपकी आँख [ठंडी होना] मुझे इससे कहीं अधिक प्रिय है कि वह [मेरे पिता का इस्लाम लाना] होता। 1— [उर्दू]: (बेहतर होता कि) वह आपके चाचा का हाथ होता और उनके इस्लाम लाने से अल्लाह तआला हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) की आँख ठंडी करता, तो मुझे अपने बाप के मुसलमान होने से ज़्यादा यह बात अज़ीज़ थी।

हाकिम ने कहा: यह हदीस शैख़ैन (बुखारी और मुस्लिम) की शर्त पर सही है। हाफ़िज़ अल-शान (इब्ने हजर) ने 'असाबः' में इसे मुस्लिम के हवाले से ज़िक्र किया और फ़रमाया: इसकी सनद सही है। 2— (इसकी सनद सही है। त)

बारहवीं हदीस: अबू क़ुर्रह मूसा बिन तारिक़, मूसा बिन उबैदा से, वह अब्दुल्लाह बिन दीनार से, और वह हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा) से रावी हैं:

अरबी

[अरबी]: उन्होंने कहा: सिद्दीक़-ए-अकबर मक्का फ़तह के दिन अबू क़ुहाफ़ा को हाथ पकड़कर लाए। तब अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया: "आपने बूढ़े को वहीं क्यों न रहने दिया कि हम उनके पास जाते?" अबू बक्र ने कहा: "मैंने चाहा कि अल्लाह उन्हें अज्र दे। उस ज़ात की क़सम जिसने आपको हक़ के साथ भेजा है, मुझे अपने बाप के इस्लाम लाने से ज़्यादा अबू तालिब के इस्लाम लाने की ख़ुशी होती अगर वह इस्लाम ले आते।" 3—

उर्दू

यानी सिद्दीक़-ए-अकबर (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) फ़तह-ए-मक्का के दिन अबू क़ुहाफ़ा का हाथ पकड़े हुए ख़िदमत-ए-अक़दस हुज़ूर सैयदे आलम (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) में हाज़िर लाए। हुज़ूर अकरम (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया, "इस बूढ़े को वहीं क्यों न रहने दिया कि हम खुद उसके पास तशरीफ़ फ़रमा होते?" सिद्दीक़ ने अर्ज़ की कि "मैंने चाहा कि इनको अज्र मिले। क़सम उसकी जिसने हुज़ूर को हक़ के साथ भेजा है, मुझे अपने बाप के मुसलमान होने से ज़्यादा अबू तालिब के मुसलमान होने की ख़ुशी होती अगर वह इस्लाम ले आते।" (त)

अल्लाह, अल्लाह! यह महबूब में फ़ना-ए-मुतलक़ (पूर्ण समर्पण) का मर्तबा है। अल्लाह तआला ने सच फ़रमाया: "और जो ईमान वाले हैं वे अल्लाह से सख़्त मुहब्बत रखते हैं" (क़ुरआन 2:165)। 4—

(अल्लाह तआला ने सच फ़रमाया और ईमान वालों को अल्लाह के बराबर किसी की मुहब्बत नहीं। त) इसी तरह...

---

1. अल-इसाबः फ़ी तमीज़ अल-सहाबः, उमर बिन शैबा और अन्य के हवाले से, अबू तालिब का ज़िक्र, दार सादिर, बेरूत, 4/116
2. अल-इसाबः फ़ी तमीज़ अल-सहाबः, उमर बिन शैबा और अन्य के हवाले से, अबू तालिब का ज़िक्र, दार सादिर, बेरूत, 4/116
3. अल-इसाबः फ़ी तमीज़ अल-सहाबः, अबू क़ुर्रह और अन्य के हवाले से, अबू तालिब का ज़िक्र, दार सादिर, बेरूत, 4/117
4. अल-क़ुरआन अल-करीम, 2/165

اللہ عینك احب الی من ان یکون ۱۔ چچا کا ہاتھ ہوتا اور ان کے اسلام لانے سے اللہ تعالیٰ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) کی آنکھ ٹھنڈی کرتا تو مجھے اپنے باپ کے مسلمان ہونے سے زیادہ یہ بات عزیز تھی۔

حاکم نے کہا: یہ حدیث بر شرط شیخین صحیح ہے۔ حافظ الشان نے اصابہ میں اسے مسلم رکھا اور فرمایا: سندہ صحیح ۲۔ (اس کی سند صحیح ہے۔ت)

حدیث دوازدہم: ابوقرہ موسی بن طارق وہ موسی بن عبیدہ وہ عبداللہ بن دینار و حضور عبداللہ بن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے راوی:

عربی	اردو
قال جاء ابوبکر بابی قحافة	یعنی صدیق اکبر رضی اللہ تعالیٰ عنہ فتح مکہ کے دن ابو قحافہ کا
یقوده یوم فتح مکة فقال رسول	ہاتھ پکڑے ہوئے خدمت اقدس حضور سید عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ
اللہ صلی اللہ تعالی علیه وسلم الا وسلم میں حاضر لائے حضور اکرم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے	
ترکت الشیخ حتی نأتیه قال	فرمایا اس بوڑھے کو وہیں کیوں نہ رہنے دیا کہ ہم خود اس کے
ابوبکر ادرت ان یأجره اللہ	پاس تشریف فرما ہوتے، صدیق نے عرض کی کہ میں نے چاہا کہ
والذي بعثک بالحق لانا کنت	ان کو اجر دے قسم اس کی جس نے حضور کو حق کے ساتھ بھیجا
اشد فرحا باسلام ابی طالب لو	ہے مجھے اپنے باپ کے مسلمان ہونے سے زیادہ ابوطالب کے
کان اسلم منی بابی ۳۔	مسلمان ہونے کی خوشی ہوتی اگر وہ اسلام لے آتے۔(ت)

اللہ اللہ یہ محبوب میں فنائے مطلق کا مرتبہ ہے، صدق اللہ "وَالَّذِیْنَ اٰمَنُوْا اَشَدُّ حُبًّا لِّلّٰہِ" ط ۴۔ (اللہ تعالی نے سچ فرمایا اور ایمان والوں کو اللہ کے برابر کسی کی محبت نہیں۔ ت) اسی طرح

---

۱ الاصابة فی تمییز الصحابة بحواله عمر بن شیبه وغیره ذکر ابی طالب دار صادر بیروت ۴/ ۱۱۶

۲ الاصابة فی تمییز الصحابة بحواله عمر بن شیبه وغیره ذکر ابی طالب دار صادر بیروت ۴/ ۱۱۶

۳ الاصابة فی تمییز الصحابة بحواله ابی قره وغیره ذکر ابی طالب دار صادر بیروت ۴/ ۱۱۷ ۴

القرآن الکریم ۲/ ۱۶۵

Fatawa Razawiyya, Volume 29

Ameer al-Mu'minin Farooq-e-Azam (may Allah be pleased with him) said to Hazrat Abbas (may Allah be pleased with him), the uncle of the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him):

[Arabic]: "I was more pleased with your acceptance of Islam when you became a Muslim than I would have been with the acceptance of Islam by [my father] Al-Khattab." Mentioned by Ibn Ishaq in his Siyar. [Urdu]: I was more pleased with your conversion to Islam than I would have been with the conversion of my father, Khattab. (Abu Ishaq mentioned this in his Siyar. T)

Thirteenth Hadith: Yunus bin Bukayr in the Ziyadat of Maghazi by Ibn Ishaq, from Yunus bin Amr, from Abi al-Safar:

[Arabic]: He said: Abu Talib sent word to the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) saying: "Feed me from the grapes of your Paradise." Abu Bakr said: "Indeed, Allah has forbidden them for the disbelievers." [Urdu]: That is, Abu Talib sent a request to the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) to give him grapes from his Paradise to eat. At this, Siddiq-e-Akbar (may Allah be pleased with him) said: "Indeed, Allah has forbidden them for the disbelievers."

Fourteenth Hadith: Al-Wahidi from the Hadith of Musa bin Ubaydah, who said: Muhammad bin Ka'b al-Qurazi informed us:

[Arabic]: He said: It reached me that when Abu Talib suffered the illness from which he passed away, the Quraysh said to him: "Send word to your nephew to send you something from that Paradise he mentions, so that it may be a cure for you." So he sent word to him, and the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: "Indeed, Allah has forbidden its food and drink for the disbelievers." Then he came to him and offered him Islam, so he said: "Were it not that they would taunt [me]..." [Urdu]: That is, during the terminal illness of Abu Talib, the disbelievers of Quraysh suggested: "Ask your nephew (peace and blessings of Allah be upon him) to send some of that Paradise he describes so that you may find healing." Abu Talib sent the request. The Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) replied: "Allah Almighty has forbidden the food and water of Paradise for the disbelievers." Then he arrived and presented Islam to Abu Talib. Abu Talib said: "People will taunt that..."

Footnotes: 1. Al-Isaba fi Tamyiz al-Sahaba, citing Ibn Ishaq, mention of Abu Talib, Dar Sader Beirut, 4/711. 2. Al-Isaba fi Tamyiz al-Sahaba, citing Ibn Ishaq, mention of Abu Talib, Dar Sader Beirut, 4/116.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 29

अमीरुल मोमिनीन फ़ारूक़-ए-आज़म (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने हज़रत अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हु), अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के चचा से कहा:

[अरबी]: "अना ब-इस्लामिका इज़ा अस्लमता अफ़रहु मिन्नी ब-इस्लामिल ख़त्ताब, ज़करा इब्ने इसहाक़ फ़ी सीरतिही।" [अनुवाद]: मुझे आपके इस्लाम की जितनी ख़ुशी हुई, अपने बाप ख़त्ताब के इस्लाम की उतनी न होती। (इसे अबू इसहाक़ ने अपनी सीरत में ज़िक्र किया। त)

तेरहवीं हदीस: यूनुस बिन बुक़ैर, इब्ने इसहाक़ की ज़ियादात मग़ाज़ी में, यूनुस बिन अम्र से, उन्होंने अबी अल-सफ़र से रिवायत की:

[अरबी]: उन्होंने कहा: अबू तालिब ने नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की ओर संदेश भेजा और कहा: "मुझे अपनी जन्नत के अंगूर खिलाएं।" अबू बक्र ने कहा: "बेशक अल्लाह ने उन्हें काफ़िरों पर हराम कर दिया है।" [अनुवाद]: यानी अबू तालिब ने हुज़ूर अक़दस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से अर्ज़ कर भेजी कि मुझे अपनी जन्नत के अंगूर खिलाएं। इस पर सिद्दीक़-ए-अकबर (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने फ़रमाया: बेशक अल्लाह ने उन्हें काफ़िरों पर हराम किया है।

चौदहवीं हदीस: अल-वाहिदी, मूसा बिन उबैदा की हदीस से, उन्होंने कहा: हमें मुहम्मद बिन कअब अल-क़ुरज़ी ने बताया:

[अरबी]: उन्होंने कहा: मुझे ये ख़बर पहुंची है कि जब अबू तालिब उस बीमारी में मुब्तला हुए जिससे उनका इंतक़ाल हुआ, तो क़ुरैश ने उनसे कहा: "अपने भतीजे को संदेश भेजें कि वह आपको उस जन्नत में से कुछ भेज दें जिसका वह ज़िक्र करते हैं ताकि वह आपके लिए शिफ़ा बन जाए।" तो उन्होंने उनकी तरफ़ संदेश भेजा, तो अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया: "बेशक अल्लाह ने उसका खाना और पीना काफ़िरों पर हराम कर दिया है।" फिर आप उनके पास आए और उन पर इस्लाम पेश किया, तो उन्होंने कहा: "अगर ये बात न होती कि लोग ताना देंगे..." [अनुवाद]: यानी अबू तालिब के मर्ज़-उल-मौत में काफ़िरान-ए-क़ुरैश ने सलाह दी कि अपने भतीजे (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से अर्ज़ करो कि ये जन्नत जो वह बयान करते हैं इसमें से तुम्हारे लिए कुछ भेज दें कि तुम शिफ़ा पाओ। अबू तालिब ने अर्ज़ कर भेजी। हुज़ूर अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने जवाब दिया कि अल्लाह तआला ने जन्नत का खाना पानी काफ़िरों पर हराम किया है। फिर तशरीफ़ ला कर अबू तालिब पर इस्लाम पेश किया। अबू तालिब ने कहा: लोग ताना करेंगे कि...

पादलेख: 1. अल-इसाबा फ़ी तमीज़-उस-सहाबा, हवाले इब्ने इसहाक़, अबू तालिब का ज़िक्र, दार सादिर बेरुत, 4/711 2. अल-इसाबा फ़ी तमीज़-उस-सहाबा, हवाले इब्ने इसहाक़, अबू तालिब का ज़िक्र, दार सादिर बेरुत, 4/116

امیر المومنین فاروق اعظم رضی اللہ تعالٰی عنہ نے حضرت عباس رضی اللہ تعالٰی عنہ عم رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم سے کہا:

انا باسلامك اذا اسلمت افرح منی باسلام الخطاب، ذکر ابن اسحق فی سیرتہ۔ | مجھے آپ کے اسلام کی جتنی خوشی ہوئی اپنے باپ خطاب کے اسلام کی اتنی نہ ہوتی۔ (اس کو ابواسحق اس کی سیرت میں ذکر کیا۔ت)

حدیث سیزدہم: یونس بن بکیر فی زیادات مغازی ابن اسحق عن یونس بن عمرو عن ابی السفر :

قال بعث ابوطالب الی النبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فقال اطعمنی من عنب جنتك فقال ابوبکر ان اللہ حرمھا علی الکافرین 2۔ | یعنی ابوطالب نے حضور اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم سے عرض کر بھیجی کہ مجھے اپنی جنت کے انگور کھلائے۔ اس پر صدیق اکبر رضی اللہ تعالٰی عنہ نے فرمایا: بے شک اللہ نے انہیں کافروں پر حرام کیا ہے۔

حدیث چہاردہم: الواحدی من حدیث موسٰی بن عبیدۃ قال اخبرنا محمد بن کعب القرظی،

قال بلغنی انہ لما اشتکی ابوطالب شکواہ التی قبض فیھا قالت لہ قریش ارسل الی ابن اخیك یرسل الیك من ھذہ الجنۃ التي ذکرھا یکون لك شفاء فارسل الیہ فقال رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم ان اللہ حرمھا علی الکافرین طعامھا وشرابھا ثم اتاہ فعرض علیہ الاسلام، فقال لولا ان تعیربھا | یعنی ابوطالب کے مرض الموت میں کافران قریش نے صلاح دی کہ اپنے بھتیجے (صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم) سے عرض کرو کہ یہ جنت جو وہ بیان کرتے ہیں اس میں سے تمہارے لیے کچھ بھیج دیں کہ تم شفاء پاؤ۔ ابوطالب نے عرض کر بھیجی حضور اکرم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے جواب دیا

کہ اللہ تعالٰی نے جنت کا کھانا پانی کافروں پر حرام کیا ہے۔ پھر تشریف لا کر ابو طالب پر اسلام پیش کیا۔ ابو طالب نے کہا: لوگ طعنہ کریں گے کہ

1 الاصابة في تمييز الصحابة بحوالہ ابن اسحاق ذکر ابی طالب دار صادر بیروت ۴ / ۷۱۱ 2 الاصابة في تمييز الصحابة بحوالہ ابن اسحاق ذکر ابی طالب دار صادر بیروت ۴ / ۱۱۶

Fatawa Razawiyya Volume 29

[Arabic Text]: It was said: 'Your uncle was distressed by death, so may your eyes not find comfort through it.' And he sought forgiveness for him after he died. Then the Muslims said: 'What prevents us from seeking forgiveness for our fathers and relatives? Ibrahim (peace be upon him) sought forgiveness for his father, and Muhammad (peace and blessings of Allah be upon him) for his uncle.' So they sought forgiveness for the polytheists until the verse was revealed: 'It is not for the Prophet and those who believe...' [Translation]: It was said: The uncle of the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) was distressed by death; if it were not for that thought, I would have gladdened the Prophet. When he died, the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) prayed for his forgiveness. The Muslims said: 'Who prevents us from praying for forgiveness for our ancestors and relatives? Ibrahim (peace be upon him) sought forgiveness for his father, and Muhammad (peace and blessings of Allah be upon him) is seeking forgiveness for his uncle.' Thinking this, the Muslims prayed for forgiveness for their polytheist relatives. Then Allah Almighty revealed the verse that this prayer for polytheists is neither permissible for the Prophet nor for the Muslims, once it has become clear that they are inhabitants of Hell. We seek refuge with Allah Almighty.

Fifteenth Hadith: Abu Nu'aym narrates in 'Hilya' from the Commander of the Faithful, Mawla Ali (may Allah honor his face), that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said:

[Arabic Text]: The will of Allah Almighty was for the Islam of my uncle Abbas, and my will was for the Islam of my uncle Abu Talib. So the will of Allah prevailed over my will. | [Translation]: Allah Almighty willed for my uncle Abbas to become a Muslim, and my desire was that my uncle Abu Talib should become a Muslim. Allah's will prevailed over my desire, such that Abu Talib remained a disbeliever and Abbas (may Allah be pleased with him) was honored with Islam. For Allah is the conclusive argument.

Section Three:

As 54 sayings of the noble Imams and eminent scholars have been mentioned above, followed by the Word of God and the Messenger (Mighty and Majestic is He, and may Allah bless him and grant him peace), what awaited state remains? Who knows the reality of the end better than God and His Messenger? (Exalted is His glory, and may Allah bless him and grant him peace).

1 2 Kanz al-Ummal with the code for Abu Nu'aym from Ali, Hadith 34439, Mu'assasah al-Risala, Beirut 12/152.

फतावा रज़विया जिल्द 29

[अरबी पाठ]: कहा गया: तुम्हारे चाचा मृत्यु से व्याकुल हो गए, ताकि तुम्हारी आँखें ठंडी न हों। और उनके मरने के बाद उन्होंने उनके लिए क्षमा मांगी। फिर मुसलमानों ने कहा: हमें अपने पूर्वजों और अपने रिश्तेदारों के लिए क्षमा माँगने से क्या रोकता है? इब्राहिम (उन पर शांति हो) ने अपने पिता के लिए क्षमा माँगी और मुहम्मद (उन पर अल्लाह की शांति और कृपा हो) ने अपने चाचा के लिए। तो उन्होंने मुशरिकों के लिए क्षमा माँगी यहाँ तक कि यह आयत उतरी: "नबी और ईमान वालों के लिए यह उचित नहीं है..." | [अनुवाद]: यह कहा गया: पवित्र पैगंबर (उन पर अल्लाह की शांति और कृपा हो) के चाचा मृत्यु से घबरा गए थे, अन्यथा मैं वह करता जिससे पैगंबर को खुशी मिलती। जब उनका निधन हो गया, तो पवित्र पैगंबर (उन पर अल्लाह की शांति और कृपा हो) ने उनके लिए क्षमा की प्रार्थना की। मुसलमानों ने कहा: हमें अपने पूर्वजों और रिश्तेदारों के लिए क्षमा की प्रार्थना करने से कौन रोकता है? इब्राहिम (उन पर शांति हो) ने अपने पिता के लिए क्षमा मांगी, और मुहम्मद (उन पर अल्लाह की शांति और कृपा हो) अपने चाचा के लिए क्षमा मांग रहे हैं। यह सोचकर, मुसलमानों ने अपने मुशरिक (बहुदेववादी) रिश्तेदारों के लिए क्षमा की प्रार्थना की। तब अल्लाह सर्वशक्तिमान ने आयत उतारी कि न तो नबी और न ही मुसलमानों के लिए मुशरिकों के लिए प्रार्थना करना उचित है जब यह स्पष्ट हो गया है कि वे जहन्नम (नरक) के निवासी हैं। हम अल्लाह सर्वशक्तिमान की शरण चाहते हैं।

पंद्रहवीं हदीस: अबू नुऐम ने 'हिलिया' में अमीरुल मोमिनीन मौला अली (अल्लाह उनके चेहरे को सम्मानित करे) से रिवायत की है कि अल्लाह के रसूल (उन पर अल्लाह की शांति और कृपा हो) ने फरमाया:

[अरबी पाठ]: अल्लाह सर्वशक्तिमान की इच्छा मेरे चाचा अब्बास के इस्लाम में थी और मेरी इच्छा मेरे चाचा अबू तालिब के इस्लाम में थी। तो अल्लाह की इच्छा मेरी इच्छा पर प्रबल रही। | [अनुवाद]: अल्लाह सर्वशक्तिमान ने मेरे चाचा अब्बास का मुसलमान होना चाहा और मेरी इच्छा थी कि मेरे चाचा अबू तालिब मुसलमान हों। अल्लाह की इच्छा मेरी इच्छा पर प्रबल रही कि अबू तालिब काफिर रहे और अब्बास (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) इस्लाम से सम्मानित हुए। क्योंकि अल्लाह ही का तर्क प्रबल है।

तीसरा खंड:

चूंकि प्रतिष्ठित इमामों और प्रख्यात विद्वानों के54 कथन ऊपर बताए गए हैं, और उसके बाद ईश्वर और रसूल (उनकी जय हो, और उन पर अल्लाह की शांति और कृपा हो) के शब्द आए हैं, अब कौन सी प्रतीक्षा शेष है? अंत की वास्तविकता को ईश्वर और उसके रसूल से बेहतर कौन जानता है? (उनकी महिमा उच्च हो, और उन पर अल्लाह की शांति और कृपा हो)।

1 2 कंजुल उम्माल, अबू नुऐम के संकेत के साथ अली से, हदीस 34439, मुअस्ससतुर् रिसाला, बेरूत 12/152.

فيقال جزع عمّك من الموت لا قرت بها عينك و استغفر له بعد ما مات فقال المسلمون ما يمنعنا ان نستغفر لآبائنا ولذوی قرابتنا قد استغفر ابراهيم عليه السلام لابيه ومحمد صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم لعمه فاستغفروا للمشركين حتى نزلت ما كان للنبي والذين آمنوا 1 الآية۔ | حضور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کا چچا موت سے گھبرا گیا اس کا خیال نہ ہوتا تو میں حضور کی خوشی کر دیتا۔ جب وہ مر گئے حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے انکے لیے دعائے مغفرت کی، مسلمانوں نے کہا ہمیں اپنے والوں قریبوں کے لیے دعائے بخشش سے کون مانع ہے ، ابراہیم علیہ الصلوۃ والسلام نے اپنے باپ کے لیے استغفار کی، محمد صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم اپنے چچا کے لیے استغفار کر رہے ہیں، یہ سمجھ کر مسلمانوں نے اپنے اقارب مشرکین کے واسطے دعائے مغفرت کی، اللہ عزوجل نے آیت اتاری کہ مشرکوں کے لیے یہ دعا نہ نبی کو روا نہ مسلمانوں کو، جب کہ روشن ہوگیا کہ وہ جہنمی ہیں۔ والعیاذ باللہ تعالیٰ

حدیث پازدہم: ابونعیم حلیہ میں امیر المومنین مولیٰ علی کرم اللہ تعالیٰ وجہہ الکریم سے راوی، رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا:

كانت مشيئة الله عزوجل فی اسلام عمی العباس و مشيتی فی اسلام عمی ابی طالب فغلبت مشيئة الله مشيتی -2 | اللہ تعالیٰ نے میرے چچا عباس کا مسلمان ہونا چاہا اور میری خواہش یہ تھی کہ میرا چچا ابو طالب مسلمان ہو، اللہ تعالیٰ کا ارادہ میری خواہش پر غالب آیا کہ ابو طالب کافر رہا اور عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہ مشرف باسلام ہوئے۔ فَلِلّٰهِ الْحُجَّةُ الْبَالِغَةُ

فصل سوم:

چون ۵۴ اقوال ائمہ کرام و علمائے اعلام اوپر گزرے اور بعد کلام خدا و رسول جل جلالہ و صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کیا حالت منتظرہ باقی ہے خاتمہ کا حال خدا و رسول سے زیادہ کون جانے، عز مجدہ و صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم،

2 1 کنزالعمال برمز ابی نعیم عن علی حدیث ۳۴۴۳۹ مؤسسۃ الرسالہ بیروت ۱۲ / ۱۵۲

However, to increase the benefits and for further satisfaction, add some others that are currently under consideration, for an increase in goodness is indeed an increase in goodness. And with Allah is the guidance.

Imam of the Imams, Master of the Crisis, Dispeller of Grief, Lamp of the Ummah, our master Imam-e-Azam (may Allah be pleased with him) states in Fiqh al-Akbar:

Arabic	Urdu
Abu Talib, his uncle (may Allah's peace and blessings be upon him), died as a disbeliever.[1]	The death of the Prophet's (may Allah's peace and blessings be upon him) uncle, Abu Talib, occurred in a state of disbelief. We seek refuge with Allah.

Imam Burhan al-Din Ali bin Abi Bakr al-Farghani states in Al-Hidayah:

Arabic	Urdu
If a disbeliever dies and has a Muslim relative, then he should wash him, shroud him, and bury him; Ali (may Allah be pleased with him) was commanded to do so regarding his father Abu Talib. However, he should be washed like a filthy garment is washed, wrapped in a cloth, and a pit should be dug for him without observing the Sunnah of shrouding or digging a niche (Lahd); he should not be placed in it but rather cast in.[2]	When a disbeliever dies and a Muslim relative is present, he should wash him, clothe him in a shroud, and bury him. Hazrat Ali Murtada (may Allah be pleased with him) was given a similar command regarding his father Abu Talib. But he should be washed as a dirty cloth is washed and wrapped in some cloth. A pit should be dug for him, but the Sunnah of shrouding and making a niche (Lahd) should not be observed, nor should he be placed respectfully in the pit, but rather thrown into it. (T)

Imam Abu al-Barakat Abdullah al-Nasafi states in Al-Kafi Sharh al-Wafi:

Arabic	Urdu
If a disbeliever dies, his Muslim relative washes him, shrouds him, and buries him. The basis for this is that when Abu Talib died, Ali (may Allah be pleased with him) came to the Messenger of Allah (may Allah's peace and blessings be upon	If a disbeliever dies, his Muslim relative should wash him, shroud him, and bury him. The basis for this is that when Abu Talib died, Hazrat Ali (may Allah be pleased with him) came to the Messenger of Allah (may Allah's peace and blessings

Arabic	Urdu
him) and said: 'Indeed, your elderly misguided uncle...'	be upon him) and said: 'Indeed, your elderly misguided uncle...'

[1] Al-Fiqh al-Akbar with Wasiyat Nama, Malik Siraj-ud-Din & Sons Publishers, Kashmiri Bazaar Lahore, p. 21. [2] Al-Hidayah, Book of Funerals, Section on Prayer over the Deceased, Al-Maktaba al-Arabiyya and Shangir Colony, Karachi, 1/161-162.

फतावा रज़विया - खंड २९

मगर फायदों की वृद्धि और अधिक संतुष्टि के लिए, कुछ और भी जोड़ें जो वर्तमान में विचाराधीन हैं, क्योंकि भलाई में वृद्धि वास्तव में भलाई में वृद्धि है। और अल्लाह ही तौफीक देने वाला है।

इमामों के इमाम, संकटों के स्वामी, दुखों को दूर करने वाले, उम्मत के चिराग, हमारे स्वामी इमाम-ए-आज़म (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) 'फ़िक़्ह अल-अकबर' में फरमाते हैं:

अरबी	उर्दू
अबू तालिब, नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के चाचा, कुफ्र की हालत में मरे।[1]	नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चाचा अबू तालिब की मृत्यु कुफ्र पर हुई। हम अल्लाह की पनाह मांगते हैं।

इमाम बुरहानुद्दीन अली बिन अबी बक्र अल-फरगानी 'हिदाया' में फरमाते हैं:

अरबी	उर्दू
जब कोई काफिर मर जाए और उसका कोई मुसलमान रिश्तेदार हो, तो वह उसे नहलाए, कफन पहनाए और दफन करे; अली (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) को उनके पिता अबू तालिब के बारे में ऐसा ही आदेश दिया गया था। लेकिन उसे वैसे ही नहलाया जाना चाहिए जैसे एक गंदे कपड़े को धोया जाता है, और उसे एक कपड़े में लपेट दिया जाना चाहिए। उसके लिए एक गड्ढा खोदा जाना चाहिए, कफन पहनाने और लहद (कब्र का आला) बनाने की सुन्नत का पालन न किया जाए, और उसे सम्मान से गड्ढे में न रखा जाए बल्कि उसमें फेंक दिया जाए।[2]	जब काफिर मर जाए और उसका कोई मुसलमान रिश्तेदार मौजूद हो तो वह उसको गुस्ल दे, कफन पहनाए और दफन करे, हजरत अली मुर्तजा रदियल्लाहु अन्हु को उनके बाप अबू तालिब के बारे में ऐसा ही हुक्म दिया गया। लेकिन उसको गुस्ल ऐसे दिया जाए जैसे पलीद (नापाक) कपड़े को धोया जाता है और किसी कपड़े में लपेट दिया जाए और उसके लिए गड्ढा खोदा जाए, कफन पहनाने और लहद बनाने की सुन्नत मलहूज़ (ध्यान) न रखी जाए और न ही उसको गड्ढे में रखा जाए बल्कि फेंक दिया जाए। (त)

इमाम अबुल बरकात अब्दुल्ला अल-नस्फी 'काफी शरह वाफी' में फरमाते हैं:

अरबी

यदि कोई काफिर मर जाता है, तो उसका मुस्लिम रिश्तेदार उसे नहलाता है, कफन पहनाता है और दफन करता है। इसका आधार यह है कि जब अबू तालिब की मृत्यु हुई, तो अली (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के पास आए और कहा: 'निश्चित रूप से, आपके बुजुर्ग गुमराह चाचा...'

उर्दू

काफिर मर जाए तो उसका मुसलमान रिश्तेदार उसको गुस्ल दे, कफन पहनाए और दफन करे, इसमें असल यह है कि जब अबू तालिब मर गए तो हजरत अली रदियल्लाहु अन्हु रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आए और कहा कि आपका बूढ़ा गुमराह चाचा...

[1] अल-फ़िक़्ह अल-अकबर वसीयत नामा के साथ, मलिक सिराज-उद-दीन एंड संस पब्लिशर्स, कश्मीरी बाज़ार लाहौर, पृष्ठ २१। [2] अल-हिदाया, जनाज़ा का अध्याय, मृतक पर नमाज़ का खंड, अल-मकतबा अल-अरबिया और शंगीर कॉलोनी, कराची, १/१६१-१६२।

पृष्ठ ६८७/७५०

مگر تکثیر فوائد و تسکین زائد کے لیے بعض اور بھی کہ سردست پیش نظر ہیں اضافہ کیجئے کہ زیادت خیر زیادت خیر ہے۔ وباللہ التوفیق۔

امام الائمہ، مالک الازمہ، کاشف الغمہ، سراج الامہ، سید نا امام اعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہ فقہ اکبر میں فرماتے ہیں:

عربی	اردو
ابو طالب عمه صلی الله تعالی علیه وسلم مات کافرا -1	نبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے چچا ابو طالب کی موت کفر پر ہوئی۔ والعیاذ باللہ۔

امام برہان الدین علی بن ابی بکر فرغانی ہدایہ میں فرماتے ہیں :

عربی	اردو
اذا مات الکافر وله ولی مسلم فانه یغسله ویکفنه ویدفنه بذلك امر علی رضی الله تعالیٰ عنه فی حق ابیه ابی طالب لکن یغسل غسل الثوب النجس ویلف في خرقة و یحفر حفیرة من غیر مراعاة سنة التکفین و اللحد و لا یوضع فیه بل یلقی -2	جب کافر مر جائے اور اس کا کوئی مسلمان رشتہ دار موجود ہو تو وہ اس کو غسل دے، کفن پہنائے اور دفن کرے، حضرت علی مرتضیٰ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کو ان کے باپ ابوطالب کے بارے میں ایسا ہی حکم دیا گیا۔ لیکن اس کو غسل ایسے دیا جائے جیسے پلید کپڑے کو دھویا جاتا ہے اور کسی کپڑے میں لپیٹ دیا جائے اور اس کے لیے گڑھا کھودا جائے، کفن پہنانے اور لحد بنانے کی سنت ملحوظ نہ رکھی جائے اور نہ ہی اس کو گڑھے میں رکھا جائے بلکہ پھینکا جائے۔ (ت)

امام ابوالبرکات عبداللہ نسفی کافی شرح وافی میں فرماتے ہیں:

عربی	اردو
مات کافر یغسله ولیه المسلم ویکفنه ویدفنه، و الاصل فیه انه لما مات ابوطالب اتی علی رضی الله تعالی عنه رسول الله صلی الله تعالی علیه وسلم وقال ان عمك الشیخ الضال	کافر مر جائے تو اس کا مسلمان رشتہ دار اس کو غسل دے، کفن پہنائے اور دفن کرے، اس میں اصل یہ ہے کہ جب ابوطالب مر گئے تو حضرت علی رضی اللہ تعالیٰ عنہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے پاس آئے اور کہا کہ آپ کا بوڑھا گمراہ چچا

1 الفقه الاکبر مع وصیت نامه ملک سراج الدین اینڈ سنز پبلشرز کشمیری بازار لاہور ص ۲۱ 2 الهدایه باب الجنائز فصل فی الصلوة علی المیت المکتبة العربیة و شنگیر کالونی کراچی ۱۶۱/۱-۱۶۲

Fatawa Razawiyya Volume 29

[Arabic]: He has died, so say: Wash him, shroud him, and bury him, and do not do anything [extra] until you meet me, i.e., do not pray [the funeral prayer] over him 1. [Urdu]: He has died, the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: Give him a bath (ghusl), put on his shroud (kafan), and bury him, and do not do anything new until you meet me, i.e., do not pray the funeral prayer for him, etc. (T)

Allama Ibrahim Halabi states in Ghunyah Sharh Munyah: [Arabic]: If a close non-believer relative of a Muslim dies and he has no guardian among the non-believers, he should be washed like the washing of a garment, wrapped in a piece of cloth, a pit should be dug for him, and he should be thrown into it without observing the Sunnah in this regard. This is because it is narrated that when Abu Talib died, Ali came and said: O Messenger of Allah! Your misguided uncle has died 2. etc. [Urdu]: A Muslim's close non-believer relative died. There is no heir present among the non-believers, so that Muslim should wash him as a dirty cloth is washed, wrap him in a piece of cloth, dig a pit and throw him in it, and in this regard, do not consider the Sunnah because it is narrated that when Abu Talib passed away, Hazrat Ali Murtada (may Allah be pleased with him) came and said: O Messenger of Allah! Your misguided uncle has died. etc.

Allama Ibrahim Tarabulsi in Burhan Sharh Mawahib al-Rahman, then Allama Sayyid Ahmad Tahtawi in Hashiyah Maraqi al-Falah under the statement of Nur al-Idah: If a non-believer has a close Muslim relative, he should wash him (If any close relative of a non-believer is a Muslim, then he should wash him. T) states: [Arabic]: The basis for this is what was narrated by Abu Dawud and others from Ali (may Allah be pleased with him) who said: When Abu Talib died 3. - the Hadith. [Urdu]: The basis for this is that Hadith which Abu Dawud and others have narrated from Hazrat Ali Murtada (may Allah be pleased with him) that when Abu Talib died, he said. (Al-Hadith. T)

Allama Zayn ibn Nujaym al-Misri states in Bahr al-Ra'iq: [Arabic]: A Muslim guardian washes the non-believer and shrouds him and [Urdu]: A Muslim relative washes the non-believer, puts on his shroud, and

1 Al-Kafi Sharh al-Wafi 2 Ghunyat al-Mustamli Sharh Munyat al-Musalli, Chapter on Funerals, Suhail Academy Lahore, p. 603 3 Hashiyat al-Tahtawi 'ala Maraqi al-Falah, Chapter on Funeral Rulings, Section: The Ruler is more entitled to the prayer, Nur Muhammad Karkhana Karachi, p. 329 & 330

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

[अरबी]: वह मर गया है, तो कहो: उसे नहलाओ, कफ़न पहनाओ और दफ़ना दो, और जब तक मुझसे न मिलो तब तक कोई नया कार्य न करो, यानी उस पर नमाज़ न पढ़ो 1। [उर्दू]: वह मर गया है, अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया: उसे ग़ुसल दो, कफ़न पहनाओ और दफ़ना दो और कोई नई चीज़ न करना यहाँ तक कि मुझे आ मिलो यानी उसकी नमाज़-ए-जनाज़ा मत पढ़ना इत्यादि। (त)

अल्लामा इब्राहिम हलबी 'गुनिया शरह मुनिया' में फरमाते हैं: [अरबी]: यदि किसी मुसलमान का कोई क़रीबी काफ़िर रिश्तेदार मर जाए और काफ़िरों में उसका कोई वली (अभिभावक) न हो, तो उसे इस तरह नहलाया जाए जैसे कपड़े को धोया जाता है, उसे एक चिथड़े में लपेटा जाए, उसके लिए एक गड्ढा खोदा जाए और उसमें डाल दिया जाए बिना सुन्नत का पालन किए। क्योंकि रिवायत है कि जब अबू तालिब की मृत्यु हुई, तो अली आए और कहा: ऐ अल्लाह के रसूल! आपके गुमराह चाचा की मृत्यु हो गई है 2। इत्यादि। [उर्दू]: मुसलमान का कोई क़रीबी काफ़िर रिश्तेदार मर गया। उसका काफ़िरों में कोई वारिस मौजूद नहीं है तो वह मुसलमान उसे ग़ुसल दे जैसे पलीद कपड़े को धोया जाता है, एक कपड़े में लपेटे और एक गड्ढा खोदकर उसमें फेंक दे और इस सिलसिले में सुन्नत का लिहाज़ न करे क्योंकि मरवी है कि जब अबू तालिब का इंतक़ाल हुआ तो हज़रत अली मुर्तज़ा (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने आकर कहा: या रसूल अल्लाह! आप का गुमराह चाचा मर गया है। इत्यादि।

अल्लामा इब्राहिम तराबलुसी 'बुरहान शरह मवाहिब अल-रहमान' में, फिर अल्लामा सैय्यद अहमद तहतावी 'हाशिया मराकी अल-फलाह' में 'नूर अल-ईज़ाह' के इस कथन के तहत (यदि काफ़िर का कोई मुस्लिम रिश्तेदार हो तो वह उसे नहलाए। त) फरमाते हैं: [अरबी]: इसकी असल वह है जिसे अबू दाऊद और अन्य लोगों ने अली (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत किया है, जिन्होंने कहा: जब अबू तालिब की मृत्यु हुई 3। - हदीस। [उर्दू]: असल इसमें वह हदीस है जिसको अबू दाऊद वग़ैरह ने हज़रत अली मुर्तज़ा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत किया कि जब अबू तालिब मर गया तो उन्होंने कहा। (अल-हदीस। त)

अल्लामा ज़ैन बिन नुजैम मिस्री 'बहर अल-राइक' में फरमाते हैं: [अरबी]: मुसलमान वली काफ़िर को नहलाता है और उसे कफ़न पहनाता है और [उर्दू]: मुसलमान रिश्तेदार काफ़िर को ग़ुसल दे, कफ़न पहनाए और

1 अल-काफ़ी शरह अल-वाफ़ी 2 ग़ुनियत अल-मुस्तमली शरह मुनियत अल-मुसल्ली, फ़स्ल अल-जनाइज़, सुहैल एकेडमी लाहौर, पृष्ठ 603 3 हाशिया अल-तहतावी अली मराकी अल-फ़लाह, बाब अहकाम अल-जनाइज़, फ़स्ल अस-सुल्तान अहक़ु बि-सलातिही, नूर मोहम्मद कारखाना कराची, पृष्ठ 329 और 330

पृष्ठ 688 का 750

قد مات فقل اغسله واکفنه وادفنه ولا تحدث حدثا حتی تلقانی ای لاتصل علیه ۱۔ مر گیا ہے، رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا اس کو غسل دو، کفن پہناؤ اور دفن کردو اور کوئی نئی چیز نہ کرنا یہاں تک کہ مجھے آملو یعنی اس کی نماز جنازہ مت پڑھنا الخ۔ (ت)

علامہ ابراہیم حلبی غنیہ شرح منیہ میں فرماتے ہیں: مات للمسلم قریب کافر لیس له ولی من الکفار یغسله غسل الثوب الجنس ویلفه فی خرقة و یحفر له حفرة ویلقیه فیها من غیر مراعاة السنة فی ذلك لما روی ان ابا طالب لما هلك جاء علی فقال یا رسول ان عمك الضال قدمات ۲۔ الخ مسلمان کا کوئی قریبی کافر رشتہ دار مر گیا۔ اس کا کافروں میں کوئی وارث موجود نہیں ہے تو وہ مسلمان اسے غسل دے جیسے پلید کپڑے کو دھویا جاتا ہے، ایک کپڑے میں لپیٹے اور ایک گڑھا کھود کر اس میں پھینک دے اور اس سلسلے میں سنت کا لحاظ نہ کرے کیونکہ مروی ہے کہ جب ابو طالب کا انتقال ہوا تو حضرت علی مرتضی رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے آکر کہا یا رسول اللہ ! آپ کا گمراہ چچا مر گیا ہے۔ الخ

علامہ ابراہیم طرابلسی برہان شرح مواہب الرحمن پھر علامہ سید احمد طحطاوی حاشیہ مراقی الفلاح میں زیر قول نور الایضاح ان کان للکافر قریب مسلم غسله (اگر کسی کافر کا کوئی قریبی رشتہ دار مسلمان ہو تو وہ اس کو غسل دے۔ ت) فرماتے ہیں: الاصل فیه ما رواه ابو داؤد وغیره عن علی رضی اللہ تعالی عنه قال لما مات ابو طالب ۳۔ الحدیث۔ اصل اس میں وہ حدیث ہے جس کو ابو داؤد وغیرہ نے حضرت علی مرتضی رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کیا کہ جب ابو طالب مر گیا تو انہوں نے کہا۔ (الحدیث۔ ت)

علامہ زین بن نجیم مصری بحر الرائق میں فرماتے ہیں: یغسل ولی مسلم الکافر ویکفنه و مسلمان رشتہ دار کافر کو غسل دے، کفن پہنائے اور

۱ الکافی شرح الوافی ۲ غنیۃ المستملی شرح منیۃ المصلی فصل فی الجنائز سہیل اکیڈمی لاہور ص ۶۰۳ ۳ حاشیۃ الطحطاوی علی مراقی الفلاح باب احکام الجنائز فصل السلطان احق بصلوتہ نور محمد کارخانہ کراچی ص ۳۲۹ و ۳۳۰

yudfinuhu bidhalika amara 'ali radi Allahu ta'ala 'anhu an yaf'ala bi-abihi hina mata 1-	**Bury him; Hazrat Ali al-Murtaza (may Allah be pleased with him) was ordered to do this when his father died. (T)**

The gist of all these statements is that a Muslim can bathe their deceased non-believer relative, as Mawla Ali (may Allah be pleased with him) bathed his father Abu Talib with the permission of the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him). This subject is accepted and established in Fath al-Qadir, Kifayah, Binayah, and all other commentaries of Hidayah. Numerous such statements will be found in books of jurisprudence; there is no need to prolong this by citing them all. It has become clear that all scholars consider Abu Talib a non-believer. Similarly, Imam Abu Dawud in his Sunan established a chapter titled "Chapter on a person whose polytheist relative dies," meaning a chapter for a person who has a polytheist relative who passes away. And Imam Nasa'i named it "Chapter on the Burial of a Polytheist," and both of them cited this very Hadith of Abu Talib's death in it. In the same Mujtaba of Nasa'i, there is a chapter "The Prohibition of Seeking Forgiveness for Polytheists," in which the second Hadith is narrated. Ibn Majah in his Sunan wrote a chapter on inheritance titled "Muslims inheriting from People of Polytheism," meaning whether a Muslim will receive the inheritance of a polytheist or not. The second Hadith mentioned there relates to this. The great Imam of the school of thought, our master Imam Malik, established a chapter in Muwatta Sharif titled "Inheritance between people of different faiths," meaning the ruling on receiving inheritance from one another among people of different religions, and narrated Hadiths in it about the lack of inheritance between a Muslim and a non-believer, among which this Hadith of Imam Zain al-Abidin regarding Abu Talib's inheritance is also mentioned as the tenth Hadith. Similarly, the master Imam Muhammad, the scribe of the school of thought, established a chapter in Muwatta Sharif titled "A Muslim does not inherit from a non-believer" and presented the aforementioned Hadith.

---

1. Bahr al-Ra'iq, Kitab al-Jana'iz, Section: The Ruler is more entitled to lead the prayer, H.M. Saeed Company Karachi, 2/190
2. Sunan Abi Dawud, Kitab al-Jana'iz, Chapter on a person who dies etc., Aftab-e-Alam Press Lahore, 2/102
3. Sunan al-Nasa'i, Kitab al-Jana'iz, Chapter on the Burial of a Polytheist, Noor Muhammad Karkhana Karachi, 1/283

4. Sunan al-Nasa'i, Kitab al-Jana'iz, Chapter on the Prohibition of Seeking Forgiveness for Polytheists, Noor Muhammad Karkhana Karachi, 1/286
5. Sunan Ibn Majah, Book of Inheritance, Chapter on Inheritance of People of Islam from People of Polytheism, H.M. Saeed Company Karachi, p. 200
6. Muwatta al-Imam Malik, Book of Inheritance, Chapter on Inheritance Between People of Different Faiths, Meer Muhammad Kutub Khana Karachi, p. 266
7. Muwatta al-Imam Muhammad, Book of Inheritance, Chapter: A Muslim does not inherit from a non-believer, Noor Muhammad Karkhana Karachi, pp. 319 & 320

युदफिनुहु बिदालिका अमरा अली रदी अल्लाहु तआला अन्हु अन यफअला बि-अबियाही हीना माता 1-

उसे दफ़ना दें; हज़रत अली अल-मुर्तज़ा (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) को ऐसा करने का हुक्म दिया गया जब उनके पिता का देहांत हुआ। (त)

इन सभी इबारतों का सार यह है कि एक मुसलमान अपने काफ़िर (अविश्वासी) रिश्तेदार के शव को नहला सकता है, क्योंकि मौला अली (अल्लाह उनके चेहरे को सम्मान दे) ने अपने पिता अबू तालिब को नबी करीम (अल्लाह की शांति और आशीर्वाद उन पर हों) की अनुमति से नहलाया था। फ़तह अल-क़दीर, किफ़ाया, बिनाया और हिदाया की अन्य सभी व्याख्याओं में इस विषय को स्वीकार किया गया और स्थापित रखा गया है। फ़िक़्ह (इस्लामी न्यायशास्त्र) की किताबों में इसकी इबारतें बहुतायत में मिलेंगी; उन सभी को उद्धृत करके विस्तार करने की आवश्यकता नहीं है। यह स्पष्ट हो गया कि सभी विद्वान अबू तालिब को काफ़िर मानते हैं। इसी तरह, इमाम अबू दाऊद ने अपनी सुनन में एक अध्याय "अध्याय: वह व्यक्ति जिसके किसी मुशरिक (बहुदेववादी) रिश्तेदार की मृत्यु हो जाए" स्थापित किया, जिसका अर्थ है उस व्यक्ति का अध्याय जिसके किसी मुशरिक रिश्तेदार का देहांत हो। और इमाम नसाई ने "अध्याय: मुशरिक को दफ़नाने का बयान" नाम दिया, और दोनों ने इसमें अबू तालिब की मृत्यु की यही हदीस ज़िक्र की। नसाई की इसी मुज्तबा में एक अध्याय "मुशरिकों के लिए क्षमा प्रार्थना की मनाही" है, जिसमें दूसरी हदीस वर्णित है। इब्न माजा ने सुनन में विरासत का अध्याय "अहले इस्लाम का अहले शिर्क से विरासत पाना" लिखा, यानी क्या किसी मुसलमान को मुशरिक की विरासत मिलेगी या नहीं। इसमें दूसरी हदीस दर्ज की गई। मज़हब के महान इमाम, हमारे आका इमाम मालिक ने मुवत्ता शरीफ़ में एक अध्याय "विभिन्न धर्मों के लोगों के बीच विरासत" स्थापित किया, यानी अलग-अलग धर्म वालों में एक-दूसरे की विरासत मिलने का हुक्म, और उसमें मुसलमान और काफ़िर के बीच विरासत न होने की हदीसें बयान फरमाईं, जिनमें अबू तालिब की विरासत के बारे में इमाम ज़ैनुल आबिदीन की यह हदीस भी दसवीं हदीस के रूप में वर्णित है। इसी प्रकार, मज़हब के मुहर्रिर (लेखक) आका इमाम मुहम्मद ने मुवत्ता शरीफ़ में "मुसलमान काफ़िर का वारिस नहीं होता" अध्याय स्थापित करके उपर्युक्त हदीस पेश की।

---

1. बहर अल-रैक़, किताब अल-जनाइज़, फ़स्ल: सुल्तान प्रार्थना के लिए अधिक हकदार है, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 2/190

2. सुनन अबी दाऊद, किताब अल-जनाइज़, बाब अर-रजुल यमूतु लहू आदि, आफ़ताब-ए-आलम प्रेस लाहौर, 2/102
3. सुनन अन-नसाई, किताब अल-जनाइज़, बाब मुवारात अल-मुशरिक, नूर मुहम्मद कारख़ाना कराची, 1/283
4. सुनन अन-नसाई, किताब अल-जनाइज़, बाब अन-नह्य अन अल-इस्तिग़फ़ार लिल-मुशरिकीन, नूर मुहम्मद कारख़ाना कराची, 1/286
5. सुनन इब्न माजा, अबवाब अल-फ़राइज़, बाब मीरास अहल अल-इस्लाम मिन अहल अश्-शिर्क, एच.एम. सईद कंपनी कराची, पृ. 200
6. मुवत्ता अल-इमाम मालिक, किताब अल-फ़राइज़, बाब मीरास अहल अल-मिलल, मीर मुहम्मद कुतुब ख़ाना कराची, पृ. 266
7. मुवत्ता अल-इमाम मुहम्मद, किताब अल-फ़राइज़, बाब ला यारिस अल-मुस्लिम काफ़िर, नूर मुहम्मद कारख़ाना कराची, पृ. 319 और 320

یدفنه بذلك امر علی رضی الله تعالی عنه ان یفعل بابیه حین مات 1- **دفن کرے ، حضرت علی مرتضٰی رضی الله تعالٰی عنہ کو ایسا کرنے کا حکم دیا گیا جب ان کا باپ مرگیا۔ (ت)**

ان سب عبارتوں کا حاصل یہ ہے کہ مسلمان اپنے قرابت دار کافر مردہ کو نہلاسکتا ہے کہ مولٰی علی کرم الله تعالٰی وجہہ نے اپنے باپ ابوطالب کو نبی کریم صلی الله تعالٰی علیہ وسلم کی اجازت سے نہلایا۔ فتح القدیر وکفایہ وبنایہ و غیرہا تمام شروحِ ہدایہ میں اس مضمون کو مقبول و مقرر رکھا۔ کتب فقہ میں اس کی عبارات بکثرت ملیں گی سب کی نقل سے اطالت کی حاجت نہیں ، واضح ہوا کہ سب علمائے کرام ابوطالب کو کافر جانتے ہیں۔ یونہی امام ابو داؤد نے اپنی سنن میں "باب الرجل یموت له قرابة مشرک " 2 وضع فرمایا یعنی "باب اُس شخص کا جس کا کوئی قرابت دار مشرک مرے ، " اور امام نسائی نے "باب مواراة المشرک" 3 یعنی "دفنِ مشرک کا باب" ، اور دونوں نے اس میں یہی حدیث موت ابی طالب ذکر کی، انہیں نسائی کے اسی مجتبٰی میں ایک باب " النهي عن الاستغفار للمشرکین " 4 ہے اس میں حدیث دوم روایت کی ، ابنِ ماجہ نے سُنن میں باب میراث "اهل الاسلام من اهل الشرك" 5 لکھا یعنی مشرک کا ترکہ مسلم کو ملے گا یا نہیں۔ اس میں حدیثِ دوم وارد کی۔ امام اجل صاحب المذہب سیدنا امام مالک نے موطا شریف میں باب "التوارث بین اهل الملل" 6 منعقد فرمایا یعنی مختلف دین والوں میں ایک کو دوسرے کا ترکہ ملنے کا حکم ، اور اس میں حدیثیں مسلم و کافر کے عدمِ توارث کی روایت فرمائیں جن میں یہ حدیث امام زین العابدین درباره ترکہ ابوطالب مذکور حدیثِ دہم بھی ارشاد کی۔ یونہی امام محرر المذہب سیدنا امام محمد نے موطا شریف میں باب "لا یرث المسلم الکافر" 7 منعقد فرما کر حدیث مذکور ایراد کی۔

1 بحر الرائق کتاب الجنائز فصل السلطان احق بصلوته ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۲ / ۱۹۰ 2 سنن ابی داؤد کتاب الجنائز باب الرجل یموت له الخ آفتاب عالم پریس لاہور ۲ / ۱۰۲ 3 سنن النسائی کتاب الجنائز باب مواراة المشرک نور محمد کارخانہ کراچی ۱ / ۲۸۳ 4 سنن النسائی کتاب الجنائز باب النہی عن الاستغفار للمشرکین نور محمد کارخانہ کراچی ۱ / ۲۸۶ 5 سنن ابن ماجہ ابواب الفرائض باب میراث اهل الاسلام من اهل الشرك ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ص ۲۰۰ 6 مؤطا الامام مالک کتاب الفرائض باب میراث اهل الملل میر محمد کتب خانہ کراچی ص ۲۶۶ 7 مؤطا الامام محمد کتاب الفرائض باب لا یرث المسلم کافر نور محمد کارخانہ کراچی ص ۳۱۹ و ۳۲۰

Fatawa Razawiyya Volume 29

Imam-e-Ajal Muhammad bin Ismail Bukhari established a chapter in Jami' Sahih, Kitab al-Jana'iz: "Chapter: If a polytheist says 'La ilaha illAllah' at the time of death."[1] That is, a chapter describing the ruling if a polytheist says 'La ilaha illAllah' at the time of death, and he narrated the second hadith in it. In the same book, Kitab al-Adab, he wrote "Chapter: The Kunya (agnomen) of a polytheist."[2] In it, the fourth hadith and the mentioned hadith are narrated:

| I heard the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) say while he was on the pulpit: "Indeed, the Bani Hashim bin al-Mughirah asked me for permission to marry their daughter to Ali bin Abi Talib."[3] | I heard the Noble Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) saying while he was sitting on the pulpit that Bani Hashim bin Mughira have sought permission from me to marry their daughter to Ali bin Abi Talib. (T) |

Mention of _____ Imam Qastalani wrote in the reconciliation of hadith and translation: "He mentioned Abu Talib the polytheist by his kunya." The Noble Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) remembered Abu Talib the polytheist by his kunya. Then he wrote:

| It has been permitted to mention a disbeliever by his kunya if he is not known except by it, as in the case of Abu Talib, or if it is for the sake of winning hearts in the hope of their Islam, or to obtain a benefit from them, not by way of honoring them, for we are commanded to be harsh with them.[4] | Scholars have allowed mentioning a disbeliever by his kunya when he is not recognized by any other name, like Abu Talib, or for the purpose of inclining them towards Islam, or to get some work done, but it is not permissible as a form of honoring, for we are commanded to be firm with them. |

In 'Umdat al-Qari it is stated: | Ibn Battal said regarding it: "The permissibility of giving a kunya to a polytheist."[5] | Imam Ibn Battal said: From this hadith, the permissibility of remembering a polytheist by the word of his kunya was known. |

In the same (book) it is stated:

[1] Sahih al-Bukhari, Kitab al-Jana'iz, Chapter: When a Polytheist Says at the Time of Death, etc., Qadimi Kutub Khana, Karachi, 1/181. [2] Sahih al-Bukhari, Kitab al-Adab, Chapter: Kunya of a Polytheist, Qadimi Kutub Khana, Karachi, 2/916. [3] Sahih al-Bukhari, Kitab al-Nikah, Chapter: A Man Defending His Daughter with Regard to

Jealousy, etc., Qadimi Kutub Khana, Karachi, 2/787. [4] Irshad al-Sari, Kitab al-Adab, Chapter: Kunya of a Polytheist, under Hadith 6208, Beirut, 23/207 & 210. [5] 'Umdat al-Qari Sharh al-Bukhari, Kitab al-Adab, under Hadith 6208, Dar al-Kutub al-Ilmiyyah, Beirut, 22/339.

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

इमाम-ए-अजल मुहम्मद बिन इस्माइल बुखारी ने जामेअ सहीह की किताब अल-जनाइज़ में एक बाब (अध्याय) स्थापित किया: "बाब: जब एक मुशरिक मौत के वक्त ला इलाहा इल्लल्लाह कहे।"१ यानी यह बाब उस हुक्म के बयान में है कि अगर कोई मुशरिक मरते वक्त ला इलाहा इल्लल्लाह कहे, और इसमें दूसरी हदीस रिवायत की। इसी की किताब अल-अदब में लिखा: "बाब: मुशरिक की कुनियत (उपनाम)।"२ इसमें चौथी हदीस और उक्त हदीस रिवायत है:

| मैंने नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को मिंबर पर कहते सुना: "बनी हाशिम बिन अल-मुगीरा ने मुझसे अपनी बेटी का निकाह अली बिन अबी तालिब से करने की इजाजत मांगी है।"३ | मैंने नबी-ए-करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को मिंबर पर तशरीफ़ फर्मा होते हुए फरमाते सुना कि बनी हाशिम बिन मुगीरा ने मुझसे इजाज़त मांगी है कि वे अपनी बेटी का निकाह अली बिन अबी तालिब के साथ कर दें। (त) |

जिक्र की _____ इमाम कस्तलानी ने हदीस और तर्जुमा के सामंजस्य में लिखा: "उन्होंने मुशरिक अबू तालिब का ज़िक्र उनकी कुनियत से किया।" नबी-ए-करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने अबू तालिब मुशरिक को कुनियत से याद फरमाया। फिर लिखा:

| काफिर को उसकी कुनियत से पुकारना जायज़ है अगर वह उसके बिना न पहचाना जाए जैसे अबू तालिब, या इस्लाम की ओर आकर्षित करने की उम्मीद में हो, या उनसे कोई फायदा हासिल करना हो, न कि उनके सम्मान के तौर पर, क्योंकि हमें उनके प्रति कठोर रहने का हुक्म दिया गया है।४ | विद्वानों ने काफिर को कुनियत से ज़िक्र करना जायज़ रखा है जब वह किसी और नाम से न पहचाना जाए जैसे अबू तालिब, या इस्लाम की ओर झुकाव का उद्देश्य हो या काम निकलवाना हो, लेकिन सम्मान के तौर पर जायज़ नहीं है क्योंकि हमें उन पर सख्ती करने का हुक्म है। |

उम्दतुल कारी में है: | इब्न बत्तल ने इसके बारे में कहा: "मुशरिक को कुनियत देने की अनुमति।"५ | इमाम इब्न बत्तल ने फरमाया: इस हदीस से मुशरिक को कुनियत के शब्द से याद करने का जवाज़ (वैधता) मालूम हुआ। |

इसी में है:

१ सहीह अल-बुखारी, किताब अल-जनाइज़, बाब: जब मुशरिक मौत के वक्त कहे आदि, क़दीमी कुतुब खाना, कराची, 1/181 २ सहीह अल-बुखारी, किताब अल-अदब, बाब: मुशरिक की कुनियत, क़दीमी कुतुब खाना, कराची, 2/916 ३ सहीह अल-बुखारी, किताब अल-निकाह, बाब: अपनी बेटी के लिए गैरत करना आदि, क़दीमी कुतुब खाना, कराची, 2/787 ४ इरशाद अल-सारी, किताब अल-अदब, बाब: मुशरिक की कुनियत, हदीस 6208 के तहत, बेरुत, 23/207 और 210 ५ उम्दतुल कारी शरह अल-बुखारी, किताब अल-अदब, हदीस 6208 के तहत, दार अल-कुतुब अल-इल्मिया, बेरुत, 22/339

امام اجل محمد بن اسمعیل بخاری نے جامع صحیح کتاب الجنائز میں ایک باب وضع فرمایا : " باب اذا قال المشرک عند الموت لا الہ الا اللہ "۔ ۱ یعنی باب اس کے بیان کا کہ مشرک مرتے وقت لا الہ الا اللہ کہے تو کیا حکم ہے اور اس میں حدیث دوم روایت فرمائی۔ اسی کی کتاب الادب میں لکھا " باب کنیۃ المشرک " ۲۔ اس میں حدیث چہارم روایت اور حدیث مذکور :

| سمعت النبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم یقول وھو علی المنبر ان بنی ھاشم بن المغیرۃ استأذونی ان ینکحوا ابنتھم علی بن ابی طالب ۳۔ | میں نے نبی کریم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کو فرماتے ہوئے سنا جب کہ آپ منبر پر تشریف فرما تھے کہ بنی ہاشم بن مغیرہ نے مجھ سے اجازت طلب کی ہے کہ وہ اپنی بیٹی کا نکاح علی بن ابی طالب کے ساتھ کر دیں۔ (ت) |

ذکر کی _____ امام قسطلانی نے تطبیقِ حدیث و ترجمہ میں لکھا "فذکر ابا طالب المشرك بكنية" نبی کریم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے ابو طالب مشرک کو کنیت سے یاد فرمایا۔ پھر لکھا :

| قد جوز اذکر الکافر بکنیتہ اذا کان لا یعرف الا بھا کما فی ابی طالب اوکان علی سبیل التألف رجاء اسلامھم او تحصیل منفعۃ منھم لا علی سبیل التکریم فاناً ما مورون بالا غلاظ علیھم ۴۔ | علماء نے کافر کو کنیت سے ذکر کرنا ناجائز رکھا جب کہ وہ اور نام سے نہ پہچانا جائے جیسے ابو طالب یا بامیہ اسلام تالیف مقصود یا کام نکالنا ہو مگر بطورِ تکریم جائز نہیں کہ ہمیں ان پر سختی کرنے کا حکم ہے۔ |

عمدۃ القاری میں ہے : | قال ابن بطال فیہ جواز تکنیۃ المشرک ۵۔ | امام ابن بطال نے فرمایا : اس حدیث سے مشرک کو بلفظ کنیت یاد کرنے کا جواز معلوم ہوا۔ |

اسی میں ہے :

۱ صحیح البخاری کتاب الجنائز باب اذا قال المشرک عند الموت الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ۱ / ۱۸۱ ۲ صحیح البخاری کتاب الادب باب کنیۃ المشرک قدیمی کتب خانہ کراچی ۲ / ۹۱۶ ۳ صحیح البخاری کتاب النکاح باب ذب الرجل عن ابنتہ فی الغیرہ الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ۲ / ۷۸۷ ۴ ارشاد الساری کتاب الادب باب کنیۃ المشرک تحت الحدیث ۶۲۰۸ بیروت ۲۳ / ۲۰۷ و ۲۱۰ ۵ عمدۃ القاری شرح البخاری کتاب الادب تحت الحدیث ۶۲۰۸ دار الکتب العلمیہ بیروت ۲۲ / ۳۳۹

Fatawa Ridawiyya, Volume 29

[Arabic quote]: "Therein is a proof that Allah the Almighty may grant a disbeliever compensation for his deeds, such as those that would be a means of closeness for the people of faith in Allah the Almighty. This is because he (the Prophet) صلی اللہ تعالی علیہ وسلم informed that his uncle benefited from his upbringing of him and his protection of him through mitigation (of punishment) 1... etc." [Urdu explanation]: From this Hadith, it is also known that Allah Almighty grants even a disbeliever some compensation for his deeds, which if believers were to perform, they would attain closeness to God. Look, the Prophet صلی اللہ تعالی علیہ وسلم informed that the Prophet's uncle benefited from a reduction in punishment due to his service and protection of the Prophet, etc.

Imam Arif Billah Sayyidi Ali Muttaqi Makki (may his secret be sanctified) established a chapter in his noble books, *Manhaj al-Ummal*, *Kanz al-Ummal*, and *Muntakhab Kanz al-Ummal*:

[Boxed text - Arabic]: "Chapter Six: Regarding individuals who are not among the Companions 2." [Boxed text - Urdu]: Mentioning those persons who are not Sahabi, and in this same chapter he mentioned Abu Talib and Abu Jahl, etc.

Similarly, Allama Abd al-Rahman bin Shaybani in *Taysir al-Wusul ila Jami' al-Usul* placed the Hadiths mentioning Abu Talib in the section for non-Companions and presented only the second, fourth, and fifth Hadiths therein. If Abu Talib had been granted Islam, could such a person be excluded from the Sahaba who raised the resplendent Prophet, the Master of the World صلی اللہ تعالی علیہ وسلم in his lap since childhood and established a renown of participation by accompanying him in residence and travel until his death? Likewise, the Imam and Hafiz of Hadith, Abu al-Fadl Shihab al-Din Ibn Hajar al-Asqalani in the book *al-Isabah fi Tamyiz al-Sahabah* mentioned Abu Talib in the chapter of *Kunya* under the letter *Ta al-Muhmalah* in the fourth category. Meaning, those who are rejected, wrong, and false to be called Sahabi. In it, he says:

[Boxed text - Arabic]: "It has been narrated through several chains regarding those who died in the *Fitrah* (interval between prophets) and those born insane and the like, that their speech is put forward as an argument, and they say: 'If I had possessed intellect or been reminded, I would have believed.' So a fire will be raised for them and it will be said to them, 'Enter it.' Then whoever enters it..." [Boxed text - Urdu]: Meaning, Hadiths have come through many chains that he who died in the period of *Fitrah* before the arrival of Islam or was born insane and passed away in

insanity, and people of this sort to whom the invitation of the Prophets (peace be upon them) did not reach, each of them will present an excuse on the Day of Resurrection: 'O God! Had I possessed intellect or the invitation reached me, I would have brought faith.' For their test, a...

1. *Umdat al-Qari Sharh Sahih al-Bukhari*, Book of Manners, Chapter on the Kunya of a Mushrik, under Hadith 6208, Dar al-Kutub al-Ilmiyah, Beirut, 22/239.
2. *Kanz al-Ummal*, Chapter Six on the virtues of individuals who are not among the Companions, Muassasat al-Risala, Beirut, 12/150.

फ़तावा रज़विया, जिल्द २९

[अरबी उद्धरण]: "इसमें यह प्रमाण है कि अल्लाह तआला काफ़िर को भी उसके उन कर्मों का बदला दे सकता है जो ईमान वालों के अल्लाह पर ईमान के साथ किए जाने पर अल्लाह की निकटता का कारण होते। क्योंकि उन्होंने (नबी) सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने खबर दी कि उनके चाचा को उनकी परवरिश और सुरक्षा से अज़ाब में कमी का लाभ हुआ १... आदि।" [उर्दू स्पष्टीकरण]: इस हदीस से यह भी पता चला कि अल्लाह अज़्ज़वजल काफ़िर को भी उसके कर्मों का कुछ बदला देता है, जिसे ईमान वाले करें तो अल्लाह की निकटता पाएं। देखो नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने खबर दी कि हुज़ूर के चाचा को हुज़ूर की सेवा और हिमायत ने अज़ाब में कमी का फायदा दिया आदि।

इमाम आरिफ़ बिल्लाह सैय्यदी अली मुत्तक़ी मक्की (अल्लाह उनके रहस्य को पवित्र करे) ने अपनी प्रतिष्ठित पुस्तकों 'मिन्हाजुल उम्माल', 'कन्जुल उम्माल' और 'मुंतखब कन्जुल उम्माल' में एक अध्याय स्थापित किया है:

[बॉक्स टेक्स्ट - अरबी]: "अध्याय छह: उन व्यक्तियों के बारे में जो सहाबा में से नहीं हैं २।" [बॉक्स टेक्स्ट - उर्दू]: उन व्यक्तियों के उल्लेख में जो सहाबी नहीं हैं, और इसी अध्याय में अबू तालिब और अबू जहल आदि का उल्लेख किया।

इसी तरह अल्लामा अब्दुल रहमान बिन शैबानी ने 'तयसीरुल वुसूल इला जामिउल उसूल' में अबू तालिब के उल्लेख वाली हदीसों को गैर-सहाबा के खंड में रखा है और उसमें केवल दूसरी, चौथी और पांचवीं हदीस को पेश किया है। यदि अबू तालिब को इस्लाम नसीब होता तो क्या वह व्यक्ति सहाबा से बाहर हो सकता था जिसने बचपन से हुज़ूर पुरनूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को अपनी गोद में पाला और मरते दम तक सफ़र और हज़र (प्रवास) में साथ रहकर सौभाग्य पाने का शोर मचाया। इसी तरह इमाम हाफ़िज़ुल हदीस अबुल फ़ज़ल शिहाबुद्दीन इब्न हजर असकलानी ने अपनी पुस्तक 'इसाबा फ़ी तमीज़िस सहाबा' में अबू तालिब का उल्लेख 'बाबुल कुनया' में हर्फ़'ता मुहमला' की चौथी श्रेणी में किया है। यानी वे लोग जिन्हें सहाबी कहना अस्वीकार्य, गलत और झूठ है। इसी में वे कहते हैं:

[बॉक्स टेक्स्ट - अरबी]: "विभिन्न माध्यमों से उन लोगों के बारे में हदीस आई है जो 'फ़ितरत' काल में मरे या जो पागल पैदा हुए और इसी तरह के लोग, कि उनकी बात दलील के रूप में पेश की जाएगी

और वे कहेंगे: 'अगर मेरे पास अक्ल होती या मुझे याद दिलाया जाता तो मैं ईमान ले आता।' फिर उनके लिए एक आग उठाई जाएगी और उनसे कहा जाएगा, 'इसमें प्रवेश करो।' तो जो प्रवेश करेगा..." [बॉक्स टेक्स्ट - उर्दू]: यानी बहुत सारी सनदों से हदीस आई है कि जो ज़माना-ए-फ़ितरत में इस्लाम आने से पहले मर गया या पागल पैदा हुआ और पागलपन में ही गुज़र गया और इस तरह के लोग जिन तक नबियों (अलैहिमुस्सलाम) की दावत नहीं पहुँची, उनमें से हर एक कयामत के दिन एक उज़्र (बहाना) पेश करेगा कि ऐ अल्लाह! अगर मेरे पास अक्ल होती या मुझ तक दावत पहुँचती तो मैं ईमान लाता, उनके इम्तिहान के लिए एक...

1. 'उम्दतुल क़ारी शरह सहीह बुखारी', किताबुल अदब, बाब कुनियतुत मुशरिक, हदीस ६२०८ के तहत, दारुल कुतुब अल-इल्मिया, बेरुत, २२/२३९।
2. 'कन्ज़ुल उम्माल', अध्याय छह उन व्यक्तियों की फ़ज़ीलत में जो सहाबा में से नहीं हैं, मुअस्ससतुत रिसाला, बेरुत, १२/१५०।

पेज ६९१ ऑफ ७५०

فتاوی رضویہ، جلد ۲۹

[عربی اقتباس]: فیہ دلالة ان اللہ تعالی قد یعطی الکافر عوضاً من اعمالہ التی مثلھا یکون قربة لاھل الایمان باللہ تعالی لانہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم اخبر ان عمہ نفعتہ تربیتہ ایاہ وحیاطتہ لہ التخفیف ۱۔ الخ [اردو وضاحت]: اس حدیث سے یہ بھی معلوم ہوا کہ اللہ عزوجل کافر کو بھی اس کے اعمال کا کچھ عوض دیتا ہے، جو اہل ایمان کریں تو قرب الہی پائیں۔ دیکھو نبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے خبر دی کہ حضور کے چچا کو حضور کی خدمت وحمایت نے تخفیف عذاب کا فائدہ دیا الخ۔

امام عارف باللہ سیدی علی متقی مکی قدس سرہ الملکی نے اپنی کتب جلیلہ منج الخمال و کنز العمال و منتخب کنز العمال میں ایک باب منعقد فرمایا:

[باکسڈ متن - عربی]: الباب السادس في اشخاص لیسوا من الصحابة ۲۔ [باکسڈ متن - اردو]: ان شخصوں کے ذکر میں جو صحابی نہیں، اور اسی باب میں ابو طالب وابو جہل وغیرہماذ کر کیا۔

اسی طرح علامہ عبدالرحمٰن بن شیبانی نے تیسر الوصول الی جامع الاصول میں احادیث ذکر ابی طالب کو فصل غیر صحابہ میں وارد کیا اور اس میں صرف حدیث دوم و چہارم و پنجم کو جلوہ دیا۔ اگر ابو طالب کو اسلام نصیب ہوتا تو کیا وہ شخص صحابہ سے خارج ہو سکتا جس نے بچپن سے حضور پر نور سید عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کو گود میں پالا اور مرتے دم تک حضر وسفر کی ہمرکابی سے بہرہ یابی کا غلغلہ ڈالا۔ یونہی امام حافظ الحدیث ابو الفضل شہاب الدین ابن حجر عسقلانی نے کتاب اصابہ فی تمییز الصحابہ میں ابو طالب کو باب الکنی حرف الطاء المہملہ کی قسم رابع میں ذکر کیا۔ یعنی وہ لوگ جنہیں صحابی کہنا مردود و غلط وباطل ہے۔ اسی میں فرماتے ہیں:

[باکسڈ متن - عربی]: ورد من عدة طرق في حق من مات في الفترة ومن ولد مجنوناً ونحو ذلك ان كلامهم يدلى بحجة ويقول لو عقلت او ذكرت لآمنت فترفع لهم نار ويقال لهم ادخلوها فمن دخلها [باکسڈ متن - اردو]: یعنی بہت اسانید سے حدیث آئی کہ جو زمانہ فتترت میں اسلام آنے سے پہلے مر گیا یا مجنون پیدا ہوا اور جنون ہی میں گزر گیا اور اسی قسم کے لوگ جنہیں دعوت انبیاء علیہم الصلوۃ والسلام نہ پہنچی ان میں ہر ایک روز قیامت ایک عذر پیش کرے گا کہ الہی! میں عقل رکھتا یا مجھے دعوت پہنچتی تو میں ایمان لاتا، ان کے امتحان کو ایک

۱ عمدة القاری شرح صحیح البخاری کتاب الادب باب کنیة المشرك تحت الحدیث ۶۲۰۸ دار الکتب العلمیه بیروت ۲۳۹/۲۲ ۲ کنز العمال الباب السادس فی فضل اشخاص لیسوا من الصحابة موسسة الرسالہ بیروت ۱۵۰/۱۲

Fatawa Razawiyya Volume 29

"Fire will be raised and it will be commanded: 'Enter into it.' Whoever obeys and enters it, it will become cool and safe for them. And whoever refuses, will be thrown into the fire by force. We hope that Abdul Muttalib and the members of his household, who passed away before the appearance of the light of Islam, will be among those who will be saved by entering this test fire of their own volition. However, concerning Abu Talib, there are reports that contradict this, as mentioned previously regarding the verse of Bara'ah (Surah At-Tawbah) and the Sahih Hadith stating that he is in a shallow part of the fire (up to the ankles). This is the state of one who dies in disbelief. Had he died on monotheism (Tawhid), he would have been saved from the fire altogether. Numerous Sahih Hadiths and reports confirm his disbelief. - Summary ends."

Then he said: "Al-Mansur took pride over Muhammad ibn Abdullah ibn al-Hasan when he revolted in Madinah and they exchanged famous letters. Among them, in Al-Mansur's letter, it was written: 'When the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) was sent with prophethood, four of his uncles were alive: Hamza, Abbas, Abu Talib, and Abu Lahab. Two of them believed in him, one of whom was my father (Abbas), and two disbelieved in him, one of whom was your father (Abu Talib).'"

---

1. Al-Isabah fi Tamyiz al-Sahabah, Letter 'Ta', Section Four, Abu Talib, Dar Sadir, Beirut, 2/118.
2. Al-Isabah fi Tamyiz al-Sahabah, Letter 'Ta', Section Four, Abu Talib, Dar Sadir, Beirut, 2/118.

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

"आग ऊँची की जाएगी और आदेश दिया जाएगा: 'इसमें प्रवेश करो।' जो आदेश मानेगा और उसमें प्रवेश करेगा, वह उसके लिए ठंडी और सलामती वाली हो जाएगी। और जो इनकार करेगा, उसे ज़बरदस्ती आग में डाल दिया जाएगा। हमें उम्मीद है कि अब्दुल मुत्तलिब और उनके घरवाले, जो इस्लाम के नूर के प्रकट होने से पहले इंतकाल कर गए, वे उन लोगों में होंगे जो अपनी खुशी से इस परीक्षा वाली आग में जाकर मुक्ति पा लेंगे। लेकिन अबू तालिब के बारे में वह रिपोर्ट आई है जो इसे रोकती है, जैसा कि पहले सूरह तौबा की आयत और सहीह हदीस के बारे में उल्लेख किया गया है कि वह पैरों तक की आग में है। यह उस व्यक्ति की स्थिति है जो कुफ़्र (अविश्वास) पर मरा। यदि वह तौहीद (एकेश्वरवाद) पर मरता, तो वह आग से पूरी तरह बच जाता। सहीह और अनेक हदीसें अबू तालिब के कुफ़्र को साबित कर रही हैं। - सारांश।"

फिर फ़रमाया: "अल-मंसूर ने मुहम्मद बिन अब्दुल्ला बिन अल-हसन पर गर्व किया जब उन्होंने मदीना में विद्रोह किया और उनके बीच प्रसिद्ध पत्राचार हुआ। उनमें से, अल-मंसूर के एक पत्र में लिखा था: 'जब हुज़ूर अकदस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की नबूवत ज़ाहिर हुई, तो हुज़ूर के चार चाचा जीवित थे: हमज़ा, अब्बास, अबू तालिब और अबू लहब। उनमें से दो हुज़ूर पर ईमान लाए, जिनमें से एक मेरे पिता (अब्बास) थे, और दो ने हुज़ूर का इनकार किया, जिनमें से एक आपके पिता (अबू तालिब) थे।'"

---

1. अल-इसाबा फी तमयीज़ अल-सहाबा, हर्फ अत-ता, खंड चार, अबू तालिब, दार सादिर, बेरूत, 2/118।
2. अल-इसाबा फी तमयीज़ अल-सहाबा, हर्फ अत-ता, खंड चार, अबू तालिब, दार सादिर, बेरूत, 2/118।

"آگ بلند کی جائے گی اور ارشاد ہوگا اس میں جاؤ جو حکم مانے گا اور اس میں داخل ہوگا وہ اس پر ٹھنڈی اور سلامتی والی ہو جائے گی، اور جو نہ مانے گا جبراً آگ میں ڈالا جائے گا، اور ہمیں امید ہے کہ عبدالمطلب اور انکے گھر والے کہ قبل ظہورِ نورِ اسلام انتقال کرگئے وہ سب انہیں لوگوں میں ہوں گے جو اپنی خوشی سے اس امتحانی آگ میں جاکر ناجی ہوجائیں گے، مگر ابوطالب کے حق میں وہ وارد ہوا جو اسے دفع کرتا ہے، سورہ توبہ شریف کی آیت اور حدیثِ صحیح کا ارشاد کہ وہ پاؤں تک کی آگ میں ہے۔ یہ حال اس کا ہے جو کافر مرے، اگر اخیر وقت اسلام لاکر مرنا ہوتا تو دوزخ سے نجات ملنی چاہیے تھی، صحیح اور کثیر حدیثیں کفر ابی طالب ثابت کر رہی ہیں۔ اہ مختصر۔"

پھر فرمایا: "یعنی جب امام نفس زکیہ محمد بن عبداللہ بن حسن مجتبی رضی اللہ تعالیٰ عنہم نے خلیفہ عباسی عبداللہ بن محمد بن علی بن عبداللہ بن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما مشہور بہ منصور و انبقی پر خروج فرمایا اور مدینہ طیبہ پر تسلط کرکے خلیفہ وامیر المومنین لقب پایا ان میں اور خلیفہ مذکور منصور میں مکاتبات مشہورہ ہوئے ازاں جملہ منصور نے ایک نامہ میں لکھا جب حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی نبوت ظاہر ہوئی حضور کے چار چچازندہ تھے حمزہ و عباس و ابوطالب و ابولہب دو حضور پر ایمان لائے ایک ان میں میرے باپ"

1۔ الاصابۃ فی تمییز الصحابۃ حرف الطاء القسم الرابع ابوطالب دارصادر بیروت ۲/ ۱۱۸ 2۔ الاصابۃ فی تمییز الصحابۃ حرف الطاء القسم الرابع ابوطالب دارصادر بیروت ۲/ ۱۱۸

Fatawa Razawiya, Volume 29

...namely, Hazrat Abbas (may Allah be pleased with him), and two remained disbelievers, one of whom is your father, i.e., Abu Talib.

Besides being a Caliph and part of the Ahl al-Bayt, this Mansur himself was among the scholars of the Tabi' al-Tabi'in, jurists, and traditionists. Imam Jalaluddin Suyuti (may mercy be upon him) wrote in Tarikh al-Khulafa that he was 'Faqih al-Nafs' (deeply insightful in jurisprudence) and 'Jayyid al-Musharaka fi al-'Ilm' (excellent participant in knowledge) and said:

He was born in the year 95 AH, he met his grandfather but did not narrate from him; he narrated from his father and from Ata bin Yasar, and his son al-Mahdi narrated from him.[1]	He was born in 95 AH, saw his grandfather but did not narrate from him, narrated from his father and Ata bin Yasar, and his son Mahdi narrated from him. (T)

And for the great Imam Nafs al-Zakiyya to write thus without hesitation, and for the Imam not to refute it, also shows that the disbelief of Abu Talib was a clear and famous matter. In al-Isaba, it is mentioned after this: "From the poetry of Abdullah bin al-Mu'tazz addressing the Fatimids:

And you are the children of his daughter besides us And we are the children of his Muslim uncle [2]"

Meaning, Abdullah bin Muhammad bin Ja'far bin Muhammad bin Haroon bin Muhammad bin Abdullah bin Muhammad bin Ali bin Abdullah bin Abbas (may Allah be pleased with them both), or say, the son of six Caliphs, Abdullah bin al-Mu'tazz Billah ibn al-Mutawakkil ibn al-Mu'tasim ibn al-Rashid ibn al-Mahdi ibn al-Mansur has a verse addressing some noble Sayyids: "You are the grandsons of the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him), we are not; and we are the sons of the Prophet's Muslim uncle."

In this also there is a clear allusion to the disbelief of Abu Talib. Abdullah is from the people of knowledge and merit. In Hadith, Ali bin Harb, a contemporary of Imam Bukhari and Muslim, a student, and also the praised Imam in the book Al-Ahkam, then Imam Qastalani in Mawahib, says:

We hope that Abdul Muttalib will enter	We hope that Abdul Muttalib and his household...

[1] Tarikh al-Khulafa, accounts of al-Mansur Abu Ja'far Abdullah, Mujtabai Press Delhi, p. 180. [2] Al-Isaba fi Tamyiz al-Sahaba, letter Ta, biography 1685, Abu Talib, Dar Sadr Beirut, 2/118.

फतावा रज़विया, जिल्द २९

...यानी हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु, और दो काफिर रहे, एक उनमें आपके बाप हैं यानी अबू तालिब।

यह मंसूर खलीफा और अहले बैत होने के अलावा खुद भी तबई ताबईन के उलमा, फुकहा और मुहद्दिसीन में से हैं। इमाम जलालुद्दीन सुयूती अलैहिर्रहमा ने तारीखुल खुलफा में उन्हें 'फकीहुन्नफ्स' और 'जय्यिदुल मुशारका फिल इल्म' लिखा है और फरमाया:

वह वर्ष ९५ हिजरी में पैदा हुए, उन्होंने अपने दादा को पाया लेकिन उनसे रिवायत नहीं की; उन्होंने अपने पिता और अता बिन यसार से रिवायत की, और उनके बेटे अल-महदी ने उनसे रिवायत की।[1]	वह ९५ हिजरी में पैदा हुए, अपने दादा को पाया मगर उनसे रिवायत नहीं की, अपने बाप और अता बिन यसार से रिवायत की और उनसे उनके बेटे महदी ने रिवायत की। (त)

और इमाम अजल नफ़्स ज़किया को यूँ बिना हिचकिचाहट लिखकर भेजना और इमाम का उस पर इनकार न फरमाना भी बता रहा है कि अबू तालिब का कुफ्र एक स्पष्ट और प्रसिद्ध बात थी। असाबा में इसके बाद फरमाया गया: "अब्दुल्लाह बिन अल-मुअतज़ के शेरों में से, वह फातिमी लोगों को संबोधित करते हुए कहते हैं:

और तुम उनकी बेटी के बच्चे हो हमारे बजाय और हम उनके मुसलमान चाचा के बच्चे हैं [2]"

यानी अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद बिन जाफ़र बिन मुहम्मद बिन हारून बिन मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद बिन अली बिन अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा, या यूँ कहिए कि छह खलीफाओं के बेटे अब्दुल्लाह बिन अल-मुअतज़ बिल्लाह इब्न अल-मुतवक्किल इब्न अल-मुअतसिम इब्न अल-रशीद इब्न अल-महदी इब्न अल-मंसूर का एक शेर कुछ सादात किराम के संबोधन में है कि: "तुम हुज़ूर अकदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के नवासे हो हम नहीं, और हम हुज़ूर के मुसलमान चाचा के बेटे हैं।"

इसमें भी अबू तालिब के कुफ्र पर साफ़ इशारा मौजूद है। अब्दुल्लाह इल्म व फ़ज़्ल वालों में से हैं। हदीस में अली बिन हर्ब, जो इमाम बुखारी व मुस्लिम के समकालीन और शागिर्द थे, और प्रशंसित इमाम ने किताबुल अहकाम में, फिर इमाम कस्तलानी ने मवाहब में फरमाया है:

हमें उम्मीद है कि अब्दुल मुत्तलिब दाखिल होंगे	हम उम्मीद करते हैं कि अब्दुल मुत्तलिब और उनके अहले बैत...

[1] तारीखुल खुलफा, अहवालुल मंसूर अबू जाफ़र अब्दुल्लाह, मतबा मुजतबाई दिल्ली, पृ. १८०। [2] अल-इसाबा फी तमीज़िल सहाबा, हर्फ अत-ता, जीवनी १६८५, अबू तालिब, दार सादिर बेरुत, २/११८।

पृष्ठ ७५० का ६९३

ہیں یعنی حضرت عباس رضی اللہ تعالٰی عنہ، اور دو کافر رہے ایک ان میں آپ کے باپ ہیں یعنی ابوطالب۔

یہ منصور علاوہ خلیفہ و اہل بیت ہونے کے خود بھی علمائے تبع تابعین و فقہاء محدثین سے ہیں امام جلال الدین سیوطی علیہ الرحمہ نے تاریخ الخلفاء میں انہیں فقیہ النفس وجید المشارکہ فی العلم لکھا اور فرمایا :

ولد سنۃ خمس وتسعین وادرك جدہ ولم یرو عنہ و روی عن ابیہ و عن عطاء بن یسار و عنہ ولدہ المہدی[1]

وہ ۹۵ھ میں پیدا ہوا، اپنے دادا کو پایا مگر ان سے روایت نہیں کی، اپنے باپ اور عطاء بن یسار سے روایت کی اور اس سے اس کے بیٹے مہدی نے روایت کی۔ (ت)

اور امام اجل نفس زکیہ کو یوں بے تامل لکھ بھیجنا اور امام کا اس پر رد نہ فرمانا بھی بتا رہا ہے کہ کفر ابی طالب واضح و مشہور بات تھی، اصابہ میں اس کے بعد فرمایا : ومن شعر عبداللہ بن المعتز یخاطب الفاطمیین ،

وانتم بنو بنتہ دوننا ونحن بنو عمہ المسلم [2]

یعنی عبد اللہ بن محمد بن جعفر بن محمد بن ہارون بن محمد بن عبد اللہ بن محمد بن علی بن عبد اللہ بن عباس رضی اللہ تعالٰی عنہما ، یا یوں کہیے کہ چھ خلفاء کے بیٹے عبد اللہ بن المعتز باللہ ابن المتوکل ابن المعتصم ابن الرشید ابن المہدی ابن المنصور کا ایک شعر بعض سادات کرام کے خطاب میں ہے کہ : " تم حضور اقدس صلی اللہ تعالی علیہ وسلم کے نواسے ہو ہم نہیں، اور ہم حضور کے مسلمان چچا کے بیٹے ہیں "۔

اس میں بھی کفر ابی طالب پر صاف تعریض موجود ہے عبد اللہ اہل علم و فضل سے ہیں، حدیث میں علی بن حرب معاصر امام بخاری و مسلم کے شاگرد نیز امام ممدوح کتاب الاحکام پھر امام قسطلانی مواہب میں فرماتے ہیں :

نحن نرجو ان یدخل عبد المطلب ہم امید کرتے ہیں کہ عبد المطلب اور ان کے اہلبیت

1 تاریخ الخلفاء احوال المنصور ابو جعفر عبد اللہ مطبع مجتبائی دہلی ص ۱۸۰ 2 الاصابۃ فی تمییز الصحابۃ حرف الطاء ترجمہ ۱۶۸۵ ابوطالب دار صادر بیروت ۲ / ۱۱۸

[Arabic Box 1]: And his household (ahl al-bayt) will enter Paradise except for Abu Talib, for he reached the time of the Prophethood and did not believe. (End of excerpt) [Urdu Box 1]: All will enter Paradise except Abu Talib, because he witnessed the era of Islam but did not embrace it.

Furthermore, it is stated in Fath al-Bari Sharh Sahih Bukhari:

[Arabic Box 2]: It is among the wonders of coincidence that the uncles of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) who reached the era of Islam were four. Two of them did not embrace Islam and two did. The names of those who did not embrace Islam were contrary to the names of Muslims; they were Abu Talib whose name was Abd Manaf, and Abu Lahab whose name was Abd al-Uzza. In contrast, those who embraced Islam were Hamza and al-Abbas. [Urdu Box 2]: It is a remarkable coincidence that four uncles of the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) were alive during the era of Islam; two did not embrace Islam and two were honored with Islam. The names of the two who did not embrace Islam were already contrary to the names of Muslims. Abu Talib's name was Abd Manaf and Abu Lahab's was Abd al-Uzza. The two who became Muslims had pure and clean names: Hamza and Abbas (may Allah be pleased with them both).

Similarly narrated by Al-Zarqani in Sharh al-Mawahib. Imam Ahmad ibn Muhammad al-Khatib al-Qastallani states in Al-Mawahib al-Ladunniyyah and Minah al-Muhammadiyyah:

[Arabic Box 3]: Al-Abbas was the youngest of his (peace and blessings of Allah be upon him) uncles, and none of them embraced Islam except him and Hamza. [Urdu Box 3]: Abbas (may Allah be pleased with him) was the youngest uncle of the Master of the World (peace and blessings of Allah be upon him). Among the uncles of the Holy Prophet, only he and Hazrat Hamza became Muslims, and that's it.

Imam Muhammad Muhammad Muhammad ibn Amir al-Hajj in Halya Sharh Munya, towards the end of the section on prayer, in discussing the issue that praying for the forgiveness of a disbeliever is impermissible, after reciting the second verse, states:

[Arabic Box 4]: It is established in the two Sahihs that the reason for revelation... [Urdu Box 4]: It has been established in the two Sahihs (Bukhari and Muslim) that the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him)...

Footnotes: 1. Al-Mawahib al-Ladunniyyah, the issue of the salvation of his parents (peace and blessings of Allah be upon him), the author's view on the matter, Al-Maktab al-Islami Beirut 1/183, Al-Isabah fi Tamyiz al-Sahabah, letter Ta, entry 685 Abu Talib, Dar Sadir Beirut 2/118. 2. Fath al-Bari Sharh Sahih al-Bukhari, Book of Merits, Chapter on the Story of Abu Talib, Mustafa al-Babi Egypt 8/296, Sharh al-Zarqani 'ala al-Mawahib al-Ladunniyyah, Year of Sorrow, death of Khadija and Abu Talib, Dar al-Ma'rifah Beirut 1/296. 3. Al-Mawahib al-Ladunniyyah, Second Objective, Fourth Chapter, Al-Maktab al-Islami Beirut 2/111.

[अरबी बॉक्स 1]: और उनके घर वाले (अहल अल-बैत) जन्नत में जाएंगे सिवाय अबू तालिब के, क्योंकि उन्होंने नबी का ज़माना पाया और ईमान नहीं लाए। (संक्षेप में) [उर्दू बॉक्स 1]: सब जन्नत में जाएंगे सिवाय अबू तालिब के कि इस्लाम का ज़माना पाया और इस्लाम न लाए।

साथ ही फ़त्ह अल-बारी शरह सहीह बुखारी में फरमाते हैं:

[अरबी बॉक्स 2]: यह इत्तेफ़ाक़ के अजूबों में से है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के जो चाचा इस्लाम के दौर में पहुंचे वे चार थे। उनमें से दो इस्लाम नहीं लाए और दो इस्लाम लाए। जो इस्लाम नहीं लाए उनके नाम मुसलमानों के नामों के विपरीत थे; वे अबू तालिब थे जिनका नाम अब्द मुनाफ़ था, और अबू लहब जिनका नाम अब्द अल-उज़्ज़ा था। इसके विपरीत जो इस्लाम लाए वे हम्ज़ा और अल-अब्बास थे। [उर्दू बॉक्स 2]: अजायब इत्तेफ़ाक़ से है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चार चाचा ज़माना-ए-इस्लाम में ज़िंदा थे, दो इस्लाम न लाए और दो मुशर्रफ ब-इस्लाम हुए, वो दो के इस्लाम न लाए उनके नाम भी पहले ही से मुसलमानों के नाम के खिलाफ थे। अबू तालिब का नाम अब्द मुनाफ था और अबू लहब का अब्द अल-उज़्ज़ा, और दो कि मुसलमान हुए उनके नाम पाक व साफ़ थे हम्ज़ा व अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा।

इसी तरह अज़-ज़रक़ानी ने शरह अल-मवाहिब में उल्लेख किया है। इमाम अहमद बिन मुहम्मद खतीब क़स्तलानी 'मवाहिब अल-लदुन्निया' और 'मिनह अल-मुहम्मदिया' में फरमाते हैं:

[अरबी बॉक्स 3]: अल-अब्बास उनके(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) चाचाओं में सबसे छोटे थे और उनमें से उनके और हम्ज़ा के सिवाय किसी ने इस्लाम स्वीकार नहीं किया। [उर्दू बॉक्स 3]: अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के सब में छोटे चाचा थे, हुज़ूर के एमाम (चाचाओं) में सिर्फ ये और हज़रत हम्ज़ा मुसलमान हुए बस।

इमाम मुहम्मद मुहम्मद मुहम्मद इब्न अमीर अल-हज 'हुलिया शरह मुन्या' के आखिर में नमाज़ के अध्याय में इस मसले के बयान में कि काफिर के लिए दुआ-ए-मगफिरत नाजायज़ है, दूसरी आयत की तिलावत करके फरमाते हैं:

[अरबी बॉक्स 4]: सहीहैन (बुखारी और मुस्लिम) में साबित हो चुका है कि नुज़ूल (अवतरण) का कारण... [उर्दू बॉक्स 4]: सहीहैन में साबित हो चुका है कि नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि...

पाद-टिप्पणी (Footnotes): 1. अल-मवाहिब अल-लदुन्निया, वालिदैन की नजात का मुद्दा, लेखक की राय, अल-मक्तब अल-इस्लामी बेरुत 1/183, अल-इसबा फ़ी तमयीज़ अल-सहाबा, हर्फ़ ता, अनुवाद संख्या 685 अबू तालिब, दार सादिर बेरुत 2/118। 2. फ़त्ह अल-बारी शरह सहीह अल-बुखारी, किताबुल मनाकिब, बाब अबू तालिब की कहानी, मुस्तफा अल-बाबी मिस्र 8/296, शरह अज़-ज़रक़ानी अलल मवाहिब अल-लदुन्निया, ग़म का साल, खदीजा और अबू तालिब की वफ़ात, दारुल मारिफ़ा बेरुत 1/296। 3. अल-मवाहिब अल-लदुन्निया, दूसरा मक़सद, चौथा अध्याय, अल-मक्तब अल-इस्लामी बेरुत 2/111।

पेज 694/750

[عربی باکس ۱]: وآل بیته الجنة الا ابا طالب فانه ادرك البعثة ولم یؤمن اھ باختصار۔ [اردو باکس ۱]: سب جنت میں جائیں گے سوا ابوطالب کے کہ زمانہ اسلام پایا اور اسلام نہ لائے۔

نیز فتح الباری شرح صحیح بخاری میں فرماتے ہیں:

[عربی باکس ۲]: من عجائب الاتفاق ان الذین ادرکھم الاسلام من اعمام النبي صلی اللہ تعالی علیہ وسلم اربعة لم یسلم منھم اثنان واسلم اثنان وکان اسم من لم یسلم ینافی اسامی المسلمین وھما ابوطالب و اسمه عبد مناف و ابولھب و اسمه عبدالعزی بخلاف من اسلم وھما حمزة والعباس۔ [اردو باکس ۲]: عجائب اتفاق سے ہے کہ نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے چار چچا زمانۂ اسلام میں زندہ تھے، دو اسلام نہ لائے اور دو مشرف باسلام ہوئے، وہ دو کے اسلام نہ لائے ان کے نام بھی پہلے ہی سے مسلمانوں کے نام کے خلاف تھے۔ ابو طالب کا نام عبد مناف تھا اور ابو لہب کا عبدالعزی، اور دو کہ مسلمان ہوئے انکے نام پاک وصاف تھے حمزہ و عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما۔

وکذا اثرہ الزرقانی فی شرح المواہب۔ امام احمد بن محمد خطیب قسطلانی مواہب اللدنیہ و منح محمدیہ میں فرماتے ہیں:

[عربی باکس ۳]: کان العباس اصغر اعمامه صلی اللہ تعالی علیه وسلم ولم یسلم منھم الا ھو وحمزة۔ [اردو باکس ۳]: عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہ سید عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے سب میں چھوٹے چچا تھے، حضور کے اعمام میں صرف یہ اور حضرت حمزہ مسلمان ہوئے وبس۔

امام محمد محمد محمد ابن امیر الحاج حلیہ شرح منیہ اواخر صلوٰۃ اس مسئلہ کے بیان میں کہ کافر کے لیے دعائے مغفرت ناجائز ہے، آیت دوم تلاوت کرکے فرماتے ہیں:

[عربی باکس ۴]: ثبت في الصحيحين ان سبب نزول [اردو باکس ۴]: صحیحین میں ثابت ہو چکا ہے کہ نبی صلی اللہ تعالیٰ

حواشی: 1. المواهب اللدنية قضية نجاة والديه صلى الله تعالى عليه وسلم راي المصنف في المسئلة المكتب الاسلامي بيروت ۱/ ۱۸۳، الاصابة في تمييز الصحابة حرف الطاء ترجمہ ۶۸۵ ابو طالب دارصادر بيروت ۲/ ۱۱۸ 2. فتح البارى شرح صحيح البخارى كتاب المناقب باب قصه ابي طالب مصطفى البابى مصر ۸/ ۲۹۶، شرح الزرقاني على المواهب اللدنية عام الحزن وفاة خديجه وابي طالب دارالمعرفۃ بيروت ۱/ ۲۹۶ 3. المواهب اللدنية المقصد الثانى الفصل الرابع المكتب الاسلامى بيروت ۲/ ۱۱۱

صفحہ ۶۹۴ از ۷۵۰

Fatwa Razawiyya Volume 29

[Boxed Text] Ayah: Regarding the words of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) for Abu Talib: "I will surely seek forgiveness for you until I am forbidden from doing so." (Meaning he said, "Until I am prohibited, I will seek forgiveness for you.") Upon this, this verse was revealed.

[Main Text] Imam Muhi-us-Sunnah Baghavi in Ma'alim al-Sharif, first ruku of Surah Baqarah, under the words of Allah Almighty: "Indeed, those who disbelieve - it is all the same for them...", then Qadi Husain bin Muhammad Diyar Bakri Maliki Makki in the book Al-Khamis says: "Disbelief (Kufr) is of four types: Disbelief of denial (Inkar), Disbelief of rejection (Juhud), Disbelief of obstinacy (Anad), and Disbelief of hypocrisy (Nifaq). Disbelief of denial is that one does not know Allah Almighty in their heart and does not acknowledge Him with their tongue. Disbelief of obstinacy is when one knows Allah in their heart and acknowledges Him with their tongue but refuses to follow His religion, like the disbelief of Abu Talib, where he says:"

And I surely know that the religion of Muhammad Is the best of all religions in the world. Were it not for blame or fear of insult, You would have found me clearly and open-heartedly accepting it.

Meaning, disbelief of obstinacy is to know Allah Almighty in the heart and to even say it with the tongue, but to refrain from submission and devotion, like the disbelief of Abu Talib, as shown in this verse. By Allah! I know that the religion of Muhammad (peace and blessings of Allah be upon him) is better than all the religions of the world. If it were not for avoiding blame or taunts, you would have seen how clearly and open-heartedly I would have accepted this religion. The mentioned Imam, after explaining these four types, says: "All these types are equal in that whoever meets Allah Almighty with any one of them, He will not forgive him." All these types are equal in this ruling, that whoever possesses any one of these types...

[Footnotes] 1 Hilyat al-Mahalli Sharh Munyat al-Musalli 2 Tarikh al-Khamis, Wafat Abi Talib, Muassasah Sha'ban Beirut 1/301, Ma'alim al-Tanzil Tafsir al-Baghawi under Ayah 2/6 Dar al-Kutub al-Ilmiyah Beirut 1/21 3 Ma'alim al-Tanzil Tafsir al-Baghawi under Ayah 2/6 Dar al-Kutub al-Ilmiyah Beirut 1/21

फ़तावा रज़विया खंड २९

[बक्से में पाठ] आयत: पैगंबर (उन पर अल्लाह की शांति और आशीर्वाद हो) के अबू तालिब के लिए कहे गए शब्द: "मैं निश्चित रूप से तुम्हारे लिए क्षमा मांगूंगा जब तक कि मुझे ऐसा करने से मना न कर दिया जाए।" (यानी उन्होंने कहा, "जब तक मुझे रोका नहीं जाता, मैं तुम्हारे लिए क्षमा मांगता रहूंगा।") इस पर यह आयत उतरी।

[मुख्य पाठ] इमाम मुही-उस-सुन्ना बगवी 'मआलिम शरीफ' के पहले रुकू सूरह बकराह में अल्लाह तआला के कथन "निस्संदेह, जिन्होंने कुफ्र किया - उनके लिए समान है..." के तहत, फिर काज़ी हुसैन बिन मुहम्मद दयार बकरी मलिकी मक्की अपनी पुस्तक 'अल-ख़मीस' में कहते हैं: "कुफ्र चार प्रकार का होता है: इनकार का कुफ्र, जुहूद (अस्वीकृति) का कुफ्र, अनाद (हठ) का कुफ्र और निफ़ाक़ (पाखंड) का कुफ्र। इनकार का कुफ्र यह है कि कोई अल्लाह अज़्ज़वजल को न दिल से जाने और न ज़बान से माने। अनाद का कुफ्र यह है कि व्यक्ति अल्लाह को दिल से जानता है और ज़बान से भी स्वीकार करता है, लेकिन उसके धर्म का पालन करने से इनकार करता है, जैसे अबू तालिब का कुफ्र, जहां वह कहते हैं:"

और मैं निश्चित रूप से जानता हूँ कि मुहम्मद का धर्म दुनिया के सभी धर्मों में सबसे अच्छा धर्म है। यदि दोषारोपण या अपमान का डर न होता, तो तुम मुझे स्पष्ट रूप से और खुले दिल से इसे स्वीकार करते हुए पाते।

अर्थात, अनाद का कुफ्र यह है कि अल्लाह तआला को दिल से भी जानना और ज़बान से भी कहना, लेकिन अधीनता और समर्पण से दूर रहना, जैसे अबू तालिब का कुफ्र, जैसा कि इस कविता में है। अल्लाह की कसम! मैं जानता हूँ कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का धर्म दुनिया के सभी धर्मों से बेहतर है। अगर लोक-निंदा या तानों से बचना न होता, तो तुम मुझे देखते कि मैं कितनी साफ-दिली के साथ इस धर्म को स्वीकार कर लेता। उल्लिखित इमाम इन चारों प्रकारों का वर्णन करने के बाद कहते हैं: "ये सभी प्रकार इस बात में समान हैं कि जो कोई भी इनमें से किसी एक के साथ अल्लाह तआला से मिलेगा, वह उसे क्षमा नहीं करेगा।" ये सभी प्रकार इस नियम में एक समान हैं कि जो कोई इनमें से किसी भी प्रकार का...

[पाद लेख] 1 हिलयत अल-महल्ली शरह मुनियत अल-मुसल्ली 2 तारीख अल-ख़मीस, वफ़ात अबी तालिब, मुअस्सस शबान बेरूत १/३०१, मआलिम अल-तन्ज़ील तफ़सीर अल-बगवी आयत २/६ के

तहत, दार अल-कुतुब अल-इल्मिया बेरूत १/२१ 3 मआलिम अल-तन्ज़ील तफ़सीर अल-बगवी आयत २/६ के तहत, दार अल-कुतुब अल-इल्मिया बेरूत १/२१

पृष्ठ ६९५ का ७५०

الایہ قولہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم ابی طالب لاستغفرن علیہ وسلم نے ابو طالب کے لیے دعائے مغفرت کی تھی۔ لك مالم انہ عنک 1۔ (یعنی یہ کہا تھا کہ جب تک مجھے منع نہ کیا گیا میں تیرے لیے استغفار کروں گا) اس پر یہ آیت اتری۔

امام محی السنہ بغوی معالم شریف اول رکوع سورہ بقر میں زیر قولہ تعالٰی ان الذین کفرو اسواء علیہم، پھر قاضی حسین بن محمد دیار بکری مالکی مکی کتاب الخمس میں فرماتے ہیں، کفر چار قسم ہے کفر انکار وکفر حجود و کفر عناد و کفر نفاق، کفر انکار یہ کہ اللہ عزوجل کو نہ دل سے جانے اور نہ زبان سے مانے مگر دل میں نہ جانے۔ وکفر العناد ان یعرف اللہ بقلبہ ویعترف بلسانہ ولا یدین بہ ککفر ابی طالب حیث یقول 2۔

ولقد علمت بأن دین محمد من خیر ادیان البریۃ دینا لولا الملامۃ او حذار مسبۃ لو جدتنی سمحا بذاك مبینا

یعنی کفر عنادیہ کہ اللہ تعالیٰ کو دل سے بھی جانے اور زبان سے بھی کہے مگر تسلیم و گرویدگی سے باز رہے جیسے ابوطالب کا کفر کہ یہ شعر کہے۔ واللہ! میں جانتا ہوں کہ محمد صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کا دین تمام جہان کے دین سے بہتر ہے، اگر ملامت یا طعنے سے بچنا نہ ہوتا تو تو مجھے دیکھتا کہ میں کیسی اہلِ دلی کے ساتھ صاف صاف اس دین کو قبول کر لیتا۔ امام ممدوح یہ چاروں قسمیں بیان کر کے فرماتے ہیں: جمیع ھذہ الاصناف سواء فی ان من لقی اللہ تعالیٰ بواحد منھا لایغفر لہ 3۔ یہ سب قسمیں اس حکم میں یکساں ہیں کہ جو ان میں سے کسی قسم کا

1 حلية المحلى شرح منية المصلى 2 تاريخ الخميس وفاة ابى طالب موسسة شعبان بيروت ١ / ٣٠١ ، معالم التنزيل تفسير البغوى تحت الآية ٢ / ۶ دار الكتب العلمية بيروت ١/ ٢١ 3 معالم التنزيل تفسير البغوى تحت الآية ٢ / ۶ دار الكتب العلمية بيروت ١/ ٢١

Fatawa Razawiyyah, Volume 29

If one meets Allah (Exalted and Glorified) in a state of disbelief (kufr), He will never forgive him.

Imam Shihab al-Din Abu al-Abbas Ahmad ibn Idris al-Qarafi in "Sharh al-Tanqih," and then Imam al-Qastalani in "al-Mawahib," described a type of disbeliever as follows:

One who believes outwardly and inwardly but disbelieves due to a lack of submission (adh'an) to the branches (of faith), as narrated about Abu Talib. He used to say: "I know for certain that what my nephew says is the truth. If I did not fear that the women of Quraysh would reproach me, I would have followed him." In his poetry, he says: "Indeed, they know that our son is not a liar for sure, nor can any falsehood be attributed to his words." This is explicit verbal acknowledgement and heartfelt belief, yet there was no submission.	Meaning, a disbeliever is one who knows in his heart and acknowledges with his tongue, yet does not bring about submission. For example, it is narrated from Abu Talib that: "Indeed, I surely know that whatever my nephew (peace and blessings of Allah be upon him) says is certainly the truth. If it were not for the fear that the women of Quraysh would shame me, I would have certainly become his follower." And in one of his verses, he said: "By God, the disbelievers of Quraysh know well that our son (peace and blessings of Allah be upon him) is surely truthful, and God forbid, no word contrary to the truth is attributed to him." So, this is verbal declaration and heartfelt conviction, but submission did not take place.

Imam Ibn al-Athir al-Jazari in "al-Nihayah," and then Allamah al-Zarqani in "Sharh al-Mawahib," state:

Obstinate disbelief (Kufr 'Inad) is when one knows him (the Prophet) in his heart and acknowledges him with his tongue, but does not follow his religion, like Abu Talib.	Obstinate disbelief is to recognize with the heart and confess with the tongue, but refrain from submission and obedience, like Abu Talib.

Allamah Majd al-Din Firuzabadi in "Safar al-Sa'adah" says:

Like the uncle of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him), Abu Talib...

When the uncle of the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him), Abu Talib...

1. Al-Mawahib al-Ladunniyyah, Year of Sorrow, Death of Abu Talib, Al-Maktab al-Islami Beirut, 1/265.
2. Sharh al-Allamah al-Zarqani 'ala al-Mawahib al-Ladunniyyah, Death of Khadijah and Abu Talib, Dar al-Ma'rifah Beirut, 1/295.

फ़तावा रज़विया, खंड 29

यदि कोई कुफ़्र (अविश्वास) की स्थिति में अल्लाह (अज़्ज़ा व जल्ला) से मिलता है, तो वह उसे कभी नहीं बख्शेगा।

इमाम शिहाबुद्दीन अबुल अब्बास अहमद बिन इदरीस कुरानी ने "शरह अल-तनकीह" में, और फिर इमाम कस्तलानी ने "मवाहिब" में काफ़िरों की एक श्रेणी का इस प्रकार वर्णन किया है:

वह जो ज़ाहिर और बातिन (बाहरी और आंतरिक) रूप से विश्वास करता है लेकिन शाखाओं (ईमान के अंगों) के प्रति समर्पण (अदआन) की कमी के कारण कुफ़्र करता है, जैसा कि अबू तालिब के बारे में वर्णित है। वह कहा करते थे: 'मैं निश्चित रूप से जानता हूँ कि मेरा भतीजा जो कहता है वह सच है। यदि मुझे यह डर न होता कि कुरैश की महिलाएँ मुझे धिक्कारेंगी, तो मैं उनका अनुसरण करता।' अपनी कविता में वह कहते हैं: 'निश्चित रूप से वे जानते हैं कि हमारा बेटा निश्चित रूप से झूठा नहीं है, और न ही उनके शब्दों के लिए कोई असत्य कहा जा सकता है।' तो यह ज़ुबान से स्पष्टता और दिल से विश्वास है, सिवाय इसके कि समर्पण नहीं हुआ।

यानी, एक काफ़िर वह है जो दिल से जानता है और ज़ुबान से स्वीकार करता है, लेकिन समर्पण नहीं लाता। जैसे अबू तालिब से वर्णित है कि: "बेशक, मैं निश्चित रूप से जानता हूँ कि मेरे भतीजे (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) जो कुछ भी कहते हैं वह निश्चित रूप से सत्य है। यदि यह डर न होता कि कुरैश की औरतें मुझे दोष देंगी, तो मैं ज़रूर उनका अनुयायी हो जाता।" और अपने एक शेर में कहा: "खुदा की कसम, कुरैश के काफ़िर अच्छी तरह जानते हैं कि हमारा बेटा (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) यकीनन सच्चा है, और खुदा न करे, कोई शब्द सत्य के विपरीत उनकी ओर नहीं जोड़ा जाता।" तो यह ज़ुबान से स्पष्ट घोषणा और दिल से विश्वास है, लेकिन समर्पण नहीं हुआ।

इमाम इब्न अल-असीर अल-जज़री "निहाया" में, फिर अल्लामा ज़रकानी "शरह मवाहिब" में फ़रमाते हैं:

हठपूर्ण कुफ़्र (कुफ़्र इनाद) वह है जब कोई उन्हें (पैगंबर को) अपने दिल से पहचानता है और अपनी ज़ुबान से स्वीकार करता है, लेकिन उनके धर्म का पालन नहीं करता, जैसे अबू तालिब।

कुफ़्र इनादिया यह है कि दिल से पहचाने और ज़ुबान से इकरार करे मगर तस्लीम व इनकियाद (समर्पण और आज्ञाकारिता) से बाज़ रहे जैसे अबू तालिब।

अल्लामा मजदुद्दीन फ़िरोज़ाबादी "सफ़र अस-सआदा" में फ़रमाते हैं:

जब नबी करीम (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) के चचा अबू तालिब...	जब नबी करीम (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) के चचा अबू तालिब...

1. अल-मवाहिब अल-लदुन्निया, आम अल-हुज़न, वफ़ात अबी तालिब, अल-मकतब अल-इस्लामी बेरूत, 1/265
2. शरह अल-अल्लामा अज़-ज़रकानी अला अल-मवाहिब अल-लदुन्निया, वफ़ात खदीजा व अबी तालिब, दार अल-मारिफ़ा बेरूत, 1/295

पृष्ठ 696/750

کفر کر کے اللہ عزوجل سے ملے گا وہ کبھی اسے نہ بخشے گا۔

امام شہاب الدین ابوالعباس احمد بن ادریس قرافی نے شرح التنقیح پھر امام قسطلانی نے مواہب میں کفار کی ایک قسم یوں بیان فرمائی:

من آمن بظاہرہ و باطنہ و کفر بعدم الاذعان للفروع کما حکیٰ عن ابی طالب انہ کان یقول انی لا علم ان ما یقولہ ابن اخی لحق ولو لا انی اخاف ان تعیرنی نساء قریش لاتبعتہ وفی شعرہ یقول: لقد علموا ان ابننا لا مکذب یقیناً ولا یعزی لقول الاباطل فہذا تصریح باللسان و اعتقاد بالجنان غیر انہ لم یذعن۔

یعنی ایک کافر وہ ہے جو قلب سے عارف زبان سے معترف ہو مگر اذعان نہ لائے جیسے ابوطالب سے مروی کہ بے شک میں یقیناً جانتا ہوں کہ جو کچھ میرے بھتیجے (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) فرماتے ہیں ضرور حق ہے اگر اس کا اندیشہ نہ ہوتا کہ قریش کی عورتیں مجھے عیب لگائیں گی تو ضرور میں اُن کا تابع ہو جاتا اور اپنے ایک شعر میں کہا: خدا کی قسم کافران قریش خوب جانتے ہیں کہ ہمارے بیٹے (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) یقیناً سچے ہیں اور معاذ اللہ کوئی کلمہ خلاف حق کہنا، ان کی طرف نسبت نہیں کیا جاتا۔ تو یہ زبان سے تصریح اور دل سے اعتقاد سب کچھ ہے مگر اذعان نہ ہوا۔

امام ابن اثیر جزری نہایہ، پھر علامہ زرقانی شرح مواہب میں فرماتے ہیں:

کفر عناد ہو ان یعرفہ بقلبہ و یعترف بلسانہ ولا یدین بہ کابی طالب۔

کفر عنادیہ ہے کہ دل سے پہچانے اور زبان سے اقرار کرے مگر تسلیم و انقیاد سے باز رہے جیسے ابوطالب۔

علامہ مجد الدین فیروز آبادی سفر السعادۃ میں فرماتے ہیں:

چوں عم نبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم ابو طالب

جب نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے چچا ابوطالب

1. المواہب اللدنیہ عالم الحزن وفاۃ ابی طالب المکتب الاسلامی بیروت ۱/ ۲۶۵
2. شرح العلامۃ الزرقانی علی المواہب اللدنیہ وفاۃ خدیجہ و ابی طالب دارالمعرفۃ بیروت ۱/ ۲۹۵

Fatawa Ridawiyya, Volume 29

He fell ill, and despite him being a polytheist, the Prophet (peace be upon him) visited him and invited him to Islam, which Abu Talib did not accept. — Summary from Source 1	He fell ill, so despite his being a disbeliever, the Prophet (peace and blessings be upon him) visited him and invited him to accept Islam, which Abu Talib did not accept. (T)
Sheikh Muhaqqiq states in 'Madarij al-Nubuwwah':	
Authentic hadiths have established the disbelief (kufr) of Abu Talib. — Source 2	Authentic hadith has established the disbelief of Abu Talib. (T)
Then after mentioning the hadiths, he said:	
And in 'Rawdat al-Ahbab' also, reports regarding Abu Talib's death in disbelief have been brought forth... etc. — Source 3	In 'Rawdat al-Ahbab' as well, hadiths regarding Abu Talib dying in disbelief have been brought. etc. (T)
Bahr al-Ulum, Malik al-Ulama Mawlana Abd al-Ali states in 'Fawatih al-Rahmut' (commentary on 'Muslim al-Thubut'):	
The hadiths regarding his disbelief are well-known. Regarding his uncle Abu Talib, the verse was revealed to the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him): "Indeed, [O Muhammad], you do not guide whom you like" [Quran 28:56], as mentioned in Sahih Muslim and Sunan al-Tirmidhi. It has been established in an authentic report from Imam Muhammad al-Baqir—may Allah honor his face and the faces of his noble ancestors—that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) made Talib and Aqil heirs to their father but did not make Ali and Ja'far heirs. Ali (may Allah honor his noble face) said: "For this reason, we abandoned our share in the Valley (Shi'b) of	The hadiths about his disbelief are famous. Regarding his uncle Abu Talib, this verse was revealed to the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him): "O Prophet! You do not guide whom you like," as found in Sahih Muslim and Tirmidhi. It has been proven in an authentic report from Imam Muhammad Baqir—may Allah honor his and his ancestors' faces—that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) made Talib and Aqil heirs to their father, but did not make Ali and Ja'far heirs. Hazrat Ali (may Allah honor his noble face) said: "Because of this, we relinquished

Abu Talib." Thus it is in Muwatta Imam Malik. — Source 4

our share in the Valley of Abu Talib." It is likewise in Muwatta Imam Malik. (T)

1. Sharh Safar al-Sa'adat, Chapter on visiting the sick and funeral prayers, Maktaba Nooria Rizvia, Sukkur, p. 449.
2. Madarij al-Nubuwwah, Death of Abu Talib, Maktaba Nooria Rizvia, Sukkur, Vol. 2, p. 48.
3. Madarij al-Nubuwwah, Death of Abu Talib, Maktaba Nooria Rizvia, Sukkur, Vol. 2, p. 49.
4. Fawatih al-Rahmut Sharh Muslim al-Thubut, appended to al-Mustasfa, Manshurat al-Sharif al-Radi, Qom, Iran, Vol. 1, pp. 152 & 153.

फतावा रजविया, जिल्द 29

वह बीमार हुए, बावजूद इसके कि वे मुशरिक थे, हुज़ूर ने उनकी अयादत फरमाई और इस्लाम की दावत दी और अबू तालिब ने कबूल न किया। संक्षेप में—1

बीमार हो गए, तो उनके काफ़िर होने के बावजूद हुज़ूर अलैहिस्सलातु वसल्लम ने उनकी अयादत की और इस्लाम लाने की दावत दी जिसे अबू तालिब ने स्वीकार नहीं किया। (त)

शैख़ मुहक्क़िक 'मदारिजुन्नुबुव्वह' में फ़रमाते हैं:

सही हदीस ने अबू तालिब के कुफ़्र को साबित किया है—2

सही हदीस ने अबू तालिब के कुफ़्र को साबित कर दिया है। (त)

फिर हदीसों के ज़िक्र के बाद फ़रमाया:

और 'रौज़तुल अहबाब' में भी अबू तालिब की मौत कुफ़्र पर होने की खबरें लाई गई हैं... आदि—3

'रौज़तुल अहबाब' में भी अबू तालिब के कुफ़्र पर मरने की हदीसें लाई गई हैं। आदि (त)

बह्रुल उलूम मलिकुल उलमा मौलाना अब्दुल अली 'फ़वातिहुर रहमूत' शरह मुस्लिम अस्-सुबूत में फ़रमाते हैं:

उनके कुफ़्र की हदीसें मशहूर हैं, नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर उनके चाचा अबू तालिब के बारे में यह आयत नाज़िल हुई: "बेशक जिसे आप चाहें उसे हिदायत नहीं दे सकते" जैसा कि सही मुस्लिम और सुनन तिर्मिज़ी में है। इमाम मुहम्मद बाक़िर (अल्लाह उनके और उनके बुज़ुर्गों के चेहरों को सम्मानित करे) से सही खबर में साबित हो चुका है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तालिब और अकील को उनके बाप का वारिस बनाया मगर अली और जाफ़र को वारिस नहीं बनाया। हज़रत अली (करमल्लाहु वजहुल करीम) ने फरमाया: इसी वजह से हमने

उनके कुफ़्र की हदीसें मशहूर हैं, नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर उनके चाचा अबू तालिब के बारे में यह आयत नाज़िल हुई: "ऐ नबी! आप हिदायत नहीं देते जिसे दोस्त रखो" जैसा कि सही मुस्लिम और तिर्मिज़ी में है। तहकीक इमाम मुहम्मद बाक़िर (अल्लाह तआला ने उनके और उनके आबा-ओ-अजदाद के चेहरों को मुकर्रम बनाया) से खबर-ए-सही में साबित हो चुका है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तालिब और अकील को उनके बाप का वारिस बनाया मगर अली और जाफ़र को वारिस नहीं बनाया। हज़रत अली

शेब-ए-अबू तालिब में अपना हिस्सा छोड़ दिया। मुअत्ता इमाम मालिक में भी ऐसा ही है—4

(करमल्लाहु वजहुल करीम) ने फरमाया: इसी वजह से हमने शेब-ए-अबू तालिब से अपना हिस्सा तर्क कर दिया। मुअत्ता इमाम मालिक में यूँही है। (त)

1. शरह सफ़र अस्-सआदत, बीमारों की अयादत और जनाज़ा की नमाज़ का बयान, मक्तबा नूरिआ रिज़विआ, सुक्कुर, पृ. 449.
2. मदारिजुन्नुबुव्वह, अबू तालिब का वफ़ात पाना, मक्तबा नूरिआ रिज़विआ, सुक्कुर, भाग 2, पृ. 48.
3. मदारिजुन्नुबुव्वह, अबू तालिब का वफ़ात पाना, मक्तबा नूरिआ रिज़विआ, सुक्कुर, भाग 2, पृ. 49.
4. फ़वातिहुर रहमूत शरह मुस्लिम अस्-सुबूत, अल-मुस्तस्फ़ा के ज़ैल में, मन्शूरात अल-शरीफ़ अल-राज़ी, क़ोम, ईरान, भाग 1, पृ. 152 और 153.

بیمار شد با وجود آنکہ مشرک بود او را عیادت فرمود و دعوت اسلام کرد وابو طالب قبول نہ کرد اھ ملخصاً- 1

بیمار ہو گئے تو ان کے کافر ہونے کے باوجود حضور علیہ الصلوۃ و السلام نے ان کی عیادت کی اور اسلام لانے کی دعوت دی جسے ابوطالب نے قبول نہ کیا۔ (ت)

شیخ محقق مدارج النبوۃ میں فرماتے ہیں:

حدیث صحیح اثبات کردہ است برائے ابوطالب کفر را- 2

حدیث صحیح نے کفر ابوطالب کو ثابت کر دیا ہے۔ (ت)

پھر بعد ذکر احادیث فرمایا:

و در روضۃ الاحباب نیز اخبار موت ابوطالب بر کفر آوردہ الخ- 3

روضۃ الاحباب میں بھی ابوطالب کے کفر پر مرنے کی احادیث لائی گئی ہیں۔ الخ (ت)

بحر العلوم ملک العلماء مولانا عبد العلیٰ فواتح الرحموت شرح مسلم الثبوت میں فرماتے ہیں:

احادیث کفرہ شہیرۃ وقد نزل فی حق رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فی شان عمہ ابی طالب "انک لا تھدی من احببت" کما فی صحیح مسلم وسنن الترمذی وقد ثبت فی الخبر الصحیح عن

حدیثیں اُس کے کفر کی مشہور ہیں، نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم پر ان کے چچا ابوطالب کے بارے میں یہ آیت نازل ہوئی اے نبی! تم ہدایت نہیں دیتے جسے دوست رکھو جیسا کہ صحیح مسلم اور ترمذی میں ہے تحقیق امام محمد باقر، اللہ تعالیٰ نے ان کے اور ان کے

الامام محمد ن الباقر کرم اللہ تعالیٰ وجہہ الکریم ووجوہ آبائہ الکرام ان رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم ورث طالبا وعقیلا اباہما ولم یورث علیاً وجعفر ا قال علی ولذا ترکنا نصیبنا فی الشعب کذا فی مؤطا الامام مالک- 4

آباء واجداد کے چہرے کو مکرم بنایا، سے خبر صحیح میں ثابت ہو چکا ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے طالب و عقیل کو ان کے باپ کا وارث بنایا مگر علی و جعفر کو وارث نہیں بنایا حضرت علی کرم اللہ وجہہ الکریم نے فرمایا: اسی وجہ سے ہم نے شعب ابی طالب سے اپنا حصہ ترک کر دیا۔ مؤطا امام مالک میں یونہی ہے- (ت)

1. شرح سفر السعادت فصل در بیان عیادت بماراں و نماز جنازہ مکتبہ نوریہ رضویہ سکھر ص ۴۴۹
2. مدارج النبوۃ وفات یافتن ابوطالب مکتبہ نوریہ رضویہ سکھر ص ۴۸/۲
3. مدارج النبوۃ وفات یافتن ابوطالب مکتبہ نوریہ رضویہ سکھر ص ۴۹/۲
4. فواتح الرحموت شرح مسلم الثبوت بذیل المستصفٰی منشورات الشریف رضی قم ایران ۱/ ۱۵۲ و ۱۵۳

Fatawa Rizvia, Volume 29

That is, the hadiths regarding the disbelief of Abu Talib are well-known, then in proof of this, the revelation of the first verse and the tenth hadith were stated: that because of the disbelief of Abu Talib, the Holy Prophet (may peace and blessings of Allah be upon him) did not grant Ali and Ja'far inheritance.

I say: The mention of Imam al-Baqir (may Allah be pleased with him) occurred due to a slip of the pen. In reality, it is Imam Zain-ul-Abidin (may Allah be pleased with him), as we have informed you with reference to Muwatta, the two Sahihs, etc. (T)

Naseem al-Riyadh, commentary on Shifa of Imam Qadi 'Iyad, Section Five regarding the modes of insult, narrated from Imam Ibn Hajar al-Makki:

The hadith of Muslim "Indeed my father and your father are in the fire": by father, he meant his uncle Abu Talib, because the Arabs call an uncle 'father' (summarized).

That is, it is the custom of the Arabs to call an uncle 'father', and the Master of the World (may peace and blessings of Allah be upon him), following this same custom, called his uncle Abu Talib 'father' in this hadith and stated that he is in Hell.

Imam Khatim al-Hufadh Jalal al-Millah wal-Deen al-Suyuti, in 'Masalik al-Hunafa fi Walidayy al-Mustafa' (may peace and blessings of Allah be upon him), says regarding this hadith:

What prevents it from being that his uncle Abu Talib is meant, that he is in Hell? At that time, it was common for Abu Talib to be called the father of the Holy Prophet (may peace and blessings of Allah be upon him). This was because of him being an uncle and having served and cared for the Holy Prophet from his childhood. (Summarized 2)

I say: Just as it has just passed in the poetry of Abu Talib, the Holy Prophet (may peace and blessings of Allah be upon him) called Abu Talib's wife, Hazrat Fatima bint Asad (may Allah be pleased with them both), his mother.

---

1. Naseem al-Riyadh Sharh al-Shifa al-Qadi 'Iyad, Chapter Five, Markaz Ahl al-Sunnat Barakaat-e-Raza, Gujarat, India, 4/414.
2. Al-Hawi lil-Fatawi, Masalik al-Hunafa fi Walid al-Mustafa, Dar al-Kutub al-Ilmiyyah, Beirut, 2/227 and 228.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 29

यानी अबू तालिब के कुफ़्र की हदीसें मशहूर हैं, फिर इसके सबूत में पहली आयत का उतरना और दसवीं हदीस बयान की गई कि अबू तालिब के कुफ़्र के कारण नबी करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने अली और जाफ़र को विरासत नहीं दिलाई।

अक़ूल (मैं कहता हूँ): इमाम बाक़िर (रज़ियल्लाहु अन्हु) का ज़िक्र क़लम की लग़्ज़िश (फिसलन) से हुआ। वास्तव में वह इमाम ज़ैनुल आबिदीन (रज़ियल्लाहु अन्हु) हैं, जैसा कि हम आपको मुअत्ता और सहीहैन (बुखारी व मुस्लिम) आदि के हवाले से बता चुके हैं। (त)

नसीमुल रियाज़, शरह शिफ़ा इमाम क़ाज़ी अयाज़, फ़सल पाँचवीं, इमाम इब्ने हजर मक्की से नक़ल फ़रमाया:

मुस्लिम की हदीस "बेशक मेरे और तुम्हारे बाप आग में हैं" में बाप से मुराद आपके चाचा अबू तालिब हैं क्योंकि अरब चाचा को बाप कह देते हैं। (संक्षिप्त)

अर्थात्, अरबों की यह आदत है कि वे चाचा को बाप कहते हैं, और हुज़ूर सैयदे आलम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने भी इसी आदत पर इस हदीस में अपने चाचा अबू तालिब को बाप कहकर फ़रमाया कि वह दोज़ख़ (नर्क) में हैं।

इमाम ख़ातमुल हुफ़्फ़ाज़ जलालुल मिल्लत वद्दीन सुयूती 'मसालिकुल हुनफ़ा फ़ी वालिदइल मुस्तफ़ा' (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) में इसी हदीस के बारे में फ़रमाते हैं:

कौन सी चीज़ इस बात में रुकावट है कि इस हदीस में अबू तालिब मुराद हों कि वह दोज़ख़ में हैं? उस ज़माने में यह आम था कि अबू तालिब को हुज़ूर अक़दस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का बाप कहा जाता था। चाचा होने और बचपन से हुज़ूर अक़दस की सेवा और परवरिश करने के कारण। (संक्षिप्त 2)

अक़ूल: जिस तरह अभी अबू तालिब के शेर से गुज़रा कि हुज़ूर अक़दस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने अबू तालिब की पत्नी हज़रत फ़ातिमा बिन्त असद (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) को अपनी माँ फ़रमाया।

---

1. नसीमुल रियाज़ शरह शिफ़ा अल-क़ाज़ी अयाज़, फ़सल पाँचवीं, मरकज़े अहल-ए-सुन्नत बरकाते रज़ा, गुजरात, भारत, 4/414।

2. अल-हावी लिल-फ़तावा, मसालिकुल हुनफ़ा फ़ी वालिद अल-मुस्तफ़ा, दारुल कुतुबुल इलमिया, बेरुत, 2/227 और 228।

पृष्ठ 698 का 750

یعنی کفر ابوطالب کی حدیثیں مشہور ہیں پھر اس کے ثبوت میں آیت اولٰی کا اترنا اور حدیثِ دہم کفرِ ابی طالب کی وجہ سے نبی کریم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کا علی و جعفر کو ترکہ نہ دلانا بیان فرمایا۔

اقول: وذکر الامام الباقر رضی اللہ تعالٰی عنہ وقع زلۃ من القلم وانما ہو الامام زین العابدین رضی اللہ تعالٰی عنہ کما اسمعناك من المؤطا والصحیحین وغیرھا۔ (میں کہتا ہوں امام محمد باقر رضی اللہ تعالٰی عنہ کا ذکر قلم کی لغزش سے واقع ہوا۔ درحقیقت وہ امام زین العابدین ہیں رضی اللہ تعالٰی عنہ، جیسا کہ ہم تجھے بحوالی مؤطا و صحیحین وغیرہ بتاچکے ہیں۔ ت)

نسیم الریاض شرح شفائے امام قاضی عیاض فصل الوجہ الخامس من وجوہ السب امام ابن حجر مکی سے نقل فرمایا:

حدیث مسلم ان ابی و اباك فی النار اراد بابیہ عمہ ابا طالب لان العرب تسمی العم ابا (ملخصاً)۔ (حدیثِ مسلم میں کہ میرا اور تیرا باپ جہنم میں ہیں، باپ سے مراد آپ کے چچا ابو طالب ہیں کیونکہ عرب چچا کو باپ کہہ دیتے ہیں۔ (ملخصاً) (ت))

یعنی عرب کی عادت ہے کہ باپ کو چچا کہتے ہیں، حضور سیدِ عالم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے بھی اسی عادت پر اس حدیث میں اپنے چچا ابو طالب کو باپ کہہ کر فرمایا کہ وہ دوزخ میں ہے۔

امام خاتم الحفاظ جلال الملۃ والدین سیوطی مسالک الحنفاء فی والدی المصطفٰی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم میں اسی حدیث کی نسبت فرماتے ہیں:

ما المانع ان یکون المراد بہ عمہ ابوطالب فکانت تسمیۃ ابی طالب ابا النبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم شائعۃ عندھم لکونہ عمہ وکونہ رباہ وکفلہ من صغرہ اھ ملخصاً ۲۔ (کون مانع ہے کہ اس حدیث میں ابوطالب مراد ہو کہ وہ دوزخ میں ہے، اس زمانہ میں شائع تھا کہ ابوطالب کو حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کا باپ کہا جاتا۔ چچا ہونے اور بچپن سے حضور اقدس کی خدمت و کفالت کرنے کے باعث۔ ملخصاً ۲)

اقول: جس طرح ابھی ابوطالب کے شعر سے گزرا کہ حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے ابوطالب کی بی بی حضرت فاطمہ بنت اسد رضی اللہ تعالیٰ عنہما کو اپنی ماں فرمایا۔

---

1. نسیم الریاض کی شرح شفاء القاضی عیاض فصل الوجہ خامس مرکزِ اہلسنت برکاتِ رضا گجرات الہند ۴ / ۴۱۴
2. الحاوی للفتاوی مسالک الحنفاء فی والد المصطفیٰ دار الکتب العلمیۃ بیروت ۲ / ۲۲۷ و ۲۲۸

Volume 29 Fatawa Razawiyya

In the same (book), it is stated:

| [Arabic Text:] Tamam al-Razi narrated in his 'Fawa'id' with a weak chain from Ibn Umar (may Allah be pleased with them both) that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: "When the Day of Resurrection comes, I will intercede for my father, my mother, Abu Talib, and a brother of mine who was in the pre-Islamic period of ignorance." It was mentioned by al-Muhibb al-Tabari, who is among the preservers (of Hadith) and scholars of jurisprudence, in his book 'Dhakha'ir al-Uqba fi Manaqib Dhawi al-Qurba'. He said: "If it is proven, it is interpreted regarding Abu Talib according to what has been mentioned in the Sahih (authentic collection) about the lightening of the punishment for him through his (the Prophet's) intercession (peace and blessings of Allah be upon him). End." The need for interpretation arose only concerning Abu Talib, not the other three (his father, mother, and brother - i.e., foster brother) because Abu Talib lived to see the start of the mission and did not embrace Islam, while the other three died in the Fatrah (period without a prophet). | [Urdu Translation of the above:] Meaning, Tamam al-Razi narrated with a weak chain of transmission from Ibn Umar (may Allah be pleased with them both) that the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said: "On the Day of Resurrection, I will intercede for my parents, for Abu Talib, and for a foster brother of mine who lived during the time of Ignorance (Jahiliyyah)." Imam Muhibb al-Tabari, who is among the preservers of Hadith and scholars of Fiqh, said in 'Dhakha'ir al-Uqba': "If this Hadith is established, its interpretation regarding Abu Talib is what has been mentioned in the authentic Hadith, that through the intercession of the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him), his punishment will be lightened." Imam Suyuti (may Allah have mercy on him) says: "The need for interpretation specifically regarding Abu Talib arose because Abu Talib witnessed the advent of Islam and persisted in disbelief, unlike the noble parents and the foster brother who passed away during the 'Fatrah' (period between prophets)." |

Meaning, it is mentioned in a weak Hadith that: "On the Day of Resurrection, I will intercede for my parents, for Abu Talib, and for a foster brother of mine who lived during the time of Ignorance (Jahiliyyah)."

Aqool (I say): Here 'Tawil' (interpretation) means explaining the intended meaning, just as the explanation of the meanings of the Quran is called 'Tawil'. The lightening

of punishment for disbelievers is also among the types of intercession of the Master of Intercessors (peace and blessings of Allah be upon him). The 'Greatest Intercession' (Shafa'at al-Kubra), which is for the opening of the doors of reckoning, is universal and general for the whole world. Imam Nawawi, despite considering Abu Talib a disbeliever with certainty, titled the chapter for the fourth and fifth Hadiths in Sahih Muslim as follows:

| [Arabic Text:] Chapter on the intercession of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) for Abu Talib and the lightening of his punishment because of him. | [Urdu Translation of the above:] Chapter on the intercession of the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) for Abu Talib and the lightening of his punishment. |

1. Al-Hawi lil-Fatawi, Masalik al-Hunafa fi Walid al-Mustafa, Dar al-Kutub al-Ilmiyyah, Beirut, 2/208.
2. Sahih Muslim, Book of Faith, Chapter on the Intercession of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him), Qadimi Kutub Khana, Karachi, 1/115.

खंड 29 फ़तावा रज़विया

उसी में कहा गया है:

| [अरबी पाठ:] तमाम अल-राज़ी ने अपने 'फ़वाइद' में इब्न उमर (अल्लाह उन दोनों से प्रसन्न हो) से एक कमज़ोर सनद के साथ रिवायत की है कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया: "जब क़यामत का दिन आएगा, मैं अपने पिता, अपनी माँ, अबू तालिब और अपने एक भाई के लिए शफ़ाअत (सिफारिश) करूँगा जो जाहिलियत के दौर में था।" इमाम मुहिब अल-तबरी, जो हदीस के हाफिज़ और फ़िक़्ह के विद्वानों में से हैं, ने अपनी पुस्तक 'ज़ख़ायर अल-उकबा' में कहा: "अगर यह साबित हो जाता है, तो अबू तालिब के बारे में इसकी तावील (व्याख्या) वही है जो सही (प्रामाणिक संग्रह) में उनकी शफ़ाअत (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के माध्यम से उनके दंड को कम करने के बारे में बताई गई है। समाप्त।" तावील की आवश्यकता केवल अबू तालिब के संबंध में उत्पन्न हुई, न कि अन्य तीन (उनके पिता, माता और भाई - यानी दूध शरीक भाई) के बारे में, क्योंकि अबू तालिब ने मिशन की शुरुआत देखी और इस्लाम स्वीकार नहीं किया, जबकि अन्य तीन 'फ़तरत' (नबियों के बीच का काल) में मर गए। | [उपरोक्त का उर्दू अनुवाद:] यानी तमाम अल-राज़ी ने इब्न उमर (अल्लाह उन दोनों से प्रसन्न हो) से एक कमज़ोर सनद के साथ रिवायत की है कि हुज़ूर अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया: "क़यामत के दिन मैं अपने माता-पिता, अबू तालिब और अपने एक रज़ाई (दूध शरीक) भाई के लिए शफ़ाअत करूँगा जो जाहिलियत के ज़माने में गुज़रा।" इमाम मुहिब अल-तबरी, जो हदीस के हाफिज़ और फ़िक़्ह के विद्वानों में से हैं, ने 'ज़ख़ायर अल-उकबा' में कहा: "अगर यह हदीस साबित भी हो, तो अबू तालिब के बारे में इसकी तावील वही है जो सही हदीस में आई है कि हुज़ूर अकदस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की शफ़ाअत से उनका अज़ाब (दंड) हल्का हो जाएगा।" इमाम सुयुती (अल्लाह उन पर रहम करे) फरमाते हैं: "खास अबू तालिब के मामले में तावील की ज़रूरत इसलिए हुई क्योंकि अबू तालिब ने इस्लाम का ज़माना पाया और कुफ़्र पर अड़े रहे, जबकि नेक माता-पिता और रज़ाई भाई 'फ़तरत' के ज़माने में गुज़रे।" |

यानी एक कमज़ोर हदीस में आया है कि: "क़यामत के दिन मैं अपने माता-पिता, अबू तालिब और अपने एक रज़ाई भाई के लिए शफ़ाअत करूँगा जो जाहिलियत के ज़माने में गुज़रा।"

अकूल (मैं कहता हूँ): यहाँ तावील का अर्थ मुराद और अर्थ का बयान है, जिस तरह कुरान के अर्थों की व्याख्या को तावील कहा जाता है। काफिरों के लिए अज़ाब की कमी भी सैय्यद अल-शाफ़िईन

(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की शफ़ाअत की श्रेणियों में से है। 'शफ़ाअते कुबरा', जो हिसाब के दरवाज़े खोलने के लिए है, पूरी दुनिया के लिए आम और व्यापक है। इमाम नववी ने, बावजूद इसके कि वे अबू तालिब को निश्चित रूप से काफिर मानते हैं, सही मुस्लिम शरीफ में चौथी और पांचवीं हदीस के अध्याय का शीर्षक इस प्रकार लिखा है:

| [अरबी पाठ:] नबी अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की अबू तालिब के लिए शफ़ाअत और उनकी वजह से उनके अज़ाब में कमी का अध्याय। | [उपरोक्त का उर्दू अनुवाद:] नबी अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की अबू तालिब के लिए शफ़ाअत और उनके अज़ाब में कमी का अध्याय। |

1. अल-हावी लिल-फ़तावा, मसालिक अल-हुनफ़ा फ़ी वालिद अल-मुस्तफ़ा, दार अल-कुतुब अल-इल्मिया, बेरुत, 2/208।
2. सही मुस्लिम, किताब अल-ईमान, नबी अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की शफ़ाअत का अध्याय, क़दीमी कुतुब खाना, कराची, 1/115।

اسی میں فرماتے ہیں:

| اخرج تمام الرازی فی فوائدہ بسند ضعیف عن ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما قال قال رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم اذا کان یوم القیامۃ شفعت لا بی وامی وابی طالب واخ لی کان فی الجاھلیۃ اوردہ المحب الطبری وھو من الحفاظ والفقہاء فی کتابہ ذخائر العقبیٰ فی مناقب ذوی القربیٰ وقال ان ثبت فھو مؤول فی ابی طالب علی ما ورد فی الصحیح من تخفیف العذاب عنہ بشفاعتہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم انتھی وانما احتاج الی تاویلہ فی ابی طالب دون الثلاثۃ ابیہ وامہ واخیہ یعنی من الرضاعۃ لان ابا طالب ادرک البعثۃ و لم یسلم والثلاثۃ ماتوا فی الفترۃ 1 - | یعنی تمام الرازی نے بسندِ ضعیف ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کیا کہ حضور اکرم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: میں روزِ قیامت اپنے والدین اور ابو طالب اور اپنے ایک رضاعی بھائی کہ زمانہ جاہلیت میں گزرا شفاعت فرماؤں گا۔ امام محب طبری نے کہ حافظانِ حدیث و علمائے فقہ سے ہیں ذخائر العقبیٰ میں فرمایا یہ حدیث اگر ثابت بھی ہو تو ابو طالب کے بارے میں اس کی تاویل وہ ہے جو صحیح حدیث میں آیا کہ حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی شفاعت سے عذاب ہلکا ہو جائے گا۔ امام سیوطی علیہ الرحمہ فرماتے ہیں۔ خاص ابو طالب کے باب میں تاویل کی حاجت یہ ہوئی کہ ابو طالب نے زمانہ اسلام پایا اور کفر پر اصرار رکھا بخلاف والدین کریمین و برادرِ رضاعی کہ زمانہ فترت میں گزرے۔ |

یعنی ایک حدیثِ ضعیف میں آیا کہ میں روزِ قیامت اپنے والدین اور ابوطالب اور اپنے ایک رضاعی بھائی کہ زمانہ جاہلیت میں گزرا شفاعت فرماؤں گا۔

اقول: یہاں تاویل بمعنی بیانِ مراد و معنی ہے جس طرح شرح معانیِ قرآن کو تاویل کہتے ہیں، کفار سے تخفیفِ عذاب بھی حضور سید الشافعین صلی اللہ تعالیٰ کی اقساطِ شفاعت سے ہے شفاعتِ کبریٰ کہ فتحِ بابِ حساب کے لیے ہے تمام جہان کو شامل و عام ہے۔ امام نووی نے با آنکہ ابوطالب کو بالیقین کافر جانتے ہیں تبویبِ صحیح مسلم شریف میں حدیث چہارم و پنجم کا باب یوں لکھا۔

| باب شفاعۃ النبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم لابی طالب والتخفیف عنہ بسببہ 2 - | نبی اکرم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی ابو طالب کے لیے شفاعت اور اس کے عذاب میں تخفیف کا باب۔ |

1 الحاوی للفتاوی مسالك الحنفاء فی والد المصطفیٰ دار الکتب العلمیۃ بیروت ۲/ ۲۰۸ 2 صحیح مسلم کتاب الایمان باب شفاعۃ النبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/ ۱۱۵

Fatawa Razawiya, Volume 29

Imam Badruddin Zarkashi, in 'Al-Khadim', quoted Ibn Dihya that one of the types of intercession of the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) is the reduction of punishment given to Abu Lahab every Monday. This is due to his joy at the birth of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) and his emancipation of Thuwaybah when she brought the glad tidings. He said: 'Indeed, this is a miracle for him (the Holy Prophet, peace and blessings of Allah be upon him).' This is because he rejoiced at the blessed birth of the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) and freed Thuwaybah upon hearing the news. This is solely the grace of the Holy Prophet, due to which he received a reduction in punishment (peace and blessings of Allah be upon him). This was also quoted in 'Al-Masalik'. Furthermore, in 'Masalik-ul-Hunafa' and then in 'Sharh Mawahib' by Allama Zurqani, it is stated:

- It is established in the Sahih and reported by the truthful and verified one (peace and blessings of Allah be upon him) that Abu Talib has the lightest punishment among the people of the Fire. (Indeed, it is proven in authentic traditions that the Truthful and Verified Prophet informed that Abu Talib has the least punishment among all the denizens of Hell.)
- O Allah! Protect us from Your painful punishment through the status of Your Compassionate and Merciful Prophet. May the best blessings and eternal peace be upon him and his family. Amen, and all praise belongs to Allah, the Lord of all worlds. (T)

Chapter Four:

Allama Abd al-Ra'uf al-Munadi in 'al-Taysir' and then Allama Ali bin Ahmad al-Azizi in 'Siraj al-Munir Sharh Jami al-Saghir', regarding the eighth hadith, state:

- 'This [hadith] signifies his death upon disbelief, and it is the truth, while the contrary is a misconception.' (Meaning this hadith indicates that Abu Talib's death occurred in disbelief, and this is the truth, and any contrary view is a misconception.)

Imam Ayni, regarding the second and fourth hadith, states:

1. Al-Hawi lil-Fatawi, citing Az-Zarkashi in Masalik al-Hunafa fi Walid al-Mustafa, Dar al-Kutub al-Ilmiyah, Beirut, 2/208.
2. Sharh az-Zurqani 'ala al-Mawahib al-Ladunniyah, Death of Khadija and Abu Talib, 1/292, and Al-Hawi lil-Fatawi, 2/228.
3. At-Taysir Sharh al-Jami' al-Saghir, under the hadith 'Ahwan ahl al-nar 'adhaban...', Maktabah al-Imam al-Shafi'i, Riyadh, 1/382.

फ़तावा रज़विया, खंड 29

इमाम बदरुद्दीन ज़रकशी ने 'खादिम' में इब्न दिह्या से नक़ल किया है कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की शफ़ाअत (सिफारिश) की किस्मों में से वह अज़ाब (दंड) में कमी है जो अबू लहब को सोमवार के दिन मिलती है। यह नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की विलादत (जन्म) पर उसकी खुशी और सुवैबा को आज़ाद करने की वजह से है जब उसने यह खबर दी थी। उन्होंने कहा: "यह उनके(हुज़ूर) लिए एक करामात है।" क्योंकि उसने हुज़ूर अकदस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की मुबारक विलादत की खुशी मनाई और सुवैबा को खुशखबरी सुनकर आज़ाद कर दिया। यह हुज़ूर ही का फ़ज़्ल है जिसकी वजह से उसे कमी मिली (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)। इसे 'मसालिक' में भी नक़ल किया गया है। इसके अलावा 'मसालिक-उल-हुनफ़ा' फिर अल्लामा ज़रकानी की 'शर्ह मवाहिब' में है:

- सहीह अहादीस में साबित है और सादिक़ मसदूक़ुन (सच्चे) नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने खबर दी है कि अबू तालिब को जहन्नुमियों में सबसे कम अज़ाब है। (बेशक सहाह में साबित है और सादिक़ मसदूक़ुन (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने खबर दी कि अबू तालिब पर सब दोज़खियों से कम अज़ाब है।)
- ऐ अल्लाह! हमें अपने दर्दनाक अज़ाब से बचा, अपने रऊफ़ और रहीम नबी के सदके में। आप पर और आपकी आल (संतान) पर बेहतरीन दरूद और दायमी (सदा रहने वाला) सलाम हो। आमीन और तमाम तारीफें अल्लाह के लिए हैं जो तमाम जहानों का पालने वाला है। (त)

चौथा अध्याय:

अल्लामा अब्दुल रऊफ़ मुनादी 'तयसीर' में, फिर अल्लामा अली बिन अहमद अज़ीज़ी 'सिराज-उल-मुनीर शर्ह जामि-उस-सगीर' में हदीस नंबर आठ के तहत फरमाते हैं:

- "यह (हदीस) उनके कुफ़्र पर मरने की सूचना देती है और यही हक़ है, और इसके विपरीत वहम (भ्रम) है।" (यानी यह हदीस बताती है कि अबू तालिब की मौत कुफ़्र पर हुई और यही हक़ है और इसका खिलाफ वहम है।)

इमाम ऐनी हदीस नंबर दो और चार के तहत फरमाते हैं:

1. अल-हावी लिल-फ़तावा बहवाला अज़-ज़रकशी मसालिक अल-हुनफ़ा फ़ी वालिद अल-मुस्तफा, दार अल-कुतुब अल-इल्मिया, बेरुत, 2/208.
2. शर्ह अज़-ज़रकानी अलल मवाहिब अल-लदुन्निया, वफ़ात ख़दीजा व अबी तालिब, 1/292 और अल-हावी लिल-फ़तावा 2/228.
3. अत-तयसीर शर्ह अल-जामि' अस-सगीर, हदीस 'अहवन अहल अन-नार अज़ाबन...' के तहत, मकतबा अल-इमाम अश-शाफ़ई, रियाज़, 1/382.

पृष्ठ 700/750

امام بدر الدین زرکشی نے خادم میں ابن دحیہ سے نقل کیا کہ حضور صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کی اقسامِ شفاعت سے وہ تخفیف عذاب ہے جو ابو لہب کو بروزِ دوشنبہ ملتی ہے۔ لسروره بولادة النبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم واعتاقہ ثویبۃ حین بشر بہ قال وانما ھی کرامۃ لہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم۔ اس لیے کہ اس نے حضور اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کے میلاد مبارک کی خوشی کی اور اس کا مژدہ سن کر ثوبیہ کو آزاد کیا تھا۔ یہ حضور ہی کا فضل ہے جس کے باعث اس نے تخفیف پائی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم، نقلہ فی المسالک ایضاً۔ (اسے مسالک میں بھی نقل کیا گیا ۔ ت) نیز مسالک الحنفاء پھر شرح مواہب علامہ زرقانی میں ہے:

- قد ثبت فی الصحیح واخبر الصادق المصدوق صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم ان ابا طالب اھون اھل النار عذاب اھ ملتقطاً۔ | بے شک صحاح میں ثابت ہے اور صادق مصدوق صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے خبر دی کہ ابو طالب پر سب دوزخیوں سے کم عذاب ہے۔
- اللھم اجرنا من عذابک الالیم بجاہ نبیک الرؤف الرحیم علیہ وعلی الہ افضل الصلوٰۃ وادوم التسلیم امین والحمد للہ رب العلمین۔ | اے اللہ ! ہمیں اپنے دردناک عذاب سے بچا رؤف و رحیم نبی کے صدقے میں، آپ پر اور آپ کی آل پر بہترین درود اور دائمی سلام ہو۔ اے اللہ ہماری دعا قبول فرما۔ اور سب تعریفیں اللہ کے لیے ہیں جو تمام جہانوں کا پروردگار ہے۔ (ت)

فصلِ چہارم:

علامہ عبدالرؤف منادی تیسر پھر علامہ علی بن احمد عزیزی سراج المنیر شرح جامع صغیر میں زیرِ حدیث ہشتم فرماتے ہیں:

- هذا يؤذن بموته على كفره وهو الحق ووهم البعض۔ | یعنی یہ حدیث بتاتی ہے کہ ابو طالب کی موت کفر پر ہوئی اور یہی حق ہے اور اس کا خلاف وہم ہے۔

امام عینی زیر حدیث دوم و چہارم فرماتے ہیں:

۱۔ الحاوی للفتاوی بحوالہ الزرکشی مسالك الحنفاء فی والد المصطفیٰ دار الکتب العلمیہ بیروت ۲/ ۲۰۸ ۲۔ شرح الزرقانی علی المواہب اللدنیہ وفات خدیجہ و ابی طالب ۲۹۲/۱ والحاوی للفتاوی ۲۲۸/۲ ۳۔ التیسیر شرح الجامع الصغیر تحت الحدیث اھون اھل النار عذابا الخ مکتبۃ الامام الشافعی ریاض ۳۸۲/۱

Fatawa Ridawiyya, Volume 29

[Arabic Box]: All this clearly shows that he died on something other than Islam. If you say that Al-Suhayli mentioned that he saw in some of Al-Masudi's books that he (Abu Talib) accepted Islam, I say: such a groundless narration cannot contradict what is in the Sahih (Bukhari). [Urdu Box]: From all these Hadiths, it is clear that Abu Talib's death occurred in a non-Islamic state. If you say that Suhayli mentioned he saw in some book of Masudi that Abu Talib accepted Islam, I will say such a baseless tale cannot oppose the authentic Hadiths of Sahih Bukhari.

I say: Moreover, although Al-Masudi Ali bin Hussain, the author of 'Muruj al-Dhahab', is widely cited, he himself is a Rafidi (Shia). His book 'Muruj al-Dhahab' is tainted and polluted throughout with explicit vituperation against the noble Caliphs, the great Companions (Sahaba), the ten promised paradise (Ashara Mubashshara), etc. (may Allah be pleased with them all). He frequently quotes the sayings and narrations of Lut bin Yahya Abu Mikhnaf, a vile and perished Rafidi, on whose rejection and unreliability the Imams of Jarh wa Ta'dil (Hadith criticism) have a consensus. Similarly, the basis of his book is on the reports of other Rafidis, deviants, and perished ones, as is clear and evident from its study. This humble one (may Allah forgive him) has written a warning about this in the margins of his copy of 'Muruj al-Dhahab'. Shah Abdul Aziz Sahib says in 'Tuhfa Ithna Ashariyya':

[Right Side Box (Persian)]: Hisham al-Kalbi, the commentator who is an extremist Rafidi, and similarly Al-Masudi, author of 'Muruj al-Dhahab', and Abu al-Faraj al-Isbahani, author of 'Kitab al-Aghani', and so on. This sect includes such people among the ranks of Ahl al-Sunnah and wants to blame the Ahl al-Sunnah based on their sayings and narrations. [Left Side Box (Urdu)]: Hisham al-Kalbi, the commentator who is an extremist Rafidi, similarly Masudi, the author of 'Muruj al-Dhahab', and Abu al-Faraj al-Isbahani, the author of 'Kitab al-Aghani', and so on; this sect includes such other Rafidis among the Ahl al-Sunnah and wants to blame the Ahl al-Sunnah based on their sayings and narrations. (T)

Allamah Zarqani says in the commentary of 'Mawahib': [Arabic Box]: The claim of Abu Talib's Islam is not authentic, as said by Ibn Asakir and others. [Urdu Box]: It is wrong to believe in Abu Talib's Islam; Imam Ibn Asakir and others have stated this explicitly.

1. Umdat al-Qari Sharh Sahih al-Bukhari, Book of the Virtues of the Ansar, under Hadith 3884, Dar al-Kutub al-Ilmiyah, Beirut, 17/24

2. Tuhfa Ithna Ashariyya, Chapter 2, Section 2, Trick 23, Suhail Academy Lahore, p. 41
3. Sharh al-Zarqani 'ala al-Mawahib al-Ladunniyyah, Second Objective, Fourth Chapter, Dar al-Ma'rifah, Beirut, 3/286

फ़तावा रज़विया, जिल्द 29

[अरबी बॉक्स]: यह सब स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि उनकी मृत्यु इस्लाम के अलावा किसी अन्य चीज़ पर हुई। यदि आप कहें कि अल-सुहैली ने उल्लेख किया है कि उन्होंने अल-मसूदी की कुछ पुस्तकों में देखा कि उन्होंने (अबू तालिब ने) इस्लाम स्वीकार कर लिया था, तो मैं कहता हूँ: ऐसा निराधार वर्णन सहीह (बुखारी) में जो कुछ भी है उसका खंडन नहीं कर सकता। [उर्दू बॉक्स]: इन सभी हदीसों से स्पष्ट है कि अबू तालिब की मृत्यु गैर-इस्लामी स्थिति में हुई थी। यदि आप कहें कि सुहैली ने उल्लेख किया है कि उन्होंने मसूदी की किसी पुस्तक में देखा कि अबू तालिब ने इस्लाम स्वीकार कर लिया है, तो मैं कहूंगा कि ऐसी आधारहीन कहानी सहीह बुखारी की प्रामाणिक हदीसों का विरोध नहीं कर सकती।

मैं कहता हूँ: इसके अलावा, हालांकि अल-मसूदी अली बिन हुसैन, 'मुरुज अल-धहब' के लेखक, व्यापक रूप से उद्धृत हैं, वे स्वयं एक राफ़िज़ी (शिया) हैं। उनकी पुस्तक 'मुरुज अल-धहब' महान खलीफाओं, महान सहाबा, अशरा मुबश्शरा आदि (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) के खिलाफ स्पष्ट अपशब्दों से हर जगह प्रदूषित और दूषित है। वे लूत बिन याह्या अबू मिख़नफ़ जैसे नीच और नष्ट राफ़िज़ी के कथनों और उद्धरणों को कसरत से लाते हैं, जिनके अस्वीकार और अविश्वसनीय होने पर जरह व तादील (हदीस आलोचना) के इमामों की सहमति है। इसी तरह, उनकी पुस्तक का आधार अन्य राफ़िज़ियों, गुमराहों और नष्टों की रिपोर्टों पर है, जैसा कि इसके अध्ययन से स्पष्ट और प्रत्यक्ष है। इस विनम्र व्यक्ति (अल्लाह उसे क्षमा करे) ने अपनी 'मुरुज अल-धहब' की प्रति के हाशिये पर इस बारे में एक चेतावनी लिखी है। शाह अब्दुल अज़ीज़ साहिब 'तुहफ़ा इत्ना अशरिया' में फ़रमाते हैं:

[दायां बॉक्स (फ़ारसी)]: हिशाम अल-कल्बी, मुफ़स्सिर जो एक कट्टर राफ़िज़ी है, और इसी तरह अल-मसूदी, 'मुरुज अल-धहब' के लेखक, और अबू अल-फ़रज अल-इस्बहानी, 'किताब अल-अघानी' के लेखक, और इसी तरह। यह संप्रदाय ऐसे लोगों को अहले सुन्नत की कतारों में शामिल करता है और उनके कथनों और वर्णन के आधार पर अहले सुन्नत को दोषी ठहराना चाहता है। [बायां बॉक्स (उर्दू)]: हिशाम अल-कल्बी, मुफ़स्सिर जो एक कट्टर राफ़िज़ी है, इसी तरह मसूदी, 'मुरुज अल-धहब' के लेखक, और अबू अल-फ़रज अल-इस्बहानी, 'किताब अल-अघानी' के लेखक, और इसी तरह; यह संप्रदाय अहले सुन्नत के बीच ऐसे अन्य राफ़िज़ियों को शामिल करता है और उनके कथनों और वर्णन के आधार पर अहले सुन्नत को दोषी ठहराना चाहता है। (त)

अल्लामा ज़रकानी 'मवाहिब' की व्याख्या में फ़रमाते हैं: [अरबी बॉक्स]: अबू तालिब के इस्लाम का दावा सही नहीं है, जैसा कि इब्न असाकिर और अन्य लोगों ने कहा है। [उर्दू बॉक्स]: अबू तालिब के इस्लाम पर विश्वास करना गलत है; इमाम इब्न असाकिर और अन्य ने इसे स्पष्ट रूप से कहा है।

1. उम्दत अल-क़ारी शराह सहीह अल-बुखारी, किताब मनाक़िब अल-अंसार, हदीस 3884 के तहत, दार अल-कुतुब अल-इल्मिया, बेरुत, 17/24
2. तुहफ़ा इत्ना अशरिया, अध्याय 2, अनुभाग 2, छल 23, सुहैल अकादमी लाहौर, पृष्ठ 41
3. शराह अल-ज़रकानी अला अल-मवाहिब अल-लदुन्निया, दूसरा उद्देश्य, चौथा अध्याय, दार अल-मारीफ़ा, बेरुत, 3/286

पृष्ठ 750 का 701

ہذا کلہ ظاہر انہ مات علی غیر الاسلام فان قلت ذکر السہیلی انہ رای فی بعض کتب المسعودی انہ اسلم قلت مثل ہذا لا یعارض ما فی الصحیح۔ 1 ان سب حدیثوں سے ظاہر ہے کہ ابوطالب کی موت غیر اسلامی پر ہوئی، اگر تو کہے کہ سہیلی نے ذکر کیا کہ انہوں نے مسعودی کی کسی کتاب میں دیکھا کہ ابوطالب اسلام لے آئے میں کہوں گا ایسی بے سروپا حکایت احادیث صحیح بخاری کی معارض نہیں ہو سکتی۔

اقول : علاوہ بریں اگرچہ مسعودی علی بن حسین صاحب مروج ہے تو خود رافضی ہے اس کی کتاب مروج الذہب خلفائے کرام و صحابہ عظام عشرہ مبشرہ وغیرہ ہم رضی اللہ تعالٰی عنہم پر صریح تبرا سے جا بجا آلودہ و ملوث ہے ۔ لوط بن یحیٰی ابو مخنف رافضی خبیث ہالک کے اقوال و نقول بکثرت لاتا ہے جس کے مردود و تالف ہونے پر آئمہ جرح و تعدیل کا اجماع ہے اسی طرح اور رفاض و فساق و ہالکین کے اخبار پر اس کی کتاب کا مدار ہے جیسا کہ اس کے مطالعہ سے واضح و آشکار ہے، فقیر غفر اللہ تعالٰی نے اپنے نسخہ مروج الذہب کے ہامش پر اس کی تنبیہ لکھ دی ہے۔ شاہ عبدالعزیز صاحب تحفہ اثنا عشریہ میں فرماتے ہیں:

ہشام کلبی مفسر کہ رافضی غالی ست و ہمچنیں مسعودی صاحب مروج الذہب و ابوالفرج اصبہانی صاحب کتاب الاغانی و علی ہٰذا القیاس امثال اینہا را ایں فرقہ در اعداد اہلسنت داخل کنند و بمقولات و منقولات ایشاں الزام اہلسنت خواہند۔ 2 ہشام کلبی مفسر جو کہ غالی رافضی ہے ، اسی طرح مروج الذہب کا مصنف مسعودی اور ابوالفرج اصبہانی صاحب کتاب الاغانی اور علی ہٰذا القیاس ان جیسے دیگر رافضیوں کو یہ فرقہ ، اہل سنت میں داخل کرتا ہے اور ان کے اقوال و منقولات سے اہل سنت کو الزام دینا چاہتا ہے۔ت)

علامہ زرقانی شرح مواہب میں فرماتے ہیں : القول باسلام ابی طالب لا یصح قاله ابن عساکر وغیرہ۔

3 ابوطالب کا اسلام ماننا غلط ہے امام ابن عساکر وغیرہ نے اس کی صریح کی۔

1 عمدة القاری شرح صحیح البخاری کتاب مناقب الانصار تحت حدیث ۳۸۸۴ دار الکتب العلمیہ بیروت ۲۴/۱۷ 2 تحفه اثنا عشریه باب دوم فصل دوم کید بست و سوم سہیل اکیڈمی لاہور ص ۴۱ 3 شرح الزرقانی علی المواہب اللدنیة المقصد الثانی الفصل الرابع دار المعرفة بیروت ۲۸۶/۳

Similarly, it is mentioned in Al-Isaba as will be discussed later (T - as will come). Allama Shihab states in Naseem al-Riyadh: [Arabic]: "Among the strange reports is what some have narrated, that Allah Almighty resurrected him [Abu Talib] for him [the Prophet], peace and blessings of Allah be upon him, and he then believed, like his parents. I suspect this is a fabrication of the Shi'a." 1 [Urdu]: It is among the rarities what some have reported that Allah Almighty, like the parents of the Messenger of Allah, peace and blessings of Allah be upon him, also brought Abu Talib back to life for the Prophet, peace and blessings of Allah be upon him, so that he became honored with Islam after death. In my opinion, this is a fabrication of the Rafidites (Shi'ites).

I say: Fabricators and liars are not limited to the Rafidites, but this aligns with their school of thought, hence the suspicion of fabrication falls on them. Yet, how is it possible to be certain without investigation that someone else fabricated it? For this reason, the word 'suspicion' (zann) was used, otherwise there is no doubt about it being fabricated and forged, as is not hidden (T - as is clear). Allama Sabban Muhammad bin Ali al-Misri states in the book Is'af al-Raghibin: [Arabic]: "As for the paternal uncles of the Prophet, peace and blessings of Allah be upon him, they were twelve: Hamza and al-Abbas, both of whom were Muslims, and Abu Talib. The correct view is that he died as a disbeliever." 2 [Urdu]: There were twelve paternal uncles of the Master of the Universe, peace and blessings of Allah be upon him; Hamza and Abbas, may Allah be pleased with them, and only these two were honored with Islam, and Abu Talib, and the correct view is that he died a disbeliever.

Section Five: It is stated in Sharh al-Maqasid and Sharh al-Tahrir, then in Radd al-Muhtar Hashiya Durr al-Mukhtar, in the chapter on apostates: [Arabic]: "One who persists in refusing to testify [to faith] when asked is a disbeliever by consensus, because that is a sign of lack of internal belief, and for this reason, they applied [this ruling]." [Urdu]: One who is asked to testify to Islam and persists in not testifying is by consensus a disbeliever, for this is a sign of not having belief in the heart.

1 Naseem al-Riyadh, Part 1, Chapter 1, Section 5, Markaz-e-Ahle Sunnat, Gujarat, India, 1/210. 2 Is'af al-Raghibin fi Sirat al-Mustafa on the margins of Nur al-Absar, Dar al-Fikr, Beirut, p. 94.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 29

इसी तरह अल-इसाबा में है जैसा कि आगे आएगा (त - जैसा कि आगे आएगा)। अल्लामा शिहाब नसीम अल-रियाज़ में फ़रमाते हैं: [अरबी]: "अजीब बातों में से वह है जिसे कुछ लोगों ने बयान किया है कि अल्लाह तआला ने नबी (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) के लिए अबू तालिब को भी ज़िंदा किया जैसे उनके माता-पिता को किया था, फिर वह ईमान लाए। मेरा मानना है कि यह शियाओं की मनगढ़ंत बात है।" 1 [उर्दू]: अजीब बातों में से है यह जो कुछ ने नक़ल किया कि अल्लाह तआला ने रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) के माता-पिता की तरह अबू तालिब को भी नबी (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) के लिए ज़िंदा किया कि मौत के बाद जी कर इस्लाम से मुशर्रफ़ हुए। मेरे गुमान में यह राफ़ज़ियों (शियाओं) की घड़ंत है।

मैं कहता हूँ: मनगढ़ंत बातें करने वाले झूठे लोग सिर्फ़ राफ़ज़ियों तक ही सीमित नहीं हैं, लेकिन यह उनके मत (मसलक) के अनुकूल है, इसलिए इसके मनगढ़ंत होने का गुमान उन्हीं की ओर जाता है। फिर भी बिना जाँच-परख के यह कहना कैसे मुमकिन है कि किसी और ने इसे गढ़ा हो, इसी कारण 'गुमान' (ज़न्न) शब्द का प्रयोग किया गया, वर्ना इसके मनगढ़ंत और झूठा होने में कोई संदेह नहीं है, जैसा कि छिपा नहीं है (त - जैसा कि स्पष्ट है)। अल्लामा सबान मुहम्मद बिन अली मिस्री अपनी किताब इस'आफ़ अल-राग़िबीन में फ़रमाते हैं: [अरबी]: "रही बात नबी (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) के चचाओं की, तो वे बारह थे: हमज़ा और अब्बास, ये दोनों मुसलमान थे, और अबू तालिब। सही बात यही है कि उनकी मृत्यु कुफ़्र की हालत में हुई।" 2 [उर्दू]: हुज़ूर सैयदे आलम (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) के बारह चचा थे; हमज़ा और अब्बास (रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा) और यही दो इस्लाम से मुशर्रफ़ हुए और अबू तालिब, और सही यही है कि ये काफ़िर मरे।

पाँचवाँ अध्याय (फ़स्ल पंजुम): शराह मक़ासिद और शराह तहरीर, फिर रद्द अल-मुह्तार हाशिया दुर्रे मुख्तार के'मुर्तदों के बयान' (बाब अल-मुर्तदीन) में है: [अरबी]: "जो व्यक्ति मांग किए जाने पर ईमान की गवाही न देने पर अड़ा रहे, वह सर्वसम्मति (इत्तेफ़ाक़) से काफ़िर है, क्योंकि यह दिल में तस्दीक़ (सच्चा न मानने) की निशानी है, और इसी कारण उन्होंने इसे लागू किया है।" [उर्दू]: जिससे इस्लाम के इक़रार का मुतालबा (मांग) किया जाए और वह इक़रार न करने पर इसरार (ज़िद) रखे, वह बिल-इत्तेफ़ाक़ काफ़िर है कि यह दिल में तस्दीक़ न होने की अलामत (निशानी) है।

1 नसीम अल-रियाज़, भाग 1, अध्याय 1, खंड 5, मरकज़े अहले सुन्नत गुजरात, भारत 1/210। 2 इस'आफ़ अल-राग़िबीन फ़ी सीरत अल-मुस्तफ़ा, नूर अल-अबसार के हाशिये पर, दार अल-फ़िक्र बेरुत, पृष्ठ 94।

اسی طرح اصابہ میں ہے کما سیأتی (جیسا کہ آگے آئے گا۔ ت) علامہ شہاب نسیم الریاض میں فرماتے ہیں: من الغریب مانقلہ بعضھم ان اللہ تعالی احیاہ لہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم فآمن بہ کابویہ واظنہ من افتراء الشیعۃ ۱۔ غرائب سے ہے یہ جو بعض نے نقل کیا کہ اللہ تعالیٰ نے والدین رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی طرح ابوطالب کو بھی نبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے لیے زندہ کیا کہ بعد مرگ جی کر مشرف باسلام ہوئے میرے گمان میں یہ رافضیوں کی گھڑت ہے۔

اقول: وضاع کذاب رافضیوں ہی میں منحصر نہیں مگر یہ اُن کے مسلک کے موافق ہے لہذا اس کی وضع کا گمان انہیں کی طرف جاتا ہے پھر بھی بے تحقیق جزم کی کیا صورت ممکن کہ کسی اور نے وضع کی ہو، اس بنا پر لفظ ظن فرمایا، ورنہ اس کے موضوع و مفتری ہونے میں تو شبہ نہیں، کما لا یخفی (جیسا کہ پوشیدہ نہیں۔ت) علامہ صبان محمد بن علی مصری کتاب اسعاف الراغبین میں فرماتے ہیں: اما اعمامہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم فاثنا عشرۃ حمزۃ العباس وھما المسلمان وابوطالب والصحیح انہ مات کافراً ۲۔ حضور سید عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے بارہ چچا تھے، حمزہ و عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما اور یہی دو مشرف باسلام ہوئے اور ابوطالب اور صحیح یہی ہے کہ یہ کافر مرے۔

فصل پنجم: شرح مقاصد و شرح تحریر پھر ردالمحتار حاشیہ در مختار باب المرتدین میں ہے:

المصر علی عدم الاقرار مع المطالبۃ بہ کافر وفاقاً لکون ذلك من امارات عدم التصدیق و لھذا طبقوا

جس سے اقرار اسلام کا مطالبہ کیا جائے اور وہ اقرار نہ کرنے پر اصرار رکھے بالاتفاق کافر ہے کہ یہ دل میں تصدیق نہ ہونے کی علامت ہے۔

١ نسيم الرياض القسم الاول الباب الاول الفصل الخامس مركز اہلسنت گجرات الہند ١ / ٢١٠ ٢

اسعاف الراغبين في سيرة المصطفى على هامش نور الابصار دارالفكر بيروت ص ٩٤

Fatawa Razawiya, Volume 29

Regarding the Disbelief of Abu Talib[1] For this reason, all scholars have reached a consensus on the disbelief of Abu Talib.

Maulana Ali Qari states in the commentary of Shifa Sharif:

- Arabic: "If he is commanded with it (the testimony of faith) and he refuses and desists from it like Abu Talib, then he is a disbeliever by consensus."[2]
- Urdu Translation: "One who is commanded to testify to the word of Islam and stays back and refuses to testify like Abu Talib, then he is a disbeliever by consensus."

In 'Mirqat', the commentary of 'Mishkat', regarding a person who held belief in his heart but did not express it with his tongue without any excuse or impediment, the disagreement of scholars is quoted whether this belief without declaration will benefit him in the afterlife or not. They state:

- Arabic: "I say: but on the condition that declaration was not requested from him. If he refuses after that, then he is a disbeliever by consensus due to the case of Abu Talib."[3]
- Urdu Translation: "That is, this disagreement is in the case where declaration was not requested from him. And if he desisted after the request, then he is a disbeliever by consensus. The incident of Abu Talib is evidence for this."

In the second section of the same work, in the chapter 'Signs of the Hour', it says:

- Arabic: "Abu Talib did not believe according to the People of the Sunnah."[4]
- Urdu Translation: "According to the Ahlus Sunnah, Abu Talib is not a Muslim."

Sheikh Muhaqqiq Maulana Abdul Haq Muhaddith Dehlavi states in the commentary of 'Safar al-Sa'adah':

- (Persian side): "Hadith masters and scholars of the Sunnah are of the opinion that the faith of Abu Talib was not proven. And it is in the authentic Hadiths that the Prophet (peace be upon him) came to him at the time of his death and..."
- (Urdu side): "The position of the masters of Hadith and the scholars of Ahlus Sunnah is that the faith of Abu Talib is not established. It is mentioned in authentic Hadiths that at the time of Abu Talib's death, the Messenger of Allah (peace be upon him) [came] to him..."

1. Radd al-Muhtar, Kitab al-Siyar, Bab al-Murtad, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 3/283 and 282 2. 3.
2. Mirqat al-Mafatih Sharh Mishkat al-Masabih, Kitab al-Fitan, Hadith 5258, Al-Maktabah al-Habibiyah, Quetta, 9/360.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 29

अबू तालिब के कुफ़्र (अविश्वास) पर[1] इसी कारण तमाम विद्वानों (उलेमा) ने अबू तालिब के कुफ़्र पर इज्मा (आम सहमति) किया है।

मौलाना अली क़ारी 'शर्ह शिफ़ा शरीफ़' में फ़रमाते हैं:

- अरबी: "जब उसे इसका (कलमा-ए-शहादत) हुक्म दिया गया और उसने इंकार किया और उससे रुक गया जैसे अबू तालिब, तो वह आम सहमति (इज्मा) से काफ़िर है।"[2]
- उर्दू अनुवाद: "जिसे इस्लाम के कलमे की गवाही देने का हुक्म दिया जाए और वह रुका रहे और गवाही देने से इनकार करे जैसे अबू तालिब, तो वह ब-इज्मा (आम सहमति से) काफ़िर है।"

'मिरक़ात शर्ह मिश्कात' में उस व्यक्ति के बारे में जो दिल से विश्वास रखता था लेकिन बिना किसी उज़्र (बहाने) या बाधा के ज़बान से इक़रार की नौबत नहीं आई, विद्वानों का मतभेद नक़ल करके फ़रमाते हैं कि क्या यह बिना इक़रार वाला विश्वास उसे आख़िरत में लाभ पहुँचाएगा या नहीं। वे फ़रमाते हैं:

- अरबी: "मैं कहता हूँ: लेकिन इस शर्त पर कि उससे इक़रार की मांग न की गई हो। अगर इसके बाद भी उसने इनकार किया, तो अबू तालिब के मामले की वजह से वह आम सहमति से काफ़िर है।"[3]
- उर्दू अनुवाद: "यानी यह मतभेद उस सूरत में है कि उससे इक़रार तलब (मांग) न किया गया हो। और अगर मांग के बाद रुका रहे तो वह ब-इज्मा काफ़िर है। अबू तालिब की घटना इस पर प्रमाण (दलील) है।"

उसी की दूसरी फ़स्ल (धारा), 'अशरात-उस-साअह' (क़यामत की निशानियाँ) के अध्याय में है:

- अरबी: "अहले सुन्नत के नज़दीक अबू तालिब ईमान नहीं लाए।"[4]
- उर्दू अनुवाद: "अहले सुन्नत के नज़दीक अबू तालिब मुसलमान नहीं हैं।"

शेख़ मुहाक़िक़ मौलाना अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी 'शर्ह सफ़र-उस-सआदत' में फ़रमाते हैं:

- (फ़ारसी पक्ष): "हदीस के उस्ताद और सुन्नत के विद्वान इस पर हैं कि अबू तालिब का ईमान साबित नहीं हुआ। और सही हदीसों में है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) उनकी मृत्यु के समय उनके पास आए और..."
- (उर्दू पक्ष): "हदीस के उस्तादों और अहले सुन्नत के विद्वानों का रुख यह है कि अबू तालिब का ईमान साबित नहीं है। सही हदीसों में आया है कि अबू तालिब की वफ़ात के वक़्त रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) उनके[पास आए]..."

---

1. रद-उल-मुहतार, किताब-उस-सियर, बाब-उल-मुरतद, दार इह्या अत-तुरास अल-अरबी, बेरूत, 3/283 और 282।
2.
3.
4. मिरक़ात-उल-मफ़ातीह शर्ह मिश्कात-उल-मसाबीह, किताब-उल-फ़ितन, हदीस 5258, अल-मकतबा अल-हबीबिया, क्वेटा, 9/360।

فتاویٰ رضویہ، جلد ۲۹

علی کفر ابی طالب ۱ اسی واسطے تمام علماء نے کفرِ ابی طالب پر اجماع کیا ہے۔

مولانا علی قاری شرح شفا شریف میں فرماتے ہیں:

- عربی: اذا امر بھا وامتنع وابی عنھا کابی طالب فھو کافر بالاجماع ۲
- اردو ترجمہ: جسے شہادت کلمہ اسلام کا حکم دیا جائے اور وہ باز رہے اور ادائے شہادت سے انکار کرے جیسے ابوطالب، تو وہ بالاجماع کافر ہے۔

مرقاۃ شرح مشکوۃ میں اس شخص کے بارے میں جو قلب سے اعتقاد رکھتا تھا اور بغیر کسی عذر ومانع کے زبان سے اقرار کی نوبت نہیں آئی ، علماء کا اختلاف کہ یہ اعتقاد بے اقرار اسے آخرت میں نافع ہوگا یا نہیں، نقل کر کے فرماتے ہیں۔

- عربی: قلت لکن بشرط عدم طلب الاقرار منه فان ابی بعد ذلک فکافر اجماعاً للقضیة ابی طالب ۳
- اردو ترجمہ: یعنی یہ اختلاف اس صورت میں ہے کہ اس سے اقرار طلب نہ کیا گیا ہو اور اگر بعد طلب باز رہے جب تو بالاجماع کافر ہے۔ ابو طالب کا واقعہ اس پر دلیل ہے۔

اُسی کی فصلِ ثانی باب اشراط الساعۃ میں ہے:

- عربی: ابوطالب لم یؤمن عند اھل السنة ۴
- اردو ترجمہ: اہل سنت کے نزدیک ابوطالب مسلمان نہیں۔

شیخ محقق مولانا عبدالحق محدث دہلوی شرح سفر السعادۃ میں فرماتے ہیں:

- مشائخ حدیث و علمائے سنت، بریں اند کہ ایمان ابوطالب ثبوت نہ پذیرفتہ ودر صحاح احادیث است کہ آنحضرت صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم در وقت وفات دے، بر سر دے آمدو
- مشائخ حدیث اور علماء اہلسنت کا موقف یہ ہے کہ ابوطالب کا ایمان ثابت نہیں ہے، صحیح حدیثوں میں آیا ہے کہ ابوطالب کی وفات کے وقت رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم اسکے [پاس آئے]

---

۱ ردالمحتار کتاب السیر باب المرتد داراحیاء التراث العربی بیروت ۳ / ۲۸۳ و ۲۸۲ ۲ ۳ ۴ مرقات المفاتیح شرح مشکوۃ المصابیح کتاب الفتن حدیث ۵۲۵۸ المکتبۃ الحبیبیہ کوئٹہ ۹/ ۳۶۰

Fatawa Ridawiyya, Volume 29

"Offered Islam, but he did not accept."[1] [Note: He came and offered salams but he (Abu Talib) did not accept it. -T]

Section Six: Imam Ibn Hajar Makki, in 'Afzal al-Qura al-Qurra Umm al-Qura', after recording the couplet of Abu Talib narrated in Sahih Bukhari which we mentioned at the beginning of the answer, states: "This couplet is from a long poem of his in which there is wonderful praise for him (the Holy Prophet) ﷺ, to the extent that the Shia took the view of his Islam from it."[2] [Translation]: This couplet is from a poem of Abu Talib in which there is an amazing praise of the Holy Prophet ﷺ, to the point that the Rafidis (Shia) deduced Abu Talib's being a Muslim from it.

Then he states: "Explicit Hadiths whose authenticity is agreed upon reject that."[3] [Translation]: But clear and bright Hadiths, upon whose authenticity there is consensus, are rejecting the Islam of Abu Talib.

Allama Muhammad bin Abdul Baqi in 'Sharh Mawahib', mentioning a weak narration of Ibn Ishaq which, God willing, will come soon along with its answers, states: "With this, the Rafidah and those who followed them argue for his Islam."[4] [Translation]: The Rafidis and those who became their followers use this narration as proof for Abu Talib's Islam.

In 'Anwar al-Tanzil' and 'Irshad al-Aql', under the noble verse "Indeed, you do not guide whom you like," it is stated: "The majority are of the view that it was revealed concerning Abu Talib."[5] [Translation]: According to the majority of Imams, this verse was revealed regarding Abu Talib.

---

[1] Sharh Safar as-Sa'ada, section on visiting the sick and funeral prayers, Maktaba Nooriya Razawiyya Sukkur, p. 249 [2] Afzal al-Qura al-Qurra Umm al-Qura, under couplet 125, Al-Majma' al-Thaqafi Abu Dhabi, 1/286 [3] Afzal al-Qura al-Qurra Umm al-Qura, under couplet 125, Al-Majma' al-Thaqafi Abu Dhabi, 1/286 [4] Sharh al-Zarqani 'ala al-Mawahib al-Laduniyya, Year of Sorrow, death of Khadija and Abu Talib, Dar al-Ma'rifa Beirut, 1/291 [5] Anwar al-Tanzil (Tafsir al-Baydawi), under verse 28/56, Dar al-Fikr Beirut, 4/298

फतावा रज़विया, खंड २९

"इस्लाम पेश किया लेकिन उसने स्वीकार नहीं किया।"[1] [नोट: वह तशरीफ़ लाए और सलाम पेश किया मगर उसने (अबू तालिब) स्वीकार नहीं किया। -त]

छठा अध्याय: इमाम इब्न हजर मक्की 'अफ़ज़ल अल-कुरा अल-कुर्रा उम्म अल-कुरा' में अबू तालिब के उस शेर को लिखकर जो सहीह बुखारी में वर्णित है और जिसे हमने जवाब की शुरुआत में उल्लेख किया है, फरमाते हैं: "यह शेर उनके एक कसीदे (प्रशंसा काव्य) का हिस्सा है जिसमें उनके(नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के लिए अद्भुत प्रशंसा है, यहाँ तक कि शियाओं ने इससे उनके इस्लाम का विचार ग्रहण कर लिया।"[2] [अनुवाद]: यह शेर अबू तालिब के एक कसीदे का है जिसमें हुज़ूर अकदस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अजीब नात है, यहाँ तक कि राफ़ज़ियों ने इससे अबू तालिब का मुसलमान होना अख़ज़ (निष्कर्ष) कर लिया।

फिर फरमाते हैं: "स्पष्ट हदीसें जिनकी सत्यता पर सहमति है, उसे खारिज करती हैं।"[3] [अनुवाद]: लेकिन साफ़ और रौशन हदीसें जिनकी सेहत (सत्यता) पर इत्तेफ़ाक़ (सहमति) है, इस्लाम-ए-अबू तालिब को रद्द कर रही हैं।

अल्लामा मुहम्मद बिन अब्दुल बाक़ी 'शर्ह मवाहिब' में इब्न इस्हाक़ की एक कमज़ोर (ज़ईफ़) रिवायत का ज़िक्र करके जो इंशा अल्लाह तआला जल्द ही अपने जवाबों के साथ आएगी, फरमाते हैं: "इसके ज़रिए राफ़िज़ियों और उनके अनुयायियों ने उनके इस्लाम पर दलील पेश की है।"[4] [अनुवाद]: राफ़ज़ी और जो उनके पैरो (अनुयायी) हुए, वे इसी रिवायत से अबू तालिब के इस्लाम पर सनद (प्रमाण) लाते हैं।

'अनवार अल-तन्ज़ील' और 'इरशाद अल-अक्ल' में आयत-ए-करीमा "बेशक आप जिसे चाहें हिदायत नहीं दे सकते" के तहत फरमाया गया: "जमहूर (बहुसंख्यक विद्वान) का मत है कि यह अबू तालिब के बारे में उतरी थी।"[5] [अनुवाद]: जमहूर अइम्मा के नज़दीक यह आयत दर-बारे अबू तालिब उतरी।

---

[1] शर्ह सफर अस्-सादा, फ़स्ल दर बयान एयादत बीमारान व नमाज़ जनाज़ा, मकतबा नूरिया रज़विया सुक्कुर, पृ. २४९ [2] अफ़ज़ल अल-कुरा अल-कुर्रा उम्म अल-कुरा, शेर १२५ के तहत, अल-मजमा' अल-थकाफ़ी अबू धाबी, १/२८६ [3] अफ़ज़ल अल-कुरा अल-कुर्रा उम्म अल-कुरा, शेर १२५ के तहत, अल-मजमा' अल-थकाफ़ी अबू धाबी, १/२८६ [4] शर्ह अल-ज़रक़ानी अला अल-मवाहिब अल-लदुन्निया,

आम अल-हुज़्न, वफ़ात ख़दीजा व अबू तालिब, दार अल-मआरिफ़ बेरुत, १/२९१ [5] अनवार अल-तन्ज़ील (तफ़्सीर अल-बैज़ावी), आयत २८/५६ के तहत, दार अल-फ़िक्र बेरुत, ४/२९८

पृष्ठ ७०४ / ७५०

فتاوی رضویہ جلد ۲۹

عرض اسلام کرد وے قبول نہ کرد۔[1] [پاس تشریف لائے اور سلام پیش فرمایا مگر اس نے قبول نہیں کیا۔ت]

فصلِ ششم: امام ابن حجر مکی افضل القری القراء ام القری میں ابو طالب کی بیت مروی صحیح بخاری کہ ہم نے شروع جواب میں ذکر کی لکھ کر فرماتے ہیں: هذا البيت من جملة قصيدة له فيها مدح عجيب له صلى الله تعالى عليه وسلم حتى اخذا الشيعة منها القول باسلامه۔[2] یہ بیت ابو طالب کے ایک قصیدہ کا ہے جس میں حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی عجب نعت ہے، یہاں تک کہ رافضیوں نے اس سے ابو طالب کا مسلمان ہونا اخذ کر لیا۔

پھر فرماتے ہیں: صرايح الاحاديث المتفق على صحتها ترد ذلك۔[3] لیکن صاف اور روشن حدیثیں جن کی صحت پر اتفاق ہے اسلام ابو طالب کو رد کر رہی ہیں۔

علامہ محمد بن عبد الباقی شرح مواہب میں روایت ضعیفہ ابن اسحق کہ ان شاء اللہ تعالیٰ عنقریب مع اپنے جوابوں کے آتی ہے ذکر کر کے فرماتے ہیں: بهذا احتج الرفضة ومن تبعهم على اسلامه۔[4] رافضی اور جو ان کے پیرو ہوئے وہ اسی روایت سے ابو طالب کے اسلام پر سند لاتے ہیں۔

انوار التنزیل وارشاد العقل میں زیرِ آیہ کریمہ "انك لاتهدى من احببت" فرمایا: الجمهور على انها نزلت في ابي طالب۔[5] جمہور ائمہ کے نزدیک یہ آیت درباره ابو طالب اتری۔

---

[1] شرح سفر السعادة فصل در بیان عیادت بیماراں و نماز جنازہ مکتبہ نوریہ رضویہ سکھر ص ۲۴۹

[2] افضل القری القراء ام القری تحت البیت ۱۲۵ المجمع الثقافی ابو ظبی ۱/ ۲۸۶ [3] افضل القری القراء ام القری تحت البیت ۱۲۵ المجمع الثقافی ابو ظبی ۱/ ۲۸۶ [4] شرح الزرقانی علی المواهب اللدنیة عام

الحزن وفاة خديجة وابي طالب دارالمعرفة بيروت ١/ ٢٩١ [5] انوار التنزيل (تفسير البيضاوى) تحت الآية ٢٨ / ٥٦ دارالفكر بيروت ٤/ ٢٩٨

Fatawa Razawiyya Volume 29

Allama Khafaji says in his marginal notes: | Arabic Text | Urdu Translation | | :--- | :--- | | اشارہ الی الرد علی بعض الرافضہ اذ ذھب الی اسلامہ ۱ | This is an indication towards the refutation of some Rafidis (Shias) as they held the view of Abu Talib's conversion to Islam. 1. |

It is stated in *Al-Isabah*: | Arabic Text | Urdu Translation | | ذکر جمع من الرافضہ انہ مات مسلما ۲، قال ابن عساکر في صدر ترجمتہ قیل انہ اسلم ولا یصح اسلامہ مختصر ۳۔ | A group of Rafidis says that Abu Talib died as a Muslim. 2. Imam Ibn Asakir mentioned at the beginning of Abu Talib's account in his history that some became convinced of Abu Talib's conversion to Islam, and this is not authentic - summarized. 3. |

It is stated in *Zurqani*: | Arabic Text | Urdu Translation | | الصحیح ان ابا طالب لم یسلم، و ذکر جمع من الرافضہ انہ مات مسلما و تمسکوا باشعار و اخبار واھیۃ تکفل بردھا فی الاصابۃ ٤۔ | The correct view is that Abu Talib did not embrace Islam. A group of Rafidis claimed his death was upon Islam and relied on some poems and baseless reports, the refutation of which the illustrious Imam (Ibn Hajar) took upon himself in *Al-Isabah*. 4. |

It is stated in *Nasim* (Chapter on the Manner of Salutations upon him, peace and blessings of Allah be upon him): | Arabic Text | Urdu Translation | | ابو طالب توفی کافرا و ادعاء بعض الشیعۃ انہ اسلم لا اصل لہ ۵۔ | Abu Talib's death occurred in disbelief (Kufr), and the false claim of some Rafidis that he embraced Islam is completely without foundation. 5. |

Shaikh Muhaqqiq says in the commentary of *Sirat-e-Mustaqim*:

---

1. *Inayah al-Qadhi Hashiyah al-Shihab 'ala Tafsir al-Baydawi*, under verse 28/56, Dar al-Kutub al-Ilmiyyah, Beirut, 7/309.
2. *Al-Isabah fi Tamyiz al-Sahabah*, Letter Taa, Section Four: Abu Talib, Dar Sader, Beirut, 2/116.
3. *Tarikh Dimashq al-Kabir*, Biography 8930: Abu Talib, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, 70/228.
4. *Sharh al-Zurqani 'ala al-Mawahib al-Ladunniyyah*, Al-Maqsad al-Thani, Section Four, Dar al-Ma'rifah, Beirut, 3/274.
5. *Nasim al-Riyadh fi Sharh Shifa al-Qadhi Iyad*, Markaz-e-Ahle Sunnat Barkat-e-Raza, Gujarat, India, 3/484.

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

अल्लामा खफाजी अपने हाशिये (फुटनोट) में फरमाते हैं: | अरबी इबारत | उर्दू अनुवाद | | :--- | :--- | | اشارہ الی الرد علی بعض الرفضہ اذ ذھب الی اسلامہ ١۔ | यह कुछ राफज़ियों (शियाओं) के खंडन की ओर इशारा है क्योंकि वे अबू तालिब के इस्लाम के कायल हैं। 1. |

'इसाबा' (Al-Isabah) में है: | अरबी इबारत | उर्दू अनुवाद | | ذکر جمع من الرفضہ انہ مات مسلما ٢، قال ابن عساکر فی صدر ترجمتہ قیل انہ اسلم ولا یصح اسلامہ مختصر ٣۔ | राफज़ियों का एक समूह कहता है कि अबू तालिब मुसलमान मरे। 2. इमाम इब्न असाकिर ने अपनी तारीख (इतिहास) में अबू तालिब के वर्णन की शुरुआत में फरमाया कि कुछ लोग उनके इस्लाम के कायल हुए और यह सही नहीं है - संक्षिप्त। 3. |

'ज़रक़ानी' (Zurqani) में है: | अरबी इबारत | उर्दू अनुवाد | | الصحیح ان ابا طالب لم یسلم ، و ذکر جمع من الرفضہ انہ مات مسلما و تمسکوا باشعار و اخبار واھیۃ تکفل بردھا فی الاصابۃ ٤۔ | सही यह है कि अबू तालिब मुसलमान नहीं हुए, राफज़ियों की एक जमात ने उनका इस्लाम पर मरना माना और कुछ शेरों और बेतुकी खबरों से दलील ली, जिनके खंडन की जिम्मेदारी इमाम हाफ़िज़ अल-शान ने 'अल-इसाबा' में ली। 4. |

'नसीम' (Nasim) के फ़स्ल 'कैफ़िय्यतुल सलात अलैह' में है: | अरबी इबारत | उर्दू अनुवाद | | ابو طالب توفی کافرا وادعاء بعض الشیعۃ انہ اسلم لا اصل لہ ٥۔ | अबू तालिब की मौत कुफ़्र पर हुई और कुछ राफज़ियों का यह बातिल दावा कि वे इस्लाम लाए, बिल्कुल बेबुनियाद है। 5. |

शेख मोहक्किक शरह 'सिराते मुस्तकीम' में फरमाते हैं:

---

1. इनायतुल काज़ी हाशिया अल-शिहाब अला तफ़सीर अल-बैज़ावी, आयत 28/56 के तहत, दारुल कुतुब अल-इल्मिया, बेरुत, 7/309।
2. अल-इसाबा फी तमीज़ अल-सहाबा, हर्फ ता, भाग चार: अबू तालिब, दार सादेर, बेरुत, 2/116।
3. तारीख़ दमिश्क अल-कबीर, तर्जुमा 8930: अबू तालिब, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, 70/228।

4. शरह अल-ज़रक़ानी अला अल-मवाहिब अल-लदुनिया, अल-मकसद अल-थानी, भाग चार, दारुल मारिफा, बेरुत, 3/274।
5. नसीम अल-रियाज़ फी शरह शिफा अल-काज़ी इयाज़, मरकज़-ए-अहले सुन्नत बरकात-ए-रज़ा, गुजरात, भारत, 3/484।

पेज 705/750

علامہ خفاجی اس کے حاشیہ میں فرماتے ہیں: | عربی عبارت | اردو ترجمہ | | :--- | :--- | | اشارہ الی الرد علی بعض الرفضہ اذ ذھب الی اسلامہ ۱۔ | یہ اشارہ ہے بعض رافضیوں کے رد کی طرف کہ وہ اسلام ابو طالب کے قائل ہیں۔ ۱۔ |

اصابہ میں ہے: | عربی عبارت | اردو ترجمہ | | ذکر جمع من الرفضہ انہ مات مسلما ۲، قال ابن عساکر فی صدر ترجمتہ قیل انہ اسلم ولا یصح اسلامہ مختصر ۳۔ | رافضیوں کا ایک گروہ کہتا ہے کہ ابو طالب مسلمان مرے۔ ۲۔ امام ابن عساکر نے اپنی تاریخ میں شروع تذکرہ ابوطالب میں فرمایا بعض اسلام ابوطالب کے قائل ہوئے اور یہ صحیح نہیں مختصر۔ ۳۔ |

زرقانی میں ہے: | عربی عبارت | اردو ترجمہ | | الصحیح ان ابا طالب لم یسلم ، و ذکر جمع من الرفضہ انہ مات مسلما و تمسکوا باشعار و اخبار واھیۃ تکفل بردھا فی الاصابۃ ٤۔ | صحیح یہ ہے کہ ابوطالب مسلمان نہ ہوئے ، رافضیوں کی ایک جماعت نے ان کا اسلام پر مرنا مانا اور کچھ شعروں اور واہیات خبروں سے تمسک کیا جن کے رد کا امام حافظ الشان نے اصابہ میں ذمہ لیا۔ ۴۔ |

نسیم فصل کیفیت الصلوۃ علیہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم والتیسلیم میں ہے: | عربی عبارت | اردو ترجمہ | | ابو طالب توفی کافرا وادعاء بعض الشیعۃ انہ اسلم لا اصل لہ ۵۔ | ابوطالب کی موت کفر پر ہوئی اور بعض رافضیوں کا دعویٰ باطلہ کہ وہ اسلام لائے محض بے اصل ہے۔ ۵۔ |

شیخ محقق شرح صراط مستقیم میں فرماتے ہیں:

۱ عنایۃ القاضی حاشیۃ الشہاب علی تفسیر البیضاوی تحت الایۃ ۵۶/۲۸ دار الکتب العلمیہ بیروت ۷/ ۳۰۹ ۲ الاصابۃ في تمییز الصحابۃ حرف الطاء القسم الرابع ابوطالب دار صادر بیروت ۲ /۱۱۶ ۳ تاریخ دمشق الکبیر ترجمہ ۸۹۳۰ ابوطالب دار احیاء التراث العربی ۷۰/ ۲۲۸ ۴ شرح الزرقانی علی المواہب اللدنیۃ المقصد الثانی الفصل الرابع دارالمعرفتہ بیروت ۳/ ۲۷۴ ۵ نسیم الریاض فی شرح شفاء القاضی عیاض مرکز اہلسنت برکات رضا گجرات الہند ۳/ ۴۸۴

Volume 29 Fatawa Razawiyya

Sheikh Ibn Hajar says in Fath al-Bari that Abu Talib's recognition of the prophethood of the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) is mentioned in many reports. The Shia have relied on this for his conversion to Islam and have sought evidence for their claim from things that do not support it. (t) Sheikh Ibn Hajar states in Fath al-Bari: Abu Talib had knowledge of the prophethood of the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him). There are several hadiths on this subject which the Shia present as evidence for Abu Talib's Islam, but the things they use as evidence for their claim do not actually support their claim. (t)

In the same it is: It should not be hidden that the validity of the Islam of the parents, in fact, all the ancestors of he (peace and blessings of Allah be upon him) is well-known, and the Shia also consider Abu Talib's Islam to be of this kind. (Excerpted) Let it not be hidden that the correctness of the Islam of the parents of the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him), indeed all his forefathers and ancestors, is well-known. The Shia also consider Abu Talib's Islam to be from the same category. (End of condensed quote) (t)

Chapter Seven: Praise be to Allah, the discourse has reached its conclusion. After so many clear and evident texts from the Quran, Hadith, and the sayings of the Companions, Successors, followers of the Successors, and imams of ancient and modern times, an objective person has no choice but to accept, and doubts have no share but complete annihilation. Nevertheless, for the clarification of the goal and the calming of misconceptions as appropriate for the occasion, 'Amr mentioned eight doubts, and a ninth, if it can even be called a doubt, is the one that was omitted; we mention all of them and, with the guidance of Allah Almighty, express the answer and manifest the truth.

First Doubt - Guardianship - I say: (I say - t) Yes, certainly. But guardianship of the Prophet does not necessitate obedience to the Prophet. Allah Almighty said (Allah Almighty said - t): "Then the family of Pharaoh picked him up, that he might become for them an enemy and a cause of grief." (3 - The Verse) So the people of Pharaoh picked him up so that he might be an enemy to them and a source of grief for them. The Verse (t)

1 Safar al-Sa'adat, Chapter on visiting the sick, etc., Maktaba Nooria Razawiyya Sukkur, p. 249 2 Safar al-Sa'adat, Chapter on visiting the sick, etc., Maktaba Nooria Razawiyya Sukkur, pp. 249-250 3 The Holy Quran 28/8

जिल्द 29 फ़तावा रज़विया

शेख इब्न हजर 'फ़तह अल-बारी' में कहते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की नुबुव्वत के बारे में अबू तालिब की पहचान कई रिपोर्टों में आई है और शियाओं ने उनके इस्लाम पर इसे आधार बनाया है और अपने दावे के लिए उन चीजों से दलील दी है जो उस पर दलाली नहीं करतीं। (त) शेख इब्न हजर फ़तह अल-बारी में फरमाते हैं: अबू तालिब को रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की नुबुव्वत की मारिफ़त (पहचान) हासिल थी। इस बारे में कई हदीसें आई हैं जिन्हें शिया अबू तालिब के इस्लाम की दलील बताते हैं, लेकिन वे जिस चीज़ से अपने दावे के लिए दलील पेश करते हैं, वह उनके दावे को साबित नहीं करती। (त)

इसी में है: यह बात छिपी नहीं रहनी चाहिए कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के माता-पिता, बल्कि उनके सभी पूर्वजों के इस्लाम की प्रामाणिकता प्रसिद्ध है, और शिया अबू तालिब के इस्लाम को भी इसी श्रेणी का मानते हैं। (संक्षिप्त) छिपा न रहे कि नबी करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के माता-पिता, बल्कि तमाम पूर्वजों और पूर्वजों के इस्लाम का सही होना मशहूर है, और शिया अबू तालिब के इस्लाम को भी इसी श्रेणी का समझते हैं। (संक्षेप में) (त)

सातवाँ अध्याय: अल्हम्दुलिल्लाह, बातचीत अपने अंत तक पहुँच गई है। कुरान, हदीस, और सहाबा, ताबेईन, तबअ ताबेईन और प्राचीन और आधुनिक इमामों के इतने स्पष्ट और प्रत्यक्ष प्रमाणों के बाद, एक निष्पक्ष व्यक्ति के पास स्वीकार करने के अलावा कोई विकल्प नहीं है, और संदेहों का हिस्सा पूर्ण विनाश के अलावा कुछ नहीं है। फिर भी, लक्ष्य के स्पष्टीकरण और अवसर के अनुसार गलतफहमियों को शांत करने के लिए, 'अम्र' ने आठ संदेहों का उल्लेख किया, और नौवां, यदि उसे संदेह कहने के योग्य भी माना जा सकता है, तो वह वही है जो छोड़ दिया गया था; हम अल्लाह तआला की तौफीक से उन सभी का उल्लेख करते हैं और जवाब का इजहार करते हैं और सच्चाई को स्पष्ट करते हैं।

पहला संदेह - कफ़ालत (संरक्षण) - मैं कहता हूँ: (मैं कहता हूँ - त) हाँ, निश्चित रूप से। लेकिन नबी की कफ़ालत नबी की आज्ञाकारिता को अनिवार्य नहीं करती। अल्लाह तआला ने फरमाया (अल्लाह तआला ने फरमाया - त): "फिर फिरौन के घर वालों ने उसे उठा लिया, ताकि वह उनके लिए दुश्मन और गम का कारण बन जाए।" (3 - आयत) तो उसे फिरौन के घर वालों ने उठा लिया ताकि वह उनके लिए दुश्मन और उन पर गम हो। आयत (त)

1 सफर अल-सआदत, बीमारों की इयादत के बयान में अध्याय, आदि, मकतबा नूरिया रज़विया सुक्कुर, पृष्ठ 249 2 सफर अल-सआदत, बीमारों की इयादत के बयान में अध्याय, आदि, मकतबा नूरिया रज़विया सुक्कुर, पृष्ठ 249-250 3 अल-कुरान अल-करीम 28/8

شیخ ابن حجر در فتح الباری میگوید معرفت ابوطالب به نبوت رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم در بسیاری از اخبار آمدہ و تمسک کردہ بدان شیعہ بر اسلام وی و استدلال کردہ اند بر دعوی خود بچیزی کہ دلالت ندارد بر آں ۱۔ شیخ ابن حجر فتح الباری میں فرماتے ہیں ابو طالب کو رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ و سلم کی نبوت کی معرفت حاصل تھی۔ اس بارے میں متعدد احادیث وارد ہیں جن کو شیعہ اسلام ابو طالب کی دلیل بتاتی ہیں اور ان دعوی پر جس چیز سے استدلال کرتے ہیں وہ ان کے دعوی پر دلالت نہیں کرتی۔ ت)

اسی میں ہے: مخفی نماند کہ صحت اسلام ابوین بلکہ سائر آبائے دے صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم مشہورست و شیعہ اسلام ابوطالب را نیز ازیں قبیل دانند ۲ھ مختصراً۔ پوشیدہ نہ رہے کہ نبی کریم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کے والدین بلکہ تمام آباء و اجداد کے اسلام کا صحیح ہونا مشہور ہے، اور شیعہ اسلام ابوطالب کو بھی اسی قبیل سے سمجھتے ہیں اھ اختصار (ت)

فصل ہفتم: الحمدللہ کلام اپنی نہایت کو پہنچا بعد اس قدر نصوص علیہ وجلیہ قرآن و حدیث و ارشادات صحابہ و تابعین و تبع تابعین و آئمہ قدیم و حدیث کے منصف کو چارہ نہیں مگر تسلیم اور شبہات کا حصہ نہیں مگر فنائے عمیم پھر بھی تبیین مرام و تسکین اوہام مناسب مقام، عمر و نے آٹھ شبہے ذکر کیے اور نواں کہ اگر شبہ کہنے کے بھی کچھ قابل ہے تو وہی ہے اس سے متروک ہوا ہم اُن سب کو ذکر کر کے بتوفیق اللہ تعالٰی اظہار جواب و ابانت صواب کریں۔

شبہ اولیٰ _ کفالت _ اقول: (میں کہتا ہوں ۔ ت) ہاں بالیقین مگر کفالت نبی مستلزم اطاعت نبی نہیں، قال اللہ تعالیٰ (اللہ تعالیٰ نے فرمایا۔ ت): "فَالْتَقَطَهُ آلُ فِرْعَوْنَ لِيَكُونَ لَهُمْ عَدُوًّا وَحَزَنًا" ۳۔ الآیۃ تو اُسے اٹھا لیا فرعون کے گھر والوں نے کہ وہ ان کا دشمن اور ان پر غم ہو، الآیۃ (ت)

۱ سفر السعادت فصل در بیان عیادت بیماراں الخ مکتبہ نوریہ رضویہ سکھر ص ۲۴۹ ۲ سفر السعادت فصل در بیان عیادت بیماراں الخ مکتبہ نوریہ رضویہ سکھر ص ۲۴۹-۲۵۰ ۳ القرآن الکریم ۸/۲۸

Volume 29 Fatawa Razawiyya

Allah Almighty says (and Allah Almighty stated): "Did we not bring you up among us as a child, and did you not remain among us for years of your life?" (The Quran, 26:18) | He said: Did we not bring you up among us as a child, and you stayed among us for many years of your life. (T)

Second Doubt — Aid and Support — Narrations: Necessary but far from the objective; the Rafidi (Shi'ite) cited this as evidence, and the Sunni scholars have already replied. In "Al-Isabah" it is stated:

The Rafidi argued with the words of Allah Almighty: "Those who believe in him, honor him, help him and follow the light which has been sent down with him, it is they who will prosper." He said: Abu Talib honored him as is well known and understood, and for his sake, he rejected the Quraysh and showed enmity towards them, which no chronicler denies, so he must be among the successful. This is the extent of their knowledge. We concede that he helped him and went to great lengths in doing so, but he did not follow the light that was with him, which is the Mighty Book calling to monotheism, and success is only attained by possessing all the attributes upon which it is predicated.

Meaning, regarding the Islam of Abu Talib, the Rafidi brought evidence from this verse that Allah Almighty says: "Those who brought faith in this Prophet, aided and helped him, and followed the light sent down with this Prophet, they are the ones who attain success." The Rafidi said: Abu Talib's help and support are famous and well-known; he incurred the enmity of the Quraysh for the sake of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him), which no reporter of news will deny, so he should be counted among those who attained success. This is the reach of the knowledge of the Rafidis. We acknowledge that Abu Talib certainly provided support, and to the ultimate degree, but he did not follow that light which descended with the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him), meaning the Holy Quran, the caller to monotheism. Success is only obtained when all the qualities upon which it was ordained are achieved.

1. Al-Quran Al-Karim 26/18
2. Al-Isabah fi Tamyiz al-Sahabah, Letter 'Ta', Biography 1685, Abu Talib, Dar Sader Beirut 2/118

जिल्द 29 फ़तावा रिज़विया

अल्लाह तआला ने फरमाया: "क्या हमने तुम्हें अपने यहाँ बचपन में नहीं पाला और तुम ने हमारे यहाँ अपनी उम्र के कई साल गुज़ारे?" (क़ुरान, 26:18) | बोला: क्या हमने तुम्हें अपने यहाँ बचपन में न पाला और तुम हमारे यहाँ अपनी उम्र के कई बरस गुज़ारे। (त)

दूसरा संदेह — सहायता और समर्थन — उद्धरण: आवश्यक लेकिन उद्देश्य से दूर, राफ़िज़ी (शिया) ने इसे प्रमाण के रूप में पेश किया और सुन्नी विद्वानों ने उत्तर दे दिया है। "अल-इसाबा" में कहा गया है:

राफ़िज़ी ने अल्लाह तआला के इस कथन से तर्क दिया: "तो जो लोग उस पर ईमान लाए, उसका सम्मान किया, उसकी सहायता की और उस नूर (प्रकाश) का अनुसरण किया जो उसके साथ उतारा गया है, वही सफल होने वाले हैं।" उसने कहा कि अबू तालिब ने उसका सम्मान किया जैसा कि प्रसिद्ध और ज्ञात है, और उनके कारण कुरैश का विरोध किया और उनसे शत्रुता मोल ली, जिसे समाचारों का कोई भी वर्णनकर्ता नकार नहीं सकता, इसलिए वह सफल होने वालों में से हुए। उनके ज्ञान की पहुँच यहीं तक है। हम स्वीकार करते हैं कि उन्होंने उनकी सहायता की और उसमें कोई कसर नहीं छोड़ी, लेकिन उन्होंने उस नूर का अनुसरण नहीं किया जो उनके साथ था, यानी वह महान पुस्तक जो एकेश्वरवाद (तौहीद) की ओर बुलाती है, और सफलता केवल उन सभी गुणों को प्राप्त करने से ही मिलती है जिन पर उसे आधारित किया गया है।

यानी अबू तालिब के इस्लाम पर राफ़िज़ी ने इस आयत से दलील दी कि अल्लाह अज़्ज़वजल फ़रमाता है "जो लोग इस नबी पर ईमान लाए और उनकी नुसरत (मदद) की और जो नूर इस नबी के साथ उतारा गया उसके पैरव हुए वही लोग फ़लाह (सफलता) पाने वाले हैं।" राफ़िज़ी ने कहा: अबू तालिब की मदद व नुसरत मशहूर व मारूफ़ (प्रसिद्ध) है, नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की वजह से कुरैश से मुखालफत की अदावत (दुश्मनी) बाँध ली जिसका कोई रावी (वर्णनकर्ता) इंकार न करेगा तो वह फ़लाह पाने वालों में ठहरे। राफ़िज़ियों के इल्म की रसाई यहाँ तक है और हम तस्लीम करते हैं कि अबू तालिब ने ज़रूर नुसरत की और बदरजा-ए-ग़ायत (अंतिम सीमा तक) की मगर उस नूर का इत्तेबा (अनुसरण) न किया जो हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के साथ उतरा

यानी क़ुरान मजीद दाई-ए-तौहीद, और फ़लाह तो जब मिले कि जितनी सिफ़ात पर उसे मुरत्तब फ़रमाया है सब हासिल हों।

1. अल-क़ुरान अल-करीम 26/18
2. अल-इसाबा फी तमीज़ अस-सहाबा, हर्फ़'ता', जीवनी 1685, अबू तालिब, दार सादिर बेरुत 2/118

पृष्ठ 707 का 750

قال تعالٰی (اور اللہ تعالٰی نے فرمایا ت): "قَالَ اَلَمْ نُرَبِّكَ فِيْنَا وَلِيْدًا وَّلَبِثْتَ فِيْنَا مِنْ عُمُرِكَ سِنِيْنَ ﴿۱۸﴾" | بولا کیا ہم نے تمہیں اپنے یہاں بچپن میں نہ پالا اور تم نے ہمارے یہاں اپنی عمر کے کئی برس گزارے۔(ت)

شبہ ثانیہ — نصرت و حمایت — نقول: ضرور مگر مدعا سے دور، رافضی اس سے دلیل لائے اور علمائے سنت جواب دے چکے۔ اصابہ میں فرمایا:

استدل الرافضي بقول الله تعالى "فالذين أمنوا به و عزروه و نصروه و اتبعوا النور الذى معه اولئك هم المفلحون" قال وقد عزره ابوطالب بما اشتهر و علم و نابذ قريشا وعاداهم بسببه مما لا يدفعه احد من نقلة الاخبار فيكون من المفلحين انتهى وهذا مبلغهم من العلم و انانسلم انه نصره و بالغ فى ذلك لكنه لم يتبع النور الذى معه وهو الكتاب العزيز الداعى الى التوحيد ولا يحصل الفلاح الا بحصول مارتب عليه من الصفات كلها۔ یعنی اسلام ابی طالب پر رافضی اس آیت سے دلیل لایا کہ اللہ عزوجل فرماتا ہے "جو لوگ اس نبی پر ایمان لائے اور اس کی نصرت ومدد کی اور جو نور اس نبی کے ساتھ اتارا گیا اس کے پیرو ہوئے وہی لوگ فلاح پانے والے ہیں۔" رافضی نے کہا: ابو طالب کی مدد و نصرت مشہور و معروف ہے نبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کے پیچھے قریش سے مخالفت کی عداوت باندھ لی جس کا کوئی راوی اخبار انکار نہ کرے گا تو وہ فلاح پانے والوں میں ٹھہرے۔ رافضیوں کے علم کی رسائی یہاں تک ہے اور ہم تسلیم کرتے ہیں کہ ابوطالب نے ضرور نصرت کی اور بدرجہ غایت کی مگر اس نور کا اتباع نہ کیا جو حضور اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کے ساتھ اترا یعنی قرآن مجید داعی توحید اور فلاح تو جب ملے کہ جتنی صفات پر اسے مرتب فرمایا ہے سب حاصل ہوں۔

1 القرآن الكريم ۲۶/ ۱۸ 2 الاصابة فی تمییز الصحابة حرف الطاء ترجمہ ۶۸۵ ۱ ابوطالب

دارصادر بیروت ۲ / ۱۱۸

I say: Firstly, this story of assistance and support has already been presented in the court of Prophethood. Abbas (may Allah be pleased with him) asked: O Messenger of Allah! Abu Talib used to do such and such, what benefit did he get? The answer that was given has already been mentioned in the fourth Hadith.

Secondly: Rather, the Lord of Honor Himself has already answered based on the exegesis (Tafsir) of Ibn Abbas (may Allah be pleased with them both) that they stop others from hurting the Prophet while avoiding bringing faith themselves. See the verse and the third Hadith.

Thirdly: It is the ending that matters, "Verily, actions are judged by their endings."1 (The outcome of actions depends on how they end. -T) When Abu Talib's death in disbelief is proven from the Quran and Hadith, then narrating previous stories and bringing evidence from past guardianship and support is absolutely void. In the Sahih Sittah (six authentic collections), there is a long Hadith from Hazrat Abdullah bin Masood, where the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says:

| "By Allah, besides Whom there is no other god, one of you may perform the deeds of the people of Paradise until there is only an arm's length between him and it, then that which is written (destiny) overcomes him and he performs the deeds of the people of Hellfire and enters it."2 | By Allah, besides Whom there is no other god, a person among you continues to perform the deeds of the people of Paradise until only one hand's distance remains between him and Paradise. Then, destiny prevails such that he performs the deeds of the people of Hell and enters Hell. (And we seek refuge with Allah, the Lord of the worlds). |

Fourthly: Merely claiming Islam does not necessitate being a Muslim, nor is there specific or general proof. In the two Sahihs (Bukhari and Muslim), it is narrated from Abu Hurairah (may Allah be pleased with him) that during the Battle of Khaybar, a claimant of Islam fought intensely alongside the Noble Prophet and engaged in great battle with the disbelievers. The Companions praised him. The Noble Messenger (peace and blessings of Allah be upon him) said: "He is from the people of Hell." On this, some people were close to becoming wavering (meaning, such high-level excellent work, such magnificent and beautiful assistance to Islam, and yet a decree of being destined for fire). Finally, news was received that he was wounded in the

battle, could not bear the pain, and slit his own throat at night and died. The Noble Messenger (peace and blessings of Allah be upon him)...

1. Musnad Ahmad bin Hanbal, Hadith Sahl bin Sa'd, Al-Maktab al-Islami Beirut, 5/335
2. Sahih al-Bukhari, Kitab al-Tawhid, Chapter: Allah's statement "And our word has already gone forth...", Qadeemi Kutub Khana Karachi, 2/1110; Sahih Muslim, Kitab al-Qadr, Chapter: The manner of creation of man etc., Qadeemi Kutub Khana Karachi, 2/332; Sunan Abi Dawud, Kitab al-Sunnah, Chapter: Al-Qadr, Aftab Alam Press Lahore, 2/292.

मैं कहता हूँ: पहले, सहायता और समर्थन का यह किस्सा रिसालत के दरबार में पेश हो चुका है, अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने अर्ज़ की: ऐ अल्लाह के रसूल! अबू तालिब ने ऐसा-ऐसा किया, उसे क्या लाभ मिला? जो उत्तर दिया गया, वह चौथी हदीस में गुज़र चुका है।

दूसरे: बल्कि, इब्ने अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) की तफसीर पर स्वयं रब्बुल इज़्ज़त उत्तर दे चुका है कि वे दूसरों को नबी की तकलीफ से रोकते हैं और स्वयं ईमान लाने से बचते हैं, आयत और तीसरी हदीस देखें।

तीसरे: अंत का महत्व है "बेशक, कार्यों का दारोमदार उनके अंत पर है।"1 (कार्यों की निर्भरता अंत पर होती है। -त) जब अबू तालिब का कुफ्र पर मरना कुरान और हदीस से साबित है, तो अब पिछले किस्से सुनाना और पिछली किफालत व सहायता से दलील लाना पूरी तरह से अमान्य है। सहाह सित्तह में हज़रत अब्दुल्ला बिन मसूद से एक लंबी हदीस में है, अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं:

| "अल्लाह की कसम जिसके सिवा कोई माबूद नहीं, तुम में से कोई व्यक्ति जन्नतियों के काम करता रहता है यहाँ तक कि उसके और जन्नत के बीच केवल एक हाथ का अंतर रह जाता है, इतने में तकदीर हावी हो जाती है कि वह दोज़खियों (नरकवासियों) के काम करके दोज़ख में जाता है।"2 | अल्लाह की कसम जिसके सिवा कोई खुदा नहीं, तुम में से कोई शख्स जन्नतियों के काम करता रहता है यहाँ तक कि उसमें और जन्नत में सिर्फ एक हाथ का फर्क रह जाता है, इतने में तकदीर गालिब (हावी) आ जाती है कि वह दोज़खियों के काम करके दोज़ख में जाता है। (और हम अल्लाह, जहानों के रब की पनाह मांगते हैं)। |

चौथे: न केवल इस्लाम का दावा करना इस्लाम के लिए ज़रूरी है और न ही इसका कोई विशेष या सामान्य प्रमाण है। सहीहैन (बुखारी और मुस्लिम) में अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से वर्णित है कि खैबर की लड़ाई में इस्लाम का एक दावेदार मुकद्दस नबी के साथ था और उसने काफिरों से डटकर युद्ध किया, सहाबा ने उसकी प्रशंसा की। नबी-ए-करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया: "वह दोज़खी है।" इस पर करीब था कि कुछ लोग विचलित हो जाते। (यानी इतने उच्च स्तर के उम्दा काम, इस्लाम की इतनी अज़ीम और खूबसूरत मदद और फिर भी नारी (नरकवासी) होने के हुक्म)।

अंत में खबर मिली कि वह जंग में ज़ख्मी हो गया, दर्द बर्दाश्त नहीं कर सका और रात को अपना गला काट कर मर गया। नबी-ए-करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)...

1. मुसनद अहमद बिन हंबल, हदीस सहल बिन साद, अल-मकतब अल-इस्लामी बेरूत, 5/335
2. सहीह अल-बुखारी, किताब अल-तौहीद, अध्याय: अल्लाह का कथन "और हमारा वचन पहले ही जा चुका है...", कदीमी कुतुब खाना कराची, 2/1110; सहीह मुस्लिम, किताब अल-क़द्र, अध्याय: मनुष्य के निर्माण का तरीका आदि, कदीमी कुतुब खाना कराची, 2/332; सुनन अबी दाऊद, किताब अस-सुन्नाह, अध्याय: अल-क़द्र, आफताब आलम प्रेस लाहौर, 2/292।

اقول: اولاً یہ نصرت و حمایت کا قصہ بارگاہِ رسالت میں پیش ہو چکا، عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے عرض کی: یارسول اللہ ! ابو طالب چنیں و چناں کرتا اسے کیا نفع ملا؟ جواب جو ارشاد ہوا۔ حدیثِ چہارم میں گزرا۔

ثانیاً: بلکہ تفسیر ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما پر خود رب العزت جواب دے چکا کہ اوروں کو نبی کی ایذا سے روکتے اور خود ایمان لانے سے بچتے ہیں، دیکھو آیت و حدیث سوم۔

ثالثاً: اعتبار خاتمہ کا ہے "انما الاعمال بالخواتیم"۔1 (اعمال کا دارو مدار خاتموں پر ہے۔ت) جب ابوطالب کا کفر پر مرنا قرآن و حدیث سے ثابت تو اب اگلے قصے سنانا اور گزشتہ کفالت و نصرت سے دلیل لانا محض ساقط۔ صحاح ستہ میں حضرت عبداللہ بن مسعود سے ایک حدیث طویل میں ہے، رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں :

| "فواللہ الذی لا الہ غیرہ ان احدکم لیعمل بعمل اھل الجنۃ حتی مایکون بینہ وبینھا الاذراع فیسبق علیہ الکتاب فیعمل بعمل اھل النار فیدخل النار"۔2 | قسم اللہ کی جس کے سوا کوئی خدا نہیں تم میں کوئی شخص جنتیوں کے کام کرتا رہتا ہے یہاں تک کہ اس میں اور جنت میں صرف ایک ہاتھ کا فرق رہ جاتا ہی اتنے میں تقدیر غالب آجاتی ہے کہ وہ دوزخیوں کے کام کر کے دوزخ میں جاتا ہے۔
(والعیاذ باللہ رب العالمین)۔ |

رابعاً: نہ صرف اسلام مستلزم اسلام نہ ثبوتِ خاص نہ ثبوتِ عام، صحیحین میں ابوہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے ہی غزوہ خیبر میں ایک مدعی اسلام نے ہمراہ رکابِ اقدس سخت جہاد اور کافروں سے عظیم قتال کیا، صحابہ اس کے مداح ہوئے، حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا:

وہ دوزخی ہے۔ اس پر قریب تھا کہ بعض لوگ متزلزل ہو جاتے۔ (یعنی ایسے عالی درجے کے عمدہ کام ایسی جلیل و جمیل نصرتِ اسلام اور اس پر ناری ہونے کے احکام) بالآخر خبر پائی کہ وہ معرکہ میں زخمی ہوا درد کی تاب نہ لایا رات کو اپنا گلا کاٹ کر مر گیا۔ حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم

1 مسند احمد بن حنبل حدیث سهل بن سعد المكتب الاسلامي بيروت ۵/ ۳۳۵ 2 صحیح البخاری کتاب التوحید باب قولہ تعالی ولقد سبقت کلمتنا الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ۲/ ۱۱۱۰، صحیح مسلم کتاب القدر باب کیفیۃ خلق الآدمی الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ۲/ ۳۳۲، سنن ابی داؤد کتاب السنۃ باب القدر آفتاب عالم پریس لاہور ۲/ ۲۹۲

Fatawa Rizvia, Volume 29

"Indeed, none shall enter Paradise except a Muslim soul, and indeed, Allah supports this religion through a wicked man."[1] | Indeed, no one will enter Paradise except a Muslim soul, and indeed Allah helps this religion through a transgressor.

Near to this, Tabarani narrated in 'Al-Mu'jam al-Kabir' from Amr bin Nu'man bin Muqarrin (may Allah be pleased with him). Nasa'i and Ibn Hibban narrated from Hazrat Anas bin Malik, and Ahmad and Tabarani narrated from Hazrat Abu Bakr (may Allah be pleased with them) with a good chain of narration that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said:

"Indeed, Allah supports this religion with people who have no share [in the Hereafter]."[2] | Indeed, Allah Almighty helps this religion through such people who have no portion [of reward].

In 'Al-Mu'jam al-Kabir' of Tabarani, it is narrated from Hazrat Abdullah bin Amr bin al-Aas (may Allah be pleased with them) that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said:

"Indeed, Allah Almighty supports Islam with men who are not from its people."[3] | Indeed, Allah Almighty grants support to Islam through such people who are not themselves from the followers of Islam.

We ask Allah for forgiveness and well-being. (We seek forgiveness and safety from Allah the Almighty. - Translator)

Third Doubt ——— Love I say: Indeed, but within natural limits, as an uncle should feel for a nephew; and what a nephew! He was the sole remnant of a biological brother who had passed away young. Furthermore, he possessed such beauty of appearance and perfection of character that not only his own relatives but strangers too, upon seeing him, would be devoted to him (peace and blessings of Allah be upon him). The Hashimite family was illuminated by this single Praiseworthy lamp and smokeless candle. Every sane person possesses familial protectiveness, especially the Arabs, especially the Quraysh, and especially the Banu Hashim, who had a great inclination for it. Therefore, when the noble verse "So proclaim..."

---

[1] Sahih al-Bukhari, Kitab al-Maghazi, Chapter on the Battle of Khaybar, Qadimi Kutub Khana Karachi, 2/604; Sahih Muslim, Kitab al-Iman, Chapter on the Severity of the Prohibition of Killing a Human, Qadimi Kutub Khana Karachi, 1/72. [2] Kanz al-

Ummal, ... from Abu Bakra, Hadith 28956, Mu'assasat al-Risala Beirut, 10/184. [3] Kanz al-Ummal, ... from Ibn Amr, Hadith 28956, Mu'assasat al-Risala Beirut, 10/184.

फ़तावा रिज़विया, जिल्द 29

"बेशक जन्नत में कोई नहीं जाएगा सिवाय एक मुस्लिम जान के, और बेशक अल्लाह इस दीन की मदद फासिक (पापी) आदमी के ज़रिए करता है।"[1] | बेशक जन्नत में कोई न जाएगा मगर मुसलमान जान, और बेशक अल्लाह इस दीन की मदद करता है फासिक के हाथ पर।

इसी के करीब तबरानी ने 'कबीर' में अम्र बिन नुमान बिन मुक़र्रिन रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की। नसाई और इब्ने हिब्बान ने हज़रत अनस बिन मालिक से, और अहमद व तबरानी ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से उम्दा सनद के साथ रिवायत किया कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फरमाते हैं:

"बेशक अल्लाह इस दीन की मदद उन लोगों से करता है जिनका (आख़िरत में) कोई हिस्सा नहीं।"[2] | बेशक अल्लाह अज़्वजल इस दीन की मदद ऐसे लोगों से फरमाता है जिनका कोई हिस्सा नहीं।

तबरानी कबीर में हज़रत अब्दुल्ला बिन अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फरमाते हैं:

"बेशक अल्लाह तआला इस्लाम की ताईद (मदद) उन लोगों से कराता है जो खुद इस्लाम वाले नहीं।"[3] | बेशक अल्लाह तआला इस्लाम की ताईद ऐसे लोगों से कराता है जो खुद अहले इस्लाम से नहीं।

नसालुल्लाह अल-अफ़्व वल-आफ़िया (हम अल्लाह तआला से माफ़ी और आफ़ियत माँगते हैं। - त)

तीसरा शुबहा ——— मुहब्बत मैं कहता हूँ: बेशक, मगर प्राकृतिक सीमा तक, जैसे एक चाचा को भतीजे से होनी चाहिए; और भतीजा भी कैसा! जवान फौत हुए हकीकी भाई की इकलौती निशानी। फिर उस पर ऐसा हुस्न और ऐसा कमाल-ए-सीरत कि अपने तो अपने, गैर देखें तो फिदा हो जाएँ (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)। हाशमी खानदान इसी एक महमूद चिराग और धुंआरहित शम्मा से रोशन था। खानदानी हमियत (सम्मान की भावना) हर अक्लमंद में होती है, खुसूसन अरबों में, खुसूसन कुरैश में, और बिल-खुसूस बनी हाशिम में इसका बड़ा मादा था, इसीलिए जब आयत-ए-करीमा "फ़स्दअ..."

---

[1] सहीह अल-बुखारी, किताबुल मगाज़ी, बाब ग़ज़वतुल ख़ैबर, कदीमी कुतुब खाना कराची, 2/604; सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाब बयान ग़िलज़ तहरीम कत्लुल इंसान, कदीमी कुतुब खाना

कराची, 1/72। [2] कंजुल उम्माल, ... हज़रत अबू बकरा से, हदीस 28956, मुअस्ससतुल रिसाला बेरूत, 10/184। [3] कंजुल उम्माल, ... हज़रत इब्ने अम्र से, हदीस 28956, मुअस्ससतुल रिसाला बेरूत, 10/184।

पेज 709 / 750

"انہ لا یدخل الجنۃ الا نفس مسلمۃ وان اللہ لیؤید ھذا الدین بالرجل الفاجر"[1] | بے شک جنت میں کوئی نہ جائے گا مگر مسلمان جان، اور بے شک اللہ اس دین کی مدد کرتا ہے فاسق کے ہاتھ پر۔

اسی کے قریب طبرانی نے کبیر میں عمرو بن نعمان بن مقرن رضی اللہ تعالٰی عنہ سے روایت کی۔ نسائی وابن حبان حضرت انس بن مالک اور احمد و طبرانی حضرت ابوبکر رضی اللہ تعالٰی عنہما سے بسند جید راوی رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں:

ان اللہ یؤید ھذا الدین باقوام لا خلاق لھم[2] | بے شک اللہ عزوجل اس دین کی مدد ایسے لوگوں سے فرماتا ہے جن کا کوئی حصہ نہیں۔

طبرانی کبیر میں حضرت عبد اللہ بن عمرو بن عاص رضی اللہ تعالٰی عنہما سے راوی رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں:

ان اللہ تعالٰی لیؤید الاسلام برجال ماھم من اھلہ[3] | بے شک اللہ تعالٰی اسلام کی تائید ایسے لوگوں سے کراتا ہے جو خود اہل اسلام سے نہیں۔

نسأل اللہ العفو و العافیۃ (ہم اللہ تعالٰی سے معافی اور عافیت مانگتے ہیں۔ت)

شبہ ثالثہ ——— محبت اقول: بے شک مگر حد طبعی تک جیسے چچا کو بھتیجے سے چاہیے اور بھتیجے بھی کیسے کہ حقیقی بھائی نوجوان گزرے ہوئے کی اکلوتی نشانی، پھر اس پر جمال صورت و کمال سیرت وہ کہ اپنے تو اپنے غیر دیکھیں تو فدا ہو جائیں صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم خاندان ہاشمی ایک اسی چراغ محمود و شمع بے دود سے روشن تھا۔ خاندانی حمیت ہر عاقل کو

ہوتی ہے خصوصاً عرب خصوصاً قریش خصوصاً بنی ہاشم میں اس کے عظیم مادہ ولہذا جب آیہ کریمہ "فَاصْدَعْ ..."

---

[1] صحیح البخاری کتاب المغازی باب غزوۃ الخیبر قدیمی کتب خانہ کراچی ۲ / ۶۰۴، صحیح مسلم کتاب الایمان باب بیان غلظ تحریم قتل الانسان قدیمی کتب خانہ کراچی ۱ / ۷۲ [2] کنز العمال بر من حب و حم طب عن ابی بکرۃ حدیث ۲۸۹۵۶ مؤسسۃ الرسالہ بیروت ۱۰ / ۱۸۴ [3] کنز العمال بر مز طب عن ابن عمرو حدیث ۲۸۹۵۶ مؤسسۃ الرسالہ بیروت ۱۰ / ۱۸۴

Fatawa Razawiyya, Volume 29

"So proclaim what you are commanded and turn away from the polytheists." (Quran 15:94). [Meaning: So openly proclaim what you have been commanded and turn away from the idolaters. - Translator]. This was revealed, and the Master of the World (peace be upon him) began the public invitation to Islam. The nobles of Quraysh gathered and went to Abu Talib, saying that we should take the most handsome and best-built boy in all of Arabia and raise him instead of Muhammad (peace be upon him), and give Muhammad to us. They had brought 'Ammarah bin Walid with this corrupt intention, thinking that if Abu Talib agreed, they would give him to him. Abu Talib replied:

"By Allah, what a bad bargain you are making with me! Would you give me your son so that I may feed and raise him for you, and I give you my son so that you may kill him? By Allah, this shall never happen. When camels return in the evening, if a she-camel leaves its own calf and turns towards another, only then would I exchange my son with you."

We have summarized this from the Hadith of Ibn Ishaq, which he narrated in detail, and from the Hadith of Muqatil mentioned in Al-Mawahib.[2]

By God, what a bad deal you are doing with me! Will you give me your son so that I may feed and raise him for you, and I give my son to you so that you may kill him? By God, this will never be; when camels go out in the evening, if any she-camel leaves its own calf and leans towards another, then I too will exchange my son with you.

(We have summarized this from the Hadith of Ibn Ishaq, which he explained in detail, and we have summarized it from the Hadith of Muqatil, which is mentioned in Mawahib. - Translator)

Abu Talib clearly showed that his love was the natural affection that a human or even an animal has for its offspring. Such love is not faith. Faith is religious love; Abu Talib did not possess this quality. If there were religious and faithful love, why would he choose the fire of hell over the shame [of his tribe], and why would he refuse the Kalima Tayyiba and insist on the creed of ignorance at the time of death? Imam Qastallani says in Irshad al-Sari:

1. The Holy Quran 15/94
2. Al-Mawahib al-Ladunniyyah

फतावा रजविया, खंड 29

"अतः जो आपको आदेश दिया गया है उसे स्पष्ट रूप से कह दें और बहुदेववादियों से मुख मोड़ लें।" (कुरान 15:94)। [अर्थ: तो जो बात आपको हुक्म दी गई है उसे खुल्लम-खुल्ला कह दें और मुशरिकों से मुँह फेर लें। - टी]। यह आयत नाजिल हुई और सैय्यद-ए-आलम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने इस्लाम की खुलेआम दावत शुरू की। कुरैश के अशराफ जमा होकर अबू तालिब के पास गए और कहा कि पूरे अरब में सबसे खूबसूरत और सबसे अच्छी कद-काठी वाला लड़का हमसे ले लें और उसे मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के बदले पालें, और उन्हें हमें दे दें। वे अम्माराह बिन वलीद को इसी बुरे इरादे से लेकर आए थे कि अगर अबू तालिब मान गए, तो वे उसे उन्हें दे देंगे। अबू तालिब ने कहा:

"अल्लाह की कसम, तुम मेरे साथ कितना बुरा सौदा कर रहे हो! क्या तुम अपना बेटा मुझे दोगे कि मैं उसे तुम्हारे लिए खिलाऊं और पालूं, और मैं अपना बेटा तुम्हें दे दूं कि तुम उसे मार डालो? खुदा की कसम, यह कभी नहीं होगा। जब ऊंट शाम को लौटते हैं, तो अगर कोई ऊंटनी अपने बच्चे को छोड़कर दूसरे की तरफ झुकाव रखे, तो मैं भी तुमसे अपना बेटा बदल लूंगा।"

हमने इसे इब्ने इसहाक की हदीस से संक्षिप्त किया है जिसे उन्होंने विस्तार से बयान किया, और मुकातिल की हदीस से जिसका जिक्र मवाहिब में किया गया है।[2]

खुदा की कसम, क्या बुरी गाहकी मेरे साथ कर रहे हो, क्या तुम अपना बेटा मुझे दो कि मैं तुम्हारे लिए इसे खिलाऊं परवरिश करूं और मैं अपना बेटा तुम्हें दे दूं कि तुम उसे कत्ल करो, खुदा की कसम यह कभी होनी नहीं, जब ऊंट शाम को निकलते हैं तो अगर कोई नाका (ऊंटनी) अपने बच्चे को छोड़कर दूसरी की तरफ मेल करती हो तो मैं भी तुमसे अपना बेटा बदल लूं।

(हमने इसको हदीस-ए-इब्ने इसहाक से मुलखस (संक्षिप्त) किया जिसे उन्होंने मुफस्सल बयान किया और हमने मुलखस किया और हदीस-ए-मुकातिल से जिसको मवाहिब में जिक्र किया गया है। - टी)

अबू तालिब ने साफ बता दिया कि उनकी मोहब्बत वही है जो इंसान और जानवर को भी अपने बच्चे से होती है, ऐसी मोहब्बत ईमान नहीं है। ईमान शरई (धार्मिक) मोहब्बत है, अबू तालिब में इसकी शान नहीं थी। यदि शरई और ईमान वाली मोहब्बत होती, तो वे आर (शर्म) पर नार (आग) को क्यों

चुनते, और मौत के समय कलमा तय्यिबा से इनकार और जाहिलियत के मजहब पर अड़िग क्यों रहते? इमाम कस्तलानी इरशाद अल-सारी में फरमाते हैं:

1. अल-कुरान अल-करीम 15/94
2. अल-मवाहिब अल-लदुन्नियाह

पृष्ठ 750 का 710

"فَاصْدَعْ بِمَا تُؤْمَرُ وَأَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِينَ ﴿٩٤﴾" - (تو اعلانیہ کہہ دو جس بات کا تمہیں حکم ہے اور مشرکوں سے منہ پھیر لو۔ ت) نازل ہوئی اور سید عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے اعلانیہ دعوت اسلام شروع کی اشراف قریش جمع ہو کر ابوطالب کے پاس گئے اور کہا کہ تمام عرب میں سب سے زیادہ خوبصورت اور سب سے بڑھ کر اچھی اٹھان والا لڑکا ہم سے لے لو اسے بجائے محمد صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم پرورش کرو اور انہیں ہم کو دے دو اور اسی ارادہ فاسد پر عمارہ بن ولید کو لے کر گئے تھے کہ ابوطالب نے مانا تو اسے انہیں دے دیں گے، ابوطالب نے کہا:

"واللہ لبئس ماتسومونني اتطوننی ابنکم اغذوہ لکم واعطیکم ابنی تقتلونہ ھذا واللہ مالا یکون ابدا حین تروح الابل فانہ حنت ناقۃ الی غیر فصیلہا دفعتہ الیکم"

خدا کی قسم کیا بُری گاہکی میرے ساتھ کر رہے ہو، کیا تم اپنا بیٹا مجھے دو کہ میں تمہارے لیے اسے کھلاؤں پرورش کروں اور میں اپنا بیٹا تمہیں دے دوں کہ تم اسے قتل کرو، خدا کی قسم یہ کبھی ہونی نہیں، جب اُونٹ شام کو نکلتے ہیں تو اگر کوئی ناقہ اپنے بچے کو چھوڑ کر دوسری کی طرف میل کرتی ہو تو میں بھی تم سے اپنا بیٹا بدل لوں۔

لخصناہ حدیث ابن اسحق ذکرناہ بلاغا ومن حدیث مقاتل ذکرہ فی المواہب 2

(ہم نے اس کو حدیث ابنِ اسحق سے ملخص کیا جسے انہوں نے مفصل بیان کیا اور ہم نے ملخص کیا اور حدیث مقاتل سے جس کو مواہب میں ذکر کیا گیا ہے۔ ت)

ابوطالب نے صاف بتادیا کہ ان کی محبت وہی ہے جو انسان حیوان کو بھی اپنے بچے سے ہوتی ہے، ایسی محبت ایمان نہیں، ایمان محبّ شرعی ہے، ابوطالب میں اس کی شان نہیں، محبت شرعی

و ایمانی ہوتی تو نار کو عار پر اختیار اور دم مرگ کلمہ طیبہ سے انکار اور ملتِ جاہلیت پر اصرار کیوں ہوتا۔ امام قسطلانی ارشاد الساری میں فرماتے ہیں:

1 القرآن الکریم ۱۵/ ۹۴ 2 المواہب اللدنیۃ

Fatawa Razawiyya Volume 29

[Arabic Text Block 1]: Abu Talib used to guard him (the Prophet), peace and blessings of Allah be upon him, support him, and love him with a natural love, not a Shari'i (legal/faith-based) one. Thus, divine decree preceded him, and he continued in his disbelief, and for Allah is the supreme argument.

[Urdu Translation]: That is, Abu Talib provided every kind of help and support to the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him), and he had great natural love. However, there was no legal (Shari'i) love; ultimately, divine decree prevailed and, God forbid, he passed away in disbelief, and for Allah is the ultimate proof.

It is stated in Nasim al-Riyad: [Arabic Text Block 2]: His affection for the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) and his love for him are well-known matters in the biographies. He used to honor him and recognized his prophethood, but Allah did not grant him success in Islam. There is a hidden wisdom from Allah Almighty in this refusal, because he was a leader of the Quraysh, and none of them could infringe upon whoever was in his protection. Thus, the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) was in the beginning of his mission under his wing of protection, and he would ward them off from him, as he said:

"By Allah, they will never reach you with their collective assembly, Until I am laid to rest, buried in the dust."

[Urdu Translation]: Abu Talib's affection and love for the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) are well-known and his respect and recognition of prophethood were evident. However, Allah Almighty did not grant him the success of becoming a Muslim. In the book 'al-Imta' it is said: There is a subtle wisdom from Allah Almighty in Abu Talib not becoming a Muslim. He was a leader of the Quraysh, and no one among them could infringe upon his protection. In the beginning of Islam, the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) was under his protective care, and he would ward off opponents from the Prophet. He himself said in a couplet:

"By God, all of the Quraysh gathered together will never reach the Prophet, Until I am buried and laid in the earth."

[Arabic Text Block 3]: For if he had embraced Islam, his protection would have had no weight with them. Therefore, after his death, there was no choice for him (the Prophet), peace and blessings of Allah be upon him, but to migrate.

[Urdu Translation]: So if he had embraced Islam, his protection would have held no weight in the eyes of the Quraysh. Consequently, after his passing, the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) had no choice but to migrate.

Footnotes: 1. Irshad al-Sari Sharh Sahih al-Bukhari, Book of Merits, Chapter on the Story of Abu Talib, Dar al-Kutub al-Ilmiyah, Beirut, 2/201. 2. Nasim al-Riyad, Part 1, Chapter 1, Section 5, Markaz Ahl-e-Sunnat Barkat-e-Raza Gujarat, India, 1/210.

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

[अरबी पाठ 1]: अबू तालिब हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) की हिफाज़त करते, उनकी मदद करते और उनसे स्वाभाविक प्रेम रखते थे, न कि शरीई (धार्मिक)। अतः ईश्वरीय विधान (तक़दीर) उन पर हावी रहा और वह कुफ़्र (अविश्वास) पर ही रहे, और अल्लाह ही के लिए सर्वोच्च प्रमाण है।

[उर्दू अनुवाद का हिंदी]: यानी अबू तालिब ने हुज़ूर अकदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की हर तरह से मदद और हिमायत की, और बहुत ज़्यादा स्वाभाविक प्रेम रखा। मगर शरीई प्रेम नहीं था, अंततः ईश्वरीय इच्छा (तकदीर) प्रबल हुई और, अल्लाह की पनाह, कुफ्र (अविश्वास) की स्थिति में उनका देहांत हुआ, और अल्लाह ही के लिए सर्वोच्च दलील है।

नसीम अल-रियाद में है: [अरबी पाठ 2]: नबी (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) के प्रति उनकी कोमलता और उनके लिए उनका प्रेम सीरत (जीवनियों) में एक प्रसिद्ध मामला है। वह उनका सम्मान करते थे और उनकी नबूवत (पैग़म्बरी) को पहचानते थे, लेकिन अल्लाह ने उन्हें इस्लाम अपनाने का सौभाग्य नहीं दिया। इस इनकार में अल्लाह तआला की एक गुप्त हिकमत (बुद्धिमत्ता) है, क्योंकि वह कुरैश के एक महान नेता थे, और उनमें से कोई भी उस व्यक्ति के साथ ज़्यादती नहीं कर सकता था जो उनके संरक्षण में हो। अतः नबी (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) अपने मिशन की शुरुआत में उनके संरक्षण के घेरे में थे, और वह उनसे विरोधियों को दूर रखते थे, जैसा कि उन्होंने कहा:

"अल्लाह की कसम, वे अपनी पूरी भीड़ के साथ तुम तक कभी नहीं पहुँच सकेंगे, जब तक कि मैं मिट्टी में दफन न कर दिया जाऊँ।"

[उर्दू अनुवाद का हिंदी]: नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के साथ अबू तालिब का स्नेह और प्रेम प्रसिद्ध है और उनका सम्मान व नबूवत की पहचान ज्ञात थी। लेकिन अल्लाह तआला ने उन्हें मुसलमान होने का सौभाग्य नहीं दिया। किताब 'अल-इमता' में कहा गया है: अबू तालिब के मुसलमान न होने में अल्लाह तआला की एक सूक्ष्म हिकमत है। वह कुरैश के सरदार थे और उनमें से कोई भी उनके संरक्षण का उल्लंघन नहीं कर सकता था। इस्लाम के प्रारंभिक काल में हुज़ूर अकदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम उनके संरक्षण में थे और वह विरोधियों को हुज़ूर से दूर रखते थे। उन्होंने स्वयं एक शेर में कहा है:

"खुदा की कसम, अगर तमाम कुरैश इकट्ठे हो जाएँ तो हुज़ूर तक नहीं पहुँच सकेंगे, जब तक कि मैं खाक में दबा कर लेटा न दिया जाऊँ।"

[अरबी पाठ 3]: क्योंकि यदि वह इस्लाम स्वीकार कर लेते, तो उनके पास (कुरैश के निकट) उनके संरक्षण का कोई मूल्य नहीं रह जाता। इसीलिए उनकी मृत्यु के बाद हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) के पास हिजरत (प्रवास) के अलावा कोई विकल्प नहीं था।

[उर्दू अनुवाद का हिंदी]: तो अगर वह इस्लाम ले आते तो कुरैश के नज़दीक उनकी पनाह कोई चीज़ न रहती, अंततः उनके इंतकाल पर हुज़ूर अकदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को हिजरत ही फ़रमानी हुई।

पाद-टिप्पणियाँ (Footnotes): 1. इरशाद अल-सारी शरह सहीह अल-बुखारी, किताबुल मनाकिब, बाबू किस्सा अबी तालिब, दारुल किताब अल-अरबी, बेरूत, 2/201। 2. नसीम अल-रियाद, अल-किस्मुल अव्वल, अल-बाबुल अव्वल, अल-फ़सलुल ख़ामिस, मरकज़े अहले सुन्नत बरकाते रज़ा गुजरात, भारत, 1/210।

قد کان ابو طالب یحوطه صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم و ینصره و یحبه حباً طبعیاً لا شرعیاً فسبق القدر فیه و استمر علی کفره واللہ الحجة السامیة[1]- یعنی ابو طالب نے حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی نصرت و حمایت سب کچھ کی، طبعی محبت بہت کچھ رکھی۔ مگر شرعی محبت نہ تھی، آخر تقدیر الٰہی غالب آئی اور معاذ اللہ کفر پر وفات پائی اور اللہ ہی کے لیے ہے حجت بلند۔

نسیم الریاض میں ہے: حنونه علی النبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم و محبته له امر مشهور فی السیر و کان یعظمه و یعرف نبوته و لکن لم یوفقه اللہ للاسلام و فی الامتناع ان فیه حکمة خفیة من اللہ تعالیٰ لانه عظیم قریش لا یمکن احد منهم ان یتعدی علی ما فی جواره فکان النبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فی بدء امره فی کنف حمایته یذبهم عنه کما قال:- نبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے ساتھ ابو طالب کی مہر و محبت مشہور ہے اور تعظیم و معرفت نبوت معلوم، مگر اللہ تعالیٰ نے مسلمان ہونے کی توفیق نہ دی، اور کتاب الامتاع میں فرمایا: ابو طالب کے مسلمان نہ ہونے میں اللہ تعالیٰ کی ایک باریک حکمت ہے وہ سردار قریش تھے کوئی ان کی پناہ پر تعدی نہ کر سکتا تھا حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم ابتدائے اسلام میں ان کی حمایت میں تھے وہ مخالفوں کو حضور سے دفع کرتے تھے، خود ایک شعر میں کہا ہے۔

واللہ لن یصلوا الیك بجمعهم حتی اوسد فی التراب دفیناً خدا کی قسم تمام قریش اکٹھے ہو جائیں تو حضور تک نہ پہنچ سکیں گے جب تک میں خاک میں دبا کر لٹا نہ دیا جاؤں۔

فلو اسلم لم یکن لہ ذمۃ عندھم ولذا لم یکن لہ صلی اللہ علیہ و سلم بعد موتہ بد من الھجرۃ[2] تو اگر وہ اسلام لے آتے قریش کے نزدیک ان کی پناہ کوئی چیز نہ رہتی، آخر ان کے انتقال پر حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کو ہجرت ہی فرمانی ہوئی۔

[1]ارشاد الساری شرح صحیح البخاری کتاب المناقب باب قصہ ابی طالب دار الکتاب العربی بیروت ۲/ ۲۰۱ [2]نسیم الریاض القسم الاول الباب الاول الفصل الخامس مرکز اہلسنت برکات رضا گجرات الہند ۱/ ۲۱۰

Fatawa Razawiya, Volume 29

I say: The wisdom behind not embracing Islam until close to passing away could be this; the wisdom behind persisting in disbelief at the time of death is known to Allah or His Messenger. Perhaps in this, firstly: there is this point that if he had died after embracing Islam, the opponents might have suspected that the Messenger of Allah (peace be upon him) had, God forbid, practiced deception with us, making his uncle a Muslim but for the sake of protection and responsibility did not let it manifest, and when the final time came and that purpose was no longer served, he let it be known.

Secondly: there is also comfort for those Muslims whose elders died in a state of disbelief, as indicated by the hadith 'Indeed, my father and your father [are in the fire]' (1). Initially, it was unpleasant, but when his own uncle was included, they found peace.

Thirdly: setting a good example (Uswa-e-Hasna) for Muslims that when their relatives are against God, they should disassociate from them, not join their funeral processions, not pray [funeral prayers] for them, and not pray for their forgiveness; for when God forbade His Beloved, who are others to be considered?

Fourthly: an encouragement for sincerity for the sake of Allah, fear, and obedience, and a warning against becoming complacent due to association with the beloved of God. When such a close relationship and remarkable deeds did not benefit Abu Talib due to lack of submission, then what else will?

"To other than that which Allah and His Messenger know best, Glorious is He and may Allah Almighty bless him and grant him peace" (Besides these, there are other reasons that Allah Almighty, Glorious is He, and the Messenger of Allah, peace and blessings of Allah be upon him, know very well. - Trans.)

Fourth Doubt — Naat Sharif — I say: This is more of an establishment of Divine proof; when you know such things, then why do you not believe? The stubborn Jews, before the rising of the sun of Prophethood, what praises did they not sing? Whenever a difficulty arose or a calamity showed its face, they would seek mediation (tawassul) through the Holy Prophet; whenever they faced an enemy, they would pray:

Arabic	Urdu Translation
O Allah, grant us victory over them by the Prophet sent in the end of times, whose description we find in the Torah (2).	O God, help us against them for the sake of the Prophet of the end of times whose praise we find in the Torah.

Then see what the result of knowing but not believing was, as the Great Qur'an states:

Arabic	Urdu Translation
"And before that they were asking for victory over those who disbelieved - then when there came to them that which they recognized, they disbelieved in it; so the curse of Allah is upon"	And before this, they used to ask for victory over the disbelievers through the means of this Prophet, but when he whom they recognized came to them, they became deniers of him; so [the curse] of Allah is [upon the disbelievers].

---

1 Sahih Muslim, Kitab al-Iman, Bab Bayan Anna Man Mata 'ala al-Kufr etc., Qadimi Kutub Khana Karachi, 1/114. 2 Al-Bahr al-Muhit, under the verse 9/27, Dar al-Fikr Beirut, 1/303.

फतावा रजविया, जिल्द २९

अक़ूल (मैं कहता हूँ): मृत्यु के निकट होने तक इस्लाम न लाने की हिकमत (बुद्धिमत्ता) यह हो सकती है, मरते समय कुफ़्र (अविश्वास) पर अड़े रहने की हिकमत अल्लाह जाने या उसका रसूल। शायद इसमें पहली बात यह हो कि अगर इस्लाम लाकर मरते तो विरोधी यह गुमान (संदेह) करते कि अल्लाह के रसूल ने हमारे साथ—अल्लाह की पनाह—धोखा किया, अपने चचा को मुसलमान तो कर लिया था मगर संरक्षण और ज़िम्मेदारी बनाए रखने के लिए ज़ाहिर नहीं होने दिया, जब अंतिम समय आया कि अब वह काम न रहा तो ज़ाहिर कर दिया।

दूसरी बात: उन मुसलमानों के लिए सांत्वना भी है जिनके बड़े कुफ़्र की हालत में मरे, जैसा कि हदीस 'बेशक मेरे वालिद और तुम्हारे वालिद [जहन्नम में हैं]' (१) बताती है। पहले यह नागवार गुज़रा, लेकिन जब अपने चचा को भी इसमें शामिल पाया तो सुकून मिला।

तीसरी बात: मुसलमानों के लिए 'उसवा-ए-हसना' (उत्तम आदर्श) स्थापित करना कि जब अपने रिश्तेदार खुदा के खिलाफ हों, तो उनसे बरात (अलगाव) करें, उनके मरने पर जनाज़े में शरीक न हों, नमाज़ न पढ़ें, मग़फ़िरत (क्षमा) की दुआ न करें, क्योंकि जब खुदा ने अपने हबीब को मना फरमाया तो दूसरों की क्या गिनती।

चौथी बात: अल्लाह के लिए इखलास (निष्ठा), खौफ और आज्ञाकारिता के प्रति प्रोत्साहन और अल्लाह के महबूबों से संबंध पर गर्व करके बैठ जाने से डराना। जब अबू तालिब को इतना निकट का संबंध और अद्भुत कार्य आज्ञाकारिता न होने के कारण काम न आए, तो और क्या चीज़ काम आएगी।

"इला गैरि ज़ालिका मिम्मा अल्लाहु व रसूलोहू बिही आलम जल्ला जलालुहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम" (इसके अलावा अन्य कारण भी हैं जिन्हें अल्लाह तआला जल्ला जलालुहू और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम खूब जानते हैं। - अनुवादक)

चौथा संदेह — नात शरीफ — अक़ूल: यह तो ईश्वरीय प्रमाण की स्थापना है, जब तुम ऐसा जानते हो तो फिर क्यों नहीं मानते? हठी यहूदी रिसालत (नबी होने) के सूरज के उदय होने से पहले क्या कुछ नात व मद्ध (प्रशंसा) नहीं करते थे। जब भी कोई मुश्किल आती, मुसीबत सामने आती, वे हुज़ूर के माध्यम (तवस्सुल) से दुआ करते; जब दुश्मन का सामना होता तो दुआ मांगते:

अरबी	हिन्दी अनुवाद
ऐ अल्लाह! आखिरी ज़माने में भेजे जाने वाले नबी के सदके में हमें उन पर जीत दिला, जिनकी सिफ़त (गुण) हम तौरात में पाते हैं (२)।	ऐ खुदा! आखिरी ज़माने के नबी के सदक़े में हमें उन पर मदद दे जिनकी नात हम तौरात में पाते हैं।

फिर जानकर न मानने का क्या नतीजा हुआ, यह जो कुरान-ए-अज़ीम ने फरमाया:

अरबी	हिन्दी अनुवाद
"और इससे पहले वे (यहूदी) काफिरों पर इस नबी के वसीले से फतह (जीत) माँगते थे, फिर जब उनके पास वह जाना-पहचाना (नबी) आ गया तो उन्होंने उसे मानने से इनकार कर दिया; तो अल्लाह की लानत है"	और इससे पहले वे इस नबी के वसीले से काफिरों पर फतह मांगते थे तो जब उनके पास वह जाना-पहचाना (नबी) तशरीफ लाया तो वे उसके मुनकिर (इनकारी) हो बैठे, तो अल्लाह की [लानत काफिरों पर है]।

---

1 सहीह मुस्लिम किताबुल ईमान बाब बयान अन्ना मन माता अलल कुफ्र आदि क़दीमी कुतुब खाना कराची १/११४ 2 अल-बह्रुल मुहीत आयत के नीचे ९/२७ दारुल फिक्र बेरूत १/३०३

اقول: قربِ انتقال تک اسلام نہ لانے کی یہ حکمت ہوسکتی ہے، مرتے وقت کفر پر اصرار کی حکمت اللہ جانے یا اس کا رسول، شاید اس میں اولاً: یہ نکتہ ہو کہ اگر اسلام لا کر مرتے مخالف گمان کرتے کہ اللہ کے رسول نے ہمارے ساتھ معاذ اللہ فریب برتا، اپنے چچا کو مسلمان تو کر لیا تھا مگر پناہ وذمہ رکھنے کے لیے ظاہر نہ ہونے دیا جب اخیر وقت آیا کہ اب وہ کام نہ رہا ظاہر کروایا۔

ثانیاً: ان مسلمانوں کی تسکین بھی ہے جن کے بزرگ حالت کفر میں مرے جس کا پتا حدیث ان ابی واباک ۱۔ دیتی ہے اول ناگوار ہوا جب اپنے چچا کو شامل فرمایا سکون پایا۔

ثالثاً: مسلمانوں کے لیے اُسوہ حسنہ قائم فرمانا کہ اپنے اقارب جب خدا کے خلاف ہوں ان سے براءت کریں مرنے پر جنازہ میں شریک نہ ہوں، نماز نہ پڑھیں، دعائے مغفرت نہ کریں کہ جب خدا نے اپنے حبیب کو منع فرمایا تو اوروں کی کیا گنتی۔

رابعاً: عمل میں اخلاص للہ وخوف وانقیاد کی ترغیب اور محبوبانِ خدا سے نسبت پر بھول بیٹھنے سے ترہیب، جب ابوطالب کو ایسی نسبت قریبہ بان کارہائے عجیب بروجہ نامنقادی کام نہ آئی تو اور کیا چیز ہے۔

"الی غیر ذلک مما اللہ ورسولہ بہ اعلم جل جلالہ وصلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم" (اس کے علاوہ دیگر وجوہ جنہیں اللہ تعالیٰ جل جلالہ اور رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم خوب جانتے ہیں ت)

شبہ رابعہ __ نعت شریف __ اقول: یہ تو اور حجت الہیہ قائم ہونا ہے جب ایسا جانتے ہو پھر کیوں نہیں مانتے یہود عنود قبل طلوع شمس رسالت کیا کچھ نعت ومدحت نہ کرتے جب کوئی مشکل آتی مصیبت منہ دکھاتی حضور سے توسل کرتے جب دشمن کا مقابلہ ہوتا دعا مانگتے۔

عربی متن	اردو ترجمہ
اللھم انصرنا علیہم بالنبی المبعوث فی آخر الزمان الذی نجد صفتہ فی التورٰۃ ۲۔	الہی ہمیں ان پر مدد دے صدقہ نبی آخر الزمان کا جس کی نعت ہم تورات میں پاتے ہیں۔

پھر جان کر نہ ماننے کا کیا نتیجہ ہوا یہ جو قرآن عظیم نے فرمایا:

عربی متن	اردو ترجمہ
"وَ كَانُوْا مِنْ قَبْلُ يَسْتَفْتِحُوْنَ عَلَى الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۚ فَلَمَّا جَآءَهُمْ مَّا عَرَفُوْا كَفَرُوْا بِهٖ ۚ فَلَعْنَةُ اللّٰهِ عَلَى"	اور اس سے پہلے وہ اس نبی کے وسیلہ سے کافروں پر فتح مانگتے تھے تو جب تشریف لایا ان کے پاس وہ جانا پہچانا تو اسے منکر ہو بیٹھے، تو اللہ کی [لعنت کافروں پر ہے]۔

---

1 صحیح مسلم کتاب الایمان باب بیان ان من مات علی الکفر الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/۱۱۴ 2 البحر المحیط تحت الآیۃ ۹/۲۷ دار الفکر بیروت ۱/۳۰۳

Fatawa Rizvia Volume 29

[Box Start] "...the disbelievers (19)"[1] - Curse be upon the deniers. (T) [Box End]

It is stated in *Al-Isabah*: [Two columns start] (Arabic): أما شهادة أبي طالب بتصديق النبي صلى الله تعالى عليه وسلم فالجواب عنه وعما ورد من شعراء أبي طالب في ذلك أنه نظير ما حكى الله تعالى عن كفار قريش "وجحدوا بها واستيقنتها أنفسهم ظلماً وعلواً" فكان كفرهم عناداً ومنشؤه من الأنفة والكبر وإلى ذلك أشار أبو طالب بقوله "لولا أن تعيرني قريش" ٢

(Urdu Translation/Explanation): That is, the answer regarding those verses etc. of Abu Talib (which bear witness to the confirmation of the Prophet) is that they are of the same kind that the Great Quran has described as the condition of the infidels, that they deny out of oppression and arrogance while their hearts are well convinced. So this was disbelief out of stubbornness, and its origin is pride and thinking highly of oneself. Abu Talib himself pointed to this by saying, "Were it not for the fear of the Quraish taunting me, I would have embraced Islam." [Two columns end]

Fifth Objection: The Prophet's seeking of forgiveness... I say: Firstly, the answer to this has already been given by the Lord of Lords, Jalla Jalaluhu. The Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) had placed a condition: "I will seek forgiveness for you as long as I am not forbidden from it." The Lord of Honor, Jalla Jalaluhu, then forbade it. Now, basing an argument on this is like gathering thorns from a gum-arabic tree (a futile effort).

Secondly: This very promise was made after hearing the refusal of the Kalima Tayyiba. See the second Hadith; then making it a proof of Islam is strange.

Sixth Objection: The narration from *Jami' al-Usul*... I say: The masters of the Ahl al-Bayt (may Allah be pleased with them), including Maula Karam Allah Wajhahu al-Karim, call Abu Talib a polytheist. Despite the holy command, they expressed hesitation in washing and shrouding him. The Master of Masters, the Master of all beings (peace and blessings be upon him and his family, the best of prayers and most complete salutations), upheld this. They refrained from participating in the funeral. Sayyiduna Ja'far bin Abi Talib and the Commander of the Faithful, Ali (may Allah be pleased with both), were deprived of the inheritance of the infidels because of their Islam. Sayyiduna Imam Zain al-Abidin (may Allah be pleased with him) stated the reason for this was the disbelief of Abu Talib. The Commander of the Faithful, Umar Faruq (may Allah be pleased with him), son-in-law of the Ahl al-Bayt, cited this as a proof that a believer does not receive the inheritance of a disbeliever.

[1] Al-Quran al-Karim 9/2 [2] Al-Isabah fi Tamyiz al-Sahabah, letter Ta, biography 685, Abu Talib, Dar Sadr Beirut, 4/117

फतावा रज़विया जिल्द 29

[बॉक्स प्रारंभ] "...काफिरों (19)"[1] - इनकार करने वालों पर लानत हो। (त) [बॉक्स अंत]

असाबा में फरमाते हैं: [दो कॉलम प्रारंभ] (अरबी): أما شهادة أبي طالب بتصديق النبي صلى الله تعالى عليه وسلم فالجواب عنه وعما ورد من شعراء أبي طالب في ذلك أنه نظير ما حكى الله تعالى عن كفار قريش "وجحدوا بها واستيقنتها أنفسهم ظلماً وعلواً" فكان كفرهم عناداً ومنشؤه من الأنفة والكبر وإلى ذلك أشار أبو طالب بقوله "لولا أن تعيرني قريش" ٢

(उर्दू अनुवाद/व्याख्या): यानी अबू तालिब के उन अशआर वगैरह (जिनमें तस्दीक-ए-नबी की शहादत है) का जवाब यह है कि वह उसी कबीले से है जो कुरान-ए-अजीम ने कुफ्फार का हाल बयान फरमाया कि बराह-ए-ज़ुल्म व तकब्बुर मुनकिर होते और दिल में खूब यकीन रखते हैं तो यह कुफ्र-ए-अनाद हुआ और इसका मन्शा तकब्बुर और अपने नज़दीक बड़ी नाक वाला होना है खुद अबू तालिब ने इसकी तरफ इशारा किया कि अगर कुरैश की तअना ज़नी का ख्याल न होता तो इस्लाम ले आता। [दो कॉलम अंत]

पांचवां शुब्हा: हुज़ूर का इस्तगफार फरमाना... मैं कहता हूँ: अव्वलन इसका जवाब खुद रब्बुल अरबाब जल्ल जलालुहू दे चुका, हुज़ूर अकदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने कैद लगा दी थी जब तक मुझे मना न किया जाए मैं तुम्हारे लिए इस्तगफार फरमाऊंगा। रब्बुल इज्ज़त जल्ल जलालुहू ने मना फरमा दिया अब इससे इस्तनाद खरजतुल कताद (बेकार की कोशिश) है।

दुसरे: खुद यह वादा ही कलिमा तय्यिबा से इनकार सुनकर इरशाद हुआ था। देखो हदीस दूसरी, फिर इसे दलील-ए-इस्लाम ठहराना अजब है।

छठा शुब्हा: हिकायत-ए-जामे अल-उसूल... मैं कहता हूँ: सैय्यद अहले बैत रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम मौला करम अल्लाह वज्हहु अल-करीम अबू तालिब को मुशरिक कहते बावजूद हुक्म-ए-अकदस गुस्ल व कफन में तामुल अर्ज़ करते सैय्यदुस सादात सैय्यदुल कायनात अलैहि व आलिहि अफज़लुस सलात व अकमलुत तहिय्यात इसे मुकर्रर रखते, जनाज़े में शिरकत से बाज़ रहते, सैय्यदना जाफर बिन अबी तालिब व अमीरुल मोमिनीन अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा बवजह-ए-इस्लाम तरका-ए-कुफ्फार से महरूमी पाते, सैय्यद इमाम ज़ैनुल आबदीन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु इसकी वजह कुफ्र-

ए-अबी तालिब बयान फरमाते। अमीरुल मोमिनीन उमर फारूक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ख़तन अहले बैत इसे काफिर का तरका मोमिन को न मिलने की दलील (बनाते)।

---

[1] अल-कुरान अल-करीम 9/2 [2] अल-इसाबा फी तमीज़ अल-सहाबा, हर्फ ता, तर्जुमा 685, अबू तालिब, दार सादिर बेरुत, 4/117

فتاوی رضویہ جلد ۲۹

[باکس شروع] الْكٰفِرِيْنَ ﴿۱۹﴾ ۱۔ لعنت ہو منکروں پر۔ (ت) [باکس ختم] اصابہ میں فرماتے ہیں: [دو کالم شروع] (عربی): اما شهادة ابی طالب بتصدیق النبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فالجواب عنہ وعما ورد من شعراء ابی طالب فی ذلک انہ نظیر ما حکی اللہ تعالیٰ عن کفار قریش "وجحدوا بہا واستیقنتہا انفسہم ظلماً وعلواً" فکان کفرہم عناداً ومنشؤہ من الانفۃ والکبر والی ذلک اشار ابوطالب بقولہ "لولا ان تعیرنی قریش" ۲

(اردو): یعنی ابوطالب کے ان اشعار وغیرہ (جن میں تصدیق نبی کی شہادت ہے) کا جواب یہ ہے کہ وہ اسی قبیل سے ہے جو قرآن عظیم نے کفار کا حال بیان فرمایا کہ براہ ظلم و تکبر منکر ہوتے اور دل میں خوب یقین رکھتے ہیں تو یہ کفر عناد ہوا اور اس کا منشاء تکبر اور اپنے نزدیک بڑی ناک والا ہونا ہے خود ابوطالب نے اس کی طرف اشارہ کیا کہ اگر قریش کی طعنہ زنی کا خیال نہ ہوتا تو اسلام لے آتا۔ [دو کالم ختم]

شبہ خمسہ__ حضور کا استغفار فرمانا___ اقول: اولاً اس کا جواب خود رب الارباب جل جلالہ دے چکا، حضور اقدس صلی اللہ تعالی علیہ وسلم نے قید لگا دی تھی مالم انھ عند تیرے لیے استغفار فرماؤں گا جب تک منع نہ کیا جاؤں گا۔ رب العزت جل جلالہ نے منع فرما دیا اب اس سے استناد خرط القتاد۔

ثانیاً: خود یہ وعدہ ہی کلمہ طیبہ سے انکار سن کر ارشاد ہوا تھا۔ دیکھو حدیث دوم، پھر اسے دلیل اسلام ٹھہرانا عجب ہے۔

شبہ سادسہ **حکایت جامع الاصول** اقول: سید اہلبیت رضی اللہ تعالی عنہم مولیٰ کرم اللہ وجہہ الکریم ابوطالب کو مشرک کہتے باوصف حکم اقدس غسل و کفن میں تامل عرض کرتے سید السادات سید الکائنات علیہ وآلہ افضل الصلوۃ واکمل التحیات اسے مقرر رکھتے، جنازہ میں شرکت سے باز رہتے، سید نا جعفر بن ابی طالب و امیر المومنین علی رضی اللہ تعالی عنہما بوجہ اسلام ترکہ کفار سے محرومی پاتے، سید امام زین العابدین رضی اللہ تعالی عنہ اس کی وجہ کفر ابی طالب بیان فرماتے۔ امیر المومنین عمر فاروق رضی اللہ تعالی عنہ ختن اہل بیت اسے کافر کا ترکہ مومن کو نہ ملنے کی دلیل۔

---

۱ القرآن الکریم ۹ / ۲ ۲ الاصابۃ فی تمییز الصحابۃ حرف الطاء ترجمہ ٦٨٥ ابو طالب دار صادر بیروت ٤ / ٧١١

Volume 29 Fatawa-e-Razvia

...established. Sayyiduna Abbas, the uncle of the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him and be pleased with him), would ask about their condition and receive an answer. Sayyiduna Abdullah ibn Abbas (may Allah be pleased with both of them) stated that the verse "And they only destroy themselves" was revealed concerning Abu Talib. He also narrated the eighth Hadith from the Master of the Universe (peace and blessings of Allah be upon him), the seventh Hadith from the Mother of the Believers, Umm Salama, the wife of the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him), and the fifteenth Hadith from the Commander of the Faithful, Ali, the brother of the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him). These are the leaders and masters of the noble People of the Household (Ahl al-Bayt), may Allah be pleased with them all. After them, who among the Ahl al-Bayt are the ones claiming Abu Talib's conversion to Islam? Can such baseless and unbridled anecdotes stand against the Quran, Hadith, and the consensus of the ancient and modern Imams? Never! Certainly, Sheikh Muhaqqiq states in Madarij al-Nubuwwah:

[Persian text]: Among the uncles of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him), none became Muslim except Hamza and Abbas. Abu Talib and Abu Lahab witnessed the time of Islam but were not granted the success of embracing Islam. This is the stance of the majority of scholars. The author of Jami' al-Usul mentioned that it is the claim of the Ahl al-Bayt that Abu Talib died as a Muslim, and Allah knows best the truth of it. Similarly, it is in Rawdat al-Ahbab[1].

[Urdu translation of the Persian]: None among the uncles of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) became Muslim except for Hazrat Hamza and Abbas (may Allah be pleased with both of them). Abu Talib and Abu Lahab lived during the era of Islam but were not granted the guidance to embrace it. This is the position of the majority of scholars, and the author of Jami' al-Usul has mentioned that the notion of the Ahl al-Bayt is that Abu Talib left the world as a Muslim; Allah Almighty knows best the reality of its authenticity. This is also how it is mentioned in Rawdat al-Ahbab. (T)

I say: The frequent citation by scholars of the consensus on the disbelief of Abu Talib and their identification of the claim of Abu Talib's Islam as a fabrication of the Rafidites (the reports of which are mentioned and quoted in the following chapters) is sufficient to refute this baseless anecdote. Could a consensus be formed despite

the opposition of the Imams of the Ahl al-Bayt? Or, God forbid, was their opposition considered insignificant and the claim of agreement made regardless? And when disagreement exists among their own noble Imams, what is the basis for attributing it to others, namely the Rafidites? Therefore, upon investigation, this anecdote is baseless and its attribution is non-existent and false. Yes, if the Zaydi Sayyids, who are a sect of the Rafidites, are meant, then it is not surprising and the doubt is removed.

[1] Madarij al-Nubuwwah, Chapter Three, regarding the uncles of the Prophet, Maktaba Nooria Razvia, Sukkur, Pakistan, 2/490.

...ठहराते। सैयदुना अब्बास, रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) के चचा, रज़ियल्लाहु तआला अन्हु उनसे उनके हाल के बारे में पूछते और वे जवाब पाते। सैयदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा ने आयत "व-इन युहलिक्ना इल्ला अनफुसहुम" (और वे केवल स्वयं को नष्ट करते हैं) का नुज़ूल अबू तालिब के हक़ में बताया और सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से आठवीं हदीस और उम्मुल मोमिनीन उम्मे सलमा ज़ौजाए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से सातवीं हदीस और अमीरुल मोमिनीन अली बिरादरे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से पंद्रहवीं हदीस रिवायत फरमाते हैं: ये अहल-ए-बैत-ए-किराम के सरवर और सरदार हैं रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन, उनके बाद वे कौन से अहल-ए-बैत हैं जो अबू तालिब के इस्लाम के कायल हुए? क्या क़ुरआन व हदीस और पुराने व नए इमामों के सर्वसम्मति के मुक़ाबले ऐसी बेबुनियाद कहानियाँ कुछ काम दे सकती हैं? हरगिज़ नहीं! निसंदेह शेख़ मुहक़्क़िक़ 'मदारिजुन नुबुव्वह' में फरमाते हैं:

[फ़ारसी इबारत]: पैग़म्बर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के चचाओं में से हमज़ा और अब्बास के सिवा कोई मुसलमान नहीं हुआ। अबू तालिब और अबू लहब ने इस्लाम का ज़माना पाया लेकिन इस्लाम की तौफीक नहीं पाई। जम्हूर उलमा इसी पर हैं और साहब-ए-जामेउल उसूल ने बयान किया है कि अहल-ए-बैत का मानना है कि अबू तालिब मुसलमान होकर दुनिया से गए, अल्लाह तआला ही इसकी हकीकत बेहतर जानता है। इसी तरह 'रौज़तुल अहबाब' (१) में है।

[उर्दू तर्जुमा]: पैग़म्बर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के चचाओं में से हज़रत हमज़ा व अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा के सिवा कोई मुसलमान न हुआ, अबू तालिब व अबू लहब ने इस्लाम का ज़माना पाया मगर इस्लाम लाने की तौफीक न पाई। जम्हूर उलमा का रुख यही है, और साहब-ए-जामेउल उसूल ने ज़िक्र किया है कि अहल-ए-बैत का गुमान यह है कि अबू तालिब मुसलमान होकर दुनिया से गए हैं, इसकी सेहत का हाल अल्लाह तआला खूब जानता है, इसी तरह 'रौज़तुल अहबाब' में है। (त)

अकौल (मैं कहता हूँ): उलमा का जगह-जगह अबू तालिब के कुफ़्र पर इजमा (सर्वसम्मति) नक़ल फरमाना और अबू तालिब के इस्लाम के कॉल को राफज़ियों का गढ़ा हुआ बताना, जिसके उल्लेख अगले अध्यायों में मन्कूर व नक़ल हैं, इस बे-सिर-पैर की कहानी के खंडन के लिए काफी है। क्या

अहल-ए-बैत के इमामों के विरोध के बावजूद इजमा हो सकता है? या अल्लाह न करे, उनके विरोध को महत्वहीन मानकर इत्तेफ़ाक़ का दावा कर दिया जाता? और जब खुद अपने इमामों में मतभेद मौजूद है तो दूसरों यानी राफज़ियों की तरफ निस्बत करने का क्या आधार? अतः शोध के अनुसार यह कहानी निराधार है और इसकी प्रामाणिकता शून्य और गलत है। हाँ, अगर ज़ैदी सादात जो राफज़ियों का एक फिरका है मुराद हों, तो आश्चर्य नहीं और संदेह दूर हो जाता है।

१ मदारिजुन नुबुव्वह, तीसरा अध्याय, नबी के चचाओं के वर्णन में, मकतबा नूरिया रज़विया सुक्कुर पाकिस्तान २/४९०

ٹھہراتے۔ سیدنا عباس عم رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم رضی اللہ تعالٰی عنہ ان کے حال سے سوال کرکے وہ جواب پاتے۔ سیدنا عبداللہ بن عباس رضی اللہ تعالٰی عنہما آیت "وان یہلکو ن الاانفسہم" کا ابوطالب کے حق میں نزول بتاتے اور سید عالم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم سے حدیث ہشتم اور اُم المومنین ام سلمہ زوجہ رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم حدیث ہفتم امیر المومنین علی برادر رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم حدیث پانزدہم روایت فرماتے ہیں : یہ سروران و سرداران اہل بیت کرام ہیں رضی اللہ تعالٰی عنہم اجمعین، ان کے بعد وہ کون سے اہلبیت قائل اسلام ابوطالب ہوئے، کیا قرآن و حدیث و اطباق ائمہ قدیم و حدیث کے مقابل ایسی حکایات بے زمام و خطام کچھ کام دے سکتی ہیں، حاشا، لا جرم شیخ محقق مدارج النبوت میں فرماتے ہیں:

از اعمام پیغمبر صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم غیر حمزہ و عباس مسلمان نہ شدہ اند وابوطالب وابولہب زمان اسلام را دریافتہ اما توفیق اسلام نیافتہ جمہور علماء برین اند وصاحب جامع الاصول آوردہ کہ زعم اہلبیت آن ست کہ ابوطالب مسلمان از دنیا رفتہ واللہ اعلم بصحتہ کذا فی روضۃ الاحباب ۱۔

پیغمبر صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کے چچوں میں سے حضرت حمزہ و عباس رضی اللہ تعالٰی عنہما کے سوا کوئی مسلمان نہ ہوا، ابوطالب و ابولہب نے اسلام کا زمانہ پایا مگر اسلام لانے کی توفیق نہ پائی۔ جمہور علماء کا موقف یہی ہے، اور صاحب جامع الاصول نے ذکر کیا ہے کہ اہل بیت کا گمان یہ ہے کہ ابوطالب مسلمان ہو کر دنیا سے گئے ہیں، اس کی صحت کا حال اللہ تعالٰی خوب جانتا ہے، یونہی روضۃ الاحباب میں ہے۔ (ت)

اقول: علماء کا جابجا کفرِ ابی طالب پر اجماع نقل فرمانا اور اسلامِ ابی طالب کا قول مزعومِ روافض بتانا، جس کے نقول اگلے فصول میں مذکور و منقول، اس حکایت بے سروپا کے رد کو بس ہے، کیا باوصفِ خلافا ئمہ اہلبیت اجماع منعقد ہو سکتا یا معاذ اللہ ان کا خلاف لا یعتد بہ ٹھہرا کر دعویٰ اتفاق فرما دیا جاتا اور جب خود اپنے ائمہ کرام میں خلاف حاصل تو جانبِ اجانب یعنی روافض قصر نسبت پر کیا حامل، پس عندالتحقیق یہ حکایت بے اصل اور صحی عنہ معدوم و باطل، ہاں اگر ساداتِ زیدیہ کہ ایک فرقہ روافض ہے مراد ہوں تو عجب نہیں اور شبہ زائل۔

۱ مدارج النبوۃ باب سوئم در ذکر اعمام النبی مکتبہ نوریہ رضویہ سکھر پاکستان ۲/ ۴۹۰

Seventh Doubt — Text from Sharh Safar al-Sa'ada — I say: This is a mere accusation; the writings of Sheikh Muhaqqiq (may Allah have mercy on him) have already been mentioned above from this same commentary of Sirat-e-Mustaqim and other works, which are sufficient to refute this. The Sheikh says: Authentic Hadith proves the disbelief (kufr) of Abu Talib. The scholars of Ahl al-Sunnah acknowledge the disbelief of Abu Talib; the Shias consider them Muslim; their arguments are rejected and false. After all these clarifications, where is the room for hesitation? Yes, this passage in Madarij al-Sharif was written regarding the lineage of the ancestors of the Master of Mankind (peace and blessings be upon him).

[Box Content] Left (Persian): Where he stated that the later scholars have proved that the ancestors of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) were pure and refined from the filth of polytheism and disbelief. At the very least, they should maintain silence (tawaqquf) on this issue and observe caution. Right (Urdu): Where he said that the later scholars have proved that the ancestors of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) are pure and clean from the filth of polytheism and disbelief in Allah Almighty. At the very least, they have maintained silence on this issue and kept caution in view. (T)

Eighth Doubt — The Will — I say: Firstly, it is a broken narration (hikayat-e-munqati'a) whose chain ends with an extreme Rafidi (Shiite extremist). In Al-Mawahib al-Sharif, from which Amr is the narrator, this will is narrated as follows:

[Box Content] Left (Arabic): It was narrated from Hisham bin al-Saib al-Kalbi or his father that he said: When death approached Abu Talib, he gathered the leaders of the Quraysh... etc. Right (Urdu): That is, a story was narrated from Hisham bin Saib al-Kalbi of Kufa or his father Kalbi that Abu Talib, at the time of his death, gathered the prominent figures of the Quraysh and made a will.

Hisham and Kalbi are both condemned Rafidis. It is in Mizan al-I'tidal:

[Box Content] Left (Arabic): Al-Bukhari said: Abu al-Nadr al-Kalbi was abandoned by Yahya and Ibn Mahdi. Ali said, praising Yahya, from Sufyan, he said: All the Kalbi related to you from Abu Salih is a lie. And Yazid bin Zurai' said: Kalbi was a Rafidi. Right (Urdu): Imam Bukhari said: Abu al-Nadr al-Kalbi was abandoned by Imam Yahya bin Ma'in and Imam Abd al-Rahman bin Mahdi. Imam Sufyan says: Kalbi said to me,

"All the hadiths I have narrated to you from Abu Salih are all lies." Yazid bin Zurai' said: Kalbi was a Rafidi.

1. Madarij al-Nubuwwah, Chapter Three, Death of Abu Talib, Maktaba Nooria Razawiyya, Sukkur, 2/69.
2. Al-Mawahib al-Ladunniyyah, Year of Grief, Death of Abu Talib, Al-Maktab al-Islami, Beirut, 1/265.

फतावा रज़विया ... जिल्द 29

सातवां संदेह — शरह सफर अल-सआदा का पाठ — मैं कहता हूँ: यह मात्र एक आरोप है; शेख मुहाक़्क़िक़ (रहमतुल्लाह अलैह) के लेख पहले ही इसी सिरत-ए-मुस्तकीम की व्याख्या और अन्य कृतियों से ऊपर आ चुके हैं जो इसके खंडन के लिए पर्याप्त हैं। शेख फरमाते हैं: सही हदीस अबू तालिब के कुफ्र (अविश्वास) को साबित करती है। अहल-ए-सुन्नत के विद्वान अबू तालिब के कुफ्र को मानते हैं; शिया उन्हें मुसलमान मानते हैं; उनके तर्क खारिज और बातिल (झूठे) हैं। इन सभी स्पष्टीकरणों के बाद संकोच का क्या स्थान है? हाँ, मदारीज शरीफ में यह इबारत हुज़ूर सैय्यद-ए-अनाम (उन पर सर्वोच्च दुआएं और सलाम हों) के माता-पिता और पूर्वजों के संदर्भ में लिखी गई है।

[बॉक्स सामग्री] बायाँ (फारसी): जहाँ उन्होंने कहा कि बाद के विद्वानों ने साबित किया है कि पैगंबर (उन पर अल्लाह की शांति और आशीर्वाद हो) के पूर्वज शिर्क और कुफ्र की गंदगी से शुद्ध और पवित्र थे। कम से कम, उन्हें इस मुद्दे पर खामोशी (तवाक्कुफ) अख्तियार करनी चाहिए और सावधानी बरतनी चाहिए। दायाँ (उर्दू): जहाँ फ़रमाया कि बाद के विद्वानों ने साबित किया है कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के पूर्वज अल्लाह तआला के शिर्क और कुफ्र की गंदगी से पाक-साफ हैं; कम से कम इस मुद्दे में उन्होंने खामोशी अख्तियार की है और एहतियात को ध्यान में रखा है। (त)

आठवां संदेह — वसीयतनामा — मैं कहता हूँ: पहली बात यह है कि यह एक टूटी हुई कहानी (हिकायत-ए-मुनकातिआ) है जिसकी श्रृंखला एक कट्टर राफिज़ी (शिया चरमपंथी) पर समाप्त होती है। अल-मवाहिब शरीफ में, जिससे अम्र कथावाचक है, यह वसीयतनामा इस प्रकार वर्णित है:

[बॉक्स सामग्री] बायाँ (अरबी): हिशाम बिन अल-साइब अल-कलबी या उसके पिता से रिवायत है कि उन्होंने कहा: जब अबू तालिब की मृत्यु का समय आया, तो उन्होंने अपने पास कुरैश के प्रमुखों को इकट्ठा किया... आदि। दायाँ (उर्दू): यानी हिशाम बिन साइब कलबी कूफी या उसके पिता कलबी से हिकायत की गई कि अबू तालिब ने मरते समय कुरैश के प्रमुखों को जमा करके वसीयत की।

हिशाम और कलबी दोनों ही निंदनीय राफिज़ी हैं। मीज़ान अल-एतेदाल में है:

[बॉक्स सामग्री] बायाँ (अरबी): अल-बुखारी ने कहा: अबू अल-नज़र अल-कलबी को याह्या और इब्न महदी ने छोड़ दिया। अली ने याह्या की प्रशंसा करते हुए सुफियान से कहा: वह सब जो कलबी ने तुमसे अबू सालेह के हवाले से बयान किया है, वह झूठ है। और यज़ीद बिन ज़ुरैअ ने कहा: कलबी राफिज़ी था। दायाँ (उर्दू): इमाम बुखारी ने फ़रमाया: अबू अल-नज़र कलबी को इमाम याह्या बिन

मईन और इमाम अब्दुर्रहमान बिन महदी ने छोड़ दिया (यानी उनकी रिवायतें स्वीकार नहीं कीं)। इमाम सुफियान फरमाते हैं: कलबी ने मुझसे कहा, "जितनी हदीसें मैंने आपके सामने अबू सालेह से रिवायत की हैं, वे सब झूठ हैं।" यज़ीद बिन ज़ुरैअ ने कहा: कलबी राफिज़ी था।

1. मदारीज अल-नुबुव्वा, तीसरा अध्याय, अबू तालिब की मृत्यु, मकतबा नूरिया रज़विया, सुक्कुर, 2/69।
2. अल-मवाहिब अल-लदुन्निय्या, शोक का वर्ष, अबू तालिब की मृत्यु, अल-मकतब अल-इस्लामी, बेरूत, 1/265।

पेज 715/750

شبہہ سابعہ - عبارت شرح سفر السعادۃ - اقول: یہ تہمت محض ہے شیخ محقق رحمۃ اللہ علیہ کی عبارتیں خود اسی شرح صراط المستقیم وغیرہ تصانیف سے اوپر گزر چکیں جو اس کی تکذیب کو بس ہیں۔ شیخ فرماتے ہیں: حدیث صحیح ابو طالب کا کفر ثابت کرتی ہے علمائے اہل سنت ابو طالب کا کفر مانتے ہیں شیعہ انہیں مسلمان جانتے ہیں انکے دلائل مردود و باطل ہیں۔ ان سب تصریحات کے بعد توقف کا کیا محل، ہاں یہ عبارت مدارج شریف میں نسبت آباء و اجداد حضور سید انام علیہ افضل الصلوۃ والسلام تحریر فرمائی ہے۔

[باکس مواد] بائیں (فارسی): حیث قال متاخران ثابت کردہ اند کہ آباء و اجداد آں حضرت صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم پاک و مصفا بودند از دنس شرک و کفر باری کم ازاں نہ باشد کہ دریں مسئلہ توقف کنند و صرفہ نگاہ دارند۱۔ دائیں (اردو): جہاں فرمایا کہ متاخرین نے ثابت کیا ہے کہ آنحضرت صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے آباء و اجداد شرک و کفر باری تعالیٰ کی میل کچیل سے پاک وصاف ہیں کم از کم اس مسئلہ میں انہوں نے توقف کیا ہے اور احتیاط کو ملحوظ رکھا ہے۔ (ت)

شبہہ ثامنہ - وصیت نامہ - اقول: اولاً : وہ ایک حکایت منقطعہ ہے جس کا منتہائے سند ایک رافضی غالی، مواہب شریف میں جس سے عمرو ناقل یہ وصیت نامہ یوں منقول :

[باکس مواد] بائیں (عربی): حکی عن ھشام بن السائب الکلبي او ابیہ انہ قال لما حضرت ابا طالب الوفاۃ جمع الیہ وجوہ قریش ۲الخ دائیں (اردو): یعنی ہشام بن سائب کلبی کوفی یا اس کے باپ کلبی سے حکایت کی گئی کہ ابو طالب نے مرتے وقت عمدگان قریش کو جمع کرکے وصیت کی۔

ہشام و کلبی دونوں رافضی مطعون ہیں۔ میزان الاعتدال میں ہے:

[باکس مواد] بائیں (عربی): قال البخاري ابوالنضر الكلبي تركه يحيى وابن مهدي قال على ثناء يحيى عن سفين قال الكلبي كلها حدثتك عن ابى صالح فهو كذب. و قال يزيد بن زريع ثناء الكلبى دائیں

(اردو): امام بخاری نے فرمایا ابوالنضر کلبی کو امام یحییٰ بن معین و امام عبدالرحمن بن مہدی نے اسے متروک کیا۔ امام سفیان فرماتے ہیں۔ مجھ سے کلبی نے کہا جتنی حدیثیں میں نے آپ کے سامنے ابوصالح سے روایت کی ہیں وہ سب جھوٹ ہیں، یزید بن زریع نے کہا: کلبی رافضی

۱ مدارج النبوة باب سوم وفات یافتن ابوطالب مکتبہ نوریہ رضویہ سکھر ۶۹/۲ ۲ المواهب اللدنية عام الحزن وفاة ابى طالب المكتب الاسلامي بيروت ۲۶۵/۱

Fatawa Razawiyya Volume 29

"And he was a Sab'i (follower of Abdullah bin Saba)." Imam Sulayman al-A'mash, a Tabi'i, said: "Beware of these Sab'is, for I found scholars calling them 'the liars'." At-Tabudhani said: "I heard Hammam say: 'I heard al-Kalbi himself say: "I am a Sab'i".'" Abu 'Awanah said: "Al-Kalbi said in my presence that Gabriel used to dictate the revelation to the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him), and when the Prophet went to the latrine, he would start dictating it to Ali (may Allah honor his face)." Al-Jawzajani and others said: "Al-Kalbi is a liar." Ad-Daraqutni and a group of scholars said: "He is discarded (matruk)." Ibn Hibban said: "His doctrine regarding religion and the clarity of falsehood in it is more manifest than the need to dwell on describing it; it is not permissible to mention him in books, let alone using him as evidence."[1] (Summarized).

In the same source:

"Hisham bin Muhammad bin al-Sa'ib al-Kalbi. Ahmad bin Hanbal said regarding Hisham, the son of Kalbi: 'He merely knew some tales and genealogies; I did not think anyone would narrate hadith from him.' Ad-Daraqutni and others said: 'He is discarded (matruk).' Ibn 'Asakir said: 'He is a Rafidi, not trustworthy.'"[2]

Secondly: In that very testament itself, those words are quoted which clearly indicate his state, as he said to those present:

[1] Mizan al-I'tidal, biography 5747, Muhammad bin Sa'ib al-Kalbi, Dar al-Ma'rifah Beirut, 3/556 to 559. [2] Mizan al-I'tidal, biography 9237, Hisham bin Muhammad al-Sa'ib, Dar al-Ma'rifah Beirut, 4/302.

फ़तावा रज़विया जिल्द २९

"और वह एक सबई (अब्दुल्ला बिन सबा का अनुयायी) था।" इमाम सुलेमान अल-आमश ताबिई ने कहा: "इन सबइयों से बचो, क्योंकि मैंने विद्वानों को उन्हें 'झूठा' कहते पाया।" अत-तबूजनी ने कहा: "मैंने हम्माम को कहते सुना: 'मैंने खुद कल्बी को कहते सुना: "मैं एक सबई हूँ"।'" अबू अवाना ने कहा: "कल्बी ने मेरे सामने कहा कि जिब्रईल नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को वह्य लिखवाते थे, और जब हुज़ूर शौचालय जाते थे, तो वह अली (करमल्लाहु तआला वजहुत करीम) को लिखवाने लगते थे।" जोज़जानी आदि ने कहा: "कल्बी झूठा है।" दारक़ुतनी और विद्वानों के एक समूह ने कहा: "वह त्याज्य (मतरूक) है।" इब्न हिब्बान ने कहा: "दीन में उसका पंथ और उसमें झूठ की स्पष्टता इतनी ज़ाहिर है कि इसके वर्णन पर विस्तार करने की ज़रूरत नहीं है; किताबों में उसका ज़िक्र करना हलाल नहीं है, फिर उससे दलील लेना तो दूर की बात है।"[1] (संक्षिप्त)।

उसी में है:

"हिशाम बिन मुहम्मद बिन अल-साइब अल-कल्बी। अहमद बिन हंबल ने कल्बी के बेटे हिशाम के बारे में कहा: 'वह तो बस कुछ कहानियाँ और वंशावलियाँ जानता था; मुझे गुमान नहीं था कि कोई उससे हदीस बयान करेगा।' इमाम दारक़ुतनी आदि ने कहा: 'मतरूक है।' इमाम इब्न असाकिर ने कहा: 'राफ़ज़ी है, भरोसेमंद नहीं है'।"[2]

दूसरा: उसी वसीयतनामा में वे शब्द उद्धृत हैं जो स्पष्ट रूप से उसकी स्थिति की ओर इशारा करते हैं, जैसा कि उसने उपस्थित लोगों से कहा:

१ मिज़ानुल एतदाल, जीवनी ५७४७, मुहम्मद बिन साइब अल-कल्बी, दारुल मारिफ़ा बैरूत, ३/५५६ से ५५९ २ मिज़ानुल एतदाल, जीवनी ९२३७, हिशाम बिन मुहम्मद अल-साइब, दारुल मारिफ़ा बैरूत, ४/३०२

पृष्ठ ७१६/७५०

وکان سبائیا قال الاعمش اتق هذه السبائية فانی ادرکت الناس وانما یسمونهم الکذابین، التبوذکی سمعت هماً ما یقول سمعت الکلبي یقول انا سبائی عن ابی عوانة سمعت الکلبي یقول انا سبائی عن ابي عوانة سمعت الکلبي یقول کان جبرئیل یملی الوحی علی النبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فلما دخل النبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم الخلاء جعل یملی علی علی، قال الجوز جانی وغیرہ کذاب وقال الدار قطنی و جماعة متروك وقال ابن حبان مذهبه في الدین و وضوح الکذب فیه اظهر من ان یحتاج الی الاغراق في وصفه لایحل ذکره في الکتاب فکیف الاحتجاج به[1] اہ ملتقطاً۔ تھا۔ امام سلیمان اعمش تابعی نے فرمایا کہ ان رافضیوں سے بچو، میں نے علماء کو پایا کہ ان کا نام کذاب رکھتے تھے تبوذکی کہتے ہیں میں نے ہمام سے سنا وہ کہتی ہیں میں نے خود کلبی کو کہتے سنا کہ میں رافضی ہوں۔ ابو عوانہ کہتے ہیں کلبی نے میرے سامنے کہا کہ جبرئیل نبی کو وحی لکھواتے تھے جب حضور بیت الخلاء کو تشریف لے جاتے تو مولٰی علی (کرم اللہ تعالٰی وجہہ الکریم) کو لکھوانے لگتے۔ جوزجانی وغیرہ نے کہا۔ کلبی کذاب ہے، دار قطنی اور ایک جماعت علماء نے کہا: متروک ہے۔ ابن حبان نے کہا اس کا مذہب دین میں اور اس میں کذب کا وضوح ایسا روشن ہے کہ محتاج بیان نہیں کتابوں میں اس کا ذکر کرنا حلال نہیں اور نہ اس سے سند لانا اہ ملتقطا۔

اسی میں ہے :

هشام بن محمد بن السائب الکلبي قال احمد بن حنبل انما کان صاحب سمر و نسب ما ظننت ان احدا یحدث عنه وقال الدارقطنی وغیرہ متروك وقال ابن عساکر رافضي لیس بثقة [2]- امام احمد نے کلبی کے بیٹے ہشام کی نسبت فرمایا: وہ تو یہی کچھ کہانیاں کچھ نسبت نامے جانتا تھا مجھے گمان نہ تھا

کہ کوئی اس سے حدیث روایت کرے گا۔ امام دار قطنی وغیرہ نے فرمایا: متروک ہے۔ امام ابن عساکر نے کہا: رافضی نا معتمد ہے۔

ثانیا: خود اُسی وصیت نامہ میں وہ لفظ منقول جن میں صاف اپنے حال کی طرف اشارہ ہے کہ اُن حاضرین سے کہا:

[1] میزان الاعتدال ترجمہ ۵۷۴۷ محمد بن سائب الکلبی دارالمعرفۃ بیروت ۳ / ۵۵۶ تا ۵۵۹ [2] میزان الاعتدال ترجمہ ۹۲۳۷ ھشام بن محمد السائب دارالمعرفۃ بیروت ۴ / ۳۰۲

Fatawa Razawiyyah Volume 29

[Arabic Box 1]: He came with a matter that the heart accepted but the tongue denied for fear of enmity^1. [Urdu Box 1]: Muhammad (peace and blessings of Allah be upon him) came to us with a matter that the heart accepted, but the tongue denied out of fear that people would become enemies.

Allama Zarqani states in its explanation: [Arabic Box 2]: Because you would reproach him for following his nephew^2. [Urdu Box 2]: Meaning, that fear is that you would find fault, saying he became a follower of his nephew.

Meaning, a nephew is like a son; making him the leader and becoming a slave to him felt shameful. You would taunt him, hence the denial of Islam, even though its truth was manifest in his heart.

Thirdly: Certain testaments regarding the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) are definitely narrated from him, but when there is advice for others while he himself holds onto pre-Islamic pride, what is the gain? Allah Almighty said: [Arabic Box 3]: "Most hateful it is in the sight of Allah that you say that which you do not do." [Urdu Box 3]: It is severely hated by Allah that you say what you do not do.

This was his behavior even in health—encouraging others while avoiding it himself; he maintained the same attitude at the time of death. It is stated in Al-Isaba: [Arabic Box 4]: And he commanded Abu Talib's sons to follow him, so his own abandonment of it is part of the stubbornness. It is also part of his good support and defense of him, and his enmity with his people because of him^4. [Urdu Box 4]: As for Abu Talib's instruction to his sons, Haider-e-Karrar and Ja'far Tayyar (may Allah be pleased with them), to follow the Master of the Universe (peace and blessings of Allah be upon him), while himself abstaining, this is due to stubbornness. Encouraging others to follow is also part of his excellent support, protection, and opposition to his own people for the sake of the Prophet.

1. Al-Mawahib al-Ladunniyah, Year of Sorrow, Death of Abu Talib, Al-Maktab al-Islami, Beirut, 1/265
2. Sharh al-Zarqani al-Mawahib al-Ladunniyah, Death of Khadija and Abu Talib, Dar al-Ma'rifah, Beirut, 1/295
3. The Holy Quran, 61/3
4. Al-Isaba fi Tamyiz al-Sahaba, letter 'Ta', Section Four, Abu Talib, Dar Sader, Beirut, 7/117

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

[अरबी बॉक्स 1]: वह एक ऐसी बात लेकर आए जिसे दिल ने स्वीकार किया लेकिन ज़बान ने दुश्मनी के डर से इनकार कर दिया^1। [उर्दू बॉक्स 1]: मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) हमारे पास वह बात लेकर आए जिसे दिल ने मान लिया और ज़बान ने इस डर से इनकार किया कि लोग दुश्मन हो जाएंगे।

अल्लामा ज़रकानी इसकी शरह (व्याख्या) में फ़रमाते हैं: [अरबी बॉक्स 2]: क्योंकि तुम उसे उसके भतीजे के पीछे चलने के लिए ताना दोगे^2। [उर्दू बॉक्स 2]: यानी वह डर यह है कि तुम ऐब लगाओगे कि वह अपने भतीजे का ताबे (अनुयायी) हो गया।

यानी भतीजा तो बेटे की तरह है, उन्हें इमाम बनाना और खुद गुलाम बनना शर्म की बात लगती थी। तुम ताना दोगे, इसलिए इस्लाम से इनकार है, हालांकि दिल पर उनकी सच्चाई ज़ाहिर है।

तीसरा: नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के बारे में उनसे कुछ वसीयतें ज़रूर वर्णित हैं, लेकिन जब दूसरों को वसीयत हो और खुद जाहिली (अज्ञानतापूर्ण) हठ हो, तो उससे क्या हासिल। अल्लाह तआला ने फ़रमाया: [अरबी बॉक्स 3]: "अल्लाह के नज़दीक यह बहुत नापसंदीदा बात है कि तुम वह कहो जो तुम करते नहीं।"^3 [उर्दू बॉक्स 3]: अल्लाह को सख्त नापसंदगी है यह बात कि कहो और न करो।

तंदुरुस्ती में भी यही बर्ताव था कि दूसरों को तरगीब (प्रोत्साहन) देना और खुद बचना, वही अंदाज़ मौत के वक्त बरता। 'असाबा' में फ़रमाया: [अरबी बॉक्स 4]: और उन्होंने अबू तालिब के बेटों को उनका अनुसरण करने का आदेश दिया, इसलिए उनका स्वयं इसे छोड़ना हठ का हिस्सा है। यह उनके अच्छे समर्थन, बचाव और उनके कारण अपनी कौम से दुश्मनी में भी शामिल है^4। [उर्दू बॉक्स 4]: रहा यह कि अबू तालिब का अपने बेटों हैदर-ए-करार और जाफ़र तैयार (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से कहना कि सय्यद-ए-आलम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की पैरवी करो, तो खुद उनका इसे छोड़ना हठ (अनाद) में से है। और यह पैरवी की तरगीब भी उनकी इसी खूबी, मदद, हिमायत और हुज़ूर के कारण अपनी कौम से मुख़ालफत ही में शामिल है।

1. अल-मवाहिब अल-लदुन्निया, आम अल-हुज़्न, वफ़ात-ए-अबू तालिब, अल-मक्तब अल-इस्लामी, बेरूत, 1/265

2. शरह अल-ज़रकानी अल-मवाहिब अल-लदुन्निया, वफ़ात-ए-खदीजा व अबू तालिब, दार अल-मारिफ़ा, बेरूत, 1/295
3. अल-कुरान अल-करीम, 61/3
4. अल-असाबा फ़ी तमीज़ अल-सहाबा, हर्फ़ अत-ता, अल-क़िस्म अल-रबी, अबू तालिब, दार सादिर, बेरूत, 7/117

[عربی باکس 1]: قد جاء بأمر قبله الجنان وأنكره اللسان مخافة الشنان^1۔ [اردو باکس 1]: محمد صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم ہمارے پاس وہ بات لے کر آئے جسے دل نے مانا اور زبان نے انکار کیا اس خوف سے کہ لوگ دشمن ہوجائیں گے۔

علامہ زرقانی اس کی شرح میں فرماتے ہیں: [عربی باکس 2]: لمّا تعيرونه به من تبعيته لابن اخيه^2۔ [اردو باکس 2]: یعنی وہ خوف یہ ہے کہ تم عیب لگاؤ گے کہ وہ اپنے بھتیجے کا تابع ہوگیا۔

یعنی بھتیجا تو بیٹے کی مثل ہے انہیں امام بناتے آپ غلام بنتے عار آتی ہے، تم طعنہ کرو گے اس لیے اسلام سے انکار ہے اگرچہ دل پر ان کا صدق آشکار ہے۔

ثالثاً: نبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے باب میں ان سے بعض وصایا ضرور منقول مگر جب اوروں کو وصیت ہو خود جاہلی حمیت ہو تو اس سے کیا حصول۔ قال اللہ تعالیٰ: [عربی باکس 3]: "كَبُرَ مَقْتًا عِندَ اللَّهِ أَن تَقُولُوا مَا لَا تَفْعَلُونَ"^3۔ [اردو باکس 3]: اللہ کو سخت دشمن ہے یہ بات کہ کہو اور نہ کرو۔

تندرستی میں بھی یہی برتاؤ تھا کہ اوروں کو ترغیب دینا اور آپ بچنا وہی انداز وقت مرگ برتا۔ اصابہ میں فرمایا: [عربی باکس 4]: وهو امر ابی طالب ولديه بأتباعه فتركه ذلك هو من جملة العناد وهو ايضاً من حسن نصرته له وذبه عنه ومعاداته قومه بسببه^4۔ [اردو باکس 4]: رہا یہ کہ ابوطالب کا اپنے بیٹوں حیدرِ کرار و جعفر طیار رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے کہنا کہ سید عالم صلی اللہ تعالیٰ

علیہ وسلم کی پیروی کرو تو خود اس کا ترک کرنا یہ عناد میں سے ہے اور یہ ترغیبِ پیروی بھی ان کی اسی خوبی مدد و حمایت اور حضور کے باعث اپنی قوم سے مخالفت ہی میں داخل ہے۔

1 المواہب اللدنیہ عام الحزن وفاۃ ابی طالب المکتب الاسلامی بیروت ۱/ ۲۶۵ 2 شرح الزرقانی المواہب اللدنیہ وفاۃ خدیجۃ و ابی طالب دارالمعرفۃ بیروت ۱/ ۲۹۵ 3 القرآن الکریم ۶۱/ ۳ 4 الاصابۃ فی تمییز الصحابۃ حرف الطاء القسم الرابع ابوطالب دارصادر بیروت ۷/ ۱۱۷

Fatawa Razawiyya Volume 29

That is, where all that was present, yet how is it possible to find faith (Iman) without conviction (Az'an)? Therefore, where the esteemed scholars narrate these matters about Abu Talib, they also clarify his death upon disbelief (Kufr). Several statements from Al-Mawahib al-Ladunniyyah and his other book Irshad al-Sari have been mentioned above. In Majma' al-Bihar, it is stated:

(Arabic Text)

In the tenth year [of prophethood], Abu Talib's death approached, and he advised the children of Al-Muttalib to assist him [the Prophet] (may Allah the Exalted bless him and grant him peace). When he died, Ali (may Allah the Exalted be pleased with him) said: "Indeed, your misguided uncle has died." He [the Prophet] said: "Wash him, shroud him, and bury him; may Allah forgive him." He continued to seek forgiveness for him for several days until the verse "It is not for the Prophet..." [9:113] was revealed.

(Urdu Translation)

That is, in the tenth year of Prophethood, death came to Abu Talib. He died after making a will to the Banu Abd al-Muttalib to assist the Prophet (may Allah the Exalted bless him and grant him peace). On this, Mawla Ali (may Allah the Exalted ennoble his countenance) said: "Your Majesty's uncle has died." He [the Prophet] replied: "Give him a bath, shroud him, and bury him; may Allah forgive him." He continued to pray for his forgiveness until the verse was revealed that it is not permissible for the Prophet to seek forgiveness for the polytheists destined for Hell.

Allamah Hifni writes in the margin of the commentary of Hamziyya:

(Arabic Text)

"Al-Qurtubi said in Al-Mufhim: Abu Talib knew the truthfulness of the Messenger of Allah (may Allah the Exalted bless him and grant him peace) in everything he said. He would say to the Quraysh: 'By Allah, you know that Muhammad has never lied.' And he would say to his son Ali: 'Follow him, for he is on the truth.' However, he did not enter

(Urdu Translation)

That is, Imam Qurtubi stated in Al-Mufhim, a commentary on Sahih Muslim: Abu Talib knew very well that whatever the Messenger of Allah (may Allah the Exalted bless him and grant him peace) says is entirely the truth. He would tell the Quraysh: "By God, you know that Muhammad (may Allah the Exalted bless him and grant him peace) has never spoken a word contrary to the truth." He would tell his son Ali (may Allah the Exalted ennoble his

(Arabic Text)

into Islam and remained in that state until his death. The Messenger of Allah (may Allah the Exalted bless him and grant him peace) visited him, desiring his entry into Islam, being keen on it, and putting effort into it..."

(Urdu Translation)

countenance) to remain his follower as he is on the truth. But despite all this, he did not personally embrace Islam and remained in this state until death. At that time, the Noble Messenger (may Allah the Exalted bless him and grant him peace) came to him with the hope that perhaps he would become a Muslim, for which His Majesty had a strong desire...

1 Majma' al-Bihar al-Anwar, Chapter on Seerah, Section on Breastfeeding, Maktabah Dar al-Iman, Medina al-Munawwarah, 5/272.

यानी जहाँ वह सब कुछ था, फिर भी बिना दृढ़ विश्वास (अज़ान) के ईमान मिलना कैसे संभव है? इसलिए, जहाँ उलेमा-ए-किराम अबू तालिब के बारे में इन मामलों को बयान करते हैं, वहीं वे उनके कुफ़्र (अविश्वास) पर मृत्यु को भी स्पष्ट करते हैं। 'अल-मवाहिब अल-लदुन्निया' और उनकी दूसरी किताब 'इरशाद अल-सारी' के कई कथन ऊपर गुज़र चुके हैं। 'मजमा अल-बिहार' में है:

(अरबी पाठ)

दसवें वर्ष [नुबुव्वत के], अबू तालिब की मृत्यु समीप आई और उन्होंने बनी अल-मुत्तलिब को उनकी [नबी की] सहायता करने की वसीयत की (अल्लाह उन पर कृपा करे और उन्हें शांति प्रदान करे)। जब उनकी मृत्यु हो गई, तो अली (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) ने कहा: "निस्संदेह, आपके गुमराह चाचा की मृत्यु हो गई है।" उन्होंने [नबी ने] कहा: "उन्हें नहलाओ, कफन पहनाओ और दफना दो; अल्लाह उन्हें क्षमा करे।" वे कई दिनों तक उनके लिए क्षमा मांगते रहे जब तक कि आयत "यह नबी के लिए उचित नहीं है..." [9:113] नाजिल नहीं हुई।

(उर्दू अनुवाद)

यानी नुबुव्वत के दसवें साल अबू तालिब को मौत आई। वे बनी अब्द अल-मुत्तलिब को नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की मदद करने की वसीयत करके मर गए। इस पर मौला अली (करमल्लाहु वजहुल करीम) ने अर्ज़ की: "हुज़ूर का चचा मर गया।" आपने फ़रमाया: "नहला कफ़न कर दबा दे, अल्लाह उसे बख़्शे।" दुआ-ए-मग़फ़िरत फ़रमाते रहे यहाँ तक कि आयत उतरी कि नबी को रवा नहीं कि मुशरिकों जहन्नुमियों की बख़्शिश माँगें।

अल्लामा ह़िफ़्नी 'श़रह ह़मज़िया' के हाशिये में लिखते हैं:

(अरबी पाठ)

"अल-क़ुर्तुबी ने अल-मुफ़्हिम में कहा: अबू तालिब अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की हर बात की सच्चाई को जानते थे। वह क़ुरैश से कहते थे: 'अल्लाह की क़सम, तुम जानते हो कि मुहम्मद ने कभी झूठ नहीं बोला।' और वह अपने बेटे अली से कहते थे: 'उनका अनुसरण करो, क्योंकि वह हक़ (सत्य)

(उर्दू अनुवाद)

यानी इमाम क़ुर्तुबी ने 'मुफ़्हिम श़रह़ सहीह मुस्लिम' में फ़रमाया: अबू तालिब ख़ूब जानते थे कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) जो कुछ फ़रमाते हैं सब हक़ है। क़ुरैश से कहते ख़ुदा की क़सम तुम्हें मालूम है कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने कभी कोई कलमा ख़िलाफ़-ए-वाक़े न फ़रमाया। अपने बेटे अली (करमल्लाहु

(अरबी पाठ)	(उर्दू अनुवाद)
पर हैं।' हालाँकि, वह इस्लाम में दाखिल नहीं हुए और अपनी मृत्यु तक इसी स्थिति में रहे। अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) उनके पास आए, उनके इस्लाम लाने की आशा में, इसके लिए उत्सुक थे और इसमें प्रयास कर रहे थे..."	वजहुह) से कहते उनके पैरो रहना कि ये हक़ पर हैं। पर सब कुछ था मगर ख़ुद इस्लाम में न आए, मौत आने तक इसी हाल पर रहे। उस वक़्त हुज़ूर अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) उनके पास तशरीफ़ फ़रमा हुए इस उम्मीद पर कि शायद मुसलमान हो जाएँ इसकी हुज़ूर को सख़्त ख़्वाहिश...

1 मजमा' अल-बिहार अल-अनवार, सीरत का अध्याय, स्तनपान का विवरण, मकतबा दार अल-ईमान, मदीना अल-मुनव्वरा, 5/272.

یعنی جہاں وہ سب کچھ تھا ایں ہم بر علم ایمان بے اذعان ملنا کیا امکان، ولہذا علمائے کرام جہاں ابوطالب سے یہ امور نقل فرماتے ہیں وہیں موت علی الکفر کی بھی تصریح کر جاتے ہیں اسی مواہب اللدنیہ اور ان کی دوسری کتاب ارشاد الساری کے کتنے کلمات اوپر گزرے۔ مجمع البحار میں ہے:

| فی العاشرۃ دنا موت ابی طالب فوصی بنی المطلب باعانتہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم ومات فقال علی رضی اللہ تعالی عنہ ان عمك الضال قدمات قال فاغسلہ وکفنہ واراہ غفر اللہ لہ فجعل یستغفر لہ ایاماً حتی نزل "ماکان للنبی" ۱- | یعنی نبوت سے دسویں سال ابو طالب کو موت آئی بنی عبدالمطلب کو مددگاری نبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی وصیت کرکے مر گئے۔ اس پر مولا علی کرم اللہ تعالیٰ وجہہ الکریم نے عرض کی: حضور کا چچا مر گیا۔ فرمایا: نہلا کفنا کر دبا دے اللہ اسے بخشے۔ دعائے مغفرت فرماتے رہے یہاں تک کہ آیت اتری نبی کو روا نہیں کہ مشرکوں جہنمیوں کی بخشش مانگے۔ |

علامہ حفنی حاشیہ شرح ہمزیہ میں لکھتے ہیں:

| "قال القرطبی فی المفہم کان ابو طالب یعرف صدق رسول اللہ تعالی علیہ وسلم فی کل ما یقولہ ویقول لقریش تعلمون واللہ ان محمدا لم یکذب قط و یقول لابنہ علی اتبعہ فانہ علی الحق غیر انہ لم یدخل فی الاسلام ولم یزل علی ذلک حتی حضورہ الوفاۃ فدخل علیہ رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم طامعاً فی اسلامہ حریصاً علیہ باذلاً فی ذلک | یعنی امام قرطبی نے مفہم شرح صحیح مسلم میں فرمایا: ابوطالب خوب جانتے تھے کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم جو کچھ فرماتے ہیں

سب حق ہے قریش سے کہتے خدا کی قسم تمہیں معلوم ہے کہ محمد صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے کبھی کوئی کلمہ خلافِ واقع نہ فرمایا اپنے بیٹے علی کرم اللہ وجہہ سے کہتے ان کے پیرو رہنا کہ یہ حق پر ہیں پر سب کچھ تھا مگر خود اسلام میں نہ آئے موت آنے تک اسی حال پر رہے اس وقت حضور اکرم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم ان کے پاس تشریف فرما ہوئے اس امید پر کہ شاید مسلمان ہوجائیں، اس کی حضور کو سخت خواہش |

۱ مجمع بحار الانوار فصل فی السیر بیان ارضاعه مکتبه دار الایمان مدینة المنورة ۲۷۲/۵

Fatawa Razawiyya, Volume 29

[Table Content] Arabic: He exhausted all efforts he had, but the obstacles of destiny hindered that, against which neither desire nor excuse avails. And Allah is sufficient for us, and He is the best Disposer of affairs. There is no power or strength except with Allah, the Most High, the Most Great. Urdu Translation: Whatever effort was possible, he spent it all, but those destinies came in the way against which neither desire nor excuse works. And Allah Almighty is sufficient for us; what a wonderful Disposer of affairs He is! And there is no power to avoid sin nor strength to do good except by the guidance of God, the One of highness and greatness. (T)

Ninth Doubt: Praise be to Allah, all of Amr's doubts have been resolved, and what were those doubts but mere trivialities? Now one doubt remains which some Rafidis (a Shia sect) in ancient times relied upon in their treatise "Islam Abi Talib". Eminent imams and scholars of the Ahl-e-Sunnah, such as the great Imam Bayhaqi, the noble Imam Suhayli, the magnificent Imam Hafiz Ibn Hajar Asqalani, Imam Badr al-Din Mahmud al-Ayni, Imam Ahmad Qastallani, Imam Ibn Hajar Makki, Allama Husayn Diyar Bakri, Allama Muhammad Zurqani, and Shaykh al-Muhaqqiq Dihlawi (may Allah have mercy on them all), have answered it from multiple perspectives. For a Sunni, it has become clear enough that the one making the argument is a Rafidi and those answering are the imams and scholars of the Ahl-e-Sunnah. However, for complete benefit, this humble servant (may the Almighty forgive him) mentions that doubt and the answers of the scholars and records what was bestowed upon his heart by Divine Grace. Success comes from Allah. Ibn Ishaq mentioned an irregular (shadh) narration in Seerah whose summary is that during Abu Talib's terminal illness, the elites of Quraysh gathered and went to him, saying, "Advise Muhammad (peace and blessings of Allah be upon him) not to concern himself with our religion, and we will not interfere with his religion." Abu Talib called the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) and presented this request. The Radiant Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said, "Yes, let them say one word by which you will become the masters of all of Arabia and the non-Arabs will obey you." The cursed Abu Jahl said, "O Prophet, by your father's life, not just one word, ten words!" He (the Prophet) said, "Then say 'La ilaha illAllah' (There is no god but Allah)." At this, the disbelievers clapped their hands and fled. From Abu Talib's mouth came the words, "By God, the Prophet did not ask anything unreasonable of them." By this statement, the Master of the Universe (peace and blessings of Allah be upon him) felt hope that perhaps he might become Muslim. The Prophet began to say repeatedly, "O Uncle!

You just say it, so that I may make intercession for you lawful on the Day of Judgment." When Abu Talib saw the intensity of the Prophet's desire, he said, "O nephew! By my God, if it were not for the fear..."

1

फतवा रज़विया, खंड 29

[तालिका की सामग्री] अरबी: उन्होंने अपनी पूरी कोशिश की, लेकिन भाग्य की बाधाओं ने उसे रोक दिया, जिसके सामने न इच्छा चलती है और न बहाना। और अल्लाह हमारे लिए काफी है और वह सबसे अच्छा कार्यसाधक है। और न गुनाह से बचने की ताकत है और न नेकी करने की कुव्वत मगर बुलंदी और महानता वाले खुदा की तौफीक से। उर्दू अनुवाद: जो कुछ कोशिश मुमकिन थी सब खर्च फ़रमा दी मगर वो तक़दीरें आड़े आईं जिनके आगे न ख़्वाहिश चलती है न उज़्र। और अल्लाह तआला हमें काफ़ी है क्या ही अच्छा कारसाज़ है, और न गुनाह से बचने की ताक़त है और न नेकी करने की कुव्वत मगर बुलंदी व अज़मत वाले ख़ुदा की तौफ़ीक़ से। (त)

नवां संदेह (शब्हा तासुआ): अल्हम्दुलिल्लाह, अम्र के सभी संदेह हल हो गए और वे संदेह क्या थे, महज़ बेकार की बातें थीं। अब एक संदेह बाकी रह गया है जिस पर प्राचीन काल में कुछ राफिज़ियों ने अपने शोध प्रबंध "इस्लाम अबी तालिब" में भरोसा किया था और अहले सुन्नत के महान इमामों और विद्वानों जैसे इमाम अजल बैहक़ी, इमाम जलील सुहैली, इमाम हाफिज़ुश्शान इब्न हजर असकलानी, इमाम बदरुद्दीन महमूद ऐनी, इमाम अहमद कस्तलानी, इमाम इब्न हजर मक्की, अल्लामा हुसैन दियार बकरी, अल्लामा मुहम्मद ज़रकानी और शेख मोहक्किक देहलवी (अल्लाह उन सब पर रहम करे) ने कई पहलुओं से इसका उत्तर दिया है। एक सुन्नी के लिए तो इसी से स्पष्ट हो गया कि तर्क देने वाला एक राफिज़ी है और उत्तर देने वाले अहले सुन्नत के इमाम और विद्वान हैं। लेकिन अतिरिक्त लाभ के लिए, यह फकीर (अल्लाह उसे माफ करे) उस संदेह और विद्वानों के उत्तरों का उल्लेख करके वह सब लिखता है जो हृदय पर ईश्वरीय कृपा से अवतरित हुआ। और सफलता अल्लाह की ओर से है। इब्न इस्हाक़ ने सीरत में एक दुर्लभ (शाज़) रिवायत का उल्लेख किया है जिसका सारांश यह है कि अबू तालिब की मृत्युशय्या पर कुरैश के रईस उनके पास एकत्र हुए और कहा कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को समझा दें कि हमारे धर्म से कोई मतलब न रखें, हम उनके धर्म में हस्तक्षेप नहीं करेंगे। अबू तालिब ने हुज़ूर अकदस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को बुलाकर यह बात रखी। हुज़ूर पुरनूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया: "हाँ, वे एक ऐसी बात कह दें जिससे तुम पूरे अरब के मालिक बन जाओ और अजम (गैर-अरब) तुम्हारे अधीन हो जाएँ।" लानती अबू जहल ने कहा, "हुज़ूर, आपके पिता की कसम! एक बात नहीं, दस बातें।" आपने फरमाया: "तो 'ला इलाहा इल्लल्लाह' कह लो।" इस पर काफ़िर तालियाँ बजाकर भाग गए। अबू तालिब के मुँह से निकला, "खुदा की कसम हुज़ूर ने उनसे कोई बेजा (अनुचित) बात तो नहीं चाही

थी।" इस बात से सैयदे आलम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को उम्मीद हुई कि शायद वे मुसलमान हो जाएँ। हुज़ूर ने बार-बार कहना शुरू किया: "ऐ चाचा! आप ही कह लें जिसके कारण मैं कयामत के दिन आपकी शफ़ाअत (सिफारिश) हलाल कर लूँ।" जब अबू तालिब ने हुज़ूर की तीव्र इच्छा देखी तो कहा, "ऐ भतीजे! मेरे खुदा की कसम अगर यह डर न होता..."

1

पृष्ठ 719 / 750

[جدول کا مواد] عربی: جهده مستفرغا ما عنده ولكن عاقت عن ذلك عوائق الاقدار التی لا ینفع معها حرص ولا اعتذار 1- وحسبنا الله ونعم الوكيل ولا حول ولا قوة الا بالله العلی العظیم ۔ اردو ترجمہ: تھی جو کچھ کوشش ممکن تھی سب خرچ فرمادی مگر وہ تقدیریں آڑے آئیں جن کے آگے نہ خواہش چلتی ہے نہ عذر۔ اور اللہ تعالٰی ہمیں کافی ہے کیا ہی اچھا کارساز ہے، اور نہ گناہ سے بچنے کی طاقت ہے اور نہ نیکی کرنے کی قوت مگر بلندی و عظمت والے خدا کی توفیق سے۔ (ت)

شبہہ تاسعہ: الحمدللہ عمرو کے سب شبہات حل ہوگئے اور وہ شبہات ہی کیا تھے محض مہملات تھے اب ایک شبہ باقی رہا جس سے زمانہ قدیم میں بعض روافض نے اپنے رسالہ "اسلام ابی طالب" میں استناد کیا اور اکابر ائمہ علمائے اہل سنت مثل امام اجل بیہقی و امام جلیل سہیلی و امام حافظ الشان ابن حجر عسقلانی و امام بدر الدین محمود عینی و امام احمد قسطلانی و امام ابن حجر مکی و علامہ حسین دیار بکری و علامہ محمد زرقانی و شیخ محقق دہلوی وغیر ہم رحمہم اللہ تعالٰی نے متعدد وجوہ سے جواب دیا۔ سنی کے لیے تو اسی قدر سے جواب ظاہر ہوگیا کہ استدلال کرنے والا ایک رافضی اور جواب دینے والے ائمہ و علمائے اہلسنت مگر تتمیم فائدہ کے لیے فقیر غفرلہ المولی القدیر وہ شبہ اور علماء کے اجوبہ ذکر کرکے جو کچھ فیض قدیر سے قلب فقیر پر فائض ہوا تحریر کرے۔ وباللہ التوفیق ، ابن اسحق نے سیرۃ میں ایک روایت شاذہ ذکر کی جس کا خلاصہ یہ ہے کہ ابو طالب کے مرض الموت میں اشراف قریش جمع ہو کر ان کے پاس گئے کہ محمد صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کو سمجھا دو کہ ہمارے دین سے غرض نہ رکھیں ، ہم ان کے دین سے تعرض نہ کریں ابو طالب نے حضور اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کو بلا کر عرض کی، حضور

پر نور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: ہاں یہ ایک بات کہہ لیں جس سے تم تمام عرب کے مالک ہو جاؤ اور عجم تمہاری مطیع ابو جہل لعین نے عرض کی حضور ، ہی کے باپ کی قسم ایک بات نہیں دس باتیں ۔ فرمایا: تو لا الہ الا اللہ کہہ لو۔ اس پر کافر تالیاں بجا کر بھاگ گئے۔ ابو طالب کے منہ سے نکلا، خدا کی قسم حضور نے کوئی بے جا بات تو ان سے نہ چاہی تھی اس کہنے سے سید عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کو اُمید پڑی کہ شاید یہی مسلمان ہو جائے۔ حضور نے بار بار فرمانا شروع کیا: اے چچا! تو ہی کہہ لے جس کے سبب سے میں تیری شفاعت روزِ قیامت حلال کرلوں۔ جب ابو طالب نے حضور کی شدت خواہش دیکھی تو کہا۔ اے بھتیجے! میرے خدا کی قسم اگر یہ خوف نہ ہوتا

1

Fatawa Ridawiyya, Volume 29

...that people would taunt the Prophet (peace be upon him) and the sons of his father (i.e., Abu Talib himself), saying that they could not endure the agony of death and thus recited the Kalima. "I would have recited it, and that too in this manner: 'I would not say it except to make you happy with it' (I would not say that word but only to please you), just to make the Prophet happy." These events were occurring during the agony of death when the time for the soul to depart drew near. Abbas (may Allah be pleased with him) noticed the movement of his lips, listened intently, and submitted to the Holy Prophet (peace be upon him): "O son of my brother! By Allah, my brother has said the word that you were asking him to say." He [Abbas] said so, but the Messenger of Allah (peace be upon him) said: "I did not hear it." - The Master of the Worlds (peace be upon him) said, "I did not hear it."

This is the narration to which scholars have given five answers. First: This is the narration to which scholars have given five answers. First: This narration is weak (da'if) and rejected (mardud); there is an ambiguous narrator in its chain of transmission. This answer was provided by Imam Bayhaqi, then Imam Hafiz-ul-Sha'n Ibn Hajar Asqalani, Imam Badruddin Mahmood Aini, Imam Ibn Hajar Makki, Allama Husayn Dayar Bakri, Allama Zarqani, and others. It is stated in 'Khamis':

Imam Bayhaqi said it is interrupted (munqati') etc., and its full detail is coming soon. (T)	قال البیهقی انه منقطع الخ وسیأتی تمامه [2]-
In its chain, there is a narrator who has not been named. (T)	فی سنده من لم یسم [3]۔
The narration of Ibn Ishaq is weak. (T)	روایة ابن اسحق ضعیفه [4]۔

1. Al-Sirat al-Nabawiyya by Ibn Hisham, Death of Abu Talib and Khadija, Dar Ibn Kathir, first part 18/217.
2. Tarikh al-Khamis, Death of Abu Talib, Muassasat Sha'ban Beirut 1/300.
3. 'Umdat al-Qari, Book of Merits of the Ansar, Chapter on the Story of Abu Talib, under Hadith 3883, Dar al-Kutub al-Ilmiyya Beirut 17/23.
4. Sharh al-Zarqani ala al-Mawahib al-Laduniyya, First Objective, Death of Khadija and Abu Talib, Dar al-Ma'rifa Beirut 1/291.

फतवा रज़विया, खंड 29

...कि लोग हुज़ूर को और हुज़ूर के बाप (यानी खुद अबू तालिब) के बेटों को ताना देंगे कि नज़अ (प्राण निकलने) की सख्ती पर सब्र न हुआ और कलिमा पढ़ लिया। "तो मैं पढ़ लेता, और वह भी इस तरह पढ़ता 'ला अक़ूलुहा इल्ला लि-असर्रुका बिहा' (मैं वह कलिमा न कहता मगर इसलिए कि आप खुश हों) सिर्फ इसलिए कि हुज़ूर की खुशी कर दूँ।" ये बातें नज़अ में तो हो ही रही थीं जब रूह परवाज़ करने का वक़्त नज़दीक आया, अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने उनके लबों की जुम्बिश (हलचल) देखी, कान लगा कर सुना और हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से अर्ज़ की: "ऐ मेरे भतीजे! खुदा की क़सम मेरे भाई ने वह बात कह ली जो हुज़ूर अक़दस उनसे कहलवाते थे।" उन्होंने [अब्बास ने] कहा, मगर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया: "लम अस्मा" - सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया मैंने न सुनी।

यह वह रिवायत है जिसके विद्वानों ने पांच जवाब दिए। पहला: यह वह रिवायत है जिसके विद्वानों ने पांच जवाब दिए। पहला: यह रिवायत ज़ईफ़ (कमज़ोर) और मरदूद (अस्वीकार्य) है, इसकी सनद (सूत्र) में एक रावी (वर्णनकर्ता) मुबहम (अस्पष्ट) मौजूद है, यह जवाब इमाम बैहक़ी, फिर इमाम हाफ़िज़ुश-शान इब्ने हजर अस्क़लानी, इमाम बदरुद्दीन महमूद ऐनी, इमाम इब्ने हजर मक्की, अल्लामा हुसैन दियार बकरी, अल्लामा ज़रक़ानी और अन्य लोगों ने अता फरमाया। 'खमीस' में है:

बैहक़ी ने कहा यह मुनक़ते (टूटी हुई) है आदि, इसकी पूरी तफ़सील (विवरण) जल्द आ रही है। (त)	قال البیھقی انه منقطع الخ وسیأتی تمامه [2]-
इसकी सनद में एक ऐसा रावी है जिसका नाम नहीं लिया गया। (त)	فی سنده من لم یسم [3]۔
इब्ने इसहाक़ की रिवायत ज़ईफ़ है। (त)	روایة ابن اسحق ضعیفه [4]۔

1. अस-सीरत अन-नबविय्या इब्ने हिशाम द्वारा, अबू तालिब और खदीजा की मृत्यु, दार इब्ने कसीर, भाग 1, 18/217।
2. तारीख अल-खमीस, अबू तालिब की मृत्यु, मुअस्ससत शाबान बेरूत, 1/300।
3. उम्दतुल क़ारी, अंसार के गुणों की पुस्तक, अबू तालिब की कहानी का अध्याय, हदीस 3883 के तहत, दार अल-कुतुब अल-इल्मिया बेरूत, 17/23।

4. शरह अल-ज़रक़ानी अलल मवाहिब अल-लदुन्निया, पहला उद्देश्य, खदीजा और अबू तालिब की मृत्यु, दार अल-माआरिफा बेरूत, 1/291।

पृष्ठ 720/750

کہ لوگ حضور کو اور حضور کے باپ (یعنی خود ابوطالب) کے بیٹوں کو طعنہ دیں گے کہ نزع کی سختی پر صبر نہ ہوا کلمہ پڑھ لیا۔ تو میں پڑھ لیتا، اور وہ بھی اس طرح پڑھتا "لا اقولھا الا لاسرک بھا" (میں نہ کہتا وہ کلمہ مگر اس لیے کہ آپ کو خوش کروں) صرف اس لیے کہ حضور کی خوشی کر دوں۔ یہ باتیں نزع میں تو ہو ہی رہی تھیں جب روح پرواز کرنے کا وقت نزدیک آیا عباس رضی اللہ تعالٰی عنہ نے ان کے لبوں کی جنبش دیکھی کان لگا کر سنا حضور اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم سے عرض کی: "یا ابن اخي واللہ لقد قال اخي الکلمۃ التی امرتہ ان یقولھا" اے میرے بھتیجے! خدا کی قسم میرے بھائی نے وہ بات کہہ لی جو حضور اقدس اس سے کہلواتے تھے :قال فقال رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم لم اسمع- سید عالم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے فرمایا میں نے نہ سنی۔

یہ وہ روایت ہے علماء نے اس سے پانچ جواب دیئے اوّل: یہ وہ روایت ہے علماء نے اس سے پانچ جواب دیئے اوّل: یہ روایت ضعیف و مردود ہے، اس کی سند میں ایک راوی مبہم موجود ہے، یہ جواب امام بیہقی پھر امام حافظ الشان ابن حجر عسقلانی و امام بدر الدین محمود عینی و امام ابن حجر مکی و علامہ حسین دیار بکری و علامہ زرقانی و غیرہم نے افادہ فرمایا۔ خمیس میں ہے:

قال البیھقی انہ منقطع الخ وسیأتی تمامہ [2]۔ بیہقی نے کہا یہ منقطع ہے الخ اس کی پوری تفصیل عنقریب آ رہی ہے۔(ت)

فی سندہ من لم یسم [3]۔ اس کی سند میں ایک ایسا راوی ہے جس کا نام نہیں لیا گیا۔(ت)

روایة ابن اسحق ضعیفه [4]۔ ابن اسحاق کی روایت ضعیف ہے۔ (ت)

1. السیرة النبویة لابن هشام وفاة ابی طالب وخدیجه دار ابن کثیر والتوزیع للطباعة والنشر القسم الاول ۱۸/ ۲۱۷
2. تاریخ الخمیس وفاة ابی طالب مؤسسته شعبان بیروت ۱ / ۳۰۰
3. عمدة القاری کتاب المناقب الانصار باب قصة ابی طالب تحت حدیث ۳۸۸۳ دار الکتب العلمیة بیروت ۱۷/ ۲۳
4. شرح الزرقانی علی المواهب اللدنیة المقصد الاول وفاة خدیجة وابي طالب دار المعرفة بیروت ۱ / ۲۹۱

Fatawa Rizvia - Volume 29

[Table Header] [Arabic]: There is someone in it who is not named.[1] [Urdu]: In its chain of transmission, there is a narrator who has not been named. (T)

In the commentary of Hamziyyah, it is stated: [Table Middle] [Arabic]: A weak narration from Al-Abbas that he (Abu Talib) privately informed him of Islam at the time of his death.[2] [Urdu]: There is a weak narration from Hazrat Abbas (may Allah be pleased with him) that Abu Talib secretly informed him of his acceptance of Islam at the time of his death. (T)

In 'Al-Isabah', it is stated: [Large Table] [Arabic]: I came across a work by some Shia in which he sought to prove the Islam of Abu Talib, including what was narrated from Muhammad bin Ishaq... until he said after citing the arguments of the Rafidi: the chains of these hadiths are flimsy[3]. I say: and through Allah is the success, here are matters that must be noted: Firstly, the term 'Munqati' (disconnected) here in the speech of Al-Bayhaqi is not used in the common technical sense among the majority, which is a hadith from whose chain a narrator has dropped, either absolutely or with the condition that no more than one narrator drops consecutively, which is 'Al-Mursal' according to... [Urdu]: Meaning, I saw a treatise by a Rafidi in which he wanted to prove the Islam of Abu Talib from some narrations, among which is this narration of Ibn Ishaq. The chains of all of these are flimsy. I say: (I say) and success is from Allah Almighty, there are several matters here that need to be noted. First matter: 'Munqati' (disconnected) here in the words of Al-Bayhaqi is not used in that sense which is a famous term among the majority, meaning that hadith from whose chain some narrator has dropped, either absolutely or with the condition that in its chain more than one narrator has not dropped consecutively, in the first case...

[Footnotes] [1] Sharh al-Zurqani 'ala al-Mawahib al-Ladunniyyah, The First Objective, Death of Khadija and Abu Talib, Dar al-Ma'rifah Beirut, 1/291. [2] [3] Al-Isabah fi Tamyiz al-Sahabah, Letter Ta', Section Four, Abu Talib, Dar Sadir Beirut, 2/116.

फ़तावा रज़विया - खंड 29

[तालिका शीर्षक] [अरबी]: इसमें वह है जिसका नाम नहीं लिया गया।[1] [उर्दू]: इसकी सनद (प्रमाण श्रृंखला) में एक ऐसा रावी (वर्णनकर्ता) है जिसका नाम नहीं लिया गया है। (त)

'शर्ह-ए-हम्ज़िया' में है: [तालिका मध्य] [अरबी]: अल-अब्बास से एक कमज़ोर रिवायत है कि उन्होंने (अबू तालिब ने) अपनी मृत्यु के समय उनसे गुप्त रूप से इस्लाम की सूचना दी।[2] [उर्दू]: हज़रत अब्बास (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) से एक ज़ईफ़ (कमज़ोर) रिवायत है कि अबू तालिब ने मौत के समय गोपनीयता के साथ उन्हें इस्लाम की ख़बर दी। (त)

'असाबा' में है: [बड़ी तालिका] [अरबी]: मैंने कुछ शियाओं की एक कृति देखी जिसमें उन्होंने अबू तालिब के इस्लाम को साबित करने की कोशिश की, जिसमें मुहम्मद बिन इसहाक से वर्णित बातें भी शामिल हैं... यहाँ तक कि राफ़िज़ी के तर्कों को उद्धृत करने के बाद उन्होंने कहा: इन हदीसों की सनदें कमज़ोर हैं। मैं कहता हूँ: और अल्लाह की मदद से सफलता है, यहाँ कुछ बातें हैं जिन पर ध्यान देना ज़रूरी है: पहला, अल-बैहक़ी के कलाम में यहाँ 'मुनक़तिअ' (विच्छिन्न) शब्द उस अर्थ में इस्तेमाल नहीं हुआ है जो बहुमत के बीच प्रसिद्ध पारिभाषिक शब्दावली है, यानी वह हदीस जिसकी सनद से कोई रावी गिर गया हो, या तो पूर्णतः या इस शर्त के साथ कि उसकी सनद में एक से अधिक रावी लगातार न गिरे हों, जो कि... के अनुसार 'मुर्सल' है। [उर्दू]: यानी मैंने एक राफ़िज़ी का रिसाला (पत्रिका) देखा जिसमें उसने कुछ रिवायतों से इस्लाम-ए-अबू तालिब साबित करना चाहा है, उनमें से एक रिवायत इब्न-ए-इसहाक़ की है। इन सब की सनदें वाही (कमज़ोर) हैं। मैं कहता हूँ: (मैं कहता हूँ) और तौफ़ीक़ (सफलता) अल्लाह तआला की ओर से है, यहाँ कुछ बातें ऐसी हैं जिन पर आगाह होना ज़रूरी है। पहला मामला: 'मुनक़तिअ' यहाँ पर बैहक़ी के कलाम में उस मायने में इस्तेमाल नहीं हुआ है जो जमहूर (बहुमत) के नज़दीक मशहूर इस्तलाह (पारिभाषिक शब्दावली) है, यानी वह हदीस जिसकी सनद से कोई रावी साक़ित (लुप्त) हो गया हो या मुतलक़न (पूर्णतः) या इस शर्त के साथ कि इसकी सनद में एक से अधिक रावी पे दर पे (लगातार) साक़ित न हुए हों, पहली सूरत में...

[पाद टिप्पणियाँ] [1] शर्ह अल-ज़ुरक़ानी अलल मवाहिब अल-लदुन्निय्या, अल-मक़्सद अल-अव्वल, वफ़ात ख़दीजा व अबी तालिब, दार अल-मआरिफ़ा बेरूत, 1/291. [2] [3] अल-असाबा फ़ी तमयीज़ अल-साहबा, हर्फ़ अल-ता, अल-क़िस्म अल-रबेअ, अबू तालिब, दार सादिर बेरूत, 2/116.

[جدول سرخی] [عربی]: فیه من لم یسم [1] [اردو]: اس کی سند میں ایک ایسا راوی ہے جس کا نام نہیں لیا گیا۔ (ت)

شرح حمزیہ میں ہے: [جدول وسط] [عربی]: روایة ضعیفة عن العباس انه اسر الیه الاسلام عند موته [2] [اردو]: حضرت عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے ایک ضعیف روایت ہے کہ ابو طالب نے بوقتِ موت راز داری سے انہیں اسلام کی خبر دی۔ (ت)

اصابہ میں ہے: [بڑا جدول] [عربی]: لقد وقفت علی تصنیف لبعض الشیعة اثبت فیه اسلام ابی طالب منها ما اخرجه عن محمد بن اسحق الی ان قال بعد نقل متمسکات الرافضی اسانید هذه الاحادیث واهیة [3]. اقول: وباللہ التوفیق ههنا امور یجب التنبه لها: اولها: لیس المنقطع ههنا فی کلام البیهقی بالاصطلاح المشهور عند الجمهور انه الذی سقط من سنده راو اما مطلقا او بشرط ان لا یسقط ازید من واحد علی التوالی وهو المرسل علی [اردو]: یعنی میں نے ایک رافضی کا رسالہ دیکھا جس میں اس نے بعض روایات سے اسلام ابی طالب ثابت کرنا چاہا ہے، ازاں جملہ یہ روایت ابن اسحق ہے۔ ان سب کی سندیں واہی ہیں۔ اقول: (میں کہتا ہوں) اور توفیق اللہ تعالی کی طرف سے ہے، یہاں چند امور ایسے ہیں جن پر آگاہ ہونا ضروری ہے۔ پہلا امر: منقطع یہاں پر بیہقی کے کلام میں اُس معنی میں استعمال نہیں ہوا جو جمہور کے نزدیک مشہور اصطلاح ہے، یعنی وہ حدیث جس کی سند سے کوئی راوی ساقط ہو گیا ہو یا مطلقا یا اس شرط کے ساتھ کہ اس کی سند میں ایک سے زائد راوی پے در پے ساقط نہ ہوئے ہوں، بصورت اول

[حواشی] [1] شرح الزرقانی علی المواهب اللدنیة المقصد الاول وفاة خدیجة وابی طالب دارالمعرفة بیروت ۱ / ۲۹۱ [2] [3] الاصابة فی تمییز الصحابة حرف الطاء القسم الرابع ابوطالب دارصادر بیروت ۲ / ۱۱۶

صفحہ 750 میں سے 721

Fatawa Razvia Volume 29

[Main Text Body] (Left Column - Arabic/Urdu Mix): Firstly, or from it to the second, according to the terminology of the jurists and the scholars of principles (Usul). When its narrators are sound, it is acceptable to us and to the majority. How can it be considered interrupted (munqati') in the terminology of the majority, whereas in the narration of Ibn Ishaq, it is contrary to the aforementioned meaning? For its chain of transmission (isnad), as I have seen in Sirat Ibn Hisham and as cited by Al-Hafiz and others in Al-Fath and other works, is as follows: 'Abbas bin Abdullah bin Ma'bad narrated to me from some of his family members from Ibn Abbas (may Allah be pleased with them).'[1] As you can see, there is no interruption in this. There is no room to claim interruption on the basis that Ibn Abbas did not witness the event because he was born in the year Abu Talib died, three years before the Hijrah, as stated in Al-Taqrib.[2] Similarly, Ibn al-Jazzar dated the death of Abu Talib three years before the Hijrah of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him), as mentioned in Al-Mawahib.[3] This is because the Mursal narrations...

(Right Column - Urdu Translation/Explanation): It is 'Mursal', and in the second case, it is a type of 'Mursal' in the terminology of the jurists and the scholars of principles. When its narrators are just/reliable, it is acceptable to us and to the majority. How can it be considered interrupted in the terminology of the majority, whereas in the narration of Ibn Ishaq, it occurs contrary to the aforementioned meaning? Because its chain, as I saw in Sirat Ibn Hisham and as Al-Hafiz and others cited it in Fath al-Bari etc., is as follows: Abbas bin Abdullah bin Ma'bad related the hadith to me from some of his household from Abbas (may Allah be pleased with them both). As you see in it, there is no interruption, nor is there any room to imply interruption from the perspective that Ibn Abbas (may Allah be pleased with him) did not find this incident because he was born in the year Abu Talib passed away. Your birth was three years before the Hijrah, as in Al-Taqrib. Similarly, the date of Abu Talib's death was mentioned by Ibn Jazzar that he passed away three years before the Hijrah of the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him), as in Al-Mawahib. And this is because Mursal narrations...

[Footnotes] [1] Al-Sirah al-Nabawiyyah by Ibn Hisham, Death of Abu Talib and Khadijah, Dar Ibn Kathir for Printing, Part 1, p. 417. [2] Taqrib al-Tahdhib, Translation 3220, Dar al-Kutub al-Ilmiyah, Beirut, 1/502. [3] Al-Mawahib al-Ladunniyyah, Year of Grief, Death of Abu Talib, Al-Maktab al-Islami, Beirut, 1/262.

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

[मुख्य पाठ] (बायाँ कॉलम - अरबी/उर्दू मिश्रण): पहला, या उससे दूसरे पर, फ़ुक़हा (विधिवेत्ताओं) और उसूल (सिद्धांतों) के विशेषज्ञों की शब्दावली के अनुसार। जब इसके रावी (वर्णनकर्ता) विश्वसनीय हों, तो यह हमारे और बहुमत के निकट स्वीकार्य है। बहुमत की शब्दावली में इसे टूटा हुआ (मुनक़ति) कैसे कहा जा सकता है, जबकि इब्न इस्हाक़ के वर्णन में यह उल्लेखित अर्थ के विपरीत है? क्योंकि इसका इस्नाद (प्रमाण-श्रृंखला), जैसा कि मैंने सीरत इब्न हिशाम में देखा है और अल-हाफ़िज़ तथा अन्य लोगों ने अल-फ़तह और अन्य कृतियों में इसे उद्धृत किया है, वह इस प्रकार है: 'मुझे अब्बास बिन अब्दुल्लाह बिन मा'बाद ने अपने परिवार के कुछ सदस्यों से, उन्होंने इब्न अब्बास (अल्लाह उन दोनों से प्रसन्न हो) से हदीस सुनाई।'[1] जैसा कि आप देख रहे हैं, इसमें कोई विच्छेद नहीं है। इस आधार पर विच्छेद का दावा करने की कोई गुंजाइश नहीं है कि इब्न अब्बास ने इस घटना को नहीं पाया क्योंकि वे उसी वर्ष पैदा हुए थे जिस वर्ष अबू तालिब का निधन हुआ था, हिजरत से तीन साल पहले, जैसा कि तक़रीब में है।[2] इसी तरह, इब्न अल-जज़ार ने नबी करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की हिजरत से तीन साल पहले अबू तालिब की मृत्यु की तारीख बताई है, जैसा कि मवाहब में है।[3] और यह इसलिए है क्योंकि मुरसल...

(दायाँ कॉलम - उर्दू अनुवाद/व्याख्या): वह मुरसल है, और दूसरी स्थिति में मुरसल का एक प्रकार है फ़ुक़हा और अहले उसूल की शब्दावली में, और जब इसके रावी आदिल (न्यायपूर्ण/विश्वसनीय) हों तो वह हमारे नज़दीक और बहुमत के नज़दीक मक़बूल (स्वीकार्य) है। बहुमत की शब्दावली में यह कैसे मुनक़ति (टूटा हुआ) हो सकता है, हालाँकि इब्न इस्हाक़ की रिवायत में ज़िक्र किए गए अर्थ के ख़िलाफ़ वाक़े है, क्योंकि इसकी सनद (श्रृंखला) जैसा कि मैंने सीरत इब्न हिशाम में देखी और हाफ़िज़ वग़ैरह ने इसको फ़तहुल बारी वग़ैरह में नक़्ल किया, वह यूँ है: 'मुझे हदीस बयान की अब्बास बिन अब्दुल्लाह बिन मा'बाद ने अपने कुछ घर वालों से, उन्होंने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से।' और इसमें जैसा कि तू देख रहा है कोई इन्क़ता (विच्छेद) नहीं है और न ही इस लिहाज़ से इन्क़ता मुराद लेने की कोई गुंजाइश है कि इब्न अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने यह वाक़िया नहीं पाया क्योंकि आप उस साल पैदा हुए जिस साल अबू तालिब का इंतक़ाल हुआ। आपकी विलादत हिजरत से तीन साल क़ब्ल हुई जैसा कि तक़रीब में है, और यूँ ही अबू तालिब की मौत की तारीख़ इब्न जज़ार ने बयान की कि वह नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की हिजरत से तीन साल पहले फ़ौत हुए जैसा कि मवाहब में है। और यह इसलिए कि मरासील...

[पादलेख] [1] अस-सीराह अन-नबविया इब्न हिशाम द्वारा, अबू तालिब और खदीजा की मृत्यु, दार इब्न कसीर, भाग 1, पृष्ठ 417। [2] तक़रीब अत-तहज़ीब, अनुवाद 3220, दार अल-कुतुब अल-इल्मिया, बेरुत, 1/502। [3] अल-मवाहब अल-लदुननिया, दुख का वर्ष, अबू तालिब की मृत्यु, अल-मकत़ब अल-इस्लामी, बेरुत, 1/262।

पृष्ठ 750 का 722

الاول اومنه علی الثانی باصطلاح الفقهاء واهل الاصول واذا نظفت رجاله فعندنا وعند الجمهور مقبول کیف و ذلك خلاف الواقع فی روایة ابن اسحق فان سنده علی مارأیت في سیرة ابن هشام ونقله الحافظ وغیره في الفتح وغیره هکذا حدثنی العباس بن عبدالله بن معبد عن بعض اهله عن ابن عباس رضی الله تعالی عنهما[1] وهذا لا انقطاع فیه کما تری و لا مساغ لا رادة الانقطاع من قبل ان ابن عباس لم یدرك الواقعة فانه انما ولد عام مات ابوطالب ولد قبل الهجرة بثلث سنین کما فی التقریب[2] وکذلك ارخ ابن الجزار موت ابی طالب قبل هجرته صلی الله تعالی علیه وسلم بثلث سنین کما فی المواهب[3] و ذلك لان مراسیل

وہ مرسل ہے، اور بصورت ثانی مرسل کی ایک نوع ہے فقہاء اور اہل اصول کی اصطلاح میں، اور جب اس کے رجل عادل ہوں تو وہ ہمارے نزدیک اور جمہور کے نزدیک مقبول ہے اور جمہور کی اصطلاح میں یہ کیسے منقطع ہوسکتی ہے حالانکہ ابن اسحق کی روایت میں معنی مذکور کے خلاف واقع ہے، کیونکہ اس کی سند جیسا کہ میں نے سیرت ابن ہشام میں دیکھی اور حافظ وغیرہ نے اس کو فتح الباری وغیرہ میں نقل کیا وہ یوں ہے، مجھے حدیث بیان کی عباس بن عبداللہ بن معبد نے اپنے بعض گھر والوں سے انہوں نے عباس رضی اللہ تعالٰی عنہما سے اور اس میں جیسا کہ تُو دیکھ رہا ہے کوئی انقطاع نہیں اور نہ ہی اس جہت سے انقطاع مراد لینے کی کوئی گنجائش ہے کہ ابن عباس رضی اللہ تعالٰی عنہ نے یہ واقعہ نہیں پایا کیونکہ آپ اس سال پیدا ہوئے جس سال ابوطالب کا انتقال ہوا۔ آپ کی ولادت ہجرت سے تین سال قبل ہوئی جیسا کہ تقریب میں ہے اور یونہی ابوطالب کی موت کی تاریخ ابن جزار نے بیان کی وہ نبی کریم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کی ہجرت سے تین سال پہلے فوت ہوئے جیسا کہ مواہب میں ہے۔ اور یہ اس لیے کہ مراسیل

[1] السيرة النبوية لابن ہشام وفاة ابی طالب و خدیجہ دار ابن کثیر للطباعة القسم الاول ص ۴۱۷ [2] تقریب التہذیب ترجمہ ۳۲۲۰ دارالکتب العلمیۃ بیروت ۱ / ۵۰۲ [3] المواہب اللدنیۃ عام الحزن وفاة ابی طالب المکتب الاسلامی بیروت ۱ / ۲۶۲

Fatawa Razawiyya, Volume 29

[Arabic Text] The acceptance of the Sahaba (companions) is by consensus (ijma'), and no weight is given to those who deviate. In 'Taqrib al-Nawawi', all of this discussion is regarding someone other than the Mursal of a Sahabi. As for the Mursal of a Sahabi, it is ruled as authentic according to the correct position (Al-Madhhab al-Sahih) 1. It is stated in 'Al-Tadrib' that the majority (jumhur) of our companions and others have stated this decisively, and the Hadith scholars (Muhaddithun) have agreed upon it 2. And in 'Musallam al-Thubut', it is mentioned that if a Mursal is from a Sahabi, it is accepted absolutely by consensus, and no consideration is given to those who oppose this 3. اھ (End of quote). And Al-Bayhaqi only called it 'munqati' (disconnected) based on his own terminology and that of his teacher Al-Hakim, because to them, an ambiguous narrator (mubham) is also considered 'munqati'. In 'Taqrib' and 'Tadrib', it is said that when a narrator says in the chain (isnad): "so-and-so from a man from so-and-so", Imam Al-Hakim said: "this is munqati, not mursal", while others said: "it is mursal". Al-Iraqi said: "both these views are contrary to what the majority hold, for they maintain that it is muttasil (connected) with an unknown narrator in its chain." Al-Bayhaqi added to this in his 'Sunan' and termed such a hadith 'mursal'...

[Urdu Text] The acceptance of the companions is by consensus, and no consideration is given to those who are alone against this position. It is in Taqrib Nawawi that all this discussion is about other than the Mursal of a Sahabi. As for the Mursal of a Sahabi, it has been ruled as authentic in the correct school of thought. In Tadrib it is said that the majority of our companions etc. have declared this ruling as definitive and the Hadith scholars have agreed upon it. In Musallam al-Thubut it is said that if Mursal is from a Sahabi then it will be accepted absolutely, and whoever opposes it, there is no consideration for them. Al-Bayhaqi calling it 'Munqati' is only the terminology of him and his teacher Imam Hakim, that according to them 'Mubham' is also 'Munqati'. It is in Taqrib and Tadrib that when a narrator said in the chain of transmission that so-and-so narrated from a man and he from so-and-so, Imam Hakim said that this is 'Munqati', not 'Mursal', whereas others said it is 'Mursal'. Iraqi said that both these statements are against the position of the majority because the position of the majority is that this is 'Muttasil' (connected), but the narrator in its chain is 'Majhul' (unknown). Imam Bayhaqi added to this in his 'Sunan' and made this hadith 'Mursal'.

Majlis of Dawatelslami

[Footnotes] 1. Taqrib al-Nawawi with Tadrib al-Rawi, the ninth type: The Mursal, Qadimi Kutub Khana Karachi, 1/171. 2. Tadrib al-Rawi in explanation of Taqrib al-Nawawi, the ninth type: The Mursal, Qadimi Kutub Khana Karachi, 1/171. 3. Musallam al-Thubut, the second origin: The Sunnah, issue of the definition of Mursal, Matba' Mujtabai Delhi, p. 201.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 29

[अरबी पाठ] सहाबा की स्वीकार्यता सर्वसम्मति (इज्मा) से है, और जो कोई इससे विचलित होता है उसका कोई महत्व नहीं है। 'तक़रीब अल-नवावी' में है कि यह सारी चर्चा सहाबी के मुर्सल के अलावा अन्य के बारे में है। जहाँ तक सहाबी के मुर्सल का सवाल है, तो सही मज़हब (अल-मज़हब अल-सहीह) के अनुसार इसे सही होने का हुक्म दिया गया है 1। 'तदरीब' में कहा गया है कि हमारे साथियों के बहुमत (जमहूर) और अन्य लोगों ने इसे निश्चित माना है और हदीस विद्वानों (मुहद्दिसीन) ने इस पर सहमति व्यक्त की है 2। 'मुसल्लम अल-सुबूत' में है कि यदि मुर्सल किसी सहाबी से है, तो इसे बिना किसी शर्त के सर्वसम्मति से स्वीकार किया जाएगा, और जिसने इसका विरोध किया उसका कोई विचार नहीं किया जाएगा 3। अह (उद्धरण समाप्त)। और अल-बैहक़ी ने इसे 'मुनक़ति' (विच्छिन्न) केवल अपनी और अपने शिक्षक इमाम हाकिम की शब्दावली के आधार पर कहा है, क्योंकि उनके अनुसार अस्पष्ट रावी (मुभम) भी 'मुनक़ति' होता है। 'तक़रीब' और 'तदरीब' में है कि जब रावी सनद में कहता है: "अमुक ने एक व्यक्ति से और उसने अमुक से रिवायत की", तो इमाम हाकिम ने फ़रमाया: "यह मुनक़ति है, मुर्सल नहीं", जबकि दूसरों ने कहा: "यह मुर्सल है"। इराक़ी ने कहा: "ये दोनों विचार बहुमत के रुख के ख़िलाफ़ हैं, क्योंकि उनका मानना है कि यह मुत्तसिल (निरंतर) है जिसकी सनद में रावी अज्ञात (मजहूल) है।" इमाम बैहक़ी ने अपनी 'सुनन' में इसमें इज़ाफ़ा किया और इस हदीस को 'मुर्सल' करार दिया...

[उर्दू पाठ] सहाबा के मक़बूल होने पर इज्मा है और जो तन्हा इस मौक़िफ़ के ख़िलाफ़ है उसका कोई एतबार नहीं, तक़रीब नवावी में है कि ये सब गुफ़्तगू मुर्सल सहाबी के ग़ैर में है। रहा मुर्सल सहाबी तो सही मज़हब में इसके सही होने का हुक्म दिया गया है। तदरीब में कहा कि हमारे असहाब वग़ैरा जमहूर ने इस हुक्म को क़तई क़रार दिया और मुहद्दिसीन ने इस पर इत्तिफ़ाक़ किया है। मुसल्लम अल-सुबूत में है मुर्सल अगर सहाबी से है तो मुतलक़न क़बूल की जाएगी, और जिस ने मुख़ालफ़त की इसका कोई एतबार नहीं अह बैहक़ी का इसे मुनक़ति कहना फ़क़त इनकी अपनी और इनके शैख़ इमाम हाकिम की इस्तलाह है कि इनके नज़दीक मुभम भी मुनक़ति है। तक़रीब और तदरीब में है रावी ने असनाद में जब कहा कि फ़लां ने एक मर्द से और इसने फ़लां से रिवायत की तो इमाम हाकिम ने फ़रमाया कि ये मुनक़ति है मुर्सल नहीं है जब कि इसके ग़ैर ने कहा ये मुर्सल है। इराक़ी ने कहा ये दोनों क़ौल अकसरियत के मौक़िफ़ के ख़िलाफ़ हैं क्यूंकि अकसर का मौक़िफ़

ये है कि ये मुत्तसिल है इसकी सनद में रावी मजहूल है, इमाम बहक़ी ने अपनी सुनन में इस पर इज़ाफ़ा किया और इस हदीस को मुर्सल (क़रार दिया)।

मजलिस-ए-दावत-ए-इस्लामी

[पाद टिप्पणियाँ] 1. तक़रीब अल-नवावी मअ तदरीब अल-रावी, नौवां प्रकार: अल-मुर्सल, क़दीमी कुतुब ख़ाना कराची, 1/171। 2. तदरीब अल-रावी फ़ी शरह तक़रीब अल-नवावी, नौवां प्रकार: अल-मुर्सल, क़दीमी कुतुब ख़ाना कराची, 1/171। 3. मुसल्लम अल-सुबूत, दूसरा अस्ल: अल-सुन्नत, मुर्सल की परिभाषा का मसला, मतबा मुज्तबाई दिल्ली, पृष्ठ 201।

पृष्ठ 723/750

الصحابۃ مقبولۃ بالاجماع ولا عبرۃ بمن شذ، فی تقریب النووی ھذا کلہ فی غیر مرسل الصحابی اما مرسلہ فمحکوم بصحتہ علی المذھب الصحیح ۱۔ قال فی التدریب قطع بہ الجمھور من اصحابنا و غیرھم واطبق علیہ المحدثون ۲۔ وفی مسلم الثبوت ان کان من الصحابی یقبل مطلقا اتفاقا ولا اعتداد لمن خالف ۳۔ اہ وانما سمّاہ البیھقی منقطعا علی اصطلاح لہ ولشیخہ الحاکم ان المبھم ایضا من المنقطع فی التقریب و التدریب (اذا قال الراوی فی الاسناد(فلان عن رجل عن فلان فقال الحاکم) ھو منقطع لیس مرسلا وقال غیرہ مرسل) قال العراقی کل من القولین خلاف ما علیہ الاکثرون، فانھم ذھبوا الی انہ متصل فی سندہ مجھول، وزاد البیھقی علی ھذا فی سننہ فجعل

صحابہ کے مقبول ہونے پر اجماع ہے اور جو تنہا اس موقف کے خلاف ہے اس کا کوئی اعتبار نہیں، تقریب نوادی میں ہے کہ یہ سب گفتگو مرسل صحابی کے غیر میں ہے۔ رہا مرسل صحابی تو صحیح مذہب میں اس کے صحیح ہونے کا حکم دیا گیا ہے۔ تدریب میں کہا کہ ہمارے اصحاب وغیرہ جمہور نے اس حکم کو قطعی قرار دیا اور محدثین نے اس پر اتفاق کیا ہے۔ مسلم الثبوت میں ہے مرسل اگر صحابی سے ہے تو مطلقاً قبول کی جائے گی، اور جس نے مخالفت کی اس کا کوئی اعتبار نہیں اھ بیہقی کا اسے منقطع کہنا فقط ان کی اپنی اور ان کے شیخ امام حاکم کی اصطلاح ہے کہ ان کے نزدیک مبہم بھی منقطع ہے۔ تقریب اور تدریب میں ہے راوی نے اسناد میں جب کہا کہ فلاں نے ایک مرد سے اور اس نے فلاں سے روایت کی تو امام حاکم نے فرمایا کہ یہ منقطع ہے مرسل نہیں ہے جب کہ اس کے غیر نے کہا یہ مرسل ہے۔ عراقی نے کہا یہ دونوں قول اکثریت کے موقف کے خلاف ہیں کیونکہ اکثر کا موقف یہ ہے کہ یہ متصل ہے اس کی سند میں راوی مجہول ہے، امام بہقی نے اپنی سنن میں اس پر اضافہ کیا اور اس حدیث کو مرسل

١ تقریب النواوی مع تدریب الراوی النوع التاسع المرسل قدیمی کتب خانہ کراچی ١/١٧١ ٢ تدریب الراوی فی شرح تقریب النواوی النوع التاسع المرسل قدیمی کتب خانہ کراچی ١/١٧١ ٣ مسلم الثبوت الاصل الثانی السنۃ مسئلہ تعریف المرسل مطبع مجتبائی دہلی ص ٢٠١

Volume 29 Fatawa Razawiyya

What a Tabi'i narrates from a man among the Sahaba whom he did not name is termed as 'Mursal' (summary ends). And in both these books (Taqrib and Tadrib) is the tenth type: 'Al-Munqati' (the disconnected). The correct position, which the noble jurists and from among the Hadith scholars like Al-Khatib, Ibn Abd al-Barr, and others have adopted, is that 'Munqati' refers to that Hadith whose chain of transmission is not continuous, regardless of how the disconnection occurred. It and 'Mursal' are one and the same. Its most frequent application is to a Hadith in which someone of a lower rank than a Tabi'i narrates from the Sahaba, for example, Imam Malik (may Allah have mercy on him) narrates from Hazrat Ibn Umar (may Allah be pleased with him). According to one saying, 'Munqati' is that Hadith in which some narrator before the Tabi'i (the correct being: before the Sahabi) is missing, whether they are omitted or ambiguous, for instance, if it is said 'a certain person'. This is based on what was previously mentioned: 'that so-and-so narrated from a man', this is called 'Munqati'. It has already been stated previously that the majority are against this view. Furthermore, this view is famous with the condition that the missing narrator is only one, or two but not consecutively, as asserted by Al-Iraqi and Shaykh al-Islam (summary ends).

Footnotes: 1 Taqrib al-Nawawi with Tadrib al-Rawi, Type Nine: Al-Mursal, Qadimi Kutub Khana Karachi, 1/161-162. 2 Tadrib al-Rawi fi Sharh Taqrib al-Nawawi, Type Ten: Al-Munqati, Qadimi Kutub Khana Karachi, 1/171 and 172.

Page 724 of 750

एक ताबेई ने सहाबा में से एक ऐसे व्यक्ति से रिवायत किया जिसका नाम स्पष्ट नहीं किया, उसे 'मुरसल' कहा जाता है (संक्षेप)। और इन दोनों किताबों (तक़रीब और तदरीब) में दसवीं क़िस्म 'मुनक़त' (विच्छिन्न) के बारे में है। सही रुख़ जिसकी ओर फ़ुक़हा-ए-किराम और मुहद्दीसीन में से अल-ख़तीब और इब्न अब्दुल बर्र आदि गए हैं, वह यह है कि मुनक़त उस हदीस को कहते हैं जिसकी सनद (कड़ी) जुड़ी हुई न हो, चाहे किसी भी कारण से विच्छेद हो। वह और मुरसल एक ही हैं। और इसका अधिकांश प्रयोग ऐसी हदीस पर होता है जिसमें ताबेई से निचले दर्जे का कोई व्यक्ति सहाबा से रिवायत करे, जैसे इमाम मालिक (रहमतुल्लाह अलैहि) हज़रत इब्न उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत करें। एक मत के अनुसार मुनक़त वह हदीस है जिसमें ताबेई से पहले (सही यह है कि सहाबी से पहले) कोई रावी (वर्णनकर्ता) ग़ायब हो, चाहे वह हटा दिया गया हो या अस्पष्ट हो, जैसे कहा जाए 'एक व्यक्ति'। यह उस पर आधारित है जिसका ज़िक्र पहले हो चुका है कि 'फ़लां ने एक व्यक्ति से रिवायत की', इसे मुनक़त कहा जाता है। और पहले गुज़र चुका है कि अधिकांश इसके विरुद्ध हैं। फिर यह मत इस शर्त के साथ प्रसिद्ध है कि लुप्त रावी केवल एक हो, या दो हों लेकिन लगातार न हों, जैसा कि अल-इराक़ी और शैख़ुल इस्लाम ने दृढ़ता से कहा है (सारांश समाप्त)।

पादलेख: 1 तक़रीब अन-नवावी मअ तदरीब अर-रावी, नौवीं क़िस्म: अल-मुरसल, क़दीमी कुतुब ख़ाना कराची, 1/161-162। 2 तदरीब अर-रावी फ़ी शरह तक़रीब अन-नवावी, दसवीं क़िस्म: अल-मुनक़त, क़दीमी कुतुब ख़ाना कराची, 1/171 और 172।

قرار دیا جس کو تابعی نے صحابہ میں سے ایک مرد سے روایت کیا اس صحابی کے نام کی تصریح نہیں کی اھ اختصار۔ اور ان دونوں (تقریب و تدریب) میں ہے دسویں قسم منقطع، صحیح موقف جس کی طرف فقہاء کرام اور محدثین میں سے خطیب و ابن عبدالبر وغیرہ گئے ہیں وہ یہ ہے کہ منقطع اس حدیث کو کہتے ہیں جس کی سند متصل نہ ہو، چاہے کسی وجہ سے انقطاع ہو، وہ اور مرسل ایک ہی ہیں، اور اس کا اکثر اطلاق ایسی حدیث پر ہوتا ہے جس میں تابعی سے نیچے درجے کا کوئی شخص صحابہ سے روایت کرے جیسے امام مالک علیہ الرحمہ حضرت ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کریں۔ ایک قول کے مطابق منقطع وہ حدیث ہے جس میں تابعی سے قبل (صحیح یہ ہے کہ صحابی سے قبل) کوئی راوی مختل ہو، چاہے تو وہ محذوف ہو یا مبہم، جیسے کہا جائے "کوئی شخص" یہ اس پر مبنی ہے جس کا پہلے ذکر ہو چکا "یعنی فلاں نے ایک شخص سے روایت کی" یہ منقطع کہلاتی ہے۔ اور ماقبل میں گزر چکا ہے کہ اکثریت اس کے خلاف ہے، پھر یہ قول اس شرط کے ساتھ مشہور ہے کہ ساقط فقط ایک راوی ہو یا دو ہوں مگر پے در پے نہ ہوں جیسا کہ اس پر عراقی اور شیخ الاسلام نے جزم کیا ہے اھ تلخیص۔

حواشی: 1 تقریب النووی مع تدریب الراوی النوع التاسع المرسل قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/ ۱۶۱-۱۶۲ 2 تدریب الراوی فی شرح تقریب النواوی النوع العاشر المنقطع قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/ ۱۷۱ و ۱۷۲

(Left Column - Arabic text): Secondly: The ambiguous (mubham) is not from the unknown (majhul) that is acceptable according to us and many of the greats or most of them. For if a narrator is not narrated from except by one person, then he is unknown by identity (majhul al-ayn); we and many of the researchers call him so. And if he is appraised outwardly but not inwardly, then he is 'mastur' (concealed); we and most researchers accept him, as I explained in "Munir al-Ayn fi Hukm Taqbil al-Ibhamayn". It is clear that none of this is known except by naming. Thus, the ambiguous is not part of either of them at all, but rather he is like the one whose condition is unknown (majhul al-hal), whose integrity has not been known inwardly or outwardly. Even if we specifically restrict it to those who are named, then he is not from the terminological unknown at all, even if the name "majhul" is applied to him considering the linguistic meaning. The investigation of the ruling concerning him is that the ambiguity of a narrator other than a Companion without an expression of endorsement (ta'dil)—such as saying "a reliable person narrated to us"—is not like his omission according to us in terms of acceptance. For certainty despite omission is a sign of reliance, unlike in cases of providing a chain of narration (isnad). It is stated in 'Musallam al-Thubut' and its commentary 'Fawatih al-Rahmut': "Someone said, 'A man narrated to me, he is not accepted..."

(Right Column - Urdu translation): Second point: The ambiguous (mubham) is not from that unknown (majhul) which is acceptable to us and all expert scholars or most of them, because if only one person narrates from a narrator, then he is 'majhul al-ayn' (unknown by identity). We and many researchers accept him. And if he is vetted outwardly but not inwardly, then he is 'mastur' (concealed); according to us and most researchers, this is acceptable, as I have stated in the treatise "Munir al-Ayn fi Hukm Taqbil al-Ibhamayin". It is obvious that neither of the two types of unknown is recognized except by mentioning the name, so the ambiguous narrator is neither of these two types, rather he is like the 'majhul al-hal' whose integrity is known neither outwardly nor inwardly. If we also restrict this (majhul al-hal) to those whose names are mentioned, then in this case the ambiguous will not be among the terminologically unknown at all. Although in terms of linguistic meaning, the term unknown will be applied to him. The investigation of the ruling in this is that the ambiguity of a non-companion narrator without a word of appraisal (ta'dil), like "a reliable person narrated a hadith to me." To us, it is not like the omission of a narrator in terms of acceptability. Because despite the omission of a narrator, being

firm about it is a sign of trust. Unlike cases of providing a chain of narration (isnad). It is in "Musallam al-Thubut" and its commentary "Fawatih al-Rahmut" that someone said "a hadith was narrated to me..."

(बायाँ कॉलम - अरबी पाठ): दूसरा: मुबहम (अस्पष्ट) उन मजहूल (अज्ञात) में से नहीं है जो हमारे नज़दीक और कई महान विद्वानों या उनके अधिकांश के नज़दीक स्वीकार्य हैं। क्योंकि जब रावी (वर्णनकर्ता) से केवल एक ही व्यक्ति वर्णन करे, तो वह 'मजहूल अल-ऐन' है; हम और कई शोधकर्ता उसे यही कहते हैं। और यदि उसकी बाहरी तौर पर पुष्टि हो जाए लेकिन आंतरिक तौर पर नहीं, तो वह 'मस्तूर' है; हम और अधिकांश शोधकर्ता उसे स्वीकार करते हैं, जैसा कि मैंने "मुनीर अल-ऐन फ़ी हुक्म तक़बील अल-इबहामैन" में स्पष्ट किया है। और यह स्पष्ट है कि इनमें से कुछ भी नाम के उल्लेख के बिना ज्ञात नहीं होता। अतः मुबहम इनमें से किसी भी श्रेणी में नहीं आता, बल्कि वह 'मजहूल अल-हाल' के समान है जिसकी न्यायप्रियता न आंतरिक रूप से ज्ञात है और न बाहरी। यदि हम इसे केवल उनके लिए विशिष्ट करें जिनके नाम का उल्लेख है, तो वह तकनीकी रूप से मजहूल में से नहीं होगा, हालाँकि भाषाई अर्थ की दृष्टि से उस पर मजहूल शब्द का प्रयोग किया जा सकता है। इसके हुक्म की जाँच यह है कि सहाबी के अलावा किसी रावी का मुबहम होना बिना किसी पुष्टि (तअदील) के शब्द के, जैसे "एक विश्वसनीय व्यक्ति ने हमसे वर्णन किया", हमारे नज़दीक स्वीकार्यता में उसके विलोपन (हज़फ़) के समान नहीं है। क्योंकि विलोपन के बावजूद दृढ़ता, भरोसे का संकेत है, सनद (श्रृंखला) के विपरीत। 'मुसल्लम अल-सुबूत' और इसकी व्याख्या 'फ़वातिह अल-रहमूत' में कहा गया है (एक आदमी ने कहा, "वह स्वीकार नहीं करता...")।

(दायाँ कॉलम - उर्दू अनुवाद): दूसरा विषय: मुबहम उस मजहूल में से नहीं है जो हमारे नज़दीक और तमाम माहिर विद्वानों या अधिकांश के नज़दीक स्वीकार्य है, इसलिए कि अगर किसी रावी से केवल एक ही व्यक्ति वर्णन करे तो वह 'मजहूल अल-ऐन' है, हम और कई शोधकर्ता उसे स्वीकार करते हैं। और अगर उसका बाहरी तौर पर शोध (तज़किया) हो जाए मगर आंतरिक तौर पर न हो तो वह 'मस्तूर' है, हमारे और अधिकांश शोधकर्ताओं के नज़दीक यह स्वीकार्य है जैसा कि मैंने इसे रिसाला "मुनीर अल-ऐन फ़ी हुक्म तक़बील अल-इबहामैन" में बयान किया है। ज़ाहिर है कि मजहूल की दोनों किस्मों में से कोई भी नाम का ज़िक्र किए बिना नहीं पहचाना जाता, तो मुबहम इन दोनों किस्मों में से कोई भी न हुआ बल्कि वह 'मजहूल अल-हाल' के समान है जिसकी न्यायप्रियता न बाहरी तौर पर मालूम होती है न आंतरिक तौर पर, अगर हम इस (मजहूल अल-हाल) को भी उसी के साथ विशिष्ट कर लें जिसका नाम ज़िक्र किया जाता है तो इस सूरत में मुबहम बिल्कुल ही तकनीकी मजहूल में से नहीं होगा। हालाँकि भाषाई अर्थ के आधार पर उस पर मजहूल शब्द का प्रयोग होगा। इसमें हुक्म की

जाँच यह है कि ग़ैर-सहाबी का मुबहम होना बिना पुष्टि के शब्द के जैसे "मुझसे एक विश्वसनीय व्यक्ति ने हदीस बयान की"। हमारे नज़दीक स्वीकार्यता में रावी को हटा देने के समान नहीं है। क्योंकि रावी को हटाने के बावजूद उस पर दृढ़ता, भरोसे की निशानी है। सनद के विपरीत। 'मुसल्लम अल-सुबूत' और उसकी व्याख्या 'फ़वातिह अल-रहमूत' में है कि किसी शख़्स ने कहा "मुझसे हदीस बयान की..."

पृष्ठ ७२५ / ७५०

(بایاں کالم - عربی عبارت): ثانیها: لیس المبهم من المجهول المقبول عندنا وعند کثیر من الفحول اواکثرهم فان الراوی اذا لم یروعنه الا واحد فمجهول العین نسمیه نحن وکثیر من المحققین واذا زکی ظاهرا لا باطنا فمستور نقبله نحن واکثر المحققین کما بینته فی "منیر العین فی حکم تقبیل الابهامین" وظاهر ان شیئا من هذا لا یعرف الا بالتسمیة فالمبهم لیس منهما فی شئ بل هو کمجهول الحال الذی لم تعرف عدالته باطن ولا ظاهرا وان خصصناه ایضا بمن سمی فلیس من المجهول المصطلح علیه اصلا وان کان یطلق علیه اسم المجهول نظرا الی المعنی اللغوی، وتحقیق الحکم فیه ان ابهام راو غیر الصحابی بغیر لفظ التعدیل کحدثنا وثقة لیس کحذفه عندنا فی القبول فان الجزم مع الاسقاط امارة الاعتماد بخلاف الاسناد قال فی مسلم الثبوت و شرحه فواتح الرحموت (قال رجل لا یقبل

(دایاں کالم - اردو ترجمہ): دوسرا امر: مبہم اس مجہول میں سے نہیں جو ہمارے نزدیک اور تمام علماء ماہرین یا اکثر کے نزدیک مقبول ہے، اس لئے کہ اگر کسی راوی سے فقط ایک ہی شخص روایت کرے تو وہ مجہول العین ہے، ہم اور کثیر محققین اس کو قبول کرتے ہیں۔ اور اگر اس کا ظاہری طور پر تزکیہ ہو جائے مگر باطنی طور پر نہ ہو تو وہ مستور ہے، ہمارے اور اکثر محققین کے نزدیک یہ مقبول ہے جیسا کہ میں نے اس کو رسالہ "منیر العین فی حکم تقبیل الابہامین" میں بیان کیا ہے۔ ظاہر ہے کہ مجہول کی دونوں قسموں میں سے کوئی نہیں پہچانا جاتا مگر نام ذکر کرنے سے تو مبہم ان دونوں قسموں میں سے کوئی قسم بھی نہ ہوا بلکہ وہ مجہول الحال کی مثل ہے جس کی عدالت نہ ظاہری طور پر معلوم ہوتی ہے نہ باطنی طور پر، اگر ہم اس (مجہول الحال) کو بھی مختص کر لیں اس کے ساتھ جس کا نام ذکر کیا جاتا ہے تو اس صورت میں مبہم بالکل ہی مجہول اصطلاحی میں سے نہیں ہوگا۔ اگرچہ معنی لغوی کے اعتبار سے اس پر مجہول کا اطلاق

ہوگا۔ اس میں حکم کی تحقیق یہ ہے کہ غیر صحابی کا ابہام بغیر لفظ تعدیل کے جیسے مجھے حدیث بیان کی ایک ثقہ نے۔ ہمارے نزدیک قبولیت میں حذف راوی کی مثل نہیں۔ کیونکہ اسقاط راوی کے باوجود اس پر جزم، اعتماد کی نشانی ہے۔ بخلاف اسناد کے۔ مسلم الثبوت اور اس کی شرح فواتح الرحموت میں ہے کسی شخص نے کہا مجھ سے حدیث بیان کی

Fatawa Razawiyyah, Volume 29

In the (correct) view of the school, this is not like 'Irsal' as reported from Shams al-A’imma, because this is a narration from an unknown person (majhul), whereas 'Irsal' is an assertive attribution of the text to the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him), and this cannot be done except through validation (tawthiq). Thus, there is a difference between the two. (Contrarily) if one says, "A trustworthy person (thiqa) told me" or "a man from the Companions (Sahaba) told me," then this is a narration from a trustworthy person because all the Companions are upright ('adil). (And if there is a convention) to refer to a specific person whose uprightness is known by the term "a man," (then there is no problem) in its acceptance. I say: It appears to me that an exception should be made for one who uses ambiguity while it is well-known that his habit is not to narrate except from a trustworthy person, like our Greatest Imam (Abu Hanifa), Imam Ahmad, and others whose names we mentioned in "Munir al-Ayn." For the ambiguous person will be among those of unknown status (majhul al-hal) or similar. Scholars have explicitly stated this detail in it; they said in the two books regarding the narration of an upright person from an unknown person: there are several views. One of them is (validation/ta’dil), because the nature of an upright person is that he only narrates from an upright person. (And) the second [view is...]

1. Fawatih al-Rahmut Sharh Musallam al-Thubut, Bazl al-Mustasfa, Issue of Majhul al-Hal, etc., Manshurat al-Sharif al-Radi, Qom, Iran, 2/177.

(सही) संप्रदाय के अनुसार, इसे स्वीकार नहीं किया जाएगा। यह 'इरसाल' की तरह नहीं है जैसा कि शम्स अल-अइम्मा से उद्धृत है, क्योंकि यह एक अज्ञात व्यक्ति (मजहूल) से वर्णन है, जबकि 'इरसाल' अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के प्रति पाठ के संबंध का एक दृढ़ निश्चय है, और यह सत्यापन (तौसीक़) के बिना नहीं हो सकता। इस प्रकार दोनों में अंतर है। (इसके विपरीत) यदि कोई कहे, "एक भरोसेमंद (सिक़ा) व्यक्ति ने मुझे बताया" या "एक सहाबी (पैगंबर के साथी) ने मुझे बताया," तो यह एक भरोसेमंद व्यक्ति से वर्णन है क्योंकि सभी सहाबा न्यायप्रिय ('आदिल) हैं। (और यदि यह परंपरा हो) कि किसी विशेष व्यक्ति को जिसकी न्यायप्रियता ज्ञात है, "एक व्यक्ति" शब्द से संबोधित किया जाए, (तो इसकी स्वीकार्यता में कोई समस्या नहीं है)। मैं कहता हूँ: मुझे लगता है कि उस व्यक्ति के लिए एक अपवाद होना चाहिए जिसने अस्पष्टता (इबहाम) का उपयोग किया है, जबकि यह ज्ञात है कि उसकी आदत किसी भरोसेमंद व्यक्ति के अलावा किसी और से वर्णन करने की नहीं है, जैसे हमारे इमाम-ए-आज़म, इमाम अहमद और अन्य इमाम जिनके नाम हमने "मुनीर अल-ऐन" में उल्लेख किए हैं। क्योंकि अस्पष्ट व्यक्ति अज्ञात स्थिति (मजहूल अल-हाल) या उसके समान होगा। विद्वानों ने इसमें इस विवरण के साथ स्पष्ट किया है; उन्होंने दो पुस्तकों में एक अज्ञात व्यक्ति से न्यायप्रिय व्यक्ति के वर्णन के बारे में कहा है: कई विचार हैं। उनमें से एक (तअदील) है, क्योंकि एक न्यायप्रिय व्यक्ति की विशेषता यह है कि वह केवल एक न्यायप्रिय व्यक्ति से ही वर्णन करता है। (और) दूसरा [विचार है...]

1. फ़वातिह अर-रहमूत शरह मुसल्लम अ-सुबूत, बज़्ल अल-मुस्तस्फ़ा, मसला मजहूल अल-हाल इत्यादि, मंसूरात अल-शरीफ़ अल-रज़ी, क़ुम, ईरान, 2/177।

في المذهب (الصحيح) اور یہ (روایت) مذہب صحیح میں قبول نہیں کی جائے گی۔ یہ ارسال کی مثل نہیں جیسا کہ شمس الائمہ سے منقول ہے، کیونکہ یہ مجہول سے روایت ہے جبکہ ارسال رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی طرف متن کی نسبت کا جزم ہے اور یہ بغیر توثیق کے نہیں ہوسکتا، تو اس طرح دونوں میں فرق ہو گیا۔ (بخلاف) اس کے کہ اگر کسی نے کہا مجھ سے حدیث بیان کی ایک ثقہ نے یا صحابہ کرام میں سے ایک مرد نے کیونکہ یہ ثقہ سے روایت ہے، اس لیے کہ تمام صحابہ عادل ہیں۔ (ولو اصطلح علی معین) اگر یہ اصطلاح بنالی جائے کہ فلاں معین شخص جس کی عدالت معلوم ہے اسے "ایک مرد" کے ساتھ تعبیر کیا جائے گا تو اس کے مقبول ہونے میں کوئی اشکال نہیں۔ اھ اقول: (میں کہتا ہوں) میرے لیے اُس شخص کا استثناء ظاہر ہوا جس نے ابہام کیا حالانکہ اس کی عادت معروف ہے کہ بغیر ثقہ کے کسی سے روایت نہیں کرتا جیسا کہ ہمارے امام اعظم اور امام احمد اور دیگر ائمہ کرام جن کے نام ہم نے "منیر العین" میں ذکر کیے ہیں۔ اس لیے کہ مبہم مجہول الحال سے ہوگا یا اس کی مثل سے۔ تحقیق اس میں علماء نے اس تفصیل کے ساتھ تصریح فرمائی ہے، دونوں کتابوں میں کہا کہ مجہول سے عادل کی روایت کے بارے میں چند مذہب ہیں، ان میں سے ایک مذہب اس کی تعدیل ہے، کیونکہ عادل کی شان یہ ہے کہ وہ فقط عادل سے روایت کرتا ہے۔ دوسرا مذہب...

۱ فواتح الرحموت شرح مسلم الثبوت بذل المستصفی مسئلہ مجہول الحال الخ منشورات الشریف الرضی قم ایران ۲ /۱۷۷

Volume 29 Fatawa Ridawiyya

(Prohibition) because it is possible that his narration is based on reliance upon a Mujtahid, for he does not act except after validation (ta'dil). And (the) third is (differentiation between one who is known) from his habit (that he does not narrate except from a reliable person), so it would be a validation (ta'dil), (otherwise) not. And this (the third one) is (more just/equitable) and it is apparent, abbreviated. Third: The ruling on a kafir (disbeliever) whose disbelief is known, especially one who attained linguistic health by the onset of Islam, is not from the category of virtues (fada'il) in which weak (da'if) narrations are accepted by the consensus of scholars. How can it be so, when many rulings are based on it, such as the prohibition of mentioning him except in a good way, and the obligation of honoring him by seeking pleasure (taraddi) for him when he is mentioned, after that (previously) being forbidden, rather sometimes leading to disbelief, refuge is sought with Allah the Almighty. And the acceptance of his word in narrations, if they occur, and so on. Certainty is not removed by doubt, and the weak (narration) does not nullify what is established. The secret in accepting weak (narrations) where they are accepted is that they do not establish anything that was not established, as we have investigated it such that nothing more can be added.

[Footnote 1: Fawatih al-Rahamut Sharh Muslim al-Thubut, Bazl al-Mustasfa, problem of 'majhul al-hal' etc., Al-Sharif al-Radi Publications, Qom, Iran, 2/150.]

Page 727 of 750

जिल्द २९ फ़तावा रज़विया

(निषेध) इसलिए कि यह संभव है कि उसका वर्णन एक मुजतहिद पर निर्भर होने के कारण हो, क्योंकि वह प्रमाणीकरण (तअदील) के बाद ही कार्य करता है। और (तीसरा) विस्तार (उन लोगों के बीच अंतर है जिनके बारे में ज्ञात है) उनकी आदत से (कि वे केवल एक विश्वसनीय व्यक्ति से वर्णन करते हैं), तो यह एक प्रमाणीकरण होगा, (अन्यथा) नहीं। और यह (तीसरा) अधिक न्यायसंगत है और यह स्पष्ट है, संक्षिप्त में। तीसरा विषय: जिस काफ़िर का कुफ़्र ज्ञात हो, विशेष रूप से जब वह भाषाई सत्यता प्राप्त करने वाला हो। उस पर इस्लाम के हावी होने का हुक्म उन गुणों (फ़ज़ाइल) की श्रेणी में नहीं है जिसमें विद्वानों की सर्वसम्मति से कमज़ोर (ज़ईफ़) हदीसें भी स्वीकार्य होती हैं। ऐसा कैसे हो सकता है जब इस पर कई हुक्म आधारित हैं, जैसे कि भलाई के अलावा उसके ज़िक्र का हराम होना, उसके सम्मान की अनिवार्यता और उसके ज़िक्र के साथ 'रज़ियल्लाहु तआला अन्हु' कहना, जबकि इसके बाद यह हराम बल्कि कभी-कभी कुफ़्र तक पहुँचा देने वाली चीज़ है, और अल्लाह तआला की पनाह। और वर्णनों में उसकी बात को स्वीकार करना जब वे घटित हों आदि, जबकि निश्चितता (यक़ीन) संदेह (शक) के साथ समाप्त नहीं होती, और कमज़ोर हदीस स्थापित सत्य को मिटा नहीं सकती। कमज़ोर हदीसें जहाँ स्वीकार की जाती हैं वहाँ उन्हें स्वीकार करने में रहस्य यह है कि वहाँ कमज़ोर हदीसें किसी अपुष्ट चीज़ को सिद्ध नहीं करतीं जैसा कि हमने अपने शोध ग्रंथ में...

[पाद-टिप्पणी 1: फ़वातिह अर-रहमूत शरह मुस्लिम अस-सुबूत, बज़लुल मुस्तसफ़ा मसला मजहूलुल हाल आदि, मंशूरात अश्-शरीफ़ अर-रज़ी, क़ुम, ईरान १५०/२]

पृष्ठ ७२७ / ७५०

(المنع) لجواز روایته تعویلا علی المجتهدانه لا یعمل الا بعد التعدیل (و) الثالث (التفصیل بین من علم) من عادته (انه لا یروی الا عن عدل) فیکون تعدیلا (اولا) فلا (وهو) ای الثالث (الاعدل) وهو ظاهر اهـ باختصار۔ منع تعدیل ہے کیونکہ ہو سکتا ہے اس نے مجتہد پر بھروسا کرتے ہوئے یہ روایت کرتی ہو کیونکہ مجتہد تعدیل کے بعد ہی عمل کرتا ہے، اور تیسرا مذہب تفصیل یعنی اگر اس کی یہ عادت معلوم ہے کہ وہ فقط عادل سے روایت کرتا ہے غیر عادل سے نہیں، تو تعدیل ہوگی ورنہ نہیں، اور یہ تیسرا مذہب زیادہ عدل والا ہے اور وہ ظاہر ہے اھ اختصار۔

ثالثها: لیس الحکم علی کافر معلوم الکفر لاسیما المدرك صحة لغویة بطریان الاسلام من باب الفضائل المقبول فیه الضعاف باتفاق الاعلام، کیف وانه یبتنی علیه کثیر من الاحکام کتحریم ذکره الا بخیر و وجوب تعظیمه بطلب الترضی علیه اذا ذکر بعد ما کان ذاك حراما بل ربما المنجر الی الکفر، و العیاذ بالله تعالی، وقبول قوله فی الروایات ان وقعت الی غیر ذلك والیقین لا یزول الشك والضعیف لا یرفع الثابت وانما السر فی قبول الضعاف حیث تقبل انها ثمة لم تثبت شیئا لم یثبت کما حققناه بما لا مزید علیه۔ تیسرا امر: جس کافر کا کفر معلوم ہو خصوصاً جب کہ وہ صحت لغویہ کو پانے والا ہو۔ اُس پر اسلام کے طاری ہونے کا حکم از قبیل فضائل نہیں ہے جس میں باتفاق علماء ضعیف حدیثیں بھی مقبول ہیں، ایسا کیونکر ہو سکتا ہے جب کہ اس پر بہت سے احکام کی بنیاد ہے مثلاً بھلائی کے سوا اس کے ذکر کا حرام ہونا، اس کی تعظیم کا واجب ہونا اور اس کے ذکر کے ساتھ رضی اللہ تعالٰی عنہ کہنا، بعد اس کے یہ حرام بلکہ بسا اوقات کفر تک پہنچا دینے والی چیز ہے، اور اللہ تعالٰی کی پناہ، اور روایات میں اس کے قول کو قبول کرنا جب کہ واقع ہوں وغیرہ ذلک، حالانکہ یقین شک کے ساتھ زائل نہیں ہوتا، اور ضعیف حدیث ثابت کو رفع نہیں کر سکتی، ضعیف حدیثیں

جہاں قبول کی جاتی ہیں وہاں ان کو قبول کرنے میں راز یہ ہے کہ وہاں ضعیف حدیثیں کسی غیر ثابت چیز کو ثابت نہیں کرتیں جیسا کہ ہم اپنے رسالہ

1 فواتح الرحموت شرح مسلم الثبوت بذل المستصفی مسئلہ مجہول الحال الخ منشورات الشریف الرضی قم ایران ۱۵۰/۲

Fatawa Rizvia, Volume 29

I have researched the removal of doubts that occur to it in our treatise "Al-Had al-Kaf fi Hukm al-Di'af". | It has been researched in "Al-Had al-Kaf fi Hukm al-Di'af" (The Sufficient Guide on the Ruling of Weak Hadiths). Since it [a weak narration] cannot establish what is not established, how can it remove what is already established? This is nothing but error and deviation, and this is very clear. Thus, by the praise of Allah, it has become clear that the narration is weak and flimsy, and it is not sufficient or adequate for establishing what was intended by it. This is how research should be conducted, and Allah Almighty is the Grantor of success. | To which nothing further can be added. It has removed all the doubts arising in this matter. Thus, when weak Hadiths cannot establish an unproven matter, how can they remove an established matter? This is merely error and distancing from the truth; this is well-clarified. By the grace of Allah, it has become clear that the mentioned narration is weak and absurd, and it is not useful or sufficient for the purpose intended to be proven by it. Similarly, research is required, and Allah Almighty is the Master of success. (T)

Secondly: Even if, for the sake of argument, it were authentic, it would be contrary to those glorious and most authentic Sahih Hadiths; therefore, it would be rejected, whereas it is not even authentic itself. Now, what consideration do they deserve compared to those? I say: the first answer was from the perspective of the chain of transmission (sanad); this is from the perspective of the text (matn). That is, even if it were sound in its chain, it would be irregular (shadhdh) in its text, and such an irregularity that impairs authenticity would make it weak anyway. Now that it is not sound even in its chain and is specifically "munkar" (denied), it is in any case rejected and unreliable. This answer was also given by the aforementioned scholars, and Imam Qastalani and Shaykh Muhaqqiq also alluded to it. In [Tarikh al-] Khamis, after the aforementioned text, it is from Imam Bayhaqi:

"The authentic Hadith has established for Abu Talib his death upon disbelief and polytheism, as we have narrated in Sahih al-Bukhari."[1] | Meaning, the authentic Hadith proves Abu Talib's death on disbelief and polytheism, as it exists in Sahih Bukhari.

The same is stated in [Mawahib al-Ladunniyyah]. In ['Umdat al-Qari], after the aforementioned text, and in [Sharh] Zurqani, it is reported from the Imam of Grandeur (Hafiz al-Sha'n):

"And even if it were authentic, it would be contradicted by the Hadith..." | If this were authentic, then the Hadith narrated in this chapter...

[1] Tarikh al-Khamis fi Ahwal Anfus Nafis, Wasiyyat Abi Talib, Mu'assasatu Sha'ban lil-Nashr, Beirut, 1/300.

फतावा रिज़विया, जिल्द २९

हमने अपने शोध-निबंध "अल-हाद अल-काफ फी हुक्म अद-दियाफ" में इसमें उत्पन्न होने वाले संदेहों के निवारण पर शोध किया है। | "अल-हाद अल-काफ फी हुक्म अद-दियाफ" (कमज़ोर हदीसों के नियम पर पर्याप्त मार्गदर्शिका) में इस पर शोध किया गया है। जब (कमज़ोर रिवायत) किसी अपुष्ट चीज़ को साबित नहीं कर सकती, तो वह एक पहले से साबित चीज़ को कैसे हटा सकती है? यह केवल त्रुटि और मर्यादा का उल्लंघन है, और यह बहुत स्पष्ट है। अत; अल्लाह की प्रशंसा से यह स्पष्ट हो गया कि वह रिवायत कमज़ोर और अर्थहीन है, और वह उस उद्देश्य को सिद्ध करने के लिए पर्याप्त नहीं है जिसके लिए उसे लाया गया था। शोध इसी प्रकार होना चाहिए और अल्लाह तआला ही सफलता प्रदान करने वाला है। | जिसमें कोई वृद्धि नहीं की जा सकती। इसने इस मामले में पैदा होने वाले सभी भ्रमों को दूर कर दिया है। अत; जब वे कमज़ोर हदीसें किसी अपुष्ट चीज़ को साबित नहीं कर सकतीं, तो वे स्थापित चीज़ को कैसे रद्द कर सकती हैं? यह केवल गलती और सत्य से दूरी है; यह भली-भांति स्पष्ट है। अल्लाह के शुक्र से यह स्पष्ट हो गया कि वर्णित रिवायत कमज़ोर और बेतुकी है, और जिस उद्देश्य को इससे साबित करना चाहा गया था, उसके लिए यह उपयोगी और पर्याप्त नहीं है। शोध ऐसा ही होना चाहिए और अल्लाह तआला ही तौफीक का मालिक है। (त)

दूसरा: यदि मान भी लिया जाए कि यह सही (प्रामाणिक) है, तो यह उन महान और सबसे सही हदीसों के विरुद्ध होगी; अतः इसे खारिज कर दिया जाता, जबकि यह स्वयं भी सही नहीं है। अब उनके मुकाबले यह किस ध्यान के योग्य है? मैं कहता हूँ: पहला उत्तर सनद (प्रसारण श्रृंखला) के दृष्टिकोण से था; यह मतन (पाठ) के दृष्टिकोण से है। अर्थात, यदि यह अपनी सनद में सही भी होती, तो अपने मतन में शाज़ (असंगत) होती, और ऐसी असंगति जो प्रामाणिकता में दोष उत्पन्न करती है, वैसे भी इसे कमज़ोर बना देती है। अब जबकि यह अपनी सनद में भी सही नहीं है और विशेष रूप से 'मुनकर' (अस्वीकृत) है, तो यह हर हाल में खारिज और अविश्वसनीय है। यह उत्तर उन प्रशंसित विद्वानों ने भी दिया है, और इमाम कस्तलानी तथा शेख मुहक्किक ने भी इसकी ओर संकेत किया है। 'तारीख अल-खमीस' में उपर्युक्त इबारत के बाद इमाम बैहकी से उद्धृत है:

"और हदीस-ए-सही से यह साबित हो चुका है कि अबू तालिब की मृत्यु कुफ्र और शिर्क पर हुई, जैसा कि हमने सही बुखारी में रिवायत किया है।"[1] | अर्थात्, सही हदीस अबू तालिब की मृत्यु कुफ्र और शिर्क पर होने को प्रमाणित कर रही है, जैसा कि सही बुखारी में मौजूद है।

ठीक इसी प्रकार 'मवाहिब' (अल-लदुन्निय्या) में भी है। 'उमदतुल कारी' में उपर्युक्त इबारत के बाद और ज़ुरक़ानी में इमाम हाफ़िज़ अल-शान से है:

"और अगर यह सही भी होती, तो इसके विरोध में वह हदीस आती..." | अगर यह सही भी होती तो इस बाब (अध्याय) में आई हदीस...

[1] तारीख अल-खमीस फी अहवाल अनफुस नफीस, वसियत अबी तालिब, मुअस्ससतु शाबान लिल-नश्र, बेरुत, १/३००।

पृष्ठ ७२८ (७५० में से)

مادفع الاوھام المتطرقۃ الیہ في رسالتنا "الھاد الکاف في حکم الضعاف" میں اس کی تحقیق کردی | "الھاد الکاف في حکم الضعاف" میں اس کی تحقیق کردی ہے فاذا لم تکن لتثبت مالم یثبت فکیف ترفع ما قد ثبت ما ھذا الا غلط وشطط وھذا واضح جدا فاتضح بحمد اللہ ان الروایۃ ضعیفۃ واھیۃ وانھا في اثبات ما ریم منھا غیر مغنیۃ ولا کافیۃ ھکذا ینبغي التحقیق واللہ تعالی ولي التوفیق۔ | جس پر زیادتی نہیں کی جاسکتی جس نے اس مسئلہ میں پیدا ہونے والے تمام وہموں کا ازالہ کردیا ہے، چنانچہ جب وہ ضعیف حدیثیں غیر ثابت چیز کو ثابت نہیں کر سکتیں تو ثابت شدہ چیز کو رفع کیسے کرسکیں گی۔ یہ محض غلط اور حق سے دوری ہے، یہ خوب واضح ہے۔ بحمد اللہ واضح ہوگیا کہ روایت مذکورہ ضعیف اور بے ہودہ ہے اور اس سے جس مقصد کو ثابت کرنا مطلوب تھا اسکے لیے یہ مفید و کافی نہیں ہے۔ یونہی تحقیق چاہیے اور اللہ تعالٰی توفیق کا مالک ہے۔ (ت)

ثانیاً: اگر بالفرض صحیح بھی ہوتی تو ان احادیث جلیلہ صحاح اصح کے مخالف تھی لہٰذا مردود ہوتی نہ کہ خود صحیح بھی نہیں اب اُن کے مقابل کیا التفات کے قابل اقول جواب اول بنظر سند تھا یہ بلحاظ متن ہے یعنی اگر سنداً صحیح بھی ہوتی تو متناً شاذ تھی اور ایسا شذوذ قادح صحت یوں بھی ضعیف رہتی اب کہ سنداً بھی صحیح نہیں خاص منکر ہے اور بہر حال مردود و نامعتبر، یہ جواب بھی علمائے ممدوحین نے دیا اور امام قسطلانی و شیخ محقق نے بھی اس کی طرف اشارہ کیا۔ خمیس میں بعد عبارت مذکورہ امام بیہقی سے ہے:

والصحیح من الحدیث قد اثبت لابی طالب الوفاۃ علی الکفر والشرک کما رویناہ في صحیح البخاري[1]۔ | یعنی حدیثِ صحیح ابو طالب کا کفر وشرک پر مرنا ثابت کررہی ہے جیسا کہ صحیح بخاری میں موجود۔

بعینہ اسی طرح مواہب میں ہے۔ عمدہ میں بعد عبارت مذکورہ اور زرقانی میں امام حافظ الشان سے ہے:

ولو کان صحیحاً لعارضہ حدیث | اگر یہ صحیح بھی ہوتی تو اس باب میں وارد حدیث

[1] تاریخ الخمیس فی احوال انفس نفیس وصیت ابی طالب مؤسسة شعبان للنشر بیروت ۱/۳۰۰

Fatawa Razawiyya - Volume 29

Arabic	Urdu
The chapter [contains it] because it is more authentic than it, let alone that it is not authentic at all.[1]	It would oppose it because it is more authentic than it, what to say of it not being authentic at all. (T)

In Al-Isaba, after the previous discourse, it is stated:

Arabic	Urdu
And on the assumption of its proof, that Hadith opposes it which is more authentic than both of them.[2]	And on the assumption of its proof, that Hadith opposes it which is more authentic than it. (T)

Then after writing the second Hadith, he stated:

Arabic	Urdu
So this is the authentic one which refutes the narration mentioned by Ibn Ishaq.[3]	This authentic Hadith is refuting the narration of Ibn Ishaq.

The excerpt from Sharh al-Hamziyyah passed above:

Arabic	Urdu
Explicit Hadiths whose authenticity is agreed upon refute that.[4]	Explicit Hadiths whose authenticity is agreed upon are refuting it.

In Madarij al-Nubuwwah it is stated:

Persian	Urdu
In Hadiths and reports, his Islam has not found proof, except for what came in the narration of Ibn Ishaq that he accepted Islam near the time of death and said that when his death drew near and Abbas said, O son of my brother! By Allah, my brother has indeed spoken the word which you commanded him to say. And in a narration it came that the Prophet said: I did not hear it, although the Hadith...	In reports and Hadiths, the Islam of Abu Talib has not been proven except for that narration reported from Ibn Ishaq that he accepted Islam near the time of death. Ibn Ishaq said that when the time of Abu Talib's death approached, Hazrat Abbas (may Allah be pleased with him) said: O my nephew! By God, my brother has uttered that word which...

[1] Umdat al-Qari Kitab Manaqib al-Ansar Hadith 3883 Dar al-Kutub al-Ilmiyah Beirut 17/23, Sharh al-Zarqani ala al-Mawahib al-Ladunniyyah al-Maqsad al-Awwal Dar al-

Ma'rifah Beirut 1/293 [2] Al-Isaba fi Tamyiz al-Sahaba Letter Taa Section 4 Dar Sadr Beirut 4/116 [3] Al-Isaba fi Tamyiz al-Sahaba Letter Taa Section 4 Dar Sadr Beirut 4/117 [4] Sharh Hamziyya

फतावा रज़विया - जिल्द 29

अरबी	उर्दू
अध्याय [इसे समाहित करता है] क्योंकि यह उससे अधिक प्रामाणिक है, इस बात को छोड़ दें कि वह बिल्कुल सही ही नहीं है।[1]	यह इसका विरोध करेगा क्योंकि यह उससे अधिक प्रामाणिक है, यह कहना क्या कि यह सही ही नहीं है। (त)

अल-इसाबा में पिछली चर्चा के बाद उल्लेख है:

अरबी	उर्दू
और इसके प्रमाण की स्थिति में, वह हदीस इसके विपरीत है जो इन दोनों से अधिक सही है।[2]	और इसके प्रमाण की स्थिति में, वह हदीस इसके विपरीत है जो इससे अधिक सही है। (त)

फिर दूसरी हदीस लिखने के बाद फरमाया:

अरबी	उर्दू
तो यह वही सही है जो इब्न इशाक द्वारा वर्णित रिवायत का खंडन करता है।[3]	यह हदीस सही रिवायत इब्न इशाक का खंडन कर रही है।

शरह अल-हमज़िया का उद्धरण ऊपर गुज़र चुका:

अरबी	उर्दू
स्पष्ट हदीसें जिनकी प्रामाणिकता पर सहमति है, इसे नकारती हैं।[4]	स्पष्ट हदीसें जिनकी प्रामाणिकता पर सहमति है, इसे रद्द कर रही हैं।

मदारिज अल-नुबुव्वह में है:

फारसी	उर्दू
हदीसों और समाचारों में उनके इस्लाम का प्रमाण नहीं मिला, सिवाय इसके कि इब्न इशाक की रिवायत में आया है कि उन्होंने मृत्यु के समय के पास इस्लाम स्वीकार किया और कहा कि जब उनकी मृत्यु निकट आई और अब्बास ने कहा, हे मेरे भाई के बेटे!	समाचारों और हदीसों में अबू तालिब का इस्लाम साबित नहीं हुआ, सिवाय उस रिवायत के जो इब्न इशाक से वर्णित है कि वह मृत्यु के समय के करीब इस्लाम लाए थे। इब्न इशाक ने कहा कि जब अबू तालिब की मृत्यु का समय

फारसी

अल्लाह की कसम, मेरे भाई ने वास्तव में वह शब्द कह दिया है जिसका आपने उन्हें आदेश दिया था। और एक रिवायत में आया है कि पैगंबर ने कहा: मैंने इसे नहीं सुना, हालांकि हदीस...

उर्दू

करीब आया, तो हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा: ऐ मेरे भतीजे! खुदा की कसम, मेरे भाई ने वह कलमा कह दिया है जिसका...

[1] उमदतुल क़ारी किताब मनाक़िबुल अंसार हदीस 3883 दारुल कुतुब अल-इलमिया बेरूत 17/23, शरह अल-ज़रक़ानी अलल मवाहिब अल-लदुननिया अल-मक़्सद अल-अव्वल दारुल मारिफ़ा बेरूत 1/293 [2] अल-इसाबा फ़ी तमीज़ अस-सहाबा हर्फ़ अत्त-ता क़िस्म 4 दार सादर बेरूत 4/116 [3] अल-इसाबा फ़ी तमीज़ अस-सहाबा हर्फ़ अत्त-ता क़िस्म 4 दार सादर बेरूत 4/117 [4] शरह हमज़िया

عربی	اردو
الباب لانه اصح منه فضلا عن انه لم یصح1 -	اس کے معارض ہوتی کیونکہ وہ اس سے اصح ہے چہ جائیکہ یہ صحیح ہی نہیں۔ (ت)

اصابہ میں بعد کلام سابق ہے:

عربی	اردو
وعلی تقدیر ثبوته فقد عارضهما ما هو اصح منهما2 -	اور اس کے ثبوت کی تقدیر پر وہ حدیث اس کے معارض ہے جو اس سے اصح ہے۔ (ت)

پھر حدیث دوم لکھ کر فرمایا:

عربی	اردو
فهذا هو الصحیح الذي یرد الروایة التی ذکرها ابن اسحق3 -	یہ حدیث صحیح روایت ابن اسحاق کو رد کر رہی ہے۔

شرح ہمزیہ کی عبارت اوپر گزری:

عربی	اردو
صرائح الاحادیث المتفق علی صحتها ترد ذلك4 -	صریح حدیثیں جن کی صحت پر اتفاق ہے اسے رد کر رہی ہیں۔

مدارج النبوۃ میں ہے:

فارسی	اردو
در احادیث و اخبار اسلام دے ثبوت نیافتہ	اخبار و احادیث میں ابوطالب کا اسلام ثابت نہیں
جزانچہ در روایت ابن اسحق آمدہ کہ دے اسلام	ہوا سوائے اُس روایت کے جو ابن اسحاق سے
آورد نزدیک بوقت مرگ و گفتہ کہ چوں قریب	مروی ہے کہ وہ وقتِ موت کے قریب اسلام لے
شد موت دے و عباس گفت یا ابن اخی ! واللہ	آئے تھے ابن اسحاق نے کہا کہ جب ابوطالب کا
بتحقیق گفت برادر من کلمہ را کہ امر کردی تو	وقت موت قریب ہوا تو حضرت عباس رضی اللہ
او را بداں کلمہ و در روایتی آمدہ کہ آنحضرت تعالیٰ عنہ نے کہا: اے میرے بھتیجے! بخدا میرے	
گفت من نشنیدم با آنکہ حدیث	بھائی نے وہ کلمہ کہہ دیا ہے جس کا

1 عمدة القاری کتاب مناقب الانصار حدیث ۳۸۸۳ دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۷ / ۲۳، شرح الزرقاني على المواهب اللدنيہ المقصد الاول دار المعرفة بیروت ۱ / ۲۹۳ 2 الاصابة فی تمییز الصحابة حرف الطاء القسم الرابع دار صادر بیروت ۴ / ۱۱۶ 3 الاصابة فی تمییز الصحابة حرف الطاء القسم الرابع دار صادر بیروت ۴ / ۱۱۷ 4 شرح ہمزیہ

Fatawa Razawiya Volume 29

[Persian text]: He has briefly established the truth of Abu Talib's disbelief. (Footnote 1) [Urdu text]: He commanded it; it is mentioned in a narration that the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said: "I did not hear," despite the fact that authentic Hadith has proven the disbelief of Abu Talib. (End of summary)

This discourse belongs to the Honorable Sheikh (may Allah have mercy on him), and this humble servant (may Allah forgive him) found two marginal notes written on the margins of 'Madarij', the transcription of which is not without benefit.

[Persian text]: First, regarding the Sheikh's phrase "except what has come in the narration of Ibn Ishaq," upon this I say: This exception is 'munqati' (disconnected). Masters of the field like Imam Bayhaqi, Imam Ibn Hajar Asqalani, Imam Ayni, Imam Ibn Hajar Makki, etc., have explicitly stated the weakness of this narration because an ambiguous narrator occurs in it. Furthermore, it is 'munkar' (rejected) due to its contradiction with authentic traditions. The Sheikh, at the end of his discourse, points towards its weakness by saying: "Despite authentic Hadith establishing it, etc.," it becomes clear that this is not authentic. [Urdu text]: First, regarding the Sheikh's words "except what has come in the narration of Ibn Ishaq," upon this text I say: This exception is disconnected. Masters of the field like Imam Bayhaqi, Imam Ibn Hajar Asqalani, Imam Ayni, and Imam Ibn Hajar Makki, etc., have explicitly stated the weakness of this narration because an ambiguous narrator is present in it; moreover, it is 'munkar' due to its contradiction with authentic Hadiths. At the end of his discourse, the Sheikh (may mercy be upon him) points towards its weakness with these words: "Despite the fact that authentic Hadith has proven his disbelief," making it known that this Hadith is not authentic.

[Persian text]: Second, regarding the Sheikh's phrase "and in a narration it has come," upon this I say: This word creates an ambiguity that there are two narrations here, whereas the mentioned narration of Ibn Ishaq is devoid of mentioning the Prophet's (peace and blessings of Allah be upon him) rejection by saying... [Urdu text]: Second: Upon the Sheikh's words "and in a narration it has come," a marginal note was written with these words: I say this creates a misconception that there are two narrations here, whereas in the narration of Ibn Ishaq, these words of rejection by

the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) "I did not..." are not present.

1. Madarij-un-Nubuwwah, Second Chapter: The passing away of Abu Talib, Maktaba Nooria Razawiya, Sukkur, Pakistan, 2/48. Page 730 of 750

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

[फ़ारसी पाठ]: उन्होंने संक्षेप में अबू तालिब के कुफ़्र (अविश्वास) की सत्यता स्थापित की है। (पाद-टिप्पणी 1) [उर्दू पाठ]: आपने इसका आदेश दिया है; एक रिवायत में आया है कि पैग़ंबर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया: "मैंने नहीं सुना," इसके बावजूद कि सही हदीस ने अबू तालिब के कुफ़्र को साबित कर दिया है। (संक्षेप अंत)

यह कलाम हज़रत शेख (रहमतुल्लाह अलैहि) का है और इस तुच्छ सेवक (अल्लाह उन्हें क्षमा करे) ने यहाँ 'मदारिज' के हाशिए पर अपने दो हाशिए लिखे पाए, जिनका नकल करना लाभ से खाली नहीं है।

[फ़ारसी पाठ]: पहला, शेख के शब्दों "इब्न इशाक की रिवायत में जो आया है उसके अलावा" पर, मैं कहता हूँ: यह अपवाद 'मुन्कते' (टूटा हुआ) है। इस विषय के विशेषज्ञों जैसे इमाम बैहकी, इमाम इब्न हजर असकलानी, इमाम ऐनी, इमाम इब्न हजर मक्की आदि ने इस रिवायत की कमजोरी को स्पष्ट किया है क्योंकि इसमें एक संदिग्ध रावी (वर्णनकर्ता) आया है। इसके अलावा, यह सही हदीसों के विपरीत होने के कारण 'मुनकर' (अस्वीकार्य) है। शेख अपने कलाम के अंत में इसकी कमजोरी की ओर इशारा करते हुए कहते हैं: "इसके बावजूद कि सही हदीस ने इसे स्थापित किया है आदि," जिससे पता चला कि यह सही नहीं है। [उर्दू पाठ]: पहला, शेख के शब्दों "इब्न इशाक की रिवायत में जो आया है उसके अलावा" पर मैं कहता हूँ: यह अपवाद मुन्कते है। इस विषय के विशेषज्ञों जैसे इमाम बैहकी, इमाम इब्न हजर असकलानी, इमाम ऐनी और इमाम इब्न हजर मक्की आदि ने इस रिवायत के ज़ईफ़ (कमजोर) होने को स्पष्ट किया है क्योंकि इसमें एक संदिग्ध रावी मौजूद है; फिर, सही हदीसों के विरोध के कारण यह 'मुनकर' है। शेख (रहमतुल्लाह अलैहि) अपने कलाम के अंत में इन शब्दों के साथ इसकी कमजोरी की ओर इशारा करते हैं कि "बावजूद इसके कि सही हदीस ने उसके कुफ़्र को साबित कर दिया है," जिससे पता चला कि यह हदीस सही नहीं है।

[फ़ारसी पाठ]: दूसरा, शेख के वाक्यांश "और एक रिवायत में आया है" पर मैं कहता हूँ: यह शब्द यह भ्रम पैदा करता है कि यहाँ दो रिवायतें हैं, जबकि इब्न इशाक की उल्लिखित रिवायत में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) द्वारा इन शब्दों के साथ अस्वीकार करने का कोई उल्लेख नहीं है... [उर्दू पाठ]: दूसरा: शेख के कथन "और एक रिवायत में आया है" पर इन शब्दों के साथ हाशिया

लिखा: मैं कहता हूँ यह भ्रम पैदा करता है कि यहाँ दो रिवायतें हैं, जबकि इब्न इशाक की रिवायत में नबी करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के ये अस्वीकृति वाले शब्द नहीं हैं कि "मैंने नहीं..."

1. मदारिज-उन-नुबुव्वह, दूसरा अध्याय: अबू तालिब का निधन, मकतबा नूरिया रज़विया, सुक्कुर, पाकिस्तान, 2/48। पृष्ठ 730/750

صحیح اثبات کردہ است برائے ابوطالب کفر راہ مختصراً ۱۔ آپ نے اس کو حکم دیا ہے، ایک روایت میں آیا ہے کہ آنحضرت صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے فرمایا میں نے نہیں سنا باوجود یہ کہ حدیث صحیح نے کفر ابوطالب کو ثابت کر دیا ہے اھ اختصار(ت)

یہ کلام حضرت شیخ رحمہ اللہ تعالٰی کا ہے اور فقیر غفراللہ تعالٰی لہ نے یہاں ہامش مدارج پر اپنے دو حاشیے لکھے پائے جن کی نقل خالی از نفع نہیں۔

اوّل قولِ شک جز آنچہ در روایت ابن اسحق آمدہ بر بریں عبارت اقول ایں استثناء منقطع ست ائمہ فن ہمچو امام بیہقی و امام ابن حجر عسقلانی و امام عینی و امام ابن حجر مکی و غیر ہم تصریح کردہ اند بضعف ایں روایت زیرا کہ در و راوی مبہم واقع شدہ باز بمخالف صحاح منکر ست و شیخ در آخر کلام خود ارشارہ بضعف او میکند کہ با آنکہ حدیث صحیح اثبات کردہ است الخ معلوم شد کہ ایں صحیح نیست۔ اوّل شیخ کے قول "جز آنچہ در روایت ابن اسحق آمدہ" پر اس عبارت اقول میں کہتا ہوں یہ استثناء منقطع ہے۔ ائمہ فن جیسے امام بیہقی، امام ابن حجر عسقلانی، امام عینی اور امام ابن حجر مکی وغیرہ نے اس روایت کے ضعیف ہونے کی تصریح کی ہے کیونکہ اس میں ایک راوی مبہم واقع ہوا ہے، پھر صحیح حدیثوں کی مخالفت کی وجہ سے منکر ہے، اور شیخ علیہ الرحمہ اپنے کلام کے آخر میں ان لفظوں کے ساتھ اس کے ضعف کی طرف اشارہ کرتے ہیں کہ "باوجود یہ کہ حدیث صحیح نے اس کے کفر کو ثابت کر دیا ہے" معلوم ہو گیا کہ یہ حدیث صحیح نہیں ہے۔

دوم قوم شیخ ودر روایتے آمدہ پر بایں الفاظ اقول : ایں لفظ ایہام میکند آں را کہ ایں جادو روایت ست و روایت مذکورہ ابن اسحق عاری ست از ذکر ردّ فرمودن نبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم بقول دوم:

شیخ کے قول "و در روایتے آمدہ" پر ان الفاظ کے ساتھ حاشیہ لکھا: میں کہتا ہوں یہ وہم میں ڈالتا ہے کہ یہاں دو روایتیں ہیں، اور روایت ابن اسحق میں نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے یہ کلمات ردّ نہیں ہیں کہ "میں نے نہیں

"I did not hear it", while the situation is not like that, rather it is a continuation of that same narration of Ibn Ishaq.	"Sunna" (hearing) while it is not so, but this is the supplement to the same narration of Ibn Ishaq.
It is a continuation of Ibn Ishaq, one should be aware of this meaning. (T)	One should be aware of this meaning. (T)

Thirdly: The Great Quran itself rejects this. If death had occurred upon Islam, why was the Master of the Universe (peace and blessings of Allah be upon him) prohibited from seeking forgiveness? This is the answer of Hafiz ash-Sha'n and he mentioned it in *al-Khamis* as well. In *al-Isabah*, after the aforementioned near passage, it says:

"If he had said the word of Tauheed (monotheism), Allah Almighty would not have forbidden His Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) from seeking forgiveness for him."

If he had uttered the word of Monotheism, Allah Almighty would not have prohibited His Prophet from seeking forgiveness for him. (T)

I say: The prohibition of seeking forgiveness is not explicit in disbelief. The Master of the Universe (peace and blessings of Allah be upon him) was prohibited from praying the funeral prayer over a deceased debtor in the beginning of Islam. Later scholars have given this same answer to the Hadith: "I asked permission from my Lord to seek forgiveness for my mother, but He did not permit me." (I asked my Lord for permission to seek forgiveness for my mother, so He did not permit me. T)

Drawing inference from the words 'for the polytheists' and 'the companions of Hellfire' in this noble verse is more appropriate and suitable. If death had occurred upon the word of Islam, why would the Lord of Honor call Abu Talib a polytheist, why would He designate him as a companion of the fire? Inevitably, this narration is baseless.

Fourthly, I say: There is another defect in this. See the fourth authentic Hadith; Abbas (may Allah be pleased with him) himself, from whom this story is narrated, asks the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) after the death of Abu Talib: "O Messenger of Allah! Did your Excellency benefit your uncle Abu Talib at all? He was your sympathizer and supporter." It was said: "We found him completely drowned in Hell; I granted him such relief that the fire is only up to his ankles. If it were not for me, his place would have been in the lowest depths of the fire."

Subhan Allah! If Abbas (may Allah be pleased with him) had heard the word of Tauheed being recited at the time of death with his own ears, then...

1.
2. Al-Isabah fi Tamyiz al-Sahabah, letter Ta, Section Four, Abu Talib, Dar Sader Beirut, 4/7
3. Sahih Muslim, Book of Funerals, Chapter on the permissibility of visiting the graves of polytheists, etc., Qadimi Kutub Khana Karachi, 1/314
4. Sahih al-Bukhari, Virtues of the Ansar, Chapter on the Story of Abu Talib, Qadimi Kutub Khana Karachi, 1/548; Sahih Muslim, Book of Faith, Chapter on the Intercession of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) for Abu Talib, Qadimi Kutub Khana Karachi, 1/115; Musnad Ahmad bin Hanbal on the authority of Abbas, Al-Maktab al-Islami Beirut, 1/207 and 210

फ़तावा रज़विया, जिल्द 29

"मैंने नहीं सुना", जबकि ऐसा نہیں ہے، بلکہ یہ اسی روایت ابن اسحاق کا تتمہ ہے।

"सुनना" (Hearing) जबकि ऐसा नहीं है, बल्कि यह इब्न इशाक की उसी रिवायत का हिस्सा है।

यह इब्न इशाक का हिस्सा है, इस अर्थ से अवगत होना चाहिए। (त)

इस अर्थ पर अवगत होना चाहिए। (त)

तीसरा: स्वयं कुरान अज़ीम इसे खारिज करता है। यदि मृत्यु इस्लाम पर हुई होती, तो सैय्यद-ए-आलम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को उनके लिए मगफिरत (क्षमा) मांगने से क्यों मना किया जाता? यह हाफ़िज़ अश-शान का उत्तर है और उन्होंने इसे अल-ख़मीस में भी उल्लेख किया है। अल-इसाबा में उक्त करीबी इबारत के बाद है:

"यदि उन्होंने तौहीद का कलमा कह दिया होता, तो अल्लाह तआला अपने नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को उनके लिए मगफिरत मांगने से मना न फरमाता।"

यदि उन्होंने तौहीद का कलमा कह दिया होता, तो अल्लाह तआला अपने नबी को उनके हक में मगफिरत से मना न फरमाता। (त)

मैं कहता हूँ: मगफिरत की मनाही कुफ्र में स्पष्ट नहीं है। सैय्यद-ए-आलम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) इस्लाम के प्रारंभ में ऋणी मृत व्यक्ति के जनाजे की नमाज पढ़ने से मना थे। उत्तरकालीन विद्वानों ने हदीस "मैंने अपने रब से अपनी माँ के लिए मगफिरत मांगने की अनुमति माँगी, लेकिन उसने मुझे अनुमति नहीं दी" का यही उत्तर दिया है। (मैंने अपने रब से इजाजत चाही कि मैं अपनी माँ के लिए मगफिरत करूँ तो उसने मुझे इजाजत न दी। त)

इस आयत करीमा के शब्द 'मुशरिकों के लिए' और 'जहन्नम वालों' से दलील देना अधिक उचित और उपयुक्त है। यदि मृत्यु इस्लाम के कलमे पर हुई होती, तो रब्बुल इज़्ज़त अबू तालिब को मुशरिक क्यों बताता, आग वालों में क्यों ठहराता। अनिवार्य रूप से यह रिवायत बे-असल (निराधार) है।

चौथा, मैं कहता हूँ: इसमें एक और दोष है, चौथी सही हदीस देखें; स्वयं हजरत अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हु), जिनसे यह कहानी वर्णित है, अबू तालिब की मृत्यु के बाद हुजूर अकदस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से पूछते हैं: "या रसूल अल्लाह! हुजूर ने अपने चाचा अबू तालिब को भी कुछ लाभ दिया? वह हुजूर के हमदर्द और मददगार थे।" फरमाया गया: "हमने उसे पूरी तरह जहन्नम में डूबा हुआ

पाया, मैंने इतनी छूट दे दी कि आग टखनों तक है, यदि मैं न होता तो उसका ठिकाना असफ़ल-उस-साफ़िलीन (सबसे निचली जगह) होता।"

सुब्हान अल्लाह! यदि अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हु) अपने कानों से मरते समय तौहीद का कलमा पढ़ते सुनते, तो...

1.
2. अल-इसाबा फी तमीज़ अस-सहाबा, हर्फ ता, भाग चार, अबू तालिब, दार सादिर बेरुत, 4/7
3. सहीह मुस्लिम, किताबुल जनाइज़, मुशरिकों की कब्रों की ज़ियारत की अनुमति का अध्याय, आदि, पुरानी कुतुब खाना कराची, 1/314
4. सहीह अल-बुखारी, मनाकिबुल अंसार, अबू तालिब की कहानी का अध्याय, पुरानी कुतुब खाना कराची, 1/548; सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान, अबू तालिब के लिए नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की शफ़ाअत का अध्याय, पुरानी कुतुब खाना कराची, 1/115; मुसनद अहमद बिन हंबल अब्बास से, अल-मकतब अल-इस्लामी बेरुत, 1/207 और 210

مبارکش لم اسمع حالانکہ نہ چنان ست بلکہ ایں تتمہ ہماں روایت ابن اسحاق ست بریں معنی آگاہ باید بود 1. "سننا" حالانکہ ایسا نہیں ہے بلکہ یہ اسی روایت ابن اسحاق کا تتمہ ہے، اس معنی پر آگاہ ہونا چاہیے۔ (ت)

ثالثاً: خود قرآن عظیم اسے رَد فرما رہا ہے اگر اسلام پر موت ہوتی سید عالم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کو استغفار سے کیوں ممانعت آئی۔ یہ جواب حافظ الشان کا ہے اور اُسے خمیس میں بھی ذکر کیا۔ اصابہ میں بعد عبارت مذکورہ قریبہ ہے:

"اذلو کان قال کلمة التوحید مانهی الله تعالی نبیه صلی الله تعالی علیه وسلم عن الاستغفار له"

اگر اس نے کلمہ توحید کہہ لیا ہوتا تو اللہ تعالٰی اپنے نبی کو اُس کے حق میں استغفار سے منع نہ فرماتا۔ (ت)

اقول: استغفار سی نہی کفر میں صریح نہیں حضور سید عالم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم ابتدائے اسلام میں میت مدیون کے جنازہ پر نماز پڑھنے سے ممنوع تھے۔ علمائے متاخرین نے حدیث استأذنت ربي ان استغفر لامي فلم یأذن لي 3۔ (میں نے اپنے رب سے اذن طلب کیا کہ میں اپنی ماں کے لیے استغفار کروں تو اُس نے مجھے اذن نہ دیا۔ ت)

کا یہی جواب دیا ہے استدلال اسی آیت کریمہ کے لفظ للمشرکین ولفظ اصحاب الجحیم سے اولٰی وانسب ہے اگر کلمہ اسلام پر موت ہوتی تو رب العزۃ ابو طالب کو مشرک کیوں بتاتا، اصحاب نار سے کیوں ٹھہراتا۔ لا جرم یہ روایت بے اصل ہے۔

رابعاً اقول: اس میں ایک علّت اور ہے، حدیث صحیح چہارم دیکھئے خود یہی عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہ جن سے یہ حکایت ذکر کی جاتی ہے موت ابی طالب کے بعد حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم سے پوچھتے ہیں۔ یا رسول اللہ ! حضور نے اپنے چچا ابو طالب کو بھی کچھ نفع دیا وہ حضور کا غمخوار طرفدار تھاارشاد ہوا ہم نے اُسے سراپا جہنم میں غرق پایا اتنی تخفیف فرمادی کہ ٹخنوں تک آگ ہے میں نہ ہوتا تو اسفل السافلین اس کا ٹھکانا تھا۔

سُبحن اللہ! اگر عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہ اپنے کانوں سے مرتے وقت کلمہ توحید پڑھنا سنتے تو

---

1 2 الاصابة في تمييز الصحابة حرف الطاء القسم الرابع ابوطالب دارصادر بیروت ۷/۴ 3 صحیح مسلم کتاب الجنائز فصل فی جواز زیارة قبور المشرکین الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/۳۱۴ 4 صحیح البخاری مناقب الانصار باب قصه ابی طالب قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/۵۴۸، صحیح مسلم کتاب الایمان باب شفاعة النبی صلی اللہ علیه تعالیٰ علیه وسلم لابی طالب قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/۱۱۵، مسند احمد بن حنبل عن العباس المکتب الاسلامی بیروت ۱/۲۰۷ و ۲۱۰

Fatawa Razawiya Volume 29

What was the context of this question? Did they not know that 'Islam wipes out what preceded it' (meaning becoming a Muslim destroys all previous bad deeds)? Did they not know that a disbeliever who dies as a Muslim at the last moment enters Paradise without account? "Whoever says La ilaha illa Allah enters Paradise" [1]. (Whoever says 'There is no god but Allah' enters Paradise). And then, what do they request in the question? The same old stories of support, aid, protection, and sympathy. They do not say: "O Messenger of Allah! He died after reciting the Kalimah of Islam." They ask: "Has the Prophet (peace be upon him) benefited him at all?" They do not ask which high levels of Paradise have been granted. If the situation were correct, the question would have flown like this: "O Messenger of Allah! Abu Talib's end was upon faith, and his extreme love and perfect support for the Prophet (peace be upon him) were from long ago; which palace of the highest Paradise has Allah the Almighty honored him with?" Thus, in the eye of justice, this question itself is a clear indication of the baselessness of this narration. And the answer that was given is obvious: "Seeking refuge in Allah the Almighty, the Most Merciful of the merciful." This answer the humble one (may Allah forgive him) mentioned in his previous brief fatwa. Now I saw in the commentary of Mawahib that Allama Zurqani also hinted towards this, he says:

Arabic	**Urdu Translation**
In the question of Abbas regarding his (Abu Talib's) condition is proof of the weakness of the narration of Ibn Ishaq, because if the testimony (of faith) were present according to him, he would not have asked, because he would have known his condition [2].	In the question of Hadrat Abbas (may Allah be pleased with him) regarding Abu Talib's condition, there is proof of the weakness of Ibn Ishaq's narration, because if Abu Talib had recited the Shahadah (testimony of faith) in the presence of Hadrat Abbas, he would not have asked this question because he would have known his condition. (T)

I say: Similarly, Ibn Abbas (may Allah be pleased with both of them) to whom the narration is attributed, besides the interpretation narrated from them regarding the third verse, it is known through an authentic chain that they had heard the blessed saying regarding Abu Talib from the Radiant Prophet, the Master of the Day of Resurrection (peace and blessings of Allah be upon him), as mentioned in the eighth Hadith, which explicitly states he is in the Fire. If this narration were authentic, it would have required that Ibn Abbas (may Allah be pleased with both of them)...

[1] Al-Durr al-Manthur under the verse, Maktaba Ayatul Allah al-Uzma Qom Iran 6/23; al-Mustadrak lil Hakim, Kitab al-Tawbah, 'Whoever says La ilaha illa Allah enters Paradise', Dar al-Fikr Beirut 4/251; al-Mu'jam al-Kabir, Hadith 7234, al-Maktaba al-Faysaliyya Beirut 7/28. [2] Sharh al-Zurqani 'ala al-Mawahib al-Ladunniyya, al-Maqsad al-Awwal, Wafat Khadija, Dar al-Ma'rifa Beirut 1/293.

इस सवाल का क्या स्थान था? क्या वे नहीं जानते थे कि 'इस्लाम पिछले सब (बुरे) कर्मों को मिटा देता है'? क्या वे नहीं जानते थे कि अंतिम समय में जो काफ़िर मुसलमान होकर मरे, वह बिना हिसाब जन्नत में जाएगा? "जिसने ला इलाहा इल्लल्लाह कहा वह जन्नत में दाखिल हुआ" [1]। (जिसने ला इलाहा इल्लल्लाह कहा, वह जन्नत में प्रवेश कर गया)। और फिर सवाल में वे क्या अर्ज़ करते हैं? वही पुराने किस्से मदद, सहायता, हिमायत और हमदर्दी के। वे यह नहीं कहते कि 'ऐ अल्लाह के रसूल! वह तो कलमा-ए-इस्लाम पढ़कर मरा है'। वे यह पूछते हैं कि 'क्या हुज़ूर ने उसे कुछ लाभ पहुँचाया?' वे यह नहीं पूछते कि जन्नत के कौन से ऊँचे दर्जे अता फरमाए। अगर वह स्थिति सही होती, तो सवाल का रुख यह होता कि 'ऐ अल्लाह के रसूल! अबू तालिब का अंत ईमान पर हुआ और हुज़ूर के साथ उनकी अत्यंत मोहब्बत और पूर्ण हिमायत तो प्राचीन काल से थी; अल्लाह अज़्वजल ने उन्हें फिरदौस-ए-आला का कौन सा महल प्रदान किया?' तो न्याय की दृष्टि में यह सवाल ही इस रिवायत की निराधारता पर स्पष्ट प्रमाण है। और जो जवाब दिया गया वह तो ज़ाहिर है: "अल्लाह तआला की पनाह, जो सबसे बड़ा रहम करने वाला है।" यह जवाब इस तुच्छ ने (अल्लाह उसे क्षमा करे) अपने पिछले संक्षिप्त फ़तवे में ज़िक्र किया था। अब 'शरह मवाहिब' में देखा कि अल्लामा ज़रकानी ने भी इसकी ओर संकेत किया है, वे फरमाते हैं:

अरबी	**उर्दू अनुवाद**
अबू तालिब के हाल के बारे में अब्बास के सवाल में इब्ने इस्हाक़ की रिवायत की कमजोरी पर दलील है, क्योंकि अगर उनके अनुसार कलमा-ए-शहादत मौजूद थी, तो वे सवाल न पूछते क्योंकि उन्हें उनका हाल पता होता [2]।	अबू तालिब के हाल के बारे में हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु के सवाल में रिवायत इब्ने इस्हाक़ की कमजोरी पर दलील है, क्योंकि अगर अबू तालिब ने हज़रत अब्बास के नज़दीक कलमा-ए-शहादत पढ़ लिया होता तो वे यह सवाल न करते क्योंकि उन्हें उनका हाल मालूम होता। (त)

मैं कहता हूँ: इसी तरह इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा, जिनकी ओर इस रिवायत का श्रेय दिया जाता है, तीसरी आयत की तफ़सीर के अलावा जो उनसे वर्णित है, सही सनद से मालूम है कि उन्होंने हुज़ूर पुरनूर, सैयदे यौमे नशूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से अबू तालिब के बारे में वह पाक इरशाद आठवीं हदीस में सुन लिया है जिसमें उनके दोज़खी होने का स्पष्ट उल्लेख है। अगर यह रिवायत सही होती तो इसका तकाज़ा यह था कि इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा...

[1] अल-दुर्र अल-मनथूर आयत के तहत, मकतबा आयतुल अल्लाह अल-उज़्मा क़ुम ईरान 6/23; अल-मुस्तदरक लिल हाकिम, किताब अल-तौबा, 'जिसने ला इलाहा इल्लल्लाह कहा वह जन्नत में दाखिल हुआ', दार अल-फ़िक्र बेरुत 4/251; अल-मुअजम अल-कबीर, हदीस 7234, अल-मकतबा अल-फ़ैसलिया बेरुत 7/28। [2] शरह अल-ज़रकानी अला अल-मवाहिब अल-लदुन्निया, अल-मक़सद अल-अव्वल, वफ़ात ख़दीजा, दार अल-मआरिफ़ा बेरुत 1/293।

اس سوال کا کیا محل تھا، وہ نہ جانتے تھے کہ الاسلام یجب ما قبلہ مسلمان ہو جانا گزرے ہوئے سب اعمالِ بد کو ڈھا دیتا ہے، کیا وہ نہ جانتے تھے کہ اخیر وقت جو کافر مسلمان ہو کر مرے بے حساب جنت میں جائے، من قال لا الہ الا اللہ دخل الجنۃ [1] ۔ (جس نے لا الہ الا اللہ کہا جنت میں داخل ہوا، ت) اور پھر سوال میں کیا عرض کرتے ہیں وہی پرانے قصے نصرت و یاری و حمایت و غمخواری یہ نہیں کہتے یا رسول اللہ ! وہ تو کلمہ اسلام پڑھ کر مرا ہے، یہ پوچھتے ہیں کہ حضور نے اسے بھی کچھ نفع بخشا، یا نہیں کہتے یا رسول اللہ ! وہ تو کلمہ اسلام پڑھ کر مرا ہے، یہ پوچھتے ہیں کہ حضور نے اسے بھی کچھ نفع بخشا یہ نہیں عرض کرتے کہ کون سے اعلٰی درجاتِ جنت عطا فرمائے، وہ حالت صحیح میں ہوتے تو پروازِ سوال یوں ہوتا کہ یا رسول اللہ! ابوطالب کا خاتمہ ایمان پر ہوا اور حضور کے ساتھ اُن کی غایت محبت و کمال حمایت تو قدیم سے تھی اللہ عزوجل نے فردوسِ اعلٰی کا کون سا محل انہیں کرامت فرمایا تو نظرِ انصاف میں یہ سوال ہی اس روایت کی بے اصلی پر قرینہ واضحہ ہے اور جواب تو جو ارشاد ہوا ظاہر ہے "والعیاذ باللہ تعالی ارحم الراحمین" یہ جواب فقیر غفر اللہ تعالی لہ نے اپنے فتوائے سابقہ مختصرہ میں ذکر کیا تھا۔ اب شرح مواہب میں دیکھا کہ علامہ زرقانی نے بھی اس کی طرف ایما کیا، فرماتے ہیں:

عربی	اردو ترجمہ
فی سوال العباس عن حالہ دلیل علی ضعف روایۃ ابن اسحق لانہ لو کانت الشہادۃ عندہ لم یسأل لعلمہ بحالہ [2] ۔	ابو طالب کے حال کے بارے میں حضرت عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے سوال میں روایت ابن اسحق کے ضعف پر دلیل ہے، کیونکہ اگر ابوطالب نے حضرت عباس کے نزدیک کلمہ شہادت

عربی **اردو ترجمہ**

پڑھ لیا تھا تو وہ یہ سوال نہ کرتے اس لیے کہ ان کو اس کا حال معلوم ہوتا۔ (ت)

اقول: یونہی ابن عباس رضی اللہ تعالٰی عنہما جن کی طرف اس کی روایت کی نسبت جاتی ہے علاوہ اس تفسیر کے جو آیت ثالثہ میں اُن سے مروی خود بسند صحیح معلوم کہ وہ حضور پر نور سید یوم النشور صلی اللہ تعالی علیہ وسلم سے ابوطالب کے بارے میں وہ ارشاد پاک حدیث ہشتم میں سن چکے ہیں جس میں ناری ہونے کی صریح تصریح ہے یہ روایت اگر صحیح ہوتی تو اس کا مقتضٰی یہ تھا کہ ابن عباس رضی اللہ تعالٰی عنہما

---

[1] الدرالمنشور تحت الآیۃ مکتبہ آیۃ اللہ العظمی قم ایران ۶/۲۳، المستدرک للحاکم کتاب التوبۃ من قال لا الہ الا اللہ دخل الجنۃ دار الفکر بیروت ۴/ ۲۵۱، المعجم الکبیر حدیث ۷۲۳۴ المکتبۃ الفیصلیۃ بیروت ۷ / ۲۸ [2] شرح الزرقانی علی المواہب اللدنیہ المقصد الاول وفاۃ خدیجہ دار المعرفۃ بیروت ۱/ ۲۹۳

Fatawa Rizvia Volume 29

...consider Abu Talib as saved, for there is no room for abrogation or change in these matters. However, what follows from the command of the Sahih Muslim hadith is false, so the premise is also devoid of the garb of correctness, so understand.

Fifthly: It is certainly known that Abbas (may Allah be pleased with him) had not yet been honored with Islam at that time; he became a Muslim some eleven years later at the conquest of Mecca. In the same narration, it is mentioned that the Master of the World (peace and blessings of Allah be upon him) did not hear Abu Talib reciting the Kalima (declaration of faith) and was not satisfied even with his (Abbas's) plea: the same command was given that we did not hear. Now nothing remains except the testimony of one person who, let alone justice, was not even a Muslim at the time of giving testimony. By what Sharia rule or law can that be acceptable or worthy of attention by people of intellect?

I say: The result of previous answers was the weakening of the narration in terms of chain or text. In this answer, even if we accept it as correct in every way, the discourse remains that it still does not touch the proof of the claimant. It was not proven from this that Abu Talib recited the Kalima, but rather it was only known that Abbas (may Allah be pleased with him) made such a statement in his state of non-Islam. Then what of it? This answer was given by Imam Suhayli in 'Rawd al-Unuf', and after him, Imam Ayni and Imam Qastalani mentioned it. In 'Umda' it is:

Al-Suhayli said that Al-Abbas said this while he was in a state of non-Islam; had he conveyed it after Islam, it would have been accepted from him.	**Suhayli said that Hazrat Abbas said this in a state of non-Islam; if he had related it after embracing Islam, it would have been acceptable. (T)**

I say, and success is from Allah: The description of this very narration, that the Master of the World (peace and blessings of Allah be upon him) replied to his request by saying that it did not reach our holy ears, is clear evidence that the Noble Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) was not satisfied with his statement and did not consider this testimony acceptable or reliable. Otherwise, would sound intellect accept that the Noble Prophet (peace and blessings of Allah be upon him), who had exerted such great personal effort for his (Abu Talib's) Islam and desired it to such an extreme degree, would give an answer in such simple words when that great beloved event occurred? Certainly, the implication of this instruction is: what reliance can there be on your word? If we had heard it, it would have been correct.

This is an explicit rejection of testimony. So, when God and the Messenger reject a testimony, who else can accept it?

And with this elegant investigation, it has become enlightened, and praise be to Allah.

And through this excellent research, by the grace of Allah, it has become clear that Imam Ayni...

1. 'Umda al-Qari, Book of Funerals, Hadith 1360, Dar al-Kutub al-Ilmiyah, Beirut, 8/264

फ़तावा रज़विया, खंड 29

...अबू तालिब को निजात पाने वाला मानें कि इन मामलों में निरसन (नस्ख) या परिवर्तन की कोई गुंजाइश नहीं है, लेकिन सही मुस्लिम की हदीस के आदेश से जो अनिवार्य है वह गलत है, इसलिए आधार भी सच्चाई के लिबास से खाली है, तो समझें।

पांचवां: यह निश्चित रूप से ज्ञात है कि अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हु) उस समय तक इस्लाम से सम्मानित नहीं हुए थे; वे लगभग ग्यारह साल बाद मक्का की विजय के समय मुसलमान हुए। और इसी रिवायत में है कि हुज़ूर सैयदे आलम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने अबू तालिब को कलमा पढ़ते नहीं सुना और उनके(अब्बास के) निवेदन पर भी संतोष व्यक्त नहीं किया: यही फरमाया कि हमने नहीं सुना। अब सिवाय एक व्यक्ति की गवाही के कुछ नहीं बचा जो न्याय तो दूर, गवाही देते समय मुसलमान भी नहीं था। वह शरीयत के किस नियम या कानून से बुद्धिमान लोगों के लिए स्वीकार्य या ध्यान देने योग्य हो सकता है?

मैं कहता हूँ: पिछले उत्तरों का परिणाम रिवायत को सनद (श्रृंखला) या मतन (पाठ) के रूप में कमज़ोर करना था। इस उत्तर में इसे हर तरह से सही मानकर चर्चा है कि अब भी यह दावेदार के प्रमाण को नहीं छूता। इससे यह साबित नहीं हुआ कि अबू तालिब ने कलमा पढ़ा, बल्कि केवल इतना पता चला कि अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने अपनी गैर-इस्लाम की स्थिति में ऐसा बयान दिया। फिर इससे क्या होता है? यह उत्तर इमाम सुहैली ने 'रौज़ुल उनुफ़' में दिया और उनके बाद इमाम ऐनी और इमाम क़स्तलानी ने इसका उल्लेख किया। 'उमदा' में है:

सुहैली ने कहा कि अल-अब्बास ने यह तब कहा था जब वह गैर-इस्लाम की स्थिति में थे; यदि उन्होंने इस्लाम के बाद इसे बयान किया होता, तो इसे उनसे स्वीकार कर लिया जाता।

सुहैली ने कहा कि हज़रत अब्बास ने यह बात गैर-इस्लाम की हालत में कही थी, अगर इस्लाम के बाद वे इसे बयान करते तो स्वीकार्य होती। (त)

मैं कहता हूँ, और सफलता अल्लाह की ओर से है: इसी रिवायत का वर्णन कि सैयदे आलम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने उनके निवेदन पर यही फरमाया कि हमारे पवित्र कानों तक नहीं पहुँचा, स्पष्ट प्रमाण है कि हुज़ूर अकदस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने उनके बयान पर संतोष नहीं किया और इस गवाही को स्वीकार्य और विश्वसनीय नहीं ठहराया। वरना क्या स्वस्थ बुद्धि स्वीकार करेगी कि हुज़ूर अकदस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने, जिन्होंने उनके(अबू तालिब के) इस्लाम के

लिए व्यक्तिगत रूप से इतना महान प्रयास किया था और इस कदर तीव्रता से उसकी इच्छा की थी, जब वह महान प्रिय घटना घटी तो इतने सरल शब्दों में उत्तर दे दिया? निश्चित रूप से इस आदेश का यही अर्थ है कि तुम्हारे कहने पर क्या भरोसा, अगर हम सुनते तो ठीक था। यह गवाही का स्पष्ट खंडन है। तो जिस गवाही को खुदा और रसूल ठुकरा दें, उसे स्वीकार करने वाला दूसरा कौन है?

और इस शानदार शोध से यह प्रकाशित हो गया है, और अल्लाह का शुक्र है।

और इस बेहतरीन शोध से, अल्लाह के करम से, यह स्पष्ट हो गया कि इमाम ऐनी...

1. उमदतुल क़ारी, किताबुल जनाइज़, हदीस 1360, दारुल कुतुबुल इल्मिया, बेरुत, 8/264

ابو طالب کو ناجی جانیں کہ ان امور میں نسخ و تغیر کو راہ نہیں مگر لازم بحکم حدیث صحیح مسلم باطل تو ملزوم بھی حلیہ صحت سے عاطل، فافہم۔

خامسا: یقیناً معلوم کہ عباس رضی اللہ تعالٰی عنہ اس وقت تک مشرف باسلام نہ ہوئے تھے کہیں گیارہ برس بعد فتح مکہ میں مسلمان ہوئے ہیں، اور اسی روایت میں ہے کہ حضور سید عالم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے ابو طالب کا کلمہ پڑھنا نہ سنا اور ان کی عرض پر بھی اطمینان نہ فرمایا: یہی ارشاد ہوا کہ ہم نے نہ سنا، اب نہ رہی مگر ایک شخص کی شہادت جو عدالت در کنار گواہی دیتے وقت مسلمان بھی نہیں وہ شرعاً کس قاعدہ و قانون سے قابل قبول یا لائق التفات اصحاب عقول ہوسکتی ہے۔

اقول: پہلے جوابوں کا حاصل سنداً یا متناً روایت کی تضعیف تھی اس جواب میں اسے ہر طرح صحیح مان کر کلام ہے کہ اب بھی اثبات مدعی سے مس نہیں اس سے یہ ثابت ہوا کہ ابو طالب نے کلمہ پڑھا بلکہ اس اس قدر معلوم ہوا کہ عباس رضی اللہ تعالٰی عنہ نے اپنی غیر اسلام کی حالت میں ایسا بیان کیا پھر اس سے کیا ہوتا ہے، یہ جواب امام سہیلی نے روض الانف میں ارشاد فرمایا اور ان کے بعد امام عینی و امام قسطلانی نے ذکر کیا۔ عمدہ میں ہے:

قال السهيلي ان العباس قال ذلك فی حال كونہ علی غير الاسلام ولوا اداہا بعد الاسلام لقبلت منہ ۔ ۱

سہیلی نے کہا کہ حضرت عباس نے یہ بات حالت غیر اسلام میں کہی اگر بعد اسلام وہ اس کو ادا کرتے تو مقبول ہوتی۔ (ت)

اقول: وباللہ التوفیق خود اسی روایت کا بیان کہ سید عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے ان کی عرض پر یہی فرمایا کہ ہمارے مسامع قدسیہ تک نہ آیا۔ دلیل واضح ہے کہ حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے ان کے بیان پر اطمینان نہ فرمایا اس گواہی کو مقبول و معتبر نہ ٹھہرایا ورنہ کیا عقل سلیم قبول کرتی ہے کہ حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کو جس کے اسلام میں اس درجہ کوشش بلیغ ہو نفسِ نفیس نے اس حد شدت پر اس کی خواہش فرمائی جب وہ امر عظیم محبوب و قوع میں آئی ایسے سہل لفظوں میں جواب دے دیا جائے، لاجرم اس ارشاد کا یہی مفاد کہ تمہارے کہنے پر کیا اعتماد، ہم سنتے تو ٹھیک تھا یہ صریح رد شہادت ہے تو جو گواہی خدا اور رسول رَد فرمادیں دوسرا اس کا قبول کرنے والا کون۔

وبہذا التحقیق الانیق استنار واللہ الحمد **اور اس عمدہ تحقیق سے بحمد اللہ روشن ہو گیا کہ امام عینی نے**

۱ عمدۃ القاری کتاب الجنائز حدیث ۱۳۶۰ دار الکتب العلمیہ بیروت ۸ / ۲۶۴

Fatawa Razawiyya Volume 29

(Arabic Text)

Indeed, Imam al-Ayni did well when he restricted himself to quoting the words of Imam al-Suhayli based on what has passed, and he did exceptionally well in not overstepping into what Imam al-Qastalani overstepped into, followed by the scholar al-Zarqani, where they quoted his words in full and affirmed these words for both of them (It was answered) as al-Suhayli said in al-Rawd: (Indeed, the testimony of al-Abbas regarding Abu Talib, if he had given it after he converted to Islam, would have been accepted and his testimony would not have been rejected) (The Prophet, peace and blessings be upon him, says: 'I did not hear' because when a just witness says 'I heard' and someone even more just than him says 'I did not hear', the words of the one who affirms the hearing are taken). Al-Suhayli said: because not hearing admits of reasons that prevented the witness from hearing. (But al-Abbas testified to that before he converted to Islam), so his testimony is not accepted. - I say: The discussion is not about whether al-Abbas affirmed and the Prophet, peace and blessings of Allah be upon him, negated.

(Urdu Translation/Explanation)

Imam al-Suhayli did very well by limiting the quotation of the words based on what has passed, and he also did well by not overstepping in the direction that Imam al-Qastalani overstepped, followed by Allama al-Zarqani, because both of them quoted his words in full and remained firm upon them, and these words belong to both of them. (The answer given was) just as Imam al-Suhayli said in *al-Rawd* that if the testimony of Hadrat Abbas (may Allah be pleased with him) regarding Abu Talib had occurred after your conversion to Islam, it would have been acceptable; it would not have been rejected with the Prophet's (peace and blessings be upon him) statement 'I did not hear.' This is because when a just witness says 'I have heard' and someone more just than him says 'I did not hear', the statement of the one who affirms the hearing will be accepted. Al-Suhayli said: The reason for this is that non-hearing carries the possibility of several factors that prevent a witness from hearing. However, since Hadrat Abbas (may Allah be pleased with him) gave his testimony before converting to Islam, his testimony will not be accepted. I say: There is no debate in this that Hadrat Abbas (may Allah be pleased with him) affirmed and the Noble Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) negated.

1. *Sharh al-Zarqani 'ala al-Mawahib al-Ladunniyyah*, First Objective: Passing of Khadija and Abu Talib, Dar al-Ma'rifah Beirut, 1/291 and 292.

(अरबी पाठ का अनुवाद)

वास्तव में, इमाम अल-ऐनी ने अच्छा किया जब उन्होंने इमाम अल-सुहैली के शब्दों को उद्धृत करने में खुद को सीमित रखा जो पहले बीत चुका है, और उन्होंने बहुत अच्छा किया कि उन्होंने उस सीमा को नहीं लांघा जिसे इमाम अल-क़स्तलानी ने लांघा था, और उनके बाद अल्लामा ज़रक़ानी ने, जहाँ उन्होंने उनके शब्दों को पूरी तरह से उद्धृत किया और उन दोनों के लिए इन शब्दों की पुष्टि की (इसका उत्तर दिया गया) जैसा कि सुहैली ने अल-रौद में कहा: (वास्तव में, अबू तालिब के बारे में अल-अब्बास की गवाही, यदि उन्होंने इस्लाम कबूल करने के बाद दी होती, तो स्वीकार की जाती और उनकी गवाही को खारिज नहीं किया जाता) (पैगंबर, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, कहते हैं: 'मैंने नहीं सुना' क्योंकि जब एक न्यायप्रिय गवाह कहता है 'मैंने सुना' और उससे भी अधिक न्यायप्रिय व्यक्ति कहता है 'मैंने नहीं सुना', तो सुनने की पुष्टि करने वाले के शब्दों को लिया जाता है)। सुहैली ने कहा: क्योंकि न सुनना उन कारणों की संभावना रखता है जिन्होंने गवाह को सुनने से रोक दिया। (लेकिन अल-अब्बास ने इस्लाम कबूल करने से पहले इसकी गवाही दी थी), इसलिए उनकी गवाही स्वीकार नहीं की जाती है। - मैं कहता हूँ: चर्चा इस बारे में नहीं है कि

(उर्दू पाठ का अनुवाद)

इमाम सुहैली के शब्दों के उद्धरण को सीमित करके बहुत अच्छा किया गया, जो बीत चुका है उसके आधार पर, और उस दिशा में न बढ़कर भी अच्छा किया जिसमें इमाम क़स्तलानी ने अति किया और अल्लामा ज़रक़ानी ने उनका अनुसरण किया, क्योंकि उन दोनों ने उनके शब्दों को पूरा उद्धृत किया और उस पर कायम रहे और ये शब्द उन दोनों के हैं। (जवाब दिया गया) जैसा कि इमाम सुहैली ने रौज़ में फ़रमाया कि अगर अबू तालिब के बारे में हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की गवाही आपके इस्लाम लाने के बाद होती तो क़बूल होती, उसे हुज़ूर अलैहिस सलातो वस्सलाम के इस इरशाद के साथ रद्द न किया जाता कि 'मैंने नहीं सुना' क्योंकि आदिल गवाह जब कहे कि 'मैंने सुना है' और उससे ज़्यादा अदल वाला कहे कि 'मैंने नहीं सुना' तो उसके क़ौल को क़बूल किया जाएगा जो समाअत (सुनने) को साबित करने वाला है, सुहैली ने कहा: इसकी वजह ये है कि अदम-ए-समाअत (न सुनना) कई ऐसे असबाब का एहतमाल रखता है जो गवाह को सुनने से रोकते हों, लेकिन चूंकि हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने इस्लाम लाने से क़ब्ल इसकी गवाही दी लिहाज़ा उनकी गवाही क़बूल न होगी। अह मैं कहता हूँ इसमें कलाम नहीं कि हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने

(अरबी पाठ का अनुवाद)

अल-अब्बास ने पुष्टि की और पैगंबर, अल्लाह उन पर कृपा और शांति बरसाए, ने इनकार किया।

(उर्दू पाठ का अनुवाद)

इसबात किया और नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने नफ़ी फ़रमाई।

1. शरह अल-ज़रक़ानी अलल मवाहिब अल-लदुन्निय्या, अल-मक़सदुल अव्वल: वफ़ात-ए-ख़दीजा व अबू तालिब, दारुल मा'रिफ़ा बैरूत, 1/291 और 292।

पृष्ठ 734 का 750

(عربی متن)

ان الامام العيني لقد احسن اذاقتصر في نقل كلام الامام السهيلي على مامر ونعم ما فعل اذلم يتعدالى ما تعدى اليه الامام القسطلانى وتبعه العلامة الزرقانى حيث اثرا كلامه برمته واقرا عليه هذ اللفظهما (اجيب) كما قال السهيلى فى الروض (بان شهادة العباس لابى طالب لواداها بعد ماسلم كانت مقبولة و لم ترد) شهادته(يقول عليه الصلوة والسلام لم اسمع لان الشاهد العدل اذا قال سمعت وقال من هو اعدل منه لم اسمع اخذ بقول من اثبت السماع) قال السهيلى لان عدم السماع يحتمل اسبابا منعت الشاهد من السمع(ولكن العباس شهد بذك قبل ان يسلم) فلا تقبل شهادته '- اه اقول: فليس الكلام فى ان عباساً اثبت والنبى صلى الله تعالٰى عليه وسلم نفى

(اردو ترجمہ و تشریح)

امام سہیلی کے نقل کلام میں اقتصار کرکے بہت اچھا کیا اس کی بنیاد پر جو گزرا اور اس کی طرف تجاوز نہ کرکے بھی اچھا کیا جس کی طرف امام قسطلانی نے تجاوز کیا اور ان کی اتباع کی علامہ زرقانی نے کیونکہ ان دونوں نے اس کے کلام کو پورا نقل کیا اور اس پر قائم رہے اور یہ لفظ ان دونوں کے ہیں۔ (جواب دیا گیا) جیسا کہ امام سہیلی نے روض میں فرمایا کہ اگر ابو طالب کے بارے میں حضرت عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی شہادت آپ کے اسلام لانے کے بعد ہوتی تو مقبول ہوتی، اس کو حضور علیہ الصلوٰۃ والسلام کے اس ارشاد کے ساتھ رد نہ کیا جاتا کہ "میں نے نہیں سنا" کیونکہ عادل گواہ جب کہے کہ میں "میں نے سنا ہے" اور اس سے زیادہ عدل والا کہے کہ "میں نے نہیں سنا" تو اس کے قول کو قبول کیا جائے گا جو سماع کو ثابت کرنے والا ہے، سہیلی نے کہا: اس کی وجہ یہ ہے کہ عدم سماع کئی ایسے اسباب کا احتمال رکھتا ہے جو گواہ کو سننے سے روکتے ہوں، لیکن چونکہ حضرت عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے اسلام لانے

(عربی متن) **(اردو ترجمہ و تشریح)**

سے قبل اس کی شہادت دی لہٰذا ان کی شہادت قبول نہ ہوگی۔ اھ میں کہتا ہوں اس میں کلام نہیں کہ حضرت عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے اثبات کیا اور نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے نفی فرمائی

1 شرح الزرقانی علی المواھب اللدنیۃ المقصد الاول وفاۃ خدیجہ وابی طالب دارالمعرفۃ بیروت ۲۹۱/۱و ۲۹۲

Fatawa Razawiyya, Volume 29

[Table Content] [Left Column - Arabic] "فهما شهادتان جاءتاعندنا احدهما تثبت و الاخرى تنفى فتقدم التى تثبت لوكان صاحبها عدلا ومعاذ اللہ ان تقدم على قوله صلى الله تعالٰى عليہ وسلم لم يقبل شهادة العباس و لم يركن اليها فهو صلى اللہ تعالٰى عليہ وسلم قاض لاشاهد اخر و انما الشاهد العباس وحده، فاذا لم يقبلها النبى صلى اللہ تعالٰى عليہ وسلم فمن يقبلها بعده ھٰذا ماعندى و انا فى عجب عاجب ههنا من كلام هؤلاء الاعلام الاكابر فامعن النظر لعل له معنى قصرت عنه يد فهمى القاصر۔" [Right Column - Urdu Translation of above] These two testimonies are before us; one is affirmative and the other is negative. Therefore, the affirmative testimony shall take precedence over the negative one when the one giving the affirmative testimony is just; and God forbid that it should take precedence over the saying of the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him). The Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) did not accept the testimony of Hazrat Abbas (may Allah be pleased with him) nor did he incline towards it, because he was the judge and not another witness; the only witness was Hazrat Abbas alone. When the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) did not accept it, then who can accept it after him? This is what I have; and I am in profound amazement here at the words of these great eminent scholars. I looked deeply to see if it might have a meaning, but the hand of my deficient understanding failed to grasp it. (T)

[Main Body Text] These are the answers of the scholars and, by the grace of Allah, they are sufficient, complete, and clear. And I say: and success is from Allah (I say by the success granted by Allah. T).

Sixthly, we accept that the narration, in terms of its chain and text, is of the highest grade of authenticity, just like these authentic Hadiths, and the testimony of Abbas (may Allah be pleased with him) is also perfectly acceptable and authentic. However, it is neither beneficial to the claimant nor fundamentally repelling the disbelief of Abu Talib. After all, when by the command of clear Hadiths and Quranic verses he is shown as a polytheist and an inhabitant of fire, this is not erased by anyone. This second Hadith, even if assumed to be of the same level of authenticity and greatness, only states that Abu Talib said 'La ilaha illallah' (There is no god but Allah) at the last moment; it does not say what that time was, what the 'last moment' was. There are two 'last moments': one where the veils still remain, and this time is the time for the acceptance of faith; the second is when reality arrives, the state of the death rattle, the veils are lifted, and Paradise and Hell come before the eyes. The occasion for

'believing in the unseen' no longer remains. A disbeliever's embracing Islam at that time is, by consensus, rejected and unacceptable. Allah Almighty says:

“فَلَمْ يَكُ يَنْفَعُهُمْ إِيْمَانُهُمْ لَمَّا رَأَوْا بَأْسَنَا سُنَّتَ اللَّهِ الَّتِي قَدْ خَلَتْ”

[Translation]: So their faith did not benefit them when they saw Our punishment; (this is) the way of Allah which has passed [among His servants]. [Urdu text on right]: So their faith did not benefit them when they saw Our punishment; Allah's decree which has...

फतावा रज़विया, जिल्द 29

[तालिका सामग्री] [बायाँ कॉलम - अरबी] "فهما شهادتان جاءتاعندنا احدهما تثبت و الاخرى تنفى فتقدم التى تثبت لوكان صاحبها عدلا ومعاذ اللہ ان تقدم على قوله صلى الله تعالٰى عليہ وسلم لم يقبل شهادة العباس و لم يركن اليها فهو صلى اللہ تعالٰى عليہ وسلم قاض لاشاهد اخر و انما الشاهد العباس وحده، فاذا لم يقبلها النبى صلى اللہ تعالٰى عليہ وسلم فمن يقبلها النظر لعل بعدہ هٰذا ماعندى و انا فى عجب عاجب ههنا من كلام هؤلاء الاعلام الاكابر فامع له معنى قصرت عنه يد فهمى القاصر۔" [दायाँ कॉलम - उपरोक्त का उर्दू अनुवाद] ये दो गवाहियाँ हमारे सामने हैं, एक साबित करने वाली और दूसरी नकारने वाली, इसलिए सकारात्मक गवाही नकारने वाली पर प्रधान होगी जब सकारात्मक गवाही देने वाला न्यायपूर्ण हो और भगवान न करे कि वह नबी करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के वचन पर प्रधान हो। नबी अकदस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने हज़रत अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हु) की गवाही को स्वीकार नहीं किया और न ही उसकी ओर झुकाव दिखाया, क्योंकि आप न्यायाधीश थे न कि दूसरे गवाह, गवाह तो अकेले हज़रत अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हु) थे। जब नबी करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने इसे स्वीकार नहीं किया तो आपके बाद कौन स्वीकार कर सकता है। यह वह है जो मेरे पास है। मुझे यहाँ इन महान विद्वानों की बातों पर गहरा आश्चर्य है, मैंने गहरी नज़र से देखा कि शायद इसका कोई अर्थ हो सकता है लेकिन मेरी कमतर समझ का हाथ इससे वंचित रहा। (त)

[मुख्य पाठ] ये विद्वानों के उत्तर हैं और अल्लाह की कृपा से पर्याप्त, पूर्ण और स्पष्ट हैं, और मैं कहता हूँ: और अल्लाह की सफलता से (मैं अल्लाह की दी हुई सफलता के साथ कहता हूँ। त)।

छठे, हम स्वीकार करते हैं कि कथन अपनी श्रृंखला और पाठ के संदर्भ में इन प्रामाणिक हदीसों की तरह उच्चतम श्रेणी का सही है और अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हु) की गवाही भी पूर्ण रूप से स्वीकार्य और सही है, फिर भी यह न तो प्रमाण देने वाले के लिए लाभकारी है और न ही मूल रूप से अबू तालिब के कुफ्र (अविश्वास) को दूर करने वाली है। आखिरकार, जब स्पष्ट हदीसों और कुरान की आयतों के आदेश से उसे मुशरिक और नरकवासी बताया जा रहा है, तो यह किसी के मिटाने से नहीं मिटता। यह दूसरी हदीस, जिसे मान लिया जाए कि उसी स्तर की सही और महान है, केवल इतना बताती है कि अबू तालिब ने अंतिम समय में 'ला इलाहा इल्लल्लाह' कहा था; यह नहीं बताती कि वह समय क्या था, अंतिम समय क्या था। अंतिम समय दो हैं: एक वह जब अभी पर्दे बाकी हैं और यह

समय ईमान की स्वीकृति का समय है; दूसरा वह वास्तविक जब प्राण कंठ में आ जाएँ, पर्दे उठ जाएँ, जन्नत और नरक सामने आ जाएँ। 'ग़ैब (अदृश्य) पर विश्वास' करने का स्थान नहीं रहता। उस समय काफ़िर का इस्लाम स्वीकार करना सर्वसम्मति से अस्वीकार्य और अमान्य है। अल्लाह सर्वशक्तिमान कहता है:

“فَلَمْ يَكُ يَنْفَعُهُمْ إِيْمَانُهُمْ لَمَّا رَأَوْا بَأْسَنَا سُنَّتَ اللَّهِ الَّتِي قَدْ خَلَتْ”

[अनुवाद]: तो उनके ईमान ने उन्हें कोई लाभ नहीं पहुँचाया जब उन्होंने हमारा दंड देख लिया, (यही) अल्लाह की सुन्नत (नियम) है जो [उसके बंदों में बीत चुकी है]... [दाहिनी ओर उर्दू पाठ]: तो उनके ईमान ने उन्हें काम न दिया जब उन्होंने हमारा अज़ाब देख लिया, अल्लाह का दस्तूर जो उसके..

[جدول کا متن] [بایاں کالم - عربی متن] "فهما شهادتان جاءتاعندنا احدهما تثبت و الاخری تنفی فتقدم التی تثبت لوکان صاحبها عدلا ومعاذ الله ان تقدم علی قوله صلی الله تعالٰی علیہ وسلم لم یقبل شهادة العباس و لم یرکن الیها فهو صلی الله تعالٰی علیہ وسلم قاض لاشاهد اخر و انما الشاهد العباس وحده، فاذا لم یقبلها النبی صلی الله تعالٰی علیہ وسلم فمن یقبلها بعده ھٰذا ماعندی و انا فی عجب عاجب ههنا من کلام ھؤلاء الاعلام الاکابر فامعن النظر لعل له معنی قصرت عنه ید فهمی القاصر۔" [دایاں کالم - اردو ترجمہ] یہ دو شہادتیں ہمارے پیش نظر ہیں، ایک ثابت کرنے والی اور دوسری نفی کرنے والی، لہذا مثبت گواہی نافی پر مقدم ہوگی جب کہ مثبت گواہی دینے والا عادل ہو اور معاذ اللہ کہ وہ نبی کریم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کے قول پر مقدم ہو۔ نبی اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے حضرت عباس رضی اللہ تعالٰی عنہ کی شہادت کو قبول نہیں فرمایا اور نہ ہی اس کی طرف میلان فرمایا، کیونکہ آپ تو قاضی تھے نہ کہ دوسرے گواہ، گواہ تو تنہا حضرت عباس رضی اللہ تعالٰی عنہ تھے جب نبی کریم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے اسے قبول نہیں فرمایا تو آپ کے بعد کون قبول کر سکتا ہے۔ یہ وہ ہے جو میرے پاس ہے۔ مجھے اس مقام پر ان اکابر علماء کے کلام پر سخت تعجب ہے، میں نے گہری نظر سے دیکھا کہ شاید اس کا کوئی معنی بن سکتا ہو مگر میرے فہم قاصر کا ہاتھ اس سے قاصر رہا۔(ت)

[عبارت] یہ اجوبہ علماء ہیں اور بحمد اللہ کافی و وافی و صافی ہیں، وانا اقول : وباللہ التوفیق (میں اللہ تعالٰی کی توفیق سے کہتا ہوں۔ت)

سادساً ہم تسلیم کرتے ہیں کہ روایت انہیں احادیث صحیحہ کی مثل سنداً و متناً ہر طرح اعلٰی درجہ کی صحیح اور شہادت عباس رضی اللہ تعالٰی عنہ بھی بروجہ کمال مقبول و صحیح، پھر بھی نہ

متدل کو نافع نہ کفر ابی طالب کی اصلاً دافع، آخر جب بحکم احادیث جلیلہ آیت قرآنیہ مشرک و ناری بتارہی ہے تو یہ کسی کے مٹائے مٹتا نہیں، یہ دوسری حدیث کہ فرضاً اسی پلہ کی صحیح و جلیل ہے صرف اتنا بتاتی ہے کہ ابوطالب نے اخیر وقت لا الٰہ الا اللہ کہا، یہ نہیں بتاتی، کہ وہ وقت کیا تھا، آخر وقت کیا تھا، آخر وقت دو ہیں ایک وہ کہ ہنوز پردے باقی ہیں اور یہ وقت وقت قبول ایمان ہے، دوسرا وہ حقیقی آکر جب حالتِ غرغرہ ہو، پردے اُٹھ جائیں جنت و نار پیشِ نظر ہو جائیں۔ "یؤمنون بالغیب" کا محل نہ رہے، کافر کا اس وقت اسلام لانا بالا جماع مردود و نامقبول ہے۔ اللہ عز وجل فرماتا ہے:

"فَلَمْ يَكُ يَنْفَعُهُمْ إِيْمَانُهُمْ لَمَّا رَأَوْا بَأْسَنَا سُنَّتَ اللَّهِ الَّتِي قَدْ خَلَتْ"

[ترجمہ]: تو اُن کے ایمان نے انہیں کام نہ دیا جب انہوں نے ہمارا عذاب دیکھ لیا، اللہ کا دستور جو اس کے (پیچھے کے لوگوں میں چلا آ رہا ہے)--- [دائیں جانب عبارت]: تو اُن کے ایمان نے انہیں کام نہ دیا جب انہوں نے ہمارا عذاب دیکھ لیا، اللہ کا دستور جو اس کے

Vol. 29 | Fatawa Razawiyya

| 1- ﴿۸۵﴾ فِی عِبَادِہٖ ۚ وَ خَسِرَ ہُنَالِكَ الْكٰفِرُوْنَ- | (It was the way of Allah) among His servants, and the disbelievers were in loss then. (T) |

The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says:

| 'Indeed, Allah accepts the repentance of a servant as long as he does not reach the stage of the death rattle.' Narrated by Ahmad, at-Tirmidhi (who graded it as Hasan), Ibn Majah, al-Hakim, Ibn Hibban, and al-Bayhaqi in *ash-Shu'ab*; all of them narrated from our master Abdullah bin Umar (may Allah be pleased with them both). | Allah Almighty accepts repentance before the agonies of death. This was narrated by Ahmad, at-Tirmidhi, and at-Tirmidhi graded it as 'Hasan'. It was also narrated by Ibn Majah, al-Hakim, Ibn Hibban, and Imam al-Bayhaqi in 'ash-Shu'ab'; all of them narrated it from Sayyiduna Abdullah bin Umar (may Allah be pleased with them both). (T) |

Now, if the first time is considered valid, then the Quranic verse, along with these authentic (Sahih) Hadiths, would contradict that assumed authentic Hadith, and there would be no choice but to reject one of the authentic Hadiths. However, if the second time is considered, then the verse and Hadiths all remain true and correct, and any contradiction or conflict is naturally resolved. He recited the Kalimah, and indeed he did, but when? At a time when time itself had run out. Therefore, the decree of polytheism and hellfire remained in effect. Allah Almighty said (Allah Almighty said - T):

| "...until, when drowning overtook him, he said, 'I believe that there is no deity except He in whom the Children of Israel believe, and I am of the Muslims.'" (3) | Until when the drowning overtook him, he said, "I believe that there is no true God except Him in whom the Children of Israel believe, and I am a Muslim." | | "Now? And you had disobeyed before and were of the corrupters?" (4) | Is it now (that you believe)? While you were disobedient before and you were of the mischief-makers. |

1. Al-Quran al-Karim 40/85
2. Jami' at-Tirmidhi, Chapters on Supplications, Chapter on the Virtue of Repentance etc., Amin Company Delhi, 2/192; Musnad Ahmad bin Hanbal from Abdullah bin Umar (may Allah be pleased with them both), Al-Maktab al-Islami Beirut, 2/132; Al-Mustadrak by al-Hakim, Book of Repentance, Chapter: Indeed Allah forgives His servant, Dar al-Fikr Beirut, 4/257

3. Al-Quran al-Karim 10/90
4. Al-Quran al-Karim 10/91

| फ़ि इबादिही व खसीरा हुनालिकल काफिरून (85) -1- | (अल्लाह का यही तरीका) उसके बंदों में गुज़र चुका और वहाँ काफ़िर घाटे में रहे। (त) |

अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं:

| 'बेशक अल्लाह तआला बंदे की तौबा तब तक कबूल फरमाता है जब तक कि उसकी जान हलक में न आ जाए (सकरात की स्थिति)।' इसे अहमद, तिर्मिज़ी (जिन्होंने इसे हसन कहा), इब्न माजाह, हाकिम, इब्न हब्बान और बैहकी ने 'अश-शुआब' में रिवायत किया; इन सब ने हमारे आका अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से रिवायत किया। | अल्लाह तआला मौत की बेहोशी (सकरात) से पहले-पहले तौबा कबूल फरमाता है। इसे अहमद, तिर्मिज़ी ने रिवायत किया और तिर्मिज़ी ने इसे 'हसन' कहा। साथ ही इसे इब्न माजाह, हाकिम, इब्न हब्बान और इमाम बैहकी ने 'शुआब' में रिवायत किया, इन सब ने सैयदना अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से रिवायत किया। (त) |

अब अगर पहले समय को (तौबा का समय) माना जाए, तो कुरानी आयत इन सहीह हदीसों के साथ उस कल्पित सहीह हदीस के विरोधाभासी होगी, और किसी न किसी सहीह हदीस को खारिज किए बिना कोई चारा न होगा। लेकिन अगर दूसरे समय को माना जाए, तो आयत और हदीसें सब सच और सही साबित होती हैं, और विरोधाभास व टकराव आसानी से दूर हो जाता है। उसने कलमा पढ़ा और ज़रूर पढ़ा, पर कब? उस वक्त जब कि समय समाप्त हो चुका था। लिहाज़ा, शिर्क और नर्क का हुक्म बरकरार रहा। अल्लाह तआला ने फरमाया (अल्लाह तआला ने फरमाया - त):

| "...यहाँ तक कि जब उसे डूबने ने घेर लिया, तो वह बोला, 'मैं ईमान लाया कि उसके सिवा कोई सच्चा माबूद नहीं जिस पर बनी इसराइल ईमान लाए, और मैं मुसलमानों में से हूँ।'" (3) | यहाँ तक कि जब उसे डूबने ने आ लिया तो बोला मैं ईमान लाया कि कोई सच्चा माबूद नहीं उसके सिवा जिस पर बनी इसराइल ईमान लाए और मैं मुसलमान हूँ। | | "क्या अब? जबकि तुमने पहले नाफरमानी की थी और तुम फसादियों में से थे?" (4) | क्या अब? और पहले से नाफ़रमान रहा और तू फसादी था। |

1. अल-कुरान अल-करीम 40/85

2. जामे तिर्मिज़ी, अबवाबुल दावत, बाबू मा जाआ फी फ़ज़लतित तौबा, अमीन कंपनी दिल्ली 2/192; मुस्नद अहमद बिन हंबल, अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से, अल-मकतब अल-इस्लामी बेरूत 2/132; अल-मुस्तदरक लिल-हाकिम, किताबुत तौबा, बाबू इन्नल्लाहा यग़फिरु लिअब्दीही, दारुल फिक्र बेरूत 4/257
3. अल-कुरान अल-करीम 10/90
4. अल-कुरान अल-करीम 10/91

| فِی عِبَادِہٖ ۪ وَ خَسِرَ ھُنَالِكَ الْكٰفِرُوْنَ ﴿۸۵﴾ -1- | بندوں میں گزر چکا اور وہاں کا فر گھاٹے میں۔ (ت) |

رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم فرماتے ہیں :

| ان اللہ یقبل توبۃ العبد مالم یغرغر۔ رواہ احمد والترمذی و حسنہ و ابن ماجۃ والحاکم و ابن حبان و البیھقی فی الشعب کلھم عن سیدنا عبداللہ بن عمر رضی اللہ تعالی عنھما۔ | اللہ تعالٰی سکرات موت سے پہلے پہلے توبہ قبول فرماتا ہے، اس کو روایت کیا احمد نے، ترمذی نے اور ترمذی نے اس کو حسن کہا۔ نیز روایت کیا اس کو ابن ماجہ، حاکم، ابن حبان اور امام بیہقی نے شعب میں، ان تمام نے سید نا عبداللہ بن عمر رضی اللہ تعالٰی عنہما سے روایت کیا۔ (ت) |

اب اگر وقت اول کہنا مانتے ہیں تو آیت قرآنیہ مع ان احادیث صحیحہ کے اس حدیث صحیح مفروض سے مناقض ہوگی اور کسی نہ کسی حدیث صحیح کو رد کے بغیر چارہ نہ ملے گا اور اگر وقت دوم پر مانتے ہیں تو آیت و احادیث سب حق و صحیح ٹھہرتے ہیں اور تناقض و تعارض بے تکلف دفع ہو اجاتا ہے کلمہ پڑھا اور ضرور پڑھا مگر کب، اس وقت جب کہ وقت نہ رہا تھا، لہذا حکم شرک و نار برقرار رہا۔ قال اللہ تعالٰی (اللہ تعالٰی نے فرمایا۔ت) :

| " حَتّٰۤی اِذَاۤ اَدْرَكَهُ الْغَرَقُ قَالَ اٰمَنْتُ اَنَّهٗ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا الَّذِیْۤ اٰمَنَتْ بِهٖ بَنُوْۤا اِسْرَآءِیْلَ وَ اَنَا مِنَ الْمُسْلِمِیْنَ ﴿۹۰﴾ " -3- | یہاں تک کہ جب اسے ڈوبنے نے آلیا تو بولا میں ایمان لایا کہ کوئی سچا معبود نہیں اس کے جس پر بنی اسرائیل ایمان لائے اور میں مسلمان ہوں۔ | | " آٰلْـٰٔنَ وَ قَدْ عَصَیْتَ قَبْلُ وَ كُنْتَ مِنَ الْمُفْسِدِیْنَ ﴿۹۱﴾ " -4- | کیا اب اور پہلے سے نافرمان رہا اور تو فسادی تھا۔ |

1 القرآن الكريم ٨٥/٤٠ 2 جامع الترمذی ابواب الدعوات باب ماجاء فی فضل التوبة الخ امین کمپنی دہلی ۲ / ۱۹۲، مسند احمد بن حنبل عن عبدالله بن عمر رضی الله عنهما المکتب الاسلامی بیروت ۲ / ۱۳۲، المستدرك للحاکم کتاب التوبة باب ان الله یغفر لعبده دار الفکر بیروت ۴ / ۲۵۷ 3 القرآن الکریم ۹۰/۱۰ 4 القرآن الکریم ۹۱/۱۰

Fatawa Razawiyyah Volume 29

The first scenario is clearly false, therefore the final option must be accepted. In reality, if this narration was factual, then this is exactly what occurred and it is certainly consistent with reason. The Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) graced him with his presence near his deathbed. In that state, dialogues occurred with the infidels of Quraish. The Master of the Universe (peace and blessings of Allah be upon him) repeatedly and insistently invited him to Islam. The infidels exerted all their effort to ensure he remained on the path of disbelief. Finally, the last response given was that Abu Talib is passing away on the path of ignorance. Until then, there was the power of speech. Now, the final breaths were at the chest, the veils were lifted, the unseen appeared before him. That fire, over which he had chosen disgrace, showed its face in its terrifying form. Hearing is not like seeing. (Seeing is not like hearing. T). Now it became clear that this calamity was unbearable. A drowning man catches at a straw (literally: a drowning man catches a rider). Now the value of 'La ilaha illAllah' was realized. He wanted to say it but found no strength. A slight movement occurred in the lips but it was futile as the time had passed.

[Boxed Text:] Indeed, to Allah we belong and to Him we shall return. There is no power or strength except with Allah, the Most High, the Most Supreme. (We belong to Allah Almighty and to Him we are to return; there is no power to avoid sin, nor any strength to do good except by the grace of God, the Possessor of height and greatness. T)

So, Hazrat Abbas (may Allah be pleased with him) was also truthful that he recited the Kalima, and the Quran and Hadith are certainly truthful that the ruling of disbelief remained as it was. We seek refuge in Allah, the Lord of all the worlds. (Allah's protection, Who is the Sustainer of all the worlds. T).

Previously: Disregard even this, let's also accept that he recited it before the state of the death rattle. Then Hazrat Abbas (may Allah be pleased with him) would only testify to what was apparent. God is the Knower of the state of hearts. If a person recites the Kalima a hundred thousand times daily and Allah (Exalted and Majestic) declares him an infidel, will we look at his recitation of the Kalima or at the statement of our Lord (Exalted and Majestic)? Faith is not just the name of reciting the Kalima with the tongue. When the Master of hearts judges him to be on disbelief, then it is absolutely proven that there is no conviction or Islam in his heart. After all, did you not hear what was said upon those who were alive, awake, and healthy, taking the

greatest oaths and saying, "We bear witness that you are indeed the Messenger of Allah" (We testify that the Prophet is surely the Messenger of Allah. T) saying what happened:

---

1. Musnad Ahmad bin Hanbal on the authority of Ibn Abbas (may Allah be pleased with him), Al-Maktab al-Islami, Beirut, 1/271.
2. The Holy Quran, 63/1.

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

पहली सूरत स्पष्ट रूप से असत्य है, इसलिए अंतिम विकल्प को ही स्वीकार करना अनिवार्य है। और वास्तविकता में यदि यह वर्णन सत्य था, तो निश्चित रूप से यही वास्तविक स्थिति हुई और वह निश्चित रूप से तर्कसंगत भी है। हुज़ूर अकदस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) उनकी मृत्यु के समय उनके पास तशरीफ़ लाए थे। उसी स्थिति में कुरैश के काफ़िरों से वे संवाद हुए। सैयदे आलम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने बार-बार इसरार के साथ इस्लाम की दावत दी। काफ़िरों ने कुफ़्र की मिल्लत पर कायम रहने में अपनी पूरी जान लड़ा दी। अंततः अंतिम उत्तर यह दिया गया कि अबू तालिब जाहिलियत की मिल्लत पर जा रहा है। यहाँ तक बातचीत करने की शक्ति थी। अब सीने पर दम आया, परदे उठे, ग़ैब सामने आया। उस आग ने, जिस पर शर्म को चुना था, अपनी भयानक शक्ल दिखाई। 'देखना सुनने के समान नहीं है' (सुनना देखने जैसा नहीं। त)। अब खुला कि यह बला झेलने की नहीं, डूबता हुआ सवार को पकड़ता है। अब 'ला इलाहा इल्लल्लाह' का महत्व समझ आया, कहना चाहा पर शक्ति न पाई, होठों में धीमी सी हलचल हुई मगर बेफायदा क्योंकि समय निकल चुका था।

[बॉक्स टेक्स्ट:] बेशक हम अल्लाह ही के लिए हैं और उसी की तरफ़ लौटने वाले हैं। और गुनाह से बचने की ताक़त और नेकी करने की कुव्वत नहीं मगर बुलंद और अज़मत वाले ख़ुदा की तौफ़ीक से। (हम अल्लाह तआला के लिए हैं और उसी की तरफ लौटकर जाने वाले हैं, न गुनाह से बचने की ताकत है और न नेकी करने की शक्ति मगर बुलंदी और अज़मत वाले खुदा की तौफ़ीक से। त)

तो हज़रत अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हु) भी सच्चे थे कि कलमा पढ़ा, और क़ुरान व हदीस तो निश्चित रूप से सच्चे हैं कि कुफ़्र का हुक्म यथावत रहा। वल-इयाज़ु बिल्लाहि रब्बिल-आलमीन। (अल्लाह की पनाह जो तमाम जहानों का पालने वाला है। त)

पूर्व में: इसे भी छोड़िए, यह भी मान लें कि गरगरा (मृत्यु की हिचकी) की स्थिति से पहले ही पढ़ा है, फिर हज़रत अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हु) तो ज़ाहिर ही की गवाही देंगे। दिल के हाल का जानने वाला खुदा है। क्या अगर कोई व्यक्ति रोज़ाना लाख बार कलमा पढ़े और अल्लाह अज़्वजल उसे काफ़िर बताए, तो हम उसके कलमा पढ़ने को देखेंगे या अपने रब अज़्वजल के इरशाद को? ईमान केवल ज़बान से कलमा पढ़ने का नाम नहीं है। जब दिलों का मालिक उसके कुफ़्र पर हाकिम है, तो निश्चित रूप से सिद्ध है कि उसके दिल में अज़आन (यकीन) और इस्लाम नहीं है। आख़िर आपने सुना नहीं

कि जीते-जागते तंदुरुस्तों के बड़ी से बड़ी कसम खाकर "हम गवाही देते हैं कि आप बेशक अल्लाह के रसूल हैं" कहने पर क्या इरशाद हुआ?

---

1. मुसनद अहमद बिन हंबल, इब्न अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हु) से, अल-मक्तब अल-इस्लामी बेरूत, 1/271
2. अल-क़ुरान अल-करीम 63/1

पृष्ठ 737 का 750

صورتِ اُولیٰ ظاہر البطلان، لہذا شق اخیر ہی لازم الاذعان، اور فی الواقع اگر یہ روایت مطابقِ واقع تھی تو قطعاً یہی صورت واقعی ہوئی اور وہ ضرور قرینِ قیاس بھی ہے، حضورِ اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم ان کے قریبِ مرگ ہی جلوہ افروز ہوئے ہیں، اسی حالت میں کفارِ قریش سے وہ محاورات ہوئے سید عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے بار بار باصرارِ دعوت اسلام فرمائی کفار نے ملت کفر پر قائم رہنے میں جان لڑائی، آخر پچھلا جواب وہ دیا کہ ابوطالب ملتِ جاہلیت پر جاتا ہے، یہاں تک بات چیت کی طاقت تھی اب سینے پر دم آیا پر دے اُٹھے غیب سامنے آیا اُس نار نے جس پر عار کو اختیار کیا تھا اپنی مہیب صورت سے منہ دکھایا لیس الخبر کالمعاینۃ (خبر مشاہدہ کی مثل نہیں۔ ت) اب کھلا کہ یہ بلا جھیلنے کی نہیں، ڈوبتا ہوا سوار پکڑتا ہے، اب لا الہ الا اللہ کی قدر آئی، کہنا چاہا طاقت نہ پائی، آہستہ لبوں کو جنبش ہوئی مگر بے سود کہ وقت نکل چکا تھا۔

[Boxed text:] انّا للہ وانا الیہ راجعون ولا حول ولاقوۃ الا باللہ العلی العظیم۔ ہم اللہ تعالیٰ کے لیے ہیں اور اسی کی طرف لوٹ کر جانے والے ہیں، نہ گناہ سے بچنے کی طاقت ہے اور نہ نیکی کرنے کی قوت ہے مگر بلندی و عظمت والے خدا کی توفیق سے۔ (ت)

تو حضرت عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہ بھی سچے کہ کلمہ پڑھا، اور قرآن و حدیث تو قطعاً سچے ہیں کہ حکم کفر بدستور رہا۔ والعیاذ باللہ ربّ العالمین۔ (اللہ کی پناہ جو پروردگار ہے تمام جہانوں کا۔ ت)

سابقاً: اس سے بھی در گزرئیے، یہ بھی مانا کہ حالتِ غَرغرہ سے پہلے ہی پڑھا ہے پھر حضرت عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہ تو ظاہر ہی کی گواہی دیں گے، دل کے حال کا عالم خدا ہے، کیا اگر

کوئی شخص روزانہ لاکھ بار کلمہ پڑھے اور اللہ عزوجل اسے کافر بتائے تو ہم اس کے کلمہ پڑھنے کو دیکھیں گے یا اپنے رب عزوجل کے ارشاد کو، ایمان زبان سے کلمہ خوانی کا نام نہیں، جب دلوں کا مالک اس کے کفر پر حاکم تو قطعاً ثابت کہ اس کے قلب میں اذعان و اسلام نہیں، آخر نہ سُنا کہ جیتے جاگتے تندرستوں کے بڑی سے بڑی قسم کھا کر "نَشْهَدُ اِنَّكَ لَرَسُوْلُ اللهِ" (ہم گواہی دیتے ہیں کہ حضور بے شک یقیناً اللہ کے رسول ہیں۔ ت) کہنے پر کیا ارشاد ہوا:

---

1 مسند احمد بن حنبل عن ابن عباس رضی اللہ عنہ المکتب الاسلامی بیروت ۱ / ۲۷۱ 2 القرآن الکریم ۶۳ / ۱

Fatawa Razawiyya Volume 29

"And Allah knows that you are His messenger, and Allah bears witness that the hypocrites are indeed liars." [1] | And Allah knows that you are His messenger and Allah bears witness that the hypocrites are surely liars. (T)

In short, try a million ways, you will not find exoneration through the verse of exoneration; this is what is destined (the same fate, the same lot), that:

"It has become clear to them that they are inhabitants of Hellfire." [2] | It has become clear that they are inhabitants of hell. (T)

[Arabic prayer text] | And refuge is sought with Allah, Lord of the worlds. O Allah, Most Merciful of the merciful, send blessings, peace and benediction upon the Trustworthy Master, who came from You with the Manifest Truth. O Allah, by Your power over us and our need for You, have mercy on our weakness, O Most Merciful of the merciful. Amen, Amen, Amen. And praise be to Allah, Lord of the worlds. There is no god but Allah, a provision for the meeting with Allah; Muhammad is the Messenger of Allah, a trust with Allah; and there is no power nor might except with Allah. And may Allah Almighty's blessings be upon our master Muhammad and his entire family and all companions. And all praise be to Allah, Lord of the worlds. (T)

By the praise of Allah, the removal of doubts was also achieved in the best possible way.

There is another doubt, weaker and lighter, which we did not mention as it did not arise. | Here is another doubt which is very weak and very light, we do not present it for this reason.

1. The Holy Quran 63/1
2. The Holy Quran 9/113

Page 738 of 750

फ़तवा रज़विया जिल्द 29

"और अल्लाह जानता है कि तुम उसके रसूल हो और अल्लाह गवाही देता है कि मुनाफ़िक़ (पाखंडी) ज़रूर झूठे हैं।" [1] | और अल्लाह जानता है कि तुम उसके रसूल हो और अल्लाह गवाही देता है कि मुनाफ़िक़ ज़रूर झूठे हैं। (त)

संक्षेप में, चाहे लाख यत्न करें, बारात (मुक्ति) की आयत से बारात नहीं मिलेगी; यही नियति है (वही किस्मत वही नसीब) कि:

"उन पर यह स्पष्ट हो गया है कि वे नरकवासी हैं।" [2] | खुल चुका कि वे दोज़ख़ी (नरकवासी) हैं। (त)

[अरबी प्रार्थना पाठ] | और अल्लाह तआला की पनाह जो तमाम जहानों का परवर्डिगार (पालक) है। ऐ अल्लाह, बेहतरीन रहम करने वाले। दुरूद-ओ-सलाम और बरकत नाज़िल फ़रमा उस अमानतदार सरदार पर जो तेरी बारगाह से हक़-ए-मुबीन (स्पष्ट सत्य) लेकर आने वाला है। ऐ अल्लाह! अपनी कुदरत के साथ जो हम पर है और हमारी मोहताजी तेरी तरफ़ है, हमारी बेबसी पर रहम फ़रमा ऐ बेहतरीन रहम फ़रमाने वाले, हमारी दुआ क़बूल फ़रमा, और तमाम तारीफ़ें उस ख़ुदा के लिए हैं जो कुल जहानों का रब है। अल्लाह के सिवा कोई सच्चा माबूद नहीं, मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम), अल्लाह तआला से मुलाक़ात का वादा अल्लाह के पास अमानत है, न गुनाह से बचने की ताक़त है और न ही नेकी करने की कुव्वत मगर अल्लाह की तौफ़ीक़ से। अल्लाह तआला दुरूद नाज़िल फ़रमाए हमारे आक़ा मुहम्मद मुस्तफ़ा पर, आपकी आल और सब सहाबा पर, और सब तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं जो तमाम जहानों का रब है। (त)

अल्लाह की हम्द (प्रशंसा) से, संदेहों के निवारण का कार्य भी उत्तम रीति से संपन्न हुआ।

यहाँ एक दूसरा संदेह है जो बहुत कमज़ोर और बहुत हल्का है, हमने उसे यहाँ इसलिए प्रस्तुत नहीं किया क्योंकि वह सामने नहीं आया। | यहाँ एक दूसरा शुबा (संदेह) है जो बहुत कमज़ोर और बहुत हल्का है, हम उसको इसलिए पेश नहीं करते।

1. अल-क़ुरान 63/1
2. अल-क़ुरान 9/113

"وَاللّٰہُ یَعْلَمُ اِنَّکَ لَرَسُوْلُہٗ وَاللّٰہُ یَشْہَدُ اِنَّ الْمُنٰفِقِیْنَ لَکٰذِبُوْنَ ۱" اور اللہ جانتا ہے کہ تم اس کے رسول ہو اور اللہ گواہی دیتا ہے کہ منافق ضرور جھوٹے ہیں۔ (ت)

غرض لاکھ جتن کیجئے آیت براءت سے براءت ملے یہ شدنی نہیں رہے گی ہمار آتش در کاسہ (وہی قسمت وہی نصیب۔ ت) کہ:

"تَبَیَّنَ لَہُمْ اَنَّہُمْ اَصْحٰبُ الْجَحِیْمِ ۲" کھل چکا کہ وہ دوزخی ہیں۔ (ت)

والعیاذ باللہ رب العلمین اللھم ارحم الرحمین صل وسلم وبارك علی السید الامین الاتی من عندك بالحق المبین اللھم بقدر تك علینا وفاقتنا الیك ارحم عجزنا یا ارحم الراحمین امین امین امین والحمدللہ رب العلمین لا الہ الا اللہ عدۃ للقاء اللہ محمد رسول اللہ ودیعۃ عند اللہ ولا حول ولا قوۃ الا باللہ وصلی اللہ تعالی علی سیدنا محمد وآلہ اجمعین والحمدللہ رب العلمین۔ | اور اللہ تعالیٰ کی پناہ جو تمام جہانوں کا پروردگار ہے۔ اے اللہ بہترین رحم کرنے والے۔ درود و سلام اور برکت نازل فرما اُس امانت والے سردار پر جو تیری بارگاہ سے حقِ مبین لے کر آنے والا ہے۔ اے اللہ! اپنی قدرت کے ساتھ جو ہم پر ہے اور ہماری محتاجی تیری طرف ہے، ہمارے عجز پر رحم فرما اے بہترین رحم فرمانے والے، ہماری دُعا قبول فرما، اور تمام تعریفیں اس خدا کے لیے ہیں جو کل جہانوں کا پروردگار ہے۔ اللہ کے بغیر کوئی سچا معبود نہیں، محمد رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے ساتھ اللہ تعالیٰ کی ملاقات کا وعدہ اللہ تعالیٰ کے پاس ودیعت ہے، نہ گناہ سے بچنے کی طاقت ہے اور نہ ہی نیکی کرنے کی قوت مگر اللہ کی توفیق سے۔ اللہ تعالیٰ درود نازل فرمائے ہمارے آقا محمد مصطفیٰ پر،

آپ کی آل اور سب صحابہ پر، اور سب تعریفیں اللہ کے لیے ہیں جو تمام جہانوں کا پروردگار ہے۔ (ت)

بحمد اللہ ازاحت شبہات سے بھی بوجہ احسن فراغ پایا۔

وھناك شبھة اخرا وھن واھون لم نوردھا اذ لم تعرض | یہاں ایک دوسرا شبہ ہے جو بہت کمزور اور بہت ہلکا ہے ہم اس کو اس لیے وارد نہیں کرتے۔

١ القرآن الکریم ٦٣ / ١ ٢ القرآن الکریم ٩ / ١١٣

Fatawa Razawiya, Volume 29

"...and it was not known, so we will not lengthen the discourse by mentioning it, and let us fold it upon its fold until its appointed time." - For neither was it addressed nor is it well-known, therefore we do not lengthen the discourse by introducing it. So it is proper that we fold it upon its crease until its appointed time. (T)

Now take the answer to the remaining question and list the names of those Imams, scholars, and books at the end from which this matter is proven, so that he who feels lazy in looking at the treatise may, by just looking at these names, withdraw from opposition. Therefore, let the connection of three chapters and the appropriate 'that is a complete ten' (these are ten full ones. T) show its manifestation.

Chapter Eight

When Abu Talib's disbelief is evident from proofs as clear as day, then how can the use of 'May Allah be pleased with him' (Radi Allahu Anhu) be justified? If it is a report, it is an accusation against Allah Almighty; what share do the disbelievers have in Allah's pleasure? And if it is a prayer, as is apparent, then a prayer for the impossible is, God forbid, a mockery of the Majesty of the Exalted; the Master of the Universe (peace and blessings of Allah be upon him) forbade such a prayer.

"As in the two Sahihs[1] and we have explained it in our treatise 'Zayl al-Mud'a li Ahsan al-Wi'a' which we added as a supplement to the treatise 'Ahsan al-Wi'a li Adab al-Du'a' by the Seal of Researchers, our master and father, may his noble secret be sanctified." - (As it is in the two Sahihs, and we have stated it in our treatise 'Zayl al-Mud'a li Ahsan al-Wi'a'. We made this treatise a marginal note to the treatise 'Ahsan al-Wi'a li Adab al-Du'a' which is a composition of the Seal of Researchers, our respected father, may his secret be sanctified. - T)

Scholars have issued a very severe ruling on praying for forgiveness for a disbeliever, and there is a consensus on its prohibition. Then, a prayer for pleasure (Ridwan) is even higher and more exalted than that.

"For the master may sometimes forgive his servant..." Because the master sometimes forgives his slave...

[1] Sahih al-Bukhari, Book of Tafsir, Surah al-Bara'ah, Chapter: 'It is not for the Prophet and those who believe...', Qadimi Kutub Khana, Karachi, 2/675; Sahih Muslim, Book of

Faith, Chapter: 'Proof of the validity of Islam of one who is visited by death...', etc., Qadimi Kutub Khana, Karachi, 1/20.

फ़तावा रज़विया, खंड 29

"...और वह ज्ञात नहीं था, इसलिए हम उसका उल्लेख करके बात को लम्बा नहीं करेंगे, और आइए हम इसे इसके नियत समय तक इसकी तह पर लपेट दें।" - क्योंकि न तो इसे संबोधित किया गया है और न ही यह प्रसिद्ध है, इसलिए हम इसे शामिल करके बात को लंबा नहीं करते हैं। अतः उचित है कि हम इसे इसके नियत समय तक इसकी तह पर लपेट दें। (त)

अब शेष प्रश्न का उत्तर लें और इस ग्रंथ में जिन इमामों, विद्वानों और पुस्तकों से यह मसला सिद्ध है, उनके नाम अंत में गिनवा दें ताकि जिसे ग्रंथ देखने में आलस आए वह केवल इन नामों को देखकर विरोध से हाथ खींच ले। इसलिए तीन अध्यायों का मिलन और उचित 'वह पूर्ण दस हैं' (ये पूरे दस हुए। त) अपना जलवा दिखाए।

आठवां अध्याय

जब अबू तालिब का कुफ़्र (अविश्वास) दिन के उजाले की तरह साफ़ प्रमाणों से स्पष्ट है, तो 'रज़ियल्लाहु अन्हु' (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) कहने का अधिकार कैसे हो सकता है? यदि यह समाचार है तो अल्लाह तआला पर मिथ्यारोप है, काफ़िरों को अल्लाह की रज़ा से क्या सरोकार? और यदि यह दुआ है, जैसा कि स्पष्ट है, तो असंभव के लिए दुआ अल्लाह की महानता के साथ मज़ाक है, अल्लाह की पनाह; ऐसी दुआ से हुज़ूर सरवर-ए-आलम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने मना फरमाया है।

"जैसा कि दोनों सहीह[1] में है और हमने इसे अपने ग्रंथ 'ज़ैल अल-मुदआ लि अहसन अल-विआ' में स्पष्ट किया है जिसे हमने 'अहसन अल-विआ लि आदाब अद-दुआ' के साथ जोड़ा है, जो शोधकर्ताओं की मुहर, हमारे आका और पिता (क़ुद्दिस सिर्रुहु) की रचना है।" - (जैसा कि सहीहैन में है, और हमने इसे अपने ग्रंथ 'ज़ैल अल-मुदआ लि अहसन अल-विआ' में बयान कर दिया है। हमने इस ग्रंथ को 'अहसन अल-विआ लि आदाब अद-दुआ' का हाशिया बनाया जो ख़ातिमतुल मुहक़्क़िक़ीन हमारे सम्मानित पिता की रचना है। - त)

विद्वानों ने काफ़िर के लिए मगफ़िरत (क्षमा) की दुआ पर बहुत सख्त हुक्म जारी किया है और इसके हराम होने पर तो इज्मा (सहमति) है, फिर रिज़वान (अल्लाह की प्रसन्नता) की दुआ तो इससे भी अधिक बुलंद और उच्च है।

"क्योंकि स्वामी कभी-कभी अपने सेवक को क्षमा कर देता है..." क्योंकि मालिक कभी-कभी अपने गुलाम को माफ़...

[1] सहीह अल-बुखारी, किताबुल तफ़्सीर, सूरह अल-बारात, अध्याय: 'नबी और ईमान वालों के लिए उचित नहीं...', क़दीमी कुतुब ख़ाना कराची 2/675, सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान, अध्याय: 'मौत के समय इस्लाम स्वीकार करने की प्रमाणिकता पर दलील...', आदि, क़दीمی कुतुब ख़ाना कराची 1/20।

ولم تعرف فلا نطیل الکلام بایرادھا و لنطوھا علی غرھا لمیعادھا"- کہ نہ تو اُس کا تعرض کیا گیا ہے اور نہ ہی وہ معروف ہے، چنانچہ ہم اس کو وارد کر کے کلام کو لمبا نہیں کرتے۔ لہٰذا چاہیے کہ ہم اس کے مقررہ وقت تک اس کو اس کے شکن پر لپیٹ دیں۔(ت)

اب بقیہ سوال کا جواب لیجئے اور اس رسالہ میں جن ائمہ و علماء و کتب سے یہ مسئلہ ثابت کیا آخر میں اُن کے اسماء شمار کر دیجئے کہ جسے رسالہ دیکھنے میں کاہلی آئے ان ناموں ہی کو دیکھ کر خلاف سے ہاتھ اٹھائے لہٰذا تین فصل کا وصل اور مناسب کہ تلک عشرۃ کاملۃ (یہ پورے دس ہوئے ۔ت) جلوہ دکھائے۔

فصل ہشتم

جب ابو طالب کا کفر ادلہ کالتار سے آشکار تو رضی اللہ تعالٰی عنہ کہنے کا کیونکر اختیار ، اگر اخبار ہے تو اللہ تعالٰی عزوجل پر افترا، کفار کو رضائے الٰہی سے کیا بہرہ، اور اگر دُعا ہے کما ھو الظاھر (جیسا کہ ظاہر ہے۔ ت) تو دعا بالحمال حضرت ذی الجلال سے معاذ اللہ استہزاء، ایسی دُعا سے حضور سرور عالم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے نہی فرمائی۔

کما فی الصحیحین[1] و قد بیّنّاہ فی رسالتنا "ذیل المدعاء لاحسن الوعاء" التی ذیلنا بھا رسالۃ "احسن الوعاء لآداب الدعاء" لخاتمۃ المحققین سیدنا الوالد قدس سرہ الماجد"- جیسا کہ صحیحین میں ہے، اور ہم نے اس کو اپنے رسالہ "ذیل المدعاء لاحسن الوعاء" میں بیان کر دیا۔ اس رسالے کو ہم نے حاشیہ بنایا رسالہ "احسن الوعاء لآداب الدعاء" کا جو تصنیف ہے خاتمۃ المحققین ہمارے سردار والد گرامی قدس سرہ کی۔ ت)

علماء نے کافر کے لیے دُعائے مغفرت پر سخت اشد حکم صادر فرمایا اور اس کے حرام ہونے پر تو اجماع ہے، پھر دعائے رضوان تو اس سے بھی ارفع و اعلیٰ۔

فان السید قد یعفو عن عبدہ اس لیے کہ مالک بعض دفعہ اپنے غلام کو معاف

1 صحیح البخاری کتاب التفسیر سورۃ البراءۃ باب ماکان للنبی والذین آمنوا لخ قدیمی کتب خانہ کراچی ۲ / ۶۷۵ ، صحیح مسلم کتاب الایمان باب الدلیل علی صحۃ الاسلام من حضرہ الموت الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ۱ / ۲۰

Fatawa Razawiyya Volume 29

[Arabic]: And he is not pleased with it, just as a slave might love his master but does not act upon his command. Allah is sufficient for us, and what an excellent protector He is. [Urdu]: ...makes it so, although He is not pleased with it, just as a slave often likes his master but does not follow his command. Allah is sufficient for us, and what an excellent protector He is. (T)

Imam Muhammad Muhammad Halabi states in Hilya:

[Arabic]: "Sheikh Shihab al-Din al-Qarafi al-Maliki clarified that praying for forgiveness for a disbeliever (kafir) is disbelief (kufr), because it seeks to belie what Allah the Almighty has informed. For this reason, the author and others stated, 'if they are believers'." [Urdu]: That is, Imam Shahab Qur'ani Maliki clarified that praying for forgiveness for disbelievers is kufr, as it seeks to falsify what Allah Almighty has foretold. Therefore, in books of jurisprudence like Munyah etc., a condition is added that one may pray for parents' forgiveness provided they are Muslims.

Then after one page he stated, "it has preceded that it is kufr". It has been stated above that this is kufr. It is in Radd al-Muhtar:

[Arabic]: Praying for it is kufr because it is not permissible either rationally or legally (by Sharia), and because it belies the definitive texts, unlike praying for the believers as you have known. So the truth is what is in Hilya. [Urdu]: This prayer is kufr because it is intellectually and religiously impermissible and involves denying absolute texts, contrary to praying for believers, as you already know. The truth is what is stated in Hilya. (T)

It is in Durr al-Mukhtar:

[Arabic]: The truth is the prohibition of praying for forgiveness for a disbeliever. [Urdu]: The truth is that praying for a disbeliever's forgiveness is forbidden (haram).

Similarly, it is in Bahr al-Ra'iq:

---

1 Hilyat al-Mahalli 2 Hilyat al-Mahalli 3 Radd al-Muhtar, Book of Prayer, Chapter: When one intends to start the prayer, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 1/351. 4 Al-Durr al-Mukhtar, Book of Prayer, Chapter: When one intends to start the prayer, Matba' Mujtabai, Delhi, 1/87.

फ़तावा रज़विया खंड 29

[अरबी]: और वह इससे प्रसन्न नहीं है, ठीक वैसे ही जैसे एक दास अपने मालिक से प्यार तो कर सकता है लेकिन उसके आदेश पर अमल नहीं करता। अल्लाह हमारे लिए काफी है, और वह क्या ही अच्छा कार्यसाधक है। [उर्दू]: ...कर देता है, हालाँकि वह उस पर राज़ी नहीं होता, जैसा कि ग़ुलाम बसा औक़ात अपने मालिक को पसंद करता है मगर उसके हुक्म पर अमल पैरा नहीं होता। अल्लाह हमें काफी है और क्या ही अच्छा कारसाज़ है। (त)

इमाम मुहम्मद मुहम्मद हलबी 'हिलिया' में फरमाते हैं:

[अरबी]: "शेख शिहाब अल-दीन अल-कराफी अल-मालिकी ने स्पष्ट किया है कि एक काफ़िर (अविश्वासी) के लिए क्षमा की प्रार्थना करना कुफ्र (अविश्वास) है, क्योंकि यह अल्लाह सर्वशक्तिमान द्वारा बताई गई बात को झुठलाने की कोशिश है। इसी कारण लेखक और अन्य लोगों ने कहा, 'यदि वे मोमिन (विश्वासी) हों'।" [उर्दू]: यानी इमाम शहाब कुरानी मालिकी ने तसरीह (स्पष्टीकरण) फ़रमाई कि काफ़िरों के लिए मग़फ़िरत (क्षमा) की दुआ करना कुफ्र है, क्योंकि अल्लाह अज़वजल ने जो ख़बर दी है, यह उसे झूठा साबित करना चाहता है। इसीलिए मुन्या आदि फ़िक़्ह की किताबों में यह शर्त लगा दी गई है कि माता-पिता के लिए मग़फ़िरत की दुआ करे बशर्ते कि वे मुसलमान हों।

फिर एक पन्ने के बाद फ़रमाया कि "यह पहले बताया जा चुका है कि यह कुफ्र है"। ऊपर बयान हो चुका है कि यह कुफ्र है। 'रद्द अल-मुह्तार' में है:

[अरबी]: इसके लिए दुआ करना कुफ्र है क्योंकि यह न तो अक्ल से और न ही शरीयत के हिसाब से जायज़ है, और इसमें निश्चित पाठों (नसूस-ए-कतईया) को झुठलाना है, मोमिनों के लिए दुआ करने के विपरीत, जैसा कि आप जानते हैं। तो हक वही है जो 'हिलिया' में है। [उर्दू]: इसकी दुआ कुफ्र है क्योंकि यह अक्ल और शरीयत के हिसाब से नाजायज़ है और इसमें नसूस-ए-कतईया (अटल धार्मिक प्रमाणों) की तकज़ीब (खंडन) है, मोमिनों के लिए दुआ करने के बरक्स (विपरीत), जैसा कि आप जान चुके हैं। और हक़ वही है जो 'हिलिया' में है। (त)

'दुर्र-ए-मुख्तार' में है:

[अरबी]: सच तो यह है कि काफिर के लिए मग़फ़िरत की दुआ करना हराम है। [उर्दू]: हक़ यह है कि काफ़िर के लिए दुआ-ए-मग़फ़िरत हराम है।

इसी तरह 'बहर-उर-राइक' में है:

---

1 हिलियात अल-महल्ली 2 हिलियात अल-महल्ली 3 रद्द अल-मुह्तार, किताबुस-सलात, बाब: व-इज़ा अरादा-अश-शुरू फ़िस-सलात, दार इहया अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 1/351। 4 अल-दुर्र अल-मुख्तार, किताबुस-सलात, बाब: व-इज़ा अरादा-अश-शुरू फ़िस-सलात, मतबा मुजतबाई, दिल्ली, 1/87।

وہو عند غیر راض کما ان العبد ربما یحب سیدہ وھو علی امرہ غیر ماض وحسبنا اللہ و نعم الوکیل | کر دیتا ہے حالانکہ وہ اس پر راضی نہیں ہوتا، جیسا کہ غلام بسا اوقات اپنے مالک کو پسند کرتا ہے مگر اس کے حکم پر عمل پیرا نہیں ہوتا۔ اللہ ہمیں کافی ہے اور کیا ہی اچھا کارساز ہے۔(ت)

امام محمد محمد حلبی حلیہ میں فرماتے ہیں:

"صرح الشیخ شہاب الدین القرافی المالکی بان الدعاء بالمغفرۃ للکافر کفر لطلبہ تکذیب اللہ تعالٰی فیما اخبر بہ ولھذا قال المصنف وغیرہ ان کان مؤمنین "۔ | یعنی امام شہاب قرآنی مالکی نے تصریح فرمائی کہ کفار کے لیے دعائے مغفرت کرنا کفر ہے، کہ اللہ عزوجل نے جو خبر دی اس کا جھوٹا کرنا چاہتا ہے اس لیے منیہ وغیرہ کتب فقہ میں قید لگادی کہ ماں باپ کے لیے دعائے مغفرت کرے بشرطیکہ وہ مسلمان ہوں۔

پھر ایک ورق کے بعد فرمایا کہ "تقدم ان کفر" ۔ اوپر بیان ہو چکا ہے کہ یہ کفر ہے۔ رد المحتار میں ہے:

الدعاء بہ کفر لعدم جوازہ عقلاً ولا شرعاً ولتکذیب النصوص القطعیۃ بخلاف الدعاء للمؤمنین کما علمت فالحق مافی الحلیۃ ۔ | اس کی دعا کفر ہے کیونکہ یہ عقلاً و شرعاً ناجائز ہے اور اس میں نصوص قطعیہ کی تکذیب ہے، بخلاف مومنوں کے لیے دعا کے، جیسا کہ تو جان چکا ہے، اور حق وہ ہے جو حلیہ میں ہے۔ (ت)

در مختار میں ہے:

الحق حرمۃ الدعاء بالمغفرۃ للکافر ۔ | حق یہ ہے کہ کافر کے لیے دعائے مغفرت حرام ہے۔

اسی طرح بحر الرائق میں ہے:

---

1 حلیۃ المحلی 2 حلیۃ المحلی 3 ردالمحتار کتاب الصلوۃ فصل واذا ارادالشروع فی الصلوۃ داراحیاء التراث العربی بیروت ۱ / ۳۵۱ 4 الدرالمختار کتاب الصلوۃ فصل واذا ارادالشروع فی الصلوۃ داراحیاء مطبع مجتبائی دہلی ۱ / ۸۷

Fatawa Ridawiyya Volume 29

[Table Top] I say: Regarding what Al-Allama al-Shami leaned towards about the intellectual impossibility of pardoning disbelief (kufr), he was merely following Imam al-Nasafi, the author of 'Umdat al-Kalam, and a small group of the Ahl al-Sunnah. The majority (Jamhur) hold that it is legally (Shari'i) impossible but intellectually possible, as stated in 'Sharh al-Maqasid', 'al-Musamara', etc. The evidences support this, so it is the correct view and the one to be relied upon. Thus, the truth is what the author of 'al-Bahr' opted for, followed by the author of 'al-Durr'. The complete discourse on this matter is in our marginalia on 'Radd al-Muhtar'. (T)

[Main Body] Indeed, to liken [him] to Abu Lahab and Iblis (may Allah curse them) is pure excess and an injustice. Abu Talib's entire life was spent in the service, guardianship, assistance, and support of the Master of Messengership (peace and blessings be upon him and his family). These accursed ones, however, were secretly and openly bent on causing harm and injury. Where is he whose duty was praise and commendation, and where is that wretched one whose litany was blame and reproach? One, though personally deprived and away from Islam, was occupied in benefiting Islam through the subjugation of fate; while the other was rejected, rebellious, a hostile enemy, fully engrossed in trying to break the core of Islam.

Verse: How great is the difference between this path and that! (There is a difference of heaven and earth between them. T)

Finally, did you not see what was stated in the Sahih Hadith, that Abu Talib's punishment is the least among all disbelievers, whereas these wretched ones are among those who face the severest punishment? Only Abu Talib's feet are in the fire, while these accursed ones are among those for whom:

[Bottom Table] Arabic: "For them are layers of fire above them and layers of fire beneath them."(1) Urdu: There are layers of fire above them and layers of fire beneath them. Arabic: "They shall have beds of Hell, and over them coverings of fire."(2) Urdu: Beneath them is a bed of fire and above them are quilts of fire.

[Footer] Complete fire, fire from all sides; and we seek refuge in Allah, Lord of the worlds. (And the refuge of Allah, Lord of the worlds. T)

1 Al-Quran al-Karim 39/16 2 Al-Quran al-Karim 7/41

Page 741 of 750

फ़तावा रज़विया, खंड 29

[शीर्ष तालिका] मैं कहता हूँ: अल्लामा शामी ने कुफ्र (अविश्वास) को माफ करने की बौद्धिक असंभवता के संबंध में जो रुख अपनाया है, उसमें उन्होंने केवल 'उमदतुल कलाम' के लेखक इमाम नसफी और अहले सुन्नत के एक छोटे समूह का अनुसरण किया है। जबकि बहुसंख्यक (जम्हूर) के निकट यह शरीयत के अनुसार असंभव है लेकिन बुद्धि के अनुसार संभव है, जैसा कि 'शर्ह अल-मक़ासिद' और 'अल-मुसामरा' आदि में उल्लेखित है। प्रमाण इसी का समर्थन करते हैं, इसलिए यही सही मत है और इसी पर भरोसा किया जाना चाहिए। अतः सत्य वही है जिसे 'अल-बहर' के लेखक ने अपनाया और 'अल-दुर्र' ने उनका अनुसरण किया। इस विषय पर विस्तृत चर्चा 'रद्द अल-मुह्तार' पर हमारे हाशिये (फुटनोट) में है। (त)

[मुख्य भाग] हाँ, अबू लहब और इबलीस (अल्लाह उन पर लानत करे) से उनकी तुलना करना शुद्ध अतिशयोक्ति और सरासर अन्याय है। अबू तालिब का पूरा जीवन पैगंबर (उन पर और उनके परिवार पर शांति और आशीर्वाद हो) की सेवा, संरक्षण, सहायता और समर्थन में बीता। इसके विपरीत, ये शापित लोग गुप्त और प्रकट रूप से क्षति और हानि पहुँचाने पर आमादा रहे। कहाँ वह व्यक्ति जिसका कार्य प्रशंसा और गुणगान था, और कहाँ वह अभागा जिसका काम निंदा और दोषारोपण था? एक, यद्यपि स्वयं वंचित और इस्लाम से दूर रहा, फिर भी भाग्य के वशीभूत होकर इस्लाम के लाभ में व्यस्त रहा; जबकि दूसरा बहिष्कृत, विद्रोही, कट्टर शत्रु और इस्लाम की बुनियाद को नष्ट करने में पूरी तरह तल्लीन रहा।

शेर: यहाँ मार्ग में कितना अंतर है, कहाँ से कहाँ तक! (इनमें ज़मीन और आसमान का अंतर है। त)

अंतत; क्या आपने नहीं देखा जो सही हदीस में कहा गया है कि अबू तालिब पर सभी काफिरों की तुलना में सबसे कम अज़ाब (दंड) है, जबकि ये अभागे उनमें से हैं जिन पर सबसे कठोर अज़ाब है? अबू तालिब के केवल पैर आग में हैं, जबकि ये शापित उनमें से हैं जिनके लिए:

[निचली तालिका] अरबी: "उनके लिए उनके ऊपर से आग की परतें होंगी और उनके नीचे से भी परतें होंगी।"(1) हिंदी: उनके ऊपर आग की परतें हैं और उनके नीचे आग की परतें हैं। अरबी: "उनके लिए जहन्नम (नरक) का बिछौना होगा और उनके ऊपर (आग के) ओढ़ने के कपड़े होंगे।"(2) हिंदी: उनके नीचे आग का बिछौना और ऊपर आग की रजाई (लिहाफ)।

[पादलेख] सिर से पाँव तक आग, हर तरफ से आग; और हम अल्लाह, संसार के प्रतिपालक की शरण चाहते हैं। (और अल्लाह रब्बुल आलमीन की पनाह। त)

1 अल-कुरान अल-करीम 39/16 2 अल-कुरान अल-करीम 7/41

[اوپر کا جدول] اقول: ومانحا الیہ العلامہ الشامی من عدم جواز عفو الکفر عقلا فانما تبع فیہ الامام النسفی صاحب عمدۃ الکلام وشر ذمۃ قلیلۃ من اھل السنۃ والجمہور علی امتناعہ شرعا وجوازہ عقلا کما فی شرح المقاصد والمسامرۃ وغیرھما و بہ تقضی الدلائل فھو الصحیح وعلیہ التعویل فاذن الحق ما ذھب الیہ البحر وتبعہ فی الدر وتمام الکلام فی ھذا المقام فیما علقناہ علی رد المحتار۔ اقول: (میں کہتا ہوں) جس کا قصد علامہ شامی نے کیا یعنی کفر کی معافی کا عقلاً عدم جواز تو اس میں انہوں نے عمدۃ الکلام کے مصنف امام نسفی اور اہلسنت کے گروہ قلیل کی پیروی کی ہے، جب کہ جمہور کے نزدیک یہ شرعاً ممتنع اور عقلاً جائز ہے جیسا کہ شرح المقاصد اور مسامرہ وغیرہ میں ہے۔ اور دلائل اسی کے مؤید ہیں لہذا یہی صحیح اور اسی پر بھروسا ہے، تو اب حق وہ ہے جس کی طرف صاحب البحر گئے ہیں اور دُر میں اسی کی پیروی کی ہے، اور مکمل کلام اس مقام پر ردالمحتار پر ہمارے حاشیہ میں ہے۔ (ت)

[درمیانی حصہ] ہاں ابولہب وابلیس لعنہما اللہ کی مثل کہنا محض افراط اور خون انصاف کرنا ہے، ابوطالب کی عمر خدمت وکفالت و نصرت و حمایت حضرت رسالت علیہ وعلی آلہ الصلوۃ والتحیۃ میں کٹی اور یہ ملاعنہ درپردہ و علانیہ در پئے ایذاء و اضرار رہے کہاں وہ جس کا وظیفہ مدح و ستائش ہوا اور کہاں وہ شقی جس کا ورد ذم و نکوہش ہو ایک اگرچہ خود محروم اور اسلام سے مصروف مگر بتسخیر تقدیر نفع اسلام میں مصروف اور دوسرا مردود و متمرد و عدو و معاند ہمہ تن کسر بیضہ اسلام میں مشغوف ع یہیں تفاوتِ رہ از کجاست تا بہ کجا (ان میں زمین و آسمان کا فرق ہے۔ ت) آخر نہ دیکھا جو صحیح حدیث میں ارشاد ہوا کہ ابوطالب پر تمام کفار سے کم عقاب

ہے اور یہ اشقیاء ان میں ہیں جن پر اشد العذاب ہے، ابوطالب کے صرف پاؤں آگ میں ہیں اور یہ ملاعنہ اُن میں کہ :

[نیچے کا جدول] "لَهُمْ مِّنْ فَوْقِهِمْ ظُلَلٌ مِّنَ النَّارِ وَمِنْ تَحْتِهِمْ ظُلَلٌ" (1) - اُن کے اوپر آگ کی تہیں ہیں اور اُن کے نیچے آگ کی تہیں ہیں۔ "لَهُمْ مِّنْ جَهَنَّمَ مِهَادٌ وَّمِنْ فَوْقِهِمْ غَوَاشٍ" (2) - ان کے نیچے آگ کا بچھونا اور اوپر آگ کے لحاف۔

[فوٹر] سراپا آگ، ہر طرف سے آگ، والعیاذ باللہ رب العلمین (اور اللہ رب العالمین کی پناہ۔ت)

1 القرآن الکریم ۳۹ / ۱۶ 2 القرآن الکریم ۷ / ۴۱

Fatawa Razawiyya, Volume 29

Rather, the proof of disbelief for both is not the same. In the case of Abu Talib, although the true and correct view is that of disbelief and punishment, and any view to the contrary is rare, rejected, false, and discarded, it still doesn't reach the level where, God forbid, accusing the opponent of disbelief would be possible. On the other hand, the status of those enemies of Allah as disbelievers and eternal inhabitants of Hell is among the necessities of faith, and whoever denies it is himself a disbeliever bound for Hell. Thus, for both parties, neither the disbelief is equal, nor the proof is equal, nor the action is equal, nor the punishment is equal. There is a world of difference in every aspect, so where is the similarity?

Nas'alullah suluka suwa al-sirat wa na'udhu billahi min al-tafreet wal-ifraat. We ask Allah Almighty to keep us on the straight path and seek His protection from excess and negligence. (T)

Ninth Chapter

Mentioning the blessed names of those leaders of religion and trustworthy scholars who explicitly stated and confirmed the disbelief of Abu Talib, and whose narrations have been quoted in this treatise. From among the Sahaba (Companions):

(1) Commander of the Faithful, Siddiq-e-Akbar (2) Commander of the Faithful, Farooq-e-Azam (3) Commander of the Faithful, Ali Murtaza (4) The Sage of the Ummah, our master Abdullah bin Abbas (5) The Preserver of Sahaba, our master Abu Huraira (6) The Companion, son of a Companion, our master Musayyib bin Hazn Qurashi Makhzumi (7) Our master Abbas, uncle of the Messenger of Allah, peace and blessings be upon him (8) Our master Abu Sa'id al-Khudri (9) Our master Jabir bin Abdullah al-Ansari (10) Our master, Mother of the Believers, Umm Salama, may Allah be pleased with all of them (11) Our master Anas bin Malik, servant of the Messenger of Allah, peace and blessings be upon him (12) Our master, Mother of the Believers, Umm Salama, may Allah be pleased with all of them

The statements of the first six individuals have already been mentioned. Anas and Ibn Umar (may Allah be pleased with them) provide supporting evidence, while the remaining four narrate the saying of the Prophet himself (peace and blessings be upon him). It is evident that conveying the Prophet's words here is even more impactful than speaking on one's own behalf.

And from among the Tabi'un (Followers):

(13) The Adam of the People of the Cloak, Zain al-Abidin Ali bin Hussain bin Ali Murtaza, may Allah be pleased with them and honor them. (14) Imam Ata bin Abi Rabah, the teacher of our master Imam al-Azam, may Allah be pleased with him. (15) Imam Muhammad bin Ka'b al-Qurazi, who is among the great Imams of Hadith and Tafsir among the Tabi'un.

फतावा रज़विया, जिल्द 29

बल्कि दोनों के कुफ्र (अविश्वास) का प्रमाण भी एक जैसा नहीं है। अबू तालिब के मामले में, हालाँकि सही और दुरुस्त बात वही कुफ्र और अज़ाब (सज़ा) की है, और इसके विपरीत राय दुर्लभ, खारिज, झूठी और ठुकराई हुई है, फिर भी यह उस स्तर तक नहीं पहुँचती कि माज़अल्लाह (ईश्वर न करे) विरोध करने वाले पर कुफ्र का हुक्म लगाया जाए। दूसरी ओर, अल्लाह के उन दुश्मनों का काफ़िर और शाश्वत नरकवासी होना धर्म की अनिवार्यताओं (ज़रूरियाते दीन) में से है, जिसका इनकार करने वाला स्वयं नरकगामी काफ़िर है। अतः दोनों पक्षों के लिए न कुफ्र एक समान है, न प्रमाण एक समान, न कर्म एक समान और न ही सज़ा एक समान है। हर जगह ज़मीन-आसमान का फ़र्क है, फिर समानता कहाँ?

नसअलुल्लाहा सुलूका सुवा अस्सिराती व नऊज़ु बिल्लाहि मिनत्तफ्रीति वल इफ्रात। हम अल्लाह तआला से सीधे रास्ते पर चलने की दुआ करते हैं, और अति (इफरात) और कमी (तफ़रीत) से उसकी पनाह मांगते हैं। (त)

नवां अध्याय

उन धर्म-गुरुओं और भरोसेमंद विद्वानों के मुबारक नामों का उल्लेख जिन्होंने अबू तालिब के कुफ्र को स्पष्ट और प्रमाणित किया है, और जिनके कथनों का उल्लेख इस शोध-पत्र में हो चुका है। सहाबा (साथियों) में से:

(1) अमीरुल मोमिनीन सिद्दीक़-ए-अकबर (2) अमीरुल मोमिनीन फारूक़-ए-आज़म (3) अमीरुल मोमिनीन अली मुर्तज़ा (4) हब्रुल उम्मत सय्यदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास (5) हाफ़िज़-ए-सहाबा सय्यदुना अबू हुरैरा (6) सहाबी इब्ने सहाबी सय्यदुना मुसय्यब बिन हज़्न क़ुरैशी मख़ज़ूमी (7) हज़रत सय्यदुना अब्बास, अल्लाह के रसूल के चाचा, उन पर अल्लाह की दया और शांति हो (8) सय्यदुना अबू सईद खुदरी (9) सय्यदुना जाबिर बिन अब्दुल्लाह अन्सारी (10) हज़रत सय्यदुना उम्मुल मोमिनीन उम्मे सलमा, अल्लाह उन सब से प्रसन्न हो (11) सय्यदुना अनस बिन मालिक, अल्लाह के रसूल के सेवक, उन पर अल्लाह की दया और शांति हो (12) हज़रत सय्यदुना उम्मुल मोमिनीन उम्मे सलमा, अल्लाह उन सब से प्रसन्न हो

पहले छह व्यक्तियों के तो अपने कथन गुज़र चुके हैं, और अनस व इब्ने उमर (अल्लाह उन सब से प्रसन्न हो) का उल्लेख है, जबकि बाकी चार स्वयं हुज़ूर पुरनूर सय्यद-ए-आलम (अल्लाह की दया और

शांति उन पर हो) का फरमान बयान करते हैं, और यह स्पष्ट है कि यहाँ अपनी बात कहने से पैगम्बर का फरमान बताना और भी अधिक प्रभावशाली है।

और ताबेईन (अनुयायियों) में से:

(13) आले-अबा के आदम ज़ैनुल आबिदीन अली बिन हुसैन बिन अली मुर्तज़ा, अल्लाह उन सब से प्रसन्न हो और उन्हें सम्मानित करे। (14) इमाम अता बिन अबी रबाह, सय्यदुना इमाम-ए-आज़म के उस्ताद, अल्लाह उनसे प्रसन्न हो। (15) इमाम मुहम्मद बिन का'ब क़ुरज़ी जो ताबेईन के महान मुहाद्दिसीन और मुफस्सिरीन में से हैं।

पृष्ठ 742 / 750

بلکہ دونوں کا ثبوت کفر بھی ایک سا نہیں، ابو طالب کے باب میں اگرچہ قولِ حق و صواب وہی کفر و عذاب ، اور اس کا خلاف شاذ و مردود باطل و مطرود پھر بھی اس حد کا نہیں کہ معاذاللہ خلاف پر تکفیر کا احتمال ہو اور ان اعداء اللہ کا کافر و ابدی جہنمی ہونا تو ضروریاتِ دین سے ہے جس کا منکر خود جہنمی کافر، تو فریقین کا نہ کفر یکساں نہ ثبوت یکساں، نہ عمل یکساں نہ سزا یکساں، ہر جگہ فرق زمین و آسمان، پھر مماثلت کہاں۔

نسأل اللہ سلوك سوی الصراط ونعوذ باللہ من التفریط والافراط ہم اللہ تعالٰی سے سیدھے راستے پر چلنے کا سوال کرتے ہیں، اور افراط و تفریط سے اس کی پناہ مانگتے ہیں۔ (ت)

فصل نہم

ان ائمہ دین و علمائے معتمدین کے ذکر اسمائے طیبہ میں جنہوں نے کفرِ ابی طالب کی تصریح و تصحیح فرمائی اور اُن کے ارشادات کی نقل اس رسالہ میں گزری، فمن الصحابۃ:

(۱) امیر المؤمنین صدیق اکبر (۲) امیر المؤمنین فاروق اعظم (۳) امیر المؤمنین علی مرتضٰی (۴) حبر الامتہ سیدنا عبداللہ بن عباس (۵) حافظ الصحابہ سیدنا ابوہریرہ (۶) صحابی ابن الصحابی سیدنا مسیب بن حزن قریشی مخزومی (۷) حضرت سیدنا عباس عم رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم (۸) سیدنا ابو سعید خدری (۹) سیدنا جابر بن عبداللہ انصاری (۱۰) حضرت سید تنام المومنین ام سلمہ رضی اللہ تعالٰی عنہم اجمعین (۱۱) سیدنا انس بن مالک خادم رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم (۱۲) حضرت سید تنام المومنین ام سلمہ رضی اللہ تعالٰی عنہم اجمعین

پہلے چھ حضرات سے تو خود ان کے اقوال گزرے اور انس وابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہم کی تقریر اور باقی چار خود حضور پُرنور سید عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے ارشاد بیان فرماتے ہیں، اور ظاہر ہے کہ یہاں اپنے کہنے سے نبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کا ارشاد بتانا اور بھی ابلغ ہے۔

ومن التابعین:

(۱۳) آدم آلِ عبا زین العابدین علی بن حسین بن علی مرتضیٰ رضی اللہ تعالیٰ عنہم و کرم وجوھہم۔ (۱۴) امام عطاء بن ابی رباح استاذ سیدنا الامام الاعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہا۔ (۱۵) امام محمد بن کعب قرظی کہ اجلہ ائمہ محدثین و مفسرین تابعین سے ہیں۔

Fatawa Ridawiyya, Volume 29

(16) Sa'id bin Muhammad Abu al-Safar, a Successor (Tabi'i), son of a Successor, son of a Companion (Sahabi), the grandson of our master Jubayr ibn Mut'im, may Allah be pleased with him. (17) The Imam of Imams, the Lamp of the Ummah, our master Imam al-A'zam Abu Hanifa, may Allah be pleased with him.

And from those who followed the Successors (Taba' al-Tabi'in): (18) The Scholar of Madinah, the Imam of the Abode of Hijra, our master Imam Malik, may Allah be pleased with him. (19) The compiler of the school of thought, the reference of the world in jurisprudence and knowledge, our master Imam Muhammad, may Allah be pleased with him. (20) The Imam of Exegesis (Tafsir), Muqatil al-Balkhi. (21) The Sultan of Islam, the Caliph of the Muslims, whose arrival our master Abdullah ibn Abbas, may Allah be pleased with them both, gave glad tidings of, saying:

"From us will be as-Saffah, from us will be al-Mansur, and from us will be al-Mahdi." Narrated by al-Khatib, Ibn Asakir, and others through Sa'id bin Jubayr from him. Al-Suyuti said: Al-Dhahabi said its chain of narration (isnad) is sound.	"Amongst us will be as-Saffah, amongst us will be al-Mansur, and amongst us will be al-Mahdi." (Al-Khatib and Ibn Asakir etc. narrated this through Sa'id bin Jubayr, and through the same chain Imam al-Suyuti stated that al-Dhahabi said its chain is sound. - T)

Rather, these same words came from the Prophet, peace and blessings of Allah be upon him, in two hadiths:

It was likewise narrated by al-Khatib through al-Dahhak from Ibn Abbas, and by Ibn Asakir within a hadith from Abu Sa'id al-Khudri, may Allah be pleased with them, tracing it back (marfu') to the Prophet, peace and blessings of Allah be upon him.	Al-Khatib narrated it in the same way through al-Dahhak from our master Ibn Abbas (may Allah be pleased with them), while Ibn Asakir narrated it within a hadith from Hazrat Abu Sa'id al-Khudri (may Allah be pleased with him), and both of them traced its chain back to the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him). (T)

Meaning Imam Abu Ja'far al-Mansur, the grandson of the cousin of the Messenger of Allah, peace and blessings of Allah be upon him.

And from the followers of the Successors and those who followed them: (22) The Imam of the world in memorization and Hadith, Abu Abdullah Muhammad bin Isma'il

al-Bukhari. (23) The exalted Imam, Abu Dawood Sulayman bin al-Ash'ath al-Sijistani. (24) Imam Abdur Rahman Ahmad bin Shu'ayb an-Nasa'i.

फ़तावा रज़विया, खंड 29

(16) सईद बिन मुहम्मद अबू अल-सफ़र ताबई, ताबई के पुत्र, सहाबी के पुत्र, हमारे स्वामी जुबैर बिन मुतइम के पोते, अल्लाह उन पर प्रसन्न हो। (17) इमामों के इमाम, उम्मत के चिराग, हमारे स्वामी इमाम-ए-आज़म अबू हनीफ़ा, अल्लाह उन पर प्रसन्न हो।

और तबे ताबेईन में से: (18) मदीना के विद्वान, दार अल-हिजरा के इमाम, हमारे स्वामी इमाम मालिक, अल्लाह उन पर प्रसन्न हो। (19) मज़हब के संकलनकर्ता, फ़िक़्ह और इल्म में दुनिया के संदर्भ, हमारे स्वामी इमाम मुहम्मद, अल्लाह उन पर प्रसन्न हो। (20) तफ़सीर के इमाम मुक़ातिल बल्खी। (21) इस्लाम के सुल्तान, मुसलमानों के खलीफ़ा, जिनके आने की हमारे स्वामी अब्दुल्ला बिन अब्बास (अल्लाह उन दोनों पर प्रसन्न हो) ने खुशखबरी दी थी कि:

"हममें से सफ़ाह होगा, हममें से मंसूर होगा और हममें से महदी होगा।" अल-खतीब, इब्न असाकिर और अन्यों ने सईद बिन जुबैर के माध्यम से उनसे रिवायत किया। अल-सुयुती ने कहा: ज़हबी ने कहा कि इसकी सनद सही है।

"हममें से सफ़ाह होगा और हममें से मंसूर और हममें से महदी होगा।" (इसे खतीब और इब्न असाकिर आदि ने सईद बिन जुबैर के माध्यम से रिवायत किया और इसी के माध्यम से इमाम सुयुती ने कहा: ज़हबी ने कहा इसकी सनद सही है। - त)

बल्कि दो हदीसों में यही शब्द नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से आए हैं:

इसे इसी तरह अल-खतीब ने ज़हक के माध्यम से इब्न अब्बास से रिवायत किया, और इब्न असाकिर ने अबू सईद खुदरी (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) से एक हदीस के तहत रिवायत किया और इसे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक पहुँचाया।

इसे इसी तरह खतीब ने ज़हक के माध्यम से सैय्यदना इब्न अब्बास (रज़ीअल्लाहु अन्हुमा) से रिवायत किया जब कि इब्न असाकिर ने एक हदीस के तहत हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़ीअल्लाहु अन्हु) से रिवायत किया और उन दोनों ने इसे नबी-ए-करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) तक पहुँचाया। (त)

यानी इमाम अबू जाफ़र मंसूर, अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के चचेरे भाई के पोते।

और तबे ताबेईन के अनुयायियों और उनके बाद आने वालों में से: (22) हिफ़्ज़ और हदीस में दुनिया के इमाम, अबू अब्दुल्ला मुहम्मद बिन इस्माइल बुखारी। (23) महान इमाम अबू दाऊद सुलेमान बिन अशअथ सिजिस्तानी। (24) इमाम अब्दुर्रहमान अहमद बिन शुएब नसाई।

(۱۶) سعید بن محمد ابوالسفر تابعی ابن التابعی ابن الصحابی نبیرہ سیدنا جبیر بن مطعم رضی اللہ تعالٰی عنہ۔ (۱۷) امام الائمہ سراج الامہ سیدنا امام اعظم ابو حنیفہ رضی اللہ تعالٰی عنہ۔

ومن تبع تابعین: (۱۸) عالم المدینہ امام دار الہجرۃ سیدنا امام مالک رضی اللہ تعالٰی عنہ۔ (۱۹) محرر المذہب مرجع الدنیا فی الفقہ والعلم سیدنا امام محمد رضی اللہ تعالٰی عنہ (۲۰) امام تفسیر مقاتل بلخی (۲۱) سلطان اسلام خلیفہ المسلمین جن کے آنے کی سیدنا عبداللہ بن عباس رضی اللہ تعالٰی عنہما نے بشارت دی تھی کہ:

منا السفاح ومنا المنصور ومنا المهدی رواه الخطیب و ابن عساکر وغیرہما بطریق سعید بن جبیر عنہ قال السیوطی قال الذهبی اسناده صالح۔

ہمیں میں سے ہوگا سفاح اور ہمیں میں منصور اور ہمیں میں مہدی۔ (اس کو خطیب و ابن عساکر وغیرہ نے سعید بن جبیر کے طریق سے روایت کیا اور اسی کے طریق سے امام سیوطی نے کہا: ذہبی نے کہا اس کا اسناد صالح ہے۔ ت)

بلکہ دو حدیثوں میں یہی الفاظ نبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم سے آئے:

رواه کذلک الخطیب من طریق الضحاک عن ابن عباس وابن عساکر فی ضمن حدیث عن ابی سعید الخدری رضی اللہ تعالٰی عنہم رفعہ الی النبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم۔

اس کو اسی طرح خطیب نے بطریق ضحاک سیدنا ابن عباس رضی اللہ تعالٰی عنہما سے روایت کیا جب کہ ابن عساکر نے ایک حدیث کے ضمن میں حضرت ابوسعید خدری رضی اللہ تعالٰی عنہ سے روایت کیا اور ان دونوں

نے اس کا رفع نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم تک کیا۔

(ت)

اعنی امام ابو جعفر منصور نبیرہ زادہ ابن عم رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم۔

ومن اتباع التبع ومن یلیھم: (۲۲) امام الدنیا فی الحفظ والحدیث ابو عبد اللہ محمد بن اسمعیل بخاری۔

(۲۳) امام اجل ابو داؤد سلیمان بن اشعث سجستانی (۲۴) امام عبدالرحمن احمد بن شعیب نسائی۔

Volume 29 Fatawa Razawiya

(25) Imam Abu Abdullah bin Yazid Ibn Majah al-Qazwini. These four Imams are famous authors of the 'Sihah' (authentic collections), and this is the final category according to Abdullah bin al-Mu'tazz.

And from those after them from the Commentators (Mufassirin): (26) Imam Muhyi-us-Sunnah Abu Muhammad Husain bin Mas'ud al-Farra' al-Baghawi. (27) Imam Abu Ishaq Zajjaj Ibrahim bin al-Sari. (28) Jar-Allah Mahmood bin Umar al-Khwarazmi al-Zamakhshari. (29) Abul Hasan Ali bin Ahmad al-Wahidi al-Nishapuri, author of al-Basit, al-Wasit, and al-Wajiz. (30) Imam al-Ajal Muhammad bin Umar Fakhr-ud-Din al-Razi. (31) Qadi al-Qudat Shihab-ud-Din bin Khalil al-Khuwi al-Dimashqi, [author of] al-Mukammil al-Kabir. (32) Allama Qutb-ud-Din Muhammad bin Mas'ud bin Mahmud bin Ibn Abi al-Fath al-Sirafi al-Shaffar, author of al-Taqrib. (33) Imam Nasir-ud-Din Abu Sa'id Abdullah bin Umar al-Baydawi. (34) Imam Allamatul-Wujud, Mufti of the Roman lands, Abu al-Su'ud bin Muhammad al-Imadi. (35) Allama Ala-ud-Din Ali bin Muhammad bin Ibrahim al-Baghdadi al-Sufi, author of the exegesis 'Lubab', famous as 'al-Khazin'. (36) Imam Jalal-ud-Din Muhammad bin Ahmad al-Mahalli. (37) Allama Sulayman al-Jamal and others who will follow.

And from the Muhaddithin and Commentators (Sharhin): (38) Imam al-Ajal Ahmad bin Husain al-Bayhaqi. (39) Hafiz al-Sham Abu al-Qasim Ali bin Husain bin Hibat-Allah al-Dimashqi, famous as Ibn Asakir. (40) Imam Abul Hasan Ali bin Khalaf, known as Ibn Battal al-Maghribi, commentator of Sahih Bukhari. (41) Imam Abu al-Qasim Abdur Rahman bin Ahmad al-Suhayli. (42) Imam Hafiz al-Hadith, Allama al-Fiqh Abu Zakariyya Yahya bin Sharaf al-Nawawi. (43) Imam Abul Abbas Ahmad bin Umar bin Ibrahim al-Qurtubi, commentator of Sahih Muslim. (44) Imam Abul Sa'adat Mubarak bin Muhammad Abil Karam, known as Ibn al-Athir al-Jazari, author of al-Nihayah and Jami' al-Usul. (45) Imam al-Jalil Muhibb-ud-Din Ahmad bin Abdullah al-Tabari. (46) Imam Sharaf-ud-Din Hasan bin Muhammad al-Tibi, commentator of Mishkat.

(२५) इमाम अबू अब्दुल्लाह बिन यज़ीद इब्न माजा अल-क़ज़वीनी। ये चारों इमाम 'सिहाह' (प्रसिद्ध प्रामाणिक संग्रहों) के लेखक हैं और यही अब्दुल्लाह बिन अल-मुअतज़ के अनुसार अंतिम श्रेणी है।

और उनके बाद मुफ़स्सिरीन (कुरान के व्याख्याकार) में से: (२६) इमाम मुह्यी-उस-सुन्नाह अबू मुहम्मद हुसैन बिन मसूद अल-फ़र्रा अल-बग़वी। (२७) इमाम अबू इसहाक़ ज़ज्जाज इब्राहीम बिन अल-सरी। (२८) जार-अल्लाह महमूद बिन उमर अल-ख़्वारिज़मी अज़-ज़मख़्शरी। (२९) अबुल हसन अली बिन अहमद अल-वाहिदी अल-निशापुरी, जो अल-बसीत, अल-वसीत और अल-वजीज़ के लेखक हैं। (३०) इमाम अल-अजल मुहम्मद बिन उमर फ़ख़्र-उद-दीन अल-राज़ी। (३१) क़ाज़ी अल-क़ुज़ात शिहाब-उद-दीन बिन ख़लील अल-खुवी अल-दिमश्क़ी, [लेखक] अल-मुकम्मिल अल-कबीर। (३२) अल्लामा क़ुत्ब-उद-दीन मुहम्मद बिन मसूद बिन महमूद बिन इब्न अबी अल-फ़तह अल-सीराफ़ी अल-शफ़्फ़ार, तक़रीब के लेखक। (३३) इमाम नासिर-उद-दीन अबू सईद अब्दुल्लाह बिन उमर अल-बैज़ावी। (३४) इमाम अल्लामतुल-वजूद, रोमी देशों के मुफ़्ती, अबू अल-सऊद बिन मुहम्मद अल-इमादी। (३५) अल्लामा अला-उद-दीन अली बिन मुहम्मद बिन इब्राहीम अल-बग़दादी अल-सूफ़ी, तफ़्सीर 'लुबाब' के लेखक, जो 'अल-ख़ाज़िन' के नाम से प्रसिद्ध है। (३६) इमाम जलाल-उद-दीन मुहम्मद बिन अहमद अल-महील्ली। (३७) अल्लामा सुलेमान अल-जमल और अन्य जो आएंगे।

और मुहद्दीसीन (हदीस के विद्वान) और शारेहीन (व्याख्याकारों) में से: (३८) इमाम अल-अजल अहमद बिन हुसैन अल-बैहक़ी। (३९) हाफ़िज़ अल-शाम अबू अल-क़ासिम अली बिन हुसैन बिन हिबत-अल्लाह अल-दिमश्क़ी, जो इब्न असाकिर के नाम से प्रसिद्ध हैं। (४०) इमाम अबुल हसन अली बिन खलफ़, जो इब्न बत्ताल अल-मग़रिबी के नाम से जाने जाते हैं, सहीह बुखारी के व्याख्याकार। (४१) इमाम अबू अल-क़ासिम अब्दुर रहमान बिन अहमद अल-सुहैली। (४२) इमाम हाफ़िज़ अल-हदीस, अल्लामा अल-फ़िक़्ह अबू ज़करिया यहया बिन शरफ़ अल-नववी। (४३) इमाम अबुल अब्बास अहमद बिन उमर बिन इब्राहीम अल-क़ुर्तुबी, सहीह मुस्लिम के व्याख्याकार। (४४) इमाम अबुल सहादत मुबारक बिन मुहम्मद अबिल करम, जो इब्न अल-असीर अल-जज़री के नाम से जाने जाते हैं, अल-निहाया और जामी अल-उसूल के लेखक। (४५) इमाम अल-जलील मुहिब-उद-दीन अहमद बिन अब्दुल्लाह अल-तबरी। (४६) इमाम शरफ़-उद-दीन हसन बिन मुहम्मद अल-तीबी, मिश्कात के व्याख्याकार।

(۲۵) امام ابو عبداللہ بن یزید ابن ماجہ قزوینی۔ یہ چاروں ائمہ اصحاب صحاح مشہورہ ہیں اور یہی طبقہ اخیر ہ عبداللہ بن المعتز کا ہے۔

ومن بعدھم من المفسرین: (۲۶) امام محی السنہ ابو محمد حسین بن مسعود فراء بغوی (۲۷) امام ابو اسحق زجاج ابراہیم بن السری۔ (۲۸) جار اللہ محمود بن عمر خوارزمی زمخشری (۲۹) ابو الحسن علی بن احمد واحدی نیشاپوری صاحب بسیط و وسیط و وجیز۔ (۳۰) امام اجل محمد بن عمر فخر الدین رازی۔ (۳۱) قاضی القضاۃ شہاب الدین بن خلیل خوبی دمشقی مکمل الکبیر۔ (۳۲) علامہ قطب الدین محمد بن مسعود بن محمود بن ابن ابی الفتح سیرافی شفار صاحبِ تقریب۔ (۳۳) امام ناصر الدین ابو سعید عبد اللہ بن عمر بیضاوی۔ (۳۴) امام علامۃ الوجود مفتی ممالک رومیہ ابو السعود بن محمد عمادی۔ (۳۵) علامہ علاء الدین علی بن محمد بن ابراہیم بغدادی صوفی صاحبِ تفسیر لباب شہیر بہ خازن۔ (۳۶) امام جلال الدین محمد بن احمد محلی۔ (۳۷) علامہ سلیمان جمل و غیر ہم من یاتی

ومن المحدثین والشارحین: (۳۸) امام اجل احمد بن حسین بیہقی (۳۹) حافظ الشام ابو القاسم علی بن حسین بن ہبتہ اللہ دمشقی شہیر بابن عساکر۔ (۴۰) امام ابو الحسن علی بن خلف معروف بابن بطال مغربی شارح صحیح بخاری۔ (۴۱) امام ابو القاسم عبدالرحمن بن احمد سہیلی۔ (۴۲) امام حافظ الحدیث علامۃ الفقہ ابوز کریا یحییٰ بن شرف نووی۔ (۴۳) امام ابوالعباس احمد بن عمر بن ابراہیم قرطبی شارح صحیح مسلم۔ (۴۴) امام ابوالسعادات مبارک بن محمد ابی الکرم معروف بابن اثیر جزری صاحب نہایہ و جامع الاصول۔ (۴۵) امام جلیل محب الدین احمد بن عبد اللہ الطبری۔ (۴۶) امام شرف الدین حسن بن محمد طیبی شارح مشکوٰۃ۔

Fatawa Razawiyya Volume 29

(47) Imam Shams al-Din Muhammad ibn Yusuf ibn Ali al-Kirmani, commentator of Sahih al-Bukhari. (48) Allama Majd al-Din Muhammad ibn Yaqub al-Fayruzabadi, author of al-Qamus. (49) Imam, the Great Hafiz Abu al-Fadl Shihab al-Din Ahmad ibn Hajar al-Asqalani. (50) The illustrious Imam Badr al-Din Abu Muhammad Mahmud ibn Ahmad al-Ayni. (51) Imam Shihab al-Din Abu al-Abbas Ahmad ibn Idris al-Qarafi, author of Tanqih al-Usul. (52) Imam, Seal of the Hadith Masters, Jalal al-Millah wa al-Din Abu al-Fadl Abd al-Rahman ibn Abi Bakr al-Suyuti. (53) Imam Shihab al-Din Abu al-Abbas Ahmad ibn Khatib al-Qastallani, commentator of Sahih al-Bukhari. (54) Allama Abd al-Rahman ibn Ali al-Shaybani, student of Imam Shams al-Din al-Sakhawi. (55) Allama Qadi Husayn ibn Muhammad ibn Husayn Diyar Bakri al-Makki. (56) Mawlana al-Fadil Ali ibn Sultan Muhammad al-Qari al-Harawi al-Makki. (57) Allama Zayn al-Abidin Abd al-Rauf Muhammad Shams al-Din al-Munawi. (58) Imam Shihab al-Din Ahmad ibn Hajar al-Makki. (59) Shaykh Taqi al-Din Ahmad ibn Ali al-Maqrizi al-Ikhbari. (60) Sayyid Jamal al-Din Ata Allah ibn Fadl Allah al-Shirazi, author of Rawdat al-Ahbab. (61) Imam, Gnostic of Allah, Sayyidi Ala al-Millah wa al-Din Ali ibn Husam al-Din al-Muttaqi al-Makki. (62) Allama Shihab al-Din Ahmad al-Khafaji, commentator of al-Shifa. (63) Allama Ali ibn Ahmad ibn Muhammad ibn Ibrahim al-Azizi. (64) Allama Muhammad al-Hafni, annotator of Afdal al-Qura. (65) Allama Tahir al-Patni, author of Majma' Bihar al-Anwar. (66) Shaykh al-Muhaqqiq Mawlana Abd al-Haq ibn Sayf al-Din al-Bukhari. (67) Allama Muhammad ibn Abd al-Baqi ibn Yusuf al-Zurqani al-Misri. (68) The learned Muhammad ibn Ali al-Sabban al-Misri, author of Is'af al-Raghibin, and others who have passed and who are yet to come.

And from the Jurists and Legal Theorists: (69) The most venerable Imam, Shaykh al-Islam wa al-Muslimin, Ali ibn Abi Bakr Burhan al-Din al-Farghani, author of al-Hidayah. (70) Imam Abu al-Barakat Abd Allah ibn Ahmad Hafiz al-Din al-Nasafi, author of Kanz.

(47) इमाम शम्स उद्दीन मुहम्मद बिन यूसुफ़ बिन अली किरमानी, सहीह बुख़ारी के व्याख्याता। (48) अल्लामा मजद उद्दीन मुहम्मद बिन याक़ूब फ़ीरोज़ाबादी, 'अल-क़ामूस' के लेखक। (49) इमाम हाफ़िज़-उल-शान अबू अल-फ़ज़्ल शिहाब उद्दीन अहमद बिन हजर असक़लानी। (50) इमाम जलील बद्र उद्दीन अबू मुहम्मद महमूद बिन अहमद ऐनी। (51) इमाम शिहाब उद्दीन अबुल अब्बास अहमद बिन इदरीस क़राफ़ी, 'तन्क़ीह अल-उसूल' के लेखक। (52) इमाम ख़ातमुल हुफ़्फ़ाज़ जलाल अल-मिल्लह वद-दीन अबू अल-फ़ज़्ल अब्दुर्रहमान बिन अबी बक्र सुयूती। (53) इमाम शिहाब उद्दीन अबुल अब्बास अहमद बिन खतीब क़स्तलानी, सहीह बुख़ारी के व्याख्याता। (54) अल्लामा अब्दुर्रहमान बिन अली शैबानी, इमाम शम्स उद्दीन सखावी के शिष्य। (55) अल्लामा क़ाज़ी हुसैन बिन मुहम्मद बिन हुसैन दियार बकरी मक्की। (56) मौलाना अल-फ़ाज़िल अली बिन सुल्तान मुहम्मद क़ारी हरवी मक्की। (57) अल्लामा ज़ैनुल आबिदीन अब्दुर रऊफ़ मुहम्मद शम्स उद्दीन मुनावी। (58) इमाम शिहाब उद्दीन अहमद बिन हजर मक्की। (59) शैख़ तक़ी उद्दीन अहमद बिन अली मक़रीज़ी इख़बारी। (60) सय्यद जमाल उद्दीन अताउल्लाह बिन फ़ज़्लुल्लाह शीराज़ी, 'रौज़तुल अहबाब' के लेखक। (61) इमाम आरिफ़ बिल्लाह सय्यदी अला अल-मिल्लह वद-दीन अली बिन हुसाम उद्दीन मुत्तक़ी मक्की। (62) अल्लामा शिहाब उद्दीन अहमद ख़फ़ाजी, 'शिफ़ा' के व्याख्याता। (63) अल्लामा अली बिन अहमद बिन मुहम्मद बिन इब्राहीम अज़ीज़ी। (64) अल्लामा मुहम्मद हफ़नी, 'अफ़ज़ल अल-क़ुरा' के हाशिया लेखक। (65) अल्लामा ताहिर फ़तनी, 'मजमा बिहार अल-अनवार' के लेखक। (66) शैख़ मोहक़्क़िक़ मौलाना अब्दुल हक़ बिन सैफ़ उद्दीन बुख़ारी। (67) अल्लामा मुहम्मद बिन अब्दुल बाक़ी बिन यूसुफ़ ज़रक़ानी मिस्री। (68) फ़ाज़िल मुहम्मद बिन अली सब्बान मिस्री, 'इसआफ़ अर-रागेबीन' के लेखक और वे सब जो गुज़र चुके और आने वाले हैं।

और फुक़हा (विधिवेत्ताओं) और उसूलियों में से: (69) इमाम अजल शैख़ुल इस्लाम वल मुस्लिमीन अली बिन अबी बक्र बुरहान उद्दीन फ़रग़ानी, 'हिदाया' के लेखक। (70) इमाम अबुल बरकात अब्दुल्लाह बिन अहमद हाफ़िज़ उद्दीन नफ़ी, 'कंज' के लेखक।

(۴۷) امام شمس الدین محمد بن یوسف بن علی کرمانی شارح صحیح بخاری۔ (۴۸) علامہ مجد الدین محمد بن یعقوب فیروز آبادی صاحب القاموس۔ (۴۹) امام حافظ الشان ابو الفضل شہاب الدین احمد بن حجر عسقلانی۔ (۵۰) امام جلیل بدر الدین ابو محمد محمود بن احمد عینی۔ (۵۱) امام شہاب الدین ابوالعباس احمد بن ادریس قرافی صاحب تنقیح الاصول۔ (۵۲) امام خاتم الحفاظ جلال الملۃ والدین ابو الفضل عبد الرحمن بن ابی بکر سیوطی۔ (۵۳) امام شہاب الدین ابو العباس احمد بن خطیب قسطلانی شارح صحیح بخاری۔ (۵۴) علامہ عبدالرحمن بن علی شیبانی تلمیذ امام شمس الدین سخاوی۔ (۵۵) علامہ قاضی حسین بن محمد بن حسین دیار بکری مکی۔ (۵۶) مولانا الفاضل علی بن سلطان محمد قاری ہروی مکی۔ (۵۷) علامہ زین العابدین عبد الرؤف محمد شمس الدین مناوی۔ (۵۸) امام شہاب الدین احمد بن حجر مکی۔ (۵۹) شیخ تقی الدین احمد بن علی مقریزی اخباری۔ (۶۰) سید جمال الدین عطاء اللہ بن فضل اللہ شیرازی صاحب روضتۃ الاحباب (۶۱) امام عارف باللہ سیدی علاء الملۃ والدین علی بن حسام الدین متقی مکی۔ (۶۲) علامہ شہاب الدین احمد خفاجی شارح شفاء (۶۳) علامہ علی بن احمد بن محمد بن ابراہیم عزیزی۔ (۶۴) علامہ محمد حفنی محشی افضل القری (۶۵) علامہ طاہر فتنی صاحب مجمع بحار الانوار (۶۶) شیخ محقق مولانا عبدالحق بن سیف الدین بخاری (۶۷) علامہ محمد بن عبدالباقی بن یوسف زرقانی مصری (۶۸) فاضل محمد بن علی صبان مصری صاحب اسعاف الراغبین وغیر ہم ممن مضٰی ویجیئ۔

ومن الفقہاء والاصولیین: (۶۹) امام اجل شیخ الاسلام والمسلمین علی بن ابی بکر برہان الدین فرغانی صاحب ہدایہ (۷۰) امام ابوالبرکات عبد اللہ بن احمد حافظ الدین نسفی صاحب کنز۔

Volume 29 Fatawa Razawiya

(71) Imam Muhaqqiq 'ala al-Itlaq Kamal al-Din Muhammad bin al-Humam. (72) Imam Jalal al-Din Kurlani, author of Kifayah. (73) Imam Muhaqqiq Muhammad bin Muhammad bin Muhammad bin Amir al-Hajj al-Halabi. (74) Imam Ibrahim bin Musa Tarabulusi al-Misri, author of Mawahib al-Rahman. (75) Allama Ibrahim bin Muhammad Halabi, commentator of Munyah. (76) Allama Sa'd al-Din Mas'ud bin 'Umar al-Taftazani. (77) Allama Muhaqqiq Zain bin Nujaym al-Misri, author of Bahr. (78) Malik al-Ulama Bahr al-Ulum Abd al-Ali Muhammad Lakhnawi. (79) Allama Sayyid Ahmad Misri Tahtawi. (80) Allama Sayyid Muhammad Afandi ibn Abidin Shami and others from those who preceded them, may Allah Almighty have mercy on them all, those who came later and those who came before. Ameen. (In addition to these, other scholars who have been mentioned before, may Allah Almighty have mercy on all our later and earlier scholars. Ameen. - T)

Chapter Ten: Names of the books whose quotations regarding Abu Talib are mentioned in this treatise:

Books of Exegesis (Tafsir): (1) Ma'alim al-Tanzil by Imam Baghawi (2) Madarik al-Tanzil by Imam Nasafi (3) Anwar al-Tanzil by Imam Baydawi (4) Irshad al-'Aql al-Salim ila Mazaya al-Kitab al-Karim by al-Mufti Allama al-Imadi (5) Kashshaf Haqa'iq al-Tanzil by al-Zamakhshari (6) Mafatih al-Ghayb by Imam al-Razi (7) Takmilat al-Mafatih by al-Shams al-Khubi (8) Jalalayn (9) Futuhat al-Ilahiyyah by Shaykh Sulayman (10) 'Inayat al-Qadi wa Kifayat al-Radi by Allama al-Shihab (11) Ma'ani al-Qur'an by al-Zajjaj (12) Futuh al-Ghayb by al-Tibi (13) Taqrib Mukhtasar al-Kashshaf by al-Yisrafi (14) Al-Basit by al-Wahidi (15) Lubab al-Ta'wil fi Ma'ani al-Tanzil by Allama al-Khazin (16) Al-Ahkam li-Bayan ma fi al-Qur'an min al-Ibham by al-Asqalani.

जिल्द २९ फ़तावा रज़विया

(७१) इमाम मुहक़्क़िक़ अला अल-इतलाक़ कमालुद्दीन मुहम्मद बिन अल-हुमाम। (७२) इमाम जलालुद्दीन कुरलानी, किफ़ाया के लेखक। (७३) इमाम मुहक़्क़िक़ मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन मुहम्मद इब्न अमीर अल-हाज हलबी। (७४) इमाम इब्राहिम बिन मूसा तराबलुसी मिस्री, मवाहिब अल-रहमान के लेखक। (७५) अल्लामा इब्राहिम बिन मुहम्मद हलबी, मुन्या के व्याख्याकार। (७६) अल्लामा साद अल-दीन मसूद बिन उमर तफ़्ताज़ानी। (७७) अल्लामा मुहक़्क़िक़ ज़ैन बिन नुजैम मिस्री, बह्र के लेखक। (७८) मलिक अल-उलमा बह्र अल-उलूम अब्दुल अली मुहम्मद लखनवी। (७९) अल्लामा सैयद अहमद मिस्री तहतावी। (८०) अल्लामा सैयद मुहम्मद अफ़ंदी इब्न आबिदीन शामी और अन्य, जो उनसे पहले थे, अल्लाह तआला उन सभी पर रहम करे, जो बाद में आए और जो पहले आए। आमीन। (इनके अलावा अन्य विद्वान जिनका उल्लेख पहले किया जा चुका है, अल्लाह तआला हमारे सभी बाद वाले और पहले वाले विद्वानों पर रहम फरमाए। आमीन। - त)

दसवां अध्याय: उन पुस्तकों के नाम जिनके अबू तालिब के संबंध में उद्धरण इस शोधपत्र में दिए गए हैं:

तफ़सीर की पुस्तकें(कुरान की व्याख्या): (१) मआलिम अल-तन्ज़ील - इमाम बग़वी (२) मदारिक अल-तन्ज़ील - इमाम नसफ़ी (३) अनवार अल-तन्ज़ील - इमाम बैज़ावी (४) इरशाद अल-अक़्ल अल-सलीम इला मज़ाया अल-किताब अल-करीम - मुफ़्ती अल्लामा अल-इमादी (५) कशशाफ़ हक़ायिक़ अल-तन्ज़ील - अल-ज़मख़्शरी (६) मफ़ातीह अल-ग़ैब - इमाम अल-राज़ी (७) तक्मिलत अल-मफ़ातीह - अल-शम्स अल-खूबी (८) जलालेन (९) फ़ुतूहात अल-इलाहिया - शेख सुलेमान (१०) इनायत अल-क़ाज़ी व किफ़ायत अल-राज़ी - अल्लामा अल-शिहाब (११) मआनी अल-क़ुरान - अल-ज़ज्जाज (१२) फ़ुतूह अल-ग़ैब - अल-तीबी (१३) तक़रीब मुख्तसर अल-कशशाफ़ - अल-यिसराफ़ी (१४) अल-बसीत - अल-वाहिदी (१५) लुबाब अल-तावील फ़ी मआनी अल-तन्ज़ील - अल्लामा अल-ख़ाज़िन (१६) अल-अहकाम लि-बयान मा फ़ी अल-क़ुरान मिन अल-इबहाम - अल-असक़लानी।

पृष्ठ ७४६ (७५० में से)

(۷۱) امام محقق علی الاطلاق کمال الدین محمد بن الھمام۔ (۷۲) امام جلال الدین کر لالی صاحب کفایہ۔ (۷۳) امام محقق محمد بن محمد بن محمد ابن امیر الحاج حلبی۔ (۷۴) امام ابراہیم بن موسی طرابلسی مصری صاحب مواہب الرحمن۔ (۷۵) علامہ ابراہیم بن محمد حلبی شارح منیہ (۷۶) علامہ سعد الدین مسعود بن عمر تفتازانی۔ (۷۷) علامہ محقق زین بن نجیم مصری صاحب بحر۔ (۷۸) ملک العلماء بحر العلوم عبد العلی محمد لکھنوی۔ (۷۹) علامہ سید احمد مصری طحطاوی۔ (۸۰) علامہ سید محمد افندی ابن عابدین شامی وغیرہم ممن تقدم رحمہم اللہ تعالٰی جمیعاً من تأخر منھم و من قدم آمین (اس کے علاوہ دیگر علماء جن کا پہلے ذکر ہوچکا ہے، اللہ تعالٰی ہمارے تمام علماء متاخرین و متقدمین پر رحم فرمائے۔ آمین۔ ت)

فصل دہم: ان کتابوں کے نام جن کی نقول دربارہ ابوطالب اس رسالہ میں مذکور ہوئیں:

کتب تفسیر: (۱) معالم التنزیل امام بغوی (۲) مدارک التنزیل امام نسفی (۳) انوار التنزیل امام بیضاوی (۴) ارشاد العقل السلیم الی مزایا الکتاب الکریم للمفتی العلامۃ العمادی (۵) کشاف حقائق التنزیل للزمخشری (۶) مفاتیح الغیب للامام الرازی (۷) تکملۃ المفاتیح للشمس الخوبی (۸) جلالین (۹) فتوحات الہیہ للشیخ سلیمان (۱۰) عنایۃ القاضی وکفایۃ الراضی للعلامۃ الشھاب (۱۱) معانی القرآن للزجاج (۱۲) فتوح الغیب للطیبی (۱۳) تقریب مختصر الکشاف للیسرافی (۱۴) بسیط للواحدی (۱۵) لباب التاویل فی معانی التنزیل للعلامۃ الخازن (۱۶) الاحکام لبیان مافی القرآن من الابہام للعسقلانی۔

Fatawa Ridawiyya Volume 29

Books of Hadith: (17) Sahih Bukhari (18) Sahih Muslim (19) Sunan Abi Dawud (20) Jami` at-Tirmidhi (21) Mujtaba Nasa'i (22) Sunan Ibn Majah (23) Muwatta Imam Malik (24) Muwatta Imam Muhammad (25) Musnad Imam Shafi'i (26) Musnad Imam Ahmad (27) Sharh Ma'ani al-Athar (28) Mishkat al-Masabih (29) Taysir al-Wusul ila Jami' al-Usul (30) Jami' al-Saghir (31) Manhaj al-Ummal by Imam al-Muttaqi (32) Kanz al-Ummal (33) Muntakhab Kanz al-Ummal (34) Musannaf Abd al-Razzaq (35) Musannaf Abi Bakr ibn Abi Shaybah (36) Musnad Abu Dawud al-Tayalisi (37) Musnad Ishaq ibn Rahwayh (38) Tabaqat Ibn Sa'd (39) Kitab Musa ibn Tariq Abu Qurrah (40) Ziyadat Maghazi Ibn Ishaq by Yunus ibn Bukayr (41) Sahih Ibn Khuzaymah (42) Muntaqa Ibn al-Jarud (43) Musnad al-Bazzar (44) Musnad Abi Ya'la (45) Al-Mu'jam al-Kabir al-Tabarani (46) Al-Mu'jam al-Awsat by him (47) Fawa'id Tammam al-Razi (48) Al-Kamil Ibn Adi (49) Kitab al-Jana'iz by al-Marwazi (50) Kitab Makkah by Umar ibn Shabbah (51) Kitab Abi Bishr (52) Fawa'id Samuyah (53) Mustakhraj Isma'il (54) Mustadrak al-Hakim (55) Hilyat al-Awliya by Abu Nu'aym (56) Sunan al-Bayhaqi (57) Dala'il al-Nubuwwah (58) Sunan Sa'id ibn Mansur (59) Musnad Faryabi (60) Musnad Abd ibn Humayd (61) Tafsir Ibn Jarir (62) Tafsir Ibn al-Mundhir (63) Tafsir Ibn Abi Hatim (64) Tafsir Abu al-Shaykh (65) Tafsir Ibn Marduwayh (66) Maghazi Ibn Ishaq as we have established and recorded.

Commentaries of Hadith: (67) Minhaj Sharh Muslim by al-Nawawi (68) Umdat al-Qari Sharh Sahih Bukhari by al-Ayni (69) Irshad al-Sari Sharh Sahih Bukhari by al-Qastallani (70) Mirqat Sharh Mishkat by al-Qari (71) Taysir Sharh Jami' al-Saghir by al-Munawi (72) Siraj al-Munir Sharh Jami' al-Saghir by al-Azizi (73) Fath al-Bari Sharh Sahih Bukhari by al-Asqalani (74) Kawakib al-Durari Sharh Sahih Bukhari by al-Kirmani

फ़तावा रज़विया जिल्द 29

हदीस की किताबें: (17) सहीह बुखारी (18) सहीह मुस्लिम (19) सुनन अबी दाऊद (20) जामि' तिरमिज़ी (21) मुजतबा नसाई (22) सुनन इब्न माजा (23) मुअत्ता इमाम मालिक (24) मुअत्ता इमाम मुहम्मद (25) मुसनद इमाम शाफ़ई (26) मुसनद इमाम अहमद (27) शरह मा'नी अल-आसार (28) मिश्कात अल-मसाबीह (29) तयसीर अल-वुसूल इला जामि' अल-उसूल (30) जामि' सगीर (31) मनहज अल-उम्माल लिल-इमाम अल-मुत्तकी (32) कंज़ अल-उम्माल (33) मुंतखब कंज़ अल-उम्माल (34) मुसन्नफ़ अब्द अल-रज़्ज़ाक़ (35) मुसन्नफ़ अबी बक्र इब्न अबी शैबा (36) मुसनद अबू दाऊद तयालिसी (37) मुसनद इस्हाक़ इब्न राहवैह (38) तबाकात इब्न साद (39) किताब मूसा इब्न तारिक अबू कुर्रा (40) ज़ियादात मग़ाज़ी इब्न इस्हाक़ लियूनुस इब्न बुकीर (41) सहीह इब्न खुज़ैमा (42) मुंतका इब्न ज़ूद (43) मुसनद बज़ार (44) मुसनद अबी यला (45) मुअजम कबीर तबरानी (46) मुअजम औसत लहू (47) फ़वाइद तमाम राज़ी (48) कामिल इब्न अदी (49) किताब अल-जनाइज़ लिल-मरवज़ी (50) किताब मक्का लियर इब्न शब्बह (51) किताब अबी बिश्र (52) फ़वाइद समविया (53) मुस्तख्रज इस्माईल (54) मुस्तदरक हाकिम (55) हियतुल औलिया लिल-अबी नुऐम (56) सुनन बैहक़ी (57) दलाइल अल-नुबुव्वह (58) सुनन सईद इब्न मंसूर (59) मुसनद फ़र्याबी (60) मुसनद अब्द इब्न हुमैद (61) तफ़सीर इब्न जरीर (62) तफ़सीर इब्न अल-मुन्ज़िर (63) तफ़सीर इब्न अबी हातिम (64) तफ़सीर अबुल शैख़ (65) तफ़सीर इब्न मरदूवैह (66) मग़ाज़ी इब्न इस्हाक़ जैसा कि हमने निर्धारित और दर्ज किया है।

हदीस की शरह (व्याख्या): (67) मिन्हाज शरह मुस्लिम लिन-नववी (68) उम्दतुल कारी शरह सहीह बुखारी लिल-ऐनी (69) इर्शाद अल-सारी शरह सहीह बुखारी लिल-क़स्तलानी (70) मिर्कात शरह मिश्कात लिल-क़ारी (71) तयसीर शरह जामि' सगीर लिल-मुनावी (72) सिराज अल-मुनीर शरह जामि' सगीर लिल-अज़ीज़ी (73) फ़तह अल-बारी शरह सहीह बुखारी लिल-असकलानी (74) कवाकिब अल-दुरारी शरह सहीह बुखारी लिल-किरमानी

पृष्ठ 747 of 750

کتب حدیث: (۱۷) صحیح بخاری (۱۸) صحیح مسلم (۱۹) سنن ابی داؤد (۲۰) جامع ترمذی (۲۱) مجتبٰی نسائی (۲۲) سنن ابن ماجہ (۲۳) مؤطا امام مالک (۲۴) مؤطا امام محمد (۲۵) مسند امام شافعی (۲۶) مسند امام احمد (۲۷) شرح معانی الآثار (۲۸) مشکوۃ المصابیح (۲۹) تیسیر الوصول الی جامع الاصول (۳۰) جامع صغیر (۳۱) منہج العمال للامام المتقی (۳۲) کنز العمال لہ (۳۳) منتخب کنز العمال لہ (۳۴) مصنف عبدالرزاق (۳۵) مصنف ابی بکر بن ابی شیبہ (۳۶) مسند ابوداؤد طیالسی (۳۷) مسند اسحق بن راہویہ (۳۸) طبقات ابن سعد (۳۹) کتاب موسٰی بن طارق ابوقرۃ (۴۰) زیادات مغازی ابن اسحق لیونس بن بکیر (۴۱) صحیح ابن خزیمہ (۴۲) منتقٰی ابن زود (۴۳) مسند بزار (۴۴) مسند ابی یعلی (۴۵) معجم کبیر طبرانی (۴۶) معجم اوسط لہ (۴۷) فوائد تمام رازی (۴۸) کامل ابن عدی (۴۹) کتاب الجنائز للمروزی (۵۰) کتاب مکہ لعمر بن شبہ (۵۱) کتاب ابی بشر (۵۲) فوائد سمویہ (۵۳) مستخرج اسمعیل (۵۴) مستدرک حاکم (۵۵) حلیۃ الاولیاء لابی نعیم (۵۶) سنن بیہقی (۵۷) دلائل النبوۃ (۵۸) سنن سعید بن منصور (۵۹) مسند فریابی (۶۰) مسند عبد بن حمید (۶۱) تفسیر ابن جریر (۶۲) تفسیر ابن المنذر (۶۳) تفسیر ابن ابی حاتم (۶۴) تفسیر ابوالشیخ (۶۵) تفسیر ابن مردویہ (۶۶) مغازی ابن اسحق علی ما قررنا و حررنا۔

شروح حدیث: (۶۷) منہاج شرح مسلم للنووی (۶۸) عمدۃ القاری شرح صحیح بخاری للعینی (۶۹) ارشاد الساری شرح صحیح بخاری للقسطلانی (۷۰) مرقاۃ شرح مشکوۃ للقاری (۷۱) تیسیر شرح جامع صغیر للمناوی (۷۲) سراج المنیر شرح جامع صغیر للعزیزی (۷۳) فتح الباری شرح صحیح بخاری للعسقلانی (۷۴) کواکب الدراری شرح صحیح بخاری للکرمانی

Vol 29 Fatawa Ridawiyya

(75) Mufhim Sharh Sahih Muslim by al-Qurtubi

Books of Fiqh (76) Hidaya (77) Kafi Sharh al-Wafi, both by Imam al-Nasafi (78) Fath al-Qadir by al-Muhaqqiq (the Researcher) (79) Kifaya Sharh al-Hidaya (80) Hilya Sharh Munya by Imam al-Halabi (81) Ghunyah Sharh Munyah by al-Muhaqqiq al-Halabi (82) Bahr al-Ra'iq Sharh Kanz al-Daqaiq (83) Tahtawi 'ala Maraqi al-Falah by al-Shurunbulali (84) Radd al-Muhtar 'ala al-Durr al-Mukhtar (85) Binaya Sharh al-Hidaya by al-'Ayni (86) Burhan Sharh Mawahib al-Rahman, both by al-Tarabulsi

Books of Seerah (87) Mawahib al-Ladunniyyah wa Minah al-Muhammadiyyah (88) Sharh Mawahib by al-Zurqani (89) Sirat al-Mustaqim by al-Majd (90) Sharh Sirat al-Mustaqim by the Sheikh (91) Madarij al-Nubuwwah by him (92) Al-Khamis by al-Diyarbakri (93) Is'af al-Raghibin by al-Sabban (94) Rawdat al-Ahbab (95) Tarikh (History) of Ibn Asakir (96) Rawd al-Suhayli (97) Imta' al-Asma' by al-Maqrizi

Books of Beliefs, Principles, and Various Sciences (98) Fiqh al-Akbar by al-Imam al-A'zam (99) Sharh al-Maqasid by al-'Allamah al-Matin (100) al-Isabah fi Tamyiz al-Sahabah by Imam Ibn Hajar (101) Maslak al-Hunafa fi Waliday al-Mustafa (s.a.w.) by Imam Suyuti (102) Afdal al-Qura Umm al-Qura by Imam Ibn Hajar (103) Sharh al-Shifa by Ali al-Qari (104) Nasim al-Riyad by al-Khafaji (105) Hafni Sharh al-Hamziyya (106) Majma' al-Bihar by al-Fatni (107) Fawatih al-Rahmut by Bahr al-'Ulum (108) al-Taqrir wa al-Tahrir fi al-Usul by al-'Allamah Ibn Amir al-Hajj (109) Al-Nihaya fi Gharib al-Hadith by Ibn al-Athir

जिल्द 29 फ़तावा रज़विया

(75) मुफ़हिम शरह सहीह मुस्लिम लिल-कुर्तुबी

फ़िक़्ह की किताबें (76) हिदाया (77) काफ़ी शरह अल-वाफ़ी, दोनों इमाम अल-नसफ़ी द्वारा (78) फ़तह अल-क़दीर लिल-मुहक़्क़िक़ (79) किफ़ाया शरह हिदाया (80) हिलया शरह मुन्या लिल-इमाम अल-हलबी (81) ग़ुनया शरह मुन्या लिल-मुहक़्क़िक़ अल-हलबी (82) बहर अल-रैक़ शरह कंज़ अद-दक़ैक़ (83) त़हत़ावी अला मराक़ी अल-फ़लाह़ लिश-शुरुनबुलाली (84) रद अल-मुह़्तार अला अद-दुर अल-मुख़्तार (85) बिनाया शरह हिदाया लिल-ऐनी (86) बुरहान शरह मवाहिब अल-रह़मान, दोनों अल-तराबुलसी द्वारा

सीरत की किताबें (87) मवाहिब अल-लदुन्निया व मिनह़ अल-मुहम्मदिया (88) शरह मवाहिब लिल-ज़ुरक़ानी (89) सिरात अल-मुस्तक़ीम लिल-मज्द (90) शरह सिरात अल-मुस्तक़ीम लिश-शेख़ (91) मद़ारिज उन-नबुव्वत उनके द्वारा (92) ख़मीस लिल-दियार बकरी (93) इसाफ़ अर-राग़िबीन लिस-सब्बान (94) रौज़तुल अह़बाब (95) तारीख़ इब्न असाकिर (96) रौज़ सुहैली (97) इम्ता अल-अस्मा लिल-मक़रीज़ी

अक़ायद, उसूल और विभिन्न विज्ञान की किताबें (98) फ़िक़्ह अकबर लिल-इमाम आज़म (99) शरह अल-मक़ासिद लिल-अल्लामा अल-मातिन (100) अल-इसाबा फ़ी तमीज़ अल-स़हाबा लिल-इमाम इब्न ह़जर (101) मस्लक अल-ह़ुनफ़ा फ़ी वालिदै अल-मुस्त़फ़ा (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) लिल-इमाम सुयूती (102) अफ़ज़ल अल-क़ुरा उम्म अल-क़ुरा लिल-इमाम इब्न ह़जर (103) शरह अल-शिफ़ा ली अली अल-क़ारी (104) नसीम अल-रियाज़ लिल-ख़फ़ाजी (105) ह़फ़नी शरह अल-ह़मज़िया (106) मज्म उल-बिहार लिल-फ़तनी (107) फ़वातिह़ अल-रह़मूत लबहर अल-उलूम (108) अल-तक़रीर व अल-तहरीर फ़ी अल-उसूल लिल-अल्लामा इब्न अमीर अल-ह़ाज (109) निहाया फ़ी ग़रीब अल-ह़दीस लिब्न असीर

पृष्ठ 748/750

جلد ۲۹ فتاوی رضویہ

(۷۵) مفہم شرح صحیح مسلم للقرطبی

کتب فقہ (۷۶) ہدایہ (۷۷) کافی شرح الوافی کلاہما للامام النسفی (۷۸) فتح القدیر للمحقق (۷۹) کفایہ شرح ہدایہ (۸۰) حلیہ شرح منیہ للامام الحلبی (۸۱) غنیہ شرح منیۃ للمحقق الحلبی (۸۲) بحر الرائق شرح کنز الدقائق (۸۳) طحطاوی علی مراقی الفلاح للشرنبلالی (۸۴) رد المحتار علی الدر المختار (۸۵) بنایہ شرح ہدایہ للعینی (۸۶) برہان شرح مواہب الرحمان کلاہما للطرابلسی

کتب سیر (۸۷) مواہب اللدنیہ و منح محمدیہ (۸۸) شرح مواہب للزرقانی (۸۹) صراط المستقیم للمجد (۹۰) شرح صراط المستقیم للشیخ (۹۱) مدارج النبوۃ لہ (۹۲) خمیس للدیار بکری (۹۳) اسعاف الراغبین للصبان (۹۴) روضۃ الاحباب (۹۵) تاریخ ابن عساکر (۹۶) روض سہیلی (۹۷) امتاع الاسماع للمقریزی

کتب عقائد و اصول و علوم شتی (۹۸) فقہ اکبر للامام اعظم (۹۹) شرح المقاصد للعلامۃ الماتن (۱۰۰) اصابہ تمییز الصحابۃ للامام ابن حجر (۱۰۱) مسلک الحنفاء فی والدی المصطفی صلی اللہ علیہ وسلم للامام سیوطی (۱۰۲) افضل القراء ام القری للامام ابن حجر (۱۰۳) شرح شفاء لعلی القاری (۱۰۴) نسیم الریاض للخفاجی (۱۰۵) حفنی شرح الہمزیہ (۱۰۶) مجمع البحار للفتنی (۱۰۷) فواتح الرحموت لبحر العلوم (۱۰۸) التقریر والتحریر فی الاصول للعلامۃ ابن امیر الحاج (۱۰۹) نہایہ فی غریب الحدیث لابن اثیر

Fatawa Rizvia, Volume 29

(110) Sharh Tanqih al-Fusul fi al-Usul - both by al-Qarafi (111) Dhakha'ir al-Uqba fi Manaqib Dhawi al-Qurba by al-Hafiz al-Muhibb al-Tabari

Note Those books from which assistance was taken in this treatise:

(112) Sharh 'Aqa'id al-Nasafi (113) Sharh 'Aqa'id al-'Adudi (114) Sirat Ibn Hisham (115) Al-Itqan fi 'Ulum al-Qur'an (116) Mizan al-I'tidal (117) Taqrib al-Tahdhib (118) Taqrib of Imam Nawawi (119) Tadrib of Imam Suyuti (120) Musallam al-Thubut (121) Durr al-Mukhtar (122) Tarikh al-Khulafa (123) Tuhfa-e-Ithna Ashariya (124) Sahih Ibn Hibban (125) Al-Alqab of Shirazi (126) Al-Isti'ab by Abu 'Umar (127) Ma'rifat al-Sahaba by Abu Nu'aym (128) Musnad al-Firdaws of Daylami (129) Khadim al-Imam Badr al-Din al-Zarkashi (130) Shu'ab al-Iman by Imam al-Bayhaqi

Khatam Allah Ta'ala lana bil-imaan wal-amaan. Ameen, Ameen.	**May Allah Almighty grant us an end with faith and peace. Ameen, Ameen.**
Alhamdu lillahi 'alal ikhtitam wa nasaluhu husnal khitam.	All praises are for Allah Almighty upon completion, and we ask Allah Almighty for a good end. (T)

Previously, this question came from Badaun. In response, a concise treatise of a few pages was written and named "Mu'tabar al-Talib fi Shuyun Abi Talib" (1292 AH). Now that the question has come again from Ahmedabad and some scholars of Bombay also requested special attention in this regard, according to the current situation and available time, a detailed and extensive explanation was employed and it was made an explanation of that initial summary. Also, in the explanation of the objectives and the satisfaction of the seeker, by the grace of Allah the Almighty, it was found to be comprehensive and complete. Therefore, its name was kept "Sharh al-Matalib fi Mabhash Abi Talib" (1316 AH), and this is the date of its beginning and end.

Walhamdu lillahi wali al-in'am wa afdal	**All praise is for Allah Almighty who is the provider of favors...**

फ़तावा रिज़विया, खंड 29

(110) शर्ह तनक़ीह अल-फ़ुसूल फ़ी अल-उसूल - दोनों अल-क़राफ़ी द्वारा (111) ज़ख़ाइर अल-उक़्बा फ़ी मनाक़िब ज़वी अल-क़ुर्बा, अल-हाफ़िज़ अल-मुहिब्ब अत-तबरी द्वारा

अनुपूरक नोट वे किताबें जिनसे इस शोध प्रबंध में सहायता ली गई है:

(112) शर्ह अक़ायद नफ़ी (113) शर्ह अक़ायद अददी (114) सीरत इब्न हिशाम (115) अल-इतक़ान फ़ी उलूम अल-क़ुरान (116) मीज़ान अल-इतिदाल (117) तक़रीब अत-तहज़ीब (118) तक़रीब इमाम नववी (119) तदरीब इमाम सुयूती (120) मुसल्लम अत-थुबूत (121) दुर्रे मुख़्तार (122) तारीख़ अल-ख़ुलफ़ा (123) तोहफ़ा इथना अशरिया (124) सहीह इब्न हिब्बान (125) अल-अल्क़ाब शीराज़ी (126) इस्तीयाब अबू उमर (127) मारिफ़त अस-सहाबा अबू नईम द्वारा (128) मुस्नद अल-फ़िरदौस दैलमी (129) ख़ादिम अल-इमाम बद्रुद्दीन ज़रकशी (130) शअब अल-ईमान इमाम बैहक़ी द्वारा

ख़तम अल्लाहु तआला लना बिल-ईमान वल-अमान। आमीन, आमीन।	**अल्लाह तआला ईमान और सुरक्षा के साथ हमारा अंत करे। आमीन, आमीन।**
अलहम्दु लिल्लाहि अलल इख़्तिताम व नसअलुहु हुस्नल ख़िताम।	समापन पर सभी प्रशंसाएँ अल्लाह तआला के लिए हैं, और हम अल्लाह तआला से अच्छे अंत का सवाल करते हैं। (त)

पहले यह सवाल बदाऊं से आया था, जवाब में कुछ पन्नों का एक संक्षिप्त शोध प्रबंध लिखा गया और इसका नाम "मोतबर अत-तालिब फ़ी शुयून अबी तालिब" (1292 हिजरी) रखा गया। अब जब दोबारा अहमदाबाद से सवाल आया और बम्बई के कुछ विद्वानों ने भी इस बारे में विशेष ध्यान देने का अनुरोध किया, तो वर्तमान स्थिति और उपलब्ध समय के अनुसार विस्तृत व्याख्या का उपयोग किया गया और इसे उस प्रारंभिक सारांश की व्याख्या बनाया गया। साथ ही, उद्देश्यों की व्याख्या और साधक की संतुष्टि में, अल्लाह तआला की कृपा से इसे व्यापक और पूर्ण पाया गया। इसलिए, इसका नाम "शर्ह अल-मतालिब फ़ी मबहस अबी तालिब" (1316 हिजरी) रखा गया और यही इसकी शुरुआत और समाप्ति की तारीख है।

वलहम्दु लिल्लाहि वली अल-इनआम व अफ़ज़ल	**सभी प्रशंसाएँ अल्लाह तआला के लिए हैं जो इनामतों का...**

(۱۱۰) شرح تنقیح الفصول فی الاصول کلاھما للقرافی (۱۱۱) ذخائر العقبیٰ فی مناقب ذوی القربیٰ للحافظ المحب الطبری

تذلیل وہ کتابیں جن سے اس رسالہ میں مدد لی گئی :

(۱۱۲) شرح عقائد نسفی (۱۱۳) شرح عقائد عضدی (۱۱۴) سیرت ابن ہشام (۱۱۵) اتقان فی علوم القرآن (۱۱۶) میزان الاعتدال (۱۱۷) تقریب التہذیب (۱۱۸) تقریب امام نووی (۱۱۹) تدریب امام سیوطی (۱۲۰) مسلم الثبوت (۱۲۱) در مختار (۱۲۲) تاریخ الخلفاء (۱۲۳) تحفہ اثناء عشریہ (۱۲۴) صحیح ابن حبان (۱۲۵) القاب شیرازی (۱۲۶) استیعاب ابو عمر (۱۲۷) معرفۃ الصحابہ لابی نعیم (۱۲۸) مسند الفردوس دیلمی (۱۲۹) خادم الامام بدر الدین الزرکشی (۱۳۰) شعب الایمان للامام البیہقی

ختم اللہ تعالٰی لنا بالایمان والآمان آمین آمین

اللہ تعالٰی ایمان اور امان کے ساتھ ہمارا خاتمہ کرے، آمین۔

الحمدللہ علی الاختتام ونسألہ حسن الختام۔ آمین۔ حسن اختتام رسالہ پر تمام تعریفیں اللہ تعالٰی کے لیے ہیں ، اور ہم اللہ تعالٰی سے حسن خاتمہ کا سوال کرتے ہیں ، (ت)

پہلے یہ سوال بدایوں سے آیا تھا جواب میں ایک موجز رسالہ چند ورق کا لکھا اور اس کا نام معتبر الطالب فی شیون ابی طالب ۱۲۹۲ھ رکھا، اب کہ دوبارہ احمد آباد سے سوال آیا اور بعض علمائے بمبئی نے بھی اس بارہ میں توجہ خاص کا تقاضا فرمایا حسب حالت راہنہ و فرصت حاضرہ شرح وبسط کافی کو کام میں لایا اور اسے اس اجمال اول کی شرح بنایا نیز شرح مطالب و تسکین طالب

میں بحمد اللہ تعالٰی حافل و کامل پایا، لہذا شرح المطالب فی مبحث ابی طالب ۱۳۱۶ھ اس کا نام رکھا اور یہی اس کی تاریخ آغاز و انجام۔

والحمدللہ ولی الانعام وافضل سب تعریفیں اللہ تعالٰی کے لیے ہیں جو انعام کا

Volume 29 Fatawa Razawiyya

[Allah] is the Owner, and may the most excellent blessings and most perfect peace be upon our master Muhammad Mustafa, who is the guide for all humanity, and upon his noble family and companions with radiant foreheads, and may He accept our prayer for us and for them until the Day of Resurrection through their sake, O Possessor of Majesty and Honor. Allah, Glorified and Exalted is He, knows best, and His knowledge, may His glory be exalted, is most complete and most firm. (T)

Written by the sinful servant Ahmad Raza al-Barelwi, may he be forgiven, by the praise of Al-Mustafa, the Unlettered Prophet, peace and blessings of Allah Almighty be upon him.

Muhammadi Sunni Hanafi Qadri Abd al-Mustafa Ahmad Raza Khan

Treatise Sharh al-Matalib regarding the discussion of Abu Talib has ended.

Note Volume 29 concluded under the title of "Beliefs, Theology, and Religious Sciences". The final volume 30 of Fatawa Razawiyya will, God willing, consist of the themes of the Biography and Virtues of the Messenger of Allah, peace and blessings of Allah be upon him.

Page 750 of 750

[अल्लाह] स्वामी है, और हमारे आका मुहम्मद मुस्तफ़ा पर श्रेष्ठतम दुरूद और पूर्णतम सलाम हो, जो समस्त संसार के मार्गदर्शक हैं, और उनके उज्ज्वल मस्तक वाले कृपाशील परिवार और साथियों पर, और उनके माध्यम से हम पर और उनके लिए प्रलय के दिन तक हमारी प्रार्थना स्वीकार फरमाए, ऐ महानता और सम्मान वाले। अल्लाह सुब्हानहू व तआला भली-भांति जानता है, और उसका ज्ञान (उसकी महिमा बुलंद हो) अत्यंत पूर्ण और दृढ़ है। (त)

इसे गुनहगार बंदे अहमद रज़ा बरेलवी (अल्लाह उन्हें क्षमा करे) ने मुस्तफ़ा नबी-ए-उम्मी (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) की प्रशंसा के साथ लिखा।

मुहम्मदी सुन्नी हनफी कादरी अब्द अल-मुस्तफा अहमद रज़ा खान

रिसाला शरह अल-मतालिव फ़ी मबहत अबी तालिब समाप्त हुआ

नोट खंड २९ 'अकाएद व कलाम व दीनियात' के शीर्षक पर समाप्त हुआ। इंशाअल्लाह, फ़तावा रज़विया का अंतिम खंड ३० अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) के'सीरत और फ़ज़ाइल' के शीर्षक पर आधारित होगा।

पृष्ठ ७५० का ७५०

الصلوۃ واکمل السلام علی سیدنا محمد ھادی الانام و علی آلہ وصحبہ الغر الکرام وعلینا بھم ولھم الی یوم القیمۃ آمین یا ذا الجلال والاکرام، واللہ سبحنہ و تعالٰی اعلم وعلمہ جل مجدہ اتم واحکم۔ مالک ہے، اور افضل درود و اکمل سلام ہو ہمارے آقا محمد مصطفیٰ پر جو کُل جہان کے ہادی ہیں، اور آپ کے روشن پیشانیوں والے اہل کرم آل واصحاب پر اور انکے صدقے میں ہم پر اور اُن کے لیے یومِ قیامت تک ہماری دعا قبول فرمائے اے بزرگی اور اکرام والے۔ اللہ سبحانہ و تعالٰی خوب جانتا ہے، اور اس کا علم اتم اور مستحکم ہے۔ (ت)

کتبہ عبد المذنب احمد رضا البریلوی عفی عنہ بحمد المصطفی النبی الامی صلے اللہ تعالیٰ علیہ وسلم

محمدی سنی حنفی قادری عبد المصطفی احمد رضا خاں

رسالہ شرح المطالب فی مبحث ابی طالب ختم ہوا

نوٹ جلد ۲۹ "عقائد و کلام و دینیات" کے عنوان پر اختتام پذیر ہوئی۔ فتاوی رضویہ کی آخری جلد ۳۰ ان شاء اللہ تعالیٰ سیرت اور فضائل رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے عنوان پر مشتمل ہوگی۔